बृहत् हिन्दी कोश

बृहत् हिन्दी कोश

शब्दसंख्या १,४०,०००

सम्पादक

कालिका प्रसाद

राजवल्लभ सहाय

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य ५०) ६०/

प्रथम संस्करण, रथयात्रा, संवत् २००९
द्वितीय संस्करण, रामनवमी, संवत् २०१३
तृतीय संस्करण, ज्येष्ठ, संवत् २०२०
चतुर्थ परिवर्धित संस्करण, मार्गशीर्ष संवत् २०३०

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी १.
मुद्रक—ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस) ७०१७–२७

चतुर्थ संस्करणकी भूमिका

विश्वकी अनेक प्रगतिशील भाषाओंके साथ-साथ हिन्दीका साहित्य-भण्डार भी पिछले कुछ वर्षोंमें तेजीसे बढ़ता रहा है। विविध विषयोंकी अनेकानेक पुस्तकों तथा रचनाओंका सतत प्रकाशन होते रहने तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाओंमें ज्ञान-विज्ञानकी आधुनिकतम सामग्रीकी चर्चा और विवेचनका सिलसिला चलते रहनेके कारण राष्ट्रभाषाकी शब्दनिधिमें निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इस स्थितिको ध्यानमें रखकर "बृहत् हिन्दी कोश"का पूर्णरूपसे संशोधन और परिवर्धन कर दिया गया है जिससे यह पाठकोंके लिए अधिकसे अधिक उपयोगी साबित हो सके।

पारिभाषिक शब्दोंका अब यथेष्ट प्रचलन हो गया है और जन-साहित्यमें धड़ल्लेसे उनका प्रयोग होने लगा है, अतः अब उन्हें परिशिष्टके रूपमें न रखकर मूल भागमें क्रमानुसार यथास्थान रख दिया गया है। इसी दृष्टिसे अंग्रेजीके पारिभाषिक शब्दोंको भी इसमें समाविष्ट किये रहनेका अब कोई औचित्य नहीं प्रतीत होता, अतः इस संस्करणसे वे बिलकुल निकाल दिये गये हैं। फिर भी हिन्दीके पारिभाषिक शब्दोंके साथ यत्रतत्र उनके अंग्रेजी पर्याय भी कोष्ठकमें दे दिये गये हैं।

"बृहत् हिन्दी कोश"का यथेष्ट प्रचार हो जानेके बावजूद कितने ही पाठक उसकी रचना-प्रणालीसे भली भाँति परिचित नहीं हो पाये हैं, इसीसे यदाकदा हमें इस आशयके पत्र मिलते रहते हैं कि अमुक शब्द इसमें नहीं आया है, ढूँढ़नेपर अमुक शब्द हमें यथा-स्थान नहीं मिला, इत्यादि। पाठकोंको चाहिये कि यदि कोई शब्द उन्हें यथास्थान अर्थात् क्रममें न मिले तो वे यह समझनेका प्रयत्न करें कि वह शब्द किसी अन्य शब्दसे मिलकर तो नहीं बना है। ऐसा करनेसे उन्हें उक्त शब्द उस अन्य शब्दके साथ रखा हुआ मिल जायगा। कमजोर, खानदान, दरकार, दुविधा, दुशाला, नटसाल, पावंद, लाचार, सकरपाला आदि ऐसे ही शब्द हैं जो क्रममें न मिलकर क्रमशः कम, खान, दर, दु, नट, पा, ला, सकर आदि शब्दोंके साथ समस्त रूपमें देख पड़ेंगे। इसी तरह प्रत्ययोंसे बने संस्कृतके शब्द तो मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं, क्योंकि संस्कृतमें समस्त पदोंका बाहुल्य होनेसे उनके ढूँढ़नेमें असुविधा होती किन्तु अन्य भाषाओंके शब्द, जहाँ प्रत्ययोंके मिलनेपर उनके मूल रूपमें कोई हेरफेर नहीं होता, मूल शब्दके साथ ही रखे गये हैं। जिन शब्दोंमें प्रत्ययोंके लगनेपर, सन्धि आदिके कारण, परिवर्तन हो जाता है, वे मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं जिससे पाठकोंको उन्हें ढूँढ़नेमें कठिनाई न हो।

अन्तमें हम अपने मित्र श्री भगवतीप्रसाद श्रीवास्तवको हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने विज्ञानके सैकड़ों शब्दोंकी व्याख्या लिख देकर हमारी सहायता की है। इसी तरह हिन्दू विश्वविद्यालयके हिन्दी विभागके रीडर श्री शिवप्रसाद सिंहके भी हम कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमारे अनुरोधपर नवलेखनके बहुतसे शब्द, व्याख्या सहित, लिखकर हमें देनेकी कृपा की है। हमारे "आज" परिवारके सदस्योंसे भी बहुतसे महत्त्वपूर्ण नये शब्द मिले हैं, इसके लिए वे पाठकोंके धन्यवादके पात्र हैं। साथ ही श्री विश्वनाथ त्रिपाठी तथा श्री कृष्णदत्त भट्ट भी हमारे धन्यवादके भाजन हैं, क्योंकि उन्होंने इस संस्करणके प्रूफ संशोधनमें विपुल प्रयास किया है।

एक बात और। यद्यपि इस संस्करणमें लगभग दो हजार नये शब्द समाविष्ट किये गये हैं, फिर भी पृष्ठसंख्या पहलेकी अपेक्षा लगभग ३४० कम हो गयी है, क्योंकि जहाँ तृतीय संस्करणके प्रत्येक पृष्ठमें १०० पंक्तियाँ थीं वहाँ इस संस्करणमें १२० पंक्तियाँ रखनेका प्रयत्न किया गया है।

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

तृतीय संस्करणके संबंधमें

"बृहत् हिन्दी कोश"का तृतीय संस्करण हिंदी-जगत्के समक्ष प्रस्तुत है। इतने थोड़े समयके बाद इसका नवीन संस्करण प्रकाशित होना इस बातका द्योतक है कि इस कोशको अन्य कोशोंकी अपेक्षा अधिक प्रियता प्राप्त है। इससे हमारा उत्साह बढ़ा है और इसीलिए हमने इसे पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी एवं आधुनिकतम बनानेकी चेष्टा की है। इस संस्करणमें पिछले संस्करणोंकी बहुत-सी त्रुटियोंका आनुपूर्वी परिमार्जन कर दिया गया है; शब्दोंके अनेक नये अर्थ बढ़ा दिये गये हैं। द्वितीय संस्करणके परिशिष्ट ३ में दिये गये शब्द अर्थ सहित मूलमें यथास्थान निहित कर दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त लगभग दो हजार नये शब्द भी बढ़ाये गये हैं। उनमें कुछ तो यथास्थान बढ़ाये गये हैं और कुछ शब्द परिशिष्टमें। इस तरह अब इसमें १,३६,००० के स्थानपर १,३८,००० शब्द आ गये हैं। पाठक ही इसकी अच्छाई-बुराईके निर्णायक होंगे।

इच्छा न रहते हुए भी कागजकी अत्यधिक महँगाई, दफ्ती, जिल्दबंदीके कपड़े आदिकी मूल्यवृद्धिके कारण इस कोशका मूल्य बढ़ानेके लिए विवश होना पड़ा है। इस संस्करणमें नये शब्दोंका चयन करनेमें श्री विद्याभास्करने विशेष परिश्रम किया है; तथा श्री श्रीशंकर शुक्लने प्रूफ शोधन करनेमें सहायता की है, इसके लिए हम इनको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

—प्रकाशक

द्वितीय संस्करणकी भूमिका

"बृहत् हिंदी कोश"का यह द्वितीय संस्करण पाठकोंके सामने प्रस्तुत करनेमें हमें हार्दिक प्रसन्नता होती है। इसके प्रथम संस्करणका जैसा स्वागत-सत्कार हिंदी-जगत्में हुआ है, उससे हमें यथेष्ट बल मिला है और अब हम तीन-चार वर्षके भीतर ही द्विगुणित उत्साहसे इसका दूसरा संस्करण लेकर हिंदी-प्रेमियोंकी सेवामें उपस्थित हो रहे हैं। इसमें आवश्यक संशोधन, परिवर्द्धन करनेमें हमने अपनी ओरसे भरसक कोई कोर-कसर नहीं होने दी है, फिर भी हम नहीं कह सकते कि हम इस प्रयासमें कहाँतक सफल हो सके हैं। विवेकशील पाठक ही इसके वास्तविक निर्णायक हो सकते हैं; अतः उन्हींके ऊपर इसके मूल्यांकनका भार छोड़ देना हमारे लिए अलम् होगा।

प्रथम संस्करणकी ही तरह इस आवृत्तिमें भी प्रत्ययोंसे बने संस्कृतके शब्द मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं किंतु अन्य भाषाओंके शब्द, जहाँ प्रत्ययोंके मिलनेपर उनके मूल रूपमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता, मूल शब्दके साथ रख दिये गये हैं। इसी तरह जिन समस्त पदोंमें सन्धिके कारण विकार हो जाता है वे मूलशब्दसे पृथक् रखे गये हैं। इसका कारण यह है कि जो लोग सन्धिके नियमोंसे अपरिचित हैं उन्हें उनका रूप पहचाननेमें कठिनाई हो सकती है। इसी सिद्धांतके अनुसार हमने कितने ही समस्त पद जो पहले मूलशब्दके साथ रखे गये थे, इस संस्करणमें पृथक् रखे हैं जिससे संस्कृत न जाननेवालोंके लिए भी उन्हें पहचानने या ढूँढ़नेमें असुविधा न हो।

कभी-कभी समस्त पदका रूप सरसरी तौरसे देखनेपर साफ-साफ समझमें नहीं आता, अतः जब ऐसा कोई शब्द अपने स्थानपर अर्थात् क्रममें न मिले, तब पाठकोंको निराश होनेके बजाय एक बार यह विचार कर लेनेका प्रयत्न करना चाहिये कि वह किसी अन्य शब्दसे तो नहीं बना है। ऐसा करनेसे उचित स्थानपर उक्त शब्दको ढूँढ़ निकालनेमें कुछ भी कठिनाई न होगी। लाचार, पाबंद, अरघट्ट, कमजोर, दरकार, दुविधा, नटसाल, पसोपेश, सकरपाला आदि ऐसे ही शब्द हैं जो क्रममें न मिलकर इन शब्दोंके साथ देख पड़ेंगे :—ला, पा, अर, कम, दर, दु, नट, पस तथा सकर।

समूचा कोश फिरसे दोहराया गया है और गद्य-पद्यकी कितनी ही अन्य पुस्तकें पढ़-पढ़कर छूटे हुए शब्दों तथा अर्थोंका संकलन किया गया है। ऐसे हजारों शब्द मूल भागमें ही समाविष्ट कर दिये गये हैं किंतु जो वहाँ नहीं दिये जा सके वे परिशिष्ट संख्या ३ में रखे गये हैं। इसके सिवा इस संस्करणकी उपयोगिता बढ़ानेकी दृष्टिसे हमने विभिन्न कवियों तथा लेखकोंकी रचनाओंसे हजारों उदाहरण भी यथास्थान दे दिये हैं जिससे कठिन तथा अप्रचलितसे प्रतीत होनेवाले शब्दोंका अर्थ और उनका प्रयोग समझनेमें जिज्ञासु पाठकोंको आसानी हो।

इसी तरह परिशिष्ट दोमें दिये हुए अंग्रेजीके पारिभाषिक शब्दोंकी भी संख्या काफी बढ़ा दी गयी है। प्रथम संस्करणमें यह परिशिष्ट कुल ३६ पृष्ठोंमें समाप्त हुआ था और अब इसका विस्तार ५९ पृष्ठोंका हो गया है। पहिले लगभग ३३०० पारिभाषिक शब्दोंके पर्याय दिये गये थे, अब इनकी संख्या कोई ५६५० तक पहुँच गयी है। इसीके परिणामस्वरूप प्रथम संस्करणमें जिन पारिभाषिक शब्दोंकी हिंदीमें व्याख्या दी गयी थी (परिशिष्ट नम्बर एक), उनकी संख्या भी इस संस्करणमें काफी बढ़ा देनी पड़ी है।

इस संस्करणकी एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें साहित्य, राजनीति आदि विभिन्न क्षेत्रोंके कतिपय प्रसिद्ध व्यक्तियों—नेहरूजी, गोखले, एनी बेसेंट, बिस्मार्क, स्टालिन, जगदीशचंद्र वसु, बंकिमचंद्र, स्काट, होमर, टाल्सटाय आदि—के नाम और उनका संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है। आशा है, इससे हमारे कोशकी सहायता लेनेवाले हिंदीके पाठक विशेष लाभ उठा सकेंगे।

इस प्रकार इस संस्करणमें कुल मिलाकर दो सौ पृष्ठोंकी वृद्धि हो गयी है और शब्द संख्या भी १ लाख २६ हजारसे बढ़कर लगभग १ लाख ३६ हजार हो गयी है, फिर भी प्रकाशकोंका इरादा इसके मूल्यमें वृद्धि करनेका नहीं था। किन्तु कागजके दाममें तथा जिल्दबंदीकी चीजोंके मूल्यमें भी वृद्धि हो जानेके कारण उनके लिए इसका मूल्य बढ़ाना आवश्यक हो गया। इसका उन्हें आन्तरिक खेद है।

इस संस्करणके प्रूफ शोधनमें हमारे सहकारी तथा सहयोगी श्री श्रीशंकर शुक्ल तथा श्री मार्कण्डेय शुक्लने विशेष परिश्रम किया है, इसके लिए हम उन्हें हृदयसे धन्यवाद देते हैं।

रामनवमी,
संवत् २०१३

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

प्रथम संस्करणकी भूमिका

इस कोशके निर्माणका कार्य आजसे कई वर्ष पहले आरम्भ हुआ था। हिंदीमें यद्यपि नागरी-प्रचारिणी सभाका बड़ा कोश "हिंदी शब्दसागर" निकल चुका था, फिर भी महार्घ होनेके कारण एक तो वह सर्वसाधारणके लिए उपलब्ध नहीं हो सकता था; दूसरे, उसकी सभी प्रतियाँ प्रकाशित होनेके कुछ ही वर्षोंके भीतर समाप्त हो चुकी थीं और उसका दूसरा संस्करण निकलनेकी कोई संभावना न थी। इसके सिवा यह भी अनुभव किया गया कि 'शब्दसागर'का निर्माण जिस समय किया गया था तबसे हिंदीमें कितने ही नये-नये शब्दोंका समावेश होता रहा है और संस्कृतके अधिकाधिक शब्दोंके प्रयोगकी ओर भी छायावादी कवियों तथा अन्य साहित्यिकोंकी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इन सब बातोंको ध्यानमें रखते हुए हिंदीके ऐसे नये कोशकी आवश्यकता प्रतीत हुई जो आकार-प्रकारमें "शब्दसागर" जैसा भारी-भरकम न होते हुए भी अपने आपमें परिपूर्ण एवं सर्वोपयोगी हो, जिसमें हिंदीमें प्रयुक्त किये गये या प्रयुक्त हो सकनेवाले प्रायः सभी शब्द और उनसे बने मुहावरे आदि आ गये हों, फिर भी जो यथासंभव एक ही जिल्दमें समाप्त हो सके। "बृहत् हिंदी कोश"का प्रकाशन इसी परिकल्पनाका परिणाम है।

इसमें लगभग १ लाख २६ हजार शब्द आये हैं, जितने हिंदीके अन्य किसी भी कोशमें सन्निविष्ट नहीं किये जा सके हैं।

प्रत्ययांत शब्द

कार्यारंभ होनेके बाद शब्दोंके चुनाव और उनके रखनेके ढंगमें किंचित् परिवर्तन करना पड़ा। पहले प्रत्ययोंके योगसे बननेवाले शब्द भी समस्त पदोंकी तरह मूल शब्दके साथ ही रखे गये थे (यह रूप 'मिलनसार' शब्दमें देखा जा सकता है जो भूलसे पूर्वरूपमें ही रह गया है,) और प्रत्ययांत तथा समस्त पदोंमें संधि आदिके कारण होनेवाले विकारोंकी ओर संकेतभर कर दिया गया था। यह पद्धति आकार छोटा रखनेके विचारसे तो ठीक थी, पर इससे पाठकोंको कोशका उपयोग करनेमें असुविधा और शब्दोंका रूप समझनेमें भ्रम होनेकी संभावना देखकर संस्कृतके सारे प्रत्ययांत शब्द अलग रखे गये और अन्य भाषाओंके शब्दोंके साथ केवल ऐसे प्रत्यय रहने दिये गये जिनके मिलनेपर शब्दके मूल रूपमें कोई परिवर्तन नहीं होता। ('ता' और 'त्व' प्रत्ययोंसे बननेवाले शब्द कम ही दिये गये हैं।) संस्कृतके प्रत्यांत शब्दोंको अलग रखनेका एक कारण और था—समास-पद्धतिका प्रयोग। मूल और प्रत्ययांत शब्दोंसे बने हुए समस्त पद अगर साथ-साथ दिये जाते तो उन्हें क्रममें रखने और पाठकोंको उन्हें ढूँढ़नेमें कम दिक्कत न होती। श्री मोनियर विलियम्सने अपने कोशमें प्रत्ययांत शब्द प्रायः मूल शब्दके साथ ही रखे हैं और अगर प्रत्ययांत शब्दसे बननेवाले समासोंकी संख्या अधिक नहीं रही है तो उन्हें मूल शब्दसे बने हुए समासोंके सिलसिलेमें ही रख दिया है। अंग्रेजीमें एक ही आकारके तरह-तरहके टाइप होनेके कारण दोनों प्रकारके शब्दोंमें अन्तर करना आसान है, पर दुर्भाग्यवश हम हिंदीवालोंके लिए यह स्थिति अभी नहीं आयी है।

समस्त पद

समास-पद्धतिका सहारा लेते हुए भी सारे समस्त पद मूल शब्दके साथ ही नहीं रखे गये हैं। जिन समस्त पदोंमें संधिके कारण विकार हुआ है वे मूल शब्दसे पृथक् रखे गये हैं—समान विकारवाले समस्त पद अल्पसंख्यक होनेपर स्वतंत्ररूपमें और बहुसंख्यक होनेपर विकृत पूर्वपद स्वतंत्र शब्दके रूपमें रखकर उत्तरपद साथ रख दिये गये हैं। इस प्रकार मूल शब्दके साथ केवल ऐसे समस्त पद मिलेंगे जिनके रूपमें कोई विकार नहीं हुआ है। विकारवाले शब्द इस कारण अलग कर दिये गये हैं कि ऐसा न करनेपर संधिके नियमोंसे अपरिचित व्यक्तियोंको समास बनानेमें दिक्कत होती—'विद्वस्' शब्दमें 'जन' जोड़नेसे 'विद्वज्जन' कैसे बन गया, यह समझना उनके लिए सरल न होता।

समस्त पदों और मुहावरोंमें मूल शब्दके लिए डैश (—) का प्रयोग किया गया है और जहाँ समस्त पदसे पुनः समास बनानेकी आवश्यकता पड़ी है वहाँ मध्यवर्ती पदके लिए शून्य (०) रख दिया गया है। 'जल' शब्दसे बने हुए 'जलदकाल' पर ध्यान देनेपर यह नियम स्पष्ट हो जायगा। मुहावरोंमें मूल शब्दके रूपमें परिवर्तन होनेपर या तो पूरा शब्द दे दिया गया है या परिवर्तनका संकेत कर दिया गया है।

इतर भाषाओंके शब्दोंके साथ भी समास-पद्धति बरती गयी है, पर यह पद्धति अभी वहींतक सीमित रखी गयी है जहाँतक पूर्व या उत्तरपदका रूप इतना नहीं बिगड़ा है कि वह जल्द समझमें न आ सके। उदाहरणके रूपमें 'तिरसठ' और 'तिरपन' शब्द ले लीजिये। पहलेमें पूर्व और उत्तर—दोनों पदोंका रूप आसानीसे समझमें आ जाता है, पर दूसरेमें उत्तरपदका रूप उतना स्पष्ट नहीं है, इसलिए 'तिरसठ' तो हमने समस्त पदके रूपमें रखा है और 'तिरपन' स्वतंत्र रूपमें। उचित तो यह हुआ होता कि 'तिरपन' समस्त और स्वतंत्र—दोनों रूपोंमें रखा गया होता, पर कलेवर-वृद्धिके भयसे ऐसा नहीं किया जा सका। पाठकोंसे अनुरोध है कि समस्त पद मूल शब्दके साथ न मिलनेपर क्रममें भी देखनेका कष्ट करें। हिंदी कोशके लिए यह पद्धति बिलकुल नयी और यह पहला ही प्रयास है, इसलिए इसमें इस तरहकी कुछ त्रुटियोंका होना स्वाभाविक है। आशा है, यह पद्धति विद्वानोंको पसंद आयेगी।

विभिन्न भाषाओंके समरूप शब्दोंके अर्थ साथ ही रखे गये हैं, भाषा-संबंधी अंतर भाषा-परिचायक चिह्न द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है, पर अगर ऐसे शब्दोंसे विभिन्न भाषाओंके समास बनाने पड़े हैं तो वे अलग-अलग रखे गये हैं। बीचमें आनेवाले समस्त पदोंके मुहावरे अंतमें न रखकर समस्त पदके साथ ही कोष्ठोंके अंदर रख दिये गये हैं। सुविधाके विचारसे हमने पंचम वर्णके स्थानपर अनुस्वारका प्रयोग किया है और अनुस्वार तथा विसर्गयुक्त वर्ण आरंभमें रखे गये हैं। 'न्' के बाद 'न' और 'स्' के बाद 'म' आनेपर 'न्' और 'म्'का मूल रूप रहने दिया गया है।

शब्दोंका मूल रूप

संस्कृतके शब्द प्रथमा विभक्तिसे युक्त होकर हिंदीमें आते हैं और कोशोंमें उनका यही रूप दिया जाता है। हमने इस रूपके साथ ही शब्दका मूल रूप भी दे दिया है जिसमें पाठक शब्दके मूल रूपसे परिचय प्राप्त कर सकें और उन्हें समास बनाने या समस्त पदका रूप समझनेमें सहूलियत हो। मूल रूप न देनेपर समस्त पदका रूप गलत हो जानेकी संभावना रहती है। उदाहरणार्थ, कई कोशोंमें 'अधिकारी' शब्दके साथ भाषा-चिह्न (सं०) तो दिया गया है, पर उसका मूल रूप 'अधिकारिन्' नहीं दिया गया है। परिणाम यह होता है कि जो शब्दका रूप और नियम नहीं जानते—यह नहीं जानते कि समासमें मूल रूपके अंतिम 'न्'का लोप हो जाता है—वे चटपट 'अधिकारीवर्ग' बना लेते और उसके शुद्ध रूप 'अधिकारिवर्ग'को ही अशुद्ध मानते हैं।

अरबी-फारसीके शब्दोंका मूल रूप सर्वत्र दिखलानेकी जरूरत नहीं जान पड़ी, वे बहुत कुछ उच्चारणके ही अनुसार रखे गये हैं—'हमेशः' न देकर सिर्फ 'हमेशा' दिया गया है।

संस्कृतके अलावा अन्य भाषाओंके शब्दोंके साथ कोष्ठोंके अंदर आया हुआ अंश उनके वैकल्पिक रूपका द्योतक है। 'काँचरी' के साथ कोष्ठोंमें 'ली' रखनेका अभिप्राय यह है कि 'काँचरी' और 'काँचली' दोनों रूप प्रयोगमें आते हैं।

कोशकी प्रामाणिकता

इस कोशकी उपयोगिता या उसकी 'उत्तमता' आदिके संबंधमें कुछ कहनेका हमें अधिकार नहीं; यह हम इसके गुणग्राही प्रयोगकर्ताओंपर ही छोड़ देते हैं। हाँ, इतना अवश्य हम कह देना चाहते हैं कि अपनी ओरसे हमने इसे "प्रामाणिक" और यथासंभव परिपूर्ण बनानेकी शक्तिभर चेष्टा की है। त्रुटियाँ तो हमसे हुई होंगी ही और हुई भी हैं, क्योंकि हम सर्वज्ञ एवं प्रमादहीन बननेका दावा नहीं करते। वस्तुतः प्रेसके भूतों, दृष्टिदोष, असावधानी या हमारे अज्ञानके कारण इतने बड़े कोशमें, विशेषकर उस हालतमें जब कि मुद्रणके समय इसमें कुछ शीघ्रता करनी पड़ी है, भूलोंका न रहना ही आश्चर्यका विषय होता। उदाहरणार्थ, 'अतद्‌गुण' शब्द 'अतर्गण' हो गया है और 'बहनापा' 'बहनावा' बन गया है, 'गाँस'के साथ भाषा-चिह्न (सं०) मालूम नहीं कहाँसे टपक पड़ा है और 'सट्टेबाज' के साथ 'सट्टेबाजी'का अर्थ, जो शब्दके साथ ही निकाल दिया गया था, संबद्ध हो गया है। कहीं-कहीं क्रम और नियम-संबंधी भूलें भी देख पड़ती हैं। इस तरहकी और भी कई भूलें होंगी जो आसानीसे स्पष्ट हो जायँगी। आशा है, पाठक उनका सुधार कर लेनेकी कृपा करेंगे और हो सका तो हम भी शुद्धिपत्र लगाकर उन्हें स्पष्ट कर देंगे।

व्युत्पत्ति क्यों नहीं ?

व्युत्पत्ति कोशका एक महत्त्वपूर्ण अंग है, फिर भी हमें अपना कोश इस अंगसे वंचित रखना पड़ा है। शब्दसागर आदि दो-एक बड़े कोशोंने कुछ शब्दोंकी व्युत्पत्ति या मूल रूप देनेका प्रयत्न किया है और उनका यह प्रयत्न श्लाघनीय भी है, पर खेदके साथ कहना पड़ता है कि इसमें उन्हें पूरी सफलता नहीं मिली है और कहीं-कहीं तो वह ऐसी ऊटपटाँग है कि उससे पाठक गुमराह भी हो जा सकते हैं। उदाहरणके रूपमें कटोरा, कागद, गाजर, गेह, ठार, डोम आदि कुछ शब्द लिये जा सकते हैं। ये सभी शब्द अन्य शब्दोंके विकृत रूप माने गये हैं, पर वाचस्पत्य आदि कोश देखनेपर पता चलता है कि ये संस्कृतके शब्द हैं और अपने वर्तमान अर्थोंमें ही संस्कृतके ग्रंथोंमें प्रयुक्त होते रहे हैं। 'कटोरा' कटोरका स्त्रीलिंग रूप है जो हिंदीमें आकर पुंलिंग हो गया है, काँसा+ओरासे उसका बनना ठीक नहीं जान पड़ता; 'कागद' शब्द स्थानिक और 'कागज'का बिगड़ा हुआ रूप माना गया है; 'गाजर'का शुद्ध रूप "गृंजन" माना गया है, 'गर्जर' भी नहीं। इसी तरह 'गेह' 'गृह'से, 'ठार' 'स्तब्ध'से और 'डोम' 'डम'से बिगड़कर बना हुआ माना गया है। 'उद्योगीकरण'की व्युत्पत्ति तो प्रयत्न करनेपर भी समझमें नहीं आयी। इन कतिपय उदाहरणोंसे यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि यह कार्य कितना कठिन और श्रमसाध्य है।

शब्दोंका व्याकरण

शब्दोंका भेद या व्याकरण हिंदीमें अभी विवादका विषय बना ही हुआ है। एक ही शब्द एक व्यक्ति स्त्रीलिंगमें प्रयुक्त करता है और दूसरा पुंलिंगमें और विचित्रता तो यह है कि दोनों ही प्रयोग शुद्ध माने जाते हैं। उदाहरणार्थ, नागरी-प्रचारिणी सभावाले 'झंझट' स्त्रीलिंग मानते हैं और अन्य बहुतसे लेखक पुंलिंग। हिंदीमें इस तरहके कई शब्द हैं। हमने कहीं-कहीं प्रयोगके अनुसार दोनों रूप दिये हैं और कहीं-कहीं स्वतंत्र विचारसे काम लिया है। संस्कृतके शब्दोंका लिंग हिंदीके अनुसार रखा गया है। गरिमा, लघिमा, अग्नि आदि शब्द संस्कृतमें तो पुंलिंग हैं, पर हिंदीमें वे स्त्रीलिंगमें प्रयुक्त होते हैं, इसलिए हमने भी ऐसे शब्दोंके संबंधमें हिंदीका ही प्राधान्य माना है। यह अंतर संस्कृतके पाठकोंको कुछ खटक सकता है, पर हमारे लिए और कोई मार्ग नहीं था।

शब्दोंका चुनाव

कोशका कलेवर बहुत अधिक न बढ़ने देते हुए इसे सर्वोपयोगी बनानेके विचारसे हमने अधिकसे अधिक शब्द और अर्थ देकर गागरमें सागर भरनेकी उक्ति चरितार्थ करनेका प्रयत्न किया है। शब्दोंके चुनावमें हमने बहुप्रचलित या अल्पप्रचलित होनेका भेद नहीं रखा है और इसमें ऐसे भी बहुतसे शब्द और अर्थ देख पड़ेंगे जो अब केवल कोशकी शोभा बढ़ाते हैं। हमारा खयाल है कि कोशमें ऐसे शब्दोंका समावेश होना आवश्यक है। आज जब कि अप्रचलित शब्दतक ढूँढ़-ढूँढ़कर प्रयोगमें लाये जाने लगे हैं, उपसर्गों और प्रत्ययोंके योगसे नये-नये शब्द बनाये जा रहे हैं और 'नहिक' (नेगेटिव) और 'सहिक' (पॉजिटिव) जैसे शब्द मनमाने तौरपर गढ़कर कोशोंमें रखे जा रहे हैं और उन्हें चलानेका प्रयत्न किया जा रहा है तब उत्तराधिकारमें प्राप्त शब्दों और अर्थोंका केवल अल्पप्रचलित या अप्रचलित होनेके कारण बहिष्कार करना उचित नहीं जान पड़ता। कोशोंमें बने रहनेपर ऐसे शब्द और अर्थ भी धीरे-धीरे प्रयोगमें आने लगेंगे। हाँ, जिन शब्दोंकी रचना और उच्चारण बहुत क्लिष्ट हो और जो हिंदीकी प्रवृत्तिके अनुकूल न पड़ते हों उनका त्याग कर देनेमें कोई हर्ज नहीं है।

अंतमें परिशिष्टके रूपमें कुछ छूटे हुए शब्द और अर्थ, लाक्षणिक शब्दोंकी व्याख्या और राजनीति, अर्थशास्त्र, विधान आदिमें प्रयुक्त होनेवाले लगभग ३२०० अंग्रेजीके पारिभाषिक शब्द हिंदी पर्यायके साथ दे दिये गये हैं जिससे कोशकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है।

इस कोशके निर्माणका कार्य "आज" के प्रधान सहायक संपादक श्री कालिकाप्रसादने आरंभ किया था और रोगग्रस्त होनेके पूर्वतक यही काम बराबर करते रहे, पर आज वे इसका वर्तमान रूप देखनेके लिए इस संसारमें नहीं हैं जिसका हमें हार्दिक दुःख है। आशा है, इसके प्रकाशनसे उनकी स्वर्गस्थ आत्माको अवश्य शांति मिलेगी।

श्री वंशदेव मिश्र एम. ए. ने काफी अरसेतक और श्री शिवनाथ एम. ए. ने भी कुछ दिनोंतक इसके संपादनमें सहयोग किया था। श्री मार्कण्डेय शुक्लसे इसके मुद्रणमें विशेष और संपादनमें भी जहाँ-तहाँ सहायता मिली है। अगर हमें इन सज्जनोंका सहयोग न मिला होता तो इसके प्रकाशनमें दो-तीन वर्ष और लग जाते।

इसके संपादनमें हमें हिंदी शब्द-सागर, हिंदी शब्द-संग्रह, संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी (मोनियर विलियम्स), संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी (वामन शिवराम आप्टे), अमरकोष, वाचस्पत्य, शब्दकल्पद्रुम (संस्कृत), जामिउल्लुग़ात, लुग़ात सईदी, नूरुल्लुग़ात, प्रशासन शब्दकोष (डा० रघुवीर), शासन-शब्दकोष (राहुल सांकृत्यायन) से विशेष सहायता मिली है। एतदर्थ हम इन कोशोंके संपादकों, उक्त सहयोगियों और इनके अतिरिक्त जिन व्यक्तियोंसे हमें अप्रत्यक्ष रूपमें सहायता मिली है उन सबका आभार स्वीकार करते हैं।

अंतमें सहृदय विद्वानोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे इस कोशकी त्रुटियाँ दिखलाकर और सत्परामर्श देकर हमें अनुगृहीत करेंगे जिसमें इसका दूसरा संस्करण अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

रथयात्रा, सं० २००६

राजवल्लभ सहाय : मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

संकेत-सूची

*–पद्यमें प्रयुक्त
+–स्थानिक
अ०–अव्यय
(अ०)–अरबी
अ० क्रि०–अकर्मक क्रिया
(अप्र०)–अप्रचलित
अमर०–अमरबेल (वृंदावनलाल वर्मा)
अल्प०–अल्पसूचक, (लघु रूपसूचक)
अहिल्या–(वृंदावनलाल वर्मा)
(आ०)–आधुनिक
(आयु०), (आ० वे०)–आयुर्वेद
(इ०)–इत्यादि
(इ०), (इब०)–इबरानी
(उ०)–उदाहरण
उप०–उपसर्ग
(उपनि०)–उपनिषद्
कवि०–कौ०–कविताकौमुदी (रामनरेश त्रिपाठी)
(का०)–कानून
(काम०)–कामंदकीय या कामशास्त्र
(कौ०)–कौटिल्य
(क्व०)–क्वचित्
(ग०)–गणित
(गी०)–गीता
गीता०–गीतावली, तुलसी-कृत
गुलाब–गुलाबराय-कृत नवरस
ग्राम०–ग्रामगीत, रामनरेश त्रिपाठी
(ग्रा०)–ग्राम्य
घन०–घन आनन्द ग्रन्थावली
चंदा०–चंदायन
(चि०)–चित्रकारी
छत्तीस०–छत्तीसगढ़ी बोली
छत्र०–छत्रप्रकाश
(ज०)–जरमन
जिंदगी०–जिंदगी मुसकरायी–कन्हैयालाल प्रभाकर
(जै०)–जैन साहित्य
(ज्या०)–ज्यामिति
(ज्यो०)–ज्योतिष
(तं०)–तंत्रशास्त्र
(ति०)–तिब्बती
(तिर०)–तिरस्कार-सूचक
(तु०)–तुर्की
दीनद०–दीनदयाल गिरि
दे०–देखिये
नागरी०–नागरीदास
(ना०)–नाटक
(न्या०)–न्याय
प०–पद्मावत, जायसी-कृत
(पह०)–पहलवी
(पा०)–पाली
(पाराशरसं०)–पाराशरसंहिता
पु०–पुंलिंग
(पु०)–पुराण
(पुर्त०)–पुर्तगाली
प्र०–प्रत्यय
(प्रा०)–प्राचीन
(फा०)–फारसी
(फ्रें०)–फ्रेंच
(बं०)–बंगाली
(ब०)–बर्मी
(बहु०), (बहुव०)–बहुवचन
बि०–बिहारी रत्नाकर
बी०–बीसलदेव रासो
बुंदेल०–बुंदेलखंडी बोली
(बृ० सं०)–बृहत्संहिता
(बो०), (बोल०)–बोल-चाल
(बौ०, बौद्ध०)–बौद्धसाहित्य
(भाग०)–भागवत
भाववि०–भावविलास देव-कृत
भू०, भूषणग्रंथावली
भू० क्रि०–भूतकालिक क्रिया
(मति०)–मतिराम
(मनु०)–मनुस्मृति

(म० भा०)–महाभारत
(मी०)–मीमांसा
(मु०), (मुस०), (मुसल०)–मुसलमानोंमें प्रचलित
मृग०–मृगनयनी (वृंदावनलाल वर्मा)
(यू०)–यूनानी
(योग०)–योगशास्त्र
रघु०–रघुराजसिंह-कृत रामस्वयंवर
रतन०–रतनहजारा
राम०–रामचंद्रिका, केशवदास-कृत
रामा०–तुलसीकृत रामचरितमानस
रासो–पृथ्वीराज रासो
ललित०–ललितललाम, मतिराम-कृत
(ला०)–लाक्षणिक
(लै०)–लैटिन
(लोक०)–लोकप्रचलित
(वा०)–वाक्य
वि०–विशेषण
वि० स्त्री०–विशेषण स्त्रीलिंग
विद्या०–विद्यापति
(वे०)–वेदांत
(वै०)–वैदिक

(व्यं०)–व्यंग्य
(व्या०)–व्याकरण
(शुक्र०)–शुक्रनीति
शेखर-शेखर, एक जीवनी
(सं०)–संस्कृत
स० क्रि०–सकर्मक क्रिया
स०, सर्व० सर्वनाम
(सांख्य०)–सांख्यशास्त्र
(सा०)–साहित्य
सुँद०, सुंदर०–सुँदरदास
सुजान०–सुजानचरित, सूदन-कृत
सू०, सूर–सूरदास
(सूफी०)–सूफीमत
(स्त्रि०)–स्त्रियोंकी बोल-चाल
स्त्री०–स्त्रीलिंग
(स्मृति०)–स्मृतिग्रंथ
हजारीप्र०–हजारीप्रसाद द्विवेदी
(हरि०)–हरिवंशपुराण
(हिं०)–हिंदीमें प्रयुक्त अर्थ
(हिं०)–हिंदी भाषाका शब्द

बृहत् हिन्दी कोश

अ

अ–देवनागरी और संस्कृत-कुटुंबकी अन्य वर्णमालाओंका पहला अक्षर और स्वरवर्ण। इसका उच्चारणस्थान कंठ है। व्यंजनवर्णोंका उच्चारण इस अक्षरकी सहायताके बिना नहीं हो सकता, इसीलिए क, ख, आदि वर्ण 'अकार' के साथ बोले और लिखे जाते हैं। अव्य० (उपसर्गके रूपमें प्रयुक्त) रहित, हीन; बुरा; उलटा; भिन्न।

अंक–पु० (सं०) चिह्न; छाप; संख्याका चिह्न (१, २, ३ आदि); अदद; पत्रपत्रिकाओंकी बँधे हुए समयपर प्रकाशित होनेवाली प्रति; लिखावट; अक्षर 'तुम सन मिटहिं कि विधिके अंका'–रामा० कलंक, दाग; डिठौना; तप्त मुद्राका सांप्रदायिक चिह्न; भूषण; नाटकका एक खंड या सर्ग; रूपकका एक प्रकार; हुक जैसा टेढ़ा औजार, वक्र रेखा; झुकाव, मोड़; गोद, क्रोड; बगल; नकली लड़ाई, चित्रयुद्ध; स्थान; देह; *दफा, बार; पाप; अपराध; पर्वत; एककी संख्या। **–करण**–पु० चिह्न लगानेकी क्रिया। **–कार**–पु० बाजी आदिका निर्णायक; वह योद्धा जिसके हारने या जीतनेसे हार या जीत मान ली जाती थी। **–गणित**–पु० संख्याओंका हिसाब; संख्याओंको जोड़ने-घटाने, गुणा-भाग आदि करनेकी विद्या। **–गत**–वि० पकड़में आया हुआ। **–तंत्र**–पु० अंकशास्त्र, पाटीगणित या बीजगणित। **–धारण**–पु० देहपर सांप्रदायिक चिह्न (शंख, चक्र, त्रिशूल आदि) छपवाना, छाप लगवाना। **–धारी (रिन्)**– वि० शंख, चक्र आदिके चिह्न धारण करनेवाला। **–पत्र**–पु०**–पत्रित**–वि०दे० क्रममें**–परिवर्तन**–पु० करवट बदलना; बच्चेका गोदमें इधरसे उधर होना; नाटकमें अंकका बदलना। **–पलई**–स्त्री० (हि०) दे० 'अँक पलई'। **–पादव्रत**–पु० एक व्रत। **–पालि,–पालिका**–स्त्री० गोद; दाई; आलिंगन। **–पाली**–स्त्री० परिचारिका; वेदिकानामक गंधद्रव्य; आलिंगन। **–पाश**–पु० गणितकी एक क्रिया; आलिंगनकी मुद्रा। **–पूरण**–पु० गुणन। **–बंध**–पु० झुककर गोदका आकार बनाना; मस्तकहीन मनुष्यका चित्र अंकित करना। **–भाक् (ज्)**–वि० गोदमें बैठा हुआ; बहुत निकट। **–माल**–पु० आलिंगन, अँकवार। **–मालिका**–स्त्री० अंकमाल; छोटी माला। **–मुख**–पु० नाटकका आरंभिक भाग जिसमें बीज-रूपमें कथानक दिया रहता है। **–लोडच**–पु० वृक्षविशेष। **–लोप**–पु० अंकोंको घटाना। **–विद्या**–स्त्री० अंकगणित। **–शायिनी**–वि० स्त्री० बगलमें सोनेवाली। स्त्री० पत्नी। **–शायी (यिन्)**–वि० बगलमें सोनेवाला। **–शास्त्र**–पु० दे० सांख्यिकी। **मु०–देना**–गले लगाना। **–भरना, लगाना**–गले लगाना, लिपटाना।

अंकक–पु० (सं०) हिसाब लिखनेवाला; चिह्न करनेवाला। (स्त्री० 'अंकिका'।)

अँकटा†–पु० छोटा कंकड़; कंकड़का छोटा टुकड़ा।

अँकटी†–स्त्री० कंकड़का छोटा टुकड़ा, कंकड़ी।

अँकड़ी–स्त्री० टेढ़ी कँटिया; लग्गी; टेढ़ी गाँसी; लता।

अंकति–पु० (सं०) हवा; अग्नि; ब्रह्मा; अग्निहोत्री।

अंकन–पु० (सं०) चिह्न करना; लेखन; चित्रण; शरीरपर शंख, चक्र आदि छपवाना; गिनती करना; चिह्न बनानेका साधन।

अँकना–अ० क्रि० आँका जाना; लिखा जाना; अंकित होना। * सं० क्रि० आँकना।

अंकनी–स्त्री० (पेंसिल) एक प्रकारकी लेखनी जो लकड़ी या धातुके पोले लंबेसे टुकड़ेमें सीसे या विशेष प्रकारके मसालेकी सलाई बैठाकर तैयार की जाती है, पेंसिल।

अंकनीय–वि० (सं०) अंकनके योग्य; मुद्रित करने योग्य।

अंकपत्र–पु० (स्टांप) निर्धारित मूल्यपर मिलनेवाला कागजका टुकड़ा जो लिफाफे, अर्जी आदिपर लगाया जाता है, स्टांप, टिकट।

अंकपत्रित–वि० (स्टांप्ड) (वह लिफाफा, पत्र या न्यायिक आवेदन-पत्र) जिसपर अंकपत्र (स्टांप) लगा हो।

अँकपलई–स्त्री० अंकोंको अक्षरोंके रूपमें काममें लानेकी एक विद्या।

अंकम*–पु० अंक, गोद।

अँकरा–पु० एक घास; अंकुर; †कंकड़का टुकड़ा।

अँकरास†–पु० देह टूटना; आलस्य; शैथिल्य।

अँकरी–स्त्री० छोटा अँकरा (अँकराका अल्प०)।

अँकरोरी, अँकरौरी–स्त्री० कंकड़ी; कंकड़ आदिका बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवाई–स्त्री० अंकवानेकी क्रिया या मजदूरी।

अँकवाना–स० क्रि० अंकित कराना; जँचवाना, मूल्य निर्धारित कराना। आँकनेके लिए प्रेरित करना, अँकाना।

अँकवार–स्त्री० गोद, अंक; आलिंगन। **मु०–देना**–गले लगाना। **–भरना**–गोदमें भरना, गोदमें बच्चेका रहना।

अँकवारना*–स० क्रि० आलिंगन करना, भेंटना।

अँकवारी*–स्त्री० गोद।

अंकस–पु० (सं०) चिह्न; शरीर। वि० चिह्नयुक्त।

अंकांक–पु० (सं०) जल।

अँकाई–स्त्री० आँकनेकी क्रिया, कूत. अंदाजा; आँकनेकी उजरत।

अँकाना–स० क्रि० अंदाजा लगवाना; जँचवाना; चिह्न कराना; मूल्य ठहरवाना।

अँकाव–पु० आँकनेका काम; अंदाजा लगानेका काम।

अंकावतार–पु० (सं०) नाटकमें अंकके अंतका वह भाग जिसमें अगले अंकके अभिनेय विषयकी सूचना रहती है।

अंकित–वि० (सं०) चिह्नित; लिखित; चित्रित; गिना हुआ। **–मूल्य**–पु० वह मूल्य जो किसी मुद्रा; ऋणपत्र आदिपर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियों या विशेष कारणोंसे घटता-बढ़ता रहे। **मूल्य**–पु० (फेस वैल्यू) वह मूल्य जो किसी मुद्रा, ऋणपत्र आदिपर अंकित हो पर जो विशेष स्थितियोंमें या विशेष कारणोंसे घटता-बढ़ता रहे; प्रत्यक्ष मूल्य।

अंकिनी–स्त्री० (सं०) चिह्नोंका समूह; चिह्नोंवाली स्त्री।

अंकिल†–वि० अंकित, दागवाला। पु०–दागा हुआ साँड़।

अंकी (किन्)–पु० (सं०) छोटा नगाड़ा; मृदंग (जो अंकमें लेकर बजाया जा सके)।

अंकुट, अँकुडक–पु० (सं०) ताली, कुंजी।

अँकुडा–पु० लोहेका टेढ़ा काँटा; लोहेकी छड़ या कँटियाके बने कुछ औजार; कुलाबा; किवाड़की चूलमें ठोकनेका लोहेका पच्चड़; बुनकरोंका एक औजार; गाय-बैलका एक रोग जिसमें पेटमें ऐंठन होती है।

अँकुड़ी–स्त्री० (अँकुड़ाका अल्प०) हुक; लोहारोंका एक औजार; हलका वह भाग जिसमें फाल लगता है; एक्केके पहियेके जोड़ोंपर लगायी जानेवाली कील। **–दार**–वि० जिसमें अँकुड़ी लगी हो;

गड़ारीदार (कशीदा)।

अंकुर–पु० (सं०) अँखुआ, डाभ; कली; रोआँ; अँकुड़ा; संतति; जल; रुधिर; नोक; अर्वुद; सूजन; घावका भराव सूचित करनेवाले मांसके छोटे-छोटे दाने; विकास आदिके सूचक चिह्न; नोकदार जबड़ा।

अंकुरक–पु० (सं०) घोंसला; माँद।

अंकुरण–पु० (सं०) अंकुरका निकलना, बीज आदिका अंकुरित होना (जरमिनेशन); किसी वस्तुकी उत्पत्ति होना, शुरू होना।

अँकुरना, अँकुराना–अ० क्रि० अँखुआ फूटना, अंकुर उगना।

अंकुरित–वि० (सं०) अंकुरयुक्त; अँखुआया हुआ; प्रस्फुटित। **–यौवना**–स्त्री० वह स्त्री जिसमें यौवनके चिह्न प्रकट हो चुके हों।

अँकुरी|–स्त्री० भिगोये हुए चने आदि; ऐसे चने आदि जिनमें भिगोनेके कारण अंकुर निकल आये हों।

अंकुश–पु० (सं०) लोहेका काँटा या एक तरहका भाला जिसे महावत हाथीके सिरपर कोंचकर उसे चलाता है; रोक; दवाव; नियंत्रण। **–कृमि**–पु० मनुष्यकी अंतड़ियोंमें उत्पन्न होनेवाले एक तरहके कीड़े, जिनका मुँह कँटियाकी तरह होता है (हुकवर्म)। **–ग्रह**–पु० महावत, पीलवान। **–दंता**–पु० (हि०) वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा नीचेकी ओर झुका हो। **–दुर्धर**–पु० मस्त, अंकुश न माननेवाला, हाथी। **–धारी (रिन्)**–पु० दे० 'अंकुशग्रह'। **–मुद्रा**–स्त्री० उँगलियोंकी अंकुशाकार मुद्रा।

अंकुशा, अंकुशी–स्त्री० (सं०) २४ जैन देवियोंमेंसे एक।

अँकुशा–पु० अंकुश, हाथीका सिर कोंचनेका एक हथियार; नोककी तरफ मुड़ा हुआ काँटा, हुक।

अंकुशित–वि० (सं०) अंकुश द्वारा बढ़ाया हुआ।

अंकुशी (शिन्)–वि० (सं०) अंकुशवाला; अंकुशकी सहायतासे काबूमें करनेवाला।

अंकुस*–पु० दे० 'अंकुश'।

अँकुसी–स्त्री० लोहेकी झुकायी हुई कील; हुक; लोहेकी टेढ़ी छड़ जिससे बाहरसे अगड़ी या सिटकिनी खोली जाती है; फल तोड़नेकी लग्गीके सिरेपर बँधी छोटी लकड़ी; भट्ठीकी राख निकालनेका एक औजार; नारियलकी गिरी निकालनेका एक छोटा औजार।

अंकूर–पु० (सं०) दे० 'अंकुर'।

अंकूष–पु० (सं०) अंकुश; नकुल।

अंकेक्षक–पु० (सं०) (ऑडिटर) लेखा या हिसाबके आय-व्ययादि सम्बन्धी आँकड़ोंकी जाँच करनेवाला, दे० लेखा-परीक्षक।

अंकेक्षित लेखा–पु० (ऑडिटेड अकाउंट) वह लेखा या हिसाब जिसके आय-व्ययादिके आँकड़ोंकी जाँच लेखा-परीक्षक द्वारा कर ली गयी हो।

अंकोट, अंकोटक–पु० (सं०) अंकोल वृक्ष।

अँकोड़ा–पु० एक तरहका लंगर; बड़ी कँटिया।

अँकोर*–पु० गोद, अँकवार; भेंट, नजर; घूस;–'टका लाख दस दीन्ह अँकोरा'–प०। कलेवा, छाक।

अँकोरी*–स्त्री० गोद; आलिंगन।

अंकोल–पु० (सं०) एक पहाड़ी पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है। **–सार**–पु० अंकोलके पेड़से पैदा होनेवाला विष।

अंकोलिका–स्त्री० (सं०) आलिंगन।

अंक्य–वि० (सं०) चिह्न करने, या अंकित करने योग्य; दागने योग्य (अपराधी)। पु० मृदंग, पखावज आदि।

अँखड़ी*–स्त्री० आँख; चितवन।

अँखमिचनी–स्त्री०, **अँखमूदनी**–पु० आँखमिचौनी।

अँखाना*–अ० क्रि० अनखाना, रुष्ट होना।

अँखिया–स्त्री० नक्कासी करनेकी कलम; * आँख।

अँखुआ–पु० अंकुर, कल्ला।

अँखुआना–अ० क्रि० अँखुआ फेंकना; अंकुर निकलना।

अंग–पु० (सं०) देह; अवयव; भाग, अंश, विभाग; गौण या आश्रित वस्तु; वस्तु; प्रधान या अंगीका सहायक; उपाय; साधन; मन; जन्मलग्न; (ला०) ६की संख्या; सप्रत्यय शब्दका प्रत्ययरहित भाग, प्रकृति (व्या०); नाटककी पाँच संधियोंके अंतर्गत एक उपविभाग; अंगी या नायकके सहायक पात्र (ना०); अप्रधान रस (ना०); वेदके छ अंग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद); सेनाके चार अंग (हाथी, अश्व, रथ, पैदल); योगके आठ अंग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि); राजनीतिके सात अंग (स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना); एक संवोधन; भागलपुरके आसपासका प्रदेश; (हि०) ओर; कक्ष; प्रकार। वि० संलग्न; अंगोंवाला; निकट; गौण; प्रतीकस्वरूप। **–कर्म (न्)**–पु०–**क्रिया**–स्त्री० शरीरमें उवटन आदि मलना, देह-संस्कार। **–ग्रह**–पु० देहका जकड़ना; देहकी पीड़ा। **–घात**–पु० शरीरके किसी अंगके निश्चेष्ट या सुन्न हो जानेका रोग, लकवा; **–चारी**–पु० मित्र, सखा, सहचर, अनुयायी। **–चालन**–पु० हाथ-पैर हिलाना। **–च्छेद**–पु० अंगको काटना; शरीरके अंग (हाथ, पाँव, नाक, कान आदि) कटवानेका दंड (ऐंप्यूटेशन) किसी व्याधि या चोट लगनेके कारण जीवन रक्षाके लिए, हाथ, पाँव आदिका शल्य क्रिया द्वारा काट दिया जाना। **–ज,–जात**–वि० देहसे उत्पन्न। पु० बेटा; पसीना; रोम; काम; मद; सात्त्विक विकारोंमेंसे तीन–हाव, भाव और हेला (सा०); रोग। **–जा,–जाता**–स्त्री० बेटी। **–जाई***–स्त्री० दे० 'अंगजा'। **–जाया**–पु० औरस पुत्र। **ज्वर**–वि० ज्वरोत्पादक। पु० राजरोग, क्षयरोग। **–त्राण**–पु० वर्म, बख्तर; वस्त्र। **–द**–पु० दे० क्रममें। **–दा**–स्त्री० दक्षिण दिशाके हस्तीकी भार्या। **–दान**–पु० युद्धमें आत्मसमर्पण; (स्त्रीका) देह-समर्पण। **–द्वार**–पु० मुख, कान, नाक, नेत्र, गुदा, उपस्थ–शरीरके ये ९ छिद्र (कबीर आदिने दस द्वार माने हैं, जिनमें ब्रह्मांड भी है) शरीरके दस छिद्र। **–द्वीप**–पु० छ द्वीपोंमेंसे एक। **–धारी (रिन्)**–पु० प्राणी; शरीरी। **–न्यास**–पु० अंगों या शरीरको विशेष स्थितिमें रखना; मंत्रोच्चारण करते हुए एक-एक अंगको हाथसे स्पर्श करना। **–पाक**–पु० अंगोंके पकनेका रोग। **–पालि,–पाली**–स्त्री० आलिंगन। **–पालिका**–स्त्री० धाय। **–प्रत्यंग**–पु० देहका हर एक अंग। **–प्रायश्चित्त**–पु० अशौचमें देहशुद्धिके लिए किया जानेवाला दानरूप प्रायश्चित्त। **–प्रोक्षण**–पु० अंग पोंछना। **–भंग**–पु० किसी अंगका टूट जाना; अंगोंका ऐंठना; *अंगभंगी। वि० विकलांग। **–भंगिमा (मन्)**–स्त्री० अंग द्वारा भावप्रकाश। **–भंगी**–स्त्री० मोहक अंगसंचालन, अदा। **–भाव**–पु० संगीत आदिमें अंगोंके द्वारा भावद्योतन। **–भू**–पु० पुत्र; काम। वि० शरीरसे उत्पन्न। **–भूत**–वि० अंगस्वरूप बना हुआ; अंतर्गत। पु० पुत्र। **–भ्रांति**–स्त्री० एक रोग जिसमें किसी अंगके अन्य अंग होनेका भ्रम होता है। **–मर्द**–पु० हड्डियोंमें दर्द होना; मालिश करनेवाला नौकर। **–मर्दक,–मर्दी (दिन्)**–पु० मालिश करनेवाला नौकर। **–मर्दन**–पु० मालिश। **–मर्ष**–पु० गठिया रोग। **–यष्टि**–स्त्री० पतली आकृति। **–रक्त**–पु० वृक्षविशेष। **–रक्षक**–पु० राजा-महाराजा, राज्यपाल आदि बड़े आदमियोंकी रक्षापर नियुक्त सैनिक, बाडी-गार्ड (दस्ता ?)। **–रक्षणी, रक्षिणी**–स्त्री० लोहेकी जालीका बना हुआ वर्म, जिरह, बख्तर; पोशाक। **–रक्षा**–स्त्री० शरीरकी रक्षा। **–रस**–पु० पत्ती, फल आदिका कूटकर निचोड़ा हुआ रस। **–राग**–पु० सुगंधित लेप या उबटन; इनका लेपन। **–राज**–पु० अंग देशका राजा; कर्ण या लोमपाद। **–रुह**–पु० बाल; ऊन। **–लेप**–पु० दे० 'अंगराग'। **–लोड्य**–पु० वृक्षविशेष। **–विकल**–वि० विकलांग; मूर्च्छित। **–विकृति**–स्त्री० देहमें कोई विकार होना; मिरगीकी बीमारी। **–विक्षेप**–पु० बोलने, गाने आदिमें हाथ, पैर, सिर आदि हिलाना; नृत्य। **–विद्या**–स्त्री० ज्ञानके साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र; प्रश्नकालमें अंगोंकी चेष्टा या अंगोंके चिह्न देखकर शुभाशुभ कहनेकी विद्या। **–विभ्रम**–पु० अंगभ्रांति, एक रोग। **–वैकृत**–पु० संकेत या मुखमुद्रा द्वारा आंतरिक भावोंका प्रकाश। **–शुद्धि**–स्त्री० स्नानादि द्वारा शरीर की शुद्धि। **–शैथिल्य**–पु० शरीरका ढीलापन। **–शोष**–पु० सूखा या सुखंडी नामकी बीमारी। **–संग**–पु० संभोग, शरीर-संग। **–संगिनी**–वि स्त्री० अंग-संग करनेवाली। **–संगी–(गिन्)**–वि० अंग-संग करनेवाला। **–संचालन**–पु० हाथ-पाँव आदि हिलानेकी क्रिया। **–संधि**–

स्त्री० दे० 'संध्यंग'। **–संस्कार**–पु० देहको सँवारना, सजाना, बनाव-सिंगार। **–संहति**–स्त्री० अंगसमष्टि; अंगोंकी बनावट; छोटाई-बड़ाईका मेल, गठन। **–सख्य**–पु० प्रगाढ़ मैत्री। **–सिहरी**–स्त्री० (हि०) जड़ैया बुखारके पहलेकी कँपकँपी; जूड़ी। **–सेवक**–पु० निजी सेवा-टहल करनेवाला नौकर। **–सौष्ठव**–पु० अंगोंकी बनावटकी सुंदरता। **–स्पर्श**–पु० शरीरका स्पर्श; अशौचयुक्त व्यक्तिका दूसरोंके छूने योग्य हो जाना। **–हानि**–स्त्री० अंगविशेषकी हानि; विकृति; मुख्य कर्मके सहायक कर्मको न करना या ठीक तरहसे न करना। **–हार**–पु० अंगविक्षेप; नृत्य। **–हारि**–स्त्री० रंग-भूमि। पु० दे० 'अंगहार'। **–हीन**–वि० अंग-विशेष-रहित; विकलांग; उपकरण-रहित (पूजा इ०)। पु० अनंग, कामदेव। **मु०–करना**–स्वीकार करना। **–छूना**–कसम खाना। **–टूटना**–अँगड़ाई आना; ज्वरके पहले देह टूटना (?)। **–धरना**–पहनना, धारण करना। **(फूले) –न समाना**–अत्यंत प्रसन्न होना। **–मोड़ना**–लज्जासे देह सिकोड़ना; अँगड़ाई लेना। **–लगना**–लिपटना; आहारका पचकर देहकी पुष्टि करना; परचना। **–लगाना**–लिपटाना; परचाना; विवाहमें देना।

अँगऊँ*–पु० अँगौंगा।

अंगक–पु० (सं०) अंग; शरीर।

अँगजाई*–स्त्री० दे० 'अंगजा'।

अंगड़-खंगड़–वि० टूटा-फूटा; बचा-खुचा। पु० टूटा-फूटा सामान।

अँगड़ाई–स्त्री० जम्हाईके साथ अंगको तानना; देहका टूटना। **मु०–तोड़ना**–अँगड़ाई लेते समय किसीके कंधेपर हाथ रखकर अपनी देहका भार देना (जो आमतौरपर मनहूस समझा जाता है); कुछ काम न करना।

अँगड़ाना–अ० क्रि० अँगड़ाई लेना।

अंगड़-अंगण–पु० (सं०) दे० 'अंगन।

अंगति–पु० (सं०) अग्नि; अग्निहोत्र; ब्रह्मा; विष्णु; सवारी, यान।

अंगद–पु० (सं०) बाजूबंद, बिजायठ; बालिका बेटा; लक्ष्मणका एक पुत्र; दुर्योधनके पक्षका एक योद्धा।

अंगदीया–स्त्री० (सं०) लक्ष्मणके पुत्र अंगदको मिले राज्य-(कारुपथ) की राजधानी।

अंगन–पु० (सं०) टहलनेका स्थान; आँगन, चौक; टहलना; यान, सवारी।

अंगना–स्त्री० (सं०) सुंदर अंगोंवाली स्त्री; स्त्री; कलहप्रिया स्त्री; उत्तर दिशाके हस्तीकी भार्या। **–गण**–पु० स्त्रियोंका समूह। **–जन**–पु० स्त्रीवर्ग। **–प्रिय**–पु० अशोक वृक्ष।

अँगना†–पु० दे० 'आँगन'।

अँगनाई*–स्त्री० भीतर या जनानखानेका आँगन।

अँगनैया†–स्त्री० दे० 'आँगन'।

अँगरखा–पु० एक लंबा बंददार मर्दाना पहनावा, अंगा, चपकन।

अँगरना†–अ० क्रि० शीश करना; बहुत सिफारिश चाहना; नाज नखरा दिखाना।

अँगरा†–पु० अंगार; बैलोंके पैरमें दर्द होनेका एक रोग।

अँगारना*–अ० क्रि० दे० अँगड़ाना'।

अँगरी*–स्त्री० जिरह, बख्तर; गोहके चमड़ेका दस्ताना।

अँगरेज–पु० इंग्लैण्ड देशका रहनेवाला, 'इंग्लिशमैन'।

अँगरेजियत–स्त्री० अँगरेजपन, अँगरेजी चाल-ढाल।

अँगरेजी–वि० अँगरेज-संबंधी; अँगरेजका। स्त्री० अँगरेजोंकी भाषा।

अंगलेट–पु० शरीरका गठन या ढाँचा।

अँगवना*–स० क्रि० अंगीकार करना; सहना–'सूल कुलिस असि अँगवनिहारे, ते रतिनाथ सुमन सर मारे'–रामा०। अपने सिरपर लेना।

अँगवारा†–पु० खेतकी जोताईमें पारस्परिक सहायता; गाँवके छोटे हिस्सेका मालिक।

अंगांगिभाव–पु० (सं०) अंग और अंगीका संबंध; परस्पर अंग और देह, गौण और मुख्य, उपकारक और उपकार्यका संबंध।

अंगा–पु० अँगरखा।

अंगाकड़ी–स्त्री० बाटी, लिट्टी (जो अंगारोंपर सेंककर बनायी जाती है)।

अंगाधिप, अंगाधीश–पु० (सं०) लग्नका स्वामी ग्रह; अंग देशका राजा; राजा कर्ण।

अंगार–पु० (सं०) अंगारा, दहकता हुआ कोयला या काष्ठखंड; कोयला; मंगल ग्रह; हितावली नामका पौधा; एक राजा; लाल रंग। वि० लाल। **–कारी(रिन्)**–पु० बिक्रीके लिए कोयला तैयार करनेवाला। **–कुष्टक**–पु० हितावली नामक पौधा। **–धानिका,–धानी,–पात्री,–शकटी**–स्त्री० अँगीठी। **–परिपाचित**–वि० अँगारेपर पकाया हुआ। पु० ऐसा खाद्य पदार्थ। **–पर्ण**–पु० गंधर्वपति चित्ररथ। **–पुष्प**–पु० हिंगोष्ठका पेड़, इंगुदी। **–मंजरी, –मंजी**–स्त्री० रक्त करंज वृक्ष, करौंदा। **–मणि**–पु० मूंगा। **–वल्लरी,–वल्ली**–स्त्री० करंज; भार्गी, घुंघचीकी बेल। **–वेणु**–पु० एक तरहका बाँस। **–शकटी**–स्त्री० अँगीठी।

अंगारक–पु० (सं०) अंगारा; छोटा अंगारा; मंगल ग्रह; मंगलवार; एक सौवीर-नरेश; कुरंटक; भृंगराज; एक असुर; एक रुद्र; औषधियोंके मेलसे बना हुआ एक तेल; कतिपय पदार्थोंमें पाया जानेवाला एक अधात्वीय मूल तत्त्व। (कारबन) (कोयला इसीका उदाहरण है)। **–मणि**–पु० मूंगा। **–वार**–पु० मंगलवार।

अंगारकाडी†–स्त्री० दियासलाई।

अंगारपेटी†–स्त्री० दियासलाईकी डिबिया।

अंगारकाम्ल–पु० (सं०) कार्बन और आक्सीजनके मेलसे बननेवाला एक अम्ल।

अंगारकित–वि० (सं०) आगसे जलाया या अंगारोंपर भूना हुआ।

अंगारमती–स्त्री० (सं०) कर्णकी स्त्री; †हाथकी उँगलियोंमें होनेवाला एक रोग, गलका।

अंगारा–पु० दहकता हुआ कोयला, कंडा आदि; अग्निखंड। वि० अँगारे जैसा लाल। **मु०–बनना,–हो जाना,–होना**–गुस्सेसे, क्रोधमें लाल हो जाना। **–(रे) उगलना**–जली-कटी सुनाना। **–फाँकना**–ऐसा काम करना जिसका फल बहुत बुरा हो। **–बरसना**–आग बरसना, सख्त गरमी पड़ना; दैव-कोप होना। **–(रों) पर पैर रखना**–जान-बूझकर अपनेको खतरेमें डालना; इतराना। **–पर लोटना**–क्रोध या ईर्ष्यासे जलना; तड़पना, विकल होना। **–पर लोटाना**–जलाना; तड़पाना।

अँगारा–पु० दे० 'अंगारा'।

अँगारावक्षेपण–पु० (सं०) अँगारे बुझाने या कोयले फेंकनेका एक पात्र।

अंगारि, अंगारिका–स्त्री० (सं०) अँगीठी; इक्षुदंड; किंशुककी कली।

अंगारिणी–स्त्री० (सं०) छोटी अँगीठी; अस्त होते हुए सूर्यकी लालिमासे रंजित दिशा; एक लता।

अंगारित–वि० (सं०) दग्ध; दग्धप्राय। पु० पलाश-कलिका।

अंगारिता–स्त्री० (सं०) अँगीठी; कलिका; एक लता; एक नदी।

अँगारी–स्त्री० चिनगारी; † बाटी; अँगीठी।

अंगारी (रिन्)–वि० (सं०) सूर्य द्वारा तप्त।

अंगारी–स्त्री० गँड़ासेसे काटे हुए ईखके छोटे-छोटे टुकड़े; ईखके सिरपरकी पत्ती।

अंगारीय–वि० (सं०) कोयला तैयार करनेके काममें आने लायक।

अंगार्या–स्त्री० (सं०) कोयलेका ढेर।

अंगिका–स्त्री० (सं०) अँगिया, कंचुकी।

अँगिया–स्त्री० चोली, कंचुकी; दे० 'अँघिया'। **–का कंठा,–का घाट**–अँगियाका गरेबान, गलेके नीचेका खुला भाग। **–का पान**–कटोरीका छोटा टुकड़ा। **–का बँगला**–अँगियाकी कटोरीकी कलियाँ या फाँके जो गोखरू आदिके टाँकनेसे बन जाती हैं। (दो कलियाँ होनेसे 'बँगला' और दस-बारह होनेसे खरबूजा कहते हैं।)**–की कटोरी,–की मुलकट**–अँगियाका वह भाग जो स्तनपर पड़ता है। **–की चिड़िया**–कटोरियोंके बीचकी सीवन। **–की**

दीवार–कटोरियोंके नीचेका भाग। **–की लहर**–कटोरियोंपर तिकोना टँका हुआ साज। **–के पछुए**–अँगियाकी पीठकी ओरके टुकड़े। **–के बंद**–वे डोरियाँ जिनसे पीठकी ओर अँगिया कसी जाती है।

अंगिर–पु० (सं०) एक मंत्रकार ऋषि जो ब्रह्माके दस मानस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र और सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि तथा एक स्मृतिकार कहे जाते हैं।

अंगिरस–पु० (सं०) परशुरामावतारमें विष्णुका एक शत्रु।

अंगिरा (रस्)–पु० (सं०) एक संवत्सर; दे० 'अंगिर'।

अँगिराना–अ० क्रि० दे० 'अँगड़ाना'।

अंगी (गिन्)–वि० (सं०) देहयुक्त; अवयवविशिष्ट; प्रधान; अंशी। पु० प्रधान पात्र या नायक; प्रधान रस (ना०)। (स्त्री० अंगी = अंगवाली—समासांतमें)।

अंगीकरण–पु० (सं०) स्वीकार या ग्रहण करनेकी क्रिया; वादा करना; राजी होना।

अंगीकार–पु० (सं०) स्वीकार; ग्रहण; ऊपर लेना, उठाना (काम, जिम्मेदारी आदि)।

अंगीकृत–वि० (सं०) अंगीकार किया हुआ।

अंगीकृति–स्त्री० (सं०) स्वीकृति, मंजूरी।

अँगीठा–पु० अँगीठी (क्व०)।

अँगीठी–स्त्री० आग रखनेका बरतन, आतिशदान, बोरसी।

अंगीय–वि० (सं०) अंग देश-संबंधी; शरीर-संबंधी।

अँगुठा*–पु० दे० 'अँगूठा'।

अँगुठी–स्त्री० पैरके अँगूठेका एक गहना।

अंगुर–पु० दे० 'अंगुल'।

अंगुरि, अंगुरी–स्त्री० (सं०) हाथ या पैरकी उँगली।

अँगुरिया*–स्त्री० दे० 'अँगुरी'।

अँगुरी†–स्त्री० दे० 'अंगुरि'। **–की चाँदी**–एक तरहकी चाँदी जिससे वरक बनाते हैं।

अंगुरीय, अंगुरीयक–पु० (सं०) उँगलीका एक गहना, अँगूठी।

अंगुल–पु० (सं०) उँगली; एक नाप, उँगलीकी चौड़ाई, बित्तेका १२वाँ भाग; ग्रास या १२ वाँ भाग (ज्यौ०); वात्स्यायन मुनि। **–प्रमाण,–मान**–पु० अंगुलकी लंबाई। वि० अंगुलकी लंबाईवाला

अंगुलांक–पु० (फिगरप्रिंट) उँगली या उँगलियोंका निशान।

अंगुलि, अंगुली–स्त्री० (सं०) उँगली; हाथीकी सूँड़का अग्र-भाग; अंगुल-मान; गजकर्णी नामक वृक्ष। **–छाप**–स्त्री० दे० 'अंगुलि प्रतिमुद्रण' **–तोरण**– पु० ललाटपर बना हुआ चंदनका अर्द्ध-चंद्राकार चिह्न। **–त्र**–पु० अंगुलित्राण; मिजराबसे बजाया जानेवाला तंतुवाद्य (सितार, बीन आदि)। **–त्राण**–पु० गोहके चमड़ेका दस्ताना जो बाण चलानेमें उँगलियोंको रगड़से बचानेके लिए पहना जाता था। **–निर्देश**–पु० किसीकी ओर उँगली उठाना, निंदा करना, बदनाम करना। **–पंचक**–पु० हाथकी पाँचों उँगलियाँ। **–पर्व**–पु० उँगलीकी पोर या गाँठ। **–प्रतिमुद्रण** (फिंगर प्रिंट) किसी वस्तुकी प्राप्ति या अपराध आदिकी स्वीकृति सूचित करनेके लिए ली गयी अंगुलि या अंगुलियोंके अगले हिस्सेकी छाप, अंगुलिछाप। **–मुख**–पु० उँगलीकी नोंक। **–मुद्रा,–मुद्रिका**–स्त्री० नाम खुदी हुई या मुहरका काम देनेवाली अँगूठी; उँगलीकी छाप। **–मोटन,–स्फोटन**–पु० उँगली चटकाना; चुटकी। **–वेष्टक,–वेष्टन**–पु० दस्ताना। **–संज्ञा**–स्त्री० उँगलीसे किया हुआ संकेत। **–संदेश**–पु० उँगलीकी मुद्रा या आवाजसे इशारा करना। **–संभूत**–वि० उँगलीपर या उँगलीसे उत्पन्न। पु० नख।

अंगुलिका–स्त्री० (सं०) अंगुली; एक तरहकी चींटी।

अँगुली–स्त्री० दे० 'अंगुली'।

अंगुलीक, अंगुलीय, अंगुलीयक–पु० (सं०) अँगूठी।

अंगुल्यग्र–पु० (सं०) उँगलीकी नोक।

अंगुल्यादेश–पु० (सं०) उँगलीके द्वारा किया हुआ संकेत।

अंगुश्त–पु० (फा०) उँगली। **–नुमा**–वि० जिसकी ओर उँगली उठायी जाय, बदनाम। **–नुमाई**–स्त्री० अंगुश्तनुमा होना; बदनामी, लांछन। **–(श्ते) नर**–पु० अँगूठा।

अंगुश्तरी–स्त्री० (फा०) अँगूठी।

अंगुश्ताना–पु० (फा०) लोहे या पीतलकी टोपी जो सिलाईमें उँगलीके बचावके लिए उसपर पहन ली जाती है; तीरंदाजीके वक्त उँगलीपर पहननेके लिए सींग या हड्डीकी बनी हुई अँगूठी।

अंगुष्ठ–पु० (सं०) अँगूठा। **–मात्र,–मात्रक**–वि० अँगूठेकी लम्बाई या आकारका।

अंगुष्ठिका–स्त्री० (सं०) एक क्षुप।

अंगुष्ठच–पु० (सं०) अँगूठेका नाखून।

अँगुसा†–पु० अँखुआ।

अँगुसाना†–अ० क्रि० अंकुरित होना।

अँगुसी–स्त्री० हलका फाल; सुनारोंकी वह नली जिससे चिरागको फूँककर टाँका जोड़ते हैं।

अँगूठा–पु० हाथ या पैरकी पहली और सबसे मोटी उँगली। मु०**–चूमना**–खुशामद करना; सम्मान या बहुत विनय प्रकट करना। **–चूसना**–बड़ा होकर बच्चेकी तरह नासमझीका काम करना। **–दिखाना**–अवज्ञापूर्वक, किसीको तुच्छ समझनेका भाव दिखाते हुए, नाहीं या इनकार करना।

अँगूठी–स्त्री० उँगलीमें पहननेका एक गहना, मुंदरी।

अंगूर–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध लता या उसका फल जो पकनेपर बहुत मीठा होता है, द्राक्षा, दाख; (हि०) भरते हुए घावके लाल दाने;* अँखुआ, अंकुर। **–की टट्टी**– वह टट्टी जिसपर अंगूरकी बेल चढ़ाते हैं। **–की बेल**–वह लता जिसमें अंगूर फलते हैं, द्राक्षा-लता। मु० **–खट्टे होना**–अ० क्रि० किसी चीजका पहुँचके बाहर होना (प्रयत्नमें सफलता न मिलनेपर किया जानेवाला बहाना)। **–तड़कना,–फटना**–भरते घावपरकी झिल्लीका फट जाना। **–बँधना या भरना**–घावमें लाल दाने उठ आना; घावका भरने लगना।

अंगूरी–वि० (फा०) अंगूरका बना; अंगूरके रंगका। पु० हलका हरा रंग जो अंगूरके रंगसे मिलता है। **–बेल**–स्त्री० कपड़ेपर काढ़ी या छापी जानेवाली अंगूरकी बेलकी शक्लकी बेल। **–शराब**–स्त्री० अंगूरसे बनायी हुई शराब।

अंगूष–पु० (सं०) नरकुल; बाण।

अँगेजना–स० क्रि० सहना; अंगीकार करना।

अँगेट–स्त्री० अंगदीप्ति–'एड़ी तें शिखा लौ है अनूठियै अँगेट आछी' –घन०।

अँगेठा†–पु० दे० 'अँगीठा'।

अँगेठी–स्त्री० दे० 'अँगीठी'।

अँगेथू–पु० अरणी या गनियारीका पेड़।

अँगेरना*–स० क्रि० दे० 'अँगेजना'।

अंगोंच, अंगोंचन–पु० (सं०) अँगोछा, तौलिया।

अँगोछना–स० क्रि० गीले गमछेसे बदन पोंछना या रगड़ना।

अँगोछा–पु० देह पोंछनेका कपड़ा, गमछा, अंगोंचन।

अँगोछी–स्त्री० छोटा गमछा; छोटी धोती।

अँगोजना*–स० क्रि० दे० 'अँगेजना'।

अँगोरा†–पु० मच्छर; फनगा।

अँगोरी–स्त्री० आग; चिनगारी।

अँगौंगा–पु० अनाज या अन्य किसी वस्तुका वह भाग जो उपयोगमें आनेके पहले धर्मार्थ निकाल दिया जाय; पुरोहितको देने या देवताको चढ़ानेके लिए राशिसे निकाला गया अन्न, अँगऊँ।

अँगौरिया–पु० मजदूरीके बदले हल-बैल लेकर खेती करनेवाला हलवाहा।

अंग्य–वि० (सं०) अंगोंसे संबंध रखनेवाला।

अँग्रेज–पु० दे० 'अँगरेज'।

अंघस्–पु० (सं०) पाप।

अँघड़ा†–पु० पैरके अँगूठेमें पहननेका काँसेका छल्ला।

अँघराई†–स्त्री० पशुओंपर लगनेवाला एक कर (प्रा०)।

अँघिया–स्त्री० झीने कपड़ेसे मढ़ी छलनी।

अंघ्रि–पु० (सं०) पाँव, चरण; पेड़की जड़; छंदका चरण। **–नाम (न्),–नामक**–पु० वृक्ष-मूल; पैर। **–प**–पु० वृक्ष (जड़से पान करनेवाला)। **–पर्णिका,–पर्णी,–वल्लिका, –वल्ली**–स्त्री०

सिंहपुच्छी नामक पौधा। **–पान**–वि० वच्चोंकी तरह अँगूठा चूसनेवाला। पु० अँगूठा चूसना। **–स्कंध**–पु० घुटना, घुट्टी, टखना।

अंचति–स्त्री० (सं०) हवा; अग्नि।

अंचती–स्त्री० (सं०) दे० 'अंचति'।

अँचरा†–पु० दे० 'आँचल'।

अंचल–पु० (सं०) वस्त्रका छोर; साड़ी, ओढ़नी आदिका वह छोर जो छाती और पेटपर रहता है, आँचल; छोर; देशका प्रांत-भाग; कोना; तट, किनारा।

अँचला–पु० दे० 'आँचल'।

अँचवन–पु० दे० 'अचवन'।

अँचयना–स० क्रि० दे० 'अचवना'।

अँचवाना–स० क्रि० दे० 'अचवाना'।

अंचित–वि० (सं०) झुका या मुड़ा हुआ, कुटिल, टेढ़ा; घुंघराले (वाल); सुंदर; गया हुआ; सिकोड़ा हुआ; गूंथा हुआ; सिला हुआ; व्यवस्थित; पूजित। **–पत्र**–पु० एक प्रकारका कमल जिसकी पत्तियाँ टेढ़ी या मुड़ी होती हैं। **–भ्रू**–वि० स्त्री० टेढ़ी, कमान-सी भौंवाली। स्त्री० टेढ़ी भौंवाली स्त्री।

अंछ⁕–स्त्री० अक्षि, आँख (रासो)।

अंछर–पु० एक मुखरोग; † अक्षर; मंत्र, टोना। मु०**–मारना**–जादू-टोना करना।

अंज⁕–पु० कंज, कमल।

अंजन–पु० (सं०) काजल; सिद्धांजन; सुरमा; स्याही; माया (निरजन); रात्रि; पश्चिम दिशा; पश्चिम दिशाका हस्ती; एक नाग; एक मिथिलानरेश; एक पर्वत, नीलगिरि; एक वृक्ष; व्यंजना वृत्तिः अग्निः; छिपकली; एक तरहका वगला; आँजना; लेपन; मिलाना; व्यक्त करना। **–केश**–पु० दीपक। वि० जिसके वाल वहुत काले हों। **–केशी**–स्त्री० हट्टविलासिनी नामक गंधद्रव्य जिसके लगानेसे वाल वहुत काले होते हैं। **–गिरि**–पु० नीलगिरि। **–नामिका**–स्त्री० आँखका एक रोग, विलनी। **–शलाका**–स्त्री० आँजन या सुरमा लगानेकी सलाई। **–सार**–वि० (हि०) अंजनयुक्त। **–हारी**–स्त्री० (हि०) विलनी; भृंगी कीड़ा।

अंजना–स्त्री० (सं०) हनूमान्‌की माता; बिलनी; व्यंजना वृत्ति; एक तरहकी छिपकली; दे० 'अंजनावती'। पु० एक तरहका धान। **–गिरि**–पु० एक पहाड़। **–नंदन**–पु० हनूमान्।

अंजना⁕–स० क्रि० दे० 'आँजना'।

अंजनाधिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी छिपकली।

अंजनावती–स्त्री० (सं०) उत्तर-पूर्वके दिग्गज सुप्रतीककी भार्या; कालांजन वृक्ष।

अंजनिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी छिपकली; चुहिया; उत्तर-पूर्वके दिग्गजकी भार्या।

अंजनी–स्त्री० (सं०) हनूमान्‌की माता; चंदन, कुंकुम आदिसे अनुलिप्त स्त्री; बिलनी; माया; कटुका वृक्ष; कालांजन वृक्ष। **–नंदन**–पु० हनूमान्।

अंजबार–पु० (फा०) दवाके काम आनेवाला एक पौधा।

अंजर⁕–वि० उज्ज्वल।

अंजर-पंजर–पु० शरीरका जोड़; ठठरी; हड्डी-पसली; ढाँचा। अ० अगल-बगल। मु०**–ढीला हो जाना**–जोड़-जोड़ हिल जाना, सब अंगोंका शिथिल हो जाना।

अंजरि⁕–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अंजल–पु० अंजलि; †अन्न-जल (?)।

अंजलि–स्त्री० (सं०) करसंपुट; अंजलिभर वस्तु; अभिवादनका संकेत। **–कर्म (न्)**–पु० आदरपूर्वक नमस्कार करना। **–कारिका**–स्त्री० नमस्कार करनेकी मुद्रावाली मिट्टीकी छोटी मूर्ति; लज्जालु लता। **–गत**–वि० अंजलीमें या हथेलियोंपर रखा हुआ। **–पुट**–पु० दोनों हथेलियोंको मिलानेसे बननेवाला गड्ढा। **–बद्ध**–वि० करबद्ध।

अंजलिक–पु० (सं०) अर्जुनका एक बाण।

अंजलिका–स्त्री० (सं०) चुहिया; अर्जुनका एक बाण।

अंजली–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अँजवाना, अँजाना–स० क्रि० अंजन लगवाना।

अंजस–वि० (सं०) सीधा, अकुटिल, ईमानदार।

अंजसा–अ० (सं०) जल्दीसे, झटपट; साक्षात्; ठीक तौरपर, यथावत्।

अंजसायन–वि० .(सं०) सीधा जानेवाला।

अंजहा†–वि० अनाजका। (स्त्री० अंजही) गल्लेका बाजार।

अंजाम–पु० (फा०) अंत, समाप्ति; पूर्ति; फल, नतीजा। मु०**–को पहुँचाना**–पूरा करना। **–देना**–पूरा करना। **–पाना**–पूरा होना।

अंजि–पु० (सं०) प्रेरक, भेजनेवाला; आदेशक; त्रिपुंड। स्त्री० अंगराग, रंग; जननेंद्रिय।

अंजित–वि० (सं०) अंजन-युक्त।

अंजिव–वि० (सं०) पिच्छिल, चिकना।

अंजिष्ट, अंजिष्णु–पु० (सं०) सूर्य।

अंजी–स्त्री० (सं०) आशीर्वाद, शुभकामना; पीसनेका यंत्र; दे० 'अंजि' (स्त्री०)।

अंजीर–पु० (फा०) गूलरकी जातिका एक फल; उसका पेड़।

अंजुमन–पु० (फा०) सभा, समिति, मजलिस, महफिल।

अँजुरी, अँजुलि, अँजुली†–स्त्री० दे० 'अंजलि'।

अँजोर, अँजोरा⁕–पु० उजाला, प्रकाश।

अंजोरना⁕–स० क्रि० दिया बालना; हरण करना; समेट लेना।

अंजोरी⁕–स्त्री० उजाला, चाँदनी। वि० स्त्री० उजियाली।

अंझा–पु० अनध्याय, छुट्टी; नागा; स्त्री०–'अंझासी दिनकी भई संझासी सकल दिसि'–भू०। लोप।

अंटकना–अ० क्रि० दे० 'अटकना'।

अँटना–अ० क्रि० समाना; ठीक आना; ठीक नापका होना। (कपड़ा, जूता इ०); काफी होना; पूरा पड़ना; ⁕ खप जाना।

अंटसंट–वि०, पु० दे० 'अंडबंड'।

अंटा–पु० बड़ी गोली; बड़ी कौड़ी; सूत या रेशमका लच्छा; बिलियर्डका खेल। **–घर**–पु० बिलियर्ड खेलनेका कमरा।

अंटागुड़गुड़–वि० बेसुध, बेहोश, नशेमें चूर (बोल०)।

अंटाचित–वि० पूरी तरह चित; स्तब्ध; नशेमें चूर, बेसुध; बर्बाद, बेकार (ला०)।

अँटाना–स० क्रि० स्थान निकालकर रखना या भरना, कोई वस्तु इस तरह बाँटना या देना कि सबको मिल जाय, कमी न पड़े।

अंटाबंधू–पु० सब कुछ हार जानेपर दाँवपर रखी जानेवाली खेलनेकी कौड़ी।

अँटिया–स्त्री० घास, पतली लकड़ियों, दातुनों आदिका मुट्ठा, गठिया, पूला।

अँटियाना–स० क्रि० उँगलियोंके बीचमें छिपा लेना; गायब करना; अँटिया बनाना; तागेकी पिंडी बनाना।

अंटी–स्त्री० दो उँगलियोंके बीचकी जगह, घाईं; धोतीकी कमरके ऊपरकी लपेट; गाँठ; टेंट, डोंड़िया; पहलवानोंका एक दाँव; अटेरन; अट्टी; सूत या रेशमकी लच्छी; मनमें पड़नेवाली गाँठ; बिगाड़; छोटी बाली। **–बाज**–वि० दगाबाज, फरेबी। मु०**–करना**–माल उड़ा लेना; सूत लपेटकर अंटी बनाना। **–देना**–गरदनिया देना। **–पर चढ़ना**–धोखा खा जाना। **–मारना**–दूसरेकी चीज धीरेसे उड़ा लेना; कम तौलना, डाँड़ी मारना।

अँटौतल–पु० कोल्हूमें जुते हुए बैलकी आँखोंपर लगाये जानेवाले ढक्कन।

अँठई†–स्त्री० कुत्तों आदिके बदनमें चिपटे रहनेवाले छोटे कीड़े, किलनी।

अँठली–स्त्री० नवोढाका उभड़ता हुआ स्तन।

अंठी–स्त्री० गुठली; गिल्टी; गाँठ, गिरह; अँठली।

अंड–पु० (सं०) अंडा; अंडकोश, फोता; ब्रह्मांड; वीर्य; मृगनाभि, नाफा; शिव। **–कटाह**–पु० ब्रह्मांड। **–कोटर-पुष्पी**–स्त्री० नीलवुह्ना नामक पौधा। **–कोश, –कोष, –कोषक**–पु० फोता, खुसिया; ब्रह्मांड। **–ज**–पु० अंडेसे उत्पन्न होनेवाले प्राणी (पक्षी, साँप, मछली इ०)। वि० अंडेसे उत्पन्न। **–जा**–स्त्री० कस्तूरी।

–धर–पु० शिव। **–पीत**–पु० अंडेके भीतर निकलनेवाला पौष्टिक पीला पदार्थ; अंडेकी जर्दी। **–वर्धन**–पु०,**–वृद्धि**–स्त्री० फोता बढ़नेकी बीमारी। **–सू**–वि० अंडेसे उत्पन्न होनेवाला।

अंडक–पु० (सं०) छोटा अंडा; अंडकोश।

अंडजेश्वर–पु० (सं०) गरुड़।

अंडबंड–पु० बे-सिर-पैरकी बात। वि० बे-सिर-पैरका; ऊटपटाँग, शृंखलाहीन।

अंडरना†–अ० क्रि० (धानका) बाल निकलनेकी अवस्थापर पहुँचना, रेंड़ना।

अंडस†–स्त्री० अड़चन, कठिनाई।

अंडसना†–अ० क्रि० कठिनाईमें फँसना।

अंडा–पु० वह गोल पिंड या खोल जिसमेंसे साँप, मछली, चिड़िया आदिका बच्चा निकलता है; *देह, पिंड। **मु०–खटकना**–अंडेका तड़कना। **–ढीला हो जाना**–कमजोर या बीमार होना, शिथिल होना; दिवालिया होना। **–फूटना**–अंडेसे बच्चेका बाहर आना। **–(डे) सेना**– पक्षियोंका अपने अंडेपर बैठकर गरमी पहुँचाना; घरमें बैठे रहना। **–(डे)–बच्चे**–औलाद, संतान। **–लड़ना**–एक तरहका जूआ। **–सरकाना**–हाथ-पैर हिलाना।

अंडाकर्षण–पु० (सं०) अंडरहित करना, नपुंसक बनाना, बधिया करना।

अंडाकार, अंडाकृति–वि० (सं०) अंडेकी आकृतिवाला।

अंडालु–पु० (सं०) अंडोंसे युक्त मत्स्य, मछली।

अंडाशय–पु० (ओवरी) फूलके स्त्री-केसर (पिस्टिल)के पेंदेका उभरा हुआ भाग। निषेचनके फलस्वरूप अंडाशय फलका रूप धारण कर लेता है (वनस्पति विज्ञान); शरीरका वह अंग जो अंडाणु (ओवा) उत्पन्न करता है और जिसमें लिंग-हार्मोन पाया जाता है (प्राणिविज्ञान)।

अंडिका–स्त्री० (सं०) एक तौल (चार यव)।

अंडिनी–स्त्री० (सं०). स्त्रियोंका एक रोग, योनिकंद।

अंडिया†–पु० बाजरेकी पकी हुई बाल; अटेरनपर लपेटा हुआ सूत; दे० 'अठिया'।

अंडी–स्त्री० रेंड़ या एरंडका पेड़ या बीज; एक रेशमी कपड़ा।

अंडीर–पु० (सं०) जवान पुरुष। वि० बली।

अंडुआ–वि० जो बधिया न किया गया हो। पु० ऐसा पशु। **–बैल**–पु० आँड़ू बैल, साँड़; बड़े अंडकोशवाला या सुस्त आदमी।

अंडुआना–स० क्रि० बधिया करना, अंडाकर्षण।

अंडुवारी–स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली।

अंडैल–वि० स्त्री० जिसके पेटमें अंडे हों।

अंतः–'अंतर्'का समागतरूप।**–कथा**–स्त्री० किसी प्रसंगमें संकेतित अन्य कथा, घटना या बात। **–करण**–पु० भले-बुरेका विवेक करनेवाली भीतरी इंद्रिय; ज्ञान, सुख-दुःखके अनुभवका साधन, मन; मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इन चार वृत्तियोंका योग। **–कलह**–पु० आपसी लड़ाई, गृहयुद्ध। **–कुटिल**–वि० भीतरका कुटिल, छली। **–कोण**–पु० भीतरका कोण, 'इंटीरियर ऐंगल'। **–क्रिया**–स्त्री० भीतरी व्यापार; मनको शुद्ध करनेवाला कर्म। **–क्षिप्त**–वि० (इन्‌जेक्टेड) जो सूई द्वारा भीतर प्रविष्ट कराया गया हो।**–क्षेप,–क्षेपण**–पु० (इन्‌जेक्शन) सूई द्वारा भीतर प्रविष्ट करानेका कार्य; सुई (लगाना)। **–पट**–पु० दूल्हे और दुलहिनके बीच खड़ा किया जानेवाला कपड़ेका परदा; अँतरौटा। **–पटी**–स्त्री० वह चित्रपट जिसपर पर्वत, नदी आदिका दृश्य अंकित हो। **–पत्रित**–वि० (इंटरलीव्ड) संशोधन,परिवर्धन आदिके लिए जिसमें बीच-बीचमें सादे कागज लगे हों। **–परिधान**–पु० सबसे नीचेका कपड़ा। **–परिधि**–स्त्री० परिधिके भीतरका स्थान। **–पवित्रा**–वि० स्त्री० शुद्ध अंतःकरणवाली। **–पाल**–पु० अंतःपुरका रक्षक। **–पुर**–पु० राजप्रासाद; जनानखाना, हरम। **–०प्रचार**–पु० स्त्रियोंकी गप्प। **–पुरिक**–पु० अंतःपुरका रक्षक, कंचुकी। **–पुरिका**–स्त्री० अंतःपुरमें रहनेवाली स्त्री। **–पुष्प**–पु० नियमित रजःस्राव आरम्भ होनेके पूर्व स्त्रियोंमें वर्तमान रहनेवाला स्रावका द्रव्य। **–प्रकृति**–स्त्री० मूल स्वभाव; राजाका मंत्रिमंडल; आत्मा; हृदय। **–प्रजनन**–पु० निकट सम्बन्धवाले पौधों या प्राणियोंका संगम (मेटिंग)। **–प्रज्ञ**–वि० आत्मज्ञानी। **–प्रवाह**–पु० भीतर ही भीतर बहनेवाली धारा। **–प्रांतीय,–प्रादेशिक**–वि० प्रांत या प्रदेशके भीतर होनेवाला या भीतरी भागसे सम्बन्ध रखनेवाला; दो या अधिक प्रांतोंमें अवस्थित या उनसे संबंध रखनेवाला, अंतर प्रादेशिक।**–प्रेरणा**–स्त्री० सहज प्रेरणा; साहित्यिक रचनाके लिए प्रेरित करनेवाली आन्तरिक वृत्ति। **–शरीर**–पु० सूक्ष्म शरीर। **–शल्य**–वि० भीतर सालनेवाला, गाँसीकी तरह चुभनेवाला। **–शुद्धि**–स्त्री० चित्तशुद्धि। **–संज्ञ**–वि० अपने सुख-दुःखादिके अनुभवोंको प्रकट न कर सकनेवाला (वृक्ष आदि)। **–सत्व**–वि० जिसके अन्दर शक्ति हो। पु० भिलावाँ। **–सत्वा**–स्त्री० गर्भवती स्त्री। **–सलिला**–स्त्री० दे० 'अंतस्सलिला'। **–सार**–वि० पु० दे० 'अंतस्सार'। **–सुख**–वि० जिसे आंतरिक सुख प्राप्त हो। **–स्थ**–वि० भीतर या बीचमें स्थित। पु० स्पर्श और ऊष्म वर्णोंके बीचमें पड़नेवाले य, र, ल, व ये चार वर्ण। **–स्थ राज्य**–पु० (बफर स्टेट) दो बड़े राज्योंके बीचमें पड़नेवाला वह राज्य जिसके कारण उन दोनोंमें प्रत्यक्ष संघर्षकी नौबत आनेकी कम-से-कम संभावना हो, अंतराल राज्य, मध्यवर्ती राज्य। **–स्वेद**–पु० हाथी।

अंत–वि० (सं०) निकट; आखिरी; सुंदर; सबसे खराब; सबसे छोटा। पु० समाप्ति; नाश; मृत्यु; अंतकाल; परिणाम; सीमा, छोर, अंतिम भाग; सामीप्य; पड़ोस; निबटारा; निश्चय; शब्दका अंतिम अक्षर; समासका अंतिम पद; भीतरका हिस्सा; पूर्ण राशि; बहुत बड़ी संख्या; प्रकृति, स्वभाव; भेद; अंतःकरण; आँत। *अ० अन्तमें; अन्यत्र। **–कर,–करण,–कर्ता,–कारक,–कारी, (रिन्)** –वि० नाश करनेवाला, संहारक। **–कर्म(न्)**–पु० मृत्यु; नाश। **–कारिणी**–वि० स्त्री० नाश करनेवाली। **–काल**–पु० मृत्युकाल, आखिरी वक्त। **–कृत्**–वि० अंत करनेवाला। पु०. मृत्यु; यमराज। **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टि, मृतक-क्रिया। **–ग**–वि० अंत तक जानेवाला, पारगामी। **–गति**–स्त्री० मृत्यु। वि० अंतको प्राप्त होनेवाला; नष्ट होनेवाला। **–गमन**–पु० अंततक जाना, पूरा करना। **–गामी (मिन्)**–वि० दे० 'अंतगति'। **–घाई***–वि० अंतघाती, दगाबाज, धोखा देनेवाला। **–घाती(तिन्)**–वि० दगाबाज। **–चर**–वि० सीमापर जानेवाला; (कार्य) पूरा करनेवाला। **–च्छद**–पु० भीतरका परदा, भीतरका आच्छादन। **–ज**–वि० सबसे पीछे उत्पन्न होनेवाला। **–दीपक** पु० एक काव्यालंकार। **–पाल**–पु० सीमारक्षक; द्वारपाल। **–भव**–वि० अंतमें होनेवाला; अंतका। **–भूत**–वि० भीतरका; सम्मिलित। **–भेदी(दिन्)**–पु० एक तरहका व्यूह। **–रत**–वि० नाशमें आनंद मनानेवाला। **–लीन**–वि० छिपाया हुआ। **–लोप**–वि० जिस (शब्द) के अंतिम अक्षरका लोप हो जाय। **–वह्नि**–पु० प्रलयाग्नि। **–वासी (सिन्)**–वि० पास या सीमांतमें रहनेवाला। पु० शिष्य; चांडाल। **–विदारण**–पु० ग्रहणके दस मोक्षोंमेंसे एक। **–वेला**–स्त्री० दे० 'अंतकाल'। **–व्यापत्ति**–स्त्री० शब्दके अंतिम अक्षरका परिवर्तन। **–शय्या**–स्त्री० भूमिशय्या; चिता; मृत्यु; अरथी; श्मशान। **–सत्क्रिया**– स्त्री० अंतिम संस्कार। **–सद्**–पु० शिष्य (गुरुके पास रहकर पढ़नेवाला)। **–स्नान**–पु० अवभृथ स्नान। **–हीनता**–स्त्री० असीमता। **मु०–पाना**–भेद पाना। **–बनना**–अंतिम भागका अच्छा होना। **–बिगड़ना**–अंतिम भागका बुरा होना। **–लेना**–भेद लेना।

अंतक–वि० (सं०) नाश करनेवाला। पु० मृत्यु; काल; यमराज; ईश्वर; सन्निपात ज्वरका एक भेद; सीमा।

अँतड़ी–स्त्री० आँत।

अंततः–अ० (सं०) अंतमें; कमसे कम; अंशतः; भीतर।

अंततोगत्वा–अ० (सं०) निदान, आखिरकार, अंतमें।

अंतम–वि० (सं०) अति समीपी।

अंतरंकित–वि० (इन्सक्राइब्ड) (वह वृत्तादि) जिसके भीतर कोई आकृति (त्रिकोणादि) बनायी या अंकित की गयी हो; जिसके भीतर या जिसके ऊपर कोई लेख, मूर्ति आदि अंकित

की गयी हो।

अंतरंग–वि० (सं०) भीतरी; अतिप्रिय या घनिष्ठ, दिली (दोस्त)। पु० सबसे भीतरके अंग (हृदय, मस्तिष्क); अंतरिंद्रिय। **–सचिव**–पु० निजी सचिव, प्राइवेट सेक्रेटरी। **–सभा**–स्त्री० किसी सभाकी कार्यकारिणी समिति।

अंतरंगी(गिन्)–वि० (सं०) दिली, भीतरी। पु० दिली दोस्त।

अंतरंस–पु० (सं०) सीना, वक्षःस्थल।

अंतर–वि० (सं०) भीतरका; आसन्न, निकट; आत्मीय; समान (स्वर, शब्द) बाहरी; भिन्न, दूसरा (समासमें)। पु० भीतरका भाग; आशय; छिद्र; बीच; आत्मा; मन; हृदय; परमात्मा; अवकाश; स्थान; प्रवेश; पहुँच; अवधि; काल; अवसर; फर्क; शेष (गणित); फासला, दूरी; विशेषता; निर्बलता; दोष, त्रुटि; निश्चय; लिहाज; प्रयोजन; गोपन; ओट; अभाव; वस्त्र; प्रतिनिधि; अंग्रेजी के 'इंटर' के सदृश एक नया उपसर्ग जो इस अर्थका द्योतक है–दो या अधिक देशों में होने या मिलनेवाला या उनसे संबंध रखनेवाला। अ० दूर; भीतर। **–अयन**–पु० दे० 'अंतर्गृही'। **–चक्र**–पु० शरीरके भीतर के छ चक्र (तंत्र); स्वजनसमूह; चिड़ियोंकी बोलीके आधारपर शुभाशुभ जाननेकी विद्या; दिशा-विदिशाके बीचके अंतरका चतुर्थांश। **–छाल**–स्त्री० (हि०) छालके भीतरका नरम भाग। **–जातीय**–वि० दो या दोसे अधिक जातियोंमें होने या पाया जानेवाला या उनसे संबंध रखनेवाला।**–०विवाह**–(इंटरकास्ट मैरिज) दो विभिन्न जातियों (ब्राह्मण-वैश्य, कायस्थ-खत्री इ०)में होनेवाला विवाह। **–ज्ञ**–वि० हृदयकी बात जाननेवाला।**–दिशा**–स्त्री० दो दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिशा। **–देशीय**–वि० दो या अधिक देशोंमें पाया जानेवाला, होनेवाला, या उनसे संबंध रखनेवाला। **–पट**–पु० परदा; दुराव; विवाहके समय वर और कन्याके बीच डाला जानेवाला परदा; कपड़मिट्टी; मिट्टीके साथ लपेटा जानेवाला कपड़ा। **–पतित आय**–स्त्री० सौदा ठीक करनेकी दस्तूरी। **–पुरुष,-पूरुष**-पु० आत्मा; अंतःकरणमें द्रष्टारूपमें स्थित परमात्मा। **–प्रभव**–पु० वर्णसंकर। **–प्रश्न**–पु० वह प्रश्न जो पहले कही हुई बातमें ही मौजूद हो। **–प्रांतीय –प्रादेशिक**–वि० अनेक प्रान्तों, प्रदेशोंसे संबंध रखनेवाला या उनमें होनेवाला। **–राष्ट्रीय**–वि० दे० 'अंताराष्ट्रिय'। **–राष्ट्रीय मुद्राकोष**–पु० (इंटरनेशनल मनेटरी फंड) संयुक्त राष्ट्र-संघकी देखरेखमें स्थापित निधि जिसका कार्य सदस्य देशोंकी मुद्राओंके विनिमय-मूल्य स्थिर बनाये रखनेमें सहायता देना तथा विदेशी मुद्राओंकी कमी पड़ जानेपर प्राप्यांशसे अधिक मुद्राएँ निकालनेकी सुविधा प्रदान करना है। **–शायी–(यिन्)**–वि० अंदर रहनेवाला; चित्तस्थ (जीवात्मा)। **–संचारी**––पु० संचारी भाव। **–स्थ,–स्थायी (यिन्)**, **–स्थित**–वि० भीतर रहनेवाला (जीवात्मा)। **–स्थापन**–पु० (इंटरपोज) अपने आपको बीचमें डालने, स्थापित करनेकी क्रिया, मध्यस्थ बनना।

अंतरजाल–पु० कसरत करनेकी एक लकड़ी।

अंतरण–पु० (सं०) अंतरित करना; व्यवधापन, व्यवधान डालना; किसी वस्तु, धन आदिका एकके हाथ या खाते से दूसरे के हाथ या खातेमें जाना (हस्तांतरण, ट्रान्सफरेंस); स्थानांतरण।

अंतरतम–वि० (सं०) आत्मीय; अति समीपी। पु० सबसे भीतरका भाग, दिलकी गहराई।

अंतरद्वंद्व–पु० (सं०) दे० 'अंतर्द्वंद्व'।

अंतरय–पु० (सं०) दे० 'अंतराय'।

अंतरांस–पु० (सं०) कंधोंके बीचका भाग, वक्षःस्थल।

अंतरा–अ० (सं०) भीतर; बीचमें; निकट; सिवा; लगभग; तबतक; यदा-कदा; कुछ कालके लिए; प्रसंगतः। पु० स्थायी या टेकको छोड़कर गीतके और सब चरण। **–दिक्**–स्त्री० विदिशा। **–भवदेह**–स्त्री० भवसत्व; मृत्यु और जन्मके बीचकी स्थितिवाली आत्मा। **–वेदी**–स्त्री० खंभोंके सहारे बना हुआ अलिंद।

अंतरा*–पु० अंतर, बीच;–'पारसमें अरु संतमें बड़ो अंतरो जान। वह लोहा कंचन करै यह पुनि आप समान।'

अँतरा–पु० कोना; नागा; रुकावट; एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर। वि० एक छोड़कर दूसरा; जो एक दिनके अंतरसे हो या आये (अँतरा बुखार; अँतरे दिन)।

अंतरागम–पु० (इन्फ्लेक्स) जलराशि या जन-समूहका भीतर आना।

अँतराना*–स० क्रि० भीतर करना, छिपाना; अलग करना।

अंतरापत्या–वि० स्त्री० (सं०) गर्भवती (स्त्री)।

अंतराभिमुखता–स्त्री० (इनवर्डनेस) अपनी आन्तरिक स्थितियोंके प्रति अधिक अभिनिवेश रखनेकी वृत्ति।

अंतराय–पु० (सं०) विघ्न; अड़चन; ओट; मनकी एकाग्रतामें बाधक बातें (वे०); मुक्तिकी प्राप्तिके प्रयत्नमें लगे हुए व्यक्तिके मार्गमें बाधक होना।

अंतराल–पु० (सं०) मध्यवर्ती स्थान या काल; बीच, भीतरका भाग। **–दिशा**–स्त्री० विदिशा। **–राज्य**–पु० (बफर स्टेट) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाला वह स्वतन्त्र राज्य जिसके कारण उन दोनोंमें प्रत्यक्ष संघर्षकी नौबत नहीं आने पाती।

अंतरावरोधित–वि० जो (चलते समय) बीचमें रोक लिया गया हो (इंटरसेप्टेड)।

अंतरिका–स्त्री० (सं०) मकानोंके बीचकी गली।

अंतरिक्ष–पु० (सं०) पृथ्वी और स्वर्गके बीचका स्थान, आकाश। वि० अदृश्य। **–किरण**–स्त्री० (कास्मिक किरण) अत्यन्त शक्तिशाली विकिरण जो बाह्य अंतरिक्षसे पृथ्वीपर आते हैं। ये किरणें मुख्यतः आवेशित कणिकाओंकी बनी होती हैं जिनमें अधिकांश प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन होते हैं। ये पानीके भीतर हजारों फुटकी गहराई तक प्रवेश कर जाती हैं। **–ग,–चर,–चारी(रिन्)**–पु० पक्षी। वि० आकाशमें चलनेवाला। **–जल**–पु० ओस। **–यान**–पु० राकेट आदिकी सहायतासे आकाशमें अत्यन्त क्षिप्र गतिसे उड़नेवाला यान। **–यात्रा-विज्ञान**–पु० अंतरिक्षमें स्थित ग्रहों, उपग्रहों आदिकी स्थिति, स्वरूप, आदिकी जानकारी प्राप्त करनेके उद्देश्यसे की गयी यात्रासे संबंधित विज्ञान (ऐस्ट्रोनॉटिक्स)।

अंतरिख, अंतरिच्छ*–पु० दे० 'अंतरिक्ष'।

अंतरित–वि० (सं०) भीतर आया या किया हुआ; छिपा हुआ; बीचमें आया हुआ; ढका हुआ ; नष्ट; अदृश्य;- पृथक् किया हुआ; तुच्छ समझा हुआ। पु० शेष (गणित)।

अंतरिम–वि० दो समयोंके बीचका, मध्यवर्ती; अंतिम निर्णय, आदेश आदि होनेके पूर्वका या पूर्वकी (सहायता, व्यवस्था) (इंटेरिम)। **–आदेश**–पु० (इंटेरिम आर्डर) बीचके समयके लिए दी गयी आज्ञा।

अँतरिया–वि० एक दिनके अंतरसे आनेवाला (ज्वर)।

अंतरीक्ष–पु० (सं०) दे० 'अंतरिक्ष'।

अंतरीप–पु० (सं०) भूमिका नुकीला भाग जो समुद्रमें दूरतक चला गया हो, रास (केप)।

अंतरीय–पु० (सं०) अधोवस्त्र, नीचे पहननेका कपड़ा, धोती; अँतरौटा। वि० भीतरका।

अँतरौटा–पु० बारीक साड़ीके नीचे पहननेका कपड़ा, अस्तर, साया।

अंतर्–अ० (सं०) भीतर; बीचमें। **–अग्नि**–स्त्री० जठराग्नि। वि० अग्निस्थ। **–अयण**–पु० नीचे जाना; गायब होना। **–अवयव**–पु० भीतरका अंग। **–आकाश**–पु० मध्यस्थल; मनुष्यके हृदयमें रहनेवाला ब्रह्म। **–आकूत**–पु० गुप्त अभिप्राय या उद्देश्य। **–आगम**–दे० क्रममें। **–आगार**–पु० घरका भीतरी भाग। **–आत्मा(त्मन्)**–स्त्री० आत्मा; अंतःकरण। **–आपण**–पु० नगरके बीचका बाजार। **–आयाम**–पु० एक वातज रोग। **–आराम**–वि० मनमें आनंदका अनुभव करनेवाला। **–इंद्रिय**–स्त्री० मन, बुद्धि आदि भीतरकी इंद्रियाँ। **–गंगा**–स्त्री० गुप्त या छिपी हुई गंगा। **–गडु**–वि० अनावश्यक; बेकार, अलाभकर। **–गत**–वि० भीतर समाया हुआ; शामिल; गुप्त। **–गतवृत्त**,–पु० (इन-सरकिल) किसी ऋजुभुज क्षेत्रकी सब भुजाएँ जिसका स्पर्श करती हों वह वृत्त। **–गति**–स्त्री० भावना, मनकी वृत्ति। **–गर्भ**-वि० गर्भयुक्त। **–गांधार**–पु० एक विकृत स्वर (संगीत)।

–गृह,–गेह–पु० मनका भीतरी खंड। **–गृही**–स्त्री० तीर्थस्थानके भीतर पड़नेवाले स्थानोंकी यात्रा। **–ग्रस्त**–वि० किसी झगड़े, अपराध , कठिनाई आदिमें फँसा हुआ (इनवाल्वड)। **–घट**–पु० अंतःकरण। **–जठर**–पु० कुक्षि, पेट। **–जातीय**–वि० दे० 'अंतरजातीय'। **–जानु**–वि० जो हाथोंको घुटनोंके बीच रखे हुए हो। **–जामी***–वि० (हि०) दे० 'अंतर्यामी'। **–ज्ञान**–पु० अंतःकरणमें अपने आप उपजनेवाला ज्ञान, अंतर्बोध; आत्मरक्षा तथा जीवन-यापनके निमित्त प्राणियोंको प्राप्त सहज ज्ञान; सहजबोध (इन्टचूशन); क्रोचे द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो ईसाइयों की सहजानुभूतिसे मिलता-जुलता है। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० भीतरका प्रकाश। वि० जिसकी आत्मा प्रकाशमान हो।**–ज्वाला**–स्त्री० भीतरकी आग; चिंता, संताप। **–दधन**–पु० शराब चुलाना। **–दधान**–पु० गायब होना, छिपना। **–दर्शी (शिन्)**–वि० भीतर देखनेवाला, आत्मनिरीक्षक; दिलकी बात जाननेवाला। **–दशा**–स्त्री० महादशाके अंतर्गत प्रत्येक ग्रहका भोगकाल या आधिपत्यकाल (ज्यो०)। **–दशाह**–पु० मृत्युके उपरांत दस दिनके भीतर होनेवाला एक कृत्य। **–दृष्टि**–स्त्री० भीतरकी आँख, ज्ञानचक्षु; अंतर्मुखी दृष्टि। **–देशीय**–वि० (इनलैंड) देशके भीतर होने या उसके भीतरी हिस्सेसे संबंध रखनेवाला। **–०जलपथ**–पु० (इनलैंड वाटरवेज़) देशके भीतरके जलमार्ग। **–०वाणिज्य**– पु० दे० 'अंतर्वाणिज्य'; अंतर्देशीय व्यापार। **–द्धान**–पु० दे० 'अंतर्धान'। **–द्वंद्व**–पु० अंदर ही अंदर चलनेवाला द्वंद्व, परस्पर विरोधी भावोंका संघर्ष। **–द्वार**–पु० भीतरी या गुप्त दरवाजा। **–धान**–पु० अदृश्य, लुप्त हो जाना। **–अंतर्ध्वंस**–पु० (सैबटेज) असंतुष्ट कर्मियों द्वारा कल-कारखानों, रेलपथों, पुलों आदिका जान-बूझकर किया गया विनाश, तोड़-फोड़। **–नगर**–पु० राजप्रासाद। **–नाद**–पु० अंतरात्माकी आवाज या आदेश। **–निविष्ट**–वि० भीतर गया, समाया या रसा हुआ। **–निहित**–वि० भीतर स्थित, समाविष्ट। **–पत्रित**–वि० (इंटर लीव्ड), दे० 'अंतःपत्रित'। **–बोध**–पु० अंतर्दर्शन, सहज ज्ञान, आत्मबोध। **–भवन**–पु० दे० 'अंतर्गृह'। **–भाव**–पु० अंतर्गत होना; (इनक्लूजन) शामिल या समाविष्ट होना; किसी वस्तुका किसी दूसरी के भीतर आ जाना; अभाव; तिरोभाव; आशय; भीतरका; मनका भाव; अष्टकर्म (जैन)। **–भावना**–स्त्री० मन ही मन किया जानेवाला चिंतन, अंतस्थ भावना। **–भावित**–वि० अंतर्भूत; छिपाया हुआ। **–भुक्त**–वि० जो स्वतन्त्र रूप छोड़कर किसी अन्यमें मिलजुल गया हो, समा गया हो। **–भूत**–वि० भीतर समाया हुआ, अंतर्गत। पु० जीवात्मा; प्राण। **–भूमि**–स्त्री० भूगर्भ। **–भौम**–वि० जमीनके अंदरका, भूगर्भस्थ। **–मना(नस्)**–वि० बाहरी दुनियासे उदासीन रहकर अपने विचारोंमें ही डूबा रहनेवाला, समाहित-चित्त; उदास; घबड़ाया हुआ। **–मल**–पु० भीतरका मल; चित्तविकार। **–मुख**–वि० भीतरकी ओर मुखवाला; भीतरकी ओर जानेवाला। (स्त्री० 'अंतर्मुखी')। पु० चीर-फाड़में काम आनेवाली एक तरहकी कैंची। **–मृत**–वि० मृतजन्मा, गर्भमें ही मर जानेवाला (शिशु)। **–याम**–पु० मानस यज्ञ या पूजा। **–यामी (मिन्)**– वि० दिलकी बात जाननेवाला। पु० अंतःकरणमें स्थित जीवकी प्रेरणा करनेवाला ईश्वर; आत्मा। **–योग**–पु० प्रगाढ़ चिंतन। **–राष्ट्रीय**–(असाधु) दे० 'अंताराष्ट्रीय'; किसी राष्ट्रके भीतर होनेवाला या उससे संबंध रखनेवाला। **–लंब**–पु० वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब गिरा हो; (ऑफसेट) बहुभुजके दो शीर्षोंको मिलानेवाली सरल रेखा (आधार रेखा) पर किसी अन्य शीर्षसे गिराया गया लंब। **–लापिका**–स्त्री० वह पहेली जिसका उत्तर उसीके अक्षरोंसे निकलता हो। **–लिखित**–(इन्स्क्राइब्ड) दे० अंतरंकित। **–लीन**–वि० भीतर छिपा हुआ; डूबा हुआ; ध्यानमग्न। **–वंशिक,–वासक**–पु० महिलाओंके रहनेके स्थानका निरीक्षक। **–वमि**–स्त्री० अजीर्ण। **–वर्ग**–पु० किसी वर्ग या समूहके भीतरका छोटा वर्ग। **–वर्ती(तिन्)**–वि० भीतर रहनेवाला। **–वस्तु**–स्त्री० किसी पुस्तक, पात्र, पेटी आदिके भीतर जो कुछ हो, भीतरकी सामग्री (कंटेण्ट्स)। **–वस्त्र,–वास(स्)**–पु० भीतर पहननेका कपड़ा। **–वाणिज्य**–पु० (इंटरनल ट्रेड) देशके भीतरी भागोंमें होनेवाला वाणिज्य, आभ्यंतर व्यापार। **–वाणी**–वि० विद्वान्, शास्त्रविद्। **–वाष्प**–पु० भीतरी दुःख जिसमें आँसू न निकलें। **–वासित करना**–स० क्रि० (टु इंटर्न) क्षेत्र-विशेषकी सीमाके भीतर रहनेको बाध्य करना, स्थानबद्ध करना। **–वासी रोगी**–पु० (इन-डोर पेशंट) दे० 'प्रविष्ट रोगी'। **–विकार**–पु० शारीरिक धर्म; ; मनमें होनेवाला विकार; मानसिक अनुभूति। **–विरोध**–पु० भीतरी विरोध, आपसी वैमनस्य; दे० 'अंतर्द्वंद्व'। **–वृत्त**–पु० किसी आकृतिके भीतर बनाया गया वृत्त जो आकृतिकी सभी भुजाओंको स्पर्श करता हो (इन्स्क्राइब्ड सर्किल), दे० अंतर्गत वृत्त ('अंतर' के साथ)। **–वेग**–पु० आंतरिक अशान्ति, चिंता; भीतर रहनेवाला ज्वर। **–वेद**–पु० दे० 'अंतर्वेदि'। **–वेदना**–स्त्री० हृदयकी वेदना। **–वेदि,–वेदी**–स्त्री० गंगा और यमुनाके बीचका देश, ब्रह्मावर्त। **–वेधी**–पु० शरीरकी गाँठोंमें होनेवाली पीड़ा। **–वेश्म(न्)**–अन्तःपुर। **–वेश्मिक**–पु० दे० 'अंतर्वंशिक'। **–व्याधि**–स्त्री० भीतरका रोग। **–व्रण**–पु० भीतरका फोड़ा। **–हस्तीन**–वि० जो हाथमें या हाथकी पहुँचके भीतर हो। **–हास**–पु० खुलकर न हँसी जानेवाली हँसी। **–हित**–पु० अदृश्य, गायब। **–हृदय**–हृदयका भीतरी भाग।

अंतर्धि–पु० (सं०) युद्धरत दो राज्योंके मध्यमें स्थित राज्य।

अंतर्य–वि० (सं०) भीतरका, बीचका। **–श्छद**–पु० (सं०) भीतरका आवरण।

अंतर्वती, अंतर्वत्नी–वि० स्त्री० (सं०) गर्भवती।

अंतश्–'अंतर्' का समासगत रूप। **–छद**–पु० भीतरका आवरण। **–छिद्र**–पु० भीतरका छेद।

अंतस–पु० हृदय, अन्तःकरण।

अंतस्–'अंतर्' का समासगत रूप। **–तप्त**–वि० भीतर जला हुआ; परेशान। **–तल**–पु० हृदय। **–ताप**–पु० भीतरी वेदना, मनस्ताप। **–सलिल**–वि० जिसकी धारा भीतर ही भीतर, जमीनके अन्दर ही अंदर बहती हो।**–सलिला**–स्त्री० सरस्वती या फल्गु नदी। **–सार**–वि० भीतरसे ठोस, पोढ़ा; बलवान्। पु० भीतरी सार, तत्त्व, दम, ठोसपन; मन, बुद्धि, अहंकारका योग, (सा०); अंतरात्मा।

अंतस्थ राज्य–पु० दे० 'अंतःस्थ राज्य' (अंतःके साथ)।

अंतस्त्य–पु० (सं०) आँत।

अंतहपुर*–पु० दे० 'अंतःपुर'।

अंताराष्ट्रिय, अंताराष्ट्रीय–वि० (सं०) दो या अधिक राष्ट्रोंके बीचका, उनसे संबद्ध या उनमें प्रचलित (विधान आदि); अंतरराष्ट्रीय।

अंतावरी–स्त्री० अँतड़ी।

अंतावशायी(यिन्)–पु० दे० 'अंतावसायी'।

अंतावसायी(यिन्)–पु० (सं०) चांडाल; नीच जातिका व्यक्ति। (स्त्री० अंतावसायिनी।)

अंति–स्त्री० (सं०) बड़ी बहन (ना०)।

अंतिक–वि० (सं०) नजदीकी, समीपी; पासका; अंततक पहुँचनेवाला। पु० पड़ोस; नैकट्य, सामीप्य।

अंतिका–स्त्री० (सं०) बड़ी बहन (ना०); चूल्हा; भट्ठी; सप्तला नामक पौधा।

अंतिकाश्रय–पु० (सं०) निकटवर्तीका सहारा, समीपस्थका अवलंबन।

अंतिम–वि० (सं०) सबसे पीछेका, आखिरी, चरम।

अंतिमांक–पु० (सं०) नौकी संख्या।

अंतिमेत्थम्–पु० (अल्टिमेटम्) अंतिम चेतावनी या सूचना, अंतिम बार यह कह देना कि इस अवधिके बाद हम न रुकेंगे, अवधिके भीतर यह बात न की गयी तो भयानक परिणाम होगा।

अंती–स्त्री० (सं०) चूल्हा।

अंतेउर, अंतेवर*–पु० दे० 'अंतःपुर'।

अंतेवासी(सिन्)–पु० (सं०) गुरुके पास रहनेवाला शिष्य;

चांडाल । वि० पास या साथ रहनेवाला ।

अंत्य–वि० (सं०) अंतका, आखिरी; सबसे नीचे या पीछेका; बादका । पु० मुस्ता नामक पौधा; अंत्यज; संस्कृत गणन-पद्धतिके अनुसार सौ नीलकी संख्या (१,००,००,००,००,००,००,०००); शब्दका अंतिम वर्ण; अंतिम चांद्र मास, फाल्गुन; अंतिम लग्न; अंतिम नक्षत्र । **–कर्म (न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० दाहकर्म आदि, अंत्येष्टि । **–गमन**–पु० ऊँची जातिकी स्त्रीका शूद्रादिसे संबंध करना । **–ज**–पु० शूद्र; अछूत । वि० पंचम वर्णका । **–पद,–मूल**–पु० वर्गका सबसे बड़ा मूल (गणित) । **–भ**–पु० रेवती नक्षत्र; मीन राशि । **–युग**–पु० कलियुग । **–लोप**–पु० शब्दके अंतिम अक्षरका लोप । **–वर्ण**–पु० शूद्र; कविताके चरणका अंतिमाक्षर । **–विपुला**–स्त्री० एक वृत्त ।

अंत्यक–पु० (सं०) शूद्र ।

अंत्या–स्त्री० (सं०) अंत्यज स्त्री ।

अंत्याक्षर–पु० (सं०) शब्द या पदका अंतिम अक्षर ।

अंत्याक्षरी–स्त्री० (सं०) पद्यपाठकी वह प्रतियोगिता जिसमें पहले पढ़े हुए पद्यके अंतिम अक्षरसे आरम्भ होनेवाला पद्य पढ़ना होता है ।

अंन्यानुप्रास–पु० (सं०) पद्यके चरणोंके अंतिम अक्षरोंमें समानता होना, तुक, काफिया ।

अंत्यावसायी (यिन्)–पु० (सं०) अति निम्नजातीय व्यक्ति ।

अंत्याश्रम–पु० (सं०) आखिरी आश्रम, सन्न्यासाश्रम ।

अंत्याश्रमी (मिन्)–वि० (सं०) अंतिम आश्रममें रहनेवाला । पु० सन्न्यासी ।

अंत्येष्टि–स्त्री० (सं०) मृतककर्म ।

अंत्रंधमि–स्त्री० (सं०) अजीर्ण; वायुके कारण पेटका फूलना ।

अंत्र–पु० (सं०) आँत, अँतड़ी । **–कूज,–कूजन,–विकूजन**–पु० आँतोंमें होनेवाली गुड़गुड़ाहट । **–पाचक**–पु० एक पौधा जो दवाके काममें आता है । **–प्रदाह**–पु० आँतोंमें जलन होना । **–वृद्धि**–स्त्री० आँत उतरनेकी बीमारी; अंडकोश बढ़नेका रोग ।

अंत्राद–पु० (सं०) अंत्रस्थ कृमि ।

अंत्री–स्त्री० (सं०) छगलांत्री नामक पौधा; * दे० 'अंत्र' ।

अंथऊ†–पु० जैनियोंका संध्याकालीन भोजन ।

अंदर–अ० (फा०) भीतर । पु० दिल (अंदरका साफ) ।

अँदरसा–पु० चौरेठेसे बनी एक प्रसिद्ध मिठाई ।

अंदरी–वि० भीतरका ।

अंदरूनी–वि० (फा०) भीतरी, अंदरका ।

अंदाज़–पु० (फा०) ढंग, ढब; मोहक ढंग, अदा; अटकल, उचित मात्रा । वि० फेंकनेवाला (संज्ञाके अन्तमें—जैसे तीरंदाज, गोलंदाज़) । **–पट्टी**–स्त्री० कनकूत । **–पीटी**–स्त्री० नाजपर इतरानेवाली स्त्री । **मु०–उड़ा लेना**–किसीकी तर्जकी नकल करना ।

अंदाजन–अ० (फा०) अटकलसे, लगभग ।

अंदाज़ा–पु० (फा०) अटकल, अनुमान, तखमीना ।

अँदाना*–स० क्रि० बचाना, बरकाना ।

अंदिका–स्त्री० (सं०) चूल्हा, अँगीठी; बड़ी बहन ।

अंदु–पु० (सं०) जंजीर; हाथीके पाँव बाँधनेकी साँकल; पाँवोंमें पहननेका एक गहना, पाजेब, पैरी, नूपुर ।

अँदुआ–पु० हाथीके पीछेके पैरमें डालनेके लिए काठका बना हुआ एक काँटेदार यंत्र ।

अंदुक, अंदू, अंदूक–पु० (सं०) दे० 'अंदु' ।

अंदेश†–पु० दे० 'अंदेशा' ।

अंदेशा–पु० (फा०) सोच, चिंता; शक, आशंका; खतरा; हानि; दुविधा ।

अंदेस*–पु० दे० 'अंदेशा' ।

अंदोर–पु० शोरगुल, कोलाहल–'बाजन बाजहिं होइ अंदोरा'–प० ।

अंदोह–पु० (फा०) दुःख, रंज; खटका । **–नाक**–वि० दुःखद ।

अंध–वि० (सं०) अंधा; विचारहीन; आँख बन्दकर किया हुआ (–भक्ति,–अनुसरण); निर्बुद्धि; अचेत; उन्मत्त । पु० नेत्रहीन व्यक्ति; अंधकार; अज्ञान; जल; पंकिल जल; एक तरहका परिव्राजक; उल्लू; चमगादड़; एक काव्यदोष । **–कार**–पु० अँधेरा; मोह; अज्ञान; निराशा । **–काल**–पु० (हि०) अँधेरा । **–कूप**–पु० अँधेरा कुआँ; कुआँ जिसका मुंह घास-पातसे ढका हो; एक नरक । **–खोपड़ी**–वि० (हि०) नासमझ, मूर्ख । **–तमस,–तामस**–पु० घोर अंधकार, अँधेरा घुप्प । **–तामिश्र,–तामिस्र**–पु० निविडांधकार; अज्ञान; २१ नरकोंमेंसे एक; मृत्यु-भय । **–धी**–वि० नासमझ । **–धुंध***–पु० अँधेरा; अंधेर, दुराचार । **–परंपरा**–स्त्री० बिना सोचे-समझे पुरानी रीतिका अनुसरण, भेड़ियाधँसान । **–पूतना**–स्त्री० सुश्रुतमें कथित एक बालग्रह । **–बाई***–स्त्री० आँधी । **–मति**–वि० अक्लका अंधा । **–मूषिका**–स्त्री० देवताड़ नामक पौधा । **–विंदु**–पु० आँखके भीतरी परदेका अप्रकाशग्राही विंदु या स्थल । **–विश्वास**–पु० बिना सोचे-समझे किसी बातको मान लेना, विचाररहित विश्वास, वहम । **–श्रद्धा**–स्त्री० विचाररहित श्रद्धा । **–सैन्य**–पु० वह सेना जिसे सैनिक शिक्षा न मिली हो । वि० दे० 'भिन्नकूट' ।

अंध (स्)–पु० (सं०) आहार, खाद्य; भात ।

अंधक–वि० (सं०) अंधा । पु० शिवके हाथों मारा गया एक दैत्य; एक यादव जिससे यादवोंकी अंधक शाखा चली । **–घाती (तिन्),–रिपु,–शत्रु**–पु० शिव; सूर्य; चन्द्रमा; अग्नि ।

अंधकारि–पु० (सं०) शिव ।

अंधकारी–स्त्री० (सं०) भैरव रागकी एक रागिनी ।

अंधड़–पु० आँधी, तूफान ।

अंधर*–पु० दे० 'अधड़'; अंधकार ।

अँधरा*–पु० अंधा मनुष्य । वि० अंधा ।

अंधा–वि० बिना आँखका; देखनेकी शक्तिसे रहित; भला-बुरा सोचनेमें असमर्थ; विचारहीन; बिना सोचे-समझे काम करनेवाला; अँधेरा (अंधी गुफा) । पु० दृष्टिहीन प्राणी । **–आईना**–पु० दे० 'अंधा शीशा' । **–कुआँ**–पु० सूखा कुआँ, अंधकूप; लड़कोंका एक खेल । **–घोड़ा**–पु० जूता (साधु-फकीर) । **–चिराग,–दिया**–पु० धुंधली रोशनीवाला चिराग । **–तारा**–पु० नेपचून तारा । **–भैंसा**–पु० लड़कोंका एक खेल । **–शीशा**–पु० ऐसा आईना जिसमें चेहरा साफ न दिखाई दे । **मु० बनना**–बेवकूफ बनना; धोखा खाना; जान-बूझकर उपेक्षा करना । **–बनाना**–उल्लू बनाना; ठगना । **–(धे) की लकड़ी, –की लाठी**–दुर्बलका एकमात्र सहारा ।

अंधाकुप्प–पु० (ब्लैकआउट) हवाई हमला होनेके समय या उसकी आशंका होते ही सार्वजनिक स्थानोंकी बत्तियोंका बुझा दिया जाना या उन्हें इस तरह ढक देना जिससे बाहरसे, विशेषकर आसमानसे, रोशनी दिखाई न पड़े, चिरागगुल ।

अंधाधुंध–अ० बिना सोचे-विचारे; बेहिसाब; बेतहाशा । वि० विचारहीन । स्त्री० घना अंधकार; अंधेर, धींगाधींगी, अव्यवस्था ।

अंधानुकरण–पु० (सं०) आँख मूंदकर किसीके पीछे चलना; किसी व्यक्ति या व्यवहारका बिना बिचारे अनुकरण करना ।

अँधार*–पु० अंधकार ।

अंधालजी–स्त्री० अंधा फोड़ा ।

अंधाहि, अंधाहिक–पु० (सं०) एक विषहीन सर्प; एक तरहकी मछली ।

अंधाहूली–स्त्री० चोरपुष्पी नामक क्षुप ।

अंधिका–स्त्री० (सं०) रात; आँखका एक रोग; जूआ; स्त्रियोंका एक भेद ।

अँधियार, अँधियारा*–पु० अंधकार । वि० अँधेरा ।

अँधियारी–स्त्री० अंधकार; घोड़ों, शिकारी चिड़ियों आदिकी आँखोंपर बाँधी जानेवाली पट्टी ।

अँधियाली–स्त्री० अंधकार ।

अंधु–पु० (सं०) कुँआ; मेहन, शिश्न ।

अंधुल–पु० (सं०) शिरीष वृक्ष ।

अंधेर–पु० अनीति, अन्याय, धींगाधींगी; नियम-व्यवस्थाका अभाव । **–खाता**–पु० गड़बड़, अव्यवस्था, हिसाब-किताबका ठीक न रहना । **–गर्दी**–स्त्री० मनमानी काररवाई, गड़बड़ी या अव्यवस्था । **–नगरी**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कोई नियम-व्यवस्था न हो ।

अंधेरना*–स० क्रि० अंधेर करना; अँधेरा करना ।

अँधेरा–पु० अंधकार; नैराश्य; उदासी; छाया (अँधेरा छोड़ो) । वि० प्रकाशरहित; अंधकारमय । **–उजाला–**पु० सफेद और रंगीन कागजोंको विशेष प्रकारसे लपेटकर बनाया हुआ एक खिलौना । **–गुप्प,–घुप्प–**पु० गहरा अँधेरा, घोर अंधकार । **–पाख–**पु० कृष्णपक्ष । **–मु० छा जाना–**अत्यधिक अन्धकार होना; बहुत बड़ी हानि आदिके एकाएक होनेपर कुछ दिखाई न देना । **–(रे)–उजेले–**समय-कुसमय । **–घरका उजाला–**अति सुन्दर या कांतियुक्त व्यक्ति; एकलौता बेटा । **–मुंह–**पौ फटते, उजाला होनेके पहले ।

अँधेरिया–स्त्री० अंधकार; अंधेरा पाख; ईखकी पहली गोड़ाई ।

अँधेरी–स्त्री० अंधकार; अंधड़; घोड़े या बैलकी आँखपर डालनेका पर्दा या जाली; दक्षिण भारतका एक स्थान । वि० स्त्री० अंधकारभरी । **मु०–कोठरी–**गर्भ, कोख; गुप्त भेद । **–०का यार–**गुप्त प्रेमी ।**–डालना या देना–**आँख मूंदकर दुर्गति करना; धोखा देना ।

अँधोटी–स्त्री० घोड़े या बैलकी आँखपर डालनेका पर्दा, अनवट ।

अँधौरी†**–**स्त्री० दे० 'अम्हौरी' ।

अँध्यार*–पु० अंधकार ।

अँध्यारी*–स्त्री० अँधियारी, अंधकार ।

अंध्र–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक प्रदेश, आंध्र; एक प्राचीन अंत्यज जाति; बहेलिया; मगधका एक राजवंश । **–भृत्य–**पु० मगधका एक राजवंश जो अंध्रवंशके वाद चला ।

अंब–पु० (सं०) स्वर; वेद; स्वर करनेवाला; आँख; जल;* आम । स्त्री० दे० 'अंबा' (विनय०) ।

अंबक–पु० (सं०) आँख; पिता; ताँवा ।

अंबर–पु० (सं०) आकाश; वस्त्र; एक विशेष प्रकारकी साड़ी; केसर; समुद्रके किनारे पायी जानेवाली एक सुगंधित वस्तु जो दवाके काम आती है; कपास; अभ्रक; राजपूतानाका एक नगर; परिधि; घेरा; पड़ोस; ओठ; बुराई, पाप; शून्य;* बादल । **–चर–**पु० खग, पक्षी; विद्याधर । **–चारी(रिन्)–**पु० ग्रह । **–डंबर–**पु० (हि०) सूर्यास्तकालमें पश्चिम दिशामें दिखाई देनेवाली लाली । **–द–**पु० कपास । **–पुष्प–**पु० असंभव बात । **–बारी–**स्त्री० (हि०) एक झाड़ी जो दवाके काम आती है । **–बेल–**स्त्री० (हि०) आकासबेल । **–मणि–**पु० सूर्य । **–युग–**पु० ऊपर और नीचेका वस्त्र । **–लेखी (खिन्)–**वि० गगनस्पर्शी । **–शैल–**पु० बहुत ऊँचा पहाड़ । **–स्थली–**स्त्री० पृथ्वी ।

अंबरसारी–स्त्री० (?) एक पुराना कर जो घरोंपर लगता था ।

अंबरांत–पु० (सं०) क्षितिज; वस्त्रका छोर ।

अँबराई–स्त्री०, **अँबराव–**पु० अमराई ।

अंबरीष–पु० (सं०) भाड़; दाना भूननेका मिट्टीका वरतन; युद्ध; विष्णु; शिव; अनुताप; एक नरक; सूर्य; अमड़ा; छोटा जानवर, बछड़ा; अयोध्याका एक सूर्यवंशी राजा जो विष्णु-भक्तिके लिए प्रसिद्ध है ।

अंबरौका(कस्)–पु० (सं०) देवता ।

अंबल–पु० मादक पदार्थ; खट्टा रस ।

अंबष्ट–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद (लाहौर और उसके आस-पासका प्रदेश) और उसके निवासी; एक जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और वैश्या मातासे मानी जाती है; कायस्थोंकी एक उपजाति; महावत ।

अंबष्टकी–स्त्री० (सं०) दे० 'अंवष्ठा' ।

अंबष्टा–स्त्री० (सं०) जूही; अंबाड़ा; चूक्रिका; अंवष्ठ जातिकी स्त्री ।

अंबष्ठिका–स्त्री० (सं०) ब्राह्मी लता ।

अंबा–स्त्री० (सं०) माता, अम्मा; दुर्गा, शिवकी भार्या; काशिराज इंद्रद्युम्नकी तीन कन्याओंमेंसे सबसे बड़ी जिसका भीष्मने अपने भाई विचित्रवीर्यसे विवाह करनेके लिए हरण किया था; पाढ़ा लता । *पु० आम । **–पाली–**स्त्री० (हि०) अमावट, अमरस ।

अंबाड़ा–स्त्री० (सं०) माता; अमड़ा ।

अंबायु–स्त्री० (सं०) माता ।

अंबार–पु० (फा०) ढेर, राशि । **–ख़ाना–**पु० गोदाम, भंडार ।

अंबारी–पु० दे० 'अम्मारी' ।

अंबाला–स्त्री० (सं०) माता ।

अंबालिका–स्त्री० (सं०) माता; पाढ़ा लता; काशिराज इंद्रद्युम्न की भीष्म द्वारा हरी गयी कन्याओंमेंसे सबसे छोटी जो विचित्र-वीर्यकी कनिष्ठा पत्नी और पांडुकी माता थी ।

अंबिका–स्त्री० (सं०) माता; दुर्गा, पार्वती; पाढ़ा लता; काशिराज इंद्रद्युम्नकी भीष्म द्वारा हरी गयी मँझली कन्या जो विचित्र-वीर्यकी बड़ी रानी और धृतराष्ट्रकी माता थी । **–पति–**पु० शिव । **–पुत्र,–सुत–**पु० धृतराष्ट्र । **–वन–**पु० एक पुराणवर्णित वन; व्रजमंडलके अंतर्गत एक वन ।

अंबिकेय–पु० (सं०) अंबापुत्र (धृतराष्ट्र; गणेश या कार्तिकेय) ।

अंबिया–स्त्री० छोटा कच्चा आम जिसमें जाली न पड़ी हो, टिकोरा ।

अँबिरथा*–वि० वृथा ।

अंबिली*–स्त्री० इमली ।

अंबु–पु० (सं०) जल; रक्तका जलीय तत्त्व; एक छंद; जन्म-कुंडलीमें चौथा स्थान; चारकी संख्या । **–कंटक,–किरात–**पु० मगर । **–कीश,–कूर्म–**पु० सूंस । **–केशर–**पु० छालंग वृक्ष, नीबू । **–क्रिया–**स्त्री० पितृतर्पण । **–ग, चर,–चारी (रिन्)–**वि० पानीमें रहनेवाला (मत्स्य आदि जलचर) । **–घन–**पु० ओला । **चत्वर–**पु० झील । **–चामर,–ताल–**पु० सिवार । **–ज–** वि० जलमें उत्पन्न । पु० कमल; चन्द्रमा; शंख; वज्र; ईजड़ नामका पेड़; वेंत; कपूर; सारस पक्षी; इंद्रका वज्र । **–जा–**स्त्री० एक रागिनी; कमलिनी । **–जात–**दे० 'अंवुज' । **–तस्कर–**पु० सूर्य । **–द–**वि० जल देनेवाला । पु० बादल । **–धर–**वि० जल धारण करनेवाला; बादल । **–धि–**पु० समुद्र; जलपात्र; चारकी संख्या । **–०स्रवा–**स्त्री० घीकुआर । **–नाथ–**पु० समुद्र । **–निधि–**पु० समुद्र । **–प–**पु० समुद्र; वरुण; चक्रमर्दक नामक पौधा । वि० पानी पीनेवाला । **–पति–**पु० समुद्र; वरुण । **–पत्रा–**स्त्री० उच्चटा, नागरमोथा । **–पद्धति–**स्त्री०,**–पात–**पु० जलप्रवाह, धारा ।**–प्रसाद,–प्रसादन–**पु० कतक, निर्मली । **–भव–**पु० कमल । **–भृत्–**पु० बादल; समुद्र; मोथा; अभ्रक । **–अंबुमती–**स्त्री० (सं०) एक नदी-का नाम । **–मात्रज–**पु० शंबुक, घोंघा । **–राज–**पु० समुद्र; वरुण । **–राशि–**पु० समुद्र । **–रुह–**पु० कमल । **–रुहा–**स्त्री० स्थलपद्मिनी । **–रोहिणी–**स्त्री० कमल । **–वाची–**स्त्री० आषाढ़ कृष्ण पक्षके दशमीसे त्रयोदशीतकके चार दिनोंके लिए पृथ्वीके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक विशेषण (इस समय पृथ्वी रजस्वला मानी जाती है और कृषिकर्म बंद रहता है) । **–वासिनी, –वासी–**स्त्री० पाटला नामक पौधा । **–वाह–**पु० बादल; मोथा; १७ की संख्या; झील । **–वाहिनी–**स्त्री० नावका पानी उलीचनेका बरतन; जल लानेवाली स्त्री । **–वाही(हिन्)–**पु० बादल; नागरमोथा । **–विहार–**पु० जलक्रीड़ा । **–वेतस–**पु० पानीमें पैदा होनेवाला एक तरहका बेंत । **–शायी(यिन्)–**पु० विष्णु, नारायण । **–शिरीषिका–**स्त्री० एक पौधा । **–सर्पिणी–**स्त्री० जोंक । **–सेचनी–**स्त्री० जल छिड़कने या उलीचनेका (काष्ठका) पात्र ।

अंबुजाक्ष–वि० (सं०) कमलके समान नेत्रोंवाला । पु० विष्णु ।

अंबुजासन–पु० (सं०) ब्रह्मा ।

अंबुजासना–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी ।

अँबुवा*–पु० आम ।

अंबेडकर, डा० भीमराव रामजी–पु० प्रसिद्ध हरिजन नेता (जन्म १८९३), गोलमेज संमेलनके सदस्य १९३०-३२; १९४७ से १९५१ तक भारतके विधिमंत्री थे । भारतीय संविधानका मसविदा मुख्य रूपसे उन्हींने तैयार किया था ।

अंबोह–पु० (फा०) भीड़, मजमा ।

अंभः–पु० (सं०) 'अंभस्'का समासगत रूप । **–पति–**पु० वरुण । **–सार–**पु० मोती । **–सू–**पु० धूआँ, भाप ।

अंभ(स्)–पु० (सं०) जल; आकाश; देवता; मनुष्य; शक्ति, तेज; पितर; पितृलोक; जन्मकुंडलीमें लग्नसे चौथा स्थान; आध्यात्मिक तुष्टि (यो०); चारकी संख्या; एक राक्षस; एक वृत्त।

अंभनिधि–पु० दे० 'अंभोनिधि'।

अंभस्तुष्टि–स्त्री० (सं०) चार आध्यात्मिक तुष्टियोंमेंसे एक (सां०)।

अंभो–'अंभस्'का समासगत रूप। **–ज**– वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल; शंख; चंद्रमा; सारस; कपूर। **–० जनि,–० जन्मन्,–० जन्मा(न्मन्)–० योनि**–पु० ब्रह्मा। **–द,–धर**–पु० बादल; मोथा। **–धि,–निधि**–पु० समुद्र। **–० पल्लव,–० वल्लभ**–पु० मूंगा। **–राशि**–पु० समुद्र। **–रुह**–पु० कमल; सारस।

अंभोजिनी–स्त्री० (सं०) कमलिनी; कमलपुष्पोंका समूह; वह स्थान जहाँ कमलोंकी बहुलता हो।

अँभौरी–स्त्री० दे० 'अम्हौरी'।

अंमि*–पु० अमृत; अंबिया, आमका छोटा फल।

अँवदा*–वि० औंधा, जिसका मुंह नीचेकी ओर हो।

अँवरा, अँवला†–पु० दे० 'आँवला'।

अँवली†–स्त्री० छोटा आँवला।

अंश–पु० (सं०) भाग, हिस्सा; चौथा भाग; सोलहवाँ भाग; वृत्तकी परिधिका ३६वाँ भाग; भाज्य अंक; भिन्नकी लकीरके ऊपरका अंक; एक आदित्य; दिन; कंधा। **–करण**–पु० भाग लगाना, बँटवारा करना। **–कालिक**–वि० थोड़े समयसे, पूरे समयके कुछ भागसे, जिसका संबंध हो (नौकरी, सेवा); किसी काममें पूरा समय न देकर थोड़ा समय लगानेवाला (पार्ट टाइम) (कार्यकर्ता)। **–दान**–पु० (कांट्रिब्यूशन) किसी कोष या सामान्य निधि आदिमें अथवा देशकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक उन्नति आदिमें अन्य लोगोंकी तरह अपना भी उचित अंश या भाग प्रदान करना; योगदान; वह रकम या सहायता जो इस प्रकार प्रदत्त की जाय, अवदान, दत्तांश। **–धर,-धारी**–पु० (शेयरहोल्डर) वह व्यक्ति जो किसी प्रमंडल या व्यापारिक संस्था आदिमें लगायी जानेवाली पूंजीके एक या एकाधिक हिस्सोंका स्वामी हो, हिस्सेदार। **–पत्र**–पु० वह लेखपत्र जिसमें हिस्सेदारोंका हिस्सा लिखा हो। **–पूंजी**–स्त्री० (स्टॉक) किसी संस्था या निगम आदिमें विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लगायी गयी पूंजीके हिस्से। **–भाक्(ज्),–भागी(गिन्)**–वि० हिस्सा पानेवाला। **–शोधन**–पु० किसी यंत्रके पाठ्य अंकोंकी शुद्धता की जाँच तथा उनका शोधन। **–सुता**–स्त्री० यमुना नदी। **–हर,–हारी(रिन्)**–वि० हिस्सा पानेवाला।

अंशक–पु० (सं०) भाग, खंड; दिन; हिस्सेदार; दायाद। वि० हिस्सा पानेवाला।

अंशतः–अ० (सं०) कुछ अंशमें, किसी हदतक।

अंशन–पु० (सं०) विभाजन, हिस्से बाँटना।

अंशयिता(तृ)–वि० (सं०) हिस्से बाँटनेवाला।

अंशल–वि० (सं०) हिस्सेदार; दे० 'अंसल'।

अंशांकित–वि० (ग्रेडेड) (वह गिलास आदि) जिसपर नापनेके लिए अंशोंके चिह्न बने हों।

अंशावतार–पु० (सं०) वह अवतार जिसमें ईश्वर या देव विशेषकी पूरी कला अवतीर्ण न हुई हो।

अंशी(शिन्)–वि० (सं०) हिस्सेदार; जिसके कई अंश या अवयव हों, अवयवी; अवतारी; सामर्थ्यवान्।

अंशु–पु० (सं०) किरण, प्रभा; सूक्ष्मांश; छोर, सिरा; तागेका छोर; वस्त्राभूषण; वेग; एक ऋषि। **–जाल**–पु० प्रकाशपुंज। **–धर,–पति,–भर्ता(तृ),–स्वामी(मिन्)**–पु० सूर्य। **–नाभि**–स्त्री० वह बिंदु जिसपर किरणें एकत्र होकर मिलें। **–पट्ट**–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा। **–मर्दन**–पु० एक ग्रहयुद्ध (ज्योतिष) **–माली(लिन्),–हस्त**–पु० सूर्य।

अंशुक–पु० (सं०) वस्त्र; सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा; रेशमी कपड़ा; उपरना; दुपट्टा; तेजपात; अल्प प्रकाश।

अंशुमनी–स्त्री० (सं०) सालपर्णी।

अंशुमान्(मत्)–पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा; सूर्यवंशी राजा सगरका पौत्र। वि० अंशयुक्त; प्रभायुक्त; नोकदार; तंतुमय। **–(मत्)फला**—स्त्री० कदली।

अंशुल–वि० (सं०) प्रभायुक्त। पु० चाणक्य मुनि।

अंषि, अंषी*–स्त्री० आँख, अक्षि।

अंस–पु० (सं०) अंश; कंधा। **–कूट**–पु० साँड़का कूबड़। **–त्र**–पु० कंधोंका बख्तर। **–फलक**–पु० रीढ़का ऊपरी हिस्सा। **–भारिक**–वि० कंधोंपर बोझ ढोनेवाला।

अंसल–वि० (सं०) मजबूत कंधोंवाला; तगड़ा।

अंसु*–पु० अंश, भाग; कंधा; आँसू; किरण।

अँसुआ, अँसुवा–पु० दे० 'आँसू'।

अँसुआना–अ० क्रि० आँसू भर आना।

अंस्य–वि० (सं०) कंधा संबंधी।

अंह(स)–पु० (सं०) पाप; चिंता; कष्ट।

अंहड़ा†–पु० बटखरा।

अंहति, अंहती–स्त्री० (सं०) दान; त्याग; कष्ट; रोग।

अंहस्पति–पु० क्षयमास।

अंहिति, अंहिती–स्त्री० (सं०) दान।

अंह्रि–पु० (सं०) चरण; वृक्षमूल। **–प**–पु० वृक्ष। **–स्कंध**–पु० एड़ी और घुटनेके बीचका भाग।

अ–उप० (सं०) यह व्यंजनादि संज्ञा और विशेषण शब्दोंके पहले लगकर सादृश्य (अब्राह्मण), भेद (अपट), अल्पता (अकर्ण, अनुदार), अभाव (अरूप, अकाम), विरोध (अनीति) और अप्राशस्त्य (अकाल, अकार्य) के अर्थ प्रकट करता है। स्वरसे आरंभ होनेवाले शब्दोंके पहले आनेपर इसका रूप 'अन्' हो जाता है। पु० विष्णु; शिव; ब्रह्मा; वायु; वैश्वानर; विश्व; अमृत।

अइल†–पु० मुंह; छेद।

अउ, अउर†–अ० और, तथा।

अउठा–पु० कपड़ा नापनेके काम आनेवाली जुलाहोंकी लकड़ी।

अउहब*–वि० अनोखा, अद्वितीय (बीसल०)।

अऊत*–वि० निपूता, निस्संतान।

अऊलना–अ० क्रि० तप्त होना, जलना; गरमी पड़ना; चुभना; छिलना।

अऋण, अऋणी(णिन्)–वि० (सं०) जो ऋणी या कर्जदार न हो; ऋणमुक्त।

अएरना*–स० क्रि० अंगीकार करना, ग्रहण करना; –'दियो सो सीस चढ़ाइ ले आछी भाँति अएरि'–वि०।

अकंटक–वि० (सं०) बिना काँटेका; निर्विघ्न; शत्रुरहित।

अकंठ–वि० (सं०) जिसके कंठ न हो; स्वरहीन; कर्कश।

अकंप–वि० (सं०) कंपरहित, स्थिर।

अकंपन–पु० (सं०) रावणके दलका एक राक्षस। वि० दे० 'अकंप'।

अकंपित–वि० (सं०) जो कँपा न हो, स्थिर। पु० महावीर (अंतिम तीर्थंकर) के ग्यारह शिष्योंमेंसे एक।

अकंप्य–वि० (सं०) जो काँपनेवाला न हो, निश्चल।

अक–पु० (सं०) कष्ट, दुःख; पाप।

अकच–वि० (सं०) केशरहित, गंजा। पु० केतु ग्रह।

अकचकाना–† अ० क्रि० चकित रह जाना, भौंचक हो जाना।

अकच्छ–वि० (सं०) नंगा; लंपट।

अकटुक–वि० (सं०) जो कटु या कड़वा न हो; अक्लान्त।

अकठोर–वि० (सं०) जो कठोर न हो; कमजोर।

अकड़–स्त्री० अकड़नेका भाव, ढिठाई; कड़ापन, तनाव; ऐंठ, घमंड; हठ; स्वाभिमान। **–तकड़**–स्त्री० ताव; ऐंठ; आन-बान; बाँकपन। **–फों**–स्त्री० गर्वसूचक चाल, चेष्टा। **–बाई**–स्त्री० एक रोग जिसमें नसें तन जाती हैं। **–बाज**–वि० अकड़कर चलनेवाला, घमंडी। **–बाजी**–स्त्री० ऐंठ, घमंड।

अकड़ना–अ० क्रि० सूखकर कड़ा होना; ठिठुरना; तनना, ऐंठना; घमंड करना; स्तब्ध होना; तनकर चलना; जिद करना; धृष्टता करना; रुष्ट होना। **मु० अकड़कर चलना**–सीना उभार-

कर चलना ।

अकडम, अकथह–पु० (सं०) एक तांत्रिक चक्र ।

अकड़ा–पु० चौपायोंका एक रोग ।

अकड़ाव–पु० अकड़नेकी क्रिया, तनाव, ऐंठन ।

अकड़ू†–वि० दे० 'अकड़बाज' ।

अकड़ैत–वि० दे० 'अकड़बाज' ।

अकत–वि० कुल, संपूर्ण । अ० पूर्णतया, सरासर ।

अकती†–स्त्री० अक्षयतृतीयाका त्योहार (वैशाख-शुक्ला तृतीया) जिस दिन नववधूसे उसकी सखियाँ, नँनद आदि उसके पतिका नाम पूछती हैं या उसे कागजपर लिख देनेका आग्रह करती हैं (बुंदेलखंडका रिवाज),–'तुम नाम लिखावती हो हमपै हम नाम कहा कहो लीजिये जू ।...कवि 'किंचित्' औसर जो अकती सकती नहीं हाँ पर कीजिये जू ।'–कवि० कौ० ।

अकत्थ*–वि० दे० 'अकथ्य' ।

अकत्थन–वि० (सं०) दर्पहीन, जो घमंड न करे ।

अकथ*–वि० दे० 'अकथ्य' ।

अकथनीय–वि० (सं०) दे० 'अकथ्य' ।

अकथित–वि० (सं०) जो न कहा गया हो, अनुक्त; गौण (कर्म–व्या०) ।

अकथ्य–वि० (सं०) जो कहा न जा सके, कथनके अयोग्य, अकथनीय, कहनेकी शक्तिके बाहर ।

अक़द–पु० दे० 'अक़्द' ।

अकधक*–पु० आगापीछा; आशंका ।

अकनना*–स० क्रि० कान लगाकर सुनना; सुनना; आहट लेना या पाना ।

अकना–अ० क्रि० घबड़ाना ।

अकनिष्ठ–वि० (सं०) जो सबसे छोटा न हो । पु० बुद्ध; बौद्ध देववर्गविशेष ।

अकन्या–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका कौमार्य नष्ट हो चुका हो ।

अकबक–पु० अंडबंड बातें; प्रलाप; सुधबुध; चिंता, खटका । वि० चकित, निस्तब्ध । मु०–करना–प्रलाप करना ।

अकबकाना–अ० क्रि० भौचक्का होना; घबराना ।

अकबर–वि० (अ०) बहुत बड़ा, महत्तर । पु० भारतके मुगल राजवंशका तीसरा और मुगल साम्राज्यकी नींव पक्की करनेवाला बादशाह (१५४२-१६०५ ई०) ।

अकबरी–वि० अकबरका चलाया हुआ; अकबर-संबंधी; बेमेल (० विवाह) । स्त्री० एक मिठाई; लकड़ीपर की जानेवाली एक तरहकी नक्काशी । –गज–पु० दे० 'गज इलाही' ।

अक़बाल–पु० दे० 'इक़बाल' ।

अकर–वि० (सं०) बिना हाथका; बिना महसूलका; करसे मुक्त; दुष्कर; निष्क्रिय, जो कार्य न कर रहा हो ।

अकरकरा–पु० दवाके काम आनेवाला एक पौधा, आकरकरहा ।

अकरखना*–स० क्रि० आकृष्ट करना, खींचना, तानना ।

अकरण–वि० (सं०) इंद्रिय-रहित; देह, इंद्रियादिसे रहित (परमात्मा); अकृत्रिम, स्वाभाविक । *अकारण, कारणरहित; जिसका करना अनुचित या कठिन हो । पु० कुछ न करना, कर्मका अभाव ।

अकरणि–स्त्री० (सं०) असफलता; नैराश्य ।

अकरणीय–वि० (सं०) न करने योग्य ।

अकरन*–वि० अकारण; अकरणीय ।

अकरनीय*–वि० दे० 'अकरणीय' ।

अकरब–पु० (अ०) बिच्छू; वृश्चिक राशि; वह घोड़ा जिसके मुँहपर श्वेत रोमराजिके बीच दूसरे रंगके रोएँ हों ।

अकरा–स्त्री० (सं०) आमलकी । *वि० बहुमूल्य; खरा, चोखा ।

अकराथ*–वि० व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

अकराम–पु० (अ०) अनुग्रह, बख्शिश ('करम'का बहु०, इनाम-अकराम) ।

अकराल–वि० (सं०) जो भयंकर न हो, सुंदर, सौम्य । *वि० भयानक ।

अकरास–पु० सुस्ती, आलस्य; अँगड़ाई ।

अकरासू†–वि० स्त्री० जिसे गर्भ हो, गर्भवती ।

अकरी–स्त्री० हलमें लगा हुआ चोंगा जिससे बीज गिराते हैं; एक विशेष पौधा ।

अकरुण–वि० (सं०) करुणारहित, निठुर ।

अकर्कश–वि० (सं०) कर्कशतारहित, नरम, मृदु ।

अकर्ण–वि० (सं०) जिसके कान छोटे हों; कर्णहीन, बहरा; जिसमें पतवार न हो । पु० साँप । –धार–वि० चालकहीन ।

अकर्णक–वि० (सं०) कर्णहीन ।

अकर्ण्य–वि० (सं०) जो कानोंके योग्य न हो ।

अकर्तन–वि० (सं०) जो न काटे; बौना ।

अकर्तव्य–वि० (सं०) न करने योग्य, अविहित, अनुचित । पु० अनुचित कर्म ।

अकर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) जो कर्ता न हो, कर्म न करनेवाला, कर्मसे अलिप्त (पुरुष) ।

अकर्तृक–वि० (सं०) जिसका कोई कर्ता न हो ।

अकर्तृत्व–पु० (सं०) कर्तृत्व, कर्तापनके अभिमानका अभाव ।

अकर्म(न्)–पु० (सं०) कर्मका अभाव, निष्क्रियता, कर्तव्य कर्मको न करना; बुरा काम । –भोग–पु० कर्मफलके भोगसे मुक्ति । –शील–वि० सुस्त, आलसी ।

अकर्मक–वि० (सं०) (वह क्रिया) जिसके लिए कर्मकी अपेक्षा न हो (व्या०) । पु० परमात्मा ।

अकर्मण्य–वि० (सं०) कर्मके अयोग्य; निकम्मा; आलसी; न करने योग्य ।

अकर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) कर्मरहित, जो कुछ करता न हो; निकम्मा; संस्कार आदिका अनधिकारी ।

अकर्मान्वित–वि० (सं०) अपराधी; दुष्कर्मयुक्त; निठल्ला, बेकार ।

अकर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) दुष्कर्म करनेवाला, पापी ।

अकर्षण–पु० (सं०) कर्षण या खिंचावका न होना; आकर्षण, खिंचाव ।

अकलंक–वि० (सं०) कलंकरहित, निर्दोष, बेदाग । पु० एक जैन ।

अकलंकता–स्त्री० (सं०) दोषहीनता ।

अकलंकित–वि० (सं०) निर्दोष, शुद्ध, बेदाग ।

अकल–वि० सं० अवयवरहित; अखंड; अंशरहित; निराकार; कलाहीन; गुणहीन । स्त्री० अकल । –दाढ़–स्त्री० जवान होनेपर निकलनेवाली दाढ़, अक्लका दाँत ।

अकलखुरा–वि० अकेला खानेवाला, स्वार्थी; ईर्ष्यालु; जो मिलनसार न हो ।

अकलबर, अकलबीर–पु० एक पौधा जिसकी जड़ रेशमपर रंग चढ़ानेके काममें आती है ।

अकलुष–वि० (सं०) स्वच्छ, मलहीन, निर्दोष । –इस्पात–पु० क्रोमियम आदि धातुएँ मिलाकर तैयार किया गया इस्पात जिसमें मोरचा नहीं लगता, 'स्टेनलेस स्टील' ।

अकल्क–वि० (सं०) बिना तलछटका, निर्मल, शुद्ध; निष्पाप ।

अकल्कक, अकल्कन, अकल्कल–वि० (सं०) विनम्र, दंभरहित; निरहंकार; ईमानदार ।

अकल्कता–स्त्री० (सं०) ईमानदारी, शुद्धता ।

अकल्का–स्त्री० (सं०) चाँदनी, ज्योत्स्ना ।

अकल्प–वि० (सं०) अनियंत्रित; नियम न माननेवाला; दुर्बल; अक्षम; अतुलनीय ।

अकल्पनीय*–वि० जिसकी कल्पना न की जा सके । नवलेखनमें अप्रामाणिक अर्थमें प्रयुक्त ।

अकल्पित–वि० (सं०) कल्पनारहित, अकाल्पनिक; अकृत्रिम ।

अकल्मष–वि० (सं०) बेदाग; निर्दोष, शुद्ध ।

अकल्य–वि० (सं०) अस्वस्थ; सत्य ।

अकल्याण–पु० (सं०) अमंगल; अहित । वि० अशुभ ।

अकव, अकवा–वि० (सं०) अवर्णनीय; जो तुच्छ या कृपण न हो (रघु०) ।

अकवच–वि० (सं०) कवचरहित, जिसके बदनपर बख्तर न हो ।

अकवन–पु० अर्क, आकका पेड़ ।

अक़वाम–स्त्री० (अ०) क़ौमका बहु०।

अकविता–स्त्री० कविताके पूर्व प्रचलित सभी उपादानों को अस्वीकार करके चलनेवाली आधुनिक काव्यात्मक प्रवृत्ति।

अकशेरुकी–पु० (इनवर्टेब्रेट) ऐसे प्राणी जिनके शरीरमें रीढ़ (मेरुदण्ड) नहीं होती (जैसे प्रोटोज़ोआ, घोंघा); अपृष्ठवंशी।

अकस–पु०† वैर, द्वेष; ईर्ष्या; बराबरी; छाया, प्रतिबिंब।

अकस*–अ० अकस्मात् (रासो)।

अकसना*–अ० क्रि० बराबरी करना; वैर करना; झगड़ना।

अकसर–वि० (अ०) बहुत अधिक। अ० अधिकतर, बहुधा। *वि० अकेला।† अकेले, बिना किसीको साथ लिये। –'कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयेहु तात'–रामा०।

अकसी–वि० अकस रखनेवाला, शत्रु।

अकसीर–स्त्री० (अ०) कीमिया, वह दवा जिससे सस्ती धातुसे सोना बनाया जा सके; रोगविशेषकी अत्यंत गुणकारी, अचूक औषधि। वि० अचूक, अव्यर्थ। **–गर**–वि० कीमिया बनानेवाला। **–की बूटी**–सोना-चाँदी बनानेकी बूटी।

अकस्मात्–अ० (सं०) सहसा, अचानक; हठात्; संयोगवश, बिना कारण; दर्शनका एक पारिभाषिक शब्द जो तांत्रिक साधना में एक विशिष्ट अर्थ रखता है।

अकह*–वि० अवर्णनीय, न कहने योग्य; अनुचित।

अकहानी–स्त्री० यूरोपमें प्रचलित 'एंटी स्टोरी' आन्दोलनका हिन्दीमें प्रचलित रूप जो यह मानता है कि कहानीके सभी तत्त्वोंको अस्वीकार करके ही कहानी अपनेको आधुनिक बना सकती है।

अकहुवा*–वि० अकथनीय, जिसका वर्णन न हो सके।

अकांड–वि० (सं०) बिना धड़ या तनेका; अचानक या असमय होनेवाला। अ० अकारण ही, अचानक। **–जात**–वि० अचानक पैदा या असमय उत्पन्न। **–तांडव**–पु० व्यर्थकी बहस, उछल-कूद आदि। **–पात**–पु० अचानक घटित होनेवाली घटना। **०जात**–वि० जन्म लेते ही मरनेवाला। **–शूल**–पु० अचानक होनेवाला उदर-शूल।

अकाउंट–पु० (अं०) हिसाब, लेखा। **–बुक**–पु० बही-खाता।

अकाउंटेंट–पु० (अं०) हिसाब लिखनेवाला, मुनीम; हिसाब जाँचनेवाला।

अकाज–पु० कार्यहानि, हर्ज; हानि; विघ्न; दुष्कर्म, बुरा काम। *अ० व्यर्थ ही, निष्प्रयोजन।

अकाजना*–स० क्रि० हानि करना। अ० क्रि० नष्ट होना, न रहना।

अकाजी*–वि० अकाज करनेवाला; बहुत जरूरी।

अकाट–वि० जो कट न सके (दलील इ०), अखंडनीय।

अकाट्य–वि० दे० 'अकाट' (असाधु)।

अकातर–वि० (सं०) जो भीरु या हतोत्साह न हो।

अकाथ*–वि० अकथनीय, न कहने योग्य। अ० अकारथ, व्यर्थ।

अकादमी–पु० (एकैडेमी) उच्च शैक्षणिक संस्था; कला, विज्ञान आदिकी समुन्नतिके लिए स्थापित विद्वानोंकी संस्था या परिषद्।

अकाम–वि० (सं०) कामनारहित, निष्काम; इच्छारहित; उदासीन; अनिच्छुक। पु० दुष्कर्म। *अ० निष्प्रयोजन, बिना कामके। **–हत**–वि० जो इच्छासे प्रभावित न हो, धीर, शांत।

अकामता–स्त्री० (सं०) इच्छाका अभाव।

अकामी(मिन्)–वि० (सं०) दे० 'अकाम'।

अकाय–वि० (सं०) कायरहित, अशरीर। पु० राहु; परमात्मा।

अकार–पु० (सं०) 'अ' अक्षर या उसकी उच्चारण-ध्वनि। *आकार।

अकारण–अ० (सं०) बिना कारण, बेमतलब। वि० हेतुरहित। पु० कारणका अभाव।

अकारत, अकारथ–अ० व्यर्थ, बेकार (जाना, होना)। वि० निष्फल, लाभरहित।

अकारन*–वि०, अ० दे० 'अकारण'।

अकारांत–वि० (सं०) जिसके अंतमें 'अ' हो।

अकारादि–वि० (सं०) 'अ' से आरम्भ होनेवाला क्रम।

अकार्पण्य–वि० (सं०) जो बिना नीचता या दीनता दिखाये प्राप्त किया गया हो। पु० दीनता या कृपणताका अभाव।

अकार्य–वि० (सं०) न करने योग्य, अकर्तव्य, अनुचित। पु० बुरा काम, अनुचित कार्य। **–कारी(रिन्)**–वि० बुरा काम करनेवाला; कर्तव्यका पालन न करनेवाला।

अकाल–पु० (सं०) अयोग्य या अनियत काल, कुसमय; अनवसर; अशुभकाल; कालके परे, परमात्मा; (हि०) दुर्भिक्ष; कमी। वि० जो काला न हो, सफेद; बेमौसिमका, असामयिक। **–कुसुम**–पु० बेमौसिमका फूल; बेमौसिमकी चीज। **कुष्मांड,–कूष्मांड**–पु० बेमौसिमका कुम्हड़ा; बलिदान आदिके काम न आनेवाला कुम्हड़ा; बेकार चीज; निरर्थक जन्म। (गांधारीके कूष्मांडाकार मांसपिण्डका अकाल प्रसव हुआ था। उसीसे कुरुकुल-नाशक दुर्योधन आदि सौ पुत्रोंका जन्म हुआ।) **–ज**–वि० असमय उत्पन्न होनेवाला। **–जलद**–पु० बेवक्तका बादल। **–जलदोदय,–मेघोदय**–पु० बेवक्त, बेमौसिम बादलोंका घिरना। **–जात**–वि० वक्तसे पहले, बेमौसिम उपजा हुआ। **–पक्व**–वि० समयसे पहले पक जानेवाला (फल आदि)। **–पुरुष**–पु० परमेश्वर, परमात्मा (सिख)। **–प्रसव**–पु० स्त्रीको समयसे पहले प्रसव होना। **–भृत**–पु० एक प्रकारका दास जो अकालमें मिला हो। **–मूर्ति**–पु० अविनाशी पुरुष। **–मृत्यु**–स्त्री० असामयिक या अल्प वयमें होनेवाली मृत्यु। **–०विचारणा**–स्त्री० (इनक्वेस्ट) अकालमृत्यु आदिके संबंधमें की जानेवाली कानूनी जाँच-पड़ताल; अन्वीक्षण, अपमृत्यु-समीक्षा। **–वृद्ध**–वि० समयसे पहले बूढ़ा हो जानेवाला। **–वेला**–स्त्री० असमय। **–सह**–वि० जो देर न सह सके, अधीर; जो देरतक चल या टिक न सके।

अकालिक–वि० (सं०) असामयिक।

अकाली–पु० सिखोंका एक संप्रदाय; उसे संप्रदायका अनुयायी।

अकालोत्पन्न–वि० (सं०) जो समयसे पहले उत्पन्न हुआ हो।

अकाव†–पु० आक, मदार।

अकास*–पु० दे० 'आकाश'। **–दीया**–पु० आकाशदीप। **–नीम**–पु० एक पेड़। **–बानी**–स्त्री० आकाशवाणी। **–बेल**–स्त्री० अमरबेल। **मु०–बाँधना**–असंभव कार्य करनेका यत्न करना;–'सूधे बात कहौ सुख पावै, बाँधन कहत अकास'–सू०।

अकासी–स्त्री० एक पक्षी, चील; ताड़ी।

अकिंचन–वि० (सं०) जिसके पास कुछ न हो, अतिनिर्धन, दरिद्र; कर्मशून्य; अपरिग्रही। पु० वह वस्तु जिसका कोई मूल्य न हो; दरिद्र व्यक्ति; परिग्रहका त्याग (जैन)। **–वाद**–पु० (पॉपर सूट) वह वाद या मामला जिसमें वादी या प्रतिवादीकी ओरसे यह कहा जाय कि मुकदमेके खर्चके लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है अतः सरकारकी ओरसे मुझे वकील तथा वाद चलानेके लिए आवश्यक व्यय दिया जाय।

अकिंचनता–स्त्री०, **अकिंचनत्व**–पु० (सं०) निर्धनता; परिग्रहका त्याग (जैन)।

अकिंचिज्ज्ञ–वि० (सं०) जो कुछ भी न जानता हो, ज्ञानहीन।

अकिंचित्कर–वि० (सं०) जिसके किये कुछ न हो सके; निरर्थक; तुच्छ।

अकि*–अ० अथवा, या फिर;–'आगि जरौं अकि पानी परौं'–घन०।

अकितव–वि० (सं०) जो जुआरी न हो; निष्कपट।

अकिल–स्त्री० दे० 'अक्ल'। **–दाढ़**–स्त्री० जवानीमें निकलने वाला दाँत। **–का अजीरन**–बुद्धिका अतिरेक (व्यं०)।

अकिलैनि*–स्त्री० एकाकिनी;–'कान्ह! परे बहुतायतमैं अकिलैनिकी बेदन जानौ कहा तुम'–घन०।

अकिल्विष–वि० (सं०) पापरहित, निर्मल।

अक़ीक़–पु० (अ०) लाल रंगका एक बहुमूल्य पत्थर।

अक़ीदत–स्त्री० (अ०) श्रद्धा। **–मंद**–वि० श्रद्धालु।

अक़ीदा–पु० (अ०) श्रद्धा, विश्वास; धर्मविश्वास।

अकीरति*–स्त्री० दे० 'अकीर्ति'।

अकीर्ति–स्त्री० (सं०) अपयश, बदनामी। **–कर**–वि० अपयश देनेवाला; अपमान करनेवाला।

अकुंठ–वि० (सं०) जो कुंठित या भोथरा न हो; कार्यक्षम;

शक्तिशाली; खुला हुआ; तीक्ष्ण, पैना; स्थिर; अप्रतिहत (?)। **–धिष्ण्य–**पु० स्वर्ग।

अकुंठित–वि० (सं०) दे० 'अकुंठ'।

अकुच*–वि० अकुंचित, बिखरा हुआ।

अकुटिल–वि० (सं०) सीधा; सरल; भोला-भाला।

अकुताना*–अ० क्रि० दे० 'उकताना'।

अकुतोभय–वि० (सं०) जिसे कहीं या किसीसे भय न हो, नितांत भयशून्य, निडर।

अकुत्सित–वि० (सं०) अनिंदनीय, जो बुरा न हो।

अकुप्य, अकुप्यक–पु० (सं०) वह धातु जो बुरी न हो, सोना या चाँदी।

अकुमार–वि० जो कुमार न हो, प्राप्तवयस्क।

अकुल–वि० (सं०) अकुलीन; कुलरहित। पु० शिव; बुरा कुल।

अकुला–स्त्री० (सं०) शिवा, पार्वती।

अकुलाना–अ० क्रि० आकुल होना, घबड़ाना, विह्वल होना, मग्न होना।

अकुलिनी–स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।

अकुलीन–वि० (सं०) हीन कुलका, नीच कुलमें उत्पन्न, कमीना; पृथ्वीसे संबंध न रखनेवाला, अपार्थिव।

अकुशल–वि० (सं०) अनाड़ी, (किसी) काममें कच्चा; भाग्यहीन; अशुभ। पु० बुराई, अमंगल; बुरा शब्द। **–श्रमिक–**पु० (अनस्किल्ड लेबर) किसी कारखाने आदिमें काम करनेवाला वह श्रमिक जिसने अपना काम करने की विशेष योग्यता या कुशलता न प्राप्त कर ली हो।

अकुसीद–वि० (सं०) सूद या लाभ न लेनेवाला।

अकुह, अकुहक–पु० (सं०) ईमानदार आदमी।

अकूट–वि० (सं०) जो धोखा न दे, अमोघ (अस्त्र); जो खोटा न हो (सिक्का)।

अकूत–वि० जिसकी कूत या अंदाजा न हो सके; विपुल, अपरिमित। अ० अचानक, अकस्मात् (?)।

अकूपार, अकूवार–पु० (सं०) समुद्र; सूर्य; कच्छप; वह महाकच्छप जिसपर पृथ्वीका भार माना जाता है; चट्टान। वि० अच्छे परिमाणवाला; अपरिमित, असीम।

अकूर्च–वि० (सं०) कपटरहित; खल्वाट; जिसके दाढ़ी न हो। पु० बुद्ध।

अकूल–वि० (सं०) विना कूल, किनारेका; सीमारहित।

अकूहल*–वि० अत्यधिक; अगणित।

अकृच्छ्र–वि० (सं०) बिना क्लेश, कठिनाईका, आसान। पु० क्लेश या कठिनाईका अभाव।

अकृच्छ्री(च्छ्रिन्)–वि० (सं०) क्लेशरहित।

अकृत–वि० (सं०) जो पूरा न किया गया हो; बिगड़ा हुआ या अन्यथा किया हुआ; जो किसीके द्वारा बनाया न गया हो, अकृत्रिम; जिसने कुछ किया न हो; अविकसित; अपक्व। पु० अधूरा काम, किसी कामका पूरा न किया जाना; प्रकृति; कारण; मोक्ष। **–कार्य–**वि० असफल-मनोरथ। **–काल–**वि० गैरमीयादी, बिना मुद्दतका (बंधक)। **–चिकीर्षा–**स्त्री० सामादि उपायोंसे नयी संधि करना और उनमें छोटे, बड़े एवं समकक्ष राजाओंका यथायोग्य ध्यान रखना। **–ज्ञ–**वि० कृतघ्न, उपकार न माननेवाला। **–धी,–बुद्धि–**वि० जिसे पूरा ज्ञान न हो। **–शुल्क–**वि० चुंगी या स्थानीय कर न देनेवाला; जिसपर चुंगी न लगी हो।

अकृता–स्त्री० (सं०) वह कन्या जो पुत्रके समान अधिकारिणी न मान ली गयी हो।

अकृतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) अज्ञानी; असंस्कृत मतवाला; जिसे ईश्वरका साक्षात्कार न हुआ हो (साधक)।

अकृताभ्यागम–पु० (सं०) अकृत कर्मके फलकी प्राप्ति।

अकृतार्थ–वि० (सं०) विफल।

अकृतास्त्र–वि० (सं०) जिसने अस्त्रोंका चलाना न सीखा हो।

अकृती(तिन्)–वि० (सं०) अकुशल, अनाड़ी; निकम्मा।

अकृतोद्वाह–वि० (सं०) अविवाहित।

अकृत्त–वि० (सं०) न कटा हुआ; जिसकी कतर-ब्योंत न की गयी हो।

अकृत्य–वि० (सं०) जो करने योग्य न हो। पु० दुष्कर्म, अपराध। **–कारी(रिन्)–**वि० कुकर्मी।

अकृत्रिम–वि० (सं०) जो बनावटी न हो, स्वाभाविक; असली, सच्चा।

अकृत्स्न–वि० (सं०) अधूरा, जो पूरा न हुआ हो।

अकृप–वि० (सं०) निर्दय, दयाहीन।

अकृपण–वि० (सं०) जो कृपण न हो, उदार।

अकृपा–स्त्री० (सं०) कृपाका अभाव, नाराजी।

अकृश–वि० (सं०) जो दुबला-पतला न हो, सबल, मोटा-ताजा। **–लक्ष्मी–**वि० वैभवशाली। स्त्री० प्रभूत ऐश्वर्य।

अकृषिक–वि० जिसका संबंध कृषिसे न हो।

अकृषित–वि० (अनकल्टिवेटेड) जो जोती-बोयी न गयी हो (भूमि)।

अकृष्ट–वि० (सं०) जो खींचा न गया हो; जो जोता न गया हो। पु० परती जमीन, वह जमीन जो जोती न गयी हो। **–पच्य–**वि० बिना जुते खेतमें उगने पकनेवाला (शस्य)। **–पूर्वा भूमि–**स्त्री० (वर्जिन साइल) वह भूमि जो पहले कभी जोती-बोयी न गयी हो। **–रोही(हिन्)–**वि० बिना जुती जमीनमें अपने आप उगनेवाला।

अकृष्ण–वि० (सं०) जो काला न हो, सफेद, निर्मल, शुद्ध। पु० निष्कलंक चंद्रमा। **–कर्मा(मन्)–**वि० पुण्यात्मा; निर्दोष, निष्पाप।

अकेतन–वि० (सं०) गृहहीन, बेघर-बारका।

अकेतु–वि० (सं०) आकृतिरहित; जिसकी पहचान न हो सके।

अकेल*–वि० दे० 'अकेला'।

अकेला–वि० बिना साथीका, तनहा; बेजोड़; फर्द; खाली (मकान)। पु० निर्जन स्थान। (स्त्री० 'अकेली'।)**–दम–**पु० एक ही प्राणी। **–दुकेला–**वि० अकेला या जिसके साथ एक और हो; इक्का-दुक्का। **–(ली) कहानी–**स्त्री० एकतरफा बात। **–जान–**स्त्री० जिसका कोई साथी न हो, तन-तनहा।

अकेले–अ० बिना किसी साथीके; तनहा; केवल। **–अकेले** –बिना किसीको साथ लिये, शरीक किये (–मिठाइयाँ खाना)। **–दुकेले–**अकेले या एक औरके साथ।

अकेश–वि० (सं०) केशरहित; अल्प केशयुक्त; बुरे बालोंवाला।

अकैतव–पु० (सं०) निष्कपटता। वि० निष्कपट, निश्छल।

अकैया–पु० सामान लादनेका थैला, गोन।

अकोट–पु० (सं०) सुपारी या उसका पेड़। *वि० अगणित, करोड़ों।

अकोतर सौ–वि० सौसे एक अधिक, एक सौ एक। पु० एक सौ एककी संख्या, १०१।

अकोप–पु० (सं०) कोपका अभाव; राजा दशरथका एक मंत्री।

अकोप्या पणयात्रा–स्त्री० (सं०) सिक्केका प्रचलन; इसके प्रचलनमें किसी तरहकी बाधा न होना।

अकोर*–पु० दे० 'अँकोर'।

अकोरी*–स्त्री० अँकवार, गोद।

अकोला–पु० अंकोल वृक्ष।

अकोविद–वि० (सं०) अपंडित, मूर्ख, अनाड़ी।

अकोसना*–स० क्रि० कोसना, बुरा-भला कहना, गालियाँ देना।

अकौआ|–पु० मदार, आक; ललरी, गलेकी घंटी।

अकौटा|–पु० गड़रीका डंडा या धुरा।

अकौटिल्य–पु० (सं०) कौटिल्यका अभाव, सरलता।

अकौता–पु० दे० 'उकवत'।

अकौशल–पु० (सं०) कुशलताका अभाव, अदक्षता।

अक्का–स्त्री० (सं०) माता, जननी।

अक्कास–पु० (अ०) अक्स उतारनेवाला, फोटोग्राफर।

अक्कासी–स्त्री० फोटो खींचनेका काम।

अक्खड़–वि० उजड्ड, अशिष्ट, उद्धत; लड़ाका; दो-टूक कहनेवाला, निडर; झगड़ालू; जड़, मूर्ख। **–पन–**पु० उजड्डपन, उग्रता, अशिष्टता; लड़ाकापन; निर्भयता; स्पष्टवादिता।

अक्खर*–पु० दे० 'अक्षर'।

अक्खा–पु० गोन।

अक्खो-मक्खो–पु० बच्चेको बहलानेके लिए कहे जानेवाले एक

वाक्यका अंश। (बुरी नजरसे बच्चेको बचानेके लिए स्त्रियाँ दीपकके पास हाथ ले जाकर उसके (बच्चेके) मुंहपर फेरते हुए कहती हैं–'अक्खो-मक्खो दिया बरक्खो, जो मेरे बच्चेको तक्के उसकी फूटें दोनों अक्खों।)

अक्त–वि० (सं०) अंजन लगा हुआ; लिप्त, छिपा हुआ; व्याप्त; व्यक्त; भरा हुआ; युक्त (समासांतमें–जैसे तैलाक्त); हाँका हुआ, चलाया हुआ।

अक्ता–स्त्री० (सं०) रात्रि।

अक्तूबर–पु० ईसवी सालका दसवाँ महीना।

अक्त्र–पु० (सं०) वर्म, कवच।

अक्द–पु० (अ०) प्रतिज्ञा, इकरार; विवाह, निकाह। **–नामा**–पु० विवाहका प्रतिज्ञा-पत्र। **–बंदी**–स्त्री० विवाह-सूत्रमें बँधना।

अक्र–वि० (सं०) निष्क्रिय।

अक्रम–वि० (सं०) क्रमरहित, अव्यवस्थित, बेसिलसिला; गतिहीन, आगे बढ़नेमें असमर्थ। पु० क्रमका अभाव, बेतरतीबी, अव्यवस्था; गतिहीनता। **–सन्न्यास**–पु० संन्यासका एक प्रकार (जो आश्रम-व्यवस्थाके अनुसार धारण न किया गया हो)।

अक्रमातिशयोक्ति–स्त्री० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकारका एक भेद, जहाँ कार्य और कारणका एक साथ ही होना दिखलाया जाय।

अक्रव्याद–वि० (सं०) निरामिषभोजी, जो मांस न खाता हो।

अक्रांत–वि० (सं०) जिससे कोई आगे न निकल गया हो; अपराजित।

अक्रांता–स्त्री० (सं०) बृहती, कंटकारि।

अक्रिय–वि० (सं०) निष्क्रिय, काहिल, जो कुछ न करे; कर्मशून्य (परमात्मा); निकम्मा।

अक्रिया–स्त्री० (सं०) निष्क्रियता; कर्त्तव्य न करना; दुष्कर्म।

अक्रूर–वि० (सं०) दयालु, कोमल-चित्त। पु० एक यादव जो कृष्णके चाचा और भक्त थे।

अक्रोध–पु० (सं०) क्रोधका नियंत्रण या अभाव, सहिष्णुता। वि० क्रोधरहित।

अक्रोधन–वि० (सं०) दे० 'अक्रोध'। पु० एक राजा, अयुतायुका पुत्र।

अक्रोधमय–वि० (सं०) क्रोधरहित।

अक्ल–स्त्री० (अ०) बुद्धि, समझ। **–मंद**–वि० चतुर, बुद्धिमान्। (**–की दुम**–मूर्ख (व्यं०))। **–मंदी**–स्त्री० चतुराई। **–(क्ले) इंसानी**–स्त्री० मानव-बुद्धि। **–कुल**–पु० वह सलाहकार जिससे राय किये बिना कोई काम न किया जाय। **–हैवानी**–स्त्री० पशुबुद्धि। मु०**–आना**–समझ होना। **–औंधी होना**–बेअक्ल होना। **–का कसूर होना**–अक्लकी कमी होना, बुद्धिका दोष होना। **–का काम न करना**–कुछ समझमें न आना। **–का चक्करमें आना**–हैरान होना, चकित होना। **–का चरने जाना**–समझका जाता रहना। **–का चिराग गुल होना**–अक्ल जाती रहना। **–का दुश्मन**–मूर्ख। **–का पुतला**–बहुत बुद्धिमान्। **–का पूरा**–मूर्ख, बुद्धू (व्यं०)। **–का फ़तूर**–अक्लकी कमी। **–का मारा**–मूर्ख। **–की पुड़िया**–बुद्धिमती। **–के घोड़े दौड़ाना**–तरह-तरहकी कल्पना करना। **–के तोते उड़ जाना**–होश ठिकाने न रहना। **–के नाखून लेना**–समझकर बात करना। **–के पीछे लट्ठ लिये फिरना**–नासमझीके काम करना। **–के बखिये उधेड़ना**–बुद्धि नष्ट कर देना। **–खर्च करना**–सोचना-समझना, समझको काममें लाना। **–गुम होना**–अक्ल मारी जाना, अक्लका काम न करना। **–चकराना**–चकित होना, हैरान होना। **–जाती रहना**–घबड़ा जाना। **–ठिकाने होना**–होशमें आना। **–देना**–समझाना-बुझाना। **–दौड़ना,–भिड़ाना,–लड़ाना**–सोचना, गौर करना। **–पर पत्थर पड़ना, –पर पर्दा पड़ना**–अक्ल जाती रहना। **–मारी जाना**–हतबुद्धि होना। **–सठियाना**–बुद्धि नष्ट होना। **–से दूर,–से बाहर होना**–समझमें न आना।

अक्लम–पु० (सं०) क्लांतिहीनता। वि० न थकनेवाला।

अक्लांत–वि० जो थका न हो, क्लांतिरहित।

अक्लिका–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा।

अक्लिन्न–वि० (सं०) जो आर्द्र या गीला न हो। **–वर्त्म(न्)**–पु० आँखका एक रोग जिसमें पलकें चिपकती हैं।

अक्लिष्ट–वि० (सं०) क्लेशरहित, अक्लांत; जो शांत न हो, अनुद्विग्न; जो क्लिष्ट न हो, सरल। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जो काम करनेमें थके नहीं।

अक्ली–वि० बुद्धि-संबंधी, अक्लमें आनेवाली (बात); बुद्धिकृत। मु०**–गद्दा लगाना**–अटकलबाजी करना।

अक्लेद–पु० (सं०) सूखापन।

अक्लेद्य–वि० (सं०) जो भिगाया या गीला न किया जा सके।

अक्लेश–पु० (सं०) क्लेशहीनता। वि० क्लेशरहित।

अक्षंतव्य–वि० (सं०) अक्षम्य।

अक्ष–पु० (सं०) खेलनेका पासा; पासोंका खेल; चौसर; पहिया, चक्र; पहियेका धुरा; धरतीकी धुरी; गाड़ी; भूमध्यरेखाके उत्तर या दक्षिण किसी स्थानका गोलीय अंतर; रुद्राक्ष; सर्प; सोलह माशेकी एक तौल, कर्ष; एक पैमाना (१०४ अंगुल); तराजूकी डाँड़ी; कानून; लेनदेनका मुकदमा; अक्षकुमार; ज्ञान; ज्ञानेंद्रिय; आँख; जन्मांध; आत्मा; गरुड़; तूतिया; सोचर नमक; सुहागा; बहेड़ा। **–कर्ण**–पु० समकोण त्रिभुजकी सबसे लंबी भुजा। **–काम**–वि० द्यूतप्रिय। **–कुमार**–पु० रावणका एक पुत्र जिसे हनुमान्ने मारा था। **–कुशल,–कोविद,–शौंड**–वि० जुआ खेलनेमें चतुर। **–कूट**–पु० आँखकी पुतली। **–क्रीड़ा**–स्त्री० पासोंका खेल; जुआ। **–ज**–पु० हीरा; वज्र; विष्णु; प्रत्यक्ष ज्ञान। **–दर्शक**–पु० न्यायाधीश; धर्माध्यक्ष; जुएका निरीक्षक। **–देवी(विन्)**–पु० जुआरी। **–द्यूत**–पु० जुआ। **–द्यूतिक**–पु० जुएमें होनेवाला झगड़ा। **–धर**–वि० धुरेको धारण करनेवाला। पु० विष्णु; पहिया; शाखोट वृक्ष। **–धुर**–पु० पहियेका धुरा। **–धूर्त**–वि० जुआ खेलनेमें कुशल। **–पटल**–पु० न्यायालय; मुकदमेके कागज रखनेका स्थान। **–पाट,–वाट**–पु० अखाड़ा; जुआखाना। **–पाटक**–पु० धर्माध्यक्ष। **–पीडा**–स्त्री० इन्द्रियों या अंगोंकी क्षति; यवतिक्ता लता। **–बंध**–पु० दृष्टि बाँध देनेकी विद्या, नजरबंदी। **–मात्र**–पु० निमिष। **–मापक**–पु० ग्रह-नक्षत्र देखनेका एक यंत्र। **–माला**–स्त्री० रुद्राक्षकी माला; वर्णमाला; वशिष्ठकी पत्नी, अरुंधती। **–माली(लिन्)**–पु० रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाला; शिवका एक नाम। **–रेखा**–स्त्री० धुरीकी रेखा। **–वाम**–पु० जुएमें कपट करनेवाला। **–विक्षेप**–पु० कटाक्ष। **–विद्**–वि० द्यूतज्ञ। **–विद्या**–स्त्री० द्यूतविद्या; जुआ। **–वृत्त**–पु० अक्षांश-दर्शक वृत्त, राशिचक्र। वि० जुएका आदी; जुआ खेलते समय घटित होनेवाला। **–सूत्र**–पु० रुद्राक्षकी माला; जपमाला। **–सेन**–पु० एक प्राचीन राजा। **–हीन**–वि० अंधा। **–हृदय**–पु० द्यूतकौशल।

अक्षक–पु० (सं०) वृक्षविशेष, तिनिश वृक्ष।

अक्षण–वि० (सं०) असामयिक।

अक्षणिक–वि० (सं०) स्थिर, दृढ़; जो क्षणिक न हो।

अक्षत–वि० (सं०) अखंडित, समूचा; क्षतहीन, जिसे चोट न आयी हो। पु० शिव; अखंडित चावल; लावा; जौ; धान्य; हानिका अभाव, कल्याण; हिजड़ा। **–योनि**–वि० स्त्री० जिसका कौमार भंग या पतिसे समागम न हुआ हो। स्त्री० ऐसी कन्या (विवाहित या अविवाहित)। **–वीर्य**–वि० अच्युतवीर्य, ब्रह्मचारी। पु० क्षयाभाव; शिव; नपुंसक (क्व०)।

अक्षता–स्त्री० (सं०) कुमारी; अक्षतयोनि; कर्कटश्रृंगी, काकड़ासींगी।

अक्षत्र–वि० (सं०) क्षत्रियोंसे रहित।

अक्षम–वि० (सं०) क्षमा-रहित, असहिष्णु; ईर्ष्या करनेवाला; क्षमता-रहित, असमर्थ।

अक्षमा–स्त्री० (सं०) अधीरता; क्रोध; ईर्ष्या; असमर्थता।

अक्षम्य–वि० (सं०) क्षमा न करने योग्य।

अक्षय–वि० (सं०) क्षयरहित, अविनाशी; निर्धन। पु० परमात्मा। **–गुण,–पुरुहूत**–पु० शिव। **–तृतीया**–स्त्री० वैशाख-शुक्ला तृतीया। **–धाम**–पु० वैकुंठ; मोक्ष। **–नवमी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला

नवमी। **–नीवी**–स्त्री० स्थायी दान या निधि (बौ०)। **–पद**–पु० मोक्ष। **–लोक**–पु० स्वर्ग। **–वट,–वृक्ष**–पु० प्रयाग और गयाके वटवृक्षविशेष (इनका प्रलयमें भी नाश न होना माना जाता है)।

अक्षया–स्त्री० (सं०) पुण्यतिथिविशेष।

अक्षयिणी–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'अक्षयी'। स्त्री० पार्वती।

अक्षयी(यिन्)–वि० (सं०) जिसका नाश न हो।

अक्षय्य–वि० (सं०) क्षय न होने योग्य; कभी न चुकनेवाला। **–नवमी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला नवमी।

अक्षय्योदक–पु० (सं०) श्राद्धमें पिंडदानके वाद दिया जानेवाला जल, मधु और तिलका अर्घ्य।

अक्षर–वि० (सं०) अविनाशी, अपरिवर्तनशील, अच्युत, नित्य, अक्षय। पु० वर्ण, हर्फ; स्वर; शब्द; ब्रह्मा; आत्मा; शिव; विष्णु; खड्ग; आकाश; मोक्ष; तपस्या; जल; अपामार्ग। **–गणित**–पु० बीजगणित। **–चंचु,–चण,–चन,–चुंचु**–पु० सुलेखक। **–च्युतक**–पु० एक खेल। **–जननी**–स्त्री० लेखनी। **–जीवक,–जीविक,–जीवी(विन्)**–पु० लिखनेका पेशा करनेवाला, लेखक। **–ज्ञान**–पु० लिख-पढ़ लेनेकी योग्यता, साक्षरता। **–तूलिक**–स्त्री० लेखनी। **–धाम्**–पु० ब्रह्मलोक, मोक्ष। **–न्यास**–पु० लिखावट; तंत्रकी एक क्रिया। **–पंक्ति**–स्त्री० एक वैदिक वृत्त। **–पूजक**–वि० धार्मिक पुस्तकोंमें लिखी वातोंका अक्षरशः पालन करनेवाला। **–बंध**–पु० एक वर्णवृत्त। **–माला**–स्त्री० वर्णमाला। **–मुख**–पु० विद्यार्थी; विद्वान्; 'अ' अक्षर। वि० अक्षर सीखनेवाला। **–मुष्टिका**–स्त्री० उँगलियोंके संकेत द्वारा वोलना। **–वर्जित,–शत्रु**–वि० अपढ़, निरक्षर। – **–विन्यास**–पु० वर्णविन्यास, हिज्जे; लिपि। **–वृत्त**–पु० वर्णवृत्त। **–संस्थापन**–पु० लिखे हुए अक्षर, लिपि। **–समाम्नाय**–पु० वर्णमाला। मु० **–घोंटना**–अक्षर लिखनेका अभ्यास करना। **–से भेंट न होना**–बिलकुल अपढ़ होना।

अक्षरशः–अ० (सं०) एक-एक, अक्षर, हर्फ-बहर्फ; सोलहों आने, पूर्णतया।

अक्षरांग–पु० (सं०) लिपि; लेखन-सामग्री।

अक्षरा–स्त्री० (सं०) शब्द; भाषा।

अक्षराक्षर–पु० (सं०) एक प्रकारकी समाधि।

अक्षरारंभ–पु० (सं०) पहले पहल अक्षरोंका ज्ञान कराना (एक संस्कार), विद्यारंभ।

अक्षरार्थ–पु० (सं०) शब्दार्थ; संकुचित अर्थ।

अक्षरी–स्त्री० (सं०) वर्षाऋतु; वर्त्तनी, हिज्जे (आधुनिक)।

अक्षरौटी–स्त्री० वर्णमाला; लिपिका ढंग; सितारपर वोल निकालनेकी क्रिया।

अक्षर्य–वि० (सं०) अक्षर-संबंधी। पु० एक साम।

अक्षांति–स्त्री० (सं०) ईर्ष्या; अधीरता; असहिष्णुता।

अक्षांश–पु० (सं०) भूमध्यरेखासे उत्तर या दक्षिणका अंतर; पृथ्वीकी सतह पर स्थित विन्दु की, भू-केन्द्रपर नापी गयी कोणीय दूरी, जवकि यह दूरी विषुवत् रेखासे उत्तर या दक्षिणको ली जाती है। विषुवत् रेखापर स्थित सभी स्थलोंका अक्षांश शून्य डिग्री है; ज्यों-ज्यों उत्तर या दक्षिण हटते हैं त्यों-त्यों अक्षांश बढ़ता जाता है, यहाँ तक कि ध्रुवोंपर अक्षांश ९०° हो जाता है।

अक्षाग्र–पु० (सं०) धुरा या धुरेका छोर। **–कील**–स्त्री० **–कीलन**–पु० चक्ररोधके लिए लगायी जानेवाली खूंटी; लट्ठे और जुएको जोड़नेवाली खूंटी।

अक्षार–वि० (सं०) क्षाररहित। पु० प्राकृतिक लवण। **–लवण**–पु० प्राकृतिक लवण, वह नमक जिसमें खार न हो; बिना नमकका हविष्यान्न।

अक्षावाप–पु० (सं०) जुआरी; जुआ खेलनेवाला।

अक्षि–स्त्री० (सं०) आँख; दोकी संख्या। **–कंप**–पु० पलक मारना। **–कूट,–कूटक**–पु० आँखकी पुतली, नेत्रगोलक। **–गत**–वि० दृष्ट, देखा हुआ; विद्यमान; द्वेष्य। **–गोलक**–पु० आँखका ढेंढर। **–तारक**–पु०,**–तारा**–पु० आँखकी पुतली। **–निमेष**–पु० पल, क्षण। **–पक्ष्म(न्)**–पु० बरौनी। **–पटल**–पु० आँखका परदा, आँखके गोलकके पीछेकी झिल्ली। **–भू**–वि० दृश्य, सत्य, यथार्थ। **–भेषज**–पु० पट्टिकालोध्र। **–लोम(न्)**–पु० बरौनी। **–विकूणित,–विकूशित**–पु० कटाक्ष, तिरछी, चितवन। **–विक्षेप**–पु० कटाक्ष।

अक्षिक, अक्षीक–पु० (सं०) वृक्षविशेष, रंजन वृक्ष।

अक्षित–वि० (सं०) जिसका क्षय न हुआ हो; न छीजनेवाला; जिसे चोट न लगी हो। पु० जल; दस लाखकी संख्या। **–वसु**– –पु० इंद्र।

अक्षितर–पु० (सं०) जल।

अक्षिति–स्त्री० (सं०) नश्वरता। वि० क्षयरहित।

अक्षिब, अक्षिव–पु० (सं०) दे० 'अक्षीव'।

अक्षीण–वि० (सं०) क्षीण न होनेवाला, अनश्वर।

अक्षीब, अक्षीव–पु० (सं०) सहिजन; समुद्रलवण। त्रि० अमत्त।

अक्षीय–वि० अक्ष संबंधी।

अक्षुण, अक्षुण्ण–वि० (सं०) अखंडित, अभग्न; अन्यून; अपराजित; अकुशल।

अक्षुद्र–त्रि० (सं०) जो नीच, छोटा या तुच्छ न हो। पु० शिव।

अक्षुध्य–वि० (सं०) भूख नष्ट करनेवाला; जिसे भूख न लगती हो।

अक्षुब्ध–वि० (सं०) क्षोभरहित; अनुत्तेजित, शांत।

अक्षेत्र–वि० (सं०) क्षेत्ररहित; कृषिके अयोग्य, परती। पु० बुरी जमीन; ज्यामितिका अशुद्ध या खराब चित्र; मंदबुद्धि छात्र। **–ज्ञ,–विद्**–वि० आध्यात्मिक ज्ञानसे शून्य, जिसे शरीरकी प्रकृतिका ज्ञान न हो।

अक्षेत्री (त्रिन्)–वि० जिसे खेत न हो।

अक्षोट–पु० (सं०) पर्वतीय पीलु वृक्ष, अखरोटका पेड़।

अक्षोड, अक्षोडक–पु० (सं०) दे० 'अक्षोट'।

अक्षोधुक–वि० (सं०) जो भूखा न हो।

अक्षोनि*–स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।

अक्षोभ–पु० (सं०) क्षोभका अभाव, शांति; हाथी वाँधनेका खूंटा। वि० शांत, धीर; जो क्षुब्ध या घबड़ाया न हो।

अक्षोभ्य–वि० (सं०) धीर, गंभीर, अशांत न होनेवाला। पु० बुद्ध; एक बड़ी संख्या। **–कवच**–पु० एक तंत्रोक्त कवच।

अक्षौहिणी–स्त्री० (सं०) चतुरंगिणी सेनाका एक परिमाण या विभाग (१,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और इतने ही हाथी)।

अक्ष्ण–वि० (सं०) अखंड। पु० समय, काल।

अक्स–पु० (अ०) परछाईं, छाया; चित्र; फोटो। मु० **–उतारना**–हूबहू नकशा बनाना; फोटो खींचना। **–छाना**–रंगका उतर जाना। **–लेना**–किसी तसवीरपर बारीक कागज रखकर खाका लेना।

अक्सर–अ० दे० 'अकसर'; प्रायः; बहुधा; एकाकी।

अक्सी–वि० छाया-संबंधी; अक्सके जरिये लिया जानेवाला (चित्र आदि); फोटोग्राफ-संबंधी। **–तसवीर**–स्त्री० फोटो, छायाचित्र।

अखंग*–वि० न चुकनेवाला।

अखंड–वि० (सं०) संपूर्ण; अविकल, पूरा; अटूट, बाधारहित, जिसका सिलसिला न टूटे। **–द्वादशी**–स्त्री० मार्गशीर्ष-शुक्ला द्वादशी। **–पाठ**–पु० वह पाठ जो अविराम चलता रहे। **–सौभाग्य**–पु० स्त्रीका आमरण सौभाग्यवती रहना।

अखंडन–वि० (सं०) अखंडित; अखंडनीय; समूचा। पु० परमात्मा; काल; स्वीकार; खंडन न करना।

अखंडनीय–वि० (सं०) जिसका खंडन न किया जा सके; सुदृढ़, अविभाज्य।

अखंडल*–वि० अखंड, संपूर्ण। पु० आखंडल, इंद्र।

अखंडित–वि० (सं०) अखंड, अटूट, अबाधित; जिसका खंडन न हुआ हो।

अखगरिया–पु० एक तरहका ऐबदार घोड़ा।

अखज*–वि० अखाद्य।

अखट्ट–पु० (सं०) प्रियाल वृक्ष।

अखट्टि–स्त्री० (सं०) बाल कल्पना; असद्व्यवहार।

अखड़ा†–पु० तालके बीचका गड्ढा।

अखड़ैत–पु० पहलवान, मल्ल ।

अखती†–स्त्री० दे० 'अखतीज' ।

अखतीज*–स्त्री० अक्षय तृतीया ।

अखनी–स्त्री० यखनी, शोरबा ।

अख़बार–पु० (अ०) समाचार ('ख़बर' का बहु०); समाचार-पत्र । **–नवीस**–पु० अखबार लिखनेवाला, पत्रकार । **–नवीसी**–स्त्री० पत्रकारी ।

अख़बारी–वि० समाचारपत्र-संबंधी ।

अखय*–वि० दे० 'अक्षय' ।

अखर*–पु० दे० 'अक्षर' ।

अखरना–अ० क्रि० खलना, बुरा लगना; कठिन या कष्टप्रद जान पड़ना ।

अखरा–पु० बिना कुटे जौका आटा; *अक्षर । *वि० जो खरा न हो ।

अखरावट–स्त्री० वर्णमाला; अक्षरक्रमके अनुसार आरंभ होनेवाला पद्यसमूह; जायसी-कृत एक लघुग्रंथ ।

अखरावटी–स्त्री० दे० 'अखरावट' ।

अख़रोट–पु० एक प्रसिद्ध मेवा और उसका पेड़ । **–जंगली** –पु० जायफल ।

अखर्व–वि० (सं०) जो छोटा या ठिगना न हो; बड़ा; लंबा ।

अखर्वा–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

अख़लाक़–पु० (अ०) शिष्टता, सौजन्य; सदाचार ।

अखाड़ा–पु० कुश्ती लड़ने या कसरत करनेका स्थान, व्यायाम-शाला; सांप्रदायिक साधुओंकी मंडली; साधुओंके रहनेका स्थान, मठ; करतब दिखाने या गाने-बजानेवालोंकी जमात; सभा, दरबार; अड्डा; जमघट; आँगन; (इंदरका अखाड़ा) नृत्यशाला, रंगशाला । मु०**–गरम होना**– ज्यादा भीड़ होना । **–जमना** –खेलाड़ियोंका अखाड़ेमें जमा होना और दर्शकोंकी भीड़ लगना; किसी जगह बहुतसे आदमियोंका जमा होना ।**–(ड़े)का जवान**–कसरती बदनका आदमी ।**–में आना**–मुकाबलेमें खड़ा होना ।**–में उतरना**–मुकाबला करनेके लिए अखाड़ेमें आना ।

अखाड़िया–वि० दंगली (पहलवान); बड़े बड़ोंको पछाड़ देने की क्षमता रखनेवाला ।

अखात–पु० (सं०) प्राकृतिक झील, ताल; खाड़ी ।

अखाद्य–वि० (सं०) न खाने योग्य, अभक्ष्य ।

अखानी–स्त्री० दँवरीके समय डंठल एकत्र करनेका एक औजार ।

अखार–पु० नरिया आदि बनानेके लिए चाकपर रखा जानेवाला मिट्टीका लोंदा ।

अखारा*–पु० दे० 'अखाड़ा' ।

अखिन्न–वि० खेदरहित; क्लेशरहित; अक्लांत; प्रसन्न ।

अखिल–वि० (सं०) संपूर्ण, सारा; कृषिके योग्य, कृष्ट (भूमि) ।

अखिला–वि० अविकसित; अप्रसन्न ।

अखिलात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विश्वात्मा ।

अखिलेश–पु० (सं०) सबका स्वामी, परमेश्वर ।

अखीन*–वि० अक्षीण, न छीजनेवाला, अविनाशी ।

अख़ीर–पु० (अ०) अंत, समाप्ति ।

अखीरी–वि० अखीरका, अंतिम ।

अखुटित*–लगातार, बराबर ।

अखूट–वि० अखंड, जो घटे नहीं, अक्षय; अत्यधिक ।

अखेट*–पु० दे० 'आखेट' ।

अखेटक–पु० दे० 'आखेटक' ।

अखेटिक -पु० (सं०) वृक्ष; वह कुत्ता जिसे शिकारका पीछा करना सिखलाया गया हो ।

अखेद–पु० (सं०) दुःख या खेदका अभाव; प्रसन्नता । वि० प्रसन्न; दुःखरहित । अ० प्रसन्नतापूर्वक ।

अखेदी(दिन्)–वि० (सं०) अक्लांत, जो थका न हो । (स्त्री० 'अखेदिनी' ।)

अखेलत*–वि० जो खेलता न हो; अचंचल, स्थिर; आलस्ययुक्त ।

अखै*–वि० दे० 'अक्षय' । **–बट,–बर,–वट,–वर**–पु० अक्षयवट ।

अखैनी–स्त्री० सुखाने आदिके लिए डंठल उलटनेकी लग्गी ।

अखोर–वि० निकम्मा, तुच्छ; * अच्छा, भद्र, सुंदर; निर्दोष । पु० निकम्मी चीज, कूड़ा-करकट; खराब घास ।

अखोला–पु० अंकोल वृक्ष ।

अखोह–पु० ऊबड़-खाबड़ जमीन ।

अखौट, अखौटा–पु० जाँते या चक्कीकी किल्ली; गड़ारीका डंडा ।

अख़्ख़ाह–अ० (अ०) आश्चर्यसूचक उद्‌गार (किसीके अनपेक्षित आगमन, मिलन या कार्यपर बोलते हैं); बहुत खूब ।

अख़्ज़–पु० (अ०) ग्रहण करने, पकड़नेका भाव । मु०**–करना**–ग्रहण करना, अर्थ या नतीजा निकालना, बातसे बात निकालना ।

अख़्तर–पु० (अ०) तारा; झंडा ।**–शुमार**–पु० ज्योतिषी । **–शुमारी**–स्त्री० जन्मपत्री बनाना; बेकरारीसे रात काटना । मु०**–चमकना**–नसीब जागना, भाग्यका उदय होना ।

अख़्तियार–पु० दे० 'इख़्तियार' ।

अख्यात–वि० (सं०) अप्रसिद्ध; अप्रतिष्ठित; अविदित ।

अख्यान*–पु० दे० 'आख्यान' ।

अख्यायिका*–स्त्री० दे० 'आख्यायिका' ।

अगंड–पु० बिना हाथ-पैरका धड़ ।

अगंता(तृ)–वि० (सं०) न चलने, न जानेवाला । (स्त्री० 'अगंत्री' ।)

अग–वि० (सं०) चलनेमें असमर्थ, स्थावर; टेढ़ा चलनेवाला; अगम्य; *अज्ञ, अज्ञान । पु० पहाड़; पेड़; साँप; सूर्य; घड़ा; सातकी संख्या ।**–ज**–वि० पहाड़ या वृक्षसे पैदा होनेवाला; पहाड़ पहाड़ घूमनेवाला जंगली । पु० शिलाजतु; हाथी । **–जग**–पु० (हिं०) चराचर । **–जा**–स्त्री० पार्वती ।

अगच्छ–वि० (सं०) जो न चले । पु० वृक्ष ।

अगट–पु० मांसकी दुकान ।

अगटना–अ० क्रि० एकत्र होना ।

अगड़*–पु० अकड़, ऐंठ ।

अगड़धत्त, अगड़धत्ता–वि० लंबा-तगड़ा; ऊँचा; बढ़ा-चढ़ा ।

अगड़बगड़–वि० ऊलजलूल, बेसिर-पैरका । पु० अंडबंड बात या काम ।

अगड़म-बगड़म–पु० तरह-तरहकी चीजों या काठ-कबाड़का बेतरतीब ढेर ।

अगड़ी–स्त्री० ब्योंड़ा, अर्गल ।

अगण–पु० (सं०) पिंगलके चार गण–जगण, तगण, रगण, सगण–जो छंदके आदिमें अशुभ माने जाते हैं ।

अगणन–वि० (सं०) अगणनीय, असंख्य ।

अगणनीय–वि० (सं०) दे० 'अगण्य' ।

अगणित–वि० (सं०) अनगिनत, बेहिसाब । **–प्रतियात**–वि० ध्यान न दिये जानेके कारण लौटा हुआ । **–लज्ज**–वि० लज्जाका खयाल न करनेवाला ।

अगण्य–वि० (सं०) असंख्य; तुच्छ, उपेक्षणीय ।

अगत–वि० (सं०) न गया हुआ । † 'आगे चलो' '(विधि) वि० (हाथीको आगे बढ़ानेके लिए महावतों द्वारा प्रयुक्त किया जानेवाला शब्द) । *स्त्री० दे० 'अगति' ।

अगति–स्त्री० (सं०) गतिका अभाव; पहुँचका न होना; उपायका अभाव; दुर्दशा; उन्नतिका अभाव, प्रगतिका रुक जाना; अ-सद्‌गति; गति अर्थात् मोक्षकी अप्राप्ति; स्थिर पदार्थ । वि० गतिहीन; निरुपाय ।

अगतिक–वि० (सं०) निरुपाय; निराश्रय । **–गति**–स्त्री० आश्रयहीनका आश्रय, अंतिम आश्रय (ईश्वर) ।

अगती–वि० सद्‌गतिका अनधिकारी; कुकर्मी, पापी । पु० पापी मनुष्य । स्त्री० एक पौधा जो चर्मरोगकी दवाके काममें आता है, चकवँड़ । वि० पेशगी । अ० पहलेसे ।

अगतीक–वि० (सं०) जिसपर चलना उचित न हो (कुमार्ग); दे० 'अगतिक' ।

अगत्या–अ० (सं०) आगे चलकर, अंतमें; सहसा; अन्य गति न रहनेसे, लाचार होकर ।

अगदंकार–पु० (सं०) वैद्य ।

अगद–वि० (सं०) नीरोग, स्वस्थ; न बोलनेवाला; *बाधारहित ।

पु० औषध; स्वास्थ्य; आरोग्य। **–तंत्र**–पु० आयुर्वेदके ८ अंगोंमेंसे एक जिसमें सर्पादिके दंशकी चिकित्सा बतायी गयी है। **–वेद**–पु० चिकित्सा-शास्त्र, आयुर्वेद।

अगदित–वि० (सं०) अकथित, जो कहा न गया हो।

अगन†–स्त्री० अग्नि। पु० दुष्टगण (पिंगल)। वि० अगण्य, बेशुमार।

अगनत, अगनित*–वि० दे० 'अगणित'।

अगनिउ*–पु० अग्निकोण, दक्षिण-पूर्वका कोना।

अगनी–स्त्री० घोड़ेके सिरपरकी भौंरी; अग्नि। *वि० अगणित।

अगनू*–स्त्री० आग्नेय कोण।

अगनेउ, अगनेत*–पु० अग्निकोण।

अगम–वि० (सं०) न चलनेवाला, अगंता; सुदृढ़–'लंका वसत दैत्य अरु दानव, उनके अगम सरीरा।' –सू०। पु० वृक्ष; पहाड़।* वि० दे० 'अगम्य'। *पु० दे० 'आगम'।

अगमन–पु० (सं०) गमनका अभाव, न जाना।* अ० आगेसे; पहले।

अगमनीया–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'अगम्या'।

अगमानी*–पु० अगुआ, नायक। स्त्री० अगवानी।

अगमासी–स्त्री० दे० 'अगवाँसी'।

अगम्य–वि० (सं०) दुर्गम; पहुँचके बाहर, अप्राप्य; अयुक्त; मन, बुद्धिके परे; कठिन; अपार; अथाह; जिससे सहवास न किया जा सके। **–गा**–स्त्री० अपात्र पुरुषसे संबंध रखनेवाली स्त्री। **–रूप**–वि० जिसका रूप या स्वभाव समझमें न आये।

अगम्या–वि० स्त्री० (सं०) न गमन करने योग्य (स्त्री)। स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ संभोग निषिद्ध हो; अंत्यजा। **–गमन**–पु० अगम्या स्त्रीसे सहवास करना (एक महापातक)। **–गमनीय**–वि० अवैध संबंध-विषयक। **–गामी (मिन्)**–वि० अगम्यागमन करनेवाला।

अगर–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीमें सुगंध होती है और धूप, दशांगमें पड़ती है; ऊद। **–बत्ती**–स्त्री० अगरकी बत्ती। **–सार**–पु० अगरु नामक वृक्ष।

अगर*–पु० आगार, घर–'जें सँसार-अँधियार अगरमें भये मगनवर' –काव्यांगकौ०।

अगर–अ० (फा०) यदि, जो। **–चे**–अ० यद्यपि। मु०**–मगर करना**–तर्क करना; आगा-पीछा करना; टाल-मटोल करना।

अगरई–वि० कालापन लिये हुए सुनहले रंगका।

अगरना*–अ० क्रि० आगे जाना या बढ़ना।

अगरपार–पु० क्षत्रियोंका एक भेद।

अग़र-वगर*–अ० दे० 'अगल-बगल'।

अगरवाला–पु० वैश्योंकी एक जाति, 'अग्रवाल'।

अगराई*–स्त्री० अग्रता, श्रेष्ठता–'गिरा अगराई गुनगरिमा-गगन कों'–घन०।

अगराना*–स० क्रि० मन बढ़ाना; लाड़-प्यारके कारण धृष्ट बनाना। अ० क्रि० प्यार आदिके कारण धृष्टतापूर्वक व्यवहार करना।

अगरी–स्त्री० दे० 'अगड़ी'; फूसकी छाजनका एक ढंग;* बुरी बात; धृष्टता; (सं०) एक विषनाशन द्रव्य; देवताड वृक्ष।

अगरु–पु० (सं०) अगरका पेड़ या लकड़ी।

अगरे†–अ० सामने, आगे।

अगरो*–वि० अगला; श्रेष्ठ; अधिक; निपुण।

अगर्व–वि० (सं०) गर्व या अभिमानसे रहित।

अगर्हित–वि० (सं०) जो बुरा न हो, अनिंद्य।

अगल-बगल–अ० इधर-उधर; आस-पास।

अगला–वि० आगे या सामनेका; बीते समयका, पुराना; आनेवाला; बादका। पु० अगुआ; चतुर, चालाक आदमी; पूर्वज; कर्णफूलमें आगे लगी हुई जंजीर; गाँव और उसकी सीमाके बीच पड़नेवाले खेत।

अगवना*–स० क्रि० सहना, अँगेजना। अ० क्रि० आगे बढ़ना, अग्रसर होना।

अगवाँसी–स्त्री० हलकी वह लकड़ी जिसमें फाल लगता है।

अगवाई–स्त्री० अगवानी। पु० अगुआ।

अगवाड़ा–पु० घरके आगेका भाग या भूमि, 'पिछवाड़ा'का उलटा।

अगवान–पु० अगवानी करनेवाला; अगवानी।

अगवानी–स्त्री० आगे बढ़कर लेना या स्वागत करना; बरातके स्वागतार्थ कन्यापक्षका आगे जाना।* पु० अगुआ।

अगवार†–पु० वह अन्न जो गाँवके पुरोहित, फकीर आदिको देनेके लिए खलियानमें राशिसे अलग कर दिया जाता है; ओसाते समय भूसेके साथ उड़नेवाला हलका अन्न; गाँवका चमार; दे० 'अगवाड़ा'।

अगसर–अ० आगे,–'अगसर खेती, अगसर भार, घाघ कहैं ये कबहुँ न हार'–अमर०।

अगसार, अगसारी*–अ० आगे।

अगस्त–पु० ईसवी सालका आठवाँ महीना; एक वृक्ष; दे० 'अगस्त्य'।

अगस्ति–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि (पुराणोंमें इनके समुद्रको चुल्लूमें धरकर पी जानेकी बात लिखी है); एक तारा; एक पेड़।

अगस्त्य–पु० (सं०) दे० 'अगस्ति'; शिव। **–कूट**–पु० दक्षिणका एक पर्वत जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है। **–गीता**–स्त्री० महाभारत-शांतिपर्वमें कथित एक गीता। **–चार,–मार्ग**–पु० अगस्त्य नामक तारेका मार्ग। **–तीर्थ**–पु० दक्षिणका एक प्रसिद्ध तीर्थ। **–वट**–पु० एक पवित्र स्थान जो हिमालयपर है। **–संहिता**–स्त्री० अगस्त्य मुनि-रचित एक धर्मग्रंथ।

अगस्त्योदय–पु० (सं०) अगस्त्यका उदय (इसका समय भाद्रपदका शुक्ल पक्ष है)।

अगह*–वि० अग्राह्य, पकड़में न आने लायक; चंचल; ग्रहणके अयोग्य; दुस्साध्य; वर्णन या चिंतनके बाहर।

अगहन–पु० अग्रहायण या मार्गशीर्ष मास।

अगहनिया–वि० अगहनमें होनेवाला (धान)।

अगहनी–वि० अगहनमें तैयार होनेवाला। स्त्री० अगहनमें तैयार होनेवाली फसल।

अगहर*–अ० आगे, पहले।

अगहाट–पु० वह भूमि जो बहुत दिनोंसे किसीके अधिकारमें चली आती हो और जिसे वह छोड़नेको तैयार न हो।

अगहार–पु० दे० 'अग्रहार'।

अगहुँड़*–अ० आगे; आगेकी ओर। वि० आगे चलनेवाला।

अगाउनी*–अ० अगौनी, आगे।

अगाऊँ, अगाऊ–वि० पेशगी; आगेका। अ० आगेसे, पहलेसे।

अगाड़–पु० हुक्केकी निगाली; ढेंकलीके छोरपर लगी पतली लकड़ी।

अगाड़ा–पु० पहले भेजा जानेवाला यात्राका सामान।

अगाड़ी–अ० आगे; पहले; सामने; भविष्यमें। स्त्री० किसी वस्तुका आगेका हिस्सा; घोड़ेकी गरदनमें बँधी रस्सियाँ; अँगरखे या कुरतेका सामनेका भाग; सेनाका पहला धावा।

अगाड़ू–अ० आगे, पहले।

अगाता(तृ)–पु० (सं०) अच्छा न गानेवाला व्यक्ति।

अगात्मजा–स्त्री० (सं०) पार्वती।

अगाद*–वि० अगाध।

अगाध–वि० (सं०) अथाह; अपार; अधिक; दुर्बोध; अज्ञेय। पु० स्वाहाकारकी पाँच अग्नियोंमेंसे एक; गहरा छेद, गड्ढा। **–जल**–पु० गहरा जलाशय (झील आदि)। **–रुधिर**–पु० बहुत अधिक रक्त।

अगान*–वि० अज्ञानी, नासमझ। पु० नासमझी।

अगामै*–अ० आगे।

अगार–अ० आगे। पु० (सं०) दे० 'आगार'।

अगारी–अ० स्त्री० दे० 'अगाड़ी'।

अगारी(रिन्)–वि० (सं०) मकानवाला।

अगाव–पु० ईखके ऊपरका नीरस भाग।

अगास*–पु० दे० 'आकाश'; द्वारके सामनेका चबूतरा।

अगाह*–वि० अथाह; अत्यधिक; उदास, चिंतित; दे० 'आगाह'। अ० आगेसे, पहलेसे।

अगि*–स्त्री० 'अग्नि' का (समासमें प्रयुक्त) विकृत रूप। **–दधा***

–वि० अग्निदग्ध, आगसे जला हुआ। **–दाह**–पु० दे० 'अग्निदाह'। **–हाना**†–पु० अग्नि जलाने या रखनेका स्थान।

अगिन–स्त्री० आग; एक छोटी चिड़िया; एक घास; ऊखका ऊपरका हिस्सा। वि० बहुत अधिक, अगणित। **–झाल**–स्त्री० जलपिप्पली। **–बाव**–पु० चौपायों, विशेषकर घोड़ोंको होनेवाला एक रोग। **–बोट**–पु० स्टीमर, धुआँकश। **–गोला**–पु० एक तरहका बम जिसके फटनेपर आग लग जाय।

अगिनत, अगिनित–वि० दे० 'अगणित'।

अगिया–स्त्री० अगिन घास। पु० एक पौधा; घोड़ों-बैलोंका एक रोग; एक रोग जिसमें पैरमें छाले पड़ जाते हैं; विक्रमादित्यका एक बैताल। **–कोइलिया**–पु० बैताल-पचीसीमें वर्णित दो बैताल जिन्हें विक्रमादित्यने सिद्ध किया था। **–बैताल**–पु० विक्रमादित्यको सिद्ध दो बैतालोंमेंसे एक; मुँहसे आग उगलनेवाला प्रेत; घूमती हुई-सी ज्योति (दलदल आदिसे निकलनेवाली गैस जो आगके समान जलती दिखाई देती है)।

अगियाना†–अ० क्रि० गरम होना; उत्तेजित होना। स० क्रि० बरतनको आगमें डालकर शुद्ध करना।

अगियार–पु० पूजाके लिए जलायी जानेवाली आग। †वि० जिसकी आग अधिक समयतक रहे या अधिक तेज हो (लकड़ी, कोयला इ०)।

अगियारी†–स्त्री० धूपकी तरह अग्निमें डालनेकी वस्तु। पु० पारसियोंका मंदिर।

अगिर–पु० (सं०) स्वर्ग; सूर्य; अग्नि; एक राक्षस।

अगिरी–स्त्री० घरका अगवाड़ा।

अगिरौका (कस्)–वि० (सं०) स्वर्गमें रहनेवाला (देवता); धमकीसे न रुकनेवाला।

अगिला†–वि० दे० 'अगला'।

अगिलाई*–स्त्री० अग्निदाह–'जोन्ह नहीं सु नई अगिलाई'–घन०; झगड़ा लगाना।

अगिहाना†–पु० दे० 'अगि' में।

अगीठा–पु० सामनेका हिस्सा, अगवाड़ा; पान-जैसे किन्तु उससे बड़े पत्तोंवाला एक पौधा।

अगीत-पछीत*–पु० अगवाड़ा-पिछवाड़ा। अ० आगे-पीछे।

अगु–पु० (सं०) राहु; अंधकार।

अगुआ–पु० आगे चलनेवाला; मुखिया; पथप्रदर्शक; विवाह तय करानेवाला, बिचुआ, घटक; आगेका हिस्सा।

अगुआई–स्त्री० नेतृत्व; मार्गप्रदर्शन; अगवानी।

अगुआना–स० क्रि० अगुआ बनना। अ० क्रि० आगे जाना।

अगुआनी–स्त्री० आगे जाकर स्वागत करना।

अगुण–वि० (सं०) निर्गुण, गुणरहित; अनाड़ी। पु० अवगुण, दोष। **–ज्ञ**–वि० जिसे गुणकी परख न हो, गँवार। **–वादी (दिन्)**–वि० दोष निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी। **–शील**–वि० अयोग्य, निकम्मा।

अगुणी (णिन्)–वि० (सं०) गुणहीन।

अगुरु–पु० (सं०) अगर; शीशमका पेड़। वि० हलका; लघु (वर्ण); निगुरा; गुरुसे भिन्न, जो गुरु न हो।

अगुवा–पु० दे० 'अगुआ'।

अगुवानी–स्त्री० दे० 'अगवानी'।

अगुसरना*–अ० क्रि० आगे बढ़ना।

अगुसारना*–स० क्रि० आगे बढ़ाना।

अगूठना*–स० क्रि० अगोटना, घेर लेना।

अगूठा†–पु० घेरा।

अगूढ़–वि० (सं०) प्रकट; स्पष्ट; सहज। **–गंध**–पु०, **–गंधा**–स्त्री० हींग। **–भाव**–वि० जिसका भाव, अर्थ गूढ़, छिपा हुआ न हो; सरलचित्त।

अगूता*–अ० आगे; सामने।

अगृह–वि० (सं०) गृहहीन, बेघर-बारका। पु० वानप्रस्थ।

अगेंद्र–पु० (सं०) हिमालय।

अगेथू–पु० दे० 'अँगेथू'।

अगेह–वि० (सं०) दे० 'अगृह'।

अगोई*–वि०, स्त्री० जो गुप्त न हो, प्रकट। †नोक या सिरा 'हरिणीकी खुरियाँ…जिनकी नुकीली अगोइयोंने जानवरकी खाल उधेड़ दी।' –नवनीत, दिस० ६२।

अगोचर–वि० (सं०) जिसका ज्ञान इंद्रियोंसे न हो सके, इन्द्रियातीत; अप्रकट। पु० वह जो इंद्रियातीत हो; वह जो देखा या जाना न जा सके; ब्रह्म।

अगोट*–पु० आड़, रोक; आश्रय, सहारा; सुरक्षित स्थान। वि० अकेला, गुटरहित; सुरक्षित।

अगोटना*–स० क्रि० छेंकना, घेरना; छिपा या रोक रखना, कैद करना; स्वीकार करना; चुनना। अ० क्रि० रुकना; फँसना, उलझना।

अगोता*–अ० सम्मुख, आगे। पु० अगवानी।

अगोरदार–पु० रखवाली करनेवाला।

अगोरना†–स० क्रि० बाट जोहना; * रखवाली करना; रोकना।

अगोरा†–पु० अगोरनेकी क्रिया, रखवाली; दे० 'अगोरिया'।

अगोरिया†–पु० खेत आदिकी रखवाली करनेवाला।

अगोही†–पु० आगेकी ओर निकले हुए सींगोंवाला बैल।

अगोह्य–वि० (सं०) जो छिपाये या ढँके जाने योग्य न हो, प्रकाश्य।

अगौंडी†–स्त्री० दे० 'अगाव'।

अगौका (कस्)–पु० (सं०) पर्वतवासी; सिंह; पक्षी; शरभ।

अगौढ़†–पु० पेशगी दी जानेवाली रकम।

अगौता*–अ० आगे। पु० अगवानी; पेशगी।

अगौनी*–स्त्री० दे० 'अगवानी'; बरात आनेपर द्वारपूजाके समय छोड़ी जानेवाली आतिशबाजी। अ० आगे।

अगौरा–पु० दे० 'अगाव'।

अगौरी, अगौली†–स्त्री० एक तरहकी ईख।

अगौहैं*–अ० आगे; आगेकी ओर।

अग्ग*–वि०, अ० दे० 'अग्र'।

अग्गई–स्त्री० हाथ-हाथभर लंबी पत्तियोंवाला एक वृक्ष जो अवधमें अधिकतासे पाया जाता है।

अग्गे*–अ० आगे।

अग्नायी–स्त्री० (सं०) अग्निदेवकी स्त्री, स्वाहा; त्रेतायुग।

अग्नि–स्त्री० (सं०) आग; पंचमहाभूतोंमेंसे तेज तत्त्व; प्रकाश; उष्णता, गरमी; जठराग्नि; पित्त; अग्निकर्म, जलानेकी क्रिया; सोना; ३ की संख्या (वैद्यकके मतानुसार अग्निके तीन भेद हैं–१. भौमाग्नि = काष्ठादिसे उत्पन्न, २. दिव्याग्नि = बिजली, उल्का आदि, ३. जठराग्नि = उदरमें उत्पन्न; कर्मकांडके अनुसार तीन भेद ये हैं–१. गार्हपत्य, २. आहवनीय, ३, दक्षिणाग्नि। शरीरस्थ दस अग्नियाँ ये हैं–१. भ्राजक, २. रंजक, ३. क्लेदक, ४. स्नेहक, ५. धारक, ६. बंधक, ७. द्रावक, ८. व्यापक, ९. मापक, १०. श्लेष्मक); चित्रक; नीबू; भिलावाँ; 'र्'का प्रतीक। **–कण**–पु० चिनगारी। **–कर्म (न्)**–पु० अग्निहोत्र; शवदाह; गरम लोहेसे दागना। **–कला**–स्त्री० अग्निके दशविध अवयवों–वर्णों या मूर्तियोंमेंसे कोई। **–कांड**–पु० आग लगानेकी घटना, आगजनी। **–कारिका**–स्त्री० ऋग्वेदका 'अग्निदूतं पुरोदधे'..., मंत्र जिससे अग्न्याधान किया जाता है। **–कार्य**–पु० अग्निमें आहुति आदि देना; लोहेसे दागना; गरम तेल आदिसे अर्बुद, मसे आदिको जलाना, दे० 'प्रतिसारण'। **–काष्ठ**–पु० अरणीकी लकड़ी। **–कीट**–पु० समंदर नामक कीड़ा। **–कुंड**–पु० वेदी, हवनकुंड। **–कुक्कुट**–पु० लूका। **–कुमार**–पु० शिवके पुत्र कार्त्तिकेय; एक अग्निवर्धक रस। **–कुल**–पु० क्षत्रियोंका एक वंश जिसकी उत्पत्ति अग्निकुंडसे मानी जाती है–प्रमार, परिहार, चालुक्य या सोलंकी और चौहान। **–केतु**–पु० धुँआँ; शिव; रावणके दलके दो राक्षस जो रामके हाथों मारे गये थे। **–कोण**–पु०, **–दिक् (श्)**–स्त्री० पूरब और दक्खिनका कोना। **–क्रिया**–स्त्री० शवका दाह; दागना। **–क्रीडा**–स्त्री० आतिशबाजी। **–गर्भ**–वि० जिसके भीतर आग हो या जिससे आग पैदा हो। पु० अरणि; सूर्यकांत मणि; आतिशी शीशा। **–०पर्वत**–पु० ज्वालामुखी पहाड़। **–गर्भा**–स्त्री० शमी वृक्ष; महाज्योतिष्मती लता; पृथिवी। **–गृह**–पु० होमाग्नि रखनेका घर या स्थान।

–चक्र–पु० शरीरके भीतरके छः चक्रोंमेंसे एक (यो०)। **–चय,–चयन**–पु० अग्न्याधान; वह मंत्र जिससे अग्न्याधान किया जाता है। **–चित्**–वि० अग्निहोत्री। **–ज,–जन्मा(न्मन्),–जात**–पु० अग्निजार वृक्ष; सुवर्ण; कार्त्तिकेय; विष्णु। वि० अग्निसे उत्पन्न; अग्नि उत्पन्न करनेवाला; पाचक। **–जार,–जाल**–पु० सिंधुफला, गजपिप्पलीका पेड़। **–जिह्व**–पु० देवता; वाराहरूपधारी विष्णु। वि० अग्नि ही जिसकी जीभ है। **–जिह्वा**–स्त्री० आगकी लपट; अग्निकी जीभें जो ७ बतायी जाती हैं (काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता); लांगलीवृक्ष। **–जीवी(विन्)**–पु० अग्निके आधारपर काम करनेवाले–जैसे सुनार, लुहार आदि। **–ज्वाल**–पु० शिव। **–ज्वाला**–स्त्री० आगकी लपट; जलपिप्पली; धातकी। **–तुंडावटी**–स्त्री० अजीर्ण दूर करनेकी एक गोली (आ० वै०)। **–तेजा(जस्)**–वि० अग्नि-सदृश तेजोधारी। **–त्रय**–पु०,**–त्रेता**–स्त्री० यथाविधि स्थापित तीन प्रकारकी अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय और रक्षित)। **–दंड**–पु० आगमें जलानेका दंड। **–द**–पु० आग लगानेवाला; दाहक। **–दग्ध**–वि० चितापर विधिपूर्वक जलाया हुआ। पु० एक पितृवर्ग। **–दमनी**–स्त्री० एक क्षुप। **–दाता(तृ)**–पु० अंतिम कृत्य (दाह) करनेवाला। **–दान**–पु० चितामें आग लगाना। **–दाह**–पु० जलाना; शवदाह। **–दिव्य**–पु० अग्निपरीक्षा। **–दीपक**–वि० पाचनशक्ति बढ़ानेवाला। **–दीपन**–पु० जठराग्निका दीपन, पाचनशक्तिकी वृद्धि; पाचनशक्ति बढ़ानेवाली दवा। **–दीप्ता**–स्त्री० महाज्योतिष्मती लता। **–दूत**–पु० यज्ञ; यज्ञमें आवाहित देवता। **–देव**–पु० अग्निकी पूजा करनेवाला। **–देवा**–स्त्री० कृत्तिका नक्षत्र। **–धान**–पु० पवित्र अग्नि रखनेकी जगह। **–नक्षत्र**–पु० कृत्तिका नक्षत्र। **–निर्यास**–पु० अग्निजार वृक्ष। **–नेत्र**–पु० देवतामात्र। **–पक्व**–वि० आगपर पकाया हुआ। **–परिक्रिया**–स्त्री० अग्निचर्या, होमादि करना। **–परिग्रह**–पु० शास्त्रोक्त अग्निको अखंड रखनेका व्रत। **–परिधान**–पु० यज्ञाग्निको परदेसे घेरना। **–परीक्षा**–स्त्री० अग्नि द्वारा परीक्षा, जलती आग, खौलते तेल आदिके जरिये, किसीके दोषी-निर्दोष होनेकी जाँच; सोना-चाँदी आदिको आगमें तपाकर परखना; कठिन परीक्षा। **–पर्वत**–पु० ज्वालामुखी पहाड़। **–पुराण**–पु० व्यासरचित अट्ठारह महापुराणोंमेंसे एक जिसे पहले पहल अग्निने वसिष्ठको सुनाया था। **–पूजक**–पु० आगकी पूजा करनेवाला; पारसी। **–प्रणयन**–पु० अग्निहोत्रकी अग्निका मंत्रपूर्वक संस्कार करना। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० धार्मिक कृत्यों, विशेषकर विवाहके अवसरपर किया जानेवाला अग्निका आवाहन और पूजन। **–प्रवेश**–पु० आगमें प्रवेश; स्त्रीका पतिकी चितामें प्रवेश। **–प्रस्तर**–पु० चकमक पत्थर। **–बाण**–पु० वह बाण जिससे आगकी लपट निकले। **–बाहु**–पु० धुआँ; स्वायंभुव मनुका एक पुत्र। **–बीज**–पु० सोना; 'र' अक्षर। **–भ**–पु० सोना; कृत्तिका नक्षत्र। वि० अग्नि जैसा चमकनेवाला। **–भू**–पु० कार्त्तिकेय। **–भूति**–पु० अंतिम तीर्थंकरके ग्यारह शिष्योंमेंसे एक। **–मंथ,–मंथन**–पु० अरणीसे रगड़कर आग उत्पन्न करना; इस कार्यमें प्रयुक्त मंत्र; गनयारीका पेड़। **–मथ**–पु० अरणीकी दो टहनियोंसे रगड़कर आग निकालनेवाला याज्ञिक: अग्निमंथनका मंत्र; अरणीकी लकड़ी। **–मणि**–पु० सूर्यकांत मणि; आतिशी शीशा। **–मांद्य**–पु० जठराग्निका मंद हो जाना, मंदाग्नि, हाजमेकी खराबी। **–मारुति**–पु० अगस्त्य ऋषि। **–मित्र**–पु० शुंगवंशका एक राजा, पुष्यमित्रका बेटा। **–मुख**–पु० ब्राह्मण; देवता; प्रेत; अग्नहोत्री; चीतेका पेड़; भिलावाँ; एक अग्निवर्द्धक चूर्ण। **–मुखी**–स्त्री० गायत्री मंत्र; भिलावाँ; पाकशाला। **–युग**–पु० ज्योतिषमें माने गये पाँच युगोंमेंसे एक। **–योजन**–पु० अग्नि प्रज्वलित करनेकी क्रिया। **–रजा (जस्)**–पु० बीरबहूटी; सोना। **–रहस्य**–पु० अग्निकी उपासनाका रहस्य; शतपथ ब्राह्मणका दसवाँ कांड। **–रुहा**–स्त्री० मांसरोहिणी नामक पौधा। **–रेता (तस्)**–पु० सोना। **–रोहिणी**–स्त्री० एक तरहका फोड़ा जिसमें ज्वर होता है; कँखौरी। **–लिंग**–पु० आगकी लपट देखकर शुभाशुभ बतानेकी विद्या। **–लोक**–पु० एक लोक जिसके अधिकारी अग्निदेव माने गये हैं। **–वंश**–पु० अग्निकुल। **–वधू**–स्त्री० स्वाहा। **–वर्च (स्)**–पु० अग्निका तेज। **–वर्ण**–वि० अग्निकेसे रंगवाला। पु० एक सूर्यवंशी राजा। **–वर्णा**–स्त्री० तेज शराब। **–वर्द्धक,–वर्द्धन**–वि० पाचनशक्ति बढ़ानेवाला। **–वर्षा**–स्त्री० आगकी या तोपके गोलों, बमों आदिकी वर्षा। **–वल्लभ**–पु० शालवृक्ष; राल। **वारक**–वि० (फायर प्रूफ) अग्निका प्रभाव रोकनेवाला; वह जो आगके संपर्कमें आनेपर भी न जले, सफलतापूर्वक उसके प्रभावका वारण कर सके; दे० 'अग्निसह'। **–वासा(सस्)**–वि० अग्नितुल्य शुद्ध वस्त्रवाला; जो लाल कपड़े पहने हो। **–वाह**–पु० धुआँ; बकरा। वि० अग्निवाहक। **–वाहन**–पु० बकरा। **–विंदु**–पु० चिनगारी। **–विद्**–वि० अग्निहोत्र जाननेवाला। पु० अग्निहोत्री। **–विद्या**–स्त्री० अग्निहोत्र। **–विसर्प**–पु० अर्बुद-रोगजन्य जलन। **–वीर्य**–वि० अग्नि जैसे तेजवाला। पु० अग्निका तेज; सोना। **–वेश**–पु० आयुर्वेदके आचार्य एक प्राचीन ऋषि। **–शर्मा(र्मन्)**–वि० बहुत क्रोधी। पु० एक ऋषि। **–शामक दल**–पु० (फायर ब्रिगेड) किसी मकान आदिमें लगी हुई आग बुझानेका काम करनेके लिए संघटित प्रशिक्षित व्यक्तियोंका दल, 'दमकल'। **–शाला**–स्त्री० अग्न्याधानका स्थान। **–शिख**–पु० कुसुमका पेड़; केसर; सोना; दीपक; बाण। वि० अग्निकी-सी शिखा या ज्वालावाला। **–शिखा**–स्त्री० आगकी ज्वाला या लपट; कलियारी पौधा। **–शुद्धि**–स्त्री० आगमें तपाकर शुद्ध करना; अग्निपरीक्षा। **–शेखर**–पु० केसर; कुसुम; सोना। **–ष्टोम**–पु० यज्ञविशेष। **–ष्ठ**–वि० आगपर रखा हुआ। पु० लोहेकी कड़ाही। **–ष्वात्त**–पु० पितरोंका एक गण या वर्ग। **–संभव**–वि० आगसे उत्पन्न। पु० अरण्यकुसुम; सोना; भोजनका रस। **–संस्कार**–पु० आग जलाना; तप्त करना; अग्नि द्वारा शुद्धि करना; मृतक-दाह; श्राद्धमें एक विधि। **–संहिता**–स्त्री० अग्निवेश-रचित चिकित्साग्रंथ। **–सखा,–सहाय**–पु० वायु; धुआँ; जंगली कबूतर। **–सह**–वि० जिसपर अग्निका असर न हो, 'फायरप्रूफ', अदाह्य। **–साक्षिक**–वि० अग्नि जिसका साक्षी हो; अग्निको साक्षी करके किया हुआ (कर्म)। **–सात्**–वि० आगमें जलाया हुआ, भस्मसात्। **–सार**–पु० रसांजन। **–सेवन**–पु० आग तापना। **–स्तंभ,–स्तंभन**–पु० अग्निकी दाहक शक्ति रोकनेकी क्रिया; इस कार्यके लिए प्रयुक्त होनेवाला मंत्र या औषध। **–स्तोक**–पु० चिनगारी। **–होत्र**–पु० वैदिक मंत्रोंसे अग्निमें आहुति देना; विवाहकी साक्षीभूत अग्निमें नियमपूर्वक हवन करना। **–होत्री(त्रिन्)**–वि०, पु० अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्निक–पु० (सं०) इंद्रगोप; बीरबहूटी; एक पौधा; एक तरहका साँप।

अग्निमान्(मत्)–पु० (सं०) यथाविधि अग्न्याधान करनेवाला द्विज, अग्निहोत्री।

अग्नीध्र–पु० (सं०) यज्ञाग्नि जलानेवाला ऋत्विक्; ब्रह्मा; यज्ञ; होम; स्वायंभुव मनुका एक पुत्र।

अग्नीय–वि० (सं०) अग्नि-संबंधी, अग्निके समीपका।

अग्न्यगार, अग्न्यागार–पु० (सं०) यज्ञाग्नि रखनेका स्थान।

अग्न्यस्त्र–पु० (सं०) मंत्र-प्रेरित बाण जिससे आग निकले; अग्निचालित अस्त्र (बंदूक, तमंचा आदि)।

अग्न्याधान–पु० (सं०) वेदमंत्र द्वारा अग्निकी स्थापना; अग्निहोत्र।

अग्न्यालय–पु० (सं०) दे० 'अग्न्यगार'।

अग्न्याशय–पु० (सं०) जठराग्निका स्थान।

अग्न्याहित–पु० (सं०) अग्निहोत्री, साग्निक।

अग्न्युत्पात–पु० (सं०) अग्निकांड; उल्कापात।

अग्न्युत्सादी (दिन्)–वि० (सं०) यज्ञाग्निको बुझने देनेवाला।

अग्न्युद्धार–पु० (सं०) दो अरणिकाष्ठोंको रगड़कर आग उत्पन्न करना।

अग्न्युपस्थान–पु० (सं०) अग्निहोत्रके अंतमें होनेवाली अग्निकी

पूजा या उसका मंत्र ।

अग्य*–वि० स्त्री० दे० 'अज्ञ' ।

अग्या*–स्त्री० दे० 'आज्ञा' ।

अग्यारी–स्त्री० आगमें गुड़, दशांग आदि डालना; अग्यारी करनेका पात्र (?) ।

अग्र–वि० (सं०) अगला; पहला; मुख्य; अधिक । अ० आगे । पु० अगला भाग, नोक; शिखर; अपने वर्गका सबसे अच्छा पदार्थ; बढ़-चढ़कर होना, उत्कर्ष; लक्ष्य; आरंभ; एक तौल; आहारकी एक मात्रा; समूह । **–कर**–पु० हाथका अगला हिस्सा, उँगली; पहली किरण । **–ग**–पु० नेता, नायक । **–गण्य**–वि० गणनामें पहले आनेवाला, मुख्य । **–गामी(मिन्)**–वि० आगे चलनेवाला । पु० नायक, अगुआ (स्त्री० 'अग्रगामिनी') । **–०दल**–पु० (फारवर्ड ब्लाक) भारतका एक राजनीतिक दल जिसकी संस्थापना नेताजी सुभाषचंद्र वसुने की थी । **–ज**–वि० पहले जनमा हुआ; *श्रेष्ठ । पु० बड़ा भाई; ब्राह्मण; * अगुआ । **–जन्मा(न्मन्)** –पु० बड़ा भाई; ब्राह्मण । **–जा**–स्त्री० बड़ी बहिन । **–जात,–जातक**–पु०, **–जाति**–स्त्री० ब्राह्मण । **–जिह्वा**–स्त्री० जीभका अगला हिस्सा । **–णी**–वि० आगे चलनेवाला; श्रेष्ठ । पु० नेता; अगुआ; एक अग्नि । **तर**–वि० (फरदर) और आगेका, कहे हुएके बादका । **–दानी(निन्)**–पु० मृतकके निमित्त दिया हुआ पदार्थ या शूद्रका दान ग्रहण करनेवाला पतित ब्राह्मण । **–दूत**–पु० पहलेसे पहुँचकर किसीके आनेकी सूचना देनेवाला । **–निरूपण**–पु० भविष्य-कथन । **–पर्णी**–स्त्री० अजलोमा वृक्ष । **–पा**–वि० पहले पीनेवाला । **–पाद**–पु० पाँवका अगला भाग, अँगूठा । **–पूजा**–स्त्री० सर्वप्रथम पूजा; सर्वाधिक पूज्य मानना । **–प्रेषण**–पु० दे० 'अग्रसारण' । **–प्रेषित**–वि० (फॉरवर्डेड) (आवेदन पत्रादि) जो आगे (ऊँचे अधिकारीके पास) भेज दिया गया हो, जो आगे बढ़ा दिया गया हो । **–बीज**–पु० वह वृक्ष जिसकी डाल काटकर लगायी जाय; कलम । वि० इस प्रकार जमनेवाला (पौधा) । **–भाग**–पु० श्रेष्ठ या अगला भाग; सिरा, नोक; श्राद्ध आदिमें पहले दी जानेवाली वस्तु; शेष भाग । **–भागी(गिन्)**–वि० प्रथम भाग पानेका अधिकारी । **–भुक्(ज्)**–वि० पहले खानेवाला; बिना देव-पितरको अर्पित किये खानेवाला; पेटू । **–भू,–भूमि**–स्त्री० लक्ष्य; मकानका सबसे ऊपरका भाग, छत । **–महिषी**–स्त्री० पटरानी । **–मांस**–पु० हृदय; यकृतका एक रोग । **–यान**–पु० शत्रुसे लड़नेके लिए आगे बढ़नेवाली सेना । वि० अग्रगामी । **–यायी(यिन्)**–वि० आगे बढ़नेवाला, नेतृत्व करनेवाला । **–योधी(धिन्)**–पु० सबसे आगे बढ़कर लड़नेवाला; प्रमुख योद्धा । **–लेख**–पु० समाचारपत्रका मुख्य (संपादकीय) लेख, 'लीडिंग आर्टिकिल' । **–लोहिता**–स्त्री० चिल्ली शाक । **–वक्त्र**–पु० चीर-फाड़का एक औजार । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० आगे रहनेवाला । **–शाला**–स्त्री० ओसारा । **–संधानी**–स्त्री० यमकी वह पुस्तक जिसमें मनुष्योंके कर्म लिखे जाते हैं । **–संध्या**–स्त्री० प्रातःकाल । **–सर**–वि०, पु० आगे जानेवाला, अग्रगामी, प्रधान, अगुआ । (स्त्री० 'अग्रसरी' ।) **–सारण**–पु० आगेकी तरफ बढ़ाना; किसीका आवेदनपत्रादि अपनेसे बड़े अधिकारीके पास स्वीकृति, आदेश आदिके लिए भेजना 'अग्रप्रेषण' । **–सारा**–स्त्री० पौधेका फलरहित सिरा । **–सारित**–वि० (फॉरवर्डेड) दे० 'अग्रप्रेषित' । **–सूची**–स्त्री० सूईकी नोक । **–सोची**–वि० (हिं०) आगेकी बात सोचनेवाला, दूरदर्शी । **–स्थान**–पु० प्रथम स्थान । **–हर**–वि० प्रथम देय (वस्तु) । **–हस्त**–पु० उँगली; हाथीकी सूँड़की नोक । **–हायण**–पु० अगहनका महीना । **–हार**–पु० राज्यकी ओरसे ब्राह्मण को निर्वाहार्थ मिलनेवाला भूमिदान; इस तरह दी हुई भूमि; ब्राह्मणको देनेके लिए खेतकी उपजसे निकाला हुआ अन्न ।

अग्रजाधिकार–पु० दे० 'ज्येष्ठाधिकार' ।

अग्रतः(तस्)–अ० (सं०) आगे, पहले; आगेसे ।

अग्रदाय धन–पु० (इम्प्रेस्टमनी) दे० 'अग्रिम देय धन' ।

अग्रवाल–पु० वैश्योंका एक भेद, अगरवाला ।

अग्रशः(शस्)–अ० (सं०) आरंभसे ही ।

अग्रह–पु० (सं०) ग्रहण न करना; गृहहीन व्यक्ति; वानप्रस्थ ।

अग्रांश–पु० (सं०) दे० 'अग्रभाग' ।

अग्रांशु–पु० (सं०) केंद्रीय विंदु ।

अग्राक्षण–पु०, **अग्राक्षि**–स्त्री० (सं०) कटाक्ष, तिरछी चितवन ।

अग्राणीक, अग्रानीक–पु० (सं०) फौजका आगे जानेवाला भाग ।

अग्राम्य–वि० (सं०) जो देहाती न हो, नगरका; जो पालतू न हो, जंगली ।

अग्राशन–पु० (सं०) भोजनका वह अंश जो देवता, गौ आदिके लिए पहले निकाल दिया जाय ।

अग्रासन–पु० (सं०) सम्मानका आसन या स्थान ।

अग्राह्य–वि० (सं०) ग्रहणके अयोग्य; त्याज्य; अविचारणीय; अविश्वसनीय । **– व्यक्ति**–पु० (परसोना नान्-ग्रेटा) (किसी देशका) वह राजदूत, राजपुरुष या अन्य व्यक्ति जो (प्रायः किसी अन्य देशके) उच्चाधिकारियों आदिको अग्राह्य या अमान्य जान पड़े, अमान्य या अस्वीकार्य व्यक्ति ।

अग्राह्या–स्त्री० (सं०) शौचादिके काममें न लाने लायक मिट्टी ।

अग्रिम–वि० (सं०) पहला, अगला; (हिं०) श्रेष्ठ, उत्तम; पेशगी; आगामी; सबसे बड़ा । पु० बड़ा भाई । **–धन**–पु० (एडवांस) किसीके वेतन, कार्यके पारिश्रमिक, वस्तुके मूल्यादिका वह अंश जो उसे नियत तिथिसे पहले ही या वस्तु प्राप्त होनेके पूर्व ही दे दिया जाय ।

अग्रिम देय धन–पु० (इम्प्रेस्ट मनी) किसी कार्य-विशेषमें खर्च करनेके लिए पहलेसे दिया गया धन, जिसका हिसाब बादमें किया जाय ।

अग्रिमा–स्त्री० (सं०) ग्रीष्मजा, लोणा नामक फल या उसका वृक्ष ।

अग्रिय–वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम । पु० बड़ा भाई; पहले लगनेवाले फल ।

अग्रेदिधिषु–पु० (सं०) ऐसी स्त्रीसे विवाह करनेवाला द्विज जिसका पहले विवाह हो चुका हो ।

अग्रेदिधिषू–स्त्री० (सं०) वह विवाहिता स्त्री जिसकी बड़ी बहिन अविवाहिता हो ।

अग्रेमूल्य–पु० (फारवर्ड प्राइस) आगे मिलने या लगाया जानेवाला मूल्य; बादमें बेची जानेवाली वस्तुका अभीसे लगाया जानेवाला मूल्य ।

अग्रेसर–वि०, पु० (सं०) आगे जानेवाला; अगुआ । (स्त्री० 'अग्रेसरी' ।)

अग्रेसरिक–पु० (सं०) नेता; मालिकके आगे जानेवाला नौकर ।

अग्र्य–वि० (सं०) जो सबसे आगे हो; श्रेष्ठ; कुशल, योग्य । पु० बड़ा भाई; मकानकी छत ।

अघ–वि० (सं०) खराब; पापी; दुष्ट । पु० पाप; दुष्कर्म; दुःख; विपत्ति; अशौच; कंसका एक सेनापति । **–कृच्छ्र**–पु० प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक कठिन व्रत । **–कृत्**–पु० पाप करनेवाला । **–घ्न,–नाशक,–नाशन**–वि० पापनाशक । पु० विष्णु । **–भोजी(जिन्)**–वि० जो देव, पितर, अतिथि आदिके लिए खाना न बनाकर केवल अपने लिए बनाये और खाये । **–मर्षण**–वि० पापनाशक (मंत्र) । पु० संध्योपासनके अंतर्गत एक पापनाशिनी क्रिया; उस क्रियामें पढ़ा जानेवाला एक मंत्र । **–०कृच्छ्र**–पु० दे० 'अघकृच्छ्र' । **–मार**–वि० पापका नाश करनेवाला । **–ल**–वि० पापनाशक । **–विष**–पु० बहुत विषैला सर्प । **–शंस**–पु० दुष्ट मनुष्य; बुराई चाहनेवाला; चोर; अपने कुकर्मकी सूचना देना । [वि० 'अघशंसी'(सिन्) ।] **–हार**–पु० मशहूर डाकू ।

अघट–वि० जो घटे नहीं; जो एक-सा बना रहे; *बेमेल, अयोग्य; (सं०) न होने योग्य, कठिन ।

अघटित–वि० (सं०) जो हुआ न हो; न होनेवाला, असंभव; अयोग्य; अनुचित; * अवश्यंभावी; *न घटनेवाला । **–घटनापटीयसी**–वि० स्त्री० जो कुछ नहीं हुआ है उसे करनेमें कुशल (माया) ।

अघट्ट*–वि० दे० 'अघट'–'दीपक दीन्हा तेल भरि बाती दई अघट्ट'

–साखी।

अघन–वि० (सं०) जो घना या ठोस न हो।

अघर्म–वि० (सं०) जो गरम न हो, ठंढा।

अघर्मांशु–पु० (सं०) चंद्रमा।

अघवाना–स० क्रि० इच्छाभर खिलाना; संतुष्ट करना।

अघाउ*–पु० तृप्ति, संतोष।

अघाट†–पु० वह भूमि जिसे बेचनेका अधिकार उसके स्वामीको न हो।

अघात–पु० (सं०) घात या क्षतिका अभाव; * आघात, प्रहार, चोट। वि० पेटभर; ज्यादा, बहुत।

अघाती(तिन्)–वि० (सं०) जो घातक या क्षतिकारक न हो।

अघाना–अ० क्रि० अफरना, तृप्त होना, छकना; किसी वस्तुके सेवन या उपभोगसे जी भरना; *प्रसन्न होना।

अघायु(स्)–वि० (सं०) पापरत; पापका जीवन बितानेवाला।

अघारि–पु० (सं०) पापका नाश करनेवाला; अघ नामक दैत्यके मारनेवाले, कृष्ण।

अघासुर–पु० (सं०) कृष्णके समयका एक दैत्य (यह पूतनाका छोटा भाई और कंसका सेनापति था)।

अघी(घिन्)–वि० (सं०) पापी।

अघेरन†–पु० जौका मोटा आटा।

अघोड़ी–वि०, पु० दे० 'अघोरी'।

अघोर–पु० (सं०) शिवका एक रूप; एक शिवोपासक पंथ। वि० जो घोर या भयानक न हो, सौम्य।–**घोररूप**–पु० शिव। –**नाथ**–पु० शिव।–**पंथ**–पु० (हिं०) अघोरियोंका पंथ या संप्रदाय।–**पंथी**–वि०, पु० (हिं०) अघोर मतका अनुयायी। –**पथ,–मार्ग**–पु० शिवका उपासक एक संप्रदाय।

अघोरा–स्त्री० (सं०) भाद्र-कृष्णा चतुर्दशी।

अघोरी–वि० घृणित; गंदा। पु० अघोरपंथी, औघड़; घिनौनी चीजें खाने-पीनेवाला।

अघोष–वि० (सं०) बिना शब्दका; अल्प ध्वनिवाला; ग्वालोंसे रहित। पु० एक वर्णसमूह (प्रत्येक वर्गके प्रथम दो अक्षर और श, ष, स)।

अघौघ–पु० (सं०) पापसमूह।

अघ्न्य–वि० (सं०) न मारने योग्य। पु० ब्रह्मा; साँड़।

अघ्न्या–स्त्री० (सं०) गाय।

अघ्रान*–पु० दे० 'आघ्राण'।

अघ्रानना*–स० क्रि० गंध लेना, सूँघना।

अघ्रेय–वि० (सं०) न सूँघने योग्य। पु० मद्य।

अचंचल–वि० (सं०) जो चंचल न हो, स्थिर; धीर।

अचंड–वि० (सं०) जो उग्र स्वभावका न हो, सौम्य।

अचंडी–स्त्री० (सं०) शांत गाय; कोप न करनेवाली स्त्री।

अचंद्र–वि० (सं०) चंद्ररहित।

अचंभव, अचंभो, अचंभौ*–पु० अचंभा, आश्चर्य।

अचंभा–पु० आश्चर्य, विस्मय; आश्चर्यजनक बात।

अचंभित*–वि० चकित, विस्मित।

अचक–वि० भरपूर, न चुकनेवाला। *स्त्री० भौचक्कापन, अचकचानेका भाव।

अचकचाना–अ० क्रि० भौचक्का होना, विस्मित होना, चौंक उठना।

अचकन–पु० लंबा कलीदार अँगरखा जिसमें पहले गरेबाँसे कमर-पट्टीतक अर्धचंद्राकार बंद लगते थे और अब सीधे बटन टँकते हैं।

अचकाँ*–अ० अचानक।

अचक्का–पु० अनजान। –**(क्के)में**–अचानक, धोखेमें।

अचक्र–वि० (सं०) चक्ररहित, जिसमें पहिये न हों; अचल, स्थिर।

अचक्षु(स्)–वि० (सं०) चक्षु-रहित, अंधा। पु० बुरी आँख।

अचक्षुर्–'अचक्षुस्'का समासगत रूप। –**दर्शन**–पु० नेत्रेतर इंद्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान। –**विषय**–वि० दृष्टिसे परे।

अचक्षुष्क–वि० (सं०) नेत्ररहित, अंधा।

अचगरा*–वि० उत्पाती, नटखट, शरारती–'जो तेरो सुत खरोई अचगरों तऊ कोखको जायो'–सूर०।

अचगरी*–स्त्री० नटखटी, शरारत।

अचतुर–वि० (सं०) चारसे वंचित, जिसके पास चारसे कम हो; जो चतुर या कुशल न हो।

अचना*–स० क्रि० दे० 'अचवना'।

अचपल–वि० (सं०) अचंचल, धीर, स्थिर; *चंचल, शोख।

अचपलाहट–स्त्री० अचंचलता; † चुलबुलापन।

अचपली*–स्त्री० छेड़छाड़, क्रीड़ा।

अचभौन*–पु० अचरजकी बात; दे० अचंभा।

अचमन*–पु० दे० 'आचमन'।

अचर–वि० (सं०) अचल, स्थावर। पु० स्थावर प्राणी या पदार्थ; स्थिर राशि–(वृष, सिंह, वृश्चिक और कुंभ)।

अचरज–पु० आश्चर्य, अचंभा; आश्चर्यकी चीज या घटना। वि० अचरजभरा, अनोखा।

अचरम–वि० (सं०) जो अंतिम न हो।

अचरा*–वि० अचर, स्थिर।

अचरित–वि० (सं०) जिसपर कोई चला न हो; अव्यवहृत; अछूता। पु० गतिरोध।

अचल–वि० (सं०) गतिहीन, स्थिर; चिरस्थायी, सदा रहनेवाला; अटल, अपरिवर्तनशील। पु० पहाड़; कील, खूँटी; ७ की संख्या (७ कुल-पर्वतोंपरसे); ब्रह्म; शिव; आत्मा। –**कन्यका,–जा,–तनया,–दुहिता(तृ),–सुता**–स्त्री० पार्वती। –**कीला**–स्त्री० पृथ्वी। –**ज,–जात**–वि० पहाड़पर या पहाड़से उत्पन्न। –**त्विट्(ष्)**–पु० कोकिल। वि० स्थिर कांतिवाला। –**द्विट्(ष्)**–पु० इंद्र। –**धृति**–स्त्री० एक वृत्त। –**पति,–राज**–पु० हिमालय। –**व्यूह**–पु० असंहत व्यूहका एक भेद।

अचल संपत्ति–स्त्री० (सं०) न हटायी जा सकनेवाली संपत्ति, गैर मनकूला जायदाद (घर, खेत आदि)।

अचला–स्त्री० (सं०) पृथ्वी। वि०, स्त्री० न चलनेवाली। –**सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी।

अचलाधिप–पु० (सं०) हिमालय।

अचवन†–पु० दे० 'आचमन'।

अचवना†–स० क्रि० आचमन करना, पीना; छोड़ देना। अ० क्रि० भोजनोपरांत कुल्ली आदि करना।

अचवाई*–वि० प्रक्षालित, स्वच्छ।

अचवाना–स० क्रि० आचमन कराना।

अचाक, अचाका*–अ० अचानक।

अचाक्षुष–वि० (सं०) जो देखा न जा सके, अदृश्य, अप्रत्यक्ष।

अचातुर्य–पु० (सं०) चतुराईका न होना, अकुशलता, अनाड़ीपन।

अचान*–अ० अचानक, सहसा।

अचानक–अ० यकायक, अनपेक्षित या असंभावित रूपमें, औचटमें।

अचापल, अचापल्य–वि० (सं०) अचपल, स्थिर। पु० अचपलता, स्थिरता, गंभीरता।

अचार–पु० चिरौंजीका पेड़; चिरौंजीका फल; फल या तरकारीमें मिर्च-मसाले लगाकर कुछ दिनोंतक तेल या सिरकेमें रखनेसे बना चटपटा खाद्य।* दे० 'आचार'।

अचारज*–पु० दे० 'आचार्य'।

अचारी†–वि०, पु० दे० 'आचारी'। स्त्री० आमोंकी फाँकोंको धूपमें सिझाकर बनाया हुआ अचार।

अचारु–वि० (सं०) असुंदर।

अचालक–वि० (नॉन कंडक्टर) दे० 'असंवाहक'।

अचालू†–पु० न चलनेवाला या कम चलनेवाला जहाज।

अचाह*–स्त्री० चाहका अभाव, अनिच्छा। वि० इच्छारहित, निष्काम; जिसकी चाह करनेवाला कोई न हो–'चाह-आलवाल औ अचाहके कलपतरु'–घन०।

अचाहा*–वि० जिसकी चाह न हो; जो प्रेमपात्र न हो; प्रीति-रहित। पु० वह व्यक्ति जिसपर प्रेम न हो या जो प्रेम न करे।

अचाही*–वि० इच्छा-रहित, निष्काम।

अचिंत–वि० (सं०) चिंता-रहित, बेफिक्र।

अचिंतनीय–वि० (सं०) जिसका चिंतन न हो सके, अज्ञेय; आकस्मिक, अप्रत्याशित। पु० शिव।

अचिंता–स्त्री० (सं०) लापरवाही, बेफिक्री।

अचिंतित–वि० (सं०) जो सोचा न गया हो, अतर्कित; आकस्मिक, अप्रत्याशित; उपेक्षित ।

अचिंत्य–वि० (सं०) दे० 'अचिंतनीय' । **–कर्म(न्)**–पु० ऐसा कार्य जो चिंतनसे परे हो । **कर्मा(र्मन्)**–वि० अचिंत्य कर्म करनेवाला । **–रूप**–वि० अज्ञेय रूप या आकृतिवाला ।

अचिंत्यात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परमात्मा, जिसका रूप समझमें न आये ।

अचिकित्स्य–वि० (सं०) जो चिकित्साके योग्य न हो; (इनक्योरेबिल) चिकित्सा करनेसे जिसके अच्छा होने, दूर होने, शांत होने, की आशा या संभावना न हो; असाध्य, लाइलाज (रोग) ।

अचिकीर्षु–वि० (सं०) जिसे (कोई काम) करनेकी इच्छा न हो, जो कुछ करना न चाहता हो, आलसी ।

अचिज्ज*–पु० आश्चर्य, अचंभा ।

अचित–वि० (सं०) जो सोचा न गया हो; जो एकत्र न किया गया हो ।

अचितवन–वि० एकटक, निर्निमेष ।

अचित्–वि० (सं०) अचेतन, जड । पु० जड जगत् ।

अचित्त–वि० (सं०) जो समझके परे हो; निर्बुद्धि, अज्ञान; जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो; अप्रत्याशित, न सोचा हुआ ।

अचित्ति–वि० (सं०) अज्ञान, ज्ञानाभाव ।

अचित्र–वि० (सं०) जो बहुरंगा न हो; जिसमें भेद न किया जा सके ।

अचिर–अ० (सं०) शीघ्र; हालमें, कुछ ही पहले । वि० क्षणस्थायी; हालका । **–द्युति, –प्रभा, –भा(स्)–रोचि(स्)**–स्त्री० बिजली । **–प्रसूता**–स्त्री० हालकी व्यायी हुई गाय । **–मृत**–वि० जो कुछ ही देर पहले मरा हो ।

अचिरता–स्त्री० (सं०) क्षणिकता ।

अचिरम्, अचिरात्, अचिराय, अचिरेण–अ० (सं०) शीघ्र, अविलंब; हालमें, कुछ ही पहले ।

अचिरांशु–पु० (सं०) बिजली ।

अचिराभा–स्त्री० (सं०) विद्युत् ।

अचीता–वि० अनसोचा, आकस्मिक; अननुमेय, बहुत अधिक; निश्चित । (स्त्री० 'अचीती') ।

अचीर–वि० (सं०) वस्त्रहीन ।

अचूक–वि० खाली न जानेवाला, अव्यर्थ; निश्चित, भ्रमरहित । अ० कौशलपूर्वक, सफाईसे; निश्चय-पूर्वक ।

अचेत–वि० संज्ञा-रहित; जड़ । *पु० जड पदार्थ; जडता, माया ।

अचेतन–वि० (सं०) चेतना-रहित; अज्ञान; निर्जीव; संज्ञारहित, बेसुध । पु० जड पदार्थ ।

अचेतनक–पु० (एनीस्थेटिक) चेतनाहीन बना देनेवाला पदार्थ (जैसे क्लोरोफार्म); दे० 'संवेदनाहारी'; 'निश्चेतक' ।

अचेतनीकरण–पु० शल्यचिकित्साके समय ओषधि द्वारा या सूई लगाकर शरीरके किसी भागको चेतनाहीन करनेकी क्रिया (एनीस्थेसिस), 'संवेदनाहरण' ।

अचेता(तस्)–वि० (सं०) चित्त-रहित; चेतना-रहित, अचेत; निर्जीव । (स्त्री० 'अचेतसी' ।)

अचेष्ट–वि० (सं०) निश्चेष्ट, प्रयत्नहीन; गतिहीन ।

अचैतन्य–वि० (सं०) चेतना-रहित, जड । पु० चेतनाका अभाव; अज्ञान; बेहोशी; जड पदार्थ ।

अचैन*–वि० बेचैन । पु० बेचैनी ।

अचैना–पु० लकड़ीका कुंदा जिसपर लकड़ी या घास रखकर काटते हैं, ठीहा ।

अचोना*–पु० आचमनका पात्र ।

अचौन*–पु० दे० 'अचवन' ।

अच्–पु० (सं०) स्वर वर्ण (व्या०) । **–संधि**–स्त्री० स्वर-संधि ।

अच्छ–वि० (सं०) स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक । पु० स्फटिक; भालू; एक पौधा; साम्मुख्य; *आँख; रुद्राक्ष; रावणका पुत्र अक्षकुमार; वि० *सुंदर–'मानहु विधि तन अच्छ छबि स्वच्छ राखिबे काज'–वि० । अच्छा । **–भल्ल**–पु० भालू ।

अच्छत–पु० दे० 'अक्षत' । वि० अखंडित; लगातार ।

अच्छर†–पु० दे० 'अक्षर' ।

अच्छरा, अच्छरी*–स्त्री० दे० 'अप्सरा' ।

अच्छा–वि० भला, बढ़िया; शुभ; ठीक, सुंदर; खरा; सकुशल; चंगा, नीरोग; सुधरता हुआ; स्वास्थ्यकर (जल-वायु); संपन्न, प्रतिष्ठित; दाममें मुनासिब, सस्ता (?); जो बुरा न हो; कामचलाऊ । पु० श्रेष्ठ पुरुष, गुरुजन; बड़ा-बूढ़ा । अ० अच्छी तरह; स्वीकार-सूचक उत्तर, हाँ; खैर (यह आश्चर्य भी प्रकट करता है–अच्छा, आप है !) । **–ई**–स्त्री० भलाई; अच्छापन, खूबी । **–खासा**–वि० काफी अच्छा । **–पन**–पु० उत्तमता, सुंदरता । **–बुरा**–वि० भला-बुरा । **–बिच्छा**–दुरुस्त; भला-चंगा । **मु० –आना**–ठीक वक्तपर आना (व्यंग्यमें इसका उलटा); सुंदर बनना । **–करना**–तंदुरुस्त करना; आफतसे बचाना; अच्छा काम करना । **–कहना**–तारीफ करना । **–लगना**–सुंदर लगना, पसंद आना, भला मालूम होना । **–(च्छी)–कटना,–गुजरना,–बीतना**–आरामसे दिन बीतना । **–(च्छे)–अच्छे**–बड़े आदमी । **–वक्त**–जरूरतके वक्त । **–से पाला पड़ना**–बड़े बेढब आदमीसे वास्ता पड़ना । **–हालों गुजरना**–आरामसे दिन बीतना ।

अच्छावाक–पु० (सं०) सोमयागका ऋत्विक् जो होताका सहायक होता है ।

अच्छिद्र–वि० (सं०) छिद्र-रहित; अक्षत; निर्दोष; अखंडित । पु० अक्षुण्ण अवस्था; निर्दोष कार्य ।

अच्छिन्न–वि० (सं०) जो कटा न हो, अखंडित; अविभक्त, अटूट; लगातार चलनेवाला । **–पत्र,–पर्ण**–पु० शाखोटक आदि वृक्ष जिनकी पत्तियाँ बराबर बनी रहती हैं; ऐसे पक्षी जिनके पर कटे या क्षत न हुए हों ।

अच्छिर*–पु० अक्षर (रासो) ।

अच्छुप्ता–वि० स्त्री० (सं०) निष्पाप (स्त्री) । स्त्री० जैनोंकी एक देवी ।

अच्छूरिका–स्त्री० (सं०) चक्र; मंडल ।

अच्छेदिक, अच्छैदिक–वि० (सं०) जो काटने या छेदने योग्य न हो ।

अच्छेद्य–वि० (सं०) जिसका छेदन न हो सके, अविभाज्य ।

अच्छोटन–पु० (सं०) आखेट, शिकार करना ।

अच्छोत*–वि० अक्षत, पूरा; अधिक; बहुत ।

अच्छोद–वि० (सं०) स्वच्छ जलवाला । पु० हिमालयकी एक झील (कादंबरी) ।

अच्छोदा–स्त्री० (सं०) एक नदी (पुराण) ।

अच्छोहिन, अच्छौहिनी–स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी' ।

अच्युत–वि० (सं०) जो अपने स्वरूप, सामर्थ्य, स्थानसे च्युत न हुआ हो; अचल, अस्खलित; निर्विकार; स्थिर; न चूनेवाला । पु० परमेश्वर, विष्णु; कृष्ण । **–कुल,–गोत्र**–पु० रामानंदी साधुओंका समाज या शिष्य-परंपरा । **–ज**–पु० जैन देवताओंका एक वर्ग । **–पुत्र**–पु० कामदेव; कृष्णका पुत्र । **–मध्यम**–पु० संगीतमें एक विकृत स्वर । **–मूर्ति**–पु० विष्णु । **–वास**–पु० वट वृक्ष; अश्वत्थ वृक्ष । **–षड्ज**–पु० संगीतमें एक विकृत स्वर ।

अच्युतांगज, अच्युतात्मज–पु० (सं०) कामदेव; कृष्णपुत्र ।

अच्युताग्रज–पु० (सं०) विष्णुके बड़े भाई, इंद्र (इंद्र तथा वामन, दोनों कश्यपके पुत्र थे); कृष्णके बड़े भाई, बलराम ।

अच्युतानंद–वि० (सं०) जिसका आनंद नित्य हो । पु० परमात्मा ।

अच्युतावास–पु० (सं०) दे० 'अच्युतवास' ।

अछक*–वि० जो छका न हो, अतृप्त ।

अछकना–अ० क्रि० न छकना, तृप्त न होना ।

अछग*–वि० अछक, अतृप्त ।

अछत*–अ० विद्यमानतामें, रहते हुए; सिवा, अलावा । वि० अविद्यमान ('छतहूँ अछत समान') ।

अछताना-पछताना–अ० क्रि० बार-बार पछताना या खेद करना ।

अछन*–पु० बहुत दिन । अ० धीरे-धीरे ।

अछना*–अ० क्रि० विद्यमान रहना ।

अछप*–वि० न छिपने लायक, प्रकट ।

अछय*–वि० दे० 'अक्षय' । **–कुमार**–पु० दे० 'अक्षकुमार' ।

अछया*–स्त्री० इच्छा ।

अछरा, अछरी*–स्त्री० दे० 'अप्सरा' ।

अछरौटी–स्त्री० वर्णमाला ।

अछल–वि० (सं०) निश्छल, सीधा-सादा ।

अछवाई*–स्त्री० सफाई ।

अछवाना*–स० क्रि० साफ करना, सँवारना ।

अछवानी–स्त्री० एक तरहका अवलेह जो प्रसूता स्त्रियोंको दिया जाता है ।

अछाम*–वि० जो दुबला न हो, मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट ।

अछित–अ० दे० 'अछत' ।

अछिद्र–वि० (सं०) छिद्ररहित; निर्दोष ।

अछूत–पु० अछूत जातिका मनुष्य, अंत्यज, हरिजन । वि० न छूने योग्य; ०दे० 'अछूता' ।

अछूता–वि० जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट; जो काममें न लाया गया हो, कोरा, नया ।

अछूतोद्धार–पु० अछूतोंका उद्धार या सुधार; इसका यत्न या आंदोलन ।

अछेद*–वि० अच्छेद्य, अभेद्य । पु० छल-छिद्रका अभाव, निष्कपटता, अभेद ।

अछेद्य–वि० (सं०) जिसका छेदन या खंडन न हो सके, अविभाज्य; अविनश्वर ।

अछेव*–वि० छिद्र-रहित, निर्दोष ।

अछेह*–वि०, अ० लगातार, निरंतर; अत्यधिक ।

अछोप*–वि० नंगा, तुच्छ, नीच; दीन ।

अछोभ*–वि० क्षोभरहित; गंभीर, शांत; निर्भीक; मोह-रहित; नीच ।

अछोर*–वि० ओर-छोर रहित ।

अछोह–पु० स्नेह, ममता या क्षोभका अभाव; शांति; निर्दयता । वि० निर्दय, निष्ठुर; स्नेहरहित; क्षोभरहित ।

अछोही–वि० दे० 'अछोह' ।

अजंभ–वि० (सं०) दंतहीन । पु० मेढक; सूर्य; बच्चेकी वह अवस्था जब उसके दाँत नहीं निकले होते ।

अज–वि० (सं०) अजन्मा, अनादि कालसे विद्यमान । पु० ईश्वर; ब्रह्मा; विष्णु; शिव; जीवात्मा; दशरथके पिता; एक ऋषि; बकरा; भेंड़ा; कामदेव; चंद्रमा; मेष राशि; एक धान्य; माक्षिक धातु; अग्नि; सूर्यका रथ; एक नक्षत्रवीथी । **–कर्ण**–पु० असन नामक वृक्ष । **–कर्णक**–पु० सालवृक्ष । **–गंधा, –गंधिका**–स्त्री० अजमोदा । **–गंधिनी**–स्त्री० अजशृंगी पौधा; वनतुलसी । **–ग**–पु० शिवका धनुष; विष्णु; अग्नि । **–गर**–पु० अजदहा, एक विशाल सर्प जो बकरी, हिरन आदिको निगल जाता है; एक असुर । **–०वृत्ति**–स्त्री० निरुद्यम या भगवान्‌के भरोसे रहनेकी वृत्ति । **–गरी**–वि० (हिं०) अजगरकी, –कीसी, बिना परिश्रमकी । स्त्री० अजगरी वृत्ति; एक पौधा । **–गल्लिका**–स्त्री० बच्चोंका एक रोग । **–जीव,–जीविक**–पु० बकरी पाल और बेचकर जीविका चलानेवाला । **–दंडी**–स्त्री० एक पौधा, ब्रह्मदंडी । **–देवता**–पु० अग्नि; पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र । **–नामक**–पु० एक खनिज द्रव्य । **–पति**–पु० सबसे अच्छा बकरा; मंगल । **–पथ**–पु० अजवीथी, छायापथ । **–पथ्य**–पु० तंग रास्ता, दरी । **–पद, –पाद**–पु० एक रुद्र । **–पाल**–पु० छागपालक; दशरथके पिता । **–बंधु**–पु० बकरेका भाई । वि० मूर्ख (ला०) । **–भक्ष**–पु० बबूलका पेड़ । **–मार**–पु० बकर-कसाब; अजमेर । **–मीढ**–पु० दे० क्रममें । **–मुख**–पु० दक्षप्रजापति (वीरभद्रने शिवकी आज्ञासे शिरश्छेदके बाद बकरेका सिर जोड़ दिया था) । **–मुखी**–स्त्री० एक राक्षसी जो अशोक-वाटिकामें सीताजीकी निगरानी करती थी । **–मोदा,–मोदिका**–स्त्री० अजवायनका एक भेद; अजवायन । **–लंबन**–पु० स्रोतांजन । **–लोमा(मन्)**–पु०,–**लोमी**–स्त्री० अग्रपर्णी नामक पौधा, केवाँच । **–वाह**–पु० कच्छ-काठियावाड़का पुराना नाम (उन दिनों वहाँके लोग बकरियोंसे जीविका चलाते थे) । **–वीथि,–वीथी**–स्त्री० सूर्य, चंद्रादिके गमनके तीन मार्गोंमेंसे एक, छायापथ । **–शृंगी**–स्त्री० विषाणी नामक पौधा ।

अज़–अ० (फा०) से, साथ । **–खुद**–अ० खुद-बखुद, अपने आप । **–ग़ैब**– अ० गैबसे, परोक्षसे, अलक्षित स्थानसे । *पु० अदृष्ट स्थान । **–ग़ैबी**–वि० गैब, अलक्षित स्थानसे आनेवाला, आकस्मिक, आसमानी (अजग़ैबी गोला,–तमाचा,–मार–अचानक आनेवाली विपदा, दैवी कोप) । **–सरे नौ**–अ० नये सिरेसे । **–हद**–अ० बेहद, अत्यधिक ।

अजक–पु० (सं०) पुरूरवाका एक वंशज ।

अजकव–पु० (सं०) शिवका धनुष ।

अजका–स्त्री० (सं०) कम अवस्थाकी बकरी; आँखका एक रोग, ढेंढ़र; अजागलस्तन । **–जात**–पु० आँखका एक रोग, ढेंढ़र ।

अजकाव–पु० (सं०) शिवका धनुष; बबूलका पेड़; एक यज्ञपात्र; ढेंढ़र नामक आँखका एक रोग ।

अजगव–पु० (सं०) शिवका धनुष्; अजवीथी ।

अजगाव–पु० (सं०) पिनाक; अजवीथी; एक नागगुरु; एक यज्ञपात्र ।

अजगुत*–पु० अचंभेकी बात, विचित्र व्यापार; अयुक्त बात । वि० आश्चर्योत्पादक; अनुपमेय ।

अजघन्य–वि० (सं०) जो अंतिम, तुच्छतम या सबसे नीच न हो ।

अजटा–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी ।

अजड–वि० (सं०) जो जड न हो, चेतन, समझदार । पु० चेतन पदार्थ ।

अजथ्या–स्त्री० (सं०) पीली जूही; बकरोंका झुंड ।

अज़दहा–पु० (फा०) अजगर ।

अजन–पु० (सं०) ब्रह्मा; तुच्छ व्यक्ति; गमन । वि० निर्जन, जनहीन; *जन्मरहित; अजन्मा । **–योनिज**–पु० दक्ष ।

अजनक–वि० (सं०) अनुत्पादक; अकारक ।

अजननि–स्त्री० (सं०) जन्मराहित्य ।

अजनबी–वि० (फा०) अपरिचित, अनजान; परदेशी ।

अजनबी–वि० (फा०) नवलेखनमें प्रचलित शब्द–जो व्यक्तिकी अपनी विशिष्टताके कारण उसे आजके समाजमें अपरिचित जैसा बना देती है ।

अजनि–स्त्री० (सं०) मार्ग, सड़क ।

अजन्म–वि० दे० 'अजन्मा' ।

अजन्म(न्)–पु० (सं०) जन्मका अभाव ।

अजन्मा(न्मन्)–वि० (सं०) जन्म-रहित; अनादि ।

अजन्य–वि० (सं०) जो उत्पादनके योग्य न हो; अजननीय; मनुष्यके लिए अनुपयुक्त । पु० मानवजातिके लिए अशुभसूचक घटना–भूकंप आदि उत्पात ।

अजप–पु० (सं०) उचित रूपसे पाठ न करनेवाला या धर्मविरोधी ग्रंथ पढ़नेवाला ब्राह्मण; कुपाठक; छागपालक ।

अजपा–स्त्री० (सं०) एक मंत्र जिसका उच्चारण साँसके भीतर-बाहर आने-जाने मात्रसे किया जाता है, हंस-मंत्र, 'सोऽहम्'; पु० मंत्र जपनेका एक प्रकार जिसमें उच्चारण मुँहसे न किया जाय, मन ही मन जप किया जाय । वि० जिसका जप न किया जाय । **–जप**–पु० अजपा मंत्रका जप ।

अजब–वि० (अ०) विचित्र, अनोखा । पु० अचरज, अचंभा ।

अज़म–पु० (अ०) अरबसे भिन्न देश, विशेषतः ईरान, तूरान; वे लोग जो अरब न हों ।

अज़मत–स्त्री० (अ०) बड़ाई, बुजुर्गी; गौरव; चमत्कार ।

अजमी–वि० (अ०) अजमका । पु० अजमका रहनेवाला, ईरानी, तूरानी ।

अजमीढ–पु० (सं०) अजमेर; उसके आस-पासका प्रदेश; पुरुवंशीय हस्तिका पुत्र युधिष्ठिर; सुहोत्रका एक पुत्र ।

अजय–स्त्री० (सं०) पराजय । वि० अजेय । पु० एक छंद; विष्णु; अग्नि; एक नदी ।

अजयपाल–पु० भैरव रागका एक पुत्र; एक राजा; जमालगोटा ।

अजया–स्त्री० (सं०) भाँग; माया; दुर्गाकी एक सहचरी; *बकरी ।

अजय्य–वि० (सं०) जो जीता न जा सके, अजेय; खेलमें न जीतने योग्य ।

अजर–वि० (सं०) जरारहित, जो सदा जवान रहे; क्षय-रहित; *जो पचे नहीं । पु० परब्रह्म; देवता; एक पौधा, जीर्णफंजी ।

अजरक–पु० (सं०) अग्निमांद्य ।

अजरा–स्त्री० (सं०) घृतकुमारी; छिपकली ।

अजरायल*–वि० जीर्ण न होनेवाला, चिरस्थायी, टिकाऊ ।

अजर्य–वि० (सं०) जरारहित; चिरस्थायी; जो पचाया न जा सके । पु० मैत्री ।

अजल–वि० जलरहित, जिसकी रचनामें जलका अभाव हो ।

अजवाइन, अजवायन–स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा और उसके दाने जो दवा और मसालेके काम आते हैं ।

अजस*–पु० दे० 'अयश' ।

अजसी*–वि० वदनाम, जिसके हाथमें यश न हो ।

अजस्र–वि० (सं०) अविच्छिन्न, अनवरत । अ० निरंतर, सतत ।

अजहति–स्त्री० दे० 'अजहत्स्वार्था' ।

अजहत्–वि० (सं०) जो छोड़े या खोये नहीं । **–स्वार्था**–स्त्री० वह लक्षणा जिसमें वाच्यार्थका त्याग किये विना अन्यार्थका वोध होता है, उपादानलक्षणा (सा०) ।

अजहल्लिग–पु० (सं०) वह शब्द जो अन्य लिंग-वाचक शब्दके विशेषणरूपमें व्यवहृत होनेपर भी स्वलिंगका त्याग न करे ।

अजहुँ, अजहूँ*–अ० आज भी; अवतक ।

अज़ाँ–स्त्री० (अ०) दे० 'अज़ान' ।

अजांत्री–स्त्री० (सं०) एक पौधा, नीलपुष्पी ।

अजा–स्त्री० (सं०) प्रकृति, माया; शक्ति; बकरी; एक पौधा । **–गलस्तन**–पु० वकरीके गलेमें लटकनेवाली स्तनाकार थैली; (ला०) उस जैसी निरर्थक वस्तु । **–जीव,–पालक**–पु० छागपालक ।

अज़ा–स्त्री० (अ०) शोक, मातम; मातमपुर्सी । **–ख़ाना**–पु० वह मकान जहाँ मातम किया जाय, मर्सिये पढ़े जायँ या ताजिया रखा जाय । **–दार**–पु० मातम करनेवाला । **–दारी**–स्त्री० मातम करना, मानना ।

अजागर–वि० (सं०) जो जाग्रत् न हो । पु० भृंगराज ।

अजाच*–वि० दे० 'अजाचक' ।

अजाचक, अजाची*–वि० जिसे किसीसे कुछ माँगनेकी आवश्यकता न हो, धन-धान्यसे भरपूर ।

अजाजि, अजाजी–स्त्री० (सं०) श्वेत या कृष्ण जीरा ।

अज़ाज़ील–पु० (अ०) शैतान ।

अजात–वि० (सं०) अजन्मा; अनुत्पन्न; अविकसित; (हिं०) जातिहीन; जातिच्युत । **–ककुद्**–पु० वह साँड़ जिसका डिल्ला अभी न उठा हो । **–पक्ष**–वि० जिसके पंख न निकले हों । **–व्यवहार**–पु० वह व्यक्ति जो अभी वालिग न हुआ हो । **–शत्रु**–वि० शत्रुविहीन, जिसका कोई शत्रु न (जनमा) हो । पु० युधिष्ठिर; शिव; उपनिषद्-वर्णित काशीका एक राजा; भगवान् बुद्धका समकालीन एक जरासंध-वंशी मगधनरेश । **–श्मश्रु**–वि० जिसे दाढ़ी-मूँछ न निकली हो, अल्पवयस्क ।

अजातारि–पु० (सं०) युधिष्ठिर ।

अजाति–वि० (सं०) जिसकी कोई जाति न हो; जो उत्पन्न न हुआ हो, अनादि । स्त्री० उत्पत्तिका अभाव ।

अजाती–वि० जातिसे निकाला हुआ, विरादरीसे खारिज ।

अजादनी–स्त्री० (सं०) जवासका एक भेद ।

अज़ान–वि० अज्ञान, अनजान; नासमझ; अज्ञात । पु० नासमझी, अनभिज्ञता (मेंके साथ); एक वृक्ष । **–पन**–पु० नासमझी । **–में**–अनजानमें, अज्ञानवश ।

अज़ान–स्त्री० (अ०) नमाजके समयकी सूचना जो मस्जिदकी छत या दूसरी ऊँची जगहपर खड़े होकर दी जाती है, बाँग । मु० **–देना**–ऊँचे स्थानपर खड़ा होकर ऊँचे स्वरसे नमाजके समयकी सूचना देना; मुर्गेका बाँग देना ।

अजानता*–स्त्री० अज्ञान, अबोधता ।

अजानि–वि० (सं०) पत्नीरहित, विधुर ।

अजानिक–पु० (सं०) छागपालक । वि० दे० 'अजानि' ।

अजानेय–पु० (सं०) अच्छी जातिका घोड़ा ।

अज़ाब–पु० (अ०) पापके बदलेमें मिलनेवाला दुःख; गुनाहकी सजा; पाप 'न जानें कौन-सा अज़ाब किया है'–सरिता । पीड़ा; झंझट, वखेड़ा । **–के फ़िरिश्ते**–वे फ़िरिश्ते जो पापियोंको दंड देनेपर नियुक्त हैं (मुसल०) । मु० **–मोल लेना**–अकारण कष्ट, झंझटमें पड़ना ।

अजामिल–पु० (सं०) पुराण-वर्णित एक पातकी जो मरते समय अपने वेटे 'नारायण'का नाम लेनेसे सद्गति पा गया ।

अजाय–*वि० बेजा, अनुचित; (सं०) पत्नीरहित ।

अजायब–पु० (अ०) अद्भुत, अनोखी वस्तुओंका समूह या संग्रह ('अजीव'का बहु०) । **–ख़ाना, घर**–पु० कला तथा पुरातत्व संवंधी वस्तुओं, विविध प्रकारके पशुपक्षियों, (जीवित तथा मृत), और तरह तरहके परिधानों, हथियारों, बर्तनों, आदिके संग्रह एवं प्रदर्शनका स्थान, अद्भुतालय, म्यूजियम ।

अजाया*–वि० मरा हुआ, मृत ।

अजार*–पु० बीमारी, कष्ट ।

अजि–वि० (सं०) जानेवाला, गमन करनेवाला । स्त्री० गति; गमन; फेंकनेकी क्रिया ।

अजिऔरा–पु० आजीके पिताका घर ।

अजित–वि० (सं०) जिसे कोई जीत न सका हो; अपराजित; अजेय । पु० विष्णु; शिव; बुद्ध; एक विषैला मूषक; पहले मन्वंतरका एक देववर्ग । **–नाथ**–पु० जैनियोंके दूसरे तीर्थंकर । **–बला**–स्त्री० एक जैन देवी । **–विक्रम**–वि० जिसका विक्रम अपराजित हो । पु० द्वितीय चंद्रगुप्तकी उपाधि ।

अजिता–स्त्री० (सं०) भाद्रपद-कृष्णा एकादशी ।

अजितेंद्रिय–वि० (सं०) जिसे अपनी इंद्रियोंपर अधिकार न हो, असंयमी, विषयासक्त ।

अजिन–पु० (सं०) खाल, चर्म; कृष्ण मृग, व्याघ्र आदिका चमड़ा; एक तरहकी चमड़ेकी थैली; धौंकनी; छाल । **पत्रा,–पत्रिका,––पत्री**–स्त्री० चमगादड़ । **–योनि**–पु० हिरन । **–वासी (सिन्)**–वि० मृगचर्म धारण करनेवाला । **–संध**–पु० मृगचर्मका व्यवसाय करनेवाला ।

अजिया–वि० आजा या आजीके समकक्ष (–ससुर,–सास) ।

अजिर–पु० (सं०) आँगन; शरीर; वायु; इंद्रिय-विषय; छछूंदर; मेढक । वि० शीघ्रगामी । **–वती**–स्त्री० एक नदी जो अब राप्ती कहलाती है ।

अजिरा–स्त्री० (सं०) एक नदी; दुर्गा ।

अजिरीय–वि० (सं०) आँगन-संवंधी ।

अजिह्म–वि० (सं०) सरल, जो टेढ़ा न हो; ईमानदार, खरा । पु० मेढक; मछली । **–ग**–वि० सीधा जानेवाला । पु० बाण ।

अजिह्व–वि० (सं०) जिह्वारहित । पु० मेढक ।

अजी–अ० संबोधन, 'एजी'का लघु रूप (बराबरवालोंके लिए व्यवहृत) ।

अजीकव–पु० (सं०) दे० 'अजकव' ।

अजीगर्त–पु० (सं०) साँप; एक भृगुवंशी ब्राह्मण, शुनःशेफका पिता ।

अज़ीज़–वि० (फ़ा०) प्रिय, प्यारा । पु० निकट संवंधी; मिस्रके पुराने बादशाहोंकी उपाधि । **–दार**–पु० दोस्त; रिश्तेदार । **–दारी**–स्त्री० दोस्ती; रिश्तेदारी । मु० **–करना**–प्यारा जानना । **–जानना,–रखना**–कद्र करना, प्यारा समझना, चाहना । **–होना**–प्यारा होना; (किसी चीजके) देनेमें संकोच होना ।

अज़ीज़ी–स्त्री० बड़ाई; दोस्ती; इज्जत ।

अजीटन–पु० एक सहायक फौजी अफसर, 'एडजुटेंट' ।

अजीत–वि० (सं०) जो मुझाया हुआ न हो, जो मंद न पड़ा हो; *अजित; अजेय ।

अजीति–स्त्री० (सं०) अभ्युदय; क्षयराहित्य ।

अजीब–वि० (अ०) अद्भुत, अनोखा । **–व(बो) गरीब**–वि० अनोखा; दुष्प्राप्य ।

अजीरन–पु० दे० 'अजीर्ण' । मु० **–होना**–भारी, दूभर होना (लो अजीरन अभीसे हो गये हम); कठिन होना ।

अजीर्ण–पु० (सं०) अपच, बदहजमी; अतिरेक, अतिशयता;

शक्ति; क्षयाभाव। वि० जो पचा न हो; जो गला न हो; जो बूढ़ा या पुराना न हुआ हो।

अजीर्ण, अजीर्ति–स्त्री० (सं०) अपच, बदहजमी।

अजीर्णी(र्णिन्)–वि० (सं०) अजीर्ण रोगवाला।

अजीव–वि० (सं०) जीव-रहित, मृत; जड। पु० मृत्यु; अस्तित्व-हीनता; जड पदार्थ; जड जगत् (जैन)।

अजीवन–वि० (सं०) जीविकारहित। पु० जीवन या अस्तित्वका अभाव, मृत्यु।

अजीवित–वि० (सं०) मृत। पु० मृत्यु।

अजुगत, अजुगुत–पु० दे० 'अजगुत'। वि० अयुक्त; असंभव।

अजुगुप्सित–वि० (सं०) जो बुरा न समझा गया हो, जो नापसंद न किया गया हो।

अजू*–अ० दे० 'अजी' (व्रज)।

अजूबा*–पु० एक मुर्दाखोर जानवर।

अजूबा–पु० (अ०) अनोखी, अचरजमें डालनेवाली चीज। वि० अजीब।

अजूरा*–वि० न जुड़ा हुआ; पृथक्; अप्राप्त। पु० मजदूरी।

अजूह*–पु० युद्ध।

अजे, अजेइ, अजै*–वि० दे० 'अजेय'।

अजेतव्य–वि० (सं०) दे० 'अजेय'।

अजेय–वि० (सं०) जिसे कोई जीत न सके।

अजैकपाद–पु० (सं०) एक रुद्र; विष्णु।

अजैव–वि० (सं०) जो जीव-संबंधी न हो; अप्राणिज (इन-ऑर्गेनिक)।

अजोग*–वि० अनुचित, अयोग्य; बेमेल, बेजोड़।

अजोतर*–वि० स्वच्छंद।

अजोरना*–स० क्रि० छीनना, हरण करना; बटोरना; अँजोरना, प्रकाशित करना।

अजौं*–अ० आज भी; आजतक, अबतक।

अज्ज*–अ० आज।

अज्जान*–अ० आजानु, घुटनेतक।

अज्जूका, अज्जका–स्त्री० (सं०) वेश्या (ना०)।

अज्झटा–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी।

अज्झल–पु० (सं०) ढाल; अंगारा।

अज्ञ–वि० (सं०) ज्ञान-रहित; मूर्ख, नासमझ; अचेतन।

अज्ञता–स्त्री०, **अज्ञत्व**–पु० (सं०) अज्ञान, नासमझी; अचेतनता।

अज्ञा*–स्त्री० दे० 'आज्ञा'।

अज्ञात–*अ० बिना जाने। वि० (सं०) न जाना हुआ; अप्रकट; अप्रत्याशित। **–कुल**–वि० जिसके कुल आदिका पता न हो। **–चर्या**–स्त्री० छिपकर रहना, गुप्तवास। **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम ज्ञात न हो; अप्रसिद्ध। **–पितृक**–वि० जिसके बापका पता न हो; रामजना। **–पूर्व**–वि० जो पहलेसे ज्ञात न हो। **–यौवना**–स्त्री० मुग्धा नायिका जिसे यौवनागमका पता न हो। **–वास**–पु० गुप्तवास। **–स्वामिक**–वि० (वह धन) जिसके स्वामीका पता न हो।

अज्ञातक–वि० (सं०) अविदित, अप्रसिद्ध।

अज्ञाता–स्त्री० (सं०) दे० 'अज्ञातयौवना'।

अज्ञाति–पु० (सं०) वह व्यक्ति जो संबंधी न हो।

अज्ञान–पु० (सं०) ज्ञानका अभाव; मिथ्या ज्ञान, अविद्या। वि० ज्ञान-रहित, मूर्ख। **–कृत**–वि० अनजानमें किया हुआ; अज्ञता, अज्ञानवश किया हुआ। **–तिमिर**–पु० अज्ञानरूप अंधकार।

अज्ञानतः(तस्)–अ० (सं०) अज्ञानके कारण, अज्ञानवश (किया हुआ)।

अज्ञानता–स्त्री०, **अज्ञानपन**–पु० मूर्खता, नादानी, नासमझी।

अज्ञानी(निन्)–वि० (सं०) अज्ञ, मूर्ख, नासमझ।

अज्ञेय–वि० (सं०) जो जाना न जा सके, ज्ञानातीत; जो जानने योग्य न हो। **–वाद**–पु० ईश्वर या परमतत्त्व अज्ञेय है–यह मत।

अज्येष्ठ–वि० (सं०) जो सबसे बड़ा या सर्वश्रेष्ठ न हो; जिसके बड़ा भाई न हो।

अज्यों*–अ० दे० 'अजौं'।

अझर*–वि० जो न झरे; न बरसनेवाला (बादल)।

अझूना*–पु० आग–'बारि दियौ हियेमैं उदेगको अझूनो है'–घन०; वि० अजूना, जो जीर्ण न हो।

अझोरी*–स्त्री० झोली (जो कंधेपर लटकायी जाती है)।

अटंबर–पु० ढेर, राशि।

अट–स्त्री० प्रतिबंध, शर्त।

अटक–स्त्री० रोक; अड़चन, उलझन, हिचक; अकाज; एक नदी। पु० इस नामका एक नगर। वि० (सं०) भ्रमण करनेवाला, भ्रमणशील।

अटक†–स्त्री० जरूरत–'तीसरीकी अटक भी क्या है। तुम्हारे और भैयाके लिए एक ही मच्छरी बहुत है'–मृग०।

अटकन–स्त्री० रोका; अड़चन, उलझन, हिचक; अकाज।

अटकन-बटकन–पु० बच्चोंका एक खेल। **मु०–खेलना**–बेकार काम करना।

अटकना–अ० क्रि० रुकना; बोलने या पढ़नेमें रुकना; उलझना; बहस करना; गलेसे न उतरना; प्रेमपाशमें बँधना।

अटकर*–स्त्री० दे० 'अटकल'।

अटकरना, अटकलना–स० क्रि० अनुमान करना, अंदाज लगाना।

अटकल–स्त्री० अंदाजा, अनुमान; पहचान। **–पच्चू**–वि० अंदाजी, अनुमानाश्रित। अ० अंदाजन, अटकलके सहारे। **–बाज़**–वि० जो अटकल लगानेमें तेज हो, अनुमान-कुशल। **–बाज़ी**–स्त्री० अटकल लगाना।

अटका–पु० जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात। †स्त्री० रुकावट; जरूरत (बुंदेल०)।

अटकाना–स० क्रि० रोकना; उलझाना; देर लगाना।

अटकाव–पु० प्रतिबंध, रुकनेका भाव, रुकावट; अड़चन, बाधा।

अटखट*–वि० अंड-बंड; टूटा-फूटा (सामान)।

अटखेली–स्त्री० दे० 'अठखेली'।

अटन–पु० (सं०) चलना; घूमना, भ्रमण। वि० भ्रमणशील।

अटना–अ० क्रि० पूरा पड़ना, काफी होना; बीचमें पड़कर ओट करना; अटन करना, भ्रमण या यात्रा करना।

अटनि, अटनी–स्त्री० (सं०) धनुष्का अग्रभाग जहाँ डोरी बाँधनेके लिए गड्ढा बना होता है।

अटपट*–वि० दे० 'अटपटा'। स्त्री० कठिनाई।

अटपटा–वि० टेढ़ा, कठिन; ऊटपटाँग; अनोखा; *लड़खड़ाता हुआ।

अटपटाना*–अ० क्रि० अटकना; घबराना; हिचकना; लड़खड़ाना।

अटपटी*–स्त्री० नटखटी, शरारत।

अटब्बर*–पु० आडंबर; कुटुंब।

अटरुष, अटरूष, अटरूषक–पु० (सं०) वासक, अड़ूसा।

अटल–वि० अचल; नित्य; स्थिर, निश्चित, अवश्यंभावी, दृढ़, पक्का।

अटवाटी-खटवाटी–स्त्री० खाट-खटोला, बोरिया-बँधना। **मु०–लेकर पड़ना**–रूठकर अलग जा बैठना।

अटवि, अटवी–स्त्री० (सं०) वन। **–बल**–पु० जंगलियोंकी सेना।

अटविक–पु० (सं०) दे० 'आटविक'।

अटहर–पु० ढेर; फेंटा; अड़चन।

अटा–स्त्री० अटारी; (सं०) पर्यटन; भ्रमणशीलता, घूमनेकी आदत (सन्न्यासियोंकी)। * पु० अटाला, ढेर।

अटाउ*–पु० बिगाड़; शरारत।

अटाटूट–वि० अनगिनत, बेशुमार।

अटारी–स्त्री० कोठा, अट्टालिका; दो या अधिक खंडोंवाला मकान।

अटाला–पु० ढेर, अंबार; असबाब; कसाइयोंकी बस्ती।

अटाला†–पु० अट्टालिका, महल।

अटी–स्त्री० चाहा नामकी चिड़िया।

अटूट–वि० न टूटनेवाला, दृढ़, मजबूत; अखंडित; न चुकनेवाला, बहुत, अपार; अजेय।

अटेरन–पु० सूतकी आँटी बनानेका यंत्र; कुश्तीका एक पेंच; घोड़ा फेरनेका चक्कर। वि० दुबला; शीर्ण। **–कावा**–पु० बाँधकर

घोड़ेको चक्कर देनेका एक खास तरीका । **मु०–कर देना**–हरा देना, थका देना । **–फेरना**–घोड़ेको कावा देना । **–होना**–बहुत दुबला हो जाना ।

अटेरना–स० क्रि० सूतकी आँटी बनाना; † बहुत अधिक शराब पीना ।

अटैची–स्त्री० (अं०) चमड़े आदिकी बनी हलकी छोटी पेटी; राजदूतावासका एक कर्मचारी (अटैशे) ।

अटोक*–वि० प्रतिबंध-हीन ।

अट्ट–वि० (सं०) ऊँचा, उच्चस्वरयुक्त; सूखा हुआ; निरंतर । पु० कोठा, अटारी; महल; बुर्ज; अन्न; भात; हाट; रेशमी कपड़ा; वध; घायल करना; अतिशयता; प्राधान्य । **–स्थली**–स्त्री० महलोंसे भरा हुआ नगर या देश । **–हसित,–हास,–हास्य**–पु० जोरकी हँसी, ठहाका । **–हासक**–पु० कुंदका फूल और पौधा । वि० अट्टहास करनेवाला । **–हासी(सिन्)**–वि० अट्टहास करनेवाला । पु० शिव ।

अट्टक–पु० (सं०) कोठा; महल; बालाखाना ।

अट्टन–पु० (सं०) एक चक्राकार आयुध; उपेक्षा, अवमानना ।

अट्टसट्ट–वि० अंडबंड, अगड़म-बगड़म । पु० निरर्थक बात ।

अट्टा–पु० मचान; अटारी ।

अट्टाट्टहास–पु० (सं०) दे० 'अट्टहास' ।

अट्टाल, अट्टालक–पु० (सं०) अटारी; बालाखाना; महल; किलेका बुर्ज ।

अट्टालिका–स्त्री० (सं०) अटारी; महल; पक्की इमारत । **–कार**–पु० राज ।

अट्टी–स्त्री० सूत या उनका लच्छा ।

अट्ठा–पु० ताशका वह पत्ता जिसपर आठ बूटियाँ हों ।

अट्ठाइस, अट्ठाईस–वि० बीस और आठ । पु० २८ की संख्या ।

अट्ठानवे–वि० नब्बे और आठ । पु० ९८ की संख्या ।

अट्ठारह–वि०, पु० दे० 'अठारह' ।

अट्ठावन–वि० पचास और आठ । पु० ५८ की संख्या ।

अट्ठासी–वि० अस्सी और आठ । पु० ८८ की संख्या ।

अट्या–स्त्री० (सं०) परिभ्रमण, पर्यटन ।

अटंग*–पु० अष्टांग योगकी साधना करनेवाला ।

अठ–आठका समासमें प्रयुक्त रूप । **–करी**–स्त्री० दे० 'अठवाली' । **–पतिया**–स्त्री० एक तरहकी नक्काशी । **–पहला**–वि० आठ पहलोंवाला, जिसमें आठ पार्श्व हों । **–पृष्ठी,–पेजी**–वि० (आक्टेवो) (छपी हुई पुस्तक या फार्मका वह आकार) जिसमें एक ही तरफ छपे हुए कागजमें आठ पृष्ठ किये गये हों । **–मासा**–पु० दे० 'अठवाँसा' । **–वाँसा**–पु० गर्भके आठवें महीने होनेवाला संस्कार; आठ ही मासमें जन्म लेनेवाला बच्चा; वह खेत जो आठ महीनेतक जोतकर बिना बोये छोड़ दिया गया हो । वि० आठ ही मासमें उत्पन्न होनेवाला । **–वारा**–पु० आठ दिनका समय । **–वाली**–स्त्री० आठ कहारोंसे चलनेवाली पालकी; सेंगरेसे उठानेके लिए भारी चीजमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा । **–सिल्या***–पु० (?) सिंहासन ।

अठइसी–स्त्री० २८ गाही फलोंकी संख्या ।

अठई*–स्त्री० अष्टमी ।

अठकौसल–पु० पंचायत; मंत्रणा, सलाह ।

अठखेल–वि० शोख, चुलबुला, खिलाड़ी (अप्र०) । **–पन**–पु० चुलबुलापन, शोखी ।

अठखेली–स्त्री० किलोल; शोखी, चुलबुलापन; ठसकभरी या मस्तानी चाल । (प्रायः बहुवचनमें ही व्यवहृत ।) **मु०–(लियाँ) करना**–किलोल करना, इतराकर, नाजके साथ चलना ।

अठत्तर–वि०, पु० दे० 'अठहत्तर' ।

अठन्नी–स्त्री० आठ आनेका सिक्का ।

अठपाव*–पु० शरारत, नटखटी ।

अठलाना*–अ० क्रि० दे० 'इठलाना' ।

अठवना*–अ० क्रि० जमना, ठनना ।

अठहत्तर–वि० सत्तर और आठ । पु० ७८ की संख्या ।

अठाई–वि० उत्पाती; नटखट ।

अठान–वि० न ठानने, न करने योग्य (काम); कठिन (काम) । पु० वैर, विरोध ।

अठाना–स० क्रि० सताना; ठानना; छेड़ना; जमाना ।

अठार*–वि०, पु० अठारह (वीसल०) ।

अठारह–वि० दस और आठ । पु० १८ की संख्या ।

अठासी–वि०, पु० दे० 'अट्ठासी' ।

अठिलाना–अ० क्रि० दे० 'इठलाना' ।

अठी*–पु० सिपाही, योद्धा (रासो) ।

अठोठ*–पु० ढोंग, आडंबर ।

अठोतर सौ–वि० एक सौ आठ ।

अठोतरी–स्त्री० एक सौ आठ दानोंकी माला ।

अठौरा–पु० वह खोंगी जिसमें पानके आठ बीड़े रखे हों ।

अड़ंग–वि० दे० 'अडिग' ।

अड़ंगा–पु० अटकाव, रोक, रुकावट, बाधा; कुश्तीका एक पेंच । **–(गे)बाज**–पु० अड़ंगे लगानेवाला । **–बाजी** स्त्री० अड़ंगा लगाना । **मु० –(गा) डालना,–लगाना**–अड़चन डालना, होते हुए कार्यमें बाधक होना । **–मारना**–अड़ंगेका पेंच करना; विघ्न डालना ।

अडंड*–वि० अदंड्य, जिसे दंड न दिया जा सके ।

अडंबर*–पु० दे० 'आडंबर' ।

अड़–स्त्री० अड़नेकी क्रिया, टेक, हठ । **–गड़ा**–पु० बैलगाड़ियोंके ठहरने या बैलों आदिके बिकनेका स्थान । **–गोड़ा**–पु० नटखट चौपायोंके गलेमें लटकायी जानेवाली लकड़ी जो तेज दौड़नेमें बाधक होती है । **–डंडा**–पु० मस्तूलमें बँधा रहनेवाला पाल चढ़ानेका डंडा । **–तल**–पु० ओट; बहाना; आश्रय; छाया । (**मु० –*पकड़ना,–*लेना**–पनाह ढूँढ़ना या पनाहमें आना ।) **–दार**–वि० अड़नेवाला; मस्त (हाथी) ।

अड़काना†–स० क्रि० अड़ाना, टिकाना; उलझाना ।

अडग–वि० न डिगनेवाला, स्थिर ।

अड़चन, अड़चल–स्त्री० रुकावट, बाधा ।

अड़पोपो†–पु० हस्तरेखाविद्; आडंबर फैलानेवाला ।

अड़तालिस, अड़तालीस–वि० चालीस और आठ । पु० ४८की संख्या ।

अड़तीस–वि० तीस और आठ । पु० ३८ की संख्या ।

अड़ना–अ० क्रि० रुकना; अटकना; हठ करना ।

अड़पना–स० क्रि० डाँटना-डपटना ।

अड़बंग, अड़बंगा†–वि० टेढ़ा, विकट; विलक्षण, बेढब; टेढ़े मिजाजवाला ।

अडर*–वि० निडर ।

अड़व–पु० एक राग जिसमें पाँच स्वर लगते हैं ।

अड़सठ–वि० साठ और आठ । पु० ६८ की संख्या ।

अड़हुल–पु० लाल रंगका एक फूल जो देवीको चढ़ाया जाता है, जपाकुसुम ।

अड़ाअड़ी–स्त्री० होड़, लाग-डाट ।

अड़ाड़–पु० चौपायोंको रखनेका घेरा, खरक; अड़ार ।

अड़ान–पु० रुकनेकी जगह; पड़ाव ।

अड़ाना–स० क्रि० रोकना, अटकाना; डाट लगाना; ठूँसना; ढरकाना । पु० एक राग; डाट; थूनी ।

अड़ानी–पु० बड़ा पंखा । स्त्री० कुश्तीका एक पेंच, अड़ंगा; लकड़ीकी रोक जो खिड़की-दरवाजेमें लगायी जाती है ।

अड़ायती*–वि० आड़ करनेवाला ।

अड़ार–पु० ढेर; जलानेकी लकड़ीका ढेर; लकड़ीकी दुकान । *वि० नुकीला; तिरछा ।

अड़ारना*–स० क्रि० डालना; देना ।

अड़ाल–पु० (सं०) एक तरहका नाच, मयूर-नृत्य ।

अडिग–वि० जो अपनी जगहसे डिगे नहीं, अटल ।

अड़ियल–वि० अड़कर चलनेवाला; मट्ठर; हठी ।

अड़िया–स्त्री० साधुओंकी कुबड़ी; गारा, चूना ढोनेका बरतन, अढिया ।

अड़िल्ल–पु० दे० 'अरिल्ल' ।

अड़ी–स्त्री० दे० 'अड़'; जरूरतका वक्त ।

अडीठ–वि० जो दिखाई न दे; गुप्त ।

अडुचल–पु० (सं०) हलका एक भाग ।

अडूलना*–स० क्रि० ढालना, उड़ेलना ।

अड़ूसा–पु० एक पौधा जिसके पत्तों और फूलोंका रस कास-श्वाँस-की उत्तम औषधि है ।

अडोर–पु० शोर-गुल, अंदोर ।

अडोल*–वि० अटल, अडिग; स्तब्ध ।

अड़ोस-पड़ोस–पु० आस-पास, पास-पड़ोस ।

अड़ोसी-पड़ोसी–पु० पास-पड़ोसमें रहनेवाले ।

अड्डन–पु० (सं०) ढाल ।

अड्डा–पु० मिलने या इकट्ठा होनेकी जगह; चोरों, जुआरियों, रंडियों आदिके मिलनेकी जगह; कुटनियोंका डेरा; डोली ढोनेवाले कहारोंके रहनेका स्थान; इक्कों, ताँगों आदिके रुकने, ठहरनेकी जगह; किसीके उठने-बैठनेकी खास जगह; केंद्रस्थान; चिड़िया-के बैठनेके लिए लगी आड़ी लकड़ी या छड़; कबूतरोंकी छतरी; कपड़ेका गद्दा जिसपर छीपी कपड़ा रखकर छापते हैं; जुलाहेका करघा; जाली काढ़नेका चौखटा; वह ढाँचा जिसपर बैठाकर गोटा बुनते हैं; † पुलिस चौकी ।

अड्डी–स्त्री० लंबी चीजें छेदनेका बरमा; जूतेका किनारा ।

अढ़उल–पु० अड़हुलका फूल ।

अढ़तिया–पु० आढ़तका कारबार करनेवाला, एजेंट ।

अढन*–स्त्री० मर्यादा ।

अढ़ना*–अ० क्रि० लगना–'रीझनि भीजे सुधारत स्याम सदा घन आनँद ऐंड़ अढ़ी है'–घन० ।

अढ़वना*–स० क्रि० आज्ञा देना ।

अढ़वायक†–पु० वह व्यक्ति जो दूसरोंको काम करनेका आदेश दे या कामपर नियुक्त करे ।

अढ़वैया†–पु० दे० 'अढ़वायक' ।

अढ़िया†–स्त्री० काठ या पत्थरका बना हुआ छोटा बरतन; लोहेकी हलकी छोटी कड़ाही जिसमें मजदूर गारा आदि ढोते हैं ।

अढ़ी*–वि०, स्त्री० करनेवाली; युक्त ।

अढुक*–पु० ठोकर ।

अढुकना*–अ० क्रि० ठोकर खाना; रुकना; सहारा लेना ।

अढ़ैया–पु० ढाई सेरकी तौल या बाट; ढाईगुनेका पहाड़ा; आदेश देनेवाला ।

अणक–वि० (सं०) बहुत छोटा; तुच्छ, कुत्सित, अधम । पु० एक तरहका पक्षी ।

अणकीय–वि० (सं०) तुच्छ वस्तु-संबंधी ।

अणव्य–पु० (सं०) चीना आदि जैसे धान्य उत्पन्न करनेका क्षेत्र ।

अणि–स्त्री० (सं०) अनी, नोक; धार; धुरीकी कील; घरका कोना; सीमा ।**–मांडव्य**–पु० एक ब्राह्मण ऋषि (कहा जाता है कि इन्हें सूली दी गयी थी) ।

अणिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) अणुत्व; सूक्ष्मता; योगकी ८ सिद्धियोंमेंसे पहली जिससे योगी अणुरूप ग्रहण करके अदृश्य हो सकता है ।

अणिमादिक–स्त्री० (सं०) अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व) ।

अणियाला*–वि० अनियारा, नुकीला ।

अणी–स्त्री० (सं०) दे० 'अणि' । * अ० अरी ।

अणु–पु० (सं०) पदार्थका सबसे छोटा इंद्रिय-ग्राह्य विभाग या मात्रा; यौगिक या तत्त्वका सबसे छोटा कण जो स्वतंत्र रूपसे अपना अस्तित्व बनाये रख सके, तथा उस यौगिक या तत्त्वके सभी गुण प्रदर्शित कर सके। (मालेक्यूल) । ६० परमाणुओंका संघात; परमाणु; कण, जर्रा; मात्राका चतुर्थांश (छंद); एक मुहूर्त (४८ मिनट)का ५,४६,७५,००० वाँ भाग; संगीतमें तीन तालके कालका चतुर्थांश; सरसों, कंगनी जैसे धान्य; शिव । वि० अतिसूक्ष्म ।**–बम**–पु० (ऐटम बम) एक अतिसंहारकारी बम । **–भा**–स्त्री० बिजली । **–भाष्य**–पु० ब्रह्मसूत्रपर वल्लभाचार्यका भाष्य । **–मात्र, –मात्रिक**–वि० अणुके आकारका । **–रेणु**–पु० बहुत छोटे कण (जैसे सूर्यरश्मिमें दिखाई देते हैं) । **–रेवती**–स्त्री० दंती वृक्ष । **–वाद**–पु० जीवको अणु माननेवाला दर्शन, वल्लभा-चार्यका मत; अणुको नित्य और प्रपंचका कारण माननेवाला सिद्धांत, न्याय-वैशेषिक दर्शन । **–वादी(दिन्)**–वि० अणुवादका अनुयायी । **–वीक्षण यंत्र**–पु० सूक्ष्मदर्शी यंत्र, खुर्दबीन, 'माइक्रोस्कोप' । **–व्रत**–पु० जैनधर्मके अनुसार गृहस्थधर्मका एक अंग । **–व्रीहि**–पु० छोटा धान्य; एक बढ़िया धान, मोतीचूर ।

अणुक–वि० (सं०) अणुवत् सूक्ष्म । पु० सरसों जैसे धान्य ।

अणोरणीयान्(यस्)–वि० (सं०) छोटेसे छोटा, अतिसूक्ष्म (ईश्वर-का विशेषण) । पु० उपनिषद्का एक मंत्र ।

अण्वंत–पु० (सं०) बालकी खाल निकालनेवाला प्रश्न ।

अतंक–पु० दे० 'आतंक' ।

अतंत†–वि० दे० 'अत्यंत' ।

अतंत्र–वि० (सं०) तंत्र या तंतु-रहित । पु० अनियंत्रित कार्य ।

अतंद्र–वि० (सं०) तंद्रारहित, जागरूक, सतर्क ।

अतंद्रित, अतंद्रिल, अतंद्री(द्रिन्)–वि० (सं०) दे० 'अतंद्र' ।

अतः(तस्)–अ० (सं०) इसलिए, इस कारण; अबसे; इस स्थान-से; इससे, इसकी अपेक्षा । **–परम्**–अ० अबसे आगे ।

अतऊर्ध्वम्–अ० (सं०) आगे, अबसे, बादमें ।

अतएव–अ० (सं०) इसलिए, इस कारण; इसीसे ।

अतट–वि० (सं०) तटहीन; खड़ी ढालवाला । पु० खड़ी ढालवाला पहाड़ या चट्टान; पहाड़की चोटी; जमीनका निचला भाग, अतल । **–प्रपात**–पु० सीधा गिरनेवाला झरना ।

अतथ्य–वि० (सं०) जो तथ्य न हो; असत्य, अयथार्थ, गलत ।

अतद्गुण–पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें संगति आदि कारण मौजूद होते हुए दूसरेका गुण ग्रहण न करना दिखाया जाता है ।

अतद्वत्–वि० (सं०) जो उसके सदृश न हो ।

अतनु–वि० (सं०) देहरहित; मोटा; पु० अनंग, कामदेव ।

अतप–वि० (सं०) ठंढा, अनुत्तेजित; आडंबरहीन; जो किसी काममें न लगा हो, निठल्ला ।

अतप्त–वि० (सं०) जो तपा या गरम न हो । **–तनु**–वि० जिसने तप्त मुद्रा न धारण की हो; बिना छापका । पु० बिना छापका मनुष्य ।

अतमा(मस्)–वि० (सं०) अंधकाररहित ।

अतमाविष्ट–वि० (सं०) जो अंधकारसे आच्छन्न न हो ।

अतमिस्र–वि० (सं०) जो अंधकाराच्छन्न न हो ।

अतर–पु० इत्र, पुष्पसार । **–दान**–पु० अतर रखनेका पात्र ।

अतरल–वि० (सं०) जो तरल या द्रव न हो, गाढ़ा, ठोस ।

अतरवन–पु० छज्जा पाटनेकी पत्थरकी पटिया; छाजनमें खपरोंके नीचे फैलायी जानेवाली मूँज या इस तरहका और कोई तृण ।

अतरसों–अ० परसोंके बाद या पहलेका दिन, आजसे बादका या पहलेका चौथा दिन ।

अतरिख*–पु० दे० 'अंतरिक्ष' ।

अतर्क–वि० (सं०) तर्कहीन, असंगत, अहेतुक । पु० तर्कका अभाव; तर्कहीन बहस करनेवाला ।

अतर्कित–वि० (सं०) अनसोचा, अननुमित; आकस्मिक ।

अतर्क्य–वि० (सं०) तर्क न करने योग्य; अचिंत्य, जिसका अनुमान न किया जा सके; जो तर्क द्वारा समझमें न आ सके ।

अतल–पु० (सं०) सात अधोलोकोंमेंसे पहला; शिव । वि० तलहीन, अथाह । **–स्पर्श, स्पर्शी(र्शिन्)**–वि० बहुत गहरा, अथाह ।

अतलस–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

अतलांतक–पु० वह महासागर जिसके पूर्वी तटपर अफ्रीका और यूरोप तथा पश्चिमी तटपर अमेरिका महाद्वीप है । (अं० 'ऐटलांटिक' ।)

अतवान–वि० बहुत अधिक ।

अतवार–पु० रविवार ।

अतस–पु० (सं०) वायु; आत्मा; अतसीके रेशोंसे बना हुआ कपड़ा; एक अस्त्र; गुल्म, क्षुप ।

अतसी–स्त्री० (सं०) अलसी; पटसन ।

अता–पु० (अ०) दान, वख्शिश । **–नामा** पु० वख्शिशनामा, दानपत्र । **–वख्श**–वि० उदार, सख़ी । **मु०–करना,–फरमाना –देना ।–होना**–मिलना ।

अताई–वि० जिसने खुद सीखा हो, जो विना सीखे हुए कोई काम करे; चतुर, चालाक, दक्ष; अनाड़ी; जिसे ईश्वरकी देनके रूपमें कोई विद्या प्राप्त हुई हो (व्य०) । पु० वह गवैया या वैद्य जिसने अपने कामकी शिक्षा न पायी हो । **–नुस्खा**–पु० फकीरी नुस्खा; इधर-उधरसे सीखा हुआ नुस्खा ।

अताना–पु० मालकोस रागकी एक रागिनी ।

अतापी*–वि० तापरहित; शांत ।

अतारांकित प्रश्न–पु० (अन स्टार्ड क्वेश्चन) विधानसभा आदिके अधिवेशनमें प्रश्नोत्तरके समय पूछा जानेवाला वह प्रश्न जिसमें तारांक लगाकर विभेद न किया गया हो और जिसका उत्तर मौखिक न देकर लिखित दिया जाय ।

अतालीक़–पु० (अ०) शिक्षक, गुरु ।

अति–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो संज्ञाके पूर्व आनेपर अतिशयता, सीमोल्लंघन, श्रेष्ठता, प्रशंसा आदिकी और विशेषण तथा अव्ययके पूर्व आनेपर आधिक्यका सूचन करता है । स्त्री० अधिकता, अतिशयता, अतिरेक; सीमोल्लंघन ।

अति-उत्पादन–पु० (ओवर-प्रॉडक्शन) खपत या माँगसे अधिक मात्रामें पण्य वस्तुओंका उत्पादन, 'अत्युत्पादन' ।

अतिकंदक–पु० (सं०) हस्तिकंद नामक पौधा ।

अतिकथ–वि० (सं०) अतिरंजित, अविश्वसनीय; कहनेके अयोग्य; मृत, नष्ट; समाजके नियमोंको न माननेवाला ।

अतिकथा–स्त्री० (सं०) अतिरंजित कहानी; निरर्थक भाषण ।

अतिकर्षण–पु० (सं०) वहुत अधिक परिश्रम ।

अतिकांत–वि० (सं०) वहुत अधिक प्यारा ।

अतिकाय–वि० (सं०) भारी डील-डौलवाला; विशालकाय । पु० रावणका एक बेटा ।

अतिकाल–पु० (सं०) वेलाका बीत जाना, अबेर ।

अतिकृच्छ्र–पु० (सं०) वहुत वड़ा कष्ट; एक कठिन व्रत । वि० अति कठिन ।

अतिकृत–वि० (सं०) जिसे करनेमें अति या मर्यादाका अतिक्रम किया गया हो ।

अतिकृति–स्त्री० (सं०) मर्यादाका अतिक्रम; २५ वर्णोंवाले वृत्त ।

अतिकेशर–पु० (सं०) कुब्जक नामक पौधा ।

अतिक्रम, अतिक्रमण–पु० (सं०) सीमा या मर्यादाका उल्लंघन, हदसे आगे जाना, (एंक्रोचमेंट) अपनी भूमि, अधिकार, कर्तव्य आदिकी सीमाका उल्लंघन कर दूसरेकी भूमि, अधिकार आदिकी सीमामें प्रवेश, कब्जा या हस्तक्षेप करना, सीमोल्लंघन; (वायोलेशन) संधि आदिकी शर्तोंका अपालन या उल्लंघन; कर्तव्यका उल्लंघन; दुरुपयोग; प्रबल आक्रमण; बीतना; गुजरना (समयका); बढ़ जाना (बल, संख्या आदिका); जीतना, काबू पाना ।

अतिक्रांत–वि० (सं०) आगे बढ़ा हुआ; बीता हुआ, अतीत; क्रमका उल्लंघन किया हुआ । पु० बीती हुई बात । **–निषेध**–वि० जिसने निषेधाज्ञाका उल्लंघन किया हो । **–भावनीय**–पु० योगियोंका एक भेद ।

अतिक्रामक दृष्टि–स्त्री० सीमाओंको भेदकर असली, मूल तत्त्वको पहचाननेवाली दृष्टि ।

अतिक्रामक–पु० (सं०) क्रम या मर्यादाका उल्लंघन करनेवाला ।

अतिक्रुद्ध–वि० (सं०) बहुत नाराज । पु० एक तंत्रोक्त मंत्र ।

अतिक्रूर–वि० (सं०) बहुत निष्ठुर । पु० एक तंत्रोक्त मंत्र; क्रूर ग्रह, शनि आदि ।

अतिक्षिप्त–वि० (सं०) अत्यन्त दूर या सीमासे पार फेंका हुआ । पु० नस आदिकी मोच, मुरकन ।

अतिखट्व–वि० (सं०) चारपाईसे रहित या परे; चारपाईके अभावमें काम चला लेनेवाला ।

अतिगंड–वि० (सं०) जिसके कपोल बड़े हों । पु० एक तारा; एक योग; बड़ा कपोल; बड़े कपोलोंवाला व्यक्ति ।

अतिगंध–पु० (सं०) चंपाका पेड़ या फूल; भूतृण, मुद्गर आदि; गंधक । वि० तीक्ष्ण गंधवाला ।

अतिगंधालु–पु० (सं०) पुत्रदात्री लता ।

अतिगत–वि० (सं०) अतिको पहुँचा हुआ; अत्यधिक ।

अतिगति–स्त्री० (सं०) उत्तम गति; मुक्ति ।

अतिगव–वि० (सं०) अत्यन्त मूर्ख; वर्णनातीत ।

अतिगहन, अतिगह्वर–वि० (सं०) बहुत गहरा; जिसमें प्रवेश करना बहुत कठिन हो ।

अतिगुण–वि० (सं०) वहुत अच्छे गुणोंवाला; निकम्मा । पु० अच्छा गुण ।

अतिगुरु–वि० (सं०) वहुत भारी । पु० बहुत आदरणीय व्यक्ति, पिता आदि ।

अतिगुहा–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी नामक पौधा ।

अतिगो–स्त्री० (सं०) बहुत बढ़िया गाय ।

अतिग्रह–वि० (सं०) दुर्बोध । पु० ज्ञानेंद्रियोंका विषय; सही ज्ञान; आगे बढ़ जाना; बहुत ग्रहण करनेवाला व्यक्ति ।

अतिग्राह–पु० (सं०) दे० 'अतिग्रह' ।

अतिग्राह्य–वि० (सं०) नियंत्रणमें रखने योग्य । पु० ज्योतिष्टोम यज्ञमें लगातार तीन बार किया जानेवाला तर्पण ।

अतिघ–पु० (सं०) एक आयुध; क्रोध ।

अतिघ्न–वि० (सं०) अधिक नाश करनेवाला ।

अतिघ्नी–स्त्री० (सं०) ऐसी गहरी निद्रा या विस्मृति जिसमें अतीतकी सारी अप्रिय बातें भूल जायँ ।

अतिचर–वि० (सं०) बहुत परिवर्तनशील ।

अतिचरण–पु० (सं०) जितना करना हो उससे अधिक करना; (ट्रांसग्रेशन) सीमा या अधिकारके बाहर अनुचित रूपसे जाना, जिससे दूसरेके अधिकार या सुविधामें बाधा पहुँचे, 'उत्क्रमण' ।

अतिचरा–स्त्री० (सं०) एक लता, स्थलपद्मिनी ।

अतिचार–पु० (सं०) अतिक्रमण, आगे बढ़ जाना; एक राशिका भोगकाल समाप्त हुए बिना दूसरीमें चला जाना; मर्यादाका उल्लंघन; बहुत खेल-तमाशे देखनेका दोष ।

अतिचारी(रिन्)–वि० (सं०) अतिक्रमण करनेवाला, आगे निकल जानेवाला ।

अतिचालकता–स्त्री० (सुपर कन्डक्टिविटी) कतिपय धातुओं तथा मिश्रधातुओंको यदि–२७३ डिग्री सेण्टीग्रेडके आसपास तक ठण्डा किया जाय तो उस दशामें इनकी विद्युत्-चालकता अत्यधिक बढ़ जाती है—अत्यन्त निम्न तापपर इस प्रकार बढ़ी हुई विद्युत्-चालकताको 'अतिचालकता' नाम दिया गया है ।

अतिच्छत्र, अतिच्छत्रक–पु० (सं०) भूतृण, छत्रक ।

अतिच्छत्रका, अतिच्छत्रा–स्त्री० (सं०) दे० 'अतिच्छत्रक' ।

अतिजगती–स्त्री० (सं०) १३ वर्णोंके वृत्त ।

अतिजन–वि० (सं०) अवसित, जो आबाद न हो ।

अतिजव–पु० (सं०) आसाधारण गति, बहुत तीव्र गति । वि० अति वेगवान्, बहुत तेज चलनेवाला ।

अतिजागर–वि० (सं०) सदा जागता रहनेवाला, जागरूक । पु० नीला बगला ।

अतिजात–वि० (सं०) पितासे बढ़ा हुआ ।

अतिजीवन–पु० (सरवाइवल) अन्य व्यक्तियों, प्रजातियों, प्रथाओं आदिके समाप्त हो जानेके बाद भी किसी व्यक्ति, प्रजाति, प्रथा आदिका जीवित या बना रहना ।

अतिजीवी–पु० (औरोंकी अपेक्षा) अधिक समयतक जीवित रहनेवाला (सरवाइवर); अन्य व्यक्तियों, जातियों आदिके समाप्त हो जानेके बाद भी बचा रहनेवाला, दे० 'उत्तरजीवी' ।

अतिडीन–पु० (सं०) असाधारण उड़ान (चिड़ियोंकी) ।

अतितत–वि० (सं०) बहुत दूर फैलनेवाला; अपनेको बड़ा दिखानेवाला, आडंबरी ।

अतितरण–पु० (सं०) पार करना; पराभूत करना ।

अतितराम्–अव्य० (सं०) अतिशय, बिलकुल 'मनो राजाकी शरीरादि प्रजाएँ अतितराम् वंचित रह जाती हैं'–आज१९-४-६०।

अतितारी(रिन्)–वि० (सं०) पार करनेवाला; विजयी ।

अतितीक्ष्ण–वि० (सं०) बहुत तेज। पु० शोभांजन वृक्ष।

अतितीव्र–वि० (सं०) बहुत तेज। पु० तीव्रसे भी ऊँचा स्वर (संगीत)।

अतितीव्रा–स्त्री० (सं०) गंडदूर्वा।

अतितृण्ण–वि० (सं०) जिसे बहुत अधिक चोट पहुँची हो।

अतितृष्ण–वि० (सं०) बहुत प्यासा; अत्यधिक लालची।

अतितृष्णा–स्त्री० (सं०) अत्यधिक प्यास; अत्यन्त लालच।

अतित्रस्नु–वि० (सं०) बहुत अधिक डरनेवाला।

अतिथि–पु० (सं०) अभ्यागत; वह सन्यासी जो कहीं एक रातसे अधिक न ठहरे; अचानक आया हुआ मेहमान; कुशके पुत्र, सुहोत्र; अग्नि; यज्ञमें सोम-संबंधी कार्य करनेवाला अनुचर। **–क्रिया**–स्त्री० आतिथ्य। **–गृह**–पु० (गेस्ट-हाउस) अतिथियों, अभ्यागतोंको ठहरानेके लिए निर्धारित गृह, प्रकोष्ठादि। **–देव**–वि० जिसके लिए अतिथि देवरूप हो। **–द्वेष**–पु० अतिथियोंसे घृणा करना। **–धर्म**–पु० आतिथ्यका अधिकार, अतिथिको प्राप्य सत्कार। **–धर्मी(र्मिन्)**–वि० अतिथिको प्राप्त होनेवाले सत्कारका अधिकारी। **–पति**–पु० मेजबान। **–पूजा**–स्त्री० अतिथिका स्वागत-सत्कार। **–भवन**–पु० अतिथियोंको ठहरानेका स्थान, अतिथिशाला, अतिथिगृह। **–यज्ञ**–पु० पंच महायज्ञोंमेंसे एक यज्ञ, नृयज्ञ, मेहमानदारी। **–शाला**–स्त्री० (गेस्ट-हाउस) दे० 'अतिथिगृह'। **–संविभाग** –पु० चार शिक्षाव्रतोंमेंसे एक (जैन)। **–सत्कार**–पु०,**–सत्क्रिया**, **–सेवा**–स्त्री० अतिथि पूजा, मेहमानकी आवभगत।

अतिदंतुर–वि० (सं०) जिसके दाँत बहुत बड़े या बाहर निकले हों।

अतिदर्प–वि० (सं०) अत्यधिक अभिमानी। पु० अत्यधिक अभिमान; एक सर्प।

अतिदर्शी(शिन्)–वि० (सं०) बहुत दूरदर्शी।

अतिदाता(तृ)–पु० (सं०) बहुत बड़ा दानी व्यक्ति।

अतिदान–पु० (सं०) बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता।

अतिदाह–पु० (सं०) अतिताप, बहुत अधिक जलन।

अतिदिष्ट–वि० (सं०) प्रभावित; आकृष्ट; दूसरेके स्थानपर रखा हुआ।

अतिदीप्य–पु० (सं०) रक्त चित्रक वृक्ष।

अतिदुःसह–वि० (सं०) जिसका सहन करना कठिन हो, असह्य।

अतिदुर्गत–वि० (सं०) जिसकी स्थिति बहुत बुरी हो।

अतिदुर्धर्ष–वि० (सं०) जिसके पास जाना कठिन हो; जो बहुत अहंकारी हो।

अतिदेव–पु० (सं०) सब देवताओंसे बड़ा देवता; शिव; विष्णु (?)।

अतिदेश–पु० (सं०) अन्य वस्तुके धर्मका अन्यपर आरोपण; निर्दिष्ट विषयके अलावा और विषयोंपर भी लागू होनेवाला नियम; सादृश्य, उपमा; निष्कर्ष; आत्मसात् करना।

अतिदोष–पु० (सं०) बहुत बड़ा दोष, अपराध।

अतिद्वय–वि० (सं०) दोनोंसे बढ़ा हुआ; अद्वितीय।

अतिधन्वा(न्वन्)–पु० (सं०) अद्वितीय वीर; वह जो मरुभूमिका अतिक्रमण कर गया हो; एक वैदिक आचार्य।

अतिधृति–स्त्री० (सं०) १९ वर्णोंके वृत्त; १९ की संख्या।

अतिधेनु–वि० (सं०) जो अपनी गायोंके लिए प्रसिद्ध हो।

अतिनाटकीय–वि० (मेलोड्रेमेटिक) अस्वाभाविक ढंगसे नाटकीयता पैदा करनेका अवगुण।

अतिनाठ–पु० संकीर्ण रागका एक भेद।

अतिनाष्ट्र–वि० (सं०) खतरेसे बाहर।

अतिनिद्र–वि० (सं०) जो बहुत सोता हो; निद्रासे वंचित।

अतिनु, अतिनौ–वि० (सं०) नावसे जमीनपर उतरा हुआ।

अतिपंचा–स्त्री० (सं०) वह बालिका जिसका पाँचवाँ वर्ष व्यतीत हो गया हो।

अतिपटीक्षेप–पु० (सं०) पर्देका न उठाया जाना (ना०)।

अतिपतन–पु० (सं०) भूल; गलतीसे छूट जाना; उड़कर आगे निकल जाना; सीमासे बाहर जाना, अतिक्रमण।

अतिपतित–वि० (सं०) अतिक्रांत; सीमासे बाहर गया हुआ; भूला हुआ।

अतिपत्ति–स्त्री० (सं०) अतिक्रमण; समयका व्यतीत होना; कार्य पूरा न करना।

अतिपत्र–पु० (सं०) हस्तिकंद वृक्ष, सागौन।

अतिपथ–पु० (सं०) उत्तम मार्ग, सन्मार्ग।

अतिपद–वि० (सं०) पदहीन; जिसमें एक चरण अधिक हो (छंद)।

अतिपन्न–वि० (सं०) अतिक्रांत; बीता हुआ; भूला या छूटा हुआ।

अतिपर–वि० (सं०) जिसने अपने शत्रुओंको पराजित कर दिया है। पु० वह शत्रु जो शक्तिमें बढ़ा-चढ़ा हो।

अतिपरोक्ष–वि० (सं०) दृष्टिसे बिलकुल परे, अदृश्य; जो छिपा न हो, प्रकट। **–वृत्ति**–वि० अप्रचलित, जिसका अब प्रयोग न होता हो (शब्द)।

अतिपांडुकंबला–स्त्री० (सं०) तीर्थंकरका सिंहासन (जैन)।

अतिपात–पु० (सं०) अतिक्रम, नियम या मर्यादाका उल्लंघन; (कालका) व्यतीत हो जाना; अव्यवस्था; घटना; दुर्व्यवहार; विरोध; दुष्प्रयोग; विघ्न।

अतिपातक–पु० (सं०) धर्मशास्त्रोंमें बताये हुए महापातकोंमेंसे सबसे बड़ा।

अतिपातित–वि० (सं०) पूर्ण रूपसे तोड़ा हुआ; स्थगित किया हुआ। पु० हड्डीका बिलकुल टूट जाना।

अतिपाती(तिन्)–वि० (सं०) गतिमें आगे बढ़ जानेवाला (समासमें); तीव्र (रोग); भूल करनेवाला।

अतिपात्य–वि (सं०) स्थगित करने योग्य; कुछ देर बाद करने योग्य।

अतिपीतवर्णता–स्त्री० (ल्यूकोसिस) पांडुवर्णमयता, श्वेतकणोत्पादक ऊतककी वृद्धिका रोग।

अतिपुरुष, अतिपूरुष–पु० (सं०) प्रथम श्रेणीका मनुष्य; वीर पुरुष।

अतिप्रकाश–वि० (सं०) बहुत मशहूर; कुख्यात।

अतिप्रकृत–वि० (सं०) जो प्रकृत या सामान्य रूपसे बहुत बढ़ गया हो।

अतिप्रजनन–पु० (ओव्हर पॉपुलेशन) किसी देश या क्षेत्रकी आबादी का इतना अधिक बढ़ जाना कि उसके लिए वहाँ समुचित रूपसे निर्वाह करना कठिन हो गया हो; दे० 'जनसंख्यातिरेक'।

अतिप्रबंध–पु० (सं०) अजस्रता, बिलकुल लगा होना।

अतिप्रवृद्ध–वि० (सं०) अत्यधिक बढ़ा हुआ; अहंकारी।

अतिप्रश्न–पु० (सं०) मर्यादाका अतिक्रमण करके किया गया प्रश्न; समुचित उत्तर मिल जानेपर भी किया गया प्रश्न।

अतिप्रसंग–पु०, **अतिप्रसक्ति**–स्त्री० (सं०) बहुत अधिक संपर्क; घना संबंध; धृष्टता; किसी नियमका बहुत अधिक विस्तार।

अतिप्रौढा–स्त्री० (सं०) वह लड़की जो विवाह करने योग्य हो गयी हो, सयानी लड़की।

अतिबरवै–पु० एक छंद।

अतिबल–वि० (सं०) अति बलवान्; (ऐसा योद्धा) जो बहुतोंसे अकेले लड़ सके। पु० बहुत बड़ा बल; शक्तिशाली सैन्य।

अतिबला–स्त्री० (सं०) एक अस्त्रविद्या जो विश्वामित्रने रामको सिखायी थी; एक पौधा जो दवाके काम आता है, पीतबला, कंगही।

अतिबालक–पु० (सं०) शिशु। वि० बाल्य, बच्चों जैसा।

अतिबाला–स्त्री० (सं०) दो वर्षकी गाय। वि० स्त्री० बहुत छोटी (लड़की)।

अतिब्रह्मचर्य–पु० (सं०) ब्रह्मचर्य व्रतका बहुत अधिक पालन। वि० जिसने ब्रह्मचर्यव्रत भंग कर दिया है।

अतिभव–पु० (सं०) बढ़ जाना, पराजित करना।

अतिभार–पु० (सं०) बहुत अधिक बोझ; (वाक्यकी) अस्पष्टता; गति। **–ग**–पु० खच्चर।

अतिभारारोपण–पु० (सं०) पशुओंपर अधिक बोझ लादना (जो जैनोंके अनुसार एक अत्याचार है)।

अतिभारित–वि० (ओव्हर-लोडेड) जिसपर उचितसे अधिक भार लाद दिया गया हो।

अतिभी–स्त्री० (सं०) वज्रमाला, बिजली।

अतिभू–वि० (सं०) सबसे बढ़ जानेवाला (विष्णु)।

अतिभूमि–स्त्री० (सं०) अधिकता, प्राचुर्य; श्रेष्ठता; मर्यादा-

भंग; विस्तृत भूमि।

अतिभोजन–पु० (सं०) अधिक खाना, पेटूपन।

अतिमंगल्य–वि० (सं०) वहुत शुभ। पु० विल्व वृक्ष।

अतिमति–स्त्री० (सं०) अहंकार, वहुत अधिक घमंड।

अतिमध्यंदिन–पु० (सं०) खड़ी दुपहरी।

अतिमर्त्य–वि० (सं०) मनुष्यकी शक्तिसे परे, अमानुषिक।

अतिमर्श–पु० (सं०) बहुत अधिक संपर्क।

अतिमांस–वि० (सं०) मांसल, अधिक मांसवाला (जैसे जंघा)।

अतिमात्र–वि० (सं०) अतिशय, अत्यधिक; मात्रासे अधिक।

अतिमान–पु० (सं०) दे० 'अतिमति'। वि० अपरिमेय, वहुत विस्तृत (यश)।

अतिमानव–पु० (सं०) अलौकिक शक्ति और गुणोंवाला व्यक्ति, महामानव (सूपरमैन)।

अतिमानवीय–वि० ऐसी घटनाएँ या उनका चित्रण जो मनुष्यके लिए असंभव प्रतीत हों।

अतिमानुष–वि० (सं०) मानवशक्तिके वाहरका; अलौकिक।

अतिमाय–वि० (सं०) जो मायासे रहित हो गया हो, वीतराग।

अतिमित–वि० (सं०) अपरिमित, वेहिसाव; जो भीगा न हो।

अतिमित्र–पु० (सं०) घनिष्ठ मित्र; शुभ ग्रह।

अतिमिर्मिर–वि० (सं०) शीघ्रतासे पलकें गिरानेवाला।

अतिमुक्त–वि० (सं०) जिसे मुक्ति मिल गयी हो; वीतराग। पु० दे० 'अतिमुक्तक'।

अतिमुक्तक–पु० (सं०) माधवी लता; तिनिश वृक्ष; तिंदुक वृक्ष; ताल वृक्ष।

अतिमूत्र–पु० (सं०) वहुमूत्र रोग।

अतिमृत्यु–स्त्री० (सं०) महामारी; मुक्ति।

अतिमैथुन–पु० (सं०) अत्यधिक स्त्री-संभोग।

अतिमोदा–स्त्री० (सं०) सुगंधकी अधिक मात्रा; नवमल्लिका, नेवारी।

अतियव–पु० (सं०) एक तरहका जौ।

अतियोग–पु० (सं०) अतिशयता; रेल-पेल; औषधमें द्रव्यविशेषको नियत मात्रासे अधिक मिलाना।

अतिरंजन–पु० (सं०) बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

अतिरंजना–स्त्री० (सं०) बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति।

अतिरंजित–वि० वहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा हुआ।

अतिरक्ता–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

अतिरथ, अतिरथी (थन्)–पु० (सं०) अकेले वहुतोंसे लड़नेवाला रथारूढ़ योद्धा।

अतिरभस–पु० (सं०) असाधारण गति।

अतिरसा–स्त्री० (सं०) मूर्वा लता; रास्ना; क्लीतनक।

अतिरात्र–पु० (सं०) ज्योतिष्टोम यज्ञका एक वैकल्पिक अंग; इस यज्ञसे संवद्ध एक मंत्र; चाक्षुष मनुका एक पुत्र; मध्यरात्रि।

अतिराष्ट्र–पु० (सं०) एक नाग।

अतिरिक्त–वि० (सं०) वढ़ा हुआ, नियत परिमाणसे अधिक; फाजिल; भिन्न; अद्वितीय। अ० सिवाय, अलावा। **–कंबला** –स्त्री० तीर्थंकरका सिंहासन (जैन)। **–पत्र**–पु० वह समाचार या विज्ञप्ति आदि जो अलग छापकर समाचारपत्रके साथ बाँटी जाय, क्रोडपत्र।

अतिरिक्त लाभ–पु० (एक्सेस प्रॉफिट) साधारण या नियमितसे अधिक लाभ।

अतिरूक्ष–वि० (सं०) रूखा; कठोर, प्रेमहीन; वहुत स्नेही। पु० एक तरहका अन्न।

अतिरूप–वि० (सं०) आकृतिहीन; अति सुंदर; रूपसे परे (परमेश्वर)।

अतिरेक–पु० (सं०) आधिक्य, अतिशयता; आवश्यकतासे अधिक, फाजिल होना; अंतर।

अतिरोग–पु० (सं०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग।

अतिरोमश, अतिलोमश–वि० (सं०) बहुत बालोंवाला। पु० जंगली बकरा; एक तरहका बंदर।

अतिलंघन–पु० (सं०) दीर्घ उपवास; अतिक्रमण।

अतिलंघी (घिन्)–वि० (सं०) गलती करनेवाला।

अतिलोमशा–स्त्री० (सं०) नीलवुह्ना नामक पौधा।

अतिलौल्य–पु० (सं०) बहुत तीव्र इच्छा।

अतिवक्ता (क्तृ)–वि० (सं०) बकवादी, बहुत बोलनेवाला।

अतिवक्रा–स्त्री० (सं०) ग्रहोंकी एक तरहकी चाल।

अतिवया (यस्)–वि० (सं०) अतिवृद्ध; वृद्ध। (स्त्री० 'अतिवयसी'।)

अतिवर्तन–पु० (सं०) क्षम्य अपराध; दंडसे मुक्ति।

अतिवर्ती (तिन्)–वि० (सं०) पार करनेवाला; आगे वढ़ जानेवाला; सबसे आगे वढ़ा हुआ; बहुत अधिक।

अतिवर्तुल–वि० (सं०) वहुत गोल। पु० एक अन्न, कलाय।

अतिवाद–पु० (सं०) कठोर वचन; औचित्यकी सीमासे आगे बढ़ जाना; डींग; अतिरंजना।

अतिवादी (दिन्)–वि० (सं०) वहुत बोलनेवाला; सबके मतका खंडन कर अपने पक्षकी स्थापना करनेवाला; खरी बात कहनेवाला; डींग मारनेवाला।

अतिवास–पु० (सं०) श्राद्धके पहले दिन किया जानेवाला उपवास।

अतिवाह–पु० (सं०) सूक्ष्म शरीरका अन्य देहमें जाना या ले जाना; फाजिल पानी बाहर निकालनेका रास्ता।

अतिवाहक–पु० (सं०) सूक्ष्म शरीरकी देहांतरप्राप्तिमें सहायक देवता।

अतिवाहन–पु० (सं०) बिताना, यापन; भेजना; बहुत अधिक परिश्रम करना।

अतिवाहिक–पु० (सं०) सूक्ष्म शरीर।

अतिवाहित–वि० (सं०) बिताया हुआ। पु० सूक्ष्म शरीर; अधोलोकका निवासी।

अतिविकट–वि० (सं०) बहुत डरावना। पु० दुष्ट हाथी।

अतिविपिन–वि० (सं०) बहुतसे जंगलोंवाला; गहन (वन), जिसमें प्रवेश पाना कठिन हो।

अतिविश्रब्ध नवोढा–स्त्री० मध्या नायिकाका एक भेद।

अतिविष–वि० (सं०) बहुत ही जहरीला।

अतिविषा–स्त्री० (सं०) अतीस नामकी एक औषधि जो जहरीली होती है।

अतिविस्तर–पु० (सं०) बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता।

अतिवृंहित–वि० (सं०) पुष्ट या सशक्त किया हुआ।

अतिवृत्ति–स्त्री० (सं०) बढ़ जाना; अतिक्रमण; अतिरंजना; तेजीसे निकलना (रक्त)।

अतिवृद्ध–वि० (सं०) बहुत बूढ़ा। पु० एक तंत्रोक्त मंत्र।

अतिवृद्धा–स्त्री० (सं०) बहुत बूढ़ी गाय (जो घास न चबा सके)।

अतिवृष्टि–स्त्री० (सं०) अत्यधिक वर्षा, खेतीको नुकसान पहुँचानेवाली वर्षा।

अतिवेगित–वि० (सं०) जोरसे चलाया गया; तेजीसे चलनेवाला।

अतिवेध–पु० (सं०) निकट संपर्क; दशमी और एकादशीका एक साथ होना।

अतिवेल–वि० (सं०) किनारेके ऊपर उठा हुआ; उद्वेलित; मर्यादाका अतिक्रमण करनेवाला; अत्यधिक; सीमाहीन।

अतिवेला–स्त्री० (सं०) अतिकाल, अबेर; वेलाका अतिक्रम।

अतिव्यथन–पु०, **अतिव्यथा**–स्त्री० (सं०) तीव्र वेदना, अतिशय यातना।

अतिव्ययकर्म (न्)–पु० (सं०) व्यर्थ खर्चा करनेका काम, फजूलखर्चीका काम।

अतिव्याप्ति–स्त्री० (सं०) लक्षणमें लक्ष्यके अतिरिक्त अन्य वस्तुका भी आ जाना (न्या०); लक्षणके तीन दोषोंमेंसे एक।

अतिशक्करी, अतिशक्वरी–स्त्री० (सं०) एक तरहके वृत्त।

अतिशय–वि० (सं०) बहुत ज्यादा, अत्यधिक। पु० अधिकता, अतिरेक; श्रेष्ठता; एक अर्थालंकार।

अतिशयन–पु० (सं०) आधिक्य, प्राचुर्य।

अतिशयनी–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

अतिशयित–वि० (सं०) बहुत अधिक; आगे बढ़ा हुआ।

अतिशयी (यिन्)–वि० (सं०) प्रधान; श्रेष्ठ; अत्यधिक, बहुत

ज्यादा ।

अतिशयोक्ति–स्त्री० (सं०) किसी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिरंजना; एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तुका अतिरंजित वर्णन होता है ।

अतिशयोपमा–स्त्री० (सं०) उपमाका वह भेद जिसमें किसी एक वस्तुकी उपमा एक वस्तुको छोड़कर अन्य किसीसे न दी जा सके ।

अतिशस्त्र–वि० (सं०) शस्त्रसे बढ़ा हुआ ।

अतिशायन–पु० (सं०) अधिक होना; बढ़ जाना; श्रेष्ठता ।

अतिशायी (यिन्)–वि० (सं०) आगे बढ़ जानेवाला; श्रेष्ठ; अत्यधिक । **अतिशायी अर्थ**–पु० सामान्यसे भिन्न लक्ष्यार्थ । (प्राचीन लक्षणा या व्यंजनासे अलग करनेके लिए इस शब्दका प्रयोग नयी समीक्षामें होता है ।)

अतिशीलन–पु० (सं०) अभ्यास करना ।

अतिशूद्र–पु० (सं०) अंत्यज ।

अतिशेष–पु० (सं०) बचा हुआ अंश ।

अतिश्रेष्ठ–वि० (सं०) सर्वोत्कृष्ट; सबसे अच्छा ।

अतिसंध–पु० (सं०) वचनभंग; आज्ञाका उल्लंघन

अतिसंधान–पु० (सं०) धोखा, छल-कपट; अतिक्रमण; (ओव्हर-हिटिंग, ओव्हर-शूटिंग) उचित लक्ष्यसे आगे निशाना लगाना ।

अतिसंधि–स्त्री० (सं०) शक्तिसे अधिक सहायता देनेकी प्रतिज्ञा; एक मित्रकी सहायतासे दूसरे मित्र या सहायककी प्राप्ति ।

अतिसंधित–वि० (सं०) अतिक्रांत; वंचित, छला गया ।

अतिसंध्या–स्त्री० (सं०) सूर्योदयके ठीक पहले और सूर्यास्तके ठीक बादका समय ।

अतिसर–वि० (सं०) आगे बढ़ जानेवाला; सबसे आगेका । पु० प्रयत्न, प्रयास ।

अतिसर्ग–पु० (सं०) इच्छा पूर्ण करना; देना; पृथक् करना । वि० चिरस्थायी; नित्य; मुक्त ।

अतिसर्जन–पु० (सं०) अधिक दान; उदारता; वध; धोखा; पार्थक्य ।

अतिसर्पण–पु० (सं०) तीव्र गति; तेजीसे चलना (गर्भाशयमें बच्चेका); दे० 'अतिक्रमण' ।

अतिसर्व–वि० (सं०) दे० 'अतिश्रेष्ठ' । पु० ईश्वर ।

अतिसांतपन–पु० (सं०) एक कठिन व्रत जो प्रायश्चित्तरूपमें किया जाता है ।

अतिसांवत्सर–वि० (सं०) एक सालसे अधिक टिकने या चलनेवाला ।

अतिसाम्या–स्त्री० (सं०) मधुयष्टि ।

अतिसार–पु० (सं०) पतले दस्तों या आँवकी बीमारी ।

अतिसारकी (किन्), अतिसारी (रिन्)–वि० (सं०) अतिसार रोगसे पीड़ित ।

अतिसौरभ–वि० (सं०) अत्यधिक सुगंधवाला । पु० बहुत अधिक सुगंध; आम ।

अतिसौहित्य–पु० (सं०) कसकर खाना ।

अतिस्थूल–वि० (सं०) बहुत मोटा; अत्यंत मूर्ख । पु० मोटापेका रोग ।

अतिस्पर्श–वि० (सं०) कंजूस; कमीना । पु० उच्चारणमें जीभ और तालुका अल्प स्पर्श (व्या०) ।

अतिस्वप्न–पु० (सं०) अत्यधिक निद्रा; स्वप्न देखनेकी अधिक प्रवृत्ति ।

अतिस्वन (विमान)–वि० (सुपरसॉनिक) शब्दसे भी अधिक तीव्र गतिसे उड़नेवाला (वायुयान), 'पराध्वनिक' ।

अतिहत–वि० (सं०) मजबूतीसे जमाया हुआ; पूर्णतः नष्ट किया हुआ ।

अतिहसित–पु० (सं०) हासके छ भेदोंमेंसे एक, दे० 'हास'; जोरकी हँसी ।

अतींद्रिय–वि० (सं०) इंद्रियोंकी पहुँचके बाहर; इंद्रियोंसे परेका (बोध), अगोचर; प्रधान । पु० आत्मा; प्रकृति (सां०); मन (वे०) ।

अतीचार–पु० दे० 'अतिचार' ।

अतीत–वि० (सं०) बीता हुआ, गत; मृत; परे, पार गया हुआ; बाहर; निर्लेप; न्यारा । पु० भूतकाल; साधु, सन्न्यासी; गोसाइँयोंकी एक जाति; *अतिथि । अ० परे ।

अतीतना*–अ० क्रि० बीतना; गुजरना ।

अतीथ*–पु० दे० 'अतिथि'; गोसाइँयोंकी एक जाति ।

अतीरेक–पु० (सं०) दे० 'अतिरेक' ।

अतीव–अ० (सं०) बहुत अधिक, अत्यंत ।

अतीस–पु० (सं०) एक वनौषधि ।

अतीसार–पु० (सं०) दे० 'अतिसार' ।

अतुंग–वि० (सं०) जो ऊँचा न हो; नाटा, ठिंगना ।

अतुकांत–वि० जिसमें तुक न मिलता हो ।

अतुद–वि० (सं०) जो हृष्ट-पुष्ट न हो; दुबला-पतला ।

अतुराई*–स्त्री० आतुरता; चंचलता ।

अतुराना*–अ० क्रि० आतुर होना, जल्दी मचाना ।

अतुल–वि० (सं०) जिसकी तौल-माप न हो सके; अमित, असीम; तुलनारहित । पु० तिलक वृक्ष; अनुकूल नायक (केशव); तिलपुष्पी; कफ, श्लेष्मा ।

अतुलनीय–वि० (सं०) जिसकी तुलना न हो सके; अपरिमित ।

अतुलित–वि० (सं०) बिना तौला हुआ; बेहिसाब; अपार; बेजोड़ ।

अतुल्य–वि० (सं०) बेजोड़, अद्वितीय ।

अतुष–वि० (सं०) बिना भूसीका ।

अतुषार–वि० (सं०) जो ठंढा न हो । **–कर**–पु० सूर्य ।

अतुष्टि–स्त्री० (सं०) अप्रसन्नता; असंतोष ।

अतुहिन–वि० (सं०) जो ठंढा न हो । **–कर,–धाम (न्),–रश्मि, –रुचि**–पु० सूर्य ।

अतूथ*–वि० अपूर्व; अतुल्य ।

अतूल*–वि० दे० 'अतुल' ।

अतृणाद–पु० (सं०) हालका उत्पन्न हुआ बछड़ा जो तृण न खाता हो ।

अतृप्त–वि० (सं०) असंतुष्ट; भूखा ।

अतृप्ति–स्त्री० (सं०) संतुष्ट न होनेकी अवस्था, असंतुष्टि ।

अतृष्ण–वि० (सं०) तृष्णारहित, जिसे कोई चाह, कामना न हो ।

अतेज (स्)–पु० (सं०) धुँधलापन; छाया; अंधकार; शक्तिका अभाव; सुस्ती ।

अतेजा (जस्)–वि० (सं०) जो चमकीला न हो, धुँधला; कमजोर; तुच्छ ।

अतोर*–वि० अटूट ।

अतोल, अतौल–वि० बिना तौला हुआ; बेजोड़; बेहिसाब ।

अत्क–पु० (सं०) पथिक, मुसाफिर; शरीरका अंग; कवच; परिधान (रघु०) ।

अत्त*–वि० आप्त, प्राप्त ।

अत्त†–स्त्री० अति, ज्यादती ।

अत्तव्य–वि० (सं०) खाने योग्य ।

अत्ता–स्त्री० (सं०) माता; मौसी; बड़ी बहन; सास ।

अत्ता (तृ)–पु० (सं०) खानेवाला; चराचरका ग्रहण करनेवाला; ईश्वर ।

अत्तार–पु० (अ०) इत्र बेचनेवाला; यूनानी दवाएँ बनाने, बेचनेवाला ।

अत्ति*–स्त्री० अति, ज्यादती; ऊधम ।

अत्ति, अत्तिका–स्त्री० (सं०) बड़ी बहन ।

अत्न, अत्नु–पु० (सं०) सूर्य; वायु; पथिक ।

अत्यंकुश–वि० (सं०) नियंत्रणमें न रहनेवाला ।

अत्यंत–वि० (सं०) हदसे ज्यादा; अतिशय; पूर्ण, नितांत; अनंत; चिरस्थायी । अ० अत्यधिक, पूरे तौरसे; सोलहों आने; हमेशाके लिए । **–ग**–वि० बहुत तेज चलनेवाला । **–गत**–वि० जो हमेशाके लिए चला गया हो । **–गामी (मिन्)**–वि० बहुत अधिक, बहुत तेज चलनेवाला । **–तिरस्कृत वाच्यध्वनि**–स्त्री० एक ध्वनि जिसमें वाच्यार्थका पूर्ण रूपसे त्याग होता है (सा०) । **–निवृत्ति –स्त्री०** पूर्ण अदर्शन; पूर्ण रूपसे अलग या पृथक् हो जाना ।

वासी(सिन्)–पु॰ हमेशा आचार्यके साथ रहनेवाला विद्यार्थी। **–सुकुमार**–वि॰ बहुत कोमल। पु॰ एक धान्य।

अत्यंतातिशयोक्ति–स्त्री॰ (सं॰) अतिशयोक्तिका एक भेद–जहाँ कारणके आरंभके पूर्व ही कार्यका हो जाना वर्णित किया जाय।

अत्यंताभाव–पु॰ (सं॰) किसी वस्तुका पूर्ण अभाव, तीनों कालोंमें संभव न होना (जैसे आकाश-कुसुम)।

अत्यंतिक–वि॰ (सं॰) बहुत चलने या घूमनेवाला; अति समीपी।

अत्यंतीन–वि॰ (सं॰) बहुत अधिक चलनेवाला; बहुत तेज चलनेवाला।

अत्यग्नि–वि॰ (सं॰) अग्निसे बढ़ा हुआ। स्त्री॰ पाचनक्रियाका बहुत तेजीसे होना।

अत्यम्ल–पु॰ (सं॰) इमलीका पेड़; वृक्षाम्ल; विषायिल; बिजौरा नीबू। वि॰ बहुत खट्टा। **–पर्णी**–स्त्री॰ लताविशेष, रामचना।

अत्यम्ला–स्त्री॰ (सं॰) जंगली बिजौरा नीबू।

अत्यय–पु॰ (सं॰) बीतना; अभाव; विनाश; मृत्यु; अंत; दंड; अपराध; आक्रमण; मर्यादाका अतिक्रमण; श्रेणी; खतरा; कष्ट।

अत्ययिक–वि॰ (सं॰) दे॰ 'आत्ययिक'।

अत्ययी (यिन्)–वि॰ (सं॰) आगे बढ़ जानेवाला।

अत्यर्थ–वि॰ (सं॰) उचित मानसे बाहर, बहुत अधिक।

अत्यष्टि–स्त्री॰ (सं॰) १७ वर्णोंवाले वृत्त।

अत्यह्न–वि॰ (सं॰) एक दिनसे अधिक कालका।

अत्याकार–पु॰ (सं॰) घृणा; निंदा; बहुत बड़ा डील-डौल।

अत्याग–पु॰ (सं॰) स्वीकार, ग्रहण।

अत्यागी(गिन्)–वि॰ (सं॰) विषयोंका त्याग न कर उनमें लिप्त रहनेवाला, विषयासक्त।

अत्याचार–पु॰ (सं॰) अनुचित आचरण, दुराचार; ढोंग; जुल्म, उत्पीडन, अन्याय।

अत्याचारी(रिन्)–वि॰ (सं॰) अत्याचार करनेवाला, अन्यायी।

अत्याज्य–वि॰ (सं॰) जो छोड़ा न जा सके या छोड़ने योग्य न हो।

अत्याधान–पु॰ (सं॰) किसीपर रखनेकी क्रिया; धोखा; अतिक्रमण; होमाग्निको सुरक्षित न रखना।

अत्यानंदा–स्त्री॰ (सं॰) मैथुनसे अत्यधिक आनंदकी इच्छा, जो स्त्रियोंका एक रोग है।

अत्याय–पु॰ (सं॰) सीमोल्लंघन; अतिक्रमण; मर्यादाभंग; बहुत अधिक लाभ।

अत्यारूढ–वि॰ (सं॰) बहुत बढ़ा हुआ, उच्चपदपर पहुँचा हुआ।

अत्यारूढि–स्त्री॰ (सं॰) बहुत ऊँचा पद; उन्नति।

अत्याल–पु॰ (सं॰) रक्त चित्रक वृक्ष।

अत्यावाय–पु॰ (सं॰) राजद्रोहियोंकी अधिकता।

अत्याहारी(रिन्)–वि॰ (सं॰) अधिक आहार करनेवाला।

अत्याहित–वि॰ (सं॰) अरुचिकर। पु॰ अरुचि, अप्रियता; संकट; खतरा, दुःसाहसिक कार्य। **–कर्मा(र्मन्)**–वि॰ दुष्ट, बदमाश।

अत्युक्ता, अत्युक्था–स्त्री॰ (सं॰) एक तरहके वृत्त।

अत्युक्ति–स्त्री॰ (सं॰) किसी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहना, मुबालिगा; एक अलंकार जिसमें उदारता, वीरता आदिका बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है।

अत्युग्र–वि॰ (सं॰) बहुत प्रचंड। पु॰ एक गंधद्रव्य, हींग।

अत्युत्पादन–पु॰ (सं॰) मालका अधिक मात्रामें उत्पादन।

अत्युपध–वि॰ (सं॰) परीक्षित, विश्वस्त।

अत्यूह–पु॰ (सं॰) बहुत सोच-विचार; दात्यूह पक्षी; मोर।

अत्यूहा–स्त्री॰ (सं॰) नीलिका नामक पौधा।

अत्र–अ॰ (सं॰) यहाँ, इस जगह; इस संबंधमें; वहाँ। **–स्थ**–वि॰ यहाँ रहनेवाला, इस जगहका।

अत्रत्य–वि॰ (सं॰) यहाँका; इस स्थानसे संबद्ध; यहाँ उपन्न।

अत्रप–वि॰ (सं॰) निर्लज्ज, अविनीत।

अत्रस्त, अत्रस्नु, अत्रास–वि॰ (सं॰) निर्भीक, बेखौफ, निडर।

अत्रि–पु॰ (सं॰) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि जो सप्तर्षियोंमें गिने जाते हैं; एक तारा। **–ज**–पु॰ अत्रिके पुत्र–चंद्रमा, दत्तात्रेय, दुर्वासा। **–जात**–पु॰ दे॰ 'अत्रिज'। **दृग्ज,–नेत्रज,–नेत्रप्रभव,–नेत्रप्रसूत,–नेत्रभू,–नेत्रसूत**–पु॰ चंद्रमा; एककी संख्या (गणित)। **–प्रिया**–स्त्री॰ अत्रिकी पत्नी अनसूया। **–संहिता,–स्मृति**–स्त्री॰ अत्रिप्रणीत धर्मशास्त्र।

अत्रिगुण–वि॰ (सं॰) तीनों गुणोंसे परे।

अत्रिजात–पु॰ (सं॰) प्रथम तीन वर्णोंमेंसे किसी वर्णका मनुष्य; द्विजन्मा; दे॰ 'अत्रि'।

अत्री(त्रिन्)–पु॰ (सं॰) खा जानेवाला, राक्षस।

अत्रैगुण्य–पु॰ (सं॰) सत्त्व, रज, तमका अभाव।

अत्वक्क–वि॰ (सं॰) चर्मरहित।

अत्वरा–स्त्री॰ (सं॰) शीघ्रताका अभाव।

अथ–अ॰ (सं॰) आरंभ तथा मंगल-सूचक शब्द; अब; तब; अनंतर; अगर। पु॰ आरंभ, आदि। **–किम्**–अ॰ और क्या; हाँ; अवश्य। **–च**–अ॰ और; और भी। मु॰**–से इतितक**–आदिसे अंततक।

अथक– वि॰ न थकनेवाला।

अथना, अथयना*–अ॰ क्रि॰ अस्त होना।

अथमना†–पु॰ पश्चिम दिशा।

अथरा–पु॰ मिट्टीका एक चौड़े मुंहका बड़ा बरतन जो कपड़ा रँगने आदिके काममें आता है, नाँद।

अथरी–स्त्री॰ छोटा अथरा, मिट्टीका छिछला बरतन जिसमें दही जमाते हैं और कुम्हार हंडी रखकर थापीसे पीटते हैं।

अथर्व-पु॰ (सं॰) एक वेद जो चौथा वेद माना जाता है। **–निधि,–विद्**–पु॰ अथर्ववेदका ज्ञाता। **–शिखा**–स्त्री॰,**–शिर(स्)**–पु॰ एक उपनिषद्।

अथर्वण–पु॰ (सं॰) शिव; अथर्ववेद।

अथर्वणि–पु॰ (सं॰) अथर्ववेदोक्त कर्मोंको जाननेवाला ब्राह्मण; पुरोहित।

अथर्वनी*–पु॰ यज्ञादि करानेवाला, पुरोहित।

अथर्वा(र्वन्)–पु॰ (सं॰) एक मुनि जो ब्रह्माके पुत्र और अग्निको स्वर्गसे पृथ्वीपर लानेवाले माने जाते हैं।

अथर्वाण–पु॰ (सं॰) अथर्ववेद या उस वेदमें कहे हुए कर्मोंको जाननेवाला।

अथवना*–अ॰ क्रि॰ अस्त होना–'पूरब ऊगै पश्चिम अथवै भखै पवनका फूल'–साखी।

अथवा–अ॰ (सं॰) वा, या।

अथाई–स्त्री॰ बैठक; चौपाल, गाँववालोंके एकत्र होनेका स्थान –'हाट बाट घर गली अथाई, कहहिं परस्पर लोग लुगाई'–रामा॰; गोष्ठी, मंडली।

अथान*–पु॰ अचार।

अथाना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'अथवना'। स॰ क्रि॰ थाह लेना; ढूंढ़ना। पु॰ दे॰ 'अथान'।

अथावत*–वि॰ अस्त, डूबा हुआ।

अथाह–वि॰ बहुत गहरा, अगाध; अपार, बेहिसाब; अगम्य। पु॰ समुद्र; गहराई। मु॰**–में पड़ना**–मुश्किलमें पड़ना।

अथाही†–स्त्री॰ वसूली, उगाही।

अथिर*–वि॰ अस्थिर, क्षणस्थायी।

अथैया–स्त्री॰ दे॰ 'अथाई'।

अथोर*–वि॰ जो कम न हो, अधिक, बहुत।

अदंक*–पु॰ डर, भय।

अदंड–वि॰ (सं॰) अदंडनीय; *निर्भय; बिना महसूलका।

अदंडनीय, अदंड्य–वि॰ (सं॰) दंडका अनधिकारी; दंडमुक्त।

अदंडमान*–वि॰ अदंड्य।

अदंत–वि॰ (सं॰) बे-दाँतका; जिसे दाँत न निकले हों। पु॰ जोंक; एक आदित्य।

अदंत्य–वि॰ (सं॰) दाँत-संबंधी नहीं; जो दाँतोंके योग्य न हो, दाँतोंके लिए हानिकारक।

अदंभ–वि॰ (सं॰) दंभरहित; सच्चा; सरल; *अकृत्रिम, स्वाभाविक। पु॰ शिव; दंभका अभाव; खरापन।

अदंष्ट्र–वि॰ (सं॰) दंतहीन। पु॰ विष-दंतहीन सर्प।

अदक्ष–वि॰ (सं॰) अकुशल; भद्दा, बदशकल।

अदक्षिण–वि॰ (सं॰) बायाँ; बिना दक्षिणाका (यज्ञादि);

अनाड़ी; प्रतिकूल ।

अदक्षिणीय, अदक्षिण्य–वि० (सं०) जो दक्षिणाका अधिकारी न हो ।

अदग–वि० बेदाग, निर्दोष; अछूता ।

अदग्ध–वि० (सं०) न जला हुआ; शास्त्रविधिसे न जलाया हुआ ।

अदत्त–वि० (सं०) अनुचित तरीकेसे दिया हुआ; जो दिया न गया हो; विवाहमें जिसे न दिया गया हो; न देनेवाला; कंजूस । पु० वह दान जो रद्द कर दिया गया हो । **–दान**–पु० चोरी; डकैती (जैन) । **–पूर्वा**–स्त्री० वह कन्या जिसकी मँगनी न हुई हो ।

अदत्ता–स्त्री० (सं०) अविवाहिता कन्या । वि०, स्त्री० न दी हुई ।

अदद–पु० (अ०) संख्या, अंक ।

अदन–पु० (सं०) भक्षण, खानेकी क्रिया; (अ०) स्वर्गका वह उद्यान जहाँ ईश्वरने आदमको रखा था; अरबसागरका एक बंदरगाह ।

अदना–वि० (अ०) छोटा; तुच्छ ।

अदनीय–वि० (सं०) खाने योग्य ।

अदब–पु० (अ०) विनय, शिष्टाचार; बड़ोंका सम्मान; साहित्य-शास्त्र, वाङ्मय । **–क़ायदा**–पु० विनीत या शिष्ट व्यवहार । **-लिहाज**–पु० सम्मान । **मु०–करना**– लिहाज करना । **–की जगह**––वह व्यक्ति या वस्तु जिसका अदब करना जरूरी हो ।

अदबदाकर–अ० हठ करके, जानबूझकर; अवश्य ।

अदब्ब*–पु० दे० 'आदाब' ।

अदभ्र–वि० (सं०) अनल्प, प्रचुर; * अपार ।

अदम–पु० (अ०) अभाव, अनस्तित्व; अनुपस्थिति; परलोक । **–तामील**–स्त्री० समन आदिका तामील न होना । **–पैरवी**–स्त्री० मुकदमेमें किसी फरीककी ओरसे जरूरी कारखाईका न होना **–फ़ुरसत**–स्त्री० अनवकाश । **–मौजूदगी**–स्त्री० अनुपस्थिति । **–वसूली**–स्त्री० लगान आदिका वसूल न होना । **–वाक़फ़ीयत**–स्त्री० अज्ञान, ग़ैरजानकारी । **–सबूत**–पु० प्रमाणका अभाव । **–हाज़िरी**–स्त्री० अनुपस्थिति । **मु०–का रास्ता लेना,–को सिधारना**–परलोक सिधारना, मरना ।

अदम्य–सि० (सं०) जो दबाया न जा सके; उत्कट, प्रबल ।

अदय–वि० (सं०) निष्ठुर, निर्दय ।

अदरक–पु० एक पौधा जिसकी गाँठें दवा, चटनी, अचार आदिके रूपमें खायी जाती हैं ।

अदरकी–स्त्री० सोंठौरा ।

अदरा|–स्त्री० दे० 'आर्द्रा' ।

अदराना–अ० क्रि० आदर-मनुहारसे गर्ववृद्धि होना, मिजाज बिगड़ना; इतराना । स० क्रि० आदर-मनुहारसे किसीका मिजाज बिगाड़ना ।

अदर्श–पु० (सं०) नये चंद्रमाका दिन; आदर्श, आईना ।

अदर्शन–पु० (सं०) दर्शनका अभाव; दिखाई न देना; लोप, नाश; उपेक्षा । वि० अदृश्य, लुप्त ।

अदर्शनीय–वि० (सं०) जो देखने योग्य न हो, भद्दा, कुरूप ।

अदल–वि० (सं०) बिना पत्तेका; बिना सेनाका । पु० एक पौधा, हिज्जल; (अ०) दे० 'अद्ल' ।

अदल-बदल–पु० हेर-फेर, परिवर्तन ।

अदला–स्त्री० (सं०) एक पौधा, घृतकुमारी ।

अदला-बदली–स्त्री० हेरफेर; एक वस्तु देकर उसके बदलेमें दूसरी वस्तु लेना (बार्टर) ।

अदली*–वि० न्यायी, न्यायशील ।

अदलीय–वि० (सं०) (इंडिपेंडेंट) जो किसी विशेष दलसे संबद्ध न हो; उन लोगोंसे संबंध रखनेवाला जो किसी दल-विशेषमें शामिल न हों ।

अदवाइन*–स्त्री० दे० 'अदवान' ।

अदवान–स्त्री० चारपाईके पैतानेकी रस्सी, ओनचन ।

अदस–पु० (अ०) मसूर ।

अदहन–पु० दाल-चावल आदि पकानेके लिए आगपर चढ़ाया गया पानी; खौलता हुआ पानी । **मु०–देना**–अदहनका पानी आगपर चढ़ाना ।

अदांत–वि० (सं०) जो दबाया न गया हो, काबूमें न किया हुआ; जिसने अपनी इंद्रियोंका निग्रह न किया हो ।

अदाँत–वि० बिना दाँतका (पशु) ।

अदा–स्त्री० (अ०) देना, चुकाना, पूरा करना; बयान करना; (फ़ा०) हाव-भाव, मोहक चेष्टा; ढंग; तर्ज । **–कार**–पु० अभिनेता । **–बंदी**–स्त्री० किस्तबंदी । **–यगी**–स्त्री० भुगतान, चुकता करना ।

अदाई–स्त्री० अदा करने, चुकानेकी क्रिया । * वि० चालबाज; चतुर ।

अदाग, अदागी*–वि० बेदाग, साफ़, स्वच्छ; निष्कलंक ।

अदाता(तृ)–वि० (सं०) जो न दे, अनुदार, कृपण; विवाहके लिए (कन्या) न देनेवाला; जिसे चुकाना न हो ।

अदान*–वि० नादान, नासमझ; (सं०) न देनेवाला; कंजूस । पु०जिसका मदजल न निकल रहा हो (हाथी) ।

अदानी*–वि० कृपण, कंजूस ।

अदाय–वि० (सं०) हिस्सा पानेका अनधिकारी ।

अदायाँ*–वि० वाम, प्रतिकूल; बुरा ।

अदायाद–वि० (सं०) उत्तराधिकार-रहित; असपिंड ।

अदायिक–वि० (सं०) लावारिस; दाय–उत्तराधिकारसे संबंध न रखनेवाला ।

अदार–वि० (सं०) विपत्नीक, रँडुआ ।

अदालत–स्त्री० (अ०) न्यायालय ।

अदालती–वि० अदालत-संबंधी; मुकदमेबाज ।

अदावँ–पु० कुदावँ, कठिनाई ।

अदावत–स्त्री० (अ०) वैर, शत्रुता ।

अदावती–वि० अदावत रखनेवाला; द्वेषसे किया गया ।

अदास–वि० (सं०) जो दास न हो, स्वाधीन ।

अदाह–वि० जिसमें दाह या जलन न हो । * स्त्री० हाव-भाव, अदा ।

अदाहक–वि० (सं०) न जलानेवाला ।

अदाह्य–वि० (सं०) न जलनेवाला; जो चितापर जलाने योग्य न हो; आत्मा या परमात्माका एक विशेषण ।

अदित*–पु० आदित्य; रविवार ।

अदिति–पु० (सं०) मृत्यु; ईश्वरका एक नाम । स्त्री० दक्षकी पुत्री जो कश्यपसे ब्याही थी और जो आदित्यों या देवताओंकी माता मानी जाती है; पृथ्वी; प्रकृति; वाणी; पुनर्वसु नक्षत्र; निर्धनता; स्वतन्त्रता; असीमता; प्राचुर्य; पूर्णता; गाय; दूध । **–ज**–पु० आदित्य, देवता । **–नंदन**–पु० देवता ।

अदिन–पु० कुदिन, कुसमय, अभाग्य ।

अदिव्य–वि० (सं०) लौकिक; स्थूल । पु० लौकिक नायक ।

अदिव्या–स्त्री० (सं०) लौकिक नायिका ।

अदिश–(स्केलर) ऐसी भौतिक राशि जिसमें केवल परिमाण (मैग्निच्यूड) मौजूद हो, किन्तु दिशा न हो; जैसे द्रव्यमान, आयतन, घनत्व आदि ।

अदिष्ट|–पु० दे० 'अदृष्ट'; दुर्भाग्य ।

अदिष्टी*–वि० अदूरदर्शी; दुष्ट; अभागा ।

अदीक्षित–वि० (सं०) जिसने दीक्षा नहीं ली है; जो दीक्षित न हो ।

अदीठ*–वि० अदृष्ट, न देखा हुआ; छिपा हुआ ।

अदीन–वि० (सं०) दीनता-रहित, अकातर; न दबनेवाला; तेजस्वी; उदार । **–वृत्ति,–सत्त्व**–वि० तेजोमय ।

अदीनात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दे० 'अदीनवृत्ति' ।

अदीपित–वि० अप्रकाशित ।

अदीयमान–वि० (सं०) जो दिया न जा सके, अदेय ।

अदीर्घ–वि० (सं०) लंबा नहीं । **–सूत्र,–सूत्री(त्रिन्)**–वि० तेज, स्फूर्तिवाला; काम करनेमें विलंब न करनेवाला ।

अदीह*–वि० अदीर्घ, छोटा ।

अदुंद*–वि० निर्द्वंद्व, बेफिक्र; शांत; बेजोड़ ।

अदुःख–वि० (सं०) दुःखसे रहित । **–नवमी**–स्त्री० भाद्रशुक्ला नवमी (इस दिन स्त्रियाँ दुःखके निवारणके लिए देवीकी पूजा करती हैं) ।

अदुतिय*–वि० अद्वितीय, बेजोड़ ।

अदुर्ग–वि० (सं०) दुर्ग-रहित, बिना किलेबंदीका; अदुर्गम । **–विषय**–पु० दुर्गहीन देश ।

अदूजा*–वि० अद्वितीय ।

अदूर–अ० (सं०) निकट, पास । वि० पासका । पु० सामीप्य । **–दर्शी(शिन्)**–वि० दूरतक न सोचनेवाला; अविचारी । **–भव**–वि० पासमें ही स्थित ।

अदूषण–वि० (सं०) दूषणरहित, निर्दोष ।

अदूषित–वि० (सं०) अविकृत, शुद्ध, निर्दोष । **–धी**–वि० पवित्रात्मा, जिसकी बुद्धि भ्रष्ट न हुई हो ।

अदृढ–वि० (सं०) कमजोर; अस्थिर, चंचल ।

अदृप्त–वि० (सं०) दर्परहित, निरभिमान ।

अदृश्य–वि० (सं०) जो दिखाई न दे, जो देखा न जा सके, अगोचर; लुप्त, गायब; परमेश्वरका एक विशेषण ।

अदृष्ट–वि० (सं०) न देखा हुआ; अदृश्य; अज्ञात, अननुभूत; अस्वीकृत; अवैध । पु० भाग्य, प्रारब्ध; कर्मजन्य संस्कार, पूर्वजन्मोंमें संचित पुण्य-पाप जो इस जन्मके सुख-दुःखके कारण माने जाते हैं; एक विषैला द्रव्य या कीट । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसे कार्यका अभ्यास या अनुभव न हो । **–गति**–वि० जिसकी गति-विधि, चाल समझमें न आये । **–नर,–पुरुष**–पु० ऐसी संधि जो बिना मध्यस्थके दोनों दल आपसमें मिलकर कर लें । **–नरसंधि**–स्त्री० ऐसी संधि या प्रतिज्ञा जो किसीके साथ इसलिए की जाय कि वह किसी अन्य व्यक्तिसे कोई कार्य सिद्ध करा देगा । **–पूर्व**–वि० जो पहले न देखा गया हो; अद्‌भुत, विलक्षण । **–फल**–पु० पुण्य-पापका भविष्यमें प्राप्त होनेवाला फल । वि० जिसका फल अज्ञात हो । **–वाद**–पु० प्रारब्धवाद, नियतिवाद ।

अदृष्टाक्षर–पु० (सं०) ऐसी स्याहीसे लिखे अक्षर जो साधारण अवस्थामें अदृश्य रहें, विशेष उपायसे ही पढ़े जा सकें ।

अदृष्टार्थ–वि० (सं०) आध्यात्मिक या गूढ़ अर्थ रखनेवाल.; जिसका विषय इंद्रियगोचर न हो ।

अदृष्टि–स्त्री० (सं०) क्रुद्ध या बुरी दृष्टि; देख न पड़ना । वि० अंधा ।

अदृष्टिका–स्त्री० (सं०) दे० 'अदृष्टि' ।

अदेख*–वि० अदृश्य; न देखा हुआ; जो न देखा जाय ।

अदेखी–वि० जो दूसरेका सुख-उत्कर्ष न देख सके, डाही । वि०, स्त्री० न देखी हुई ।

अदेय–वि० (सं०) न देने योग्य; जिसका दान उचित या वैध न हो; जिसे देनेको कोई विवश न किया जा सके (ऐसी वस्तु) । पु० वह वस्तु जिसे देना उचित या आवश्यक न हो ।**–दान**–पु० अवैध दान, अविहित दान ।

अदेव–पु० (सं०) देवभिन्न; असुर, दैत्य । वि० जो देवता-संबंधी न हो; देवरहित; अपवित्र; अधार्मिक । **–मातृक**–वि० जहाँ वर्षा न हुई हो; वर्षाके अभावमें तालाब आदिके जलसे सींचा हुआ ।

अदेवक–वि० (सं०) जो देवताके निमित्त न हो ।

अदेवता–पु० (सं०) दे० 'अदेव' ।

अदेश–पु० (सं०) अयोग्य, अनुपयुक्त देश; बुरा या निंदित देश ।

अदेश्य–वि० (सं०) जो स्थल या अवसरविशेषसे संबद्ध न हो; जिसका आदेश या निर्देश करना उचित न हो ।

अदेस*–पु० आदेश; प्रणाम; दे० 'अंदेशा' ।

अदेह–वि० (सं०) देहरहित । पु० कामदेव ।

अदैन्य–वि० (सं०) दीनता या हीनतासे रहित । पु० दीनताका अभाव ।

अदैव–वि० (सं०) देवताओं या उनके कार्योंसे असंबद्ध; जो भाग्य या देवताओं द्वारा पूर्वनिर्धारित न हो ।

अदोख, अदोखिल*–वि० दे० 'अदोष' ।

अदोग्धा(ग्धृ)–वि० (सं०) अशोषक, विचारवान् (नरेश) ।

अदोष–वि० (सं०) दोषरहित, बेऐब; निरपराध ।

अदोस*–वि० दे० 'अदोष' ।

अदोह–पु० (सं०) वह समय जब दुहना संभव न हो; न दुहना ।

अदौरी†–स्त्री० उर्दकी सुखायी हुई बरी ।

अद्‌ग–पु० (सं०) पुरोडाश ।

अद्ध*–वि० दे० 'अर्द्ध' ।

अद्धरज*–पु० दे० 'अध्वर्यु' ।

अद्धा–अ० (सं०) प्रत्यक्षतः; निश्चयपूर्वक, निस्संदेह, सत्य ही । **–पुरुष**–पु० सत्पुरुष; सच्चा आदमी । **–मिश्रित वचन**–पु० काल-संबंधी मिथ्या वचन (जैन) ।

अद्धा–पु० किसी चीजकी आधी तौल या नाप; बोतलका आधा, बोतली; एक बोतली या एक पाइंट शराब; आधे घंटेपर बजनेवाला घंटा; चार मात्राओंका एक ताल; रसीद आदिका आधा भाग जो देनेवालेके पास रह जाता है, मुसन्ना; एक छोटी नाव; एक बैलकी छोटी गाड़ी 'दूसरे दिन चार अद्धे जोते गये'–नव० दिस० ६२ । आधी ईंट ।

अद्धी–स्त्री० दमड़ीका आधा, पैसेका सोलहवाँ भाग; मलमलकी किस्मका एक तरहका बढ़िया बारीक कपड़ा ।

अद्‌भुत–वि० (सं०) विचित्र, अनोखा, विस्मयजनक । पु० आश्चर्य; आश्चर्यजनक पदार्थ या घटना; काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायीभाव विस्मय है । **–कर्म(र्मन्)**–वि० अद्‌भुत कर्म करनेवाला । **–दर्शन**–वि० देखनेमें अद्‌भुत, अनोखा लगनेवाला । **–धर्म**–पु० बौद्धोंके नौ अंगोंमेंसे एक । **–रस**–पु० काव्यके नौ रसोंमेंसे एक । **–सार**–पु० खदिरसार । **–स्वन**–वि० विचित्र स्वरवाला । पु० शिव ।

अद्‌भुतालय–पु० (सं०) जहाँ अद्‌भुत वस्तुओंका संग्रह हो, अजायबघर ।

अद्‌भुतोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद (उपमानमें ऐसे गुणोंकी कल्पना करना जिनसे युक्त होनेपर उससे उपमेयकी तुलना की जा सके) ।

अद्मनि–पु० (सं०) अग्नि ।

अद्मर–वि० (सं०) बहुत अधिक खानेवाला, पेटू ।

अद्य–अ० (सं०) आजकल; आज; अब; अभी । वि० खानेयोग्य । पु० आहार, खाद्य पदार्थ । **–तन**–वि० दे० 'अद्यावधिक' । **–दिन,–दिवस**–अ० आजका दिन । **–पूर्व**–अ० आजसे पहले । वि० आजसे पहलेका । **–प्रभृति**–अ० आजसे; अबसे । **–श्वीन**–वि० आजकलमें घटित होनेवाला । **–श्वीना**–स्त्री० आसन्नप्रसवा ।

अद्यतन–वि० (सं०) आजका, आजसे संबंध रखनेवाला; दे० 'अद्यावधिक' । पु० पिछली आधी रातसे आनेवाली आधी राततकका समय ।

अद्यतनता–स्त्री० आधुनिकता । एक दम नये साहित्यकी विशेषता ।

अद्यतनीय–वि० (सं०) आजका, आधुनिक ।

अद्यापि–अ० (सं०) आज भी; अब भी; आजतक; अबतक ।

अद्यावधि–अ० (सं०) आजतक; अबतक ।

अद्यावधिक–वि० (अपटुडेट) बिलकुल आजतकका, हालतकका; जिसमें बिलकुल हालतकके तथ्य तथा आँकड़े आदि आ गये हों; अद्यतन; जो अभी-अभीतकके भूषाचारों, तौर-तरीकों आदिसे परिचित हो ।

अद्यूत्य–वि० (सं०) जुएसे नहीं, ईमानदारीसे प्राप्त किया हुआ ।

अद्यैव–अ० (सं०) आज ही ।

अद्रव–वि० (सं०) तरल नहीं, ठोस, कठिन । पु० कठिन पदार्थ ।

अद्रव्य–पु० (सं०) तुच्छ वस्तु, निकम्मी चीज । वि० जिसके पास कोई संपत्ति न हो, दरिद्र ।

अद्रा*–स्त्री० दे० 'आर्द्रा' ।

अद्रि–पु० (सं०) पहाड़, पत्थर; बिजली; वृक्ष; सूर्य; बादल; बादलोंका समूह; एक मान; सातकी संख्या; पृथुका एक पौत्र । **–कन्या,–नंदिनी,–सुता**–स्त्री० पार्वती । **–कर्णी**–स्त्री० अपराजिता । **–कील**–पु० विष्कुंभ पर्वत । **–कीला**–स्त्री० पृथ्वी । **–कुक्षि**–स्त्री० गुफा, कंदरा । **–छिद्**–पु० बिजली । **–ज**–पु० शिलाजतु; गेरू । वि० पर्वतसे उत्पन्न । **–जा**–स्त्री० पार्वती; गंगा; सैंहली वृक्ष । **–तनया**–स्त्री० पार्वती; एक वृत्त । **–द्रोणी**–स्त्री० पहाड़ी घाटी; नदीका उद्‌गम । **–द्विट्(ष्),–भिद**–पु० इंद्र । **–पति, राज**–पु० हिमालय । **–भू**–स्त्री० अपराजिता,

आखुकर्णी लता। **–वह्नि–**पु० पर्वताग्नि; दावाग्नि। **–शय्य–**पु० शिव। **–शृंग,–सानु–**पु० पहाड़की चोटी। **–सार–**पु० लोहा; सिलाजीत। वि० पर्वत जैसा दृढ़, कठिन।

अद्रींद्र, अद्रीश,–पु० (सं०) हिमालय।

अद्रोघ–वि० (सं०) सत्य; द्वेषरहित।

अद्रोह–पु० (सं०) द्वेषराहित्य। **–वृत्ति–**स्त्री० द्रोहरहित आचरण।

अद्रोही(हिन्)–वि० (सं०) द्रोहरहित।

अद्ल–पु० (अ०) न्याय, इंसाफ। **–परवर–**वि० न्यायशील, इंसाफ करनेवाला।

अद्वंद्व–वि० (सं०) शत्रुताहीन।

अद्वय–वि० (सं०) अद्वितीय, अकेला। पु० द्वैतका अभाव, अद्वैत; बुद्ध। **–वादी(दिन्)–**वि० अद्वैतवादका अनुयायी।

अद्वार–पु० (सं०) द्वाररहित स्थान; वह प्रवेश-मार्ग जो द्वार न हो।

अद्वितीय–वि० (सं०) जैसा कोई दूसरा न हो, बेजोड़, लासानी; अकेला; अद्भुत, अनोखा। पु० ब्रह्म।

अद्वेष–वि० (सं०) द्वेषरहित, निर्वैर, वैर-विरोध न रखनेवाला; शांत। पु० द्वेषहीनता।

अद्वेषी(षिन्)–वि० (सं०) द्वेषहीन।

अद्वेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) वह जो द्वेषी या शत्रु न हो, मित्र।

अद्वैत–पु० (सं०) द्वैत या भेदका अभाव; जीव-ब्रह्म या जड-चेतनकी एकता; ब्रह्म। वि० अद्वितीय। **–वाद–**पु० जीव और ब्रह्मका अभेद बतानेवाला दर्शन, जगत्‌का मूल तत्त्व एक ही है यह मत, वेदांत। **–वादी(दिन्)–**वि० अद्वैतवादके सिद्धांतको माननेवाला, वेदांती। **–सिद्धि–**स्त्री० ब्रह्म और जगत्‌के अभेदकी सिद्धि; शांकर वेदांतका एक विशेष प्रकरण।

अद्वैध–वि० (सं०) जो दो भागोंमें बँटा न हो; अवियुक्त; असद्भावनारहित; खरा।

अद्वैध्य मित्र–पु० (सं०) जिसकी मैत्रीमें किसी तरहका संदेह न हो ऐसा मित्र (व्यक्ति या राष्ट्र)।

अधः(धस्)–अ० (सं०) नीचे; नीचेके लोकमें, पाताल या नरकमें। (समासमें नाम या विशेषणके पहले लगकर 'नीचे' या 'नीचेका' अर्थ प्रकट करता है)। **–काय–**पु० देहका नाभिके नीचेका भाग। **–क्रिया–**स्त्री० किसीको अपमानित या तिरस्कृत करना, नीचा दिखाना। **–पतन,–पात–**पु० नीचे गिरना; पतन, अधोगति, अवनति। **–पुष्पी–**स्त्री० गोजिह्वा; अवाक्‌पुष्पी। **–प्रस्तर–**पु० मरणाशौचवाले व्यक्तियोंके बैठनेकी एक चटाई। **–शयन–**पु० जमीनपर सोना। **–शिरा(रस्)–**वि० सिर नीचे रखनेवाला। पु० एक नरक। **–स्वस्तिक–**पु० अधोबिंदु।

अध–वि० 'आधा'का समासमें व्यवहृत लघु रूप। **–कचरा–**वि० अपक्व; अधूरा; अधूरी जानकारी रखनेवाला, अकुशल; अधकुटा। **–कच्छा–**पु० नदीके तटकी वह उच्चभूमि जो ढालुई होती हुई पानीकी सतहसे सट जाती है। **–कछार–**पु० पहाड़की तलहटीकी ढालू जमीन। **–कपारी–**स्त्री० आधे सिरका दर्द, आधासीसी। **–करी–**स्त्री० मालगुजारी, लगान आदिकी आधी किस्त। **–कहा–**वि० अस्पष्ट रूपसे कहा हुआ। **–खिला–**वि० अर्द्धविकसित। **–खुला–**वि० आधा खुला हुआ, अर्धोन्मीलित (आँखें, कली इ०)। **–गोरा–**वि० यूरोपियन और एशियाई माँ-बापकी संतति, यूरेशियन, ऐंग्लोइंडियन। **–घट*–**वि० जो पूरा न घटे; अस्पष्ट अर्थवाला, कठिन। **–चना†–**पु० गेहूँ और चनेकी समान मिलावट। **–चरा–**वि० आधा चरा या आधा खाया हुआ, अर्द्धभक्षित। **–जर*–**वि० आधा जला हुआ। **–जल–**वि० आधा भरा हुआ (घड़ा इ०)। **–जला–**वि० अर्द्धदग्ध, आधा जला हुआ। **–पई–**स्त्री० एक बाट जो आधा पाव होता है। **–बर–**पु० आधा रास्ता, बीच। **–बुध*–**वि० अर्द्धशिक्षित। **–बैसू*–**वि० अधेड़। **–मरा,–मुआ–**वि० अर्द्धमृत, मृतप्राय। **–रात–**स्त्री० आधी रात। **–रौंथा–**वि० आधा चबाया या पागुर किया हुआ। **–सेरा–**पु० आध सेरका बाट।

अधड़ी–वि० अधरमें स्थित; ऊटपटाँग।

अधन–वि० (सं०) धनहीन; स्वतंत्र धन-संपत्तिका अनधिकारी।

अधनिया–वि० आधा आनेका, जो दो पैसेमें मिले।

अधन्ना–पु०, **अधन्नी–**स्त्री० आधा आनेका सिक्का जो पहले प्रचलित था।

अधन्य–वि० (सं०) अभागा, दुःखी; निंद्य; जो धान्यादिसे भरा-पूरा न हो; जो उन्नति न कर रहा हो।

अधफर*–पु० अधर, अंतरिक्ष।

अधम–वि० (सं०) नीच, निकृष्ट; दुष्ट; पापी; नीचतम, अतिहीन या दुष्ट; निर्लज्ज। पु० कामी; ग्रहोंका एक अनिष्ट योग; परनिंदक कवि। **–भृत,–भृतक–**पु० निम्न श्रेणीका नौकर, पौरिया। **–रति–**स्त्री० स्वार्थवश की जानेवाली प्रीति।

अधमई, अधमाई*–स्त्री० अधमता, नीचता।

अधमर्ण–पु० (सं०) ऋण लेनेवाला, कर्जदार।

अधमांग–पु० (सं०) शरीरका नीचेवाला भाग, पैर।

अधमा–स्त्री० (सं०) नायिकाका एक भेद; निम्न श्रेणीकी स्त्री; कर्कशा स्त्री।

अधमाधम–वि० (सं०) बुरेसे बुरा, नीचतम।

अधमार्द्ध–पु० (सं०) देहका नाभीके नीचेका भाग।

अधमुख*–वि० दे० 'अधोमुख'।

अधमोद्धारक–वि० (सं०) पापियोंको तारनेवाला (महात्मा, परमात्मा इ०)।

अधर–वि० (सं०) नीचा; नीचेका; पहलेका; नीच, बुरा; घटिया; (वाद या मुकदमेमें) पराजित; चंचल। पु० नीचेका ओठ; होंठ; शरीरका निचला भाग; धरती और आकाशके बीचका स्थान; अंतरिक्ष; पाताल; रतिगृह, योनि; दक्षिण दिशा। **–काय–**पु० शरीरका नीचेका भाग। **–पान–**पु० होंठ चूमना, चुंबन। **–बुद्धि–**वि० क्षुद्र या नीच बुद्धिवाला। **–मधु,–रस–**पु० अधरामृत। **–सपत्न–**वि० जिसके शत्रु हारकर मौन हो गये हों। **–सुधा–**स्त्री० अधर-रसरूपी अमृत। **–स्वस्तिक–**पु० अधोबिंदु। मु० **–चबाना–**क्रोधावेशमें दाँतोंसे ओठ चबाना, अत्यंत क्रुद्ध होना। **–में झूलना,–में पड़ना,–में लटकना–**बीचमें पड़ा रहना; अधूरा रहना; दुविधामें पड़ा रहना।

अधरज–पु० ओठोंकी लाली या पानकी लकीर।

अधरम–पु० दे० 'अधर्म'। **–काय*–**पु० दे० 'अधर्मास्तिकाय'।

अधराधर–पु० (सं०) नीचेका ओठ।

अधरामृत–पु० (सं०) अधर चुंबनसे प्राप्त होनेवाला अमृततुल्य रस।

अधरावलोप–पु० (सं०) ओठ चबाना।

अधरीण–वि० (सं०) तिरस्कृत; निंदित; नीच।

अधरेद्युः(द्युस्)–पु० (सं०) परे दिन, परसों (बीता हुआ)।

अधरोत्तर–वि० (सं०) ऊँचा-नीचा; अच्छा-बुरा; कमोबेश।

अधरोष्ठ, अधरौष्ठ–पु० (सं०) नीचेका ओठ; नीचे और ऊपरके ओठ।

अधर्म–पु० (सं०) धर्म-विरुद्ध कार्य, शास्त्र-विरुद्ध कर्म या आचरण; पाप, दुष्कर्म; अन्याय; अकर्तव्य; एक प्रजापति। **–मंत्रयुद्ध–**पु० वह युद्ध जो दोनों पक्षोंका पूर्ण नाश करनेके लिए ही प्रारंभ किया गया हो।

अधर्मास्तिकाय–पु० (सं०) जैनमतानुसार द्रव्यके छ भेदोंमें एक।

अधर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) अधर्म करनेवाला, पापी।

अधर्म्य–वि० (सं०) धर्म-विरुद्ध; अधर्मी; अवैध; अन्याय्य।

अधर्षणी(णिन्)–वि० (सं०) जो दबाया या डराया न जा सके, प्रबल, निर्भय।

अधर्षणीय–वि० जो डरा-धमकाकर दबाया न जा सके, निर्भय।

अधवा–स्त्री० (सं०) विधवा, पतिरहिता, राँड़।

अधवारी–स्त्री० एक वृक्ष।

अधश्चर–पु० (सं०) सेंध लगाकर चोरी करनेवाला, चोर। वि० नीचे-नीचे या जमीनपर रेंगकर चलनेवाला।

अधस्–अ० (सं०) दे० 'अधः। **–तल–**पु० नीचेकी कोठरी; नीचेकी तह; तहखाना। **–स्वस्तिक–**पु० दे० 'अधःस्वस्तिक'।

अधस्तन–वि० (सं०) नीचा, नीचे अवस्थित; अधीनस्थ; पहलेका।

अधस्तात्–अ० (सं०) नीचे।

अधाँगा–पु० एक तरहकी चिड़िया ।

अधातु–स्त्री० वह जो धातु न हो; वह जिसमें धातुके गुण न हों ।

अधात्वीय–वि० (सं०) जो धातुका न बना हो, धातुसे भिन्न पदार्थसे बना हुआ ।

अधाधुंध–अ० दे० 'अंधाधंध' ।

अधाना–पु० खयालका एक भेद (संगीत) ।

अधान्यवाय–पु० (सं०) वह स्थान या प्रदेश जहाँ धान न पैदा होता हो ।

अधामार्गव–पु० (सं०) अपामार्ग ।

अधार*–पु० दे० 'आधार' ।

अधारणक–वि० (सं०) जो लाभदायक न हो ।

अधारिया–पु० वैलगाड़ीमें गाड़ीवानके वैठनेका स्थान, मोढ़ा ।

अधारी*–स्त्री आधार, सहारा; साधुओंकी वाँहके नीचे लगानेकी लकड़ी; मुसाफिरी थैला । वि०, स्त्री० अच्छी, भली लगनेवाली; सहारा देनेवाली । पु० वह वैल जो हल या गाड़ीमें जोता न गया हो ।

अधार्मिक–वि० (सं०) अधर्मी, धर्मसे संवंध न रखनेवाला; पापी, दुष्कर्मी ।

अधावट–वि० जो औटनेपर आधा रह गया हो, औटकर आधा किया हुआ (दूध इ०) ।

अधि–उप० (सं०) यह ऊपर, मुख्य, प्रधान (अधिराज), अधिक, अतिरिक्त (अधिमास), संवंधी, विषयक (अधिदैव, अध्यात्म) आदि अर्थोंका द्योतन करता है । स्त्री० वह स्त्री जिसका मासिक स्राव चल रहा हो; चिंता, मनःपीड़ा ।

अधिक–वि० (सं०) वहुत, ज्यादा; वढ़ा हुआ; असाधारण; अतिरिक्त, फाजिल विशेष; वादका; गौण । पु० एक अलंकार जिसमें आधेयका आधारसे अधिक होना कहा जाता है; एक निग्रहस्थान––हेतु, व्याप्ति और दृष्टांतसे जो सिद्ध हो उससे अधिक सिद्ध करना (न्या०) । **–कोण**–पु० (ऑब्टयूज एंगिल) एक समकोणसे वड़ा, किन्तु दो समकोणोंसे छोटा, कोण । **–०त्रिभुज**–पु० (आव्टयूज एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण अधिककोण हो । **–तिथि**–स्त्री० दो दिन मानी जानेवाली तिथि । **–दिन,–दिवस**– पु० दे० 'अधिक तिथि' । **अधि(क) प्रतिनिधित्व**–पु० (वेटेज) किसी अल्पसंख्यक संप्रदाय या वर्गको दिया जानेवाला उसकी संख्याके अनुपातसे अधिक प्रतिनिधित्व । **–मास**–पु० लौंदका महीना, मलमास । **–वाक्योक्ति**–स्त्री० अतिरंजना । **–संवत्सर**–पु० मलमास ।

अधिकतर–वि० (सं०) और अधिक, किसीकी तुलनामें अधिक वड़ा । अ० वहुत करके, ज्यादातर ।

अधिकता–स्त्री० (सं०) वहुतायत, वढ़ती; विशेषता ।

अधिकर–पु० (सुपर टैक्स) अधिक आयपर या किसी विशेष अवस्थामें लगनेवाला अतिरिक्त कर ।

अधिकरण–पु० (सं०) आधार, आश्रय, अधिष्ठान; संवंध; सामान, पदार्थ; दावा; प्राधान्य; राज्यका कोई मुख्य विभाग (जैसे नावधिकरण) । व्याकरणमें क्रियाका आधार, सातवाँ कारक; न्यायालय; किसी विशिष्ट कार्यके हेतु थोड़े समयके लिए स्थापित या नियुक्त न्यायालय (ट्रिब्यूनल); प्रकरण, अध्याय, वह प्रकरण या परिच्छेद जिसमें किसी विषयकी पूर्ण विवेचना की जाय; अधिकार-प्रदान, नियुक्ति । **–भोजक**–पु० न्यायाधीश । **–मंडप**–पु० न्यायालय । **–विचाल**–पु० किसी वस्तुके गुणमें ह्रास या वृद्धि करते जाना । **–सिद्धांत**–पु० वह सिद्धांत जिसमें कुछ और सिद्धांतों या अर्थोंका अंतर्भाव हो (न्या०) ।

अधिकरणिक–पु० (सं०) न्यायाधीश; अधिकारी ।

अधिकरणी(णिन्)–पु० (सं०) निरीक्षक; अध्यक्ष ।

अधिकरण्य–पु० (सं०) अधिकार ।

अधिकर्द्धि–वि० (सं०) समृद्धिशाली ।

अधिकर्म(न्)–पु० (सं०) निगरानी, निरीक्षण । **–कर, –कृत**–पु० मजदूरों आदिके कामकी देखभाल.करनेवाला, मेठ ।

अधिकर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) निरीक्षक; अध्यक्ष ।

अधिकर्मिक–पु० (सं०) व्यापारियोंसे चुंगी वसूल करनेवाला अधिकारी, हट्टाध्यक्ष ।

अधिकर्मी–पु० (ओह्वरसीयर) कुछ लोगोंपर निगरानी रखते हुए उनके कामोंकी देखभाल करनेवाला अधिकारी, ओवरसियर, सर्वेक्षक ।

अधिकांग–पु० (सं०) अतिरिक्त अंग । वि० अतिरिक्त अंगवाला ।

अधिकांश–पु० (सं०) वड़ा भाग । वि० अधिकतर । अ० वहुधा, अकसर ।

अधिकाई*–स्त्री० अधिकता; विशेषता; महत्त्व ।

अधिकाधिक–वि०, अ० (सं०) अधिकसे अधिक, ज्यादासे ज्यादा ।

अधिकाना*–अ० क्रि० अधिक होना, वढ़ना ।

अधिकाभेदरूपक–पु० (सं०) रूपक अलंकारका एक उपभेद जिसमें उपमान तथा उपमेयके वीच अभेद दिखलाते हुए भी पीछेसे उपमेयमें कुछ विशेषताका उल्लेख कर दिया जाय ।

अधिकार–पु० (सं०) प्रभुत्व, शक्ति; इख्तियार; हक; निरीक्षण; कर्तव्य; पद; प्रयत्न; स्थान; स्वत्व; कब्जा; राज्य, हुकूमत; पात्रता, योग्यता; ज्ञान; कर्म-विशेषको पात्रता; प्रकरण, विषय; नाटकके प्रधान फलका प्रभुत्व या उसे प्राप्त करनेकी योग्यता; वह मुख्य नियम जिसका और नियमोंपर भी प्रभाव हो (व्या०) । **–क्षेत्र**–पु० (जूरिस्डिक्शन) किसी न्यायाधीश आदिके अधिकारकी सीमा या क्षेत्र; क्षेत्राधिकार । **–का अवक्रमण**–पु० (डिवॉल्यूशन ऑफ पावर) अधिकारका एक व्यक्ति या संस्थाके हाथसे दूसरेके हाथमें चला जाना या दे दिया जाना; अप्रयुक्त अधिकारोंका अंतिम हकदारको प्राप्त हो जाना । **–पत्र**–पु० (चार्टर) अधिकार प्रदान करनेवाला वह लिखित प्रलेख जो राज्य, राजा या प्रधान शासकसे प्राप्त हुआ हो; दे० 'शासपत्र' । **–पात्र**–वि० अधिकारकी योग्यता रखनेवाला । **–पृच्छा**–स्त्री० (क्वो वारंटो) वह लिखित आदेशपत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति या निगमित संस्थासे पूछा जाय कि किस अधिकारके आधारपर उसकी ओरसे किसी पद या मताधिकारका दावा किया जा रहा है । **विधि**–स्त्री० वह विधि जिससे व्यक्ति-विशेषके काम करनेके अधिकारका वोध हो ।

अधिकारिका सेना–स्त्री० (आरमी ऑफ आकुपेशन) जीते हुए देशपर तवतक अधिकार वनाये रखनेवाली सेना जवतक वहाँ नियमित शासनकी व्यवस्था कायम न हो जाय ।

अधिकारितंत्र, राज्य–पु० (ब्यूरोक्रैसी) वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था मुख्य रूपसे अधिकारियोंकी परंपरापर आश्रित हो; नौकरशाही; कर्मचारितंत्र ।

अधिकारी(रिन्)–वि० (सं०) अधिकार रखनेवाला, हकदार । पु० वह वस्तु जिसपर किसीका स्वत्व हो; वह जिसमें पात्रता हो; मालिक; शासक; अफसर; पुरुष (सृष्टिकर्ता); वेदांतका ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति; नाटकका वह पात्र जिसे मुख्य फलकी प्राप्ति होती है । **–तंत्र**–पु० दे० 'अधिकारितंत्र' ।

अधिकार्य–वि० (सं०) अतिरंजित । **–वचन**–पु० अतिरंजना ।

अधिकृत–वि० (सं०) अधिकार या कब्जेमें आया हुआ; अधिकार-संपन्न, आवश्यक योग्यता रखनेवाला । पु० अधिकारी, अध्यक्ष ।

अधिकृति–स्त्री० (सं०) अधिकार, स्वत्व ।

अधिकोष–पु० (वैंक) दे० 'वैंक' ।

अधिकोषण कार्य (व्यापार)–पु० (वैंकिंग विजिनेस) दूसरोंका रुपया जमा करने, लोगोंको ऋण देने आदिका कारवार, कोठीवाली, महाजनी; वैंक व्यापार ।

अधिक्रम, अधिक्रमण–पु० (सं०) आरोहण; चढ़ाई; हमला; किसी व्यक्ति या संस्थाको हटाकर उसके अधिकार अपने हाथमें ले लेना या किसी अन्यको दे देना (सुपरसेशन) ।

अधिक्रांत–वि० किसी को हटाकर जिसे अधिकारमें ले लिया गया हो (संस्था), 'सुपरसीडेड' ।

अधिक्षिप्त–वि० (सं०) अपमानित, तिरस्कृत; फेंका हुआ; नियत किया हुआ; भेजा हुआ ।

अधिक्षेत्र–पु० (जूरिस्डिक्सान) दे० 'अधिकारक्षेत्र' ।

अधिक्षेप–पु० (सं०) फेंकना; निंदा, अपमान; दोषारोप; व्यंग्य;

पृथक् करना।

अधिगंतव्य, अधिगमनीय, अधिगम्य–वि० (सं०) प्राप्त करने योग्य; सीखने योग्य; समझने योग्य।

अधिगंता(तृ)–पु० (सं०) प्राप्त करनेवाला; सीखनेवाला।

अधिगणन–पु० (सं०) गिनना; अधिक मूल्य लगाना; अधिक महत्त्व देना।

अधिगत–वि० (सं०) प्राप्त; ज्ञात; पढ़ा हुआ।

अधिगम–पु० (सं०) प्राप्ति; पहुँचना; जानना; सीखना; धनादिकी प्राप्ति; व्यापारिक लाभ; स्वीकार; मैथुन।

अधिगव–वि० (सं०) गायमें या गायसे प्राप्त।

अधिगुण–वि० (सं०) विशिष्ट गुणयुक्त, सुयोग्य; जिसका गुण खिंचा हो (धनुष्)। पु० विशिष्ट गुण।

अधिगुप्त–वि० (सं०) सुरक्षित; छिपाया हुआ।

अधिग्रहण–पु० (ऐक्विजिशन) दे० 'अभिग्रहण'।

अधिचरण–पु० (सं०) किसीके ऊपर गमन करना।

अधिचर्म–पु० (एपिडर्मिस) प्राणी या पौधेकी कोशिकाओंको घेरे रहनेवाली बाहरी परत।

अधिज–वि० (सं०) जनमा हुआ; सद्वंशजात।

अधिजनन–पु० (सं०) जन्म।

अधिजिह्व–पु० (सं०) एकाधिक जीभोंवाला जीव, साँप आदि; एक रोग जिसमें जीभ सूज जाती है।

अधिजिह्वा, अधिजिह्विका–स्त्री० (सं०) जीभकी एक बीमारी; गलेका कौआ।

अधिज्य–वि० (सं०) (धनुष्) जिसका चिल्ला चढ़ा हुआ हो, तना हुआ। **–कार्मुक,–धन्वा(न्वन्)**–वि० जिसके धनुष्का चिल्ला चढ़ा हुआ हो।

अधित्यका–स्त्री० (सं०) पहाड़के ऊपरकी समतल भूमि, 'टेबुललैंड'।

अधित्याग–पु० (ऐब्डिकेशन) राज्य, पद, अधिकार आदिका औपचारिक रूपसे किया गया त्याग, राज्यत्याग।

अधिदंडनेता(तृ)–पु० (सं०) यम।

अधिदंत–पु० (सं०) दाँतके ऊपर निकलनेवाला दाँत।

अधिदार्व–वि० (सं०) काष्ठ-संबंधी; काठका।

अधिदिन–पु० (सं०) दे० 'अधिक तिथि'।

अधिदीधित–वि० (सं०) जिसमें बहुत अधिक प्रभा, चमक हो।

अधिदेय–पु० (अलाउंस) यात्रा-व्यय, भोजन-व्यय, मकानके किराये आदिके संबंधमें या किसी अतिरिक्त कामके लिए कर्मचारीको दी जानेवाली बँधी हुई रकम, भत्ता।

अधिदेव–पु० (सं०) इष्ट देव; प्रधान देव; देवाधिप; परमेश्वर। वि० देव-संबंधी।

अधिदैव, अधिदैवत–पु० (सं०) दे० 'अधिदेव'।

अधिदैविक–वि० (सं०) आध्यात्मिक।

अधिनाथ–पु० (सं०) अधीश्वर; प्रधान अधिकारी।

अधिनायक–पु० (सं०) मुखिया, नेता; अनियंत्रित, सर्वाधिकार-संपन्न शासक या अधिकारी, 'डिक्टेटर'। **–तंत्र**–पु० अधिनायकके अधीन चलनेवाला शासन-प्रबंध; (डिक्टेटरशिप) एक व्यक्ति या व्यक्तिसमूहका स्वेच्छापूर्ण शासन, जिसमें शासित वर्गकी स्वीकृति लेने या इच्छा जाननेकी आवश्यकता न समझी जाय। अधिनायक-शासित राज्य।

अधिनायकवादिता–साहित्यकारोंपर अपनी मनमानी लादनेके इच्छुक प्रतिष्ठान, सम्पादक आदिके प्रयत्न, जिनका विरोध करना नया साहित्यकार अपना कर्तव्य मानता है।

अधिनायकी–स्त्री० अधिनायकका पद या कार्य।

अधिनियम–पु० (ऐक्ट) विधानमंडल (अथवा राजा या प्रधान शासक) द्वारा पारित या स्वीकृत विधि।

अधिनियमन–पु० (इनैक्टमेंट) दे० 'विधायन'।

अधिनिष्कासन–पु० (इविक्शन) विधि-विहित कार्यवाही द्वारा किसीको भूमि, मकान आदिसे बाहर निकाल देना, 'बेदखली'।

अधिन्यस्त–वि० (असाइंड) जो किसीको सौंप दिया गया हो, विन्यस्त।

अधिन्यास–पु० (असाइन्मेंट) किसी भूमि, अधिकार आदिका लिखकर वैध रूपसे हस्तांतरण करना; अभिहस्तांकन; किसीके लिए कोई हिस्सा, कार्य आदि निर्धारित करना।

अधिप–पु० (सं०) मालिक, स्वामी; राजा, शासक; प्रधान।

अधिपति–पु० (सं०) दे० 'अधिप'; मस्तकका वह भाग जहाँका घाव घातक होता है। **–प्रत्यय**–पु० संयमका एक प्रकार (जै०)।

अधिपत्नी–स्त्री० (सं०) स्वामिनी; शासिका।

अधिपत्र–पु० (वारंट) वह पत्र जिसमें किसीको कोई काम करनेका अधिकार, अनुमति या आज्ञा दी जाय, लिखित आदेशपत्र; किसीको पकड़ने या उसका माल जब्त करनेकी न्यायालयकी लिखित आज्ञा।

अधिपांशुल–वि० (सं०) धूलिसे भरा हुआ।

अधिपुरुष–पु० (सं०) पुरुषोत्तम; श्रेष्ठ व्यक्ति। (बॉस) किसी संस्था आदिका प्रमुख अधिकारी; अधिकारप्राप्त व्यक्ति; हाकिम।

अधिपूरुष–पु० (सं०) पुरुषोत्तम, परमेश्वर।

अधिप्रज–वि० (सं०) बहुतसे बच्चोंवाला।

अधिबल–पु० (सं०) गर्भसंधिके तेरह अंगोंमेंसे एक (ना०); किसीको रूप बदले हुए देखकर होनेवाला धोखा।

अधिभार–पु० (सरचार्ज) कर या शुल्कादिका वह अतिरिक्त भार जो विशेष परिस्थितियोंमें या विशेष कार्यके लिए किसीपर डाला जाय, निर्धारित परिमाणसे अधिक कर, शुल्क इत्यादि।

अधिभू–पु० (सं०) स्वामी, प्रभु; श्रेष्ठ व्यक्ति।

अधिभूत–वि० (सं०) भूत-संबंधी। पु० ब्रह्म या उसकी माया; जड़ जगत्।

अधिभोजन–पु० (सं०) बहुत अधिक खाना, अतिभोजन।

अधिभौतिक–वि० दे० 'आधिभौतिक'।

अधिमंथ–पु० (सं०) आँखका एक रोग; दे० 'अधिमंथन'।

अधिमंथन–पु० (सं०) अग्नि उत्पन्न करनेके लिए अरणीकी लकड़ियोंको रगड़ना। वि० रगड़कर अग्नि उत्पन्न करने योग्य (काष्ठ)।

अधिमंथित–वि० (सं०) अधिमंथ रोगसे ग्रस्त।

अधिमत–पु० (वर्डिक्ट) किसी मामलेमें जूरी या न्यायसभ्य द्वारा दिया गया निर्णायक मत; जनता या निर्वाचकों द्वारा दिया गया मत; पंचनिर्णय, फैसला।

अधिमांस–पु० (सं०) आँखके श्वेत भागमें या मसूड़ोंके पृष्ठभागमें होनेवाला एक रोग।

अधिमांसक–पु० (सं०) मसूड़ोंके पृष्ठभागमें होनेवाला एक प्रकारका रोग।

अधिमात्र–वि० (सं०) मानसे अधिक, बहुत ज्यादा।

अधिमान–पु० (प्रिफरेंस) किसी वस्तु, देश, व्यक्ति आदिको औरोंसे अधिक महत्त्व या मान देना, वरीयता, तरजीह।

अधिमान्य–वि० (प्रिफरेबिल, प्रिफरेनशल) जो औरोंसे अधिक अच्छा, महत्त्वपूर्ण या ग्रहण करने योग्य हो अथवा समझा जाय, तरजीही।

अधिमान्यता–स्त्री० (प्रेफरेंस) अधिमान्य होनेका भाव, वरीयता (राजकीय अधिमान्यता = इंपीरियल प्रेफरेंस)।

अधिमास–पु० (सं०) हर तीसरे वर्ष बढ़नेवाला चांद्र मास, लौंदका महीना।

अधिमित्र–वि० (सं०) जिनमें परस्पर मैत्री हो। पु० परस्पर मित्रग्रहोंका योग।

अधिमुक्त–वि० (सं०) विश्वासयुक्त।

अधिमुक्ति–स्त्री० (सं०) विश्वास।

अधिमुक्तिक–पु० (सं०) महाकाल (बौ०)।

अधिमुह्य–पु० (सं०) बुद्धका पूर्वजन्मका एक नाम (बौ०)।

अधिमूल्यन–पु० दे० 'मूल्योत्कर्ष', 'मूल्याधिरोह'।

अधिमूल्यपर–अ० (अबव्ह पार) निर्धारित या अंकित मूल्यसे अधिक दामपर, अधिक मूल्यपर।

अधियज्ञ–वि० (सं०) यज्ञ-संबंधी। पु० प्रधान यज्ञ।

अधिया–पु० आधेका हिस्सेदार। स्त्री० आधेकी साझेदारी; खेती की वह व्यवस्था जिसमें उपजका आधा खेतके मालिकको और आधा खेत जोतने-बोनेवालेको मिलता है।

अधियाचन–पु० (रेक्विज़िशन) किसी विशेष कार्यके लिए किसीसे कोई चीज अधिकारपूर्वक माँगना या कोई काम करनेकी (लिखित) माँग करना; किसी सभाके सदस्यों द्वारा सभाका अधिवेशन करनेकी लिखित मांग करना।

अधियान*–पु० गोमुखी, जपनी; सुमिरनी।

अधियाना–स० क्रि० आधे-आध बाँट देना। अ०- क्रि० आधा होना, आधा रह जाना।

अधियार–पु० आधा हिस्सा या आधेका हिस्सेदार; वह जमींदार या काश्तकार जिसका आधा संबंध एक गाँवसे और आधा दूसरेसे हो।

अधियारिन†–स्त्री० सौत; आधेकी दावेदार या आधे हिस्सेकी हकदार स्त्री।

अधियारी–स्त्री० किसी जायदादमें आधी हिस्सेदारी; किसीकी जमींदारी या काश्तका दो गाँवोंमें होना।

अधियुक्त–वि० (एंप्लॉयड) दे० 'नियोजित'।

अधियोक्ता, अधियोजक–पु० (एंप्लॉयर) दे० 'नियोजक' मालिक।

अधियोग–पु० (सं०) ग्रहोंका एक योग जो यात्राके लिए शुभ माना जाता है।

अधियोजन–पु० (एंप्लॉयमेंट) दे० 'नियोजन'।

अधियोजनालय–पु० (एंप्लॉयमेंट एक्सचेंज) दे० 'नियोजनालय', काम-दिलाऊ दफ्तर, 'रोजगार कार्यालय'।

अधिरथ–वि० (सं०) रथारूढ़। पु० रथ हाँकनेवाला, सारथि; कर्णको पालनेवाला सूत।

अधिराज,–अधिराट्–पु० (सं०) सम्राट्, अधीश्वर।

अधिराज्य–पु० (सं०) सम्राट्का पद या अधिकार; साम्राज्य; (डोमिन्यन) स्वराज्य-प्राप्त उपनिवेश, स्वतंत्र उपनिवेश, डोमिनियन।

अधिरूढ–वि० (सं०) चढ़ा हुआ; बढ़ा हुआ।

अधिरोप–पु० (चार्ज) किराया, दंड आदिके रूपमें किसी पर अधिरोपित की जानेवाली रकम, प्रभार, आरोप।

अधिरोपण–पु० (सं०) उठाने या चढ़ानेकी क्रिया; (अपराधका) आरोप लगाना।

अधिरोह–पु० (सं०) गजारोही; चढ़ना। वि० चढ़ा हुआ।

अधिरोहण–पु० (सं०) ऊपर चढ़ना, सवार होना; धनुषपर चिल्ला चढ़ाना।

अधिरोहणी, अधिरोहिणी–स्त्री० (सं०) सीढ़ी, सोपान, जीना।

अधिरोही(हिन्)–वि० (सं०) अधिरोहण करनेवाला।

अधिलाभांश–पु० (बोनस) वह लाभांश जो किसी कारखाने अथवा व्यापारिक संस्थाके कार्यकर्ताओं या हिस्सेदारोंको वेतन या साधारण लाभांशके अतिरिक्त दिया जाय; लाभांश।

अधिलोक–पु० (सं०) संसार; ब्रह्मांड। वि० ब्रह्मांड-संबंधी।

अधिवक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) किसी पक्षका समर्थन करनेवाला, वकील; (एडवोकेट) न्यायालय आदिमें किसीके मामलेकी पैरवी करनेवाला; वक्ता।

अधिवचन–पु० (सं०) पक्षसमर्थन, हिमायत; नाम; उपाधि; अत्युक्ति।

अधिवर्ष–पु० (लीप-ईयर) (अधिक दिन या अधिक मासवाला वर्ष) वह चांद्र वर्ष जिसमें मलमास पड़ता हो; वह ईसवी सन् जिसमें फरवरी २९ दिनका हो; वह सौर वर्ष जिसमें फाल्गुन ३१ दिनका हो।

अधिवसित–वि० (सं०) अध्युषित, आबाद, बसा हुआ।

अधिवाचन–पु० (सं०) नामजदगी, निर्वाचन, चुनाव।

अधिवास–पु० (सं०) निवासी; पड़ोसी; ऊपर रहनेवाला; वासस्थान, बस्ती; धरना; विलंबतक ठहरना; दूसरेके घर जाकर रहना; (डोमिसाइल) एक देश, प्रांत या राज्यसे हटकर किसी दूसरे देश, प्रांतादिमें स्थायी रूपसे बस जाना; हठ; सुगंध; उबटन आदिका उपयोग; यज्ञारंभके पूर्व देवताका आवाहन-पूजन आदि; विवाहके पहले हलदी आदि चढ़ानेकी एक रीति; लबादा। **–भूमि–स्त्री०** बस्ती, निवासस्थान।

अधिवासन–पु० (सं०) सुगंधसे बसाना; यज्ञके पूर्व देवताका आवाहन-पूजन आदि करना; मूर्तिमें देवताकी प्राण-प्रतिष्ठा करना; धरना देना।

अधिवासित–वि० (सं०) सुगंधित, बसाया हुआ।

अधिवासी(सिन्)–वि०, पु० (सं०) बसनेवाला, रहनेवाला; (डोमिसाइल्ड पर्सन) दूसरे देश या राज्यादिमें स्थायी रूपसे बसनेवाला; सुवासित करनेवाला।

अधिवासी किसान–पु० वह किसान जो भूमिधर, सीरदार अथवा काश्तकार शरहमुअइनसे लगानपर खेत लेकर जोतता है। वह उसे जीवनभर जोतता रह सकता है पर हस्तांतरित नहीं कर सकता।

अधिविकर्ष–पु० (ओव्हर ड्राफ्ट) अधिकोष या बैंकमें किसीके खातेमें जितना रुपया जमा हो, उससे अधिककी हुंडी या धनादेश काटना या इस तरह काटी हुई हुंडी।

अधिविन्ना–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके रहते पति दूसरा विवाह कर ले।

अधिवीत–वि० (सं०) लपेटा हुआ; आच्छादित।

अधिवेत्तव्या–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके रहते दूसरा विवाह करना उचित है।

अधिवेत्ता(त्तृ)–पु० (सं०) एक स्त्रीके रहते दूसरा विवाह करनेवाला।

अधिवेद, अधिवेदन–पु० (सं०) एक स्त्रीके रहते दूसरा विवाह करना।

अधिवेदनीया, अधिवेद्या–स्त्री० (सं०) दे० 'अधिवेत्तव्या'।

अधिवेशन–पु० (सं०) किसी बड़ी सभा या समितिका सम्मेलन जिसमें कई बार बैठक हो; जलसा।

अधिशय–पु० (सं०) योग; वह वस्तु जो पीछे मिलायी या दी गयी हो।

अधिशयन–पु० (सं०) किसी चीजपर लेटना या सोना।

अधिशयित–वि० (सं०) (किसी चीजपर) लेटा हुआ; जो लेटने या सोनेके काममें आता हो।

अधिशस्त–वि० (सं०) ख्यात (बुरे अर्थमें)।

अधिशासी अभियंता–पु० (एग्जीक्यूटिव इंजीनियर) मकान इत्यादि बनानेके संबंधमें बनाये गये नियमोंका, या इस संबंधमें जारी किये गये आदेशोंका पालन करानेवाला अधिकारी।

अधिशिक्षक–पु० (रेक्टर) किसी विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदिका प्रधान, प्राध्यक्ष; किसी विद्यालयका प्रधान शिक्षक (स्काटलैंड); मुख्याधिष्ठाता।

अधिशीतित–वि० (ओवरकूल्ड) जो आवश्यकतासे अधिक ठंडा हो गया हो।

अधिशुल्क–पु० (प्रीमियम) अंकित या वास्तविक मूल्यसे अधिक ली जानेवाली रकम या शुल्क, अधिमूल्य; किसी मुद्राको उससे अधिक मूल्यकी मुद्रामें परिणत करनेपर अलगसे लिया जानेवाला शुल्क।

अधिशोषण–पु० (ऐडसार्पशन) वह प्रक्रम जिसके द्वारा किसी पदार्थके अणु किसी ठोसके नन्हें कणोंकी सतह पर चिपक जाते हैं।

अधिश्रय–पु० (सं०) आधार; पात्र।

अधिश्रयण–पु० (सं०) आगपर रखना, उबालना; चूल्हा।

अधिश्रयणी–स्त्री० (सं०) चूल्हा; अँगीठी।

अधिश्रित–वि० (सं०) आगपर रखा हुआ; अधिवसित।

अधिषवण–पु० (सं०) सोमरस निचोड़ना; इसका साधन।

अधिष्ठाता(तृ)–पु० (सं०) देखभाल करनेवाला; नियामक; अध्यक्ष; मुखिया; ईश्वर। (स्त्री० 'अधिष्ठात्री'।)

अधिष्ठान–पु० (सं०) रहनेका स्थान; वास, रहना; आधार, आश्रय; बस्ती; नगर; नियम; आशीर्वाद; भ्रांति या अध्यासका आधार (वे०); पासमें होना, सन्निधि; भोक्ता और भोग (आत्मा-देह इंद्रिय-विषय) का संयोग (सां०); अधिकार; शासन; राज्य; चक्र; प्रभाव। **–देह–स्त्री०,–शरीर–पु०** मरनेके बाद जीवको मिलनेवाली देह जिससे वह पितृलोकमें निवास करता है, प्रेतशरीर।

अधिष्ठापन–पु० (इंस्टलेशन) विद्युद्यंत्र, तापयंत्र आदिका बैठाया

या स्थापित किया जाना; संस्थापन।

अधिष्ठित–वि० (सं०) स्थित; स्थापित; अधिकृत; नियोजित; व्यापार आदिमें लगाया हुआ (धन)। **–स्वार्थ**–पु० (वेस्टेड इंटरेस्ट) वह स्वार्थ जो किसी संस्था, प्रतिष्ठान आदिमें धन लगानेसे उत्पन्न हुआ हो, निहित स्वार्थ।

अधिसूचना–स्त्री० (नोटिफिकेशन) प्रज्ञापन, अधिकृत सूचना, सरकार द्वारा प्रकाशित या सरकारी गजटमें छपी हुई सूचना।

अधिस्त्री–स्त्री० (सं०) उच्च श्रेणीकी, प्रथित स्त्री।

अधीकार–पु० (सं०) दे० 'अधिकार'।

अधीक्षक–पु० (सुपरिंटेंडेंट) किसी कार्यालय या विभागका वह प्रधान अधिकारी जो अपने अधीन काम करनेवाले समस्त कर्मचारियोंकी निगरानी करे।

अधीक्षण–पु० (सुपरिंटेंडेंस) मातहत कर्मचारियोंके काम-काजकी देखरेख करनेका कार्य।

अधीजना*–अ० क्रि० अधीर होना।

अधीत–वि० (सं०) पढ़ा हुआ (विषय); जिसने किसी वस्तुका अध्ययन कर लिया हो। **–विद्य**–वि० जिसने अध्ययन पूरा कर लिया हो।

अधीति–स्त्री० (सं०) अध्ययन, पठन।

अधीती(तिन्)–वि० (सं०) जिसका अध्ययन अच्छा हो, बहुत पढ़ा हुआ।

अधीन–वि० (सं०) वशवर्ती, मातहत; आश्रित। **–अधीन अधिकारी**–पु० (सवॉर्डिनेट आफिसर) किसी बड़े या मुख्य अधिकारीके नीचे काम करनेवाला अफसर, मातहत अफसर। **–अधीन न्यायालय**–पु० (सवॉर्डिनेट कोर्ट) वह छोटी अदालत जो किसी बड़ी अदालत (उच्च न्यायालय आदि) के मातहत या अधीन हो। **–स्थ**–वि० जो किसीके अधीन हो।

अधीनता–स्त्री० (सं०) परवशता; विवशता; दीनता।

अधीनना*–अ० क्रि० अधीन होना।

अधीनीकरण–पु० (सव्जुगेशन) वशमें करने, जीतने या अधीनतामें लानेका कार्य।

अधीमंथ–पु० (सं०) दे० 'अधिमंथ'।

अधीयान–पु० (सं०) अध्ययन करनेवाला, विद्यार्थी।

अधीर–वि० (सं०) धैर्यरहित, उतावला; उद्विग्न, आकुल; दृढ़तारहित; अस्थिरचित्त; भीरु।

अधीरा–स्त्री० (सं०) बिजली; मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओंका एक भेद।

अधीवास–पु० (सं०) अधिवास; ऐसा लंबा अँगरखा जिससे सारा शरीर ढक जाय, लबादा।

अधीश, अधीश्वर–पु० (सं०) मालिक; अध्यक्ष; राजा; सर्वोपरि या सार्वभौम नरेश।

अधीसारक–पु० (सं०) बार-बार वेश्याओंके पास जानेवाला।

अधुना–अ० (सं०) अब; इस समय; इन दिनों।

अधुनातन–वि० (सं०) आजकलका, आधुनिक।

अधुर–वि० (सं०) भार या चिंतासे रहित।

अधूत–वि० (सं०) अकंपित; निडर, ढीठ।

अधूमक–वि० (सं०) धूम-रहित। पु० जलती आग।

अधूरा–वि० अपूर्ण; नातमाम; अस्पष्ट। **मु०–जाना**–असमय गर्भपात होना।

अधृत–वि० (सं०) धारण न किया हुआ; अनधिकृत; अनियंत्रित। पु० विष्णुके सहस्र नामोंमेंसे एक।

अधृति–स्त्री० (सं०) धृति या धीरताका अभाव; नियंत्रणका न होना; असंयम; दुःख। वि० अस्थिर।

अधृष्ट–वि० (सं०) जो ढीठ न हो; सलज्ज; विनम्र; अजेय; जिसे क्षति न पहुँची हो।

अधृष्य–वि० (सं०) अजेय; लज्जाशील; अभिमानी।

अधेँगा–पु० दे० 'अधांगा'।

अधेड़–वि० आधी उम्रका; ढलती उम्रका।

अधेनु–स्त्री० (सं०) ठाँठ गाय।

अधेला–पु० पैसेका आधा, धेला।

अधेली–स्त्री० आठ आनेका सिक्का, अठन्नी।

अधैर्य–पु० (सं०) अधीरता। वि० धैर्यरहित; आतुर।

अधो–'अधस्' का समासगत रूप। **–गति**–स्त्री० पतन, गिरावट; अवनति; दुर्गति, दुर्दशा; नरक जाना। **–गमन**–पु० दे० 'अधोगति'। **–गामी(मिन्)** वि० पतन या अवनतिकी ओर जानेवाला; नरक जानेवाला। **–घंटा**–स्त्री० अपामार्ग। **–जिह्विका** स्त्री० गलेका कौआ। **–दिक्(श्)**–स्त्री० दक्षिण दिशा; अधोबिंदु। **–देश**–पु० शरीरका नीचेका भाग। **–द्वार**–पु० गुदा। **–निलय**–पु० नरक। **–भुवन**–पु० पाताल आदि नीचेके लोक। **भूमि**–स्त्री० पर्वतके नीचेकी भूमि (सब-साइल) निचली भूमि; भूमिके ऊपरी तलके नीचेका भाग, निचली मिट्टी, अवभूमि। **–मर्म(न्)**–पु० गुह्य द्वार। **–मार्ग**–पु० सुरंगका रास्ता; गुदा। **–मुख, –वदन**–वि० जिसका मुख नीचेकी ओर हो; औंधा। अ० मुँहके बल। **–मुखा**–स्त्री० गोजिह्वा। **–मूल**-वि० जिसका मूल नीचे हो। **–मृद**–दे० 'अधोभूमि'। **–यंत्र**–पु० भभका।

अधोरेखित–वि० (अंडरलाइण्ड) (वह शब्द या शब्दावली) जिसके नीचे, पाठकका ध्यान दिलानेके लिए, बायेंसे दायें रेखा खींच दी गयी हो। **–लंब**–पु० लंब, साहुल। **–लोक**–पु० नीचेका लोक। **–वस्त्र**–पु० (अन्य कपड़ोंके) नीचे पहननेका कपड़ा। **–वायु**–स्त्री० अपान वायु, गोज़। **–बिंदु**–पु० पैरके नीचेका बिंदु।

अधोक्षज–पु० (सं०) विष्णु; कृष्ण।

अधोटी†–स्त्री० गाय, भैंस आदिकी खालका आधा दाम जो लाश फेंकनेपर चमारसे लिया जाय।

अधोरध*–अ० दे० 'अधोर्द्ध'।

अधोर्द्ध–अ० नीचे-ऊपर, तले-ऊपर।

अधौड़ी–स्त्री० आधा चरसा; मोटा चमड़ा। **–अस्तर**–पु० जूतेके तलेके ऊपरका मोटा चमड़ा; एक तरहका जूता जिसमें अधौड़ीका अस्तर हो; शरीरका नीचेका भाग, पेट। **मु० –तनना**–पेट खूब भर जाना। **–तानना**–छककर खाना।

अधौरी–स्त्री० एक वृक्ष जो विशेषतः हिमालयकी तराईमें पाया जाता है, बकली, धौरा।

अध्मान–पु० (सं०) पेट फूलना, अफरा।

अध्यंडा, अध्यांडा–स्त्री० (सं०) अजश्रृंगी; भूम्यामलकी।

अध्यक्ष–वि० (सं०) गोचर, दृश्य। पु० निरीक्षक; नियामक; संचालक; मुख्य अधिकारी; अधिष्ठाता; सफेद मदार; क्षीरिका नामका पौधा; साक्षी; (चेयरमैन) किसी सभा, संस्था या नगरपालिकाका प्रधान; (स्पीकर) संसद या विधानसभाके सदस्यों द्वारा चुना गया वह मुख्य अधिकारी जो उसकी बैठकोंमें अध्यक्षता करे, विवादके समय शांतिभंग न होने दे तथा किसी प्रस्तावके पक्ष-विपक्षमें समसंख्यक मत प्राप्त होनेपर अपना निर्णायक मत दे; प्रमुख। **–पीठ**–पु० (चेयर) अध्यक्ष या प्रमुखके बैठनेकी कुरसी या आसन। **–दीर्घा**–स्त्री० (स्पीकर्स गैलरी) संसद या विधानसभाके अध्यक्षके पीछेकी वह दीर्घा जहाँ बैठकर विशिष्ट अतिथिगण अथवा अध्यक्षसे अनुमतिप्राप्त विशिष्ट व्यक्ति सभाकी काररवाई देखते तथा वक्ताओंके भाषणादि सुनते हैं।

अध्यक्षर–पु० (सं०) 'ओम्' मंत्र। अ० अक्षरशः।

अध्यग्नि–पु० (सं०) एक तरहका स्त्रीधन, विवाहके समय अग्निको साक्षी करके कन्याको दिया जानेवाला धन। अ० विवाहकी अग्निके पास।

अध्यच्छ*–पु० दे० 'अध्यक्ष'।

अध्ययन–पु० (सं०) ब्राह्मणके छ कर्मोंमेंसे एक, पढ़ना; पढ़ाई। **–कक्ष**–पु० (स्टडी) वह कमरा जहाँ लिखने-पढ़ने, अध्ययनादिका कार्य किया जाता हो।

अध्ययनावकाश–पु० (सं०) विशेष अध्ययनके लिए छात्रों, प्राध्यापकों आदिको दी जानेवाली छुट्टी।

अध्ययनीय–वि० (सं०) अध्ययन करने योग्य।

अध्यर्द्ध–वि० (सं०) डेढ़। पु० वायु।

अध्यर्बुद–पु० (सं०) एक रोग, जिस स्थानपर एक बार अर्बुद हुआ हो उसी स्थानपर होनेवाला अर्बुद।

अध्यवसान–पु० (सं०) निश्चय; प्रयत्न; अध्यवसाय; प्रकृत और अप्रकृतकी ऐसी एकरूपता जिसमें एकका दूसरेके द्वारा निगरण हो (सा०)।

अध्यवसाय–पु० (सं०) यत्न, उद्यम; लगातार कोशिश; निश्चय; उत्साह।

अध्यवसायित–वि० (सं०) जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो।

अध्यवसायी(यिन्)–वि० (सं०) अध्यवसाय करनेवाला; उत्साही; उद्यमशील।

अध्यवसित–वि० (सं०) जिसके लिए प्रयत्न या संकल्प किया गया हो।

अध्यवसिति–स्त्री० (सं०) प्रयत्न, प्रयास।

अध्यशन–पु० (सं०) अतिभोजन; एक वारका खाया पचे बिना फिर खा लेना।

अध्यस्त–वि० (सं०) आरोपित; भ्रमवश प्रतीत या अनुभूत।

अध्यस्थ–पु० (सं०) अस्थिके ऊपरका हिस्सा।

अध्यस्थि–स्त्री० (सं०) अस्थिके ऊपर निकलनेवाली अस्थि।

अध्यात्म–वि० (सं०) आत्मासे संवंध रखनेवाला। पु० आत्मा-परमात्मा-संवंधी विचार; परमात्मा। **–ज्ञान**–पु० परमात्मा या आत्मा-संवंधी ज्ञान। **–दर्शी(शिन्)**–वि० परमात्माको जाननेवाला। **–योग**–पु० इंद्रियोंके विषयोंसे मनको हटाकर परमात्माके ध्यानमें केंद्रित करना। **–रति**–वि० परमात्माके ध्यानमें मग्न रहनेवाला। **–रामायण**–स्त्री० एक रामायण जिसमें रामचरितका वर्णन करते हुए अध्यात्मतत्त्वका प्रतिपादन किया गया है। **–वाद**–दु० अध्यात्म संवंधी विचारों, सिद्धांतोंका अध्ययन, अनुसरण, प्रचार आदि। **–विद्या**–स्त्री० आत्मा-परमात्माके स्वरूप, संवंध आदिका विचार करनेवाला शास्त्र; ब्रह्मविचार। **–शास्त्र**–पु० अध्यात्म-विद्या।

अध्यात्मिक–वि० (सं०) अध्यात्म-संवंधी।

अध्यादेश–पु० (आर्डिनेंस) राज्यके अधिपति द्वारा जारी किया गया वह आधिकारिक आदेश जो किसी आकस्मिक या विशेष स्थितिमें थोड़े समयतक लागू हो और जो उक्त स्थितिके न रहनेपर वापस ले लिया जाय या आवश्यकता बनी रहनेपर संसद या विधानसभा द्वारा अधिनियमके रूपमें स्वीकृत कर लिया जाय।

अध्यापक–वि० (सं०) पढ़ानेवाला, शिक्षक।

अध्यापकी–स्त्री० शिक्षण-कार्य, पाठन, पढ़ानेका काम।

अध्यापन–पु० (सं०) ब्राह्मणोंके छ कर्मोंमेंसे एक, पढ़ाना।

अध्यापयिता(तृ)–पु० (सं०) पढ़ानेवाला। (स्त्री० 'अध्यापयित्री'।)

अध्यापिका–स्त्री० (सं०) पढ़ानेवाली, शिक्षिका।

अध्याप्त–वि० प्राप्त किया हुआ (ऐक्वायर)।

अध्याप्ति–स्त्री० किसी वस्तुपर अधिकार करने या उसे प्राप्त करनेकी क्रिया।

अध्याय–पु० (सं०) पढ़ना, अध्ययन; पाठ, परिच्छेद; पाठका समय; विद्यार्थी, पढ़नेवाला (समासमें)।

अध्यायी(यिन्)–वि० (सं०) अध्ययनमें संलग्न। पु० विद्यार्थी।

अध्यारूढ–वि० (सं०) सवार, चढ़ा हुआ; उन्चतर या निम्नतर।

अध्यारोप, अध्यारोपण–पु० (सं०) एक वस्तुके गुण-धर्मका भ्रमवश अन्य वस्तुमें आरोप करना; अध्यास; मिथ्या ज्ञान (वे०)।

अध्यारोपित–वि० (सं०) भ्रमवश (एक वस्तुका गुण-धर्म अन्य वस्तुमें) आरोपित।

अध्यावाहनिक–पु० (सं०) कन्याकी विदाईके समय दिया जानेवाला एक प्रकारका स्त्रीधन।

अध्यास–पु० (सं०) मिथ्या ज्ञान; भ्रांत ज्ञान या प्रतीति (रस्सीमें साँप, सीपमें चाँदीका भ्रम)।

अध्यासन–पु० (सं०) बैठना; निरीक्षण करना; आसन; स्थान। (वि० 'अध्यासित', 'अध्यासीन'।)

अध्याहरण–पु० (सं०) दे० 'अध्याहार'।

अध्याहार–पु० (सं०) (इन्फरेंस) घटनावली आदिसे कोई निष्कर्ष निकालना, तथ्योंके आधारपर कुछ अनुमान लगाना, अनुमान, अनुमिति। वाक्यमें छूटे हुए पद या पदोंको अर्थपूर्तिके लिए ऊपरसे जोड़ लेना; तर्क-वितर्क; अनुमान।

अध्याहृत–वि० (सं०) अध्याहार किया हुआ।

अध्युषित–वि० (सं०) निवसित, बसा हुआ।

अध्युष्ट–वि० (सं०) बसा हुआ; साढ़े तीन।

अध्युष्ट्र–पु० (सं०) ऊँटगाड़ी।

अध्यूढ–वि० (सं०) उन्नत; समृद्ध; उच्च; अत्यधिक। पु० विवाहके पूर्वके गर्भसे उत्पन्न पुत्र; शिव।

अध्यूढा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले, प्रथम विवाहिता स्त्री।

अध्यूहन–पु० (सं०) (राख आदिकी) परत डालना।

अध्येतव्य, अध्येय–वि० (सं०) पढ़नेके योग्य; जिसका अध्ययन अभी करना है।

अध्येता(तृ)–पु० (सं०) अध्ययन करनेवाला। (स्त्री० 'अध्येत्री'।)

अध्येषण–पु० (सं०) आदरपूर्वक किसी कार्यमें प्रवृत्त करना।

अध्येषणा–स्त्री० (सं०) निवेदन, याचना।

अध्रि–वि० (सं०) जिसका नियंत्रण न हो सके, जो वशमें न किया जा सके।

अध्रियमाण–वि० (सं०) जो पकड़में न आ सके; मृत।

अध्रुव–वि० (सं०) अस्थिर; अस्थायी; अनिश्चित; संदिग्ध; जो पृथक् किया जा सके। पु० अनिश्चय।

अध्रुष–पु० (सं०) गलशोथ, कंठप्रदाह।

अध्व–दे० 'अध्वा'।

अध्वनीन, अध्वन्य–पु० (सं०) यात्री, पथिक। वि० यात्रा करने योग्य; तेज चलनेवाला।

अध्वर–पु० (सं०) यज्ञ; सोमयज्ञ; आकाश; आठ वसुओंमेंसे एक। वि० अकुटिल; सावधान; व्यतिक्रमरहित; टिकाऊ। **–कल्पा**–स्त्री० काम्येष्टि यज्ञ। **–कांड**–पु० शतपथ ब्राह्मणका एक खंड। **–ग**–वि० अध्वरके काममें आनेवाला।

अध्वर्यु–पु० (सं०) चार ऋत्विकों–यज्ञ करानेवालोंमेंसे एक, यजुर्वेदज्ञ ऋत्विक। **–वेद**–यजुर्वेद।

अध्वांत–पु० (सं०) ईषत् अंधकार, छाया; यात्राका अंत। **–शात्रव**–पु० श्योनाक नामक क्षुप।

अध्वा(ध्वन्)–पु० (सं०) रास्ता, पथ; यात्रा; दूरी; काल (बौ०); साधन; वेदकी शाखा; स्थान; आक्रमण; हवा; तरीका। **(अध्व)ग**–पु० पथिक, यात्री; सूर्य; ऊँट; खच्चर। **–०भोग्य**–पु० आम्रातक वृक्ष। **–गत्यंत**–पु० लंबाईका एक मान। **–गा**–स्त्री० गंगा नदी। **–गामी(मिन्)**–वि० यात्रा करनेवाला। **–जा**–स्त्री० स्वर्णपुष्पी। **–निवेश**–पु० पड़ाव। **–पति**–पु० सूर्य; मार्ग-निरीक्षक। **–रथ**–पु० यात्रायान; यात्रा-कुशल दूत। **–शल्य**–पु० अपामार्ग। **–शोषि**–पु० रोगविशेष।

अध्वाति–पु० (सं०) पथिक; चतुर व्यक्ति।

अध्वाधिप–पु० (सं०) मार्गनिरीक्षक।

अध्वायन–पु० (सं०) यात्रा, सफर।

अध्वेश–पु० (सं०) दे० 'अध्वाधिप'।

अनंग–वि० (सं०) देह-रहित, बिना देहका; आकृतिहीन। पु० वह जिसके अंग नहीं है, कामदेव; आकाश; मन। **–क्रीड़ा**–स्त्री० कामक्रीड़ा; मुक्तक वृत्तके दो भेदोंमेंसे एक। **–द**–वि० कामोत्पादक। **–रंग**–पु० कोकशास्त्रका एक प्रसिद्ध (संस्कृत) ग्रंथ। **–लेख**–पु०, **–लेखा**–स्त्री० प्रेमपत्र। **–शत्रु**–पु० शिव। **–शेखर**–पु० दंडक छंदका एक भेद।

अनंगक–पु० (सं०) चित्त, मन।

अनंगना*–अ० क्रि० बेसुध होना, विदेह होना।

अनंगवती–वि०, स्त्री० (सं०) कामिनी।

अनंगारि–पु० (सं०) शिव।

अनंगासुहृद्(त्)–पु० (सं०) शिव।

अनंगी(गिन्)–वि० (सं०) बिना अंगका, अशरीरी। पु० परमेश्वर; कामदेव।

अनंगीकार करना–स० क्रि० (रिपुडिएट) किसीकी सत्ता, प्रभाव या आज्ञा न मानना; ऋण, दायित्व आदिसे इनकार करना;

किसीके कथन, आरोप आदिको न मानना ।

अनंगुरि, अनंगुलि–वि० (सं०) जिसे उँगलियाँ न हों ।

अनंजन–वि० (सं०) अंजन-रहित; बेदाग; निर्दोष; निर्विकार; निःसंबंध । पु० परब्रह्म; विष्णु; आकाश ।

अनंत–वि० (सं०) जिसका अंत न हो; असीम, अपार; अक्षय । पु० विष्णु; विष्णुका शंख; कृष्ण; शिव; रुद्र; शेषनाग; लक्ष्मण; असीमता; नित्यता; मोक्ष; बलराम; वासुकि; आकाश; बादल; सिंदुवार; अभ्रक; श्रवण नक्षत्र; ब्रह्म; जैनोंके एक तीर्थंकर; बाँहपर पहननेका एक गहना; अनंत चतुर्दशीके व्रतमें पहननेका एक गंडा । **–कर**–वि० बढ़ाकर असीम करनेवाला; बहुत अधिक कर देनेवाला । **–काय**–पु० वे वनस्पतियाँ जिनके खानेका जैन धर्ममें निषेध है । **–ग**–वि० अनंत कालतक चलनेवाला । **–गुण**–वि० असीम विशेषताओंसे युक्त । **–चतुर्दशी**–स्त्री० भाद्रशुक्ला चतुर्दशी । **–जित्**–पु० वासुदेव; चौदहवें जैन अर्हत् । **–टंक**–पु० एक राग जो मेघरागका पुत्र माना जाता है । **–तीर्थकृत**–पु० अनंतजित् । **–दर्शन**–पु० सम्यक् दर्शन (जै०) । **–दृष्टि**–पु० शिव; इंद्र । **–देव**–पु० शेषनाग; शेषशायी नारायण । **–नाथ**–पु० जैनोंके चौदहवें तीर्थंकर । **–पार**–वि० सीमारहित । **–मायी(यिन्)**–वि० अगणित छल-छद्मोंवाला । **–मूल**–पु० एक रक्तशोधक पौधा, सारिवा । **–राशि**–स्त्री० असीम राशि या परिमाण । **–रूप**–वि० अनगिनत रूपोंवाला; विष्णुका एक विशेषण । **–विजय**–पु० युधिष्ठिरके शंखका नाम । **–वीर्य**–वि० अपार सामर्थ्यवाला । पु० जैनोंके तेईसवें तीर्थंकर (भावी) । **–व्रत**–पु० अनंत चतुर्दशी व्रत । **शक्ति**–वि० सर्वशक्तिमान् (परमेश्वर) । **–शीर्ष**–पु० विष्णु, परमेश्वर । **–शीर्षा**–स्त्री० वासुकि नागकी पत्नी । **–श्री**–वि० असीम ऐश्वर्यवाला; परमेश्वरका एक विशेषण ।

अनंतक–वि० (सं०) असीम; नित्य । पु० अनंतदेव (जै०) ।

अनंतर–अ० (सं०) तुरत बाद; पीछे । वि० अंतर-रहित; सटा या लगा हुआ; पास या पड़ोसका; अपने वर्णसे ठीक नीचेके वर्णका । पु० सामीप्य; लगा हुआ होना; ब्रह्म । **–ज**–पु०,**–जा**–स्त्री० ऐसी संतान जिसके पिताका वर्ण माताके वर्णसे ठीक ऊपर हो (वैश्या माता, क्षत्रिय पिता); 'तरपरिया' भाई-बहन ।

अनंतरय–पु० (सं०) अंतरका अभाव; अपरित्याग ।

अनंतराय–वि० (सं०) अंतररहित; निर्विघ्न ।

अनंतरित–वि० (सं०) अखंडित, अटूट ।

अनंतरीय–वि० (सं०) वंशक्रममें ठीक बादका ।

अनंतवान्(वत्)–वि० (सं०) असीम; नित्य । पु० ब्रह्माके चार चरणों (पृथ्वी, मध्यवर्ती भाग, आकाश और समुद्र)मेंसे एक ।

अनंता–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; पार्वती; अनंतमूल; आमलकी, दूब आदि; एककी संख्या ।

अनंतात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परमात्मा ।

अनंतानुबंधी(धिन्)–पु० (सं०) जैनमतानुसार वह दोष जो कभी न जाय ।

अनंताभिधेय–वि० (सं०) अनगिनत नामोंवाला; परमेश्वरका एक विशेषण ।

अनंती–स्त्री० (सं०) स्त्रियोंके बाँयें बाजूपर बाँधनेका गंडा ।

अनंत्य–वि० (सं०) अंतरहित, असीम । पु० नित्यता; हिरण्यगर्भका चरण ।

अनंद–वि० (सं०) आनंदरहित । पु० एक प्रेतलोक; एक वर्णवृत्त; * दे० 'आनंद' ।

अनंदना*–अ० क्रि० आनंदित होना ।

अनंदी–वि० दे० 'आनंदी' । †पु० एक धान ।

अनंबर–वि० (सं०) निर्वस्त्र, नंगा । पु० एक तरहका जैन साधु ।

अनंभ(स्)–वि० (सं०) जलविहीन ।

अनंश–वि० (सं०) जिसका कोई भाग न हो; जिसका पैतृक संपत्तिपर कोई अधिकार न हो; भाग-रहित; विष्णु या आकाशका एक विशेषण ।

अनंशुमत्फला–स्त्री० (सं०) कदली, केला ।

अन–पु० (सं०) श्वास-प्रश्वास । * अ० विना, वगैर (उपसर्गके तौरपर यह व्यंजनादि शब्दोंके पूर्व भी लगता है––जैसे अनहोनी, अनमेल) । †पु० अनाज । वि० दूसरा ।

अनअहिवात*–पु० वैधव्य ।

अनइ*–पु० अन्न (बीसल०) ।

अनइच्छित*–वि० जिसकी इच्छा न की गयी हो, बिना चाहा ।

अनइस, अनइसा*–वि० दे० 'अनैस', 'अनैसा' ।

अनऋतु*–स्त्री० विरुद्ध ऋतु; अनुपयुक्त समय ।

अनकंप*–वि० कंपनरहित, स्थिर । पु० कंपनका अभाव ।

अनक–वि० (सं०) दे० 'अणक' । पु० दे० 'अणक'; * दे० 'आनक' ।

अनकदुंदुभ–पु० (सं०) कृष्णके पितामह ।

अनकदुंदुभि–पु० दे० 'आनकदुंदुभि' ।

अनकना*–स० क्रि० सुनना; लुक-छिपकर सुनना ।

अनक़रीब–अ० (अ०) जल्द, शीघ्र; करीब-करीब; पास; प्रायः ।

अनकस्मात्–अ० (सं०) अचानक नहीं; अकारण नहीं ।

अनकहा–वि० बिना कहा हुआ, अनुक्त । (स्त्री० 'अनकही' ।) मु० **–(ही) देना**–चुप रहना ।

अनक़ा–पु० (अ०) दे० 'उनक़ा' ।

अनकाढ़ा–वि० जो निकाला न गया हो, बिना निकाला हुआ ।

अनकीय–वि० (सं०) दे० 'अणकीय' ।

अनक्ष–वि० (सं०) दृष्टिहीन, अंधा ।

अनक्षर–वि० (सं०) निरक्षर; मूर्ख; गूंगा; जिसका कथन उचित न हो । पु० दुर्वचन, गाली ।

अनक्षि–स्त्री० (सं०) खराब आँख ।

अनक्षिक–वि० (सं०) नेत्रहीन, अंधा ।

अनख–पु० क्रोध, रोष; ग्लानि; डाह, जलन; *झंझट; डिठौना । वि० (सं०) नखहीन ।

अनखना*–अ० क्रि० रुष्ट होना, खीझना ।

अनखाना*–अ० क्रि० रुष्ट होना, खीझना । स० क्रि० रुष्ट करना, खिझाना ।

अनखाहट–स्त्री० खीझनेकी क्रिया, खीझ ।

अनखी–वि० अनख करनेवाला, क्रोधी ।

अनखुला–वि० जो खुला न हो; जिसका कारण अज्ञात हो ।

अनखौहाँ*–वि० अनख-भरा, कुपित; चिड़चिड़ा; अनुचित; क्रोधोत्पादक । (स्त्री० 'अनखौहीं' ।)

अनगढ़–वि० बिना गढ़ा हुआ; बे-डौल; टेढ़ा-मेढ़ा; असंस्कृत; उजड्ड; *स्वयंभू ।

अनगन, अनगिन*–वि० दे० 'अनगिनत' –'अनगन भाँति करी बहु लीला जसुदानंद निवाही'–सूर ।

अनगना–वि० जो गिना न गया हो, बेशुमार । पु० गर्भका आठवाँ मास । स० क्रि० खपड़ा फेरना ।

अनगनिया*–वि० अगणित, बेशुमार ।

अनगवना*–अ० क्रि० जान-बूझकर देर लगाना–'मुंह धोवति, ऐंडी घसति, हँसति, अनगवति तीर' । वि० टालमटोल करना ।

अनगाना*–अ० क्रि० देर लगाना । स० क्रि० सुलझाना (केशादि) ।

अनगार–वि० (सं०) गृहरहित । पु० भ्रमणकारी सन्न्यासी ।

अनगारिका–स्त्री० (सं०) भ्रमणकारी सन्न्यासीका जीवन या अवस्था ।

अनगिनत–वि० अगणित, बेहिसाब ।

अनगिना–वि० दे० 'अनगिनत'; जो गिना न गया हो ।

अनगिनित–वि० दे० 'अनगिनत' ।

अनगैरी–वि० अपरिचित, बे-जाना; गैर ।

अनग्नि–वि० (सं०) जिसे अग्निकी आवश्यकता न हो; अग्निहोत्र न करनेवाला; श्रौत-स्मार्त कर्म न करनेवाला; अग्निमांद्य रोगसे ग्रस्त; अविवाहित ।

अनघ–वि० (सं०) अघहीन, निष्पाप; पवित्र, अकलुष; निर्मल; सुंदर; निरापद; शोकहीन । पु० वह जो पाप न हो; पुण्य; विष्णु; शिव; सफेद सरसों ।

अनघरी*–स्त्री० कुसमय, असमय ।

अनघैरी*–वि० अनिमंत्रित; अनाहूत ।

अनघोर*–पु॰ अन्याय, ज्यादती ।

अनघोरी*–अ॰ चुपकेसे, अचानक–'जीति पाइ अनघोरी आये' –छत्र॰ ।

अनचहा*–वि॰ जो चाहा न गया हो, अप्रिय, अनिच्छित ।

अनचाखा*–वि॰ न चखा हुआ ।

अनचाहत*–वि॰ न चाहनेवाला, प्रेम-रहित । पु॰ न चाहनेवाला व्यक्ति ।

अनचीता–वि॰ विना सोचा हुआ; न चाहा हुआ ।

अनचीन्हा*–वि॰ अपरिचित, वे-जाना ।

अनचैन*–पु॰ वेचैनी ।

अनच्छ–वि॰ (सं॰) जो साफ न हो, गंदा ।

अनछता*–वि॰ विना इच्छाका ।

अनजका, अनजिका–स्त्री॰ (सं॰) छोटी वकरी ।

अनजन्मा–वि॰ दे॰ 'अजन्मा' ।

अनजान–वि॰ अज्ञान, नासमझ; न जाननेवाला, अनभिज्ञ; अपरिचित । पु॰ अज्ञानावस्था; अज्ञान; एक पेड़; एक घास ।

अनजानत*–वि॰ न जाननेवाला; अज्ञान ।

अनजोखा–वि॰ न तौला हुआ ।

अनट*–पु॰ अन्याय, अनाचार, अनीति ।

अनडीठ*–वि॰ न देखा हुआ, अदृष्ट ।

अनडुज्जिह्वा–स्त्री॰ (सं॰) गोजिह्वा; अनंतमूल ।

अनड्वान्(अनडुह)–पु॰ (सं॰) वैल, साँड़; वृप राशि; सूर्य (उपनि॰) । (स्त्री॰ 'अनडुही; 'अनड्वाही' –गौ ।)

अनणु–वि॰ (सं॰) जो सूक्ष्म न हो । पु॰ मोटा अन्न ।

अनत–वि॰ (सं॰) न झुका हुआ, अनम्र । * अ॰ अन्यत्र, और कहीं ।

अनति–स्त्री॰ (सं॰) नम्रता या विनयका अभाव; घमंड । वि॰ अतिका उलटा, थोड़ा ।

अनतिक्रमणीय–वि॰ (सं॰) जो अतिक्रमणके योग्य न हो ।

अनतिदूर–अ॰ अधिक दूर नहीं, थोड़ी ही दूर ।

अनदेखा–वि॰ न देखा हुआ ।

अनद्य–पु॰ (सं॰) सफेद सरसों । वि॰ न खाने योग्य ।

अनद्यतन–वि॰ (सं॰) आजके दिनसे संवंध न रखनेवाला; आजसे पहले या पीछेका; जो आजतकका न होकर, पुराना हो । पु॰ अद्यतनसे भिन्न काल । **–भविष्य**–पु॰ भविष्यत् कालका एक भेद (व्या॰) । **–भूत**–पु॰ भूत कालका एक भेद (व्या॰) ।

अनधिक–वि॰ (सं॰) जो अधिक न हो; असीम; पूर्ण; जिससे कोई वढ़ न सके या जो वढ़ाया न जा सके ।

अनधिकार–पु॰ (सं॰) अधिकार, शक्ति, योग्यता, पात्रता, हक आदिका अभाव । वि॰ अधिकार-रहित । **–चर्चा**–स्त्री॰ विना जाने-समझे या योग्यताके वाहर किसी विषयमें वोलना, दखल देना । **–चेष्टा**–स्त्री॰ जिस वात या कार्यका अधिकार न हो वह करना ।

अनधिकारी(रिन्)–वि॰ (सं॰) अधिकार न रखनेवाला; किसी विषयकी योग्यता, पात्रता न रखनेवाला । (स्त्री॰ 'अनधिकारिणी' ।)

अनधिकृत–वि॰ (सं॰) जिसकी अधिकारीके पदपर नियुक्ति न हुई हो; जो अधिकारमें न किया गया हो; (अन-अथॉराइज्ड) जिसके पीछे समुचित अधिकार न हो; जो अधिकारके वाहर हो (चेष्टा इ॰), जो किसी अधिकारी व्यक्ति द्वारा दिया या जारी न किया गया हो (वक्तव्य, विवरण इ॰); दे॰ 'अनाधिकारिक' ।

अनधिगत–वि॰ (सं॰) न जाना हुआ; अप्राप्त । **–मनोरथ**–वि॰ जिसकी अभिलाषा पूरी न हुई हो, निराश । **–शास्त्र**–वि॰ जिसे शास्त्रोंका ज्ञान न हो ।

अनधिगम्य–वि॰ (सं॰) पहुँचके वाहर; अप्राप्य; अज्ञेय ।

अनधिष्ठान–पु॰ (सं॰) निरीक्षणका अभाव ।

अनधिष्ठित–वि॰ (सं॰) जिसकी (अधिकारीके पदपर) नियुक्ति न हुई हो; अनुपस्थित ।

अनधीन–वि॰ (सं॰) स्वाधीन, स्वतंत्र कार्य करनेवाला । पु॰ वह स्वतंत्र वढ़ई जो अपने इच्छानुसार कार्य करता हो ।

अनध्यक्ष–वि॰ (सं॰) इंद्रियोंसे जिसका ज्ञान न हो, अप्रत्यक्ष; अध्यक्षभिन्न; शासकहीन ।

अनध्ययन–पु॰ (सं॰) अध्ययन न करना; अध्ययन करते समय वीचमें होनेवाला विराम ।

अनध्यवसाय–पु॰ (सं॰) अध्यवसायका अभाव, संदेहसे मिलता-जुलता एक अर्थालंकार जिसमें मिलती-जुलती कई वस्तुओंके वीच नहीं, वरन् किसी एक ही वस्तुके संवंधमें संदेह प्रकट किया जाय ।

अनध्याय–पु॰ (सं॰) पढ़ाई न होना; पढ़ाई वंद रहनेका दिन, छुट्टी ।

अनध्यास–वि॰ (सं॰) जो याद न हो, विस्मृत; जो भूल गया हो ।

अनन–पु॰ (सं॰) साँस लेना, जीना ।

अननुकूल–वि॰ (सं॰) जो अनुकूल न हो; प्रतिकूल, उलटा ।

अननुज्ञात–वि॰ (सं॰) जिसकी अनुमति न मिली हो; अस्वीकृत ।

अननुज्ञापित–वि॰ (डिस-अलाउड) (वह प्रस्तावादि) जिसे सभामें उपस्थापित करनेकी अनुज्ञा न दी गयी हो ।

अननुपालन–पु॰ (नॉनकम्प्लायेंस) किसी आज्ञा, आदेश आदिका पालन न करना ।

अननुभाषण–पु॰ (सं॰) मौन स्वीकृति; एक निग्रह-स्थान–वादीके अपनी वात तीन वार कह चुकनेपर भी प्रतिवादीका चुप रहना जो उसकी हार समझा जाता है (न्या॰) ।

अननुभूत–वि॰ (सं॰) जिसका अनुभव न किया गया हो, अज्ञात ।

अननुमत–वि॰ (सं॰) जिसकी स्वीकृति न मिली हो; जो पसंद न किया गया हो; अयोग्य ।

अननुमोदन–पु॰ (सं॰) दे॰ 'निरनुमोदन' ।

अननुरूप–वि॰ (सं॰) (इंकॉम्पैटिविल) जो रूप, स्वभाव आदिकी दृष्टिसे अनुरूप न हो, मेल न खाता हो ।

अनन्न–पु॰ (सं॰) अन्नसे भिन्न पदार्थ जो खाने योग्य न हो ।

अनन्नास–पु॰ एक पौधा जिसमें ऊपरके हिस्सेमें फल जैसी एक गाँठ वन जाती है । इसका स्वाद खटमीठा होता है ।

अनन्य–वि॰ (सं॰) एकनिष्ठ; एकाश्रयी; अन्यकी ओर न जानेवाला; अभिन्न; वही; अद्वितीय; एकाग्र; अविभक्त । **–गति** –स्त्री॰ एकमात्र सहारा । वि॰ दे॰ 'अनन्यगतिक' । **–गतिक** –वि॰ जिसको दूसरा उपाय या सहारा न हो । **–गुरु**–वि॰ जिससे कोई बड़ा न हो । **–चित्त,–चेता(तस्),–मनस्क,–मना(नस्), –मानस**–वि॰ एकाग्रचित्त, जिसका मन और कहीं न हो । **–ज, –जन्मा(न्मन्)**–पु॰ कामदेव । **–दृष्टि**–स्त्री॰ एकटक देखते रहना; वि॰ जो एकटक देखता रहे । **–देव**–वि॰ जिसके और कोई देवता न हो; परमेश्वरका एक विशेषण । **–परता**–स्त्री॰ एकनिष्ठता, एकको भक्ति । **–परायण**–वि॰ जिसका और किसी (स्त्री)के प्रति प्रेम न हो । **–पूर्व**–पु॰ वह पुरुष जिसके और कोई स्त्री न हो; अविवाहित । **–पूर्वा**–स्त्री॰ विनब्याही स्त्री, कुमारी । **–भाव**–पु॰ एकनिष्ठ भक्ति या साधना । **–योग**–वि॰ जो और किसीके योग्य न हो ।**–विषयात्मा(त्मन्)**–वि॰ जिसका मन एक ही लक्ष्यपर जमा हो । **–वृत्ति**–वि॰ एकनिष्ठ मनोवृत्तिवाला; जिसकी दूसरी जीविका न हो; वैसे ही स्वभावका । **–साधारण, –सामान्य**–वि॰ दूसरेमें न मिलनेवाला, असाधारण ।

अनन्यता–स्त्री॰ (सं॰) एकनिष्ठता ।

अनन्याधिकार–पु॰ (सं॰) किसी वस्तुके वनाने-वेचने आदिका एकाधिकार, इजारा ।

अनन्याश्रित–वि॰ (सं॰) जो किसी दूसरेके आश्रयमें न हो, स्वाधीन । पु॰ वह संपत्ति जिसपर कोई ऋण न लिया गया हो ।

अनन्वय–पु॰ (सं॰) अन्वय–संवंधका अभाव; एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय स्वयं ही अपना उपमान होता है ।

अनन्वित–वि॰ (सं॰) असंबद्ध, बे-लगाव; असंगत; वंचित, रहित ।

अनप–वि॰ (सं॰) जलहीन (जैसे पंकिल क्षुद्र जलाशय) ।

अनपकरण, अनपकर्म(न्)–पु॰ (सं॰) नुकसान न पहुँचाना; ऋण न अदा करना (कानून) ।

अनपकर्ष–पु॰ (सं॰) अपकर्ष नहीं, उत्कर्ष, उन्नति ।

अनपकार–पु॰ (सं॰) अहित न करना; निर्दोषता ।

अनपकारक–वि॰ (सं॰) अहानिकर; निर्दोष ।

अनपकारी(रिन्)–वि॰ (सं॰) निर्दोष, बे-गुनाह ।

अनपकृत–वि० (सं०) जिसका अहित न किया गया हो। पु० दोषाभाव।

अनपक्रम, अनपक्रास–पु० (सं०) न हटना, न जाना।

अनपक्रिया–स्त्री० (सं०) दे० 'अनपकरण'।

अनपच–पु० बदहजमी, अपच।

अनपढ़–वि० बे-पढ़ा निरक्षर।

अनपत्य–वि० (सं०) संतानहीन; जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो; जो बच्चोंके अनुकूल न हो। –**दोष**–पु० बाँझपन।

अनपत्यक–वि० (सं०) निःसंतान।

अनपत्रप–वि० (सं०) निर्लज्ज, बेहया।

अनपदेश–पु० (सं०) लचर दलील, अग्राह्य तर्क।

अनपभ्रंश–पु० (सं०) वह शब्द जो भ्रष्ट न हो, व्याकरणकी दृष्टिसे शुद्ध शब्द।

अनपर–वि० (सं०) दूसरेसे रहित; जिसका कोई अनुयायी न हो; अकेला; एकमात्र (ब्रह्म)।

अनपराद्ध–वि० (सं०) दे० 'अनपराधी'।

अनपराध–वि० (सं०) निर्दोष, बेगुनाह। पु० निर्दोषता।

अनपराधी(धिन्)–वि० (सं०) बे-कसूर, निरपराध।

अनपसर–वि० (सं०) जिसमेंसे निकलनेका मार्ग न हो; अन्याय्य; अक्षम्य।

अनपाकरण, अनपाकर्म(न्)–पु० (सं०) इकरार पूरा न करना; ऋण या मजदूरी न चुकाना। –**विवाद**–पु० श्रमिकों और उद्योगपतियोंके बीचका वेतन-संबंधी विवाद।

अनपाय–वि० (सं०) क्षयरहित; अविनश्वर। पु० अनश्वरता, नित्यता; शिव।

अनपायी(यिन्)–वि० (सं०) अचल, स्थायी, स्थिर; नाशरहित; अविकारी। (स्त्री० 'अनपायिनी'।) –**(यि)पद**–पु० स्थिर-पद, मोक्ष।

अनपाश्रय–वि० (सं०) जो किसीका आश्रित नहीं; स्वतंत्र।

अनपेक्ष, अनपेक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) चाह या परवाह न रखनेवाला; तटस्थ; निष्पक्ष; असंबद्ध; स्वतंत्र।

अनपेक्षा–स्त्री० (सं०) अपेक्षाका अभाव, अनिच्छा, बेपरवाही।

अनपेक्षित, अनपेक्ष्य–वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा, चाह या परवाह न हो; (अन-एक्सपेक्टेड) जिसके होनेकी अपेक्षा, प्रतीक्षा या कल्पना न की गयी हो।

अनपेत–वि० (सं०) जो गया या बीता न हो; अपृथक्; विश्वास-पात्र; अविरहित।

अनफाँस*–पु० बंधका उलटा, मुक्ति।

अनफा–पु० (यू०) ज्योतिषके १६ योगोंमेंसे एक।

अनबन–स्त्री० बिगाड़; झगड़ा। * वि० विधि, अनेक।

अनबाद*–पु० फालतू बात।

अनबिध*–वि० दे० 'अनबिधा'।

अनबिधा–वि० बिन-बिधा (मोती)।

अनबूझ*–वि० जो समझमें न आ सके (–पहेली); दे० 'अबूझ'।

अनबूड़ा*–वि० न डूबा हुआ; गहराईमें न पैठा हुआ।

अनबेधा–वि० दे० 'अनबिधा'।

अनबोल, अनबोला–वि० न बोलनेवाला; बे-जबान (पशु, शिशु इ०)।

अनबोलता–वि० दे० 'अनबोल'।

अनब्याहा–वि० जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित।

अनभल*–पु० अहित; हानि। **मु०–ताकना**–अहित चाहना।

अनभला*–वि० बुरा, कुत्सित, निंद्य।

अनभाय, अनभाया*–वि० न भानेवाला, अप्रिय, अरुचिकर।

अनभावता*–वि० दे० 'अनभाया'।

अनभिग्रह–वि० (सं०) भेद-भावसे रहित। पु० भेदराहित्य। सब मतोंको मोक्षप्रद माननेका गलत सिद्धांत (जै०)।

अनभिज्ञ–वि० (सं०) जिसे (किसी बात या घटनाकी) जानकारी न हो; अनजान; मूर्ख, बुद्धिहीन; अनाड़ी; अपरिचित।

अनभिप्रेत–वि० (सं०) सोचे हुएके विरुद्ध; जो अभीष्ट नहीं था; अनिष्ट।

अनभिभूत–वि० (सं०) अपराजित; अबाधित।

अनभिमत–वि० (सं०) असम्मत; अनभीष्ट; अप्रिय।

अनभिरूप–वि० (सं०) असदृश; असुन्दर।

अनभिलाष–वि० (सं०) इच्छारहित। पु० इच्छा या भूखका अभाव; रस या स्वाद न मिलना।

अनभिवाद्य–वि० (सं०) जो अभिवादनके योग्य न हो।

अनभिव्यक्त–वि० (सं०) जो व्यक्त या प्रकट न हो, गुप्त, अस्पष्ट।

अनभिसंधान–पु०, **अनभिसंधि**–स्त्री० (सं०) अभिप्राय या प्रयोजनका अभाव।

अनभिहित–वि० (सं०) जिसका नाम न लिया गया हो; अबद्ध।

अनभीष्ट–वि० (सं०) अवांछित; अप्रिय; अनुद्दिष्ट (?)।

अनभेदी*–वि० भेद न जाननेवाला।

अनभो*–पु० अनहोनी बात, अचरज। वि० अलौकिक, अद्भुत।

अनभोरी*–स्त्री० भुलावा, धोखा।

अनभ्यसित–वि० दे० 'अनभ्यस्त'।

अनभ्यस्त–वि० (सं०) जिसका अभ्यास न किया गया हो; जिसने अभ्यास न किया हो।

अनभ्याश–वि० (सं०) निकट नहीं, दूर।

अनभ्यास–पु० (सं०) अभ्यासका अभाव; अनुशीलन, मश्क या आदतका न होना। वि० दे० 'अनभ्याश'।

अनभ्यासी(सिन्)–वि० (सं०) अभ्यास न करनेवाला।

अनभ्र–वि० (सं०) बिना बादलका। –**वज्रपात**–पु० एकाएक आ पड़नेवाली विपत्ति। –**वृष्टि**–स्त्री० ऐसा लाभ या प्राप्ति जिसकी आशा या अनुमान पहले न किया गया हो।

अनम–पु० (सं०) ब्राह्मण (जो दूसरेको नमस्कार न करे)। * वि० उद्धत।

अनमद*–वि० मदरहित; निरहंकार।

अनमन–पु० (सं०) न झुकना। * वि० दे० 'अनमना'।

अनमना–वि० उदास, खिन्न; अस्वस्थ।

अनमाँगा–वि० बिना माँगा हुआ, अयाचित।

अनमापा*–वि० जिसकी माप न हो सके; जो नापा न गया हो।

अनमारग*–पु० कुमार्ग; अधर्म, दुष्कर्म।

अनमिख*–वि० दे० 'अनमिष'।

अनमितंपच(=मितंपच)–वि० (सं०) बिना तौले न पकानेवाला; कंजूस।

अनमित्र–वि० (सं०) जिसका कोई अमित्र न हो। पु० शत्रु न होनेकी अवस्था; एक अवधनरेश।

अनमिल, अनमिलत*–वि० बे-मेल, असंबद्ध; निर्लिप्त।

अनमिलता*–वि० न मिलनेवाला, अप्राप्य।

अनमीलना*–स० क्रि० आँखें खोलना।

अनमेल–वि० बे-मेल; खालिस।

अनमोल–वि० अमूल्य; बहुमूल्य।

अनम्र–वि० (सं०) अविनीत; उद्दंड; घमंडी।

अनय–पु० (सं०) अनीति; अन्याय; दुर्नीति; कुप्रबंध; व्यसन; विपद्; दुर्भाग्य; एक तरहका जुएका खेल।

अनयन–वि० (सं०) नेत्ररहित, अंधा।

अनयस*–वि० दे० 'अनैस'।

अनयास*–अ० दे० 'अनायास'।

अनरथ*–पु० दे० 'अनर्थ'।

अनरना*–स० क्रि० अनादर करना।

अनरस–पु० रसका अभाव; रुखाई; रोष; बिगाड़; दुःख; रसहीन रचना। वि० नीरस।

अनरसना*–अ० क्रि० उदास होना, खिन्न होना। –'हँसे हँसत अनरसे अनरसत प्रतिबिम्बति ज्यों झाँई'–गीता०।

अनरसा–पु० एक मिठाई। * वि० अनमना।

अनरसौं†–अ० दे० 'अतरसौं'।

अनराता*–वि० न रँगा हुआ।

अनरितु–स्त्री० किसी ऋतुमें अन्य ऋतुका आभास होना। वि० ठीक ऋतुमें न होकर आगे-पीछे होनेवाला।

अनरीता*–वि० भरा हुआ। पु० अनरीति, अन्याय, अनुचित कार्य।

अनरीति–स्त्री० कुरीति, अनीति; अनुचित व्यवहार।

अनरुच*–वि० अरुचिकर।

अनरुचि*–स्त्री० अरुचि, अनिच्छा; मंदाग्नि।

अनरूप*–वि० कुरूप; असदृश।

अनर्गल–वि० (सं०) वेरोक, लगातार; अनियंत्रित; मनमाना; विचारहीन। **–प्रलाप**–पु० वेतुकी हाँकना; मनमानी बकवास।

अनर्घ–वि० (सं०) अमूल्य; कम मूल्यका। पु० गलत कीमत, अनुचित मूल्य। **–क्रय**–पु० वाजार-भावसे अधिक या कम मूल्यपर खरीदना (कौ०)। **–राघव**–पु० एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक। **–विक्रय**–पु० बाजार-भावसे अधिक या कम मूल्यपर वेचना।

अनर्घ्य–वि० (सं०) अमूल्य; कम मूल्यका; सर्वाधिक सम्मान्य; पूजाके अयोग्य।

अनर्जित–वि० (सं०) जिसका अर्जन न किया गया हो, न कमाया हुआ; अप्राप्त। **–आय**–स्त्री० चीजोंके दाम यकायक चढ़ जानेसे या ऊपरसे होनेवाली आय या लाभ।

अनर्थ–वि० (सं०) निकम्मा; भाग्यहीन; हानिकारक; बुरा; अर्थहीन; भिन्न अर्थवाला। पु० उलटा अर्थ; अर्थका अभाव; अर्थहानि; मूल्यका न होना; नैराश्यजनक घटना; अनिष्ट; खरावी; निकम्मी चीज; भयकी प्राप्ति; विष्णु। **–कर,–कारी-(रिन्)**–वि० अनर्थ करनेवाला; हानि या अनिष्ट करनेवाला। (स्त्री० 'अनर्थकरी', 'अनर्थकारिणी'।) **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० अहित सोचने या चाहनेवाला; अनुपयोगी या निकम्मी चीजोंपर ध्यान देनेवाला। **–नाशी(शिन्)**–पु० शिव। **–निरनुबंध**–पु० किसी कमजोर राजाको लड़नेके लिए उभाड़कर स्वयं अलग हो जाना। **–बुद्धि**–वि० जिसकी समझ बिलकुल गयी-बीती हो। **–भाव**–वि० बुरे स्वभाववाला। **–लुप्त**–वि० सारहीन विषयोंसे मुक्त। **–संशय**–पु० वह कार्य जिसमें बहुत बड़े अनिष्टकी आशंका हो; वह संपत्ति जिसके लिए कोई खतरा न हो। **–संशयापद**–पु० शत्रुओंसे मित्रोंके युद्धका अवसर। **–सिद्धि**–स्त्री० चल मित्र और आक्रंदकी संधि।

अनर्थक–वि० (सं०) अर्थरहित; निष्प्रयोजन, वे-मतलब; अलाभकर; भाग्यहीन। पु० अर्थहीन या असंबद्ध बात।

अनर्थानर्थानुबंध–पु० (सं०) किसी बलवान् राजाको युद्धके लिए उभाड़कर स्वयं अलग हो जाना।

अनर्थानुबंध–पु० (सं०) वैरीका ऐसा विनाश न होना कि अनर्थका संदेह न रहे।

अनर्थार्थसंशय–पु० (सं०) ऐसी स्थिति जिसमें एक ओर अर्थप्राप्तिकी आशा हो और दूसरी ओर अनर्थका संदेह।

अनर्थार्थानुबंध–पु० (सं०) अपने लाभके लिए शत्रु या पड़ोसीको धन और सेना द्वारा सहायता पहुँचाना।

अनर्थ्य–वि० (सं०) दे० 'अनर्थक'।

अनर्ह–वि० (सं०) अयोग्य; अनुपयुक्त; अनधिकारी; दंड या पुरस्कारके अयोग्य।

अनर्हता–स्त्री० (डिस्क्वालिफिकेशन) किसी कार्य, पद आदिके योग्य न होनेका भाव, अयोग्यता, नाकाबिलीयत।

अनर्हीकरण–पु० (डिस्क्वालिफाई) किसीको किसी कार्य, पद आदिके अयोग्य ठहराना।

अनर्हीकृत–वि० (डिस्क्वालिफाइड) जो किसी कार्य या पदके लिए अयोग्य ठहरा दिया गया हो।

अनल–पु० (सं०) अग्नि, आग; अग्निके अधिष्ठाता देवता; पाचनशक्ति; पाचन-रस; पित्त; वायु; अष्ट वसुओंमेंसे पंचम वसु; एक पितृदेव; परमेश्वर; जीव; विष्णु; वासुदेव; एक वानर; एक मुनि; एक राक्षस; तीनकी संख्या; कृत्तिका नक्षत्र; ५०वाँ संवत्सर; चित्रक; भिलावाँ; 'र्' अक्षर। **–चूर्ण**–पु० बारूद। **–द**–वि० अग्नि उत्पन्न करनेवाला; ताप या अग्नि शांत करनेवाला। **–दीपन**–वि० जठराग्नि तीव्र करनेवाला। **–पंख**–(हि०),**–पक्ष**–पु० एक चिड़िया (काल्पनिक ?)। **–प्रभा**–स्त्री० ज्योतिष्मती लता। **–प्रिया**–स्त्री० आग्नेयी, स्वाहा। **–मुख**–वि० अग्नि जिसका मुख हो। पु० देवता; ब्राह्मण; चित्रक; भिलावाँ। **–साद**–पु० अग्निमांद्य रोग।

अनलस–वि० (सं०) आलस्यरहित, जागरूक, चुस्त, फुर्तीला; अयोग्य; असमर्थ।

अनलसित–वि० आलस्यरहित।

अनलहक़–पु० (अ०) मैं हक, अहं ब्रह्मास्मि (परमेश्वर इ०)।

अनला–स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या; माल्यवान् नामक राक्षसकी एक कन्या।

अनलायक*–वि० अयोग्य।

अनलि–पु० (सं०) बक वृक्ष।

अनली*–स्त्री० पिंगला नाड़ी।

अनलेख*–वि० अलख; अगोचर।

अनल्प–वि० (सं०) थोड़ेका उलटा, अधिक; उदाराशय। **–घोष**–पु० बहुत ज्यादा शोरगुल। **–मन्यु**–वि० बहुत अधिक क्रुद्ध।

अनवकाश–वि० (सं०) जिसके लिए कोई गुंजाइश या मौका न हो, अप्रयोज्य। पु० अवकाशका अभाव, फुरसत या गुंजाइशका न होना।

अनवकाशिक–पु० (सं०) एक पैरपर खड़ा होकर तप करनेवाला ऋषि।

अनवगत–वि० (सं०) अज्ञात, न जाना हुआ।

अनवगाह, अनवगाह्य–वि० (सं०) अथाह, बहुत गहरा।

अनवगाही(हिन्)–वि० (सं०) डुबकी न लगानेवाला; अध्ययन न करनेवाला।

अनवगीत–वि० (सं०) अनिंदित।

अनवग्रह–वि० (सं०) अनियंत्रित, जो रोका न जा सके, अबाधित, स्वच्छंद।

अनवच्छिन्न–वि० (सं०) न बिलगाया हुआ, अखंडित, अंतररहित; अपरिसीमित; अनिर्दिष्ट। **–हास**–पु० जोरकी लगातार चलनेवाली हँसी।

अनवट–पु० एक आभूषण जो पैरके अँगूठेमें पहना जाता है; कोल्हूके बैलकी आँखोंका ढक्कन।

अनवत्व–पु० (सं०) जीवनयुक्त होना।

अनवद्य–वि० (सं०) अनिंद्य, निर्दोष।

अनवद्यांग–वि० (सं०) सुंदर अंगोंवाला।

अनवद्राण–वि० (सं०) अनिद्रित।

अनवधान–पु० (सं०) अमनोयोग, असावधानता। वि० प्रमादी, लापरवाह।

अनवधानता–स्त्री० (सं०) असावधानी, लापरवाही।

अनवधि–वि० (सं०) असीम, बेहद। अ० निरंतर।

अनवन–वि० (सं०) सहायता या आश्रय न देनेवाला; कष्टप्रद। पु० आश्रयाभाव।

अनवनामित–वि० (सं०) जो झुकाया न गया हो।

अनवभ्र–वि० (सं०) अक्षुण्ण; अनश्वर, स्थायी।

अनवम–वि० (सं०) तुच्छ या हीन नहीं; बड़ा; श्रेष्ठ।

अनवय*–पु० वंश, कुल; दे० 'अन्वय'।

अनवर–वि० (सं०) अकनिष्ठ; अन्यून; श्रेष्ठ।

अनवरत–वि० (सं०) अविराम; निरंतर। अ० लगातार।

अनवरार्ध्य–वि० (सं०) सर्वोत्तम; प्रधान।

अनवरोध–पु० (सं०) बिना रोक-टोकका, मुक्त। पु० अवरोधका अभाव।

अनवलंब, अनवलंबन–वि० (सं०) अवलंब-हीन, बेसहारा। पु० स्वतंत्रता।

अनवलंबित–वि० (सं०) निराधार, आश्रयहीन।

अनवलोभन–पु० (सं०) गर्भके तीसरे मासमें किया जानेवाला एक संस्कार।

अनवसर–पु० (सं०) निरवकाश, अवसरका अभाव; कुसमय। वि० व्यस्त, बे-फुरसत; असामयिक, अप्राप्तकाल; अपने स्थानपर नहीं।

अनवसान–वि० (सं०) अंतर-रहित; मृत्यु-रहित; जिसकी समाप्ति न हो।

अनवसित–वि० (सं०) असमाप्त; जो अस्त न हुआ हो। **–संधि**–स्त्री० औपनिवेशिक संधि; जंगल या ऊसरको आबाद करनेके

लिए दो व्यक्तियों या राज्योंकी संधि ।

अनवसिता–स्त्री० (सं०) एक वृत्त ।

अनवस्कर–वि० (सं०) स्वच्छ, मलरहित, साफ ।

अनवस्थ–वि० (सं०) अस्थिर, चंचल; अव्यवस्थित ।

अनवस्था–स्त्री० (सं०) अवस्थितिका अभाव; अस्थिरता; अव्यवस्था; चरित्रभ्रष्टता; एक तर्कदोष–तर्क या कार्य-कारणकी ऐसी परंपरा जिसका न अंत हो, न किसी निर्णयपर पहुँचे ।

अनवस्थान–पु० (सं०) अस्थिरता; अनिश्चितता; वायु; आचरण-भ्रष्टता । वि० दे० 'अनवस्थित' ।

अनवस्थायी(यिन्)–वि० (सं०) क्षणस्थायी ।

अनवस्थित–वि० (सं०) अस्थिर; अस्थिरचित्त ।

अनवस्थिति–स्त्री० (सं०) चापल्य, अस्थिरता; अधैर्य; आश्रयका अभाव; आचरणहीनता; समाधि प्राप्त होने पर भी चित्तका स्थिर न होना ।

अनवहित–वि० (सं०) असावधान ।

अनवाँसना–स० क्रि० नये बरतन, वस्त्र आदिको प्रथम बार काममें लाना ।

अनवाँसा–पु० कटी हुई फसलका पूला; एक अनवांसीमें उत्पन्न फसल ।

अनवांसी–स्त्री० बिस्वांसीका बीसवाँ या बिस्वेका ४००वाँ भाग ।

अनवाद*–पु० कुबोल, कटुवचन ।

अनवाप्त–वि० (सं०) अप्राप्त ।

अनवाप्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्तिका अभाव, अप्राप्ति ।

अनवेक्ष, अनवेक्षक–वि० (सं०) लापरवाह, उदासीन ।

अनवेक्षण–पु०, **अनवेक्षा**–स्त्री० (सं०) लापरवाही, असावधानता, उदासीनता; निरीक्षणका अभाव ।

अनशन–पु० (सं०) आहारत्याग, उपवास; किसी विशेष संकल्पके साथ आहार-त्याग । वि० उपवास करनेवाला ।

अनश्वर–वि० (सं०) सनातन, शाश्वत; ध्रुव; अविनाशी, नित्य ।

अनसखरी–स्त्री० पक्की रसोई ।

अनसत्त*–वि० असत्य ।

अनसमझ*–वि० नासमझ ।

अनसमझा*–वि० नासमझ; जो समझा हुआ न हो ।

अनसह*–वि० दे० 'अनसहत' ।

अनसहत*–वि० असह्य ।

अनसाना†–अ० क्रि० झुँझलाना, क्रुद्ध होना; स० क्रि० अप्रसन्न करना ।

अनसुनी–वि० न सुनी हुई । **मु०–करना**–सुनकर भी न सुनने जैसा आचरण करना; जान-बूझकर उपेक्षा करना ।

अनसूय–वि० (सं०) असूयारहित, द्वेषरहित ।

अनसूयक, अनसूयु–वि० (सं०) दे० 'अनसूय' ।

अनसूया–स्त्री० (सं०) दूसरेके गुणोंमें दोष ढूँढ़नेकी वृत्तिका न होना; ईर्ष्या या द्वेषका अभाव; दक्षकी एक कन्या, अत्रि ऋषिकी पत्नी; शकुंतलाकी एक सखी ।

अनसूरि–पु० (सं०) मूर्ख नहीं, चतुर व्यक्ति ।

अनस्तमित–वि० (सं०) जो अस्त न हुआ हो; जिसका पतन न होता हो ।

अनस्तित्व–पु० (सं०) अस्तित्वका अभाव, अविद्यमानता, नेस्ती ।

अनस्थ, अनस्थिक–वि० (सं०) अस्थिरहित ।

अनहंकार–पु० (सं०) अहंकारका अभाव । वि० जिसे अहंकार न हो, निरहंकार ।

अनहंकृत–वि० (सं०) अहंकाररहित ।

अनहंकृति–स्त्री०, वि० (सं०) दे० 'अनहंकार' ।

अनहद*–पु० दे० 'अनाहत' । **–नाद**–पु० दे० 'अनाहत नाद' ।

अनह(न्)–पु० (सं०) कुदिन, बुरा दिन ।

अनहित*–पु० बुराई, अहित । वि० अप्रिय, अहितकारी ।

अनहितू–वि० अशुभ चाहनेवाला, अपकारी ।

अनहोता–वि० निर्धन; अलौकिक; असंभव ।

अनहोनी–वि० स्त्री० न होनेवाली, असंभव; अलौकिक । स्त्री० अनहोनी बात ।

अनाकनी, अनाकानी*–स्त्री० दे० 'आनाकानी' ।

अनाकर्षण–पु० (सं०) आकर्षणका अभाव, अरुचि ।

अनाक्रमण–पु० (सं०) देशादिपर आक्रमण न करना । **–सन्धि**–स्त्री० (नॉन-ऐग्रेशन पैक्ट) दो राष्ट्रोंके बीच की गयी वह संधि जिसमें एक दूसरेके विरुद्ध सैनिक बलका प्रयोग न करने तथा मतभेद या झगड़ा उत्पन्न होनेपर आपसकी बातचीत अथवा पंचायत द्वारा उसे निपटानेकी बात स्वीकार की गयी हो ।

अनाकार–वि० (सं०) निराकार, आकारहीन; परमेश्वरका एक विशेषण ।

अनाकाल–पु० (सं०) दुर्भिक्ष । **–भृत**–पु० वह व्यक्ति जो भुखमरीसे बचनेके लिए चाकरी करता हो ।

अनाकाश–वि० (सं०) अपारदर्शक; आकाशसे भिन्न ।

अनाकुल–वि० जो आकुल न हो, स्थिर, शांत; असंगत ।

अनाकृत–वि० (सं०) जो रोका न गया हो, अनिवारित; जिसकी देख-भाल न की गयी हो ।

अनाक्रांत–वि० (सं०) जो आक्रांत या पीड़ित न हो ।

अनाक्रांता–स्त्री० (सं०) कंटकारि नामक पौधा ।

अनागंधित–वि० (सं०) न सूँघा हुआ; अस्पृष्ट ।

अनागत–वि० (सं०) न आया हुआ; अप्राप्त; अज्ञात; आनेवाला; भावी; * अनादि; अपूर्व । अ० अचानक । पु० भविष्यत्काल; एक ताल (संगीत) । **–विधाता(तृ)**–पु० आनेवाले अनिष्टको पहलेसे सोचकर उसके निराकरणका उपाय करनेवाला; भविष्यके विषयमें सावधान, दूरदर्शी व्यक्ति ।

अनागताबाध–पु० (सं०) भावी कष्ट, रोग आदि ।

अनागतार्तवा–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका मासिक स्राव आरंभ न हुआ हो, अरजस्का ।

अनागतावेक्षण–पु० (सं०) दूरदर्शिता ।

अनागति–स्त्री० (सं०) न आना; अप्राप्ति; पहुँच न होना ।

अनागम–पु० (सं०) न आना; अप्राप्ति । वि० अनागत; जिस (संपत्ति)का क्रयपत्र या अधिकारपत्र न हो ।

अनागमोपभोग–पु० (सं०) अधिकारपत्रके बिना संपत्तिका उपभोग ।

अनागम्य–वि० (सं०) दुर्गम, अगम्य; अप्राप्य ।

अनागामी(मिन्)–वि० (सं०) न आनेवाला; अभविष्यत्; न लौटनेवाला ।

अनागार, अनागारिक–वि० (सं०) विना घरका । पु० साधु-सन्न्यासी ।

अनाघात–पु० (सं०) संगीतका एक ताल ।

अनाघ्रात–वि० (सं०) जो सूँघा न गया हो ।

अनाचरण–पु० (सं०) किसी निर्दिष्ट या निर्धारित कामका न करना; दे० 'अनाचार' ।

अनाचार–पु० (सं०) अयोग्य आचरण; दुराचरण, बुराई; कुरीति । वि० अविशिष्ट; अभद्र; विच्छिन्न ।

अनाचारी(रिन्)–वि० (सं०) बुरे आचरणवाला, आचारहीन, कुचाली ।

अनाज–पु० अन्न, नाज ।

अनाजी–वि० जो अनाजसे बनायी गयी हो (मिठाई इ०); जो 'फलाहारी' न हो ।

अनाज्ञप्त–वि० (सं०) जिसके लिए आज्ञा न दी गयी हो । **–कारी(रिन्)**–वि० ऐसा काम करनेवाला जिसके लिए आज्ञा न दी गयी हो ।

अनाज्ञाकारी(रिन्)–वि० (सं०) आज्ञाका पालन न करनेवाला ।

अनाज्ञात–वि० (सं०) अज्ञात; जो कुछ अबतक ज्ञात है उससे बढ़ा हुआ ।

अनाड़ी–वि० अज्ञान, अकुशल ।

अनाढ्य–वि० (सं०) धनहीन, दरिद्र ।

अनातप–वि० (सं०) आतपहीन, छायादार; ठंडा । पु० आतपका अभाव, छाया; ठंढ ।

अनातुर–वि० (सं०) अनुत्कंठित; उदासीन; अक्लांत; स्वस्थ, अरुग्ण ।

अनात्म(न्)–वि० (सं०) आत्मा या चैतन्यरहित, जड़; आध्या-

त्मिक नहीं, शारीरिक; जिसने अपनेपर नियंत्रण नहीं किया है। पु॰ आत्मभिन्न, जड़ पदार्थ, देहादि। **–ज्ञ,–वेदी(दिन्)**–वि॰ आध्यात्मिक ज्ञानसे रहित, अज्ञान। **–धर्म**–पु॰ शारीरिक धर्म। **–वाद**–पु॰ आत्माका अस्तित्व न माननेवाला सिद्धांत, जड़वाद।

अनात्मक–वि॰ (सं॰) अयथार्थ; क्षणिक; संसारका विशेषण (बौ॰)। **–दुःख**–पु॰ अज्ञानसे उत्पन्न दुःख; भवबाधा।

अनात्मवान्(वत्)–वि॰ (सं॰) असंयमी।

अनात्म्य–वि॰ (सं॰) अशारीरिक। पु॰ अपने परिवारके प्रति स्नेहका अभाव।

अनात्यंतिक–वि॰ (सं॰) अनित्य; अंतिम नहीं; सविराम, पुनरावर्त्तक।

अनाथ–वि॰ (सं॰) जिसका कोई मालिक या रक्षक न हो; असहाय, निराश्रय, दीन। पु॰ विना माँ-वापका बच्चा; आश्रयहीन व्यक्ति। **–सभा**–स्त्री॰ अनाथालय।

अनाथानुसारी(रिन्)–वि॰ (सं॰) दीनोंका सहायक।

अनाथालय, अनाथाश्रम–पु॰ (सं॰) वह स्थान जहाँ विना माँ-वापके बच्चे आदि रखे जायँ, यतीमखाना।

अनादर–पु॰ (सं॰) आदरका अभाव; तिरस्कार; एक अर्थालंकार जिसमें अधिक अच्छी लगनेवाली किसी अप्राप्त वस्तुको पाकर या देखकर प्राप्त वस्तुका अनादर किया जाय। वि॰ उदासीन; उपेक्षा करनेवाला।

अनादरण–पु॰ (सं॰) उपेक्षा या तिरस्कारपूर्ण व्यवहार; (डिसऑनर) (खातेमें या शिल्लकमें धनकी कमी आदिके कारण) धनादेश (चेक), हुंडी या प्राप्यक (बिल)का रुपया देनेसे इनकार करना।

अनादरित–वि॰ दे॰ 'अनादृत'।

अनादि–वि॰ (सं॰) आदिरहित; नित्य; परमेश्वरका एक विशेषण। **–निधन**–वि॰ जिसका आदि-अंत न हो; शाश्वत; विष्णुका एक विशेषण। **–मध्यांत**–वि॰ आदि, मध्य, अंत तीनोंसे रहित। **–सिद्ध**–वि॰ अनादि कालसे चला आनेवाला।

अनादिष्ट–वि॰ (सं॰) आदेश न दिया हुआ।

अनादृत–वि॰ (सं॰) जिसका आदर न किया गया हो; तिरस्कृत।

अनादेय–वि॰ (सं॰) न लेने योग्य, अग्राह्य।

अनादेश–पु॰ (सं॰) आदेशका न होना। **–कर**–वि॰ जिसके लिए आज्ञा न हो वह करनेवाला।

अनाद्यंत–वि॰ (सं॰) जिसका आदि-अंत न हो। पु॰ शिव।

अनाद्य–वि॰ (सं॰) अनादि; न खाने योग्य।

अनाद्यनंत–वि॰, पु॰ (सं॰) दे॰ 'अनाद्यंत'।

अनाधार–वि॰ (सं॰) निरवलंब, बेसहारा (आकाश, ब्रह्म)।

अनाधि–वि॰ (सं॰) चिंतारहित।

अनाधिकारिक–वि॰ 'अन-अथॉराइज्ड', जो अधिकारपूर्वक न किया गया हो; जिसे करनेका अधिकार न हो; दे॰ 'अनधिकृत'।

अनाधृष्ट, अनाधृष्य–वि॰ (सं॰) अजेय; अनियंत्रित; पूर्ण, अक्षुण्ण।

अनाना*–स॰ क्रि॰ मँगाना।

अनानुपूर्व्य–पु॰ (सं॰) नियत क्रममें न आना।

अनापद्–स्त्री॰ (सं॰) संकट या दुर्दिनका न होना।

अनाप-शनाप–पु॰ अंडबंड, बेतुकी बकवास।

अनापा*–वि॰ बिना नापा हुआ; अपरिमित।

अनाप्त–वि॰ (सं॰) जो आप्त–आत्मीय, यथार्थज्ञाता, विश्वसनीय या कुशल न हो; जो प्राप्त न हुआ हो। पु॰ अजनबी।

अनाम(न्)–वि॰ (सं॰) जिसका नाम या ख्याति न हो। पु॰ (सं॰) अर्श, बवासीर।

अनामक–वि॰ (सं॰) दे॰ 'अनामा'। पु॰ मलमास; अर्श।

अनामय–वि॰ (सं॰) रोगरहित; स्वस्थ। पु॰ आरोग्य; विष्णु; शिव।

अनामा, अनामिका–स्त्री॰ (सं॰) कानी और बिचली उंगलियोंके बीचकी उंगली।

अनामा(मन्)–वि॰ (सं॰) नामरहित; अप्रसिद्ध। पु॰ मलमास; अनामिका।

अनामिष–वि॰ (सं॰) मांसरहित; प्रलोभनरहित; लाभरहित।

अनामृत–वि॰ (सं॰) अमर।

अनायक–वि॰ (सं॰) नायकहीन; अव्यवस्थित।

अनायत–वि॰ (सं॰) अनियंत्रित; अनिवारित; बे-सहारा; अविच्छिन्न; संलग्न; जिसमें लंबाई न हो।

अनायत्त–त्रि॰ (सं॰) जो दूसरेके वशमें न हो, अवशीभूत, स्वाधीन।

अनायास–पु॰ (सं॰) आयास(श्रम, कठिनाई)का अभाव; आलस्य; लापरवाही। अ॰ बिना प्रयास–परिश्रमके, आसानीसे।

अनायासिक विजय–स्त्री॰ (वॉकओव्हर) बिना विशेष आयासके, आसानीसे प्राप्त विजय, अनायास-प्राप्त विजय।

अनायुष्य–वि॰ (सं॰) दीर्घ जीवनके लिए घातक (अति भोजन आदि)।

अनारंभ–पु॰ (सं॰) आरंभका अभाव। वि॰ आरंभरहित।

अनार–पु॰ एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़; एक आतिशबाजी; *अन्याय; ऊधम (बुंदेल॰); दो छप्परोंको जोड़नेवाली रस्सी। **–दाना**–पु॰ अनारके सुखाये हुए दाने।

अनारत–वि॰ (सं॰) अनवरत; नित्य, स्थायी। पु॰ अविच्छिन्नता।

अनारभ्य–वि॰ (सं॰) आरंभ करनेके अयोग्य।

अनारी*–वि॰ अनारके रंगका, लाल; दे॰ 'अनाड़ी'। पु॰ लाल आँखोंवाला कबूतर; एक पकवान।

अनारोग्य–वि॰ (सं॰) अस्वस्थ; स्वास्थ्यके लिए हानिकारक। पु॰ बीमारी। **–कर**–वि॰ अस्वास्थ्यकर।

अनार्जव–पु॰ (सं॰) कपट; कुटिलता; रोग। वि॰ कुटिल; बेईमान।

अनार्तव–पु॰ (सं॰) रजोधर्मका अवरोध। वि॰ असामयिक, समयसे पूर्व, बे-मौसिम।

अनार्तवा–स्त्री॰ (सं॰) अरजस्वला।

अनार्य–पु॰ (सं॰) जो आर्य न हो, शूद्र, म्लेच्छ। वि॰ असभ्य, अप्रतिष्ठित, नीच; अनार्योचित; (वह देश) जहाँ आर्य न हों। **–कर्मी(र्मिन्)**–वि॰ ऐसा कार्य करनेवाला जो आर्योचित न हो। **–ज**–पु॰ अगुरु वृक्ष। वि॰ अनार्य या शूद्रसे उत्पन्न। **–जुष्ट**–वि॰ अनार्याचरित। **–तिक्त**–पु॰ चिरायता।

अनार्यक–पु॰ (सं॰) अगुरु काष्ठ।

अनार्ष, अनार्षेय–वि॰ (सं॰) जो आर्ष–ऋषिकृत न हो; अवैदिक।

अनालंब–वि॰ (सं॰) बेसहारा, अवलंबहीन। पु॰ अवलंबका अभाव।

अनालंबन–वि॰ (सं॰) दे॰ 'अनालंब'।

अनालंबी–स्त्री॰ (सं॰) शिवका एक वाद्य (वीणा ?)।

अनालंबुका, अनालंभुका–स्त्री॰ (सं॰) रजस्वला स्त्री।

अनालाप–वि॰ (सं॰) मौन; मितभाषी, अधिक न बोलनेवाला। पु॰ मौन; कम बोलना।

अनालोचित–वि॰ (सं॰) जो देखा न गया हो; अविवेचित, जिसपर भली भाँति विचार न किया गया हो।

अनावरण–पु॰ (अनवीलिंग) किसी महापुरुषकी मूर्ति या चित्रको अनावरित करनेका कार्य या तत्संबंधी सार्वजनिक समारोह।

अनावरित करना–स॰ क्रि॰ (अनवील) किसी प्रसिद्ध व्यक्तिकी मूर्ति या चित्रके ऊपर पड़ा हुआ आवरण हटाकर उसे जनताके दर्शनार्थ खोल देना।

अनावर्तक, अनावर्ती–वि॰ (नान-रेकरिंग) जो बार-बार न हो, जो एक ही बार दिया जाय या किया जाय (अनुदान, व्यय आदि)।

अनावर्ति–स्त्री॰ (सं॰) न लौटना; फिर जन्म न लेना, मोक्ष।

अनावर्षण–पु॰ (सं॰) अवर्षण, सूखा।

अनावश्यक–वि॰ (सं॰) गैरजरूरी, जिसकी आवश्यकता न हो।

अनावासिक–वि॰ जो स्थायी निवासी न हो; (नॉनरेजिडेंट) कर्तव्य आदि-संबंधी दायित्वके क्षेत्रमें न रहनेवाला, अन्यत्र निवास करनेवाला। **–छात्र**–पु॰ (डे स्कालर) वह छात्र जो विश्वविद्यालयके बाहर, किसी निकटवर्ती नगर या ग्राममें, रहते हुए केवल विद्या-अर्जनके लिए वहाँकी पढ़ाई आदिमें सम्मिलित होता हो।

अनाविद्ध–वि॰ (सं॰) न बिधा हुआ; अनाहत, जिसे चोट न

पहुँची हो।

अनाविल–वि० (सं०) अपंकिल; स्वच्छ; स्वास्थ्यकर (देश)।

अनावृत–वि० (सं०) जो ढका न हो, खुला।

अनावृत्त–वि० (सं०) जो लौटा न हो; जो दोहराया न गया हो।

अनावृत्ति–स्त्री० (सं०) न लौटना; फिर जन्म न होना, मोक्ष।

अनावृष्टि–स्त्री० (सं०) अवर्षण, सूखा।

अनावेदित–वि० (सं०) जिसकी विज्ञप्ति न की गयी हो, जो जनाया न गया हो।

अनाश–वि० (सं०) निराश; जिसका नाश न हो; जो नष्ट न किया गया हो; जीवित।

अनाशक–वि० (सं०) भोजनादिके आनंदसे वंचित; अविनश्वर; बुराई, नुकसान या नाश न करनेवाला। पु० उपवास।

अनाशकायन–पु० (सं०) ब्रह्मचर्यावस्था।

अनाशस्त–वि० (सं०) अप्रशंसित।

अनाशा–स्त्री० (सं०) नैराश्य।

अनाशी(शिन्)–वि० (सं०) अनश्वर (आत्मा, ब्रह्म)।

अनाशु–वि० (सं०) अनश्वर; अव्यापक; तेज नहीं, सुस्त।

अनाश्य–वि० (सं०) अनश्वर।

अनाश्रमी(मिन्)–वि० (सं०) जो किसी आश्रममें न हो; आश्रमधर्मका अनुसरण न करनेवाला।

अनाश्रय–वि० (सं०) आश्रयरहित, बे-सहारा।

अनाश्रित–वि० (सं०) जो दूसरेपर आश्रित न हो, स्वाधीन।

अनास–वि० (सं०) नासिकारहित।

अनासक्त–वि० (सं०) आसक्तिरहित।

अनासक्ति–स्त्री० (सं०) आसक्तिका अभाव।

अनासादित–वि० (सं०) अप्राप्त; अनाक्रांत; अघटित; अस्तित्वहीन। **–विग्रह**–वि० जिसे युद्ध करनेका अवसर न मिला हो।

अनासाद्य–वि० (सं०) अप्राप्य।

अनासिक–वि० (सं०) बिना नाकका, नकटा।

अनासीन–वि० (अन्सीटेड) जिसे किसी कारणवश अपने स्थान, पद आदिसे हट जाना पड़ा हो, स्थानवंचित; आसनच्युत।

अनास्था–स्त्री० (सं०) आस्थाका अभाव, अश्रद्धा; अनादर; उदासीनता। (वि० 'अनास्थ'–उदासीन।)

अनास्राव–वि० (सं०) क्लेशरहित।

अनास्वाद–वि० (सं०) बिना स्वादका, विरस। पु० स्वादका अभाव, नीरसता।

अनास्वादित–वि० (सं०) जिसका स्वाद न लिया गया हो।

अनाह–पु० (सं०) पेट फूलना, अफरा।

अनाहक*–अ० नाहक, व्यर्थ–'राहु भयौ यह आनि अनाहक'–घन०।

अनाहत–वि० (सं०) आघातरहित; कोरा; जो आघातसे उत्पन्न न हुआ हो; अगुणित। पु० हठयोगके अनुसार शरीरके ६ चक्रोंमेंसे एक जिसका स्थान हृदय बताया जाता है। **–नाद,–शब्द**–पु० योगियोंको सुनाई देनेवाली एक आंतरिक ध्वनि; ओम्-ध्वनि।

अनाहार–पु० (सं०) आहारका अभाव या त्याग। वि० निराहार; जिसमें कुछ न खाया जाय। **–मार्गणा**–स्त्री० जैनियोंका एक व्रत।

अनाहार्य–वि० (सं०) अकृत्रिम; अभोज्य।

अनाहिताग्नि–वि० (सं०) जिसने विधिवत् अग्न्याधान न किया हो; अग्निहोत्र न करनेवाला।

अनाहूत–वि० (सं०) बिन-बुलाया, अनिमंत्रित। **–प्रवेश**–पु० (इंट्रूजन) बिना बुलाये किसीके घरमें प्रविष्ट हो जाना, किसीके सामने जबरन अपने आपको उपस्थित कर देना।

अनिंद*–वि० दे० 'अनिंद्य'।

अनिंदनीय–वि० (सं०) जो निंदाके योग्य न हो, निर्दोष।

अनिंदित–वि० (सं०) निर्दोष, उत्तम, निंदारहित।

अनिंद्य–वि० (सं०) निर्दोष; प्रशंसनीय; सुंदर।

अनिआई–वि० अन्यायी।

अनिकेत–वि० (सं०) जिसका कोई नियत वासस्थान न हो; पु० सन्यासी; खानाबदोश।

अनिक्षिप्त सैन्य–पु० (सं०) तोड़ी या कार्यभारसे मुक्त की हुई सेना।

अनिक्षु–पु० (सं०) ईख जैसा एक पौधा।

अनिगीर्ण–वि० (सं०) जो निगला न गया हो; जो छिपा न हो, व्यक्त।

अनिग्रह–पु० (सं०) बंधन, रोक, या दंडका अभाव; तर्कमें हार न मानना। वि० अनियंत्रित; अजेय।

अनिच्छ, अनिच्छक, अनिच्छु, अनिच्छुक–वि० (सं०) इच्छारहित, न चाहनेवाला।

अनिच्छा–स्त्री० (सं०) इच्छाका अभाव; अरुचि।

अनिच्छित–वि० (सं०) जो न चाहा गया हो।

अनिजक–वि० (सं०) अपना नहीं, दूसरेका।

अनित–वि० (सं०) रहित, वंचित; * अनित्य।

अनित्य–वि० (सं०) जो सदा न रहे, नश्वर, क्षणस्थायी, अनियमित; असाधारण; अस्थिर। **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० सामयिक कार्य (यज्ञादि)। **–दत्त,–दत्तक,–दत्रिम**–पु० वह लड़का जो गोद लिये जानेके लिए अस्थायी या आरंभिक रूपमें दिया जाय। **–भाव**–पु० क्षणभंगुरता; नश्वरता। **–सम**–पु० जाति या असत् उत्तरके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०)।

अनिदान–वि० (सं०) कारणरहित।

अनिद्र–वि० (सं०) जिसे नींद न आये। पु० अनिद्रा रोग।

अनिद्रा–स्त्री० (सं०) नींद न आनेकी बीमारी।

अनिद्रित–वि० (सं०) जो सोया न हो, जाग्रत्।

अनिधृष्ट–वि० (सं०) अपराभूत, अनियंत्रित।

अनिप*–पु० सेनापति।

अनिपात–पु० (सं०) अपतन; जीवनका बना रहना।

अनिपुण–वि० (सं०) अकुशल, अधकचरा।

अनिपुण श्रमिक–पु० दे० 'अकुशल श्रमिक'।

अनिबद्ध–वि० (सं०) असंबद्ध, बे-लगाव। **–प्रलाप**–पु० बे-सिर-पैरकी बात।

अनिभृत–वि० (सं०) निजी नहीं, सार्वजनिक; जो छिपा न हो; धृष्ट; अस्थिर। **–संधि**–स्त्री० किसी राजाकी अत्यंत उर्वरा भूमिको खरीद लेनेके इच्छुक राजाको वह भूमि देकर की हुई संधि।

अनिभ्य–वि० (सं०) धनहीन, दरिद्र।

अनिमंत्रित–वि० (सं०) बिना बुलाया हुआ, अनाहूत।

अनिमक–पु० (सं०) मेढ़क; कोयल; भ्रमर; मधुमक्खी; पद्मकेशर; महुएका पेड़।

अनिमा*–स्त्री० दे० 'अणिमा'।

अनिमित्त–वि० (सं०) कारणरहित, अहेतुक, आकस्मिक। पु० उचित कारणका न होना; अपशकुन। अ० बिना किसी उचित कारणके। **–निराक्रिया**–स्त्री० अपशकुन या अनिष्टसूचक चिह्नोंका निवारण। **–लिंगनाश**–पु० आँखका एक रोग जिससे मनुष्य अंधा हो जाता है।

अनिमित्तक–वि० (सं०) व्यर्थ, प्रयोजनरहित।

अनिमिष, अनिमेष–वि० (सं०) जिसकी पलक न गिरे, स्थिर–दृष्टि, जागरूक; खुला हुआ, विकसित। अ० बिना पलक गिराये, एकटक। पु० देवता; मछली; महाकाल। दृष्टि,**–नयन,–लोचन**–वि० एकटक देखनेवाला।

अनिमिपाक्ष–पु० (सं०) वह व्यक्ति जो एकटक देख रहा हो।

अनिमिषाचार्य–पु० (सं०) देवगुरु, बृहस्पति।

अनिमिषीय–वि० (सं०) देवता-संबंधी।

अनिमेखी*–अ० निरंतर।

अनियंत्रित–वि० (सं०) प्रतिबंधरहित; स्वच्छंद; निरंकुश। **–शासन**–पु० एकतंत्र या निरंकुश राज्य।

अनियत–वि० (सं०) अनिश्चित; अनियमित; अस्थिर; असीम; असाधारण; आकस्मिक; कारणरहित; जो बँधा हुआ न हो। **–पुंस्का**–स्त्री० व्यभिचारिणी। **–वृत्ति**–वि० बँधा काम न करनेवाला; जिसकी आय नियत न हो।

अनियतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसका मन वशमें न हो, चंचलप्रकृति।

अनियम–पु० (सं०) नियमका अभाव; व्यवस्थाका अभाव; बेकायदगी; निश्चित आदेशका न होना; संदेह; अविहित कर्म।

वि० नियमहीन, अनियमित ।

अनियमित–वि० (सं०) नियमरहित; नियमविरुद्ध, वेकायदा ।

अनियाउ, अनियाव*–पु० दे० 'अन्याय' ।

अनियारा–वि० अनीदार, पैना,–'जाहि लगे सोई पै जाने प्रेम वान अनियारो'–सू०; कँटीला; बाँका, बहादुर,–'चम्पतिराय वड़े अनियारे'–छत्र० ।

अनियुक्त–वि० (सं०) जो नियुक्त न किया गया हो, जो अधिकार-संपन्न न हो । पु० विचारपतिका वह सहायक जिसकी नियमानुसार नियुक्ति न हुई हो और जिसे अपना मत देनेका अधिकार न हो ।

अनियोग–पु० (सं०) प्रयोगका अभाव; अनुपयुक्त पद ।

अनिराकरण–पु० (सं०) निवारण न करना ।

अनिरुक्त–वि० (सं०) जिसका सम्यक् निर्वचन या व्याख्या न हुई हो; अस्पष्ट ।

अनिरुद्ध–वि० (सं०) जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके; वेरोक; स्वच्छंद । पु० कृष्णके पौत्र, प्रद्युम्नके पुत्र; भेदिया, गुप्तचर । **–पथ**–पु० आकाश ।

अनिर्णय–पु० (सं०) निर्णयका अभाव, अनिश्चय । (वि० 'अनिर्णीत'–वि० जिसके संवंधमें निर्णय न हुआ हो, जिसमें हार-जीतका फैसला न हुआ हो (–मैच); अनिश्चित ।)

अनिर्दश, अनिर्दशाह–वि० (सं०) जिसका दशाह–जनन या मरण-संवंधी अशौचके दस दिन–न हुआ हो ।

अनिर्दिश्य, अनिर्देश्य–वि० (सं०) जिसका निर्देश न किया जा सके ।

अनिर्दिष्ट–वि० (सं०) जिसका निर्देश न किया गया हो; न वताया हुआ; अनादिष्ट । **–भोग**–पु० किसीकी किसी वस्तुको विना उसकी आज्ञाके काममें लाना ।

अनिर्देश–पु० (सं०) निश्चित नियम या आदेशका अभाव ।

अनिर्द्धारित–वि० (सं०) अनिश्चित ।

अनिर्धार्य–वि० जिसका निर्धारण न हो सके ।

अनिर्वंध–वि० (सं०) वंधनरहित, स्वच्छंद ।

अनिर्भर–वि० (सं०) अधिक नहीं, थोड़ा; हलका; अनवलंबित ।

अनिर्भेद–पु० (सं०) भेद न खोलना ।

अनिर्माल्या–स्त्री० (सं०) पृक्का नामक ओषधि ।

अनिर्लोचित–वि० (सं०) अविचारित, अविवेचित ।

अनिर्वचनीय–वि० (सं०) निर्वचनके अयोग्य; जिसके लक्षण आदि न वताये जा सकें; जिसका वर्णन न हो सके । पु० माया, अज्ञान; जगत् ।

अनिर्वाच्य–वि० (सं०) जिसका निर्वाचन न हो सके, जो चुना न जा सके; दे० 'अनिर्वचनीय' ।

अनिर्वाण–वि० (सं०) न वुझा हुआ; अप्रक्षालित ।

अनिर्वाह–पु० (सं०) पूरा. न होना, अनिष्पत्ति; असंगति; अपर्याप्त आय ।

अनिर्वाह्य–वि० (सं०) निर्वाहके योग्य नहीं । **–पण्य**–पु० वह वस्तु जिसका राज्य या नगरमें लाया जाना मना हो ।

अनिर्विण्ण–वि० (सं०) निर्वेदरहित; अदुःखित ।

अनिर्विद–वि० (सं०) अक्लांत ।

अनिर्वृत–वि० (सं०) खिन्न; अशांत, दुःखी ।

अनिर्वृति, अनिर्वृत्ति–स्त्री० (सं०) चिंता; वेचैनी; निर्धनता ।

अनिर्वेद–पु० (सं०) विषादका अभाव; स्वावलंवन ।

अनिर्वेश–वि० (सं०) दुःखित; वे-रोजगार ।

अनिल–पु० (सं०) वायु, पवन, हवा; (इसके सात भेद ये हैं–आवह, निवह, उद्वह, संवह, विवह, प्रवह, परिवह); पवन देव; अष्ट वसुओंमेंसे एक; वातरोग; पक्षाघात; ४६ पवनोंमेंसे एक; शरीरका एक तत्त्व; 'य्' अक्षर; स्वाति नक्षत्र; विष्णु; ४६की संख्या; सागौनका पेड़ । **–कुमार**–पु० हनुमान्; भीम; देवताओं-का एक वर्ग (जै०) । **–घ्न**–वि० वातजन्य विकार दूर करनेवाला । **–घ्नक**–पु० विभीतक वृक्ष । **–पर्यय,–पर्याय**–पु० आँखका एक रोग जिसमें पलकें सूख जाती हैं । **–प्रकृति**–वि० वातकी प्रकृतिवाला । पु० शनि ग्रह । **–व्याधि**–स्त्री० आंतरिक वातजन्य विकार । **–सख,–सारथि**–पु० अग्नि । **–हा(हन्), हृत्**–वि० दे० 'अनिलघ्न' ।

अनिलय–वि० (सं०) विश्राम या विश्राम-स्थानसे रहित ।

अनिलांतक–पु० (सं०) अंगारपुष्प, इंगुदी ।

अनिलात्मज–पु० (सं०) हनुमान्; भीम ।

अनिलापह–वि० (सं०) दे० 'अनिलघ्न' ।

अनिलामय–पु० (सं०) वातरोग ।

अनिलाशन, अनिलाशी(शिन्)–पु० (सं०) साँप । वि० हवा पीकर रहनेवाला ।

अनिलोडित–वि० (सं०) अनुभवहीन ।

अनिवर्तन–वि० (सं०) स्थिर; अपरित्याज्य ।

अनिवर्त्ती(र्त्तिन्)–वि० (सं०) न लौटनेवाला; मुस्तैद; पीठ न दिखानेवाला, वीर; विष्णु और परमेश्वरका एक विशेषण ।

अनिवारित–वि० (सं०) अनियंत्रित; जो रोका न गया हो ।

अनिवार्य–वि० (सं०) जिसका निवारण न हो सके; अटल; अत्यावश्यक । **–भरती**–स्त्री० (कॉन्स्क्रिप्शन) स्थल-सेना, जल-सेना आदिमें सेवाके लिए अनिवार्य या परमावश्यक रूपसे भरती कर लिया जाना ।

अनिश–अ० (सं०) निरंतर, लगातार ।

अनिश्चय–पु० (सं०) निश्चयका अभाव; संदेह ।

अनिश्चित–वि० (सं०) जिसका निश्चय न हुआ हो या न हो; कच्चा; संदिग्ध ।

अनिषिद्ध–वि० (सं०) जो वर्जित या अविहित न हो ।

अनिष्कासिनी–स्त्री० (सं०) पर्दानशीन औरत ।

अनिष्ट–वि० (सं०) जो इष्ट न हो; अवांछित; हानिकर; वुरा । पु० अहित; हानि; अमंगल; विपत् । **–कर**–वि० हानिकर । **–ग्रह**–पु० वुरा या हानिकर ग्रह । **–प्रवृत्तिक**–वि० राष्ट्रद्रोही, वागी । **–प्रसंग**–पु० अवांछित घटना; वुरे विषय या तर्कका संवंध । **–फल**–पु० वुरा परिणाम । **–शंका**–स्त्री० वुराई या अहितकी आशंका । **–हेतु**–पु० वुरा लक्षण ।

अनिष्टापादन–पु०, **अनिष्टाप्ति**–स्त्री० (सं०) अनिष्टकी प्राप्ति; अवांछित घटना ।

अनिष्टाशंसी(सिन्)–वि० (सं०) अनिष्ट या वुराईका सूचक ।

अनिष्पत्ति–स्त्री० (सं०) अपूर्णता; असमाप्ति ।

अनिष्पन्न–वि० (सं०) अपूर्ण, असमाप्त ।

अनिस*–अ० अनिश, लगातार, अहर्निश–'कृस्नकथा आनंद-रसायन । गावत अनिस व्यास द्वैपायन'–घन० ।

अनिसृष्ट–वि० (सं०) जिसने आज्ञा या अधिकार न लिया हो; जिसके उपयोग या व्यवहारकी अनुमति न ली गयी हो ।

अनिसृष्टोपभोक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) धरोहर रखनेवालेकी आज्ञा लिये विना धरोहरको उपयोगमें लानेवाला व्यक्ति ।

अनिस्तीर्ण–वि० (सं०) जो पार न किया गया हो, जिससे छुटकारा न मिला हो; जिसका उत्तर न दिया गया हो ।

अनिस्तीर्णाभियोग–पु० (सं०) वह अभियुक्त जिसने आरोपको असत्य प्रमाणित कर उससे छुटकारा नहीं पाया है ।

अनी–स्त्री० नोक, कोर; लगने, चुभनेवाली वात; ग्लानि; कुसमय; नावकी गलही; जूतेकी नोक; पानीमें निकली हुई जमीनकी नोक; समूह; सेना । **–दार**–वि० तेज नोकवाला । **मु०–का हाथ,–की चोट**–सामनेकी चोट । **–पर कनी चाटना**–ग्लानिके कारण कनी चाटकर आत्महत्या करना ।

अनीक–पु० (सं०) सेना; समूह; पंक्ति; सैन्यपंक्ति; कूच; युद्ध; शकल; कांति; किनारा । * वि० जो नीक अर्थात् अच्छा न हो, खराव ।

अनीकिनी–स्त्री० (सं०). सेना; अक्षौहिणी या पूरी सेनाका दसवाँ भाग–२१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ पैदल; कमलिनी, नलिनी ।

अनीठ*–वि० अनिष्ट; अप्रिय; वुरा ।

अनीठि*–स्त्री० वुराई; क्रोध ।

अनीड–वि० (सं०) विना घोंसलेका; आश्रयहीन; अशरीरी; अग्निका एक विशेषण ।

अनीत*–स्त्री० अन्याय, दुर्व्यवहार; दुष्कर्म ।

अनीति–स्त्री० (सं०) नीतिका उलटा, अनैतिकता; अन्याय,

अनुचित व्यवहार; दुराचार; ईति-संकटका अभाव ।

अनीप्सित–वि० (सं०) अनभिलषित, अनिच्छित ।

अनीलवाजी(जिन्)–पु० (सं०) सफेद घोड़ोंवाला, अर्जुन ।

अनीश–वि० (सं०) जिसका कोई स्वामी या नियंता न हो; अनाथ; प्रधान; असमर्थ; अधिकारहीन; अस्वतंत्र । पु० ईश्वरसे भिन्न–जीव या माया; विष्णु ।

अनीशा–स्त्री० (सं०) असहायावस्था, दीनता ।

अनीश्वर–वि० (सं०) जिसके ऊपर कोई न हो; ईश्वर-रहित, ईश्वरको न माननेवाला; असमर्थ; संसारका एक विशेषण (सां०) । **–वाद**–पु० ईश्वरका अस्तित्व न मानना; नास्तिक मत । **–वादी(दिन्)**–वि० ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला; नास्तिक ।

अनीस*–वि० अनाथ; दे० 'अनीश' ।

अनीसून–पु० (यू०) एक प्रकारकी सौंफ ।

अनीह–वि० (सं०) इच्छारहित; उदासीन; बेपरवाह । पु० अयोध्याका एक राजा ।

अनीहा–स्त्री० (सं०) अनिच्छा; उदासीनता; निश्चेष्टता ।

अनु–उप० (सं०) शब्दोंके पहले मिलकर यह पीछे (अनुचर), समान (अनुरूप), साथ (अनुपान), बारंबार (अनुशीलन), प्रत्येक (अनुदिन), ओर, योग्य, मुनासिब, हीन, गौण आदि अर्थोंका द्योतन करता है । पु० ययातिका एक पुत्र; * दे० 'अणु' । * अ० अब; अथवा; हाँ; ठीक ।

अनुकंपन–वि० (सं०) दयालु, हमदर्द । पु० दया, सहानुभूति ।

अनुकंपा–स्त्री० (सं०) दया, हमदर्दी ।

अनुकंपित–वि० (सं०) जिसपर अनुकंपा की गयी हो ।

अनुकंप्य–वि० (सं०) दयनीय, दयाका पात्र ।

अनुक–वि० (सं०) लोलुप; कामुक; आश्रित ।

अनुकथन–पु० (सं०) पीछे कहना; वर्णन; बातचीत ।

अनुकरण–पु० (सं०) नकल; किसीकी देखादेखी करना ।

अनुकरणीय–वि० (सं०) अनुकरण करने योग्य ।

अनुकर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) नकल करनेवाला; अभिनेता । (स्त्री० 'अनुकर्त्री' ।)

अनुकर्म(न्), **अनुकार**–पु०, **अनुक्रिया**–स्त्री० (सं०) नकल ।

अनुकर्ष, **अनुकर्षण**–पु० (सं०) आकर्षण, खिंचाव; देवताका आवाहन; रथका तला; कर्तव्यका विलंबसे पालन ।

अनुकल्प–पु० (सं०) गौण विधान; मुख्य वस्तुके अभावमें काममें लायी जानेवाली तत्सदृश वस्तु (जैसे–जौके अभावमें गेहूँ) ।

अनुकांक्षा–स्त्री० (सं०) इच्छा ।

अनुकांक्षित–वि० (सं०) चाहा हुआ, इच्छित ।

अनुकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) चाहनेवाला, इच्छुक ।

अनुकाम–वि० (सं०) इच्छानुकूल; इच्छुक; कामुक । पु० उचित इच्छा ।

अनुकामी(मिन्), **अनुकामीन**–वि० (सं०) अपने इच्छानुसार कार्य करनेवाला ।

अनुकारी(रिन्)–वि० (सं०) नकल या देखादेखी करनेवाला; आज्ञाकारी ।

अनुकाल–वि० (सं०) समयोचित; सामयिक ।

अनुकीर्तन–पु० (सं०) कथन; प्रकाशन ।

अनुकुंचित–वि० (सं०) झुका या झुकाया हुआ ।

अनुकूल–वि० (सं०) मेल खानेवाला, मुआफिक; सहायक; प्रसन्न । पु० विवाहिता पत्नीमें अनुरक्त रहनेवाला नायक; विष्णुका एक नाम (सर्वप्रिय); कृपा; अनुग्रह; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें प्रतिकूल वस्तुसे मनोऽनुकूल वस्तुकी सिद्धि दिखाई जाती है । * अ० ओर, अभिमुख ।

अनुकूलन–पु० (एडैप्टेशन) आवश्यक परिवर्तन कर अनुकूल बनाना; किसी कार्यादिके उपयुक्त बनाना, दे० 'अभ्यनुकूलन' ।

अनुकूलना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; मुआफिक होना ।

अनुकूला–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; दंती वृक्ष ।

अनुकूलित–वि० (एडैप्टेड) आवश्यक परिवर्तन करनेके बाद जो (स्थिति आदिके) अनुकूल बना लिया गया हो ।

अनुकूलीकरण–पु० (एडैप्टेशन) दे० 'अनुकूलन' ।

अनुकृत–वि० (सं०) जिसकी नकल की गयी हो ।

अनुकृति–स्त्री० (सं०) नकल; देखादेखी; एक काव्यालंकार जिसमें एक वस्तुका किसी अन्य कारणसे दूसरीके अनुरूप हो जाना दिखाया जाय । **–काव्य**–पु० (पैरोडी) किसी प्रसिद्ध कविकी कविताका ऐसा अनुकरण जिसमें शब्द-विन्यास एवं विचार परंपरा इस तरह बदल दी जाय कि उसके पढ़नेसे हास्य-मिश्रित आनंदकी सृष्टि हो, व्यंग्य काव्य ।

अनुकृष्ट–वि० (सं०) आकृष्ट, खिंचा हुआ ।

अनुक्त–वि० (सं०) अकथित, न कहा हुआ ।

अनुक्ति–स्त्री० (सं०) न बोलना, अनुचित बात ।

अनुक्रंदन–पु० (सं०) उत्तरमें क्रंदन करना ।

अनुक्रकच–वि० (सं०) जिसमें दाँत बनाये गये हों (आरा इ०) ।

अनुक्रम–वि० (सं०) क्रमबद्ध । पु० उचित क्रम, सिलसिला; एकके बाद एक होनेकी क्रिया; दे० 'अनुक्रमणी' ।

अनुक्रमण–पु० (सं०) क्रमपूर्वक आगे बढ़ना; अनुगमन ।

अनुक्रमणिका, अनुक्रमणी–स्त्री० (सं०) अकारादि क्रमसे दी गई विषयसूची या शब्दसूची ।

अनुक्रांत–वि० (सं०) पठित; क्रमपूर्वक किया हुआ; उल्लिखित, परिगणित ।

अनुक्रोश–पु० (सं०) दया, अनुकंपा ।

अनुक्षण–अ० (सं०) प्रतिक्षण, लगातार ।

अनुख्याता(तृ)–पु० (सं०) पता लगानेवाला ।

अनुख्याति–स्त्री० (सं०) पता लगाना ।

अनुग–वि० (सं०) पीछे चलनेवाला (समासमें) । पु० अनुचर; साथी ।

अनुगत–वि० (सं०) अनुगामी; अनुकूल, उपयुक्त; अधीन । पु० सेवक; खुशामद, मनुहार ।

अनुगतार्थ–वि० (सं०) मिलते-जुलते अर्थका ।

अनुगति–स्त्री० (सं०) अनुगमन; अनुकरण ।

अनुगम, अनुगमन–पु० (सं०) पीछे चलना; नकल करना; सहमरण; अर्थबोध; समझना ।

अनुगर्जित–पु० (सं०) गर्जन इत्यादिकी प्रतिध्वनि ।

अनुगवीन–पु० (सं०) गोप, गोरक्षक ।

अनुगादी(दिन्)–वि० (सं०) दूसरेके शब्दोंको दुहराने, प्रतिध्वनित करनेवाला ।

अनुगामी(मिन्)–वि० (सं०) पीछे चलनेवाला, अनुयायी; साथी; आज्ञाकारी । (स्त्री० 'अनुगामिनी' ।)

अनुगामुक–वि० (सं०) आदतन पीछे चलनेवाला, बराबर पीछे चलनेवाला ।

अनुगायन–पु० किसीके साथ-साथ गाना; गानमें संगत करना; किसीके गानेके ढंगपर गाना ।

अनुगीति–स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद ।

अनुगीता–स्त्री० (सं०) महाभारत-अश्वमेधपर्वके १६ से ९२ तकके अध्याय ।

अनुगुण–वि० (सं०) समान गुणवाला; अनुकूल, अनुगत । पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें किसी वस्तुमें पहलेसे विद्यमान गुणका अन्य वस्तुकी संगति या संसर्गसे बढ़ जाना दिखलाया जाय, स्वाभाविक विशेषता ।

अनुगुप्त–वि० (सं०) छिपाया हुआ; रक्षित ।

अनुगृहीत–वि० (सं०) जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत, एहसानमंद ।

अनुग्रह–पु० (सं०) कृपा, प्रसाद; राज्यकी कृपासे प्राप्त सहायता या सुभीता; सेनाके पृष्ठभागकी रक्षा करनेवाला दल; * अनिष्ट-निवारण–'शाप अनुग्रह होय जिमि नाथ थोरही काल'–रामा० । **–काल**–पु० (डेज ऑफ ग्रेस) किसी हुंडी या बीमाकी किस्तकी निर्धारित अवधि बीत जानेके बाद उसके भुगतान या अदायगीके लिए अनुग्रहपूर्वक दिया गया अतिरिक्त समय । **–धन**–पु० (गैटचूइटी) दीर्घकालीन सेवाके बदले अनुग्रहके रूपमें दिया जानेवाला धन, सेवोपहार; **आनुतोषिक; उपदान** ।

अनुग्रही(हिन्)-वि० (सं०) बाजीगरीमें कुशल।

अनुग्रासक-पु० (सं०) कौर, नेवाला।

अनुग्राहक, अनुग्राही(हिन्)-वि० (सं०) अनुग्रह करनेवाला, मेहरबान।

अनुग्राह्य-वि० (सं०) अनुग्रहका पात्र।

अनुघटन-पु० (सं०) संबंध स्थापित करना; परस्पर मिलाना।

अनुघात-पु० (सं०) विनाश।

अनुचर-पु० (सं०) पीछे चलनेवाला; नौकर, टहलुआ; साथी। (स्त्री० 'अनुचरी'।)

अनुचारक-पु० (सं०) अनुचर। (स्त्री० 'अनुचारिका'।)

अनुचारी(रिन्)-वि० (सं०) पीछे चलनेवाला। पु० नौकर, अनुचर।

अनुचिंतन-पु० **अनुचिंता**-स्त्री० (सं०) सोचना; (भूली हुई बातको फिरसे) याद करना; सतत चिंतन। (वि० 'अनुचिंतित'।)

अनुचित-वि० (सं०) नामुनासिब, बेजा; बुरा।

अनुच्च-वि० 'उच्च'का उलटा, निम्न।

अनुच्चरित-वि० (सं०) जिसका उच्चारण न किया गया हो।

अनुच्छित्ति-स्त्री०, पु० (सं०) कटकर अलग न होना; नाश न होना, अनश्वरता।

अनुच्छिष्ट-वि० (सं०) जो जूठा न हो, अभुक्त; शुद्ध।

अनुच्छेद-पु० (सं०) दे० 'अनुच्छित्ति'; (आर्टिकिल; पैराग्राफ) किसी अधिनियम, विधान, नियमावली, संविदा आदिका वह विशिष्ट अंग या अंश जिसमें एक विषय और उसके प्रतिबंधों आदिका उल्लेख हो; लेख आदिका वह अंश जिसमें कोई एक बात कही गयी हो और जिसकी पहली पंक्ति आरंभमें कुछ स्थान छोड़कर लिखी गयी हो।

अनुछन*-अ० दे० 'अनुक्षण'।

अनुज, अनुजात-वि० (सं०) पीछे जनमा हुआ। पु० छोटा भाई; प्रपौंडरीक लता, स्थलपद्म।

अनुजन्मा(न्मन्)-पु० (सं०) दे० 'अनुज'।

अनुजा, अनुजाता-स्त्री० (सं०) छोटी बहन; त्रायमाणा लता।

अनुजीवी(विन्)-वि० (सं०) किसीके सहारे जीनेवाला; आश्रित। पु० सेवक।

अनुज्ञप्ति-स्त्री० (सं०) दे० 'अनुज्ञापन'। (लाइसेंस) कोई वस्तु बेचने-खरीदने आदिकी अनुमति जो उचित शुल्क देनेपर सरकारसे प्राप्त की गयी हो। दे० 'अनुज्ञापत्र'।

अनुज्ञा-स्त्री० (सं०) अनुमति, स्वीकृति, आज्ञा; एक काव्यालंकार जहाँ अच्छे गुणकी लालसासे दोषवाली वस्तुकी भी इच्छा की जाय; (परमिशन) वह अनुमति (या स्वीकृति) जो कोई काम करनेके लिए किसी अधिकारी या मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी हो। -**धारी**-पु० (लाइसेंसी) वह व्यक्ति जिसे कोई वस्तु बेचने या कोई काम करनेके लिए (सरकारसे) अनुज्ञापत्र दिया गया हो, प्राप्तानुज्ञ। -**पत्र**-पु० (लाइसेंस) सरकारसे प्राप्त वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिको उचित शुल्क देनेपर कोई वस्तु बेचने-खरीदने या ऐसा ही कोई अन्य काम करनेकी अनुमति दी गयी हो।

अनुज्ञात-वि० (सं०) अनुमति-प्राप्त; आदिष्ट। -**क्रय**-पु० सरकारकी ओरसे दिया गया कुछ वस्तुओंको बेचनेका ठेका।

अनुज्ञान-पु० (सं०) अनुमति, स्वीकृति।

अनुज्ञापक-पु० (सं०) अनुमति या आज्ञा देनेवाला। (स्त्री० 'अनुज्ञापिका'।)

अनुज्ञापन-पु० (सं०) आज्ञा देना; अनुमति या अधिकार देना; सूचित करना, बतलाना।

अनुज्ञेय-वि० जिसकी या जिसके संबंधमें अनुज्ञा दी जा सकती हो।

अनुज्येष्ठ-वि० (सं०) सबसे बड़ेसे छोटा।

अनुतप्त-वि० (सं०) अनुताप-युक्त; रंजीदा, खिन्न।

अनुतर-पु० (सं०) नाव आदिका भाड़ा, किराया।

अनुतर्ष-पु० (सं०) इच्छा; प्यास; मद्य; मद्यपान या पान-पात्र।

अनुतर्षण-पु० (सं०) मद्यपान या उसका पात्र।

अनुताप-पु० (सं०) खेद, रंज; पछतावा; जलन, ताप।

अनुतापन-वि० (सं०) खेद उत्पन्न करनेवाला।

अनुतोषण-पु० (ग्रैटिफिकेशन) संतुष्ट या प्रसन्न करना; रुपया-पैसा, भेंट आदि देकर किसीको अपने अनुकूल बनाना, परितोषण, परितुष्टि।

अनुत्क-वि० (सं०) जो चिंतित या खिन्न न हो, प्रसन्न।

अनुत्तम-वि० (सं०) सबसे अच्छा नहीं; सबसे अच्छा। पु० शिव; विष्णु।

अनुत्तर-वि० (सं०) निरुत्तर; प्रधान, सर्वोत्तम; स्थिर; तुच्छ; दक्षिणी। पु० उत्तरका अभाव; जैन-देवताओंका एक वर्ग।

अनुत्तरदायी(यिन्)-वि० (सं०) जो अपना उत्तरदायित्व न समझे, कर्तव्यपालन और जिम्मेदारीका खयाल न रखे।

अनुत्तरि-वि० (सं०) जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तान-वि० (सं०) चित नहीं, पट, सीनेके बल लेटा हुआ।

अनुत्ताप-पु० (सं०) बौद्धोंके अनुसार दस क्लेशोंमेंसे एक।

अनुत्तीर्ण-वि० (सं०) जो परीक्षामें उत्तीर्ण (सफल) न हो सका हो।

अनुत्थान-पु० (सं०) उत्थानका अभाव, ऊपर उठने या बढ़नेका अभाव; चेष्टाका अभाव। (वि० 'अनुत्थित'।)

अनुत्पत्ति-स्त्री० (सं०) उत्पत्तिका अभाव; असफलता। -**सम**-पु० जाति या असत् उत्तरके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०)।

अनुत्पत्तिक-वि० (सं०) जो अबतक उत्पन्न न हुआ हो।

अनुत्पन्न-वि० (सं०) जो पैदा न हुआ हो; जो पूरा न हुआ हो।

अनुत्पाद, अनुत्पादन-पु० (सं०) उत्पत्तिका अभाव।

अनुत्पादक-वि० (सं०) जो उत्पन्न न करे या जिससे उत्पन्न न हो।

अनुत्साह-पु० (सं०) चेष्टा या प्रयासका अभाव, मनकी ढिलाई; संकल्पाभाव। वि० जिसमें संकल्पकी दृढ़ता न हो; उत्साहहीन।

अनुत्सुक-वि० (सं०) औत्सुक्यरहित, अनिच्छुक; शांत।

अनुत्सेक-पु० (सं०) दर्पाभाव, घमंड न होना।

अनुदक-वि० (सं०) जलहीन (मरुभूमि); अल्प जलवाला; जिसे कोई पानी देनेवाला न हो।

अनुदग्र-वि० (सं०) ऊँचा नहीं; कोमल; कमजोर; निस्तेज।

अनुदत्त-वि० (सं०) स्वीकृत; अनुदानके रूपमें दिया हुआ, माफ किया हुआ; लौटाया हुआ।

अनुदर-वि० (सं०) पतली कमरवाला; क्षीण, पतला।

अनुदर्शन-पु० (सं०) निरीक्षण, पर्यवेक्षण।

अनुदात्त-वि० (सं०) उदात्तका उलटा, छोटा, नीचा। पु० नीचा स्वर।

अनुदान-पु० (सं०) किसी विशेष कार्यके लिए राज्यादिकी ओरसे दी जानेवाली आर्थिक सहायता, 'ग्रांट'।

अनुदार-वि० (सं०) अदाता; कंजूस; संकीर्ण-हृदय; बहुत उदार; जिसकी पत्नी भली या अनुगमन करनेवाली हो (अनु+दारा)।

अनुदित-वि० (सं०) अकथित; अकथनीय; निंद्य; जो उदित या प्रकट न हुआ हो।

अनुदिन, अनुदिवस-अ० (सं०) प्रतिदिन।

अनुदृष्टि-स्त्री० (सं०) अनुकूल दृष्टि। वि० अनुकूल दृष्टि रखनेवाला।

अनुदेश-पु० (इन्स्ट्रक्शन) कोई काम करनेके लिए विशेष रूपमें समझाना या आदेश देना, हिदायत।

अनुदैर्ध्य तरंग-स्त्री० (लाँगिच्यूडिनल वेव) ऐसी तरंग जिसके संचरणमें माध्यमके कणोंका कम्पन उसी दिशामें होता है, जिस दिशामें तरंग गमन करती है। छल्लेदार कमानी (सर्पिल कमानी) के ऊपरी सिरेसे लटका कर निचले सिरेपर हथेलीसे ऊपरकी ओर धक्का दें, तो उस दशामें अनुदैर्ध्य तरंग कमानीपर नीचेसे ऊपरकी ओर गमन करेगी।

अनुद्धत-वि० (सं०) विनीत; शिष्ट; सौम्य।

अनुद्धरण-पु० (सं०) न हटाना; प्रमाणित न करना।

अनुद्धार-पु० (सं०) बँटवारा न करना, हिस्सा न लेना; न हटाना।

अनुद्धत-वि० (सं०) अविभक्त; अक्षत; अप्रमाणित, जिसकी

स्थापना न की गयी हो।

अनुद्भट–वि० (सं०) नरम स्वभाववाला, अधृष्ट; निरहंकार, सौम्य।

अनुद्भुत–वि० जो उत्पन्न या प्रकट न हुआ हो, प्रच्छन्न, सुप्त (डार्मेंट)।

अनुद्यत–वि० (सं०) जो किसी बातके लिए या कोई काम करनेके लिए तैयार न हो; दे० 'अनुद्यम'।

अनुद्यम–पु० (सं०) उद्यमका अभाव। वि० उद्यम न करनेवाला; आलसी।

अनुद्यमी(मिन्)–वि० (सं०) उद्यम न करनेवाला, आलसी।

अनुद्योग–पु० (सं०) उद्योगका अभाव; निश्चेष्टता। वि० निरुद्योगी, आलसी।

अनुद्योगी (गिन्)–वि० (सं०) उद्योग न करनेवाला; निष्क्रिय; उदासीन।

अनुद्रुत–पु० (सं०) संगीतमें एक ताल, द्रुतका आधा। वि० अनुगत, अनुधावित।

अनुद्वाह–पु० (सं०) अपरिणय, चिर-कौमार्य।

अनुद्विग्न–वि० (सं०) जिसका मन शांत हो, आशंका, चिंता आदिसे मुक्त।

अनुद्वेग–पु० (सं०) भय, आशंका आदिका अभाव। वि० दे० 'अनुद्विग्न'।

अनुधर्मक, अनुधर्मी(र्मिन्)–वि० आकृति, रूप, गुण आदिमें जो किसीसे मिलता-जुलता हो (एनेलोगस)।

अनुधावन–पु० (सं०) अनुसरण; चिंतन; अनुसंधान; सफाई; किसी स्त्रीको पानेका प्रयत्न करना।

अनुध्यान–पु० (सं०) चिंतन, ध्यान।

अनुनय–पु० (सं०) विनय, प्रार्थना, मनावन; अनुशासन।

अनुनयी(यिन्)–वि० (सं०) नम्र, विनयी।

अनुनाद–पु० (सं०) प्रतिध्वनि, गूँज।

अनुनादित–वि० (सं०) प्रतिध्वनित, जिसकी गूँज हुई हो।

अनुनायक–वि० (सं०) दे० 'अनुनयी'।

अनुनायिका–स्त्री० (सं०) नायिकाके साथ रहनेवाली स्त्री (सखी, दासी आदि)।

अनुनासिक–वि० (सं०) जिसका उच्चारण मुंह और नाकसे हो–(ङ, ञ्, ण्, न्, म् और अनुस्वार)। पु० अनुनासिक वर्ण; उसका उच्चारण।

अनुनीत–वि० (सं०) अनुशासित; समादृत; संतुष्ट; शांत किया हुआ; प्रार्थित।

अनुनीति–स्त्री० (सं०) दे० 'अनुनय'।

अनुन्नत–वि० (सं०) जो ऊपर उठाया न गया हो; जिसने उन्नति न की हो। **–गात्र**–वि० जिसके अंग पुष्ट न हों या पूर्ण रूपसे बढ़े न हों।

अनुन्मत्त–वि० (सं०) जो मत्त या पागल न हो।

अनुन्मदित–वि० (सं०) दे० 'अनुन्मत्त'।

अनुन्माद–पु० (सं०) पागलपनका अभाव। वि० दे० 'अनुन्मत्त'।

अनुन्मुक्त–वि० (अन-डिस्चार्ज्ड) (वह ऋण) जिसका परिशोधन न किया गया हो; (वह बंदी) जो कारागृहसे मुक्त न किया गया हो।

अनुपकार–पु० (सं०) अहित, बुराई।

अनुपकारी (रिन्)–वि० (सं०) उपकार न करनेवाला; कृतघ्न; निकम्मा। **–(रि) मित्र**–पु० शत्रु राजाका मित्र।

अनुपक्षित–वि० (सं०) जिसे क्षति न पहुँची हो।

अनुपगत–वि० (सं०) अप्राप्त; अननुभूत; दूरवर्ती।

अनुपगीत–वि० (सं०) अप्रशंसित।

अनुपजीवनीय–वि० (सं०) जीविका न देनेवाला, जीविकाहीन।

अनुपतन–पु० (सं०) एकके बाद दूसरेका गिरना; पीछा करना; दे० 'अनुपात'; त्रैराशिक (गणित)।

अनुपद–अ० (सं०) कदम-बकदम; शब्द-प्रतिशब्द। पु० गीतका टेक। वि० (किसीके) पीछे-पीछे चलनेवाला, पदानुसरणकारी; प्रत्येक शब्दकी व्याख्या करनेवाला (भाष्य) (जैसे–अनुपदसूत्र)।

अनुपदवी–स्त्री० (सं०) मार्ग, सड़क।

अनुपदिक–वि० (सं०) पीछे-पीछे चलनेवाला; पीछे गया हुआ।

अनुपदिष्ट–वि० (सं०) जिसे शिक्षा न दी गयी हो, अशिक्षित।

अनुपदी(दिन्)–वि० (सं०) अनुसरणकर्ता; अन्वेषक, खोजी।

अनुपदीना–स्त्री० (सं०) मोजा; जूता।

अनुपधि–वि० (सं०) छल-कपट-रहित।

अनुपनीत–वि० (सं०) न लाया हुआ; जिसका उपनयन न हुआ हो।

अनुपन्यास–पु० (सं०) असिद्धि, प्रमाणित न होना; अनिश्चय, संदेह। (वि० 'अनुपन्यस्त'।)

अनुपपत्ति–स्त्री० (सं०) असिद्धि; असंगति; युक्तिका अभाव; असमर्थता, दैन्य; संकट।

अनुपपन्न–वि० (सं०) जो प्रमाणित न किया गया हो, अयुक्त; जो कहा न गया हो; अनुपपादित।

अनुपम–वि० (सं०) उपमारहित, बे-जोड़, सर्वोत्तम।

अनुपमर्दन–पु० (सं०) किसी आरोप या अभियोगका खंडन न होना।

अनुपमा–स्त्री० (सं०) दक्षिण-पश्चिम दिशाके गज (कुमुद)की पत्नी।

अनुपमित–वि० (सं०) दे० 'अनुपम'।

अनुपमेय–वि० (सं०) अतुलनीय।

अनुपयुक्त–वि० (सं०) जिसका उपयोग न हुआ हो; अयोग्य; अनुचित, नामौजूँ; निकम्मा।

अनुपयोग–वि० (सं०) बे-मसरफ, बे-कार। पु० उपयोगी न होना; उपयोगमें न आना (आहार आदि)।

अनुपयोगिता–स्त्री० (सं०) उपयोगी न होना, निरर्थकता।

अनुपयोगी(गिन्)–वि० (सं०) उपयोगरहित, बे-मसरफ।

अनुपरत–वि० (सं०) मृत नहीं; अबाधित।

अनुपलंभ–पु० (सं०) ज्ञानाभाव, जानकारी न होना।

अनुपलक्षित–वि० (सं०) जिसकी पहचान न हुई हो; अचिह्नित, जो जाना न गया हो।

अनुपलब्ध–वि० (सं०) अप्राप्त; जो जाना न गया हो; जिसका निश्चय न हुआ हो।

अनुपलब्धि–स्त्री० (सं०) अप्राप्ति; जानकारी न होना। **–सम**–पु० जातिके चौबीस भेदोंसे एक (न्या०)।

अनुपवीती(तिन्)–वि० (सं०) यज्ञोपवीत धारण न करनेवाला (जातिच्युत)।

अनुपशय–पु० (सं०) रोग बढ़ानेवाला कारण।

अनुपस्कृत–वि० (सं०) जिसका संस्कार या परिष्कार न किया गया हो; जो वास्तविक या शुद्ध रूपमें हो, निर्दोष; जो सिझाया न गया हो।

अनुपस्थान–पु० (सं०) अनुपस्थिति।

अनुपस्थित–वि० (सं०) जो सामने या पासमें न हो, गैरहाजिर, अविद्यमान।

अनुपस्थिति–स्त्री० (सं०) अविद्यमानता, गैरहाजिरी।

अनुपहत–वि० (सं०) अक्षत; कोरा, नया।

अनुपाख्य–वि० (सं०) जो साफ-साफ देखा या पहचाना न जा सके; जो स्पष्ट रूपसे कहा न जा सके।

अनुपात–पु० (सं०) सापेक्षिक संबंध; तीन ज्ञात संख्याओंके आधारपर चौथीको निकालना; त्रैराशिक (गणित); एकके बाद दूसरेका गिरना; अनुसरण।

अनुपातक–पु० (सं०) ब्रह्महत्यादि महापातकोंके बराबरके पाप–चोरी, हत्या, परस्त्रीगमनादि।

अनुपाती प्रतिनिधित्व–पु० दे० (प्रपोरशनल रिप्रजेंटेशन) 'आनुपातिक प्रतिनिधित्व'।

अनुपादक–पु० (सं०) आकाशसे भी सूक्ष्म एक तत्त्व (तंत्र)।

अनुपान–पु० (सं०) अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करनेकी दृष्टिसे दवाके साथ या पीछे ली जानेवाली वस्तु।

अनुपानत्क–वि० (सं०) पादत्राणरहित।

अनुपानीय–वि० (सं०) दवा खानेके लिए पेयके रूपमें काम देनेवाला। पु० वह पीनेकी वस्तु जो बादमें पी जाय।

अनुपालन–पु० (सं०) रक्षण; आज्ञापालन।

अनुपाश्रया भूमि–स्त्री० (सं०) वह भूमि जो वहाँ बसे हुए लोगोंके अलावा और किसीको आश्रय न दे सके।

अनुपासन–पु० (सं०) ध्यान न देना। (वि० 'अनुपासित'–उपेक्षित।)

अनुपुरुष–पु० (सं०) अनुयायी; पूर्वोक्त व्यक्ति।

अनुपुष्प–पु० (सं०) सरकंडा।

अनुपूरक–पु० (सप्लिमेंट) वह अंश जो छुटी हुई बात या कोई कमी पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा जाय। वि० (सप्लिमेंटरी) जो कमी रह गयी हो उसे पूरा करनेके लिए जो बादमें रखा जाय, जोड़ा जाय, प्रकाशित किया जाय, पूछा जाय। **–प्रश्न**–पु० कोई प्रश्न पूछनेके बाद छूटी हुई बात या तत्संबंधी अन्य जानकारी प्राप्त करनेके लिए उसी सिलसिलेमें पूछा गया प्रश्न।

अनुपूरण–पु० (सप्लिमेंट) छूट, कमी आदि पूरी करनेके लिए बादमें कुछ बढ़ाना या मिलाना।

अनुपूरित–वि० (सप्लिमेंटेड) जो कोई कमी, छूट आदि पूरी करनेके लिए बादमें जोड़ा, रखा या प्रकाशित किया गया हो।

अनुपूर्व–वि० (सं०) क्रमबद्ध, सिलसिलेवार। **–गात्र,–दंष्ट्र**–वि० जिसके गात्र, दाँत आदि बे-डौल न हो। **–वत्सा**–स्त्री० नियमित रूपसे बच्चा देनेवाली गाय।

अनुपूर्व्य–वि० (सं०) क्रमबद्ध; नियमित।

अनुपेत–वि० (सं०) अदीक्षित; अनुपनीत। (किसी गुण, वस्तु आदि)से रहित।

अनुप्त–वि० (सं०) जो बोया न गया हो (बीज)। **–शस्य**–वि० परती (जमीन)।

अनुप्रज्ञान–पु० (सं०) पदचिह्नोंका अनुसरण, टोह लगाना।

अनुप्रदान–पु० (सं०) दान (बौ०); वृद्धि।

अनुप्रवेश–पु० (सं०) प्रवेश, दाखिल होना; अनुकरण।

अनुप्रश्न–पु० (सं०) पीछे किया हुआ प्रश्न।

अनुप्रसक्ति–स्त्री० (सं०) प्रगाढ़ संबंध।

अनुप्रस्थ–वि० (सं०) चौड़ाईके मुताबिक। **–तरंग**–स्त्री० ऐसी तरंग जिसके संचरणमें माध्यमके कणोंका कम्पन तरंगकी गमन दिशाके समकोण तलमें होता है, जैसे पानीकी सतहपर उत्पन्न होनेवाली तरंग।

अनुप्राणन–पु० (सं०) प्राणसंचार; प्रेरण; स्फूर्ति।

अनुप्राणित–वि० (सं०) प्रेरित; समर्थित, पोषित, पुष्ट किया हुआ; जिसे जीवन या स्फूर्ति दी गयी हो।

अनुप्राप्ति–स्त्री० (सं०) कर आदिके रूपमें प्राप्य धनकी वसूली, उगाही।

अनुप्राप्य–वि० (सं०) जो प्राप्त होनेको हो, उगाहने योग्य।

अनुप्राशन–पु० (सं०) खाना, भोजन।

अनुप्रास–पु० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें वर्ण-विशेष या वर्ग-विशेषके वर्णोंकी आवृत्ति होती है; वर्णसाम्य। **–हीन**–वि० (कविता) जिसके अंतमें अनुप्रास न मिलाया गया हो, अतुकांत।

अनुप्रेक्षा–स्त्री० (सं०) गौरसे देखना; मनन, चिंतन।

अनुप्लव–पु० (सं०) साथी; अनुयायी, अनुचर।

अनुबंध–पु० (सं०) बंधन; संबंध; सिलसिला; आरंभ; फल; नतीजा; मार्ग; क्षुद्रांश; संबंध जोड़नेवाला; बाधा; अपत्य; उद्देश्य, नीयत; आधार; प्रकृति; प्यास; गौण या अप्रधान वस्तु; मुख्य रोगके साथ होनेवाला गौण विकार या व्याधि; गुरुजनोंका अनुयायी बालक; आपसमें किया गया समझौता या ठहराव। **–चतुष्टय**–पु० विषय, प्रयोजन, अधिकारी और संबंध—इन चारका समुदाय (वे०)। **–पत्र**–पु० इकरारनामा (एग्रीमेंट फार्म); बंधनपत्र, शर्तनामा।

अनुबंधक–वि० (सं०) संबद्ध।

अनुबंधन–पु० (सं०) अनुबंध करनेकी क्रिया; सहमति (एग्रीमेंट); संबंध; क्रम; सिलसिला।

अनुबंधी–स्त्री० (सं०) प्यास; हिचकी।

अनुबंधी(धिन्)–वि० (सं०) अनुबंधयुक्त; संबद्ध।

अनुबद्ध–वि० (सं०) संबद्ध, लगाव रखनेवाला; जिसके संबंधमें कोई ठहराव हुआ हो। **–करना**–स० क्रि० (टु एनेक्स) अंतमें जोड़ना, साथमें रखना या मिला देना, नत्थी करना।

अनुबल–पु० (रीयरगार्ड) पीछे स्थित रक्षक सेना, पृष्ठ-रक्षक सेना, चंदावल दस्ता।

अनुबल–पु० (सं०) पीछे स्थित रक्षक सेना।

अनुबोध–पु० (सं०) स्मरण; पीछे होनेवाला स्मरण; कम पड़ी हुई सुगंधिको तेज करना।

अनुब्राह्मण–पु० (सं०) ब्राह्मणका-सा कर्म।

अनुभव–पु० (सं०) प्रत्यक्ष ज्ञान, देख-सुनकर या प्रयोग-परीक्षासे प्राप्त ज्ञान; मनसे जानना; संवेदन, महसूस करना; सुख-दुःख-रूपमें उपलब्धि। **–वाद**–पु० पूर्वज्ञात बातों आदिपर नहीं, केवल अनुभव तथा परीक्षणादिपर आश्रित तत्त्ववाद, 'एंपिरिसिज्म'। **–सिद्ध**–वि० अनुभव करके देखा हुआ; परीक्षा-सिद्ध।

अनुभवना*–स० क्रि० अनुभव करना।

अनुभवतीतवाद–पु० सामान्य मानवीय अनुभवोंको अतिक्रांत करनेवाली वृत्तियोंसे प्रेरित विचारधारा (ट्रांसेंडेंटैलिज्म)।

अनुभविता–पु० (सं०) अनुभव करनेवाला।

अनुभवी(विन्)–वि० (सं०) अनुभव रखनेवाला, तज्विवेकार; भुक्तभोगी।

अनुभवोक्ति–स्त्री० (मैक्सिम) अनुभवके आधारपर कही जानेवाली बात, कहावत आदि; सूत्र, उक्ति।

अनुभाव–पु० (सं०) मनोगत भावकी सूचक बाह्य क्रियाएँ, स्तंभ, स्वेद, रोमांच इ० (सा०); प्रभाव; बड़ाई; संकल्प; दृढ़ विश्वास।

अनुभावक–वि० (सं०) अनुभव करानेवाला।

अनुभावन–पु० (सं०) अंगभंगी द्वारा मनोगत भावोंको व्यक्त करना।

अनुभावी(विन्)–वि० (सं०) अनुभव करनेवाला; चश्मदीद गवाह; भावजन्य चिह्न प्रकट करनेवाला; पीछे होने या आनेवाला।

अनुभाव्य–वि० (सं०) अनुभव योग्य; जिसका अनुभव होनेको हो।

अनुभाषण–पु० (सं०) कही हुई बातको खंडनके लिए फिर कहना; कथनकी आवृत्ति करना; वार्तालाप, कथोपकथन।

अनुभास–पु० (सं०) एक तरहका कौआ।

अनुभूत–वि० (सं०) अनुभव किया हुआ; आजमाया हुआ, परीक्षित।

अनुभूति–स्त्री० (सं०) अनुभव; संवेदना; प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्दबोध द्वारा प्राप्त ज्ञान (न्या०)।

अनुभूतिवाद–पु० (एंपिरिसिज्म) दे० 'अनुभववाद'।

अनुभोग–पु० (सं०) उपभोग; सेवाके बदले मिलनेवाली माफी जमीन।

अनुभ्राता(तृ)–पु० (सं०) छोटा भाई।

अनुमंता(तृ)–वि० (सं०) इजाजत देनेवाला; किसी कार्यको होने देनेवाला।

अनुमत–वि० (सं०) सम्मत; स्वीकृत; प्रिय; मनोरम। पु० स्वीकृति; सहमति; आज्ञा; प्यार करनेवाला।

अनुमति–स्त्री० (सं०) कोई काम करने, जाने आने आदिके लिए किसीसे ली गयी स्वीकृति, इजाजत; चतुर्दशी-युक्त पूर्णिमा। **–पत्र**–पु० स्वीकृति-सूचक पत्र या लेख।

अनुमत्त–वि० (सं०) खुशीके मारे आपेसे बाहर, आनंदोन्मत्त।

अनुमनन–पु० (सं०) स्वीकृति देना।

अनुमरण–पु० (सं०) सती होना, सहमरण।

अनुमा–स्त्री० (सं०) अनुमिति, अनुमान।

अनुमात(तृ)–वि० (सं०) अनुमान करनेवाला। (स्त्री० 'अनुमात्री'।)

अनुमान–पु० (सं०) अटकल, अंदाजा; प्रत्यक्षसे अप्रत्यक्षका ज्ञान (धुआँ देखकर आगका ज्ञान), न्यायशास्त्रके माने हुए चार प्रमाणोंमेंसे एक; साहित्यमें एक अलंकार; अनुमति, स्वीकृति।

अनुमानतः(तस्)–अ० (सं०) अनुमानसे ।

अनुमानना*–स० क्रि० अनुमान करना, सोचना; समझना ।

अनुमानोक्ति–स्त्री० (सं०) तर्क, ऊहा ।

अनुमाप–पु० (स्केल) मापनेका साधन, मापनी; (मानचित्रादि बनाते समय) निश्चित दूरीके लिए मानी हुई इकाई, पैमाना, मापक्रम ।

अनुमापक–वि० (सं०) अनुमान करानेवाला; जिसके सहारे अनुमान किया जा सके ।

अनुमापन–पु० (टाइट्रेशन) अम्ल, क्षार, ऑक्सीकारक या अवकारीके विलयनके सान्द्रणकी नाप करनेकी आयतनी विधि ।

अनुमित–वि० (सं०) अनुमान किया हुआ ।

अनुमिति–स्त्री० (सं०) अनुमान; अनुमान द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

अनुमृता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो सती हुई हो ।

अनुमेय–वि० (सं०) अनुमान करने योग्य ।

अनुमोद–पु० (सं०) सहानुभूतिजन्य प्रसन्नता; समर्थन, स्वीकृति ।

अनुमोदक–वि० (सं०) अनुमोदन, समर्थन करनेवाला ।

अनुमोदन–पु० (सं०) प्रसन्न करना या होना; (ऐप्रूवल) किसीके कार्य, मत या प्रस्तावको ठीक मानते हुए अपनी सहमति प्रकट करने या उसका समर्थन करनेकी क्रिया । समर्थन; स्वीकृति ।

अनुमोदित–वि० (सं०) समर्थित, स्वीकृत; (ऐप्रूव्हड) (कार्य या प्रस्ताव) जिसका किसीने अनुमोदन किया हो या ठीक समझकर स्वीकार कर लिया हो; प्रसन्न किया हुआ ।

अनुयाचक–पु० (कैनवैसर) माल खरीदनेके लिए दूसरोंको राजी करनेका प्रयत्न करनेवाला; मतदाताके पास जाकर उसे अपने पक्षमें मतदान करनेके लिए तैयार करनेवाला, मतप्रार्थी, **मतार्थी, उपार्थक** ।

अनुयाचन–पु० (कैनवैसिंग) किसीको समझा-बुझाकर अपने पक्षमें करते हुए उससे कोई काम करनेके लिए नम्रतापूर्वक कहना; पदपर नियुक्त करने, मत देने आदि की स्वीकृति प्राप्त करनेका प्रयत्न करना; **मतार्थना, उपार्थना** ।

अनुयाता(तृ)–पु० (सं०) अनुसरण करनेवाला, पीछे चलनेवाला, अनुयायी ।

अनुयात्रिक–पु० (सं०) अनुयायी; अनुचर ।

अनुयान–पु० (सं०) पीछे चलना ।

अनुयायी(यिन्)–वि० (सं०) पीछे चलनेवाला, अनुगामी; किसी मत या नेताका अनुसरण करनेवाला; समान, सदृश । पु० पीछे चलनेवाला; अनुचर । (स्त्री० 'अनुयायिनी' ।)

अनुयुक्त–वि० (सं०) जिससे पूछताछ की गयी हो; परीक्षित; निंदित ।

अनुयोक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) पूछताछ करनेवाला, परीक्षक; अध्यापक । (स्त्री० 'अनुयोक्त्री ।)

अनुयोग–पु० (सं०) प्रश्न; जिज्ञासा; पूछताछ ।

अनुयोजन–किसी दूसरेकी भावभूमि, या प्राचीन साहित्यमें वर्णित कथावस्तु आदिका नवीन चेतनासे अभिव्यक्तिके हेतु ग्रहण ।

अनुयोज्य–वि० (सं०) जिससे प्रश्न किया जा सके; जिससे डाँट-फटकारके साथ पूछताछ की जा सके । पु० सेवक, आज्ञाकारी सेवक ।

अनुरंजक–पु० (सं०) प्रसन्न, संतुष्ट करनेवाला । (स्त्री० 'अनुरंजिका' ।)

अनुरंजन–पु० (सं०) प्रसन्न करना, संतुष्ट करना; प्रीति ।

अनुरंजित–वि० (सं०) प्रसन्न, संतुष्ट ।

अनुरक्त–वि० (सं०) अनुराग-युक्त, प्रेमी, आसक्त; वफादार; प्रसन्न, संतुष्ट; लाल । **–प्रकृति**–वि० (वह राजा) जिसकी प्रजा उसमें अनुरक्त हो ।

अनुरक्ति–स्त्री० (सं०) प्रेम, आसक्ति; भक्ति ।

अनुरक्षक–पु० दे० 'मार्गरक्षक' (एस्कार्ट) ।

अनुरणन–पु० (सं०) घंटा, नूपुर आदिकी प्रतिध्वनि, गूँज; व्यंजना ।

अनुरणित–वि० (सं०) प्रतिध्वनित; झंकृत ।

अनुरत–वि० (सं०) अनुरक्त ।

अनुरति–स्त्री० (सं०) अनुराग ।

अनुरथ्या–स्त्री० (सं०) सड़ककी बगलकी राह, पटरी ।

अनुरस–पु० (सं०) गौण रस (सा०); गौण स्वाद; प्रतिध्वनि ।

अनुरसित–पु० (सं०) प्रतिध्वनि । वि० प्रतिध्वनित ।

अनुरहस–वि० (सं०) एकांत ।

अनुराग–पु० (सं०) प्रेम, आसक्ति; भक्ति; लाल रंग । वि० लाल रँगा हुआ ।

अनुरागना*–स० क्रि० प्रेम करना । अ० क्रि० अनुरागयुक्त होना; प्रेममें मग्न होना ।

अनुरागी(गिन्)–वि० (सं०) प्रेमी, आसक्त; भक्त ।

अनुरात्र–अ० (सं०) हर रात; रातमें ।

अनुराध–वि० (सं०) हित, भलाई करनेवाला; अनुराधा नक्षत्रमें उत्पन्न । * पु० विनती, अनुरोध ।

अनुराधना*–स० क्रि० विनती करना ।

अनुराधपुर–पु० (सं०) लंकाकी पुरानी राजधानी ।

अनुराधा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र ।

अनुरुहा–स्त्री० (सं०) एक घास ।

अनुरूप–वि० (सं०) समान रूपवाला, सदृश; योग्य, उपयुक्त ।

अनुरूपक–पु० (सं०) प्रतिमूर्ति, सदृश वस्तु ।

अनुरूपना*–स० क्रि० सदृश बनाना ।

अनुरूपा सिद्धि–स्त्री० (सं०) पुत्रों, भाई-बंधुओं आदिको साम, दान आदिके द्वारा पक्षमें करना (कौ०) ।

अनुरेखन–पु० (सं०) किसी चित्रादिपर पारदर्शी कागज रखकर उसकी रेखाओंपर कलम चलाते हुए प्रतिलिपि तैयार करना, 'ट्रेसिंग' ।

अनुरेवती–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

अनुरोदन–पु० (सं०) समवेदना-प्रकाश ।

अनुरोध–पु० (सं०) अनुसरण; लिहाज; विचार; प्रार्थना; विनय; आग्रह; वाधा, रुकावट ।

अनुरोधक–वि० (सं०) दे० 'अनुरोधी' । –पु० (मेमोरैंडम) शिकायतों, माँगों आदिका संक्षेपमें स्पष्टीकरण करते हुए अधिकारियोंके समक्ष उपस्थित किया गया अनुरोध-पत्र, **ज्ञापन-पत्र**, स्मरण-पत्र ।

अनुरोधी(धिन्)–वि० (सं०) अनुरोध या अनुसरण करनेवाला; अपेक्षा रखनेवाला ।

अनुर्वर–वि० (सं०) अनुपजाऊ, वंजर ।

अनुलंब–पु० (ऑफसेट) दे० 'अंतर्लंब' ('अंतर्'के साथ) ।

अनुलग्न–वि० (सं०) संलग्न, साथमें जुड़ा हुआ ।

अनुलाप–पु० (सं०) पुनरुक्ति; घुमा-फिराकर बार-बार एक ही बात कहना ।

अनुलाभ–पु० (परक्विजिट) दे० 'परिलब्धि' ।

अनुलास, अनुलास्य–पु० (सं०) मोर ।

अनुलिपि–स्त्री० (सं०) लिखित वस्तुकी ज्योंकी त्यों उतारी हुई नकल ।

अनुलिपि–स्त्री० (फैक्सिमिलि) लेख, चित्र आदिकी ज्योंकी-त्यों प्रतिलिपि या अनुकृति; प्रतिकृति ।

अनुलेप–पु० (सं०) सुगंधित लेप, उबटन आदि; ऐसी वस्तुओंका लेप या मालिश ।

अनुलेपक–वि० (सं०) चंदन, उबटन आदि लगानेवाला । (स्त्री० 'अनुलेपिका' ।)

अनुलेपन–पु० (सं०) दे० 'अनुलेप' । (वि० 'अनुलिप्त' ।)

अनुलेपी(पिन्)–वि० (सं०) दे० 'अनुलेपक' ।

अनुलोम–वि० (सं०) ऊपरसे नीचेकी ओर आनेवाला; यथाक्रम; अनुकूल; अविलोम । पु० संगीतमें स्वरोंका उतार, अवरोह । **–ज, –जन्मा(न्मन्)**–वि० अनुलोम विवाहसे उत्पन्न । **–विवाह**–पु० उच्च वर्णके पुरुषका अपनेसे हीन वर्णकी स्त्रीसे विवाह ।

अनुलोमन–पु० (सं०) मलादिको नियत मार्गसे बाहर निकालनेका उपाय करना, उन्हें पचा-पिघलाकर नीचे लाना ।

अनुलोमा–स्त्री० (सं०) पतिसे हीन वर्णकी स्त्री । **–सिद्धि**–स्त्री० पौरों, जानपदों और सेनापतियोंको दान और भेद द्वारा अपने अनुकूल बनाना (कौ०) ।

अनुल्लंघ्य, अनुल्लंघनीय–वि० (सं०) जिसका उल्लंघन न हो सके ।

अनुवंश–पु० (सं०) वंशवृत्त; वंशवृक्ष ।

अनुवक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) पीछे बोलनेवाला, उत्तर देनेवाला ।

अनुवचन–पु० (सं०) दुहराना; पाठ; शिक्षण; भाषण; अध्याय ।

अनुवत्सर–पु० (सं०) ज्योतिषोक्त पाँच वर्षोंके युगका चौथा वर्ष । अ० हर साल ।

अनुवर्तन–पु० (सं०) अनुसरण, अनुगमन; आज्ञापालन; परिणाम; संतुष्ट करना ।

अनुवर्ती(तिन्)–वि० (सं०) अनुसरण करनेवाला, अनुयायी; आज्ञाकारी; समान; उपयुक्त । (स्त्री० 'अनुवर्तिनी' ।)–**प्रस्ताव**–पु० (सबसीक्वेंट मोशन) बादमें आनेवाला या रखा जानेवाला प्रस्ताव ।

अनुवश–वि० (सं०) आज्ञाकारी; दूसरेकी इच्छाके अनुसार चलनेवाला । पु० आज्ञाकारिता ।

अनुवसित–वि० (सं०) वस्त्राच्छादित; आबद्ध, संबद्ध ।

अनुवह–पु० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक ।

अनुवाक–पु० (सं०) दुहराना; अध्याय; वेदोंका उपविभाग ।

अनुवाचन–पु० (सं०) अध्वर्युके आदेशानुसार होता द्वारा ऋग्वेदके मंत्रोंका पाठ; पाठ करना या कराना ।

अनुवाद–पु० (सं०) फिरसे कहना; व्याख्या या समर्थनरूपमें पुनरुक्ति; समर्थन; अपशब्द; जनश्रुति; विज्ञापन; भाषणका आरंभ; उलथा, भाषांतर ।

अनुवादक–पु० (सं०) अनुवाद करनेवाला; भाषांतरकार । वि० दे० 'अनुवादी' ।

अनुवादित–वि० (सं०) अनुवाद किया हुआ; भाषांतरित ।

अनुवादी(दिन्)–वि० (सं०) व्याख्याके साथ दुहरानेवाला; समर्थन करनेवाला; सदृश । पु० संगीतमें स्वरका एक भेद ।

अनुवाद्य–वि० (सं०) अनुवाद करने योग्य ।

अनुवास, अनुवासन–पु० (सं०) धूपादि सुगंधित द्रव्योंसे सुगंधित करना; बसाना; स्नेहवस्ति––तैल पदार्थोंका एनिमा; उसकी क्रिया ।

अनुवासित–वि० (सं०) बसाया हुआ; वस्तिक्रिया द्वारा चिकित्सित ।

अनुवासी(सिन्)–वि० (सं०) बसनेवाला; पड़ोसमें रहनेवाला ।

अनुवित्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्ति । (वि० 'अनुवित्त' ।)

अनुविद्ध–वि० (सं०) बिधा हुआ, छिद्रित; मिश्रित, संयुक्त; जड़ा हुआ (जैसे रत्न) ।

अनुविधान–पु० (सं०) आदेशपालन, आज्ञाकारिता ।

अनुविभाग–पु० (सेक्शन) पुस्तकादिके मुख्य खंडोंमेंसे किसी एकका छोटा विभाग; किसी समाज, संप्रदाय या वर्गका वह खंड या समूह जिसकी अपनी अलग विशेषता, स्वार्थ, रीति-रिवाज आदि हों; किसी कक्षाके विषयादिकी भिन्नताके कारण किये गये विभाग; किसी चिकित्सालय, निर्माणशाला आदिके पृथक्-पृथक् हिस्से जिनमें अलग-अलग तरहका काम होता हो ।

अनुवृत्त–वि० (सं०) अनुसरण या आज्ञापालन करनेवाला; अविच्छिन्न; शीलानुगत; जिसकी अनुवृत्ति की गयी हो ।

अनुवृत्ति–स्त्री० (सं०) अनुसरण; स्वीकृति; आज्ञापालन; आवृत्ति; अनुकरण; वाक्यार्थ स्पष्ट करनेके लिए पूर्ववर्ती वाक्यका कुछ अंश लेना ।

अनुवेध–पु० (सं०) छेदना, सूराख करना; मिश्रण ।

अनुवेल्लित–पु० (सं०) पट्टी बाँधना; घावपर बाँधनेकी एक तरहकी पट्टी ।

अनुवेश, अनुवेशन–पु० (सं०) अनुसरण, पीछे प्रवेश करना; बड़े भाईके पहले छोटे भाईका विवाह ।

अनुवेशपत्र–पु० (वीज़ा) पारपत्रका निरीक्षण कर लेनेके बाद उसकी पीठपर लिखा हुआ यह लेख कि उसकी विधिवत् जाँच की जा चुकी है और यात्रार्थी उसे लेकर आगे बढ़ सकता है, **प्रवेशपत्र**, वीज़ा ।

अनुवेश्य–वि० (सं०) बगलके घरमें रहनेवाला ।

अनुव्याख्यान–पु० (सं०) मंत्रादिका अर्थ-प्रकाशक व्याख्यान; किसी ब्राह्मणका वह भाग जिसमें कठिन सूत्रादिकी व्याख्या हो ।

अनुव्याध–पु० (सं०) दे० 'अनुवेध' ।

अनुव्याहरण, अनुव्याहार–पु० (सं०) पुनरुक्ति; शाप ।

अनुव्रजन, अनुव्रज्या–स्त्री० (सं०) घरसे जाते या विदा होते हुए शिष्ट जन या मेहमानके साथ कुछ दूर जाना ।

अनुव्रत–वि० (सं०) निर्धारित कर्तव्यका समुचित रूपसे पालन करनेवाला । पु० एक तरहका जैन साधु ।

अनुशंसा–स्त्री० (रेकॉमेंडेशन) दे० संस्तुति, सिफारिश ।

अनुशंसित–वि० (रेकॉमेंडेड) जिसके संबंधमें अनुशंसा या संस्तुति की गयी हो ।

अनुशतिक–पु० (सं०) सौसे अधिक सिपाहियोंका नायक ।

अनुशप–पु० (सं०) कार्यभारसे ग्रहण किया हुआ अवकाश ।

अनुशय–पु० (सं०) पछतावा; दुःख; अति द्वेष; पुराना वैर; आसक्ति; भोगे हुए कर्मोंका अवशेष (वे०); दान-संबंधी विवादोंका निर्णय ।

अनुशयान–वि० (सं०) पश्चात्ताप करनेवाला ।

अनुशयाना–स्त्री० (सं०) वह परकीया नायिका जो प्रियके मिलन-स्थानके नष्ट हो जानेसे दुःखित हो ।

अनुशयी–स्त्री० (सं०) पैरका एक रोग; मस्तक आदिमें निकलनेवाला फोड़ा ।

अनुशयी(यिन्)–वि० (सं०) पश्चात्ताप करनेवाला; वैर या द्वेष रखनेवाला; कर्म-फलका भोक्ता (जीव); आसक्त । पु० दान-संबंधी विवादोंका निर्णय करनेवाला ।

अनुशासक–पु० (सं०) अनुशासन करनेवाला; शासक; शिक्षक ।

अनुशासन–पु० (सं०) आदेश; शिक्षा; (किसी विषयका) निरूपण; नियंत्रण या शासन; दंड; नियम-पालन । नये या पुराने शास्त्रोंको सही ढंगसे अभ्यास करके सीखनेकी आत्मारोपित उच्च पद्धति । –**पर**–वि० आज्ञाकारी । –**पर्व**–पु० महाभारतका एक पर्व ।

अनुशासित–वि० (सं०) जिसका अनुशासन किया गया हो; आदिष्ट; दंडित ।

अनुशासी(सिन्), अनुशास्ता(स्तृ)–पु० (सं०) दे० 'अनुशासक' ।

अनुशास्ति–स्त्री० (सं०) कानूनकी अवहेलना या उल्लंघनपर दिये जानेवाले दंडका प्रावधान (सैंक्शन) ।

अनुशिष्ट–वि० (सं०) अनुशासित ।

अनुशिष्टि–स्त्री० (सं०) शिक्षा; आदेश; शासन ।

अनुशीलन–पु० (सं०) सतत तथा गंभीर अभ्यास; नियमित अध्ययन ।

अनुशीलित–वि० (सं०) जिसका अनुशीलन किया गया हो; अधीत ।

अनुशोक, अनुशोचन–पु० (सं०) पछताना; दुःख करना ।

अनुशोचक, अनुशोची(चिन्)–वि० (सं०) पछतावा करनेवाला; खेदजनक ।

अनुश्रव–पु० (सं०) वैदिक परंपरा ।

अनुश्रुत–वि० (सं०) परंपरासे प्राप्त (ज्ञान आदि) ।

अनुश्रुति–स्त्री० (सं०) श्रुति-परंपरासे प्राप्त कथा, ज्ञान इ० ।

अनुषंग–पु० (सं०) संबंध, लगाव; मिश्रण; अर्थपूर्तिके लिए किसी वस्तुकी प्रासंगिक चर्चा या शब्दादिकी आवृत्ति; करुणा; अवश्यंभावी परिणाम; एक शब्दका अन्य शब्दके साथ या कारण और कार्यका संबंध; उत्कट इच्छा; उपनय और निगमनमें सर्वनाम आदिके द्वारा संबंध-स्थापन (न्या०) ।

अनुषंगिक–वि० (सं०) संबद्ध; प्रसंगतः प्राप्त; अनिवार्य फलस्वरूप ।

अनुषंगी(गिन्)–वि० (सं०) संबद्ध; अनिवार्य परिणामके रूपमें आनेवाला; सामान्य रूपसे प्रयुक्त होनेवाला; आसक्त, अनुरक्त ।

अनुषक्त–वि० (सं०) संबद्ध; संलग्न ।

अनुषेक, अनुषेचन–पु० (सं०) फिरसे सींचना; बराबर सींचना या छिड़कना । (वि० 'अनुषिक्त' ।)

अनुष्टुप्(भ्)–स्त्री० (सं०) ३२ अक्षरोंका (प्रति चरणमें ८ वर्ण) एक प्रसिद्ध छंद; वाणी; सरस्वती ।

अनुष्ठातव्य–वि० (सं०) दे० 'अनुष्ठेय' ।

अनुष्ठाता(तृ)–वि०, पु० (सं०) अनुष्ठान करनेवाला; कार्य आरंभ करनेवाला।

अनुष्ठान–पु० (सं०) करना; आरंभ करना; कोई धार्मिक कृत्य; फल-विशेषके लिए किसी देवताका आराधन। **–क्रम**–पु० धार्मिक कृत्योंके करनेका क्रम। **–शरीर**–पु० सूक्ष्म और स्थूल शरीरके बीचकी देह (सां०)। **–स्मारक**–वि०, पु० धार्मिक कृत्योंका स्मरण करानेवाला।

अनुष्ठापन–पु० (सं०) कार्य कराना (प्रे०)।

अनुष्ठायी(यिन्)–वि० (सं०) अनुष्ठान करनेवाला।

अनुष्ठित–वि० (सं०) विधिपूर्वक किया हुआ; आचरित।

अनुष्ठेय–वि० (सं०) अनुष्ठानके योग्य; करणीय।

अनुष्ण–वि० (सं०) जो गरम न हो, ठंढा; सुस्त; आलसी। पु० नील कमल। **–गु**–पु० चंद्रमा। **–वल्लिका**–स्त्री० नील दूर्वा।

अनुष्णक–वि० (सं०) दे० 'अनुष्ण'।

अनुष्यंद–पु० (सं०) पीछेका पहिया।

अनुसंधान–पु० (सं०) अन्वेषण, खोज, जाँच-पड़ताल; प्रयत्न; योजना, आयोजन; व्यवस्थित करना। –पु० (इनवेस्टिगेशन) अच्छी तरह देख-सुनकर या जाँच-पड़ताल द्वारा वस्तु-स्थितिका पता लगाना, छानबीन। **–लेख**–पु० (मेमॉइर) स्वयं पता लगाकर ज्ञात की गयी बातों या सामग्रीके आधारपर लिखा गया लेख।

अनुसंधानना*–स० क्रि० ढूँढ़ना; विचारना।

अनुसंधानी(निन्), अनुसंधायी(यिन्)–वि० (सं०) जाँच-पड़ताल या खोज करनेवाला; योजना बनानेमें कुशल।

अनुसंधि–स्त्री० (सं०) गुप्त मंत्रणा, गुप्त योजना; अनुसंधान।

अनुसंधेय–वि० (सं०) खोज करने योग्य।

अनुसंहित–वि० (सं०) जिसकी खोज या जाँच पड़ताल की गयी हो; (किसीके) अनुसार या अनुरूप।

अनुसचिव–पु० (सं०) (अंडर सेक्रेटरी) मुख्य सचिवके मातहत किन्तु सहायक सचिवसे ऊँचा अधिकारी; अवरसचिव।

अनुसमर्थन–पु० (रैटिफिकेशन) (प्रतिनिधियों द्वारा) किये गये समझौते आदिका जाब्तेसे–संधिपत्र, संविदा-पत्रपर हस्ताक्षर आदि द्वारा–समर्थन या अभिपुष्टि।

अनुसमापन–पु० (सं०) नियमित रूपसे कार्य संपन्न करना।

अनुसयाना*–स्त्री० दे० 'अनुशयाना'।

अनुसर–वि० (सं०) अनुसरण करनेवाला, अनुचर, हमराही, साथी; * दे० 'अनुसार'।

अनुसरण–पु० (सं०) पीछे चलना; अनुकरण; अनुकूल आचरण; प्रथा; अभ्यास।

अनुसरना*–स० क्रि० अनुसरण करना; अनुकरण करना; किसीके अनुकूल कार्य करना।

अनुसर्प–पु० (सं०) सर्प सदृश प्राणी; सरीसृप।

अनुसाम–वि० (सं०) संतुष्ट किया हुआ; अनुकूल।

अनुसार–पु० (सं०) अनुसरण; प्रथा; प्रकृति या प्राकृतिक अवस्था; चलन; परिणाम। वि० अनुकूल, अनुरूप, मुताबिक।

अनुसारक–वि० (सं०) अनुसरण करनेवाला; खोज करनेवाला; अनुरूप।

अनुसारणा–स्त्री० (सं०) अनुसरण करना, पीछा करना।

अनुसारना*–स० क्रि० अनुसरण करना, कोई काम करना; आरंभ करना; चलाना; भेजना, पठाना।

अनुसारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'अनुसारक'।

अनुसार्यक–पु० (सं०) सुगंधित पदार्थ–चंदन, अगुरु आदि।

अनुसाल*–पु० दर्द, पीड़ा।

अनुसासन*–पु० दे० 'अनुशासन'।

अनुसूचित जाति–स्त्री० (शेड्यूल्ड कास्ट) अनुसूचीमें उल्लिखित या निर्दिष्ट जाति।

अनुसूची–स्त्री० (शेड्यूल) खानापूरी, कोष्ठक या व्यवस्थित सूचीके रूपमें दी गयी वह नामावली जो प्रायः किसी विवरण, नियमावली आदिके परिशिष्टकी तरह दी जाय।

अनुसृत–वि० (सं०) अनुसरण किया हुआ; आचरित।

अनुसृति–स्त्री० (सं०) अनुसरण; कुलटा स्त्री।

अनुसृष्टि–स्त्री० (सं०) क्रमानुसार रचना; हाजिरजवाब औरत।

अनुसेवी(विन्)–वि० (सं०) आदतन करनेवाला, आदी।

अनुस्तरण–पु० (सं०) बिखेरना, छितराना, फैलाना।

अनुस्तरणी–स्त्री० (सं०) आच्छादन, आवरण; गाय; वह गाय जिसका अग्नि-संस्कारके अवसरपर बलिदान किया जाय।

अनुस्मरण–पु० (सं०) बार-बार स्मरण; याद करना।

अनुस्मारक–पु० (रिमाइंडर) स्मरण दिलानेवाला पत्र (या व्यक्ति)।

अनुस्मृति–स्त्री० (सं०) वह स्मृति या स्मरण जो प्रिय हो; और विषयोंका त्याग कर एक विषयका चिंतन या स्मरण।

अनुस्यूत–वि० (सं०) ग्रथित; पिरोया हुआ; सिला हुआ; संबद्ध।

अनुस्वान–पु० (सं०) प्रतिध्वनि, गूंज।

अनुस्वार–पु० (सं०) स्वरके बाद बोला जानेवाला हलंत अनुनासिक वर्ण जिसका चिह्न यह है (ं), अनुस्वारसूचक बिंदी।

अनुहरण–पु० (सं०) अनुकरण, नकल करना; सादृश्य।

अनुहरत*–वि० अनुसरण करता हुआ; अनुरूप; उपयुक्त; योग्य।

अनुहरना*–स० क्रि० अनुसरण करना; नकल करना।

अनुहरिया*–स्त्री० आकृति, चेहरा। वि० तुल्य, सदृश।

अनुहार–स्त्री० भेद, प्रकार; आकृति। पु० (सं०) अनुकरण, समानता। वि० तुल्य, समान।

अनुहारक–वि० (सं०) अनुहरण करनेवाला; नकल या सदृश कार्य करनेवाला।

अनुहारना*–स० क्रि० समता करना, उपमा देना।

अनुहारि*–वि० अनुसार, समान; योग्य; उपयुक्त। स्त्री० मुखाकृति, चेहरा; प्रतिकृति; सादृश्य; वेश।

अनुहारी(रिन्)–वि० (सं०) अनुहारक।

अनुहार्य–वि० (सं०) अनुहरण करने योग्य।

अनूअर*–(अ०) लगातार, निरंतर।

अनूक–पु० (सं०) मेरुदंड, रीढ़; मेहराबके बीचकी ईंट; वेदीका पिछला हिस्सा; यज्ञ-संबंधी एक पात्र; पूर्व जन्म; वंश; स्वभाव; वंशस्वभाव।

अनूकाश–पु० (सं०) प्रकाशकी झलक; हवाला; उदाहरण।

अनूक्त–वि० (सं०) दुहराया हुआ, अनुपठित।

अनूक्ति–स्त्री० (सं०) दुहराना, अनुपाठ; व्याख्या; वेदाध्ययन।

अनूचान–वि० (सं०) विद्वान्; स्नातक, वेद-वेदांगोंमें पारंगत; विनम्र, सुशील।

अनूजरा*–वि० अनुज्ज्वल, मैला।

अनूठा–वि० अद्‌भुत, अनोखा; सुंदर।

अनूढ–वि० (सं०) अविवाहित; जो वहन न किया गया हो।

अनूढा–स्त्री० (सं०) अविवाहिता स्त्री। **–गमन**–पु० अविवाहिता स्त्रीसे संबंध रखना।

अनूत्तर*–वि० निरुत्तर; मौन।

अनूदक–पु० (सं०) जलाभाव; सूखा, अवर्षण।

अनूदर्वा–पु० (सं०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव (यह ४८ हाथ लंबी, २४ हाथ चौड़ी और २४ हाथ ऊँची होती थी)।

अनूदित–वि० (सं०) पीछे कहा हुआ; उलथा किया हुआ, भाषांतरित।

अनूद्य–वि० (सं०) पीछे कहे जाने योग्य; अनुवाद करने योग्य।

अनून–वि० (सं०) अधिक; अन्यून; जो हीन या घटिया न हो; संपूर्ण, समग्र; जिसे पूरा अधिकार हो।

अनूप–वि० उपमारहित, बेजोड़; अति सुंदर; (सं०) जलके पासका या जलकी अधिकतावाला; दलदलवाला। पु० जलप्राय स्थान या देश; दलदल; तालाब; (नदी आदिका) किनारा; मेढक; तीतरकी जातिका एक पक्षी; भैंसा; हाथी। **–ग्राम**–पु० नदीतटपर बसा गाँव।

अनूरु–वि० (सं०) जिसे जंघा न हो। पु० सूर्यका सारथि, अरुण; अरुणोदय। **–सारथि**–पु० सूर्य।

अनूर्जित–वि० (सं०) बलहीन, अशक्त; निरहंकार।

अनूर्ध्व–वि० (सं०) ऊँचा नहीं, नीचा।

अनूर्मि–वि० (सं०) लहरीला नहीं, अतरंगित; अनतिक्रमणीय ।

अनूषर–वि० (सं०) रेहवाला; जिसमें रेह न हो ।

अनूह–वि० (सं०) समझमें न आनेवाला, अतर्क्य; विचारहीन, लापरवाह ।

अनृजु–वि० (सं०) जो ऋजु–सीधा–न हो, कुटिल, टेढ़ा; दुष्ट; बे-ईमान ।

अनृण–वि० (सं०) ऋणहीन, ऋणमुक्त ।

अनृणी(णिन्)–वि० (सं०) दे० 'अनृण' ।

अनृत–पु० (सं०) असत्य, झूठ; खेती । वि० झूठा (शब्द, वाक्य); * अन्यथा, उलटा । **–भाषण,–वादन**–पु० झूठ बोलना । **–वादी(दिन्)**–वि० झूठा । **–व्रत**–वि० अपने वचन या प्रतिज्ञाका पालन न करनेवाला ।

अनृतक, अनृती(तिन्)–वि० (सं०) झूठ बोलनेवाला ।

अनृतु–स्त्री० (सं०) अनुपयुक्त समय, असमय । **–कन्या**–स्त्री० वह कन्या जो अभी रजस्वला न हुई हो । **–प्राप्त सैन्य**–पु० वह सेना जिसके अनुकूल ऋतु न पड़ती हो ।

अनृशंस–वि० (सं०) जो निर्दय या कठोर न हो, मृदुल ।

अनेऊ*–दि० बुरा; कुटिल ।

अनेक–वि० (सं०) एकसे अधिक, कई, बहुत । **–काम**–वि० बहुतसी इच्छाओंवाला । **–कालावधि**–अ० चिरकालसे । **कृत्**–पु० शिव । **–चर**–वि० झुंड बनाकर रहनेवाला, समूहमें रहनेवाला । **–चित्त**–वि० जिसका मन चंचल हो । **–ज**–वि० जिसका कई बार जन्म हो । पु० पक्षी इ० । **–प**–पु० हाथी । **–भार्य**–वि० जिसके कई स्त्रियाँ हों । **–मुख**–वि० कई दिशाओंमें जानेवाला । **–रूप**–वि० कई रूपोंवाला; अस्थिर, परिवर्तनशील । पु० परमेश्वर । **–लोचन**–पु० शिव; इंद्र; विराट् पुरुष । **–वचन**–पु० बहुवचन । **–वर्ण**–पु० अज्ञात राशियाँ (बीजगणित) । **–विध**–वि० कई प्रकारका । **–शफ**–वि० फटे खुरोंवाला । **–शब्द**–वि० पर्यायवाची । **–साधारण**–वि० बहुतोंमें पाया जानेवाला–सामान्य (गुण) ।

अनेकता–स्त्री०, **अनेकत्व**–पु० (सं०) एकसे अधिक होनेका भाव, विविधता, बहुत्व ।

अनेकवाद–पु० (प्लूरलिज्म) जीवोंकी भी पृथक् और वास्तविक सत्ता माननेवाला दर्शन; जगत्में दोसे अधिक परम सत्ताओंमें विश्वास करनेका सिद्धांत; बहुत्ववाद; बहुलवाद ।

अनेकत्र–अ० (सं०) कई जगह ।

अनेकधा–अ० (सं०) कई तरहसे ।

अनेकांत–वि० (सं०) अनिश्चित, बदलनेवाला । **–वाद**–पु० जैनियोंका स्याद्वाद । **–वादी(दिन्)**–पु० अनेकांतवाद माननेवाला ।

अनेकाकार–वि० (सं०) बहुतसे आकारों, आकृतियोंवाला ।

अनेकाकी(किन्)–वि० (सं०) जो अकेला न हो, जिसके साथ कई हों ।

अनेकाक्षर–वि० (सं०) कई अक्षरोंवाला ।

अनेकाग्र–वि० (सं०) कई कामोंमें लगा हुआ ।

अनेकाच्–वि० (सं०) जिसमें एकाधिक स्वर हों ।

अनेकार्थ, अनेकार्थक–वि० (सं०) जिसके कई अर्थ हों ।

अनेकाश्रय, अनेकाश्रित–वि० (सं०) एकसे अधिकमें रहनेवाला, एकाधिकपर अवलंबित ।

अनेग*–वि० दे० 'अनेक' ।

अनेड–वि० (सं०) मूर्ख; निकम्मा, खराब; टेढ़ा–'पियका मारग सुगम है, तेरा चलन अनेड'–साखी । **–मूक**–वि० गूँगा-बहरा; अंधा; दुष्ट; छली ।

अनेता†–पु० मालती लता ।

अनेरा*–वि० स्वच्छंद विचरनेवाला, निरंकुश; बे-रोक-टोक; दुष्ट; झूठा; व्यर्थ; निकम्मा । अ० व्यर्थ ही ।

अनेस*–वि० अनिष्ट, अप्रिय, बुरा । पु० अंदेशा, चिंता ।

अनेह–पु० स्नेहका अभाव, अप्रीति । वि० स्नेह-रहित ।

अनेहा(हस्)–पु० (सं०) काल, समय ।

अनेही*–वि० अस्नेही, जो स्नेह न करे ।

अनै*–पु० दे० 'अनय' ।

अनैकांत–वि० (सं०) दे० 'अनेकांत' ।

अनैकांतिक–वि० (सं०) दे० 'अनेकांत' । पु० एक हेत्वाभास–व्यभिचारी हेतु ।

अनैकांत्य–पु० (सं०) बदलनेवाली, अस्थिर प्रकृति ।

अनैक्य–पु० (सं०) एकताका अभाव या उलटा; बहुत्व; फूट, मतभेद; अव्यवस्था ।

अनैच्छिक–वि० (सं०) जो स्वेच्छासे न किया गया हो ।

अनैतिक–वि० (सं०) नीतिविरुद्ध, अविहित ।

अनैतिहासिक–वि० (सं०) जो इतिहासमें न आया हो या जो इतिहाससे प्रमाणित न होता हो, इतिहासविरुद्ध ।

अनैपुण–पु० (सं०) निपुणताका अभाव, अकुशलता ।

अनैश्वर्य–पु० (सं०) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति इत्यादिका अभाव ।

अनैस*–पु० अनिष्ट, बुराई; अंदेशा । वि० बुरा ।

अनैसना*–अ० क्रि० रूठना, अप्रसन्न होना ।

अनैसर्गिक–वि० (सं०) अप्राकृतिक; अस्वाभाविक ।

अनैसा–वि० अनिष्ट, बुरा । –'तरुनिनकी यह प्रकृति अनैसी थोरेहि बात खिसावै'–सू० ।

अनैसे–अ० बुरे भावसे । 'अजहु अनुज तव चितव अनैसे'–रामा० ।

अनैहा*–पु० उत्पात; मचलना ।

अनोकशायी(यिन्)–पु० (सं०) घरमें न सोनेवाला, भिक्षुक ।

अनोकह–वि० (सं०) घरका परित्याग न करनेवाला । पु० वृक्ष ।

अनोखा–वि० अनूठा, अद्भुत; अपूर्व; नया; सुंदर । **–पन**–पु० विलक्षणता; सुंदरता; नयापन ।

अनोट–पु० पैरके अँगूठेका एक आभूषण, अनवट ।

अनोदन–वि० (सं०) निराहार (जैसे व्रतमें) ।

अनोसर*–पु० ठाकुरजीको शयन कराना ।

अनौचित्य–पु० (सं०) औचित्यका अभाव या उलटा; अनुचित या नामुनासिब होना ।

अनौजस्य–पु० (सं०) शक्ति, बलका अभाव ।

अनौट*–पु० दे० 'अनवट' ।

अनौँठा*–वि० अनूठा । (स्त्री० अनौठी) ।

अनौद्धत्य–पु० (सं०) उच्छृंखलता या दर्पका अभाव; विनम्रता; शांति; (नदीके पानीका) ऊँचा न होना ।

अनौधि*–अ० शीघ्र, बिना देर किये ।

अनौपचारिक–वि० (सं०) (इन-फार्मल) जिसमें उपचार या विशिष्ट परिपाटी, नियम आदिका पालन न किया गया हो (सभाकी अनौपचारिक बैठक) ।

अनौपम्य–वि० (सं०) अद्वितीय, बेजोड़ ।

अनौरस–वि० (सं०) जो औरस–विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न न हो, अवैध या गोद लिया हुआ (पुत्र) ।

अन्–उप० (सं०) 'अ'(नञ्)का स्वरादि शब्दोंके पहले लगनेवाला रूप (दे० 'अ') ।

अन्न*–वि० अन्य, दूसरा । पु० (सं०) खानेकी चीज, भोज्य पदार्थ; पका अन्न; भात; अनाज, धान्य; जल; पृथ्वी; सूर्य; विष्णु । **–काल**–पु० भोजनका समय; आरोग्य-लाभ करते हुए रोगीको पथ्य देनेका समय । **–किट्ट**–पु० दे० 'अन्नमल' । **–कूट**–पु० भात या मिष्ठान्नादिका पहाड़ या ढेर; कार्त्तिक-शुक्ला प्रतिपदाको होनेवाला एक उत्सव । **–कोष्ठक**–पु० कोठिला, बखार; गोला; पका खाद्य पदार्थ रखनेकी आलमारी । **–गंधि**–स्त्री० अतिसार । **–गति**–स्त्री० अन्नप्रणाली । **–जल**–पु० दानापानी, आब-दाना; स्थानविशेषमें रहनेका संयोग । **–दा**–स्त्री० दुर्गा, अन्नपूर्णा । **–दाता(तृ)**–वि० अन्न देनेवाला; प्रतिपालन करनेवाला । पु० मालिकोंके लिए सेवकों द्वारा प्रयुक्त संबोधन । **–दास**–वि० भोजनमात्र लेकर काम करनेवाला (नौकर) । **–दोष**–पु० दूषित अन्न खानेसे होनेवाला रोग इ०; निषिद्ध अन्न खाने या अग्राह्य अन्नके प्रतिग्रहसे होनेवाला पाप । **–द्रवशूल**–पु० पेटमें हमेशा रहनेवाला दर्द । **–द्वेष**–पु० भोजनकी अरुचि, भूख न लगना । **–पति**–पु० अन्नका स्वामी, सूर्य; अग्नि; शिव । **–पाक**–पु० अग्निपर या पेटमें खाद्य पदार्थका पकना । **–पूर्णा**

–स्त्री० अन्नकी अधिष्ठात्री देवी, दुर्गाका एक रूप । **–पूर्णेश्वरी**–स्त्री० अन्नपूर्णा; तंत्रोक्त एक भैरवी । **–प्रलय**–पु० मृत्युके बाद शरीरका अन्न या मूल रूपमें परिणत होना । **–प्राशन**–पु० बच्चेको पहली बार अन्न खिलानेकी रस्म या संस्कार, चटावन । **–बुभुक्षु**–वि० अन्न खानेका इच्छुक । **–मल**–पु० सिट्ठी, विष्ठा; मद्य । **–वाही स्रोत(स्)**–पु० अन्न-नलिका । **–विकार**–पु० अन्नका रूपांतर–रस, रक्त मांस आदि । **–व्यवहार**–पु० खान-पान-संबंधी नियम या प्रथा । **–शाला**–स्त्री० अनाज रखने, इकट्ठा करनेका स्थान । **–शेष**–पु० जूठन, भूसी-चोकर आदि । **–संस्कार**–पु० देवादिके लिए अन्नका उत्सर्ग । **–सत्र**–पु० वह संस्थान जहाँ साधु-फ़कीरों, गरीबों-अपाहिज़ोंको भोजन दिया जाता है । **मु० –जल उठना**–रहनेका संयोग या सहारा न होना ।

अन्नमय–वि० (सं०) अन्नसे बना; अन्नसे भरा । **–कोश(ष)**–पु० वेदांतमें माने हुए पाँच कोशोंमेंसे पहला, स्थूल शरीर ।

अन्ना–स्त्री० धाय; माता ।

अन्नाकाल–पु० (सं०) दे० 'अनाकाल' ।

अन्नाद–वि० (सं०) अन्न खानेवाला; अच्छी भूखवाला । पु० विष्णु ।

अन्नोपलब्धि–स्त्री० (प्रोक्यूरमेंट) किसानों, ग्रामीणों आदिसे उचित मूल्यपर खाद्यान्न प्राप्त करना, गल्ला-वसूली ।

अन्य–वि० (सं०) दूसरा, गैर; भिन्न; असाधारण; अतिरिक्त, अधिक; नया । **–कारुका**–स्त्री० मलजात कीट । **–क्रीत**–वि० दूसरेका खरीदा हुआ । **–ग, -गामी(मिन्)**–वि० अन्यके यहाँ जानेवाला, व्यभिचारी । **–चित्त**–वि० अन्यमनस्क, जिसका मन अन्यत्र लगा हो । **–जात**–वि० भूली हुई या नष्ट (वस्तु) । **–दुर्वह**-वि० जो दूसरोंको बर्दाश्त न हो । **–देशीय**-वि० अन्य देशका, विदेशी । **–धी**–वि० जिसका मन फिर गया हो । **–नाभि** वि० दूसरे वंशका । **–पर**-वि० अन्यनिष्ठ; अन्यविषयक । **–पुरुष**–पु० पुरुषवाचक सर्वनामका एक भेद; दूसरा आदमी । **–पुष्ट**-वि० दूसरेके द्वारा पालित । **–पुष्टा**-स्त्री० कोयल । **–पूर्वा**–स्त्री० एकसे मँगनीके बाद दूसरेसे ब्याही जानेवाली कन्या; पुनर्विवाह करनेवाली स्त्री, पुनर्भू । **–बीजज,–बीजसमुद्भव, –बीजोत्पन्न**–पु० दत्तक पुत्र । **–भृता**–स्त्री० कोयल । **–भृत्**–वि० दूसरेका पालन करनेवाला । पु० काक । **--मनस्क,–मना(नस्),–मानस**–वि० जिसका चित्त कहीं और हो; अनमना । **–मातृज**–पु० दूसरी मातासे उत्पन्न, सौतेला भाई । **–वादी(दिन्)**–वि० झूठी गवाही देनेवाला; प्रतिवादी । **–वाप**–पु० कोयल । **–विर्वाधत**–वि० दूसरेके द्वारा पाला गया । **–शाख, --शाखक**–पु० अपने धर्मका त्याग करनेवाला ब्राह्मण । **–संक्रांत**-वि० जिसने अन्य (स्त्री)से संबंध कर लिया है । **–संगम**-पु० अवैध संबंध । **–संभूयक्रय**–पु० पहले लगाये गये मूल्यपर थोक मालके न बिकनेपर उसपर लगाया गया दूसरा मूल्य । **–संभोगदुःखिता**–स्त्री० वह नायिका जो पतिमें अन्यके साथ रतिके चिह्न देखकर दुःखित हो । **–साधारण**–वि० जो (बात, गुण) बहुतोंमें पाया जाय ।

अन्यच्च–अ० (सं०) और भी; इसके सिवा ।

अन्यतः(तस्)–अ० (सं०) दूसरेसे; दूसरे स्थानसे; दूसरा या दूसरेकी ओर, अन्यथा ।

अन्यतस्त्य–पु० (सं०) शत्रु, प्रतिपक्षी ।

अन्यतम–वि० (सं०) बहुतोंमेंसे एक; सर्वश्रेष्ठ ।

अन्यतर–वि० (सं०) दोमेंसे एक; दूसरा, भिन्न ।

अन्यत्–वि० (सं०) अन्य । अ० पुनः, अलावा ।

अन्यत्र–अ० (सं०) दूसरी जगह, और कहीं ।

अन्यत्व–पु० (सं०) परायापन । **–भावना**–स्त्री० जीवात्माको शरीरसे भिन्न मानना (जै०) ।

अन्यथा–वि० (सं०) उलटा, विरुद्ध; झूठ । अ० नहीं तो । **–अनुपपत्ति**–स्त्री० एक वस्तुके अभावमें दूसरीके अस्तित्वकी असंभावना । **–करण**–पु० (डिस्टार्शन)–किसी पदार्थका अंतर्निहित अर्थ ढूँढ़नेके उद्देश्यसे विरूपीकरणकी एक प्रक्रिया । चित्रकलाके क्षेत्रसे लिया गया शब्द है जो आधुनिक कलाकी विशेषता. समझा जाता है । **–भाव**–पु० भिन्न रूपमें होना । **–वाही(हिन्)**–वि० बिना चुंगी या महसूल दिये माल ले जानेवाला (कौ०) । **–सिद्धि**–स्त्री० न्याय-संबंधी एक दोष, असंबद्ध कारण द्वारा सिद्धि ।

अन्यदा–अ० (सं०) दूसरे समय; एक समय; यदा-तदा ।

अन्यदीय–वि० (सं०) दूसरेका, अन्यका ।

अन्यर्हि–अ० (सं०) किसी और समय ।

अन्यादृश–वि० (सं०) अन्य प्रकारका; परिवर्तित; विचित्र ।

अन्यापदेश–पु० (सं०) अन्योक्ति ।

अन्यापदेशिक–वि० (सं०) जो दूसरेके बहाने, अन्योक्तिके रूपमें कहा गया हो ।

अन्याय–पु० (सं०) न्यायविरुद्ध कार्य, बे-इंसाफी; अनौचित्य, जुल्म, अत्याचार ।

अन्यायी(यिन्)–वि० (सं०) अन्याय करनेवाला ।

अन्याय्य–वि० (सं०) न्यायविरुद्ध, अनुचित ।

अन्यारा*–वि० जो जुदा न हो, अभिन्न; अनोखा; वीर; अनीदार; बहुत ।

अन्यार्थ–वि० (सं०) भिन्न अर्थ रखनेवाला ।

अन्याश्रित–वि० (सं०) दूसरेपर अवलंबित ।

अन्यास*–अ० दे० 'अनायास'; अकस्मात्–'मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास'–सू० ।

अन्यासाधारण–वि० (सं०) असामान्य, असाधारण; विचित्र ।

अन्यून–वि० (सं०) अनल्प, अधिक, बहुत ।

अन्येद्युः(द्युस्)–अ० (सं०) दूसरे दिन; एक समय ।

अन्येद्युष्क–वि० (सं०) दूसरे दिन या प्रतिदिन होनेवाला । पु० रोज होनेवाला ज्वर ।

अन्योका(कस्)–वि० (सं०) अपने घरमें नहीं, दूसरेके घरमें रहनेवाला ।

अन्योक्ति–स्त्री० (सं०) ऐसी उक्ति जो साधर्म्यके कारण कथित वस्तुके अतिरिक्त औरोंपर भी घटित हो सके; कुछ लोगोंने इसे अर्थालंकारका एक भेद माना है ।

अन्योदर्य–वि० (सं०) सहोदर नहीं, अन्यसे उत्पन्न ।

अन्योन्य–अ० (सं०) परस्पर; एक दूसरेको या पर । वि० पारस्परिक, आपसका । पु० अर्थालंकारका एक भेद जहाँ दो वस्तुएँ परस्पर एक ही क्रिया करें; जैसे तुमसे वह रमणी शोभित होती है और उससे तुम । **–प्रजनन**–पु० (क्रास बीडिंग) विभिन्न जातिके पशु-पौधोंके पारस्परिक संसर्ग द्वारा उत्पादन करना, दे० 'संकरण, । **–भेद**–पु० आपसका भेद, शत्रुता । **–विभाग**–पु० पैतृक संपत्तिका आपसमें बँटवारा । **–वृत्ति**–स्त्री० पारस्परिक प्रभाव । **–व्यतिकर, –संश्रय**–पु० पारस्परिक संबंध (कारण और कार्यका) ।

अन्योन्याभाव–पु० (सं०) अभावका एक भेद, किसी एक पदार्थका अन्य पदार्थ न होना ।

अन्योन्याश्रय–पु० (सं०) एकका दूसरेपर अवलंबित होना, परस्पर कार्य-कारण संबंध । वि० एक दूसरेपर आश्रित ।

अन्योन्याश्रयी(यिन्), अन्योन्याश्रित–वि० (सं०) एक दूसरेपर अवलंबित ।

अन्वक्–अ० (सं०) पीछे, बादमें; अनुकूल रूपमें ।

अन्वक्ष–वि० (सं०) दृश्य, प्रत्यक्ष; अनुभवगम्य; बादका । अ० पीछे, बादमें; सामने, सीधे ।

अन्वक्षरित–वि० (सं०) वह (प्रलेख, आवेदन पत्रादि) जिसके नीचे हस्ताक्षर किये गये हों; स्वीकृति सूचित करनेके लिए जिसपर हस्ताक्षर कर दिये गये हों, हस्ताक्षरित ।

अन्वय–पु० (सं०) अनुगमन; संबंध; मेल; अवकाश; वाक्यमें पदोंका परस्पर उचित संबंध; आशय; वंश; नियमानुसार यथास्थान रखना; हेतु और साध्यका साहचर्य (न्या०); कारण-कार्यका संबंध । **–व्यतिरेक**–पु० नियम और अपवाद; संगति और असंगति । **–व्याप्ति**–स्त्री० निश्चयात्मक या स्वीकारात्मक तर्क ।

अन्वयागत-वि० (स०) वंशानुगत ।

अन्वयार्थ–पु० (सं०) अन्वयसे निकलनेवाला अर्थ ।

अन्वयी(यिन्)-वि० (सं०) अन्वययुक्त; संबद्ध; एक ही कुलका ।

अन्वर्थ–वि० (स०) अर्थका अनुसरण करता हुआ, यथार्थ; स्पष्ट अर्थवाला।

अन्ववकिरण–पु० (सं०) क्रमपूर्वक चारों ओर विखेरना।

अन्ववसर्ग–पु० (सं०) ढीला करना; इच्छानुसार व्यवहार करने देना।

अन्ववसायी(यिन्)–वि० (सं०) संवंध रखनेवाला; आश्रित, अवलंवित।

अन्ववसित–वि० (सं०) संवद्ध; आवद्ध।

अन्ववाय–पु० (सं०) जाति; वंश, कुल।

अन्ववेक्षा–स्त्री० (सं०) विचार; लिहाज, खयाल (किसी व्यक्तिका)।

अन्वष्टका–स्त्री० (सं०) पौष, माघ और फाल्गुनकी कृष्ण नवमी जब साग्नियोंका मातृक श्राद्ध होता है।

अन्वाख्यान–पु० (सं०) पूर्वकथनकी व्याख्या; अध्याय, पर्व।

अन्वाचय–पु० (सं०) मुख्य काम या विषयके साथ गौण काम या विषयको जोड़ना; इस प्रकारका काम या विषय।

अन्वाचित–वि० (सं०) गौण; हीन।

अन्वादिष्ट–वि० (सं०) पश्चात्कथित, महत्त्वकी दृष्टिसे गौण; पुनर्नियुक्त।

अन्वादेश–पु० (सं०) कही हुई वात या शब्दको फिर कहना या उसकी ओर संकेत करना; किसी शब्दका वाक्यमें पुनः प्रयोग; एक कार्य हो जानेपर दूसरे कार्यके लिए कहना।

अन्वाधान–पु० (सं०) अग्निहोत्रकी अग्निके स्थापनके वाद उसमें ईंधन डालना।

अन्वाधि–स्त्री० (सं०) जमानत; अधिकारी व्यक्तिको देनेके लिए किसी अन्य व्यक्तिको कोई वस्तु देना; पश्चात्ताप, ग्लानि, मानसिक व्यथा।

अन्वाधेय, अन्वाधेयक–पु० (सं०) विवाहके वाद स्त्रीको पतिकुल या पितृकुलसे मिलनेवाला धन।

अन्वाध्य -पु० (सं०) एक देववर्ग।

अन्वाय–पु० (सं०) सेनाके किसी एक अंगकी अधिकता।

अन्वायन–पु० (सं०) वह सामग्री जो वधू अपने पिताके घरसे लेकर आयी हो।

अन्वारंभ, अन्वारंभण -पु० (सं०) पृष्ठभागका स्पर्श (आशीर्वाद देने आदिके लिए)।

अन्वारूढ–वि० (सं०) पीछे चढ़नेवाला।

अन्वारोहण–पु० (सं०) किसीके पीछे चढ़ना; पतिके शवके साथ या पीछे विधवाका चितारोहण।

अन्वालंभन, अन्वालभन–पु० (सं०) मूठ (?)।

अन्वासन–पु० (सं०) सेवा, आराधना; पीछे आसन ग्रहण करना; पश्चात्ताप; स्नेहवस्ति; कारखाना, शिल्पगृह।

अन्वाहार्य, अन्वाहार्यक–पु० (सं०) यज्ञमें पुरोहितको दिया जानेवाला भोजन या दक्षिणा; मासिक श्राद्ध।

अन्वाहिक–वि० (सं०) दैनिक।

अन्वाहित–पु० (सं०) दे० 'अन्वाधि'। वि० अधिकारीको देनेके लिए किसीके पास जमा किया हुआ।

अन्वित–वि० (सं०) युक्त, सहित; ग्रस्त (शोकान्वित); संवद्ध; समझा हुआ।

अन्वितार्थ–पु० (सं०) ऐसा अर्थ जो अन्वय करनेसे सहज ही समझमें आ जाय। वि० ऐसा अर्थ रखनेवाला।

अन्विति–स्त्री० (सं०) अन्वित होनेका भाव या स्थिति; अनुगमन; कृति, प्रभाव, रूप, परिणाम आदिमें दृश्य वह एकता जिससे वह खंडित या विकृत न जान पड़े; नाटकमें काल, देश तथा कथावस्तु आदि संवंधी एकता या सामंजस्य; विभिन्न घटनाओं, चरित्रों या भावोंका ऐसा समुच्चय जो कहींसे अलग अलग न प्रतीत हो (यूनिटी); आहार।

अन्विष्ट–वि० (सं०) इच्छित; ढूँढ़ा हुआ।

अन्वीक्षण–पु० (सं०) वारीकीसे देखना; खोज, अन्वेषण; मनन।

अन्वीक्षा–स्त्री० (सं०) अन्वीक्षण।

अन्वीत–वि० (सं०) दे० 'अन्वित'।

अन्वीप–वि० (सं०) जलके समीपका; प्राप्य।

अन्वेष, अन्वेषण,–पु०, **अन्वेषणा**–स्त्री० (सं०) खोज करना, जाँच-पड़ताल करना।

अन्वेषक–वि० (सं०) अन्वेषण करनेवाला, खोजी। **–प्रकाश**–पु० (सर्चलाइट) वह तेज प्रकाश जो अँधेरेमें किसी भी दिशाकी ओर दूरतक इस आशयसे प्रक्षिप्त किया जाय कि उससे शत्रुके विमानों या उसकी गतिविधि आदिका अथवा भागते हुए या कहीं छिपे हुए चोर आदिका पता चल सके या उस तरफकी सव चीजें साफ-साफ देखी जा सकें; **खोजवत्ती**।

अन्वेषण–पु० (रिसर्च) लगातार परिश्रमपूर्वक छानवीन करते हुए ऐतिहासिक वातों तथा अन्य तथ्योंका पता लगाना, **गवेषणा, शोध**।

अन्वेषित–वि० (सं०) जिसका अन्वेषण किया गया हो।

अन्वेषी(षिन्), अन्वेष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) अन्वेषक।

अन्वेष्टव्य, अन्वेष्य–वि० (सं०) अन्वेषणके योग्य।

अन्हरा†–पु० नेत्रहीन व्यक्ति। वि० अंधा।

अन्हवाना*–स० क्रि० नहलाना।

अन्हाना*–अ० क्रि० नहाना।

अपंकिल–वि० (सं०) विना कीचड़का; सूखा; निर्मल।

अपंग–वि० अंगहीन; लँगड़ा-लूला; अशक्त।

अपंचीकृत–वि० (सं०) जिसका पंचीकरण न हुआ हो (पंच महाभूतोंका अमिश्र-सूक्ष्म रूप)।

अपंडित–वि० (सं०) मूर्ख, निरक्षर, ज्ञानहीन।

अपःप्रवेशन–पु० (सं०) (राजद्रोही ब्राह्मणको) पानीमें डुवाकर मारनेका दंड (कौ०)।

अप–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो वैपरीत्य, वैरुद्ध्य, वुराई, आधिक्य, निषेध, हीनता, दूषण, विकृति, विशेषता इत्यादिका द्योतन करता है। सर्व० (हि०) आपका संक्षिप्त रूप (यौगिक शब्दोंमें)। **–काजी***–वि० स्वार्थी, खुदगरज। **–देखा***– वि० घमंडी। **–वश, –बस –वश***–वि० जो दूसरेके वशमें न हो, स्वाधीन, स्वेच्छाचारी। **–रती***–स्त्री० स्वार्थ। **–स्वार्थी**–†वि० खुदगरज, मतलवी।

अपकरण–पु० (सं०) दुर्व्यवहार; दुष्कर्म।

अपकरुण–वि० (सं०) निर्दय, निष्ठुर।

अपकर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) अपकार करनेवाला, हानि या वुराई करनेवाला; शत्रुभाव रखनेवाला।

अपकर्म(न्)–पु० (सं०) वुरा काम, दुष्कर्म; ऋणपरिशोध।

अपकर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) दुष्कर्मी, भ्रष्टाचारी।

अपकर्ष–पु० (सं०) नीचेकी ओर खींचना या लाना; अवनति, गिराव; हीनता; क्षय; अपमान; साहित्यमें वह दोष जव रचनाका अर्थ समझनेमें कठिनाई हो; अपयश; दे० 'अल्पीकरण'। **–सम**–पु० जातिके चौवीस भेदोंमेंसे एक (न्या०)।

अपकर्षक–वि० (सं०) अपकर्ष करनेवाला।

अपकर्षण–पु० (सं०) दे० 'अपकर्ष'।

अपकलंक–पु० (सं०) न मिटनेवाला कलंक।

अपकल्मष, अपकषाय–वि० (सं०) पापरहित; निष्कलंक।

अपकार–पु० (सं०) उपकारका उलटा; वुराई; अहित; अनिष्टचिंता; नुकसान; शत्रुता; अपमान; अत्याचार; नीच कर्म।

अपकारक, अपकारी(रिन्)–वि० (सं०) अपकार करनेवाला।

अपकारीचार*–वि० अपकार करनेवाला; विघ्नकर्ता।

अपकिरण–पु० (सं०) विखेरना, छितराना।

अपकीरति*–स्त्री० दे० 'अपकीर्ति'।

अपकीर्ति–स्त्री० (सं०) अपयश; वदनामी।

अपकृत–वि० (सं०) जिसका अपकार किया गया हो। पु० क्षति, हानि।

अपकृति–स्त्री०, **अपकृत्य**–पु० (सं०) अपकार।

अपकृष्ट–वि० (सं०) हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ; गिराया हुआ; घटिया, खराव। पु० काक। **–चेतन**–वि० वुरे विचारोंवाला।

अपकेंद्री–वि० (सं०) (सेण्ट्रीफ्यूगल) केन्द्रसे दूसरी दिशामें जाने

या अलग होनेवाला (अपकेन्द्री बल)।

अपकौशली–स्त्री० (सं०) समाचार, सूचना।

अपक्ति–स्त्री० (सं०) कच्चापन; अजीर्ण।

अपक्रम–पु० (सं०) पीछे हटना; भागना; भागनेकी सीमा; व्यतीत होना (समयका)। वि० क्रमरहित, जिसका क्रम ठीक न हो।

अपक्रमण, अपक्राम–पु० (सं०) दे० 'अपक्रम'।

अपक्रमी(मिन्)–वि० (सं०) जानेवाला, हटनेवाला; तेजीसे न जानेवाला।

अपक्रिया–स्त्री० (सं०) हानि, क्षति; अहित; द्रोह; दुष्कर्म; ऋणपरिशोध।

अपक्रोश–पु० (सं०) निंदा करना, अपशब्दका प्रयोग करना।

अपक्व–वि० (सं०) न पका हुआ, कच्चा; न पकाया हुआ; अनभ्यस्त।

अपक्ष–वि० (सं०) बिना पंखका; जिसके साथी-समर्थक न हों; निष्पक्ष। पु० वह जो राज्यके पक्षमें न हो; वह जिससे राज्यको कोई लाभ न हो; वह जिसका किसीसे मेल-जोल न हो; वह जो किसीसे हिल-मिलकर न रह सके। **–पात**–पु० पक्षपातका अभाव। **–पाती(तिन्)**–वि० पक्षपात न करनेवाला, निष्पक्ष।

अपक्षय–पु० (सं०) छीजना, ह्रास; नाश। (वि० 'अपक्षीण')

अपक्षालन–पु० (सं०) दे० 'निक्षालन' (लीचिंग)।

अपक्षेप, अपक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; गिराना; पलटाना; किसी वस्तुसे टकराकर फेंका जाना। (वि० 'अपक्षिप्त')

अपखंड–पु० (फ्रैगमेंट) किसी वस्तुका टूटा हुआ हिस्सा, अधूरा या अपूर्ण भाग; विनष्ट या लुप्त वस्तुका बचा हुआ अंश।

अपगंड–वि० (सं०) दे० 'अपोगंड'।

अपगत–वि० (सं०) गया हुआ; बीता हुआ; भागा हुआ; तिरोहित; मृत। **–व्याधि**–वि० रोगमुक्त।

अपगति–स्त्री० (सं०) अधोगति; दुर्गति; दुर्भाग्य।

अपगम, अपगमन–पु० (सं०) जाना; हट जाना; गायब हो जाना; मृत्यु।

अपगमन–पु० गलत रास्तेपर जाना; (मिस्कैरिज) (किसी पत्रादिका) भूलसे अन्यत्र चले जाना, निर्दिष्ट व्यक्तिके पास न पहुँचकर अन्य किसीके पास चले जाना; अपवाहन।

अपगर–पु० (सं०) निंदा; निंदा करनेवाला।

अपगर्जित–वि० (सं०) गर्जनरहित (बादल)।

अपगल्भ–वि० (सं०) भीरु, घबड़ाया हुआ।

अपगा–स्त्री० (सं०) दे० 'आपगा'।

अपगुण–पु० (सं०) दोष, ऐब।

अपगोपुर–वि० (सं०) द्वाररहित (नगर)।

अपघटन–पु० (डीकम्पोज़िशन) विघटन।

अपघन–वि० (सं०) मेघरहित। पु० शरीर; शरीरका कोई अंग–हाथ-पाँव आदि।

अपघर्षण–पु० (एब्रेशन) घिसनेके कारण होनेवाला क्षरण।

अपघात–पु० (सं०) रोकना; हत्या; आघात या दुर्घटनासे मरना; धोखा।

अपघाती(तिन्)–वि० (सं०) अपघात करनेवाला।

अपच–पु० बदहजमी, अजीर्ण; (सं०) वह जो पाककार्य करनेमें असमर्थ हो; वह जो अपने लिए पाककार्य न करे; बुरा पाचक।

अपचक्र–पु० (विशस सर्किल) (दलीलों आदिका) ऐसा दुश्चक्र जिसमें दोष भरे पड़े हों तथा जिनमेंसे बाहर आ सकना कठिन हो; विषम वृत्त; दुश्चक्र।

अपचय–पु० (सं०) हानि; छीजना; व्यय; असफलता; दोष; कंजूसी; सम्मान, पूजा। (वि० 'अपचयी')

अपचयन–पु० (रिडक्शन) किसी रासायनिक यौगिकसे ऑक्सीजनका पृथक् किया जाना; किसी भी आयत, परमाणु या परमाणु-समूहमें इलेक्ट्रानका जुड़ जाना।

अपचरण–पु० (सं०) कुत्सित व्यवहार, कदाचार; (ट्रेसपासिंग) अपनी सीमा या अधिकार-क्षेत्रसे आगे बढ़कर दूसरेकी ऐसी सीमा या अधिकार-क्षेत्रमें चले जाना जहाँ प्रवेश करना अनुचित हो, अनधिकार प्रवेश।

अपचरित–वि० (सं०) गया हुआ; मृत। पु० दोष; दुष्कर्म; मृत्यु; अभाव; प्रस्थान। **–प्रकृति**–पु० वह राजा जिसकी प्रजा अत्याचारसे उद्विग्न हो।

अपचायी(यिन्)–वि० (सं०) बड़ोंके प्रति सम्मान प्रकट न करनेवाला।

अपचार–पु० (सं०) अभाव, अनुपस्थिति; दोष; अनुचित कर्म; दुराचार, अपथ्य।

अपचारक, अपचारी–पु० (ट्रेसपासर) दूसरेकी सीमा या अधिकार-क्षेत्रमें अनधिकार प्रवेश करनेवाला।

अपचारी(रिन्)–वि० (सं०) दुष्कर्मी; बुरा, नीच; पृथक् होनेवाला; अविश्वासी।

अपचाल*–स्त्री० कुचाल, खोटाई।

अ-पचित–वि० बिना पचा हुआ।

अपचित–वि० (सं०) क्षीण; व्यय किया हुआ; दुबला-पतला; सम्मानित, पूजित।

अपचिति–स्त्री० (सं०) हानि; क्षय, नाश; व्यय; प्रायश्चित्त; पृथक् करना; दंड देना; सम्मान करना।

अपची–स्त्री० (सं०) एक रोग जिसमें गलेकी ग्रंथियाँ बढ़ जाती हैं।

अपचेता(तृ)–वि० (सं०) कंजूस।

अपच्छत्र–वि० (सं०) छत्ररहित।

अपच्छाय–वि० (सं०) छायारहित; बुरी छायावाला; धुंधला। पु० देवता।

अपच्छाया–स्त्री० (सं०) प्रेत; बुरी छाया।

अपच्छी*–वि० विपक्षी, वैरी; बिना पंखका।

अपच्छेद, अपच्छेदन–पु० (सं०) काटकर अलग करना; हानि; विघ्न-बाधा।

अपच्युत–वि० (सं०) गिरा हुआ; गया हुआ; मृत; पिघलकर बहा हुआ।

अपछरा*–स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अपछरी*–स्त्री० अप्सरा, देवांगना।

अपछह*–वि० अहितकर (वीसल०)।

अपजय–स्त्री० (सं०) हार, पराजय।

अपजस*–पु० अपयश, बदनामी; लांछन।

अपजात–पु० (सं०) कपूत, वह पुत्र जो अपने माता-पितासे गुणादिकी दृष्टिसे हीन हो। वि० (डिजेनरेट) जो जाति, वंश आदिके श्रेष्ठ गुणों या विशेषताओंसे रहित हो गया हो; जो ऊँचे वंश, परंपरा आदिसे स्खलित होकर क्षुद्र या निकृष्ट श्रेणीका बन गया हो।

अपज्ञान–पु० (सं०) इनकार; छिपाना।

अपज्य–वि० (सं०) ज्या या धनुर्गुणसे रहित।

अपटन†–पु० दे० 'उबटन'।

अपटांतर–वि० (सं०) जो (पर्देके जरिये) अलग न किया गया हो, मिला हुआ; संयुक्त; अव्यवहित।

अपटी–स्त्री० (सं०) परदा; कपड़ेकी दीवार, कनात। **–क्षेप**–पु० (पात्रोंके अचानक रंगमंचपर आनेके लिए) परदेका हटाया जाना।

अपटु–वि० (सं०) अकुशल, कच्चा; बोदा; सुस्त, अस्वस्थ; (वह ग्रह) जिसका प्रकाश मंद पड़ गया हो (ज्यो०)।

अपट्ठमान*–वि० न पढ़ने योग्य, अपाठ्य।

अपठ–वि० (सं०) अपढ़, निरक्षर।

अपठित–वि० (सं०) अपढ़; जो नहीं पढ़ा गया है।

अपडर*–पु० डर, शंका।

अपडरना*–अ० क्रि० डरना, शंकित होना।

अपड़ाना*–अ० क्रि० खींचातानी करना, झगड़ना।

अपड़ाव*–पु० झगड़ा, 'जन्महि ते अपड़ाव करत है गुनि गुनि हृदय कहै'–सू०; तकरार, खींचातानी।

अपढ़–वि० बेपढ़ा, अशिक्षित।

अपढार*–वि० बेढंगे तरहसे ढलनेवाला–'अस जो अपढार ढरै न ढरै'–घन०।

अपण्य–वि० (सं०) न बेचने योग्य; जिसका बेचना निषिद्ध हो। पु० न बेचने योग्य वस्तु।

अपतंत्र, अपतंत्रक–पु० (सं०) एक वातरोग।

अपत*–वि० पत्रहीन, नंगा; निर्लज्ज; अधम। स्त्री० विपत्ति।

अपतई*–स्त्री० निर्लज्जता; ढिठाई; चंचलता (?)।

अपतर्पण–पु० (सं०) लंघन, उपवास, भोजनत्याग (रोगमें); तृप्तिका अभाव।

अपतानक–पु० (सं०) अपतंत्र जैसा एक रोग जिसमें बार-बार मूर्च्छा आती है।

अपताना*–पु० जंजाल, झंझट।

अपति–वि० (सं०) पतिहीन, विना मालिकका; कुमारी; विधवा; *निर्लज्ज, दुराचारी। स्त्री० दुर्दशा।

अपतिक–वि० (सं०) जिसका कोई मालिक न हो, पतिहीन; (स्त्री० 'अपतिका'–कुमारी, विधवा।)

अपती–स्त्री० नावमें दोनों सिरोंपर लगायी जानेवाली एक लकड़ी जो लगभग वित्तेभर चौड़ी होती है।

अपतुष्टि–स्त्री० (सं०) (एपीजमेण्ट) भय, दवाव आदिके कारण किसीको अनुचित रूपसे प्रसन्न या संतुष्ट करना, तुष्टीकरण।

अपतोस*–पु० अफ़सोस, दुःख।

अपत्नी–वि० स्त्री० (सं०) अविवाहिता; पतिहीना।

अपत्नीक–वि० (स०) विना पत्नीका, रँडुआ।

अपत्य–पु० (सं०) संतान, वेटा या वेटी। **–काम**–दि० संतानका इच्छुक। **–जीव**–पु० एक पौधा। **–दा**–स्त्री० एक वृक्ष, गर्भदात्री। **–पथ**–पु० योनि। **–विक्रयी(यिन्)**–वि० संतान बेचनेवाला। **-शत्रु**-पु० केकड़ा; साँप।

अपत्र–वि० (सं०) विना पत्तोंका; पंखहीन। पु० बाँसका कल्ला; वह वृक्ष जिसके पत्ते गिर गये हों; वह चिड़िया जिसे पंख न हों।

अपत्रप–वि० (सं०) निर्लज्ज, धृष्ट।

अपत्रपण–पु०, **अपत्रपा**–स्त्री० (सं०) लज्जा, संकोच; आकुलता।

अपत्रस्त–वि० (सं०) भीत, डरा हुआ।

अपथ–वि० (सं०) पथहीन; जहाँ अच्छे रास्ते न हों। पु० कुपथ, गलत या वुरी राह; पथका अभाव; प्रचलित धर्म या मतका विरोध; योनि। **–गामी(मिन्)** -वि० कुमार्गगामी। **–प्रपन्न**–वि० कुमार्गपर जानेवाला; दुरुपयोगमें लाया हुआ।

अपथ्य–वि० (सं०) वुरा, अयुक्त; अहितकर; स्वास्थ्यनाशक। पु० प्रतिकूल आहार-विहार। **–निमित्त**–वि० अयुक्त आहार तथा पानसे उत्पन्न।

अपद*–अ० अनधिकारपूर्वक; अनुचित रूपमें। वि० (सं०) बिना पैरका; बिना ओहदेका। पु० रेंगनेवाला जंतु; बुरा स्थान; आकाश। **–रुहा,–रोहिणी**–स्त्री० अन्य वृक्षके सहारे जीनेवाला वायवीय पौधा-विशेष।

अपदम–वि० (सं०) आत्मनियंत्रणरहित; जिसकी स्थिति बदलती रहती हो।

अपदव–वि० (सं०) दावाग्निसे रहित या मुक्त।

अपदस्थ–वि० (सं०) पदसे हटाया हुआ, पदच्युत।

अपदांतर–वि० (सं०) सटा हुआ, मिला हुआ; अति निकट। अ० जल्द, अविलंब।

अपदान–पु० (सं०) शुद्धाचरण; उत्तम कार्य; पूर्ण रूपसे किया हुआ कार्य।

अपदार्थ–पु० (सं०) अनस्तित्व; तुच्छता; नगण्यता; तुच्छवस्तु। वि० तुच्छ, नगण्य।

अपदेखा*–वि० दे० 'अप' में।

अपदेवता–पु० (सं०) दुष्ट देव; दैत्य, राक्षस।

अपदेश–पु० (सं०) व्याज, बहाना; वेश बदलना; छल; निर्देश; हेतुनिर्देश; लक्ष्य; कुदेश, बुरी जगह; इनकार; प्रसिद्धि।

अपद्रव्य–पु० (सं०) बुरा द्रव्य, बुरी वस्तु।

अपद्वार–पु० (सं०) बगलका दरवाजा।

अपधावन–पु० (सं०) सत्यका अपलाप।

अपधूम–वि० (सं०) धूमहीन।

अपध्यान–पु० (सं०) (किसीका) बुरा सोचना, अनिष्टचिंतन।

अपध्वंस–पु० (सं०) पतन; नाश; अपमान; निंदा। **–ज**–पु० वर्णसंकर; वह जिसकी माता उच्च वर्णकी और पिता निम्न वर्णका हो।

अपध्वंसी(सिन्)–वि० (सं०) गिरानेवाला; अपमान करनेवाला; नाश करनेवाला; विजयी।

अपध्वस्त–वि० (सं०) निंदित; अपमानित; पराजित; चूर-चूर किया हुआ।

अपध्वांत–वि० (सं०) गलत स्वर निकालनेवाला। पु० कर्कश स्वर।

अपन*–सर्व० दे० 'अपना'; † हम। **–पो,–पौ**–पु० अपनापन, आत्मीयता; अपना स्वरूप; होश, सुध-बुध; आत्मगौरव; गर्व।

अपनय–पु० (सं०) दूर करना; स्थानांतरित करना; खंडन; दुर्नीति; अपकार।

अपनयन–पु० (सं०) दूर करना; दूसरी जगह ले जाना; (ऐबडक्शन) भगा ले जाना, किसी स्त्री, बालक, आदिको उसके पति या माता-पिताके पाससे हटाकर अन्यत्र ले जाना; अपहरण; (रोगादिका) दूर होना; ऋण-परिशोध; खंडन; घटाना।

अपनर्मक–पु० (सं०) एक प्रकारका हार।

अपना–सर्व० आत्म-संबंधी, निजका, स्वीय; आप, निज। पु० स्वजन। **–पन**–पु० आत्मीयता, अपनापन, स्वाभिमान। **मु०– करना**–मित्र या अनुकूल बना लेना; हाथमें कर लेना। **–पराया, –बेगाना**–स्वजन-परजन, दोस्त-दुश्मन। **–सा मुंह लेकर रह जाना**–लज्जित होना; बेवकूफ बनना। **–(नी)-अपनी पड़ना**–सबको अपनी चिंता होना। **–गाना**–अपनी ही बात कहना। **–गुड़िया सँवार देना**–सामर्थ्यानुसार कन्याका विवाह कर देना। **–नींद सोना**–अपनी मर्जीसे सोना-जागना; इच्छानुसार काम करना। **–बातका एक**–जो अपनी बातपर डटा रहे। **–बातपर आना**–हठ करना। **–(ने)आप**–स्वतः, खुद, अपनेसे। **–तक रखना**–किसीसे न कहना। **–पर आना**–अपने बुरे स्वभावके अनुसार काम करना। **–भावे**–अपनी जानमें। **–मुंह मियाँ मिट्ठू**–आत्मप्रशंसक।

अपनाइयत†–स्त्री० दे० 'अपनायत'।

अपनाना–स० क्रि० स्वीकार कर लेना; अपना बना लेना; अपने पक्ष या वशमें कर लेना।

अपनाम–पु० (सं०) बदनामी, निंदा।

अपनामा(मन्)–वि० (सं०) बदनाम, निंदित।

अपनायत–स्त्री० आत्मीयता, आपसदारी।

अपनाव–पु० अपनानेकी क्रिया; ऐक्य।

अपनीत–वि० (सं०) दूर किया हुआ; निकाला हुआ; खंडित; खराब किया हुआ; चुकाया हुआ; विरोधी, जिसका अपनयन किया गया हो, जिसे कोई भगा ले गया हो। पु० दुराचरण।

अपनुत्ति–स्त्री०, **अपनोद, अपनोदन**–पु० (सं०) खंडन; हटाना, दूर करना; नष्ट करना; प्रायश्चित्त।

अपपलायी(यिन्)–पु० पकड़े जाने, दंडित होनेके डरसे भाग जाने, छिप जानेवाला, भगोड़ा (ऐब्सकांडर)।

अपपाठ–पु० (सं०) गलत या सदोष पाठ।

अपपात्र, अपपात्रित–वि० (सं०) जिसे सब लोगोंके व्यवहारमें आनेवाला पात्र न दिया जाय, वर्णच्युत।

अपपाद–वि० (सं०) बुरे पैरोंवाला। **–त्र**–वि० पादत्राणहीन।

अपपूत–वि० (सं०) जिसके नितंबोंकी बनावट ठीक न हो।

अपप्रजाता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका गर्भ गिर गया हो।

अपप्रदान–पु० (सं०) उत्कोच, रिश्वत, घूस।

अपवस*–दे० 'अप' के साथ।

अपबाहुक–पु० (सं०) बाहुका रोगविशेष।

अपभय–वि० (सं०) भयरहित। पु० भय; अकारण भय; भयका न रहना।

अपभाषण–पु० (सं०) निंदा करना, गाली देना।

अपभ्रंश–पु० (सं०) नीचे गिरना, पतन; बिगाड़; शब्दका विकृत रूप; प्राकृत भाषाओंका परवर्ती रूप जिनसे उत्तर भारतकी आधुनिक आर्य-भाषाओंकी उत्पत्ति मानी जाती है। वि०

बिगड़ा हुआ ।

अपभ्रंशित–वि० (सं०) दे० 'अपभ्रष्ट' ।

अपभ्रष्ट–वि० (सं०) बिगड़ा हुआ; गिरा हुआ ।

अपमर्द–पु० (सं०) गर्द, धूल ।

अपमर्श–पु० (सं०) स्पर्श; चरनेकी क्रिया ।

अपमान–पु० (सं०) मानभंग, बेइज्जती, अनादर, तिरस्कार । **–लेख**–पु० (लाइबेल) वह लेख, वक्तव्य आदि जिसमें किसी व्यक्तिकी अप्रतिष्ठा, बदनामी या अपमान हो । **–वचन**–पु० (स्लैंडर) किसीकी बदनामी फैलानेके लिए गढ़ी हुई झूठी बात कहना या सुनाना, निंदावाणी, **अपवचन** ।

अपमानना*–स० क्रि० अपमान करना ।

अपमानित–वि० (सं०) जिसका अपमान किया गया हो, तिरस्कृत, निरादृत ।

अपमानी (निन्)–वि० (सं०) अपमान करनेवाला ।

अपमार्ग–पु० (सं०) कुमार्ग; अंगपरिमार्जन ।

अपमार्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) कुमार्गगामी, पापी ।

अपमार्जक–पु० (डेटरजेन्ट) ठोस वस्तुओंकी सतहको साफ़ करनेके लिए प्रयुक्त होनेवाला विशेष किस्मका पदार्थ जो घोलकी दशामें रहता है ।

अपमार्जन–पु० (सं०) शुद्धि, सफाई; बाल बनाना; खंड, टुकड़ा; (डिलीशन) रद्द करने, मिटा देने या निकाल देनेकी क्रिया; लोप, उच्छेद । वि० नष्ट करनेवाला; हटानेवाला ।

अपमार्जित करना–स० क्रि० (डिलीट) (किसी लेख, वाक्य, शब्द इत्यादिसे कोई अंश) निकाल देना, मिटा देना या रद्द कर देना ।

अपमिश्रण–पु० (एडुलटरेशन) घी, दूध आदिमें दूषित अथवा घटिया वस्तुकी मिलावट करना ।

अपमुख–वि० (सं०) टेढ़े मुँहवाला ।

अपमृत्यु–स्त्री० (सं०) अकाल मृत्यु, साँप काटने, विष खाने, कोई दुर्घटना हो जाने आदिसे होनेवाली मृत्यु; बहुत बड़ा खतरा या रोग (जिससे मनुष्य बच जाय) ।

अपमृषित–वि० (सं०) अस्पष्ट (वाक्यादि); असह्य ।

अपयश(स्)–पु० (सं०) अपकीर्ति, बदनामी । **–(स्) कर**–वि० अकीर्तिकर ।

अपयान–पु० (सं०) पलायन, भागना; खिसक जाना ।

अपयोग–पु० (सं०) कुयोग; कुसमय; कुचाल ।

अपयोजन–पु० (मिस्ऐप्रोप्रियेशन) दे० 'दुरुपयोजन'; 'दुर्विनियोग' ।

अपरंच–अ० (सं०) और भी; दूसरा भी; फिर ।

अपरंपार–वि० अपार, असीम ।

अपर–वि० (सं०) अन्य, दूसरा; पिछला; निकृष्ट; साधारण; दूसरेका; पश्चिमी; दूरवर्ती; जिससे बढ़कर या जिसकी बराबरी करनेवाला कोई न हो । पु० हाथीका पिछला पैर; शत्रु; भविष्यत्काल या भविष्यत्कालमें किया जानेवाला कार्य । **–काल**–पु० बादका समय । **–ज**–वि० बादमें उत्पन्न । पु० प्रलयाग्नि । **–दक्षिण**–पु० दक्षिण-पश्चिम कोण । **–दिशा**–स्त्री० पश्चिम दिशा । **–न्यायाधीश**–पु० (एडीशनल जज) अतिरिक्त या दूसरा न्यायाधीश । **–पक्ष**–पु० महीनेका दूसरा पक्ष; प्रतिपक्ष, प्रतिवादी पक्ष । **–पर**–वि० एक और दूसरा; कई । **–पुरुष**–पु० वंशज । **–प्रणेय**–वि० जो दूसरोंसे जल्द प्रभावित हो जाय । **–भाव**–पु० भिन्न होनेका भाव; भेद, अंतर । **–रात्र**–पु० रात्रिका अंतिम भाग । **–लोक**–पु० परलोक; स्वर्ग । **–वक्त्र**–पु०,**–वक्त्रा**–स्त्री० वृत्त-विशेष । **–वश**–वि० परतंत्र । **–सचिव**–पु० (एडीशनल सेक्रेटरी) सचिवका बढ़ा हुआ काम सँभालनेके लिए रखा गया अतिरिक्त सचिव ।

अपरक्त–वि० (सं०) बिना रंगका; रक्तहीन; असंतुष्ट ।

अपरछन*–वि० अप्रच्छन्न, अनावृत, जो छिपा न हो; आवृत, प्रच्छन्न, छिपा हुआ, गुप्त ।

अपरतंत्र–वि० (सं०) जो किसीके वशमें न हो, स्वतंत्र ।

अपरता–स्त्री० (सं०) भिन्नता; पृथक्त्व; वैशेषिकोक्त २४ गुणोंमेंसे एक; नैकट्य; दूरी ।

अपरति–स्त्री० (सं०) विच्छेद; असंतोष ।

अपरती*–स्त्री० दे० 'अप'में ।

अपरत्र–अ० (सं०) अन्यत्र; और कभी ।

अपरना*–स्त्री० दे० 'अपर्णा' ।

अपरबल*–वि० प्रबल; उद्धत; प्रचंड ।

अपरव–पु० (सं०) झगड़ा, विवाद (संपत्ति-संबंधी) ।

अपरस–पु० एक चर्मरोग । * वि० अस्पृश्य; अलिप्त, अनासक्त, दूर–'अपरस रहत सनेह तगातें नाहिन मन अनुरागी'–सूर; नीरस।

अपरस्पर–वि० (सं०) अव्यवहित, अविच्छिन्न (कार्य); जो परस्पर या आपसका न हो ।

अपरांग–पु० (सं०) गुणीभूत व्यंग्यका एक भेद (सा०) ।

अपरांत–पु० (सं०) पश्चिमी सीमांत; पश्चिमी सीमांतका देश या निवासी ।

अपरांतक–पु० (सं०) दे० 'अपरांत'; एक गीत । वि० पश्चिमी सीमांतका रहनेवाला ।

अपरांतिका–स्त्री० (सं०) वैताली छंदका एक भेद ।

अपरा–स्त्री० (सं०) अध्यात्म-विद्याको छोड़कर शेष संपूर्ण विद्या; लौकिक विद्या, वेद-वेदांगादि; पश्चिम दिशा; पुरइन, खेड़ी । वि० स्त्री० दूसरी ।

अपराग–पु० (सं०) असंतोष; शत्रुता ।

अपराग्नि–स्त्री० (सं०) दक्षिण और गार्हपत्य अग्नि; चिताकी आग ।

अपराजित–वि० (सं०) जो जीता न गया हो । पु० विष्णु; शिव, ११ रुद्रोंमेंसे एक; एक विषैला कीड़ा ।

अपराजिता–स्त्री० (सं०) दुर्गा, शेफालिका, जयंती, विष्णुक्रांता, शंखिनी आदि पौधे; अयोध्या नगरी; एक वर्णवृत्त; उत्तर-पूर्व विदिशा; एक योगिनी ।

अपराजेय–वि० (सं०) जो जीता न जा सके ।

अपराद्ध–वि० (सं०) जिसने अपराध किया हो; जो निशाना चूक गया हो; दोषी, गलती करनेवाला; अतिक्रांत; उल्लंघित । पु० अपराध; बुराई । **अपराद्ध नरहत्या**–स्त्री० (कल्पेबिल होमिसाइड) ऐसी नरहत्या जो अपराध मानी जाय तथा जिसके लिए दंडकी व्यवस्था हो; **सदोष मानववध** ।

अपराद्धि–स्त्री० (सं०) भूल, दोष; अपराध; पाप ।

अपराध–पु० (सं०) दोष; दंड योग्य कर्म; जुर्म; गलती; पाप । **–निरोध**–पु० अपराधोंकी रोकथाम । **–भंजन**–पु० अपराधों या पापोंका नाश करनेवाला; शिव । **–लेखा**–पु०(हिस्ट्री शीट) दे० 'वृत्तफलक' । **–विज्ञान**–पु० (क्रिमिनॉलॉजी) वह विज्ञान जिसमें अपराध करनेके प्रेरक कारणों तथा निवारक उपायोंका विवेचन हो । **–शील**–वि० (क्रिमिनल) जो अपराधोंकी ओर प्रवृत्त हो, जो अपराध करते रहनेका आदी हो (जैसे–अपराधशील जन-जातियाँ) । **–स्वीकरण**–पु० (कन्फेशन) पुरोहित इत्यादिके सामने अपना अपराध या पाप स्वयं स्वीकार करना; वह कथन जिसमें अपना अपराध स्वीकार किया गया हो ।

अपराधी(धिन्)–वि० (सं०) अपराध करनेवाला; दोषी । **–(धि) साक्षी(क्षिन्)**–पु० इकबाली गवाह ।

अपरापरण–वि० (सं०) निःसंतान ।

अपरार्द्ध–पु० (सं०) उत्तरार्द्ध ।

अपरावर्तनीय–वि० (नॉन-ट्रांसफरेबल) दे० 'अहस्तांतरणीय' ।

अपराह्ण–पु० (सं०) दोपहरके बादका काल, तीसरा पहर ।

अपराह्णतन–वि० (सं०) अपराह्ण-संबंधी या इस कालमें उत्पन्न ।

अपराह्णेतन–वि० (सं०) दे० 'अपराह्णतन' ।

अपराह्न–पु० दे० 'अपराह्ण' ।

अपरिकलित–वि० (सं०) अज्ञात; अदृष्ट ।

अपरिक्रम–वि० (सं०) चलनेमें असमर्थ; परिश्रम न करनेवाला ।

अपरिक्लिन्न–वि० (सं०) आर्द्र या तरल नहीं, सूखा ।

अपरिगण्य–वि० (सं०) अनगिनत, बेशुमार ।

अपरिगत–वि० (सं०) अज्ञात; अप्राप्त ।

अपरिगृहीत–वि० (सं०) स्वीकार न किया हुआ; त्यक्त ।

अपरिगृहीतागमन–पु० (सं०) एक तरहका अतिचार (जै०) ।

अपरिग्रह–पु० (सं०) किसीसे कुछ न ग्रहण करना; त्याग; दानका अस्वीकार; शरीरयात्राके लिए जितना आवश्यक हो उससे अधिक पैसा, अन्न आदि न लेना; निर्धनता; योगदर्शनोक्त यमोंमेंसे एक। वि० परिग्रह न करनेवाला; संपत्ति, दास आदिसे रहित, अकिंचन।

अपरिग्राह्य–वि० (सं०) जो लेने या स्वीकार करने योग्य न हो।

अपरिचय–पु० (सं०) परिचयका अभाव, जान-पहचान न होना।

अपरिचयी(यिन्), अपरिचेय–वि० (सं०) जिसकी जान-पहचान ज्यादा न हो; जो मिलनसार न हो।

अपरिचित–वि० (सं०) अज्ञात; अनभिज्ञ; परिचयहीन; अजनवी।

अपरिच्छद–वि० (सं०) वस्त्रहीन; फटेहाल, गरीव।

अपरिच्छन्न, अपरिच्छादित–वि० (सं०) आवरणरहित, जो ढका न हो, नंगा; सर्वव्यापक।

अपरिच्छिन्न–वि० (सं०) अंतररहित; सीमारहित; विभागरहित।

अपरिच्छेद–पु० (सं०) विभाग, विलगाव या सीमाका अभाव; क्रम या व्यवस्थाका अभाव; नैरंतर्य; विचार या विवेकका अभाव।

अपरिणत–वि० (सं०) अनपका, कच्चा; अपरिवर्तित, ज्योंका त्यों।

अपरिणय, अपरिणयन–पु० (सं०) चिरकौमार्य, ब्रह्मचर्य।

अपरिणाम–पु० (सं०) विकारराहित्य। **–दर्शी(र्शिन्)** –वि० अदूरदर्शी।

अपरिणामी(मिन्)–वि० (सं०) जो वदले नहीं, निर्विकार, एकरस।

अपरिणीत–वि० (सं०) अविवाहित, क्वाँरा। (स्त्री० 'अपरिणीता'।)

अपरिपक्व–वि० (सं०) पक्का नहीं, कच्चा, अधकचरा।

अपरिपणित संधि–स्त्री० (सं०) केवल धोखेमें रखनेके लिए की जानेवाली एक प्रकारकी कपटसंधि।

अपरिमाण–वि० (सं०) दे० 'अपरिमित'।

अपरिमित–वि० (सं०) वे-हद; वे-हिसाव; अत्यधिक।

अपरिमेय–वि० (सं०) जिसकी तौल-माप न हो सके, वे-अंदाज; अनगिनत।

अपरिम्लान–वि० (सं०) न मुरझानेवाला; जिसका क्षय न हो। पु० महासहा वृक्ष।

अपरिवर्तनीय–वि० (सं०) न वदलनेवाला; अटल; अवश्यंभावी; जो वदलेमें न दिया जा सके।

अपरिवर्तित–वि० (सं०) जिसमें कोई परिवर्तन, हेर-फेर न हुआ हो; अविकृत।

अपरिवाद्य–वि० (सं०) जो भर्त्सनाके योग्य न हो।

अपरिवृत–वि० (सं०) जो चारों ओरसे घिरा न हो (खेत); अपरिच्छन्न।

अपरिशेष–वि० (सं०) कुछ शेष न रहने देनेवाला; व्यापक। पु० सीमा या शेषका अभाव।

अपरिष्कार–पु० (सं०) भद्दापन; संस्कारका अभाव; मैलापन; उच्छृंखलता।

अपरिष्कृत–वि० (सं०) जो माँजा-धोया न गया हो; मैला; भद्दा; असंस्कृत।

अपरिसर–वि० (सं०) निकट नहीं, दूर; अप्रशस्त। पु० विस्ताराभाव।

अपरिस्कंद–वि० (सं०) गतिहीन।

अपरिहरणीय–वि० (सं०) दे० 'अपरिहार्य'।

अपरिहार–पु० (सं०) अनिवारण; दूरीकरणके उपायका अभाव।

अपरिहारित–वि० (सं०) जिसका निवारण न किया गया हो; जो दूर न किया गया हो।

अपरिहार्य–वि० (सं०) जिसका परिहार न हो सके, अनिवार्य; अवश्यंभावी; अत्याज्य।

अपरीक्षित–वि० (सं०) जिसकी परीक्षा न हुई हो; न आजमाया हुआ; मूर्खतापूर्ण, विचारशून्य; अप्रमाणित।

अपरुष–वि० (सं०) क्रोधरहित; अकठोर, मृदुल।

अपरूप–वि० (सं०) कुरूप, भद्दा; अपूर्व (वँ०)। पु० भद्दापन, कुरूपता।

अपरूपता–स्त्री० (एलोट्रॉपी) जब एक ही तत्त्वके दो या अधिक रूप इस प्रकार के पाये जाते हैं कि उनके भौतिक गुण भिन्न हों किन्तु रासायनिक गुणोंमें कोई अन्तर न हो, तव ये एक दूसरेके अपरूप (एलोट्रोप) कहलाते हैं तथा इस विशेषताको अपरूपता कहते हैं। जैसे कार्वन तत्त्वके अपरूप हैं लकड़ीका कोयला (चारकोल) तथा हीरा। इनके भौतिक गुणोंमें अत्यधिक अन्तर है किन्तु दोनों ही, वायुमें प्रज्वलनके उपरान्त, कार्वन-डाई-आक्साइडका निर्माण करते हैं।

अपरोक्ष–वि० (सं०) जो परोक्ष न हो, प्रत्यक्ष, इंद्रियगोचर; जो दूर न हो।

अपरोक्षानुभूति–स्त्री० (सं०) प्रत्यक्षज्ञान; वेदांतका एक प्रकरण।

अपरोध–पु० (सं०) वर्जन, निषेध।

अपरोप–पु० (सं०) उन्मूलन, विध्वंस; राज्यच्युति।

अपर्ण–वि० (सं०) पत्ररहित।

अपर्णा–स्त्री० (सं०) पार्वती (शिवकी प्राप्तिके निमित्त तप करते समय पहले तो पत्ते खाती रहीं, किंतु आगे चलकर उन्होंने पत्ते खाना भी छोड़ दिया, इसीसे अपर्णा नाम पड़ गया), दुर्गा।

अपर्तु–वि० (सं०) असामयिक, वे-मौसिम; जिसके मासिक स्रावका समय वीत गया हो, निवृत्तरजस्का (स्त्री)।

अपर्यंत–वि० (सं०) असीम, अपरिमित।

अपर्याप्त–वि० (सं०) नाकाफी; अधूरा; असीम; अयोग्य।

अपर्याय–वि० (सं०) क्रमहीन। पु० क्रमहीनता।

अपर्व(न्) –पु० (सं०) वह दिन जो पर्ववाला न हो। **–दंड**–पु० एक ईख।

अपर्वक–वि० (सं०) संधिहीन।

अपर्वा(र्वन्) –वि० (सं०) संधिरहित।

अपल–अ० अपलक। वि० (सं०) पलशून्य, मांसरहित। पु० किल्ली, अर्गल।

अपलक–अ० एकटक, निर्निमेष।

अपलक्षण–पु० (सं०) कुलक्षण; अव्याप्ति अथवा अतिव्याप्ति-दोषयुक्त लक्षण।

अपलाप–पु० (सं०) छिपाना; (दोषादिसे) इनकार करना; सत्यका गोपन; कंधे और पसलियोंके बीचका भाग; प्यार; सम्मान; वे-मतलबकी वकवास।

अपलापी(पिन्) –वि० (सं०) अपलाप करनेवाला।

अपलाभ–पु० (प्रोफिटियरिंग) जनताकी या सरकारकी विपत्तिसे अनुचित लाभ उठानेकी चेष्टा, **मुनाफाखोरी**।

अपलाषिका–स्त्री० (सं०) अत्यधिक तृष्णा या लालसा।

अपलाषी(षिन्), अपलाषुक–वि० (सं०) प्यासा; जिसे तृष्णा या लालसा न हो।

अपलेखन–पु० (राइटिंग आफ) ऋण या पावनेकी रकम वसूल होनेकी आशा न रह जानेपर उसे रद्द कर देना, **बट्टेखाते डाल देना**।

अपलोक*–पु० अपवाद; बदनामी।

अपवचन–पु० (सं०) निंदा, अपशब्द; दे० 'अपमानवचन'।

अपवन–वि० (सं०) वायुरहित; वायुसे सुरक्षित। पु० कुंज, उद्यान, उपवन।

अपवरक–पु०, **अपवरका**–स्त्री० (सं०) शयनागार, अंतःपुर; वातायन।

अपवरण–पु० (सं०) आवरण; पोशाक।

अपवर्ग–पु० (सं०) मोक्ष, निर्वाण; त्याग, दान; विशेष नियम, अपवाद; (वाण) छोड़ना।

अपवर्जन–पु० (सं०) त्याग; दान; चुकाना (ऋण आदि); वचनपालन; अपवर्ग।

अपवर्जित–वि० (सं०) त्याग किया हुआ; दिया हुआ।

अपवर्त–पु० (सं०) पृथक् करना; हटाना; सामान्य विभाजक (गणित)।

अपवर्तक–वि० (सं०) सामान्य विभाजक।

अपवर्तन–पु० (सं०) परिवर्तन; हटाना, स्थानांतरण; निःशेष भाग; विभाजक; (रीफ्रैक्शन) प्रकाशकी किरण जब एक माध्यम-से दूसरे माध्यममें तिर्यक् प्रवेश करती है तो विभाजक तलपर

यह अपनी पूर्व दिशासे थोड़ी मुड़ जाती है। किरणका इस प्रकार मुड़ना अपवर्तन है।

अपवर्तित–वि० (सं०) परिवर्तित; हटाया हुआ, पृथक् किया हुआ; सामान्य विभाजकसे निःशेष विभक्त किया हुआ।

अपवर्त्य–वि० (सं०) जिसका सामान्य विभाजकसे निःशेष विभाग किया जा सके।

अपवहित–वि० (सं०) हटाया हुआ, स्थानांतरित।

अपवाद–पु० (सं०) निंदा, बदनामी; लांछन; सामान्य नियमको बाधित या मर्यादित करनेवाला विशेष उदाहरण या नियम, इस्तिसना; खंडन, प्रतिवाद; भ्रांत धारणाका निराकरण; आदेश; विश्वास; प्रेम; हिरन आदि जानवरोंको फँसानेके लिए शिकारियों द्वारा की जानेवाली विशेष प्रकारकी ध्वनि।

अपवादक, अपवादी(दिन्)–वि० (सं०) निंदा, बदनामी, खंडन आदि करनेवाला; बाधक।

अपवारक–पु० (सं०) आवरण; घिरी हुई या परदेदार जगह।

अपवारण–पु० (सं०) छिपना; ढकना; गायब हो जाना; व्यवधान; व्यवधानकारक वस्तु।

अपवारित–वि० (सं०) छिपा हुआ, अंतर्हित।

अपवाह, अपवाहन–पु० (सं०) स्थानांतरित करना; घटाना; एक वृत्त।

अपवाहक–वि० (सं०) ढोने या ले जानेवाला। पु० किसी वस्तुको एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेका साधन या यंत्र।

अपवाहन–पु० (सं०) (मिसकैरिज) चिट्ठी, तार या अन्य वस्तुको गलत स्थानपर पहुँचाना या ले जाना।

अपवाहित–वि० (सं०) दे० 'अपवहित'; (मिसकैरिड) जो उचित स्थानपर न ले जाया जाकर इधर-उधर पहुँचा दिया गया हो।

अपविंदुता–स्त्री० (डाइवर्जेंस) दूसरी ओर चला जाना; किसी विंदुसे अलग हटने या जानेकी क्रिया।

अपविघ्न–वि० (सं०) अबाधित।

अपवित्र–वि० (सं०) अशुद्ध, नापाक; मैला।

अपविद्ध–वि० (सं०) छोड़ा हुआ; बेधा हुआ; नीच, कमीना। **–पुत्र**–पु० बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक, वह पुत्र जो माता-पिता द्वारा त्यक्त होनेपर अन्य द्वारा पालित हो। **–लोक**–वि० जो इस संसारको छोड़ चुका है, मृत।

अपविद्या–स्त्री० (सं०) आध्यात्मिक अज्ञान, अविद्या।

अपविष–वि० (सं०) विषशून्य।

अपविषा–स्त्री० (सं०) निर्विषी नामक पौधा।

अपवीण–वि० (सं०) खराब बीनवाला।

अपवृक्त—वि० (सं०) समाप्त किया हुआ।

अपवृति–स्त्री० (सं०) सूराख, छिद्र, रंध्र।

अपवृत्त–वि० (सं०) घुमाया या उलटा हुआ; क्षुब्ध किया हुआ; समाप्त किया हुआ; औंधा।

अपवृत्ति–स्त्री० (सं०) अंत, समाप्ति।

अपवेध–पु० (सं०) गलत जगह या बुरे तरीकेसे (मोती इत्यादिमें) छेद करना।

अपवोढा(ढृ)–वि० (सं०) ढोने या हटानेवाला।

अपव्यय–पु० (सं०) अनुचित व्यय, फिजूलखर्ची।

अपव्ययी(यिन्)–वि० (सं०) व्यर्थ या अनुचित व्यय करनेवाला, फिजूलखर्च, उड़ाऊ।

अपव्रत–वि० (सं०) शास्त्रविहित कर्म न करनेवाला; व्रतत्यागी। पु० हीन व्रत।

अपशंक–वि० (सं०) निःशंक, निर्भीक।

अपशकुन–पु० (सं०) असगुन, अनिष्ट-सूचक शकुन।

अपशद–पु० (सं०) दे० 'अपसद'।

अपशब्द–पु० (सं०) अशुद्ध, असाधु शब्द; बिगड़ा हुआ शब्द; ग्राम्य शब्द; दुर्वचन; गाली-गलौज; निंदित शब्द; अपान वायुका त्याग, गोज।

अपशम–पु० (सं०) विराम, निवृत्ति।

अपशु–वि० (सं०) पशुरहित; निर्धन। पु० पशु नहीं; बुरा पशु; गाय या घोड़ेसे भिन्न पशु।

अपशुक्(च्)–पु० (सं०) आत्मा। वि० शोकरहित।

अपशोक–वि० (सं०) शोकरहित। पु० अशोक वृक्ष।

अपश्चिम–वि० (सं०) अंतिम, जिसके पीछे कोई न हो; अंतिम नहीं, पहला; चरम।

अपश्रय–पु० (सं०) तकिया।

अपश्री–वि० (सं०) श्रीहीन।

अपश्रुति–स्त्री० (सं०) एक ही धातुसे बने शब्दोंमें स्वरोंके इधर उधर हो जानेसे दिखाई देनेवाली भिन्नता, जैसे काट और कटाव।

अपश्वास–पु० (सं०) अपान वायु।

अपष्ठ–पु० (सं०) अंकुशकी नोक।

अपष्ठु–वि० (सं०) उलटा, विपरीत; वाम; शोभन। पु० समय। अ० अच्छे ढंगसे; विपरीत रूपमें।

अपष्ठुर, अपष्ठुल–वि० (सं०) उलटा, विपरीत।

अपसंग्रह, अपसंचय–पु० (होर्डिंग) बादमें अधिक दाम प्राप्त करनेकी गरजसे बड़ी संख्या या परिमाणमें वस्तुओंका संग्रह करना।

अपसगुन–पु० दे० 'अपशकुन'।

अपसद–पु० (सं०) अनुलोम विवाहसे उत्पन्न संतान। वि० नीच।

अपसना, अपसवना*–अ० क्रि० भागना; चुपकेसे चल देना–'पौन बाँधि अपसवहि अकासा'–प०।

अपसर–पु० (सं०) प्रस्थान; पलायन; उचित कारण; दूरी (व्या०)।

अपसरण–पु० (सं०) हट जाना; पीछे हटना; भागना; निकल भागनेका रास्ता।

अपसर्जन–पु० (सं०) त्याग; दान; मोक्ष।

अपसर्प, अपसर्पक–पु० (सं०) भेदिया, जासूस।

अपसर्पण–पु० (सं०) लौटना; पीछे हटना; जासूसी करना।

अपसर्पित–वि० (सं०) गया हुआ।

अपसव्य–वि० (सं०) सव्य(बायाँ)का उलटा, दाहिना; उलटा; जिसका यज्ञोपवीत दाहिने कंधेपर हो। **मु० –करना**–दाहिनी ओर रखते हुए किसीकी परिक्रमा करना। **–होना**–जनेऊ-गमछा बायेंसे दाहिने कंधेपर रखना।

अपसामान्य–वि० (ऐबनारमल) जो सामान्यके अपवाद स्वरूप या विपरीत हो।

अपसार–पु० जलकण; भाप। (सं०) दे० 'अपसरण'।

अपसारण–पु० (सं०) दूर ले जाना; बाहर कर देना; फेंक देना; –पु० (इक्सपलशन) किसी स्थान, संस्था आदिसे बलपूर्वक या नियमभंग आदिके कारण हटा दिया जाना; **निष्कासन**, निकाल देना।

अपसारित–वि० (सं०) हटाया हुआ; दूर किया हुआ।

अपसिद्धांत–पु० (सं०) गलत या भ्रमयुक्त निर्णय; एक निग्रहस्थान (न्या०); विरुद्ध सिद्धांत (जै०)।

अपसृत–पु० (सं०) गया हुआ; भागा हुआ; च्युत; फैलाया हुआ; फेंका हुआ; युद्धसे भागा हुआ (कौ०)।

अपसृति–स्त्री० (सं०) दे० 'अपसरण'।

अपसोस*–पु० दे० 'अफ़सोस'।

अपसोसना*–अ० क्रि० अफ़सोस करना।

अपसौन*–पु० अपशकुन।

अपसौना†–अ० क्रि० जाना; पहुँचना; प्राप्त होना।

अपस्कर–पु० (सं०) गाड़ीका कोई हिस्सा, पहिया आदि; मल, विष्ठा; योनि; गुदा।

अपस्कार–पु० (सं०) घुटनेके नीचेका भाग।

अपस्तंब, अपस्तंभ–पु० (सं०) सीनेके पासका वह अंग जिसमें प्राणवायु रहती है।

अपस्तुति–स्त्री० (सं०) अनुचित प्रशंसा, निंदा।

अपस्नान–पु० (सं०) कुटुंबी या संबंधीके मरनेपर किया जानेवाला स्नान, मृतकस्नान। (वि० 'अपस्नात'।)

अपस्पर्श–वि० (सं०) संज्ञाशून्य।

अपस्फीति–स्त्री० (डीपलेशन) मुद्राके बाहुल्य या विस्तारमें कमी हो जाना या कमी करना; अवस्फीति।

अपस्मार–पु० (सं०) मृगी रोग; वियोगमें काँपकर या मूर्च्छित

होकर गिर पड़ना (एक संचारी भाव); स्मरणशक्तिकी हानि।

अपस्मारी(रिन्)–वि० (सं०) अपस्मार रोगवाला।

अपस्मृति–वि० (सं०) विस्मरणशील; घबड़ाया हुआ।

अपस्वर–पु० (सं०) बुरा या गलत स्वर (संगीत)।

अपह–वि० (सं०) निवारण या नाश करनेवाला (समासांतमें–क्लेशापह)।

अपहत–वि० (सं०) नष्ट या दूर किया हुआ; मारा हुआ। **–पाप्मा(मन्)** –वि० पापमुक्त।

अपहरण–पु० (सं०) छीन लेना; उठा ले जाना; चुराना; लूट लेना; छिपाना, गायब करना; महसूली मालको दूसरी चीजोंमें छिपाकर महसूल बचाना (कौ०)। स्त्री० (किडनैपिंग) रुपया ऐंठने, स्वार्थ सिद्ध करने आदिके उद्देश्यसे किसी बालक-बालिका या धनी व्यक्ति आदिको बलपूर्वक उठाकर ले जाना या गायब कर देना, हरण; (ऐब्डक्शन) दे० 'अपनयन'।

अपहरना*–स० क्रि० अपहरण करना।

अपहर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) अपहरण करनेवाला।

अपहसित–पु० (सं०) अकारण हँसी। वि० जिसकी खिल्ली उड़ायी गयी हो।

अपहस्त–पु० (सं०) गलहस्त; इस प्रकार हटाया जानेवाला आदमी; फेंकना; ले जाना; चुराना; लूटना।

अपहस्तित–वि० (सं०) फेंका हुआ; परित्यक्त।

अपहान–पु०, **अपहानि**–स्त्री० (सं०) परित्याग; कम होना; गायब होना।

अपहार–पु० (सं०) अपहरण; दूसरेकी संपत्तिका दुरुपयोग; हानि, क्षति।

अपहार–पु० (एंबेजिलमेंट) किसी दूसरेका माल या धन अनुचित रूपसे अपने अधिकारमें कर उसे अपने काममें लाना; ग़बन।

अपहारक–वि० (सं०) अपहरण करनेवाला। पु० चोर, डाकू।

अपहारित–वि० (सं०) छीना हुआ, लूटा हुआ; छिपाया हुआ।

अपहारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'अपहारक'।

अपहार्य–वि० (सं०) छीनने या चुराने योग्य।

अपहास–पु० (सं०) अकारण या बे-मौका हँसी; उपहास, चिढ़ाना।

अपहृत–वि० (सं०) अपहरण किया हुआ, छीना या चुराया हुआ। **–ज्ञान**–वि० बे-सुध, जिसके होश गायब हो गये हों।

अपहेला–स्त्री० (सं०) तिरस्कार, भर्त्सना।

अपह्नव–पु० (सं०) छिपाना, वस्तुस्थितिका गोपन; बात बनाना; सत्यका अपलाप; तुष्टीकरण; प्रेम। (वि० 'अपह्नुत'।)

अपह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नव; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें उपमेयका निषेध कर उपमानकी स्थापना की जाती है।

अपह्नोता(तृ)–वि० (सं०) इनकार करनेवाला, छिपानेवाला।

अपांक्त, अपांक्तेय, अपांक्त्य–वि० (सं०) पंक्तिमें बैठने–साथ भोजन करनेका अनधिकारी (ब्राह्मण), जाति-बहिष्कृत।

अपांग–वि० (सं०) अंगहीन; अशरीरी; पंगु। पु० संप्रदाय-सूचक तिलक; आँखकी कोर; कामदेव; अपामार्ग। **–दर्शन**–पु०,**–दृष्टि**–स्त्री० तिरछी चितवन।

अपांगक–वि०, पु० (सं०) दे० 'अपांग'।

अपांनाथ, अपांपति–पु० (सं०) समुद्र; वरुण।

अपांनिधि–पु० (सं०) समुद्र।

अपांपित्त–पु० (सं०) अग्नि; एक पौधा।

अपांशुला–स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री।

अपा*–स्त्री० दे० 'आपा'।

अपाउ–पु० दे० 'अपाय'।

अपाक–वि० (सं०) अनपका। पु० अपच; कच्चापन। **–ज**–वि० जो पक या पकाकर तैयार न हो; प्राकृतिक। **–शाक**–पु० अदरक।

अपाकरण–पु०, **अपाकृति**–स्त्री० (सं०) दूर करना, निराकरण; अस्वीकृति; (ऋणादि) चुकता करना। वि० 'अपाकृत'।

अपाकर्म(न्)–पु० (सं०) चुकाना, अदायगी।

अपाक्ष–वि० (सं०) उपस्थित, प्रत्यक्ष; नेत्रहीन; बुरी आँखोंवाला।

अपाची–स्त्री० (सं०) दक्षिण। (वि० 'अपाचीन', 'अपाच्य'।)

अपाच्य–वि० (सं०) जो पकाया न जा सके; जो पच न सके; दक्षिणी।

अपाटव–पु० (सं०) अपटुता, अनाड़ीपन; भद्दापन; रोग, अस्वस्थता। वि० अकुशल, अनाड़ी; रोगी; भद्दा।

अपाठ्य–वि० (सं०) जो पढ़ा न जा सके; जो पढ़ने लायक न हो।

अपात्र–वि० (सं०) अयोग्य, मूर्ख; अनधिकारी; दान, श्राद्ध आदिमें निमंत्रणका अनधिकारी (ब्राह्मण)। पु० निकम्मा बरतन; अयोग्य व्यक्ति; दान आदि पानेका अनधिकारी ब्राह्मण। **–कृत्या**–स्त्री० वह कर्म जो ब्राह्मणको अपात्र बना दे। **–दायी(यिन्)**–वि० अपात्रको दान देनेवाला। **–भृत्**–वि० अयोग्यका समर्थन करनेवाला।

अपाद–वि० बिना पैरोंका, पंगु।

अपादक–वि० (सं०) पदहीन।

अपादान–पु० (सं०) हटाना, दूर करना; बिलगाव; व्याकरणमें पाँचवाँ कारक (जहाँसे कोई चीज हटायी जाय या जिसमेंसे निकाली जाय, उसके लिए प्रयुक्त, जैसे पौधेसे फूल तोड़ो, लोटेसे जल ले आओ)।

अपान*–पु० आत्मज्ञान; आत्मगौरव; होश-हवास; अहंकार। सर्व० अपना। पु० (सं०) पाँच प्राणोंमेंसे एक; भीतरको खींची जानेवाली साँस; गुदा-मार्गसे बाहर निकलनेवाली हवा; गुदा। वि० दुःखहर्ता, ईश्वरका एक विशेषण। **–द्वार**–पु० गुदा। **–पवन**–पु०,**–वायु**–स्त्री० गुदा मार्गसे निकलनेवाली वायु, गोज़।

अपानन–पु० (सं०) साँस लेना; मूत्र-त्याग, स्राव।

अपानृत–वि० (वं०) मिथ्यासे रहित, सत्य।

अपाप–वि० (सं०) पापरहित, निर्दोष। पु० पुण्य।

अपामार्ग–पु० (सं०) एक बूटी, चिचड़ा।

अपामार्जन–पु० (सं०) सफाई, शुद्धि; दूर करना (रोगादि)।

अपामृत्यु–स्त्री० (सं०) दे० 'अपमृत्यु'।

अपाय–वि० बिना पैरका; निरुपाय। पु० (सं०) जाना; बिलगाव; लोप; नाश; किसीके प्रति किया जानेवाला हानिकर कार्य; हानि; अंत; बुराई; खतरा; विपत्ति; * उपद्रव।

अपायी(यिन्)–वि० (सं०) जानेवाला; नाशमान; हानिकर।

अपार–वि० (सं०) जिसका पार न हो; असीम, असंख्य; अत्यधिक; पहुँचके बाहर; जिसे पार या पराभूत करना कठिन हो। पु० एक तरहका मानसिक संतोष जो अपमानादिसे बचनेपर हो, तटस्थता; असहमति; नदीका दूसरा तट; असीम सागर।

अपारदर्शक, अपारदर्शी–वि० (सं०) (ओपेक) जिसमेंसे होकर प्रकाशकी किरणें गुज़र न सकें; जिसके उस पार न दिखाई दे; पारांध।

अपारदर्शिता–स्त्री० (ओपेसिटी) आरपार न देखे जा सकनेका गुण, अपारदर्शी होनेका भाव या गुण, पारांधता।

अपारक–वि० (सं०) अशक्त, अयोग्य।

अपारा–स्त्री० (सं०) धरती, पृथ्वी।

अपार्ण–वि० (सं०) निकटवर्ती; दूरवर्ती।

अपार्थ–वि० (सं०) अर्थहीन, निष्प्रयोजन; गलत अर्थवाला। पु० निरर्थक या असंगत बात कहना या वैसी युक्ति देना (न्या०)। **–करण**–पु० दावेमें झूठी दलील पेश करना।

अपार्थक–वि० (सं०) निकम्मा, निरर्थक।

अपार्थिव–वि० (सं०) जो पृथ्वी या मिट्टी-संबंधी न हो या उससे उत्पन्न न हुआ हो।

अपालंक–पु० (सं०) एक पौधा या साग।

अपाल–वि० (सं०) अरक्षित।

अपाव*–पु० बुराई, अन्याय, 'अपाय'।

अपावन–वि० (सं०) अपवित्र; मैला, गंदा।

अपावरण–पु०, **अपावृति**–स्त्री० (सं०) खोलना, उद्घाटन; ढकना; छिपाना; घेरना।

अपावर्त्तन–पु०, **अपावृत्ति**–स्त्री० (सं०) लौटना; पीछे हटना; अस्वीकृति; घूमना, चक्कर देना।

अपावृत–वि० (सं०) खुला हुआ; ढका या छिपाया हुआ; घेरा

हुआ; स्वतंत्र, अनियंत्रित ।

अपावृत्त–वि० (सं०) लौटाया या पीछे हटाया हुआ; तिरस्कार-पूर्वक अस्वीकार करनेवाला । पु० लोटना (घोड़ेका) ।

अपाश्रय–पु० (सं०) आश्रय; चँदोवा; सिरहाना । वि० आश्रयहीन ।

अपाश्रित–वि० (सं०) अधिवसित; आवद्ध; अवलंबित, अवस्थित; विरक्त; त्यागी, संन्यस्त ।

अपासंग–पु० (सं०) तूणीर ।

अपासन–पु० (सं०) फेंकना; अलग करना; वध करना । (वि० 'अपासित', 'अपास्त' ।)

अपासरण–पु० (सं०) अपसरण, गमंन; पलायन । (वि० 'अपासृत' ।)

अपासु–वि० (सं०) निर्जीव, मृत ।

अपाहज, अपाहिज–पु० अपंग; निकम्मा; आलसी; अकर्मण्य ।

अपिंडी(डिन्)–वि० (सं०) पिंडरहित, अशरीरी ।

अपि–अ० (सं०) और, भी; अगरचे । **–च**–अ० और भी, बल्कि । **–तु**–अ० किंतु ।

अपिगीर्ण–वि० (सं०) वर्णित, कथित ।

अपिच्छिल–वि० (सं०) जिसमें फिसलन न हो, अपंकिल; गहरा ।

अपिज–वि० (सं०) फिर जनमा हुआ । पु० ज्येष्ठ मास ।

अपितृक–वि० (सं०) पितृहीन; अपैतृक ।

अपित्र्य–वि० (सं०) अपैतृक ।

अपिधान–पु० (सं०) ढकना; छिपाना; ढक्कन; आच्छादन, आवरण ।

अपिनद्ध–वि० (सं०) ढका हुआ; बँधा हुआ ।

अपिव्रत–वि० (सं०) धार्मिक कृत्यका सहभागी; रक्त द्वारा संबद्ध ।

अपिहित–वि० (सं०) ढका, छिपाया हुआ; जो छिपा या ढका न हो, स्पष्ट ।

अपीच*–वि० दे० 'अपीच्य' ।

अपीच्य–वि० (सं०) अति सुंदर; गुप्त, छिपा हुआ ।

अपीडन–पु० (सं०) पीड़ा न देना; दया, अनुकंपा ।

अपीत–वि० (सं०) जिसने मद्यपान नहीं किया है; जो पीला नहीं है । पु० पीतसे भिन्न वर्ण ।

अपीति–स्त्री० (सं०) प्रवेश; नाश; हानि; प्रलय ।

अपीनस–पु० (सं०) नाककी शुष्कता; घ्राणशक्तिकी हानि; जुकाम ।

अपील–स्त्री० (अं०) साग्रह प्रार्थना; चंदे आदिके लिए सार्वजनिक प्रार्थना; किसी अदालतका फैसला बदलवानेके लिए उससे ऊपरकी अदालतमें दरख्वास्त देना, पुनर्विचारकी प्रार्थना । **–अदालत**–स्त्री० अपील सुननेकी अधिकारिणी या मातहत अदालतोंके फैसल किये हुए मुकदमे सुननेवाली अदालत ।

अपीलांट–पु० (अं०) अपील करनेवाला ।

अपीली–वि० अपील संबंधी ।

अपु*–अ० आप; –में आपसमें ।

अपुच्छ–वि० (सं०) विना पूँछका, पुच्छविहीन ।

अपुच्छा–स्त्री० (सं०) शीशमका पेड़ ।

अपुण्य–वि० (सं०) अधार्मिक; अपविद्ध; बुरा । पु० पुण्यका अभाव ।

अपुत्र, अपुत्रक, अपुत्रीय–वि० (सं०) पुत्रहीन, निपूता ।

अपुत्रिक–पु० (सं०) ऐसी लड़कीका पिता जो अपुत्र होनेके कारण उत्तराधिकारिणी न वनायी जा सके ।

अपुत्रिका–स्त्री० (सं०) पुत्रहीन पिताकी ऐसी कन्या जिसे पुत्र न हो ।

अपुनपो, अपुनपौ–पु० दे० 'अपनपौ' ।

अपुनरावर्तन–पु० (सं०) फिर न लौटना; मोक्ष ।

अपुनरावृत्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'अपुनरावर्तन' ।

अपुनर्भव–पु० (सं०) पुनः जन्म न लेना, मोक्ष ।

अपुनीत–वि० (सं०) अपवित्र, दूषित ।

अपुब्ब*–वि० अपूर्व ।

अपुराण–वि० (सं०) पुराना नहीं, नया ।

अपुरुष–वि० (सं०) अमानुषिक, अमानवोचित । पु० हिजड़ा ।

अपुष्कल–वि० (सं०) अधिक नहीं; नीच, कमीना ।

अपुष्ट–वि० (सं०) जिसका पोषण या बाढ़ ठीक तरहसे न हुई हो; कमजोर; मंद (स्वर); (कथन इ०) जिसकी पुष्टि न हुई हो; एक अर्थदोष ।

अपुष्प–वि० (सं०) पुष्पहीन, जो न फूले । पु० गूलरका पेड़ । **–फल,–फलद**–वि० विना फूले फल देनेवाला । पु० कटहल; गूलर ।

अपूजक–वि० (सं०) अधार्मिक; अभक्त, भक्तिहीन ।

अपूजा–स्त्री० (सं०) अनादर, अभक्ति ।

अपूजित–वि० (सं०) जिसकी पूजा या सम्मान न किया गया हो ।

अपूज्य–वि० (सं०) पूजा या सम्मानके अयोग्य ।

अपूठ*–वि० वापस । अ० पीछे, पीछेकी ओर ।

अपूठा*–वि० अपुष्ट; अधकचरा; अनभिज्ञ; अविकसित ।

अपूत–वि० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध; अपरिष्कृत; * निपूता ।

अपूप–पु० (सं०) मालपुआ; गेहूँ; मधुचक्र, मधुमक्खीका छत्ता ।

अपूप्य–वि० (सं०) पुआ-संबंधी । पु० आटा ।

अपूर*–वि० भरपूर, प्रचुर ।

अपूरणी–स्त्री० (सं०) शाल्मली वृक्ष ।

अपूरना*–स० क्रि० भरना; फूँकना, बजाना ।

अपूरब*–वि० दे० 'अपूर्व' ।

अपूरा* -वि० दे० 'अपूर'; व्याप्त ।

अपूर्ण–वि० (सं०) जो पूरा या भरा न हो; अधूरा, नातमाम; न्यून, कम । **-भूत**–पु० क्रियाके कालका एक भेद जिसमें भूतकाल तो पाया जाय, पर क्रियाकी समाप्ति न हुई हो (व्या०) ।

अपूर्व–वि० (सं०) जो या जैसा पहले न हुआ हो; अद्भुत, बे-जोड़; अज्ञात, अजनबी; पहला नहीं । पु० परब्रह्म; कर्मका अदृष्ट फल, पाप-पुण्य । **–पति**–स्त्री० कुमारी कन्या । **–रूप**–पु० एक अर्थालंकार जिसमें पूर्वगुणकी प्राप्तिका न होना वर्णित हो । **–वाद**–पु० ब्रह्मके संबंधमें किया जानेवाला वाद-विवाद । **–विधि**–स्त्र० नया आधिकारिक आदेश ।

अपृक्त–वि० (सं०) असंयुक्त; असंबद्ध ।

अपेक्षण–पु० (सं०) अपेक्षा करना या रखना; चाह, आशा या आवश्यकता; विचारणा; कारण-कार्य आदिका संबंध; ध्यान देना, देख-भाल; आदर ।

अपेक्षणीय, अपेक्ष्य–वि० (सं०) अपेक्षा करने योग्य; वांछनीय ।

अपेक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'अपेक्षण' । अ० निस्बत्, तुलनामें ('की'के साथ प्रयुक्त) । **–कृत**–अ० किसीकी तुलनामें (न्यूनाधिक), निस्बतन् । **–बुद्धि**–स्त्री० भेदबुद्धि ।

अपेक्षया–अ० किसीकी तुलनामें, अपेक्षाकृत ।

अपेक्षित–वि० (सं०) जिसकी चाह, प्रतीक्षा या आवश्यकता हो ।

अपेक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) अपेक्षा करनेवाला; आकांक्षा, प्रतीक्षा करनेवाला (जैसे परमुखापेक्षी) ।

अपेच्छा*–स्त्री० दे० 'अपेक्षा' ।

अपेत–वि० (सं०) गया हुआ; पलायित; वंचित, रहित; मुक्त । **–राक्षसी**–स्त्री० तुलसी नामक पौधा ।

अपेय–वि० (सं०) न पीने योग्य ।

अपेल*–वि० अटल; जिसका खंडन न हो सके, अकाट ।

अपैठ*–वि० पैठ या पहुँचके बाहर, दुर्गम ।

अपैतृक–वि० जो पूर्वजोंसे प्राप्त न हुआ है ।

अपोगंड–वि० (सं०) सोलह बरससे अधिक अवस्थावाला, बालिग; भीरु; विकलांग, न्यून या अधिक अंगोंवाला; शिशु, किशोर ।

अपोढ–वि० (सं०) दे० 'अपवहित' ।

अपोदिका–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

अपोह, अपोहन–पु० (सं०) दूर करना, निवारण; तर्क, युक्ति द्वारा शंकनिवारण; एक तर्कको काटनेवाला दूसरा तर्क (ऊहापोह) ।

अपौरुष, अपौरुषेय–वि० (सं०) पुरुषार्थहीन; भीरु, अपुरुषोचित; अलौकिक, ईश्वरीय; मनुष्यकृत नहीं, ईश्वर कृत । पु० पौरुषका अभाव; अलौकिक शक्ति ।

अप्–पु० (सं०) पानी; हवा । **–चर**–पु० जलजंतु । **–पति**–पु० वरुण; समुद्र । **–पित्त**–पु० अग्नि; एक पौधा । **–सर**–पु०

जलचर प्राणी।

अप्तु–पु० (सं०) शरीर; अंग; यज्ञपशु।

अप्प*–सर्व० आप; अपना।

अप्पना*–स० क्रि० अर्पित करना, देना।

अप्पान*–पु० अपान; अपनापन, आत्मज्ञान।

अप्यय–पु० (सं०) नाश, लय; संयोग, जोड़।

अप्ययन–पु० (सं०) मेल, संयोग; मैथुन।

अप्रकंप–वि० (सं०) स्थिर; जिसका खंडन न हुआ हो; जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अप्रकट–वि० (सं०) जो प्रकट न हो, छिपा हुआ।

अप्रकर–वि० (सं०) सुचारु रूपसे कार्य न करनेवाला, अकुशल।

अप्रकरण–पु० (सं०) अप्रधान विषय; आकस्मिक या असंवद्ध विषय।

अप्रकल्पक–वि० (सं०) जिसके लिए स्पष्ट आदेश न हो, जिसे करनेके लिए वाध्यता न हो।

अप्रकांड–वि० (सं०) शाखारहित (छोटा)। पु० क्षुप, झाड़ी।

अप्रकाश–पु० (सं०) प्रकाशका अभाव, अँधेरा; गुप्त वात, रहस्य। वि० प्रकाशरहित; छिपा हुआ; अंधकारपूर्ण; अप्रकट; स्वतः प्रकाशित।

अप्रकाशित–वि० (सं०) प्रकाशहीन; अप्रकट; न छपा हुआ, जो छपकर जनसाधारणके सामने न आया हो।

अप्रकाश्य–वि० (सं०) प्रकाशित या प्रकट करनेके अयोग्य।

अप्रकृत–वि० (सं०) अयथार्थ; वनावटी; अप्रधान, आनुषंगिक, गौण; आकस्मिक; विषयसे असंवद्ध। पु० अप्रस्तुत, उपमान।

अप्रकृति–स्त्री० (सं०) विकृति; पुरुष, आत्मा (सां०); **–स्थ**–वि० अस्वस्थ; रोग, उद्वेग आदिके कारण जिसका तन-मन स्वाभाविक अवस्थामें न हो।

अप्रकृष्ट–वि० (सं०) नीच, वुरा। पु० काक।

अप्रखर–वि० (सं०) अतीक्ष्ण; सुस्त; कोमल।

अप्रगल्भ–वि० (सं०) सलज्ज; विनीत; दब्बू; जो प्रौढ़ या ढीठ न हो; ढीला।

अप्रगुण–वि० (सं०) व्याकुल, घवड़ाया हुआ; व्यस्त।

अप्रग्राह–वि० (सं०) अनियंत्रित।

अप्रचलित–वि० (सं०) जिसका चलन या व्यवहार न हो।

अप्रचोदित–वि० (सं०) अनिच्छित; अनादिष्ट।

अप्रच्छन्न–वि० (सं०) अनावृत, प्रकट, खुला हुआ।

अप्रच्छिन्न–वि० (सं०) अविभक्त।

अप्रज–वि० (सं०) निस्संतान; अजात, न जनमा हुआ; अवसित, जनहीन।

अप्रतर्क्य–वि० (सं०) जो तर्क या अनुमानसे न जाना जा सके, अतर्क्य।

अप्रति–वि० (सं०) अद्वितीय; अप्रतियोगी।

अप्रतिकर–वि० (सं०) विश्वस्त; विश्वासपात्र।

अप्रतिकार–पु० (सं०) प्रतिकारका अभाव; उपाय या बदलेमें वार न करना। वि० निरुपाय, ला-इलाज।

अप्रतिकारी(रिन्)–वि० (सं०) प्रतिकार न करनेवाला।

अप्रतिगृह्य–वि० (सं०) जिसका दान स्वीकार न किया जा सके।

अप्रतिग्रहण–पु० (सं०) दानादि न लेना; कन्यादान न लेना।

अप्रतिग्राह्य–वि० (सं०) ग्रहण न करने योग्य।

अप्रतिघ–वि० (सं०) अजेय; जो रोका न जा सके; अक्रुद्ध।

अप्रतिघात–वि० (सं०) प्रतिघात या विरोधसे रहित; आघातसे बचा हुआ।

अप्रतिदेय–वि० (ऋण) जिसे लौटाना न हो।

अप्रतिद्वंद्व–वि० (सं०) बिना प्रतिद्वंद्वीका, बे-जोड़।

अप्रतिपक्ष–वि० (सं०) अप्रतियोगी, विपक्षशून्य; असमान।

अप्रतिपण्य–वि० (सं०) जिसका विनिमय या विक्रय न हो सके।

अप्रतिपत्ति–स्त्री० (सं०) निश्चयका अभाव; कर्तव्यका निश्चय न कर सकना; विह्वलता; असफलता; स्फूर्तिका अभाव।

अप्रतिपन्न–वि० (सं०) अनिश्चित; असंपन्न; कर्तव्यज्ञानसे हीन।

अप्रतिबंध–पु० (सं०) रोक-टोक न होना, स्वच्छंदता। वि० बे-रोक-टोक, स्वच्छंद; बिना किसी झगड़ेके प्राप्त (का०)।

अप्रतिबद्ध–वि० (सं०) बे-रोक, स्वच्छंद; मनमाना।

अप्रतिबल–वि० (सं०) बे-जोड़ ताकतवाला।

अप्रतिभ–वि० (सं०) प्रतिभाहीन, जिसे जवाव या वचाव न सूझे, अप्रत्युत्पन्नमति; उदास; मंद; लज्जाशील।

अप्रतिभट–वि० (सं०) प्रतिभटहीन, जिसका मुकाबला करनेवाला कोई न हो। पु० ऐसा योद्धा।

अप्रतिभा–स्त्री० (सं०) प्रतिभाहीनता; वादमें प्रतिवादीका वादीके तर्कोंका उत्तर न दे सकना; दब्बूपन, लज्जाशीलता।

अप्रतिभाव्य–वि० (नॉन-वेलेबिल) (वह अपराध) जिसमें किसीके जामिन वनने या जमानत देनेको तैयार होनेपर भी अपराधीके अस्थायी रूपसे रिहा किये जानेकी गुंजाइश न हो, अ-जमानती, जमानत अयोग्य।

अप्रतिम–वि० (सं०) बे-जोड़, अनुपम।

अप्रतियोगी(गिन्)–वि० (सं०) जिसका कोई मुकावला करनेवाला न हो; जिसके मुकाबलेका दूसरा हिस्सा न हो।

अप्रतिरथ–वि० (सं०) अद्वितीय वीर; जिसका कोई मुकावला करनेवाला न हो।

अप्रतिरव–वि० (सं०) बिना विवाद या झगड़ेका।

अप्रतिरूप–वि० (सं०) अननुरूप, अयोग्य; बे-जोड़ रूपवाला; अद्वितीय।

अप्रतिवीर्य–वि० (सं०) अतुलित शक्तिवाला।

अप्रतिशासन–वि० (सं०) जिसका प्रतिद्वंद्वी शासक न हो; एक ही शासनके अधीन।

अप्रतिष्ठ–वि० (सं०) वे-इज्जत, वदनाम; अस्थिर; निकम्मा; फेंका हुआ। पु० एक नरक; ब्रह्म।

अप्रतिष्ठा–स्त्री० (सं०) आदर-मानका अभाव; अनादर, वे-इज्जती; दृढ़ता या स्थिरताका अभाव।

अप्रतिष्ठित–वि० (सं०) प्रतिष्ठाहीन, समाजमें जिसका आदर-सम्मान न हो; जो स्थिर या सुस्थापित न हो।

अप्रतिसंबद्धा भूमि–स्त्री० (सं०) वह भूमि जो एक दूसरीसे सटी न हो (कौ०)।

अप्रतिहत–वि० (सं०) जिसे कोई रोकनेवाला न हो, अवाधित; अपराजित; अक्षुण्ण। पु० अंकुश। **–गति**–वि० जिसकी गति किसी प्रकार रोकी न जा सके। **–नेत्र**–पु० एक बौद्ध देवता। **–व्यूह**–पु० वह अव्यवस्थित व्यूह जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और सिपाही एक दूसरेके पीछे हों (कौ०)।

अप्रतिहार्य–वि० (सं०) जिसका निरोध न किया जा सके।

अप्रतीक–वि० (सं०) अंगहीन; शरीरहीन; ब्रह्मका एक विशेषण।

अप्रतीकार–पु०, वि० (सं०) दे० 'अप्रतिकार'।

अप्रतीकारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'अप्रतिकारी'।

अप्रतीघात–वि० (सं०) दे० 'अप्रतिघात'।

अप्रतीत–वि० (सं०) अप्रसन्न; अगम्य; विरोधरहित; एक देशमें ही प्रसिद्ध (अर्थवाला–एक शब्ददोष)।

अप्रतीति–स्त्री० (सं०) प्रतीतिका अभाव, अविश्वास; (अर्थादिका) स्पष्ट न होना।

अप्रतीयमान–वि० (सं०) अनिश्चित।

अप्रतुल–पु० (सं०) वजनकी कमी; अभाव; आवश्यकता। वि० अतुलनीय, अद्वितीय।

अप्रत्त–वि० (सं०) अप्रदत्त, न लौटाया हुआ।

अप्रत्ता–स्त्री० (सं०) अप्रदत्ता, कुमारी कन्या।

अप्रत्यक्ष–वि० (सं०) जो दिखाई न दे, अगोचर; परोक्ष। **–कर**–पु० (इंडाइरेक्ट टैक्स) वह कर जो प्रत्यक्ष रूपसे न लिया जाकर विक्रेय वस्तुओं आदिकी बढ़ी हुई कीमतके रूपमें उपभोक्ताओंसे उद्गृहीत किया जाय।

अप्रत्यनीक–पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें शत्रुको जीतनेकी योग्यताके कारण उससे संबंध रखनेवाली वस्तुओंका तिरस्कार न किया जाय।

अप्रत्यय–पु० (सं०) विश्वासका अभाव; प्रतीतिका, ज्ञानका अभाव। वि० विभक्तिरहित (संज्ञा, प्रातिपदिक–व्या०);

विश्वासरहित; अनभिज्ञ ।

अप्रत्यादेय–वि० (इर्रिकव्हरेबिल) जो फिर प्राप्त या वसूल न किया जा सके, अशोध्य; अपूरणीय ।

अप्रत्याशित–वि० (सं०) जिसकी आशा न रही हो, अनसोचा, आकस्मिक ।

अप्रदत्ता–स्त्री० (सं०) वह कन्या जो किसीको अभी दी न गयी हो, कुमारी कन्या ।

अप्रधान–वि० (सं०) गौण; छोटा । पु० गौण कार्य ।

अप्रधृष्य–वि० (सं०) अजेय ।

अप्रभ–वि० (सं०) प्रभाशून्य, धुंधला; हतप्रभ; बुरा ।

अप्रभु–वि० (सं०) असमर्थ, अयोग्य ।

अप्रभूति–स्त्री० (सं०) अल्प यत्न; अप्रचुरता, अल्पता ।

अप्रमत्त–वि० (सं०) लापरवाह नहीं, सावधान, जागरूक ।

अप्रमद–वि० (सं०) आमोद-प्रमोदसे विरत; उदास, अप्रसन्न ।

अप्रमय–वि० (सं०) अनश्वर; अप्रमेय ।

अप्रमा–स्त्री० (सं०) भ्रांत ज्ञान ।

अप्रमाण–वि० (सं०) जो प्रमाण न माना जा सके, अप्रामाणिक; प्रमाणरहित, बिना सबूतका; अनधिकृत; असीम, अपरिमित । पु० वह जो प्रामाणिक न माना जाय; अप्रासंगिकता ।

अप्रमाद–पु० (सं०) सावधानता, जागरूकता । वि० प्रमाद-रहित; चौकन्ना, मुस्तैद ।

अप्रमित–वि० (सं०) जो मापा न गया हो; असीम; जो अधिकारी द्वारा प्रमाणित न किया गया हो ।

अप्रमेय—वि० (सं०) जिसकी माप न हो सके; बे-हद, बे-हिसाब; जो सिद्ध या प्रमाणित न किया जा सके; अज्ञेय ।

अप्रमोद–पु० (सं०) कष्ट दूर करनेकी अक्षमता; प्रसन्नता-का अभाव ।

अप्रयत्न–वि० (सं०) प्रयत्न न करनेवाला, उत्साहहीन; उदासीन । पु० प्रयत्नका अभाव ।

अप्रयुक्त–वि० (सं०) जो काममें न लाया गया हो, अव्यवहृत; गलत तरीकेसे काममें लाया हुआ; अप्रचलित (शब्द) ।

अप्रयोग–पु० (सं०) प्रयोगका अभाव या दुष्प्रयोग; काममें न लाना; प्रयोगमें न आना (शब्दका) ।

अप्रलंब–वि० (सं०) देर न लगानेवाला, तेज, चुस्त ।

अप्रवर्त्तक–वि० (सं०) कार्यमें संलग्न होनेके लिए उत्तेजित न करनेवाला; निष्क्रिय; अविच्छिन्न ।

अप्रवर्ती (र्तिन)–वि० (इन-आपरेटिव्ह) जो लागू न हो; जो अपनी क्रिया न कर रहा हो, प्रभाव न डाल रहा हो; प्रभाव-हीन, बेकार; दे० 'अप्रवर्तक' ।

अप्रवृत्त–वि० (सं०) जो प्रवृत्त न हो । **–वध**–वि० जिसकी ओरसे आक्रमण न हुआ हो ।

अप्रवृत्ति–स्त्री० (सं०) प्रवृत्तिका अभाव; कोष्ठबद्धता ।

अप्रशस्त–वि० (सं०) अप्रशंसित; निंद्य, बुरा; अविहित; क्षीण ।

अप्रसंग–पु० (सं०) आसक्ति, संगति, लगाव आदिका अभाव । वि० असंबद्ध; प्रसंगरहित ।

अप्रसक्त–वि० (सं०) आसक्तिहीन; विना संगति या लगावका ।

अप्रसक्ति–स्त्री० (सं०) अनासक्ति; संयमन; परिमितता ।

अप्रसन्न–वि० (सं०) प्रसादरहित, खिन्न, उदास; नाखुश, नाराज ।

अप्रसाद–पु० (सं०) अकृपा, अननुकूलता ।

अप्रसिद्ध–वि० (सं०) जिसे अधिक लोग न जानते हों, गुमनाम; असामान्य; अनिष्पन्न ।

अप्रसूता–स्त्री० (सं०) वंध्या स्त्री ।

अप्रस्तुत–वि० (सं०) अनुपस्थित; असंबद्ध; अवर्ण्य; गौण, अप्रधान; अनुद्यत । पु० उपमान । **–प्रशंसा**–स्त्री० एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुतके अर्थ अप्रस्तुतका वर्णन किया जाय ।

अप्रहत–वि० (सं०) अछूता; न जोता हुआ (खेत); कोरा या न पहना हुआ (कपड़ा) ।

अप्राकरणिक–वि० (सं०) जिसका प्रकरण या विषयसे संबंध न हो ।

अप्राकृत–वि० (सं०) अस्वाभाविक; अलौकिक; असाधारण; संस्कृत ।

अप्राकृतिक–वि० (सं०) अस्वाभाविक, अलौकिक ।

अप्राग्रय–वि० (सं०) अप्रधान, गौण ।

अप्राज्ञ–वि० (सं०) ज्ञानहीन; अशिक्षित ।

अप्राचीन–वि० (सं०) पुराना नहीं, नया; पूर्वीय नहीं, पश्चिमीय ।

अप्राण–वि० (सं०) प्राणहीन, निर्जीव । पु० ईश्वर ।

अप्राप्त–वि० (सं०) न मिला हुआ; न आया हुआ; न पहुँचा हुआ; अप्रस्तुत; जिसकी अवस्था विवाहके योग्य न हुई हो, अल्पवयस्क । **–काल**–वि० जिसका समय न आया हो, बे-वक्त । पु० वादमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण आदि यथाक्रम न कहनेका दोष (न्या०) । **–यौवन**–वि० युवावस्थाको न पहुँचा हुआ । (स्त्री० 'अप्राप्तयौवना')। **–वय**–वि० (हि०) दे० 'अप्राप्तवया' । **–वया (स्)**–वि० कच्ची उम्रका; नाबालिग । **–व्यवहार**–वि० १६ वर्षसे नीचेका (बालक) ।

अप्राप्ति–स्त्री० (सं०) न मिलना, अलाभ; पूर्वनियमसे प्रमाणित न होना; घटित न होना; अनुपपत्ति । **–सम**– पु० जाति या असत् उत्तरके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अप्राप्य–वि० (सं०) न मिलनेवाला, अलभ्य ।

अप्रामाणिक–वि० (सं०) प्रमाणरहित; न मानने योग्य; अविश्वसनीय ।

अप्रावृत–वि० (सं०) जो ढका न हो, अनावृत ।

अप्राशन–पु० (सं०) अनशन ।

अप्रासंगिक–वि० (सं०) प्रस्तुत विषयसे असंबद्ध; प्रसंगके विरुद्ध या बाहरका ।

अप्रियंवद–वि० (सं०) दे० 'अप्रियवादी' ।

अप्रिय–वि० (सं०) जो प्यारा न हो; अरुचिकर, नापसंद; वैर करनेवाला । पु० शत्रु, शत्रुतापूर्ण कार्य; बेंत । **–कर,–कारक,–कारी (रिन्)**–वि० अरुचिकर । **–भागी (गिन्)**–वि० दुर्भाग्य-ग्रस्त । **–वादी (दिन्)**–वि० कटुभाषी, कठोर बात कहनेवाला ।

अप्रिया–स्त्री० (सं०) शृंगी मछली ।

अप्रीति–स्त्री० (सं०) अरुचि; वैर; दुर्भाव; स्नेहाभाव । **–कर**–वि० कठोर; अननुकूल; अप्रिय ।

अप्रेंटिस–पु० (अं०) काम सीखनेके लिए काम करनेवाला; उम्मेदवार ।

अप्रेत–वि० (सं०) न गया हुआ । **–राक्षसी**–स्त्री० तुलसी नामक पौधा ।

अप्रैल–पु० ईसवी सालका चौथा महीना, एप्रिल । **–फूल**–पु० पहली अप्रैलको मजाकमें बेवकूफ बनाया जानेवाला व्यक्ति ।

अप्रोषित–वि० (सं०) न गया हुआ; जो अनुपस्थित न हो ।

अप्रौढ–वि० (सं०) अधृष्ट; भीरु; नम्र; अशक्त; नाबालिग ।

अप्रौढा–स्त्री० (सं०) कुमारी कन्या; वह कन्या जिसका हालमें ही विवाह हुआ हो, पर रजस्वला न हुई हो ।

अप्लव–वि० (सं०) पोतहीन; जो तैरता न हो ।

अप्सरःपति–पति–पु० (सं०) इंद्र ।

अप्सर*–स्त्री० दे० 'अप्सरा' । पु० (सं०) 'अप्'में ।

अप्सरा (रस्)–स्त्री० (सं०) स्वर्गलोक-वासिनी वेश्या, परी; अत्यन्त रूपवती स्त्री ।

अप्सु–वि० (सं०) आकृतिहीन; कुरूप ।

अप्सुक्षित्–पु० (सं०) देवता ।

अप्सुचर–वि० (सं०) जलमें रहनेवाला ।

अप्सुप्रवेशन–पु० (सं०) अपराधीको जलमें डुबाकर मारनेका दंड (कौ०) ।

अप्सुयोनि–पु० (सं०) घोड़ा; बेंत ।

अफ़ग़ान–वि० (फा०) अफगानिस्तानका रहनेवाला ।

अफ़ग़ानिस्तान–पु० (फा०) भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर अवस्थित एक देश ।

अफ़ज़ल–वि० श्रेष्ठ ।

अफ़ज़ूँ–वि० (फा०) फाजिल, बचा या उबरा हुआ ।

अफ़तार–पु० फा० दे० 'इफ़्तार' ।

अफताली*–पु० पड़ावपर पहलेसे जाकर आरामका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी ।

अफनाना–अ॰ क्रि॰ ऊब उठना, घबराना, साँस रुकने जैसा अनुभव होना*; उबलना; क्रुद्ध होना।

अफ़यून–स्त्री॰ (अ॰) अफीम।

अफ़यूनी–वि॰ (अ॰) अफीमची।

अफरना–अ॰ क्रि॰ जीभर खाना, अघाना; पेट फूलना; ऊबना।

अफरा–पु॰ पेट फूलनेका रोग; अपच या वायुविकारसे पेटका फूलना।

अफ़रा-तफ़री–स्त्री॰ (फा॰) गड़बड़, गोलमाल; उतावली या व्याकुलताके कारण होनेवाली भूल या गड़बड़; बदहवासी; आतंक।

अफराना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'अफरना'।

अफ़रीदी–पु॰ भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर बसनेवाली एक पठान जाति।

अफल–वि॰ (सं॰) फलरहित; निरर्थक; बाँझ। पु॰ झाबुक या झाऊ नामक वृक्ष।

अफला–स्त्री॰ (सं॰) भूम्यामलकी; घृतकुमारी।

अफ़लातून–पु॰ (फा॰) प्राचीन यूनानका एक प्रमुख विद्वान् तथा दार्शनिक, प्लेटो। **–का नाती**–अपने बड़प्पनकी डींग मारनेवाला।

अफलित–वि॰ (सं॰) फलहीन; परिणामशून्य।

अफल्गु–वि॰ (सं॰) उत्पादक, लाभदायक, निकम्मा नहीं।

अफ़वा–स्त्री॰ दे॰ 'अफ़वाह'।

अफ़वाह–स्त्री॰ (अ॰) किंवदंती, उड़ती खबर; गप्प।

अफ़सर–पु॰ (फा॰) प्रधान अधिकारी; हाकिम; सरदार। **–ए-आला**–पु॰ सर्वोच्च अधिकारी।

अफ़सरी–स्त्री॰ अफसरके पदपर रह कर काम करना; प्रधानता; अधिकार।

अफ़साना–पु॰ (फा॰) कहानी, आख्यान; उपन्यास। **–नवीस, –निगार**–पु॰ कहानी-लेखक; उपन्यासकार। **–साँचा**–पु॰ छोटी कहानी।

अफ़सूँ–पु॰ (फा॰) जादू, मोहन-वशीकरण-विद्या। **–गर**–पु॰ जादूगर।

अफ़सोस–पु॰ (फा॰) दुःख; खेद; पछतावा।

अफ़ीम–स्त्री॰ पोस्तेके ढोंढ़का गोंद जो नशे और दवाके लिए काममें लाया जाता है। **–ची**–वि॰ अफीम खानेका आदी।

अफ़ीमी–वि॰ दे॰ 'अफीमची'।

अफुल्ल–वि॰ (सं॰) अविकसित (पुष्प)।

अफेन–वि॰ (सं॰) जिसमें फेन न हो। पु॰ अफीम, अहिफेन।

अप्फना*–स॰ क्रि॰ अर्पित करना, देना।

अबंड–वि॰ (सं॰) जो पंगु न हो।

अबंध–वि॰ (सं॰) दे॰ 'अबंधन'।

अबंधन–वि॰ (सं॰) बंधन-रहित, स्वच्छंद।

अबंधु, अबांधव–वि॰ (सं॰) मित्रहीन, अकेला; जिसके कोई न हो।

अबंध्य–वि॰ जो बाँधा न जा सके; जो व्यर्थ जानेवाला न हो।

अब–अ॰ इस समय; इस क्षण, फिलहाल; आगेसे। **–का**–वर्तमान कालका, हालका, आधुनिक। **–की, –के**–इस बार, अगली बार। **–जाकर**–इतनी देर बाद। **–भी**–आज भी; इतनेपर भी। **–से**–आगेसे, आइंदा। **मु॰–तब करना**–आज-कल करना, टालमटोल करना। **–तब लगना या होना**–मरणासन्न होना, कुछ देरका मेहमान होना।

अब–पु॰ (अ॰) बाप, पिता।

अबख़रा–पु॰ (अ॰) भाप; बुखारका बहु॰।

अबटन†–पु॰ दे॰ 'उबटन'।

अबतर–वि॰ (फा॰) बिगड़ा हुआ; बुरा, खराब; चौपट।

अबतरी–स्त्री॰ (फा॰) बिगड़ी हालत; अवनति, खराबी।

अबद्ध–वि॰ (सं॰) न बँधा हुआ, मुक्त; स्वच्छन्द, आजाद; अर्थहीन, बे-मतलब। **–पत्र-प्रपंजी**–स्त्री॰ (लूज़ लीफ लेजर) वह प्रपंजी जो खुले या बिना सिले पन्नोंके रूपमें हो। **–मुख**–वि॰ जो मनमें आये वह बकनेवाला, बदजबान। **–मूल**–वि॰ जिसकी जड़ दृढ़ न हो।

अबद्धक–वि॰ (सं॰) दे॰ 'अबद्ध'।

अबध*–वि॰ अबाध।

अबधू*–पु॰ अवधूत, सन्न्यासी। वि॰ अबोध।

अबध्य–वि॰ (सं॰) न मारने योग्य; वधदंडके अयोग्य (स्त्री, ब्राह्मण आदि)।

अबर*–वि॰ अपर, अन्य। दे॰ 'अबल'।

अबरक–पु॰ अभ्रक धातु; एक तरहका पत्थर।

अबरख–पु॰ दे॰ 'अबरक'।

अबरखी–वि॰ अबरकके रंगवाला; अबरकका बना हुआ।

अबरन*–वि॰ अवर्णनीय; बिना रंग-रूपका; भिन्न रंगका। पु॰ आवरण।

अबरस–वि॰ (अ॰) चितकबरा। पु॰ चितकबरा घोड़ा; ऐसा रंग।

अबरा–पु॰ (फा॰) ऊपरका पल्ला, उपल्ला; न खुलनेवाली गाँठ; उलझन। † वि॰ अबल।

अबरी–वि॰ बादलकीसी धारियोंवाला; रंगदार; धब्बादार। स्त्री॰ एक तरहका रंगदार कागज जो जिल्दके ऊपर लगाया जाता है, 'मार्बुल', एक तरहका पत्थर; एक तरहकी लाखकी रँगाई।

अबरू–स्त्री॰ (फा॰) भौं। **मु॰–पर (में) बल आना**–क्रुद्ध होना, त्योरी चढ़ना। **–पर मैल न आना**–(आघात आदिका) असर न होना; अविचलित रहना।

अबल–वि॰ (सं॰) बलहीन, कमजोर; अरक्षित। पु॰ वरुण वृक्ष; निर्बलता।

अबलक–वि॰ (फा॰) सफेद-काला; सफेद और लाल रंगका; चितकबरा। पु॰ ऐसे रंगका घोड़ा।

अबलख–वि॰ दे॰ 'अबलक'।

अबलखा–स्त्री॰ एक चिड़िया।

अबला–स्त्री॰ (सं॰) स्त्री, नारी।

अबलावल–पु॰ (सं॰) शिव।

अबल्य–पु॰ (सं॰) निर्बलता, कमजोरी; अस्वस्थता।

अबवाब–पु॰ (अ॰) मालगुजारी या लगानपर लगनेवाला अतिरिक्त कर; गाँवके व्यापारी आदिसे जमींदारको मिलनेवाला कर।

अबस–अ॰ (अ॰) बेकार, व्यर्थ। वि॰ निरर्थक, बे-फायदा; *जो अपने वशमें न हो।

अबाँह*–वि॰ बिना बाँहका; अनाथ।

अबा–पु॰ (अ॰) अंगेके ढंगका एक पहनावा जो उससे अधिक लंबा होता है, 'गाउन'।

अबाती*–वि॰ निर्वात; स्थिर रूपसे जलनेवाला; जिसमें बत्ती न हो।

अबाद*–वि॰ निर्विवाद; आबाद।

अबादान–वि॰ आबाद; समृद्ध।

अबादानी–स्त्री॰ दे॰ 'आबादानी'।

अबाध–वि॰ (सं॰) बाधारहित, बे-रोक, निर्विघ्न; कष्टरहित; *अपार, असीम। पु॰ बाधा या खंडन न होना।

अबाध व्यापार–पु॰ (फ्री ट्रेड) वह व्यापार जिसमें संरक्षक कर आदि लगाकर बाधा न डाली जाय, दे॰ 'मुक्त वाणिज्य', मुक्त व्यापार।

अबाधा–स्त्री॰ (सं॰) त्रिभुजके आधारका खंड; कष्टराहित्य। *वि॰ अबाध।

अबाधित–वि॰ (सं॰) जो रोका न गया हो, स्वाधीन; जिसका खंड न किया गया हो; अनिषिद्ध।

अबाध्य–वि॰ (सं॰) जो रोका न जा सके।

अबान*–वि॰ जिसके हाथमें बाण न हो, निहत्था।

अबाबील–स्त्री॰ (फा॰) एक छोटी चिड़िया जो प्रायः खँडहरोंमें घोंसला बनाती है।

अबार*–स्त्री॰ अबेर, देर। अ॰ शीघ्र, जल्द ही–'तुमको देखावहिं जहँ स्वयंबर होनहार अबार'–रघु॰।

अबाल–वि॰ (सं॰) जो बालक न हो, जवान; बालोचित नहीं, युवकोचित। † पु॰ चरखेकी पँखुड़ियोंमें बाँधी जानेवाली रस्सी।

अबास*–पु॰ आवास, घर।

अबाह्य–वि॰ (सं॰) बाहरी नहीं; भीतरी; पूर्ण रूपसे परिचित; जिसमें बहिर्भाग न हो।

अंबिधन–पु० (सं०) वाडवाग्नि ।

अंबिध्य–पु० (सं०) रावणका एक मंत्री ।

अबिरथा*–वि० व्यर्थ ।

अबिरल–वि० दे० 'अविरल', घना, दृढ़ (–भक्ति) ।

अबिहड़*–वि० अखंड, जो विदीर्ण न हो ।

अबीज–वि० (सं०) बीजहीन; नपुंसक ।

अबीजा–स्त्री० (सं०) अंगूरका पौधा; किशमिश ।

अबीर–पु० (अ०) वह लाल रंग जिसे हिंदू अधिकतर होली खेलनेके काममें लाते हैं, गुलाल ।

अबीरी–वि० अबीरके रंगका ।

अबीह*–वि० निर्भय, निश्शंक ।

अबुझ*–वि० अबूझ, नासमझ ।

अबुद्ध–वि० (सं०) दे० 'अबुध' !

अबुद्धि–स्त्री० (सं०) अज्ञान, नासमझी । वि० मूर्ख, नासमझ ।

अबुध–वि० (सं०) मूर्ख, नासमझ । पु० मूर्ख व्यक्ति ।

अबुलकलाम आजाद–पु० (१८८९–१९५८) १९१२ में 'अलहिलाल' पत्न निकाला; सरकारने उसे बंद कर मौलानाको नजरबंद कर दिया; जनवरी १९२० में मुक्त हुए; असहयोगमें महात्माजीके साथ रहे; १९४२ में क्रिप्सके साथ और १९४६ में ब्रिटिश मंत्रियोंके साथ कांग्रेसके एकमात्र प्रतिनिधि-रूपमें वार्ता की; केंद्रीय सरकारमें शिक्षामंत्री १९४७ से मृत्युपर्यंत ।

अबुहाना*–अ० क्रि० प्रेतादिसे आविष्ट होकर हाथ-पैर पटकना; बक उठना ।

अबू–पु० (अ०) बाप, पिता ।

अबूझ–वि० नासमझ, निर्बुद्धि, अज्ञान ।

अबूत*–वि० व्यर्थ, बेकार ।

अबे–अ० तिरस्कार-सूचक संबोधन, क्यों रे, अरे । –मु०–**तबे करना**–अपमान-जनक ढंगसे बात करना ।

अबेध*–वि० जो बिधा न हो, अनबिधा ।

अबेर–स्त्री० देर, अतिकाल । अ० दे० 'अबार' । पु० वरुण ।

अबेश*–वि० अधिक, बहुत ।

अबैन*–वि० चुप, मौन ।

अबोध–वि० (सं०) अज्ञान, नासमझ; घबड़ाया हुआ । पु० ज्ञानका अभाव । –**गम्य**–वि० अचिंतनीय, धारणाशक्तिसे परे ।

अबोल–वि० न बोलनेवाला, मूक, मौन; अनिर्वचनीय । पु० कुबोल । अ० बिना बोले हुए, चुपचाप ।

अबोला*–पु० न बोलना; रोष या मानके कारण न बोलना ।

अब्ज–वि० (सं०) जलसे उत्पन्न । पु० कमल; शंख; चंद्रमा; धन्वंतरि; निचुल वृक्ष; कपूर; अरब (१,००,००,००,०००) । –**कर्णिका**–स्त्री० कमलका छत्ता । –**ज**–पु० ब्रह्मा । –**दृक्(श्)**,–**नयन**,–**नेत्र**,–**लोचन**–वि० कमल जैसे बड़े और सुंदर नेत्रोंवाला । –**बांधव**–पु० सूर्य । –**भव**,–**भू**,–**योनि**–पु० ब्रह्मा । –**भोग**–पु० भँसीड; बड़ी कौड़ी । –**वाहन**–पु० शिव । –**वाहना**–स्त्री० लक्ष्मी । –**हस्त**–पु० सूर्य ।

अब्जद–पु० (अ०) अरबी वर्णमालाके (२५) वर्ण; अरबी वर्णमाला; वर्णोंसे अंकोंका काम लेनेकी प्रणाली । –**ख़्वा**–पु० वर्णमाला पढ़नेवाला, नौसिखिया ।

अब्जा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; सीपी (मोतीवाली) ।

अब्जाद–पु० (सं०) हंस ।

अब्जासन–पु० (सं०) ब्रह्मा ।

अब्जिनी–स्त्री० (सं०) कमलिनी; पद्म-समूह; कमलका पौधा; कमलसे भरा हुआ जलाशय । –**पति**–पु० सूर्य ।

अब्द–पु० (अ०) दास; सेवक; (सं०) पु० वर्ष; बादल; एक पर्वत; आकाश; मुस्ता नामक घास । वि० जल देनेवाला । –**कोश**–पु० दे० 'वर्षबोध' (ईयरबुक) । –**ज्ञ**–पु० ज्योतिषी । –**प**–पु० इंद्र । –**वाहन**–पु० शिव; इंद्र । –**सार**–पु० कपूर ।

अब्दुर्ग–पु० (सं०) वह किला जिसके चारों ओर पानीसे भरी खाई या झील हो ।

अब्धि–पु० (सं०) समुद्र; झील; ताल; सातकी संख्या । –**कफ**–पु० समुद्रका फेन । –**ज**–पु० चंद्रमा; शंख; अश्विनीकुमार । –**जा**–स्त्री० लक्ष्मी; वारुणी । –**द्वीपा**–स्त्री० पृथ्वी; समुद्रसे घिरा हुआ भूभाग । –**नगरी**–स्त्री० द्वारकापुरी । –**नवनीतक**–पु० चंद्रमा । –**फेन**–पु० समुद्रका झाग । –**मंडूकी**–स्त्री० मोतीका सीप । –**शय**,–**शयन**–पु० विष्णु । –**सार**–पु० रत्न ।

अब्ध्यग्नि–स्त्री० (सं०) वाडवाग्नि ।

अब्बर*–वि० अबल, कमजोर ।

अब्बा–पु० (अ०) बाप, पिता ('अब' का संबोधनरूप) । –**जान**–पु० पिताजी ।

अब्बास–पु० (अ०) मुहम्मदके चचा; एक पौधा जिसकी जड़ और फूल दवाके काम आते हैं ।

अब्बासी–वि० (अ०) अब्बासके (फूलोंके) रंगका, लाल । स्त्री० मिस्र देशकी एक तरहकी कपास ।

अंब्बिदु–पु० (सं०) अश्रुकण, आँसू ।

अब्भक्ष–वि० (सं०) पानीके सहारे जीनेवाला । पु० पानीमें रहनेवाला एक साँप ।

अब्भक्षण–पु० (सं०) पानी पीकर रहना; एक तरहका उपवास जिसमें केवल पानी पीते हैं ।

अब्भ्र–पु० (सं०) दे० 'अभ्र' ।

अब्र–पु० (फा०) अभ्र, बादल, घटा ।

अब्रह्मण्य–वि० (सं०) ब्राह्मणके अयोग्य, अब्राह्मणोचित; ब्राह्मणके प्रति वैर रखनेवाला । पु० ब्राह्मणके अयोग्य कर्म; हिंसादि कर्म ।

अब्राह्मण–पु० (सं०) वह जो ब्राह्मण न हो; ब्राह्मणेतर व्यक्ति । वि० ब्राह्मणहीन ।

अब्राह्मण्य–पु० (सं०) ब्राह्मणके कर्त्तव्यका उल्लंघन; अब्रह्मण्य ।

अब्रू–स्त्री० (फा०) दे० 'अबरू' ।

अभंग–वि० (सं०) अखंडित, न टूटा हुआ; न टूटनेवाला । पु० संगीतका एक ताल; मराठी भाषाके एक प्रकारके पद; भंग, पराजय आदिका अभाव । –**पद**–पु० श्लेष अलंकारका एक भेद जिसमें शब्दको बिना तोड़े दूसरा अर्थ निकाल लिया जाता है ।

अभंगी(गिन्)–वि० (सं०) दे० 'अभंग'; * जिसका कोई कुछ न ले सके ।

अभंगुर–वि० (सं०) स्थिर; अनश्वर ।

अभंजन–वि० (सं०) जिसका भंजन न हो सके । पु० किसी पदार्थका कई तत्त्वोंमें विभक्त न होना ।

अभक्त–वि० (सं०) जिसमें भक्ति या आस्था न हो; असंबद्ध; अपूजक; अस्वीकृत; न खाया हुआ; जिसके टुकड़े न हुए हों, समूचा । पु० आहार नहीं, खाद्येतर पदार्थ ।

अभक्ष, अभक्षण–पु० (सं०) आहार न ग्रहण करना, उपवास ।

अभक्ष्य–वि० (सं०) न खाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो, जिसका खाना पाप माना गया हो । पु० वह खाद्य पदार्थ जो निषिद्ध हो ।

अभग–वि० (सं०) भाग्यहीन ।

अभगत*–वि० जो भक्ति न करता हो ।

अभग्न–वि० (सं०) न टूटा हुआ, अखंडित; अबाधित ।

अभद्र–वि० (सं०) अशुभ, अमंगल; असभ्य, अशिष्ट । पु० अहित, बुराई; शोक; पाप ।

अभय–पु० (सं०) भयका अभाव, निर्भयता; परमात्मा; परमात्मज्ञान; ज्ञान; भयसे रक्षा; शिव; वह जिसके पास कोई संपत्ति न हो; एक यात्रा-मुहुर्त्त; खस । वि० भयरहित, निडर; निरापद । –**चारी(रिन्)**–पु० वे जंगली जानवर जिनके मारनेकी मनाही हो । –**डिंडिम**–पु० युद्धवाद्य; सुरक्षाकी घोषणा । –**दक्षिणा**–स्त्री०,–**दान**–पु० रक्षाका वचन देना; शरण देना । –**पत्न**–पु० रक्षाका लिखित आश्वासन; (सेफ कांडक्ट) किसी देशके शासक या सेनापति आदि द्वारा दिया गया वह पत्न जिसमें लिखा रहता है कि यह व्यक्ति गिरफ्तार न किया जाय और न इसे किसी तरहकी क्षति पहुँचायी जाय; यात्रा-सुरक्षण-पत्न । –**प्रद**–वि० अभय देनेवाला । –**मुद्रा**–स्त्री० अभयदानकी मुद्रा; एक तंत्रोक्त मुद्रा । –**वचन**–पु० रक्षाकी प्रतिज्ञा । –**वन**–पु० रक्षित वन, रखांत । –***परिग्रह**–पु० सुरक्षित जंगल-संबंधी सरकारी नियमका

उल्लंघन।

अभया–स्त्री० (सं०) हरीतकी; दुर्गाका एक रूप।

अभर*–वि० दुर्वह, जो उठाया या ढोया न जा सके।

अभरन*–पु० दे० 'आभरण'।* वि० जो भरा हुआ न हो, रिक्त।

अभरम, अभर्म–वि० भ्रमरहित; निःशंक।

अभर्तृका–वि० स्त्री० (सं०) भर्तृविहीना, विधवा; कुमारी।

अभल*–वि० भला नहीं, बुरा, खराब।

अभव–पु० (सं०) न होना, अनस्तित्व; मोक्ष, प्रलय।

अभव्य–वि० (सं०) न होने योग्य; अयोग्य; असुंदर; अमांगलिक; अभागा।

अभाऊ*–वि० अरुचिकर; असुंदर, अशोभन; अभद्र।

अभाग–पु० दे० 'अभाग्य'। वि० (सं०) जिसका कोई हिस्सा न हो; अविभक्त।

अभागा–वि० भाग्यहीन, बदनसीब।

अभागी(गिन्)–वि० (सं०) जायदादमें हिस्सा पानेका अनधिकारी; (हिं०) अभागा। (स्त्री० 'अभागिनी'।)

अभाग्य–पु० (सं०) भाग्यहीनता, बदकिस्मती।

अभाज्य संख्या–स्त्री० (प्राइम नंबर) वह संख्या जिसके गुणनखंड न हो सकें (१, २, ३, ५, ७, ११ इत्यादि)।

अभाव–पु० (सं०) न होना, अनस्तित्व; मृत्यु; लोप; कमी;* दुर्भाव। वि० स्नेहहीन। **–ग्रस्तक्षेत्र**–पु० (डेफिसिट एरिया) वह जिला या भूक्षेत्र जहाँ खाद्यान्न आदिकी कमी हो; कमीवाला क्षेत्र। **–पदार्थ**–पु० वह पदार्थ जिसकी सत्ता न हो। **–प्रमाण**–पु० न्यायमें माना जानेवाला एक प्रमाण।

अभावन*–वि० सुंदर, रुचिकर।

अभावना–स्त्री० (सं०) विवेकका अभाव; ध्यान आदिका अभाव।

अभावनीय–वि० (सं०) जिसका चिंतन न किया जा सके, अचिंतनीय।

अभावित–वि० (सं०) जिसकी भावना न की गयी हो।

अभावी(विन्), अभाव्य–वि० (सं०) न होनेवाला।

अभाषण–पु० (सं०) न बोलना, मौनावलंबन।

अभाषित–वि० (सं०) अकथित, अनुक्त।

अभास*–पु० दे० 'आभास'।

अभि–उप० (सं०) यह शब्दोंके पूर्व आकर, ओर, सामने (अभ्यागत), पास, समीप (अभिसार), ऊपर (अभिषेक), श्रेष्ठ (अभिधर्म), अति, अत्यधिक (अभिनव), बारंबार, पुनः-पुनः (अभ्यास) आदि अर्थोंका द्योतन करता है।

अभिक–वि० (सं०) कामी; लंपट। पु० प्रेमिक; कामी पुरुष।

अभिकथन–पु० (एलेगेशन) किसीके संबंधमें ऐसी बात कहना या ऐसा आरोप लगाना जिसके लिए कोई निश्चित प्रमाण न हो; इस प्रकार कही गयी बात या अप्रमाणित आरोप; मिथ्याभियोग।

अभिकरण–पु० (एजेंसी) किसीकी ओरसे उसके प्रतिनिधि या अभिकर्ताके रूपमें कार्य करना; अभिकर्ता (एजेंट) के कार्य करनेका स्थान।

अभिकर्त्ता–पु० (एजेंट) किसी व्यापारी, व्यापारिक संस्था या राज्यकी ओरसे प्रतिनिधिरूपमें काम करनेवाला या कमीशनपर माल बेचनेवाला व्यक्ति, आढतिया; एजेंट।

अभिकल्प–पु० किसी वस्तु, मशीन या प्रक्रियाके पूर्व रूपरेखा (डिजाइन), दे० अभिकल्पना।

अभिकल्पना–स्त्री० (डिजाइन) किसी भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तुकी पहलेसे सोची हुई रूपरेखा; किसी कलात्मक कृति या सजावट आदिके संबंधमें पहलेसे सोची विचारी हुई परिकल्पना; कपड़े इत्यादिपर फूल, बूटी आदि बनानेका विशेष ढंग।

अभिकाम–वि० (सं०) इच्छुक; स्नेही; कामुक। पु० प्यार; इच्छा।

अभिकेंद्री बल–पु० (सेन्ट्रीपीटल फोर्स) पिण्डको केन्द्रविन्दुके गिर्द वृत्तपथमें घुमाते रहने के लिए आवश्यक वह बल जिसकी दिशा सदैव ही केन्द्रविन्दुकी ओर हो।

अभिक्रंद–पु० (सं०) चिल्लाहट।

अभिक्रम–पु० (सं०) आरंभ; प्रयत्न; आक्रमण; आरोहण।

अभिक्रमण–पु०, **अभिक्रांति**–स्त्री० (सं०) दे० 'अभिक्रम'।

अभिक्रोश–पु० (सं०) अपशब्द कहना; निंदा करना।

अभिख्या–स्त्री० (सं०) शोभा; कांति; नाम, प्रसिद्धि; माहात्म्य; बुद्धि।

अभिख्यात–वि० (सं०) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी।

अभिख्यान–पु० (सं०) नाम; यश; प्रसिद्धि।

अभिगम, अभिगमन–पु० (सं०) पास जाना; संभोग।

अभिगामी(मिन्)–वि० (सं०) अभिगमन करनेवाला।

अभिगुप्ति–स्त्री० (सं०) रक्षण, बचाना।

अभिगृहीत–वि० (एडॉप्टेड) जिसका अभिग्रहण किया गया हो; गोद लिया हुआ, दत्तक।

अभिगोप्ता(प्तृ)–वि० (सं०) रक्षा करनेवाला।

अभिग्रस्त–वि० (सं०) शत्रु द्वारा आक्रांत।

अभिग्रह–पु० (सं०) ग्रहण; कलह; लूट; आक्रमण; चुनौती; शिकायत; अधिकार।

अभिग्रहण–पु० (सं०) किसी वस्तुका उसके स्वामीके सामने अपहरण। पु० (ऐक्विजिशन) अधिकार या अभियाचन द्वारा किसी की संपत्ति आदि लेना; अवाप्ति। (एडॉप्शन) चुन कर लेना, (दूसरेके पुत्र, नियम, प्रथा आदिको) अपना बना लेना या अपना कहकर स्वीकार करना, अंगीकार करना; दत्तक ग्रहण।

अभिघट–पु० एक प्राचीन बाजा।

अभिघात–पु० (सं०) प्रहार, आघात, चोट पहुँचाना; विनाश।

अभिघातक, अभिघाती(तिन्)–वि० (सं०) अभिघात करनेवाला।

अभिघार–पु० (सं०) घी; होममें घीकी आहुति; बघार।

अभिचर–पु० (सं०) नौकर, अनुचर।

अभिचार–पु० (सं०) तंत्रोक्त मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अनुष्ठान; बुरे कामोंके लिए मंत्रका प्रयोग।

अभिचारक, अभिचारी(रिन्)–वि० (सं०) अभिचार करनेवाला।

अभिजन–पु० (सं०) कुल, वंश; जन्म; उच्च कुलमें जन्म; जन्मभूमि; वह स्थान जहाँ बाप-दादा आदि जनमे या रहते हों; घरका मुखिया या श्रेष्ठ व्यक्ति; ख्याति; अनुचर; हमराही।

अभिजय–स्त्री० (सं०) पूर्ण विजय।

अभिजात–वि० (सं०) उच्च कुलमें उत्पन्न, कुलीन; योग्य; सुंदर; श्रेष्ठ; विद्वान्; बुद्धिमान्। पु० उच्च वंश; कुलीनता। **–तंत्र**–पु० (सं०) (ऐरिस्टोक्रैसी) वह शासन प्रणाली जिसमें शासन-व्यवस्था कुलीन वर्गके हाथमें हो; कुलीनतंत्र। **–साहित्य** पु० उच्च वर्गके लोगोंका साहित्य।

अभिजाति–स्त्री० (सं०) कुलीनता।

अभिजित–पु० (सं०) एक नक्षत्र; दिनका आठवाँ मुहूर्त।

अभिजित्–वि० (सं०) विजय प्राप्त करनेवाला; अभिजित् नक्षत्रमें उत्पन्न। पु० एक नक्षत्र; एक लग्न; दिनका आठवाँ मुहूर्त, दोपहरके एक घड़ी पहलेसे एक घड़ी बादतकका समय; एक यज्ञ; विष्णु।

अभिज्ञ–वि० (सं०) जाननेवाला; कुशल।

अभिज्ञा–स्त्री० (सं०) पहचानना; याद करना; भूत, भविष्यादि जान लेनेकी गौतम बुद्धकी अलौकिक शक्ति। (रेकॉगनिशन) अस्तित्व स्वीकृति, मान्यता।

अभिज्ञात–वि० (रेकगनाइज्ड) पहचाना हुआ; जिसका अस्तित्व मान लिया गया हो; (सरकार द्वारा) जिसे मान्यता दे दी गयी हो, मान्य, मान्यताप्राप्त।

अभिज्ञान–पु० (सं०) पहचानना; याद करना; जानना; पहचान; –पु० (आइडेंटिफिकेशन) किसीको देखकर या पहचानकर बतलाना कि वह अमुक व्यक्ति ही है, शिनाख्त; निशानी; मुद्राकी छाप, मुहर। **–पत्र**–पु० प्रमाणपत्र; सिफारिशकी चिट्ठी। **–शकुंतल**–पु० कालिदासकृत एक प्रसिद्ध नाटक ('शाकुंतल', असाधु)।

अभिज्ञापक–वि० (सं०) जतानेवाला; (एनाउंसर) सूचना देने या बतानेवाला; रेडियोपर समाचार सुनाने या कार्यक्रम आदि

बतानेवाला, उद्घोषक, आख्यापक ।

अभिज्ञापन–पु० (ऐनाउंसमेंट) कोई बात घोषित करना या बताना, संवाद आदि सुनाना–सूचित करना, आख्यापन ।

अभिटिप्पण–पु० (एनोटेशन) किसी पुस्तकके कठिन स्थलोंका अर्थ स्पष्ट करनेके लिए जोड़े गये अंश या टीका; **टिप्पण-लेखन** ।

अभिटिप्पणित–वि० (एनोटेटेड) अभिटिप्पणोंसे युक्त, सटीक, सटिप्पण ।

अभितः(तस)–अ० (सं०) निकट; सब ओरसे; पूरे तौरसे ।

अभिताप–पु० (सं०) अत्यधिक ताप (शारीरिक या मानसिक); पीड़ा; क्षोभ; भावावेश ।

अभिदर्शन–पु० (सं०) देखना; दृश्य होना, प्रकट होना ।

अभिदाता–पु० (सब्सक्राइबर) किसी कामके लिए बहुतोंसे प्राप्त सहायता-रूपमें कुछ धन देनेवाला; चंदा देनेवाला ।

अभिदान–पु० (सब्स्क्रिप्शन) किसी कामके लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा दिया हुआ धन, चंदा ।

अभिद्रव, अभिद्रवण–पु० (सं०) आक्रमण ।

अभिद्रुत–वि० (सं०) आक्रांत; रौंदा हुआ ।

अभिद्रोह–पु० (सं०) बुराई; हानि; निष्ठुरता; उत्पीड़न; गाली, निंदा ।

अभिधर्म–पु० (सं०) श्रेष्ठ धर्म; अध्यात्मतत्त्व (बौ०) । **–पिटक** –पु० बुद्धदेवके उपदेशोंके तीन संग्रहोंमेंसे एक जो बौद्ध दर्शनका मूल है ।

अभिधर्षण–पु० (सं०) प्रेतादिसे आविष्ट होना ।

अभिधा–स्त्री० (सं०) नाम, उपाधि, शब्द; शब्दका वाच्यार्थ या अक्षरार्थ; वाच्यार्थ प्रकट करनेवाली शब्दकी शक्ति ।

अभिधान–पु० (सं०) नाम, उपाधि; कथन; शब्द, शब्द-कोश, लुगत । **–माला**–स्त्री० शब्दकोश; नामकोश ।

अभिधानक–पु० (सं०) शब्द, आवाज ।

अभिधायक–पु० (सं०) (अर्थविशेषका) वाचक, नाम देने, कहने या प्रकट करनेवाला । (स्त्री० 'अभिधायिका' ।)

अभिधावक–वि०, पु० (सं०) धावा करनेवाला; आक्रमण करनेवाला, आक्रामक ।

अभिधावन–पु० (सं०) आक्रमण, धावा ।

अभिधेय–वि० (सं०) नाम देने योग्य; कथनीय, वाच्य; प्रतिपाद्य; नामवाला, नामक । पु० नाम; भावार्थ; वाच्यार्थ; विषय ।

अभिध्या–स्त्री० (सं०) लालच; इच्छा, चाह; प्राप्त करनेकी इच्छा ।

अभिध्यान–पु० (सं०) चाह, इच्छा, लोभ; चिंतन ।

अभिनंद–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला । पु० आनंद, प्रसन्नता; प्रशंसा; बधाई; इच्छा; प्रोत्साहन; अल्प सुख; परमात्माका एक नाम ।

अभिनंदन–पु० (सं०) आनंदित या प्रसन्न करना; सराहना करना; प्रोत्साहन, बधाई देना; स्वागत करना; विनती; इच्छा; आम । **–ग्रन्थ**–पु० वह ग्रंथ जो किसी प्रतिष्ठित या सम्मानित व्यक्तिकी महत्त्वपूर्ण सेवाओंका समादर करने तथा उनकी स्मृति चिरस्थायी बनाये रखनेके लिए तैयार कराया जाता है और (प्रायः) उसे अर्पित किया जाता है । **–पत्र**–पु० (ऐड्रेस ऑफ वेलकम) किसी बड़े अधिकारी, नेता आदिके आगमनपर उसके सम्मान एवं प्रशंसामें पढ़ा जानेवाला स्वागत-भाषण; मानपत्र ।

अभिनंदनीय, अभिनंद्य–वि० (सं०) अभिनंदन करने योग्य ।

अभिनंदित–वि० (सं०) जिसका अभिनंदन किया गया हो ।

अभिनंदी(दिन्)–वि० (सं०) अभिनंदन करनेवाला ।

अभिनय–पु० (सं०) मनोगत भाव व्यक्त करनेवाली शरीर-चेष्टा आदि; किसीके कार्य, चेष्टादिकी नकल करना; नाटक खेलना; नकल, स्वाँग ।

अभिनव–वि० (सं०) नया; बिलकुल नया; ताजा ।

अभिनवीकरण–पु० (रैशनैलिजेशन आफ इंडस्ट्री) दे० 'उद्योग-समीकरण', वैज्ञानिक व्यवस्था ।

अभिनहन–पु० (सं०) आँखपर बाँधनेकी पट्टी ।

अभिनिधन–वि० (सं०) जिसका नाश निकट हो । पु० सामवेदका एक मंत्र जिसका ऐसे अवसरपर जप करते हैं ।

अभिनियोग–पु० (सं०) संलग्न होना; (कार्यमें) दत्तचित्तता ।

अभिनिर्णय–पु० (वर्डिक्ट) किसी मामलेमें न्यायसभ्य द्वारा दिया गया निर्णयात्मक मत; किसीके संबंधमें उद्घोषित या सूचित जनता, निर्वाचकों आदिका मत; अंतिम निर्णय; **अधिमत** ।

अभिनिर्णयाधीन–वि० (सब-जुडिसी) जो अभिनिर्णयके लिए न्यायालयके पास भेज दिया गया हो और जिसपर अभी विचार हो रहा हो, विचाराधीन; **न्यायाधीन** ।

अभिनिर्णायक–पु० (रेफरी) वह व्यक्ति जिससे दो पक्षोंके बीच कोई विवाद या झगड़ा उत्पन्न होनेपर निर्णय करनेकी प्रार्थना या अनुरोध किया जाय; निर्देशी । दे० 'खेल-मध्यस्थ' ।

अभिनिर्देश–पु० (कन्सल्टेशन, रेफरेंस) किसी शब्दके अर्थ, प्रयोग, स्वरूप आदिके संबंधमें शंका उत्पन्न होनेपर या किसी घटना, व्यक्ति आदिके संबंधमें विशेष जानकारी प्राप्त करनेके लिए कोई कोश या अन्य आकर-ग्रंथ खोलकर उसमें दिए हुए विवरण, व्यवस्था आदिसे सहायता लेनेका कार्य ।

अभिनिर्याण–पु० (सं०) कूच; आक्रमण; शत्रुपर आक्रमण करनेके लिए आगे बढ़ना ।

अभिनिविष्ट–वि० (सं०) अभिनिवेश-युक्त ।

अभिनिवृत्ति–स्त्री० (सं०) कार्यकी समाप्ति; पूर्ति ।

अभिनिवेश–पु० (सं०) आग्रह; संकल्प; उत्कट या दृढ़ अनुराग; पक्की लगन, कार्यविशेषमें दृढ़ निश्चय और मनोयोगके साथ लग जाना; योगदर्शनमें बताये पाँच क्लेशोंमेंसे एक–मरणभय-जनक अज्ञान ।

अभिनिवेशित–वि० (सं०) प्रविष्ट किया हुआ; डुबाया हुआ ।

अभिनिषिद्ध–वि० दे० 'वारित' ।

अभिनिषेध–पु० (एब्रोगेशन) दे० 'निराकरण' ।

अभिनिष्क्रमण–पु० (सं०) बाहर जाना; प्रव्रज्याके लिए गृहत्याग (बौ०) ।

अभिनिष्पत्ति–स्त्री० (सं०) पूर्णता; समाप्ति; सिद्धि ।

अभिनिष्पन्न–वि० (सं०) पूर्ण; समाप्त; सिद्ध ।

अभिनीत–वि० (सं०) अभिनय किया हुआ; अनुकृत; निकट लाया हुआ; सुसज्जित; अलंकृत; योग्य; उचित; धीर; क्रुद्ध; दयालु, कृपायुक्त ।

अभिनेतव्य, अभिनेय–वि० (सं०) अभिनय करने योग्य ।

अभिनेता(तृ)–पु० (सं०) अभिनय करनेवाला, 'ऐक्टर' । (स्त्री० 'अभिनेत्री', 'ऐक्ट्रेस' ।)

अभिनै*–पु० दे० 'अभिनय' ।

अभिन्न–वि० (सं०) जो अलग न हो; भेद या अंतर न रखनेवाला; एकरूप; अविकृत; अपरिवर्तित; अविभक्त । **–पद**–पु० श्लेष अलंकारका एक भेद जिसमें पदका भंग न हो अर्थात् पूरे पदका श्लेष हो । **–हृदय**–वि० एकदिल, एकजान ।

अभिन्नता–स्त्री० (सं०) भेद या बिलगावका अभाव; गहरी मित्रता; एकरूपता ।

अभिन्यास–पु० (सं०) एक तरहका सान्निपातिक ज्वर । पु० (ले-आउट) किसी परिकल्पना (प्लैन) के अनुसार गृह, उद्यान आदिका निर्माण, विस्तार, आदि करना ।

अभिपतन–पु० (सं०) नजदीक जाना; आक्रमण करना; प्रस्थान करना ।

अभिपत्ति–स्त्री० (सं०) निकट जाना; समाप्ति; पूर्ति ।

अभिपन्न–वि० (सं०) निकट गया या आया हुआ; पलायित; पराभूत; भाग्यहीन; संकटग्रस्त; स्वीकृत; दोषी; मृत; दूर हटाया हुआ ।

अभिपुष्टि–स्त्री० (कॉनफर्मेशन) किसी कथन, बयान, संवाद आदिकी सत्यता पुनः स्वीकार कर उसे अधिक दृढ़ एवं विश्वसनीय बनाना; किसी पदपर किसीकी नियुक्तिका स्थायी और दृढ़ बना दिया जाना; संपुष्टि । **–सापेक्ष**–वि० (सबजेक्ट टु कनफर्मेशन) अभिपुष्टि हो जानेपर ही जिसका होना निर्भर हो, अभिपुष्टिके बाद ही जो पक्की समझी जाय ।

अभिपूर्ति करना–स० क्रि० (इंप्लिमेंट) ठेके आदिकी शर्तें पूरी

करना, दिया हुआ वचन पूरा करना, **कार्यान्वित करना** ।

अभिपुष्प–वि० (सं०) फूलोंसे ढका हुआ । पु० वहुत बढ़िया फूल ।

अभिप्रणय–पु० (सं०) प्रेम; कृपा, अनुग्रह ।

अभिप्रणयन–पु० (सं०) वेद-मंत्रोंके द्वारा संस्कार करना ।

अभिप्रपन्न–वि० (सं०) प्राप्त ।

अभिप्राणन–पु० (सं०) साँस बाहर निकालना ।

अभिप्राय–पु० (सं०) उद्देश्य, प्रयोजन; इच्छा; आशय, मतलब; राय; संवंध; विष्णु ।

अभिप्रेत–वि० (सं०) उद्दिष्ट, अभिलषित; स्वीकृत; प्रिय ।

अभिप्लव–पु० (सं०) उपद्रव, उत्पात; उतराकर वहना; बाढ़; गवामयन यज्ञका अंगरूप कर्मविशेष; प्राजापत्य आदित्य ।

अभिभव–पु० (सं०) हराना, दवा लेना; आक्रमण; तिरस्कार, अपमान; प्रवलता ।

अभिभाव, अभिभावी (विन्), अभिभावक–वि० (सं०) हरानेवाला; वशमें करनेवाला; दबा रखनेवाला; आक्रमण करनेवाला; तिरस्कार करनेवाला; संरक्षक, 'गार्जियन' ।

अभिभाषण–पु० (सं०) बोलना, भाषण करना; भाषण; सभापतिका (लिखित) भाषण ।

अभिभूत–वि० (सं०) पराजित; वशमें किया हुआ; आक्रांत; पीडित ।

अभिभूति–स्त्री० (सं०) अभिभव, पराभव; अपमान ।

अभिमंडन–पु० (सं०) सजाना, पक्ष-समर्थन ।

अभिमंता (तृ)–वि० (सं०) गर्व करनेवाला, घमंडी ।

अभिमंत्रण–पु० (सं०) मंत्र द्वारा संस्कार या पवित्र करना; आवाहन ।

अभिमंत्रित–वि० (सं०) मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ; आवाहित ।

अभिमंथ–पु० (सं०) आँखका एक रोग ।

अभिमत–वि० (सं०) इष्ट, प्रिय, मनचाहा; सम्मत; स्वीकृत; आदृत । पु० इच्छा; राय; मनचाही वात ।

अभिमति–स्त्री० (सं०) अभिमान; आदर; अभिलाषा; राय, विचार ।

अभिमन्यु–पु० (सं०) सुभद्राके गर्भसे उत्पन्न अर्जुनका बेटा (जो महाभारतमें चक्रव्यूहका भेदन करते समय मारा गया) ।

अभिमर–पु० (सं०) नाश; वध; युद्ध, संघर्ष; अपने पक्ष द्वारा विश्वासघात; कैद; वह जो निराश होकर शेर या हाथीसे लड़नेके लिए आगे बढ़े ।

अभिमर्दन–पु० (सं०) पीसना, रगड़ना; निचोड़ना; कुचलना; युद्ध ।

अभिमर्शक, अभिमर्शी (र्शिन्), अभिमर्षक, अभिमर्षी (र्षिन्)–वि० (सं०) अभिमर्शन करनेवाला ।

अभिमर्शन, अभिमर्षण–पु० (सं०) छूना; आक्रमण; संभोग; बलात्कार ।

अभिमाद–पु० (सं०) नशा ।

अभिमान–पु० (सं०) गर्व, घमंड ।

अभिमानित–पु० (सं०) अहंकार; प्रेम; संभोग । वि० गर्वित ।

अभिमानी (निन्)–वि० (सं०) घमंडी, दर्पी, अपनेको बड़ा समझनेवाला ।

अभिमुख–वि० (सं०) जो किसीकी ओर मुख किये हुए हो; प्रवृत्त; उद्यत । अ० ओर, सामने ।

अभिमृष्ट–वि० (सं०) छुआ हुआ; आक्रांत ।

अभियंता–पु० (सं०) नहर, पुल, इमारतों आदिके नक्शे बनाने और उनके निर्माणकी देखरेख करनेवाला; यंत्र विशेषज्ञ; दे० इंजीनियर ।

अभियाचन–पु०, **अभियाच्ञा**–स्त्री० (सं०) प्रार्थना; याचना, माँगना ।

अभियाचना–स्त्री० (डिमांड) दृढ़ताके साथ या अधिकारपूर्वक याचना करना, माँग ।

अभियाता (तृ), अभियायी (यिन्)–वि० (सं०) निकट जानेवाला; आक्रमण करनेवाला ।

अभियान–पु० (सं०) सामने जाना; युद्धके लिए आगे बढ़ना, चढ़ाई, आक्रमण । (कैंपेन) किसी निश्चित क्षेत्रमें या किसी विशेष लक्ष्यकी ओर किये गये सैनिक आक्रमणोंकी परंपरा, मुहिम; किसी लक्ष्यकी दृष्टिसे अथवा जनताको किसी नीतिके पक्षमें प्रभावित करनेके लिए की जानेवाली संघटित काररवाई; व्यवस्थित आंदोलन ।

अभियानी–पु० विजयप्राप्ति या लक्ष्य सिद्धिके लिए अभियान करनेवाला ।

अभियुक्त–वि० (सं०) जिसपर अभियोग लगाया गया हो, मुलजिम; अध्यवसायी; संलग्न; आक्रांत; नियुक्त; कथित; दक्ष, विद्वान् । पु० वह जिसपर अभियोग लगाया गया हो ।

अभियुक्ति–स्त्री० (सं०) (चार्ज) न्यायालयमें किसी व्यक्तिपर अपराध या नियमविरोधी कार्य करनेका आरोप लगाना, अभियोग, दोषारोप ।

अभियोक्ता (क्तृ)–वि० (सं०) अभियोग लगानेवाला, आरोपी, फरियादी; आक्रमण करनेवाला । पु० शत्रु; आक्रामक; आरोप करनेवाला; दावा करनेवाला ।

अभियोग–पु० (सं०) (एक्यूजेशन) (किसीपर) अपराध-विशेषका आरोप; फौजदारी नालिश; आक्रमण; मनोयोग, लगकर कोशिश करना, लगन । **–पत्र**–पु० वह पत्र जिसमें किसीपर लगाये गये अभियोगका वर्णनकर उसकी जाँच की प्रार्थना की गयी हो ।

अभियोगाधीन–वि० (अंडर ट्रायल) (वह व्यक्ति या बंदी) जिसका अभियोग अभी अदालतमें चल रहा हो ।

अभियोगी (गिन्)–वि० (सं०) फरियादी; आक्रमण करनेवाला; मनोयोग-पूर्वक लगा हुआ । पु० वादी ।

अभियोजन–पु० (प्रासिक्यूशन) किसीपर फौजदारी मामला चलानेका कार्य (विशेषतः पुलिस द्वारा) । **–कारी**–पु० (प्रासिक्यूटर) (पुलिसकी ओरसे) न्यायालयके सामने रखे गये फौजदारी मामलेका संचालन करनेवाला ।

अभियोज्य–वि० (सं०) जिसपर अभियोग लगाया जा सके । **–दोष**–पु० वह दोष जिसमें अभियोग चल सके ।

अभिरक्त–वि० (सं०) लगा हुआ, संवद्ध ।

अभिरक्षक–पु० (कस्टोडियन) सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी वस्तु या व्यक्तिको अपने अधिकार, देखरेख या संरक्षणमें रखनेवाला; किसी संस्थाके अधिकारों आदिकी रक्षाका विशेष रूपसे ध्यान रखनेवाला ।

अभिरक्षण–पु०, **अभिरक्षा**–स्त्री० (सं०) (कस्टॅडी) किसी संपत्तिकी अच्छी तरह देख-भाल करना; किसी व्यक्तिको भागने आदिसे रोकनेके लिए अपने संरक्षणमें रखना ।

अभिरक्ष्य–पु० (सं०) (वार्ड) दे० 'प्रपन्न' ।

अभिरत–वि० (सं०) प्रसन्न; अनुरक्त; लगा हुआ; * युक्त ।

अभिरति–स्त्री० (सं०) अनुराग; लगन; सुखानुभव; कार्याभ्यास; संतोष ।

अभिरना*–अ० क्रि० भिड़ना; टकराना; किसीका सहारा लेना ।

अभिरमण–पु० (सं०) (किसी चीजमें) आनंद लेना ।

अभिराद्ध–वि० (सं०) प्रसन्न या संतुष्ट किया हुआ ।

अभिराम–वि० (सं०) अच्छा लगनेवाला; सुंदर; मोहक; सुखद । पु० शिव; आनंद; सुख ।

अभिरामी (मिन्)–वि० (सं०) रमण करनेवाला; संचरण करनेवाला ।

अभिरुचि–स्त्री० (सं०) चाह; शौक; झुकाव; विशेष रुचि; कीर्ति आदिकी अभिलाषा ।

अभिरुत–वि० (सं०) शब्दायमान; गुंजित । पु० शब्द, स्वर ।

अभिरुता–स्त्री० (सं०) एक मूर्च्छना (संगीत) ।

अभिरूप–वि० (सं०) अनुरूप; सुंदर, मनोहर; प्रिय; सदृश; चतुर, विद्वान् । पु० चंद्रमा; विष्णु; कामदेव ।

अभिरोग–पु० (सं०) चौपायोंका एक रोग ।

अभिलक्षित–वि० (सं०) चिह्नोंसे युक्त; संकेतित ।

अभिलषण–पु० (सं०) चाहना, इच्छा करना; ललचना ।

अभिलषित–वि० (सं०) चाहा हुआ, वांछित ।

अभिलाख*–पु० दे० 'अभिलाष'।

अभिलाखना*–स० क्रि० चाहना, अभिलाष करना।

अभिलाप–पु० (सं०) शब्द; कथन; वर्णन; संकल्प-कथन।

अभिलाव–पु० (सं०) घास, फसल आदि काटना।

अभिलाष, अभिलास–पु० (सं०) चाह, इच्छा; लोभ; प्रियसे मिलनेकी इच्छा।

अभिलाषक, अभिलाषुक–वि० (सं०) दे० 'अभिलाषी'।

अभिलाषा, अभिलासा–स्त्री० (सं०) दे० 'अभिलाष'।

अभिलाषी(षिन्)–वि० (सं०) चाहनेवाला, इच्छुक।

अभिलिखित–वि० (सं०) लिखा या खोदा हुआ; (रेकॉर्डेड) नियमित रूपसे लिखकर सुरक्षित रखा हुआ, अभिलेखके रूपमें लाया हुआ।

अभिलीन–वि० (सं०) अनुरक्त, आसक्त; पसंद किया हुआ।

अभिलुलित–वि० (सं०) क्षुब्ध, अस्थिर; क्रीड़ायुक्त।

अभिलूता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मकड़ी।

अभिलेख–पु० (सं०) लेख; पत्थर, ताम्रपट आदिपर खुदा हुआ लेख। (रेकॉर्ड) किसी तथ्य, विषय या काररवाई आदिके संबंधमें नियमित रूपसे लिखी हुई सब बातें; न्यायालयके कागज-पत्रों, पंजी आदिमें लिखकर सुरक्षित रूपसे रखा गया गवाहों, वादी-प्रतिवादी आदिका वक्तव्य या न्यायाधीशका फैसला। **–न्यायालय**–पु० (कोर्ट ऑफ रेकार्ड) राज्यके प्रधान अभिलेख विभागका वह न्यायालय जिसे लिपि-संबंधी या ऐसी ही अन्य भूलें ठीक करनेका अधिकार होता है। **–पाल**–पु० (रेकार्डकीपर) किसी न्यायालय, कार्यालय आदिके अभिलेखोंकी देखभाल करनेवाला कर्मचारी।

अभिलेखन–पु० (सं०) लिखना; खोदना; लिखकर सुरक्षित रखना।

अभिलेखागार–पु० (सं०) (आर्काइव्ज) वह प्रकक्ष या स्थान जहाँ सार्वजनिक अभिलेख संगृहीत कर रखे जाते हैं, पुरालेख-भवन।

अभिलेखित–पु० (सं०) लिपिबद्ध पत्रादि। वि० लिपिबद्ध।

अभिलोपन करना–स० क्रि० (आब्लिटरेट) मिटा देना; उड़ा देना, नष्ट कर देना, कोई चिह्न या अवशेष न छोड़ना।

अभिवंचित–वि० (सं०) जो छला गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो।

अभिवंदन–पु० (सं०) प्रणाम करना, वंदन।

अभिवंदना–स्त्री० (सं०) नमस्कार; स्तुति।

अभिवंदनीय, अभिवंद्य–वि० (सं०) प्रणाम करने योग्य, वंदनीय; स्तुति करने योग्य।

अभिवंदित–वि० (सं०) अभिवादित, वंदित।

अभिवक्ता–पु० (प्लीडर) न्यायालयमें किसीकी ओरसे मुकदमेकी पैरवी करनेवाला, वकील, पक्षसमर्थक।

अभिवचन–पु० (सं०) प्रतिज्ञा, वादा।

अभिवदन–पु० (सं०) नमस्कार, प्रणाम। (प्लीडिंग) न्यायालयमें उपस्थित किसी वादमें किसी पक्षका विधिक प्रतिनिधि बनकर उसके समर्थनमें प्रमाण, तर्क आदि देते हुए भाषण करना, पक्ष-समर्थन।

अभिवर्तन–पु० (सं०) (किसीकी ओर) बढ़ना; आक्रमण करना।

अभिवांछा–स्त्री० (सं०) इच्छा, अभिलाषा।

अभिवांछित–वि० (सं०) अभिलषित, मनचाहा। पु० इच्छा, अभिलाषा।

अभिवाद, अभिवादन–पु० (सं०) प्रणाम करना; छोटेकी ओरसे बड़ेको नमस्कार; स्तुति।

अभिवादक, अभिवादयिता(तृ), अभिवादी(दिन्)–वि० (सं०) अभिवादन करनेवाला।

अभिवादित–वि० (सं०) जिसका आदरपूर्वक अभिवादन किया गया हो।

अभिवाद्य–वि० (सं०) अभिवादन करने योग्य।

अभिवास, अभिवासन–पु० (सं०) आवरण, चादर; वस्त्रादिसे आच्छादित करना।

अभिविनीत–वि० (सं०) सुशील, शिष्ट; शिक्षित; शुद्ध, पवित्र।

अभिविमान–वि० (सं०) अपरिमित आकारका; परमात्माका एक विशेषण।

अभिविश्रुत–वि० (सं०) सुविख्यात, सुप्रसिद्ध।

अभिवृद्धि–स्त्री० (सं०) सफलता; बढ़ती, अभ्युदय।

अभिव्यंजक–वि० (सं०) प्रकट करनेवाला।

अभिव्यंजन–पु० (सं०) विचारों, भावोंको भाषा या संकेतों द्वारा स्पष्ट रूपसे प्रकट करना; अभिव्यक्ति।

अभिव्यंजना–स्त्री० (सं०) अभिव्यंजन। **–वाद**–पु० (एक्सप्रेशनिज्म) संगीत तथा साहित्यमें वह सिद्धान्त जिसके अनुसार यथार्थ स्थितिकी तुलनामें आंतरिक अनुभूतिका चित्रण करना ही वांछनीय माना जाता है।

अभिव्यंजित–वि० (सं०) शब्दों, संकेतों, चेष्टाओं द्वारा प्रकटित।

अभिव्यक्त–वि० (सं०) प्रकट, स्पष्ट, प्रकाशित; कार्यरूप-प्राप्त।

अभिव्यक्ति–स्त्री० (सं०) व्यक्त, प्रकट होना; कारणका कार्यरूपमें आविर्भाव; प्रकाशन।

अभिव्यापक, अभिव्यापी(पिन्)–वि० (सं०) सब ओर फैला हुआ; समावेश करनेवाला।

अभिव्याप्ति–स्त्री० (सं०) सर्वव्यापकता; समावेश।

अभिशंका–स्त्री० (सं०) संदेह; चिंता; आशंका, भय।

अभिशंसन–पु० (सं०) दोष लगाना; अपराध या आरोपकी विधिक पुष्टि; झूठा दोष लगाना; चोट पहुँचाना।

अभिशंसा–स्त्री० (सं०) दे० 'अभिशस्ति'।

अभिशपन–पु० (सं०) झूठा आरोप।

अभिशप्त–वि० (सं०) शापित; अभियुक्त; जिसपर झूठी तुहमत लगायी गयी हो।

अभिशस्त–वि० (सं०) अभिशप्त; (कनविक्टेड) न्यायालयमें जिसका दोषी होना प्रमाणित हो गया हो; दोषसिद्ध।

अभिशस्ति–स्त्री० (सं०) अभिशाप; विपत्ति; (कनविक्शन) अदालत या पंचों द्वारा किसी व्यक्तिका अपराधी घोषित किया जाना, यह प्रख्यापित करना कि उसपर जो आरोप लगाया गया था वह प्रमाणित हो गया है; दोषसिद्धि।

अभिशाप–पु० (सं०) शाप, किसीका बुरा मनाना; लांछन; मिथ्या आरोप; बुराई; अनिष्टका हेतु, दुःखद वस्तु।

अभिशापन–पु० (सं०) शाप देना; कोसना।

अभिशून्यन–पु० (एनलिंग) विधि, आज्ञप्ति (डिक्री), न्यायालयके निर्णय आदिको रद्द कर देना, मंसूख करना, निष्प्रभावन।

अभिशून्यीकृत–वि० (एनल्ड) जो रद्द या मंसूख कर दिया गया हो (निर्णय, विधि आदि)।

अभिषंग, अभिषंजन–पु० (सं०) पूर्ण संबंध या मिलन; आलिंगन; संभोग; हार खाना; अचानक आया हुआ संकट या आघात; शपथ; कोसना; प्रेतादिका आवेश; तिरस्कार।

अभिषंगी–पु० (एकॉम्प्लिस) दे० 'सहापराधी'।

अभिषद्–स्त्री० (सिंडिकेट) किसी व्यापारिक वस्तुके उत्पादन या पूर्ति आदिका एकाधिकार प्राप्त करने या किसी अन्य सामान्य उद्देश्यकी सिद्धिके लिए स्थापित व्यापारिक संस्थाओंकी समिति; लेख, कहानियाँ आदि प्राप्त कर निर्धारित पुरस्कारकी शर्तपर उन्हें एक साथ कई समाचार-पत्रों, मासिकों आदिमें प्रकाशित करानेवाली संस्था; 'सिनेट'की प्रबंध-समिति।

अभिषव–पु० (सं०) स्नान; यज्ञका अंगभूत स्नान; यज्ञ; सोमरस निचोड़ना; सोमपान; चुआना (मद्य आदि); खमीर; कांजी।

अभिषवण–पु० (सं०) स्नान; सोमरस निचोड़नेका साधन।

अभिषवणी–स्त्री० (सं०) सोमरस निकालनेका एक साधन।

अभिषावक, अभिषोता(तृ)–पु० (सं०) सोमरस निचोड़नेवाला पुरोहित।

अभिषिक्त–वि० (सं०) जिसका अभिषेक हो चुका हो, जिसपर बाधा दूर करनेके लिए अभिमंत्रित जल छिड़का गया हो; अधिकार-प्राप्त, पदारूढ़।

अभिषुत–वि० (सं०) निचोड़ा हुआ; जो स्नान कर चुका हो।

अभिषेक–पु० (सं०) जल छिड़कना; राजाका सिंहासनारोहण, गद्दीनशीनी; यज्ञादिके अंतमें शांतिके लिए किया जानेवाला

स्नान; अभिषेकमें काम आनेवाला पवित्र जल। **–शाला**–स्त्री० राज्याभिषेकका मंडप।

अभिषेक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) अभिषेक करनेवाला।

अभिषेक्य–वि० (सं०) दे० 'अभिषेचनीय'।

अभिषेचन–पु० (सं०) अभिषेक करना।

अभिषेचनीय, अभिषेच्य–वि० (सं०) अभिषेकके योग्य; राज्यारोहणका अधिकारी; अभिषेक-संबंधी।

अभिषेणन–पु० (सं०) शत्रुका सामना करनेके लिए आगे बढ़ना।

अभिष्यंद–पु० (सं०) चूना, रसना; स्राव; आँखका एक रोग; आँख आना।

अभिष्यंदी(दिन्)–वि० (सं०) चूने या रसनेवाला; रेचक। **–(दि)रमण**–पु० उपनगर, बड़े नगरसे लगा हुआ छोटा नगर।

अभिष्वंग–पु० (सं०) बहुत गहरा संबंध, अनुरक्ति, प्रेम।

अभिसंग–पु० (सं०) दे० 'अभिषंग'।

अभिसंताप–पु० (सं०) संघर्ष, युद्ध; पीड़ा।

अभिसंदेह, अभिसंदोह–पु० (सं०) विनिमय; जननेंद्रिय।

अभिसंध, अभिसंधक–पु० (सं०) धोखा देनेवाला, वंचक; निंदक।

अभिसंधा–स्त्री० (सं०) वचन; वादा; धोखा।

अभिसंधान–पु० (सं०) वचन; लक्ष्य; उद्देश्य; लगन; लक्ष्य करना; धोखा देना; ठगना; संधि या समझौता करना।

अभिसंधि–स्त्री० (सं०) वचन; अभिप्राय, मत; लक्ष्य; समझौता; धोखेबाजी, प्रतारणा; कुचक्र, षड्यंत्र।

अभिसंधिता–स्त्री० (सं०) कलहांतरिता नायिका।

अभिसंपात–पु० (सं०) मिलन, संगम; युद्ध, संघर्ष; पतन; शाप।

अभिसंयोग–पु० (सं०) प्रगाढ़ संबंध।

अभिसंश्रय–पु० (सं०) रक्षा, आश्रय, पनाह।

अभिसंस्कार–पु० (सं०) मत, विचार, कल्पना; निरर्थक कार्य।

अभिसमय–पु० (कॉनवेंशन) (१) परस्पर संबंध रखनेवाले (डाक, तार आदि) कतिपय विषयोंके संबंधमें किया गया विभिन्न राज्योंका समझौता; (२) युद्धलिप्त देशोंके सैनिक अधिकारियोंका युद्धस्थगन आदि-संबंधी वह समझौता जो दोनों ओरके प्रतिनिधियोंकी बातचीत द्वारा किया जाय और जिसका पालन दोनोंके लिए पक्की संधिके सदृश ही आवश्यक हो; उपसंधि; (३) इस तरहका समझौता करनेके लिए होनेवाला उक्त राज्योंके प्रतिनिधियोंका सम्मेलन; संगमन; (४) कोई प्रथा या परिपाटी जो परंपरासे चल पड़ी हो और जो अलिखित होते हुए भी सबके लिए मान्य हो; परिपाटी, रूढि।

अभिसम्मत–वि० (सं०) सम्मानित।

अभिसर–पु० (सं०) अनुचर; अनुयायी; साथी।

अभिसरण, अभिसारण–पु० (सं०) किसी स्थानकी ओर बढ़ना या मिलनेके लिए जाना; नायक या नायिकाका मिलनेके लिए संकेतस्थलपर जाना।

अभिसरन*–पु० आश्रय, सहारा; अभिसरण।

अभिसरना*–अ० क्रि० जाना; संकेत-स्थलपर प्रियसे मिलनेके लिए जाना।

अभिसर्ग–पु० (सं०) रचना, सृष्टि।

अभिसर्जन–पु० (सं०) दान; देन; वध।

अभिसर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) हमला करनेवाला, आक्रामक।

अभिसामयिक–वि० (कनवेंशनल) जो पहलेसे चली आती हुई परंपरा या परिपाटीके अनुरूप हो; रूढ।

अभिसार–पु० (सं०) अभिसरण; प्रियसे मिलनेके लिए जाना; संकेतस्थल; साथी; अनुचर; युद्ध; शक्ति; यंत्र; हथियार, औजार; शुद्धिसंस्कार।

अभिसारना*–अ० क्रि० दे० 'अभिसरना'।

अभिसारिका–स्त्री० (सं०) प्रियसे मिलनेके लिए निर्दिष्ट स्थानपर जानेवाली स्त्री।

अभिसारिणी–स्त्री० (सं०) अभिसारिका; एक वृत्त।

अभिसारी(रिन्)–पु० (सं०) अभिसार करनेवाला; धावा करनेवाला; सहायक, साथी, हमराही।

अभिसेख*–पु० दे० 'अभिषेक'।

अभिस्ताव–पु० (रेकमिंडेशन) किसीके पक्षमें अनुकूल प्रभाव डालनेके लिए या किसीकी प्रशंसामें कुछ कहना या लिखना; कोई सुझाव या सलाह देते हुए उसके पक्षमें अपना भाव प्रकट करना, सिफारिश, संस्तुति।

अभिस्यंद–पु० (सं०) दे० 'अभिष्यंद'।

अभिस्रावण–पु० (डिस्टिलेशन) दे० 'आसवन'।

अभिस्रावणी–स्त्री० (डिस्टिलरी) दे० 'आसवनी'; मद्य निर्माणशाला।

अभिहत–वि० (सं०) पीटा गया, आहत; आक्रांत; पराभूत; गुणित।

अभिहति–स्त्री० (सं०) निशाना लगाना, मारना; गुणनक्रिया; गुणनफल।

अभिहर–पु० (सं०) ले भागना; हटाना। वि० ले भागनेवाला।

अभिहरण–पु० (सं०) निकट लाना; लूटना; (डिस्ट्रेस) ऋण, किराये आदिकी वसूलीके लिए न्यायालयके आदेशसे किसीकी जायदाद, जमीन आदि जब्त कर लेना, नीलाम कर देना, या कुर्की। **–अधिपत्र**–पु० अभिहरणके लिए जारी किया गया अधिपत्र (वारंट)।

अभिहर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) लेकर चल देनेवाला; अपहरण करनेवाला, डाकू।

अभिहस्य–पु० उपहासास्पद चित्रण।

अभिहार–पु० (सं०) चोरी; दे० 'अभिहरण', कुर्की; डाका; हमला; हथियारसे लैस होना; मिश्रण; प्रयत्न; गाँजा आदि पीनेवाला, मद्यप।

अभिहारी(रिन्)–वि० (सं०) हरण करनेवाला; चुरानेवाला–'राधासी न और अभिहारिणी लखाई है'–रा० ना०।

अभिहास–पु० (सं०) दिल्लगी, मसखरी, मजाक; विनोद।

अभिहित–वि० (सं०) कहा हुआ, उक्त; अभिधा वृत्ति द्वारा बोधित; आबद्ध। पु० नाम; शब्द। **–परिव्यय**–पु० (नॉमिनल कॉस्ट) कहने भरके लिए, नाममात्रका, परिव्यय (लागत)। **–पूंजी**–स्त्री० (नॉमिनल कैपिटल) अवास्तविक या कहने भरके लिए उल्लिखित पूंजी। **–संधि**–स्त्री० बिना लिखा-पढ़ीकी संधि (कौ०)।

अभिहितान्वयवाद–पु० (सं०) कुमारिल भट्ट द्वारा प्रवर्तित साहित्यका सिद्धांत जिसमें वाक्यार्थबोधके लिए अभिधा द्वारा उपस्थित पदार्थोंका वक्ताके तात्पर्यानुसार अन्वय मुख्य माना जाता है।

अभिहूति–स्त्री० (सं०) आवाहन; पूजन।

अभिहोम–पु० (सं०) घीकी आहुति देना।

अभी–अ० इसी वक्त, इसी क्षण, तत्काल; अबतक; अब भी। वि० (सं०) भयरहित, निर्भीक।

अभीक–वि० (सं०) निर्भय; लालसा रखनेवाला; कामुक; उत्सुक; क्रूर; अभिगत; भयंकर। पु० पति; स्वामी; कवि।

अभीक्षक–वि० किसी काम या चीजको अच्छी तरह देखनेवाला; निगरानी करनेवाला (केयर टेकर)।

अभीघात–पु० (सं०) दे० 'अभिघात'।

अभीत–वि० (सं०) निडर, निर्भीक।

अभीति–स्त्री० (सं०) निर्भीकता; हमला, धावा; नैकटच। वि० निर्भीक।

अभीप्सा–स्त्री० किसी वस्तुको प्राप्त करनेकी उत्कट इच्छा। (एसपिरेशन); किसी भी संकल्पको या आह्वानको स्वीकार करके निरन्तर लक्ष्य की ओर केन्द्रित इच्छा।

अभीप्सित–वि० (सं०) वांछित, चाहा हुआ, अभिलषित। पु० इच्छा, अभिलाषा।

अभीप्सी(प्सिन्), अभीप्सु–वि० (सं०) इच्छुक।

अभीम–वि० (सं०) भय न उत्पन्न करनेवाला। पु० विष्णु।

अभीमान–पु० (सं०) दे० 'अभिमान'।

अभीर–पु० (सं०) अहीर; एक छंद।

अभीरणी–स्त्री० (सं०) एक तरहका साँप।

अभीराजी–स्त्री० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

अभीरी–स्त्री० (सं०) अहीरोंकी बोली।

अभीरु-वि० (सं०) निडर; जो भयदायक न हो; निर्दोष। पु० शिव; भैरव; युद्धभूमि। **-पत्नी**-स्त्री० शतमूली, सतावर।

अभीरुण-वि० (सं०) निडर; निर्दोष।

अभील-पु० (सं०) संकट; कठिनाई; भयंकर दृश्य।

अभीशाप-पु० (सं०) दे० 'अभिशाप'।

अभीशु, अभीषु-पु० (सं०) लगाम; प्रकाश-किरण; बाहु; उँगली।

अभीष्ट-वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित; अभिप्रेत; प्रिय; ऐच्छिक, वैकल्पिक। पु० अभिलषित वस्तु; मनोरथ; प्रेमी; प्रिय व्यक्ति। **-लाभ**-पु० अभीष्ट वस्तुकी प्राप्ति। **-सिद्धि**-स्त्री० अभीष्ट कार्यकी सिद्धि।

अभीष्टा-स्त्री० (सं०) प्रेमिका; पान, तांबूल।

अभीष्टि-स्त्री० (सं०) इच्छा।

अभीसार-पु० (सं०) आक्रमण, हमला।

अभुआना*-अ० क्रि० प्रेतावेशमें हाथ-पाँव पटकना, बकझक करना आदि।

अभुक्त-वि० (सं०) न खाया हुआ; न भोगा हुआ; अछूता, अव्यवहृत; (अनकैश्ड) जिसका उपभोग या भुगतान न किया गया हो; जिसने भोजन या भोग न किया हो। **-पूर्व**-वि० जिसका पहले उपभोग न किया गया हो। **-मूल**-पु० ज्येष्ठा नक्षत्रके अंत और मूल नक्षत्रके आदिकी दो-दो घड़ियाँ।

अभुग्न-वि० (सं०) न झुका हुआ, अकुटिल, सीधा; स्वस्थ, रोगहीन।

अभुज-वि० (सं०) बाहुरहित, लूला।

अभू-पु० (सं०) विष्णु।* अ० अब भी।

अभूखन*-पु० दे० 'आभूषण'।

अभूत-वि० (सं०) जो हुआ न हो; अविद्यमान; मिथ्या; असाधारण। **-दोष**-वि० निर्दोष। **-पूर्व**-वि० जो पहले न हुआ हो; अनोखा, अद्भुत। **-शत्रु**-वि० जिसका कोई शत्रु न हो।

अभूतार्थ-पु० (सं०) अश्रुतपूर्व या अनहोनी बात।

अभूताहरण-पु० (सं०) कपटपूर्ण या व्यंग्यमय बात कहना (ना०)।

अभूति-स्त्री० (सं०) अविद्यमानता; धन या शक्तिका अभाव; निर्धनता। वि० निर्धन।

अभूतोपमा-स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक उपभेद जिसमें उपमेयके विशेष उत्कर्षके कारण उपमानका कथन न हो सके।

अभूमि-स्त्री० (सं०) पृथ्वीसे भिन्न कोई चीज; अयुक्त स्थान; स्थानाभाव। **-प्राप्त सैन्य**-पु० ऐसे स्थानपर पड़ी हुई सेना जहाँसे लड़ना संभव न हो, प्रतिकूल भूमिमें पड़ी हुई सेना (कौ०)।

अभूरि-वि० (सं०) कुछ, थोड़ा; कतिपय।

अभूष, अभूषित-वि० (सं०) अनलंकृत, विना गहनेका।

अभृत, अभृतक-वि० (सं०) पारिश्रमिक आदि न पानेवाला। **-सैन्य**-पु० वह सेना जिसे वेतन या भत्ता न दिया गया हो (कौ०)।

अभृश-वि० (सं०) थोड़ा, कुछ, चंद।

अभेद-पु० (सं०) भेदका अभाव, एकता; एकरूपता। वि० भेद-रहित, अनुरूप; अविभक्त; * दे० 'अभेद्य'। **-रूपक**-पु० रूपकालंकारका एक भेद जिसमें उपमान और उपमेयकी एकता बतायी जाती है। **-वादी(दिन्)**-वि० अद्वैतवादी।

अभेदनीय, अभेदिक-वि० (सं०) 'अभेद्य'।

अभेद्य-वि० (सं०) जिसका भेद न हो सके; जिसमें घुसा न जा सके; अविभाज्य। पु० हीरा।

अभेय, अभेव*-पु० अभेद, एकता। वि० अभिन्न, एक।

अभेरना-स० क्रि० संयुक्त करना; मिश्रण करना, मिलाना।

अभेरा*-पु० रगड़, टक्कर, मुठभेड़।

अभै*-वि० दे० 'अभय'।

अभोक्तव्य-वि० (सं०) जिसका उपभोग या उपयोग न किया जाय।

अभोक्ता(क्तृ)-वि० (सं०) उपभोग न करनेवाला; परहेज करनेवाला, विरक्त।

अभोग-पु० (सं०) भोगका अभाव। * वि० अभुक्त।

अभोगी(गिन्)-वि० (सं०) अभोक्ता; विरक्त।

अभोग्य-वि० (सं०) जो भोग करने योग्य न हो, जिसे भोगना वर्जित हो।

अभोज*-वि० दे० 'अभोज्य'।

अभोजन-पु० (सं०) न खाना; खानेसे परहेज, उपवास।

अभोज्य-पु० (सं०) न खाने योग्य; जिसके खानेका निषेध हो।

अभौतिक-वि० (सं०) जो पंच भूतोंसे न बना हो, अपार्थिव।

अभौम-वि० (सं०) जो भूमिसे उत्पन्न न हुआ हो, अपार्थिव।

अभ्यंग-पु० (सं०) लेपन; तेल-उबटन आदिकी मालिश।

अभ्यंजन-पु० (सं०) दे० 'अभ्यंग'; आँखोंमें सुरमा या अंजन लगाना; तेल, अंगरागादि।

अभ्यंतर-पु० (सं०) वस्तुका भीतरी भाग; भीतरका या बीचका अवकाश; अंतःकरण। अ० भीतर, अंदर। वि० भीतरी, आंतरिक; अंतरंग; परिचित; कुशल; जिसके साथ घनिष्ठ संबंध हो।

अभ्यंतरक-पु० (सं०) घनिष्ठ मित्र।

अभ्यंश-पु० (कोटा) दे० 'वंटितांश', 'नियतांश'।

अभ्यक्त-वि० (सं०) जिसे तेल आदिकी मालिश की गयी हो; जो तेल-फुलेल लगाये हुए हो।

अभ्यनुकूलन-पु० (सं०) आवश्यक परिवर्तन, समंजन आदि करके स्थिति, समय, कार्य आदिके अनुरूप बना लेना, 'एडैप्टेशन'।

अभ्यमन-पु० (सं०) आक्रमण; चोट; रोग।

अभ्यमित-वि० (सं०) रुग्ण; आहत।

अभ्यर्चन-पु०, **अभ्यर्चना**-स्त्री० (सं०) पूजा, आराधना।

अभ्यर्ण-वि० (सं०) निकट, आसन्न; निकट आनेवाला। पु० नैकट्य, सामीप्य।

अभ्यर्थन-पु०, **अभ्यर्थना**-स्त्री० (सं०) बिनती, प्रार्थना; दरख्वास्त; अगवानी, स्वागत। **-समिति**-स्वागत समिति।

अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थ्य-वि० (सं०) अभ्यर्थना करने योग्य।

अभ्यर्थित-वि० (सं०) जिसकी अभ्यर्थना की गयी हो।

अभ्यर्थी(र्थिन्)-वि० (सं०) अभ्यर्थना करनेवाला। पु० (कैंडिडेट) किसी परीक्षामें बैठने या नौकरी आदिके लिए आवेदन-पत्र देनेवाला।

अभ्यर्दन-पु० (सं०) उत्पीड़न, कष्ट देना।

अभ्यर्दित-वि० (सं०) जिसे कष्ट दिया गया हो, उत्पीड़ित।

अभ्यर्पित-वि० (सर्व्ड) (वह सरकारी आदेश, आह्वान पत्रादि) जो किसीको विधिवत् अर्पित या संप्रदत्त कर दिया गया हो, तामील।

अभ्यर्हणा-स्त्री० (सं०) पूजा, सम्मान, इज्जत करना।

अभ्यवकर्षण-पु० (सं०) खींचना, निकालना, (शल्यादि)।

अभ्यवस्कंद, अभ्यवस्कंदन-पु० (सं०) शत्रुका डटकर मुकाबला करना; आक्रमण करनेके लिए आगे बढ़ना या कूच करना; शत्रुको निःशस्त्र करनेके लिए प्रहार करना; आघात; पतन।

अभ्यवहरण-पु० (सं०) नीचे फेंकना; भोजन ग्रहण करना, गलेके नीचे उतारना।

अभ्यवहार-पु० (सं०) भोजन करना; आहार।

अभ्यसन-पु० (सं०) अभ्यास करना; अनुशीलन करना।

अभ्यसनीय, अभ्यसितव्य-वि० (सं०) अभ्यास करने योग्य।

अभ्यसित-वि० अभ्यस्त।

अभ्यसूय-पु० (सं०) क्रोध; द्वेष।

अभ्यस्त-वि० (सं०) अच्छी तरह सीखा हुआ; मश्क किया हुआ; अधीत, पढ़ा हुआ; जिसने अभ्यास किया हो, कुशल; पक्का; आदी।

अभ्यांत-वि० (सं०) रुग्ण; आहत; क्षतिग्रस्त।

अभ्याकर्ष-पु० (सं०) सीनेपर ताल ठोंकना (कुश्ती)।

अभ्याकांक्षित-वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित। पु० मिथ्या अभियोग, झूठा दावा; अभिलाषा।

अभ्याख्यान-पु० (सं०) झूठा अभियोग या नालिश।

अभ्यागत-वि० (सं०) सामने या पास आया हुआ; अतिथिके रूपमें आया हुआ। पु० अतिथि, मेहमान।

अभ्यागम-पु० (सं०) नजदीक आना, पहुँचना; पड़ोस; किसी

परिणामपर पहुँचना या उसका उपभोग करना; उठना, अगवानी; मारना, वध करना; मुकावला; हमला; युद्ध; शत्रुता।

अभ्यागारिक–वि० (सं०) परिवारके पालनमें तत्पर या हैरान।

अभ्यागृहीत–वि० (अटैच्ड) कुर्क किया हुआ।

अभ्याग्रहण–पु० दे० 'कुर्की'।

अभ्याघात–पु० (सं०) आक्रमण; धावा; वाधा, रुकावट।

अभ्यात्त–वि० (सं०) प्राप्त; व्याप्त; परब्रह्मका एक विशेषण।

अभ्याधान–पु० (सं०) आरंभ।

अभ्यापात–पु० (सं०) विपत्ति, संकट; बुराई।

अभ्यामर्द–पु० (सं०) युद्ध, संग्राम।

अभ्याश–वि० (सं०) निकट, पासका। पु० पड़ोस; सामीप्य; परिणाम; अभ्युदय।

अभ्यास–पु० (सं०) किसी कामको वार-वार करना, मश्क; सीखना; अध्ययन, साधन; आदत; सैनिक अनुशासन आदि; पड़ोस; गुणन। **–कला**–स्त्री० योगकी एक कला। **–योग**–पु० एक ही विषयके सतत चिंतनसे उत्पन्न समाधि।

अभ्यासादन–पु० (सं०) आक्रमण; सामना।

अभ्यासिका–स्त्री० अभ्यास या अध्ययन करनेका कक्ष (स्टडी)।

अभ्यासी(सिन्)–वि० (सं०) अभ्यास करनेवाला, साधक।

अभ्याहत–वि० (सं०) वाधित; आहत, ताडित।

अभ्याहार–पु० (सं०) निकट लाना; चौर्य, अपहरण।

अभ्युक्ति–स्त्री० (रिमार्क) आलोचना या व्यंग्यके ढंगपर कही गयी कोई वात; फवती; किसीके कथनपर या किसी विषयके संबंधमें की गयी उक्ति।

अभ्युक्षण–पु० (सं०) सिंचन, छिड़काव।

अभ्युक्षित–वि० (सं०) सिंचित, जिसपर छिड़काव हुआ हो।

अभ्युचित–वि० (सं०) नियमित, प्रचलित, प्रथाके अनुरूप।

अभ्युच्चय–पु० (सं०) बढ़ती, वृद्धि, उत्कर्ष, अभ्युदय।

अभ्युच्छ्रय–पु० (सं०) उत्थान; स्वरसाधनकी एक प्रणाली (संगीत)।

अभ्युत्थान–पु० (सं०) उठना; किसीके सम्मानमें उठकर खड़ा हो जाना; वढ़ती, उत्कर्ष; उदय।

अभ्युत्थित–वि० (सं०) उठा हुआ; जो सम्मानार्थ खड़ा हुआ हो; उन्नत; उदित।

अभ्युदय–पु० (सं०) सूर्य-चंद्रादिका उदय; वृद्धि, समृद्धि; उत्तरोत्तर वृद्धि; इष्टलाभ; उत्सव; आरंभ; संतानकी उत्पत्तिके अवसरपर किया जानेवाला श्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध।

अभ्युदाहरण–पु० (सं०) मिसाल या विपरीत बातके द्वारा किसी विषयका स्पष्टीकरण।

अभ्युदित–वि० (सं०) उगा हुआ, उदित; जो सूर्योदय हो जानेके वाद भी सोया हो; घटित; समृद्धिप्राप्त; उत्सव आदिके रूपमें मनाया हुआ।

अभ्युपगत–वि० (सं०) पास गया या आया हुआ; प्राप्त; माना हुआ; सदृश।

अभ्युपगम–पु० (सं०) पास जाना, पहुँचना; पाना; वादा करना; मानना, स्वीकार करना। **–सिद्धांत**–पु० परीक्षाके लिए पहले स्वीकार कर पीछे खंडन करना।

अभ्युपपत्ति–स्त्री० (सं०) सहायता देनेके लिए निकट जाना; रक्षा; कृपा, अनुग्रह; वादा; समझौता।

अभ्युपाय–पु० (सं०) वादा; अंगीकार, स्वीकार; साधन; उपाय।

अभ्युपायन–पु० (सं०) भेंट; रिश्वत।

अभ्युपेत–वि० (सं०) गया या पहुँचा हुआ; स्वीकृत; वादा किया हुआ।

अभ्युष, अभ्यूष, अभ्योष–पु० (सं०) एक तरहकी रोटी; अर्द्धपक्व आहार।

अभ्युषित–वि० (सं०) साथ या निकट रहनेवाला। पु० दास, नौकर।

अभ्यूह–पु० (सं०) तर्क; निष्कर्ष, परिणाम या फल।

अभ्रंकष–वि० (सं०) गगनचुंबी, बहुत ऊँचा। पु० (स्काइ-स्क्रेपर) बादलोंको छूनेवाला मकान, गगनचुंबी (बहुत ऊँचा) भवन। हवा; पहाड़।

अभ्रंलिह–वि० (सं०) बहुत ऊँचा। पु० वायु।

अभ्र–पु० (सं०) वादल; आकाश; सोना; अभ्रक; कपूर; शून्य (गणित); मुस्ता। **–कूट**–पु० बादलकी चोटी। **–कोष्ठ**–पु० (क्लाउड चैम्बर) एक प्रकारका वैज्ञानिक उपकरण जिसके कोष्ठमें अतिसंतृप्त जलवाष्प भरी रहती है। कोष्ठकी दीवार काँचकी वनी होती है। जब इसमेंसे होकर नन्हें आवेशित कण गुजरते हैं तो श्वेत धुएंकी लकीर द्वारा उनका पथ दृष्टिगोचर होता है जिसकी फोटो ले ली जाती है। **–गंगा**–स्त्री० आकाशगंगा। **–नाग,–मातंग**–पु० ऐरावत। **–पथ**–पु० गुब्बारा, 'वैलून'। **–पिशाच,–पिशाचक**–पु० राहु। **–पुष्प**–पु० वेंतका एक प्रकार; पानी; कोई असंभव वात। **–भेदी(दिन्)**–वि० गगनचुंबी। **–मांसी**–स्त्री० जटामासी। **–रोह**–पु० वैदूर्य मणि। **–वाटिक**–पु०,**–वाटिका**–स्त्री० अम्रातक वृक्ष।

अभ्रक–पु० (सं०) एक धातु, अबरक। **–सत्त्व**–पु० इस्पात।

अभ्रम–वि० (सं०) भ्रमरहित, स्पष्ट। पु० स्थिरता, दृढ़ता; भ्रमका अभाव।

अभ्रमु–स्त्री० (सं०) पूर्वके दिग्गज ऐरावतकी भार्या। **–प्रिय,–वल्लभ**–पु० ऐरावत।

अभ्रांत–वि० (सं०) भ्रमरहित, यथार्थ ज्ञाता; भ्रांतिहीन (वात); धीर।

अभ्रावकाशिक, अभ्रावकाशी(शिन्)–वि० (सं०) दिगंबर।

अभ्रित–वि० (सं०) बादलोंसे आवृत।

अभ्रिय–वि० (सं०) बादल, आकाश या मुस्तासे उत्पन्न या संबद्ध। पु० विजली।

अभ्री–स्त्री० (सं०) कुदाली; पटेला।

अभ्रेष–पु० (सं०) औचित्य; न्याय।

अभ्रोत्थ–पु० (सं०) वज्र।

अभ्रच–पु० (सं०) नंगा रहनेवाला, दिगंबर साधु।

अभ्व–वि० (सं०) महान्; बहुत अधिक शक्तिवाला। पु० विशालता; अधिक शक्ति।

अमंगल–वि० (सं०) अशुभ, अकल्याणकर; भाग्यहीन। पु० अकल्याण, अनिष्ट; दुर्भाग्य; एरंड वृक्ष।

अमंगल्य–वि० (सं०) दे० 'अमंगल'।

अमंड–पु० (सं०) एरंड वृक्ष। वि० बिना माँड़का (चावल); अनलंकृत।

अमंत्र, अमंत्रक–वि० (सं०) मंत्ररहित या (वैदिक) मंत्र-पाठकी अपेक्षा न रखनेवाला (कर्म); अवेदज्ञ; (वेद-)मंत्रका अनधिकारी।

अमंद–वि० (सं०) सुस्त नहीं, तेज; परिश्रमी; उग्र; कम नहीं, ज्यादा; सुंदर; कुशल। पु० वृक्ष।

अम–पु० (सं०) गमन; दवाव; भार; बल; भय; रोग; अनुचर, नौकर; प्राणवायु; अमित होनेकी अवस्था। वि० कच्चा (फल)।

अम–'आम'का समासगत लघु रूप। **–चुर,–चूर**–पु० सुखाये हुए कच्चे आमका चूर। **–रस**–पु० अमावट। **–रसी**–वि० आमके रसके रंगका, सुनहला। **–हर**–स्त्री० कच्चे आमकी सुखायी हुई फाँक।

अमका†–वि० ऐसा-ऐसा, अमुक, फलाँ।

अमग्ग*–पु० अमार्ग, कुपथ।

अमज्जक–वि० (सं०) मज्जारहित।

अमड़ा–पु० एक खट्टा फल जिसकी चटनी और अचार बनाते हैं।

अमणिव–वि० (सं०) मणिहीन, रत्नरहित।

अमत–पु० (सं०) मतका अभाव; रोग; मृत्यु; समय; धूलिकण। वि० अज्ञात; अननुभूत; न चाहा हुआ, अस्वीकृत। **–परार्थता**–स्त्री० एक शब्ददोष (जहाँ दूसरा अर्थ अवांछनीय या अमान्य ज्ञान पड़े वहाँ यह दोष होता है)।

अमतदेय–वि० जिसके संबंधमें मत न दिया जा सकता हो। **–व्यय**–पु० (नॉन-वोटेबिल एक्सपेंडिचर) वह व्यय जिसके संबंधमें (धारासभाके) सदस्योंको मत देनेका अधिकार न हो।

अमति–स्त्री० (सं०) अज्ञान; अदूरदर्शिता; संज्ञाहीनता। वि०

दुष्टबुद्धि, कुटिल। पु० काल; चंद्रमा।

अमत्त–वि० (सं०) जो नशेमें न हो; सही दिमागका; सावधान; विचारशील; ऐसा पद्य जिसमें मात्राओंका प्रयोग न हो।

अमत्र–पु० (सं०) पात्र; ताकत।

अमत्सर–पु० (सं०) मात्सर्यका अभाव। वि० मात्सर्यरहित।

अमद–वि० (सं०) मदरहित; गंभीर; शोकान्वित। पु० (अ०) इरादा, संकल्प।

अमदन–पु० (सं०) शिव। अ० (अ०) इरादा करके, जान-बूझकर।

अमधुर–वि० (सं०) मधुर नहीं, कड़वा या किसी अन्य स्वादका; अरुचिकर।

अमन–पु० (अ०) शांति, इतमीनान; रक्षा। **–अमान**–पु० शांति और सुरक्षा या सुव्यवस्था। **–चैन**–पु० सुख-शांति। **–पसंद**–वि० शांतिप्रिय।

अमन(स्)–पु० (सं०) अनुभूतिका अभाव; अनवधानता।

अमनस्क–वि० (सं०) दे० 'अमना'।

अमना(नस्)–वि० (सं०) नासमझ; अन्यमनस्क, जिसका चित्त या ध्यान और कहीं हो; लापरवाह, बे-फिक्र; उदास; जिसका मनपर नियंत्रण न हो; स्नेहहीन। पु० परमेश्वर।

अमनाक्–अ० (सं०) थोड़ा नहीं, अधिक।

अमनि–स्त्री० (सं०) गति; रास्ता।

अमनिया*–वि० पवित्र, शुद्ध; अछूता। स्त्री० भोजन बनानेकी क्रिया, रसोई पकाना।

अमनुष्य–वि० (सं०) अमानवोचित; जहाँ मनुष्यका आना-जाना बहुत कम हो। पु० मनुष्य नहीं, राक्षस आदि।

अमनैक–पु० सरदार; अवधमें काश्तकारोंका एक विशेष वर्ग। वि० दावेदार, अधिकारी; ढीठ।

अमनैकी–स्त्री० अमनैकपन।

अमनोज्ञ–वि० (सं०) चित्तको प्रिय न लगनेवाला, अरुचिकर।

अमम–वि० (सं०) अहंकारशून्य; निःस्वार्थ; ममताशून्य; कामनाहीन। पु० भावी जिनविशेष।

अमर–वि० (सं०) न मरनेवाला; अविनाशी। पु० देवता; एक मरुत्; पारा; सोना; ३३ की संख्या; देवदारका एक भेद; स्नुही वृक्ष, सेंहुड़; अस्थियोंका ढेर। **–कंटक**–पु० विंध्य-श्रेणीका एक भाग जिसके पाससे नर्मदा नदी निकली है। **–कोट**–(हिं०) पु० राजपूतानाका एक प्रसिद्ध नगर। **–कोश,–कोष**–पु० अमरसिंहका बनाया संस्कृतका प्रसिद्ध कोश। (अमरसिंह महाराज विक्रमादित्यके दरबारके नवरत्नोंमें माने जाते हैं)। **–गुरु**–पु० बृहस्पति। **–ज**–पु० एक तरहका खदिर-वृक्ष। **–तटिनी**–स्त्री० देवनदी, गंगा। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–दारु**–पु० देवदारु। **–द्विज**–पु० देवल ब्राह्मण, वह ब्राह्मण जो मंदिर या मूर्ति-संबंधी कार्य करता हो। **–धाम(न्)**–पु० देवलोक, स्वर्ग। **–नाथ**–पु० एक प्रसिद्ध तीर्थ। **–पख**–पु० (हिं०) पितृपक्ष। **–पति**–पु० इंद्र। **–पद**–पु० देवपद; मोक्ष। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० इंद्रपुरी, अमरावती। **–पुष्प,–पुष्पक**–पु० कल्पवृक्ष; केतक; चूत; काँस तृण। **–पुष्पिका**–स्त्री० अधःपुष्पी। **–प्रभु**–पु० विष्णुका एक नाम। **–बेल**–स्त्री० (हिं०) अकासबेल। **–रत्न**–पु० स्फटिक। **–राज**–पु० इंद्र। **–लोक**–पु० देवलोक, स्वर्ग। **–वर**–पु० इंद्र। **–वल्लरी,–वल्ली**–स्त्री० आकाशलता। **–सिंह**–पु० अमरकोश नामक प्रसिद्ध संस्कृतकोशके रचयिता।

अमरख*–पु० दे० 'अमर्ष'।

अमरण–पु० (सं०) अमरत्व।

अमरता–स्त्री० (सं०) अमर होना।

अमरत्व–पु० (सं०) अमरता, देवत्व।

अमरभनित*–पु० देववाणी।

अमरांगना–स्त्री० (सं०) देवपत्नी; अप्सरा।

अमरा–स्त्री० (सं०) अमरावती; नाल; अपरा, खेड़ी; दूब; गुडुच; सेंहुड़; घीकुआर आदि।

अमराई–स्त्री० आमका बाग; सुरकानन, उद्यान–'दान-सी बिराजै सुरतरु अमराईमैं'–लछिराम।

अमराउ*–पु० दे० 'अमराई'।

अमराचार्य–पु० (सं०) बृहस्पति।

अमराद्रि–पु० (सं०) सुमेरु पर्वत।

अमराधिप–पु० (सं०) इंद्र।

अमरापगा–स्त्री० (सं०) स्वर्गंगा।

अमरारि–पु० (सं०) देवशत्रु, असुर। **–पूज्य**–पु० दैत्योंके गुरु, शुक्र।

अमरालय–पु० (सं०) स्वर्ग।

अमरावती–स्त्री० (सं०) इंद्रपुरी।

अमरी–स्त्री० (सं०) देवपत्नी; देवकन्या; एक वृक्ष। * हठयोगियोंकी एक क्रिया, अमरोली।

अमरीकन–वि०, पु० दे० 'अमेरिकन'।

अमरीका–पु० पश्चिमी गोलार्द्धमें अवस्थित एक महादेश, अमेरिका।

अमरीकी–वि० अमरीकाका। पु० अमरीकाका रहनेवाला।

अमरु–पु० (सं०) एक राजा जो कवि भी थे।

अमरू–पु० एक रेशमी कपड़ा।

अमरूत–पु० दे० 'अमरूद'।

अमरूद–पु० एक प्रसिद्ध फल, अमृतफल, 'बिही', 'जाम' (छतीस०)।

अमरेश, अमरेश्वर–पु० (सं०) देवराज, इंद्र।

अमरोली–स्त्री० अमरी नामक क्रिया (हठयोग)।

अमर्त्य–वि० (सं०) अनश्वर, मृत्युरहित; दिव्य। पु० मानवभिन्न, देवादि। **–भुवन**–पु० स्वर्ग।

अमर्त्यापगा–स्त्री० (सं०) स्वर्गंगा।

अमर्दित–वि० (सं०) जिसका मर्दन न हुआ हो; अपराभूत, अपराजित।

अमर्याद–वि० (सं०) सीमारहित; सीमाका उल्लंघन करनेवाला; प्रतिष्ठारहित।

अमर्यादा–स्त्री० (सं०) सीमोल्लंघन; आचरणहीनता; अप्रतिष्ठा।

अमर्ष–पु० (सं०) असहिष्णुता; क्रोध, कोप; एक संचारी भाव; अपनी अवज्ञा, तिरस्कार आदिसे उत्पन्न क्षोभ।

अमर्षण, अमर्षित–वि० (सं०) दे० 'अमर्षी'।

अमर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) अमर्ष करनेवाला।

अमल–वि० (सं०) मलरहित, स्वच्छ; निष्पाप; उज्ज्वल। पु० स्वच्छता; अबरक; परब्रह्म। **–कोची**–स्त्री० कंजेकी जातिका एक पेड़। **–गुच्छ**–पु० पद्मकाष्ठ या पद्म नामक वृक्ष। **–पतत्री(त्रिन्)**–पु० वन्य हंस। **–मणि,–रत्न**–पु० स्फटिक।

अमल–पु० (अ०) काम, क्रिया, व्यवहार; कर्म; आचरण; उम्मीद; (हिं०) बान, आदत; अधिकार; लत; नशा; प्रभाव; समय। **–दखल**–पु० कब्जा-दखल। **–दरामद**–पु० जाब्ता काररवाई। **–दारी**–स्त्री० राज्य, हुकूमत; अधिकार। **–पट्टा**–पु० कार्य करनेके लिए कारिंदेको दिया जानेवाला अधिकार-पत्र। मु० **–दरामद होना**–काममें लाया जाना। **–पानी करना**–नशा पीना, भंग पीना।

अमलतास–पु० एक पेड़ जिसके फूल, फल और बीज दवाके काम आते हैं।

अमलबेत–पु० एक लता; एक खट्टा फल जो दवाके काम आता है।

अमलबेल–स्त्री० एक लता।

अमलाँ*–नशा; मादक द्रव्य।

अमला–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; नाल; आँवला; सातला वृक्ष; भूम्यामलकी। पु० (अ०) कर्मचारिमंडल; दफ्तर ('अमिल'-का बहु०); गिरे हुए मकानका सामान, काठ-कबाड़। **–फैला** पु० कर्मचारिमंडल; सब तरहके अहलकार; नौकर-चाकर। **–साज़ी**–स्त्री० कर्मचारियोंको घूस आदिसे हाथमें करके काम निकालना।

अमलातक, अमलातिक, अमलानक–पु० (सं०) अमलबेत।

अमलिन–वि० (सं०) निर्मल, स्वच्छ; निर्दोष।

अमली–वि० व्यावहारिक; कामकाजी (अमली काररवाई); नशेबाज। स्त्री० इमली; एक झाड़ीदार पेड़। **मु०–जामा**

पहनाना–कार्यरूप देना, कार्यमें परिणत करना ।

अमलूक–पु० एक पेड़ जो पंजाब आदिमें होता है और जिसका फल खाया जाता है ।

अमलोनी–स्त्री० नोनी या कुलफा नामक साग ।

अमस–पु० (सं०) रोग; समय; मूर्खता; मूर्ख व्यक्ति ।

अमसूल–पु० एक वृक्ष जो दक्षिण भारतमें वहुतायतसे होता है ।

अमसृण–वि० (सं०) मुलायम नहीं, कड़ा ।

अमस्तु–वि० (सं०) जिसमें छेना या मलाई न हो । पु० छेनेका पानी या मट्ठा ।

अमहल*–वि० जिसका कोई नियत आवास न हो, ला-मकान; व्यापक ।

अमांस–वि० (सं०) मांसरहित; दुवला-पतला, निर्वल । पु० मांस नहीं, इतर पदार्थ ।

अमांसक–वि० (सं०) 'अमांस' ।

अमा–स्त्री० (सं०) अमावास्या; चंद्रमाकी १५वीं कला; घर; आत्मा; अमित होनेकी अवस्था; प्रामाणिक न होना । वि० अमित । अ० साथ । **–निशा**–स्त्री० अमावास्याकी रात, अँधेरी रात । **–मसी, मासी**–स्त्री० दे० 'अमावास्या' । **–वस**–स्त्री० ('हिं०) दे० 'अमावास्या' । **–वसी,–वासी,–वस्या,–वास्या**–स्त्री० कृष्ण पक्षकी पंद्रहवीं या अंतिम तिथि ।

अमातना*–स० क्रि० आमंत्रित करना, न्योतना ।

अमातृक–वि० (सं०) मातृहीन, बिना माँका ।

अमात्य–पु० (सं०) मंत्री ।

अमात्र–वि० (सं०) मात्रारहित; जिसकी माप-तोल न हो; असमग्र; अनारंभिक । पु० परब्रह्म; वह जो माप नहीं है ।

अमान–वि० (सं०) परिमाण-रहित; असीम; अत्यधिक; बहुसंख्यक; निरभिमान, सरल; जिसका आदर या प्रतिष्ठा न हो । पु० रक्षा; अभय; शरण, आश्रय; शांति । **मु०–माँगना**–रक्षाकी प्रार्थना करना; त्राहि-त्राहि करना ।

अमानत–स्त्री० (अ०) धरोहर, थाती; थाती रखना; पैमाइशका काम; अमीनका पद; अमन । **–खाता**–पु० बंक या कोठीका वह खाता जिसमें अमानती रकमें जमा की जायँ । **–ख़ाना**–पु० वह जगह जहाँ चीजें अमानतमें रखी जायँ । **–दार**–पु० अमानत रखनेवाला; अमीन । **–में ख़यानत**–अमानतकी रकम खा जाना ।

अमानन–पु०, **अमानना**–स्त्री० (सं०) अनादर, अपमान, अवज्ञा ।

अमानस्य–पु० (सं०) दुःख, पीड़ा, व्यथा । वि० दुःखित, पीड़ित ।

अमाना–अ० क्रि० अँटना, समाना;* इतराना ।

अमानित सेना–स्त्री० (सं०) अपने पराक्रमका यथोचित आदर-सम्मान न पानेके कारण असंतुष्ट सेना (कौ०) ।

अमानिता–स्त्री०, **अमानित्व**–पु० (सं०) नम्रता ।

अमानिया–पु० एक तरहका पटसन ।

अमानी–स्त्री० वह तामीरी काम जो ठीकेपर न दिया गया हो; वह चीज जिसपर कोई रोक-टोक न हो; वह भूमि जो सरकारके अधिकारमें हो और जिसका प्रबंध सरकारी कर्मचारी करता हो; लगानकी वसूली जिसमें फसल खराब होनेके कारण कुछ छूट दी जाय; † अंधेर ।

अमानी(निन्)–वि० (सं०) निरभिमान, विनीत ।

अमानुष–वि० (सं०) मनुष्यसे न होनेवाला; अलौकिक; अमनुष्योचित; पाशव; पैशाचिक । पु० मनुष्य नहीं, ज्ञानहीन प्राणी । (स्त्री० 'अमानुषी' ।)

अमानुषी–वि० अलौकिक; पैशाचिक ।

अमानुषीय, अमानुष्य–वि० (सं०) अलौकिक ।

अमान्य–वि० (सं०) अमाननीय; मान या आदरके योग्य नहीं । **–व्यक्ति**–पु० दे० 'अस्वीकार्य व्यक्ति' ।

अमान्यन–पु० (डिसमिसल) किसी व्यवहार (मुकदमे), पुनर्न्याय-प्रार्थना, दावे आदिका अमान्य, न्यायालयमें अविचारणीय, ठहरा दिया जाना, खारिज कर दिया जाना ।

अमाप–वि० (सं०) अपरिमित; बहुत अधिक ।

अमामा–पु० दे० 'अम्मामा' ।

अमाय–वि० (सं०) मायारहित; छल-कपटसे रहित; ईमानदार; जो मापा न जा सके । पु० परब्रह्म ।

अमाया–स्त्री० (सं०) छल-कपटका अभाव; अविद्या, भ्रांतिका अभाव; ईमानदारी । * वि० मायारहित ।

अमायिक, अमायी(यिन्)–वि० (सं०) मायारहित; निश्छल; सच्चा ।

अमार–पु० (सं०) अमरण, अनाश । * अन्न रखनेका खत्ता ।

अमारग*–वि०, पु० दे० 'अमार्ग' ।

अमारी–स्त्री० (अ०) दे० 'अम्मारी' ।

अमार्ग–पु० (सं०) बुरा रास्ता, कुमार्ग; मार्गका अभाव । वि० मार्गरहित ।

अमार्जित–वि० (सं०) जो साफ न किया गया हो, अपरिष्कृत ।

अमार्ज्य–वि० (सं०) जिसका मार्जन न हो सके; जो स्वच्छ न किया जा सके ।

अमाल*–पु० अधिकारी; शासक ।

अमालनामा–पु० वह पुस्तक जिसमें कर्मचारियोंकी भली-बुरी काररवाइयाँ दर्ज की जाती हैं, कर्म-विवरण (मुसल०) ।

अमावट–स्त्री० पके आमका रस सुखाकर बनायी हुई मोटी परत; एक तरहकी मछली ।

अमावना*–अ० क्रि०–अमाना, भीतर आ सकना ।

अमावास्य, अमावास्यक–वि० (सं०) अमावास्याकी रात्रिमें उत्पन्न ।

अमाह–पु० आँखकी एक बीमारी, नाखूना ।

अमाही–वि० अमाह रोग-संबंधी ।

अमिख*–पु० आमिष, मांस ।

अमिट–वि० न मिटनेवाला; सदा रहनेवाला; अटल ।

अमित–वि० (सं०) बे-हद, बे-हिसाब; अत्यधिक; उपेक्षित; अज्ञात; असंस्कृत । **–क्रतु**–वि० अपरिमित साहस या बुद्धिवाला । **–तेजा(जस्),–द्युति**–वि० बे-हद कांति और तेजवाला । **–विक्रम**–वि० असीम शक्तिवाला; विष्णुका एक विशेषण । **–वीर्य**–वि० बे-अंदाज ताकतवाला ।

अतिमाभ–वि० (सं०) अति कांतियुक्त या तेजस्वी । पु० बुद्धका एक नाम ।

अमिताशन–वि० (सं०) बहुत खानेवाला; सर्वभक्षी । पु० अग्नि; विष्णु ।

अमिति–स्त्री० (सं०) असीमता ।

अमितौजा(जस्)–वि० (सं०) असीम शक्तिवाला; सर्व-शक्तिमान् ।

अमित्र–वि० (सं०) मित्रहीन; वैरी, विरोधी । पु० मित्र नहीं, शत्रु, प्रतिपक्षी । **–खाद**–पु० इंद्र । **–घात,–घाती(तिन्),–घ्न**–वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला । **–जित्**–वि० शत्रुओंको जीतनेवाला । **–टपन**–वि० शत्रुओंको पीड़ा देनेवाला । **–विषयातिगा(नौका)**–स्त्री० वह जहाज जो शत्रुदेशमें जानेवाला हो । **–सह,–साह**–वि० शत्रुओंको वशमें करनेवाला । पु० इंद्र । **–सेना**–स्त्री० शत्रु-सेना ।

अमित्री(त्रिन्), अमित्रीय, अमित्र्य–वि० (सं०) वैरी, विपक्षी ।

अमिय*–पु० अमृत । **–मूरि**–स्त्री० संजीवनी बूटी ।

अमिल–वि० बे-मेल; भिन्न वर्गका; जिससे मेल-जोल न हो; ऊबड़-खाबड़; न मिलनेवाला, अप्राप्य । **–पट्टी**–स्त्री० चौड़ी तुरपन ।

अमिलताई*–स्त्री० अम्लता, खटाई; कपट, दूर-दूर रहनेका स्वभाव–'मिलत न क्यों हूँ, भरे रावरी अमिलताई'–घना० ।

अमिलतास–पु० दे० 'अमलतास' ।

अमिलातक–पु० (सं०) दे० 'अमलातक' ।

अमिलित–वि० (सं०) जो मिला न हो, पृथक् ।

अमिली*–स्त्री० वैमनस्य, अनबन; इमली ।

अमिश्र–वि० (सं०) बिना मिलावटका, खालिस; असंयुक्त । **–राशि**–स्त्री० इकाईसे प्रकट होनेवाली राशि, १ से ९ तकके अंक (ग०) ।

अमिश्रित–वि० (सं०) अमिश्र ।

अमिष–वि० (सं०) निश्छल । पु० छल-कपटका न होना; सांसारिक सुख; विलासकी वस्तु; मांस ।

अमी*–पु० दे० 'अमिय'। **–कर**–पु० चंद्रमा।

अमी(मिन्)–वि० (सं०) रोगी।

अमीच*–अ० विना मृत्युके ही––'सुख या दुख बीच अमीच मरैं' ––घना०।

अमीटर–पु० (अमीटर) यह यंत्र वस्तुतः ऐसा गैल्वैनोमापी होता है जिसे विद्युत परिपथमें लगानेपर परिपथमें प्रवाहित होनेवाली विद्युतधाराका मान सीधे हो 'ऐम्पियर'में पढ़ा जा सकता है।

अमीढ़–पु० दे० 'अघौरी'।

अमीत–वि० (सं०) जिसे क्षति न पहुँची हो। *पु० शत्रु।

अमीन–वि० (अ०) अमानत रखनेवाला; विश्वसनीय। पु० एक दीवानी अहलकार जो पैमाइश, बँटवारे आदिका काम करता है।

अमीबा–पु० (अमीबा) एक-कोशीय सूक्ष्म प्राणी जो पानीमें रहता है तथा उच्च श्रेणीके प्राणीकी भाँति ही जीवनकी सभी क्रियाएँ संपादित करता है। यह द्विविभाजन द्वारा जनन क्रिया पूरी करता है।

अमीमांसा–स्त्री० (सं०) मीमांसा या विवेचनका अभाव।

अमीर–पु० (अ०) अधिकारी; सरदार; रईस; धनी व्यक्ति; अफगानिस्तानके राजाकी उपाधि। वि० धनवान्। **–ज़ादा**–पु० धनिकका पुत्र; कुलीन। (स्त्री० 'अमीरज़ादी'।)

अमीराना–वि० अमीरी जतानेवाला; धनिकोचित।

अमीरी–स्त्री० दौलतमंदी। वि० अमीरके योग्य।

अमीरुलबहर–वि० (अ०) नौ-सेनापति।

अमीरुल-मौमिनीन–पु० (अ०) मौमिनों, ईमानवालोंका सरदार; मुहम्मदकी एक उपाधि।

अमीव–पु० (सं०) पाप; कष्ट; रोग; शत्रु; क्षति।

अमुक–वि० (सं०) कोई खास (आदमी या चीज जिसका नाम नहीं लिया जा रहा है), फलाँ।

अमुक्त–वि० (सं०) जो मुक्त न हो, बँधा हुआ; जिसका मोक्ष न हुआ हो। पु० छुरा, कटारी आदि हथियार जो हाथमें पकड़कर काममें लाये जायँ। **–हस्त**–वि० कम-खर्च, अल्पव्ययी।

अमुख–वि० (सं०) मुखहीन।

अमुख्य–वि० (सं०) अप्रधान, गौण; निम्न श्रेणीका।

अमुग्ध–वि० (सं०) मूर्ख नहीं, चतुर; अनासक्त, विरक्त।

अमुत्र–अ० (सं०) वहाँ; उस लोकमें, परलोकमें।

अमुत्रत्य–वि० (सं०) परलोक संवंधी।

अमुद्र–वि० (सं०) जिसके पास कहीं जानेका परवाना या मुहर न हो।

अमूक–वि० (सं०) जो मूक या गूँगा न हो, वक्ता; चतुर।

अमूमन्–अ० अनुमानतः; बहुत करके।

अमूढ–वि० (सं०) घवड़ाया नहीं; चतुर; विद्वान्। पु० पंचतन्मात्र।

अमूर्त–वि० (सं०) आकार-रहित; देह-रहित; निरवयव (आकाश, काल, वायु, आत्मा, परमात्मा आदि)। पु० शिव। **–गुण**–पु० धर्म, अधर्म आदि गुण (जो अमूर्त होते हैं)।

अमूर्ति–वि० (सं०) आकार-रहित। पु० विष्णु। स्त्री० आकारहीनता।

अमूर्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) आकार-रहित। पु० विष्णु।

अमूल–वि० (सं०) विना जड़का; निराधार; प्रमाण-रहित, मनगढंत; मिथ्या; जिसका कोई भौतिक कारण न हो (सां०); चल।

अमूलक–वि० (सं०) दे० 'अमूल'; * अमूल्य, अनमोल।

अमूला–स्त्री० (सं०) अग्निशिखा नामक पौधा।

अमूल्य–वि० (सं०) अनमोल; बहुमूल्य।

अमृणाल–पु० (सं०) एक खुशबूदार पौधेकी जड़, वीरण-मूल, खस।

अमृत–वि० (सं०) न मरा हुआ; न मरनेवाला; अमर; अमरत्व देनेवाला; सुंदर; अभीष्ट, प्रिय। पु० अमरत्व; वह वस्तु जिसके पीनेसे मुर्दा जी उठे और जीवित प्राणी अजर-अमर हो जाय, सुधा, आबेहयात; अति मधुर, हितकर वस्तु; जल; घी; सोमरस; दूध; यज्ञशेष; अन्न; भात; अयाचित भिक्षा; औषध; पारा; सोना; देवता; धन्वंतरि; इंद्र; सूर्य; जीवात्मा; ब्रह्म; वाराही कंद; विष; वत्सनाभ नामक विष; वार-नक्षत्रके कुछ विशेष योग; चारकी संख्या; कांति। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–कुंडली,–गति**–स्त्री० एक छंदके नाम। **–क्षार**–पु० नौसादर। **–गर्भ**–पु० जीवात्मा; ब्रह्म। **–जटा**–स्त्री० जटामासी। **–तरंगिणी**– स्त्री० चाँदनी। **–तिलका**–स्त्री० एक छंदका नाम। **–दीधिति,–द्युति**–पु० चंद्रमा। **–द्रव**–पु० चंद्रकिरण। **–धारा**–स्त्री० एक छंदका नाम; एक गुणकारी औषध। **–ध्वनि**–स्त्री० एक छंदका नाम। **–प**–पु० विष्णु; देवता; मद्यप। **–पुत्र**–पु० देवपुत्र; स्थायी कीर्तिवाला व्यक्ति। **–फल**–पु० नाशपाती; परवल; अमरूद। **–फला**–स्त्री० अंगूर, दाख; आँवला। **–बंधु**–पु० देवता; चंद्रमा। **–बिंदु**–पु० एक उपनिषद्। **–भुक्(ज)**–पु० अमृतपान करनेवाला; देवता। **–मंथन**–पु०–समुद्रमंथन जिससे अन्य रत्नोंके साथ अमृतकी उत्पत्ति मानी जाती है। **–मालिनी**–स्त्री० दुर्गा। **–मूरि**–स्त्री० संजीवनी जड़ी। **–योग**–पु० फलित ज्योतिषमें एक शुभ योग। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा। **–रस**–पु० सुधा; परब्रह्म। **–रसा**–स्त्री० एक अंगूर; अनरसा नामक मिठाई। **–लता,–लतिका**–स्त्री० गुडुच। **–लोक**–पु० स्वर्ग। **–वपु(स्)**–पु० चंद्र; विष्णु; शिव। **–वल्लरी,–वल्ली,–संभवा**–स्त्री० गुडुच। **सहोदर,–सोदर**–पु० घोड़ा; उच्चैःश्रवा। **–सार**–पु० मक्खन, घी। **–०ज**–पु० गुड़। **–सू**–पु० चंद्रमा। **–स्रवा**–स्त्री० रुदंती नामक पौधा।

अमृतक–पु० (सं०) अमृत।

अमृतत्व–पु० (सं०) अमरता; मोक्ष।

अमृतदान–पु० एक ढकनेदार बरतन।

अमृतबान–पु० अचार आदि रखनेका एक तरहका रोगन किया हुआ मिट्टीका वरतन।

अमृतमती–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

अमृतांधा(धस्)–पु० (सं०) देवता।

अमृतांशु–पु० (सं०) चंद्रमा।

अमृता–स्त्री० (सं०) मद्य; आमलकी; हरीतकी; गुडुच; तुलसी; इंद्रवारुणी; दूर्वा; शरीरकी एक नाड़ी; एक सूर्य-रश्मि। **–फल**–पु० पटोल, परवर।

अमृताक्षर–वि० (सं०) अविनश्वर।

अमृताश–पु० (सं०) विष्णु।

अमृताशन, अमृताशी(शिन्)–पु० (सं०) देवता।

अमृतासंग–पु० (सं०) तूतिया।

अमृताहरण–पु० (सं०) गरुड़ (कहते हैं कि उन्होंने एक बार अमृत चुराया था)।

अमृताह्व–पु० (सं०) नाशपाती।

अमृतेश–पु० (सं०) शिव; देवता।

अमृतेशय–पु० (सं०) विष्णु।

अमृतेश्वर–पु० (सं०) दे० 'अमृतेश'।

अमृतेष्टका–स्त्री० (सं०) पकी हुई ईंट।

अमृतोत्पन्न, अमृतोद्भव–पु० (सं०) खपरिया तूतिया।

अमृत्यु–वि० (सं०) अमर; अमर बनानेवाला। स्त्री० अमरत्व। पु० विष्णु।

अमृष्ट–वि० (सं०) न माँजा हुआ, मैला, गंदा। **–मृज**–वि० जिसकी शुद्धता अक्षुण्ण हो।

अमेजना*–स० क्रि० मिलाना, मिलावट करना। अ० क्रि० मिलना।

अमेठना, अमैठना*–स० क्रि० उमेठना।

अमेत*–वि० अमित, असंख्य, बहुत।

अमेदस्क–वि० (सं०) वसारहित; दुबला-पतला।

अमेधा(धस्)–वि० (सं०) मूर्ख, निर्बुद्धि।

अमेध्य–वि० (सं०) यज्ञके अयोग्य; यज्ञका अनधिकारी; अपवित्र। पु० अपवित्र वस्तु; मल आदि; अपशकुन।

अमेय–वि० (सं०) सीमारहित; परिमाणरहित; अज्ञेय।

अमेयात्मा(मन्)–वि० (सं०) जिसकी आत्मा महान् हो।

पु० विष्णु ।

अमेरिकन–वि० (अं०) अमेरिकाका; अमेरिका-संबंधी । पु० अमेरिका-निवासी (गोरा), संयुक्त राष्ट्रका निवासी ।

अमेरिका–पु० (अं०) दे० 'अमरीका' ।

अमेल–वि० जिसका मेल न बैठता हो, बेमेल, असंगत ।

अमेली*–वि० असंबद्ध; अनाप-शनाप ।

अमेव*–वि० दे० 'अमेय' ।

अमेह–पु० (सं०) पेशावका न उतरना ।

अमैड*–वि० मर्यादारहित ।

अमैंडई*–स्त्री० शरारत ।

अमैंड़ा*–वि० मर्यादा न माननेवाला–'आपनो आनन जान अमैंड़े' –घना० ।

अमैथुनी सृष्टि–स्त्री० स्त्री-पुरुषके संबंधसे नहीं, वरन् अप्राकृतिक रूपसे हुई उत्पत्ति, जैसे कुंभसे अगस्त्यकी ।

अमोक्ष–वि० (सं०) अमुक्त । पु० बंधन; संसृतिसे छुटकारा न मिलना ।

अमोघ–वि० (सं०) अचूक; अव्यर्थ । पु० अव्यर्थता; विष्णु; शिव । **–किरण**–स्त्री० उदित और अस्त होनेके समयकी सूर्यकी किरणें । **–दंड**–पु० वह जो दंड देनेमें न चूके, शिव । **–दर्शी(शिन्)**,**–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि कभी न चूकती हो । **–पतन**–वि० लक्ष्यतक पहुँचनेवाला । **–पाश**–पु० लोकेश्वर बुद्ध । **–वांछित**–वि० कभी निराश न होनेवाला । **–वाक्(च्)**–वि० जिसके शब्द कभी व्यर्थ न हों । **–विक्रम**–पु० शिव ।

अमोघा–स्त्री० (सं०) पाटला; विडंग; हरीतकी; एक शक्ति; शिवकी पत्नी ।

अमोचन–पु० (सं०) न छूटना; ढीला न पड़ना । * वि० न छूटनेवाला; ढीला न होनेवाला ।

अमोद–वि० (सं०) मोदरहित, निरानंद । * पु० दे० 'आमोद' ।

अमोनिया–पु० नौसादर, 'एमोनिया' ।

अमोरी–स्त्री० अँबिया; आमड़ा ।

अमोल, अमोलक*–वि० अनमोल; बहुमूल्य ।

अमोला–पु० आमका उगता हुआ पौधा ।

अमोही*–वि० निष्ठुर, निर्मोही ।

अमौआ–वि० आमके रंगका । पु० जर्दीकी झलक लिये मूँगिया रंग ।

अमौन–पु० (सं०) मौनाभाव; आत्मज्ञान; मुनि न होनेकी अवस्था; मुनिके कर्त्तव्योंका पालन न होना ।

अमौलिक–वि० (सं०) निर्मूल; जो मौलिक या स्वतंत्र रचना न हो, अन्यकी कृतिके आधारपर या अनुवाद-रूपमें रचित; अयथार्थ ।

अम्मय–वि० (सं०) जलसे बना हुआ या जलयुक्त ।

अम्मरस–पु० एक तरहका कबूतर ।

अम्माँ–स्त्री० माता, माँ ।

अम्मामा–पु० (अ०) एक तरहका साफा जिसे मुसलमान बाँधते हैं ।

अम्मारी–स्त्री० (अ०) हौदा, महमिल ।

अम्र–पु० (सं०) दे० 'आम्र'; (अ०) आज्ञा; विषय; बात; क्रियाका आज्ञारूप ।

अम्रात, अम्रातक–पु० (सं०) आमड़ा नामका पेड़ और उसका फल ।

अम्ल–वि० (सं०) खट्टा । पु० खट्टापन, खटाई; (एसिड) ऐसे पदार्थ जिनके अन्दर हाइड्रोजन इस ढंगसे संयोजित रहता है कि उसे किसी धातु द्वारा स्थानान्तरित करके लवण (सॉल्ट) का निर्माण किया जा सके । अनेक अम्ल स्वादमें खट्टे होते हैं तथा ये लिटमस को लाल रंगमें बदल देते हैं जैसे शोरेका अम्ल (नाइट्रिक ऐसिड) । सिरका; तेजाब; अमलबेत; वमन; मट्ठा; एक नीबू । **–कांड**–पु० लवणतृण । **–केशर**–पु० बिजौरा नीबू । **–चुक्रिका**–स्त्री०, **–चूड**,**–शाक**–पु० एक खट्टा साग । **–जंबीर**,**–निंबूक**–पु० नीबूका पेड़ । **–जन**–पु० एक गैस, आक्सिजन । **–नायक**–पु० अम्लवेतस । **–निशा**–स्त्री० शठी नामक पौधा । **–पंचक**–पु० पाँच मुख्य खट्टे फल–जंबीरी नीबू, खट्टा अनार, इमली, नारंगी और अमलबेत । **–पत्र**–पु० अश्मंतक नामक पौधा । **–पत्री**–स्त्री० पलाशी तथा क्षुद्राम्लिका नामक पौधे । **पनस**–पु० बड़हर । **–पित्त**–पु० एक रोग जिसमें आहार आमाशयमें पहुँचकर अम्ल हो जाता है । **–फल**,**–बीजक**–पु० इमली । **–तरु**,**–पादप**–पु० इमलीका पेड़ । **–भेदन**,**–वेतस**–पु० अमलबेत । **–मेह**–पु० एक मूत्र-संबंधी रोग । **–रुहा**–स्त्री० एक तरहका पान (जो मालव देशमें होता है) । **–लोणिका**,**–लोणी**,**–लोलिका**–स्त्री० एक खट्टा साग । **–वर्ग**–पु० अनार, आँवला, कैथ, बेर, करौंदा, कोल, अमलबेत, लकुच इत्यादि खट्टे फलोंवाले वृक्षोंका एक वर्ग । **–वल्ली**–स्त्री० त्रिपर्णिका नामक कंदविशेष । **–वाटक**–पु० अमड़ा । **–वाटिका**–स्त्री० एक तरहका पान । **–वास्तूक**–पु० चूक । **–वृक्ष**– पु० इमलीका पेड़ । **–सार**–पु० नीबू; चूक; अमलबेत; हिंताल; काँजी; आँवलासार गंधक । **–हरिद्रा**–स्त्री० आँबाहल्दी ।

अम्लक–पु० (सं०) बड़हर ।

अम्लांकुश–पु० (सं०) एक तरहका खट्टा साग ।

अम्लाध्युषित–पु० (सं०) आँखका एक रोग ।

अम्लान–वि० (सं०) जो मुरझाया या कुम्हलाया न हो; प्रफुल्ल; प्रसन्न; स्वच्छ, निर्मल । पु० बाणपुष्प वृक्ष; पुपहरिया, कटसरैया ।

अम्लानि–वि० (सं०) सशक्त; मुरझाया नहीं । स्त्री० शक्ति; नयापन ।

अम्लानी(निन्)–वि० (सं०) साफ, स्वच्छ ।

अम्लिका, अम्लीका–स्त्री० (सं०) खट्टी डकार; इमलीका वृक्ष; पलाशी आदि पौधे । **–वटक**–पु० एक तरहका खटाईमें भिगोया हुआ बड़ा ।

अम्लिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) खट्टापन ।

अम्लोटक–पु० (सं०) अश्मंतक नामक पौधा ।

अम्लोद्गार–पु० (सं०) खट्टी डकार ।

अम्हौरी–स्त्री० अधिक पसीना निकलनेके कारण बदनमें निकलनेवाली छोटी-छोटी फुंसियाँ ।

अयंत्र–पु० (सं०) अनियंत्रण ।

अयंत्रित–वि० (सं०) अनियंत्रित; मनमानी करनेवाला ।

अयः–पु० (सं०) 'अयस्'का समासगत रूप । **–पान**– पु० एक नरक जिसमें पुराणोंके कथनानुसार तपा हुआ लोहा पातकीके गलेमें ठूँसा जाता है । **–शंकु**–पु० भाला; किल्ली । **–शय**–वि० लोहेमें सोने या रहनेवाला (अनल) । **–शूल**–पु० भाला; उग्र उपाय या कार्य ।

अय–पु० (सं०) मंगल अनुष्ठान; प्राक्तन शुभ कर्म; एक यज्ञ; पासा ।

अय(स्)–पु० (सं०) लोहा, फौलाद; धातु; हथियार; सोना; अगुरु नामक वृक्ष । **–(स्)कंस**–पु० लोहेका प्याला या पानपात्र । **–कांड**–पु० लोहेका बाण; बढ़िया लोहा; लोहेका एक बड़ा परिमाण । **–कांत**,**–कांतमणि**–पु० चुंबक । **–कार**–पु० लोहार; जाँघका ऊपरका हिस्सा । **–कीट**–पु० मोरचा, जंग । **–कुंड**,**–कुंभ**–पु०, **–कुंभी**–स्त्री० लोहेका कलसा । **–कुशा**–स्त्री० लोहेके मेलसे बना हुआ रस्सा । **–ताप**–वि० लोहा गरम करनेवाला ।

अयज्ञ–वि० (सं०) यज्ञ न करनेवाला ।

अयज्ञक–वि० (सं०) जो यज्ञके योग्य न हो ।

अयज्ञिय, अयज्ञीय–वि० (सं०) यज्ञमें व्यवहारके अयोग्य; यज्ञका अनधिकारी; अपवित्र; अधार्मिक ।

अयत–वि० (सं०) असंयत; अनियंत्रित ।

अयती(तिन्)–वि० (सं०) जिसने अपनी इच्छाओंपर विजय नहीं प्राप्त की है ।

अयतेंद्रिय–वि० (सं०) जिसकी इंद्रियाँ संयत न हों ।

अयत्न–पु० (सं०) यत्नका अभाव । वि० जिसके लिए उद्योग करनेकी आवश्यकता न हो । **–कृत्**–वि० जो बिना प्रयत्न किये ही, आसानीसे हो जाय । **–ज**–वि० बिना उद्योग किये उत्पन्न होनेवाला । **–लभ्य**–वि० बिना उद्योगके प्राप्त होनेवाला ।

अयथा–अ० (सं०) जैसे होना चाहिये वैसे नहीं; अनुचित या गलत तरीकेसे । पु० अनुचित कार्य । **–तथ**–वि० जैसा चाहिये वैसा नहीं, अयोग्य, अनुकूल नहीं; विपरीत; अयथार्थ । **–तथ्य**–पु० अयथार्थता; अनौचित्य; अयोग्यता; व्यर्थता । **–द्योतन**–

पु० अप्रत्याशित घटना या कार्यका सूचन। **–पूर्व**–वि० पहले जैसा नहीं। **–मुखीन**–वि० जिसने अपना मुख फेर लिया है। **–वृत्त**–वि० बुरे या गलत ढंगसे काम करनेवाला। **–स्थित**–वि० बे-तरतीब, अव्यवस्थित।

अयथार्थ–वि० (सं०) झूठ, गलत।

अयथार्थनाम–पु० (मिसनोमर) दे० 'मिथ्यानाम'।

अयथावत्–अ० (सं०) गलत तरीकेसे।

अयथेष्ट–वि० (सं०) इच्छाके अनुरूप नहीं; अनिच्छित; अपर्याप्त।

अयथोचित–वि० (सं०) अयोग्य; निकम्मा।

अयन–पु० (सं०) गति, चलना; सूर्यकी विषुवत् रेखासे उत्तर या दक्षिणको गति; इस गतिका काल; राशिचक्रकी गति; मार्ग, रास्ता; व्यूहमें प्रवेश करनेका मार्ग; गृह; आश्रय (जैसे नारायण) कुछ विशेष यज्ञ (गवामयन); अंश; थनका वह भाग जिसमें दूध रहता है। **–काल**–पु० सूर्यके उत्तरायण या दक्षिणायन रहनेका काल। **–भाग**–पु० दे० 'अयनांश'। **–वृत्त**–पु० ग्रहण-रेखा। **–संक्रम**–पु०,**–संक्रांति**–स्त्री० मकर और कर्कंकी संक्राति, राशिचक्रसे होकर गुजरनेका मार्ग। **–संपात**–पु० अयनांशयोग।

अयनांत–पु० (सं०) दो अयनोंका संधिकाल।

अयनांश–पु० (सं०) अयनका भाग, विषुवत् रेखासे मेष राशिके आरंभतकके अयनका भाग।

अयमदिन–पु० (सं०) वह एक ही रात-दिन जिसमें दो तिथियाँ बीत जायँ।

अयमित–वि० (सं०) अनियंत्रित, जो काटा-छाँटा न गया हो (नख, बाल); असज्जित।

अयव–वि० (सं०) अभावग्रस्त; जो पूर्ण न हो; जिसमें जौ खराब हो या न हो (यज्ञादि)। पु० आँतोंमें उत्पन्न होनेवाला एक कृमि; कृष्णपक्ष; बे-मेल शत्रु; पितृकर्म।

अयश(स्)–पु० (सं०) अपयश, बदनामी; लांछन। **–(स्)–कर** वि० दे० 'अयशस्य'।

अयशस्य–वि० (सं०) बदनामी करनेवाला; अयशका हेतु।

अयशस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) जिसे यश न प्राप्त हो, बदनाम।

अयशी–वि० यशोहीन, बदनाम।

अयश्चूर्ण–पु० (सं०) लोहेका चूर।

अयस–पु० दे० 'अय'।

अयस्क–पु० (ओर) अपरिष्कृत या कच्ची धातु; धातुक।

अयाँ–वि० (अ०) प्रकट, खुला, जाहिर।

अयाचक–वि० (सं०) न माँगनेवाला; कामनारहित; संतुष्ट।

अयाचित–वि० (सं०) न माँगा हुआ, अप्रार्थित। **–वृत्ति**–स्त्री०, **–व्रत**–पु० विना माँगे मिलनेवाली भीखपर गुजर करनेका व्रत।

अयाची(चिन्)–वि० (सं०) दे० 'अयाचक'।

अयाज्य–वि० (सं०) यज्ञ करनेका अनधिकारी; पतित; जाति-च्युत। पु० चांडाल। **–याजन**–पु० यज्ञ करनेके अनधिकारीसे यज्ञ कराना। **–संयाज्य**–पु० पतितके लिए यज्ञ करना (जो एक उपपातक माना गया है)।

अयात–वि० (सं०) न गया हुआ। **–याम**–वि० जिसे एक पहर न बीता हो; ताजा, टटका; जो उपयोगमें आनेके कारण जीर्ण शीर्ण न हुआ हो।

अयाथार्थिक–वि० (सं०) जो सत्य न हो, झूठा; अनुचित; अवास्तविक, असंगत।

अयान–पु० (सं०) न जाना, टिकना; स्वभाव। वि० विना सवारीका, पैदल; * अजान। **–प,–पन***–पु० अजानपन; भोलापन।

अयानता*–स्त्री० अजानपन, अज्ञान।

अयानय–पु० (सं०) अच्छा या बुरा भाग्य; बिसातपर मोहरोंकी विशेष स्थिति।

अयानी–वि० अजान, अज्ञान।

अयाम–पु० (सं०) मार्ग नहीं; दिनका कोई समय।

अयाल–पु० (फा०) घोड़े या सिंहकी गर्दनपरके बाल; (अ०) बाल-बच्चे, कुटुंब। **–दार**–पु० बाल-बच्चोंवाला।

अयावन–पु० (सं०) संयोग या मिश्रण न होने देना।

आयस–अ० अनायास; सहज गतिसे।

अयास्य–पु० (सं०) अंगिरा ऋषि; प्राणवायु।

अयि–अ० (सं०) (संबोधन) हे, ए, अरी।

अयुक्(ज्)–वि० (सं०) दे० 'अयुग्म'। **–छद**–पु० छतिवन वृक्ष। **–पलाश**–पु० दे० 'अयुक्छद'। **–शक्ति**–पु० शिव। **–शर**–पु० कामदेव।

अयुक्त–वि० (सं०) न जोता हुआ; न जोड़ा हुआ; बे-लगाव; अधार्मिक; अयोग्य; अविवाहित; आपद्ग्रस्त; असंबद्ध; अनुपयुक्त, बे-ठीक; अन्यमनस्क; अनभ्यस्त। **–कृत्**–वि० दुष्कर्मी। **–चार**–पु० वह व्यक्ति जो जासूस न रखे।

अयुक्ति–स्त्री० (सं०) संबंध या लगावका अभाव; पार्थक्य; युक्ति, तर्कका अभाव; अनौचित्य; बंसी बजाते समय छेदोंको बंद करनेकी क्रिया।

अयुग–वि० (सं०) दे० 'अयुगल'। **–पद्**–अ० एक ही साथ नहीं, क्रमशः।

अयुगक्ष–पु० (सं०) शिव।

अयुगल–वि० (सं०) अलग; अकेला; विषम।

अयुगिषु–पु० (सं०) कामदेव।

अयुगू–स्त्री० (सं०) एक संतान उत्पन्न करनेके बाद बंध्या हो जानेवाली स्त्री, काकवंध्या।

अयुग्बाण–पु० (सं०) कामदेव।

अयुग्म–वि० (सं०) जो जोड़ा न हो, अकेला; विषम। **–च्छद, –पत्र**–पु० छतिवन वृक्ष (सप्तपर्ण)। **–नयन,–नेत्र**–पु० (तीन आँखोंवाले) शिव। **–बाण,–शर**–पु० कामदेव (पंचशर)। **–वाह,–सप्ति**–पु० सूर्य (सप्ताश्व-रथवान्)।

अयुज–वि० (सं०) जिसका कोई साथी न हो, अकेला; पृथक्।

अयुत–पु० (सं०) १० हजारकी संख्या। वि० असंबद्ध, पृथक्। **–सिद्ध**–वि० जिसकी अविच्छेद्यता सिद्ध हो।

अयुद्धग्रस्तता, अयुद्धलिप्ति–स्त्री० (नान-बेलिजरेन्सी) किसी राष्ट्रका, कहनेके लिए युद्धसे पृथक् रहते हुए भी खुल्लमखुल्ला युद्धलिप्त राष्ट्रकी सहायता करते रहना।

अयुध–पु० (सं०) वह जो न लड़े; * दे० 'आयुध'।

अयुध्य–वि० (सं०) अजेय।

अयुव–वि० (सं०) अविभक्त; असंबद्ध।

अये–अ० (सं०) संबोधनका शब्द; विस्मयादिसूचक शब्द।

अयो–पु० (सं०) 'अयस्'का समासगत रूप। **–गव**–पु० वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुषसे उत्पन्न वर्णसंकर संतान। **–गुड**–पु० लोहेका गेंद। **–घन**–पु० (सं०) हथौड़ा। **–जाल**–पु० (सं०) लोहेका जाल या जाली। वि० लोहेका जाल रखनेवाला। **–मल**–पु० जंग, मोरचा। **–मार्ग**–दे० क्रममें। **–मुख**–वि० जिसके मुँह या सिरेपर लोहा लगा हो। **–हृदय**–वि० जिसका हृदय लोहेकी तरह कठिन हो, निष्ठुर।

अयोग–पु० (सं०) बिलगाव; अयुक्तता; अप्राप्ति; अक्षमता; अनौचित्य; संकट; दुष्ट ग्रहादिका योग; कुयोग; हथौड़ा; जोरदार कोशिश; विधुर; कूट। वि० असंबद्ध; जोरदार कोशिश करनेवाला। **–क्षेम**–पु० प्राप्त संपत्तिकी सुरक्षा न होना। **–वाह**–पु० अनुस्वार, विसर्ग, उपध्मानीय तथा जिह्वामूलीय वर्ण (व्या०)।

अयोगी*–वि० अयोग्य।

अयोगी(गिन्)–वि० (सं०) जिसने शास्त्रानुसार योगका अनुष्ठान नहीं किया है।

अयोग्य–वि० (सं०) योग्यताहीन, नाकाबिल; निकम्मा; अनधिकारी; नामुनासिब।

अयोच्छिष्ट–पु० (सं०) मोरचा, जंग।

अयोद्धा(द्धृ)–पु० (सं०) वह जो योद्धा नहीं है; निम्नश्रेणीका योद्धा।

अयोध्य–वि० (सं०) जिससे युद्ध न किया जा सके; अजेय।

अयोध्या–स्त्री० (सं०) अवधकी एक प्रसिद्ध नगरी, सूर्यवंशी राजाओंकी राजधानी, साकेत। **–कांड**–पु० रामायणका दूसरा कांड या खंड जिसमें रामके राज्याभिषेककी तैयारी, वनगमन

आदिका वर्णन है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'–पु० (सं० १९२२-२००२)— द्विवेदीयुगके प्रमुख साहित्यकार। रचनाएँ—महाकाव्य–प्रियप्रवास, वैदेही-वनवास; स्फुट काव्यसंग्रह—चोखे चौपदे, रसकलश, वोलचाल, पद्यप्रसून,कल्पलता आदि; उपन्यास—ठेठ हिंदीका ठाठ, अधखिला फूल; आलोचनात्मक—हिंदी भाषा और साहित्यका विकास, कवीर-वचनावलीकी आलोचना आदि।

अयोनि–वि० (सं०) अजन्मा; नित्य; मौलिक; कोखसें उत्पन्न नहीं; अवैध रूपसे उत्पन्न। पु० ब्रह्मा; शिव; योनि नहीं। **–ज**–वि० जो जरायुसे उत्पन्न न हो। पु० विष्णु; शिव। **–जा,–संभवा**–स्त्री० सीता।

अयोमय–वि० (सं०) लोहेका वना हुआ।

अयोमार्ग–पु० (रेलवे) लोहेकी पटरियोंको सिलसिलेसे जोड़कर वनाया हुआ मार्ग जिसपर यात्रियों या सामानको ढोनेवाली रेलगाड़ी दौड़ती है, रेल-पथ, रेलवे।

अयौक्तिक–वि० (सं०) युक्तिविरुद्ध, असंगत।

अयौगिक–वि० (सं०) अनियमित रूपसे व्युत्पन्न; रूढ़; जिसका योगसे संवंध न हो।

अयौन–वि० (सं०) (नान-सेक्सुअल) जो यौन न हो, जिसका संवंध कामवासना आदिसे न हो।

अरंग–पु० सुगंध; खराव रंग; दुर्गति।

अरंगम–पु० (सं०) निकट आना; सहायताके लिए मौजूद रहना।

अरंगर–वि० (सं०) चटपट प्रशंसा करनेवाला; विषसे वना हुआ।

अरंगी(गिन्)–वि० (सं०) रागहीन।

अरंड–पु० दे० 'एरंड'।

अरंधन–पु० (सं०) व्रतविशेष।

अरंभ*–पु० दे० 'आरंभ'।

अरंभना*–अ० क्रि० बोलना; आरंभ होना। स० क्रि० आरंभ करना।

अर*–स्त्री० दे० 'अड़'। पु० (सं०) पहियेकी नाभि और नेमिके बीचकी लकड़ी, आरा; कोण; सिवार; चक्रवाक पक्षी; पित्तपापड़ा। वि० तेज; थोड़ा। **–घोट्ट,–घट्टक**–पु० रहट; कूप।

अरइल*–वि० दे० 'अड़ियल'। पु० प्रयागमें गंगा-यमुनाका संगमस्थान।

अरई–स्त्री० पैनेकी नोकपर लगी हुई कील जिससे तेज चलाने के लिए वैलको कोंचते हैं। मु०–**देना, –लगाना**–ताकीद करना।

अरक–पु० (सं०) पहियेकी तीली या आरा; सिवार; पित्तपापड़ा; *सूर्य; अकवन; दे० 'अर्क'।

अरकटी–पु० नावकी पतवारपर रहनेवाला माँझी।

अरकना*–अ० क्रि० टकराना, भिड़ना; दरकना। **–बरकना**–अ० क्रि० पकड़में न आनेके लिए हटना, बचना।

अरकला*–पु० रोक, मर्यादा; अर्गल।

अरकसी–स्त्री० सुस्ती, आलस्य। वि० सुस्त।

अरकाट–पु० मद्रासका एक नगर।

अरकाटी–पु० गिरमिटिया कुलियोंकी भरती करनेवाला।

अरकान–पु० (अ०) (रुक्न–स्तंभ–का वहु०) प्रधान कार्यकर्ता या कर्मचारी; वे लोग जिनपर किसी कार्य या प्रवंधका दारमदार हो; उर्दू छंदोंके मात्रारूप अक्षर। **–(ने)-दौलत, –सल्तनत**–पु० राज्यके आधारस्तंभ–मंत्री, सरदार आदि।

अरकोल–पु० हिमालयपर पाया जानेवाला एक वृक्ष।

अरक्तता–स्त्री० (अनीमिया) रक्तक्षीणता; रक्तके लाल कोशोंकी कमीके कारण उत्पन्न होनेवाली शारीरिक दशा। (शरीर पीला पड़ जाना, दुर्वलता, श्वासकी कमी, इ०)।

अरक्षित–वि० (सं०) जिसकी रक्षा न की गयी या की जाती हो; विना वचावका।

अरग–पु० दे० 'अरगजा'।

अरगजा–पु० एक सुगंधित लेप जो चंदन, केसर आदि मिलाकर तैयार किया जाता है।

अरगजी–वि० अरगजा जैसे रंग या सुगंधवाला। पु० अरगजेके रंगसे मिलता हुआ पीला रंग।

अरगट–वि० अलग, भिन्न।

अरगन–पु० एक विलायती वाजा, 'आर्गन'।

अरगनी–स्त्री० कपड़ा टाँगनेके लिए वँधी हुई रस्सी, वाँस आदि।

अरगल–पु० किवाड़को भीतरसे वंद करनेके लिए लगायी जानेवाली आड़ी लकड़ी, व्योंड़ा।

अरग़वान–पु० (फा०) गहरे लाल रंगका एक फ़ूल; लाल रंग।

अरग़वानी–वि० अरगवानके रंगका, गहरा लाल। पु० गहरा लाल रंग।

अरगाना*–अ० क्रि० अलग होना; चुप्पी साधना–'सूनेसदन मथनियाके ढिग वैठि रहे अरगाई'–सू०। स० क्रि० अलग करना–'तहँ राखै जननी अरगाई'–रामा०।

अरघ*–पु० दे० 'अर्घ'।

अरघट्ट–पु० (सं०) दे० 'अर'के साथ।

अरघा–पु० अर्घ-पात्र; अर्घपात्रके आकारका वना पत्थरका आधार जिसमें शिवलिंगकी स्थापना की जाती है, जलहरी; वह पात्र जिसमें अर्घ रखकर दिया जाय; कुएँकी जगतपर पानीके निकासके लिए वना हुआ रास्ता।

अरघान, अरघानि*–स्त्री० गंध।

अरचन*–पु०, **अरचना***–स्त्री० दे० 'अर्चन', 'अर्चना'।

अरचल*–स्त्री० दे० 'अड़चन'।

अरचि*–स्त्री० ज्योति, प्रकाश।

अरचित*–वि० दे० 'अर्चित'।

अरज–पु० कपड़े आदिकी चौड़ाई। स्त्री० दे० 'अर्ज़'।

अरजना*–स० क्रि० अर्ज करना; प्राप्त करना।

अरजम–पु० कुंबी नामक एक वृक्ष।

अरज़ल–वि० (अ०) वड़ा रजील या कमीना, नीच; नीची जातिका। पु० वह घोड़ा जिसके तीन पाँव सफेद या एक रंगके हों।

अरजस्क–वि० (सं०) धूलिरहित, स्वच्छ; वासनारहित।

अरजस्का–वि० स्त्री० (सं०) अरजस्वला।

अरज़ाँ–वि० (फा०) सस्ता। (स्त्री० 'अरज़ानी'।)

अरजा(जस्)–वि० दे० 'अरजस्क'। वि० स्त्री० दे० 'अरजस्का'। स्त्री० कन्या; भार्गव ऋषिकी पत्नी; घीकुआर।

अरज़ाल–पु० (अ०) कमीने, नीच लोग (रज़ीलका वहु०)।

अरजी–स्त्री० दे० 'अर्ज़ी'। *वि० अरज करनेवाला, प्रार्थी।

अरज्जु–वि० (सं०) जिसमें रस्सी न हो। पु० कारागृह।

अरझना–अ० क्रि० दे० 'अरुझना'।

अरझा–पु० छोटी जातिका सन, सनई।

अरटु–पु० (सं०) अरल नामक वृक्ष।

अरणि, अरणी–स्त्री० (सं०)एक वृक्ष, गनियार, अँगेथू; काठका एक यंत्र जिससे (विशेषतः) यज्ञके लिए आग उत्पन्न करते हैं; सूर्य; अग्नि; चकमक पत्थर; सोनापाढ़ा; चीतेका पेड़ या लकड़ी। **–केतु– –**पु० अग्निमंथ वृक्ष। **–सुत**–पु० शुकदेव।

अरण्य–पु० (सं०) वन, जंगल; कायफल; सन्यासियोंका एक भेद; कट्फल नामक वृक्ष। **–कणा**–स्त्री० जंगली जीरा। **–कांड**–पु० रामायणका तीसरा कांड या खंड। **–गान**–पु० सामवेदका वनमें गाया जानेवाला गान-विशेष। **–चंद्रिका**–स्त्री० जंगलकी चाँदनी; (ला०) निरर्थक श्रृंगार या आभूषण, ऐसा बनाव-सिंगार जिसे कोई देखने-सराहनेवाला न हो। **–दमन**–पु० दोन नामक पौधा। **–नृपति,–राज**–पु० सिंह। **–पंडित**–पु० ऐसा मनुष्य जो वनमें ही (जहाँ कोई सुनने-टोकनेवाला नहीं होता) अपना पांडित्य प्रकट कर सके। वि० मूर्ख। **–भव**–वि० जंगलमें उत्पन्न। **–मक्षिका**–स्त्री० डाँस। **–यान**–पु० वानप्रस्थ आश्रममें प्रवेश करना। **–रुदित,–रोदन,–विलाप**–पु० ऐसा रोना जिसे कोई सुननेवाला न हो, निष्फल कथन, निवेदन इ०। **–वास्तुक,–वास्तूक**–पु० बनबेंत। **–श्वा(श्वन्),–श्वान**–पु० भेड़िया; गीदड़। **–षष्ठी**–स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला षष्ठीका व्रत।

अरण्यक–पु० (सं०) जंगल; जंगलकी सभा; एक पौधा।

अरण्या–स्त्री० (सं०) एक ओषधि।

अरण्यानि, अरण्यानी–स्त्री० (सं०) बहुत बड़ा जंगल या वीरान; वनदेवी, वन्य पशुओंकी माता।

अरण्यायन–पु० (सं०) दे० 'अरण्ययान' ।

अरण्यीय–वि० (सं०) जंगलवाला; जंगलके पासका ।

अरत–वि० (सं०) सुस्त; विरक्त; अनासक्त; असंतुष्ट ।

अरति–स्त्री० (सं०) रागका अभाव, विरक्ति; असंतोष; क्रोध, उचाट; चिंता; उद्वेग; सुस्ती; व्यथा; एक पैत्तिक रोग । वि० असंतुष्ट; अशांत; सुस्त ।

अरत्नि–पु० (सं०) बाँह; कुहनी; कुहनीसे कानी उँगलीके छोरतककी माप ।

अरथ*–पु० दे० 'अर्थ' ।

अरथाना*–स० क्रि० अर्थ लगाना, समझाकर कहना, व्याख्या करते हुए कहना ।

अरथी–स्त्री० बाँसकी सीढ़ी जैसी चीज जिसपर मुर्देको सुलाकर श्मशान ले जाते हैं, टिकठी । वि० दे० 'अर्थी' ।

अरथी(थिन्)–वि० (सं०) जो रथपर सवार न होकर लड़े, पैदल ।

अरद–वि० (सं०) बिना दाँतका; जिसके दाँत टूट गये हों । * पु० कष्ट पहुँचाना; विनाश ।

अरदन–वि० (सं०) दे० 'अरद' । * पु० दे० 'अर्दन' ।

अरदना*–स० क्रि० मसलना; कुचलना; मसल-कुचलकर मार डालना ।

अरदल–पु० दक्षिणमें होनेवाला एक वृक्ष ।

अरदली–पु० किसी बड़े अफसरके साथ रहनेवाला खास चपरासी (अं० 'आर्डरली') ।

अरदावा–पु० दला हुआ अन्न; भरता ।

अरदास–स्त्री० प्रार्थना; प्रार्थना-पत्र; नानकपंथी ईश्वर-प्रार्थना; भेंट, नजर (फा० 'अर्ज़दाश्त') ।

अरधंग*–पु० दे० 'अर्द्धांग' ।

अरधंगी, अरधाँगी–पु० दे० 'अर्द्धांगी' ।

अरध*–वि० दे० 'अर्द्ध' । अ० अंदर, भीतर ।

अरन–पु० एक तरहकी निहाई; * दे० 'अरण्य' ।

अरना–पु० जंगली भैंसा । अ० क्रि० दे० 'अड़ना' ।

अरनि–स्त्री० दे० 'अरणि'; * अड़ना; रुकना; हठ करना ।

अरनी–स्त्री० अरणि, यज्ञका अग्निमंथन-काष्ठ; जलन, दाह ।

अरन्य*–पु० दे० 'अरण्य' ।

अरपन*–पु० दे० 'अर्पण' ।

अरपना*–सं० क्रि० अर्पण करना, भेंट करना; भोजनके पूर्व भोज्य पदार्थ भगवान्‌को अर्पित करना । * अ० क्रि० पैर रखना, चढ़ना, आसीन हो जाना ।

अरपित*–वि० दे० 'अर्पित' ।

अरब–वि० सौ करोड़ । पु० सौ करोड़की संख्या; * घोड़ा; इंद्र; (अ०) दक्षिण-पश्चिम एशियाका एक प्रसिद्ध देश जहाँ इसलाम धर्मके प्रवर्तक मुहम्मदका जन्म हुआ था; अरब देशका निवासी ।

अरबर*–वि० अटपट, अंडबंड; कठिन, टेढ़ा ।

अरबराना*–अ० क्रि० घबड़ाना; लटपटाना ।

अरबरानि*–स्त्री० घबराहट, हड़बड़ी–'लोचैं वही मूरति अरबरानि आवरें'–घन० ।

अरबरी*–स्त्री० हड़बड़ी ।

अरबिस्तान–पु० (अ०) अरब देश ।

अरबी–वि० (अ०)अरब देशका । पु० अरब-निवासी; अरबका या अरबी नस्लका घोड़ा; अरबी ऊँट; एक तरहका बाजा । स्त्री० अरबकी भाषा ।

अरबीला*–वि० अंडबंड, निरर्थक; गर्वयुक्त (?); अड़ियल, अड़नेवाला–'घूमत घुरत अरबीले न मुरत'–घन० ।

अरब्बी–पु० दे० 'अरबी' ।

अरभक*–पु० दे० 'अर्भक' ।

अरम–वि० (सं०) नीच, कमीना ।

अरमण, अरममाण–वि० (सं०) अरुचिकर; असुंदर; असंतोष-जनक; अविराम ।

अरमनी–पु० आरमीनिया देशका रहनेवाला ।

अरमा*–स्त्री० चमक, –'मैथिली-बिलास बीजुरीकी अरमा सोहैं' –लछिराम ।

अरमान–पु० (फा०) लालसा, इच्छा, कामना । **मु०–निकलना**––इच्छा, कामनाकी पूर्ति होना । **–रह जाना**–लालसा, कामना-का अतृप्त रह जाना ।

अरर–अ० विस्मय, उल्लास आदिका सूचक शब्द । पु० मैनफल; (सं०) दरवाजा; किवाड़; उल्लू; युद्ध; ढक्कन ।

अररना-दररना*–स० क्रि० पीसना, दलना ।

अरराना*–अ० क्रि० 'अरर'की ध्वनिके साथ (दीवार, पेड़, डाल आदिका) टूटकर गिरना; भहराना ।

अररि–पु०, **अररी**–स्त्री० (सं०) दरवाजा; किवाड़ ।

अररु–पु० (सं०) शत्रु; एक हथियार; एक असुर ।

अरलु–पु० (सं०) सोना गाछ ।

अरवन–पु० काटकर लायी जानेवाली कच्ची फसल, पहले पहल काटी जानेवाली फसल जो खलिहानमें न ले जाकर घर लायी जाय; † दे० 'अरिवन' ।

अरवल†–पु० घोड़ेके कानके पासकी भौंरी ।

अरवा–पु० बिना उबाले धानका चावल; † ताखा ।

अरवाती*–स्त्री० ओलती ।

अरविंद–पु० (सं०) कमल; सारस; ताँबा । **–दलप्रभ**–पु० ताँबा । **–नयन, –लोचन**–पु० विष्णु । **–नाभ,–नाभि**–पु० विष्णु । **–बंधु**–पु० सूर्य । **–योनि,–सद्**–पु० ब्रह्मा ।

अरविंद घोष–पु० (१८७२ से १९५०) सन् १९०८ में उनपर अलीपुर बमकेसमें मुकदमा चला पर वे छूट गये । बादमें वे राजनीतिसे पृथक् हो गये और पांडिचेरी-स्थित अपने आश्रममें रहते हुए आध्यात्मिक अध्ययनमें लग गये ।

अरविंदाक्ष–पु० (सं०) विष्णु ।

अरविंदिनी–स्त्री० (सं०) नलिनी; कमल-लता; कमलसमूह; कमलपूर्ण स्थान ।

अरवी–स्त्री० एक कंद, घुइयाँ ।

अरस–वि० (सं०) रसहीन, नीरस, फीका; असभ्य; सुस्त; निर्बल; अयोग्य । पु० रसका अभाव; * आलस्य; आकाश, –'जाकी तेग अरसमें डूलै'–छ० प्र०; छत; महल ।

अरसठ–वि०, पु० दे० 'अड़सठ' ।

अरसथ†–पु० मासिक आय-व्ययका लेखा रखनेकी बही ।

अरसन-परसन*–पु० दे० 'अरस-परस' ।

अरसना*–अ० क्रि० ढीला या सुस्त पड़ना ।

अरसना-परसना–स० क्रि० छूना; आलिंगन करना ।

अरस-परस–पु० आँखमिचौनीका एक खेल; दरस-परस ।

अरसा–पु० (अ०) समय; अवधि; मैदान; देर; बहुत दिन, मुद्दत । **मु० –तंग होना**–कठिनाईमें पड़ना ।

अरसात–पु० एक तरहका सवैया छंद ।

अरसाना*–अ० क्रि० अलसाना ।

अरसाश–पु० (सं०) स्वादरहित, रूखा-सूखा पदार्थ खाना ।

अरसिक–वि० (सं०) अरसज्ञ, काव्य, संगीत आदिका रस लेनेमें असमर्थ; स्वादहीन, रूखा; रूखे स्वभावका ।

अरसी*–स्त्री० अलसी, तीसी ।

अरसीला, अरसौंहा*–वि० अलसाया हुआ ।

अरस्तू–पु० प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातूनका शिष्य तथा सिकन्दर महान्‌का शिक्षक था (३८४ से ३२२ ईसवी-पूर्व) ।

अरहंत*–पु० दे० 'अर्हंत' ।

अरह(स्)–पु० (सं०) रहस्य या गुप्त भेदका अभाव ।

अरहट–पु० कुएँसे पानी निकालनेका यंत्र, रहट ।

अरहन–पु० साग-भाजीमें पकाते समय मिलाया जानेवाला आटा या बेसन ।

अरहना*–स्त्री० पूजा ।

अरहर–स्त्री० दालके काम आनेवाला एक अनाज, तुअर ।

अरा*–पु० आरा; पहियेकी गड़ारी तथा पुट्ठीके बीचकी लकड़ी, झगड़ा । **–अरी**–स्त्री० दे० 'अड़ाअड़ी' ।

अराक़–पु० (अ०) अरब देश; वहाँका घोड़ा ।

अराकान–पु० बर्माका एक प्रांत जो भारतकी पूर्वी सीमाके पास

पड़ता है।

अराग–वि० (सं०) वासनारहित; शांत।

अरागी(गिन्)–वि० (सं०) अरंजित; रागहीन, वासनारहित।

अराज–वि० विना राजाका, अराजक। पु० अराजकता।

अराजक–वि० (सं०) विना राजा या राज्यका; अराजकतावादी। पु० राजाका न होना; विप्लव।

अराजकता–स्त्री० (सं०) शासनका अभाव; अव्यवस्था, बदअमली। **–वाद**–पु० राज्यहीन समाज-व्यवस्थाका प्रतिपादन करनेवाला मतवाद। **–वादी(दिन्)**–वि० उक्त सिद्धांतका प्रतिपादक, समर्थक।

अराजन्य–वि० (सं०) क्षत्रियरहित।

अराजपत्रित–वि० (नॉन-गजेटेड) (अधिकारी, कर्मचारी) जिसका नाम या जिसकी पदवृद्धि, स्थानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिके संवंधमें कोई सूचना सरकारी समाचार-पत्रमें न छपती हो।

अराजवीजी–वि० (सं०) अराजकता फैलानेवाला; राजविद्रोह प्रचारक।

अराजव्यसन–पु० (सं०) अराजकतासे उत्पन्न या तत्संवंधी संकट।

अराज़ी–स्त्री० (अ०) जमीन, धरती (अर्ज़का वहु०, अत्र एकवचनमें प्रयुक्त)।

अरात*–पु० दे० 'अराति'।

अराति–पु० (सं०) दुश्मन, शत्रु; कुंडलीका छठाँ स्थान; काम-क्रोधादि षड्रिपु; ६की संख्या।

अराद्धि–स्त्री० (सं०) पाप; अपराध; द्वेप; असफलता।

अराधन*–पु० दे० 'आराधन'।

अराधना*–स० क्रि० आराधन करना। स्त्री० आराधना।

अराधी*–पु० आराधना करनेवाला।

अराबा–पु० (अ०) गाड़ी, रथ; तोप लादनेकी गाड़ी; जहाजपर एक ओर एक बार तोप दागना।

अराम*–पु० आराम, वाग।

अरारूट, अरारोट–पु० एक पौधा; उसकी जड़से निकलनेवाला सत जो तीखुर जैसा होता है और प्रायः बीमारोंको दिया जाता है।

अराल–वि० (सं०) टेढ़ा। पु० राल; मतवाला हाथी; वक्र हस्त; एक समुद्र।

अराला–स्त्री० (सं०) पुंश्चली, वेश्या; अधृष्ट स्त्री।

अरावल–पु० हरावल, अग्रगामी सैन्य।

अरावली–पु० राजस्थानका एक पहाड़।

अराष्ट्र–पु० (सं०) राष्ट्र नहीं, राजसत्ताका अंत।

अरिंद*–पु० शत्रु।

अरिंदम–वि० (सं०) शत्रुओंका दमन करनेवाला, शत्रुविजयी।

अरि–पु० (सं०) शत्रु; काम, क्रोध आदि षड्रिपु; जन्मकुंडलीमें लग्नसे छठा स्थान; ६की संख्या; एक तरहका खदिर; स्वामी; हवा; धार्मिक व्यक्ति; रथका पहिया या और कोई भाग। **–कर्षक**–वि० शत्रुओंको पीड़ित या पराभूत करनेवाला। **–केशी**–पु० (हिं०) केशीके शत्रु, कृष्ण। **–घ्न**–वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला। पु० शत्रुघ्न। **–चिंतन**–पु०, **–चिंता**–स्त्री० शत्रुके नाशका उपाय सोचना। **–दमन, –मर्दन**–वि० शत्रुका नाश करनेवाला। **–निपात**–पु० शत्रुका आक्रमण। **–नुत**–वि० जिसकी शत्रु भी प्रशंसा करें। **–प्रकृति**–स्त्री० युद्धसंलग्न राजाके शत्रुओंकी स्थिति। **–मेद**–पु० विट्खदिर; गँधिया नामका कीड़ा। **–मेदक**–पु० मलमें उत्पन्न होनेवाला एक कीड़ा। **–सूदन**–वि० शत्रुओंका नाश करनेवाला, शत्रुघ्न।

अरिक्थभाक(ज्), अरिक्थीय–वि० (सं०) जो पैतृक संपत्तिमें हिस्सा पानेका अधिकारी न हो।

अरित्र–पु० (सं०) डाँड़; लंगर; नाव, पोत। वि० शत्रुसे रक्षा करनेवाला; आगे बढ़ानेवाला। **–गाध**–वि० छिछला।

अरिया–स्त्री० विशेषतः पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

अरियाना*–स० क्रि० अपमानजनक शब्दसे संवोधन करना।

अरिल्ल–पु० १६ मात्राओंका एक छंद।

अरिवन–पु० रस्सीका फंदा जिसमें घड़ा आदि फँसाया जाता है।

अरिष–पु० (सं०) लगातार वर्षा होना; एक गुदारोग।

अरिष्ट–पु० (सं०) दुर्भाग्य; अशुभ; विपत्ति; शत्रु; अनिष्ट ग्रह या ग्रहयोग, मृत्युकारक योग; (रोगीके) मृत्युसूचक लक्षण; भूकंपादि उत्पात; दवाओंके खमीरसे बनाया जानेवाला मादक अर्क; लहसुन; कौआ; गिद्ध; रीठा; लंकाके पासका एक पर्वत; सौरी; तक्र; एक असुर जिसे कृष्णने मारा था; एक प्रकारका व्यूह। वि० अविनाशी; निरापद; अशुभ। **–गृह**–पु० सौरी। **–नेमि**–पु० कश्यपका एक पुत्र; सोलहवें प्रजापति; जैनोंके बाईसवें तीर्थंकर। **–मथन**–पु० शिव या विष्णु।

अरिष्टक–पु० (सं०) रीठा।

अरिष्टा–स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या और कश्यप ऋषिकी पत्नी जिससे गंधर्वोंकी उत्पत्ति मानी जाती है; कुटकी; पट्टी।

अरिष्टिका–स्त्री० (सं०) रीठी; कुटकी।

अरिहन–पु० रेहन; जिन; * शत्रुघ्न।

अरिहा(हन्)–वि० (सं०) शत्रुका नाश करनेवाला। पु० शत्रुघ्न।

अरी–अ० स्त्रियोंके लिए व्यवहृत संबोधन।

अरीझना*–अ० क्रि० उलझना, वँध जाना।

अरीठा–पु० रीठा।

अरीत*–स्त्री० अरीति, अनुचित कार्य।

अरुंतुद–वि० (सं०) मर्मस्थलोंको छेदनेवाला; मर्मपीड़क; लगनेवाला। पु० शत्रु।

अरुंधती–स्त्री० (सं०) वसिष्ठ ऋषिकी पत्नी; दक्षकी एक कन्या अथवा धर्मकी एक पत्नी; सप्तर्षि-मंडलके पासका एक छोटा तारा; जीभ। **–जानि, –नाथ, –सहचर**–पु० वसिष्ठ। **–दर्शनन्याय**–पु० स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर जाना (अरुंधतीके बहुत छोटे होनेके कारण पहले उसके पासके बड़े तारे (वशिष्ठ) पर ही दृष्टि जाती है)।

अरु*–अ० और।

अरु(स्)–पु० (सं०) सूर्य; रक्तखदिर; अर्क वृक्ष; जख्म; मर्मांग; आँख।

अरुआ–पु० एक वृक्ष जो बंगाल, मद्रास आदिमें अधिकतासे होता है (इसकी लकड़ी ढोल, तलवारकी म्यान आदि बनानेके काम आती है); † तरकारीके काम आनेवाला एक कंद।

अरुई†–स्त्री० दे० 'अरवी'।

अरुक्(ज्)–वि० (सं०) रोगमुक्त, नीरोग।

अरुग्ण–वि० (सं०) नीरोग, स्वस्थ।

अरुचि–स्त्री० (सं०) (किसी वस्तुका) अच्छा न लगना, अनिच्छा; घृणा; विरक्ति; भूख न लगना, अग्निमांद्य रोग; संतोषजनक व्याख्याका अभाव। **–कर**–वि० जो पसंद न आये, न रुचनेवाला।

अरुचिर, अरुच्य–वि० (सं०) भला न लगनेवाला, अरुचिकर; कुढ़न पैदा करनेवाला।

अरुज–वि० (सं०) नीरोग, तंदुरुस्त। पु० आरग्वध नामक पौधा।

अरुझना*–अ० क्रि० उलझना, फँसना, अटकना; झगड़ना; युद्धमें संलग्न होना।

अरुझाना*–स० क्रि० उलझाना। अ० क्रि० उलझना।

अरुठ*–वि० रुष्ट, जो रूठ गया हो।

अरुण–वि० (सं०) लाल, उषा या सिंदूरके रंगका; घबड़ाया हुआ; मूक। पु० लाल रंग, उगते हुए सूर्यका रंग; सांध्य लालिमा; बाल सूर्य; सूर्यका सारथि; माघ महीनेका सूर्य; सिंदूर; सोना; कुंकुम; गुड़; एक तरहका कुष्ठ रोग; एक छोटा विषैला जंतु; एक आदित्य; कैलासकी एक चोटी; पुन्नाग वृक्ष। **–कर, –किरण**–पु० सूर्य। **–चूड, –शिखा**–पु० मुर्गा। **–ज्योति(स्)**–पु० शिव। **–नेत्र, –लोचन**–पु० कबूतर। **–प्रिय**–पु० सूर्य। **–प्रिया**–स्त्री० सूर्यकी पत्नी, संज्ञा, छाया। **–मल्लार**–पु० मल्लार रागका एक भेद। **–सारथि**–पु० सूर्य।

अरुणा–स्त्री० (सं०) पूर्व दिशामें देख पड़नेवाली प्रातःकालकी लालिमा; उषा; मजीठ, घुँघची, अतिविषा, इंद्रवारुणी, काला अनंतमूल इ०।

अरुणाई*–स्त्री० लालिमा।

अरुणाग्रज–पु० (सं०) गरुड़ ।

अरुणात्मज–पु० (सं०) शनि, यम, जटायु, सुग्रीव, कर्ण इ० ।

अरुणात्मजा–स्त्री० (सं०) यमुना और ताप्ती ।

अरुणानुज, अरुणावरज–पु० (सं०) गरुड़ ।

अरुणाभ–वि० (सं०) लाल आभायुक्त, लालिमा लिये हुए ।

अरुणार–वि० दे० 'अरुनारा' ।

अरुणार्चि(स्)–पु० (सं०) सूर्य ।

अरुणाश्व–पु० (सं०) मरुत् ।

अरुणित–वि० (सं०) लाल रंगमें रँगा हुआ ।

अरुणिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) लाली ।

अरुणी–स्त्री० (सं०) लाल गाय; उषा ।

अरुणोदक–पु० (सं०) लाल सागर; एक झील ।

अरुणोदय–पु० (सं०) उषःकाल, तड़का, भोर । **–सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी ।

अरुणोपल–पु० (सं०) लाल नामक रत्न ।

अरुन✻–वि० दे० 'अरुण' । **–ई**–स्त्री०, **–ता**–स्त्री० दे० 'अरुनाई' । **–चूड़, –शिखा**–पु० दे० 'अरुणचूड,–शिखा' ।

अरुनाई✻–स्त्री० ललाई ।

अरुनाना✻–अ० क्रि० सुर्खी आना, लाल होना । स० क्रि० लाल करना ।

अरुनारा✻–वि० लाल ।

अरुनोदय✻–पु० दे० 'अरुणोदय' ।

अरुरना✻–अ० क्रि० सिकुड़ना, वल खाना ।

अरुराना✻–स० क्रि० सिकोड़ना; ऐंठना, मरोड़ना ।

अरुवा–पु० एक लता जिसकी जड़में कंद होता है; अरुआ; उल्लू पक्षी ।

अरुष–वि० (सं०) अक्रुद्ध; चमकीला; अक्षत । पु० अग्निका लाल घोड़ा; ज्वाला; सूर्य ।

अरुषी–स्त्री० (सं०) उषा; ज्वाला; भृगुपत्नी ।

अरुष्क–पु० (सं०) भल्लातक वृक्ष या उसकी गिरी; अड़ूसा ।

अरुष्कर–वि० (सं०) व्रणकर, क्षतकारक । पु० भल्लातक वृक्ष ।

अरुहा–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी ।

अरूक्ष–वि० (सं०) कड़ा नहीं, मुलायम ।

अरूझना✻–अ० क्रि० भिड़ना, झगड़ना ।

अरूढ–वि० (सं०) जो रूढ न हो, अप्रचलित; ✻ दे० 'आरूढ' ।

अरूप–वि० (सं०) आकृतिहीन, बिना रूप-आकारका; कुरूप; असमान । पु० भद्दी शक्ल ।

अरूपक–वि० (सं०) आकृतिहीन, अपार्थिव; रूपकालंकार आदिसे रहित (शाब्दिक) ।

अरूपहार्य–वि० (सं०) जो सौंदर्य द्वारा आकृष्ट या वशमें न किया जा सके ।

अरूरना✻–अ० क्रि० व्यथित होना, पीड़ित होना ।

अरूलना✻–अ० क्रि० छिलना; कटना ।

अरूष–पु० (सं०) सूर्य; एक सर्प ।

अरूस, अरूसा–पु० अड़ूसा ।

अरे–अ० छोटोंके लिए व्यवहृत और प्रायः तिरस्कार-सूचक संबोधन; आश्चर्य, दुःख, आकुलता आदि प्रकट करनेवाला उद्‌गार ।

अरेणु–वि० (सं०) जिसमें धूलि न लगी हो; जिसका धूलिसे स्पर्श न हो । स्त्री० धूलिका न होना ।

अरेरना✻–स० क्रि० रगड़ना ।

अरैल✻–वि० दे० 'अड़ियल' ।

अरैली–स्त्री० नेपाली कागज बनानेके काम आनेवाली एक प्रकारकी झाड़ी ।

अरोक–वि० अवाध्य, जो रोका न जा सके; (सं०) छिद्ररहित; कांतिहीन, निष्प्रभ । **–दंत**–वि० जिसके दाँत काले या आपसमें खूब मिले हों ।

अरोग–वि० (सं०) नीरोग, स्वस्थ ।

अरोगना✻–स० क्रि० खाना, दे० 'आरोगना' ।

अरोगी(गिन्), अरोग्य–वि० (सं०) स्वस्थ, नीरोग ।

अरोच✻–पु० अरुचि, अनिच्छा ।

अरोचक–वि० (सं०) जो चमकीला न हो; भूख मंद करनेवाला; अरुचि पैदा करनेवाला, अरुचिकर । पु० अग्निमांद्य; अरुचि ।

अरोचकी(किन्)–वि० (सं०) अग्निमांद्य रोगसे पीड़ित ।

अरोड़ा–पु० पंजाबकी एक हिंदू जाति ।

अरोध्य–वि० (सं०) जो रोका न जा सके, अवाधित ।

अरोर✻–वि० शब्दरहित, शांत ।

अरोहन✻–पु० दे० 'आरोहण' ।

अरोहना✻–अ० क्रि० चढ़ना, आरोहण करना ।

अरोही✻–वि० दे० 'आरोही' ।

अरौद्र–वि० (सं०) जो भयंकर न हो; विष्णुका एक विशेषण ।

अर्क–पु० (सं०) ज्योति, प्रकाश-किरण; सूर्य; अग्नि; रविवार; ताँबा; स्फटिक; आक, मदार; इंद्र; विष्णु; एक धार्मिक कृत्य; उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र; एक तरहका क्वाथ; विद्वान् व्यक्ति; वड़ा भाई; आहार; १२की संख्या (सूर्य १२ माने गये हैं) । वि० पूजा करने योग्य । **–कर**–पु० सूर्यकी किरण । **–कला**–स्त्री० सूर्यमंडलका वारहवाँ अंश । **–कांता**–स्त्री० अड़हुल । **–क्षेत्र**–पु० सिंह राशि । **–चंदन**–पु० लाल चंदन । **–ज, –तनय**–पु० कर्ण, यम, सुग्रीव, शनि, अश्विनीकुमार । **–जा,–तनया**–स्त्री० यमुना; ताप्ती । **–दिन**–पु० रविवार । **–नंदन,–पुत्र, –सुत, –सूनु**–पु० शनि, कर्ण, यम आदि । **–नयन**–पु० विराट् पुरुष । **–पत्र, –पर्ण**–पु० अर्क-वृक्ष । **–पत्रा**–स्त्री० सुनंदा, अर्कमूल । **–पुष्पी**–स्त्री० सूर्यमुखी । **–प्रिया**–स्त्री० जपा । **–फल**–पु० (सं०) मदारका फल 'ज्यों गज अर्कफलनको मार्यो'—रामा० । **–वंधु**–पु० गौतम; कमल । **–भ**–पु० सूर्यप्रभावित नक्षत्रादि । **–भक्ता**–स्त्री० अड़हुल । **–मूल**–पु०, **–मूला**–स्त्री० सुनंदा । **–रिपु**–पु० राहु । **–वल्लभ**–पु० वंधूक; कमल । **–वल्लभा**–स्त्री० जपा । **–विवाह**–पु० मदारके पेड़के साथ किया जानेवाला विवाह (तीसरा विवाह करनेवाले पुरुषके लिए पहले मदारसे विवाह करनेका विधान किया गया है, ताकि तीसरी पत्नी चौथी हो जाय) । **–वेध**–पु० तालीश-पत्र । **–व्रत**–पु० सूर्यका एक व्रत (यह माघ-शुक्ला सप्तमीको किया जाता है); राजाका प्रजासे कर लेनेमें सूर्यके नियमका अनुसरण करना (सूर्य ८ महीने अपनी किरणोंसे पानी सोखता और वरसातमें उसे कई गुना करके वरसा देता है, अर्थात् लोककी वृद्धिके लिए ही रस ग्रहण करता है) । **–सोदर**–पु० ऐरावत । **–हिता**–स्त्री० दे० अर्ककांता ।

अर्क़–पु० (अ०) रस; किसी चीजका भभकेसे खींचा हुआ रस; पसीना । **–गीर**–पु० पगड़ीके नीचेकी टोपी; जीनके नीचे रखा जानेवाला नमदेका टुकड़ा या कंबल । **–नाना**–पु० पुदीनेका अर्क जो सिरका मिलाकर खींचा गया हो । **–बादियान**–पु० सौंफका अर्क । **–रेज़ी**–स्त्री० कठोर परिश्रम या प्रयास । मु० **–होना** –पसीनेसे तर हो जाना; लज्जित होना; पानी-पानी होना ।

अर्कांश–पु० (सं०) दे० 'अर्ककला' ।

अर्काश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) दे० 'अर्कोपल' ।

अर्की(किन्)–पु० (सं०) मोर ।

अर्कीय, अर्क्य–वि० (सं०) अर्क-संबंधी; पूजित ।

अर्कोपल–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि; चुन्नी ।

अर्ग–पु० (अर्ग, erg) कार्य अथवा ऊर्जा नापनेका मात्रक । यदि एक डाइन का बल किसी विन्दुको वलकी दिशामें एक सें० मी० खिसकाता है तो एक अर्ग कार्य पूरा होता है । यदि एक ग्राम वाटको ऊर्ध्वाधर एक सें० मी० ऊँचा उठाएँ तो ९८० अर्ग कार्य पूरा होगा ।

अर्गजा✻–पु० दे० 'अरगजा' ।

अर्गल–पु० (सं०) ब्योंड़ा, अगड़ी; रोक, अवरोध; किवाड़; लहर; एक नरक; मांस ।

अर्गला–स्त्री० (सं०) अगड़ी; सिटकिनी; हाथी बाँधनेकी जंजीर; दुर्गा सप्तशतीके आदिमें पढ़ा जानेवाला एक स्तोत्र ।

अर्गलिका–स्त्री० (सं०) छोटी अर्गला ।

अर्गलित–वि० (सं०) अगड़ीसे बंद किया हुआ ।

अर्गली–स्त्री० (सं०) दे० 'अर्गला' ।

अर्घ–पु० (सं०) पूजनके १६ उपचारोंमेंसे एक; दूब, दूध, चावल

आदि मिला हुआ जल जो देवता या पूजनीय पुरुषके सामने श्रद्धापूर्वक गिराया जाय; आगंतुकको हाथ धोनेके लिए दिया गया जल; २५ मोतियोंका समूह जिसका वजन एक धरण हो; दाम, मूल्य; अश्व, घोड़ा; मधु, शहद। **–दान**–पु० अर्घ अर्पण करना। **–पतन**–पु० सस्ती होना, भाव गिरना। पु० (स्लंप) एकाएक मूल्य गिर जाना, दे०, 'मूल्यावपात'। **–पात्र**–पु० अर्घ अर्पण करनेका पात्र; अरघा। **–पाद्य**–पु० अर्घ और पाँव धोनेका जल या इन्हें प्रस्तुत करना। **–बलाबल**–पु० उचित मूल्य; वस्तुओंके मूल्यकी तेजी और मंदी। **–वर्णांतर**–पु० अच्छी चीजमें रद्दी चीज मिलाकर अच्छी चीजकी कीमतपर बेचना। **–वर्द्धन**–पु० भाव बढ़ाना, वस्तुको अकारण महँगा करना। **–वृद्धि**–स्त्री० भाव बढ़ना, महँगी होना। **–संख्यान, –संस्थापन**–पु० व्यापारिक वस्तुओंका मूल्य निर्धारित करना।

अर्घंट–पु० (सं०) राख।

अर्घा–पु० दे० 'अरघा'। स्त्री० (सं०) २० मोतियोंका वह लच्छा जिसकी तौल ४ माशे हो।

अर्घापचय–पु० (सं०) मूल्यका ह्रास होना।

अर्घार्ह–वि० (सं०) भेंट या पूजाके योग्य।

अर्घेश्वर–पु० (सं०) शिव।

अर्घ्य–वि० (सं०) पूजनीय; बहुमूल्य। पु० पूजामें देनेयोग्य वस्तु, अर्घके उपयुक्त द्रव्य; एक प्रकारका मधु।

अर्चक–वि० (सं०) पूजा करनेवाला।

अर्चन–पु०, **अर्चना**–स्त्री० (सं०) पूजन, वंदन।

अर्चनीय, अर्च्य–वि० (सं०) पूजनीय; सम्मान्य।

अर्चमान–वि० (सं०) दे० 'अर्चनीय'।

अर्चा–स्त्री० (सं०) पूजा; प्रतिमा जिसकी पूजा करनी हो।

अर्चि(स्)–स्त्री० (सं०) किरण; अग्नि-शिखा; प्रकाश, द्युति।

अर्चित–वि० (सं०) पूजित; सम्मानित। पु० विष्णु।

अर्चिती(तिन्)–वि० (सं०) पूजा करनेवाला।

अर्चिष्मती–स्त्री० (सं०) अग्निपुरी, अग्निलोक; दस धराओंमेंसे एक (बौ०)।

अर्चिष्मान्(ष्मत्)–वि० (सं०) चमकवाला; लपटवाला। पु० अग्नि; सूर्य; एक उपदेव; विष्णु।

अर्ज़–पु० (अ०) निवेदन; प्रार्थना; चौड़ाई। **–इरसाल**–पु० खजानेमें रुपया जमा करनेका चालान। **–दाश्त**–पु० लिखित प्रार्थना, प्रार्थना-पत्र, अर्जी। **–मारूज़**–पु० निवेदन, प्रार्थना। **–हाल**–पु० निवेदन।

अर्जक–वि० (सं०) अर्जित करनेवाला, प्राप्त करनेवाला। पु० सितपर्णास; क्षुद्र तुलसी।

अर्जन–पु० (सं०) कमाना; संग्रह करना।

अर्जनीय–वि० (सं०) संग्रह या प्राप्त करने योग्य।

अर्जित–वि० (सं०) कमाया हुआ; बटोरा हुआ। **–अवकाश**–पु० निर्धारित अवधितक काम करनेके बाद मिलनेवाला अवकाश ('अर्न्ड लीव')

अर्ज़ी–स्त्री० (अ०) प्रार्थनापत्र, दरख्वास्त। **–दावा**–पु० दीवानी या मालके मुकदमेमें वादी पक्षका प्रार्थनापत्र। **–नवीस**–पु० अर्जी लिखनेवाला। **–नालिश**–स्त्री० दे० 'अर्जीदावा'। **–मरम्मत**–स्त्री० आवेदनपत्रकी कोई भूल ठीक करने या कोई बात बढ़ानेके लिए दिया जानेवाला प्रार्थनापत्र।

अर्जुन–पु० (सं०) पांडुके पाँच पुत्रोंमेंसे मझले जो महाभारत-युद्धमें पांडवपक्षके नायक थे; हैहयनरेश कार्तवीर्य; इंद्र; सफेद रंग; एक पेड़ जिसकी छाल दवाके काम आती है; एकलौता बेटा; मोर; चाँदी; सोना; आँखका एक रोग; दूब। वि० सफेद; चमकीला; स्वच्छ। **–च्छवि**–वि० सफेद रंगका। **–ध्वज**–पु० हनूमान्। **–पाकी**–स्त्री० एक पौधा। **–पुरुष**–पु० अर्जुन नामक वृक्ष।

अर्जुनक–वि० (सं०) अर्जुन-संबंधी। पु० अर्जुनका पूजक।

अर्जुनी–स्त्री० (सं०) श्वेत गौ; एक सर्प; अनिरुद्धकी पत्नी, ऊषा; करतोया नदी; कुटनी।

अर्जुनोपम–पु० (सं०) सागौन वृक्ष।

अर्ण–पु० (सं०) जल; धारा (वै०); अक्षर, वर्ण; सागौन वृक्ष; एक दंडक वृत्त; युद्धादिका होहल्ला, शोरगुल।

अर्ण(स्)–पु० (सं०) जल; तरंग; उद्वेलित समुद्र; एक वृत्त।

अर्णव–पु० (सं०) समुद्र; धारा; अंतरिक्ष; इंद्र; सूर्य; एक वृत्त; चारकी संख्या; रत्न, मणि। **–ज, –मल**–पु० समुद्र-फेन। **–नेमि**–स्त्री० पृथ्वी। **–पति**–पु० महासागर। **–पोत, यान**–पु० जहाज। **–मंदिर**–पु० वरुण।

अर्णवोद्भव–पु० (सं०) अग्निजार नामक पौधा; चंद्रमा; अमृत।

अर्णवोद्भवा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।

अर्णस–वि० (सं०) तरंगोंसे भरा हुआ।

अर्णस्वान्(स्वत्)–पु० (सं०) समुद्र। वि० अधिक जलवाला।

अर्णा–स्त्री० (सं०) नदी (वै०)।

अर्णो–'अर्णस्'का समासगत रूप। **–द**–पु० बादल; मुस्तक नामक पौधा। **–निधि**–पु० समुद्र।

अर्तगल–पु० (सं०) दे० 'आर्तगल'।

अर्तन–पु० (सं०) निंदा; जुगुप्सा। वि० निंदा करनेवाला; शोकान्वित, खिन्न।

अर्ति–स्त्री० (सं०) पीडा; धनुष्का छोर।

अर्तिका–स्त्री० (सं०) बड़ी बहन (ना०)।

अर्थ–पु० (सं०) शब्दका अभिप्राय, मानी, मतलब; प्रयोजन; काम; मामला; हेतु, निमित्त; इंद्रियोंके विषय–शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध; धन, शारीरिक आवश्यकताओंकी पूर्तिका साधन; पैसा कमाना जो जीवनके चार पुरुषार्थोंमेंसे एक माना गया है; उपयोग; लाभ; दिलचस्पी; स्वार्थ; इच्छा; गरज; प्रार्थना; दावा; वस्तुस्थिति; तरीका; मूल्य; निवारण; फल, परिणाम; धर्मपुत्रका एक नाम; कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान; विष्णु। **–कर**–वि० जिससे पैसा मिले। (स्त्री० 'अर्थकरी'।) **–कर्म(न्)**–पु० मुख्य कार्य। **–काम**–वि० धनेच्छु। **–किल्विषी(षिन्)**–वि० रुपये-पैसेके मामलेमें बेईमानी करनेवाला। **–कृच्छ्र**–पु० पैसेकी तंगी; राज्यकरकी आयसे व्ययका अधिक होना। **–गत**–वि० (शब्दके) अर्थपर आश्रित। **–गृह**–पु० खजाना। **–गौरव**–पु० अर्थकी गंभीरता। **–गर्भ**–वि० अर्थपूर्ण, जिसमें विशिष्ट अर्थ निहित हो। **–घ्न**–वि० अपव्ययी। **–चर**–पु० सरकारी नौकर। **–चिंतन**–पु० द्रव्योपार्जनका उपाय सोचना। **–चिंता**–स्त्री० धन या पैसेकी चिंता। **–दंड**–पु० जुर्मानेकी सजा। **–द**–वि० धन देनेवाला। पु० कुबेर; धन देकर पढ़नेवाला शिष्य। **–दर्शक**–पु० धन-संपत्ति-संबंधी मुकदमोंका विचार करनेवाला। **–दूषण**–पु० अपव्यय; अन्यायसे किसीका धन ले लेना; दूसरेका धन नष्ट करना; अर्थमें दोष ढूँढ़ना। **–दोष**–पु० अर्थ-संबंधी दोष। **–पति**–पु० कुबेर; राजा। **–पिशाच**–पु० अति धनलोभी। **–प्रबंध**–पु० आय-व्ययकी व्यवस्था, 'फिनैन्स'। **–बंध**–पु० छंद, वाक्य आदिकी रचना। **–बुद्धि**–वि० स्वार्थी। **–भाक्(ज्)** –वि० हिस्सा पानेका अधिकारी। **–भृत**–पु० तनख्वाह लेकर काम करनेवाला; वेतनभोगी कर्मचारी। **–भ्रंश**–पु० बरबादी; उद्देश्यका पूरा न होना। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० वह मंत्री जिसके जिम्मे राज्यका अर्थप्रबंध हो, वित्तमंत्री। **–युक्ति**–स्त्री० लाभ। **–वर्जित**–वि० महत्त्वहीन। **–वाद**–पु० किसी उद्देश्यका प्रकटीकरण; उपदेशादिकी व्याख्या, तीन प्रकारके वाक्योंमेंसे एक (न्या०)। **–विकरण, –विकार**– पु० मतलब बदलना। **–विज्ञान**–पु० अर्थबोध; अर्थशास्त्र। **–विद्**–वि० तात्पर्य समझनेवाला। **–व्यवस्था**–स्त्री० सार्वजनिक राजस्व और उसके आय-व्ययकी पद्धति। **–शास्त्र**–पु० अर्थोपार्जन, भूमि और श्रम तथा पदार्थोंके उत्पादन, वितरण, उपभोग आदिके तथ्यों, सिद्धान्तों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, अर्थविज्ञान; राजनीति-विज्ञान; नीतिशास्त्र। **–शौच**–पु० लेन-देन या पैसा कमानेमें ईमानदारीसे काम करना। **–सचिव**–पु० दे० 'अर्थमंत्री'। **–सिद्ध**–वि० प्रसंगसे ही जिसका अर्थ स्पष्ट हो। **–सिद्धि**–स्त्री० अभीष्टकी प्राप्ति, उद्देश्यकी सिद्धि। **–हर**–वि० उत्तराधिकारमें धन प्राप्त करनेवाला। **–हीन**–वि० निर्धन; बे-मानी; असफल।

अर्थतः(तस्)–अ० (सं०) अर्थकी दृष्टिसे; वस्तुतः, सचमुच।

अर्थना–स्त्री० (सं०) प्रार्थना, निवेदन; दावा ।

अर्थांतर–पु० (सं०) दूसरा विषय; नयी स्थिति; दूसरा मतलब । **–न्यास**–पु० एक अर्थालंकार जहाँ सामान्यसे विशेषका, विशेषसे सामान्यका अथवा कारणसे कार्यका या कार्यसे कारणका समर्थन हो।

अर्थागम–पु० (सं०) धनागम, आय; शब्दमें किसी नये अर्थका लगना ।

अर्थातिक्रम–पु० (सं०) हस्तगत उत्तम वस्तुका त्याग (कौ०) ।

अर्थात्–अ० (सं०) यानी, दूसरे शब्दोंमें ।

अर्थाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) खजांची; अर्थमंत्री ।

अर्थानर्थापद–पु० (सं०) एक ओरसे लाभ और दूसरी ओरसे राज्य जानेका भय ।

अर्थाना*–स० क्रि० अर्थ लगाना, व्याख्या करना ।

अर्थानुवाद–पु० (सं०) विधिविहित विषयका पुनः कथन या अनुवचन (न्या०) ।

अर्थान्वित–वि० (सं०) धनी; अर्थ या आशयसे युक्त, सारगर्भ, महत्त्वपूर्ण ।

अर्थापत्ति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें एक अर्थ द्वारा दूसरा स्वतः सिद्ध हो जाय, जिसमें यह दिखलाया जाय कि जव इतनी वड़ी वात हो गयी तव इस छोटी-सी वातके होनेमें क्या संदेह हो सकता है; परिणाम; एक प्रमाण जिसमें एक वातसे दूसरी वातकी सिद्धि होती है (मी०) । **–सम**–पु० जातिके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अर्थापन–पु० (इंटरप्रिटेशन) अर्थ लगाना; अर्थनिर्णय; विशेष ढंगसे समझना या समझाना; व्याख्या ।

अर्थाप्रतिकार–पु० (सं०) कारखानेके नौकरों और कच्चा माल आदि देनेवाले मनुष्योंको वेतन, मूल्य आदि देनेका प्रवंध करनेवाला व्यक्ति ।

अर्थार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) धनकी कामना रखने या उसकी प्राप्तिके लिए प्रयास करनेवाला; गरज या मतलव रखनेवाला ।

अर्थालंकार–पु० (सं०) वह अलंकार जो शब्द-प्रयोगपर नहीं, किंतु अर्थपर आश्रित हो ।

अर्थिक–पु० (सं०) प्रहरी; राजाको सोने और उठनेके समयकी सूचना देनेवाला स्तुतिपाठक । वि० धनकी या किसी वस्तुकी कामना करनेवाला ।

अर्थित–वि० (सं०) माँगा हुआ; चाहा हुआ ।

अर्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) चाह या गरज रखनेवाला; प्रार्थी; वादी; सेवा करनेवाला; धनी । पु० माँगनेवाला; भिक्षुक; वादी; मालिक ।

अर्थ्य–वि० (सं०) माँगने योग्य; उपयुक्त; धनी; चतुर । पु० शिलाजीत ।

अर्दन, अर्द्दन–पु० (सं०) पीडन; दूर करना या हटाना; वध; याचना; जाना । वि० पीड़ा देनेवाला; नष्ट करनेवाला; वेचैनीसे घूमने या चलनेवाला ।

अर्दना–स्त्री० (सं०) दे० 'अर्दन' । * स० क्रि० कष्ट पहुँचाना ।

अर्दनि–पु० (सं०) रोग; प्रार्थना; भिक्षा; अग्नि ।

अर्दित–वि० (सं०) पीडित; हत; याचित; गया हुआ । पु० एक वातरोग, गर्दन और मुँहकी एक ओरकी पेशियोंका अकड़ जाना ।

अर्द्ध, अर्ध–वि० (सं०) आधा । पु० आधा भाग; भाग; वृद्धि; हवा; समीपता । **–आयु**–स्त्री० (हाफ़ लाइफ़) समयकी वह अवधि जितनी देरमें किसी रेडियो ऐक्टिव पदार्थकी ऐक्टिवता अपने प्रारंभिक मानकी आधी हो जाती हैं । (उदाहरणके लिए रेडियमकी अर्द्धआयु १५९० वर्ष है; अर्थात् रेडियमकी दी हुई मात्राका विघटन इसपरसे होता है कि १५९० वर्षमें प्रारंभिक मात्राका केवल आधा भाग रेडियम वच रहेगा ।) **–काल, –कूट**–पु० शिव । **–केतु**–पु० रुद्र । **–गंगा, –जाह्नवी**–स्त्री० कावेरी नदी । **–गुच्छ**–पु० चौवीस लड़ियोंका हार । **–गोल**–पु० भूगोल या खगोलका आधा, गोलार्द्ध । **–चंद्र**–पु० आधा चंद्रमा; हिलाल; सानुनासिकका चिह्न, चंद्रविंदु; वह वाण जिसका फल अर्द्धचंद्राकार हो; मोरपंखपरकी आँख; विशेष प्रकारका नखक्षत; निकाल वाहर करनेके लिए गर्दनमें हाथ लगाना, गर्दनिया (देना); एक प्रकारका त्रिपुंड्र । **–चंद्रा**–स्त्री० कर्णस्फोट नामक पौधा, तिधारा । **–चंद्रिका**–स्त्री० एक लता । **–चालक**–पु० (सेमी कन्डक्टर) ऐसे पदार्थ जिनमेंसे होकर विद्युत्धारा विशेष परिस्थितियोंमें ही प्रवाहित हो सकती है––ये धातु और अधातुके वीचके वर्गमें आते हैं । **जल**–पु० शवको स्नान कराकर आधा वाहर, आधा जलमें रखनेकी क्रिया । **–ज्योतिका**–स्त्री० तालका एक भेद (सं०) । **–तिक्त**–पु० नेपाली नीम । **–तूर**–पु० वाद्यविशेष (सं०) । **–नयन**–पु० देवताओंका तीसरा नेत्र । **–नाराच**–पु० एक तरहका वाण; प्रमाणिका नामक छन्द । **–नारायण**–पु० विष्णुका एक रूप । **–नारीश, –नारीश्वर**–पु० शिवका वह रूप जिसमें आधा भाग पार्वतीका होता है, शिव-पार्वतीका संयुक्त रूप । **–निशा, –रात्रि**–स्त्री० आधी रात । **–पारावत**–पु० तीतर । **–प्रादेश**–पु० पुलके वीचसे खंभेतकका अंतर । **–भाक्(ज्), –भागिक**–वि० आधेका हिस्सेदार या हकदार । **–भास्कर**–पु० मध्याह्न । **–मागधी**–स्त्री० प्राकृतका वह रूप जो पटना और मथुराके वीच वोला जाता था । **–माणव, –माणवक**–पु० १२ लड़ियोंका हार । **–मात्रा**–स्त्री० आधी मात्रा; व्यंजन वर्ण । **–मासभृत**–पु० अर्धमासिक वेतन पानेवाला मजदूर या नौकर । **–रथ**–पु० किसीके साथ होकर लड़नेवाला रथारोही । **–सिवर्ग, –विसर्जनीय**–पु० क और पके पहले होनेवाला विसर्गसा उच्चारण । **–वीक्षण**–पु० तिरछी चितवन । **–वृत्त**–पु० वृत्तकी परिधिका आधा भाग । **–वृद्ध**–वि० अधेड़ उम्रका । **–वृद्धि**–स्त्री० सूद या किरायेका आधा । **–वैनाशिक**–पु० कणादके अनुयायी । **–वैशस**–पु० आधा वध, अधूरा वध (जैसे पतिके नाशसे पत्नीका भी आधा नाश हो जाता है) । **–व्यास**–पु० केंद्रसे परिधितककी दूरी । **–शफर**–पु० एक तरहकी मछली । **–शब्द**–वि० धीमी आवाजवाला । **–शेष**–वि० जिसका आधा ही वचा हो । **–सम**–वि० आधेके वरावर । पु० वह वृत्त या छंद जिसका पहला और तीसरा तथा दूसरा और चौथा चरण समान हो (जैसे दोहा और सोरठा) । **–साप्ताहिक**–वि० सप्ताहमें दो वार निकलने या होनेवाला । पु० सप्ताहमें दो वार निकलनेवाला पत्र । **–सीरी(रिन्)**–पु० वटाईदार, परिश्रमके वदले आधी फसल लेनेवाला कृषक । **–हार**–पु० ६४ (या ४०) लड़ियोंका हार । **–ह्रस्व**–पु० लघु स्वरका आधा ।

अर्द्धक, अर्धक–वि० (सं०) आधा । पु० (वाइसेक्टर) किसी कोण आदिको दो समान भागोंमें वाँटनेवाली रेखा, समद्विभाजक ।

अर्द्धवृत्त–पु० (सेमिसरकिल) वृत्तका आधा भाग जो व्यासके एक ओर या दूसरी ओर हो ।

अर्द्धांग, अर्धांग–पु० (सं०) आधी देह; पक्षाघात रोग, फालिज; शिव ।

अर्द्धांगिनी, अर्धांगिनी–स्त्री० (सं०) पत्नी, सहधर्मिणी ।

अर्द्धांगी(गिन्), अर्द्धांगी(गिन्)–पु० (सं०) शिव; पक्षाघातका रोगी, वह जिसे लकवा मार गया हो ।

अर्द्धांशी(शिन्), अर्धांशी(शिन्)–वि० (सं०) आधे हिस्सेका अधिकारी ।

अर्द्धा, अर्धा–स्त्री० (सं०) २५ मोतियोंका वह गुच्छा जिसकी तौल ४ माशे हो ।

अर्द्धार्द्ध, अर्धार्ध–वि० (सं०) आधे-आध; आधेका आधा, चौथाई ।

अर्द्धाली, अर्धाली–स्त्री० आधी चौपाई ।

अर्द्धावभेदक, अर्धावभेदक–पु० (सं०) आधासीसी ।

अर्द्धाशन, अर्धाशन–पु० (सं०) आधा भोजन ।

अर्द्धासन, अर्धासन–पु० (सं०) आधा आसन; वहुत अधिक सम्मानकी जगह; वरावरीका स्थान ।

अर्द्धिक, अर्धिक–वि० (सं०) मापमें आधा; आधेका अधिकारी । पु० ब्राह्मण पिता और वैश्या मातासे उत्पन्न संतान; आधासीसी ।

अर्द्धेंदु, अर्धेंदु–पु० (सं०) अर्द्ध चंद्र । **–मौलि**–पु० शिव ।

अर्द्धोत्तोलित ध्वज–पु० (हाफमास्ट फ्लैग) किसी महान् व्यक्तिके मरनेपर उसके सम्मानमें आधी ऊँचाईतक झुकाया हुआ राष्ट्रीय झंडा, अधझुका झंडा ।

अर्द्धोदक, अर्धोदक–पु० (सं०) आधे शरीरतक गहरा पानी; मृत

व्यक्तिको आधा पानीमें, आधा बाहर रखना ।

अर्द्धोदय, अर्धोदय–पु० (सं०) एक पर्व जिसमें स्नान करना सूर्य-ग्रहण-स्नानका पुण्य देनेवाला माना जाता है ।

अर्धंग*–पु० दे० 'अद्धांग' ।

अर्द्धंगी*–पु० दे० 'अद्धांगी' ।

अर्धुक–वि० (सं०) उन्नतिशील ।

अर्पण–पु० (सं०) देना, दान करना; भेंट करना; वापस करना; रखना (पदार्पण); छेदन । **–प्रतिभू**–पु० ऐसी जमानत करनेवाला प्रतिभू जो ऋणीके न दे सकनेपर स्वयं धन देना स्वीकार करे ।

अर्पना*–स० क्रि० 'अरपना' ।

अर्पित–वि० (सं०) अर्पण किया हुआ ।

अर्पिस–पु० (सं०) हृदय; हृदयका मांस ।

अर्ब-दर्ब*–पु० धन-संपत्ति, माल-दौलत ।

अर्बुद–पु० (सं०) दस करोड़की संख्या (संस्कृत पद्धति); आबू पहाड़; एक रोग जिसमें शरीरमें कहीं बड़े इल्ले जैसा मांसपिंड निकल आता है; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था; एक पुराणोक्त सर्प; दो महीनेका गर्भ; बादल; जैनियोंका एक तीर्थस्थान; एक नरक ।

अर्बुदि–पु० (सं०) अर्बुद नामक राक्षस; सर्वव्यापक ईश्वर ।

अर्बुदी(दिन्)–वि० (सं०) अर्बुद रोगसे ग्रस्त ।

अर्भ–पु० (सं०) शिशु, बच्चा; छात्र; नेत्रवाला; कुशा ।

अर्भक–पु० (सं०) बच्चा; छौना; नेत्रबाला; कुशा; मूर्ख आदमी । वि० थोड़ा; दुबला; मूर्ख, निर्बुद्धि; सदृश; बच्चों जैसा ।

अर्म–पु० (सं०) आँखका फूली नामक रोग; गंतव्य देश; पुराना या आधा उजड़ा हुआ गाँव ।

अर्य–वि० (सं०) श्रेष्ठ; पूज्य, सम्मान्य; सच्चा; प्रिय; दयालु । पु० स्वामी, प्रभु; वैश्य ।

अर्यमा(मन्)–पु० (सं०) सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे एक; एक पितर जो पितृराज माने जाते हैं; उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र; अकवन; अंतरंग मित्र ।

अर्या–स्त्री० (सं०) वैश्य जातिकी स्त्री; रखेली ।

अर्याणी–स्त्री० (सं०) वैश्य जातिकी स्त्री ।

अर्यी–स्त्री० (सं०) वैश्यकी स्त्री ।

अर्रबर्र–पु० व्यर्थकी बात ।

अर्रा–पु० वृक्षविशेष ।

अर्ल–पु० (अं०) इंगलैंडके सामंतों और बड़े-बड़े जमींदारोंकी एक सम्मानित उपाधि । (यह मार्क्विसके नीचे और वाइकाउंटके ऊपरकी उपाधि है और वंशानुक्रमके लिए दी जाती है ।)

अर्वट–(सं०) राख ।

अर्वती–स्त्री० (सं०) घोड़ी; कुटनी; विद्याधरी ।

अर्वा(वन्)–पु० (सं०) घोड़ा; चंद्रमाके दस घोड़ोंमेंसे एक; इंद्र ।

अर्वाक्(च्)–अ० (सं०) इधर, इस ओर; पीछे; पास, समीप; नीचे । **–(क्)कालिक**–वि० हालका; आधुनिक । **–शत**–वि० सौसे नीचे । **–स्रोता(तस्)**–वि० व्यभिचारी, कामुक, लंपट ।

अर्वाग्–'अर्वाक्'का समासगत रूप । **–बिल**–वि० जिसका मुँह नीचेकी ओर हो । **–वसु**–वि० धन देनेवाला । पु० बादल; वर्षा ।

अर्वाचीन–वि० (सं०) जो पीछे उत्पन्न हुआ हो; इधरका; हालका; आधुनिक; नया; कृपादृष्टि रखनेवाला; उलटा ।

अर्वावसु–पु० (सं०) देवताओंका होता ।

अर्वुक–पु० (सं०) महाभारतोक्त एक जाति ।

अर्श–पु० (अ०) तख्त; छत; आकाश; इसलाम धर्मके अनुसार आठवीं बिहिश्त या सर्वोच्च स्वर्ग; ऊन कातनेकी चरखी । **मु० (दिमाग)–पर होना**–अपनेको बहुत बड़ा समझना; अपनी शक्ति-सामर्थ्यपर इतराना; बड़े-बड़े मनसूबे बाँधना । **–से फर्श-तक**–आकाशसे धरतीतक ।

अर्श(स्)–पु० (सं०) गुदाका एक रोग, बवासीर ।

अर्शस–वि० (सं०) अर्श रोगवाला ।

अर्शसान–पु० (सं०) अग्नि; एक राक्षस ।

अर्शहर–पु० दे० 'अर्शोघ्न' ।

अर्शी(शिन्)–वि० (सं०) बवासीरका रोगी ।

अर्शो–'अर्शस्'का समासगत रूप । **–घ्न**–वि० अर्श रोगका नाशक। **–घ्न**–पु० शूरण; भिलावाँ; सज्जीखार; तेजबल; सफेद सरसों । **–घ्नी**–स्त्री० तालमूली । **–वर्त्म(न्)**–पु० अर्शका एक भेद जिसमें (गुदा या आँखके किनारे) फुंसियाँ निकलती हैं । **–हर**–पु० दे० 'अर्शोघ्न' । **–हित**–पु० भल्लातक ।

अर्हंत–वि० (सं०) योग्य । पु० बुद्ध; जिन; शिव ।

अर्ह–वि० (सं०) पूजनीय; सम्मान्य; योग्य; अधिकारी; उपयुक्त । पु० विष्णु; इंद्र; मूल्य; औचित्य; उपयुक्तता; गति ।

अर्हण–पु०, **अर्हणा, अर्हा**–स्त्री० (सं०) पूजा; सम्मान ।

अर्हणीय–वि० (सं०) पूजा या सम्मानके योग्य ।

अर्हत–पु० (सं०) परम ज्ञानी; बुद्ध; तीर्थंकर । वि० पूज्य; प्रशंसित; प्रसिद्ध ।

अर्हता–स्त्री० (सं०) योग्यता, किसी पदादिके लिए वांछित विशेष गुणराशि (क्वालिफिकेशन) ।

अर्हित–वि० (सं०) पूजित; सम्मानित ।

अर्ह्य–वि० (सं०) पूजनीय; प्रशंसनीय; योग्य; अधिकारी ।

अलं–'अलम्'का समासगत रूप । **–करण**–पु० सजाना; सजावट; (पद्मभूषण आदि उपाधियोंसे) विभूषित करना; पद्मभूषण आदि उपाधियाँ; आभूषण । **–कर्ता(र्तृ)**–वि० सजानेवाला । **–कार**–पु० सजावट; भूषा; आभूषण, गहना; रचनागत विशिष्ट शब्द-योजना या अर्थ-चमत्कार–उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि; वह हाव-भाव या क्रिया आदि जिससे स्त्रियोंका सौंदर्य बढ़े । **–० शास्त्र**–पु० अलंकारका वर्णन, विवेचन आदि करनेवाला शास्त्र । **–कृत**–वि० अलंकारयुक्त, भूपित । **–कृति**–स्त्री० अलंकार; सजावट ।

अलँग*–अ० ओर, तरफ । **–पर आना**–पशुका मस्ताना ।

अलंघनीय, अलंघ्य–वि० (सं०) जो लाँघा या पार न किया जा सके; अटल ।

अलंजर, अलंजुर–पु० (सं०) दे० 'अलिंजर' ।

अलंपट–वि० (सं०) सच्चरित्र । पु० अंतःपुर ।

अलंब*–पु० दे० 'आलंब' ।

अलंबुष–पु० (सं०) वमन; फैलायी हुई उँगलियोंके साथ हथेली; रावणका मंत्री, प्रहस्त; एक असुर जिसे घटोत्कचने मारा था ।

अलंबुषा–स्त्री० (सं०) विद्याधरी; लजौनी या छुईमुई लता; जलरेखा (प्रवेश रोकनेके लिए) ।

अल–पु० (सं०) बिच्छूका डंक; विष; हरताल । **–गर्द,–गर्ध**–पु० एक तरहका पानीका साँप ।

अलई–स्त्री० एक कँटीली लता ।

अलक–पु० (सं०) सिरके बाल; जुल्फ; पट्टा; हरताल; सफेद मदार; पागल कुत्ता; शरीरपर लेपा हुआ केसर; * महावर । **–नंदा**–स्त्री० ८ से १० सालतककी कन्या; एक नदी । **–प्रभा**–स्त्री० अलकापुरी । **–प्रिय**–पु० पीतसाल नामक वृक्ष । **–संहति**–स्त्री० जुल्फोंकी कतार ।

अलकत*–पु० महावर ।

अलक़त–पु० (अ०) काट देना; रद कर देना; न मानना । **–क़िस्सा**–अ० सारांश, खुलासा यह कि । **–ग़रज़**–अ० निदान, चुनांचे ।

अलकतरा–पु० काले रंगका एक गाढ़ा द्रव जो लकड़ी आदि रँगनेके काम आता है, 'कोलतार' ।

अलकलड़ा*–वि० दे० 'अलकलड़ैता' ।

अलकलड़ैता, अलकसलोरा–वि० लाड़ला, दुलारा ।

अलका–स्त्री० (सं०) कुबेरपुरी; आठ और दस बरसके बीचकी लड़की । **–पति**–पु० कुबेर ।

अलकाउरि*–स्त्री० बालोंकी लटें, अलकावली ।

अलकाधिप, अलकेश्वर–पु० (सं०) कुबेर ।

अलकावलि–स्त्री० (सं०) बालोंकी लटें, केशपाश ।

अलकोहल–पु० (अ०) सुरासार, स्पिरिट ।

अलक्त, अलक्तक–पु० (सं०) लाख; महावर । **–राग**–पु० महावरका लाल रंग ।

अलक्षण–वि० (सं०) चिह्नरहित; जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो–अशुभ । पु० अपशकुन; बुरा चिह्न; अनुपयुक्त परिभाषा ।

अलक्षित–वि० (सं०) न देखा हुआ; अज्ञात; अदृश्य; गुप्त ।

अलक्षितांतक–वि० (सं०) अचानक मरा हुआ ।

अलक्ष्मी–स्त्री० (सं०) दुर्भाग्य; दारिद्र्य ।

अलक्ष्य–वि० (सं०) अदृश्य; अज्ञेय; चिह्नरहित; जिसका लक्षण न किया जा सके । **–गति**–वि० अदृश्य रूपसे गमन करनेवाला । **–लिंग**–वि० जो वेश बदले हुए हो; जिसने नाम-पता छिपा रखा हो ।

अलख–वि० जो देखा न जा सके, अलक्ष्य; अगोचर । पु० परमेश्वर । **–धारी, –नामी**–पु० गोरख-पंथियोंका एक संप्रदाय और उसका अनुयायी । **–निरंजन, –पुरुष**–पु० परमात्मा । **मु० –जगाना**–'अलख'-'अलख' पुकारकर परमात्माको याद करना और दूसरोंको उसकी प्रेरणा करना; 'अलख'-'अलख' पुकारकर भीख माँगना ।

अलखित*–वि० दे० 'अलक्षित' ।

अलखिया–पु० दे० 'अलखधारी' ।

अलग–वि० जुदा, भिन्न; दूर; तटस्थ; सुरक्षित; न्यारा, विशिष्ट । **–अलग**–अ० व्यक्तिशः, प्रत्येकको या प्रत्येकसे । **–थलग**–वि० जुदा; दूर । **मु० –करना**–दूर करना, हटाना; काम या नौकरीसे हटा देना; बेचना; संयुक्त कुटुंबसे पृथक् करना; छाँटना । **–होना**–दूर या किनारे होना; संयुक्त परिवारसे पृथक् होना; नौकरी या काम छोड़ना ।

अलगगीर–पु० दे० 'अर्कगीर' ।

अलगनी–स्त्री० कपड़े टाँगनेके लिए बाँधी हुई रस्सी या बाँस ।

अलगरज†–वि० लापरवाह ।

अलगरजी†–वि० लापरवाह; निपट स्वार्थी । स्त्री० लापरवाही । स्वार्थपरायणता ।

अलगाऊ–वि० अलग करनेवाला; जो अलग करनेके पक्षमें हो ।

अलगाना–स० क्रि० अलग करना; दूर करना; छाँटना; † कोई भारी चीज ऊपर उठाना या उठानेमें सहायता देना । अ० क्रि० अलग होना ।

अलगाव–पु० अलग होनेकी क्रिया या स्थिति; (एलीनियेशन) आधुनिक लेखनमें, (किसी व्यक्तिकी) परम्परासे विच्छिन्नता ।

अलग़ोजा–पु० (अ०) एक तरहकी बाँसुरी ।

अलगौझा†–पु० अलहदगी, संयुक्त कुटुंबसे अलग होना, बँटवारा ।

अलघ्नकमोच्य–वि० (नान-बेलेबिल) दे० 'अप्रतिभाव्य' ।

अलघु–वि० (सं०) हलका नहीं, भारी; लंबा; उग्र; गंभीर ।

अलच्छ*–वि० दे० 'अलक्ष्य' ।

अलज–पु० एक तरहका पक्षी । * वि० दे० 'अलज्ज' ।

अलजी–स्त्री० (सं०) आँखका जलना या शोथ; एक संधिरोग ।

अलज्ज–वि० (सं०) लज्जारहित, बेहया ।

अलता–पु० स्त्रियोंके पैरोंमें लगानेके काम आनेवाला एक प्रकारका लाल रंग; खसीकी मूत्रेंद्रिय ।

अलप*–वि० दे० 'अल्प' ।

अलपाका–पु० दक्षिण अमेरिकाका एक जानवर जिसके बालोंका बढ़िया ऊन बनता है; अलपाकेका ऊन; अलपाकेका ऊन और रेशम या सूत मिलाकर बुना हुआ कपड़ा । (पेरूवियन–'ऐलपैका' ।)

अलफ़–पु० (अ०) घोड़ेका पिछली टाँगोंके बल खड़ा होना । * ग्रहादिके प्रभावसे आशंकित कष्टयोग, संकट (बुंदेल०) ।

अलफ़ा–पु० (अ०) बिना बाँहका ढीलाढाला कुरता जिसे प्रायः मुसलमान फकीर पहना करते हैं । (स्त्री० 'अलफ़ी') ।

अलबत्ता–अ० (अ०) बेशक, निस्संदेह; हाँ ।

अलबम–पु० (फ्रें०) तसवीरें रखनेकी किताब या कापी; चित्राधार, चित्र-संग्रह ।

अलबी-तलबी–स्त्री० अत्यंत क्लिष्ट उर्दू या अरबी-फारसी आदि विदेशी भाषाएँ; अस्पष्ट बात या बोली ।

अलबेला–वि० सुंदर; अनूठा; बाँका; मनमौजी । पु० नारियलका हुक्का । (स्त्री० 'अलबेली' ।)

अलब्ध–वि० (सं०) अप्राप्त । **–नाथ**–वि० संरक्षकहीन । **–निद्र**–वि० जिसे नींद न आती हो । **–भूमिकत्व**–पु० समाधि न लगनेकी अवस्था । **–व्यायामभूमि**–स्त्री० सेना संग्रह करनेके अयोग्य भूमि (कौ०) ।

अलभ*–वि० दे० 'अलभ्य' ।

अलभ्य–वि० (सं०) जो न मिलता हो, अप्राप्य; दुर्लभ; बहुमूल्य; अनमोल ।

अलम–पु० (अ०) दुःख; शोक; झंडा, निशान; भाला । **–नाक**–वि० दुःखमय; अति दुःखद । **–बरदार**–पु० झंडा उठानेवाला; कार्य या आंदोलन-विशेषमें आगे रहनेवाला ।

अलमनक–पु० दे० 'आलमनक' ।

अलमर–पु० एक पौधा ।

अलमस्त–वि० मस्त, मतवाला; मौजी; बे-फ़िक्र ।

अलमारी–स्त्री० पुस्तक आदि रखनेके लिए बना कई खानोंवाला लोहे, लकड़ी आदिका बना ढाँचा, दीवारमें बना ऐसा ही आधान ।

अलमास–पु० (फा०) हीरा ।

अलम्–अ० (सं०) पर्याप्त, काफी; पूरा; बस, बहुत हो चुका ।

अलय–वि० (सं०) गृहहीन; चलता-फिरता; अनश्वर । पु० नित्यता, नाशाभाव; जन्म, उत्पत्ति ।

अलर्क–पु० (सं०) पागल कुत्ता; सफेद मदार; एक कीड़ा ।

अललटप्पू–वि० अटकलपच्चू ।

अललबछेड़ा–पु० घोड़ेका जवान बच्चा; अल्हड़ आदमी ।

अललहिसाब–अ० (अ०) बिना हिसाब किये । **मु०–देना**–पावनेका हिसाब किये बिना कुछ रकम दे देना ।

अललाना†–अ० क्रि० चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना ।

अलल्ल*–पु० घोड़ा (रासो) ।

अलवाँत, अलवाँती†–स्त्री० प्रसूता, जच्चा ।

अलवाई–वि० स्त्री० जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो (गाय-भैंस) ।

अलवान–पु० (अ०) एक तरहका ऊनी शाल ।

अलवाल–पु० (सं०) दे० 'आलवाल' ।

अलविदा–(अ०) विदा होते समय कहा जानेवाला एक पद–अच्छा, अब चलते हैं । स्त्री० रमजान महीनेका आखिरी शुक्रवार (–की नमाज) ।

अलस–वि० (सं०) आलसी, सुस्त; अलसाया हुआ, क्लांत; निष्क्रिय । पु० पैरकी उँगलियोंके चमड़ेका सड़ना; एक वृक्ष; एक छोटा विषैला जंतु ।

अलसक–पु० (सं०) अजीर्ण रोगका एक भेद ।

अलसना, अलसाना–अ० क्रि० थकावट या सुस्ती मालूम होना; कुछ करनेको जी न चाहना ।

अलसा–स्त्री० (सं०) हंसपदी लता, लज्जालु ।

अलसान, अलसानि*–स्त्री० आलस्य ।

अलसित–वि० अलसाया हुआ, आलस्यपूर्ण ।

अलसी–स्त्री० एक पौधा और उसके बीज जिनसे तेल निकलता है, तीसी । * वि० आलसी ।

अलसेट–स्त्री० अड़चन; अड़ंगा; ढिलाई; टालमटूल ।

अलसेटिया–वि० अलसेट डालनेवाला ।

अलसौंहा*–वि० अलसाया हुआ, क्लांत ।

अलस्सबाह–अ० (अ०) सबेरे, तड़के ।

अलहदगी–स्त्री० बिलगाव, अलगौझा ।

अलहदा–वि० (अ०) अलग, जुदा ।

अलहदी–वि० दे० 'अहदी' ।

अलहनियाँ–वि० अलहदी, अकर्मण्य ।

अलहिया–स्त्री० एक रागिनी ।

अलहैरी–पु० (अ०) एक ही कूबड़वाला ऊँट ।

अलाई–वि० आलसी, काहिल । पु० घोड़ेकी एक जाति ।

अलाग लाग–पु० नृत्यका एक ढंग ।

अलात–पु० (सं०) अंगार; लुकाठी । **–चक्र**–पु० लुकाठी या लुकको घुमानेसे बननेवाला मंडल; जलती बनेठी ।

अलान–पु० हाथी बाँधनेका खूँटा या सीकड़; बेड़ी; बेल चढ़ानेके लिए गाड़ी हुई लकड़ी ।

अलानाहक†–अ० नाहक, व्यर्थ ।

अलानिया–अ० (अ०) खुले खजाने, डंकेकी चोट ।

अलाप–पु० दे० 'आलाप' ।

अलापना–अ० क्रि० बात करना; बोलना; गानेमें आलापका प्रयोग करना, शास्त्रीय ढंगसे गाना ।

अलापी*–वि० आलाप करनेवाला; बोलनेवाला; गानेवाला ।

अलाबु, अलाबू–पु० (सं०) लौकी, कद्दू; तूँबी ।

अलाभकर जोत–स्त्री० (अनएकॉनामिक होल्डिंग) किसी काश्तकार द्वारा जोती-बोयी जानेवाली वह भूमि जिसकी उपज उसके परिवारके भरण-पोषणके लिए पर्याप्त न हो ।

अलाम*–वि० बात बनानेवाला; मिथ्यावादी ।

अलामत–स्त्री० (अ०) चिह्न, पहचान, लक्षण; गुणा-भाग आदिके चिह्न ।

अलायक*–वि० अयोग्य, निकम्मा ।

अलाय बलाय–स्त्री० व्यर्थकी बला, इधर-उधरका संकट ।

अलार–पु० (सं०) किवाड़; * अलाव, आगका ढेर ।

अलारम–पु० दे० 'अलार्म' ।

अलार्म–पु० खतरेकी सूचना । **–घड़ी**–स्त्री० नियत समयपर घंटी बजानेवाली घड़ी । **–सिगनल**–पु० खतरेकी सूचना देनेवाला संकेत, (रेलके डब्बेमें लगी) जंजीर आदि । मु० **–बजना**–खतरेकी घंटी बजना ।

अलाल*–वि० अकर्मण्य, काहिल ।

अलाव–पु० (फा०) तापनेके लिए जलायी हुई आग, कौड़ा ।

अलावज–पु० (सं०) एक प्राचीन बाजा ।

अलावनी–स्त्री० एक पुराना बाजा ।

अलावा–अ० (अ०) सिवा, अतिरिक्त ।

अलास–पु० (सं०) एक रोग जिसमें जीभके नीचेका हिस्सा पक जाता है ।

अलास्य–वि० (सं०) जो नृत्य न कर रहा हो; आलसी; जो काममें न लगा हो ।

अलिंग–वि० (सं०) बिना चिह्न या लक्षणका; जिसका लक्षण न किया जा सके; बुरे चिह्नोंवाला; (वह शब्द) जिसका कोई लिंग न हो या जो सब लिंगोंमें व्यवहृत हो सके (हम, तुम आदि –व्या०) । पु० ईश्वर, परमात्मा; चिह्नाभाव ।

अलिंगी जनन–पु० (एसेक्सुअल रीप्रोडक्शन) कुछ जीवोंमें बिना लैंगिक सम्बन्धके ही होनेवाली सन्तानोत्पादनकी क्रिया ।

अलिंजर–पु० (सं०) घड़ा; झंझर ।

अलिंद–पु० (सं०) बाहरी दरवाजेके सामनेका चौतरा या छज्जा; द्वारकोष्ठ, पौर; एक प्राचीन जनपद; * भौंरा ।

अलिंपक, –पु०अलिंबक (सं०) दे० 'अनिमक' ।

अलि–पु० (सं०) भौंरा; बिच्छू; कोयल; कौआ; वृश्चिक राशि; मदिरा । स्त्री० दे० 'अली' । **–कुल**–पु० भौंरोंका समूह । **– ०प्रिया,–० संकुला**–स्त्री० चमेली । **– ० संकुल**–पु० कुब्ज नामक पौधा । वि० भ्रमरपूर्ण । **–गर्द,–गर्ध**–पु० एक जलसर्प । **–जिह्वा,–जिह्विका**–स्त्री० गलेके भीतरका कौआ, घाँटी । **–दूर्वा**–स्त्री० माला-दूर्वा । **–पत्रिका,–पर्णी**–स्त्री० वृश्चिकपत्र नामक वृक्ष; बिछुआ घास । **–प्रिय,–वल्लभ**–पु० लाल कमल । **–मोदा**–स्त्री० गणिकारी नामक पौधा । **–विराव,–विरुत्**–पु० भौंरेका गुंजन । **–वृत्ति**–स्त्री० भौंरेकी तरह इधर उधरसे रस लेना; घर-घरसे पका भोजन माँगकर पेट भरना, मधुकरी ।

अलिक–पु० (सं०) माथा, ललाट ।

अलिखित–वि० (सं०) जो लिखित न हो, केवल जबानी तै किया गया हो ।

अलिपक–पु० (सं०) कोयल; भौंरा; कुत्ता ।

अलिप्त–वि० (सं०) बिना लेपका, असंलग्न; बे-लाग; अनावृत; निर्दोष ।

अलिमक–पु० (सं०) दे० 'अनिमक' ।

अली–स्त्री० सखी; अलिया बलिया–वि० बखेड़ा करनेवाला । पाँत । * पु० भौंरा; (अ०) मुसलमानोंके चौथे खलीफा, मुहम्मदके दमाद और इमाम हुसेनके बाप । **–बंद**–पु० एक तरहका भुजबंद ।

अली(लिन्)–पु० (सं०) भ्रमर; बिच्छू ।

अलीक–वि० (सं०) अप्रिय; मिथ्या, झूठ, मनगढंत; अल्प; कुछ । पु० ललाट; अप्रिय विषय; झूठ; स्वर्ग । * स्त्री० अप्रतिष्ठा ।

अलीकी(किन्)–वि० (सं०) अप्रिय; झूठ ।

अलीगर्द–पु० दे० 'अलिगर्द' ।

अलीजा*–वि० प्रचुर, बहुत-सा ।

अलीन–पु० दरवाजेकी चौखटकी लंबाईवाली लकड़ी जिसमें पल्ला जड़ा जाता है; बरामदे आदिका खंभा जो दीवारसे लगा हो । वि० अनुचित; अग्राह्य ।

अलीपित*–वि० अलिप्त ।

अलील–वि० (अ०) बीमार ।

अलीह*–वि० अलीक ।

अलुक्–पु० (सं०) एक समास जिसमें पूर्वपदकी विभक्तिका लोप नहीं होता (सरसिज, असूर्यंपश्या); आलू बुखारा ।

अलुझना*–अ० क्रि० दे० 'अरुझना' ।

अलुटना*–अ० क्रि० लोटना; लड़खड़ाना ।

अलुणी*–वि० अलोना, बिना नमकका ।

अलुमिनम–पु० एक धातु जिसके बर्तन बनते हैं, 'अलुमिनियम' ।

अलूना†–वि० अलोना ।

अलूप*–वि० दे० 'अलोप' ।

अलूला*–पु० बुलबुला; लपट; उद्गार ।

अलेख–वि० बे-हिसाब; अज्ञेय; अदृश्य ।

अलेख*–पु० अदृश्य, निराकार ब्रह्म–'भूल्यौ कहा तू अलेखहि लेखि लै' –घन०; देवता–'सितासित अरुनारे पानिपके राखिबेकों तीरथके पति हैं अलेख लखि हारे हैं'–दास ।

अलेखा*–वि० अनगिनत; वृथा ।

अलेखी*–वि० अन्यायी, अंधेर करनेवाला; जो कभी देखनेमें न आया हो, अभूतपूर्व ।

अलेपक–वि० (सं०) बे-दाग । पु० परब्रह्म ।

अलोक–वि० (सं०) अदृश्य; निर्जन; पुण्यहीन । पु० जगत् नहीं, पातालादि लोक; संसारका विनाश; आध्यात्मिक जगत्; * अपयश, बदनामी । **–सामान्य**–वि० लोकोत्तर, असाधारण ।

अलोकना*–स० क्रि० देखना, अवलोकन करना ।

अलोकनीय–वि० (सं०) अदृश्य ।

अलोक्य–वि० (सं०) असाधारण– जिसे स्वर्गकी प्राप्ति न हो सके ।

अलोचन–वि० (सं०) नेत्रहीन; बिना खिड़कीका (मकान) ।

अलोना–वि० बिना नमकका; बे-मजा; असुंदर । मु० **–रहना**–नमक न खानेका व्रत रखना ।

अलोप–पु० (सं०) लुप्त न होना (वर्ण आदिका) । * वि० लुप्त, अदृश्य, गायब ।

अलोमक–वि० (सं०) केशरहित ।

अलोल–वि० (सं०) अचंचल, स्थिर; इच्छा या तृष्णासे रहित । पु० एक वृत्त ।

अलोलिक*–पु० अचंचलता ।

अलोलु–वि० (सं०) विषयोंसे उदासीन ।

अलोलुष–वि० (सं०) जो लालची न हो, लोभरहित ।

अलोह–वि० (सं०) (नॉन-फेरस) जिसमें लोहेका अंश विद्यमान न हो; लोहेतर ।

अलोहित–वि० (सं०) जो लाल न हो; रक्तशून्य । पु० लाल कमल ।

अलौकिक–वि० (सं०) जो लोकमें न मिलता हो, लोकोत्तर; अमानुषी; अतिप्रकृत; असाधारण, अद्भुत; विरल ।

अलौह, अलौहिक–वि० दे० 'अलोह' ।

अल्क–पु० (सं०) एक वृक्ष; अवयव ।

अल्प–वि० (सं०) तुच्छ; थोड़ा, कम; छोटा; मरणशील; विरल; कम अवस्थाका । पु० जवासा; एक अर्थालंकार, जिसमें आधारको आधेयसे छोटा दिखलाया जाय । **–केशी**–स्त्री० भूतकेशी नामक पौधा । **–गंध**–पु० रक्त कैरव । **–जीवी(विन्)**

–वि० अल्पायु । **–ज्ञ**–वि० थोड़ा जाननेवाला; मूर्ख । **–तंत्र**–पु० (ऑलिगैर्की) थोड़ेसे उच्च कुलके व्यक्तियों द्वारा शासन चलानेकी पद्धति, कुलीनतंत्र । **–तनु**–वि० ठिंगना; दुर्बल, पतला; छोटी हड्डियोंवाला । **–दक्षिण**–वि० जो दक्षिणा देनेमें उदार न हो । **–दर्शन,–दृष्टि**–वि०संकुचित दृष्टिवाला, अदूरदर्शी । **–धी**–वि० थोड़ी बुद्धि रखनेवाला, मूर्ख । **–पत्र**–पु० एक तरहकी तुलसी । **–पद्म**–पु० रक्त कमल । **–प्रमाण,–प्रमाणक**–वि० थोड़े वजनका; जो बड़ा प्रमाण न हो । पु० खरबूजा; तरबूजा । **–प्रसार**–पु० छोटीसी जांगलिक सेना या सहायता (कौ०) । **–प्राण**–वि० अल्पशक्ति; अल्पसत्त्व; श्वासरोगी । पु० प्रत्येक व्यंजनवर्गका पहला, तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल, व (व्या०) । **–बुद्धि,–मति**–वि० दे० 'अल्पधी' । **–भाषी(षिन्), –वादी(दिन्)**–वि० कम बोलनेवाला । **–भृत्**–पु० सालाना भत्ता या तनखाह पानेवाला कर्मचारी । **–मत**–पु० छोटा, अल्पसंख्यक पक्ष या समुदाय, बहुमतका उलटा । **–मध्यम**–वि० जिसकी कमर पतली हो । **–मारिष**–पु० शाक-विशेष । **–मेधा-(धस्)**–वि० नासमझ, मूर्ख । **–वयस्क, –वया(यस्)**–वि० छोटी उम्रका, कमसिन । **–विराम**–पु० अर्थबोधके लिए किसी शब्दके बाद थोड़ा ठहरना; इसका चिह्न (,) । **–व्यय**–पु० वह काम जो केवल थोड़ासा भत्ता देनेसे हो जाय । **–व्ययारंभ**–वि० थोड़े ही व्ययसे बन जानेवाला (कौ०) । **–शमी**–स्त्री० शमीकी जातिका एक छोटा वृक्ष । **–संख्य,–संख्यक**–वि० कम जन-संख्यावाला (समुदाय) । **–संतोषी(षिन्)**–वि० थोड़ेसे संतोष कर लेनेवाला । **–सार**–वि० थोड़े मूल्यका । **–स्वाप**–पु० विश्राम करनेका बहुत कम स्थान या अवसर प्राप्त होना ।

अल्पक–वि० (सं०) थोड़ा; छोटा ।

अल्पकालिक–वि० (सं०) थोड़े समयतक रहने या चलनेवाला; थोड़े समयके लिए किया गया (संधि, अनुबंध) ।

अल्पकालिक–दे० 'अल्पकालिक' ।

अल्पकालीन ऋण–पु० (शार्ट टर्म लोन) वह ऋण जो थोड़े ही समयके लिए लिया गया हो अतः जो शीघ्र ही (प्रायः ५-१० वर्षोंके भीतर) अदा कर दिया जाय ।

अल्पजनतंत्र–पु० (सं०) थोड़ेसे लोगों द्वारा शासित राज्य ।

अल्पना–स्त्री० (मांगलिक अवसरोंपर) रंगीन पाउडर आदिसे द्वारपर या आँगनके फर्शपर चित्र बनाने या चौक पूरनेकी कला; मुख-सज्जाकी कला (कादं० नव० १९६४) ।

अल्प-भोगयोजना–स्त्री० (ऑस्टेरिटी स्कीम) आवश्यक वस्तुओंका कम प्रयोग करने, कष्ट उठाते हुए थोड़ेसे पदार्थोंसे ही काम चला लेनेपर जोर देनेवाली योजना; मितोपभोग-योजना, कष्ट-सहन-योजना ।

अल्पवादी सदस्य–पु० (बैकबेंचर) दे० 'क्वचिद्भाषी सदस्य' ।

अल्पशः(शस्)–अ० (सं०) थोड़ा-थोड़ा करके ।

अल्पसूचित प्रश्न–पु० (शार्ट नोटिस क्वेश्चन) संसद् या विधानसभा आदिमें पूछा जानेवाला ऐसा प्रश्न जिसके लिए सामान्यसे कम सूचना दी गयी हो ।

अल्पायु(स्)–वि० (सं०) जिसकी आयु थोड़ी हो, छोटी उम्रमें मरनेवाला ।

अल्पारंभ–पु० (सं०) छोटे पैमानेपर होनेवाला आरंभ ।

अल्पावकाश–पु० (रिसेस) विद्यालयों, न्यायालयों या खेल आदिमें बीचमें थोड़े समयके लिए जलपान या विश्रामके लिए मिलनेवाला अवकाश, मध्यावकाश ।

अल्पाहार–वि० (सं०) दे० 'अल्पाहारी' । पु० साधारणसे कम आहार ।

अल्पाहारी(रिन्)–वि० (सं०) जिसका आहार थोड़ा या संयत रहता हो ।

अल्पित–वि० (सं०) घटाया या कम किया हुआ; उपेक्षित ।

अल्पिष्ठ–वि० (मिनिमम) कमसे कम; न्यूनतम ।

अल्पीकरण–पु० (डेरोगेशन) अधिकार, प्रतिष्ठा, महत्त्व, शक्ति आदिका घट जाना या उसमें कमी हो जाना, अपकर्ष ।

अल्पेतर–वि० (सं०) बड़ा; अनेक, बहुत ।

अल्ल–पु० वंश या कुलका नाम (तिवारी, पाँडे, मिसिर इ०) ।

अल्ल-बल्ल, अल्लम-गल्लम–पु० अंड-बंड, अनाप-शनाप ।

अल्लहमारी–वि० स्त्री० दैवमारी, अभागिन ।

अल्ला–पु० दे० 'अल्लाह' । स्त्री० (सं०) माता; पराशक्ति ।

अल्लाना*–अ० क्रि० चिल्लाना ।

अल्लामा–वि० (अ०) बड़ा आलिम, महापंडित । † स्त्री० लड़ाकी स्त्री ।

अल्लाह–पु० (अ०) परमेश्वर, खुदा । **–ताला**–पु० परमेश्वर । **–अल्लाह**–विस्मय और श्लाघासूचक उद्गार । **–आमीन**–आशीर्वादार्थक उद्गार, 'खुदा सलामत रखे' । **–का नाम**–कुछ भी नहीं, नाम लेनेभर (उसकी पढ़ाई-लिखाई बस अल्लाहका नाम है) । **–बेली**–ईश्वर रक्षक है ! **–मियाँकी गाय**–सीधा, भोला, बिना छक्के-पंजेका (आदमी) । **–(हो) अकबर**–ईश्वर महान् है (इसलामका मुख्य नारा) ।

अल्लोल*–वि० लोल, चंचल ।

अल्हजा*–पु० इधर-उधरकी बात, गप ।

अल्हड़–वि० बालोचित सरलताके साथ मस्त और लापरवाह; दुनियादारी न जाननेवाला; भोला । पु० बिना दाँतका या हलमें न निकाला हुआ बछड़ा । **–पन**–पु० अल्हड़ स्वभाव; भोलापन और लापरवाही ।

अल्हर*–वि० अल्हड़, मस्त और लापरवाह ।

अवंति, अवंती–स्त्री० (सं०)एक प्राचीन नगर, आधुनिक उज्जैन; मालव जनपद । **–सोम**–पु० काँजी ।

अवंतिका–स्त्री० (सं०) उज्जैन; उज्जैनकी भाषा ।

अवंश–वि० (सं०) निःसंतान । पु० नीच या खराब कुल ।

अव–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो दूर या नीचे होने, निश्चय, व्याप्ति, अल्पता, ह्रास, ज्ञान आदिका बोध कराता है ।

अवकर*–पु० अपशब्द; (सं०) बहारनेसे निकली हुई धूल आदि, कूड़ा ।

अवकरपात्र–पु०, **अवकरी**–स्त्री० (डस्टबिन) झाड़ने-बुहारनेसे निकला हुआ कूड़ा रखनेकी टोकरी (अवकर = कूड़ा) ।

अवकर्त–पु० (सं०) टुकड़ा, खंड ।

अवकर्तन–पु० (सं०) काटना, विभाजन ।

अवकर्षण–पु० (सं०) (किसी चीजको) जोरसे खींचना, नीचे लाना; हटाना, दूर करना ।

अवकलन–पु० (सं०) देखना; जानना; ग्रहण; एक साथ करना ।

अवकलना*–अ० क्रि० सूझना; समझमें आना 'मोहि अवकलत उपाय न एकू'–रामा० ।

अवकलित–वि० (सं०) देखा हुआ; ज्ञात; गृहीत; दृष्ट ।

अवकल्कन–पु० (सं०) एक साथ मिलना ।

अवका–स्त्री० (सं०) शैवाल ।

अवकाश–पु० (सं०) स्थान; शून्य स्थान; अंतर, व्यवधान, फासला; अवसर; दरार, छिद्र; गुंजाइश; फुरसत, छुट्टी; दृष्टिपात । **–ग्रहण**–पु० (रिटायरमेंट) नौकरी, सक्रिय सेवा, सार्वजनिक जीवन आदिसे विश्राम लेना, पृथक् हो जाना, निवृत्ति, विश्रामग्रहण । पेंशन लेना, 'रिटायर' होना । **–प्राप्त**–वि० जो काम या नौकरी से अलग हो चुका हो, 'रिटायर्ड' । **–लेखा**–पु० कर्मचारियों द्वारा ली गयी छुट्टियोंका लेखा ।

अवकिरण–पु० (सं०) बिखेरना; दे० 'अवकर' ।

अवकीर्ण–वि० (सं०) बिखेरा हुआ; फैलाया हुआ; चूर किया हुआ; ध्वस्त; जिसका ब्रह्मचर्य व्रत भंग हो गया हो । **–याग**–पु० ब्रह्मचर्य व्रत भंग होनेपर प्रायश्चित्तरूप किया जानेवाला यज्ञविशेष ।

अवकीर्णी(र्णिन्)–वि० (सं०) ब्रह्मचर्य व्रतसे च्युत हो जानेवाला ।

अवकीलक–पु० (सं०) खूँटी ।

अवकुंचन–पु० (सं०) सिकोड़ना; समेटना; मोड़ना; एक रोग ।

अवकुंठन–पु० (सं०) पाटना, ढकना; परिवेष्टित करना; आकृष्ट करना ।

अवकुटार–पु० (सं०) वैरूप्य, रूपविकृति । वि० बहुत गहरा ।

अवकुत्सित–वि० (सं०) निंदित । पु० निंदा ।

अवकृष्ट–वि० (सं०) वहिष्कृत; हटाया हुआ; तुच्छ या नीच; जातिच्युत। पु० निम्न श्रेणीका (वहारने आदिका) कार्य करनेवाला नौकर।

अवकेश–वि० (सं०) जिसके वाल नीचे लटके हुए हों।

अवकेशी(शिन्)–वि० (सं०) फल न उत्पन्न करनेवाला (वृक्ष); अल्प या छोटे बालोंवाला। पु० फल न देनेवाला वृक्ष।

अवक्खन*–पु० दे० 'अवेक्षण'।

अवक्तव्य–वि० (सं०) जो कहने योग्य न हो, अश्लील; अनुचित; निंद्य; असत्य; वर्णनातीत।

अवक्त्र–वि० (सं०) विना मुँहका या जिसका मुँह नीचेकी ओर हो (फोड़ा, बरतन)।

अवक्रंदन–पु० (सं०) क्रंदन, चिल्लाकर रोना।

अवक्रम–पु० (सं०) नीचे आना, गिराव, अधोगमन।

अवक्रम करना–स० क्रि० (सुपरसीड) पहले नियुक्त किये हुए किसी व्यक्तिके स्थानपर और किसीको नियुक्त करना; किसीका स्थान ग्रहण करना; अधिक्रमण करना; विस्थित करना; अधिक्रांत होना; अपने उच्चतर अधिकारसे (किसी आदेशादिको) व्यर्थ वना देना।

अवक्रमण–पु० (सं०) नीचे आना; गर्भमें आना (वौ०, जै०)।

अवक्रमित–वि० दे० 'पंक्तिच्युत' (डीग्रेडेड)।

अवक्रय–पु० (सं०) मूल्य; भाड़ा; उजरत; कर, महसूल; किरायेपर देना।

अवक्रांति–स्त्री० (सं०) दे० 'अवक्रम'।

अवक्रीतक–वि० (सं०) मँगनी लिया हुआ।

अवक्रोश–पु० (सं०) कोसना; शाप देना; निंदा।

अवक्लिन्न–वि० (सं०) भीगा हुआ, तर।

अवक्लेद–पु० (सं०) रिसना, स्राव।

अवक्षय–पु० (सं०) नाश, बर्वादी –कोष–(डिप्रीशियेशन फंड) दे० 'मूल्यह्रास कोष' (घिसाई कोष)।

अवक्षिप्त–वि० (सं०) नीचे गिराया हुआ; निंदित; लांछित।

अवक्षुत–वि० (सं०) जिसपर छींक पड़ी हो।

अवक्षेप–पु० (सं०) लांछन; निंदा; आक्षेप; आपत्ति, उज्र; (प्रेसिपिटेट) वह अवशिष्ट पदार्थ जो छन्ना-पत्रादिकी सहायतासे किसी द्रवके छाननेपर छन्ना-पत्रके ऊपर रह जाता है; किसी विलयन (घोल)में रासायनिक क्रियाके फलस्वरूप वननेवाला अविलेय पदार्थ।

अवक्षेपण–पु० (सं०) नीचे फेंकना या गिराना; पछाड़ना; निंदा करना; दोष लगाना; पराभूत करना; प्रकाशकी किरणका किसी वस्तुसे गुजरते समय वक्र होना।

अवक्षेपणी–स्त्री० (सं०) लगाम।

अवखंडन–पु० (सं०) विभाजन करना; नष्ट करना।

अवखात–पु० (सं०) गहरा गड्ढा या खाई।

अवखाद–पु० (सं०) वुरा आहार, अनुपयुक्त नैवेद्यादि।

अवगंड–पु० (सं०) चेहरेपरकी फुंसी या फुड़िया।

अवगण–वि० (सं०) जो अपने मित्रोंसे पृथक् हो, एकाकी।

अवगणन–पु०, **अवगणना**–स्त्री० (सं०) अवज्ञा; अवहेलना; तिरस्कार; हार खाना; निंदा करना।

अवगणित–वि० (सं०) अवज्ञात, तिरस्कृत; पराभूत; निंदित।

अवगत–वि० (सं०) जाना हुआ, ज्ञात; गया या गिरा हुआ; वादा किया हुआ।

अवगतना*–स० क्रि० सोचना, विचारना; स० क्रि० अवगत कराना, बतलाना।

अवगति–स्त्री० (सं०) ज्ञान, बोध; निश्चयात्मक ज्ञान; बुरी गति।

अवगथ–वि० (सं०) प्रातःस्नात।

अवगम, अवगमन–पु० (सं०) जानना, समझना; निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करना; नीचे जाना, गलत या बुरे रास्तेपर जाना; अवगति होना।

अवगरा*–वि० सूझबूझवाला।

अवगरी*–वि०, स्त्री० बुद्धिमती।

अवगलित–वि० (सं०) गिरा हुआ।

अवगहना*–स० क्रि० थहाना।

अवगाढ–वि० (सं०) निमज्जित, भीतर पैठा हुआ; गहरा; जमा हुआ।

अवगाद–पु० (सं०) नावमेंका पानी उलीचनेका काठका छोटा वरतन।

अवगारना*–स०क्रि० समझाना; निंदा करना।

अवगाह–पु० (सं०) पानीमें उतरकर नहाना; भीतर पैठना, डूबना; थाह लेना; खोज, छानबीन; नहानेका स्थान; बालटी; * खतरेकी जगह; कठिनाई। * वि० अथाह; कठिन 'तोरेउ धनुष व्याह अवगाहा'–रामा०।

अवगाहन–पु० (सं०) अवगाहकी क्रिया।

अवगाहना*–स० क्रि० विलोड़ना; हलचल मचाना; पार करना; देखना; बिचारना; छानबीन करना; ग्रहण करना। अ० क्रि० डुबकी लगाना; जलमें घुसकर स्नान करना।

अवगाहित–वि० (सं०) नहाया हुआ; जिसमें नहाया जाय (नदी आदि)।

अवगाही(हिन्) वि० (सं०) स्नान करनेवाला; गहराईमें जानेवाला, अच्छी तरह छानबीन करनेवाला।

अवगाह्य–वि० (सं०) नहाने या डुबकी लगाने योग्य।

अवगीत–वि० (सं०) निंदित; दुष्ट; वार-बार देखा हुआ। पु० निंदा; वेसुरा गान।

अवगुंठन–पु० (सं०) स्त्रीका माथा और मुँह ढकना, घूंघट निकालना; घूंघट; बुर्का; पर्दा; यज्ञ आदिमें उँगलियोंको मिलाकर बनायी जानेवाली एक विशेष मुद्रा; झाड़ू।

अवगुंठनवती–वि० स्त्री० (सं०) घूंघटवाली।

अवगुंठिका–स्त्री० (सं०) घूंघट; परदा; आवरण; चिक।

अवगुंठित–वि० (सं०) ढका, छिपा हुआ; चूर्णित।

अवगुंडित–वि० (सं०) चूर्ण किया हुआ।

अवगुंफन–पु० (सं०) गूँथना; बुनना।

अवगुंफित–वि० (सं०) गूँथा हुआ; बुना हुआ।

अवगुण–पु० (सं०) दोष; ऐब, बुराई।

अवगुन–पु० दे० 'अवगुण'।

अवगुरण, अवगोरण–पु० (सं०) मारने-पीटनेके लिए उद्यत होना; आघात करनेके लिए हथियार उठाना।

अवगूहन–पु० (सं०) छिपाना; गले लगाना।

अवग्रह–पु० (सं०) रुकावट; बाधा; संधि-विच्छेद (व्या०); शब्दके बीचमें ए और ओके बाद आनेवाला लुप्ताकार (ऽ); अवर्षण; दंड (अनुग्रहका उलटा); अंकुश; हाथियोंका समूह; हाथीका ललाट; प्रकृति, स्वभाव; कोसना; भ्रांत मत।

अवग्रहण–पु० (सं०) बाधा, रुकावट; अनादर; ज्ञान।

अवग्राह–पु० (सं०) विच्छेद, पार्थक्य; बाधा; अभिशाप।

अवघट–वि० विकट, दुर्गम।

अवघट्ट–पु० (सं०) बिल; माँद; गुफा; चक्की; हिलाना।

अवघर्षण–पु० (सं०) रगड़ना; पीसना; साफ करना, मार्जन करना।

अवघात–पु० (सं०) मारना; आघात करना; धान आदिको कूटना; अपमृत्यु।

अवघूर्ण–पु० (सं०) वातावर्त।

अवघूर्णन–पु० (सं०) लुढकना; चक्कर देना; बवंडर।

अवघोटित–वि० (सं०) सब ओरसे ढका हुआ; अस्तव्यस्त

अवघोषक–पु० (सं०) असत्य समाचार कहनेवाला, अफवाहें फैलानेवाला।

अवचट–स्त्री० दे० 'औचट'। अ० अचानक।

अवचन–पु० (सं०) चुप्पी, मौनावलंबन; निंदा। वि० मूक।

अवचनीय–वि० (सं०) कहने योग्य नहीं; अश्लील।

अवचय, अवचाय–पु० (सं०) पुष्पादिका चयन, तोड़कर इकट्ठा करना।

अवचस्कर–वि० (सं०) मौन, न बोलता हुआ।

अवचार–पु० (सं०) सड़क; कार्यक्षेत्र।

अवचित–वि० (सं०) बटोरा हुआ; अधिवसित।

अवचूड़, अवचूल–पु० (सं०) ध्वजाके अग्रभागमें बँधा हुआ अधोमुख वस्त्रखंड ।

अवचूरि, अवचूरिका–स्त्री० (सं०) टिप्पणी; संक्षिप्त व्याख्या ।

अवचूर्णित–वि० (सं०) चूर्ण किया हुआ; पीसा हुआ; टिप्पणित ।

अवचूलक–पु० (सं०) मोरके पंख या सुरा गायकी पूँछका बना हुआ चँवर ।

अवचेतन–वि० (सं०) (सबकांशस) जिसमें पूरी चेतना न हो, अर्धचेतन ।

अवचेतना–स्त्री० (सं०) अंतःसंज्ञा ।

अवच्छद, अवच्छाद–पु० (सं०) आवरण, ढक्कन ।

अवच्छिन्न–वि० (सं०) काटकर अलगाया हुआ; सीमित; सविशेषण ।

अवच्छरित–वि० (सं०) मिश्रित । पु० अट्टहास ।

अवच्छेद–पु० (सं०) खंड, अंश; परिच्छेद; विलगाव; सीमा; (शब्दार्थकी) सीमा बाँधना; निश्चय; पदार्थका वह गुण जो उसे औरोंसे अलग कर दे; व्याप्ति ।

अवच्छेदक–वि० (सं०) अवच्छेद करनेवाला । पु० विशेषण; सीमा ।

अवच्छेदन–पु० (सं०) काटकर अलग करना, विभाजन, हद बाँधना इ० ।

अवच्छेद्य–वि० (सं०) अवच्छेदनके योग्य; जिसका अवच्छेदन होना हो ।

अवछंग–पु० दे० 'उछंग' ।

अवजय–स्त्री० (सं०) पराजय ।

अवजात–वि० (सं०) निम्न कुलमें उत्पन्न, अकुलीन ।

अवजित–वि० (सं०) पराजित, विजित; तिरस्कृत ।

अवज्जना†–अ० क्रि० आवाज करना, गरजना । स० क्रि० पुकारना ।

अवज्ञा–स्त्री० (सं०) अनादर; अपमान; उपेक्षा, किसी आज्ञा या कानूनको न मानना; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें एकके गुण-दोषसे दूसरेमें गुण-दोषका न होना दिखलाया जाय ।

अवज्ञात–वि० (सं०) जिसकी अवज्ञा की गयी हो, तिरस्कृत ।

अवज्ञान–पु० (सं०) अवज्ञा, तिरस्कार ।

अवज्ञेय–वि० (सं०) अवज्ञाके योग्य ।

अवट–पु० (सं०) गड्ढा; कुआँ; हाथी फँसानेका तृणाच्छादित गड्ढा; एक नरक; काँख आदिका गड्ढा; दाँतका गड्ढा; नाडीव्रण; बाजीगर । **–कच्छप**–पु० अनुभवहीन व्यक्ति । **–निरोधन**–पु० एक नरक ।

अवटना–स० क्रि० दे० 'औटना' । **–मु० –(टि) मरना***–कष्ट उठाना, ठोकरें खाना ।

अवटि, अवटी–स्त्री० (सं०) कूप, गर्त, नाडीव्रण आदि ।

अवटीट–वि० (सं०) चिपटी नाकवाला ।

अवटु–पु० (सं०) गड्ढा; कुआँ; माँद; गरदनका पिछला भाग; एक वृक्ष । **–ज**–पु० सिरके पिछले भागके बाल ।

अवडंग–पु० (सं०) हाट, बाजार ।

अवडीन–पु० (सं०) पक्षियोंकी एक उड़ान; नीचेकी ओर उड़ना ।

अवडेर†–पु० झंझट, बखेड़ा; बाधा ।

अवडेरना*–स० क्रि० रहने न देना, उदबासना; झंझटमें डालना, परेशान करना 'पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही'–रामा०; अपमानित करना ।

अवडेरा–वि० झंझटवाला; चक्करदार; भद्दा ।

अवढर–वि० अकारण या अनायास ही ढरने, प्रसन्न होनेवाला ।

अवतंस–पु० (सं०) बाली; करनफूल; ; टीका; मुकुट; आभूषण; हार; † दूल्हा; श्रेष्ठ व्यक्ति ।

अवतंसक–पु० (सं०) बाली; करनफूल; आभूषण ।

अवतंसित–वि० (सं०) जो हार या मुकुट पहने हो; विभूषित ।

अवतक्षण–पु० (सं०) काटकर टुकड़े-टुकड़े की हुई वस्तु ।

अवतत–वि० (सं०) जिसका विस्तार नीचेकी तरफ हो; फैलाया हुआ ।

अवतमस–पु० (सं०) अल्पांधकार; अंधकार; अस्पष्टता ।

अवतरण–पु० (सं०) उतरना; नीचे आना या जाना; नहानेके लिए जलमें उतरना; पार होना; देवादिका पार्थिव रूपमें प्रकट होना; नदीका घाट; घाटकी सीढ़ी; अनुवाद; भूमिका; एकाएक गायब हो जाना; तीर्थ । (कोटेशन) किसीके कहे हुए शब्दों, संदेश आदिको (उलटे विराम-चिह्नोंके बीच) उद्धृत करना, उद्धरण । **–चिह्न**–पु० अवतरित अंशके ठीक पहले तथा अंतमें दिये जानेवाले उलटे विराम-चिह्न । (' ') । **–पथ**–पु० (रनवे) वायुयानोंके लिए बना वह लंबा-सा पथ जिसपर उन्हें, ऊपर उठनेके पूर्व या नीचे उतरनेके बाद, कुछ दूरतक चलना पड़ता है, धावनपथ । **–भूमि**–स्त्री० (लैंडिंग-ग्राउंड) हवाई जहाजोंके लिए आकाशसे नीचे उतरनेका खुला स्थान । **–मंगल**–पु० श्रद्धापूर्वक स्वागत करना ।

अवतरणिका–स्त्री० (सं०) ग्रंथारंभमें की जानेवाली सरस्वती आदिकी संक्षिप्त वंदना; प्रस्तावना ।

अवतरणी–स्त्री० (सं०) प्रस्तावना; परिपाटी ।

अवतरना*–अ० क्रि० अवतार लेना; प्रकट होना; उत्पन्न होना ।

अवतरित–वि० उतरा हुआ; अवतारके रूपमें उत्पन्न; पार पहुँचा हुआ; स्नात; अनूदित; उद्धृत ।

अवतर्पण–पु० (सं०) शांतिदायक उपचार ।

अवताडन–पु० (सं०) कुचलना, रौंदना; चोट देना ।

अवतान–पु० (सं०) फैलाना; कमानकी डोरी ढीली करना; मुँह लटकाना; पौधेका फैलना; आवरण; चँदोवा ।

अवतापी(पिन्)–वि० (सं०) (वह स्थान) जहाँ सूर्यका ताप बहुत अधिक होता हो ।

अवतार–पु० (सं०) उतरना; नीचे आना; किसी देवता या ईश्वरका मनुष्यादिके रूपमें जन्म लेना या वैसी अभिव्यक्ति (इनकी संख्या २४ मानी गयी है—ब्रह्मा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कच्छप, धन्वंतरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, हंस और हयग्रीव । इनमेंसे ये दस अवतार मुख्य माने गये हैं—मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि); विष्णुके १० या २४ अवतारोंमेंसे कोई एक; ईश्वरका अंश माना जानेवाला विशिष्ट व्यक्ति; किसी विषयको लक्ष्य बनाना; तीर्थ; अनुवाद; सरोवर; भूमिका; पार करना; * सृष्टि, रचना । **–मंत्र**–पु० अवतार धारण करनेके लिए की जानेवाली देवस्तुति । **–वाद**–पु० धर्मग्लानि होनेपर उसकी पुनः स्थापनाके लिए ईश्वर पृथ्वीपर जन्म लिया करता है, यह मत या विश्वास । **मु०–धरना,–लेना**–जन्म ग्रहण करना ।

अवतारण–पु०, **अवतारणा**–स्त्री० (सं०) उतारना; नीचे लाना; भूत-प्रेतका आवेश; अनुवाद; चित्र, मूर्ति आदिके रूपमें उतारना, इंद्रियगोचर करना; भूमिका; वस्त्रका छोर; उद्धरण ।

अवतारना*–स० क्रि० जन्म देना; पैदा करना ।

अवतारी(रिन्)–वि० (सं०) अवतार लेनेवाला; जिसने किसी देवताका अवतार ग्रहण किया है; दिव्य गुणोंवाला । पु० एक मात्रिक छंद ।

अवतीर्ण–वि० (सं०) उतरा हुआ, नीचे आया हुआ; प्रादुर्भूत; अवतारके रूपमें उत्पन्न; जलमें उतरा या स्नान किया हुआ; पार गया हुआ; अनूदित; उद्धृत ।

अवतोका–स्त्री० (सं०) वह स्त्री या गाय जिसका किसी दुर्घटनाके कारण गर्भ गिर गया हो ।

अवदंश–पु० (सं०) उत्तेजक या प्यास उत्पन्न करनेवाली चटपटी चीज जो मद्यपानके समय खायी जाती है, गजक, चाट ।

अवदंस–पु० दे० 'अवदंश' ।

अवदरण–पु० (सं०) फोड़ना; फाड़ना; अलग करना ।

अवदशा–स्त्री० (सं०) हीन दशा ।

अवदाघ–पु० (सं०) ताप; जलन; ग्रीष्म ऋतु ।

अवदात–वि० (सं०) उज्ज्वल; निर्मल; सुंदर; पीला; गुणविशिष्ट । पु० सफेद या पीला रंग ।

अवदान–पु० (सं०) प्रशस्त कर्म, उज्ज्वल कर्म; पराक्रम; किसी

महत्त्वपूर्ण घटनापर आधारित बहुत दिनोंसे प्रचलित आख्यान (लीजेंड)। उल्लंघन; विभाजन; खंड; वीरणमूल; (कांट्रिब्यूशन) दे० **'अंशदान', 'योगदान'**।

अवदान्य–वि० (सं०) पराक्रमी; कंजूस।

अवदारण–पु० (सं०) चीरना; विभाजन करना; खोदना; काटकर टुकड़े-टुकड़े करना; कुदाल, खंता।

अवदारित–वि० दे० 'अवदीर्ण'।

अवदाह–पु० (सं०) जलाना; ताप; वीरणमूल।

अवदीर्ण–वि० (सं०) खंडित, विभक्त; टिघला हुआ; घबड़ाया हुआ।

अवदोह–पु० (सं०) दूध; दुहना।

अवद्य–वि० (सं०) निंद्य; त्याज्य; अधम; पापी; दोषी; चर्चाके अयोग्य। पु० अपराध; पाप; दोष; निंदा; लज्जा।

अवध–पु० (सं०) कोशल; अयोध्या; उत्तर-प्रदेशका एक अंश; वध न करना। वि० जो वधके योग्य न हो। * स्त्री० दे० 'अवधि'।

अवधा–स्त्री० (सेगमेंट आफ ए सरकिल) वह आकृति जो किसी जीवा और उस जीवाके एक ओरके चापसे घिरी हो, वृत्तखंड।

अवधाता–पु० (केयरटेकर) वह व्यक्ति जो असली मालिककी अविद्यमानतामें मकान आदिकी निगरानी करे, संपत्ति या व्यक्तिके संरक्षण आदिका अवधान (ध्यान) रखनेवाला, अभीक्षक।

अवधात्री सरकार–स्त्री० (केयरटेकर गवर्नमेंट) वह सरकार जो निर्वाचन आदि होनेके बाद नयी सरकारके कार्यभार ग्रहण कर लेनेतक शासन-व्यवस्थाकी निगरानी करती रहे।

अवधान–पु० (सं०) ध्यान; मनोयोग; किसी विषयमें मनकी एकाग्रता; चौकन्नापन; (केयर, चार्ज) किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्यकी देखभाल करने या उसपर नजर रखनेका कार्य। **–द्रव्य**– दे० 'परिभाव्य धन'। * गर्भ।

अवधानी(निन्)–वि० (सं०) ध्यान देनेवाला; मनोयोगयुक्त। (दे० शतावधानी)।

अवधायक अधिकारी–पु० (आफिसर इनचार्ज) वह अधिकारी जिसकी देखभाल या अधीनतामें कोई कार्य अथवा कार्यालय हो।

अवधायक सरकार–स्त्री० (केयरटेकर गवर्नमेंट) दे० 'अवधात्री सरकार'।

अवधार–पु० (सं०) निश्चय; सीमा; इयत्ता।

अवधारक–वि० (सं०) अवधारण करनेवाला।

अवधारण–पु० (सं०) निश्चय करना; हद बाँधना; शब्दार्थकी सीमा बाँधना; (शब्दविशेषपर) जोर देना।

अवधारणा–स्त्री० (कॉन्सेप्शन) मनमें किसी धारणा, कल्पना या विचारका उदय होना, बनना या स्थिर होना; किसी वस्तु, पदार्थ या भावके प्रति लेखकीय चित्तमें उत्पन्न विचार।

अवधारणीय–वि० (सं०) निश्चय करने योग्य; विचारणीय।

अवधारना*–स० क्रि० ग्रहण करना, धारण करना; मानना–'उपजै जहँ जिय दुष्टता सु असूया अवधारु'– भाव०।

अवधारित–वि० (सं०) निश्चित; सुज्ञात।

अवधार्य–वि० (सं०) दे० 'अवधारणीय'।

अवधावन–पु० (सं०) पीछा करना, पकड़ना; साफ करना।

अवधावित–वि० (सं० पीछा किया हुआ; साफ किया हुआ, धोया हुआ।

अवधि–स्त्री० (सं०) सीमा; अंतिम सीमा; नियत काल, मीयाद; पड़ोस; गड्ढा। अ० तक। **–ज्ञान,–दर्शन**–पु० इंद्रियोंके संपर्कसे प्राप्त दूरकी वस्तुओंका ज्ञान (जै०)। मु० **–देना,–धरना,–बदना**– समय नियत करना, मुद्दत बाँधना।

अवधिमान*–पु० समुद्र।

अवधी–वि० अवधसे संबंध रखनेवाला। स्त्री० अवधकी बोली; * दे० 'अवधि'।

अवधीरण–पु० (सं०) तिरस्कारपूर्वक बर्ताव करना।

अवधीरित–वि० (सं०) तिरस्कृत; निरादृत।

अवधू*–पु० दे० 'अवधूत'।

अवधूक–वि० (सं०) पत्नीरहित, अपत्नीक।

अवधूत–पु० (सं०) सन्यासी; साधुओंका एक भेद। वि० हिलाया हुआ; तिरस्कृत; अपमानित; बढ़ा हुआ; विरक्त; आक्रांत; पराभूत। **–वेश**–वि० नग्न।

अवधूपित–वि० (सं०) सुवासित।

अवधूलन–पु० (सं०) घावपर दवाकी बुकनी भुरकना।

अवधृत–वि० (सं०) दे० 'अवधारित'।

अवधेय–वि० (सं०) ध्यान देने योग्य; रखने योग्य; जानने योग्य। पु० ध्यान।

अवधेश–पु० (सं०) अवधनरेश; दशरथ।

अवध्य–वि० (सं०) वधके अयोग्य।

अवध्वंस–पु० (सं०) परित्याग; चूर्ण; अनादर; निंदा; गिरकर अलग होना; छिड़काव।

अवध्वस्त–वि० (सं०) विनष्ट; निंदित; तिरस्कृत; चूर्णित; परित्यक्त; छितराया हुआ; छिड़का हुआ।

अवन–पु० (सं०) रक्षण; प्रसन्न करना; प्रसन्नता; प्रीति; इच्छा; संतोष; जल्दबाजी। * स्त्री० रास्ता; अवनि, भूमि।

अवनक्षत्र–पु० (सं०) तारोंका गायब होना।

अवनत–वि० (सं०) झुका हुआ; गिरा हुआ; पिछड़ा हुआ; हीन; अस्त होता हुआ; विनीत।

अवनति–स्त्री० (सं०) झुकाव; गिराव; अधःपतन; उतार; डूबना, अस्त होना; दंडवत; विनम्रता।

अवनद्ध–वि० (सं०) निर्मित; ढका हुआ; बँधा हुआ; बैठाया हुआ। पु० मृदंग, ढोल।

अवनमन, अवनाम–पु० (सं०) झुकना; उतार, नीचेकी ओर झुकाव; पाँव पड़ना।

अवनयन–पु० (सं०) नीचे लाना, नीचे गिराना।

अवनर्मिल–एबनार्मल, नर्म का मूल अर्थ नियमन है। **अवनर्म**–नियमविरुद्ध। असामान्य।

अवना*–अ० क्रि० आना।

अवनाट, अवनासिक–वि० (सं०) चिपटी नाकवाला।

अवनामक–वि० (सं०) नीचे गिरानेवाला।

अवनाय–पु० (सं०) नीचे ले जाना; नीचे फेंकना।

अवनायक–वि० नीचे ले जानेवाला, अवनति करानेवाला।

अवनाह–पु० बाँधना, कसना; आवृत करना।

अवनि, अवनी–स्त्री० (सं०) धरती, जमीन; उँगली; एक लता। **–चर**–वि० घुमक्कड़, आवारागर्द। **–ज**–पु० मंगल ग्रह। **–तल**–पु० जमीनकी सतह, धरातल। **–ध्र**–पु० पहाड़। **–प,–पति,–पाल,–भृत्**–पु० राजा। **–पालक**–पु० राजा; पहाड़। **–रुह**–पु० वृक्ष। **–सुत**–पु० मंगल। **–सुता**–स्त्री० जानकी।

अवनिक्त–वि० (सं०) धोया या साफ किया हुआ।

अवनींद्र–पु० (सं०) राजा।

अवनींद्रनाथ ठाकुर–पु० भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति-शिल्पमें नवयुगके प्रवर्तक (१८७१-१९५१)।

अवनीश, अवनीश्वर–पु० (सं०) राजा।

अवनेजन–पु० (सं०) धोना (हाथ या पाँव); हाथ-पाँव धोनेका पानी; पिंडदानकी वेदीपर बिछाये हुए कुशोंपर पानी छिड़कना।

अवपाक–वि० (सं०) बुरे तरीकेसे पकाया हुआ। पु० बुरा पाचक।

अवपाटिका–स्त्री० (सं०) शिश्नके अग्रभागके चमड़ेका फट जाना।

अवपात–पु० (सं०) अधःपतन; झपट्टा; रंध्र; गर्त; हाथी फँसानेका गड्ढा।

अवपातन–पु० (सं०) गिराना, नीचे फेंकना।

अवपात्र–वि० (सं०) म्लेच्छ–जिसके किसी पात्रमें खानेसे वह पात्र दूसरोंके उपयोगमें आने योग्य न रह जाय। पु०अयोग्य पात्र।

अवपाद–पु० (सं०) नीचे गिरना।

अवप्रेरण–पु० (ऍबेटमेंट) किसीको अपराध करनेके लिए प्रोत्साहित करना या सहायता देना; दुरुत्साहन।

अवबाहुक–पु० (सं०) भुजस्तंभ, भुजाकी गति रुक जानेका रोग।

अवबुद्ध–वि० (सं०) ज्ञात; जाननेवाला।

अवबोध–पु० (सं०) जागना; ज्ञान, बोध; विवेक; जताना।

अवबोधक–वि० (सं०) ज्ञापक। पु० जगानेवाला–सूर्य; चारण;

चौकीदार; शिक्षक; विचार।

अवबोधकीय कक्षा–स्त्री० महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयोंमें भाषण कक्षाओंके अतिरिक्त चलनेवाला शिक्षण जिसमें कमसे कम संख्यावाली कक्षाओंमें अध्यापक ज्यादासे ज्यादा छात्रोंके निकट रहकर उन्हें प्रशिक्षित करे। (टयूटोरियल क्लास)।

अवबोधन–पु० (सं०) बताना, जताना; ज्ञान।

अवभंग–पु० (सं०) नीचा दिखाना; पराजित करना।

अवभास–पु० (सं०) चमक, प्रकाश; ज्ञान; मिथ्या ज्ञान; प्रतीति; दिखाई देना।

अवभासक–वि० (सं०) प्रकाशमय; प्रकाशक। पु० परब्रह्म।

अवभासित–वि० (सं०) प्रकाशित; प्रकट; प्रतीत।

अवभासिनी–स्त्री० (सं०) ऊपरका चर्म।

अवभूमि–स्त्री० दे० 'अधोभूमि' (सब-साइल)।

अवभृथ–पु० (सं०) यज्ञका अंत; यज्ञके अंतमें शुद्धिके लिए किया जानेवाला स्नान; मुख्य यज्ञकी समाप्तिपर दोष-त्रुटियोंके प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला यज्ञ। **–स्नान**–पु० यज्ञकी पूर्णाहुतिके वाद किया जानेवाला स्नान।

अवभ्रट–वि० (सं०) दे० 'अवनाट'।

अवमंता(तृ)–वि० (सं०) अवमान करनेवाला।

अवमंथ–पु० (सं०) एक रोग जिसमें लिंगमें फुंसियाँ हो जाती हैं। वि० सूजन पैदा करनेवाला।

अवम–वि० (सं०) अंतिम; अधम; नीच; पापी; घटता हुआ। पु० पाप; चांद्र और सौर दिनका अंतर; रक्षक; पितरोंका एक वर्ग। **–तिथि**–स्त्री० वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।

अवमत–वि० (सं०) अपमानित; तिरस्कृत।

अवमति–स्त्री० (सं०) अवज्ञा, तिरस्कार; विरक्ति; अनुचितवुद्धि। पु० स्वामी।

अवमर्द–पु० (सं०) रौंदना; उत्पीड़न; वध; शत्रुके देशकी वर्बादी; ग्रहणका एक भेद।

अवमर्दन–पु० (सं०) कुचलना; दमन; उत्पीड़न; मालिश करना।

अवमर्दित–वि० (सं०) रौंदा हुआ; मर्दन किया हुआ; नष्ट किया हुआ।

अवमर्श–पु० (सं०) स्पर्श; संपर्क। **–संधि**–स्त्री० नाटयशास्त्रके अनुसार पाँच प्रकारकी संधियोंमेंसे एक।

अवमर्ष–पु० (सं०) आलोचना; नाटककी पाँच मुख्य संधियों (मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्ष और निर्वहण) मेंसे एक; आक्रमण।

अवमर्षण–पु० (सं०) असहिष्णुता; मिटाना; हटाना।

अवमान–पु० (सं०) अवज्ञा, अपमान; तिरस्कार; न्याय-व्यवस्थामें हस्तक्षेप या उसकी अवहेलना; अवहेला; शासक, विधानसभा आदिके आदेशोंकी अवज्ञा।

अवमानन–पु०, **अवमानना**–स्त्री० (सं०) तिरस्करण; अपमान करना।

अवमानित–वि० (सं०) अपमानित; तिरस्कृत।

अवमानी(निन्)–वि० (सं०) अपमान या तिरस्कार करनेवाला।

अवमूर्तन–पु० किसी स्थूल वस्तुका सूक्ष्म वनाया जाना।

अवमूर्धशय–वि० (सं०) मुँहके वल लेटनेवाला।

अवमूल्यन–पु० (डीवेलुएशन) किसी सरकार द्वारा अन्य देश या देशोंकी मुद्राओंकी तुलनामें अपने देशकी मुद्राका मूल्य घटा दिया जाना, मुद्राका विनिमय-मूल्य या सापेक्ष मूल्य गिरा देना।

अवमूल्यपर–अ० (विलो पार) निर्धारित या अंकित मूल्यसे कम दामपर।

अवमोचन–पु० (सं०) मुक्त करना; छोड़ देना; ढीला करना।

अवयव–पु० (सं०) शरीर या शरीरका कोई भाग, (हाथ-पाँव आदि) अंग; (वस्तुका) अंश; तर्क या वाँक्यके पाँच अंगों (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन और निगमन) मेंसे एक; उपकरण। **–धर्म**–पु० अंगोंका गुण या धर्म। **–रूपक**–पु० एक तरहका रूपक जिसमें अंगोंके गुणोंका ही सारूप्य दिखलाया जाता है।

अवयवार्थ–पु० (सं०) शब्दके अवयवों (प्रकृति-प्रत्यय) से निकलनेवाला अर्थ।

अवयवी(विन्)–वि० (सं०) जिसके अवयव या अंग हों। पु० कई अवयवों–अंगोंसे मिलकर वनी हुई वस्तु; देह; उपनयन, निगमन आदिका संयोग (न्या०)।

अवयस्क–वि० (माइनर) जो अभी कम उम्रका, अप्राप्तवयस्क (१८ वर्षसे कमका) हो, नावालिग।

अवयान–पु० (सं०) तुष्टीकरण; प्रायश्चित्त।

अवर–*वि० और, दूसरा; वलहीन; (सं०) छोटा; नीचा; (इनफीरियर) दरजे, कोटि, गुण आदिमें हीन या नीचा; पीछे होनेवाला; पश्चिमीय; वादका; अंतिम; अत्यंत श्रेष्ठ। पु० अतीत काल; हाथीका पीछेका भाग; पश्चाद्वर्ती देश। **–ज**–पु० छोटा भाई; शूद्र। **–वर्ण**–वि० शूद्र वर्णका। पु० शूद्र। **–वर्णक,–वर्णज**–पु० शूद्र। **–वर्णाभिनिवेश**–पु० निम्न जातियोंसे वसाया हुआ उपनिवेश। **–व्रत**–वि० हीन व्रत। पु० सूर्य; अकवन। **–शैल**-पु० पश्चिमी पहाड़ जिसके पीछे सूर्यका अस्त होना माना जाता है। **–सदन**–पु० (लोअर हाउस) दे० दे० 'निम्नसदन' या अवरागार। **–सेवा**–स्त्री० (सवार्डिनेट सर्विस) लोकसेवाका वह अंग जिसमें अवर श्रेणीके कर्मचारी आते हैं। **–स्नातक**–वि० स्नातक कक्षाओं के ठीक पहलेकी (अंडरग्रेजुएट), पु० स्नातक कक्षाके ठीक पहलेकी श्रेणीका विद्यार्थी।

अवरक्त किरण–स्त्री० (इन्फ्रारेड-रे) विद्युत्चुम्बकीय तरंगोंका विकिरण जिसका तरंग दैर्घ्य ७५०० ऐंग्स्ट्रॉमसे लेकर १ मिमी तक हो सकता है। ये किरणें नेत्रको प्रभावित नहीं कर पातीं अतः अवरक्त किरणों से (प्रकाशित) वस्तुको हम देख नहीं सकते–ये ऊष्मा उत्पन्न करती हैं।

अवरण*–पु० दे० 'अवर्ण'।

अवरत–वि० (सं०) रुका हुआ; निवृत्त; विरामयुक्त। * पु० पानीका भँवर।

अवरति–स्त्री० (सं०) ठहराव, विश्राम; निवृत्ति।

अवरहस–वि० (सं०) अवसित; वीरान।

अवरा–स्त्री० (सं०) दुर्गा; हाथीका पिछला हिस्सा; दिशा।

अवरागार–पु० (लोअर हाउस) संसद या विधानमंडलका निम्नसदन–लोकसभा, कामंस सभा, प्रतिनिधिसभा, विधानसभा, इ०; अवर सदन।

अवराधक*–वि० आराधना करनेवाला।

अवराधन*–पु० आराधन।

अवराधना*–स० क्रि० पूजा करना; सेवा करना।

अवराधी*–वि० दे० 'अवराधक'।

अवरार्ध–वि० (सं०) उत्तरार्द्ध। पु० पीछे या नीचेका आधा भाग।

अवरावपतन–पु० (सं०) गर्भपात।

अवरावर-वि० (सं०) सबसे खराव; छोटेसे छोटा।

अवरुद्ध–वि० (सं०) रुका या रोका हुआ; घिरा हुआ; वंद; प्रच्छन्न।

अवरुद्धा–स्त्री० (सं०) रखेली।

अवरूढ–वि० (सं०) उतरा हुआ, आरूढका उलटा; उखड़ा हुआ।

अवरूप–वि० (सं०) जिसका रूप विकृत हो गया हो; जिसका पतन हो गया हो।

अवरेखना*–स० क्रि० उरेहना, तसवीर खींचना; देखना; जानना; सोचना।

अवरेब–पु० कपड़ेकी तिरछी काट; वक्र गति; * उलझन, कठिनाई; झगड़ा; व्यंग्य, उक्तिकी वक्रता। **–दार**–वि० तिरछी काटका (कपड़ा)।

अवरोक्त–वि० (सं०) (लैटर) जिसका अंतमें उल्लेख हुआ हो; जो वादमें कहा गया हो।

अवरोचक–पु० (सं०) एक तरहका रोग जिसमें भूख जाती रहती है।

अवरोध–पु० (सं०) रोक, अटकाव, नुकसान; घेरा; आवरण, ढक्कन, वाड़ा; अंतःपुर; महल; किसी राजाकी रानियोंका समूह; प्रहरी; नीचे जाना; किसी पौधेके मूल आदिसे तंतुओंका निकलना।

अवरोधक–वि० (सं०) घेरा डालनेवाला; रोकनेवाला; बाधक। पु० रोक; बाड़ा; प्रहरी।

अवरोधन–पु० (सं०) घेरा, रोक; बाधा; घिरा हुआ या निजी स्थान; किसी चीजका भीतरी भाग; राजप्रासादका अंतःपुर।

अवरोधना*–स० क्रि० रोकना, मना करना; बाधा डालना।

अवरोधिक–पु० (सं०) अंतःपुरका प्रहरी। वि० बाधा डालनेवाला; रोक डालनेवाला।

अवरोधिक–पु० (सं०) अंतःपुरका प्रहरी। वि० बाधा डालनेवाला; रोक डालनेवाला।

अवरोधी(धिन्)–वि० (सं०) दे० 'अवरोधक'।

अवरोधी–पु० (इन्स्यूलेटर) दे० 'विसंवाहक'।

अवरोप–पु० (डिस्चार्ज) किसी आरोप या अभियोगसे मुक्त करना या होना; उन्मोचन, उन्मुक्ति।

अवरोपण–पु० (सं०) उन्मूलन; नीचे उतारना; हटाना।

अवरोह–पु० (सं०) उतार, ऊपरसे नीचे आना; संगीतमें स्वरोंके ऊपरसे नीचे आनेका क्रम; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें किसी वस्तुके रूप या गुणका क्रमशः घटता जाना दिखाया जाय; वरोह; चढ़ना; किसी वेलका वृक्षके चारों ओर लिपटना; मूल या शाखासे तंतुओंका निकलना; पौधे या वेलकी बाढ़; स्वर्ग। **–शाख,–शाखी (खिन्),–शायी(यिन्)**–पु० वटवृक्ष।

अवरोहक–वि० (सं०) गिरने, नीचे आनेवाला; ऊपर चढ़नेवाला। पु० असगंध।

अवरोहण–पु० (सं०) उतरना, नीचे आनेकी क्रिया; ऊपर जाना, चढ़ना।

अवरोहना*–अ० क्रि० उतरना; चढ़ना। स० क्रि० रोकना; अंकित करना।

अवरोहिका–स्त्री० (सं०) अश्वगंधा।

अवरोहिणी–स्त्री० (सं०) ग्रहोंके विशेष स्थानके कारण उत्पन्न बुरी दशा।

अवरोहित–वि० (सं०) हलके लाल रंगका; नीचे गिरा हुआ; हीन।

अवरोही(हिन्)–वि० (सं०) नीचे आनेवाला। पु० ऊपरसे नीचे आनेवाला स्वर; वटवृक्ष।

अवर्ग–वि० (सं०) श्रेणीरहित। पु० स्वर वर्ण।

अवर्ण–वि० (सं०) विना रंगका; बदरंग; बुरा; वर्ण-धर्म-रहित। पु० निंदा, अपवाद।

अवर्ण्य–वि० (सं०) वर्णनके अयोग्य। पु० उपमान।

अवर्तन–पु० (सं०) जीविकारहित होना; अस्तित्वका न रहना। वि० जीविकाहीन।

अवर्त्त*–पु० दे० 'आवर्त्त'।

अवर्त्तमान–वि० (सं०) अविद्यमान; अनुपस्थित।

अवर्धमान–वि० (सं०) न बढ़नेवाला।

अवर्ष, अवर्षण–पु० (सं०) वर्षाका न होना, सूखा।

अवलंघना*–स० क्रि० लाँघना।

अवलंब–पु० (सं०) सहारा, आश्रय, भरोसा; लकुट; परिशिष्ट; लंब (रेखा)।

अवलंबक–पु० (सं०) एक वृत्त।

अवलंबन–पु० (सं०) सहारा लेना; अपनाना; अवलंब; छड़ी।

अवलंबना*–स० क्रि० आश्रय लेना।

अवलंबित–वि० (सं०) आश्रित, मुनहसर; लटकाया हुआ; सत्वर।

अवलंबी(बिन्)–वि० (सं०) अवलंबन करनेवाला।

अवलक्ष–वि० (सं०) सफेद रंगका। पु० सफेद रंग।

अवलग्न–वि० (सं०) लगा या लटका हुआ; सटाकर रखा हुआ। पु० कमर।

अवलि*–स्त्री० दे० 'अवली'।

अवलिप्त–वि० (सं०) (किसी वस्तुसे) पुता, चुपड़ा हुआ; लगाव रखनेवाला; घमंडी।

अवली–स्त्री० पाँत; समूह; नवान्नके लिए खेतसे काटकर लाया हुआ कुछ अंश; एक बार काटा हुआ ऊन।

अवली-सवली*–वि० सजी-वजी (वीसल०)।

अवलीक–वि० निष्पाप; दोषरहित।

अवलीढ–वि० (सं०) चाटा हुआ; खाया हुआ।

अवलीला–स्त्री० (सं०) क्रीडा, खेल; अनादर; तिरस्कार।

अवलुंचन–पु० (सं०) काटना; उखाड़ना; खोलना; हटाना।

अवलुंठन–पु० (सं०) लोटना; लूटना।

अवलुंठित–वि० (सं०) भूमिपर लुढ़का हुआ, लोटा हुआ; लूटा हुआ।

अवलुंपन–पु० (सं०) (किसी चीजपर) अचानक टूट पड़ना, झपट्टा मारना।

अवलेख–पु० (सं०) खुरची हुई चीज; खुरचना; तोड़ना।

अवलेखन–पु० (सं०) खुरचना; लकीर खींचना; कंघी करना, वाल झाड़ना।

अवलेखना*–स० क्रि० खुरचना; चिह्न करना।

अवलेखनी–स्त्री० (सं०) कंघी; ब्रश।

अवलेखा–स्त्री० (सं०) चित्रकारी; रगड़ना; सजाना।

अवलेप–पु० (सं०) लेप, उबटन, चंदन आदि; लेप करना; गाढ़ा द्रव पदार्थ, गाढ़ा थूक 'मधुरस जो तृप्ति करे, मुखमें अवलेप उत्पन्न करे'। आभूषण; संग, लगाव; घमंड; हिंसा; आक्रमण; अपमान।

अवलेपन–पु० (सं०) लेपन; उबटन, तेल आदि; लेपनेकी क्रिया; लगाव; घमंड; चंदन वृक्ष।

अवलेह–पु० (सं०) चटनी; चाटकर खायी जानेवाली दवा; माजून।

अवलेहन–पु० (सं०) चाटना; चटनी।

अवलोक, अवलोकन–पु० (सं०) देखना; अनुसंधान; निरीक्षण; दृष्टि; दृष्टिपात।

अवलोकक–वि० (सं०) देखनेकी इच्छा रखनेवाला (गुप्तचरके रूपमें)।

अवलोकना*–स० क्रि० देखना।

अवलोकनि*–स्त्री० देखनेका ढंग; चितवन।

अवलोकनीय–वि० (सं०) देखने योग्य, दर्शनीय।

अवलोकित–वि० (सं०) देखा हुआ। पु० एक बुद्ध; चितवन।

अवलोकितेश्वर–पु० (सं०) एक बोधिसत्त्व।

अवलोक्य–वि० (सं०) देखने योग्य।

अवलोचना*–स० क्रि० निवारण करना; दूर करना।

अवलोप–पु० (सं०) काटकर अलग करना; नष्ट करना; दाँत काटना; चूमना।

अवलोभन–पु० (सं०) विषयवासना।

अवलोम–वि० (सं०) अनुकूल (व्यक्ति); उपयुक्त।

अवल्गुज–पु० (सं०) सोमराजी नामक पौधा।

अववद, अववदन–पु० (सं०) अपवाद, निंदा।

अववदित–वि० (सं०) सिखलाया हुआ।

अववदिता(तृ)–वि० (सं०) निर्णायक।

अववरक–पु० (सं०) छिद्र; खिड़की।

अववाद–पु० (सं०) निंदा, अपवाद; विश्वास; उपेक्षा; तिरस्कार; सहारा।

अवश–वि० (सं०) बे-बस, लाचार; इंद्रियोंका दास; जो दूसरेके वशमें न हो; निरंकुश; स्वाधीन, दाब न माननेवाला। (स्त्री० 'अवशा'।)

अवशप्त–वि० (सं०) अभिशप्त, जिसे शाप दिया गया हो।

अवशातन–पु० (सं०) नष्ट करना; मुरझाना; शीर्ण होना।

अवशिष्ट–वि० (सं०) बचा हुआ, बाकी, फाजिल। **–शक्तियाँ**–स्त्री० (रेसीडुअरी पावर्स) किसी संविधान आदिमें जिन शक्तियों या अधिकारोंकी स्पष्ट रूपसे व्याख्या या चर्चा कर दी गयी हो उनके बाद बची हुई अन्य सब शक्तियाँ या अधिकार।

अवशीन–पु० (सं०) बिच्छू।

अवशीर्ण–वि० कटा हुआ, छिन्नभिन्न।

अवशीर्णक्रिया–स्त्री० (सं०) विरक्त मित्र या राज्यका कोई अपराध करनेके कारण निकाले हुए व्यक्तिके साथ फिर संधि करना (कौ०)।

अवशीर्ष–वि० (सं०) जिसका सिर झुका हो; औंधा। पु० एक नेत्ररोग।

अवशेष–पु० (सं०) वह जो बच रहे या बाकी रहे; समाप्ति । ✻ वि० बचा हुआ; समाप्त ।

अवशेषित–वि० दे० 'अवशिष्ट' ।

अवश्यंभावी(विन्)–वि० (सं०) जिसका होना निश्चित हो; अटल ।

अवश्य–वि० (सं०) जो वशमें न किया जा सके; अनिवार्य । अ० जरूर, निश्चय । **–सैन्य**–वि० (वह राजा या राष्ट्र) जिसकी सेना वशमें न हो ।

अवश्यमेव–अ० (सं०) निस्संदेह; यकीनन् ।

अवश्यय–पु० (सं०) कुहरा; ओस; पाला ।

अवश्या–स्त्री० (सं०) पाला; कुहरा; स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

अवश्याय–पु० (सं०) पाला; हिमकण, ओस; अभिमान ।

अवश्रयण–पु० (सं०) आग या चूल्हेपरसे कोई चीज उतारना ।

अवष्कयणी–स्त्री० (सं०) बहुत दिनोंके अंतरसे बच्चा देनेवाली गाय ।

अवष्टंभ–पु० (सं०) आश्रय, सहारा; खंभा; घमंड; आरंभ; साहस; रुक जाना; बाधा; पक्षाघात; स्तब्धता; जड़ीभूत होना; श्रेष्ठता; सोना ।

अवष्टंभन–पु० (सं०) सहारा लेना; सहारा देना; जड़ीभूत करना; स्तंभ; रुकना ।

अवष्टब्ध–वि० (सं०) आश्रित, रक्षित; निकटवर्ती; बाधित; आबद्ध; निश्चेष्टित; आवृत्त; पराभूत ।

अवसंजन, अवसज्जन–पु० (सं०) आलिंगन ।

अवसंडीन–पु० (सं०) पक्षियोंके समूहकी नीचेकी ओरकी उड़ान ।

अवस–पु० (सं०) राजा; सूर्य; आक; आहार; उपाहार; रक्षण । ✻ अ० दे० 'अवश्य' । ✻ वि० लाचार ।

अवसक्त–वि० (सं०) संलग्न । पु० संपर्क ।

अवसक्थिका–स्त्री० (सं०) बैठनेकी एक मुद्रा जिसमें पीठ और घुटनोंको बाँधते हैं; इस प्रकार बाँधनेका कपड़ा; उंचन ।

अवसथ–पु० (सं०) रहनेका स्थान, घर; ग्राम; विद्यालय; छात्रालय ।

अवसथ्य–पु० (सं०) विद्यालय । वि० गृह-संबंधी ।

अवसन–वि० (सं०) वस्त्रहीन, विवस्त्र ।

अवसन्न–वि० (सं०) सुस्त, बे-दम; उदास, खिन्न; अपना कार्य करनेमें असमर्थ; समाप्त; हारा हुआ (का०); नाशोन्मुख ।

अवसर–पु० (सं०) मौका; सुयोग; अवकाश; वत्सर; भूमिका; वर्षा; गुप्त परामर्श; अर्थालंकारका एक भेद । **–ग्रहण**–पु० (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाशग्रहण' । **–प्राप्त**–वि० (रिटायर्ड) नौकरीकी अवधि या सेवाकाल समाप्त हो जानेपर कार्यसे पृथक् होनेवाला, जिसने नौकरी आदिसे अवकाश ग्रहण कर लिया हो । **–वाद**–पु० सामयिक परिस्थितिके अनुसार नीतिका निर्धारण, जैसा मौका हो वैसा बन जाना; (ऑपॉरच्यूनिज्म) प्रत्येक सुअवसरसे लाभ उठानेकी प्रवृत्ति या नीति । **–वादिता**–स्त्री० अवसरसे लाभ उठानेकी प्रवृत्ति । **–वादी(दिन्)** –वि० (ऑपॉरच्यूनिस्ट) जो किसी स्थिर नीतिपर दृढ़ न रहकर प्रत्येक उपयुक्त अवसरसे पूरा-पूरा लाभ उठानेका प्रयत्न करे । अवसरवादको मानने और बरतनेवाला । **मु० –चूकना**–सुयोगका लाभ न उठाना, मौकेपर काम न करना । **–ताकना**–मौका ढूँढ़ना । **–मारा जाना**–मौका हाथसे निकल जाना ।

अवसर्ग–पु० (सं०) मुक्त करना; ढीला करना; रोक न लगाना; स्वतंत्रता; दंड आदिमें कमी कर देना ।

अवसर्जन–पु० (सं०) छोड़ना, मुक्त करना ।

अवसर्प–पु० (सं०) भेदिया, जासूस ।

अवसर्पण–पु० (सं०) नीचे उतरना, अधोगमन ।

अवसर्पिणी–स्त्री० (सं०) जैनियोंका एक लंबा काल ।

अवसव्य–वि० (सं०) दाहिना ।

अवसाद–पु० (सं०) सुस्ती, शिथिलता; उदासी; नाश; अंत; हार (का०); तरल मिश्रणका वह अंश जो उसके नीचे या पेंदीमें बैठ जाय, तलछट, कल्क (सेडीमेंट) ।

अवसादक–वि० (सं०) अवसादकारक, सुस्ती लानेवाला; समाप्त करनेवाला ।

अवसादन–पु० (सं०) पतन; नाश; कार्य करनेकी अक्षमता, सुस्ती; उत्पीड़न; समाप्त करना; मरहम-पट्टी करना ।

अवसादी(दिन्)–वि० (सं०) अवसाद-युक्त ।

अवसान–पु० (सं०) विराम; अंत, समाप्ति; मृत्यु; हद्द; समाप्त करना; घोड़े आदिसे उतरनेका स्थान; छंदका अंत या छंद ।

अवसानक–वि० (सं०) जो समाप्त या नष्ट हो रहा हो ।

अवसाय–पु० (सं०) अंत; नाश; समाप्ति; निश्चय; संकल्प ।

अवसायी(यिन्)–वि० (सं०) रहनेवाला ।

अवसारण–पु० (सं०) हटाना; चलाना; गमनमें प्रवृत्त करना ।

अवसि✻–अ० अवश्य ।

अवसिक्त–वि० (सं०) सींचा हुआ ।

अवसित–वि० न बसा हुआ; (सं०) समाप्त; गत; ज्ञात; परिपक्व; निश्चित; माँड़ा हुआ (अनाज); संबद्ध; जमा किया हुआ (अन्न) । पु० रहनेका स्थान ।

अवसुप्त–वि० (सं०) सोया हुआ ।

अवसृष्ट–वि० (सं०) छोड़ा हुआ, परित्यक्त; बर्खास्त किया हुआ ।

अवसेक–पु० (सं०) सिंचन; एक नेत्ररोग ।

अवसेख✻–पु० दे० 'अवशेष' ।

अवसेचन–पु० (सं०) सींचना; छिड़कना; सींचने इत्यादिके काममें आनेवाला पानी; पसीना निकलना; पसीना निकालनेकी क्रिया; जोंक, फस्द आदिके जरिये रक्त निकालना ।

अवसेर✻–स्त्री० देर, अबेर –'गयी रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आज अवसेर लगायी' – सू०; उलझन; क्लेश–'गाइनके अवसेर मिटावहु' – सू०; चिंता; व्याकुलता । पु० प्रतीक्षा ।

अवसेरना✻–स० क्रि० कष्ट देना, परेशान करना; अ० क्रि० देर लगाना ।

अवसेषित✻–वि० दे० 'अवशिष्ट' ।

अवस्कंद–पु० (सं०) आक्रमण; टूट पड़ना; शिविर, छावनी ।

अवस्कंदक–पु० (सं०) आक्रमण करनेवाला व्यक्ति; वह जो लोगोंको अकारण, राह चलते मारे-पीटे, गुंडा ।

अवस्कंदित–वि० (सं०) आक्रांत; नीचे गया हुआ; स्नात । **–श्रमी (मिन्)**–पु० मजदूरी लेकर भाग जानेवाला मजदूर ।

अवस्कर–पु० (सं०) विष्ठा, मल; मल-मूत्रेंद्रिय; कूड़ा; घूर । **–श्रम**–पु० पाखानेका नल, 'सिवेज' (कौ० ?) । **–मंदिर**–पु० शौचालय ।

अवस्करक–पु० (सं०) गोबरौला; कूड़ा, मलमूत्र उठानेवाला, मेहतर; झाड़ू ।

अवस्तार–पु० (सं०) परदा; खेमेके चारों ओरकी कपड़ेकी दीवार, कनात; चटाई ।

अवस्तु–वि० (सं०) नाचीज़, तुच्छ, निकम्मा; शून्य । स्त्री० असद्वस्तु, निकम्मी चीज; सारहीनता ।

अवस्त्र–वि० (सं०) वस्त्रहीन, नग्न ।

अवस्थ–पु० (सं०) पुरुषेंद्रिय ।

अवस्थांतर–पु० (सं०) दूसरी या बदली हुई अवस्था ।

अवस्था–स्त्री० (सं०) हालत, दशा; देहादिकी कालकृत अवस्था –लड़कपन, जवानी, बुढ़ापा आदि; उम्र; स्थिति; स्थिरता; आकृति; भग । **–चतुष्टय**–पु० जीवनकी चार अवस्थाएँ–बाल्य, कौमार, यौवन और वार्द्धक्य । **–त्रय**–पु० जीवात्मा या चित्तकी तीन अवस्थाएँ –जागर्ति, स्वप्न, सुषुप्ति । **–दशक**–पु० प्रेमीकी दस अवस्थाएँ–अभिलाष, चिंता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, संलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण । **–द्वय**–पु० जीवनकी दो अवस्थाएँ–सुख और दुःख । **–परिणाम**–पु० दे० 'परिणाम' (यो०) । **–षट्क**–पु० यास्कके मतसे कर्मकी ६ अवस्थाएँ –जन्म, स्थिति, वृद्धि, विपरिणमन (बदलना), अपक्षय और नाश ।

अवस्थान–पु० (सं०) ठहरना; रहना; रहने, ठहरनेका स्थान, घर; मौका; ठहरने या रहनेकी अवधि; (स्टेशन) यात्रा-मार्ग तय करते समय रेलगाड़ी, बस आदिके बीच-बीचमें कुछ समयतक रुकनेकी जगह जहाँ यात्रियों या मालके चढ़ने-चढ़ानेकी व्यवस्था हो, **स्टेशन**; वह स्थान जहाँ सैनिक या पुलिसके आदमी रक्षा आदि-

की व्यवस्थाके लिए रखे गये हों या रहते हों। (स्टेज) दे० 'प्रक्रम'।

अवस्थापन–पु० (सं०) रखना, स्थापित करना; विठाना; रहनेका स्थान।

अवस्थित–वि० (सं०) ठहरा हुआ, टिका हुआ; कार्यलग्न; मौजूद; खड़ा; दृढ़निश्चय।

अवस्थिति–स्त्री० (सं०) स्थित होनेकी अवस्था, अवस्थान; विद्यमानता; डालनेकी क्रिया या भाव, स्थापन (हिंदी कवितामें युगांतर)।

अवस्फीति–स्त्री० (डीप्रीसियेशन) दे० 'अपस्फीति'।

अवस्फूर्ज–पु० (सं०) बादलोंका गरजना।

अवस्यंदन–पु० (सं०) रिसना, चूना, टपकना।

अवह–वि० (सं०) न बहनेवाला; बिना नदी-नालेका (देश)। पु० एक वायु, 'ईथर' (?)।

अवहट्ट–स्त्री० प्राचीन अपभ्रंश हिंदीका एक रूप।

अवहनन–पु० (सं०) डंठल पटककर दाने अलग करना; फटकना; वाम फुफ्फुस।

अवहरण–पु० (सं०) अन्यत्र ले जाना; चुरा लेना; युद्धविराम।

अवहस्त–पु० (सं०) हथेलीकी पीठ।

अवहार–पु० (सं०) अपहरण; लौटाना; चोर; सूंस, जल-हस्ती; रणविराम; जाति या धर्मका त्याग; आमंत्रण; पास लाने योग्य वस्तु; (रिबेट) प्राप्य धन (महसूल आदि) का विशेष स्थितिमें कुछ अंश छोड़ दिया जाना, छूट।

अवहारक–वि० (सं०) अवहरण-कारक; युद्ध बंद करनेवाला। पु० सूंस।

अवहार्य–वि० (सं०) ले जाने योग्य; जिसे लौटाना आवश्यक हो।

अवहालिका–स्त्री० (सं०) प्राचीर, दीवार।

अवहास–पु० (सं०) मुस्कराहट, मुस्कराना; उपहास, खिल्ली उड़ाना।

अवहित–वि० (सं०) एकाग्रचित्त, सावधान।

अवहित्थ–पु०, **अवहित्था**–स्त्री० (सं०) एक व्यभिचारी भाव जिसमें लज्जा, भय आदि भावोंके छिपानेका प्रयत्न होता है; भावगोपन।

अवहृत–वि० (सं०) हरण किया हुआ; चुराया हुआ; जिसपर जुर्माना किया गया हो।

अवहेलना, अवहेला–स्त्री० (सं०) अनादर, अवज्ञा; तिरस्कार; उपेक्षा।

अवहेलित–वि० (सं०) अवज्ञात; तिरस्कृत।

अवाँ–पु० दे० 'आवाँ'।

अवाँगना*–स० क्रि० नीचेकी ओर झुकाना।

अवांछनीय–वि० (सं०) जिसकी चाहना न की जाय; अनभिलषणीय; अप्रिय।

अवांतर–वि० (सं०) बीचमें स्थित, मध्यवर्ती; अंतर्गत; गौण। **–दिशा**–स्त्री० विदिशा, दो दिशाओंके बीचका कोण। **–देश**–पु० दो स्थानों या देशोंके बीचका स्थान या देश। **–भेद**–पु० गौण भेद, उपविभाग।

अवाँसना–स० क्रि० दे० 'अनवाँसना'।

अवाँसी–स्त्री० नवान्नके लिए फसलमेंसे काटकर लाया हुआ पहला बोझ।

अवाई–स्त्री० आगमन; गहरी जोताई।

अवाक्(च्)–वि० (सं०) अधोमुख; मौन, चुप; स्तब्ध; दक्षिणी। अ० नीचे; दक्षिणकी ओर। पु० ब्रह्म। **–पुष्पी**–स्त्री० अधःपुष्पी। **–शाख**–पु० अश्वत्थ, पीपल। **–श्रुति**–वि० गूंगा और बहरा।

अवाक्ष–पु० (सं०) रक्षक, देख-भाल करनेवाला।

अवागी*–वि० मौन।

अवाङ्–'अवाच्'का समासगत रूप। **–निरय**–पु० नीचेका नरक (पृथ्वी)। **–मनसगोचर**–वि० मन और वाणीके परे, अवर्णनीय और अचिंत्य (ईश्वर, परमतत्त्व)। **–मुख**–वि० अधोमुख, जिसका मुख नीचेकी ओर हो; लज्जित।

अवाची–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा; निम्न देश।

अवाचीन–वि० (सं०) दक्षिणी; अधोमुख; अधोगत।

अवाच्य–वि० (सं०) न कहने योग्य; बात करनेके अयोग्य; अस्पष्ट; दक्षिणी। पु० अपशब्द; न कहने योग्य बात। **–देश**–पु० योनि।

अवाज*–स्त्री० दे० 'आवाज'।

अवाजी*–वि० आवाज करनेवाला।

अवात–वि० (सं०) निर्वात, बिना हवाका।

अवादी(दिन्)–वि० (सं०) जो वादी नहीं है, अविरोधी; अवक्ता।

अवान–वि० (सं०) सूखा हुआ, शुष्क (फलादि)।

अवापित–वि० (सं०) बोया हुआ नहीं, रोपा हुआ; न कटा हुआ (बाल)।

अवाप्त–वि० (सं०) प्राप्त, मिला हुआ।

अवाप्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्ति; सार्वजनिक हितके लिए किसीकी भूमि या संपत्ति उचित मूल्य देकर ले लेना (ऐक्वीजीशन)।

अवाप्य–वि० (सं०) प्राप्त करने योग्य; न काटने योग्य (केशादि)।

अवाय*–वि० अनिवार्य; उद्धत, निरंकुश।

अवार–पु० (सं०) नदीका इधरका किनारा, पारका उलटा, इस पार। **–पार**–पु० समुद्र। **–पारीण**–वि० समुद्र-संबंधी; नदी पार करनेवाला।

अवारजा, अवारिजा–पु० (फा०) खतियौनी; जमाखर्चकी बही; गोशवारा, रोजनामचा।

अवारणीय–वि० (सं०) जिसका निवारण न हो सके, ला-इलाज।

अवारना*–स० क्रि० रोकना, वारण करना।

अवारा†–वि० दे० 'आवारा'।

अवारिका–स्त्री० (सं०) धनिया।

अवारित–वि० (सं०) अनिवारित, जिसपर रोक न लगायी गयी हो। **–द्वार**–वि० जिसका द्वार खुला हो।

अवारीण–वि० (सं०) पार गया हुआ।

अवार्य–वि० (सं०) दे० 'अवारणीय'।

अवावट–पु० (सं०) उसी वर्णके दूसरे पतिसे उत्पन्न पुत्र।

अवास*–पु० दे० 'आवास'।

अवासा(सस्)–पु० (सं०) दिगंबर जैन। वि० नग्न।

अवास्तव–वि० (सं०) जो यथार्थ न हो, मिथ्या; निराधार।

अवाहन–वि० (सं०) जिसके पास वाहन न हो; जो सवारीपर न हो।

अवि–पु० (सं०) रक्षक; स्वामी; सूर्य; वायु; पहाड़; दीवार, घेरा; अकवन; मूषिक कंबल; समूर; मेष; बकरा। स्त्री० भेड़; लज्जा; ऋतुमती स्त्री। **–कट**–पु० भेड़ोंका झुंड। **–गंधा, –गंधिका**–स्त्री० अजगंधा नामक पौधा। **–पट**–पु० ऊनी वस्त्र। **–पाल**–पु० गड़ेरिया।

अविक–पु० (सं०) मेष; हीरा।

अविकच, अविकचित–वि० (सं०) बंद, अविकसित।

अविकत्थ, अविकत्थन–वि० (सं०) घमंड न करनेवाला; डींग न मारनेवाला।

अविकल–वि० (सं०) जो घटाया-बढ़ाया या बदला न गया हो, ज्योंका त्यों हो; व्यवस्थित; जो बे-चैन न हो, शांत।

अविकल्प–वि० (सं०) विकल्परहित; अपरिवर्तनीय; निश्चित। पु० विकल्प या संदेहका अभाव।

अविका, अविता–स्त्री० (सं०) भेड़।

अविकार–वि० (सं०) विकार-रहित, न बदलनेवाला, एकरूप। पु० विकाराभाव।

अविकारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'अविकार'; जो किसीका विकार न हो।

अविकार्य–वि० (सं०) जिसमें विकार या परिवर्तन न हो, परिवर्तनशील।

अविकाशी(शिन्), अविकासी(सिन्)–वि० (सं०) जिसका अविकास न हो, न खिलनेवाला; न चमकनेवाला।

अविकृत–वि० (सं०) जो बदला या बिगड़ा न हो, जो ज्योंका त्यों हो।

अविकृति–स्त्री० (सं०) विकारका अभाव; मूल-प्रकृति (सां०)।

अविक्रम–वि० (सं०) शक्तिहीन, कमजोर। पु० कायरता।

अविक्रांत–वि० (सं०) जिससे कोई बढ़ा हुआ न हो; कमजोर, शक्तिहीन।

अविक्रिय–वि० (सं०) अविकारी। पु० ब्रह्म।

अविक्रेय–वि० (सं०) जो बिक्रीके लिए न हो।

अविक्षत–वि० (सं०) जिसकी क्षति न हुई हो; समग्र।

अविक्षिप्त–वि० (सं०) जो फेंका न गया हो; जो घबराया या पागल न हो, एकाग्रचित्त।

अविगत–वि० (सं०) जो गया या बीता न हो, मौजूद; * अज्ञेय; अज्ञात; अविनाशी।

अविगीत–वि० (सं०) अनिंदित; जिसमें असंगति न हो।

अविग्न–पु० (सं०) करमर्दक नाम वृक्ष या उसका फल, करौंदा।

अविग्रह–वि० (सं०) निराकार, देहरहित; अज्ञात; नित्यसमास (व्या०)।

अविघात–वि० (सं०) बाधारहित। पु० विघ्नाभाव।

अविचल–वि० (सं०) अचल, स्थिर।

अविचार–पु० (सं०) अविवेक, नासमझी; अन्याय; अनीति। वि० अविवेकी।

अविचारित–वि० (सं०) जिसपर विचार न किया गया हो, बिना सोचे-समझे किया हुआ।

अविचारी(रिन्)–वि० (सं०) विवेकहीन, उचित-अनुचितका विचार न रखनेवाला।

अविचालित–वि० (सं०) अटल, स्थिर; विजयी।

अविच्छिन्न–वि० (सं०) अविभक्त; न टूटा हुआ; जो लगातार हो।

अविच्छेद–वि० (सं०) विच्छेदरहित। पु० विच्छेद याने बिलगावका अभाव।

अविच्युत–वि० (सं०) जो अपने स्थानसे भ्रष्ट न हुआ हो; शाश्वत, नित्य।

अविछीन*–वि० अविच्छिन्न, अटूट–'जो सुनि होइ रामपद प्रीति सदा अविछीन'–रामा०।

अविजन*–पु० दे० 'अभिजन'।

अविजित–वि० (सं०) जो जीता न गया हो।

अविज्ञ–वि० (सं०) अजान, अनाड़ी।

अविज्ञात–वि० (सं०) बे-जाना-समझा; संदिग्ध; अस्पष्ट। **–क्रय**–पु० गुप्त स्थानसे या मालिकको बिना जनाये कोई वस्तु खरीदना; व्यवहारमें आधा माल नष्ट हो जाना। **–गति**–वि० जिसकी गतिविधि ज्ञात न हो।

अविज्ञाता(तृ)–पु० (सं०) जिससे अधिक जाननेवाला कोई न हो, परमेश्वर; विष्णु।

अविज्ञेय–वि० (सं०) जो पहचाना न जा सके; जो जाना न जा सके; न जानने योग्य। पु० परमेश्वर।

अविडीन–पु० (सं०) पक्षियोंका सीधे सामने उड़ना।

अवितत्–वि० (सं०) विरुद्ध। **–करण**–पु० साधारणतः बुरा समझे जानेवाले कार्यको करणीय मानना (पाशुपत); विरुद्धाचरण।

अवितथ–वि० (सं०) जो गलत या झूठ न हो, सही। पु० सचाई।

अवितथता–स्त्री० संक्षेपमें स्पष्टतः कथित या चित्रित कर सकनेकी क्षमता।

अवितद्भाषण–पु० (सं०) अंडबंड बकना, निरर्थक बातें कहना।

अवितर्कित–वि० (सं०) जिसपर विचार न किया गया हो; अदृष्टपूर्व।

अवित्त–वि० (सं०) निर्धन; अप्रसिद्ध; अज्ञात।

अवित्ति–स्त्री० (सं०) अप्राप्ति; बुद्धिहीनता; निर्धनता। वि० मूर्ख; जिसे प्राप्त न हुआ हो।

अवित्यज–वि० (सं०) जो त्यागा या छोड़ा न जा सके, अनिवार्य। पु० (सं०) पारा।

अविथ्या–स्त्री० (सं०) अजथ्या नामक पौधा; जूही; पाढ़ा।

अविदग्ध–वि० (सं०) अधजला; अधकचरा; अपंडित, मूर्ख। पु० भेड़का दूध।

अविदित–वि० (सं०) अज्ञात; अप्रकट। पु० परमेश्वर।

अविद्ध–वि० (सं०) अनविधा। **–कर्णा,–कर्णी**–स्त्री० पाढ़ा लता।

अविद्य–वि० (सं०) विद्याविहीन, अपढ़, मूर्ख; * नष्ट, लुप्त।

अविद्यमान–वि० (सं०) अनुपस्थित; असत्।

अविद्या–स्त्री० (सं०) विद्या या ज्ञानका अभाव; विपरीत ज्ञान; भ्रांति; वह भ्रांति जिसके कारण ब्रह्ममें जगत्की प्रतीति होती है, माया, प्रकृति (सां०)। **–कृत, –जन्य**–वि० अविद्यासे उत्पन्न।

अविद्वान्–वि० (सं०) जो विद्वान् न हो, अपंडित, मूर्ख।

अविधवा–वि० स्त्री० (सं०) जो विधवा न हो।

अविधान–पु० (सं०) विधानका अभाव, विधानका न होना। वि० विधिविरुद्ध, अवैध, अविहित।

अविधि–वि० (सं०) अवैध, विधिविरुद्ध। स्त्री० विधि या विधानका अभाव।

अविधिक–वि० (सं०) जो विधि (कानून) से संबंधित न हो; विधिसे निषिद्ध, विधिविरुद्ध।

अविनय–स्त्री० (सं०) विनय या नम्रताका अभाव; अशिष्टता; धृष्टता, गुस्ताखी; उजड्डपन; घमंड; अपराध। वि० विनयहीन।

अविनश्वर–वि० (सं०) जिसका नाश न हो। पु० परब्रह्म।

अविनाभाव–पु० (सं०) अविच्छेद्य संबंध (जैसे आग और धुएँका); संबंध, लगाव।

अविनाशी(शिन्)–वि० (सं०) नाशरहित, अक्षय, नित्य।

अविनासी*–वि० दे० 'अविनाशी'। पु० ईश्वर।

अविनीत–वि० (सं०) अनम्र, अशिष्ट; गुस्ताख; उजड्ड; घमंडी।

अविनीता–स्त्री० (सं०) कुलटा, व्यभिचारिणी।

अविपक्व–वि० (सं०) पका नहीं; अधकचरा।

अविपद्–स्त्री० (सं०) दुःखाभाव; समृद्धि।

अविपन्न–वि० (सं०) जो क्षतिग्रस्त न हो; निष्कलुष, पवित्र; स्वस्थ।

अविपर्यय–पु० (सं०) विकार या क्रमभंगका न होना।

अविपाक–पु० (सं०) अजीर्ण रोग। वि० अजीर्णसे ग्रस्त।

अविबुध–वि० (सं०) बुद्धिहीन, मूर्ख। पु० देवता नहीं, असुर आदि।

अविभक्त–वि० (सं०) अविभाजित, अखंड; साबित; समूचा; एक।

अविभाज्य–वि० (सं०) जो बाँटा न जा सके। पु० वह राशि जिसका किसी भाजकसे भाग न किया जा सके।

अविभावन–पु० (सं०) किसी वस्तुका स्पष्ट ज्ञान या पहचान न होना; लोप।

अविमान–पु० (सं०) अपमान नहीं, आदर-सत्कार।

अविमुक्त–वि० (सं०) अमुक्त, बद्ध। पु० (पंचक्रोशीसहित) काशी; कनपटी।

अविमुक्तेश्वर–पु० (सं०) काशीका एक प्रसिद्ध शिव-लिंग।

अवियुक्त–वि० (सं०) अविभक्त, मिला हुआ, संयुक्त; जो पृथक् न हुआ हो।

अवियोग–वि० (सं०) संबद्ध, मिला हुआ। पु० उपस्थिति; संयोग। **–व्रत**–पु० मार्गशीर्ष-शुक्ला तृतीयाको होनेवाला एक व्रत।

अविरत–वि० (सं०) विरामहीन, निरंतर चलते रहनेवाला, अनिवृत्त, लगा हुआ; परित्यक्त। अ० लगातार, निरंतर।

अविरति–स्त्री० (सं०) विरामका अभाव; आसक्ति।

अविरथा*–अ० नाहक, बेकार।

अविरल–वि० (सं०) मिला, सटा हुआ; अविरत; घना। **–धारासार**–पु० लगातार होनेवाली मुसलधार वृष्टि।

अविरहित–वि० (सं०) अवियुक्त, जो पृथक् न हो।

अविराम–वि० (सं०) विरामहीन। अ० लगातार, बिना ठहरे-सुस्ताये।

अविरुद्ध–वि० (सं०) जो विरुद्ध न हो, अप्रतिकूल; अनुकूल।

अविरेचन–पु० (सं०) कब्ज करनेवाली चीज।

अविरोध–पु० (सं०) विरोधका अभाव, मेल; सामंजस्य।

अविलंब–वि० (सं०) विलंबरहित। अ० झटपट, तुरत।

अविलंब्य–वि० (अर्जेंट) जिसकी ओर तुरंत ध्यान देना आवश्यक हो; जिसे करने, पूरा करने, भेजने, पहुँचाने आदिमें विलंब न किया जा सके, अत्यावश्यक ।

अविलक्ष्य–वि० (सं०) जिसका कोई लक्ष्य न हो; अचिकित्स्य ।

अविला–स्त्री० (सं०) भेड़ ।

अविलिख–वि० (सं०) न लिखनेवाला; बुरा लिखनेवाला; लिखनेवालेसे भिन्न ।

अविलेय–वि० (इन सॉल्यूबिल) जो घुले नहीं, अघुलनीय ।

अविलोकना*–स० क्रि० दे० 'अवलोकना' ।

अविवक्षित–वि० (सं०) अनुद्दिष्ट; जिसके विषयमें कहना न हो ।

अविवाद–पु० (सं०) विवादका अभाव, सहमति । वि० विवादरहित ।

अविवाहित–वि० (सं०) बिन-ब्याहा, क्वाँरा ।

अविविक्त–वि० (सं०) अविवेचित; भेदरहित; सार्वजनिक; विवेकरहित ।

अविवेक–पु० (सं०) भला-बुरा समझनेकी शक्तिका अभाव; अविचार; नासमझी ।

अविवेकिता–स्त्री० (सं०) अविवेक ।

अविवेकी(किन्)–वि० (सं०) विवेकरहित, नासमझ ।

अविशंक–वि० (सं०) शंकारहित; निडर ।

अविशुद्ध–वि० (सं०) जो शुद्ध न हो, अपवित्र; मिलावटी ।

अविशेष–वि० (सं०) भेदरहित, समान । पु० भेदक धर्मका अभाव, समानता; एकता; सूक्ष्म भूत (सां०) । **–सम**–पु० जातिके चौबीस भेदोंमेंसे एक (न्या०) ।

अविश्रांत–पु० (सं०) विश्वासका अभाव, अविश्वास ।

अविश्रांत–वि० (सं०) न थकनेवाला; अविराम; जो क्षतिग्रस्त न हो । अ० लगातार ।

अविश्वसनीय–वि० (सं०) जो विश्वासके योग्य न हो ।

अविश्वस्त–वि० (सं०) जिसका विश्वास न हो, संदिग्ध ।

अविश्वास–पु० (सं०) विश्वासका न होना, बे-एतबारी; शंका, संदेह । **–प्रस्ताव**–पु० (मोशन ऑफ नो-कानफिडेंस) मंत्रिमंडल या उसके किसी सदस्य अथवा किसी संस्थाके अध्यक्ष आदिमें विश्वास न रह जानेका प्रस्ताव जो विधानसभा या उक्त संस्थामें पुरःस्थापित किया जाय ।

अविश्वासी(सिन्)–वि० (सं०) विश्वास न करनेवाला; श्रद्धाहीन; जो विश्वासके योग्य न हो ।

अविष–वि० (सं०) विषहीन; विषहारक; रक्षक । पु० समुद्र; राजा; आकाश ।

अविषय–वि० (सं०) जो किसी इंद्रियका विषय न हो, अगोचर; प्रतिपादनके अयोग्य; निर्विषय । पु० अभाव; लोप; इंद्रियोंके विषयोंकी उपेक्षा ।

अविषा–स्त्री० (सं०) निर्विषा तृण ।

अविषी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; नदी; आकाश ।

अविसर्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) न हटनेवाला, लगातार बना रहनेवाला (ज्वर) ।

अविसह्य–वि० (सं०) (वह पदार्थ) जो रोग उत्पन्न करे; जिसमें कोई गुण न हो । **–दुर्ग**–पु० वह दुर्ग जिसमें शत्रु प्रवेश न कर सके (कौ०) ।

अविस्तर–वि० (सं०) थोड़ी लंबाईका, संक्षिप्त ।

अविस्तीर्ण–वि० (सं०) जो अधिक न फैलाकर छोटा कर दिया गया हो ।

अविस्तृत–वि० (सं०) कम विस्तारवाला; ठसा हुआ, घना ।

अविहड़*–वि० अविनाशी; बीहड़ ।

अविहित–वि० (सं०) शास्त्रविरुद्ध; निषिद्ध; अकर्तव्य; अनुचित ।

अवी–स्त्री० (सं०) ऋतुमती स्त्री; वनकुलथी ।

अवीचि–वि० (सं०) बिना लहरोंका । पु० एक नरक ।

अवीज, अवीजक–वि० (सं०) दे० 'अबीज' ।

अवीजा–स्त्री० (सं०) दे० 'अबीजा', किशमिश ।

अवीरा–स्त्री० (सं०) पुत्रहीना विधवा ।

अवृत–वि० (सं०) जो रोका न गया हो; बे-चुना हुआ; अरक्षित; अपराभूत ।

अवृत्ति–वि० (सं०) अस्तित्वहीन, स्थितिहीन; जीविकारहित । स्त्री० जीविकाका अभाव; स्थितिका अभाव ।

अवृथा–अ० (सं०) व्यर्थ नहीं, सफलतापूर्वक । वि० जो व्यर्थ न हो ।

अवृद्धिक–वि० (सं०) बिना वृद्धि या सूदका । पु० मूल धन ।

अवृष्टि–स्त्री० (सं०) अवर्षण, सूखा ।

अवेक्षण–पु० (सं०) देखना; निरीक्षण, देख-भाल । वि० देख-भाल करनेवाला ।

अवेक्षणीय–वि० (सं०) देखने योग्य; निरीक्षण योग्य ।

अवेक्षा–स्त्री० (सं०) देखना; ध्यान, खयाल ।

अवेज*–पु० बदला ।

अवेणि–वि० (सं०) कबरीरहित; जो साथ मिलकर प्रवाहित न हो (नदी) ।

अवेत–वि० (सं०) बीता हुआ; प्राप्त; संयुक्त ।

अवेदि–स्त्री० (सं०) अज्ञान ।

अवेद्य–वि० (सं०) अज्ञेय; अलभ्य । पु० बछड़ा ।

अवेद्या–स्त्री० (सं०) विवाहके अयोग्य स्त्री ।

अवेल–वि० (सं०) सीमारहित; असामयिक । पु० ज्ञानगोपन, अपह्नव ।

अवेला–स्त्री० (सं०) अनुपयुक्त समय, कुबेला; चर्वित तांबूल या पूग ।

अवेश*–पु० दे० 'आवेश' ।

अवेस्ता–स्त्री० (पह० ?) पारसियोंकी मूल धर्म-पुस्तक, जेंद-अवेस्ता ।

अवैज्ञानिक–वि० (सं०) जो वैज्ञानिक न हो, जो विज्ञानके विरुद्ध या प्रतिकूल हो ।

अवैतनिक–वि० (सं०) वेतन न पाने या न लेनेवाला, 'ऑनरेरी' ।

अवैदिक–वि० (सं०) वेदविरुद्ध; अवेदोक्त ।

अवैद्य–वि० (सं०) जो वैद्य या विद्वान् नहीं है ।

अवैध–वि० (सं०) विधिविरुद्ध, अविहित; विधानविरुद्ध, गैर-आईनी; जारज । **–जात**–वि० (इल्लिसिट) अवैध रूपसे उत्पन्न या प्राप्त (संतान, आमदनी इ०) । **–निरोधन**–पु० (रांगफुल कनफाइनमेंट) किसी व्यक्तिको अवैध रूपसे रोक रखना, कमरे या घर आदिमें बंद कर देना । **–प्रेषण**–पु० (स्मगलिंग) चुंगी आदिसे बचनेके लिए (कोई माल) अवैध रूपसे भेजना या मँगाना; अपहरण (कौटिल्य), तस्करी ।

अवैधाचरण–पु० (इल्लीगल प्रैक्टिस) विधि या कानूनके विरुद्ध किया जानेवाला व्यवहार या आचरण ।

अवैधानिक–वि० (सं०) जो विधान या नियमके विरुद्ध या प्रतिकूल हो, (अनकांस्टिट्यूशनल) असांविधानिक ।

अवैमत्य–पु० (सं०) ऐकमत्य; मतभेदका अभाव । वि० सर्वसम्मत ।

अवोक्षण–पु० (सं०) हाथ तिरछा करके जल छिड़कना ।

अवोद–वि० (सं०) गीला, आर्द्र । पु० गीला करना ।

अव्यंग–वि० (सं०) जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो, सीधा ।

अव्यंगांग–वि० (सं०) जिसके अंग टेढ़े न हों, सुडौल ।

अव्यंगा, अव्यंडा–स्त्री० (सं०) शूकशिंबी, केवाँच ।

अव्यंजन–वि० (सं०) चिह्नरहित; सुलक्षणरहित; अस्पष्ट; बिना सींगका (पशु) । पु० बिना सींगका पशु ।

अव्यक्त–वि० (सं०) अप्रकट, अदृश्य; अज्ञेय; अनाविर्भूत; अज्ञात; अनुच्चार्य; अनिश्चित । पु० मूल प्रकृति; अविद्या; ब्रह्म; आत्मा; सूक्ष्म शरीर; शिव; विष्णु; कामदेव; मूर्ख व्यक्ति; सुषुप्ति अवस्था । **–क्रिया**–स्त्री०,**–गणित**–पु० बीजगणितका एक हिसाब । **–गति**–वि० अलक्षित गमन करनेवाला । **–पद**–वि० जिसका उच्चारण न हो सके । **–राग**–वि० हलका लाल, गुलाबी । **–राशि**–स्त्री० वह राशि जिसका मान निश्चित न हो (बी० ग०) । **–लक्षण**–पु० शिव । **–लिंग**–वि० (वह रोग) जिसके लक्षण स्पष्ट न हों । पु० महत्तत्त्व (सां०) । **–साम्य**–पु० अव्यक्त राशियोंका समीकरण ।

अव्यक्तानुकरण–पु० (सं०) अर्थरहित ध्वनियों (पक्षी आदिकी

बोलियों)का अनुकरण ।

अव्यथ–वि० (सं०) पीड़ा न देनेवाला, दयालु; व्यथारहित । पु० साँप ।

अव्यथय–पु० (सं०) घोड़ा ।

अव्यथा–स्त्री० (सं०) हरीतकी; सोंठ; स्थलकमल; गोरखमुंडी; आँवला; व्यथाराहित्य ।

अव्यथिष–पु० (सं०) सूर्य; समुद्र ।

अव्यथिषी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; अर्द्धरात्रि ।

अव्यथी(थिन्), अव्यथ्य–वि० (सं०) व्यथारहित; निर्भीक; पीड़ा न देनेवाला ।

अव्यध–वि० (सं०) अनबिधा ।

अव्यपदेश्य–वि० (सं०) जिसका लक्षण न कहा जा सके; जिसका निर्देश न किया जा सके । पु० ब्रह्मा; निर्विकल्प ज्ञान ।

अव्यभिचार–पु० (सं०) एकनिष्ठता, वफादारी; नित्य साहचर्य ।

अव्यभिचारी(रिन्)–वि० (सं०) अविरोधी, अनुकूल; अपवाद-रहित; स्थायी, नित्य; सदाचारी ।

अव्यय–वि० (सं०) अविकारी; अक्षय; नित्य; कंजूस । पु० वह शब्द जिसके रूपमें वचन, लिंग आदिके कारण कोई विकार नहीं होता; ब्रह्म; शिव; विष्णु; खर्च न करना, कंजूसी ।

अव्ययित शेष–पु० (अनस्पेंट बैलेंस) किसी कामके लिए निर्धारित या जमा किये हुए धनका वह अंश जो व्यय न किये जानेके कारण बच गया हो ।

अव्ययीभाव–पु० (सं०) वह समास जिसमें पूर्वपद अव्यय हो (जैसे यथाशक्ति, अनुरूप); अनश्वरता; व्ययाभाव (निर्धनताके कारण) ।

अव्यर्थ–वि० (सं०) व्यर्थ न होनेवाला; सफल; अचूक ।

अव्यलीक–वि० (सं०) झूठ नहीं, सत्य; प्रिय ।

अव्यवधान–वि० (सं०) निकट; अंतररहित; अनावृत; बिना रोकका; लापरवाह । पु० लापरवाही; लगाव; नैकट्य ।

अव्यवसाय–पु० (सं०) उद्यम या निश्चयका अभाव । वि० उद्यम-रहित; निकम्मा; आलसी ।

अव्यवसायी(यिन्)–वि० (सं०) उद्यमहीन ।

अव्यवस्था–स्त्री० (सं०) नियम, व्यवस्थाका अभाव, बे-कायदगी, गड़बड़, बदअमली; शास्त्रविरुद्ध व्यवस्था ।

अव्यवस्थित–वि० (सं०) व्यवस्थाहीन; शास्त्रमर्यादाके विरुद्ध; अस्थिर । **–चित्त**–वि० जिसके विचार बदलते रहें, अस्थिरचित्त ।

अव्यवहार्य–वि० (सं०) व्यवहारके अयोग्य, जो काममें न लाया जा सके; जिसके साथ खान-पानका व्यवहार न रखा जा सके, जातिच्युत ।

अव्यवहित–वि० (सं०) व्यवधानरहित, लगा हुआ; प्रकट ।

अव्यवहृत–वि० (सं०) जो व्यवहारमें न लाया गया हो ।

अव्यसन–वि० (सं०) व्यसनहीन, जिसे कोई बुरी लत न लगी हो । पु० व्यसनका अभाव ।

अव्याकृत–वि० (सं०) अव्यक्त, जो प्रकट न हुआ हो । पु० मूल प्रकृति (सं०); जगत्का कारणरूप अज्ञान । **–धर्म**– पु० वह स्वभाव जिसमें शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके काम किये जा सकें (बौ०)।

अव्याख्यात–वि० (सं०) जिसकी व्याख्या या स्पष्टीकरण न किया गया हो ।

अव्याख्येय–वि० (सं०) जिसकी व्याख्या न हो सके; जो समझमें आने योग्य न हो ।

अव्याघात–वि० (सं०) बे-रोक; लगातार होनेवाला ।

अव्याज–वि० (सं०) बिना छल-कपटका । पु० छल-कपटका अभाव, सरलता; ईमानदारी ।

अव्यापन्न–वि० (सं०) जो मरा न हो, जीवित ।

अव्यापार–पु० (सं०) कार्य, उद्यमका अभाव; अपनेसे संबंध न रखनेवाला काम ।

अव्यापी(पिन्)–वि० (सं०) जो सर्वव्यापी न हो; सीमित, परिच्छिन्न; जो सामान्य न हो, विशेष ।

अव्याप्त–वि० (सं०) जो सर्वत्र व्याप्त न हो; परिच्छिन्न ।

अव्याप्ति–स्त्री० (सं०) अधूरी व्याप्ति; लक्षणका लक्ष्यपर घटित न होना (न्या०) ।

अव्याप्य–वि० (सं०) व्याप्तिरहित, जो सारी स्थितिके लिए लागू न हो । **–वृत्ति**–स्त्री० वह वृत्ति जो देश-कालकी दृष्टिसे सीमित हो, व्यापक न हो (दुःख-सुख, द्वेष-प्रेम आदिके संबंधमें प्रयुक्त) ।

अव्यावृत–वि० (सं०) अविभक्त, अटूट, अविच्छिन्न ।

अव्याहत–वि० (सं०) व्याघातरहित; अबाधित; अखंडित, अटूट ।

अव्युच्छिन्न–वि० (सं०) अव्याहत; अबाधित; अटूट ।

अव्युत्पन्न–वि० (सं०) अकुशल, अदक्ष, अनुभवहीन; जो (शब्द) व्याकरणसे सिद्ध न हो सके; व्युत्पत्तिरहित । पु० व्याकरण न जाननेवाला व्यक्ति ।

अव्रण–वि० (सं०) अक्षत; बिना चोटका; जो चोट आदिके कारण खराब न हुआ हो (खड्ग, दंडादि) । पु० आँखका एक रोग ।

अव्रत–वि० (सं०) शास्त्र विहित नियमों, कर्तव्योंका पालन न करनेवाला, व्रतहीन । पु० व्रतत्याग (जै०) ।

अव्रत्य–पु० (सं०) धार्मिक कर्तव्यका उल्लंघन ।

अव्वल–वि० (अ०) पहला, प्रथम; सर्वश्रेष्ठ । पु० आदि, आरंभ । **–तो**–पहले तो, प्रथमतः । **मु० –आना,–रहना**–प्रतियोगितामें सर्वप्रथम आना ।

अव्वलन्–अ० (अ०) प्रथमतः ।

अशंकितअशंक, –वि० (सं०) शंकारहित; निर्भय; निरापद ।

अशंभु–पु० (सं०) अकल्याण; अहित; अमंगल ।

अशकुंभी–स्त्री० (सं०) एक जलीय पौधा ।

अशकुन–पु० (सं०) असगुन, अशुभ लक्षण ।

अशक्त–वि० (सं०) शक्तिहीन, कमजोर; असमर्थ; अयोग्य ।

अशक्ति–स्त्री० (सं०) निर्बलता; असामर्थ्य; बुद्धिका बेकाम होना (सां०) ।

अशक्य–वि० (सं०) जो न हो सके, असाध्य; जो काबूमें न किया जा सके ।

अशत्रु–वि० (सं०) शत्रुरहित; जिसका शत्रुओंकी ओरसे विरोध न हो । पु० चंद्रमा; शत्रुरहित होनेकी अवस्था ।

अशन–पु० (सं०) भोजन; भोज्य पदार्थ; भक्षण; पहुँचना; पार जाना; व्याप्ति, प्रवेश; चीता, चित्रककी लकड़ी; भिलावाँ; असन वृक्ष । **–पर्णी**–स्त्री० पटसन ।

अशनाया–स्त्री० (सं०) भोजनेच्छा, भूख ।

अशनायित–वि० (सं०) भूखा ।

अशनि–पु० (सं०) वज्र, बिजली; अस्त्र; स्वामी; इंद्र; अग्नि ।

अशब्द–वि० (सं०) जो शब्दोंमें व्यक्त न हुआ हो; मूक; शब्द-रहित; अवैदिक । पु० ब्रह्म; (नाटवर्ड्स) नयी समीक्षाकी एक पद्धति जो कवितामें शब्दातीत अर्थके आग्रहसे अशब्दकी हिमायत करती है ।

अशरण–वि० (सं०) आश्रयहीन, असहाय । **–शरण**–वि० अशरण-को शरण देनेवाला (भगवान्) ।

अशरफ़–वि० (फ़ा०) बहुत शरीफ, उच्च ।

अशरफ़ी–स्त्री० (फ़ा०) सोनेका सिक्का, मुहर; दे० 'गुलअशर्फ़ी' ।

अशरा–पु० (अ०) महीनेका दसवाँ दिन; मुहर्रमका दसवाँ दिन ।

अशराफ़–पु० (फ़ा०) भले और प्रतिष्ठित लोग ('शरीफ़'का बहु०) ।

अशरीर–वि० (सं०) शरीररहित, निराकार । पु० परमात्मा; कामदेव; सन्यासी ।

अशरीरी(रिन्)–त्रि० (सं०) शरीरहीन; अपार्थिव । पु० ब्रह्मा; देवता ।

अशर्फ़ी–स्त्री० दे० 'अशरफ़ी' ।

अशर्म(न्)–पु० (सं०) कष्ट, दुःख; शोक । वि० दुःखी; शोक-ग्रस्त, अशांत ।

अशस्त्र–वि० (सं०) शस्त्रहीन, निःशस्त्र । पु० शस्त्र नहीं ।

अशांत–वि० (सं०) शांतिरहित, बेचैन, उद्विग्न; असंतुष्ट, अस्थिर; अपवित्र; अधार्मिक ।

अशांति–स्त्री० (सं०) बेचैनी; क्षोभ, खलबली ।

अशाखा–स्त्री० (सं०) शूली तृण ।

अशाम्य–वि॰ (सं॰) जो शांत न किया जा सके (वैर आदि)।

अशालीन–वि॰ (सं॰) विनयहीन, ढीठ।

अशासन–पु॰ (सं॰) शासनका अभाव; अव्यवस्था; अराजकता। वि॰ शासनहीन।

अशास्त्रीय–वि॰ (सं॰) शास्त्रविरुद्ध, अविहित।

अशिक्षित–वि॰ (सं॰) अपढ़, गँवार।

अशित–वि॰ (सं॰) खाया हुआ।

अशित्र–पु॰ (सं॰) चोर।

अशिर–पु॰ (सं॰) अग्नि; सूर्य; वायु; हीरा; एक राक्षस।

अशिव–वि॰ (सं॰) अकल्याणकर; अमंगल-सूचक; डरावना। पु॰ अमंगल; दुर्भाग्य; अहित।

अशिशु–वि॰ (सं॰) संतानहीन। पु॰ शिशुत्वका अभाव, तारुण्य।

अशिश्विका, अशिश्वी–स्त्री॰ (सं॰) निःसंतान स्त्री; बिना बच्चेकी गाय।

अशिष्ट–वि॰ (सं॰) शिष्टतारहित, असभ्य, उजड्ड; अविनीत; अधार्मिक; अविहित।

अशिष्टता–स्त्री॰ (सं॰) अशिष्ट व्यवहार, असभ्यता, उजड्डपन।

अशीत–वि॰ (सं॰) ठंढा नहीं, गरम। **–कर,–रश्मि**–पु॰ सूर्य।

अशीति–स्त्री॰ (सं॰) ८०, अस्सीकी संख्या।

अशीतिक–वि॰ (सं॰) ८० बरसका, अस्सीसाला।

अशील–वि॰ (सं॰) शीलरहित; अशिष्ट; उद्दंड; उदासीन। पु॰ उद्दंडता, अशिष्टता।

अशुचि–वि॰ (सं॰) अपवित्र, नापाक; मैला; काला। स्त्री॰ अपवित्रता; अपकर्ष।

अशुद्ध–वि॰ (सं॰) अपवित्र, नापाक; साफ न किया हुआ, अशोधित; सदोष; गलत। **–वासक**–पु॰ संशयालु व्यक्ति।

अशुद्धि–स्त्री॰ (सं॰) अशुद्धता; गलती; गंदगी।

अशुन*–पु॰ अश्विनी नक्षत्र।

अशुभ–वि॰ (सं॰) अमंगलकारी; अनिष्टसूचक; अपवित्र; भाग्यहीन। पु॰ अमंगल; पाप; दुर्भाग्य।

अशुश्रूषा–स्त्री॰ (सं॰) अभिभावककी आज्ञामें न रहनेका अपराध।

अशून्य–वि॰ (सं॰) खाली नहीं, पूरा किया हुआ। **–शयन**–पु॰, **–शयनद्वितीया**–स्त्री॰, **–शयनव्रत**–पु॰ श्रावणकृष्ण द्वितीयाको होनेवाला एक व्रत।

अशृत–वि॰ (सं॰) अपक्व, कच्चा।

अशेव–वि॰ (सं॰) आनंददायक।

अशेष–वि॰ (सं॰) संपूर्ण, समूचा; सबका सब; अपार; असंख्य। **–साम्राज्य**–पु॰ शिव।

अशेषता–स्त्री॰ (सं॰) समग्रता।

अशैक्ष–पु॰ (सं॰) अर्हत् (जो अब शिक्षार्थी न हो)।

अशोक–वि॰ (सं॰) शोकरहित। पु॰ एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ लहरदार और सुंदर होती हैं और विशेषकर बंदनवार बाँधनेमें काम आती हैं; कटुक; राजा दशरथका एक मंत्री; मौर्यवंशका एक यशस्वी सम्राट्; विष्णु। **–पूर्णिमा**–स्त्री॰ फाल्गुनकी पूर्णिमा। **–मंजरी**–स्त्री॰ एक छंद; अशोकका पुष्प। **–रोहिणी**–स्त्री॰ कटुकी। **–वनिकान्याय**–पु॰ वस्तुविशेषको तरजीह देनेका कारण न बताया जा सकना (रावणने सीताको और किसी चीजके बागमें न रखकर अशोकवाटिकामें ही क्यों रखा, यह बताना कठिन है)। **–वाटिका**–स्त्री॰ अशोककी बाड़ी; वह बगीचा जहाँ रावणने सीताको कैद कर रखा था। **–षष्ठी**–स्त्री॰ चैत्र-शुक्ला षष्ठी।

अशोका–स्त्री॰ (सं॰) अशोककी कली; पारा।

अशोकारि–पु॰ (सं॰) कदंब।

अशोकाष्टमी–स्त्री॰ (सं॰) चैत्र-शुक्ला अष्टमी।

अशोच–पु॰ (सं॰) चिंताका अभाव; शांति; नम्रता।

अशोच्य–वि॰ (सं॰) शोक न करने योग्य।

अशोधित–वि॰ (सं॰) जिसका शोधन या संस्कार न हुआ हो, साफ न किया हुआ। **–शेष**–पु॰ (अनरिडीम्ड बैलेंस) किसी ऋण आदिका वह बचा हुआ अंश जिसका भुगतान या अदायगी न हुई हो।

अशोभक–पु॰ (सं॰) माणिक्यका एक दोष, दे॰ 'लहसुन'।

अशोभन–वि॰ (सं॰) असुंदर, अभद्र, न फबनेवाला।

अशोचनीय–वि॰ (सं॰) जो सुन्दर न लगे; अनुचित, अभद्रोचित; अवांछनीय, गर्हित।

अशौच–पु॰ (सं॰) अपवित्रता, नापाकी; जन्म-मरणके कारण कुटुंबियों और सपिंड जनोंको लगनेवाली छूत। **–संकर**–पु॰ दो या अधिक अशौचोंका एकमें मिल जाना।

अश्मंत–पु॰ (सं॰) चूल्हा; खेत; मृत्यु; एक मरुत्। वि॰ अशुभ; असीम।

अश्मंतक–पु॰ (सं॰) चूल्हा; दीपाधार; मूंजकी तरहकी एक घास जिससे ब्राह्मणकी मेखला बनायी जाती थी; लिसोड़ा; पाषाणभेद; कचनार।

अश्म–पु॰ दे॰ 'अश्मा'।

अश्मक–पु॰ (सं॰) एक प्राचीन जनपद, तिरुवांकुर; वहाँके निवासी।

अश्मर–वि॰ (सं॰) पथरीला; पत्थर-संबंधी।

अश्मरी–स्त्री॰ (सं॰) पथरी नामक रोग। **–घ्न,–भेदन**–पु॰ वरुण वृक्ष। **–हर**–पु॰ वृक्षविशेष।

अश्मा(श्मन्)–पु॰ (सं॰) पहाड़; पत्थर; चकमक; बादल; सोनामाखी; लोहा। **–(श्म)कदली**–स्त्री॰ काष्ठकदली। **–कीट**–पु॰ नारकीट। **–केतु**–पु॰ क्षुद्र पाषाणभेदी नामक पौधा। **–गर्भ**–पु॰ मरकत। **–ज**–पु॰ लोहा; गेरू; शिलाजतु। **–जतु, –जतुक**–पु॰ शिलाजतु। **–जाति**–स्त्री॰ पन्ना। **–भाल**–पु॰ लोहे आदिका खल। **–भेद**–पु॰ पाषाणभेदी पौधा। **–योनि**–पु॰ मरकत। **–सार**–पु॰ लोहा।

अश्मीर–पु॰ (सं॰) दे॰ 'अश्मरी'।

अश्मोत्थ–पु॰ (सं॰) शिलाजतु।

अश्र–पु॰ (सं॰) आँसू; रक्त। **–प**–पु॰ राक्षस, नरभक्षक।

अश्रद्ध–वि॰ (सं॰) श्रद्धाहीन; अविश्वासी।

अश्रद्धा–स्त्री॰ (सं॰) श्रद्धाका अभाव; अविश्वास।

अश्रद्धेय–वि॰ (सं॰) जो श्रद्धाके योग्य न हो।

अश्रवण–वि॰ (सं॰) कर्णहीन; बहरा। पु॰ साँप; बहरापन।

अश्रांत–वि॰ (सं॰) न थका हुआ, अथक। पु॰ विश्रामाभाव।

अश्राव्य–वि॰ (सं॰) न सुनने योग्य; जो सुना न जा सके। पु॰ स्वगत कथन।

अश्रि, अश्री–स्त्री॰ (सं॰) कोना; नोक, अनी; धार।

अश्रीक–वि॰ (सं॰) श्रीहीन, विवर्ण; भाग्यहीन।

अश्रु–पु॰ (सं॰) आँसू। **–कला**–स्त्री॰ अश्रुबिंदु। **–गैस**–स्त्री॰ (टीयरगैस) एक तरहकी जहरीली गैस जो आँखोंमें-लगनेसे तेज जलन पैदा कर देती है जिससे आँसू निकल पड़ते हैं और देखनेमें कठिनाई होती है (इसका प्रयोग पुलिस द्वारा उपद्रवोन्मुख भीड़को तितर-बितर करने और कभी-कभी युद्धस्थलमें शत्रु-सेनाकी बाढ़ रोकनेके लिए किया जाता है)। **–पात**–पु॰ आँसू गिरना; रोना। **–मुख**–वि॰ रुआँसा; एकाएक रो पड़नेवाला।

अश्रुत–वि॰ (सं॰) न सुना हुआ; विद्याहीन, अशिक्षित; अवैदिक। **–पूर्व**–वि॰ पहले न सुना हुआ; अद्भुत।

अश्रुति–वि॰ (सं॰) कर्णहीन। स्त्री॰ न सुनना; विस्मृति। **–धर**–वि॰ वेदोंको न जाननेवाला; ध्यान न देनेवाला; याद न रखनेवाला।

अश्रेय(स्)–पु॰ (सं॰) बुराई; अकल्याण; दुःख। वि॰ निकम्मा; हीनतर; अकल्याणकर।

अश्रौत–वि॰ (सं॰) अवैदिक, अवेदोक्त।

अश्लाघ्य–वि॰ (सं॰) प्रशंसाके अयोग्य; निंद्य।

अश्लिष्ट–वि॰ (सं॰) श्लेषरहित, जिससे एकाधिक अर्थ न निकलते हों; असंयुक्त; असंगत।

अश्लील–वि॰ (सं॰) भद्दा; ग्राम्य; गंदा; लज्जा, घृणा या अमंगलकी व्यंजना करनेवाला। **–साहित्य**–पु॰ किसी भी देश कालके प्रचलित नारी-पुरुष संबंधोंके विषयमें निश्चित धारणाओं या नियमोंके विरुद्ध उन्मुक्त संबंधोंका चित्रण करनेवाला साहित्य।

अश्लीलता–स्त्री॰ (सं॰) भद्दापन; ग्राम्यता; रचनामें अश्लील शब्दोंका प्रयोग।

अश्लेष–वि० (सं०) श्लेषरहित, जिसमें दुहरा अर्थ न हो।

अश्लेषा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र। **–भव,–भू**–पु० केतु ग्रह।

अश्वंत–वि० (सं०) अभागा; अशुभ; असीम। पु० मृत्यु; क्षेत्र; आग रखनेकी जगह; हद, समाप्ति।

अश्व–पु० (सं०) घोड़ा; ७ की संख्या (सूर्यके रथके घोड़ोंकी संख्या सात मानी गयी है)। **–कंदा,–कंदिका**–स्त्री० अश्वगंधा। **–कर्ण,–कर्णक**–पु० एक तरहका शाल वृक्ष; घोड़ेका कान; अस्थिभंगका एक प्रकार। **–कुटी**–स्त्री० घुड़साल। **–कुशल, –कोविद**–वि० घोड़ेको सधाने, सिखानेमें कुशल। **–क्रंद**–पु० एक तरहका पक्षी; देवताओंकी सेनाका एक नायक। **–क्रांता**–स्त्री० संगीतमें एक मूर्च्छना। **–खरज**–पु० खच्चर। **–खुर**–पु० घोड़ेका खुर; एक सुगंधित द्रव्य, नखी। **–खुरा,–खुरी**–स्त्री० अश्वगंधा। **–गंधा**–स्त्री० असगंध। **–गति**–स्त्री० घोड़ेका कदम; एक वृत्त; चित्रकाव्यका एक चक्र। **–गोयुग**–पु० घोड़ोंकी जोड़ी। **–गोष्ठ**–पु० अस्तवल। **–ग्रीव**–पु० हयग्रीव नामका दानव; विष्णुका एक अवतार। **–घ्न**–पु० करवीर पुष्प, कनेर। **–चक्र**–पु० घोड़ोंका समूह; एक तरहका पहिया; घोड़ेके चिह्नोंसे शुभाशुभका विचार। **–चिकित्सा**–स्त्री० पशुचिकित्सा-शास्त्र। **–दंष्ट्रा**–स्त्री० गोखरू। **–दूत**–पु० घुड़सवार दूत। **–नाय**–पु० घोड़ोंका चरवाहा। **–निबंधिक,–पाल,–पालक,–रक्ष**–पु० साईस। **–पति**–पु० घुड़सवार; घोड़ोंका मालिक; भरतके मामा। **–पुच्छी**–स्त्री० माषपर्णी। **–बंध**–पु० एक चित्रकाव्य; साईस। **–बला**–स्त्री० मेथी। **–बाल**–पु० काश। **–भा**–स्त्री० बिजली। **–मार,–मारक,–हंता(तृ)**–पु० करवीर, कनेर। **–माल**–पु० एक तरहका साँप। **–मुख**–पु० किन्नर, गंधर्व। **–मेध**–पु० एक प्रसिद्ध वैदिक यज्ञ जिसे कोई चक्रवर्ती राजा या सम्राट् ही कर सकता था और जिसमें सभी देशोंका भ्रमण करके लौटनेवाले घोड़ेको मारकर उसकी चर्वीसे हवन किया जाता था; एक तान जिसमें षड्ज स्वर नहीं लगता। **–मेधिक**–वि० अश्वमेधसे संबंध रखनेवाला। पु० अश्वमेधके योग्य घोड़ा; महाभारतका चौदहवाँ पर्व। **–मेधीय**–वि० अश्वमेध-संबंधी। पु० अश्वमेधके योग्य। घोड़ा। **–युक्(ज्)**–वि० जिसमें घोड़ा जुता हो (रथ); अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्न। स्त्री० अश्विनी नक्षत्र; आश्विन मास। **–यूप**–पु० अश्वमेधके घोड़ेको बाँधनेका खूँटा। **–योग**–पु० घोड़ेको रथादिमें जोतना; घोड़ेकी तरह तेजीसे पहुँचना। **–रोधक**–पु० कनेर। **–लक्षण**–पु० घोड़ेके भले-बुरे लक्षण। **–ललित**–पु० एक वृक्ष। **–लाला**–स्त्री० एक तरहका साँप। **–वक्त्र**–पु० किन्नर, गंधर्व। **–वह, वाह, –वाहक**–पु० घुड़सवार। **–वार, –वारक**–पु० घुड़सवार; साईस। **–विद्**–वि० दे० 'अश्वकोविद'। पु० राजा नल। **–व्यूह**–पु० घुड़सवार सेनाको सामने और अगल-बगल रखकर रचा हुआ व्यूह। **–शंकु**–पु० घोड़ा बाँधनेका खूँटा। **–शक, –शकृत्**–पु० घोड़ेकी लीद। **–शक्ति**–स्त्री० (हार्सपावर) उतनी शक्ति जितनी प्रति सेकंड ५५० पौंड (= ६॥। मन) वजनको एक फुट ऊपर उठानेके लिए आवश्यक होती है = ७४६ वॉट। **–शाला**–स्त्री० घुड़साल। **–शास्त्र**–पु० घोड़ेके शुभाशुभ लक्षण बतानेवाला शास्त्र, शालिहोत्र। **–साद, –सादी-(दिन्)**–पु० घुड़सवार। **–हृदय**–पु० घोड़ेका चिकित्साशास्त्र; घुड़सवारी।

अश्वक–पु० (सं०) छोटा घोड़ा; लावारिस घोड़ा; घोड़ा।

अश्वकिनी–स्त्री० (सं०) अश्विनी नक्षत्र।

अश्वतर–पु० (सं०) खच्चर; एक सर्पराज; एक गंधर्ववर्ग।

अश्वत्थ–पु० (सं०) पीपल; पीपलका गोदा; पीपलमें फल लगनेका समय; सूर्यका एक नाम; अश्विनी नक्षत्र। नवलेखनमें प्रयुक्त एक व्यंग्यात्मक प्रतीक जो दुनियाको ऊल-जलूल बतानेके लिए प्रयुक्त होता है। ऊपर जड़, नीचे शाखाका अभिप्राय प्रतिकूल या उल्टा माना गया है।

अश्वत्था–स्त्री० (सं०) आश्विन-पूर्णिमा (जिस मासमें पीपलके फल पकते हैं)।

अश्वत्थाम–वि० (सं०) घोड़ेकी-सी शक्तिवाला।

अश्वत्थामा(मन्)–पु० (सं०) महाभारतमें कौरवपक्षका एक महारथी, द्रोणाचार्यका पुत्र; महाभारतमें हत एक हाथी।

अश्वत्थी–स्त्री० (सं०) छोटा पीपल; पीपलकी शक्लका एक छोटा पेड़।

अश्वल–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि।

अश्वस्तन, अश्वस्तनिक–वि० (सं०) आजसे ही संबंध रखनेवाला; अगले दिनके खानेका ठिकाना न रखनेवाला।

अश्वांतक–पु० (सं०) कनेर।

अश्वाक्ष–पु० (सं०) देवसर्षप नामक पौधा; घोड़ेकी आँख।

अश्वाजनी–स्त्री० (सं०) चाबुक।

अश्वाध्यक्ष–पु० (सं०) घुड़सवार सेनाका नायक।

अश्वानीक–स्त्री० (सं०) घुड़सवार सेना, रिसाला।

अश्वायुर्वेद–पु० (सं०) अश्व-चिकित्सा-शास्त्र, शालिहोत्र।

अश्वारि–पु० (सं०) भैंसा; कनेर।

अश्वारूढ, अश्वारोही(हिन्)–वि० (सं०) जो घोड़ेपर सवार हो।

अश्वारोह–वि० (सं०) दे० 'अश्वारूढ़'। पु० घुड़सवार; घुड़सवारी।

अश्वारोहक–पु० (सं०) असगंध।

अश्विनी–स्त्री० (सं०) घोड़ी; २७ नक्षत्रोंमेंसे पहला नक्षत्र; जटामासी। **–कुमार, –पुत्र, –सुत**–पु० सूर्यकी पत्नी प्रभाके घोड़ीका रूप ग्रहण कर लेनेपर उससे उत्पन्न दो पुत्र जो देवताओंके वैद्य माने जाते हैं, स्ववैद्य।

अश्वियुगल–पु० (सं०) दो कल्पित देवता जो किसी-किसीके मतसे अश्विनीकुमार भी माने जाते हैं।

अश्वीय–वि० (सं०) अश्व-संबंधी; घोड़ेके लिए हितकर।

अषडक्षीण–वि० (सं०) जिसे दोके अलावा तीसरेने न देखा या जाना हो। पु० गुप्त भेद; दो आदमियोंके बीचकी मंत्रणा।

अषाढ–पु० (सं०) दे० 'आषाढ'।

अषाढक–पु० (सं०) आषाढ मास।

अष्ट(न्)–पु० (सं०) आठकी संख्या। वि० ७से १ अधिक या ९ से १ कम, आठ। **–कमल**–पु० हठयोगमें मूलाधारसे मस्तकतक माने गये आठ चक्र। **–कर्ण**–पु० ब्रह्मा। **–कुल**–पु० पुराणोंमें बताये गये सर्पोंके आठ कुल—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक। **–कृष्ण**–पु० वल्लभ-संप्रदायमें माने गये कृष्णके आठ रूप–श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन। **–कोण**–वि० अठकोना, अठपहल। **–गंध**–पु० पूजनमें व्यवहृत आठ सुगंधित वस्तुओंका समूह, गंधाष्टक। **–ग्रही**–स्त्री० (सं०) ज्योतिषका एक योग जिसमें आठ ग्रहोंके एक राशिमें एकत्र हो जानेसे व्यापक कष्ट होता है। **–छाप**–(हिं०) गोसाईं विट्ठलनाथजी द्वारा स्थापित आठ कवियोंका दल, जिनके नाम ये हैं–सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास। **–ताल**–पु० संगीतके आठ ताल। **–दल**–वि० अठपहला, अठकोना। पु० आठ दलोंका कमल। **–द्रव्य**–पु० यज्ञकी सामग्रीके आठ द्रव्य–पीपल, गूलर, पाकड़, बरगद, तिल, सरसों, पायस और घृत। **–धाती**–वि० (हिं०) जिसके माता-पिताका ठीक पता न हो, वर्णसंकर। **–धातु**–स्त्री० आठ मुख्य धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा। **–नायिका**–स्त्री० दुर्गाकी ये आठ शक्तियाँ–उग्रचंडा, प्रचंडा, चंडोग्रा, चंडनायिका, अतिचंडा, चामुंडा, चंडा, चंडवती। **–पत्र**–पु० आठ दलोंका कमल। **–पद**–वि० आठ पैरोंवाला। पु० मकड़ा; कीड़ा; शरभ; सिटकिनी; बिसात; सोना; कैलास। **–पदी**–स्त्री० एक छंद; एक प्रकारका गीत; एक तरहकी चमेली; बेलेका फूल और पौधा। **पाद**–वि० आठ पैरोंवाला। पु० शरभ; मकड़ा। **–प्रकृति**–स्त्री० राज्यके आठ प्रधान कर्मचारी–सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि, अथवा आठ अंग–राजा, राष्ट्र, अमात्य, दुर्ग, बल (सेना), कोष, सामंत और प्रजा–(नी० शा०)। **–प्रधान**–पु० आठ प्रकारके मंत्री–प्रधान, अमात्य, सचिव, मंत्री, धर्माध्यक्ष, न्यायशास्त्री, वैद्य और सेनापति। **–भुज–**
–बाहु–पु० आठ बाहुओंवाला एक जलजन्तु (ऑक्टोपस)।

पु० (ऑक्टेगॉन) आठ भुजाओं या आठ कोणोंवाली आकृति। **–भुजा, –भुजी**– स्त्री० दुर्गा। **–मंगल**–पु० सिंह, वृष, हाथी, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी और दीपक–ये आठ अथवा–ब्राह्मण, गाय, अग्नि, सोना, घी, सूर्य, जल और राजा (जो मांगलिक माने जाते हैं)। **–मुष्टि**–स्त्री० एक माप, कुडव। **–मूर्ति**–पु० शिव (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र और ऋत्विक्–इन आठ रूपोंवाले)। **–लोह, –लोहक**–पु० दे० 'अष्टधातु'। **–वर्ग**–पु० शुभाशुभ जाननेका एक चक्र; वर्णमालाके आठ वर्ग; आयुर्वेदोक्त आठ ओषधियोंका समूह–जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि; नीतिशास्त्रानुसार राज्यके अंगभूत ऋषि, वस्ती, दुर्ग, सेतु, हस्तिबंधन, खान, करग्रहण तथा सैन्यसंस्थापन। **–वर्षा**–स्त्री० आठ बरसकी कन्या। **–श्रवण, –श्रवा(स्)**–पु० ब्रह्मा। **–सिद्धि**–स्त्री० योगसिद्धिसे मिलनेवाली आठ सिद्धियाँ या अलौकिक शक्तियाँ–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

अष्टक–पु० (सं०) आठ वस्तुओं, पद्यों आदिका समूह या योग; आठ ऋषियोंका एक गण; आठ अवगुणोंका समूह–पिशुनता, साहस, द्रोह, ईर्ष्या, असूया, अर्थदूषण, वाग्दंड तथा पारुष्य (मनु०); विश्वामित्रका एक पुत्र; अष्टाध्यायी (व्या०)।

अष्टका–स्त्री० (सं०) अष्टमी; अगहन, पूस, माघ और फागुनकी कृष्णाष्टमी; अष्टमीको किया जानेवाला यज्ञ या श्राद्ध।

अष्टम, अष्टमक–वि० (सं०) आठवाँ।

अष्टमिका–स्त्री० (सं०) चार तोलेका एक परिमाण।

अष्टमी–स्त्री० (सं०) सित या असित पक्षकी आठवीं तिथि; क्षीरकाकोली।

अष्टांग–वि० (सं०) जिसके आठ अंग या भाग हों। पु० शरीरके वे आठ अंग जिनसे साष्टांग प्रणाम किया जाता है–घुटना, हाथ, पाँव, छाती, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि। इन आठ पदार्थोंसे युक्त अर्घ्य–जल, दूध, घृत, मधु, दही, रक्त चंदन, कनेर तथा कुशा। **–मार्ग**–पु० बुद्ध द्वारा उपदिष्ट दुःखनिवृत्तिका आठ अंगोंवाला मार्ग–सम्यग्दृष्टि, सम्यक्संकल्प, सम्यग्वाक्, सम्यक्कर्म, सम्यगाजीव, सम्यग्व्यायाम, सम्यक्स्मृति और सम्यक्समाधि। **–योग**–पु० योगके आठ अंग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

अष्टांगायुर्वेद–पु० (सं०) आयुर्वेदके आठ अंग या विभाग–शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और वाजीकरण।

अष्टाक्षर–वि० (सं०) आठ अक्षरोंवाला। पु० 'ॐ नमो नारायणाय' मंत्र।

अष्टादश–वि० (सं०) अट्ठारह।

अष्टाध्यायी–स्त्री० (सं०) पाणिनिकृत व्याकरण-ग्रंथ।

अष्टाध्यायी(यिन्)–वि० (सं०) आठ अध्यायोंवाला।

अष्टावक्र–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि जिनके अंग टेढ़े-मेढ़े थे। वि० जिसके आठ अंग टेढ़े हों; कुरूप। **–गीता**–स्त्री० अष्टावक्र ऋषि-रचित तत्त्वज्ञानका एक प्रमुख ग्रंथ।

अष्टि–स्त्री० (सं०) १६ मात्राओंका एक छंद; सोलहकी संख्या; बीज; गिरी।

अष्टी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

अष्ठीला–पु० (सं०) एक रोग जिसमें नाभिके नीचे शोथ हो जाता है; एक रोग जिसमें पुरःस्थ ग्रंथिके बढ जानेसे मूत्रमें रुकावट होने लगती है। गुर्देकी एक बीमारी; गिरी; बीज; पत्थरकी गोली।

अष्ठीलिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका व्रण; पत्थर।

असंक*–वि० दे० 'अशंक'।

असंका–स्त्री० दे० 'आशंका'; अनुचित शंका।

असंकुल–वि० (सं०) जहाँ भीड़ न हो; खुला हुआ; चौड़ा। पु० चौड़ी सड़क।

असंक्रांत–वि० (सं०) जिसका संक्रमण न हुआ हो, जो एक क्षेत्रसे दूसरेमें न गया हो। पु० अधिक मास।

असंक्रांतिमास–पु० (सं०) वह महीना जिसमें संक्रांति न पड़े, अधिक मास, मलमास।

असंख*–वि० दे० 'असंख्य'।

असंख्य, असंख्यक, असंख्यात–वि० (सं०) अगणित, बे-हिसाब, बे-शुमार।

असंख्येय–वि० (सं०) अगणित, बेशुमार। पु० शिव; विष्णु; बहुत बड़ी संख्या।

असंग–वि० (सं०) अनासक्त, बंधनरहित, निर्लिप्त; अकेला; अबाधित। पु० अनासक्ति; पुरुष, आत्मा (सां०)। **–चारी(रिन्)**–वि० अनियंत्रित रूपसे विचरण करनेवाला।

असंगत–वि० (सं०) बे-मेल, असंबद्ध, प्रसंगविरुद्ध; अनुचित, अयुक्त; असमान; उजड्ड।

असंगति–स्त्री० (सं०) मेलका न होना, अनौचित्य; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें कार्य-कारण, देश-काल-संबंधी असंगति (अन्यथात्व)का वर्णन किया जाय–कार्य कहीं, कारण कहीं दिखाया जाय। **–प्रदर्शन**–पु० (रिडक्शियो एबसर्डम) किसी तर्ककी असंगति दिखला देना, विसंगतिप्रमाण।

असंगम–पु० (सं०) अनासक्ति; मेल या संबंधका अभाव; पार्थक्य; असामंजस्य। वि० अयुक्त, पृथक्।

असंगी(गिन्)– वि० (सं०) जो किसीके साथ न हो, किसीसे जिसका संबंध न हो।

असंचय–वि० (सं०) संभारहीन, जिसके पास आवश्यक वस्तुएँ मौजूद न हों। पु० संचय या संभारका अभाव।

असंचयिक, असंचयी(यिन्)–वि० (सं०) संचय न करनेवाला।

असंचर–पु० (सं०) वह जो गमनागमनके लिए खुला मार्ग नहीं है।

असंछन्न–वि० (सं०) जो ढका न हो, अनावृत।

असंज्ञ–वि० (सं०) संज्ञाहीन, अचेतन; नामरहित।

असंज्ञा–स्त्री० (सं०) असामंजस्य; नामका न होना।

असंज्वर–वि० (सं०) जिसे क्रोध, शोकादि न हो।

असंत–वि० असाधु, खल।

असंतति, असंतान–वि० (सं०) संतानरहित, लावल्द।

असंतुष्ट–पु० (सं०) अतृप्त; अप्रसन्न।

असंतोष–पु० (सं०) अतृप्ति; अप्रसन्नता, नाराजगी; बेसब्री; लोभ।

असंतोषी(षिन्)–वि० (सं०) संतुष्ट न रहनेवाला; बेसब्र; लोभी।

असंदिग्ध–वि० (सं०) संदेहरहित; निश्चित, पक्का।

असंधि–वि० (सं०) जिनका योग न हुआ हो (शब्द); अबद्ध, स्वतंत्र। स्त्री० संधिका अभाव।

असंपत्ति–वि० (सं०) निर्धन; भाग्यहीन। स्त्री० निर्धनता; दुर्भाग्य; असफलता।

असंपर्क–पु० (सं०) संबंध-लगावका न होना। वि० संपर्कहीन, संबंधहीन।

असंपृक्त–वि० (सं०) जो किसीके साथ मिला या सटा न हो, संपर्करहित।

असंपूर्ण–वि० (सं०) अपूर्ण, असमाप्त, अधूरा।

असंप्रज्ञात–वि० (सं०) सम्यक् प्रकारसे न जाना हुआ। **–समाधि**–स्त्री० वह समाधि जिसमें ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञानका भेद नहीं रह जाता, निर्विकल्प समाधि।

असंबंध–वि० (सं०) दे० 'असंबद्ध'। पु० संबंधका अभाव।

असंबद्ध–वि० (सं०) संबंधहीन; बे-मेल; बे-लगाव; असंगत, बेतुका। **–प्रलाप**–पु० बे-तुकी बकवास।

असंबाध–वि० (सं०) संकीर्ण नहीं, चौड़ा; सुनसान; खुला हुआ; सावकाश; कष्टरहित।

असंबाधा–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

असंभव–वि० (सं०) न होने या हो सकनेवाला, नामुमकिन। पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें यह दिखाया जाय कि जो बात हो गयी उसका होना असंभव था; अनस्तित्व; असंभावना; असाधारण घटना।

असंभव्य, असंभावी(विन्)–वि० (सं०) दे० 'असंभव'।

असंभार–पु० (सं०) आवश्यक वस्तुओं या सहारेका प्रस्तुत न रहना। वि० जिसके पास आवश्यक वस्तुएँ प्रस्तुत न हों; बिना

सहारेका; * जो सँभाला न जा सके; विशाल; अपार।

असंभावना–स्त्री० (सं०) संभावनाका न होना; होने योग्य न होना; अशक्यता।

असंभावनीय, असंभाव्य–वि० (सं०) जिसके होनेकी आशा या संभावना न हो; असंभव।

असंभावित–वि० (सं०) जिसकी संभावना न रही हो; असंभव।

असंभाष्य–वि० (सं०) न कहने योग्य; वार्तालाप न करने योग्य। पु० कुवचन।

असंभूति–स्त्री० (सं०) अविद्यमानता, अनस्तित्व; पुनर्जन्म न होना; अव्याकृत प्रकृति।

असंभृत–वि० (सं०) प्राकृतिक, अकृत्रिम; जिसका पोषण समुचित रूपसे न हुआ हो।

असंभोज्य–वि० (सं०) जिसके साथ भोजन उचित न हो।

असंभ्रम–वि० (सं०) उतावली या व्याकुलतासे रहित, शांत। पु० धीरता; शांति।

असंयत–वि० (सं०) संयमरहित; अनियंत्रित; बंधनहीन।

असंयम–पु० (सं०) संयमका अभाव, मन, इंद्रिय आदिको वशमें न रखना; विलासिता।

असंयुक्त–वि० (सं०) विलग, न जुड़ा हुआ, जुदा।

असंयुत–वि० (सं०) न मिलाया हुआ, अमिश्र। पु० विष्णु।

असंयोग–पु० (सं०) योग या मेल न होना। वि० जिसके साथ संपर्क निषिद्ध हो।

असंरोध–पु० (सं०) अक्षति, क्षतिका अभाव।

असंलक्ष्य–वि० (सं०) जो लक्षित न हो सके, अबोधगम्य।

असंवाहक–वि० (नॉन कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका संवाहन, परिचालन न हो सके, जैसे रबड़।

असंवृत–वि० (सं०) जो ढका न हो, खुला हुआ। पु० एक नरक।

असंव्यवहित–वि० (सं०) अवकाशरहित, व्यवधानरहित।

असंशय–पु० (सं०) संशयका अभाव, संदेह, शकका न होना। वि० संशयशून्य, शंकारहित।

असंश्रव–वि० (सं०) जो सुनाई न दे।

असंश्लिष्ट–वि० (सं०) असंयुक्त। पु० शिव।

असंसक्त–वि० (सं०) अनासक्त; विभक्त।

असंसक्ति–स्त्री० (सं०) अनासक्ति; विरक्ति; संबंधका अभाव।

असंसदीय–वि० (अनपार्लिमेंटरि) दे० 'असांसद'।

असंसारी(रिन्)–वि० (सं०) जिसका संसारसे कोई संबंध न हो, विरक्त।

असंसारी–वि० जैसा इस संसारमें न देख पड़े, अलौकिक।

असंसृति–स्त्री० (सं०) पुनर्जन्म न होना, मोक्ष।

असंसृष्ट–वि० (सं०) जो दूसरेसे संबद्ध या मिला न हो; साथ न रहनेवाला।

असंस्कृत–वि० (सं०) संस्कारहीन, जिसका कोई संस्कार न हुआ हो; जो सँवारा-सुधारा न गया हो; असभ्य; व्याकरण-विरुद्ध।

असंस्तुत–वि० (सं०) अज्ञात, अप्रसिद्ध; विचित्र; सामंजस्यरहित; जिसकी संस्तुति न की गयी हो।

असंस्थान–पु० (सं०) अव्यवस्था; संबंध न होना; अभाव।

असंस्थित–वि० (सं०) अव्यवस्थित, क्रमरहित; असंगृहीत; अपूर्ण; चल।

असंस्थिति–स्त्री० (सं०) क्रम या व्यवस्थाका अभाव।

असंहत–वि० (सं०) असंयुक्त, ढीला; बिखरा हुआ। पु० पुरुष या आत्मा (सां०); एक तरहकी व्यूहरचना। **–व्यूह**–पु० छोटे-छोटे समूहोंमें सेनाको पृथक्-पृथक् स्थित करना।

अस*–वि० ऐसा; जैसा, समान, तुल्य।

असकताना–अ० क्रि० आलस्य (आसकत) अनुभव करना।

असकन्ना–पु० रेतीकी तरहका एक औजार।

असकल–वि० (सं०) असंपूर्ण।

असक्त–वि० (सं०) आसक्तिरहित, बे-लगाव; उदासीन। * अशक्त, दुर्बल।

असक्तारंभ–पु० (सं०) वह भूमि जिसमें अत्यल्प श्रमसे अन्न उत्पन्न हो; थोड़े परिश्रम और स्वल्प वृष्टिसे संपन्न होनेवाली उपज।

असक्थ–वि० (सं०) जिसे जाँघें न हों।

असगंध–पु० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है, अश्वगंधा।

असगर–वि० (अ०) बहुत छोटा।

असगुन–पु० अपशकुन।

असगुनियाँ†–पु० वह व्यक्ति जिसका मुँह देखना अशुभ मानते हों।

असगोत्र–वि० (सं०) भिन्न गोत्र या कुलका।

असच्छास्त्र–पु० (सं०) अधर्मकी ओर ले जानेवाला शास्त्र।

असजात्य–वि० (सं०) जिसके साथ रक्तसंबंध न हो।

असज्जन–पु० (सं०) बुरा, दुष्ट आदमी।

असढ़िया†–पु० साँपोंका एक भेद। वि० आषाढ मासका या आषाढमें होनेवाला।

असती–वि० स्त्री० (सं०) अपतिव्रता, पुंश्चली।

असत्–वि० (सं०) अविद्यमान, जिसका अस्तित्व न हो; मिथ्या; बुरा; अनुचित। पु० अनस्तित्व; अहित; मिथ्यात्व। **–कार्य**–पु० बुरा पेशा या काम। **–कृत्य**–वि० बुरा काम करनेवाला। **–ख्याति**–स्त्री० मिथ्या ज्ञान। **–पथ**–पु० बुरा मार्ग; खराब सड़क। **–परिग्रह, –प्रतिग्रह**–पु० निषिद्ध व्यक्तियोंका दिया हुआ या निषिद्ध वस्तुओंका दान लेना। **–पुत्र**–पु० पुत्रहीन मनुष्य; कपूत।

असत्कार–पु० (सं०) अनादर, आवभगत न होना; अहित।

असत्कृत–वि० (सं०) अनादृत; जिसके प्रति बुरा बर्ताव किया गया हो।

असत्ता–स्त्री० (सं०) सत्ताका अभाव, नेस्ती; असाधुता।

असत्त्व–वि० अशक्त, निर्बल; सत्त्वगुणरहित। पु० असत्ता; असाधुता।

असत्य–वि० (सं०) झूठ, मिथ्या, गलत। पु० गलत बात, झुठाई; झूठ बोलनेवाला व्यक्ति। **–वाद**–पु० झूठ बोलना। **–वादी(दिन्)**–वि० झूठ बोलनेवाला। **–शील**–वि० जिसकी झूठ बोलनेकी ओर प्रवृत्ति हो। **–संध**–वि० सत्यका पालन न करनेवाला; धोखा देनेवाला, छली, कमीना। **–सन्निभ**–वि० असत्य जैसा, असंभव-सा।

असत्यता–स्त्री० (सं०) झुठाई।

असद्–'असत्'का समासगत रूप। **–आगम**–पु० धर्म-विरुद्ध शास्त्र; अनुचित साधनोंसे धन प्राप्त करना; बुरा साधन। **–आचार**–पु० धर्म-विरुद्ध, नीति-विरुद्ध आचरण, अधर्म। **–बुद्धि**–वि० मूर्ख। **–भाव**–पु० अस्तित्वका अभाव, अनुपस्थिति; बुरी भावना; बुरा स्वभाव; नव्य न्यायानुसार एक दोष। **–वाद**–पु० सत्ताको कोई वस्तु न माननेका सिद्धांत। **–वृत्ति**–वि० दुराचारी, दुष्ट, बदमाश। स्त्री० दुष्टता; शठता। **–व्यवहार**–वि०, पु० दे० 'असद्वृत्ति'।

असदृश–वि० (सं०) असमान; अयोग्य, अनुचित।

असन*–पु० भोजन; (सं०) फेंकना, छोड़ना, चलाना (बाणादि); पीतशाल नामक वृक्ष। **–पर्णी**–स्त्री० सातल नामक वृक्ष।

असना–पु० वृक्षविशेष।

असनान*–पु० स्नान, नहाना।

असन्नद्ध–वि० (सं०) जो हथियार न बाँधे हो या तैयार न हो; घमंडी; पंडितम्मन्य।

असन्नादी–वि० (डिसोनैण्ट) भिन्न स्वरवाला, जिसमें ध्वनिसाम्य न हो।

असन्निकर्ष–पु० (सं०) निकट न होना; (किसी वस्तुका) दूर होना।

असन्निधान–पु०, **असन्निधि**–स्त्री० (सं०) अनुपस्थिति; दूर होनेकी स्थिति; अभाव।

असन्निहित–वि० (सं०) जो निकटस्थ न हो, दूरवर्ती; गलत तरीकेसे रखा हुआ।

असपत्न–वि० (सं०) शत्रुरहित; अशत्रु। (वह स्त्री) जिसके सौत न हो।

असपिंड–वि० (सं०) जो अपने कुलका या कुलमें सात पीढ़ियोंके अंदर न हो।

असफल–वि० (सं०) विफल, नाकामयाब।

असफलता–स्त्री० (सं०) विफलता ।

असवर्ग–पु० एक घास जो रेशम रँगनेके काममें आती है ।

असबाब–पु० (अ०) ('सबब'का बहु०) कारण; आवश्यक सामग्री, चीज, वस्तु; मुसाफिरके साथका सामान ।

असभ्य–वि० (सं०) सभाके अयोग्य; अशिष्ट; गँवार, सामाजिक व्यवस्थामें पिछड़ा हुआ; जंगली ।

असभ्यता–स्त्री० (सं०) अशिष्टता; गँवारपन; जंगलीपन ।

असमंजस–वि० (सं०) अस्पष्ट; अयुक्त, असंगत; मूर्खतापूर्ण; अनुचित । पु० दुविधा, कठिनाई; अनौचित्य; अंतर; महाराज सगरका ज्येष्ठ पुत्र, अंशुमान्‌का पिता ।

असमंत*–पु० चूल्हा ।

असम–वि० (सं०) जो बराबर न हो; असदृश; बे-जोड़, विषम, ताक; ऊँचा-नीचा, नाहमवार । पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें उपमानका मिलना असंभव दिखलाया जाय, जैसे–'मालति सम सुंदर कुसुम ढूँढ़ेहु मिलिहै नाहिं'; बुद्ध; उत्तरपूर्वमें स्थित भारतका एक राज्य । **–नयन,–नेत्र,–लोचन**–पु० तीन आँखोंवाले शिव । **–बाण**–पु० कामदेव । **–वृत्त**–पु० वह वर्णवृत्त जिसके सब चरणोंमें समान गण न हों, विषमवृत्त । **–शर,–सायक**–पु० कामदेव, पंचशर ।

असमग्र–वि० (सं०) असंपूर्ण, असफल ।

असमत–स्त्री० (अ०) पवित्रता, निष्पापता; सतीत्व । **–फ़रोश**–वि० व्यभिचारिणी । **–फ़रोशी**–स्त्री० सतीत्व-विक्रय, व्यभिचार ।

असमन–वि० (सं०) विभिन्न रंगों या मतोंवाला; विभिन्न मार्गोंपर जानेवाला; असम, विषम ।

असमय–पु० (सं०) समयका उलटा; अयोग्य काल, कुसमय । अ० बे-वक्त, बे-मौके ।

असमयोचित–वि० (इनएक्स्पीडिएंट) जो समय-विशेष या स्थिति-विशेषको देखते हुए उचित न हो, अनुपयुक्त ।

असमर्थ–वि० (सं०) अशक्त, दुर्बल; अपेक्षित शक्ति या योग्यता न रखनेवाला; अभीष्ट अर्थ व्यक्त न कर सकनेवाला । **–पद**–पु० अभिप्रेत अर्थ प्रकट करनेमें असमर्थ शब्द । **–समास**–पु० अन्वय-दोष-युक्त समास ('अश्राद्धभोजी' और 'असूर्यपश्या'में 'अ'का अन्वय 'श्राद्ध' और 'सूर्य'के साथ न करके 'भोजी' और 'पश्या'के साथ करना होता है) ।

असमर्थता-निवृत्तिवेतन–पु० (इनवैलिडिटि पेंशन) रोग, दुर्घटना आदिके कारण किसी कर्मचारीके काम करनेमें स्थायी रूपसे असमर्थ हो जानेपर उसे भरण-पोषणके लिए मिलनेवाली वृत्ति ।

असमवायी(यिन्)–वि० (सं०) जो सहज या अविच्छेद्य न हो, आनुषंगिक, समवाय-संबंध न रखनेवाला । **–(यि)-कारण**–पु० कार्य-कारणका अनित्य संबंध ।

असमस्त–वि० (सं०) जो पूरा या कुल न हो, असमग्र; आंशिक; जो एकत्र न किया गया हो; समासरहित; असंक्षिप्त, विस्तृत ।

असमान–वि० (सं०) जो बराबर न हो, असदृश । * पु० आकाश ।

असमाप्त–वि० (सं०) अपूर्ण, नातमाम, अधूरा ।

असमावर्तक, असमावृत्त, असमावृत्तक, असमावृत्तिक–वि० (सं०) जिस (विद्यार्थी)का समावर्तन-संस्कार न हुआ हो, जिसका वेदाध्ययन समाप्त न हुआ हो ।

असमाहार–पु० (सं०) असंयोग, पार्थक्य; किसी वस्तुकी अप्राप्ति ।

असमाहित–वि० (सं०) जिसका चित्त एकाग्र न हो; अस्थिर ।

असमिया, असमी–स्त्री० असम राज्यकी भाषा या लिपि । पु० असमका निवासी । वि० असममें उत्पन्न; असम देशका, असम संबंधी ।

असमीचीन–वि० (सं०) अयुक्त, अनुचित ।

असमेध*–पु० दे० 'अश्वमेध' ।

असम्मत–वि० (सं०) मतभेद रखनेवाला, विरुद्ध; अनादृत; अस्वीकृत, नामंजूर । पु० शत्रु, विरोध करनेवाला ।

असम्मति–स्त्री० (सं०) मतभेद; अस्वीकृति; विकर्षण; असम्मान, निरादर ।

असम्मान–पु० (सं०) निरादर ।

असम्मित–वि० (सं०) अपरिमित, बहुत अधिक ।

असयाना*–वि० अचतुर, सीधा, भोला ।

असर–पु० (अ०) खोज; पदचिह्न; खँडहर; छाप, प्रभाव; गुण; दबाव; फल; दे० 'अस्र' (अ०) ।

असरार–पु० (अ०) भेद, रहस्य ('सिर्र'का बहु०) 'जो पूछते हो मेरी जिंदगीके असरार'–फिराक । * अ० लगातार ।

असरु–पु० (सं०) कुकुरमुत्ता नामक पौधा जो दवाके काम आता है ।

असल–पु० (सं०) लोहा; अस्त्र; एक मंत्र जिसका अस्त्र चलाते समय प्रयोग किया जाता था; † एक झाड़ जिसकी छालसे चमड़ा सिझाते हैं । वि० (अ०) दे० 'अस्ल' ।

असलियत–स्त्री० (अ०) असल बात, वास्तविकता; जड़; मूल तत्त्व ।

असली–वि० सच्चा, शुद्ध; खालिस । पु० (अ०) शहद ।

असलेउ*–वि० दे० 'असह्य' ।

असवर्ण–वि० (सं०) जो समान वर्णके न हों, भिन्न वर्ण या जातिका । **–विवाह**–पु० एक वर्ण या जातिमें न होनेवाला विवाह ।

असवार†–पु० दे० 'सवार' ।

असवारी†–स्त्री० दे० 'सवारी' ।

असह–वि० (सं०) असहिष्णु, न सहनेवाला; अधीर । पु० सीनेके बीचका हिस्सा ।

असहकार–पु० (सं०) दे० 'असहयोग' ।

असहन–वि० (सं०) सहन न करनेवाला, असहिष्णु; ईर्ष्यालु; न टिकनेवाला । पु० शत्रु; असहिष्णुता; अधीरता । **–शील**–वि० असहिष्णु, चिड़चिड़ा, क्रोधी ।

असहनीय, असहितव्य–वि० (सं०) दे० 'असह्य' ।

असहयोग–पु० (सं०) सहयोगका अभाव या उलटा; मिलकर या साथ काम न करना; सरकारसे या शासनकार्यमें सहयोग न करना । **–वाद**–पु० असहयोग द्वारा सरकारपर दबाव डालनेका सिद्धांत । **–वादी(दिन्)**–वि० असहयोगवादको माननेवाला ।

असहाय–वि० (सं०) जिसका कोई साथी, सहायक न हो, निराश्रय, बे-सहारा; निरुपाय ।

असहिष्णु–वि० (सं०) बर्दाश्त न करनेवाला, चिड़चिड़ा, क्रोधी; झगड़ालू ।

असही*–वि० जो दूसरेकी बढ़ती न देख सके, अदेखी । स्त्री० ककही या कंघीका पौधा ।

असह्य–वि० (सं०) न सहने लायक, असहनीय । **–व्यूह**–पु० वह व्यूह जिसके दोनों पक्ष फैला दिये गये हों ।

असाँच*–वि० असत्य, झूठ ।

असांद्र–वि० (सं०) बिरल, जो घना न हो ।

असांप्रत–वि० (सं०) अयोग्य, अनुचित; असामयिक; वर्तमान कालका नहीं ।

असांप्रदायिक–वि० (सं०) जिसका किसी संप्रदायसे संबंध न हो; परंपराविरुद्ध ।

असांसद, असांसदिक–वि० (अनपार्लिमेंटरी) संसदकी मर्यादा, कार्यविधि, परंपरा आदिके प्रतिकूल; जो संसदमें कहने या करने योग्य न हो, (अशिष्ट), असंसदीय ।

असा–पु० (अ०) डंडा, सोंटा; चाँदी या सोना मढ़ा हुआ सोंटा । **–ए-शाही**–पु० राजदंड । **–बरदार**–पु० राजा, दूल्हे आदिकी सवारीके आगे-आगे असा लेकर चलनेवाला ।

असाई*–वि० अज्ञ, मूर्ख ।

असाक्षिक–वि० (सं०) जिसका कोई साक्षी न हो; जिसकी तसदीक न हुई हो; जिसका कोई अधिष्ठाता न हो ।

असाक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) जो चश्मदीद गवाह न हो; गवाह बननेके अयोग्य ।

असाक्ष्य–पु० (सं०) गवाहका न होना ।

असाडा*–सर्व० हमारा–'आनँद-जीवन ज्या न असाडी ज्यारिया'–घन० ।

असाढ़–पु० आषाढ़ मास ।

असाढ़ा–पु० रेशमका बटा हुआ तागा; एक तरहकी कच्ची चीनी ।

असाढ़ी–वि० असाढ़का, असाढ़में होनेवाला । स्त्री० असाढ़में बोयी

जानेवाली फसल; आषाढ़की पूर्णिमा।

असाढ़ू†–पु० मोटी सिल्ली, भोट।

असात्म्य–वि० (सं०) अस्वास्थ्यकर; (वह आहार) जो स्वास्थ्यके अनुकूल न पड़े।

असाध*–वि० असाध्य; असाधु।

असाधन–वि० (सं०) साधनहीन। पु० साधन या सिद्धि न होना; अनुचित साधन।

असाधारण–वि० (सं०) जो साधारण, आम न हो, खास, विशेष; साधारणसे अधिक, गैरमामूली। पु० एक हेत्वाभास; विशेषता; विशेष संपत्ति। **–धर्म**–पु० साधारण धर्मको बाद कर देनेपर बच रहनेवाला धर्म, वस्तुका मुख्य धर्म, विशेषता। **–राजदूत**–पु० (एंबैसेडर एक्स्ट्रा-आर्डिनरी) विशेष अवसरपर या विशेष उद्देश्यसे भेजा गया राजदूत।

असाधित–वि० (सं०) जिसकी साधना न की गयी हो, असिद्ध।

असाधु–वि० (सं०) खल, दुष्ट; असदाचारी; खोटा; अप्रामाणिक; असंस्कृत (शब्द)। पु० बुरा आदमी। **–वृत्ता**–स्त्री० पुंश्चली।

असाध्य–वि० (सं०) जिसका साधन या सिद्धि न हो सके; अच्छा न होनेवाला, लाइलाज (रोग); अशक्य, अति कठिन। **–साधन**–पु० **–असाध्य**–न हो सकनेवाले कामको कर लेना।

असाध्वी–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी, असती।

असानूं*–सर्व० हमको।

असामयिक–वि० (सं०) जो नियत समयपर न हो, बे-वक्त, बे-मौका।

असामर्थ्य–स्त्री० (सं०) अक्षमता, सामर्थ्यहीनता; निर्बलता।

असमामान्य–वि० (सं०) असाधारण, जो औरोंमें न मिले, विशेष।

असामी–पु० (अ०) नाम; नामसूची ('इस्म'–नामका बहु०); पद; नौकरी; काश्तकार; कर्जदार; ग्राहक; मुलजिम; आदमी (लाखोंका असामी)।

असाम्य–पु० (सं०) अंतर; असमानता; अननुकूलता (दवा, आहारकी)।

असार–वि० (सं०) सारहीन, सत्त्वशून्य; पोला; निरर्थक, निकम्मा; बेदम। पु० एरंड; अगर; महत्त्वहीन अंश। **–भांड**–पु० घटिया माल (कौ०)।

असार*–पु० असवार, सवार।

असालत–स्त्री० (अ०) असलियत, खरापन; कुलीनता; जड़।

असालतन्–अ० (अ०) स्वयम्, खुद, 'वकालतन्'का उलटा।

असाला–स्त्री० चंसुर नामक पौधा।

असावधान–वि० (सं०) जो सजग–चौकन्ना न हो, गाफ़िल, बेखबर।

असावधानता–स्त्री० (सं०) गफलत, बेखबरी।

असावधानी–स्त्री० दे० 'असावधानता'।

असावरी–स्त्री० एक रागिनी जो भैरव रागकी पत्नी मानी जाती है।

असास–पु० (अ०) माल-असबाब, चीज-वस्तु।

असि–स्त्री० (सं०) तलवार, खड्ग; भुजाली; श्वास; दे० 'असी'। **–कला, –क्रीडा**–स्त्री० तलवार चलानेकी कला या अभ्यास, 'जे असिकला प्रवीन'–रामा०। **–गंड**–पु० गालके नीचे रखनेका तकिया। **–चर्या**–स्त्री० खड्गचालनका अभ्यास। **–जीवी(विन्)**–वि० तलवारसे जीविका करनेवाला, सिपाही। **–दंत,–दंष्ट्र,–दंष्ट्रक**–पु० मगर, घड़ियाल। **–धाराव्रत**–पु० तलवारकी धारपर खड़े होने जैसा कठिन व्रत; पति-पत्नीका एक बिस्तरपर, किंतु ब्रह्मचर्यके रक्षार्थ बीचमें तलवार रखकर सोना। **–धाव,–धावक**–पु० तलवार आदिकी सफाई करनेवाला, सिकलीगर। **–धेनु**–स्त्री० छुरा; छुरी। **–पत्र**–पु० ईख; तलवारकी म्यान; एक नरक। **–पत्रक**–पु० ईख। **–पत्रवन**–पु० पुराणानुसार एक नरक जहांके पेड़ोंके पत्ते तलवार जैसे हैं। **–पथ**–पु० श्वासमार्ग। **–पाणि**–वि० खड्ग धारण करनेवाला। **–पुच्छ, –पुच्छक**–पु० सूंस; सकुची मछली। **–पुत्रिका,–**–स्त्री०**पुत्री** छुरी। **–मेद**–पु० विट्खदिर। **–यष्टि,–लता**–स्त्री० तलवारका फल। **–हत्य**–पु० खड्गयुद्ध। वि० खड्गसे वध करने योग्य। **–हेति**–पु० खड्गधारी।

असिक–पु० (सं०) ओठ और ठुड्डीके बीचका हिस्सा।

असिक्निका–स्त्री० (सं०) युवती दासी।

असिक्नी–स्त्री० (सं०) अंतःपुरमें रहनेवाली युवती दासी; चिनाव नदी; दक्षकी पत्नी; रात्रि।

असित–वि० (सं०) अश्वेत; काला; नीला; कुटिल। पु० काला या नीला रंग; शनि; देवल ऋषि; कृष्ण पक्ष; धव वृक्ष। **–केशा**–स्त्री० काले बालोंवाली स्त्री। **–गिरि,–नग**–पु० नील गिरि, नीलाचल। **–ग्रीव**–पु० अग्नि। **–पक्ष**–पु० कृष्ण पक्ष। **–फल**–पु० मीठा नारियल। **–मृग**–पु० कृष्णमृग। **–यवन**–पु० कालयवन। **–वर्म्मा(र्म्मन्)**–पु० अग्नि।

असितांग–पु० (सं०) शिवका एक रूप। वि० काले अंगवाला।

असितांबुज–पु० (सं०) नील कमल।

असिता–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; यमुना; अंतःपुरकी असितकेशा दासी; दक्षपत्नी; पंजाबकी एक नदी; रात्रि।

असितार्चि(स्)–पु० (सं०) अग्नि।

असितलोत्पल–पु० (सं०) नील कमल।

असितोपल–पु० (सं०) नीलम।

असिद्ध–वि० (सं०) अप्रमाणित; न पका हुआ, कच्चा; अपूर्ण; असफल; जिसे योगसिद्धि न मिली हो। पु० एक हेत्वाभास जिसमें हेतु स्वयं असिद्ध होता है।

असिद्धि–स्त्री० (सं०) अपूर्णता; विफलता; साबित न होना; साधनाकी अपूर्णता; कच्चापन।

असिव*–वि० दे० 'अशिव'।

असिस्टेंट–वि० (अं०) सहायक, नायब (कर्मचारी)। **–एडिटर**–पु० सहायक संपादक। **–कलेक्टर**–पु० डिप्टी कलेक्टर; तहसीलदार।

असिस्टेंटी–स्त्री० असिस्टेंटका पद या कार्य।

असी–स्त्री० (सं०) एक नदी (अब नाला) जो काशीके दक्खिन गंगामें मिलती है।

असीन†–पु० सजका पेड़।

असीम–वि० (सं०) जिसकी सीमा न हो, बे-हद; बे-हिसाब, अपार।

असीमित–वि० (सं०) जिसकी हद न बाँधी गयी हो; अपरिमित।

असीर–वि० (अ०) बंदी, कैदी।

असीरी–स्त्री० (अ०) कैद।

असील–वि० (अ०) कुलीन, शुद्ध रक्तवाला; शरीफ, नेक; * असल।

असीस*–स्त्री० आशीर्वाद।

असीसना*–स० क्रि० आशीर्वाद देना।

असुंदर–वि० (सं०) भद्दा, जो सुंदर न हो; अप्रशस्त।

असु–पु० (सं०) प्राण, प्राण वायु; चित्त; गरमी; पानी; पलका छठा भाग; विचार; हृदय; शोक; *घोड़ा। **–त्याग**–पु० प्राणत्याग। **–धारण**–पु०,**–भधारणा**–स्त्री० जीवन धारण, अस्तित्व। **–नीत**–पु० यमराज। **–पाद**–पु० एक कालपरिमाण। **–भंग**–पु० प्राणनाश। **–भृत्**–वि० प्राणी, जानदार (मनुष्यादि) **–विलास**–पु० एक वृत्त। **–सम**–पु० पति। वि० प्राणप्रिय।

असुकर–वि० (सं०) जिसे करना कठिन हो।

असुख–वि० (सं०) अप्रसन्न, दुःखी; कठिन। पु० दुःख, कष्ट। **–जीविका**–स्त्री० दुःखी जीवन।

असुखी(खिन्)–वि० (सं०) दुःखमय, शोकपूर्ण।

असुखोदय, असुखोदर्क–वि० (सं०) दुःखकारक; दुखांत।

असुग*–वि० पु० दे० 'आशुग'।

असुचि*–वि० दे० 'अशुचि'।

असुत–वि० (सं०) पुत्रहीन।

असुप्त–वि० (सं०) जो सोया न हो, जागता हुआ।

असुभ*–वि० दे० 'अशुभ'।

असुमान्(मत्)–वि० (सं०) दे० 'असुभृत्'।

असुर–पु० (सं०) दैत्य, दानव; सूर्य; राहु; हाथी; बादल; खल,

दुष्ट व्यक्ति; देवदार; समुद्री नमक। वि० जीवित; अपार्थिव; ब्रह्म या वरुणका एक विशेषण। **–गुरु–पु०** शुक्राचार्य। **–द्रुट्–पु०** (ह) देवता। **–द्विट्(ष्)–पु०** विष्णु। **–राज–पु०** राजा वलि। **–रिपु,–सूदन–पु०** विष्णु। **–विजयी(यिन्)–पु०** विजितकी जाति भी छीननेकी इच्छा करनेवाला राजा। **–सेन–पु०** एक राक्षस जिसके शरीरपर गया नगरीके बसनेकी बात कही जाती है।

असुरसा–स्त्री० (सं०) तुलसी नामक पौधेका एक भेद।

असुरा–स्त्री० (सं०) रात्रि; राशि; वेश्या।

असुराई*–स्त्री० असुरता, दुष्टता; उत्पात।

असुराचार्य–पु० (सं०) शुक्राचार्य; शुक्र ग्रह।

असुराधिप–पु० (सं०) राजा वलि।

असुरारि–पु० (सं०) विष्णु; देवता।

असुराह्व–पु० (सं०) काँसा।

असुरी–स्त्री० (सं०) राक्षसी; राई।

असुविधा–स्त्री० सुभीता न होना; अड़चन; कठिनाई।

असुस्थ–वि० (सं०) अस्वस्थ, बीमार।

असुहाती*–वि०, स्त्री० अच्छी न लगनेवाली, बुरी।

असूक्षण–पु० (सं०) अपमान, अनादर।

असूझ–वि० अंधकारमय; जिसका वारपार न सूझे, अपार; विकट। स्त्री० अदूरदर्शिता।

असूत*–वि० असंबद्ध; विपरीत।

असूतिका–वि० स्त्री० (सं०) जिसने बच्चा न जना हो; वंध्या।

असूयक–वि० (स०) दूसरेके गुणमें दोष निकालनेवाला, ईर्ष्यालु; असंतुष्ट, अप्रसन्न। पु० ईर्ष्या करनेवाला व्यक्ति; निंदक।

असूया–स्त्री० (सं०) दूसरेके गुण, सुख, समृद्धि आदिको सहन न कर सकना; दूसरेके गुणमें दोष निकालना; जलन; ईर्ष्या; रोष; एक संचारी भाव।

असूयिता(तृ), –वि० असूयु(सं०) असूयक।

असूर्यंपश्या–वि० स्त्री० (सं०) ऐसे कड़े पर्देमें रहनेवाली कि सूर्यको भी न देख सके। स्त्री० राजमहिषी; पतिव्रता स्त्री।

असूल–पु० दे० 'वसूल'; 'उसूल'।

असृक्(ज्)–पु० (सं०) रक्त; केसर; मंगल ग्रह; एक योग। **–(क्)कर–पु०** लसीका। **–प–पु०** रक्तका पान करनेवाला, राक्षस। **–पात–पु०** रक्तपात। **–स्राव–पु०** रक्तका स्राव।

असृग्–'असृज्'का समासगत रूप। **–ग्रह पु०** मंगल ग्रह। **–दर–पु०** मासिक स्रावका अधिक मात्रामें या अनियमित रूपमें होना। **–दोह–पु०** खून आना। **–धरा–स्त्री०** चर्म। **–धारा–स्त्री०** रक्तकी धारा; चर्म। **–वहा–स्त्री०** रक्तवाहिनी नाडी। **–विमोक्षण–पु०** खून निकलना।

असेग*–वि० असह्य; कठिन।

असेचन, असेचनक, असेचनीय–वि० (सं०) जिसको देखनेसे तृप्ति न हो, अत्यधिक सुंदर।

असेवन–वि० (सं०) सेवा न करनेवाला; उपेक्षा करनेवाला; अभ्यास न कर परित्याग करनेवाला। पु० उपेक्षा; त्याग; ध्यान न देना।

असेवा–स्त्री० (सं०) (रोगी आदिकी) सेवा-शुश्रूषा न करना, उपेक्षा।

असेवित–वि० (सं०) जिसकी सेवा न की गयी हो, उपेक्षित; जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो; जिसका सेवन न किया गया हो, जिससे परहेज किया गया हो।

असेसमेंट–पु० (अं०) कर लगानेके लिए मकान, जमीन आदिकी मालियत आँकना; तशखीस; करकी रकम निश्चित करना। **–आफ़िसर–पु०** तशखीसका काम करनेवाला कर्मचारी।

असेसर–पु० (अं०) फौजदारी मामलोंमें जज या मजिस्ट्रेटको सलाह देनेके लिए चुना गया व्यक्ति; करकी मात्रा निर्द्धारित करनेवाला; कर लगानेके लिए आय, मालियत आदिकी जाँच करनेवाला।

असैनिक–वि० (सं०) जो सैनिक न हो; जहाँ सेना न रखी जाय (क्षेत्र); जिसका संबंध सेनासे न हो; मुल्की (सिविल) देश या समाजके शासन इत्यादिसे संबंध रखनेवाला; (सैनिकका उलटा), मुल्की (फौजी नहीं)। **—व्यय–पु०** (सिविल एक्सपेंडिचर) असैनिक कार्योंके लिए होनेवाला व्यय।

असैनिकीकरण–स्त्री० (डीमिलिटैरिज़ेशन) किसी स्थान या क्षेत्रका सैन्यविहीन कर दिया जाना, विसैन्यीकरण।

असैला*–वि० कुमार्गगामी; अनुचित।

असोक–वि०, पु० दे० 'अशोक'।

असोकी–वि० दे० 'अशोक'।

असोच–वि० चिंतारहित, निर्द्वंद्व; * अपवित्र।

असोज†–पु० आश्विन मास, क्वार।

असोढ–वि० (सं०) जिसका सहन न किया जा सके; जो वशमें न लाया जा सके।

असोस*–वि० न सूखनेवाला, अशोष्य।

असोसियेशन–पु० (अं०) संघ, समिति, सभा।

असौंदर्य–पु० (सं०) सुंदरताका अभाव, कुरूपता।

असौंध*–स्त्री० दुर्गंध।

असौच–पु० दे० 'अशौच'।

असौम्य–वि० (सं०) अविनीत; असुंदर, भद्दा; अप्रिय।

असौष्ठव–वि० (सं०) सौंदर्यहीन, भद्दा, कुरूप। पु० भद्दापन, कुरूपता; निकम्मापन, गुणाभाव।

अस्कंदित–वि० (सं०) जो गया न हो; जो फटा न हो; अनाक्रांत।

अस्कन्न–वि० (सं०) अविदीर्ण, जो फटा न हो; जो उड़ेला न गया हो; अनावृत; स्थायी, टिकाऊ।

अस्कर–पु० (अ०) लश्कर, सेना।

अस्करी–पु० (अ०) सैनिक, सिपाही।

अस्खल–पु० (सं०) अग्नि।

अस्खलित–वि० (सं०) जो फिसले-डगमगाये नहीं; उच्चारण आदिमें भूल-चूक न करनेवाला; शुद्ध; सत्पथसे न बहकनेवाला; अच्युत।

अस्तंगत–वि० (सं०) डूबा हुआ; नष्ट; लुप्त।

अस्त–वि० (सं०) डूबा हुआ; फेंका हुआ; गत; समाप्त। पु० (सूर्य-चंद्रका) डूबना; अदृश्य होना, ह्रास; पतन; अंत; नाश; कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ स्थान। **–गमन–पु०** डूबना. लोप; अवनत होना; मृत्यु। **–गिरि–पु०** पश्चिमी पर्वत, अस्ताचल। **–प्राय–वि०** डूबता हुआ; मरता हुआ–'किनारेपर पड़े हुए अस्तप्राय सुअरको देखने लगा'–मृग०। **–भवन–पु०** उदयके लग्नसे सातवाँ लग्न। **–मय–पु०** प्रलय; डूबना (सूर्य आदिका); सूर्यके साथ अन्य ग्रहोंका योग। **–मस्तक,–शिखर–पु०** अस्ताचलका शिखर। **–व्यस्त–वि०** तितर-बितर, जहाँ-तहाँ बिखरा हुआ, अव्यवस्थित, बेतरतीब।

अस्तन*–पु० दे० 'स्तन'।

अस्तनी–स्त्री० (सं०) अति लघु, नहींके बराबर स्तनोंवाली स्त्री।

अस्तबल–पु० (अ०) अश्वशाला, तबेला।

अस्तब्ध–वि० (सं०) जो स्थिर न हो, घबड़ाया हुआ; चंचल, अस्थिर; विनयी।

अस्तमती–स्त्री० (सं०) शालपर्णी।

अस्तमन–पु० (सं०) डूबना, अस्त होना।

अस्तमित–वि० (सं०) अस्तंगत।

अस्तर–पु० सिले कपड़े, जूते आदिके भीतरकी तह, भितल्ला; अँतरौटा; इत्रकी जमीन; चित्रकी जमीन बाँधनेका मसाला; नीचेका रंग। **–कारी–स्त्री०** पलस्तर करना; चूनेका लेप करना। **–बट्टी–स्त्री०** तसवीरकी जमीन घोंटनेकी पत्थरकी बट्टी।

अस्ताघ–वि० (सं०) बहुत गहरा।

अस्ताचल, अस्ताद्रि–पु० (सं०) पश्चिमका वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्यका अस्त होना माना जाता है।

अस्ति–स्त्री० (सं०) सत्ता, भाव, विद्यमानता। होनेका भाव। जो नास्तिका ठीक उल्टा है। अस्तित्ववादियोंका अस्ति नास्ति बहुत प्रसिद्ध है। **–अस्ति*–अ०** वाह-वाह। **–काय–पु०** सिद्ध पदार्थ (जै०)। **–मंत–पु०** (दि हैब्ज) धनी या संपन्न व्यक्ति। **–रूप–वि०** भावरूप, 'पाजिटिव'।

अस्तित्व-पु० (सं०) सत्ता, हस्ती, विद्यमान होना। **-वाद**-पु० पश्चिमका एक विशिष्ट दार्शनिक सिद्धान्त, जो मनुष्यको आकस्मिक उपज मानकर संत्रास, मृत्यु, कुंठा आदिके भीतर उसके सही अर्थकी खोज करता है। (एग्ज़िस्टेंशियलिज़्म)।

अस्तिमान्(मत्)-वि० (सं०) मालदार।

अस्तीन-स्त्री० दे० आस्तीन।

अस्तु-अ० (सं०) जो हो, ऐसा हो।

अस्तुति-स्त्री० (सं०) प्रशंसा न करना; *दे० 'स्तुति' (रामा०)।

अस्तुरा-पु० दे० 'उस्तुरा'।

अस्तेय-पु० (सं०) चोरी न करना; चोरी न करनेका व्रत; योगके अनुसार एक यम या संयम। **-व्रत**-पु० आवश्यकतासे अधिक वस्तुके संग्रह या उपयोगको चोरी मानना।

अस्तोदय-पु० (सं०) उदय-अस्त; बनना-बिगड़ना।

अस्त्यान-पु० (सं०) भर्त्सना; निंदा।

अस्त्र-पु० (सं०) हथियार; फेंककर चलाया जानेवाला हथियार (बाण आदि); मंत्र-प्रेरित बाण आदि; धनुष्; चीरफाड़का औजार, नश्तर। **-कंटक**-पु० बाण। **-कार,-कारक,-कारी(रिन्)**-पु० हथियार बनानेवाला। **-चिकित्सा**-स्त्री० चीर-फाड़, शल्य-चिकित्सा। **-जीव,-जीवी(विन्),-धारी(रिन्)**-पु० सैनिक। **-निर्माणशाला**-स्त्री० (आर्डनैंस फैक्टरी) तोपें, गोला-बारूद, बम आदि तैयार करनेका कारखाना। **-बंध**-पु० बाणोंकी अविराम वर्षा। **-मार्जक**-पु० अस्त्र साफ करनेवाला। **-लाघव**-पु० अस्त्र चलानेकी कुशलता। **-विद्या**-स्त्री० अस्त्र-संचालनकी विद्या, बाण-विद्या। **-वेद**-पु० धनुर्वेद। **-शस्त्र**-पु० हरबा-हथियार। **-शाला**-स्त्री० अस्त्र-शस्त्र रखनेका स्थान। **-शिक्षा**-स्त्री० अस्त्र-संचालनकी शिक्षा। **-सायक**-पु० लोहेका बाण।

अस्त्रागार-पु० (सं०) हरबा-हथियार रखनेका भंडार, सलहखाना।

अस्त्री(स्त्रिन्)-वि० (सं०) अस्त्रसे लड़नेवाला, अस्त्रधारी।

अस्त्रीक-वि० (सं०) बिना स्त्रीका, रँडुआ।

अस्थल*-पु० दे० 'स्थल'।

अस्थाई*-वि० दे० 'स्थायी'।

अस्थाग-वि० (सं०) बहुत गहरा।

अस्थान-वि० (सं०) बहुत गहरा। पु० बुरा स्थान या अवसर; *दे० 'स्थान'।

अस्थायी(यिन्)-वि० (सं०) जो सदा या अधिक दिन रहनेवाला न हो, क्षणिक; कुछ समयके लिए नियुक्त; अस्थिर। **-संधि**-स्त्री० (आर्मिसटिस) युद्ध समाप्त कर देनेके संबंधमें की गयी अस्थायी संधि।

अस्थावर-वि० (सं०) जंगम, चल (संपत्ति)।

अस्थि-स्त्री० (सं०) हड्डी; गिरी। **-कुंड**-पु० एक नरक। **-कृत्, -ज,-तेज(स्)**-पु०, **-मज्जा**-स्त्री० हड्डीके अंदरका स्नेह; वज्र। **-तुंड**-पु० एक पक्षी; पक्षी। **-धन्वा(न्वन्)**-पु० शिव। **-पंजर**-पु० हड्डियोंका ढाँचा, कंकाल। **-प्रक्षेप**-पु० शवके जलनेपर बचे हुए अस्थि-खंडोंका गंगा आदिमें विसर्जन। **-बंधन**-पु० स्नायु। **-भंग**-पु० (फ्रैक्चर) गिर पड़ने, चोट लगने आदिके कारण हड्डीका टूट जाना। **-भक्ष, भुक्(ज्)**-पु० हड्डियाँ खानेवाला, कुत्ता। **भेद**-पु० दे० 'अस्थिभंग'। **-माली(लिन्)**-पु० शिव। **-विग्रह**-वि० बहुत दुबला। पु० शिवका एक अनुचर, भृंगी। **-शृंखला**-स्त्री०,**-संहार**-पु०, **-संहारिका**-स्त्री० ग्रंथिमान् वृक्ष। **-शेष**-वि० जिसके शरीरमें हड्डियाँभर रह गयी हों, बहुत दुबला। **-संचय**-पु० शवदाहके बाद गंगा आदिमें प्रवाहके लिए हड्डियाँ या राख एकत्र करना; अस्थियोंका ढेर। **-संधि**-स्त्री० हड्डीका जोड़। **-संभव**-पु० मज्जा; वज्र। **-समर्पण**-पु० संचित अस्थियोंको गंगा आदिमें फेंकना। **-सार,-स्नेह**-पु० मज्जा।

अस्थिति-स्त्री० (सं०) स्थिति या दृढ़ताका अभाव; मर्यादाका अभाव।

अस्थिर-वि० (सं०) जो स्थिर न हो, डावाँ-डोल, चंचल; अनिश्चित, बे-भरोसेका।

अस्थिर*-वि० स्थिर।

अस्थूल-वि० जो मोटा न हो, सूक्ष्म।

अस्थैर्य-पु० (सं०) अस्थिरता।

अस्नान*-पु० स्नान।

अस्नाविर-वि० (सं०) स्नायुहीन; स्थूल शरीररहित।

अस्निग्ध-वि० (सं०) जो चिकना न हो; कठिन; शुष्क; निर्दय। **-दारु**-पु० देवदारुका एक भेद।

अस्नेह-पु० (सं०) स्नेहका अभाव।

अस्पंद-वि० (सं०) स्पंदन-हीन, न हिलने-डुलनेवाला।

अस्पताल-पु० दवाखाना, चिकित्सालय (अं० 'हास्पिटल')।

अस्पताली-वि० अस्पताल संबंधी। **-गाड़ी**-स्त्री० आहतों या रोगियोंको अस्पताल पहुँचानेवाली गाड़ी (ऐंबुलैंस कार)।

अस्पष्ट-वि० (सं०) जो साफ दिखाई न दे या साफ समझमें न आये, धुंधला, संदिग्ध।

अस्पृश्य-वि० (सं०) स्पर्शके अयोग्य, न छूने लायक, अछूत।

अस्पृश्यता-स्त्री० (सं०) स्पर्शकी अयोग्यता, अछूतपन। **-आंदोलन**-पु० अछूतोद्धार-छुआछूत मिटानेका आंदोलन।

अस्पृष्ट-वि० (सं०) न छुआ हुआ, अछूता।

अस्पृह-वि० (सं०) निष्काम, निर्लोभ, जिसे लालच न हो।

अस्फटिक-वि० (एमार्फस) जिसका चूर्ण चमकीला तथा खुरदरा न हो वरन चिकना जान पड़े।

अस्फुट-वि० (सं०) अस्पष्ट; अप्रकट; जो खिला न हो (फूल)।

अस्मत-स्त्री० दे० 'असमत'।

अस्मदादि, अस्मदादिक-सर्व० (बहु०) (सं०) हम लोग।

अस्मदीय-वि० (सं०) मेरा या हमारा।

अस्मद्-सर्व (सं०) मैं (अहमादिका प्रातिपदिक रूप)। पु० जीवात्मा, प्रत्यगात्मा।

अस्मय*-वि० अश्मय, पत्थरका बना।

अस्मार्त-वि० (सं०) परंपराविरुद्ध, अवैध; स्मार्त संप्रदायका नहीं; स्मृतिसे परे।

अस्मिता-स्त्री० (सं०) अहंता, अहंकार; अस्तित्व, विद्यमानता ('अन्तर्जगत् अब अपनी अस्मिताको प्रकट कर रहा था'—सुधीन्द्र); योगशास्त्रोक्त पाँच प्रकारके क्लेशोंमेंसे एक।

अस्र-पु० (सं०) कोण; रक्त; आँसू; केसर; केश। **-कंठ**-पु० बाण। **-खदिर**-पु० रक्तखदिर वृक्ष। **-ज**-पु० मांस। **-प**-वि० रक्त पीनेवाला। पु० राक्षस; मूल नक्षत्र। **-पत्रक**-पु० भिंडा वृक्ष। **-पा**-स्त्री० जोंक; डाकिनी; चुड़ैल। **-पित्त**-पु० मुख, नाक आदिसे खून गिरना; रक्तपित्त। **-फला,-फली**-स्त्री० सल्लकी नामक पौधा। **-मातृका**-स्त्री० शरीररस। **-रोधिनी**-स्त्री० लज्जालु नामक पौधा। **-विंदुच्छदा**-स्त्री० लक्षणा कंद।

अस्र-पु० (अ०) काल; युग; उम्र; दिनका चौथा पहर। **-की नमाज**-शामकी नमाज।

अस्रार्जक-पु० (सं०) श्वेत तुलसी।

अस्रु-पु० (सं०) दे० 'अश्रु'।

अस्ल-पु० (अ०) जड़, मूल; बीज; सचाई; मूल धन; मूल वस्तु; नकलका उलटा। वि० दे० 'अस्ली'। **-में**-वास्तवमें, सचमुच।

अस्ली-वि० मौलिक; खालिस; खरा; सच्चा।

अस्लीयत-स्त्री० वस्तुस्थिति, सच्ची स्थिति या रूप; जड़।

अस्वंत-पु० (सं०) मृत्यु; दे० 'अश्मंत'।

अस्व-वि० (सं०) धनहीन।

अस्वच्छ-वि० (सं०) गंदा, धुँधला।

अस्वतंत्र-वि० (सं०) परतंत्र, पराधीन।

अस्वप्न-वि० (सं०) निद्रारहित। पु० देवता; अनिद्रा।

अस्वभाव-वि० (सं०) भिन्न स्वभावका। पु० भिन्न या अस्वाभाविक लक्षण।

अस्वर-वि० (सं०) बुरे स्वरवाला अस्पष्ट, मंद (स्वर)। पु० मंद स्वर; व्यंजन वर्ण।

अस्वर्ग्य-वि० (सं०) जिससे स्वर्गकी प्राप्ति न हो।

अस्वस्थ-वि० (सं०) अप्रकृतिस्थ, अनमना; रोगी; दूषित, हानिकर।

अस्वादुकंटक–पु० (सं०) गोखरू ।

अस्वाधीन–वि० (सं०) जो दूसरेके वशमें हो ।

अस्वाध्याय–वि० (सं०) जिसने वेदोंकी आवृत्ति नहीं की है; जिसने वेदोंकी आवृत्ति अभी आरंभ नहीं की है । पु० आवृत्तिके अंदर पड़नेवाला व्यवधान या अवकाश ।

अस्वाभाविक–वि० (सं०) स्वभावविरुद्ध; अनैसर्गिक, बनावटी ।

अस्वामिक–वि० (सं०) बिना मालिकका, लावारिस । पु० वह धन या संपत्ति जिसका कोई दावागीर न हो । **–भूमि**–स्त्री० दे० 'निःस्वामिक भूमि' ।

अस्वामी(मिन्)–वि० (सं०) जिसका स्वत्व न हो; जिसका कोई दावागीर न हो । **–(मि)विक्रय**–पु० ऐसा विक्रय जिसमें बेचनेवाला बिक्री वस्तुका स्वामी न हो । **–संहत**–वि० जिसका सेनापति मारा न गया हो ।

अस्वार्थ–वि० (सं०) निकम्मा; निःस्वार्थ; उदासीन ।

अस्वास्थ्य–पु० (सं०) रोग, बीमारी ।

अस्विन्न–वि० (सं०) जो अच्छी तरह उबाला या पकाया न गया हो ।

अस्वीकार–पु० (सं०) न मानना, इनकार; न लेना ।

अस्वीकार्य–वि० जो स्वीकार करने, ग्रहण करने, योग्य न हो;–**व्यक्ति**–पु० दे० 'अग्राह्य व्यक्ति' ।

अस्वीकृत–वि० (सं०) न माना हुआ, नामंजूर; ग्रहण न किया हुआ ।

अस्वीकृति–स्त्री० (सं०) अस्वीकार ।

अस्वेद, अस्वेदन–पु० (सं०) पसीनेका न निकलना ।

अस्स*–पु० अश्व, घोड़ा ।

अस्सी–वि० सत्तर और दस । पु० ८० की संख्या ।

अहं–'अहम्'का समासगत रूप । **–कार**–पु० अपनी सत्ताका बोध; गर्व, घमंड; अंतःकरणकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (वे०, सां०) । **–कारी(रिन्)**–वि० घमंडी । **–कार्य**–पु० व्यक्तिगत कार्य । **–कृत**–वि० घमंडी । **–कृति**–स्त्री० अहंकार, घमंड । **–केन्द्रित**–वि० (इगोसेंट्रिक) अपनेको ही मूल्य, आदर्श, धारणाके लिए प्रमाण माननेवाला (व्यक्ति) । **–धी**–स्त्री० अहंकार । **–पद**–पु० गर्व, घमंड । **–पूर्व**–वि० होड़में बढ़ जानेका इच्छुक । **–पूर्विका,–प्रथमिका**–स्त्री० होड़, प्रतिद्वंद्विता । **–प्रत्यय**–पु० गर्व । **–भद्र**–पु० अपने व्यक्तित्वको बहुत बड़ा समझना । **–भाव**–पु०, **मन्यता**–स्त्री० (सं०) (इगोटिज्म) अपनेको बहुत ऊँचा, बड़ा या योग्य समझनेका भाव या आदत । **–मन्य**–वि० दे० 'अहम्'के साथ । **–वादी(दिन्)**–पु० डींग मारनेवाला । **–श्रेयस**–पु० अपनेको बड़ा या श्रेष्ठ मानना । मु०–**अहंका विलयन**–टी० यस० इलियट द्वारा प्रतिपादित साहित्यिक दृष्टिकोण कि महत्तम साहित्य तभी उत्पन्न होता है जब उसमें लेखकके व्यक्तित्वका विलय हो जाता है ।

अहंता–स्त्री० (सं०) घमंड, गर्व ।

अहः–'अहन्'का समासगत रूप । **–पति**–पु० दे० 'अहर्पति' । **–शेष**–पु० संध्या ।

अह–अ० अचरज, दुःख, क्लेश आदिका सूचक उद्गार ।

अह(न्)–पु० (सं०) दिन; दिनका अधिष्ठाता देवता; दिनका कार्य; विष्णु; रात्रि; एक दिन पढ़नेके लिए पुस्तकका निर्धारित अंश (समासांतमें अह्न—जैसे मध्याह्न) । **–निसि**– * अ० दे० 'अहर्निश' ।

अहक*–पु० लालसा, अतृप्त आकांक्षा ।

अहकना*–अ० क्रि० इच्छा करना, कामना करना ।

अहकाम–पु० (अ०) आज्ञाएँ, आदेश ('हुक्म'का बहु०) ।

अहटाना*–अ० क्रि० आहट मिलना; दुखना । स० क्रि० पता लगाना ।

अहत–वि० (सं०) अक्षत, अनाहत; जो पीटा न गया हो (धोते समय कपड़ा); बिना धुला हुआ, नया; बे-दाग, स्वच्छ; जो हताश न हो । पु० नया कपड़ा (जो धोया न गया हो) ।

अहथिर*–वि० दे० 'अस्थिर' तथा 'स्थिर' ।

अहद–पु० (अ०) दे० 'अह्द' ।

अहदनामा–पु० दे० 'अह्दनामा' ।

अहदी–वि० आलसी; प्रतिज्ञा करनेवाला, प्रणपर डँटा रहनेवाला । पु० वह सैनिक जिससे असाधारण आवश्यकताके समय ही काम लिया जाय (अकबरकी सेनाकी एक श्रेणी) । **–ख़ाना**–पु० अहदियोंके रहनेकी जगह ।

अहना*–अ० क्रि० वर्तमान रहना, होना ।

अहप्पति*–पु० अहिपति, शेषनाग ।

अहबाब–पु० (अ०) मित्र ('हबीब'का बहु०) ।

अहम–वि० (अ०) बहुत जरूरी, महत्त्वपूर्ण ।

अहमक़–वि० (अ०) जडमति, मूर्ख, नासमझ ।

अहमकाना–वि० मूर्खतापूर्ण, 'अहमकाना खयाल' ।

अहमिति*–स्त्री० दे० 'अहम्मति' ।

अहम्–सर्व० (सं०) मैं । पु० अहंभाव, अहंतत्त्व; नवलेखनमें अच्छे अर्थोंमें प्रयुक्त साहित्यकारका निजत्व जो उसके साहित्यको विशिष्ट बनाता है । **–अग्रिका, –अहमिका**–स्त्री० अपनेको बड़ा तथा दूसरेको तुच्छ समझना; चढ़ाऊपरी, होड़, प्रतियोगिता । **–एव**–पु० घमंड, गर्व । **–मति**–स्त्री० गर्व, घमंड; ममता । **–मन्य**–वि० अपनेको बहुत बड़ा माननेवाला ।

अहरणीय–वि० (सं०) जो हटाने या हरण करने योग्य न हो; दृढ़, स्थिर । पु० पहाड़ ।

अहरन, अहरनि*–स्त्री० निहाई ।

अहरना–स० क्रि० लकड़ी छीलकर सुडौल करना ।

अहरा–पु० आग सुलगानेके लिए लगाये गये कंडे या उपले; इकट्ठा किये हुए कंडेसे तैयार की गयी आग; लोगोंके ठहरनेका स्थान; प्याऊ ।

अहराम–पु० (अ०) पुरानी इमारतें; मिस्रके जगत्प्रसिद्ध स्तूप, परामिड (हरम–पुरानी इमारतका बहु०) ।

अहरिमन–पु० पारसियोंमें पाप और अंधकारका देवता, शैतान ।

अहरी–स्त्री० प्याऊ; हौज, चरही; गड्ढा ।

अहर्–'अहन्'का समासगत रूप । **–अह**–अ० दिन-दिन । **–आगम**–पु० दिनका आगमन । **–गण**–पु० मास; परिगणित दिनसमूह; यज्ञवाले दिनोंका क्रम । **–दल**–पु० मध्याह्न । **–निश**–अ० दिन-रात, आठों पहर । **–पति,–मणि**–पु० सूर्य । **–मुख**–पु० उषःकाल, सवेरा, भोर ।

अहल, अहलि, अहल्य–वि० (सं०) जो जोता न गया हो या जोता न जा सके ।

अहलकार–पु० दे० 'अह्लकार' ।

अहलना*–अ० क्रि० हिलना; दहलना ।

अहलमद–पु० दे० 'अह्लमद' ।

अहल्या–स्त्री० (सं०) गौतम ऋषिकी पत्नी जो शापसे पत्थरकी शिला हो गयी थी और जिसने रामके चरणस्पर्शसे पुनः पूर्व रूप प्राप्त कर लिया । **–जार**–पु० इंद्र । **–नंदन,**–पु० अहल्याके पुत्र, सतानंद ।

अहवान*–पु० दे० 'आह्वान' ।

अहवाल–पु० (अ०) वृत्तांत, समाचार; हाल ('हाल'का बहु०) ।

अहश्चर–वि० (सं०) दिनके समय भ्रमण करनेवाला ।

अहसान–पु० दे० 'एहसान' ।

अहस्कर, अहस्पति–पु० (सं०) सूर्य; मदार ।

अहस्त–वि० (सं०) हस्तरहित; जिसका हाथ कट गया हो ।

अहस्तक्षेप-नीति–स्त्री० (लैसेज फेयर) अर्थ-शास्त्रियोंका यह सिद्धांत कि देशके आर्थिक मामलों-(व्यापारादि)में राज्यको बिलकुल हस्तक्षेप न करना चाहिये, अबंधनीति ।

अहस्तांतरकरणीय–वि० (इनएलाइनेबिल) जिसके स्वामित्व या अधिकारका हस्तांतरण न किया जा सके, अहरणीय ।

अहस्तांतरणीय–वि० (नान-ट्रांसफरेबिल) जो हस्तांतरित न किया जा सके, जिसका हस्तांतरण न हो सके ।

अहह–अ० (सं०) दुःख, क्लेश, आश्चर्य और संबोधन सूचक उद्गार ।

अहा, अहाहा–अ० हर्ष तथा विस्मय-सूचक उद्गार ।

अहागति*–स्त्री० आनंदकी स्थिति ।

अहाता–पु० (अ०) दे० 'एहाता' ।

अहान*–पु० आह्वान, पुकार ।

अहार–पु० दे० 'आहार' ।

अहारना–स० क्रि० लकड़ीको छील-छालकर सुडौल करना; चिपकाना; * आहार करना, खाना ।

अहारी*–वि० दे० 'आहारी' ।

अहार्य–वि० (सं०) जो हरा, चुराया न जा सके; जो धन या चकमा देकर वशमें न किया जा सके; दृढ़, न बदलनेवाला ।

अहिंसक–वि० (सं०) हिंसा न करनेवाला ।

अहिंसा–स्त्री० (सं०) किसी प्राणीको न मारना; मन, वचन, कर्मसे किसीको पीडा न देना; हिंस नामका पौधा । **–वादी(दिन्)**–वि० अहिंसा सिद्धांतको माननेवाला ।

अहिंस्र–वि० (सं०) अहिंसक ।

अहि–पु० (सं०) साँप; सूर्य; राहु; वृत्रासुर; पथिक; जल; पृथिवी; ठग, वंचक; बादल; नाभि; सीसा; अश्लेषा नक्षत्र । **–कांत**–पु० वायु । **–कोष**–पु० केंचुल; एक वृत्त । **–गण**–पु० वृत्तविशेष; सर्पोंका समूह । **–चक्र**–पु० एक तांत्रिक चक्र । **–च्छत्र**–पु० दक्षिण पांचाल जिसे अर्जुनने जीतकर द्रोणाचार्यको गुरु-दक्षिणामें दे दिया था; एक वनस्पति-जन्य विष । **–च्छत्रक**–पु० कुकुरमुत्ता । **–च्छत्रा**–स्त्री० अहिच्छत्र देशकी राजधानी; शर्करा; मेषशृंगी । **–जित्**–पु० कृष्ण । **–जिह्वा**–स्त्री० नागफनी । **–तुंडिक**–पु० सँपेरा । **–देव, –दैवत**–पु० अश्लेषा नक्षत्र । **–द्विट्(ष्), –मार, –रिपु**–पु० गरुड़; नकुल; मयूर; इंद्र । **–नकुलिका**–स्त्री० साँप और नेवलेका सहज वैर । **–नाथ**–पु० शेषनाग । **–नाह** * –पु० शेषनाग । **–निर्मोक**–पु० केंचुल । **–प,–पति**–पु० वासुकि; कोई बड़ा साँप । **–पताक**–पु० एक प्रकारका विषहीन सर्प । **–पुत्रक**–पु० सर्पाकृति नौका । **–पूतना**–स्त्री० एक तरहका रोग । **–फेन**–पु० साँपकी लार या विष; अफीम । **–बुध्न,–ब्रध्न**–पु० शिव; एक रुद्र । **–बेल**–स्त्री० (हि०) दे० 'अहिवल्ली' । **–भय**–पु० सर्पसे उत्पन्न होनेवाला भय; स्वपक्षके विश्वासघातकी आशंका । **–०दा**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–भुक्(ज्)**–पु० गरुड़; मोर; नेवला । **–भृत्**–पु० शिव । **–मर्दनी**–स्त्री० गंधनाकुली नामक कंदविशेष । **–मारक,–मेद,–मेदक**–पु० अरिमेद नामक वृक्ष । **–माली(लिन्)**–पु० शिव । **–मेध**–पु० सर्पसत्र, नागयज्ञ । **–लता**–स्त्री० नागवल्ली, पान; गंधनाकुली । **–लोचन**–पु० शिवके एक सर्पका नाम । **–लोलिका**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–वल्ली**–स्त्री० नागवल्ली, पान । **–विषापहा**–स्त्री० गंधनाकुली । **–साव** * –पु० साँपका बच्चा, सँपोला ।

अहिक–पु० (सं०) ध्रुव; अंधा साँप । वि० नियत दिनोंतक रहनेवाला (संख्यासूचक शब्दके साथ–जैसे 'दशाहिक') ।

अहिका–स्त्री० (सं०) सेमलका वृक्ष ।

अहित–पु० (सं०) हितका अभाव या उलटा, बुराई, अपकार; हानि; शत्रु । वि० अहितकर, अपथ्य; विरोधी । **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० हानि, अपकार करनेवाला ।

अहिम–वि० (सं०) ठंढा नहीं, गरम । **–कर,–किरण,–तेजा(जस्),–दीधिति, –द्युति, –मयूख, –रश्मि**–पु० सूर्य ।

अहिमांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

अहिमान–पु० चाकका वह गड्ढा जिसके बल चाक कीलपर रखा जाता है ।

अहियान*–पु० शेषशायी विष्णु । **–पदी**–स्त्री० (विष्णुके पदसे उद्भूत) गंगा–'देवनदी अहियानपदी महिमान वदी स्तुति साखि बिसेखी'–घन० ।

अहिरख*–पु० हर्षका अभाव, दुःख ।

अहिला*–पु० कीचड़का न होना, पानीकी बाढ़ या प्रचुरता; झगड़ा ।

अहिवर–पु० दोहेका एक भेद ।

अहिवात–पु० सधवा होनेका भाव, सुहाग ।

अहिवातिन, अंहिवाती–वि० स्त्री० सौभाग्यवती, सधवा ।

अहीक–पु० (सं०) बौद्धोंके अनुसार दस प्रकारके क्लेशोंमेंसे एक ।

अहीन–वि० (सं०) अक्षुण्ण, समग्र, समूचा; बहुत दिनोंतक टिकनेवाला; जो जातिच्युत न हो; नीच नहीं, श्रेष्ठ । पु० बड़ा साँप; वासुकि; बहुत दिनोंतक चलनेवाला यज्ञविशेष । **–गु**–पु० एक सूर्यवंशी राजा । **–वादी(दिन्)**–पु० वह गवाह जो गवाही देनेके योग्य न हो ।

अहीर–पु० (सं०) आभीर, ग्वाला ।

अहीरणि–पु० (सं०) द्विमुख सर्प ।

अहीरी–स्त्री० एक राग; (सं०) ग्वालिन ।

अहीश–पु० (सं०) सर्पराज; लक्ष्मण; बलराम ।

अहुजी†–स्त्री० कद्दू या लौएके साथ एकमें पकाया हुआ चावल ।

अहुटना*–अ० क्रि० हटना, अलग होना ।

अहुटाना*–स० क्रि० हटाना, दूर करना ।

अहुठ*–वि० साढ़े तीन ।

अहुत–वि० (सं०) जिसकी आहुति न की गयी हो; जिसे नैवेद्य न मिला हो । पु० स्तुति; ध्यान; वेदाध्ययन ।

अहुर–पु० (सं०) जठराग्नि ।

अहुरमज्द–पु० (पह०) पारसी धर्मानुसार धर्म, नेकी और प्रकाशका देवता ।

अहुराना*–स० क्रि० खींच देना, हटा देना–'फिरि-फिरि पट तानें तऊ बहु-यों अहुराऊँ'–घन० ।

अहुरि-बहुरि*–अ० अहुर-बहुरकर, किसी प्रकार बचकर–'ठहरनि बीत नितें बहुरि अहुरि नीकें'–घन० ।

अहूँठ–वि० साढे तीन ।

अहूठन† पु० चारा काटनेका ठीहा ।

अहृदय–वि० (सं०) हृदयहीन; विस्मरणशील ।

अहृद्य–वि० (सं०) अप्रिय; अनभिलषित ।

अहे–अ० (सं०) निंदा, शोक, पार्थक्य आदिका द्योतक शब्द; हे । पु० वृक्षविशेष ।

अहेतु–वि० (सं०) हेतुरहित । पु० हेतुका अभाव; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ कई कारणोंके विद्यमान रहते हुए भी कार्यका न होना वर्णित किया जाय । **–सम**–पु० जातिका एक भेद (न्या०) ।

अहेतुक, अहैतुक–वि० (सं०) हेतुरहित, अकारण ।

अहेर–पु० आखेट, शिकार ।

अहेरी–वि० शिकारी । पु० शिकार करनेवाला, आखेटक ।

अहेरु–पु० (सं०) शतमूली ।

अहो–अ० (सं०) विस्मय, प्रशंसा, खेद, विषाद, धिक्कारसूचक उद्गार; संबोधनमें भी व्यवहृत । **–रूपमहोध्वनिः**–परस्पर प्रशंसा (लो०) ।

अहो–'अहन्'का समासगत रूप । **–रत्न**–पु० सूर्य । **–रात्र**–पु० दिन और रात; दो सूर्योदयके बीचका समय ।

अहोक–पु० असम प्रदेशकी एक प्राचीन जाति ।

अहोरा-बहोरा–पु० व्याह या गौनेमें दुलहिनका ससुराल जाकर उसी दिन वापस आना । अ० बार-बार ।

अह्द–पु० (अ०) प्रतिज्ञा; काल; राजत्व । **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र, इकरारनामा । **–शिकनी**–स्त्री० प्रतिज्ञाभंग । **–(दे)-हुकूमत**–पु० राज्यकाल ।

अह्निज–वि० (सं०) दिनमें उत्पन्न या प्रकट होनेवाला ।

अह्रिय–वि० (सं०) निर्लज्ज; ढीठ; घमंडी ।

अह्रिमान–पु० (पह०?) पारसी धर्मानुसार पाप और अंधकारका देवता, शैतान, 'अहरिमान' ।

अह्रीक–वि० (सं०) निर्लज्ज । पु० बौद्ध भिक्षु ।

अह्ल–वि० (अ०) योग्य, अधिकारी, पात्र । पु० कुटुंबी । **–कार**–पु० कर्मचारी; राजकर्मचारी । **–मद**–पु० अदालतका एक विशेष कर्मचारी । **–(ह्ले)क़लम**–पु० लेखक, लेखन-व्यवसायी; शिक्षित व्यक्ति । **–किताब**–पु० ऐसे धर्मको माननेवाला जो किसी इलहामी किताबपर आश्रित हो । **–ख़ाना**–स्त्री० गृहस्वामिनी, पत्नी । **–ज़बाँ**–पु० वह व्यक्ति जिसकी मातृभाषा कोई खास भाषा हो; वह आदमी जिसकी बोल-चाल टकसाली मानी जाय । **–वतन**–पु० देशवासी, देशभाई ।

अह्लिया–स्त्री० (अ०) पत्नी, घरवाली ।

अह्लीयत–स्त्री० (अ०) योग्यता, पात्रता ।

अह्वल–वि० (सं०) दृढ़, स्थिर ।

अह्वला–स्त्री० (सं०) भल्लातक वृक्ष ।

आ

आ–देवनागरी वर्णमालाका दूसरा (स्वर) वर्ण और 'अ'का दीर्घ रूप ।

आँ–अ० विस्मयसूचक शब्द ।

आँक–पु० अंक; अदद; चिह्न; अक्षर; अँकवार; गोद; सिद्धांत; निश्चय; अंश; किसीके नामपर चला हुआ वंश; नौ मात्राओंके छंद; पहियेकी धुरी डालनेका ढाँचा ।

आँकड़ा–पु० अंक; हुक; पशुओंका एक रोग ।

आँकना–स० क्रि० कूतना, अंदाजा करना, अनुमान करना; निशान लगाना ।

आँकर*–वि० गहरा; महँगा; बहुत ज्यादा ।

आंकिक–पु० (सं०) (स्टैटिस्टीशियन) दे० 'सांख्यिक'; **सांख्यिकीविद्** ।

आँकुड़ा–पु० अँकुड़ा ।

आंकुशिक–पु० (सं०) अंकुश मारनेवाला, महावत ।

आँकुस*–पु० दे० 'अंकुश' ।

आँकू–पु० आँकनेवाला; कूतनेवाला ।

आँख–स्त्री० देखने–रूपबोध करनेकी इंद्रिय, नयन, चक्षु; निगाह, दृष्टि; कृपादृष्टि; परख, पहचान; ईखकी गाँठपरकी नोक जिससे अँखुआ निकलता है; अँखुआ; आँखकी शक्लका चिह्न (मोर-पंखपरका); छिद्र (सूईका); ध्यान; संतान । **–मिचौनी,–मिचौली,–मीचली**–स्त्री० लड़कोंका एक खेल जिसमें एक लड़केकी आँखें जब ढँक दी जाती हैं, तब और लड़के छिप जाते हैं । फिर उक्त लड़का इन्हें ढूँढकर छूनेका प्रयत्न करता है; (बादलोंका) कभी छिपना, कभी प्रकट हो जाना । **–मुँदाई,–मुचाई**–स्त्री० आँखमिचौनी । **मु० –आना,–उठना**–आँखोंमें लालिमा आकर उनमें पीड़ा और सूजन होना । **–उठाकर न देखना**–ध्यान न देना, उपेक्षा करना; लज्जा आदिके कारण सामने न देखना । **–उठाना**–निगाह सामने करके देखना; बुरी निगाह या शत्रुभावसे देखना । **–उलट जाना**–मरनेके समय आँखोंका पथरा जाना; घमंड होना । **–ऊँची न होना**–लज्जाके कारण सामने न देखना, नजर बराबर न करना । **–ऊपर न उठाना**–लज्जा या भयसे सामने न देखना । **–ओट पहाड़ ओट**–सामने न होनेपर दूर-नजदीक एकसा होना । **–कड़ुआना**–आँख गड़ाकर देखने या देरतक ताकनेके कारण आँखमें पीड़ा होना । **–का अंधा गाँठ का पूरा**–पैसेवाला, पर मूर्ख । **–का अंधा नाम नयनसुख**–नाम-गुणमें विरोध, कालेको गोरा कहना । **–का काँटा**–जिसे देखकर कष्ट हो; शत्रु; कार्यमें बाधक । **–का काजल चुराना**–सामने या पासकी वस्तु चुरा लेना, सफाईसे हाथ मारना । **–का कोया, –का डेला**–आँखका उभरा हुआ सफेद भाग जिसपर पुतली रहती है । **–का जाला**–आँखका एक रोग जिसमें पुतलीपर सफेद झिल्ली आ जाती है । **–का तारा, –का तिल**–कनीनिका; प्रिय व्यक्ति । **–का तेल निकालना**–आँखों पर जोर पड़नेवाला काम करना । **–कान खुला रहना**–सावधान रहना । **–का परदा**–आँखके भीतरकी झिल्ली । **–का परदा उठना**–भ्रम दूर होना । **–का पानी ढल जाना**–निर्लज्ज हो जाना । **–की किरकिरी**–आँखका काँटा । **–की ठंढक**–प्रिय व्यक्ति या वस्तु । **–की पुतली**–आँखके भीतरके परदेका वह भाग जो बाहरसे काला दिखाई देता है; अतिप्रिय व्यक्ति । **–की पुतली फिरना**–आँखका पथराना । **–की बदी भौं के आगे**-किसीका दोष उसके मित्र या संबंधीके सामने कहना । **–खटकना**–आँख किरकिराना । **–खुलना**–पलक खुलना; जागना; भ्रम दूर होना; दिमागपर तरी-ताजगी पहुँचाना । **–खुलवाना**–आँख बनवाना । **–खोलना**–आँख बनाना; सावधान करना; होशमें आना । **–गड़ना**–आँख दुखना; दृष्टि जमना । **–गड़ाना**–टकटकी लगाकर देखना । **–चमकाना**–आँखोंसे संकेत करना; आँख मटकाना । **–चरने जाना**–नजर गायब होना । **–चीर-चीरकर देखना**–आँख फाड़कर देखना । **–चुराकर कुछ करना**–छिपकर कुछ करना । **–चुराना, –छिपाना**–कतरा जाना, सामना बचाना; लज्जासे सामने न देखना; बे-मुरौवत हो जाना । **–चूकना**–गाफिल होना । **–छतसे लगना**–मरनेके समय आँख टँग जाना । **–जमना**–दृष्टि स्थिर रहना । **–जाना**–आँख फूटना । **–झपकना**–पलक गिरना, नींद आना । **–झपकाना**–आँखसे संकेत करना । **–झेंपना**–लज्जित होना । **–टँगना**–पुतलीका स्तब्ध होना, टकटकी बँधना । **–टेढ़ी करना**–बे-मुरौवती दिखलाना । **–डालना**–ध्यान देना । **–दबाना**–पलक सिकोड़ना; आँख मचकाना । **–दिखाना**–रोष या अवज्ञा-सूचक दृष्टिसे देखना । **–न खोलना**–(ज्वर आदिके कारण) गाफिल, बेसुध होना । **–न ठहरना**–चमक आदिके कारण दृष्टिका न टिकना । **–न पसीजना**–आँखमें आँसू न आना । **–नाकसे डरना**–ईश्वरसे डरना । **–निकालना**–आँखके डेलेको निकालना; क्रोधपूर्ण दृष्टिसे देखना । **–नीची करना या होना**–लज्जित होना । **–नीली-पीली,–लाल-पीली करना**–गुस्सा दिखाना; धमकाना । **–पटपटा जाना**–आँख फूटना । **–पड़ना**–दृष्टिगत होना; पानेकी इच्छा होना । **–पथराना**–मरनेके समय पुतलीका गतिहीन होना । **–पसारना,–फैलाना**–दूरतक नजर दौड़ाना । **–फड़कना**–पलक-का बार-बार हिलना (इसके आधारपर शुभाशुभका अनुमान किया जाता है) । **–फाड़-फाड़कर देखना**–आश्चर्य या औत्सुक्यके साथ देखना । **–फूटना**–अंधा होना; बुरा मालूम होना, देखकर जलना । **–फेरना**–पहलेकासा प्रेम न रखना, निगाह बदलना । **–फोड़ना**–आँख नष्ट करना; आँखपर जोर पड़नेवाला काम करना । **–बंदकर (मूँदकर) कोई काम करना**–बिना सोचे-समझे कोई काम करना; और किसी बातकी परवा न कर अपना काम करते जाना । **–बंद होना,–मुँदना**–आँख झपकना; मृत्यु होना । **–बचाना**–आँख चुराना । **–बनाना**–मोतियाबिंद आदिका शल्योपचार करना । **–बराबर करना**–सामने ताकना; डटकर बात करना । **–बिगड़ना**–आँख खराब होना; आँख टँगना । **–बिछाना**–आदरपूर्वक स्वागत करना । **–बैठना**–चोट आदिके कारण आँखका नष्ट हो जाना । **–भर आना**–आँखका अश्रुपूर्ण होना । **–भर देखना**–अच्छी तरह देखना । **–भौं टेढ़ी करना**–नाराज होना । **–मचकाना**–बार-बार पलकें गिराना; संकेत करना । **–मारना**–आँखोंसे इशारा करना । **–मिलाना**–बराबरीके भावसे देखना । **–मूँद लेना**–न देखना, ध्यान न देना । **–में आँख डालना**–आँख मिलाना; धृष्टतापूर्ण दृष्टिसे देखना । **–में खटकना**–बुरा मालूम होना । **–में गड़ना**–खटकना; मन लुभा लेना । **–में चुभना**–पसंद आना; बुरा लगना । **–में बसना**–ध्यान पर चढ़ना । **–मोड़ना**–आँख फेरना । **लगना**–नजर मिलना; प्रेम-दृष्टिसे देखना । **–लड़ना**–नींद आना; दिल लगना । **–लड़ाना**–आँख मिलाना, घूरना । **–ललचाना**–देखनेकी इच्छा होना । **–लाल करना**–क्रोधपूर्ण दृष्टिसे देखना । **–सामने न करना**–लज्जा आदि-के कारण सामने न ताकना । **–सेंकना**–सौंदर्य-दर्शनका सुख लेना, हसीनोंको घूरना । **–से आँख मिलाना**–नजर बराबर करना; आँख लड़ाना । **–से भी न देखना**–तुच्छ समझना । **–होना**–परख होना, ज्ञान होना । **–(खें) घुलना**–चार आँखें होना; आँख मिलाना । **–चढ़ना**–नींद आदिके कारण पलकोंका चढ़ जाना । **–चार करना या होना**–देखादेखी होना । **–ठंढी होना**–जी भरना, तृप्त होना । **–डबडबाना**–आँखोंमें आँसू भर आना । **–तरेरना**–क्रोधकी दृष्टिसे देखना । **–दौड़ाना**–नजर दौड़ाना, इधर-उधर देखना । **–फिर जाना**–बे-मुरौवत होना, नजर बदल जाना । **–बदल जाना**–नजर बदल जाना, कृपादृष्टि न रहना । **–(खों)की ठंढक**–प्रिय व्यक्ति या वस्तु । **–की सूइयाँ निकालना**–किसीके कोई काम लगभग पूरा कर लेनेपर थोड़ा करके सारा श्रेय लेनेका प्रयत्न करना । **–के आगे अँधेरा छाना**–मूर्च्छित होना; निर्बलता आदिके कारण क्षणमात्रके लिए कुछ न देख पड़ना । **–के आगे अँधेरा होना**–विपत्ति आदिमें अपनेको असहाय पाकर निराश होना; मूर्च्छित होना । **–के आगे चिनगारी छूटना**–चोट आदिके कारण चकाचौंध होना । **–के आगे नाचना**

या फिरना–सामने दृश्य मौजूद रहना; स्मृतिमें बना रहना । **–के आगे रखना**–सामने रखना । **–के डोरे**–आँखोंके सफेद भागपर लाल रंगकी बारीक नसें । **–के डोरे छूटना**–चोट आदिके कारण चकाचौंध होना । **–के सामने नाचना**–स्मृतिमें बना रहना; दृश्य सामने रहना । **–को रो बैठना**–आँखें खो देना । **–तले न लाना**–कुछ न समझना, हकीर समझना । **–देखा हुआ**–स्वयं देखा हुआ । **–पर ठिकरी रख लेना**–अनजान बनना; रुखाई दिखलाना । **–पर पट्टी बाँध लेना**–ध्यान न देना । **–पर परदा पड़ना**–भ्रम होना, समझमें न आना । **–पर पलकों का बोझ न होना**–अपने लोगोंका भार न मालूम होना । **–पर बिठाना,–पर बैठाना**–आदर-सत्कार करना, आदरके साथ रखना । **–पर रखना**–खातिरदारीके साथ रखना । **–में**–नजरमें, परखमें । **–में काजल घुलना**–काजलका खूब लगना । **–में खून उतरना**–क्रोधसे आँखोंका लाल होना । **–में चढ़ना**–पसंद आना, जँचना । **–में चरबी छाना**–घमंड या प्रमादसे किसी वस्तुकी ओर ध्यान न देना । **–में चुभना (खटकना)**–अच्छा न लगना । **–में चोब आना**–चोट आदिके कारण आँखोंका लाल होना । **–में झाईं पड़ना**–आँखोंका पकना । **–में टेसू, तीसी या सरसों फूलना**–ध्यानमें रहनेवाली बात सर्वत्र दिखाई देना; मस्ती आना । **–में तकला चुभाना**–आँखें फोड़ना । **–में धूल झोंकना, डालना या देना**–धोखा देना । **–में नाचना**–ध्यान बना रहना; दृश्य सामने रहना । **–में नोन देना**–आँखें फोड़ना । **–में फिरना**–ध्यान बना रहना । **–में बसना**–दिलमें घर कर लेना । **–में बैठना**–पसंद आना । **–में भंग घुटना**–भंगके नशेमें होना । **–में रखना**–प्यारसे रखना, हिफाजतसे रखना । **–में रात काटना**–जागकर रात बिताना । **–में शील होना**–मुरौवती होना । **–में समाना**–ध्यानपर चढ़ना; स्मरण बना रहना । **–लगना**–ऊपर आना, शरीरपर बीतना । **–सुख कलेजे ठंढक**–पूरी प्रसन्नता । **–से उतरना**–नजरोंसे उतर जाना । **–से ओझल होना**– सामने न रहना, दृष्टिसे परे होना । **–से काम करना**–इशारेसे काम निकालना । **–से गिरना**–आँखोंसे उतरना । **–से लगाकर रखना**–प्यारके साथ रखना ।

आँखड़ी*–स्त्री० आँख; अँखड़ी ।

आँखा–पु० एक तरहकी चलनी ।

आंग–वि० (सं०) शारीरिक; अंगधारी; अंग देशमें उत्पन्न; निम्न वर्गके पात्रोंसे संबंध रखनेवाला (ना०) । पु० कोमल शरीर ।

आँग*–पु० अंग; शरीर; स्तन ।

आंगक–पु० (सं०) अंगमें बसनेवाला; अंगराज । वि० अंग देशमें उत्पन्न ।

आँगन–पु० चौक, अजिर, घरके भीतरका सहन ।

आंगविद्य–वि० (सं०) आंगविद्या, सामुद्रिक विद्या जाननेवाला ।

आंगार–पु० (सं०) अँगारोंका ढेर ।

आंगारिक–वि० (सं०) अंगार-संबंधी; अंगार जलानेवाला ।

आंगिक–वि० (सं०) अंग या शरीर-संबंधी; अंगचेष्टा द्वारा व्यंजित या कृत (भाव, अभिनय आदि) । पु० मृदंगवादक; शारीरिक चेष्टा; कायिक अनुभाव । **–अभिनय**–पु० अभिनयके चार भेदोंमेंसे एक–शारीरिक चेष्टाओं द्वारा किया जानेवाला अभिनय ।

आंगिरस–वि० (सं०) अंगिरा ऋषिसे संबद्ध या उत्पन्न । पु० अंगिराके पुत्र बृहस्पति आदि; अंगिरस गोत्रमें उत्पन्न जन; अथर्ववेदका एक सूक्त ।

आँगी*–स्त्री० अँगिया, चोली; छलनी ।

आँगुयर, आँगुल–पु० अंगुल ।

आँगुरिया*–स्त्री० दे० 'आँगुर' ।

आँगुरी*–स्त्री० उँगली ।

आंग्ल–वि० (अंग्रेजी एंग्लोसे) अंग्रेजोंका, अंग्रेजों संबंधी ।

आँघी†–स्त्री० महीन जालीसे मढ़ी चलनी ।

आँच–स्त्री० गरमी; जलन; लपट; आग; ताव; तेज; चोट; क्षति, हानि, अहित; संकट; प्रेम; कामताप । **मु०–आना**– हानि होना; कष्ट, क्षति, आघात पहुँचना । **–खाना**–आँचपर पकाया जाना; (पकायी जानेवाली चीजका) अधिक आँच खा जाना, ताव खाना ।

आंचन, आंछन–पु० (सं०) अस्थिभंग, मोच आदि ठीक करना; शरीरसे काँटा, बाण आदि निकालना ।

आँचना*–स० क्रि० जलाना, तपाना; कष्ट देना ।

आँचर*–पु० दे० 'आँचल' ।

आँचल–पु० शाल, दुपट्टे आदिका छोर; साड़ी, धोती आदिका सामने रहनेवाला छोर, अँचला; स्तन (ला०) । **मु०–डालना**–विवाहकी एक रीति (मुसल०) । **–दबाना**–बच्चेका दूध पीना । **–देना**–बच्चेको दूध पिलाना; विवाहकी एक रीति; आँचलसे हवा करना । **–में बाँधना**–गाँठ बाँधना, अच्छी तरह याद कर लेना; (किसी वस्तुको) सर्वदा साथ रखना । **–लेना**–आँचलसे पैर छूकर प्रणाम करना ।

आंचलिक–वि० (सं०) जिसका संबंध किसी अंचल या क्षेत्र विशेषसे हो, प्रान्तीय या क्षेत्रीय (प्रयोग, इ०) ।

आंचलिकता–स्त्री० कहानी उपन्यासमें प्रचलित आधुनिक प्रवृत्ति जो किसी जनपद या अंचल के जीवनको समग्र रूपसे चित्रित करना अपना उद्देश्य मानती है ।

आंजन–पु० (सं०) अंजन; अंजनीके पुत्र हनूमान् । वि० अंजन-संबंधी ।

आँजन–पु० अंजन ।

आँजना–स० क्रि० अंजन लगाना ।

आंजनी–स्त्री० (सं०) अंजन । **–कारी**–स्त्री० अंजन तैयार करनेवाली स्त्री ।

आंजनेय–पु० (सं०) अंजना-पुत्र हनूमान् ।

आँट–पु०, स्त्री० अँगूठे और तर्जनीके बीचकी जगह; दाँव; पूला; लाग-डाट; गाँठ । **–साँट**–स्त्री० साजिश, बंदिश; मेलजोल । **मु०–पर चढ़ना**–दाँवपर चढ़ना ।

आँटना*–अ० क्रि० अँटना, पूरा पड़ना; पार पाना; पहुँचना; मिलना, हाथ लगना । स० क्रि० अँटाना; अंटी बनाना ।

आँटी–स्त्री० गुल्ली-डंडा खेलनेकी गुल्ली; पूला; सूतका लच्छा; कुश्तीका एक पेच; टेंट; रीति ।

आँठी–स्त्री० दही, बलगम आदिका थक्का; गाँठ; गुठली; उठता हुआ स्तन ।

आंड–वि० (सं०) अंडेसे उत्पन्न । पु० हिरण्यगर्भ; अंडकोश; अंडा; अंडोंका ढेर । **–ज**–वि० अंडेसे उत्पन्न होनेवाला । पु० पक्षी, सर्प आदि ।

आँड़–पु० अंडकोश ।

आँड़ी–स्त्री० गाँठ, कंद; सिरा; पहियेकी सामी या हाल; † अंडकोश ।

आँड़ू–वि० जो बधिया न हो, अँड़ुआ (बैल) ।

आंत–वि० (सं०) अंतिम, अंतका ।

आँत–स्त्री० पाचन-संस्थानका आमाशयके बादसे मलद्वारतकका भाग जिसमेंसे होकर आहार, रसग्रहणके बाद, मलरूपमें बाहर निकलता है, अंत्र, अँतड़ी । **–कट्टू**–पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें पतले दस्त लगते हैं । **मु० –उतरना**–आँत उतरनेकी बीमारी, अंत्रवृद्धि, 'हार्निया' । **–ऐंठना**–आँतोंमें ऐंठन होना, मरोड़ होना । **–(तें) उलट जाना**–कै होना । **–कुलकुलाना,–कुलबुलाना**–भूखसे बेचैन होना ।**–गलेमें या मुँहमें आना**–आँतोंमें बल पड़ना, तंग होना । **–समेटना**–भूख सहना । **–सूखना**–बहुत भूखा होना । **–(तों)का बल खुलना**–छककर खाना । **–में बल पड़ना**–पेटमें दर्द होना ।

आंतर–वि० (सं०) भीतरी, अंतरंग; गुप्त । पु० अंतरंग मित्र; हृदय; आंतरिक स्वभाव ।

आँतर–पु० अंतर; खेतका वह भाग जो एक बार जोतनेके लिए घेरा जाता है; पानीकी क्यारियोंके बीच छोड़ा जानेवाला रास्ता ।

आंतरागारिक–वि० (सं०) भंडारीके कर्तव्योंसे संबंध रखनेवाला; घरके भीतरी भागसे संबंधित ।

आंतराल–वि० (सं०) आंतरिक स्वभावका ज्ञान रखनेवाला ।

आंतरिक–वि० (सं०) भीतरी; हार्दिक; जिसका संबंध भीतरी

वातोंसे हो।

आंतरिक्ष, आंतरीक्ष–वि० (सं०) अंतरिक्ष-संबंधी, आकाशीय। पु० दे० 'अंतरिक्ष'।

आंतर्गेहिक–वि० (सं०) अंतःपुरमें उत्पन्न या उसमें होनेवाला।

आंतर्वेश्मिक–वि० (सं०) दे० 'आंतर्गेहिक'।

आंतिका–स्त्री० (सं०) बड़ी बहन।

आंत्र–वि० (सं०) आँतसे संबंध रखनेवाला। पु० आँत।

आंत्रिक–वि० (सं०) अंत्र-संबंधी। **–ज्वर**–पु० आँतोंमें विकार होनेसे उत्पन्न कठिन ज्वर जो दो तीन सप्ताह या अधिक समय तक बराबर बना रहता है।

आँदू*–पु० सीकड़; बेड़ी।

आंदोल–पु० (सं०) झूलना; कंपन; झूला।

आंदोलक–पु० (सं०) झूला; हिलाने, झुलानेवाला।

आंदोलन–पु० (सं०) इधरसे उधर आना-जाना, झूलना, हिलना (रेलगाड़ीका प्रकंपन औरं मृदु आंदोलन निद्राकर्षण कर रहा था); हलचल; किसी बातके लिए व्यापक सामूहिक प्रयत्न; तहरीक। **–कर्ता, कारी**–पु० (सं०) आंदोलन करनेवाला, (किसी बात अथवा लक्ष्यके लिए) हलचल या धूम मचानेवाला। **–समिति**–स्त्री० (कमिटी ऑफ ऐक्शन) दे० 'संघर्षसमिति'।

आंदोलित–वि० (सं०) कंपित; झुलाया हुआ; हलचलसे पूर्ण।

आँध–स्त्री० अँधेरा; रतौंधी; आफत।

आँधना*–अ० क्रि० हल्ला बोलना, टूट पड़ना।

आँधर†, **आँधरा***–वि० अंधा।

आंधस–पु० (सं०) माँड़।

आंधसिक–पु० (सं०) पाचक, रसोईदार। वि० पकानेवाला।

आँधारंभ–पु० अंधेर, मनमाना कार्य।

आँधी–स्त्री० धूलभरी जोरकी हवा, तूफान, प्रभंजन; भारी हलचल। वि० आँधी-जैसा वेगवान्, बहुत तेज। **मु० –उठना**–हलचल मचाना; तूफान उठना।

आँधै*–स्त्री० दे० 'आँधी'।

आंध्य–पु० (सं०) अंधापन; अंधकार।

आंध्र–पु० (सं०) दक्षिण भारतका तेलगू-भाषी प्रदेश; आंध्रवासी।

आंब–पु० (सं०) एक तरहका अन्न।

आँब†–पु० आम।

आंबष्ठ–पु० (सं०) अंबष्ठ देशका रहनेवाला।

आँबाहलदी–स्त्री० आमाहलदी।

आंबिकेय–पु० (सं०) कार्त्तिकेय; धृतराष्ट्र।

आँय-बाँय–पु० अंडबंड, निरर्थक प्रलाप, बकवक।

आँव–पु० पेटमें अन्न ठीकसे न पचना या उसके कारण उत्पन्न होनेवाला एक तरहका चिकना सफेद मल।

आँवठ–पु० किनारा; कपड़े या बरतनका किनारा।

आँवड़ना*–अ० क्रि० उमड़ना, बह निकलना।

आँवड़ा*–वि० गहरा।

आँवन–पु० पहियेके छेदपर लगायी जानेवाली लोहेकी सामी; छेद बढ़ानेका औजार।

आँवरा–पु० आँवला।

आँवल–स्त्री० वह झिल्ली जिसमें गर्भस्थ शिशु लिपटा रहता है।

आँवलगट्टा–पु० सूखा आँवला।

आँवला–पु० एक पेड़ या उसका फल जो मुरब्बा, अचार बनाकर खाने या दवाके काममें आता है। **–पत्ती**–स्त्री० सिलाईका एक प्रकार। **–सार गंधक**–स्त्री० साफ की हुई गंधक।

आँवाँ–पु० दे० 'आवाँ'।

आंशिक–वि० (सं०) अंश-संबंधी; कुछ, थोड़ा।

आंशुक जल–पु० (सं०) धूप दिखलाया हुआ पानी।

आंश्य–वि० (सं०) अंश-संबंधी।

आँस*–पु० आँसू; वेदना, कष्ट। स्त्री० डोरी, रेशा।

आँस†–स्त्री० मूँछोंका आरंभिक रूप, रोमावलीकी हलकी-सी रेखा, मस–'अटल युवक था। आँसें भीग चुकी थीं'–मृग०।

आँसना†–अ० क्रि० खटकना, गड़ना, चुभना ('टूटे काँटे'में)।

आँसी*–स्त्री० बायन, भेंट।

आँसू–पु० नेत्रजल, अश्रु। **–ढाल**–पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें आँखोंसे बहुत पानी गिरता है। **मु० –गिराना, ढालना**–रोना। **–पीकर रह जाना**–मन मसोसकर रह जाना। **–पोंछना**–ढाढ़स बँधाना। **आँसुओंसे मुँह धोना**–बहुत रोना।

आँह–अ० भरोसे–'रह्यौ न काम कछू काहू सों पालत प्रान रावरी आँह'–घन०।

आँहड़–पु० बरतन।

आँहाँ–अ० निषेधसूचक शब्द, नहीं।

आ–उप० (सं०) तक (आसेतु), से (आजन्म), भर (आजीवन), सहित (आबालवृद्ध) आदिका सूचक।

आइंदा–वि० (फा०) आनेवाला, भविष्य। अ० आगे। **–ज़माना**–पु० भविष्यत्काल (व्या०)।

आइंस्टाइन, प्रोफेसर अलबर्ट–पु० जर्मनीके प्रसिद्ध वैज्ञानिक (१८७९-१९५५) जो अपने 'सापेक्षतावादके सिद्धांत'के कारण विख्यात हुए। वे यहूदी थे और उन्हें हिटलरके उत्पीडनसे त्रस्त होकर स्वदेश छोड़ना पड़ा।

आइ*–स्त्री० आयु, जीवन।

आइना†–पु० आईना।

आइस*–पु०, स्त्री० दे० 'आयसु'।

आइसक्रीम–स्त्री० (अं०) दूध आदिके संयोगसे तैयार की हुई कुलफी।

आई*–स्त्री० आयु; मौत; † माता।

आईन–पु० (अ०) विधान, कानून, नियम। **–(ने)अकबरी**–पु० फारसीका एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें अकबरके राज्य-प्रबंधका वर्णन है। **–सल्तनत,–हुकूमत**–पु० शासन-विधान।

आईना–पु० (फा०) दर्पण, शीशा; किवाड़ेका दिलहा; (ला० आईने जैसा साफ, स्पष्ट)। **–दार**–वि० गुण-दोष प्रकट करनेवाला। पु० नाई। **–बंदी**–स्त्री० कमरेमें झाड़ आदि सजाना; फर्शमें पत्थर आदिकी जुड़ाई; रोशनी करनेके लिए टट्टियाँ खड़ी करना। **–साज़**–पु० आईना बनानेवाला। **मु०–(ने)में मुँह देखना**–अपनी योग्यता समझ लेना।

आईनी–वि० (अ०) वैध, विधानसंगत; नियमबद्ध।

आउंस–पु० दे० 'औंस'।

आउ*–स्त्री० दे० 'आयु'।

आउज, आउझ*–पु० एक बाजा, ताशा।

आउ-बाउ*–पु० आयँ-बायँ (बकना); प्रलाप।

आउर्द–पु० (फा०) आमदका उलटा; (कवितामें) सोचकर लाया जानेवाला भाव, क्लिष्ट कल्पना।

आउर्दा–वि० (फा०) लाया हुआ; कृपापात्र।

आउस*–पु० एक तरहका धान।

आऊ*–स्त्री० दे० 'आयु'।

आकंठ–क्रि० वि० (सं०) कण्ठ तक, पूर्णरूपसे।

आकंप, आकंपन–पु० (सं०) हिलना, काँपना।

आकंपित–वि० (सं०) हिला, काँपा हुआ; हिलाया या कँपाया हुआ; क्षुब्ध किया हुआ।

आक–पु० मदार। **–की बुढ़िया**–अकवनका घूआ; बहुत बूढ़ी स्त्री।

आकटि–अ० (सं०) कमरतक। वि० कमरतक पहुँचनेवाला।

आक़बत–स्त्री० (अ०) मृत्यु या प्रलयके बादका काल; परलोक। **–अंदेश**–वि० अग्रसोची, दूरंदेश, नतीजेका विचार करनेवाला। **मु० –बिगड़ना**–परलोक बिगड़ना। **–में दिया दिखाना**–परलोकमें काम आना।

आक़बती लंगर–पु० एक तरहका लंगर जो संकटके समय डाला जाता है।

आकवाक*–पु० दे० 'अकबक'।

आकर–पु० (सं०) खान; उत्पत्तिस्थान; भांडार; भेद; तलवारका एक हाथ। वि० दक्ष; श्रेष्ठ; अधिक; गुना (दस आकर)। **–ग्रंथ**–पु० शब्दकोश, विश्वकोश आदि ऐसे ग्रंथ जिनमें शब्दों, देशों, व्यक्तियों, घटनाओं इत्यादिका विवरण दिया रहता है और जिनसे ग्रंथादिके प्रणयनमें सहायता ली जाती है (बुक्स ऑव् रेफरेंस); संदर्भग्रंथ।

आक़रक़रहा–पु० (अ०) एक प्रसिद्ध ओषधि, अकरकरा ।

आकरखना*–स० क्रि० आकृष्ट करना, खींचना ।

आकरिक–पु० (सं०) खानके कामकी निगरानी करनेवाला; खान खोदनेवाला ।

आकरी–स्त्री० (सं०) खान खोदनेका धंधा; * व्याकुलता, आकली ।

आकरी(रिन्)–वि० (सं०) खानसे उत्पन्न, खनिज; अच्छी नस्लका । पु० दे० 'आकरिक' ।

आकर्ण–अ० (सं०) कानतक । वि० कानतक पहुँचा हुआ, कानको छूता हुआ ।

आकर्णन–पु० (सं०) सुनना ।

आकर्णित–वि० (सं०) सुना हुआ ।

आकर्ष–पु० (सं०) खींचना; खिंचाव; चुंबक; पासा; पासेका खेल; पासेकी बिसात; कसौटी ।

आकर्षक–वि० (सं०) खींचनेवाला; दूसरोंका मन, ध्यान अपनी ओर खींचनेवाला, रोचक, सुंदर ।

आकर्षण–पु० (सं०) (अपनी ओर) खींचना; खिंचाव; मन खींचकर दूरस्थ व्यक्तिको बुला लेनेका तांत्रिक प्रयोग । **–शक्ति** –स्त्री० किसी भौतिक पदार्थकी अन्य पदार्थको अपनी ओर खींचनेकी प्राकृतिक शक्ति, चुंबक-शक्ति ।

आकर्षणी–स्त्री० (सं०) फल आदि तोड़नेकी लग्गी, अँकुसी; शरीरपर अंकित की जानेवाली एक तरहकी मुद्रा; एक प्राचीन सिक्का ।

आकर्षन*–पु० दे० 'आकर्षण' ।

आकर्षना*–स० क्रि० खींचना ।

आकर्षिक–वि० (सं०) आकर्षण करनेवाला, खींचनेवाला ।

आकर्षित–वि० (सं०) दे० 'आकृष्ट' ।

आकर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) दे० 'आकर्षक' ।

आकलन–पु० (सं०) ग्रहण, पकड़ना; समझना; इकट्ठा करना; गिनना; खोज करना, अनुसंधान; इच्छा, आकांक्षा; (एस्टिमेशन) व्यय या संभावनाओं आदिके सम्बन्धमें पहलेसे अनुमान लगाना या मत स्थिर करना ।

आकलित–वि० (सं०) गृहीत, संगृहीत; आबद्ध; गुँथा हुआ; कंपित किया हुआ; समझा हुआ; परिगणित ।

आकली*–स्त्री० बेचैनी, व्याकुलता; गौरैया नामक पक्षी ।

आकल्प–पु० (सं०) सजना, वेशरचना; पहनावा; आभूषण; अस्वस्थता, रोग । अ० कल्पपर्यंत ।

आकल्पक–पु० (सं०) अंधकार; मोह; गाँठ; उत्कंठा; हर्ष; मूर्च्छा; दुःखपूर्ण स्मृति ।

आकल्य–पु० (सं०) रोग, बीमारी ।

आकष–पु० (सं०) कसौटी ।

आकस्मात्*–अ० दे० 'अकस्मात्' ।

आकस्मिक–वि० (सं०) अचानक होनेवाला, इत्तिफाकी; कारणहीन । **–छुट्टी**–स्त्री० (हिं०) अचानक आवश्यकता आ पड़नेपर ली जानेवाली छुट्टी ।

आकस्मिकतानिधि–स्त्री० (कंटिनजेंसी फंड) वह निधि या कोष जिसमेंसे अकस्मात् उपस्थित होनेवाली आवश्यकता आदिके लिए रुपया व्यय किया जा सके ।

आकांक्षा–स्त्री० (सं०) चाह, इच्छा; अपेक्षा; वाक्यमें अर्थपूर्तिके लिए पदविशेषकी आवश्यकता; खोज-पूछ ।

आकांक्षित–वि० (सं०) चाहा हुआ; अपेक्षित ।

आकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) इच्छा, अपेक्षा रखनेवाला; खोजी ।

आक़ा–पु० (अ०) मालिक, स्वामी ।

आकाय–पु० (सं०) चिताग्नि; चिता; निवासस्थान ।

आकार–पु० (सं०) रूप, शक्ल; गढ़न, बनावट; लंबाई-चौड़ाई, फैलाव (छोटा-बड़ा आदि); मनका भाव बतानेवाली देह-चेष्टा, इशारा; एकरूपता; 'आ' स्वर । **–गुप्ति**–स्त्री०, **–गहन**, **–गोपन** –पु० मनके भावोंको छिपाना ।

आकारण–पु० (सं०) बुलाना, आह्वान; चुनौती ।

आकारवान्(वत्)–वि० (सं०) साकार; सुरूप; सुगठित ।

आकारपत्र–पु० (फार्म) दे० 'प्रपत्र' ।

आकारविज्ञान–पु० (मॉरफॉलॉजी) जीवों तथा पौधोंके आकारादिके अध्ययनका शास्त्र, 'आकारिकी' ।

आकारांत–वि० (सं०) (वह शब्द) जिसके अंतमें 'आ' हो ।

आकारिकी–स्त्री० (मॉरफॉलॉजी) दे० 'आकारविज्ञान' ।

आकारित–वि० (सं०) आहूत; माँगा हुआ ।

आकारी*–वि० बुलानेवाला ।

आकाल–पु० (सं०) उपयुक्त समय; अनुपयुक्त काल ।

आकालिक–वि० (सं०) क्षणिक; असामयिक, बे-मौसिम; अप्रत्याशित ।

आकालिकी–स्त्री० (सं०) बिजली ।

आकाश–पु० (सं०) पंच महाभूतोंमेंसे प्रथम जो शब्दगुणवाला माना जाता है, आसमान; ईथर; शून्य (ग०); शून्य स्थान; अवकाश; छिद्र, रंध्र; ब्रह्म; अभ्रक । **–कक्षा**–स्त्री० क्षितिज । **–कल्प** –पु० ब्रह्म । **–कुसुम**, **–पुष्प**–पु० आसमानका फूल, कल्पित या अनहोनी बात । **–गंगा**–स्त्री० आकाशमें उत्तरसे दक्षिणतक फैला हुआ छोटे-छोटे तारोंका समूह; आकाशवाहिनी गंगा, मंदाकिनी । **–ग**–पु० पक्षी । **–गा**–स्त्री० आकाशगंगा । **–चमस**–पु० चंद्रमा। **–चारी(रिन्)**–वि० आकाशमें चलने-फिरनेवाला (पक्षी, ग्रह आदि) । **–जननी**–स्त्री० बाण चलानेके लिए प्राचीरमें बने हुए छिद्र । **–जल**–पु० मेह; ओस । **–दीप**, **–प्रदीप**–पु० बाँसके सिरेपर बाँधकर जलाया जानेवाला दीया या लालटेन । **–देश**–पु० खुली जगह । **–धुरी**–स्त्री०, **–ध्रुव**–पु० खगोलका ध्रुव । **–नदी** –स्त्री० आकाशगंगा । **–निंब**–पु० अकासनीम । **–निद्रा**–स्त्री०, **–शयन**–पु० खुली जगहमें सोना । **–नीम**–स्त्री० नीमके वृक्षपर होनेवाली एक वनस्पति । **–पथिक**–पु० सूर्य । **–फल**–पु० संतान। **–बेल**, स्त्री० अमरबेल। **–भाषित**, **–वचन**–पु० अभिनयमें किसी पात्रका आकाशकी ओर देखकर कोई प्रश्न करना और फिर उसका उत्तर देना । **–मंडल**–पु० खगोल । **–मांसी**–स्त्री० जटामाँसी । **–मुखी (खिन्)**–पु० आकाशकी ओर मुख करके तप करनेवाला साधु (शैवसंप्रदाय) । **–मूली**–स्त्री० जलकुंभी । **–यान**–पु० विमान, हवाई जहाज । **–योधी(धिन्)**–पु० किसी ऊँचे स्थान, टीले, विमान आदिपरसे युद्ध करनेवाला योद्धा । **–रक्षी(क्षिन्)** –पु० प्राचीरके ऊपरी हिस्सेपरसे पहरा देनेवाला । **–लोचन**–पु० मानमंदिर । **–बल्ली**–स्त्री० अमरबेल । **–वाणी**–स्त्री० आसमानसे आनेवाली आवाज, अभौतिक वाणी, देववाणी; दे० क्रममें । **–वृत्ति**–स्त्री० ऐसी जीविका जिसका कुछ ठीक-ठिकाना न हो, अनिश्चित वृत्ति । वि० ऐसी वृत्तिवाला । **–सलिल**–पु० मेह; ओस । **–स्फटिक**–पु० एक तरहका पत्थर जिसका निर्माण आकाशमें होना माना जाता है; ओला । मु०**–खुलना**–आसमान साफ होना; बादल हटना । **–छूना**–बहुत ऊँचा होना । **–पाताल एक करना**–भारी प्रयास करना, हलचल मचाना । **–पातालका अंतर**–बहुत बड़ा अंतर । **–से बातें करना**–बहुत ऊँचा होना ।

आकाशवाणी–स्त्री० (सं०) रेडियो द्वारा प्रसारित वाणी । **–केंद्र** –स्त्री० वह स्थान जहाँसे रेडियो द्वारा वार्ता, समाचार, संगीत आदि प्रसारित किया जाय ।

आकाशास्तिकाय–पु० (सं०) ६ प्रकारके द्रव्योंमेंसे एक (जै०) ।

आकाशी–स्त्री० (सं०) धूपसे बचनेके लिए ताना गया चँदोवा ।

आकाशीय–वि० (सं०) आकाश-संबंधी; आकाशमें स्थित या उत्पन्न ।

आकाशेश–वि० (सं०) असहाय, निराश्रय । पु० इंद्र ।

आकिंचन, **आकिंचन्य**–पु० (सं०) निर्धनता, कंगाली ।

आक़िबत–स्त्री० (अ०) दे० 'आक़बत' ।

आक़िल–वि० (अ०) अक्ल रखनेवाला, समझदार ।

आकिलखानी–पु० एक तरहका कत्थई रंग ।

आकीर्ण–वि० (सं०) फैलाया, बिखेरा हुआ; भरा हुआ, व्याप्त ।

आकुंचन–पु० (सं०) सिमटना, सिकुड़ना; टेढ़ा होना; वैशेषिक मतके अनुसार पाँच कर्मोंमेंसे एक ।

आकुंचित–वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ; कुटिल; घुंघराले (केश) ।

आकुंठन–पु० (सं०) लज्जा; भोथरा होना ।

आकुंठित–वि० (सं०) जड़; लज्जित; कुंद, भोथरा ।

आकुल–वि० (सं०) उद्विग्न, परेशान; बेचैन; भरा हुआ; अव्यवस्थित; दबा, अभिभूत (शोकाकुल)। पु० आबाद जगह; खच्चर।

आकुलता–स्त्री० (सं०) बेचैनी, उद्विग्नता; परेशानी।

आकुलित–वि० (सं०) आकुल; जोता हुआ; पंकिल किया हुआ।

आकूत–पु० (सं०) अभिप्राय; आशय; इच्छा; प्रेरणा; उत्साह; अनुभूति; आश्चर्य।

आकूति–स्त्री० (सं०) इच्छा; अभिप्राय; इरादा; स्वायंभुव मनुकी तीन कन्याओंमेंसे एक।

आकूवार–पु० (सं०) समुद्र।

आकृति–स्त्री० (सं०) रूप, गढ़न; चेहरा; जाति; एक वर्णवृत्त। **–च्छत्ना**–स्त्री० घोषातकी नामक लता।

आकृष्ट–वि० (सं०) खींचा हुआ; मुग्ध।

आकृष्टि–स्त्री० (सं०) खिंचाव; गुरुत्वाकर्षण; धनुषको झुकाना।

आकेकर–वि० (सं०) अर्द्धनिमीलित, आधा बंद।

आकोकेर–पु० (सं०) मकर राशि।

आकोप–पु० (सं०) थोड़ा क्रोध।

आक्रंद–पु० (सं०) रोना, चिल्लाना; पुकारना; आवाज; लड़ाईका नारा; घोर युद्ध; चिल्लानेका स्थान; मित्र, सहायक; मित्र राजापर होनेवाले आक्रमणको रोकनेवाला राजा।

आक्रंदन–पु० जोरसे चिल्लाना या पुकारना; चीख; रोना।

आक्रंदिक–वि० (सं०) ऐसे स्थानपर जाकर चिल्लानेवाला जहाँसे उसका चिल्लाना सुनाई दे।

आक्रंदित–वि० (सं०) जोरसे रोने, चिल्लानेवाला; पुकारा गया, आहूत। पु० रोना, चिल्लाना।

आक्रंदी(दिन्)–वि० (सं०) रोने, चिल्लाने या पुकारनेवाला।

आक्रम–पु० (सं०) निकट जाना; प्राप्त करना; पराभूत करना; पराक्रम।

आक्रमण–पु० (सं०) पास जाना; टूट पड़ना; चोट करना; हमला, चढ़ाई; छीनना; कब्जा करना; पराभूत करना; आक्षेप, (ला०); चोट; शक्ति; आहार।

आक्रमित–वि० (सं०) जिसपर आक्रमण किया गया हो, आक्रांत।

आक्रमिता–वि० स्त्री० (सं०) (वह नायिका) जो मनसावाचाकर्मणा नायकको अपने वशमें करे।

आक्रय–पु० (सं०) व्यापार, व्यापारी; (हाकर) घूम-फिरकर सौदा बेचनेवाला; फेरीवाला।

आक्रांत–वि० (सं०) जिसपर हमला किया गया हो; प्राप्त; पराभूत; जिसपर कब्जा किया गया हो; कष्टग्रस्त।

आक्रांति–स्त्री० (सं०) कब्जा करना; आरोहण; चढ़ जाना; पराभूत करना; मार डालना; शक्ति, बल।

आक्रामक–वि० (सं०) आक्रमण करनेवाला।

आक्रीड–पु० (सं०) क्रीड़ास्थान, विहारस्थल, उपवन आदि; क्रीड़ा। वि० क्रीड़ाशील। **–गिरि, –पर्वत**–पु० क्रीड़ाका पहाड़। **–भूमि**–स्त्री० क्रीड़ास्थल।

आक्रीडन–पु० (सं०) क्रीड़ा करना।

आक्रीडी(डिन्)–वि० (सं०) क्रीड़ाशील। (स्त्री० 'आक्रीडिनी'।)

आक्रुष्ट–वि० (सं०) जो कोसा गया हो; अभिशप्त। पु० दुर्वचन; परुष भाषण; डाँट-फटकार।

आक्रोश–पु० (सं०) कोसना; शाप; निंदा, कुत्सा; कटूक्ति; चीखपुकार, चिल्लाहट; शपथ।

आक्रोशक–वि० (सं०) कोसने, शाप देनेवाला।

आक्रोशन–पु० (सं०) कोसना; शाप देना; बुरा-भला कहना।

आक्रोशित–वि० (सं०) दे० 'आक्रुष्ट'।

आक्रोष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) आक्रोशक।

आक्लिन्न–वि० (सं०) तर, भीगा हुआ; द्रवित, करुणार्द्र।

आक्लेद–पु० (सं०) भींगना, आर्द्र होना।

आक्ष–वि० (सं०) अक्ष-संबंधी। **–पाटिक**–पु० द्यूतनिरीक्षक; न्यायाधीश।

आक्षकी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी शराब।

आक्षपाद–पु० (सं०) अक्षपाद–गौतम–का अनुयायी।

आक्षारण–पु० (सं०) व्यभिचार आदिका दोषारोप।

आक्षिक–वि० (सं०) जुआड़ी; जुएसे संबंध रखनेवाला; जुएमें जीता हुआ। पु० एक वृक्ष, अक्षिक; जुएमें जीता या हारा हुआ धन।

आक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका, गिराया हुआ; छीना हुआ; जिसपर आक्षेप किया गया हो, लांछित; अभिभूत; परित्यक्त; निर्दिष्ट; जिसे चुनौती दी गयी हो।

आक्षीव–वि० (सं०) मत्त। पु० सहिजन, अक्षीव।

आक्षेप–पु० (सं०) फेंकना; उछालना; खींचना; किसीके व्यवहार, कथन आदिके संबंधमें ऐसी कटु बात कहना जिससे वह दोषित जान पड़े, अपवाद, लांछन; आपत्ति, एतराज; संकेत, निर्देश; ध्वनि; एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तुको कुछ विशेषता प्रतिपादित करनेके लिए निषेधसा किया जाता है (सा०); एक वातरोग।

आक्षेपक–वि० (सं०) आक्षेप करनेवाला, ताना देनेवाला; शिकारी। पु० एक वातरोग।

आक्षेपण–पु० (सं०) आक्षेप करना।

आक्षेपी(पिन्)–वि० (सं०) आक्षेपक।

आक्षोट–पु० (सं०) अखरोट।

आक्षोदन–पु० (सं०) आखेट।

आक्षोभ–पु० आघात। **–चिकित्सा**–स्त्री० (शॉक ट्रीटमेंट) दे० 'सहसोपचार'।

आक्साइड–पु० (अं०) आक्सिजन और धातुके मेलसे बना पदार्थ, जंग, मोरचा।

आक्सिजन–पु० (अं०) एक गैस जो प्राणियोंके जीवनके लिए अत्यावश्यक है, अम्लजन, ओषजन।

आक्सीकरण–(ऑक्सिडेशन) किसी पदार्थका ऑक्सीजनके साथ रासायनिक संयोग करना। किंतु अब 'आक्सीकरण' अधिक व्यापक अर्थमें प्रयोग किया जाता है; जब किसी क्रियामें आयन, परमाणु या परमाणुसमूहसे इलेक्ट्रान निकल जाते हैं तो हम कहते हैं कि उसका आक्सीकरण हो गया। जैसे सोडियम जब क्लोरीनसे संयोग करके सोडियम-क्लोराइड बनाता है तो इस क्रियामें सोडियमका आक्सीकरण हो जाता है क्योंकि सोडियम अपने एकाकी वैलेन्सी-इलेक्ट्रॉनसे वंचित हो गया।

आखंडल–पु० (सं०) इंद्र।

आख–पु० (सं०) खंती; कुदाल।

आखण–वि० (सं०) कड़ा (जो खोदा न जा सके–जैसे पत्थर)।

आखत–पु० अक्षत; विवाह आदिमें नाई आदिके लिए निकाला जानेवाला अन्न; केसर आदिमें रँगा हुआ चावल जो दूल्हे या देवताके मस्तकपर लगाया जाता है।

आख़ता–वि० (फा०) बधिया।

आखथू–अ० खखारकर थूकनेकी आवाज; धिक्कार-सूचक उद्गार।

आखन–पु० (सं०) दे० 'आख'। * अ० प्रतिक्षण।

आखना*–स० क्रि० कहना; देखना; चाहना; उल्लंघन करना; छलनीसे छानना।

आखनिक–पु० (सं०) खोदनेवाला; खान खोदनेवाला; चूहा; शूकर; चोर; कुदाल।

आखर–पु० (सं०) कुल्हाड़ी; कुदाल; सार; अस्तबल; * अक्षर, वर्ण।

आखा–पु० झीने कपड़ेसे मढ़ी छलनी; खुरजी। * वि० पूरा, समूचा; अनगढ़ा।

आखात–पु० (सं०) उत्खनन; कुदाल; खंती; उपसागर।

आख़िर–पु० (फा०) अंत, समाप्ति, सीमा; परिणाम। वि० अंतका, पिछला। अ० अंतमें, आखिरको; अवश्य; भला; मगर। **–कार**–अ० अंतमें, अंततः।

आख़िरत–स्त्री० (अ०) परलोक (बनना, बिगड़ना)।

आख़िरी–वि० अंतिम, सबसे पीछेका।

आखु–पु० (सं०) चूहा; चोर; सूअर; कुदाल; कंजूस; देवताड़। **–करीष**–पु० वल्मीक। **–कर्णपर्णिका, –कर्णी, –पर्णिका, –पर्णी**–स्त्री० मूसाकानी नामक लता। **–ग, –रथ, –वाहन**–पु० गणेश। **–घात**–पु० मुसहर, चूहड़ा। **–पाषाण**–पु० चुंबक; संखिया।

–भुक्(ज्)–पु० विडाल । **–विषहा**–पु० देवताड़ वृक्ष । **–श्रुति**–स्त्री० आखुकर्णी ।

आखेट–पु० (सं०) शिकार, मृगया ।

आखेटक–पु० (सं०) शिकारी; शिकार ।

आखेटिक–पु० (सं०) शिकारी; शिकारी कुत्ता । वि० शिकार करनेमें दक्ष; भयंकर ।

आखोट–पु० (सं०) अखरोट ।

आख़ोर–पु० (फा०) पानी पीनेकी जगह; चौपायोंके चारा खानेका स्थान, सार, चरनी; उनके आगेकी घास; उनके खानेसे बचा चारा; रद्दी, निकम्मी चीज; कूड़ा । वि० निकम्मा, खराब; सड़ा-गला; गंदा । **–की भर्ती**–रद्दी चीजोंका ढेर ।

आख्या–स्त्री० (सं०) नाम; विवरण; व्याख्या; यश ।

आख्यात–वि० (सं०) कहा हुआ; जनाया हुआ; प्रसिद्ध । पु० क्रियापद ।

आख्याता(तृ)–पु० (सं०) कहने, वतानेवाला; शिक्षक ।

आख्याति–स्त्री० (सं०) कहना, बताना; नाम; प्रसिद्धि ।

आख्यान–पु० (सं०) कहना, वर्णन; वृत्तांत; कथा-कहानी; पौराणिक कथा; भेदक धर्म; महाकाव्यका सर्ग; वह कथा जिसे कवि या लेखक स्वयं कहे ।

आख्यानक–पु० (सं०) आख्यान; छोटा आख्यान; कथानक ।

आख्यानकी–स्त्री० (सं०) एक वृत्त ।

आख्यानिक–वि० (सं०) आख्यान सम्बन्धी; जिसकी चर्चा आख्यानोंमें मिलती हो (लीजेंण्डरी) ।

आख्यायक–वि०, पु० (सं०) कहने, वतानेवाला; संदेशवाहक; पु० (आकाशवाणीमें) कार्यक्रम आदि उद्घोषित या सूचित करनेवाला (एनाउंसर), अभिज्ञापक ।

आख्यायिका–स्त्री० (सं०) सिलसिलेवार कहानी या वृत्तांत; वह आख्यान जिसमें पात्र भी अपना चरित्र अपने मुँहसे कुछ-कुछ कहते हैं; शिक्षा देनेवाली कल्पित कथा ।

आख्येय–वि० (सं०) कहने, वताने योग्य ।

आगंता(तृ)–वि० (सं०) आनेकी इच्छा करनेवाला ।

आगंतु–वि० (सं०) आनेवाला; बाहरसे आनेवाला; भटका हुआ; आकस्मिक । पु० अजनबी; मेहमान, अतिथि ।

आगंतुक–वि० (सं०) विना वुलाये आनेवाला; अचानक आने या होनेवाला; अजनवी; प्रक्षिप्त; भूला-भटका (जानवर); आकस्मिक । पु० क्षेपक; अजनवी; अतिथि । **–ज्वर**–पु० चोट, भय आदिसे होनेवाला ज्वर । **–व्याधि**–स्त्री० किसी बीमारीके बीच आकस्मिक हेतुसे होनेवाला गौण रोग ।

आग–वि० (सं०) आकस्मिक । स्त्री० (हिं०) अग्नि; ताप; कामाग्नि; वात्सल्य प्रेम; जलन; डाह; संताप, अंतर्ज्वाला । पु० ऊखका अगौरा; हरसेकी नोकके पास वना हुआ खड्डा । वि० जलता हुआ, गरम; (ला०) अतिक्रुद्ध । * अ० आगे । **मु०** **–उठाना**–झगड़ा उठाना; दबी वेदनाको जगाना । **–का पुतला**–क्रोधी, अग्निशर्मा । **–का बाग**–सुनारका अँगीठा; आतशबाजी । **–के मोल**–बहुत मँहगा । **–खाना अंगार हगना**–जैसी करनी वैसी भरनी । **–झाड़ना**–चकमकसे आग पैदा करना । **–दिखाना**–आग लगाना; तोपमें वत्ती देना । **–देना**–दाहकर्म करना; आतशबाजीमें आग लगाना; जलाना; नष्ट करना; तोपमें वत्ती देना । **–धोना**–अंगारेपरकी राख झाड़ना । **–पर आग डालना**–जलेको जलाना । **–पर पानी डालना**– क्रुद्धको शांत करना, लड़नेवालोंको समझाना-बुझाना । **–पर लोटना**–तड़पना, वेचैन होना; ईर्ष्या करना । **–पानीका वैर**–सहज वैर । **–फाँकना**–डींग मारना । **–फूँकना**–क्रुद्ध करना । **–फूसका वैर**–सहज वैर । **–बबूला, भभूका होना**–गुस्सेसे लाल होना, अति क्रुद्ध होना । **–बरसना**–सख्त गरमी पड़ना या लू चलना; गोले-गोलियोंकी वौछार होना । **–बरसाना**–दुश्मनपर गोले-गोलियोंकी वर्षा करना । **–बुझा लेना**–कसर निकालना । **–बोना**–उत्पात खड़ा करना; झगड़ा लगाना । **–भड़काना**–हलचल मचाना; लड़ाई वढ़ाना; जोश वढ़ाना । **–भी न लगाना**–तुच्छ समझना । **–भूनना**–अति करना । **–में कूदना**–अपने ऊपर विपत्ति लेना । **–में घी छोड़ना या डालना**–क्रोध भड़काना; झगड़ा बढ़ाना । **–में झोंकना**–(किसीको) आफत, खतरे, अनिष्टमें ढकेल देना । **–में पानी डालना**–क्रोध शांत करना; झगड़ा मिटाना । **–लगना**–क्रोध भड़क उठना, गुस्सेसे लाल हो जाना; डाहसे जलने लगना; किसी वस्तुका बहुत महँगा हो जाना; नष्ट होना । **–लगाकर तमाशा देखना**–झगड़ा खड़ा करके उसमें आनंद लेना । **–लगाकर पानीको दौड़ना**–पहले झगड़ा लगाकर फिर उसको शांत करनेका यत्न करना । **–लगाना**–क्रोध या ईर्ष्या भड़काना; चुगली खाना; नाश करना । **–लगेपर कुआँ खोदना**–पहलेसे करनेके कामको ऐन वक्त-पर करने चलना । **–लगेपर पानी कहाँ**–गुस्सेमें मुरौवत नहीं रहती । **–लेने आना**–उलटे पाँव लौट जाना । **–से पानी होना**–क्रोध करनेके वाद शांत होना । **–होना**–क्रुद्ध होना ।

आग(स्)–पु० (सं०) अपराध, दोष; पाप; दंड ।

आगजनी–स्त्री० उपद्रवकारियों द्वारा घर, दूकान आदिमें आग लगा देनेका कार्य ।

आगड़ा–पु० ज्वार आदिकी वह वाल जिसके दाने मर गये हों ।

आगणन–पु० (एस्टिमेट) दे० 'प्राक्कलन' ।

आगत–वि० (सं०) आया हुआ, पहुँचा हुआ; घटित; प्राप्त; वाहरसे आया हुआ (माल) । पु० आगमन; अतिथि; घटना । **–पतिका,–भर्तृका**–स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेशसे लौटा हो । **–स्वागत**–पु० अतिथि, निमंत्रितका स्वागत-सत्कार, आवभगत ।

आगति–स्त्री० (सं०) आगमन; प्राप्ति; वापस आना; मूल; अवसर ।

आग-पीछ*–पु० आगा-पीछा ।

आगपेटी–स्त्री० दियासलाईकी डिविया ।

आगम–पु० (सं०) आना, अवाई; समागम; संभोग, प्राप्ति; (रेविन्यू) दे० 'राजस्व' । जन्म, उत्पत्ति; वृद्धि; संचय (धनागम), आमदनी; प्रवाह, धारा; ज्ञान; वेदादि मान्य ग्रन्थ; शास्त्र; दर्शन; तंत्रशास्त्र; न्यायमें माने हुए चार प्रमाणोंमेंसे एक, शव्द-प्रमाण; सिद्धांत; साक्षिपत्र; शव्दसाधनमें किसी वर्णकी वृद्धि; होनहार; आनेवाला समय; उपक्रम । वि० आगामी । **–जानी**–वि० (हि०) होनहार–भविष्यको समझनेवाला । **–ज्ञानी(निन्)**–वि० होनहार समझनेवाला । **–निरपेक्ष**–वि० साक्षिपत्रकी अपेक्षा न रखनेवाला । **–नीत**–वि० अधीत । **–रहित**–वि० जिसके पास साक्षिपत्र न हो; शास्त्रोंसे रहित । **–वक्ता(क्तृ)**–वि०, पु० भविष्य वतलानेवाला । **–वृद्ध**–वि० ज्ञानवृद्ध, शंकराचार्यका एक विशेषण । **–शष्कुली**–स्त्री० अतिथिके आनेपर भेंट की जानेवाली पूरी । **–श्रुति**–स्त्री० रिवाज, प्रथा । **–सोची**–वि० (हि०) आगेकी वात सोचनेवाला, आकवत-अंदेश । **मु०** **–करना**–उपक्रम वाँधना । **–जनाना**–होनहारकी सूचना देना । **–वाँधना**–आनेवाली वातका निश्चय करना ।

आगमन–पु० (सं०) आना; लौटना; प्राप्ति; उत्पत्ति ।

आगमापायी(यिन्)–वि० (सं०) जन्म-मरण-शील, अनित्य ।

आगमावर्ता–स्त्री० (सं०) वृश्चिकाली नामक पौधा ।

आगमित–वि० (सं०) अधीत, पठित ।

आगमी(मिन्)–वि०, पु० (सं०) ज्योतिषी; सामुद्रिक जाननेवाला; शास्त्रज्ञ; आनेवाला; भावी ।

आगर–पु० आकर, खान; ढेर; खजाना; घर; छप्पर; नमक जमानेका गड्ढा; * अगड़ी, ब्योंड़ा; (सं०) अमावास्या । वि० बढ़कर, अधिक; कुशल, चतुर ।

आगरा*–वि० बढाचढा; बहुत ।

आगरी–पु० नमक वनानेवाला ।

आगल*–पु० अगड़ी । वि० अगला । अ० आगे, सामने ।

आगला*–वि० अगला ।

आगलित–वि० (सं०) खिन्न, उदास ।

आगली*–वि० स्त्री० बढकर; अच्छी, सुंदर; आगेवाली (वीसल०) ।

आगवन*–पु० दे० 'आगमन' ।

आगस्ती–स्त्री० (सं०) अगस्त्यकी दिशा, दक्षिण ।

आगस्त्य–वि० (सं०) अगस्त्य-संबंधी; दक्षिणी; अगस्त्य वृक्षसे उत्पन्न । पु० अगस्त्यके वंशज; उस गोत्रके व्यक्ति ।

आगांतु–पु० (सं०) अतिथि, मेहमान ।

आगा–पु० वस्तुका आगेकी ओरका भाग; अँगरखे आदिमें आगेका पल्ला या टुकड़ा; मकानके आगेका सहन, अगवारा; सेनाका अग्र भाग; लिंगेंद्रिय; चेहरा; माथा; गलही; भविष्य; आगम । **–पीछा**–पु० आगे-पीछे होनेवाली बातें; (कार्यका) परिणाम, नतीजा; हिचक, पसोपेश; देहका अगला-पिछला भाग, विशेषतः गोपनीय अंग । **मु०** **–काटना**–किसी अपशकुन-कारक व्यक्ति या प्राणीका आगेसे निकल जाना । **–तागा लेना**–आदर-सत्कार करना । **–भारी होना**–गर्भवती होना । **–मारना**–बाधक होना । **–रोकना**–हमला रोकना; किसी बड़े कामको सँभालना; ओट करना; बाधक होना । **–लेना**–हमला रोकना । **–सँभालना**–दुश्मनका हमला रोकना; गुप्तेंद्रियको ढकना ।

आग़ा–पु० (तु०) बड़ा भाई; मालिक; काबुलका रहनेवाला ।

आग़ाज़–पु० (फा०) आरंभ, शुरू, उठान ।

आगाता(तृ)–वि० (सं०) गानके द्वारा प्राप्त करनेवाला ।

आगाध–वि० (सं०) बहुत गहरा, अथाह; दुष्प्राप्य ।

आगान–पु० प्रसंग; हाल, वृत्तांत; (सं०) गानके द्वारा प्राप्त करना ।

आगामि–वि० दे० 'आगामी' ।

आगामिक–वि० (सं०) भविष्यत् कालसे संबंध रखनेवाला; आनेवाला ।

आगामी(मिन्)–वि० (सं०) आनेवाला; भावी ।

आगामुक–वि० (सं०) आनेवाला; भावी ।

आगार–पु० (सं०) घर; स्थान; भांडार (अस्त्रागार); खजाना । **–गोधिका**–स्त्री० छिपकली । **–धूम**–पु० मकानसे निकलनेवाला धुआँ; एक पौधा ।

आगाह–वि० (फा०) जानकार, खबर रखनेवाला, अभिज्ञ । ✻ पु० होनहार, भवितव्य ।

आगाही–स्त्री० (फा०) जानकारी, सूचना ।

आगि✻–स्त्री० आग । **–वर्त**–पु० एक तरहका मेघ ।

आगिल, आगिला✻–वि० अगला ।

आगी✻–स्त्री० दे० 'आग' ।

आगू–स्त्री० (सं०) इकरार, वचन, प्रतिज्ञा । ✻ अ० आगे । पु० परिणाम ।

आगे–अ० सामने; सामनेकी ओर कुछ दूरपर; पहले; पीछे, बादमें; अधिक; आइंदा; गोदमें । **–आगे**–अ० क्रमशः; कुछ दिन बाद; आगे चलकर । **–पीछे**–अ० एकके बाद एक; मुँहपर और पीठ पीछे; अव्यवस्थित रूपमें; पास-पास; थोड़ा आगे या पीछे; वंश, खानदानमें (उसके आगे-पीछे कोई नहीं है) । **मु०** **–आना**–सामना करना; कर्मका फल मिलना; घटित होना । **–करना**–सामने रखना, हाजिर करना; अगुआ बनाना; खतरे आदिके सामने कर देना, आड़ लेना । **–का उठा**–जूठन । **–की उखेड़**–कुश्तीका एक पेंच । **–को**–आगेसे, आइंदा । **–डालना**–खानेके लिए सामने रखना । **–डोलना**–आगे फिरना; लड़कोंका सामने होना । **–देना**–सामने रखना । **–दौड़ पीछे चौड़**–आगे काम करते जाना और पीछेका खयाल न रखना । **–धरना,–रखना**–हाजिर करना; भेंट करना; आदर्श बनाना । **–निकलना**–साथियों, प्रतिस्पर्द्धियोंसे आगे बढ़ जाना । **–लेना**–अगवानी करना, आगे जाकर मिलना । **–से**–पहलेसे; भविष्यमें; सामनेसे । **–से लेना**–स्वागत करना । **–होकर लेना**–आगे बढ़कर स्वागत करना । **–होना**–अग्रसर होना; बढ़ जाना; सामना करना; परदा करना; स्वागत करना ।

आगोश–पु० आलिंगन, क्रोड, अंक 'मानों वे पत्थरकी तिपाइयाँ न होकर बाँहें हों जो हर आनेवालेको अपने आगोशमें लेना चाहती हों', नीहारिका, पृ० ६४ ।

आगौ✻–वि० अग्रगण्य, बढ़ा हुआ–'जान कहाय अजाननि आगौ' –घन० ।

आगौन✻–पु० आगमन ।

आग्निक–वि० (सं०) अग्नि या यज्ञाग्निसे संबंध रखनेवाला ।

आग्नीध्र–पु० (सं०) अग्नीध्र; अग्नीध्रका कर्तव्य; यज्ञाग्नि जलानेका स्थान । वि० अग्नीध्र-संबंधी ।

आग्नेय–वि० (सं०) अग्नि-संबंधी; अग्निको अर्पित; जिसका देवता अग्नि हो (**–कोण**–दक्षिणपूर्वकी दिशा); अग्निसे उत्पन्न; अग्नि-गर्भ; जिससे आग निकले; अग्निदीपन; अग्नि जैसा (कीड़ा) । पु० स्कंद; अगस्त्य; किष्किंधाके पासका एक प्राचीन जनपद; अग्नि-पूजक; अग्निको अर्पित हवि आदि; कृत्तिका नक्षत्र; सोना; रक्त; लाख; बारूद; आग्नेयास्त्र; वह कीड़ा जिसके काटनेसे जलन हो (भिड़ आदि); ज्वालामुखी पर्वत । **–पुराण**–पु० अग्निपुराण ।

आग्नेयास्त्र–पु० (सं०) अभिमंत्रित बाण जिससे आग निकले; तोप-बंदूक आदि ।

आग्नेयी–स्त्री० (सं०) अग्निपत्नी, स्वाहा; पूर्व-दक्षिणकी दिशा; प्रतिपदा; अग्नि उद्दीप्त करनेवाली औषध ।

आग्रयण–पु० (सं०) वर्षा, शरत् या वसंतमें नये अन्नसे किया जानेवाला श्रौत यज्ञ; अग्निका एक रूप ।

आग्रह–पु० (सं०) ग्रहण, लेना, पकड़ना; किसी वस्तुको दृढ़तासे पकड़ना; आक्रमण; अनुग्रह; नैतिक बल; निश्चय; जोर देना, इसरार; पुनः पुनः निवेदन करना; किसी बात पर बार-बार जोर देना, उसीपर अड़े रहना, हठ; मुस्तैदी ।

आग्रहायण, आग्रहायणक–पु० (सं०) अगहनका महीना ।

आग्रहायणी–स्त्री० (सं०) अगहनकी पूर्णमासी; मृगशिरा नक्षत्र; एक पाकयज्ञ ।

आग्रहारिक–वि० (सं०) अग्रहार भूमिका हरण कर लेनेवाला ।

आग्रहिका–स्त्री० (सं०) अनुग्रह, कृपा; सहायता ।

आग्रही(हिन्)–वि० (सं०) आग्रह करनेवाला ।

आघ✻–पु० अर्घ, मूल्य । सूँघनेकी क्रिया, गंध ।

आघट्टक–पु० (सं०) लाल चिचड़ी ।

आघट्टना–स्त्री० (सं०) हिलना या काँपना; रगड़; संघर्षण; संपर्क ।

आघर्ष, आघर्षण–पु० (सं०) रगड़, संघर्षण ।

आघर्षणी–स्त्री० (सं०) ब्रश; रवर ।

आघाट–पु० (सं०) सरहद, सिवान; अपामार्ग; नृत्यके साथ बजाया जानेवाला एक वाद्य ।

आघात–पु० (सं०) चोट, प्रहार; घाव; धक्का; वध; बूचड़खाना; विपत्ति; पेशाबका रुकना, मूत्राघात; चोट करनेवाला । **–स्थान**–पु० वधालय ।

आघातक–पु० (सं०) आघात करनेवाला; तोप, बंदूक, राइफल आदिका खटका, घोड़ा, लिबलिबी ।

आघातन–पु० (सं०) आघात करना; वधस्थान ।

आघार–पु० (सं०) छिड़कना; यज्ञाग्निमें घीकी आहुति देना; घी ।

आघी†–स्त्री० ब्याजके रूपमें मिलनेवाला अन्न; ब्याजके रूपमें अन्न मिलनेकी शर्तपर होनेवाला लेन-देन ।

आघु–पु० दे० 'आघ' ।

आघूर्ण–वि० (सं०) चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ ।

आघूर्णन–पु० (सं०) घूमना, चक्कर खाना ।

आघूर्णित–वि० (सं०) घुमाया या चक्कर खाया हुआ ।

आघृणि–पु० (सं०) सूर्य । वि० तेजसे चमकनेवाला ।

आघोष–पु० (सं०) जोरसे पुकारना, ऊँची आवाजमें कहना; मुनादी ।

आघोषण–पु०, **आघोषणा**–स्त्री० (सं०) घोषणा; मुनादी ।

आघ्राण–पु० (सं०) सूँघना; तृप्ति । वि० सूँघा हुआ; तृप्त ।

आघ्रात–वि० (सं०) सूँघा हुआ; तृप्त; स्पृष्ट । पु० ग्रहणका एक भेद (ज्यो०) ।

आघ्रापण–पु० (सं०) सुँघाना, सुगंध-दान ।

आघ्रेय–वि० (सं०) जो सूँघा जाय; सूँघनेके योग्य ।

आचक्षु(स्)–पु० (सं०) विद्वान् ।

आचमन–पु० (सं०) (जल) पीना; पूजन आदिके पहले शुद्धिके लिए हथेलीपर जल लेकर पीना; इस प्रकार पीनेका जल; गरगर शब्दके साथ कुल्ली करना; सुगंधवाला ।

आचमनक–पु० (सं०) थूकने, कुल्ली फेंकनेका पात्र, पीकदान; आचमन करनेका जल ।

आचमनी–स्त्री० कलछीकी शक्लका चम्मच जिसमें जल लेकर आचमन करते हैं ।

आचमनीय–वि० (सं०) आचमन करने योग्य । पु० आचमनके काममें लाया हुआ जल; पीकदान ।

आचमनीयक–पु० (सं०) आचमन करनेका जल ।

आचमित–वि० (सं०) पिया हुआ; आचमन किया हुआ ।

आचय–पु० (सं०) चुनना, इकट्ठा करना; ढेर ।

आचयक–वि० (सं०) चयन-कुशल ।

आचरज*–पु० दे० 'अचरज' ।

आचरजित*–वि० दे० 'आश्चर्यित' ।

आचरण–पु० (सं०) करना; बरतना; अनुसरण; शुद्धि; लक्षण; समाजमें एक दूसरेके प्रति किया जानेवाला व्यवहार, चाल-चलन; आगमन; नियम; रथ, गाड़ी । **–पंजी,–पुस्तक**–स्त्री० (कांडक्ट-बुक) वह पुस्तक (पंजी) जिसमें कर्मचारीके आचरण, व्यवहार, कर्तव्यपालन इत्यादिसे संबंध रखनेवाली बातें समय-समयपर लिखी जाती हैं ।

आचरणीय–वि० (सं०) आचरण करने योग्य, अनुसरणीय ।

आचरन*–पु० दे० 'आचरण' ।

आचरना*–स० क्रि० व्यवहार करना ।

आचरित–वि० (सं०) किया हुआ, अनुसृत; निर्दिष्ट; नियम द्वारा निश्चित । पु० ऋणीके स्त्री-पुत्रादि लेकर या उसके दरवाजेपर धरना देकर पावना वसूल करना ।

आचर्य–वि० (सं०) आचरणीय ।

आचांत–वि० (सं०) जिसने आचमन कर लिया हो; कुल्ली करके फेंका हुआ या आचमनके योग्य (जल) ।

आचांति–स्त्री० (सं०) दे० 'आचमन' ।

आचाम–पु० (सं०) आचमन; माँड़ ।

आचामक–पु० (सं०) आचमन करनेवाला ।

आचार–पु० (सं०) चरित्र, चाल; अच्छा चाल-चलन; व्यवहार; शास्त्रोक्त आचार; रिवाजी या रूढ व्यवहार (लोकाचार, कुलाचार); आचारविधि, व्यवहारका तरीका; आहार; आचरण-संबंधी नियम । **–तंत्र**–पु० तंत्रका एक भेद (बौ०) । **–दीप**–पु० आरती उतारनेका दीप । **–पतित**–वि० दे० 'आचारभ्रष्ट' । **–पूत**–वि० शुद्धाचारी । **–भेद**–पु० आचारण-संबंधी नियमोंका अंतर । **–भ्रष्ट**–वि० जिसका आचार-व्यवहार बिगड़ गया हो, पतित । **–लाज**–पु० राजा आदिपर फेंका जानेवाला लावा । **–वर्जित**–वि० जातिच्युत; नियमविरुद्ध । **–विचार**–पु० आचार और शौचादिका ध्यान । **–वेदी**–स्त्री० आर्यावर्त्त, पुण्यभूमि । **–शास्त्र**–पु० नीतिशास्त्र, कर्त्तव्यशास्त्र । **–संहिता**–स्त्री० आचारविधियों, व्यवहार संबंधी नियमोंका समूह, 'चोरों, डाकुओंकी भी आचार संहिता होती है' । **–हीन**–वि० शास्त्रोक्त कर्म न करनेवाला, आचारभ्रष्ट ।

आचारज*–पु० दे० 'आचार्य' ।

आचारजी–स्त्री० पौरोहित्य; आचार्य होनेका भाव । वि० दे० 'आचार्यी' ।

आचारवान्(वत्)–वि० (सं०) शास्त्रोक्त कर्म करनेवाला, कर्मनिष्ठ, सदाचारी ।

आचारी–स्त्री० (सं०) हुरहुर, हिलमोचिका ।

आचारी(रिन्)–वि० (सं०) आचारवान्, शुद्ध आचरणवाला । पु० रामानुज संप्रदायका अनुयायी, श्रीवैष्णव ।

आचार्य–पु० (सं०) गुरु, शिक्षक; उपनयन करने और वेद पढ़ानेवाला गुरु; महाविद्यालयका प्रधान प्राध्यापक; (किसी विषयका) असाधारण पंडित, पूज्यपुरुष; मतप्रवर्त्तक; यज्ञमें कर्मका उपदेश करनेवाला; पांडवों आदिके गुरु द्रोणका उपनाम । **–करण**–पु० अध्यापकका कार्य करना । **–देव** –वि० जो आचार्यको अपना आराध्य देव मानता है । **–भोगीन**–वि० आचार्यको अच्छा लगनेवाला; आचार्यके उपयुक्त ।

आचार्यक–वि० (सं०) आचार्यसे मिलनेवाला । पु० पाठ, शिक्षा ।

आचार्या–स्त्री० (सं०) स्त्री गुरु; मंत्रकी व्याख्या करनेवाली ।

आचार्यानी–स्त्री० (सं०) आचार्यपत्नी ।

आचार्यी–वि० आचार्य-संबंधी; आचार्यका ।

आचिंत्य*–वि० जो चिंतनमें न आ सके । पु० ईश्वर ।

आचित–वि० (सं०) भरा हुआ; लदा हुआ; बँधा हुआ; इकट्ठा किया हुआ; फैलाया हुआ; व्याप्त । पु० एक गाड़ीका बोझ; एक परिमाण जो दस भार या ८० हजार तोला होता था ।

आचूषण–पु० (सं०) चूसना; तुंबी लगाना ।

आच्छन्न–वि० (सं०) छिपा हुआ; ढका हुआ ।

आच्छाक–पु० (सं०) एक वृक्ष, आक्षिक ।

आच्छाद–पु० (सं०) वस्त्र; पहनावा ।

आच्छादक–वि० (सं०) ढकने, छिपानेवाला ।

आच्छादन–पु० (सं०) ढकना, छिपाना; ढक्कन, खोल; वस्त्र, पहनावा; छाजन, ठाट; लोप ।

आच्छादित–वि० (सं०) ढका, छिपा हुआ ।

आच्छादी(दिन्)–वि० (सं०) आच्छादन करनेवाला ।

आच्छुक–पु० (सं०) दे० 'आच्छाक' ।

आच्छुरित–वि० (सं०) मिला हुआ; ढका हुआ; क्षुब्ध; नाखूनसे खरोचा हुआ । पु० नाखूनसे नाखून रगड़कर बजाना, नखवाद्य; अट्टहास ।

आच्छुरितक–पु० (सं०) नखक्षत; अट्टहास; सशब्द हास ।

आच्छेत्ता(त्तृ)–पु० (सं०) काटनेवाला ।

आच्छेद, आच्छेदन–पु० (सं०) काटना, पृथक् करना; बलपूर्वक ले लेना ।

आच्छोटन–पु० (सं०) उँगली फोड़ना या चटकाना ।

आच्छोदन–पु० (सं०) शिकार, आखेट ।

आछत*–अ० होते, रहते हुए, मौजूदगीमें ।

आछना*–अ० क्रि० होना, मौजूद होना ।

आछा*–वि० दे० 'अच्छा' ।

आछी*–वि०, स्त्री० अच्छी । वि० खानेवाला ।

आछे*–अ० अच्छी तरह ।

आछेप*–पु० दे० 'आक्षेप' ।

आछै*–वि० अक्षय ।

आछो*–वि० दे० 'अच्छा' ।

आज–वि० (सं०) बकरा-संबंधी । पु० घी; गिद्ध; फेंकना; (हि०) वर्तमान, बीतता हुआ दिन । अ० वर्तमान दिनमें; वर्तमान कालमें; इस घड़ी, इस वक्त । **–कल**–पु० वर्तमान काल; नया जमाना । अ० वर्तमान कालमें, इन दिनों । मु० **–कल करना, बताना**–टालमटोल करना । **–कलका**–हालका; नये जमानेका । **–कलमें**–दो-चार दिनोंमें ही, बहुत जल्द । **–कल लगना**–मौत करीब होना । **–को**–इस समय । **–तक,–लौं**–वर्तमान दिन या घड़ीतक । **–मुये कल दूसरा दिन**–मृत्युके बादकी बातकी ओर ध्यान न देना । **–से**–आजके दिनसे, अबसे ।

आजक–पु० (सं०) बकरोंका समूह ।

आजकार–पु० (सं०) शिवका वृषभ, नंदी ।

आजगर–वि० (सं०) अजगर-संबंधी; अजगरोचित; अजगरसा कार्य करनेवाला ।

आजगव–पु० (सं०) शिवका धनुष ।

आजणी*–पु० अंजन ।

आजनन–पु० (सं०) उच्च वंश, सद्वंश । अ० जन्मसे ।

आजना*–स० क्रि० बिछाना–'पदकमय मंडल मनोहर मृदुल आसन आजि'–घन० ।

आजन्म–अ० (सं०) जन्मसे, जन्मकालसे लगाकर; जन्मभर, आजीवन ।

आज़माइश–स्त्री० (फा०) परीक्षा, जाँच; परीक्षार्थ प्रयोग ।

आज़माइशी–वि० परीक्षाके लिए किया गया, परीक्षार्थ ।

आजमाना–स० क्रि० परीक्षा, जाँच करना; परीक्षार्थ प्रयोग करना ।

आज़मूदा–वि० (फा०) आजमाया हुआ, परीक्षित, अनुभूत ।

आजयन–पु० (सं०) जीतना; युद्ध ।

आजवह–वि० (सं०) बकरेसे ढोया जानेवाला । पु० (हिमालय-

का) पर्वतीय देश जहाँ बकरा सामान ढोनेके काममें लाया जाता है।

आजा–पु० दादा, पितामह। **–गुरु**–पु० गुरुका गुरु।

आज़ाद–वि० (फा०) स्वाधीन, जो दास या बँधुआ न हो; निडर; उद्धत; हाजिरजवाव; अकिंचन; वे-निशान; शास्त्र या लोकाचारका बंधन न माननेवाला; वे-परवाह; दे० 'अवुल कलाम'। **–ख़याल**–वि० स्वाधीनचेता, स्वतंत्र विचारका। **–तबीयत**–वि० खुले दिलका, सरल।

आज़ादाना–अ० (फा०) आजादीके साथ, खुलकर। वि० आज़ाद ख्यालका (आदमी)।

आज़ादी–स्त्री० स्वाधीनता, स्वतंत्रता; मुक्ति।

आजान–पु० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; जन्मस्थान; वंश। अ० सृष्टिकालसे। **–देव**–पु० जन्मजात देवता; वह देवता जो सृष्टिके आदिमें देवरूपमें उत्पन्न हुआ।

आजानि–स्त्री० (सं०) जन्म; वंश; अच्छी नस्ल या वंश; जन्मदात्री, माता।

आजानु–अ० (सं०) जाँघके अंत या घुटनेतक। **–बाहु**–वि० जिसकी बाँहें घुटनेतक पहुँचती हों।

आजानेय–वि० (सं०) अच्छी नस्लका (घोड़ा); कुलीन। पु० अच्छी नस्लका घोड़ा।

आज़ार–पु० (फा०) रोग; कष्ट, पीड़ा।

आजि–पु० (सं०) युद्ध; युद्धस्थल; दौड़का मैदान; सीमा; सड़क; क्षण; अपशब्द।

आजिग्रह–वि० (सं०) ग्रहण करनेवाला; हरण करनेवाला।

आजिज़–त्रि० (अ०) दीन, लाचार, अशक्त; तंग आया हुआ; नम्र। मु० **–आना**–तंग आना, ऊब जाना।

आजिज़ी–स्त्री० (अ०) लाचारी, अशक्तता; विनय; दीनता।

आजी–स्त्री० दादी, पितामही।

आजीव–पु० (सं०) जीविका, रोजी, पेशा; जीविकाका उपाय; उचित आय; राजकर (कौ०)।

आजीवक–पु० (सं०) जैन साधु।

आजीवन–पु० (सं०) जीविका। अ० जीवनपर्यंत, जिंदगीभर।

आजीविका–स्त्री० (सं०) रोजी; रोजगार, धंधा।

आजीव्य–वि० (सं०) जीविका देने योग्य; पेशा बनानेके लायक; वसने योग्य; उपजाऊ। पु० जीविकाका साधन।

आजु–*पु०, अ० दे० 'आज'।

आज़ुर्दगी–स्त्री० (फा०) खिन्नता, रंज।

आज़ुर्दा–वि० (फा०) खिन्न, अप्रसन्न।

आजुल*–पु० आजा (वावुलके ढँगपर)।

आजू–पु० (सं०) विना मजदूरीके काम करनेवाला व्यक्ति। स्त्री० वेगार; नरकवास।

आज्ञप्त–वि० (सं०) आदिष्ट; जिसके संबंधमें आज्ञा दी गयी हो।

आज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) आज्ञा, आदेश; (डिक्री) दीवानी मुकदमेमें न्यायालय द्वारा किसीके पक्षमें दिया गया निर्णय; किसी उच्चाधिकारी या परिषद् आदिका वह आदेश जो किसी व्यवस्था आदिके संबंधमें हो तथा जिसका मानना आवश्यक हो। **–हर**–पु० आज्ञावाहक, दूत।

आज्ञा–स्त्री० (सं०) हुक्म, आदेश; अनुमति। **–कर**–पु० नौकर, सेवक। **–करण,–पालन**–पु० आदेशका पालन। **–कारी(रिन्)**–वि० आज्ञापालक। **–चक्र**–पु० तंत्र और योगमें देहके भीतर माने हुए ६ चक्रोंमेंसे एक। **–पत्र**–पु० हुक्मनामा, आदेशज्ञापक पत्र। **–प्रतिघात,–भंग**–पु० आज्ञाका उल्लंघन, आज्ञाके विरुद्ध कार्य करना। **–फलक**–वह पत्र जिसपर किसी विपयादिकी आज्ञा लिखी गयी हो। **–विधेय**–वि० दे० 'आज्ञाकारी'।

आज्ञाता(तृ), आज्ञापक–वि० (सं०) आज्ञा देनेवाला।

आज्ञाधि–स्त्री० (सं०) राजाज्ञासे रखी या रखायी गयी गिरवी।

आज्ञान–पु० (सं०) बोध, अनुभव करना; देखना, समझना।

आज्ञापक–वि० (सं०) आज्ञा देनेवाला। पु० मालिक, स्वामी।

आज्ञापन–पु० (सं०) हुक्म देना; जताना।

आज्ञापित–वि० (सं०) आदिष्ट; (वस्तु) जिसके विषयमें आज्ञा दी गयी हो; (व्यक्ति) जिसे कोई आज्ञा दी गयी हो।

आज्ञायी(यिन्)–वि० (सं०) जानने-समझनेवाला; वोध करनेवाला; अनुभव करनेवाला।

आज्ञार्थक–वि० (नियम) (क्रियाका वह रूप) जिसमें किसीको कोई काम करनेकी आज्ञा दी जाय (भागो, उठो)।

आज्य–पु० (सं०) वह घी जिससे यज्ञमें आहुति दी जाय; घीकी जगह काम आनेवाला पदार्थ–तेल, दूध आदि; प्रातःकालीन यज्ञ-संबंधी एक शास्त्र या स्तोत्र। **–ग्रह**–पु०, **–धानी**–स्त्री०,**–पात्र**–पु० घृतपात्र। **–प**–पु० पितरोंका एक वर्ग। वि० घी पीनेवाला। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि; देवता। **–वारि**–पु० एक पुराणोक्त समुद्र। **–स्थाली**–स्त्री० दे० 'आज्यग्रह'।

आटना–स० क्रि० तोपना, ढक देना।

आटरूप–पु० (सं०) अटरूप, अडूसा।

आटविक–पु० (सं०) वनवासी; सेनाका एक भेद।

आटा–पु० पिसा हुआ अन्न, पिसान। मु० **–आटा कर देना,–कर देना**–वहुत वारीक करना, पीसना। (मुफ़लिसीमें) **–गीला होना**–कठिनाईमें कठिनाई पैदा हो जाना। **–माटी होना**–तबाह होना। **–(टे)की आपा**–भोलीभाली औरत। **–के साथ घुन पीसना**–बड़े आदमीके साथ छोटेको नुकसान पहुँचाना। **–दालका भाव मालूम होना**–अस्लियतका पता चलना; कियेका फल मिलना। **–दालकी फ़िक्र**–गृहस्थीकी चिंता। **–में नमक**–थोड़ासा, जरासा।

आटि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया; एक मछली। **–मुख**–पु० चीर-फाड़में काम आनेवाला एक औजार।

आटिक, आटिक्य–वि० (सं०) जिसकी स्थिति यात्रा या भ्रमण करने योग्य हो।

आटी†–स्त्री० डाट, रोक।

आटीकन–पु० (सं०) गायके बछड़ेकी उछल-कूद।

आटीकर–पु० (सं०) साँड़; वृष।

आटोक्रैट–पु० (अं०) निरंकुश राजा, असीम स्वेच्छाचारी मनुष्य।

आटोप–पु० (सं०) फूलना, फैलाव; घमंड; आडंबर; पेटमें गुड़गुड़ाहट होना।

आठ–वि० सात और एक, चारका दूना। पु० आठकी संख्या। मु० **–अठारह होना**–तितर-वितर होना; हैरान होना। **–आठ आँसू रोना**–बहुत विलाप करना। **–आठ पहर**–हर वक्त। **–०जामेसे वाहर रहना**–हर वक्त गुस्सेमें रहना। **–पहर चौंसठ घड़ी**–हर वक्त। **–(ठों) गाँठ कुम्मैत**–वह घोड़ा जिसके सव अंग दुरुस्त हों और रंग कुम्मैत हो; दुष्ट; चालाक। **–पहर**–हर वक्त। **–० सूलीपर रहना**–हमेशा कष्टमें रहना।

आठक*–वि० आठके लगभग।

आठें, आठों–स्त्री० अष्टमी तिथि।

आडंबर–पु० (सं०) दिखावा, ठाट-बाट; अनावश्यक या दिखाऊ आयोजन; बादलोंका गर्जन या हाथीका चिग्घाड़ना; लड़ाईका डंका; लड़ाईका डंका बजना; युद्धका कोलाहल; तंबू; गर्व, घमंड; हर्ष; आरंभ; क्रोध; पलक; डंका बजानेवाला; बदन दवाना, मालिश।

आडंबराघात–पु० (सं०) डंका बजानेवाला।

आडंबरी(रिन्)–वि० (सं०) आडंबर करनेवाला।

आड़–स्त्री० ओट, परदा; वचाव, आश्रय; रोक; टेक; माथेका भूषण; लंबी टिकली; आड़ा तिलक; टीका; संगीतमें एक ताल; डंक। **–गीर**–पु० खेतके किनारेकी घास। **–बंद**–पु० फकीरों या पहलवानोंका जाँघियेके ऊपर पहननेका लँगोटा। मु० **–(ड़े) देना*** –ओट करना।

आड़ना*–स० क्रि० रोकना; बाँधना; वंधक रखना।

आड़ा–वि० देखनेवालेके दाहिनेसे बायें या बायेंसे दाहिने गया हुआ, खड़ा या सीधाका उलटा, पड़ा। (स्त्री 'आड़ी'।) पु० एक धारीदार कपड़ा; जहाजका लट्ठा; शहतीर; बुनाईमें सूत फैलानेकी लकड़ी। **–खेमटा**–पु० मृदंगके दो तरहके ताल। **–चौताल**–पु० मृदंगका एक ताल। **–ठेका,–पँचताल**–पु० संगीतके दो तरहके ताल। मु०**–तिरछा होना**–क्रुद्ध होना। **–पड़ना,–होना**–बाधक होना; रुकावट डालना। **–(ड़े) आना**–संकटमें सहायक होना, कठिनाईमें काम आना; बाधक होना। **–हाथों लेना**–व्यंग्य-बाणों

से बेधना, बुरी तरह बनाना ।

आडि–स्त्री० (सं०) दे० 'आटि' ।

आड़ि*–स्त्री० हठ ।

आडिटर–पु० (अं०) हिसाब, आमद-खर्चकी जाँच करनेवाला ।

आड़ी–स्त्री० संगीतका एक ताल; ओर, तरफ । वि० अपने पक्षका ।

आड़ू–पु० (सं०) उड़ुप, भेला ।

आड़ू–पु० एक खटमिट्ठा फल और उसका पेड़ ।

आढ़–पु० अनाजका एक वजन या परिमाण जो लगभग चार सेरके बराबर होता है । स्त्री० आड़; अंतर; एक आभूषण, टीका । वि० कुशल । मु० **–करना**–टालमटूल करना ।

आढक–पु० (सं०) आढ़, चार सेरका वजन या माप ।

आढकी–स्त्री० (सं०) अरहरकी दाल; एक तरहकी खुशबूदार मिट्टी ।

आढ़त–स्त्री० दूसरेका माल कमीशन लेकर बिकवा देनेका रोजगार; वह स्थान जहाँ ऐसा माल रहे । **–दार**–पु० अढ़तिया ।

आढ़तिया–पु० अढ़तिया ।

आढ़ौ*–अ० बीचमें ।

आढ्यकर–वि० (सं०) धनी बनानेवाला ।

आढ्य–वि० (सं०) (किसी वस्तुसे) संपन्न, भरा-पूरा (धनाढ्य, बलाढ्य); धनवान्; प्रचुर । **–कुलीन**–वि० धनी कुलमें उत्पन्न । **–चर**–वि० जो कभी संपन्न था । **–रोगी(गिन्)**–वि० गठिया नामक रोगसे पीड़ित । **–वात**–पु० वातजन्य कटि-पक्षाघात ।

आढ्यक–पु० (सं०) धन ।

आणक–पु० (सं०) एक रतिबंध; आना, रुपयेका सोलहवाँ भाग (?) । वि० अधम, निंद्य ।

आणव–वि० (सं०) अणुरूप, अति सूक्ष्म । पु० अणुता ।

आणविक–वि० अणुसंबंधी; अणुशक्ति-संबंधी । **–युग**–पु० अणु विस्फोटने मनुष्य जीवनके असुरक्षित होनेका जो बोध जगाया, उससे उत्पन्न अनेक अराजकतामूलक मान्यताएँ सामने आयीं । ऐसी मान्यताओंवाले वातावरणके लिए साहित्यमें प्रयुक्त एक कालावधि ।

आणवीन–वि० (सं०) जिसमें अणु धान्य–सरसों, तिल, साँवा आदि –उत्पन्न किये या रखे जायँ (खेत या बखार) ।

आणि–स्त्री० (सं०) पहियेकी धुरीकी कील; सीमा; तलवारकी धार; मर्मस्थान; घुटनेके ऊपरका भाग; घरका कोना ।

आतंक–पु० (सं०) रोग; ज्वर; पीड़ा; भय, दहशत; मशीनीकृत शासन या सामाजिक अनुशासनोंकी क्रूरतासे उत्पन्न स्थिति । दबदबा; संदेह; अनिश्चय; डंकेका शब्द । **–युद्ध**–पु० (वार ऑफ नर्व्ज) प्रचारादि द्वारा ऐसा आतंक उत्पन्न करना जिससे शत्रुपक्षका नैतिक साहस छिन्न-भिन्न हो जाय और उसकी युद्ध-क्षमता क्षीण होने लगे । **–वाद**–पु० राज्य या विरोधिवर्गको दबानेके लिए भयोत्पादक उपायोंका अवलंबन, 'टेरोरिज्म' । **–वादी(दिन्)**–पु० (टेरॉरिस्ट) सरकारको तथा जनताको दबाने, झुकाने या प्रभावित करनेके लिए भयोत्पादक उपायोंका सहारा लेनेवाला ।

आतंचन–पु० (सं०) दूधको जमानेके लिए जामन देना; जामन ।

आत–पु० शरीफा ।

आतत–वि० (सं०) फैला हुआ; खिंचा, चढ़ा हुआ (धनुष्, रोदा) ।

आतताई–वि० दे० 'आततायी' ।

आततायी(यिन्)–वि० (सं०) जिसकी कमान दूसरेकी जान लेनेके लिए खिंच चुकी हो, वधोद्यत, हत्यारा; निदारुण अपराध करनेवाला; अत्याचारी, दुष्ट । पु० आग लगानेवाला; जहर देनेवाला; शस्त्रधारी; धन, धरती, स्त्रीका हरण करनेवाला (स्मृतिकारोंने इसके वधमें दोष नहीं माना है) ।

आतन–पु० (सं०) तानना, फैलाना; दृश्य ।

आतप–पु० (सं०) धूप; गरमी; प्रकाश; ज्वर (?) । **त्र,–त्रक,–वारण**–पु० छतरी, छाता । **–लंघन**–पु० धूप लगना, लू लगना । **–शुष्क**–वि० धूपमें सूखा हुआ । **–स्नान**–पु० (सनबाथ) विवस्त्र होकर धूपमें कुछ समय इस प्रकार बैठना या लेटना जिससे समस्त शरीरपर सूर्यकी किरणें पड़ें; सूर्यस्नान ।

आतपन–पु० (सं०) शिव ।

आतपी(पिन्)–पु० (सं०) सूर्य । वि० धूप संबंधी; जलनेवाला, ईर्ष्यालु ।

आतपीय–वि० (सं०) धूपवाला ।

आतपोदक–पु० (सं०) मृगजल ।

आतम*–वि० अपना, निजका ।

आतमा–स्त्री० दे० 'आत्मा' ।

आतर–पु० (सं०) उतराई, खेवा ।

आतर्दन–पु० (सं०) खोलना; धक्का देकर खोलना ।

आतर्पण–पु० (सं०) तृप्ति, संतोष; मंगलालेपन ।

आतश–पु० (फा०) आग । **–कदा**–पु० बहुत गरम मकान । **–ख़ाना,–गाह**–पु० अग्नि-पूजकों (पारसियों) का अग्निमंदिर; आग रखनेका स्थान । **–ज़दगी**–स्त्री० आग लगाना । **–ज़न**–वि० आग लगानेवाला । पु० चकमक । **–ज़नी**–स्त्री० आग लगाना । **–दान**–पु० अँगीठी । **–परस्त**–पु० अग्निपूजक; पारसी । **–फ़िशाँ**–वि० आग उगलनेवाला । पु० ज्वालामुखी पर्वत । **–बाज़**–पु० आतिशबाजी बनाने या जलानेवाला । **–बाज़ी**–स्त्री० बारूद भरकर बनाये हुए खिलौने (अनार, महताबी, छछूंदर, पटाखा इत्यादि); इनके जलानेका दृश्य या तमाशा । **–मिज़ाज**–वि० झट क्रुद्ध हो जानेवाला, बिगड़ैल ।**–(शे) तर**–स्त्री० शराब, मद्य ।

आतशक–स्त्री० (फा०) गरमीकी बीमारी, उपदंश ।

आतशी–वि० अग्नि-संबंधी; अग्निसे उत्पन्न; अग्नि-उत्पादक ।**–आईना,–शीशा**–पु० वह शीशा जिसे सूर्यके सामने करनेसे उसके मध्यबिंदुके नीचे रखी रुई, तिनका आदि जल उठते हैं ।

आतापि–पु० (सं०) एक असुर जिसे अगस्त्यने खा डाला था ।

आतापी(पिन्), आतायी(यिन्)–पु० (सं०) चील ।

आतार–पु० (सं०) दे० 'आतर' ।

आति–स्त्री० (सं०) एक पक्षी, आटि ।

आतिथेय–वि० (सं०) अतिथि-निमित्तक, अतिथिके लिए उपयुक्त (भोजनादि); अतिथिसेवापरायण । पु० अतिथिसत्कार; अतिथि-सत्कारकी सामग्री; (हिं०) अतिथि-सत्कार करनेवाला, अतिथिपति, मेजबान ।

आतिथेयी–स्त्री० (सं०) अतिथि-सत्कार ।

आतिथ्य–पु० (सं०) अतिथि-सत्कार, आवभगत; अतिथि । वि० अतिथिके उपयुक्त; अतिथिसेवापरायण । **–सत्कार**–पु०,**–सत्क्रिया**–स्त्री० अतिथिकी खातिरदारी, आवभगत ।

आतिरेक्य, आतिरैक्य–पु० (सं०) अतिरेक, आतिशय्य; फालतू, फाजिल होना ।

आतिवाहिक–वि० (सं०) इस लोकसे परलोक ले जानेपर नियुक्त; आत्माको एक शरीरसे निकल जानेपर दूसरेमें पहुँचानेवाला । पु० सूक्ष्म शरीर ।

आतिश–पु० (फा०) दे० 'आतश' (समास भी) ।

आतिशयिक–वि० (सं०) बहुत अधिक ।

आतिशय्य–पु० (सं०) अतिशयता, बहुतायत ।

आती–स्त्री० (सं०) दे० 'आति' ।

आती-पाती–स्त्री० लड़कोंका छिपने और छूनेका खेल ।

आतुर–वि० (सं०) पीड़ित; बीमार; अशक्त; उत्सुक; अधीर, बेसब्र । पु० रोग, रुग्ण व्यक्ति । * अ० जल्द, शीघ्र । **–शाला**–स्त्री० दे० 'आतुरालय' । **–सन्न्यास**–पु० ऐसे रोगी द्वारा लिया हुआ सन्न्यास जिसके बचनेकी आशा न रह गयी हो ।

आतुरता–स्त्री० (सं०) अधीरता; उतावली; बेचैनी; *शीघ्रता ।

आतुरताई*–स्त्री० आतुरता ।

आतुराना*–अ० क्रि० उतावला होना; उत्सुक होना ।

आतुरालय–पु० (सं०) चिकित्सालय, अस्पताल ।

आतुरी–स्त्री० आतुरता ।

आतुर्य–पु० (सं०) रोग; एक तरहका ज्वर ।

आतृण्ण–वि० (सं०) विधा; कटा हुआ । पु० छिद्र; खुला जख्म ।

आतृप्त–वि० अच्छी तरह तृप्त ।

आतृप्य–पु० (सं०) एक पेड़ या उसका फल ।

आतोद्य, आतोद्यक–पु० (सं०) एक वाद्य (संगीत) ।

आत्त–वि० (सं०) गृहीत; स्वीकृत; आकृष्ट; आरब्ध; निकाला हुआ । **–गंध**–वि० जिसका दर्प चूर कर दिया गया हो; अपमानित; पराभूत; सूँघा हुआ । **–गर्व**–वि० अपमानित; नीचा दिखाया हुआ । **–दंड**–वि० राजदंड ग्रहण करनेवाला । **–प्रतिदान**–पु० प्राप्त वस्तुको लौटाना । **–मनस्क**–वि० हर्षविह्वल । **–लक्ष्मी**–वि० धनसे वंचित किया हुआ ।

आत्मंभरि–वि० (सं०) अपना ही पेट पालनेवाला, खुदगर्ज ।

आत्म–'आत्मन्'का समासमें व्यवहृत रूप । **–कथा**–स्त्री० अपनी जीवन-कहानी; स्वलिखित जीवनचरित । **–कल्याण**–पु० अपना भला, हित । **–काम**–वि० अभिमानी; आत्माको जानने, पानेका अभिलाषी । **–कार्य**–पु० निजी काम । **–कृत**–वि० स्वयं किया हुआ; स्वयं अपने विरुद्ध किया हुआ । **–गत**–वि० मनके भीतरका, स्वगत । **–गुप्ता**–स्त्री० केवाँच; सतावर । **–गुप्ति**–स्त्री० गुफा, सुरंग; माँद । **–गौरव**–पु० अपना गौरव, प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान । **–ग्राही(हिन्)**–वि० स्वार्थी; लोभी । **–घात**–पु० आत्महत्या, खुदकुशी । **–घातक,–घाती(तिन्)**–वि० आत्महत्या करनेवाला । **–घोष**–पु० (अपनेको ही पुकारनेवाला) कौआ; मुर्गा । **–चरित,–चरित्र**–पु० आत्मकथा । **–ज**–पु० बेटा, वंशधर; कामदेव । **–जय**–स्त्री० अपनेको जीतना, मन, इंद्रियादिको वशमें कर लेना । **–जा**–स्त्री० बेटी । **–जात**–पु० बेटा, वंशधर; कामदेव । **–जिज्ञासा**–स्त्री० अपनेको जाननेकी इच्छा । **–ज्ञान**–पु० अपनेको जानना; अध्यात्मज्ञान; आत्म-साक्षात्कार । **–तत्त्व**–पु० आत्माका स्वरूप, रहस्य । **–तुष्टि**–स्त्री० आत्मसंतोष । **–तृप्त**–वि० जो अपने आपमें संतुष्ट हो । **–तृप्ति**–स्त्री० अपनी अंतरात्माका संतोष, आत्मसंतोष । **–त्याग**–पु० आत्महत्या; दूसरेके भलेके लिए अपनी हानि करना, स्वार्थत्याग । **–त्यागी(गिन्)**–वि० आत्मघाती; अविश्वासी, धर्मविरोधी; परोपकारी । **–त्राण**–पु० आत्मरक्षा । **–दर्श**–पु० आईना । **–दर्शन**–पु० आत्म-साक्षात्कार; आत्मज्ञान । **–दान**–पु० स्वार्थत्याग । **–द्रोह**–पु० अपनेको ही पीड़ा पहुँचाना; अपनी ही हानि करना; आत्महत्या । **–धारणभूमि**–स्त्री० वह अधीन राज्य या भूमि जिसकी शासनव्यवस्था वहींकी सेना और संपत्तिसे हो जाय । **–निंदा**–स्त्री० अपनी निंदा । **–नित्य**–वि० बहुत प्रिय । **–निरीक्षण**–पु० अपनेको देखना-समझना, अपने भावों, वृत्तियों, त्रुटियों, दोषोंको जानने-समझनेका प्रयत्न । **–निर्णय**–पु० अपने हित या भविष्यादिके संबंधमें स्वयं निश्चय करना । **–निवेदन**–पु० नवधा भक्तिका एक अंग–अपना तन-मन-धन अपने आराध्यदेवको अर्पित कर देना; अपनी कैफियत । **–निष्ठ**–वि० आत्मामें निष्ठा रखनेवाला, आत्मसाधनमें निरत; जो व्यक्तिकी अनुभूतियों तथा विचारोंपर ही आश्रित हो, बाह्यवस्तुओंपर नहीं (सब्जेक्टिव) । **–प्रकाश**–पु० भीतरके भावोंको व्यक्त करना । **–प्रवाद**–पु० ब्रह्म-विषयक वार्तालाप । **–प्रशंसा**–स्त्री० अपने मुँह अपनी तारीफ करना । **–बल**–पु० आत्माका, मनका बल । **–बोध**–पु० आत्मज्ञान । **–भाव**–पु० आत्माका अस्तित्व; अपनी प्रकृति; शरीर । **–भू**–वि० स्वयं उत्पन्न; अपनेसे उत्पन्न । पु० ब्रह्मा; शिव; विष्णु; कामदेव; पुत्र । **–भूत**–वि० दे० 'आत्मभू'; संबद्ध; विश्वस्त । पु० पुत्र; कामदेव । **–मंथन**–पु० अंत:करणमें अनेक वृत्तियों, भावोंका मंथन होना । **–मानी(निन्)** –वि० स्वाभिमानी; घमंडी ।**–मूली**–स्त्री० दुरालभा नामक पौधा । **–योनि**–पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; कामदेव । **–रक्षा**–स्त्री० अपना बचाव; इंद्रवारुणी वृक्ष । **–रत**–वि० ब्रह्मज्ञानी । पु० बड़ी इंद्रायन । **–रति**–स्त्री० आत्मामें रमना, आत्मानंद । **–वंचक**–वि० अपनेको धोखा देनेवाला । **–वंचना**–स्त्री० अपनेको धोखा देना, अपने दोषको गुणरूपमें देखना; अपनेको सही और सार्थक सिद्ध करनेके लिए किसी गलत सिद्धांतकी स्वीकृति और उसका अवलम्बन । **–वध**–पु० आत्महत्या । **–वाद**–पु० आत्माके अस्तित्वका प्रतिपादन । **–वादी(दिन्)**–वि० आत्माका अस्तित्व माननेवाला । **–विक्रय**–पु० अपनेको, अपनी आजादीको बेच देना । **–विक्रेता(तृ)**–पु० जो व्यक्ति अपनेको बेचकर किसीका दास बन गया हो । **–विचय**–पु० अपनी तलाशी देना । **–विचार**–पु० आत्मतत्त्वका मनन, विवेचन । **–विद**–पु० आत्माका स्वरूप पहचाननेवाला व्यक्ति, ब्रह्मज्ञानी । **–विद्या**–स्त्री० अध्यात्मतत्त्व । **–विभोर**–वि० हर्षातिरेकसे विह्वल हो जाना, सुधबुध भूल जाना । **–विश्वास**–पु० अपनी शक्ति, योग्यतापर विश्वास । **–विस्मृति**–स्त्री० अपनेको भूल जाना, सुधबुध न रहना, बेखुदी । **–वृत्तांत**–पु० आत्मकथा । **–शल्या**–स्त्री० शतावरी । **–शासन**–पु० दे० 'स्वराज्य' । **–श्लाघा,–स्तुति**–स्त्री० आत्मप्रशंसा । **–संतोष**–पु० आत्मतप्ति, आत्मतुष्टि । **–संदेह**–पु० व्यक्तिगत संदेह; अपनी जानका खतरा । **–संभव,–समुद्भव**–पु० पुत्र; शिव; ब्रह्मा; कामदेव; ईश्वर । **–संयम**–पु० अपने मन, इंद्रियादिको वशमें रखना । **–संवाद**–पु० अपनी अन्तरात्मासे किया गया एकालाप (इनर कम्यूनियन) । **–संवेदन**–पु० आत्मबोध । **–संस्कार**–पु० अपना सुधार । **–समर्पण**–पु० अपनेको (पुलिस, शत्रुसेना आदिके हाथ) सौंप देना; हथियार डाल देना । **–साक्षात्कार**–पु० आत्माका अपरोक्ष ज्ञान । **–साक्षी(क्षिन्)**–वि० आत्माका द्रष्टा; जीवोंका द्रष्टा । **–सात्**–वि० अपने अधिकारमें ले लिया गया, अपनेमें मिला लिया गया । **–साधन**–पु० आत्मसाक्षात्कारकी साधना, मोक्ष-साधन । **–सिद्ध**–वि० आप ही आप होनेवाला । **–हत्या**–स्त्री०,**–हनन**–पु०,**–हिंसा**–स्त्री० अपने हाथों अपना वध, खुदकुशी । **–हन,***–**हा(हन्)**–वि० मूर्तिकी पूजा करनेवाला; धर्मविरोधी; आत्मघाती; अपना भला न देखनेवाला । **–हित**–पु० अपना कल्याण । वि० अपने लिए कल्याणकर ।

आत्मक–वि० (सं०) (समासके अंतमें व्यवहृत) युक्त, गुणधर्मरूपवाला (रचनात्मक, पद्यात्मक इ०) ।

आत्मकीय–वि० (सं०) जिसपर अपना अधिकार हो ।

आत्मगाथात्मक–वि० (ऐसी रचना) जो लेखककी आत्मकथा प्रतीत हो, या उस शैलीमें प्रस्तुत की जाय ।

आत्मनीन–वि० (सं०) जिसपर अपना अधिकार हो; अपने लिए लाभदायक; चैतन्यविशिष्ट, जीवित; वर्तमान । पु० पुत्र; साला; विदूषक ।

आत्मनेपद–पु० (सं०) धातुमें लगनेवाला एक प्रत्यय या इस प्रकार बनी हुई क्रिया (सं० व्या०) ।

आत्मभरित योजना–स्त्री० (सेल्फसफीशेन्सी प्लैन) देशको, प्रदेशको मुख्य आवश्यक वस्तुओंके संबंधमें स्वावलंबी बनानेकी योजना ।

आत्मवत्ता–स्त्री० (सं०) आत्मनियंत्रण; बुद्धि; समझ, चेतना ।

आत्मा(मन्)–स्त्री०, पु० (सं०) जीव, जीवनतत्त्व; व्यष्टि जीव, जीवात्मा; चेतन तत्त्व; परमात्मतत्त्व; अंत:करण; मन; बुद्धि; स्वरूप; जात; स्वभाव; देही; सार तत्त्व; विचारशक्ति; साहस; शक्ति; पुत्र; सूर्य; अग्नि; वायु । **–की पुकार**–स्त्री० सभी प्रचलित धारणाओं, नारों आदिसे अलग अपनी चेतनाकी आवाज जो राजनीति और साहित्य दोनोंमें विशिष्ट अर्थका बोधक हो गयी है । मु०**–ठंढी होना**–संतोष होना । **–मसोसना**–भूख सहना ।

आत्माधिक–वि० (सं०) अपनेसे भी अधिक (प्रिय) ।

आत्माधीन–वि० (सं०) अपने वशमें । पु० पुत्र; प्राणाधार; साला; विदूषक ।

आत्मानंद–पु० (सं०) आत्मज्ञान, आत्म-साक्षात्कारसे मिलनेवाला आनंद । वि० ब्रह्मानंदमें लीन ।

आत्मानात्म–पु० (सं०) आत्मा और तद्भिन्न संपूर्ण पदार्थ, चेतन और जड तत्त्व । **–विवेक**––पु० आत्मीय और अनात्म वस्तुका विचार, बिलगाव ।

आत्मानुभव–पु० (सं०) अपना तजर्बा ।

आत्मानुभूति–स्त्री० (सं०) आत्म-साक्षात्कार ।

आत्मानुरूप–वि० (सं०) गुण आदिमें अपने समान ।

आत्मानुशीलन–पु० (सं०) आत्मचिंतन ।

आत्मापहार–पु० (सं०) आत्मगोपन, अपनेको छिपाना ।

आत्माभिमान–पु० (सं०) आत्म-सम्मान, स्वाभिमान ।

आत्माभिमानी(निन्)–पु०, वि० (सं०) आत्म-प्रतिष्ठाका ध्यान रखनेवाला, स्वाभिमानी ।

आत्माभिमुख–वि० (सं०) आत्माकी ओर लौटा हुआ, अंतर्मुख ।

आत्मामिषसंधि–स्त्री० (सं०) अपनी सेनाकी बलि देकर शत्रुके साथ की जानेवाली संधि ।

आत्मायन–पु० प्रेतात्मवादियोंकी बैठक, जिसमें परलोकगत आत्माओंका आवाहन कर प्रेतात्मवादके रहस्य जाननेका प्रयत्न किया जाता है ।

आत्माराम–पु० (सं०) आत्मज्ञानका प्रयासी योगी; आत्मामें रमण करनेवाला ।

आत्मार्पण–पु० (सं०) आत्मनिवेदन, अपनेको अर्पित कर देना । पु० किसी पवित्र या अच्छे काममें अपने आपको लगा देना (कान्सीक्रेशन) ।

आत्मावलंबी(बिन्)–वि० (सं०) अपने भरोसे सब काम करनेवाला ।

आत्माशी(शिन्)–पु० (सं०) मत्स्य ।

आत्माश्रय–वि० (सं०) केवल अपना या अपनी बुद्धिका भरोसा करनेवाला । पु० आत्मनिर्भरता; सहज ज्ञान ।

आत्मिक–वि० (सं०) आत्म-संबंधी ।

आत्मीभाव–पु० (सं०) परमात्मासे एकीभाव, व्यष्टि आत्माका परमात्मामें लय हो जाना ।

आत्मीय–वि० (सं०) अपना । पु० स्वजन ।

आत्मीयता–स्त्री० (सं०) अपनापन, मैत्री ।

आत्मोत्कर्ष–पु० (सं०) अपना अभ्युदय, आत्मोन्नति ।

आत्मोत्सर्ग–पु० (सं०) दूसरेके हितके लिए अपनेको संकटमें डालना; अपना जीवन अर्पित कर देना ।

आत्मोदय–पु० (सं०) अपना अभ्युदय ।

आत्मोद्धार–पु० (सं०) अपना उद्धार, मुक्ति; अपने ही प्रयत्नसे अपना छुटकारा ।

आत्मोद्भव–पु० (सं०) पुत्र; कामदेव; शोक; पीड़ा ।

आत्मोद्भवा–स्त्री० (सं०) पुत्री; बुद्धि; माषपर्णी नामक पौधा ।

आत्मोन्नति–स्त्री० (सं०) अपनी या अपनी आत्माकी उन्नति ।

आत्मोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) अपने श्रमसे जीविका चलानेवाला; मजदूर; अभिनेता ।

आत्मोपम–वि० (सं०) अपने जैसा ।

आत्मौपम्य–पु० (सं०) सबको अपने जैसा मानना ।

आत्यंतिक–वि० (सं०) अविच्छिन्न; अबाधित; बहुत अधिक; सार्वकालिक; पूर्ण; जिसकी अतिशयता, इफरात हो । –**दुःखनिवृत्ति**–स्त्री० मोक्ष । –**प्रलय**–पु० महाप्रलय ।

आत्ययिक–वि० (सं०) विध्वंसक; कष्टकारक; अशुभ; जिसकी जल्दी हो, अत्यावश्यक ।

आत्रेय–वि० (सं०) अत्रि-संबंधी; अत्रिसे या उनके गोत्रमें उत्पन्न । पु० अत्रिका पुत्र; अत्रिका वंशज ।

आत्रेयायण–पु० (सं०) आत्रेयका वंशज ।

आत्रेयिका–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री ।

आत्रेयी–स्त्री० (सं०) अत्रि-पत्नी; अत्रिगोत्रकी स्त्री; रजस्वला स्त्री ।

आथना*–अ० क्रि० होना; अस्त होना, 'अथना' ।

आथर्वण–वि० (सं०) अथर्ववेद या अथर्वण ऋषिसे संबंध रखनेवाला अथवा उनसे उत्पन्न । पु० अथर्ववेदका ज्ञाता ब्राह्मण; अथर्ववेदोक्त कर्म करानेवाला पुरोहित; अथर्ववेद; अथर्वण ऋषिका पुत्र या वंशज ।

आथर्वणिक–वि० (सं०) अथर्ववेदसे संबंध रखनेवाला । पु० अथर्ववेदका ज्ञाता ब्राह्मण ।

आथी*–स्त्री० पूँजी ।

आदंश–पु० (सं०) दाँतसे काटनेका जख्म; दाँत ।

आद–वि० (सं०) (समासांतमें) लेनेवाला (दायाद) । * स्त्री०, पु० दे० 'आदि' ।

आदत–स्त्री० (अ०) अभ्यास, बान, टेक, लत; व्यसन; स्वभाव ।

आदतन्–अ० आदतके अनुसार, अभ्यासतः; स्वभावतः, स्वभावानुरोधसे ।

आदत्त–वि० (सं०) दे० 'आत्त' ।

आदम–पु० (अ०) यहूदी, इसलाम आदि धर्मोंके अनुसार ईश्वरसृष्ट प्रथम मनुष्य, आदि-मानव; मनुष्य । –**क़द**–वि० मनुष्यके आकारका । –**ख़ोर**–वि०, पु० नरमांसभक्षी । –**चश्म**–पु० मनुष्यकीसी काली आँखोंवाला घोड़ा । –**ज़ाद**–पु० आदम-संतान, मनुष्य ।

आदमियत–स्त्री० दे० 'आदमीयत' ।

आदमी–पु० (अ०) मनुष्य; व्यक्ति; नौकर; पति (बोलचाल) । मु०–**बनना**–मनुष्यता आना, सभ्यता, शिष्टता सीखना; संपन्न होना, पैसा पैदा कर लेना ।

आदमीयत–स्त्री० मनुष्यता, इनसानियत; भलमनसी ।

आदर–पु० (सं०) सम्मान; इज्जत; पूज्यभाव; कद्र; उत्सुकता; प्रयत्न; आरंभ; प्रेम । –**भाव**–पु० आदर-सत्कार, कद्र-इज्जत ।

आदरण–पु० (सं०) आदर करना ।

आदरणीय, आदर्तव्य–वि० (सं०) आदरके योग्य, सम्मान्य ।

आदरना*–स० क्रि० सम्मान करना ।

आदरस*–पु० दे० 'आदर्श' ।

आदर्य–वि० (सं०) 'आदरणीय' ।

आदर्श–पु० (सं०) आईना, शीशा; मूल लेख; असल; नमूना; अनुकरणीय वस्तु; टीका, व्याख्या । –**बिंब**–पु० गोल आईना । –**मंडल**–पु० गोल आईना; आईनेकी सतह; एक तरहका साँप । –**मंदिर**–पु० शीशमहल । –**वाद**–पु० वह वाद या मत जिसके अनुसार रचनामें आदर्श चरित्र आदिकी स्थापना की जाती है । –**वादी(दिन्)**–वि० अपनी रचनामें आदर्शवादका अनुसरण करनेवाला; ऊँचे सिद्धांतोंके अनुसरणपर जोर देनेवाला ।

आदर्शक–पु० (सं०) आईना ।

आदर्शन–पु० (सं०) दिखलाना, प्रदर्शित करना; आईना ।

आदर्शित–वि० (सं०) दिखलाया हुआ, प्रदर्शित; निर्देश किया हुआ ।

आदहन–पु० (सं०) जलाना; आहत करना, मारना; घृणा करना; निंदा करना; श्मशान ।

आदात–स्त्री० (अ०) अभ्यास, स्वभाव; तौर-तरीका ('आदत'का बहु०) ।

आदाता(तृ)–वि० (सं०) लेने, पानेवाला; वह व्यक्ति या अधिकारी जो झगड़ेमें पड़ी किसी संपत्ति या दिवालिया प्रतिष्ठानकी देखरेख और प्रबंध करनेके लिए न्यायालय द्वारा नियुक्त किया गया हो, 'रिसीवर' ।

आदान–पु० (सं०) लेना, ग्रहण; रोग-लक्षण; बाँधना; अश्वसज्जा । –**प्रदान**–पु० लेना-देना, अदल-बदल ।

आदानी–स्त्री० (सं०) हस्तिघोषा नामक पौधा ।

आदाब–पु० (फ़ा०) व्यवहार-नियम; अदब-कायदा; शिष्टाचार; नमस्कार ('अदब'का बहु०) । –**अर्ज़**–पु० नमस्कार । –**अलक़ाब**–पु० (संबोध्यकी) पदवी, विशेषण आदि । –**तसलीमात**–पु० नमस्कार-प्रणाम । मु० –**अर्ज़ करना**–सलाम करना; विदा लेना । –**बजा लाना**–विनयपूर्वक या यथोचित प्रकारसे अभिवादन करना ।

आदाय–पु० (सं०) लेना, पाना । –**चर**–वि० कुछ लेकर जानेवाला ।

आदायक–पु० न्यायालय द्वारा नियुक्त वह व्यक्ति जो विवादग्रस्त संपत्तिका अधिकार ग्रहण कर उसकी निगरानी तथा प्रबन्ध करता है ('रिसीवर'), आदाता ।

आदायी(यिन्)–वि० (सं०) लेने, पानेवाला; लेनेका इच्छुक ।

आदि–वि० (सं०) प्रथम; मूल; प्रधान । पु० आरंभ; मूल कारण; परमेश्वर; सामीप्य । अ० वगैरह, इत्यादि । –**कर, कर्त्ता(र्तृ)**–पु० स्रष्टा । –**कवि**–पु० वाल्मीकि; शुक्राचार्य ? –**कांड**–पु० रामायणका प्रथम कांड, बालकांड । –**कारण**–पु० सृष्टिका मूल कारण, उपादान (सांख्यमतसे मूल प्रकृति, वैशेषिकमतसे परमाणु, वेदांतमतसे ब्रह्म) । –**काव्य** पु० वाल्मीकीय रामायण । –**ताल**–पु० एक ताल (संगीत) । –**देव**–पु० परमेश्वर; नारायण; विष्णु । –**पर्व(न्)**–पु० महाभारतका पहला पर्व । –**पुराण**–पु० ब्रह्मपुराण । –**पुरुष,–पूरुष**–पु०

परमेश्वर; नारायण; विष्णु; वंशका मूल पुरुष। **–भूत**–वि० आरंभमें उत्पन्न। पु० ब्रह्मा; विष्णु। **–रस**–पु० श्रृंगाररस (सा०)। **–राज**–पु० पृथु; मनु। **–शक्ति**–स्त्री० महामाया; दुर्गा। **–सर्ग**–पु० आदि, प्रथम सृष्टि।

आदिक–अ० (सं०) वगैरह, इत्यादि।

आदित*–पु० आदित्य, सूर्य।

आदितेय–पु० (सं०) अदितिका पुत्र; देव; सूर्य।

आदित्य–पु० (सं०) सूर्य; देव; अदितिके इन बारह पुत्रोंमेंसे कोई जो सभी सूर्य माने जाते हैं–धाता, मित्र, अर्यमा, रुद्र, वरुण, सूर्य, भग, विवस्वान्, पूषा, सविता, त्वष्टा और विष्णु; विष्णुका वामन अवतार; १२ की संख्या; मदार। वि० अदितिसे उत्पन्न; आदित्य-संबंधी या आदित्यसे उत्पन्न। **–केतु**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; सूर्यका सारथि। **–पत्र**–पु० एक पौधा; आकका पत्ता। **–पर्णिनी**–स्त्री० जलाशयोंके किनारे उत्पन्न होनेवाली एक लता। **–पुराण**–पु० एक उपपुराण, सूर्य पुराण। **–पुष्पिका**–स्त्री० लाल फूलवाला मदार। **–भक्ता**–स्त्री० अर्कभक्ता नामक पौधा। **–मंडल**–पु० सूर्यके चारों ओरका प्रभा-मंडल। **–वार**–पु० रविवार। **–व्रत**–पु० सूर्यका व्रत। **–सूनु**–पु० सूर्यपुत्र–सुग्रीव, यम, शनि और कर्ण।

आदिम–वि० (अ०) आदिमें उत्पन्न; पहला; सर्वप्रथम।

आदिल–वि० (अ०) अदल–इंसाफ करनेवाला, न्यायी।

आदिवासी(सिन्)–पु० (सं०) किसी देशका मूल निवासी।

आदिष्ट–वि० (सं०) आदेश-प्राप्त; जिसे (कार्यका) आदेश किया गया हो, कथित। पु० आज्ञा; सम्मति; जूठन। **–संधि**–स्त्री० प्रबल शत्रुको कोई भूमिखंड देकर की जानेवाली संधि।

आदिष्टी(ष्टिन्)–वि० (सं०) आदेश देनेवाला। पु० ब्रह्मचारी; विद्यार्थी; प्रायश्चित्त करनेवाला।

आदी–वि० (अ०) अभ्यस्त; जिसे किसी चीजकी आदत, लत लग गयी हो, व्यसनी। * अ० निपट; तनिक भी। † स्त्री० अदरक। **–चक**–पु० एक प्रकारका अदरक।

आदीनव–पु० (सं०) क्लेश, पीड़ा, बेचैनी; अपराध; उत्पीड़क।

आदीपन–पु० (सं०) आग लगाना; उत्तेजित करना; दीवारकी सफेदी करना।

आदीपित, आदीप्त–वि० (सं०) प्रज्वलित किया हुआ; जलता हुआ।

आदृत–वि० (सं०) आदर-प्राप्त, सम्मानित; सावधान।

आदृत्य–वि० (सं०) सम्मान्य; आदरणीय।

आदृष्टि–स्त्री० (सं०) नजर, देखना।

आदेय–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; जिसपर शुल्कादि लिया जा सके। पु० वह लाभ जो बिना कठिनाईके प्राप्त हो, अच्छीं तरह रखा जाय और शत्रु जिसे छीन न सके। **–कर्म(न्)**–पु० वाक्-सिद्धि प्रदान करनेवाला कर्म (जै०)।

आदेवक–वि० (सं०) क्रीड़ा करनेवाला।

आदेवन–पु० (सं०) द्यूत; पासा खेलनेका स्थान या बिसात.

आदेश–पु० (सं०) आज्ञा, हुक्म; हिदायत; सलाह; विवरण; भविष्यकथन; एक अक्षरके स्थानपर दूसरे अक्षरका आना (व्या०); ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थितिका फल (ज्यो०); * प्रणाम। **–देय**–वि० (पेयेबिल टु आर्डर) (वह हुंडी आदि) जिसका रुपया किसीको देनेका लिखित आदेश प्राप्त होनेपर दिया जाय।

आदेशक–वि० (सं०) आदेश–आज्ञा करनेवाला।

आदेशन–पु० (सं०) आदेश करना।

आदेशी(शिन्)–वि० (सं०) आदेश करनेवाला; ज्योतिषी, भविष्य-वक्ता। **–चेक,–धनादेश**–पु० (आर्डर चेक) वह धनादेश या चेक जिसकी पीठपर पानेवालेको अर्थात् जिसके नाम वह जारी किया गया हो, पहलेसे हस्ताक्षर करना पड़ता है, तभी उसका भुगतान किसी अन्य आदिष्ट आदमीके हाथ किया जा सकता है।

आदेष्टा (ष्टृ)–वि० (सं०) दे० 'आदेशक'।

आदेस*–पु० दे० 'आदेश'।

आद्यंत–अ० (सं०) आदिसे अंततक। पु० आदि-अंत।

आद्य–वि० (सं०) आदिका; पहला, प्रथम; प्रधान; अद्वितीय; ····के ठीक पहलेका; खाने योग्य। **–कवि**–पु० ब्रह्मा; वाल्मीकि। **–बीज**–पु० जगत्का मूल कारण; प्रधान। **–माषक**–पु० एक तौल (५ रत्ती)। **–श्राद्ध**–पु० मृत्युके ग्यारहवें दिन होनेवाले श्राद्धोंमें पहला।

आद्यक्षर–पु० (इनीशल्स) किसी व्यक्तिके नामके विभिन्न शब्दों या खंडोंके आरंभके अक्षर जो पूरे नामके बदले (प्रायः संक्षिप्त हस्ताक्षरके रूपमें) लिख दिये जाते हैं।

आद्यक्षरित–वि० (इनीशल्ड) जिसपर पूरे हस्ताक्षरके बजाय नामके आरंभके अक्षर मात्र लिख दिये गये हों।

आद्या–स्त्री० (सं०) दुर्गा; प्रतिपदा।

आद्यून–वि० (सं०) पेटू; भूखा; लालची; आदिहीन।

आद्योत–पु० (सं०) प्रकाश, चमक, कांति।

आद्योपांत–अ० (सं०) आदिसे अंततक।

आद्रा–स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

आद्रिसार–वि० (सं०) लोहेसे बना हुआ।

आध–वि० दे० 'आधा'।

आधमर्ण्य–पु० (सं०) कर्जदार होना।

आधर्मिक–वि० (सं०) अन्यायी; असाधु।

आधवन–पु० (सं०) हिलाना, कँपाना; क्षुब्ध करना।

आधा–वि० वस्तुके दो समान भागोंमेंसे एक, अर्द्ध, नीम, निस्फ। **–तीहा**–वि० आधा या तिहाईके लगभग। **–साझा**–पु० बराबर-का हिस्सा। **–सीसी**–स्त्री० आधे सिरका दर्द। मु० **–तीतर, आधा बटेर**–कुछ एक तरहका, कुछ दूसरी तरहका, बेमेल। **–होना**–दुबला होना, सूखना। **–(धी) बात न पूछना**–कदर न करना। **आधे आध**–दो बराबर या अर्द्ध भाग।

आधाझारा–पु० चिचड़ा।

आधाता(तृ)–वि० (सं०) आधान करनेवाला; बंधक रखनेवाला।

आधान–पु० (सं०) रखना, स्थापन; ग्रहण, लेना; अग्निहोत्रके लिए अग्निका स्थापन; धारण करना; (कोई कार्य) पूरा करना; उत्पन्न करना; प्रयत्न; कोई वस्तु रखने या जमा करनेका स्थान; या पात्र; घेरा; गर्भाधानके पहले किया जानेवाला एक संस्कार; गर्भ; बंधक, धरोहर।

आधानिक–पु० (सं०) गर्भाधानके निमित्त किया जानेवाला एक विशेष संस्कार।

आधायक–वि० (सं०) दे० 'आधाता'।

आधार–पु० (सं०) सहारा, आलंबन; वह जो किसी वस्तुको धारण करे; नींव; परिस्थितियाँ, परिवेश आदि जिनपर लेखकीय तथ्य प्रस्तुत होता है; बरतन; तालाब; नहर; परिखा; बाँध; अधिष्ठान; पात्र (ना०); पेड़का थाला; संबंध; अधिकरण कारक; वह रेखा जिसपर कोई आकृति या घनपिंड स्थित हो। **–रूपा**–स्त्री० गलेका एक आभूषण। **–शक्ति**–स्त्री० प्रकृति, माया। **–शिला**–स्त्री० नींवका वह पत्थर जिसके ऊपर मकानकी दीवार उठायी जाती है। **–स्तंभ**–पु० किसी कार्य या वस्तुका मुख्य आधार।

आधारक–पु० (सं०) नींव।

आधारण–पु० (सं०) धारण करना; सहारा देना।

आधाराधेयभाव–पु० (सं०) आश्रयाश्रयिभाव।

आधारिक–वि० (सं०) जो आधारका काम दे, आधार स्वरूप हो (–भाषा—बेसिक लैंग्वेज)।

आधारित–वि० दे० 'आधृत'।

आधि–स्त्री० (सं०) मानसिक पीड़ा; अभिशाप; विपत्ति; बंधक; धरोहर; स्थान; आवास; लक्षण; धर्मचिंता; आशा। **–पाल**–पु० धरोहरकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला राजकर्मचारी। **–भोग**–पु० धरोहरकी चीजका उपयोग। **–मन्यु**–पु० ज्वरका ताप। **–मोचन**–पु० बंधक छुड़ाना। **–व्याधि**–स्त्री० मन और शरीरकी पीड़ा। **–स्तेन**–पु० अधिकारीसे पूछे बिना धरोहरकी रकम खर्च करनेवाला व्यक्ति।

आधिक*–वि० आधा या आधेके लगभग। अ० लगभग आधा; किंचित्।

आधिकरणिक–पु० (सं०) न्यायाधीश; सरकारी पदाधिकारी।

आधिकर्ता–पु० (पॉनर) कोई वस्तु या किसी व्यक्तिको किसीके पास धरोहर या जमानतके रूपमें रखनेवाला (आधि—धरोहर)।

आधिकारिक–वि० (सं०) अधिकार या अधिकारीसे संबद्ध; साधिकार; (आँथॉराइज्ड) जो अधिकारपूर्वक दिया या किया गया हो (सूचना, आदेश इ०); सरकारी, 'आफिशल'। पु० मूल कथावस्तु; प्रधान शासक; परमात्मा।

आधिकोषिक–पु० (बैंकर) किसी अधिकोष (बैंक)का मालिक, साझेदार, संचालक आदि; महाजन, बैंकर।

आधिक्य–पु० (सं०) अधिकता, बहुतायत; प्राधान्य।

आधिग्राही–पु० (पॉनी) वह जो कोई धरोहर या जमानतकी वस्तु अपने पास रखे।

आधिदैविक–वि० (सं०) इंद्रियोंके अधिष्ठाता देवताओंसे संबंध रखनेवाला; दैवकृत या भूत-प्रेतकृत (क्लेशादि)।

आधिपत्य–पु० (सं०) प्रभुत्व; राज्य।

आधिभौतिक–वि० (सं०) प्राणियों या पंचभूतोंसे संबद्ध या उनसे उत्पन्न।

आधिराज्य–पु० (सं०) अधिराजका पद या अधिकार; सर्वोपरि प्रभुत्व।

आधिवेदनिक–पु० (सं०) दूसरा विवाह करनेपर पहली पत्नीको संतोषार्थ दिया जानेवाला धन।

आधीन*–वि० दे० 'अधीन'।

आधीनता*–स्त्री० दे० 'अधीनता'।

आधुत–वि० (सं०) दे० 'आधूत'।

आधुनिक–वि० (सं०) आजकलका, वर्तमान कालका, नये जमानेका।

आधुनिकता–स्त्री० आधुनिक होनेका भाव; एक ऐसा दृष्टिकोण जो मनुष्यकी नियतिको पूर्व परम्परासे सम्बद्ध न मानकर नये युगकी स्थितियोंके अनुसार परिभाषित करे।

आधुनिका–स्त्री० (सं०) आधुनिक वेष-भूषा, नये फैशन, नये विचारों तथा मान्यताओंका अनुसरण करनेवाली नारी। **–भास**–आधुनिक दृष्टिकोणके स्थानपर आधुनिक जीवनके फैशनमूलक बाह्य उपकरणोंकी नकल द्वारा आधुनिक बननेका प्रयास।

आधुनिकीकरण–पु० (माडर्नाइजेशन) (मिलों आदिमें) पुराने यंत्रोंको हटाकर नये यंत्रों तथा नूतन निर्माणविधियोंके संप्रयोग द्वारा आधुनिक स्थितियोंके अनुकूल एवं लाभकारी बनाना।

आधूत–वि० (सं०) कँपाया हुआ, हिलाया हुआ; चालित; क्षुब्ध किया हुआ।

आधूपन–पु० (सं०) धूमयुक्त करना; धुएँसे आवृत करना।

आधूमित–वि० (सं०) धुएँसे आवृत।

आधूम्र–वि० (सं०) धुएँके रंगका।

आधृत–वि० (सं०) किसीके सहारे टिका हुआ, अवलंबित।

आधेक*–वि०, अ० दे० 'आधिक'।

आधेय–वि० (सं०) जो रखा या स्थापित किया जाय; जो धारण किया जाय; जो बंधक रखा जाय; किसी आधारपर टिका हुआ; ठहराने या रखने योग्य। पु० किसी आधार पर रखी या टिकायी हुई वस्तु; रखनेकी क्रिया; लेखकीय कथ्य, जो आधार अर्थात् परिस्थितियों, वातावरण आदिके माध्यमसे प्रकट किया जाय।

आधोरण–पु० (सं०) महावत, पीलवान।

आध्मात–वि० (सं०) फूला हुआ; गर्वित; दग्ध; शब्दित, ध्वनित; पेटकी वायुसे ग्रस्त। पु० पेटका वायुरोग; युद्ध।

आध्मान–पु० (सं०) गर्व करना; पेट फूलना, अफरा; शोथ; जलोदर; धौंकनी।

आध्मानी–स्त्री० (सं०) नलिका नामक गंधद्रव्य।

आध्यात्मिक–वि० (सं०) परमात्मा या आत्मासे संबंध रखनेवाला; मनसे संबंध रखनेवाला।

आध्यान–पु० (सं०) चिंता; दुःखपूर्ण स्मृति; चिंतनमनन।

आध्यापक–पु० (सं०) शिक्षक, गुरु।

आध्यायिक–वि० (सं०) वेदाध्ययनमें संलग्न।

आध्यासिक–वि० (सं०) अध्यास जनित, भ्रांतिसे उत्पन्न।

आध्वनिक–वि० (सं०) यात्रा करनेवाला।

आनंतर्य–पु० (सं०) व्यवधानराहित्य, निरन्तरता।

आनंत्य–पु० (सं०) असीमता; अमरत्व।

आनंद–पु० (सं०) मोद, हर्ष, खुशी, मौज; ब्रह्म; मदिरा; ४८वाँ संवत्सर; शिव; विष्णु; बुद्धका एक शिष्य; एक वृत्त। **–कानन**–पु० काशी। **–कोश**–पु० आत्माको आवृत करनेवाले पाँच कोशोंमेंसे अंतिम। **–घन**–वि० आनंदसे भरपूर। **–जल,–बाष्प**–पु० आनंदजन्य अश्रु। **–पट**–पु० नवोढाका वस्त्र। **–प्रभव,–संभव**–पु० वीर्य, शुक्र; विश्व। **–बधाई**–स्त्री०,**–बधावा**–पु० (हिं०) उछाह-बधावा; उत्सव-मंगल। **–भैरव**–वि० जो हर्ष और भय दोनोंका जनक हो। पु० शिव; आयुर्वेदोक्त एक रस। **–भैरवी**–स्त्री० भैरव रागकी एक रागिनी। **–मंगल**–पु० सुख-चैन, हँसी-खुशी। **–सत्ता**–स्त्री० दे० 'आनंदसम्मोहिता'। **–मास**–पु० (हनीमून) (पश्चिममें) विवाह होनेके ठीक बादका लगभग एक मासका वह समय जो वर-वधू द्वारा, प्रायः किसी रमणीक स्थानमें जाकर सैर-सपाटे तथा आनंद-मौजमें बिताया जाता है, 'प्रमोदकाल', 'नव दांपत्यमास'। **–लहरी**–स्त्री० शंकराचार्य-विरचित पार्वती-स्तोत्र। **–वन**–पु० काशी। **–सम्मोहिता**–स्त्री० संभोगके आनंदमें मग्न रहनेके कारण मुग्ध हुई प्रौढा नायिका।

आनंदक–वि० (सं०) आनंद मनानेवाला।

आनंदथु–वि० (सं०) प्रसन्न। पु० प्रसन्नता, हर्ष।

आनंदन–वि० (सं०) आनंदप्रद। पु० प्रसन्न करना; भद्रता; मित्रों आदिसे मिलने और विदा होनेके समयका सौम्य व्यवहार; आनंद प्रदान करनेवाली वस्तु।

आनंदना*–अ० क्रि० आनंदित होना।

आनंदमय–वि० (सं०) आनंदसे भरा हुआ। **–कोश**–पु० वेदांतमें माने हुए आत्माके पाँच कोशों या आवरणोंमेंसे अंतिम।

आनंदयिता(तृ)–वि० (सं०) आनंद देनेवाला।

आनंदा–स्त्री० (सं०) भाँग।

आनंदाश्रु–पु० (सं०) आनंदके अतिरेकसे निकलनेवाले आँसू।

आनंदि–पु० (सं०) प्रसन्नता, हर्ष; औत्सुक्य।

आनंदित–वि० (सं०) प्रसन्न, खुश।

आनंदी–स्त्री० (सं०) वृक्षविशेष।

आनंदी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न, मुदित; प्रसन्न करनेवाला।

आन–स्त्री० मर्यादा, गौरव, गर्व; ठसक; दुहाई; शपथ; ढंग; शर्म; भय; अदब, लिहाज; घोषणा; हठ। * वि० अन्य, दूसरा। **–तान**–स्त्री० शान; नाज; आबरू; बेतुकी बात। **–बान**–पु० सजधज; ठसक; शान; प्रतिष्ठा, मर्यादा। **मु०–तोड़ना**–प्रतिज्ञा भंग करना; हठ छोड़ना। **–रखना**–अपनी बात रखना।

आन–पु०, स्त्री० (?) (अ०) क्षण, लहजा। **मु०–की आनमें**–बातकी बातमें।

आनक–पु० (सं०) डंका, नगाड़ा; गड़गड़ाता हुआ बादल। **–दुंदुभि**–पु० कृष्णके पिता वसुदेव। **–दुंदुभी**–स्त्री० नगाड़ा।

आनडुह–वि० (सं०) बैलसे संबंध रखनेवाला।

आनत–वि० (सं०) झुका हुआ; नम्र, विनीत; नमस्कार करनेवाला। पु० एक जैन देवता।

आनति–स्त्री० (सं०) झुकना; प्रणाम करना; सत्कार; संतुष्टि।

आनद्ध–वि० (सं०) बँधा या मढ़ा हुआ; कोष्ठबद्ध। पु० मढ़ा हुआ बाजा–ढोल, मृदंग आदि; बनाव-सिंगार, सजावट। **–बस्तिता**–स्त्री० पेशाब या मलका रुकना।

आनन–पु० (सं०) मुँह; चेहरा; ग्रंथका बड़ा खंड, अध्याय।

आननफानन–अ० तुरत, अति शीघ्र।

आनना*–स० क्रि० लाना।

आनमन–पु० (सं०) दे० 'आनति'।

आनमित–वि० (सं०) झुकाया हुआ, नवाया हुआ।

आनम्य–वि० (सं०) जो झुकाया जा सके, लचीला। **–संविधान**–पु० (फ्लेक्सिबिल कांस्टिट्यूशन) किसी राज्यका ऐसा संविधान जिसमें देश-कालकी आवश्यकताके अनुसार आसानीसे परिवर्तन किया जा सके।

आनम्यता–स्त्री० (सं०) मोड़े जाने या झुका दिये जानेपर वैसा ही रह जानेकी शक्ति या गुण (प्लायेबिलिटि)।

आनयन–पु० (सं०) लाना; पास ले जाना; उपनयन-संस्कार।

आनरेरी–वि० (अं०) सम्मानार्थक (डिग्री); अवैतनिक (कर्मचारी); निर्वेतन।

आनर्त–पु० (सं०) सौराष्ट्र देश या वहाँका निवासी; रंगशाला; नृत्यशाला; नृत्य; युद्ध; जल; एक सूर्यवंशीय नरेश। **–नगरी** –स्त्री०,**–पुर**–पु० द्वारकापुरी।

आनर्तक–वि० (सं०) आनर्त देशसे संबद्ध या वहाँ उत्पन्न; नाचनेवाला।

आनर्तन–पु० (सं०) नाचना।

आनर्थक्य–पु० (सं०) उपयोग-राहित्य, निरर्थकता; अनुपयुक्तता।

आना–अ० क्रि० एक जगहसे चलकर दूसरी जगह (कहने या सुननेवालेके पास या उसके स्थानपर) पहुँचना; वहाँके लिए रवाना होना; लौटना; शुरू होना; फल-फूल लगना; मिलना; भोज्य वस्तुका पकना; स्खलित होना; ज्ञान या अभ्यास होना; अँटना; बैठना; बढ़ना (धान कमरतक आ गये हैं); अंतर्भाव होना; (क्रोधादिका) उत्पन्न होना। पु० रुपयेका सोलहवाँ भाग, चार पैसे; सोलहवाँ भाग। **आता-जाता**–आने-जानेवाला। **आना-जाना**–आमद-रफ्त, मिलना-जुलना। **आनी-जानी**–आने-जाने, बनने-बिगड़नेवाली, अस्थिर, नश्वर। **आया-गया**–मेहमान, अतिथि। **आयेदिन**–नित्यप्रति। मु० **आ धमकना**–अचानक आ जाना। **आ निकलना**–अचानक पहुँच जाना। **आ पड़ना**–थकायक आ जाना, टूट पड़ना; संकट, विपद् आना। **आ बनना**–अवसर हाथ लगना; घटित होना, 'आइ बना अस आज संजोगू'–रामा०। **आ रहना**–गिर पड़ना। **आ लगना**-आरंभ होना; साथ लगना; ठिकाने पहुँचना। **आ लेना**–पकड़ लेना, पहुँच जाना।

आनाकानी–स्त्री० टालमटूल, उज्र, एतराज; कानाफूसी।

आनाथ्य–पु० (सं०) असहायावस्था।

आनाय–पु० (सं०) जाल।

आनायी(यिन्)–पु० (सं०) मछुआ।

आनाह–पु० (सं०) बंधन; मलावरोध; मल-मूत्रके अवरोधसे पेटका फूलना; लंबाई (कपड़े आदिकी)।

आनाहिक–वि० (सं०) कब्जमें इस्तेमाल किया जानेवाला।

आनि*–स्त्री० दे० 'आन'।

आनिल–वि० (सं०) वायु-संबंधी। पु० हनूमान्; भीम; स्वाति नक्षत्र।

आनिलि–पु० (सं०) दे० 'आनिल'।

आनीत–वि० (सं०) लाया हुआ; पास लाया हुआ।

आनीति–स्त्री० (सं०) आनयन।

आनील–वि० (सं०) हलके नीले या स्याह रंगका। पु० स्याह घोड़ा।

आनुकूलिक–वि० (सं०) अनुकूल।

आनुकूल्य–पु० (सं०) अनुकूलता।

आनुक्रमिक–वि० (ग्रैडूएटेड) जिसमें अंशोंके चिह्न बने हों; जिसमें ऊँचे-नीचे, कठिन-सरलका सिलसिला निबाहा गया हो, जो अनुक्रमसे हो; क्रमके अनुसार होनेवाला; क्रमसे लगा हुआ; क्रमशः वर्द्धमान।

आनुगतिक–वि० (सं०) अनुयायीसे संबंध रखनेवाला; पीछे चलनेवाला, 'गतानुगतिको लोकः'।

आनुगत्य–पु० (सं०) अनुगत होना; अनुगमन; परिचय; घनिष्ठता।

आनुग्रहिक–वि० (सं०) अनुग्रह-प्रेरित। **–कर-नीति**–स्त्री० (कनसेशनल टैरिफ) आयात-निर्यात-कर लगाते समय कुछ देशोंके साथ खास-रिआयत करनेकी नीति। **–दारोदयशुल्क**–पु० कुछ विशिष्ट वस्तुओंपर कम लिया जानेवाला शुल्क या चुंगी।

आनुग्रामिक–वि० (सं०) ग्राम-संबंधी; ग्रामीण।

आनुतोषिक–पु० (ग्रैटुइटि) किसी कर्मचारीको सेवाविरत होने या अवकाश ग्रहण करने पर उपहार रूपमें दिया जानेवाला धन, 'उपदान'; अनुग्रहधन।

आनुपदिक–वि० (सं०) पीछा करनेवाला, अनुसरण करनेवाला; अध्ययन करनेवाला।

आनुपातिक–वि० (सं०) अनुपातके अनुसार होनेवाला, दिया जानेवाला; अनुपात संबंधी। **–प्रतिनिधित्व**–पु० (प्रपोर्शनल रिप्रजेंटेशन) विधानसभा आदिके चुनावकी वह प्रणाली जिसके अनुसार सभी दलोंको, उन्हें प्राप्त हुए कुल मतोंके अनुपातसे, प्रतिनिधित्व दिये जानेकी व्यवस्था की जाती है।

आनुपूर्व–पु०, **आनुपूर्वी**–स्त्री०, **आनुपूर्व्य**–पु० (सं०) एकके बाद एक होना, (सक्सेशन) वस्तुओं या व्यक्तियोंका एक पहले, दूसरा बादमें, इस सिलसिलेसे आना; सिलसिला, क्रम; वर्णव्यवस्था या उसका क्रम।

आनुमानिक–वि० (सं०) अनुमान, अटकलपर आश्रित, कयासी।

आनुयात्रिक–पु० (सं०) अनुचर, सेवक।

आनुरक्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'अनुरक्ति'।

आनुलोमिक–वि० (सं०) क्रमबद्ध, सिलसिलेवार, अनुकूल; उपयुक्त।

आनुवंशिक–वि० (सं०) वंशपरंपरासे प्राप्त, पुश्तैनी; पुश्त दर पुश्त चलनेवाला।

आनुवंशिकता–स्त्री० (सं०) (हेरेडिटी) एक पीढ़ीसे अन्य पीढ़ीमें जानेकी क्रिया या भाव; वे गुण या विशिष्टताएँ जो एक पुश्तसे दूसरी पुश्तमें प्रजनन द्वारा संक्रमित होती हैं।

आनुवंशिकी–स्त्री० प्राणी या पौधेकी विभिन्न पीढ़ियोंमें वंशानुगत समानताओं तथा असमानताओंका अध्ययन।

आनुवेश्य–पु० (सं०) वह पड़ोसी जिसका घर अपने घरसे दूसरा (प्रतिवेशीके बाद) हो।

आनुश्रविक, आनुश्राविक–वि० (सं०) अनुश्रुति, श्रुति-परंपरापर आश्रित।

आनुषंगिक–वि० (सं०) गौण रूपसे साथ चलनेवाला, संबद्ध (चिकित्सा); संयुक्त; अनिवार्य; गौण; सदृश; आनुपातिक।

आनूप–वि० (सं०) दलदल, धँसाववाला, गीला (भूखंड); अनूप देशमें उत्पन्न। पु० जलसे विशेष संबंध रखनेवाला प्राणी (भैंस, मछली)।

आनूपक–वि० (सं०) दलदल आदिमें रहनेवाला।

आनृण्य–पु० (सं०) ऋण-परिशोध, अनृणता।

आनृत–वि० (सं०) हमेशा झूठ बोलनेवाला।

आनृशंस, आनृशंस्य–वि० (सं०) दयालु, कोमल स्वभावका। पु० कोमलता, दयालुता; करुणा।

आनेता(तृ)–वि० (सं०) लानेवाला।

आनैपुण, आनैपुण्य–पु० (सं०) भद्दापन; अदक्षता।

आनैश्वर्य–पु० (सं०) ऐश्वर्य या अधिकारका अभाव।

आन्न–वि० (सं०) खाद्य-संबंधी; अन्नसे बना हुआ; जिसके पास अन्न या खाद्य-सामग्री प्रस्तुत हो; जिसे खाद्य पदार्थ मिलते हों।

आन्वयिक–वि० (सं०) कुलीन; व्यवस्थित।

आन्वहिक–वि० (सं०) प्रतिदिन होनेवाला।

आन्वीक्षिकी–स्त्री० (सं०) तर्कशास्त्र; अध्यात्म-शास्त्र।

आप–पु० (सं०) पानी; प्राप्ति; एक वसु; आकाश। वि० प्राप्य। **–गा,–या**–स्त्री० नदी। **–निधि**–पु० समुद्र। **–स्तंभिनी**–स्त्री० लिंगिनी नामक लता।

आप–सर्व० खुद, स्वयं; तुम, वे, येका आदरार्थक रूप। पु० परमात्मा। **–काज**–पु० अपना काम। **–काजी**–वि० अपना मतलब देखनेवाला। **–धाप**–स्त्री० दे० 'आपाधापी'। **–बीती** –स्त्री० अपने ऊपर बीती हुई बात; अपने जीवन या तदंतर्गत घटना-विशेषकी कहानी। **–रूप**–वि० स्वयं; साक्षात्। **–स्वार्थी** –वि० खुदगर्ज, मतलबी। मु० **–आप करना**–खुशामद करना। **–आपकी पड़ना**–अपने-अपने काममें व्यस्त रहना। **–आपको** –अलग-अलग, अपने-अपने; अपनेको। **–से आप**–खुद-बखुद, अपने आप। **–ही आप**–स्वतः, अपने मनसे; मन ही मन।

आपक–वि० (सं०) प्राप्त करनेवाला।

आपकर–वि० (सं०) अमैत्रीपूर्ण; हानिकारक; अनिष्टकर; बुराई करनेवाला।

आपक्व–वि० (सं०) कम पका हुआ।

आपगेय–पु० (सं०) भीष्म ।

आपचारना*–मनमानी करना–'कै बिसासी आपचारचौ' घन० ।

आपण–पु० (सं०) बाजार; दुकान । † सर्व० अपना ।

आपणिक–वि० (सं०) बाजार-संबंधी; बाजारसे प्राप्त (कर आदि) पु० दुकानदार; बाजार; दुकानका कर ।

आपतन–पु० (सं०) पहुँचना, टूट पड़ना; घटित होना; उतरना; प्राप्ति; ज्ञान; स्वाभाविक परिणाम ।

आपतिक-वि० (सं०) आकस्मिक; दैवी; अदृष्ट । पु० वाज ।

आपत्–'आपद्'का समासगत रूप । **–कल्प**–पु० आपत्कालके लिए विहित विकल्प । **–काल**–पु० मुसीवत, कष्ट, कठिनाईके दिन । **–कालिक**–वि० आपत्कालमें होनेवाला; आपत्कालके लिए उचित । **–कृत ऋण**–पु० संकटकालमें लिया हुआ ऋण । **–सहायकार्य**–पु० (रिलीफ वर्क) दुष्काल या बाढ़, भूकंपादि जैसे संकटके समय आर्त और असहाय जनताकी सहायताके लिए आरंभ किया गया सार्वजनिक निर्माण-कार्य ।

आपत्ति–स्त्री० (सं०) विपत्, संकट; दोष; उज्र, एतराज; अनिष्ट-प्रसंग; प्राप्ति ।

आपत्य–वि० (सं०) अपत्य-संबंधी; अपत्याधिकारमें विहित (प्रत्यय-व्या०) ।

आपदर्थ–पु० (सं०) जिसको ग्रहण करनेसे भविष्यमें अनिष्ट हो वह धन-संपत्ति ।

आपदा–स्त्री० (सं०) विपत् ।

आपद्–स्त्री० (सं०) विपत्, मुसीबत; कष्ट, कठिनाई । **–गत,–ग्रस्त**–वि० मुसीबतमें फँसा हुआ; भाग्यहीन । **–धर्म**–पु० वह आचरण, वृत्ति आदि जिसकी इजाजत केवल आपत्कालके लिए हो ।

आपन–पु० (सं०) पाना; पहुँचना; भेंटना; मिर्च । * सर्व० दे० 'अपना' । **–पो,–पौ***–दे० 'अपनपो' ।

आपना, आपनो*–सर्व० दे० 'अपना' ।

आपनिक–पु० (सं०) इंद्रनीलमणि; किरात या असभ्य व्यक्ति ।

आपन्न–वि० (सं०) प्राप्त; संकटको पहुँचा हुआ, आपद्ग्रस्त (संकटापन्न) । **–सत्त्वा**–स्त्री० गर्भवती ।

आपमित्यक–वि० (सं०) विनिमय द्वारा प्राप्त । पु० विनिमय द्वारा प्राप्त वस्तु ।

आपयिता(तृ)–वि० (सं०) पाने, जुटानेवाला ।

आपराधिक–वि० (सं०) अपराधसे संबंध रखनेवाला; (कार्य) जिसकी गणना अपराधमें हो सकती हो ।

आपराह्णिक–वि० (सं०) तीसरे पहर होनेवाला ।

आपर्तुक–वि० (सं०) किसी विशेष समय या ऋतुसे संबंध न रखनेवाला ।

आपव–पु० (सं०) वसिष्ठका एक नाम ।

आपवर्ग्य–वि० (सं०) अपवर्ग संबंधी; मोक्ष देनेवाला ।

आपस–पु० संबंध, हेल-मेल, नाता; परस्परका संबंध । **–दारी**–स्त्री० परस्पर निकट संबंध, भाईचारा । **–का**–स्वजनों, संबंधियों, मित्रोंके बीचका (–का मामला,–की फूट) । **–में**–परस्पर, एक-दूसरेके साथ । **–वाले**–स्वजन; संबंधी; मेली ।

आपसी–वि० आपसका ।

आपस्कार–पु० (सं०) धड़ या शरीरका छोर ।

आपस्तंब–पु० (सं०) एक शाखाप्रवर्त्तक ऋषि ।

आपा–पु० अपना स्वरूप, सत्ता, जात; अपनी सत्ताका ज्ञान, अहंभाव, खुदी; अहंकार, गर्व; सुध-बुध । स्त्री० वड़ी वहन (मुसल०) । मु०**–खोना**–घमंड छोड़ना; अपनेको वरवाद करना; मरना । **–डालना**–घमंड छोड़ना । **– तजना,–मेटना**–द्वैतभावका त्याग; घमंड छोड़ना । **–दिखलाना**–दर्शन देना । **–विसराना**–अपनेको भूल जाना; सुध-बुध खो देना । **–सँभालना**–चेतना, सजग होना । **–(पे) में आना या होना**–होश-हवासमें होना; मनोभावोंपर काबू होना । **–में न रहना,–से निकलना,–से बाहर होना**–क्रोधादिके अतिरेकसे मनपर काबू न रहना, उत्तेजनामें विवेक खो देना, धैर्यच्युत होना ।

आपाक–पु० (सं०) आँवाँ, भट्ठी ।

आपात–पु० (सं०) गिराना; गिराव; अचानक आ धमकना, टूट पड़ना; वर्तमान क्षण या काल; प्रथम दर्शन, पहली निगाह; (इमर्जेंसी) अकस्मात् आयी हुई संकटकी स्थिति, आकस्मिक आवश्यकता । **–दुःसह**–वि० जिसका प्रथम आक्रमण सह्य न हो । **–रमणीय**–वि० (केवल) तत्काल सुख देनेवाला ।

आपाततः(तस्)–अ० (सं०) पहली निगाहमें, ऊपरसे देखनेमें; तत्क्षण, तुरत; अकस्मात् ।

आपातिक, आपाती–वि० (इमर्जेंट) आकस्मिक आवश्यकताके कारण उत्पन्न, आहूत या सामने आनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला ।

आपाती(तिन्)–वि० (सं०) गिरनेवाला, उतरनेवाला; आक्रामक; अकस्मात् घटित होनेवाला ।

आपाद–पु० (सं०) प्राप्ति; पुरस्कार । अ० पैरसे लेकर; पैर तक । **–मस्तक**–अ० सिरसे पैरतक ।

आपाधापी–स्त्री० हर एकको अपनी या अपने कामकी चिंता होना; धाँधली ।

आपान–पु० (सं०) कुछ लोगोंका मिलकर शराब पीना, पानगोष्ठी; इकट्ठा होकर शराब पीनेका स्थान । **–गोष्ठी**–स्त्री० एक साथ मद्य पीनेवाली मंडली । **–भूमि**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कई आदमी बैठकर मद्यपान करें । **–शाला**–स्त्री० शराबकी दुकान ।

आपापंथी–वि० धाँधलीबाज, अपने मनकी करनेवाला, स्वच्छंद ।

आपालि–पु० (सं०) जूँ ।

आपिंजर–वि० (सं०) कुछ-कुछ लाल । पु० सोना ।

आपी–वि० (सं०) मोटा; बलवान् । * स्त्री० पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।

आपीड–वि० (सं०) पीड़ा देनेवाला; दबानेवाला । पु० सिरपर पहननेकी चीज; किरीट; माला; मुकुटमणि; एक विषम वृत्त ।

आपीडन–पु० (सं०) दबाना; मसलना; निचोड़ना; पीड़ा देना ।

आपीत–वि० (सं०) हलका पीला, जर्दी-मायल । पु० सोनामाखी ।

आपीन–वि० (सं०) बलवान्; मोटा । पु० कूप; थन या छीमी ।

आपु*–सर्व० दे० 'आप' ।

आपुन, आपुनो*–सर्व० दे० 'अपना'; स्वयं ।

आपुस–पु० दे० 'आपस' ।

आपूपिक–वि० (सं०) अच्छा पुआ बनानेवाला; पुआ ज्यादा पसंद करनेवाला या बेचनेवाला । पु० पुआ बनाने या बेचनेवाला व्यक्ति; हलवाई ।

आपूप्य–पु० (सं०) आटा; मैदा; सत्तू; बेसन ।

आपूर–पु० (सं०) जलधारा; बाढ़; भरना ।

आपूरण–पु० (सं०) भरना, लबालब होना ।

आपूरना*–अ० क्रि० भर जाना । स० क्रि० पूरी तरह भरना ।

आपूरित, आपूर्ण–वि० (सं०) पूरी तरह भरा हुआ ।

आपूर्ति–स्त्री० (सं०) भरना; भरा होना; आवश्यक वस्तुओंकी उपलब्धि, 'सप्लाई'; संतुष्टि ।

आपूष–पु० (सं०) टीन; रांगा ।

आपृच्छा–स्त्री० (सं०) बात-चीत; जिज्ञासा; औत्सुक्य; बिदा करना; (रिफरेंडम) दे० 'जननिर्देश' ।

आपेक्षिक–वि० (सं०) अपेक्षा रखनेवाला; जिसका अस्तित्व दूसरी वस्तुपर आश्रित हो; तुलनात्मक, निस्बती । **–गुरुत्व**–पु० दो वस्तुओंका तुलनात्मक घनत्व । **–ताप**–पु० (स्पेसिफिक हीट) किसी वस्तुका तापक्रम एक अंश बढ़ानेके लिए जितने तापकी आवश्यकता हो और उसके समान मात्राके पानीका तापक्रम एक अंश बढ़ानेमें जितने तापकी आवश्यकता हो, उन दोनों तापोंकी मात्राओंका अनुपात ।

आपेक्षिकता सिद्धान्त–पु० (थियरी आव रिलेटिविटी) आइन्सटाइन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त जिसकी 'निरपेक्ष गति'का पता लगाना असम्भव है । यह सिद्धान्त बतलाता है कि आकाश (स्पेस) और काल (टाइम) दो भिन्न राशियाँ नहीं हैं, बल्कि ये दोनों ही सांतत्यक (कन्टिनुअम)के अंग हैं । विशिष्ठ (स्पेशल) आपेक्षिकता सिद्धान्तके अनुसार (१) किसी पिण्डका द्रव्यमान उसके वेगके साथ बढ़ता जाता है; यहाँ तक कि वेग जब प्रकाशके वेगके बराबर हो जाता है तो पिण्डका द्रव्यमान अनन्त हो जाता है; (२) पदार्थ और ऊर्जाका पारस्परिक रूपान्तरण हो सकता है;

तथा (३) गति करनेवाली वस्तुकी लम्बाई गतिकी दिशामें घट जाती है।

आपो, आपौ*–पु० आपा; अहंभाव; सुध, होश।

आपोक्लिम–पु० (सं०) लग्नसे तीसरा, छठा, नवाँ और बारहवाँ स्थान।

आपोजीशन–पु० (अं०) पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभाओंके सदस्योंका वह दल या गुट जो विरोधी दलका काम करता है।

आप्त–वि० (सं०) प्राप्त, पाया, मिला हुआ; पहुँचा हुआ; नियुक्त; प्रामाणिक; विश्वसनीय; यथार्थ ज्ञान रखनेवाला; कुशल, पूर्ण; यथार्थ; घनिष्ठ; अभियुक्त; युक्ति-संगत। पु० विश्वस्त व्यक्ति; मित्र; संबंधी; अर्हत्; लब्धि (गणित); शब्दप्रमाण (यो०)। **–काम**–वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो, संतुष्ट; जिसने सांसारिक कामनाएँ और आसक्तियाँ त्याग दी हों। पु० परमात्मा। **–कारी(रिन्)**–वि० उचित ढंगसे या गुप्त रूपसे कार्य करनेवाला। पु० विश्वस्त अनुचर। **–गर्भा**–स्त्री० गर्भवती। **–गर्व**–वि० घमंडी। **–पुरुष**–पु० तत्वों आदिकी अच्छी ज़ानकारी रखनेवाला व्यक्ति। **–वचन,–वाक्य**–पु० श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण आदिमें कथित बात; प्रमादादि-शून्य वचन। **–वर्ग**–पु० मित्र-मंडली। **–श्रुति**–स्त्री० स्मृति, वेदादि।

आप्ता–स्त्री० (सं०) बालोंकी जटा।

आप्तागम–पु० (सं०) दे० 'आप्तश्रुति'।

आप्ताधिकार, आप्ताधिकारी–पु० किसी मान्य विद्वान्के कथनको प्रमाण माननेकी प्रक्रिया; वह व्यक्ति। (एथारिटी)।

आप्ताधीन–वि० (सं०) विश्वस्त व्यक्तियोंपर निर्भर रहनेवाला।

आप्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्ति; पहुँचना; संबंध; संयोग; उपयुक्तता; पूर्णता; भविष्यत् काल।

आप्तोक्ति–स्त्री० (सं०) सिद्धांत-वाक्य।

आप्य–वि० (सं०) जल-संबंधी; प्राप्य। पु० एक देववर्ग; जलविकार, फेन।

आप्यायन–पु० (सं०) बाढ़, वर्द्धन; तृप्ति; तृप्त करना; प्रसन्नता; मोटा करना; बढ़ाना; वृद्धिकारक या बलकारक औषध।

आप्यायित–वि० (सं०) तृप्त; प्रसन्न; गीला; वर्द्धित; बलवान्; मोटा-ताजा।

आप्रच्छन्न–पु० (सं०) स्वागत करना या विदा देना; मिलनके समयका कुशल-प्रश्न।

आप्रच्छन्न–वि० (सं०) छिपा हुआ गुप्त।

आप्रपद–पु० (सं०) पैरोंतक पहुँचनेवाला वस्त्र। (वि० 'आप्रपदीन')।

आप्रवास, आप्रवासन–पु० (इमिग्रेशन) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जाना।

आप्रवासी–वि० (इमिग्रैंट) बाहरसे आकर किसी देशके भीतर बस जानेवाला।

आप्लव–पु० (सं०) स्नान; पानीसे तर कर देना; सिंचन। **–व्रती(तिन्)**–पु० ब्रह्मचर्य समाप्त कर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला; स्नातक।

आप्लवन–पु० (सं०) दे० 'आप्लव'।

आप्लाव–पु० (सं०) स्नान; बाढ़।

आप्लावन–पु० (सं०) स्नान; सिंचन; पानीसे तर करना; डुबाना, बोरना।

आप्लावित–वि० (सं०) स्नात; सिक्त; डुबाया हुआ।

आप्लुत–वि० (सं०) आप्लावित। पु० स्नातक।

आप्व(न्)–पु० (सं०) वायु; गरदन।

आफ़त–स्त्री० (अ०) विपद्, मुसीबत; दुःख, क्लेश; संकट, बला; ऊधम। मु०**–उठाना**–ऊधम मचाना। **–का टुकड़ा, -का परकाला**–बहुत तेज, चलता, धूर्त आदमी; तूफानी। **–का मारा**–विपद्ग्रस्त, दुर्दैव-पीडित। **–ढाना**–उपद्रव मचाना; कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना; अनहोनी बात कहना। **–मचाना**–उपद्रव मचाना, शोर-गुल करना; (किसी काममें) बहुत उतावली करना। **–मोल लेना, -सिरपर लेना**–कोई झंझट, बखेड़ा अपने सिर लेना; संकटको न्योता देना।

अफ़ताब–पु० (फा०) सूर्य; धूप। **–ज़दा**–वि० धूपका जला हुआ। **–रू**–वि० जिसका मुँह सूर्यकी ओर हो।

आफ़ताबा–पु० (फा०) हाथ-मुँह धुलानेका गडुआ, टोटीदार बधना।

आफ़ताबी–वि० सूर्य-संबंधी; धूपमें बनाया या सिझाया हुआ। स्त्री० एक तरहकी आतशबाजी; जरीके कामका पंखा जिसपर सूर्यका चित्र कढ़ा होता है; झाँप।

आफ़रीं–अ० (फा०) शाबाश, धन्य!

आफ़रीनिश–स्त्री० (फा०) सृष्टि, जगत्की उत्पत्ति।

आफ़ियत–स्त्री० (अ०) कुशल, खैरियत; बचाव।

आफ़िस–पु० (अं०) दफ्तर, कार्यालय; पद।

आफ़िसर–पु० (अं०) राजकर्मचारी; अधिकारी, अफ़सर।

आफू–स्त्री० दे० 'आफूक'।

आफूक–पु० (सं०) अफीम।

आवंध, आबंधन–पु० (सं०) बंधन; हल आदिके जुएका बंधन; प्रेम; अलंकार।

आब–पु० (फा०) पानी; पसीना; आँसू; अर्क; शराब; मवाद; फूलोंका प्राकृतिक रस। स्त्री० चमक, कांति; शोभा; ताजगी; धार; प्रतिष्ठा; उत्कर्ष। **–कार**–पु० शराब बनाने, बेचनेवाला, कलाल। **–कारी**–स्त्री० शराब बनाने, बेचनेका स्थान, शराबखाना; मद्य या मादक वस्तुओंका व्यवसाय। **–० कानून**–पु० आबकारीसे संबंध रखनेवाला कानून। **–० महकमा**–पु० नशीली चीजोंके उत्पादन, विक्रय आदिका नियमन करनेवाला विभाग, 'एक्साइज डिपार्टमेंट'। **–ख़ुर्दा**–वि० पानी या सील खाया हुआ। **–खोरा**–पु० एक तरहका गिलास जो मुँहपर कुछ सकरा होता है। **–गीना**–पु० शीशा; स्फटिक। **–गीर**–पु० गढ़ा; तालाब; जुलाहोंकी कूँची जिससे तानीपर पानी छिड़कते हैं। **–गुल**–पु० गुलाबका अर्क। **–जोश**–पु० लाल मुनक्का; शोरबा। **–दस्त**–पु० सौचना, पानी छूना; आबदस्तका पानी। **–दार**–वि० चमकदार; धारदार; स्वाभिमानी। पु० पानी पिलानेवाला नौकर; तोपमें सुंबा और पानीका पुचारा देनेवाला। **–दीदा**–वि० जिसकी आँखोंमें आँसू भर आये हों, रोता हुआ। **–दोज़**–वि० पानीमें डूबकर, पानीके भीतर-भीतर चलनेवाली (नाव), 'सबमेरीन'। **–पाशी**–स्त्री० खेतकी सिंचाई। **–यारी**–स्त्री० पेड़-पौधोंको सींचना। **–रू**–स्त्री० मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। **–शार**–पु० झरना, निर्झर। **–शिनास**–पु० पानीकी गहराई नापनेवाला जहाजी कर्मचारी। **–(बे) नज़ूल**–पु० फोतेमें पानी आ जाना, अंडवृद्धि। **–रवाँ**–पु० बहुत बारीक मलमल। **–सुर्ख़**–पु० शराब। **–हयात**–पु० अमृत। **–हैवाँ**–पु० अमृत। **–(बो) ताब**–स्त्री० चमकदमक; शोभा। **–दाना**–पु० अन्न-जल। **–हवा**–स्त्री० जल-वायु। मु० **–दाना उठना**–स्थानविशेषमें जीविकाका उपाय (नौकरी आदि) न रह जाना।

आबद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ; बाधित; जकड़ा हुआ; निर्मित; प्राप्त। पु० दृढ़ बंधन; प्रेम; अलंकार; जुआ।

आबनूस–पु० तेंदू नामक एक जंगली वृक्ष।

आवनसी–वि० आबनूसका या आबनूसके रंग जैसा गहरा काला।

आबला–पु० (फा०) छाला, फफोला।

आबल्य–पु० (सं०) निर्बलता, कमजोरी।

आबाद–वि० (फा०) बसा हुआ, बस्तीवाला; संपन्न, खुशहाल; फलता-फूलता। **–कार**–पु० जंगल, बंजर जमीनमें आबाद होनेवाले कृषक। मु०**–करना**–उजाड़, बंजर जमीनको बसाना या कृषि योग्य बनाना।

आबादान–वि० बसा हुआ; भरा-पूरा; उन्नत, समृद्ध।

आबादानी–स्त्री० आबाद जगह; सभ्यता, संस्कृति; अभ्युदय; कृषि; आबादी; बहुतायत; करवृद्धि; आमोद-प्रमोद।

आबादी–स्त्री० बस्ती; जनसंख्या; खुशहाली; कृषिभूमि।

आबाध–पु० (सं०) पीड़ा, कष्ट; क्षति; छेड़छाड़।

आबाधा–स्त्री० (सं०) पीड़ा; चिंता; बेचैनी।

आबाल–अ० (सं०) बालकोंसे लेकर।

आबिल–वि० (सं०) पंकिल; गंदा; भंग करनेवाला; साफ करनेवाला। **–कंद**–पु० मालाकंद।

आबी–वि० जलीय; जलचर; हलका नीला।

आबेस*–पु० आवेश, जोश; आनंदातिरेक।

आब्द–वि० (सं०) बादलसे उत्पन्न या संबंध रखनेवाला।

आब्दिक–वि० (सं०) प्रतिवर्ष होनेवाला, वार्षिक, सालाना।

आब्रत–पु० दे० 'आवर्त'।

आभ*–स्त्री० दे० 'आभा'। पु० पानी।

आभय–पु० (सं०) काला अगर; कूट नामक ओषधि।

आभर*–पु० आभरण, आभूषण (वीसल०)।

आभरण–पु० (सं०) आभूषण, गहना; पोषण।

आभरन*–पु० आभूषण।

आभरित–वि० (सं०) भरा हुआ; सँवारा हुआ; भूषित।

आभा–स्त्री० (सं०) चमक, द्युति; झलक; छाया; प्रतीति; सादृश्य (स्वर्णाभ–सोने जैसी चमक-दमकवाला); बबूलका पेड़।

आभाणक–पु० (सं०) कहावत, लोकोक्ति।

आभात–वि० (सं०) कांतियुक्त; चमकता हुआ; दृश्य।

आभाति–स्त्री० (सं०) चमक, द्युति; प्रतिबिंब।

आभार–पु० (सं०) बोझ; जिम्मेदारी; घरकी देख-भालका बोझ; एहसान; एक वर्णवृत्त।

आभारी(रिन्)–वि० (सं०) एहसानमंद, ऋणी।

आभाष–पु० (सं०) संबोधन; भूमिका।

आभाषण–पु० (सं०) बोलना, बातचीत; संबोधन।

आभास–पु० (सं०) द्युति; चमक; झलक; छाया, परछाईं; सादृश्य; प्रतीति (चिदाभास); मिथ्या (दिखाऊ) प्रतीति (हेत्वाभास); संकेत; अभिप्राय।

आभासन–पु० (सं०) आलोकित करना; स्पष्ट करना।

आभासुर, आभास्वर–वि० (सं०) चमकीला, द्युतिमान्। पु० एक देववर्ग।

आभिचारिक–वि० (सं०) अभिचार-संबंधी; अभिचारात्मक। पु० अभिचारके मंत्रादि।

आभिजन–वि० (सं०) जन्म या कुलसे संबंध रखनेवाला; कुलागत (नाम)। पु० कुलीनता।

आभिजात्य–पु० (सं०) कुलीनता, ऊँचे कुलमें उत्पत्ति; सौंदर्य; पांडित्य। **–वाद**–पु० प्राचीन शास्त्रीय परम्पराका अनुकरण करनेवाला साहित्यिक आन्दोलन।

आभिजित–वि० (सं०) अभिजित् नक्षत्रमें उत्पन्न।

आभिधा–स्त्री० (सं०) स्वर; शब्द; नाम; उल्लेख।

आभिधातक–पु० (सं०) दे० 'आभिधा'।

आभिधानिक–वि० (सं०) अभिधान–कोशमें लिखित। पु० कोशकार।

आभिप्रायिक–वि० (सं०) ऐच्छिक।

आभिमुख्य–पु० (सं०) (किसीकी ओर) रुख होना, आमने-सामने होना।

आभिरामिक–वि० (सं०) सुंदर, प्रिय।

आभिरूपक, आभिरूप्य–पु० (सं०) सौंदर्य।

आभिषेचनिक–वि० (सं०) राजतिलक-संबंधी।

आभिहारिक–वि० (सं०) छल या बलपूर्वक लिया हुआ; भेंटके रूपमें दिया जानेवाला। पु० भेंट, उपहार; कमरा।

आभीर–पु० (सं०) अहीर; एक जनपद या उसके निवासी; एक राग। **–नट**–पु० एक राग। **–पल्लि,–पल्लिका,–पल्ली**–स्त्री० अहीरोंका पुरवा या गाँव।

आभीरक, आभीरिक–वि० (सं०) गोप-संबंधी। पु० अहीर जाति।

आभीरी–स्त्री० (सं०) अहीरिन; अहीरोंकी बोली; भारतकी एक प्राचीन भाषा; एक रागिनी।

आभील–वि० (सं०) भयानक; दुःखित, पीड़ित। पु० शारीरिक कष्ट; क्षति; दुःख; दुर्भाग्य।

आभूत–वि० (सं०) उत्पन्न; अस्तित्वमय।

आभूषण–पु० (सं०) गहना, अलंकार; सजावट, शृंगार।

आभूषन*–पु० दे० 'आभूषण'।

आभूषित–वि० (सं०) अलंकृत, सजाया हुआ; शोभित।

आभृत–वि० (सं०) निकट लाया हुआ; उत्पादित; भरा हुआ; जकड़ा हुआ।

आभेरी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

आभोग–पु० (सं०) रूप; विस्तार; परिपूर्णता; घुमाव; भोग; किसीकी भूमिपर किराया आदि देकर रहना और उसका सुख भोगना (टेनेन्सी); भोजन; तृप्ति; वरुणका छत्र; साँपका फैला हुआ फन; साँप; प्रयत्न; पद्यमें कविका नामोल्लेख; वस्तुके परिचायक चिह्नोंकी विद्यमानता।

आभोगी(गिन्)–वि० (सं०) भोगनेवाला (टेनेंट); भोजन करनेवाला।

आभोग्य–वि० (सं०) भोगने योग्य। पु० भोज्य पदार्थ।

आभोजी(जिन्)–वि० (सं०) खानेवाला।

आभ्यंतर–वि० (सं०) भीतरका, अंदरूनी, आंतर। **–कोप**–पु० मंत्री, पुरोहित, सेनापति आदिका विद्रोह। **–प्रयत्न**–पु० स्पष्ट उच्चारणके लिए किया जानेवाला आंतरिक (मुखके भीतरी भागका) प्रयत्न। **–व्यापार**–पु० (इंटरनल ट्रेड) दे० 'अंतर्वाणिज्य'।

आभ्यंतरातिथ्य–पु० (सं०) अपने देशमें आया हुआ विदेशी माल।

आभ्यंतरिक–वि० (सं०) दे० 'आभ्यंतर'।

आभ्युदायिक–वि० (सं०) अभ्युदय-संबंधी; अभ्युदय-साधक; उन्नत। पु० पुत्रजन्म, विवाह आदिके अवसरपर किया जानेवाला एक श्राद्ध।

आमंजु–वि० (सं०) सुंदर, मनोरम।

आमंड, आमंत्र–पु० (सं०) एरंडका पेड़।

आमंत्रण–पु० (सं०) संबोधन, बुलाना, पुकारना; न्योता, निमंत्रण; स्वागत; विदा लेना; अनुमति; विचार, सलाह-मश्विरा।

आमंत्रणा–स्त्री० (सं०) दे० 'आमंत्रण'।

आमंत्रयिता(तृ)–पु० (सं०) निमंत्रण देनेवाला।

आमंत्रित–वि० (सं०) निमंत्रित, बुलाया हुआ। पु० वार्तालाप; बुलाना; संबोधन कारक।

आमंद्र–पु० (सं०) थोड़ा गंभीर स्वर।

आम–वि० (सं०) कच्चा, अनपका; न पचा हुआ। पु० कच्चा होनेकी अवस्था; अपक्व आहार-रस; डंठलसे अलग किया हुआ अन्न; रोग; अजीर्ण। **–कुंभ**–पु० कच्चा घड़ा। **–गंधि, –गंधिक, –गंधी(धिन्)**–वि० कच्चे मास या जलते हुए शवकी गंधवाला। **–गर्भ**–पु० भ्रूण। **–ज्वर**–पु० ज्वरका एक भेद। **–पाक**–पु० शोथ या जलोदर नामक रोगका आरंभिक रूप; अर्बुदको पकानेका एक उपाय। **–पाची(चिन्)**–वि० पाचनमें सहायक। **–पेष**–पु० कच्चे अन्नका चूर्ण। **–भृष्ट**–वि० थोड़ा पकाया हुआ। **–रक्त**–पु० रक्त अतिसार। **–रस**–पु० आहारके पचनेपर उससे बननेवाला रस। **–वात**–पु० कोष्ठबद्धता, कब्ज; आँव पड़नेका रोग। **–शूल**–पु० अजीर्णके कारण होनेवाली भयंकर पीड़ा; आँवके कारण पेट मरोड़नेका रोग। **–श्राद्ध**–पु० एक श्राद्ध जो कच्चे अन्नसे किया जाता है।

आम–पु० एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़, आम्र, रसाल। **–रस**–पु० अमावट। मु०**–के आम, गुठलीके दाम**–दोहरा लाभ।

आम–वि० (अ०) फैला हुआ, व्यापक; प्रसिद्ध; साधारण, सामान्य। **–ख़ास**–पु० राजमहलका वह भीतरी भाग जहाँ राजा-बादशाह बैठा करते हैं। **–जलसा**–पु० सार्वजनिक सभा। **–दरबार**–पु० खुला दरबार जिसमें सब लोग जा सकें। **–फ़हम्**–वि० जो सबकी समझमें आ जाय, सुबोध। **–राय**–स्त्री० लोकमत। **–लोग**–पु० जनसाधारण।

आमक–पु० वह श्मशान जहाँ मृत व्यक्तियोंके शरीर कौओं, गिद्धों आदिके खानेके लिए यों ही फेंक दिये जाते हैं।

आमड़ा–पु० आम जैसा एक खट्टा छोटा फल और उसका पेड़।

आमद–स्त्री० (फा०) आना, अवाई; आय; (कवितादिमें) सहज प्रवाहसे आनेवाला, स्वाभाविक भाव–अकृत्रिम, अक्लिष्ट-कल्पित भाव। **–(व)ख़र्च**–पु० आय-व्यय। **–रफ्त**–पु० आना-जाना। मु० **–आमद होना**–किसीके आसन्न आगमनकी चर्चा या धूम होना।

आमदनी–स्त्री० (फा०) आय; प्राप्ति; नफा, निकास; देसावरसे आनेवाला माल, आयात।

आमन–पु० अगहनी धान (बंगाल); एकफसला खेत।

आमनस्य–पु० (सं०) रंज, दुःख; पीडा।

आमनाय–पु० दे० 'आम्नाय'।

आमना-सामना–पु० सामना; भेंट।

आमनी–स्त्री० वह खेत जिसमें आमन बोया जाय; आमनकी खेती।

आमने-सामने–अ० एक-दूसरेके सामने; मुकाबलेमें।

आमय–पु० (सं०) रोग, बीमारी; क्षति; अग्निमांद्य, अजीर्ण; कूट नामक ओषधि।

आमयावी(विन्)–वि० (सं०) रोगी; अग्निमांद्य रोगसे ग्रस्त।

आमरख*–पु० क्रोध; अमर्ष।

आमरखना*–अ० क्रि० क्रोध करना।

आमरण–अ० (सं०) मरणपर्यंत, जीवनके अंततक।

आमरणांत, आमरणांतिक–वि० (सं०) मृत्युपर्यंत रहनेवाला।

आमर्द, आमर्दन–पु० (सं०) मसलना, रगड़ना; दबाना; निचोड़ना।

आमर्ष–पु० (सं०) दे० 'अमर्ष'।

आमलक–पु० (सं०) आँवला।

आमलकी–स्त्री० (सं०) छोटा आँवला; फाल्गुन-शुक्ला एकादशी।

आमला–पु० आँवला।

आमाँ–पु० गरम लोहा पीटनेके लिए दूसरे लोहारको बुलाना।

आमातिसार–पु० (सं०) आँव, पेचिशकी बीमारी जिसमें मलके साथ सफेद आँव आता है।

आमात्य–पु० (सं०) दे० 'अमात्य'।

आमादगी–स्त्री० आमादा–तैयार होना, तत्परता।

आमादा–वि० (फा०) तैयार, तत्पर, उद्यत।

आमानस्य–पु० (सं०) दे० 'आमनस्य'।

आमानाह–पु० (सं०) आँवके कारण पेटका फूलना।

आमान्न–पु० (सं०) कच्चा, बिना पचा अन्न; कच्चा चावल।

आमावास्य–वि० (सं०) अमावस या उस दिन होनेवाले व्रतसे संबंध रखनेवाला।

आमाशय–पु० (सं०) पाचन-संस्थानका वह थैलीनुमा भाग जिसमें आहार इकट्ठा होकर पचता है, मेदा।

आमाहल्दी–स्त्री० एक ओषधि।

आमिक्षा–स्त्री० (सं०) फटे दूधका ठोस भाग, छेना।

आमिख*–पु० दे० 'आमिष'।

आमिर–वि० (अ०) हुक्म देनेवाला। पु० हाकिम, अधिकारी।

आमिल–वि०, पु० (अ०) अमल–काम करनेवाला, साधक; अधिकारी; झाड़-फूँक करनेवाला। वि० सिद्ध; * खट्टा।

आमिश्र–वि० (सं०) एक साथ मिलाया हुआ।

आमिश्रा–स्त्री० (सं०) वह राज्य या प्रदेश जहाँ राजभक्त और राजद्रोही दोनों समान रूपसे रहते हों।

आमिष–पु० (सं०) मांस; शिकार; भोग्य वस्तु; लुभावनी वस्तु, चारा; घूस; कामना, भोगेच्छा; रूप; आकृति; पत्र; जँभीरी नीबू। **–प्रिय,–भुक्(ज्)**–वि० जिसे मांस प्रिय हो। पु० मांसभक्षी पक्षी (गिद्ध, बाज आदि)। **–भोजी(जिन्)**–वि० मांसभक्षी, गोश्तखोर।

आमिषाशी(शिन्)–वि० (सं०) मांसाहारी।

आमीं–अ० (अ०) दे० 'आमीन'।

आमी–स्त्री० छोटा आम, अँबिया; जौ आदिकी भूनी हुई बाल।

आमीक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'आमिक्षा'।

आमीन–अ० (अ०) ईश्वर ऐसा करे, तथास्तु।

आमीलन–पु० (सं०) आँखें बंद करना।

आमुक्त–वि० (सं०) मुक्त किया हुआ; फेंका या छोड़ा हुआ; धारण किया हुआ।

आमुक्ति–स्त्री० (सं०) मोक्ष; धारण करना, पहनना। अ० मुक्ति मिलनेके समयतक।

आमुख–पु० (सं०) आरंभ; (नाटककी) प्रस्तावना; भूमिका।

आमुष्मिक–वि० (सं०) परलोक-संबंधी।

आमूल–अ० (सं०) मूलपर्यंत, जड़तक; जड़से। **–सुधारवाद**–पु० (रैडिकैलिज्म) जड़से या पूर्णतः सुधार करनेपर जोर देनेवाला राजनीतिक सिद्धांत, पराकाष्ठावाद।

आमृण–वि० (सं०) क्षति पहुँचानेवाला; शत्रुता करनेवाला।

आमेज़–वि० (फा०) मिला हुआ, युक्त (समासमें व्यवहृत, रंगामेज़–रंग भरा हुआ)।

आमेजना*–स० क्रि० मिलाना।

आमेज़िश–स्त्री० (फा०) मिलावट, मिश्रण।

आमोख़्ता–पु० (फा०) पढ़े हुए पाठको दोहराना, उद्धरणी।

आमोचन–पु० (सं०) छुड़ाना; मुक्त करना।

आमोद–पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, खुशी; बिखरने, फैलनेवाली सुगंध, सुरभि; सतावर। **–प्रमोद**–पु० मौज-चैन, रंग-रलियाँ। **–यात्रा**–स्त्री० (ट्रिप) आनंदके लिए, मन बहलानेके लिए की गयी छोटी-सी यात्रा।

आमोदन–पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता देना; बसाना, वासना।

आमोदित–वि० (सं०) प्रसन्न, आनंदित; सुवासित।

आमोदी(दिन्)–वि० (सं०) सुवासित, खुशबूदार; प्रसन्न रहनेवाला।

आमोष–पु० (सं०) अपहरण, चोरी।

आमोषी(षिन्)–वि० (सं०) चोरी करनेवाला, छीन लेनेवाला।

आम्नात–वि० (सं०) उद्धृत, उल्लिखित; विचारित; अधीत; याद किया हुआ; पवित्र ग्रंथादिके रूपमें परंपरासे प्राप्त (वै०)।

आम्नाय–पु० (सं०) वेद, श्रुति; परंपराप्राप्त उपदेश; तंत्र; कुल; कुलक्रम।

आम्र–पु० (सं०) आम। **–कूट**–पु० अमरकंटक पर्वत। **–गंधक**–पु० समष्ठिल नामक पौधा। **–वन**–पु० आमका बाग, अमराई।

आम्रात, आम्रातक–पु० (सं०) आमड़ा।

आम्ल–पु० (सं०) इमलीका पेड़; खट्टापन।

आम्ला–स्त्री० (सं०) इमली; खट्टापन।

आम्लिका, आम्लीका–स्त्री० (सं०) इमली; मुँहका खट्टा स्वाद या डकार।

आयँती पायँती–स्त्री० सिरहाना-पायताना।

आयंदा–अ० दे० 'आइंदा'।

आय–स्त्री० (सं०) धनागम, आमदनी; लाभ। पु० जन्म-कुंडलीमें ग्यारहवाँ स्थान, अंतःपुररक्षक; आगमन। **–कर**–पु० (सं०) (इनकम टैक्स) राज्य द्वारा आमदनीपर लगाया जानेवाला कर। **–व्यय**–पु० आमद-खर्च। **–०का चिट्ठा**–बजट। **–स्थान**–पु० लगान जमा करनेकी जगह।

आयत–वि० (सं०) लंबा; विस्तृत; विशाल; आकृष्ट। पु० (रेक्टैंगिल) वह समानांतर चतुर्भुज जिसका प्रत्येक कोण समकोण हो (ज्या०)। **–च्छदा**–स्त्री० केला। **–नेत्र,–लोचन**–वि० बड़ी-बड़ी या लंबी आँखोंवाला।

आयत–स्त्री० (अ०) कुरानका वाक्य; चिह्न, निशान।

आयतन–पु० (सं०) (कैपेसिटी) किसी पात्रादिके अंदरका स्थान जिसमें कोई चीज आ सके; लम्बाई-चौड़ाई आदि; स्थान; घर; आश्रय; देवस्थान; यज्ञस्थान; बखार; रोगका कारण; मकान बनानेका स्थान।

आयताकार–वि० (रेक्टैंगुलर) जिसका आकार आयत जैसा हो।

आयति–स्त्री० (सं०) वह सीमा जहाँतक कोई वस्तु पहुँच सकती हो; लंबाई; विस्तार; भविष्यत् काल; तेज; प्रभाव; संगम, मिलन; संयम; भविष्यमें होनेवाली आय।

आयत्त–वि० (सं०) अधीन; आश्रित, अवलम्बित।

आयत्ति–स्त्री० (सं०) अधीनता; दूसरेपर अवलंबित होना; प्रेम; सीमा; उपाय; प्रभाव; सामर्थ्य; महत्ता; दिन; आचरणकी दृढ़ता; लंबाई; भविष्यत् काल।

आययातथ्य–पु० (सं०) जैसा होना चाहिये वैसा न होना; अयथार्थता; अनौचित्य।

आयद–वि० (अ०) लौटनेवाला; घटित होनेवाला; लगनेवाला। मु० **–होना**–लगना; लगाया जाना (जुर्म, दफा आदि)।

आयनमंडल–पु० (आयनोस्फियर) पृथ्वीके गिर्द, वायुमण्डलमें लगभग ६० मीलकी ऊँचाईसे लेकर ६०० मीलकी ऊँचाई तक विद्यमान वायुमण्डलका वह भाग जिसमें आयनित अणु–परमाणु

बहुतायतसे मिलते हैं। यह आयनमंडल ही रेडियो तरंगोंका परावर्तन करके भूमण्डलके एक ओरसे दूसरी ओर उन्हें पहुँचाता है ताकि उनका अभिग्रहण किया जा सके।

आयमन–पु० (सं०) लंबाई; फैलाव; नियमन; खींचना, तानना (धनुष् आदि)।

आयवस–पु० (सं०) चरागाह।

आयव्ययक–पु० (बजट) किसी राज्यकी या किसी व्यक्ति अथवा संस्थाकी सालभरमें या किसी निश्चित कालतक होनेवाली संभावित आय एवं उसी अवधिके संभावित व्ययके अनुमानका लेखा, बजट।

आयव्यय-फलक–पु० (बैलेंस शीट) दे० 'देयादेय-फलक', चिट्ठा, तुलनपत्र।

आयस–पु० (सं०) लोहा; लोहेकी बनी चीज; हथियार; अगर; रत्न। वि० लौहनिर्मित; लोहेके रंगका। *स्त्री० दे० 'आयसु'।

आयसी–स्त्री० (सं०) लोहेका कवच, बख्तर।

आयसीय–वि० (सं०) लोहेका, लौहनिर्मित।

आयसु*–स्त्री०, आदेश, आज्ञा।

आया–स्त्री० (पुर्त०) बच्चेको दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय। अ० (फा०) क्या; या।

आयाचित–वि० (सं०) प्रार्थित। पु० प्रार्थना।

आयात–वि० (सं०) आया हुआ, आगत; देसावरसे आया हुआ (माल)। पु० देसावरसे माल आना या मँगाना, आमदनी; अतिशयता, उद्रेक। **–व्यापार**–पु० बाहरसे मँगायी जानेवाली वस्तुओंका व्यापार।

आयातक–पु० (इंपोर्टर) विदेशोंसे बड़ी मात्रामें माल माँगनेवाला व्यवसायी।

आयाति–स्त्री० (सं०) आना, पास आना।

आयान–पु० (सं०) आना; स्वभाव, प्रकृति।

आयाम–पु० (सं०) लंबाई; विस्तार; फैलाव; तानना, खींचना; नियमन, रोक (प्राणायाम); किसी भी पदार्थ या धारणाके विभिन्न पहलू। (डाइमेंशन); मान।

आयामित–वि० (सं०) खींचा, फैलाया हुआ।

आयामी (मिन्)–वि० (सं०) नियमन करनेवाला; लंबा।

आयास–पु० (सं०) यत्न; कड़ी कोशिश; श्रम; थकावट; मानसिक पीड़ा।

आयासक–वि० (सं०) थकानेवाला; कष्टकारक।

आयासी (सिन्)–वि० (सं०) आयास करनेवाला; थका हुआ।

आयुः, आयु–'आयुस्'का समासगत रूप। **–शेष**–पु० शेष जीवन, आयुका शेष भाग। **–ष्टोम**–पु० दीर्घायुके लिए किया जानेवाला यज्ञविशेष।

आयु(स्)–स्त्री० (सं०) जीवन; जीवनकाल; जीवन-शक्ति; आहार; आयुष्टोम नामक यज्ञ। मु० **–खुटाना***–आयु कम होना।

आयुक्त–वि० (सं०) संयुक्त; नियुक्त। पु० मंत्री; कारिंदा; (कमिश्नर) किसी विशेष कार्यके लिए नियुक्त 'आयोग'का सदस्य जिसे विशेष अधिकार दिया गया हो; विशेष कार्यके लिए जिसकी नियुक्ति की गयी हो; किस्मत या कमिश्नरीका प्रधान अधिकारी। **–अधिकारी**–पु० (कमीशंड आफिसर) सेना या बेड़ेका वह अधिकारी जिसकी नियुक्ति कमीशन या आयोग द्वारा की जाय।

आयुत–वि० (सं०) मिलाया हुआ; टिघला हुआ। पु० आधा टिघला हुआ मक्खन।

आयुतिक–पु० (सं०) दस हजार सिपाहियोंका नायक।

आयुध–पु० (सं०) युद्धका साधन, हथियार; आभूषण बनानेके काममें आनेवाला सोना। **–जीवी (विन्)**–वि० अस्त्रसे जीविका करनेवाला, सिपाही। **–धर्मिणी**–स्त्री० जयंती नामक वृक्ष। **–न्यास**–पु० पूजनके पहले वाह्य शुद्धिका विधान (वैष्णव)। **–पाल**–पु० शस्त्रागारका अफसर। **–भृत्**–पु० योद्धा, सैनिक। **–शाला**–स्त्री० शस्त्रागार। **–सहाय**–वि० शस्त्रविशिष्ट।

आयुधागार–पु० (सं०) हरबे-हथियारका गोदाम, सिलहखाना।

आयुधिक–वि० (सं०) आयुध-संबंधी। पु० सैनिक।

आयुधी (धिन्)–वि० (सं०) हथियार बाँधनेवाला। पु० सैनिक। **–(धि)काय**–पु० वह राज्य जहाँ सेनामें काम करनेवाले अधिक हों (कौ०)।

आयुधीय–वि० (सं०) दे० 'आयुधी'।

आयुर्–'आयुस्'का समासगत रूप। **–दाय**–पु० जन्म-लग्नके आधारपर आयुका निर्णय करना। **–द्रव्य**–पु० औषध; घी। **–बल**–पु० आयु, जिंदगी। **–योग**–पु० ग्रहोंका योग जिसके आधारपर ज्योतिषी मनुष्यका भावी जीवन बतलाते हैं। **–वृद्धि**–स्त्री० उम्र बढ़ना। **–वेद**–पु० स्वास्थ्य-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, भारतीय चिकित्सा-शास्त्र। **–वेदी (दिन्)**–पु० आयुर्वेदका ज्ञाता; चिकित्सक। वि० चिकित्सा-शास्त्र-संबंधी।

आयुर्वेदिक–वि० (सं०) आयुर्वेद-संबंधी। पु० आयुर्वेदका ज्ञाता।

आयुष–पु० (सं०) जीवनकाल।

आयुष्–'आयुस्'का समासगत रूप। **–कर**–वि० आयु बढ़ानेवाला। **–काम**–वि० दीर्घायु या स्वास्थ्यकी कामना करनेवाला। **–कौमारभृत्य**–पु० बालरोगोंका उपचार। **–ष्टोम**–पु० दे० 'आयुष्टोम'।

आयुष्मान् (ष्मत्)–वि० (सं०) जीवित; लंबी उम्रवाला। पु० ज्योतिषका एक योग; कृत्तिका नक्षत्र।

आयुष्य–वि० (सं०) दीर्घायु देनेवाला। पु० उम्र; जीवन-शक्ति।

आयोग–पु० (सं०) नियुक्ति; कोई काम देना या किसी काममें लगाना; (कमीशन) कोई विशेष कार्य संपन्न करनेके लिए नियुक्त व्यक्तियोंका मंडल; पुष्पादि भेंट करना; कूल, तट; काम; कार्य-संपादन; संबंध।

आयोगव–पु० (सं०) वैश्य माता और शूद्र पितासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

आयोजक–वि० (सं०) आयोजन करनेवाला।

आयोजन–पु० (सं०) जोड़ना, इकट्ठा करना; ग्रहण; उद्योग; प्रबंध; तैयारी।

आयोजित–वि० (सं०) जिसका आयोजन किया गया हो; संगृहीत, संबद्ध किया हुआ।

आयोधन–पु० (सं०) युद्ध; युद्धभूमि; वध।

आरंजित–वि० (सं०) कुछ कुछ रंगा हुआ; लाल 'आरंजित हो उषा सुंदरीने मुख माना' –हरिऔध।

आरंभ–पु० (सं०) शुरू, इब्तिदा, श्रीगणेश; कार्य; प्रयत्न; उपक्रम; शुरूका हिस्सा; उत्पत्ति; तीव्रता; अभिमान; वध। **–निष्पत्ति**–स्त्री० उपलब्धि; मालकी जितनी माँग हो उसको पूरा करना; वस्तु उत्पन्न करने या बनानेपर होनेवाला व्यय (कौ०)। **–शूर**–पु० केवल आरंभमें सक्रियता या तत्परता प्रदर्शित करनेवाला पर बादमें ढीला पड़ जानेवाला।

आरंभक–वि० (सं०) आरंभ करनेवाला।

आरंभण–पु० (सं०) पकड़ना; मूठ।

आरंभना*–स० क्रि० शुरू करना। अ० क्रि० शुरू होना।

आरंभिक–वि० (सं०) आरंभका; शुरूमें होनेवाला।

आरंभी (भिन्)–वि० (सं०) नये नये मंसूबे बाँधनेवाला।

आर–स्त्री० शत्रुता; घृणा; सूजा; अनी; सोंटे या पहियेमें लगी कील; *हठ, जिद; (अ०) शर्म; लज्जा। पु० (सं०) अशोधित लोहा; पीतल; कोना; मंगल; शनि; गमन; दूरी; गर्त; निकटता; डंक; किनारा; सीमा, छोर; मधुराम्ल फल; हरताल।

आरकाटी–पु० शर्तबंद कुलियोंकी भरती करनेवाला व्यक्ति।

आरकेस्ट्रा–पु० (अं०) नाट्यशालामें वह स्थान जहाँ शामिल बाजा बजानेवाले बैठते हैं; वहाँ बैठकर बाजा बजानेवाले; सिनेमामें सबसे आगेकी सीटें।

आरक्त–वि० (सं०) हलका लाल, सुर्खी मायल। पु० लाल चंदन।

आरक्ष–पु० (सं०) रक्षा; सेना; गजकुंभसंधि; इस संधिके नीचेका भाग। वि० रक्षित।

आरक्षक–पु० (सं०) प्रहरी, पहरेदार; सँभालकर रखनेवाला; (पुलीस) देशमें आंतरिक शांति बनाये रखने तथा अपराधियों आदिको न्यायालयोंके समक्ष उपस्थित करनेका काम करनेवाला, कर्मचारी, पुलिसका सिपाही। **–बल**–पु० (पुलीसफोर्स) आरक्षकोंका दल या समूह।

आरक्षण–पु० (सं०) (रिजर्वेशन) विशेष दृष्टिसे या विशेष व्यक्ति अथवा कार्यके लिए पहलेसे निर्धारित (अलग) कर देने या करा लेनेका कार्य।

आरक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'आरक्ष'।

आरक्षिक–पु० (सं०) दे० 'आरक्षक'।

आरक्षित–वि० आवश्यकता या संकटके समयके लिए बचा या हुआ, रखा हुआ। **–कोष** पु०, **–निधि**–स्त्री० (रिजर्व्ड फंड) विशेष आवश्यकता या संकटके समय काम आ सके, इस दृष्टिसे इकट्ठा किया जानेवाला कोष। **–विषय**–पु० (रिजर्व्ड सबजेक्ट्स) वे विषय जो किसी विशेष दृष्टिसे या विशेष व्यक्तियोंके लिए, अथवा स्वयं अपने हाथमें, सुरक्षित रखे गये हों।

आरक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) रक्षा करनेवाला। पु० (पुलीस) दे० 'आरक्षक'।

आरग्वध–पु० (सं०) दवाके काममें आनेवाला एक वृक्ष, अमिलतास।

आरचित–वि० (सं०) व्यवस्थित किया हुआ; तैयार किया हुआ।

आरज*–वि० दे० 'आर्य'।

आरज़ा–पु० बीमारी, दे० 'आरिज़ा'।

आरज़ू–स्त्री० (फा०) इच्छा, कामना; विनती। **–मंद**–वि० इच्छुक। **मु०–बर आना**–इच्छा पूरी होना। **–मिटाना**–इच्छा पूरी करना।

आरट–वि० (सं०) चिल्लाने या शोरगुल करनेवाला। पु० विदूषक।

आरट्ट–पु० (सं०) उत्तर-पूर्व पंजाबका एक जनपद; वहाँका निवासी या घोड़ा।

आरण*–पु० अरण्य, जंगल।

आरणि–पु० (सं०) आवर्त, भँवर।

आरणेय–वि० (सं०) अरणिसे उत्पन्न या उससे संबंध रखनेवाला। पु० शुकदेव मुनि।

आरण्य–वि० (सं०) जंगली, बनैला, जंगलका। पु० जंगल; बिना बोये उत्पन्न होनेवाला एक अन्न; जंगली पशु; सिंह आदि कुछ राशियाँ। **–कांड**–पु० रामायणका तीसरा कांड। **–कुक्कट**–पु० बनमुर्गा। **–गान**–पु० सामवेदके चार गानोंमेंसे एक। **–पर्व(न्)**–पु० महाभारतका एक पर्व। **–पशु**–पु० बनैला जानवर। **–राशि**–स्त्री० सिंह आदि कुछ राशियाँ।

आरण्यक–वि० (सं०) वन्य; वनमें उत्पन्न। पु० वनवासी; वेदोंका एक भाग जिसमें वानप्रस्थोंके कृत्योंका विवरण है।

आरत–वि० (सं०) रुका हुआ; शांत; सौम्य; * दे० 'आर्त'।

आरति–स्त्री० दे० 'आरती'; * दे० 'आर्ति'; स्त्री० लालसा–'मोहन सोंहनं जोहनकी लगियै रहै आँखिनके उर आरति'–घन०। (सं०) विराम, रोक।

आरती–स्त्री० पूजन-अभिनन्दन आदिमें देवता या अभिनंदनीय व्यक्तिके मुखके सब ओर कपूर-दीपक घुमाना; वह पात्र जिसमें कपूर या दीपक रखा जाय; उस समय पढ़ा जानेवाला स्तोत्र। **मु० –उतारना**–अभिनंदन करना।

आरथ–पु० (सं०) एक घोड़े या बैल द्वारा वाहित गाड़ी।

आरन*–पु० दे० 'आरण्य'।

आरनाल, आरनालक–पु० (सं०) काँजी।

आर-पार–पु० नदीके दोनों किनारे। अ० इस पार्श्वसे उस पार्श्वतक।

आरबल*–पु० दे० 'आयुर्बल'।

आरब्ध–वि० (सं०) शुरू किया हुआ। पु० आरंभ।

आरब्धि–स्त्री० (सं०) आरंभ।

आरभट–पु० (सं०) साहस; साहसी पुरुष।

आरभटी–स्त्री० (सं०) साहस; वह वृत्ति जो रौद्र, भयानक और वीर रसोंके वर्णनमें प्रयुक्त होती है (ना०); नृत्यकी एक शैली।

आरमण–पु० (सं०) आनंद लेना; विराम; विश्राम करनेका स्थान।

आरव–पु० (सं०) आहट; चिल्लाहट; आवाज।

आरषी*–वि० स्त्री० दे० 'आर्ष'।

आरस*–पु० आलस। स्त्री० दे० 'आरसी'।

आरसी–स्त्री० आईना; आईना जड़ा छल्ला जिसे स्त्रियाँ दाहने हाथके अँगूठेमें पहनती हैं।

आरस्य–पु० (सं०) नीरसता, विरसता, स्वादहीनता।

आरा–पु० (सं०) लकड़ी चीरनेका एक दाँतीदार औजार; चमड़ा सीनेका सूजा; पहियेकी गड़ारी और पुट्ठीके बीचकी पटरी; घोड़िया बैठानेके लिए दीवारपर रखी जानेवाली लकड़ी या पत्थरकी पटरी; * आला, ताखा। **–कश**–पु० (हिं०) आरा खींचनेवाला।

आराइश–स्त्री० (फा०) सजावट, शृंगार; कागजके फूल-पत्ते, फुलवारी।

आराज़ी–स्त्री० (अ०) दे० 'अराज़ी'।

आराति–पु० (सं०) शत्रु।

आरातीय–वि० (सं०) निकटवर्ती; दूरवर्ती।

आरात्रिक–पु० (सं०) आरती उतारनेका दीप या ऐसा दीप रखनेका पात्र।

आराधक–वि० (सं०) आराधना करनेवाला, पूजा करनेवाला।

आराधन–पु० (सं०) पूजा, उपासना करना; तुष्ट, प्रसन्न करना; सेवा करना; सम्मान करना; पाककार्य; अर्जन; तुष्टीकरणका साधन।

आराधना–स्त्री० (सं०) पूजा, उपासना; सेवा। * स० क्रि० पूजा, उपासना करना, आराधन करना।

आराधनी–स्त्री० (सं०) पूजा, उपासना।

आराधनीय–वि० (सं०) आराधनके योग्य, पूज्य।

आराधयिता(तृ)–वि० (सं०) आराधक।

आराधित–वि० (सं०) पूजित; सेवित।

आराध्य–वि० (सं०) आराधन करने योग्य, पूजनीय।

आराम–पु० (सं०) सुख, प्रसन्नता; बगीचा, उद्यान, उपवन; एक वृत्त। **–शीतला**–स्त्री० आनन्दी नामक पौधा।

आराम–पु० (फा०) सुख; चैन; विश्राम; आरोग्य। वि० चंगा, नीरोग। **–कुरसी**–स्त्री० लंबी कुरसी जिसपर लेटा भी जा सकता है। **–गाह**–पु०, स्त्री० सोनेका कमरा, शयनागार। **–तलब**–वि० सुख चाहनेवाला; आलसी। **–दान**–पु० पानदान; सिंगारदान। **मु० –करना**– सोना; चंगा कर देना। **–से**–धीरे-धीरे; फुरसतमें। **–से गुजरना**–चैनसे दिन कटना। **–होना**–चंगा होना।

आरामाधिपति–पु० (सं०) बाग-बगीचोंका अफसर।

आरामिक–पु० (सं०) बागवान, माली।

आरालिक–पु० (सं०) सूपकार, पाचक, रसोइया।

आराव–पु० (सं०) दे० 'आरव'।

आरावी(विन्)–वि० (सं०) चिल्लानेवाला, शोर मचानेवाला।

आरास्ता–वि० (फा०) सजा या सजाया हुआ।

आरि*–स्त्री० हठ, जिद; मर्यादा।

आरिज़–पु० (अ०) गाल, क़पोल। वि० लगनेवाला (रोगादि); बाधक (तमादी आरिज़ होना)।

आरिज़ा–पु० (अ०) रोग, बीमारी; क्लेश।

आरिज़ी–वि० आकस्मिक, अस्थायी, चंदरोजा।

आरित्रिक–वि० (सं०) नावके डाँड़से संबंध रखनेवाला।

आरियत–स्त्री० (अ०) उधार, मँगनी।

आरियतन्–अ० (अ०) उधार या मँगनीके रूपमें।

आरिया–स्त्री० ककड़ी जैसा एक फल।

आरी–स्त्री० छोटा आरा; पैनेकी नोकमें खुँसी कील; सुतारी; जालबर्बुरक, स्थूलकंटक; बबुरी; * किनारा, कोर। वि० (अ०) नंगा; रिक्त; शून्य; थका, ऊबा हुआ।

आरु–पु० (सं०) शूकर; केकड़ा; एक वृक्ष; घड़ा।

आरुक–वि० (सं०) हानिकारक; नुकसान पहुँचानेवाला। पु० एक पौधा जो हिमालयपर उत्पन्न होता है और दवाके काम आता है।

आरुण–वि० (सं०) अरुणसे संबंध रखनेवाला।

आरुणि–पु० (सं०) अरुणके वंशज; उद्दालक; यम आदि सूर्यके पुत्र; विनताके पुत्र।

आरुष्कर–पु० (सं०) भल्लातकका फल।

आरुह–वि० (सं०) चढ़नेवाला, ऊपर जानेवाला। पु० चढ़ाव।

आरू–वि० (सं०) पिंगल वर्णका, भूरापन लिये हुए लाल। पु० पिंगल वर्ण; दे० 'आरु'।

आरूक–पु० (सं०) आलू बुखारा।

आरूढ–वि० (सं०) सवार; आसीन; जमकर बैठा हुआ, दृढ़। **–यौवना**–स्त्री० मध्या नायिकाका एक भेद।

आरूढि–स्त्री० (सं०) चढ़ाव, आरोहण।

आरेक–पु० (सं०) खाली करना; संकुचन; संदेह; अतिशयता।

आरेचन–पु० (सं०) खाली करना, बाहर निकालना।

आरेचित–वि० (सं०) खाली किया हुआ; मिश्रित; संकुचित।

आरेवत–पु० (सं०) अमिलतास, आरग्वध।

आरेस*–पु० ईर्ष्या, डाह 'कबहुँ न कियउ सवति आरेसू'–रामा०।

आरो*–पु० दे० 'आरव'।

आरोग*–वि० नीरोग, स्वस्थ।

आरोगना*–स० क्रि० खाना, भक्षण करना।

आरोग्य–पु० (सं०) रोगका अभाव, तंदुरुस्ती। **–प्रतिपद्-व्रत**–पु० एक व्रत जो स्वास्थ्य-प्राप्तिके लिए किया जाता है। **––शाला** –स्त्री० चिकित्सालय, अस्पताल। **–स्नान**–पु० रोगमुक्तिके बादका स्नान।

आरोग्यलाभ–पु० (कॉनवेलेसेंस) बीमारी भुगतनेके बाद क्रमशः स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करना, दे० 'रोगोत्तर स्वास्थ्यलाभ'।

आरोग्यनिवास–पु०, **–शाला**–स्त्री० (सैनेटोरियम) दे० 'स्वास्थ्य निवास'।

आरोचन–वि० (सं०) चमकीला।

आरोध–पु० (सं०) घेरा, अवरोध।

आरोधना*–स० क्रि० रोकना।

आरोप–पु० (सं०) एक पदार्थमें दूसरेके गुण-धर्मकी कल्पना; लगाना; न्यास, संस्थापन; इलजाम। **–पत्र, –फलक**–पु० (चार्जशीट) (न्यायालय द्वारा तैयार किया हुआ) वह पत्र जिसमें किसी व्यक्तिपर लगाये गये आरोपोंका ब्यौरा दिया रहता है।

आरोपक–वि० (सं०) आरोप करनेवाला।

आरोपण–पु० (सं०) ऊपर चढ़ाना; मढ़ना; संस्थापन, रखना; रोपना; लगाना; कमानकी डोरी चढ़ाना; विश्वास करना; एक वस्तुमें दूसरीके धर्मकी कल्पना; झूठी कल्पना; भ्रम।

आरोपित–वि० (सं०) आरोप किया हुआ; रोपा, लगाया हुआ।

आरोह–पु० (सं०) चढ़नेवाला; चढ़ना, ऊपरको जाना; (घोड़े आदिपर) सवार होना; संगीतमें स्वरोंका चढ़ाव; ऊँचाई; ऊँचा स्थान; घमंड; नितंब; पहाड़; ढेर; लंबाई; एक परिमाण; उतरना, नीचे आना; एक प्रकारका ग्रहण।

आरोहक–वि० (सं०) आरोहण करनेवाला। पु० सवार; सारथी; वृक्ष।

आरोहण–पु० (सं०) चढ़ना; सवार होना; ऊपरको जाना; सीढ़ी; अँखुआ फूटना; नृत्यादिके लिए बना हुआ मंच।

आरोही(हिन्)–वि० (सं०) आरोह करनेवाला; ऊपरकी ओर –षड्जसे निषादकी ओर–जानेवाला, अवरोहीका उलटा। पु० चढ़नेवाला; ऊपर जानेवाला स्वर या स्वरोंका क्रम।

आर्क–वि० (सं०) सूर्य या मदार-संबंधी।

आर्कि–पु० (सं०) शनि, यम, कर्ण आदि सूर्यके पुत्र।

आर्गल–पु० (सं०) दे० 'अर्गल'।

आर्ग्वध–पु० (सं०) दे० 'आरग्वध'।

आर्घा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पीले रंगकी मधुमक्खी।

आर्घ्य–वि० (सं०) आर्घा नामक मधुमक्खीसे संबंध रखनेवाला। पु० जंगली शहद।

आर्जव–पु० (सं०) ऋजुता, सीधापन; सरल व्यवहार; नम्रता।

आर्जुनि–पु० (सं०) अर्जुनका पुत्र, अभिमन्यु।

आर्ट–पु० (अं०) कला; शिल्प, दस्तकारी; चित्रकला; मूर्तिकला; विज्ञानका व्यावहारिक उपयोग; (आर्ट्स) कालेजका साहित्यका या साधारण पाठ्यक्रम। **–गैलरी**–स्त्री० वह कोष्ठ जहाँ प्रदर्शन आदिके लिए मूर्तिकला आदिकी कृतियाँ संगृहीत की गयी हों। **–पेपर**–पु० तसवीरें आदि छापनेके काम आनेवाला चिकना, चमकीला कागज। **–स्कूल**–पु० कलाविद्यालय; चित्रकलाविद्यालय।

आर्डर–पु० (अं०) आज्ञा, आदेश; माल भेजने, बनानेका आदेश, फरमाइश; फैसला। **–बुक**–स्त्री० वह वही या रजिस्टर जिसमें आज्ञाएँ या फरमाइशें लिखी जायँ।

आर्डिनैंस–पु० (अं०) शासकके आदेश या फरमानके रूपमें खास जरूरतके लिए निकाला गया अस्थायी कानून, अध्यादेश।

आर्त–वि० (सं०) पीड़ित, किसी कष्ट-पीड़ासे बेचैन, दुःख-कातर; बीमार; नश्वर। **–गल**–पु० नीलझिंटी नामक पौधा, नीली कटसरैया। **–ध्वनि**–स्त्री०, **–नाद, –स्वर**–पु० दुखियाकी पुकार; दर्दभरी ऊँची आवाज; करुण स्वरमें दुःखका ज्ञापन या सहायताकी पुकार। **–बंधु, –साधु**–पु० पीड़ितोंकी सहायता करनेवाला व्यक्ति।

आर्तव–वि० (सं०) ऋतु-संबंधी; ऋतुमें उत्पन्न; मासिक स्राव-संबंधी। पु० स्त्रियोंको मासिक धर्मके समय होनेवाला रजःस्राव, स्त्री-रज, पुष्प। **–दोष**–पु० मासिक धर्मकी गड़बड़; ऋतुदोष। **–ध्यान**–पु० कष्टप्रद ध्यान (जै०)।

आर्तवेयी–स्त्री० (सं०) रजस्वला, ऋतुमती स्त्री।

आर्ति–स्त्री० (सं०) क्लेश, पीड़ा; रोग; मनोव्यथा; बुराई; बर्बादी; धनुषका छोर। **–नाशन**–पु० क्लेश दूर करना, कष्ट-निवारण। वि० कष्टनिवारक।

आर्त्विज–वि० (सं०) ऋत्विक्-संबंधी।

आर्थ–वि० (सं०) वस्तु-संबंधी; तात्पर्य-संबंधी; महत्त्वका।

आर्थिक–वि० (सं०) अर्थ-संबंधी, माली, रुपये-पैसेसे संबंध रखनेवाला; महत्त्वपूर्ण; चतुर; धनी; वास्तविक; शब्दार्थसे निकलनेवाला। **–अवस्था**–स्त्री० माली हालत। **–सहायता**–स्त्री० पैसेकी सहायता।

आर्थी–वि० (सं०) शब्दोंके अर्थसे जिसका संबंध हो। **–व्यंजना** –स्त्री० वह व्यंजना जिसमें शब्दोंसे नहीं, बरन् उनसे निकलनेवाले अर्थ या भावसे अथवा व्यंग्य, काकु आदि द्वारा कोई विशेष आशय व्यक्त होता है; दे० 'कैतवापह्नुति'।

आर्द्ध–वि० (सं०) आधा (समासके आरंभमें, आर्द्धमासिक)।

आर्द्धिक–पु० (सं०) दे० 'आर्धिक'।

आर्द्र–वि० (सं०) गीला, तर, नम; रसयुक्त; द्रवित, पिघला हुआ (स्नेहार्द्र, करुणार्द्र)...; सहानुभूति पूर्ण (आर्द्र दृष्टि)। **–काष्ठ** –पु० हरी लकड़ी। **–नयन**–वि० रोता हुआ। **–पत्रक**–पु० बाँस। **–माषा**–स्त्री० माषपर्णी। **–शाक**–पु० हरा अदरक।

आर्द्रक–पु० (सं०) अदरक। वि० गीला, तर; आर्द्रा नक्षत्रमें उत्पन्न।

आर्द्रतामापी–पु० (हाइग्रोमीटर) हवामें विद्यमान आर्द्रता (नमी)-की मात्रा बतलानेवाला यंत्र।

आर्द्रतामिति–स्त्री० (हाईग्रोमिट्रि) भौतिक शास्त्रका वह अंग जो वायुमंडलकी आर्द्रतासे संबंध रखता है।

आर्द्रा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र जो प्रायः शुरू आषाढ़में पड़ता है और जिसमें वर्षा तथा खेतीका आरंभ होना अच्छा माना जाता है; एक वर्णवृत्त; आदी, अदरक; अतीस। **–लुब्धक**–पु० केतु।

आर्धिक–पु० (सं०) अधियापर खेत जोतनेवाला, श्रम आदिके बदले आधी पैदावार लेकर खेत जोतने-बोनेवाला; स्मृतियोंके अनुसार वैश्या माता और ब्राह्मण पिता द्वारा पालित व्यक्ति।

आर्नव*–पु० आर्णव, समुद्र।

आर्मेचर–पु० (आर्मेचर) ताँबेके तारके कुण्डल जो विद्युत डायनमो या विद्युत मोटरमें सामान्यतः घूर्णी गति करते हैं।

आर्य–पु० (सं०) अनार्यों और शूद्रोंसे भिन्न भारतकी एक प्राचीन सभ्य जाति (इस जातिके लोग भारतमें द्विजाति नामसे प्रसिद्ध हैं और यूरोपके कई देशोंमें भी बहुत बड़ी संख्यामें है); अपने धर्म और नियमोंके प्रति आस्था रखनेवाला व्यक्ति; द्विजातियाँ; सम्मान्य और सदाचारी व्यक्ति; आचार्य; मित्र; श्वशुर; एक बुद्ध; बुद्धके सिद्धांतोंका पालन करनेवाला; मनु सावर्णका एक पुत्र। वि० आर्य जातिका; आर्यके योग्य; आदरणीय; भद्र, श्रेष्ठ। **–देश**–पु० आर्योंकी निवासभूमि। **–धर्म**–पु० सदाचार,

उत्तम आचरण; हिंदूधर्म। **–पुत्र**–पु० आदरणीय व्यक्तिका पुत्र; आचार्यका पुत्र; राजकुमार, पति आदिका संबोधन (ना०)। **–प्राय**–वि० आर्यों द्वारा अधिवसित। **–भट्ट**–पु० एक प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिषी जिन्होंने बीजगणितका आविष्कार किया था (कहा जाता है कि ये ईसाकी पाँचवीं सदीके पहले हुए थे)। **–भाव**–पु० सदाचार, भद्रोचित व्यवहार। **–मिश्र**–वि० गौरवान्वित, आदरणीय। पु० आदरणीय व्यक्ति (ना०)। **–रूप**–वि० ढोंगी। **–वृत्त**–वि० धर्मात्मा, सदाचारी। **–वेश**–वि० जिसके वस्त्र अच्छे, भद्रोचित हों; ढोंगी। **–श्वेत**–वि० आदर-सम्मानके योग्य। पु० भद्र पुरुष। **–सत्य**–पु० महान् सत्य (बौद्ध धर्ममें ऐसे चार मुख्य सत्य माने गये हैं)। **–समाज**–पु० स्वामी दयानंद द्वारा प्रवर्तित एक धार्मिक समाज। **–समाजी**–पु० आर्यसमाजके सिद्धांतोंको माननेवाला। **–हृद्य**–वि० कुलीनोंको प्रिय लगनेवाला।

आर्यक–पु० (सं०) आदरणीय व्यक्ति; पितामह; पितरोंके सम्मानार्थ किया जानेवाला एक श्राद्ध।

आर्यका, आर्यिका–स्त्री० (सं०) श्रेष्ठ स्त्री; एक नक्षत्र।

आर्यव–पु० (सं०) सज्जनोचित व्यवहार; ईमानदारी।

आर्या–स्त्री० (सं०) पार्वती; एक वृत्त जिसके प्रथम तथा तृतीय चरणमें १२-१२ तथा दूसरे-चौथेमें १५-१५ मात्राएँ होती हैं; सास; श्रेष्ठ स्त्री। **–गीति**–स्त्री० आर्या छंदका एक भेद।

आर्यावर्त्त–पु० (सं०) विंध्याचलसे हिमालय और पश्चिमी समुद्रसे पूर्वी समुद्रतक विस्तृत आर्योंकी निवासभूमि (मध्य और उत्तर भारत)।

आर्याष्टांगमार्ग–पु० (सं०) बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दुःख-निवृत्तिके आठ मार्ग–उत्तम कर्म, उत्तम वचन, उत्तम विचार आदि।

आर्येतर–वि०, पु० (सं०) जो आर्य न हो, अनार्य, अहिन्दू।

आर्ष–वि० (सं०) ऋषिकृत; ऋषिप्रयुक्त; वैदिक। पु० विवाहके ८ प्रकारोंमेंसे एक; वेद। **–ग्रंथ**–पु० वेदादि। **–प्रयोग**–पु० ऋषियों या बड़े विद्वानों द्वारा किया गया शब्दोंका व्याकरण-विरुद्ध प्रयोग। **–विवाह**–पु० स्मृतियोंमें वैध माने हुए आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्याका पिता वरसे दो बैल शुल्करूपमें लेकर कन्या देता था।

आर्षभ–वि० (सं०) साँड़से उत्पन्न। पु० ऋषभका वंशज।

आर्षभि–पु० (सं०) ऋषभका वंशज; भारतका प्रथम चक्रवर्ती नरेश।

आर्षभी–स्त्री० (सं०) केवाँच।

आर्षेय–वि० (सं०) ऋषियोंसे संबंध रखनेवाला; श्रेष्ठ, आदरणीय। पु० ऋषियोंका गोत्र; ऋषियोंका कर्म; मंत्रद्रष्टा ऋषि।

आर्हत–वि० (सं०) अर्हत्‌से या जैन-सिद्धांतोंसे संबंध रखनेवाला। पु० जैन-सिद्धांत; जैन-सिद्धांतोंका अनुयायी।

आलंकारिक–वि० (सं०) अलंकार-संबंधी; अलंकारयुक्त; अलंकार-शास्त्र-वेत्ता।

आलंग–वि० (सं०) संलग्न, चिपटा हुआ, लगा हुआ।

आलंब–वि० (सं०) आश्रित; सहारेसे लटकता हुआ। पु० सहारा, आधार; अधिष्ठान; लटकन, 'पेंडुलम'; (फल्क्रम) उत्तोलक (लीवर)का वह विन्दु जिसके गिर्द उत्तोलक स्वतंत्रतापूर्वक घूम सकता है।

आलंबन–पु० (सं०) सहारा; सहारा लेना; आधार; रसकी उत्पत्तिका आधार (सा०); कारण; साधन; योगियों द्वारा किया जानेवाला एक प्रकारका मानसिक अभ्यास; पंच-तन्मात्र (बौ०)।

आलंबित–वि० (सं०) आश्रित; सहारेपर टिका हुआ।

आलंबी(बिन्)–वि० (सं०) आलंब लेनेवाला।

आलंभ, आलंभन–पु० (सं०) पकड़ना; छूना; उखाड़ना; वध (विशेषतः यज्ञमें पशुका–अश्वालंभ, गवालंभ इ०)।

आलंभी(भिन्)–वि० (सं०) स्पर्श करनेवाला; पकड़नेवाला।

आल–स्त्री० एक पौधा या उससे बना रंग; † एक कीड़ा; † कद्दू। वि० (सं०) बड़ा; विस्तृत; अधिक। पु० हरताल; छल; विषैले जंतुओंके शरीरसे होनेवाला विषका स्राव; झंझट; गीलापन; आँसू। स्त्री० (अ०) संतति; बेटीकी संतान; वंशज। **–औलाद**–स्त्री० बाल-बच्चे; नाती-पोते।

आलकस†–पु० आलस।

आलक्षण–पु० (सं०) देखना-समझना।

आलक्षि–वि० (सं०) देखने-समझनेवाला; अनुभव करनेवाला।

आलक्षित–वि० (सं०) देखा हुआ; समझा हुआ; अनुभूत।

आलगर्द–पु० (सं०) एक जलसर्प।

आलजाल†–पु० ऊटपटाँग, ऊलजलूल।

आलथी-पालथी–स्त्री० दाहिनी एड़ी बायीं और बायीं एड़ी दाहिनी जाँघपर रखकर बैठना।

आलन–पु० मिट्टीके गारे, पलस्तरमें या उपले पाथते समय गोबरमें मिलाया जानेवाला भूसा आदि; सागमें मिलाया जानेवाला बेसन।

आलना–पु० घोंसला।

आलपाका–पु० दे० 'अलपाका'।

आलपीन–स्त्री० लोहेकी सूई जैसी पतली कँटिया, पिन।

आलबाल–पु० दे० 'आलवाल'।

आलभन–पु० (सं०) छूना; पकड़ना; मारना; वध।

आलम–पु० (अ०) दुनिया, जहान, जगत्; भीड़; अवस्था, हालत; एक तरहका नाच। **–पनाह**–पु० जहाँपनाह, बादशाह आदिका संबोधन।

आलमनक–पु० (पुर्त०) तिथिपत्र, पंचांग।

आलमारी–स्त्री० दे० 'अलमारी'।

आलय–पु० (सं०) घर, मकान; आधार, अधिष्ठान; आश्रय-स्थान; संपर्क, संबंध। अ० लयपर्यंत। **–विज्ञान**–पु० अहंकारका आधार (बौ०)।

आलर्क–वि० (सं०) अलर्क-संबंधी; पागल कुत्तेका (विष)।

आलवण्य–पु० (सं०) विरसता; स्वादहीनता; भद्दापन; कुरूपता।

आलवार–पु० दक्षिण भारतका एक वैष्णव संप्रदाय।

आलवाल–पु० (सं०) थाला; मेघ।

आलस–वि० (सं०) आलसी। * पु० आलस्य।

आलसी(सिन्)–वि० (सं०) आलस्य-दोषयुक्त, सुस्त, काहिल।

आलस्य–पु० (सं०) काम करनेकी अनिच्छा, सुस्ती, ढिलाई।

आला–पु० ताक, ताखा; पजावा। * वि० गीला; ताजा; हरा। पु० (अ०) औजार; उपकरण; साधन। वि० बहुत ऊँचा; बढ़िया, श्रेष्ठ। **–दरजेका**–बहुत बढ़िया, उत्तम।

आलाइश–स्त्री० (फा०) मल, गंदगी; आँतों आदिमें चिपकी हुई गंदगी; दोष; पूय; आँतें आदि।

आलात–पु० (सं०) अंगारा; जलती हुई लकड़ी, लुक। **–चक्र**–पु० जलते हुए लुकको घुमानेसे बननेवाला मंडल।

आलात–पु० (अ०) औजार; उपकरण ('आला'का बहु०)। **–(ते)जंग**–पु० युद्धसामग्री; आयुध।

आलान–पु० (सं०) हाथी बाँधनेका खंभा, खूँटा या रस्सा; बेड़ी, जंजीर; बाँधना।

आलाप–पु० (सं०) कथन, बात-चीत; संगीतके सातों स्वर; स्वरोंका साधन; गानेका तान जैसा एक अंग जिसमें स्वर तानकी तरह द्रुत न होकर विलंबित होते हैं; प्रश्न; पाठ (जै०)। **–चारी**–स्त्री० स्वरोंकी साधना।

आलापक–वि० (सं०) स्वरोंका आलाप करनेवाला, गानेवाला; बातचीत करनेवाला।

आलापन–पु० (सं०) बातचीत करना; आलाप लेना; स्वस्तिवाचन।

आलापना–स० क्रि० आलाप लेना; गाना।

आलापित–वि० (सं०) कहा हुआ; गाया हुआ।

आलापिनी–स्त्री० (सं०) तुमड़ी, बाँसुरी आदि।

आलापी(पिन्)–वि० (सं०) बातचीत करनेवाला; गानेवाला।

आलाबु, आलाबू–पु० (सं०) तुंबी, लौकी, अलाबु।

आलारासी–वि० निर्द्वंद्व, बेफिक्र। स्त्री० जहाँ किसी बातकी परवाह न हो, ऐसी स्थिति।

आलावर्त–पु० (सं०) कपड़ेका पंखा।

आलास्य–पु० (सं०) मगर।

आलिंग–पु० (सं०) एक तरहका ढोल; आलिंगन।

आलिंगन–पु० (सं०) लिपटाना; गले लगाना, अंकमें भर लेना ।

आलिंगना*–स० क्रि० गले लगाना, भेंटना ।

आलिंगित–वि० (सं०) जो लिपटाया, गले लगाया गया हो ।

आलिंगी(गिन्)–वि० (सं०) आलिंगन करनेवाला । पु० एक तरहका बहुत छोटा ढोल ।

आलिंग्य–वि० (सं०) आलिंगन करने योग्य । पु० एक तरहका मृदंग ।

आलिंजर–पु० (सं०) बड़ा घड़ा; झंझर ।

आलिंद, आलिंदक–पु० (सं०) दे० 'अलिंद' ।

आलिंपन–पु० (सं०) (फर्श, दीवार आदि) लीपना, पोतना; लिपाई, पुताई; सफेदी ।

आलि–वि० (सं०) निकम्मा; सुस्त; निरर्थक; ईमानदार । पु० बिच्छू; भ्रमर । स्त्री० दे० 'आली' ।

आलिखित–वि० (सं०) लिखित, चित्रित, अंकित ।

आलिप्त–वि० (सं०) लिपा हुआ, पुता हुआ ।

आलिम–वि० (अ०) जाननेवाला, विद्वान्, पंडित ।

आली–स्त्री० (सं०) सखी, सहेली; पंक्ति; रेखा; बाँध; पुल, सेतु; वंश । वि० (हिं०) आलके रंगका; (अ०) ऊँचा; बड़ा । **–खानदान**–वि० ऊँचे घरानेका, कुलीन । **–जनाब, –जाह**–वि० ऊँचे पद, मर्तबेवाला । **–ज़र्फ़**–वि० बड़े हौसलेवाला; उदाराशय । **–दिमाग़**–वि० ऊँचे दिमागवाला, बुद्धिमान् । **–शान**–वि० बड़ी शानवाला, शानदार, भव्य, गौरवमय ।

आलीढ–वि० (सं०) चाटा हुआ; भक्षित । पु० बाण चलानेके समयकी एक विशेष अवस्थिति ।

आलीढक–पु० (सं०) बछड़ेकी उछल-कूद ।

आलीन–वि० (सं०) आलिंगित; चिपटा हुआ; पिघला हुआ । पु० संपर्क; टीन; सीसा ।

आलीनक–पु० (सं०) दे० 'आलीन' ।

आलुंचन–पु० (सं०) चीरना; चीरकर टुकड़े-टुकड़े करना ।

आलुंठन–पु० (सं०) लूटना, बलात् छीन लेना, अपहरण करना ।

आलु–पु० (सं०) उल्लू; आबनूस; बेड़ा; एक मूल; एक फल ।

आलुक–पु० (सं०) शेषनाग; आलू कंद; एक तरहका आबनूस ।

आलुल–वि० (सं०) काँपता या हिलता हुआ, अस्थिर ।

आलुलायित–वि० हिलता हुआ, बिखरा हुआ । **–कुंतला,–केशा**–वि० स्त्री० (नारी) जिसके बाल बँधे हुए न हों, लटकते हुए तथा हिलते हुए हों ।

आलुलित–वि० (सं०) क्षुब्ध ।

आलू–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध कंदशाक । **–दम**–पु० दे० 'दम आलू' ।

आलूचा–पु० एक पेड़ या उसका फल ।

आलूदा–वि० (फा०) लिप्त, सना हुआ ।

आलून–वि० (सं०) काटकर अलग किया हुआ ।

आलूबालू–पु० एक वृक्ष जिसका फल आलूचेके समान होता है ।

आलूबुखारा–पु० आलूचेका सुखाया हुआ फल ।

आलेख–पु० (सं०) लिखावट, लिखाई; पत्र; लेख, तहरीर; (डिक्टेशन) जोरसे कहना या इस तरह पढ़ना कि सुनकर लिखनेवाला उसे लिख ले; इस तरह सुनकर लिखा गया लेख या इबारत; श्रुतिलेख, इमला ।

आलेखन–पु० (सं०) लिखना; तसवीर बनाना, चित्रांकन; दे० 'अभिलेखन' । **–विद्या**–स्त्री० चित्रकला, तसवीरकशी ।

आलेखनी–स्त्री० (सं०) कूची, ब्रश; पेंसिल ।

आलेख्य–वि० (सं०) लिखने, चित्रित करने योग्य । पु० लेख; चित्र । **–देवता**–पु० चित्रांकित देवता । **–पुरुष**–पु० मनुष्यका चित्र । **–विद्या**–स्त्री० चित्रकारी । **–शेष**–वि० जिसका चित्रमात्र संसारमें रह गया हो, मृत । **–समर्पित**–वि० चित्रित ।

आलेप–पु० (सं०) लेप, उबटन आदि; पलस्तर ।

आलेपन–पु० (सं०) लेप करना; पलस्तर करना; उबटन, लेप ।

आलोक–पु० (सं०) प्रकाश, उजाला; दर्शन; दृष्टिसीमा; प्रशंसा; अध्याय । **–कर**–वि० प्रकाश करनेवाला । **–पथ,–मार्ग**–पु० दृष्टिपथ ।

आलोकचित्रण–पु० (फोटोग्राफी) रासायनिक मसालोंसे तैयार किये गये विशेष पटलपर प्रकाशकी प्रतिक्रिया होनेसे उतरनेवाला चित्र ।

आलोकन–पु० (सं०) देखना, दर्शन; विचार करना ।

आलोकनीय–वि० (सं०) देखने योग्य ।

आलोकित–वि० (सं०) देखा हुआ; प्रकाशित ।

आलोचक–वि० (सं०) देखनेवाला; समीक्षक ।

आलोचन–पु०, **आलोचना**–स्त्री० (सं०) देखना; गुण-दोषका विवेचन, परख, समीक्षा ।

आलोचनीय, आलोच्य–वि० (सं०) आलोचना करने योग्य ।

आलोचित–वि० (सं०) जिसकी आलोचना की गयी हो; विवेचित ।

आलोडन–पु० (सं०) मथना, बिलोना; मर्दन; छान-बीन, ऊहा-पोह करना ।

आलोड़ना*–स० क्रि० मथना; ऊहा-पोह करना ।

आलोडित–वि० (सं०) मथित; हिलोरा हुआ; विचारित ।

आलोल–वि० (सं०) थोड़ा हिलता हुआ, ईषच्चंचल; आंदोलित ।

आलोलित–वि० (सं०) हिलाया हुआ, क्षुब्ध ।

आल्हा–पु० पृथ्वीराजके समकालीन महोबानरेश परमर्दिदेवके सेनापति जो अपने समयके उद्भट योद्धा और वीर थे; वह वीरगाथा जिसमें आल्हा और उनके अनुज ऊदलके कार्योंका वर्णन है; उक्त वीरगाथाका छंद, वीरछंद, जिसमें १६+१५ मात्राएँ होती हैं; बहुत लंबा वर्णन; कहानी । **–का पँवारा**–निरर्थक लंबा वर्णन । मु०**–गाना**–आपबीती सुनाना ।

आवंटन–पु० (एलॉटमेंट) भूमि, संपत्ति आदिका हिस्सोंमें बाँटा जाना; वंटन, विभाजन; किसीके लिए भूमि आदिका कोई हिस्सा निर्धारित करना, **नियतन** (**भूमिका**–एलाटमेंट ऑफ लैंड । **राजस्वका**–एलॉटमेंट ऑफ रेवेन्यू) ।

आवंट्य–पु० (एलाटी) वह जिसे कोई वस्तु आवंटनमें दी गयी हो, नियत भागी ।

आवंत–पु० (सं०) अवंति-नरेश ।

आवंतक, आवंतिक–वि० (सं०) अवंतीसे संबंध रखनेवाला ।

आवंत्य–वि० (सं०) अवंतीका; अवंतीमें उत्पन्न । पु० अवंतीका राजा या निवासी; पतित ब्राह्मणकी संतान ।

आवंदन–पु० (सं०) नमस्कार, प्रणाम ।

आव*–भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए धातुमें लगनेवाला प्रत्यय, जैसे चढाव, बनाव । स्त्री० आयु; आब, चमक ।

आवक–स्त्री० (गल्ला इत्यादि मालका) बिक्रीके लिए आना, मालकी आमद ।

आवक्ष–वि० (सं०) जो वक्ष पर्यन्त हो । **–प्रतिमा**–स्त्री० (बस्ट) किसी व्यक्तिकी वह प्रतिमा जिसमें उसके सिर, कंधों तथा वक्ष तकका भाग आ गया हो, ऊर्ध्वांगप्रतिमा, 'बस्ट' ।

आवज, आवझ†–पु० एक बाजा, ताशा ।

आवजात्य–पु० (सं०) निम्न कुलमें उत्पत्ति, अकुलीनता ('आभिजात्य'का विलोम) ।

आवटना*–स० क्रि० औटना, खौलाना । पु० हलचल, उथल-पुथल; मंथन ।

आवधिक–वि० (सं०) किसी सीमा या अवधिसे संबंधित; निश्चित अवधिमें होनेवाला ।

आवन–पु०, **आवनि***–स्त्री० आगमन ।

आवनेय–पु० (सं०) अवनि-पुत्र, मंगल ।

आवपन–पु० (सं०) बोना, बोआई; बिखेरना; सारे सिरका मुंडन; क्षमता; पात्र, भाँड़ा ।

आव-भगत–स्त्री० स्वागत-सत्कार, खातिर-बात ।

आव-भाव–पु० आव-भगत ।

आवय–पु० (सं०) आना; आनेवाला ।

आवरक–वि० (सं०) आवरण करने, छिपानेवाला । पु० परदा ।

आवरण–पु० (सं०) ढकना, छिपाना; घेरना; ढक्कन, बेठन; परदा; बचाव; ढाल; चहारदीवारी; ताला; ब्योंड़ा । **–पत्र**–पु० पुस्तकके रक्षार्थ उसपर चढ़ाया हुआ कागज जिसपर उसका नाम-दाम भी रहता है, 'कवर' । **–शक्ति**–स्त्री० अज्ञान ।

आवरा†–पु॰ आवरण, खोल, गिलाफ; ढकनेवाली चादर। (स्त्री॰ 'आवरी'।) * वि॰ आवृत, ढकी हुई–'मोहमैं आवरी ह्वै वुधि बावरी'–घन॰।

आवरिका–स्त्री॰ (सं॰) छोटी दुकान।

आवरित–वि॰ दे॰ 'आवृत'।

आवरिता, आवरीता(तृ)–वि॰ (सं॰) आवरण करनेवाला।

आवर्जक–वि॰ (सं॰) आकृष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला।

आवर्जन–पु॰ (सं॰) आकृष्ट करना; तुष्ट करना; पराभूत करना, झुकाना; देना; समाज, नीतिशास्त्र आदिके ऐसे निषेध जो मानवीय अनुभूतियोंका दमन करके एक खास तरहकी कुंठा पैदा करते हैं।

आवर्जना–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'आवर्जन'।

आवर्जित–वि॰ (सं॰) झुकाया हुआ; उँडेला हुआ; वहाया हुआ; पराभूत, नीचा दिखाया हुआ; परित्यक्त। पु॰ चंद्रमाकी एक विशेष स्थिति।

आवर्त–पु॰ (सं॰) घुमाव, चक्कर; भँवर; (घोड़ेकी) भँवरी; घनी आवादी; लाजवर्द; माक्षिक धातु; एक मेघाधिप; भौंके ऊपरका ललाटका धँसा हुआ हिस्सा; धातुका पिघलना; किसी वातको वार-वार सोचना-विचारना, चिंता; घूमने या वार-वार आने जानेकी जगह, संसार; संशय। **–विंदु**–पु॰ (टर्निंग पाइंट) जीवनमें या विकासक्रममें निर्णायक परिवर्त्तन कर देनेवाली विशेष स्थिति या कोई महत्त्वपूर्ण घटना, परावर्तन विंदु, मोड़। **–मणि**–पु॰ लाजवर्द। **–सारणी**–(पीरियॉडिक टेबुल) तत्त्वोंको उनके वढ़ते हुए परमाणु भारके क्रमसे इस प्रकार रखें कि क्षैतिज पंक्तिमें पड़नेवाले तत्त्वोंके गुण-धर्ममें एक सिरेसे दूसरे सिरे तक जानेमें नियमित परिवर्तन होते दीखें, तथा ऊर्ध्व कालममें पड़नेवाले सभी तत्त्वोंके गुणधर्ममें वहुत हद तक समानता हो, तो इस दशामें हमें आवर्त सारणी मिलती है। यह रूसके वैज्ञानिक मेन्डीलीफ़ द्वारा १८६६ में प्रतिपादित किये गये आवर्ती नियम (पीरियाडिक लॉ) को प्रदर्शित करता है कि तत्त्वोंके गुणधर्म उनके परमाणु क्रमांक द्वारा निर्धारित होते हैं तथा इन गुणधर्मोंकी निश्चित अवधिपर पुनरावृत्ति होती है।

आवर्तक–वि॰ (सं॰) घूमने, चक्कर खानेवाला; (रेकरिंग) वार-वार होने या दिया जानेवाला (व्यय, अनुदान इ॰)। पु॰ एक विषैला कीड़ा; एक मेघाधिप; भौंके ऊपरका धँसा हुआ भाग; भँवर; भँवरी; चक्कर; चिंतन; योगके पाँच प्रकारके विघ्नोंमेंसे एक।

आवर्तकी–स्त्री॰ (सं॰) विषाणिका नामक लता।

आवर्तन–पु॰ (सं॰) घूमना, चक्कर खाना; मंथन, आलोडन; (धातु) गलाना, पिघलाना; दुहराना, फिर-फिर करना या होना; दोपहर (इसके वाद पदार्थोंकी छाया पश्चिमके वदले पूर्वकी ओर पड़ने लगती है)। **–मणि**–पु॰ आवर्तक मणि।

आवर्तनी–स्त्री॰ (सं॰) धातु गलानेकी कुल्हिया, घड़िया; चम्मच, कलछी; दोहरानेकी क्रिया।

आवर्तित–वि॰ (सं॰) घुमाया हुआ; मथा हुआ।

आवर्तिनी–स्त्री॰ (सं॰) भँवर; अजशृंगी।

आवर्ती(र्तिन्)–वि॰ (सं॰) घूमने, चक्कर खानेवाला; गलनेवाला। पु॰ वह घोड़ा जिसके शरीरपर भँवरियाँ हों।

आवर्द, आवर्दा–वि॰, पु॰ दे॰ 'आउर्द', 'आउर्दा'।

आवर्ष–पु॰ (सं॰) वर्षा, वृष्टि।

आवर्हित–वि॰ (सं॰) उन्मूलित, उत्पाटित।

आवलि, आवली–स्त्री॰ (सं॰) पाँत, श्रेणी, सिलसिला, परंपरा।

आवलित–वि॰ (सं॰) कुछ मुड़ा हुआ।

आवल्गित–वि॰ (सं॰) धीरे-धीरे हिलता हुआ।

आवश्य–पु॰ (सं॰) आवश्यकता; अनिवार्य कार्य या फल।

आवश्यक–वि॰ (सं॰) जरूरी, अवश्यंभावी।

आवश्यकता–स्त्री॰ (सं॰) जरूरत।

आवश्यकीय–वि॰ जरूरी।

आवस*–स्त्री॰ ऊमस, औंस (भाप ?)।

आवसति–स्त्री॰ (सं॰) रात्रिकालमें विश्राम करनेका स्थान; रात्रि।

आवसथ–पु॰ (सं॰) घर; गाँव; छात्रों या साधुओंके रहनेका स्थान, आश्रम; एक व्रत।

आवसथ्य–वि॰ (सं॰) घरमें स्थित। पु॰ यज्ञमें व्यवहृत पाँच अग्नियोंमेंसे एक, लौकिकाग्नि; रात्रिकालमें विश्राम करनेका स्थान; घर।

आवसान–वि॰ (सं॰) गाँवकी सीमापर रहनेवाला (चांडाल)।

आवसित–वि॰ (सं॰) पूरा किया हुआ; निर्धारित, निश्चित किया हुआ; जमा किया हुआ (अन्न); पका हुआ (अन्न)।

आवस्थिक–वि॰ (सं॰) अवस्था या परिस्थितिके अनुकूल।

आवह–पु॰ (सं॰) वायुके सात स्कंधोंमेंसे पहला, भूर्लोक और स्वर्लोकके मध्यवर्ती आकाशकी वायु; अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक। वि॰ (समासांतमें) जनक, उत्पादक (भयावह, क्लेशावह)।

आवहन–पु॰ (सं॰) नजदीक लाना।

आवाँ–पु॰ मिट्टीके बरतन पकानेका भट्ठा; † गरम लोहा पीटनेके लिए दूसरे लोहारका वुलाया जाना। मु॰**–बिगड़ना**–वरतनोंका ठीक तौरसे न पकना। **–लगाना**–वरतनोंके सब ओर उपले चुनकर उन्हें पकानेके लिए आँच देना। **–(वें)का आवाँ बिगड़ना**–सारे कुटुंबमें कोई दोष होना।

आवागमन–पु॰ (सं॰) आना-जाना; जन्म-मरणका चक्र या बंधन, संसृति। मु॰ **–छूटना**–मुक्ति मिलना।

आवागमनी–वि॰ आने-जानेवाला, जीने-मरनेवाला।

आवागवन, आवागौन*–पु॰ दे॰ 'आवागमन'।

आवाज़–स्त्री॰ (फा॰) वोल, ध्वनि, स्वर; पुकार; शोर। मु॰ **–उठाना,–ऊँची करना**–किसी वातके पक्ष या विपक्षमें कहना, वोलना। **–खुलना**–गला वैठनेके वाद शव्दका साफ निकलना। **–गिरना**–स्वरका मंद होना। **–देना**–पुकारना, वुलाना। **–** **–निकालना**–वोलना। **–पड़ना**–गला वैठना, स्वरभंग होना। **–पर कान रखना**–ध्यान देना। **–पर लगना**–(तीतर, बटेर आदिका) वोलकी धुन, संकेतपर चलना, काम करना। **–फटना**–आवाज भर्राना। **–वैठना**–गला बैठना, स्वरभंग होना। **–भर्राना,–भारी होना**–गलेसे अस्पष्ट और मोटी आवाज निकलना। **–मारना**–जोरसे पुकारना। **–लगाना**–आवाज देना; ऊँची तान लगाना।

आवाज़ा–पु॰ (फा॰) प्रसिद्धि, शुहरत; व्यंग्य, ताना। **–ए-ख़ल्क़**–पु॰ लोकप्रसिद्धि, लोककी पुकार। **–कशी**–स्त्री॰ व्यंग्य करना, ताना मारना। मु॰**–कसना**–वोली वोलना, व्यंग्य करना।

आवा-जानी–स्त्री॰ जन्म-मरण।

आवा-जाही†–स्त्री॰ आना-जाना, आमदरफ्त।

आवादानी–स्त्री॰ दे॰ 'आवादानी'।

आवाप–पु॰ (सं॰) बिखेरना; बीज बोना; फेंकना; किसी मिश्रण-में ऊपरसे कुछ मिलाना; पात्रोंको व्यवस्थित करना; थाला; धान्यपात्र; शत्रुतापूर्ण अभिप्राय, एक विशेष अग्नि-यज्ञ; एक पेय; कंकण; विषम भूमि।

आवापक–पु॰ (सं॰) स्वर्ण-कंकण।

आवापन–पु॰ (सं॰) करघा, बुननेका यंत्र; सूर्ययंत्र, वह गोल लकड़ी जिसपर तागा लपेटा जाता है।

आवापिक–वि॰ (सं॰) वपन, मुंडन आदिके लिए उत्तम; अतिरिक्त, पूरक।

आवाय–पु॰ (सं॰) व्यूह-रचनासे बची हुई सेना (कौ॰)।

आवार–पु॰ (सं॰) पनाह, बचाव; रक्षण, बचाना।

आवारगी–स्त्री॰ (फा॰) आवारापन।

आवारजा–पु॰ (फा॰) जमा-खर्च-बही; रोजनामचा; अवारजा।

आवारा–वि॰ (फा॰) जो बेकार घूमता-फिरता, भटकता रहे; कुमार्गगामी; निकम्मा। **–गर्द**–वि॰ बेकार घूमने, भटकता रहनेवाला। **–गर्दी**–स्त्री॰ वेकार घूमना, भटकना।

आवाल–पु॰ (सं॰) थाला, आलवाल।

आवास–पु॰ (सं॰) वासस्थान, घर; कमरा।

आवासिक–वि॰ दे॰ 'आवासी'।

आवासी(सिन्)–वि० (सं०) रहनेवाला, वास करनेवाला। –वि० (रेज़िडेंट) जहाँ काम करने, पढाने आदिपर नियुक्त हो उसी स्थानपर रहनेवाला (आवासी चिकित्सक, अध्यापक आदि)। **–प्रतिनिधि**–पु० (रेज़िडेंट) किसी अर्द्ध स्वतंत्र राज्यमें स्थायी रूपसे रहनेवाला अन्य देशका प्रतिनिधि।

आवाह–पु० (सं०) आमंत्रण; विवाह।

आवाहक–पु० (सं०) बुलानेवाला, आमंत्रित करनेवाला।

आवाहन–पु० (सं०) बुलाना, पुकारना; पूजनमें किसी देवताको मंत्र द्वारा वुलाना; अग्निको होम अर्पित करना।

आवाहना*–स० क्रि० आमंत्रित करना।

आवाहनी–स्त्री० (सं०) देवताके आवाहन-कालमें बनायी जानेवाली हाथकी एक विशेष मुद्रा।

आविक–वि० (सं०) भेड़-संबंधी; ऊनी। पु० ऊनी वस्त्र, कंवल। **–सौत्रिक**–वि० ऊनी धागेसे वना हुआ।

आविग्न–वि० (सं०) उद्विग्न, परेशान। पु० एक फलवाला वृक्ष, अविग्न।

आविद्ध–वि० (सं०) विधा, छेदा हुआ; जोरसे फेंका हुआ; तोड़ा हुआ; मुड़ा हुआ; कुटिल; विषम; हताश; मिथ्या; मूर्ख। पु० तलवारका एक हाथ। **–कर्ण**–वि० जिसके कान छिदे हों। **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० पाठा।

आविध–पु० (सं०) लकड़ी छेदनेका औजार, बरमा।

आविर्भाव–पु० (सं०) प्रकट होना, अभिव्यक्ति; उत्पत्ति; अवतार; वस्तुधर्म।

आविर्भावण–पु० (इनवेंशन) दे० 'उद्भावन'।

आविर्भूत–वि० (सं०) प्रकटित, अभिव्यक्त; अवतीर्ण; उत्पन्न।

आविर्मुखी–स्त्री० (सं०) आँख।

आविर्मूल–वि० (सं०) जिसकी जड़ खोद दी गयी हो (वृक्ष)।

आविर्हित–वि० (सं०) प्रत्यक्ष किया हुआ।

आविल–वि० (सं०) मैला, गंदा, कलुषयुक्त; धुँधला, अस्पष्ट।

आविष्करण–पु० (सं०) प्रकट करना, दिखाना; कोई अज्ञात बात खोज निकालना; नयी चीज़ वनाना, ईजाद, उद्भावन।

आविष्कर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार–पु० (सं०) दे० 'आविष्करण'।

आविष्कारक–वि० (सं०) दे० 'आविष्कर्ता'।

आविष्कृत–वि० (सं०) प्रकट किया हुआ; ईजाद किया हुआ, उद्भावित।

आविष्क्रिया–स्त्री० (सं०) दे० 'आविष्कार'।

आविष्ट–वि० (सं०) आवेशयुक्त; प्रेतादिसे ग्रस्त; तत्पर; भरा हुआ; अभिभूत (क्रोधाविष्ट); प्रविष्ट।

आवी–स्त्री० (सं०) ऋतुमती स्त्री; गर्भवती स्त्री; प्रसव-वेदना।

आवीत–वि० (सं०) पहना हुआ; गया हुआ; प्रविष्ट; ढका हुआ; उपनीत। पु० एक विशेष ढंगसे पहना गया जनेऊ।

आवृत–वि० (सं०) ढका, छिपा, लपेटा हुआ; घेरा हुआ; वाधित; फैला हुआ। पु० एक वर्णसंकर जाति।

आवृति–स्त्री० (सं०) आवरण।

आवृत्त–वि० (सं०) घुमाया, फिराया, लौटा, पीछे हटा, लौटाया, दुहराया, पढ़ा हुआ।

आवृत्ति–स्त्री० (सं०) घूमना; लौटना; चक्कर लगाना; पलायन; दुहराना; बार-बार पढ़ना, अभ्यास; संसृति; पुस्तकादिका फिरसे छपना, संस्करण; उपयोग, प्रयोग; प्रति सेकण्ड, साइकिलोंकी संख्या, उत्पन्न होनेवाली तरंगोंकी संख्या, या कम्पनोंकी संख्या 'आवृत्ति' कहलाती है।

आवृत्ति, वेग तथा तरंग दैर्घ्यमें सम्वन्ध निम्नलिखित है :

$$\text{आवृत्ति} = \frac{\text{वेग}}{\text{तरंग दैर्घ्य}}$$

–दीपक–पु० दीपक अलंकारका एक भेद जिसमें क्रिया-पदोंकी आवृत्ति की जाती है।

आवृष्टि–स्त्री० (सं०) वर्षा।

आवेग–पु० (सं०) उद्दीप्त, प्रवल मनोवेग; विना सोचे-विचारे कुछ कर बैठनेकी अंतःप्रेरणा, झोंक; अशांति; उतावली; एक संचारी भाव; (इम्पल्स) जब कोई बल अत्यन्त थोड़े समय तक लगाया जाता है तो 'वल' और उस 'समय मान'का गुणनफल 'आवेग' कहलाता है।

आवेग–संवेग (मोमेन्टम)का टोटल परिवर्तन।

आवेगी–स्त्री० (सं०) वृद्धदारक वृक्ष।

आवेज़ा–पु० (फा०) लटकने या झूलनेवाली वस्तु; लटकनेवाला गहना (लटकन, झुलनी, झूमक आदि)।

आवेदक–वि० (सं०) आवेदन करनेवाला। पु० मुद्दई; प्रार्थी।

आवेदन–पु० (सं०) निवेदन, अर्ज; प्रार्थना करना; नालिश। **–पत्र**–पु० अर्जी, प्रार्थनापत्र।

आवेदनीय, आवेद्य–वि० (सं०) निवेदन करने योग्य; प्रार्थनाका विषय वनाने योग्य।

आवेदित–वि० (सं०) बताया हुआ, निवेदित; जिससे निवेदन किया गया हो।

आवेदी(दिन्)–वि० (सं०) आवेदन करनेवाला।

आवेश–पु० (सं०) प्रवेश, व्याप्ति; दवा लेना, हावी हो जाना (क्रोधावेश); प्रेतादिका पकड़ लेना; जोश; गुस्सा; घमंड; लगन, अभिनिवेश; मूर्च्छा; मृगी। **–विद्युत**–पु० (चार्ज, इलेक्ट्रिक) किसी वस्तुपर पायी जानेवाली विद्युतकी मात्रा जो धन या ऋणजातिकी हो सकती है।

आवेशन–पु० (सं०) भूतावेश; पकड़ना; प्रवेश; क्रोध; निवासस्थान; सूर्य या चंद्रमाका परिवेश; शिल्पशाला।

आवेशनिक–पु० (सं०) प्रीतिभोज।

आवेशिक–वि० (सं०) निजी; असाधारण; अंतर्निहित। पु० अतिथि; प्रवेश; आतिथ्य।

आवेष्टक–पु० (सं०) चहारदीवारी, घेरा; जाल।

आवेष्टन–पु० (सं०) लपेटना; ढकना; बेठन, खोल; चहारदीवारी, घेरा।

आवेष्टित–वि० (सं०) छिपा, ढका या घिरा हुआ।

आव्याधी(धिन्)–वि० (सं०) कष्ट देनेवाला; आहत करनेवाला।

आव्रजन–स्त्री० (सं०) चलना-फिरना; एक जगहसे दूसरी जगह जाना।

आशंकनीय–वि० (सं०) शंका या संदेह करने योग्य; संदिग्ध।

आशंका–स्त्री० (सं०) भय, खतरे, अनिष्टकी संभावना; संदेह, अविश्वास।

आशंकित–वि० (सं०) जिसकी आशंका हो; आशंकायुक्त। पु० शंका, डर; संदेह।

आशंकी(किन्)–वि० (सं०) आशंका करनेवाला।

आशंसन–पु० (सं०) इच्छा, आशा, अपेक्षा करना; कहना।

आशंसा–स्त्री० (सं०) इच्छा, अपेक्षा; आशा; कथन; चर्चा।

आशंसित–वि० (सं०) जिसकी इच्छा, आशा या अपेक्षा की गयी हो; कहा, सोचा हुआ।

आशंसिता (तृ), आशंसी(सिन्), आशंसु–वि० (सं०) इच्छा, आशा, अपेक्षा करनेवाला।

आश–पु० (सं०) आहार, भोजन (समासमें प्रयुक्त–प्रात-राश)। * स्त्री० आशा। पु० (फा०) पेय; लपसी। **–जौ**–पु० जौका जूस या लपसी।

आशक–वि० (सं०) खानेवाला, भोक्ता।

आशक्त–वि० (सं०) सक्षम, शक्तिशाली।

आशक्ति–स्त्री० (सं०) क्षमता, सामर्थ्य; योग्यता।

आशन–वि० (सं०) खिलानेवाला। पु० अशन नामक वृक्ष; वज्र, अशनि।

आशना–वि० (फा०) परिचित, जान-पहचानवाला; जिससे मैत्री हो। पु०, स्त्री० प्रेमी, यार; प्रेमपात्र; प्रेमिका, रखेली।

आशनाई–स्त्री० दोस्ती; प्रेम; अवैध संबंध।

आशय–पु० (सं०) शयनस्थान, विश्रामस्थान; आश्रय; शयन; रहनेकी जगह (आमाशय, पित्ताशय); घर; अधिष्ठान, आधार; अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य; उदर; चित्त, हृदय; पाप और पुण्य–सुख-दुःखके कारणरूप कर्मजन्य संस्कार (यो०); जानवर फँसानेका गड्ढा; कटहल; अभ्युदय; बखारी; भाग्य; संपत्ति; कृपण

व्यक्ति।

आशयाश–पु० (सं०) अग्नि।

आशयिता(तृ)–वि० (सं०) खिलानेवाला, संरक्षण करनेवाला।

आशर–पु० (सं०) राक्षस; अग्नि; वायु।

आशल–पु० (सं०) एक वृक्ष।

आशव–पु० (सं०) वेग, क्षिप्रता; आसव।

आशा–स्त्री० (सं०) किसी वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा और किंचित् विश्वास; उम्मीद, साधारण विश्वास या भरोसा; आशाका आधार; आसरा; दिशा; एक राग; दक्षकी एक कन्या। **–गज**–पु० दिग्गज। **–जनक**–वि० आशा उत्पन्न करनेवाला। **–तंतु**–पु० क्षीण आशा। **–निर्वेदिसेना**–स्त्री० हताश सेना। **–पाल**–पु० दिक्पाल। **–पाश**–पु० अपूरणीय आशाका बंधन या फंदा। **–पिशाचिका**–स्त्री० झूठी आशा। **–प्राप्त**–वि० जिसकी आशा पूरी हो गयी हो। **–बंध**–पु० आशाका बंधन, विश्वास। **–भंग**–पु० आशाका टूटना, आशा पूरी न होना। **–वसन**–वि० दिगंबर, नग्न। **–वह**–पु० सूर्य; वृष्णि। **–वाद, वादी**–दे० क्रममें। **–विभिन्न**–वि० हताश। **–हीन**–वि० निराश। **मु० –टूटना**–आशा भंग होना। **–तोड़ना**–निराश करना। **–देना**–उम्मीद बँधाना। **–पूजना**–आशा पूरी होना। **–बँधना**–आशा उत्पन्न होना।

आशाढ–पु० (सं०) दे० 'आषाढ'।

आशातीत–वि० (सं०) आशासे अधिक।

आशार–पु० (सं०) आश्रय, रक्षास्थान।

आशावाद–पु० (ऑप्टिमिज्म) प्रत्येक घटना और प्रत्येक वस्तुके संबंधमें आशामयी दृष्टि रखना, सदा अच्छी बातों और अच्छे परिणामोंकी आशा करनेका स्वभाव, सर्वशुभवाद।

आशावादिता–स्त्री० (ऑप्टिमिज्म) आशावादी होनेकी क्रिया, भाव या आदत।

आशावादी–वि० (ऑप्टिमिस्ट) सर्वदा अच्छी बातों और कल्याणमय परिणामोंकी आशा करनेवाला।

आशासन–पु० (सं०) किसी वस्तुकी इच्छा करना या उसके लिए प्रार्थना करना।

आशासनीय, आशास्य–वि० (सं०) अभिलषणीय। पु० इच्छा; आशीर्वाद।

आशिंजित–वि० (सं०) झनकार करता हुआ (गहना)। पु० गहनोंकी झनकार।

आशि–स्त्री० (सं०) खाना, भक्षण।

आशिक़–वि० (अ०) इश्क़-प्रेम करनेवाला, अनुरक्त, आसक्त। पु० प्रेम करनेवाला व्यक्ति। **–माशूक़**–पु० प्रेमी और प्रेमपात्र। **–मिज़ाज**–वि० प्रेमप्रवण; दिलफेंक।

आशिक़ाना–वि० प्रेमीके अनुरूप या उपयुक्त; प्रेमसूचक, अनुरागमय।

आशिक़ी–स्त्री० आशिक होना, प्रेम।

आशित–वि० (सं०) खाया हुआ; भोजनतृप्त; पेटू। पु० भक्षण।

आशिता(तृ)–वि० (सं०) पेटू।

आशिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) तीव्रता, तेजी।

आशियाँ, आशियाना–पु० (फ़ा०) घोंसला; बसेरा; घर।

आशिष्(स्)–स्त्री० (सं०) असीस, ईश्वरसे किसीके कल्याण-मंगलकी प्रार्थना; अनुग्रह; सर्पका विषदंत; एक जड़ी; वृद्धि।

आशी–स्त्री० (सं०) साँपका जहरीला दाँत; सर्पविष; असीस। **–विष**–पु० साँप। वि० जिसके दाँतमें विष हो।

आशी(शिन्)–वि० (सं०) खानेवाला (समासमें प्रयुक्त–फलाशी)।

आशीर्वचन, आशीर्वाद–पु० (सं०) असीस।

आशु–वि० (सं०) तेज, द्रुत। अ० तेजीसे, फौरन। पु० भादोंमें पकनेवाला धान, आउस; घोड़ा। **–कवि**–पु० तुरत कविता बनानेमें समर्थ कवि। **–कोपी(पिन्)**–वि० झट क्रुद्ध हो जानेवाला, चिड़चिड़ा। **–ग**–वि० शीघ्रगामी, तेजरौ। पु० वायु; सूर्य; तीर। **–गामी(मिन्)**–वि० तेज चलनेवाला। पु० सूर्य। **–तोष**–वि० झट प्रसन्न होनेवाला। पु० शिव। **–पत्र**–पु० (एक्सप्रेस लेटर) शीघ्रतापूर्वक भेजा जानेवाला पत्र, वह पत्र जो डाकघरमें पहुँचते ही हरकारे द्वारा तुरंत पानेवालेके पास भेज दिया जाय, तुरत पत्र। **–पत्री**–स्त्री० शल्लकी नामक लता। **–बोध**–वि० जल्द सिखलानेवाला। **–व्रीहि**–पु० आउस धान। **–लिपिक**–पु० (स्टेनोग्राफर) आशुलिपि (शीघ्रलिपि)की सहायतासे कोई भाषण या बोला-सुनाया गया मजमून शीघ्रतापूर्वक लिख लेनेवाला कर्मचारी (व्यक्ति), शीघ्रलेखक।

आशुशुक्षणि–वि० (सं०) शत्रुओंको ताप देने या तेजीसे चमकनेके कारण पूजा जानेवाला। पु० हवा; अग्नि।

आशोकेय–वि० (सं०) अशोक वृक्षके पासका (स्थान); अशोकसंबंधी।

आशोब–पु० (फ़ा०) फसाद; डर; शोर-गुल; आँखका दुखना। **–गाह**–पु० फसादकी जगह। **–चश्म**–पु० आँखका उठना। **–जान**–स्त्री० जानकी आफ़त; माशूक़। **मु०–उठना**–फ़साद शुरू होना।

आशोषण–पु० (सं०) सोखनेकी क्रिया।

आशौच–पु० (सं०) अशुद्धि, अपवित्रता।

आशौची(चिन्)–वि० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।

आश्चर्य–पु० (सं०) अचरज, अचंभा, विस्मय; अद्भुत रसका स्थायी भाव।

आश्चर्यित–वि० (सं०) चकित, विस्मित।

आश्म–वि० (सं०) पत्थरका बना हुआ। पु० पत्थरसे बनी हुई वस्तु।

आश्मन–वि० (सं०) दे० 'आश्म'। पु० सूर्यका सारथि, अरुण।

आश्मरिक–वि० (सं०) अश्मरी, पथरी रोगसे ग्रस्त। पु० अश्मरी रोग।

आश्मिक–वि० (सं०) अश्म (पत्थर)का बना; पत्थरोंसे युक्त; पत्थर ढोनेवाला।

आश्यान–वि० (सं०) जो जमकर ठोस हो गया हो या अंशतः सूख गया हो।

आश्र–पु० (सं०) आँसू।

आश्रपण–पु० (सं०) पाकक्रिया।

आश्रम–पु० (सं०) साधु-संतकी कुटी, मठ; तपोवन; साधकसमुदायके रहनेका स्थान; वर्णाश्रम-धर्मी द्विजके जीवनके चार विभाग या अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास); विद्यालय; विष्णु। **–गुरु**–पु० आचार्य। **–धर्म**–पु० आश्रमविहित धर्म; ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदिके विशेष धर्म। **–पद, –मंडल,–स्थान**–पु० तपोवन। **–भ्रष्ट**–वि० जो आश्रमधर्मसे च्युत हो गया हो। **–वास**·पु० तपोवन-निवास, वानप्रस्थका जीवन। **–वासिक**–वि० तपोवन या आश्रममें निवाससे संबंध रखनेवाला। **–वासी(सिन्)**–वि० आश्रममें रहनेवाला। पु० वानप्रस्थ।

आश्रमालय–पु० (सं०) तपोवनमें निवास करनेवाला।

आश्रमिक, आश्रमी(मिन्)–वि० (सं०) आश्रममें रहनेवाला, चार आश्रमोंमेंसे किसी आश्रमका।

आश्रय–पु० (सं०) आधार; विषय; शरण, ठिकाना; घर; सहायता; सहारा; संरक्षक; तूणीर; संबंध; बहाना; आचरणके अनुरूप कार्य; सान्निध्य; उद्गम; उद्देश्य (व्या०); अभ्यास; ग्रहण; पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और मन (बौ०)। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि; कृत्तिका नक्षत्र।

आश्रयण–पु० (सं०) सहारा लेना।

आश्रयाश–पु० (सं०) अग्नि।

आश्रयासिद्ध–पु० (सं०) वह हेत्वाभास जिसका आश्रय–आधार गलत हो।

आश्रयी(यिन्)–वि० (सं०) आश्रय लेनेवाला।

आश्रव–पु० (सं०) प्रतिज्ञा, वचन; दोष, क्लेश; अंगीकार; धारा; नदी; उबलते हुए चावलका फेन।

आश्रि–स्त्री० (सं०) तलवारकी धार।

आश्रित–वि० (सं०) (किसीके सहारे) ठहरा, टिका हुआ, अवलंबित; अधीन; अभ्यास करनेवाला। पु० वह जो भरणपोषणके लिए किसीपर अवलंबित हो, स्त्री-बच्चे, नौकर-चाकर;

मन और ज्ञानेंद्रियों द्वारा ज्ञात विषय ।

आश्रुत–वि० (सं०) अंगीकृत, स्वीकृत; सुना हुआ ।

आश्रुति–स्त्री० (सं०) सुनना; अंगीकृति ।

आश्लिष्ट–वि० (सं०) लगा, जुड़ा हुआ; संबद्ध; आलिंगित ।

आश्लेष–पु० (सं०) लगाव, संबंध; आलिंगन ।

आश्लेषण–पु० (सं०) मेल, संयोग; अवलंबन ।

आश्लेषा–स्त्री० (सं०) अश्लेषा नक्षत्र ।

आश्लेषित–वि० (सं०) आलिंगित ।

आश्व–वि० (सं०) अश्व-संबंधी; घोड़ेसे खींचा जानेवाला । पु० घोड़ोंका समूह; घोड़ेकी स्थिति या अवस्था; घोड़ोंसे खींचा जानेवाला रथ ।

आश्वत्थ–वि० (सं०) अश्वत्थ-संबंधी; अश्वत्थमें फल लगनेके समयसे संबद्ध । पु० पीपलका फल ।

आश्वत्था–स्त्री० (सं०) अश्वत्थ नक्षत्रवाली रात्रि ।

आश्वमेधिक–वि० (सं०) अश्वमेध-संबंधी । पु० महाभारतका चौदहवाँ पर्व ।

आश्वयुज–पु० (सं०) आश्विन मास ।

आश्वरथ–वि० (सं०) घोड़ोंसे खींचे जानेवाले रथसे संबंध रखनेवाला ।

आश्वलक्षणिक–वि० (सं०) घोड़ेके लक्षण पहचाननेवाला ।

आश्वलायन–पु० (सं०) आश्वलायन श्रौत और गृह्यसूत्रोंके निर्माता ऋषि ।

आश्वस्त–वि० (सं०) आश्वास-प्राप्त, जिसका डर दूर कर दिया गया हो; जिसे ढाढ़स बँधाया गया हो; उत्साहित ।

आश्वास–पु० (सं०) खुलकर साँस लेना; ढाढ़स, दिलासा; रक्षा या अभयका वचन; डरे हुएका भयनिवारण; विराम; ग्रंथका अध्याय ।

आश्वासक–वि० (सं०) आश्वासन देनेवाला । पु० वस्त्र ।

आश्वासन–पु० (सं०) आश्वास; आश्वास देना; भयनिवारण; प्रोत्साहन ।

आश्वासी(सिन्)–वि० (सं०) आश्वासकारक; प्रसन्न होनेवाला ।

आश्वास्य–वि० (सं०) आश्वासनके योग्य ।

आश्विक–वि० (सं०) घोड़ेसे संबंध रखनेवाला; घोड़ेसे खींचा जानेवाला; अश्वारोही (सैनिक) । पु० अश्वारोही सैनिक ।

आश्विन–पु० (सं०) वह महीना जिसमें चंद्रमा अश्विनी नक्षत्रके पास रहता है, क्वार; एक यज्ञ जिसके अधिष्ठाता अश्विनीकुमार होते हैं ।

आश्विनेय–पु० (सं०) अश्विनी संबंधी; अश्विनीकुमार; नकुल-सहदेव ।

आषडीय।*–स्त्री० आँख ।

आषाढ–पु० (सं०) असाढ़का महीना; यतियों द्वारा धारण किया जानेवाला पलाशका दंड; मलयगिरि ।

आषाढक–पु० (सं०) आषाढ़ मास ।

आषाढा–स्त्री० (सं०) पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र । **–भव, –भू**–पु० मंगल ग्रह ।

आषाढी–स्त्री० (सं०) आषाढकी पूर्णिमा; इस दिन होनेवाला कृत्य । **–योग**–पु० आषाढकी पूर्णिमाको अन्नकी तौलसे किया जानेवाला वृष्टिका निश्चय ।

आषाढी(ढिन्)–वि० (सं०) पलाशदंड धारण करनेवाला ।

आषाढीय–वि० (सं०) आषाढ़ा नक्षत्रमें उत्पन्न ।

आसंग–पु० (सं०) आसक्ति, लगाव; साथ; संलग्नता; कर्तृत्वाभिमान; मुलतानी मिट्टी । वि० अबाधित; अविच्छिन्न ।

आसंगत्य–पु० (सं०) पार्थक्य, अलगाव, वियोग ।

आसंगिनी–स्त्री० (सं०) चक्रवात, वात्याचक्र, आवर्त ।

आसंगिम–पु० (सं०) एक तरहकी पट्टी (शल्यचिकित्सा) ।

आसंगी(गिन्)–वि० (सं०) आसक्त; संबद्ध ।

आसंजन–पु० (सं०) बाँधना; धारण करना; उलझ जाना; आसक्ति, संबंध; मूठ; कुर्की, अभ्याग्रहण, टॉच (अटैचमेंट); किसी सतहसे चिपक जाना; ऐसा भिन्न किस्मके अणुओंके पारस्परिक आकर्षण बल के कारण होता है । काँचकी प्लेटपर पानीकी बूँदका चिपकना आसंजनके कारण ही होता है ।

आसंजित–वि० ('अटैच्ड') कुर्क किया हुआ, अभ्यागृहीत ।

आसंद–पु० (सं०) विष्णु; वासुदेव ।

आसंदिका–स्त्री० (सं०) छोटी कुरसी; मचिया ।

आसंदी–स्त्री० (सं०) मचिया; आराम-कुरसी; वेदी ।

आसंबाध–वि० (सं०) घिरा हुआ, अवरुद्ध; आकीर्ण ।

आसंसार, आसंसृति–वि० (सं०) प्रगतिशील; विकारी । अ० संसार या पार्थिव अस्तित्व बने रहनेतक; सारे अस्तित्वकालमें ।

आस–पु० (सं०) बैठना; आसन; चूतड़; राख; सामीप्य; धनुष् । स्त्री० (हिं०) आशा; भरोसा; सहारा; कामना; * दिशा । **मु०** **–टूटना**–निराश होना । **–तकना**–प्रतीक्षा करना, मुँह जोहना । **–तोड़ना**–निराश करना । **–देना**–उम्मीद दिलाना । **–पूजना,–पूरना**–आशा पूरी होना, मनचाही बात होना । **–बाँधना**–उम्मीद करना । **–लगना**–आशा उत्पन्न होना । **–होना**–आशा या सहारा होना; गर्भ रहना ।

आसकत|–स्त्री० सुस्ती, आलस्य ।

आसकती|–वि० आलसी ।

आसक्त–वि० (सं०) आसक्तियुक्त; मनका प्रबल लगाव रखनेवाला, अनुरक्त; फँसा हुआ, लिप्त (विषयासक्त); लगनवाला; घिरा हुआ; विश्वास करनेवाला ।

आसक्ति–स्त्री० (सं०) मनका लगाव; अनुराग, लगन ।

आसति*–स्त्री० सत्य; आसक्ति; समीपता; मुक्ति ।

आसतीन–स्त्री० दे० 'आस्तीन' ।

आसते*–अ० दे० 'आहिस्ता' ।

आसतोष*–वि०, पु० दे० 'आशुतोष' ।

आसत्ति–स्त्री० (सं०) निकट संबंध, समीपता; मेल; वाक्यमें संबद्ध पदोंका पास-पास रहना; लाभ, प्राप्ति ।

आसथान*–पु० दे० 'आस्थान' ।

आसदन–पु० (सं०) समीपता; संबंध; बैठना; आसन; लाभ, नफा ।

आसन–पु० (सं०) बैठना; वह चीज जिसपर बैठा जाय (चटाई, कुरसी आदि); बैठनेका ढंग; हठयोगके अंदर बैठने और विभिन्न अंगोंके व्यायामकी विधियाँ; रतिक्रियाकी कोई विधि; रुकना; रहना; फेंकना; हाथीका कंधा; शत्रुपर आक्रमण न कर अवसरकी प्रतीक्षामें अपनी जगहपर डटे रहना (यानका उलटा); परराष्ट्र-नीतिके ६ प्रकारोंमेंसे एक, उपेक्षाकी नीति; असन तथा जीवक वृक्ष, साधुओंके ठहरने या रहनेकी जगह । **–बंधधीर**–वि० अपनी जगहपर जमकर बैठा हुआ । **मु०** **–उखड़ना**–जमकर (खासकर घोड़ेकी पीठपर) न बैठ सकना; बैठनेमें हिलना, डगमगाना । **–उठना**–स्थान छूटना । **–करना**–योगके अनुसार शरीरको विशेष स्थितिमें रखना; टिकना । **–कसना**–अंगोंको तोड़-मरोड़कर बैठना । **–छोड़ना**–उठकर चल देना । **–जमना**–एक ही स्थानपर एक प्रकारसे देरतक बैठना; स्थिर होकर बैठना । **–जमाना**–जमकर, अडिग भावसे बैठना; अपनी स्थिति, अधिकार दृढ़ कर लेना; डेरा डालना । **–डिगना,–डोलना**–चित्तका विचलित हो जाना; मनमें भय या घबराहट पैदा हो जाना; मन ललचाना । **–तले आना**–वशमें होना । **–देना**–आदरपूर्वक बैठाना; टिकाना । **–बाँधना**–जाँघोंसे जकड़ना । **–मारना, –लगाना**–आसन जमाना, जमकर बैठना ।

आसना–स्त्री० (सं०) आसन, छोटा बिछावन; बैठना । * अ० क्रि० होना ।

आसनी–स्त्री० (सं०) छोटा आसन, बैठने भरका बिछावन; बैठना; ठहरना; छोटी दुकान ।

आसन्न–वि० (सं०) पास आया हुआ; उपस्थितप्राय; लगा, सटा हुआ; जिसकी मृत्यु निकट हो । पु० सामीप्य; अंत, मृत्यु; डूबता हुआ सूर्य । **–काल**–वि० जिसकी मृत्यु पास आ गयी हो । पु० मृत्युकाल । **–कोण**–पु० (ऐडजेसेंट एंगिल्ज) वे कोण जो एक ही बिंदुपर एक उभयनिष्ठ भुजाके दोनों ओर बने हों । **–परिचारक**–पु० अंगरक्षक; निजी काम करनेवाला नौकर । **–प्रसवा**–वि० स्त्री० जिसे आज-कलमें ही बच्चा होनेवाला हो । **–भूत–**

पु० भूत कालका वह भेद जिससे क्रियाकी पूर्णता और भूत-कालकी निकटता सूचित होती हो (व्या०)। **–मरण, –मृत्यु**–वि० जिसकी मृत्यु पास आ गयी हो, कुछ ही देरका मेहमान।

आस-पास–अ० अगल-बगल, चारों ओर; करीब, पासमें।

आसबंद–पु० पटवोंका एक तागा जिसमें जेवर अटकाकर गूँथते हैं।

आसमाँ, आसमान–पु० (फा०) आकाश; स्वर्ग। **मु०–के तारे तोड़ना**–दुस्साध्य, अनहोनी बात कर डालना। **–छूना**–बहुत ऊँचा होना, गगनचुंबी होना। **–जमीनके कुलाबे मिलाना**–डूनकी हाँकना, लंबी-चौड़ी बातें करना। **–झाँकना,–ताकना**–घमंड करना। **–टूटना**–अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना। **–दिखाना**–कुश्तीमें प्रतिद्वंद्वीको चित कर देना। **–पर उड़ना,–पर चढ़ना**–गर्वसे इतराना, मिजाज बहुत बढ़ जाना। **–पर चढ़ाना**–अति प्रशंसा करना; अति प्रशंसाके द्वारा मिजाज बिगाड़ देना। **–पर थूकना**–बड़े आदमीको निंदित करनेके प्रयत्नमें स्वयं निंदित होना। **–फटना**–अचानक भारी विपद् आ पड़ना, दैवकोप होना। **–में छेद होना**–वर्षाका न थमना, लगातार अतिवृष्टि होना। **–में थिगली या थूनी लगाना**–कठिन, अनहोनी बात करना। **–सिर-पर उठा लेना**–बहुत शोर, ऊधम, कोलाहल मचाना। **–सिरपर टूट पड़ना**–दैवकोप होना, अचानक कोई भारी विपद् आ पड़ना। **–से गिरना,–से टपकना**–(किसी चीजका) अपने आप उपस्थित हो जाना। **–से बातें करना**–आसमान छूना।

आसमानी–वि० आसमानका; आसमानके रंगका; दैवी। पु० हलका नीला रंग। स्त्री० ताड़ी। **–ग़ज़ब**–पु० दैवकोप।

आसमुद्र–अ० (सं०) समुद्रसे लेकर; समुद्रतक।

आसय*–पु० दे० 'आशय'।

आसर*–पु० दे० 'आशर'।

आसरना*–स० क्रि० आश्रय लेना।

आसरा–पु० सहारा, अवलंब; भरोसा; आशा; प्रतीक्षा; शरणकी जगह, शरण; सहायक।

आसरैत–वि० किसीके आसरे रहनेवाला। स्त्री० रखेली।

आसव–पु० (सं०) मद्य; रस; पुष्परस; अधरामृत; फल आदिके खमीरसे तैयार किया हुआ अर्क; मद्यपात्र; उत्तेजन। **–द्रु**–पु० ताड़; खजूर।

आसवन–पु० (डिस्टिलेशन) वाष्पीकरण तथा द्रवीकरणकी संयुक्त क्रिया। आसवनमें द्रवको गर्म करके वाष्पमें परिणत किया जाता है, साथ ही उस वाष्पको ठण्डा करके उसे द्रवरूपमें ले आनेका भी प्रबन्ध रहता है; पातालयंत्र (भभके)की सहायतासे मद्य या अर्क चुलाने या जल शुद्ध करनेकी क्रिया, अभिस्रावण।

आसवनी–स्त्री० (डिस्टिलरी) शराब या अर्क चुलानेका यंत्र, भट्ठी या घर, अभिस्रावणी; मद्य-निर्माणशाला।

आसवी(विन्)–वि० (सं०) आसवसेवी, शराबी।

आसा*–स्त्री० दे० 'आशा'। पु० दे० 'असा'। **–बरदार**–दे० 'असा'के साथ। **–मुखी**–वि० किसीका मुहताज, परमुखापेक्षी।

आसाइश–स्त्री० (फा०) सुख; आराम।

आसाढ़–पु० दे० 'आषाढ'।

आसादन–पु० (सं०) रखना; आक्रमण करना; तेज चलकर पकड़ लेना; प्राप्ति।

आसादित–वि० (सं०) लब्ध, प्राप्त; रखा हुआ; फैलाया हुआ; पूरा किया हुआ; तेज चलकर पकड़ा हुआ; आक्रांत।

आसान–वि० (फा०) सहल, सुगम, सीधा।

आसानी–स्त्री० सहल होना, सुगमता।

आसाम–पु० भारतका एक राज्य जो उसकी उत्तर-पूर्वी सीमा है, असम राज्य।

आसामी–वि० आसामका; आसाम-संबंधी। पु० आसामवासी; दे० 'असामी'। स्त्री० आसामकी भाषा, असमीया।

आसार–पु० (सं०) मूसलधार वृष्टि; शत्रुको घेर लेना; आक्रमण; मित्र राजकी सेना; रसद। (अ०) पदचिह्न; चिह्न, लक्षण; खँडहर; नीवें; दीवारकी चौड़ाई ('असर'का बहु०)। **–(रे)-कदीमा**–पु० पुराने जमानेमें खँडहर आदि; पुरानी इमारत।

आसाव–वि० (सं०) प्रशंसा करनेवाला। पु० सोमरस निचोड़नेवाला।

आसावरी–स्त्री० श्री रागकी एक रागिनी।

आसिक–वि० (सं०) खड्गधारी; खड्गसे युद्ध करनेवाला।

आसिख, आसिखा*–स्त्री० आशीर्वाद।

आसित–वि० (सं०) बैठा हुआ; आरामसे बैठा हुआ। पु० बैठना; आसन; रहनेका स्थान; बैठनेका ढंग।

आसिद्ध–वि० (सं०) हिरासत या कैदमें रखा हुआ (प्रतिवादी); जिसके संबंधमें प्रतिबंध लगा हो।

आसिन|–पु० आश्विन, क्वार।

आसिया–स्त्री० (फा०) चक्की, जाँता।

आसिरवचन*–पु० आशीर्वाद।

आसिष्य*–पु० आशीष, आशीर्वाद।

आसी*–वि० दे० 'आशी'।

आसीन–वि० (सं०) बैठा हुआ। **–पाठ्य**–पु० लास्यके दस अंगों-मेंसे एक (ना०)।

आसीवन–पु० (सं०) सीना, टाँके लगाना।

आसीस–स्त्री० आशीर्वाद।

आसीसा–पु० तकिया।

आसु*–सर्व० इसका। अ० दे० 'आशु'। **–ग**–वि० दे० 'आशुग'। **–तोष**–वि०, पु० दे० 'आशुतोष'।

आसुत–वि० चुआया हुआ; आसव बनाया हुआ।

आसुति–स्त्री० (सं०) चुआना; शराब चुआना; काढ़ा; प्रसव।

आसुतीबल–पु० (सं०) पुरोहित; कलाल; कन्यापालक।

आसुर–वि० (सं०) असुरका; असुर-संबंधी; यज्ञ न करनेवाला; ईश्वरीय, दैवी। पु० वह विवाह जिसमें वर कन्याके पिता-माताको धन देकर कन्याको खरीदता है; काला नमक; राक्षस; रक्त।

आसुरि–पु० (सं०) सांख्य दर्शनके प्रवर्तक कपिल मुनिका एक शिष्य।

आसुरी–स्त्री० (सं०) असुर-स्त्री, दानवी; शल्य-चिकित्सा; राई; काली सरसों। वि० स्त्री० दे० 'आसुर'। **–चिकित्सा**–स्त्री० शल्य-चिकित्सा। **–माया**–स्त्री० असुरोंकी माया। **–संपत्**–स्त्री० बुरे तरीकेसे प्राप्त किया हुआ धन। **–सृष्टि**–स्त्री० दैवी आपत्ति।

आसू*–अ० दे० 'आशु'।

आसूत्रित–वि० (सं०) माला बनाने या धारण करनेवाला; ओत-प्रोत; बुना हुआ।

आसूदगी–स्त्री० (फा०) आसूदा होना, तृप्ति।

आसूदा–वि० (फा०) तृप्त, संतुष्ट। **–हाल**–वि० खुशहाल, खाने-पीनेसे सुखी।

आसेक–पु० (सं०) भिगाना, तर करना, सिंचन करना।

आसेक्य–पु० (सं०) एक तरहका नपुंसक।

आसेचन–पु० (सं०) दे० 'आसेक'। वि० सुंदर; प्रिय।

आसेचनी–स्त्री० (सं०) छोटा पात्र।

आसेतुहिमाचल–वि० (सं०) सेतुबंध रामेश्वरसे हिमालयतक विस्तीर्ण (भारत, राज्य)।

आसेद्धा(द्धृ)–पु० (सं०) कैद करनेवाला।

आसेध–पु० (सं०) कैद, रोक, प्रतिबंध (का०)।

आसेधक–वि० (सं०) कैद करनेवाला, रोक रखनेवाला।

आसेब–पु० (फा०) चोट; कष्ट; बाधा, प्रेतबाधा।

आसेवन–पु०, **आसेवा**–स्त्री० (सं०) सतत सेवन; बार-बार होनेका भाव; संपर्क।

आसेवित–वि० (सं०) किया हुआ; बार-बार किया हुआ।

आसेवी(विन्)–वि० (सं०) लगनके साथ बार-बार करनेवाला; सेवन करनेवाला।

आसेव्य–वि० (सं०) सेवनके योग्य; बार-बार जाकर देखने योग्य।

आसोज, आसोजा|–पु० आश्विन मास।

आसौं*–अ० इस साल।

आस्कंद, आस्कंदन–पु० (सं०) आक्रमण; आरोहण; रौंदना; युद्ध; घोड़ेकी सरपट चाल; तिरस्कार, गाली, आक्रामक; शोषण; नष्ट करना।

आस्कंदित–वि० (सं०) भारग्रस्त। पु० घोड़ेकी सरपट चाल।

आस्कंदितक–पु० (सं०) दे० 'आस्कंदित'।

आस्कंदी(दिन्)–वि० (सं०) आक्रमण करनेवाला; बहानेवाला; देनेवाला; व्यय करनेवाला; अपहरण करनेवाला।

आस्तर–पु० (सं०) आच्छादन; बिस्तर; कंबल; कालीन; गद्दा; फैलाना।

आस्तरण–पु० (सं०) फैलाना; बिछाना; दरी; गद्दा; झूल; यज्ञमें फैलाये हुए कुश।

आस्तरणिक–वि० (सं०) फैलाया जानेवाला; कालीन, दरी आदिपर सोनेवाला।

आस्तार–पु० (सं०) फैलाना; बिखेरना। **–पंक्ति**–स्त्री० एक वृत्त।

आस्ताव–पु० (सं०) स्तुति; यज्ञमें स्तुतिपाठका स्थान।

आस्तिक–वि० (सं०) ईश्वर और परलोकको माननेवाला; वेदको माननेवाला; धर्मनिष्ठ। पु० ईश्वर तथा परलोकमें विश्वास करनेवाला व्यक्ति।

आस्तिकता–स्त्री०, **आस्तिकत्व**–पु० (सं०) दे० 'आस्तिक्य'।

आस्तिक्य–पु० (सं०) ईश्वर आदिमें विश्वास; धार्मिकता।

आस्तीक–पु० (सं०) एक ऋषि जिनकी सिफारिशसे जनमेजयने अपने सर्पसत्रमें तक्षक नागकी जान बख्श दी।

आस्तीन–स्त्री० (फा०) सिले कपड़ेका बाँहपरका भाग, बाँही। **मु० –का साँप**–मित्र बनकर शत्रुता करनेवाला, दोस्तनुमा दुश्मन। **–चढ़ाना**–लड़नेको तैयार होना; किसी कामके लिए तैयार होना।

आस्ते*–अ० दे० 'आहिस्ता'।

आस्त्र–वि० (सं०) अस्त्र-संबंधी।

आस्थगन–पु० (अवेयंस) कुछ समयके लिए स्थगित कर देना या लागू न करना।

आस्थगित–वि० (सं०) (डिफर्ड) (वेतन, मुनाफा आदि) जिसका दिया या चुकाया जाना निर्धारित अवधि तक या कोई खास शर्त पूरी होनेतक स्थगित रखा जाय।

आस्था–स्त्री० (सं०) आदर; विश्वास; श्रद्धा; आलंबन, सहारा; सभा; वादा; आशा; स्थिति; प्रयत्न; रहनेका साधन या स्थान; मूल्य, धारणा, आदिमें विश्वास।

आस्थाता(तृ)–वि० (सं०) खड़ा होनेवाला; आरोहण करनेवाला।

आस्थान–पु० (सं०) स्थान; सभा; सभागृह; दरबार; मनोरंजनका स्थान; श्रद्धा; आस्था।

आस्थानी–स्त्री० (सं०) सभाभवन।

आस्थापन–पु० (सं०) अच्छी तरह स्थापन; बलकारक औषध; स्नेहवस्ति।

आस्थायिका–स्त्री० (सं०) दरबार।

आस्थित–वि० (सं०) रहा हुआ; सहारा लिया हुआ; पहुँचा हुआ; प्राप्त कर चुका हुआ; लब्ध; घेरा हुआ।

आस्थिति–स्त्री० (सं०) स्थिति, हालत।

आस्नान–पु० (सं०) स्वच्छता, पवित्रता; धोने या स्नान करनेका जल।

आस्पद–पु० (सं०) स्थान; अधिष्ठान, आलंबन; पद; अल्ल, कुलकी उपाधि; काम; कुंडलीमें दशम स्थान।

आस्पर्धा–स्त्री० (सं०) स्पर्धा, लागडाट, होड़।

आस्पर्धी(धिन्)–वि० (सं०) स्पर्धा करनेवाला।

आस्फाल–पु० (सं०) मारना; रगड़ना; हिलाना; हाथीका कान फड़फड़ाना; दाबना; धक्का देना।

आस्फालन–पु० (सं०) रगड़ना; हिलाना; फड़फड़ाना; धक्का देना; घमंड।

आस्फुजित्–पु० (सं०) शुक्र ग्रह।

आस्फोट–पु० (सं०) ताली बजाने या ताल ठोकनेकी आवाज; रगड़ या धक्का; हिलना; काँपना; आक।

आस्फोटक–वि० (सं०) ताल ठोकनेवाला। पु० अखरोट।

आस्फोटन–पु० (सं०) ताल ठोकना; हिलाना-डुलाना; फैलना; फूलना; विकास; सिकुड़ना; प्रकट करना; फटकना; माँड़ना।

आस्फोटनी–स्त्री० (सं०) छेद करनेकी बरमी।

आस्फोटा–स्त्री० (सं०) नवमल्लिका; वनमल्लिका।

आस्फोत, आस्फोतक–पु० (सं०) अर्क; कोविदार; भू-पलाश।

आस्फोतका, आस्फोता–स्त्री० (सं०) मल्लिका; अपराजिता; सारिवा।

आस्यंदन–पु० (सं०) बहना, क्षरित होना।

आस्य–पु० (सं०) मुँह, चेहरा। वि० मुख-संबंधी। **–पत्र**–पु० कमल। **–लांगल**–पु० कूकर; शूकर। **–लोम(न्)**–पु० दाढ़ी।

आस्या–स्त्री० (सं०) बैठना; निवास; निवासस्थान; विश्रामावस्था।

आस्यासव–पु० (सं०) लाला।

आस्यूत–वि० (सं०) सिला हुआ; साथ सिला हुआ।

आस्र–पु० (सं०) रक्त। **–प**–वि० रक्त पीनेवाला। पु० राक्षस; मूल नक्षत्र।

आस्रव–पु० (सं०) बहाव; जलाशयका वह द्वार जिससे आवश्यकता होनेपर पानी लेते और फिर बंद कर देते हैं; पकते हुए चावलका फेन; दोष; क्लेश; बाह्य विषयोंकी ओर प्रेरित करनेवाला ज्ञानेन्द्रियोंका कार्य।

आस्राव–पु० (सं०) बहाव; घाव; थूक; पीड़ा; एक विशेष रोग।

आस्वनित–वि० (सं०) दे० 'आस्वांत'।

आस्वांत–वि० (सं०) शब्द किया हुआ, ध्वनित।

आस्वाद–पु० (सं०) रस, स्वाद, मजा; रसानुभव, चखना; किसी भी कलात्मक रचनाको सहृदयतापूर्वक समझनेकी प्रक्रिया।

आस्वादन–पु० (सं०) रस, स्वाद लेना, चखना; खाना।

आस्वादित–वि० (सं०) चखा, स्वाद लिया, खाया हुआ।

आस्वाद्य–वि० (सं०) चखने, स्वाद लेने योग्य; मजेदार।

आह–अ० क्लेश, शोक, वेदना आदिका सूचक उद्गार, हाय। स्त्री० दुःख, पीड़ा प्रकट करनेवाली ध्वनि, कलपने, कराहनेकी आवाज; हाय, ठंढी साँस; शाप। * पु० साहस; जोर, बल; क्रोध; ललकार। **मु०–करना**–कलपना। **–खींचना**–ठंढी साँसके साथ आह करना, कलपना। **–पड़ना**–शाप पड़ना, किसीको सताने, रुलानेका फल मिलना। **–भरना**–दे० 'आह खींचना'। **–मारना**–ठंढी साँस खींचना।। **–लेना**–सताना; सतानेका फल अपने ऊपर लेना।

आहक–पु० (सं०) नाकका एक रोग।

आहट–स्त्री० किसीके चलने, हिलने आदिसे होनेवाली हल्की आवाज, चाप; किसीकी उपस्थितिका अनुमान करानेवाली ध्वनि; टोह। **मु०–लेना**–आहट पाने, टोह लेनेके लिए कान लगाये रहना।

आहत–वि० (सं०) जिसपर प्रहार, आघात किया गया हो; घायल; मारा हुआ, हत; रौंदा हुआ; बजाया हुआ; हटाया, निकाला हुआ; गुणित; ज्ञात; लुढ़काया हुआ; धुला हुआ या नया (वस्त्र); पुराना; कंपित; व्याघातदोषयुक्त, असंगत (वाक्य)। पु० ढोल; पुराना कपड़ा; नवीन वस्त्र; किसी असंभव या मिथ्या बातपर जोर देना। **–नाद**–पु० आघातसे, बाजे आदिसे, उत्पन्न होनेवाला नाद। **–लक्षण**–वि० गुणोंके लिए प्रसिद्ध।

आहति–स्त्री० (सं०) आघात; वध; गुणन।

आहतोपचारी दल–पु० (ऐंबूलेंसकोर) घायलोंका उपचार करनेवाले डाक्टरों, कंपाउंडरों, परिचारकों आदिका दल; **अस्पताली दल**, रोगिवाहक दल।

आहन–पु० (फा०) लोहा। **–रुबा**–पु० चुंबक पत्थर।

आहनन–पु० (सं०) मारना, पीटना; डंडा।

आहननीय–वि० (सं०) डंका बजाकर प्रसिद्धि करनेवाला; मारने योग्य।

आहनी–वि० (फा०) लोहेका; लोहे जैसा कठिन, कठोर।

आहर–पु० (सं०) लाना; ग्रहण; पूरा करना (याज्ञदि); साँस लेना; साँससे खींची गयी हवा; बलिप्रदान; * समय; दिन; युद्ध; पशुओंके धोने आदिके लिए बना हुआ जलाधार।

आहरण–पु० (सं०) लेना; छीन लेना; उठा ले जाना; लाना; प्रवृत्त करना; हटाना; यज्ञादि पूरा करना; विवाहके समय दुलहिनको उपहार-रूपमें दिया जानेवाला धन।

आहरन–पु० निहाई ।

आहर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) आहरण करनेवाला; छीनने, लेनेवाला; लानेवाला; अनुष्टान, यज्ञादि करनेवाला; प्रवृत्त करनेवाला ।

आहव–पु० (सं०) यज्ञ; युद्ध; आह्वान; ललकार ।

आहवन–पु० (सं०) यज्ञ; हवि ।

आहवनीय–वि० (सं०) आहुति देने योग्य । पु० यज्ञकी तीन अग्नियोंमेंसे एक ।

आहाँ*–स्त्री० दुहाई, पुकार, आह्वान । †अ० निषेधसूचक शब्द ।

आहा–अ० हर्ष, आश्चर्य व्यक्त करनेवाला उद्गार, अहाहा ।

आहार–पु० (सं०) ग्रहण, लेना; लाना; खाना, भोजन; खानेकी वस्तु । **–नाल**–पु० दे० 'पोषिका' । **–पाक**–पु० पकानेकी क्रिया; आँतोंमें खाद्य पदार्थका पचना । **–विज्ञान**–पु० **–विद्या**–स्त्री०, **–शास्त्र**–पु० (डाइटेटिक्स) वह विज्ञान जिसमें खाद्य पदार्थोंके गुण-दोषों, योग, पोषक-तत्त्वों, वर्गीकरण आदिका विवेचन हो । **–विरह**–पु० आहारकी कमी; भुखमरी । **–विहार**–पु० भोजन, शयन, श्रम आदि । **–संभव**–पु० शरीरका रस, लसीका ।

आहारक–वि० (सं०) पास लानेवाला ।

आहारिक–पु० (सं०) आत्माके पाँच प्रकारके शरीरोंमेंसे एक (जै०) ।

आहारी(रिन्)–वि० (सं०) ग्रहण करनेवाला; खानेवाला; एकत्र करनेवाला ।

आहार्य–वि० (सं०) ग्रहण करने, लेने, लाने, छीनने, खाने योग्य; बनावटी; अभिप्रेत; ऊपरी; व्याप्य; पूजाके योग्य (जैसे अग्नि) । पु० अनुभावके चार प्रकारोंमेंसे एक, नायक-नायिकाका एक-दूसरेका भेस बनाना; अभिनयके चार प्रकारोंमेंसे एक; एक तरहकी पट्टी या बंध (आ० वे०); शस्त्रोपचारवाला रोग ।

आहार्याभिनय–पु० (सं०) बिना कुछ कहे या किये केवल रूप या भेससे भाव व्यक्त करना; वस्त्रादि द्वारा वेश-विन्यास (ना०) ।

आहार्योदक सेतु–पु० (सं०) ऐसी नहर जिसमेंका पानी कहींसे खींचकर लाया गया हो ।

आहाव–पु० (सं०) अग्नि; युद्ध; ललकार; पशुओंके पानी पीनेके लिए कुएँके पास बनी हुई टंकी ।

आहिंडन–पु० (वैग्रैंसी) बेघर द्वारके, बेमतलब इधर-उधर भटकना; बेकार घूमना, आवारागर्दी ।

आहिंडिक–पु० (सं०) स्मृतियोंके अनुसार निषाद पिता और वैदेही मातासे उत्पन्न वर्णसंकर ।

आहि*–अ० क्रि० है–'जानैको आहि बसै केहि ग्रामा'–सुदामा० ।

आहिक–पु० (सं०) केतु; पाणिनि ।

आहित–वि० (सं०) रखा हुआ, स्थापित; अमानत या बंधक रखा हुआ; किया हुआ । **–क्लम**–वि० थका हुआ । **–दास**–पु० कर्ज पटानेके लिए दासत्व स्वीकार करनेवाला व्यक्ति । **–लक्षण**–वि० परिचायक चिह्नवाला । **–स्वन**–वि० शोर करनेवाला ।

आहितक–पु० (सं०) बंधक रखा हुआ माल ।

आहितांक–वि० (सं०) चिह्नित ।

आहिताग्नि–पु० (सं०) अग्निकी स्थापना कर उसे रखनेवाला अग्निहोत्री ।

आहिति–स्त्री० (सं०) स्थापना ।

आहिस्ता–अ० (फा०) धीरेसे; धीरे-धीरे; धीमी आवाजसे । **-आहिस्ता**–अ० धीरे-धीरे, क्रमशः ।

आहुक–पु० (सं०) कृष्णके दादा ।

आहुत–वि० (सं०) देवादिके लिए हविरूपमें अर्पित, होमा हुआ । पु० अतिथियज्ञ, अतिथिका भोजनादिसे सत्कार; पाँच यज्ञोंमेंसे एक, भूतयज्ञ ।

आहुति–स्त्री० (सं०) यज्ञ या हवनमें हवनसामग्रीको अग्निमें डालना; हवनसामग्री; उतनी हवनसामग्री जो एक बारमें अग्निमें डाली जाय; बलि, कुर्बानी; ललकार, चुनौती ।

आहुती*–स्त्री० यज्ञाग्निमें हवनसामग्री डालना; हवनके रूपमें डाली जानेवाली वस्तु ।

आहुल्य–पु० (सं०) एक क्षुप ।

आहू–पु० (फा०) हिरन । **–(ए)तर**–पु० बादल । **–(ए) फलक**–पु० सूर्य ।

आहूत–वि० (सं०) बुलाया, पुकारा, न्योता हुआ; नाम दिया हुआ । **–पूंजी**–स्त्री० (कॉल्ड अप कैपिटल) किसी कारखाने, कंपनी आदिके बिके हुए हिस्सोंका वह अंश जो आवश्यकता पड़नेपर संचालकों द्वारा हिस्सेदारोंसे माँगा जाय, अभियाचित पूंजी । **–संप्लव**–पु० प्रलयकाल ।

आहूति–स्त्री० (सं०) बुलाना, पुकारना ।

आहृत–वि० (सं०) छीना या लिया हुआ; लाया हुआ ।

आहेय–वि० (सं०) सर्प-संबंधी ।

आह्न–वि० (सं०) दैनिक, रोजका ।

आह्निक–वि० (सं०) दैनिक; एक दिन या प्रतिदिनका । पु० नित्यकर्म; एक दिनका काम; पाठ; अध्यापक । **–कर्म(न्)**–पु० नित्यकर्म ।

आह्लाद–पु० (सं०) हर्ष, आनंद, खुशी ।

आह्लादन–पु० (सं०) हर्ष, आनंद देना । वि० हर्ष, आनंद देनेवाला ।

आह्लादित–वि० (सं०) आह्लादयुक्त, आनंदित ।

आह्लादी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न; आह्लादजनक ।

आह्वय–पु० (सं०) नाम ।

आह्वयन–पु० (सं०) नाम; नाम लेना ।

आह्वान–पु० (सं०) पुकारना, बुलाना; पुकार, बुलावा; देवताका आवाहन; अदालतमें हाजिर होनेका आदेश, तलबनामा; ललकार, चुनौती; नाम । **–दर्शन**–पु० अभियोगपर विचार होनेका दिन । **–पत्र**–पु० (समंस) न्यायालयमें उपस्थित होनेका आदेश, सम्मन ।

आह्वाय–पु० (सं०) तलबनामा, समन; नाम ।

आह्वायक–वि० (सं०) आह्वान करनेवाला । पु० संदेहवाहक ।

इ

इ–देवनागरी वर्णमालाका तीसरा (स्वर) वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान तालु है ।

इंक–स्त्री० (अं०) स्याही, रोशनाई । **–टेबुल**–पु० छापेखाने (हैंडप्रेस)की वह मेज या चौकी जिसपर छपनेवाले मैटरपर देनेके लिए स्याही पुती रहती है । **–पॉट**–पु० दावात । **–पैड**–पु० स्याही लगी गद्दी जो रबरकी मुहर आदिपर स्याही लगानेके काम आती है । **–मैन**–पु० छापेखानेमें स्याही देनेका काम करनेवाला कर्मचारी । **–रोलर**–पु० छपनेवाले मैटरपर स्याही देनेका बेलन ।

इंग–पु० (सं०) संकेत; चिह्न; अंगोंके द्वारा भावाभिव्यक्ति; ज्ञान; हाथीदाँत । वि० चल, गतिमान्; आश्चर्यजनक ।

इंगन–पु० (सं०) चलना; हिलना; चलाना; हिलाना; इशारा करना; ज्ञान, जानना ।

इंगनी–स्त्री० एक खनिज द्रव्य, मैंगनीज ।

इंगला–स्त्री० इडा नामकी नाडी ।

इंगलिश, इंग्लिश–वि० (अं०) इंग्लैंडका; इंग्लैंडमें उत्पन्न या बना । स्त्री० अंग्रेजी भाषा । **–मैन**–पु० अंग्रेज, इंग्लैंडवासी ।

इंगलिस्तान, इंग्लिस्तान–पु० इंग्लैंड ।

इंगलिस्तानी, इंग्लिस्तानी–वि० अंग्रेजी, इंग्लिश ।

इंगलैंड, इंग्लैंड–पु० (अं०) इंग्लिस्तान, अंग्रेजोंका देश ।

इंगित–पु० (सं०) संकेत, इशारा; मनका भाव, अभिप्राय; मनका भाव बतानेवाली अंगचेष्टा; हिलना, डोलना । वि० चलित, कंपित; हिला या हिलता हुआ । **–कोबिद,–ज्ञ**–वि० अंगचेष्टा द्वारा आंतरिक भावोंको जानने या प्रकट करनेमें कुशल ।

इंगु–पु० (सं०) एक रोग ।

इंगुद–पु०, **इंगुदी**–स्त्री०, **इंगुल**–पु० (सं०) हिंगोटका पेड़; मालकँगनी; हिंगोटकी गिरी ।

इंगुर*–पु० दे० 'ईंगुर' ।

इंगुरौटी–स्त्री० इंगुर या सेंदुर रखनेकी डिबिया ।

इंगुवा–पु० हिंगोटका वृक्ष या उसका फल ।

इंच–पु० (अं०) फुटका बारहवाँ भाग, तीन जौकी लंबाई; अल्पांश (ला०) ।

इंचना*–अ० क्रि० खिंचना ।

इंचाक–पु० (सं०) जलवृश्चिक, एक तरहकी मछली ।

इंचार्ज–वि० (अं०) जिसपर किसी कार्य या विभागकी देखभालका भार हो ।

इंजन–पु० भाप आदिकी शक्तिको चालक शक्तिमें बदल देनेवाला यंत्र; रेलवे इंजन; साधन; कल, यंत्र । **–ड्राइवर**–पु० इंजन चलानेवाला ।

इंजर–पु० दे० 'समुंदरफल' ।

इंजीनियर–पु० (अं०) इंजन बनानेवाला; यंत्रविशेषज्ञ; नहर, पुल आदिके नकशे बनाने और उनके निर्माणकी निगरानी करनेवाला ।

इंजीनियरिंग–स्त्री० (अं०) इंजीनियरका काम; लोहेके कल-पुरजे बनानेका काम ।

इंजील–स्त्री० (यू०) ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक, बाइबिल; खुशखबरी ।

इंटकोहरा–पु० ईंटका टुकड़ा, गिट्टी ।

इंटरनेशनल–वि० (अं०) दो या अधिक राष्ट्रोंके बीचका या उनसे संबद्ध, अंतरराष्ट्रीय । पु० संयुक्त प्रयत्नके उद्देश्यसे किया गया श्रमिकवर्गका सार्वदेशिक सम्मेलन । (**थर्ड इंटरनेशनल**–पु० उक्त प्रकारका तीसरा सम्मेलन जो बोलशेवी दलकी विजयके बाद १९१८ में रूसमें हुआ, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ।)

इंटरमीडियेट–वि० (अं०) बीचका, दरमियानी । **–क्लास**–पु० कालेजकी पढ़ाईका पहला दरजा, हाईस्कूल और बी० ए० के बीचकी कक्षा; रेलमें तीसरे और दूसरे दरजोंके बीचका दरजा, ड्योढ़ा दरजा, इंटर क्लास ।

इंटरव्यू–पु० (अं०) मिलना, मुलाकात; समाचार-पत्रके प्रतिनिधिका किसीसे किसी विषयपर उसका मत जानने या वक्तव्य लेनेके लिए मिलना (करना, लेना) ।

इंट्रेंस–पु० (अं०) द्वार, प्रवेशमार्ग; प्रवेशिका (अंग्रेजी) परीक्षा ।

इंडहर–पु० उर्दकी दालसे बना एक खाद्य पदार्थ ।

इंडियन–वि०, पु० (अं०) भारतीय, भारतवासी ।

इंडिया–पु० (अं०) भारतवर्ष, हिंदुस्तान ।

इंडुरी*–स्त्री०, **इँडुवा**–पु० गेंडुरी, बिड़ई ।

इंडेंट–पु० (अं०) मालकी फरमाइश (खासकर देसावरसे); मालकी फरमाइशके साथ भेजी जानेवाली मालकी सूची; छपाईमें मैटरके एक या दोनों ओर अधिक जगह छोड़ना ।

इंडेक्स–पु० (अं०) किसी पुस्तकके विषयों या विशेष शब्दोंकी अकारादि-क्रमसे बनी हुई सूची जो प्रायः पुस्तकके अंतमें दी जाती है, अनुक्रमणिका । **–नंबर**–पु० भावों आदिकी सूची जिससे उनका उतार-चढ़ाव जाना जा सके ।

इंतकाम, इंतिकाम–पु० (अ०) बदला लेना ।

इंतक़ाल, इंतिक़ाल–पु० (अ०) एकसे दूसरी जगह जाना; हस्तांतरित होना; (जायदादका) दूसरेके कब्जेमें जाना; मरना, मृत्यु (करना, फरमाना) । **–जायदाद**–पु० संपत्तिका (रेहन, बय आदिके जरिये) दूसरेके पास जाना ।

इंतख़ाब, इंतिख़ाब–पु० (अ०) चुनना, छाँटना; चुनाव; खसरे-खतियौनीके किसी कागजकी बाजाब्ता नकल ।

इंतज़ाम, इंतिज़ाम–पु० (अ०) प्रबंध करना; व्यवस्था, उपाय ।

इंतज़ामी, इंतिज़ाम–वि० (अ०) प्रबंध-संबंधी ।

इंतज़ार, इंतिज़ार–पु० (अ०) प्रतीक्षा करना; राह देखना; प्रतीक्षा ।

इंतशार, इंतिशार–पु० (अ०) बिखरना; चिंतित, उद्विग्न होना; चिंता, परेशानी ।

इंतहा, इंतिहा–स्त्री० (अ०) अंत, समाप्ति; सीमा । **–पसंद**–वि० अतिवादी, 'एक्सट्रीमिस्ट' । **मु० –कर देना**–अति करना, हद कर देना ।

इंतहाई, इंतिहाई–वि० (अ०) अतिशय, हद दर्जेकी ।

इंदंबर–पु० (सं०) दे० 'इंदीवर' ।

इंदे–अ० (अ०) पास, करीब; पर । * पु० दे० 'इंद्र' ।

इंदर*–पु० दे० 'इंद्र' ।

इंदराज–पु० (फा०) बही या हिसाबमें चढ़ाया जाना ।

इंदव–पु० एक वृत्त; * दे० 'इंदु' ।

इंदारा–पु० इनारा, कूप ।

इँदारुन–पु० एक लता और उसका फल जो देखनेमें सुंदर पर स्वादमें बहुत कड़वा होता है (यह विष है, पर दवाके काम आता है), इंद्रायन ।

इंदिंदिर–पु० (सं०) भ्रमर ।

इंदिया–पु० (अ०) राय, विचार; इच्छा ।

इंदिरा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; कांति, शोभा; आश्विन-कृष्णा एकादशी । **–मंदिर**–पु० विष्णु; नील कमल । **–रमण**–पु० विष्णु ।

इंदिरालय–पु० (सं०) लक्ष्मीका निवास, नील कमल ।

इंदिवर, इंदीवर, इंदीवार–पु० (सं०) नील कमल ।

इंदीवरिणी–स्त्री० (सं०) उत्पलिनी ।

इंदीवरी–स्त्री० (सं०) शतमूली ।

इंदु–पु० (सं०) चंद्रमा; एककी संख्या; कपूर; मृगशिरा नक्षत्र । **–कमल**–पु० श्वेत कमल । **–कर**–पु० चंद्र-किरण । **–कला**–स्त्री० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची; सोमलता । **–कलिका**–स्त्री० केतकी; चंद्रकी कला । **–कांत**–पु० चंद्रकांत मणि । **–कांता**–स्त्री० रात्रि; केतकी । **–किरीट**–पु० शिव । **–ज**–पु० बुध ग्रह । **–जनक**–पु० समुद्र; अत्रि ऋषि । **–जा**–स्त्री० नर्मदा नदी । **–नंदन,–पुत्र**–पु० बुध ग्रह । **–पुष्पिका**–स्त्री० कलिकारी । **–भ**–पु० मृगशिरा नक्षत्र । **–भूषण,–भृत्, –मौलि, –शेखर**–पु० शिव । **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि; मोती । **–रत्न**–पु० मोती । **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० चंद्रमाकी कला; अमृता; गुडुची; सोमलता । **–लोहक,–लौह**–पुं० चाँदी । **–वदना**–स्त्री० चंद्रमुखी, एक वर्ण-वृत्त । **–वल्ली**–स्त्री० सोमलता । **–वार**–पु० ज्योतिषका एक योग; सोमवार । **–वासर**–पु० सोमवार । **–व्रत**–पु० चांद्रायण व्रत ।

इंदुआ–पु० दे० 'इँडुरी' ।

इंदुक–पु० (सं०) अश्मंतक नामक वृक्ष ।

इंदुमती–स्त्री० (सं०) पूर्णिमा; अजकी पत्नी ।

इंदुमान्(मत्)–पु० (सं०) अग्नि ।

इंदुलतलब–अ० (अ०) माँगनेपर या जब माँगा जाय (तब लौटाया जानेवाला) ।

इंदूर–पु० (सं०) चूहा ।

इंद्र–पु० (सं०) देवराज; अंतरिक्षका देवता; वर्षाका देवता (देवताओंका राजा होनेके कारण इंद्रको देवराज या सुरपति भी कहते हैं । वज्र धारण करनेसे वज्री या वज्रायुध भी इसका नाम है । इसकी पत्नी शची और पुत्रका नाम जयंत है । इसका वाहन ऐरावत है और रथके घोड़ेका नाम है उच्चैःश्रवा । इसने वृत्रासुरको मारा था और पर्वतोंके पंख काट दिये थे, इससे वृत्रहा और पर्वतारि भी इसका नाम है); मेघ; राजा, अधिपति; श्रेष्ठ, प्रधान व्यक्ति आदि (कवींद्र); दाहिनी आँखकी पुतली; रात्रि; एक योग; कुटज वृक्ष; एक वनस्पतिजन्य विष; छप्पय छंदका एक भेद; १४ की संख्या; आत्मा; जंबुद्वीपका एक भाग । **–कर्मा(र्मन्)**–पु० विष्णु । **–कार्मुक**–पु० इंद्रधनुष । **–कील**–पु० मंदर पर्वत । **–कुंजर**–पु० ऐरावत हाथी । **–कूट**–पु० एक पर्वत । **–कृष्ट**–वि० बिना जोते-बोये उत्पन्न होनेवाला । **–कोश,–कोष,–कोषक**–पु० पलंग; मचान; छज्जा । **–गिरि**–पु० महेंद्र पर्वत । **–गुरु**–पु० बृहस्पति । **–गोप,–गोपक**–पु० बीरबहूटी । **–चंदन**–पु० हरिचंदन । **–चाप**–पु० इंद्रधनुष् । **–चिर्भिटी**–स्त्री० लताविशेष, दीर्घवृंता । **–छंद(स्)**–पु० एक हजार आठ लड़ियों (मोतियों ?) का हार । **–जाल**–पु० जादू, नजर-बंदीके काम, हाथकी सफाईके काम, बाजीगरी; अर्जुनका एक अस्त्र; एक रणकौशल । **–जालिक**–पु० इंद्रजाल करनेवाला, जादूगर, बाजीगर । **–जित्**–वि० इंद्रको जीतनेवाला ।

पु० रावणका वेटा, मेघनाद । **–जौ**–पु० (हिं०) दे० 'इंद्रयव' । **–तरु**–पु० दे० 'इंद्रद्रुम' । **–तापन**–पु० वादलोंका गर्जन; एक दानव । **–तूल,–तूलक**–पु० रुईका ढेर; हवामें उड़नेवाला सूत । **–दमन**–पु० बाढ़में नदीके पानीका किसी बट, पीपल या कुंडतक पहुँच जाना; मेघनाद; बाणासुरका एक वेटा । **–दारु**–पु० देवदारुका पेड़ । **–द्रुम**–पु० अर्जुनका पेड़ । **–द्वीप**–पु० जंबुद्वीपके ९ खंडोंमेंसे एक । **–धनुष**–पु० बरसातमें आकाशमें अक्सर दिखाई देनेवाला सतरंगा अर्द्धवृत्त । **–ध्वज**–पु० इंद्रकी पताका; भाद्रशुक्ला द्वादशीको होनेवाला इंद्रका पूजन जिसमें इंद्रको पताका चढ़ायी जाती है । **–नील**–पु० नीलकांत मणि । **–नेत्र**–पु० इंद्रकी आँखें; एक हजारकी संख्या (इंद्रकी आँखोंकी गिनतीसे) । **–पर्णी,–पुष्पी**–स्त्री० एक वनौषधि, करियारी । **–पुरोहित**–पु० वृहस्पति । **–प्रस्थ**–पु० पांडवोंकी राजधानी जो खांडव वन जलाकर वसायी गयी थी (इसके खँडहर आजकलकी दिल्लीसे कुछ ही मीलपर मिलते हैं) । **–प्रहरण**–पु० वज्र । **–भेषज**–पु० सोंठ । **–मंडल**–पु० अभिजितसे अनुराधातकके सात नक्षत्र । **–मख**–पु० इंद्रकी तुष्टिके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ । **–मद**–पु० पहली वर्षासे मछलियोंको होनेवाला एक रोग । **–मह**–पु० वर्षा ऋतु । **–० कामुक**–पु० कुत्ता । **–यव**–पु० कुटजका वीज, इंद्रजौ । **–लुप्त, –लुप्तक**–पु० सिरके वाल झड़ जानेका रोग, गंजापन । **–लोक**–पु० स्वर्ग । **–वंशा**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–वज्रा**–स्त्री० एक वर्णवृत्त 'स्यादिंद्रवज्रा यदि तौ जगौ ग:' । **–वधू**–स्त्री० वीरवहूटी । **–वल्लरी, –वल्ली**–स्त्री० पारिजात । **–वस्ति**–स्त्री० पैरका मांसल भाग । **–वारुणिका,–वारुणी**–स्त्री० इंद्रायन । **–वृद्धा**–स्त्री० एक तरहका व्रण । **–व्रत**–पु० राजाका प्रजाके समृद्धिसाधनमें इंद्रका अनुसरण करना, जो जल बरसाकर संपूर्ण प्राणियोंका पोषण करता है । **–शक्ति**–स्त्री० इंद्राणी । **–शत्रु**–पु० वृत्रासुर; प्रह्लाद । **–शैल**–पु० एक पर्वत । **–सारथि**–पु० मातलि; वायु । **–सावर्णि**–पु० चौदहवें मनु । **–सुत,–सूनु**–पु० जयंत; अर्जुन; वालि । **–सुरस,–सुरिस**–पु०,**–सुरा**–स्त्री० सिंदुवार वृक्ष । **–सेन**–पु० राजा वलिका एक नाम । **–सेनानी**–पु० कार्त्तिकेय । **–स्तोम**–पु० इंद्रकी प्रसन्नताके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ; इंद्रका एक स्तोत्र । **–का अखाड़ा**–इंद्रसभा; नाच-रंगकी खूब जमी हुई महफिल । **–की परी**–अप्सरा; अति रूपवती स्त्री ।

इंद्रक–पु० (सं०) सभागृह; वड़ा कमरा ।

इंद्रप्रस्थ–पु० (सं०) दे० 'इंद्र'में ।

इंद्रा–स्त्री० (सं०) इद्रकी पत्नी, शची, इंद्रायन ।

इंद्राग्निधूम–पु० (सं०) हिम ।

इंद्राणिका–स्त्री० (सं०) इंद्रसुरिस, निर्गुंडी ।

इंद्राणी–स्त्री० (सं०) इंद्रकी पत्नी; दुर्गा; वायीं आँखकी पुतली; वड़ी इलायची; नील सिंदुवार; इंद्रायन ।

इंद्रानी*–स्त्री० दे० 'इंद्राणी' ।

इंद्रानुज, इंद्रावरज–पु० (सं०) विष्णु ।

इंद्रायन–पु० एक लता जिसका फल कड़वा होता है और दवाके काम आता है ।

इंद्रायुध–पु० (सं०) वज्र; इंद्रधनुष् ।

इंद्रावसान–पु० (सं०) मरुस्थल ।

इंद्राशन–पु० (सं०) भाँग; घुँघची ।

इंद्रासन–पु० (सं०) इंद्रकी गद्दी; इंद्रपद ।

इंद्रिय–स्त्री० (सं०) शरीरके ज्ञान और कर्मके साधन-रूप अंग, वे अवयव जिनसे बहिर्जगत्का बोध होता या शारीरिक क्रियाएँ संपन्न होती हैं–(ज्ञानेंद्रिय–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा; कर्मेंद्रिय–हाथ, पाँव, वाक, गुदा और उपस्थ । कुछ दर्शन मनको भी इंद्रिय मानते हैं); इंद्रियकी शक्ति; वीर्य; लिंगेंद्रिय; पाँचकी संख्या । **–गोचर**–वि० इंद्रियोंका विषय होने योग्य, इंद्रियग्राह्य; ज्ञेय । पु० इंद्रियोंका विषय । **–ग्राम,–वर्ग**–पु० पाँचों ज्ञानेंद्रियोंकी समष्टि । **–जित्**–वि० इंद्रियोंको वशमें रखनेवाला, जितेंद्रिय । **–निग्रह**–पु० इंद्रियों, भोगेच्छाओंको वशमें या अंकुशमें रखना । **–बुद्धि**–स्त्री० इंद्रियोंके द्वारा होनेवाली अनुभूति । **–बोध**–पु० इंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभवोंके आधारपर निःसृत ज्ञान । **–बोधन**–वि० इंद्रियोंको उत्तेजित करनेवाला । **–लोलुप**–विषय-भोगकी उत्कट इच्छा करनेवाला । **–वध**–पु० इंद्रियोंका निःसक्त होना । **–वृत्ति**–स्त्री० इंद्रियोंका व्यापार । **–सुख**–पु० विषय-सुख, भोग । **–० वाद**–पु० (सेंशुअलिज्म) दे० 'इंद्रियार्थवाद' । **–स्वाप**–पु० इंद्रियोंकी सुषुप्ति; इंद्रियोंको किसी विषयका ज्ञान न होना; जड़ता; प्रलय ।

इंद्रियागोचर–वि० (सं०) अज्ञेय ।

इंद्रियातीत–वि० (सं०) इंद्रियोंका विषय न होने योग्य, अज्ञेय ।

इंद्रियायतन–पु० (सं०) इंद्रियोंका निवासस्थान, शरीर ।

इंद्रियाराम–वि० (सं०) इंद्रियसुख, विषयभोगमें आसक्त ।

इंद्रियार्थ–पु० (सं०) किसी इंद्रियका विषय–शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंधमेंसे कोई । **–सन्निकर्ष**–पु० इंद्रियोंका अपने विषयके साथ संबंध (जो प्रत्येक ज्ञानका साधन होता है) । **–वाद**–पु० (सेंशुअलिज्म) यह सिद्धांत कि हमें सब तरहका ज्ञान इंद्रियों द्वारा होनेवाले अनुभवसे ही प्राप्त होता है, संवेदनवाद; इंद्रियोंकी तृप्ति ही जीवनका सर्वोच्च लक्ष्य माननेका सिद्धांत, इंद्रियसुखवाद ।

इंद्रियासंग–पु० (सं०) वैराग्य, अनासक्ति, सन्न्यासवृत्ति ।

इंद्रचा*–स्त्री० इंद्रिय ।

इंद्री–स्त्री० दे० 'इंद्रिय ।' **–जुलाब**–पु० अधिक पेशाव लानेवाली दवा ।

इंद्रेज्य–पु० (सं०) वृहस्पति ।

इंध–पु० (सं०) ईंधन; जलाना; परमेश्वर ।

इंधन–पु० (सं०) जलानेकी लकड़ी, कोयला, उपले आदि; जलाना ।

इंधरौड़ा–पु० जलावन रखनेका स्थान ।

इँनारुन–पु० इंद्रायन ।

इंपीरियल–वि० (अं०) साम्राज्य-संवंधी; साम्राज्य-भोगी राष्ट्रसे संवद्ध; सम्राट्के उपयुक्त; शाही । **–प्रेफरेंस**–पु० साम्राज्य-सरकारकी अपने अधीनस्थ देशोंमें साम्राज्यकी वस्तुओंपर आयात-निर्यात-कर वैठानेकी वह नीति जिससे अन्य देशोंकी स्पर्धामें अपना माल सस्ता पड़े ।

इंपीरियलिज्म–पु० (अं०) साम्राज्यवाद; साम्राज्य-विस्तारकी नीति ।

इंशा–स्त्री० (अं०) इबारत; वह पुस्तक जिसमें पत्रादि लिखनेके नियम दिये गये हो ।

इंसान–पु० दे० 'इनसान' ।

इंसाफ़–पु० (अ०) न्याय, निर्णय, फैसला ।

इंस्पेक्टर–पु० (अं०) देखभाल करनेवाला, निरीक्षक ।

इ–पु० (सं०) कामदेव ।

इकंक*–अ० निश्चय ही 'वाल बदन सम है नहीं, रंक मयंक इकंक'–का० कौ० ।

इकंग*–वि० एकतरफा । पु० अर्द्धनारीश्वर, शिव ।

इकंत*–वि०, पु० दे० 'एकांत' ।

इक*–वि० दे० 'एक' । **–आँक***–अ० दे० 'एक-आँक' । **–जोर***–अ० एक साथ । **–डाल**–वि०, पु० दे० 'एक-डाल' । **–तरा**–पु० एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर । **–ताना***–वि० एक-निष्ठ, अनन्यचित्त । **–तार**–वि० एक-रस, समान । अ० निरंतर । **–तारा**–पु० दे० 'एकतारा' । **–ताला**–पु० दे० 'एकताला' । **–तीस**–वि० तीस और एक । पु० ३१ की संख्या । **–पेचा**–पु० एक तरहकी पगड़ी । **–बारगी**–अ० दे० 'एकबारगी' । **–रदन***–पु० दे० 'एकरदन' । **–रस***–वि० दे० 'एकरस' । **–ला**–वि० दे० 'अकेला' । **–लाई**–स्त्री० एक पाटका बना बारीक दुपट्टा; बारीक फर्दी धोती; अकेलापन । **–लौता**–वि० अपने माँ-बापका अकेला (वेटा) । (स्त्री० 'इकलौती' ।) **–सठ**–वि० साठ और एक । पु० ६१ की संख्या । **–सूत***–वि० इकट्ठा; एक साथ । **–हाई–***–अ० एक साथ; एकबारगी ।

इकइस*–वि०, पु० दे० 'इक्कीस' ।

इकट–पु० (सं०) सरकंडेकी कोंपल ।

इकट्ठा–वि० एक जगह रखा हुआ, एकत्र किया हुआ; एक साथ ।

इकतर, इकत्र*–वि० दे० 'एकत्र' ।

इकतरा–पु० दे० 'इक' में ।

इकता–स्त्री० दे० 'एकता' ।

इकताई*–स्त्री० एक होनेका भाव; एकांतप्रियता ।

इक़दाम–पु० (अ०) कदम रखना; आगे वढ़ना; कुछ करनेका उपक्रम; चेष्टा । **–(मे)जुर्म**–पु० कोई अपराध करनेकी चेष्टा ।

इकन्नी–स्त्री० दे० 'एकन्नी' ।

इक़वाल–पु० (अ०) सौभाग्य, समृद्धि, प्रताप; कबूल करना, स्वीकार । **–दावा**–पु० मुद्दईके दावेको स्वीकार कर लेना । **–मंद**–वि० भाग्यशाली, प्रतापी ।

इकवाली गवाह–पु० अपराधि-साक्षी या राज-साक्षी ।

इकराम–पु० (अ०) दान, बख्शिश; अनुग्रह; मान, वड़ाई ।

इक़रार–पु० (अ०) हाँ करना, स्वीकृति; वचन, प्रतिज्ञा । **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र; अनुबंध-पत्र ।

इकलाई–स्त्री० दे० 'इक'में ।

इक़लीम–पु० (अ०) भूखंड; दुनियाके आवाद हिस्सेका सातवाँ भाग; राज्य ।

इकल्ला–वि० एकहरा; एकाकी ।

इकवाई–स्त्री० एक तरहकी निहाई ।

इकसर–वि० दे० 'अकसर' ।

इकसार*–अ० समान ढंगसे ।

इकसीर–स्त्री० (अ०) कीमिया, सस्ती धातुको सोना-चाँदी बनानेकी दवा; लाभदायक औषध; बहुत लाभदायक वस्तु ।

इकहरा–वि० दे० 'एकहरा' ।

इकहाई*–अ० दे० 'इक'में ।

इकांत*–वि०, पु० दे० 'एकांत' ।

इकाई–स्त्री० गणनामें प्रथम अंक या उसका स्थान; वह मान या माप जो दूसरी चीजोंकी नाप-तौलमें मानदंडका काम दे; यौगिक पदार्थके मूल अवयव ।

इकार-पु० (सं०) 'इ' स्वर ।

इकारांत–वि० (सं०) जिसके अंतमें 'इ' हो (शब्द) ।

इकेला*–वि० दे० 'अकेला' ।

इकैठ*–वि० इकट्ठा ।

इकोतर–वि० एक अधिक, एकोत्तर । **–सौ**–वि० एक सौ एक, १०१ ।

इकौँज–स्त्री० वह स्त्री जिसे एक ही संतान हुई हो, काक-वंध्या ।

इकौना–पु० विना छाँटा चावल आदि ।

इकौली–वि०, स्त्री० बेजोड़, यकता ।

इकौसेँ*–अ० अकेले, एकांतमें ।

इकौसा*–वि० एकांत ।

इक्कट–पु० (सं०) एक तरहका सरकंडा, जिसकी चटाई वनती है ।

इक्कवाल–पु० (सं०) अभ्युदय; एक ग्रहयोग ।

इक्का–वि० अकेला; अद्वितीय । पु० एक घोड़ेकी गाड़ी; अकेले लड़नेवाला योद्धा; एक तरहकी बाली; अपने झुंडसे अलग रहनेवाला पशु; ताशका एक बूटीवाला पत्ता । **–दुक्का**–वि० अकेला-दुकेला ।

इक्कावन–वि०, पु० दे० 'इक्यावन' ।

इक्कासी–वि०, पु० दे० 'इक्यासी' ।

इक्की–स्त्री० एक वैलकी गाड़ी; ताशका इक्का ।

इक्कीस–वि० वीस और एक । पु० २१ की संख्या ।

इक्यावन–वि० पचास और एक । पु० ५१ की संख्या ।

इक्यासी–वि० अस्सी और एक । पु० ८१ की संख्या ।

इक्षु–पु० (सं०) ईख; कोकिला वृक्ष; इच्छा । **–कांड**–पु० ईखका डंठल; ईख; कास; मूँज । **–कुट्टक**–पु० ईख एकत्र करनेवाला । **–गंध**–पु० छोटा गोखरू; कास । **–गंधा**–स्त्री० गोखरू; तालमखाना; कास; शुक्ल भूमिकुष्मांड, सफेद विदारीकंद । **–गंधिका**–स्त्री० भूमिकुष्मांड । **–ज**–वि० ईखके रससे बननेवाला । पु० ईखके रससे बननेवाले पदार्थ, गुड़ आदि । **–तुल्या**–स्त्री० कास । **–दंड**–पु० ईखका डंठल । **–दर्भ**–पु०,**–दर्भा**–स्त्री० तृणविशेष । **–नेत्र**–पु० ईखकी गाँठपरकी आँख; एक तरहकी ईख । **–पत्र**–पु० ज्वार; वाजरा । **–पाक**–पु० गुड़ । **–प्र**–पु० शरतृण । **–प्रमेह**–पु० मधुमेह । **–बालिका**–स्त्री० कास । **–मालिनी**–स्त्री० दे० 'इक्षुमती' । **–मूल**–पु० एक तरहकी ईख; ईखकी जड़ । **–मेह**–पु० मधुमेह । **–यंत्र**-पु० ईख पेरनेकी कल । **–यष्टि**–स्त्री० ईखका डंठल । **–रस**–पु० ईखका रस; शीरा; कास । **–रसोद**–पु० इक्षुसमुद्र । **–वल्लरी**,**–वल्ली**–स्त्री० पीले रंगकी एक ईख; क्षीरविदारी । **–वाटिका**,**–वाटी**-स्त्री० पुंड्रक । **–विकार**–पु० गुड़, चीनी आदि । **–विदारी**–स्त्री० विदारीकंद । **–शर्करा**–स्त्री० ईखके रससे बनी शक्कर । **–शाकट**,**–शाकिन**–पु० ईख बोने योग्य खेत । **–समुद्र**–पु० पुराणोंके अनुसार वह समुद्र जो ईखके रससे भरा है । **–सार**–पु० शीरा, गुड़ आदि ।

इक्षुक–पु० (सं०) ईख ।

इक्षुमती–स्त्री० (सं०) पुराणवर्णित एक नदी ।

इक्षुर–पु० (सं०) ईख; गोखरू; तालमखाना ।

इक्ष्वाकु–पु० (सं०) वैवस्वत मनुका पुत्र और सूर्यवंशका पहला राजा; कड़वी लौकी ।

इक्ष्वालिका–स्त्री० (सं०) नरकट; कास ।

इखद*–वि०, अ० ईषत्, थोड़ा ।

इख़फ़ाय–पु० (अ०) छिपाना, गोपन । **–(ये) वारदात**–पु० ऐसी घटनाको छिपाना जिसकी सूचना (पुलिसको) देना फर्ज हो ।

इख़राज–पु० (अ०) निकालना, वाहर करना; खर्च ।

इख़राजात–पु० (अ०) खर्चे, व्यय ।

इख़लास–पु० (अ०) पवित्रता; सरलता; सच्ची, हार्दिक मित्रता; मित्रता ।

इखु*–पु० दे० 'इषु' ।

इख़्तियार–पु० (अ०) ग्रहण, पसंद करना या इसका अधिकार; अधिकार; वश; विचाराधिकार । **–(रे) समाअत**–पु० विचाराधिकार, मुकदमा सुननेका अधिकार ।

इख़्तियारी–वि० अपने बस, मर्जीका; वैकल्पिक, अपने इच्छाधीन ।

इख़्तिलाफ़–पु० (अ०) भेद, अंतर; विरोध; अनबन । **–(फ़े) राय**–पु० मतभेद ।

इगारह, इग्यारह*–वि० दस और एक । पु० ११ की संख्या ।

इग्यारी*–स्त्री० अगियारी; अग्न्याधान; आरती ।

इचिकिल–पु० (सं०) तालाब; पंक; दलदल ।

इच्छक–वि० (सं०) इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला । पु० एक वृक्ष, नारंगी ।

इच्छना*–स० क्रि० इच्छा करना ।

इच्छा–स्त्री० (सं०) चाह, कामना, ख्वाहिश; रुचि; मालकी माँग, 'डिमांड' (कौ०) । **–दान**–पु० इच्छाकी पूर्ति करना । **–निवृत्ति**–स्त्री० इच्छाका दमन; विरक्ति । **–पत्र**–पु० (विल) मृत्युके पहले लिखा गया वह पत्र या प्रलेख जिसमें कोई व्यक्ति यह इच्छा प्रकट करता है कि मेरी संपत्ति इस-इस प्रकारसे इन-इन व्यक्तियोंको दी जाय, मेरी दाहक्रिया इस स्थानपर इस ढंगसे की जाय इत्यादि, वसीयतनामा । **–भेदी (दिन्)**–वि० जितने चाहे उतने दस्त लानेवाला (रेचक) । **–भोजन**–पु० अपनी रुचि, पसंदका भोजन । **—वसु**–वि० जिसके पास जितना चाहे उतना धन हो । पु० कुबेर ।

इच्छित–वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित ।

इच्छु–वि० (सं०) चाहनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त–हितेच्छु, शुभेच्छु) । * पु० ईख ।

इच्छुक–वि० (सं०) चाहनेवाला ।

इछु*–वि० इच्छुक ।

इजमाल–पु० (अ०) इकट्ठा करना; संक्षेप करना, थोड़ेमें कहना; साझा ।

इजमालन्–अ० (अ०) संक्षेपमें, मुख्तसरमें ।

इजमाली–वि० साझेका, शिरकती ।

इजरा–स्त्री० उर्वरता वढ़ानेके लिए परती छोड़ी हुई जमीन; दे० 'इजराय' ।

इजराय–पु० (अ०) जारी करना, होना; काममें लाना या लाया जाना । **–डिगरी**–पु० डिगरीका जारी किया जाना या अमलमें लाया जाना ।

इजलास–पु० (अ०) वैठना; बैठक; हाकिम या अधिकारीका (विचारके लिए) बैठना; उसके बैठनेका स्थान, कचहरी। –(**से**) **कामिल**–पु० विचारके लिए सव जजोंका एक साथ मिलकर बैठना, 'फुल बेंच' (?)।

इज़हार–पु० (अ०) जाहिर करना, प्रकट करना; अदालतमें दिया हुआ वयान या गवाही। –(**रे**) **तहरीरी**–पु० लिखित वयान या गवाही।

इज़ाज़त–स्त्री० (अ०) अनुमति, परवानगी।

इज़ाफ़त–स्त्री० (अ०) लगाव, संबंध; एक शब्दका दूसरेसे संबंध, समास (व्या०)।

इज़ाफ़ा–पु० (अ०) वृद्धि, बढ़ती। –**लगान**–पु० लगानका बढ़ना, बढ़ती।

इजाबत–स्त्री० (अ०) स्वीकृति; प्रार्थना स्वीकार करना; शौच, मलत्याग।

इज़ार–पु० (अ०) पाजामा, सुथना। –**बंद**–पु० पाजामा या लहँगा बाँधनेका बंद या फीता।

इजारा–पु० (अ०) ठेका, पट्टा; एकाधिकार, किसी वस्तुके बनाने, वेचने, भोगने आदिका अकेले अधिकारी होना। –(**रे**) **दार**–पु० ठेकेदार; एकाधिकारी।

इज़्ज़त–स्त्री० (अ०) मान, प्रतिष्ठा, बड़ाई; आदर। –**दार**–वि० प्रतिष्ठित। मु० –**उतारना**,–**बिगाड़ना**,–**लूटना**,–**लेना**–बेआबरू करना, अपमानित करना; सतीत्व भंग करना। –**खोना**,–**गँवाना**–मर्यादा खोना। –**देना**–मर्यादा खोना; गौरवान्वित करना।

इज्जल–पु० (सं०) जलाशयके पास उत्पन्न होनेवाला एक छोटा वृक्ष, हिज्जल।

इज्तिराब–पु० (अ०) बेचैनी, व्याकुलता, अधीरता।

इज्या–स्त्री० (सं०) यज्ञ; पूजा।

इटली–पु० यूरोपका एक देश।

इटालिक, इटैलिक–पु० (अं०) एक तरहका तिरछा टाइप।

इटालियन–पु० (अं०) इटलीका निवासी; एक चिकना कपड़ा जो पहले इटलीसे ही आता था। वि० इटलीसे संबद्ध।

इट्चर–पु० (सं०) स्वच्छंदतापूर्वक घूमनेवाला बैल या साँड़, इड्डुर।

इठलाना–अ० क्रि० गर्वसूचक चेष्टाएँ करना, ठसक, ऐंठ दिखाना, इतराना; नखरा करना; बनना।

इठलाहट–स्त्री० इठलानेका भाव, ऐंठ।

इठाई*–स्त्री० मित्रता, प्रीति; रुचि।

इडली‡–स्त्री० दक्षिणी अंचलोंमें प्रचलित एक भोज्य पदार्थ जो चावलका बनता है।

इडहर–पु० दे० 'इँडहर'।

इडा–स्त्री० (सं०) धरती;, वाणी; आहुति, हवि; धारावाहिक स्तुति; अन्न; गाय; स्वर्ग; एक नाडी जो रीढ़की हड्डीसे होकर मस्तकतक पहुँचती है; मनुकी पुत्री जो बुधकी पत्नी और पुरूरवाकी माता थी; दुर्गा।

इडाचिका–स्त्री० (सं०) भिड़, ततैया।

इडिका–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

इडिक्क–पु० (सं०) जंगली बकरा।

इड्डुर–पु० (सं०) दे० 'इट्चर'।

इतः(तस्)–अ० (सं०) यहाँ; यहाँसे; इधर; अबसे; इसलिए।

इत*–अ० इधर, यहाँ। –**उत**–अ० यहाँ-वहाँ।

इतक़ाद–पु० दे० 'एतक़ाद'।

इतना–अ० इस मात्रा, मिकदारमें। वि० इस मात्राका। –(**ने**)-**में**–इसी बीच या अरसेमें, तबतक।

इतमाम*–पु० दे० 'इहतिमाम'।

इतमीनान–पु० (अ०) भरोसा, विश्वास; तसल्ली, समाधान; शांति। –(**ने**) **क़लब**–पु० मनका समाधान।

इतमीनानी–वि० (अ०) विश्वासी, भरोसेका।

इतर–पु० दे० 'इत्र'। वि० (सं०) दूसरा, और; भिन्न (ब्राह्मणेतर); साधारण; हीन।

इतरतः (तस्)–अ० (सं०) अन्यथा।

इतराजी*–स्त्री० दे० 'एतराज़'।

इतराना–अ० क्रि० गर्वसे ऐंठना, गर्वका इतना बढ़ जाना कि वचन, व्यवहारसे प्रकट होने लगे; इठलाना।

इतराहट–स्त्री० गर्व, इतरानेका भाव।

इतरेतर–अ० (सं०) परस्पर, एक-दूसरेको या से। –**योग**–पु० परस्पर संबंध; द्वंद्व समासका एक भेद।

इतरेतराभाव–पु० (सं०) अन्योन्याभाव।

इतरेतराश्रय–पु० (सं०) एक तर्कदोष, दो वस्तुओंकी सिद्धिका एक-दूसरीपर अवलंबित होना।

इतरौहाँ*–वि० जिससे इतराना प्रकट हो, गर्वसूचक।

इतलाक़–पु० (अ०) बंधनमुक्त करना; जारी करना; व्यवहार, प्रयोग; समन आदिके जारी होने, तलबानेके आमद-खर्चका हिसाब रखनेवाला दफ्तर। –**नवीस**–पु० इतलाकका हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी।

इतवरी–स्त्री० दे० 'इत्वरी'।

इतवार–पु० रविवार।

इतस्ततः(तस्)–अ० (सं०) इधर-उधर, यहाँ-वहाँ।

इताअत–स्त्री० (अ०) अधीनता, ताबेदारी; आज्ञापालन।

इताति*–स्त्री० दे० 'इताअत'।

इतालवी–वि० इटली देश संबंधी। पु० इटलीका निवासी। स्त्री० वहाँकी भाषा।

इताब–पु० (अ०) कोप, रोष, खफगी।

इति–अ० (सं०) समाप्ति-सूचक शब्द। स्त्री० समाप्ति; अंत; पूर्णता; गमन। –**कथ**–वि० अविश्वसनीय; दुष्टतापूर्ण। –**करणीय**,–**कर्तव्य**–वि० जिसका करना उचित या आवश्यक हो, कर्तव्य। –**कर्त्तव्यता**–स्त्री० (किसी कार्यका) आवश्यक या कर्तव्य होना। –**मात्र**–वि० इतना ही। –**वृत्त**–पु० घटना; कहानी; पुरानी (राजाओं, ऋषियों, आदिकी) कहानियाँ। –**इत्तात्मक**–वि० घटनाप्रधान, वर्णनात्मक।

इति सिद्धं–पद–(क्यू० ई० डी०) जो प्रमाणित या सिद्ध करना था, वह प्रमाणित (सिद्ध) हो गया (रेखा-गणित)।

इतिहास–पु० (सं०) अबतक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाला व्यक्तियोंका कालक्रमानुसार वर्णन; इस प्रकारके वर्णनवाली पुस्तक। –**कार**–पु० इतिहास-लेखक। –**ज्ञ**,–**वेत्ता**–पु० इतिहासका जानकार।

इतेक‡–वि० इतना।

इतो, इत्तो*–वि० इतना।

इत्तफ़ाक़, इत्तिफ़ाक़–पु० (अ०) मेल, एकता; सहमति; संयोग; अचानक होनेवाली, अनहोनी बात।

इत्तफ़ाक़न्, इत्तिफ़ाक़न्–अ० (अ०) संयोगवश, अचानक।

इत्तफ़ाक़िया, इत्तिफ़ाक़िया, इत्तिफ़ाक़ी–वि० अचानक होनेवाला, आकस्मिक।

इत्तला, इत्तिला–स्त्री० (अ०) सूचना, खबर, जानकारी।

इत्ता–वि० इतना।

इत्तिलानामा–पु० किसी बातकी सूचना देनेवाला कागज, सूचनापत्र (नोटिस)।

इत्तिहाद–पु० (अ०) एका, मेल; संयोग।

इत्तिहाम–पु० (अ०) तुहमत, इलजाम, दोष।

इत्थंविध–वि० (सं०) इस प्रकारका; इन गुणोंसे विशिष्ट।

इत्थम्–अ० (सं०) इस प्रकार, यों। –**भूत**–वि० इस प्रकार घटित।

इत्थशाल–पु० (सं०) ज्योतिषका एक योग।

इत्थूँ* **इत्थें**‡–अ० यहाँ।

इत्यादि, इत्यादिक–अ० (सं०) इसी प्रकार और, वगैरह।

इत्र–पु० (अ०) सुगंध, सुगंधसार; चंदनके तेलपर उतारा हुआ पुष्पसार, इतर; सार। –**दान**–पु० इत्र रखनेका पात्र या संदूकची। –**फ़रोश**–पु० इत्र बेचनेवाला, गंधी। –**साज़**–पु० इत्र बनानेवाला।

इत्वर–वि० (सं०) यात्रा करनेवाला; निर्दय; नीच; हेय; निर्धन। पु० हिजड़ा।

इत्वरी–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी, कुलटा; अभिसारिका ।

इदंतन, इदानीतन–वि० (सं०) इस समय या क्षणका, वर्तमान; क्षणिक ।

इदंता–स्त्री० (सं०) सारूप्य, एकरूपता ।

इदम्–सर्व० (सं०) यह । **–इत्थम्**–अ० यह ऐसा ही है ।

इद्दत–स्त्री० (अ०) तलाक या पतिकी मृत्युके बादका वह काल जिसमें मुसलमान स्त्री पुनर्विवाह नहीं कर सकती (तलाकवालीके लिए यह मुद्दत ३ महीने १० दिन, विधवाके लिए ४ महीने १० दिन और गर्भवतीके लिए प्रसव होनेतक है) ।

इद्ध–वि० (सं०) प्रज्वलित; चमकता हुआ; साफ; आश्चर्यजनक; पालित (आदेश) । पु० ताप; धूप; कांति; आश्चर्य ।

इधर–अ० इस ओर; यहाँ । **–उधर**–अ० यहाँ-वहाँ; जहाँ-तहाँ; आस-पास; अगल-बगल; सब ओर । मु० **–उधर करना**–इधरका उधर, कहींका कहीं कर देना; टालमटूल करना । **–उधरकी**–जहाँ-तहाँकी, सुनी-सुनायी, बाजारी, अप्रामाणिक (बात, खबर) । **–उधरकी हाँकना**–गप मारना । **–उधरसे**–जहाँ-तहाँसे; दूसरोंसे । **–उधर होना**–अव्यवस्थित हो जाना; टाल-मटूल होना । **–का उधर होना**–कहींका कहीं हो जाना, उलट-पुलट जाना । **–की उधर करना, लगाना**–झगड़ा लगाना, चुगली खाना । **–की दुनिया उधर हो जाना**–असंभवका संभव होना । **–या उधर** अनुकूल या प्रतिकूल, पक्षमें या विपक्षमें; जीत या हार ।

इध्म–पु० (सं०) ईंधन; समिधा । **–जिह्व**–पु० अग्नि । **–परिवासन**–पु० चैली । **–प्रव्रश्चन**–पु० कुल्हाड़ी ।

इन–सर्व० 'इस'का बहु० । पु० (सं०) स्वामी, प्रभु; राजा; सूर्य; हस्त नक्षत्र । **–कांत**–पु० सूर्यकांत मणि । **–सभ**–पु० राजदरबार ।

इनआम–पु० (अ०) दे० 'इनाम' ।

इनकम–स्त्री० (अं०) आमदनी, आय । **–टैक्स**–पु० आय-कर ।

इनक़लाब–पु० (अ०) उलट-पलट; भारी उलटफेर; क्रांति । **–(बे) हुकूमत**–पु० राज्यक्रांति, राज्यव्यवस्थाका उलट, बदल जाना । (**इनक़लाब ज़िंदाबाद**–क्रांति जीती रहे ! क्रांतिकी जय !)

इनकार–पु० (अ०) मुकरना, नाहीं करना; अस्वीकृति; न मानना; ईश्वरका अस्तित्व न मानना ।

इनकारी–वि० (अ०) नकारात्मक, अस्वीकृति-सूचक ।

इनकिशाफ़–पु० (अ०) खुलना, प्रकट होना; पता लगना ।

इनकिसार–पु० (अ०) नम्रता, विनय, आजिजी ।

इनफार्मर–पु० (अं०) भेदिया, मुखबिर ।

इनफ़िकाक–पु० (अ०) अलग, जुदा होना; बंधक संपत्तिका छूटना, छुड़ाना ।

इनफ़िसाल–पु० (अ०) ज़ुदा होना; फैसल, निर्णीत होना ।

इनफ्लुएंज़ा–पु० (अं०) एक संक्रामक शीतज्वर ।

इनसान–पु० (अ०) मनुष्य, आदमी ।

इनसानियत, इनसानीयत–स्त्री० (अ०) मनुष्यता; मनुष्योचित गुण; सहानुभूति; सौजन्य ।

इनसानी–वि० मानव, मानुषिक ।

इनसिदाद–पु० (अ०) बंद होना, रुकना । **–(दे)जुर्म**–पु० अपराधोंकी रोक ।

इनहिदाम–पु० (अ०) ढह, गिर जाना ।

इनहिसार–पु० (अ०) अवलंबित होना; घेरना ।

इनान–स्त्री० (अ०) बाग, लगाम । **–ए-सल्तनत,–ए-हुकूमत**–स्त्री० शासनसूत्र ।

इनाम–पु० पुरस्कार, बख्शिश; माफी जमीन । **–इकराम**–पु० उपहार-सम्मान; मान-दान । **–दार**–पु० माफीदार ।

इनायत–स्त्री० (अ०) अनुग्रह, कृपा; प्रदान । मु०**–करना,–फरमाना**–(कृपापूर्वक) देना, प्रदान करना ।

इनारा–पु० कूप ।

इनारुन–पु० इंद्रायनका फल ।

इने-गिने–वि० गिने-गिनाये, कुछ; थोड़े, कतिपय ।

इनोदय–पु० (सं०) सूर्योदय ।

इन्नर–पु० चिरौंजी आदि डालकर जमाया हुआ पेयूष ।

इन्वका–स्त्री० (सं०) मृगशिरा नक्षत्रके ऊपर रहनेवाले पाँच तारोंका समूह, इल्वला ।

इन्श्योरेंस–पु० (अं०) दे० 'बीमा' ।

इफतरा–पु० (इफ्तिरा) झूठा आरोप; व्यर्थकी बात ।

इफ़रात–स्त्री० (अ०) बहुतायत, प्रचुरता; अतिशयता ।

इफ़लास–पु० (अ०) गरीबी, मुफलिसी, दरिद्रता, निर्धनता ।

इफ़ाक़ा–पु० (अ०) रोगमुक्ति, आराम होना; रोगीकी अवस्थामें सुधार ।

इफ्तार–पु० (अ०) रोजा खोलना ।

इफ्तारी–स्त्री० रोजा खोलनेके काम आनेवाली वस्तुएँ ।

इबरत–स्त्री० (अ०) चेतावनी; शिक्षा । **–अंग्रेज**–वि० शिक्षाप्रद; चेतावनी देनेवाला ।

इबरानी–वि० यहूदी-संबंधी । पु० इब्राहीमके वंशका व्यक्ति, यहूदी, इसरायली । स्त्री० यहूदियोंकी पुरानी भाषा, तोरेतकी भाषा ।

इबरायनामा–पु० (फा०) त्यागपत्र ।

इबलीस–पु० (अ०) शैतान, मनुष्यको बहकानेवाला फरिश्ता ।

इबादत–स्त्री० (अ०) पूजा, उपासना; वंदना । **–ख़ाना**–पु० उपासना-मंदिर, प्रार्थनाभवन ।

इबारत–स्त्री० (अ०) वाक्यकी बनावट, रचना; लिखनेका ढंग । **–आराई**–स्त्री० लच्छेदार, आलंकारिक भाषा लिखना ।

इबारती–वि० इबारतमें कथित, स्थित ।

इब्तिदा–स्त्री० (अ०) आरंभ, आदि; उत्पत्ति । **–ए-इश्क**–स्त्री० प्रणयारंभ, पूर्वानुराग ।

इब्न–पु० (अ०) बेटा, पुत्र । **–उल्ग़ैब**–वि० जिसके नाम-धाम, कुल आदिका पता न हो । **–उल्वक्त**–वि० (स्वार्थसाधनके लिए) समय, अवसरके अनुकूल व्यवहार करनेवाला, अवसरवादी ।

इब्राहीम–पु० (अ०) यहूदी जातिके आदि पुरुष और यहूदी, इसलाम धर्मोंके अनुसार एक पैगंबर ।

इब्राहीमी–पु० इब्राहीम लोदीका सिक्का ।

इभ–पु० (सं०) हाथी; आठकी संख्या । **–कणा**–स्त्री० गजपिप्पली । **–कुंभ**–पु० हाथीका मस्तक । **–केशर**–पु० नागकेशर। **–गंधा**–स्त्री० एक पौधा जिसका फल विषैला होता है । **–दंता**–स्त्री० नागदंती । **–निमीलिका**–स्त्री० चातुर्य, बुद्धिमत्ता; भाँग । **–पोटा**–स्त्री० अल्पवयस्का इभी। **–राज**–पु० ऐरावत हाथी ।

इभमाचल–पु० (सं०) सिंह ।

इभया–स्त्री० (सं०) स्वर्णक्षीरी, भड़भाँड़ ।

इभाख्य–पु० (सं०) नागकेसर नामक पौधा ।

इभानन–पु० (सं०) गणेश ।

इभी–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

इभोषणा–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली ।

इभ्य–वि० (सं०) हाथीनशीन; धनी । पु० राजा; महावत; शत्रु।

इभ्या–स्त्री० (सं०) हथिनी; शल्लकी, सलईका पेड़ ।

इमकान–पु० (अ०) संभावना; शक्यता; शक्ति, सामर्थ्य ।

इमदाद–स्त्री० (अ०) मदद, सहायता; मदद करना ।

इमदादी–वि० मदद पाने या मददसे चलनेवाला ।

इमरती–स्त्री० जलेबीकी शक्लकी एक प्रसिद्ध मिठाई ।

इमरतीचाल, इमरतीदार–वि० इमरतीके ढंगकी बनावटवाला ।

इमलाक–पु० (अ०) संपत्ति, जायदाद, मिलकियत ।

इमलिया, इमिलिया–स्त्री० आलमारी आदिके पल्लेमें लगाया जानेवाला साँकल जैसा वह साधन जिसे कोंढ़ेमें फँसाकर ताला लगाते हैं।

इमली–स्त्री० एक पेड़ और उसका फल जो पहले खट्टा, किंतु पकनेपर कुछ मीठा हो जाता है और चटनी, अचार आदिके काम आता है । मु० **–घोंटाना**–ब्याहकी एक रस्म जो वर-वधूके मामाको करनी पड़ती है ।

इमसाक–पु० (अ०) रोकना; स्तंभन; कंजूसी ।

इमाम–पु० (अ०) नेता, अगुआ; धर्मके कार्योंमें नेतृत्व करनेवाला (मुसल०); हसन-हुसैनकी उपाधि । **–बाड़ा**–पु० (हिं०) शीया मुसलमानोंका धार्मिक स्थान; वह इहाता जिसमें ताजिये दफनाये

जाते हैं।

इमामत–स्त्री० (अ०) इमामका पद; नेतृत्व, पेशवाई।

इमामदस्ता–पु० एक तरहका लोहे या पीतलका खरल।

इमामा–पु० वड़ी पगड़ी।

इमारत–स्त्री० (अ०) मकान; पक्का मकान।

इमारती–वि० (अ०) इमारत संवंधी; इमारत बनानेके काम आनेवाला सामान (–लकड़ी)।

इमि*–अ० इस प्रकार।

इम्तनाई, इम्तिनाई–वि० (अ०) निषेधक, रोक लगानेवाला (हुक्म इम्तिनाई)।

इम्तनाय, इम्तिनाय–पु० (अ०) निषेध, मनाही।

इम्तहान–पु० दे० 'इम्तिहान'।

इम्तियाज़–पु० (अ०) भेद, अंतर; विवेक; भेद, विवेक करना; विशेषता।

इम्तिहान–पु० (अ०) परीक्षा, परख, आजमाइश।

इयत्–वि० (सं०) इतना। अ० यहाँतक।

इयत्ता–स्त्री०, **इयत्त्व**–पु० (सं०) परिमित, नियत संख्या या परिमाण; सीमा, हद; परिमाण; संख्या।

इयारा*–वि० यार–दोस्त जैसा; मैत्रीपूर्ण, प्रेमयुक्त।

इरण–पु० (सं०) मरुस्थल; वंजर भूमि।

इरम्मद–वि० (सं०) पीनेमें आनंद माननेवाला; अग्निका एक विशेषण। पु० विजली; वज्राग्नि; वडवाग्नि।

इरशाद–पु० दे० 'इर्शाद'।

इरषा, इरिषा*–स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

इरषित*–वि० दे० 'ईर्षित'।

इरा–स्त्री० (सं०) भूमि; वाणी, सरस्वती; वृहस्पतिकी माता; जल; मद्य; आहार; कोई पेय (दूध आदि)। **–क्षीर**–पु० क्षीरसागर। **–चर**–पु० ओला। वि० जलचर; भूचर। **–ज**–पु० कामदेव।

इराक़–पु० (अ०) पश्चिमी एशियाका एक देश, मेसोपोटामिया।

इराक़ी–वि० इराक देशका। पु० इराकनिवासी; इराकका घोड़ा।

इरादतन्–अ० इरादा करके, संकल्पपूर्वक, जान-बूझकर।

इरादा–पु० (अ०) संकल्प; इच्छा; विचार।

इरावती–स्त्री० (सं०) पंजावकी एक नदी, रावी; बर्माकी एक नदी; कश्यपकी एक कन्या जो ऐरावतकी माता थी; दुर्गा; वटपत्री नामक पौधा।

इरावान्(वत्)–पु० (सं०) समुद्र; मेघ; एक पर्वत; अर्जुनका एक पुत्र। वि० तृप्त करनेवाला; सुखकर।

इरिका–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

इरिण–पु० (सं०) खारी जमीन; बंजर; मरुस्थल।

इरिमेद–पु० (सं०) विट्खदिर।

इरिविल्ला, इरिविल्लिका–स्त्री० (सं०) सिरमें होनेवाली फुंसियाँ।

इरेश–पु० (सं०) विष्णु; गणेश; सम्राट्; वरुण; ब्राह्मण।

इर्गल–पु०, **इर्गला**–स्त्री० दे० 'अर्गल', 'अर्गला'।

इर्तिकाब–पु० (अ०) कर्म करना, विशेषतः अपराध या कोई बुरा काम करना।

इर्द-गिर्द–अ० आस-पास, चारों ओर।

इर्दब–पु० (फा०) वह मोहरा जो शाहको शहसे बचानेके लिए बीचमें लाया जाता है (शतरंज); चोट बचानेवाला, बीचमें आनेवाला; रोकनेवाला।

इर्वारु, इर्वालु–पु० (सं०) एक तरहकी ककड़ी। वि० हिंसक। **–शुक्तिका**–स्त्री० एक तरहका खरबूजा, फूट।

इर्वारुक–पु० (सं०) माँदमें रहनेवाला जानवर।

इर्शाद–पु० (अ०) पथप्रदर्शन; हिदायत करना; आदेश।

इर्साल–पु० (अ०) भेजना; पत्र भेजना; लगान, मालगुजारीकी इकट्ठी रकम (नियत समयपर) सदर दफ्तरको भेजना।

इलज़ाम–पु० (अ०) आरोप, अभियोग, दोष लगाना।

इलता†–पु० एक प्रकारका बाँस।

इलमास–पु० (अ०) हीरा।

इलय–वि० (सं०) गतिहीन।

इलव–पु० (सं०) किसान; हलवाहा; निर्धन व्यक्ति।

इलहाक़–पु० (अ०) मिलाना, जोड़ना; (किसी प्रदेशको) राज्यमें मिला लेना। **–दार**–वि० जिसके साथ मालगुजारी अदा करनेका इकरारनामा हो।

इलहाम–पु० (अ०) ईश्वरका दिलमें कोई बात डालना, ईश्वरीय प्रेरणा या संदेश।

इलहामी–वि० इलहामसे प्राप्त, ईश्वरसे प्रेरित। **–किताब**–स्त्री० ईश्वर-प्रेरणासे रचित, ईश्वरकी भेजी हुई धर्मपुस्तक।

इला–स्त्री० (सं०) दे० 'इडा'। **–धर**–पु० पर्वत। **–वर्त***–पु० दे० 'इलावृत'। **–वृत**–पु० जंबुद्वीपके नौ भागोंमेंसे एक।

इलाक़ा–पु० (अ०) लगाव, संवंध; जमींदारी; पूरे गाँवकी जमींदारी; विस्तृत भूखंड जो एक व्यक्तिके अधीन हो, रियासत। **–(क़े)दार**–पु० जमींदार; पूरे गाँवका जमींदार। **–बंद**–पु० पटवा।

इलाज–पु० (अ०) निवारक उपाय, उपचार; चिकित्सा।

इलाम*–पु० आज्ञा, सूचना–'ठान्यो न सलाम मान्यो साहिको इलाम' –भू०।

इलायची–स्त्री० एक सुगंधित फल जिसके सूखे दाने या बीज मसाले, दवा आदिके काम आते हैं। **–दाना**–पु० इलायचीका दाना; चीनी में पगे हुए इलायची या पोस्तेके दाने।

इलाहियात–पु० (अ०) अध्यात्मविद्या।

इलाही–अ० (अ०) (इलाह–परमेश्वरका संबोधनका रूप) हे ईश्वर, या खुदा! पु० ईश्वर, खुदा। वि० ईश्वरीय। **–ख़र्च**–पु० फजूल खर्च, अपव्यय। **–गज़**–पु० अकबरका चलाया हुआ गज जो अब इमारत आदि नापनेके काम आता है। **–तौबा**–अ० हे ईश्वर, दया कर मेरा अपराध क्षमा कर (किसी पाप-कर्मसे तौबा करते समयकी प्रार्थना)। **–रात**–स्त्री० रतजगेकी रात।

इलिका–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

इली–स्त्री० (सं०) लगुड; छोटी तलवार, करवाल।

इलीश, इलीष, इल्लिश, इल्लिस–पु० (सं०) हिलसा मछली।

इलेक्ट्रॉन–पु० (इलेक्ट्रॉन) नन्हा, ऋण विद्युत आवेशवाला कण जिसका द्रव्यमान प्रोटानके द्रव्यमानका १।१८३७ होता है। परमाणुके अन्दर इलेक्ट्रॉन उसके नाभिकके गिर्द दीर्घवृत्तीय कक्षामें परिक्रमा लगाते रहते हैं। इलेक्ट्रॉन अपने परमाणुओंसे पृथक् किये जा सकते हैं। इलेक्ट्रॉनोंके प्रवाहसे विद्युत धारा बनती है। **–सूक्ष्मदर्शी**–पु० (इलेक्ट्रॉन माइक्रॉस्कोप) यह एक ऐसा सूक्ष्मदर्शी होता है जिसमें सूक्ष्म आकारकी चीज़ोंका प्रतिविम्ब प्रकाश किरणोंकी बजाय इलेक्ट्रॉन किरणों द्वारा बनता है। प्रेक्षण की जानेवाली वस्तु एक पतली फिल्मकी शक्लमें ली जाती है और इलेक्ट्रॉनोंकी समान्तर किरणें इसमेंसे गुज़रती हैं।

इलेक्ट्रॉनिकी–स्त्री० (इलेक्ट्रॉनिक्स) अनुप्रयुक्त भौतिक विज्ञानकी वह शाखा जिसमें उन विद्युत परिपथोंका अध्ययन किया जाता है जिनमें निवतिनली (वाल्व), ट्रान्जिस्टर या इलेक्ट्रॉनोंकी गतिको नियंत्रित करनेवाली अन्य युक्तियोंका इस्तेमाल किया जाता है। रेडियो, टेलीविज़न, परिकलन यंत्र आदिका अध्ययन इलेक्ट्रॉनिकीके अन्तर्गत आता है।

इलेक्ट्रिक–वि० (अं०) बिजलीका; बिजलीकी शक्तिसे होनेवाला, वैद्युत। **–पावर**–पु० बिजलीकी ताकत, विद्युच्छक्ति। **–लाइट**–स्त्री० बिजलीकी रोशनी।

इलेक्ट्रिसिटी–स्त्री० (अं०) बिजली, विद्युत्।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम–पु० हृदयकी धड़कनके साथ हृदयमें होनेवाले वैद्युत परिवर्तनोंका अभिलेख। इसे 'ईसीजी' या 'ईकेजी' भी कहते हैं।

इल्ज़ाम–पु० दे० 'इलज़ाम'।

इल्तिजा–स्त्री० (अ०) प्रार्थना, बिनती, निवेदन।

इल्तिफ़ात–स्त्री० (अ०) ध्यान देना; कृपा, अनुग्रह।

इल्तिमास–पु० (अ०) निवेदन, अर्ज।

इल्तिवा–पु० (अ०) मुल्तवी होना, टलना।

इल्म–पु० (अ०) ज्ञान, जानकारी; विद्या, शास्त्र। **–(मे)अदब**–पु० साहित्यशास्त्र। **–इलाही**–पु० अध्यात्मविद्या, दर्शन,

इलाहियात ।

इल्लत–स्त्री० (अ०) कारण; रोग; दोष; झंझट; दुर्व्यसन, बुराई । मु० **–पालना**–कोई झंझट, बुरी आदत आदि लगा लेना ।

इल्लल–पु० (सं०) एक तरहका पक्षी ।

इल्ला–पु० चमड़ेपर निकलनेवाला छोटा कड़ा अर्वुद ।

इल्ली–स्त्री० उड़नेवाले कीड़ोंके बच्चोंका अंडेसे निकलनेके वादका रूप ।

इल्वल–पु० (सं०) एक तरहकी मछली; एक दैत्य ।

इल्वला–स्त्री० (सं०) दे० 'इन्वका' ।

इव–अ० (सं०) समान, सदृश, मानिंद ।

इशरत–स्त्री० (अ०) सुख-विलास, मौज-चैन । **–गाह**–स्त्री०, पु० विलासभवन, राग-रंगका स्थान ।

इशा–स्त्री० (अ०) रात्रिका अंधकार; रात । **–की नमाज़**–रात (पहले पहर)की नमाज ।

इशाअत–स्त्री० (अ०) प्रकट, प्रसिद्ध, करना; प्रचार करना, फैलाना; प्रकाशित करना; छापना ।

इशारत–स्त्री० (अ०) इशारा करना; संकेत, सैन ।

इशारा–पु० (अ०) संकेत, सैन; गुप्त प्रेरणा; छिपी, अस्पष्ट सूचना । **–(रे)बाज़ी**–स्त्री० इशारे करना, आँखोंसे (विशेषतः प्रेमी-प्रेमिकाका) संकेत करना ।

इशीका–स्त्री० (सं०) दे० 'इषीका' ।

इश्क–पु० (अ०) प्रेम, चाह, अनुराग; आसक्ति । **–पेचा**–पु० एक वेल जो सुंदरताके लिए लगायी जाती है । **–बाज़**–वि० प्रेमी, रसिक, दिलफेंक । पु० प्रेमी व्यक्ति । **–मजाज़ी**–पु० लौकिक, मानव प्रेम; भोग-वासनायुक्त प्रेम । **–हक़ीक़ी**–पु० ईश्वरसे प्रेम; आत्माकी परमात्मासे मिलनेकी तड़प; सच्चा, वासनारहित प्रेम ।

इश्किया–वि० इश्क सम्वन्धी, प्रेम-सूचक ।

इश्तहार–पु० (अ०) दे० 'इश्तिहार' ।

इश्तहारी–वि० (अ०) दे० 'इश्तिहारी' ।

इश्तिआल, इश्तियाल–पु० (अ०) भड़कना, प्रज्वलित होना; भड़काना; उत्तेजना । **–अंगेज़**–वि० उत्तेजित कर देनेवाला; क्रोधोत्पादक ।

इश्तिआलक, इश्तियालक–पु० (अ०) भड़काना; उसकाना; चिरागकी वत्ती उसकाना; वत्ती उसकानेका तिनका ।

इश्तियाक़–पु० (अ०) शौक होना; चाह, लालसा ।

इश्तिराक–पु० (अ०) शिरकत, साझा ।

इश्तिराकिया–पु० (अ०) समाजवादी व्यवस्थामें उत्पादनके साधनों पर संयुक्त स्वामित्व ।

इश्तिहा–पु० (अ०) भूख; इच्छा ।

इश्तिहार–पु० (अ०) प्रसिद्ध करना; प्रसिद्धि; विज्ञापन; सूचना । **–नीलाम**–पु० किसी चीजके नीलामकी सार्वजनिक सूचना ।

इश्तिहारी–वि० (अ०) जिसका इश्तिहार निकला हो, विज्ञापित । **–मुजरिम**–पु० वह फरार अपराधी जिसकी गिरफ्तारीके लिए इश्तिहार (प्रायः इनामकी सूचनाके साथ) निकला हो ।

इष–पु० (सं०) आश्विन मास; बलवान् व्यक्ति ।

इषण*–स्त्री० इच्छा, कामना ।

इषणि–स्त्री० (सं०) भेजना; इच्छा ।

इषण्या–स्त्री० (सं०) बलवती इच्छा ।

इषव्य–वि० (सं०) बाणविद्यामें कुशल ।

इषिका, इषीका–स्त्री० (सं०) सरपत, मूँज आदिके बीचकी सींक; बाण; कूँची; हाथीकी आँखका डेला ।

इषित–वि० (सं०) चालित; प्रेषित; उत्तेजित; तीव्र ।

इषु–पु० (सं०) बाण, तीर; पाँचकी संख्या; जीवाके मध्य-विंदुसे परिधितक खींची गयी सीधी रेखा(ज्या०) । **–कार**–पु० बाण बनानेवाला । **–धर**–पु० तीरंदाज, बानैत । **–धि**–पु० तूणीर । **–पथ**–पु० तीरकी मार, तीरकी पहुँचकी दूरी । **–पुष्पा**–स्त्री० एक पौधा, शरपुष्पा । **–मात्र**–पु० धनुष्की लंबाईके बराबर एक माप । ३ फ़ुट ।

इषुध्या–स्त्री० (सं०) गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना ।

इषुमान्(मत्)–पु० (सं०) तीरंदाज ।

इषूपल–पु० (सं०) किलेके फाटकपर रखी जानेवाली एक तरहकी तोप ।

इष्ट–वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित; वांछनीय; अनुकूल, प्रिय; उद्दिष्ट; पूजित । पु० संस्कार; अग्नि-होत्र; वेदाध्ययन, अतिथि-सत्कार आदि कर्म; ईंट; मित्र; विष्णु; यज्ञ; इच्छा; प्रिय व्यक्ति; पति; इष्टदेव; एरंड । **–कापथ**–पु० वीरणमूल । **–काल**–पु० किसी घटनाके घटित होनेका ठीक समय (फ० ज्यो०), कोई काम करनेका शुभ समय । **–गंध**–पु० सुगंधित पदार्थ; बालू । **–देव,–देवता**–पु० आराध्यदेव; कुलदेवता । मु० **–होना**–किसी देवताकी आराधनामें सिद्धि प्राप्त कर लेना, उसके आवाहन और अभिलषित कार्य करानेमें समर्थ होना ।

इष्टका, इष्टिका–स्त्री० (सं०) ईंट । **–चित**–वि० ईंटोंसे बना हुआ । **–न्यास**–पु० नीवँ रखना, शिलान्यास । **–पथ**–पु० ईंटोंसे बना हुआ रास्ता ।

इष्टापत्ति–स्त्री० (सं०) वादीका ऐसी बात कहना जो प्रतिवादीके अनुकूल हो; इच्छित घटनाका होना ।

इष्टापूर्त–पु० (सं०) इष्ट और पूर्त कर्मोंको करना (पूर्त–कुएँ-तालाव खुदवाना, मंदिर, बनवाना, बाग लगवाना, अन्नदान करना आदि) ।

इष्टि–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह; निवेदन; निमंत्रण; प्राप्त करनेका प्रयत्न; यज्ञ; हवि । **–पच**–पु० कंजूस; असुर । **–पशु**–पु० बलिका पशु ।

इष्टु–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह ।

इध्म–पु० (सं०) कामदेव; वसंत ऋतु; गमन; मार्ग ।

इष्य–पु० (सं०) वसंत ऋतु ।

इष्व–पु० (सं०) आध्यात्मिक गुरु ।

इष्वनीक–पु० (सं०) बाणकी नोक ।

इष्वसन, इष्वस्त्र–पु० (सं०) धनुष् ।

इष्वास–पु० (सं०) धनुष्; तीरंदाज ।

इस–सर्व० 'यह'का विभक्तिके पहले प्रयोगमें आनेवाला रूप ।

इसकंदर–पु० सिकंदर, अलेक्ज़ेंडर ।

इसकंदरिया–पु० मिस्रका एक प्रसिद्ध नगर और बंदरगाह ।

इसपंज–पु० मुर्दा बादल, स्पंज ।

इसपात–पु० कड़ा और बढ़िया लोहा, फौलाद ।

इसबगोल–पु० एक लुआबदार दाना जो अतीसार आदि रोगोंमें दिया जाता है ।

इसमाईल–पु० (इब०) इब्राहीमके पुत्र ।

इसमाईली–पु० (इब०) शीया मुसलमानोंका एक फिर्क़ा ।

इसराईल–पु० (इब०) याकूब; दक्षिण पश्चिम एशियाका नव-स्थापित यहूदी राज्य ।

इसराईली–पु० (इब०) याकूबके वंशज, यहूदी ।

इसराज–पु० एक सितार जैसा बाजा जो सारंगीकी तरह कमानीसे बजाया जाता है ।

इसराफ़–पु० (फा०) फजूलखर्ची, उड़ाऊपन ।

इसराफ़ील–पु० (अ०) इसलामके अनुसार वह फरिश्ता जो कयामत (प्रलय)के दिन सूर (तुरही, नरसिंहा) फूँकेगा और जिसके पहली बार बजानेसे जीवित प्राणी मृत और दूसरी बार बजानेसे सब मृत प्राणी जीवित हो जायँगे ।

इसरार–पु० (अ०) आग्रह, हठ; आग्रह करना; भेद, रहस्य ।

इसलाम–पु० (अ०) स्वीकार करना; ईश्वरेच्छाके सामने सिर झुका देना; मुसलमानोंका, मुहम्मदका चलाया हुआ धर्म; मुसलमानोंकी समष्टि, मुसलिम जगत् ।

इसलामी–वि० (अ०) इसलाम-संबंधी ।

इसलाह–पु० (अ०) सुधारना, शोधना, गलती दुरुस्त करना; रचनाका संशोधन (देना, लेना) ।

इसहाक़–पु० (अ०) इसलाम आदि धर्मोंके एक पैगंबर जो इब्राहीमके बेटे थे ।

इसहाल–पु० (अ०) पतले दस्त आना, अतीसार ।

इसारत*–स्त्री० इशारा, संकेत ।

इस्क़ात–पु० (अ०) गिरना, पतन; गर्भपात ।

इस्तरी–स्त्री० दे० 'इस्तिरी' ।

इस्तिजा–पु० (अ०) पानीसे धोना; शौच; पेशाब करनेके बाद उसकी बूँदोंको मिट्टीके ढेलेसे सुखाना। –**(जे)का ढेला**–तुच्छ, निकम्मा आदमी। मु० –**लड़ाना**–मित्रता करना।

इस्तिअमाल–पु० (अ०) दे० 'इस्तेमाल'।

इस्तिक़बाल–पु० (अ०) अगवानी, स्वागत के लिए आगे जाना; स्वागत।

इस्तिक़लाल–पु० (अ०) दृढ़ता, निश्चय; संकल्पकी दृढ़ता; स्वाधीनता।

इस्तिग़ासा–पु० (अ०) न्यायकी प्रार्थना, फरियाद; फौजदारी नालिश।

इस्तिमरारी–वि० (अ०) सदा रहनेवाला, स्थायी, सार्वकालिक। –**बंदोबस्त**–पु० जमीनका वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदाके लिए निश्चित हो जाती है, नये बंदोबस्तपर बढायी नहीं जा सकती।

इस्तिरी–स्त्री० पीतल या लोहेका वह औजार जिसके भीतर जलते कोयले रखकर, या विजलीसे, धुले या सिले कपड़ोंकी शिकन दूर की और तह वैठायी जाती है।

इस्तिलाह–पु० (अ०) शब्दका मान लिया हुआ परिभाषा-सिद्ध अर्थ; किसी कला, शास्त्र, व्यवसायकी विशेष पारिभाषिक शब्दावली।

इस्तिलाही–वि० (अ०) पारिभाषिक, लाक्षणिक।

इस्तिसनाय–पु० (अ०) अलग करना; (गणना, कथन आदिमें) शामिल न करना; अपवादभूत मानना या होना।

इस्तीफ़ा–पु० (अ०) माफी माँगना; काम, नौकरीसे छुटकारेकी प्रार्थना; त्यागपत्र।

इस्तेमाल–पु० (अ०) काममें लाना, व्यवहार, उपयोग।

इस्त्री*–स्त्री० दे० 'स्त्री' तथा 'इस्तरी'।

इस्पंज–पु० दे० 'इसपंज'।

इस्म–पु० (अ०) नाम, संज्ञा। –**नवीसी**–स्त्री० नाम-लिखाई; (गवाहों आदिकी) नाम-सूची। –**सिफ़त**–पु० विशेषण-पद (व्या०)।

इस्लाम–पु० देखो 'इसलाम'।

इह–अ० (सं०) यहाँ, इस जगह; इस लोकमें; अब, इस कालमें। पु० यह लोक। –**काल**–पु० यह जीवन। –**लीला**–स्त्री० इस लोकका जीवन। –**लोक**–पु० यह लोक; यह जीवन। –**लौकिक**–वि० इस लोकका, इस लोक-संबंधी; इस लोकमें सुख देनेवाला।

इहतिमाम–पु० (अ०) प्रबंध; आयोजन; निगरानी।

इहतिमाल–पु० (अ०) संभावना; शक, संदेह।

इहतियाज–पु० (अ०) अभाव; गरज; हाजत।

इहतियात–स्त्री० (अ०) बचाव; परहेज; सावधानी।

इहतियातन्–अ० (अ०) सावधानीकी दृष्टिसे।

इहतियाती काररवाई–स्त्री० किसी अनिष्टकी संभावनाकी रोकके लिए किया जानेवाला उपाय।

इहतिलाम–पु० (अ०) स्वप्नमें वीर्यपात होना, स्वप्नदोष।

इहसान–पु० (अ०) नेकी, भलाई, उपकार; नेकी, उपकार करना। –**फ़रामोश**–वि० कृतघ्न, उपकार न माननेवाला। –**मंद**–वि० कृतज्ञ, ऋणी।

इहामुत्र–अ० (सं०) इस लोक और परलोक दोनोंमें। पु० यह लोक और परलोक।

ई

ई–देवनागरी वर्णमालाका चौथा (स्वर) वर्ण, 'इ'का दीर्घ रूप।

ईंखन–पु० (सं०) झूलना, चक्कर खाना।

ईँगुर–पु० लाल रंगका एक खनिज द्रव्य (सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माथेपर इसकी बिंदी लगाती हैं)।

ईँचना*–स० क्रि० ऐंचना, खींचना।

ईँट–स्त्री० आयताकार साँचेमें ढालकर पकाया हुआ मिट्टीका टुकड़ा जो दीवार बनानेके काममें आता है; धातुका चौखूंटा ढला हुआ टुकड़ा; ताशके चार रंगोंमेंसे एक। –**कारी**–स्त्री० ईंटका काम। –**पत्थर**–पु० कुछ नहीं। मु० –**का छल्ला देना** –कच्ची दीवारकी मजबूतीके लिए उससे सटाकर ईंटें चुनना। **(डेढ़ या ढाई) –की मस्जिद अलग बनाना** –अपनी ही बातपर चलना; निराला ढंग रखना(व्यं०)। –**गढ़ना**–ईंटोंको काट-छाँटकर जोड़ाईके काममें आने योग्य बनाना। –**चुनना**–ईंटोंको जोड़कर दीवार उठाना। –**पाथना**–गीली मिट्टीको साँचेमें डालकर ईंटका आकार देना। **(गुड़ दिखाकर)–मारना**–भलाईकी आशा बँधाकर बुराई करना। **–से ईँट बजना**–मकानका ध्वस्त होना; खुलकर लड़ाई होना। **–से ईँट बजाना**–मकान ध्वस्त करना।

ईँटा–पु० दे० 'ईंट'।

ईँडरी, ईँडुरी–स्त्री० गेंडुरी, विड़ई।

ईँत–पु० सान चढ़ाते समय उसके नीचे रखी जानेवाली ईंट।

ईँदर–पु० पेयूषको औटकर बनायी जानेवाली एक मिठाई।

ईँधन–पु० जलावन, जलानेकी लकड़ी, उपला आदि; आग या क्रोध भड़कानेवाली वस्तु। –**सेल**–स्त्री० (फ़ुएल सेल) ऐसा सेल जिसमें विद्युतधारा उत्पन्न करनेके लिए ऊर्जा एक ईंधन तथा ऑक्सीजनकी पारस्परिक अभिक्रियासे प्राप्त होती है।

ई–पु० (सं०) कामदेव। स्त्री० लक्ष्मी। *सर्व० यह। *अ० ही।

ईकार–पु० (सं०) 'ई' स्वर।

ईकारांत–वि० (सं०) जिसके अंतमें 'ई' हो (शब्द)।

ईक्षक–वि०, पु० (सं०) देखनेवाला; विचार करनेवाला।

ईक्षण–पु० (सं०) देखना, दर्शन, दृष्टि; देखभाल; आँख; विवेचन; आलोचना।

ईक्षणिक, ईक्षणीक–पु० (सं०) भविष्यवक्ता, ज्योतिषी; हस्तरेखा-विशेषज्ञ।

ईक्षा–स्त्री० (सं०) दर्शन, दृष्टि; पर्यालोचन, विवेचन।

ईक्षिका–स्त्री० (सं०) आँख; दृष्टि, निगाह।

ईक्षित–वि० (सं०) देखा हुआ; विवेचित।

ईक्षिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) देखनेवाला।

ईक्ष्यवाचक–पु० (सं०) (प्रूफरीडर) दे० 'शोध्यशोधक'।

ईख–स्त्री० गन्ना, ऊख।

ईखना*–स० क्रि० देखना। स्त्री० एषणा, इच्छा।

ईछन*–पु० ईक्षण, आँख।

ईछना*–स० क्रि० इच्छा करना।

ईछा*–स्त्री० दे० 'इच्छा'।

ईजति*–स्त्री० इज्जत, मर्यादा।

ईजा–स्त्री० (अ०) पीडा, कष्ट।

ईजाद–स्त्री० (अ०) कोई नयी चीज बनाना, निकालना, आविष्कार; उद्भावन।

ईजान–वि० (सं०) यज्ञ करनेवाला।

ईठ*–वि०, पु० इष्ट; मित्र; प्यारा।

ईठना*–अ० क्रि० चाहना।

ईठि*–स्त्री० मित्रता, प्रीति; यत्न; चाह।

ईठी–स्त्री० भाला। * वि०, स्त्री० प्यारी।

ईडन–पु० (सं०) प्रशंसा करना।

ईडा–स्त्री० (सं०) स्तुति, प्रशंसा।

ईडित–वि० (सं०) स्तुत, प्रशंसित।

ईडुरी*–स्त्री० दे० 'ईँडुरी'।

ईड्य–वि० (सं०) प्रशंसा करने योग्य, स्तुत्य।

ईढ़*–स्त्री० हठ।

ईतर*–वि० इतरानेवाला; ढीठ; साधारण; नीच।

ईति–स्त्री० (सं०) बाधा, उपद्रव; खेतीको नुकसान पहुँचानेवाले छ उपद्रव–अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चूहों, टिड्डियों और पक्षियोंका फसल खा जाना और दूसरे राजाकी चढ़ाई; संक्रामक रोग; कलह; प्रवास।

ईथर–पु० (अं०) आकाश, अंतरिक्ष; रसायन शास्त्रका एक कार्बनिक यौगिक जिसका वैज्ञानिक नाम डाइ-एथिल-ईथर $(C_2H_5)_2O$ है। इसकी मीठी गंध होती है; यह निश्चेतकके रूपमें चिकित्साके

क्षेत्रमें प्रयुक्त किया जाता है; उन्नीसवीं शताब्दीमें यह कल्पना की गयी थी कि ईथर नामका एक माध्यम सर्वत्र व्याप्त है जिसके अन्दरसे होकर विद्युत-चुम्बकीय-तरंगों आदिका संचरण होता है। आधुनिक विज्ञानकी दृष्टिसे यह परिकल्पना व्यर्थ सिद्ध हो चुकी है।

ईद–स्त्री० (अ०) खुशीका दिन, त्योहार; (मुसलमानोंका) एक त्योहार। **–गाह**–स्त्री०, पु० ईदके दिन मुसलमानोंके एकत्र होकर नमाज पढ़नेकी जगह। **मु०** **–का चाँद**–ऐसी वस्तु जिसके दर्शन दुर्लभ हों।

ईदिया–पु० ईद या दूसरे त्योहारोंपर एक-दूसरेके यहाँ भेजी जानेवाली सौगात।

ईदी–स्त्री० ईदका इनाम, त्योहारी; ईद या इस प्रकारके त्योहारके अवसरपर उसके बखानमें लिखित पद्य; वह सुंदर हाशियेदार कागज जिसपर यह पद्य लिखा हो; वह पुरस्कार या त्योहारी जो ईदी लिखनेके लिए मौलवियोंको उनके शागिर्दोंसे मिलती है।

ईदुज्जुहा–स्त्री० (अ०) दसवीं जिलहिजको मनायी जानेवाली ईद; बकरीद।

ईदुलफ़ितर–स्त्री० (अ०) रमजानकी समाप्तिपर नया चाँद होनेके दूसरे दिन मनाया जानेवाला त्योहार।

ईदृश–वि० (सं०) ऐसा, इस तरहका। अ० ऐसे, इस तरह।

ईप्सन–पु० (सं०) पानेकी इच्छा करना।

ईप्सा–स्त्री० (सं०) पानेकी इच्छा; चाह, इच्छा।

ईप्सित–वि० (सं०) चाहा हुआ; जिसकी चाह हो, प्रिय।

ईप्सु–वि० (सं०) इच्छा, चाह रखनेवाला।

ईफाय–पु० (अ०) पूरा करना, वचनपालन। **–(ये)वादा**–पु० वादा पूरा करना, प्रतिज्ञापालन।

ईबी-सीबी*–स्त्री० सीत्कार, (रतिकालमें स्त्रीका) सी-सी करना।

ईमन–पु० एक रागिनी, ऐमन। **–कल्यान**–पु० एक मिश्रित राग।

ईमा, ईमाय–पु० (अ०) इशारा, संकेत; ध्वनि।

ईमान–पु० (अ०) धर्मविश्वास; ईश्वरपर विश्वास; धर्म; सचाई; खरापन; लेन-देन आदिमें सचाई; दयानत; नीयत। **–दार**–वि० सच्चा, विश्वसनीय; रुपये-पैसेके मामलेमें सच्चा, दयानतदार। **मु०–का सौदा**–खरा व्यवहार। **–की कहना**–सच कहना, सच्ची बात कहना। **–ठिकाने न रहना**–धर्मपर दृढ़ न रहना। **–डिगना**–नीयतमें खामी आना। **–देना**–सत्य छोड़ना। **–बिगड़ना,–में फ़र्क़ आना**–नीयत बिगड़ना; धर्ममें सच्ची निष्ठा न रहना। **–लाना**–किसी मत, सिद्धांत या धर्मकी सचाईपर विश्वास करना; उसे धर्म-रूपमें स्वीकार करना।

ईर*–स्त्री० दे० 'ईढ़'। पु० (सं०) वायु। **–ज,–पुत्र**–पु० हनूमान्। **–पाद**–पु० एक सर्प।

ईरखा*–स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

ईरण–वि० (सं०) क्षुब्ध या अस्थिर करनेवाला। पु० वायु; कथन; गमन; प्रेषण; कष्टपूर्ण मलत्याग।

ईरमद*–पु० दे० 'इरम्मद'।

ईरान–पु० (फा०) फारसका देश।

ईरानी–वि० (फा०) ईरानका। पु० ईरानवासी; ईरान देशकी भाषा।

ईरिण–वि० (सं०) ऊसर। पु० ऊसर जमीन।

ईरित–वि० (सं०) प्रेषित; कथित; कंपित; गत।

ईर्म–वि० (सं०) क्षुब्ध; बराबर चलने या भड़कानेवाला। पु० बाहु; फोड़ा, घाव।

ईर्या–स्त्री० (सं०) यतियोंकी तरह भ्रमण करना।

ईर्वारु–पु० (सं०) एक तरहकी ककड़ी, फूट।

ईर्षणा*–स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

ईर्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'ईर्ष्या'।

ईर्षित–वि० (सं०) जिससे ईर्ष्या की गयी हो।

ईर्ष्य–वि० (सं०) डाह करनेवाला।

ईर्ष्यक–वि० (सं०) दे० 'ईर्ष्य'। पु० एक प्रकारके नपुंसक (ये किसीको मैथुन करते देखकर कामोत्तेजित होते हैं)।

ईर्ष्या–स्त्री० (सं०) दूसरेकी बढ़ती न देख सकना, डाह, जलन। **–रति,–षंढ**–पु० अर्द्धनपुंसक पुरुष।

ईर्ष्यालु–वि० (सं०) दे० 'ईर्ष्य'।

ईर्ष्यु–वि० (सं०) डाह करनेवाला।

ईल–स्त्री० (अं०) बाँग मछली।

ईलि, ईली–स्त्री० (सं०) छोटी तलवार; लगुड।

ईश–पु० (सं०) स्वामी, मालिक; राजा; पति; ईश्वर; शिव; एक रुद्र; पारा; ११की संख्या; एक उपनिषद्। वि० ऐश्वर्ययुक्त; समर्थ। **–कोण**–पु० उत्तर-पूर्वका कोना। **–नगरी,–पुरी**–स्त्री० काशी। **–बल**–पु० पाशुपतास्त्र। **–सख**–पु० कुबेर।

ईशता–स्त्री० (सं०) प्रभुत्व; स्वामित्व।

ईशा–स्त्री० (सं०) ऐश्वर्य; अधिकार; ऐश्वर्ययुक्त स्त्री; दुर्गा।

ईशान–वि० (सं०) ऐश्वर्ययुक्त; आधिपत्ययुक्त; शासक। पु० शिव; एक रुद्र; विष्णु; शिवरूप सूर्य; उत्तर-पूर्वका कोना; आर्द्रा नक्षत्र; एक साध्य; ज्योति, कांति, प्रकाश; शमी वृक्ष।

ईशानी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; शाल्मली वृक्ष।

ईशिता–स्त्री०, **ईशित्व**–पु० (सं०) ईश्वरत्व; प्राधान्य; आठ सिद्धियोंमेंसे एक (इसके सिद्ध हो जानेपर दूसरोंपर प्रभुत्व किया जा सकता है)।

ईशी(शिन्)–वि० (सं०) शासन करनेवाला। पु० देवता; पति; स्वामी।

ईश्वर–पु० (सं०) स्वामी; राजा; धनी या बड़ा व्यक्ति; पति; जगन्नियंता, परमेश्वर; आत्मा; एक संवत्सर; शिव; कामदेव; पारा; पीतल; रामानुजी वैष्णवोंके अनुसार तीन पदार्थों (ईश्वर, चित् और अचित्) मेंसे एक। वि० ऐश्वर्ययुक्त; शक्तिमान्; समर्थ; धनी। **–निषेध**–पु० नास्तिकता। **–निष्ठ**–वि० ईश्वरमें विश्वास करनेवाला। **–प्रणिधान**–पु० संपूर्ण कर्म और उनके फल ईश्वरको अर्पित कर देना। **–प्रसाद**–पु० ईश्वरकी कृपा। **–भाव**–पु० ऐश्वर्य, स्वामित्व, सामर्थ्य इ०। **–वाद**– पु० ईश्वरके अस्तित्व तथा उसकी शक्तिमत्तामें विश्वास। **–वादी**– पु० ईश्वरके अस्तित्वमें विश्वास करनेवाला। **–विभूति**–स्त्री० परमेश्वरके विभिन्न रूप। **–सद्म(न्)**–पु० देवमंदिर।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर–पु० दे० 'विद्यासागर'।

ईश्वरा–स्त्री० (सं०) दुर्गा; लक्ष्मी या कोई शक्ति।

ईश्वराधीन–वि० (सं०) ईश्वरकी इच्छापर अवलंबित।

ईश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; लक्ष्मी; कोई शक्ति; लिंगिनी, वंध्या कर्कटी, क्षुद्रजटा, नाकुली आदि पौधे।

ईश्वरीय–वि० (सं०) ईश्वरका, ईश्वर-संबंधी; ईश्वर द्वारा किया गया, दिया गया या भेजा गया।

ईष–पु० (सं०) आश्विन मास; तीसरे मनुका एक पुत्र; शिवका एक अनुचर।

ईषण–वि० (सं०) शीघ्रता करनेवाला।

ईषणा–स्त्री० (सं०) क्षिप्रता; तीव्रगति।

ईषत्–वि० (सं०) थोड़ा। अ० कुछ-कुछ; आंशिक रूपमें। **–कर**–वि० अंशमात्र या कम करनेवाला; सरल, आसान। **–पुरुष**–पु० नीच व्यक्ति। **–स्पृष्ट**–पु० अर्धस्वर(य, र, ल, व)।

ईषद्–'ईषत्'का समासगत रूप। **–उष्ण**–वि० थोड़ा गरम, कुनकुना। **–दर्शन**–पु० चितवन; ईषद्दृष्टि।

ईषद्धास–पु० (सं०) मुस्कराहट।

ईषना*–स्त्री० एषणा; बलवती इच्छा।

ईषल्लभ–वि० (सं०) अल्प मूल्यमें मिलनेवाला।

ईषा–स्त्री० (सं०) हरिस। **–दंड**–पु० हलकी मुठिया। **–दंत**–पु० लंबे दाँतोंवाला हाथी; हलकी मूठ; हाथीका दाँत। वि० जिसके दाँत लंबे हों।

ईषिका, ईषीका–स्त्री० (सं०) हाथीकी आँखका गोलक; चित्रकारकी कूँची; बाण; सींक।

ईषिर–पु० (सं०) अग्नि।

ईष्म–पु० (सं०) कामदेव; वसंत ऋतु।

ईष्व–पु० (सं०) गुरु, आचार्य।

ईस*–पु० दे० 'ईश'।

ईसन*–पु० ईशान कोण।

ईसबगोल, ईसरगोल–पु० दे० 'इसबगोल'।

ईसर*–पु० महादेव; ऐश्वर्य ।

ईसरमूल–पु० रुद्रजटा या रुद्रलता नामक पौधा ।

ईसवी–वि० (अ०) ईसासे संवंध रखनेवाला, मसीही । **–सन्**–पु० ईसाके जन्मकालसे चला हुआ सन् ।

ईसा–पु० (अ०) ईसाई धर्मके प्रवर्तक, मसीह ।

ईसाई–पु० (अ०) ईसा-प्रवर्तित धर्मको माननेवाला क्रिश्चियन ।

ईसान*–पु० ईशान कोण ।

ईसार–पु० (अ०) स्वार्थत्याग, दूसरेके हितके लिए अपनी हानि करना ।

ईहा–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह; उद्यम, चेष्टा । **–मृग**–पु० भेड़िया; रूपकका एक भेद जिसमें चार अंक होते हैं (ना०) । **–वृक**–पु० भेड़िया ।

ईहार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) धनलाभके लिए सचेष्ट; उद्देश्यपूर्तिके लिए प्रयत्नशील ।

ईहित–वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित, चेष्टित ।

उ

उ–देवनागरी वर्णमालाका पाँचवा (स्वर) वर्ण । इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है ।

उँ–अ० प्रश्न, क्रोध आदिका सूचक एक अव्यक्त शब्द ।

उंकुण–पु० (सं०) खटमल ।

उँखारी†–स्त्री० दे० 'उखारी' ।

उँगनी–स्त्री० ओंगने अर्थात् गाड़ीकी धुरीमें तेल लगानेकी क्रिया ।

उंगल–पु० दे० 'अंगुल' ।

उँगलाना–स० क्रि० तंग करना, परेशान करना ।

उँगली–स्त्री० हाथके फलीके आकारवाले अंतिम भाग जो छोटी चीजोंके पकड़ने-उठाने आदिके साधन होते हैं; पाँवके ऐसे ही भाग । **–मिलाव**–पु० नाचकी एक गत । मु० **–उठना**–बदनामी होना, उपहासका पात्र होना । **–उठाना**–दोष, लांछन लगाना, बदनाम करना; बुरी निगाह, हानि पहुँचानेकी दृष्टिसे देखना । **–करना**–परेशान करना, सताना । **–चटकाना**–उँगलियोंसे चट-चट शब्द करना । **–चमकाना**–उँगलियोंको द्वेष, नखरेसे हिलाना । **–पकड़ते पहुँचा पकड़ना**–थोड़ा पाकर अधिक पानेका प्रयत्न करना, किसीकी भलमनसीका अनुचित लाभ उठानेका यत्न करना । **–रखना**–(किसीकी कृतिमें) दोष दिखाना । **–लगाना**–(किसी काममें) नाममात्र सहायता या सहारा देना, हाथ लगाना । **–(लियाँ) (पाँचों) घीमें होना**–प्रचुर लाभका अवसर मिलना । **–नचाना**–उँगलियाँ चमकाना । **(लियों)पर नचाना**–इच्छानुसार काम कराना, इशारोंपर नचाना; हैरान करना ।

उँघाई†–स्त्री० ऊँघनेकी क्रिया, झपकी ।

उंचन–स्त्री० उनचन, अदवान ।

उंचना–स० क्रि० अदवान कसना ।

उँचाई*–स्त्री० ऊँचापन; ऊँचेपनकी सीमा; बड़ाई ।

उँचान*–पु० ऊँचाई ।

उँचाना*–स० क्रि० ऊँचा करना, ऊपर उठाना ।

उँचाव*–पु० ऊँचाई ।

उंचास–वि० चालीस और नौ । पु० ४९की संख्या ।

उँचास*–पु० ऊँचाई ।

उंछ–पु० (सं०) खेतमें (लुनाईके बाद) या रास्तेमें पड़े हुए दाने जीविकाके लिए चुनना, सीला बीनना । **–वृत्ति**–स्त्री० खेतमें छूटे हुए दाने चुनकर गुजर करना । वि० इस प्रकार निर्वाह करनेवाला । **–शिल** पु० उंछवृत्ति । **–शील**–वि० उंछवृत्तिसे जीविका करनेवाला ।

उँजरिया*–स्त्री० चाँदनी; रोशनी । वि० स्त्री० उँजेली ।

उँजियार*–पु० प्रकाश । वि० प्रकाशमान; उज्ज्वल ।

उँजियारी, उँज्यारी–स्त्री० चाँदनी, प्रकाश । वि० स्त्री० प्रकाशयुक्त ।

उँजेरा, उँजेला–पु० दे० 'उजेला' ।

उँटड़ा, ऊँटरा–पु० गाड़ीका अगला भाग जमीनपर टिकानेके लिए जूएके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी ।

उंडक–पु० (सं०) एक तरहका कुष्ठ रोग ।

उंडुक–पु० पुस्तकादिके अंतमें जोड़ा गया अतिरिक्त अंश, पूरक भाग, परिशिष्ट ।

उँडेलना–स० क्रि० दे० 'उड़ेलना' ।

उंदन–पु० (सं०) गीला करना, भिगोना ।

उँदरी–स्त्री० गंजा होने, बाल झड़ जानेका रोग ।

उँदरू–पु० बबूलकी जातिकी एक काँटेदार झाड़ी ।

उंदुर, उंदुरु, उंदूरु–पु० (सं०) चूहा । **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० मूसाकानी नामकी लता ।

उंद्र*–पु० चूहा ।

उंवर, उंबुर–पु० (सं०) चौखटकी ऊपरकी लकड़ी ।

उंबी–स्त्री० (सं०) आँचपर पकायी हुई जौ-गेहूँकी हरी बाल ।

उँह–अ० अस्वीकार, घृणा, वेदना आदिका सूचक शब्द ।

उ–पु० (सं०) शिव; ब्रह्मा; चंद्रमंडल ।

उअना*–अ० क्रि० उगना, उदय होना ।

उआना*–स० क्रि० उगाना; मारनेके लिए हाथ या हथियार उठाना ।

उऋण–वि० ऋणमुक्त; जो किसीके प्रति अपने कर्तव्यका पालन कर चुका हो ।

उकचन*–पु० मुचकुंदका फूल ।

उकचना–अ० क्रि० उखड़ना, उचड़ना; हट जाना ।

उकटना–स० क्रि० किसीपर अपने उपकार या उसके अपकारको बार-बार कहना, उघटना ।

उकटा–वि० उकटनेवाला । पु० उकटनेका कार्य । **–पुरान**–पु० पुरानी शिकायतोंको उघटना, गड़े मुर्दे उखाड़ना ।

उकठना–अ० क्रि० सूखकर ऐंठ जाना ।

उकठा–वि० सूखकर ऐंठा हुआ ।

उकड़ूँ–पु० बैठनेका वह ढंग जिसमें घुटने (खड़ेबल) मोड़े जाते हैं (**–बैठना**) ।

उकत*–स्त्री० दे० 'उक्ति' ।

उकताना–अ० क्रि० ऊबना, अधीर होना ।

उकताहट–स्त्री० अधीरता, जल्दबाजी–'घर जानेकी उकताहटमें थे' –अमर० ।

उकति*–स्त्री० दे० 'उक्ति' ।

उकलना–अ० क्रि० लपेट या ऐंठनका खुलना, उघड़ना; उखड़ना ।

उकलवाना–स० क्रि० उघड़वाना, लपेट या ऐंठन खुलवाना ।

उकलाई†–स्त्री० उलटी, कै; मिचली ।

उकलाना–अ० क्रि० कै करना । * अकुलाना, व्याकुल होना–'आवण कह गये अजहुँ न आये जिवड़ो अति उकलावै'–मीरा ।

उकलैदिस–पु० रेखागणितका आविष्कारक यूनानी गणितज्ञ युक्लिड; रेखागणित ।

उकवत, उकवथ–पु० एक चर्मरोग, एक तरहकी सूखी या गीली दाद ।

उकसना–अ० क्रि० उभरना; अंकुरित होना ।

उकसनि*–स्त्री० उभार ।

उकसाना–स० क्रि० उभारना; भड़काना; उछाल देना; (दीयेकी बत्तीको) आगे सरकाना, बढ़ाना । अ० क्रि० हट जाना–'हाथिनके हौदा उकसाने'–भू० ।

उकसाहट–स्त्री० उकसानेका भाव; उत्तेजना ।

उकसौंहा*–वि० उठता, उभरता हुआ ।

उकाँव†–पु० भूसा मिला हुआ वह अन्न जो अभी ओसाया न गया हो ।

उक़ाब–पु० (अ०) गरुड़; बड़ी जातिका गिद्ध ।

उकार–पु० (सं०) शिव; 'उ' स्वर ।

उकारांत–वि० (सं०) जिसके अंतमें 'उ' हो (शब्द) ।

उकासना*–स० क्रि० ऊपरकी ओर फेंकना ।

उकासी†–स्त्री० उधड़ जाना; छुट्टी; उत्सव।

उकिलना†–अ० क्रि० दे० 'उकलना'।

उकीरना–स० क्रि० उखाड़ना; खोदना।

उकील*–पु० दे० 'वकील'।

उकुण–पु० (सं०) दे० 'उंकुण'।

उकुति*–स्त्री० दे० 'उक्ति'।

उकुरू–पु० दे० 'उकड़ूँ'।

उकुसना*–स० क्रि० उधेड़ना; उजाड़ना।

उकेरना–स० क्रि० पत्थर, काष्ठ आदिपर नक्काशी करना।

उकेलना–स० क्रि० लपेट या ऐंठन खोलना, उधेड़ना; उचाड़ना।

उकौथ, उकौथा–पु० दे० 'उकवथ'।

उकौना†–पु० गर्भावस्थामें होनेवाली इच्छाएँ, दोहद।

उक्त–वि० (सं०) कहा हुआ, कथित। **–निर्वाह**–पु० अपने कथनका समर्थन या रक्षण। **–प्रत्युक्त**–पु० कथोपकथन; लास्यके दस अंगोंमेंसे एक (ना०)। **–वाक्य**–वि० जो अपना मत व्यक्त कर चुका हो। पु० निर्णय।

उक्तानुशासन–वि० (सं०) जिसे आदेश दिया गया हो।

उक्ति–स्त्री० (सं०) कथन; वाक्य; कवित्वमय वचन, पद्य; शब्दकी अर्थद्योतनशक्ति।

उक्थ–पु० (सं०) स्तोत्र; साम-विशेष; एक यज्ञ; ऋषभक नामकी ओषधि।

उक्थी(क्थिन्)–वि० (सं०) स्तोत्र-पाठ करनेवाला।

उक्षण–पु० (सं०) जल छिड़कना, सींचना।

उक्षा(क्षन्)–पु० (सं०) वैल; सूर्य; अग्नि; सोम; मरुत्; अष्टवर्गके अंतर्गत ऋषभक नामक ओषधि।

उक्षाल–वि० (सं०) क्षिप्र; भयंकर; वड़ा; उत्तम। पु० बंदर।

उक्षित–वि० (सं०) भिगोया हुआ।

उखटना–स० क्रि० खोंटना; कुतरना। अ० क्रि० लड़खड़ाना।

उखड़ना–अ० क्रि० जमी, गड़ी या जड़ी हुई चीजका ऊपर आ जाना, अपनी जगहसे हटना; टूटना (दम, साँस); निशान पड़ना, उपटना; हड्डीका जोड़से हट जाना; वेताल या वेसुरा हो जाना; तितर-बितर होना; (गाने आदिका) न जमना। मु० **उखड़ा उखड़ा-सा रहना**–अस्तव्यस्त या उदास-सा रहना। **उखड़ी-उखड़ी बातें करना**–वेलौस होकर बात करना। **उखड़ी-पुखड़ी सुनाना**–अंडवंड सुनाना।

उखड़वाना–स० क्रि० उखाड़नेका कार्य दूसरेसे कराना।

उखनींद*–स्त्री० उखड़ी, उचटी नींद।

उखम*–पु० गरमी। **–ज**–पु०, वि० दे० 'उष्मज'।

उखर*–पु० ऊख वोनेके वाद होनेवाली हलकी पूजा।

उखरना*–अ० क्रि० दे० 'उखड़ना'।

उखराज–पु० ईखकी वोआईका पहला दिन।

उखर्वल–पु० (सं०) एक तरहकी घास, भूरिपत्र।

उखली–स्त्री० दे० 'ओखली'।

उखा–स्त्री० (सं०) वटलोई; हाँड़ी; * दे० 'ऊषा'।

उखाड़–पु० उखाड़नेकी क्रिया; पेंच या दलीलकी काट; कुश्तीका एक पेंच। **–पछाड़**–स्त्री० उलट-पुलट; चुगली खाना।

उखाड़ना–स० क्रि० गड़ी, जमी, बैठायी हुई चीजको अपनी जगहसे हटा देना; ऊपर लाना; हड्डीको जोड़से हटा देना; तितर-बितर कर देना; रंग, प्रभाव आदि न जमने देना; भगाना, उदवासना; नष्ट करना।

उखाड़ू–वि० उखाड़नेवाला।

उखारना*–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना'।

उखारी–स्त्री० ईखका खेत।

उखालिया–पु० व्रत आरंभ करनेके पूर्व कुछ रात रहते ग्रहण किया जानेवाला अल्पाहार, 'सरगही'।

उखेड़–पु० दे० 'उखाड़'।

उखेड़ना–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना'।

उखेरना*–स० क्रि० दे० 'उखाड़ना'।

उखेलना*–स० क्रि० तसवीर वनाना, उरेहना।

उख्य–वि० (सं०) हंडी या इस प्रकारके अन्य पात्रमें पकाया हुआ (मांसादि)।

उगट्ना*–अ० क्रि० बढ़ना।

उगटना*–स० क्रि० दे० 'उघटना'।

उगना–अ० क्रि० उदय होना; अँखुआ फेंकना, जमना; उपजना।

उगरना†–अ० क्रि० निकलना; कुएँमें जमी हुई मिट्टी आदिकी सफाई होना।

उगलना–स० क्रि० मुँहमें ली हुई चीजको थूक देना; खायी-पी हुई चीजको मुँहकी राह वाहर कर देना; छिपा रखी हुई वातको प्रकट कर देना; अपराध स्वीकार कर लेना; दवा, छिपा रखा हुआ माल लौटा देना; वाहर निकालना, विखेरना (आग, जहर आदि)।

उगलवाना, उगलाना–स० क्रि० 'उगलना'का प्रेरणार्थक रूप।

उगवना*–स० क्रि० उगाना, उपजाना।

उगसाना–स० क्रि० दे० 'उकसाना'।

उगसारना*–स० क्रि० कहना; प्रकट करना।

उगहना–स० क्रि० दे० 'उगाहना'।

उगहनी†–स्त्री० चंदा।

उगाना–स० क्रि० जमाना, उपजाना; उदय करना; उठाना; तानना।

उगार–पु० निचुड़ा या निचोड़ा हुआ पानी; रँगे हुए कपड़ेके निचोड़नेसे निकलनेवाला पानी; दे० 'उगाल'।

उगारना–स० क्रि० कुएँकी मिट्टी आदि निकालकर सफाई करना।

उगाल–पु० थूक, खखार; पीक। **–दान**–पु० थूकनेका वरतन, पीकदान।

उगाला–पु० फसलको नुकसान पहुँचानेवाला एक कीड़ा।

उगाहना–स० क्रि० वहुतसे लोगोंसे लेकर इकट्ठा करना; चंदा करना; वसूल करना।

उगाही–स्त्री० वसूली; चंदा; लगान।

उगिलना*–स० क्रि० दे० 'उगलना'।

उगिलवाना, उगिलाना–स० क्रि० दे० 'उगलवाना'।

उग्गार*–पु० उद्गार, वमन; विचार या भावकी अभिव्यक्ति।

उग्र–वि० (सं०) उत्कट, तीव्र; भयानक; क्रूर; तीखा, तेज; क्रुद्ध, कोपनशील; उच्च; परिश्रमी। पु० शिव; रुद्र; क्षत्रिय पिता और शूद्रा मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति; रौद्र रस; केरल देश; सहजनका पेड़; वच्छनाग (वत्सनाग) विष; पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वापाढ़ा आदि पाँच नक्षत्रोंका समूह; वायु। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० डरावने काम करनेवाला, क्रूर-कर्मा। **–कांड**–पु० करेला। **–गंध**–पु० लहसुन, हींग, चंपा, कायफल इ०। वि० कड़ी गंधवाला। **–गंधा**–स्त्री० अजवायन; अजमोदा; वच; नकछिकनी। **–चंडा,–चारिणी**–स्त्री० दुर्गा। **–जाति**–वि० जारज; नीच वंशमें उत्पन्न। **–तारा**–स्त्री० एक देवी। **–तेजा(जस्)**–वि० भयानक तेजसे युक्त। **–दंड**–वि० कठोरतापूर्वक शासन करनेवाला; निष्ठुर। **–दर्शन**–वि० जो देखनेमें डरावना हो, भयानक। **–धन्वा(न्वन्)**–पु० शिव; इंद्र। **–नासिक**–वि० दीर्घ नासिकावाला। **–पुत्र**–वि० वड़े वंशमें उत्पन्न। पु० कार्त्तिकेय। **–रेता(तस्)**–पु० रुद्रका एक रूप। **–वाद**–पु० (रैडिकैलिज्म) वहुत ज्यादा परम्परा विरोधी उग्र वृत्ति जो राजनीति और साहित्यमें ही नहीं, किसी भी वैचारिक क्षेत्रमें दिखाई पड़ सकती है। **–शेखरा**–स्त्री० गंगा। **–सेन**–पु० कंसके पिता, मथुराके राजा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–०ज**–पु० कंस।

उग्रक–वि० (सं०) वीर; बलवान्।

उग्रह–पु० ग्रहणसे छूटना; मोक्ष।

उग्रा–स्त्री० (सं०) दुर्गा, महाकाली; उग्र स्वभाववाली, कर्कशा स्त्री; अजवायन, वच इ०।

उघटना–स० क्रि० भेद खोलना; किसीपर अपने उपकारों या उसके अपकारोंकी उद्धरणी करना, उकटना; कोसना; ताल देना।

उघटा–वि० उवटनेवाला। **–पुरान**–पु० दे० 'उकटा-पुरान'।

उघड़ना–अ० क्रि० खुलना; प्रकट होना; नंगा होना; भंडाफोड़ होना। मु० **उघड़कर नाचना**–मान-मर्यादाका खयाल छोड़कर मनमानी करना।

उघरना*–अ० क्रि० दे० 'उघड़ना'।

उघरारा*–वि० खुला हुआ। पु० खुला स्थान।

उघाड़ना–स० क्रि० खोलना; अनावृत करना; वस्त्रहरण, पर्दाफाश करना।

उघारना*–स० क्रि० दे० 'उघाड़ना'।

उघारा–वि० वस्त्रविहीन, नंगा; आवरणरहित।

उघेलना*–स० क्रि० उघाड़ना।

उचंत(उँचित) खाता–पु० (सस्पेंस अकाउंट) दे० 'निलंबित खाता'।

उचकन–पु० कोई चीज ऊँची करनेके लिए उसके नीचे दिया जानेवाला ईंट आदिका टुकड़ा।

उचकना–अ० क्रि० एड़ीके बल खड़ा होना; किसी चीजको पाने या देखनेके लिए ऊपर उठना; उछलना। स० क्रि० लपककर ले लेना; उठा लेना।

उचका*–अ० सहसा, अचानक।

उचकाना–स० क्रि० ऊपर उठाना।

उचक्का–पु० चीज छीन-उठाकर भाग जानेवाला, चाईं, उठाईगीरा।

उचटना–अ० क्रि० उचड़ना; अलग होना, बिलगाना, छूटना; मनका हट जाना, न लगना; भड़कना।

उचटाना–स० क्रि० अलग करना, छुड़ाना; विरक्त करना; बिचकाना, भड़काना।

उचड़ना–अ० क्रि० सटी, चिपकी हुई चीजका अलग हो जाना; उखड़ना; चल देना, उड़ जाना (कौएके उड़नेके आधारपर शकुन-विचार–स्त्रि०)।

उचना*–अ० क्रि० उचकना, ऊपर उठना। स० क्रि० ऊपर उठाना।

उचनि*–स्त्री० उठान, उभार।

उचरना–स० क्रि० उच्चारण करना, बोलना। अ० क्रि० ध्वनि, शब्द होना।

उचाट–पु० विरक्ति, उदासी, जी न लगना। वि० उचटा हुआ, जो किसी काममें न लगे (मन उचाट है)।

उचाटन*–पु० दे० 'उच्चाटन'।

उचाटना–स० क्रि० उचाट कर देना, उच्चाटन करना।

उचाटी*–स्त्री० मनका उचाट होना, उदासी।

उचाड़ना–स० क्रि० सटी, चिपकी चीजको जुदा करना; उखाड़ना।

उचाना*–स० क्रि० ऊँचा करना, उठाना।

उचार*–पु० दे० 'उच्चार'।

उचारना*–स० क्रि० उच्चारण करना, बोलना; उखाड़ना।

उचावा–पु० सपनेमें बड़बड़ाना।

उचित–वि० (सं०) ठीक, योग्य, मुनासिब; स्तुत्य; विहित; ज्ञात; मापा हुआ; प्रिय, ग्राह्य।

उचेड़ना, उचेलना†– स० क्रि० दे० 'उचाड़ना'।

उचैंहा, उचौंहा*–वि० उभरा हुआ, उठा हुआ।

उच्चंड–वि० (सं०) अति उग्र, प्रचंड; अति क्रुद्ध; तेज; उतावला।

उच्चंद्र–पु० (सं०) रात्रिशेष; रात्रिका चंद्रहीन या अंतिम भाग।

उच्च–वि० (सं०) ऊँचा, लंबा; बड़ा, श्रेष्ठ; कुलीन; तेज; जोरदार; शुभ; ऊँचे, दूसरोंपर प्रभाव डालने योग्य स्थानपर बैठा हुआ। **–तरु**–पु० नारियल या इस श्रेणीका ऊँचा वृक्ष। **–ताल**–पु० पानगोष्ठी, भोज आदिमें होनेवाला नाच-गाना। **–न्यायालय**–पु० (हाईकोर्ट) किसी प्रदेश या राज्यका प्रधान न्यायालय। **–सदन**–पु० (अपर हाउस) धन, विद्या, वय आदिकी दृष्टिसे अधिक संपन्न या अनुभवी माने जानेवाले सदस्योंसे निर्मित सदन, द्वितीय सदन।

उच्चकित–वि० (सं०) भौंचक, घबड़ाहटमें ऊपर-नीचे देखनेवाला।

उच्चघन–पु० (सं०) मन ही मन हँसना, वह हँसी जो प्रकट न हो।

उच्चटा–स्त्री० (सं०) घमंड; अभ्यास; प्रथा; गुंजा; भूम्यामलकी; नागरमुस्ता; लहसुनका एक भेद; चूड़ाला।

उच्चय–पु० (सं०) ढेर, राशि; चयन, चुनना (पुष्पादि); नीवीबंध, अभ्युदय।

उच्चयापचय–पु० (सं०) उत्थान और पतन।

उच्चरण–पु० (सं०) ऊपर उठना, आना; बाहर आना; ध्वनि, शब्दरूपमें (मुँहसे) बाहर आना।

उच्चरना*–स० क्रि० उच्चारण करना।

उच्चरित–वि० (सं०) ऊपर, बाहर आया हुआ; कहा हुआ, कथित। पु० मल, विष्ठा।

उच्चल–वि० (सं०) गतिशील। पु० मन; समक्ष।

उच्चलन–पु० (सं०) जाना, रवाना होना।

उच्चलित–वि० (सं०) जो जानेवाला ही हो, प्रस्थान कर रहा हो; बाहर आया या ऊपर गया हुआ; फटका हुआ।

उच्चाकांक्षा–स्त्री० (सं०) ऊँची, बड़प्पनकी आकांक्षा।

उच्चाट–पु० (सं०) वैरीको नष्ट करना; मंत्रसे मनको विरक्त कर देना; ऊब, विरक्ति।

उच्चाटन–पु० (सं०) हटाना; निकालना; उखाड़ना; किसीके चित्तको किसी व्यक्ति, स्थान, कार्य आदिसे उचटाना; तंत्रके छ अभिचारोंमेंसे एक।

उच्चाटित–वि० (सं०) जिसका उच्चाटन किया गया हो।

उच्चायुक्त–पु० (हाई कमिश्नर) राष्ट्रमंडलके किसी एक देशका राजदूत जो मंडलके किसी अन्य देशमें अपने देशका प्रतिनिधि बनकर रहे।

उच्चार–पु० (सं०) (शब्दको) बोलना, कहना; मल, विष्ठा।

उच्चारक–वि० (सं०) उच्चारण करनेवाला, कहनेवाला।

उच्चारण–पु० (सं०) शब्दको मुँहसे निकालना, बोलना; शब्द या उसके वर्णोंको कहनेका ढंग। **–स्थान**–पु० मुँहका वह स्थान जिसके प्रयत्नसे कोई विशेष ध्वनि निकले (कंठ, तालु, ओष्ठ, जिह्वा आदि)।

उच्चारणीय–वि० (सं०) उच्चारण करने योग्य।

उच्चारित–वि० (सं०) कहा, बोला हुआ।

उच्चार्य–वि० (सं०) उच्चारणीय।

उच्चार्यमाण–वि० (सं०) जिसका उच्चारण किया जा रहा हो या किया जानेवाला हो।

उच्चावच–वि० (सं०) ऊँचा-नीचा; छोटा-बड़ा; विविध, विभिन्न; विषम।

उच्चावचता–स्त्री०, **उच्चावचन**–पु० (सं०) (धरातलका) ऊँचा या नीचा होना, पृथ्वी तलकी ऊँचाई-निचाई (रिलीफ); छोटा-बड़ा होना, वैषम्य।

उच्चिगट–पु० (सं०) भावाविष्ट, क्रुद्ध व्यक्ति; एक तरहका केकड़ा; एक तरहका झींगुर।

उच्चित–वि० (सं०) संगृहीत; एकत्र किया हुआ, चयन किया हुआ; राशीकृत।

उच्चूड, उच्चूल–पु० (सं०) ध्वजा या उसका ऊपरका भाग; झंडेके सिरेपरकी सजावट।

उच्चैः(च्चैस्)–अ० (सं०) ऊँची आवाजमें, जोरसे। **–श्रवा-(वस्)**–पु० इंद्रका घोड़ा। वि० ऊँचा सुननेवाला; लंबे कानोंवाला।

उच्छन्न–वि० (सं०) अनावृत; नष्ट, लुप्त।

उच्छरना*–अ० क्रि० दे० 'उछलना'।

उच्छलन–पु० (सं०) उछलना; तरंगित होना।

उच्छलना*–अ० क्रि० छलकना; ऊपर उठकर गिरना।

उच्छलित–वि० (सं०) उछला या उछलता हुआ; तरंगित, क्षुब्ध; कंपित; गया हुआ।

उच्छव*–पु० उत्सव।

उच्छादन–पु० (सं०) ढकना; लेपना, उबटन लगाना।

उच्छाव*–पु० दे० 'उछाव'।

उच्छास*–पु० दे० 'उच्छ्वास'।

उच्छासन–वि० (सं०) नियंत्रणमें न रहनेवाला, निरंकुश।

उच्छास्त्र–वि० (सं०) शास्त्र-विरोधी; शास्त्रके विरुद्ध चलनेवाला।

उच्छाह*–पु० दे० 'उछाह'।

उच्छिंघन–पु० (सं०) नाकसे साँस लेना; खर्राटे भरना।

उच्छिख–वि० (सं०) शिखायुक्त; जिसकी ज्वाला ऊपरकी ओर जा रही हो; चमकीला; प्रकाशमान।

उच्छित्ति–स्त्री० (सं०) विनाश, ध्वंस।

उच्छिन्न–वि० (सं०) कटा, उखड़ा हुआ; नष्ट, मिटाया हुआ। **–संधि**–स्त्री० उर्वरा या खनिज पदार्थोंसे पूर्ण भूमि देकर की जानेवाली संधि।

उच्छिष्ट–वि० (सं०) खानेसे बचा, खाकर छोड़ा हुआ; परित्यक्त; बासी; जिसके मुँहमें जूठन लगी हुई हो। पु० जूठा अन्न, जूठन; शहद। **–गणेश,–विनायक**–पु० तंत्रोक्त एक गणपति। **–चांडालिनी**–स्त्री० मातंगी देवी (तंत्र)। **–भोक्ता(क्तृ)**–वि० जूठन खानेवाला। पु० नीच व्यक्ति। **–भोजन**–पु० जूठन खाना; देवताका प्रसाद या पंच महायज्ञसे बचे हुए अन्नका भोजन। **–भोजी(जिन्)**–वि० उच्छिष्ट खानेवाला। **–मोदन**–पु० मोम।

उच्छीर्षक–वि० (सं०) जिसका सिर उठा हो। पु० तकिया; सिर।

उच्छुल्क–वि० (सं०) जिस (माल) पर चुंगी न दी गयी हो (कौ०)। अ० बिना चुंगी या महसूल दिये।

उच्छुष्क–वि० (सं०) सूखा हुआ।

उच्छू–स्त्री० गलेमें कुछ अटकनेसे आनेवाली खाँसी।

उच्छून–वि० (सं०) सूजा हुआ; मोटा, स्थूलकाय; ऊँचा।

उच्छृंखल–वि० (सं०) क्रमरहित; बंधन न माननेवाला, निरंकुश, स्वेच्छाचारी।

उच्छेत्ता(त्तृ)–वि०, पु० (सं०) उच्छेद करनेवाला, नाशकर्ता।

उच्छेद, उच्छेदन–पु० (सं०) काटना; जड़ उखाड़ना, उन्मूलन; नाश।

उच्छेदी(दिन्)–वि० (सं०) उच्छेद करनेवाला।

उच्छेष, उच्छेषण–पु० (सं०) अवशेष, बचा, छूटा हुआ भाग; जूठन।

उच्छोषण–पु० (सं०) सुखाना; रस ऊपर खींच लेना। वि० सुखानेवाला।

उच्छ्रय, उच्छ्राय–पु० (सं०) ऊँचाई; वृद्धि; अभिमान।

उच्छ्वसन–पु० (सं०) साँस लेना; गहरी साँस लेना।

उच्छ्वसित–वि० (सं०) उच्छ्वासयुक्त; प्रसन्न; प्रफुल्ल, विकसित; आशानुप्राणित; आश्वासित, ढाढ़स बँधाया हुआ; चिंतामुक्त; क्षुब्ध।

उच्छ्वास–पु० (सं०) ऊपर खींची या छोड़ी जानेवाली साँस; आह भरना; प्रोत्साहन, ढाढ़स; मरण; ग्रंथका अध्याय; जीवन; हवा खींचने या फूँकनेके निमित्त बनी हुई नलिका।

उच्छ्वासित–वि० (सं०) साँसके साथ या साँसके रूपमें बाहर आया हुआ; प्रसन्न किया हुआ; उठाया हुआ; ढाढ़स बँधाया हुआ; मुक्त, ढीला या पृथक् किया हुआ; थका हुआ; अत्यधिक।

उच्छ्वासी(सिन्)–वि० (सं०) साँस लेनेवाला; स्फीत; आह भरनेवाला; मरता हुआ; मुरझानेवाला; ठहरनेवाला; आगे बढ़नेवाला।

उछंग*–पु० गोद; हृदय।

उछकना*–अ० क्रि० चौंकना; होशमें आना।

उछक्का–वि०, स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा।

उछरना*–अ० क्रि० उछलना; उतरना; उपटना; कै करना।

उछल-कूद–स्त्री० उछलना-कूदना, कूद-फाँद; असंयत, अधीरतासूचक चेष्टाएँ।

उछलना–अ० क्रि० तेजीके साथ नीचेसे ऊपर उठना, उझकना, कूदना; ऊपर उठकर नीचे गिरना; हर्ष या क्रोधकी अतिशयतासे उझकना; उपटना, उभरना; उतराना।

उछाँटना*–स० क्रि० उपाटना; चुनना, छाँटना; उचाटना।

उछार*–स्त्री० दे० 'उछाल'।

उछारना*–स० क्रि० दे० 'उछालना'।

उछाल–स्त्री० उछलनेकी क्रिया, कुदान, छलाँग; उछलने, ऊपर उठनेकी हद; उलटी, कै; ऊँचाई; छींटा; ऊपर उठता हुआ कण। **–छक्का**–वि०, स्त्री० कुलटा।

उछालना–स० क्रि० ऊपर फेंकना; जाहिर, उजागर करना।

उछाला–पु० उलटी, कै; उफान।

उछाव–पु० उत्सव, खुशी; उत्साह, उमंग। **–बधाव**–पु० धूमधाम, आनंद।

उछाह–पु० उत्साह; हर्ष; खुशीके कामकी धूम, उत्सव; चाव, हौसला।

उछाही*–वि० उत्साही; उछाह करनेवाला।

उछिन्न*–वि० दे० 'उच्छिन्न'।

उछिष्ट*–वि०, पु० दे० 'उच्छिष्ट'।

उछीनना*–स० क्रि० उच्छेद, नाश करना।

उछीर*–पु० अवकाश, दरार।

उछेद*–पु० दे० 'उच्छेद'।

उजका†–पु० पक्षियों इत्यादिको डरवानेके लिए खेतमें गाड़ दिया जानेवाला 'पुतला', 'धोखा'।

उजट*–पु० पर्णकुटी, उटज।

उजड़ना–अ० क्रि० जनशून्य, वीरान होना, बसनाका उलटा; तबाह, बर्बाद होना।

उजड्ड–वि० अशिष्ट, असभ्य, गँवार; उद्धत। **–पन**–उद्दंडता, अशिष्टता; उच्छृंखलता।

उज़बक–पु० (तु०) तातारियोंकी एक जाति। वि० मूर्ख, निर्बुद्धि।

उजर*–वि० दे० 'ऊजड़'।

उजरत–स्त्री० (अ०) मजदूरी, पारिश्रमिक, मेहनतका बदला।

उजरा*–वि० दे० 'उजला'। **–ई**–स्त्री० उजलापन, सफेदी; कांति।

उजराना*–स० क्रि० उजाला करना; साफ करना; चमकाना।

उजलत–स्त्री० (अ०) जल्दी, उतावली। **–पसंद,–बाज़**–वि० जल्दबाज। **–बाज़ी**–स्त्री० उतावली।

उजला–वि० सफेद, उज्ज्वल; स्वच्छ। पु० धोबी। (स्त्री० 'उजली'।) मु० **–मुँह करना**–गौरव बढ़ाना, कलंक मिटाना। **–(ली)समझ**–निर्मल बुद्धि; स्वच्छ विचार।

उजवास†–पु० प्रयत्न, चेष्टा।

उजागर–वि० दीप्तिमय; प्रकट, प्रकाशित; प्रसिद्ध, कीर्तिशाली। अ० प्रकट रूपसे, खुलेआम।

उजाड़–वि० ध्वस्त, उजड़ा हुआ; वीरान, जनशून्य। पु० उजड़ा हुआ, वीरान स्थान।

उजाड़ना–स० क्रि० बसे हुएको निकाल बाहर करना, रहने न देना; नष्ट, बर्बाद कर देना, तोड़ फोड़ मचाना, ढाहना।

उजान–अ० बहावकी उलटी दिशामें, चढ़ावकी ओर।

उजार*–वि०, पु० दे० 'उजाड़'।

उजारना*–स० क्रि० दे० 'उजाड़ना'।

उजारा*–पु० दे० 'उजाला'।

उजारी*–स्त्री० दे० 'उजाली'; † अँगऊँ या 'अँगौंगा'।

उजालना–स० क्रि० (गहने आदिका) मैल साफ करना, निखारना; चमकाना; जलाना।

उजाला–पु० प्रकाश, रोशनी; कुल या जातिमें श्रेष्ठ व्यक्ति। वि० प्रकाशयुक्त, अँजोरा। **–पाख**–पु० शुक्ल पक्ष। **–(ले) का तारा**–शुक्र ग्रह। मु० **–होना**–सवेरा होना; नाश होना।

उजाली–स्त्री० चाँदनी। वि०, स्त्री० प्रकाशमयी, चाँदनीवाली।

उजास–पु० उजाला, रोशनी; चमक। –'कछु उजास भो प्रात समाना'–रामरसायन।

उजासना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना।

उजियर*–वि० उजला।

उजियरिया*–स्त्री० उजाली, चाँदनी।

उजियाना–अ० क्रि० उत्पन्न करना; प्रकट करना।

उजियार*–पु० उजाला, रोशनी। वि० प्रकाशित, रोशन; चतुर।

उजियारना*–स० क्रि० रौशन करना, बालना।

उजियारा*–पु० प्रकाश, उजेला; प्रतापी व्यक्ति। वि० चमकवाला, प्रकाशयुक्त, उज्ज्वल।

उजियारी–स्त्री० चाँदनी; रोशनी; सती-साध्वी स्त्री।

उजियाला–पु० दे० 'उजाला'।

उजीर*–पु० दे० 'वजीर'।

उजुर–पु० दे० 'उज्र'।

उजूबा–पु० बैंगनी रंगका एक पत्थर।

उजेनी*–स्त्री० उज्जयिनी।

उजेर, उजेरा*–पु० दे० 'उजेला' ।

उजेला–पु० उजाला, चाँदनी । वि० प्रकाशयुक्त । (स्त्री० 'उजेली' ।)

उज्जयंत–पु० (सं०) रैवतक पर्वत जो विंध्य-श्रेणीका एक भाग है ।

उज्जयनी, उज्जयिनी–स्त्री० (सं०) मालव देशकी प्राचीन राजधानी, आधुनिक उज्जैन ।

उज्जर*–वि० दे० 'उज्ज्वल' ।

उज्जल–अ० (सं०) धाराके प्रतिकूल । * वि० उज्ज्वल ।

उज्जागर–वि० (सं०) उत्तेजित, क्षुब्ध ।

उज्जासन–पु० (सं०) मारण, वध ।

उज्जीवन–पु० (सं०) नया जीवन मिलना, पुनः प्राण-संचार होना; मृतप्राय होकर फिर स्वस्थ, चंगा हो जाना ।

उज्जीवित–वि० (सं०) जिसे पुनः जीवन प्राप्त हुआ हो ।

उज्जीवी(विन्)–वि० (सं०) पुनर्जीवन प्राप्त करनेवाला ।

उज्जृंभ, उज्जृंभण,–पु०, **उज्जृंभा**–स्त्री० (सं०) मुँह वाना, जँभाई लेना; फैलना; खिलना; फटना; क्षोभ ।

उज्जृंभित–वि० (सं०) फैला, खिला हुआ ।

उज्जैन–पु० उज्जयिनी नगरी ।

उज्ज्वल–वि० (सं०) जलता हुआ; चमकता हुआ; उजला; स्वच्छ, निर्मल; सुंदर; खिला हुआ । पु० प्रेम; सोना ।

उज्ज्वलन–पु० (सं०) प्रकाशयुक्त होना, जलना; चमकना; दीप्ति, चमक; आग; सोना ।

उज्ज्वला–स्त्री० (सं०) कांति, चमक; स्वच्छता; एक वृत्त ।

उज्ज्वलित–वि० (सं०) जलता हुआ; प्रकाशित; चमकाया हुआ ।

उज्झटित–वि० (सं०) उलझा हुआ; कर्तव्य-मूढ़ ।

उज्झड़–वि० मनमौजी, झक्की; मूर्ख ।

उज्झन–पु० (सं०) परित्याग ।

उज्झित–वि० (सं०) परित्यक्त; वर्जित ।

उज्यारा*–पु० दे० 'उजाला' ।

उज्यास*–पु० दे० 'उजास' ।

उज्र–पु० (अ०) आपत्ति, विरोध, वहाना; हेतु । **–ख़्वाही**–स्त्री० क्षमायाचना । **–दार**–वि० उज्र करनेवाला । **–दारी**–स्त्री० अदालतकी किसी आज्ञा या उसे प्राप्त करनेकी दरखास्तके खिलाफ दी गयी दरखास्त, आपत्ति-निवेदन ।

उज्रत–स्त्री० (अ०) दे० 'उजरत' ।

उझकना–अ० क्रि० उचकना; चौंकना । मु० **–विझकना**–उछलना-कूदना ।

उझपना–अ० क्रि० खुलना ।

उझरना*–स० क्रि० ऊपर उठना; सरकाना; ऊपरको सरकाना ।

उझलना–स० क्रि० उड़ेलना । * अ० क्रि० उमड़ना ।

उझाँकना–अ० क्रि० उझकना; सिर उठाकर देखना ।

उझिल*–स्त्री० उमड़ाव–'रूपकी उझिल आछे आननपै नयी-नयी' –घन० ।

उझिलना†–स० क्रि० दे० 'उझलना', ढालना ।

उझिला–स्त्री० उवटनके लिए भूनी हुई सरसों; पोस्ते और महुएके मेलसे तैयार किया जानेवाला एक खाद्य पदार्थ; खेतके गड्ढे पाटनेके लिए उसी खेतकी ऊँची जगहसे निकाली हुई मिट्टी । वि० भूनी या उवाली हुई (सरसों) ।

उटंग–वि० जो पहननेमें काफी नीचेतक न आये, उचितसे कम लंवाईवाला, ओछा (कपड़ा) ।

उटंगन–पु० चौपतिया नामकी घास ।

उटंगा–वि० दे० 'उटंग' ।

उट–पु० (सं०) पत्ती; घास, तृण । **–ज**–पु० झोपड़ी, पर्णशाला, कुटी ।

उटकना*–स० क्रि० अंदाजा लगाना ।

उटक-नाटक–वि० ऊँचा-नीचा; अंड-बंड ।

उटक्करलैस–वि० अटकलपच्चू ।

उटड़पा, उटड़ा, उटहड़ा–पु० गाड़ीका अगला हिस्सा जमीनपर टिकानेके लिए जूएके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी ।

उटारी–स्त्री० ठीहा ।

उटेव–पु० ऊपरकी धरन रखनेके लिए नीचेकी धरनके बीचोबीच ठोकी जानेवाली छोटी लकड़ी ।

उट्ठी–स्त्री० प्रतियोगितामें हार जाना । मु० **–बोलना**– हार मान लेना ।

उटँगन–पु० आड़, थूनी, वह वस्तु जिससे टिककर बैठा जाय ।

उठँगना–अ० क्रि० वैठनेमें किसी चीजका सहारा लेना; वैठे-वैठे थकावट मिटानेके लिए थोड़ा सो लेना ।

उठँगाना–स० क्रि० किवाड़ोंको विना साँकल, सिटकिनीके वंद करना जिसमें वे केवल धकेलनेसे खुल जायँ; किसी चीजको दूसरी चीजके सहारे टिकाना; लिटाना । **उठकना**–अ० क्रि० दे० 'उठँगना' ।

उठतक–पु० टेक; घोड़ेकी पीठपर जीनके नीचे रखी जानेवाली चीज ।

उठना–अ० क्रि० ऊपरकी ओर जाना, ऊँचाईमें बढ़ना, जुड़-जुड़कर ऊँचा होना; लेटे हुएका वैठना; वैठेका खड़ा होना; जागना; शय्या छोड़ना; मनमें उपजना (विचार, शंका इ०); याद आना; अचानक उपस्थित होना (आँधी, पीड़ा इ०); उगना; खमीर या सड़न पैदा होनेसे उफनना; निर्माण होना; खर्च होना; विकना; भाड़े या लगानपर जाना; कुछ काल या सदाके लिए बंद होना; अंत होना; चलना, प्रस्थान करना; मरना; (गाय आदिका) मस्तीपर आना; उन्नति करना, ऊँची स्थितिको प्राप्त होना; रोग-मुक्त होना; आमादा होना; उभरना (छपनेमें अक्षर आदिका) । मु० **उठ खड़ा होना**–चलनेको तैयार होना । **(दुनियासे)–जाना**–मर जाना, चल बसना । **उठती जवानी**–किशोरावस्था, उभरती, खिलती हुई जवानी । **उठते-बैठते**–हर वक्त; हर हालतमें । **उठना-वैठना**–साथ, मेल-जोल । **उठा-वैठी**–उठने-बैठनेकी कसरत; हैरानी ।

उठल्लू–वि० एक स्थानपर जमकर न रहनेवाला, जो कहीं टिके नहीं । मु०**–का चुल्हा**–बेमतलब घूमनेवाला ।

उठाँगन–पु० बड़ा आँगन; बड़ा सहन ।

उठाईगीर–पु० वह जो छोटी-मोटी चीजें उठाकर चलता बने, उचक्का ।

उठान–स्त्री० उठनेकी क्रिया; वाढ़; आरंभ; व्यय, खपत; ऊँचाई ।

उठाना–स० क्रि० नीचेसे ऊपर ले जाना; लेटे हुएको बैठाना; वैठे हुएको खड़ा करना; जगाना; ऊपर लेना, वहन या धारण करना; हटा या निकाल देना; अंगीकार करना; छेड़ना, आरंभ करना; कुछ काल या सदाके लिए बंद करना; अंत करना; खर्च करना; भोगना; भाड़ेपर देना; बनाना, निर्माण करना; कसम खानेके लिए हाथमें लेना (गंगाजल, तुलसी आदि) । मु० **उठा रखना**–कसर रखना, छोड़ रखना या वाकी रखना ।

उठाव–पु० उठा, उभरा हुआ भाग; उठान ।

उठावनी–स्त्री० दे० उठौनी; मृत व्यक्तिके दाह-संस्कारके वाद दूसरे या तीसरे दिन उसकी अस्थियाँ उठानेका कार्य ।

उठौआ–वि० जो उठाया जा सके, जो दूसरी जगह ले जाया जा सके । **–चूल्हा**–पु० वह चूल्हा जो जमाया न गया हो, जहाँ चाहे वहाँ रखा जा सके । **–पाखाना**–पु० वह पाखाना जिसका मैला उठाकर बाहर फेंका जाता है, –'बहौआ' नहीं ।

उठौनी–स्त्री० उठानेकी उजरत; पेशगी दिया हुआ मूल्य, दादनी; पुरहत; उधार लेन-देन; ब्याह पक्का करनेके लिए कन्यापक्षको दिया जानेवाला धन; पूजा आदिके निमित्त अलग रखा हुआ धन; मृतक-संबंधी एक रीति; एक तरहकी धानके खेतकी जोताई; प्रसूताकी शुश्रूषा ।

उठौवा–वि० दे० 'उठौआ' ।

उड़ंकू–वि० उड़नेवाला; चलने-फिरनेवाला ।

उड़ंत–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

उड़ंबरी–स्त्री० एक पुराना बाजा ।

उड़*–पु० दे० 'उडु' । **–पति,–पाल,–राज**–पु० दे० 'उडुपति' ।

उड़तक–पु० दे० 'उठतक' ।

उड़द–पु० दे० 'उरद' ।

उड़न–स्त्री० उड़नेकी क्रिया, उड़ान । **–खटोला**–पु० उड़नेवाला खटोला, एक तरहका विमान । **–छू**–वि० गायब, अदृश्य, लापता । **–झाईं**–स्त्री० चकमा । **–तश्तरी**–स्त्री० तश्तरीसे मिलता-जुलता

एक तरहका ज्योतिर्मय उपकरण। **–फल–**पु० उड़नेकी शक्ति देनेवाला फल। **–फाख़्ता–**वि० सीधा-सादा, बेवकूफ।

उड़ना–अ० क्रि० पंखके सहारे हवामें चलना-फिरना; विमान आदिपर बैठकर आकाशमार्गसे यात्रा करना; हवाके साथ डोलना-फिरना (पत्ता, धूल आदिका); बिखरना; फैलना; फहराना, लहराना; नष्ट, लुप्त होना; फीका पड़ना; कटकर अलग हो जाना; खर्च होना; (आनंदपूर्वक) भोगा जाना; पड़ना, लगना (जूते, बेंत इ०); छलाँग भरना, घोड़ेका चौफाल कूदना; उछलकर लाँघ जाना; बहुत तेजीसे जाना, भागना; धोखा, चकमा देना; बात उड़ाना; इतराना; बहानेबाजी करना। **उड़ती बैठक–**स्त्री० एक तरहकी बैठक। **उड़ती ख़बर–**स्त्री० अफवाह, सुनी-सुनायी खबर। **मु० उड़ आना–**तेजीसे आना। **उड़ खाना–**अप्रिय लगना; उड़-उड़कर काटना। **उड़ चलना–**असाधारण वेगसे जाना; अत्यधिक खिलना, फबना; (शोभा, स्वाद आदिका) बहुत बढ़ जाना; कुमार्गपर जाना; इतराना।

उड़प–पु० एक तरहका नाच; उडुप।

उड़री–स्त्री० एक तरहका छोटा उरद।

उड़व–पु० ओडव, एक तरहका राग जिसमें कोई दो स्वर वर्जित होते हैं; मृदंगका एक प्रवंध।

उड़सना*–अ० क्रि० उठना, भंग होना।

उड़ाँक, उड़ाँकू*–वि० उड़नेवाला; जिसमें उड़नेकी योग्यता हो।

उड़ा–पु० रेशम खोलनेका एक तरहका परेता।

उड़ाइक, उड़ायक*–वि०, पु० (गुड्डी आदि) उड़ानेवाला।

उड़ाऊ–वि० पैसा बर्बाद करनेवाला, फुजूलखर्च। **–पन–**पु० फुजूलखर्ची।

उड़ाक–वि० उड़ानेवाला; पतंग उड़ानेवाला।

उड़ाका–पु० उड़नेवाला; हवाई जहाजपर उड़नेवाला; हवाई जहाजका चालक। **–दल–**पु० (फ्लाइंग स्क्वाड) पुलिसका वह दस्ता जिसका काम आकस्मिक संकट या दुर्घटनाके समय तुरन्त पहुंचकर जनताकी सहायता करना होता है, (पुलिसका) तूफानी दस्ता।

उड़ाकू–वि० उड़नेवाला; उड़नेमें समर्थ।

उड़ान–स्त्री० उड़नेकी क्रिया; उड़नेकी सामर्थ्यकी सीमा; हवाई जहाज आदि एक उड़ानमें जहाँतक जा सकें; (लंबी) छलाँग; * कलाई। **–घाई–**स्त्री० चकमा, उड़नझाईं। **–परदा–**पु० बैलगाड़ीपर डाला जानेवाला परदा। **–फल–**पु० दे० 'उड़नफल'। **मु० –मारना–**बहाना करना, बातोंमें टालना।

उड़ाना–स० क्रि० उड़नेकी क्रिया कराना, उड़नेवाले प्राणी, वस्तुको चलाना; लहराना, फहराना; विखेरना, फैलाना; गायब करना; सफाईसे चुराना; झटक लेना; नष्ट करना; मिटा देना; अलग कर देना, काटकर फेंक देना; बारूद, गोले आदिसे नष्ट, ध्वस्त कर देना (पुल, किला इ०); खर्च करना; भोगना; (चिड़ियों आदिको) भगा देना, मारना; तेजीसे दौड़ाना; लगाना; चकमा, भुलावा देना; चुपके-चुपके कौशलसे कुछ सीख लेना। * अ० क्रि० उड़ना; छितरा जाना।

उडायक*–पु० उडानेवाला; पतंग उडानेवाला।

उड़ाल–पु० कचनारकी छाल; उससे बनी हुई रस्सी।

उडावनी|–स्त्री० (अन्न) हवामें उड़ाकर दानोंसे भूसा अलग करना, ओसाई।

उड़ास*–स्त्री० वासस्थान।

उड़ासना–स० क्रि० (विस्तरा आदि) समेटना, उठाना; भगाना, उदवासना; उजाड़ना।

उड़िया–पु० उड़ीसाका निवासी। स्त्री० उड़ीसाकी भाषा। वि० उड़ीसा संबंधी।

उडियाना–पु० एक मात्रिक वृत्त।

उड़िल–पु० वह भेड़ जिसके वाल काटे न गये हों।

उड़िस|–पु० दे० 'उड़ुस'।

उड़ी–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत; कलाबाजी।

उडीकना*–स० क्रि० प्रतीक्षा करना।

उड़ीसा–पु० भारतवर्षका एक पूर्वी प्रदेश, उत्कल।

उडुंबर–पु० (सं०) गूलर; दरवाजेकी चौखट; हिजड़ा; एक तरहका कुष्ठ रोग; कुष्ठ रोगका कीटाणु; ताँबा; दो तोलेकी एक तौल। **–दला, –पर्णी–**स्त्री० दंती नामक पौधा।

उडु–पु० (सं०) नक्षत्र; जल। **–प–**पु० चंद्रमा; वरुण; एक तरहकी नाव, भेला; एक तरहका पान-पात्र। **–पति,–राई *, –राज–**पु० चंद्रमा; वरुण। **–पथ–**पु० आकाश।

उड़ुस–पु० खटमल।

उड़ेरना*–स० क्रि० दे० 'उड़ेलना'।

उड़ेलना–स० क्रि० तरल पदार्थको एक बर्तनसे दूसरे बर्तनमें डालना या जमीनपर गिराना।

उड़ैनी*–स्त्री० जुगनू।

उड़ौंहा–वि० उड्डयनशील; उड़नेवाला।

उड्डयन–पु० (सं०) उड़ना; हठयोगका एक बंध जिसकी सिद्धिसे योगीमें उड़नेकी शक्तिका आ जाना माना जाता है। **–विभाग–**हवाई जहाजों आदिकी व्यवस्था करनेवाला सरकारी विभाग।

उड्डामर–वि० (सं०) श्रेष्ठ; सम्मान्य; दुर्धर्ष; प्रचंड।

उड्डीन–वि० (सं०) उड़ा हुआ; उड़ता हुआ। पु० उड़ान; पक्षियोंकी एक विशेष प्रकारकी उड़ान।

उड्डीयन–पु० (सं०) उड़ना।

उड्डीयमान–वि० (सं०) उड़नेवाला; उड़ता हुआ।

उड्डीश–पु० (सं०) शिव।

उढ़कन–पु० टेक, सहारा।

उढ़कना–अ० क्रि० ठोकर खाना; सहारा लेना; रुकना।

उढ़काना–स० क्रि० सहारा देकर खड़ा करना; भिड़ाना।

उढ़ना*–स० क्रि० वाहर निकालना।

उढ़रना|–अ० क्रि० विवाहिता स्त्रीका परपुरुषके साथ निकल जाना, भाग जाना 'उढरि जाय औ रोवै'–घाघ।

उढ़री–स्त्री० भगाकर लायी हुई स्त्री, रखेली।

उढ़ाना–स० क्रि० दे० 'ओढ़ाना'।

उढ़ारना–स० क्रि० दूसरेकी स्त्रीको भगा लाना।

उढ़ावनी, उढ़ौनी–स्त्री० दे० 'ओढ़नी'।

उतंक–पु० (सं०) उत्तंक नामके मुनि। * वि० ऊँचा। **–मेघ–**पु० एक प्रकारका मेघ।

उतंग*–वि० ऊँचा, उत्तुंग।

उतंत*–वि० बड़ा, सयाना, जवान; समृद्ध।

उत*–अ० उधर, वहाँ।

उतथ्य–पु० (सं०) अंगिराके पुत्र और वृहस्पतिके बड़े भाई। **–तनय–**पु० गौतम।

उतथ्यानुज–पु० (सं०) वृहस्पति।

उतन*–अ० उधर।

उतना–वि० उस मात्राका; उस कदर। अ० उस मात्रामें।

उतन्ना–पु० कानमें ऊपर पहननेकी वाली।

उतपन्न*–वि० दे० 'उत्पन्न'।

उतपात*–पु० दे० 'उत्पात'।

उतपादना, उतपानना*–स० क्रि० उपजाना। अ० क्रि० उपजना, उत्पन्न होना।

उतमंग*–पु० दे० 'उत्तमांग'।

उतरंग–पु० दरवाजेमें साहके ऊपर बैठायी जानेवाली लकड़ी या पत्थर।

उतर*–पु० दे० 'उत्तर'।

उतरन|–स्त्री० उतारन, पुराने कपड़े। पु० उतरंग। **–पुतरन–**स्त्री० उतारे हुए पुराने कपड़े।

उतरना–अ० क्रि० ऊपरसे या किसी सवारीसे नीचे आना; ह्रास, विगाड़की ओर आना; ढलना; घटना; पृथक् होना, निकलना; फीका, हलका पड़ना; दूर होना (ज्वर, क्रोध आदिका); हटना; भोगकाल समाप्त होना (मास, नक्षत्र आदिका); कटकर अलग होना; पके फलोंका तोड़ा जाना; (साँचे आदिपर चढ़ी चीजका) बनकर तैयार होना; पार होना; टिकना; ठहरना; सिद्ध होना, निकलना; प्रवेश करना; वसूल होना; ढीला होना; खिंचना, अंकित होना; नकल होना; तौलमें ठीक आना; जन्म लेना;

अखाड़ेमें कुश्तीके लिए आना; प्यादेका कोई बड़ा मोहरा बनना (शतरंज); पकती हुई चीजका तैयार होना; बच्चोंका मर जाना; भर आना (नजला आदिका); उघड़ना; घटित होना।

उतरवाना–स० क्रि० 'उतारना'का प्रे० रूप।

उतरहा|–वि० उत्तरका, उत्तरी।

उतराई–स्त्री० उतरनेकी क्रिया; चढ़ाईका उलटा, ढाल; नदीके पार उतारनेका भाड़ा, खेवा; पुलका महसूल; नाव आदिपरसे उतरनेका स्थान।

उतराना–अ० क्रि० पानीके ऊपर रहना, वहना या आना; उफनना; हर जगह देख पड़ना; छा जाना; पीछे-पीछे लगे फिरना। स० क्रि० पानीके ऊपर लाना; उद्धार करना।

उतरायल–वि० उतारा हुआ; पहना हुआ।

उतराव–पु० उतार।

उतरावना*–स० क्रि० 'उतारना'का प्रे० रूप।

उतराहा*–अ० उत्तरकी ओर। वि० उत्तरका।

उतरिन*–वि० ऋणमुक्त।

उतरु*–पु० उत्तर, जवाब।

उतलाना*–अ० क्रि० उतावली करना।

उतल्ला*–अ० दे० 'उताइल'। पु० दे० उपल्ला।

उतहसकंठा*–स्त्री० उत्कंठा।

उताइल, उतायल*–अ० उतावलीके साथ, जल्दी-जल्दी। वि० उतावली।

उताइली, उतायली*–स्त्री० उतावली।

उतान–वि० चित, पीठके वल लेटा हुआ; जो छाती ताने हुए हो।

उतार–पु० उतरनेकी क्रिया; चढ़ावका उलटा, ढाल; उतरनेका क्रम, घटाव; भाटा; वह जगह जहाँसे नदी हलकर पार की जा सके; (विप, मंत्रका) प्रभाव दूर करनेवाली दवा, युक्ति; उतारन; * उतारा। **–चढ़ाव**–पु० ऊँचाई-निचाई; हानि-लाभ।

उतारन–पु० पहना हुआ पुराना कपड़ा आदि जो नौकर, भिक्षुक आदिको दिया जाय; न्योछावर; निकृष्ट वस्तु।

उतारना–स० क्रि० ऊपरसे नीचे लाना; पहनी हुई चीजको अलग करना; दूर करना; मंत्रादि पढ़कर प्रभाव दूर करना; अलग कर लेना, निकाल लेना, (मलाई आदि); काटकर जुदा कर देना; कमीकी ओर लाना, घटाना; (साँचे आदिपर चढ़ी वस्तुको) तैयार कर लेना; पका लेना; खींचना, उरेहना; नकल करना; पटाना, चुकाना; कस ढीला करना; मुकाबलेमें लाना; पार पहुँचाना; प्यादेको बढ़ाकर बड़ा मोहरा बनाना; तौलमें पूरा कर देना; टिकाना, ठहरनेका प्रबंध करना; न्योछावर करना; सिर या चेहरेके चारों ओर घुमाना (आरती आदि); उतारा करना; बहुतोंसे प्राप्य रकम वसूल करना (चंदा आदि); अर्क या सार खींचना, (चमड़ी) खींचना; निकालना; * जन्म देना; तोड़ना।

उतारा–पु० रोग या प्रेतबाधाकी निवृत्तिके लिए पीडित व्यक्तिपर कोई चीज वारकर चौराहे आदिपर धर देना; इस क्रियामें व्यवहृत सामग्री; * टिकना; पड़ाव; नदी पार करना।

उतारू–वि० उद्यत, आमादा।

उताल*–अ० शीघ्र। स्त्री० शीघ्रता।

उताली*–स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती।

उतावल*–अ० शीघ्रतापूर्वक, जल्द।

उतावला–वि० उतावली करनेवाला, जल्दवाज; वेसब्र।

उतावली–स्त्री० जल्दी, जल्दबाजी; अधीरता। वि०, स्त्री० जल्दी मचानेवाली, अधीर।

उताहल, उताहिल*–अ० दे० 'उतावल'।

उती*–अ० उधर, उस ओर।

उतू*–पु० वेलबूटा निकालनेका औजार; वेलबूटा; बुनावट—'चोली चुनावट चीन्हें चुभें चपि होत उजागर दाग उतूके'—घन०।

उतृण–वि० उऋण, ऋणमुक्त।

उतै*–अ० उस ओर।

उतैला*–वि० उतावला।

उत्–उप० (सं०) यह शब्दोंके पहले लगकर ऊपर (उद्गमन), अतिक्रमण (उत्क्रांत), उत्कर्ष (उद्बोधन), प्राबल्य (उद्बल), प्राधान्य (उद्दिष्ट), अभाव (उत्पथ), विकास (उत्फुल्ल), शक्ति (उत्साह) आदिका सूचन करता है।

उत्कंठ–वि० (सं०) जो गरदन ऊपर किये हुए हो, उद्ग्रीव; उद्यत; उत्कंठायुक्त। पु० इच्छा करना; रतिक्रियाका एक आसन।

उत्कंठा–स्त्री० (सं०) विलंब न सह सकनेवाली इच्छा, लालसा; बेचैनी; प्रियसे मिलनेकी उत्सुकता; रतिक्रियाका एक आसन।

उत्कंठित–वि० (सं०) उत्कंठायुक्त, उत्सुक; अधीर।

उत्कंठिता–स्त्री० (सं०) प्रियमिलनके लिए बेचैन नायिका; संकेतस्थलपर प्रियके न मिलनेसे चिंता करनेवाली नायिका।

उत्कंदक–पु० (सं०) एक प्रकारका रोग।

उत्कंधर–वि० (सं०) जिसने गरदन ऊपर उठायी हो, उद्ग्रीव।

उत्क–वि० (सं०) इच्छुक; खिन्न; विस्मरणशील। पु० इच्छा; अवसर।

उत्कच–वि० (सं०) जिसके वाल खड़े हों; गंजा। पु० हिरण्याक्षका एक पुत्र।

उत्कट–वि० (सं०) तीव्र, उग्र; प्रबल; विकट; घमंडी; उन्मत्त; श्रेष्ठ; विषम; कठिन। पु० मद; मदगज, वह हाथी जिसे मद झड़ता हो; ईख; दारचीनी; घमंड; नशा; मूँज; तज; तेजपत्ता।

उत्कटा–स्त्री० (सं०) सैंहली लता।

उत्कर–पु० (सं०) राशि, ढेर।

उत्कर्कर–पु० (सं०) एक वाद्य (संगीत)।

उत्कर्ण–वि० (सं०) जो कान खड़े किये हुए हो; सुननेको उत्सुक।

उत्कर्णता–स्त्री० (सं०) सुननेकी उत्सुकता–'वाक्य सुननेकी हुई उत्कर्णता'–साकेत।

उत्कर्तन–पु० (सं०) काटना; फाड़ना; उन्मूलन।

उत्कर्ष–पु० (सं०) ऊपर खींचना, उठाना; ऊपर चढ़ना, उन्नति; श्रेष्ठता; समृद्धि; इफरात; दर्प; घमंड; प्रसन्नता।

उत्कर्षक–वि० (सं०) उत्कर्षकारक।

उत्कर्षण–पु० (सं०) उत्कर्ष करना।

उत्कर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) उत्कर्षकारक।

उत्कल–पु० (सं०) वर्तमान उड़ीसा; बहेलिया; ब्राह्मणोंका एक उपभेद; भारवाहक।

उत्कलाप–वि० (सं०) जिसने पूँछ ऊपर फैला रखी हो (मोर)।

उत्कलिका–स्त्री० (सं०) कली; तरंग; कामक्रीड़ा, हेला; उत्कंठा; गद्यकी एक शैली जिसमें लंबे-लंबे समास होते हैं।

उत्कलित–वि० (सं०) उन्नतिशील; विकसित; बंधनमुक्त; विपन्न।

उत्कषण–पु० (सं०) फाड़ना; जोतना।

उत्का*–स्त्री० उत्कंठिता नायिका।

उत्काका–स्त्री० (सं०) प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली गाय।

उत्कार–पु० (सं०) अनाज फटकना; गल्लेका ढेर लगाना; बीज बोनेवाला।

उत्कारिका–स्त्री० (सं०) फोड़ा पकानेका लेप; पुलटिस।

उत्काशन–पु० (सं०) आदेश देना।

उत्कास, उत्कासन, उत्कासिका–स्त्री० (सं०) खखारना, गलेको साफ करना।

उत्कीर्ण–वि० (सं०) छितराया या ढेर किया हुआ; खुदा हुआ; छिदा हुआ।

उत्कीर्तन–पु० (सं०) चिल्लाना; घोषणा करना; प्रशंसा करना।

उत्कुट, उत्कुटक–वि० (सं०) चित लेटा हुआ।

उत्कुण–पु० (सं०) खटमल; जूँ।

उत्कूज–पु० (सं०) कोकिलकी काकली।

उत्कूट–पु० (सं०) छतरी।

उत्कूर्दन–पु० (सं०) उछलना, कूदना।

उत्कूल–वि० (सं०) किनारेपर पहुँचनेवाला; तटके ऊपर होकर बहनेवाला।

उत्कृति–स्त्री० (सं०) २६ वर्णोंका एक वृत्त; २६की संख्या।

उत्कृष्ट–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; उन्नत; निकाला हुआ; श्रेष्ठ; उत्तम; जोता हुआ। **–वेदन**–पु० उच्चतर जातिके पुरुषसे विवाह करना।

उत्केंद्र–वि० (इकसेंट्रिक) केन्द्रसे विमुख या हटा हुआ, जो ठिकानेपर

न हो ।

उत्केंद्रक–वि० (सं०) केंद्रसे दूर फेंकनेवाला, विकेंद्रक् । **–शक्ति** –स्त्री० वस्तुको केंद्रसे दूर फेंकनेवाली शक्ति ।

उत्कोच–पु० (सं०) घूस, रिश्वत ।

उत्कोचक–वि०, पु० (सं०) घूस लेने, खानेवाला ।

उत्कोटि–वि० (सं०) नोकदार; धारदार ।

उत्क्रम–पु० (सं०) ऊपर जाना, चढ़ना; क्रमोन्नति; बाहर जाना; प्रस्थान; क्रमभंग ।

उत्क्रमण–पु० (सं०) ऊपर जाना, चढ़ना; बढ़ जाना; दे० 'अतिक्रमण' (ट्रांसग्रेशन); प्रस्थान; देहसे जीवात्माका प्रस्थान, मृत्यु ।

उत्क्रांत–वि० (सं०) प्रस्थित; मुरझाया हुआ; बढ़ा हुआ; मृत ।

उत्क्रांति–स्त्री० (सं०) उत्क्रमण; क्रमिक उन्नति या विकास; मृत्यु ।

उत्क्रास–पु० (सं०) प्रस्थान; बहिर्गमन; बढ़ जाना; उत्क्रमण; विरोध ।

उत्क्रोश–पु० (सं०) शोर-गुल; घोषणा; कुररी पक्षी ।

उत्क्लेद–पु० (सं०) दे० 'उत्क्लेदन' ।

उत्क्लेदन–पु० (सं०) गीला, तर होना । **–वस्ति**–स्त्री० तरी पहुँचानेके लिए ओषधियोंका क्वाथ वस्तिमें पहुँचाना ।

उत्क्लेश–पु० (सं०) उत्तेजना; क्षोभ; बेचैनी; शरीरका ठीक हालतमें न रहना; अस्वस्थता; मिचली, छर्दि ।

उत्क्लेशक–पु० (सं०) एक विषैला कीड़ा ।

उत्क्वथन–(एवुलीशन) इतना खौलाना या औटाना कि उफान आ जावे; उवाल, उफान ।

उत्क्षिप्त–वि० (सं०) ऊपर फेंका हुआ, उछाला हुआ; दूर फेंका हुआ; ध्वस्त; अलग किया हुआ । पु० धतूरा ।

उत्क्षेप–पु० (सं०) ऊपर फेंकना, उछालना; फेंक देना; भेजना; उछाली जानेवाली वस्तु; वमन; परित्याग; कनपटीके ऊपरका सिरका भाग ।

उत्क्षेपक–वि० (सं०) फेंकने, उछालने, भेजनेवाला; वस्त्रादि चुरानेवाला ।

उत्क्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; उछालना; भेजना; वमन; सूप; पंखा; नाज पीटनेका डंडा; १६ पणका एक मान ।

उत्खचित–वि० (सं०) मिलाकर गूँथा, बुना हुआ; जड़ा हुआ ।

उत्खनन–पु० (सं०) खुदाई, खोदनेका काम; खोदकर बाहर निकालना; बाहर करना ।

उत्खला–स्त्री० (सं०) मुरा नामक गंधद्रव्य ।

उत्खात–वि० (सं०) खोदा हुआ; उखाड़ा हुआ; खोदकर निकाला हुआ; नष्ट किया हुआ । पु० छेद, बिल; गढ़ा; ऊबड़-खाबड़ जमीन । **–केलि**–स्त्री० (जानवरोंका) खेलमें सींग या दाँतसे धरती खोदना ।

उत्खाता(तृ)–वि० (सं०) खोदनेवाला; उखाड़नेवाला ।

उत्खाती(तिन्)–वि० (सं०) जो समतल न हो, ऊबड़-खाबड़, विषम; नाश करनेवाला ।

उत्खान–पु० (सं०) खोदना; खोदकर बाहर करना ।

उत्खेद–पु० (सं०) काटना; निकालना ।

उत्तंक–पु० दे० 'उतंक' ।

उत्तंग*–वि० दे० 'उत्तुंग' ।

उत्तंभ, उत्तंभन–पु० (सं०) सहारा, टेक; रोकना ।

उत्तंस–पु० (सं०) कर्णपूर, कर्णाभरण; शेखर, शिरोभूषण; आभूषण; * दे० 'अवतंस' ।

उत्त–वि० (सं०) गीला, भीगा हुआ, तर । * पु० अचरज; संदेह । * अ० उधर ।

उत्तट–वि० (सं०) किनारेसे छलकता हुआ, उद्वेलित ।

उत्तपन–पु० (सं०) एक विशेष प्रकारकी अग्नि ।

उत्तप्त–वि० (सं०) बहुत ज्यादा गरम; दुःखी; कुढ़ता हुआ; क्रुद्ध; स्नात; चिंतित । पु० सुखाया हुआ मांस; उत्ताप ।

उत्तब्ध, उत्तभित–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; उन्नमित; उत्तेजित किया हुआ ।

उत्तमंग*–पु० उत्तमांग, सिर ।

उत्तम–वि० (सं०) सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बेहतरीन; प्रधान, सबसे बड़ा । पु० विष्णु; ध्रुवका सौतेला भाई । **–गंधा**–स्त्री० चमेली । **–दर्शन**–वि० देखनेमें भला मालूम होनेवाला । **–पुरुष**–पु० बोलनेवालेका सूचक सर्वनाम (मैं, हम); ईश्वर; पुरुषोत्तम । **–फलिनी**–स्त्री० दुग्धिका नामक पौधा । **–मणि**–पु० एक रत्न । **–मित्र**–पु० वह जो राजा या राष्ट्रका सबसे उत्तम मित्र हो । **–वयस**–स्त्री० जीवनका अंतिम भाग । **–वर्ण**–वि० अच्छे रंगका; सर्वोच्च जातिका । **–वेश**–पु० शिव । **–श्रुत**–वि० बहुश्रुत, बहुत बड़ा विद्वान् । **–श्लोक**–वि० अच्छी कीर्तिवाला, यशस्वी । **–संग्रह**–पु० परस्त्रीके साथ साँठ गाँठ । **–साखपत्र**–पु० (गिल्ट-एज्ड सिक्यूरिटीज) वे साख-पत्र या प्रतिभूतियाँ जो बिलकुल सुरक्षित मानी जाती हों तथा जिनके डूब जानेका कमसे कम खतरा हो । व्यावसायिक संस्थाएँ, व्यापारी आदि इनमें रुपया लगाना शौकसे पसंद करते हैं (प्रथम श्रेणीके साखपत्र) । **–साहस**–पु० एक हजार पण जुर्मानेकी सजा; कोई बड़ी सजा–प्राणदंड, निर्वासन, जायदादकी जब्ती, अंग-भंग आदि ।

उत्तमता–स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता; अच्छाई ।

उत्तमताई*–स्त्री० उत्तमता ।

उत्तमन–पु० (सं०) अधीरता; दिलका बैठ जाना ।

उत्तमर्ण, उत्तमर्णिक–पु० (सं०) महाजन, ऋण देनेवाला (क्रेडिटर) ।

उत्तमांग–पु० (सं०) सिर ।

उत्तमांभ(स्)–पु० (सं०) नौ प्रकारकी तुष्टियोंमेंसे एक जो अहिंसासे प्राप्त होती है ।

उत्तमा–वि० स्त्री० (सं०) भली, नेक । स्त्री० नेक स्त्री; एक तरहका फोड़ा; दुग्धिका नामक पौधा; इंदीवरी । **–दूती**–स्त्री० वह दूती जो नायक या नायिकाको बातोंसे मना ले । **–नायिका** –स्त्री० वह नायिका जो प्रतिकूल पतिके साथ भी अनुकूल आचरण करे ।

उत्तमारणी–स्त्री० (सं०) इंदीवरी नामक पौधा ।

उत्तमार्द्ध, उत्तमार्ध–पु० (सं०) उत्कृष्ट अर्धांश; उत्तरार्ध ।

उत्तमाह–पु० (सं०) सुदिन; अंतिम दिन ।

उत्तमीय–वि० (सं०) सबसे ऊपरका, सर्वश्रेष्ठ; प्रधान ।

उत्तमोत्तम–वि० (सं०) अच्छेसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ ।

उत्तमोत्तमक–पु० (सं०) लास्यके दस अंगोंमेंसे एक (ना०) ।

उत्तमौजा(जस्)–वि० (सं०) बल-वीर्यमें सबसे बढ़कर । पु० महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़नेवाला एक राजा; मनुका एक पुत्र ।

उत्तरंग–पु० (सं०) चौखटके ऊपरकी काठकी मेहराब । वि० क्षुब्ध; तरंगित; उछलता हुआ ।

उत्तरंगि–वि० (सं०) हाँफता हुआ ।

उत्तर–वि० (सं०) उत्तर दिशा-संबंधी; ऊपरवाला; ऊँचा; पीछे आनेवाला, पिछला; श्रेष्ठ (लोकोत्तर); अतीत; अधिक,. . .से अधिक (अष्टोत्तर शत); वाम; शक्तिशाली; पार करने या किया जानेवाला । पु० दक्षिणकी उलटी दिशा, शुमाल; जवाब; बदला; बादका जवाब, बचाव; राजा विराट्का पुत्र; भविष्यत् काल; विष्णु; शिव; आधिक्य; नीचे जाना; ऊपरकी सतह या आवरण; निष्कर्ष; शेष; आतिशय्य; प्राधान्य; एक अर्थालंकार जिसमें उत्तर सुनकर प्रश्नका अनुमान लगा लिया जाय । अ० पीछे; बाद । **–कांड**–पु० रामायणका सातवाँ या अंतिम कांड । **–काय**–पु० शरीरका ऊपरका भाग । **–काल**–पु० आनेवाला समय, भविष्यत् काल । **–काशी**–स्त्री० बदरिकाश्रमके रास्तेमें पड़नेवाला एक स्थान । **–कुरु**–पु० कुरु देशका उत्तरी भाग, जंबूद्वीपका एक खंड । **–कोशल,–कोसल**–पु० अवध । **–कोशला**–स्त्री० अयोध्या नगरी । **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टि, पिंडदानादि । **–गुण** –पु० मूल गुणोंकी रक्षा करनेवाले गुण (जै०) । **–ग्रंथ**–पु० ग्रंथका परिशिष्ट । **–च्छद**–पु० बिछावनकी चादर; आवरण । **–जीवी(विन्)**–वि० अन्य व्यक्तियोंकी मृत्यु या प्रजातियों आदिकी समाप्तिके बाद भी बचा रहनेवाला (सरवाइवर) । **–तंत्र**–पु० सुश्रुतका परिशिष्ट भाग । **–तिथित,–तिथीय**–वि० (पोस्ट डेटेड) जिसपर बादकी तिथि डाली गयी हो (वह प्रलेख, धनादेश

आदि); 'उत्तरदिनांकित'। –०**धनादेश**–पु० (पोस्ट डेटेड चेक) वह धनादेश जिसपर बादकी तिथि डाल दी गयी हो अतः जिसका भुगतान तुरंत न होकर उक्त तिथिको ही या उसके बाद संभव हो सके। –**दाता(तृ)**,–**दायक**–वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार; धृष्ट। –**दायित्व**–पु० जवाबदेही, जिम्मेदारी। –**दायी(यिन्)** –वि० जवाब देनेवाला, जिम्मेदार। –**नाभि**–स्त्री० यज्ञमें उत्तर दिशामें बना कुंड। –**पक्ष**–पु० वाद या बहसका जवाब; सिद्धांत-पक्ष। –**पट**–पु० दुपट्टा, चादर। –**पथ**–पु० उत्तरका रास्ता; देवयान। –**पद**–पु० समासका अंतिम पद। –**पाद**–पु० दावेका जवाब। –**प्रत्युत्तर**–पु० सवाल-जवाब, बहस-हुज्जत। –**प्राप्य**, –**भोग्य**–वि० (रिवर्शनरी) जो बादमें, प्रायः मृत्युके उपरांत, दिया जाय; जो प्राप्य हो जाने पर भी तुरंत न दिया जाकर पूरी अवधि समाप्त हो जाने पर या मृत्यु हो जाने पर ही मिले। –**प्रोष्ठपदा** –स्त्री० उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र। –**मंद्रा**–स्त्री० संगीतके स्वरका एक प्रकार। –**मीमांसा**–पु० वेदांत दर्शन। –**रामचरित**–पु० भवभूति-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक। –**लक्षण**–पु० उत्तर, जवाबके लक्षण। –**वय**–स्त्री० बुढ़ापा। –**वयस**–पु० (हिं०) बुढ़ापा। –**वस्ति**–स्त्री० एक तरहकी छोटी पिचकारी। –**वस्त्र**–पु० ऊपर पहननेका वस्त्र; दुपट्टा; उपरना। –**वादी(दिन्)**–पु० प्रतिवादी, मुद्दालेह; बादमें, पीछे फरियाद करनेवाला। –**विचार**–पु० (आफ्टर थॉट) बादमें उठा हुआ (मनमें आया हुआ) विचार, **पश्चविचार**। –**साक्षी(क्षिन्)**–पु० सुनी हुई बात कहनेवाला गवाह; प्रतिवादिपक्षका गवाह। –**साधक** –वि० शेषांशको पूरा करनेवाला; जवाबको साबित करनेवाला। पु० सहायक।

उत्तरण–पु० (सं०) पार होना; उतरना; पानीसे निकलना।

उत्तरप्रदेश–पु० (सं०) दिल्ली-पंजाब और बिहारके बीचका प्रदेश जिसे ब्रिटिश शासनकालमें संयुक्तप्रांत कहते थे।

उत्तरा–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा; एक नक्षत्र; अभिमन्युकी पत्नी जिससे परीक्षित्का जन्म हुआ। –**खंड**–पु० भारतवर्षका उत्तरी, हिमालयके पासका भाग। –**फाल्गुनी**–स्त्री० एक नक्षत्र। –**भाद्रपदा**–स्त्री० एक नक्षत्र।

उत्तराधिकार–पु० (सं०) किसीके (मरनेके) बाद उसकी संपत्ति पानेका हक, वरासत।

उत्तराधिकारी(रिन्)–वि० (सं०) किसीके बाद उसकी संपत्ति पानेका हकदार, वारिस।

उत्तरापेक्षी–वि० (सं०) पत्र या प्रश्नादिके उत्तरकी अपेक्षा करनेवाला।

उत्तराभास–पु० (सं०) झूठा जवाब; बहाना; टालमटूल।

उत्तरायण–पु० (सं०) सूर्यका मकररेखासे उत्तर (कर्करेखा)की ओर जाना; वह छ महीनेका काल जब सूर्यकी गति उत्तरकी ओर रहती है।

उत्तरायणी–स्त्री० (सं०) एक मूर्छना (संगीत)।

उत्तरार्द्ध, उत्तरार्ध–पु० (सं०) देहका कमरसे ऊपरका भाग; पिछला, अंतकी ओरका आधा भाग (पूर्वार्धका उलटा)।

उत्तराशा–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा।

उत्तराषाढा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र।

उत्तरासंग–पु० (सं०) ऊपरका वस्त्र, उपरना।

उत्तरीय, उत्तरीयक–वि० (सं०) उत्तरका; ऊपरका। पु० दुपट्टा, उपरना, ओढ़नी; एक अच्छी जातिका सन।

उत्तरेतर–वि० (सं०) उत्तरसे भिन्न; दक्षिणी।

उत्तरेतरा–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा।

उत्तरेद्युः(द्युस्)–अ० (सं०) अगले दिन, कल।

उत्तरोत्तर–अ० (सं०) अधिकाधिक; दिन-दिन अधिक; लगातार।

उत्तर्जन–वि० (सं०) प्रचंड; भयंकर।

उत्तल–वि० (सं०) (कॉन्वेक्स) जिसके तलका बीचका भाग ऊपर उठा हुआ हो, **उन्नतोदर**।

उत्तलित–वि० (सं०) ऊपरकी ओर फेंका हुआ, उछाला हुआ।

उत्तान–वि० (सं०) ताना, फैलाया हुआ; पीठके बल लेटा हुआ, चित; सीधा (खड़ा); स्पष्टवक्ता; ऊर्ध्वमुख। –**कर्मक**–पु० बैठनेकी एक मुद्रा। –**पत्रक**–पु० रक्त एरंड। –**पाद**–वि० जिसकी टाँगें फैला दी गयी हैं। पु० स्वायंभुव मनुका पुत्र जो ध्रुवका पिता था; परमेश्वर। –० **ज**–पु० ध्रुवतारा; ध्रुव। –**शय**–वि० चित लेटा हुआ। पु० दुधमुँहा बच्चा। –**हृदय**–वि० खुले या साफ दिलवाला।

उत्तानक–पु० (सं०) उच्चटा नामक तृण।

उत्तानित–वि० (सं०) ऊपर उठाया या फैलाया हुआ (मुख)।

उत्ताप–पु० (सं०) तेज गरमी या आँच; दुःख; क्लेश; चिंता; क्षोभ; उत्तेजना; शक्ति; प्रयास। –**मापी**–पु० (पाइरोमीटर) ऐसे तापमापी जो अति उच्च तापको नापनेके काम आते हैं। (जैसे प्रकाशीय उत्तापमापी, आप्टिकल पाइरोमीटर, द्वारा सूर्यकी सतहका ताप (६००० डिग्री सेन्टीग्रेड) नापा जा सकता है। विद्युत-उत्तापमापी द्वारा लगभग १००० डिग्री तकका ताप नाप सकते हैं।)

उत्तापित–वि० (सं०) गरम किया हुआ; पीडित; उत्तेजित किया हुआ।

उत्तापी(पिन्)–वि० (सं०) उत्तापयुक्त।

उत्तार–वि० (सं०) औरोंसे बढ़ जानेवाला, श्रेष्ठ। पु० उद्धार; मुक्ति; वमन; अस्थिरता; प्रयाण; पार ले जाना; तटपर उतारना।

उत्तारक–वि० (सं०) उद्धारक, तारनेवाला। पु० शिव।

उत्तारण–पु० (सं०) पार उतारना; उद्धार करना; विष्णु।

उत्तारी(रिन्)–वि० (सं०) पार करनेवाला; अस्थिर; परिवर्तनशील; अस्वस्थ।

उत्तार्य–वि० (सं०) पार करने योग्य; वमन करने योग्य।

उत्ताल–वि० (सं०) ऊँचा; प्रबल; प्रचंड; भयंकर; विशाल; कठिन; प्रकट; श्रेष्ठ। पु० बनमानुस; एक विशेष संख्या (बौ०)।

उत्तीर्ण–वि० (सं०) पार पहुँचा हुआ; जिसका उद्धार किया गया हो; कर्तव्यसे मुक्त; परीक्षामें पास; चतुर, अनुभवी।

उत्तुंग–वि० (सं०) बहुत ऊँचा, गगनस्पर्शी; प्रवर्धित (धारा)।

उत्तुंडित–पु० (सं०) काँटेका सिरा (जो बदनमें चुभता है)।

उत्तुष–पु० (सं०) भूसी निकाला हुआ या भूना हुआ अन्न, लावा।

उत्तू–पु० (फा०) कपड़ेपर बेल-बूटे या चूनटके निशान डालनेका औजार; बेल-बूटेका काम जो इस औजारके जरिये किया जाय। वि० मत्त, नशेमें चूर। –**कश**,–**गर**–पु० उत्तूका काम करनेवाला। **मु०** –**करना**– इतना मारना कि देहपर दाग पड़ जायँ।

उत्तेजक–वि० (सं०) उभारने, बढ़ावा देनेवाला; काम, क्रोध आदिको भड़कानेवाला।

उत्तेजन–पु० (सं०) उभारना, भड़कना; बढ़ावा देना, तेज करना (धार आदि)।

उत्तेजना–स्त्री० (सं०) बढ़ावा; प्रेरणा; रोष; क्रोध। –**जनक** –वि० भड़कानेवाला; क्रोधोत्पादक।

उत्तोरण–वि० (सं०) तोरण आदिसे सजा हुआ।

उत्तोलक–पु० दे० 'उत्तोलनयंत्र'। एक दृढ़ दण्ड जो अपने किसी नियत विन्दु (आलम्ब)के गिर्द स्वतंत्रतापूर्वक घूम सके। उत्तोलकके एक भागपर हलका बल लगाकर किसी अन्य भागपर अपेक्षाकृत अधिक बड़ा बल उत्पन्न कर सकते हैं। कैंची, सरोता, संडसी आदि उत्तोलकके उदाहरण हैं। (लीवर)

उत्तोलन–पु० (सं०) ऊपर उठाना, तानना; तौलना। –**यंत्र**–पु० (क्रेन) रेलके डब्बे, भारी गाँठें आदि ऊपर उठानेवाला, सारसकी चोंच जैसा यंत्र।

उत्त्यक्त–वि० (सं०) छोड़ा हुआ; उछाला हुआ; अनासक्त।

उत्त्याग–पु० (सं०) छोड़ना; फेंकना; उछालना; सन्न्यास।

उत्त्रास–पु० (सं०) भय, आतंक।

उत्थ–वि० (सं०)...से उत्पन्न या निकला हुआ (समासांतमें व्यवहृत–आनंदोत्थ)।

उत्थवना*–स० क्रि० आरंभ करना।

उत्थान–पु० (सं०) उठना; उठाना; बढ़ती, बल-वैभवकी वृद्धि; जागना; प्रसन्नता; युद्ध; सेना; आँगन; यज्ञमंडप; सीमा;

पौरुष; पुस्तक; उद्यम; उद्‌गम; मलोत्सर्ग; प्रबंध, व्यवस्था; रोगका कारण। **–एकादशी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशी। **–पतन**–पु० उठना-गिरना, वृद्धि-ह्रास।

उत्थानक–पु० (लिफ्ट) मकानके नीचेके खंडसे ऊपरके खंडमें पहुँचाने या उतारनेवाला बिजलीका आसन, उन्नयनयंत्र।

उत्थापक–वि० (सं०) उठाने, जगाने, उभारनेवाला। **–यंत्र**–पु० दे० 'उत्थानक', 'लिफ्ट'।

उत्थापन–पु० (सं०) उठाना; जगाना; उभारना; प्रेरित करना; त्याग कराना (वासस्थान); वमन करना; समाप्त करना; उत्पन्न करना; अभीष्ट राशि या उत्तर प्राप्त करना (ग०)।

उत्थायी(यिन्)–वि० (सं०) उठने, उभरने, बढ़नेवाला।

उत्थित–वि० (सं०) उठा हुआ; उठता हुआ; बल-वैभवमें बढ़ा हुआ; उद्धार किया हुआ, बचाया हुआ; उत्पन्न; उद्यमी; वृद्धिशील; घटित होनेवाला; ऊँचा; फैलाया हुआ।

उत्थिति–स्त्री० (सं०) उठान, ऊपर उठना, उन्नत होना।

उत्पट–पु० (सं०) पेड़के छिलकेसे निकलनेवाला लसदार रस, गोंद; दुपट्टा।

उत्पत–पु० (सं०) पक्षी।

उत्पतन–पु० (सं०) ऊपर उड़ना; ऊपर उठना; कूदना; चढ़ना; उछलना; फेंकना; उछालना; उत्पत्ति।

उत्पताक–वि० (सं०) जो झंडा ऊपर किये हुए हो; उठाये हुए झंडेके साथ।

उत्पत्ति–स्त्री० (सं०) जन्म; उत्पादन; आरंभ; जन्मस्थान; उद्‌गम; पुनर्जन्म; अस्तित्व ग्रहण करना; सृष्टि; उपज; ऊपर उठना; लाभ। **–केतन,–धाम(न्)**–पु० जन्मस्थान।

उत्पथ–पु० (सं०) कुमार्ग, बुरा या गलत रास्ता; भटका हुआ व्यक्ति। वि० कुमार्गी।

उत्पथगामिता–स्त्री० कुमार्गपर जानेकी क्रिया, आदत या प्रवृत्ति।

उत्पथिक–पु० (सं०) नगरमें इधर-उधर आते-जाते हुए लोग।

उत्पन्न–वि० (सं०) जनमा हुआ; उपजा हुआ। **–बुद्धि**–वि० चतुर, दक्ष। **–भक्षी(क्षिन्)**–वि० जो खानेभरको ही कमा सके। **–विनाशी(शिन्)**–वि० जनमते ही मर जानेवाला।

उत्परिवर्तन–पु० (म्यूटेशन) पौधों तथा प्राणियोंके वंशजोंमें होनेवाले आकस्मिक परिवर्तन। उत्परिवर्तनमें वंशजोंमें अचानक ही ऐसे गुण प्रस्फुटित हो जाते हैं जिनका कोई भी सम्बन्ध पूर्वजोंसे नहीं होता। ये वंशज अपने माता-पितासे नितान्त भिन्न होते हैं।

उत्पल–पु० (सं०) कमल; नील कमल; कुमुद; बिना साफ किये हुए अन्नकी पीठी; पौधा। वि० क्षीण, दुबला-पतला। **–गंधिक**–पु० चंदनविशेष। **–पत्र**–पु० कमलका पत्ता; नखक्षत; चंदनका तिलक; चौड़े फलका चाकू। **–पत्रक**–पु० चौड़े फलका चाकू। **–शारिवा**–स्त्री० श्यामा लता।

उत्पलवन घनत्वमापी–पु० (हाइड्रोमीटर) द्रवका घनत्व नापनेका यंत्र जो काँचके बल्बका बना होता है। इसके पेंदेमें पारा रखा रहता है तथा उसकी गर्दन लम्बी होती है।

उत्पलिनी–स्त्री० (सं०) कमल-पुष्पोंका समूह; कमलका पौधा; एक वृत्त।

उत्पवन–पु० (सं०) शुद्धीकरण, संस्क्रिया; पानी छानना; साफ करनेका यंत्र; कुशसे अग्निपर घी छिड़कना।

उत्पाचित–वि० (सं०) अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ।

उत्पाट–पु० (सं०) उखाड़ना; उन्मूलन, जड़से नाश करना; कानके लोलकमें शोथ, पीड़ा होना।

उत्पाटक–वि० (सं०) उखाड़नेवाला। पु० कानका एक रोग।

उत्पाटन–पु० (सं०) उखाड़ना; जड़-मूलसे नाश करना।

उत्पाटिका–स्त्री० (सं०) पेड़की ऊपरी छाल। वि०, स्त्री० उखाड़नेवाली।

उत्पाटित–वि० (सं०) जड़से उखाड़ा हुआ; हटाया हुआ; सिंहासनच्युत।

उत्पाटी(टिन्)–वि० (सं०) उत्पाटन करनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त)।

उत्पात–पु० (सं०) ऊपर उठना, उछलना; उछाल; छलाँग; विपत्सूचक आकस्मिक घटना; लोकके लिए विपद्-रूप भौतिक घटना (भूकंपादि); खुराफात, उपद्रव, ऊधम; कानका एक रोग।

उत्पातक–वि० (सं०) उत्पात-जनक; ऊपर उड़नेवाला। पु० एक कल्पित जानवर, शरभ।

उत्पातिक–वि० (सं०) अतिप्रकृत (जै०)।

उत्पाती(तिन्)–वि० (सं०) उत्पात करनेवाला, खुराफाती।

उत्पाद–वि० (सं०) जिसके पैर ऊपर उठे हों। पु० जन्म, उत्पत्ति। **–शय,–शयन**–वि० शिशु; टिट्टिभ पक्षी।

उत्पादक–वि० (सं०) पैदा करनेवाला। पु० मूल, कारण; शरभ नामक कल्पित पशु। **–व्यय**–पु० (प्रॉडक्टिव एक्सपेंडिचर) उत्पादन बढ़ानेवाला व्यय, उत्पादक कार्योंके निमित्त किया जानेवाला व्यय।

उत्पादन–पु० (सं०) पैदा करना, उपजाना; (माल) तैयार करना; तैयार किया गया माल। **–बाधा**–स्त्री० (बाटिलनेक) वह वस्तु जो उत्पादनका कार्य सुचारु रूपसे चलानेमें बाधक हो। **–शुल्क**–पु० (एक्साइज ड्यूटी) देशमें उत्पादित कतिपय वस्तुओंपर लगनेवाला कर (भारतमें चीनी, तंबाकू आदिपर लगनेवाले करकी आय केंद्रीय सरकारको तथा अफीम, गाँजा आदिपरकी आय राज्यकी सरकारोंको मिलती है)।

उत्पादिका–स्त्री० (सं०) एक कीट, हिलमोचिका, दीमक (?); पूतिका, पोय; माता। वि०, स्त्री० उत्पन्न करनेवाली।

उत्पादित–वि० (सं०) उत्पन्न; उपजाया, पैदा किया हुआ।

उत्पादी(दिन्)–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला (समासमें); उत्पन्न, जात।

उत्पाली–स्त्री० (सं०) स्वास्थ्य, आरोग्य।

उत्पिंज–पु० (सं०) विद्रोह; षड्यंत्र।

उत्पिंजर, उत्पिंजल–वि० (सं०) मुक्त किया हुआ; अव्यवस्थित; व्याकुल।

उत्पीड–पु० (सं०) दबाना; पेरना; कुचलना; बह पड़ना; फेन; जख्म।

उत्पीडक–वि० (सं०) दबानेवाला; सतानेवाला।

उत्पीडन–पु० (सं०) दबाना; सताना, जुल्म करना।

उत्पीडित–वि० (सं०) दबाया, सताया हुआ, मजलूम।

उत्पुच्छ–वि० (सं०) जिसकी पूँछ ऊपर उठी हो।

उत्पुट–वि० (सं०) खिला हुआ।

उत्पुटक–पु० (सं०) कानके बाहरी हिस्सेमें होनेवाला एक रोग।

उत्पुलक–वि० (सं०) रोमांचित; प्रसन्न।

उत्प्रबंध–वि० (सं०) अविराम, अविच्छिन्न।

उत्प्रभ–वि० (सं०) प्रकाश बिखेरनेवाला; प्रभापूर्ण। पु० दहकती हुई आग।

उत्प्रवासी–पु० (एमीग्रैंट) एक देश छोड़कर अन्य देशमें जा बसनेवाला, उद्व्रजक।

उत्प्रसव–पु० (सं०) गर्भपात।

उत्प्रास, उत्प्रासन–पु० (सं०) लुढ़काना; फेंकना; हँसी, दिल्लगी; ठहाका; व्यंग्य, कटूक्ति; आतिशय्य।

उत्प्रेक्षक–वि० (सं०) देखने-समझने, विचार करनेवाला।

उत्प्रेक्षण–पु० (सं०) ऊपर देखना; उद्भावन; तुलना करना।

उत्प्रेक्षा–स्त्री० (सं०) उद्भावना, अनुमान; उपेक्षा; उदासीनता; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें प्रस्तुत वस्तुमें सादृश्यके कारण अन्य वस्तुकी कल्पना की जाती है।

उत्प्रेरक–पु० (कैटेलाइजर) ऐसे पदार्थ जो अपनी उपस्थितिसे किसी रासायनिक क्रियाकी रफ्तार बढ़ा देते हैं किन्तु इस क्रियामें स्वयं उस पदार्थमें कोई परिवर्तन नहीं आता। क्रियाके अन्तमें उत्प्रेरक जैसेका तैसा बना रहता है।

उत्प्रेरणा–स्त्री० (सं०) प्रेरणा करना; अविकृत रहनेवाले किसी पदार्थका दूसरे पदार्थपर रासायनिक प्रतिक्रिया करना।

उत्प्रेषणलेख, उत्प्रेषणादेश–पु० (सर्शिऑरेराइ) अधीन न्यायालयमें विचार किये गये किसी मामलेके कागज-पत्र प्रेषित करनेका उच्च न्यायालयका आदेश।

उत्प्लव–पु० (सं०) कुदान।

उत्प्लवन–पु० (सं०) कूदना, उछलना; कुशसे तेल, घी आदिका ऊपरका मैल निकालना।

उत्प्लावकता–स्त्री० (बॉयन्सी) किसी गैस या द्रवमें डुबाये गये ठोस पर ऊपरकी ओर लगनेवाला उछालका बल। यह उछालका बल उस ठोस द्वारा हटाये गये द्रव या गैसके भारके बराबर होता है।

उत्फाल–पु० (सं०) उछाल; छलाँग; जस्त।

उत्फुल्ल–वि० (सं०) खिला हुआ, पूर्णतः विकसित; प्रसन्नतासे खिला हुआ; चित सोया हुआ; विस्फारित (नेत्र)। पु० योनि; एक रतिबंध।

उत्फुल्लन–पु० हवामें रखे जानेपर क्रिस्टलोंका भुरभुरे चूर्णकी शक्ल धारण कर लेनेकी क्रिया (एफ्लोरेसेन्स)।

उत्संग–पु० (सं०) गोद, अंक; संपर्क, योग; नितंबके ऊपरका भाग; घरका सबसे ऊपरका भाग; शिखर, चोटी; सतह; पार्श्व; ढाल; वितान; यति; नाडीव्रणका भीतरी भाग; करद राजाओं और प्रजावर्गसे राजकुमारके जन्मके अवसरपर उपहाररूपमें मिलनेवाला धन।

उत्संगित–वि० (सं०) गोदमें लिया हुआ, आलिंगित; संपर्कमें लाया हुआ।

उत्संगिनी–स्त्री० (सं०) पलकके अंदर होनेवाली फुंसी।

उत्संगी(गिन्)–वि० (सं०) साथ रहनेवाला; गहराईतक पहुँचा हुआ (व्रण)। पु० नाडीव्रण।

उत्संजन–पु० (सं०) उठाना; उछालना।

उत्स–पु० (सं०) स्रोत, सोता; जलमय स्थान।

उत्सन्न–वि० (सं०) क्षीण; नष्ट, उच्छिन्न, जिसकी जड़ उखाड़ दी गयी हो; उठाया हुआ; अभिशप्त; विलुप्त; व्यवहारमें न आनेवाला; पूरा किया हुआ।

उत्सर–पु० (सं०) वृत्तविशेष।

उत्सर्ग–पु० (सं०) अलग करना; छोड़ना, त्यागना; टालना; दान; व्यय; बलि; गुदा; अपान वायु या मलका त्याग; समापन (अध्ययन आदिका); वैदिक कर्मविशेष; सामान्य नियम (अपवादका उलटा)।

उत्सर्गतः(तस्)–अ० (सं०) नियमरूपमें, आमतौरसे।

उत्सर्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) उत्सर्ग करनेवाला।

उत्सर्जन–पु० (सं०) उत्सर्ग करना; त्याग; दान करना; एक वैदिक कर्म जो सालमें दो बार किया जाता है; वेदाध्ययन स्थगित करना।

उत्सर्जित–वि० (सं०) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

उत्सर्प, उत्सर्पण–पु० (सं०) ऊपर चढ़ना; उठना; फूलना; फैलना।

उत्सर्पिणी–स्त्री० (सं०) जैनमतानुसार कालका एक विभाग।

उत्सर्पी(र्पिन्)–वि० (सं०) ऊपर उठने, चढ़नेवाला; अत्युत्तम।

उत्सर्या–स्त्री० (सं०) गर्भ योग्य अवस्थामें पहुँची हुई गाय, अलंगपर आयी हुई गाय।

उत्सव–पु० (सं०) आनंद, प्रसन्नता; आनंदजनक कार्य, विवाह आदि; जलसा; उछाव-बधाव (मनाना); ऊँचाई; गुस्सा, क्रोध; इच्छा; ग्रंथका खंड, भाग; कार्य-भार ग्रहण करना; कार्यारंभ।

उत्साद–पु० (सं०) नाश, क्षय।

उत्सादक–वि० (सं०) विध्वंसकारी, नाशक।

उत्सादन–पु० (सं०) नाश करना; बाधा डालना; घावका भरना; ऊपर चढ़ना; उठाना; मालिश करना, उबटन लगाना; खेतकी दूसरी जोताई करना। पु० (ऐब्रोगेशन) किसी विधि (कानून), अधिनियम, प्रथा आदिको उठा देना, रद्द कर देना; निराकरण।

उत्सादित–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ; जो रद्द कर दिया गया हो। साफ किया हुआ; आरूढ़; उठाया हुआ।

उत्सारक–पु० (सं०) उत्सारण करनेवाला; पहरेदार, द्वारपाल।

उत्सारण–पु० (सं०) हटाना, दूर करना; (सवारी आदिसे) उतरनेमें सहायता देना; अतिथिका स्वागत करना।

उत्साह–पु० (सं०) हौसला, उमंग; उद्यम, चेष्टा; प्रवृत्ति, इच्छा; अध्यवसाय; दृढ़ संकल्प; योग्यता, क्षमता; दृढ़ता; कल्याण; सुख; सूत्र; वीर रसका स्थायी भाव। **–वर्धन**–पु० वीर रस; शक्तिकी वृद्धि; उद्यम-वृद्धि। **–वृत्तांत**–पु० हौसला बढ़ाने, उत्तेजना बढ़ानेकी योजना। **–शक्ति**–स्त्री० दृढ़ता; अध्यवसाय; आक्रमण और युद्ध करनेकी शक्ति। **–सिद्धि**–स्त्री० उत्साह-शक्तिसे सिद्ध होनेवाला कार्य। **–हेतुक**–वि० उत्साहित कर काममें प्रवृत्त करनेवाला।

उत्साहक–वि० (सं०) अध्यवसायी; कर्मठ, क्रियाशील।

उत्साहन–पु० (सं०) उद्यम; अध्यवसाय; उत्तेजना देना, उत्साह बढ़ाना।

उत्साहिल–वि० दे० 'उत्साही'।

उत्साही(हिन्)–वि० (सं०) उत्साहयुक्त; उद्यमी; अध्यवसायी।

उत्सिक्त–वि० (सं०) अभिषिक्त; प्लावित; घमंडी; चंचलचित्त।

उत्सुक–वि० (सं०) उत्कंठित; अत्यधिक इच्छुक; बेचैन; अफसोस करनेवाला; बहुत चाहनेवाला (किसी वस्तुको)।

उत्सुकता–स्त्री० (सं०) अधीरता, व्याकुलता, बेचैनी; उत्कंठा प्रबल इच्छा; आसक्ति, प्रेम; पश्चात्ताप, अफसोस।

उत्सूत्र–वि० (सं०) धागेसे निकाला हुआ; अनियमित; नियम या सूत्रका त्याग करनेवाला।

उत्सूर–पु० (सं०) संध्या।

उत्सृष्ट–वि० (सं०) उत्सर्ग किया हुआ, परित्यक्त; उड़ेला हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ। **–पशु**–पु० विशेष अवसरपर उत्सर्ग किया हुआ साँड़। **–वृत्ति**–स्त्री० फेंका हुआ अन्न ग्रहण करना।

उत्सृष्टि–स्त्री० (सं०) परित्याग।

उत्सेक–पु० (सं०) छिड़कना; उफनकर बहना; प्लावित करना; घमंड, दर्प।

उत्सेकी(किन्)–वि० (सं०) प्लावित करनेवाला; ऊपरसे बहनेवाला; उफननेवाला; घमंडी।

उत्सेचन–पु० (सं०) छिड़कने या उफननेकी क्रिया।

उत्सेध–पु० (सं०) ऊँचाई; मोटाई; श्रेष्ठता; बड़ाई; शोथ; देह; वध। वि० ऊँचा; बड़ा।

उत्स्मय–पु० (सं०) मुस्कराहट।

उत्स्य–वि० (सं०) कूप या सोतेसे निकला हुआ।

उत्स्वन–वि० (सं०) ऊँची आवाज करनेवाला; शोर करनेवाला। पु० ऊँची आवाज।

उथपना*–स० क्रि० उठा देना; उजाड़ या उखाड़ देना।

उथराई*–स्त्री० उठान–'नैननि बोरति रूपके भौंर अचंभे भरी छतिया उथराई'–घन०।

उथराना*–अ० क्रि० किंचित् उठना, उन्नत होना।

उथलना*–अ० क्रि० डगमगाना; उलटना। **मु०–पुथलना**–नीचे-ऊपर होना; इधरका उधर होना।

उथल-पुथल–स्त्री० उलट-पलट; भारी उलट-फेर; हलचल (मचाना)।

उथला–वि० छिछला, कम गहरा।

उदंक–पु० (सं०) (तैलादिका) चर्मपात्र, कुप्पी।

उदंचन–पु० (सं०) घड़ा; कुएँसे पानी निकालनेकी बालटी; ऊपर फेंकना; आरोहण; ढक्कन। **–स्थान**–पु० पानी रखनेका स्थान।

उदंचित–वि० (सं०) उछाला हुआ; ऊपर उठाया हुआ; उक्त; प्रतिध्वनित; पूजित।

उदंचु–वि० (सं०) ऊर्ध्वगमनशील, जिसकी प्रवृत्ति ऊपर जानेकी हो।

उदंड*–वि० दे० 'उद्दंड'।

उदंडपाल–पु० (सं०) एक तरहकी मछली; सर्पका एक भेद।

उदंत–पु० (सं०) समाचार, वार्ता, खबर; सज्जन; व्यापार; यज्ञ आदिके सहारे जीविका प्राप्त करनेवाला। वि० सीमातक पहुँचनेवाला (समाचार आदि)। *जिसके (दूधके) टूटे दाँत न जमे हों।

उदंतक–पु० (सं०) वृत्तांत, समाचार, खबर।

उदंतिका–स्त्री० (सं०) संतुष्टि, तृप्ति।

उदंत्य–वि० (सं०) सीमाके बाहर रहनेवाला।

उद(न्)–पु० (सं०) जल (साधारणतः समासमें या 'उदक'के विकल्परूपमें व्यवहृत होता है)। **–कीर्ण,–कीर्य**–पु० महाकरंज। **–कुंभ**–पु० पानीका या पानीसे भरा घड़ा। **–कोष्ठ,–पात्र**–पु० पानीका घड़ा। **–घोष**–पु० जलका गर्जन। **–चमस**–पु० पानी पीनेका गिलास। **–ज**–वि० जलीय, जलमें उत्पन्न। **–जन**–पु०

(हाइड्रोजन) एक गंधहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस (वायव्य) जिससे पानीका निर्माण होता है (पानीमें इसका दो-तिहाई अंश विद्यमान रहता है। **–बम**–पु० हाइड्रोजन बम नामक अत्यन्त संहारकारी बम। **–धान**–पु० घड़ा; बादल। **–धि**–पु० दे० क्रममें। **–प**–पु० नाव। **–पात्र**–पु०,**–पात्री**–स्त्री० घड़ा, जल रखनेका पात्र। **–पान**–पु० कुएँके पासका गढ़ा; कुआँ; कमंडलु; पानीका छोटा गढ़ा; तालाबके निकटकी भूमि या टीला। **–पुर**–पु० हौज। **–प्लव**–पु० जलप्लावन। **–प्लुत**–वि० जलमें तैरनेवाला। **–बिंदु,–विंदु**–पु० पानीकी बूंद। **–भार**–पु० जल ढोनेवाला, बादल। **–मंथ**–पु० जौकी माड़ी, 'बार्लीवाटर'। **–मान**–पु०, **–मेही(हिन्)**–वि० बहुमूत्र रोगसे ग्रस्त। **–वाप**–पु० पितरोंको जल देनेवाला व्यक्ति। **–वास**–पु० जलस्थ निवासस्थान; जलाशयके किनारेका निवासस्थान। **–वाह**–पु० बादल। **–वाहन**–पु० जलपात्र। **–वीवध**–पु० पानी ढोनेकी बँहगी, काँवर। **–शराव**–पु० जलपूर्ण घट। **–शुद्ध**–वि० नहाया हुआ। **–श्वित्**–पु० आधा पानी मिला हुआ मट्ठा। **–हरण**–पु० पानी खींचनेका पात्र। **–हार**–पु० बादल।

उदउ†–पु० दे० 'उदय'।

उदक–पु० (सं०) पानी। **–कर्म(न्), –कार्य,–दान**–पु० दे० 'उदकक्रिया'। **–कृच्छ्र**–पु० एक व्रत जिसमें महीनेभर केवल जौके सत्तू और पानीपर रहना होता है। **–क्रिया**–स्त्री० पितरोंको जल देना, पितृतर्पण। **–क्रीडन**–पु० जलक्रीड़ा। **–गाह**–पु० स्नान करना, गोता लगाना। **–गिरि**–पु० जलाशयोंसे पूर्ण पर्वत। **–चरण**–पु० बुड्डआ, पनडुब्बा। **–द,–दाता(तृ),–दानिक,–दायी(यिन्)**–वि० पितरोंको पानी देनेवाला; उत्तराधिकारी। **–धर**–पु० बादल। **–परीक्षा**–स्त्री० एक प्रकारकी दिव्य परीक्षा। **–प्रतीकाश**–वि० जलीय; जल जैसा। **–बिंदु,–विंदु**–पु० पानीकी बूंद। **–शांति**–स्त्री० रोग दूर करनेके लिए अभिमंत्रित जल छिड़कना। **–शाक**–पु० पानीमें पैदा होनेवाले शाक। **–शुद्ध**–वि० स्नात, नहाया हुआ। **–स्पर्श**–पु० शरीरके विभिन्न अंगोंका जलसे स्पर्श कराना; शपथ, प्रतिज्ञा आदिके पूर्व जलका स्पर्श करना। **–हार**–पु० पनभरा, कहार।

उदकअद्रि*–पु० दे० 'उदगद्रि'।

उदकना*–अ० क्रि० (उत्साहातिरेकसे) उछलना-कूदना; छटकना।

उदकल, उदकिल–वि० (सं०) जलीय; जलवाला।

उदकांत–पु० (सं०) तट, किनारा।

उदकाधार–पु० (सं०) हौज, कूप आदि।

उदकार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) प्यासा; जल चाहनेवाला।

उदकेचर–वि० (सं०) जलचर।

उदकेविशीर्ण–वि० (सं०) पानीमें सुखाया हुआ अर्थात् अश्रुतपूर्व, असंभव।

उदकेशय–वि० (सं०) जलमें सोने या रहनेवाला।

उदकोदंचन–पु० (सं०) पानीका घड़ा।

उदकोदर–पु० (सं०) जलोदर रोग।

उदकौदन–पु० (सं०) भात।

उदक्(च्)–वि० (सं०) ऊपरका; उत्तरी; परवर्ती। अ० ऊपर; उत्तरकी ओर।

उदक्त–वि० (सं०) ऊपर खींचा या उठाया हुआ; ऊपर उठा हुआ; उक्त।

उदक्य–वि० (सं०) जलस्थ; जल चाहनेवाला।

उदक्या–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री।

उदगरना†–अ० क्रि० निकलना, प्रकट होना; उभड़ना।

उदगार*–पु० दे० 'उद्गार'।

उदगारना*–स० क्रि० उगलना; अ० क्रि० डकार लेना; भड़काना।

उदगारी*–वि० उगलने, डकार लेनेवाला।

उदग्–'उदक्'का समासगत रूप। **–अद्रि**–पु० हिमालय। **–अयन**–पु०,**–गति**–स्त्री० उत्तरायण। **–द्वार**–वि० जिसका द्वार उत्तरकी ओर हो। **–भूम**–पु०,**–भूमि**–स्त्री० उपजाऊ जमीन।

उदगग*–वि० दे० 'उदग्र'।

उदग्र–वि० (सं०) ऊपरको उठा, उभरा हुआ; उदार; वयोवृद्ध; ऊंचा; उन्नत; प्रवर्धित; विशाल; असह्य; प्रचंड; प्रबल; उग्र; भयंकर; क्रुद्ध।

उदघटना*–अ० क्रि० प्रकट होना।

उदघाटन*–पु० दे० 'उद्घाटन'।

उदघाटना*–स० क्रि० प्रकट करना; खोलना।

उदजन–पु० (हाइड्रोजन) एक गंधहीन, वर्णहीन, अदृश्य गैस (वायव्य) जिससे पानीका निर्माण होता है (पानीमें इसका दो तिहाई अंश विद्यमान रहता है); हाइड्रोजन।

उदङ्–'उदक्'का समासगत रूप। **–मुख**–वि० उत्तराभिमुख। **–मृत्तिक**–पु० दे० 'उदग्भूम'।

उदथ*–पु० सूर्य।

उदधि–पु० (सं०) समुद्र; घड़ा; बादल। **–कन्या,–तनया**–स्त्री० लक्ष्मी। **–कुमार**–पु० एक देवता (जै०)। **–क्रम,–क्रा**–पु० केवट, नाविक। **–मल**–पु० समुद्रफेन। **–मेखला,–वस्त्रा**–स्त्री० पृथ्वी। **–संभव**–पु० समुद्री नमक। **–सुत**–पु० चंद्रमा, अमृत, शंख आदि। **–सुता**–स्त्री० लक्ष्मी।

उदन्य–वि० (सं०) प्यासा; जलीय।

उदन्या–स्त्री० (सं०) प्यास।

उदन्यु–वि० (सं०) प्यासा; जलमें चलनेवाला।

उदन्वन्(वत्)–पु० (सं०) समुद्र।

उदबर्तन–पु० दे० 'उद्वर्तन'।

उदबस*–वि० उजड़ा हुआ, सूना; उद्वासित; जो आज यहाँ, कल वहाँ रमता रहे।

उदबासना–स० क्रि० किसी स्थानसे हटा, भगा देना; उजाड़ना।

उद्बुदि*–वि० उद्बुद्ध; जगाया हुआ।

उदबेग*–पु० दे० 'उद्वेग'।

उदभव*–पु० दे० 'उद्भव'।

उदभौत*–पु० अद्भुत घटना, अचंभेकी बात।

उदमदना*–अ० क्रि० उन्मत्त होना, सुध-बुध खो देना।

उदमाती–वि०, स्त्री० मस्तीसे भरी हुई, मस्तानी।

उदमाद*–पु० उन्माद; मस्ती।

उदमादी*–वि० मस्त, मतवाला, उन्मत्त।

उदमान–पु० (सं०) दे० 'उद'के साथ। *वि० मतवाला, उन्मत्त।

उदमानना*–अ० क्रि० उन्मत्त होना।

उदय–पु० (सं०) (सूर्यादिका) उगना, निकलना, आकाशमें ऊपरकी ओर उठना; प्रकट होना; बढ़ती, चढ़ती, उत्थान; सृष्टि; उद्गमस्थान; पूर्वपर्वत, उदयाचल; परिणाम; कार्यकी पूर्णता; लाभ; आय; सूद; कांति, ज्योति। **–गढ़***–पु० उदयगिरि। **–गिरि,–पर्वत,–शैल**–पु० पूर्वका एक (कल्पित) पर्वत जिसके पीछेसे सूर्यका उगना माना जाता है। **–नक्षत्र**–पु० वह नक्षत्र जिसपर कोई ग्रह दिखाई दे। **–पुर**–पु० मेवाड़की राजधानी। **–प्रस्थ**–पु० उदयगिरिका पठार। **–से अस्ततक**–धरतीके एक सिरेसे दूसरे तक, संपूर्ण भूमंडलमें।

उदयन–पु० (सं०) ऊपर जाना, उगना; फल; समाप्ति; स्वप्नवासवदत्ताका नायक वत्सराज; कुसुमांजलिकार उदयनाचार्य; अगस्त्य। वि० जिसका उदय हो रहा हो, ऊपर उठता हुआ।

उदयना*–अ० क्रि० उदय होना।

उदयाचल–पु० (सं०) उदयगिरि।

उदया तिथि–स्त्री० (सं०) सूर्योदयकालमें वर्तमान तिथि।

उदयाद्रि–पु० (सं०) उदयगिरि।

उदयान*–पु० उद्यान, बाग।

उदयास्त–पु० (सं०) उत्थान-पतन; बनना-बिगड़ना।

उदयी(यिन्)–वि० (सं०) उगता हुआ, उठता हुआ; प्रवाहित होनेवाला; उन्नतिशील।

उदरंभर, उदरंभरि–वि० (सं०) अपना ही पेट पालनेवाला; पेटू; स्वार्थी।

उदरंभरी–स्त्री० पेटूपन।

उदर–पु० (सं०) पेट; वस्तुका भीतरी भाग, अंतर; मध्यभाग; विजातीय द्रव्य एकत्र होने या जलोदर आदिके कारण पेटका बढ़ना। **–कृमि**–पु० पेटमें उत्पन्न होनेवाला कीड़ा; तुच्छ व्यक्ति

(ला०)। **–गुल्म**–पु०,**–ग्रंथि**–स्त्री० प्लीहा संबंधी एक रोग। **–ज्वाला**–स्त्री० पेटकी आग, भूख। **–त्राण**–पु० पेटपर या शरीरके सामनेके भागपर लगाया जानेवाला कवच। **–दास**–पु० पैदाइशी गुलाम, वह दास जिसके माँ-बाप भी दास रहे हों। **–पिशाच**–पु० पेटू, पिशाचकी तरह खानेवाला व्यक्ति। **–रेखा**–स्त्री० त्रिबली। **–वृद्धि**–स्त्री० रोगके कारण पेटका बढ़ना। **–शय**–वि० पेटके बल सोनेवाला। **–सर्पी(र्पिन्)**–वि० पेटके बल रेंगनेवाला। **–सर्वस्व**–वि० पेटू। **–स्थ**–वि० पेटके अन्दर पहुँचाया हुआ, हजम किया हुआ। पु० जठराग्नि।

उदरक–वि० (सं०) उदर-संबंधी।

उदरथि–पु० (सं०) सूर्य; समुद्र।

उदरना*–अ० क्रि० विदीर्ण होना; (मेड़, दीवार आदिका) कटकर अलग हो जाना; टूट जाना; नष्ट होना; गिरना।

उदराग्नि–स्त्री० (सं०) जठराग्नि, पाचनशक्ति।

उदराट–पु० (सं०) पेटमें रहनेवाला एक तरहका कृमि।

उदराध्मान–पु० (सं०) अफरा, अजीर्ण आदि।

उदरामय–पु० (सं०) पेटकी बीमारी।

उदरावर्त–पु० (सं०) नाभि।

उदरावेष्ट–पु० (सं०) पेटका कब्ज।

उदरिक, उदरिल–वि० (सं०) तुंदिल; स्थूल-काय।

उदरी(रिन्)–वि० (सं०) बड़ी तोंदवाला। (स्त्री० 'उदरिणी' –गर्भवती स्त्री।)

उदर्क–पु० (सं०) अंत; समाप्ति; परिणाम; भावी फल; भविष्यत्काल; मीनार, गुंबद; बढ़ जाना; मदनकंटक वृक्ष।

उदर्चि(स्)–पु० (सं०) अग्नि; शिव; कंदर्प। वि० ऊपरकी ओर ज्वाला या कांति विकीर्ण करनेवाला।

उदर्द–पु० (सं०) एक रोग, चर्मप्रदाह।

उदर्द्ध, उदर्ध–पु० (सं०) ज्वरका एक भेद।

उदर्य–वि० (सं०) उदर-संबंधी। पु० उदरके अंदरके अंगादि।

उदवना*–अ० क्रि० उदय होना।

उदवसित–पु० (सं०) गृह, मकान।

उदवाह*–पु० दे० 'उद्वाह'।

उदश्रु–वि० (सं०) फूट-फूटकर रोनेवाला।

उदसन–पु० (सं०) फेंकना; निकाल देना, निरसन; उठाना।

उदसना*–अ० क्रि० उजड़ना; उध्वस्त होना।

उदस्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; निकाला हुआ, निरस्त; उठाया हुआ; नीचा दिखाया हुआ।

उदात्त–वि० (सं०) ऊँचा; महान्; श्रेष्ठ; उदार; प्रसिद्ध; प्रिय; ऊँचे स्वरमें उच्चरित। पु० स्वरके तीन भेदोंमेंसे एक; ऊँचा स्वर; दान; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ अतिशय समृद्धिका वर्णन किया जाय; नायकका एक प्रकार; एक तरहका बड़ा ढोल। **–श्रुति**–वि० उदात्त स्वरमें उच्चरित।

उदात्तीकरण–पु० लांजाइनसके काव्य सिद्धान्तमें वर्णित अनुभूतियोंको मनोवैज्ञानिक प्रक्रियासे उच्च भूमिपर ले जानेका प्रयत्न।

उदान–पु० (सं०) प्राणके पाँच भेदोंमेंसे एक जिसका स्थान कंठ और गति हृदयसे कंठ-तालुतक है; साँस; नाभि; बरुनी; एक तरहका साँप; हर्षप्रकाश (बौ०)।

उदाम*–वि० दे० 'उद्दाम'।

उदार–वि० (सं०) दानशील, सख़ी; ऊँचे दिलवाला; ईमानदार, खरा; उच्च; दयालु; भला; सुंदर; उचित; विस्तृत, विशाल; दूसरोंमें गुण, भलाई देखनेवाला; धीर। पु० योगशास्त्रानुसार क्लेशका एक भेद; ᐩ गुलू नामक वृक्ष। **–चरित**–वि० ऊँचे चरित्रवाला। **–चेता(तस्)**,**–मना(नस्)**–वि० ऊँचे दिलवाला। **–दर्शन**–वि० देखनेमें भला लगनेवाला। **–धी**–वि० प्रतिभाशाली; ऊँचे दिलवाला, भला। पु० विष्णु। स्त्री० सद्गुण।

उदारता–स्त्री० (सं०) दानशीलता; उदार स्वभाव।

उदारथि–वि० (सं०) ऊपर उठनेवाला; ज्ञानेंद्रियोंको प्रकाश देनेवाला; जिसमेंसे भाप निकल रही हो। पु० विष्णु।

उदारना–स० क्रि० उदीर्ण या छिन्न-भिन्न करना।

उदाराशय–वि० (सं०) ऊँचे दिलवाला।

उदावत्सर–पु० (सं०) संवत्सरविशेष।

उदावर्त–पु० (सं०) बड़ी आँतका एक रोग, काँच, गुदग्रह।

उदावर्ता–स्त्री० (सं०) स्त्रियोंका मासिक स्राव-संबंधी एक रोग जिसमें पीड़ाके साथ रुधिर आदिका स्राव होता है।

उदास–पु० (सं०) तटस्थता; सन्न्यास; * दुःख। वि० जिसका मन उचटा रहता हो, खिन्न; दुःखी; उदासीन; तटस्थ; कांतिहीन, सूना, फीका।

उदासना–अ० क्रि० उदास होना। * स० क्रि० उजाड़ना; समेटना (बिस्तर)।

उदासिल*–वि० उदासीन।

उदासी–स्त्री० रंजीदगी, खिन्नता।

उदासी(सिन्)–वि० (सं०) तटस्थ, निरपेक्ष, विरक्त। पु० सन्न्यासी, विरागी; नानकशाही साधु।

उदासीन–वि० (सं०) रुचि न लेनेवाला, विरक्त; तटस्थ; निष्पक्ष। पु० अजनबी; तटस्थ व्यक्ति या नरेश; अभियोगसे असंबद्ध व्यक्ति; पंच, तीसरा व्यक्ति; दंड देने, अनुग्रह करने आदिमें समर्थ वह शक्तिशाली राजा जो किसी दूरस्थ राज्यमें रहता हो। **–मित्र**–पु० ऐसा मित्र राजा जिसके कुछ सहायता करने या न करनेके बारेमें निश्चय न हो।

उदासीन भागीदार–पु० (स्लीपिंग पार्टनर) ऐसा साझेदार जिसने कारखाने या व्यवसाय आदिमें रुपया तो लगाया हो पर जो प्रबंधादिमें दिलचस्पी न लेता हो; **निष्क्रिय साझीदार**।

उदासीनता–स्त्री० (सं०) विरक्ति; तटस्थता, निरपेक्षिता।

उदास्थित–वि० (सं०) नियुक्त। पु० निरीक्षक; द्वारपाल; जासूस; वह सन्न्यासी जो अपना व्रत छोड़कर गुप्तचर आदिका कार्य करता हो।

उदाहट–स्त्री० ऊदापन।

उदाहरण–पु० (सं०) कहना, वर्णन करना; दृष्टांत, मिसाल; वाक्यके पाँच अवयवोंमेंसे तीसरा (न्या०); आरंभ; एक अर्थालंकार जिसमें कोई सामान्य कथन करनेके बाद बानगीके तौरपर कोई बात कही जाय 'एक दोष गुनपुंजमें होत निमग्न 'मुरार', जैसे चंद मयूखमें अंक कलंक निहार'।

उदाहार–पु० (सं०) मिसाल; भाषणका आरंभिक भाग।

उदाहित–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ।

उदाहृत–वि० (सं०) कथित, वर्णित; जिसका दृष्टांत दिया गया हो।

उदाहृति–स्त्री० (सं०) उदाहरण; उत्कर्षयुक्त वाक्यका कथन (ना०)।

उदित–वि० (सं०) उगा हुआ, उदयप्राप्त; प्रकट, प्रकाशित; उत्पन्न; ऊँचा; कथित। पु० एक तरहकी सुगंध। **–यौवना**–स्त्री० मुग्धा नायिकाका एक भेद।

उदिति–स्त्री० (सं०) उदय; भाषण।

उदियाना*–अ० क्रि० व्याकुल होना, परेशान होना, थक जाना।

उदीक्षण–पु० (सं०) ऊपरकी ओर देखना।

उदीची–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा।

उदीचीन–वि० (सं०) उत्तरी; उत्तराभिमुख।

उदीच्य–वि० (सं०) उत्तरका; उत्तरका रहनेवाला। पु० सरस्वती नदीके उत्तर-पश्चिममें पड़नेवाला देश; गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; वैतालीय छंदका एक भेद; एक गंधद्रव्य।

उदीप–वि० (सं०) प्लावित। पु० जलप्लावन, बाढ़।

उदीपन*–पु० दे० 'उद्दीपन'।

उदीपित*–वि० दे० 'उद्दीप्त'।

उदीयमान–वि० (सं०) उगता, उदय होता हुआ।

उदीरण–पु० (सं०) कथन, उच्चारण, बोलना; अस्त्रक्षेपण।

उदीरित–वि० (सं०) कहा हुआ।

उदीर्ण–वि० (सं०) उत्थित; उत्पन्न किया हुआ; घमंडी; उत्तेजित; उदार; महान्; कथित; प्रस्तुत (बाण आदि चलानेके लिए)।

उदुंबर–पु० (सं०) दे० 'उडुंबर'। **–पर्णी**–स्त्री० दंतिका।

उदूखल–पु० (सं०) दे० 'उलूखल'।

उदूढ–वि० (सं०) उठाया हुआ; विवाहित; लंबा; भारी; स्थूल; प्राप्त; सारवान्; अत्यधिक।

उदूल–पु० (अ०) विमुख होना; उल्लंघन; अवज्ञा। **–हुक्मी** –स्त्री० हुक्म न मानना, आज्ञाका उल्लंघन।

उदेग*–पु० दे० 'उद्वेग'।

उदेजय–वि० (सं०) हिलानेवाला, कँपानेवाला; भयंकर।

उदै, उदो, उदौ*–पु० दे० 'उदय'।

उदोत*–पु० प्रकाश; शोभा ('अगणित बढत उदोत'); वृद्धि, उन्नति–'जन राजवंत, जग जोगवंत। तिनको उदोत, केहि भाँति होत।'–राम०। वि० प्रकाशित, प्रकट; शुभ्र। **–कर**–वि० प्रकाश करनेवाला; चमकानेवाला।

उदोती–वि० उदय करनेवाला; प्रकाश करनेवाला।

उद्गंधि–वि० (सं०) तीव्र गंधवाला।

उद्गत–वि० (सं०) ऊपर आया हुआ; गया हुआ; उत्पन्न; बाहर निकाला, कै किया हुआ।

उद्गता–स्त्री० (सं०) वृत्तविशेष।

उद्गतार्थ–पु० (सं०) ऐसी वस्तु या धरोहर जिसका दाम रखे-रखे बढ़ गया हो।

उद्गतासु–वि० (सं०) जिसके प्राण निकल गये हों, मृत।

उद्गति–स्त्री० (सं०) आरोह, ऊपर जाना; उदय; मूल; वमन।

उद्गम–पु० (सं०) ऊपर आना; उठना; सीधे खड़ा होना (बालोंका); प्रस्थान; दृष्टि; जन्म, उत्पत्ति; उत्पत्तिस्थान; निकलना; निकास; वमन; अँखुआ, अंकुर।

उद्गमन–पु० (सं०) उदय, प्रकट होना।

उद्गाढ–वि० (सं०) गहरा; प्रचंड; अतिशय। पु० आतिशय्य।

उद्गाता(तृ)–पु० (सं०) यज्ञमें सामगान करनेवाला ऋत्विक्।

उद्गाथा–स्त्री० (सं०) आर्या छंदका एक भेद।

उद्गार–पु० (सं०) मुँहसे बाहर आना; वमन; थूक, लार; डकार; दिलमें भरी हुई बातका बाहर निकलना; हर्ष, शोक आदिके सूचक शब्द (शोकोद्गार इ०); बार-बार कहना; शब्द; कंठगर्जन; प्रतिध्वनि; जलप्लावन। **–चूडक** पु० एक तरहका पक्षी।

उद्गारी(रिन्)–वि० (सं०) डकार लेने या वमन करनेवाला; ऊपर जानेवाला; बाहर निकालनेवाला।

उद्गिरण–पु० (सं०) उगलना, वमन; डकार, भीतरसे बाहर निकालना; उन्मूलन।

उद्गीति–स्त्री० (सं०) गाना; सामगान; आर्या छंदका एक भेद।

उद्गीथ–पु० (सं०) सामगान; सामवेदका दूसरा खंड; ओंकार; पवित्र सामूहिक गान या नारा 'स्वराज्य... यह रणघोष राष्ट्रका परम उद्गीथ रहा है'––सुधीन्द्र।

उद्गीरण–पु० (सं०) बाहर निकालना; वमन करना; थूकना; मुँहमें पानी लाना, लार निकालना।

उद्गीर्ण–वि० (सं०) उगला हुआ; निकाला हुआ; टपका हुआ।

उद्गूर्ण–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; उत्तेजित; क्षुब्ध।

उद्गेय–वि० (सं०) गाने योग्य; जिसे अभी गाना हो।

उद्गेही–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चींटी।

उद्ग्रंथ–वि० (सं०) बंधनमुक्त; ढीला किया हुआ। पु० पुस्तकका एक विभाग या अध्याय।

उद्ग्रंथि–वि० (सं०) न बँधा हुआ; सांसारिक बंधनोंसे मुक्त, असंग।

उद्ग्रहण–पु० (लेवी) कर आदि अधिकारपूर्वक वसूल करना, उगाहना, उगाही।

उद्ग्राह–पु० (सं०) ऊपर उठाना; प्रतिवाद, वादका उत्तर; कररूपसे इकट्ठा किया हुआ अन्न।

उद्ग्राहित–वि० (सं०) उपन्यस्त; हटाया हुआ; बद्ध; स्मृत; वर्णित; उत्तम।

उद्ग्रीव, उद्ग्रीवी(विन्)–वि० (सं०) जिसकी गर्दन ऊपर उठी हो, उत्कंठ।

उद्घ–पु० (सं०) श्रेष्ठता, उत्तमता; सुख, आनंद; अग्नि; नमूना।

उद्घटित–पु० (सं०) संकेत।

उद्घट्टक–पु० (सं०) तालका एक भेद।

उद्घट्टन–पु० (सं०) खोलना; खंड; संघर्ष।

उद्घट्टित–वि० (सं०) खोला हुआ; अलग किया हुआ।

उद्घन–पु० (सं०) वह लकड़ी जिसपर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ता है, ठीहा।

उद्घर्षण–पु० (सं०) रगड़ना; घोंटना; मारना; सोंटा।

उद्घस–पु० (सं०) मांस।

उद्घाट–पु० (सं०) खोलना, चुंगीकी चौकी।

उद्घाटक–पु० (सं०) कुंजी; कुएँकी चरखी; उद्घाटन करनेवाला।

उद्घाटन–पु० (सं०) खोलना, प्रकट करना; किसी सम्मेलन या समारोहका किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा आरंभ किया जाना; ऊपर उठाना; कुंजी; पानी निकालनेकी चरखी।

उद्घाटित–वि० (सं०) खोला, उघाड़ा हुआ; ऊपर उठाया हुआ, उत्तोलित; आरंभ किया हुआ।

उद्घात–पु० (सं०) आरंभ; उल्लेख; हवाला; आघात; डगमगाना; धक्का; गदा; हथियार; प्राणायाम; अध्याय।

उद्घातक–वि० (सं०) आघात करने, धक्का मारनेवाला; आरंभ करनेवाला। पु० नाटकमें प्रस्तावनाका एक भेद।

उद्घुष्ट–वि० (सं०) उद्घोष किया हुआ। पु० शोर, घोष।

उद्घोष–पु० (सं०) ऊँची आवाजमें कहना; घोषणा, मुनादी करना; जनतामें चलनेवाली बात।

उद्घोषणा–स्त्री० (प्रोक्लमेशन) सार्वजनिक रूपसे और सरकारी तौरपर घोषित करना; सबकी जानकारीके लिए दी जानेवाली सूचना।

उद्घोषित–वि० (सं०) जिसके संबंधमें उद्घोषणा की गयी हो।

उद्दंड–वि० (सं०) निडर, न दबनेवाला, अक्खड़, सरकश। **–पाल** –पु० दंड देनेवाला; एक तरहकी मछली; एक तरहका साँप।

उद्दंतुर–वि० (सं०) जिसके दाँत लंबे या निकले हुए हों; ऊँचा; भयंकर, कराल।

उद्दंश–पु० (सं०) खटमल; जूँ; मच्छड़।

उद्दत*–वि० दे० 'उद्यत'।

उद्दम–पु० (सं०) दमन, पराभव; वशमें लाना, पोस मनवाना।

उद्दर्शन–पु० (सं०) देखे जानेकी स्थितिमें लाना, स्पष्ट करना।

उद्दांत–वि० (सं०) अत्यन्त दबाया हुआ, विनम्र; उत्साही।

उद्दान–पु० (सं०) बंधन; वशमें लाना, उद्दम; मध्य भाग, कटि; चुल्हा; लग्न।

उद्दाम–वि० (सं०) बंधनरहित, निरंकुश; प्रचंड; उग्र; घमंडी; विशाल; असाधारण; असीम; भयंकर। पु० यम; वरुण, एक वृत्त।

उद्दाल–पु० (सं०) वनकोद्रव, बहुवारक नामक पौधा; उद्दालक ऋषि।

उद्दालक–पु० (सं०) एक ऋषि; एक व्रत; बनकोदो।

उद्दित–वि० (सं०) बँधा हुआ; ० दे० 'उदित'; 'उद्धत'; 'उद्यत'।

उद्दिन–पु० (सं०) मध्याह्न।

उद्दिम*–पु० दे० 'उद्यम'।

उद्दिष्ट–वि० (सं०) बताया हुआ; चाहा, सोचा हुआ, अभिप्रेत; वादा किया हुआ। पु० प्रस्तारके हिसाबसे छंदका भेद जाननेकी पिंगलकी एक क्रिया; लाल चंदन; अधिकारीकी आज्ञा प्राप्त कर किसी वस्तुका भोग करना।

उद्दीप–पु० (सं०) प्रज्वलित करना; उत्तेजित करना; उत्तेजित करनेवाला; गोंद जैसा एक लसदार पदार्थ, गुग्गुल।

उद्दीपक–वि० (सं०) उद्दीपन करनेवाला, उत्तेजित करनेवाला; प्रज्वलित करनेवाला; जठराग्नि बढ़ानेवाला।

उद्दीपन–पु० (सं०) उत्तेजित करना, भड़काना; जगाना; रसका पोषण-वर्द्धन करनेवाली वस्तु (सा०); जलाना; शवदाह। वि० उद्दीपन करनेवाला।

उद्दीपित–वि० दे० 'उद्दीप्त'।

उद्दीप्त–वि० (सं०) जगाया, भड़काया हुआ; उत्तेजित; प्रज्वलित; चमकीला।

उद्दीप्ति–स्त्री० (सं०) उद्दीप्त होना।

उद्दीप्र–वि० (सं०) प्रज्वलित, चमकता हुआ। पु० गुग्गुल।

उद्देश–पु० (सं०) चर्चाका विषय बनाना; संकेत या लक्ष्य करना, दृष्टिमें रखना; अभिप्राय, इरादा; उदाहरण, स्पष्टीकरण; निश्चय, निर्धारण; स्थान; ऊँचा पद या स्थान; अनुसंधान; तर्कके लिए रखी जानेवाली प्रतिज्ञा। **–पादप,–वृक्ष**–पु० किसी विशेष प्रयोजनसे लगाया हुआ वृक्ष।

उद्देशक–वि० (सं०) दृष्टांतरूप। पु० मिसाल; दिखलाने बतलानेवाला; प्रश्न (ग०)।

उद्देशन–पु० (सं०) दिखलाने, बतलाने, लक्षित करनेकी क्रिया।

उद्देश्य–वि० (सं०) स्पष्ट या इंगित किये जाने योग्य; लक्ष्य, इष्ट। पु० जिसके विषयमें कुछ कहा जाय (व्या०); प्रयोजन।

उद्देष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) बतलानेवाला, इंगित करनेवाला; कोई लक्ष्य दृष्टिमें रखकर काम करनेवाला।

उद्देहिका–स्त्री० (सं०) एक कीट, दीमक।

उद्दोत*–वि०, पु० दे० 'उद्द्योत'। –'पुर पैठत श्रीरामके भयो मित्र उद्दोत'–राम०।

उद्दोतिताई*–स्त्री० प्रकाश।

उद्द्योत–वि० (सं०) प्रकाशमान, ज्वलंत। पु० चमकना; प्रकाशित होना; प्रकट होना; प्रकाश; कांति; अध्याय। **–कर, कारी(रिन्)**– वि० प्रकाशित करनेवाला।

उद्द्योतित–वि० (सं०) प्रकाशित किया हुआ; प्रज्वलित किया हुआ; चमकीला।

उद्द्राव–पु० (सं०) ऊपरकी ओर जाना; भागना, पलायन।

उद्द्रुत–वि० (सं०) भागनेवाला।

उद्ध*–अ० ऊपर।

उद्धत–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; अतिशय; कठोर; उजड्ड, अक्खड़; अविनीत; किसीका अदब-लिहाज न करनेवाला; घमंडी; उत्तेजित; क्षुब्ध; प्रचंड; राजसी। पु० राजमल्ल। **–मनस्क,–मना(नस)**–वि० अभिमानी।

उद्धति–स्त्री० (सं०) उठान; घमंड, दर्प; उजड्डपन; आघात।

उद्धना*–अ० क्रि० ऊपर उठाना; उड़ना; बिखरना।

उद्धम–पु० (सं०) बजाना; जोरसे साँस लेना, हाँफना।

उद्धरण–पु० (सं०) उतारना; निकालना; सुधार; उद्धार होना या करना; मुक्ति; विनाश; ऊपर उठाना; पढ़ा हुआ दुहराना; कुछ अंश लेना; (एक्सट्रैक्ट) किसीकी उक्ति, लेख या पुस्तकका अंश कहीं उद्धृत करना; इस तरह दिया गया लेखादिका अंश। अवतरण; वमन; वमनसे निकली हुई वस्तु।

उद्धरणी–स्त्री० (सं०) पढ़े हुए पाठको दुहराना, आमोख्ता।

उद्धरना*–स० क्रि० उद्धार करना।

उद्धर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) ऊपर उठानेवाला; संपत्तिका हिस्सेदार; संपत्तिका उद्धार करनेवाला। पु० नाश करनेवाला; त्राता, रक्षक।

उद्धर्ष–वि० (सं०) प्रसन्न। पु० प्रसन्नता, उमंग (कार्यभार ग्रहण करनेकी); व्रतोत्सव।

उद्धर्षण–पु० (सं०) उत्तेजन; रोमांच।

उद्धव–पु० (सं०) एक यादव जो कृष्णके सखा और संबंधी थे; यज्ञाग्नि; उत्सव।

उद्धव्य–पु० (सं०) बौद्धोंके मतसे दस क्लेशोंमेंसे एक।

उद्धस्त–वि० (सं०) जिसके हाथ ऊपर उठे या फैले हुए हों।

उद्धांत–वि० (सं०) वमित। पु० निर्मद हस्ती।

उद्धान–वि० (सं०) उद्गत; वमित; फूला हुआ। पु० चूल्हा; वमन।

उद्धार–पु० (सं०) ऊपर उठाना; बाहर निकालना (विपत्ति, दुदर्शा आदिसे); छुटकारा, (जन्म-मरणके बंधनसे) मुक्ति; ऋण या ऋणरूप कर्तव्यसे छुटकारा; बड़े पुत्रको ऊपरसे मिलनेवाला संपत्तिका भाग; युद्धमें प्राप्त धनका षष्ठांश जो राजाको मिलता है; एहसान; ऋण; प्रस्थान; पुस्तकके किसी अंशका उद्धरण; अभ्युदय।

उद्धारक–वि० (सं०) उद्धार करनेवाला।

उद्धारण–पु० (सं०) उबारना; ऊपर उठाना; भाग लेना।

उद्धारना*–स० क्रि० उद्धार करना।

उद्धारा–स्त्री० (सं०) गुडूची।

उद्धित–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ, उत्तोलित।

उद्धुर–वि० (सं०) भारमुक्त; स्वतंत्र; दृढ़, साहसी; विजयी; ऊँचा (स्वर); भारी; मोटा; प्रसन्न; योग्य।

उद्धूत–वि० (सं०) हिलाकर गिराया हुआ; उच्च; ऊपर फेंका हुआ।

उद्धूनन–पु० (सं०) उठाना; ऊपर फेंकना; हिलाना।

उद्धूपन–पु० (सं०) धूप देना, सुवासित करना।

उद्धूलन–पु० (सं०) धूल या कोई चूर्ण भुरकना।

उद्धूषण–पु० (सं०) रोमांच, पुलक।

उद्धृत–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; उबारा, बचाया हुआ, उन्मूलित; पृथक् किया हुआ; अन्य रचनासे (अवतरण-रूपमें) लिया हुआ; बँटवारा किया हुआ; चुना हुआ; बिखेरा हुआ; अनावृत; वमित। पु० गाँवकी प्राचीन घटनाओंके जानकार वृद्ध जन।

उद्धृति–स्त्री० (सं०) निकालना; हटाना; त्राण।

उद्ध्मान–पु० (सं०) चूल्हा।

उद्ध्वंस–पु० (सं०) कर्कशता (स्वरकी); विनाश; महामारी; आक्रांत होना (रोगादिसे)।

उद्ध्वस्त–वि० (सं०) ढहा, गिरा हुआ; नष्ट।

उद्बंध–वि० (सं०) बंधनमुक्त। पु० लटकाना, टाँगना; स्वयं फाँसी लगा लेना।

उद्बंधक–पु० (सं०) धोबीका काम करनेवाली एक वर्णसंकर जाति।

उद्बंधन–पु० (सं०) दे० 'उद्बंध'।

उद्बल–वि० (सं०) बलवान्, शक्तिशाली।

उद्बाष्प–वि० (सं०) अश्रुपूर्ण।

उद्बाहु–वि० (सं०) जो बाहें ऊपर उठाए हुए हो।

उद्बुद्ध–वि० (सं०) जगा या जगाया हुआ; विकसित; उद्दीप्त; याद आया या दिलाया हुआ।

उद्बोध–पु० (सं०) जगना; स्वरूप, कर्तव्य आदिका स्मरण होना।

उद्बोधक–वि० (सं०) जगाने, उठाने, याद दिलानेवाला; उद्दीपक।

उद्बोधन–पु० (सं०) जगना, चेतना; जगाना; (ऐडमॉनिशन) मामूली डाँट-डपटके साथ समझाना, चेतावनी देना, भर्त्सना।

उद्बोधिता–स्त्री० (सं०) परकीया नायिकाका एक भेद।

उद्भट–वि० (सं०) श्रेष्ठ; असाधारण; जबर्दस्त; प्रचंड। पु० कच्छप; सूर्प।

उद्भव–पु० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; उद्गम, मूल; विष्णु; वृद्धि। **–कर**–वि० उत्पन्न करनेवाला, उत्पादक। **–क्षेत्र**–पु० उत्पत्ति-स्थान। **–वेश्म**–पु० (ओरिजिनेटिंग चेंबर) संसद या विधानमंडलका वह सदन जिसमें कोई प्रस्ताव पहले पहल उपस्थापित किया गया तथा स्वीकृत हुआ हो।

उद्भवन–अवधि–स्त्री० (इन्क्यूबेशन पीरियड) रोगाणुके सम्पर्कमें आनेके क्षण और उसके कारण उत्पन्न होनेवाले रोगके लक्षणके प्रगट होनेके क्षण, के बीच व्यतीत होनेवाली अवधि।

उद्भाव–पु० (सं०) उद्भव; कल्पना; उदाराशयता, उद्भावन।

उद्भावक–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला; उद्भावना करनेवाला।

उद्भावन–पु० (सं०) उत्पादन; कल्पना करना; सोचना; कहना; बोलना; उपेक्षा करना। (इनवेंशन) किसी नयी प्रणाली, यंत्रादिका निर्माण करना (जिसका पहले अस्तित्व न रहा हो), आविर्भावन, उपज्ञा, ईजाद।

उद्भावना–स्त्री० (सं०) उद्भव; कल्पना।

उद्भावयिता(तृ)–वि० (सं०) उद्भावक।

उद्भास–पु० (सं०) चमक, दीप्ति; प्रकाश।

उद्भासित–वि० (सं०) व्यक्त; चमकता हुआ; प्रकाशित; अलंकृत।

उद्भासी(सिन्)–वि० (सं०) चमकीला, दीप्तिमान्; व्यक्त होनेवाला; चमकानेवाला।

उद्भासुर–वि० (सं०) दीप्तिमान्, चमकीला।

उद्भिज्ज–वि० (सं०) धरती फोड़कर बाहर निकलनेवाला; उगनेवाला। पु० पेड़-पौधे, वनस्पति। **–शास्त्र**–पु०

वनस्पतिशास्त्र ।

उद्भिद–वि० (सं०) उगने, निकलनेवाला । पु० पांशु लवण, समुद्री नमक ।

उद्भिद्–वि० (सं०) धरती फोड़कर उगने, निकलनेवाला । पु० अँखुआ; पौधा; उत्स, झरना ।

उद्भिन्न–वि० (सं०) निकला हुआ; व्यक्त; उत्पन्न; विभक्त; विकसित; जिसके प्रति विश्वासघात किया गया हो ।

उद्भूत–वि० (सं०) उत्पन्न, सृष्ट; उच्च; व्यक्त; गोचर ।

उद्भूति–स्त्री० (सं०) उत्पत्ति; उत्कर्ष ।

उद्भेद–पु० (सं०) बीजका अंकुरित होना, धरती फोड़कर निकलना; प्रकट होना; उत्स; ज्वालामुखीका फूटना; विस्फोट; विश्वासघात ।

उद्भेदन–पु० (सं०) फोड़कर बाहर निकलना; उगना; प्रकट होना ।

उद्भ्रम–पु० (सं०) घूमना, चक्कर खाना; घुमाना; पश्चात्ताप ।

उद्भ्रमण–पु० (सं०) घूमना, भ्रमण करना; उदय होना ।

उद्भ्रांत–वि० (सं०) घूमा, चक्कर खाया हुआ; भीत; भ्रमित-चित्त; हैरान; उद्विग्न; जो हाथ ऊँचा करके तलवार घुमाता हो ।

उद्यत–वि० (सं०) उठाया हुआ, ताना हुआ; तैयार, आमादा; परिश्रमी; तना या खिंचा हुआ (धनुष); अनुशासित, शिक्षित । पु० पुस्तकका अध्याय या विभाग; ताल (संगीत) ।

उद्यति–स्त्री० (सं०) उठाना; प्रयत्न, चेष्टा ।

उद्यम–पु० (सं०) उठाना; श्रम, मेहनत; उद्योग; धंधा; तैयारी । **–कर्ता**–पु० किसी कारखाने या उद्योगका वास्तविक नियंत्रण करनेवाला (आंट्रेप्रेनेर), 'उपक्रमी' । **–भंग**–पु० प्रयत्नसे विरत होना या विरत करना; उत्साहभंग ।

उद्यमी(मिन्)–वि० (सं०) मेहनती; उद्योगी ।

उद्यान–पु० (सं०) बगीचा, वाटिका; प्रयोजन; टहलना । **–कर्म**–पु० (हार्टिकल्चर) उद्यानमें पेड़-पौधे लगाने तथा उनकी देख-भाल आदि करनेका काम, उद्यानविज्ञान, बागवानी । **–गोष्ठी**–स्त्री० (गार्डन पार्टी) किसीके उद्यानमें या दूर्वाक्षेत्र आदिपर आयोजित प्रीतिभोज अथवा प्रीति-सम्मेलन । **–पाल, –पालक**–पु० माली । **–भोज**–पु० दे० 'उद्यानगोष्ठी' । **–रक्षक**–पु० माली । **–विज्ञान**–पु० दे० 'उद्यानकर्म' ।

उद्यानक–पु० (सं०) वाटिका । **–व्यूह**–पु० एक प्रकारका असंहत व्यूह ।

उद्यापन–पु० (सं०) व्रतादिकी समाप्ति; व्रतकी समाप्तिपर किया जानेवाला हवनादि ।

उद्यापित–वि० (सं०) विधिपूर्वक पूर्ण किया हुआ; जिसका उद्यापन हो चुका हो ।

उद्याव–पु० (सं०) मिलाना, संयोग ।

उद्युक्त–वि० (सं०) काममें लगा हुआ; उद्यमी; मुस्तैद ।

उद्योग–पु० (सं०) अध्यवसाय; यत्न, श्रम; उद्यम; कार्य; कर्तव्य; उत्पादक–जीवनके लिए आवश्यक सामग्री उत्पन्न करने-का–धंधा, 'इंडस्ट्री' । **–धंधा**–पु० (हिं०) जनोपयोगके लिए माल या सामान तैयार करनेका काम या धंधा । **–पति**–(सं०) माल तैयार करनेवाले कारखानेका मालिक । **–शाला**–स्त्री० उत्पादक धंधा सिखानेवाली संस्था; कारखाना । **–समीकरण**–पु० (रैशनैलिजेशन आफ इंडस्ट्री) श्रमिकोंके काम, समय तथा सामग्री आदि-संबंधी बरबादी दूर कर उद्योगकी स्थिति सुधारना, **युक्तिकरण** ।

उद्योगी(गिन्)–वि० (सं०) उद्योगशील, कोशिशमें लगा रहनेवाला; मेहनती ।

उद्योगीकरण–पु० (सं०) जो पहले उद्योगके रूपमें नहीं था उसे उद्योगका रूप देना; दे० 'औद्योगिकीकरण' ।

उद्योत–पु० दे० 'उद्द्योत' ।

उद्योतन–पु० प्रकाशित करना या होना ।

उद्रंग–पु० (सं०) उद्ग्रंथ; उद्ग्राह; गाँवोंसे एकत्र किया गया वह अन्न जो राजाका अंश हो ।

उद्र–पु० (सं०) एक जलजंतु, ऊदबिलाव ।

उद्रथ–पु० (सं०) रथके धुरेमें लगायी जानेवाली खूँटी; मुर्गा ।

उद्रपात्र*–पु० उदरपात्र; वह व्यक्ति जिसके पास उदरके सिवा और कोई बरतन न हो ।

उद्राव–पु० (सं०) शोर, हल्ला ।

उद्रिक्त–वि० (सं०) बढ़ा हुआ; अतिशय; प्रचुर; स्पष्ट । **–चित्त, चेता(तस्)**–वि० ऊँचे दिलवाला, उदाराशय ।

उद्रुज–वि० (सं०) तोड़नेवाला; नष्ट करनेवाला; जड़ खोदनेवाला ।

उद्रेक–पु० (सं०) बढ़ती, प्रचुरता, इफरात; उपक्रम, आरंभ; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ कई सजातीय वस्तुओं या गुणोंकी तुलनामें किसी सजातीय या विजातीय वस्तु या गुणकी उत्कृष्टता (अधिकता) दिखाई जाय । **–भंग**–पु० आरंभमें ही हतोत्साह कर देना ।

उद्रेका–स्त्री० (सं०) महानिंब ।

उद्रेचक–वि० (सं०) बहुत बढ़ा देनेवाला ।

उद्वत्सर–पु० (सं०) वर्ष, वत्सर ।

उद्वपन–पु० (सं०) दान; उड़ेलना; हिलाकर गिराना ।

उद्वर्त–पु० (सं०) उबटन; उबटनका मालिश; शेषांश; अतिरिक्त अंश; आतिशय्य । वि० फाजिल; शेष बचा हुआ ।

उद्वर्तक–वि०, पु० (सं०) उबटन लगानेवाला; उठानेवाला ।

उद्वर्तन–पु० (सं०) उत्थान; बाढ़, अभ्युदय; लेपन, उबटन लगाना; उबटन; सुगंधित लेप; मालिश; पीसना; तारकशी; उजड्डपन ।

उद्वर्तित–वि० (सं०) जिसे उबटन लगाया गया हो; जिसकी मालिश की गयी हो; उठा हुआ; निकाला हुआ; सुवासित ।

उद्वर्धन–पु० (सं०) वृद्धि; दबायी हुई हँसी ।

उद्वर्हित–वि० (सं०) खींचा हुआ; उन्मूलित ।

उद्वस–वि० (सं०) अवसित; रिक्त; गत; लुप्त; मधु निकाला हुआ (छत्ता) । पु० निर्जन स्थान ।

उद्वह–पु० (सं०) बेटा; वायुके सात स्तरोंमेंसे एक, तीसरे स्कंधकी वायु; विवाह; उदान वायु; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । वि० ले जानेवाला; जारी रहनेवाला ।

उद्वहन–पु० (सं०) ऊपरकी ओर उठाना, उठाकर ले जाना; उठाना; सँभालना; विवाह करना; (किसी वस्तुसे) युक्त या संपन्न होना । **–यंत्र**–पु० (पंप) पानी, तेल आदि ऊपर उठाकर बाहर निकालनेवाला पिचकारी जैसा यंत्र, **पंप** ।

उद्वहा–स्त्री० (सं०) पुत्री ।

उद्वादन–पु० (सं०) जोरसे चिल्लाना; उद्घोष ।

उद्वांत–वि० (सं०) वमित; निकाला हुआ । पु० निकालना; वमन; चूल्हा ।

उद्वाप–पु० (सं०) फेंकना; हटाना; निकालना; ऊपर उठाना; मुंडन; खेती, फसल ।

उद्वापन–पु० (सं०) बुझाना (आग) ।

उद्वाष्प–वि० (सं०) दे० 'उद्बाष्प' ।

उद्वास–पु० (सं०) निकालना; खदेड़ देना; त्याग; वध करनेके लिए ले जाना; वध; मुक्त करना । वि० जिसने अपने कपड़े उतार दिये हैं ।

उद्वासन–पु० (सं०) निकाल, खदेड़ देना; उजाड़ना; मार डालना; यज्ञके पहले आसन बिछाना आदि ।

उद्वासित–वि० (डिसप्लेस्ड) दे० **'विस्थापित'** ।

उद्वाह–पु० (सं०) उठाना; संभालना; विवाह; एक वायु ।

उद्वाहन–पु० (सं०) उठाना; सँभालना, विवाह करना; एक बार जोते हुए खेतको फिर जोतना; चिंता ।

उद्वाहनी–स्त्री० (सं०) कौड़ी; रस्सी ।

उद्वाहर्क्ष–पु० (सं०) विवाहके लिए शुभ नक्षत्र ।

उद्वाहिक–वि० (सं०) विवाह-संबंधी, वैवाहिक ।

उद्वाहित–वि० (सं०) खींचा हुआ; उठाया हुआ; विवाहित ।

उद्वाहिनी–स्त्री० (सं०) रस्सी, डोरी ।

उद्वाही(हिन्)–वि० (सं०) उठानेवाला; विवाह करनेवाला ।

उद्विकासित–वि० (इवाल्व्ड) जो आरंभिक अवस्थासे धीरे-धीरे

पूर्ण विकासकी अवस्थाको पहुँचाया गया हो, जो क्रमशः विकसित किया गया हो।

उद्विग्न–वि॰ (सं॰) उद्वेगयुक्त, परेशान; चिंतित; खिन्न; आतंकित।

उद्विद्ध–वि॰ (सं॰) उछलता हुआ; क्षुब्ध; उठा हुआ।

उद्वीक्षण–पु॰ (सं॰) ऊपरकी ओर देखना; देखना; नजर; आँख।

उद्वीजन–पु॰ (सं॰) पंखा झलना।

उद्वृंहण–पु॰ (सं॰) वृद्धि, बढ़ती।

उद्वृत्त–वि॰ (सं॰) उठा हुआ; ऊपरसे बहा हुआ; बढ़ा हुआ; समृद्ध; घमंडी; उजड्ड; क्षुब्ध।

उद्वेग–पु॰ (सं॰) क्षोभ; घबराहट; परेशानी; चित्तकी अस्थिरता; चिंता; भय; विस्मय; सुपारी। वि॰ बहुत तेज जानेवाला (धावन); शांत, धीर; आरोहण करनेवाला; उद्वाहु।

उद्वेगी(गिन्), उद्वेजी(जिन्)–वि॰ (सं॰) दुःखी, कष्टग्रस्त; चिंताजनक।

उद्वेजक–वि॰ (सं॰) उद्वेगकारक।

उद्वेजन–पु॰ (सं॰) उद्वेगका कारण होना; क्लेश; पीड़ा देना।

उद्वेजयिता(तृ)–वि॰ (सं॰) उद्वेजक।

उद्वेप–पु॰ (सं॰) कंपन।

उद्वेल–वि॰ (सं॰) उफनकर, उतराकर बहनेवाला; मर्यादाका अतिक्रमण करनेवाला; अतिशय।

उद्वेलन–पु॰ (सं॰) उफनना, छलक कर बाहर बहना; सीमाका उल्लंघन।

उद्वेलित–वि॰ (सं॰) ऊपरसे बहाया हुआ।

उद्वेल्लित–वि॰ (सं॰) उछलता हुआ; किनारोंसे छलकता, उफनता हुआ।

उद्वेष्टन–पु॰ (सं॰) घेरना; घेरा, बाड़ा; नितंब या पृष्ठभागमें होनेवाली पीड़ा। वि॰ बंधनमुक्त।

उद्वेष्टित–वि॰ (सं॰) चारों ओरसे घिरा हुआ।

उद्वोढा(ढ)–पु॰ (सं॰) पति।

उधड़ना–अ॰ क्रि॰ खुलना, टूटना (सीवन, टाँका); अलग होना (खाल इ॰); बिखरना; उखड़ना।

उधम*–पु॰ दे॰ 'ऊधम'।

उधर–अ॰ उस ओर, वहाँ; उस पक्षमें। **–से**–उस ओरसे; दूसरे पक्षकी ओरसे। **–ही उधर**–बाहर ही बाहर, वक्ताके पास न आकर।

उधरना*–अ॰ क्रि॰ उद्धार होना; दे॰ 'उधड़ना'। स॰ क्रि॰ उद्धार करना।

उधराना*–अ॰ क्रि॰ तितर-बितर होना, बिखरना; उड़ जाना; गायब हो जाना।

उधसना*–अ॰ क्रि॰ छितरा जाना, फैलना।

उधाड़–पु॰ कुश्तीका एक पेंच, उखाड़।

उधार–पु॰ कर्ज; मँगनी; * उद्धार। **–का व्यवहार**–कर्ज देना; उधार माल बेचना। **–पट्टा अधिनियम**–पु॰ (लेड एंड लीज एक्ट) द्वितीय महायुद्धके समय अमेरिका द्वारा प्रवर्तित अधिनियम जिसके अनुसार वह युद्धलिप्त मित्रराष्ट्रोंको आवश्यक सामग्री या सैनिक महत्त्वके अड्डे उधार अथवा पट्टेपर देता था और उनसे भी इसी प्रकार सहायता प्राप्त करता था। **मु॰–खाना**–कर्जपर गुजर करना। **–खाये बैठना**–किसी बातपर तुल जाना; किसी चीजके आसरे रहना।

उधारक, उधारन*–वि॰ उद्धार करनेवाला।

उधारना*–स॰ क्रि॰ उद्धार करना।

उधारी*–वि॰ दे॰ 'उधारक'।

उधेड़ना–स॰ क्रि॰ खोलना, तोड़ना (सीवन, टाँका आदि); उखाड़ना; अलग करना; बिखेरना। **मु॰ उधेड़कर रख देना**–कच्चा चिट्ठा खोल देना; सब दोष, बुराई उघट देना।

उधेड़-बुन–पु॰ सोच-विचार, चिंता; उलझन; उधेड़ना और बुनना।

उधेरना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'उधेड़ना'।

उनंत*–वि॰ झुका हुआ, नमित, दे॰ 'ओनंत'।

उन–सर्व॰ 'उस'का बहु॰।

उनइस*–वि॰, पु॰ दे॰ 'उन्नीस'।

उनक़ा–पु॰ (अ॰) एक कल्पित पक्षी; अलभ्य वस्तु (ला॰)। **मु॰ –होना**–अलभ्य, अदृश्य हो जाना।

उनचन–स्त्री॰ ओनचन, अदवान।

उनचालीस†–वि॰, पु॰ दे॰ 'उनतालीस'।

उनचास–वि॰ चालीस और नौ। पु॰ ४९की संख्या।

उनतालीस–वि॰ एक कम चालीस। पु॰ ३९की संख्या।

उनतीस–वि॰ बीस और नौ। पु॰ २९की संख्या।

उनदा, उनदौंहा*–वि॰ उनींदा।

उनमत, उनमद*–वि॰ उन्मत्त, मस्त, मतवाला।

उनमना*–वि॰ अनमना, उदास।

उनमनी*–स्त्री॰ दे॰ 'उन्मनी'।

उनमाथना*–स॰ क्रि॰ मथना।

उनमाथी*–वि॰ मथनेवाला।

उनमाद*–पु॰ दे॰ 'उन्माद'।

उनमान*–पु॰ अनुमान, अंदाजा; भाव; थाह; सामर्थ्य; तुलना। वि॰ सदृश; अनुरूप।

उनमानना*–स॰ क्रि॰ अनुमान करना; सोचना।

उनमीलन*–पु॰ दे॰ 'उन्मीलन'।

उनमुना*–वि॰ चुप, खामोश; उदास (स्त्री॰ उनमुनी)। –'हँसै न बोलै उनमुनी चंचल मेला मोर'–साखी।

उनमुनी*–स्त्री॰ दे॰ 'उन्मनी'।

उनमूलना*–स॰ क्रि॰ उखाड़ना; नष्ट करना।

उनमेख*–पु॰ दे॰ 'उन्मेष'।

उनमेखना*–अ॰ क्रि॰ विकसित होना; आँख खुलना।

उनमेद–पु॰ प्रथम वर्षासे उत्पन्न जहरीला फेन, माँजा।

उनमोचन*–पु॰ मुक्त करना; दूर करना।

उनयना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'उनवना' '...उनये देखि पयोद'।

उनरना*–अ॰ क्रि॰ उमड़ना, उठना; बढ़ना, फैलना; कूदते हुए चलना; उछलना।

उनवना*–अ॰ क्रि॰ झुकना; गिरना; घहरना, ऊपर आना, घिर आना।

उनवर*–वि॰ तुच्छ; कम।

उनवान–पु॰ (अ॰) सिरनामा, शीर्षक; प्रस्तावना; ढंग; * अनुमान, खयाल।

उनसठ–वि॰ पचास और नौ। पु॰ ५९की संख्या।

उनहत्तर–वि॰ साठ और नौ। पु॰ ६९की संख्या।

उनहानि*–स्त्री॰ दे॰ 'उन्हानि'।

उनहार*–वि॰ दे॰ 'अनुहार'। स्त्री॰ दे॰ 'उनहारि'।

उनहारि*–स्त्री॰ अनुरूपता, समानता।

उनाना*–स॰ क्रि॰ झुकाना; लगाना; सुनना, आज्ञा मानना।

उनारना*–स॰ क्रि॰ उठाना; उकसाना; खसकाना, बढ़ाना। –'ज्योति बढ़ावत दशा उनारि'–राम॰।

उनारी†–स्त्री॰ दे॰ 'उन्हारी'।

उनासी*–वि॰, पु॰ दे॰ 'उन्नासी'।

उनियार†–पु॰ उजेला 'धीरे-धीरे होत बाड़े उनियार हो'–आज, १९-४-६४।

उनींदा–वि॰ नींदसे भरा हुआ, ऊँघता हुआ।

उन्न–वि॰ (सं॰) भींगा हुआ, गीला, तर; दयालु, द्रवित।

उन्नइस*–वि॰, दे॰ 'उन्नीस'।

उन्नत–वि॰ (सं॰) उठा हुआ; ऊँचा, आगे बढ़ा हुआ; श्रेष्ठ; विद्या; कला आदिमें आगे बढ़ा हुआ; सभ्य; ककुद्वाला। पु॰ अजगर; उठान, ऊँचाई। **–कोकिला**–स्त्री॰ वाद्यविशेष (संगीत)।

उन्नति–स्त्री॰ (सं॰) ऊँचाई; बढ़ती; तरक्की; गरुड़की पत्नी। **–शील**–वि॰ आगे बढ़ने या उसका यत्न करनेवाला।

उन्नतोदर–पु॰ (सं॰) वृत्त-खंड आदिका उठा हुआ अंश। वि॰ जिसका उदर या मध्यवर्ती भाग उठा हो, उत्तल।

उन्नद्ध–वि॰ (सं॰) बँधा हुआ; फूला हुआ; बढ़ा हुआ; अत्यधिक; घमंडी।

उन्नमन–पु० (सं०) ऊपर ले जाना, उठाना; उन्नति करना; अभ्युदय।

उन्नमित–वि० (सं०) उन्नत किया हुआ; वढ़ाया हुआ।

उन्नम्र–वि० (सं०) ऊँचा, खड़ा।

उन्नयन–वि० (सं०) जिसकी आँखें ऊपर उठी हों। पु० उठाना, उन्नतिकी ओर ले जाना; ऊँचे पदपर या ऊँची कक्षामें पहुँचाना। निकालना; खींचना (पानी); वह पात्र जिससे कोई तरल पदार्थ निकाला जाय; विचार करना; रेखा या सीमंत बनाना (गर्भवती स्त्रीका); परिणाम, निष्कर्ष। **–यंत्र**–पु० (लिफ्ट) दे० 'उत्थानक', उत्थापक यंत्र।

उन्नस–वि० (सं०) ऊँची नाकवाला।

उन्नहन–वि० (सं०) बंधनमुक्त, अवद्ध।

उन्नाद–पु० (सं०) चिल्लाहट, शोर, हल्ला; गुंजन; (पक्षियोंका) कलरव।

उन्नाव–पु० (अ०) एक तरहका सुखाया हुआ वेर जो दवाके काम आता है।

उन्नावी–वि० उन्नाव संवंधी; उन्नावके रंगका।

उन्नाभ–वि० (सं०) जिसकी नाभि उभरी हुई हो; तोंदवाला। पु० एक सूर्यवंशी राजा।

उन्नाय–पु० (सं०) उठाना, ऊपर ले जाना; ऊँचाई, उठान; निष्कर्ष।

उन्नायक–वि० (सं०) ऊपर उठानेवाला, उन्नतिकी ओर ले जानेवाला।

उन्नासी–वि० सत्तर और नौ। पु० ७९की संख्या।

उन्नाह–पु० (सं०) आगेकी ओर निकलना; आतिशय्य, प्राचुर्य; दर्प; काँजी।

उन्निद्र–वि० (सं०) जिसे नींद न आती हो; पूर्णतः विकसित। पु० एक रोग।

उन्नीस–वि० दस और नौ; कम; छोटा; घटकर। पु० १९की संख्या। **–बिस्वे**–अ० अधिकतर, प्रायः। मु० **–बीस होना**–कम-बेश होना, (एक-दूसरेसे) कुछ घट-वढ़कर होना, लगभग वरावर होना; भला-बुरा होना। **–होना**–घटना, कुछ कम होना।

उन्नेता(तृ)–वि० (सं०) दे० 'उन्नायक'। पु० यज्ञ करानेवाले १६ ऋत्विकोंमेंसे एक।

उन्नैना*–अ० क्रि० झुकना।

उन्मंथ–पु० (सं०) कानकी लौ पर सूजन हो जानेका रोग; कष्ट देना; विलोड़ना; क्षुब्ध करना; वध करना।

उन्मंथक–वि० (सं०) मथनेवाला; स्पंदन करनेवाला। पु० कानका शोथ।

उन्मकर–पु० (सं०) मकरकी आकृतिका एक कर्णाभरण।

उन्मज्जक–वि० (सं०) जलसे वाहर आनेवाला। पु० एक तरहका तपस्वी।

उन्मज्जन–पु० (सं०) जलसे वाहर आना, निमज्जनका उलटा।

उन्मत्त–वि० (सं०) नशेमें चूर, मतवाला; पागल; सनकी। पु० धतूरा; मुचकुंद। **–कीर्ति, –वेश**–पु० शिव। **–प्रलपित, –प्रालप**–पु० पागलकी वह्क, मतवालेकी वकवास; अर्थ-संगति-रहित वातें। **–लिंगी(गिन्)**–वि० पागल होनेका वहाना करनेवाला।

उन्मत्तक–वि० (सं०) पागल; नशेमें चूर।

उन्मथन–पु० (सं०) हिलाना; छेड़ना; क्षुब्ध करना; फेंकना; विलोड़ना; मारण।

उन्मथित–वि० (सं०) विलोड़ित; क्षुब्ध; मिश्रित, मिलाया हुआ।

उन्मद–वि० (सं०) मतवाला; पागल; उन्मत्त करनेवाला। पु० नशा; पागलपन।

उन्मदन–वि० (सं०) प्रेमाविष्ट।

उन्मदिष्णु–वि० (सं०) पागल; मतवाला; मदस्राव करता हुआ (हाथी)।

उन्मन–वि० उद्विग्न; अन्यमनस्क; उदास; उत्कंठित।

उन्मनस्क–वि० (सं०) अन्यमनस्क; उद्विग्न; व्यग्र; उत्कंठित; शोकान्वित।

उन्मना(नस्)–वि० (सं०) उद्विग्न; उत्कंठायुक्त; अन्यमनस्क।

उन्मनी–स्त्री० (सं०) हठयोगकी पाँच मुद्राओंमेंसे एक।

उन्मयूख–वि० (सं०) चमकीला, कांतिमान्।

उन्मर्द–पु० (सं०) रगड़ना, मलना (शरीर)।

उन्मर्दन–पु० (सं०) मलना, रगड़ना; शरीरमें मलनेका सुगंधित द्रव्य; हवा शुद्ध करना।

उन्माथ–पु० (सं०) कष्ट, पीड़ा; मारण; विलोड़न; जाल; वधिक; स्कंदका एक अनुचर।

उन्माद–पु० (सं०) पागलपन, सनक; अत्यधिक अनुराग; एक संचारी भाव। वि० उन्मत्त। **–ग्रस्त**–वि० उन्माद रोगसे पीड़ित, पागल।

उन्मादक–वि० (सं०) उन्मत्त या उन्मादग्रस्त करनेवाला। पु० धतूरा।

उन्मादन–पु० (सं०) उन्माद उत्पन्न करना, उन्मत्त करना; कामदेवके पाँच वाणोंमेंसे एक। वि० उन्मादक।

उन्मादी(दिन्)–वि० (सं०) उन्मादग्रस्त, उन्मत्त।

उन्मान–पु० (सं०) तौलना; नापना; तौल; नाप; मूल्य; एक तौल।

उन्मार्ग–पु० (सं०) कुमार्ग, उलटा या गलत रास्ता; कुचाल। वि० कुमार्गगामी।

उन्मार्गी(गिन्)–वि० (सं०) कुमार्गगामी, पथ-भ्रष्ट।

उन्मार्जन–पु० (सं०) मलना, रगड़ना; मिटाना।

उन्मार्जित–वि० (सं०) मलकर साफ किया हुआ; चमकाया हुआ।

उन्मित–वि० (सं०) नापा या तौला हुआ।

उन्मिति–स्त्री० (सं०) नाप; तौल।

उन्मिष–वि० (सं०) खुला हुआ; खिला हुआ। पु० आँख खोलना।

उन्मिषित–वि० (सं०) खुला हुआ; खिला हुआ।

उन्मीलन–पु० (सं०) खुलना (आँखका); खिलना, विकसित होना; अंकन; व्यक्त होना।

उन्मीलना*–स० क्रि० विकसित करना; खोलना।

उन्मीलित–वि० (सं०) खुला हुआ; खिला हुआ; अंकित। पु० एक काव्यालंकार जहाँ दो वस्तुओंमें, वहुत सादृश्य होनेके कारण, भेद करना कठिन होनेपर भी किसी एक वातसे भेद करना संभव हो सके, जैसे–'हिमगिरि तो यश सों मिल्यो छुए परत है जान'।

उन्मुक्त–वि० (सं०) बंधनरहित, आजाद। **–पोताश्रय**–पु० (फ्री पोर्ट) वह बंदरगाह जहाँ व्यापारिक वस्तुओंपर किसी तरहका कर, चुंगी आदि नहीं लगायी जाती–जो सव राष्ट्रोंके व्यापारके लिए समान रूपसे खुला हो।

उन्मुक्ति–स्त्री० (इम्यूनिटी) कर देने, किसी कर्तव्यके पालन या रोगके आक्रमणकी संभावना आदिसे मुक्ति, विमुक्ति।

उन्मुख–वि० (सं०) जिसका मुख या दृष्टि ऊपरकी ओर हो; उद्यत; . . .की ओर जाता हुआ (पतनोन्मुख); उत्कंठित; उत्सुक; शब्दायमान।

उन्मुखर–वि० (सं०) वहुत शब्द करनेवाला; शोर मचानेवाला।

उन्मुग्ध–वि० (सं०) घवड़ाया हुआ, जड़बुद्धि।

उन्मुद्र–वि० (सं०) विना मुहरका; विकसित; अनियंत्रित, आपेसे वाहर (हर्षसे)।

उन्मूलन–पु० (सं०) जड़ उखाड़ देना; पु० (अपरूटिंग; एबॉलिशन) जड़-मूलसे नष्ट करना, अस्तित्व मिटाना, पूर्ण रूपसे उठा देना, (किसी प्रथा, परंपरा आदिकी) परिसमाप्ति, अंत करना, उत्सादन।

उन्मूलित–वि० (सं०) उखाड़ा हुआ; मिटाया हुआ।

उन्मृष्ट–वि० (सं०) रगड़ा, मला हुआ; मिटाया हुआ; साफ किया हुआ।

उन्मेदा–स्त्री० (सं०) मोटापा।

उन्मेष–पु० (सं०) खुलना (आँखका); खिलना; स्फुरण; प्रकाश; दीप्ति।

उन्मेषण–पु० (सं०) उन्मेष होना।

उन्मोचन–पु० (सं०) खोलना; ढीला करना; कष्टादिसे उन्मुक्त करना; (डिसचार्ज) (सजा पूरी हो जानेपर) कैद या बंधनसे मुक्त कर देना; ऋणादि चुका देना।

उन्हानि*–स्त्री० बराबरी ।

उन्हारि*–स्त्री० दे० 'उनहारि' ।

उन्हारी†–स्त्री० चैतमें तैयार होनेवाली फसल, चैती, रबी (बुंदेल०) ।

उपंग–पु० उद्धवके पिता; एक तरहका बाजा ।

उपंत*–वि० उत्पन्न ।

उप–उप० (सं०) यह शब्दोंके पूर्व आकर समीपता (उपनयन, उपकूल), आरंभ (उपक्रम), सामर्थ्य (उपकार); छुटाई, गौणता (उपमंत्री, उपपुराण) इत्यादिका द्योतन करता है ।

उपकंठ–अ०, वि० (सं०) निकट, समीप । पु० सामीप्य; ग्रामकी सीमाके भीतरका स्थान; घोड़ेकी सरपट चाल ।

उपकथा–स्त्री० (सं०) (प्रायः बड़ी कहानीके भीतर आनेवाली) छोटी कहानी ।

उपकनिष्ठिका–स्त्री० (सं०) कानी उँगलीके पासकी उँगली, अनामिका ।

उपकन्या–स्त्री० (सं०) कन्याकी सहेली ।

उपकर–पु० (सेस) एक तरहका छोटा कर जो विविध वस्तुओंपर विभिन्न स्थितियोंमें लगाया जाता है ।

उपकरण–पु० (सं०) उपकार करना; साधन; औजार, विज्ञानशालामें काम आनेवाले यंत्र, औजार अथवा साधन आदि । सामग्री; यंत्र; जीविकाका साधन; राजाओंके छत्र, चँवर आदि; राजाके अनुचर ।

उपकरना*–स० क्रि० उपकार करना ।

उपकर्णन–पु० (सं०) सुनना ।

उपकर्णिका–स्त्री० (सं०) अफवाह, जनश्रुति ।

उपकर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) उपकार करनेवाला ।

उपकर्षण–पु० (सं०) खींचकर नजदीक लाना ।

उपकल्प–पु० (सं०) सामान, सामग्री; आवश्यक वस्तुएँ ।

उपकल्पन–पु० (सं०) आयोजन; तैयार करना, बनाना ।

उपकल्पना–स्त्री० (हाइपॉथेसिस) कोई बात सिद्ध करनेके लिए पहलेसे ही कुछ मान लेना, जो बात प्रमाणित की जा सकती हो या जिसके सत्य होनेकी संभावना हो उसकी कल्पना पहलेसे कर लेना, परिकल्पना ।

उपकल्पित–वि० (सं०) तैयार, प्रस्तुत; मनमें निश्चय किया हुआ; जो पहलेसे ही मान लिया गया हो ।

उपकार–पु० (सं०) भलाई; सहायता; लाभ; तैयारी; सजावट; बंदनवार, तोरण । मु०–**मानना–**एहसान मानना, कृतज्ञताप्रकाश करना ।

उपकारक–वि० (सं०) भलाई करनेवाला; सहायक; लाभदायक; अनुकूल ।

उपकारिका–वि०, स्त्री० (सं०) सहायिका । स्त्री० महल; खेमा ।

उपकारी–स्त्री० (सं०) राजमहल; शाही खेमा ।

उपकरी(रिन्)–वि० (सं०) उपकारक, उपकार करनेवाला; लाभकारक ।

उपकार्य–वि० (सं०) उपकार किये जाने योग्य ।

उपकार्या–स्त्री० (सं०) शाही खेमा; राजभवन; पांथशाला; समाधिस्थान । वि० स्त्री० उपकार करने योग्य (स्त्री) ।

उपकिरण–पु० (सं०) छितराना, फैलाना; (मिट्टीसे) ढकना; गाड़ना ।

उपकीर्ण–वि० (सं०) छितराया या फैलाया हुआ; ढका हुआ ।

उपकुंचि, उपकुंचिका–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची; स्याह जीरा ।

उपकुर्वाण–पु० (सं०) पढ़ाई पूरी होनेके बाद गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला, अनैष्ठिक ब्रह्मचारी ।

उपकुलपति–पु० (वाइसचांसलर) किसी विश्वविद्यालय या विद्यापीठका प्रधान अधिकारी जिसका पद कुलपतिके बाद माना जाता है ।

उपकुल्या–स्त्री० (सं०) पिप्पली; छोटी नहर; खाई ।

उपकुश–पु० (सं०) मसूड़ेका फूलना; मसूड़ेमें होनेवाला फोड़ा ।

उपकूप–पु० (सं०) छोटा कुआँ । **–जलाशय–**पु० पशुओंको पानी पिलानेके लिए कुएँके पास बना हुआ कुंड ।

उपकूल–पु० (सं०) किनारा; किनारेके पासकी भूमि । अ० किनारेपर; किनारेके पास ।

उपकृत–वि० (सं०) जिसका उपकार किया गया हो, एहसानमंद ।

उपकृति–स्त्री० (सं०) उपकार, भलाई ।

उपकृती(तिन्)–वि० (सं०) उपकार करनेवाला, सहायक ।

उपक्रंता(तृ)–वि० (सं०) आरंभ करनेवाला; उपक्रम करनेवाला ।

उपक्रम–पु० (सं०) निकट जाना; आरंभ; प्रयास; लेख या भाषणका उठान, प्रस्तावना; योजना; शुश्रूषा; चिकित्सा; सचाईकी जाँच; साहस; वेदारंभके पूर्व किया जानेवाला संस्कार । **–और जननिर्देश–**पु० (इनीशियेटिव एंड रेफरेंडम) कोई विधि या अधिनियम बनानेके लिए जनता द्वारा स्वयं उपक्रमण किया जाना तथा किसी महत्त्वपूर्ण प्रश्नके संबंधमें समस्त जनताका मत लिया जाना–जनताका वास्तविक मत जाननेके ये दो उपाय ।

उपक्रमण–पु० (सं०) आरंभ करना; आयोजन; पास जाना; चिकित्सा, उपचार ।

उपक्रमणिका–स्त्री० (सं०) प्रस्तावना; विषय-सूची ।

उपक्रमिता(तृ)–वि० (सं०) उपक्रम करनेवाला ।

उपक्रमी–पु० (आंट्रेप्रेनेर) किसी कारखाने या उद्योगका वास्तविक नियंत्रण करनेवाला व्यक्ति, उद्यमकर्ता ।

उपक्रांत–वि० (सं०) आरंभ किया हुआ; चिकित्सित; पूर्वकथित ।

उपक्रिया–स्त्री० (सं०) उपकार, भलाई ।

उपक्रीडा–स्त्री० (सं०) खेलनेका स्थान ।

उपक्रुष्ट–वि० (सं०) जिसकी निंदा की गयी हो; कोसा हुआ । पु० नीच जातिका व्यक्ति; बढ़ई ।

उपक्रोश–पु० (सं०) निंदा, अपवाद; गाली ।

उपक्रोशन–पु० (सं०) निंदा करना; कोसना ।

उपक्रोष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) निंदा करनेवाला । पु० गधा ।

उपक्लिन्न–वि० (सं०) गीला, तर; सड़ा-गला ।

उपक्लेश–पु० (सं०) हलका क्लेश (बौ०); क्लेशका कारण (क्रोधादि) ।

उपक्वण, उपक्वाण–पु० (सं०) वीणाकी ध्वनि ।

उपक्षय–पु० (सं०) क्षय, ह्रास ।

उपक्षेप–पु० (सं०) किसीकी ओर फेंकना; चर्चा; संकेत; आक्षेप; आरंभ; अभिनयके आरंभमें कथावस्तुका संक्षेपमें कथन ।

उपक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; आक्षेप करना; संकेत; शूद्रका खाद्यपदार्थ ब्राह्मणके घरमें रखना ।

उपखंड–पु० (सं०) (सबक्लॉज) (विधानकी) किसी धारा या उपधाराके खंडका कोई विभाग ।

उपखान*–पु० दे० 'उपाख्यान' ।

उपगंता(तृ)–वि० (सं०) पास जानेवाला; पानेवाला; जानने या स्वीकार करनेवाला ।

उपगत–वि० (सं०) पास आया, गया हुआ; घटित; अनुभूत; जाना हुआ; प्राप्त; स्वीकार किया हुआ; प्रतिज्ञात; गत; मृत ।

उपगति–स्त्री० (सं०) पास आना; जाना; जानना; प्राप्ति; अंगीकार करना ।

उपगम–पु० (सं०) पास जाना; आना; जानना; प्राप्ति; अंगीकार; वचन; वादा ।

उपगमन–पु० (सं०) पास जाना; जाना; पाना; अंगीकार करना ।

उपगता (तृ)–पु० (सं०) एक ऋत्विक् जो यज्ञमें उद्गाताके साथ गाता है ।

उपगामी(मिन्)–वि० (सं०) उपगमन करनेवाला ।

उपगार*–पु० दे० 'उपकार' ।

उपगारी*–वि० दे० 'उपकारी' ।

उपगीति–स्त्री० (सं०) आर्या छंदका एक भेद ।

उपगुप्त–वि० (सं०) छिपाया हुआ ।

उपगुरु–पु० (सं०) गुरुका सहकारी, सहायक अध्यापक ।

उपगूढ–वि० (सं०) छिपाया हुआ; आलिंगित; दबाया हुआ । पु० आलिंगन ।

उपगूहन–पु० (सं०) छिपाना; गोपन; आलिंगन; विस्मयजनक घटनाका घटना ।

उपग्रह–पु० (सं०) छोटा ग्रह; बड़े ग्रहकी परिक्रमा करनेवाला छोटा ग्रह या पिण्ड, जैसे पृथ्वीका उपग्रह चन्द्रमा है। अन्तरिक्षमें रॉकेट द्वारा भेजे गये 'स्पूतनिक' जब पृथ्वीके गिर्द चक्कर लगाते हैं तो इन्हें भू-उपग्रह या कृत्रिम उपग्रह कहते हैं (सैटेलाइट); गिरफ्तारी; कैद; कैदी; पराजय; अनुग्रह; प्रोत्साहन; कुश-राशि। **–संधि**–स्त्री० विजेताको सब कुछ देकर की जानेवाली संधि।

उपग्रहण–पु० (सं०) पकड़ना, गिरफ्तार या कैद करना; सँभालना; संस्कारपूर्वक वेदाध्ययन करना।

उपग्राह–पु० (सं०) भेंट, उपहार; भेंट, उपहार देना।

उपघात–पु० (सं०) आघात; नाश; क्षति पहुँचानेकी गरजसे संपर्कमें आना; आक्रमण; रोग; पाँच पापोंका समाहार।

उपघातक–वि० (सं०) उपघात करनेवाला।

उपघाती(तिन्)–वि० (सं०) दे० 'उपघातक'।

उपघ्न–पु० (सं०) निकटवर्ती सहारा; पनाह।

उपचक्र–पु० (सं०) चक्रवाक पक्षीका एक भेद।

उपचक्षु(स्)–पु० (सं०) चश्मा, ऐनक।

उपचय–पु० (सं०) इकट्ठा होना; इकट्ठा करना; चयन; बढ़ती; ढेर; उन्नति; समृद्धि; लग्नसे तीसरा, छठा, दसवाँ या ग्यारहवाँ स्थान।

उपचर–पु० (सं०) उपचार, चिकित्सा।

उपचरण–पु० (सं०) पास जाना; सेवा, चिकित्सा आदि करना।

उपचरित–वि० (सं०) जिसकी शुश्रूषा की गयी हो; सेवित, उपासित; लक्षणासे ज्ञात (सा०)।

उपचर्या–स्त्री० (सं०) सेवा; उपचार, इलाज।

उपचायी(यिन्)–वि० (सं०) वृद्धि, उन्नति करनेवाला।

उपचाय्य–पु० (सं०) एक तरहकी पवित्राग्नि; यज्ञकी अग्नि रखनेका कुंड।

उपचार–पु० (सं०) सेवा; इलाज, चिकित्सा; विधान; पूजानुष्ठान; पूजाके अंग या द्रव्य (षोडशोपचार पूजा); अभ्यास; व्यवहार; उपयोग; शिष्टाचार; प्रार्थना; चापलूसी; दिखाऊ, रस्मी व्यवहार; बहाना; नमस्कारका एक ढंग।

उपचारक–वि० (सं०) इलाज करनेवाला; सेवा, टहल करनेवाला। पु० शिष्टता; विनम्रता।

उपचारना*–स० क्रि० इलाज करना; उपाय करना; व्यवहार करना; विधान करना।

उपचारिका–स्त्री० (सं०) रोगियोंकी सेवा-सुश्रूषा करनेवाली (नर्स)।

उपचारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'उपचारक'।

उपचार्य–वि० (सं०) सेवा-टहल करने योग्य, पूज्य। पु० उपचार; चिकित्सा-कार्यका अभ्यास।

उपचित–वि० (सं०) इकट्ठा किया हुआ; बढ़ा हुआ; जिसकी शक्ति बढ़ गयी हो; जिसके पास बहुत अधिक हो, समृद्ध; ढका हुआ; लिप्त; दग्ध।

उपचिति–स्त्री० (सं०) वृद्धि; जमा करना; लाभ; राशि, ढेर।

उपचित्रा–स्त्री० (सं०) चित्रा नक्षत्रके पासके–हस्त और स्वाती–नक्षत्र; दंती वृक्ष; मूसाकानी; एक छंद।

उपचेतन–वि० दे० 'अवचेतन'।

उपचेतना–स्त्री० (सं०) अंतःसंज्ञा।

उपचेय–वि० (सं०) जमा, इकट्ठा करने योग्य, चयनीय।

उपच्छंदन–पु० (सं०) लोभ दिखलाकर तुष्ट करना, राजी करना।

उपच्छंदित–वि० (सं०) लोभ दिखाकर राजी किया हुआ।

उपच्छद–पु० (सं०) ढक्कन; चादर; परदा।

उपच्छन्न–वि० (सं०) ढका, छिपाया हुआ।

उपज–स्त्री० उत्पत्ति, पैदावार; कल्पना, सूझ; मनगढ़ंत बात; गानेमें कोई नवीनता पैदा करना, नयी तान लगाना (लेना)। **मु० –की लेना**–नयी उक्ति निकालना।

उपजगती–स्त्री० (सं०) वृत्तविशेष।

उपजत*–स्त्री० पैदावार।

उपजन–पु० (सं०) उत्पत्ति; वृद्धि; मूल; अलगसे जोड़ी, बढ़ायी हुई वस्तु; शरीर।

उपजनन–पु० (सं०) उत्पादन, प्रजनन।

उपजना–अ० क्रि० उत्पन्न होना; उगना; मनमें उठना; सूझना।

उपजप्त–वि० (सं०) विद्रोहके लिए बहकाया हुआ।

उपजल्पन, उपजल्पित–पु० (सं०) वार्तालाप।

उपजाऊ–वि० जिसमें अधिक उपजे, जरखेज।

उपजात–वि० (सं०) पैदा किया हुआ, उत्पादित; घटित; (बाई प्रॉडक्ट) वह उत्पादन जो अन्य (मुख्य) वस्तुके साथ हुआ हो, उपोत्पाद, गौण उत्पादन।

उपजाति–स्त्री० (सं०) इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा तथा इंद्रवंशा और वंशस्थके मेलसे बननेवाले वर्णवृत्त; जातिका कोई उपभेद।

उपजाना–स० क्रि० उत्पन्न करना; सुझाना।

उपजाप–पु० (सं०) विद्रोह करनेके लिए बहकाना।

उपजापक–वि० (सं०) बहकानेवाला; कान भरनेवाला; विश्वासघाती।

उपजिह्वा, उपजिह्विका–स्त्री० (सं०) जीभके मूलमें स्थित छोटी जीभ, घंटिका; एक कीट; जीभके नीचेके भागमें होनेवाला फोड़ा।

उपजीवन–पु० (सं०) जीविका, रोजी; जीविकाका साधन।

उपजीविका–स्त्री० (सं०) दे० 'उपजीवन'। (आकुपेशन) जीवन-निर्वाहका साधन; रोजी, वृत्ति।

उपजीवी(विन्)–वि० (सं०)...से जीविका करनेवाला, जीविकाके लिए दूसरेपर आश्रित।

उपजोष–पु० (सं०) पसंद; इच्छा; आनंद।

उपजोषण–पु० (सं०) उपभोग; ग्रहण (आहारका)।

उपज्ञा–स्त्री० (सं०) अंतःकरणमें अपने आप उपजा हुआ, अनुपदिष्ट ज्ञान; आद्य ज्ञान; नयी वस्तु, यंत्रादिका आविर्भाव करना, उद्भाव (इन्वेंशन)।

उपज्ञात–वि० (सं०) विना किसीके बताये जाना हुआ; मनमें उपजा हुआ; अज्ञातपूर्व, आविष्कृत।

उपज्ञाता–पु० (इन्वेण्टर) किसी नये यंत्र, सिद्धान्त आदिका उद्भाव करनेवाला, उद्भावक।

उपटन–पु० आघात आदिका चिह्न; उबटन।

उपटना–अ० क्रि० दाग या निशान पड़ना; उभरना; उखड़ना।

उपटा–*†–पु० प्लावन, बाढ; रास्तेमें चलते समय उभड़े हुए पत्थर आदिसे लगनेवाली चोट या ठोकर (बुंदेल०)।

उपटाना*–स० क्रि० उखाड़ना; उखड़वाना; उबटन लगाना या लगवाना।

उपटारना*–स० क्रि० उचाटना, विरक्त करना; उठाना; हटाना –'मधुवन तें, उपटारि श्याम कहँ या व्रज लैकै आव'–सू०।

उपड़ना–अ० क्रि० उपटना, उखड़ना।

उपड़वाना, उपड़ाना–स० क्रि० उखड़वाना।

उपडाकघर–पु० (सब पोस्ट आफिस) किसी छोटे शहर या उपनगर आदिका वह छोटा डाकघर जो जिले या शहरके प्रधान डाकघरके अधीन हो तथा जहाँसे पत्रों, पारसलों, मनी आर्डरों आदिके वितरणकी भी व्यवस्था हो।

उपडाकपाल–पु० (सब पोस्टमास्टर) उपडाक घरका डाकपाल।

उपढौकन–पु० (सं०) भेंट, नजर।

उपतपन–वि० (सं०) कष्ट देनेवाला; ताप पहुँचानेवाला।

उपतप्त–वि० (सं०) ताप पहुँचाया हुआ; झुलसा हुआ; पीड़ित; रुग्ण।

उपतप्ता(प्तृ)–वि० (सं०) ताप पहुँचानेवाला; जलानेवाला। पु० असाधारण ताप; तापका कारण; जलन; रोगका एक भेद।

उपताप–पु० (सं०) ताप, आँच; क्लेश, पीड़ा; रोग; त्वरा, जल्दवाजी।

उपतापन–पु० (सं०) ताप, आँच देना; क्लेश, पीड़ा पहुँचाना।

उपतापी(पिन्)–वि० (सं०) तप्त करनेवाला; पीड़ा देनेवाला; कष्ट सहनेवाला।

उपतारक–वि० (सं०) उपटकर बहनेवाला।

उपतिष्य–पु० (सं०) अश्लेषा तथा पुनर्वसु नक्षत्र।

उपत्यका–स्त्री० (सं०) पहाड़के पासकी जमीन, तराई, घाटी।

उपदंश-पु० (सं०) चाट, गजक; गरमीकी बीमारी, आतशक; शिग्रु नामक वृक्ष; समष्ठिल नामक पौधा।

उपदंशी(शिन्)–वि० (सं०) उपदंश रोगसे पीड़ित।

उपदर्शक–पु० (सं०) मार्गदर्शक; द्वारपाल; गवाह।

उपदर्शन–पु० (सं०) दिखलाने या समझानेकी क्रिया या भाव; टीका, व्याख्या।

उपदा–स्त्री० (सं०) भेंट, नजर; रिश्वत। **–ग्राहक**–वि० घूसखोर, रिश्वती।

उपदान–पु० (ग्रैटुइटी) दे० 'सेवोपहार'। (सबसिडी) किसी संस्था या वाणिज्य-संस्थानको कठिनाइयोंसे पार पानेके लिए दी गयी आर्थिक सहायता।

उपदानक–पु० (सं०) भेंट, नजर; रिश्वत।

उपदि*†–'उपदके', अपने आप, स्वेच्छासे (बुंदेल०)।

उपदिशा–स्त्री० (सं०) अंतर्दिशा, कोण।

उपदिष्ट–वि० (सं०) निर्देश किया हुआ; उपदेश किया हुआ; सिखाया हुआ; जिसे उपदेश किया गया हो; दीक्षाप्राप्त।

उपदी–स्त्री० (सं०) वंदाक नामक पौधा, बाँदा।

उपदीका–स्त्री० (सं०) एक कीट; चींटेका एक भेद।

उपदेव, उपदेवता–पु० (सं०) छोटा देवता (यक्ष, गंधर्व आदि)।

उपदेश–पु० (सं०) शिक्षा, सीख; नेकसलाह; दीक्षा; निर्देश; उल्लेख; बहाना।

उपदेशक–वि०, पु० (सं०) उपदेश करनेवाला, सीख देनेवाला; धर्मप्रचारके लिए व्याख्यान देनेवाला।

उपदेशता–स्त्री० (सं०) उपदेश या नियम होनेकी अवस्था; शिक्षा; सिद्धांत।

उपदेशन–पु० (सं०) उपदेश देना।

उपदेशना–स्त्री० (सं०) सूचना; सिद्धांत। * स० क्रि० दे० 'उपदेसना'।

उपदेशात्मक काव्य–(डाइडेक्टिक पोएट्री) वह काव्य जो प्रत्यक्ष रूपसे उपदेश देनेका कार्य करे। साहित्यमें यह अवगुण माना जाता है।

उपदेष्टा (ष्टृ)–पु० (सं०) दे० 'उपदेशक'।

उपदेस*–पु० दे० 'उपदेश'।

उपदेसना*–स० क्रि० उपदेश, शिक्षा देना।

उपदोह–पु० (सं०) गायकी छीमी या थन; दूध दूहनेका पात्र।

उपद्रव–पु० (सं०) उत्पात; क्षति; सार्वजनिक संकट या आपत्ति (अतिवर्षण, विप्लव आदि); दंगा-फसाद, गड़बड़, बखेड़ा, झमेला; एक रोगके बीचमें होनेवाला दूसरा गौण रोग, उपसर्ग।

उपद्रवी(विन्)–वि० (सं०) उपद्रव करनेवाला, उत्पाती।

उपद्रष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) देखनेवाला। पु० निरीक्षक; गवाह।

उपद्रुत–वि० (सं०) उपद्रव-पीड़ित; ग्रहण-युक्त (ज्यो०)।

उपद्वार–पु० (सं०) छोटा, बगलका दरवाजा।

उपद्वीप–पु० (सं०) छोटा टापू।

उपधरना*–स० क्रि० अपनाना; सहारा देना।

उपधर्म–पु० (सं०) गौण धर्म।

उपधा–स्त्री० (सं०) छल; दंगा-फरेब; ईमानदारीकी परीक्षा; शब्दका उपांताक्षर।

उपधातु–स्त्री० (सं०) अप्रधान या अर्ध धातु, मिश्र धातु (ये सात हैं–सोनामाखी, रूपामाखी, तूतिया, कोसा, मुर्दासंख, सेंदुर और सिलाजीत); शरीरस्थ सात धातुओंसे उत्पन्न सात गौण धातुएँ–दूध, रज, चर्बी, पसीना, दाँत, केश और ओज।

उपधान–पु० (सं०) वह वस्तु जिसका सहारा लिया जाय; तकिया; एक विशेष व्रत; प्रेम; विशेषता; यज्ञकी ईंट रखते समय पढ़ा जानेवाला मंत्र; विष।

उपधानी–स्त्री० (सं०) तकिया; गद्दा; पैर रखनेकी छोटी चौकी।

उपधानीय–वि० (सं०) पास रखने योग्य। पु० तकिया।

उपधायी(यिन्)–वि० (सं०) सहारा लेनेवाला; तकिया इस्तेमाल करनेवाला।

उपधारण–पु० (सं०) सम्यक् चिंतन; चित्तको किसी एक विषयमें लगाना; अँकुसी आदिमें फँसाकर फलादिको नीचे खींचना।

उपधारा–स्त्री० (सब-सेक्शन) किसी अधिनियम आदिके अंतर्गत उसका कोई विभाग या उपांग।

उपधावन–पु० (सं०) अनुयायी; अनुसरण; विचार करना।

उपधि–स्त्री० (सं०) छल, धोखेबाजी; (मुकदमेमें) सच्ची बातको छिपाकर दूसरी बात कहना; धमकी; (गाड़ीका) पहिया; आधार (बौ०)। **–युक्त**–वि० मिलावटी।

उपधिक–वि० (सं०) ठग, धोखेबाज, छली।

उपधूपित–वि० (सं०) धूप दिया हुआ, धूपसे वासित; अत्यंत कष्टग्रस्त; मरणासन्न। पु० मृत्यु।

उपधूमित–वि० (सं०) जिसपर धुआँ किया गया या लगाय गया हो।

उपधृति–स्त्री० (सं०) किरण; ग्रहण।

उपध्मान–पु० (सं०) ओठ; फूँकना।

उपध्मानीय–पु० (सं०) 'प' और 'फ'के पहले आनेवाला महाप्राण विसर्ग।

उपध्वस्त–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ; मिश्रित।

उपनंद–पु० (सं०) नंदके छोटे भाई।

उपनक्षत्र–पु० (सं०) छोटा या गौण नक्षत्र।

उपनख–पु० (सं०) नखका एक रोग, गलका।

उपनगर–पु० (सं०) नगरका बाहरी भाग (सबर्ब), शहरसे सटी हुई या उसके डाँड़े-परकी बस्ती, शाखानगर।

उपनत–वि० (सं०) पास आया हुआ; उपस्थित; नम्र, झुका हुआ; शरणागत; निकटवर्ती (समय, स्थान)।

उपनति–स्त्री० (सं०) पास आना, झुकना; नमस्कार करना।

उपनदी–स्त्री० (सं०) छोटी नदी, सहायक नदी।

उपनद्ध–वि० (सं०) बँधा या नधा हुआ।

उपनना*–अ० क्रि० उपजना; उपमा देना।

उपनय–पु० (सं०) प्राप्ति; नियुक्ति; पास ले जाना; गुरुके पास ले जाना; उपनयन संस्कार; वाक्यके पाँच अवयवोंमेंसे चौथा (न्या०)।

उपनयन–पु० (सं०) पास ले जाना; गुरुके पास ले जाना; यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनहन–पु० (सं०) बाँधना; गँठियाना; वह कपड़ा जिसमें कोई चीज बाँधी, लपेटी जाय।

उपना*–अ० क्रि० उत्पन्न होना '...सुनि हरि हिय गरब गूढ उपयो है'–गीता०।

उपनागरिका–स्त्री० (सं०) वृत्त्यनुप्रासकी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें श्रुतिमधुर वर्ण बार-बार आते हैं और समास नहीं होते, यदि होते हैं तो छोटे होते हैं।

उपनाना*–स० क्रि० उपजाना, पैदा करना।

उपनाम(न्)–पु० (सं०) गौण नाम; पुकारनेका नाम; पदवी; लेख-कविता आदिमें व्यवहृत छोटा नाम, तखल्लुस।

उपनाय, उपनायन–पु० (सं०) दे० 'उपनयन'।

उपनायक–पु० (सं०) गौण या अप्रधान नायक; नाटक आदिमें वह पात्र जो नायकका प्रधान सहायक हो (जैसे रामायणमें लक्ष्मण); उपपति, यार।

उपनायिका–स्त्री० (सं०) नायिकाकी प्रधान सहायिका।

उपनासिक–पु० (सं०) नाकके पासका हिस्सा।

उपनाह–पु० (सं०) गठरी; वीणा या सितारकी खूँटी; मरहम; बिलनी।

उपनाहन–पु० (सं०) मरहम या लेप लगाना।

उपनिक्षेप–पु० (सं०) धरोहर; मुहरबंद धरोहर।

उपनिधाता(तृ)–वि० (सं०) धरोहर रखनेवाला।

उपनिधान–पु० (सं०) किसीके पास रखना; धरोहर रखना; धरोहर।

उपनिधायक–वि० (सं०) दे० 'उपनिधाता'।

उपनिधि–स्त्री० (सं०) धरोहर, अमानत; मुहरबंद अमानत। **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० दूसरेकी धरोहरको स्वयं व्यवहारमें लानेवाला मनुष्य।

उपनिपात–पु० (सं०) घटित होना; अचानक आ पड़ना; एका-

एक आक्रमण करना; राजा, चोर, आग, पानी आदिका बिगड़ना या नष्ट होना (कौ०)।

उपनिपातन–पु० (सं०) अचानक घटित होना; अचानक आक्रमण करना।

उपनियम–पु० (सं०) गौण नियम; म्युनिसिपल बोर्ड, रेलवे कंपनी आदिके बनाये हुए नियम, 'बाइ-लॉ'। (सबरूल) किसी नियमके अंतर्गत बना हुआ अन्य छोटा नियम।

उपनिर्वाचन–पु० (बाई-इलेक्शन) मृत्यु या अन्य कारणसे विधानसभा, नगरपालिका आदिके किसी सदस्यका या किसी पदाधिकारी आदिका स्थान रिक्त हो जानेपर होनेवाला चुनाव।

उपनिविष्ट–वि० (सं०) सुशिक्षित; बाहरसे आकर बसा हुआ; अनुभवी (सेना–कौ०)।

उपनिवेश–पु० (सं०) दूसरे देशसे आये हुए लोगोंकी बस्ती; वह विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्रके लोग आकर बस गये हों, 'कॉलोनी'। –**पद**–पु० स्वतंत्र उपनिवेशोंका दरजा; उस प्रकारका स्वराज्य या स्वतंत्रता जो उन्हें प्राप्त है, 'डोमिनियन स्टेटस'।

उपनिवेशन–पु० (कॉलोनिजेशन) अन्य देशोंमें जाकर अपनी बस्ती या उपनिवेश बसाने की क्रिया।

उपनिवेशित–वि० (सं०) उपनिवेश बनाया हुआ।

उपनिवेशी(शिन्)–वि० (सं०) दूसरे देशमें बस जानेवाला, उपनिवेशवासी, आबादकार।

उपनिषत्–स्त्री० (सं०) ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिके निमित्त गुरुके पास बैठना; वेदोंका ज्ञानकांड माने जानेवाले ब्रह्मविद्या-प्रतिपादक ग्रंथविशेष (इनकी संख्या १८, ३४, ५२ अथवा १०८ तक मानी जाती है। इनमें ये १३ मुख्य हैं–ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, वृहदारण्यक, कौशीतकी, मैत्रायणी, श्वेताश्वतर।); वेदरहस्य; ब्रह्मज्ञान; निर्जन स्थान; वेदव्रती ब्रह्मचारीके लिए कर्तव्य एक विशेष संस्कार; समीपस्थ भवन।

उपनिषादी(दिन्)–वि० (सं०) गुरुके पास रहनेवाला; वशमें लाया हुआ।

उपनिष्कर–पु० (सं०) सड़क, राजमार्ग।

उपनिष्क्रमण–पु० (सं०) बाहर निकलना; नवजात शिशुको पहली बार बाहर ले जाना; राजमार्ग।

उपनिहित–वि० (सं०) अमानत रखा हुआ।

उपनीत–वि० (सं०) पास लाया हुआ; प्राप्त किया हुआ; जिसका उपनयन हुआ हो।

उपनृत्य–पु० (सं०) नाचघर, नृत्यशाला।

उपनेत*–वि० उत्पन्न–'कीनी नेम-धरम-कहानी उपनेत हैं'–घन०।

उपनेता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पास ले जानेवाला; उपनयन करानेवाला (गुरु); नेताका नायब या सहकारी।

उपनौबलाध्यक्ष–पु० (वाइस ऐडमिरल) नौ-सेनाका वह अधिकारी जो प्रधान नौबलाध्यक्षके ठीक नीचे काम करता हो।

उपन्यस्त–वि० (सं०) (किसीके) पास रखा हुआ; अमानत रखा हुआ; कथित; उल्लिखित।

उपन्यास–पु० (सं०) धरोहर, अमानत, प्रसादन; प्रमाण; वाक्यका उपक्रम; संधिका एक प्रकार; कल्पित और काफी लंबी कहानी जिसमें प्रायः बहुतसे पात्र हों तथा जीवनकी विविध बातोंका चित्रण हो, 'नावेल'। –**कार**–पु० उपन्यास लिखनेवाला। –**संधि**–स्त्री० मंगलकारी कार्यकी इच्छासे की जानेवाली संधि।

उपपंजीयक–पु० (सबरजिस्ट्रार) पंजीयनका काम करनेवाला मातहत अधिकारी।

उपपक्ष–पु० (सं०) काँख; कंधा।

उपपति–पु० (सं०) परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला पुरुष, यार, आशना।

उपपत्ति–स्त्री० (सं०) घटित होना; प्रकट होना; उत्पन्न होना; हेतु, युक्ति; तर्क; सिद्धिमें युक्ति-प्रमाण देना; सिद्धि, प्रतिपादन; समाधान; आधार, सहारा; संपर्क, संबंध; प्रमाण (ग०); प्राप्ति; औचित्य, उपयुक्तता; अंत; साधन; स्वीकृति; समाधि।

उपपत्नी–स्त्री० (सं०) रखेली।

उपपद–पु० (सं०) पहले कहा, आया हुआ शब्द; समासका पहला पद; उपाधि, पदवी। –**समास**–पु० कृदंतके साथ हुआ नाम (संज्ञा) का समास (कुंभकार, घरफूँक आदि व्या०)।

उपपन्न–वि० (सं०) युक्तियुक्त; संभव; सिद्ध किया हुआ; योग्य; युक्त; पूर्ण; प्राप्त; नीरोग किया हुआ। (एक्सपीडिएंट) अवसरके उपयुक्त; सुविधाजनक या लाभकारी, समयोचित।

उपपर्शुका–स्त्री० गौण पसली।

उपपात–पु० (सं०) आपदा; विनाश; अचानक घटित होनेवाली घटना।

उपपातक–पु० (सं०) छोटा पाप, इनकी संख्या ५० मानी गयी हैं–गोवध, परदारगमन, आत्मविक्रय, गुरुत्याग, मातृत्याग, पितृत्याग, दारविक्रय, अपत्यविक्रय, पाषंड शास्त्रोंका अभ्यास, स्त्रीवध, शूद्रवध, क्षत्रिय वध, आदि।

उपपादक–वि० (सं०) प्रकट करनेवाला; घटित करानेवाला; सिद्ध करनेवाला; सुविचारित।

उपपादन–पु० (सं०) युक्ति देकर सिद्ध करना, सम्यक् प्रतिपादन; संपादन। पु० (इंडक्शन) किसी पदार्थको विद्युत् या चुंबक-शक्तिसे युक्त वस्तुके सन्निकट ले जाकर उसमें भी विद्युत् या चुंबक शक्ति उत्पन्न कर देना।

उपपादित–वि० (सं०) प्रमाणित, सिद्ध किया हुआ; पूरा किया हुआ; प्रदत्त; चिकित्सित।

उपपादुक–वि० (सं०) स्वयंभू; पादत्राणयुक्त; नाल बँधवाया हुआ। पु० ईश्वर।

उपपाद्य–वि० (सं०) उपपादन करने योग्य।

उपपाप–पु० (सं०) दे० 'उपपातक'।

उपपार्श्व–पु० (सं०) कंधा; पक्ष, बगल; छोटी पसली; विपक्ष।

उपपीडन–पु० (सं०) दबाना; विध्वंस करना; कष्ट देना; पीड़ा, कष्ट।

उपपुर–पु० (सं०) उपनगर।

उपपुराण–पु० (सं०) छोटा या गौण पुराण; व्यासोक्त अठारह पुराणोंसे भिन्न, अन्य मुनियोंके रचे पुराण।

उपपुष्पिका–स्त्री० (सं०) जँभाई; हाँफना।

उपपौरिक–वि० (सं०) उपपुरका; उपनगरमें रहनेवाला।

उपप्रदान–पु० (सं०) देना; उत्कोच, रिश्वत; भेंट, नजर।

उपप्रमेय–पु० (कॉरोलरी) किसी प्रमेय (थ्योरम) की सत्यता प्रमाणित हो जानेके बाद उससे स्वतः सिद्ध होने या अनुमित की जा सकनेवाली बात।

उपप्रश्न–पु० (सं०) प्रश्नके अंदर पैदा होनेवाला प्रश्न, गौण प्रश्न।

उपप्रेक्षण–पु० (सं०) उपेक्षा करना।

उपप्लव–पु० (सं०) उत्पात, उपद्रव; भौतिक दुर्घटना; पीड़न; भय; विप्लव, विद्रोह; विघ्न; विपत्ति; हलचल; अराजकता; राहु; शिव; संदेह (बौ०)।

उपप्लवी(विन्)–वि० (सं०) उपप्लवसे पीड़ित; विद्रोही।

उपप्लुत–वि० (सं०) पीड़ित; आक्रांत।

उपबंध–पु० (सं०) संबंध; संयोग; एक रतिबंध। (प्रॉविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिके वे खंड या उपखंड जिनमें किसी बातकी संभावना आदिको ध्यानमें रखते हुए पहलेसे कोई प्रबंध या गुंजाइश रख दी जाय; इस तरह रखी गयी गुंजाइश या गुंजाइश रखनेकी क्रिया; प्रावधान, निवेश।

उपबंधित–वि० (प्रोवाइडेड) उपबंधके अनुरूप, उपबंधमें निर्दिष्ट; जिसमें शर्त यह है कि···।

उपबरहन*–पु० दे० 'उपबर्हण'।

उपबर्ह, उपबर्हण–पु० (सं०) दबाना; तकिया।

उपबाहु–पु० (सं०) हाथका बाहुसे नीचे (कुहनीसे कलाईतक) का भाग, पहुँचा।

उपबृंहण–पु० (सं०) बढ़ाना, सशक्त करना।

उपबृंहित–वि० (सं०) वर्धित।

उपभंग–पु० (सं०) पलायन; छंदका एक भाग।

उपभाषा–स्त्री० (सं०) गौण भाषा, मुख्य भाषाका गौण भेद, बोली।

उपभुक्त–वि० (सं०) भोगा हुआ, काममें लाया हुआ; जूठा।

–धन–वि० जिसने अपने धनका उपभोग किया है।

उपभुक्ति–स्त्री० (सं०) उपभोग; ग्रहका दैनिक चार।

उपभूमि–स्त्री० (सब-सॉइल) दे० 'अवभूमि', 'अधोभूमि'।

उपभूषण–पु० (सं०) निम्न श्रेणीका आभूषण।

उपभृत–वि० (सं०) पास लाया हुआ।

उपभेद–पु० (सं०) गौण भेद, उपविभाग।

उपभोक्तव्य–वि०, पु० (सं०) दे० 'उपभोग्य'।

उपभोक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) उपभोग करनेवाला; बरतनेवाला; काबिज।

उपभोग–पु० (सं०) भोगना; सुख, स्वाद लेना; व्यवहार, बरतना; विषय-सुख; स्त्री-सहवास; फलभोग।

उपभोगी(गिन्)–वि० (सं०) उपभोक्ता।

उपभोग्य–वि० (सं०) भोगने योग्य। पु० भोग की वस्तु। **–वस्तुएँ**–स्त्री० (कंज्यूमर्स गुड्स) मनुष्यके उपभोग या काममें आनेवाली आवश्यक वस्तुएँ–जैसे गल्ला, कपड़ा आदि।

उपभोज्य–वि० (सं०) खाने योग्य। पु० आहार।

उपमंडल–पु० (सं०) मंडल या जिलेका उपविभाग, तहसील।

उपमंत्रण–पु० (सं०) आमंत्रण; अनुरोध करना।

उपमंत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) सहायक मंत्री। वि० आमंत्रण या अनुरोध करनेवाला।

उपमंथनी–स्त्री० (सं०) आग कुरेदनेकी लकड़ी।

उपमज्जन–पु० (सं०) स्नान।

उपमन्यु–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि। वि० बुद्धिमान; उत्साही।

उपमर्द, उपमर्दन–पु० (सं०) दबाना; मसलना, रगड़ना; खंडन; नाश; निंदा; अपमान; भूसी निकालना; हिलाना।

उपमा–स्त्री० (सं०) समता, तुलना; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें दो वस्तुओंमें पृथक्ता होते हुए भी धर्मगत समता दिखायी जाती है।

उपमाता(तृ)–पु० (सं०) मूर्ति या शबीह (व्यक्तिचित्र) बनानेवाला। वि० उपमा देनेवाला। स्त्री० धाय; मातृ-तुल्य संबंधिनी–मौसी, चाची आदि।

उपमाति–स्त्री० (सं०) तुलना; मारण; अनुरोध, निवेदन।

उपमाद–वि० (सं०) आनंददायक। पु० उपभोग; प्रसन्नता।

उपमान–पु० (सं०) वह वस्तु जिससे किसीकी तुलना की जाय; समानताके आधारपर मान्य प्रमाण (न्याय०)। **–लुप्ता**–स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद।

उपमाना*–स० क्रि० तुलना करना; उपमा देना।

उपमालिनी–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

उपमित–वि० (सं०) जिसकी किसीसे उपमा दी गयी हो। पु० कर्मधारय समासका एक भेद, दो शब्दोंके बीच उपमा-वाचक शब्दका लोप करके यह बनाया जाता है (व्या०)।

उपमिति–स्त्री० (सं०) सादृश्य; पटतर; सादृश्यसे होनेवाला ज्ञान (न्या०)।

उपमित्र–पु० (सं०) साधारण मित्र, अंतरंग नहीं।

उपमेत–पु० (सं०) शाल वृक्ष।

उपमेय–वि० (सं०) उपमा देने योग्य। पु० वह वस्तु जिसकी किसीसे तुलना की जाय, वर्ण्य। **–लुप्ता**–स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद, जिसमें उपमेय स्पष्ट रूपसे विद्यमान न हो।

उपमेयोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें उपमेयकी उपमा उपमानसे और उपमानकी उपमेयसे दी गयी हो।

उपयंता(तृ)–पु० (सं०) (उपयम) विवाह करनेवाला, पति।

उपयंत्र–पु० (सं०) छोटा यंत्र या औजार; चीर-फाड़के काम आनेवाला एक विशेष यंत्र।

उपयना*–स० क्रि० उत्पन्न करना। अ० क्रि० उत्पन्न होना।

उपयम–पु० (सं०) संयम; विवाह।

उपयमन–पु० (सं०) दबाना; संयम करना; विवाह करना; संहारा।

उपयाचन–पु० (सं०) माँगना, प्रार्थना करना।

उपयाचित–वि० (सं०) प्रार्थित, निवेदित। पु० प्रार्थना; इष्टसिद्धिके लिए देवताको अर्पित की जानेवाली वस्तु।

उपयान–पु० (सं०) पास जाना।

उपयाम–पु० (सं०) विवाह।

उपयायी(यिन्)–वि० (सं०) पास जानेवाला।

उपयुक्त–वि० (सं०) उपयोगमें लाया हुआ, प्रयुक्त; उचित, ठीक, मौजूँ; योग्य; अनुकूल।

उपयोग–पु० (सं०) व्यवहार, काम लेना; लाभ; उपयुक्तता; सदाचरण; संबंध; दवा देना या तैयार करना; अभीष्टकी प्राप्ति करानेवाला कार्य।

उपयोगिता–स्त्री० (सं०) उपयोगी होना, उपयुक्तता। **–वाद**–पु० अधिकसे अधिक लोगोंका अधिकसे अधिक हितसाधन धर्म है–यह मत, 'यूटिलिटेरियनिज्म'। **–वादी(दिन्)**–उपयोगितावादका अनुयायी।

उपयोगी(गिन्)–वि० (सं०) काममें आनेवाला, कारआमद; लाभजनक; काममें लानेवाला; संपर्कवाला।

उपयोजन–पु० (एप्रोप्रियेशन) (कोई वस्तु या धन) अधिकारमें ले लेना या अपने प्रयोगमें ले आना, विनियोग।

उपरंजक–वि० (सं०) रँगनेवाला; प्रभाव डालनेवाला।

उपरंजन–पु० (सं०) रँगना; पासकी चीजपर अपना रंग या असर डालना।

उपरंजनीय, उपरंज्य–वि० (सं०) रँगने, प्रभावित किये जाने योग्य।

उपरंध्र–पु० (सं०) लघु छिद्र; घोड़ेके शरीरका एक विशेष भाग, पसलियोंके बीचका खात।

उपरक्त–वि० (सं०) विषयासक्त; पीड़ित; विपद्ग्रस्त; जिसे ग्रहण लगा हो; रंजित; जिसमें उपाधिके सान्निध्यसे उसके गुणकी प्रतीति होती हो। पु० ग्रस्त सूर्य या चंद्र; राहु।

उपरक्ष–पु० (सं०) अंगरक्षक, 'बाडीगार्ड'।

उपरक्षण–पु० (सं०) पहरा, चौकी।

उपरत–वि० (सं०) विरक्त, जिसका मन दुनिया या विषय-भोगसे हट गया हो, रागरहित; निवृत्त; मृत। **–शोणिता**–स्त्री० वह स्त्री जिसे अब मासिक स्राव न होता हो।

उपरति–स्त्री० (सं०) विराग, विषय-भोगसे विरक्ति; उदासीनता; यज्ञादि विहित कर्मोंका त्याग; मृत्यु; बुद्धि, समझ।

उपरत्न–पु० (सं०) घटिया किस्मके रत्न (सीप, मरकतमणि, स्फटिक आदि)।

उपरना–पु० दुपट्टा, उत्तरीय। * अ० क्रि० उखड़ना।

उपरफट, उपरफट्टू–वि० ऊपरी; बाहरी; निष्प्रयोजन, बेकार; नियमितके अलावा।

उपरम–पु० (सं०) उपरति, विषयसे विराग; उपरति होना; निवृत्ति; विश्रांति; मृत्यु।

उपरमण–पु० (सं०) विषयोंसे विरक्त होना; यज्ञादि कर्मोंका त्याग; विश्रांति।

उपरवार–स्त्री० ऊँची जमीन, बाँगर। † वि० ऊपरी।

उपरस–पु० (सं०) पारेके सदृश गुणवाले पदार्थ–गंधक, अभ्रक, मैनसिल, गेरू आदि; गौण भाव, थोड़ा-थोड़ा मालूम होनेवाला अप्रधान स्वाद।

उपरांत–अ० (सं०) अनंतर, बाद।

उपराग–पु० (सं०) रंग; लाल रंग; लाली; चंद्र-सूर्य-ग्रहण; विषयासक्ति; प्रभाव; निकटस्थ वस्तुके प्रभावसे रंग-रूप बदलना (सा०); दुर्व्यवहार; निंदा; राहु।

उपराचढ़ी–स्त्री० एक-दूसरेसे बढ़ जानेकी कोशिश, प्रतिस्पर्धा, लाग-डाट।

उपराज–पु० (सं०) राजाका नायब, राजप्रतिनिधि, 'वाइसराय'। * स्त्री० उपज, पैदावार।

उप-राजदूत–पु० (लिगेट) अन्य देशमें रहनेवाला किसी राज्य या राष्ट्रका वह कूटनीतिक मंत्री या प्रतिनिधि जिसे अभी मुख्य राजदूतका पद प्राप्त न हुआ हो।

उप-राजदूतावास–पु० (लिगेशन) उपराजदूतका निवास-स्थान।

उपराजना*–स० क्रि० उत्पन्न करना, उपजाना; बनाना; उपार्जन करना।

उप-राजसंरक्षक–पु० (वाइस रीजेंट) राजसंरक्षककी अनुपस्थितिमें उसका काम सम्हालनेवाला।

उपराज्यपाल–पु० (लेफ्टनेंट गवरनर) किसी छोटे प्रदेशका सर्वोच्च पदाधिकारी या शासक जो गवरनर से छोटा होता है।

उपराना*–अ० क्रि० ऊपर आना; उतराना। स० क्रि० ऊपर करना, उठाना।

उपराम–पु० (सं०) दे० 'उपरम'।

उपराला*–पु० सहायता; बचाव; पक्षग्रहण।

उपरावटा*–वि० जो सिर ऊपर किये हुए हो, अकड़ता हुआ।

उपराष्ट्रपति–पु० (वाइस प्रेसीडेंट) गणतंत्रका वह निर्वाचित पदाधिकारी जो राष्ट्रपतिकी अनुपस्थिति, बीमारी आदिके समय उसके कार्योंका निर्वाहन करता है (भारतमें यह पदेन राज्य-परिषद्‌का सभापति होता है)।

उपराहना*–स० क्रि० प्रशंसा करना।

उपराहीं*–अ० ऊपर। वि० बढ़कर। –'धावहिं बोहित मन उपराहीं'–प०।

उपरि–अ० (सं०) ऊपर; उपरांत। **–कर**–पु० एक प्रकारका कर। **–चर**–वि० ऊपर चलनेवाला। पु० पक्षी; एक वसु। **–चित**–वि० ऊपर रखा या सजा हुआ। **–श्रेणिक**–वि० ऊपरकी श्रेणीका। **–सद**–वि० ऊपर बैठा या लेटा हुआ। पु० एक देववर्ग।

उपरितन–वि० (सं०) ऊपरका; ऊँचा।

उपरी-उपरा*–पु० चढ़ा-ऊपरी।

उपरीतक–पु० (सं०) एक रतिबंध।

उपरुद्ध–वि० (सं०) रोका हुआ, बाधित; घेरा हुआ; कैद किया हुआ; परेशान किया हुआ। पु० वंदी, कैदी। **–सैन्य**–पु० शत्रु द्वारा रोकी हुई सेना (कौ०)।

उपरूढ–वि० (सं०) भरा हुआ (घाव); परिवर्तित।

उपरूप–पु० (सं०) बहुत हलका या नगण्य लक्षण (आ० वे०)।

उपरूपक–पु० (सं०) निम्न श्रेणीका या गौण रूपक जो १८ प्रकारका होता है।

उपरैना*–पु० दे० 'उपरना'।

उपरैनी*–स्त्री० ओढ़नी।

उपरोक्त–वि० 'उपर्युक्त'का असाधु रूप।

उपरोध–पु० (सं०) रोक, बाधा; घेरना; परेशान करना; बाँधना; पकड़ना; ढकना; रक्षा; फूट, कलह; सम्मान।

उपरोधक–वि० (सं०) उपरोध करनेवाला। पु० भीतरका कमरा।

उपरोधन–पु० (सं०) उपरोध करना।

उपरोधी(धिन्)–वि० (सं०) उपरोध करनेवाला।

उपरोहित†–पु० दे० 'पुरोहित'।

उपरोहिती†–स्त्री० दे० 'पुरोहिती'।

उपरौटा–पु० किसी चीजका ऊपरका पल्ला।

उपरौना*–पु० दे० 'उपरना'।

उपर्युक्त–वि० (सं०) ऊपर या पहले कहा हुआ।

उपलंभ, उपलंभन–पु० (सं०) लाभ, प्राप्ति; ज्ञान; अनुभव।

उपलंभक–वि० (सं०) ज्ञान या अनुभव करानेवाला।

उपल–पु० (सं०) पत्थर; रत्न; ओला; बादल।

उपलक–पु० (सं०) एक पत्थर।

उपलक्षक–वि० (सं०) अनुमान करनेवाला; भाँपनेवाला; बोधक। पु० उपलक्षण-शक्तियुक्त शब्द।

उपलक्षण–पु० (सं०) देखना, लखना; बोधक चिह्न; विशेष लक्षण, पहचान; संकेत; शब्दकी वह शक्ति जिससे निर्दिष्ट वस्तुके अतिरिक्त उस तरहकी और वस्तुओंका भी बोध हो।

उपलक्षित–वि० (सं०) लक्ष्य किया हुआ; अनुमान किया हुआ; इशारेसे बतलाया हुआ।

उपलक्ष्य–वि० (सं०) अनुमान करने योग्य; लक्ष्य करने योग्य। पु० सहारा; रक्षास्थान; अनुमान; संकेत; उद्देश्य। **–में**–निमित्तसे (विवाहके उपलक्ष्यमें)।

उपलधिप्रिय–पु० (सं०) चमर-मृग।

उपलब्ध–वि० (सं०) मिला हुआ, प्राप्त; ज्ञात।

उपलब्धा(ब्धृ)–वि० (सं०) प्राप्त करनेवाला; अनुभव करनेवाला। पु० आत्मा।

उपलब्धि–स्त्री० (सं०) प्राप्ति; अनुभव; ज्ञान; प्रत्यक्ष ज्ञान; ग्रहणकी योग्यता। (एव्हेलेबिलिटी; सप्लाई) किसी पण्यवस्तुकी वह संख्या या परिमाण जो बाजारमें खरीदने या माँगकी पूर्ति करनेके लिए किसी समय प्राप्य हो; (इमाल्यूमेंट) किसी पदपर काम करनेसे वेतन, परिश्रम आदिके रूपमें मिलनेवाला लाभ; (अचीव्हेमेंट) प्राप्त की गयी सफलता–'लोगोंको अपने पूर्वजोंकी उपलब्धियोंपर गर्व हो रहा था'–भारतका वैधानिक विकास।

उपलभ्य–वि० (सं०) मिलने योग्य; सम्मान्य।

उपला–पु० गोहरा। स्त्री० (सं०) शर्करा।

उपलाभ–पु० (सं०) ग्रहण करना, पकड़ना।

उपलालन–पु० (सं०) प्यार करना, दुलारना।

उपलालिका–स्त्री० (सं०) तृषा, प्यास।

उपलिंग–पु० (सं०) उपद्रव; अरिष्ट।

उपलिप्त–वि० (सं०) लेप किया हुआ।

उपलिप्सा–स्त्री० (सं०) पानेकी इच्छा।

उपली–स्त्री० गोहरी, चिपड़ी।

उपलेप–पु० (सं०) लीपना, लेप-सामग्री; (इंद्रियोंके कार्यमें) बाधा पड़ना, (उनका) अवरुद्ध या कुंठित होना।

उपलेपन–पु० (सं०) लेप लगाना; लेपकी सामग्री।

उपलेपी(पिन्)–वि० (सं०) लेप करनेवाला; लेपका काम देनेवाला; बाधा डालनेवाला।

उपलोह–पु० (सं०) एक गौण धातु।

उपल्ला–पु० रजाई आदिकी ऊपरकी पर्त, भितल्लाका उलटा।

उपबंग–पु० (सं०) बंगालसे सटा एक जनपद।

उपवक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) यज्ञका एक ऋत्विक्; (अपनी बातोंसे) प्रेरणा देनेवाला।

उपवट–पु० (सं०) प्रियाल, चिरौंजीका पेड़।

उपवन–पु० (सं०) बगीचा, उद्यान।

उपवना*–अ० क्रि० उड़ जाना, अदृश्य हो जाना; उदय होना; उत्पन्न होना।

उपवपन–पु० (सं०) ऊपर छितराना, बिखेरना।

उपवर्ण, उपवर्णन–पु० (सं०) विस्तृत, ब्योरेवार वर्णन।

उपवर्ण्य–पु० (सं०) उपमान, अवर्ण्य।

उपवर्त–पु० (सं०) एक बड़ी संख्या।

उपवर्तन–पु० (सं०) निकट लाना; अभ्यासस्थान; वसित या अवसित स्थान; जिला; परगना; राज्य; दलदल।

उपवर्ष–पु० (सं०) मीमांसा दर्शनके एक भाष्यकार।

उपवर्ह–पु० (सं०) दे० 'उपबर्ह'।

उपवल्गित-वि० (सं०) सूजा हुआ; अश्रुपूर्ण (नेत्र)।

उपवल्लिका–स्त्री० (सं०) अमृतश्रवा नामक लता।

उपवसथ–पु० (सं०) बस्ती, ग्राम; यज्ञके पहलेका दिन (इस दिन उपवास आदि करते हैं)।

उपवसन–पु० (सं०) पास रहना; उपवास करना।

उपवस्त–पु० (सं०) उपवास।

उपवस्ता(स्तृ)–वि० (सं०) उपवास करनेवाला।

उपवस्ति-स्त्री० (सं०) जीवनका सहारा (आहार, निद्रा आदि)।

उपवहन–पु० (सं०) ऊँचे स्वरमें गाना शुरू करनेके पहले अस्पष्ट और मंद स्वरमें धुन बाँधना।

उपवाक–पु० (सं०) संबोधन; प्रशंसा; इंद्रयव।

उपवाक्य–पु० (सं०) (क्लॉज) बड़े वाक्यके भीतर आया हुआ छोटा वाक्य, वाक्यखंड।

उपवाजन–पु० (सं०) पंखा।

उपवाणिज्यदूत–पु० (प्रोकॉन्सल) किसी देशके व्यापार-वाणिज्य-संबंधी हितोंकी निगरानीके लिए अन्य देशमें नियुक्त वाणिज्यदूतके अधीन काम करनेवाला छोटा दूत जो प्रायः राजधानीके अतिरिक्त अन्य महत्त्वके व्यापारिक केंद्रोंमें रहकर काम करता है।

उपवाद–पु० (सं०) निंदा; लांछन।

उपवादी(दिन्)–वि० (सं०) निंदक।

उपवायुपति–पु० (एयर कॉमोडोर) हवाई सेनाका सामान्य अधिकारी ।

उपवास–पु० (सं०) भोजनका त्याग या अप्राप्ति, फाका; व्रत-रूपमें भोजनका त्याग; अग्न्याधान; हवनकुंड; विशेष अधिकारसे रहित निम्न जातिके ग्रामीण ।

उपवासक–वि० (सं०) उपवास करनेवाला । पु० उपवास ।

उपवासी(सिन्)–वि० (सं०) उपवास करनेवाला । पु० विशेष अधिकारसे रहित निम्नजातीय ग्रामीण ।

उपवाहन–पु० (सं०) पास ले जाना ।

उपवाह्य–पु० (सं०) राजाकी सवारीमें काम आनेवाला वाहन–हाथी, रथ आदि; वाहन । वि० पास लाने योग्य; सवारीके काम आनेवाला ।

उपविक्रय–पु० (सं०) चोरीसे या संदिग्धावस्थामें होनेवाला किसी वस्तुका क्रय-विक्रय ।

उपविचार–पु० (सं०) पड़ोस ।

उपविद्या–स्त्री० (सं०) गौण विद्या; लौकिक विद्या ।

उपविधि–स्त्री० (बाई-ला) किसी विधिके अंतर्गत बनायी गयी छोटी विधि; किसी नगर-पालिका या निगम आदि द्वारा निर्मित विधि ।

उपविष–पु० (सं०) कृत्रिम या हलके विष (मदार, धतूरा, आदि) । **–प्रणिधि**–पु० वह जो छिपे तौरसे मनुष्योंको विष देकर या यंत्र-मंत्र आदिके प्रयोग द्वारा मारनेका काम करे ।

उपविषा–स्त्री० (सं०) अतिविषा, अतीस ।

उपविष्ट–वि० (सं०) बैठा हुआ; प्रविष्ट (किसी अवस्थामें) ।

उपविष्टक–वि० (सं०) नियत समयके बाद गर्भाशयमें टिका रहनेवाला (अर्भक) ।

उपवीत–पु० (सं०) जनेऊ; उपनयन संस्कार ।

उपवीती(तिन्)–वि० (सं०) यज्ञोपवीतधारी ।

उपवृंहण–पु० (सं०) दे० 'उपवृंहण' ।

उपवेद–पु० (सं०) वेदोंसे निकली लौकिक विद्याएँ–आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और स्थापत्यवेद ।

उपवेधक–पु० (सं०) गुंडा, बदमाश ।

उपवेश–पु० (सं०) बैठना; किसी कार्यमें संलग्न होना; मलत्याग ।

उपवेशन–पु० (सं०) दे० 'उपवेश'; बैठाना । (सिटिंग) सभाकी बैठक होती रहना, बैठक होती रहनेकी स्थिति, बैठक ।

उपवेशिका–स्त्री० (लाउंज) एक तरहका सोफा या आरामसे लेटने, बैठनेकी कुरसी; विश्रामकक्ष; बैठकखाना; सभाकक्ष ।

उपवेशित–वि० (सं०) बैठाया हुआ ।

उपवेशी(शिन्), उपवेष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) बैठानेवाला ।

उपवेष्टन–पु० (सं०) लपेटनेकी क्रिया ।

उपवेष्टित–वि० (सं०) लिपटा हुआ, घिरा हुआ ।

उपवैणव–पु० (सं०) दिनके तीन भाग (प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या) ।

उपव्याघ्र–पु० (सं०) चीता ।

उपशम–पु० (सं०) शांत होना; तृष्णा, वासनाका नाश; इंद्रिय-निग्रह; रोगकी पीड़ाका घटना, विश्रांति; निवृत्ति; उपाय; इलाज ।

उपशमन–पु० (सं०) शांत करना; तुष्ट करना; निवारण; दबाना; घटाना; (अबेटमेंट) लुप्त होना; शूल-नाशक औषध ।

उपशय–पु० (सं०) पासमें सोना; औषध या पथ्यविशेषके प्रभाव द्वारा रोगका निदान; अनुकूल औषध या पथ्य द्वारा रोगका उपचार; घातमें बैठना । वि० पास लेटनेवाला; शांतिदायक ।

उपशया–स्त्री० (सं०) काममें लानेके लिए तैयार गीली मिट्टी ।

उपशल्य–पु० (सं०) भाला; गाँव या नगरका सिवान, डाँड़ा; पहाड़के पासकी जमीन ।

उपशांति–स्त्री० (सं०) उपशम ।

उपशाखा–स्त्री० (सं०) छोटी शाखा; शाखाकी शाखा ।

उपशामक–वि० (सं०) उपशमकारक, शांत करनेवाला; निवारक ।

उपशाय–पु० (सं०) बारी-बारी सोना (पहरे आदिके विचारसे) ।

उपशायक–वि० (सं०) बारीसे सोनेवाला ।

उपशायी(यिन्)–वि० (सं०) सोनेवाला; पास सोनेवाला; शांत करनेवाला ।

उपशाल–पु० (सं०) मकानके पासका या आगेका सहन ।

उपशिंघन, उपशिंहन–पु० (सं०) सूँघना; सूँघनेके लिए दी गयी वस्तु ।

उपशिक्षक–पु० (सं०) सहायक शिक्षक, नायब मुदर्रिस ।

उपशिष्य–पु० (सं०) शिष्यका शिष्य ।

उपशीर्षक–पु० (सं०) छोटा शीर्षक, मुख्य शीर्षकके नीचे या बीचमें आनेवाला शीर्षक; सिरमें छोटी-छोटी फुंसियाँ निकलनेकी बीमारी ।

उपशोभन–पु० (सं०) अलंकृत करना, सजाना ।

उपशोभिका–स्त्री० (सं०) सजावट; आभूषण ।

उपशोषण–पु० (सं०) सूखना; सुखाना ।

उपश्रुत–वि० (सं०) सुना हुआ; स्वीकृत; प्रतिज्ञात ।

उपश्रुति–स्त्री० (सं०) सुनना; सुनाई देनेकी हद; स्वीकृति; वचन; रातमें सुनाई देनेवाली भविष्यसूचक देववाणी; भविष्य-कथन ।

उपश्रोता(तृ)–वि० (सं०) सुननेवाला ।

उपश्लाघा–स्त्री० (सं०) गर्व, डींग ।

उपश्लिष्ट–वि० (सं०) संपर्कमें लाया हुआ; सटा हुआ; आसन्न ।

उपश्लेष–पु० (सं०) निकट संपर्क; आलिंगन ।

उपसंक्रांत–वि० (सं०) दूसरी ओर गया या मुड़ा हुआ ।

उपसंक्षेप–पु० (ऐब्स्ट्रैक्ट) किसी विवरण, हिसाब आदिका संक्षिप्त रूप; सारांश ।

उपसंख्यान–पु० (सं०) वृद्धि; योग ।

उपसंगत–वि० (सं०) साथ मिला हुआ; संयुक्त (रति-क्रियाके लिए) ।

उपसंगमन–पु० (सं०) पास जाना; एकत्र होना; रतिक्रिया ।

उपसंगृहीत–वि० (सं०) लिया हुआ; अधिकारमें किया हुआ ।

उपसंग्रह–पु० (सं०) पादस्पर्शपूर्वक नमस्कार करना; प्रसन्न रखना; उपकरण; स्वीकार करना (स्त्रीके रूपमें); विनम्रता-पूर्वक निवेदन करना; एकत्र करना ।

उपसंघात–पु० (सं०) एकत्र करना ।

उपसंचार–पु० (सं०) प्रवेश, पहुँच ।

उपसंधान–पु० (सं०) जोड़ना; बढ़ाना ।

उपसंपत्(द्)–स्त्री० (सं०) बौद्ध भिक्षु होनेकी दीक्षा ।

उपसंपत्ति–स्त्री० (सं०) पहुँचना; अवस्थांतरमें प्रवेश करना ।

उपसंपदा–स्त्री० (सं०) भिक्षु बनना (बौ०) ।

उपसंपन्न–वि० (सं०) प्राप्त किया हुआ; पहुँचा हुआ; परिचित; पर्याप्त; बलि चढ़ाया हुआ; मृत; राँधा हुआ । पु० मसाला ।

उपसंपादक–पु० (सं०) सहायक संपादक, 'सब-एडिटर' ।

उपसंभाष–पु०, **उपसंभाषा**–स्त्री० (सं०) बातचीत; मैत्रीपूर्ण अनुरोध ।

उपसंयम–पु० (सं०) संपर्कमें लाना; नियंत्रित करना; बाँधना; प्रलय ।

उपसंवाद–पु० (सं०) समझौता, एकमत होना ।

उपसंवीत–वि० (सं०) तोपा हुआ; लपेटा हुआ ।

उपसंव्यान–पु० (सं०) अंतःपट ।

उपसंस्कार–पु० (सं०) पूरक या गौण संस्कार ।

उपसंहरण–पु० (सं०) ले लेना; अलग कर लेना; अस्वीकार करना; आक्रमण करना ।

उपसंहार–पु० (सं०) समाप्ति; समेटना, बटोरना; सारांश, निचोड़; लेख आदिके अंतमें दिया जानेवाला खुलासा; पुस्तकका अंतिम अध्याय; नाश; अंत ।

उपसंहारी(रिन्)–वि० (सं०) अंतर्भाव करनेवाला ।

उपसंहित–वि० (सं०) (किसीसे) संबद्ध या युक्त; परिवेष्टित ।

उपसक्त–वि० (सं०) आसक्त; संलग्न ।

उपसत्ति–स्त्री० (सं०) संबंध; संयोग; सेवा-टहल; पूजा; दान ।

उपसद–वि० (सं०) पास जानेवाला । पु० निकट जाना; दान ।

उपसदन–पु० (सं०) निकट जाना; शिष्यता स्वीकार करना;

पड़ोस; सेवा।

उपसद्–स्त्री० (सं०) घेरा; आक्रमण; सेवा; जमा करना।

उपसना–अ० क्रि० सड़ना; बदबूदार होना।

उपसन्न–वि० (सं०) सहायता, सेवा आदिके लिए आया हुआ; प्राप्त; निकट रखा हुआ; प्रदत्त।

उपसन्यास–पु० (सं०) परित्याग, छोड़ देना।

उपसभापति–पु० (वाइस प्रेज़ीडेंट) किसी संस्थाका वह अधिकारी जो सभापतिकी अनुपस्थितिमें उसका स्थान ग्रहण करे।

उपसमाधान–पु० (सं०) एकत्र करना, राशीकरण।

उपसमिंधन–पु० (सं०) आग जलाना, प्रज्वलित करना।

उपसमिति–स्त्री० (सं०) छोटी समिति, कार्यविशेषके लिए बनी छोटी कमेटी, 'सब-कमिटी'।

उपसर–पु० (सं०) गायके निकट गर्भाधानके लिए साँड़का जाना; गायका प्रथम बार गर्भ धारण करना।

उपसरण–पु० (सं०) (किसीकी ओर) जाना; हृदयकी ओर रक्तका तेजीसे बहना (रोगमें); जिसके पास रक्षा आदिके लिए पहुँचा जाय, पनाह।

उपसर्ग–पु० (सं०) वह अव्यय जो धातु या धातुसे बने नाम (संज्ञा) के पहले लगकर उसका अर्थ बदल देता है (प्र, अव, उप, सम् आदि); भौतिक-या दैवी उपद्रव; एक रोगके बीचमें उत्पन्न दूसरा गौण रोग; उपद्रव; मृत्युसूचक चिह्न, प्रेतबाधा।

उपसर्जन–पु० (सं०) उड़ेलना; दैवी उत्पात; ग्रहण; अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु; त्याग; गौण वस्तु।

उपसर्पण–पु० (सं०) पास जाना।

उपसवना*–अ० क्रि० भागकर अन्यत्र चले जाना।

उपसागर–पु० (सं०) चौड़े मुँहकी खाड़ी।

उपसादन–पु० (सं०) सेवामें उपस्थित होना; सम्मान करना; (ऊपर) रखना।

उपसाना–स० क्रि० बासी करना, सड़ाना।

उपसिक्त–वि० (सं०)..से भीगा हुआ।

उपसीर–पु० (सं०) हल।

उपसुंद–पु० (सं०) महाभारतमें वर्णित सुंद दैत्यका छोटा भाई।

उपसूतिका–स्त्री० (सं०) धात्री।

उपसूर्यक–पु० (सं०) सूर्यमंडल; एक तरहका भौंरा या जुगनू।

उपसृष्ट–वि० (सं०) गृहीत; प्रेताविष्ट; ग्रस्त। पु० मैथुन; ग्रस्त सूर्य या चंद्र।

उपसेक, उपसेचन–पु० (सं०) सींचना; छिड़कना; रसा।

उपसेवन–पु० (सं०) भोग; सेवन; पूजन; आदी होना।

उपस्कर–पु० (सं०) संस्कार-साधन; सामग्री; मसाला; (फर्नीचर) घरकी सजावट आदिका सामान (मेज, कुर्सी आदि), परिवर्ह। आभूषणादि; लांछन; निंदा; जीवन धारणके लिए आवश्यक सामग्री।

उपस्करण–पु० (सं०) हिंसा करना; सजाना, सँवारना; संघात; विकार; निंदा; समूह।

उपस्कार–पु० (सं०) पूरक; रिक्तस्थानकी पूर्ति करनेवाला; सँवारना, आभरण; आघात; समूह।

उपस्कृत–वि० (सं०) बनाया, तैयार किया हुआ; इकट्ठा किया हुआ; बदला हुआ; लांछित; हत; (फर्निश्ड) मेज, कुर्सी आदि सामानोंसे सजाया हुआ।

उपस्तंभ, उपस्तंभन–पु० (सं०) सहारा; जीवन-यापनका सहारा (आहारादि); आधार; प्रोत्साहन।

उपस्तरण–पु० (सं०) फैलाना, बिछाना; बिछावन; चादर।

उपस्त्री–स्त्री० (सं०) उपपत्नी, रखेली।

उपस्थ–पु० (सं०) शरीरका मध्य भाग; पेड़; स्त्री या पुरुषकी जननेंद्रिय; गोद; गुदा; नितंब। वि० निकटवर्ती; पास बैठा हुआ। **–दल,–पत्र–पु०** पीपलका वृक्ष। **–निग्रह–पु०** संयम, इंद्रियदमन।

उपस्थाता(तृ)–वि० (सं०) उपनत; समयपर आया हुआ। पु० नौकर; यज्ञ-पुरोहित।

उपस्थान–पु० (सं०) पास आना; सामने आना; उपस्थिति, मौजूदगी; देवताके सामने खड़ा होकर स्तुति या आराधना करना; उपासनास्थल; स्मृति; वासस्थान; प्राप्ति।

उपस्थापक–वि० (सं०) पास लाने या रखनेवाला, उपस्थित करनेवाला; विधानसभा आदिमें प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला; सिखाने-समझानेवाला; स्मरण दिलानेवाला। पु० (रीडर) दे० 'पेशकार'।

उपस्थापन–पु० (सं०) पास या सामने रखना; उपस्थिति; सेवा-टहल; स्मरण दिलाना; (प्रेज़ेंटेशन) विधानसभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित करना; किसी अधिकारीके सामने कोई विषय उसकी स्वीकृति प्राप्त करनेके लिए रखना।

उपस्थापित करना–स० क्रि० (टु प्रेज़ेंट) विधान-सभा आदिके सामने कोई प्रस्ताव विचारार्थ रखना।

उपस्थायी(यिन्)–वि० (सं०) पास खड़ा या पास आनेवाला।

उपस्थित–वि० (सं०) पास या सामने आया हुआ, मौजूद, हाजिर; सामने रखा हुआ, प्रस्तुत; याद; निकटवर्ती; पूजित; सेवित; प्राप्त; घटित; ज्ञात; मार्जित।

उपस्थिति–स्त्री० (सं०) हाजिरी, मौजूदगी, विद्यमानता; नैकट्य; याद होना; स्मरणशक्ति; प्राप्ति; सेवा; कार्य-पूर्ति। **–पंजिका, –पंजी–स्त्री०** कर्मचारियोंकी उपस्थितिका ब्यौरा बतानेवाली पंजिका, हाजिरी-रजिस्टर।

उपस्नेह–पु० (सं०) आर्द्र होना, गीला होना।

उपस्पर्श, उपस्पर्शन–पु० (सं०) छूना; संपर्क; स्नान करना; मुँह धोना, कुल्ला करना।

उपस्मृति–स्त्री० (सं०) गौण धर्मशास्त्र (जाबालि, नाचिकेत आदिके रचे ग्रंथ)।

उपस्रवण–पु० (सं०) स्राव; स्त्रियोंका मासिक स्राव; मासिक स्रावका अंत।

उपस्वत्व–पु० (सं०) जमीन या पूँजीसे होनेवाली आय, सूद, लगान।

उपस्वेद–पु० (सं०) पसीना; बाष्प; आर्द्रता।

उपहंता(तृ)–वि० (सं०) उपघातक।

उपहत–वि० (सं०) चोट खाया हुआ, घायल; नष्ट; दूषित, विकृत; अभिभूत; जिसपर वज्रपात हुआ हो; लांछित।

उपहतक–वि० (सं०) दुर्भाग्यग्रस्त।

उपहति–स्त्री० (सं०) आघात; वध; हानि; उपघात।

उपहत्या–स्त्री० (सं०) चोट; क्षति; आँखकी तिलमिलाहट; चकाचौंध।

उपहरण–पु० (सं०) पास लाना; ग्रहण; भेंट या नजर करना; खाना परसना।

उपहव–पु० (सं०) आमंत्रण; आवाहन।

उपहसित–वि० (सं०) जिसका उपहास किया गया हो। पु० व्यंग्य –कटाक्षभरी हँसी।

उपहस्तिका–स्त्री० (सं०) पान आदि रखनेका बटुआ; पनडब्बा।

उपहार–पु० (सं०) भेंट, सौगात; पूजनद्रव्य; नैवेद्य; मेहमानोंके सामने परसा गया भोजन; सम्मान; क्षतिपूर्ति, संधिके लिए दी जानेवाली रकम; आमोद-प्रमोद।

उपहारी(रिन्)–वि० (सं०) भेंट नजर देनेवाला; पास लानेवाला।

उपहास–पु० (सं०) निंदासूचक, बनानेवाली हँसी; खिल्ली उड़ाना; निंदा, बदनामी; तमाशा।

उपहासक–वि० (सं०) उपहास करनेवाला।

उपहासास्पद–वि० (सं०) हँसने, खिल्ली उड़ाने योग्य, उपहास्य।

उपहासी*–स्त्री० उपहास।

उपहास्य–वि० (सं०) उपहासके योग्य।

उपहित–वि० (सं०) ऊपर, नीचे या पास रखा हुआ; युक्त, सहित; उपाधियुक्त; कुछ अच्छा।

उपही*–पु० अजनबी, बाहरी आदमी, परदेसी–'ये उपही कोउ कुँवर अहेरी'–गीता०।

उपहूति–स्त्री० (सं०) चुनौती।

उपहृत–वि० (सं०) नजर किया हुआ; निकट लाया हुआ; बलि चढ़ाया हुआ; परसा हुआ (भोजन); एकत्रीकृत।

उपह्वर–पु० (सं०) निर्जन या एकांत स्थान; नैकटच।

उपांग–पु० (सं०) छोटा अंग, अंगका विभाग; पूरक, सहायक वस्तु; वेदांगके पूरक विषय–पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र; टीका; भालपर अंकित पादुका-चिह्न; ढोल जैसा एक बाजा।

उपांजन–पु० (सं०) लीपना; सफेदी करना।

उपांत–पु० (सं०) छोर, किनारा; सीमा; आँखका कोना; सान्निध्य; अंतके पासका अक्षर; हाशिया। वि० अंतके पासका। **–स्थ**–वि०–हाशियापर लिखा जानेवाला; किनारेपर स्थित।

उपांतिक, उपांतिम–वि० (सं०) निकटवर्ती, पासका।

उपांतिका–स्त्री० संसद् या विधान-सभाके कमरेके उपान्तमें स्थित वह प्रकोष्ठ जहाँ सदस्यगण परस्पर विचार-विमर्श करते या किसी प्रश्नपर विशिष्ट पत्रकारोंसे बातचीत करते हैं (लाबी), गोष्ठीकक्ष।

उपांत्य–वि० (सं०) अंतके पासका, आखिरीसे पहलेका।

उपांशु–पु० (सं०) मंद स्वरमें मंत्रका जप; मौन।

उपाइ, उपाउ*–पु० दे० 'उपाय'।

उपाकरण–पु० (सं०) कार्यारंभ करनेका निमंत्रण; तैयारी, उपक्रम; उपाकर्म संस्कारके बाद वेदाध्ययनका आरंभ; बलिप्रदान।

उपाकर्म(न्)–पु० (सं०) उपक्रम; आरंभ; वेदपाठ आरंभ करनेके पहले श्रावणी पूर्णिमाको किया जानेवाला एक संस्कार।

उपाकृत–वि० (सं०) पास लाया हुआ; आहूत; बलि चढ़ाया हुआ; आरंभ किया हुआ। पु० बलिका पशु; आमंत्रण; दैवी उपद्रव; आरंभ।

उपाख्यान, उपाख्यानक–पु० (सं०) छोटी कथा या कहानी; पौराणिक कहानी।

उपागत–वि० (सं०) आया हुआ; घटित; वादा किया हुआ; पीड़ित।

उपागम–पु० (सं०) निकट आना; घटना; वादा; स्वीकृति; कष्टानुभूति।

उपाग्रहण–पु० (सं०) संस्कारपूर्वक वेदाध्ययनका आरंभ करना।

उपाटना*–स० क्रि० उखाड़ना।

उपाड़†–पु० एक रोग जिसमें शरीरकी खाल उचड़ जाती है (यह प्रायः तेज दवा आदि खानेके कारण होता है)।

उपाड़ना*–स० क्रि० दे० 'उपाटना'।

उपाती*–स्त्री० उत्पत्ति।

उपात्त–वि० (सं०) लब्ध, प्राप्त, अधिकृत; गृहीत; अनुभूत; प्रयुक्त; उल्लिखित; आरब्ध। पु० निर्मद हस्ती।

उपात्यय–पु० (सं०) विधि-विधानका परित्याग; औद्धत्य।

उपादान–पु० (सं०) ग्रहण; स्वीकार; कारण; वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बने; कार्यरूप प्राप्त करनेवाला कारण; प्रयोग; उल्लेख; कथन; इंद्रियोंको विषयोंसे पृथक् करना; शरीरका प्रयत्न। **–कारण**–पु० समवायी कारण। **–लक्षणा**–स्त्री० अजहत्स्वार्था लक्षणा (सा०)।

उपादि*–स्त्री० दे० 'उपाधि'।

उपादेय–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; प्रशस्त; उत्कृष्ट।

उपाधि–स्त्री० (सं०) छल, धोखा; बखेड़ा, उपद्रव, कष्ट; 'मोहि कारण सब भई उपाधी'–रामा०; विघ्न, बाधा; 'तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी'–रामा०; विशेष लक्षण; अवच्छेदक गुण-धर्म; चिह्न; प्रयोजन; अल्ल; पदवी; योग्यता या प्रतिष्ठा सूचित करनेवाला शब्द। **–धारी(रिन्)**–वि० जिसे कोई उपाधि दी गयी हो।

उपाधी(धिन्)–वि० (सं०) उपद्रवी, उत्पाती; छली, धोखेबाज।

उपाध्यक्ष–पु० (डिप्टी चेयरमैन; डिप्टी स्पीकर) किसी सभा, संस्था, विधान-सभा आदिका वह पदाधिकारी जो अध्यक्षके सहायक रूपमें या उसके अनुपस्थित रहनेपर उसके स्थानपर काम करता है।

उपाध्याय–पु० (सं०) शिक्षक, अध्यापक; वेद-वेदांग पढ़ानेवाला; ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि।

उपाध्याया–स्त्री० (सं०) अध्यापिका।

उपाध्यायानी–स्त्री० (सं०) गुरुपत्नी।

उपाध्यायी–स्त्री० (सं०) अध्यापिका; गुरुपत्नी।

उपाध्वा(ध्वन्)–पु० (सं०) पगडंडी, डाँड़, मेंड़।

उपानत्(ह्)–पु० (सं०) जूता; खड़ाऊँ।

उपानना*–स० क्रि० उत्पन्न करना।

उपानह–पु० जूता।

उपाना*–स० क्रि० उपजाना, उत्पन्न करना; करना।

उपापचयन–पु० (मेटॉबोलिज्म) जीवधारीके शरीरमें सम्पन्न होनेवाले समस्त रासायनिक प्रक्रमोंका टोटल योग।

उपाय–पु० (सं०) पास जाना; साधन; युक्ति, तदबीर; इलाज; यत्न; शत्रुपर विजयप्राप्तिकी युक्ति–साम, दान, भेद और दंड; घटना; आरंभ। **–चतुष्टय**–पु० शत्रुपर विजय प्राप्त करनेके चार उपाय–साम, दान, भेद और दंड। **–चिंता**–स्त्री० कार्यसिद्धिका उपाय सोचना। **–तुरीय**–पु० चौथा उपाय–दंड, हिंसात्मक उपाय।

उपायन–पु० (सं०) पास जाना, शिष्य बनना; भेंट, उपहार।

उपायिक–वि० (सं०) बढ़ानेवाला; उन्नत करनेवाला।

उपायी(यिन्)–वि० (सं०) उपायकुशल; उपाय करनेवाला; निकट जानेवाला; स्त्री-सहवासके लिए जानेवाला।

उपायुक्त–पु० आयुक्त (कमिश्नर)का सहायक या आयुक्तसे छोटा अधिकारी 'डिप्टी कमिश्नर'।

उपारंभ–पु० (सं०) आरंभ।

उपार–पु० (सं०) भूल; दोष; पाप; सामीप्य।

उपारत–वि० (सं०) प्रसन्न, मुदित; प्रत्यागत; संलग्न।

उपारना*–स० क्रि० उखाड़ना–'खायेसि फल अरु बिटप उपारे' –रामा०।

उपार्जक–वि० (सं०) कमाने, पैदा करनेवाला।

उपार्जन–पु०, **उपार्जना**–स्त्री० (सं०) कमाना; पैदा करना; हासिल करना।

उपार्जित–वि० (सं०) कमाया हुआ; प्राप्त; बटोरा हुआ।

उपार्थ–वि० (सं०) अल्प मूल्य या महत्त्वका।

उपालंभ–पु० (सं०) उलाहना, शिकायत; निंदा, दुर्वाक्य; वर्जन; देर लगाना। **–काव्य**–पु० ऐसा वियोग काव्य जिसमें प्रियके प्रति शिकायत या उलाहना आदिका वर्णन हो।

उपालंभन–पु० दे० 'उपालंभ'।

उपाव*–पु० दे० 'उपाय'।

उपावर्तन–पु० (सं०) वापस आना; चक्कर देना; पास आना; विरत होना।

उपावृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; विरत; उचित; चक्कर खाया हुआ; लौटा हुआ। पु० थकावट दूर करनेके लिए लोटनेवाला घोड़ा।

उपाव्याध–पु० (सं०) अरक्षित स्थान।

उपाश्रय–पु० (सं०) लघु आश्रय, सहारा।

उपासंग–पु० (सं०) सामीप्य; तूणीर।

उपास*–पु० उपवास, फाका।

उपासक*–वि० (सं०) उपासना करनेवाला, आराधक; भक्त; अनुयायी। पु० शूद्र; भिक्षुसे भिन्न बुद्धका पूजक। (स्त्री० 'उपासिका'।)

उपासन–पु० (सं०) सेवा, पूजा करना, आराधन, ध्यान आदिके द्वारा इष्टदेवका चिंतन; शराभ्यास; यज्ञाग्नि; क्षति पहुँचना।

उपासना–स्त्री० (सं०) सेवा, आराधना; भक्ति। *स० क्रि० आराधना करना, पूजा-सेवा करना।

उपासा–वि० जिसने उपास किया हो, निराहार। स्त्री० (सं०) सेवा; पूजा; इष्टदेवका ध्यान।

उपासित–वि० (सं०) पूजित, आराधित; पूजा करनेवाला।

उपासिता(तृ)–वि० (सं०) आराधक, पूजक।

उपासी*–वि० उपासक।

उपास्तमन–पु० (सं०) सूर्यास्त।

उपास्ति–स्त्री० (सं०) पूजा, आराधना।

उपास्त्र–पु० (सं०) साधारण या छोटा अस्त्र।

उपास्य–वि० (सं०) पूजा, आराधना करने या किये जाने योग्य।

उपाहार-पु० (सं०) जलपान, नाश्ता । **-गृह**-पु० वह स्थान या दूकान जहाँ जलपान, चाय आदिकी व्यवस्था हो, रेस्तराँ, होटल ।

उपाहित-वि० (सं०) रखा हुआ; पहना हुआ; संबद्ध; आरोपित; आपसकी रायसे किया हुआ । पु० अग्निभय ।

उपेंद्र-पु० (सं०) इंद्रके छोटे भाई, विष्णु, कृष्ण । **-वज्रा**-स्त्री० ११ वर्णोंका छंद, जिसके प्रति चरणमें जगण, तगण, जगण तथा अंतके दोनों वर्ण गुरु हों ।

उपेक्षक-वि० (सं०) उपेक्षा करनेवाला; उदासीन; धीर ।

उपेक्षण-पु० (सं०) अनादर, अवहेलना, तिरस्कार, लापरवाही करना; परित्याग; सहन; सतर्कता; आसन-नीतिका एक भेद ।

उपेक्षणीय-वि० (सं०) उपेक्षा करने योग्य ।

उपेक्षा-स्त्री० (सं०) अपेक्षाका उलटा, उदासीनता, अवहेलना, तिरस्कार, लापरवाही; सहन; कपट; ध्यान देना; योगकी एक भावना । **-यान**-पु० मुख्य शत्रुको जीतनेके बाद उसके सहायक आदिपर आक्रमण करना ।

उपेक्षित-वि० (सं०) जिसकी उपेक्षा की गयी हो ।

उपेक्ष्य-वि० (सं०) उपेक्षणीय ।

उपेखना*-स० क्रि० उपेक्षा करना ।

उपेत-वि० (सं०) मिला हुआ, प्राप्त; युक्त ।

उपेय-वि० (सं०) उपाय करने योग्य, जिसका उपाय हो सके, साध्य; पास जाने योग्य; प्राप्य ।

उपैना*-वि० खुला हुआ, नग्न । अ० क्रि० उड़ जाना ।

उपोढ-वि० (सं०) जमा किया हुआ, बटोरा हुआ; निकट लाया हुआ; व्यूहबद्ध; शुरू किया हुआ । पु० व्यूह ।

उपोत-वि० (सं०) लपेटा हुआ; आच्छादित, ढका हुआ (वस्त्रसे) ।

उपोती-स्त्री० (सं०) पूतिका नामक पौधा ।

उपोत्पाद, उपोत्पादन-पु० (बाइप्राडक्ट) वह गौण उत्पादन (उत्पादित वस्तु) जो किसी अन्य मुख्य वस्तुका निर्माण करते समय अनायास तैयार हो जाय या की जाय; उपजात ।

उपोदक-वि० (सं०) जलके पासका । पु० जलका सामीप्य ।

उपोदका, उपोदकी, उपोदिका, उपोदीका-स्त्री० (सं०) दे० 'उपोती' ।

उपोद्ग्रह-पु० (सं०) ज्ञान ।

उपोद्घात-पु० (सं०) आरंभ; प्रस्तावना, भूमिका; साधन; अवसर; उदाहरण; विश्लेषण ।

उपोद्बलन-पु० (सं०) समर्थन, पुष्टि ।

उपोषण-पु० (सं०) उपवास, लंघन ।

उपोषित-वि० (सं०) उपासा । पु० उपवास ।

उपोसथ-पु० (पा०) निराहार व्रत (बौ०) ।

उप्त-वि० (सं०) बोया हुआ ।

उफ़-अ० (अ०) दुःख, पीड़ा, पछतावा आदिका सूचक उद्गार, आह, हा । स्त्री० आह, अफसोस । **मु०-न करना**-पीड़ाको पी जाना, मुँहसे आहतक न निकालना ।

उफड़ना*-अ० क्रि० उफनना ।

उफ़ताद-स्त्री० (अ०) घटना; संयोग; आरंभ; क्लेश, पीड़ा ।

उफ़तादा-वि० (अ०) गिरा हुआ, दीन-हीन; परती (जमीन) ।

उफनना, उफनाना-अ० क्रि० उबलना, जोश खाना ।

उफान-स्त्री० उबाल, जोश खाकर ऊपर उठना ।

उफाल-स्त्री० लंबा डग ।

उबकना-अ० क्रि० कै करना ।

उबका-पु० अरिवन, कुएँसे पानी निकालनेके लिए कलसेमें फँसाया जानेवाला रस्सीका फंदा ।

उबकाई-स्त्री० कै, मतली ।

उबट-वि० (सं०) ऊबड़-खाबड़; टेढ़ा; कठिन (रास्ता) । पु० ऊबड़-खाबड़ रास्ता ।

उबटन-पु० सरसों, तिल, चिरौंजी आदिका लेप ।

उबटना-अ० क्रि०, स० क्रि० उबटन लगाना, उबटन आदिकी मालिश करना । * आघात आदिसे शरीरपर निशान पड़ना, उपटना; ददोरा पड़ना ।

उबटबटा*-पु० उद्वर्त्म, ऊबड़-खाबड़ रास्ता; गलत रास्ता, कुपंथ ।

उबटा†-पु० रास्तेमें उभड़े हुए छोटे पत्थरसे लगनेवाली पाँवकी चोट, ठोकर; धक्का, आघात ।

उबना*-अ० क्रि० ऊबना; ऊपर उठना ।

उबरना-अ० क्रि० बचना, छुटकारा पाना; बाकी बचना ।

उबरी-स्त्री० दे० 'ओबरी'; एक तरहकी काश्तकारी ।

उबलना-अ० क्रि० खौलना, उफनना, जोश खाना, क्रोधाविष्ट होना । **मु० -उबल पड़ना**-क्रुद्ध होकर अंड-बंड बकना, आपेसे बाहर हो जाना ।

उबसन-पु० बरतन माँजनेमें काम आनेवाला (घास-पात, नारियल-के रेशे, बाध आदिका) मूठा, उसकन ।

उबसना-स० क्रि बरतन माँजना । अ० क्रि० सड़ना, गलना ।

उबहन†-पु०, स्त्री० कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी ।

उबहना*-स० क्रि० (तलवार आदि) खींचना; ऊपर उठाना । उलीचना; जोतना । अ० क्रि० ऊपर उठना, उभरना । वि० बिना जूतेका ।

उबहनी†-स्त्री० रस्सी, उबहन ।

उबांत*-स्त्री० कै, उलटी ।

उबाना-स० क्रि० ऊबनेका कारण होना, तंग, परेशान करना; * उगाना । पु० कपड़ा बुननेमें राछके बाहर रह जानेवाला सूत । * वि० नंगे पाँव ।

उबार-पु० बचाव; छुटकारा; बचत, ओहार, पर्दा ।

उबारना-स० क्रि० बचाना; छुड़ाना, उद्धार करना ।

उबारा-पु० जानवरोंके पानी पीनेके लिए कुएँके पास बनाया जानेवाला कुंड ।

उबाल-पु० खौलकर ऊपर उठना, उफान, जोश; क्रोध आदिका भड़क उठना ।

उबालना-स० क्रि० खौलाना, जोश देना; पानीमें (बिना घी, मसालेके) पकाना ।

उबासी-स्त्री० जँभाई ।

उबाहना-स० क्रि० दे० 'उबहना' ।

उबिठना, उबीठना*-स० क्रि० अरुचि पैदा करना, उबाना; विरक्त करना । अ० क्रि० ऊबना, जी भर जाना ।

उबीधना*-अ० क्रि० फँसना; धँसना, चुभना ।

उबीधा-वि० कँटीला, गड़नेवाला, छेदनेवाला; गड़ा हुआ, धँसा हुआ; फँसा हुआ ।

उबेना*-वि० नंगे पाँव ।

उबेरना*-स० क्रि० दे० 'उबारना' ।

उभइ*-वि० दे० 'उभय' ।

उभटना†-अ० क्रि० अहंकार करना ।

उभड़ना-अ० क्रि० दे० 'उभरना' ।

उभन*-अ० क्रि० उठना ।

उभय-वि० (सं०) दोनों, दोमेंसे प्रत्येक । **-चर**-वि० जल-स्थल दोनों जगह रह सकनेवाला (प्राणी) । **-निष्ठ**-वि० दोनोंमें जिसकी निष्ठा हो; जो बीचमें होनेके कारण दोनों ओर सम्मिलित किया जा सके' 'कामन' । **-मुखी**-वि० स्त्री० गर्भवती । **-लिंग**-वि० दो लिंगोंमें प्रयुक्त होनेवाला । **-वादी(दिन्)**-वि० स्वर-ताल दोनोंका बोधक (बाजा) । **-विध**-वि० दोनों प्रकार का । **-विपुला**-स्त्री० एक वृत्त । **-वेतन**-वि० दोनों पक्षोंसे वेतन पानेवाला; विश्वासघाती । **-व्यंजन**-वि० जिसमें स्त्री पुरुष दोनोंके चिह्न हों । **-संभव**-पु० धर्मसंकट; धर्मसंकट जैसी स्थिति ।

उभयतः(तस्)-अ० (सं०) दोनों ओरसे, दोनों प्रकारसे, दोनों अवस्थाओंमें ।

उभयतो-'उभयतस्'का समासगत रूप । **-अनर्थापद**-पु० ऐसी स्थिति जिसमें दो ही मार्ग हों और वे भी अनिष्टकर हों (कौ०) । **-अर्थापद**-पु० ऐसा करनेमें भी विघ्न-बाधा और वैसा करनेमें भी (कौ०) । **-दंत**-वि० जिसके दोनों ओर दाँत हों (हाथी, शूकर) । **-नाभि**-वि० जिसके दोनों ओर नाभि हो (पहिया) । **-भागी(गिन्)**-पु० मित्र और अमित्र दोनोंका

एक साथ उपकार करनेवाला राजा (कौ०)। **-मध्यस्थ**-वि० (इंटरमीडियरी) दो व्यक्तियों या पक्षोंके बीच काम करनेवाला। **-मुख**-वि० दोनों ओर मुँहवाला। **-मुखी**-वि० स्त्री० ब्याती हुई (गाय)। **-लिंग**-वि० (सं०) दो लिंगोंमें प्रयुक्त होनेवाला (शब्द); स्त्री तथा पुरुष, दोनोंके चिह्नवाला (व्यक्ति)। **-लिंगी**-दे० 'उभयलिंग'।

उभयात्मक-वि० (सं०) दोनों रूप, प्रकारसे बना; दोनोंसे बना।

उभयान्वयी(यिन्)-वि० (सं०) दोनों (पद और वाक्य) से जुड़नेवाला या दो पदों, वाक्योंको जोड़ने या उनके बीचमें आनेवाला (व्या०)।

उभयार्थ-वि० (सं०) द्व्यर्थी; अस्पष्ट।

उभयालंकार-पु० (सं०) वह अलंकार जो शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों हो।

उभयाविमित्र-पु० (सं०) वह राजा जो युद्धरत दो राजाओंमेंसे किसीका भी अमित्र न बने।

उभरना-अ० क्रि० ऊपर उठना, ऊँचा होना; (दबी हुई चीज का) प्रकट होना; खुलना; बढ़ना; जवानीपर आना; गाय आदिका मस्त होना; धन-मानकी वृद्धि होना; हिलना, उकसना।

उभरौहाँ*-वि० उभरता हुआ; ऊपर उठा हुआ।

उभाड़-पु० दे० 'उभार'।

उभाड़ना-स० क्रि० दे० 'उभारना'।

उभाना-अ० क्रि० अभुआना, सिर हिलाना और हाथ-पैर पटकना-'एक होय तौ उत्तर दीजै सूर सु उठी उभानी'-सू०।

उभार-पु० उभरने, बढ़नेकी क्रिया या अवस्था, उठान, बाढ़। **-दार**-वि० उभरा हुआ।

उभारना-स० क्रि० ऊपर उठाना, लाना; बढ़ाना; भड़काना; उकसाना।

उभिटना-अ० क्रि० हिचकना, अटकना।

उभै*-वि० दे० 'उभय'।

उभौ*-वि० उभय, दोनों।

उमंग-स्त्री० उल्लास; मौज; जोश; उभार; अरमान, आकांक्षा।

उमँगना*-अ० क्रि० उमंगमें आना, उल्लसित होना; जोशमें आना।

उमंड-पु० उठान; जोश।

उमंडना-अ० क्रि० उमड़ना।

उम-पु० (सं०) नगर; घाट।

उमकना†-अ० क्रि० उमगना।

उमग, उमगन*-स्त्री० दे० 'उमंग'।

उमगना*-अक्रि० दे० 'उमँगना'।

उमगाना*-स० क्रि० उमगनेका कारण होना; उत्साहित करना।

उमचना*-अ० क्रि० हुमचना; चौंकना।

उमझना†-अ० क्रि० उमड़ना, ऊपर आना, उठना, 'जो कुछ मनमें उमझा, कह दिया'-टूटे काँटे।

उमड़-स्त्री० बाढ़; धावा; घिराव।

उमड़ना-अ० क्रि० बढ़कर फैलना; बह चलना; छाना; जोशमें आना; क्षुब्ध होना। **मु०-घुमड़ना**-घूम-घूमकर फैलना।

उमड़ाना-स० क्रि० 'उमड़ना' का प्रे०।

उमड़ाव-पु० उमड़नेका भाव या क्रिया।

उमदगी†-स्त्री० दे० 'उम्दगी'।

उमदना*-अ० क्रि० दे० 'उमँगना'।

उमदा-वि० दे० 'उम्दा'।

उमदाना*-अ० क्रि० मस्त होना; जोशमें आना।

उमन्नै*-अ० उन्मनभावसे (रासो)।

उमर-स्त्री० दे० 'उम्र'। **-क़ैद**-स्त्री० जिंदगीभरकी कैद। **-क़ैदी**-वि०, पु० जिसे उमरकैदकी सजा हुई हो। **-पट्टा**-पु० जिंदगीभरका ठेका।

उमरती*-स्त्री० एक बाजा।

उमरा-पु० (अ०) धनिक; सरदार; सामंत, दरबारी (अमीरका बहु०)।

उमराव*-पु० दे० 'उमरा'।

उमस-स्त्री० दे० 'ऊमम'।

उमहना*-अ० क्रि० दे० 'उमड़ना'; उमंगमें आना, प्रसन्न होना।

उमहाना-स० क्रि० उमड़ाना; उमाहना।

उमा-स्त्री० (सं०) पार्वती; दुर्गा; कांति; कीर्ति; शांति; रात्रि; हलदी; अलसी; चंद्रकांतमणि। **-कट**-पु० अलसीका पराग। **-कांत**-पु० शिव। **-गुरु,-जनक**-पु० हिमाचल। **-धव,-नाथ,-पति, सहाय**-पु० शिव। **-धो***-पु० दे० 'उमा-धव'। **-वन**-पु० बाणपुर या देवीकोट नगर। **-सुत**-पु० कार्त्तिकेय; गणेश।

उमाकना*-स० क्रि० दे० 'उखाड़ना'।

उमाकिनी*-वि०, स्त्री० उखाड़नेवाली।

उमाचना*-स० क्रि० उभारना, निकालना।

उमाद*-पु० दे० 'उन्माद'।

उमाह*-उत्साह, उमंग; आनंद-'प्रगट करौ सब चातुरी मनमें विपुल उमाह'-चाचा हित०।

उमाहना*-अ० क्रि० उमड़ना, उत्साहित होना, आवेशमें आना। स० क्रि० उमड़ाना।

उमाहल*-वि० उत्साह-भरा।

उमेठन-स्त्री० ऐंठन, मरोड़।

उमेठना-स० क्रि० मरोड़ना, ऐंठना।

उमेठवाँ-वि० घुमावदार, ऐंठनवाला; जो उमेठकर घुमाया जाता हो।

उमेड़ना*-स० क्रि० दे० 'उमेठना'।

उमेद†-स्त्री० दे० 'उम्मीद'।

उमेलना*-स० क्रि० प्रकट करना, खोलकर बताना; वर्णन करना।

उम्दगी-स्त्री० (अ०) अच्छाई, खूबी।

उम्दा-वि० (अ०) अच्छा, बढ़िया, उत्तम।

उम्मत-स्त्री० (अ०) समुदाय; किसी खास पैगंबरके अनुयायी; संप्रदाय।

उम्मस-स्त्री० पीड़ा; दे० 'ऊमस'।

उम्मी-स्त्री० दे० 'उंबी'।

उम्मीद-स्त्री० (फा०) आशा; अपेक्षा; आकांक्षा, इच्छा; गर्भ (ला०)। **-वार**-वि० आशा, अपेक्षा रखनेवाला; नौकरी या पदविशेषका प्रार्थी। पु० नौकरीकी आशासे बिना वेतन काम करनेवाला; काम सीखनेवाला; चुनावके लिए खड़ा होनेवाला। **मु०-बर आना**-इच्छा पूरी होना, अभीष्ट सिद्ध होना। **-से होना**-गर्भवती होना।

उम्मुल किताब-स्त्री० (अ०) कुरान; सूरये फातिहा।

उम्मेद, उम्मैद-स्त्री० दे० 'उम्मीद'।

उम्र-स्त्री० (अ०) जीवनका उतना काल जितना बीत चुका हो, वयस, अवस्था; आयु। **मु०-का पैमाना या प्याला भर जाना**-आयुका अंत आ जाना, मृत्यु निकट होना। **-टेरना**-किसी तरह जिंदगीके दिन पूरे करना।

उरंग-पु० (सं०) साँप; नागकेसर।

उरंगम-पु० (सं०) साँप।

उरः-'उरस्'का समासगत रूप। **-कपाट**-पु० चौड़ा और मजबूत सीना। **-क्षत**-वि० हृद्रोगसे ग्रस्त। **-क्षय**-पु० फेफड़ोंका यक्ष्मा रोग। **-सूत्रिका**-स्त्री० गलेमें पड़ा हुआ मुक्ताहार। **-स्तंभ**-पु० दमा।

उर (स्)-वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम। पु० छाती; हृदय, मन। **मु०-आनना,*-लाना**-छातीसे लगाना; सोचना, ध्यान करना। **-धरना***-मनमें रखना।

उरई-स्त्री० खस।

उरकना*-अ० क्रि० रुकना, ठहरना।

उरग-पु० (सं०) (छातीके बल रेंगनेवाला) साँप, नाग। **-भूषण**-पु० शिव। **-राज**-पु० वासुकि; शेषनाग। **-लता**-स्त्री० नागवल्ली, पान। **-शत्रु**-पु० गरुड़। **-सारचंदन**-पु० चंदनका एक भेद। **-स्थान**-पु० पाताल।

उरगना*-स० क्रि० झेलना; अंगीकार करना।

उरगाद-पु० (सं) गरुड़; मोर।

उरगाय*-वि०, पु० दे० 'उरुगाय'।

उरगारि, उरगाशन-पु० (सं०) गरुड़; मोर।

उरगिनी*–स्त्री० सर्पिणी।

उरगी–स्त्री० (सं०) मादा साँप, सर्पिणी।

उरज, उरजात†–पु० दे० 'उरोज'।

उरझना*–अ० क्रि० दे० 'उलझना'।

उरझाना*–स० क्रि० दे० 'उलझाना'; अ० क्रि० फँसना 'वरणि न जाहीं। उर उरझाहीं'–राम०।

उरझेर*–पु० झकोरा।

उरझेरी*–स्त्री० उलझन; हृदयकी व्याकुलता।

उरण–पु० (सं०) मेढ़ा, भेड़ा; एक असुर।

उरणक–पु० (सं०) मेष; बादल।

उरणाक्ष, उरणाक्षक, उरणाख्य, उरणाख्यक–पु० (सं०) दद्रुघ्न नामक पौधा।

उरणी–स्त्री० (सं०) भेड़।

उरद–पु० दालके वर्गका एक अनाज, माष। **मु०–के आटेकी तरह ऐंठना**–क्रुद्ध होना; इतराना। **–पर सफेदी**–बहुत कम मात्रा।

उरदावन†–स्त्री० अदवान, उंचन।

उरदी†–स्त्री० दे० 'उरद'; दे० 'वरदी'।

उरध*–अ०, वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

उरधारना*–स० क्रि० फैलाना, विखेरना; उधेड़ना।

उरना*–अ० क्रि० दे० 'उड़ना'।

उरप-तरप–पु० नृत्यका एक भेद।

उरबसी*–स्त्री० दे० 'उर्वशी'; एक भूषण।

उरबी*–स्त्री० दे० 'उर्वी'।

उरभ्र–पु० (सं०) भेड़; एक विषैला कीड़ा; दद्रुघ्न पौधा।

उरमंडन*–पु० प्रियतम (हृदय का आभूषण)–'गाढ़े भुजदंडनके बीच उरमंडनकों धारि...'–घना०।

उरमना*–अ० क्रि० लटकना, झूलना।

उरमाना*–स० क्रि० लटकाना, झुलाना।

उंरमाल*–पु० रूमाल।

उरमी*–स्त्री० दे० 'ऊर्मि'; 'तू तो षट् उरमी रहित सदा एक रस'–सुन्दरदास।

उररना*–अ० क्रि० उमंगित होगा।

उरला*–वि० पिछला; इस तरफका; विरल, निराला।

उरविज*–पु० धरती-पुत्र, मंगल।

उरश्छद–पु० (सं०) छातीपर बाँधनेका कवच।

उरस–वि० (सं०) चौड़ी छातीवाला; *नीरस, सीठा।

उरसना*–स० क्रि०. उठाना-गिराना, ऊपर-नीचे करना।

उरसिज, उरसिरुह–पु० (सं०) स्तन, उरोज।

उरसिल–वि० (सं०) चौड़ी छातीवाला।

उरस्क–पु० (सं०) छाती।

उरस्त्राण–पु० (सं०) दे० 'उरश्छद'।

उरस्य–वि० (सं०) वैध; औरस, वक्षःस्थल-संबंधी; जिसमें छाती याने सीनेका प्रयत्न अपेक्षित हो; उत्तम। पु० औरस पुत्र; सेनाका अगला भाग (कौ०)।

उरस्वान् (वत्)–वि० (सं०) चौड़ी छातीवाला।

उरहन, उरहना*–पु० दे० 'उलाहना'।

उरा–स्त्री० धरती।

उराउ, उराय*–पु० दे० 'उराव'।

उराना*–अ० क्रि० खतम हो जाना; चुक जाना।

उरारा*–वि० प्रशस्त, फैला हुआ, विस्तृत।

उराव*–पु० उत्साह; उमंग, हौसला; चाह; आनंद।

उराहना*–पु० दे० 'उलाहना'। †स० क्रि० दे० 'ओगारना'।

उरिन*–वि० दे० 'उऋण'।

उरु*–पु० दे० 'ऊरु'। वि० (सं०) विशाल; विस्तृत; प्रचुर; वहुल; श्रेष्ठ, महान्; मूल्यवान्। **–काल, –कालक–**पु० महाकाल लता। **–क्रम–**वि० लंबे डग भरनेवाला; उच्च वर्गका। पु० विष्णु; शिव; लंबा डग। **–गाय–**वि० बहु-प्रशंसित; चलने-फिरनेके लायक विस्तृत। पु० विष्णु; सोम; इंद्र; प्रशस्त स्थान; स्तुति। **–जन्मा (न्मन्)–**वि० सद्वंश-जात। **–विक्रम–**वि० पराक्रमी; बलवान्। **–हार–**पु० मूल्यवान् हार।

उरुजना*–अ० क्रि० दे० 'उलझना'।

उरुवा–पु० रुरुवा पक्षी।

उरुवु, उरुवुक, उरुवूक–पु० (सं०) एरंड वृक्ष; रक्त एरंड।

उरूक–पु० (सं०) एक तरहका उल्लू।

उरूज–पु० (अ०) ऊपर उठना, चढ़ना; उत्थान; वढ़ती। **–(जो) जवाल–**पु० उत्थान-पतन, वृद्धि-ह्रास।

उरे*–अ० परे, दूर; पास।

उरेखना*–सं० क्रि० उरेहना; सोचना; देखना।

उरेह–पु० चित्रकारी; चित्र; आलेखन।

उरेहना–स० क्रि० तसवीर बनाना, चित्र खींचना। 'पुनिधनि सिंह उरेहैं लागैं'–प०।

उरो–'उरस्'का समासगत् रूप। **–गम–**पु० सर्प। **–ग्रह–**पु० पार्श्वशूल, 'प्ल्यूरिसी'। **–ज, –रुह–**पु० स्तन, कुच। **–विवंध–**पु० दमा।

उर्जित–वि० (सं०) वर्द्धित; शक्तिशाली; प्रख्यात, घमंडी; परित्यक्त।

उर्ण–पु० (सं०) दे० 'ऊर्ण'। **–नाभ–**पु० दे० 'ऊर्णनाभ'। **–पर्णी–**स्त्री० वन-उरदी।

उर्णा–स्त्री० (सं०) दे० 'ऊर्णा'।

उर्द–पु० दे० 'उरद'।

उर्दू–पु० (तु०) लश्कर; छावनी। स्त्री० हिंदी या हिंदुस्तानीका वह रूप जिसमें अरबी-फारसी शब्द अधिक व्यवहृत होते हैं और जो फारसी अक्षरोंमें लिखा जाता है। **–ए मुल्ला–**स्त्री० उच्च उर्दू, टकसाली उर्दू। **–बाज़ार–**पु० लश्करका बाजार; वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।

उद्र–पु० (सं०) ऊदविलाव।

उर्ध*–वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व'।

उर्फ़–पु० (अ०) अधिक प्रचलित या प्रसिद्ध नाम, पुकारनेका नाम, उपनाम।

उर्मि–स्त्री० दे० 'ऊर्मि'।

उर्मिला–स्त्री० (सं०) राजा सीरध्वजकी पुत्री, लक्ष्मणकी पत्नी।

उर्वर–वि० उपजाऊ; जिससे बहुतसे विचार, सुझाव आदि निकलें (–मस्तिष्क)।

उर्वरक–पु० (फर्टिलाइजर) वह रासायनिक खाद जो भूमिकी उर्वरता बढ़ानेमें सहायक हो।

उर्वरता–स्त्री० उपजाऊपन।

उर्वरा–वि०, स्त्री० उपजाऊ। स्त्री० (सं०) उपजाऊ, जरखेज जमीन; जमीन।

उर्वशी–स्त्री० (सं०) इंद्रलोककी एक प्रसिद्ध अप्सरा जो शापवश कुछ दिन भूलोकमें पुरूरवाकी पत्नी बनकर रही। **–तीर्थ–**पु० महाभारतवर्णित एक तीर्थस्थान। **–रमण, –वल्लभ, –सहाय–**पु० पुरूरवा।

उर्वारु, उर्वारुक–पु० (सं०) खरबूजा; ककड़ी।

उर्विजा*–स्त्री० दे० 'उर्वीजा'।

उर्वी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; जमीन। **–जा–**स्त्री० पृथ्वीसे उत्पन्न, सीता। **–तल–**पु० धरातल, पृथ्वीकी सतह। **–धर–**पु० पर्वत; शेषनाग। **–धव, –पति–**पु० राजा। **–रुह–**पु० पौधा, वृक्ष।

उर्वीश, उर्वीश्वर–पु० (सं०) राजा।

उर्स–पु० (अ०) किसी मुसलमानकी निधनतिथिको मनाया जानेवाला उत्सव (फातिहाख्वानी और मजलिस)।

उलंग–वि० नंगा।

उलंगना, उलंघना*–स० क्रि० लाँघना, उल्लंघन करना; न मानना।

उलंघन–पु० दे० 'उल्लंघन'।

उलँघना*–स० क्रि० लाँघना, उल्लंघन करना।

उलका*–स्त्री० दे० 'उल्का'।

उलग*–पु० परदेश; प्रवास।

उलगाणा*–पु० प्रवासी (वीसल०)

उलचना–स० क्रि० दे० 'उलीचना'।

उलछना*–स० क्रि० उलीचना; छितराना, फैलाना।

उलछा–पु० वीज वोनेका एक तरीका ।

उलछारना*–स० क्रि० ऊपरकी तरफ फेंकना; प्रकट करना ।

उलझन–स्त्री० फँसाव; गुत्थी; कठिनाई; चिंता; सोच ।

उलझना–अ० क्रि० तागा, डोरी आदिका फँस जाना, गुँथ जाना; लिपटना; झगड़ा, तकरार करना; आसक्त होना; लीन या मशगूल होना; अटक जाना । **–पुलझना**–अच्छी तरह फँस जाना । **उलझा-सुलझा**–टेढ़ा-सीधा; वुरा-भला ।

उलझा†–पु० उलझन ।

उलझाना–स० क्रि० फँसाना; गिरहें, गुत्थियाँ डाल देना । अटकाना; लगाये रखना; टेढ़ा करना । * अ० क्रि० उलझना ।

उलझाव–पु० उलझना; वखेड़ा; फेर ।

उलझेड़ा–पु० दे० 'उलझाव' ।

उलझौंहा*–वि० उलझानेवाला; फँसाने, लुभानेवाला ।

उलटकंवल–पु० एक पौधा जिसकी छाल रस्सी बनाने और दवाके काम आती है ।

उलटना–अ० क्रि० सीधेका औंधा होना; एकसे दूसरे रुख होना; विपरीत स्थितिमें जाना; पलटना; घूमना, मुड़ना; उमड़ना; टूट पड़ना; कुछका कुछ हो जाना, विलकुल वदल जाना; अस्त-व्यस्त होना; नष्ट होना; चित होना; वेहोश होना; मरना; गर्वसे वदल जाना; ऐंठना । स० क्रि० नीचेका ऊपर कर देना; एकसे दूसरे रुख करना, पलटना; चित करना; नष्ट करना; वदल देना; कुछका कुछ कर देना; वात दुहराना; उड़ेलना; कै करना; खोदकर फेंक देना; रटना; वोये खेतको फिरसे वोनेके लिए जोतना; सरसरी तौरपर देखना या पढ़ना । मु० **–पलटना**–ऊपर-से नीचे, इस बलसे उस वल करना; अस्त-व्यस्त करना; कुछका कुछ कर देना; इस वलसे उस वल होना, पलटे खाना ।

उलट-पलट–पु० अदल-वदल, परिवर्तन; गड़वड़; अस्तव्यस्तता । वि० अस्तव्यस्त; परिवर्तित । अ० उलट-पुलटकर, पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह–'उलट-पुलट लंका सब जारी'–रामा० ।

उलट-फेर–पु० उलट-पुलट, परिवर्तन ।

उलटवाँसी–स्त्री० (कवितामें) ऐसी उक्ति जिसमें सामान्यसे उलटी वात कही गयी हो पर जिसका कोई गूढ अर्थ निकलता हो ।

उलटा–वि० जो स्वाभाविक स्थितिमें न होकर विपरीत स्थितिमें हो, जिसका ऊपरका भाग नीचे या दाहिनेका वायें हो; औंधा; वायाँ; विपरीतक्रम; असमान; जो होना चाहिये उसके विपरीत, वेठीक, वेढंगा; विरुद्ध; वर-अकस । (स्त्री० 'उलटी') अ० जैसे होना चाहिये उसके विपरीत, अनुचित रूपमें, वेजा तौरपर । पु० एक पकवान, एक तरहका वेसनका पराठा; चीला । **–ज़माना**–वह काल जिसमें उलटी रीति चलती हो, अंधेरका जमाना । **–तवा**–वि० वहुत काला । **–पलटा,–पुलटा**–वि० अंडवंड, वेसिर-पैरका; क्रम-विरुद्ध । **–पलटी**–स्त्री० उलट-पलट । **–सीधा**–वि० सही-गलत; अच्छा-वुरा । मु०–**(टी) खोपड़ीका**–मूर्ख, नासमझ, उलटी अक्लवाला । **––गंगा बहना**–रीतिविरुद्ध या अनहोनी वातका होना । **–गंगा वहाना**–उलटी रीति चलाना; रीतिविरुद्ध वात करना । **–पट्टी पढ़ाना**–वहकाना । **–माला फेरना**–मारण आदिका प्रयोग करना; बुरा मनाना, कोसना । **–साँस चलना**–दम उखड़ना; मरणासन्न होना । **–साँस लेना**–जल्द-जल्द साँस लेना; मरणासन्न होना । **–सीधी सुनाना**–खरी-खोटी सुनाना, फटकारना । **–हवा बहना**–उलटी रीति चलना । **–(टे) काँटे तौलना**–कम तौलना । **–छुरेसे मूँड़ना**–वेवकूफ बनाकर पैसा ऐंठना । **–पाँव फिरना, –पाँव लौटना**–तुरत लौटना । **–मुँह गिरना**–दूसरेकी क्षति करनेके प्रयत्नमें अपनी क्षति कर लेना ।

उलटाना*–स० क्रि० दे० 'उलटना' ।

उलटाव–पु० चक्कर; पलटाव ।

उलटी–स्त्री० कै, वमन; मालखंभकी एक कसरत ।

उलटे–अ० जैसा होना चाहिये उसके विपरीत, वेजा तौरपर ।

उलठ-पुलठ*–दे० 'उलट-पुलट' ।

उलठना*–स० क्रि० दे० 'उलटना' ।

ज़लठाना*–स० क्रि० दे० 'उलटाना' ।

उलथना*–अ० क्रि० उलटना; उछलना–'लहरैं उठीं समुद–उलथाना–प० । स० क्रि० उलट-पलट करना ।

उलथा–पु० करवट बदलना; बैठे-बैठे अंगोंको मोड़ना; कलावाजी; एक तरहका नाच; दे० 'उल्था' । मु०**–मारना**–कलावाजी करते हुए (पानीमें) कूदना; करवट बदलना ।

उलद*–स्त्री० झड़ी, लगातार वर्षा ।

उलदना*–स० क्रि० उड़ेलना; वरसाना ।

उलप–पु० (सं०) एक तृण, विस्तीर्णा लता ।

उलपी(पिन्)–पु० (सं०) सूंस ।

उलप्य–पु० (सं०) रुद्र ।

उलफ़त–स्त्री० (अ०) प्रेम, मुहब्बत, चाह ।

उलमना*–अ० क्रि० दे० 'उरमना'; उठँगना ।

उलमा–पु० (अ०, 'आलिम'का बहु०) विद्वान् लोग ।

उलरना*–अ० क्रि० ऊपर-नीचे होना; उलार होना; उछलना; झपटना; धावा करना ।

उलरुआ–पु० उलार होनेपर नीचे जानेसे गाड़ीको रोकनेके लिए पीछेकी ओर लगायी जानेवाली लकड़ी ।

उललना*–अ० क्रि० ढरकना; उलटना ।

उलवी–स्त्री० एक तरहकी मछली ।

उलसना*–अ० क्रि० शोभित होना; उल्लसित होना ।

उलहना*–अ० क्रि० फूटना; निकलना, –'...उलहे पात नयें'–सू०; खिलना, हुलसना । पु० दे० 'उलाहना' ।

उलाँक–पु० चिट्ठी भेजने, पहुँचाने आदिकी व्यवस्था, डाक; एक तरहकी नाव । **–पत्र**–पु० पोस्टकार्ड ।

उलाँकी–पु० डाकका हरकारा ।

उलाँघना*–स० क्रि० लाँघना; आज्ञाका उल्लंघन करना ।

उलार–वि० (अधिक बोझसे) पीछेकी ओर झुका हुआ ।

उलारना*–स० क्रि० उछालना; ओलारना ।

उलारा–पु० चौतालके अंतमें गाया जानेवाला पद ।

उलाह*–पु० उछाह, उल्लास, उमंग–'मिले मग आनि अनेक उलाह'–घन० ।

उलाहना–पु० किसी व्यवहार, वरतावकी शिकायत, उपालंभ । * स० क्रि० दोष देना, गिला करना ।

उलिंद–पु०. (सं०) शिव; एक प्राचीन देश ।

उलिचना, उलीचना–स० क्रि० नाव, हौदी आदिमें अधिक पानी भर जानेसे उसे किसी वरतन या हाथसे वाहर फेंकना; मुक्त हस्तसे खर्च करना 'दुहूँ हाथ उलीचिए यहै सयानो काम ।'

उलुंबा–स्त्री० (सं०) दे० 'उंबी' ।

उलुप–पु० (सं०) दे० 'उलप' ।

उलुपी(पिन्), उलूपी(पिन्)–पु० (सं०) दे० 'उलपी' ।

उलूक–पु० (सं०) उल्लू पक्षी, घुग्घू; इंद्र; कणाद ऋषि; महाभारतमें उल्लिखित एक देश; एक तृण, दर्भ; * लुक, उल्का । **–दर्शन**–पु० वैशेषिक दर्शन ।

उलूखल–पु० (सं०) ओखली; खल; गूलरकी लकड़ीका डंडा; गुग्गुल; कानका एक गहना ।

उलूखलक–पु० (सं०) गुग्गुल; छोटी ओखली ।

उलूत–पु० (सं०) अजगर साँप ।

उलूपी–स्त्री० (सं०) एक नागकन्या जिसका व्याह अर्जुनसे हुआ था ।

उलेड़ना, उलैँड़ना*–स० क्रि० उड़ेलना ।

उलेल*–पु० वाढ़; उमंग; उछल-कूद । वि० लापरवाह, अल्हड़; अवोध ।

उल्का–स्त्री० (सं०) लुक; लौ; लौह मिश्रित पत्थरके टुकड़े जो अन्तरिक्षसे पृथ्वीके वायुमण्डलमें प्रवेश करते हैं; मशाल । **–चक्र**–पु० ताराओंकी एक विशेष स्थिति (ज्यो०) । **–जिह्व**–पु० रामायणमें उल्लिखित एक राक्षस । **–धारी(रिन्)**–पु० मशालची । **–पात**–पु० आकाशसे जलते पिंडका टूटकर गिरना । **–पाषाण**–पु० जमीनपर गिरी हुई उल्का जो पत्थरकी सिल जैसी होती है, 'मीटियर स्टोन' । **–माली(लिन्)**–पु० शिवका एक गण । **–मुख**–पु० प्रेतोंका एक भेद, अगिया वैताल; एक तरहका गीदड़ ।

उल्काश्म–पु० (मीटिओराइट) दे० 'उल्कापाषाण' ।

उल्कुषी–स्त्री० (सं०) उल्का; मशाल ।

उल्था–पु० भाषांतर, तर्जुमा; अनुवाद ।

उल्ब–पु० (सं०) दे० 'उल्व' ।

उल्बण–वि०, पु० (सं०) दे० 'उल्वण' ।

उल्ब्य–पु० (सं०) शरीरके तीनों तत्त्वों–वात, पित्त, श्लेष्मा–मेंसे किसी एकका दूषित हो जाना; विपदा । वि० गर्भाशयस्थ ।

उल्मुक–पु० (सं०) लुक, लुकाठी; मशाल ।

उल्लंघन–पु० (सं०) लाँघना; विरुद्धाचरण; (आज्ञा, नियम, संधि आदिको) तोड़ना, दे० 'अतिक्रमण' (वायोलेशन) ।

उल्लंघना*–स० क्रि० उल्लंघन करना ।

उल्लंघित–वि० (सं०) लाँघा हुआ; तोड़ा हुआ; अतिक्रांत ।

उल्लंफन–पु० (सं०) कुदान ।

उल्लंबित–वि० (सं०) खड़ा; उठा हुआ ।

उल्लकसन–पु० (सं०) रोमांच ।

उल्लल–वि० (सं०) काँपता, हिलता हुआ; रोमश; बहु-रोगग्रस्त ।

उल्ललित–वि० (सं०) आंदोलित, क्षुब्ध; उठा हुआ ।

उल्लस–वि० (सं०) चमकीला; प्रसन्न; प्रकट होनेवाला ।

उल्लसन–पु० (सं०) उल्लसित होना; हर्ष, खुशी; रोमांच, पुलक ।

उल्लसित–वि० (सं०) हर्षयुक्त, मुदित; चमकता हुआ; निकाला हुआ (खड्ग); हिलता हुआ ।

उल्लाघ–वि० (सं०) रोगमुक्त या रोगसे मुक्त होता हुआ; दक्ष; शुद्ध; दुष्ट; प्रसन्न । पु० काली मिर्च ।

उल्लाप–पु० (सं०) मुँहदेखी बात कहना, मीठी बातोंसे तुष्ट करना; ऊँची आवाजमें पुकारना; चीख-पुकार; रोगादिके कारण स्वरका परिवर्तन ।

उल्लापन–वि० (सं०) नश्वर, क्षणस्थायी । पु० चापलूसी ।

उल्लापी (पिन्)–वि० (सं०) चाटुकार, खुशामदी ।

उल्लाप्य–पु० (सं०) एक उपरूपक; एक तरहका गीत ।

उल्लाल–पु० (सं०) एक मात्रिक छंद ।

उल्लाला–पु० (?) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें १३-१३ मात्राएँ हों ।

उल्लास–पु० (सं०) हर्ष; आह्लाद; उमंग; आरंभ; क्रांति; प्रकाश; परिच्छेद; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ किसीके गुण या दोषसे किसी दूसरेका गुण या दोष होना दिखाया जाय ।

उल्लासन–पु० (सं०) चमक, कांति; प्रकाश; नचाना; उछलनेमें प्रवृत्त करना ।

उल्लासना–स्त्री० (सं०) प्रकट करनेकी क्रिया । *स० क्रि० प्रकट करना; प्रसन्न करना ।

उल्लासित–वि० (सं०) चमकाया हुआ; हर्षित; प्रकट किया हुआ ।

उल्लासी (सिन्)–वि० (सं०) क्रीडा करनेवाला; नाचनेवाला ।

उल्लिंगित–वि० (सं०) प्रसिद्ध, ख्यात ।

उल्लिखित–वि० (सं०) लिखा हुआ; जिसकी चर्चा पहले की गयी हो, वर्णित; खोदा हुआ; उरेहा हुआ ।

उल्लीढ–वि० (सं०) माँजा हुआ; रगड़ा हुआ; चमकाया हुआ ।

उल्लुंचन–पु० (सं०) उखाड़ना (बाल आदि) ।

उल्लुंठा–स्त्री० (सं०) व्यंग्योक्ति ।

उल्लू–पु० एक पक्षी जिसे दिनमें नहीं दिखाई देता और जो बहुत मनहूस माना जाता है, उलूक । वि० मूर्ख, नासमझ । मु०**–का गोश्त खिलाना**–बेवकूफ बनाना; वशमें कर लेना । **–का पट्ठा**–निपट मूर्ख । **–बनाना**–बेवकूफ बनाना; ठगना । **–बोलना**–उजड़ जाना, वीरान होना ।

उल्लेख–पु० (सं०) चर्चा, जिक्र; लिखाई; खुदाई; अर्थालंकारका एक भेद, जिसमें एक ही वस्तुका विषयभेद या द्रष्टाभेदके कारण, अनेक प्रकारसे वर्णन किया जाय ।

उल्लेखन–पु० (सं०) उल्लेख करना; लिखना; खोदना; वमन; ऊपर उठाना ।

उल्लेखनीय, उल्लेख्य–वि० (सं०) उल्लेख करने योग्य; कहने, बताने योग्य ।

उल्लोच–पु० (सं०) चँदोवा ।

उल्लोल–वि० (सं०) अति चंचल । पु० बड़ी लहर ।

उल्व–पु० (सं०) गर्भस्थ बच्चेपर लिपटी रहनेवाली झिल्ली, आँवल; गर्भाशय ।

उल्वण–वि० (सं०) उत्कट; प्रबल । पु० आँवल ।

उवना*–अ० क्रि० दे० 'उगना' ।

उवनि*–स्त्री० उदय; प्रकट होना ।

उवर*–पु० उदर, पेट (बीसल०) ।

उशती, उषती–स्त्री० (सं०) कटूक्ति; अनिष्टकर वाक्य ।

उशना (नस)–पु० (सं०) शुक्राचार्य ।

उशबा–पु० (अ०) एक रक्तशोधक ओषधि ।

उशी–स्त्री० (सं०) चाहना, इच्छा ।

उशीनर–पु० (सं०) गांधार देश और वहाँका निवासी; राजा शिबिके पिता ।

उशीर, उशीरक, उषीर, उषीरक–पु० (सं०) गाँडरकी जड़, खस ।

उशीरिक, उषीरिक–वि० (सं०) खस बेचनेवाला ।

उशीरी–स्त्री० (सं०) लघु काश ।

उषंगु–पु० (सं०) शिव ।

उषः (षस्)–स्त्री० (सं०) भोर, तड़का; भोरका उजाला; भोरकी लाली; उषःकालकी अधिष्ठात्री देवी; कर्णरंध्र; मलयश्रेणी । **–कल**–पु० कुक्कुट । **–काल**–पु० भोर, तड़का । **–पान**–पु० हठयोगकी एक क्रिया जिसमें तड़के नाकसे पानी खींचकर मुँहसे निकालते हैं ।

उष–पु० (सं०) भोर, तड़का; कामुक पुरुष; गुग्गुल; खारी मिट्टी; लोना नमक ।

उषण–पु० (सं०) काली मिर्च; अदरक; सोंठ; पिप्पलीमूल ।

उषप–पु० (सं०) अग्नि; सूर्य; चित्रक ।

उषर्बुध–वि० (सं०) उषःकालमें उठनेवाला । पु० अग्नि; चित्रक; बच्चा ।

उषसी–स्त्री० (सं०) संध्या; सांध्य प्रकाश ।

उषा–स्त्री० (सं०) भोर, प्रत्यूष, तड़का; भोरका उजाला या लाली; बाणासुरकी कन्या जिसका ब्याह अनिरुद्धसे हुआ था; पांशुल लवण; गाय; रात्रि; बटुली । **–कर**–पु० चन्द्रमा (वै०) । **–कल**–पु० मुर्गा । **–पति, –रमण**–पु० अनिरुद्ध ।

उषित–वि० (सं०) बासी; बसा हुआ; जला हुआ, दग्ध; फुर्तीला । पु० बस्ती, आबादी ।

उषेश–पु० (सं०) चंद्रमा; अनिरुद्ध ।

उष्ट्र–पु० (सं०) ऊँट; भैंसा; ककुद्वाला साँड़; बैलगाड़ी; रथ । **–कांडी**–स्त्री० एक पुष्प, रक्तपुष्पी । **–क्रोशी (शिन्)**– वि० ऊँटकी तरह आवाज करनेवाला । **–ग्रीव, –शिरोधर**–पु० अर्श । **–जिह्व**–पु० स्कंदका एक अनुचर । **–पादिका**–स्त्री० लता-विशेष, मदनमाली । **–यान**–पु० ऊँट-गाड़ी ।

उष्ट्रिका–स्त्री० (सं०) ऊँटनी; शराब रखनेकी एक तरहकी सुराही ।

उष्ट्री–स्त्री० (सं०) ऊँटनी ।

उष्ण–वि० (सं०) गरम; गरम तासीरवाला; तीखा; रागान्वित; चतुर; फुर्तीला । पु० गरमी; धूप; ग्रीष्म ऋतु; गहरी साँस; प्याज; एक नरक । **–कटिबंध**–पु० (टारिड जोन) पृथ्वीकी विषुवत् रेखाके दोनों ओरका वह भाग जो उत्तरमें कर्क रेखा और दक्षिणमें मकर रेखा द्वारा सीमित है तथा जहाँ सबसे अधिक गर्मी पड़ती है । **–कर, –किरण, –दीधिति**–पु० सूर्य । **काल, –ग**–पु० गरमीका मौसम । **–घ्न**–पु० छाता । **–नदी**–स्त्री० वैतरणी नदी । **–फला**–स्त्री० एक पौधा । **–रश्मि, –रुचि**–पु० सूर्य । **–वात**–पु० पित्ताशयका एक रोग । **–वारण**–पु० छाता । **–विदग्धक**–पु० आँखका एक रोग । **–वीर्य**–वि० गरम तासीर-वाला । पु० सूँस ।

उष्णक–वि० (सं०) गरम; गरमी पहुँचानेवाला; ज्वरयुक्त; फुर्तीला; झुका हुआ; प्रणत । पु० ज्वर; ग्रीष्म ऋतु; चक्कर काटना; सोपारी ।

उष्णता–स्त्री० (सं०) गरमी ।

उष्णत्व–पु० (सं०) उष्णता, गर्मी ।

उष्णांक–पु० (सं०) (कैलरी) तापकी वह मात्रा जो एक ग्राम पानीको एक अंश सेंटीग्रेडतक गरम बनानेके लिए आवश्यक हो (तापमापक इकाई)।

उष्णा–स्त्री० (सं०) गरमी; क्षय; पित्त।

उष्णालु–वि० (सं०) गरमी न सह सकनेवाला; तापपीड़ित।

उष्णासह–पु० (सं०) शीत काल, जाड़ेका मौसम।

उष्णिका–स्त्री० (सं०) माँड़।

उष्णिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) गरमी।

उष्णीष–पु० (सं०) पगड़ी, साफा; मुकुट।

उष्णीषी(षिन्)–वि० (सं०) जो पगड़ी बाँधे या मुकुट धारण किये हो। पु० शिव।

उष्णोष्ण–वि० (सं०) बहुत गरम।

उष्म–पु० (सं०) गरमी; ऊमस; धूप; ग्रीष्म ऋतु; जोश; सरगरमी; क्रोध; ऊष्म वर्ण। **–ज**–पु० पसीने या मैलसे पैदा होनेवाले कीड़े–जूँ, खटमल आदि। वि० गरमीसे उत्पन्न। **–प**–पु० पितर। **–स्वेद**–पु० वाष्प-स्नान।

उष्मा(स्मन्)–स्त्री० (सं०) ताप; वाष्प; ग्रीष्म ऋतु; जोश; ऊष्म वर्ण।

उस–सर्व० 'वह'का विभक्तिके पहले प्रयोगमें आनेवाला रूप (उसने, उसको इ०)।

उसकन–पु० बरतन माँजनेका तृणादिका मुट्ठा।

उसकाना–स० क्रि० उभाड़ना; चला देना; ऊपर उठाना।

उसकारना*–स० क्रि० दे० 'उसकाना'।

उसनना–स० क्रि० उबालना, पकाना।

उसनाना–स० क्रि० उसननेके कार्यमें प्रवृत्त करना।

उसनीस*–पु० दे० 'उष्णीष'।

उसमा†–पु० दे० 'वस्मा' (उबटन)।

उसमान–पु० (अ०) मुहम्मदके चार साथियोंमेंसे एक जो उमरकी शहादतके बाद (तीसरे) खलीफा चुने गये।

उसमानिया–पु० (अ०) उसमानसे चला हुआ तुर्क राजवंश। **–सल्तनत**–पु० तुर्क साम्राज्य जिसका अंत १९१४-१८ ई० वाले महायुद्धके बाद हुआ।

उसरना*–अ० क्रि० हटना; अलग होना; बीतना; बिसरना, भूलना।

उसलना*–अ० क्रि० दे० 'उसरना',–'राजनकी ठैल-पैल सैल उसलत हैं'–भू०; पानीमें उतराना।

उसवास†–पु० प्रवेग, प्रवृत्ति।

उससना*–स० क्रि० साँस लेना; उसाँस लेना; खिसकना।

उसाँस–स्त्री० ऊपरको खींची हुई या लंबी साँस; दुःख-सूचक साँस; साँस।

उसाना–स० क्रि० दे० 'ओसाना'।

उसार†–स्त्री० काम-धंधा, सेवा, पशुओंका गोबर आदि हटाकर सफाई करना–'समय कम है। ढोरोंकी उसार करनी है' –मृग०।

उसारना, उसालना*–स० क्रि० उखाड़ना; भगाना; †मकान या दीवार आदि खड़ी करना।

उसारा–पु० सायबान, बरामदा।

उसारि*–स्त्री० दे० 'उसारा'।

उसास–स्त्री० दे० 'उसाँस'।

उसासी–स्त्री० छनभर सुस्ताने, दम लेनेकी मुहलत–'जानै को केशव केतिक बार मैं सेसके सीसन्ह दीन्ह उसासी'–राम०।

उसिनना†–स० क्रि० दे० 'उसनना'।

उसीर*–पु० दे० 'उशीर'।

उसीला*–पु० वसीला; सहायक–'साहब कहूँ न रामसे तोसे न उसीले'–विनय०।

उसीस, उसीसा*–पु० सिरहाना; तकिया।

उसूल–पु० (अ०) नियम, कायदा; सिद्धांत ('असल'का बहु०)।

उसूली–वि० उसूलका; सैद्धांतिक।

उसेना†–स० क्रि० उबालना।

उस्तरा–पु० दे० 'उस्तुरा'।

उस्ताद–पु० (फा०) गुरु; शिक्षक। वि० प्रवीण; विज्ञ; धूर्त, चालाक।

उस्तादी–स्त्री० (फा०) गुरुआई; प्रवीणता; धूर्तता, चालाकी।

उस्तानी–स्त्री० गुरुआनी; शिक्षिका; धूर्त स्त्री।

उस्तुरा–पु० (फा०) छुरा, बाल मूँड़नेका औजार।

उस्र–वि० (सं०) प्रातःकाल-संबंधी; चमकीला। पु० रश्मि; साँड़, वृष; देवता; सूर्य; दिन; अश्विनीकुमार। **–धन्वा-(न्वन्)**–पु० इंद्र।

उस्रा–स्त्री० (सं०) प्रत्यूष, तड़का; प्रकाश; गाय; पृथ्वी; मूसाकानी।

उस्रिक–पु० (सं०) बछड़ा; छोटा बैल; बुड्ढा बैल।

उस्वास*–स्त्री० दे० 'उसाँस'।

उहट*–स्त्री० उचाट, ऊब जानेकी क्रिया–'अति रस मगन उहट नहिं मानत कबहुँ होति हाहा मतवारी'–घन०।

उहदा–पु० दे० 'ओहदा'।

उहाँ*–अ० वहाँ।

उहार–पु० पालकी आदिपर परदेके लिए पड़ा हुआ कपड़ा।

उही–*सर्व० दे० 'उहै'।

उहै*–सर्व० वही।

उह्–पु० (सं०) साँड़।

ऊ

ऊ–देवनागरी वर्णमालाका छठाँ (स्वर) वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

ऊँगा–पु०, **ऊँगी**–स्त्री० चिचड़ी, अपामार्ग।

ऊँघ–स्त्री० नीदका झोंका, निद्रागम; तंद्रा, झपकी; पहियेके आगे धुरेके सिरेपर लगायी जानेवाली सनकी गेंडुरी।

ऊँघन–स्त्री० झपकी, हलकी नींद।

ऊँघना–अ० क्रि० नींदमें झूमना, उनींदा होना; ढिलाईसे काम करना।

ऊँच*–वि० ऊँचा; बड़ा; कुलीन, ऊँची जातिका। **–नीच**–वि० छोटा-बड़ा; ऊँची-नीची जातिका, कुलीन-अकुलीन; भला-बुरा।

ऊँचा–वि० ऊपरकी ओर अधिक उठा हुआ, बुलंद; लंबाई या अर्जमें छोटा, उटंगा; बड़ा, श्रेष्ठ, उच्च, उदात्त; जोरका; पद-प्रतिष्ठामें बड़ा; सम्मानित। **–ई**–स्त्री० ऊँचा होना, बुलंदी; बड़ाई। **–नीचा**–वि० ऊबड़-खाबड़; भला-बुरा। **–बोल**–पु० गर्वभरी उक्ति। मु०**–नीचा सुनाना**–भला-बुरा कहना। **–सुनना**–केवल जोरसे कही हुई बात ही सुन सकना, अर्ध-बधिर होना। **–(ची) दुकान फीका पकवान**–नामके अनुरूप काम, गुण आदि न होना।

ऊँचे–अ० ऊँचाईपर, ऊपरकी ओर। मु० **–नीचे पाँव पड़ना**–चूक-खता होना; स्त्रीका पथभ्रष्ट होना।

ऊँछ*–पु० एक राग।

ऊँछना*–स० क्रि० कंघी करना।

ऊँट–पु० बोझ ढोने तथा सवारीके काम आनेवाला एक जानवर जो गरम और रेगिस्तानी प्रदेशोंमें अधिकतर पाया जाता है, उष्ट्र; शतरंजका एक मोहरा, जिसकी शकल ऊँट जैसी होती है और जो तिरछे चलता है। **–कटारा,–कटीरा**–पु० एक कँटीली झाड़ी जिसे ऊँट बड़े चावसे खाते हैं। **–वान**–पु० ऊँट चलानेवाला। मु० **(देखिये)–किस करवट बैठता है**–देखिये, मामलेका क्या नतीजा होता है। **–की चोरी और नीचे-नीचे (झुके-झुके)**–न छिपनेवाली बातको छिपानेकी कोशिश। **–के गलेमें बिल्ली**–बेमेल, असंगत बात। **–के मुँहमें जीरा**–अधिक खानेवालेको या आवश्यकतावालेको थोड़ीसी चीज देना। **–निगल जायँ, दुमसे हिचकियाँ**–बड़ी-बड़ी बातें कर जाना और छोटीमें अटकना।

–मक्केको ही भागता है–हर चीज अपने असल, उद्‌गमकी ओर ही जाती है । **–रे ऊँट, तेरी कौन-सी कल सीधी**–बेतुके आदमीकी कोई बात ठीक नहीं होती ।

ऊँटनी–स्त्री० मादा ऊँट । **–सवार**–पु० साँड़नी-सवार, हरकारा ।

ऊँड़ा*–पु० वह बरतन जिसमें रुपये आदि रखकर गाड़ दिये जायँ; तहखाना ।

ऊँदर*–पु० चूहा ।

ऊँधा–पु० ढालुवाँ किनारा; चौपायोंके पानी पीनेका घाट ।

ऊँहूँ†–अ० नहीं; कदापि नहीं ।

ऊ–पु० (सं०) शिव; चंद्रमा; रक्षक । * अ० भी । सर्व० वह ।

ऊअना*–अ० क्रि० उदय होना, उगना ।

ऊआबाई*–वि० व्यर्थ, बेसिर-पैरका । स्त्री० निरर्थक बात; घबड़ाहट ।

ऊक*–पु० लुक, उल्का । स्त्री० जलना; आँच; चूक, गलती । अ० आगेकी ओर, मुँहके बल ।

ऊकना*–अ० क्रि० चूकना । स० क्रि० छोड़ना; भूलना; तपाना; जलाना–'ये व्रजचंद चलौ किन वा व्रज, लूक बसंतकी ऊकन लागी' –क० कौ० ।

ऊकार–पु० (सं०) 'ऊ' अक्षर या उसकी ध्वनि ।

ऊख–पु०, स्त्री० दे० 'ईख'; ग्रीष्म ऋतु । * वि० गरम, तप्त ।

ऊखड़–पु० पहाड़के नीचेकी सूखी भूमि ।

ऊखम*–पु०, स्त्री० दे० 'ऊष्म' ।

ऊखल–पु० दे० 'ओखली'; एक तरहकी घास ।

ऊखिल*–वि० अनजाने, पराये । पु० किरकिरी;–'ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरिनमें'–घन० । **–ताई**–स्त्री० परायापन ।

ऊगना*–अ० क्रि० दे० 'उगना' ।

ऊचर–वि० उबानेवाला, नीरस ।

ऊज*–पु० अंधेर, उपद्रव, उत्पात ।

ऊजड़–वि० उजाड़, वीरान ।

ऊजन*–पु० उद्वेगका कारण–'दानकेलि नित आदित-पूजन । नित कोलाहल नित व्रज ऊजन ।' –घन० ।

ऊजना*–अ० क्रि० पूरा होना ।

ऊजर*–वि० दे० 'उजला'; दे० 'ऊजड़' ।

ऊजरा*–वि० दे० 'उजला' ।

ऊझड़*–वि० ऊबड़-खाबड़; जो समतल न हो ।

ऊटक-नाटक–पु० अललटप्पू, अनिश्चित काम ।

ऊटना*–अ० क्रि० जोशमें भरना; उत्साहित होना; सोच-विचार करना ।

ऊटपटाँग–वि० बेतुका, असंगत, बेसिर-पैरका, निरर्थक ।

ऊठ*–स्त्री० उठान–'घूघरवारियै ऊठ उमैठी'–घन०; दीप्ति–'मुखकी ऊठ औरई कछु अंतरको रस बाहिर छलक्यौ'–घन०; उमंग–'रिस-रूसनै रुखियै ऊठ अनूठियै' –घन० ।

ऊड़ना*–स० क्रि० ब्याह करना ।

ऊड़ा*–पु० टोटा, अभाव ।

ऊड़ी–स्त्री० पनडुब्बी चिड़िया; गोता; रेशम खोलनेवालोंकी चरखी ।

ऊढ–वि० (सं०) विवाहित; धृत, वहित । **–कंकट**–वि० कवचधारी ।

ऊढ़ना–अ० क्रि० अनुमान करना; सोचना ।

ऊढा–स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री; वह परकीया नायिका जो विवाहित पतिको छोड़कर अन्य किसीसे प्रेम करे ।

ऊढि–स्त्री० (सं०) वहन; विवाह ।

ऊत–वि० निपूता; बेवकूफ । पु० निःसंतान व्यक्ति ।

ऊतक–पु० (टिशू) जीवों या वनस्पतियोंका वह सूक्ष्म अंश जो एक ही ढंगकी केशिकाओंसे बना हो ।

ऊतर*–पु० बहाना; दे० 'उत्तर' ।

ऊतला*–वि० उतावला; तेज ।

ऊति–स्त्री० (सं०) सिलाई; सीनेकी मजदूरी; बुनाई; रक्षण; सहायता; क्रीड़ा; कृपा, अनुग्रह; इच्छा ।

ऊत्तिम*–वि० दे० 'उत्तम' ।

ऊद–पु० (अ०) अगर; बरबत नामका बाजा; ऊदबिलाव । **–गरक़ी**–पु० एक तरहका ऊद । **–बत्ती**–स्त्री० एक तरहकी अगरबत्ती । **–बिलाव**–पु० दे० क्रममें । **–सोज़**–पु० अगरदान ।

ऊदबिलाव–पु० नेवलेकी शक्लका एक उभयचर जंतु । वि० मूर्ख, बुद्धू । **–की ढेरी**–कभी समाप्त न होनेवाला झगड़ा ।

ऊदल–पु० आल्हाके नायक सुप्रसिद्ध वीर उदयसिंह; एक वृक्ष ।

ऊदा–वि० बैंगनी रंगका । पु० बैंगनी रंगका घोड़ा ।

ऊदी–वि० ऊदका; ऊदके रंगका, स्याहीमायल । पु० ऊदी रंग । **–सेम**–स्त्री० केवाँच ।

ऊध(स्)–पु० (सं०) स्तन; छाती; मित्रोंके मिलनेका गुप्त स्थान ।

ऊधन्य, ऊधस्य–पु० (सं०) दूध ।

ऊधम–पु० शोरगुल, हंगामा; उत्पात ।

ऊधमी–वि० ऊधम मचानेवाला; उत्पाती ।

ऊधव, ऊधो*–पु० दे० 'उद्धव' ।

ऊन–पु० भेड़, दुंबे आदिका कोमल बाल जिसका कपड़ा बनता है । वि० (सं०) न्यून, थोड़ा; छोटा; घटिया । मु०**–मानना***–दिल छोटा करना, दुःखी होना ।

ऊनक–वि० (सं०) न्यून, हीन; अपर्याप्त; सदोष ।

ऊनता–स्त्री० (सं०) कमी; छोटाई; घटियापन ।

ऊना*–वि० दे० 'ऊन' ।

ऊनित–वि० (सं०) कम किया हुआ, घटाया हुआ ।

ऊनी–वि० ऊनका बना, पशमी । स्त्री० दुःख, ग्लानि ।

ऊप*–स्त्री० दे० 'ओप' । पु० (उधार लिये गये) अन्नका अन्नके ही रूपमें दिया जानेवाला ब्याज ।

ऊपना*–अ० क्रि० उपजना ।

ऊपर–अ० ऊँचाईपर; आकाशकी ओर; नीचेका उलटा; कोठे या छतपर, ऊपरकी मंजिलमें; सहारे; सिरपर, जिम्मे; बड़े या ऊँचे दरजेमें; (लेखादिमें) पहले; अधिक; अतिरिक्त; जाहिरा, प्रकटमें; किनारेपर । **–ऊपर**–अ० (वक्तासे) बिना जताये, बाला-बाला, जाहिरा । मु० **–ऊपरसे**–जाहिरा, प्रकटमें । **–की आमदनी**–वेतन आदिकी बँधी आमदनीसे अतिरिक्त आय, बालाई आमदनी । **–की दोनों जाना***–दोनों आँखें फूट जाना । **–तलेके**–आगे-पीछे होनेवाले, तरपरिया । **–लेना**–सिरपर या जिम्मे लेना । **–वाला**–ईश्वर । **–वालियाँ**–चीलें; चुड़ैलें; परियाँ । **–से**–ऊँचाईसे; ...के अतिरिक्त, अलावा; इधर-उधरसे; जाहिरा । **–होना**–पद या अधिकारमें बड़ा होना; प्रधान होना ।

ऊपरी–वि० ऊपरका, बालाई; बाहरी; दिखाऊ । **–फसाद,–फेर**–पु० प्रेतबाधा ।

ऊब–स्त्री० ऊबनेका भाव, उकताना; * उमंग; उत्साह ।

ऊबट*–वि० ऊबड़-खाबड़; कठिन । पु० ऊबड़-खाबड़ रास्ता ।

ऊबड़-खाबड़–वि० ऊँचा-नीचा, अटपटा ।

ऊबना–अ० क्रि० देरतक एक ही स्थितिमें रहने, एक ही चीजको देखते-सुनते रहनेसे मनका उकता जाना, घबराना । * सुशोभित होना–'मोरी कमरिया पाँच टकाकी सवरी ऊबै देह'–बुंदेल वैभव ।

ऊबनी†–स्त्री० (कन्यापक्षके) द्वारकी शोभा बढ़ानेकी रस्म, द्वारचार (बुंदेल०) ।

ऊबर*–वि० ज्यादा ।

ऊबरना*–अ० क्रि० दे० 'उबरना' ।

ऊभ*–वि० ऊँचा । स्त्री० ऊमस; बेचैनी; उत्साह । **–चूभ**–स्त्री० डूबने-उतरानेकी क्रिया ।

ऊभट–वि०, पु० दे० 'ऊबट' ।

ऊभना*–अ० क्रि० खड़ा होना, उठना; ऊबना ।

ऊभा*–वि० खड़ा ।

ऊभासाँसी–स्त्री० दम फूलना; ऊबना; बेचैनी ।

ऊमक*–स्त्री० झपट, झोंक, वेग ।

ऊमट*–पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।

ऊमटना*–अ० क्रि० उमड़ना–'काली पीली घटा ऊमटी बरस्यौ एक घरी'–मीरा ।

ऊमना*–अ० क्रि० उमड़ना ।

ऊमर–पु० गूलर; एक वैश्य जाति ।

ऊमरि*–पु० गूलर ।

ऊमस–स्त्री० हवा न चलनेसे मालूम होनेवाली गरमी, बरसातकी गरमी, हव्स ।

ऊमहना*–अ० क्रि० उमंगमें आना; घिरना ।

ऊमा–स्त्री० दे० 'उंबी' ।

ऊर*–पु० ओर, अंत ।

ऊरज–पु० दे० 'ऊर्ज' ।

ऊरध*–वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व' ।

ऊरव्य–पु० (सं०) वैश्य ।

ऊरव्या–स्त्री० (सं०) वैश्य स्त्री ।

ऊरस*–वि० दे० 'उरस' ।

ऊरा*–वि० न्यून, अपूर्ण, अधूरा ।

ऊरु–पु० (सं०) जाँघ, रान । **–ग्राह**–पु० जाँघका जकड़ जाना । **–ग्लानि**–स्त्री० जाँघकी कमजोरी । **–ज**, **–जन्मा (न्मन्)**, **–संभव**–वि० (ब्रह्माकी) जाँघसे उत्पन्न । पु० वैश्य । **–पर्व(न्)** –पु० घुटना । **–फलक**–पु० जाँघकी हड्डी । **–संधि**–स्त्री० जाँघका जोड़, पट्टा । **–साद**–पु० जाँघकी कमजोरी । **–स्तंभ**–पु० एक रोग, जाँघों और पैरोंका जकड़ जाना । **–स्तंभा**–स्त्री० केलेका पेड़ ।

ऊरू–स्त्री० एक कँटीली लता, अलई ।

ऊरूद्भव–वि० (सं०) जाँघसे उत्पन्न । पु० वैश्य ।

ऊर्ज–वि० (सं०) बली, शक्तिशाली; बलकारक; शक्तिदायक । पु० बल; उत्साह; चेष्टा; उद्यम; जीवन; जननशक्ति; प्राण; अन्नका अत्यंत सारभूत रस; अन्न; जल; कार्तिक मास; अर्थालंकारका एक भेद । **–मेध**–वि० बहुत चतुर ।

ऊर्ज(स्)–पु० (सं०) शक्ति; उत्साह; आहार ।

ऊर्जस्वल–वि० (सं०) बलवान्; तेजस्वी; श्रेष्ठ; उत्कृष्ट ।

ऊर्जस्वान्(वत्)–वि० (सं०) खाद्यसंपन्न; रसीला; बलवान्, शक्तिशाली ।

ऊर्जस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) दे० 'ऊर्जस्वल' । पु० एक काव्यालंकार जो ऐसे स्थलोंपर आता है जहाँ रसाभास या भावाभास स्थायी भावका अंग हो ।

ऊर्जा–स्त्री० (सं०) आहार; बल; कार्य करनेकी क्षमता; जैसे रासायनिक ऊर्जा, वैद्युत ऊर्जा, ऊष्माकी ऊर्जा आदि । एक किस्मकी ऊर्जा दूसरे किस्मकी ऊर्जामें परिवर्तित की जा सकती है । इसकी नाप अर्ग, केलारी, फुट-पौण्ड आदिमें की जाती है । (इनर्जी) । उत्साह; वृद्धि; दक्षकी एक कन्या जो वसिष्ठको व्याही गयी थी ।

ऊर्जित–वि० (सं०) ओजस्वी (भाषण); बलवान्, शक्तिशाली; समृद्ध; गंभीर; तेजस्वी; श्रेष्ठ ।

ऊर्जी(र्जिन्)–वि० (सं०) जहाँ खाने-पीनेकी वस्तुओंका बाहुल्य हो ।

ऊर्ण–पु० (सं०) ऊन; ऊनी कपड़ा । **–नाभ**, **–नाभि**, **–पट**, **–वाभि** –पु० मकड़ा । **–पिंड**–पु० ऊनका गोला । **–म्रद**–वि० ऊन जैसा मुलायम ।

ऊर्णा–स्त्री० (सं०) ऊन; चित्ररथ गंधर्वकी पत्नी; भौंहोंके बीचकी भँवरी । **–सूत्र**–पु० ऊनका तागा ।

ऊर्णामय, ऊर्णावल–वि० (सं०) ऊनी ।

ऊर्णायु–वि० (सं०) ऊनी । पु० भेड़ा; मकड़ा; ऊनी कंबल ।

ऊर्णावान्(वत्)–वि० (सं०) ऊनी ।

ऊर्णुत–वि० (सं०) ढका हुआ ।

ऊर्दर–पु० (सं०) गल्ला नापनेका एक पात्र; योद्धा; दैत्य ।

ऊर्द्ध्व–वि०, अ० (सं०) दे० 'ऊर्ध्व' ।

ऊर्ध–वि०, अ० दे० 'ऊर्ध्व' ।

ऊर्ध्व–वि० (सं०) ऊँचा; सीधा; उठाया हुआ; खड़ा; बिखराये हुए (बाल); ऊपर फेंका हुआ । अ० ऊपर; ऊपरकी ओर; आगे; बाद । पु० ऊँचाई; ठीक ऊपरकी दिशा । **–कंठ**–वि० जिसकी गरदन उठी हो । **–कंटी**–स्त्री० महाशतावरी । **–कच**, **–केश** –वि० जिसके बाल खड़े या बिखरे हों । पु० केतु । **–कर्ण**–वि० जिसके कान उठे हों । **–क्रिया**–स्त्री० उच्चपद या गतिकी प्राप्तिमें सहायक क्रिया । **–गति**–स्त्री० ऊपरकी ओर, वृद्धिकी ओर जाना; मुक्ति । वि० ऊपरकी ओर जानेवाला । **–गामी(मिन्)** –वि० ऊपरकी ओर जानेवाला; पुण्यात्मा । **–चरण**–वि० जिसकी टाँगें ऊपरकी ओर उठी हों, सिरके बल खड़ा । पु० शरभ नामक पौराणिक जंतु । **–ताल**–पु० संगीतका एक ताल । **–दृष्टि** –वि० ऊपरको देखनेवाला; महत्त्वाकांक्षी । स्त्री० त्रिकुटीपर दृष्टि जमानेकी क्रिया (यो०) । **–देव**–पु० विष्णु, नारायण । **–देह**–स्त्री० मृत्युके बाद मिलनेवाला शरीर । **–नेत्र**–वि० ऊपरकी ओर देखनेवाला; महत्त्वाकांक्षी । **–पातन**–पु० (सब्लिमेशन) जब किसी ठोसका द्रवण किये बिना ही गर्म करनेपर उसे सीधे वाष्प रूपमें परिवर्तित किया जा सके और फिर इस वाष्पको ठंडा करनेपर पुनः वही ठोस प्राप्त हो जाय तो इस समूची क्रियाको 'ऊर्ध्वपातन' कहते हैं । **–पाद**–वि०, पु० दे० 'ऊर्ध्वचरण' । **–पुंड्र**–पु० खड़ा तिलक, वैष्णव या रामानंदी तिलक । **–बाहु**–पु० वह साधु या तपस्वी जो अपनी एक बाँह सदा ऊपर उठाये रहे । **–बिंदु**–पु० (ज़ेनिथ) सिरके ठीक ऊपरका सबसे ऊँचाईका स्थान या बिंदु, 'शीर्षबिंदु'; चरम सीमा । **–मंथी(थिन्)**–वि० ऊर्ध्वरेता; ब्रह्मचारी । **–मान**–पु० ऊँचाई । **–मुख**–वि० जिसका मुँह ऊपरकी ओर हो । **–मूल**–वि० जिसकी जड़ ऊपरकी ओर हो । पु० संसार । **–रेता(तस्)** वि० वीर्यपात न होने देनेवाला, नैष्ठिक ब्रह्मचारी । पु० शिव; भीष्म पितामह; हनूमान् । **–लिंग**, **लिंगी(गिन्)**–पु० शिव । **–लोक**–पु० आकाश; स्वर्ग । **–वात** –पु०, **–वायु**–स्त्री० शरीरके ऊपरी भागमें रहनेवाली वायु । **–शायी(यिन्)**–वि० मुँह ऊपरकी ओर करके सोनेवाला । पु० शिव । **–शोधन**–पु० वमन । **–श्वास**–पु० ऊपरको चढ़नेवाली साँस, उलटी साँस । **–सानु**–वि० अधिकाधिक ऊपर जानेवाला । पु० पहाड़की चोटी । **–स्थिति**–स्त्री० सीधे खड़ा होना; अश्वशिक्षण; घोड़ेकी पीठ; उत्थान । **–स्रोता(तस्)**–वि० ऊर्ध्वरेता ।

ऊर्ध्वक–पु० (सं०) एक तरहका मृदंग ।

ऊर्ध्वता–स्त्री० (सं०) ऊँचाई । **–मापी**–पु० (सं०) (कैथेटोमीटर) नलिकाओंमें रखे हुए विभिन्न द्रव पदार्थोंकी ऊँचाई नापनेका एक आला ।

ऊर्ध्वांग–पु० (सं०) शरीरका ऊपरका भाग, सिर । **–प्रतिमा**–स्त्री० (बस्ट) दे० 'आवक्षप्रतिमा' ।

ऊर्ध्वा–स्त्री० (सं०) प्राचीन कालकी एक प्रकारकी नाव ।

ऊर्ध्वायन–पु० (सं०) ऊपरकी ओर जाना; ऊपरकी ओर उड़ना ।

ऊर्ध्वारोहण–पु० (सं०) स्वर्गगमन, मृत्यु ।

ऊर्ध्वावर्त–पु० (सं०) अश्व-शिक्षण ।

ऊर्ध्वासित–पु० (सं०) करैला ।

ऊर्मि–स्त्री० (सं०) लहर, तरंग; प्रवाह; वेग; पंक्ति; प्रकाश; कपड़ेकी शिकन; प्राण, चित्त और शरीरके ये छ क्लेश–भूख, प्यास, लोभ, मोह, सर्दी और गरमी (न्या०); खेद, परिताप; इच्छा; ६ की संख्या; व्यक्त या प्रकट होना । **–माला**–स्त्री० तरंगावली, तरंगोंकी श्रेणी; एक वृत्त । **–माली(लिन्)**–पु० समुद्र ।

ऊर्मिका–स्त्री० (सं०) लहर; अँगूठी; कपड़ेकी शिकन; खेद; भौंरेका गुंजन ।

ऊर्मिमान्(मत्)–वि० (सं०) तरंगित; टेढ़ा; घुंघराले (केश) ।

ऊर्मिल–वि० लहरोंसे युक्त, तरंगमय ।

ऊर्मिला–स्त्री० (सं०) लक्ष्मणकी पत्नी ।

ऊर्मी(र्मिन्), **ऊर्म्य**–वि० (सं०) लहरोंवाला, लहराता हुआ ।

ऊर्म्या–स्त्री० (सं०) रात ।

ऊर्व–पु० (सं०) झील; ताल; समुद्र; पशुशाला; मेघ; बड़वानल; पितरोंका एक वर्ग । वि० विस्तृत ।

ऊर्वरा–स्त्री० (सं०) दे० 'उर्वरा' ।

ऊर्वशी–स्त्री० (सं०) दे० 'उर्वशी' ।

ऊर्व्यंग–पु० (सं०) छत्रक ।

ऊर्षा–स्त्री० (सं०) देवताड़ नामक तृण ।

ऊलजलूल–वि० ऊटपटांग, बेढंगा, बेसिर-पैरका; अनाड़ी; अशिष्ट । **–नाटक** (एबसर्ड ड्रामा) पश्चिमके 'एबसर्ड ड्रामा'के लिए हिन्दीमें प्रयुक्त शब्द । आजकी उलझी हुई स्थितिको सही ढंगसे देखनेका

दावा करनेवाला एक दृष्टिकोण, जो चीजोंको विल्कुल उलट कर, खंडित करके, विडंबित करता है।

ऊलना*–अ० क्रि० उछलना; खुश होना।

ऊलुपी(पिन्)–पु० (सं०) दे० 'उलपी'।

ऊलूक–पु० (सं०) दे० 'उलूक'।

ऊष–पु० (सं०) ऊसर; रेहवाली जमीन; नोनी मिट्टी; अम्ल; दरार, विवर; कर्णखात; मलय पर्वत; भोर, प्रत्यूष; शुक्र, वीर्य।

ऊषक–पु० (सं०) भोर, तड़का; नमक; काली मिर्च।

ऊषण–पु० (सं०) चित्रक, चीता; काली मिर्च; सोंठ; पिप्पली; पिप्पलीमूल; चव्य।

ऊषर–वि० (सं०) खारा। पु० ऊसर जमीन। **–ज**–पु० नोनी मिट्टीसे निकाला हुआ नमक; एक तरहका चुंबक।

ऊषा–स्त्री० (सं०) दे० 'उषा'। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–काल**–पु० सवेरा।

ऊषी–स्त्री० (सं०) नोनी मिट्टी; खारी जमीन।

ऊष्म–पु० (सं०) गरमी; ताप; गरमीका मौसम। वि० गरम। **–ज**–पु० दे० 'उष्मज'। **–प**–पु० अग्नि; एक पितृवर्ग। **–वर्ण**–पु० श्, ष्, स्, ह्।

ऊष्मांक–पु० दे० 'केलोरी'।

ऊष्मा(ष्मन्)–स्त्री० (सं०) गरमी; भाप; ग्रीष्म काल; आवेश; उग्रता। **–रोधी**–पु० एक ओरका ताप दूसरी ओर न जाने देनेके लिए प्रयुक्त उपकरण या साधन। (इन्स्यूलेटर)।

ऊष्मापह–पु० (सं०) जाड़ेका मौसम।

ऊष्मायण–पु० (सं०) ग्रीष्म काल।

ऊसर–पु० वह जमीन जिसमें रेह हो और कुछ पैदा न हो।

ऊसीजना*–अ० क्रि० उसनना, सीझना–'अंग उसीजै उदेगकी आवस'–घन०।

ऊह–पु० (सं०) परिवर्तन; सुधार; अनुमान; तर्क-वितर्क; परीक्षण; तर्क-युक्ति; अनुक्त पदकी अध्याहार द्वारा पूर्ति।

ऊहन–पु० (सं०) परिवर्तन; सुधार; तर्क-वितर्क करना; विचारना।

ऊहनी–स्त्री० (सं०) झाड़ू।

ऊहनीय–वि० (सं०) तर्क, कल्पना आदिसे जानने योग्य।

ऊहा–स्त्री० (सं०) दे० 'ऊह'। **–पोह**–पु० प्रश्नविशेषके पूर्व और उत्तर दोनों पक्षोंपर विचार करना; तर्कपूर्ण विचार या विवेचन।

ऊहिनी–स्त्री० (सं०) झुंड, समूह; झाड़ू।

ऊही(हिन्)–वि० (सं०) अनुमान या तर्क करनेवाला।

ऊह्य–वि० (सं०) ऊहा करने योग्य।

ऋ

ऋ–देवनागरी वर्णमालाका सातवाँ (स्वर) वर्ण। उच्चारण-स्थान मूर्धा।

ऋंजसान–पु० (सं०) बादल।

ऋ–स्त्री० (सं०) देवमाता, अदिति; उपहास; निंदा। पु० स्वर्ग।

ऋकार–पु० (सं०) 'ऋ' अक्षर या उसकी ध्वनि।

ऋक्(च्)–स्त्री० (सं०) ऋचा, वेदमंत्र; ऋग्वेदका मंत्र; ऋग्वेद; स्तोत्र; कांति; स्तुति; पूजा। **–(क्)तंत्र**–पु० सामवेदका परिशिष्ट। **–संहिता**–स्त्री० ऋग्वेदके मंत्रोंका संग्रह।

ऋक्ण–वि० (सं०) क्षत, आहत।

ऋक्थ–पु० (सं०) धन; जायदाद; सोना; मृत व्यक्तिकी छोड़ी हुई संपत्ति; उत्तराधिकारमें मिलनेवाली संपत्ति, वरसा, वपौती। **–ग्राह, –भागी(गिन्), –हारी(रिन्)**–पु० ऋक्थ पानेवाला, वारिस।

ऋक्ष–पु० (सं०) रीछ, भल्लुक; तारा, नक्षत्र; राशि; रैवतक पर्वत। **–गंधा**–स्त्री० क्षीरविदारी, महाश्वेता। **–जिह्व**–पु० एक तरहका कुष्ठ। **–नाथ,–पति,–राज**–पु० चंद्रमा; जांबवान्। **–नेमि**–पु० विष्णु। **–बिडंबी(बिन्)**–पु० ठगनेवाला ज्योतिषी। **–विभावन**–पु० ग्रहोंकी गतिका निरीक्षण।

ऋक्षर–पु० (सं०) काँटा; पुरोहित; वर्षा।

ऋक्षवान्(वत्)–पु० (सं०) ऋक्ष पर्वत।

ऋक्षा–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा।

ऋक्षी–(सं०) मादा रीछ।

ऋक्षीक–वि० (सं०) भालू जैसा मांसभक्षी।

ऋक्षीका–स्त्री० (सं०) एक देवी।

ऋक्षेश–पु० (सं०) चंद्रमा।

ऋग्–ऋच्‌का समासगत रूप। **–वेद**–पु० चारों वेदोंमेंसे एक जो पहला और प्रधान माना जाता है। **–वेदी(दिन्)** वि० ऋग्वेदका ज्ञाता या पढ़नेवाला; जिसके संस्कार ऋग्वेदके अनुसार होते हों।

ऋचा–स्त्री० (सं०) वेदमंत्र; ऋग्वेदका मंत्र।

ऋचीक–पु० (सं०) एक ऋषि, जमदग्निके पिता; एक देश।

ऋचीष–पु० (सं०) एक नरक; कड़ाही।

ऋच्छ–पु० रीछ।

ऋच्छका–स्त्री० (सं०) इच्छा।

ऋच्छरा–स्त्री० (सं०) वेश्या; पशुकी टाँगका एक भाग; हथकड़ी।

ऋजिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) सरलता।

ऋजीक–पु० (सं०) इंद्र; धुआँ; साधन। वि० मिश्रित; हटाया हुआ; भ्रष्ट किया हुआ।

ऋजीष–पु० (सं०) एक नरक; कड़ाही; सोम रसकी सीठी; जल।

ऋजु–वि० (सं०) सीधा, सरल, कुटिलतारहित; सच्चा; अनुकूल; हितकर। **–काय**–वि० जिसका शरीर सीधा हो। पु० कश्यप मुनि। **–कोण**–पु० (स्ट्रेट एंगिल) वह कोण जो दो समकोणोंके बराबर हो। **–क्रतु**–वि० सदाचारी। पु० इंद्र। **–ग**–पु० वाण; सज्जन। वि० सरल व्यवहार करनेवाला। **–नीति**–स्त्री० सदाचार। **–रोहित**–पु० इंद्रका सीधा लाल धनुष। **–लेखा**–स्त्री० सीधी रेखा।

ऋजुता–स्त्री० (सं०) सीधापन, सिधाई; सचाई; सरलता।

ऋज्वी–वि० स्त्री० (सं०) सरल, सीधी (स्त्री)।

ऋण–पु० (सं०) कर्ज, देना, उधार ली हुई रकम; एहसानका बोझ; देव, पितृ आदिकी कृपाके बदले की जानेवाली सेवा, कर्त्तव्य, घटाने या बाकीका चिह्न (ग०); अभाव; दुर्ग; जल; जमीन। वि० ऋणरूप, 'नेगेटिव'; भाग जानेवाला; दोषी। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० कर्ज लेनेवाला। **–ग्रस्त**–वि० कर्जमें फँसा हुआ, मकरूज। **–ग्राही(हिन्)**–वि० कर्ज लेनेवाला। **–च्छेद**–पु० कर्ज अदा करना। **–त्रय**–पु० देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण। **–द,–दाता(तृ),–दायी(यिन्)**–वि० कर्ज चुकानेवाला। **–दान**–पु० ऋणपरिशोध। **–दास**–पु० वह दास जो उसका ऋण चुकाकर खरीदा जाय। **–निर्मोक्ष**–पु० पितरोंके ऋणसे मुक्ति। **–पत्र**–पु० तमस्सुक, रुक्का, 'बांड'। **–परिशोध-कोष**–पु० (सिंकिंग फंड) राज्य या संस्था-विशेषके ऋणके क्रमिक परिशोध (अदायगी)के उद्देश्यसे समय-समयपर पृथक् रूपसे जमा की जानेवाली धनराशि, निक्षेप-निधि। **–परिसमापन**–पु० (लिक्विडेशन ऑफ डेट) ऋण पूरा-पूरा चुका देना, बेबाक कर देना। **–बंधन-पत्र**–पु० (प्रो-नोट) वह पत्र या रुक्का जो ऋण लेनेवाला शर्तोंके साथ रसीदके तौरपर लिखता है, प्रोनोट, वचनपत्र। **–मत्कुण,–मार्गण**–पु० कर्जकी अदायगीकी जमानत करनेवाला, प्रतिभू। **–मुक्त**–वि० जिसने ऋण चुका दिया हो, उऋण। **–मुक्ति**–स्त्री०, **–मोक्ष**–पु० (रिडेंपशन) ऋणसे छुटकारा पाना. ऋणका चुकाया जाना। **–मोक्षित**–पु० ऋण-दास। **–लेख्य**–पु० ऋणपत्र। **–विद्युत्**–पु० विकर्षण करनेवाली बिजली। **–विद्युदणु**–पु० (इलेक्ट्रॉन) ऋण-विद्युत्-शक्तिकी अविभाज्य इकाई-स्वरूप वे कण जो परमाणु (ऐटम)के धनविद्युत् शक्तिकणके चारों तरफ, सूर्यमंडलके ग्रहोंकी तरह घूमते हैं। **–शुद्धि**–स्त्री० ऋणका अदा होना। **–शोधन**–पु० ऋण चुकाना। **–संपिंडन**–पु० (कॉनसॉलिडेशन ऑफ डेट) बहुतसे ऋणोंको मिलाकर एक कर देना, ऋणकी छोटी-छोटी रकमोंको मिलाकर एक बड़े पिंड या राशिमें परिणत कर देना। **–समुद्धार**–पु० कर्जकी वसूली। –

स्थगन–पु॰ (मॉरेटोरियम) बैंकों आदि द्वारा (उच्च न्यायालयके या सरकारके आदेशसे) लोगोंका पावना या ऋण चुकाना अस्थायी रूपसे बंद कर दिया जाना। **मु॰–उतारना**–कर्ज अदा करना। **–चढ़ना**–कर्ज होना। **–पटाना**–धीरे-धीरे कर्ज अदा करना। **–मढ़ना**–देनदार बनाना।

ऋणांतक–पु॰ (सं॰) मंगल ग्रह।

ऋणात्मक–वि॰ (सं॰) ऋणरूप, 'नेगेटिव'।

ऋणादान–पु॰ (सं॰) कर्जका वसूल होना।

ऋणापकरण–पु॰ (सं॰) ऋणकी अदायगी।

ऋणापनयन–पु॰ (सं॰) कर्जकी अदायगी।

ऋणापनोदन–पु॰ (सं॰) कर्ज चुकाना।

ऋणार्ण–पु॰ (सं॰) कर्ज चुकानेके लिए लिया जानेवाला कर्ज।

ऋणिक–वि॰ (सं॰) कर्जदार।

ऋणिया–वि॰ ऋणी।

ऋणी(णिन्)–वि॰ (सं॰) कर्जदार; एहसानमंद, उपकृत।

ऋणोद्ग्रहण–पु॰ (सं॰) किसी प्रकार कर्ज वसूल करना।

ऋतंभर–वि॰(सं॰)सत्यका धारण-पोषण करनेवाला। पु॰परमेश्वर।

ऋतंभरा–वि॰, स्त्री॰ (सं॰) सदा एकरूप रहनेवाली, सत्यका ही धारण-पोषण करनेवाली (बुद्धि)। स्त्री॰ प्लक्ष द्वीपकी एक नदी; समाधिकी वह भूमि जिसमें सत्यका ही धारण होता है।

ऋत–पु॰ (सं॰) सत्य; सृष्टिका आदि और धारक तत्त्व; ईश्वरीय नियम; ब्रह्मा; एक आदित्य; सूर्य; कर्मफल; जल; यज्ञ; उंछवृत्ति; अनुकूल वचन। वि॰ सत्य, सच्चा; अनुकूल; उचित; यथार्थ; पूजित; प्रकाशित, दीप्त; प्रभावित। **–धामा(मन्)**–वि॰ सत्यमें निवास करनेवाला। पु॰ विष्णु। **–ध्वज**–पु॰ शिव। **–पर्ण**–पु॰ दे॰ 'ऋतुपर्ण'। **–वादी(दिन्)**–वि॰ सत्य बोलनेवाला। **–व्रत**–वि॰ सत्यवादी, सत्य बोलना जिसका व्रत हो।

ऋतव्य–वि॰ (सं॰) मौसमी; मौसम-संबंधी।

ऋतिकर–वि॰ (सं॰) कष्टप्रद; भाग्यहीन।

ऋति–स्त्री॰ (सं॰) गति; आक्रमण; मार्ग; मंगल; अभ्युदय; स्मृति; दुर्भाग्य; दुःख; रक्षण; सत्य; निंदा; ईर्ष्या; स्पर्द्धा।

ऋतीया–स्त्री॰ (सं॰) घृणा, जुगुप्सा; लज्जा; निंदा।

ऋतु–स्त्री॰ (सं॰) गरमी या वर्षाकी दृष्टिसे वर्षके ग्रीष्म, प्रावृट, शरत्, हेमंत, शिशिर, वसंत–ये छ विभाग, मौसम; वृक्षके फलने, फूलने या किसी चीजके होनेका नियत काल; रज-स्राव; गर्भधारणके अनुकूल काल; निश्चित व्यवस्था; दीप्ति; ६की संख्या। **–काल**–पु॰ उपयुक्त काल; रजोदर्शनके बादकी १६रातें जिनमें स्त्रीके गर्भधारणकी अधिक संभावना रहती है (पाश्चात्य विशेषज्ञ यह काल ११वींसे १७वीं राततक मानते हैं।) **–गामी(मिन्)**–वि॰ ऋतुकालमें संभोग करनेवाला। **–चर्या**–स्त्री॰ ऋतुविशेषके अनुकूल आहार-विहार। **–दान**–पु॰ ऋतुस्नाता पत्नीके साथ संतानकामनासे संभोग करना **–नाथ,–पति**–पु॰ वसंत। **–पर्ण**–पु॰ एक अयोध्या-नरेश। **–पर्याय**–पु॰ ऋतुओंका आवर्तन। **–पा**–पु॰ इंद्र। **–प्राप्त**–वि॰ फलनेवाला (पेड़)।। **–प्राप्ता**–वि॰, स्त्री॰ जो रजस्वला हो चुकी हो। **– प्राप्ति**–स्त्री॰ रजोदर्शन। **–फल**–पु॰ ऋतुविशेषमें होनेवाले फल। **–भाग**–पु॰ छठा हिस्सा। **–मुख**–पु॰ ऋतुके आरंभका पहला दिन। **–राज**–पु॰ वसंत ऋतु। **–लिंग**–पु॰ ऋतुका परिचायक चिह्न; रजःस्रावका लक्षण। **–विज्ञान**–पु॰ वायुमंडलमें होनेवाले परिवर्तनोंका विज्ञान जिसके आधारपर वर्षा, तूफानका अनुमान किया जाता है, 'मीटियोरॉलॉजी'। **– विपर्यय**–पु॰ ऋतुके विपरीत बात होना (जैसे–गर्मीकी वर्षा)। **–वृत्ति**–स्त्री॰ ऋतुओंका आवर्तन; वत्सर। **–वेला**–स्त्री॰,**–समय**–पु॰ रजःस्राव या उसके बाद गर्भाधानका समय। **–संधि**–स्त्री॰ दो ऋतुओंका संधिकाल। **–सात्म्य**–पु॰ ऋतुके उपयुक्त आहार आदि। **–स्तोम**–पु॰ एक विशेष यज्ञ। **–स्नाता**–स्त्री॰ ऋतुस्नान करके शुद्ध हुई स्त्री। **–स्नान**–पु॰ रजोदर्शनके बाद चौथे दिन किया जानेवाला स्नान।

ऋतुमती–वि॰, स्त्री॰ (सं॰) रजस्वला।

ऋतुरौन*–पु॰ ऋतुरमण, वसंत–'गावत कोकिल रँगभरे, धावत छवि ऋतुरौन'–काव्यांगकौ॰।

ऋतुवती*–वि॰, स्त्री॰ रजस्वला, ऋतुमती।

ऋत्व–पु॰ (सं॰) पुष्ट वीर्य; गर्भाधानका उपयुक्त समय।

ऋत्विक्(ज्)–पु॰ (सं॰) यज्ञ करानेवाला (कुल १६ ऋत्विक् होते हैं जिनमें चार मुख्य हैं–होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा)।

ऋद्ध–वि॰ (सं॰) खुशहाल, धन-धान्यसे संपन्न; जिसकी बढ़ती हुई हो; जमा किया हुआ। पु॰ विष्णु; वृद्धि; प्रत्यक्ष फल।

ऋद्धि–स्त्री॰ (सं॰) संपन्नता, वृद्धि, बढ़ती, उत्कर्ष; गौरव; सफलता; सिद्धि; पार्वती; लक्ष्मी; पत्नी; गणेशकी एक दासी; आर्या छंदका एक भेद; दवाके काम आनेवाली एक लता, प्राणदा। **–काम**–वि॰ वृद्धि, समृद्धि चाहनेवाला। **–सिद्धि**–स्त्री॰ धन-दौलत और सफलता; गणेशकी दो अनुचरियाँ।

ऋनिया, ऋनी†–वि॰ दे॰ 'ऋणी'।

ऋभु–पु॰ (सं॰) देवता; एक गणदेव; देवोंका एक अनुचर-वर्ग; शिल्पी; तीन अर्धदेवों(ऋभु, वाज और विभ्वा)मेंसे पहला जिसके नामसे तीनोंका द्योतन होता है।

ऋभुक्ष–पु॰ (सं॰) इंद्र; स्वर्ग; इंद्रका वज्र।

ऋश्य–पु॰ (सं॰) मृगविशेष; वध। **–केतु,–केतन**–पु॰ अनिरुद्ध; कामदेव। **–द**–पु॰ मृग पकड़नेके लिए खोदा हुआ गड्ढा।

ऋषभ–पु॰ (सं॰) बैल; नर जानवर; संगीतके सात स्वरोंमेंसे दूसरा; कर्णरंध्र; शूकर या मगरकी पूँछ; ८ प्रसिद्ध ओषधियोंमेंसे एक; विष्णुका एक अवतार। वि॰ उत्तम; श्रेष्ठ (समासांतमें–पुरुषर्षभ, भारतर्षभ इ॰)। **–कूट**–पु॰ एक पर्वत। **–देव**–पु॰ विष्णुके २४ अवतारोंमेंसे एक; जैनोंके एक तीर्थंकर। **–ध्वज**–पु॰ शिव।

ऋषभक–पु॰ (सं॰) अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि।

ऋषभी–स्त्री॰ (सं॰) गाय; वह स्त्री जिसे मूँछ, दाढ़ी या और कोई पुरुष-चिह्न हो; विधवा; एक ओषधि, शूकशिंबी; शिराला।

ऋषि–पु॰ (सं॰) मंत्रद्रष्टा, वेदमंत्रोंका साक्षात्कार और प्रकाशन करनेवाला व्यक्ति; बहुत बड़ा तपस्वी, मुनि; प्रकाशकिरण; ७की संख्या; एक कल्पित वृत्त; एक मत्स्य। **–ऋण**–पु॰ मनुष्यका ऋषियोंके प्रति कर्त्तव्य (वेद पढ़ने-पढ़ानेसे इससे मुक्ति मिलती है)। **–कल्प**–वि॰ ऋषितुल्य। **–कुमार**–पु॰ ऋषिका बेटा, ऋषिबालक। **–कुल**–पु॰ ऋषिका वंश; ऋषिका आश्रम; वह विद्यालय जहाँ ब्रह्मचारियोंको विद्या पढ़ायी जाय। **–कुल्या**–स्त्री॰ महाभारतमें उल्लिखित एक नदी। **–गिरि**–पु॰ मगधका एक पर्वत। **–चांद्रायण**–पु॰ व्रतविशेष। **–जांगल**–पु॰, **–जांगलिका**–स्त्री॰ ऋक्षगंधा नामक पौधा। **–तर्पण**–पु॰ ऋषियोंकी तृप्तिके लिए जलदान। **–देव**–पु॰ एक बुद्ध। **–पंचमी**–स्त्री॰ भादों सुदी पंचमी। **–पतन**–पु॰ बनारसके पासका एक जंगल, वर्तमान सारनाथ।। **–प्रोक्ता**–स्त्री॰ माषपर्णी। **–यज्ञ**–पु॰ ऋषियोंके लिए किया जानेवाला यज्ञ, वेदाध्ययन। **–लोक**–पु॰ एक लोक जो सत्य लोकके पास माना जाता है। **–साह्वय**–पु॰ दे॰ 'ऋषिपतन'। **–स्तोम**–पु॰ ऋषियोंकी स्तुति; एक यज्ञ। **–स्वाध्याय**–पु॰ वेदोंकी आवृत्ति।

ऋषिक–पु॰ (सं॰) निम्न श्रेणीका ऋषि; एक जनपद और उसका निवासी।

ऋषीक–पु॰ (सं॰) एक प्राचीन जनपद और उसका निवासी; तृणविशेष।

ऋषु–वि॰ (सं॰) बड़ा; शक्तिशाली; चतुर। पु॰ सूर्यरश्मि; मशाल; प्रज्वलित अग्नि; ऋषि।

ऋष्टि–स्त्री॰ (सं॰) खड्ग, तलवार; दुधारी तलवार; हथियार।

ऋष्टिक–पु॰ (सं॰) देशविशेष।

ऋष्य–पु॰ (सं॰) एक तरहका हिरन; एक तरहका कोढ़। **–केतन, –केतु**–पु॰ अनिरुद्ध। **–गंधा**–स्त्री॰ ऋक्षगंधा। **–गता,–प्रोक्ता**–स्त्री॰ शतमूली; शूकशिंबी। **–जिह्व**–पु॰ एक तरहका कुष्ठ। **–मूक**–पु॰ पंपासरके पासका एक पर्वत जिसपर राम कुछ दिन सुग्रीवके साथ रहे। **–शृंग**–पु॰ एक ऋषि जिन्हें दशरथकी कन्या शांता ब्याही गयी थी।

ऋष्यक–पु॰ (सं॰) मृगविशेष।

ए

ए–देवनागरी वर्णमालाका ११वाँ, ऋ, लृ, लॄको छोड़नेपर ८वाँ (स्वर) वर्ण। उच्चारण-स्थान कंठ और तालु।

एँच-पेँच–पु० उलझन, पेच-पाच; चक्कर; चाल-घात।

एंजिन–पु० (अं०) दे० 'इंजन'।

एँड़ा-बेँड़ा–वि० उलटा-सीधा।

एंडी–स्त्री० एक तरहका रेशम या उसका कीड़ा, अंडी।

एँड़ुआ–पु० गेंड़ुरी, कुंडली।

एंबुलेंस–पु० (अं०) युद्धक्षेत्रका अस्पताल जो आवश्यकतानुसार एकसे दूसरी जगह हटाया जा सके, मैदानी अस्पताल; घायलों, वीमारोंको लिटाकर अस्पताल ले जानेके लिए बनी गाड़ी। –**कार**–स्त्री० एंबुलेंसकी लारी।

ए–अ० (सं०) स्मृति, असूया, अनुकंपा, आह्वान, आमंत्रण आदिके संबंधमें इसका प्रयोग किया जाता है। पु० विष्णु। * सर्व० यह।

एकंग–वि० अकेला।

एकंगा–वि० एकतरफा, एक ओरका।

एकंगी–स्त्री० मुठिया लगा हुआ छोटा लट्टूदार डंडा। वि० दे० 'एकांगी'।

एकँड़िया–वि० जिसमें एक ही अंड वा गाँठ हो। पु० एक अंठीवाली लहसुनकी गाँठ; एक अंडकोषवाला वैल या घोड़ा।

एकंत*–वि०, पु० दे० 'एकांत'।

एक–वि० (सं०) पहले अंक या इकाईसे सूचित, दोका आधा; अकेला; जैसा दूसरा न हो, वे-जोड़; वही; अपरिवर्तित; स्थिर; प्रधान; सत्य; ईषत्; कोई; एक भी; कोई या कुछ भी (एक न चलना, न सुनना); जो मिलकर एक चीज, एकरूप हो गया हो, भेदरहित। पु० पहला अंक या इकाई; १; विष्णु; परमात्मा; * ऐक्य, साम्य। **–अंक,–आँक***–अ० निश्चय ही। **–आध**–वि० (हिं०) एक या आधा, एक-दो, दो-एक। **–एक**–वि० (हिं०) हर एक, प्रत्येक। अ० एकके वाद एक, बारी-वारीसे। **–कंठ**–वि० साथ-साथ एक स्वरमें उच्चारण करनेवाले। **–कपाल**–वि० कटोरेमें जितना आ सके। **–कर**–वि० सिर्फ एक काम करनेवाला; एक किरण या एक हाथवाला। **–क़लम**–अ० (हिं०) एक वारगी; विलकुल, पूरे तौरसे। **–कालिक,–कालीन**–वि० एक ही वार होनेवाला; एक वारका; समकालीन। **–कुंडल**–पु० कुवेर; शेष; वलराम। **–कुष्ठ**–पु० कुष्ठ रोगका एक भेद। **–कृष्ट**–वि० एक वार जोता हुआ। **–कोशी(शिन्)**–वि० जिस (प्राणी)की देह एक ही कोश (सेल)की बनी हो। **–गव्य**–पु० परमात्मा। **–गाछी**–स्त्री० (हिं०) एक ही पेड़के तनेसे बनायी गयी नाव, एकठा। **–ग्राम**–वि० एक ही गाँवमें वसनेवाला। **–घृष्टता** (मोनोटोनी) आजके जीवनसे उत्पन्न ऊब पैदा करनेवाली एकरसता। **–चक्र**–वि० एक ही नरेश द्वारा शासित; चक्रवर्ती; एक पहियेवाला। पु० सूर्यका रथ; सूर्य। **–चक्रा**–स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन नगरी। **–चक्री**–स्त्री० एक पहियेकी गाड़ी। **–चर**–वि० अकेले रहने या विचरनेवाला, एकाकी; एक नौकरवाला; एक साथ रहनेवाला। पु० गेंडा। **–चश्म**–वि० (हिं०) काना। पु० वह तसवीर जिसमें चेहरेका एक ही रुख और एक आँख दिखाई दे। **–चश्मी**–वि० (हिं०) एकरुखी। **–चारिणी**–वि० स्त्री० पतिव्रता (स्त्री)। **–चारी(रिन्)**–वि० दे० 'एकचर'। **–चित्त**–वि० एक ही विषयको सोचनेवाला, एकाग्र, तल्लीन; एक मन, विचारके। पु० किसी विषयपर मनकी एकाग्रता; ऐकमत्य। **–चेता(तस्)**–वि० दे० 'एकचित्त'। **–चोबा**–वि० (हिं०) एक चोब या खंभेपर खड़ा किया जानेवाला (खेमा)। **–छत्र**–वि० जिसमें दूसरेका अधिकार, प्रभुत्व न हो, असपत्न, एकतंत्र (राज्य)। **–ज**–पु० सगा भाई। वि० अकेले पैदा होने या वढ़नेवाला; * एकमात्र। **–जद्दी**–वि० (हिं०) एक ही पुरखेसे उत्पन्न, एक कुलके, सपिंड (जद्द–दायाद)। **–जन्मा(न्मन्)**–पु० राजा; शूद्र। **–ज़वान**–वि० (हिं०) एकमत; एकवाक्य। **–जा**–स्त्री० सगी बहन। **–जाई**–वि० (परिवार) जिसके सदस्य एक साथ रहते हों; सम्मिलित (कुटुम्ब या सम्पत्ति)। **जात**–वि० एक माता-पितासे उत्पन्न, सहोदर। **–जाति**–वि० एक ही जाति या वंशका। पु० शूद्र। **–जातीय,**–वि० (होमोजीनियस) एक ही जाति, वर्ग या किस्मका; जिसके सब अंग या अंश एक सदृश हों। **–जान**–वि० (हिं०) जो घुल-मिलकर एक हो गया हो, एकरूप, एकदिल, अभिन्न-हृदय। **–जीव**–वि० एकरूप; अभिन्न। **–टंगा**–वि० (हिं०) एक टाँगवाला; लँगड़ा। **–टक**–वि०, अ० (हिं०) विना पलक गिरे या गिराये, अनिमेष। **–डाल**–वि० (हिं०) एक ही टुकड़ेका वना हुआ; एक ही तरहका। पु० वह छुरा जिसका फल और वेंट एकमें ही वने हों। **–तंत्र**–वि० जिसमें सब शक्ति, अधिकार एक आदमीके हाथमें हो, एकहत्था (राज्य, शासनप्रवंध); एक व्यक्ति द्वारा, एकके प्रवंधसे परिचालित। **–०शासनप्रणाली**–स्त्री० वह शासनप्रणाली जिसमें सव अधिकार राजाके ही हाथमें हों और उसके आदेशानुसार सब कार्य परिचालित होते हों, एकहत्थी हुकूमत। **–तरफ़ा**–वि० (हिं०) एकपक्षीय, जिसमें दूसरे पक्षका विचार न किया गया हो। **–०डिग्री**–स्त्री०,**–०फैसला**–पु० (हिं०) वह डिग्री या फैसला जो प्रतिवादी पक्षका जवाव सुने विना (उसकी अनुपस्थितिके कारण) दी या किया जाय। **–०राय**–स्त्री० (हिं०) एक ही पक्ष सुनकर कायम की हुई राय। **–तल्ला**–वि० (हिं०) (वह मकान) जिसमें दूसरी मंजिल न हो। **–तान**–वि० एक ही विषयका ध्यान करनेवाला, एकचित्त, तल्लीन। **–तानता**–स्त्री० (मॉनोटोनी) तान या स्वरकी नीरस एकरूपता। **–तार**–वि० (हिं०) एकसा, एक रंग-रूपका। अ० लगातार। **–तारा**–पु० (हिं०) एक तरहका तँवूरा जिसमें एक ही तार होता है। **–ताल**–वि० जिसमें ताल-सुरका पूरा मेल हो। **–ताला**–पु० (हिं०) संगीतका एक ताल। **–तालिका**–स्त्री० एक मिश्रराग। **–तीर्थी(र्थिन्)**–वि० एक तीर्थमें स्नान करनेवाला; एक ही पंथ या आश्रमका। पु० सहपाठी; गुरुभाई। **–तीस**–वि० (हिं०) तीस और एक। पु० ३१ की संख्या। **–त्रिंशत्**–वि०, पु० दे० 'इकतीस'। **–दंडा**–पु० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–दंडी(डिन्)**–पु० सन्न्यासियोंका एक भेद, हंस। **–दंत**–पु० गणेश। वि० एक दाँतवाला। । **–दंता**–वि० (हिं०) एक दाँतवाला (हाथी)। **—दंष्ट्र**–पु० गणेश। **–दम**–अ० (हिं०) एकवारगी, तुरत; विलकुल। **–दरा**–वि० (हिं०) एक दरका (दालान, वैठक इ०)। **–दस्ती**–स्त्री० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–दलीय पद्धति,–शासनतंत्र**–पु० (टोटेलिटैरियनिज़्म) समूचे देशके लिए एक ही दलके शासनकी प्रणाली जिसकी लपेटमें नागरिकोंका सार्वजनिक जीवन ही नहीं, निजी और व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता है। **–दिल**–वि० (हिं०) एक विचारके; एकचित्त; अभिन्न, एकरूप। **–दिली**–स्त्री० (हिं०) एकदिल होना, एका। **–दृक्(श्)**, **–दृष्टि**–वि० काना। पु० शिव; तत्त्वज्ञानी; कौआ। **–देशी(शिन्),–देशीय**–वि० एक ही देशका; जो किसी विशेष स्थल या अवस्थामें ही लगे, सर्वत्र न लगे। **–० समास**–पु० षष्ठी तत्पुरुषका एक भेद। **–देह**–पु० बुध ग्रह। वि० एक शरीरवाला। **–धर्मा(र्मन्), –धर्मी(र्मिन्)**–वि० समान धर्म या गुण-स्वभाववाला। **–नयन**–वि० एकाक्ष। पु० शिव; कौवा; कुवेर; शुक्र ग्रह। **–नायक**–पु० शिव। **–निष्ठ**–वि० एकके ही ऊपर निष्ठा, श्रद्धा या एकसे ही अनुराग रखनेवाला, अनन्योपासक। **–निष्ठा**–स्त्री० एकनिष्ठता; अनन्यता; वफादारी। **–नेत्र,–नेत्रक**–पु० शिव। **–पक्षी(क्षिन्),–पक्षीय**–वि० एकतरफा (यूनिलैटरल) एक ही पक्ष या दलसे संवंध रखनेवाला; केवल एक तरफसे होने या किया जानेवाला। **–पटा**–वि० (हिं०) एक पाटवाला। **–पट्टा**–पु० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–पत्नी**–स्त्री० पतिव्रता। **–पत्नीव्रत**–पु० विवाहिता पत्नीके सिवा और किसी स्त्रीसे प्रेम न करनेका व्रत। **–पत्रिका**–स्त्री० गंधपत्रा। **–पद**–वि० लँगड़ा, एक-टंगा। पु० वैकुंठ; कैलाश;

एक रतिबंध। **–पदी**–स्त्री० पगडंडी। **–पदी(दिन्)**–वि० एक पद या चरणवाला (पद्य, छंद)। **–पर्णा**–स्त्री० दुर्गा। **–पलिया†**–वि० जिसमें एक ही पल्ला हो। पु० वह छाजन जिसकी ढाल एक ही ओर हो, बीचमें बँड़ेर न हो। **–पाटला**–स्त्री० एक दुर्गा। **–पाठी(ठिन्)**–वि० जिसे एक ही बार पढ़ने या सुननेसे पाठ याद हो जाय। **–पात**–वि० अचानक या यकायक होनेवाला। पु० मंत्रका पहला शब्द या प्रतीक। **–पाद**–वि० लँगड़ा; एकटंगा। पु० शिव; विष्णु। **– ०वध**–पु० (प्राचीन समयमें प्रचलित) एक पाँव काट देनेका दंड। **–पास***–अ० पास पास। **–पिंग, –पिंगल**–पु० कुबेर। **–पुत्रक**–पु० कौडिल्ला पक्षी। **–पुष्पी(ष्पिन्)**–वि० एक बीज-कोशवाला। **–प्राण**–वि० एकजान, एकदिल। **–फसला**–वि० (हिं०) जिस (खेत या जमीन)में सालमें एक ही फसल उपजे। **–ब-एक**–अ० (हिं०) अचानक, यकायक। **–बद्धी**–स्त्री० (हिं०) एक तरहका लंगर। वि० एक रस्सीका। **–बारगी**–अ० (हिं०) एक ही बारमें; बिलकुल। **–भाव**–वि० समान भाववाला; एकनिष्ठ। **–भुक्त**–वि० दिन-रातमें एक ही बार भोजन करनेवाला। पु० एक बार भोजन करनेका व्रत। **–भूम**–वि० एक-मंजिला (मकान)। **–मंजिला**–वि० (हिं०) एक मंजिल या तल्लेवाला (मकान)। **–मत**–वि० एक या समान मत रखनेवाले। **–मति**–वि० एकराय, समान मत रखनेवाला। **–मना(नस्)**–वि० एकचित्त, एक विचारवाले। **–मात्रिक**–वि० जिसमें एक ही मात्रा हो। **–मुँहा**–वि० (हिं०) एक मुँहवाला। **–मुख**–वि० एक ही लक्ष्यकी ओर प्रवृत्त; एक ही दरवाजेवाला (मकान)। **– ०विक्रय**–पु० सबसे एक दाम कहना, लेना (कौ०)। **–मुखी(खिन्)**–वि० एक मुखवाला। **–मुश्त**–अ० (हिं०) इकट्ठा, एक बारमें। **–मूला**–स्त्री० अलसी, शालपर्णी। **–मोला**–वि० (हिं०) एक दाम कहनेवाला, जो दाममें कमी-बेशी न करे। **–रंग**–वि० एक रंगवाला; एकरूप; बाहर-भीतरसे एक, दुरंगीपनसे रहित, सच्चा, निष्कपट। **–रंगा**–वि० (हिं०) एक रंगवाला (चित्र)। पु० लाल रंगका एक कपड़ा। **–रंगी**–स्त्री० (हिं०) एक रंगका होना, एकरूपता; सचाई, साफदिली। **–रदन**–पु० गणेश। **–रस**–वि० जो सदा एक रूपमें रहे, कभी बदले नहीं, अपरिणामी; जो मिलकर एक हो गया हो, एकदिल। **–रात्र**–पु० एक रात; रातभरमें पूरा होनेवाला एक यज्ञ। **–रुखा**–वि० (हिं०) एक रुखवाला, जिसका मुँह एक ही ओर हो; एकतरफा; एकचश्म। (स्त्री० 'एकरुखी'।) **–रूप**–वि० एक ही रूपवाला, जो सब अवस्थाओंमें एकसा रहे; समान रूपवाला, दे० 'एकरूप'। **–लंगा**–पु० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–लव्य**–पु० द्रोणाचार्यका निषाद शिष्य जिसने उनकी मूर्तिको गुरु मानकर बाणविद्या सीखी और गुरुदक्षिणामें दाहिना अँगूठा काटकर दे दिया था। **–लिंग**–वि० एक लिंगवाला (शब्द)। पु० शिव; मेवाड़के राजवंशके कुलदेव; कुबेर। **–लेखा**–पु० (हिं०) एक फूल; उसका पौधा। **–लौता**–वि० (हिं०) अपने माँ-बापका अकेला (बेटा)। (स्त्री० 'एकलौती'।) **–वचन**–वि० एकका वाचक, 'सिंगुलर'। पु० एकका वाचक वचन या शब्द। **–वचनांत**–वि० एकवचनकी विभक्तिवाला। **–वर्ण**–वि० एक रंगवाला; एक वर्ण या जातिका; वर्णभेद-रहित; एकरूप। **–वस्त्रा**–वि०, स्त्री० जो एक ही कपड़े पहने रहे, रजस्वला। **–वाँझ**–स्त्री० (हिं०) काकवंध्या। **–वाक्य**–वि० एकमत, एकराय। **–वाक्यता**–स्त्री० एकराय होना; एकार्थता; विधिवाक्य और अर्थवाक्यका एक ही अर्थ प्रकट करना (मी०)। **–वासा(सस्)**–पु० जैनोंका एक भेद। **–विंदुगामी रेखाएँ**–स्त्री० (कॉङ्करेंट लाइंज) एक ही विंदुपर एक दूसरेको काटनेवाली रेखाएँ। **–विंश**–वि० इक्कीसवाँ। **–विंशति**–वि० बीस और एक। स्त्री० २१ की संख्या। **–विध**–वि० एक ही विधि, प्रकारवाला। **–वृंद**–पु० गलेका एक रोग। **–वेणि,–वेणी**–स्त्री० सीधे-सादे ढंगसे बँधा जूड़ा या चोटी। वि० इस प्रकारका जूड़ा बाँधनेवाली, विधवा, वियोगिनी (स्त्री)। **–शासन**–पु० एकहत्थी हुकूमत। **–शेष**–पु० द्वंद्व समासका एक भेद जिसमें दोमें एक ही पद रह जाता है। **–श्रुत**–वि० एक बारका सुना हुआ। **–०धर**–जो एक बारका सुना याद रखे। **–श्रुति**–स्त्री० वेदपाठका वह क्रम जिसमें उदात्त-अनुदात्त आदिका विचार नहीं किया जाता। **–षष्ठि**–वि० दे० 'एकसठ'। **–सठ**–वि० (हिं०) साठ और एक। पु० ६१ की संख्या। **–सत्ताक**–वि० एकहत्था, एकतंत्र (राज्य)। **–सदनात्मक**–वि० (यूनिकेमरल) जिसमें केवल एक ही सदन, विधान-सभा, हो। **–सदनी, –सदनीय**–वि० (यूनिकेमरल) (शासनका वह रूप या प्रकार) जिसमें एक ही सदन या विधान सभा हो, दे० 'एक सदनात्मक'। **–सदस्य-निर्वाची क्षेत्र**–पु० (सिंगिल मेंबर कांस्टिटुएंसी) वह निर्वाचनक्षेत्र जहाँसे केवल एक ही सदस्य चुना जानेको हो। **–साँ**–वि० (हिं०) समान, सदृश। **–साक्षिक**–वि० जिसका एक ही साक्षी हो, जिसे एकने ही देखा हो। **–सार्थं**–अ० एक साथ; एक जमातमें। **–साला**–वि० (हिं०) एक सालका; एक सालकी मुद्दतवाला (पट्टा)। **–सूत्र**–पु० डमरू। वि० एक रूपमें परस्पर सम्बद्ध (एकसूत्रता–एक रूपमें परस्पर संबद्ध होनेका भाव)। **–सूनु**–पु० एकलौता लड़का। **–स्थ**–वि० एकपर स्थित या केंद्रित। **–स्व**–पु० दे० क्रममें। **–हत्था**–वि० (हिं०) एक हाथमें केंद्रित, एक व्यक्ति द्वारा संचालित, एकतंत्र। पु० किसी विषयपर एकाधिकार करना। **–हत्थी**–वि० स्त्री० (हिं०) दे० 'एकहत्था'। स्त्री० मालखंभकी एक कसरत। **–हल्य**–वि० एक बार जोता हुआ। **–हस्तपादवध**–पु० एक हाथ और एक पाँव काटनेका दंड (कौ०)। **–हस्तवध**–पु० एक हाथ काटनेका दंड (कौ०)। **–हायन**–वि० एक वर्षकी अवस्थाका। मु०–**अनार सौ बीमार**–चीज थोड़ी और चाहनेवाले बहुत। –**आँख न भाना**–तनिक भी न भाना, बिलकुल नापसंद होना। –**आँखसे सबको देखना**–एकसा मानना, व्यवहार करना। –**एकके दस-दस करना**–खूब नफा कमाना। –**एकके दो-दो करना**–दिन काटना। –**और एक ग्यारह होते हैं**–दोके मिलकर काम करनेसे शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। –**की चार(दस-दस) लगाना**–बढ़ा चढ़ाकर कहना, शिकायत करना; अपनी ओरसे बातें जोड़-मिलाकर कहना; भड़काना। –**को दवा दो**–एकको दबाने, हरानेके लिए दो बहुत होते हैं। –**के दस सुनाना**–एक कड़ी बातके बदले दस कड़ी बातें सुनाना। –**चना भाड़ नहीं फोड़ सकता**–एक आदमीके किये वह काम नहीं हो सकता जो कई आदमियोंके मिलकर करनेका हो। –**चनेकी दाल**–बिलकुल एकसे, हर बातमें बराबर; सगे भाई। –**जान दो क़ालिब**–बहुत गहरे दोस्त, अभिन्नहृदय होना। –**जान हजार गम या मुसीबतें**– एक आदमीको अगणित चिंताएँ, रंज, कोफ्त होना। –**तवेकी रोटी, क्या मोटी और क्या छोटी**–एक कुल, घरानेके सब आदमी बराबर हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं। –**थैलीके चट्टे-बट्टे**–दोनों एकसे हैं, दोनोंमें कोई वास्तविक अंतर नहीं। –**न शुद, दो शुद**–एक बला थी ही, दूसरी और आ पड़ी, एक कष्ट या विपत्ति रहते दूसरीका आ जाना। –**पंथ दो काज**–एक यत्न, उपायसे दो कार्य सिद्ध होना; एक काम करते हुए दूसरा हो जाना। –**पाँव भीतर, एक पाँव बाहर**–कामकी भीड़ या परेशानीसे एक जगह ठहर न सकना, कभी यहाँ कभी वहाँ आते-जाते रहना। –**पाँव रिकाबमें होना**–यात्राके लिए हर समय तैयार रहना; आज यहाँ, कल वहाँ जाते रहना। –**पाँवसे खड़ा रहना**–आज्ञा-पालनके लिए तैयार रहना, आज्ञाकी प्रतीक्षामें खड़ा रहना; ताबेदारी बजाना। –**लाठीसे सबको हाँकना**–सबके साथ एक-सा बरताव करना, भले-बुरेका विचार न करना। –**से दो होना**–ब्याह होना, बीबीका घरमें आना। –**हत्था करना**–एकाधिकार, इजारा कायम कर लेना।

एकक–वि० (सं०) अकेला; एकसे संबंधित।

एकट्ठा†–वि० दे० 'इकट्ठा'।

एकठा–पु० एक ही लकड़ीसे बनी हुई नाव, एकगाछी।

एकड़–पु० (अं०) एक नाप जो ३२ बिस्वेके करीब होती है।

एकडेमी–स्त्री० (अं०) पाठशाला, विद्यालय, स्कूल; विज्ञानकी उन्नतिके लिए स्थापित संस्था।

एकत*–अ० एक ही स्थानपर, एकत्र–'कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ'–वि०।

एकतरा–पु० एक दिनके अंतरसे आनेवाला ज्वर।

एकता–स्त्री० (सं०) एक होना, एका, मेल; अभेद।

एकतालीस–वि० चालीस और एक। पु० ४१ की संख्या।

एकत्र–अ० (सं०) इकट्ठा, यकजा।

एकत्रित–वि० इकट्ठा किया हुआ, एकत्रीकृत।

एकत्व–पु० (सं०) दे० 'एकता'।

एकदा–अ० (सं०) एक बार, एक समय।

एकन्नी–स्त्री० एक आनेका सिक्का जो पहले चलता था।

एकबाल–पु० (अ०) स्वीकार, हामी; प्रताप; सौभाग्य।

एकरार–पु० (अ०) स्वीकार; वादा। **–नामा**–पु० प्रतिज्ञापत्र।

एकल–वि० (सं०) अकेला, अद्वितीय। वि० (टेनिस या बैडमिंग्टन का वह खेल) जिसमें प्रत्येक पक्षमें केवल एक-एक व्यक्ति हिस्सा ले (पुरुष एकल)।

एकल संक्रमणीय मत–पु० (सिंगिल ट्रांसफरेबल वोट) (आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणालीमें) मतदाता द्वारा किसी निर्वाचन-क्षेत्रसे चुने जानेवाले अनेक सदस्योंमेंसे किसी एकको इस शर्तके साथ दिया गया मत कि यदि निर्धारित संख्यामें मत प्राप्त कर लेनेके कारण, उसे इसकी आवश्यकता न रहे, तो वह उसके बादके अधिमान दिये गये उम्मेदवारके पक्षमें संक्रमित हो जायगा।

एकला*–वि० दे० 'एकल'।

एकवांज–स्त्री० दे० 'एक'में।

एकसर–अ० एक सिरेसे दूसरे सिरेतक; एक ही दफा। वि० अकेला; एक पल्लेका।

एकसूत्रीकरण–पु० (को-आर्डिनेशन) समान स्तरपर लाने, परस्पर समुचित रूपसे संबद्ध करने आदिका कार्य; समन्वयन।

एकस्व–पु० (पेटेंट) किसी उद्भावित या स्वनिर्मित वस्तुसे होनेवाली आयका एकाधिकार देनेवाला सरकारी मुद्रांकित प्रलेख। **–पत्र**–पु० (लेटर्स पेटेंट) किसी बातका एकाधिकार प्रदान करनेवाला पत्र। **–भेषज**–स्त्री० (पेटेंट मेडिसिन) वह भेषज या दवा जिसे बेचने-बनानेका एकाधिकार सरकारी मुद्रांकित प्रलेख द्वारा उसके उद्भावक या मूल निर्माताको ही प्राप्त हो।

एकहत्तर–वि० सत्तर और एक, ७१। पु० ७१ की संख्या।

एकहरा–वि० एक परतका।

एकहरी–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच।

एकांक, एकांकी(किन्)–वि० (सं०) एक अंकवाला। (दृश्य काव्य)।

एकांग–वि० (सं०) एक अंगवाला; विकलांग। पु० अंग-रक्षक; विष्णु; बुध या मंगल ग्रह; चंदन; सिर। **–वध**–पु० एक अंग काटनेका दंड (कौ०)। **–वात**–पु० पक्षाघात, फालिज।

एकांगिका–स्त्री० (सं०) चंदनसे तैयार किया हुआ; एक लेप।

एकांगी(गिन्)–वि० (सं०) एक अंगवाला; एकपक्षीय।

एकांड–पु० (सं०) एक तरहका घोड़ा।

एकांत–वि० (सं०) अकेला; अलग; एक ही वस्तुको लक्ष्य करनेवाला; अत्यंत; पूर्ण 'उनमें एकान्त मौलिकता थी'–सुधीन्द्र। निरपवाद, निश्चित; एक ही ओर लगा हुआ। क्रि० वि० पूर्णतः ('एकांत नीरस')। पु० निराला, सूना स्थान; तनहाई। **–कैवल्य**–पु० मुक्तिका एक भेद। **–वास**–पु० एकांत स्थानमें रहना, **–स्वरूप**–वि० निर्लिप्त, निःसंग।

एकांतर–वि० (सं०) एकके बाद आने या पड़नेवाला, (आल्टरनेट) बीचमें एकको छोड़कर दूसरा। पु० अँतरा ज्वर।

एकांतरिक–वि० (आल्टरनेट) बीचमें एक दिन छोड़कर दूसरे दिन होने या आनेवाला; बीचमें एकको छोड़कर दूसरेसे संबंध रखनेवाला।

एकांतिक–वि० (सं०) पक्का, निश्चित।

एका–पु० एकता, मेल, इत्तिफाक, एकमत होना। स्त्री० (सं०) दुर्गा।

एकाएक–अ० अचानक, सहसा।

एकाएकी*–अ० दे० 'एकाएक'। वि० एकाकी।

एकाकार–वि० (सं०) एकरूप, मिला-जुला।

एकाकिनी–वि०, स्त्री० (सं०) अकेली।

एकाकी(किन्)–वि० (सं०) अकेला।

एकाकीपन–पु० अकेला होनेका भाव; नाना प्रकारकी परिस्थितियोंमें मनुष्य सम्बन्धोंसे विच्छिन्न रहने या होनेका बोध।

एकाक्ष–वि० (सं०) एक आँखवाला, काना; एक विंदीवाला (रुद्राक्ष)। पु० कौवा; शिव; एक दानव।

एकाक्षर–वि० (सं०) एक अक्षरवाला। पु० एक अक्षरका मंत्र, 'ॐ'।

एकाक्षरी(रिन्)–वि० (सं०) एक अक्षरवाला। **–कोश**–पु० संस्कृतका एक कोश जिसमें अलग-अलग अक्षरोंके अर्थ दिये गये हैं।

एकाग्र–वि० (सं०) एक ही नोकवाला; जिसका ध्यान एक ही ओर, एक ही वस्तुमें लगा हो; अचंचल, यकसू। पु० चित्तकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (यो०)। **–चित्त**–वि० स्थिरचित्त। **–दृष्टि**–वि० एक विंदुपर दृष्टि जमानेवाला। **–भूमि**–स्त्री० चित्तकी वह अवस्था जिसमें बाहरी वृत्तियोंका निरोध होनेपर किसी विषयमें वह तदाकार हो जाता है।

एकाग्रता–स्त्री० (सं०) एकाग्र होनेका भाव; योगके अनुसार चित्तकी वह अवस्था जब जिसमें किसी प्रकारकी चंचलता नहीं रह जाती।

एकाच्–वि० (सं०) एक स्वरवाला (शब्द)।

एकात्म–वि० (सं०) एकप्राण, अभिन्न। **–वाद**–पु० आत्माकी एकता, जीव-ब्रह्मकी एकताका सिद्धांत, अद्वैतवाद।

एकात्मता–स्त्री० (सं०) एकता, समानता, अभिन्नता।

एकादश–वि० (सं०) दस और एक; ग्यारहवाँ। पु० ग्यारहकी संख्या।

एकादशक–पु० क्रिकेट आदिके खेलमें दलके ग्यारह खिलाड़ियोंका समूह (इलेवन्स)।

एकादशाह–पु० (सं०) मृत्यु या दाहकी तिथिसे ग्यारहवें दिनका कर्म।

एकादशी–स्त्री० (सं०) चांद्र मासकी ग्यारहवीं तिथि।

एकाधिक–वि० (सं०) एकसे अधिक, अनेक।

एकाधिकारी–पु० (सं०) एक या अकेले आदमीका अधिकार; (मानोपॉली) किसी वस्तुके व्यापारादिमें केवल एक ही आदमी या एक ही कंपनीका पूर्ण अधिकार, इजारा।

एकाधिप, एकाधिपति–पु० (सं०) सारे देशपर एकच्छत्र राज्य करनेवाला, अकेला, स्वामी या शासक।

एकाधिपत्य–पु० (सं०) एकाधिकार, एक आदमीको सर्वाधिकार प्राप्त होना।

एकानुरूप–वि० (होमोलॉगस) जो एक सदृश हो, समान सापेक्ष स्थितिवाला।

एकाब्दा–स्त्री० (सं०) एक सालकी बछिया।

एकायन–वि० (सं०) एकके गमन करने योग्य (पगडंडी); एकाग्र; विचारोंका एका; नीतिशास्त्र।

एकार–पु० (सं०) 'ए' अक्षर या उसकी ध्वनि।

एकार्गल–पु० (सं०) खर्जूरवेध नामक योग।

एकार्णव–पु० (सं०) प्लावन; जलप्रलय।

एकार्थ, एकार्थक–वि० (सं०) समान अर्थवाला, हममानी, (शब्दादि)।

एकावलि–स्त्री० (सं०) अर्थालंकारका एक भेद जहाँ पूर्व-पूर्वके प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओंका विशेषणके रूपमें स्थापन या निषेध किया जाय; जैसे 'सिला कठोरी काठतें, तातें लौह कठोर। ताहूतें कीन्हों कठिन, मन तुम नंदकिसोर।' एक छंद; मोतियोंकी एक हाथ लंबी माला (कौ०)। वि० एक लड़ीका।

एकावली–स्त्री० (सं०) दे० 'एकावलि'।

एकाष्ठील–पु०, **एकाष्ठीला**–स्त्री० (सं०) पाठा, वकवृक्ष।

एकाह–वि० (सं०) एक दिनमें होनेवाला। पु० एक दिनका समय; एक दिन चलनेवाला यज्ञ।

एकीकरण–पु० (सं०) दो या अधिक वस्तुओं, समितियों, व्यापारिक संस्थाओं आदिको मिलाकर एकरूप कर देना।

एकीकृत–वि० (सं०) मिलाकर एक किया हुआ।

एकीभवन, एकीभाव–पु० (सं०) मिलकर एक हो जाना, पूरी तरह मिल जाना।

एकीभूत–वि० (सं०) जो मिलकर एक हो गया हो।

एकेंद्रिय–वि० (सं०) (वह प्राणी) जिसे एक ही इंद्रिय हो

(केंचुआ, जोंक इ०) ।

एकेश्वरवाद–पु० (सं०) ईश्वर अर्थात् जगत्‌का सर्जन-नियमन करनेवाली शक्ति एक ही है–यह मत ।

एकोतरसौ–वि० एक सौ और एक, एकोत्तरशत । पु० १०१ की संख्या ।

एकोत्तर–वि० (सं०) एक अधिक (जैसे पाँचसे छ) ।

एकोदक–पु०, वि० (सं०) एक ही पितरको जल देनेवाला, संबंधी ।

एकोद्दिष्ट–वि० (सं०) एकके उद्देश्यसे किया जानेवाला (श्राद्ध) ।

एकौझा*–वि० अकेला, तनहा ।

एक्का–वि० अकेला; बेजोड़ । पु० दो पहियोंकी गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है; ताश, गंजीफेका वह पत्ता जिसपर एक ही बूटी हो, एक्की; अकेले कठिन काम कर सकनेवाला सिपाही; सैनिकोंके संबंधमें रिपोर्ट करनेवाला सिपाही; बाँहपर पहननेका एक गहना; वह भारी मुगदर जो दोनों हाथोंसे भाँजा जाय । **–दुक्का**–वि० अकेला-दुकेला; एक-दो (आदमी) । **–वान**–पु० एक्का हाँकनेवाला ।

एक्की–स्त्री० एक बैलकी गाड़ी; एक बूटीवाला ताश का पत्ता ।

एक्यानबे–वि० नब्बे और एक । पु० ९१ की संख्या ।

एक्यावन–वि० पचास और एक । पु० ५१ की संख्या ।

एक्यासी–वि० अस्सी और एक । पु० ८१ की संख्या ।

एक्स-किरण, एक्स-रे–पु० (अं०) प्रकाशकी जाति की विद्युत् चुम्बकीय तरंग जिसका तरंग दैर्घ्य प्रकाश तरंगसे लगभग १००० गुना कम होता है । कैथोड किरणें (तीव्रगामी इलेक्ट्रान कण) जब टंग्सटन सरीखी भारी धातु पर टकराती हैं, तो उस धातुसे एक्स-किरणें उत्सर्जित होती हैं । उनकी वेधनशक्ति प्रबल होती है, ये फोटोग्राफीकी प्लेटको अत्यधिक प्रभावित करती हैं तथा गैसोंको आयनित करती हैं । ये किरणें रोगकीटाणुओंके लिए घातक होती हैं । इनकी सहायतासे शरीरांगोंका एक्सकिरण-छाया चित्र लेकर भीटरकी टूटी हुई हड्डी आदिका पता लगाया जा सकता है ।

एक्साइज़–पु० (अं०) देशमें बने हुए मालपर लगनेवाला कर, उत्पादनकर; इस करकी वसूलीका प्रबंध; नमक और मादक वस्तुओंपर लगनेवाला कर; उसकी वसूली करने और चोरी रोकनेवाला विभाग । **–डिपार्टमेंट**–पु० आबकारी विभाग । **–ड्यूटी**–स्त्री० देशमें बननेवाली वस्तुओं, मादक द्रव्य आदिपर लगनेवाला कर ।

एग्ज़िबिशन–पु० (अं०) प्रदर्शनी, नुमाइश ।

एजाज़–पु० (अ०) चमत्कार, करिश्मा, अलौकिक शक्ति-सूचक कार्य ।

एजेंट–पु० (अं०) किसीकी ओरसे, उसके प्रतिनिधिके रूपमें काम करनेवाला, अभिकर्ता; किसी व्यापारी या फर्मकी ओरसे खरीद-बेची आदि करनेवाला गुमाश्ता; कमीशनपर माल बेचनेवाला; किसी राज्य या उपनिवेशमें प्रतिनिधिरूपसे रहनेवाला अधिकारी ।

एजेंसी–स्त्री० (अं०) एजेंटका पद, कार्य या कार्यक्षेत्र, अभिकरण; वह स्थान जहाँ कमीशनपर माल बेचा जाय; किसी एजेंटके अधीन प्रदेश या इलाका; बड़े लाटके एजेंट या प्रतिनिधिके रहनेका स्थान या आफिस ।

एटर्नी–पु० (अं०) वकील; नियमानुसार अधिकारप्राप्त प्रतिनिधि ।

एड–वि० (सं०) बहरा । पु० एक तरहका भेड़ा । **–गज**–पु० एक ओषधि, उरण, चक्रमर्दक ।

एड़–स्त्री० एड़ी । **मु०–देना,–लगाना**–(घोड़ेको) तेज करने या आगे बढ़ानेके लिए एड़ मारना ।

एडक–पु० (सं०) भेंड़ा; बनैला बकरा ।

एडिकांग–पु० (अं०) जेनरलके सहायकरूपमें काम करनेवाला फौजी अफसर ।

एडिटर–पु० (अं०) संपादक, संपादनकार्य करनेवाला ।

एडिटरी–स्त्री० एडिटरका काम, संपादन ।

एडिशनल–वि० (अं०) अतिरिक्त, बढ़ाया हुआ । **–सेशन जज**–पु० अतिरिक्त दौरा जज ।

एडिसन–पु० (अं०) सत्रहवीं शतीका एक प्रमुख अंग्रेजी कवि और साहित्यकार जोजफ एडिसन (१६७२-१७१९ ई०); ग्रामोफोनका आविष्कारक सुविख्यात अमेरिकन विज्ञानवित् टामस एलवा एडिसन जिसने कुल मिलाकर लगभग एक हजार विद्युत्संबंधी आविष्कार किये (१८४७-१९३२ ई०) ।

एड़ी–स्त्री० तलवेका टखनेके नीचेका भाग । **मु०–चोटीका पसीना एक करना**–बहुत मेहनत, कोशिश करना । **–से चोटीतक**–सिरसे पैरतक । **एड़ियाँ रगड़ना**–बहुत कष्ट भोगना; बहुत श्रम, दौड़-धूप करना ।

एण–पु० (सं०) काले रंगके हिरनका एक भेद । **–तिलक, –भृत्, –लांछन**–पु० चंद्रमा । **–दृक्(श्)**–पु० मकर राशि ।

एणी–स्त्री० (सं०) मादा एण । **–दाह**–पु० एक तरहका ज्वर । **–पद**–पु० एक तरहका साँप । वि० हिरनी जैसे पैरोंवाला । **–पदी**–स्त्री० एक तरहका विषैला कीड़ा ।

एत*–वि० इतना । अ० इस प्रकार । पु० आदित्य, सूर्य ।

एतक़ाद–पु० (अ०) श्रद्धा, विश्वास, एतबार, भरोसा ।

एतत्–सर्व० (सं०) यह ।

एतदर्थ–अ० (सं०) इसलिए; इसके लिए ।

एतदवधि–अ० (सं०) अबतक; इस हदतक ।

एतदाल–पु० (अ०) साम्यावस्था, न कम, न अधिक होना; दोषसाम्य; न अधिक ठंढा, न अधिक गरम होना; बीचकी स्थिति या रास्ता । **–पसंद**–वि० मध्यम मार्गका अनुसरण करने, अतिसे बचनेवाला; नरम दलका ।

एतद्देशीय–वि० (सं०) इस देशका; इस देशमें होने या पाया जानेवाला ।

एतन–पु० (सं०) निःश्वास; एक मत्स्य ।

एतबार–पु० (अ०) विश्वास, भरोसा; साख ।

एतबारी–वि० (अ०) विश्वास करने योग्य, मातबर ।

एतमाद–पु० (अ०) विश्वास, भरोसा ।

एतराज़–पु० (अ०) विरोध, आपत्ति; दोष निकालना; नुक्ताचीनी ।

एतवार–पु० दे० 'इतवार' ।

एता*–वि० इतना ।

एतादृक्(श्)–वि० (सं०) ऐसा, इस प्रकारका ।

एतादृशी–वि०, स्त्री० (सं०) इस प्रकारकी, ऐसी ।

एतादृस*–वि० ऐसा, इस प्रकारका ।

एतावत्–वि० (सं०) इतना ।

एतिक*–वि०, इतना ।

एध(स्)–पु० (सं०) ईंधन; अभ्युदय ।

एधित–वि० (सं०) वर्द्धित ।

एन†–पु० गायका थन ।

एन*–पु० दे० 'एण' ।

एन(स्)–पु० (सं०) पाप; अपराध, दोष ।

एनामेल–पु० (अं०) लोहे आदिके पत्तरकी बनी चीजोंपर चढ़ाया जानेवाला एक तरहका लेप जिससे वे देखनेमें चीनी मिट्टीकीसी लगने लगती हैं, तामचीन ।

एनीबेसेंट–स्त्री० (१८४७-१९३३) 'थिऑसाफिकल सोसायटी'की अध्यक्षा (१९०७-३३); भारतमें 'होमरूल' 'स्वराज' आंदोलनकी प्रवर्तिका तथा काशीके हिंदू कालेजकी संस्थापिका ।

एनोड–पु० (अं०) वह प्लेट जिसके द्वारा विद्युत् अपघटनवाले पात्रके अन्दर विद्युत्धारा प्रवेश करती है ।

एन्ज़ाइम–पु० जीवोंमें पाया जानेवाला कार्बनिक पदार्थ जो प्रोटोप्लाज़ममें रासायनिक अभिक्रियाओंकी गति बढ़ानेके लिए उत्प्रेरक सरीखा काम करता है । एन्ज़ाइम की बदौलत ही शरीरके तापपर भी रासायनिक क्रियाएँ चलती रहती हैं ।

एप्रूवर–पु० (अं०) इकबाली गवाह ।

एफ़िडेविट–पु० (अं०) हलफी बयान; हलफनामा ।

एम*–अ० इस प्रकार ।

एम–पु० (अं०) (मुद्रणक्षेत्रमें प्रयुक्त) एक नाप, १।६ इंच ।

एमन–पु० एक मिश्रित राग ।

एयर–पु० (अं०) हवा, वायु । **–क्राफ्ट**–पु० हवाई जहाज । **गन**–स्त्री० हवाई बंदूक । **–टाइट**–वि० जिसमें हवा न जा सके ।

–फ़ोर्स–पु० हवाई फौज, वायुसेना । **–मेल**–पु० हवाई डाक, हवाई जहाजसे आने-जानेवाली डाक । **–मैन**–पु० उड़ाका । **–रेड**–पु० हवाई हमला । **–शिप**–पु० हवासे हलका हवाई जहाज ।

एरंग–पु० (सं०) एक तरहकी मछली ।

एरंड–पु० (सं०) रेंड । **–खरबूजा**–पु० (हिं०) पपीता । **–पत्रिका,–फला**–स्त्री० दंती वृक्ष । **–बीज**–पु० रेंड़ी ।

एरंडक–पु० (सं०) दे० 'एरंड' ।

एरंडा–स्त्री० (सं०) पिप्पली ।

एराक़–पु० दे० 'इराक़' ।

एराक़ी–वि०, पु० दे० 'इराक़ी' ।

एराफ़–पु० (अ०) जहाजका पेंदा ।

एराब–पु० (अ०) जेर, जबर, पेशकी मात्राएँ या उनके चिह्न ।

एरियल–पु० (अं०) धातुके तारकी ऐसी व्यवस्था जिसके द्वारा रेडियो तरंगोंका प्रसारण किया जा सके या उन्हें ग्रहण किया जा सके । इसे ऐन्टीना भी कहते हैं ।

एरे–अ० अरे, हे !

एरोड्रोम–पु० (अं०) हवाई अड्डा ।

एरोप्लेन–पु० (अं०) हवासे भारी हवाई जहाज, विमान ।

एर्वारु, एर्वारुक–पु० (सं०) एक तरहकी ककड़ी ।

एलंग–पु० (सं०) एक तरहकी मछली ।

एल–पु० कपड़ेकी एक नाप ।

एलक–पु० (सं०) भेड़ा, मेढ़ा; † एक तरहकी छलनी ।

एलकोहल–पु० (अं०) एक तरल मादक द्रव्य जो शराब आदि बनानेके काम आता है ।

एलची–पु० (तु०) दूत; राजदूत ।

एलवालु, एलवालुक–पु० (सं०) कपित्थकी छाल जो सुगंधित होती है; एक रवादार द्रव्य ।

एलविल–पु० (सं०) कुबेर ।

एला–†पु० एक कँटीली लता जिसकी पत्तियाँ चटनी बनानेके काम आती हैं । स्त्री० (सं०) इलायची; इलायचीका पेड़; बनरीठा; एक राग; आमोद-प्रमोद; क्रीड़ा । **–गंधिका**–स्त्री० कपित्थकी छाल । **–पत्र**–पु० ए० नाग । **–पर्णी**–स्त्री० एक पौधा, युक्तरसा ।

एलान–पु० (सं०) नारंगी; (अ०) सार्वजनिक घोषणा, मुनादी ।

एलार्म–पु० (अं०) संकटसूचक शब्द या संकेत । **–चेन**–स्त्री० रेलगाड़ियोंमें लगी हुई जंजीर जो खतरे आदिके समय खींची जाती है । **–टाइम पीस**– टेबिल आदिपर रखी जानेवाली घड़ी जो निर्धारित समयपर जगा देनेके लिए बाजा या घंटी बजा देती है । **–सिगनल**–पु० संकटसूचक संकेत ।

एलीका–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची ।

एलुक–पु० (सं०) एक सुगंधित द्रव्य; एक द्रव्य या पौधा जो दवाके काम आता है ।

एलुवा–पु० मुसब्बर ।

एल्डरमैन–पु० (अं०) म्युनिसिपल कार्पोरेशनका मेयरसे नीचेका सदस्य ।

एल्वालु, एल्वालुक–पु० (सं०) दे० 'एलवालु' ।

एव–अ० (सं०) ही ।

एवज़–पु० (अ०) बदला, प्रतिफल; वह जो (किसीके) बदलेमें काम करे, स्थानापन्न । अ० बदलेमें । **–मुआवजा**–पु० अदल-बदल; एक चीजके बदलेमें दूसरी चीज देना या लेना ।

एवज़ी–वि० (अ०) बदलेमें काम करनेवाला, स्थानापन्न ।

एवम्–अ० (सं०) ऐसे, इस प्रकार; और, और भी । **–अस्तु**–ऐसा हो । (प्रार्थनाकी स्वीकृति या वर देनेके समय कहा जाता है ।) **–(वं)गुण**–वि० ऐसे गुणोंवाला । **–भूत,–विध**–वि० ऐसा, इस प्रकारका ।

एवेन्यू–पु० (अं०) वह सड़क जिसपर थोड़ी-थोड़ी दूरपर पेड़ लगे हों; चौड़ी सड़क ।

एशिया–पु० दुनियाके पाँच भूखंडों या महाद्वीपोंमें सबसे बड़ा खंड । (भारत, ईरान, चीन, जापान आदि देश इसीके अंतर्गत हैं । इसकी लंबाई ७,८०० मील, चौड़ाई ५,२०० मील और रकबा १ करोड़, ७० लाख, ५८ हजार वर्गमील है ।) **–ई**–वि० एशियाका, एशियासे संबद्ध । पु० एशियावासी । **–ए-कोचक**–पु० अनातोलिया, एशियामाइनर ।

एषण–पु० (सं०) इच्छा, चाह; चाहना; पानेका यत्न करना; लौहमय बाण; दबाना; प्रविष्ट करना; सलाई आदिके जरिये रोगकी जाँच करना ।

एषणा–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह; प्रार्थना; याचना ।

एषणिका–स्त्री० (सं०) सोना-चाँदी तौलनेका काँटा ।

एषणी–स्त्री० (सं०) दे० 'एषणिका'; लौहशलाका ।

एषणी(णिन्)-वि० (सं०) चाहनेवाला; पानेका य न करनेवाला ।

एषणीय–वि० (सं०) चाहने योग्य ।

एषा–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह ।

एषिता(तृ)–वि० (सं०) चाहनेवाला, इच्छुक ।

एषी(षिन्)–वि० (सं०) इच्छा करनेवाला, चाहनेवाला (प्राय समासांतमें प्रयुक्त)।

एष्टि–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह ।

एष्य–वि० (सं०) इच्छा करने योग्य, अभिलषणीय; रोगकी जाँचके लिए सलाई लगाने योग्य ।

एसिड–पु० (अं०) तेजाब, अम्ल ।

एसेंब्ली–स्त्री० (अं०) सभा, परिषद्; समूह, मजमा ।

एसेंस–पु० (अं०) सार, सत्त; पुष्पसार, विलायती इत्र; सुगंधि ।

एसौं†– अ० इस साल ।

एस्पिरांटो–पु० एक कृत्रिम भाषा जो विभिन्न देशवालोंके परस्पर व्यवहारके लिए गढ़ी गयी है ।

एह*–सर्व० दे० 'यह' ।

एहतिमाम–पु० (अ०) प्रबन्ध, इंतजाम; आयोजन; निगरानी ।

एहतिमाल–पु० (अ०) संभावना; आशंका, आदेश; शक, संदेह ।

एहतिमाली–वि० संदिग्ध ।

एहतियाज–पु० (अ०) दे० 'इहतियाज' ।

एहतियात–पु० (अ०) बचना, बचाव; चौकसी, होशियारी ।

एहतियातन्–अ० (अ०) एहतियातके तौरपर; सावधानीके तौरपर; बचावकी दृष्टिसे ।

एहतियाती–वि० खतरेसे बचावके लिए किया जानेवाला; बचाव-संबंधी, हिफाजती । **–कारवाई**–स्त्री० संभाव्य अनिष्ट या खतरेसे बचावके लिए की गयी कारवाई ।

एहतिलाम–पु० (अ०) स्वप्नमें वीर्यपात, स्वप्नदोष ।

एहसान–पु० (अ०) नेकी, भलाई, उपकार; ऋण । **–फ़रामोश**–वि० एहसान भूल जानेवाला, कृतघ्न । **–मंद**–वि० उपकार माननेवाला, कृतज्ञ । **मु०–जताना**–अपने उपकारोंकी चर्चा करना; (किसीको) अपने एहसानकी याद दिलाना ।

एहाता–पु० (अ०) घेरा; चहारदीवारीसे घेरी हुई जगह; सूबा, प्रेसिडेंसी ।

एहि*–सर्व० 'इस', 'एह'का विभक्तिके पहले प्रयुक्त होनेवाला रूप; यही ।

एहो–अ० संबोधनार्थक अव्यय, हे, ए !

ऐ

ऐ–देवनागरी वर्णमालाका बारहवाँ, ऋ, लृ, लॄको छोड़कर नवाँ (स्वर) वर्ण ।

ऐं–अ० अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात फिरसे कहलानेके लिए प्रयुक्त एक शब्द ।

ऐंगुद–वि० (सं०) इंगुदीका । पु० इंगुदीकी गिरी ।

ऐंग्लो–वि० (अं०) अंग्रेजी, इंग्लिश (समासमें व्यवहृत रूप) । **–इंडियन**–पु० भारत, बर्मा आदिमें जनमा या वहाँ रहनेवाला अंग्रेज; यूरोपीय और एशियाई माता-पिताकी संतान, यूरेशियन ।

–वर्नाक्यूलर(स्कूल)–पु० जहाँ अंग्रेजी और देशभाषा दोनों पढ़ायी जाती हों।

ऐंग्स्ट्रममात्रक–पु० (ऐंग्स्ट्रम यूनिट) लंबाई नापनेकी एक छोटी इकाई (मात्रक)। एक ऐंग्स्ट्रम मात्रक=१०-८ सेमी; =१ सेमीका दस करोड़वाँ भाग, प्रकाश तरंगोंके तरंग दैर्घ्यकी नाप प्राय: ऐंग्स्ट्रममें की जाती है।

ऐँचना–स० क्रि० खींचना; अपने जिम्मे लेना; फटकना, सूप आदिके सहारे अनाजसे भूसी निकालना।

ऐंचा†–वि० तिरछा, दूसरी तरफ खिंचा हुआ (ऐंची आँख)।

ऐँचाताना–वि० जिसकी आँखकी पुतली ताकते समय दूसरी तरफ खिंची रहे।

ऐँचातानी–स्त्री० अपनी-अपनी ओर खींचनेकी कोशिश।

ऐँचीला–वि० लचीला; खींचे जाने योग्य।

ऐँछना*–स० क्रि० झाड़ना, कंघी करना–'देह पोंछि पुनि ऐंछि स्याम कच चोटी सुभग वनावै'–रघुराज सिंह।

ऐंटेना–पु० (अं०) 'एरियल' का दूसरा नाम।

ऐँठ–स्त्री० ऐंठन; अकड़, ठसक, घमंड; द्वेष।

ऐँठन–स्त्री० मरोड़, घुमाव; खिंचाव।

ऐँठना–स० क्रि० मरोड़, घुमाव देना; धोखा देकर या भय दिखाकर ले लेना। अ० क्रि० अकड़ना; बल खाना; टर्राना; मरना।

ऐँठवाना, ऐँठाना–स० क्रि० ऐंठनेके काममें लगाना।

ऐँठा–पु० रस्सी बटनेका एक यंत्र।

ऐँठू–वि० घमंडी, अकड़बाज।

ऐँड़–पु० ऐंठ, शान, गर्व; भँवर। **–दार**–वि० शानवाला, गर्वीला, घमंडी; बाँका।

ऐँड़ना–अ० क्रि० ऐंठना; अँगड़ाना; इतराना; सूखकर कड़ा पड़ जाना। स० क्रि० ऐंठना, बल देना; (बदन) तोड़ना।

ऐँड़-बैँड़*–वि० वक्र, टेढ़ा, तिरछा; अंडबंड।

ऐँडा–वि० ऐंठा हुआ; दर्पयुक्त–'ऐंडो रहै निसंक तासु हाँसी करि डोलै'–दीन०।

ऐँड़ाना–अ० क्रि० अँगड़ाई लेना; ऐंठ दिखलाना; इतराना।

ऐँदव–वि० (सं०) इंदु–चंद्रमा-संबंधी। पु० मृगशिरा नक्षत्र; चांद्रायण व्रत; चांद्र मास।

ऐंदवी–स्त्री० (सं०) सोमराजी।

ऐंद्र–वि० (सं०) इंद्र-संबंधी। पु० इंद्रपुत्र, अर्जुन; वालि; इंद्रका यज्ञांश; एक संवत्सर; ज्येष्ठा नक्षत्र; वन-अदरक।

ऐंद्रजाल–पु० (सं०) जादूगरी, बाजीगरी।

ऐंद्रजालिक–वि० (सं०) इंद्रजाल, जादू या नजरबंदीका (काम); बाजीगरी जाननेवाला। पु० इंद्रजाल करनेवाला, बाजीगर, जादूगर। **–कर्म(न्)**–पु० इंद्रजालके काम।

ऐंद्रलुप्तिक–वि० (सं०) खल्वाट।

ऐंद्रशिर–पु० (सं०) एक प्रकारका हाथी।

ऐंद्रि–पु० (सं०) इंद्रका पुत्र जयंत; अर्जुन; वालि; काक।

ऐंद्रिय–वि० (सं०) इंद्रिय-संबंधी; इंद्रियग्राह्य। पु० विषय।

ऐंद्रियक–वि० (सं०) दे० 'ऐंद्रिय'।

ऐंद्री–स्त्री० (सं०) इंद्रकी शक्ति; इंद्राणी; दुर्गा; ऋग्वेदकी एक ऋचा जिसमें इंद्रकी स्तुति की गयी है; पूर्व दिशा, ज्येष्ठा नक्षत्र; छोटी इलायची; दुर्भाग्य; एक तरहकी ककड़ी।

ऐंधन–वि० (सं०) ईंधनसे उत्पन्न (अग्नि)। पु० सूर्य।

ऐ–अ० (सं०) संबोधन–हे, ए! पु० शिव।

ऐक–वि० (सं०) एकसे संबद्ध।

ऐकपत्य–पु० (सं०) पूर्ण प्रभुत्व; एकतंत्र शासन।

ऐकपदिक–वि० (सं०) एक पदवाला। पु० यास्कके निघंटुका नैगम।

ऐकभाव्य–पु० (सं०) एक भावका होना, स्वभाव या उद्देश्यकी एकता।

एकमत्य–पु० (सं०) एकराय होना, एका।

ऐकराज्य–पु० (सं०) एकच्छत्र या एकतंत्र राज्य।

ऐकांग–पु० (सं०) अंगरक्षक सेनाका सैनिक।

ऐकांतिक–वि० (सं०) अकेले व्यक्ति या केवल एक विषयसे संबद्ध; बिना शर्त या अपवादका; कतई; अकाटच, पक्का। **–समाचार**–पु० (स्कूप न्यूज) दे० 'स्वाप्त समाचार'।

ऐकागारिक–वि० (सं०) जिसके पास एक ही घर हो। पु० चोर।

ऐकाग्र–वि० (सं०) जिसका ध्यान एक ही विषयपर हो।

ऐकात्म्य–पु० (सं०) एकात्मता, एकरूपता, तादात्म्य।

ऐकाधिकरण्य–पु० (सं०) एक ही विषयसे संबद्ध होनेकी अवस्था।

ऐकार–पु० (सं०) 'ऐ' अक्षर या उसकी ध्वनि।

ऐकार्थ्य–पु० (सं०) उद्देश्य या प्रयोजनकी एकता; एक ही अर्थका होना, अर्थ-सामंजस्य।

ऐकाहिक–वि० (सं०) एक दिन रहने या जीनेवाला; क्षणस्थायी।

ऐक्ट–पु० (अं०) काम, क्रिया; कोई खास कानून, अधिनियम; अभिनय; नाटकादिका अंक।

ऐक्य–पु० (सं०) एकता, एका; एकरूपता; समाहार, जोड़।

ऐक्षव–वि० (सं०) ईखसे उत्पन्न। पु० गुड़; शकर; एक तरहकी शराब जो ईखके रससे बनती है।

ऐक्ष्वाक–वि० (सं०) इक्ष्वाकुसे संबंध रखनेवाला। पु० इक्ष्वाकुका वंशज; इस वंश द्वारा शासित देश।

ऐक्ष्वाकु–पु० (सं०) दे० 'इक्ष्वाकु'।

ऐगुन*–पु० दे० 'अवगुण'।

ऐचो–स्त्री० चंडू या मदक पीनेकी नली।

ऐच्छिक–वि० (सं०) अपनी इच्छा या मर्जीपर अवलंबित, इख्तियारी; वैकल्पिक।

ऐज़न्–अ० (अ०) ऊपर लिखे या कहे अनुसार; फिर वही, उसी तरह (किसी शब्द या अंककी आवृत्तिसे बचनेके लिए यह शब्द या इसका चिह्न (") लिखा जाता है)।

ऐड–वि० (सं०) शक्तिवर्द्धक तत्त्ववाला; भेड़से उत्पन्न या संबद्ध। पु० पुरूरवा।

ऐडक–वि० (सं०) भेड़-संबंधी। पु० भेड़का एक भेद।

ऐडमिनिस्ट्रेटर–पु० (अं०) प्रबंधक; किसी राज्य या रियासतका (राजा या मालिककी नाबालिगी आदिमें) प्रबंध करनेवाला। किसी (सार्वजनिक) संस्थाका, जिसकी स्थिति गड़बड़ हो, भार सँभालनेवाला अधिकारी।

ऐडमिरल–पु० (अं०) जंगी बेड़ेका प्रधान सेनापति, नौ-सेनापति।

ऐडवर्टिज़मेंट–पु० (अं०) विज्ञापन, इश्तहार।

ऐडवांस–पु० (अं०) पेशगी; पेशगी देना।

ऐडविड, ऐडविल–पु० (सं०) कुबेर।

ऐडवोकेट–पु० (अं०) वकील। **–जेनरल**–पु० हाईकोर्टमें सरकारी पक्षकी वकालत करनेवाला वकील।

ऐण–वि० (सं) एण-संबंधी।

ऐणिक–वि०, पु० (सं०) एणका शिकार करनेवाला।

ऐणेय–वि० (सं०) एणसे प्राप्त या संबद्ध। पु० एण; एक तरहका रतिबंध।

ऐत*–वि० इतना।

ऐतरेय–पु० (सं०) ऋग्वेदका एक ब्राह्मण; एक आरण्यक; इतर ऋषिके वंशज; एक उपनिषद्। वि० ऐतरेयकृत (ब्राह्मण या उपनिषद्)।

ऐतरेयी(यिन्)–वि० (सं०) ऐतरेय ब्राह्मण पढ़नेवाला।

ऐतिहासिक–वि० (सं०) इतिहास-संबंधी; इतिहासमें वर्णित। पु० इतिहासका ज्ञाता।

ऐतिह्य–पु० (सं०) परंपरा-प्राप्त उपदेश या प्रमाण।

ऐन*–पु० दे० 'अयन' और 'एण'। स्त्री० (अ०) आँख; चश्मा, सोता; वस्तुकी असलीयत; उर्दू और अरबी वर्णमालाका एक अक्षर। वि० ठीक, असल; बहुत; परम। अ० हूबहू, ज्योंका त्यों। **–इनायत**–स्त्री० सच्ची कृपा, परम अनुग्रह। **–उलमाल**–पु० असल रुपया या राजस्व। **–वक़्त**–पु० ठीक वक़्त, ठीक मौका।

ऐनक–स्त्री० (अ०) चश्मा। **–फ़रोश**–पु० चश्मा बेचनेवाला। **–साज़**–पु० चश्मा बनानेवाला।

ऐनस–पु० (सं०) पाप।

ऐना*–पु० दे० 'आईना'।

ऐनि–पु० (सं०) सूर्यपुत्र; इक्ष्वाकु। **–वंश**–पु० सूर्यवंश।

ऐन्य–वि० (सं०) स्वामी या सूर्य-संबंधी।

ऐपन–पु० चावल और हल्दी एक साथ पीसकर बनाया हुआ लेप जो मांगलिक कार्यों, पूजनोंमें काम आता है।

ऐब–पु० (अ०) दोष, खोट, बुराई; धब्बा, लांछन। **–जो**–वि० ऐब ढूंढ़नेवाला, छिद्रान्वेषी। **–जोई**–स्त्री० ऐब ढूंढ़ना, छिद्रान्वेषण। **–दार**–वि० ऐबवाला, सदोष। **–पोशी**–स्त्री० किसीका दोष छिपाना, किसीके ऐबपर परदा डालना। **–बीँ**–वि० दे० 'ऐबजो'। **–बीनी**– स्त्री० दे० 'ऐबजोई'। **–(बो) हुनर**–पु० दोष-गुण, बुराई-भलाई। **मु०–करनेको हुनर चाहिये**–दोष करने (छिपाने)के लिए गुणकी अपेक्षा है।

ऐबी–वि० जिसमें कोई ऐब या दूषण हो; विकलांग; दुष्ट, पाजी।

ऐभ–वि० (सं०) हाथी-संबंधी।

ऐमेचर–पु० (अं०) वह व्यक्ति जो धनकी लालसासे नहीं, बल्कि विशेष हार्दिक रुचिके कारण किसी कला आदिका अभ्यास करता हो, शौकीन।

ऐया†–स्त्री० बूढ़ी स्त्री; दादी।

ऐयाम–पु० (अ०) दिन; समय, काल('योम'–दिन–का बहु०)।

ऐयार–पु० (अ०) धूर्त, चालाक, चलता-पुरजा व्यक्ति; वेश या रूप बदलकर अनोखे काम करनेवाला व्यक्ति।

ऐयारी–स्त्री० धूर्तता, चालाकी। वि० ऐयारोंसे संबंधित।

ऐयाश–वि० (अ०) विलासी, भोग-विलासमें रत, विषयासक्त, कामुक।

ऐयाशी–स्त्री० विलासिता, विषयासक्ति, कामुकता।

ऐरा-ग़ैरा–वि० इधर-उधरका; बाहरी; अजनबी; ऐसा-वैसा, तुच्छ, नगण्य। **मु०–नत्थू खैरा**–जिसकी कोई हैसियत न हो, साधारण जन; तुच्छ, नगण्य जन। **–पँचकल्यानी**–ऐरा-गैरा आदमी।

ऐराक*–पु० इराक देशका घोड़ा।

ऐरापति*–पु० दे० 'ऐरावत'।

ऐरावण–पु० (सं०) इन्द्रका हाथी, ऐरावत।

ऐरावत–पु० (सं०) इन्द्रका हाथी; उत्तम हस्ती; पूर्व दिशाका दिग्गज; बिजलीसे चमकता हुआ बादल; इंद्रधनुष; एक तरहकी बिजली; नागोंका एक राजा; नारंगी; चंद्रमाका उत्तरी मार्ग; लकुच वृक्ष; एक संपूर्ण राग।

ऐरावती–स्त्री० (सं०) ऐरावतकी भार्या; बिजली; इरावती नदी; वटपत्री; चंद्रवीथीका एक भाग।

एरिण–पु० (सं०) सेंधा नमक।

ऐरेय–पु० (सं०) एक तरहकी शराब।

ऐल–पु० (सं०) इलापुत्र, पुरूरवा; मंगल ग्रह; खाद्य पदार्थ; * प्रचुरता; बाढ़; कोलाहल; हलचल; समूह; † एक प्रकारकी लता।

ऐलवालुक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य।

ऐलविल–पु० (सं०) कुबेर; मंगल ग्रह।

ऐलान–पु० (अ०) सार्वजनिक घोषणा, मुनादी।

ऐलेय–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य; मंगल।

ऐश–वि० (सं०) ईश–शिवसे संबंध रखनेवाला; दैवी, ईश्वरीय; राजकीय। पु० (अ०) सुख, भोग, विलास; विषय-सुख। **–गाह**–पु० विलासभवन। **–पसंद**–वि० आरामपसंद, विलासप्रिय। **–व आराम**–पु०, **–व इशरत**–स्त्री० सुख-चैन, भोग-विलास।

ऐशान–वि० (सं०) शिव-संबंधी; उत्तर-पूर्व-संबंधी।

ऐशानी–स्त्री० (सं०) ईशानकोण; दुर्गा।

ऐशिक–वि० (सं०) शिव-संबंधी।

ऐश्य–पु० (सं०) प्रभुत्व; शक्ति।

ऐश्वर–वि० (सं०) राजकीय; ईश्वरीय; शक्तिशाली; शिव-संबंधी।

ऐश्वर्य–पु० (सं०) ईश्वरता; शक्ति; प्रभुत्व; आधिपत्य; धन-वैभव; अणिमादि सिद्धियाँ; सर्वव्यापकता; सर्वशक्तिमत्ता। **–शाली(लिन्)**–वि० ऐश्वर्यवाला।

ऐश्वर्यवान्(वत्)–वि० (सं०) ऐश्वर्यवाला।

ऐषीक–वि० (सं०) वेत या सरकंडेका बना बना हुआ (बाण); सरकंडेके बाणसे संबंध रखनेवाला।

ऐष्टक–वि० (सं०) ईंटोंसे बना हुआ (मकान)। पु० ईंटोंकी चुनाई।

ऐष्टिक–वि० (सं०) इष्टि याने यज्ञसे संबंध रखनेवाला।

ऐस*–वि० दे० 'ऐसा'। पु० दे० 'ऐश'।

ऐसन†–वि० दे० 'ऐसा'।

ऐसा–वि० इस तरहका। **–वैसा**–वि० साधारण; तुच्छ, नाचीज। **(किसीकी) ऐसी-तैसी**–गाली। **–० में जाय**–चूल्हे, भाड़में जाय (खीझ या उपेक्षाके अर्थमें)।

ऐसे–अ० इस प्रकार, इस ढंगसे।

ऐहलौकिक–वि० (सं०) इस लोकसे संबंध रखनेवाला, ऐहिक।

ऐहिक–वि० (सं०) इस लोकसे संबंध रखनेवाला, सांसारिक; स्थानिक। पु० दुनियाका कारबार। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दुनियादार। **–राज्य**–पु० धर्मनिरपेक्ष राज्य।

ऐहिकतापरक–वि० (सं०) (सेक्यूलर) जिसका संबंध सांसारिक बातोंसे हो।

ओ

ओ–देवनागरी वर्णमालाका तेरहवाँ और ऋ, लृ, लॄ को छोड़कर दसवाँ (स्वर) वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठोष्ठ है।

ओँइछना†–स० क्रि० वारना, न्योछावर करना।

ओँकना*–अ० क्रि० कै करना; ऊबना; (मन) फिर जाना।

ओंकार–पु० (सं०) 'ओम्' मंत्र या इसका उच्चारण; आरंभ, श्रीगणेश (ला०)। **–नाथ**–पु० शिवके १२ लिंगोंमेंसे एकका नाम।

ओँगन†–पु० गाड़ीकी धुरीमें दिया जानेवाला तेल।

ओँगना–स० क्रि० गाड़ीकी धुरीमें तेल लगाना।

ओँगा–पु० अपामार्ग, लटजीरा।

ओँठ–पु० होंठ; घड़े इत्यादिके मुँहका किनारा। **मु०–उखाड़ना**–परती खेतको पहले-पहल जोतना। **–चबाना**–ओठको दाँतों तले दबाना, क्रोध प्रकट करना। **–चाटना**–खा चुकनेपर स्वादके लालचसे ओठोंपर जीभ फेरना; स्वादकी लालसा रह जाना। **–चूसना**–अधरका चुंबन करना। **–पपड़ाना**–ओठोंपरके चमड़ेका सूख जाना। **–फड़कना**–क्रोधके कारण ओठोंका काँपना। **–मलना**–खराब बात कहनेवालेको दंड देना। **–हिलाना**–मुँहसे शब्द निकालना। **–(ठोँ) पर**–जबानपर, प्रकट होनेके निकट। **–में कहना**–बहुत धीमी आवाजमें बोलना।

ओँडा–वि० गहरा। पु० गड्ढा; सेंध।

ओ–पु० (सं०) ब्रह्मा। अ० पुकारनेमें प्रयुक्त–हे, ऐ, अरे; कोई विस्मृत बात यकायक याद आनेपर भी बोलते हैं (ओ, आपने ठीक कहा); ओह (विस्मयके अर्थमें); और।

ओक–स्त्री० मतली। पु० अंजलि; (सं०) घर; पनाह; पक्षी; शूद्र; नक्षत्रोंका मेल।

ओक(स्)–पु० (सं०) घर, वासस्थान; आश्रय; विलास।

ओकण, ओकणि–पु० (सं०) खटमल; जूँ।

ओकना–अ० क्रि० कै करना; भैंसकी तरह चिल्लाना।

ओकाई–स्त्री० ओक, मिचली।

ओकार–पु० (सं०) 'ओ' अक्षर या उसकी ध्वनि।

ओकुल–पु० (सं०) थोड़ा भुना हुआ गेहूँ आदि।

ओकोदनी–स्त्री० (सं०) दे० 'ओकण'।

ओक्कणी–स्त्री० (सं०) दे० 'ओकण'।

ओखद*–स्त्री दे० 'औषध'।

ओखल–पु० ओखली; परती जमीन।

ओखली–स्त्री० पत्थर या काठका वह पात्र जिसमें अन्नादि कूटते हैं, कूँडी। **मु० –में सिर देना**–कोई झंझट सिरपर लेना, कष्ट, हानि सहनेको तैयार होना।

ओखा*–पु० बहाना। वि० कठिन; झीना; मामूली, हलका; मिलावटी; रूखा-सूखा।

ओग*–पु० उगहनी, चंदा; कर; गोद।

ओगण*–पु० अवगुण–'म्हाँमें ओगण घणा छै हो प्रभुजी थे ही सतो तो सहो'–मीरा।

ओगरना†–अ० क्रि० टपकना, रसना; साफ किया जाना (कूप आदिका)।

ओगल–पु० परती जमीन; एक तरहका कुआँ।

ओगारना†–स० क्रि० कीचड़ आदि निकालकर कुएँकी सफाई करना।

ओघ–पु० (सं०) प्लावन, धारा, बहाव; समूह, ढेर, राशि; पूर्णांश; अविच्छिन्नता; परंपरागत उपदेश; एक प्रकारका नृत्य; द्रुत लय (संगीत); कालतुष्टि (सां०)।

ओछना–स० क्रि० दे० 'ऊँछना'। * पोंछना, साफ कर देना–'ललित कपोलनि ओछैंऊ पाछैं लाली लसत सुहाई है'–घन०।

ओछा–वि० गंभीरता-रहित, छिछोरा; क्षुद्र; खोटा; छोटा; हलका। **–पन**–पु० छिछोरापन, हलकापन, क्षुद्रता; खोटाई।

ओछाई–स्त्री० दे० 'ओछापन'।

ओज–वि० (सं०) विषम (पहला, तीसरा आदि)। † पु० किफायतसारी, कंजूसी।

ओज(स्)–पु० (सं०) शुक्रकी सारभूत और शरीरको कांति, तेज देनेवाली धातु; बल; वीर्य; तेज; कांति; जल; आविर्भाव; रचनाका वह गुण जिससे पढ़ने-सुननेवालेके हृदयमें उत्साह या जोश पैदा हो; शस्त्रकौशल।

ओजना†–स० क्रि० सहना, अँगेजना।

ओजस्विता–स्त्री० (सं०) प्रताप; तेज; दीप्ति; प्रभाव; वर्णनका प्रभावोत्पादक ढंग।

ओजस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) ओजभरा; जोश पैदा करनेवाला; बल-वीर्य-शाली; प्रभावकारी।

ओजुत–*पु० शरीर, देह।

ओज़ोन–पु० (अं०) आक्सिजन (अम्लजन)का घनीभूत रूप; आक्सीजनका अपर रूप। ओज़ोनके एक अणुमें आक्सीजनके तीन परमाणु स्थित होते हैं (O_3) किंचित नीले रंगकी गैस है, रासायनिक क्रियाशीलता बहुत अधिक, तथा यह प्रबल ऑक्सीकारक है।

ओझ–पु० पेट; आमाशय, अँतड़ी।

ओझइती†– स्त्री० ओझाका कार्य या धंधा।

ओझड़ी–स्त्री०, **ओझर**–पु० **ओझरी**–स्त्री० पेट; आमाशय, मेदा।

ओझल–पु० ओट, आड़। वि० आँखोंसे परे; छिपा हुआ।

ओझा–पु० झाड़-फूँक करनेवाला; ब्राह्मणोंका एक अल्ल। **–ई**–स्त्री० झाड़-फूँक; झाड़फूँककी उजरत; ओझाका काम।

ओट–स्त्री० आड़; रोक; शरण, सहारा; परदेके लिए बनायी गयी दीवार। † पु० एक वृक्ष जिसमें ताड़केसे फल लगते हैं, कुसुमोदर; (अं०) जई। **–मील**–पु० जईका आटा।

ओटन–पु० कपास ओटनेकी चरखीके डंडे।

ओटना–स० क्रि० कपाससे बिनौलेको अलग करना; किसी बातको बार-बार कहना, देरतक कहे जाना; ऊपर लेना, ओढना।

ओटनी–स्त्री० वह चरखी जिसमें दबाकर कपाससे बिनौलेको अलग करते हैं। † बभनी।

ओटपाय*–पु० धूर्तता–'कैसे गनै बनै जेऽब ओटपाय तबके'–घन०।

ओटा–पु० परदेके लिए बनी हुई दीवार; ओटनेका काम करनेवाला; सोनारोंका एक औजार; बैठकर पीसनेके लिए चक्कीके पास बना हुआ चबूतरा; † चबूतरा।

ओटी–स्त्री० कपास ओटनेकी चरखी।

ओठँगन†–पु० आधार, सहारा।

ओठँगना†–अ० क्रि० किसी चीजका सहारा लेकर बैठना; सुस्तानेके लिए लेटना।

ओठँगाना†–स० क्रि० टिकाकर रखना; साँकल आदि लगाये बिना ही किवाड़से किवाड़ लगा देना।

ओठ–पु० ओष्ठ, होंठ।

ओड़–पु० गधेपर मिट्टी, चूना आदि ढोनेवाला।

ओडक–पु० (सं०) दे० 'ओडव'।

ओड़न*–पु० वह चीज जिससे वार रोका जाय, ढाल, फरी।

ओड़ना–स० क्रि० रोकना, ऊपर लेना; (हाथ) पसारना।

ओडव–पु० (सं०) रागका एक भेद जिसमें केवल पाँच स्वर लगते हैं।

ओड़ा†–पु० बड़ा टोकरा; ओंडा; कमी, टोटा; टोकरेका मान।

ओडिका, ओडी–स्त्री० (सं०) नीवार, बिना बोये उत्पन्न होनेवाला धान।

ओड्र–पु० (सं०) उड़ीसा; उड़ीसावासी; अड़हुलका फूल।

ओढ–वि० (सं०) पास लाया हुआ।

ओढ़ना–स० क्रि० किसी कपड़े, खाल आदिसे बदनको ढकना, छिपाना; अपने ऊपर, जिम्मे लेना। पु० ओढ़नेकी चीज। **मु० –उतारना**–अपमानित करना। **–ओढ़ाना**–राँड़ स्त्रीके साथ सगाई करना। **–बिछौना बना लेना**–हर वक्त काममें लाना; लापरवाहीसे बरतना। **ओढ़ूँ कि बिछाऊँ?** –किस काममें लाऊँ? किस कामकी है?

ओढ़नी–स्त्री० स्त्रियोंके ओढ़नेका छोटा दुपट्टा। **मु०–बदलना**–सहेली बनाना, बहनापा जोड़ना।

ओढ़र*–पु० बहाना, व्याज।

ओढ़ाना–स० क्रि० (दूसरेको) कपड़ेसे ढकना।

ओत–स्त्री० आराम, चैन; लाभ, प्राप्ति; किफायत; कमी। वि० (सं०) बुना हुआ; गुँथा हुआ। पु० तानेका सूत। **–प्रोत**–वि० ताने-बानेकी तरह बुना या गुँथा हुआ; भरा हुआ; बिलकुल मिला हुआ। पु० ताना-बाना; विवाहका एक प्रकार।

ओता*–वि० उतना।

ओतु–पु० (सं०) बाना; नर बिलाव।

ओतो*–वि० उतना।

ओदंतपुरी–स्त्री० बौद्धोंका एक प्राचीन नगर।

ओद†–वि० गीला, भीगा हुआ। पु० गीलापन, तरी।

ओदक–पु० (सं०) जलजंतु, जलमें रहनेवाला प्राणी।

ओदन–पु० (सं०) भात; बादल।

ओदनाह्वया, ओदनाह्वा–स्त्री० (सं०) दे० 'ओदनिका'।

ओदनिका–स्त्री० (सं०) महासमंगा नामक पौधा जो दवाके काम आता है; बला।

ओदनी–स्त्री० (सं०) बला, बरियारा।

ओदनीय, ओदन्य–वि० (सं०) भात-संबंधी।

ओदर*–पु० दे० 'उदर'।

ओदरना*–अ० क्रि० फटना; गिर पड़ना; नष्ट होना।

ओदा–वि० गीला, नम।

ओदारना*–स० क्रि० गिराना, ढाना; फाड़ना; नष्ट करना।

ओध(स)–पु० (सं०) धन।

ओधना*–अ० क्रि० (काममें) लगना; 'निज निज काज पाइ सिख ओधे'–रामा०; फँसना, उलझना।

ओनंत*–वि० अवनत, झुका हुआ।

ओनचन–स्त्री० अद्वान, पैतानेकी रस्सी।

ओनवना–स० क्रि० पैतानेकी रस्सी खींचकर कड़ी करना।

ओनवना*–अ० क्रि० झुकना; घिर आना; टूटना।

ओना*–पु० पानी निकलनेका रास्ता।

ओनाना*–स० क्रि० कान लगाकर सुनना; झुकाना; प्रवृत्त करना; आदेशका पालन करना।

ओनामासी–स्त्री० अक्षरारंभ; आरंभ ('ॐ नमःसिद्धम्'का बिगड़ा हुआ रूप)।

ओप–स्त्री० चमक, कांति, आब; जिला, पालिश।

ओपची–पु० कवचधारी योद्धा; रक्षकयोद्धा। **–ख़ाना**–पु० चौकी।

ओपना–स० क्रि० चमक लानेके लिए माँजना, रगड़ना, पालिश करना। अ० क्रि० चमकना, आब आना।

ओपनि*–स्त्री० झलक, चमक। **–वारी**–वि०, स्त्री० चमकवाली।

ओपनी–स्त्री० ईंट या पत्थरका टुकड़ा जिससे तलवार आदि माँजी जाय; मोहरा।

ओपाना†–अ० क्रि० दूधकी हँड़िया आदि गरम करते समय अधिक

आँच लग जानेसे उसमें धुआँ मिश्रित गंधका आने लगना ।

ओपी*–वि० चमकीला ।

ओफ़–अ० (अ०) दे० 'उफ' ।

ओबरी†–स्त्री० तंग कोठरी, ऐसी कोठरी जिसमें हवा और रोशनीके लिए रास्ता न हो ।

ओम–पु० (ओह्म) वैद्युत प्रतिरोध नापनेका मात्रक । यदि प्रतिरोध तारके सिरों पर एक वोल्टका विभवान्तर स्थापित करनेपर तारमें प्रवाहित होनेवाली धाराका मान एक ऐम्पियर हो, तब उसका प्रतिरोधमान एक ओम होगा ।

ओम्–पु० (सं०) मंत्रोंके आदिमें तथा वेदपाठके पहले और पीछे कहा जानेवाला पवित्र शब्द, प्रणव, ॐ ।

ओर–स्त्री० तरफ, दिशा, पक्ष । पु० छोर, सिरा; अंत; आरंभ । (पहले दिशा या संख्यावाचक विशेषण आनेसे पुंलिग विभक्ति लगती है, जैसे–किलेके पश्चिम या तीन ओर नदी बहती थी ।) **मु०–निवाहना, –निभाना**–अंततक कर्तव्य पूरा करना ।

ओरती*–स्त्री० दे० 'ओलती' ।

ओरमना*–स० क्रि० झुकना; लटकना, झूलना ।

ओरमा–पु० सिलाईका एक प्रकार ।

ओरमाना*–स० क्रि० झुकाना; लटकाना ।

ओरलान–पु० 'एक्रीलोन्ट्राइल'के बहुलीकरण द्वारा प्राप्त संश्लेषित बहुलक यौगिक जिससे कपड़े तैयार करनेके लिए धागेका निर्माण किया जा सकता है । ओरलॉनमें कीड़े आदि नहीं लगते ।

ओरहा†–पु० दे० 'होरहा' ।

ओरांग-उटांग–पु० सुमात्रा, बोर्नियो आदि द्वीपोंमें पाया जानेवाला एक तरहका वनमानुस ।

ओरा*–पु० ओला ।

ओराना†–अ० क्रि० समाप्त होना, चुकना ।

ओरिया†–स्त्री० 'ओरी' ।

ओरी–स्त्री० ओलती ।

ओलंदेज–वि० हालैंडसे संबंधित । पु० हालैंडवासी ।

ओलंदेजी–वि० हालैंड देशका ।

ओलंबा, ओलंभा*–पु० उलाहना, शिकायत ।

ओल–पु०, स्त्री० आड़; आश्रय; गोद; शरण; किसी बातकी जमानतमें रखी या रोक रखी गयी चीज या आदमी; जमानत; बहाना । वि० (सं०) गीला, नम । पु० सूरन ।

ओलक–पु० आड़ या ओट, 'ओलिक' ।

ओलचा–पु० लकड़ीका दस्तेदार पात्र जो खेतको छिड़ककर सींचनेके काम आता है, हत्था; छिछली दौरी जिससे पानी उलीचने या अनाज ओसानेका काम लेते हैं ।

ओलची–स्त्री० गिलास नामका फल ।

ओलती–स्त्री० छप्पर या छाजनका छोर जहाँसे वर्षाका पानी जमीनपर गिरता है; ओलती गिरनेकी जगह । **मु०–तलेका भूत**–पास रहनेवाला आदमी जो घरके सब भेद जानता हो ।

ओलना*–स० क्रि० परदा करना; रोकना; चुभाना; ओढ़ना, ऊपर लेना ।

ओलमना–अ० क्रि० लटकना; झुकना ।

ओलरना†–अ० क्रि० लेटना; झुकना ।

ओलराना†–स० क्रि० लिटाना; लटकाना, झुकाना ।

ओला–पु० जमे हुए जलकणों या बर्फका गोला जो जाड़ेकी वर्षामें कभी-कभी गिरता है, बनौरी, उपल; मिश्री या दानेदार चीनीका बना हुआ गोल लड्डू; भेद; परदा । वि० बहुत ठंडा, बर्फसा ठंडा ।

ओलारना–स० क्रि० दे० 'ओलराना' ।

ओलिक*–पु० आड़, परदा ।

ओलियाना†–स० क्रि० गोदमें भरना; ढेर लगाना, घुसाना ।

ओली–स्त्री० गोद; अंचल; झोली । **–आना**–अ० क्रि० गोद लिया जाना ।

ओल्या*–पु० बहाना–'बैठी बहू गुरु लोगनमें लखि लाल गये करिकै कछु ओल्यो'–भाववि० ।

ओल्ल–पु० (सं०) ओल, जमानत । वि० गीला, नम ।

ओवरकोट–पु० (अं०) कोटके ऊपर पहननेका लंबा कोट, लबादा ।

ओवरसियर–पु० (अं०) इमारत आदिके कामका निरीक्षक ।

ओष–पु० (सं०) दाह, जलन; पकाना ।

ओषजन–पु० 'ऑक्सिजन' नामक गैस जो एक निश्चित अनुपातमें 'हाइड्रोजन'से मिलकर पानी बनाती है ।

ओषण–पु० (सं०) तीतापन, कटुता, तेज स्वाद ।

ओषणी–स्त्री० (सं०) एक शाक ।

ओषध*–स्त्री० दे० 'औषध' ।

ओषधि, ओषधी–स्त्री० (सं०) वनस्पति; जड़ी-बूटी; एकफसला पौधा । **–गर्भ**–पु० चंद्रमा; सूर्य । **–धर, –पति**–पु० चंद्रमा; कपूर; चिकित्सक ।

ओषधीश–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर ।

ओष्ठ–पु० (सं०) ओठ । **–कोप, –प्रकोप**–पु० ओठका एक रोग । **–जाह**–पु० ओठकी जड़ । **–पल्लव**–पु० कोमल ओठ । **–पुट**–पु० ओठके खोलनेसे बननेवाला गड्ढा । **–पुष्प**–पु० बंधूक-वृक्ष ।

ओष्ठक–वि० (सं०) ओठोंकी हिफाजत करनेवाला । पु० ओठ ।

ओष्ठी–स्त्री० (सं०) कुँदरू, बिंबाफल ।

ओष्ठोपमफला–स्त्री० (सं०) बिंबाफल ।

ओष्ठ्य–वि० (सं०) ओठसे संबद्ध; ओठपर उपस्थित; ओठसे उच्चरित । **–वर्ण**–पु० उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्, म् ।

ओष्ण–वि० (सं०) थोड़ा गरम, कुनकुना ।

ओस–स्त्री० हवाकी भाप जो रातमें जलकणके रूपमें जमीनपर गिरती है, शबनम । **मु०–का मोती**–क्षणभंगुर । **–चाटनेसे प्यास नहीं बुझती**–थोड़ी-सी वस्तुसे बड़ी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं हो सकती । **–पड़ना**–बेरौनक हो जाना; उदासी छाना; उत्साह नष्ट हो जाना; ठंढा हो जाना ।

ओसर, ओसरिया–स्त्री० गर्भ धारण करने योग्य भैंस । दे० 'ओसरी' ।

ओसरी†–स्त्री० अवसर; बारी, पारी ।

ओसांक–पु० (ड्यू प्वाइंट) वह ताप जिसपर वायुमें मौजूद जलवाष्प संतृप्त होकर द्रवित हो जाती है, अर्थात् ओसके रूपमें प्रकट होती है; शिशिरांक ।

ओसाई–स्त्री० ओसानेकी मजदूरी या काम ।

ओसाना–स० क्रि० माँड़े हुए अनाजको हवामें उड़ाकर दानेको भूसे आदिसे अलग करना ।

ओसार–पु० फैलाव; ओसारा । वि० चौड़ा ।

ओसारा–पु० सायबान, बरामदा ।

ओह–अ० दुःख या आश्चर्यसूचक शब्द ।

ओहट*–स्त्री ओट ।

ओहदा–पु० (अ०) पद, स्थान । **–(दे)दार**–पु० पदाधिकारी । **–दारी**–स्त्री० पदाधिकार । **–के एतबारसे**–पदकी हैसियतसे, पदेन ।

ओहना†–स० क्रि० डंठलों आदिको ऊपर उठाकर हिलाते हुए नीचे गिराना, खरही करना; किसी वस्तुको बिखेरना ।

ओहरना†–अ० क्रि० कमीपर होना ।

ओहार–पु० पालकी आदिपर परदे या शोभाके लिए डाला हुआ कपड़ा ।

ओहो–अ० हर्ष या आश्चर्यसूचक शब्द ।

औ

औ–देवनागरी वर्णमालाका चौदहवाँ, ऋ, लृ, लॄको छोड़ कर ग्यारहवाँ (स्वर) वर्ण । उच्चारण-स्थान कंठौष्ठ ।

औँगना–स० क्रि० दे० 'ओँगना' ।

औँगा*–वि० गूँगा ।

औँगी–स्त्री० चुप्पी, गूँगापन ।

औँघना, औँघाना†–अ० क्रि० दे० 'ऊँघना' ।

औँघाई†–स्त्री० ऊँघाई, झपकी, नींद ।

औँजना*–अ० क्रि० ऊबना, व्याकुल होना । स० क्रि० उझलना, उड़ेलना ।

औँटन†–पु० चारा आदि काटनेके लिए प्रयुक्त ठीहा ।

औँटना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'औटना' ।

औँटाना–स० क्रि० दे० 'औटाना' ।

औँठ–स्त्री० कपड़ेकी किनारी; बरतन आदिका उठा हुआ किनारा; ओठ । **मु०–उठाना**–परती पड़े हुए खेतको जोतना ।

औँड*–पु० ओड़; बेलदार ।

औँड़ना*–अ० क्रि० उमड़ना, बढ़ना, उभड़ना ।

औँड़ा*–वि० गहरा–'पहले थाह दिखाइ करि औंड़े देखी आनि'–साखी; उभड़ा या उभड़ता हुआ ।

औँदना, औँदाना*–अ० क्रि० उन्मत्त होना; व्याकुल होना ।

औँधना–अ० क्रि० उलट जाना, औंधा होना । स० क्रि० उलट देना ।

औँधा–वि० जिसका मुँह नीचेकी ओर हो, उलटा; नीचा । पु० चिल्ला । **मु०–हो जाना**–बेसुध होना; गिर पड़ना । **–(धी) खोपड़ी**–मूर्ख । **–समझ**–जड़-बुद्धि । **–(धे) मुँह**–मुँहके बल । **–गिरना***–धोखा खाना; भूल करना ।

औँधाना–स० क्रि० नीचा या उलटा करना ।

औँरा†–पु० आँवला ।

औंस–पु० (अं०) एक अंग्रेजी वजन जो हिंदुस्तानी सवा दो तोलेके बराबर होता है । (तरल वस्तुमें यह पौंडका १।१६ और ठोसमें १।१२ भाग होता है ।)

औँस*–स्त्री० ऊमस ।

औँसना†–अ० क्रि० ऊमस होना ।

औ–पु० (सं०) शेषनाग; शब्द । स्त्री० पृथ्वी । *अ० दे० 'और' ।

औक़ात–पु० (अ०) वक्त, समय; जमाना ('वक्त'का बहु०) । स्त्री० हैसियत । **–बसरी**–स्त्री० जीवन-निर्वाह, गुजर-बसर । **मु०–बसर करना**–जीवन-निर्वाह करना, गुजर-बसर करना ।

औक्ष, औक्षक–पु० (सं०) बैलोंका समूह ।

औखद†–स्त्री० दे० 'औषध' ।

औखा–पु० गायका चमड़ा या चरसा ।

औगत*–वि० दे० 'अवगत' । *स्त्री० दे० 'अवगति' ।

औगाह*–वि० दे० 'अवगाह' ।

औगाहना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'अवगाहना' ।

औगी–स्त्री० चाबुक, पैना; जंगली जानवर फँसानेके लिए बना हुआ गड्ढा; कारचोबी जूतेका ऊपरका चमड़ा ।

औगुन*–पु० दे० 'अवगुण' ।

औगुनी*–वि० दोषी; दुर्गुणी ।

औग्र्य–पु० (सं०) उग्रता, भयंकरता ।

औघ–पु० (सं०) प्लावन, बाढ़ ।

औघट*–वि० कठिन, दुर्गम । पु० दुर्गम मार्ग ।

औघड़–पु० अघोरी; फक्कड़; मनमौजी । वि० अटपट ।

औघर–वि० अनगढ़; अटपटा, टेढ़ा; विचित्र ।

औघूरना*–अ० क्रि० घूमना–'घर लागै औघूरि कहे मन कहा बँधावै'–सूर ।

औचक–अ० अचानक, यकायक । पु० असमंजस, कठिनाई ।

औचट–स्त्री० कठिनाई, संकट । अ० अचानक; भूलसे ।

औचिंत*–वि० निश्चिंत, बेखबर ।

औचिती–स्त्री० (सं०) दे० 'औचित्य' ।

औचित्य–पु० (सं०) उचित होना, उपयुक्तता, मुनासिबत ।

औज–पु० दे० 'ओज'; (अ०) ऊँचाई, बुलंदी; उत्कर्ष; महत्ता । **–(जे) कमाल**–पु० चरमोत्कर्ष; संगीनमें एक स्थान ।

औजक*–अ० दे० 'औचक' ।

औजड़*–वि० उजड्ड ।

औजस–पु० (सं०) सोना ।

औजसिक–वि० (सं०) ओजवाला; उत्साही, मुस्तैद । पु० वीर पुरुष ।

औजस्य–पु० (सं०) बल; उत्साह; ओज । वि० शक्तिवर्द्धक ।

औज़ार–पु० (अ०) कोई काम करनेका साधन, आला, उपकरण ।

औज्ज्वल्य–पु० (सं०) उजलापन; चमक ।

औझक*–अ० दे० 'औचक' ।

औझड़, औझर*–अ० लगातार ।

औटन*–स्त्री० औटनेकी क्रिया; ताव, आँच ।

औटना–स० क्रि० दूध, रस आदिको आँच देकर गाढा करना, देरतक उबालना, खौलाना । अ० क्रि० खौलना, आँच खाना; पगना; तपना; * भटकना ।

औटनी–स्त्री० औटी जानेवाली चीजको चलानेकी कलछी या चम्मच ।

औटपाई*–स्त्री० दे० 'औठपाय' ।

औटाना–स० क्रि० औटना, आँच देकर गाढ़ा करना ।

औटी–स्त्री० ईखका औटा हुआ रस; हलदी, गुड़ आदि डालकर गाढा पकाया हुआ दूध; गायको ब्यानेपर दी जानेवाली पुष्टई ।

औठैं*–अ० वहाँ–'म्हाँनै तो थारी औलू सतावै थे औठैं बिलमाया'–घन० ।

औठपाय*–पु० अठपाव, शरारत, धूर्तता ।

औड–वि० (सं०) आर्द्र, गीला ।

औडव–पु० (सं०) एक तरहका राग । वि० तारा-संबंधी ।

औडुंबर–पु० (सं०) दे० 'औदुंबर' ।

औडुपिक–पु० (सं०) नावका यात्री । वि० नावसे (दरिया) पार करनेवाला ।

औड्र–पु० (सं०) उड़ीसा-निवासी ।

औढर–वि० चाहे जिधर ढल जानेवाला; थोड़ेमें प्रसन्न होकर निहाल कर देनेवाला, आशुतोष । **–दानी**–वि० प्रार्थी, भक्तको निहाल कर देनेवाला ।

औतरना*–अ० क्रि० अवतार ग्रहण करना, जन्म लेना ।

औतार–पु० दे० 'अवतार' ।

औतिक–वि० (सं०) ऊतक-संबंधी ।

औतिकी–स्त्री० (सं०) जीवों तथा वनस्पतियोंके अंगोंका संघटन करनेवाले सूक्ष्म उतकोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान (हिस्टॉलॉजी) ।

औत्कंठ्य–पु० (सं०) उत्कंठा; चिंता; इच्छा ।

औत्कर्ष्य–पु० (सं०) उत्तमता, श्रेष्ठता ।

औत्तमर्णिक–वि० (सं०) जो दूसरेसे सूदपर लिया गया हो ।

औत्तमि–पु० (सं०) चौदह मनुओंमेंसे तीसरा ।

औत्तर–वि० (सं०) उत्तरी; उत्तरवासी ।

औत्तरेय–पु० (सं०) उत्तरासे उत्पन्न, परीक्षित् ।

औत्तानपाद, औत्तानपादि–पु० (सं०) ध्रुव; ध्रुवतारा ।

औत्तापिक–वि० (सं०) उत्ताप-संबंधी; उत्ताप-जनित ।

औत्पत्तिक–वि० (सं०) उत्पत्तिसे संबंध रखनेवाला; सहज, पैदाइशी ।

औत्पातिक–वि० (सं०) उत्पात-संबंधी ।

औत्राट–वि० उचाट ।

औत्स–वि० (सं०) झरनेमें उत्पन्न या झरना-संबंधी ।

औत्सर्गिक–वि० (सं०) उत्सर्ग-संबंधी; सामान्य विधियोग्य, सामान्यतया मान्य (नियम–व्या०); सामान्य; समाप्त होनेवाला; त्यागने, छोड़नेवाला; स्वाभाविक, सहज ।

औत्सुक्य–पु० (सं०) उत्सुकता ।

औथरा*–वि० उथला, छिछला–'अति अगाध अति औथरो, नदी कूप सर बाय'–वि० ।

औदक–वि० (सं०) जलीय, जल-संबंधी । पु० जलबहुल उपनिवेश (कौ०) ।

औदकना*–अ० क्रि० चौंकना ।

औदनिक–पु० (सं०) भात पकानेवाला, पाचक; भात बेचनेवाला (कौ०) ।

औदयिक–वि० (सं०) सूर्योदयसे गिना जानेवाला; शुभ कालमें होनेवाला ।

औदर–वि० (सं०) उदर-संबंधी; पाचन-संबंधी ।

औदरिक–वि० पु० (सं०) उदर-संबंधी; बहुत खानेवाला, पेटू; उदरके लिए उपयुक्त ।

औदर्य–वि० (सं०) उदर-संबंधी; उदरका।

औदश्वित–पु० (सं०) आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्ठा।

औदसा✻–स्त्री० अवदशा, दुर्दशा, विपत्ति।

औदार्य–पु० (सं०) उदारता; महत्ता; अर्थगांभीर्य।

औदासीन्य, औदास्य–पु० (सं०) उदासीनता, उदासी; एकाकीपन, निर्जनता, वैराग्य।

औदीच्य–पु० गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; उत्तरका रहनेवाला। वि० उत्तरी।

औदुंबर–वि० (सं०) उदुंबर या गूलरका बना हुआ; ताम्रनिर्मित। पु० गूलरका फल; गूलरकी लकड़ी; गूलरकी लकड़ीका वना यज्ञपात्र; एक यम; एक प्रकारका कुष्ठ; ताँवा।

औदुंबरी–स्त्री० (सं०) गूलरकी लकड़ी।

औद्दालक–पु० (सं०) दीमक आदिके बिलसे प्राप्त होनेवाला मधु जैसा एक पदार्थ जो कड़वा और कसैला होता है; एक प्राचीन तीर्थ।

औद्धत्य–पु० (सं०) उद्धतता, उजड्डपन।

औद्भिज्ज–वि० (सं०) धरतीसे उत्पन्न या प्राप्त। पु० खारी नमक।

औद्भिद–वि० (सं०) पृथ्वीसे फोड़कर निकलनेवाला; विजयी। पु० झरनेका पानी; सेंधा नमक।

औद्यानिक योजना–स्त्री० (हार्टिकल्चरल स्कीम) उद्यानोंमें पेड़-पौधे लगाने तथा उनके रक्षण आदिकी योजना।

औद्योगिक–वि० (सं०) उद्योग-संबंधी, कल-कारखानोंसे संबंध रखनेवाला। **–उन्नति**–स्त्री० उद्योग-धंधों, कल-कारखानोंकी उन्नति, बाढ़। **–तथ्य**–पु० (इंडस्ट्रियल डेटा) उद्योग-धंधोंसे संबंध रखनेवाली प्रामाणिक बातें। **–वासव्यवस्था**–स्त्री० (इंडस्ट्रियल हाउसिंग) कारखानोंमें काम करनेवाले श्रमिकोंके लिए रहनेके मकान बनवानेकी व्यवस्था।

औद्योगिकीकरण–पु० (सं०) (इंडस्ट्रियलिजेशन) अनेक कारखानों, उद्योगों आदिकी स्थापना, विस्तार आदि द्वारा देशको उद्योग-प्रधान बनानेका कार्य या योजना।

औद्वाहिक–वि० (सं०) विवाह-संबंधी; विवाहमें मिला हुआ। पु० विवाहके समय स्त्रीको उपहार रूपमें मिला हुआ धन, आभूषण आदि।

औध✻–पु० दे० 'अवध'। स्त्री० दे० 'अवधि'।

औधस–वि० (सं०) थन या स्तनमें रहनेवाला (दूध)।

औधारना✻–स० क्रि० दे० 'अवधारना'; प्रारंभ करना।

औधि✻–स्त्री० दे० 'अवधि'।

औनि औन,✻–स्त्री० दे० 'अवनि'; स्थान; घर। **–(नि)प**–पु० राजा।

औने-पौने–अ० कुछ कम दामपर, कुछ घाटा उठाकर। **मु०–करना –औने-पौने** बेचना।

औन्नत्य–पु० (सं०) उन्नत होनेका भाव, ऊँचाई; उत्थान।

औपकार्य–पु०, **औपकार्या**–स्त्री० (सं०) मकान; खेमा।

औपग्रस्तिक–पु० (सं०) ग्रहण; ग्रस्त सूर्य या चंद्रमा।

औपचारिक–वि०, (सं०) उपचार-संबंधी; रस्मी, दिखाऊ; गौण।

औपटी✻–वि० स्त्री० अटपटी, कठिन।

औपदेशिक–वि० (सं०) उपदेश-संबंधी; उपदेशसे या शिक्षण-कार्यसे जीविका चलानेवाला; शिक्षणकार्यसे प्राप्त (धन)।

औपद्रविक–वि० (सं०) रोग-लक्षणोंसे संबंध रखनेवाला।

औपधर्म्य–पु० (सं०) धर्मविरोधी मत।

औपधिक–वि० (सं०) छली। पु० ठग, भय दिखाकर धन ऐंठनेवाला।

औपनिधिक–वि० (सं०) धरोहर-संबंधी; विश्वासपर धरोहर रखा हुआ।

औपनिवेशिक–वि० (सं०) उपनिवेश-संबंधी; उपनिवेशमें रहनेवाला। **–स्वराज्य**–पु० एक प्रकारका स्वराज्य जो कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि ब्रिटिश उपनिवेशोंको प्राप्त है।

औपनिषद– वि० (सं०) उपनिषद्में कहा, बताया हुआ; उपनिषद्पर आश्रित। पु० परब्रह्म; उपनिषद्का अनुयायी।

औपनिषदिक कर्म–पु० (सं०) वे कर्म जो शत्रुका नाश करें (कौ०)।

औपनी–स्त्री० दे० 'ओपनी'।

औपन्यासिक–वि० (सं०) उपन्यास-संबंधी; उपन्यासके ढंगका; अद्भुत। पु० उपन्यासकार।

औपपत्तिक–वि० (सं०) प्रस्तुत; उपपत्ति-युक्त; युक्ति-संगत, ठीक, उपयुक्त।

औपपातिक–पु० (सं०) उपपातक करनेवाला।

औपम्य–पु० (सं०) समता, सादृश्य, बराबरी।

औपयिक–वि० (सं०) न्याय्य; उपयुक्त; प्रयत्नसे प्राप्त। पु० साधन; उपाय।

औपयोगिक–वि० (सं०) उपयोग-संबंधी।

औपराजिक–वि० (सं०) उपराज या राजप्रतिनिधि-संबंधी।

औपल–वि० (सं०) प्रस्तर-संबंधी; पत्थरका बना हुआ; पत्थरसे मिलनेवाला (कर)।

औपवस्त, औपवस्त्र, औपवास्य–पु० (सं०) उपवास।

औपवस्त्रक–पु० (सं०) उपवासके उपयुक्त आहार।

औपवास–वि० (सं०) उपवासकालमें दिया या किया जानेवाला।

औपवाह्य–वि० (सं०) सवारीके काम आनेवाला। पु० राजाकी सवारीमें काम आनेवाला हाथी या रथ।

औपशमिक–वि० (सं०) शमन करनेवाला; शमनसे उत्पन्न होनेवाला।

औपसर्गिक–वि० (सं०) उपसर्ग-संबंधी; उपसर्ग-रूपमें प्राप्त, संक्रामक (रोग); विपत्तिका सामना करने योग्य। पु० एक प्रकारका सन्निपात।

औपस्थिक–वि० (सं०) जिसकी जीविका (उपस्थके सहारे) व्यभिचारसे चलती हो।

औपस्थिका–स्त्री० (सं०) वेश्या, वारांगना।

औपस्थ्य–पु० (सं०) सहवास, भोग।

औपहारिक–वि० (सं०) उपहार-संबंधी; उपहारके काम आनेवाला। पु० उपहार।

औपाधिक–वि० (सं०) उपाधि-संबंधी; विशेष अवस्थाओंमें होनेवाला; विशेष धर्मोंसे संबंध रखनेवाला।

औपायनिक–वि० (सं०) उपहारमें मिला हुआ या दिया जानेवाला (कौ०)।

औपासन–वि० (सं०) गृह्याग्नि-संबंधी; पूजा-संबंधी। पु० गृह्याग्नि; पितरोंको दिया जानेवाला पिंड।

औपेंद्र–वि० (सं०) उपेंद्र-संबंधी।

औम–वि० (सं०) सनका बना हुआ; ✻ दे० 'अवम'।

औमक, औमिक–वि० (सं०) दे० 'औम'।

औरंगज़ेब–पु० (फा०) मुगलवंशका अंतिम शक्तिशाली बादशाह (शासनकाल १६५८ से १७०७) जो शाहजहाँका तीसरा पुत्र था।

औरंगशाह–पु० दे० 'औरंगजेब'।

और–अ० दो शब्दों या वाक्योंको जोड़नेवाला एक अव्यय, व, तथा। वि० दूसरा; अधिक। **मु०–का और–कुछका** कुछ, उलटा। **–क्या ?** –हाँ, अवश्य, नहीं तो क्या ? **–तो और**–दूसरोंकी बात जाने दो, दूसरोंकी तो बात ही क्या; दूसरी बात छोड़िये, इतना तो ? **–ही कुछ**–सबसे निराला; जुदा; अनूठा।

औरग–वि० (सं०) साँपका; साँप-संबंधी। पु० आश्लेषा नक्षत्र।

औरत–स्त्री० (अ०) स्त्री; पत्नी।

औरना✻–अ० क्रि० आगे बढ़ना; सूझना।

औरभ्र–वि० (सं०) भेड़-संबंधी। पु० भेड़का मांस; ऊनी कपड़ा, कंबल।

औरभ्रक–पु० (सं०) भेड़ोंका झुंड।

औरभ्रिक–वि० (सं०) भेड़-संबंधी। पु० गड़ेरिया।

औरस–वि० (सं०) विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न ,वैध, जायज। पु० विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न पुत्र।

औरसना✻–अ० क्रि० रूठना, अनखाना।

औरसी–स्त्री० (सं०) विवाहिता पत्नीसे उत्पन्न कन्या।

औरस्य–वि०, पु० (सं०) दे० 'औरस'।

औरासा✻–वि० विलक्षण; बेढंगा.. 'कहाँ अब काल चाल औरासी'–सूर।

औरेब–पु० तिरछापन, टेढ़ापन; कपड़ेकी तिरछी काट; पेच, चाल,

कठिनाई, संकट। **–दार**–वि० तिरछी काटवाला।

और्णिक–वि० (सं०) ऊन संबंधी, ऊनसे बना, ऊनी।

और्ध्वदेह–पु० (सं०) अंत्येष्टि, प्रेतकर्म।

और्ध्वदेहिक, और्ध्वदैहिक–वि० (सं०) मृत व्यक्तिसे संबद्ध या उसके निमित्त किया गया।

और्व–वि० (सं०) धरतीसे संबद्ध या उत्पन्न; जाँघसे उत्पन्न। पु० एक प्रवर-प्रवर्तक ऋषि; बडवाग्नि; खारी नमक।

और्वशेय–पु० (सं०) उर्वशीका पुत्र; वसिष्ठ; अगस्त्य।

औलंभा*–पु० दे० 'ओलंभा'।

औलना†–अ० क्रि० गरमी पड़ना; तप्त होना। स० क्रि० तपाना, क्लेश देना।

औलाद–स्त्री० (अ०) संतान, बेटा बेटी, वंश ('वल्द'का बहु०)।

औला-दौला–वि० लापरवाह, मौजी।

औलान–पु० (सं०) सहारा; पानीका हौज।

औलिया–पु० (अ०) सिद्ध पुरुष, संत, महात्मा, पहुँचा हुआ मुसलमान फकीर ('वली'का बहु०)।

औली†–स्त्री० खेतसे पहले पहल काटकर लाया हुआ नया हरा अन्न।

औलू*–स्त्री० विरहकी स्मृति।

औलूक–पु० (सं०) उलूकोंका झुंड।

औलूक्य–पु० (सं०) वैशेषिक दर्शनके प्रवर्तक महर्षि कणाद। **–दर्शन**–पु० वैशेषिक दर्शन।

औलूखल–वि० (सं०) ओखलीमें कूटा हुआ; उलूखल-संबंधी।

औल्वण्य–पु० (सं०) आधिक्य; अतिशयता; प्राबल्य।

औवल–वि० (अ०) पहला, प्रथम; प्रधान; सर्वश्रेष्ठ। **–औवल**–अ० पहले, प्रथमतः।

औवलन्–अ० पहले, प्रथमतः।

औशि, औसि*–अ० दे० 'अवश्य'।

औशीर–पु० (सं०) खसकी जड़; खसका लेप; चटाई; पंखे या चँवरकी डाँड़ी; कुरसी।

औशीरिका–स्त्री० (सं०) (पौधेका) अंकुर, अँखुआ; जलाधार।

औषण–पु० (सं०) कड़वापन; काली मिर्च। **–शौंडी**–स्त्री० सोंठ।

औषदि*–स्त्री० दे० 'औषधि'।

औषध–स्त्री० (सं०) दवा, ओषधि, जड़ी-बूटी; एक खनिज द्रव्य। वि० जड़ी-बूटियोंसे बनी। **–निर्देश**–पु० (प्रेस्क्रिपशन) किसी रोगके शमनार्थ चिकित्सक द्वारा दवाओंके नाम, मात्रा, प्रयोगादिके संबंधमें दिया गया (लिखित) निर्देश। **–निर्माणशास्त्र**–पु० (फारमाकोपीया) औषध तैयार करनेकी विद्या या उसकी विधि बतानेवाले ग्रंथ; भेषजग्रंथ। **–विज्ञान,–प्रभाव विज्ञान**–पु० (फार्मेकोलॉजी) किस औषधका क्या प्रभाव पड़ता है, यह बतलाने वाला विज्ञान।

औषधालय–पु० (सं०) दवाखाना।

औषधि, औषधी–स्त्री० (सं०) दे० 'ओषधि'।

औषधोपचार–पु० (सं०) दवा-इलाज।

औषर, औषरक–पु० (सं०) खारी नमक; चुंबक पत्थर।

औषस–त्रि० (सं०) उषासे संबद्ध; उषाकालीन।

औषसी–स्त्री० (सं०) भोर, प्रत्यूष।

औष्ट्र–वि० (सं०) उष्ट्रसे संबद्ध या उत्पन्न। पु० ऊँटनीका दूध। **–रथ**–पु० ऊँटगाड़ी।

औष्ट्रक–वि० (सं०) ऊँटसे प्राप्त। पु० ऊँटोंका झुंड।

औष्ट्रिक–वि० (सं०) ऊँटसे प्राप्त होनेवाला। पु० तैलिक, तेली।

औष्ठ–वि० (सं०) ओष्ठ संबंधी; ओठकी शकलका।

औष्ठ्य–वि० (सं०) ओठसे संबंध रखनेवाला; जिसका उच्चारण ओंठोंकी सहायतासे हो।

औष्ण, औष्ण्य, औष्म्य–पु० (सं०) उष्णता, ताप, गरमी।

औसत–वि० (अ०) बीचका, दरमियानी; साधारण। पु० बीचकी संख्या या राशि, राशियोंके जोड़को उनकी संख्यासे भाग देनेपर भागफलके रूपमें प्राप्त संख्या, परता। **–दरजेका**–बीचका, न बहुत अच्छा, न बुरा।

औसत मुक्त पथ–पु० (मीन-फ्री-पाथ) वह औसत दूरी जो गैसका अणु, अन्य किसी अणुसे टकरानेके पूर्व तय कर लेता है। गैसका दाब घटानेपर औसत मुक्त पथका मान बढ़ जाता है क्योंकि इस दशामें गैसके अणुओंकी बीचकी दूरी भी बढ़ जाती है।

औसना†–अ० क्रि० ऊमस होना; गरमीसे खानेकी चीजका बिगड़ना; फलादिका सूखकर पकना।

औसर*–पु० दे० 'अवसर'।

औसान–पु० (फा०) होश-हवास, चेत–'गै औसान सबन्हकर देखि समुद कै बाढ़'–प०; * अंत, अवसान। मु०–**खता होना**–हवास ठिकाने न रहना, घबरा जाना।

औसाना–स० क्रि० फलादिको भूसे आदिमें रखकर पकाना।

औसी–स्त्री० दे० 'औली'।

औसेर*–स्त्री० दे० 'अवसेर'।

औहत*–स्त्री० अपमृत्यु, कुगति।

औहाती*–वि०, स्त्री० दे० 'अहिवाती'।

क

क–देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका पहला (व्यंजन) वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ है।

कँउधा*–स्त्री० दे० 'कौंधा'।

कंक–पु० (सं०) एक मांसाहारी पक्षी जिसके पंख बाणमें लगाये जाते थे; एक तरहका आम; यम; क्षत्रिय; युधिष्ठिरका एक नाम जो उन्होंने विराट् नगरमें धारण किया था; कंसका भाई। **–त्रोट**–पु० एक तरहकी मछली। **–पत्र**–पु० वह बाण जिसमें कंकका पर लगा हो; कंकका पर। **–पत्री(त्रिन्)**–वि० जिसमें कंकका पर लगा हो (बाण)। **–पृष्ठी**–स्त्री० एक तरहकी मछली। **–मुख**–पु० एक तरहकी चिमटी जिसमें चुभा हुआ काँटा या अन्य वस्तु पकड़कर निकाली जा सकती है।

कंकट–पु० (सं०) कवच, बखतर; अंकुश। **–कर्मांत**–पु० कवच बनानेका कारखाना।

कंकड़–पु० जमीनके अन्दरसे निकलनेवाला एक तरहका रोड़ा जो सड़क बनानेके काममें आता है और जिसे जलाकर चूना बनाया जाता है; पत्थरका छोटा टुकड़ा, गिट्टी; सूखा या सुरतीका चूरा मिला हुआ तंबाकू जिसे गाँजेकी तरह पीते हैं। **–पत्थर**–पु० कूड़ा-करकट, रद्दी चीजें।

कंकड़ी–स्त्री० छोटा कंकड़, छर्री; छोटा टुकड़ा, डली, रवा।

कंकड़ीला, कंकरीला–वि० कंकड़ मिला हुआ; जिसमें कंकड़ अधिक हों।

कंकण–पु० (सं०) कंगन; विवाहके पहले वर-कन्याके हाथमें बाँधा जानेवाला धागा; विवाहसूत्र; एक षाडव राग।

कंकणास्त्र–पु० (सं०) एक अस्त्र।

कंकणी, कंकणीका–स्त्री० (सं०) कटि आदिमें पहननेके घुँघरूदार गहने; क्षुद्रघंटिका।

कंकत–पु० (सं०) कंघी; एक वृक्ष; एक विषैला जीव।

कंकतिका, कंकती–स्त्री० (सं०) कंघी।

कंकन*–पु० दे० 'कंकण'।

कंकर–वि० (सं०) बुरा, नीच। पु० मट्ठा; * दे० 'कंकड़'।

कंकरीट–स्त्री० (अं० 'कांक्रीट') कंकड़, सीमेंट, बालू आदिके मेलसे बना हुआ छत आदि बनानेका मसाला; छोटी कंकड़ी।

कंकरेत–स्त्री० दे० 'कंकरीट'; छतपर डालनेका कंकड़। वि० दे० 'कंकरीला'।

कंकरोल–पु० (सं०) निकोचक नामक वृक्ष।

कंका–स्त्री० (सं०) उग्रसेनकी बेटी जो वसुदेवके छोटे भाईको ब्याही थी।

कंकारी–स्त्री० एक वृक्ष।

कंकाल–पु० (सं०) हड्डियोंका ढाँचा, ठटरी। **–माली(लिन्)**–वि० हड्डियोंकी माला पहननेवाला। पु० शिव। **–शर**–पु० वह

वाण जिसके सिरेपर हड्डी लगी हो। **–शेष**–वि० जिसकी देहमें ठटरीभर रह गयी हो।

कंकालय–पु० (सं०) शरीर।

कंकालिनी–स्त्री० (सं०) काली। वि०, स्त्री० झगड़ालू, कर्कशा (स्त्री)।

कंकाली–पु० एक भिक्षाजीवी जाति।

कंकु–पु० (सं०) एक अन्न, कँगनी (?)।

कंकुष्ठ–पु० (सं०) आयुर्वेदमें वर्णित एक तरहकी पहाड़ी मिट्टी।

कंकूष–पु० (सं०) अंदरका शरीर; आभ्यंतर देह।

कंकर|–पु० एक तरहका पान।

कंकेरु–पु० (सं०) एक तरहका कौआ।

कंकेलि, कंकेल्ल, कंकेल्लि–पु० (सं०) अशोक वृक्ष।

कंकोल–पु० (सं०) शीतल चीनीकी जातिका एक वृक्ष या उसका फल।

कंकोली–स्त्री० (सं०) दे० 'कक्कोल'।

कंख–पु० (सं०) पापभोग, फलभोग।

कँखवारी–स्त्री० काँखका फोड़ा।

कँखोरी–स्त्री० दे० 'कँखवारी'; काँख।

कंगन–पु० कलाईमें पहननेका सोने या चाँदीका एक गहना, कंकण; वह धागा जिसमें हलदी, लोहेका छल्ला, पीली सरसों, चोकर आदि बाँधकर हलदीकी रस्मके समय वर-कन्याके हाथमें बाँध देते हैं।

कँगना–पु० कंगन बाँधते समय गाया जानेवाला गीत; कलाईपर पहननेका एक गहना। स्त्री० एक तरहकी घास।

कँगनी–स्त्री० छोटा कंगन, कलाईमें पहननेका एक गहना; लाखकी बनी दंदानेदार चूड़ी; दीवारमें उभड़ी हुई लकीर, कार्निस; दंदानेदार चक्कर या चक्करके उभड़े हुए दाने; साँवाकी जातिका एक अन्न, काकुन। **–दुमा**–वि० गँठीली पूँछवाला। पु० वह हाथी जिसकी दुममें गाँठें हों।

कँगला–वि० दे० 'कंगाल'; दुर्भिक्ष-पीड़ित।

कँगसी–स्त्री० पंजा गँठना।

कँगही|–स्त्री० कंघी।

कँगहेरा–पु० दे० 'कँघेरा'।

कंगारू–पु० (अं०) आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी आदिमें पाया जानेवाला एक जानवर।

कंगाल–वि० निर्धन, गरीब; भुक्खड़, मुहताज। **–गुंडा, बाँका**–पु० वह आदमी जो कंगाल होते हुए शौकीनी करे, मुफलिस शौकीन।

कंगाली–स्त्री० गरीबी, निर्धनता।

कंगु–पु० **कंगुनी**–स्त्री० (सं०) एक कदन्न।

कंगुरिया|–स्त्री० दे० 'कनगुरिया'।

कंगुल–पु० (सं०) कर, हाथ।

कंगुष्ठ–पु० (सं०) दे० 'कंकुष्ठ'।

कंगूरा–पु० गुंबद, बुर्ज। **–(रे)दार**–वि० कंगूरेवाला।

कंघा–पु० बाल सँवारने-सुलझानेका दंदानेदार आला; जुलाहोंका एक औजार।

कंघी–स्त्री० छोटा कंघा; जुलाहोंका एक औजार; एक पौधा। **–चोटी**–स्त्री० बनाव-सिंगार।

कँघेरा–पु० कंघी बनानेवाला।

कंच*–पु० दे० 'काँच'।

कंचन–पु० सोना; धन-दौलत; धतूरा; एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्याकर्म करती हैं। वि० निर्मल; नीरोग। **–पुरुष**–पु० दे० 'कांचनपुरुष'।

कंचनिया–स्त्री० एक तरहका कचनार।

कंचनी–स्त्री० कंचन जातिकी स्त्री; वेश्या।

कंचार–पु०–(सं०) सूर्य; अकवन।

कंचिका–स्त्री० (सं०) फुड़िया; बाँसकी शाखा।

कंचुक–पु० (सं०) बख्तर; जामा, अँगरखा; चोली, अँगिया; केंचुल; भूसी, छिलका; तसमा।

कंचुकालु–पु० (सं०) साँप।

कंचुकित–वि० (सं०) बख्तरदार, कवचित; वस्त्राच्छादित।

कंचुकी–स्त्री० चोली, अँगिया; * केंचुल।

कंचुकी(किन्)–वि० (सं०) कवचधारी। पु० रनिवासका रक्षक, अंतःपुराध्यक्ष; द्वारपाल; साँप; जौ; लंपट।

कंचुरि*–स्त्री० दे० 'केंचुल'।

कंचुलिका, कंचुली–स्त्री० (सं०) चोली, अँगिया।

कँचुली*–स्त्री० दे० 'केंचुल'।

कँचेरा–पु० काँचका काम करनेवाला। काँचकी चूड़ी।

कंछा–पु० पतली डाल।

कंज–पु० (सं०) कमल; केश; अमृत। वि० जलसे उत्पन्न। **–ज**–पु० ब्रह्मा। **–नाभ**–पु० विष्णु।

कंजई–वि० कंजेके रंगका, गहरा खाकी। पु० खाकी रंग; इस रंगकी आँखोंवाला घोड़ा।

कंजक–पु०, **कंजकी**–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका पक्षी।

कंजड़–पु० एक खानाबदोश जाति।

कंजन–पु० (सं०) कामदेव; एक तरहका पक्षी।

कंजर, कंजार–पु० (सं०) सूर्य; हाथी; उदर; ब्रह्मा; मोर; सन्यासी। (हिं०) दे० 'कंजड'।

कंजल–पु० (सं०) एक तरहका पक्षी।

कंजा–पु० एक कँटीली झाड़ी। वि० खाकी रंगका; कंजी आँखोंवाला।

कंजाभ–वि० (सं०) कमलके सदृश आभावाला। पु० कमल जैसी कांति।

कंजावलि–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

कंजिका–स्त्री० (सं०) ब्राह्मणयष्टिका नामक पौधा, भारंगी।

कंजियाना–अ० क्रि० काला-सा पड़ना; मुरझाना; ठंढा पड़ना।

कंजी–वि०, स्त्री० गहरे खाकी रंगकी।

कंजूस–वि० यथेष्ट पैसा रहते हुए भी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए जो उसे खर्च न करे, सूम, कृपण, खसीस।

कंजूसी–स्त्री० कृपणता।

कंट–वि० (सं०) कँटीला।* पु० काँटा। **–पत्रफला**–स्त्री० ब्रह्मदंडी नामक पौधा। **–फल**–पु० गोखरू; कटहल; धतूरा; लताकरंज।

कंटक–पु० (सं०) काँटा; सूई या किसी नुकीली चीजकी नोक; बाधा; छोटा शत्रु; वह जो परेशान करे; रोमांच; घड़ियाल; बाँस; दोष; कारखाना; जन्मकुंडलीमें पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान। **–द्रुम**–पु० सेमलका पेड़। **–फल**–पु० कटहल; गोखरू; रेंड़ या धतूरे का पेड़। **–भक्षक,–भुक्(ज्)**–पु० ऊँट। **–शोधन**–पु० काँटा निकालना, दूर करना; विघ्न-बाधाओंको दूर करना; उपद्रवियोंका दमन। **–श्रेणी**–स्त्री० भटकटैया; साही।

कंटकाकीर्ण–वि० जिसमें चारों ओर काँटे फैले हों; बाधाओंसे युक्त।

कँटकार–पु० (सं०) सेमल; एक तरहका बबूल; एक मछली।

कंटकारिका, कंटकारी–स्त्री० (सं०) भटकटैया; सेमल।

कंटकाल–पु० (सं०) दे० 'कंटक-फल'; काँटोंका घर।

कंटकालुक–पु० (सं०) जवासा।

कंटकाशन–पु० (सं०) ऊँट।

कंटकाष्ठील–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

कंटकित–वि० (सं०) कँटीला; रोमांचयुक्त।

कंटकिनी–स्त्री० (सं०) भटकटैया।

कंटकिल–पु० (सं०) एक तरहका काँटेदार बाँस।

कंटकी–स्त्री० (सं०) भटकटैया।

कंटकी(किन्)–वि० (सं०) काँटोंवाला; कष्टदायक। पु० मछली; काँटेदार पेड़; खैर, बाँस, बेर या गोखरूका पौधा।

कँटबाँस–पु० एक तरहका अधिक काँटोंवाला बाँस।

कंटर–पु० शीशेकी सुराही जो शराब, गुलाबजल आदि रखनेके काम आती है।

कंटल–पु० (सं०) बबूल।

कंटाइन–स्त्री० चुड़ैल; भूतनी; लड़ाकी स्त्री।

कंटाप–पु० भारी सिरा। 'पिछलीटाँगोंका भरपूर कंटाप इतने जोरका पड़ा कि सब दाँत झड़ गये'––नवनीत, दिस० ६२।

कँटाय–स्त्री० एक कटीला पेड़ ।

कंटाल–पु० दे० 'कंटालु' ।

कंटालु–पु० (सं०) भटकटैया; काँटेदार बाँस; बबूल; बृहती ।

कंटाह्वय–पु० (सं०) पद्मकंद ।

कंटिका–स्त्री० (पिन) तार आदिका बहुत पतला नुकीला टुकड़ा जिसमें ऊपरकी ओर चिपटी घुंडी या टोपी-सी होती है और जो कागजों, कपड़ों आदिमें खोंसी जाती है, शूक, आलपीन ।

कंटिकाधार–पु० (पिनकुशन) काठ, पीतल आदिका वह गद्दीदार ढाँचा जिसमें आलपीनें (कंटिकाएँ) खोंसकर रखी जाती हैं, शूकधानी, पिनगद्दा ।

कँटिया–स्त्री० छोटी कील; मछली फँसानेकी बंसी; अँकुसीके आकारकी चीज जिसमें कोई चीज फँसायी जाय; इमलीकी बीजरहित छोटी फलियाँ ।

कँटियाना–अ० क्रि० काँटोंसे युक्त होना; रोमांचित होना ।

कँटियारी–स्त्री० दे० 'वनवरें' ।

कंटी(टिन्)–वि० (सं०) काँटेदार । पु० अपामार्ग; गोखरू; खदिर ।

कँटीला–वि० काँटेदार ।

कंटूनमेंट–स्त्री० (अं० 'कैंटूनमेंट') छावनी ।

कँटेरी–स्त्री० भटकटैया ।

कँटेला–पु० कठकेला ।

कंटोप–पु० दे० 'कनटोप' ।

कंट्रैक्ट–पु० (अं०) ठेका; नियत मूल्यपर कोई माल देने, नियत उज्रतपर कोई काम करनेका मुआहिदा ।

कंट्रैक्टर–पु० (अं०) कंट्रैक्ट करनेवाला; ठेकेपर सड़क, मकान आदि बनानेका काम करानेवाला, ठेकेदार ।

कंट्रोल–पु० (अं०) नियंत्रण ।

कंठ–वि० कंठस्थ, याद, बरजबान । पु० (सं०) गला, हलक; (लेरिंक्स) गलेके अन्दरका वह अंग जो स्वर उत्पन्न करता है; स्वरयंत्र । स्वर, आवाज; घड़े आदिका गला; तोते आदिके गलेपरकी रंगीन वृत्ताकार लकीर; कोण; किनारा । **–कुब्ज**–पु० एक तरहका सन्निपात । **–कूणिका**–स्त्री० वीणा । **–गत**–वि० गलेमें आया, अटका हुआ । **–च्छेदिस्पर्द्धा**–स्त्री० (कटथ्रोट कांपिटीशन) गला काट देनेवाली, अत्यंत गहरी, प्रतियोगिता । **–तलासिका**–स्त्री० घोड़ेके गलेमें डाली जानेवाली चमड़ेकी पट्टी । **–तालव्य**–वि० जिसका उच्चारण कंठ और तालु दोनोंसे हो ('ए', 'ऐ'–व्या०) । **–त्राण**–पु० युद्धमें गलेकी रक्षाके लिए पहनी जानेवाली लोहेकी एक प्रकारकी जाली (कौ०) । **–नीलक**–पु० मशाल; लुक । **–बंध**–पु० (नेक-टाई) गलेसे बाँधकर कमीजके ऊपर लटकाया जानेवाला रेशमी या सूती सुंदर फीता, ग्रैवेय । **–मणि**–पु० गलेमें पहननेका मणि; प्रिय वस्तु; घोड़ेकी गरदनकी भँवरी । **–माला**–स्त्री; गलेका एक रोग जिसमें चारों तरफ ग्रंथियाँ (गाँठें) निकलती हैं । **–शालुक**–पु० गलेके भीतरका अर्बुद । **–शुंडी**–स्त्री० गलग्रंथिका शोथ । **–शूल**–पु० घोड़ेके गलेकी भँवरी । **–शोष**–पु० गलेका सूखना; बेकारकी बकवास । **–श्री**–स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना; कंठी । **–संगीत**–(वोकल म्यूजिक) मानव-कंठ द्वारा उच्चरित गीत ध्वनि, गायन । **–सिरी***–स्त्री० कंठश्री । **–स्थ**–वि० कंठमें स्थित; कंठगत; जबानी याद । **–हार**–पु० हार; शोभाकी या प्रियवस्तु 'कवित्त हिंदी कवियोंका कंठहार रहा है'–सुधींद्र । **मु०–खुलना**–आवाज निकलना । **–फूटना**–आवाज निकलना; जवानी आनेपर आवाजका बदलना । **–बैठना**–गला बैठना; बेसुरा होना । **–होना**–जबानी याद होना ।

कँठला–पु० दे० 'कठला' ।

कँठहरिया*–स्त्री० कंठी ।

कंठा–पु० बड़े मनकोंकी माला जो गलेसे सटी होती है; तोते आदिके गलेकी रंगीन रेखा; कुरतेका गलेपर रहनेवाला अर्द्धचंद्राकार भाग ।

कंठाग्र–वि० (सं०) जो जबानी याद हो (कविता); कंठस्थ, बरजबान ।

कंठाल–पु० (सं०) नाव; कुदाल; पटेला; युद्ध; ऊँट; एक भक्ष्य मूल, ओल; थैला; मंथनपात्र ।

कंठिका–स्त्री० (सं०) एक लड़ीका हार; कंठी ।

कंठी–स्त्री० (सं०) कंठ; घोड़ेके गलेकी रस्सी; छोटे मनकोंका कंठा; (हिं०) तुलसीके छोटे दानोंकी छोटी माला जो वैष्णवत्वका प्रधान चिह्न है । **–धारी,–बंद**–वि० (हिं०) जो कंठी पहने हो । **–रव**–पु० सिंह; मस्त हाथी; कबूतर; स्पष्ट कथन, खुले शब्दोंमें कह देना । **मु० –छूना**–कंठीकी शपथ खाना । **–तोड़ना**–वैष्णवत्वका त्याग कर फिर मांस-मछली खाने लगना । **–बाँधना, –लेना**–वैष्णव संप्रयदायकी दीक्षा लेना ।

कंठील–पु० (सं०) ऊँट; मंथनपात्र ।

कंठीला–स्त्री० (सं०) मंथनपात्र ।

कंठेकाल–पु० (सं०) शिव ।

कंठोष्ठ्य, कंठौष्ठ्य–वि० (सं०) जिसका उच्चारण कंठ और ओठ दोनोंसे हो ('ओ', 'औ'–व्या०) ।

कंठ्य–वि० (सं०) कंठ-संबंधी; कंठके लिए उपयुक्त या हितकर; कंठसे उच्चारित । **–वर्ण**–पु० वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठसे होता है (अ-आ, क, ख, ग, घ, ह और विसर्ग) ।

कंडन–पु० (सं०) कूटना, छाँटना ।

कंडनी–स्त्री० (सं०) ओखली; मुसल ।

कंडरा–स्त्री० (सं०) मोटी नस, महास्नायु, महानाड़ी ।

कंडा–पु० वह गोबर जो यों ही पड़ा-पड़ा सूख गया हो; पाथा या विना पाथा मोटा उपला; सूखामल; सरकंडा । **मु०–होना**–मर जाना; ऐंठ जाना; सूख जाना ।

कंडानक–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर ।

कंडाल–पु० गोल मुँहका गहरा लोहे-ताँबे आदिका बरतन जो पानी रखनेके काम आता है; नरसिंहा; जुलाहोंका एक औजार ।

कंडिका–स्त्री० (सं०) छोटा-खंड; वैदिक ऋचाओंका छोटा समूह; पैरा, अनुच्छेद ।

कंडी–स्त्री० छोटा कंडा; सूखा मल, गोटा ।

कंडील–स्त्री० दे० 'कंदील' ।

कंडीलिया–स्त्री० प्रकाश-स्तंभ; कंदील आदि लटकानेका बाँस ।

कंडु, कंडू–स्त्री० (सं०) खाज, खारिश । **–घ्न**–पु० सफेद सरसों ।

कंडुक–पु० भिलावाँ; तमाल ।

कंडुर–वि० (सं०) खुजली पैदा करनेवाला । पु० एक तरहका सरकंडा ।

कँडुवा–पु० बालवाले अन्नोंका एक रोग ।

कंडूति–स्त्री० (सं०) दे० 'कडूया' ।

कंडूयन–वि० (सं०) खुजली पैदा करनेवाला । पु० खुजलाने या सहलानेकी क्रिया; खुजली ।

कंडूयनक–वि० (सं०) खुजली पैदा करनेवाला ।

कंडूयः–स्त्री० (सं०) खुजली ।

कंडूरा–स्त्री० (सं०) केवाँच ।

कंडूल–वि० (सं०) खाज पैदा करनेवाला । पु० एक खाद्य कंद, ओल ।

कँडेरा–पु० एक जाति जो रूई धुनती है, धुनिया ।

कंडोल–पु० (सं०) अनाज रखनेका बाँस या बेंतका टोकरा; दौरा; भंडार; ऊँट । **–वीणा**–स्त्री० चांडाल वीणा; किंगरी ।

कंडोलक–पु० (सं०) टोकरा; भंडार-घर ।

कंडोष–पु० (सं०) शुककीट, एक तरहका फनगा ।

कंडौर–पु० अन्नका एक रोग ।

कंडौरा–पु० कंडे रखनेकी जगह; कंडोंका ढेर ।

कंत–वि० (सं०) प्रसन्न । * पु० पति; प्यारा; ईश्वर ।

कंतरि*–पु० कांतार, वन ।

कंता–पु० कंत, पति ।

कंतार*–पु० कांतार, वन, जंगल ।

कंतु–वि० (सं०) प्रसन्न । पु० कामदेव; हृदय; अन्नभांडार ।

कंथ*–पु० दे० 'कंत' ।

कंथा–स्त्री० (सं०) गुदड़ी; कथरी; दीवार; नगर । **–धारी-**

(रित्)-पु० योगी ।

कँथारी-स्त्री० कथरी ।

कंथारी-स्त्री० (सं०) एक वृक्ष ।

कंथी(थिन्)-वि० (सं०) गुदड़ी धारण करनेवाला । पु० साधु, फकीर ।

कंद-पु० (सं०) गाँठदार या गूदेदार जड़, गाजर, ओल, सूरन; बादल; लहसुन; कपूर; योनिका एक रोग; गाँठ; शोथ; एक वर्णवृत्त; * शरीर; स्कंध । **-गुडुची**-स्त्री० एक तरहकी गुडुची, पिंडालू, बहुच्छिन्ना । **-मूल**-पु० एक पौधा जिसकी जड़ भून या उबालकर खायी जाती है; मूली; कंद तथा मूल । **-वर्धन,-शूरण**-पु० ओल । **-सार**-पु० नंदनकानन ।

क़ंद-पु० (अ०) सफेद शकर; मिस्री ।

कंदक-पु० (सं०) पालकी ।

कंदर-पु० (सं०) गुफा; अंकुश; सोंठ; *मूल; कंधर, बादल ।

कंदरा, कंदरी-स्त्री० (सं०) गुफा; घाटी ।

कंदराकर-पु० (सं०) पहाड़ ।

कंदरिया†-स्त्री० जड़, मूल ।

कंदर्प-पु० (सं०) कामदेव; प्रणय; एक ताल (संगीत) । **-कूप**-पु० योनि । **-ज्वर**-पु० कामज्वर । **-दहन,-मथन**-पु० शिव । **-मुषल,-मुसल**-पु० मेहन, पुरुषेंद्रिय । **-शृंखल**-पु० एक रतिबंध ।

कंदल-पु० (सं०) कपाल; नया अँखुआ; सोना; युद्ध; वाद-विवाद; अपवाद; कलध्वनि; एक तरहका केला ।

कंदला-पु० तार खींचनेमें व्यवहृत चाँदीकी गुल्ली; पासा; सोने-चाँदीका तार; एक तरहका कचनार । **-कचहरी**-स्त्री० तारकशीका कारखाना । **-कश**-पु० तारकशीका काम करनेवाला ।

कंदली-स्त्री० (सं०) केला; कमलका बीज; एक पौधा । **-कुसुम**-पु० कुकुरमुत्ता; केलेका फूल ।

कंदा-पु० शकरकंद; अरुई ।

कंदालु-पु० वनकंद ।

कंदिरी-स्त्री० (सं०) लजालू ।

कंदी(दिन्)-पु० (सं०) सूरन ।

कंदील-स्त्री० (अ०) कागज, मिट्टी या अबरकका लैंप जिसमें दिया जलाकर लटकाते हैं; लालटेन । **-ची**-पु० मस्जिदमें चिराग जलानेवाला व्यक्ति ।

कंदु-पु० (सं०) भट्ठा; भाड़ । **-पक्व**-वि० भाड़में भूना हुआ ।

कंदुक-पु० (सं०) गेंद; गलतकिया; सुपारी; एक वर्णवृत्त । **-क्रीडा**-स्त्री० गेंद उछालने आदिका खेल । **-तीर्थ**-पु० व्रजमंडलका वह स्थान जहाँ कृष्णने कंदुक-लीला की थी ।

कंदू*-पु० कीचड़-'अगनि जु लागी नीरमें कंदू जलिया झारि'-साखी ।

कंदूरी-स्त्री० कुँदरू ।

कंदैला*-वि० गँदला; मिट्टी-कीचड़वाला ।

कंदोट-पु० (सं०) श्वेत पद्म; नीलोत्पल ।

कंदोत-पु० (सं०) श्वेत पद्म ।

कंदोरा-पु० करधनी, कटिडोरा ।

कंद्रप*-पु० कंदर्प, कामदेव ।

कंध-पु० (सं०) बादल; मोथा; * तनेका ऊपरी भाग; कंधा ।

कंधनी-स्त्री० करधनी, मेखला ।

कंधर-पु० (सं०) गरदन; बादल; मोथा; एक शाक ।

कंधरा-स्त्री० (सं०) गरदन । **-वध**-पु० गरदन काटनेका दंड (कौ०) ।

कंधा-पु० शरीरका गरदन और बाहुमूलके बीचका भाग, स्कंध, शाना, मोढ़ा; बैल या भैंसेकी गरदनके ऊपरका भाग जिसपर जुआ रखा जाता है । मु०-**डाल देना**-बैलका कंधेपर जुआ न लेना; हिम्मत हारना; (कोई) बोझ, जिम्मेदारी उठानेसे भागना । **-देना**-अरथी ढोनेमें कंधा लगाना; शामिल होना; मदद देना । **-बदलना**-पालकी, काँवर आदि एकसे दूसरे कंधेपर लेना; पालकीके थके हुए कहारको छुड़ानेके लिए किसी साथीका कंधा लगाना । **-लगना**-जुएकी रगड़से कंधेमें घाव हो जाना । **-(धे) से कंधा छिलना**-भारी भीड़ होना ।

कंधार-पु० अफ़गानिस्तानका एक नगर और प्रदेश, गांधार; * दे० 'कर्णधार' ।

कंधारी-वि० कंधारका; कंधारमें उपजा हुआ । पु० कंधार देशका घोड़ा ।

कंधावर-स्त्री० छोटा दुपट्टा जो कंधेपर डाल लिया जाता है; जुएका वह भाग जो बैलके कंधेपर रहता है; ताशेकी वह रस्सी जिसके सहारे उसे गलेमें लटकाकर बजाते हैं ।

कंधि-स्त्री० (सं०) गरदन । पु० समुद्र ।

कंधेला-पु० साड़ीका कंधेपर डाला हुआ छोर ।

कंधेली-स्त्री० घोड़ेका एक साज; घोड़े या बैलकी पीठपर रगड़से बचानेके लिए रखी जानेवाली गद्दी ।

कँधैया-पु० दे० 'कन्हैया' । स्त्री० कंधा; बच्चेको कंधेपर बैठाकर चलना ।

कंप-पु० (सं०) हिलना; काँपना; क्रोध, भय आदिके कारण शरीरमें होनेवाला कंपन (एक सात्विक भाव); स्तंभके नीचे या ऊपरकी कँगनी । **-ज्वर**-पु० जूड़ी-बुखार ।

कंप-पु० (अं० 'कैंप') डेरा, पड़ाव ।

कँपकँपी-स्त्री० काँपना; कंप ।

कंपति-पु० (सं०) समुद्र ।

कंपन-पु० (सं०) काँपना; कँपकँपी; शिशिर ऋतु ।

कँपना-अ० क्रि० काँपना, हिलना; डरना ।

कंपनी-स्त्री० (अं०) संयुक्त धनसे व्यापार करनेवाले व्यक्तियोंका समूह; जत्था; सेनाका एक विभाग ।

कंपा-पु० बाँसकी तीलियोंमें लासा लगाकर बनाया हुआ एक तरहका फंदा जिससे बहेलिये चिड़ियोंको फँसाते हैं । स्त्री० (सं०) कंपन; भय ।

कंपाउंडर-पु० (अं०) डाक्टरका वह सहायक जो दवाएँ मिलानेका काम करता है ।

कंपाउंडरी-स्त्री० कंपाउंडरका कार्य या पेशा ।

कंपाक-पु० (सं०) हवा ।

कँपाना-स० क्रि० किसीको काँपनेमें प्रवृत्त करना; हिलाना; डराना ।

कंपायमान-वि० (सं०) काँपता हुआ ।

कंपास-स्त्री० (अं०) दिग्दर्शक यंत्र, कुतुबनुमा; परकार । मु०-**लगाना**-पैमाइश करना; घातमें रहना ।

कंपित-वि० (सं०) काँपता, हिलता हुआ; कँपाया, हिलाया हुआ ।

कंपिल-पु० (सं०) रोचनी ।

कंपिल्ल-पु० (सं०) दे० 'कांपिल्ल' ।

कंपू-पु० (अं० 'कैंप') फौजकी छावनी, पड़ाव; खेमा; फौज ।

कंपोज-पु० (अं०) छापनेके लिए टाइपके अक्षरोंको जोड़ना; रचना करना ।

कंपोज़िंग-स्त्री० (अं०) कंपोज करनेका काम; कंपोजकी उजरत । **-स्टिक**-स्त्री० टाइप बैठानेकी छोटी पट्टी ।

कंपोज़िटर-पु० (अं०) टाइप बैठानेवाला ।

कंपोज़िटरी-स्त्री० कंपोजिटरका धंधा ।

कंपोटर†-पु० कंपाउंडर, मलहम-पट्टी करनेवाला या दवा तैयार कर देनेवाला डाक्टरका सहायक ।

कंप्र-वि० (सं०) हिलता हुआ; काँपता हुआ; चंचल; तेज ।

कंबख़्त-वि० दे० 'कमबख़्त' ।

कंबर-वि० (सं०) कई वर्णोंका । पु० चित्र वर्ण; * दे० 'कंबल' ।

कंबल-पु० (सं०) कम्मल; गाय-बैलके गलेमें नीचे लटकनेवाली खाल, सास्ना; जल; एक तरहका हिरन; दीवार; पानी; एक छोटा कीड़ा ।

कंबलक-पु० (सं०) ऊनी वस्त्र, कंबल ।

कंबलिका-स्त्री० (सं०) कमली; एक तरहकी हिरनी ।

कंबली(लिन्)-वि० (सं०) कंबलवाला; कंबलसे ढका हुआ । पु० बैल ।

कंबिका-स्त्री० (सं०) एक प्राचीन बाजा ।

कंबी-स्त्री० (सं०) करछी; बाँसका अँखुआ या गाँठ ।

कंबु–पु० (सं०) शंख; गला; हाथी; चित्र वर्ण; कंगन; नली (अस्थिकी)। वि० कई वर्णोंका। **–कंठी**–वि०, स्त्री० शंख जैसी गरदनवाली (स्त्री)। **–काष्ठा**–स्त्री० अश्वगंधा। **–ग्रीव**–वि० शंख जैसी सुराहीदार गरदनवाला। **–ग्रीवा**–स्त्री० शंख जैसी सुराहीदार गरदन। **–पुष्पी, –मालिनी**–स्त्री० शंखपुष्पी।

कंबुक–पु० (सं०) शंख; अधम व्यक्ति।

कंबुका–स्त्री० (सं०) अश्वगंधा; ग्रीवा।

कंबू–वि० (सं०) चोरी करनेवाला। पु० (?) चोर; कंगन।

कंबोज–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद जो अब अफगानिस्तानका भाग है; शंख; एक तरहका हाथी।

कंभारी–स्त्री० (सं०) दे० 'गंभारी' नामक पेड़।

कंभु–पु० (सं०) खस, उशीर।

कंमोद*–पु० कुमुद।

कँवल–पु० दे० 'कमल'। **–ककड़ी**–स्त्री० भसींड़। **–गट्टा**–पु० कमलका बीज। **–बाव**–पु० दे० 'कमल-वायु'।

कँवासा†–पु० नातीका लड़का।

कंस–पु० (सं०) काँसा; एक माप; कटोरा; सुराही; झाँझ; काँसेका बरतन; उग्रसेनका लड़का जिसे कृष्णने मारा था। कृष्णकी माता देवकी इसीकी बहिन थी। **–ताल**–पु० झाँझ। **–निषूदन, –शत्रु**–पु० कृष्ण। **–पात्र**–पु० काँसेका बरतन; एक माप, आढक।

कंसक–पु० (सं०) काँसा; काँसेका पात्र; कसीस।

कंसकड़ोरन†–स्त्री० मारना-पीटना; (जैसा कृष्णने कंसको किया था, उस तरह) घसीटना–'दारी, झोंटा पकड़कर कंसकड़ोरन करूँगी बहुत मुँह चलाया तो'–अमर०।

कंसरटीना–पु० (अं०) एक तरहका अंगरेजी बाजा।

कंसरवेटिव–वि० (अं०) वर्तमान व्यवस्था बदलने, नवीनता या सुधार आदिका विरोधी। पु० कंसरवेटिव दलका सदस्य; ऐसे विचारका आदमी। **–पार्टी**–स्त्री० ब्रिटेनका एक राजनीतिक दल जो वर्तमान या पुरानी व्यवस्थाको यथासंभव बनाये रखना चाहता है।

कँस–काँसाका समासगत विकृत रूप। **–कुट**–पु० दे० 'कसकुट'। **–हँड़**–पु० काँसेके बरतनोंके टुकड़े। **–हँड़ा**–पु०, **–हँड़ी**–स्त्री० देग या बटलोहीके ढंगका एक बरतन।

कंसर्ट–पु० (अं०) कई बाजोंका समूह या उनका एक साथ बजना; गाने या बजानेवालोंके स्वरका मेल।

कंसवती–स्त्री० (सं०) कंसकी बहिन।

कंसाराति, कंसारि–पु० (सं०) कृष्ण।

कंसिक–वि० (सं०) कांसेका बना हुआ।

कंसीय–वि० (सं०) कटोरेके लायक या उससे संबंध रखनेवाला। पु० काँसा।

कँसुला–पु० काँसेका एक चौकोर टुकड़ा जिसपर सोनार खोरिया बनाते हैं।

कँसुली–स्त्री० छोटा कँसुला।

कँसुवा†–पु० ईखके नये पौधेमें लगनेवाला एक कीड़ा।

कंसोद्भवा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी खुशबूदार सफेद मिट्टी।

क–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु; कामदेव; सूर्य; अग्नि; वायु; यम; प्रजापति; राजा; मेघ; बाल; गाँठ; आत्मा; मन; शरीर; शब्द; मोर; पक्षिराज गरुड़; धन; सोना; प्रकाश; सुख, आनंद; पानी; मस्तक। **–द**–वि० सुखद; जल देनेवाला। पु० बादल।

कइन, कइनी†–स्त्री० बाँसकी पतली, लंबी टहनी; टहनी।

कई–वि० एकाधिक, कुछ, चंद। * ('किया'का स्त्री०) की।

कउँधना–अ० क्रि० कौंधना।

ककंद–पु० (सं०) सोना।

ककई†–स्त्री० कंघी।

ककड़ासींगी–स्त्री० दे० 'काकड़ासींगी'।

ककड़ी–स्त्री० गरमी और बरसातमें भी होनेवाली एक बेल जिसका फल खीरेसे मिलते-जुलते आकारका होता है। मु० **–का चोर**–छोटा अपराध करनेवाला। **–के चोरको कटारीसे मारना**–छोटे अपराधके लिए भारी सजा देना। **–खीरा समझना**–तुच्छ समझना।

ककना†–पु० दे० 'कंगन'।

ककनी–स्त्री० दे० 'कँगनी'; दानेदार चक्कर; कँगनीके आकारकी एक मिठाई।

ककनू*–पु० एक पक्षी जिसके संबंधमें यह प्रसिद्धि है कि जब यह गाता है तब इसकी चोंचके छिद्रोंमेंसे आग निकलने लगती है और यह उसीमें जल मरता है।

ककमारी–स्त्री० एक प्रकारकी लता।

ककराली–स्त्री० दे० 'कँखौरी'।

ककरी–स्त्री० दे० 'ककड़ी'।

ककरेजा–पु० दे० 'काकरेज़ा'।

ककरेजी–वि०, पु० दे० 'काकरेज़ी'।

ककरौल–पु० खेखसा।

ककसी–स्त्री० एक तरहकी मछली।

ककहरा–पु० 'क'से 'ह'तक अक्षर, वर्णमाला; किसी विषयकी आरंभिक, मोटी-मोटी बातें, अलिफ़-बे; एक तरहकी कविता जिसके चरण अक्षरोंके क्रमसे आरंभ होते हैं।

ककही–स्त्री० एक तरहकी कपास; चौबगला; दे० 'कंघी'।

कका†–पु० काका, चाचा।

ककाटिका–स्त्री० (सं०) सिरका पीछेका एक भाग।

ककार–पु० (सं०) 'क' अक्षर या उसकी ध्वनि।

ककुंजल–पु० (सं०) चातक।

ककुंदर–पु० (सं०) जघन-कूप।

ककुत्स्थ–पु० (सं०) इक्ष्वाकुवंशका एक राजा।

ककुद, ककुद्–पु० (सं०) चोटी, पर्वत-शिखर; बैल या साँड़के कंधेपरका डिल्ला; सींग; राजचिह्न।

ककुद्मान्(मत्)–वि० (सं०) चोटी या डिल्लेवाला। पु० बैल; पर्वत; ऋषभ नामकी औषधि।

ककुद्मी(मिन्)–वि० (सं०) चोटी या डिल्लेवाला। पु० वह बैल जिसके कंधेपर डिल्ला या कूबड़ हो; पर्वत; विष्णु; रैवतक नामका राजा जिसकी कन्या रेवतीका ब्याह बलरामसे हुआ था।

ककुनी†–स्त्री० दे० 'कँगनी'।

ककुप्, ककुभ्–स्त्री० (सं०) दिशा; श्रेणी; शोभा; चंपकमाला; शास्त्र; चोटी; साँस; दक्षकी एक कन्या; रागिनी; तीन चरणोंका एक छंद।

ककुभ–पु० (सं०) वीणाके अंतका मुड़ा हुआ भाग; अर्जुनका पेड़; कुटज पुष्प; एक राग; एक दैत्यराज; एक छंद।

ककुभा–स्त्री० (सं०) दिशा; एक रागिनी।

ककूना–पु० रेशमके कीड़ेका कोया।

ककेड़ा, ककोड़ा–पु० खेखसा नामकी तरकारी।

ककेरुक–पु० (सं०) उदर-कृमि।

ककैया–वि० कंधीके आकारकी (ईंट)। स्त्री० लखौरिया ईंट।

ककोरना†–स० क्रि० खरोंचना; मोड़ना, सिकोड़ना (बुंदेल०)।

ककोरा–पु० दे० 'ककेड़ा'।

कक्कड़–पु० सुरतीका चूरा मिला और सेककर बनाया हुआ भुरभुरा तमाकू।

कक्का–पु० केकय देश; सिख (जिनमें पाँच ककार चलते हैं–कंघा, कृपाण, केश, कड़ा और कच्छ अर्थात् जाँघिया)। दे० 'काका'।

कक्की†–स्त्री० एक प्रकारका छोटा पेड़।

कक्कुल–पु० (सं०) बकुल वृक्ष।

कक्कोल–पु०, कक्कोली–स्त्री० (सं०) एक फलदार वृक्ष।

कक्खट–वि० (सं०) कठिन, कठोर; ठोस।

कक्खटी–स्त्री० (सं०) खड़िया।

कक्ष–पु० (सं०) काँख; कछोटा; कमरा; कछार; सूखी घास; लता; सूखा जंगल; जंगलका भीतरी भाग, राजाका अंतःपुर, रनिवास; बगल, बाजू; सेनाका दाहिना-बायाँ बाजू; दलदल जमीन; कटिबंध; नावका एक हिस्सा; ग्रहपथ; छिपनेका स्थान; चहारदीवारी; अंचल, धोती आदिका छोर, भैंसा; फाटक; पाप; तारा। **–प**–पु० कच्छप; कुबेरकी एक निधि। **–शाय, –शायु**–पु० कुत्ता।

कक्षा–स्त्री० (सं०) परिधि, दायरा; दरजा; वह परिभ्रमण मार्ग जिसपर चलता हुआ कोई पिण्ड, किसी अन्यपिण्डकी परिक्रमा करता है; परमाणुनाभिकके गिर्द परिक्रमा करनेवाले इलेक्ट्रानका परिभ्रमणमार्ग; काँख; काँखका फोड़ा; कछोटा; एक रत्तीकी तौल; कमर; कमरपट्टी; चहारदीवारी; आँगन; अंतःपुर; समता; आपत्ति; होड़; शकटका एक विशेष भाग; पलड़ा। **–पट**–पु० कछोटा, लाँग; कटिवस्त्र, कौपीन।

कक्षावेक्षक–पु० (सं०) अंतःपुरका निरीक्षक; उद्यानपाल; द्वारपाल; लंपट; चित्रकार; अभिनेता।

कक्षीवान्(वत्)–पु० (सं०) एक वैदिक ऋषि।

कक्षोत्था–स्त्री० (सं०) भद्रमुस्ता, नागरमोथा।

कक्षोन्नति–स्त्री० (प्रमोशन) अधिक ऊँची कक्षा या अधिक ऊँची स्थितिमें चढ़ा दिया, पहुँचा दिया जाना।

कक्ष्या–स्त्री० (सं०) घोड़े आदिकी पेटी, कटिबंध; उँगली; उपरना; हौदा; अंचल; अंतःपुर; घेरा, दीवार; रत्ती; घुँघची; उद्योग।

क ख ग–पु० प्रारंभिक ज्ञान 'मुझे अभिनयका क, ख, ग तक नहीं आता था'–हम हिन्दु०।

कखवाली–स्त्री० दे० 'ककराली', कँखौरी।

कखौरी–स्त्री० दे० 'कँखौरी'।

कगर–पु० कगार; बारी; मेंड़; कारनिस। *अ० किनारेपर; निकट; अलग।

कगरी–स्त्री० दे० 'कगार'।

कगरे*–अ० किनारे, अलग।

कगार–पु० ऊँचा किनारा; नदीका करारा; टीला।

कगिरी–पु० एक पेड़ जिसके दूधसे रबर बनता है।

कग्ग*–पु० काग, काक, कौआ।

कग्गद*–पु० कागद, कागज; पत्र, चिट्ठी।

कघुती–स्त्री० कागज बनानेके काम आनेवाली एक प्रकारकी झाड़ी।

कचंगल–पु० (सं०) समुद्र।

कच–पु० (सं०) सिरके बाल, केश; सूखा फोड़ा या घाव; बंध; मेघ; बृहस्पतिका एक पुत्र जिससे देवयानीका अनुराग हो गया था। **–प**–पु० तृण; पत्र। **–माल**–पु० धुआँ।

कच–पु० दाँत, काँटे आदिके किसी नरम चीजमें तेजीसे धँसने या कुचले जानेकी आवाज ('कच'से चुभ गया)। वि० 'कच्चा'का समासमें व्यवहृत रूप। **–दिला**–वि० कच्चे दिलका। **–पेँदिया**–वि० कच्ची पेंदीका; जिसकी बातका भरोसा न हो, ढुलमुल। **–लोँदा**–पु० लोई। **–लोहा**–पु०, **–लोही**–स्त्री० कच्चा लोहा। **–लोहू**–पु० पंछा।

कचक†–स्त्री० कुचल जाने, दब जानेकी चोट।

कचकच–स्त्री० दे० 'किचकिच'।

कचकचाना–अ० क्रि० कचकचकी आवाज होना; दाँत धँसाना।

कचकड़, कचकड़ा–पु० कछुएका खोपड़ा।

कचकना†–अ० क्रि० दबना; ठेस लगना।

कचकाना†–स० क्रि० दबाकर तोड़ना; दबाना; धँसाना।

कचकेला–पु० केलेका एक भेद।

कचकोल–पु० दे० 'कजकोल'।

कचट–स्त्री० दे० 'कचोट'।

कचड़ा–पु० दे० 'कचरा'।

कचनार–पु० एक पेड़ जिसकी कली तरकारी और छाल तथा फूल दवाके काम आते हैं, कांचनार।

कचपच–स्त्री० थोड़ी जगहमें बहुत-सी चीजोंका जमा हो जाना, गिचपिच; कचकच।

कचपचिया, कचपची–स्त्री० आकाशमें पूर्वकी ओर दिखाई देनेवाला छोटे तारोंका एक समूह; कृत्तिका नक्षत्र; चमकीला बुंदा, सितारा।

कचबची–स्त्री० चमकदार बुंदा, सितारा।

कचरई अमौवा–पु० एक तरहका रंग जो हरापन लिये बादामी होता है।

कचर-कचर–स्त्री० कच्चा फल खानेका शब्द; कचकच।

कचरकूट–पु० कसकर पीट देना, पूरी मरम्मत; †डटकर भोजन करना।

कचरघान–पु० कचपच; कीचड़; मार-पीट; कच्चे-बच्चे; बहुतसी वस्तुओंके एकत्र होनेके कारण गड़बड़ी होना।

कचरना*–स० क्रि० कुचलना, रौंदना; खूब खाना।

कचर-पचर–पु० गिचपिच; किचकिच।

कचरा–पु० कूड़ा-करकट; रुईका बिनौला, मैल आदि फुचड़ा; दालका बेकार अंश; खरबूजा; ककड़ी; समुद्री सेवार।

कचरी–स्त्री० एक लता जिसका फल तरकारीके काम आता है, पहुँटा; पहुँटेके सुखाये हुए गोल टुकड़े; सूखी कचरीकी तरकारी; छिलकेदार दाल। † घीमें तले हुए आलू आदिके कतरे जिनमें मिर्च और नमक लगा हो; † हरे और पुष्ट दानोंसे युक्त चनेका पौधा।

कचलोन–पु० एक प्रकारका नमक।

कचवाँसी–स्त्री० खेत नापनेका एक मान, बिस्वांसीका बीसवाँ भाग।

कचहरी–स्त्री० इजलास; अदालत; दरबार; दफ्तर; जमाव।

कचा–स्त्री० (सं०) हथिनी; शोभा।

कचाई–स्त्री० कच्चापन; अनुभवहीनता; दोष; त्रुटि, खामी।

कचाकु–वि० (सं०) दुष्ट, कुटिल; असह्य; दुष्प्राप्य। पु० सर्प।

कचाटुर–पु० (सं०) बनमुर्गा।

कचाना–अ० क्रि० कचियाना, आगा-पीछा करना।

कचायँध–स्त्री० कच्चेपनकी गंध।

कचायन–स्त्री० लड़ाई-झगड़ा, किचकिच।

कचार–पु० नदीके किनारेका छिछला और जमा हुआ जल।

कचारना†–स० क्रि० (कपड़े आदि) पछाड़ना, फींचना।

कचालू–पु० उबाले आलू आदिके टुकड़े जिनपर नमक, मिर्च, खटाई आदि छिड़की हो; बंडा, अमरूद आदिके टुकड़े जिनमें नमक-मिर्च मिलायी होती है। **मु०–करना या बनाना**–खूब पीटना।

कचाहट–स्त्री० कचाई, हिचक 'अभ्यास न करोगी तो कचाहट दूर न होगी'–अचल मेरा कोई।

कचिया–पु० काँचकी भट्ठियोंसे निकले क्षारसे बनाया जानेवाला एक प्रकारका नमक।

कचियाना–अ० क्रि० (दिल) कच्चा पड़ना, हिम्मत न होना, आगा-पीछा करना, कदराना। स० क्रि० कच्चा करना।

कचीची*–स्त्री० कचपचिया; जबड़ोंका जोड़; दाढ़। **मु०–बँधना**–दाँत बैठना। **–लेना**–मरनेके समय दाँत पीसना।

कचु–स्त्री० (?) (सं०) एक खाद्य कंद, घुइयाँ; बंडा।

कचुल्ला–पु० चौड़ी पेंदीका कटोरा, प्याला।

कचूमर–पु० कुचली हुई चीज, भर्ता। **मु०–करना,–निकालना**–भर्ता बना देना, पीटकर बेदम कर देना; लापरवाहीसे बरतकर चीजको नष्ट कर देना।

कचूर–पु० हलदीकी जातिका एक पौधा जो दवाके काम आता है; * कटोरा।

कचेल–पु० (सं०) ग्रंथके पत्रोंको एक साथ बाँधनेकी डोरी या लपेटनेका कागज।

कचोका–पु० कोई नोकदार चीज चुभाने-गड़ानेकी क्रिया।

कचोट–स्त्री० चुभन, दर्द; मानसिक पीड़ा, टीस।

कचोटना–अ० क्रि० चुभना; गड़ना; किसी प्रिय जनको याद कर दुःखी होना।

कचोना–स० क्रि० चुभाना, गड़ाना।

कचोरा*–पु० कटोरा।

कचोरी*–स्त्री० कटोरी।

कचौड़ी, कचोरी–स्त्री० उरद या किसी और चीजकी पीठी भरकर बनायी हुई पूरी; समोसेका मसाला भरकर बनायी हुई छोटी टिकिया।

कच्चट–पु० (सं०) जलीय पौधा।

कच्चर–वि० (सं०) बुरा; गंदा; दुष्ट, कमीना। पु० मट्ठा।

कच्चा–वि० अनपका, अपक्व; हरा (फल); आँचमें न तपाया हुआ (कच्चा घड़ा); अधकचरा; जिसके पकनेमें कसर हो

(चावल अभी कुछ कच्चे हैं); असंस्कृत, साफ न किया हुआ; मिट्टीका बना; प्रामाणिक तौल-मापसे कम (कच्चा सेर, कच्चा बीघा); जो पके रूपमें न हो; जिसमें काट-छाँट, रद-बदल हो सके (कच्चा मसौदा); जो नियमित रूपमें, बाकायदा न हो (कच्ची रसीद); अधिक दिन न टिकनेवाला (कच्चा रंग); पूरी बाढ़को न पहुँचा हुआ; अपरिपक्व, अनुभवहीन; जिसमें धैर्य, दृढ़ता न हो, कमजोर, बेहिम्मत; अपटु, अनाड़ी; अनभ्यस्त; नकली (गोटा)। (स्त्री० 'कच्ची'।) पु० खाका; कच्ची सिलाई; मसौदा; खर्रा; कनपटी। **–असामी**–पु० वह असामी जिसे खेतपर कोई स्थायी अधिकार न हो, शिकमी असामी; जो बातका धनी, लेन-देनमें खरा न हो। **–काग़ज़**–पु० तेल आदि छाननेका कागज; वह दस्तावेज जिसकी रजिस्टरी न हुई हो। **–काम**–पु० कच्चे गोटे, कलाबत्तू आदिका काम। **–कोढ़**–पु० खुजली; गरमीकी बीमारी। **–गोटा**–पु० झूठा गोटा। **–घड़ा**–पु० न पका हुआ घड़ा; सीखनेकी उम्रका, संस्कार ग्रहण करने योग्य व्यक्ति (बालक आदि)। **–चिट्ठा**–पु० पूरा विवरण, सच्चा हाल, कथा; किसीकी गुप्त या गोपनीय बातें (खोलना, सुनाना)। **–चूना**–पु० बिना बुझाया हुआ चूना। **–जिन्न**–पु० मूर्ख; हठी, पीछे पड़ जानेवाला आदमी। **–जोड़,–टाँका**–पु० राँगेका जोड़। **–तागा**–पु० बे-बटा धागा; कमजोर चीज। **–पक्का**–वि० सिझा-अनसिझा। **–पैसा**–पु० स्थान-विशेषमें प्रचलित पैसा–गोरखपुरी, बालासाही आदि। **–बाना**–पु० रेशमका धागा जो बटा न गया हो; रेशमी कपड़ा जिसमें माँड़ी न लगी हो। **–माल**–पु० (रा मैटीरियल) खनिज या कृषिजन्य पदार्थ जो अपने प्राकृतिक रूपमें हों और जिन्हें यंत्रादिकी सहायतासे 'पक्के' या तैयार मालके रूपमें परिणत न किया गया हो। कच्चा-बाना; कच्चा गोटा। **–शोरा**–पु० नोनी मिट्टी उबालनेसे जमा हुआ शोरा। **–हाथ**–पु० अनभ्यस्त हाथ। **–हाल**–पु० दे० 'कच्चा चिट्ठा'। **–(च्ची) असामी**–स्त्री० चंदरोजा जगह, नौकरी। **–कली**–स्त्री० मुँहबँधी कली; अप्राप्त यौवना स्त्री। **–क़ुर्क़ी**–स्त्री० मुकदमेका फैसला होनेके पहले निकलवायी जानेवाली कुर्की। **–गोटी,–गोली**–स्त्री० चौसरकी वह गोटी जिसने आधा या अधिक रास्ता पार न कर लिया हो। **–घड़ी**–स्त्री० समयका एक मान जो २४ मिनटके बराबर होता है। **–चाँदी**–स्त्री० चोखी चाँदी। **–चीनी**–स्त्री० राबसे शीरा निकालकर बनायी हुई चीनी जो अधिक साफ नहीं होती। **–ज़बान**–स्त्री० गाली, अपशब्द। **–जाकड़**–स्त्री० वह बही जिसमें कच्ची बिक्री, जाकड़पर गयी हुई चीजका ब्योरा लिखा जाय। **–नकल**-स्त्री० खानगी तौरपर ली हुई सरकारी कागजकी नकल। **–नींद**–स्त्री० वह नींद जो पूरी न हुई हो। **–पक्की(बात)**–स्त्री० अपशब्द, गाली। **–पेशी**–स्त्री० मुकदमेकी पहली पेशी जिसमें फैसला नहीं होता। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें कच्चा हिसाब, याददाश्तें आदि लिखी जायँ। **–मिती**–स्त्री० निश्चित समयके पहलेकी मिती; लेन-देनकी मिती। **–रसोई**–स्त्री० पानीमें पका हुआ अन्न, पक्की रसोईका उलटा। **–रोकड़**–स्त्री० वह बही जिसमें रोजके आय-व्ययका कच्चा हिसाब लिखा जाय। **–शक्कर**–स्त्री० दे० 'कच्ची चीनी'। **–सड़क**–स्त्री० वह सड़क जिसपर गिट्टियाँ या कंकड़ न कूटे गये हों। **–सिलाई**–स्त्री० बखिया करनेके पहले डाला हुआ टाँका जो पीछे खोल दिया जाता है, लंगर। **–(च्चे)बच्चे**–पु० छोटे बच्चे; बाल-बच्चे। **मु०–करना**–बातिल ठहराना, काट देना; लज्जित करना; कच्ची सिलाई करना। **–जाना**–गर्भ गिरना। **–पड़ना**–गलत ठहरना, निःसार ठहरना; खिसियाना, लज्जित होना। **–बैठना**–दाँत बैठना, निराहारसे कनपटीका धँस जाना। **–(च्ची) करना**–चौसर, पचीसीमें विपक्षीकी गोटी मारनेके लिए अपनी लाल या पक्की गोटीको फिर बाहर निकालना। **–गोटी–या गोली (गोलियाँ)खेलना**–अनाड़ी, अनुभवहीन होना; बेवकूफीमें समय बिताना। **–(च्चे) घड़े पानी भरना**–कठिन काम करना। **–पक्के दिन**–चार-पाँच महीनेका गर्भ; दो ऋतुओंका संधिकाल।

कच्चू–स्त्री० अरबी, बंडा।

कच्छ–पु० (सं०) किनारेकी जमीन, कछार; अनूपदेश; दलदल जमीन; धोतीकी काछ या लाँग; जाँघिया; नौकाका भाग-विशेष; कच्छ देश; एक छंद; तुनका पेड़ जिसकी लकड़ी शीघ्र जल उठती है। **–प**–पु० कछुआ; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे एक; एक तरहका भभका; तालुमें होनेवाली बतौड़ी; कुबेरकी निधियोंमेंसे एक। **–पी**–स्त्री० मादा कछुआ; एक तरहकी वीणा; सरस्वतीकी वीणा; कच्छपिका। **–शेष**–पु० दिगंबर जैनोंका एक भेद।

कच्छटिका–स्त्री० (सं०) धोतीकी लाँग।

कच्छपिका–स्त्री० (सं०) एक क्षुद्र रोग जिसमें पाँच-छ फुड़ियाँ पास-पास निकलती हैं; फुंसी।

कच्छपी–स्त्री० दे० 'कच्छ'में।

कच्छा–स्त्री० (सं०) झींगुर; वाराही नामक पौधा। पु० (हिं०) चौड़े छोरवाली बड़ी नाव जिसमें दो पतवारें लगती हैं; कई बड़ी नावोंको मिलाकर बनाया गया बेड़ा; जाँघिया। । **मु०–पाटना**–कई कच्छों या बड़ी नावोंको साथ बाँधकर जलसा वगैरहके लिए तख्तोंसे पाटना।

कच्छाटिका, कच्छाटी–स्त्री० (सं०) दे० 'कच्छटिका'।

कच्छार–पु० (सं०) एक प्रदेश, कच्छ।

कच्छी–वि० कच्छ देशका। पु० कच्छ देशका निवासी; कच्छ देशका घोड़ा जिसकी पीठ बीचमें कुछ गहरी होती है। स्त्री० कच्छ देशकी भाषा।

कच्छु–स्त्री० (सं०) खुजलीकी बीमारी, खारिश। **–घ्नी**–स्त्री० पटोल आदि।

कच्छुमती–स्त्री० (सं०) केवाँच आदि पौधे जो खुजली पैदा करते हैं।

कच्छुर–वि० (सं०) जिसे खुजलीकी बीमारी हो; लंपट; कंगाल।

कच्छुरा–स्त्री० (सं०) शूकशिंबी, दुरालभा आदि पौधे; पुंश्चली स्त्री।

कच्छू†–पु० दे० 'कछुआ'। स्त्री० (सं०) दे० 'कच्छु'।

कच्छोटिका–स्त्री० (सं०) दे० 'कच्छटिका'।

कच्छोर–पु० (सं०) कचूर।

कच्वी–स्त्री० (सं०) दे० 'कच्चू'।

कछना–पु० दे० 'कछनी'। अ० क्रि० काछा जाना। * स० क्रि० पहनना, धारण करना।

कछनी–स्त्री० घुटनेतककी कसी हुई धोती जिसमें दोनों ओर लाँग बाँधी जाती है; घुटनेके ऊपरकी धोती, छोटी धोती; घुटनेतक रहनेवाला एक तरहका घाँघरा; वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाय।

कछरा†–पु० चौड़े मुँहका मटका।

कछराली–स्त्री० दे० 'ककराली'।

कछरी†–स्त्री० छोटा कछरा।

कछवारा–पु० दे० 'कछियाना'।

कछवाहा–पु० राजपूतोंकी एक उपजाति।

कछान–पु० कछनी काछना।

कछार–पु० नदीके किनारेकी तर और नीची जमीन, घाटी; असम राज्यका एक जिला।

कछियाना–पु० काछियोंकी बस्ती; वह खेत जिसमें तरकारियाँ बोयी जायँ; तरकारियोंकी खेती।

कछु–वि० दे० 'कुछ'।

कछुआ, कछुवा–पु० एक प्रसिद्ध जल-जंतु, कच्छप।

कछुक*–वि० दे० 'कुछ'।

कछू*–पु० कच्छप। वि० कुछ।

कछोटा–पु०, **कछोटी**–स्त्री० कछनी; स्त्रीकी कछनीके ढंगपर पहनी हुई धोती। मु० **–मारना**–स्त्रीका कछोटा बाँधना।

कछौहा†–पु० दे० 'कछार'।

कज–वि० (फा०) टेढ़ा, झुका हुआ, वक्र। पु० ऐब (?)। **–अदा**–वि० बेमुरौवत; बेवफा। **–अब्रू**–वि० जिसकी भवें टेढ़ी, कमान-जैसी हों। **–फ़हम**–वि० उलटी समझवाला; नासमझ। **–रफ्तार**–वि० टेढ़ा चलनेवाला; कुटिल।

कजक–पु० (फा०) अंकुश।

कजकोल–पु० (फा०) मुसलमान फकीरोंका भिक्षापात्र जो दरियाई नारियलका होता है।

कजनी–स्त्री० पीतल आदिके वरतन खुरचनेका औजार।

कजरा*–पु० काजल; काली आँखोंवाला बैल। वि० काली आँखोंवाला; जिसकी आँखोंमें काजल लगा हो। **–ई***–कालापन।

कजरारा–वि० काजल लगा हुआ, अंजनयुक्त; काला।

कजरी–पु० एक धान। † स्त्री० दे० 'कजली'।

कजरौटा, कजलौटा–पु० काजल पारने-रखनेकी डाँड़ीदार डिबिया।

कजरौटी, कजलौटी–स्त्री० छोटा कजरौटा।

कजला–पु० स्याह रंगका एक पक्षी, मटिया। वि० काली आँखोंवाला; जिसकी आँखोंमें अंजन लगा हो।

कजलाना–अ० क्रि० स्याह पड़ना; आगका झँवाना। स० क्रि० काजल लगाना।

कजली–स्त्री० कालिख; पारे और गंधककी लुगदी; काली आँखोंवाली गाय; एक तरहकी भेड़; पोस्तेका एक रोग; एक तरहकी मछली; स्त्रियोंका एक त्योहार जो भादों वदी तीजको मनाया जाता है; इस अवसरके लिए मिट्टीमें गोदकर उगाये गये जौके पौधे, जई; एक तरहका गीत गो बरसातमें मिर्जापुर आदिमें इस त्योहारके समय गाया जाता है। **–तीज**–स्त्री० भादों वदी तीज। **–वन**–पु० केलोंका वन, असमका एक जंगल जहाँ हाथी बहुत पाये जाते हैं।

कजा*–स्त्री० माँड़, काँजी।

क़ज़ा–स्त्री० (अ०) ईश्वरीय आदेश; नियति, भाग्य; मृत्यु; कर्तव्य-पालन; निर्णय या न्याय करना। **–ए-इलाही**–स्त्री० ईश्वरका आदेश, खुदाकी मर्जी। **–कार**–अ० संयोगवश, अचानक। मु० **–आना**–मौत आना। **–करना,–होना**–नमाज या दूसरे मजहबी फर्जका नियत समयपर अदा न होना।

कजाक–पु० दे० 'क़ज़्ज़ाक'।

कजाकी–स्त्री० दे० 'क़ज़्ज़ाकी'; * लूट, राहजनी ('करत कजाकी नैन'); छल, धोखेवाजी।

कजावा–पु० एक तरहकी ऊँटकी काठी।

क़ज़िया–पु० (अ०) झगड़ा, टंटा। **–दलाल**–वि०, पु० झगड़ा लगानेवाला।

कजी–स्त्री० (फा०) टेढ़ापन, वक्रता; दोष।

कज्जल–पु० (सं०) काजल; कालिख; सुरमा; वादल; एक छंद। **–ध्वज**–पु० दीया। **–रोचक**–पु० दीवट, दीपाधार।

कज्जलित–वि० (सं०) कालिखसे पुता हुआ; आँजा हुआ, जिसमें काजल लगा हो।

कज्जली–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मछली; रोशनाई; पारे और गंधकके मिश्रणसे बना हुआ एक द्रव्य।

क़ज़्ज़ाक–पु० (तु०) एशियाई रूसकी एक तुर्क जाति जो वीरताके लिए प्रसिद्ध है; डाकू, लूट-मार करनेवाला।

कज़्ज़ाकी–स्त्री० लुटेरापन, राहजनी।

कटंकट–पु० (सं०) आग; सोना; गणेश; शिव, चित्रक वृक्ष।

कटंकटेरी–स्त्री० (सं०) दारुहल्दी।

कटंब–पु० (सं०) एक संगीत-वाद्य; बाण।

कटंभर–पु० (सं०) कटभी वृक्ष।

कटंभरा–स्त्री० (सं०) नागवला, रोहिणी, मूर्वा आदि पौधे।

कट–पु० (सं०) हाथीका गंडस्थल; कटिदेश, श्रोणि; चटाई, टट्टी; घास, सरपत; शव; अरथी; श्मशान; तख्ता; अधिकता; समय; एक स्याह रंग। वि० अधिक; उग्र। **–कट**–वि०, पु० दे० 'क्रममें'। **–कुटी**–स्त्री० झोपड़ी। **–कोल**–पु० पीकदान। **–खादक**–वि० सर्वभक्षी। पु० स्यार; कौआ। **–पूतन**–पु०,**–पूतना**–स्त्री० एक तरहकी प्रेतात्मा। **–मालिनी**–स्त्री० अंगूर आदिकी शराब। **–शर्करा**–स्त्री० चटाईका छोटा टुकड़ा; एक पौधा। **–स्थल**–पु० नितंब और कटि।

कट–पु० (अं०) काट, तराश। **–पीस**–पु० नये कपड़ोंके टुकड़े, वह नया कपड़ा जो बुनाईके समय ही कट गया हो।

कटक–पु० (सं०) सोना; सोनेका कड़ा; सेना, फौज; पहाड़का मध्य भाग; राजधानी; घर; समुद्र; चक्र; हाथीके दाँतपर लगाया जानेवाला छल्ला; समूह; लवण; चटाई; एक नगर जो पहले उड़ीसाकी राजधानी था।

कटकई*–स्त्री० सेना, फौज। 'मनहुँ करुणरस कटकई उतरी अवध वजाय'–रामा०।

कटकट–स्त्री० दाँतोंके एक-दूसरेपर लगनेसे होनेवाला शब्द। पु० (सं०) शिव। वि० बढ़िया, उत्तम।

कटकटना*–अ० क्रि० दे० 'कटकटाना'।

कटकटाना–अ० क्रि० दाँत पीसना। स० क्रि० (दाँत) पीसकर 'कटकट' आवाज करना।

कटकटिका–स्त्री० एक तरहकी बुलबुल।

कटकवाला–पु० मियादी वै।

कटकाई*–स्त्री० कटक, सेना।

कटकी(किन्)–पु० (सं०) पहाड़।

कटखना–वि० काट खानेवाला; चिड़चिड़ा, क्रोधी। पु० युक्ति; चाल।

कट–'काठ'का समासगत और विकृत रूप। **–घरा**–पु० दे० 'कठघरा'। **–ताल**–पु० दे० 'करताल'। **–रेती**–स्त्री० काठ रेतनेका एक औजार। **–बाँसी**–स्त्री० एक तरहका ठोस बाँस।

कटजीरा–पु० स्याहजीरा।

कटती–स्त्री० विक्री; खपत; छँटना।

कटन–पु० (सं०) मकानकी छाजन या छत।

कटना–अ० क्रि० दो टुकड़े होना; टुकड़े होना; विभक्त होना; किसी धारदार चीजका शरीरमें धँसना, जख्मी होना; पिसना; अलग होना; दूर होना; बीतना; खत्म होना; मनमें लज्जित होना; काटा जाना; कतरा जाना; युद्धमें मारा जाना; मिलना, हाथ लगना (माल कटना); रद्द होना; खारिज होना; मुजरा या मिनहा होना; खाने या क्यारीके रूपमें विभाजित होना; किसी संख्याका पूर्ण विभाजन या बराबर हिस्सोंमें बँट जाना; गाड़ी आदिसे राहमें मालका चुरा लिया जाना। **(कटा) रूख**–वि० वे-सहारा; वे-लगाव। मु० **कट मरना**–कटकर मर जाना; लड़ मरना। **कटेपर नमक छिड़कना**–दुखियाको और दुःख देना, कष्ट पाते हुएको कष्ट पहुँचाना।

कटनास*–पु० नीलकंठ।

कटनि*–स्त्री० काट; आसक्ति।

कटनी–स्त्री० फसलकी कटाई; काटनेका औजार; आड़े-तिरछे भागना।

कटभी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका वृक्ष; ज्योतिष्मती लता; अपराजिता।

कटर–स्त्री० एक तरहकी घास; (अं०) मोटर-बोट; मोटरबोटकी शकलकी नाव। पु० काटनेवाला।

कटरा–पु० छोटा चौकोर वाजार; भैंसका नर बच्चा; * कटार।

कटरी–स्त्री० नदीके किनारेकी नीची और दलदल जमीन; † धानका एक रोग।

कटल्लू–वि० काटनेवाला। पु० कसाई।

कटवाँ–वि० जिसमें कटाईका काम हुआ हो। **–ब्याज**–पु० वह सूद जो कुछ मूल धन चुकता हो जानेपर शेषपर लगे।

कटवा–पु० गलेका एक गहना; एक तरहकी छोटी मछली।

कटवाना–स० क्रि० दे० 'कटाना'।

कटसरैया–स्त्री० एक काँटेदार पौधा।

कटहर*–पु० दे० 'कटहल'।

कटहरा†–पु० दे० 'कठघरा'। स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली।

कटहरी चंपा–पु० चंपाका एक प्रकार जिसमें कटहर जैसी गंध हो।

कटहल–पु० काँटेदार छिलकेवाला एक बड़ा फल जो खानेके काम आता है; इसका पेड़।

कटहा†–वि० काटनेवाला। पु० महाब्राह्मण।

कटा*–स्त्री० कटाकटी, मारकाट; हत्या; प्रहार, चोट।

कटाइक*–वि० काटनेवाला।

कटाई–स्त्री० काटनेका काम; काटनेकी मजदूरी; भटकटैया।

कटाऊ*–पु० दे० 'कटाव'। वि० काटे जाने लायक।

कटाकट–पु० कटकट शब्द।

कटाकटी–स्त्री० मारकाट, खूनखराबा।

कटाकु–पु० (सं०) पक्षी ।

कटाक्ष–पु० (सं०) तिरछी निगाह; आक्षेप, चोट, तनज ।

कटाग्नि–स्त्री० (सं०) कटकी अग्नि, घास-फूसकी आग ।

कटाच्छ*–पु० दे० 'कटाक्ष' ।

कटाछनी–स्त्री० मारकाट ।

कटाटंक–पु० (सं०) शिव ।

कटान–स्त्री० कटने या काटनेकी क्रिया ।

कटाना–स० क्रि० काटनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; डसवाना; गाड़ी आदि बगलसे घुमाकर ले जाना (गाड़ीवान) ।

कटार–स्त्री० एक दुधारा हथियार; खंजर । पु० एक तरहका वनविलाव; (सं०) लंपट पुरुष; नागरिक ।

कटारा–पु० बड़ी कटार; ऊँटकटारा ।

कटारिया–पु० एक तरहका धारीदार रेशमी कपड़ा ।

कटारी–स्त्री० छोटी कटार ।

कटाली–स्त्री० भटकटैया । * कटारी, काटनेवाली ।

कटाव–पु० काट; (नदी द्वारा जमीनका) काटा जाना; काट या खोदकर बनाये हुए फूल आदि । **–दार**–वि० जिसमें कटाव हो (पत्ती, झालर इ०); जिसपर कटावका काम हुआ हो ।

कटावन–पु० कटाई करनेका काम या उजरत; कतरन । †वि० काटनेवाला, भयंकर ।

कटास–पु० बनविलावका एक भेद, कटार ।

कटासी–स्त्री० कब्रिस्तान ।

कटाह–पु० (सं०) कड़ाह; कूप; कछुएकी पीठका कड़ा आवरण; सूप; टूटे हुए घड़ेका टुकड़ा; भैंसका बच्चा जिसे सींग निकल रहे हों; राशि, ढेर; एक द्वीप; ढूह; नरक ।

कटाहक–पु० (सं०) कड़ाह ।

कटि–स्त्री० (सं०) कमर; कमरके नीचेका मांसल भाग, चूतड़; पेड़; हाथीका गंडस्थल । **–जेब**–पु० (हिं०) करधनी । **–तट**–पु० कमर । **–त्र**–पु० धोती; करधनी, मेखला, कमरबंद । **–देश**–पुं० पेड़ू, श्रोणि । **–बंध**–पु० कमरबंद; सरदी-गरमीकी कमी-बेशीके विचारसे किये गये पृथ्वीके विषुवत् रेखाके समानांतर पाँच विभागोंमेंसे एक । **–बद्ध**–वि० कमरबस्ता, तैयार, आमादा । **–रोहक**–पु० पीलवान । **–सूत्र**–पु० सूतकी करधनी, कमरपट्टी । **–स्नान**–पु० टबमें बैठकर किया जानेवाला एक तरहका स्नान जिसमें केवल कटि तथा पेड़ूका भाग पानीमें डुबाया जाता है, शेष भाग पानीकी सतहसे ऊपर रहता है (प्राकृतिक चिकित्सा) ।

कटिका–स्त्री० (सं०) कमरके नीचेका मांसल भाग, चूतड़ ।

कटिया–पु० नगोंको काटछाँटकर जड़नेवाला, हक्काक; चौपायोंका कटा हुआ चारा । स्त्री० कँटिया ।

कटियाना–अ० क्रि० कंटकित या रोमांचित होना ।

कटी–स्त्री० (सं०) पिप्पली; कटि ।

कटीरा–पु० एक वृक्षका गोंद, कतीरा ।

कटीला–वि० काँटेदार; नुकीला, तीक्ष्ण, पैना; तेज असर करनेवाला; मुग्ध करनेवाला; आनबानवाला । पु० कतीरा ।

कटुंकता–स्त्री० (सं०) कर्कशता; उजड्डपन ।

कटु–वि० (सं०) कड़वा, चरपरा; अप्रिय:, बुरा लगनेवाला । पु० ६ रसोंमेंसे एक; कड़वापन । **–कंद**–पु० अदरक; लहसुन । **–कीट,–कीटक**–पु० मच्छर । **–क्वाण**–पु० टिट्टिभ । **–ग्रंथि**–स्त्री० सोंठ; पिपरामूल । **–चातुर्जातक**–पु० चार कड़वी चीजों–इलायची, तज, तेजपात और मिर्च –का समूह । **–च्छद**–पु० तगर वृक्ष । **–तिक्तक**–पु० भूनिंब, शण वृक्ष । **–तिक्ता,–तुंबी**–स्त्री० तितलौकी । **–त्रय**–पु० त्रिकुटा । **–दला**–स्त्री० कर्कटी नामक पौधा । **–पर्णी**–स्त्री भडभांड़, सत्यानासी । **–फल**–पु० परवल; कायफल; करेला (?) । **–बीजा**–स्त्री० पीपल । **–भंगा**–स्त्री० एक तरहकी जंगली भाँग । **–भद्र**–पु० अदरक । **–भाषी(षिन्)**–वि० कड़वी बात बोलनेवाला । **–मंजरिका**–स्त्री० अपामार्ग । **–रव**–पु० मेढ़क । **–रस**–वि० कड़वे स्वादवाला । **–वचन**–पु० कड़वी बात । **–विपाक**–वि० पचनेके बाद जिसका स्वाद कड़वा हो जाय; अम्लकारक । **–स्नेह**–पु० सफेद सरसों ।

कटुआ†–पु० धानका एक कीड़ा । वि० अनेक टुकड़ोंमें कटा हुआ ।

कटुक–वि० (सं०) दे० 'कटु'; भयंकर; कठोर । पु० कड़वापन; पटोल, कुटज, अर्क, राजसर्षप आदि । **–त्रय**–पु० मिर्च, सोंठ और पीपल । **–फल**–पु० कंकोल ।

कटुता–स्त्री०, **कटुत्व**–पु० (सं०) कड़ुवापन, तिक्तता; कठोरता, अप्रियता, दुर्भावना, मनोमालिन्य ।

कटुर–पु० (सं०) छाछ, मट्ठा ।

कटूक्ति–स्त्री० (सं०) कड़वी बात, अप्रिय कथन ।

कटूमर–पु० (सं०) जंगली गूलर ।

कटेरी–स्त्री० भटकटैया ।

कटेहर–पु० हलके नीचेकी फाल लगानेकी लकड़ी ।

कटैया*–पु० काटनेवाला; फसल काटनेवाला । स्त्री० भटकटैया ।

कटैला–पु० एक बहुमूल्य पत्थर ।

कटोर–पु० (सं०) मिट्टी आदिका छोटा पात्र । **–दान**–पु० (हिं०) पीतल आदिका एक ढक्कनदार बरतन ।

कटोरा–पु० (सं०) फूल, काँसे आदिका प्याला । **मु०–चलाना**–चोरका पता लगानेके लिए मंत्रकी शक्तिसे कटोरेको चलाना ।

कटोरिया–स्त्री० दे० 'कटोरी' ।

कटोरी–स्त्री० छोटा कटोरा; कटोरीकी-सी शकलवाली चीज; अँगियाका वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं; तलवारकी मूठमेंका ऊपरका गोला भाग; हरी पत्तियोंका कटोरीके आकारका वह भाग जिसमें फूल निकलते और रहते हैं ।

कटोल–वि० (सं०) कड़वा । पु० कड़वापन; चांडाल ।

कटौती–स्त्री० किसी रकममेंसे (धर्मादा, दस्तूरी आदिके रूपमें) कुछ काट लेना । **–का प्रस्ताव**–किसी विभागके कार्यपर असंतोष प्रकट करनेके लिए उसके खर्चकी माँगसे कोई छोटी रकम घटा देनेका प्रस्ताव जो विधानसभा, संसद आदिमें उपस्थापित किया जाय ।

कट्टर–वि० काट खानेवाला; दृढ़; जिसे अपने मत या विश्वासका अधिक आग्रह हो, दुराग्रही; असहिष्णु; अनुदार विचारवाला ।

कट्टहा–पु० दे० 'कटहा' ।

कट्टा–वि० तगड़ा, मोटा-ताजा (हट्टाके साथ प्रयुक्त) । पु० जबड़ा; जूँ । **मु० कट्टे लगना**–किसीके कारण किसीकी या उसकी निगाहपर चढ़ी हुई चीजका नष्ट होना ।

कट्टार–पु० (सं०) कटार ।

कट्ठा–पु० जमीनकी एक नाप, जरीबका बीसवाँ भाग; गल्ला तौलनेका काठका पात्र जिसमें पाँच सेर अनाज आता है । एक प्रकारका (लाल) गेहूँ ।

कट्फल–पु० (सं०) कायफल ।

कट्याना*–अ० क्रि० दे० 'कटियाना' ।

कट्वर–वि० (सं०) घृणित, हेय । पु० छाछ; चटनी, अचार आदि ।

कठंगर–वि० काठकी तरह दृढ़ शरीरवाला, हट्टा कट्टा; कड़ा ।

कठंजरा*–पु० काठका पिंजड़ा या झावा ।

कठ–पु० (सं०) एक मुनि जिनके नामपर यजुर्वेदकी एक शाखाका नाम पड़ा; कठ शाखाका अध्ययन या अनुसरण करनेवाला; एक उपनिषद्, ब्राह्मण । **–वल्ली**–स्त्री० एक उपनिषद् ।

कठ–पु० एक बाजा; 'काठ'का समासगत रूप । वि० काठका बना; घटिया, निकृष्ट; कठोर (समासमें) । **–कीली**–स्त्री० पच्चड़ । **–केला**–पु० एक घटिया केला जो कड़ा और कम मीठा होता है । **–कोला**–पु० कठफोड़ा चिड़िया । **–गुलाब**–पु० एक तरहका जंगली गुलाब । **–गूलर**–पु० एक प्रकारका गूलर, कठूमर । **–घरा**–पु० काठका जँगलेदार घर या घेरा; बड़ा पिंजड़ा जिसमें कोई जंगली जानवर रखा जा सके । **–घोड़ा**–पु० घोड़ेकी सवारीका एक स्वाँग । **–जामुन**–पु० घटिया जामुन, छोटा और अधिक खट्टा जामुन । **–ताल**–पु० दे० 'करताल' । **–पुतली**–स्त्री० काठकी पुतली या गुड़िया जिसे तार या सूत हिलाकर नचाते हैं; दूसरेके आदेश या इशारेपर काम करनेवाला व्यक्ति । **–० का नाच**–एक तमाशा जिसमें कठपुतलियोंका नाच दिखाया जाता

है। –**फला**–पु॰ कुकुरमुत्ता ।–**फोड़वा,–फोड़ा**–पु॰ लंबी चोंचवाली एक चिड़िया जो अपनी चोंचसे पेड़ोंकी छाल छेदकर उसके नीचेके कीड़ोंको खाती है। – **बंधन**–पु॰ काठकी बेड़ी या छल्ला जिसे हाथीके पाँवमें पहनाते हैं। –**बाँसी**–स्त्री॰ दे॰ 'कटवाँसी। –**बाप**–पु॰ सौतेला बाप । –**बेर**–पु॰ घूंटका पेड़ । –**बेल**–पु॰ कैथ । –**बैद**–पु॰ अनाड़ी या अताई वैद्य । –**सेमल**–पु॰ एक छोटे आकारका पेड़, कक्की । –**मलिया***–वि॰ जो काठकी माला पहने हो। पु॰ बना हुआ साधु । –**मस्त,–मस्ता**–वि॰ मस्त, वेफिक्र; मुस्तंडा । –**माटी**–स्त्री॰ जल्द सूखकर कड़ी हो जानेवाली पंककी मिट्टी । –**मुल्ला**–पु॰ कम पढ़ा हुआ, कट्टर, अक्षर-पूजक मुल्ला या मौलवी । –**सेमल**–पु॰ सेमलकी जातिका एक वृक्ष । –**सोला**–पु॰ एक प्रकारकी झाड़ी । –**हँसी**–स्त्री॰ बनावटी, जबरदस्तीकी हँसी ।

कठड़ा–पु॰ दे॰ 'कठरा' ।

कठण*–वि॰ कठिन, विकट–'लागी सो ही जानै कठण लगण दी पीर'–मीरा ।

कठतार*–पु॰ दे॰ 'कठताल' ।

कठनेरा–पु॰ वैश्योंकी एक जाति ।

कठप्रेम*–पु॰ प्रियके उदासीन रहनेपर भी उससे किया जानेवाला प्रेम–'नेह कथैं सठ नीर मथैं हठकै कठप्रेमको नेम निबाहैं'–घन॰ ।

कठमर्द–पु॰ (सं॰) शिव ।

कठर–वि॰ (सं॰) सख्त, कड़ा ।

कठरा–पु॰ दे॰ 'कटघरा;' कठौता; काठका संदूक ।

कठरी–स्त्री॰ छोटा कठरा ।

कठला–पु॰ चाँदीकी चौकियों, बघनखा, बजरबट्टू आदिकी माला जो बच्चोंको पहनायी जाती है।

कठवत–स्त्री॰ दे॰ 'कठौत' ।

कठवता–पु॰ दे॰ 'कठौता' ।

कठवाना–अ॰ क्रि॰ (किसी अंगका) काठकी तरह कड़ा और संवेदन-हीन-सा हो जाना (अत्यन्त शीतसे) ।

कठाकु–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कटाकु' ।

कठारा*–पु॰ नदी आदिका किनारा ।

कठारी–स्त्री॰ कमंडलु; काठका बरतन ।

कठिका–स्त्री॰ (सं॰) खड़िया मिट्टी ।

कठिन–वि॰ (सं॰) कड़ा, सख्त; दुस्साध्य, मुश्किल; टेढ़ा । पु॰ झाड़ी । * स्त्री॰ कठिनाई; कष्ट । –**पृष्ठ,–पृष्ठक**–पु॰ कछुआ ।

कठिनता–(सं॰), **कठिनताई***–स्त्री॰ दे॰ 'कठिनाई' ।

कठिना–स्त्री॰ (सं॰) चीनीकी मिठाई; भोजन बनानेका मिट्टीका बरतन ।

कठिनाई–स्त्री॰ कठिन, दुस्साध्य होना; कष्ट; संकट; दिक्कत, झंझट ।

कठिनिका, कठिनी–स्त्री॰ (सं॰) कानी उँगली, छिगुनी; खड़िया मिट्टी ।

कठिया–वि॰ कड़े छिलकेवाला । पु॰ एक तरहका लाल गेहूँ । स्त्री॰ एक तरहकी भाँग ।

कठियाना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'कठुवाना', 'कठवाना' ।

कठुला–पु॰ दे॰ 'कटला' ।

कठुवाना*–अ॰ क्रि॰ सूखकर काठकी तरह कड़ा हो जाना, दे॰ 'कठवाना' ।

कठूमर–पु॰ दे॰ 'कटूमर' ।

कठेठ, कठेठा*–वि॰ कठोर, कड़ा ।

कठेर–वि॰ (सं॰) कष्टग्रस्त । पु॰ मुफलिस ।

कठेल–पु॰ धुंनियोंकी कमान; कसेरोंका एक औजार ।

कठैला–पु॰ कठौता ।

कठैली–स्त्री॰ छोटा कठौता ।

कठोदर–पु॰ (सं॰ एक उदररोग ।

कठोर–वि॰ (सं॰) कड़ा, सख्त; निष्ठुर, बेरहम; विकासप्राप्त । –**गर्भा**–स्त्री॰ वह स्त्री जिसका गर्भ पूर्ण विकसित–७-८ मासका–हो चुका हो । –**जल**–पु॰ ऐसा पानी जो साबुनके साथ कठिनाईसे झाग देता है। जलके कठोर होनेका कारण है कैल्शियम, मैग्नीशियम तथा लौहके यौगिकोंका पानीमें घुला होना ।

कठोरता–स्त्री॰ (सं॰) कड़ापन, सख्ती, निर्दयता । –**वाद**–पु॰ (प्यूरिटैनिज़्म) (प्रोटेस्टैंट ईसाइयोंका) कठोर जीवनको आदर्श माननेका सिद्धांत, शुद्धाचारवाद ।

कठोरताई*–स्त्री॰ दे॰ 'कठोरता' ।

कठोल–वि॰ (सं॰) दे॰ 'कठोर' ।

कठौत, कठौती–स्त्री॰ छोटा कठौता ।

कठौता–पु॰ काठका वह छिछला बरतन जिसमें प्रायः खानेका सामान रखा जाता है।

कडंकर, कडंगर–पु॰ (सं॰) तृण; मूँग आदिके डंठल ।

कडंग–पु॰ (सं॰) एक तरहकी शराब ।

कड़ंगा–वि॰ कड़े अंगोंवाला; हट्टाकट्टा; अक्खड़ ।

कडंदिका–स्त्री॰ (सं॰) विज्ञान; सर्वविद्या ।

कड–वि॰ (सं॰) गूँगा; कर्कश, श्रुतिकटु; अबोध, मूर्ख ।

कडक–पु॰ (सं॰) समुद्री नमक ।

कड़क–स्त्री॰ बहुत कड़ी और डरावनी आवाज; बिजली चमकनेके बाद होनेवाली आवाज; जोरसे डाँटने-डपटनेकी आवाज; बिजली; पेशाबका रुक-रुककर जलनके साथ आना; रुक-रुककर होनेवाला दर्द; घोड़ेकी सरपट चाल; पटेबाजीका एक हाथ । –**नाल**–स्त्री॰ एक तरहकी तोप । –**बिजली**–स्त्री॰ तोड़ेदार बंदूक; कानमें पहननेका एक गहना; शरीरमें उपचारके लिए बिजली दौड़ानेका एक यंत्र ।

कड़कड़–पु॰ कड़ी चीजके टूटने, ताशेके बजने, टिन आदिकी चादरपर किसी चीजके जोरसे गिरनेकी आवाज ।

कड़कड़ाता–वि॰ जिससे 'कड़कड़' की आवाज निकले, कलफदार; तेज (ज़ाड़ा या धूप) ।

कड़कड़ाना–अ॰ क्रि॰ 'कड़कड़' शब्द करना; घी-तेलका इतना गरम हो जाना कि उसमेंसे 'कड़कड़'की आवाज निकले । स॰ क्रि॰ खूब गरम करना (घी आदि) ।

कड़कड़ाहट–स्त्री॰ 'कड़कड़'की आवाज ।

कड़कना–अ॰ बिजली कौंधनेकी आवाज होना, गरजना; किसी चीजका तेज आवाजके साथ फटना-टूटना; डाँटते हुए जोरसे बोलना ।

कड़का–पु॰ कड़ाकेकी आवाज ।

कड़खा–पु॰ वीरोंकी प्रशंसामें रचित गीत जो योद्धाओंको उत्साहित करनेके लिए गाया जाता है।

कड़खैत–पु॰ कड़खा गानेवाला, भाट ।

कडत्र–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कलत्र'; चूतड़; एक तरहका पात्र ।

कडबड़ा–वि॰ चितकबरा । पु॰ वह मनुष्य जिसकी दाढ़ीके कुछ बाल सफेद हो गये हों ।

कड़बी†–स्त्री॰ दे॰ 'कड़वी' ।

कड़वा–वि॰ जीभको लगनेवाला, झालदार; कटु; अप्रिय; नागवार; क्रोधी; चिड़चिड़ा; रुष्ट, खफा; कठिन; टेढ़ा । –**कसैला**–वि॰ कटु; अप्रिय । –**घूँट**–पु॰ अप्रिय, कष्टकर बात । –**तंबाकू**–पु॰ वह तंबाकू जिसमें गुड़ कम पड़ा हो, तीखे स्वादका तंबाकू । –**तेल**–पु॰ सरसोंका तेल । –**पन**–पु॰,–**हट**–स्त्री॰ कड़वा होनेका भाव, कटुता । मु॰–**घूँट पीना**–अति कष्टकर बातको सह लेना । –**होना**–खफा होना, बिगड़ना ।

कड़वाना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'कड़ुआना' ।

कड़वी–वि॰, स्त्री॰ दे॰ 'कड़वा' । स्त्री॰ जुआरके डंठल जो चारेके काममें लाये जायँ । –**खिचड़ी,–रोटी**–स्त्री॰ वह खाना जो मृत व्यक्तिके निकट-संबंधी या मित्र उसके कुटुंबियोंके लिए भेजते हैं।

कड़हन–पु॰ एक तरहका धान ।

कड़ा–वि॰ सख्त, कठोर; जो नरम या लचीला न हो; कसा हुआ, ठोस; रिआयत न करनेवाला; दृढ़चित्त, धीर; कठिन; दुष्कर; न दबने, न डरनेवाला; तेज; गहरा; कर्कश; तीव्र; असह्य; रोषसूचक (तेवर); कड़ी देहवाला; सशक्त । पु॰ चूड़ीके आकारका एक गहना जो हाथ या पाँवमें पहना जाता है, वलय;

लोहेका बड़ा छल्ला जिसे सिख पहनते हैं; कंडाल-कड़ाही आदिमें पकड़ने, उठाने आदिके लिए लगा हुआ छल्ला; एक तरहका कबूतर। मु०**–पड़ना**–दृढ़ता दिखाना, न दबना।

कड़ाई–स्त्री० कड़ापन, सख्ती; कठोर व्यवहार।

कड़ाका–पु० कड़ी चीजके टूटनेकी आवाज; उपवास, फाका। **–(के)का**–तेज, सख्त, जोरका (जाड़ा या गरमी)।

कड़ाबीन–स्त्री० घोड़सवारोंके उपयुक्त छोटी बंदूक।

कडार–वि० (सं०) घमंडी; पिंगल वर्णका। पु० पिंगल वर्ण; नौकर।

कड़ाह, कड़ाहा–पु० लोहेका गोल, छिछला बरतन जो अधिक मात्रामें पूरियाँ, तरकारी, गुड़ आदि बनानेके काम आता है।

कड़ाही–स्त्री० कड़ाहेकी शकलका छोटा पात्र। मु०**–में हाथ डालना**–अग्निपरीक्षा देना।

कड़ि*–स्त्री० कली; कड़ी; कटि, कमर (बीमल०)।

कडितुल–पु० (सं०) खड्ग, तलवार।

कड़िया–स्त्री० अरहरका सूखा डंठल।

कड़िहर†–स्त्री० कमर।

कड़िहार*–पु० उद्धारक, निकालनेवाला।

कड़ी–स्त्री० कठिनाई, मुसीबत; जंजीरका एक छल्ला; कोई चीज लटकानेका छल्ला; गीतका एक पद; छोटी धरन या शहतीर; भेड़ आदिकी छातीकी हड्डी; जरीबका १।१०० भाग। वि०, स्त्री० दे० 'कड़ा'। **–क़ैद**–स्त्री० वह सज़ा जिसमें कैदीसे कड़ी मेहनतके काम लिये जायँ, सपरिश्रम कारावास। **–दार**–वि० छल्लादार। पु० एक तरहका कसीदा। **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० रोषसूचक दृष्टि; निगरानी। मु० **–उठाना**–मुसीबतें झेलना। **–सुनाना**–खोटी-खरी सुनाना।

कड़ुआ–वि० दे० 'कड़वा' (समास भी)। मु० **–करना**– पैसा लगाना।

कड़ुआना–अ० क्रि० कड़ुवा लगना; आँखें गड़ना; खफा होना।

कडुला†–पु० बच्चोंके हाथ या पाँवमें पहनाया जानेवाला छोटा कड़ा।

कड़ेरा–पु० खरादनेवाला।

कड़ेलोट, कड़ेलोटन–पु० मालखंभकी एक कसरत।

कड़ोडा–पु० बहुत कड़ा अफसर।

कढत–स्त्री० कढ़ने या काढनेकी क्रिया; निकासी।

कढ़ना–अ० क्रि० निकलना; खिचना; * उदय होना; लाभ होना; बढ़ जाना; काढ़ा जाना; दूधका खौलकर गाढ़ा होना। मु० **–कढ़ जाना**–किसी स्त्रीका किसीके साथ निकल जाना।

कढ़नी–स्त्री० नेती; † बरसातमें खेतोंकी वह जुताई जिसके बाद अन्न बोना ही शेष रहता है।

कढ़राना, कढ़लाना*–स० क्रि० घसीटकर बाहर निकालना।

कढ़वाना–स० क्रि० दे० 'कढ़ाना'।

कढ़ाई–स्त्री० बेलबूटे बनानेका काम या उजरत; निकालनेकी क्रिया या उजरत; दे० 'कड़ाही'।

कढ़ाना–स० क्रि० निकलवाना, बाहर कराना; बेल-बूटे बनवाना।

कढ़ाव–पु० बेल-बूटेका काम; दे० 'कड़ाह'।

कढ़ावना*–स० क्रि० दे० 'कढ़ाना'।

कढी–स्त्री० बेसन, दही और मसालेके योगसे बननेवाला ढीली लपसी जैसा एक व्यंजन। मु०**–का(कासा) उबाल**–क्षणिक उत्साह या आवेश। **–में कंकड़ी,–में कोयला**–अत्यंत सुंदर वस्तुमें खटकनेवाला दोष होना।

कढ़ुआ, कढ़ुवा–पु० मटके आदिसे पानी निकालनेका बरतन; आटा-चावल आदि निकालने या नापनेका काम देनेवाला बरतन; ऋण; बच्चोंके प्रातःकाल खानेके लिए बचाकर रखा गया रातका भोजन।

कढ़ेरना–पु० बरतनपर नक्काशी करनेका एक औजार।

कढ़ैया†–पु० निकालनेवाला। स्त्री० कड़ाही।

कढ़ोरना, कढ़ोलना*–स० क्रि० घसीटना।

कण–पु० (सं०) अनाजका दाना; चावल आदिका बहुत छोटा टुकड़ा; जलसीकर; जर्रा, रवा; भिक्षा। **–जीर,–जीरक**–पु० सफेद जीरा। **–प्रिय**–पु० गौरैया। **–भक्ष,–भुक्(ज्)**–पु० कणाद मुनि। **–भक्षक**–पु० कणाद; एक पक्षी।

कणगच, कणगज–पु० केवाँच; करंज।

कणप–पु० (सं०) लोहेका भाला।

कणा–स्त्री० (सं०) पीपल; जीरा; एक तरहकी मक्खी।

कणाटीन, कणाटीर, कणाटीरक–पु० (सं०) खंजन पक्षी।

कणाद–पु० (सं०) वैशेषिक दर्शनके प्रवर्तक उलूक मुनि।

कणिक–पु० (सं०) कण; अनाजकी बाल; गेहूँका आटा; शत्रु।

कणिका–स्त्री० (सं०) कण; रक्तमें प्रसरणशील छोटे कण जो लाल और सफेद रंगके होते हैं (कार्पसल)' तिनका; जीरा; अग्निमंथ वृक्ष।

कणिश–पु० (सं०) जौ, गेहूँ आदिकी बाल।

कणिष्ठ–वि० (सं०) छोटेसे छोटा; अति सूक्ष्म।

कणी–स्त्री० (सं०) कणिका; एक अन्न।

कणीक–वि० (सं०) बहुत छोटा, अत्यल्प।

कणीकरण–पु० (क्रिस्टैलाइज़ेशन) कणों या रवोंके रूपमें परिणत करना, दे० 'स्फटिकीकरण'; मणिभीकरण।

कणीची–स्त्री० (सं०) शब्द; एक वृक्ष; शकट; पुष्पित लता।

कणेर, कणेरु–पु० (सं०) कनियार या कर्णिकारका पेड़।

कणेरा–स्त्री० (सं०) जलहस्तिनी; वेश्या।

कण्व–पु० (सं०) शकुंतलाका पालन करनेंवाले एक ऋषि; यजुर्वेदीय काण्व शाखाके प्रवर्तक ऋषिविशेष।

कत–* अ० क्यों, किसलिए। पु० (सं०) निर्मली; रीठा। **–फल**–पु० निर्मली या रीठेका फल।

क़त–पु० (अ०) कलमकी नोकको तिरछा काटना; कलमकी नोककी कोर (देना, रखना, लगाना)। **–गीर,–ज़म**–पु० वह चपटी लकड़ी जिसपर कलम रखकर कत लगाते हैं।

कतअन्–अ० (अ०) पूरे तौरसे, बिलकुल; हर्गिज।

क़तई–वि० (अ०) पक्का, निश्चित; बिना शर्तका। अ० एकदम, नितांत, बिलकुल। **–फैसला**–पु० पक्का, अंतिम निर्णय। **–हुक्म**–पु० पक्का, अवश्यकर्तव्य आदेश।

कतक–पु० (सं०) निर्मली; रीठा। * अ० क्यों, किसलिए; कैसे; कितना।

कतकी†–वि० कार्त्तिक संबंधी। स्त्री० कार्त्तिक मास भर गंगा स्नान करनेवाली; कार्त्तिकमें पकनेवाली फसल।

कतना–अ० क्रि० काता जाना। वि० कितना।

कतनी–स्त्री० तकली; सूत कातनेका सामान रखनेकी टोकरी।

कतन्ना–पु०, **कतन्नी**–स्त्री० दे० 'कतरना', 'कतरनी'।

कतमाल–पु० (सं०) अग्नि।

कतर-छाँट–स्त्री० काट-छाँट।

कतरन–स्त्री० कपड़े, कागज आदिके काटनेके बाद बच रहनेवाले छोटे, रद्दी टुकड़े।

कतरना–स० क्रि० कैंची या सरौतेसे काटना। पु० बड़ी कतरनी; बात काटनेवाला व्यक्ति।

कतरनी–स्त्री० कतरनेका साधन, औजार; कैंची।

कतर-ब्योंत–स्त्री० काट-छाँट; हिसाब या खर्चमें काट-छाँट; किफायतशारी; जोड़-तोड़। **–से**–नाप-तौलकर; हिसाबसे (चलना, खर्च करना)।

कतरवाँ–वि० औरेबदार; तिरछा।

कतरवाना–स० क्रि० कतरनेका काम दूसरेसे कराना।

कतरा†–पु० दे० 'कतला'; एक तरहकी (बड़ी) नाव; पत्थर गढ़नेमें निकलनेवाला छोटा टुकड़ा।

क़तरा–पु० (अ०) बूँद। **–रसाज**–पु० बेसनसे बननेवाला एक पकवान, खँड़रा।

कतराई–स्त्री० कतरनेका काम या मजदूरी।

कतराना–अ० क्रि० किसीसे बचनेके लिए थोड़ा हटकर किनारेसे निकल जाना। स० क्रि० कतरवाना, कटवाना।

कतरी†–स्त्री० कोल्हूका पाट; एक गहना; कतरनी; जमी हुई मिठाई; गढ़े जानेवाले पत्थर या फल आदिका पतला-सा टुकड़ा; जहाजोंपर नावें चढ़ानेका एक यंत्र।

क़तल–पु० दे० 'क़त्ल'। **–की रात**–दे० 'क़त्ल'में। **–बाज़**–पु०

वधिक, हत्या करनेवाला।

कतला–पु० किसी खाद्य वस्तुका तिकोने या चौकोने आकारमें कटा हुआ टुकड़ा, फाँक।

कतलाम†–पु० दे० 'क़त्लेआम'।

कतली–स्त्री० पकवान आदिके चौकोर कटे टुकड़े; चीनीकी चाशनीमें पगे खरबूजे आदिके टुकड़े या बीज आदि।

कतवाना–स० क्रि० कातनेका काम कराना।

कतवार–पु० कूड़ा-करकट; * कातनेवाला। **–खाना**–पु० कूड़ा-करकट आदि फेंकनेका स्थान।

कतहुँ, कतहूँ*–अ० कहीं, किसी जगह।

क़ता–पु० (अ०) काटना; काट, तराश; काट-छाँट; ढंग, तौर; रूप, आकार। **–कलाम**–पु० बात काटना, बातके बीचमें बोल देना। **–तअल्लुक**–पु० संबंध-विच्छेद, बिलगाव। **–नज़र** –अ० इसके सिवा।

कताई–स्त्री० कातनेकी क्रिया; कातनेकी मजदूरी।

कतान–पु० अधिक ऐंठनवाले धागेका बारीक रेशमी कपड़ा जिससे साड़ियाँ, दुपट्टे आदि बनाये जाते हैं; पुराने जमानेका एक अत्यंत सुंदर कोमल वस्त्र (प्रसिद्धि है कि चंद्रमाका प्रकाश पड़नेसे भी यह फट जाता था)।

कताना–स० क्रि० 'कांतना'का प्रे०, कतवाना।

क़तार–स्त्री० (अ०) पाँत, पंक्ति; क्रम, सिलसिला; समूह।

कतारा–पु० ऊखकी एक किस्म।

कतारी–†–स्त्री० दे० 'क़तार'; एक तरहकी ईख।

कति–वि० (सं०) कितना; कितने; * कितने ही; कौन; बहुसंख्यक।

कतिक*–वि० कितनां; थोड़ा; बहुत।

कतिपय–वि० (सं०) कई; कुछ।

कतीरा–पु० एक पेड़का गोंद।

कतेक*–वि० दे० 'कितेक'।

कतेब(ब)–पु० धर्मग्रन्थ। * किताब (कबीर)।

कतौनी–स्त्री० कताई; ढिलाईसे काम करना; बहुत देर लगाना; कातनेकी क्रिया या भाव; कातनेकी उजरत।

कत्तल–पु० कतला; पत्थर गढ़नेमें निकलनेवाला छोटा टुकड़ा।

कत्ता*–पु० बँसफोरोंका बाँस काटनेका एक औजार, बाँक; छोटी और कुछ टेढ़ी तलवार; पासा।

कत्तारी, कत्तावा†–पु० मध्यम आकारका एक सदाबहार पेड़।

कत्तिन–स्त्री० सूत कातनेका काम करनेवाली स्त्री।

कत्ती–स्त्री० छोटी तलवार; कटार; सोनारोंकी कतरनी; एक तरहकी पगड़ी। पु० सूत कातनेवाला।

कत्तृण–पु० (सं०) एक सुगंधित तृण, सौगंध।

कत्थई–वि० कत्थेके रंगका, खैरा। पु० कत्थई रंग।

कत्थक–पु० गाने-बजानेका पेशा करनेवाली एक हिंदू जाति। **–नृत्य**–पु० कत्थकोंमें प्रचलित नाचका ढंग।

कत्थन–पु० (सं०) डींग मारना। वि० डींग मारनेवाला।

कत्थना–स्त्री० (सं०) डींग।

कत्था–पु० खैरकी लकड़ीका सत जो पानमें खाया जाता है।

क़त्ल–पु० (अ०) जानसे मार डालना, वध, हत्या। **–की रात**–मुहर्रमकी दसवीं रात। **–गाह**–पु० वधस्थल। **–व खूँ**–पु० मार-काट। **–व ग़ारत**–स्त्री० हत्या और लूट-पाट। **–(ले) अमद**–पु० जान-बूझकर, इरादेके साथ कत्ल करना। **–आम**–पु० अंधाधुंध वध, अपराधी-निरपराध, बच्चे-बूढ़ेका विचार किये बिना सबको कत्ल करना।

कत्सवर–पु० (सं०) कंधा।

कथंचित्–* (सं०) कदाचित्, शायद।

कथ†–पु० कत्था। **–कीकर**–पु० खैरका पेड़।

कथक–पु० (सं०) कथा कहनेका पेशा करनेवाला; पुराण बाँचनेवाला; नाटककी कथाका वर्णन करनेवाला; दे० 'कत्थक'।

कथकली, कथाकली–स्त्री० दक्षिण भारतकी नृत्यकी एक विशिष्ट शैली।

कथक्कड़–पु० कथा बाँचनेका पेशा करनेवाला; रामायणादिके तरह-तरहके अर्थ करनेवाला।

कथन–पु० (सं०) कहना; वचन, उक्ति; वर्णन; उपन्यासका एक भेद।

कथना*–स० क्रि० कहना; निंदा करना।

कथनी*–स्त्री० बात, कथन,; बकवाद।

कथनीय–वि० (सं०) कहने योग्य।

कथम्–अ० (सं०) किस रूपमें; कैसे; कहाँसे। **–(थं)कथिक** –पु० प्रश्नकर्त्ता; कैसे, क्या हुआ आदि पूछनेवाला। **–भूत** –वि० कैसा, किस प्रकारका।

कथरी–स्त्री० चीथड़े जोड़कर बनाया हुआ ओढ़ना-बिछौना, गुदड़ी।

कथांतर–पु० (सं०) दूसरी कथा; किसी कथाके अंतर्गत दूसरी गौण कथा।

कथा–स्त्री० (सं०) कहानी; कल्पित कहानी, हिकायत; वृत्तांत-वर्णन; चर्चा, जिक्र, हाल; रामायण-पुराणादिका अर्थसहित वाचन। **–नायक**–पु० कथाका प्रधान पात्र या आलंबन। **–पीठ** –पु० कथाका मुख्य भाग; कहानीकी प्रस्तावना। **–प्रबंध**–पु० कहानी, (कल्पित) आख्यायिका। **–प्रसंग**–पु० बातचीत; बातचीतका सिलसिला; कथावार्ता; सँपेरा। वि० मूर्ख; बकवादी। **–प्राण**–पु० अभिनेता; कथक्कड़। **––मुख**–पु० कथाकी प्रस्तावना। **–योग**–पु० कथा या वार्ताका सिलसिला। **–वस्तु**–स्त्री० कथाका मूल रूप। **–वार्त्ता**–स्त्री० पुराणादिकी कथाओंकी चर्चा; अनेक प्रकारके प्रसंग। **–सरित्सागर**–पु० संस्कृतका एक प्रसिद्ध कहानी-संग्रह। **–सूत्र**–पु० कहानी, नाटक आदिमें वर्णित वस्तु, विषय-वस्तु। मु०**–उठना**–कथा बंद होना। **–चुकाना**–झगड़ा मिटाना; मार डालना। **–बैठना**–कथाका आरंभ होना। **–बैठाना**–पुराणादिकी कथाका आयोजन करना।

कथानक–पु० (सं०) छोटी कथा; कहानीका खुलासा। **–रूढ़ि**–स्त्री० चित्रकलासे लिया हुआ शब्द (मोटिफ), मुख्य चित्रसे अलगका वह अलंकरण जो उसे शैलीगत विशिष्टता प्रदान करता है।

कथाभिप्राय–दे० 'कथानक रूढि'।

कथिक–पु० (सं०) कहनेवाला; कथक; कहानियाँ सुनानेवाला।

कथित–वि० (सं०) कहा हुआ, उक्त। पु० परमेश्वर; वार्तालाप; मृदंगका एक प्रबंध।

कथीर–पु० राँगा।

कथील, कथीला–पु० दे० 'कथीर'।

कथोद्घात–पु० (सं०) रूपककी प्रस्तावनाके पाँच भेदोंमेंसे दूसरा; कथाका आरंभ।

कथोपकथन–पु० (सं०) बातचीत, संवाद।

कथ्य–त्रि० (सं०) कहने योग्य, कथनीय।

कदंब–पु० (सं०) एक सुंदर पेड़ जिसमें गोल, पीले फूल लगते हैं, कदम; देवताडक तृण; समूह; सरसोंका पौधा; एक खनिज द्रव्य। **–नट**–पु० एक राग। **–पुष्पा,–पुष्पी**–स्त्री० कदंबकेसे फूलवाला एक पौधा, गोरखमुंडी।

कदंबक–पु० (सं०) दे० 'कदंब'; हरिद्रा।

कदंश–पु० (सं०) हीन, निकृष्ट भाग।

कद*–अ० कब, किस समय। स्त्री० (अ०) दे० 'कद्द'। पु० (फा०) घर। **–ख़ुदा**–पु० घरका मालिक, गृहस्वामी; पति; दूल्हा। **–ख़ुदाई**–स्त्री० ब्याह।

क़द–पु० (फा०) डील, देहकी ऊँचाई-लम्बाई। **–व क़ामत**–स्त्री० डील-डौल। **–(द्दे)आदम**–वि० आदमीकी देहके बराबर ऊँचा।

कदक–पु० (सं०) चँदोवा; तंबू; डेरा।

कदक्षर–पु० (सं०) कुत्सित वर्ण; बुरी लिखावट।

कदधव*–पु० कुमार्ग।

कदन–पु० (सं०) वध; विनाश; युद्ध; पाप; छुरी–'विरह कदन करि मारत लुंजै'–सूर। * कष्ट, पीड़ा–'अब पिय कपट न करियै हरियै कदनकों'–घन०।

कदन्न–पु० (सं०) खराब, मोटा अन्न–साँवा, कोदो आदि।

कदपत्य–पु० (सं०) कपूत, बुरी संतान।

कदम–पु० दे० 'कदंब'।

क़दम–पु० (अ०) पाँव; पग, डग; चलनेमें दोनों पगोंके बीचका

अंतर; पदचिह्न; कार्यविशेषके लिए किया गया यत्न, कोशिश; काम; घोड़ेकी एक चाल। **–चा**–पु० पैर रखनेकी जगह; पाखानेकी खुड्डी; पाखाना। **–ब-क़दम**–अ० साथ-साथ। **–बाज़**–वि० कदमकी चाल चलनेवाला (घोड़ा)। **–बोसी**–स्त्री० पाँव चूमना; गुरुजनोचित सम्मान-प्रदर्शन; साक्षात्कार। **मु० –उखड़ना**–पाँव उखड़ना, भाग जाना। **–उठाना**–आगे बढ़ना। **–चूमना**–पाँव छूना; गुरुजनोचित सम्मान करना; गुरु मान लेना। **–छूना**–पाँव पड़कर प्रणाम करना; किसीकी कसम खाना; खुशामद करना। **–निकालना**–(घोड़ेको) कदमकी चाल सिखाना; बाहर जाना। **–पर कदम रखना**–पीछे-पीछे चलना, अनुसरण करना। **–ब-कदम चलना**–साथ-साथ चलना; अनुसरण करना। **–बढ़ाना**–चाल तेज करना; आगे बढ़ना। **–मारना**–दौड़-धूप करना; यत्न-प्रयत्न करना। **–लेना**–पाँव पड़ना, पाँव छूकर प्रणाम करना; आदर-सम्मान करना। (इस शब्दके बहुतसे मुहावरे 'पाँव'में मिलेंगे।)

कदमा–स्त्री० कदंबके फूलके आकारकी एक मिठाई।

कदर–पु० (सं०) आरा; अंकुश; पाँवके तलवेका गोखरू; छेना; सफेद खैर।

क़दर–स्त्री० (अ०) माप; मात्रा, भाग्य, तकदीर; दे० 'क़द्र'। **–दान**–वि० दे० 'क़द्रदान'। **–दानी**–स्त्री० दे० 'क़द्रदानी'।

कदरई*–स्त्री० कायरपन।

कदरज*–पु० दे० 'कदर्य'; एक प्रसिद्ध पापी।

कदरमस*–स्त्री० मार-पीट, लड़ाई।

कदराई*–स्त्री० कायरपन।

कदराना*–अ० क्रि० डरना; कचियाना, पीछे हटना।

कदरों–स्त्री० मैनाके बराबर एक पक्षी।

कदर्थ–वि० (सं०) निरर्थक, निकम्मा।

कदर्थन–पु०, **कदर्थना**–स्त्री० (सं०) सताना, पीड़ा पहुँचाना; तिरस्कार; दुर्दशा।

कदर्थित–वि० (सं०) जिसकी कदर्थना की गयी हो; तिरस्कृत।

कदर्य–वि० (सं०) कृपण, कंजूस; तुच्छ; क्षुद्र। पु० राज्यकी आय उसकी भलाईके लिए खर्च न कर कोश एकत्र करनेके लिए प्रजापर कठोर अत्याचारतक करनेवाला कृपण राजा (कौ०)।

कदल, कदलक–पु० (सं०) केला।

कदला–स्त्री० (सं०) पृश्नी; डिबिका; शाल्मली।

कदलिका–स्त्री० (सं०) झंडा।

कदली–स्त्री० (सं०) केला; एक हिरन; झंडा; हाथीपर रखा जानेवाला झंडा।

कदली(लिन्)–पु० (सं०) एक तरहका हिरन।

कदा–अ० (सं०) कब, किस समय।

कदाकार–वि० (सं०) कुरूप, भद्दा, भोंड़ा। पु० बुरा रूप।

कदाच, कदाचि*–अ० कदाचित्।

कदाचन–अ० (सं०) दे० 'कदाचित्'।

कदाचार–पु० (सं०) बुरा, कुत्सित आचार। वि० बुरे आचरण-वाला, दुराचारी।

कदाचित्–अ० (सं०) कभी, शायद।

कदापि–अ० (सं०) कभी, हर्गिज।

क़दामत–स्त्री० (अ०) प्राचीनता।

कदाशय–वि० (सं०) जिसका इरादा बुरा हो (मैलाफाइड)। पु० बुरा इरादा।

कदाहार–पु० (सं०) बुरा भोजन; खराब चीजें खाना।

कदी–वि० कद्द रखनेवाला; हठी; कुनही। * अ० कभी-कभी।

क़दीम–वि० (अ०) पुराना, प्राचीन।

क़दीमी–वि० दे० 'क़दीम'।

कदुष्ण–वि० (सं०) थोड़ा गरम, कुनकुना।

कदूरत–स्त्री० दे० 'कुदूरत'।

कदे*–अ० कदा; कभी।

कद्द–स्त्री० (अ०) हठ, आग्रह; कष्ट; कठिनाई; यत्न, प्रयास; द्वेष, कुनह।

कद्दव–पु० कर्दम, कीचड़।

कद्दावर–वि० बड़े डील-डौलका, लंबा-चौड़ा।

कद्दी–वि० हठी, जिद करनेवाला।

कद्दू–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध तरकारी, लौकी। **–कश**–पु० कद्दू, कुम्हड़ा आदि रेतनेका आला। **–दाना**–पु० मलके साथ निकलनेवाले कीड़े।

क़द्र–स्त्री० (अ०) बड़ाई; इज्जत; दरजा; मरतबा। **–दान**–वि० कद्र समझनेवाला; सिरपरस्त। **–दानी**–स्त्री० सिर-परस्ती; गुणकी पहचान।

कद्रु, कद्रू–स्त्री० (सं०) कश्यपकी पत्नी जो साँपोंकी माता मानी जाती है। **–ज, –पुत्र, –सुत**–पु० साँप, नाग।

कद्वद–वि० (सं०) बुरा या गलत कहनेवाला।

कद्वर–पु० (सं०) छाछ, मट्ठा।

कधी|–अ० कभी।

कनंक*–पु० सोना–'पुन्य कालन देत विप्रन तौलि-तौलि कनंक'–रामचंद्रिका।

कन–पु० कण; प्रसाद; भीख; कन्ना; बूँद; सत; 'कान'का समासमें व्यवहृत संक्षिप्त रूप। **–कटा**–वि० जिसका कान कटा हो। (स्त्री० 'कनकटी'।) **–कटी**–स्त्री० कानकी एक बीमारी। **–कुटकी**–स्त्री० एक वृक्ष। **–कूट**–पु० दे० 'कुरकुंड'। **–कूत**–पु० जमींदार और असामीसे उपजके बँटवारेके लिए खड़ी फसलका कूत होना। **–खजूरा**–पु० गोजरकी जातिका एक कीड़ा जो कभी-कभी कानमें घुस जाता है। **–खोदनी**–स्त्री० लोहे, ताँबे आदिका बना कान खुजलाने और उसका मैल निकालनेका एक औजार। **–छेदन**–पु० कान छेदे जानेकी रस्म, कर्णवेध-संस्कार। **–टोप**-पु० वह टोपी जिससे कान ढके रहें। **–धार***–पु० कर्णधार, केवट। **–पट**–पु०, **–पटी**–स्त्री० कान और आँखके बीचका स्थान, गंडस्थल। **–पेड़ा**–पु० कानका एक रोग। **–फटा**–पु० गोरखपंथी साधु जिसके कान फटे होते हैं। **–फुँकवा**–पु० कान फूँकनेवाला, दीक्षागुरु। **–फुँका**–वि० दीक्षा देने या लेनेवाला। पु० कान फूँकनेवाला गुरु; शिष्य। **–फुसका**–पु० कानमें धीरेसे बात कहनेवाला, चुगुलखोर; बहकानेवाला। **–फुसकी**–स्त्री० दे० 'कानाफूसी'। **–फूल**–पु० दे० 'करनफूल'। **–फोड़ा**–पु० एक लता जो दवाके काम आती है। **–ब्रत***–पु० कण चुननेकी आदत। **–बतिया**–स्त्री० कानमें धीरेसे कही हुई बात। **–बिधा**–वि० कान छेदनेवाला; जिसका कान छेदा गया हो। **–मैलिया**–पु० कानका मैल निकालनेवाला। **–रस**–पु० संगीतका रस; गाने-बजाने या बात सुननेका व्यसन। **–रसिया**–वि० संगीत-प्रिय; संगीतप्रेमी ('टूटे काँटे'में)। **–सलाई**–स्त्री० छोटा कनखजूरा; कुश्तीका एक पेंच। **–सुई**–स्त्री० छिपकर सुनना, टोह लेना। **–हार***–पु० कर्णधार।

कनउँगली–स्त्री० कानी उँगली, छिगुनी।

कनउड़*–वि० दे० 'कनौड़ा'।

कनक–स्त्री० गेहूँका आटा। पु० (सं०) सोना; धतूरा; पलाश; कालीय वृक्ष; नागकेशर; चंपा। **–कदली**–स्त्री० एक तरहका केला। **–कली**–स्त्री० कानमें पहननेकी लौंग। **–कशिपु**–पु० हिरणकश्यप। **–क्षार**–पु० सुहागा। **–गिरि, –शैल**–पु० सुमेरु पर्वत। **–चंपा**–स्त्री० कनियारीका पेड़। **–जीर, –जीरा**–पु० (हिं०) उत्तम जातिका एक धान। **–दंड**–पु० राजच्छत्र। **–नंदी(दिन्)**–पु० शिवका एक गण। **–निकष**–पु० कसौटी। **–पत्र**–पु० कानका एक गहना। **–पराग**–पु० सोनेकी धूल। **–पुरी**–स्त्री० (सोनेकी) लंका नगरी। **–प्रभ**–वि० सोनेकीसी आभा, चमकवाला। **–प्रभा**–स्त्री० महाज्योतिष्मती। **प्रसवा**–स्त्री० स्वर्णकेतकी। **–भंग**–पु० सोनेका टुकड़ा, डला। **–रंभा**–स्त्री० स्वर्णकदली। **–रस**–पु० तरल सोना; हरताल। **–शक्ति**–पु० कार्त्तिकेय। **–सूत्र**–पु० सोनेका तार या जंजीर। **–स्थली**–स्त्री० सोनेकी खान।

कनकना–वि० हलकी-सी चोटसे भी टूट जानेवाला; चिड़चिड़ा, तुनुकमिजाज।

कनकनाना–अ० क्रि० चौकन्ना होना; रोमांचित होना; चुनचुनाना; नागवार लगना।

कनकनाहट–स्त्री० कनकनानेका भाव ।

कनका–पु० कनकी, कण ।

कनकाचल, कनकाद्रि–पु० (सं०) सुमेरु पर्वत ।

कनकाध्यक्ष–पु० (सं०) खजांची, कोषाध्यक्ष ।

कनकानी–पु० घोड़ेकी एक जाति ।

कनकालुका–स्त्री० (सं०) स्वर्णघट ।

कनकाह्व–पु० (सं०) धतूरा; नागकेशर ।

कनकाह्वय–पु० (सं०) धतूरा ।

कनकी–स्त्री० चावलका टूटा हुआ कण; छोटा कण ।

कनकैया–स्त्री० दे० 'कनकौवा' ।

कनकौवा–पु० बड़ा पतंग, गुड्डी । **–(वे) बाज़**–पु० पतंग उड़ाने-लड़ानेवाला । **मु०–(वे)से दुमछल्ला बड़ा**–मुख्य वस्तुसे अंगभूत, उससे उपजी वस्तुका बड़ा होना ।

कनखा¦–पु० डालमें फूटनेवाली छोटी-तिरछी टहनी; घड़े आदिका ऊपरका किनारा ।

कनखियाना–स० क्रि० कनखीसे देखना; इशारा करना ।

कनखी–स्त्री० आँखकी कोर; तिरछी निगाहसे देखना; दूसरोंकी निगाह बचाकर देखना; आँखका इशारा, सैन; छोटा कनखा । **मु० –मारना**–आँखसे इशारा करना ।

कनखैया*–स्त्री० दे० 'कनखी' ।

कनगुरिया–स्त्री० कानी उँगली, छिगुनी ।

कनतूतर¦–पु० एक अत्यंत विषैला और बड़ी जातिका मेढक ।

कनन–वि० (सं०) काना ।

कनमनाना–अ० क्रि० सोनेमें आहट पाकर या बेचैनीसे हाथ-पाँव हिलाना, सिकोड़ना; विरोध-सूचक चेष्टा करना ।

कनय*–पु० कनक, सोना; कनिक, आटा ।

कनरई–स्त्री० एक पौधा जिससे कतीरा निकलता है ।

कनरश्याम–पु० एक राग ।

कनवई¦–स्त्री० छटाँक ।

कनवाँ¦–पु० छटाँक ।

कनवाँसा–पु० नवासेका बेटा ।

कनवास–पु० (अं० 'कैनवस') सन, पटसन आदिका बना मोटा कपड़ा जिसके पर्दे, जूते आदि बनते हैं, 'किरमिच' ।

कनवोकेशन–पु० (अं०) विश्वविद्यालयका उपाधिदानोत्सव ।

कनसार–पु० ताँबे आदिके पत्रपर लेख खोदनेवाला ।

कनसाल–पु० चारपाईके पावेका वह छेद जो तिरछा हो गया हो ।

कनसीरी¦–स्त्री० एक वृक्ष, हावर ।

कनसुई–स्त्री० गोबरकी गौर फेंककर सगुन विचारना ।

कनस्तर–पु० (अं० 'कनिस्टर') टीनका चौखूंटा पीपा ।

कनहा–पु० कनकूत करनेवाला कर्मचारी ।

कना–पु० कन; सरकंडा ।

कनाई–स्त्री० पतली, शाखा, टहनी ।

कनाउड़ा*–वि० दे० 'कनौड़ा' ।

कनागत*–वि० दे० 'कन्यागत' ।

क़नात–स्त्री० (तु०) कपड़ेकी दीवार जो खेमे या किसी खुले स्थानके चारों ओर खड़ी करते हैं ।

क़नाती–वि० कनातसे बनाया हुआ । **–मस्जिद**–स्त्री० कनात खड़ी कर नमाज पढ़नेके लिए बनाया हुआ स्थान ।

कनारा–पु० मद्रास प्रांतका एक भाग ।

कनारी–स्त्री० कनारा प्रदेशकी भाषा, 'कन्नड़' । पु० कनाराका निवासी ।

कनावड़ा–वि० दे० 'कनौड़ा' ।

कनासी–स्त्री० रेती ।

कनिआरी–स्त्री० कनकचंपा ।

कनिक–स्त्री० गेहूँका आटा ।

कनिका*–स्त्री० दे० 'कणिका' ।

कनिगर*–वि० आनवाला ।

कनियाँ*–स्त्री० गोद; बच्चेको गोदमें लेनेका एक ढंग ।

कनियाना–अ० क्रि० कतराना, आँख बचाकर निकल जाना; गुड्डीका एक ओर झुकना ।

कनियार–पु० कनकचंपा ।

कनिष्क–पु० कुषाण वंशीय एक प्रसिद्ध सम्राट् ।

कनिष्ठ–वि० (सं०) उम्रमें सबसे छोटा; पदमें छोटा; अत्यल्प; तुच्छ । पु० शिव ।

कनिष्ठक–वि०, स्त्री० (सं०) सबसे छोटी; छोटी । स्त्री० कानी उँगली; सबसे पीछे ब्याही हुई पत्नी; वह नायिका जो पतिको कम प्यारी हो; छोटे भाईकी स्त्री ।

कनिष्ठिका–स्त्री० (सं०) छिगुनी ।

कनिहार–पु० कर्णधार, मल्लाह–'ज्यों कनिहार न भेद करै कछु आइ चढ़ै तेहि नाव चढ़ावै'–सुंदरदास ।

कनी–स्त्री० (सं०) बालिका, कन्या; (हिं०) छोटा टुकड़ा, कणिका; हीरेकी कणिका; चावलका छोटा टुकड़ा; चावल या भातका वह (छोटा) भाग जो कच्चा रह गया हो; बूंद–'झलकी भरि भाल कनी जलकी...'–कवितावली–तु० । **मु० (अनीपर)–खाना,–चाटना**–हीरेकी कनी खाकर जान देना ।

कनीचि–स्त्री० (सं०) शकट; गुंजा ।

कनीज़–स्त्री० (फा०) लौंडी, बाँदी ।

कनीन–वि० (सं०) तरुण; कम उम्रका ।

कनीनक–पु० (सं०) लड़का; किशोर; आँखका तारा ।

कनीनका–स्त्री० (सं०) क्वाँरी लड़की; आँखकी पुतली ।

कनीनिका, कनीनी–स्त्री० (सं०) छिगुनी; आँखकी पुतली ।

कनीयस–वि० (सं०) अधिक छोटा; अल्पतर । पु० ताँबा ।

कनीर*–पु० कनेर वृक्ष या उसका फूल ।

कनु*–पु० दे० 'कण' ।

कनूका*–पु० दाना; कण ।

कनै¦–अ० पास; ओर ।

कनेखी*–स्त्री० दे० 'कनखी' ।

कनेठा¦–वि० काना; ऐंचा-ताना ।

कनेठी–स्त्री० कान ऐंठना, गोशमाली ।

कनेर, कनैर–पु० एक पौधा जिसमें सफेद, पीले या लाल रंगके फूल लगते हैं, करवीर ।

कनेरा–स्त्री० (सं०) दे० 'कणेरा' ।

कनेरिया–वि० कनेरके फूलके रंगका ।

कनेरी–स्त्री० (अं०'कैनेरी') एक पीले रंगकी छोटी चिड़िया ।

कनोई*–स्त्री० कानका मैल, खूँट ।

कनोखा–वि० कटाक्षयुक्त, कुछ तिरछा (नेत्र) ।

कनौजिया–वि०, पु० कन्नौजका रहनेवाला; कान्यकुब्ज ।

कनौठा–पु० कोना; किनारा; भाई-बंधु ।

कनौड़*–पु० संकोच ।

कनौड़ना*–अ० क्रि० दबना–'काहूकी कानि कनौड़त कै को'–घन० ।

कनौड़ा–वि० काना; अपंग, बदनाम; क्षुद्र; हीन; लज्जित; एहसानमंद । पु० क्रीत दास ।

कनौती–स्त्री० पशुका कान या उसकी नोक; कान खड़े करनेका ढंग; बाली । **मु० कनौतियाँ बदलना**–घोड़ेका कान खड़ा करना; चौकन्ना होना ।

कन्ना–पु० (सं०) पाप; मूर्च्छा ।

कन्नड़श्याम–पु० दे० 'कनरश्याम' ।

कन्ना–पु० किनारा, कोर; पतंगमें ऊपर-नीचे बँधा हुआ वह धागा जिसमें लंबी डोर बाँधकर उसे उड़ाते हैं; चावलकी धूल जो छाँटनेमें निकलती है; पौधोंका एक रोग । वि० कन्ना लगा हुआ (फल या लकड़ी) । **मु० –ढीला होना**–हौसला पस्त होना; ऐंठ ढीली पड़ जाना । **–साधना**–कन्नेकी गाँठ ठीक जगहपर बाँधनेके लिए उसकी लंबाई नापना । **–(न्ने)से कटना**–पतंगका कन्नेपरसे कट जाना ।

कन्नी–स्त्री० किनारा; कोर; हाशिया; पतंगका किनारा; वजन बराबर करनेके लिए पतंगकी काँप या कमानीमें बाँधी जानेवाली धज्जी; वह औजार जिससे राजगीर गारा लगाता, पलस्तर करता है; पेड़का नया कल्ला; तंबाकूके वे कल्ले जो पत्ते काट लेनेपर फिरसे निकलते हैं । **मु० –काटना**–कतराना, किनारेसे निकल जाना । **–खाना**–पतंगका उड़नेमें एक ओर झुकना ।

–दबाना–काबूमें, अधीनतामें लाना।

कन्नौज–पु० फर्रुखाबाद जिलेका एक कसबा जो पुराने समयमें बहुत बड़ा नगर था।

कन्यका–स्त्री० (सं०) कन्या; अविवाहित लड़की।

कन्यस–पु० (सं०) सबसे छोटा भाई।

कन्यसा–स्त्री० (सं०) कानी उँगली।

कन्यसी–स्त्री० (सं०) सबसे छोटी बहिन।

कन्या–स्त्री० (सं०) लड़की; क्वारी लड़की; दशवर्षीया अविवाहिता बालिका; बारह राशियोंमेंसे छठी; दुर्गा; बड़ी इलायची; घृतकुमारी; एक वर्णवृत्त। **–कुब्ज**–पु० कान्यकुब्ज देश। **–कुमारी**–स्त्री० एक अंतरीप जो दक्षिणमें भारतकी स्थलसीमा है; दुर्गा। **–गत**–वि० कन्या राशिमें स्थित (सूर्य)। **–दान**–पु० विवाहमें वरको कन्याका दान। **–धन**–पु० दहेज, दायज। **–पाल**–पु० कुमारी कन्याओंको बेचनेवाला; बंगालकी एक जाति। **–पुर**–पु० अन्तःपुर। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० जामाता, कन्याका पति; कार्त्तिकेय। **–राशि**–वि० जिसका जन्म कन्याराशिमें हुआ हो। **–रासी**–वि० (हिं०) कन्याराशिमें उत्पन्न; स्त्रीस्वभाववाला; दब्बू; दुर्बल। **–वेदी(दिन्)**–पु० जमाता। **–शुल्क**–पु० कन्याका मूल्य जो वरकी ओरसे कन्याके पिताको दिया जाय। **–हरण**–पु० कन्याको (विवाहार्थ) पकड़, उड़ा ले जाना।

कन्याट–वि० (सं०) लड़कियोंका पीछा करनेवाला। पु० अंतःपुर; लड़कियोंका पीछा करनेवाला व्यक्ति।

कन्यिका–स्त्री० (सं०) कन्या, अविवाहिता कन्या।

कन्युष–पु० (सं०) हाथका कलाईके नीचेका भाग।

कन्हड़ी–स्त्री० कर्णाटी; कर्णाट देशकी स्त्री; कर्णाटकी भाषा।

कन्हाई–पु० दे० 'कन्हैया'।

कन्हावर*–पु० दुपट्टा; बैलकी गरदनपर रहनेवाला जुएका हिस्सा।

कन्हैया–पु० कृष्ण; सुंदर बालक; प्रियजन; एक पहाड़ी पेड़।

कप–पु० (सं०) वरुण; दैत्योंकी एक जाति; (अं०) प्याला।

कपट–पु० (सं०) बनावटी व्यवहार; छल, धोखा; मनके भावको छिपाना, दुराव। **–तापस**–पु० बना हुआ साधु; साधुका भेस बनाकर ठगनेवाला व्यक्ति। **–नाटक**–पु० कपट-व्यवहार; ठगने, धोखा देनेका काम। **–प्रबंध**–पु० धोखा देनेकी योजना। **–लेख्य**–पु० जाली या दुअर्थी दस्तावेज। **–वेश**–पु० बनावटी भेस। वि० बनावटी भेसवाला।

कपटना–स० क्रि० वस्तुको ऊपरसे थोड़ा तोड़-नोच लेना; खोंटना; रुपये-पैसे, रकममेंसे कुछ काट-निकाल लेना।

कपटा–पु० धानके पौधोंमें लगनेवाला एक कीड़ा।

कपटाघाती–पु० दे० 'कमीनदार' (स्नाइपर)।

कपटाघाती–पु० (स्नाइपर) छिपकर या धोखेमें शत्रुके शिविरपर गोलियोंकी बौछार करनेवाला या इस तरह किसीको मार डालने, आहत करनेवाला; कमीनदार।

कपटिक–वि० (सं०) कपटी।

कपटिनी–स्त्री० (सं०) चिड़ा नामक गंधद्रव्य।

कपटी–स्त्री० धानकी फसलका एक कीड़ा; (सं०) एक अंजुलीकी मात्रा।

कपटी(टिन्)–वि० (सं०) छल-कपट करनेवाला, फरेबी।

कपड़–पु० 'कपड़ा'का छोटा और समासमें व्यवहृत रूप। **–कोट**–पु० खेमा, तंबू। **–खसोट**–पु० दूसरोंके कपड़े तक छीन लेनेवाला, लोभी। **–गंध**–स्त्री० कपड़ा जलनेकी दुर्गंध। **–छन,–छान**–पु० पिसी हुई (सूखी) वस्तुको कपड़ेसे छाननेकी क्रिया (करना)। वि० कपड़ेसे छाना हुआ; बहुत महीन। **–द्वार**–पु० कपड़ोंका भंडार। **–धूलि**–स्त्री० करेब। **–मिट्टी**–स्त्री० रस-भस्मादि बनानेमें संपुटपर गीली मिट्टी और कपड़ा लपेटनेकी क्रिया (करना)।

कपड़ा–पु० कपास, ऊन आदिके धागोंसे बुनी हुई ओढ़ने-पहननेके काममें आनेवाली वस्तु; पहनावा। **–लत्ता**–पु० पहननेका सामान। मु० **–उतार लेना**–सब कुछ छीन लेना; बदनपर कपड़ा न रहने देना। **–रँगना**–गेरुआ बाना लेना, विरक्त होना। **–(ड़ों)में न समाना**–फूले अंग न समाना। **–से होना**–रजस्वला होना।

कपड़िया, कपरिया–पु० एक जाति।

कपड़ौटी, कपरौटी–स्त्री० दे० 'कपड़मिट्टी'।

कपरा*–पु० कपड़ा, वस्त्र, 'रँगाये जोगी कपरा'; कपाल।

कपर्द, कपर्दक–पु० (सं०) कौड़ी; (शिवका) जटा-जूट।

कपर्दिका–स्त्री० (सं०) कौड़ी।

कपर्दिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

कपर्दी(र्दिन्)–वि० (सं०) जटा-जूटधारी। पु० शिव।

कपसा–स्त्री० एक तरहकी मिट्टी, काबिस; गारा।

कपसेठा–पु०, **कपसेठी**–स्त्री० कपासके डंठल।

कपाट–पु० (सं०) किवाड़, दरवाजा। **–बद्ध**–पु० एक चित्रकाव्य। **–मंगल**–पु० दरवाजा बंद करना (वल्लभकुल)। **–वक्षा(क्षस्)**–वि० किवाड़ जैसी चौड़ी छातीवाला। **–संधि**–स्त्री० दरवाजेके दोनों पल्लोंका जोड़। **–संधिक**–पु० कानका एक रोग।

कपार*–पु० दे० 'कपाल'।

कपाल–पु० (सं०) खोपड़ी, मस्तक; भाग्यलेख; घड़ेका टुकड़ा; मिट्टीका भिक्षापात्र, खप्पर; वह पात्र जिसमें पुरोडाश पकाया जाता है; अंडेका छिलका; भड़भूजेकी खपड़ी; एक प्रकारका कोढ़; समूह; ढक्कन; बराबरीकी शर्तोंपर की जानेवाली सुलह; पैर या और किसी अंगकी चौड़ी हड्डी। **–केतु**–पु० एक केतु। **–क्रिया**–स्त्री० शवदाहमें मुर्देकी खोपड़ीको बाँससे फोड़नेकी क्रिया; किसी चीजको पूरी तरह नष्ट कर देना। **–चूर्ण**–पु० नृत्यकी एक क्रिया। **–नालिका**–स्त्री० तकला। **–भाती**–स्त्री० एक विशेष प्रकारकी श्वासक्रिया। **–मालिनी**–स्त्री० दुर्गा। **–माली(लिन्)**–पु० शिव। **–मोचन**–पु० काशीका एक तालाब। **–संधि**–स्त्री० बराबरीकी शर्तोंपर की हुई संधि। **–संश्रय**–पु० दो राष्ट्रोंके मध्यमें स्थित और दोनोंका मित्र बना रहनेवाला राष्ट्र।

कपालक–वि० (सं०) प्यालेकी शकलका। पु० प्याला।

कपालास्त्र–पु० (सं०) एक अस्त्र; ढाल।

कपालि–पु० (सं०) शिव।

कपालिका–स्त्री० (सं०) खोपड़ी; घड़ेका टुकड़ा; दाँतकी पपड़ी; दुर्गा।

कपालिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

कपाली(लिन्)–पु० (सं०) शिव; कपाल लेकर भीख माँगनेवाला, एक वर्णसंकर जाति, कपरिया।

कपास–स्त्री० एक पौधा जिसके डोंड़ेसे रुई निकलती है।

कपासी–वि० कपासके फूलके रंगका। पु० एक रंग जो कपासके फूलसे मिलता और हलका पीला होता है। स्त्री० एक छोटा पेड़।

कपिंजल–पु० (सं०) पपीहा; गौरा; भरदूल; तीतर; एक मुनि। वि० पीले रंगका।

कपि–पु० (सं०) बंदर; हाथी; करंजका एक भेद; सूर्य; शिलारस; एक धूप; एक ऋषि। **–कंदुक**–पु० खोपड़ी। **–कच्छु**–स्त्री० केवाँच। **–केतन**–पु० अर्जुन (महाभारतमें उनकी पताकापर हनूमानजी बैठे रहते थे)। **–केश**–वि० भूरे बालोंवाला। **–चूड**–पु०, **–चूडा**–स्त्री०, **–चूत**–पु० अमड़ा। **–जंघिका**–स्त्री० तैलपिपीलिका। **––ज,–तैल**–पु० शिलारस। **–ध्वज**–पु० अर्जुन। **–नाशन**–पु० एक मादक पेय। **–प्रभा**–स्त्री० केवाँच। **–प्रभु**–पु० राम; सुग्रीव। **–प्रिय**–पु० अमड़ा; कैथ। **–रथ**–पु० राम; अर्जुन। **–लता**–स्त्री० केवाँच। **–लोमफला**–स्त्री० केवाँच। **–लोह**–पु० पीतल; गौरा; तीतर। **–शाक**–पु० करमकल्ला।

कपित्थ–पु० (सं०) कैथ।

कपित्थपत्रक–पु०, **कपित्थपर्णी**–स्त्री० (सं०) एक क्षुप, स्वरसा।

कपित्थानी–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

कपिल–वि० (सं०) भूरा, बादामी। पु० एक मुनि जो राजा सगरके साठ हजार पुत्रोंको शाप देकर भस्म कर देनेवाले, सांख्यदर्शनके प्रवर्तक और विष्णुके चौबीस अवतारोंमें माने जाते हैं; अग्निका एक रूप; सूर्य; शिलाजतु; कुत्ता; एक देश; भूरा रंग। **–द्युति**

–पु० सूर्य । **–द्रुम**–पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है । **–धारा**–स्त्री० काशीके पासका एक तीर्थस्थान । **–वस्तु**–पु० मगधका एक प्राचीन स्थान जहाँ बुद्धका जन्म हुआ था ।**–स्मृति**–स्त्री० सांख्य-सूत्र ।

कपिलांजन–पु० (सं०) शिव ।

कपिला–वि०, स्त्री० (सं०) भूरे या बादामी रंगवाली । स्त्री० भूरे या सफेद रंगकी गाय; सीधी गाय; अग्निकोणके दिग्गज पुंडरीककी पत्नी; दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या; जोंक; रेणुका नामक गंधद्रव्य; एक चींटा, माटा ।

कपिलाक्षी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मृगी; एक प्रकारका शिंशपा वृक्ष ।

कपिलाचार्य–पु० (सं०) विष्णु ।

कपिलाश्व–पु० (सं०) इंद्र ।

कपिश–वि० (सं०) भूरा, बादामी, जिसमें काला-पीला रंग मिला हो । पु० भूरा या बादामी रंग; धूप ।

कपिशा–स्त्री० (सं०) माधवी लता; एक नदी; एक तरहकी शराब।

कपिशी, कपिशीका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका मद्य ।

कपिस*–पु० रेशमी वस्त्र ।

कपींद्र–पु० (सं०) सुग्रीव; हनूमान् ।

कपी–स्त्री० घिन्नी; (सं०) मर्कटी ।

कपीज्य–पु० (सं०) सुग्रीव; राम; क्षीरिका वृक्ष ।

कपीतन–पु० (सं०) अश्वत्थ, अमड़ा, शिरीष, विल्व आदि वृक्ष ।

कपीश–पु० (सं०) हनूमान्; सुग्रीव ।

कपीष्ट–पु० (सं०) कपित्थ ।

कपूत–पु० नालायक बेटा, कुलका नाम डुबोनेवाला लड़का, कुपुत्र ।

कपूती–स्त्री० नालायकी; कपूतका काम ।

कपूर–पु० स्फटिकके रंग-रूपका एक गंध-द्रव्य जो रखनेसे कुछ दिनोंमें उड़ जाता है; खत्रियोंका एक अल्ल । **–कचरी**–स्त्री० एक बेल जो दवाके काम आती है । **–काट**–पुं० एक चावल जो बारीक और खुशबूदार होता है । **मु०–खाना**–विष खाना ।

कपूरी–वि० कपूरके रंगका । पु० हलका पीला रंग; एक तरहका पान । स्त्री० एक जड़ी जिसकी जड़से कपूरकी गंध निकलती है ।

कपोत–पु० (सं०) कबूतर; पंडुक; चिड़िया; कबूतरका भूरा रंग । **–चरणा**–स्त्री० एक गंधद्रव्य । **–पालिका,–पाली**–स्त्री० कबूतरोंका दरबा; कबूतरोंकी छतरी; प्राचीन कालका एक गहना । **–वंका**–स्त्री० ब्राह्मी लता । **–वर्णी**–स्त्री० छोटी इलायची । **–वाणा**–स्त्री० एक गंधद्रव्य । **–वृत्ति**–स्त्री० संचय न करनेकी वृत्ति । **–व्रत**–पु० दूसरोंका अत्याचार सहन करना । **–सार**–पु० सुरमा धातु ।

कपोतक–पु० (सं०) छोटा कबूतर; हाथ जोड़नेका एक ढंग; सुरमा धातु ।

कपोतनी*–स्त्री० कपोती, कबूतरी–'करमें विकल कपोतनी, तरुपै विकल कपोत'–'माधुरी' पत्रिका ।

कपोतांघ्रि–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

कपोतांजन–पु० (सं०) सुरमा धातु ।

कपोतारि–पु० (सं०) बाज ।

कपोती–स्त्री० (सं०) कबूतरी; पंडुकी । वि० कबूतरकी शकलका; कपोतके रंगका, फाख्तई ।

कपोती(तिन्)–वि० कबूतर रखनेवाला ।

कपोल–पु० (सं०) गाल । **–कल्पना**–स्त्री० मनसे गढ़ लेना; मनसे गढ़ी हुई बात । **–कल्पित**–वि० मनगढ़ंत । **–राग**–पु० गालपरकी लाली ।

कप्तान–पु० (अं० 'कैप्टेन') जल-स्थल सेनाका एक अफसर; दल-नायक; पुलिस सुपरिंटेंडेंट ।

कप्पड़, कप्पर*–पु० कपड़ा ।

कप्फा–पु० अफीमका पसेव ।

कप्याख्य–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, धूप ।

कप्यास–पु० (सं०) बंदरका चूतड़ । वि० लाल ।

कफ–पु० (सं०) शरीरकी तीन धातुओं (वात, पित्त, कफ)मेंसे एक; वह गाढ़ी, लसीली चीज जो अक्सर खाँसनेसे बाहर आती है, बलगम; झाग, फेन । **–कर,–कारक**–वि० कफ पैदा करनेवाला । **–कूर्चिका**–स्त्री० लार, थूक । **–क्षय**–पु० यक्ष्मा । **–गंड**–पु० गलेका एक रोग । **–गुल्म**–पु० पेटका एक रोग । **–घ्न,–नाशन,–हर**–वि० कफनाशक । **–ज्वर**–पु० कफके संचय और प्रकोपसे होनेवाला बुखार । **–विरोधी(धिन्)**–पु० मिर्च ।

कफ़–पु० (अं०) कमीज, कुरते आदिकी आस्तीनका वह दुहरा भाग जिसमें बटन लगता है; खाँसी; लोहेका अर्द्ध-चंद्राकार टुकड़ा जो चकमकसे आग झाड़नेके काम आता है । **–दार**–वि० (हिं०) जिसकी आस्तीन कफदार हो ।

कफ़–स्त्री० (अ०) हथेली । **–दस्त**–पु० हथेली । **–पा**–पु० तलवा । **मु०–(फे) अफसोस मलना**–हाथ मलना, पछताना ।

क़फ़–पु० (फा०) झाग, फेन; लुआब; बलगम । **–गीर**–पु० एक तरहकी कलछी जिससे घी, चाशनी आदिका झाग, मैल आदि निकालते हैं । **–चा**–पु० छोटा कफगीर ।

कफणि–स्त्री० (सं०) कुहनी ।

कफ़न–पु० (अ०) मुर्देपर लपेटा जानेवाला कपड़ा, शवाच्छादन, शववस्त्र, मृतचेल । **–काठी**–स्त्री० शवदाह; अंत्येष्टिका प्रबंध, सामग्री । **–खसोट**–वि० शवपर लपेटा हुआ कपड़ा तक उतार लेनेवाला, कंजूस; दूसरेका माल जबरदस्ती हड़प जानेवाला । **–खसोटी**–स्त्री० श्मशानका कर जिसे डोम कफन फाड़कर वसूल करता था; कंजूसी; नोच-खसोंटकर धन बटोरना । **–चोर**–पु० वह जो कब्र खोदकर मुर्देका कफन चुराये; भारी चोर; दुष्ट व्यक्ति । **–दफ़न**–पु० अंत्येष्टिका प्रबंध । **मु०–को कौड़ी न रखना**–कुछ भी बचा न रखना, जो कुछ कमाना सब खर्च कर डालना । **–को कौड़ी न होना**–अकिंचन, बहुत गरीब होना । **–फाड़कर उठना**–मुर्देका जी उठना ।**– फाड़कर चिल्लाना, बोलना**–बहुत जोरसे बोलना । **–मैला न होना**–मृत्यु हुए अधिक दिन न होना, मरे हुए थोड़े ही दिन होना (मुसल०) । **–सर या सिरमें बाँधना**–रणभूमिमें जाते हुए सैनिकका कफनके काम आनेके लिए सिरमें सफेद कपड़ा बाँधना, मरनेको तैयार होना; जानपर खेलना ।

कफ़नाना–स० क्रि० मुर्देको कफनमें लपेटना । अ० क्रि० कफनमें ढक जाना ।

कफ़नी–स्त्री० (अ०) बिना आस्तीनका कुरता जो (मुसलमान) मुर्देको पहनाया जाता है; साधु-फकीरोंका बिना बाँहका पहननेका ढीला-ढाला कुरता ।

कफल–वि० (सं०) श्लेष्मायुक्त; कफी ।

कफली–पु० एक प्रकारका गेहूँ, खपली ।

कफ़श–पु० (फा०) जूता । **–बरदार**–पु० जूते ढोनेवाला तुच्छ सेवक; तुच्छ जन ।

क़फ़स–पु० (अ०) पिंजड़ा; कैदखाना; तंग या बंद जगह ।

कफ़ाबंद–स्त्री० (अ०) कुश्तीका एक पेंच ।

कफारि–पु० (सं०) सोंठ ।

कफालत–स्त्री० (अ०) जिम्मेदारी; जमानत । **–नामा**–पु० जमानतनामा ।

कफाशय–पु० (सं०) कफ रहनेका स्थान (कंठ, आमाशय आदि) ।

कफी(फिन्)–वि० (सं०) कफ-प्रधान; कफकी अधिकतासे पीड़ित । पु० हाथी ।

कफ़ीना–पु० जहाज़के फर्शपर लगे हुए तख्ते ।

कफ़ील–पु० (अ०) जमानत करने, देनेवाला; जिम्मेवार ।

कफेलु–वि० (सं०) कफी, श्लैष्मिक ।

कफोणि–स्त्री० (सं०) कुहनी ।

कफोदर–पु० (सं०) एक उदररोग ।

कबंध–पु० (सं०) सिरकटा या बिना सिरका धड़; पेट; बादल; जल; पुच्छल तारा; राहु; एक राक्षस जो दंडक वनमें रामके हाथों मारा गया ।

कबंधी(धिन्)–वि० (सं०) जलवाला (मरुत्) । पु० कात्यायन ।

कब–अ० किस समय, कदा; कभी नहीं (वह मेरी बात कब सुनता है) । **–का**–कितनी देरसे; बहुत देरसे; बहुत पहले ।

कबक–पु० (फा०) चकोर ।

कबड्डी–स्त्री॰ लड़कोंका एक खेल जिसमें एक पक्षका खिलाड़ी दूसरे क्षेत्रमें एक ही साँसमें जाकर विपक्षके किसी खिलाड़ीको छूकर लौट आनेकी चेष्टा करता है; कंपा।

कवर–वि॰ (सं॰) चितकवरा। पु॰ व्याख्याता; वँधी हुई चोटी; लवण; अम्ल।

क़बर–स्त्री॰ दे॰ 'क़ब्र'।

क़बरस्तान, क़बरिस्तान–पु॰ दे॰ 'क़ब्रिस्तान'।

कवरा–वि॰ जिसमें दूसरे रंगके दाग-धब्बे हों; चितकवरा। पु॰ एक प्रकारकी झाड़ी, कौर।

कबरी–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'कवरी'।

क़बल–अ॰ दे॰ 'क़ब्ल'।

क़बा–पु॰ (अ॰) एक लंवा, ढीला पहनावा जो अंगरखे आदिके ऊपर पहना जाता है, चोगा।

कबाड़–पु॰ टूटा-फूटा सामान; रद्दी चीजें।

कबाड़ा–पु॰ झंझट, वखेड़ा।

कबाड़िया, कबाड़ी–पु॰ टूटी-फूटी चीजें खरीदने, वेचनेवाला।

कबाब–पु॰ (फा॰) कुटे या बारीक कटे हुए मांसकी गोली या टिकिया जो सीखचेमें गोदकर आगपर सुर्ख की गयी हो। वि॰ भुना हुआ; जला-भुना। **मु॰–करना**–भूनना; जलाना; वहुत कष्ट पहुँचाना। **–होना**–जलना-भुनना; अति क्रुद्ध होना।

कबाबचीनी–स्त्री॰ एक दवा जिसके दाने मिर्चकेसे होते हैं।

कबाबी–पु॰ कवाव वेंचनेवाला।

क़बाय*–पु॰ दे॰ 'क़बा'।

कबायली–पु॰ किसी कवीले या पश्चिमी पाकिस्तानकी उत्तर-पश्चिमी सीमापर रहनेवाली जन-जातिका व्यक्ति।

कबार–पु॰ व्यवसाय, व्यापार; छोटा व्यवसाय; लेन-देन; यशका कीर्तन; रद्दी या छोटी मोटी चीजें।

कबारना†–स॰ क्रि॰ उखाड़ना।

क़बाला–पु॰ (अ॰) संपत्ति दूसरेको देनेका दस्तावेज; वैनामा; दानपत्र; अधिकारपत्र। **–ए-नीलाम**–पु॰ नीलाम लेनेवालेको नीलाम करनेवाले अधिकारीसे मिलनेवाला प्रमाणपत्र। **–नवीस**–पु॰ कवाला लिखनेका पेशा करनेवाला। **–(ले)दार**–वि॰ जिसके पास (किसी चीजका) कवाला हो। **मु॰–लिखाना, –लेना**–क़ब्जा कर लेना, मालिक वन जाना।

कबाहट–स्त्री॰ दे॰ 'क़बाहत'।

क़बाहत–स्त्री॰ (अ॰) दोष, खोट, खराबी; कठिनाई; झंझट, परेशानी।

कबि–पु॰ भाट; दे॰ 'कवि'।

कबित्थ–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कपित्थ'।

कबिली–स्त्री॰ एक तरहका मटर।

कबीर–वि॰ (अ॰) वड़ा; बुजुर्ग; सम्मानित। पु॰ एक प्रसिद्ध संत, संप्रदाय-प्रवर्तक और हिंदी कवि (समय अनुमानतः १४५६-१५७५ ई॰); होलीमें गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत। **–पंथ**–पु॰ कवीरका चलाया हुआ पंथ या संप्रदाय। **–पंथी**–वि॰, पु॰ कवीरके पंथ या संप्रदायका अनुयायी। **–वड़**–भड़ौचके पासका वटवृक्ष जो दुनियाका सवसे वड़ा वरगद माना जाता है।

क़बील–पु॰ (अ॰) मनुष्य; समुदाय।

कबीला–पु॰ दे॰ 'कमीला'।

क़बीला–पु॰ (अ॰) कुल, वंश; जाति; असभ्य, जंगली आदमियोंका व्यक्तिविशेषको नेता या सरदार माननेवाला समूह। स्त्री॰ पत्नी, जोरू।

कबुलवाना–स॰ क्रि॰ स्वीकार कराना।

कबुलाना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'कबुलवाना'।

कबुलि–स्त्री॰ (सं॰) जानवरका पिछला भाग।

कबूतर–पु॰ एक प्रसिद्ध पक्षी जिसके पालतू और जंगली दो भेद होते हैं। **–ख़ाना**–पु॰ कबूतर रखनेका दरबा या काबुक। **–झाड़**–पु॰ एक झाड़ी। **–बाज़**–पु॰ कबूतर पालने, उड़ाने, लड़ानेवाला। **मु॰–की तरह लोटना**–तड़पना, बहुत बेचैन होना।

कबूतरी–स्त्री॰ कवूतरकी मादा, कपोती; नर्तकी; सुंदर स्त्री।

कबूद–वि॰ (फा॰) नीला, आसमानी। पु॰ नीला रंग; नीलकंठी; वंसलोचन।

कबूदी–वि॰ नीला, आसमानी।

क़बूल–पु॰ (अ॰) मानना, स्वीकार करना, इकबाल करना। **–(ले) रुख**–वि॰ सुंदर, सुरूप।

कबूलना–स॰ क्रि॰ स्वीकार करना, मान लेना।

कबूलियत–स्त्री॰ (अ॰) स्वीकृति; वह दस्तावेज जो पट्टा लेनेवाला देनेवालेको लिखकर उसकी शर्तोंकी स्वीकृतिके रूपमें देता है।

कबूली–स्त्री॰ चनेकी दालकी खिचड़ी या पुलाव; स्वीकृति।

क़ब्ज़–पु॰ (अ॰) पकड़; अधिकार; अवरोध; कोष्ठवद्धता, मलका आँतोंमें रुकना, पेट साफ न होना। **–कुशा**–वि॰ कब्ज दूर करनेवाला, रेचक। **–मु॰–करना**–पकड़कर खींचना, ले जाना (रूह कब्ज करना); मलावरोध करना।

क़ब्ज़ा–पु॰ (अ॰) दखल; अधिकार; पकड़; काबू, वस; दस्ता, मूठ; वाजू; लोहे या पीतलका पुरजा जिससे किवाड़े आदि चौखटसे जोड़नेपर घूम सकते हैं; कुश्तीका एक पेंच। **–दार**–वि॰ कब्जा रखनेवाला; अधिकारी; जिसमें कब्जा लगा हो। **मु॰–(ब्ज़े) पर हाथ रखना**–तलवार खींचने, किसीपर वार करनेको उद्यत होना।

क़ब्ज़ियत–स्त्री॰ 'क़ब्ज'।

क़ब्जुलवसूल–पु॰ (फा॰) वह रजिस्टर जिसपर वेतन पानेवालोंके हस्ताक्षर कराये जाते हैं।

क़ब्र–स्त्री॰ (अ॰) वह गड्ढा जिसमें मुर्दा गाड़ा जाय; उसके ऊपर रखा हुआ पत्थर या बनाया हुआ चबूतरा। **–गाह**–स्त्री॰ कब्रिस्तान। **मु॰–का अज़ाब**–(मुसलमानोंके विश्वासानुसार) पातकीको कब्रमें मिलनेवाला क्लेश। **–का मुँह झाँक आना**–मौतके मुँहसे निकल आना, मरते-मरते वचना। **(अपनी) –खोदना**–अपने सर्वनाशका उपाय करना। **–में पाँव, पैर लटकाये होना**–मृत्युका दिन करीब होना; अति वृद्ध होना। **–में साथ ले जाना**–मरते दमतक याद रखना, कभी न भूलना। **–से उठकर आना**–मरते-मरते वचना, नवजीवन पाना।

क़ब्रिस्तान–पु॰ (अ॰) वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जायँ, जहाँ वहुतसी कब्रें हों।

क़ब्ल–अ॰ (अ॰) पहले, पेश्तर, आगे। **–अज़ वक़्त**–अ॰ समयसे पहले।

कभी–अ॰ (कब+ही) किसी समय। **–कबात, कभार**–अ॰ कभी-कभी, एकाध-वार, यदा-कदा। **–कभी**–जब-तब, यदा-कदा। **–का**–कवका, अरसेसे। **–न कभी**–एक-न-एक दिन, किसी-न-किसी समय।

कभू*–अ॰ दे॰ 'कभी'।

कमंगर–पु॰ कमान वनानेवाला; चित्रकार; उखड़ी हुई हड्डी वैठानेवाला।

कमंगरी–स्त्री॰ कमंगरका काम या पेशा।

कमंचा–पु॰ वढ़इयोंका कमानकी शक्लवाला एक औजार।

कमंडल–पु॰ दे॰ 'कमंडलु'।

कमंडली–वि॰ कमंडलधारी; साधु; ढोंगी। पु॰ ब्रह्मा।

कमंडलु–पु॰ (सं॰) साधु-सन्न्यासियोंका दरियाई नारियल, तूंबी आदिका बना जलपात्र। **–तरु**–पु॰ पाकरका पेड़। **–धर**–पु॰ शिव।

कमंद*– पु॰ दे॰ 'कबंध'। स्त्री॰ (फा॰) फंदा; फंदेदार रस्सी जिसके सहारे चोर ऊँचे मकानोंपर चढ़ जाते हैं; रस्सीकी सीढ़ी।

कमंध–पु॰ दे॰ 'कवंध'; झगड़ा-लड़ाई।

कम–वि॰ (फा॰) थोड़ा, अल्प; छोटा; बुरा, खराव। अ॰ क्वचित्, बहुत कम। **–अक़्ल**–वि॰ मूर्ख, निर्वुद्धि। **–असल**–वि॰ दोगला; कमीना, नीच। **–उम्र**–वि॰ छोटी उम्रवाला, अल्पवयस्क। **–क़ीमत**–वि॰ सस्ता, अल्पमूल्य। **–ख़र्च**–वि॰ किफायतसे चलनेवाला। (**–*वाला नशीं**–सस्ती पर बढ़िया, यथेष्ट उपयोगी।) **–ख़ुराक**–वि॰ कम खानेवाला। **–ख़्वाब**–पु॰ एक रेशमी कपड़ा जिसपर सोने-चाँदीके तारोंका काम होता है। **–गो**–वि॰ कम बोलनेवाला, अल्पभाषी। **–ज़र्फ़**–

–वि० ओछा; कमीना, नीच। **–ज़ोर**–वि० दुर्बल, कम ताकत या असरवाला। **–ज़ोरी**–स्त्री० दुर्बलता, अशक्तता। **–तर**–वि० अधिक छोटा, लघुतर; अल्पतर। **–तरीन**–वि० छोटेसे छोटा, लघुतम; कमसे कम। **–तवज्जही**–स्त्री० लापरवाही। **–तोला**–वि० कम तौलनेवाला, डाँड़ी मारनेवाला। **– नज़र**–वि० जिसकी निगाह थोड़ी ही दूरतक जाय, अदूरदर्शी। **–नसीब**–वि० अभागा, बदनसीब। **–नसीबी**–स्त्री० दुर्भाग्य, बद-किस्मती। **–बख़्त**–वि० अभागा, हतभाग्य। **–बख़्ती**–स्त्री० दुर्भाग्य, बदनसीबी। (**–का मारा**–अभागा।)**–याब**–वि० कम मिलनेवाला, दुर्लभ। **–व(मो)ज्यादा,–बेश**–अ० थोड़ा-बहुत। **–सख़ुन**–वि० कम बोलनेवाला, अल्पभाषी। **–सिन**–वि० कमउम्र, अल्हड़। **–हिम्मत**–वि० पस्तहिम्मत, डरपोक, कायर। **–हैसियत**–वि० अल्पवित्त; छोटा, नीचा।

कमकर–पु० कहारकी श्रेणीकी एक जाति।

कमकस–वि० कामचोर, आलसी।

कमखोरा–पु० बैल आदिके मुँहमें होनेवाला एक रोग।

कमची–स्त्री० (तु०) पतली, लचकनेवाली छड़ी; बाँस आदिकी पतली टहनी, कंचिका; तीली; पंजा लड़ानेका एक प्रकार जिससे उँगलियाँ टूट जाया करती हैं।

कमच्छा–स्त्री० दे० 'कामाख्या'।

कमटी–स्त्री० पतली, नरम टहनी।

कमठ–पु० (सं०) कछुआ; बाँस; कमंडलु; तूँबी, सलईका पेड़; एक दैत्य।

कमठा–पु० कमान।

कमती†–स्त्री० कमी। वि० कम।

कमन–वि० (सं०) कामी; सुंदर। पु० कामदेव; अशोक वृक्ष; ब्रह्मा। **–च्छद**–पु० एक पक्षी, कंक, काँक।

कमना†–अ० क्रि० कम होना, घटना; सीझना, कमाया जाना (चमड़ा)।

कमनी*–वि० दे० 'कमनीय'।

कमनीय–वि० (सं०) कामना करने, चाहने योग्य; सुंदर।

कमनैत–पु० कमान बाँधनेवाला, तीरंदाज।

कमनैती–स्त्री० तीरंदाजी।

कमर–वि० (सं०) कामी। स्त्री० (फा०) शरीरका मध्य, पेट और पेड़ूके बीचका भाग, कटि; मध्य भाग; कुश्तीका एक पेंच। **–कस**–पु० पलासका गोंद। वि०; कमरको ताकत देनेवाला (कमरकस लड्डू)। कमरमें पहननेका एक गहना। **–कोट,–कोटा**–पु० परकोटेके ऊपरकी दीवार जो लगभग कमरभर ऊँची रहती है; रक्षाके लिए घेरी हुई दीवार। **–कोठा**–पु० कोठेकी वह कड़ी जो दीवारसे बाहर निकली हो। **–टूटा**–वि० कुबड़ा; नामर्द। **–तेगा**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच; एक औषध। **–दोआल**–स्त्री० जीन कसनेका तसमा। **–पट्टी**–स्त्री० अँगरखे आदिमें कमरके ऊपर लगायी जानेवाली पट्टी। **–पेटा**–पु० मालखंभकी एक कसरत। **–बंद**–पु० कमर बाँधनेका एक दुपट्टा, पटुका; पेटी; इजारबंद; लहासी। वि० कटिबद्ध, मुस्तैद। **–बंदी**–स्त्री० मुस्तैदी; लड़ाईकी तैयारी। **–बंध**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–बल्ला**–पु० खपरैलमें कोरोओंके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी। **–बस्ता**–वि० कमर बाँधे हुए, तैयार, सन्नद्ध। पु० दे० 'कमरबल्ला'। मु०–**करना**–घोड़ेका सवारीमें कमर उछालना। **–कसना**–(किसी कामके लिए) तैयार, आमादा होना; पक्का इरादा करना। **–खोलना**–कमरबंद खोलना; दम लेना; (यात्रा या किसी कामका) संकल्प, विचार त्याग देना। **–टूटना**–हिम्मत पस्त होना; दिल बैठ जाना; कुछ करनेका दम न रह जाना। **–बाँधना**–कमरबंद बाँधना; सफरके लिए तैयार होना; कमर कसना। **–बैठ जाना**–दे० 'कमर टूटना'। **–सीधी करना**–थकावट मिटाना, सुस्ताना।

कमरख–पु० एक वृक्ष या उसका फल जो फाँकदार और कुछ खट्टा होता है।

कमरखी–वि० कमरख जैसा; कमरखके समान फाँकदार। स्त्री० किसी चीजके किनारे कटी हुई कंगूरेदार फाँकें।

कमरा–पु० कोठरी; इजलाससे सटी कोठरी जिसमें विचारक आराम, निजी बातचीत करता और कभी-कभी मुकदमा भी सुनता है, 'चेंबर'; फोटो खींचनेका यंत्र; † दे० 'कम्मल'।

कमरिया–पु० बौना हाथी। *स्त्री० दे० 'कमली'; †कमर।

कमरी*–स्त्री० दे० 'कमली'; सलूका। पु० घोड़ेका एक रोग। वि० पीठ मारनेवाला (घोड़ा)।

कमल–पु० (सं०) पानीमें होनेवाला एक प्रसिद्ध पौधा और उसका फूल, पद्म; जल; ताँबा; क्लोम; सारस; ब्रह्मा; औषध; मृगोंका एक भेद; आँखका कोया; गर्भाशयका मुँह; ध्रुव तालका एक भेद; एक राग; एक वृत्त; पीलिया रोग; मोमबत्ती जलानेका काँचका गिलास; मूत्राशय। **–अंडा**–पु० (हिं०) कँवलगट्टा। **–कंद**–पु० कमलकी जड़, मुरार। **–गट्टा**–पु० (हिं०) कमलका बीज। **–गर्भ**–पु० कमलका छत्ता। **–ज**–पु० ब्रह्मा। **–नयन**–वि० कमलकी पँखुड़ीसी आँखोंवाला। पु० विष्णु, राम; कृष्ण। **–नाभ**–पु० विष्णु। **–नाल**–स्त्री० कमलकी डंडी। **–पाणि**–वि० जिसके हाथ कमलकी तरह हों। **–बंध**–पु० एक चित्रकाव्य। **–बंधु, –बांधव**–पु० सूर्य। **–बाई**–स्त्री० (हिं०) कँवल रोग, पीलिया। **–भव,–भू**–पु० ब्रह्मा। **–मूल**–पु० कमलकी जड़। **–योनि, –संभव**–पु० ब्रह्मा। **–वन**–पु० कमलोंका समूह। **–वायु**–स्त्री० एक रोग जिसमें आँखें पीली हो जाती हैं, पीलिया।

कमलक–पु० (सं०) छोटा कमल।

कमला–पु० स्पर्शसे खुजली पैदा करनेवाला सूँड़ी नामक कीड़ा; सड़े फल आदिमें पड़नेवाला कीड़ा। स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; धन; एक नदी; एक वर्णवृत्त; एक नीबू। **–कांत,–पति**–पु० विष्णु।

कमलाकर–पु० (सं०) कमलोंका समूह; कमलोंसे भरी झील, तालाब आदि।

कमलाकार–वि० (सं०) कमलके आकारका। पु० छप्पयका एक भेद।

कमलाक्ष–वि० (सं०) कमलसी आँखोंवाला। (स्त्री० 'कमलाक्षी'।) पु० कमलगट्टा।

कमलाग्रजा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मीकी बड़ी बहन, दरिद्रा; दुर्भाग्य।

कमलालया–स्त्री० (सं०) कमलासना, लक्ष्मी।

कमलासन–पु० (सं०) ब्रह्मा; एक आसन, पद्मासन।

कमलिनी–स्त्री० (सं०) कमलका पौधा या डंडी; कमल-समूह; कमल; कमलसे पूर्ण जलाशय। **–कांत,–बंधु**–पु० सूर्य।

कमली–स्त्री० छोटा कंवल; (सं०) पद्मसमूह।

कमली(लिन्)–पु० (सं०) ब्रह्मा।

कमलेक्षण–वि० (सं०) कमलसी आँखोंवाला।

कमलेश–पु० (सं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।

कमवाना–स० क्रि० 'कमाना'का प्रे०।

कमसरियट–पु० (अं० 'कमिसेरियट') फौजी रसदका प्रबंध करनेवाला विभाग।

कमांडर–पु० (अं०) सेना-नायक, सेनाका एक विशेष अफसर। **–इन्-चीफ**–पु० प्रधान सेनापति।

कमा–स्त्री० (सं०) सौंदर्य।

कमाइच*–स्त्री० कमानी; छोटी कमान।

कमाई–स्त्री० परिश्रमसे पैदा किया हुआ पैसा या माल, उपार्जित धन; श्रम-फल; मजदूरी; परिश्रम, काम; करतूत; पैसा कमानेका धंधा; वस्तुको सुधारने-बनानेका काम।

कमाऊ–वि० कमानेवाला, कमासुत।

कमाच–पु० एक रेशमी कपड़ा।

कमाची–स्त्री० झुकी हुई तीली; कमानी।

कमान–स्त्री० (फा०) धनुष; इंद्रधनुष; मेहराब; दो तारोंके कोणांशकी दूरी या क्षितिजसे किसी तारेकी ऊँचाई नापनेका यंत्र; मालखंभकी एक कसरत; * तोप। **–गर**–पु० कमान बनानेवाला। **–चा**–पु० छोटी कमान; सारंगी बजानेका गज; धुनकी। **–दार**–वि० मेहराबदार; कमान बाँधनेवाला। **–पुश्त**–वि०

कुवड़ा । **–(ने)अब्रू**–वि० जिसकी भवें कमानसी हों; सुंदर । **मु०–खींचना**–तीर फेंकनेके लिए कमानके रोदेको अपनी ओर खींचना । **–चढ़ना**–वोलवाला होना; गुस्सेमें होना ।

कमान–स्त्री० (अं० 'कमांड') आदेश, हुक्म; फौजी ड्यूटी; आदेश दे सकनेवाला उच्चाधिकारी (कांग्रेस हाईकमान) । **–अफसर**–पु० कमांडर; कमांडिंग अफसर । **–अफसरी**–स्त्री० सेना-विशेषका नायकत्व, संचालन । **–दार**–पु० फौजी अफसर । **मु०–पर जाना**–लड़ाईपर जाना । **–बोलना**–लड़ाईपर जाने, फौजी ड्यूटीका आदेश देना ।

कमाना–स० क्रि० श्रम-उद्यमसे पैसा पैदा करना; अन्नादि उपजाना, पैदा करना; घरकी कुछ विशेष सेवाएँ (नाई, वारी आदिके काम) नियमपूर्वक करना; पाखाना साफ करना; वस्तुको श्रम द्वारा सुधारना, काम लेने लायक वनाना (खेत, चमड़ा इ०); संचय करना (पाप, पुण्य इ०); कसव, वेश्या-वृत्ति करना; † घटाना; छीलकर पतला करना । (**कमायी हुई देह या हड्डी**–व्यायामसे वलिष्ठ, गठीला वनाया हुआ शरीर) ।

कमानियर–पु० कमांडर ।

कमानिया–पु० तीरंदाज, कमनैत । वि० कमानीदार; मेहरावदार।

कमानी–स्त्री० लोहे आदिकी लचीली और कुछ झुकायी हुई तीली; घड़ी आदिका तारोंके चक्करकी शक्लका पुरजा; वह पेटी जो आँत उतरनेकी बीमारीमें पहनी जाती है; सारंगी वजानेका गज; बढ़ई आदिका एक औजार जिसमें वरमा फँसाकर खींचते हैं । **–दार**–वि० कमानी ।

कमायज–स्त्री० सारंगी वनानेकी कमानी ।

कमारी–†स्त्री० घरका काम करनेवाली मजूरनी ।

कमाल–पु० (अ०) पूर्णता, समाप्ति; पराकाष्ठा; निपुणता, कौशल; गुण, जौहर; अद्‌भुत या चमत्कारिक कार्य; कवीरका वेटा । वि० सर्वोत्तम; पूर्ण; अतिशय । **मु०–करना**–अद्‌भुत कुशलता, योग्यताका परिचय देना ।

कमालपाशा–पु० आधुनिक तुर्कीका निर्माता (१८८१-१९३८) । १९१५में उसने अंग्रेजोंसे दरेदानियलकी दृढ़तासे रक्षा की और १९२२में तुर्कीसे यूनानियोंको वाहर खदेड़ दिया । तुर्क प्रजातंत्रका प्रथम राष्ट्रपति १९२३से १९३८ तक ।

कमाला–पु० अभ्यासके लिए लड़ी जानेवाली कुश्ती ।

कमालियत–स्त्री० (अ०) दक्षता; पूर्णता ।

कमासुत–वि० कमानेवाला, कमाऊ ।

कमिता(तृ)–वि०(सं०) कामी, व्यभिचारी । (स्त्री० 'कमित्री' ।)

कमिश्नर–पु० (अं०) कमिश्नरी या किस्मतका प्रधान अधिकारी; कमीशनका सदस्य; सरकारके प्रतिनिधिरूपमें काम करनेवाला अधिकारी ।

कमिश्नरी–स्त्री० (अं०) कमिश्नरके अधीन प्रदेश, विभाग; किस्मत; कमिश्नरकी कचहरी ।

कमी–स्त्री० कम होना, अल्पता; त्रुटि; न्यूनता; घाटा; कोताही । **–बेशी**–स्त्री० कम या ज्यादा होना, अल्पता-अधिकता ।

कमीज़–स्त्री० कफ और कालरदार कुरता, 'शर्ट' ।

कमीन–स्त्री० (फा०) घात, हमला करनेके लिए छिपकर बैठना । वि० दे० 'कमीना' । **–गाह**–स्त्री० घात लगानेकी जगह । **–दार**–पु० गुप्त स्थानसे गोली चलानेवाला (स्नाइपर),कपटाघाती । **–पन**–पु० दे० 'कमीनापन' ।

कमीना–वि० (फा०) नीच, क्षुद्र, खोटा । **–पन**–पु० नीचता, क्षुद्रता ।

कमीला–पु० एक फलदार छोटा पेड़ ।

कमीशन–पु० (अं०) किसी विषयकी जाँच, विचारके लिए नियुक्त छोटी समिति या मंडल; दूरस्थ व्यक्तिके इजहारके लिए एक या अधिक वकीलोंकी नियुक्ति; एजेंटका काम करनेका अधिकार; दलाली, दस्तूरी ।

क़मीस–स्त्री० (अ०) दे० 'कमीज़' ।

कमुंजा, कमुजा–स्त्री० (सं०) वालोंका गुच्छा ।

कमुआ–पु० नावके डाँड़का दस्ता ।

कमुकंदर✻–पु० धनुष् तोड़नेवाने रामचंद्र ।

कमून–पु० (अ०) जीरा ।

कमूनी–वि० जीरेका वना; जिसमें जीरा पड़ा हो ।

कमेटी–स्त्री० किसी खास कामके लिए वनायी गयी समिति ।

कमेरा–पु० काम करनेवाला; नौकर ।

कमेला–पु० जानवरोंको जिवह करनेका स्थान, कसाईखाना ।

कमेहरा–पु० चूड़ी ढालनेका मिट्टीका साँचा ।

कमोड–पु० (अं०) चीनी मिट्टीका बना एक पात्र जो मलत्यागके लिए स्टूलमें लगा दिया जाता है ।

कमोदन, कमोदिन✻–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' ।

कमोदिक–पु० कामोद राग गानेवाला; गवैया ।

कमोरा–पु० मटका ।

कमोरी–स्त्री० छोटा कमोरा, मटकी ।

कम्मल–पु० ओढ़ने-विछानेके कामका ऊनका वना मोटा कपड़ा, कंवल ।

कम्मा†–पु० ताड़पत्रपर लिखा हुआ लेख ।

कम्यून–पु० (अं०) संपत्तिके समान और संयुक्त अधिकारी मनुष्योंका समूह या संघ; फ्रांस आदिमें देशका सबसे छोटा तथा स्वशासक विभाग; उक्त विभागके निवासी या सरकार ।

कम्यूनिज्म–पु० (अं०) समाजकी वह व्यवस्था जिसमें संपत्तिपर समाजका अधिकार होता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यताके अनुसार कार्य करता और आवश्यकतानुसार वृत्ति पाता है, साम्यवाद ।

कम्यूनिस्ट–पु० (अं०) कम्यूनिज्मका अनुयायी, साम्यवादी, मार्क्सवादी ।

कम्र–वि० (सं०) कामुक; सुंदर ।

कया✻–स्त्री० दे० 'काया' । 'नैन झरहिं अति कया सुखानी'–चंदा० ।

कयाधू–स्त्री० (सं०) हिरण्यकशिपुकी पत्नी, प्रह्लादकी माता ।

क़याम–पु० (अ०) ठहराव, ठहरना; ठिकाना; उठना, खड़ा होना; निश्चय ।

क़यामत–स्त्री० (अ०) मुसलमानों, ईसाइयों आदिके विश्वासानुसार प्राणियोंके कर्मोंका लेखा लेनेका दिन, रोजे-जजा, प्रलय; आफत; हंगामा, हलचल । **–का**–वलाका, गजबका । **–की घड़ी**–प्रलयकाल; घोर संकटका काल । **मु० –बरपा करना**–गजव ढाना, संकट उपस्थित करना, मुसीवत लाना; क्रोध करना ।

क़यास–पु० (अ०) अनुमान, अटकल; कल्पना ।

क़यासी–वि० अनुमित; माना हुआ; अटकलपच्चू ।

करंक–पु० (सं०) खोपड़ी; ठठरी; अस्थि; नरियरी, कमंडलु; † श्राद्ध आदिमें विना बुलाये पहुँचकर विना भोजन किये न टलनेवाला, कंगाल ।

करंगण–पु० (सं०) मेला; वाजार ।

करंगा–पु०, **करंगी**–स्त्री० एक तरहका मोटा धान ।

करंज, करंजक–पु० (सं०) एक झाड़, कंजा जिसके फल आदि दवाके काम आते हैं; (हिं०) मुरगा । **–ख़ाना**–पु० मुरगे रखनेकी जगह ।

करंजा–पु० दे० 'करंज' । वि० भूरी आँखोंवाला ।

करंजुना–पु० दे० 'करंज'; करंजकासा रंग; जौके पौधोंका एक रोग; घमोई । वि० करंजके रंगका ।

करंड–पु० कुरुल पत्थर जिससे सान बनता है, कुरंड । (सं०) बाँसका बना टोकरा या पिटारा; यकृत; एक तरहकी चमेली ।

करंडक–पु०, **करंडिका**–स्त्री (सं०) बाँसकी बनी टोकरी या पिटारी ।

करंडी–स्त्री० अंडीकी चादर; (सं०) करंडिका ।

करंडी(डिन्)–पु० (सं०) मछली ।

करंद†–पु० वह कंगाल जो बिना भोजन किये न टले, करंक ।

करंब–वि० (सं०) दे० 'करंबित' । पु० दे० 'करंभ' ।

करंबित–वि० (सं०) मिश्रित, मिला हुआ; खचित ।

करंभ–पु० (सं०) दहीमें सना हुआ सत्तू; दलिया; एक मिश्रित गंध; पंक ।

करंभक–पु० (सं०) दलिया; दहीमें सना हुआ सत्तू; १६ भाषाओंमें रचित एक ग्रन्थ ।

कर–पु० (सं०) हाथ; किरण; हाथीकी सूँड़; मालगुजारी, महसूल: ओला; हस्त नक्षत्र; लंबाईकी एक माप। वि० करने-वाला (समासांतमें–'सुखकर', 'दुःखकर')। * पु० कल, छल, धूर्तता। * प्र० का ('ताकर नाम भरत अस होई', रामा०)। **–कंटक**–पु० नाखून। **–कमल,–पंकज, पद्म**–पु० कमलसा कोमल सुंदर हाथ। **–कलश**–पु० अंजलि। **–कोष**–पु० पानी लेनेके लिए गहरायी हुई हथेली, चुल्लू। **–गत**–वि० हस्तगत। **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० कर लगाना या वसूल करना; पाणिग्रहण। **–ग्राह**–पु० पति; कर वसूल करनेवाला। **–चंग**–पु० (हिं०) एक तरहका डफ। **–ज**–पु० नाखून; उँगली; करंज। **–जोड़ी**–स्त्री० (हिं०) एक ओषधि, हत्थाजड़ी। **–ज्योडि**–पु० एक वृक्ष, करजोड़ी। **–तल**–पु० हथेली। **–०ध्वनि**–स्त्री० ताली। **–तली**–स्त्री० हथेली; ताली। **।–तारी***–स्त्री० दे० क्रममें। **–ताल**–पु० ताली, करतलध्वनि; हाथसे बजानेका, कीर्तन आदिमें व्यवहृत, एक बाजा। **–तालिका**–स्त्री० ताली। **–ताली**–स्त्री० छोटा करताल; ताली। **–तोया**–स्त्री० पूर्व बंगालकी एक नदी। **–द**–दे० 'क्रम'में। वि० कर खिराज देनेवाला (राजा, राज्य); सहारा देनेवाला। पु० किसान। **–दाता(तृ)**–पु० कर देने-वाला। **–धर**–पु० बादल। **– निर्धारण**–पु० (असेसमेंट) मूल्य या लाभादिकी मात्रा के आधारपर निश्चय करना कि खेत, घर आदिके स्वामीपर कितना कर लगाया जाय। **–पत्र,–पत्रक**–पु० आरा। **–पलई***– स्त्री० दे० 'करपल्लवी'। **–पल्लव**–पु० उँगली। **–पल्लवी**–स्त्री० उँगलियोंके संकेतसे शब्दोंके द्योतनकी विद्या। **–पात्र**–पु० कुछ लेनेके लिए गहरायी हुई हथेली। **–पात्री(त्रिन्)**–वि० अँजुलीमें ही अन्न-जल लेकर ग्रहण करनेवाला (साधु)। **–पाल**–पु० खड्ग, करवाल। **–पालिका**–स्त्री० सोंटा। **–पिचकी***–स्त्री० दोनों हाथोंको मिलाकर बनायी हुई पिचकारी। **–पीड़न**–पु० पाणिग्रहण, विवाह। **–पुट**–पु० अंजलि। **–पृष्ठ**–पु० हाथका ऊपरवाला, हथेलीका उलटा भाग। **–बाल**–पु० दे० 'करवाल'। **–भार**–पु० करका बोझ; भारी कर। **–मर्द,–मर्दक**–पु० करौंदा; आँवला। **–माल**–पु० धुआँ। **–माला**–स्त्री० जाप करनेकी हाथकी माला; जपमें मालाके रूपमें काम देनेवाली उँगलियोंकी पोरें। **–माली(लिन्)**–पु० सूर्य। **–मुक्त**–वि० करसे मुक्त। पु० फेंककर वार करनेका हथियार। **–मूल**–पु० कलाई। **–योग्य मूल्य**–वि० (रेटेबिल या टैक्सेबिल वैल्यू) कर लगानेकी दृष्टिसे आँका गया किसी मकान, संपत्ति आदिका मूल्य या उससे किराये, सूद आदिके रूपमें हो सकनेवाली आय। **–रुह**–पु० नाखून। **–वार***–पु० दे० 'करवाल'। **–वाल**–पु० खड्ग; नाखून। **–वालिका**–स्त्री० छोटा डंडा। **–वाली**–स्त्री० करौली। **–वीर,–वीरक**–पु० कनेर; तलवार; श्मशान; ब्रह्मावर्त देशका एक प्राचीन नगर; चेदि देशका एक प्राचीन नगर। **–शाखा**–स्त्री०,**–शूक**–पु० उँगली। **–संपुट**–पु० दोनों हथेलियोंके मिलानेसे बना गड्ढा, अंजलि। **–साद**–पु० किरणोंका मंद पड़ना; हाथकी कमजोरी। **–सूत्र**–पु० विवाहका कंगन। **–स्थाली(लिन्)**–पु० शिव। **–स्वन**–पु० ताली।

करई–स्त्री० छोटा करवा; एक छोटी चिड़िया।

करक–स्त्री० पेशाबका थोड़ा-थोड़ा और जलनके साथ होना; थोड़ी-थोड़ी देरके बाद होनेवाली पीड़ा, टीस। पु० (सं०) कमंडलु; करवा; नारियलकी खोपड़ी; अनार; हाथ; महसूल; एक पक्षी; उपल।

करकच–पु० समुद्रके पानीसे बनाया जानेवाला नमक; बखेड़ा।

करकचहा†–पु० अमलतास।

करकट–पु० कूड़ा, कतवार; † लोहेकी कलईदार चादर जिससे कंडाल, बालटी आदि बनाते हैं।

करकटिया–स्त्री० एक तरहका सारस।

करकना–अ० क्रि० आवाजके साथ फटना, तड़कना; चुभना, सालना '...मातु उर करके'–रामा०।

करकनाथ–पु० एक काला पक्षी।

करकरा–वि० दे० 'किरकिरा'। पु० करकटिया।

करकराहट–स्त्री० दे० 'किरकिराहट'।

करकस*–वि० दे० 'कर्कश'।

करका–स्त्री० (सं०) ओला।

करखना–अ० क्रि० जोशमें आना।

करखा–पु० उत्तेजना, ताव; कड़खा; एक पद; कालिख।

करगता–स्त्री० करधनी।

करगस–पु० (फा०) गिद्ध; * तीर।

करगह–पु० दे० 'करघा'।

करगहना†–पु० भरेठा।

करगही–स्त्री० एक तरहका अगहनी धान।

करगी–स्त्री० चीनीके कारखानेमें काममें लायी जानेवाली खुरचनी।

करघा–पु० कपड़ा बुननेका यंत्र; वह गड्ढा जिसमें पाँव लटकाकर जुलाहा कपड़ा बुनता है।

करछा–पु० दे० 'कलछा'; एक चिड़िया।

करछाल–स्त्री० छलाँग, जस्त।

करछिया–स्त्री० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।

करछी, करछुली†–स्त्री० दे० 'कलछी'।

करछुला†–पु० दे० 'कलछुला'।

करछैयाँ*–वि०, स्त्री० कुछ-कुछ काली, श्यामा (गाय)।

करछौंह–पु० हलका काला रंग। वि० हलके काले रंगका।

करट–पु० (सं०) कौआ; हाथीकी कनपटी; निंद्य जीवन; एकादशाहादि श्राद्ध; नास्तिक; एक बाजा; कुसुमका पौधा।

करटक–पु० (सं०) कौआ; चौर्य विद्याके प्रवर्तक कर्णीसुत।

करटा–स्त्री० (सं०) कठिनाईसे दुही जानेवाली गाय; हाथीकी कनपटी।

करटी(टिन्)–पु० (सं०) हाथी।

करटु–पु० एक तरहका सारस, करकटिया।

करडा*–वि० कड़ा, कठोर।

करण–पु० (सं०) करना; क्रिया; क्रियाविशेषके लिए अनिवार्य, आवश्यक साधन; औजार; इंद्रिय; तृतीय, साधन बतानेवाला कारक (व्या०); हेतु; देह; क्षेत्र; स्थान; नाचमें हाथकी चेष्टासे भाव बतानेकी क्रिया; कालका एक विशेष मान; दिनका एक विभाग; गणितकी एक क्रिया; कायस्थोंकी एक उपजाति; एक जंगली जाति; दस्तावेज, लिखित प्रमाण; परमात्मा; उच्चारण; एक रतिबंध; वह संख्या जिसका वर्गमूल न निकल सके; * कान। **–कारक**–पु० व्याकरणमें साधन सूचित करनेवाला कारक।

करणिक–पु० (क्लार्क) दे० 'लिपिक, लेखक'।

करणी–स्त्री० (सं०) करण जातिकी स्त्री; वह संख्या जिसका पूरा वर्गमूल न निकल सके।

करणीय–वि० (सं०) करने योग्य, कार्य।

करतब–पु० काम, कर्म; दूषित कर्म, करतूत; हुनर, गुण; कौशल; अचरजमें डालनेवाला काम (दिखाना); बाजीगरी।

करतबिया–वि० दे० 'करतबी'।

करतबी–वि० गुणी; पुरुषार्थी; करतब दिखानेवाला।

करतरी*–स्त्री० दे० 'कर्तरी'; 'करतली'।

करतली*–स्त्री० कैंची, कतरनी–'निसि बासर मग करतली लिये काल करवाहि। कागद सम भइ आयु तब, छिन-छिन कतरत ताहि'–ध्रुवदास।

करतव्य*–पु० करने योग्य काम; धर्म। वि० करणीय।

करता–पु० दे० 'कर्ता'; मुखिया, अधिकारी; एक वर्णवृत्त। **–खानदान**–पु० संयुक्त परिवारका मुखिया और प्रबंधक। **–धरता**–पु० वह जिसकी मरजी, आदेशसे सब काम हों, सर्वाधिकारी।

करतार–पु० दे० 'कर्ता'; * दे० 'करताल' ('कर'के साथ)।

करतारी*–स्त्री० करतापन, कर्तृत्व; ईश्वरकी लीला; एक बाजा; ताली।

करती–स्त्री० मृतवत्सा गौको दुहनेके लिए खालमें भूसा भरकर बनाया हुआ नकली बछड़ा।

करतूत–स्त्री० काम, करनी; निंद्य कर्म; गुण; कला।

करतूति*–स्त्री० दे० 'करतूत'।

करथरा–पु० सिंध देशवर्ती हाला पर्वतकी शृंखला।

करद–स्त्री० छुरी, चाकू । दे० 'कर'में ।

करदम*–पु० कर्दम, कीच; पाप; मांस ।

करदा–पु० बिक्रीके अनाज आदिमें मिला हुआ कूड़ा-करकट; कूड़े-करकटकी वजहसे होनेवाली मूल्यमें कमी; बदलाई ।

करदौना–पु० दौना ।

करधई†–स्त्री० एक कँटीला पेड़ या झाड़ ।

करधन†–स्त्री० दे० 'करधनी' ।

करधनी–स्त्री० सोने चाँदीकी पट्टी या लड़ियोंका गहना जो कमरमें पहना जाता है; सूत या रेशमकी बनी हुई मेखला ।

करधौनी†–स्त्री० दे० 'करधनी' ।

करन–† पु० दे० 'कर्ण', ज़रिश्क । **–धार***–पु० दे० 'कर्णधार' । **–फूल**–पु० कानमें पहननेका एक गहना, काँप । **–बेध**–पु० कनछेदन ।

करना–स० क्रि० किसी कामके होनेमें यत्नवान् होना; अंजाम देना; किसीं कार्यको संपन्न करना, निवटाना; बनाना, अन्य रूप देना; पकाना; रखना; पहुँचाना; रोजगार, पेशा करना; भाड़ेपर लेना (इक्का-ताँगा आदि); पति या पत्नीके रूपमें ग्रहण क़रना; पोतना; प्रसंग करना । * पु० करनी, काम; एक तरहका नीबू ।

करनाई–स्त्री० तुरही ।

करनाट–पु० दे० 'कर्णाट' ।

करनाटक–पु० मद्रास प्रांतका कन्नड़-भाषी भाग ।

करनाटकी–वि० करनाटकका । पु० करनाटकवासी; कसरत आदिके काम दिखानेवाला; बाजीगर । स्त्री० करनाटककी भाषा, कन्नड़ ।

करनाटी–स्त्री० दे० 'कर्णाटी' ।

करनाल–पु० एक तरहकी तोप; भोंपा; वड़ा ढोल ।

करनी–स्त्री० कर्म, करतूत; अंत्येष्टि; पिसराजोंका एक औजार, कन्नी ।

करनैल–पु० (अं० 'कर्नल') सेनाका एक वड़ा अफसर ।

करपर*–पु० खोपड़ी; खप्पर । वि० कृपण ।

करपरी†–स्त्री० पीठीकी पकौड़ी ।

करफूल–पु० दौना ।

करबुर*–स्त्री० झगड़ा; कलरव, शोरगुल; विपत्ति । वि० कई रंगका, चितकबरा ।

करबरना*–अ० क्रि० कलरव करना (पक्षियों आदिका) ।

करबला–स्त्री० (अ०) इराके अरबका वह जलहीन मैदान जहाँ इमाम हुसैन अपने साथियों सहित शहीद हुए; वह स्थान जहाँ ताजिये दफन किये जाते हों; जलहीन स्थान ।

करबी–स्त्री० जुआर या बाजरेके डंठल जो चारेके काम आते हैं ।

करबुर–पु० दे० 'कर्बुर', चितकबरा ।

करबूस–पु० घोड़ेकी जीनमें टँकी हुई पट्टी जिसमें हथियार लटकाया जाता है ।

करभ–पु० (सं०) करपृष्ठ; हाथीकी सूँड़; हाथीका बच्चा; ऊँटका बच्चा; ऊँट; एक सुगंधित द्रव्य; नख ।

करभक–पु० (सं०) ऊँट; करभ, हाथीका बच्चा ।

करभा†–पु० कोल, भील आदि जंगली जातियोंका एक विशेष गाना।

करभी–स्त्री० (सं०) ऊँटनी ।

करभी(भिन्)–पु० (सं०) हाथी ।

करभीर–पु० (सं०) सिंह ।

करभोरु–वि० स्त्री० (सं०) जिसकी जाँघ हाथीकी सूँड़के समान हो, सुंदर जाँघोंवाली ।

करम–पु० कर्म, काम; कर्मफल; भाग्य । **–चँद***–पु० कर्म । **–भोग**–पु० कर्मफल; कर्मफलके रूपमें मिलनेवाला दुःख । **–का धनी**–भाग्यशाली । मु०**–फूटना**–भाग्य फूटना ।

करम–पु० (अ०) कृपा, अनुग्रह; उदारता; क्षमा । **–फ़रमा**–वि० कृपा, अनुग्रह करनेवाला ।

करमकल्ला–पु० पत्तेवाली गोभी, पातगोभी ।

करमट्ठा*–वि० कंजूस ।

करमठ*–वि० दे० 'कर्मठ' ।

करमरी(रिन्)–पु० (सं०) वह बंदी जिसे आजीवन कारावासका दंड मिला हो ।

करमा–पु० एक वृक्ष, कैमा ।

करमात*–पु० कर्म; भाग्य ।

करमी*–वि० दे० 'कर्मी' । † स्त्री० दे० 'करेमू' ।

करमुँहा, करमुखा–वि० काले मुँहवाला; जिसके मुँहमें कालिख लगी हो; कलंकित ।

करमैल†–पु० एक प्रकारका बड़ी जातिका तोता ।

करमोद–पु० एक तरहका धान ।

कररना*–अ० क्रि० चर्र-चर्र करके टूटना; कर्कश बोली बोलना ।

कररान*–स्त्री० धनुष्की टंकार ।

कररान*–अ० क्रि० दे० 'कररना' ।

कररी–स्त्री० वनतुलसी; एक पक्षी, कुररी ।

करल*–पु० कड़ाही ।

करला–पु०, **करली**–स्त्री० कल्ला, कोमल पत्ता ।

करवट–स्त्री० दाहने या बायें बाजू लेटना; इस तरह लेटनेकी स्थिति; पहलू; बाजू । पु० आरा; एक विषैला वृक्ष, जसूंद । मु० **–न लेना**–कर्तव्यपर ध्यान न देना; चुप्पी साधना । **–बदलना**–लेटनेमें पहलू बदलना, दूसरी ओर हो जाना; पलटना; बेचैनीसे बार-बार पहलू बदलना; सो न सकना । **–लेना**–लेटे या सोये हुए आदमीका दूसरी ओर घूमना, पहलू बदलना; बदलना; पलटना; स्वर्ग-प्राप्तिकी आशासे काशी, प्रयाग आदिमें विशेष आरेके नीचे कटकर जान देना ।

करवत–पु० करपत्र, आरा ।

करवर*–स्त्री० घात; संकट, विपत्ति; कठिनाई । पु० करवाल ।

करवरना*–अ० क्रि० चहकना, कलरव करना ।

करवा–पु० मिट्टी या धातुका लोटेका काम देनेवाला टोंटीदार बरतन । **–चौथ**–स्त्री० कार्तिक-कृष्णा चतुर्थी ।

करवानक*–पु० गौरैया पक्षी, चिड़ा ।

करवीराक्ष–पु० (सं०) रामके हाथों मारा गया खरका सेनापति ।

करवीर–दे० 'कर'के साथ ।

करवील*–पु० करील ।

करवैया†–पु० करनेवाला, करतब करनेवाला ।

करवोटी–स्त्री० एक चिड़िया ।

करश्मा–पु० (फा०) आँख या भौंका इशारा; नाजनखरा; अनोखी बात; चमत्कार, करामात ।

करष*–पु०, स्त्री० खिंचाव; वैर; ताप; क्रोध ।

करषक*–पु० कृषक, किसान ।

करषना*–स० क्रि० तानना, खींचना; सोखना; बुलाना; बटोरना।

करस*–पु० कलश ।

करसना*–स० क्रि० दे० 'करषना' ।

करसाइल, करसायल–पु० काला हिरन ।

करसान*–पु० किसान ।

करसी–स्त्री० सूखे गोबर, उपलों आदिका चूर या छोटे टुकड़े ।

करहंच*–पु० दे० 'करहंस' ।

करहँज–पु० चने आदिकी वह फसल जो बढ़ी तो काफी हो पर दाने कम पड़े हों ।

करहंत–पु० दे० 'करहंस' ।

करहंस–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

करह*–पु० ऊँट; पुष्पकलिका ।

करहनी–स्त्री० एक तरहका धान ।

करहाट, करहाटक–पु० (सं०) कमलकी जड़; कमलका छत्ता; मैनफल ।

करही†–स्त्री० एक प्रकारका वृक्ष ।

कराँकुल–पु० क्रौंच पक्षी ।

करांगण–पु० (सं०) हाट, बाजार; वह स्थान जहाँ कर या चुंगी इकट्ठी की जाय ।

कराँत–पु० लकड़ी चीरनेका औजार, आरा ।

कराँती–पु० आरा चलानेवाला । स्त्री० आरी ।

करा*–स्त्री० कला ।

कराइत–पु० दे० 'करैत' ।

कराई–स्त्री० मूंग, अरहर आदिका छिलका जो पशुओंको खिलाया जाता है; करने या करानेका भाव; करने या करानेकी उजरत; * कालापन ।

कराघात–पु० (सं०) हाथका प्रहार; आघात ।

करात–पु० एक वजन जो लगभग ३॥ ग्रेनके बराबर होता है और सोना, जवाहरात आदि तौलनेके काम आता है ।

कराधान–पु० (लेवी) दे० 'करारोपण' ।

कराना–स० क्रि० 'करना'का प्रे० ।

क़रापवंचन–पु० (इवेज़न आव टैक्स) ऐसी हिकमत या चालाकी करना जिससे कर अदा न करना पड़े ।

क़राबत–स्त्री० (अ०) समीपता; नाता, रिश्ता । **–दार**–वि० नातेदार, संबंधी ।

क़राबा–पु० (अ०) शीशेका सुराही जैसा बरतन जिसमें अर्क इत्यादि रखते हैं; शीशेकी सुराही ।

करावीन–स्त्री० एक तरहकी छोटी बंदूक ।

करामत–स्त्री० (अ०) महत्ता, बड़ाई; अनुग्रह; चमत्कार, सिद्धि ।

करामात–स्त्री० (अ०) चमत्कार, सिद्धि, अचरजभरी बात ('करामत'का बहु०) ।

करामाती–वि० करामात करने-दिखानेवाला, चमत्कारी ।

करायल–पु० तेल मिली हुई राल । † स्त्री० कलौंजी; मगरैला ।

करायिका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी; सारसका एक भेद जो छोटा होता है ।

करार–पु० नदीका ऊँचा और कुछ खड़ा किनारा, कगार ।

क़रार–पु० (अ०) ठहराव; चैन, आराम; धीरज; प्रतिज्ञा, इकरार । **–दाद**–पु० ठहरी हुई बात; निश्चय । **मु०–पाना**–तै होना; ठहरना; चैन, आराम पाना ।

करारना*–अ० क्रि० काँव-काँव करना; कर्कश स्वरमें बोलना ।

करारा–वि० कड़ा; तेज; तीखा (–व्यंग्य); दृढ़; खूब सिका हुआ; गहरा । पु० कगार; टीला; कौआ ।

करारोट–पु० (सं०) मुँदरी ।

करारोपण–पु० (टैक्सेशन) भूमि, संपत्ति या व्यापारिक वस्तुओंपर कर लगाना; कराधान; (लेवी) कर आदि प्राधिकृत रूपसे संग्रह करना, वसूल करना या उगाहना, उगाही, उद्ग्रहण ।

कराल–वि० (सं०) बड़े-बड़े दाँतोंवाला; डरावना, भयानक; अधिक ऊँचा । पु० राल मिला हुआ तेल; दाँतोंका एक रोग ।

कराला–स्त्री० (सं०) डरावने रूपवाली दुर्गा; अनंतमूल, सारिवा ।

करालिक–पु० (सं०) वृक्ष; तलवार ।

करालिका–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

कराली–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । वि० स्त्री० डरावनी ।

कराव–पु० दे० 'करावा' ।

करावल–पु० (तु०) आगे जाकर खबर लानेवाला सैनिक या दस्ता; शिकार खेलानेवाला ।

करावा–पु० पतिके जीवित रहते हिंदू स्त्रीका दूसरा ब्याह, सगाई ।

कराह–पु० दर्द या पीड़ाकी आवाज, आह; * दे० 'कड़ाह' ।

कराहत–स्त्री० (अ०) घिन, नफरत ।

कराहना–अ० क्रि० आह-आह करना, पीड़ा-सूचक ध्वनि निकालना ।

कराहा*–पु० दे० 'कड़ाहा' ।

कराहियत–स्त्री० (अ०) दे० 'कराहत' ।

कराही*–स्त्री० दे० 'कड़ाही' ।

करिंगा–पु० मसखरा ।

करिंद*–पु० ऐरावत; गोलमें सबसे बड़ा हाथी; बड़ा हाथी ।

करि*–पु० हाथी ।

करिकट–पु० मछलियोंका शिकार करनेवाला एक पक्षी ।

करिका–स्त्री० (सं०) नाखूनसे छिल जानेका घाव ।

करिखई*–स्त्री० कालापन ।

करिखा*–स्त्री० कालिख ।

करिणी–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

करित–पु० (सं०) फरमाइशी सामान, आज्ञा देकर बनवायी हुई वस्तु ।

करिनी*–स्त्री० दे० 'करिणी' ।

करिया–पु० ऊखका एक रोग; * पतवार; कर्णधार, माँझी–'उन बिन ब्रजबासी यों सोहत ज्यों करिया बिन नाव'–सूर । वि० काला । **–ई०**–स्त्री० कालापन; कालिख ।

करियारी*–स्त्री० दे० 'कलियारी'; लगाम ।

करिल*–स्त्री० बाँसका नया कल्ला, कोंपल । वि० काला ।

करिश्मा–पु० (फा०) दे० 'करश्मा' ।

करिहाँ, करिहाँउँ*–स्त्री० कटि, कमर–'कै गयी काटि करेजनिके कतरे-कतरे पतरे करिहाँकी'–पद्माकर– 'नलिन खंड दुइ तस करिहाँउँ'–प० ४०१ ।

करिहैयाँ*–स्त्री० दे० 'करिहाँ' (पूर्ण०) ।

करींद्र–पु० (सं०) ऐरावत; श्रेष्ठ, बहुत बड़ा हाथी ।

करी*–स्त्री० कली–'यों करबीर करी बन राजै'–रामचं० । कड़ी, बंधन–'करकि-करकि उठै करी बखतरकी'–हरिकेस । † सौरी नामकी मछली; कड़ी, धरन ।

करी(रिन्)–पु० (सं०) हाथी । **–(रि)कुंभ**–पु० हाथीका मस्तक । **–कुसुंभ**–पु० एक चूर्ण जो नागकेशरके फूलोंसे तैयार किया जाता है । **–दारक**–पु० सिंह । **–नासिका**–स्त्री० एक वाद्य । **–प**–पु० महावत । **–पोत,–शाव,–शावक**–पु० हाथीका बच्चा । **–बंध**–पु० हाथी बाँधनेका खूँटा । **–वदन,–वरवदन**–पु० गणेशजी । **–माचल**–पु० सिंह । **–स्कंध**–पु० हाथीका कंधा; हाथियोंका झुंड ।

क़रीन–वि० (अ०) मिला हुआ; साथ बैठनेवाला; समान, तुल्य । **–(ने)क़यास**–वि० जिसे बुद्धि स्वीकार करे, जो अक्लमें बैठे । **–मसलहत**–वि० उचित, मुनासिब ।

क़रीना–पु० (अ०) मेल, समानता; ढंग, सलीका; तरतीब, क्रम ।

क़रीब–वि० (अ०) निकटस्थ, समीपी । अ० पास, निकट; लगभग । **–क़रीब**–अ० लगभग । **–तरीन**–वि० सबसे पासका, निकटतम ।

क़रीबन्–अ० लगभग ।

करीबी–वि० निकट संबंधी ।

करीबुलमर्ग–वि० (अ०) आसन्नमृत्यु ।

करीम–वि० (अ०) करम करनेवाला, उदार; दयालु; अपराध क्षमा करनेवाला; नेक । पु० ईश्वर ।

करीर–पु० (सं०) बाँसका नया कल्ला; करील; घड़ा ।

करीरक–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई ।

करीरा, करीरी–स्त्री० (सं०) हाथीके दाँतकी जड़; झींगुर; फनगा ।

करीरिका–स्त्री० (सं०) हाथीके दाँतकी जड़ ।

करील–पु० झाड़ीके रूपमें उगनेवाला एक कँटीला और बिना पत्तेका पेड़ ।

करीश, करीश्वर–पु० (सं०) दे० 'करींद्र' ।

करीष–पु० (सं०) सूखा गोबर, बनकंडा, करसी ।

करीषिणी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी ।

करीस*–पु० दे० 'करीश' ।

करुआ, करुवा*–वि० दे० 'कड़वा' । † पु० करवा; घड़ा । **–(आ)ई***–वि० स्त्री० कड़वापन ।

करुआना, करुवाना*–अ० क्रि० दुखना, गड़ना; कड़ुआ लगना, मुँहका स्वाद कड़ुआ हो जाना । स० क्रि० कड़वाहटसे मुँह बिचकाना ।

करुखी*–स्त्री० कनखी, तिरछी चितवन ।

करुण–पु० (सं०) अनुकंपा, दया; एक काव्य-रस, परमात्मा । वि० करुणायुक्त; दयनीय, करुणा उत्पन्न करनेवाला । **–मल्ली**–स्त्री० मल्लिका । **–विप्रलंभ**–पु० वियोग शृंगार ।

करुणा–स्त्री० (सं०) अनुकंपा, दया । **–निधान,–निधि**–वि० करुणा, दयासे भरा हुआ । **–पर**–वि० करुणासे भरा हुआ, अति दयालु ।

करुणामय–वि० (सं०) दे० 'करुणापर' ।

करुणी–स्त्री० (सं०) एक पुष्पवृक्ष, चारिणी ।

करुणी(णिन्)–वि० (सं०) करुणाका पात्र, दयनीय, कष्टग्रस्त ।

करुना*–स्त्री० दे० 'करुणा'।

करुवेल–स्त्री० इंद्रायन नामकी लता।

करुर*–वि० कड़ुआ।

करुल–पु० एक बड़ी जातिकी चिड़िया।

करुवार–पु० पतवार।

करुवारि*–स्त्री० पतवार।

करूर*–वि० क्रूर, कठोर, निष्ठुर।

करूष–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

करेंट–पु० (अं०) प्रवाह, धारा; विद्युत्प्रवाह। वि० प्रचलित; हालका।

करेजा*–पु० दे० 'कलेजा'।

करेजी–स्त्री० दे० 'कलेजी'।

करेट–पु० (सं०) नाखून।

करेटु–पु० दे० 'करटु'।

करेणु–पु० (सं०) हाथी; कर्णिकारका पेड़। स्त्री० हथिनी। –भू,–सुत–पु० हस्तिशास्त्रके प्रवर्तक पालकाप्य मुनि।

करेणुक–पु० (सं०) करेणुका विषैला फल।

करेणुका–स्त्री० (सं०) हथिनी।

करेणू–स्त्री० (सं०) हथिनी। पु० हाथी।

करेनर, करेवर–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, लोबान।

करेनुका*–स्त्री० दे० 'करेणुका'।

करेब–पु० (अं० 'क्रेप') बारीक और झीनी बुनावटवाला एक रेशमी कपड़ा।

करेमू–पु० पानीमें होनेवाली एक बेल जिसके पत्ते सागकी तरह खाये जाते हैं।

करेर, करेरा*–वि० कड़ा, सख्त।

करेल–पु० एक तरहका बड़ा मुगदर; करेल घुमानेकी कसरत।

करेला, करैला–पु० एक तरकारी, कारवेल्ल।

करेली, करैली–स्त्री० छोटी जातिका करेला; जंगली करेला।

करैत–पु० साँपोंका एक भेद जो काला और बहुत जहरीला होता है।

करैल–स्त्री० काली मिट्टी जो गीली होनेपर बहुत लसदार हो जाती है; इस तरहकी मिट्टीवाली जमीन। पु० बाँसका नरम कल्ला; डोमकौआ।

करोँट*–स्त्री० करवट।

करोट–पु०, **करोटि**–स्त्री० (सं०) खोपड़ी; प्याला।

करोटन–पु० (अं० 'क्रोटन') वनस्पतिका एक वर्ग जिसके पौधोंके पत्ते सुंदर और रंग-बिरंगे होते हैं।

करोटी–स्त्री० दे० 'करोट'।

करोड़–वि० सौ लाख, एक कोटि। पु० सौ लाखकी संख्या। –खुख –वि० डींग मारनेवाला। –गीरी–स्त्री० चुंगी विभाग। –पति –वि० जिसके पास करोड़ या करोड़ों रुपये हों, बहुत बड़ा अमीर।

करोड़ी–पु० रोकड़िया; महसूल इकट्ठा करनेवाला, कर-संग्राहक (मुसल०)।

करोत–पु० आरा।

करोदना*–स० क्रि० दे० 'कुरेदना'।

करोना*–स० क्रि० खुरचना, कुरेदना।

करोनी–स्त्री० खुरचन; खुरचनी।

करोर*–वि०, पु० दे० 'करोड़'।

करोला*–पु० गड़ुआ, लोटा जैसा पात्र।

करौँछ*–स्त्री० दे० 'कलौँस'।

करौँछा*–वि० काला।

करौँजी*–स्त्री० दे० 'कलौँजी'।

करौँट*–स्त्री० करवट।

करौँदा–पु० एक काँटेदार झाड़ या उसका फल, करमर्द; एक जंगली फल जो मटरके बराबर होता है और पकनेपर काला हो जाता है।

करौँदिया, करौँदी–वि० करौंदेके रंगका। पु० गुलाबीसे मिलता-जुलता एक रंग।

करौत–पु० आरा। स्त्री० रखेली स्त्री।

करौता–पु० आरा; करैल मिट्टी; करावा।

करौती–स्त्री० आरी; काँचकी भट्ठी; छोटा करावा।

करौना–पु० बरतनपर नक्काशी करनेकी कलम।

करौल*–पु० (तु० 'करावल') हँकवा करने, शिकार खेलानेवाला –'धाइ कै सिंह कह्यो समुझाइ, करौलनि आइ अचेत उठाये'–भू०।

करौली–स्त्री० सीधी, मूठदार छुरी; राजपूतानाकी एक छोटी रियासत।

कर्कंधु–पु० (सं०) बेरका फल; सूखा कुआँ।

कर्कंधू–स्त्री० (सं०) बेर।

कर्क–पु०. (सं०) केकड़ा; बारह राशियोंमेंसे चौथी; आग; आईना; घड़ा; सफेद घोड़ा; काकड़ासींगी। वि० सफेद; बढ़िया। –**चिर्भिटा,–चिर्भिटी**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी। –**रेखा**–स्त्री० (ट्रॉपिक ऑफ कैंसर) पृथ्वीके उत्तरी गोलार्धके २३।।^{0} अक्षांशकी वृत्त रेखा, जो उष्ण कटिबंधकी उत्तरी सीमा बतलाती है।

कर्कट–पु० (सं०) केकड़ा; कर्क राशि; कमलकी जड़; सारसका एक भेद; काँटा; तराजूकी डंडीका सिरा जिसमें पलड़ेकी तन्नी बाँधी जाती है; एक रतिबंध; वृत्तकी त्रिज्या; नृत्यका एक हस्तक। –**शृंगी**–स्त्री० काकड़ासींगी।

कर्कटक–पु० (सं०) केकड़ा; कर्क राशि; वृत्त; एक तरहकी ईख; अँकुशी; एक विषैला मूल; एक प्रकारका अस्थिभंग।

कर्कटकी–स्त्री० (सं०) मादा केकड़ा।

कर्कटा–स्त्री० (सं०) खेखसा।

कर्कटिका–स्त्री० (सं०) छोटी ककड़ी।

कर्कटी–स्त्री० (सं०) मादा केकड़ा; छोटा घड़ा; सेमलका फल; तराजूकी डाँड़ीका टेढ़ा छोर; एक तरहकी ककड़ी; तरोई; सर्प।

कर्कटु–पु० (सं०) एक तरहका सारस।

कर्कर–वि० (सं०) कठोर; दृढ़। पु० कंकड़; कुरंड पत्थर; आईना; हथौड़ा; अस्थि; खोपड़ीका टुकड़ा; चमड़ेकी पट्टी।

कर्करांग–पु० (सं०) खंजन पक्षी।

कर्करांधक, कर्करांधुक–पु० (सं०) अंधकूप।

कर्कराक्ष–पु० (सं०) दे० 'कर्करांग'।

कर्करादु–पु० (सं०) कटाक्ष, तिरछी चितवन।

कर्करादुक–पु० (सं०) एक तरहका सारस।

कर्कराल–पु० (सं०) सुवासित घुँघराले बाल।

कर्करी–स्त्री० (सं०) झारी; एक पौधा।

कर्करेट–पु० (सं०) अर्द्धचंद्र, गरदनियाँ।

कर्करेटु, कर्करेटुक–पु० (सं०) दे० 'कर्करादुक'।

कर्कश–वि० (सं०) कठोर; खुरदरा; तीव्र; परुष; निर्दय; उग्र; हट्टा-कट्टा; दुराचारी; अचिंत्य। पु० ईख; तलवार; कमीला वृक्ष।

कर्कशा–वि०, स्त्री० (सं०) लड़ाकी; कटुभाषिणी। स्त्री० कर्कशा स्त्री; वृश्चिकाली पौधा।

कर्कशिका, कर्कशी–स्त्री० (सं०) बनबेर।

कर्कारु–पु० (सं०) कुम्हड़ा।

कर्कारुक–पु० (सं०) तरबूज।

कर्केतन–पु० (सं०) एक रत्न, जमुर्रद।

कर्कोट, कर्कोटक–पु० (सं०) पुराणोक्त ८ नागराजोंमेंसे एक; कोड़ा; खेखसा; बेलका पेड़; ईख; कश्मीरका एक राजवंश।

कर्कोटकी–स्त्री० (सं०) पीतघोषा।

कर्कोटिकी–स्त्री० (सं०) काँकरोल।

कर्कोटी–स्त्री० (सं०) ककोड़ी; बनतोरई।

कर्खना*–स० क्रि० दे० 'कर्षना'।

कर्घा–पु० दे० 'करघा'।

कर्चर, कर्चूर–पु० (सं०) कचूर; सोना।

कर्चरिका–स्त्री० (सं०) कचौरी।

कर्चूरक–पु० (सं०) हल्दी।

क़र्ज़–पु० (अ०) ऋण, उधार, देना। –**ख़्वाह**–पु० कर्ज देनेवाला। –**दार**–पु० ऋणी, कर्ज लेनेवाला। –**(ज़ें) हसना**–पु० बेसूद और बेमीयाद कर्ज। मु० –**खाना**–ऋणी होना, ऋणभारसे दबा होना।

कर्जा–पु० दे० 'क़र्ज़'।

कर्ण–पु० (सं०) कान; नावकी पतवार; (हाइपॉटेन्यूस) त्रिभुजके समकोणके सामनेकी भुजा; महाभारतोक्त कौरवपक्षका एक महारथी जो कुंतीका अविवाहितावस्थामें उत्पन्न पुत्र माना जाता है; एक प्राचीन जाति। **–कटु**–वि० कानोंको अप्रिय लगनेवाला। **–कीटी**–स्त्री० कनखजूरा। **–कुहर**–पु० कानका छेद। **–क्रोश, –क्ष्वेड**–पु० कानका एक रोग जिसमें गूंजसी आवाज मालूम होती रहती है। **–गूथ**–पु० कानका मैल, खूंट। **–गूथक**–पु० कानके खूंटका सूखकर कड़ा हो जाना। **–गोचर**–वि० जो सुना जा सके। **–ग्राह**–पु० कर्णधार। **–ज**–पु० कानका मैल। **–जप** वि०, पु० चुगलखोर। **–जलका,–जलौका**–स्त्री० कनखजूरा। **– जाह**–पु० कानकी जड़। **–जित्**–पु० अर्जुन। **–ताल**–पु० हाथीका कान हिलाना या उसकी आवाज। **–देवता**–पु० वायु। **–धार**–पु० पतवार पकड़नेवाला, माँझी; काम सँभालनेवाला, रखवार। वि० दुःखादिका निवारण करनेवाला। **–नाद**–पु० कानमें सुनाई पड़नेवाली गूंज; कानका एक रोग जिसमें गूंज सुनाई पड़ती है। **–पटह**–पु० कानके भीतरी हिस्सेका मध्य भाग। **–पथ**–पु० श्रवणसीमा। **–परंपरा**–स्त्री० किसी बातके एक कानसे दूसरे कानमें पहुँचने, एकसे दूसरेके सुननेका सिलसिला, श्रुतिपरंपरा। **–पाक**–पु० कानका पकना। **–पाली**–स्त्री० कानकी लौ; वाली। **–पिशाची**–स्त्री० एक देवी या पिशाचिनी; उसकी प्रसन्नतासे मिलनेवाली परोक्ष-ज्ञानकी शक्ति। **–पुट**–पु० श्रवणमार्ग। **–पुर**–पु० अंग देशकी पुरानी राजधानी चंपा। **–पूर**–पु० करनफूल; सिरिस; कदंब; नील कमल। **–पूरक**–पु० करनफूल; कदंब; अशोक; नील कमल। **–प्रणाद,–प्रतिनाद**–पु० कानका एक रोग। **–प्रयाग**–पु० बदरिकाश्रमके रास्तेमें पड़नेवाला एक तीर्थ। **–फल**–पु० एक मछली। **–फूल**–पु० (हिं०) कानका एक गहना। **–भूषण**–पु०,**–भूषा**–स्त्री० कानका गहना। **–मल**–पु० खूंट। **–मूल**–पु० कानकी जड़; कानकी जड़के पासकी सूजन। **–मृदंग**–पु० कानकी झिल्ली जिसपर शब्दजनित कंपनके आघातसे शब्द-ज्ञान होता है। **–मोटी**–स्त्री० चामुंडा देवी। **–योनी**–वि० जो कानसे जनमा हो। **–रंध्र,–विवर**–पु० कानका छेद। **–रोग**–पु० कानमें उत्पन्न होनेवाले रोग, कर्णपाक आदि। **–लता, लतिका**–स्त्री० कानकी लौ। **–वंश**–पु० बाँसका मंच। **–वर्जित**–वि० विना कानका। पु० साँप। **–विद्रधि**–स्त्री० कानके भीतर होनेवाली फुंसी या घाव। **–वेध**–पु० कनछेदनका संस्कार या रस्म। **–वेधनी, वेधनिका**–स्त्री० कान छेदनेका औजार। **–वेष्ट,–वेष्टन**–पु० कुंडल। **–शष्कुली**–स्त्री० कानका वाहरी हिस्सा। **–शूल**–पु० कानका दर्द। **–श्रव**–वि० जो सुना जा सके। **–सू**–स्त्री० (कर्णको जन्म देनेवाली) कुंती। **–सूची**–स्त्री० एक छोटा कीड़ा। **–स्फोटा**–स्त्री० एक लता, चित्रपर्णी। **–स्राव**–पु० कानका बहना। **–हल्लिका**–स्त्री० कानका एक रोग। **–हीन**–वि० बहरा। पु० साँप।

कर्णक–पु० (सं०) बरतनका कानकी तरह बाहर निकला भाग; पेड़के पत्ते और टहनियाँ; एक लता; एक ज्वर।

कर्णधार समिति–स्त्री० (स्टीयरिंग कमिटी) संयुक्त राष्ट्र-संघ, कांग्रेस आदिकी वह समिति जो विभिन्न समितियोंके कार्यक्रम, विषयक्रम आदिका निर्धारण करती है; (कार्य) संचालन-समिति।

कर्णांदु–पु०, **कर्णांदू**–स्त्री० (सं०) करनफूल।

कर्णाट–पु० (सं०) करनाटक; एक राग।

कर्णाटी–स्त्री० (सं०) कर्णाट देशकी स्त्री, एक राग।

कर्णादर्श–पु० (सं०) करनफूल।

कर्णानुज–पु० (सं०) युधिष्ठिर।

कर्णारि–पु० (सं०) अर्जुन।

कर्णिक–वि० (सं०) कानवाला; जिसके हाथमें पतवार हों। पु० माँझी, कर्णधार।

कर्णिका–स्त्री० (सं०) करनफूल; विचली उँगली; कमलका छत्ता; हाथीकी सूँड़की नोक; लेखनी; गाँठ, गिलटी; एक योनिरोग; अग्निमंथ वृक्ष।

कर्णिकाचल–पु० (सं०) सुमेरु पर्वत।

कर्णिकार–पु० (सं०) कनियारका पेड़ या फूल; एक तरहका अमलतास।

कर्णी–स्त्री० (सं०) फलवाला वाण; चौर्यशास्त्रके प्रवर्तक मूलदेवकी माता; कंसकी माता। **–रथ**–पु० म्याना, डोली, पालकी (जो स्त्रियोंकी सवारीके काम आती है)। **–सुत**–पु० चौर्यशास्त्र-प्रवर्तक मूलदेव; कंस।

कर्णी(र्णिन्)–वि० (स०) कानवाला; बड़े कानोंवाला। पु० कर्णधार; बरछीकेसे फलवाला वाण; सप्त वर्ष-पर्वतोंमेंसे एक; गधा; गर्भाशयका एक रोग।

कर्णेजप–वि०, पु० (सं०) कानमें लगकर परनिंदा करनेवाला; चुगुलखोर; भेद वतानेवाला।

कर्णोत्पल–पु० (सं०) कर्णफूल नामक आभूषण।

कर्णोपकर्णिका–स्त्री० (सं०) एकसे दूसरे कानमें पहुँचनेवाली वात, जनश्रुति, अफवाह।

कर्तन–पु० (सं०) काटना; कतरना (केशकर्तन); कातना।

कर्तनी–स्त्री० (सं०) कतरनी, कैंची।

कर्तब*–पु० दे० 'करतब'।

कर्तरि, कर्तरिका–स्त्री० (सं०) कैंची; छुरी; कटारी।

कर्तरी–स्त्री० (सं०) कैंची, कतरनी; छुरी; कटारी; बाणका वह भाग जहाँ पंख लगाया जाता है; नृत्यका एक प्रकार; ज्योतिषका एक योग। **–फल**–पु० छुरीका फल।

कर्तव्य–वि० (सं०) जिसे करना उचित या आवश्यक हो, करणीय; काटने योग्य; नष्ट करने योग्य। पु० करणीय कार्य, फर्ज। **–मूढ**–वि० जो घबराहटके कारण अपने कर्तव्यका निश्चय न कर सके।

कर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) करनेवाला, बनानेवाला। पु० विधाता, ब्रह्मा; ईश्वर; करनेवाला; क्रियाके करनेवालेका बोधक कारक (व्या०)। **–धर्ता**–पु० सब कुछ करने-धरनेवाला, वह जिसे सब कुछ करनेका अधिकार हो। **–(र्तृ)प्रधान**–वि० जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०)। **–वाचक**–वि० कर्ताको बतानेवाला (व्या०)। **–वाच्य**–पु० क्रियाका वह रूप जिसमें कर्ताकी प्रधानता हो (व्या०)।

कर्तार–पु० कर्ता; ईश्वर।

कर्तृक–वि० (सं०) करनेवाला (समासमें–'माघकर्तृक'–माघ है कर्ता जिसका)।

कर्तृका–स्त्री० (सं०) छुरी; कटारी।

कर्तृत्व–पु० (सं०) कार्य; करनेवालेकी अवस्थामें होना।

कर्त्रिका, कर्त्री–स्त्री० (सं०) छुरी; कैंची।

कर्द–पु० (सं०) कीचड़। स्त्री० छुरी।

कर्दट–पु० (सं०) कीचड़; पद्मकंद।

कर्दन–पु० (सं०) पेटकी गुड़गुड़ाहट।

कर्दम–पु० (सं०) कीचड़; मांस; पाप (ला०); एक प्रजापति।

कर्दमक–पु० (सं०) एक तरहका चावल; साँपका एक भेद।

कर्दमाटक–पु० (सं०) विष्ठा फेंकनेका स्थान।

कर्दमित–वि० (सं०) कीचड़वाला।

कर्दमी–स्त्री० (सं०) चैत्र-पूर्णिमा।

कर्नल–पु० (अं०) सेनाका एक अफसर, करनैल।

कर्नेता*–पु० घोड़ोंका एक भेद।

कर्पट–पु० (सं०) फटा, मैला कपड़ा, चीथड़ा।

कर्पटिक, कर्पटी(टिन्)–वि० (सं०) जो चीथड़े लपेटे हो; भिखारी।

कर्पण–पु० (सं०) एक शस्त्र।

कर्पर–पु० (सं०) कड़ाह; कपाल; ठीकरा; एक हथियार; गूलर।

कर्पराल–पु० (सं०) पीलु वृक्ष।

कर्परी–स्त्री० (सं०) एक उपधातु; खपरिया।

कर्पास–पु० (सं०) कपास।

कर्पासी–स्त्री० (सं०) कपासका पौधा।

कर्पूर–पु० (सं०) कपूर। **–गौर**–वि० कपूर-जैसा सफेद। **–गौरी**–स्त्री० एक रागिनी। **–नालिका**–स्त्री० मैदेसे बननेवाला एक पकवान। **– मणि**–पु० दवाके काम आनेवाला एक पत्थर; एक रत्न।

कर्पूरक–पु० (सं०) कचूर।

कर्फर–पु० (सं०) आईना।

कर्बर–पु० (सं०) दे० 'कर्वर'।

कर्बुदार–पु० (सं०) लसोड़ा; सफेद कचनार; तेंदूका पेड़।

कर्बुदारक–पु० (सं०) श्लेष्मांतक वृक्ष।

कर्बुर–वि० (सं०) चितकबरा, रंग-विरंगा। पु० चितकबरा रंग; पाप; राक्षस; सोना; जल; धतूरा; कचूर।

कर्बुरा–स्त्री० (सं०) वनतुलसी।

कर्बुरित–वि० (सं०) दे० 'कर्बुर'।

कर्बुरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

कर्म(न्)–पु० (सं०) शास्त्रविहित नित्य-नैमित्तिक आदि कर्म; काम; क्रिया; धंधा; आचरण; वह पूर्वकृत कर्म जिसका फल इस जन्ममें मिल रहा हो; भाग्य; वह जिसपर क्रियाका फल पड़े (व्या०)। **–कर**–पु० मजदूर, उजरतपर काम करनेवाला; प्राचीन कालकी एक सेवावृत्तिपरायण जाति, कमकर; यम। **–करी**–स्त्री० मजदूरिन, दासी। **–कांड**–पु० वेदका वह विभाग जिसमें नित्य-नैमित्तिक आदि कर्मोंका विधान है; यज्ञ, संस्कारादिकी विधि बतानेवाला शास्त्र। **–कांडी(डिन्)**–पु० कर्मकांडका ज्ञाता, पुरोहित। **–कार**–पु० मजदूर; वेगार; कारीगर; लुहार। **–कारक**–पु० कारकका एक भेद (व्या०)। **–कार्मुक**–पु० मजबूत धनुष। **–कीलक**–पु० धोवी। **–क्षम**–वि० काम करनेमें समर्थ। **–क्षय**–पु० विपरीत कार्य करनेसे पूर्वकृत कर्मका नाश। **–क्षेत्र**–पु० कर्मभूमि, कार्यक्षेत्र। **–गुण**–पु० कामकी अच्छाई-बुराई; कर्म-सामर्थ्य (कौ०)। **–गुणापकर्ष**–पु० ठीक कार्य न होना; कर्म-सामर्थ्य कम होना। **–गृहीत**–वि० जो कोई काम (चोरी आदि) करता हुआ पकड़ा जाय। **–घात**–पु० कर्मक्षय। **–चांडाल**–पु० वह जो कर्मसे चांडाल माना जाय; नीच कर्म करनेवाला–वशिष्ठके अनुसार असूयक, पिशुन (चुगुलखोर), कृतघ्न और दीर्घरोषक (बहुत दिनोंतक वैर, बुग्ज रखनेवाला) कर्मचांडाल है। **–चारी(रिन्)**–पु० काम करनेवाला, अहलकार। **–चोदना**–स्त्री० कर्मप्रेरक हेतु, कर्मप्रेरणा। **–ज**–वि० कर्मसे उत्पन्न। पु० कर्मफल। **–धारय**–पु० तत्पुरुष समासका एक भेद जिसमें विशेष और विशेषण समानाधिकरण हों। **–देव**–पु० पुण्यकर्मसे देवपद प्राप्त करनेवाला (आजान देवसे भिन्न)। **–नाशा**–स्त्री० शाहाबाद जिलेकी एक नदी जिसके जलस्पर्शसे समस्त पुण्यका नाश होना माना जाता है। **–निष्ठ**–वि० शास्त्रविहित कर्मोंमें आस्था रखनेवाला, उन्हें श्रद्धापूर्वक करनेवाला। **–निष्पत्तिवेतन**–पु० काम हो जानेपर दिया जानेवाला वेतन; कार्यकी उत्तमता या निकृष्टताके अनुसार दिया जानेवाला वेतन (कौ०)। **–निष्पाक**–पु० परिश्रमी मजूरोंसे अंततक काम करवाना। **–न्यास**–पु० कर्मत्याग। **–पंचमी**–स्त्री० एक रागिनी। **–पाक**–पु० पूर्वकृत कर्मोंका फल। **–प्रधान**–वि० जिस (क्रिया-वाक्य)में कर्मकी प्रधानता हो–क्रियाका लिंग और वचन कर्मका अनुसरण करता हो। **–फल**–पु० पूर्वजन्ममें किये हुए कर्मोंका फल (सुख-दुःख)। **–बंध,–बंधन**–पु० जन्म-मरणका बंधन। **–भू,–भूमि**–स्त्री० यज्ञादि कर्मोंके लिए उपयुक्त भूमि; आर्यावर्त। **–भोग**–पु० कर्मफल; कर्मफलके रूपमें प्राप्त दुःख। **–मार्ग**–पु० विहित कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्त करनेका मार्ग। **–मास**–पु० ३० सावन दिनोंका एक प्रकारका महीना, सावन मास। **–मूल**–पु० कुश। **–युग**–कलियुग। **–योग**–पु० कर्ममार्गकी साधना। **–योगी(गिन्)**–पु० कर्ममार्गकी साधना करनेवाला। **–रंग**–पु० कमरख। **–रेख**–स्त्री० (हिं०) कर्मकी रेखा, तकदीर। **–रोधन**–पु० (स्ट्राइक) किसी अन्याय आदिके विरोधमें काम-काज आदि बंद कर देना, हड़ताल। **–वध**–पु० चिकित्सागत असावधानी जिससे हानि पहुँचे (कौ०)-। **–वाच्य**–वि० (क्रियाका वह रूप) जिसमें कर्मकी प्रधानता हो (व्या०)। **–वाद**–पु० कर्मका फल अवश्य होता और भोगना पड़ता है–यह मत, प्रारब्धवाद। **–विपाक**–पु० पिछले जन्मोंमें किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका फल; किस पापका कौनसा दुःख है–यह बतानेवाला शास्त्र। **–वीर**–कर्तव्य, लोकहितके कर्म करनेमें वीर; विघ्न-बाधाओंसे भिड़ते हुए कर्तव्य-पालन करनेवाला, पुरुषार्थी। **–शाला**–स्त्री० (वर्क्स, वर्कशॉप) लोहे, लकड़ी आदिका या निर्माण-संबंधी अन्य काम करनेका स्थान; कारखाना। **–शील**–वि० उद्योगी; परिश्रमी। **–शूर**–वि० कर्मवीर। **–शौच**–पु० विनय; नम्रता। **–संग**–पु० कर्मों और उनके फलोंमें आसक्ति। **–संधि**–स्त्री० दो राज्योंमें दुर्गरचनाके विषयमें की जानेवाली संधि। **–सन्न्यास**–पु० कर्मत्याग। **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० कार्यविशेषको देखनेवाला चश्मदीद गवाह; मनुष्यके भले-बुरे कर्मोंके साक्षी देवता (सूर्य, चंद्र, यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। **–स्थान**–पु० कार्यालय, दफ्तर; कारखाना; कुंडलीमें लग्नसे दसवाँ स्थान। **–हीन**–वि० जिससे कोई अच्छा कार्य न हो; हतभाग्य।

कर्मकार-हानिपूरण-अधिनियम–पु० (वर्कमेंस कंपेनसेशन ऐक्ट) दे० 'श्रमिक-क्षति-पूर्ति अधिनियम'।

कर्मचारि-तंत्र–(ब्यूरोक्रैसी) दे० 'अधिकारिराज्य', अधिकारि-तंत्र, नौकरशाही।

कर्मचारिवृंद–पु० (स्टाफ) किसी प्रधान अधिकारीके नीचे काम करनेवाले (किसी संस्था आदिके) कर्मचारियोंका समूह, अमला।

कर्मठ–वि० (सं०) काममें कुशल; मुस्तैदीसे काम करनेवाला; शास्त्रविहित कर्मोंमें लगा रहनेवाला, कर्मनिष्ठ।

कर्मणा, कर्मतः(तस्)–अ० (सं०) कर्मसे, कर्म द्वारा।

कर्मण्य–वि० (सं०) कर्मकुशल; उद्यमी। पु० कार्यनिष्ठा; सक्रियता। वि० सक्रिय, क्रियाशील।

कर्मण्या–स्त्री० (सं०) पारिश्रमिक।

कर्मना*–अ० दे० 'कर्मणा'।

कर्मांत–पु० (सं०) कार्य-समाप्ति; कार्य-संपादन; अन्न-भांडार; जोती हुई जमीन; कारखाना।

कर्मांतिक–पु० (सं०) कर्मचारी।

कर्माजीव–पु० (सं०) किसी पेशेसे जीविका-निर्वाह करनेवाला।

कर्मादान–पु० (सं०) श्रावकोंके लिए निषिद्ध १५ कर्मोंमेंसे कोई।

कर्मापरोध–पु० (सं०) रोगीके उपचारमें ढीला-ढाली।

कर्मार–पु० (सं०) कर्मकार; कारीगर; लुहार; बाँस; कमरख।

कर्माश्रया भृति–स्त्री० (सं०) कामके अनुसार वेतन या मजदूरी।

कर्मिष्ठ–वि० (सं०) कर्मकुशल; कर्मनिष्ठ।

कर्मी(मिन्)–वि० (सं०) काम करनेवाला; उद्यमी; कारीगर; फलकी आकांक्षासे कर्म करनेवाला।

कर्मीर–वि० (सं०) चितकबरा। पु० नारंगी रंग।

कर्मेंद्रिय–स्त्री० (सं०) वह इंद्रिय जिससे कोई काम किया जाय (हाथ, पाँव, वाणी, गुदा और उपस्थ)।

कर्मोपघाती(तिन्)–वि० (सं०) काम बिगाड़नेवाला (कौ०)।

कर्रा–वि० कड़ा, कठिन। (स्त्री० 'कर्री'।) पु० बुनाईके लिए सूतको फैलाकर तानना।

कर्राना–अ० क्रि० कड़ा होना, सख्त होना।

कर्वट–पु० (सं०) मंडी, बाजार; नगर; जिलेका मुख्य स्थान; पहाड़की ढाल।

कर्वर–पु० (सं०) पाप; बाघ; राक्षस। वि० चितकबरा।

कर्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; रात्रि; राक्षसी; व्याघ्री।

कर्शन–वि० (सं०) क्षीण करनेवाला। पु० अग्नि।

कर्शित–वि० (सं०) क्षीण, दुबला-पतला।

कर्ष–पु० (सं०) खींचना; जोतना; जुताई; कूँड़; खरोंच; १६ माशेका मान (५रत्तीके माशेसे); पुराने जमानेका एक सिक्का, हृण; जोश; ताव। **–फल**–पु० विभीतक वृक्ष। **–फला**–स्त्री० आमलकी।

कर्षक–वि० (सं०) खींचनेवाला। पु० किसान।

कर्षण–पु० (सं०) खींचना; जोतना; झुकाना; कृषिकर्म; खरोंचना; समय बढ़ाना; क्षति पहुँचाना; जोती हुई जमीन।

कर्षणि–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी स्त्री।

कर्षणी–स्त्री० (सं०) खिरनीका पेड़।

कर्षना*–स० क्रि० खींचना; तानना।

कर्षिणी–स्त्री० (सं०) घोड़ेकी लगाम; खिरनीका पेड़।

कर्षित–वि० (सं०) खींचा हुआ; जोता हुआ; क्षीण; पीड़ित। (स्त्री० 'कर्षिता'।) **–(ता)भूमि**–स्त्री० शत्रु द्वारा पूरी

तरह निचोड़ी हुई भूमि ।

कर्षी(षिन्)–वि० (सं०) खींचनेवाला, आकर्षक । पु० हल जोतनेवाला, हलवाहा ।

कर्षू–स्त्री० (सं०) कूँड़; जुताई; नदी; नहर । पु० कंडेकी आग; खेती; जीविका, रोजी ।

कर्हि–अ० (सं०) कब । **–चित्**–अ० कभी, किसी समय ।

कलंक–पु० (सं०) धब्बा, दाग; काला दाग; लांछन, बदनामी; चंद्रमामें दिखाई देनेवाला काला दाग; दोष; लोहेका मोरचा; पारेकी कजली । **–का टीका**–बदनामीका धब्बा, लांछन ।

कलंकष–पु० (सं०) सिंह; एक वाद्य ।

कलंकषी–स्त्री० (सं०) सिंहनी ।

कलंकित–वि० (सं०) कलंकयुक्त; मोरचा लगा हुआ ।

कलंकी(किन्)–वि० (सं०) जिसे कलंक लगा हो; बदनाम । पु० चंद्रमा ।

कलंकुर–पु० (सं०) पानीका भँवर, आवर्त ।

कलँगा–पु० वरतनपर नक्काशी करनेकी छेनी; एक पौधा ।

कलँगी–स्त्री० दे० 'कलगी' ।

कलंगो|–स्त्री० पहाड़ी या जंगली भाँग ।

कलंज–पु० (सं०) चिड़िया; जहरीले अस्त्रसे मारा हुआ मृग या पक्षी; ऐसे पशु-पक्षीका मांस; तंबाकूका पौधा ।

कलंदर–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति; उस जातिका व्यक्ति ।

क़लंदर–पु० (अ०) मुसलमान साधुओंका एक समुदाय; उस समुदायका व्यक्ति; बंदर-भालू नचानेवाला; ईश्वरके ध्यान-भजनमें मस्त रहनेवाला; फक्कड़; खेमेका आँकुड़ा ।

क़लंदरा–पु० (अ०) एक तरहका रेशमी कपड़ा; खेमेका आँकुड़ा ।

क़लंदरी–वि० (फा०) कलंदरका; कलंदरकासा । स्त्री० कलंदरकी वृत्ति, पेशा; कलंदरा लगी हुई छोलदारी; एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

कलंदिका–स्त्री० (सं०) बुद्धि, समझ ।

कलंब–पु० (सं०) वाण; कदंब; साग आदिका डंठल ।

कलंबक–पु० (सं०) एक तरहका कदंब ।

कलंबिका–स्त्री० (सं०) गर्दन, पीठकी ओरका गलेका भाग; एक साग ।

कलंवुट–पु० (सं०) ताजा मक्खन ।

कल–वि० (सं०) अस्पष्ट मधुर, मंद मधुर (ध्वनि), सुहावना; श्रुतिमधुर, कोमल; ऐसा शब्द उत्पन्न करनेवाला; कमजोर; अजीर्ण । पु० अस्पष्ट मधुर ध्वनि; वीर्य; पितरोंका एक वर्ग; चार मात्राओंका काल; सालका पेड़ । **–कंठ**–मीठी आवाज-वाला । पु० कोयल; कबूतर; हंस । **–कल**–पु० झरने या नदीके प्रवाह आदिकी कोमल मधुर ध्वनि; अनेक लोगोंके एक साथ वोलनेकी आवाज; शिव; धूना । **–कीट**–पु० संगीतमें एक ग्राम । **–कूजिका,–कूणिका**–स्त्री० मीठे वोल वोलनेवाली; पुंश्चली । **–घोष**–पु० कोयल । **–ज**–पु० मुर्गा ।**–तूलिका**–स्त्री० पुंश्चली । **–धूत**–पु० चाँदी । **–धौत**–पु० सोना; चाँदी; मंद, मधुर ध्वनि । वि० सुनहला । **–ध्वनि**–स्त्री० कोमल, मधुर ध्वनि । पु० कोयल; मोर; कबूतर । **–नाद**–पु० हंस । वि० मंद, मधुर स्वरवाला । **–बल***–वि० अस्पष्ट उच्चारित (वचन) । **–रव**–पु० कोमल, मधुर ध्वनि । **–रौ***–पु० दे० 'कलरव' । **–लिपि**–स्त्री० सोनेके पानीकी लिखावट; सुनहरी रेखाओंसे अलंकृत लेख । **–हंस**–पु० हंस, राजहंस; उत्तम राजा; परब्रह्म; राजपूतोंकी एक जाति । **–हास**–पु० केशव-दासके मतसे हासका एक भेद ।

कल–अ० अगले या पिछले दिन, आगे चलकर, पीछे । **–का–कुछ** ही दिनोंका, विलकुल हालका (कलकी वात) । **–का छोकरा**–(वक्तासे) उम्रमें वहुत छोटा; नादान, नासमझ । **–की कलपर है**–आगेकी वात आगे, यथासमय, देखी जायगी । **–को–कल**, कलके दिन ।

कल–'काला'का समासमें व्यवहृत रूप । **–चिड़ा**–पु० एक चिड़िया जिसका पेट काला और चोंच लाल होती है । (स्त्री० 'कल-चिड़ी' ।) **–चोँचा**–पु० वह कबूतर जिसकी सारी देह सफेद पर चोंच काली हो । **–जिब्भा**–वि० काली जीभवाला; जिसकी कही हुई अमंगल बातें सत्य हो जायँ । **–जीहा***–वि० दे० 'कल-जिब्भा' । **–झँवाँ**–वि० स्याह, काला । **–ठोरा**–पु० कलचोंचा कबूतर । **–दुमा,–दुम्मा**–वि० काली पूँछवाला । पु० काली दुम-वाला कबूतर । **–पोटिया**–स्त्री० एक चिड़िया । **–मुँहा**–वि० काले मुँहवाला; कलंकित । (स्त्री० 'कलमुँहीं' ।) **–सिरी**–स्त्री० एक चिड़िया जिसके सिरका रंग स्याह होता है । वि०, स्त्री० लड़ाकी (स्त्री) ।

कल–स्त्री० चैन, आराम, शांति; इतमीनान; युक्ति, कौशल; यंत्र, मशीन; पेच-पुरजा; वंदूकका घोड़ा; करवट, वल; अंग । **–दार**–पु० कलसे ढला हुआ सिक्का, रुपया । वि० कल-पेचवाला । **–वल**–पु० दाव-पेंच; जोड़-तोड़ । मु०**–ऐँठना,–घुमाना**–कल चलाना; किसीके मनको अभीष्ट दिशामें मोड़ देना; पट्टी पढ़ाना । **–वेकल होना**–बेचैन होना; किसी पेच-पुरजेका ढीला होना, अपनी जगहसे हट जाना । **–हाथमें होना**–नकेल हाथमें होना, चाहे जिधर घुमानेमें समर्थ होना ।

क़लई–स्त्री० (अ०) राँगा; राँगेका मुलम्मा जो ताँवे-पीतलके वरतनोंपर किया जाता है; लेप; मुलम्मा; चूना; चूनेकी पुताई; सफेदी; असलीयतको छिपानेवाली वस्तु, वनावट; चाल, तदवीर । **–गर**–पु० कलई करनेवाला । **–दार**–वि० जिसपर कलई की गयी हो । **–का कुश्ता**–राँगेका भस्म । **–का चूना**–पत्थरका, सफेदीके काम आनेवाला चूना । मु०**–खुलना**–असलीयतका प्रकट हो जाना, पोल खुलना ।

कलक्र–पु० (सं०) एक तरहकी मछली; गद्यकी एक शैली ।

क़लक–पु० (अ०) दुःख, रंज; पछतावा, ग्लानि; विकलता, वेचैनी ।

कलकना*–अ० क्रि० चिघाड़ना, चीत्कार करना ।

कलकान, कलकानि*–स्त्री० दुःख; परेशानी; कलह ।

कलक्टर–पु० (अं०) जिलेमें मालका सबसे वड़ा अफसर ।

कलक्टरी–स्त्री० कलक्टरकी कचहरी; कलक्टरका पद या कार्य। वि० कलक्टरका; कलक्टरसे संवद्ध ।

कलगा–पु० मरसेकी तरहका एक पौधा ।

कलगी–स्त्री० (फा०) टोपी, पगड़ीमें लगाया जानेवाला तुर्रा या फुँदना; मोर या मुर्गेके सिरपरकी चोटी; सिरका एक गहना; ऊँची इमारतका शिखर; लावनीकी एक तर्ज ।

कलची–स्त्री० एक कँटीली झाड़ी, कंजा ।

कलचुरी–पु० दक्षिण भारतका एक राजवंश ।

कलछा–पु० वड़ी कलछी ।

कलछी–स्त्री० लंवी डाँड़ीका गोल कटोरीवाला चम्मच जिससे दाल आदि निकालते हैं ।

कलछुला–पु० लंवी डाँड़ीका कलछा जिससे भड़भूजा भाड़से जलती वालू निकालता है ।

कलजुग–पु० दे० 'कलियुग' ।

कलट–पु० (सं०) मकानकी छाजन ।

कलट्टर*–पु० दे० 'कलक्टर' ।

कलत–वि० (सं०) खल्वाट, गंजा ।

कलत्र–पु० (सं०) पत्नी, भार्या; श्रोणि; दुर्ग । **–गर्हिसैन्य**–पु० परिवारकी चिंता या वशमें रहनेवाली सेना ।

कलथरा|–पु० जुलाहोंका एक लकड़ीका औजार, चक्र ।

कलन–पु० (सं०) ग्रहण; जानना, समझना; शब्द करना; गणितकी क्रिया; गर्भकी विलकुल पहली, शुक्रशोणितके संयोगके वादकी अवस्था; धब्बा; दोष; बेंत ।

कलना–स्त्री० (सं०) ज्ञान; ग्रहण, लेना; छोड़ना, मोचन ।

कलप–पु० दे० 'कलफ़' और 'कल्प'; खिजाब । **–वेल,–वेलि**–स्त्री० कल्पलता, कल्पवृक्ष ।

कलपना–अ० क्रि० विलाप करना, अंतर्वेदनाको शब्दोंमें व्यक्त करते हुए रोना; विसूरना; दुःख पाना; कुढ़ना; आह करना । * स० क्रि० काटना–'कलपौ माथ वेगि निस्तरऊँ'–प०; कल्पना करना; वनाना, गढना । स्त्री० आह, हाय (पड़ना); दे० 'कल्पना' ।

कलपाना–स० क्रि० कलपनेका कारण होना; सताना, रुलाना।

कलप्पा–पु० एकाध नारियलके भीतर पाई जानेवाली सफेद वस्तु (नारियलका मोती)।

कलफ़–पु० धुले कपड़ेमें कड़ाई, चिकनाई लानेके लिए लगायी हुई लेई या माँड़ी; चेहरेपरका काला धब्बा। **–दार**–वि० जिसमें कलफ दिया गया हो।

कलब†–पु० टेसूके फूलसे वनाया जानेवाला एक रंग।

कलबल–पु० दाँवपेंच, कार्य-साधनकी युक्ति। स्त्री० अस्पष्टध्वनि, शोर।

कलबीर–पु० एक पौधा जिसकी जड़ रेशमपर रंग चढ़ानेके काम आती है, अकलबीर।

कलबूत–पु० ढाँचा जिसपर चढ़ाकर टोपियाँ, जूते आदि तैयार किये जाते हैं; गोलंवर।

कलभ–पु० (सं०) हाथीका वच्चा; हाथी; ऊँटका बच्चा; धतूरा। **–वल्लभ**–पु० पीलूका पेड़।

कलभक–पु० (सं०) हाथीका वच्चा।

कलभी–स्त्री० (सं०) हाथी या ऊँटका वच्चा (मादा); एक तरकारी, चंचु।

कलम–स्त्री० (सं०) लेखनी, दे० 'कलम'। पु० एक तरहका धान जिसका चावल महीन और सुगंधित होता है; चोर; वदमाश।

क़लम–स्त्री० (अ०) काटना; सरकंडे, नरसल आदिका टुकड़ा जिससे लिखनेका काम लेते हैं; लकड़ी, सेलुलाइट आदिका गोल लंवोतरा टुकड़ा जिसमें लोहे आदिकी जीभ (निब) लगाकर लिखते हैं, लेखनी; किसी पेड़-पौधेकी टहनी जो नया पेड़ तैयार करनेके लिए काटी जाय; ऐसी टहनीसे लगाया हुआ पौधा; कनपटियोंपर सुंदरताके लिए छोड़े और कुछ लंवाईमें कटे हुए वाल; चित्र वनाने या रंग भरनेकी कूची; चित्रशैली (पहाड़ी कलमके चित्र); काँच या स्फटिकका पहलदार लंवोतरा टुकड़ा; नक्कासी या खुदाई करनेका औजार; हीरेकी कनी जड़ी हुई लकड़ी जिससे शीशा काटा जाता है; शोरे, नौसादर आदिका रवा; लिखावट, लिपि; आदेश, हुक्म; एक तरहकी फुलझड़ी। वि० कटा, तराशा हुआ। **–कसाई**–पु० (हिं०) वह जो लिखने-पढ़नेमें कठोरतासे काम ले, क्रूर। **–कार**–पु० लेखक; चित्रकार; चित्रोंकी रेखाओंमें रंग भरनेवाला; एक तरहका बाफता। **–कारी**–स्त्री० कलमकी कारीगरी; कलमसे वनाये हुए वेल-बूटे। **–कीली**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच। **–ज़द**–वि० कटा हुआ। **–तराश**–पु० कलम बनानेका चाकू। **–दान**–पु० काठ, पीतल आदिकी संदूकची या खुला आधार जिसमें कलम-दावात रखी जाय। **–बंद**–वि० लिखा हुआ, लिपिबद्ध। पु० कूंचीपर वाल बाँधनेवाला। **–रौ**–स्त्री० राज्य, सल्तनत। मु०–**करना**–काटना; छाँटना। **–खीँचना**–लिखे हुएको काटना। **–घसीटना,–चलाना**–लिखना। **–तोड़ना**–रचनामें ऐसी सुंदर, अनूठी वात कहना जिससे अधिक सुंदर अनूठी वात न कही जा सके, रचनाकौशलकी पराकाष्ठा कर देना। **–दान देना**–मंत्री या मीर-मुंशीका पद देना। **–फेरना**–लिखे हुएको काटना, रद्द करना। **–रोपना**–(ग्रैफ्टिंग) एक पौधेकी टहनीको लेकर अन्य पौधेकी शाखापर बाँधना। इस विधिसे नवीन गुणोंवाली पौधोंकी नस्लें तैय्यार की जाती हैं।

कलमख⁕–पु० दे० 'कल्मष'।

कलमना⁕–स० क्रि० कलम करना, काटना।

कलमलना⁕–अ० क्रि० दे० 'कलमलाना'।

कलमलाना–अ० क्रि० कसमसाना।

कलमा–पु० (अ०) सार्थक शब्द; वात, उक्ति; वह वाक्य जो मुसलमानोंके धर्म-विश्वासका मूल मंत्र है–'ला इलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मद रसूलिल्लाह'। **–ए-खैर**–पु० अच्छी, भली बात; साधारण प्रशंसा। **–गो**–पु० कलमा पढ़नेवाला, मुसलमान। मु० **–पढ़ना**–इसलाम धर्म स्वीकार करना; ईमान लाना। **(किसीका)–पढ़ना,–भरना**–(किसीका) भक्त, अनुगत, प्रेमी, प्रशंसक होना; (किसीके) रूप-गुणपर मुग्ध होना। **–पढ़ाना**–इस्लामकी दीक्षा देना, मुसलमान वनाना। **–(मे)का शरीक**–सहधर्मी, धर्मबंधु (मुसलमान)।

कलमास⁕–वि० दे० 'कल्माष'।

क़लमी–वि० (फा०) हस्तलिखित; कलम काटकर लगाया हुआ (पेड़); रवादार। **–शोरा**–पु० लंबे रवेवाला और अधिक साफ शोरा।

कलमुँडी†–स्त्री० कलैया (कलमुँही खाकर––'गद्य भारती')।

कलमुँहा–दे० 'कल'के साथ।

कलल–पु० (सं०) गर्भका आरंभिक रूप जव वह केवल कुछ कोषोंका गोला रहता है; गर्भाशय। **–ज**–पु० राल; गर्भ।

कलवरिया–स्त्री० कलवारकी दुकान, शराबखाना।

कलवार–पु० एक हिंदू जाति जो पहले मुख्यतः शराब बनाने-वेचनेका पेशा करती थी; उस जातिका व्यक्ति, कलाल। (स्त्री० 'कलवारिन'।)

कलविंक–पु० (सं०) गौरवा; कोयल; कलंक; दाग, धब्बा; तरबूज; सफेद चँवर। **–स्वर**–पु० एक तरहकी समाधि।

कलश, कलस–पु० (सं०) घड़ा, कलसा; मंदिर आदिका शिखर, कँगूरा; ८ सेरका मान; चोटी (ला०); सिरमौर। **–जन्मा (न्मन्),–भव**–पु० अगस्त्य मुनि।

कलशी, कलसी–स्त्री० (सं०) छोटा घड़ा, गगरा; छोटा कँगूरा; पृष्ठपर्णी; एक बाजा। **–सुत**–पु० अगस्त्य मुनि।

कलसरी–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच।

कलसा–पु० घड़ा; कँगूरा।

कलहंतरिता–स्त्री० दे० 'कलहांतरिता'।

कलह–पु० (सं०) झगड़ा, लड़ाई; युद्ध; रास्ता; तलवारका म्यान। **–कार**–वि० झगड़ालू, लड़ाका। **–कारिका**–स्त्री० एक पक्षी। **–कारी(रिन्)**–वि० कलह करनेवाला। **–प्रिय**–वि० झगड़ालू। पु० नारद। **–प्रिया**–वि० स्त्री० लड़ाकी। स्त्री० मैना।

कलहनी–वि० स्त्री० झगड़नेवाली।

कलहांतरिता–स्त्री० (सं०) पति या नायकका अपमान कर पीछे पछतानेवाली नायिका (सा०)।

कलहारी–वि०, स्त्री० झगड़नेवाली।

कलही(हिन्)–वि० (सं०) झगड़ालू।

कलाँ–वि० (फा०) बड़ा; दीर्घाकार।

कलांकुर–वि० (सं०) सारस, कलाकुर; कंसासुर।

कलांतर–पु० (सं०) दूसरी कला; व्याज; लाभ।

कलांवि, कलांविका–स्त्री० (सं०) कर्ज देना; सूदखोरी।

कला–स्त्री० (सं०) अंश; छोटा भाग; चंद्रमंडलका सोलहवाँ भाग; दे० 'षोडश कला'; राशिके तीसवें अंशका साठवाँ भाग; कालका एक मान (१.६ मिनट); रक्त-मांस-मेद आदिको अलग रखनेवाली शरीरकी झिल्लियाँ; हुनर, गुण (कामशास्त्रके अनुसार ६४ कलाएँ मानी गयी हैं। वे ये हैं–१. गीत, २. वाद्य, ३. नृत्य, ४. नाट्च, ५. आलेख्य (चित्रकारी), ६. विशेषकच्छेद्य (ललाटपर तिलक बनाना), ७. तंडुल-कुसुमकलि-विकार (चावल तथा फूलोंका चौक बनाना), ८. पुष्पास्तरण (फूलोंकी सेज बनाना), ९. दशनवसनांगराग (दाँतों, कपड़ों तथा अंगोंको रंगना ··), १०. मणिभूमिका-कर्म (घर सजाना), ११. शयनरचना, १२. उदकवाद्य (जलतरंग बजाना), १३. उदकघात (गुलाबजलादि छिड़कना), १४. चित्रायोग (जवानको बूढ़ा, बूढ़ेको जवान बनाना), १५. माल्य-ग्रंथ-विकल्प (माला गूँथना), १६. केश-शेखरापीड-योजन (सिरपर फूल सजाना), १७. नेपथ्ययोग (वस्त्रभूषणादि पहनना), १८. कर्णपत्रभंग (कर्णफूलादि बनाना), १९. गंधयुक्ति (इत्र, फुलेल बनाना), २०. भूषणयोजन, २१. इंद्रजाल, २२. कौचुमार योग (कुरूपको सुंदर बनानेका उबटनादि तैयार करना), २३. हस्तलाघव, २४. चित्रशाकापूप-भक्ष्य-विकार-क्रिया (तरह-तरहके शाक, पूप, पकवानादि बनाना), २५. पानकरस-रागासव-योजन (शर्वत, आसवादि बनाना), २६. सूचीकर्म (सीनेका काम), २७. सूत्रक्रीडा (वेलबूटे काढ़ना), २८. प्रहेलिका, २९.

प्रतिमाला (अंत्याक्षरी), ३०. दुर्वाचकयोग (कठिनपदोंका अर्थ करना), ३१. पुस्तक-वाचन, ३२. नाटिकाख्यायिका-दर्शन (नाटक देखना, दिखलाना), ३३. काव्य-समस्यापूरण (समस्या-पूर्ति), ३४. पट्टिकावेत्र-बाण-विकल्प (नेवार, बाध आदिसे चारपाई बुनना), ३५. तर्कुकर्म, ३६. तक्षण, ३७. वास्तुविद्या, ३८. रूप्यरत्न-परीक्षा, ३९. धातुवाद (कीमियागिरी), ४०. मणिराग-ज्ञान (रत्नोंके रंग जानना), ४१. आकरज्ञान (खानों-की विद्या), ४२. वृक्षायुर्वेद-योग, ४३. मेष-कुक्कुट-लावक-युद्धविधि, ४४. शुकसारिका-प्रलापन, ४५. उत्सादन (उबटन लगाना), ४६. केशमार्जन-कौशल, ४७. अक्षरमुष्टिका-कथन (उँगलियोंके संकेतसे बोलना), ४८. म्लेच्छितक विकल्प (विदेशी भाषाएँ जानना), ४९. देशभाषाज्ञान, ५०. पुष्प-शकटिका-निमित्तज्ञान (दैवी लक्षण देखकर भविष्यकथन), ५१. यंत्र-मातृका (यंत्र बनाना), ५२. धारण-मातृका (स्मरण बढ़ाना), ५३. संपाठ्य (किसीके कुछ पढ़नेपर उसी प्रकार पढ़ देना), ५४. मानसीकाव्यक्रिया (मनमें काव्य कर सुनाते जाना), ५५. क्रियाविकल्प (क्रियाका प्रभाव बदल देना), ५६. छलितकयोग (ऐयारी करना), ५७. अभिधानकोषच्छंदोज्ञान, ५८. वस्त्रगोपन (कपड़ोंकी रक्षा), ५९. द्यूतविशेष, ६०. आकर्षण क्रीडा (पासा फेंकना), ६१. बालक्रीडाकर्म (बच्चोंको खिलाना), ६२. वैनायिकी विद्याज्ञान (विनय तथा शिष्टाचार), ६३. वैजयिकी विद्याज्ञान, ६४. वैतालिकी विद्याज्ञान; गाने-बजाने आदिकी विद्या; सुंदर रचना या उसकी रीति; ब्याज; स्त्रीका रज; अणु; भ्रूण; लगाव; नौका; छल-कपट; चाल, युक्ति–'केतो सोम कला करो, करो सुधाको दान'–दीनद०; लीला; मात्रा (छंद); यंत्र; * ज्योति, तेज; छटा, शोभा। **–कार**–पु० किसी कलाको जानने, उससे जीविका करनेवाला; ललित कलाओंमेंसे किसीको जानने, उससे जीविका करनेवाला, कलावंत, 'आर्टिस्ट'। **–कारिता,–कारी**–स्त्री० कलाकारका कार्य या पेशा; कलाकारका भाव या प्रवृत्ति। **–कुशल**–वि० किसी कलामें निपुण। **–कृति**–स्त्री० कलामयी रचना। **–केलि**–पु० कामदेव। स्त्री० कामक्रीड़ा। **–कौशल**–पु० कला-विशेषमें निपुणता; हुनर। **–क्षय**–पु० चंद्रमाका घटना। **–जंग**–पु० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–धर,–नाथ,–निधि**–पु० चंद्रमा; * कला-विद्। **–न्यास**–पु० एक तंत्रोक्त न्यास। **–बाज़**–पु० (हिं०) कलाबाजी करनेवाला; नटका काम करनेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० (हिं०) सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना, लौटनियाँ; नटविद्या। **–भृत्**–पु० चंद्रमा; कलाकार। **–मुख**–पु० (हिं०) चंद्रमा (दास०)। **–वाद**–पु० 'कला कलाके लिए' माननेवाला सिद्धांत।

कलाई–स्त्री० हाथमें हथेलीके जोड़के ऊपर, हथेली और पहुँचेके बीचका भाग, गट्टा; कलाई पकड़ने-छुड़ानेकी कसरत; सूतका लच्छा; पूला; हाथीके गलेमें लगायी जानेवाली रस्सी जिसमें पीलवान पैर फँसाता है; अलान।

कलाकंद–पु० एक तरहकी बरफी।

कलाकुल–पु० (सं०) हलाहल विष।

कलाचिक–पु०, **कलाची**–स्त्री० (सं०) कलाई; कलछी।

कलाटीन–पु० (सं०) खंजनकी जातिका एक जलपक्षी।

कलाद, कलादक–पु० (सं०) सोनार।

कलादा*–पु० हाथीकी गरदनपरका वह भाग जहाँ पीलवान बैठता है।

कलाधिक–पु० (सं०) मुर्गा।

कलानक–पु० (सं०) शिवका एक गण।

कलानुनादी(दिन्)–पु० (सं०) भ्रमर; गौरवा; कपिंजल; चातक।

कलाप–पु० (सं०) समूह; पूला; मोरकी पूँछ; एक गहना; करधनी; तरकश; बाण; चंद्रमा; एक अर्द्ध चंद्राकार अस्त्र; हाथीके गलेकी रस्सी; एक रागिनी।

कलापक–पु० (सं०) समूह; पूला; मोतियोंकी लड़ी; करधनी; चार ऐसे श्लोकोंका समूह जिनको मिलानेसे एक वाक्य होता है; हाथीके गलेकी रस्सी; ललाटपर अंकित होनेवाला सांप्रदायिक चिह्न।

कलापिनी–स्त्री० (सं०) मोरनी; रात; नागरमोथा।

कलापी(पिन्)–वि० (सं०) तरकशधारी; झुंडमें रहनेवाला, दुम फैलानेवाला (मोर)। पु० मोर; कोयल; वटवृक्ष; मोरोंके नाचनेका समय।

कलाबतून–पु० (तु०) कलाबत्तू।

कलाबतूनी–वि० कलाबत्तूका बना हुआ।

कलाबत्तू–पु० रेशमके धागेपर लपेटा हुआ सोने या चाँदीका तार; सोने-चाँदीका तार; कलाबत्तूका बना पतला फीता।

कलाबा–पु० (अ०) सूतका लच्छा या गोला; तकलीपर लिपटा हुआ सूत; हाथीके गलेकी रस्सी; हाथीकी गरदन।

कलाबीन–पु० असम राज्यका एक बड़ा तथा ऊँचा वृक्ष।

कलाम–पु० (अ०) वचन, उक्ति; बातचीत; रचना; वादा; उज्र, एतराज। **–(मे)पाक,–मजीद**–पु० कुरानशरीफ। **–मुल्लाह**–पु० कुरान।

कलामक–पु० (सं०) जाड़ेमें तैयार होनेवाला एक धान।

कलामत*–पु० कलावंत, संगीतज्ञ।

कलाय–पु० (सं०) मटर, केराव (एक कदन्न)। **–खंज**–पु० संधियोंका एक रोग।

कलायन–पु० (सं०) नर्तक।

कलार, कलाल–पु० दे० 'कलवार'।

कलाली–स्त्री० कलाल जातिकी स्त्री; कलालका पेशा या काम। पु० कलवार; आत्मा; परमात्मा।

कलावंत–पु० विधिवत् शिक्षाप्राप्त गायक या वादक। वि० कला-कुशल।

कलावती–वि०, स्त्री० (सं०) कलावाली, कला जाननेवाली; सुंदरी।

कलावा–पु० दे० 'कलाबा'।

कलाविक–पु० (सं०) मुर्गा।

कलाविकल–पु० (सं०) गौरवा पक्षी।

कलास–पु० (सं०) एक प्राचीन बाजा।

कलाहक–पु० (सं०) एक बाजा।

कलाही†–स्त्री० कलाई, पहुँचेका निचला भाग।

कलिंग–वि० (सं०) चतुर, धूर्त; कलिंग देशका। पु० प्राचीन भारतका एक जनपद; वहाँका निवासी; कुलंग; इंद्रजौ; सिरिस; वटवृक्ष; तरबूज; एक राग।

कलिंगक–पु० (सं०) इंद्रजौ; तरबूज।

कलिंगड़ा–पु० एक राग।

कलिंगा–स्त्री० (सं०) सुंदरी स्त्री।

कलिंज–पु० (सं०) चटाई; परदा।

कलिंद–पु० (सं०) वह पर्वत जिससे यमुना निकलती है; बहेड़ा; सूर्य। **–कन्या,–जा,–तनया,–नंदिनी,–सुता**–स्त्री० यमुना।

कलिंदी*–स्त्री० दे० 'कालिंदी'।

कलि–पु० (सं०) कलह, झगड़ा (बीसल०); युद्ध; चार युगोंमेंसे चौथा जिसकी आयु ४ लाख ३२ हजार मानव-वर्ष मानी जाती है; कलियुगका अधिष्ठाता असुर; पाप-बुद्धि; पासेका एक बिंदीवाला पहलू; बहेड़ा, वीर पुरुष; बाण। स्त्री० कली। * वि० काला। **–कर्म(न्)**–पु० संग्राम। **–कार,–कारण**–पु० नारद; पूतिकरंज। **–कारी**–स्त्री० कलियारी। **–काल**–पु० कलियुग। **–द्रुम,–वृक्ष**–पु० बहेड़ा। **–पुर**–पु० पद्मराग मणिका एक भेद; एक स्थान जहाँ पद्म रागकी खानि थी। **–प्रद**–पु० शराबकी दुकान। **–प्रिय**–वि० झगड़ालू। पु० नारद; बंदर। **–मल**–पु० पाप। **–*सरि**–स्त्री० कर्मनाशा नदी। **–युग**–पु० कलिकाल। **–युगाद्या**–स्त्री० माघकी पूर्णिमा (इससे कलियुगका आरंभ माना जाता है)। **–युगी**–वि० (हिं०) कलियुगका; कलियुगी बुद्धि, प्रवृत्तिवाला। **–वर्ज्य**–वि० जिसका कलियुगमें निषेध हो। पु० कलियुगमें निषिद्ध कर्म (अश्वमेध, गोमेध, सन्न्यास, मांसका पिंडदान और देवरसे नियोग)। **–हारी**–स्त्री० कलियारी।

कलिक–पु० (सं०) क्रौंच पक्षी।

कलिका–स्त्री० (सं०) कली; एक छंद; कला, अंश; वीणामूल।

कलिकान*–वि० हैरान, परेशान।

कलित–वि० (सं०) गृहीत; ज्ञात; प्राप्त; युक्त; विभूषित; गणना किया हुआ; ध्वनित; सुंदर।

क़लिया–पु० (अ०) पकाया हुआ रसेदार मांस।

कलियाना–अ० क्रि० कलियोंसे मुक्त होना; पक्षियोंका नया पंख निकलना।

कलियारी–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ या गाँठमें विष होता है और दवाके काम आता है।

कलिल–वि० (सं०) आवृत; मिला; हुआ; परिपूर्ण;...से प्रभावित; अभेद्य, घना। पु० वड़ी राशि।

कलींद, कलींदा–पु० तरवूज, कालिंद।

कली–स्त्री० (सं०) मुँह वँधा फूल, वोंडी; चिड़ियाका पहले निकलनेवाला छोटा पर; अप्राप्तयौवना कन्या (ला०); (हिं०) कुर्ते आदिमें लगनेवाला तिकोना कपड़ा; पत्थर आदिका फूंका हुआ टुकड़ा जिससे चूना वनाया जाता है। मु० **–फूटना**–चिड़ियाके पहले परोंका निकलना।

कलीट*–वि० काला, कलूटा।

कलीरा|–पु० कौड़ियों, छुहारों आदिको गूँथकर वनाया हुआ हार।

क़लील–वि० (अ०) थोड़ा, कम; छोटा।

कलीसा–पु० (यू० 'इकलीसिया') गिरजा, ईसाइयोंका उपासना-मंदिर।

कलीसाई–वि० कलीसेसे संवद्ध। पु० ईसाई।

कलीसिया–पु० एक ईसाई संप्रदाय।

कलुआवीर–पु० झाड़-फूंक आदिके मंत्रोंसे आनेवाला एक प्रेतदेव।

कलुक्क–पु० (सं०) एक वाद्य, झाँझ।

कलुक्का–स्त्री० (सं०) सराय; उल्का।

कलुख*–पु०, **कलुखाई***–स्त्री० दे० 'कलुष'।

कलुखी*–वि० दोषी, कलुषयुक्त।

कलुष–पु० (सं०) मैल, गंदगी; पाप; क्रोध; भैंसा। वि० मैला, गंदा; पापी; निंदित; क्रुद्ध; क्रूर। **–चेता(तस्)**–वि० दुष्ट। **–योनिज**–वि० वर्णसंकर।

कलुषाई*–स्त्री० दोष; अपवित्रता।

कलुषित, कलुषी(षिन्)–वि० (सं०) कलुषयुक्त; रुष्ट; क्षुब्ध; दुष्ट।

कलूटा–वि० काले रंगका, काला।

कलूला*–पु० कुल्ली।

कलेंडर–पु० (अं०) तिथिपत्र।

कलेऊ*–पु० दे० 'कलेवा'।

कलेक्टर–पु० (अं०) दे० 'कलक्टर'।

कलेजई–पु० चुनौटिया रंग। वि० कलेजई रंगका।

कलेजा–पु० प्राणियोंका एक भीतरी अवयव जो सीनेके अंदर बाँयी ओर रहता है और जिससे पित्त बनता और दूषित रक्त शुद्ध होता है, यकृत, जिगर; छाती, दिल; साहस, हिम्मत; अति प्रिय व्यक्ति या वस्तु। मु० **–उछलना**–हर्ष, उद्वेग, आशंका आदिसे दिलका धड़कना। **–कटना**–विपादिसे आँतोंमें छेद होना; दिलको चोट पहुँचना; खूनी दस्त आना। **–कवाब होना**–दिल जलना; अति दुःख, संताप अनुभव करना। **–काँपना**–दिल दहलना, डरसे काँप जाना। **–काढ़ना,–निकालना**–वेदना पहुँचाना; प्रिय वस्तु या सर्वस्व ले लेना। **–खाना**–सताना, पीड़ा देना; किसी चीजको वार-वार माँगकर कष्ट पहुँचाना। **–खिलाना**–प्रिय वस्तु देना; आदर-सत्कारमें कोई वात उठा न रखना। **–खुरचना**–बहुत भूख लगना; प्रिय वस्तुके पृथक् होनेपर व्याकुल होना। **–छलनी होना**–ताने, व्यंग्य-बाणोंसे कलेजा छिद जाना। **–छिदना,–बिधना**–कड़ी बातसे जी दुखना। **–जलना**–मनको अति क्लेश होना; असह्य लगना; छाती जलना। **–जलाना**–कष्ट पहुँचाना, सताना। **–टूटना**–जी टूटना, हौसला पस्त होना। **–ठंढा होना**–मनको शांति मिलना, जलन-बेकलीका दूर होना। **–तर होना**–कलेजेमें ठंडक पहुँचना; निर्द्वंद्व रहना। **–थामकर रह जाना**–असह्य कष्ट-वेदनाको बिना आह किये, दिल पकड़कर सह लेना, वेदनाको वाहर न आने देना। **–थाम लेना या पकड़ लेना**–वेदनाको वाहर न आने देनेके लिए दिलको पकड़ लेना, दवा रखना। **–धक-धक करना,–धड़कना**–भय, आशंकासे असह्य कष्टके सहनके लिए मनमें वल-संचय करना; चित्तका विचलित, विकल हो जाना; दिल दहलना। **–धकसे हो जाना**–एकाएक डर जाना; स्तब्ध हो जाना, विस्मित होना। **–निकालकर धर या रख देना**–अति प्रिय वस्तु अर्पण कर देना; जान दे देना; सारी शक्ति लगा देना। **–पक जाना**–किसी कष्टसे ऊब जाना, उसका असह्य हो जाना। **–पकड़ लेना**–कष्ट सहनेके लिए जी कड़ा करना। **–पकाना**–नाकमें दम करना, परेशान करना। **–पत्थरका करना**–असह्य दुःखके सहनके लिए जी कड़ा करना; निष्ठुर, निर्मम बन जाना। **–फट जाना**–किसीके दुःखसे हृदयका विदीर्ण, द्रवित होना। **–बल्लियों, बाँसों उछलना**–हर्ष, भय, आशंका आदिसे हृदयका जोरसे स्पंदित होना, दिलका वड़े जोरसे धड़कना। **–मुँहको आना**–किसी कष्ट, व्यथासे व्याकुल, वेचैन होना, अति क्लेश होना। **–(जे)का टुकड़ा**–संतान, वेटा। **–की कोर**–संतान, वेटी। **–पर छुरी चल जाना या फिरना**–हृदयपर गहरा आघात होना, कलेजा कटने, चिरनेका-सा कष्ट होना। **–पर साँप लोटना**–किसी वातको याद कर; किसी चीजको देखकर यकायक वहुत दुःखी हो जाना; व्यथासे वहुत वेचैन हो जाना; ईर्ष्यासे जल उठना। **–पर हाथ फेरना या रखना**–अपनी वातकी यथार्थताके विषयमें अपने दिल, अंतरात्मासे पूछना। **–में आग लगना**–द्वेष होना; प्यास लगना; शोक होना। **–में डालना**–प्यारसे पास रखना। **–में तीर लगना**–दिलमें गहरी चोट लगना। **–में पैठना**–भेद लेने या मतलब निकालनेके लिए हेल-मेल वढ़ाना। **–से लगाना**–छातीसे चिपटा लेना, प्यार करना।

कलेजी–स्त्री० कलेजेका मांस।

कलेवर–पु० (सं०) देह, चोला; डील, आकार। मु० **–बदलना**–नया शरीर धारण करना, चोला वदलना; जगन्नाथजीकी पुरानी मूर्तिकी जगह नयीकी स्थापना होना।

कलेवा–पु० सवेरेका जलपान, नाश्ता; व्याहकी एक रस्म; मार्गमें खानेके लिए साथ लिया गया भोजन, पाथेय। मु० **–करना**–खा जाना।

कलेस*–पु० दे० 'क्लेश'।

कलैया|–स्त्री० कलावाजी (खाना, मारना)।

कलोर–स्त्री० जवान गाय जो ब्यायी या गाभिन न हो। * पु० वछड़ा–'मानो हरे तृन चारु चरै बगरे सुरधेनुके धौल कलोरे'–कवितावली।

कलोरी–स्त्री० जवान गाय, कलोर।

कलोल–पु० क्रीड़ा, केलि। स्त्री० लहर, तरंग–'सूर यह सुख गोप-गोपी पियत अमृत कलोल'–सूर।

कलोलना*–अ० क्रि० कलोल करना।

कलौंछ–स्त्री० दे० 'कलौंस'।

कलौंजी–स्त्री० मसाला भरकर घी-तेलमें तली हुई समूची भिंडी, वैंगन आदि; मगरैला।

कलौंस–स्त्री० कलंक; कालिमा; स्याही। वि० जो कालापन लिये हो।

कलौथी–स्त्री० मुँगरा चावल, कुलत्थ।

कल्क–पु० (सं०) तेल आदिके नीचे जमनेवाला मैल, कीट; मैल; कानका मैल, खूँट; विष्ठा; पीठी; एक तरहका काढ़ा; दंभ; पाप; शत्रुता; बहेड़ा; एक गंधद्रव्य, तुरुष्क। वि० पापी; दुष्ट। **–फल**–पु० अनार।

कल्कि–पु० (सं०) विष्णुका दसवाँ और अंतिम अवतार जो पुराणोंके अनुसार कलियुगके अंतमें संभल (मुरादाबाद)में होगा। **–पुराण**–पु० एक उपपुराण जिसमें कल्कि अवतारकी कथा वर्णित है।

कल्की(ल्किन्)–वि० (सं०) कल्क, दंभ, पापादिसे युक्त। पु० दे० 'कल्कि'।

कल्प–पु० (सं०) धार्मिक कर्तव्योंका विधि-विधान; विहित विकल्प; वेदके ६ अंगोंमेंसे वह जिसमें यज्ञों, संस्कारों आदिकी विधियाँ बतायी गयी हैं; ब्रह्माका एक दिन (एक हजार महायुग

–४ अरब ३२ करोड़ मानव-वर्ष); प्रलय; चिकित्सा; आयुर्वेदका विष-चिकित्सा-अंग; विभाग (पुस्तकादिका); स्वर्गका एक वृक्ष; स्वर्ग, देवनिवास (जैन०); शराब; शरीरको पुनः नया एवं नीरोग करनेका उपाय। वि० लगभग बराबर, जरासा कम (केवल समासांतमें–देवकल्प, मृतकल्प इत्यादि); उचित, योग्य; सशक्त; संभव; व्यवहारमें लाने योग्य। **–कार**–पु० कल्पसूत्रोंका रचयिता (आश्वलायन, आपस्तंब, बोधायन, कात्यायन); नाई; शराब बनानेवाला। वि० सजाने-सँवारनेवाला। **–क्षय**–पु० कल्पांत। **–तरु,–द्रुम,–पादप**–पु० दे० 'कल्पविटप'। **–पाल**–पु० शराब वेचनेवाला। **–वेल,–बल्लरी**–स्त्री० दे० 'कल्पलता'। **–भव**–पु० जैनशास्त्रोंमें वर्णित एक प्रकारके देवगण। **–लता**–स्त्री० कल्पवृक्ष; कल्पवृक्षकी शाखा। **–वर्ष**–पु० उग्रसेनके भाई देवकका पौत्र। **–वास**–पु० माघके महीनेभर गंगातटपर ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर धर्मकृत्य करना। **–विटप,–वृक्ष,** **शाखी(खिन्)**–पु० नंदनकाननका एक वृक्ष जो समुद्रमंथनसे निकले हुए १४ रत्नोंमें और जो कुछ भी माँगिये उसे देनेवाला माना जाता है; एक वृक्ष जो अफ्रीका और भारतके मद्रास, बंबई आदि प्रदेशोंमें होता है; अति उदार पुरुष (ला०)। **–विद्**–वि० कल्पसूत्रोंका ज्ञाता। **–सूत्र**–पु० वैदिक यज्ञादि या गृहस्थ-कर्मोंका विधान करनेवाला सूत्रग्रंथ (श्रौत और गृह्य सूत्र)। **–हिंसा**–स्त्री० अन्नके पीसने आदिमें होनेवाली हिंसा (जै०)।

कल्पक–वि० (सं०) कल्पना करनेवाला; रचनेवाला; काटनेवाला। पु० नाई; कचूर; एक संस्कार।

कल्पन–पु० (सं०) रचना; बनाना; सजाना, सँवारना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप करना; जालसाजी; कल्पना करना; छाँटना, कतरना।

कल्पना–स्त्री० (सं०) रचना; कोई नयी बात सोचना, उद्भावना; इसकी शक्ति; इस तरह सोची हुई बात, उपज; मनकी वह शक्ति जो परोक्ष विषयोंका रूप, चित्र उसके सामने ला देती है; सोचना; मान लेना; एक वस्तुमें दूसरीका आरोप; सँवारना; सवारीके लिए हाथीको सजाना। **–चित्र**–पु० कल्पनासे खींचा हुआ चित्र, नकशा; (फान्तासी) आधुनिक कथा, काव्य, नाटक आदिमें प्रयुक्त एक ख़ास किस्मका काल्पनिक काव्योपकरण, जो मूल फान्तासीसे थोड़े भिन्न अर्थमें, प्रयुक्त होता है। **–प्रसूत**–वि० कल्पनासे उपजाया हुआ, मनगढ़ंत। **–वाद**–पु० कला अनुभव की हुई कल्पना है–यह मत। **–शक्ति**–स्त्री० कोई नयी बात सोचनेकी शक्ति, उद्भावना-शक्ति। **–सृष्टि**–स्त्री० कल्पनाकी रचना, मनोराज्य।

कल्पनी–स्त्री० (सं०) कतरनी।

कल्पनीय–वि० (सं०) जिसकी कल्पना की जा सके।

कल्पांत–पु० (सं०) प्रलय, सृष्टिका अंत। **–स्थायी(यिन्)**–वि० सृष्टिके अंततक बना रहनेवाला।

कल्पातीत–पु० (सं०) जैनशास्त्रानुसार एक देवगण।

कल्पारंभी(भिन्)–वि०, पु० (सं०) प्रशंसाके लालचसे काम करनेवाला।

कल्पिक–वि० (सं०) योग्य, उपयुक्त।

कल्पित–वि० (सं०) सोचा, माना हुआ; मनसे गढ़ा हुआ, फर्जी; सजाया, सँवारा हुआ।

कल्पितोपमा–स्त्री० (सं०) एक तरहका उपमा अलंकार जहाँ प्रकृत उपमान न मिलनेपर मनमाना उपमान कल्पित कर लिया जाय।

कल्मष–पु० (सं०) मल; मैल; पाप; एक नरक; कलाईका नीचेका भाग। वि० पापी; दुष्ट; गंदा।

कल्माष–वि० (सं०) चितकबरा। पु० चितकबरा रंग; काला रंग; राक्षस; अग्निका एक रूप; एक खुशबूदार चावल; धब्बा, दाग। **–कंठ**–पु० शिव। **–पाद**–पु० एक राजा, सुदासका पुत्र।

कल्माषी–स्त्री० (सं०) यमुना नदी।

कल्य–पु० (सं०) भोर, तड़का; मद्य; मंगलकामना; सुसंवाद। वि० स्वस्थ, नीरोग; प्रस्तुत; चतुर; कुशल; शुभ, कल्याणकर; गूँगा; बहरा। अ० कल, आनेवाले दिन। **–पाल,–पालक**–पु० कलवार, मद्यव्यवसायी। **–वर्त**–पु० सवेरेका भोजन, कलेवा।

कल्या–स्त्री० (सं०) शराब; कल्याणवचन; हरीतकी; कलोर गाय (?)। **–पाल,–पालक**–पु० कलवार।

कल्याण–पु० (सं०) मंगल; सुख-सौभाग्य; भलाई; अभ्युदय; सोना; स्वर्ग; शुभ कर्म; एक राग। वि० मंगलकारी; सुंदर; सौभाग्यशाली। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० कल्याण, मंगल करनेवाला। **–०राज्य**–पु० दे० (वेलफेयर स्टेट) 'जनहितैषी राज्य'। **–कामोद**–पु० एक संकर राग। **–कृत्**–वि० शुभ कर्म करनेवाला; कल्याणकारी। **–नट**–पु० एक संकर राग। **–बीज**–पु० मसूर। **–भार्य**–पु० वह पुरुष जो बार-बार विवाह करे और स्त्री मरती रहे।

कल्याणक–वि० (सं०) शुभ, मंगलकारक; उन्नतिशील।

कल्याणिका–स्त्री० (सं०) मैनसिल।

कल्याणी–वि०, स्त्री० (सं०) कल्याणकारिणी; कल्याणमयी; सुंदरी। स्त्री० गाय; कलोर गाय; प्रयागकी एक देवी; जंगली उरद।

कल्याणी(णिन्)–वि० (सं०) सुखी; समृद्ध; भाग्यशाली; मंगलकारक।

कल्यान*–पु० दे० 'कल्याण'।

कल्याश–पु० (सं०) सवेरेका भोजन, कलेवा।

कल्योना†–पु० कलेवा।

कल्ल–वि० (सं०) बहरा।

कल्लर–पु० नोनी मिट्टी, रेह।

कल्लाँच–वि० गुंडा; कंगाल।

कल्ला–पु० अँखुआ; गोंफा (फूटना); जबड़ा; जबड़ेके नीचे गलेतकका भाग; लंपका बर्नर, वर्तिग्रह। **–तोड़**–वि० मुँहतोड़; मुँह बंद कर देनेवाला (जवाब)। **–दराज़**–वि० मुँहजोर, जिसकी जबान बहुत तेजीसे चले; लड़ाका। **–दराज़ी**–स्त्री० मुँहजोरी, जबाँदराजी। **–पाय,–पायचा**–पु० जानवरके सिर और पैरका मांस। **मु० –दबाना**–बोलनेसे रोकना। **–फुलाना**–मुँह फुलाना। **–मारना**–गाल बजाना। **–(ल्ले)तले दबा लेना**–चीख-चिल्लाकर दूसरेको दबा लेना।

कल्लाना–अ० क्रि० जलनके साथ दर्द होना।

कल्लिय*–स्त्री० कली, पुष्पकलिका।

कल्लू–वि० काला, कलूटा।

कल्लोल–पु० (सं०) कुछ ऊँची और आवाज करनेवाली लहर, मौज; आनंद; क्रीड़ा। वि० शत्रुतापूर्ण।

कल्लोलिनी–स्त्री० (सं०) लहरोंवाली नदी। वि० कल्लोल, क्रीड़ा करनेवाली।

कल्हण–पु० (सं०) प्रसिद्ध इतिहासग्रंथ राजतरंगिणीके कर्ता।

कल्हर*–पु० नोनी मिट्टी। वि० बंजर।

कल्हरना*–अ० क्रि० कड़ाहीमें भूना या तला जाना।

कल्हरा†–पु० दे० 'कलथरा'।

कल्हार–पु० (सं०) एक पुष्प, सफेद कोईं।

कल्हारना†–स० क्रि० (हरे या भिगोये चने, मटर आदिको) घी या तेल डालकर हलका तलना। अ० क्रि० कराहना।

कवक–पु० (सं०) कवल, निवाला; (फंगस) छत्रक, कुकुरमुत्ता। **–विज्ञान**–पु० दे० 'फफूँद विज्ञान' (माइकोलाजी)।

कवच–पु० (सं०) बख्तर, वर्म; छिलका; तांत्रिक साधनाका एक रक्षा-मंत्र; उस मंत्रसे बना यंत्र, तावीज; बड़ा नगाड़ा; पाकरका पेड़। **–धर–हर**–वि० कवच धारण करनेवाला; कवच धारण करने योग्य अवस्थाका। **–पत्र**–पु० भोजपत्र।

कवचित यान–पु० (आर्मर्डकार) युद्धमें काम आनेवाली वह गाड़ी जिसपर तोपों आदिकी मारसे उसे सुरक्षित रखनेके लिए लोहेकी मोटी चद्दर चढ़ा दी गयी हो तथा जो स्वयं तोपों, तोपचियों आदिसे सुसज्जित हो, बख्तरबंद गाड़ी।

कवची(चिन्)–वि० (सं०) जो कवच धारण किये हो, बख्तरपोश। पु० शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

कवटी–स्त्री० (सं०) दरवाजेका पल्ला।

कवड–पु० (सं०) कुल्ली करनेका पानी।

कवन–पु० (स०) पानी । * सर्व० कौन ।

कवनी*–वि० कमनीय, सुंदर ।

कवयिता(तृ)–पु० (सं०) कवि ।

कवयित्री–स्त्री० (सं०) काव्यरचना करनेवाली स्त्री ।

कवयी–स्त्री० (सं०) एक मछली ।

कवर–पु० (सं०) जूड़ा, चोटी; अम्ल; नमक; चितकवरापन; व्याख्याता; दे० 'कवल' । वि० चितकवरा; मिला-जुला; खचित । पु० (अं०) ढकना, वेठन; लिफाफा; पुस्तकके ऊपर चढ़ाया हुआ कागज; कापीपर जिल्दकी जगह लगाया हुआ कागज ।

कवरकी–स्त्री० (सं०) वंदिनी ।

कवरना*–स० क्रि० सेंकना; जरा-जरा भूनना ।

कवरी–स्त्री० (सं०) चोटी; वनतुलसी ।

कवर्ग–पु० (सं०) 'क'से 'ङ'तकके अक्षरोंका समूह ।

कवल–पु० (सं०) कौर, ग्रास; कुल्ली, एक मछली; एक तौल; † एक पक्षी; एक तरहका घोड़ा; पीलिया रोग । **–ग्रह**–पु० एक तौल ।

कवलन–पु० (सं०) खाना; चबाना; निगलना ।

कवलिका–स्त्री० (सं०) फोड़े आदिपर बाँधी जानेवाली पट्टी ।

कवलित–वि० (सं०) खाया, चबाया, निगला हुआ; गृहीत ।

कवष–पु० (सं०) ढाल; एक मंत्रद्रष्टा ऋषि ।

कवस–पु० (सं०) कवच; एक काँटेदार झाड़ी ।

कवाट–पु० (सं०) दे० 'कपाट' । **–घ्न**–पु० चोर । **–वक्र**–पु० एक पौधा ।

क़वाम–पु० (अ०) शीरा, चाशनी; पानके साथ खानेके लिए सुरतीका पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस ।

क़वायद–पु० (अ०) नियमावली; कार्यविधि ('कायदा'का बहु०)। स्त्री० व्याकरण; सेना या पुलिसके सिपाहियोंका युद्धकलाका अभ्यास करना, परेड ।

कवार–पु० (सं०) कमल; एक जलपक्षी ।

क्वारी†–स्त्री० दे० 'अरवन' ।

कवि–पु० (सं०) कविता करनेवाला, शायर; ऋषि; ब्रह्मा; वाल्मीकि; सूर्य; उल्लू; शुक्राचार्य । वि० अतींद्रिय विषयोंको जाननेवाला, क्रांतदर्शी; मनीषी, मेधावी । **–कर्म(न्)** पु० कविता; काव्यरचना; उद्भावन । **–गोष्ठी**–स्त्री० कवि सम्मेलन । **–ज्येष्ठ**–पु० आदिकवि वाल्मीकि । **–पुत्र**–पु० शुक्राचार्य । **–प्रसिद्धि**–स्त्री० ऐसी उक्ति, कथन या वात जिसके लिए कोई ठोस आधार हो या न हो पर जो कवियोंके बार-बार कथनसे सुप्रचलित या प्रसिद्ध हो गयी हो, जैसे चकवा-चकवीका रातमें पास-पास रहते हुए भी परस्पर मिल न सकना । **–राज**–पु० कविश्रेष्ठ; भाट; वैद्योंकी एक उपाधि । **–रामायण**–पु० वाल्मीकि । **–राय***–पु० दे० 'कविराज' । **–लाशिका –लासिका**–स्त्री० एक तरहकी वीणा । **–समय**–पु० वे मान्यताएँ जिनका कवि लोग प्राचीन कालसे वर्णन करते आ रहे है (जैसे स्त्रीके पदाघातसे अशोकका पुष्पित होना आदि) ।

कविक–पु० (सं०) लगाम ।

कविका–स्त्री० (सं०) लगाम; केवड़ा; एक मछली ।

कविता–स्त्री० (सं०) रसात्मक छंदोबद्ध रचना ।

कविताई*–स्त्री० दे० 'कविता' ।

कवित्त–पु० कविता; एक वर्णवृत्त ।

कवित्व–पु० (सं०) काव्यरचनाकी शक्ति; काव्यका गुण, रस ।

कविनासा*–स्त्री० कर्मनाशा नदी ।

कविय, क़वीय–पु० (सं०) दे० 'कविक' ।

कविलास*–पु० कैलास; स्वर्ग ।

कविली–स्त्री० कपिला ।

कवींदु–पु० (सं०) वाल्मीकि ।

कवींद्र–पु० (सं०) श्रेष्ठ कवि ।

कवीथ–पु० कैथा ।

कवेरा–वि० गँवार ।

कवेल–पु० (सं०) कमल ।

कवेला–पु० कौएका बच्चा ।

कवोष्ण–वि० (सं०) थोड़ा गरम, कुनकुना ।

कव्य–पु० (सं०) पितरोंको दिया जाने वाला अन्न। **–बाल, –वाह, –वाहन**–वाहन–पु० अग्नि ।

कव्वाली–स्त्री० दे० 'कौवाली' ।

कश–पु० (सं०) चाबुक; (फा०) खींच; तंवाकू, सिगरेट आदिके धुएँका घूंट; फूँक । वि० खींचनेवाला; उठानेवाला (केवल समासमें–आराकश, मेहनतकश) । **–मकश**–स्त्री० खींचातानी; संघर्ष; भीड़-भाड़, धक्कमधक्का । **–(शे)हयात**–स्त्री० जीवन-संग्राम; अस्तित्व-रक्षाके लिए संघर्ष ।

कशकु–पु० (सं०) एक कदन्न, गवेधुका ।

कशकोल–पु० (फा०) मुसलमान फकीरोंका भिक्षापात्र, खप्पर ।

कशा–स्त्री० (सं०) चाबुक; रस्सी ।

कशाघात–पु० (सं०) चाबुक या कोड़ा मारना ।

कशिक–पु० (सं०) नेवला ।

कशिपु–पु० (सं०) चटाई; बिछौना; तकिया; अन्न; वस्त्र; शंख ।

कशिश–स्त्री० (फा०) खिंचाव, आकर्षण; खींचनेकी शक्ति; झुकाव, प्रवृत्ति ।

कशीद–स्त्री० (फा०) अर्क खींचना (करना, होना) । **–गी**–स्त्री० खिंचाव; मनमुटाव, नाराजगी । **–पा**–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

कशीदा–वि० (फा०) खिंचा या खींचा हुआ; उठाया हुआ । पु० सुई-धागेसे कपड़ेपर बनाया हुआ बेल-बूटा, गुलकारी (काढ़ना) । **–(द:)क़ामत**–वि० लंबे कदका ।

कशेरु–पु० (सं०) कसेरू; रीढ़; जंबुद्वीपके नौ खंडोंमेंसे एक ।

कशेरुक–पु० (सं०) कसेरू ।

कशेरुका–स्त्री० (सं०) रीढ़ ।

कशेरुकी–पु० (वर्टेब्रेट) ऐसे प्राणी जिनके शरीरमें कई खंडोंवाला मेरुदण्ड (रीढ़) पाया जाता है। इनका मस्तिष्क खोपड़ीके अंदर सुरक्षित रहता है तथा इनके शरीरका ढाँचा हड्डियों का बना होता है ।

कश्चित्–वि०, सर्व० (सं०) कोई; कोई एक ।

कश्ती–स्त्री० (फा०) दे० 'किश्ती' ।

कश्मल–पु० (सं०) मूर्च्छा; मोह; उत्साहहीनता; पाप । वि० मलिन, गंदा ।

कश्मीर–पु० (सं०) भारतके पश्चिमोत्तर कोणमें स्थित एक सुंदर पहाड़ी प्रदेश । **–ज**–पु० केसर ।

कश्मीरी–वि० कश्मीरका; कश्मीरमें उपजा । स्त्री० कश्मीरकी भाषा । पु० कश्मीर-निवासी ।

कश्य–वि० (सं०) चाबुक मारने योग्य, जहाँ चाबुक मारा जाय । पु० घोड़ेकी पीठ या पार्श्व; मद्य । **–प**–पु० एक ऋषि जिनकी विभिन्न पत्नियोंसे सुर, असुर, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि संपूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति मानी जाती है; सप्तर्षिमंडलका एक तारा; कछुआ; एक तरहकी मछली; एक तरहका हिरन । वि० काले दाँतोंवाला; मद्यपान करनेवाला । **–०नंदन**–पु० गरुड़ ।

कष–पु० (सं०) कसौटी; परीक्षा; सान, रगड़ना । **–पट्टिका**–स्त्री० कसौटी ।

कषण–वि० (सं०) अपक्व, कच्चा । पु० रगड़ना; चिह्न करना; खरोचना; कसौटीपर कसना ।

कषा–स्त्री० (सं०) दे० 'कशा' ।

कषाकु–पु० (सं०) अग्नि; सूर्य ।

कषाय–वि० (सं०) कसैला; सुगंधयुक्त; गेरूके रंगका; मधुर स्वरवाला; अनुचित; गंदा । पु० कसैला स्वाद या रस; गेरुआ रंग; एक तरहका क्वाथ जिसमें चतुर्थांश जल शेष रहता है; लेप, अंगराग लगाना; गोंद; क्रोध, मान, माया और लोभमेंसे कोई (जै०); कलियुग; धूल, गंदगी; मूर्खता; मंदता; भावावेश, राग ।

कषायित–वि० (सं०) गेरुए रंगका; प्रभावित ।

कषायी(यिन्)–वि० (सं०) कसैला; जिससे गोंद या लसदार रस

निकले; गेरुए रंगका; कषाय-दोषयुक्त; दुनियादार । पु० धव, शाल आदि वृक्ष ।

कषि–वि० (सं०) हानिकारक, नुकसान पहुँचानेवाला ।

कषित–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त, जिसे नुकसान पहुँचा हो ।

कषिका–स्त्री० (सं०) पक्षी ।

कषीका–स्त्री० (सं०) एक तरहका पक्षी ।

कषुरुका–स्त्री० (सं०) रीढ़ ।

कष्कष–पु० (सं०) एक तरहका विषैला कीड़ा ।

कष्ट–पु० (सं०) पीड़ा, व्यथा; पाप; दुष्टता; कठिनाईं; मुसीवत; श्रम । वि० वुरा; हानिकर; दुःखकर; कठिन; दुःखी । **–कर**–वि० तकलीफ देनेवाला । **–कल्पना**–स्त्री० वह वात जिसकी उपपत्तिमें वहुत खींच-तान करनी पड़े; जो मुश्किलसे दिमागमें आये । **–कारक**–वि० कष्ट देनेवाला । पु० संसार । **–भागिनेय**–पु० स्त्रीकी वहनका लड़का । **–मातुल**–पु० सौतेली माँका भाई । **–मोचन**–वि० कष्टसे छुड़ाने, उवारनेवाला । **–लभ्य**–वि० जो कठिनाईसे प्राप्त हो सके । **–सहन-योजना**–स्त्री० (ऑस्टेरिटी स्कीम) दे० 'अल्पभोग योजना', मितोपभोग योजना । **–साध्य**–वि० जो कठिनाईसे किया जा सके; जिसे करनेमें वहुत श्रम करना पड़े । **–स्थान**–पु० दुःखजनक स्थान ।

कष्टार्जित–वि० (सं०) कष्ट, श्रमसे कमाया हुआ ।

कष्टार्तव–पु० (सं०) स्त्रीको रजोधर्ममें पीड़ा होना ।

कष्टार्थ–पु० (सं०) खींच-तानकर लाया हुआ अर्थ ।

कष्टि–स्त्री० (सं०) पीड़ा; चोट; परीक्षा ।

कष्टी–वि०, स्त्री० (सं०) प्रसववेदनासे पीड़ित (स्त्री) ।

कष्टी(ष्टिन्)–वि० (सं०) कष्ट पानेवाला ।

कस–पु० (सं०) कसौटी; (हिं०) जोर, वल; दृढ़ता, मजबूती; कावू, दाव; रोक; जाँच; तलवारकी लचक; अर्क, सार; कसाव या कसैलापन । स्त्री० वह रस्सी जिससे कोई चीज वाँधी जाय । ⁕ अ० कैसे, क्योंकर । **–का**–कावूका, वशका । **–वल**–पु० जोर-वल; दम-खम । **मु०–में रखना**–रोक या दवावमें रखना ।

कस–'काँसा'का समासगत विकृत रूप । **–कुट**–पु० ताँवे और जस्तेके मेलसे वनी एक धातु । **–हँड़,–हँड़ा**–पु०,**–हँड़ी**–स्त्री० दे० 'कँसहँड़', 'कँसहँड़ा' और 'कँसहँड़ी' ।

कसक–स्त्री० रह-रहकर होनेवाली पीड़ा, टीस; खटक; अरमान, अभिलाषा; पुराना वैर; हमदर्दी ।

कसकन–स्त्री० कसकनेकी क्रिया, कसक ।

कसकना–अ० क्रि० पीड़ा होना, टीसना; सालना ।

कसगर–पु० मिट्टीके वरतन वनानेवाली मुसलमानोंकी एक जाति ।

कसन–स्त्री० कसनेकी क्रिया, कसना; कसाव; कसनेकी रस्सी; क्लेश; घोड़ेका तंग ।

कसनई–स्त्री० एक पक्षी ।

कसना–स्त्री० (सं०) एक जहरीली मकड़ी । स० क्रि० (हिं०) वंधन या तनावको कड़ा करना; ढीली चीज, गाँठ, फंदे आदिको कड़ा करना; खींचकर वाँधना; मुश्कें वाँधना; जकड़ना; पेच, पुरजेको कड़ा वैठाना; (चुस्त वैठनेवाली चीजको) पहनना, वाँधना (वर्दी, चपरास आदि); कद्दू आदिको रेतना; दाम अधिक लेना; ठूँसकर भरना; घोड़े, हाथीको चारजामा, हौदा रखकर (सवारीके लिए) तैयार करना; सोनेको कसौटीपर घिसना; परखना; ⁕ क्लेश देना; तपाना; व्यंग्य, कटाक्षभरी उक्तिका लक्ष्य वनाना (फवती कसना) । अ० क्रि० तंग, चुस्त होना; वंधन, फंदा आदिका कड़ा होना; खिचना; कसा, जकड़ा जाना । पु० कसने, वाँधनेका साधन; वेठन; खोल । **कसकर**–अ० मजवूतीसे, जकड़कर; पूरा-पूरा; जोरसे; वेरहमीसे ।

कसा-कसाया–वि० साज कसा हुआ, तैयार ।

कसनि–स्त्री० दे० 'कसन' ।

कसनी–स्त्री० वह रस्सी जिससे कोई वस्तु कसी जाय; वेठन; अँगिया; कसौटी; जाँच–'कह कवीर कसनी सहै, कै हीरा कै हेम' –कवीर; कसावका पुट; हथौड़ी ।

कसब–पु० (अ०) अर्जन, कमाना; पेशा, धंधा; वेश्यावृत्ति ।

क़सबा–पु० (अ०) छोटा शहर ।

क़सबात–पु० (अ०) कसबे ('कसबा'का बहु०) ।

कसबाती–वि० नगरवासी, नागरिक ।

कसबिन–स्त्री० दे० 'कसबी' ।

कसबी–स्त्री० वेश्या, व्यभिचारसे जीविका कमानेवाली । **–ख़ाना**–पु० वेश्यालय ।

क़सम–स्त्री० (अ०) शपथ, सौगंध; शपथपूर्वक की हुई प्रतिज्ञा । **मु०–उतारना**–शपथके वंधन या प्रभावसे अपने आपको मुक्त करना (लड़कोंका); रस्म-अदाई, कहनेभरके लिए कुछ करना । **(किसी वातकी)–खाना**–किसी वातके करने या न करनेकी प्रतिज्ञा करना । **–खानेको**–नाम-मात्रको ।

कसमस–पु०, स्त्री० कसमसाहट ।

कसमसाना–अ० क्रि० भीड़के कारण आपसमें रगड़ खाते हुए हिलना, कुलवुलाना; ऊवकर हिलना-डोलना; घवड़ाना, वेचैन होना; हिचकना ।

कसमसाहट–स्त्री० कुलवुलाहट; वेचैनी, घवड़ाहट ।

कसमा-कसमी–स्त्री० दोनों पक्षोंका कसम खाना ।

कसमिया, कसमीया–अ० कसम खाकर, शपथ-पूर्वक ।

कसर–स्त्री० (अ०) कमी, न्यूनता; घाटा; वैर, वुग्ज; विकार । **मु० –करना,–रखना**–(किसी वातके करनेमें) कमी रखना, कोताही करना । **–खाना**–घाटा सहना । **–निकलना**–क्षतिपूर्ति होना; वदला मिलना । **–निकालना**–वैर फेरना, वदला लेना; घाटा या कमी पूरी करना ।

कसरत–स्त्री० (अ०) शरीरको पुष्ट, वलवान् वनानेवाली क्रियाएँ, व्यायाम, वर्जिश; वहुलता, आधिक्य । **–राय**–स्त्री० वहुमत ।

कसरती–वि० कसरत करनेवाला; कसरतसे वनाया हुआ (वदन) ।

कसरवा–पु० सालपान नामक क्षुप ।

कसरवानी–पु० वनियोंकी एक उपजाति ।

कसरहट्टा–पु० कसेरोंकी हाट, वह वाजार जहाँ वरतन वनें और विकें ।

कसली–स्त्री० छोटा फावड़ा ।

कसवाना–स० क्रि० कसनेका काम कराना ।

क़साई–पु० (अ०) मांस-विक्रेता; गोमांस वेचनेवाला, वूचड़ । वि० वेरहम, वेदर्द । **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ मांसके लिए पशुओंका वध किया जाय । **मु०–का पिल्ला**–मोटा-ताजा आदमी । **–के खूँटे बँधना**–निर्दय व्यक्तिके पाले पड़ना; वेदर्दसे व्याहा जाना ।

कसाकसी–स्त्री० तनातनी, वैर-विरोध ।

कसाना–अ० क्रि० कसैला स्वाद हो जाना; धातुका कसाव उतर आनेसे विगड़ना । स० क्रि० कसवाना ('कसना'का प्रे०) ।

कसाफ़त–स्त्री० (अ०) गाढ़ापन; मोटाई, स्थूलता; गंदगी ।

कसार–पु० भूने हुए आटे या चौरेठेका घी, शकर, मेवा आदि मिलाकर वनाया हुआ मलीदा या लड्डू; घीमें भूना हुआ आटा जिसमें चीनी पड़ी हो, चूरन, पँजीरी ।

कसालत–स्त्री० (अ०) सुस्ती, शिथिलता ।

कसाला–पु० कठिन, कष्टकर श्रम; कष्ट; वह खटाई जिसमें सोनार गहना साफ करते हैं ।

कसाव–पु० कसैलापन; कसनेका भाव; तनाव; ⁕ कसाई ।

कसावट–स्त्री० तनाव, खिचाव ।

कसावड़ा–पु० कसाई ।

कसावर–पु० एक देहाती वाजा ।

कसिपु–पु० (सं०) भोजन; भात ।

कसिया–पु० देवरिया जिलेका एक कसवा जो वुद्धके महानिर्वाणका स्थान है, कुशीनगर । † स्त्री० एक चिड़िया ।

कसियाना†–अ० क्रि० कसावयुक्त हो जाना ।

कसी–स्त्री० जमीनकी एक नाप जो दो कदमके वरावर होती है; एक पौधा जिसके फलकी गिरीकी आसाम आदिकी जंगली जातियाँ रोटी पकाकर खाती हैं; कशकु; हलका फाल ।

कसीटना⁕–स० क्रि० कसना; रोकना ।

कसीदा–पु० दे० 'कशीदा' ।

क़सीदा–पु० (अ०) उर्दू-फारसीका वह पद्य जिसमें किसीकी प्रशंसा या (क्वचित्) निंदा की गयी हो । **–गो**–वि० कसीदा लिखनेवाला ।

कसीर–वि० (अ०) वहुत, अधिक, ज्यादा।

कसीस–पु० एक लौहजन्य पदार्थ। * स्त्री० निर्दयता; कोशिश।

कसीसना*–स० क्रि० खींचना, तानना–'साँस हियै न समाय सकोचनि हाय इतेपर वान कसीसत'–घन०।

कसुंभ*–पु० कुसुंभी रंग।

कसूँभी*–वि० कुसुमके रंगका; इस रंगमें रँगा हुआ।

कसूमर–पु० दे० 'कुसुम'।

क़सूर–पु० दे० 'क़ुसूर'। **–मंद**–वि० दे० 'क़ुसूरमंद'।

कसेई–स्त्री० दे० 'कसी'।

कसेरा–पु० एक हिंदू जाति जो काँसे आदिके वरतन वनाने-वेचनेका धंधा करती है। (स्त्री० 'कसेरन', 'कसेरिन'।)

कसेरु–पु० (सं०) एक तरहकी घास; दे० 'कशेरु'।

कसेरुका–स्त्री० (सं०) दे० 'कपेरुका'।

कसेरू–पु० एक प्रकारके मोथेकी जड़ जो छीलकर खायी जाती है।

कसैया*–पु० कसने या जकड़नेवाला; परखनेवाला।

कसैला–वि० जिसमें कसाव या कसैलापन हो।

कसैली†–स्त्री० सुपारी।

कसोरा–पु० मिट्टीका वना प्याला जो छिछला होता है; कटोरा।

कसौँजा, कसौँदा–पु० कास-जैसा एक पौधा जो छाजन आदिके काम आता है; चकवड़की जातिका एक पौधा, कासमर्द।

कसौटी–स्त्री० एक काला पत्थर जिसपर सोना घिसकर परखा जाता है; परख; जाँच (ला०)।

कस्त*–पु० दे० 'कस्द'।

कस्तरी–स्त्री० दूध औटनेका एक तरहका मिट्टीका पात्र।

कस्तीर–पु० (सं०) टीन।

कस्तूर–पु० कस्तूरी-मृग; कस्तूरी-जैसा एक पदार्थ जो वीवर नामक जंतुकी नाभिसे निकलता है।

कस्तूरा–पु० कस्तूरीवाला हिरन; लोमड़ी-जैसा एक जंतु।

कस्तूरिका–स्त्री० (सं०) कस्तूरी।

कस्तूरिया–वि० कस्तूरीका; कस्तूरीसे मिलकर वना; कस्तूरीके रंगका। पु० कस्तूरी-मृग।

कस्तूरी–स्त्री० (सं०) एक सुगंधित पदार्थ जो एक तरहके नर हिरनकी नाभिके पासकी गाँठमें पैदा होता और दवाके काम आता है। **–मल्लिका,–वल्लिका**–स्त्री० एक लता। जिसके वीजसे कस्तूरीकी गंध निकलती है, लताकस्तूरिका, मुश्कदाना। **–मृग**–पु० वह हिरन जिसकी नाभिके पासकी गाँठ (नाफ़ा)में कस्तूरी पैदा होती है।

क़स्द–पु० (अ०) इरादा; संकल्प; इच्छा।

क़स्दन्–अ० (अ०) जानवूझकर, इरादा करके।

कस्र–स्त्री० अंश, भाग; इकाईका अंश; भिन्न (ग०), जेरकी हरकत। **–आशारिया**–पु० दशमलव भिन्न।

कस्रा–स्त्री० (अ०) जेरकी मात्रा।

कस्सा–पु० ववूलकी छाल; ववूलकी छालसे वननेवाली शराव।

क़स्साव–पु० (अ०) वूचड़। **–ख़ाना**–पु० वूचड़-खाना।

कहँ*–प्र० को, के लिए। अ० दे० 'कहाँ'।

कहँरना* क्रि० कराहना।

कह*– वि० क्या। पु० (फा०) घास ('काह'का छोटा रूप) **–रुवा**–पु० एक पीले रंगका मुहरा जो चमड़े या रेशमपर रगड़कर सूखी घासके पास लानेसे उसे खींच लेता है।

कहकशाँ–पु० (फा०) आकाशगंगा।

क़हक़हा–पु० (अ०) खिलखिलाकर हँसना, जोरकी हँसी (लगाना)। **–दीवार**–स्त्री० दे० 'चीनकी दीवार'।

कहगिल–स्त्री० (फा०) मिट्टीमें भूसा, पुआलकी कुट्टी आदि सानकर बनाया हुआ गारा।

क़हत–पु० (अ०) अवर्षण; अकाल; दुष्प्राप्यता (किसी चीजका क०)। **–ज़दा**–वि० अकालपीड़ित, कहतका मारा हुआ। **–साली**–स्त्री० दुर्भिक्ष, काल।

कहता–वि० कहने, बोलनेवाला।

कहन–स्त्री० उक्ति, वचन; कहनावत।

कहना–स० क्रि० शब्द द्वारा भाव-प्रकाश करना; बोलना; बयान करना, वताना; प्रकट करना; सूचित करना; पुकारना; वहकाना; आज्ञा देना; अयुक्त वात कहना; कविता रचना। पु० उक्ति, कथन; आज्ञा, आदेश। मु०**–सुनना–समझाना-वुझाना**; अनुरोध, प्रार्थना करना। **कहनेको**–नामको, वरायनाम। **(किसीके)–(ने) में आना**–किसीकी वहकानेवाली वातको मान लेना, किसीके चकमेमें आना। **(किसीके)–में होना**–किसीके हाथमें, वशमें होना। **कह-वदकर**–प्रतिज्ञा करके; ललकारकर।

कहनाउत*–स्त्री० दे० 'कहनावत'।

कहनावत–स्त्री० कथन; कहावत।

कहनि*–स्त्री० दे० 'कहन'।

कहनी†–स्त्री० कहानी; कथन।

कहनूत†–स्त्री० कहावत।

क़हर–पु०, वि० (अ०) दे० 'क़ह्र'।

कहरना*–अ० क्रि० कराहना।

कहरवा–पु० एक ताल; कहरवा तालपर गाया जानेवाला दादरा।

क़हरी–वि० कहर करनेवाला, आफत लानेवाला।

कहल*– पु० ऊमस, हवा वंद हो जानेसे होनेवाली गरमी; ताप; दुख-दर्द; (अ०) सुरमा।

कहलना*–अ० क्रि० (तापसे) व्याकुल, वेचैन होना।

कहलवाना–स० क्रि० दूसरेके जरिये किसीसे कुछ कहना; सँदेसा भेजना; उच्चारण कराना। अ० क्रि० पुकारा जाना।

कहलाना–स० क्रि० दे० 'कहलवाना'। अ० क्रि० पुकारा जाना; * दे० 'कहलना'–'कहलाने एकत वसत'–बि०।

कहवाँ*–अ० कहाँ।

क़हवा–पु० (अ०) एक पेड़का वीज जिसे भूनकर पीसते और दूध, शकर मिलाकर चायकी तरह इस्तेमाल करते हैं। **–ख़ाना**–पु० कहवेकी दुकान, जहाँ लोग इकट्ठे होकर कहवा पियें।

कहवाना–स० क्रि० दे० 'कहलवाना'।

कहवैया*–पु० कहनेवाला।

कहाँ–अ० किस जगह। पु० तुरंत पैदा हुए वच्चेके रोनेका शब्द। मु०**–अमुक, कहाँ अमुक**–दोनोंमें वहुत अंतर है, दोनोंकी कोई तुलना नहीं। **–का**–कैसा; कैसा वड़ा विकट (मूर्ख इत्यादि); नाहकका, व्यर्थका। **–का कहाँ**–कहाँसे कहाँ। **–की वात**–कैसी अनहोनी वात।

कहा–पु० सलाह; आदेश; कहना। *स्त्री० कथा। अ० कैसे; कव। सर्व० क्या। वि० क्या। **–कही**–स्त्री० उत्तर-प्रत्युत्तर, तकरार। **–सुना**–पु० बोलनेमें हुई भूल-चूक; अनौचित्य। **–सुनी**–स्त्री० हुज्जत, तकरार।

कहाउति*–स्त्री० दे० 'कहावत'; कथन 'भरत कहाउति कही सुहाई'–रामा०।

कहाना–स० क्रि०, अ० क्रि० कहलाना।

कहानी–स्त्री० कथा; वृत्तांत; आख्यायिका, उपन्यासके ढंगकी छोटी रचना जो प्रायः एक ही घटना या परिस्थितिको लेकर लिखी गयी हो; मनसे गढ़ी, उपजायी हुई वात।

कहार–पु० एक हिंदू जाति जो प्रायः डोली ढोने, पानी भरने आदिके काम करती है।

कहारा†–पु० टोकरा।

कहाल–पु० एक वाजा।

कहावत–स्त्री० मसल, लोकोक्ति; उक्ति, कथन; मृतककर्म आदिकी सूचना देनेके लिए संवंधियों आदिको भेजा जानेवाला सँदेसा या पत्र।

कहाह–पु० (सं०) भैंसा।

कहिया*–अ० कव, किस दिन। पु० राँगा जोड़नेके काममें आनेवाला एक औजार।

कहीँ–अ० किसी जगह; दूसरी जगह; (प्रश्न रूपमें, काकुसे) नहीं, कदापि नहीं; अगर; शायद। वि० वहुत; वहुत ज्यादा। **–कहीँ**–अ० कुछ स्थानोंमें, जहाँ-तहाँ। **–का**–किसी जगहका; न जाने कहाँका (उल्लू कहींका)।

कही–स्त्री० कही हुई वात, कथन।

कहुँ, कहूँ*–अ॰ दे॰ 'कहीं'।

कहुला*–वि॰ काला।

कहुवा–पु॰ जुकाममें दिया जानेवाला घी, मिर्च आदिसे वना हुआ एक अवलेह; † अर्जुनका पेड़।

क़हल–पु॰ (अ॰) वला, आफत; जुल्म। वि॰ भीषण। **–इलाही**–पु॰ खुदाई गजब। **–का**–गजबका। **मु॰–करना**–जुल्म करना। **–टूटना**–दैवी संकट पड़ना। **–ढाना**–किसीपर आफत लाना।

कह्लार–पु॰ (सं॰) श्वेत पद्म।

कह्व–पु॰ (सं॰) वगला; एक तरहका सारस।

काँइयाँ–वि॰ चालाक, धूर्त।

काँईं*– अ॰ क्यों।

काँक–पु॰ सफेद चील, कंक; कँगनी नामक एक कदन्न।

काँकर*–पु॰ कंकड़।

काँकरी*–स्त्री॰ छोटा कंकड़।

काँ-काँ*–पु॰ दे॰ 'काँव-काँव'।

काँकुनी†–स्त्री॰ कँगनी।

कांक्षणीय–वि॰ (सं॰) चाहने योग्य।

कांक्षा–स्त्री॰ (सं॰) इच्छा, चाह; झुकाव, प्रवृत्ति।

कांक्षित–वि॰ (सं॰) चाहा हुआ।

कांक्षी–स्त्री॰ (सं॰) एक तरहकी सुगंधित मिट्टी।

कांक्षी(क्षिन्)–वि॰ (सं॰) चाहनेवाला।

कांक्षोरु–पु॰ (सं॰) वगलेकी जातिका एक पक्षी।

काँख–स्त्री॰ वाहुमूलके नीचेका गढा, वगल।

काँखना–अ॰ क्रि॰ मलत्यागमें जोर लगाने या भारी वोझ उठाने आदिसे गलेसे खाँसनेकीसी आवाज निकलना।

काँखासोती–स्त्री॰ दुपट्टा डालनेका एक ढंग जिसमें वह वायें कंधेके ऊपर और दाहिनी वगलके नीचेसे जनेऊकी तरह निकाला जाता है।

काँगड़ा–पु॰ एक पक्षी; पंजावका एक जिला।

काँगड़ी†–स्त्री॰ कश्मीरियोंकी गलेमें लटकानेकी एक अँगीठी।

काँगनी–स्त्री॰ कँगनी।

काँगरू–पु॰ दे॰ 'कंगारू'।

काँगही*–स्त्री॰ दे॰ 'कंघी'।

काँगुरा*–पु॰ दे॰ 'कंगूरा'।

कांग्रेस–स्त्री॰ (अं॰) सम्मेलन; संघटन या समुदाय-विशेषके प्रतिनिधियोंकी वार्षिक वैठक; भारतकी राष्ट्रीय महासभा, इंडियन नेशनल कांग्रेस; संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी पार्लमेंट या राष्ट्रसभा। **–जन**–पु॰ (हिं॰) कांग्रेसका अनुयायी या सदस्य। **–मैन**–पु॰ कांग्रेसजन।

कांग्रेसी–वि॰ कांग्रेससे संवद्ध। पु॰ कांग्रेसका अनुयायी।

काँच–पु॰ शीशा। स्त्री॰ गुदाका भीतरका भाग; काँछ। **मु॰–खोलना**–प्रसंग करना। **–निकलना**–एक रोग जिसमें मलत्यागके समय काँच वाहर निकल आती है; श्रमादि सहनेमें असमर्थ होना।

कांचन–पु॰ (सं॰) सोना; दीप्ति, चमक; धन; धतूरा; चंपा; पद्मकेसर। वि॰ सोनेका वना; सुनहरा; सुंदर। **–कंदर**–पु॰ सोनेकी खान। **–गिरि**–पु॰ सुमेरु। **–चंगा**–पु॰ (हिं॰) हिमालयकी एक चोटी। **–पुरुष**–पु॰ सोनेके पत्तरपर वनायी हुई पुरुषकी मूर्ति जो एकादशाह कर्ममें महाब्राह्मणको दान दी जाती है। **–प्रभ**–वि॰ सोनेके समान चमकनेवाला। पु॰ ऐल वंशमें उत्पन्न एक राजा। **–संधि**–स्त्री॰ वरावरीके दर्जेपर की हुई संधि।

कांचनक–पु॰ (सं॰) हरताल; अन्न; चंपा।

कांचनार–पु॰ (सं॰) कचनार।

कांचनी–स्त्री॰ (सं॰) हलदी; गोरोचन।

काँचरी, काँचली–स्त्री॰ दे॰ 'केँचुली'।

काँचा*–वि॰ कच्चा; अस्थिर।

कांचि, कांची–स्त्री॰ (सं॰) करधनी; मेखला; दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध नगर जो सप्त पुरियोंमेंसे है, कांजिवरम्। **–कल्प**–पु॰ मेखला। **–गुणस्थान,–पद**–पु॰ कमर। **–पुरी**–स्त्री॰ कांची।

कांचिक–पु॰ (सं॰) काँजी।

काँचुरी, काँचुली*–स्त्री॰ दे॰ 'केँचुली'।

कांचू–वि॰ जिसे काँच निकलनेका रोग हो। †पु॰ केंचुल।

काँछ†–पु॰ दे॰ 'काछ'।

काँछना–स॰ क्रि॰ काछना; सँवारना; पहनना।

कांछा*–स्त्री॰ दे॰ 'कांक्षा'।

कांजिक–पु॰ (सं॰) काँजी।

कांजिका–स्त्री॰ (सं॰) जीवंती लता; पलाशी लता; काँजी।

कांजिवरम्, कांजिवारम्–पु॰ कांची नगरी।

कांजी–स्त्री॰ (सं॰) माँड़, राईके घोल, सिरके आदिमें जीरा, नमक आदि डालकर वनाया जानेवाला एक खट्टा पेय जो स्वादिष्ट और पाचक होता है; दही या फटे हुए दूधका पानी।

काँजी–स्त्री॰ दे॰ 'कांजी'।

कांजी-हाउस–पु॰ (अं॰ 'काइन-हाउस') मवेशीखाना, वह वाड़ा जिसमें दूसरेका खेत आदि खानेवाले या लावारिस चौपाये वंद किये जाते और कुछ दंड लेकर छोड़े या नीलाम किये जाते हैं। [कांजी (तामिल)–लावारिस पशु, हाउस (अं॰)–घर]।

काँट*–पु॰ दे॰ 'काँटा'।

काँटा–पु॰ पेड़-पौधोंकी टहनियोंमें निकली हुई सूई जैसी पैनी नोकवाली चीज, कंटक; लोहेकी लंवी, पतली कील; मछली पकड़नेकी कँटिया; अँकुसोंका समूह जिससे कुएँमें गिरे हुए कलश, वालटी आदि निकालते हैं; मछलीकी वारीक हड्डियाँ जो खाते हुए गलेमें चुभती हैं; लोहे-पीतल आदिके तराजूकी डाँड़ीमें वीचोवीच लगी सूई; सोना-चाँदी तौलनेका काँटेदार तराजू; घड़ीकी सूई; वह आला जिससे किसान भूसा उठाते हैं; वह क्रिया जिससे हिसावके सही-गलत होनेकी जाँच की जाय (ग॰); एक आला जिससे यूरोपीय खाना उठाकर खाते हैं; फल आदि तोड़नेकी अँकुसी; झाड़ू टाँगनेका हुक; नाककी कील। **मु॰–निकलना**–मनका क्लेश, कसक मिटना। **–होना**–सूखकर कड़ा हो जाना; सूखकर ठटरीभर रह जाना। **–(टे)की तौल**–विलकुल ठीक, न कम, न अधिक। **–पड़ना**–गले या जीभका प्याससे सूखना। **(राहमें)–विछाना**–वाधाएँ खड़ी करना, रोड़े अटकाना। **–वोना**–वुराई करना; भावी अनिष्टका कारण वनना। **–(टों) पर लोटना**–वेचैन होना, तड़पना; ईर्ष्यासे जलना। **–में घसीटना**–(अनुचित प्रशंसा द्वारा) लज्जित करना।

काँटी–स्त्री॰ छोटा काँटा; कँटिया; रुईका फुचड़ा। **मु॰–लड़ाना**–लड़कोंका एक खेल, लंगर लड़ाना।

काँठा*–पु॰ गला; गलेका आभूषण, कंठा; किनारा; पार्श्व; तोतेके गलेकी मंडलाकार रेखा।

कांड–पु॰ (सं॰) अंश, विभाग; ईख-नरकुल आदिकी पोर; पेड़का तना, वृक्ष-स्कंध; ग्रंथका विभाग, परिच्छेद; गुच्छा; समूह; डाँड; डंडा; वाण; सरकंडा; डंठल; नाल; हाथ-पाँवकी लंवी हड्डी; नली; अवसर, निर्जन स्थान; खुशामद; जल; एक माप; घटना (हत्याकांड)। वि॰ कुत्सित, खराव (केवल समासांतमें)। **–कटुक**–पु॰ करेला। **–कार**–पु॰ वाण वनानेवाला; सुपारीका पेड़। **–गोचर**–पु॰ लोहेका वाण, नाराच। **–तिक्त**–पु॰ चिरायता। **–त्रय**–पु॰ तीन कांडोंका समूह –कर्म, उपासना और ज्ञान। **–धार**–पु॰ कंधार (?)। **–पट,–पटक**–पु॰ कनात। **–पात**–पु॰ तीरकी मार; वह दूरी जहाँतक तीर जा सके। **–पृष्ठ**–पु॰ सैनिक, शस्त्रजीवी; वेश्याका पति; वाण वनानेवाला; नीच व्यक्ति; अपनी जाति, कुलका त्याग करनेवाला; भारी धनुष्; कर्णका धनुष; दत्तक पुत्र। **–भंग**–पु॰ हड्डीका टूट जाना। **–संधि**–स्त्री॰ ईख आदिकी गाँठ। **–स्पृष्ट**–पु॰ शस्त्रजीवी, सैनिक। **–हीन**–पु॰ एक तृण, भद्रमुस्तक।

काँड़ना*–स॰ क्रि॰ कूटना, कुचलना,...'भट भारी-भारी रावरे कै चाउरसे काँड़िगो'–कविता॰; कूटना।

कांडर्षि–पु॰ (सं॰) वेदके कांड या विभागकी व्याख्या करनेवाला ऋषि।

काँडली–स्त्री॰ कुलफा।

कांडवान्(वत्)–पु॰ (सं॰) तीरंदाज।

काँड़ा–पु० दाँतका कीड़ा; पेड़ोंका एक रोग; लकड़ीमें लगनेवाला एक कीड़ा।

कांडाल–पु० (सं०) दे० 'कांडोल'।

कांडिका–स्त्री० (सं०) एक अन्न; एक तरहका कुम्हड़ा; ग्रंथका खंड, अध्याय; कंडिका, अनुच्छेद।

काँड़ी–स्त्री० छाजनमें लगनेवाली लकड़ीका वल्ला या बाँस; अरहरकी सूखी लकड़ी; ओखलीका गड्ढा; हाथीका एक रोग जो तलवेमें होता है; भारी चीजें ढकेलनेका लकड़ीका डंडा; मछलियोंका झुंड; † चौपायोंको दवा पिलानेका ढरका।

कांडीर–पु० (सं०) तीरंदाज; अपामार्ग।

कांडीरी–स्त्री० (सं०) मंजिष्ठा।

कांडेरी–स्त्री० (सं०) नागदंती।

कांडेरुहा–स्त्री० (सं०) कटुकी।

कांडोल–पु० (सं०) नरकटका टोकरा।

कांत–वि० (सं०) प्रिय; मनोरम, शोभन। पु० प्यार करनेवाला; पति; प्रिय व्यक्ति; विष्णु; चंद्रमा; वसंत; कार्त्तिकेय; कृष्ण; कुंकुम; एक तरहका लोहा। **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० मयूर। **–पाषाण**–पु० चुंवक। **–लक**–पु० नंदी वृक्ष। **–लौह**–पु० कांतसार; इस्पात। **–सार**–पु० एक तरहका लोहा जो वैद्यकमें काम आता है।

कांता–स्त्री० (सं०) प्रिया; पत्नी; सुंदरी स्त्री; प्रियंगु लता; एक गंधद्रव्य; पृथ्वी; वड़ी इलायची।

कांतार–पु० (सं०) गहन वन; दुर्गम पथ; विवर, गड्ढा; एक ईख; बाँस; एक आवनूस; लक्षण; कमल।

कांतारक–पु० (सं०) एक ईख।

कांति–स्त्री० (सं०) सौंदर्य; चमक, दीप्ति; इच्छा; प्रेमके कारण वढ़ा हुआ सौंदर्य; श्रृंगार; सुंदर स्त्री; चंद्रमाकी सोलह कलाओंमेंसे एक; दुर्गा। **–कर**–वि० सौंदर्य वढ़ानेवाला। **–द**–पु० पित्त; घी। वि० सुंदरता देनेवाला। **–दा**–स्त्री० सोमराजी। **–दायक**–वि० शोभा देनेवाला। पु० कालीयक वृक्ष। **–भृत्**–पु० चंद्रमा। **–सार**–पु० एक अच्छी किस्मका लोहा। **–हर**–वि० सौंदर्य नष्ट करनेवाला; कुरूप करनेवाला।

काँती–स्त्री० एक प्रकारका घटिया लोहा जिसमें मिट्टीकी मिलावट होती है, जो रेलिंग, कडाही आदि बनानेके काम आता है।

काँती*–स्त्री० विच्छूका डंक; तीव्र व्यथा; छुरी; कैंची।

काँथरि*–स्त्री० गुदड़ी।

काँदन†–पु० रोना-चिल्लाना; मारकाट।

काँदना†–अ० क्रि० रोना-चिल्लाना।

काँदला†–वि० गँदला, मैला। पु० कीचड़।

कांदव–पु० (सं०) चूल्हे या कड़ाहीमें भूनी हुई चीज।

काँदव†–पु० दे० 'काँदो'।

कांदविक–पु० (सं०) भूनने, पकानेका पेशा करनेवाला, हलवाई।

काँदा–पु० एक गुल्म जिसमें प्याज जैसी गाँठ पड़ती है; प्याज।

कांदिशीक–वि० (सं०) भयसे भागा हुआ; डरा हुआ।

काँदू–पु० वनियोंकी एक उपजाति।

काँदो*–पु० पंक, कीचड़।

काँध*–पु० कंधा; कोल्हूके जाठका ऊपरका भाग। मु० **–देना**–सहारा देना; स्वीकार करना। **–मारना**–धोखा देना।

काँधना–स० क्रि० उठाना; सँभालना; टानना; स्वीकार करना; भार सहना।

काँधर*–पु० कृष्ण।

काँधा–० पु० कृष्ण; ! कंधा।

काँधी–स्त्री० कंधा। मु० **–देना**–टालमटूल करना। **–मारना**–सवारको गिरानेकी गरजसे घोड़ेका झटकेसे गरदन फेरना।

काँन*–पु०–कृष्ण।

काँप–स्त्री० कानमें पहननेका एक गहना; करनफूल; पतली, लचीली तीली; पतंगमें लगायी जानेवाली तीली; कलईका चूना; हाथीका दाँत; सूअरका खाँग।

काँपना–अ० क्रि० हिलना; लरजना; डरसे हिलना, थर्राना।

काँपा–पु० बाँसकी पतली तीली।

कांपिल–पु० (सं०) एक प्राचीन प्रदेश।

कांपिल्य–पु० (सं०) एक प्राचीन प्रदेश; एक पौधा।

कांपिल्ल–पु० (सं०) दे० 'कांपिल्य'; एक गंधद्रव्य, कमीला।

कांपिल्लक–पु० (सं०) कांपिल्य नामक पौधा; एक गंध-द्रव्य।

कांपील–पु० (सं०) दे० 'कांपिल्य'।

कांवलिक–पु० (सं०) काँजी।

कांबोज–वि० कंबोज (गांधार) देशका। पु० कंबोज देशका निवासी; कंबोज देशका घोड़ा; पुन्नाग वृक्ष।

काँय-काँय, काँव-काँव–पु० कौवेका शब्द।

काँवर–स्त्री० बाँसका मोटा फट्टा जिसे कंधेपर रखकर और छोरोंपर बँधे छीकोंपर चीजें रखकर ढोते हैं, वहँगी; वह डंडा जिसके छोरोंपर टोकरियाँ बाँधते और उनमें गंगाजल आदि रखकर तीर्थयात्री ले जाते हैं।

काँवरथी, काँवरथु†–पु० दे० 'काँवाँरथी'।

काँवरि*–स्त्री० दे० 'काँवर'।

काँवरिया–पु० काँवर लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

काँवरी*–स्त्री० दे० 'कामरी'।

काँवरू–पु० कामरूप देश।

काँवाँरथी–पु० काँवर लेकर तीर्थयात्रा करनेवाला।

काँस–पु०–एक लंबी घास जो शरद् ऋतुमें फूलती है।

काँसा–पु० ताँबे और जस्तेके मेलसे वनी एक धातु; भीख़ माँगनेका खप्पर। **–गर**–पु० काँसेका काम करनेवाला।

काँसार–पु० कसेरा।

काँसी–स्त्री० काँसा; धानके पौधेका एक रोग।

कांसीय–पु० (सं०) जस्ता।

काँसुला–पु० सोनारोंके घुंडी आदि वनानेके काममें आनेवाला काँसेका चौकोर टुकड़ा।

कांस्टेविल–पु० (अं०) दे० 'कान्स्टेबिल'।

कांस्य–पु० (सं०) ताँबे और टिनके मेलसे वनी एक धातु; धातुनिर्मित पानपात्र। वि० काँसेका वना हुआ। **–कार**–पु० कसेरा; ठठेरा। **–ताल**–पु० झाँझ। **–भाजन**–पु० काँसेका बरतन। **–मल**–पु० ताँबे-पीतल आदिका मोरचा। **–युग**–पु० इतिहासका वह युग जिसमें हथियार, बरतन आदि काँसेके ही बनते थे।

कांस्यक–पु० (सं०) पीतल।

का–प्र० संबंध कारककी विभक्ति। * सर्व० क्या; विभक्तिके पहले 'किस'के बदले प्रयुक्त रूप–जैसे 'कासो' इत्यादि।

काइयाँ–वि० धूर्त; चालाक।

काई–स्त्री० पानी या सीलमें रहनेवाले पत्थर आदिपर जमनेवाली बारीक, रेशे जैसी घास; बँधे पानीके ऊपर आनेवाली गोल पत्तियोंकी एक घास; किट्टकी तरह जमा हुआ मैल; ताँबे-पीतल आदिपर लगनेवाला मोरचा। मु० **–छुड़ाना**–जमा हुआ मैल छुड़ाना। **–सा फटना**–विखर जाना।

काई*–अ० काऊ, कभी–'सूरदास ऐसे अलि जगमें तिनकी गति नहि काई'–सूर।

काऊ*–अ० कभी। सर्व० कुछ; कोई।

काक–*पु० कान (वीसल०); (सं०) कौआ; एक प्रकारका तिलक; लँगड़ा आदमी; एक द्वीप; एक माप; कौएकी तरह सिर्फ सिर डुवाकर स्नान करना; अति धृष्ट; नीच व्यक्ति (ला०)। **–कंगु**–पु० कँगनी, काकुन। **–कला**–स्त्री० काकजंघा; एक ताल। **–गोलक**–पु० कौएकी आँखकी पुतली (कौएकी आँखोंमें एक ही डेला या गोलक होना माना जाता है जिसे वह आवश्यकतानुसार दोनों ओर घुमा लेता है)। **–चिंचा**–स्त्री० घुंघची या घुघची। **–चेष्टा**–स्त्री० कौएकी तरह चौकन्ना रहना। **–च्छद**–पु० काकपक्ष; खंजन। **–जंघा**–स्त्री० एक वनौषधि; चकसेनी; घुंघची। **–जंबु**–पु० काकाफला, ध्मांक्षजंबु। **–जात**–पु० कोयल। **–तालीय**–वि० अचानक, संयोगवश होनेवाला। **–०न्याय**–पु० किसी घटनाका केवल संयोगवश होना (जैसे कौएके बैठते ही उसपर ताड़के पके फलका चू पड़ना)। **–तिक्ता**–स्त्री० काकजंघा; घुंघची। **–तुंड**–पु० काला अगर। **–तुंडी**–स्त्री० कौआठोंठी। **–दंत**–पु० कौएका दाँत; कोई अनहोनी बात

(ला०)। **–०गवेषण**–पु० अनहोनी वस्तुकी खोज, बेकार कोशिश। **–ध्वज**–पु० वाडवाग्नि। **–नासा, नासिका**–स्त्री० काकजंघा। **–पक्ष**–पु० कनपटियोंपर लटकनेवाले बालोंके पट्टे, जुल्फ। **–पद**–पु० कौएके पदका परिमाण जो शिखाका शास्त्र-विहित परिमाण है; छूटे हुए शब्दके लिए पंक्तिके नीचे बनाया जानेवाला चिह्न (Λ); एक रतिबंध; हीरेका एक दोष; चर्मच्छेद। **–पाली**–स्त्री० कोयल। **–पीलु**–पु० कुचला। **–पुच्छ, –पुष्ट**–पु० कोयल। **–पेय**–वि० छिछला; मुँहतक भरा हुआ। **–फल**–पु० नीमका फल। **–फला**–स्त्री० वन-जामुन। **–बंध्या,–वंध्या**–स्त्री० एक बच्चा जनकर वंध्या हो जानेवाली स्त्री। **–बलि**–स्त्री० श्राद्ध आदिमें कौएके लिए निकाला जानेवाला अन्न। **–भांडी**–स्त्री० महाकरंज। **–भीरु**–पु० उल्लू। **–भुशुंडि**–पु० एक रामभक्त जो शापवश कौआ हो गया था। **–मद्गु**–पु० दात्यूह पक्षी। **–माचिका,–माची,–माता**–स्त्री० मकोय। **–मारी**–स्त्री० दे० 'ककमारी'। **–यव**–पु० अन्नका वह पौधा जिसकी बालमें दाने न हों। **–रव**–वि० कायर, डरपोक। **–रुक,–रूक**–वि० डरपोक; जनमुरीद; निर्धन। पु० उल्लू। (स्त्री० 'काकरुकी'।) **–रुत**–पु० कौएकी कर्कश बोली। **–रुहा**–स्त्री० पेड़ोंके सहारे जीनेवाला पौधा, बंदा आदि। **–शीर्ष**–पु० वकवृक्ष।

काकड़ा–पु० एक पहाड़ी वृक्ष। **–सींगी**–स्त्री० दवाके काम आनेवाला एक द्रव्य, कर्कट-श्रृंगी।

काकण–पु० (सं०) एक तरहका कोढ़।

काकणी–स्त्री० (सं०) घुँघची।

काकरासिंगी–स्त्री० दे० 'काकड़ासींगी'।

काकरी*–स्त्री० ककड़ी।

काकरेज़–पु० (फा०) एक तरहका ऊदा–काले और लाल रंगके मेलसे बना हुआ–रंग।

काकरेज़ा–पु० काकरेज रंगका कपड़ा; काकरेजी रंग।

काकरेज़ी–वि० काकरेज रंगका। पु० काकरेज रंग।

काकरोल–पु० खेखसा।

काकल–पु० (सं०) कंठमणि; कौआ; टेंटुआ; काला कौआ, द्रोणकाक।

काकलक–पु० (सं०) कंठमणि; एक तरहका धान; स्वर-नलिकाका सिरा।

काकलि–स्त्री० (सं०) अस्फुट मधुर ध्वनि।

काकली–स्त्री० (सं०) मधुर, अस्फुट ध्वनि, पतली, मीठी आवाज; चोरीमें सहायक एक औजार; संगीतमें एक स्थान; एक वाद्य; कैंची; घुँघची। **–द्राक्षा**–स्त्री० किशमिशी अंगूर। **–निषाद**–पु० एक विकृत स्वर। **–रव**–पु० कोयल।

काकलीक–पु० (सं०) मंद, मधुर स्वर।

काकांगा, काकांगी–स्त्री० (सं०) काकजंघा।

काकांची–स्त्री० (सं०) काकजंघा।

काका–पु० चचा। स्त्री० (सं०) काकजंघा; काकोली; घुँघची; मकोय।

काकाक्षिगोलक-न्याय–पु० (सं०) एक शब्द या पदसे, कौएकी आँखके डेलेकी तरह, दो काम निकालना।

काकातुआ–पु० एक तरहका उजला, बड़ा तोता जिसके सिरपर चोटी होती है।

काकादनी–स्त्री० (सं०) गुंजा; सफेद घुँघची।

काकायु–पु० (सं०) स्वर्णवल्ली।

काकारि–पु० (सं०) उल्लू।

काकिणी–स्त्री० (सं०) कौडी; पणका चौथाई, पाँच गंडे कौड़ी; माशेका चौथाई; घुँघची।

काकिनी–स्त्री० (सं०) दे० 'काकिणी'।

काकिल–पु० (सं०) कंठमणि; गरदनका ऊपरका भाग।

काकी–स्त्री० काकाकी स्त्री; (सं०) कौएकी मादा।

काकु–पु० (सं०) भाव या अर्थके भेदसे ध्वनिमें भेद होना; वक्रोक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें ध्वनिभेद, कहनेका ढंग बदलनेसे अर्थ बदल जाता है; नकारका ऐसा प्रयोग जिससे 'हाँ'का अर्थ निकले; * व्यंग्य, छिपी चोट करनेवाली उक्ति।

काकुत्स्थ–पु० (सं०) ककुत्स्थके वंशमें उत्पन्न व्यक्ति–दशरथ, राम आदि।

काकुद–पु० (स०) तालु।

काकुन–स्त्री० एक मोटा अन्न, कँगनी।

काकुल–स्त्री० (फा०) कनपटीपर लटकते हुए बाल, जुल्फ।

काकोदर–पु० (सं०) साँप।

काकोल–पु० (सं०) काला कौआ, डोम कौआ; सर्प; शूकर; एक विष; कुम्हार; एक नरक।

काकोली–स्त्री० (सं०) एक वनौषधि जो अष्टवर्गके अंतर्गत है, जीवंती।

काकोलूकिका–स्त्री० (सं०) कौए और उल्लूकासा सहज वैर।

काक्ष–पु० (सं०) कटाक्ष; चढ़ी हुई त्योरी।

काक्षी–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी।

काग–पु० दे० 'कार्क'; (सं०) कौआ। **–भुसुंडि,–भुसुंडी***–पु० दे० 'काकभुशुंडि'।

काग़ज़–पु० (फा०) सन, बाँस, चीथड़े आदिकी लुगदीसे बनायी हुई वस्तु जो लिखने-छापने आदिके काम आती है, 'पेपर'; लिखी हुई चीज; लेख; लिखित प्रमाण, दस्तावेज; रुक्का; ऋणपत्र; अखबार। **–पत्र**–पु० किसी मामलेसे संबद्ध लिखी हुई बातें, कागजात; सबूत। **–का रुपया**–नोट। **–की नाव**–कागज मोड़कर (खेलके लिए) बनायी हुई नाव; न टिकनेवाली, क्षणभंगुर वस्तु। **मु०–काला करना**–बेकार बातें लिखना। **–के घोड़े दौड़ाना**–लंबी लिखा-पढ़ी, पत्र-व्यवहार करना; (केवल) कागजी काररवाई करना।

काग़ज़ात–पु० (फा०) कागजपत्र ('काग़ज़')का बहु०)।

काग़ज़ी–वि० (फा०) कागजका बना; लिखित (सबूत इ०); पतले छिलकेवाला (बादाम, नीबू इ०)। पु० कागज बनाने या बेचनेवाला; बिलकुल सफेद कबूतर। **–काररवाई**–स्त्री० लिखा-पढ़ी। **–जोंक**–स्त्री० बहुत पतली और छोटी जोंक। **–सबूत**–पु० लिखित प्रमाण।

कागद–पु० (सं०) कागज।

कागमारी–स्त्री० एक तरहकी नाव।

कागर*–पु० कागज–'तुम्हरे देश कागर मसि खूटी'–सूर; केंचुली; पंख।

कागरी*–वि० कागजकी तरह पतला, तुच्छ।

कागा*–पु० कौआ। **–बासी**–स्त्री० तड़के छानी जानेवाली भाँग; एक तरहका मोती। **–रोल**–पु० कौओंका काँव-काँव करना; शोरगुल।

कागुल*–पु० पत्र (बीसल०)।

कागौर–पु० श्राद्धमें कौएके लिए निकाला जानेवाला भाग, काकबलि।

काच–पु० (सं०) शीशा; खारी मिट्टी; काला नमक; मोम; आँखकी एक बीमारी। **–भाजन**–पु० शीशेका बरतन। **–मणि**–पु० स्फटिक। **–मल,–लवण**–पु० काला नमक।

काचक–पु० (सं०) शीशा; पत्थर; खार।

काचन, काचनक–पु० (सं०) बेठन या पुस्तक बाँधनेकी डोरी।

काचरी*–स्त्री० केंचुली।

काचा, काचो*–वि० दे० 'कच्चा'।

काची†–स्त्री० सिंहाड़े, कुम्हड़े आदिका हलुआ।

काछ–पु० पेड़ू और जाँघका जोड़; धोतीका छोर जिसे जाँघोंके बीचसे ले जाकर पीछे खोंसते हैं, लाँग; सिखोंका कच्छ; नटोंका वेश-विन्यास। **मु०–खोलना**–नंगा होना; संभोग करना। **–लगना**–चलनेमें रानोंका रगड़ खाना; गीली धोती पहनने, पसीना मरने आदिसे फुंसियाँ निकलना या चमड़ेका छिलकर लाल हो जाना।

काछना–स० क्रि० लाँगको पीछे ले जाकर खोंसना; सँवारना, पहनना; वेष धारण करना; किसी तरल चीजको पोंछकर इकट्ठा करना।

काछनी–स्त्री० घुटनोंतक कसकर पहनी हुई धोती जिसमें दोनों

लाँगें पीछे खुँसी हों; मूर्तियों आदिको पहनाया जानेवाला एक तरहका घाँघरा।

काछा–पु० कुछ ऊपर चढ़ाकर और कसकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं।

काछी–पु० एक हिंदू जाति जो तरकारियाँ बोने-बेचनेका काम करती है, कोयरी, मरार (छत्तीस०)।

काछू*–पु० कछुआ।

काछे*–अ० पास, निकट।

काछैं*–अ० दे० 'काछे'।

काज–पु० काम, कार्य, धंधा; अर्थ, प्रयोजन; विवाहादि कृत्य; * व्याह; बटनका छेद। (**के काज**–के लिए, के वास्ते।)

काजर–पु० दे० 'काजल'।

काजरी*–स्त्री० वह गाय जिसकी आँखके चारों ओरका हिस्सा काला हो।

काजल–पु० दियेके धुएँकी कालिख जो सुरमेकी तरह आँखमें लगायी जाती है। मु०–**की कोठरी**–ऐसी जगह जहाँ जानेसे, ऐसा काम जिसे करनेसे, कलंक लगना अनिवार्य हो, बदनामीका घर। –**पारना**–दियेकी लौपर कजरौटा आदि रखकर कालिख इकट्ठा करना।

क़ाज़ी–पु० (अ०) मुसलमान न्यायाधीश जो शराके अनुसार मामलोंका निर्णय करे; विचारक; निकाह पढ़ानेवाला मौलवी। –**उल-कुज़्ज़ात**–पु० काजियोंका अफ़सर, प्रधान न्यायाधीश। मु०–**जीकी दाढ़ी तबर्रुकमें गयी**–किसी अच्छी चीजका यों ही समाप्त हो जाना,–"मिट्टीके देवता तिलकमें ही उजाड़"।–**जी दुबले क्यों, शहरके अंदेशेसे**–ऐसी बातोंकी चितामें घुलना जिनका अपनेसे संबंध न हो।

काजू–पु० एक पेड़ और उसका फल जिसकी गिरी मेवेके तौरपर खायी जाती है।

काट–पु० (सं०) कुआँ। स्त्री० (हिं०) काटनेका काम; काटनेका ढंग; तराश; चोट, घाव; चालबाजी; पेंचका तोड़; तेल आदिकी तलछट; मैल, मोरचा; घावपर किसी चीजके लगनेसे होनेवाली छरछराहट। –**कपट**–स्त्री० छिपाकर या अनुचित रीतिसे काटना। –**क़िबाला**–पु० ऐसा कवाला जिसमें नियत अवधिके अंदर मूल्य लौटा न दिया जाय तो बै पक्का हो जाता है, शर्ती या मीयादी बै। ––**कूट**–स्त्री० मार-काट; लिखावटमें शोधन, परिवर्तन। –**छाँट**–स्त्री० कतर-ब्योंत; घटाव-बढ़ाव; शोधन। –**पेचा**–पु०,–**फाँस**–स्त्री० एकको अलग करने, दूसरेको फँसानेकी क्रिया, दाँव-पेंच; जोड़-तोड़।

काटकी–स्त्री० वह छड़ी जिसे कलंदर बंदर-भालू नचाते समय हाथमें रखते हैं।

काटन–पु० काटा हुआ अंश, कतरन।

काटना–स० क्रि० छुरी-कैंची आदिसे किसी चीजके टुकड़े करना; अलग करना; तराशना; फाँक उतारना; कतरना; छरछराहट पैदा करना; घाव करना (जूता); कतल करना; रगड़ या रेतकर (पतंगकी) डोर कातना; दाँत धँसाना, दाँतसे चोट करना; धक्के, दरेरेसे तोड़ देना, बहा ले जाना (बाँध, जमीन); (कुछ अंश) निकाल लेना, कम कर देना; बट्टा, मिनहा करना; बारीक पीसना (भांग, मसाला); दूर करना, हटाना; रद्द करना; खंडन करना (तर्कका); बिताना, गुजारना; खारिज करना; नहर, नाली, क्यारी आदि बनाना; एक रेखा, लाइन, सड़क आदिका दूसरीके ऊपरसे निकल जाना; एक संख्याका दूसरीसे ऐसा विभाजन कि कुछ बचे नहीं; डँसना; डंक मारना; कष्ट, पीड़ा पहुँचाना (ला०); उड़ाना; हथियाना। मु० **काट खाना**–दाँतोंसे घायल करना; डँसना; डंक मारना। –(**ने**)**दौड़ना**–बहुत गुस्सेमें बोलना, अति क्रोध प्रकाश करना। –(**टे**)**खाना**–सूनेपन, किसीकी याद दिलाने आदिके कारण दुःखद होना; मनको क्लेश देना। –(**टो**) **तो खून नहीं**–अचानक उत्पन्न हुए भयादिके कारण स्तब्ध होना।

काटर*–वि० कट्टर।

काटुक–पु० (सं०) अम्लता।

काठ–पु० (सं०) चट्टान, पत्थर; (हिं०) वृक्षके तने आदिसे प्राप्त लकड़ी; ईंधन; काठकी बनी बेड़ी; * कठपुतली। –**कबाड़**–पु० लकड़ीकी रद्दी, बेकार चीजें। –**नीम**–पु० गंधेल नामक वृक्ष। –**बेल**–स्त्री० इंद्रायन जैसी एक बेल। मु०–**का उल्लू**–वज्र मूर्ख। –**का घोड़ा**–बैसाखी। –**की हाँड़ी**–धोखेकी टट्टी, दिखाऊ चीज। –**मारना**–काठकी बेड़ी पहनाना; चलने-फिरनेपर रोक लगाना; शोकादिसे स्तब्ध हो जाना। –**में पाँव देना**–काठकी बेड़ी पहनाना; स्वयं बंधनमें पड़ना। –**होना** (वस्तुका) सूखकर कड़ा हो जाना; संज्ञाहीन होना।

काठड़ा–पु० काठका कठौता।

काठिन–पु० (सं०) कड़ापन, कठोरता; खजूरका फल।

काठिन्य–पु० (सं०) कठिनाई; कड़ापन; निष्ठुरता; आचरणकी दृढ़ता। –**फल**–पु० कपित्थ।

काठियावाड़–पु० गुजरातका पच्छिमी भाग।

काठियावाड़ी–पु० काठियावाड़का निवासी; काठियावाड़का घोड़ा। स्त्री० वहाँकी बोली। वि० काठियावाड़का।

काठी–स्त्री० वह जीन जिसमें नीचे काठ होता है; अंग्रेजी ढंगकी जीन; महमिल; काठका बना म्यान; देहकी गठन।

काठू–पु० एक तरहका पौधा जिसकी खेती हिमालय प्रदेशमें होती है।

काड़ी|–स्त्री० अरहरका सूखा डंठल, रहठा।

काढ़ना–स० क्रि० निकालना, बाहर लाना; उरेहना; (सूईसे) बेल-बूटे बनाना; लेना (कर्ज), घी-तेलमें छानना।

काढ़ा–पु० दवाओंको पानीमें औटकर बनाया हुआ पेय, क्वाथ, जोशाँदा।

काण–वि० (सं०) काना; छेद किया हुआ। पु० कौआ।

काणूक–पु० (सं०) कौआ; मुर्गा; एक तरहका हंस; बया नामक चिड़िया।

काणेय, काणेर–पु० (सं०) कानी स्त्रीका बेटा।

काणेली–स्त्री० (सं०) असती, व्यभिचारिणी स्त्री; बिनब्याही स्त्री।

काण्व–पु० (सं०) कण्वका वंशज।

कातंत्र–पु० (सं०) सर्ववर्माकृत संस्कृत-व्याकरण।

कात–पु० भेड़ोंके बाल काटनेकी कैंची; मुर्गेके पैरका काँटा।

कातना–स० क्रि० चरखे या तकलीपर रुई या ऊनसे धागा निकालना; सनसे सुतली बनाना।

कातर–स्त्री० कोल्हूकी कतरी। वि० (सं०) अधीर; उद्विग्न, परेशान; कष्टसे आकुल, आर्त्त; विवश; भीत; भीरु। पु० घड़नई; एक बड़ी मछली।

कातरोक्ति–स्त्री० कष्ट या परेशानीमें पड़कर कही गयी बात, दुःखसूचक निवेदन।

कातर्य–पु० (सं०) कातरता, भीरुता।

कातल–पु० (सं०) एक बड़ी मछली।

काता–पु० कता हुआ सूत; बाँस छीलनेकी अर्द्ध-चंद्राकार छुरी, बाँक; कते हुए सूतके लच्छों जैसी एक मिठाई।

काति–वि० (सं०) इच्छा करनेवाला।

कातिक–पु० कार्तिक मास; एक प्रकारकी बड़ी जातिका तोता।

कातिब–पु० (अ०) लिखनेवाला; लीथो प्रेसके लिए कापी लिखनेवाला।

क़ातिल–पु० (अ०) कत्ल करनेवाला, हत्यारा। वि० घातक।

काती–स्त्री० कैंची; कत्ती; छुरी।

कातीय–वि० (सं०) कात्यायन-संबंधी। पु० कात्यायनका शिष्य।

कातु–पु० (सं०) कुआँ।

कातृण–पु० (सं०) रोहिष तृण।

कात्य–वि० (सं०) कत ऋषि-संबंधी। पु० कात्यायन।

कात्यायन–पु० (सं०) कत गोत्रमें उत्पन्न पुरुष; पाणिनीय सूत्रोंपर वार्तिक लिखनेवाले वररुचि; विश्वामित्रके वंशज एक ऋषि जिन्होंने श्रौत सूत्र, गृह्य सूत्र आदिकी रचना की है; पालीका व्याकरण लिखनेवाले आचार्य 'कच्चायन'।

कात्यायनी–स्त्री० (सं०) कत गोत्रमें उत्पन्न स्त्री; याज्ञवल्क्यकी

एक पत्नी; वृद्ध या अधेड़ विधवा; पार्वती। **–पुत्र,–सुत**–पु० कार्त्तिकेय।

कात्यायनीय–वि० (सं०) कात्यायन-रचित।

काथ*–पु० कत्था–'जहँ बीरा तहँ चून है, पान सोपारी काथ'–प०। स्त्री० गुदड़ी।

काथरी*–स्त्री० गुदड़ी, कथरी।

काथिक–पु० (सं०) कहानियाँ कहने या लिखनेवाला।

कादंब–वि० (सं०) कदंब या समूहसे संवद्ध या उत्पन्न। पु० कदंबका पेड़ या फूल; कदंबसे बनी मदिरा; ईख; वाण; कलहंस।

कादंबक–पु० (सं०) वाण।

कादंबर–पु० (सं०) कदंबके फूलोंसे वना मद्य; मद्य; गुड़; दहीकी मलाई।

कादंबरी–स्त्री० (सं०) कदंबके फूलोंकी शराब; शराव; गजमद; कोकिला; मैना; वाणभट्ट-रचित प्रसिद्ध गद्यकाव्य और उसकी नायिका; सरस्वती; गड्ढोंमें एकत्र वर्षाका जल।

कादंबिनी–स्त्री० (सं०) बादलोंकी लंबी पंक्ति, मेघमाला; एक रागिनी।

कादर–वि० दे० 'कातर'।

क़ादिर–वि० (अ०) कुद्रतवाला, समर्थ, शक्तिमान्। **–(रे) मुतलक़**–वि० सर्वशक्तिमान् (परमात्मा)।

क़ादिरी–स्त्री० एक तरहकी चोली।

काद्रव–वि० (सं०) गहरे पीले रंगका।

काद्रवेय–पु० (सं०) एक तरहका साँप।

कान–पु० शब्दबोधकी इंद्रिय, श्रुति, कर्ण; सुननेकी शक्ति; कानमें पहननेका एक गहना; वरतनका दस्ता; तराजूका पसँगा; बंदूककी रंजकदानी; चारपाईका टेढ़ापन; सितार आदिकी खूँटी; नावकी पतवार। * स्त्री० दे० 'कानि'। **–(नों)कान**–एकसे दूसरे कानतक, कर्णपरंपराके द्वारा। **मु०–उठाना**–(पशुका) चौकन्ना होना; आहट लेना। **–उड़ना**–शोर-गुल या लंबी वकवाससे वहुत कष्ट मिलना। **–उमेठना,–ऐंठना**–दंड या चेतावनी देनेके लिए कान मरोड़ना; कान पकड़ना। **–कतरना,–काटना**–वढ़ जाना, नीचा दिखाना। **–करना**–सुनना, कान देना। **–का कच्चा**–जो कुछ सुने उसपर बिना विचार किये विश्वास कर लेनेवाला। **–खड़े करना, होना**–सचेत, चौकन्ना होना। **–खड़े रखना**–होशियार रहना। **–खाना**–लंबी वकवाससे कष्ट पहुँचाना, देरतक बकते रहना। **–खुलना**–सजग होना। **–खोलना**–सावधान कर देना। **–गरम करना**–कान मलना, उमेठना। **–दवाना**–विरोध न करना। **–देना**–सुनना; ध्यान देना। **–धरना**–ध्यानसे सुनना; कान उमेठना। **–न दिया जाना**–शोरके मारे सुनाई न देना; शोर और ध्वनिकी कर्कशतासे असह्य कष्ट होना। **–न हिलाना**–चूं न करना; विरोध, आपत्ति न करना। **–पकड़कर उठना-बैठना**–वच्चोंको दी जानेवाली एक सजा। **–पकड़कर निकाल देना**–अनादरपूर्वक निकाल बाहर करना। **–पकड़ना**–अपनी भूल स्वीकार कर भविष्यमें वैसी बात न करनेकी प्रतिज्ञा करना, तोबा करना; आगेके लिए सचेत हो जाना। **–पड़ी आवाज सुनाई न देना**–शोर-गुलके कारण कानमें पड़ी हुई बातका सुनाई न देना। **–पर जूँ न रेंगना**–तनिक भी परवाह न होना; बिलकुल ध्यान न देना। **–फूँकना**– दीक्षा देना; कान भरना, वहकाना। **–वंद या वहरे कर लेना**–जान-बूझकर किसीकी वात न सुनना, सुनकर भी उसपर ध्यान न देना। **–वजना**–कानमें साँय-साँयकी आवाज होना। **–वहना**–कानसे लसदार और कुछ गाढ़े स्रावका वहना। **–भर जाना**–सुनते-सुनते ऊब जाना। **–भरना**–किसीके विषयमें किसीकी धारणा विगाड़ देना, बदगुमान कर देना। **–मलना**–कान उमेठना। **–में कौड़ी डालना**–गुलाम वनाना। **(कोई बात)–में डाल देना**–सुना देना। **–में तेल डालना**–कान बहरे कर लेना। **–में पारा या सीसा भरना**–गरम पारा या पिघलाया हुआ सीसा कानमें भरकर बहरा कर देना (पुराने जमानेकी एक सजा)। **–लगना**–कानसे सटकर धीरे-धीरे कुछ कहना; चुपके-चुपके कान भरना। **–होना**–दूसरोंकी कान भरनेवाली बातोंको सुनना, उनपर ध्यान देना; चेतना। **–(नों) कान खबर न होना**–तनिक भी खबर, पता न होना। **–पर हाथ धरना**–अनभिज्ञता प्रकट करना, अनजान बनना, साफ इनकार करना।

कानक–वि० (सं०) कनकका बना, सुवर्णका। पु० जमालगोटा, जयपाल वीज।

कानड़ा–वि० काना।

कानन–पु० (सं०) वन, जंगल; बाग; घर।

काननारि–पु० (सं०) शमी वृक्ष।

काना–वि० जिसकी एक आँख फूट गयी हो, एकाक्ष; कीड़ा खाया हुआ, दागी (फल आदि); टेढ़ा, तिरछा। पु० चौसरके पासेकी बिंदी (तीन काने)।

कानाकानी–स्त्री० काना-फूसी; एकसे दूसरे कानतक पहुँचना, कर्णपरंपरा।

कानागोसी*–स्त्री० काना-फूसी।

कानाफूसी–स्त्री० कानसे लगकर धीरे-धीरे बात करना; इस तरह की जानेवाली बात।

कानावाती–स्त्री० कानमें कही जानेवाली बात (वच्चोंको हँसानेके लिए उनके कानमें 'कानावाती-कानावाती–कू' कहते हैं। 'कू' शब्द खींचकर और जोरसे कहा जाता है जिससे बच्चा प्रायः खिलखिलाकर हँस पड़ता है)।

कानि*–स्त्री० लोकलज्जा; मर्यादा, लिहाज।

कानि, कानी*–स्त्री० कष्ट, दुःख–'सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन कैसे घटत कठिन कानी'–सूर।

कानिष्ठिक–पु० (सं०) छिगुनी।

कानी–वि०, स्त्री० एक आँखवाली (स्त्री); फूटी हुई (आँख); सबसे छोटी। **–उँगली**–स्त्री० छिगुनी। **–कौड़ी**–स्त्री० फूटी कौड़ी।

कानीन–पु० (सं०) बिन व्याही स्त्रीका बेटा, क्वाँरेपनमें पैदा पुत्र; व्यास; कर्ण। वि० अविवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न।

कानीहाउस–पु० (अं० 'काइन-हाउस') दे० 'कांजीहाउस'।

कानीहौद–स्त्री० दे० 'कांजीहाउस' (पशु बंदीगृह)।

कानून–पु० (अ०) राजनियम, वह नियम जिसे मानना राज्यविशेषके प्रत्येक प्रजाजनका फर्ज हो, आईन, विधान, विधि, नियम। **–गो**–पु० माल महकमेका एक कर्मचारी जिसका काम पटवारियोंके कागजातकी जाँच करना है। **–दाँ**–वि० कानून जाननेवाला, विधिज्ञ। **मु० –को हाथमें लेना** (अंग्रेजी मुहावरा) कठिनाई या शिकायत दूर करनेके लिए वलप्रयोग पर उतारू हो जाना, कानूनका सहारा लेनेकी आवश्यकता न समझना।

कानूनन्–अ० कानूनके मुताबिक, नियमतः।

कानूनिया–वि०–कानूनका ज्ञाता; हुज्जत करनेवाला।

कानूनी–वि० कानूनसे संवद्ध; कानूनका; कानूनके अनुकूल; कानून बघारनेवाला, हुज्जती।

कान्फरेंस–स्त्री० (अं०) सम्मेलन; किसी विषयपर विचार करनेके लिए बुलायी गयी सभा।

कान्यकुब्ज–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद; कान्यकुब्ज देशका निवासी; ब्राह्मणोंका एक भेद।

कान्यजा–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य।

कान्स्टेबिल–पु० (अं०) पुलिसका सिपाही।

कान्ह*–पु० कृष्ण, कन्हैया।

कान्हड़ा, कान्हरा–पु० संपूर्ण जातिका एक राग। **–नट**–पु० एक संकर राग।

कान्हड़ी–स्त्री० एक रागिनी।

कापटिक–वि० (सं०) कपट करनेवाला, दुष्ट। पु० चाटुकार; विद्यार्थी।

कापट्य–पु० (सं०) दुष्टता, छलछद्म।

कापथ–पु० (सं०) कुमार्ग, बुरा रास्ता; खस।

कापर*–पु० कपड़ा; (अं०) ताँवा। **–प्लेट**–पु० ताँबेकी चादरका टुकड़ा या पटरी जिसपर ब्लाक बनाया जाय।

कापाल–वि० (सं०) कपाल-संबंधी। पु० कापालिक; एक प्रकारका कोढ़; एक प्राचीन अस्त्र; वायबिडंग; एक तरहकी संधि जिसमें

दोनों पक्ष एक दूसरेका समान स्वत्व स्वीकार करते हैं ।

कापालिक–पु० (सं०) एक वाममार्गी शैव संप्रदायका अनुयायी जो मनुष्यकी खोपड़ी लिये रहता और उसीमें खाता-पीता है । वि० कपाल-संवंधी ।

कापाली–स्त्री० (सं०) कपालोंकी माला; चालाक औरत ।

कापाली(लिन्)–पु० (सं०) शिव । वि० कपालोंकी माला पहननेवाला ।

कापिक–वि० (सं०) कपि जैसा, वंदरकीसी शकलवाला या वैसा व्यवहार करनेवाला ।

कापिल–वि० (सं०) कपिल-संवंधी; कपिलका कहा हुआ; भूरा । पु० सांख्यमतको माननेवाला; भूरा रंग ।

कापिश–पु० (सं०) एक प्रकारका मद्य ।

कापिशायन–पु० (सं०) मद्य; एक देवता ।

कापिशी–स्त्री० (सं०) एक स्थान जहाँ कापिश शराव अच्छी वनती थी ।

कापिशेय–पु० (सं०) पिशाच ।

कापी–स्त्री० (अं०) नकल, प्रतिलिपि; सादे कागजकी वही; पुस्तक, फोटो आदिकी प्रति; छापाखानेमें छपनेके लिए दिया जानेवाला लेखादि । **–राइट**–पु० ग्रंथकार या प्रकाशकको रचना-विशेषपर प्राप्त स्वत्व, उसके छापने, वेचने आदिका अधिकार ।

कापुरुष–पु० (सं०) कायर, नीच, कुत्सित पुरुष ।

कापेय–वि० (सं०) बंदर-संवंधी । पु० वंदरोंकी घुड़की आदि; शौनक ऋषि ।

कापोत–वि० (सं०) धूसर वर्णका, कपोत वर्णका । पु० कवूतरोंका झुंड; सुरमा; सज्जी; धूसर रंग ।

काप्य–पु० (सं०) कपि ऋषिका गोत्र; पाप । **–कर**–वि० अपने पापोंको दूसरोंसे कहने या उनपर पश्चात्ताप करनेवाला । **–कार**–पु० अपने किये बुरे कर्मोंको कहने या उनपर पश्चात्ताप करनेवाला व्यक्ति; अपना पाप स्वीकार करना ।

क़ाफ़–पु० (अ०) अरवी-फारसी वर्णमालाका एक अक्षर; एक कल्पित पौराणिक पर्वत; कृष्णसागर और कास्पियन सागरके बीच अवस्थित पर्वतमाला–'काकेशस' । **–से क़ाफ़तक**–संपूर्ण भूमंडलमें ।

काफल–पु० (सं०) कायफल ।

क़ाफ़िया–पु० (अ०) तुक, अंत्यानुप्रास । **–बंदी**–स्त्री० काफिया मिलाना, तुकवंदी करना । मु०**–तंग करना**–हैरान, परेशान करना । **–मिलाना**–तुक मिलाना ।

काफ़िर–पु० (अ०) ईश्वरका अस्तित्व न माननेवाला; मुसलिम धर्मको न माननेवाला; अफ्रीकाकी एक हव्शी जाति; अफगानिस्तानकी सरहदपर बसनेवाली एक जाति । वि० मुनकिर, नास्तिक; दुष्ट, उत्पाती; निर्दय; प्यारा, माशूक (कुफ्र–न मानना, इनकार करना) ।

काफ़िरिस्तान–पु० (अ०) अफगानिस्तानका वह प्रदेश जहाँ काफिर जाति वसती है ।

क़ाफ़िरी–स्त्री० काफिर जातिकी भाषा ।

क़ाफ़िला–पु० (अ०) यात्रियों, एकसे दूसरे देशको माल ले जानेवालोंका समूह । **–सालार**–पु० काफिलेका नेता, सरदार ।

काफ़ी–स्त्री० (अं०) कहवा । वि० (अ०) किफायत करने–पूरा पड़नेवाला; पूरा, पर्याप्त; वहुत । पु० एक राग । **–से ज्यादा**–आवश्यकतासे अधिक ।

काफ़ूर–पु० (फा०) कपूर । मु०**–होना**–उड़ जाना; अदृश्य हो जाना ।

काफ़ूरी–वि० कपूरका वना हुआ; कपूरके रंगका । पु० कपूरी रंग; कपूरी पान ।

क़ाब–पु० (तु०) थाल, वड़ा तश्त ।

काबर–वि० चितकवरा । पु० दोमट जमीन ।

काबा–पु० (अ०) चौकोर इमारत; मक्काकी एक चौकोर इमारत जिसकी नीवँ इब्राहीमकी रखी हुई मानी जाती है । मुसलमानोंका पवित्र तीर्थस्थल ।

क़ाबिज़–वि० (अ०) कब्जा करने, रखनेवाला, भोक्ता; कब्ज करनेवाला ।

क़ाबिल–वि० (अ०) योग्य, लायक; विद्वान् । **–(ले) तारीफ़**–वि० सराहने योग्य । **–दीद**–वि० देखने योग्य; दर्शनीय । **–समाअत**–वि० (मुकद्दमा) जिसके सुननेका अधिकार हो ।

क़ाबिलीयत–स्त्री० योग्यता; विद्वत्ता ।

काबिस–पु० एक रंग जो कच्चे वरतन रंगनेके काम आता है; इस रंगमें पड़नेवाली लाल मिट्टी ।

काबुक–स्त्री० (फा०) कबूतरोंका दरबा; कपड़ेका गद्दा जिसपर रोटियाँ रखकर तनूरमें लगाते हैं ।

काबुल–पु० अफगानिस्तानकी राजधानी और एक प्रांत । स्त्री० एक नदी जो अटक नदीमें मिलती है । मु०**–में क्या गधे नहीं होते?**–अच्छोंके बीच वुरे, पंडितोंके कुलमें मूर्ख भी हो सकते हैं ।

काबुली–वि० काबुलका, काबुलमें उत्पन्न । पु० काबुलका रहनेवाला, अफगान; वहुत ऊँचे और देरतक उड़नेवाला एक तरहका कबूतर; एक तरहका मटर । **–मटर**–पु० एक तरहका बड़े दानेका मटर ।

क़ाबू–पु० (तु०) वस, अधिकार, जोर, नियंत्रण ।

काभर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) वुरा पति या मालिक ।

काम–पु० (सं०) इच्छा, चाह, कामना; इंद्रिय या विषय-सुखकी इच्छा; चतुर्वर्गमेंसे एक; संभोगकी इच्छा; कामदेव-प्रद्युम्न; वलराम; परमेश्वर; कामनाका विषय; प्रेम; शुक्र; एक तरहका आम । **–कला**–स्त्री० कामकी पत्नी रति; कामका उद्दीपन; मैथुन; एक तंत्रोक्त विद्या; रतिसुख-वर्द्धन करनेवाली कला । **–काम,–कामी(मिन्)**–वि० कामनाका अनुसरण करनेवाला । **–कूट**–पु० वेश्याका यार, वेश्यागामी; वेश्याका छलछंद । **–कृत ऋण**–पु० विषयभोग-संवंधी कार्योंके लिए लिया गया ऋण (स्मृति०) । **–केलि,–क्रीड़ा**–स्त्री० रतिक्रीडा । **–ग**–वि० जहाँ जी चाहे वहाँ जा सकनेवाला; लंपट । **–गति**–वि० जहाँ चाहे वहाँ जानेमें समर्थ । **–गा**–स्त्री० पुंश्चली । **–गिरि**–पु० चित्रकूट । **–चर,–चार**–वि० यथेच्छाचारी, जो मनमें आये वह करनेवाला । **–चारी(रिन्)**–वि० यथेच्छाचारी; लंपट । पु० गरुड़ । **–ज**–वि० वासनाजनित । **–जनि,–जान**–पु० कोयल । **–जित्**–वि० कामको जीत लेनेवाला । पु० शिव; स्कंद; जिनदेव । **–ज्वर**–पु० आयुर्वेदके अनुसार एक प्रकारका ज्वर जो अखंड ब्रह्मचर्यके पालनसे उत्पन्न होता है । **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष; बाँदा नामक वृक्ष । **–ताल**–पु० कोयल । **–तिथि**–स्त्री० कामकी पूजाकी तिथि, त्रयोदशी । **–द**–वि० अभीष्ट-दायक, कामना पूरी करनेवाला । पु० शिव; स्कंद । **–०मणि**–पु० चिंतामणि । **–दर्शन**–वि० देखनेमें सुंदर लगनेवाला । **–दहन**–पु० कामको भस्म करनेवाले शिव । **–दा**–स्त्री० कामधेनु; एक देवी; चैत्रशुक्ला एकादशी । **–दान**–पु० ऐसा नृत्य-गान आदि कि लोग अपना काम-काज छोड़कर उसीमें रमे रहें । **–दुघ**–वि० अभीष्ट-दायक । **–दुघा**–स्त्री० कामधेनु । **–दुह***–वि० दे० 'कामदुघ' । **–दूतिका**–स्त्री० नागदंती । **–दूती**–स्त्री० नागदंती; कोयल । **–देव**–पु० कामका देवता, रति-पति, कंदर्प; विष्णु; शिव । **–धुक्**–स्त्री० कामधेनु । वि० इच्छित फल देनेवाला । **–धेनु**–स्त्री० स्वर्गकी गाय जो सब कामनाओंकी पूर्ति करनेवाली मानी जाती है; वसिष्ठकी गाय नंदिनी जिसके लिए विश्वामित्रके साथ उनका युद्ध हुआ । **–ध्वज**–पु० मछली । **–पाल**–पु० विष्णु; शिव; बलराम । **–फल**–पु० एक तरहका आम । **–बाण**–पु० कामदेवके पाँच बाण–मोहन, उन्मादन, संतपन, शोषण और निश्चेष्टीकरण अथवा ये पाँच पुष्प–लाल कमल, नील कमल, अशोक, आम और चमेली । **–भूरुह**–पु० कल्पवृक्ष । **–मह(स्)**–पु० कामदेवका उत्सव जो चैत्र-पूर्णिमाको मनाया जाता है । **–मुद्रा**–स्त्री० तंत्रकी एक मुद्रा । **–मूढ़,–मोहित**–वि० कामवश, कामातुर । **–रिपु**–पु० शिव । **–रुचि**–स्त्री० रामको विश्वामित्रसे प्राप्त एक अस्त्र । **–रूप**–पु० आसामका एक जिला जहाँ कामाख्या देवीका मंदिर है । वि० मनचाहा रूप धारण कर सकनेवाला; सुंदर । **–रूपी(पिन्)**–वि० इच्छानुसार रूप धारण करनेवाला । **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० वेश्या । **–लता**–स्त्री०

पुरुषेंद्रिय; लिंग। **–लोक**–पु० एक परोक्ष लोक (बौ०)। **–सल्लभ**–पु० वसंत; चंद्रमा; आम। **–वल्लभा**–स्त्री० चाँदनी। **–वृत्त**–वि० कामी, लंपट। **–वृद्धि**–पु० वृक्षविशेष। **–शर**–पु० दे० 'कामवाण'; आम। **–शास्त्र**–पु० कामकला सिखानेवाला शास्त्र, रतिशास्त्र, कोकशास्त्र। **–सखा**–पु० वसंत। **–सुत**–पु० प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्ध। **–सूत्र**–पु० वात्स्यायनकृत कामशास्त्रका प्रसिद्ध ग्रंथ। **–हा(हन्)**–पु० शिव; विष्णु।

काम–पु० जो कुछ किया जाय, कर्म, फ़ेल, कार; अर्थ, प्रयोजन, मतलब, गरज; धंधा, रोजगार; नौकरी; उपयोग; दुस्साध्य कार्य; वेलबूटे, नक्काशी आदि; कारीगरी। **–काज**–पु० काम-धंधा, कारवार। **–काजी**–वि० काम-काजमें लगा रहनेवाला, उद्यमी। **–चलाऊ**–वि० जिससे फिलहाल काम निकल जाय, आवश्यकताकी पूर्ति हो जाय। **–चोर**–वि० कामसे जी चुरानेवाला, आलसी। **–दानी**–स्त्री० वह सूती या रेशमी कपड़ा जिसपर जरीकी बूटियाँ बनी हों; सलमे-सितारे आदिका काम। **–दार**–वि० जरदोजी या कलावत्तूके कामवाला (टोपी, जूता)। **–धाम**–पु० कामकाज। **–रान**–वि० जिसका अभीष्ट सिद्ध हो गया हो, सफल। **–रोको प्रस्ताव**–पु० दे० 'कार्य स्थगन प्रस्ताव'। मु०**–आना**–इस्तेमाल होना; काममें आना; युद्धमें मारा जाना; साथ देना, सहायक होना। **–करना**–असर करना; कारगर होना; कृतकार्य होना; अर्थ सिद्ध करना। **–का**–जिससे काम निकले, उपयोगी। **–चलना**–काम होना; कामका जारी रहना। **–चलाना**–प्रयोजन, आवश्यकताकी पूर्ति करना; ज्यों-त्यों काम निकाल लेना; काम चलता, जारी रखना। **–तमाम करना**–काम पूरा करना; मार डालना। **–तमाम होना**–काम पूरा होना; मारा जाना; मरना। **–निकलना**–प्रयोजन सिद्ध होना। **–बनना**–प्रयोजन निकलना। **–रखना**–वास्ता, सरोकार रखना; कठिन होना। **–लगना**–दरकार होना। **–से काम रखना**–अपने काम, प्रयोजन, अर्थका ही ध्यान रखना, और बातोंमें न पड़ना। **–होना**–मतलब पूरा होना।

काम–पु० (फा०) इच्छा, कामना; इरादा, मतलब; तालु; मुँह। **–गार**–वि० सफलमनोरथ; सौभाग्यशाली। पु० श्रमिक, मजदूर (आ०)। **–याब**–वि० सफलमनोरथ, कृतकार्य; परीक्षामें उत्तीर्ण। **–याबी**–स्त्री० सफलता, कृतकार्यता। **–रान**–वि० सफलमनोरथ; सौभाग्यशाली; प्रसन्न। **–रानी**–स्त्री० सफलता; सौभाग्य, प्रसन्नता।

कामठ–वि० (सं०) कछुएसे संबंध रखनेवाला।

कामड़िया–पु० रामदेव-पंथी साधु।

कामता–पु० चित्रकूटके पासका एक स्थान।

कामदार†–पु० जायदादका प्रबंध करनेवाला अधिकारी–'कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाव करूँ दरवार'–मीरा।

'काम न करो' हड़ताल–स्त्री० (स्टे-इन-स्ट्राइक) हड़तालका वह प्रकार जिसमें श्रमिक या कर्मी कारखाने आदिमें तो जाते हैं पर कोई काम नहीं करते–अपने स्थानपर चुपचाप बैठे रहते हैं।

कामन–वि० (स०) लंपट, कामुक; (अं०) आम, साधारण। **–वेल्थ**–पु० स्वेच्छासे संवद्ध हुए राष्ट्रोंका मंडल। **–सभा**–स्त्री० (हिं०) ब्रिटिश पार्लमेंटकी साधारण सभा।

कामना–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह।

कामनी*–स्त्री० कामिनी, सुंदर स्त्री।

कामरिया, कामरी*–स्त्री० कमली।

कामरू–पु० दे० 'कामरूप'।

कामरेड–पु० (अं०) साथी, साथ काम करनेवाला (साम्यवादियोंका एक-दूसरेको संवोधन)।

कामर्स–पु० (अं०) व्यापार, वाणिज्य।

कामल–वि० (सं०) कामी। पु० वसंत; पित्तावरोध; पीलिया रोग; मरुभूमि।

कामलरी*–स्त्री० कमली।

कामला–पु० एक प्रकारका रोग, पीलिया।

कामलिका–स्त्री० (सं०) शराब।

कामली–स्त्री० कमली; (सं०) पीलिया रोग।

कामली(लिन्)–वि० (सं०) जिसे पीलिया रोग हुआ हो।

कामवती–स्त्री० (सं०) दारुहल्दी। वि०, स्त्री० कामवासनावाली।

कामांकुश–पु० (सं०) नाखून; मेहन।

कामांग–पु० (सं०) आम।

कामांध–वि० (सं०) जो कामसे अंधा हो गया हो, कामातुर।

कामा–स्त्री० एक वृत्त; *कामिनी। पु०(अं०) लघु विराम।

कामाक्षी–स्त्री० (सं०) दुर्गाका एक नाम; असमका एक स्थान जहाँ कामाक्षीका मंदिर है।

कामाख्या–स्त्री० (सं०) दुर्गाका एक नाम; सतीका योनिपीठ, कामरूप।

कामाग्नि–स्त्री० (सं०) उत्कट कामवासना, कामोत्तेजन।

कामातुर–वि० (सं०) कामपीड़ित, कामवेगसे वेहाल।

कामात्मज–पु० (सं०) अनिरुद्ध।

कामाद्रि–पु० (सं०) असमका एक पहाड़।

कामानुज–पु० (सं०) क्रोध।

कामायन–पु० (सं०) कामगोत्रमें उत्पन्न पुरुष।

कामायनी–स्त्री० (सं०) कामगोत्रमें उत्पन्न स्त्री; मनुकी पत्नी श्रद्धा; प्रसादजीका एक काव्यग्रंथ।

कामायु(स्)–वि० (सं०) मनचाही आयुवाला। पु० गीध; गरुड़।

कामायुध–पु० (सं०) कामका वाण; पुरुषेंद्रिय; आम।

कामारि–पु० (सं०) शिव।

कामार्त–वि० (सं०) कामातुर, कामसे पीड़ित।

कामालिका–स्त्री० (सं०) मद्य।

कामावशायिता, कामावसायिता–स्त्री० (सं०) योगियोंकी अष्ट सिद्धियोंमेंसे एक; सत्यसंकल्पता।

कामिक–वि० (सं०) जिसकी इच्छा की गयी हो।

कामित–वि० (सं०) अभिलषित, इच्छित।

कामिनी–स्त्री० (सं०) कामवेगका अनुभव करनेवाली स्त्री; कामनायुक्त स्त्री; सुंदरी स्त्री; भीरु स्त्री; मदिरा; दारुहल्दी; बाँदा। **–कांचन**–पु० सुंदरी स्त्री और धन। **–कांत**–पु० एक वृत्त। **–प्रिया**–स्त्री० एक शराब।

कामिल–वि० (अ०) पूरा, संपूर्ण, तमाम; योग्य; पूर्ण ज्ञाता (सिद्ध पुरुष)।

कामी–स्त्री० काँसेका ढाला हुआ छड़।

कामी(मिन्)–वि० (सं०) कामनायुक्त, चाह रखनेवाला; जिसमें कामवेगकी प्रबलता हो, विषयासक्त। पु० प्यार करनेवाला, लंपट पुरुष; चकवा; कबूतर; गौरा; चंद्रमा; शिव; परमेश्वर।

कामुक–वि० (सं०) चाहनेवाला; कामी। पु० कामुक पुरुष; गौरवा या गौरैया पक्षी; अशोकवृक्ष।

कामुका–वि०, स्त्री० (सं०) धनकी इच्छा करनेवाली। स्त्री० धन चाहनेवाली स्त्री।

कामुकी–वि० स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी; स्त्री० कामिनी।

कामेश्वरी–स्त्री० एक भैरवी; कामाख्या देवीकी एक मूर्ति।

कामोद–पु०(सं०) सम्पूर्ण जातिका एक राग। **–कल्याण**–पु० एक संकर राग। **–तिलक**–पु० एक संकर राग। **–नट**–पु० एक संकर राग। **–सामंत**–पु० एक संकर राग।

कामोदक–पु० (सं०) वह जलांजलि जो विहित न होतीं हुई भी स्वेच्छासे मृत व्यक्तिको दी जाय।

कामोदा–स्त्री० (सं०) संपूर्ण जातिकी एक रागिनी; एक पौधा।

कामोदी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

कामोद्दीपक–वि० (सं०) काम, सहवासकी इच्छा बढ़ानेवाला।

कामोन्माद–पु० (सं०) कामवासनाकी प्रबलता; कामवासना पूरी न होनेसे उत्पन्न उन्माद या व्याधि।

काम्य–वि० (सं०) चाहने योग्य; जिसकी चाह, कामना हो; सुंदर; उद्देश्यविशेषसे किया हुआ। **–कर्म(न्)**–पु० फलकामनासे अथवा उद्देश्य-विशेषसे किया जानेवाला कर्म। **–दान**–पु० स्वीकार करने योग्य दान; रत्नादि बहुमूल्य वस्तुओंका दान; स्वेच्छासे दिया हुआ दान। **–मरण**–पु० अपनी इच्छासे प्राणत्याग करना; आत्महत्या।

काम्यक–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध वन।

काम्या–स्त्री० (सं०) इच्छा, कामना; उद्देश्य।

काम्येष्टि–स्त्री० (सं०) कामनाकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला यज्ञ।

काय–पु० (सं०) शरीर, देह; पेड़का तना; (तारोंके अतिरिक्त) वीणाका ढाँचा; संघ, समूह; मूल धन; निवासस्थान; स्वभाव; छिगुनी; प्राजापत्य विवाह; लक्ष्य। **–क्लेश**–पु० शारीरिक कष्ट, पीड़ा। **–चिकित्सा**–पु० आयुर्वेदके ८ विभागोंमेंसे तीसरा जिसमें सर्वांगव्यापी रोगोंकी चिकित्सा दी गयी है। **–बंधन**–पु० करधनी; शुक्र और रक्तका योग। **–मान**–पु० पर्णशाला। **–वलन**–पु० कवच। **–स्थ**–पु० परब्रह्म; एक हिंदू जाति। **–स्था**–स्त्री० कायस्थ स्त्री; हड़; आँवला; तुलसी; काकोली। **–स्थी**–स्त्री० कायस्थकी स्त्री।

कायक–वि० (सं०) शरीर-संबंधी।

क़ायज़ा–पु० (अ०) लगामकी डोरी; घोड़ेको बाँधनेका एक तरीका जिसमें लगामकी डोरी जीनमें बाँध देते हैं।

कायथ†–पु० कायस्थ जाति।

क़ायदा–पु० (अ०) नियम; ढंग; विधान; क्रम।

कायफर†–पु० दे० 'कायफल'।

कायफल–पु० एक पेड़ जिसकी छाल दवाके तौरपर काममें लायी जाती है।

क़ायम–वि० (अ०) खड़ा हुआ; ठहरा हुआ; स्थिर; स्थायी; निर्धारित; बराबरीमें रहनेवाला (बाजी इ०)। **–मिज़ाज**–वि० स्थिरचित। **–मुक़ाम**–वि० दूसरेकी जगह अस्थायी रूपसे काम करनेवाला, एवज।

क़ायमा–पु० (अ०) ९० अंशका कोण, समकोण।

क़ायमी–स्त्री० कायम होना; स्थिर होना।

कायर–वि० डरपोक, बुजदिल।

क़ायल–वि० (अ०) माननेवाला; अपनी गलती स्वीकार करनेवाला; निरुत्तर। मु०**–करना**–किसीसे कोई बात मनवा लेना; निरुत्तर कर देना। **–माकूल करना**–कायल करना। **–होना**–मान लेना; विपक्षीकी बातका औचित्य स्वीकार करना; निरुत्तर हो जाना।

कायली–स्त्री० लज्जा, ग्लानि; † आलस्य।

कायांतरण–पु० (मेटामोर्फोसिस) जीवनकी वह क्रिया जिसमें कतिपय प्राणी (कीट, मेंढक) अण्डेकी अवस्थासे विभिन्न शक्ल धारण करते हुए वयस्क अवस्था तक पहुँचते हैं। जैसे तितलीके अण्डेसे पहले लार्वा (डिंभक) तब प्यूपा बनता है और बादमें तितलीका रूप उसे मिलता है।

काया–स्त्री० देह, शरीर। **–कल्प**–पु० शरीरका नया या जवान हो जाना; कायाकल्पकी विधि या ओषधि; चोला बदल जाना। **–पलट**–पु० चोला बदल जाना; भारी, क्रांतिकारी परिवर्तन।

कायिक–वि० (सं०) देह-संबंधी; शरीरसे किया हुआ; संघ-संबंधी (बौ०)।

कायिका–स्त्री० (सं०) काय (मूलधन)का सूद। **–वृद्धि**–स्त्री० अपने शरीरसे या पशुओंसे काम कराकर सूद अदा करनेका एक तरीका।

कायिकी–स्त्री० शरीर क्रिया विज्ञान (फिजियालॉजी)।

कारंड, कारंडव–पु० (सं०) एक तरहका हंस या बतख।

कारंधमी(मिन्)–पु० (सं०) कीमियागर।

कारंभा–स्त्री० (सं०) प्रियंगु नामक वृक्ष।

कार–पु० (फा०) काम, कार्य; (समासके अंतमें) करनेवाला। **–करदा**–वि० अनुभवप्राप्त, जो काम कर चुका हो। **–कुन**–पु० काम करनेवाला, कारिंदा। **–ख़ाना**–पु० वह जगह जहाँ कोई बिक्रीकी चीज बनायी जाय; कार्यालय; कारबार; मामला; घटना। **–ख़ानेदार**–पु० कारखानेका मालिक। **–गर**–वि० असर करनेवाला, प्रभावकर। **–गाह**–स्त्री० कारखाना; करघा; दुनिया। **–गुज़ार**–वि० कार्यकुशल, काममें चतुर। **–गुज़ारी**–स्त्री० मुस्तैदी और होशियारीसे काम करना। **–चोब**–पु० लकड़ीका ढाँचा जिसपर कपड़ा तानकर कशीदे या गुलकारीके काम करते हैं; जरदोजीका काम करनेवाला; गुलकारीका काम। **–चोबी**–स्त्री० गुलकारी, कशीदेका काम। वि० कशीदेका (काम)। **–ज़ार**–पु० युद्ध, रण। **–नामा**–पु० प्रशंसनीय काम; कार्यावली; करतूत। **–परदाज़**–वि० काम करनेवाला, प्रबंधक। **–परदाज़ी**–स्त्री० कारगुजारी। **–बंद**–वि० अमल करनेवाला; आज्ञा पालन करनेवाला (होना)। **–बार**–पु० काम-काज; रोजगार, व्यापार। **–बारी**–वि० कामकाजी; रोजगारी। **–रवाई**–स्त्री० किसी कामको करना, जारी रखना; काम; हरकत; उपाय, तदबीर; चाल। **–साज़**–वि० काम बनाने, सँवारनेवाला। **–साज़ी**–स्त्री० काम बनानेकी योग्यता; चालबाजी। **–स्तानी**–स्त्री० साजिश, चालबाजी। –(रे) **ख़ैर**–पु० नेक काम, पुण्य कार्य, भलाईका काम। –(रो) **बार**–पु० दे० 'कारबार'।

कार*–वि० काला। पु० (सं०) (समासके अंतमें) करनेवाला, कर्ता (ग्रंथकार, चित्रकार इ०); क्रिया, काम (चमत्कार इ०); वर्णके अंतमें उसके उच्चारणके अर्थमें ('टकार', 'नकार' इ०); स्वानुकारी शब्दके अंतमें उसकी ध्वनिके अर्थमें; प्रयत्न; व्रतानुष्ठान; पति; स्वामी; संकल्प; शक्ति; कर; बर्फका ढेर; हिमालय; वध; ओलेसे उत्पन्न जल। स्त्री० (अं०) गाड़ी; मोटर गाड़ी।

कारक–पु० (सं०) संज्ञा या सर्वनामका वह रूप जिससे वाक्यमें दूसरे शब्दोंके साथ उसका संबंध प्रकट होता है। वि० करनेवाला (लाभकारक, हानिकारक इ०–प्रायः समासांतमें) **–दीपक**–पु० एक अर्थालंकार जिसमें बहुत-सी क्रियाओंके साथ कारक अर्थात् कर्ताका एक ही बार कथन हो। **–विभक्ति**–स्त्री० छठीको छोड़कर और सब विभक्तियाँ। **–हेतु**–पु० वह हेतु जो कार्यका उत्पादक हो।

कारखी*–स्त्री० कालिख, कलंक।

कारज–वि० (सं०) उँगली संबंधी। * पु० दे० 'कार्य'।

कारटा*–पु० करट, कौआ।

कारटून–पु० (अं०) किसी सामयिक घटना या व्यक्तिको हास्यजनक रूपमें सामने लानेवाला चित्र, व्यंग्यचित्र।

कारटूनिस्ट–पु० (अं०) कारटून बनानेवाला, व्यंग्य-चित्रकार।

कारण–पु० (सं०) किसी बातके होनेका हेतु, वह जिससे कार्यकी उत्पत्ति हो, निमित्त, सबब; साधन; कथावस्तुका आधार (ना०); ज्ञानेंद्रिय; शरीर; चिह्न; प्रमाण; वध; कार्य; देव; अणु। **–माला**–स्त्री० एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारणसे उत्पन्न होनेवाला कार्य स्वयं उत्तरोत्तर कारण बनते हुए अन्य कार्य उत्पन्न करता चलता है। **–वादी(दिन्)**–पु० दावा, फरियाद करनेवाला। **–वारि**–पु० वह जल जो सृष्टिके आरंभमें उत्पन्न हुआ था। **–शरीर**–पु० अविद्यारूप शरीर, आनंदमय कोश (वे०)।

कारणा–स्त्री० (सं०) पीड़ा; वेदना; यम-यातना; बढ़ावा।

कारणिक–पु० (सं०) विचारक; परीक्षक; मुहर्रिर, अर्जीनवीस।

कारतूस–पु० पीतल, दफ्ती आदिकी बनी खोली जिसमें बंदूक, तमंचे आदिके एक फ़ैरभरके लिए गोली, बारूद भरी रहती है।

कारन*–पु० दे० 'कारण'; करुण स्वर–'नागमती कारन कै रोई'–प०।

कारनिस–स्त्री० (अं०) दीवारकी कँगनी।

कारनी*–वि० कर्मकी प्रेरणा करनेवाला; भेद करानेवाला। † पु० प्रेतबाधा आदिसे ग्रस्त व्यक्ति।

कारपोरल–पु० (अं०) फौजका एक छोटा अफसर।

कारबंकल–पु० (अं०) पीठका (जहरीला) फोड़ा।

कारबन–पु० (अं०) भौतिक सृष्टिके मूलभूत तत्त्वोंमेंसे एक जो हीरे, कोयले, कारबोनिक एसिड (गैस) आदिमें पाया जाता है। **–पेपर**–पु० गहरे रंगका कागज जिसे नीचे रखकर कड़ी पेंसिलसे लिखने या टाइप करनेपर उसके नीचे रखे हुए कागजपर नकल उतर आती है, मसिपत्र।

कारभ–वि० (सं०) ऊँटसे प्राप्त या संबंध रखनेवाला।

कारमिहिका–स्त्री० (सं०) कपूर।

कारयिता(तृ)–वि० (सं०) करानेवाला।

कारव–पु० (सं०) कौआ।

कारवाँ–पु० (फा०) देशांतर जानेवाले यात्रियों, व्यापारियोंका झुंड।

कारवेल्ल, कारवेल्लक–पु० (सं०) करेला।

कारस्कर–पु० (सं०) एक वृक्ष, किंपाक।

कारा–स्त्री० (सं०) कैद; कैदखाना; पीड़ा; दूती; सुनारिन; स्वर। * वि० काला। * पु० सर्प। **–गुप्त**–पु० कैदी। **–गृह**–पु० कैदखाना। **–पथ**–पु० रामायणमें वर्णित एक जनपद। **–पाल**–पु० जेलका रक्षक, 'जेलर'। बंदीगृह या वहाँके बंदियोंकी व्यवस्था, देखरेख आदि करनेवाला मुख्य अधिकारी। **–रोधन**–पु० (इनकारसरेशन) कारागृहमें बंद कर देने, जेल भेज देनेकी क्रिया। **–वास**–पु० कैद। **–वासी(सिन्)**–पु० कैदी, बंदी।

कारागार–पु० (सं०) कैदखाना।

कारागारिक–पु० (सं०) दे० 'कारापाल'।

कारामद–वि० (फा०) काम आनेके लायक, उपयोगी।

कारायिका–स्त्री० (सं०) सारसी।

कारिंदा–पु० काम करनेवाला, कर्मचारी, गुमाश्ता।

कारि–स्त्री० (सं०) कार्य। पु० कलाकार; यंत्रविद्।

क़ारिक़–पु० (अ०) कुर्की करनेवाला।

कारिका–स्त्री० (सं०) श्लोकबद्ध व्याख्या; नटी, नर्तकी; उत्पीड़न; सूद; एक संकीर्ण राग; व्यापार।

कारिख*–स्त्री० दे० 'कालिख'।

कारित–वि० (सं०) कराया हुआ।

कारिता–स्त्री० (सं०) वह सूद जो ऋणीने देना स्वीकार किया हो। **–वृद्धि**–स्त्री० ऋण लिये हुए धनको किसीको देकर उससे लिया जानेवाला सूद।

कारी–*वि० काली; (फा०) असर करनेवाला; गहरा। **–ज़ख्म**–पु० घातक चोट।

कारी(रिन्)–वि० (सं०) (समासांतमें) करनेवाला ('कल्याण-कारी' इ०)। पु० कारीगर; कलाकार।

कारीगर–पु० (फा०) दस्तकार, शिल्पी।

कारीगरी–स्त्री० (फा०) शिल्प, दस्तकारी; शिल्प-कौशल।

करीष–पु० (सं०) सूखे गोवर, करसीका ढेर।

कारुंडिका, कारुंडी–स्त्री० (सं०) जोंक।

कारु–पु० (सं०) शिल्पी, कारीगर; विश्वकर्मा; शिल्प। वि० करने, वनानेवाला; भयंकर। **–कार्य**–पु० शिल्पकार्य, जाली, नक्काशी आदिका कार्य। **–कौशल**–पु० मूर्ति गढने या नक्काशी आदिका कार्य करनेकी निपुणता, शिल्पचातुर्य। **–चौर**–पु० सेंध मारनेवाला; डाकू। **–ज**–पु० शिल्प, काम; कारीगरीका काम (चित्र, मूर्ति आदि); देहके तिल आदि; हाथीका वच्चा; गेरू; वल्मीक; फेन। **–शासिता(तृ)**–पु० कारीगरोंकी देख-भाल करने या उन्हें कार्यमें नियुक्त करनेवाला।

कारुक–पु० (सं०) कलाकार, शिल्पी।

कारुणिक–वि० (सं०) दयाशील, करुणा करनेवाला, करुणा उत्पन्न करनेवाला, करुणायुक्त (वर्णन, दृश्य इ०)।

कारुण्य–पु० (सं०) दया, करुणा।

कारुपथ–पु० दे० 'कारापथ'।

कारूँ–पु० (अ०) मूसाका चचेरा भाई जो वहुत धनवान्, पर वड़ा कंजूस था। **–का ख़ज़ाना**–वेहिसाव दौलत।

कारूनी–स्त्री० घोड़ोंकी एक जाति।

क़ारूरा–पु० (अ०) चिकित्सकको रोगीका पेशाव दिखानेकी शीशी; पेशाव; वारूदकी कुप्पी। मु०–**मिलना**–गहरी दोस्ती होना, वहुत मेल होना।

कारौंछ–स्त्री० दे० 'कालौंछ'।

कारो*–वि० काला।

कारोनर–पु० (अं०) वह अफसर जो दुर्घटना, आघात, जहर आदिसे मरा हुआ माने जानेवाले व्यक्तिकी लाशकी जाँच करता है।

कारोबार–दे० 'कार' (–रो)के साथ।

कार्क–पु० (अं०) एक पेड़की छाल, उस छालसे वनी शीशी-वोतलोंमें लगायी जानेवाली डाट, काग।

कार्कश्य–पु० (सं०) कठोरता; दृढ़ता; ठोसपन; निर्दयता।

कार्ड–पु० (अं०) मोटे कागजका टुकड़ा; ताशका पत्ता; पोस्टकार्ड। **–बोर्ड**–पु० दफ्ती।

कार्ण–वि० (सं०) कर्ण-संवंधी। पु० कानका मैल; कर्णफूल। **–छिद्रक**–पु० एक तरहका कुआँ।

कार्तयुग–वि० (सं०) कृतयुग-संवंधी। पु० कृतयुग, सत्ययुग।

कार्तवीर्य–पु० (सं०) कृतवीर्यका वेटा, सहस्रार्जुन।

कार्तस्वर–पु० (सं०) सोना; धतूरा।

कार्तिक–पु० (सं०) आश्विनके वादका महीना; वार्हस्पत्य वर्ष; स्कंद।

कार्तिकी–स्त्री० (सं०) कार्त्तिककी पूर्णिमा।

कार्तिकेय–पु० (सं०) स्कंद। **–प्रसू**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी माता, पार्वती।

कार्दम–वि० (सं०) कीचड़से सना, भरा हुआ; कर्दम प्रजापतिसे संवंध रखनेवाला।

कार्पट–पु० (सं०) कार्यार्थी, उम्मेदवार; चीथड़ा; लाख।

कार्पटिक–पु० (सं०) यात्री; यात्रियोंका समूह; गंगा आदि नदियोंका जल लाकर जीविका चलानेवाला; अनुभवी व्यक्ति; परोपजीवी व्यक्ति।

कार्पण्य–पु० (सं०) कृपणता, कंजूसी; निर्धनता; दया।

कार्पास–वि० (सं०) कपासका वना। पु० कपासका वना (सूती) वस्त्रादि। **–नासिका**–स्त्री० तकुआ।

कार्पाससौत्रिक–वि० (सं०) कपासके सूतका वना हुआ।

कार्पासिक–वि० (सं०) दे० 'कार्पास'।

कार्पासिका, कार्पासी–स्त्री० (सं०) कपासका पौधा।

कार्म–वि० (सं०) कर्मशील, परिश्रमी।

कार्मण–वि० (सं०) काममें होशियार, कर्मकुशल। पु० मंत्र, ओषधि आदिसे मारण, मोहन आदि करना।

कार्मना*–स्त्री० दे० 'कार्मण'।

कार्मार–पु० (सं०) शिल्पी, कारीगर।

कार्मारक–पु० (सं०) लोहारका काम।

कार्मिक–पु० (सं०) वह वस्त्र जिसमें चक्र, स्वस्तिक आदि चिह्न वुनकर वनाये गये हों; कर्ममें संलग्न व्यक्ति।

कार्मुक–पु० (सं०) धनुष्, चाप; धुनकी; धनुराशि; वाँस। वि० कर्मशील।

कार्य–पु० (सं०) जो कुछ किया जाय या करना है, कर्तव्य; काम; धंधा, व्यवसाय; जव वल किसी कणको अपनी दिशामें खिसकाता है तो 'कार्य' पूरा होता है। इस कार्यकी नाप 'अर्ग'में की जाती है। एक डाइनका वल यदि कणको अपनी दिशामें १ सेमी खिसकाये तो १ अर्ग कार्य पूरा होगा। धार्मिक कृत्य; प्रभाव; कारणका विकार, परिणाम; लेन-देनका विवाद; मुकदमा; प्रयोजन; हेतु; फलित ज्योतिषमें लग्नसे दसवाँ स्थान; नाटकका अंतिम फल। **–कर**–वि० काम करनेवाला; प्रभावकर। **–करण**–पु० कार्यालय, दफ्तर, आफिस। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० काम करनेवाला, कर्मचारी। **–कारण-भाव**–पु० कार्य और कारणका संवंध। **–कारी**–वि० (ऐक्टिंग) किसी पदाधिकारीके छुट्टी आदिपर जानेके समय उसके स्थानपर काम करनेवाला, कार्यवाहक। **–काल**–पु० कार्य करनेका अवसर, समय; किसी पदपर रहनेका काल। **–कुशल**–वि० काममें होशियार, दक्ष। **–क्रम**–पु० होने या किये जानेवाले कार्योंका क्रम या उनकी सूची। **–क्षम**–वि० जिसमें काम ठिकानेसे कर सकनेकी योग्यता या शक्ति हो। **–क्षमता**–स्त्री० (सं०) (एफिशेन्सी) काम अच्छी तरहसे करनेकी योग्यता या सामर्थ्य। **–ग्रहणकाल**–पु० (जाइनिंग टाइम) किसी संस्था आदिमें या किसी पदपर नियुक्त होनेके वाद काम शुरू करनेका समय। **–चिंतक**–वि० सावधान, सोच-समझकर काम करनेवाला। पु० शासक; स्थानीय प्रवंधक। **–दर्शन**–पु० कामकी निगरानी। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० निगरानी करनेवाला, निरीक्षक। **–पंचक**–पु० ईश्वरके पाँच काम–अनुग्रह, तिरोभाव, आदान, स्थिति और उद्भव। **–परिषद्**–स्त्री० (काउंसिल ऑफ ऐक्शन) किसी कार्य, काररवाई, आंदोलन आदिका संचालन, नियंत्रण आदि करनेके लिए गठित परिषद्। **–पालिका**–स्त्री० (एक्जिक्यूटिव) शासनका वह विभाग जिसके जिम्मे संसद् द्वारा स्वीकृत विधि-विधानोंको

कार्यान्वित करानेका दायित्व हो। **–०शक्ति**–स्त्री० (एग्ज़ीक्यूटिव पॉवर) विधि, आज्ञप्ति, न्यायिक अभिनिर्णय आदिको कार्यमें परिणत कराने, पालन करानेकी शक्ति। **–पुट**–पु० अंड-बंडमें समय वितानेवाला, सनकी आदमी। **–भार**–पु० किसी कार्य या पदका दायित्व। **–वस्तु**–स्त्री० उद्देश्य। **–वाहक**–वि० दे० 'कार्यकारी'। **–वाह-संख्या**–स्त्री० (कोरम) दे० 'गणपूर्ति'। **–वृत्त पुस्तक**–स्त्री० (मिनिटवुक) दे० 'विवरणपंजी'। **–वाही-(हिन्)**–वि०, पु० कार्यका भार उठानेवाला (दे० क्रममें)। **–विवरण**–पु० सभा, संस्था आदिमें हुए कार्योंका विवरण या हाल। **–शेष**–पु० किसी कामका बाकी भाग।**–समिति**–स्त्री० (वर्किंग कमिटी) किसी संस्थाके सदस्योंकी वह छोटी समिति जो उसके कार्योंका संचालन करनेके लिए वनायी गयी हो। **–सिद्धि**–स्त्री० कार्यकी सफलता, कामयावी। **–स्थगन-प्रस्ताव**–पु० (ऐडजर्नमेंट मोशन) किसी अत्यंत आवश्यक एवं सार्वजनिक महत्त्वके प्रश्नपर विचार करनेके लिए विधान-सभा आदिमें रखा गया प्रस्ताव जिसमें प्रार्थना की जाती है कि अन्य कार्य छोड़कर पहले इसीपर विचार किया जाय। **–स्थान**–पु० कार्यालय, दफ्तर।

कार्यतः(तस्)–अ० (सं०) कार्यरूपमें; फलतः।

कार्यवाही–स्त्री० किसी सभा आदिमें हुआ काम, काररवाई।

कार्याकार्य–पु० (सं०) कर्तव्य-अकर्तव्य। **–विचार**–पु० कर्तव्य-अकर्तव्यका विचार।

कार्याक्षम–वि० (सं०) कार्य करनेमें असमर्थ।

कार्याधिप–पु० (सं०) कार्यनिरीक्षक; प्रश्नका निर्णायक ग्रह (ज्यो०)।

कार्याध्यक्ष–पु० (सं०) नगरपालिका या संस्थाका वह प्रधानाधिकारी जो प्रशासन-संबंधी कार्योंकी देख-रेख करता है।

कार्यान्वय, कार्यान्वयन–पु० किसी प्रस्ताव, आदेशादिका कार्यमें परिणत किया जाना।

कार्यान्वित–वि० (सं०) कार्यसे संबद्ध; कार्यरूपमें लाया हुआ।

कार्यान्विति–स्त्री० दे० 'कार्यान्वय'।

कार्यार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) स्वकार्यसिद्धिका यत्न करनेवाला; उम्मेदवार; मुकदमेकी पैरवी करनेवाला।

कार्यालय–पु० (सं०) काम करनेका स्थान, दफ्तर; कारखाना।

कार्यावली–स्त्री० (सं०) कार्य-सूची; काररवाई।

कार्या(र्यिन्)–वि० (सं०) कार्यार्थी।

कार्येक्षण–पु० (सं०) कामकी निगरानी।

कार्श्य–पु० (सं०) दुवलापन; सालका पेड़; वड़हर; कचूर।

कार्ष, कार्षक–पु० (सं०) कृषक, खेतिहर।

कार्षापण, कार्षिक–पु० (सं०) भारतमें पुराने समयमें चलनेवाला एक सिक्का।

कार्ष्ण–वि० (सं०) कृष्ण, कृष्ण द्वैपायन या कृष्ण मृगसे संवंध रखनेवाला; काला। पु० काले मृगका चर्म।

कार्ष्णि–पु० (सं०) कृष्णपुत्र प्रद्युम्न, कामदेव; शुकदेव।

कार्ष्ण्य–पु० (सं०) कालापन।

कालंजर–पु० (सं०) एक पहाड़ तथा उसके पासका प्रदेश; सन्न्यासियोंकी सभा; शिव।

काल–पु० (सं०) समय, अवसर; अवधि; समयका कोई विभाग (घड़ी, घंटा आदि); मौसम; अंत; मृत्यु; महाकाल; यम; काला या गहरा नीला रंग; शिव; शनि; प्रारब्ध; आँखका काला भाग; कोयल; लोहा; एक गंधद्रव्य। वि० काला; गहरे नीले रंगका; हानिकर। **–कंठ**–पु० शिव; नीलकंठ; मोर; गौरैया; खंजन। **–कंडक**–पु० पानीका साँप, डेड़हा। **–कटंकट**–पु० शिव। **–करंज**–पु० एक तरहका कंजा। **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० दुर्भाग्य। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० मृत्यु। **–कल्प**–वि० घातक, जानलेवा। **–कवलित**–वि० जिसे कालने अपना ग्रास बना लिया हो, मृत। **–कवि**–पु० अग्नि। **–काल**–पु० परब्रह्म। **–कील**–पु० कोलाहल। **–कुंज**–पु० विष्णु। **–कुंठ**–पु० यम। **–कूट**–पु० एक भयानक विष, हलाहल विष। **–कृत**–वि० कालका पैदा किया हुआ। **–कृत्**–पु० सूर्य; मोर; ब्रह्म। **–कोठरी**–स्त्री० (हिं०) भयंकर अपराधियोंको एकाकी रखनेके लिए जेलमें बनी हुई एक कोठरी जो बहुत तंग और अँधेरी होती है (सालिटरी सेल)। **–क्रम**–पु० समयकी गति। **–०विज्ञान**–पु० घटनाओं आदिका काल निश्चित करनेसे संबंधित विज्ञान (क्रोनोलॉजी)। **–क्षेप**–पु० समय विताना, दिन काटना। **–खंज,–खंजन**–पु० यकृत। **–खंड**–पु० यकृत; परमेश्वर। **–गंगा**–स्त्री० यमुना नदी। **–गंडैत**–पु० (हिं०) एक तरहका विषैला साँप। **–ग्रंथि**–स्त्री० वर्ष, साल। **–चक्र**–पु० समयका चक्र; भाग्यपरिवर्तन; सूर्य। **–चिह्न**–पु० मृत्यु निकट होनेके लक्षण। **–जयी**–वि० अंग्रेजी 'क्लासिक'के लिए प्रयुक्त। **–ज्ञ**–वि० (कार्यविशेषके) अवसरको पहचाननेवाला। पु० ज्योतिषी; मुर्गा। **–ज्येष्ठ**–वि० उम्रमें बड़ा; प्राप्तवयस्क, सयाना। **–त्रय**–पु० तीनों काल–भूत, भविष्य और वर्तमान। **–दंड**–पु० मृत्यु; यमराजका दंड। **–दोष**–पु० (एनैक्रॉनिज्म) किसी वस्तु, व्यक्ति या घटनाका अपने वास्तविक या ठीक समयसे बहुत पहले अथवा पीछे होना वर्णित किया जाना या बतलाया जाना। **–धर्म**–पु० अवसर, ऋतुविशेषके उपयुक्त आचरण; मृत्यु। **–नाथ**–पु० शिव; कालभैरव। **–निर्यास**–पु० गुग्गुल। **–निशा**–स्त्री० दीपावलीकी रात; घोर अँधेरी रात। **–नेमि**–पु० रावणका मामा जो हनुमान् द्वारा मारा गया; एक दानव जो विष्णुके हाथों मारा गया।**–पक्व**–वि० अपने समयपर, स्वाभाविक रूपमें पका हुआ। **–पाश**–पु० यमका फंदा; फाँसी। **–पाशिक**–पु० जल्लाद। **–पुरुष**–पु० कालरूप ईश्वर; ज्योतिष शास्त्र; काला आदमी; वायु-चक्र; काल। **–पृष्ठ**–पु० एक तरहका हिरन; कंक पक्षी। **–प्रभात**–पु० शरत् ऋतु। **–प्रमेह**–पु० एक तरहका प्रमेह रोग जिसमें काला पेशाव होता है। **–बंजर**–पु० (हिं०) बहुत पुरानी परती। **–बाधित**–वि० ('टाइमवार्ड') दे० 'कालातीत'। **–भैरव**–पु० शिव; काशीमें शिवके एक मुख्य गण। **–मान**–पु० कालकी मात्रा, माप। **–मुख**–पु० काले मुँहवाला बंदर, लंगूर; एक शैव संप्रदाय। **–मेषी**–स्त्री० मंजिष्ठा। **–यवन**–पु० एक यवनराज जिसने मथुरापर चढ़ाई की थी और कृष्णके कौशलसे मुचकुंदका कोपभाजन होकर भस्म हुआ। **–यापन**–पु० वक्त गुजारना, दिन काटना। **–युक्त**–पु० एक संवत्सर। **–योग**–पु० नियति, भाग्य। **–योगी(गिन्)**–पु० शिव। **–रात,–राति***–स्त्री० दे० 'कालरात्रि'। **–रात्रि,–रात्री**–स्त्री० अँधेरी, डरावनी रात; प्रलयकी रात; मौतकी रात; दिवालीकी रात; हर आदमीके ७७वें वर्षके ७वें मासकी ७वीं रात; दुर्गाका एक नाम; यमराजकी बहिन। **–लोह,–लौह**–पु० इस्पात। **–वाचक** –वि० जिससे समयका बोध हो। **–विपाक**–पु० किसी कामके पूरा होनेके लिए नियत कालका आ जाना, **–विपर्यय**–पु० (एनैक्रानिज्म) एक दोष जिसमें कोई ऐसा वर्णन किया जाय जो काल-विशेषके अनुरूप या अनुकूल न हो, कालदोष। **–वृद्धि**–स्त्री० बँधे समयपर दिया जानेवाला ब्याज (माहवार, तिमाही, छमाही आदि)। **–वेला**–स्त्री० शनिका काल; वह आधी घड़ीका समय जब कोई धर्मकृत्य करनेका निषेध है (भिन्न-भिन्न वारोंमें यह समय भिन्न-भिन्न होता है)। **–शाक**–पु० पटुआ; करेमू। **–सर्प**–पु० काला साँप जो अति विषधर होता है। **–सार**–पु० काला हिरन; पीत चंदन। **–सूत्र**–पु० २८ प्रधान नरकोंमेंसे एक; मृत्यु। **–सूर्य**–पु० प्रलयकालका सूर्य। **–सेन**–पु० हरिश्चंद्रको मोल लेनेवाला डोम। **–स्कंद**–पु० तमाल वृक्ष। **–हर**–पु० शिव।

काल†–पु० अकाल, दुर्भिक्ष।

कालक–वि० (सं०) काला। पु० तिलकका काला दाग; पानीका साँप; आँखका काला भाग; एक अन्न; यकृत; एक केतु; अव्यक्त राशि (ग०)।

कालबूत–पु० मेहराब बनानेके लिए रखा गया कच्चा भराव।

कालम–पु० (अं०) (अखबार आदिके) पृष्ठका खड़ी रेखा या रिक्त स्थानसे किया गया खंड।

कालर–पु० (अं०) कपड़ेकी इकहरी या दुहरी पट्टी जो कोट-कमीज आदिमें लगाकर या अलगसे गलेमें पहनी जाती है; कुत्ते आदिके गलेमें बाँधनेका चमड़े या धातुका पट्टा; *कल्लर, रेह–'ते नर कधी न नीपजैं ज्यों कालरका खेत'–साखी।

कालशेय–पु० (सं०) छाछ, मट्ठा ।

कालसिर–पु० जहाजके मस्तूलका सिरा ।

कालांग–वि० (सं०) काले शरीरवाला; काला (खड्‌ग आदि) ।

कालांजन–पु० (सं०) एक तरहका सुरमा ।

कालांजनी–स्त्री० (सं०) एक छोटी झाड़ी जो दवाके काम आती है ।

कालांडज–पु० (सं०) कोकिल ।

कालांतर–पु० (सं०) दूसरा समय, अन्य काल । **–विष**–पु० वह जंतु जिसके काटनेका जहर कुछ अरसेके बाद चढ़ता है (चूहा, पागल कुत्ता आदि) ।

कालांतरित पण्य–पु० (सं०) वह माल जो बहुत समय पहलेका बना हो ।

काला–वि० कोयलेके रंगका, स्याह, कृष्णवर्ण; कलुषित; भारी, बहुत बड़ा । (स्त्री० 'काली' ।) पु० काला साँप; काले रंगका आदमी । **–कानून**–पु० लोकमतके विरुद्ध बनाया गया कानून (ब्रिटिश शासनकालका आर्डिनैंस) । **–कंद**–पु० एक तरहका धान । **–कलूटा**–वि० बहुत काला । **–चोर**–पु० भारी चोर; कोई निकृष्ट, हीन जन । **–जीरा**–पु० स्याह रंगका जीरा । **–तिल**–पु० काले रंगका तिल । (**मु० –०चबाना**–दबैल होना ।) **–दाना**–पु० एक लता जिसके बीज दवाके काम आते हैं । **–देव**–पु० इंदरसभाकी कथामें वर्णित एक देव (दानव); काला और डरावनी सूरतका आदमी । **–धतूरा**–पु० एक प्रकारका धतूरा । **–धन**–पु० अवैध या अनैतिक उपायों द्वारा प्राप्त तथा प्रायः छिपाकर रखा गया धन । **–नमक**–पु० साँचर नमक । **–नाग**–पु० काला साँप; अति दुष्ट, कुटिल जन (ला०) । **–पहाड़**–पु० दुःखद, बोझिल वस्तु । **–पान**–पु० ताशमें हुकुमका रंग । **–पानी**–पु० अंडमानका टापू जहाँ पहले आजीवन कैदका दंड पानेवाले अपराधी भेजे जाते थे; आजीवन कैदकी सजा; दे० 'द्वीपान्तरण' । **–बाजार**–पु० वह व्यापार जिसमें वस्तुएँ उचित या नियन्त्रित मूल्यके बजाय लुक-छिपकर अत्यधिक दामोंपर बेची या खरीदी जायँ । **–बाल**–पु० पशम । **–भुजंग**–वि० अति काला । **–मोहरा**–पु० सींगियाकी जातिका एक पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है । **–(ली)अंछी**–स्त्री० एक. काँटेदार झाड़ी । **–आँधी**–स्त्री० वह आँधी जिसके आनेसे अँधेरा छा जाय, भयानक आँधी । **–खाँसी**–स्त्री० बच्चोंको होनेवाली एक तरहकी खाँसी जो बहुत कष्टकर होती है । **–घटा**–स्त्री० काले रंगके घने बादलोंका समूह । **–जबान**–स्त्री० वह जीभ जिसकी अमंगल बातें प्रायः सत्य हो जायँ । **–जीरी**–स्त्री० एक पौधेके बीज जो दवाके काम आते हैं । **–मिट्टी**–स्त्री० चिकनी करैली मिट्टी । **–मिर्च**–स्त्री० गोल स्याह रंगकी मिर्च । **–शीतला**–स्त्री० काले दानोंवाली चेचक जो खतरनाक होती है । **–सूची**–स्त्री० (ब्लैक लिस्ट) अवांछनीय, निन्दनीय, दंडित या दंडय व्यक्तियोंकी सूची । **–हड़**–स्त्री० छोटी हड़ । **मु०–(ले)का मंतर**–साँपका मंत्र । **–कोस,–कोसों**–अ० बहुत दूर । **–सिरका**–जवान । **–के आगे चिराग नहीं जलता**–जबरदस्तके आगे कुछ जोर नहीं चलता (कहते हैं, काले साँपके फुफकारसे चिराग बुझ जाता है) ।

कालागुरु–पु० (सं०) एक तरहका काला अगरु ।

कालाग्नि–स्त्री० (सं०) दे० 'कालानल' ।

कालाजिन–पु० (सं०) काले मृगकी खाल ।

कालातिक्रमण–पु० (सं०) समय बीत जाना, देर होना ।

कालातिपात–पु० (सं०) समयका नाश; विलंब ।

कालातिरेक–पु० (सं०) दे० 'कालातिपात' ।

कालातीत–वि० (सं०) जिसका समय बीत गया हो; (टाइम-बार्ड) (दस्तावेज, ऋणपत्रादि) जो निर्धारित अवधि या समय बीत जानेपर विधिक दृष्टिसे बेकार हो गया हो ।

कालात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परमात्मा ।

कालाध्यक्ष–पु० (सं०) सूर्य; परमेश्वर ।

कालानल–पु० (सं०) प्रलयकालकी अग्नि; रुद्र, पंचमुखी रुद्राक्ष ।

कालान्विति–स्त्री० समयको निश्चित अवबोधके साथ एकसूत्रतामें उपस्थित करनेकी प्रक्रिया ।

कालाप–पु० (सं०) सिरके बाल; साँपका फण; दानव ।

कालापास–पु० (कैलिपर्स) बेलनों, गोलों आदिका व्यास नापनेका एक आला जो दो चपटे, टेढ़े फौलादके टुकड़ोंका बना होता है–ये एक ओरसे नोकदार व दूसरी ओरसे चौड़े होते हैं, व्यासमापक ।

कालायनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

कालावधि–स्त्री० (सं०) नियत काल, मुद्दत; (पीरियड) निर्धारित समयकी सीमा ।

कालाशुद्धि–स्त्री० (सं०) शुभ कार्योंके लिए निषिद्ध समय ।

कालाशौच–पु० (सं०) जन्म या मरणसे लगनेवाला अशौच ।

कालास्त्र–पु० (सं०) वह बाण जिसके प्रहारसे प्राणांत निश्चित हो ।

कालिंग–वि० (सं०) कलिंग देशका । पु० कलिंग देशका निवासी; वहाँका राजा; कलिंग देशका सर्प; हाथी; एक तरहकी ककड़ी; तरबूज; एक विषैला पौधा; एक तरहका लोहा ।

कालिंगड़ा–पु० दे० 'कलिंगड़ा' ।

कालिंगिका–स्त्री० (सं०) त्रिवृत्, त्रिधारा नामक पौधा जो दवाके काम आता है ।

कालिंगी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ककड़ी ।

कालिंजर–पु० (सं०) बाँदाके पूरबमें पड़नेवाला एक पहाड़ जो तीर्थस्थान माना जाता है; इस नामका नगर ।

कालिंद–वि० (सं०) कलिंद पर्वत या कालिंदी नदीसे संबद्ध । पु० तरबूज ।

कालिंदक–पु० (सं०) तरबूज ।

कालिंदी–स्त्री० (सं०) (कलिंद पर्वतसे निकली हुई) यमुना नदी; सगरकी माता; कृष्णकी एक पत्नी; एक रागिनी । **–कर्षण,–भेदन**–पु० बलराम (कहा जाता है कि वे अपने हलसे यमुनाको वृंदावनमें खींच लाये) । **–सू**–स्त्री० सूर्यपत्नी, संज्ञा । **–सोदर**–पु० यम ।

कालि*–अ० कल, बीता हुआ या आनेवाला दिन । **–काला**–अ० कभी, किसी समय ।

कालिक–वि० (सं०) समय-संबंधी; सामयिक, मौसमी । पु० क्रौंच पक्षी; बगला; काला चंदन; शत्रुता ।

कालिका–स्त्री० (सं०) देवीकी एक मूर्ति, चंडिका; कालिमा; काला रंग; स्याही; मेघमाला; कई किस्तोंमें दिया जानेवाला मूल्य या सूद; चार बरसकी लड़की जो कुमारी पूजनमें दुर्गारूप मानी जाती है; काले रंगकी स्त्री; मादा कौआ; श्यामा पक्षी; एक शराब; बिच्छू; बिछुआ नामका पेड़; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी । **–पुराण**–पु० कालिका देवीके माहात्म्यका वर्णन करनेवाला उपपुराण । **–वृद्धि**–स्त्री० महीने-महीने लिया जानेवाला सूद ।

कालिकेय–पु० (सं०) दक्षकन्या कालिकासे उत्पन्न एक असुर जाति ।

कालिख–स्त्री० कलौंछ; स्याही; कलंक (लगना) ।

कालिज–पु० (अं० 'कालेज') वह विद्यालय जहाँ ऊँचे, हाई स्कूलसे ऊपरके दर्जोंकी पढ़ाई हो और जो किसी विश्वविद्यालयसे संबद्ध हो ।

कालिदास–पु० (सं०) रघुवंश, कुमारसंभव आदि काव्योंके रचयिता जो महाराज विक्रमादित्यके सभा-पंडित, संस्कृतके सर्वश्रेष्ठ कवि और विश्वके सर्वश्रेष्ठ कवियोंमेंसे एक थे (समय विवादग्रस्त) ।

कालिब–पु० (अ०) साँचा; देह ।

कालिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) कालापन, स्याही; कालिख; कलंक ।

कालिय–पु० (सं०) यमुनामें रहनेवाला एक नाग जिसका दमन कृष्णने किया और वृंदावन छोड़कर चले जानेको विवश किया । **–जित्,–दमन,–मर्दन**–पु० कृष्ण । **–ह्रद**–पु० वह दह जिसमें कालिय नाग रहता था ।

काली–स्त्री० (सं०) दुर्गा, कालिका; शिवा, पार्वती; महाविद्या, दश महाविद्याओंमेंसे पहली; अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक; काले रंगकी स्त्री; रात्रि; अँधेरी रात; हिमालयसे निकली एक नदी; सत्यवती; निंदा; कालांजनी; यमकी बहिन; भीमकी स्त्री । * पु० कालिय नाग । **–तनय**–पु० भैंसा ।

कालीक–पु० (सं०) क्रौंच पक्षी ।

कालीची–स्त्री० (सं०) यमका विचार-भवन ।

कालीन–वि० (सं०) (समासांतमें) कालका; काल-संबंधी ।

क़ालीन–पु० (अ०) बड़ा गलीचा; गलीचा ।

कालीय–पु० (सं०) काला चंदन; दे० 'कालिय' ।

कालीयक–पु० (सं०) एक तरहका चंदन; एक तरहकी हलदी; केसर।

कालुष्य–पु० (सं०) मलिनता; अपवित्रता; अस्वच्छता; मतभेद।

कालेय–वि० (सं०) कलियुग-संबंधी। पु० यकृत; काला चंदन; केशर।

कालेयक–पु० (सं०) एक तरहका काला चंदन; एक सुगंधित लकड़ी; पीलिया जैसा एक रोग; कुत्ता।

कालेयरु–पु० (सं०) कुत्ता; एक तरहका चंदन।

कालेश–पु० (सं०) सूर्य; शिव।

कालौंचां–स्त्री० दे० 'कालौंछ'।

कालौंछ–स्त्री० कालिमा; कालिख।

कालोनी–स्त्री० (अं०) दे० उपनिवेश; किसी संस्थामें काम करनेवाले या अन्य लोगोंके लिए विशिष्ट उद्देश्यसे बनाये गये भवनोंका समूह या बस्ती (हैदराबाद कालोनी, सेक्रेटेरियट कालोनी)।

काल्प–वि० (सं०) कल्प-संबंधी। पु० कचूर।

काल्पनिक–वि० (सं०) कल्पनामें स्थित, कल्पित, फर्जी।

काल्य–वि० (सं०) सामयिक; शुभ; अनुकूल। पु० तड़का, प्रातःकाल।

काल्या–स्त्री० (सं०) गर्भाधानके योग्य स्त्री या गाय।

काल्ह, काल्हि*–अ० दे० 'कल'।

कावा–पु० (फा०) घोड़ेको वृत्त या दायरेमें चक्कर देना; चक्कर। **–बाज़**–वि० चक्कर लगानेवाला; छापामार। **–बाज़ी**–स्त्री० कावा काटना; दुश्मनपर जब जहाँ मौका मिले, छापा मारते रहना। **मु०–काटना**–विशेष उद्देश्यसे किसी स्थानके निकट चक्कर मारना, लगाना; किसी विशेष स्थितिसे बचनेके लिए चक्कर लगाना।

कावार–पु० (सं०) सेवार।

कावारी–स्त्री० (सं०) बिना डंडेकी छतरी।

कावृक–पु० (सं०) मुर्गा; चक्रवाक।

कावेर–पु० (सं०) केसर।

कावेरी–स्त्री० (सं०) दक्षिण भारतकी एक प्रधान नदी; वेश्या; हल्दी; संपूर्ण जातिकी एक रागिनी

काव्य–पु० (सं०) वह रचना जो रसात्मक हो; कविता; शुक्राचार्य। **–चौर**–पु० दूसरेके काव्यको अपना कहकर प्रसिद्ध करनेवाला। **–लिंग**–पु० एक अर्थालंकार, जहाँ किसी समर्थनीय अर्थका समर्थन किया जाय। **–हास्य**–पु० प्रहसन (ना०)।

काव्या–स्त्री० (सं०) समझ, बुद्धि; पूतना।

काव्यात्मक क्षण–जीवन की अत्युच्च उदात्त मनःस्थितिका वह क्षण, जो किसी भी रचनाका केन्द्र-बिंदु बनता है।

काव्यार्थापत्ति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ 'वह कीन्ह्यो तो यह कहा, यों कहनावति होय'।

काश–पु० (सं०) काँस; काँसका फूल; खाँसी; एक मुनि; कांति। अ० (फा०) इच्छा आदिका सूचन करनेके लिए इसका प्रयोग होता है, ईश्वर करता!

काशि–पु० (सं०) मुट्ठी; सूर्य; ज्योति। स्त्री० दे० 'काशी'। **–राज**–पु० काशीका राजा, दिवोदास–धन्वंतरि।

काशिका–स्त्री० (सं०) काशीपुरी; पाणिनीय व्याकरणपर लिखी एक वृत्ति।

काशिकेय–वि० (सं०) काशीका; काशी संबंधी। पु० काशी-निवासी।

काशी–स्त्री० (सं०) उत्तर भारतकी एक प्रसिद्ध नगरी जो सप्त मोक्षदा पुरियोंमेंसे एक है, वाराणसी। **–करवट**–पु० (हिं०) काशीके अंतर्गत एक तीर्थस्थल जहाँ पुराने समयमें लोग सद्गतिकी आशासे आरेके नीचे कटकर जान देते थे। **–खंड**–पु० काशीका माहात्म्य बतानेवाला एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–नाथ**–पु० शिव। **–फल**–पु० कुम्हड़ा। **मु०–करवट लेना**–काशीकरवटमें आरे के नीचे कटकर जान देना।

काश्त–स्त्री० (फा०) खेती; जोत; किसीकी जोतकी जमीन। **–कार**–पु० खेतिहर, खेती करनेवाला, किसान। **–कारी**–स्त्री० खेती, किसानी, कृषिकर्म; वह जमीन जिसपर किसीको खेती करनेका अधिकार हो।

काश्मरी–स्त्री० (सं०) गंभारी नामक वृक्ष।

काश्मीर–वि० (सं०) कश्मीरका; कश्मीरमें उत्पन्न; कश्मीरमें बसनेवाला। पु० कश्मीर देश; केशर; पुष्करमूल। **–ज**–पु० केसर।

काश्मीरक, काश्मीरिक–वि० (सं०) कश्मीरमें उत्पन्न।

काश्मीरा–पु० एक ऊनी कपड़ा।

काश्मीरी–वि० कश्मीरका, कश्मीरमें पैदा होने या पाया जानेवाला। पु० कश्मीर-निवासी; खरका पेड़।

काश्मीर्य–पु० (सं०) केसर।

काश्य–पु० (सं०) मद्य। **–प**–पु० मांस; दे० क्रममें।

काश्यप–वि० (सं०) कश्यप-संबंधी; कश्यप गोत्रका। पु० कश्यप गोत्रमें उत्पन्न एक ऋषि; कणाद मुनि; दे० 'काश्य'में। **–नंदन**–पु० गरुड़; अरुण; असुर; सोना।

काश्यपि–पु० (सं०) गरुड़; अरुण।

काश्यपी–स्त्री० (सं०) धरती।

काश्यपेय–पु० (सं०) सूर्य; आदित्यगण; गरुड़।

काष–पु० (सं०) वह वस्तु जिसपर कोई चीज घिसी, रगड़ी जाय; कसौटी; सान; एक ऋषि।

काषाय–वि० (सं०) हड़, बहेड़ आदिसे रँगा हुआ; गेरुआ। पु० गेरुआ वस्त्र।

काष्ठ–पु० (सं०) काठ, लकड़ी; ईंधन; छड़ी; लंबाई नापनेका एक औजार। **–कदली**–पु० कठकेला। **–कीट**–पु० घुन। **–कुट्ट,–कूट**–पु० कठफोड़वा। **–तंतु**–पु० लकड़ीके भीतर मिलनेवाला एक सूत जैसा कीड़ा। **–तक्ष,–तक्षक**–पु० बढ़ई। **–द्रु**–पु० पलाश। **–पुत्तलिका**– कठपुतली। **–प्रदान**–चिता सजाना। **–भारिक**–पु० लकड़ी ढोनेवाला; लकड़हारा। **–मठी**–स्त्री चिता। **–मल्ल**–पु० अरथी। **–रंजनी**–स्त्री० दारुहल्दी। **–लेखक**–पु० घुन। **–वाट**–पु० लकड़ीकी दीवार। **–संघात**–पु० लकड़ियोंका बेड़ा (कौ०)।

काष्ठक–पु० (सं०) अगरु।

काष्ठा–स्त्री० (सं०) दिशा; सीमा; चरम, अंतिम सीमा; कलाका ३० वाँ भाग; घुड़दौड़का मैदान या मार्ग; जल; स्थिति; कश्यपकी एक पत्नी जो दक्षकी कन्या थी।

काष्ठागार–पु० (सं०) लकड़ीका बना घर।

काष्ठिक–पु० (सं०) लकड़हारा।

काष्ठिका–स्त्री० (सं०) लकड़ीका छोटा टुकड़ा, चैली।

काष्ठीला–स्त्री० (सं०) केला।

काष्ठौषधि–स्त्री० (सं०) जड़ी-बूटी जो दवाके काममें प्रयुक्त हो।

कास–पु० (सं०) खाँसी; छींक; सहिजनका पेड़; एक घास। **–कंद**–पु० कसेरू। **–कुंठ**–वि० जिसे खाँसी हुई हो। पु० यम। **–घ्न**–वि० खाँसी दूर करनेवाला। **–मर्द**–पु० कसौदा।

कासनी–स्त्री० (फा०) एक पौधा; उसके बीज जो दवाके काम आते हैं; कासनीके फूलकसा हलका नीला रंग।

कासर–पु० (सं०) भैंसा।

कासा–पु० (फा०) प्याला; कटोरा; खाना (ला०); फकीरोंका भिक्षापात्र, कचकोल। **–लेस**–वि० प्याला चाटनेवाला, लोभी; खुशामदी।

कासार–पु० (सं०) तालाब; ताल; झील।

कासारि–पु० (सं०) दे० 'कासमर्द'।

कासालु–पु० (सं०) एक तरहका आलू।

कासिका–स्त्री० (सं०) खाँसी।

क़ासिद–पु० (अ०) पत्रवाहक; दूत, सँदेसा ले जानेवाला। वि० कस्द, इरादा करनेवाला।

कासिर–वि० (अ०) कुसूर, कमी, कोताही करनेवाला।

कासी(सिन्)–वि० (सं०) कास रोगवाला, खाँसीसे पीड़ित।

कासीस–पु० (सं०) हीरा-कसीस।

कासू–स्त्री० (सं०) अस्पष्ट वाणी; बुद्धि; रोग; कांति; भाला; भक्ति।

कासृति–स्त्री० (सं०) गली; गुप्तमार्ग; पगडंडी ।

कास्टिक–पु० (अं०) त्वचा आदिको जला देनेवाला एक तेजाब ।

काह*, काहा*–सर्व० क्या, क्या बात । पु० (फा०) सूखी घास । **–रुवा**–पु० दे० 'कहरुवा' ।

काहल–पु० (सं०) बिल्ली; मुर्गा; कौवा; शब्द; अस्पष्ट वाणी; एक बाजा । वि० सूखा, मुरझाया हुआ (अन्योक्तिकल्प०); हानिकारक; *गंदा, पंकिल–'...तोहिं मथ करिहै काहल'–दीनदयाल ।

काहला–स्त्री० (सं०) फौजी ढोल ।

काहलि–पु० (सं०) शिव ।

काहली–स्त्री० (सं०) युवती ।

काहि*–सर्व० किसे; किससे ।

काहिल–वि० (अ०) सुस्त, आलसी, कामचोर ।

काहिली–स्त्री० सुस्ती, आलस्य, ढिलाई ।

काहीं*–अ० को; पास; द्वारा ।

काही–वि० स्याही लिये हुए हरे रंगका, घासके रंगका । पु० गहरा हरा रंग, घासका रंग ।

काहु*–सर्व० किसी ।

काहू*–सर्व० किसी । पु० (फा०) एक पौधा जो दवाके काम आता है ।

काहे*–अ० क्यों, किसलिए ।

किंकर–पु० (सं०) सेवक, टहलू; राक्षसोंकी एक जाति ।

किंकर्तव्यविमूढ–वि० (सं०) जिसकी समझमें न आये कि अब क्या करना चाहिये, भौचक्का ।

किंकिणी–स्त्री० (सं०) करधनी; एक तरहका खट्टा अंगूर ।

किंकिनी*–स्त्री० करधनी ।

किंकिर–पु० (सं०) घोड़ा; कोयल; एक बड़ा भ्रमर; कामदेव; लाल रंग; गजकुंभ ।

किंकिरा–स्त्री० (सं०) रक्त ।

किंकिरात–पु० (सं०) तोता; कोयल; कामदेव; अशोक; कटसरैया ।

किंगरि*–स्त्री० दे० 'किंगरी' ।

किंगरिहा–पु०, छोटा चिकारा बजाकर भीख माँगनेवाला ।

किंगरी, किंगिरी–स्त्री० छोटा चिकारा; शरीर ।

किंचन–पु० (सं०) पलाश; असाकल्य ।

किंचित्–वि० (सं०) कुछ, थोड़ा ।

किंचिलिक, किंचिलुक–पु० (सं०) केंचुआ ।

किंज, किंजल, किंजल्क–पु० (सं०) कमलका केसर, पद्मकेसर; नागकेशर । वि० पद्मकेसरके रंगका, पीला ।

किंडरगार्टन–पु० (अं०) बच्चोंको वस्तुपाठ, खिलौनों आदिके द्वारा शिक्षा देनेकी प्रणाली (किंडरगार्टन–बच्चोंका बाग) ।

किंतु–अ० (सं०) लेकिन, परंतु; बल्कि ।

किंतुघ्न–पु० (सं०) एक करण ।

किंपाक–पु० (सं०) एक वृक्ष, कारस्कर ।

किंपुरुख*–दे० 'किंपुरुष' ।

किंपुरुष–पु० (सं०) किन्नर; जंबूद्वीपका एक खंड; नीच व्यक्ति । वि० वर्णसंकर ।

किंमति*–स्त्री० दे० 'कीमत' ।

किंवदंती–स्त्री० (सं०) जनश्रुति, अफवाह ।

किंवा–अ० (सं०) या, या तो, अथवा ।

किंशारु–पु० (सं०) बालका टूंड़; बाण; कंक पक्षी ।

किंशुक–पु० (सं०) पलाश ।

किंशुलक, किंशुलुक–पु० (सं०) दे० 'किंशुक' ।

कि–अ० एक योजक शब्द; अथवा; * क्यों, क्योंकर; क्या ।

किकि–पु० (सं०) नारियलका पेड़; नीलकंठ पक्षी ।

किकियाना–अ० क्रि० रोना, चिल्लाना ।

किचकिच–स्त्री० झगड़ा, विवाद; अशांति ।

किचकिचाना–अ० क्रि० दाँतपर दाँत रखकर दबाना, दाँत पीसना (क्रोध या झुंझलाहटमें) ।

किचकिचाहट–स्त्री० किचकिचानेका भाव ।

किचकिची–स्त्री० किचकिचाहट ।

किचड़ाना–अ० क्रि० (आँखमें) कीचड़ भरना ।

किचपिच–स्त्री० भीड़भाड़; फिसलन; गिचपिच । वि० अस्पष्ट; क्रमरहित ।

किचरपिचर–स्त्री०, वि० दे० 'किचपिच' ।

किछु*–वि० कुछ ।

किटकिट–पु० झगड़ा, किचकिच ।

किटकिटाना–अ० क्रि० गुस्सेसे दाँत पीसना; खाते समय दाँतके नीचे कंकड़ी पड़ना । स० क्रि० (दाँत) पीसना ।

किटकिना–पु० ठेकेदारसे लिया हुआ, ठेकेदारकी ओरसे दूसरोंको दिया जानेवाला ठेका; किफायतसारी; थोड़े पैसोंसे काम चलानेका ढंग; चालाकी; सोनारोंका ठप्पा । **–(ने)दार**–पु० ठेकेदारसे ठेका लेनेवाला । **–बाज़**–वि० किफायत, चतुराईसे काम करनेवाला ।

किटकिरा–पु० सोनारोंका ठप्पा ।

किटि–पु० (सं०) सूअर ।

किटिका–स्त्री० (सं०) चमड़े या बाँससे बना हुआ कवच ।

किटिभ–पु० (सं०) जूँ; खटमल ।

किट्ट, किट्टक–पु० (सं०) तलछटकी तरह बैठा हुआ, जमा हुआ मैल, कीट; धातुका मैल ।

किड़कना–अ० क्रि० चुपकेसे चल देना ।

किण–पु० (सं०) घट्ठा; खुरंट; मस्सा; लकड़ीका एक कीड़ा ।

किण्वन–पु० (फर्मेन्टेशन) कार्बनिक पदार्थोंमें सूक्ष्म जीवों (ईस्ट, बैक्टीरिया आदि) द्वारा उत्पन्न किया गया रासायनिक परिवर्तन ।

कित*–अ० किधर, किस ओर; कहाँ; तरफ । वि० कितना ।

कितक*–वि० कितना; कहाँ, कितनी दूर–'...कहै कितक तव धाम'–चाचा हित० ।

कितना–वि० किस मात्रा या गिनतीका; किस दरजेका; बहुत अधिक; बहुत बड़ा । अ० किस मात्रामें; कहाँतक; बहुत ज्यादा ।

कितने–वि० बहुतेरे, बहुतसे ।

कितव–पु० (सं०) जुआरी; धूर्त; ठग; दुष्ट; सनकी; धतूरा; गोरोचन; एक प्राचीन जाति ।

क़िता–पु० (अ०) टुकड़ा, खंड; मकान आदिकी संख्या बतानेवाला शब्द, अदद; एक उर्दू पद्य; दे० 'क़ता' ।

किताब–स्त्री० (अ०) लिखी हुई चीज; पोथी; बही; इलहामी किताब । **–ख़ाना**–पु० पुस्तकालय । **–फ़रोश**–पु० पुस्तकविक्रेता ।

किताबत–स्त्री० (अ०) लिखाई; नकल करनेका काम ।

किताबी–वि० किताबसे संबद्ध; पुस्तकीय । **–इल्म**–पु० पुस्तकसे प्राप्त, पुस्तकीय विद्या । **–कीड़ा**–पु० किताबमें लगनेवाला कीड़ा; वह आदमी जो बराबर पुस्तक पढ़ता रहता है । **–चेहरा**–पु० लंबोतरा चेहरा ।

कितिक, किते, कितेक–वि० कितना; कितने ही, बहुत ।

कितेब*–स्त्री० किताब; धर्मग्रंथ ।

कितै*–अ० कहाँ, किस जगह ।

कितो*–वि०, अ० कितना ।

कित्ति*–स्त्री० दे० 'कीर्ति' ।

किदारा–पु० दे० 'केदारा' राग ।

किधर–अ० किस ओर, कहाँ । मु० **–से चाँद निकला ? –किधर भूल पड़े ?** (किसी मित्रके अरसेके बाद अचानक आ जानेपर कहते हैं ।)

किधौं–अ० या, अथवा; या तो ।

किन–सर्व० 'किस'का बहु० । अ० क्यों न । * पु० चिह्न; घट्ठा; गोखरू ।

किनका–पु० कण; टूटा हुआ दाना ।

किनर-मिनर†–स्त्री० नाक-भौं सिकोड़ने, हीला-हवाला करनेका भाव या ध्वनि–'अन्न देनेमें वे किनर-मिनर कर रहे थे'–मृग० ।

किनवानी†–स्त्री० झड़ी, फुहार ।

किनहा–वि० जिसमें कीड़े पड़ गये हों (फल) ।

किनाट–पु० (सं०) पेड़की भीतरी छाल ।

किनार–पु० (फा०) किनारा । **–दार**–वि० जिसमें किनारी हो । **–पेच**–पु० दरीके तानेके दोनों ओर लगी हुई डोरियाँ ।

किनारा–पु० (फा०) तट, तीर; हाशिया; गोट; छोर; बगल, पहलू । **–कशी**–स्त्री० किनारा खींचना, संवंध त्याग कर अलग रहना । मु० **–करना, खीँचना**–अलग होना, दूर होना । **–कश होना**–अलग, एक ओर हो जाना ।

किनारी–स्त्री० पतला गोटा जो दुपट्टों आदिके किनारे लगा होता या लगाया जाता है । **–बाफ़**–पु० किनारीपर गोटा लगानेवाला ।

किनारे–अ० किनारेपर; अलग । मु० **–लगना**–पार पहुँचना; काम समाप्त होना । **–होना**–दूर हटना; छुट्टी पाना ।

किनिका, किनुका*–पु० 'किनका' ।

किन्नर–पु० (सं०) देवताओंकी एक योनि जिनका मुँह घोड़ेके जैसा होना माना जाता है, किंपुरुष; गाने-वजानेवाली एक जाति ।

किन्नरी–स्त्री० (सं०) किन्नर स्त्री; एक तरहका तंवूरा, किंगरी ।

किफ़ायत–स्त्री० (अ०) काफी, पूरा होना; कमखर्ची; वचत; थोड़ा मूल्य । **–शिआर**–वि० किफायतसे काम करनेवाला; थोड़े खर्चमें काम चलानेवाला । **–का**–कम दामका, सस्ता ।

किफ़ायती–वि० किफायत करनेवाला; कम मूल्यमें मिलनेवाला ।

क़िवला–पु० (अ०) कावा, वह स्थान जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं; पश्चिम दिशा; पूज्य पुरुष; वाप-दादा आदिका संवोधन । **–ए-आलम**–पु० वादशाह । **–गाह**–पु० वाप, पिता । **–नुमा**–पु० एक यंत्र जिसकी सूई सदा पच्छिमकी ओर रहती है, दिग्दर्शक यंत्र । **–रू**–वि० जो किवलाकी ओर मुँह किये हो ।

किमखाव–पु० दे० 'कमख़्वाब' ।

किमपि–अ० (सं०) कुछ भी, तनिक भी; किसी हदतक ।

किमरिक, किमरिख–पु० एक चिकना सफेद कपड़ा ।

किमांड–पु० किवाड़, दरवाजा ।

किमाकार–वि० (सं०) जिसका कोई निश्चित आकार न हो; भद्दी शक्लवाला, कुरूप ।

किमाछ–स्त्री० केवाँच ।

किमाम–पु० दे० 'क़वाम', गाढा किया हुआ रस ।

क़िमार–पु० (अ०) शर्त लगाकर खेला जानेवाला खेल, जुआ । **–ख़ाना**–पु० जुएका अड्डा । **–बाज़**–वि० जुआरी । **–वाज़ी**–स्त्री० जुएका खेल ।

क़िमाश–पु० (अ०) ढंग, तर्ज ।

किमि*–अ० कैसे ।

किम्–सर्व० (सं०) कौन, क्या । अ० क्यों, कैसे; कहाँसे; समासादिमें यह 'कु'का द्योतक होता है (किंसखा–कुमित्र) ।

किम्मत*–स्त्री० कौशल; वहादुरी; दे० 'क़ीमत' ।

कियत्–वि० (सं०) कितना ।

कियारी–स्त्री० दे० 'क्यारी' ।

कियाह–पु० (सं०) लाल रंगका घोड़ा ।

किरंटा–पु० तुच्छ क्रिस्तान ।

किर–पु० (सं०) शूकर ।

किरक–पु० (सं०) लेखक; सूअरका वच्चा ।

किरका–पु० कंकड़, नन्हाँ टुकड़ा ।

किरकिटी–स्त्री० दे० 'किरकिरी' ।

किरकिरा–वि० कँकरीला । पु० लोहारोंका एक औजार । मु० (**मजा**) **–होना**–आनंदमें विघ्न पड़ना ।

किरकिराना–अ० क्रि० दाँत या आँखमें किरकिरी पड़नेसे गड़ना, कष्ट होना ।

किरकिराहट–स्त्री० किरकिरी पड़नेका अनुभव या कष्ट; कंकडीलापन ।

किरकिरी–स्त्री० रेत या किसी कड़ी चीजका छोटा कण; छोटी कंकड़ी; अपमान, हेठी ।

किरकिल–पु० गिरगिट । * स्त्री० वह शरीरस्थ वायु जिससे छींक आती है ।

किरकिला–पु० दे० 'किलकिला' ।

किरखी†–स्त्री० कृषि, खेती ।

किरच–स्त्री० दे० 'किरिच'; नुकीला रवा ।

किरचा*–पु० दे० 'किरच' ।

किरची–स्त्री० रेशम या सूतकी लच्छी; एक तरहका मुलायम रेशम ।

किरण–स्त्री० (सं०) ज्योतिसे प्रवाहरूपमें निकलनेवाली रेखा, अंशु, रश्मि; धूलिकण । **–केतु,–पति,–पाणि,–माली** (**लिन्**) –पु० सूर्य ।

किरणा–स्त्री० (सं०) काशी-खंडोक्त एक नदी ।

किरतम*–पु० मायिक प्रपंच–'पूरन ब्रह्म कहाँते प्रकटे किरतम किन उपराजा'–बीजक ।

किरन–स्त्री० दे० 'किरण'; कलावत्तूकी वनी हुई एक तरहकी झालर । मु० **–फूटना**–सूर्योदय होना ।

किरना*–अ० क्रि० भोथरा होना; विमुख होना–'अब तौ ऐसियै जिय आई प्रीतमके पनतें क्यों किरिहौं'–घन०; कष्ट सहना । –'मन वुधि चित अहंकार एक तुम करहु कृपा कितहूँ न किरौं'–घन०

किरपा*–स्त्री० दे० 'कृपा' ।

किरपान*–पु० दे० 'कृपाण' ।

किरम–पु० दे० 'किर्म' ।

किरमई–स्त्री० एक तरहकी लाख ।

किरमाल*–पु० तलवार ।

किरमाला–पु० अमलतास ।

किरमिच–पु० एक तरहका चिकना मोटा कपड़ा जिसके परदे, जूते आदि वनते हैं, कैनवस ।

किरमिज–पु० एक तरहका लाल रंग; किरिमदानेका चूर्ण; किरमिजी रंगका घोड़ा ।

किरमिजी–वि० किरमिज या किरिमदानेके रंगका ।

किरयात–पु० चिरायता ।

किरराना–अ० क्रि० दाँत पीसना; किर्रकिर्रकी आवाज करना ।

किरवान, किरवार*–पु० कृपाण, तलवार ।

क़िरवारा*–पु० अमलतास ।

किरसुन*–पु० दे० 'कृष्ण' ।

किराँची–स्त्री० असवाव ढोनेवाली गाड़ी; भूसा आदि ढोनेवाली वैलगाड़ी ।

किरात–पु० (सं०) एक जंगली जाति; साईस; वौना; शिव; एक प्राचीन देश; चिरायता । **–पति**–पु० शिव ।

क़िरात–स्त्री० (अ०) एक वजन जो जवाहरात तोलनेके काम आता है (लगभग ४ जौके वरावर) ।

किरातार्जुनीय–पु० (सं०) भारवि-कृत एक महाकाव्य ।

किराति–स्त्री० (सं०) दुर्गा; गंगा ।

किरातिनी–स्त्री० (सं०) किरातकी स्त्री; जटामासी ।

किराती–स्त्री० (सं०) किरात जातिकी स्त्री; किराती-वेशधारिणी पार्वती; स्वर्गंगा; कुटनी; चमरधारिणी ।

किरान*–अ० पास, निकट ।

किराना–पु० पंसारीकी दुकानसे मिलनेवाली चीजें, मिर्च-मसाला आदि ।

किरानी–पु० अंग्रेजी दफ्तरका क्लर्क; ईसाई, यूरेशियन ।

किराया–पु० दूसरेकी चीज काममें लानेका वदला, भाड़ा । **–(ये)-दार**–पु० कोई चीज, खासकर मकान, किरायेपर लेनेवाला । मु०**–उतारना**–भाड़ा वसूल करना । **–करना**–किरायेपर लेना ।

किरार*–पु० एक जाति ।

किरावल–पु० सेनाका वह भाग जो लड़ाईका मैदान साफ करनेके लिए आगे जाता है; वंदूकसे शिकार करनेवाला ।

किरासन–पु० मिट्टीका तेल, 'केरोसिन' ।

किरि–पु० (सं०) शूकर; वादल ।

किरिका–स्त्री० (सं०) दावात, मसिपात्र ।

किरिच–स्त्री० नुकीला टुकड़ा या रवा; नोककी ओरसे भोंकी जानेवाली सीधी तलवार । **–का गोला**–जहाजी गोला जिसके भीतर कीलें या छर्रे भरे हों ।

किरिटि–पु० (सं०) हिंताल फल ।

किरिमदाना–पु० एक छोटा कीड़ा जिसे सुखाकर किरमिजी रंग बनाते हैं ।

किरिया*–स्त्री० शपथ; कर्तव्य; मृतककर्म ।

किरीट–पु० (सं०) एक शिरोभूषण जिसे राजा या राजकुमार धारण करते थे, मुकुट; एक वर्णवृत्त; व्यापारी । **–धारी(रिन्)** –पु० राजा । **–माली(लिन्)** –पु० अर्जुन ।

किरीटी(टिन्)–वि० (सं०) किरीट धारण करनेवाला । पु० इंद्र; अर्जुन ।

किरीरा*–स्त्री० दे० 'क्रीड़ा' ।

किरोध*–पु० दे० 'क्रोध' ।

किरोर†–वि०, पु० दे० 'करोड़' ।

किरोलना–स० क्रि० कुरेदना, खुरचना ।

किरौना†–पु० कीड़ा ।

किर्च*–स्त्री० दे० 'किरिच' ।

किर्तनिया*–पु० कीर्तन करनेवाला ।

किर्म–पु० (फा०) कीड़ा । **–खर्दा**–वि० कीड़ा खाया हुआ । **–पीला**–पु० रेशमका कीड़ा । **–शबताब**–पु० जुगनू ।

किर्मि, किर्मी–स्त्री० (सं०) बड़ा कमरा; इमारत; सुवर्ण या लोहेकी प्रतिमा; पलाश वृक्ष ।

किर्मिज–पु० दे० 'किरमिज' ।

किर्मीर–पु० (सं०) नारंगी; एक राक्षस जो भीमसेनके हाथों मारा गया; चितकबरा रंग । वि० चित्र वर्णमाला । **–जित्,–निसूदन, सूदन**–पु० भीमसेन ।

किर्मीरित–वि० (सं०) चितकबरा ।

किर्याणी–स्त्री० (सं०) जंगली शूकरी ।

किर्रा–स्त्री० धातुपर नकाशी करनेके कामकी एक छेनी ।

किल–पु० (सं०) क्रीड़ा । अ० निश्चय ही । **–किंचित्**–पु० संयोग शृंगारका एक हाव जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है ।

किलक–पु०, स्त्री० किलकारी; एक तरहका नरकट ।

किलकन–स्त्री० किलकनेकी क्रिया ।

किलकना–अ० क्रि० बच्चों-बंदरों आदिका किलकारी मारना ।

किलकार, किलकारी–स्त्री० बच्चों, बंदरों आदिके मुखसे अधिक हर्षकी अवस्थामें निकलनेवाली अस्पष्ट ध्वनि या चीख़ ।

किलकारना–अ० क्रि० जोरसे आवाज करना ।

किलकिल–स्त्री० झगड़ा, किचकिच । पु० (सं०) हर्षसूचक ध्वनि, किलकारी; शिव ।

किलकिला–स्त्री० (सं०) हर्षसूचक ध्वनि, किलकारी; (हिं०) मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया । पु० समुद्रका वह भाग जहाँ लहरें तेज आवाज करती हों; एक समुद्र ।

किलकिलाना–अ० क्रि० किलकारी मारना, हर्षध्वनि करना ।

किलकिलाहट–स्त्री० किलकारी ।

किलकी–स्त्री० वढ़इयोंका एक औजार; जिससे वे नापकर काठपर चिह्न लगाते हैं; वेचैनी ।

किलचिया†–पु० एक छोटी जातिका वगला ।

किलना–अ० क्रि० कीला जाना; वशमें किया जाना ।

किलनी–स्त्री० एक छोटा कीड़ा जो कुत्तों, गाय-वैलों आदिकी देहसे चिमटा रहता है ।

किलमना†–अ० क्रि० बिलख-बिलखकर रोना, विलाप करना, हाय-हाय करना, कलपनां, भीतर ही भीतर व्याकुल होना (अमर०) ।

किलबिलाना–अ० क्रि० चंचल होना; वहुतसे कीड़ों आदिका छोटी-सी जगहमें एक साथ हिलना-डोलना ।

किलवाँक–पु० कावुली घोड़ेका एक भेद ।

किलवाना–स० क्रि० कील ठुकवाना; कीलनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; मंत्रादि द्वारा प्रेतादिके विघ्नको वंद कराना ।

किलवारी–स्त्री० छोटी नावों, डोंगियों आदिमें पतवारका काम देनेवाला छोटा डाँड़ा ।

किलविष*–पु० दे० 'किल्विष' ।

किलविषी*–वि० रोगी; पापी; दोषी ।

किलसना–स० क्रि० क्लेशयुक्त होना; कुढना ।

किलहँटा–पु० सिरोही नामक पक्षी । (स्त्री० 'किलहँटी' ।)

क़िला–पु० (अ०) वह संगीन और लंबी-चौड़ी इमारत जिसके भीतरसे रक्षात्मक युद्ध किया जा सके ,गढ़, दुर्ग; विशाल और मजबूत वनावटवाली इमारत; शतरंजमें वादशाहके लिए शहसे सुरक्षित स्थान । **–(ले)दार**–पु० किलेमें रहनेवाली सेनाका प्रधान नायक, दुर्गरक्षक । **–दारी**–स्त्री० किलेदारका पद या कार्य । **–बंद**–वि० किलेके भीतर बैठा हुआ । **–बंदी**–स्त्री० किसी स्थानको चहारदीवारी, खाई आदिसे सुरक्षित करना; ऐसी तामीर; शतरंजमें वादशाहके लिए किला बनाना । **मु०–फतह, –सर करना**–किला जीत लेना; अति कठिन कार्य करना । **–बाँधना**–शतरंजमें बादशाहके इर्द-गिर्द मुहरोंको इस तरह रखना कि शह न पड़ सके ।

किलाट–पु० (सं०) फटे हुए दूधका घनीभूत या जमा हुआ भाग ।

किलाटी(टिन्)–पु० (सं०) बाँस ।

किलावा–पु० हाथीके गलेमें लपेटी हुई रस्सी जिसपर महावत पैर रखता है; सोनारोंका एक औजार ।

किलास–पु० (सं०) एक प्रकारका कोढ़, सिध्म रोग । वि० किलास रोगसे पीड़ित ।

किलासी(सिन्)–वि० (सं०) किलास रोगवाला ।

किलिंच, किलिंज, किलिंजक–पु० (सं०) चटाई ।

किलिक–पु०, स्त्री० दे० 'किल्क' ।

किलोग्राम–पु० (अं०) तोलकी एक नाप जो हजार ग्राम (लगभग १ सेर ६ तोला)के वरावर होती है ।

किलोमीटर–पु० (अं०) दूरीकी एक नाप जो लगभग ५।८ मील होती है ।

किलोर*–स्त्री० किल्लोल, कल्लोल, लहर ।

किलोल†–पु० दे० 'कल्लोल' ।

किलोवाट–पु० (अं०) बिजलीका परिमाण जो १०० वाटके वरावर होता है । **–घंटा**–पु० ऊर्जाकी नापका एक बड़े साइजका मात्रक । एक हजार जूल प्रति सेकण्डकी दरसे एक घंटेमें उत्पन्न हुई ऊर्जा एक किलो-वाट-घंटा कहलाती है। यह ३६,००,००० जूलके बराबर हैं ।

किल्क–पु०, स्त्री० (फा०) एक नरकट जिसकी कलम बनायी जाती है ।

क़िल्लत–स्त्री० (अ०) कमी, तंगी; दुर्लभता ।

किल्ला–पु० बड़ी मेख, खूँटा; चक्की या जाँतेके बीचोबीच गड़ी मेख । **मु०–गाड़कर बैठना**–अटल होकर बैठना ।

किल्लाना*–अ० क्रि० कल्लोल करना; किलकिलाना ।

किल्ली–स्त्री० खूँटी; एक तरहका अर्गल, सिटकिनी; कलकी मुठिया; कुंजी । **मु०–ऐँठना,–घुमाना**–पेच घुमाना; किसीका मत फेर देनेकी युक्ति करना; जोड़ तोड़ लगाना । **(किसीकी) –हाथमें होना**–किसीका किसीके बस, काबूमें होना; किसीसे मनचाहा काम करा लेनेकी युक्ति मालूम होना ।

किल्विष–पु० (सं०) पाप; दोष, रोग ।

किल्विषी(षिन्)–वि० (सं०) पापी; दोषयुक्त ।

किवाँच–स्त्री० दे० 'केवाँच' ।

किवाड़–पु० लकड़ी, शीशे आदिका पल्ला जिससे दरवाजा बंद किया जाता है, कपाट । **मु०–देना**–दरवाजा बंद करना । **–बंद हो जाना**–घरमें किसीका न रहना, सबका मर जाना ।

किवार†–पु० दे० 'किवाड़' ।

किशटा–पु० एक तरहका छोटा शफतालू ।

किशनतालू–पु० काले तालूवाला हाथी ।

किशमिश–स्त्री० (फा०) सुखाया हुआ छोटा अंगूर जिसमें बीज नहीं होते ।

किशमिशी–वि० किशमिशका; किशमिशके रंगका । पु० एक तरहका रंग । **–अंगूर**–पु० अंगूरकी एक जाति जिसे सुखाकर किशमिश बनाते हैं ।

किशल, किशलय–पु० (सं०) कोंपल, नवपल्लव ।

किशोर–पु० (सं०) ११ से १५ तककी उम्रवाला लड़का; बेटा; बछेड़ा; सिंह आदिका बच्चा जो जवान न हुआ हो । (स्त्री० 'किशोरी' ।)

किशोरक–पु० (सं०) वच्चा।

किश्त–स्त्री० (फा०) खेती, कृषिकर्म; शतरंजमें वादशाहका विपक्षीके किसी मुहरेकी जदमें आना, शह (देना, लगना)। **–कार**–पु० कृषक, काश्तकार। **–ज़ार**–पु०, स्त्री० खेती; हरा-भरा खेत। **–वार**–पु० पटवारियोंका एक कागज जिसमें खेतोंका विवरण लिखा रहता है।

किश्ती–स्त्री० (फा०) नाव, डोंगी; लकड़ी या धातुकी बनी लंबी तश्तरी; खप्पर, कजकोल। **–नुमा**–वि० नावकी शकलका।

किष्किंध, किष्किंध्य–पु० (सं०) मैसूरके आस-पासका देश; उस देशमें स्थित एक पर्वत।

किष्किंधा, किष्किंध्या–स्त्री० (सं०) किष्किंध देशकी–बालि-सुग्रीवकी राजधानी; किष्किंध पर्वतकी एक गुफा। **–(धा)कांड** पु० रामायणका एक कांड।

किस–सर्व०, वि० 'कौन'का (स्वयं उसमें या उसके विशेष्यमें विभक्ति लगनेसे वननेवाला) रूप।

किसनई†–स्त्री० किसानी, कृषिकम।

किसब*–पु० दे० 'कसब'।

किसबत–स्त्री० (फा०) वह कई खानोंवाला थैला जिसमें नाई अपने औजार रखता है।

किसमिस–स्त्री० दे० 'किशमिश'।

किसमी*–पु० मजदूर।

किसल, किसलय–पु० (सं०) दे० 'किशल', 'किशलय'।

किसान–पु० खेतिहर; काश्तकार।

किसानी–स्त्री० किसानका काम, खेती। वि० किसान संबंधी।

किसिम–स्त्री० दे० 'किस्म'।

किसी–सर्व० वि०' कोई' का (स्वयं उसमें या उसके विशेष्यमें विभक्ति लगनेसे बननेवाला) रूप।

किसू*–वि० दे० 'किसी'।

क़िस्त–स्त्री० (अ०) ऋणका वह अंश जो एक अवधिमें चुकाया जानेको हो; देन या लगान, मालगुजारीका वह भाग जो नियत समयपर दिया जाय या देय हो; देन, मालगुजारी आदिके अंश-विशेषके चुकानेका नियत समय। **–ख़िलाफ़ी**–स्त्री० किस्तका नियत समयपर अदा न होना। **–बंदी**–स्त्री० किस्त बाँधना, देनको कई हिस्सोंमें बाँटकर हर एकके चुकाये जानेका समय बाँध देना। **–ब-क़िस्त**–अ० किस्त-किस्त करके, (देनको) कई अंशोंमें बाँटकर। **–वार**–अ० किस्त-किस्त करके; किस्तके अनुसार।

क़िस्म–स्त्री० (अ०) प्रकार, भेद, तरह।

क़िस्मत–स्त्री० (अ०) अंश, भाग; भाग्य; तकदीर; कमिश्नरी, विभाग। **–आज़माई**–स्त्री० भाग्यकी परीक्षा। **–वर**–वि० भाग्यवान्, खुशनसीब। **मु०–आज़माना**–भाग्यके भरोसे, सफलताका निश्चय न होते हुए भी काम करना। **–का धनी**–भाग्यवान्, बड़े भाग्यवाला। **–का फेर**–बदकिस्मती; जमानेका उलट-फेर। **–का लिखा**–जो भाग्यमें बदा हो, नियति। **–चमकना,–जागना**–भाग्य खुलना; बढ़तीके दिन आना। **–पलटना**–स्थिति बदल जाना, दुःखसे सुख या सुखसे दुःखके दिन आना। **–फूटना**–भाग्यका मंद पड़ना। **–लड़ना**–भाग्यका अनुकूल होना; भाग्यकी परीक्षा होना।

क़िस्सा–पु० (अ०) कहानी, हिकायत, वृत्तांत; जिक्र, चर्चा; झगड़ा, तकरार। **–कहानी**–स्त्री० मनगढंत या निरर्थक बात। **–कोताह,–मुख़्तसर**–अ० थोड़ेमें, संक्षेपमें। **–ख़्वाँ,–गो**–वि० कहानी कहनेवाला। **–ख़्वानी,–गोई**–स्त्री० कहानी कहने-सुननेका काम या कुशलता। **मु०–कोताह करना**–थोड़ेमें मतलबकी बात कहना। **–ख़त्म, तमाम या पाक होना**–झगड़ा खत्म होना; मिटना, मरना।

किहुनी–स्त्री० दे० 'कुहनी'।

की*–अ० या, अथवा; क्या–'इत्थूं आवत नाहिं सु की तकसीर है'–घन०। स्त्री० (अं०) कुंजी; टीका।

कीक–स्त्री० चीख, चीत्कार।

कीकट–पु० (सं०) मगध देश; वहाँकी एक प्राचीन अनार्य जाति; घोड़ा। वि० निर्धन; कृपण।

कीकना–अ० क्रि० 'की-की'की आवाजके साथ चीखना।

कीकर–पु० बबूलका पेड़।

कीकरी–स्त्री० कीकरका एक भेद; एक तरहकी सिलाई।

कीकश–पु० (सं०) चांडाल।

कीकस–पु० (सं०) हड्डी; एक तरहका कीड़ा। वि० कठिन। **–मुख**–पु० पक्षी।

कीका–पु० घोड़ा।

कीकान†–पु० केकाण देश; इस देशका घोड़ा; घोड़ा।

कीच–पु०, स्त्री० पंक, कीचड़–'मीच है कबूल पै न कीच लखनऊ-की'–बेनी।

कीचक–पु० (सं०) पोला बाँस; वह बाँस जो हवाके संपर्कमें शब्द उत्पन्न करता हो; महाभारतमें उल्लिखित राजा विराट्का साला जिसे भीमने मारा था।

कीचड़–पु० पैरोंमें चिपकनेवाली गीली मिट्टी, पंक; आँखसे निकलनेवाला बलगमकी शक्लका मैल। **मु०–में फँसना**–कठिनाई, झगड़े-झमेलेमें फँसना।

कीचर*–पु० दे० 'कीचड़'–'आँखिन बरौनिनमें कीचर छपानो है'–बेनी।

कीट–पु० (सं०) कीड़ा। **–घ्न**–पु० गंधक। **–ज**–पु० रेशम। **–जा**–स्त्री० लाख। **–नाशक**–पु० (इनसेक्टिसाइड) कीटाणुओंको नष्ट करनेवाली दवा। **–भृंग**–पु० एक न्याय जो दो वस्तुओंके एकरूपता प्राप्त करनेपर प्रयोगमें लाया जाता है। **–मणि**–पु० जुगनू। **–विज्ञान**–पु० (एंटोमॉलॉजी) कीड़े-मकोड़ोंको उत्पत्ति, स्वरूप, विशेषताओं आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान।

कीटक–पु० (सं०) कीड़ा; एक मागध जाति।

कीटाणु–पु० (सं०) वे छोटे-छोटे कीड़े जो अनेक रोगोंके मूल कारण माने जाते हैं।

कीटिका–स्त्री० (सं०) छोटा कीड़ा; तुच्छ प्राणी।

कीड़ा–पु० रेंगने या उड़नेवाले क्षुद्र जंतु, कीट (भिड़, गुबरैला, खटमल आदि); किसी चीजके सड़नेसे पैदा होनेवाले क्षुद्र कीट, कृमि; साँप; थोड़े दिनका बच्चा। **मु०–काटना**– बेचैनी होना। **–पड़ना**–(किसी चीजमें) सड़नेसे कीड़ा पैदा हो जाना; (किसी चीजका) सड़, बिगड़ जाना। **–लगना**–कीड़ोंका किसी चीज (कपड़ा, किताब आदि)को खा जाना या उसमें घर करना।

कीड़ी–स्त्री० छोटा और बारीक कीड़ा; चींटी।

कीदउँ*–अ० दे० 'किधौं'।

कीनख़ाब–पु० दे० 'कमख़्वाब'।

कीनना†–स० क्रि० खरीदना, क्रय करना।

कीनर*–पु० किन्नर; हिजड़ा।

कीना–पु० (फा०) द्वेष, वैर, बुग्ज। **–कश,–परवर,–वर**–वि० कीना करनेवाला।

कीनाश–पु० (सं०) यम; किसान; एक तरहका बंदर। वि० खेती करनेवाला; तुच्छ, अकिंचन, थोड़ा; छोटा।

कीनिया†–वि० कीना (द्वेष) रखनेवाला; छलिया।

कीप–स्त्री० अर्क, तेल आदिको आसानीसे बोतलमें ढालनेके लिए काममें लायी जानेवाली धातु आदिकी चोंगी। **–स्तंभ**–पु० (फनेल स्टैंड) वह स्तंभ जैसा आला जिसमें कीप फँसायी जाती है।

क़ीमत–स्त्री० (अ०) मूल्य, दाम; गुण; योग्यता।

क़ीमती–वि० (अ०) बहुमूल्य, दामी।

क़ीमा–पु० (अ०) छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काटा हुआ मांस। **मु० –करना**–बहुत छोटे-छोटे टुकड़े, रेजा रेजा करना।

कीमिया–स्त्री० (अ०) रसायन-विद्या; सोना-चाँदी बनानेकी विद्या; अकसीर रसायन; कार्य-साधक युक्ति। **–गर,–साज़**–पु० रसायनविद्, मध्य युगके वे पदार्थ-वैज्ञानिक जो सीसे जैसी निकृष्ट धातुको स्वर्णमें परिवर्तित करनेके लिए प्रयत्नशील थे; आधुनिक वैज्ञानिक जो परमाणुओंके नामिकोंकी संरचनामें फेर-बदल करके एक तत्त्वको दूसरे तत्त्वमें परिणत कर सकते हैं। **–गरी**–स्त्री० सोना-चाँदी बनाना।

कीमुख़्त–पु० (फा०) घोड़े या जंगली गधेकी पीठका हरे रंगका

चमड़ा जिसके जूते बनते हैं ।

कीमुख़्ती–वि० कीमुख़्तका बना ।

कीर–पु० (सं०) तोता; मांस; कश्मीर देश; * व्याधा; सर्प ।

कीरक–पु० (सं०) लब्धि, प्राप्ति; एक बुद्ध; एक वृक्ष ।

कीरणा–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

कीरतन–पु० दे० 'कीर्तन' ।

कीरति*–स्त्री० दे० 'कीर्ति' । **–कुमारी***–स्त्री० राधा ।

कीरतिदा*–स्त्री० यशोदा ।

क़ीरात–पु० (अ०) दे० 'करात' ।

कीरी–स्त्री० दे० 'कीड़ी' ।

कीर्ण–वि० (सं०) बिखरा हुआ; ढका हुआ; धृत; स्थित; मारा या चोट पहुँचाया हुआ ।

कीर्तन–पु० (सं०) कीर्ति-वर्णन, यशोगान; राम, कृष्ण आदिकी कथा गाते-बजाते हुए कहना; गाते-बजाते हुए भाषण करना (नगर-कीर्तन); कथन, वर्णन । **–कार**–पु० कीर्तन करनेवाला ।

कीर्तनिया–पु० कीर्तन करनेवाला ।

कीर्ति–स्त्री० (सं०) यश; ख्याति, नामवरी; दीप्ति; शब्द; विस्तार; आर्या छंदका एक भेद; एक ताल; दक्ष प्रजापतिकी कन्या और धर्मकी पत्नी । **–मान**–पु० दे० क्रममें । **–शाली-(लिन्)**–वि० यशस्वी, नामवर । **–शेष**–वि० जिसकी कीर्तिमात्र इस दुनियामें रह गयी हो, नामशेष, मृत । **–स्तंभ**–पु० (किसीके) स्मारकरूपमें बनाया गया स्तंभ; नाम कायम रखनेवाली चीज, यादगार ।

कीर्तित–वि० (सं०) कथित, वर्णित; प्रशंसित; ख्यात ।

क़ीर्तिमान–पु० (रेकॉर्ड) तैराकी, खेल-कूद आदिमें प्रदर्शित उत्कृष्टताकी वह चरमसीमा जहाँतक किसी व्यक्तिके पहुँचनेका अभिलेख मिलता हो ।

कीर्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) दे० 'कीर्तिशाली' ।

कील–स्त्री० छायाघड़ीका काँटा; नाकमें पहननेका एक गहना, लौंग; मुँहासे, फुंसी आदिको दबानेसे निकलनेवाली कड़ी पीब; चक्कीके बीचोबीच गड़ी खूँटी; वह खूँटी जिसपर चाक घूमता है; (सं०) लोहेका काँटा; मेख, काठकी खूँटी या खूँटा । पु० कुहनी; कुहनीका आघात; भाला; स्तंभ; एक अस्त्र; शिव; आगकी लौ; मूढ़ गर्भ । **–काँटा**–पु० (हिं०) औजार, साज-सामान, हरबा-हथियार । **–संस्पर्श**–पु० वृक्षविशेष ।

कीलक–वि० (सं०) कीलनेवाला । पु० खूँटी; खूँटा; एक तंत्रोक्त देवता; यंत्रका मध्य भाग; अन्य मंत्रका प्रभाव नष्ट कर देनेवाला मंत्र ।

कीलन–पु० (सं०) कीलना; बाँधना ।

कीलना–स० क्रि० कील ठोंकना, खूँटी गाड़ना; तोपकी नलीमें सामनेकी ओरसे लकड़ी ठोंक देना; बाँधना; मंत्रको प्रभावहीन कर देना; साँपको मंत्र-प्रभावसे हिलने-डोलनेसे असमर्थ कर देना; वशमें करना ।

कीला–पु० बड़ी खूँटी; जाँतेका खूँटा; चाककी खूँटी; मूढ गर्भ ।

कीलाल–पु० (सं०) देवताओंका अमृत जैसा एक पेय; मधु; पशु; जल; सीना; रुधिर । वि० बंधन हटानेवाला । **–ज**–पु० मांस । **–धि**–पु० समुद्र । **–प**–पु० राक्षस ।

कीलिका–स्त्री० (सं०) धुरेकी खूँटी; एक तरहका बाण; मनुष्यके शरीरकी एक अस्थि ।

कीलित–वि० (सं०) कीला हुआ; बद्ध; निरुद्ध ।

कीलिया–पु० पुर हाँकनेवाला, पैरहा ।

कीली–स्त्री० खूँटी; धुरा; कुश्तीका एक दाँव ।

कीश–पु० (सं०) बंदर; सूर्य; चिड़िया । वि० नंगा । **–केतु,–ध्वज**–पु० अर्जुन । **–पर्ण**–पु०,**–पर्णी**–स्त्री० अपामार्ग ।

कीस–पु० थैली; वह थैली या झिल्ली जिसके भीतर गर्भ रहता है; * बंदर ।

कीसा–पु० (फा०) जेब, खरीता, थैली ।

कुँअर–पु० कुमार, लड़का; राजकुमार । **–बिरास***–पु० दे० 'कुँअरबिलास' । **–बिलास**–पु० एक तरहका बढ़िया धान या चावल ।

कुँअरि*–स्त्री० कुमारी; राजकुमारी ।

कुँअरेटा*–पु० छोटा बालक ।

कुँआ–पु० दे० 'कुआँ' ।

कुँआरा–वि० जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित ।

कुँआरी–वि०, स्त्री० जो ब्याही न हो, कुमारी । स्त्री० कुमारी, अविवाहिता कन्या ।

कुँइयाँ†–स्त्री० छोटा कुआँ ।

कुँई–स्त्री० दे० 'कुईं', कुमुदिनी ।

कुंकुम–पु० (सं०) केसर; रोली; कुंकुमा ।

कुंकुमा–पु० लाखका पोला गोला जिसमें गुलाल भरकर मारते हैं ।

कुंकुमाद्रि–पु० (सं०) कश्मीरका एक पर्वत ।

कुंकुहबानी*–वि० कुंकुमके रंगका, केसरिया ।

कुंकूँ*–पु० कुंकुम, केसर ।

कुंचन–पु० (सं०) सिकुड़ना, सिमटना; टेढ़ा होना, आँखोंका एक रोग ।

कुंचि–स्त्री० (सं०) आठ मुट्ठीका एक परिमाण ।

कुंचिका–स्त्री० (सं०) ताली, कुंजी; बाँसकी टहनी; एक तरहका नरकट; एक तरहकी मछली; गुंजा; काला जीरा ।

कुंचित–वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ; टेढ़ा, मुड़ा हुआ; घुँघराले (बाल) ।

कुंची*–स्त्री० कुंजी ।

कुंज–पु० (फा०) कोना, गोशा; दुशालेके कोनेपर बनाये जानेवाले बूटे; (सं०) लता आदिसे घिरा या ढका हुआ स्थान, हाथीका दाँत; नीचेका जबड़ा; गुफा । **–कुटीर**–पु० लतागृह । **–गली**–स्त्री० (हिं०) लताओंसे ढका हुआ पथ; तंग, चक्करदार गली । **–बिहारी(रिन्)**–पु० कुंजमें विहार करनेवाले, कृष्ण ।

कुंजक*–पु० अंतःपुरमें जा सकनेवाला डेवढ़ीदार, कंचुकी ।

कुंजड़–पु० पिस्तेका गोंद ।

कुँजड़ा–पु० तरकारी बेचनेवाला; एक जाति जो तरकारी बेचनेका धंधा करती है । (स्त्री० 'कुँजड़िन' ।)—**(ड़े)का गल्ला**–गोलमाल हिसाब, वह हिसाब जो साफ और व्यवस्थित न हो ।

कुंजर–पु० (सं०) हाथी, पीपल; एक देश; एक नाग; रामायणमें वर्णित एक पर्वत; छप्पय छंदका एक भेद; हस्त नक्षत्र; बाल; आठकी संख्या (दिग्गज आठ होते हैं); (केवल समासांतमें) अपने वर्गमें श्रेष्ठ जन या प्राणी (कपिकुंजर) । **–ग्रह**–पु० हाथी पकड़नेवाला । **–पिप्पली**–स्त्री० गजपिप्पली । **–मनि***–पु० (हिं०) गजमुक्ता–'कुंजरमनि कंठा कलित उरन्ह तुलसिका माल' –रामा० ।

कुंजरा–स्त्री० (सं०) हथिनी; धातकी; पाटला ।

कुंजरानीक–पु० (सं०) हाथियोंकी सेना, हस्तिदल ।

कुंजराराति, कुंजरारि–पु० (सं०) सिंह; शरभ ।

कुंजरारोह–पु० (सं०) पीलवान ।

कुंजराशन–पु० (सं०) पीपलका पेड़ ।

कुंजरी–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

कुंजल–पु० (सं०) काँजी; * हाथी ।

कुंजा†–पु० पुरवा । * क्रौंचपक्षी–'अंबर कुंजाँ कुरलियाँ गरज भरे सब ताल'–साखी ।

कुंजिका–स्त्री० (सं०) स्याह जीरा; निकुंजिकाम्ला; कुंजी ।

कुंजित*–वि० कूजित ।

कुंजी–स्त्री० ताली; कार्य सिद्धिका कोई सरल उपाय; अर्थ खोलनेवाली पुस्तक ।

कुंठ–वि० (सं०) भोथरा; मंदबुद्धि; सुस्त; कमजोर । **–बुद्धि**–वि० मंदबुद्धि, मूर्ख ।

कुंठक–पु० (सं०) मूर्ख व्यक्ति । वि० मूर्ख ।

कुंठा–स्त्री० चिढ़, क्रोध–'अपनी कुंठा उतार रही थी'; भाव-ग्रंथि ('कांप्लेक्स'–मनोविज्ञान); निराशा ('फ्रस्ट्रेशन'–साहित्य) अतृप्तिसे उत्पन्न ग्लानि ।

कुंठित–वि० (सं०) कुंद या भोथरा किया हुआ; मूर्ख; जिसका अंग-भंग हुआ हो; गृहीत; घिरा हुआ; निराश ('फ्रस्ट्रेटेड') ।

कुंड–पु० (सं०) पानी रखनेका कुंडा; मटका; छोटा तालाब;

हौज; हवनकी अग्नि या जलसंचयके लिए खोदा हुआ गढ़ा; वटलोई; कमंडलु; ऐसी स्त्रीका जारज पुत्र जिसका पति जीवित हो; शिवका एक नाम; खप्पर; (हि०) पूला; * कूँड; लोहेका टोप; हौदा । **–कीट** पु० चार्वाक मतको माननेवाला; रखेली रखनेवाला; जारज ब्राह्मण । **–कील**–पु० नीच आदमी । –**–गोल,–गोलक**–पु० काँजी । **–पायी(यिन्)**–पु० जिसने सोम यज्ञ कराकर कुंडाकार पात्रसे सोम रस पान किया हो ।

कुँड़–पु० दे० 'कूँड़' । **–पुजी,–मुदनी**–स्त्री० किसानोंका एक उत्सव जो रबीकी बोआई समाप्त होनेके दिन मनाया जाता है ।

कुंडक–पु० (सं०) पात्र; मटका; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

कुंडकोदर–वि० (सं०) मटके जैसे पेटवाला । पु० एक नाग; शिवका एक गण ।

कुंडनी–स्त्री० (सं०) एक पात्र ।

कुंडरा–पु० कुंडा; इँडुरी ।

कुंड़रा–पु० गेंडुरी; मंडलकार खींची हुई रेखा जिसके भीतर होकर शपथ ग्रहण करते या भोजन रखकर उसे छूतसे बचाते हैं ।

कुंडल–पु० (सं०) कानमें पहननेका बाला, बाली; कड़ा या चूड़ा; गोल बनावटका वह गहना जिसे कनफटे कानोंमें पहनते हैं; चंद्रमा या सूर्यका परिवेश; रस्सी या साँपकी फेंटी; एक छंद ।

कुंडलाकार–वि० (सं०) कुंडलके आकारका, गोल ।

कुंडलिका–स्त्री० (सं०) मंडलाकार रेखा; कुंडलिया छंद; जलेबी ।

कुंडलित–वि० (स०) जो कुंडली मारे हुए हो; चक्करके रूपमें लपेटा हुआ ।

कुंडलिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा या शक्तिका एक रूप; मूलाधार चक्रमें स्थित एक शक्ति जिसे तंत्र और हठयोगका साधक जगाकर ब्रह्मरंध्रमें लगानेका यत्न करता है; जलेबी; गुडुच ।

कुंडलिया–स्त्री० एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम दो चरण दोहेके और शेष चार चरण रोला छंदके होते हैं ।

कुंडली–स्त्री० (सं०) जन्मकुंडली; कुंडलिनी; जलेबी; साँपकी फेंटी; इँडुरी; (क्वायल) ताँबेके तारका कई फेरोंका आयताकार या सिलिन्डराकार वेष्ठन ।

कुंडली(लिन्)–वि० (सं०) कुंडलधारी; कुंडलाकार; जो कुंडल या फेंटी मारे हुए हो; लपेटा हुआ । पु० साँप; मोर; वरुण; शिव; वह हिरन जिसके बदनपर चित्तियाँ हों ।

कुंडा–पु० नाद; बड़ा मटका; कोंढ़ा; कुश्तीका एक दाँव; पेट (ला०) । स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

कुंडाशी(शिन्)–पु० (सं०) जारज बेटेकी कमाई खानेवाला ।

कुंडि*–स्त्री० दे० 'कूँड' ।

कुंडिका–स्त्री० (सं०) मटका; घड़ा; कमंडलु; कूँड़ी ।

कुंडिन–पु० (सं०) विदर्भ देशकी राजधानी (रुक्मिणी यहींके राजाकी बेटी थी) ।

कुंड़िया–स्त्री० शोरेके कारखानेमें खारी मिट्टी मिला पानी रखनेका गढ़ा; दे० 'कूँड़ी' ।

कुंडी–स्त्री० पत्थरका बना गोला, गहरा पात्र जिसमें भाँग घोंटी जाती है, पथरी; एक तरहका शिरस्त्राण; दरवाजेकी जंजीर या साँकल; लंगरके सिरेपरका छल्ला; मुर्रा भैंस । **–सोंटा**–पु० भाँग घोंटनेका सामान । **मु० –खटखटाना**–दरवाजा खुलवानेके लिए साँकलको इस तरह हिलाना कि जोरकी आवाज हो ।

कुंत–पुं० (सं०) कौडिल्ला; भाला; क्रोध; जूँ; एक अन्न; वासना ।

कुंतल–पु० (सं०) सिरके बाल; प्याला; हल; जौ; एक गंधद्रव्य; एक प्राचीन जनपद; एक राग; बहुरूपिया; सूत्रधार । **–वर्द्धन**–पु० भँगरा । वि० बाल बढ़ानेवाला । **–वाही**–पु० भालाबरदार ।

कुंतलिका–स्त्री० (सं०) एक पौधा; मक्खन आदि काटने-निकालनेका चम्मच ।

कुंतली–स्त्री० एक तरहकी मधुमक्खी; (सं०) छुरी, चाकू ।

कुंता*–स्त्री० दे० 'कुंती' ।

कुंतिभोज–पु० (सं०) भोजदेशका राजा जिसने पृथा-कुंतीको गोद लिया था ।

कुंती–स्त्री० बरछी; एक तरहकी मधुमक्खी; (सं०) युधिष्ठिर, भीम और अर्जुनकी माता, पृथा ।

कुंद–पु० (सं०) एक पौधा जिसके फूल दाँतोंके उपमान माने गये हैं; कनेरका पेड़; कमल; विष्णु; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; ९की संख्या, खराद । **–कर**–पु० खरादनेवाला ।

कुंद–वि० (फा०) भोथरा, गुठला; मंद । **–जेहन, –मस्तिष्क**–वि० मंदबुद्धि; मोटी अकलका । **मु०–छुरीसे हलाल करना**–बहुत कष्ट देना, सताना ।

कुंदन–पु० खालिस और दमकता हुआ सोना; शुद्ध, स्वच्छ सोनेका पत्तर । वि० तपे हुए सोने जैसा शुद्ध और निर्मल; कांतियुक्त; स्वस्थ; सुंदर । **–साज़**–पु० कुंदनका पत्तर बनानेवाला; जड़िया ।

कुंदनपुर–पु० दे० 'कुंडिन' ।

कुंदम–पु० (सं०) विडाल ।

कुंदर–पु० (सं०) विष्णु; एक तृण जो दवाके काम आता है ।

कुंदरू–पु० एक वेल और उसका फल जिसकी तरकारी बनती है ।

कुंदा–पु० (फा०) लकड़ीका बड़ा और मोटा टुकड़ा; वह मोटी और चपटी लकड़ी जिसपर रखकर कुंदीगर कपड़ेपर कुंदी करता और वकरकसाव मांस काटता है; बंदूकका काठका बना वह भाग जिसमें घोड़ा और नली जड़ी होती है, दस्ता; काठकी बेड़ी; काठ; चिड़ियाका डैना; पतंगका आड़ा कोना; कुश्तीका एक पेंच; खोया । **मु०–(दे)जोड़, तौल या बाँधकर उतरना या गिरना**–उतरना, गिरना; (पक्षीका) परोंको समेटकर धरतीपर आना । **–तौलना**–पक्षीका डैने फैलाकर उड़नेकी चेष्टा करना ।

कुंदी–स्त्री० कपड़ेकी सिलवट दूर करने और चमक लानेके लिए उसे मुंगरीसे पीटना । **–गर**–पु० कुंदी करनेवाला । **मु०–करना**–खूब पीटना, पूरी मरम्मत कर देना ।

कुंदु–पु० (सं०) चूहा ।

कुंदुर–पु० (सं०) शल्लकी वृक्षका सुगंधित गोंद ।

कुंदुरु–पु० (सं०) शल्लकी वृक्ष; उसका निर्यास ।

कुंदेरना–स० क्रि० खरादना; छीलना ।

कुंदेरा–पु० दे० 'कुनेरा' ।

कुंबी–स्त्री० कायफल; जलकुंभी; एक पेड़ ।

कुंभ–पु० (सं०) मिट्टीका घड़ा; कलस; हाथीके सिरका कुछ उभरा हुआ भाग जो उसके दोनों ओर होता है; एक राशि; पत्तियोंका बना सिरका आवरण जिसके बीचमें टोपकी तरह गड्ढा होता है ((कादं०; फर० ६३) । अनाजका एक मान; एक पुण्यजनक पर्व जो हर बारहवें बरस पड़ता है; कुंभक प्राणायाम; वेश्यापति; गुग्गुल; एक हृद्रोग; एक राग । **–कर्ण**–पु० एक विशालकाय राक्षस जो रावणका छोटा भाई था । **–कला**–स्त्री० घड़ा बनानेकी कला, कुम्हारका काम । **–कार**–पु० कुम्हार; एक संकर जाति; साँप; उल्लू । **–कारिका,–कारी**–स्त्री० कुम्हारकी स्त्री; कुलथी; मैनसिल । **–ज,–जन्मा(न्मन्),–जात**–पु० अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य । **–दासी**–स्त्री० कुटनी । **–धर**–पु० कुंभ राशि । **–पदी**–स्त्री० द्रोणपदी । **–मंडूक**–पु० अननुभवी व्यक्ति । **–योनि**–पु० अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य । **–रेता(तस्)**–पु० अग्निका एक रूप । **–शाला**–स्त्री० मिट्टीके बरतन बनानेका स्थान, कारखाना । **–संभव**–पु० अगस्त्य मुनि; द्रोणाचार्य ।

कुंभक–स्त्री० (सं०) प्राणायामके अंतर्गत नाक-मुँह बंद करके श्वास रोक रखनेकी क्रिया ।

कुंभनदास–पु० अष्टछापके एक कवि ।

कुंभरी–स्त्री० (सं०) एक दुर्गा ।

कुंभा–स्त्री० (सं०) वेश्या; नागदंती नामक ओषधि ।

कुंभिका–स्त्री० (सं०) छोटा घड़ा; वेश्या; जलकुंभी; परवलकी लता; एक नेत्ररोग, बिलनी; कायफल; एक शिश्नरोग ।

कुंभिल–पु० (सं०) सेंध लगानेवाला चोर; दूसरोंकी रचनाकी चोरी करनेवाला; साला; अपूर्ण गर्भसे पैदा बालक; एक तरहकी मछली ।

कुंभी–स्त्री० (सं०) छोटा घड़ा; हंडी; अनाजका एक परिमाण; एक जलीय पौधा, जलकुंभी; सलईका पेड़; गनियारी; दंती;

पाँडर । **–धानक**–पु० घड़ाभर अन्न रखनेवाला । **–धान्य**–पु० ६ दिनोंके खर्चके लिए रखा हुआ मटकाभर अन्न । **–नस**–पु० एक विषैला साँप । **–नसी**–स्त्री० सुमाली राक्षसकी पुत्री जो लवणासुरकी माता थी । **–पाक**–पु० एक नरक; हंडीमें पकायी हुई चीज; एक तरहका ज्वर । **–मुख**–पु० एक तरहका फोड़ा ।

कुंभी(भिन्)–पु० (सं०) हाथी; मगर; कुंभीपाक नरक; एक मछली; एक विषैला कीड़ा; एक तरहका गुग्गुल । **–(भि)पाकी**–स्त्री० कायफल । **–पुर**–पु० हस्तिनापुर । **–मद**–पु० मदजल ।

कुंभीक–पु० (सं०) पुन्नाग वृक्ष; एक तरहका नपुंसक; जलकुंभी ।

कुंभीका–स्त्री० (सं०) जलकुंभी; कुंभिका रोग ।

कुंभीपर*–पु० हस्तिनापुर ।

कुंभीर–पु० (सं०) घड़ियाल; एक छोटा कीड़ा; एक यक्ष ।

कुंभीरक–पु० (सं०) चोर ।

कुंभीरासन–पु० (सं०) हठयोगके अंतर्गत एक आसन ।

कुंभील–पु० (सं०) घड़ियाल; सेंध मारनेवाला ।

कुंभोदर–पु० (सं०) महादेवका एक गण । वि० दे० 'कुंडकोदर' ।

कुंभोलूक–पु० (सं०) एक तरहका उल्लू ।

कुंवर–पु० लड़का; राजकुमार ।

कुंवरि, कुँवरी–स्त्री० कुमारी; राजकन्या ।

कुंवरेटा–पु० छोटा लड़का ।

कुंवाँ–पु० दे० 'कुआँ' ।

कुंवारा–वि० दे० 'कुँआरा' ।

कुंहकुंह*–पु० दे० 'कुमकुम' ।

कु–स्त्री० (सं०) धरती, पृथ्वी; त्रिभुजका आधार । **–कील**–पु० पर्वत । **–ज**–पु० मंगल ग्रह; वृक्ष; नरकासुर । वि० लाल । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० मंगल ग्रह ।**–जा**–स्त्री० जानकी; कात्यायनी, दुर्गा । **–दिन**–पु० एक सूर्योदयसे लेकर दूसरे सूर्योदयतकका काल (दे० अन्य 'कु'के साथ) । **–देव**–पु० भूदेव, ब्राह्मण । **–धर, भृत्**–पु० पहाड़; शेषनाग । **–पप,–पपी**–पु० सूर्य । **–भा**–स्त्री० दे० क्रममें । **–रुह**–पु० वृक्ष । **–वलय**–पु० दे० क्रममें । **–सुत**–पु० मंगल ग्रह ।

कु–अ० (सं०) हीनता, नीचता, दुष्टता, अल्पता, कुत्सा आदिके अर्थ देता है । (स्वरादि शब्दोंके पहले इसका रूप कत्, कव और और का हो जाता है–जैसे कदाचार, कवोष्ण, कोष्ण आदि) । **–कठ***–वि० कुकथ्य, अनुचित । **–कर्म(र्मन्),–कृत्य**–पु० बुरा काम, पापकर्म । **–कर्मी(र्मिन्)**–वि० कुकर्म करनेवाला । **–खेत***–पु० बुरी जगह, कुठाँव । **–ख्यात**–वि० बदनाम । **–ख्याति**–स्त्री० निंदा, बदनामी । **–गति**–स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा । **–गहनि***–स्त्री० हठ, दुराग्रह । **–ग्रह**–पु० बुरे ग्रह । **–घात**–पु० (हिं०) कपटभरी चाल, छलछंद; कुअवसरपर किया जानेवाला प्रहार; कुठाँव । **–चंदन**–पु० लाल चंदन; कुंकुम । **–चक्र**–पु० किसीको विपद्में फँसाने, नुकसान पहुँचानेकी चाल, साजिश, षड्यंत्र । **–चक्री(क्रिन्)**–वि० षड्यंत्र करनेवाला । **–चर**–वि० रेंगनेवाला; बीहड़ स्थानोंमें जाने, घूमनेवाला; दुराचारी; परनिंदक । (स्त्री० 'कुचरा', 'कुचरी' ।) पु० स्थिर रहनेवाला तारा । **–चर्या**–स्त्री० दुराचरण । **–चाल**–स्त्री० (हिं०) दुराचार; दुष्टता, खोटाई । **–चाली**–वि० (हिं०) दुराचारी; दुष्ट, खोटा ।–स्त्री० कुत्सित आचरण, कुचाल, 'फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली'–रामा० । **–चाह**–दे० क्रममें ।**–चिल,*–चील,*–चीला**–वि० दे० 'कुचैला' । **–चेल,–चैल**–वि० जिसके कपड़े बहुत मैले या फटे हों; गंदा । पु० मलिन वस्त्र । **–चेष्टा**–स्त्री० कुत्सित चेष्टा, बुरी नीयत बतानेवाली चेष्टा ।**–चैन***–स्त्री० बेचैनी । **–चैला**–वि० (हिं०) मैले कपड़ेवाला, मलिन । **–जंत्र***–पु० टोना-टोटका । **–जन**–पु० दुर्जन, बुरा आदमी । **–जन्मा(न्मन्)**–वि० नीच कुल या जातिमें उत्पन्न । **–जस***–पु० अपयश; बदनामी । **–जात, –जाति**–स्त्री० नीच जाति । वि० हीन जातिवाला; जातिच्युत । **–जून**–पु० कुबेला, कुसमय । **–जोग***–पु० कुसंग; प्रतिकूल अवसर । **–जोगी***–वि० दे० 'कुयोगी' । **–टेक**–स्त्री० (हिं०) अनुचित हठ । **–टेव**–स्त्री० (हिं०) बुरी बान, लत । **–ठाँउ,*–ठाँय,–ठाँव,–ठाँय**–पु०, स्त्री० (हिं०) बुरी जगह; बेमौका । **–ठाट**–पु० (हिं०) बुरे, किसीकी बुराई करनेवाले कामका आयोजन, कुचक्र । **–ठाहर,*–ठौर**–पु० (हिं०) दे० 'कुठाँव' । **–डौल**–वि० (हिं०) बेडौल, भद्दा, कुरूप । **–ढंग**–पु० (हिं०) बुरा ढंग, चाल । वि० बेढंगा । **–ढंगा**–वि० (हिं०) बेढंगा; बेशऊर । **–ढंगी**–वि० (हिं०) कुपथगामी । **–ढब**–वि० (हिं०) बेढब; कठिन, विकट । **–तप**–पु० दे० क्रममें । **–तर्क**–पु० दूषित, असंगत तर्क, वितंडा । **–तर्की(र्किन्)**–वि० कुतर्क करनेवाला, कठहुज्जती । **–दर्शन**–वि० कुरूप, बदशक्ल । **–दाँव**–पु० (हिं०) कुघात; विश्वासघात; कुठौर ।**–दाईं***–वि० कुघात करनेवाला ।**–दाउ,–दाय***–पु० दे० 'कुदाँव' – । **–दाम**–पु० (हिं०) खोटा सिक्का । **–दास**–पु० निकम्मा सेवक । **–दिन**–पु० दुर्दिन; विपत्तिके दिन । **–दिष्ट***–स्त्री० दे० 'कुदृष्टि' । **–दृष्टि**–स्त्री० बुरी, खोटी निगाह, पाप-दृष्टि; अशुभ दृष्टि । **–देव**–पु० दैत्य; राक्षस । **–देश**–पु० बुरा देश, स्थान, भदेस । **–देह**–वि० कुरूप । पु० कुबेर । **–धातु**–स्त्री० निकृष्ट धातु, लोहा । **–धान्य**–पु० निकृष्ट अन्न; पापसे पैसा कमानेवालेका धान्य । **–धी**–वि० मंदबुद्धि । **–नख**–पु० नखोंका एक रोग । **–नखी(खिन्)**–वि० कुनख रोग या बुरे नाखूनवाला । **–नाभि**–पु० बवंडर; एक निधि । **–नाम***–पु० बदनामी । **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम सवेरे लेनेसे अमंगलकी आशंका की जाय । पु० अति कृपण व्यक्ति । **–पंथ**–पु० (हिं०) दे० 'कुपथ' । **–पंथी**–वि० (हिं०) कुचाली, कुमार्गी । **–पढ़**–वि० (हिं०) अनपढ़, मूर्ख । **–पथ**–पु० अधर्म, अनीतिका रास्ता, कुमार्ग; * कुपथ्य । **–०गामी(मिन्)**–वि० बुरे आचरणवाला, कुचाली । **०–नयन**–पु० (मिस-डाइरेक्शन)–बुरे या गलत रास्तेपर ले जाना । **–पथ्य**–वि० अयुक्त, अस्वास्थ्यकर । पु० अयुक्त, अस्वास्थ्यकर आहार-विहार, बदपरहेजी । **–पाठ**–पु० बुरी सलाह, कुमंत्रणा । **–पाठी(ठिन्)**–वि० दुष्ट, उत्पाती । **–पात्र**–वि० (किसी वस्तुका) अनधिकारी, अयोग्य । पु० दान देनेके अयोग्य व्यक्ति । **–पुत्र**–पु० नालायक बेटा, कपूत । **–पोषण**–पु० (मैल-न्यूट्रिशन) उत्तम-पोषणका अभाव या कमी, न्यूनपोषण । **–प्रबंध**–पु० बुरा, सदोष प्रबंध, बदइंतजामी । **–बत***–स्त्री० बुरी बात; बुराई; कुचाल । **–बाक***–पु० दे० 'कुवचन' –। **–बानि***–स्त्री० बुरी आदत, टेव ।**–बानी***–स्त्री० बुरावाणिज्य; कुवचन । **–बुद्धि**–स्त्री० दुर्बुद्धि; नासमझी । वि० जिसकी अकल ठीक न न हो, नासमझ । **–बेला**–स्त्री० (हिं०) अतिकाल; कुसमय । **–बोल**–पु० (हिं०) कठोर या अमंगल वचन । **–बोलनी***–वि०, स्त्री० कुभाषिणी, बुरे बोल बोलनेवाली । **–भा**–स्त्री० दे० क्रममें । **–भाव**–पु० बुरा भाव, द्वेषभाव । **–मंत्र**–पु० बुरी सलाह, कुपाठ । **–मति**–स्त्री० दुर्बुद्धि; अपनी बुराई करनेवाली बुद्धि; कुत्सित विचार । **–मारग***–पु० दे० 'कुमार्ग' । **–मार्ग**–पु० कुपथ, बुरा रास्ता । **–०गामी(मिन्),–मार्गी(र्गिन्)**–वि० अधर्म, अनीतिकी राहपर जानेवाला, कुचाली । **–मीच***–स्त्री० बुरी मौत । **–मुख**–पु० रावणकी सेनाका एक योद्धा, दुर्मुख । **–योग**–पु० अशुभ योग; अनिष्ट संयोग । **–योगी(गिन्)**–वि०, पु० योगसाधनका ढोंग करनेवाला । **–रव**–वि०, पु० दे ० क्रममें । **–रस**–वि० जिसका स्वाद खराब हो या हो गया हो । **–राय***–स्त्री० दे० 'कुराह' । **–राह**–स्त्री० (हिं०) कुमार्ग, ऊबड़-खाबड़ रास्ता । **–राही**–वि० (हिं०) कुपथगामी । **–रीति**–स्त्री० बुरा ढंग; निंदनीय प्रथा । **–रुख**–वि० (हिं०) जिसका रुख खराब हो, नाराज । **–रूप**–वि० भद्दी, बेढंगी शकलवाला । **–रूप्य**–पु० टीन । **–रोग**–पु० कठिन, दुस्साध्य रोग । **–लक्षण**–पु० बुरा लक्षण, अनिष्टसूचक चिह्न । वि० बुरे लक्षणवाला । **–लक्षणी**–वि०, स्त्री० बुरे, अशुभ सूचक लक्षणवाली । स्त्री० बुरे लक्षणवाली स्त्री । **–लच्छन***–वि०, पु० दे० 'कुलक्षण' । **–लच्छनी**–वि०, स्त्री० (हिं०) दे० 'कुलक्षणी' । **–वंग**–पु० सीसा । **–वंटन**–पु० (मैल-डिस्ट्रिब्यूशन) अनुपयुक्त ढंगसे किया जानेवाला वितरण, कुवितरण । **–वचन, –वाक्य**–पु० दुर्वचन, गाली । **–वर्ष**–पु० अति वृष्टि । **–वलय**–पु० दे० क्रममें । **–वाच्य**–वि० न कहने योग्य । पु० गाली, दुर्वचन । **–वाद**–वि० दूसरोंकी निंदा करनेवाला,

नीच । **–वासना**–स्त्री० पापमय वासना । **–विचार**–पु० बुरा, दूषित विचार । **–विचारी(रिन्)**–वि० बुरे विचारवाला । **–वृत्ति**–स्त्री० निंदित आचरण । वि० निंदित आचरणवाला । **–वेणी**–स्त्री० दे० क्रममें । **–वेश**–पु० अभद्र वेश । वि० अभद्र वेशवाला, भद्दा, कुरूप–'सर्व ढके सोहैं नहीं, उघरे होत कुवेश' । **–वैद्य**–पु० अशास्त्रीय ढंगसे चिकित्सा करनेवाला, अताई । **–शासन**–पु० बुरा राज्यप्रबंध, कुराज्य । **–शील**–वि० बुरे स्वभावका, दुश्चरित्र । **–संग**–पु० बुरेका संग, बुरी सोहबत । **–संगति**–स्त्री० बुरी सोहबत । **–संवाहक**–वि० (बैड कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका परिचालन सुगमतासे न हो सके । **संस्कार**–पु० चित्तपर पड़ा हुआ बुरा असर; चित्तमें जमी हुई कुवासना या कुधारणा । **–सगुन***–पु० अपशकुन । **–समय**–पु० बुरा समय, अवसर; कुबेला । **–साइत**–स्त्री० (हिं०) कुसमय; बुरा मुहूर्त । **–साखी***–पु० बुरा पेड़, कुवृक्ष । **–सूत***–पु० बुरा सूत्र; बुरा प्रबंध । **–सृत**–वि० दुराचारी । **–सृति**–स्त्री० धोखेबाजी; इंद्रजाल; दुराचार ।

कुआँ–पु० भूगर्भस्थ जल या तेल निकालनेके लिए खोदा गया बहुत गहरा और साधारणतः गोला (कच्चा या पक्का) गढ़ा, कूप । मु०–**खोदना**–किसीकी हानि, बुराई करनेका उपाय करना; रोजीके लिए मेहनत करना । **–(एँ) की मिट्टी कुएँमें लगना**–जहाँकी कमाई वहीं खर्च हो जाना । **–झँकाना**–परेशान करना; तलाशमें दौड़ाना । **–झाँकना**–किसी चीजकी कोशिशमें बहुत जगह भटकना, बहुत हैरान होना । **–परसे प्यासे आना**–कार्यसिद्धिकी जगहसे निराश लौटना । **–में गिरना**–जान देनेके लिए कुएँमें कूदना; जान-बूझकर विपद्‌में फँसना । **–में डालना, में ढकेलना**–लड़कीको बुरे घरमें डाल देना, उसकी जिंदगी बर्बाद कर देना । **–में बाँस डालना**–बहुत ढूँढ़ना, खोजना । **–में भाँग पड़ना**–घरके घरका बेवकूफ बन जाना, सबकी अकलका मारा जाना ।

कुआड़ी–स्त्री० एक तरहकी लय (संगीत) ।

कुआर–पु० आश्विन मास ।

कुआरा–वि० कुआरमें होनेवाला ।

कुआरी–वि० आश्विनमें तैयार होनेवाला (धान आदि) । पु० एक मोटा धान जो कुआरमें पकता है ।

कुइयाँ–स्त्री० छोटा कुआँ ।

कुईं–स्त्री० कमल जैसा एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते और रातमें खिलते हैं, कुमुद ।

कुकटी–स्त्री० एक तरहकी कपास जिसकी रुई हलके सुँघनी रंगकी होती है ।

कुकड़ना*–अ० क्रि० सिमटना ।

कुकड़वल्ली, कुकड़बेल–स्त्री० बंडाल ।

कुकड़ी–स्त्री० कच्चे सूतका लच्छा; मदारका फल; खुखड़ी । * मुर्गी (कबीर) ।

कुकनू, कुकनूस–पु० (यू०) एक कल्पित पक्षी जिससे यूनानियोंके विश्वासानुसार संगीतकी उत्पत्ति हुई ।

कुकभ–पु० (सं०) एक तरहकी शराब ।

कुकर–पु० (अं०) खाना पकानेका एक यंत्र जिसमें भाफकी सहायतासे कई चीजें एक साथ पकायी जा सकती हैं ।

कुकरी*–स्त्री० कुक्कुटी, मुर्गी ।

कुकरौंदा, कुकरौंधा–पु० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवाके काम आती हैं ।

कुकस*–पु० धान आदिका छिलका ।

कुकुंदर, कुकुंदुर–पु० (सं०) जघनकूप; कुकरौंधा ।

कुकुत्संद–पु० (सं०) गौतम बुद्धसे पहले हुए एक बुद्ध ।

कुकुद, कुकूद–पु० (सं०) वस्त्रालंकार-सहित कन्यादान करनेवाला ।

कुकुभ–पु० (सं०) एक राग, ककुभ; एक छन्द ।

कुकुभा–स्त्री० (सं०) एक रागिनी, ककुभा ।

कुकुर–पु० (सं०) यादव क्षत्रियोंकी एक शाखा; यादव राजा अंधकका पुत्र जिससे उक्त शाखा चली; एक जनपद, दशार्ह; कुत्ता; ग्रंथिपर्णी; एक साँप । **–खाँसी,–ढाँसी**–स्त्री० (हिं०) एक तरहकी बहुत कष्ट देनेवाली और संक्रामक सूखी खाँसी । **–दंत**–पु० साधारण दाँतोंसे कुछ नीचे निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत । **–दंता**–वि० (हिं०) जिसके कुकुरदंत निकला हो । **–निंदिया**–स्त्री० (हिं०) कुत्तेकी नींद, जरासे खटकेसे खुल जानेवाली नींद । **–भँगरा**–पु० (हिं०) भँगरैया । **–माछी**–स्त्री० (हिं०) एक तरहकी मक्खी जो घोड़े, कुत्ते आदिको लगा करती है । **–मुत्ता**–पु० (हिं०) एक तरहका पौधा जो बरसातके दिनोंमें पेड़ोंकी जड़ोंमें या सीलकी जगहोंमें उगा करता है, छत्रक ।

कुकुरौंछी†–स्त्री० दे० 'कुकुरमाछी' ।

कुकुही–स्त्री० बनमुर्गी ।

कुकूणक–पु० (सं०) आँखोंका एक रोग, रोहा ।

कुकूल–पु० (सं०) भूसी; भूसीकी आग; चिनगी; कवच; लकड़ीके छोटे-छोटे टुकड़ोंसे भरा हुआ गड्ढा ।

कुकूलाग्नि–स्त्री० (सं०) भूसीकी आग, तुषाग्नि ।

कुक्कुट–पु० (सं०) मुर्गा; बनमुर्गा; लुक; चिनगारी । **–नाडी**–स्त्री०,**–यंत्र**–पु० पानी आदि ढालनेकी एक तरहकी टेढी नली । **–पाद**–पु० गयाके पासका एक पर्वत, कुर्किहार । **–मस्तक**–पु० चव्य, गजपिप्पली । **–व्रत**–पु० भाद्रशुक्ला सप्तमीको किया जानेवाला एक व्रत । **–शिख**–पु० कुसुंभ ।

कुक्कुटक–पु० (सं०) मुर्गा; बनमुर्गा; एक संकर जाति ।

कुक्कुटांड, कुक्कुटांडक–पु० (सं०) एक तरहका धान ।

कुक्कुटादि-पालन–पु० (पोलट्री कीपिंग) कुक्कुट, बत्तक आदि पालने, उनसे अंडे बेचने आदिका व्यवसाय, **मुर्गी पालन** ।

कुक्कुटाभ–पु० (सं०) एक तरहका साँप ।

कुक्कुटासन–पु० (सं०) योगका एक आसन ।

कुक्कुटि, कुक्कुटी–स्त्री० (सं०) मुर्गी; छिपकली; ढोंग; शाल्मली ।

कुक्कुभ–पु० (सं०) बनमुर्गा; मुर्गा; वार्निश ।

कुक्कुर–पु० (सं०) कुत्ता; ग्रंथिपर्णी; यदुवंशियोंकी एक शाखा ।

कुक्ष–पु० (सं०) पेट ।

कुक्षिंभरि–वि० (सं०) पेटू; स्वार्थी ।

कुक्षि–स्त्री० (सं०) पेट, कोख; गर्भाशय; किसी वस्तुका मध्य भाग; गुहा; म्यान; खाड़ी । पु० इक्ष्वाकुका एक पुत्र; एक प्राचीन देश; बलिका दूसरा नाम ।

कुघा*–स्त्री० दिशा, ओर ।

कुच–पु० (सं०) स्तन, उरोज । **–फल**–पु० अनार । **–मर्दन**–पु० कुचको दबाना, मसल देना, रस्सा बनानेका सन । **–मुख**–पु० स्तनका अग्रभाग, चूचुक ।

कुचकुचवा†–पु० उल्लू ।

कुचकुचा*–वि० खानेमें गीला-कच्चा लगनेवाला, पिचपिचा । (स्त्री० 'कुचकुची' ।)

कुचकुचाना–स० क्रि० बार बार हलके हाथों कोंचना; थोड़ा कुचलना ।

कुचना*–अ० क्रि० सिकुड़ना, संकुचित होना; दबना, कुचल जाना ।

कुचलना–स० क्रि० किसी भारी चीजसे जोरसे दबाना, मसलना; रौंदना । मु० **कुचल देना**–पीस डालना, बल तोड़ देना ।

कुचला–पु० एक पेड़ और उसका बीज जो विष है और दवाके काम आता है; कुपीलु ।

कुचाग्र–पु० (सं०) स्तनका अग्रभाग ।

कुचाह*–स्त्री० अमंगल बात, अशुभ संवाद 'कठिन कुचाह सुनाइहि कोई'–रामा०; बुरी इच्छा ।

कुचिक–पु० (सं०) उत्तर-पूर्व दिशाका एक प्राचीन देश ।

कुचित–वि० (सं०) संकुचित; थोड़ा ।

कुचिया†–स्त्री० छोटी टिकिया; कम बढ़ायी हुई रोटी ।

कुचिला–पु० दे० 'कुचला' ।

कुची†–स्त्री० कूची, ब्रश; कुंजी–'ज्ञान कपाट कुची जनु खोलत'–राम० ।

कुचील*–वि० मैला, गंदा–'बसन कुचील, चिहुर लपटाने, देह पीतांबर बरनी'–सूर ।

कुचुमार–पु० (सं०) कामशास्त्रके एक प्राचीन आचार्य ।

कुच्छित*–वि० दे० 'कुत्सित' ।

कुछ–वि० थोड़ासा, तनिक । सर्व० कोई चीज (कुछ देते-खिलाते

हो ?); कोई बड़ी बात, काम (कुछ कर दिखाना); कोई अनुचित अनिष्ट बात (कुछ कर बैठना, कह देना)। **–एक**–वि० थोड़ासा। **–ऐसा**–वि० विलक्षण। **–कुछ**–अ० थोड़ा, किसी कदर। **मु० –कर देना**–जादू टोना कर देना। **–कर बैठना**–कोई अनुचित, अनिष्ट बात कर डालना। **–कहना**–कोई कड़ी बात कहना। **–का कुछ**–उलटा, औरका और। **–खा लेना**–जहर खा लेना। **–गुड़ ढीला, कुछ बनिया,–सोना खोटा, कुछ सोनार**–दोष दोनों ओर है। **–न चलना**–वश न चलना। **–न पूछिये**–कहनेकी बात नहीं; क्या कहना, क्या बात है! **–लगाना,–समझना**–(अपने आपको) बड़ा समझना, अपने धन, बल आदिका गर्व करना। **–हो**–चाहे जो हो। **–हो जाना**–रोग, प्रेतबाधा आदि हो जाना।

कुजंभ–वि० टेढ़ेमेढे या लंबे दाँतवाला। पु० प्रह्लादके पुत्रका नाम।

कुजंभल, कुजंभिल–पु० (सं०) सेंध लगानेवाला चोर।

कुजाष्टम–पु० (सं०) एक अशुभ योग जो जन्मकुंडलीमें मंगलके आठवें स्थानमें होनेसे होता है।

कुज्जा†–पु० पुरवा, मिट्टीका प्याला जैसा पात्र (कबीर); मिट्टीके प्यालेमें जमायी हुई मिश्री।

कुज्झटि, कुज्झटिका, कुज्झटी–स्त्री० (सं०) कुहरा।

कुटंक–पु० (सं०) छत; छप्पर।

कुटंगक, कुटुंगक–पु० (सं०) वृक्षपर फैली हुई लताओंसे बना हुआ मंडप; वृक्षपर फैलनेवाली लता; छत; छाजन; झोपड़ी; छोटा घर; भांडार-गृह।

कुटंत*–स्त्री० मार पड़ना, पिटाई।

कुट–पु० कूटा हुआ टुकड़ा; एक मोटी झाड़ी। (सं०) गढ़, किला; घर; कलस; हथौड़ा; वृक्ष; पर्वत। **–कारिका,–हारिका**–स्त्री० नौकरानी। **–ज**–पु० इंद्रजौ; कमल; अगस्त्य; द्रोणाचार्य।

कुटक–पु० (सं०) एक वृक्ष; दक्षिणका एक (प्राचीन) देश; वह डंडा जिसमें मथानीकी रस्सी लपेटी जाती है; हलका फाल।

कुटका–पु० छोटा टुकड़ा; कशीदेमें काढ़ा हुआ तिकोना बूटा।

कुटकी–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है; कँगनी या काकुन; एक छोटा कीड़ा जो मच्छरकी तरह पशुओं, मनुष्योंको काटता है; छोटा कुटका।

कुटनई†–स्त्री० कुटनपन, कुटनीका कार्य।

कुटनपन, कुटनपना, कुटनपेशा–पु० कुटनीका काम, पेशा; झगड़ा लगानेका काम।

कुटनहारी–स्त्री० धान कूटनेवाली स्त्री।

कुटना–अ० क्रि० कूटा जाना; मारा-पीटा जाना। पु० स्त्रियोंको फुसलाकर परपुरुषसे मिलानेवाला; चुगुलखोर; कूटनेका औजार; कूटे जानेकी क्रिया। **–ई**–स्त्री० दे० 'कुटनापा'। **–पन,–पा**–पु० कुटनेका काम, पेशा।

कुटनाना–स० क्रि० किसी स्त्रीको बहकाकर व्यभिचारके मार्गपर ले जाना।

कुटनी–स्त्री० किसी स्त्रीको बहका-फुसलाकर परपुरुषसे मिलानेवाली स्त्री, कुट्टनी; झगड़ा लगानेवाली, चुगली खानेवाली स्त्री।

कुटन्नक, कुटन्नट–पु० (सं०) स्योनाक; केवटमोथा।

कुटप–पु० (सं०) घरके पासका बगीचा; कमल; ऋषि; दे० 'कुडव'।

कुटम्मस–स्त्री० कुटाई, मारना-पीटना।

कुटर–पु० (सं०) वह डंडा जिसमें मथानीकी रस्सी लपेटी जाती है।

कुटल–पु० (सं०) छप्पर, छाजन।

कुटवाना–स० क्रि० कूटनेकी क्रिया दूसरेसे कराना ('कूटना'का प्रे०)।

कुटवार†–पु० गाँवका चौकीदार (कोट्टपाल, कोतवाल), गोड़इत।

कुटवाल*–पु० कोट्टपाल, कोतवाल।

कुटाई–स्त्री० कूटनेका काम; कूटनेकी उजरत; † गहरी मरम्मत, पिटाई।

कुटार–पु० नटखट टट्टू।

कुटास–स्त्री० पिटाई।

कुटि–स्त्री० (सं०) कुटी; देह; वृक्ष; टेढ़ापन। **–चर**–पु० घड़ियाल।

कुटिका–स्त्री० (सं०) कुटिया।

कुटिया–स्त्री० घास-फूसका बना छोटा घर, कुटी।

कुटिर–पु० (सं०) झोपड़ी।

कुटिल–वि० (सं०) टेढ़ा; छली, चालबाज; दुष्ट, खोटा। पु० एक वर्णवृत्त; तगरका पौधा। **–कीट**–पु० साँप। **–कीटक**–पु० एक तरहका मकड़ा। **–गति**–स्त्री० एक वृत्त; टेढ़ी चाल। वि० टेढ़ा चलनेवाला। **–गा**–स्त्री० नदी। **–मति**–वि० खोटे स्वभावका, दुरात्मा।

कुटिलका–वि० (सं०) टेढ़ा, मुड़ा हुआ।

कुटिलता–स्त्री० (सं०) टेढ़ापन, खुटाई।

कुटिला–स्त्री० (सं०) सरस्वती नदी; भारतवर्षकी एक प्राचीन लिपि; एक गंधद्रव्य।

कुटिलाई*–स्त्री० कुटिलता।

कुटिलिका–स्त्री० (सं०) चुपके-चुपके, पाँव दबाकर आना; लोहारकी भट्ठी।

कुटी–स्त्री० (सं०) मोड़, घुमाव; कुटिया, झोपड़ी; श्वेत कुटज; एक गंधद्रव्य, मुरा; एक मद्य; कुटनी; पुष्पगुच्छ। **–चक,–चर**–पु० सन्न्यासियोंके चार भेदोंमेंसे एक जो शिखा-सूत्रका त्याग नहीं करता और अपने कुल-कुटुंबवालोंको छोड़कर दूसरोंके यहाँ भिक्षा नहीं करता। **–प्रवेश**–पु० आयुर्वेदोक्त कल्प-चिकित्साका एक अंग; विशेष विधिसे निर्मित कुटीमें कल्प-चिकित्साके लिए रहना।

कुटीका–स्त्री० (सं०) छोटा घर।

कुटीर–पु० (सं०) कुटी, कुटिया; रतिक्रिया; एक पौधा। **–शिल्प**–पु० (कॉटेज इंडस्ट्री) वह छोटा उद्योग या धंधा जो अपने घरपर ही बैठकर किया जा सके और जिसके लिए बड़े-बड़े यंत्रों आदिकी आवश्यकता न हो।

कुटीरक–पु० (सं०) कुटी।

कुटुंब–पु० (सं०) बाल-बच्चे, संतान; कुनबा, परिवार; कुटुंबका व्यक्ति, स्वजन; संबंधी; परिवारके प्रति कर्तव्य; नाम; समूह। **–कलह**–पु० गृह-कलह।

कुटुंबक–पु० (सं०) दे० 'कुटुंब'; एक तृण।

कुटुंबिक, कुटुंबी(बिन्)–पु० (सं०) कुनबे, बाल-बच्चेवाला; कुटुंबका व्यक्ति; देख-भाल करनेवाला (ला०); किसान।

कुटुंबिनी–स्त्री० (सं०) गृहिणी; बाल-बच्चेवाली स्त्री; क्षीरिणी नामका क्षुप।

कुटुनी–स्त्री० (सं०) कुटनी।

कुटुम*–पु० दे० 'कुटुंब'। **–कबीला**–पु० बाल-बच्चे; कुटुंबी।

कुटुवा–पु० कूटनेवाला; बैलको वधिया करनेवाला।

कुटौनी†–स्त्री० धान कूटनेका काम; कूटनेकी उजरत। **–पिसौनी**–स्त्री० कूटने-पीसनेका काम या उसकी उजरत।

कुट्टक–पु० (सं०) काटने, कूटने या पीसनेवाला।

कुट्टन–पु० (सं०) कूटना, पीसना; काटना।

कुट्टनी, –कुट्टिनी–स्त्री० (सं०) कुटनी।

कुट्टनीयता, कुटट्यता–स्त्री० (मैलिऐबिलटी) कूटकर फैलाये जाने योग्य होनेका गुण या विशेषता, घातवर्ध्यता।

कुट्टमित–पु० (सं०) नायिकाभेदमें माने हुए स्त्रियोंके ११ हावोंमेंसे एक–सुखानुभवके समय बनावटी कष्ट-चेष्टा।

कुट्टा–पु० परकटा कबूतर; वह पक्षी जिसके पाँव बँधे हों और पिंजड़ेमें बंद कर दिया गया हो (ऐसे पक्षीको दिखाकर दूसरा पक्षी फँसाया जाता है)।

कुट्टाक–वि० (सं०) काटने, तोड़ने, अलग करनेवाला।

कुट्टार–पु० (सं०) पहाड़; रतिक्रिया; कंबल; पार्थक्य।

कुट्टित–वि० (सं०) काटा, कूटा, या पीसा हुआ।

कुट्टिम–पु० (सं०) कूटकर या पत्थर बैठाकर बनाया हुआ, पच्चीकारीके कामका फर्श; रत्नकी खान; अनार; झोपड़ी; कुटी।

कुट्टिमित–पु० (सं०) दे० 'कुट्टमित'।

कुट्टिहारिका–स्त्री० (सं०) दे० 'कुटहारिका', नौकरानी।

कुट्टी–स्त्री० चारेको छोटे-छोटे टुकड़ोंमें काटनेकी क्रिया; बारीक काटा हुआ चारा; लड़कोंका खेलमें किसी साथीसे मैत्री-भंग; कूटा और सड़ाया हुआ कागज। **मु०–करना**–चारा काटना;

मित्रता भंग करना ।

कुट्टीर–पु॰ (सं॰) छोटा पहाड़, पहाड़ी ।

कुट्टीरक–पु॰ (सं॰) कुटिया ।

कुठ–पु॰ (सं॰) वृक्ष ।

कुठर–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कुटर' ।

कुठला–पु॰ अनाज रखनेके लिए मिट्टीका बना वड़ा पात्र ।

कुठाकु–पु॰ (सं॰) कठफोड़वा पक्षी ।

कुठाटंक–पु॰,–**कुठाटंका**–स्त्री॰ (सं॰) कुल्हाड़ी ।

कुठार–पु॰ कुठला । (सं॰) कुल्हाड़ा, फावड़ा; नाश करनेवाला; कुठ, वृक्ष । –**पाणि**–वि॰ जिसके हाथमें कुठार हो । पु॰ परशुराम ।

कुठारक–पु॰ (सं॰) कुल्हाड़ी ।

कुठाराघात–पु॰ (सं॰) कुल्हाड़ीका घाव; घातक चोट ।

कुठारिक–वि॰, पु॰ (सं॰) लकड़ी काटनेवाला ।

कुठारिका–स्त्री॰ (सं॰) कुल्हाड़ी । वि॰, स्त्री॰ नाश करनेवाली (केवल समासमें) ।

कुठारी–पु॰ भंडारी । स्त्री॰ नाश करनेवाली । (सं॰) कुल्हाड़ी ।

कुठारु–पु॰ (सं॰) पेड़; बंदर; हथियार वनानेवाला ।

कुठाली–स्त्री॰ सोना-चाँदी गलानेकी घरिया ।

कुठि–पु॰ (सं॰) वृक्ष; पर्वत ।

कुठिया, कुठिला–पु॰ दे॰ 'कुठला' ।

कुठेर–पु॰ (सं॰) अग्नि; तुलसी ।

कुठेरक–पु॰ (सं॰) श्वेत तुलसी ।

कुठेरु–पु॰ (सं॰) पंखे या चमरकी हवा ।

कुडंग–पु॰ (सं॰) निकुंज ।

कुड़–पु॰ कुट नामक ओषधि । स्त्री॰ हलकी अगवाँसी ।

कुड़कुड़–पु॰ कौए आदिको उड़ानेके लिए की जानेवाली आवाज ।

कुड़कुड़ाना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'कुड़वुड़ाना' । स॰ क्रि॰ खेतसे चिड़ियोंको उड़ाना या जानवरोंको भगाना ।

कुड़कुड़ी–स्त्री॰ अजीर्ण आदिसे पेटका गुड़गुड़ाना । मु॰–**होना**–किसी वातको जाननेके लिए आतुर होना ।

कुडप–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कुडव' ।

कुड़वुड़ाना–अ॰ क्रि॰ भीतर ही भीतर कुढ़ना, कुढकर धीरे धीरे कुछ वकना, झुँझलाना ।

कुडमल–पु॰ दे॰ 'कुड्मल' ।

कुडरिया–स्त्री॰ दे॰ 'कुड़री' ।

कुड़री–स्त्री॰ इँडुरी; नदीके घुमावसे घिरी हुई जमीन ।

कुडिया*–स्त्री॰ टोपी ।

कुड़ल–पु॰ रक्तकी कमीसे होनेवाली शरीरकी ऐंठन; नसपर नस चढ़ जाना ।

कुडव–पु॰ (सं॰) अन्नकी एक माप जो १२ मुट्ठीके वरावर होती है ।

कुड़ा–पु॰ कुरैया; दे॰ 'कुढ़ा' ।

कुडिला–स्त्री॰ (सं॰) मिट्टी या काठका जलपात्र ।

कुडी–स्त्री॰ (सं॰) झोपड़ी, कुटी ।

कुडुक–पु॰ एक प्राचीन बाजा । स्त्री॰ अंडा न देनेवाली मुर्गी । वि॰ व्यर्थ; खाली । मु॰–**बोलना**–बेकार जाना ।

कुड्मल–पु॰ (सं॰) खिलती हुई कली; एक नरक ।

कुड्च–पु॰ (सं॰) दीवार; दीवारपर पलस्तर करना; औत्सुक्य । –**च्छेदी(दिन्)**–पु॰ सेंध मारनेवाला चोर । –**पुच्छा**,–**मत्सी**–स्त्री॰,–**मत्स्य**–पु॰ छिपकली ।

कुढ़–स्त्री॰ कुढ़न, खीझ ।

कुढ़न–स्त्री॰ कुढ़नेका भाव, खीझ; जलन; विवशता आदिकी अनुभूतिसे होनेवाला मनस्ताप ।

कुढ़ना–अ॰ क्रि॰ भीतर ही भीतर जलना, खीझना, चिढ़ना; मन-ही-मन खिन्न होना, संतप्त होना, जलना ।

कुढ़ा–पु॰ सूजाकमें मूत्र-नलीमें पड़नेवाली गाँठ ।

कुढ़ाना–स॰ क्रि॰ चिढ़ाना, खिझाना, जलाना ।

कुण–पु॰ (सं॰) चीलर; नाभिपरका मैल ।

कुणक–पु॰ (सं॰) नवजात पशुशावक ।

कुणप–पु॰ (सं॰) लाश; भाला; दुर्गंध । वि॰ दुर्गंधवाला ।

कुणपाशी (शिन्)–पु॰ (सं॰) मुर्दा खानेवाला (गीध, गीदड़ आदि); प्रेतोंका एक भेद ।

कुणि–पु॰ (सं॰) तुनका पेड़; वह जिसका हाथ टेढ़ा हो गया हो या सूख गया हो; गलका ।

कुतः(तस्)–अ॰ (सं॰) कहाँ; कैसे, क्योंकर ।

कुतक, कुतका–पु॰ सोंटा; गतका; हाथका अँगूठा । –**दिखाना**–देने, वताने आदिसे साफ इनकार करना, ठेंगा दिखाना; निराश करना ।

कुतना–अ॰ क्रि॰ कूता जाना ।

कुतप–पु॰ (सं॰) द्विज; अतिथि; एक वाजा; दिनका आठवाँ मुहूर्त; सूर्य; अग्नि; भानजा; नवासा; नेपालकंवल; कुश ।

कुतरन–स्त्री॰ कुतरा हुआ टुकड़ा ।

कुतरना–स॰ क्रि॰ दाँतोंसे किसी चीजका कुछ अंश काट लेना; किसीको मिलनेवाली रकममेंसे कुछ काट लेना ।

कुतवार–पु॰ कूत करनेवाला; * दे॰ 'कोतवाल' ।

कुतवारी*–स्त्री॰ दे॰ 'कोतवाली' ।

कुतवाल†–पु॰ दे॰ 'कोतवाल' ।

कुतवाली†–स्त्री॰ दे॰ 'कोतवाली' ।

कुतार†–पु॰ असफलताकी स्थिति; अड़चन, अंडस ('सुतार'का उलटा) ।

कुताही–स्त्री॰ दे॰ 'कोताही' ।

कुतिया–स्त्री॰ कुत्तेकी मादा; नीच प्रकृतिकी स्त्री॰ (ला॰) ।

कुतुक–पु॰ (सं॰) उत्सुकता, कुतूहल ।

कुतुप–पु॰ (सं॰) चमड़ेकी कुप्पी; दिनका आठवाँ मुहूर्त ।

कुतुब–पु॰ (अ॰) 'किताव'का वहु॰ । –**ख़ाना**–पु॰ पुस्तकालय । –**फ़रोश**–पु॰ किताब वेचनेवाला ।

क़ुतुब–पु॰ (अ॰) ध्रुव तारा । –**जनूबी**–पु॰ दक्षिणी ध्रुव । –**नुमा**–पु॰ एक यंत्र जिसकी सूईका एक सिरा सदा उत्तरी ध्रुवकी ओर रहता है । –**मीनार**–स्त्री॰ पुरानी दिल्लीकी एक मीनार जो कुतुवुद्दीन ऐवककी वनवायी हुई और अपनी ऊँचाईके लिए प्रसिद्ध है । –**शाही**–स्त्री॰ दक्षिण भारतके पाँच वहमनी राज्योंमेंसे एक जिसकी राजधानी गोलकुंडा थी । –**शुमाली**–पु॰ उत्तरी ध्रुव । –**साहवकी लाट**–कुतुबमीनारके पास गड़ी हुई लोहेकी लाट जो महाराज पृथ्वीराजकी वनवायी हुई मानी जाती है ।

कुतू–स्त्री॰ (सं॰) तेल रखनेकी चमड़ेकी कुप्पी ।

कुतूहल–पु॰ (सं॰) किसी वस्तु या व्यक्तिको देखनेकी उत्कट इच्छा, उत्सुकता; अचंभा; क्रीड़ा ।

कुतूहली(लिन्)–वि॰ (सं॰) कुतूहलयुक्त; उत्सुक; कौतुकी ।

कुत्ता–पु॰ भेड़िये, स्यार आदिकी जातिका एक मांसभक्षी जानवर जो अव अधिकांशमें पालतू पशु वन गया है, श्वान; वंदूकका घोड़ा; वह लंवा-सा लकड़ीका टुकड़ा जिसे गिरा देनेसे दरवाजा वाहरसे नहीं खुल सकता; घड़ी या तालेका एक पुरजा; लपटौवाँ घास; तुच्छ, क्षुद्र जन (ला॰); पेटका गुलाम (ला॰) । मु॰–**(त्ते)का काटना**–सनक जाना, पागल हो जाना (मुझे कुत्तेने नहीं काटा है जो अमुक वात करूँ) । –**की दुम कभी सीधी नहीं होती**–प्रकृतिगत खुटाईपर समझाने-वुझानेका कोई असर नहीं होता । –**की नींद**–ऐसी नींद जो जरासे खटकेसे खुल जाय । –**की मौत मरना**–बड़ी दुर्दशाके साथ मरना । –**की हुड़क**–पागल कुत्तेके काटनेसे होनेवाला जलातंक रोगका दौरा । –॰**उठना**–अचानक किसी चीजके लिए आतुर, अधीर हो जाना । –**के पाँव जाना**–वहुत तेज, दौड़ते हुए जाना । –**के भूँकनेसे हाथी नहीं डरता**–शक्तिशाली पुरुष तुच्छ आदमीकी धमकीकी परवाह नहीं करता ।

कुत्ती–स्त्री॰ कुत्तेकी मादा. कुतिया ।

कुत्र–अ॰ (सं॰) कहाँ, किस जगह ।

कुत्सन–पु॰ (सं॰) निंदा करना ।

कुत्सा–स्त्री॰ (सं॰) निंदा, गर्हणा ।

कुत्सित–वि॰ (सं॰) निंदित, नीच । –**यथार्थ**–यथार्थके नामपर अमानवीय या अनैतिक और घृणोत्पादक स्थितियों, दृश्यों, पदार्थों या भावोंका वर्णन । गर्हित । पु॰ कुष्ठ नामक ओषधि, कुड़ा,

कोरैया; निंदा।

कुथ–पु० (सं०) हाथीकी झूल; या कंथा; पालकीका पर्दा; कुश; एक कीड़ा।

कुथना–अ० क्रि० पीटा जाना, मार खाना।

कुथा–स्त्री० (सं०) कंथा, कथरी; झूल।

कुथुआ–पु० बच्चोंका एक नेत्र-रोग।

कुदई†–स्त्री० कोदों नामक कदन्न।

कुदकना–अ० क्रि० कूदना।

कुदक्कड़–वि० कूदनेवाला।

कुदक्का†–पु० उछल-कूद।

क़ुदरत–स्त्री० (अ०) ईश्वरीय शक्ति, प्रकृति; शक्ति; सामर्थ्य; कारीगरी। **–(ते)ख़ुदा**–स्त्री० ईश्वरकी महिमा, ख़ुदा की शान। **–का खेल**–भगवान्‌की लीला।

क़ुदरती–वि० (फा०) प्राकृतिक, असली।

कुदरा*–पु० कुदाल।

कुदलाना*–अ० क्रि० कूदते हुए चलना। स० क्रि० कुदाना।

कुदान–स्त्री० कूदनेकी क्रिया; छलाँग; कूदनेका स्थान; (दे० 'कु'में)। मु० **–भरना**–कूदना।

कुदारी–स्त्री० दे० 'कुदाली'।

कुदाल, कुदाली–स्त्री० मिट्टी खोदनेका एक औजार जो फावड़ेसे कम चौड़ा होता है।

कुदूरत–स्त्री० (अ०) मैलापन; रंजिश; कीना, द्वेष।

कुद्दार, कुद्दाल–पु० (सं०) कुदाल; कोविदार वृक्ष; लाल कचनार।

कुद्मल–पु० (सं०) दे० 'कुड्मल'।

कुद्य–पु० (सं०) दे० 'कुड्य'।

कुद्रंक–पु० (सं०) घण्टाघर।

कुद्रव–पु० (सं०) कोदो।

कुन्नक–पु० (सं०) काक।

कुनकुना–वि० थोड़ा गरम।

कुनना–स० क्रि० खरादना, छीलना।

कुन्नप–पु० दे० 'कुणप'।

कुनवा–पु० कुटुंब, परिवार।

कुनबी–पु० दे० 'कुर्मी'।

कुनवा–पु० दे० 'कुनेरा'।

कुनह–पु० संचित वैर या द्वेष, पुरानी शत्रुता।

कुनही–वि० कुनह रखनेवाला, द्वेषी।

कुनाई–स्त्री० लकड़ी चीरने, खरादने आदिसे निकलनेवाला चूर; कोयलेका चूर; (बरतन) खरादनेका काम; खरादनेकी मजदूरी।

कुनाल–पु० (सं०) एक पहाड़ी पक्षी।

कुनालिका–स्त्री० (सं०) कोयल।

कुनित*–वि० बजता, झनकार करता हुआ, क्वणित।

कुनिया–पु० कुनेरा; कूत करनेवाला।

कुनेरा–पु० खरादनेवाला, खरादी।

कुनैन–स्त्री० (अं० 'क्विनाइन') सिनकोना वृक्षकी छालसे तैयार की गयी औषध जो मलेरियाके उपचारके लिए काममें लायी जाती है।

कुप†–पु० घास, भूसे आदिकी राशि।

कुपक–पु० एक मधुर स्वरवाला पक्षी।

कुपच†–पु० अपच, अजीर्ण।

कुपना*–अ० क्रि० दे० 'कोपना'।

कुपार*–पु० दे० 'अकूपार'।

कुपिंद–पु० (सं०) दे० 'कुविंद'।

कुपित–वि० (सं०) कोपयुक्त, क्रुद्ध, खफा; विकृत, बिगड़ा हुआ (दोष)। **–मूल**–पु० भड़की हुई फ़ौज।

कुपीन–पु० दे० 'कौपीन'।

कुप्पक–पु० (सं०) घोड़ोंका एक रोग।

कुप्पा–पु० चमड़ेका बना गोल आकारका पात्र जिसमें घी या तेल रखते हैं। **–साज़**–पु० कुप्पा बनानेवाला। मु० **–लुढ़कना, –लुढ़ना**–किसी बड़े आदमीका मरना। **–सा मुँह करना**–मुँह फुलाना। **–होना**–सूजना; मोटा होना; रूठना। **फूलकर–होना**–खुशीसे फूले न समाना।

कुप्पी–स्त्री० छोटा कुप्पा।

कुफ़ुत–पु० आन्तरिक चिन्ता, मानसिक कष्ट।

कुफ़ुर*–पु० दे० 'कुफ़्र'।

कुफेन–स्त्री० काबुल नदीका पुराना नाम।

कुफ़्र–पु० (अ०) इनकार, न मानना; ईश्वरके अस्तित्वसे इनकार, नास्तिकता; हठ, दुराग्रह; कृतघ्नता। **–का कलमा**–खुदाकी शानमें गुस्ताखी करनेवाली बात; ईश्वर या धर्मकी निंदा। **–का फ़तवा**–अधिकारी मौलवी या मौलवियोंकी दी हुई किसीके काफिर होनेकी व्यवस्था। मु० **–टूटना**–हठ छूटना, दुराग्रही जनका किसी बातको मान लेना।

क़ुफ़्ल–पु० (अ०) ताला।

क़ुफ़्ली–स्त्री० (अ०) दे० 'कुलफ़ी'।

कुबंड*–पु० धनुष। वि० विकलांग।

कुब–पु० दे० 'कूबड़'।

कुबजा*–स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कुबड़ा–वि० जिसकी पीठ टेढ़ी हो गयी हो; टेढ़ा। पु० टेढ़ी पीठ-वाला आदमी।

कुबड़ी–स्त्री० टेढ़ी पीठवाली स्त्री; वह छड़ी जो सिरेपर या बीचमें टेढ़ी हो।

कुबरी–स्त्री० कंसकी दासी कुब्जा; कैकेयीकी दासी मंथरा; दे० 'कुबड़ी'।

कुबलयापीड़–पु० दे० 'कुवलयापीड'।

कुबली–स्त्री० पिंडी।

कुबिजा*–स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कुबील*–वि० ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा–'राजपंथते टारि बतावत उरझ कुबील कुपैंडो'–सूर।

कुबेर–पु० (सं०) एक देवता जो उत्तर दिशाके अधिष्ठाता और धन-समृद्धिके स्वामी माने जाते हैं, यक्षराज।

कुबेराचल, कुबेराद्रि–पु० (सं०) कैलास पर्वत।

कुब्ज–वि० (सं०) कुबड़ा, जिसकी पीठ टेढ़ी हो। पु० कूबड़; खड्‌ग; एक रोग; चिचिड़ा, अपामार्ग। **–गामी(मिन्)**–वि० झुककर चलनेवाला।

कुब्जक–पु० (सं०) एक पुष्पवृक्ष, वृंतपुष्प।

कुब्जा–वि० स्त्री० (सं०) कुबड़ी। स्त्री० कंसकी कुबड़ी दासी जिसकी पीठ कृष्णने सीधी कर दी थी।

कुब्जिका–स्त्री० (सं०) अष्टवर्षीया अविवाहिता कन्या।

कुब्बा†–पु० कूबड़, डिल्ला।

कुब्र–पु० (सं०) वन; यज्ञकुंड; शकट; तंतु; अँगूठी; बाली।

कुभा–स्त्री० (सं०) काबुल नदी; पृथिवीकी छाया।

कुमंठी*–स्त्री० पतली, लचीली टहनी।

कुमइत*–पु०, वि० दे० 'कुम्मैत'।

कुमक–स्त्री० (फा०) सहायता; किसी सेनाके सहायतार्थ भेजी हुई सेना। मु० **(किसीकी)–पर होना**–किसीका पक्ष, हिमायत करना, मददगार होना।

कुमकी–स्त्री० सिखायी हुई हथिनी जिससे हाथियोंके पकड़नेमें सहायता ली जाती है। वि० कुमकका।

कुमकुम–पु० केसर; कुमकुमा।

कुमकुमा–पु० लाखका बना पोला लड्डू जिसमें अबीर-गुलाल भरकर होलीमें एक-दूसरेको मारते हैं; काँचका बना पोला गोला जो माला बनाने या सजावटके काममें लाते हैं।

कुमकुमी–वि० कुमकुमेके आकारका।

कुमरिया–पु० एक तरहका हाथी।

कुमरी–स्त्री० (अ०) पंडुककी जातिकी एक चिड़िया।

कुमलाना*–अ० क्रि० कुम्हलाना, मुरझाना (चंदा०)।

कुमाच–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; केवाँच।

कुमार–पु० (सं०) बेटा, लड़का; पाँच वर्षसे कम उम्रका लड़का; युवावस्था या उससे पहलेकी अवस्थाका पुरुष; राजकुमार;

युवराज; कार्त्तिकेय; अग्नि; साईस; तोता; सिंधु नदी; वरुण वृक्ष; मंगल ग्रह; खरा सोना। वि० अविवाहित, कुँआरा। **–जीव**–पु० पुत्रजीवक वृक्ष। **–तंत्र**–पु० आयुर्वेदका वह भाग जिसमें बाल-रोगोंका निदान और चिकित्सा हो। **–भृत्य**–पु० प्रसव करानेकी विद्या; गर्भिणी या नवजात शिशुकी परिचर्या। **–भृत्या**–स्त्री० गर्भिणी या शिशुकी देखभाल, या चिकित्सा। **–ललिता**–स्त्री० आठ वर्णोंका एक वर्णवृत्त। **–वाहन,–वाही (हिन्)**–पु० मयूर। **–व्रत**–पु० आजीवन ब्रह्मचर्य-पालनका व्रत। **–संभव**–पु० कालिदासका एक प्रसिद्ध महाकाव्य। **–सू**–स्त्री० पार्वती।

कुमारक–पु० (सं०) कुमार; आँखकी पुतली।

कुमारबाज़–पु० जुआरी।

कुमारयु–पु० (सं०) राजकुमार; युवराज।

कुमारिक–वि० (सं०) जिसके लड़कियाँ हों; जिसके यहाँ बहुत लड़कियाँ हों।

कुमारिका–स्त्री० (सं०) कुमारी , कुँआरी लड़की।

कुमारिल भट्ट–पु० (सं०) सुप्रसिद्ध मीमांसक और भाष्यकार जो शंकराचार्यके समकालीन माने जाते हैं।

कुमारी–स्त्री० (सं०) १० से १२ बरसतककी कन्या; कुँआरी कन्या; लड़की; दुर्गा; पार्वती; सीता; भारतवर्षके दक्खिनी छोरपरका अंतरीप; घीकुआर; बड़ी इलायची। वि०, स्त्री० अविवाहिता, कुँआरी (लड़की)। **–पुत्र**–पु० कर्ण। **–पूजन**–पु० एक तंत्रोक्त पूजा जिसमें कुँआरी लड़कियोंका पूजन किया जाता है।

कुमुद–पु० (सं०) कुई; रक्तकमल; चाँदी; विष्णु; कपूर; दक्षिण-पश्चिम कोणका दिग्गज; एक नाग जिसने अपनी छोटी बहिन कुमुद्वती कुशको ब्याह दी; एक तरहका बंदर। **–कला**–स्त्री० चंद्रकला। **–किरण**–स्त्री० चंद्रकिरण। **–नाथ,–पति,–बंधु,–बांधव,–सुहृद्**–पु० चंद्रमा।

कुमुदनी–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुमुदिक–वि० (सं०) कुमुदोंसे पूर्ण।

कुमुदिका–स्त्री० (सं०) कट्फल।

कुमुदिनी–स्त्री० (सं०) कुईका पौधा; कुमुदोंसे भरा हुआ तालाब आदि; कुमुद पुष्पोंका समूह। **–नाथ,–पति**–पु० चंद्रमा।

कुमुद्वती–स्त्री० (सं०) कुमुदिनी; नागराज कुमुदकी छोटी बहन जो कुशको ब्याही गयी।

कुमेरिया–पु० एक तरहका हाथी।

कुमेरु–पु० (सं०) दक्षिणी ध्रुव।

कुमोदक–पु० (सं०) विष्णु।

कुमोदनी, कुमोदिनी*–स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुम्मैत–पु० (फा०) स्याही मायल लाल रंग; इस रंगका घोड़ा। वि० कुम्मैत रंगका।

कुम्मैद*–पु०, वि० दे० 'कुम्मैत'।

कुम्हड़ा–पु० एक प्रसिद्ध बेल और उसका फल जिसकी तरकारी, मुरब्बा आदि बनाते हैं, काशीफल; पेठा। **–(ड़) बतिया***–स्त्री०,**–(ड़े)की बतिया**–बहुत ही कमजोर, निर्बल व्यक्ति, बेजान चीज।

कुम्हड़ौरी–स्त्री० रेते हुए सफेद कुम्हड़े (पेठे)को पीठीमें मिलाकर बनायी हुई बरी।

कुम्हरौटी–स्त्री० कुम्हारकी काली, चिकनी मिट्टी।

कुम्हलाना–अ० क्रि० मुरझाना; ताजगी, प्रफुल्लताका न रहना; सूखने लगना।

कुम्हार–पु० मिट्टीके बरतन बनानेवाला; इस धंधेको करनेवाली हिंदू जाति, कुंभकार। (स्त्री० 'कुम्हारिन'।)

कुम्ही*–स्त्री० दे० 'कुंभी'।

कुम्हैडा*–पु० कुम्हड़ा–'सूरजदास समाय कहाँ लौ अजके बदन कुम्हैडो'–सूर।

कुरंकर, कुरंकुर–पु० (सं०) सारस।

कुरंग–वि० खराब रंगका। पु० बुरा हाल; बुरा लक्षण; कुम्मैत; (सं०) हिरन; तामड़े रंगका हिरन; एक छंद। **–नयना,–नयनी,–नेत्रा,–लोचना**–वि०, स्त्री० हिरनकीसी आँखोंवाली। **–नाभि,–सार**–पु० कस्तूरी। **–लांछन**–पु० चंद्रमा।

कुरंगक, कुरंगम–पु० (सं०) मृग।

कुरंगिन*–स्त्री० हिरनी।

कुरंट, कुरंटक–पु०, **कुरंटिका**–स्त्री० (सं०) पीली कटसरैया।

कुरंड–पु० एक तरहका कड़ा पत्थर जिससे सान बनती है, मानिकरेत; (सं०) अंडवृद्धि रोग; साकुरुंड नामक पौधा।

कुरंडक–पु० (सं०) पीली कटसरैया।

क़ुरआन–पु० (अ०) दे० 'क़ुरान'।

कुरका–स्त्री० (सं०) सल्लकी, सलई।

कुरकी–स्त्री० दे० 'कुर्क़ी'।

कुरकुंड–पु० एक तरहकी घास।

कुरकुट–पु० छोटा टुकड़ा; * कुक्कुट, मुर्गा।

कुरकुटा–पु० टुकड़ा; रोटीका टुकड़ा।

कुरकुर–पु० खरी चीजोंके दबकर टूटनेका शब्द। वि० कुरकुरा।

कुरकुरा–वि० (खरी, सिकी या तली हुई चीज) जिसे तोड़ने या चबानेसे 'कुरकुर'की आवाज निकले।

कुरकुराना–अ० क्रि० 'कुरकुर'की आवाज करना।

कुरकुराहट–स्त्री० कुरकुरी चीजके टूटनेकी आवाज।

कुरकुरी–स्त्री० घोड़ेकी एक बीमारी; कोमल अस्थि। वि० स्त्री० दे० 'कुरकुरा'।

कुरखेत–पु० वह खेत जो जोता गया हो, पर बोया न गया हो; * दे० 'कुरुक्षेत्र'।

कुरगरा–पु० छोटी थापी जिससे कारनिस आदिका बारीक काम किया जाता है।

कुरच*–पु० कुराँकुल पक्षी।

कुरचिल्ल–पु० (सं०) केकड़ा।

कुरट–पु० (सं०) चर्मकार, मोची।

कुरता–पु० कमीजके ढंगका एक ढीला पहनावा।

कुरती–स्त्री० स्त्रियोंका एक पहनावा जिसमें आगे बटन लगे होते हैं।

कुरन–पु० दे० 'कुरंड'।

कुरना†–स० क्रि० ढेर लगाना; एक बारगी उझल देना। * अ० क्रि० ढेर लगना; उझल दिया जाना; दे० 'कुरलना'।

कुरव, कुरवक, कुरवक–पु० (सं०) लाल कटसरैया; आक।

कुरवनही–स्त्री० बढ़इयोंका कोर बनानेका एक औजार।

क़ुरबान–पु० (अ०) बलि, निछावर; वह तस्मा जिसमें तरकश बँधा रहता है। **–गाह**–स्त्री० कुरबानी करनेकी जगह, बलिस्थान। मु० **–जाना,–होना**–निछावर होना, बलि जाना।

क़ुरबानी–स्त्री० (अ०) (मुसलमानोंका) बकरीदके दिन ईश्वर-प्रीत्यर्थ पशु-बलि करना; पशुबलि; आत्मत्याग।

कुरमा*–पु० कुटुंब, परिवार।

कुरर–पु० (सं०) क्रौंच पक्षी, कुराँकुल; एक तरहका गिद्ध।

कुररा–पु० क्रौंच; टिटिहरी।

कुररी–स्त्री० (सं०) मादा कुरर; एक छंद।

कुरल–पु० (सं०) क्रौंच; घुँघराले बाल।

कुरलना*–अ० क्रि० कलरव करना–'खूंदहि कुरलहिं जनु सर हंसा'–प०।

कुरला–पु० कुल्ला; क्रीड़ा।

कुरव–पु० (सं०) लाल फूलवाली कटसरैया; आक; गीदड़; बुरा शब्द। वि० कर्कश आवाजवाला।

कुरवना–स० क्रि० ढेर लगाना; एक साथ अधिक परिमाणमें गिराना।

कुरवा†–पु० अनाज नापनेका काठका पात्र।

कुरवारना*–स० क्रि० खोदना; खरोंचना।

कुर्विंद–पु० दे० 'कुरुविंद'।

कुरसा†–पु० जंगली गोभी।

कुरसी–स्त्री० ऊँचे पायेका एक आदमीके बैठनेका आसन जिसमें पीठके सहारेके लिए पटरीसी और अकसर हाथोंके सहारेके लिए बाजू भी होते हैं; मकानकी सतह ऊँची करनेके लिए बनाया गया चबूतरा; पीढी; पुश्त; डोंगियोंमें दोनों तरफ बनी हुई बैठनेकी

जगह; उरबसी, तावीज। **–नामा**–पु० वंशवृक्ष, पुश्तनामा, नसवनामा। **मु०–देना**–आदर करना, इज्जत देना।

कुरा–पु० पुराने फोड़ेमें पड़नेवाली गाँठ; * कटसरैया; दे० कुरवा।

क़ुरान–पु० (अ०) मुसलमानोंका धर्मग्रंथ जो इलहामी किताब माना जाता है। **–मजीद,–शरीफ़**–पु० कुरान (आदरसूचक)। **मु०–उठाना,–पर हाथ रखना**–कुरानकी कसम खाना। **–का जामा पहनना**–धर्मनिष्ठ बनना।

क़ुरानी–वि० कुरानसे संबद्ध; कुरानको माननेवाला (मुसलसान)।

कुराहर*–पु० कोलाहल।

कुरिया†–स्त्री० दे० 'कुटिया'; छोटा गाँव, ढेर, राशि।

कुरियाल–स्त्री० पक्षियोंका मौजमें पंख खुजलाना, फुरहरी लेना।

कुरिहार*–पु० कोलाहल।

कुरी–स्त्री० ढेर, राशि; खंड, टुकड़ा; टीला; * कुल, घराना; (सं०) एक अन्न, चेना।

कुरीर–पु० (सं०) मैथुन; स्त्रियोंका एक तरहका सिरका पहनावा।

कुरुंट, कुरुंटक, कुरुंड–पु० (सं०) लाल कटसरैया।

कुरुंब–पु० (सं०) नारंगी।

कुरुंबा, कुरुंबिका–स्त्री० (सं०) द्रोणपुष्पी।

कुरु–पु० (सं०) एक चंद्रवंशी राजा जिसके वंशज कौरव कहलाये; दिल्लीके आसपासका देश जिसपर कुरुवंशियोंका शासन था; कुरुवंशी; भात; पुरोहित। **–कंदक**–पु० मूली। **–क्षेत्र**–पु० दिल्लीके पच्छिम करनाल जिलेका एक मैदान जहाँ कौरवों-पांडवोंमें संग्राम हुआ था। **–खेत***–पु० दे० 'कुरुक्षेत्र'। **–जांगल**–पु० कुरुक्षेत्र। **–राज**–पु० दुर्योधन। **–वर्ष**–पु० उत्तरकुरु। **–विंद**–पु० माणिक; आईना; काला नमक; शिगरफ। **–विल**–पु० एक तौल। **–विल्व**–पु० पद्मराग मणि। **–विल्वक**–पु० बनकुलथी। **–वृद्ध**–पु० भीष्म। **– श्रेष्ठ,–सत्तम**–पु० अर्जुन।

कुरुआ–पु० अन्नकी एक माप।

कुरुई–स्त्री० मूँज या बाँसकी छोटी डलिया।

कुरुखि–स्त्री० तिरछी चितवन, कटाक्ष–'बार-बार अवलोकि कुरुखियन कपट नेह मन हरत हमारे'–सूर।

कुरुम–पु० दे० 'कूर्म'।

कुरुरना*–अ० क्रि० पक्षियोंका बोलना–'मोरे अँगनवाँ चननकर गछिया ताहि चढ़ि काग कुरुरये रे'–विद्या०।

कुरुल–पु० (सं०) माथेपर बिखरी हुई जुल्फ।

कुरुला–स्त्री० (सं०) एक तरहकी गमक (संगीत)।

कुरेदना–स० क्रि० खुरचना, खरोचना।

कुरेदनी–स्त्री० नोकदार छड़-जैसी चीज जिससे भट्ठेकी आग खुलेड़ते हैं।

कुरेभा–स्त्री० वह गाय जो सालमें दो बार बच्चा दे।

कुरेर*–स्त्री० किलोल, क्रीड़ा।

कुरेलना–स० क्रि० दे० 'कुरेदना'।

कुरेलनी–स्त्री० दे० 'कुरेदनी'।

कुरैत–पु० हिस्सेदार।

कुरैना*–स० क्रि० ढालना, गिराना; ढेर लगाना। पु० राशि, ढेर।

कुरैया–स्त्री० एक जंगली पेड़ जिसका बीज–इंद्रजौ–अर्श, अतिसार आदिकी दवा है, कुटज।

कुरौना*–स० क्रि० ढेर लगाना, राशि करना।

क़ुर्क़–पु० (तु०) रोकना; माल-जायदादकी रोक, जब्ती। **–अमीन**–पु० माल कुर्क करनेवाला अहलकार। **–नामा**–पु० कुर्कीका परवाना।

क़ुर्क़ी–स्त्री० देन, जुर्माने आदिकी वसूलीके लिए माल या जायदादका जब्त किया जाना।

कुर्कुट–पु० (सं०) मुर्गा; कूड़ा।

कुर्कुर–पु० (सं०) कुत्ता, कूकुर।

कुर्चिका–स्त्री० (सं०) दे० 'कूर्चिका'।

कुर्ता–पु० दे० 'कुरता'।

कुर्दन–पु० (सं०) दे० 'कूर्दन'।

कुर्पर–पु० (सं०) घुटना; कुहनी।

कुर्पास, कुर्पासक–पु० (सं०) चोली, अँगिया।

क़ुर्ब–पु० (अ०) करीब होना; समीपता। **–त**–स्त्री० समीपता। **–व जवार**–पु० आस-पास, पास-पड़ोस।

क़ुर्बान–पु० (अ०) दे० 'क़ुरबान'।

क़ुर्बानी–स्त्री० (अ०) दे० 'क़ुरबानी'।

कुर्मी–पु० एक कृषिजीवी हिंदू जाति, कुनबी।

कुर्शिया–पु० दे० 'क्रोशिया'।

क़ुर्स–पु० (अ०) टिकिया; दवाकी टिकिया; अरब देशका एक चाँदीका सिक्का।

कुर्सी–स्त्री० दे० 'कुरसी'।

कुलंग–पु० (फा०) एक पक्षी; मुर्गा। † स्त्री० छलांग।

कुलंज, कुलंजन–पु० (सं०) एक पौधा।

कुलंधर–पु० (सं०) कुलका सिलसिला चलानेवाला।

कुलंभर–पु० (सं०) सेंध मारनेवाला चोर।

कुल–वि० सब, सारा। पु० (सं०) वंश, घराना; गोत्र; उच्च कुल; एक जातिवालोंका समूह, समुदाय; जाति; शिल्पियों-व्यापारियोंका संघ, श्रेणी; कुलीनतंत्र राज्य; घर, आवास; जनपद; देह; आगेका हिस्सा; एक नीला पत्थर; दो हलोंसे जितनी जोती जा सके उतनी जमीन; वाम मार्ग; मूलाधार चक्र; मूलाधार चक्रमें स्थित कुंडलिनी शक्ति (तं०)। **–कंटक**–पु० अपने बुरे कार्योंसे कुलके लोगोंको दुःखी करनेवाला। **–कज्जल**–पु० वंशके लिए अपमानका कारण। **–कन्या**–स्त्री० ऊँचे कुलमें जनमी हुई लड़की। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० वंश-संस्थापक। **–कलंक**–पु० कुलमें दाग लगानेवाला, कुलकी मान-प्रतिष्ठा का नाश करनेवाला। **–कानि**–स्त्री० (हि०) कुलकी मर्यादा। **–कुंडलिनी**–स्त्री० तंत्रमें मानी हुई मूलाधारमें अवस्थित एक शक्ति। **–केतु**–पु० कुलमें ध्वजाके समान, कुलश्रेष्ठ व्यक्ति। **–क्षय**–पु० कुलनाश। **–गुरु**–पु० वंशका पुरोहित। **–ज,–जात**–वि० ऊँचे कुलमें उत्पन्न, कुलीन। **–जन**–पु० कुलीन जन। **–जा**–स्त्री० दे० क्रममें। **–तंतु**–पु० वंश चलानेवाला; वंशका सहारा। **–तारन**–वि० (हि०) कुलको तारनेवाला; बहुत बड़ा पुण्य करनेवाला। **–तिथि**–स्त्री० किसी पक्षकी चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी या चतुर्दशी तिथि। **–तिलक**–पु० अपने वंशका गौरव। **–दीप,–दीपक**–पु० वह जिससे कुलका नाम उजागर हो, कुलभूषण; कुलाचारमें विहित दीप। **–देव**–पु० वह देवता जिसकी पूजा कुलविशेषमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी होती आ रही हो। **–देवता**–पु० कुलदेव। स्त्री० १६ मातृकाओंमेंसे एक। **–द्रुम**–पु० बेल, बरगद, पीपल, गूलर, नीम, आमला, लसोड़ा, इमली, करंज और कदंब–ये दस प्रधान वृक्ष। **–धर्म**–पु० कुलका क्रमागत धर्म; कुलरीति। **–धर**–पु० पुत्र। **–धारक**–पु० बेटा। **–नायिका**–स्त्री० वह स्त्री जो वाममार्गियोंके चक्रमें पूजी जा सकती हो–नटी, कापालिनी, रजकी, वेश्या, नापिता, ब्राह्मणी, शूद्रा, गोपिनी और मालिनीमेंसे कोई (तं०)। **–नीवीग्राहक**–पु० किसी समाज, संघ या संस्थाका खजांची। **–पति**–पु० कुलका मुखिया; वह ब्रह्मर्षि जो १० हजार मुनियों या विद्यार्थियोंका भरण-पोषण करता हुआ उन्हें पढ़ाये; विश्वविद्यालय या विद्यापीठका प्रधान (चांसलर)। **–परंपरा**–स्त्री० वंश-परंपरा। **–पर्वत**–पु० भारतवर्षके इन ७ प्रधान पर्वतमेंसे कोई–महेंद्र, मलय, सह्य, शक्ति, ऋक्ष, विंध्य और पारियात्र। **–पांसुका**–स्त्री० व्यभिचारिणी। **–पालि, पालिका,–पाली**–स्त्री० सती-साध्वी स्त्री; उच्च कुलकी स्त्री। **–पुरुष**–पु० प्रतिष्ठित, कुलीन जन। **–पूज्य**–वि० कुल-परंपरासे पूजा-सम्मानका अधिकारी। **–प्रांगण**–पु० विश्वविद्यालयकी सीमाके भीतरका स्थान ('कैम्पस')। **–बोरन**†–वि० कुलका नाम डुबानेवाला, नालायक (स्त्री०–बोरनी)। **–भृत्या**–स्त्री० गर्भिणीकी परिचर्या। **–मर्यादा**–स्त्री० कुलकी प्रतिष्ठा; कुलकी परंपरागत रीति-नीति। **–राज्य**–पु० कुल-विशेषके नायकों या मुखियों द्वारा चालित राज्य। **–वधू**–स्त्री० भले घरकी स्त्री। **–वार**–पु० मंगल और शुक्रवार। **–वृद्ध**–पु० घरका बड़ा-बूढ़ा, बुजुर्ग। **–शतावर ग्राम**–पु० सौसे अधिक आबादीवाला गाँव। **–श्रेष्ठ**–वि० कुलमें योग्यतम। पु० कायस्थोंकी एक उपजाति। **–संघ**–पु० कुलीनतंत्र राज्यका शासकमंडल। **–सचिव**–पु०

(रजिस्ट्रार) दे० 'पीठस्थविर' । **–सत्र**–पु० (प्राचीन आर्योंके) कुलविशेषमें होनेवाला विशेष यज्ञ । **–स्त्री**–स्त्री० दे० 'कुलवधू' ।

कुलक–पु० (सं०) शिल्पियोंकी श्रेणीका मुखिया; बाँबी; परवलकी लता; कुचिला; समूह; एक तरहका गद्य । वि० अच्छे कुलका ।

कुलक–पु० (सेट) सदृश एवं संवद्ध वस्तुओंका समूह ।

कुलकना–अ० क्रि० प्रसन्न होना ।

कुलकुल–पु० (अ०) सुराही या बोतलका पानी या मद्य उडेलनेसे निकलनेवाली आवाज ।

कुलकुलाना–अ० क्रि० कुलकुलकी आवाज निकलना ।

कुलचा–पु० एक तरहकी खमीरी रोटी; खेमेके चोवके ऊपर लगा हुआ लट्टू ।

कुलजा–स्त्री० एक तरहकी जंगली भेड़; (सं०) कुलवधू ।

कुलट–पु० व्यभिचारी, लंपट; (सं०) अनौरस पुत्र–दत्तक, गोलक आदि ।

कुलटा–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी, अनेक पुरुषोंसे प्रेम करनेवाली स्त्री ।

कुलत्थ–पु० **कुलत्थिका**–स्त्री० (सं०) कुलथी ।

कुलथ–पु० कुलथी ।

कुलथी–स्त्री० उरदकी जातिका एक मोटा अन्न ।

कुलन–स्त्री० टीस ।

कुलना–अ० क्रि० दर्द करना, टीसना ।

कुलनार–पु० संगजराहत ।

कुलफ*–पु० दे० 'क़ुफ्ल' ।

कुलफ़त–स्त्री० (अ०) मनोव्यथा, रंज; विकलता ।

कुलफा–पु० एक पौधा जिसका साग खाया जाता है; डोलके आकारका आला जिसमें मलाई, संतरे आदिकी बरफ जमाते हैं ।

कुलफ़ी–स्त्री० वह नली जैसा साँचा जिसमें दूध, मलाई आदि भरकर बरफसे जमाते हैं; उक्त साँचेमें भरकर जमायी हुई चीज; पीतल या ताँवेकी नली जो नैचे और निगालीको जोड़ती है ।

कुलबुल–पु० छोटे-छोटे जीवोंका चलना-फिरना या उससे होनेवाली आवाज़ ।

कुलबुलाना–अ० क्रि० कीड़ों, मछलियों आदिका एक साथ हिलना-डोलना; धीरे-धीरे हिलना; हाथ-पाँव हिलाना; सोतेमें हिलना; बेचैनी प्रकट करना ।

कुलबुलाहट–स्त्री० कुलबुलानेकी क्रिया या भाव ।

कुलरा*–पु० कुटुंब, परिवार–'यो संसार सकल जग झूठो झूठा कुलरा नाती'–मीरा ।

कुलवंत–वि० कुलीन ।

कुलवंती–वि०, स्त्री० कुलीन और सती (स्त्री) ।

कुलवान्(वत्)–वि० (सं०) कुलीन । (स्त्री० 'कुलवती' ।)

कुलह–स्त्री० टोपी; शिकारी चिड़ियोंकी आँखें ढक रखनेवाली टोपी, अँधियारी ।

कुलहा*–पु० दे० 'कुलह' ।

कुलही*–स्त्री० बच्चोंकी टोपी, कनटोप ।

कुलांगण–पु० दे० 'कुलप्रांगण' (कैम्पस) ।

कुलांगना–स्त्री० (सं०) कुलवधू ।

कुलांगार–पु० (सं०) कुलका नाश करनेवाला; कुल-कलंक ।

कुलाँच–स्त्री० छलाँग, चौकड़ी (भरना, मारना); कलैया, सिर नीचे पाँव ऊपर कर उलट जाना–'नटिनी कुलाँचें खाने लगी'–मृग० ।

कुलाँचना–अ० क्रि० चौकड़ी भरना; दौड़-धूप करना ।

कुलाँट–स्त्री० दे० 'कुलाँच' ।

कुलाचल, कुलाद्रि–पु० (सं०) दे० 'कुलपर्वत' ।

कुलाचार–पु० (सं०) कुलकी रीति-नीति; कुलधर्म; वाम-मार्ग ।

कुलाधि*–स्त्री० पाप ।

कुलाबा–पु० किवाड़को चौखटेसे जकड़नेका काँटा; मछली फसानेका काँटा; मोरी ।

कुलाय–पु० (सं०) घोंसला; स्थान; देह; खोला ।

कुलायिका-स्त्री० (सं०) चिड़ियाखाना, पक्षिगृह; पिंजड़ा ।

कुलाल–पु० (सं०) कुम्हार; बनमुर्गा; उल्लू ।

कुलालिका–स्त्री० (सं०) दे० 'कुलायिका' ।

कुलाली–स्त्री० (सं०) वनकुलथी; कुम्हारिन ।

कुलाह–पु० (सं०) काले घुटनोंवाला भूरे रंगका घोड़ा; (फा०) ऊँची नोककी टोपी जिसे ईरान-अफगानिस्तानके लोग पगड़ीके नीचे पहनते हैं; राजमुकुट, ताज; टोपी । **–ज़र**–पु० सुनहरे कामकी टोपी । **–फिरंगी**–पु० अंग्रेजी टोपी, हैट ।

कुलाहक–पु० (सं०) गिरगिट; एक शाक ।

कुलाहल*–पु० दे० 'कोलाहल' ।

कुलिंग–पु० (सं०) चिड़िया; गौरा; एक तरहका चूहा ।

कुलिंद–पु० (सं०) पश्चिमोत्तर भारतका एक प्राचीन जनपद; कुलिंद-निवासी ।

कुलि–पु० (सं०) हाथ; भटकटैया । **–ज**–पु० नाखून ।

कुलिक–वि० (सं०) कुलीन । पु० शिल्पि-श्रेणीका प्रधान; कुलीन शिल्पी; स्वजन; शिकारी; एक कँटीला पौधा; कुलवार (मंगल या शुक्र); एक नागराज; एक विष ।

कुलिया|–स्त्री० तंग गली, कोलिया; दे० कुल्या ।

कुलिर–पु० (सं०) दे० 'कुलीर' ।

कुलिश–पु० (सं०) इंद्रका वज्र; बिजली; हीरा; कुल्हाड़ी, कुठार; एक तरहकी मछली । **–धर,–पाणि**–पु० इंद्र । **–नायक**–पु० एक रतिबंध ।

कुलिशासन–पु० (सं०) बुद्ध ।

कुलिस*–पु० वज्र; हीरा–'मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा'–(काव्यांगकौ०) ।

कुलींजन–पु० दे० 'कुलंजन' ।

कुली–स्त्री० (सं०) बड़ी साली; भटकटैया ।

क़ुली–पु० (तु०) गुलाम; मोटिया; सिर पर बोझ ढोनेवाला मजदूर । **–कबारी**–पु० निम्न श्रेणीके लोग ।

कुली(लिन्)–वि० (सं०) उच्च वंशका । पु० पर्वत ।

कुलीन–वि० (सं०) ऊँचे कुलमें जनमा हुआ; शुद्ध; निर्मल । पु० अच्छी जातिका घोड़ा; शक्ति-पूजक; नाखूनका एक रोग; बंगाली ब्राह्मणोंका एक वर्ग । **–तंत्र**–पु० (आलिगैर्की) उच्च कुलके व्यक्तियों द्वारा शासन चलानेकी पद्धति, अल्पतंत्र, अभिजाततंत्र । **–वर्गीय**–वि० कुलीन वर्गसे संबंधित । **–साहित्य**–पु० ऐसा साहित्य जो निम्नवर्गकी उपेक्षाकर सुविधाप्राप्त वर्गतक ही अपनेको सीमित कर ले ।

कुलीनस–पु० (सं०) जल ।

कुलीर, कुलीरक–पु० (सं०) केकड़ा; कर्कट राशि ।

कुलीश–पु० (सं०) दे० 'कुलिश' ।

कुलुक–पु० (सं०) जीभपर जमा हुआ मैल या झिल्ली ।

कुलुक्कगुंजा–स्त्री० (सं०) लुकाठी ।

कुलुफ–पु० ताला, कुफ़्ल, एक तरहका हुक या अँकुड़ा ।

कुलू–पु० दे० 'कुलूत'; एक पेड़ ।

कुलूत–पु० (सं०) पश्चिमोत्तर भारतका एक जनपद, कुलू ।

कुलेल–स्त्री० दे० 'कलोल' ।

कुलेलना*–अ० क्रि० कलोल करना ।

कुलोद्भव–वि० (सं०) कुल(विशेष)में उत्पन्न; कुलीन ।

कुलोपदेश–पु० (सं०) कुलगत नाम ।

कुल्फ–पु० (सं०) एक रोग ।

कुल्फी–स्त्री० दे० 'कुलफ़ी' ।

कुल्माष–पु० (सं०) कुलथी; बनकुलथी; बोरो धान; चना आदि द्विदल; काँजी; एक रोग ।

कुल्य–पु० (सं०) कुलीन या भद्र पुरुष; कुशल-क्षेम पूछना; मांस; अस्थि; सूप ।

कुल्या–स्त्री० (सं०) नहर; नाला; छोटी नदी; कुलीन स्त्री; जीवंती; एक तौल ।

कुल्याधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) (कैनैल आफिसर) नहरोंकी देखरेख आदिका काम करनेवाला अधिकारी ।

कुल्ला–पु० दे० 'कुल्ली'; काकुल; घोड़ेका एक रंग या उस रंगका घोड़ा; एक तरहकी ऊँची या कटोरानुमा टोपी (शेखर०) ।

कुल्ली–स्त्री० मुंह साफ करनेके लिए मुंहमें पानी भरकर फेंकना; कुल्लाके लिए मुंहमें रखा पानीका एक घूंट; जुल्फ; पट्टा ।

कुल्लूक–पु० (सं०) मनुस्मृतिके एक प्रसिद्ध टीकाकार।

कुल्वक–पु० (सं०) 'कुलुक'।

कुल्हड़–पु० पुरवा, मिट्टीका छोटा जलपात्र।

कुल्हरा†–पु० लकड़ी काटने, फाड़नेका औजार, कुल्हाड़ा, टाँगा।

कुल्हरी†–स्त्री० छोटा कुल्हाड़ा, टाँगी।

कुल्हाड़ा–पु० लकड़ी चीरने, काटनेका एक औजार।

कुल्हाड़ी–स्त्री० छोटा कुल्हाड़ा।

कुल्हिया–स्त्री० छोटा पुरवा, घरिया। **मु०–में गुड़ फोड़ना**–छिपाकर काम करना।

कुव–पु० (सं०) कमल; फूल। **–ज**–पु० ब्रह्मा।

कुवम–पु० (सं०) सूर्य।

कुवल–पु० (सं०) कुईं; मोती; जल; साँपका पेट।

कुवलय–पु० (सं०) कुईं; नीली कुईं; नील कमल; भूमंडल।

कुवलयानंद–पु० (सं०) अप्पय दीक्षितकृत संस्कृतका एक अलंकार ग्रंथ।

कुवलयापीड़–पु० (सं०) एक हस्ति-रूपधारी असुर जो कृष्णके हाथों मारा गया।

कुवलयाश्व–पु० (सं०) धुंधुमार राजा; ऋतुध्वज; प्रतर्दन।

कुवलयिनी–स्त्री० (सं०) नीली कुईंका पौधा; नीली कुईंके फूलोंका समूह।

कुवाँ–पु० दे० 'कुआँ'।

कुवाट, कुवाटक–पु० (सं०) दरवाजेका पल्ला।

कुवार–पु० दे० 'कुआर'।

कुवारी–वि० कुआरके महीनेमें होनेवाला (धान आदि)।

कुवाहुल–पु० (सं०) ऊँट।

कुविंद–पु० (सं०) जुलाहा।

कुवेणी–स्त्री० (सं०) मछली रखनेकी डलिया, टोकरी; ठीक तौरसे न गँथी हुई वेणी।

कुवेर–पु० (सं०) दे० 'कुबेर'।

कुवेराचल, कुवेराद्रि–पु० (सं०) कैलास पर्वत।

कुवेल–पु० (सं०) कमल।

कुश–पु० (सं०) कड़ी और नुकीली पत्तियोंवाली एक घास जो यज्ञ, पूजन आदि धर्मकृत्योंकी आवश्यक सामग्री है, दर्भ; रामके दो पुत्रोंमेंसे एक; राजा उपरिचर वसुका पुत्र; कुशद्वीप; जल; हरिसको जुएसे जोड़नेवाली रस्सी, नाधा; फाल। वि० दुष्ट; विक्षिप्त। **–कंडिका**–स्त्री० वेदीपर या कुंडमें अग्नि-स्थापनाकी क्रिया। **–केतु**–पु० ब्रह्मा; राजा कुशध्वज। **–द्वीप**–पु० पुराण-वर्णित सात महाद्वीपोंमेंसे एक। **–ध्वज**–पु० राजा जनकके छोटे भाई जिनकी बेटियाँ भरत और शत्रुघ्नको ब्याही गयीं; एक ऋषि। **–नाभ**–पु० अयोध्यानरेश कुशका एक पुत्र। **–पुष्प**–पु० ग्रंथिपर्ण। **–पुष्पक**–पु० एक विष। **–मुद्रिका**–स्त्री० पवित्री, पैंती। **–स्तरण**–पु० हवनके पूर्व यज्ञकुंडके चारों ओर कुश बिछाना। **–स्थली**–स्त्री० द्वारका; कुशावती। **–हस्त**–वि० दान, श्राद्ध आदि करनेको उद्यत।

कुशप–पु० (सं०) पानपात्र।

कुशय–पु० (सं०) जलकुंड, हौज; पानपात्र।

कुशल–वि० (सं०) चतुर, होशियार; कार्यविशेषमें निपुण (नीतिकुशल, कर्मकुशल); उचित; प्रसन्न। पु० शिव। स्त्री० क्षेम, मंगल, खैरियत, सलामती; भलाई; चातुर्य। **–काम**–वि० कुशल चाहने, माननेवाला। **–क्षेम**–पु० आनंद-मंगल, सुख-स्वास्थ्य, खैरो-आफियत। **–प्रश्न**–पु० कुशल-मंगल, खैरियत पूछना। **–मंगल**–पु० कुशलक्षेम, खैरियत।

कुशलाई, कुशलात*–स्त्री० दे० 'कुसलाई'।

कुशली–स्त्री० (सं०) अश्मंतक वृक्ष; क्षुद्रामलकी।

कुशली(लिन्)–वि० (सं०) कुशलयुक्त; स्वस्थ; सुखी।

कुशवाहा–पु० क्षत्रियोंका एक भेद।

कुशांगुरीय, कुशांगुलीय–स्त्री० (सं०) पैंती, पवित्री।

कुशांव–पु० राजा कुशके एक पुत्रका नाम।

कुशा–स्त्री० (सं०) रस्सी; लगाम; काठका टुकड़ा या तख्ता।

कुशाकर–पु० (सं०) यज्ञाग्नि।

कुशाक्ष–पु० (सं०) बंदर।

कुशाग्र–वि० (सं०) कुशकी नोक जैसा तीक्ष्ण, तेज। **–बुद्धि**–वि० पैनी, तीक्ष्ण बुद्धिवाला।

कुशादगी–स्त्री० (फा०) कुशादा होना; फैलाव, विस्तृति।

कुशादा–वि० (फा०) फैला हुआ; लंबा-चौड़ा; खुला हुआ। **–दस्त, –दिल**–वि० उदार, खुले हाथों खर्च करनेवाला। **–पेशानी**–वि० हँसमुख, प्रसन्नचित्त।

कुशारणि–पु० (सं०) दुर्वासा ऋषि।

कुशावती–स्त्री० (सं०) रामके पुत्र कुशकी राजधानी।

कुशाश्व–पु० (सं०) इक्ष्वाकुवंशका एक राजा।

कुशासन–पु० (सं०) कुशका बना हुआ आसन; दे० 'कु'के साथ।

कुशिक–पु० (सं०) एक राजा जो विश्वामित्रके दादा तथा गाधिके पिता थे; फाल; तेलकी तलछट; बहेड़ा। वि० ऐंचाताना।

कुशित–वि० (सं०) जलमिश्रित।

कुशी–स्त्री० (सं०) फाल; एक तरहका श्रुवा।

कुशी(शिन्)–वि० (सं०) जिसके हाथमें कुश हो। पु० वाल्मीकि।

कुशीद–पु० (सं०) दे० 'कुसीद'।

कुशीनगर–पु० बुद्धका निर्वाणस्थल, कसिया।

कुशीनार–पु० दे० 'कुशीनगर'।

कुशीलव–पु० (सं०) भाट, चारण; नट; गायक; वाल्मीकि।

कुशुंभ–पु० (सं०) सन्न्यासियोंका जलपात्र; घड़ा।

कुशूल–पु० (सं०) बखार; भूसीकी आग; कड़ाही। **–धान्यक**–पु० वह गृहस्थ जिसके पास तीन बरसतक खानेको अन्न हो।

कुशेश*–पु० दे० 'कुशेशय'।

कुशेशय–पु० (सं०) कुईं; कमल; सारस।

कुशोदक–पु० (सं०) कुश सहित जल।

कुश्तमकुश्ता–पु० गुत्थमगुत्था, कुश्ती।

कुश्ता–वि० (फा०) मारा हुआ, हत। पु० धातु या औषधद्रव्यका भस्म; लाश। **कुश्तोंके पुश्ते**–लाशोंके ढेर।

कुश्ती–स्त्री० (फा०) दो आदमियोंका एक-दूसरेको पछाड़नेके लिए गुथकर लड़ना, मल्लयुद्ध। **–बाज़**–वि० कुश्ती लड़नेवाला। **मु०–खाना**–कुश्तीमें हार जाना। **–मारना**–कुश्ती जीतना, विपक्षीको पछाड़ देना। **–लड़ाना**–कुश्ती लड़ना सिखाना।

कुश्तोखून–पु० (फा०) मारकाट, खूँरेजी।

कुषल–वि० (सं०) दे० 'कुशल'।

कुषाकु–वि० (सं०) जलाने, झुलसानेवाला। पु० अग्नि; सूर्य; बंदर।

कुषित–वि० (सं०) दे० 'कुशित'।

कुषीतक–पु० (सं०) एक ऋषि; एक पक्षी।

कुषीद–वि० (सं०) उदासीन, तटस्थ। पु० दे० 'कुसीद'।

कुषुंभ–पु० (सं०) जहरीले कीड़ेका विषकोश।

कुष्ठ–पु० (सं०) कोढ़; कुट; कुड़ा; एक विष। **–केतु**–पु० भूम्याहुल्य। **–गंधि**–स्त्री० एलुआ। **–घ्न**–पु० हितावली नामक ओषधि। **–घ्नी**–स्त्री० कटूमर, काकोदुंबरिका। **–नाशन**–पु० क्षीरीश वृक्ष। **–नाशिनी**–स्त्री० सोमराजि। **–सूदन**–पु० अमलतास। **–हंता(तृ)**–पु० हस्तिकंद। **–संत्री**–स्त्री० बाकुची। **–हृत्**–पु० खदिर।

कुष्ठारि–पु० (सं०) गंधक; अर्कपत्र; परवल; खदिर। वि० कुष्ठनाशक।

कुष्ठालय–पु० (लेपर ऐसाइलम) कोढ़ियोंकी देखरेख और सहायताकी दृष्टिसे बनाया गया निवास-स्थान।

कुष्ठी(ष्ठिन्)–वि० (सं०) कुष्ठ रोगसे पीड़ित, कोढ़ी।

कुष्मल–पु० (सं०) पत्र, पत्ता; छेदन, काटना।

कुष्मांड, कुष्मांडक–पु० (सं०) कुम्हड़ा; जरायु; शिवके अनुचर-विशेष।

कुष्मांडी–स्त्री० (सं०) यज्ञक्रिया; पार्वती; कर्कारु।

कुस–पु० दे० 'कुश'।

कुसर*–स्त्री० दे० 'कुशल'; मूसल लताकी जड़।

कुसरात*–स्त्री० 'कुसलात'।

कुसल*–वि०, पु० दे० 'कुशल'।

कुसलई, कुसलाई*–स्त्री० कुशल-क्षेम ।

कुसलात*–स्त्री० कुशल-समाचार ।

कुसली*–स्त्री० आमकी गुठली; गोझा । वि० दे० 'कुशली' ।

कुसवा–पु० जड़हनका एक रोग ।

कुसवारी–पु० रेशमका जंगली कीड़ा; रेशमका कोया ।

कुसवाहा–पु० एक हिंदू जाति जो तरकारी आदिकी खेती विशेष रूपसे करती है; दे० 'कुशवाहा' ।

कुसियार–पु० एक प्रकारकी ईख ।

कुसियारी–पु० दे० 'कुसवारी' ।

कुसी–स्त्री० हलका फाल; * खुशी, आनंद (मीरा) ।

कुसीद–पु० (सं०) सूदपर रुपये देना, महाजनी; सूदपर लिया हुआ कर्ज; सूदखोर । वि० काहिल । **–जीवी (विन्)**–पु० महाजनी करनेवाला, सूदखोर । **–पथ**–पु० महाजनी; व्याज । **–वृद्धि**–स्त्री० व्याज ।

कुसीदा–स्त्री० (सं०) महाजनी करनेवाली स्त्री ।

कुसीदिक, कुसीदी (दिन्)–पु० (सं०) महाजनी करनेवाला, सूदखोर ।

कुसीनार–पु० दे० 'कुशीनगर' ।

कुसुंब–पु० (सं०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी गाड़ियाँ आदि बनानेके काम आती है ।

कुसुंभ–पु० (सं०) कुसुमका फूल; केसर; सोना; सन्न्यासीका जलपात्र; ऊपरी प्रेम ।

कुसुंभा–पु० कुसुमका रंग; एक मादक द्रव्य । स्त्री० (सं०) आषाढ़-शुक्ला षष्ठी ।

कुसुंभी–वि० कुसुमके रंगका ।

कुसुम–पु० (सं०) फूल; स्त्रीका रज; आँखोंका एक रोग; एक पौधा जिसके फूल लाल, गुलावी, पीले आदि रंगके होते हैं; अग्निका एक रूप । **–कार्मुक,–चाप,–धन्वा (न्वन्)**–पु० कामदेव । **–पंचक**–पु० कामदेवके वाणरूप पाँच फूल । **–पल्ली**–स्त्री० रजस्वला स्त्री; पाटलिपुत्र । **–पुर**–पु० पाटलिपुत्र, पटना । **–प्रवृत्ति**–स्त्री० फूल लगना, आना । **–वाण,–मार्गण,–शर,–सायक**–पु० कामदेव । **–रेणु**–पु० पराग । **–विचित्रा**–स्त्री० एक वृत्त । **–शयन**–पु० फूलोंकी सेज । **–शय्या**–स्त्री० फूलोंका बिछौना; ऐसा काम जो आसानीसे किया जा सके । **–स्तवक**–पु० फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; एक वृत्त ।

कुसुमांजन–पु० (सं०) जस्तेके भस्मका सुरमा ।

कुसुमांजलि–स्त्री० (सं०) फूलोंसे भरी अंजलि; उदयनाचार्यकृत न्यायका एक ग्रंथ ।

कुसुमाकर–पु० (सं०) वाग; वसंत ।

कुसुमागम–पु० (सं०) वसंत ।

कुसुमाधिप, कुसुमाधिराज–पु० (सं०) चंपाका पेड़ ।

कुसुमायुध–पु० (सं०) कामदेव ।

कुसुमाल–पु० (सं०) चोर ।

कुसुमासव–पु० (सं०) शहद; फूलोंसे बनी शराब ।

कुसुमित–वि० (सं०) फूला हुआ, पुष्पित ।

कुसुमी–वि० कुसुमके फूलके रंगका ।

कुसुमेषु–पु० (सं०) कामदेव ।

कुसुमोदर–पु० (सं०) ओट नामक वृक्ष ।

क़ुसूर–पु० (अ०) जुर्म, अपराध; भूल-चूक; कोताही; दोष । **–मंद,–वार**–वि० अपराधी; दोषी ।

कुसूल–पु० (सं०) एक देवयोनि; दे० 'कुशूल' ।

कुसेस, कुसेसय*–पु० दे० 'कुशेशय' ।

कुस्टी*–वि० कोढ़ी ।

कुस्तुंबरी,–स्त्री०, **कुस्तुंबरु**–पु० (सं०) धनिया ।

कुस्तुभ–पु० (सं०) समुद्र; विष्णु ।

कुहुँकुहुँ*–पु० दे० 'कुमकुम' ।

कुहँचा*–पु० कलाई ।

कुह–पु० (सं०) कुबेर; छलिया; दुष्ट । * अंधकार ।

कुहक–स्त्री० मोर या कोयलका बोल । पु० (सं०) इंद्रजाल; धोखेबाजी; ठगी; ठग, वंचक; एक तरहका मेढक; नागोंका एक भेद । **–कार**–पु० ठग । **–स्वन,–स्वर**–पु० मुर्गा ।

कुहकना–अ० क्रि० मोर, कोयल आदिका मीठी आवाजमें बोलना, कूजना ।

कुहकनी–स्त्री० कोयल ।

कुहकुह*–पु० कुंकुम; केसर ।

कुहकुहाना–अ० क्रि० कोयलका बोलना, कूकना–'कुहकुहाय आये वसंत ऋतु अंत मिलै कुल अपने जाय'–सूर ।

कुहक्क–पु० (सं०) तालका एक भेद ।

कुहन–वि० (सं०) ईर्ष्यालु; दंभी । पु० मिट्टीका बरतन; शीशेका बरतन; चूल्हा; साँप ।

कुहना–वि० (फा०) पुराना । † स० क्रि० दे० 'कूथना', मारना–'.. राम पाहि कासी कामधेनु कलि कुहत कसाई है'–कवितावली । अ० क्रि० गाना । स्त्री० (सं०) दे० 'कुहनिका' ।

कुहनिका–स्त्री० (सं०) ढोंग, दंभ; दिखाऊ ध्यान-पूजा आदि ।

कुहनी–स्त्री० बाहु और भुजाका जोड़; हुक्केकी निगालीमें लगायी जानेवाली नली । **–उड़ान**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच ।

कुहप–पु० राक्षस ।

कुहवर–पु० दे० 'कोहवर' ।

कुहर–पु० (सं०) गढ़ा; छेद; कान या गलेका छेद; कान; गला; सामीप्य; रतिक्रीड़ा; कंठस्वर; * दे० 'कुहरा' । † स्त्री० एक शिकारी पक्षी, वहरी ।

कुहरा–पु० हवामें मिले हुए जलकण जो ठंढसे जमकर नीचे गिरते हैं ।

कुहराम–पु० कई आदमियोंका एक साथ रोना-पीटना; शोरगुल, वावेला; रोने-पीटनेका शोर ।

कुहरित–पु० (सं०) शब्द, स्वर; कोयलका कूजन; रति-कालमें निकला हुआ शब्द । * वि० शब्दायमान ।

कुहलि–पु० (सं०) पान, तांबूल ।

कुहसार–पु० (फा०) पहाड़ी स्थान; पहाड़ ।

कुहा–स्त्री० (सं०) कटुकी ।

कुहाड़, कुहारा–पु० कुल्हाड़ा । (स्त्री० 'कुल्हाड़ी' ।)

कुहाना*–अ० क्रि० रूठना, नाराज होना ।

कुहासा–पु० दे० 'कुहरा' ।

कुहिरा–पु० दे० 'कुहरा' ।

कुही–स्त्री० बहरी, कुहर । पु० एक तरहका घोड़ा । वि० क्रोधी ।

कुहु, कुहू–स्त्री० (सं०) अमावस्या; अमावस्याकी अधिष्ठात्री देवी; कोयलकी कूक । **–कंठ,–मुख,–रव**–पु० कोयल । **–कुहू**–स्त्री० (हिं०) कोयलकी बोली ।

कुहुक–स्त्री० चिड़ियोंकी मधुर बोली, कूजन । **–बान**–पु० एक तरहका वाण जिसे चलाते समय कुछ आवाज और प्रकाश होता है ।

कुहेडिका, कुहेडी, कुहेलिका–स्त्री० (सं०) कुहरा ।

कुहौ-कुहौ*–स्त्री० दे० 'कुहू-कुहू' ।

कूँख†–स्त्री० कोख; पेट; काँखनेका शब्द ।

कूँखना–अ० क्रि० काँखना ।

कूँग–पु० बरतन खरादनेका एक औजार, खराद ।

कूँच–स्त्री० तानेका सूत साफ करनेका ब्रश; लोहारोंकी बड़ी सँड़सी; पैरकी मोटी नस ।

कूँचना†–स० क्रि० कुचलना ।

कूँचा–पु० बढ़नी; करछा; † कुचला हुआ कच्चे आम, आँवले आदिका गूदा जो चटनीके तौरपर खाया जाता है ।

कूँची–स्त्री० छोटी बढ़नी; ब्रश; तूलिका; मिसरी जमानेकी कुल्हिया; * ताली । मु० **–देना**–कूँचीसे साफ करना; रंग चढ़ाना; एक कोनेसे दूसरे कोनेतक खेत जोतना ।

कूँज–पु० क्रौंच पक्षी ।

कूँजना*–अ० क्रि० दे० 'कूजना' ।

कूँड़–पु० लोहेकी टोपी; पानी निकालनेका डोल जैसा एक बरतन; जोतनेसे बनी हुई गहरी लकीर; एक गहरा पात्र जो तबलेका बायाँ बनानेके काम आता है ।

कूँड़ा†–पु० पानी रखनेका चौड़ा बरतन, कुंडा; गमला; कठौता; एक तरहकी शीशेकी हाँड़ी जो रोशनी करनेके काम आती है ।

कूँड़ी–स्त्री० पत्थरकी कटोरी, पथरी; छोटी नाद; कोल्हूका ऊखल

जैसा वह भाग जिसमें जाठ रखा जाता है।

कूँथना–अ॰ क्रि॰ पीड़ासे 'उँह'की आवाज निकालना; दबी आवाजसे कराहना; कबूतरोंका गुटुरगूँ करना।

कूँवली*–वि॰ स्त्री॰ कोमलांगी (वीसल॰)।

कू–स्त्री॰ (सं॰) पिशाची।

कूई–स्त्री॰ दे॰ 'कुईं'।

कूक–स्त्री॰ कोयलकी वोली; लंवी गहरी आवाज, कीक; घड़ी, वाजे आदिमें कुंजी देना।

कूकना–अ॰ क्रि॰ कोयलका वोलना, 'कुहू-कुहू' करना। स॰ क्रि॰ घड़ी या वाजेमें ताली भरना।

कूकर†–पु॰ कुत्ता। **–कौर**–पु॰ कुत्तेके आगे डाली जानेवाली जूटन, टुकड़ा; तुच्छ वस्तु। **–बंदी**–स्त्री॰ एक पौधा जिसकी पत्तियाँ कुत्तेके काटे हुए पर लगायी जाती हैं। **–वसेरा**–पु॰ थोड़ा विश्राम। **–भँगरा**–पु॰ काला भँगरा। **–मुत्ता**–पु॰ दे॰ 'कुकुरमुत्ता'। **–लेँड़**–पु॰ कुत्तोंका मैथुन।

कूकस–पु॰ भूसी–'कूकसके कूटे कहूँ निकसत कन हैं'–सुंद॰।

कूका–पु॰ सिखोंका एक संप्रदाय; † लंवी गहरी आवाज।

कूकी–स्त्री॰ जाड़ेकी फसलमें लगनेवाला एक कीड़ा।

कूकुद–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कुकुद'।

कूख†–स्त्री॰ कोख।

कूच–पु॰ (सं॰) स्त्रीका स्तन (विशेषतः जवान या अविवाहिताका); (फा॰) एकसे दूसरी जगह जाना, रवानगी; मृत्यु, परलोकयात्रा। **–व-कूच**–अ॰ कूचपर कूच बोलते, मंजिलपर मंजिल तै करते हुए। **मु॰–का डंका या नक्कारा वजना**–(फौजका) रवाना होना, प्रस्थान करना। **–वोलना**–रवानगीका हुक्म देना; रवाना होना।

कूचना–स॰ क्रि॰ पत्थर आदिसे कुचलना, कूँचना।

कूचा*–पु॰ क्रौंच पक्षी–'वायें कुररी, दहिने कूचा'–प॰; (फा॰) गली, सँकरा रास्ता। **–गर्दी**–स्त्री॰ वेमतलव इधर-उधर घूमते रहना, आवारागर्दी। **–बंद**–पु॰ वंद गली, वह गली जिसमें एक ही ओर रास्ता हो।

कूचिका–स्त्री॰ (सं॰) कूँची; कुंजी।

कूची–स्त्री॰ दे॰ 'कूँची'।

कूज, कूजन–पु॰ (सं॰) किसी पक्षीका कलरव; पहियोंकी घड़घड़ाहट।

कूजना–अ॰ क्रि॰ मधुर ध्वनि करना।

कूजा–पु॰ कुल्हड़; कुल्हड़में जमायी हुई मिसरी; वेलेका पेड़ या फूल; मालती वृक्ष।

कूजित–वि॰ (सं॰) ध्वनित, गूँजा हुआ। पु॰ कूजन।

कूट–स्त्री॰ कूटनेकी क्रिया, कुटाई, (केवल मार-कूट, काट-कूट जैसे समासोंमें व्यवहृत); एक ओषधि; कुटी। पु॰ (सं॰) छल, धोखा, कपट, वनावट; म्यान आदिमें छिपाया हुआ हथियार; जटिल प्रश्न; पहाड़की चोटी; सींग; राशि, ढेर; लोहेका मुँगरा; फाल; असत्य; व्यंग्य; गूढोक्ति; निहाई; कीना; नगर-द्वार; गृह; अगस्त्य मुनि; ललाटकी अस्थि; शीर्ष; हिरन फँसानेका जाल; घड़ा; वह वैल जिसके सींग टूटे हों। वि॰ अचल; वनावटी; घृणित; असत्य। **–कर्म(न्)**–पु॰ छल, धोखेवाजी। **–कार**–पु॰ छल-कपट करनेवाला, धोखेवाज। **–कृत**–वि॰ नकली वाट, सिक्के आदि वनानेवाला, जालसाज। पु॰ शिव। **–खड्ग**–पु॰ छिपी तलवार, गुप्ती। **–चित्र**–पु॰ वह चित्र जिसमें ऊपरसे कुछ किन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेपर कुछ अन्य घटनाएँ या पदार्थ दिखाई दें। **–तुला**–स्त्री॰ वह तराजू जिससे तौलमें चोरी की जा सके, जिसमें पासंग हो। **–नीति**–स्त्री॰ छल-कपटकी नीति, चालवाजी। **–पणकारक**–वि॰ जाली सिक्का आदि वनानेवाला, जालसाज। **–पर्व,–पाकल,–पूर्व**–पु॰ हाथियोंको होनेवाला त्रिदोष ज्वर। **–पालक**–पु॰ कुम्हार; आँवाँ। **––पाश,–बंध**–पु॰ चिड़ियों आदिको फँसानेका जाल; फंदा। **–प्रश्न**–पु॰ पहेली। **–मान**–पु॰ ठीक मानसे छोटा या वड़ा वाट, नाप। **–मुद्र**–पु॰ जाली मुहर या सिक्का वनानेवाला (कौ॰)। **–मुद्रा**–स्त्री॰ जाली मुहर या आदेश (कौ॰)। **–मोहन**–पु॰ स्कंद। **–यंत्र**–पु॰ कूटपाश। **–युद्ध**–पु॰ छल, धोखेकी लड़ाई, अधर्मयुद्ध। **–योजना**–स्त्री॰ कुचक्र, षड्यंत्र। **–योधी(धिन्)**–पु॰ कूटयुद्ध करनेवाला। **–रचना**–स्त्री॰ स्त्रीके फँसानेकी युक्ति; फंदा। **–रूप**–पु॰ जाली सिक्का (कौ॰)। **–॰कारक**–पु॰ जाली सिक्का वनानेवाला (कौ॰)। **–॰निर्यापण**–पु॰ जाली सिक्का निकालना या चलाना (कौ॰)। **–॰प्रतिग्रहण**–पु॰ जाली सिक्का लेना (कौ॰)। **–लिपि**–स्त्री॰**–लेख,–लेख्य**–पु॰ जाली दस्तावेज। **–शाल्मलि**–पु॰ शाल्मलिका एक भेद, काला शाल्मलि; यमराजकी गदा। **–शासन**–पु॰ जाली आज्ञापत्र, फरमान। **–साक्षी(क्षिन्)**–पु॰ झूठी गवाही देनेवाला। **–साक्ष्य**–पु॰ झूठी शहादत। **–स्थ**–वि॰ चोटीपर, सवसे ऊपर अवस्थित; जो सदा एक रूपमें स्थित रहे, अपरिणामी। पु॰ परमात्मा। **–स्वर्ण**–पु॰ खोटा, नकली सोना।

कूटक–पु॰ (सं॰) छल, धोखा; उठान, निकला हुआ भाग; फाल; कवरी; एक गंधद्रव्य।

कूटकाख्यान–पु॰ (सं॰) कल्पित, वनावटी कथा।

कूटन–स्त्री॰ कूटनेकी क्रिया या भाव; मारना, पीटना।

कूटना–स॰ क्रि॰ मूसल-मुँगरीसे किसी चीजको लगातार पीटना; सिल-चक्की आदिमें टाँकीसे दाँता निकालना; मारना-पीटना; वधिया करना। **मु॰ कूट-कूटकर भरा होना**–(किसी दोष या गुणकी) अतिशयता, अत्यधिकता होना।

कूटाक्ष–पु॰ (सं॰) सीसा या पारा भरा हुआ पासा जो फेंकनेपर किसी खास वलसे ही चित हो; बनाया हुआ पासा।

कूटाख्यान–पु॰ (सं॰) कूटार्थवाले शब्दों, वाक्योंमें रचित कहानी।

कूटागार–पु॰ (सं॰) सवसे ऊपरकी, छतपरकी कोठरी; तहखाना; मानुष वुद्धोंके लिए वना हुआ मंदिर (बौ॰)।

कूटायुध–पु॰ (सं॰) छड़ी आदिके भीतर छिपाया हुआ हथियार।

कूटार्थ–पु॰ (सं॰) जल्दी समझमें न आनेवाला गूढ़ अर्थ।

कूटावपात–पु॰ (सं॰) जंगली जानवर फँसानेके लिए वनाया हुआ गड्ढा जो ढका हो।

कूटी–स्त्री॰ कुटिया, कुटी। दूती।

कूटू–पु॰ एक पौधेका वीज जो व्रतादिमें खाया जाता है।

कूड़ा–पु॰ धूल, राख आदि, वुहारन; रद्दी, निकम्मी चीजें। **–करकट**–पु॰ रद्दी, निकम्मी चीजें; कतवार। **–ख़ाना**–पु॰ कूड़ा फेंकनेकी जगह।

कूड्य–पु॰ (सं॰) दे॰ 'कुड्य'।

कूढ़–वि॰ मूर्ख, निर्बुद्धि। पु॰ हलका एक भाग, परिहत; वीज वोनेका एक तरीका। **–मग्ज़**–वि॰ मंदवुद्धि, जिसकी समझमें कुछ न आये।

कूणिका–स्त्री॰ (सं॰) वीणा, सितार आदिकी खूँटी; सींग।

कूणित–वि॰ (सं॰) वंद, संकुचित।

कूणितेक्षण–पु॰ (सं॰) वाज।

कूत–स्त्री॰ संख्या, माप, तौल आदिका अंदाजा, तखमीना।

कूतना–स॰ क्रि॰ अंदाजा, तखमीना करना।

कूथना†–स॰ क्रि॰ वुरी तरह मारना; पीटना।

कूद–स्त्री॰ कूदनेकी क्रिया। **–फाँद**–स्त्री॰ उछल-कूद।

कूदना–अ॰ क्रि॰ उछलना; ऊँचाईसे उछलकर नीचे आना; आ धमकना; वीचमें दखल देना; इतराना। स॰ क्रि॰ फाँदना, लाँघना।

कूदर–पु॰ (सं॰) जातिविशेष।

कूप–पु॰ (सं॰) कुआँ; गड्ढा; छेद; चमड़ेका वना तेलका कुप्पा; नदीके वीचमें अवस्थित वृक्ष या चट्टान; मस्तूल; नाव वाँधनेका खूँटा। **–कच्छप,–मंडूक**–पु॰ कुएँका कछुआ या मेढक; वह जिसके ज्ञानकी सीमा वहुत संकुचित हो। **–कार**–पु॰ कुआँ खोदनेवाला। **–चक्र,–यंत्र**–पु॰ पानी निकालनेकी चरखी।

कूपक–पु॰ (सं॰) छोटा कुआँ; कुप्पा; मस्तूल; नाव बाँधने का खूँटा; चिता; नदीके बीच स्थित चट्टान।

कूपन–पु॰ (अं॰) वह टिकट या पुरजा जिसे दिखानेसे कोई (नियंत्रित) वस्तु मिले; मनीआर्डर फार्मका वह भाग जिसपर पानेवालेको पत्र लिखा जा सकता है।

कूपार–पु० (सं०) समुद्र ।

कूपी–स्त्री० (सं०) छोटा कुआँ; कुप्पी; नाभिका गढ़ा ।

कूपुषु–पु० (सं०) मूत्राशय, मसाना ।

कूब–पु० दे० 'कूबड़' ।

कूबड़–पु० पीठकी हड्डीका इस तरह निकल आना कि वह टेढ़ी हो जाय ।

कूबर–पु० (सं०) कुबड़ा; रथ या गाड़ीका वह बाँस जिसमें जुआ बाँधा जाता है, युगंधर; रथीके बैठनेकी जगह । वि० सुंदर; प्रिय; कूबड़वाला ।

कूबरी–स्त्री० (सं०) दे० 'कुबरी' ।

कूबा–पु० दे० 'कूबड़'; वह लकड़ी जिसपर बँड़ेरा रखा जाता है ।

कूम–पु० (सं०) झील; ताल; तालाब ।

कूमीली*–स्त्री० मुकुल, कली (बीसल०) ।

कूर–वि० निर्दय; क्रूर; मनहूस; निकम्मा; नालायक; कायर; मूर्ख; * मिथ्या । पु० (सं०) भोजन; भात ।

कूरम*–पु० दे० 'कूर्म' ।

कूरा–पु० ढेर, राशि; भाग । वि० कुटिल; खराब ।

कूरी–स्त्री० छोटी राशि; * टीला, धुस ।

कूर्च–पु० (सं०) पूला; मुट्ठीभर कुश; कूँची; दाढ़ी; मोरका पंख; दर्प; ढोंग; छल, कपट; सिर; नाकका ऊपरी भाग; भंडार । **–शीर्ष**–पु० जीवक वृक्ष; नारिकेल । **–शेखर**–पु० नारियलका पेड़ ।

कूर्चक–पु० (सं०) कूँची; दाँत साफ करनेका ब्रश ।

कूर्चिका–स्त्री० (सं०) कूँची; तसवीर बनानेकी कूँची; कुंजी; कली; सूई; फटा हुआ दूध ।

कूर्दन–पु० (सं०) कूदना; खेल-कूद करना ।

कूर्दनी–स्त्री० (सं०) चैत्रकी पूर्णिमा ।

कूर्प–पु० (सं०) भौंहोंके बीचका हिस्सा ।

कूर्पर–पु० (सं०) कुहनी; घुटना ।

कूर्पास–पु० (सं०) दे० 'कुर्पास' ।

कूर्म–पु० (सं०) कछुआ; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे दूसरा, कच्छपावतार; वह प्राण या वायु जिससे पलकें खुलती-मुँदती हैं; एक तंत्रोक्त मुद्रा । **–क्षेत्र**–पु० एक हिंदू तीर्थ । **–खंड**–पु० पुराणानुसार एक खंड या वर्षका नाम । **–चक्र**–पु० एक तंत्रोक्त शुभाशुभ-सूचक चक्र । **–द्वादशी**–स्त्री० पौष-शुक्ला द्वादशी । **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक । **–पृष्ठ**–पु० कछुएकी पीठ; बाणपुष्प । **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक मुद्रा । **–राज**–पु० बहुत बड़ा कछुआ; विष्णुका कूर्मावतार ।

कूर्मासन–पु० (सं०) हठयोगका एक आसन ।

कूर्मी–स्त्री० (सं०) कछुई; एक प्राचीन बाजा ।

कूलंकष–वि० (सं०) किनारेको छूने, किनारेसे टकरानेवाला ।

कूलंकषा–स्त्री० (सं०) नदी ।

कूलंज–पु० (अ०) अँतड़ियोंका दर्द, 'कॉलिक' ।

कूल–पु० (सं०) नदी आदिका किनारा, तट; सामीप्य; ढूह; तालाब; सेनाका पृष्ठभाग । * अ० पास । **–चर**–वि० किनारेपर; कछारमें चरनेवाला (हिरन, हाथी आदि) ।

कूलक–पु० (सं०) किनारा; ढूह; बाँबी ।

कूलवती–स्त्री० (सं०) नदी ।

कूला–पु० छोटी नहर; दे० 'कूल्हा' ।

कूलिका–स्त्री० (सं०) वीणाका नीचेका भाग ।

कूलिनी–स्त्री० (सं०) नदी ।

कूलेचर–वि० (सं०) दे० 'कूलचर' ।

कूल्हा–पु० धड़ और जाँघका जोड़; कमरके दोनों ओरकी हड्डी; कुश्तीका एक पेंच । **मु०–सरकना**–कूल्हेका अपनी जगहसे हट जाना ।

क़ूवत–स्त्री० (अ०) शक्ति, बल । **–(ते)जिस्मानी**–स्त्री० शरीरकी शक्ति । **–बाजू**–स्त्री० बाहुबल । **–बाह**–स्त्री० रतिशक्ति; वीर्य । **–रूहानी**–स्त्री० आध्यात्मिक शक्ति । **–हाजिमा**–स्त्री० पाचनशक्ति ।

कूवर–पु० (सं०) दे० 'कूबर' ।

कूवार–पु० (सं०) दे० 'कूपार' ।

कूष्मांड–पु० (सं०) कुम्हड़ा; पिशाचोंका एक भेद; एक मंत्रकार ऋषि ।

कूष्मांडी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; एक ओषधि ।

कूसल–पु० एक तरहकी घास ।

कूह*–स्त्री० हाथीकी चिग्घाड़; चीख ।

कूहा–स्त्री० (सं०) कुहरा ।

कृंतन–पु० (सं०) काटना; कर्तन, कतरना; टुकड़े करना ।

कृंतनी–स्त्री० (सं०)काटने, कतरनेका साधन; कैंची ।

कृक–पु० (सं०) गला । **–लास**–पु० गिरगिट; छिपकली ।

कृकण–पु० (सं०) तीतरकी जातिका एक पक्षी; कृमि ।

कृकर–पु० (सं०) शिव; मस्तककी वायु; कृकण; कनेर ।

कृकल–पु० (सं०) दे० 'कृकर' ।

कृकला–स्त्री० (सं०) पिप्पली ।

कृकाटिका–स्त्री० (सं०) गरदनका उठा हुआ भाग; सिर और गरदनका जोड़ ।

कृच्छ्र–वि० (सं०) कष्टमय; कठिन; कष्टसाध्य; दुष्ट; कष्टकर । पु० कष्ट; दुःख; कठिनाई; सांतपन प्रायश्चित्त, व्रत; पाप; मूत्रकृच्छ्र रोग । **–पराक**–पु० १२ दिनका एक निराहार व्रत ।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र–पु० (सं०)२१ दिनोंका एक दुग्धाहार व्रत ।

कृत–वि० (सं०) किया हुआ; बनाया हुआ; पकाया हुआ । पु० काम; उपकार; कर्मफल; उद्देश्य; सतयुग; ४ की संख्या; पण; दाँव; युद्धमें मिला धन; भेंट । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जो अपना काम कर चुका हो; दक्ष, कुशल । पु० (ऋणत्रयसे मुक्त) सन्न्यासी; परमेश्वर । **–काम**–वि० जिसकी कामना पूरी हो गयी हो । **–कारज***–वि० दे० 'कृतकार्य' । **–कार्य**–वि० जो अपना कार्य या अभीष्ट सिद्ध कर चुका हो, सफलमनोरथ । **–काल**–वि० अवधि निर्द्धारित कर, नियत कालतक, अध्ययन आदि करनेवाला । पु० नियत काल, अवधि । **–०दास**–पु० एक नियत समयतकके लिए अपनेको किसीका दास बनानेवाला व्यक्ति । **–कृत्य**–वि० सफलमनोरथ, कृतार्थ । **–क्रय**–पु० खरीदार । **–घ्न**–वि० नेकी, उपकार न माननेवाला, नाशुक्रा । **–घ्नी***–वि० दे० 'कृतघ्न' । **–ज्ञ**–वि० नेकी, उपकार माननेवाला, एहसानमंद । **–दंड***–पु० यमराज । **–दास**–पु० नियत कालके लिए किसीका दासत्व या नौकरी करनेवाला । **–धी**–वि० स्थिरचित्त; ज्ञानी । **–निंदक**–वि० कृतघ्न । **–निश्चय**–वि० जिसने किसी बातका पक्का इरादा, निश्चय कर लिया हो । **–पुंख**–वि० बाणविद्यामें कुशल । **–पूर्व**–वि० पहले किया हुआ । **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसने कोई प्रतिज्ञा की हो, वचनबद्ध । **–फल**–वि० सफल । पु० शीतलचीनी; कोलशिंबी । **–बुद्धि**–वि० दे० 'कृतधी' । **–माल**–पु० एक तरहका हिरन; कर्णिकार वृक्ष, आरग्वध । **–मुख**–वि० पंडित, विद्वान् । **–युग**–पु० चारों युगोंमेंसे पहला, सतयुग । **–योग्य**–वि० द्वंद्वमें सम्मिलित होनेवाला । **–रूष**–वि० क्रुद्ध । **–लक्षण**–वि० जिसका लक्षण किया गया हो; चिह्नित; जो अपने गुणोंसे प्रसिद्ध हो । **–वर्मा(र्मन्)**–पु० एक वृष्णिवंशीय महारथी जो महाभारतमें दुर्योधनके पक्षसे लड़ा था और अंतमें बचा रह गया । **–विदूषणसंधि**–स्त्री० शत्रुपर संधिभंगका दोष सिद्ध करके संधिभंग करना (कौ०) । **–विद्य**–वि० विद्वान् । **–वीर्य**–वि० वीर्यशाली, बली । पु० सहस्रार्जुनका पिता । **–वृद्धि**–वि० (शब्द) जिसके आदि स्वरकी वृद्धि हुई हो । **–वेतन**–वि० वेतन या उजरत पानेवाला । **–वेदी(दिन्)**–वि० कृतज्ञ । **–वेश**–वि० जो कपड़ा-लत्ता पहने हो, वस्त्रसज्ज । **–शिल्प**–वि० किसी शिल्प या धंधेमें कुशल, अभ्यस्त । **–शुल्क**–वि० जिसकी चुंगी चुका दी गयी हो (कौ०) । **–शौच**–वि० जिसने शारीरिक गंदगी, अशुचि दूर कर दी हो । **–श्लेषणसंधि**–स्त्री० मित्रोंको मध्यस्थ रखकर की जानेवाली पक्की संधि (कौ०) । **–संकल्प**–वि० जिसने कोई संकल्प, निश्चय किया हो । **–संज्ञ**–वि० जगा हुआ; होशमें आया हुआ; जिसकी बुद्धि पैनी हो । **–संस्कार**–वि० जिसने अपने सारे संस्कार कर लिये हों । **–सपत्निका,–सापत्निका,–सापत्नी**–स्त्री० वह स्त्री

जिसके पतिने उसके जीवित रहते दूसरा विवाह कर लिया हो। **–हस्त,–हस्तक**–वि० कुशल; वाणविद्यामें कुशल।

कृतक–वि० (सं०) बनाया हुआ, बनावटी; अनित्य (न्या०)। पु० खारी नमक। **–पुत्र**–पु० गोद लिया हुआ पुत्र, दत्तक।

कृतघ्नता–स्त्री० (सं०) अहसान न मानना।

कृतघ्नताई*–स्त्री० दे० 'कृतघ्नता'।

कृतांक–वि० (सं०) चिह्नित।

कृतांजलि–वि० (सं०) जो अंजलि जोड़े या रोपे हुए हो। स्त्री० लाजवंती।

कृतांत–वि० (सं०) अंत या निश्चय करनेवाला। पु० यम; सिद्धांत; पूर्व जन्ममें किये हुए शुभाशुभ कर्म जिनका फल इस जन्ममें प्राप्त हो; शनि; शनिवार।

कृताकृत–वि० (सं०) किया और न किया हुआ; अंशतः किया हुआ।

कृतागम–वि० (सं०) योग्य, कुशल। पु० परमात्मा।

कृतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) संस्कृत मनवाला, शुद्धचित्त।

कृतात्यय–पु० (सं०) भोग द्वारा कर्मनाश (सां०)।

कृतान्न–पु० (सं०) पकाया हुआ अन्न।

कृतापराध–वि० (सं०) अपराधी।

कृताभय–वि० (सं०) खतरेसे बचाया हुआ।

कृताभिषेक–वि० (सं०) अभिषिक्त, सिंहासनासीन। पु० राजा।

कृतार्थ–वि० (सं०) कृतकार्य, सफलमनोरथ, संतुष्ट।

कृतालय–वि० (सं०) जो कहीं बस गया हो। पु० मेढक।

कृतावधि–वि० (सं०) जिसकी अवधि, सीमा नियत हो।

कृतास्त्र–वि० (सं०) अस्त्र-सज्ज; अस्त्र-प्रयोग, बाण-विद्यामें कुशल।

कृताह्वान–वि० (सं०) जो पुकारा या ललकारा गया हो।

कृति–स्त्री० (सं०) क्रिया; काम; रचना; रची, बनायी हुई वस्तु; जादू; अभिचार; जादूगरनी; दो समान अंकोंका घात (ग०); कैंची; २०की संख्या; वध; छुरी। **–कर**–पु० रावण। **–स्वाम्य**–पु० (कॉपीराइट) कोई लेख, पुस्तक, कविता, कहानी आदि पुनः प्रकाशित करने, बेचने आदिका अधिकार।

कृती(तिन्)–वि० (सं०) कृतकार्य; भाग्यवान्; जिसने अच्छे काम किये हों, पुण्यवान्; कुशल; आज्ञाकारी।

कृतोदक–वि० (सं०) स्नात।

कृतोद्वाह–वि० (सं०) विवाहित।

कृत्–पु० (सं०) धातुमें लगकर संज्ञा और विशेषण बनानेवाले प्रत्ययोंका एक वर्ग। वि० करने, बनानेवाला; कर्ता (केवल कर्तृवाचक संज्ञा बनानेमें व्यवहृत–जैसे 'ग्रंथकृत्', 'पुण्यकृत्')।

कृत्त–वि० (सं०) कटा हुआ, विभक्त; अभिलषित।

कृत्ति–स्त्री० (सं०) खाल; मृगचर्म; भोजपत्र; कृत्तिका नक्षत्र। **–वास,–वासा(सस्)**–पु० शिव।

कृत्तिका–स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रोंमेंसे तीसरा।

कृत्य–वि० (सं०) करने योग्य, कर्तव्य। पु० कर्तव्य कर्म; शास्त्रविहित कर्म (पूजन, हवन आदि); काम; तव्य, अनीय आदि प्रत्यय (व्या०)।

कृत्यका–स्त्री० (सं०) जादूगरनी।

कृत्या–स्त्री० (सं०) काम; अभिचार; जादूगरनी; एक शक्ति या देवी जो अभिचार द्वारा किसीको मारनेके लिए अनुष्ठान-विशेषसे उत्पन्न की जाती है; कर्कशा स्त्री। **–दूषण**–पु० कृत्याके प्रतिकारके लिए किया जानेवाला एक विशेष कृत्य।

कृत्याकृत्य–पु० (सं०) कर्तव्याकर्तव्य।

कृत्रिम–वि० (सं०) बनाया हुआ, बनावटी; गोद लिया हुआ। पु० माँ-बापकी सहमतिके बिना गोद लिया हुआ पुत्र; पुत्रवत् पालित अनाथ बालक; काला नमक; रसौत; लोबान। **–गर्भ-रोपण**–पु० (आर्टिफिशल इनसेमिनेशन) पिचकारी आदिकी सहायतासे शुक्राणु भीतर प्रविष्ट कराकर गर्भस्थिति कराना, कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान कराना; कृत्रिम वीर्यसेचन। **–धूप** पु० दशांग या षोडशांग धूप। **–पुत्र**–पु० माँ बापकी सहमतिके बिना गोद लिया हुआ पुत्र। **–पुत्रक**–पु० गुड्डा। **–भूमि**–स्त्री० मकानकी कुरसी। **–मित्र**–पु० वह मित्र जिसके साथ उपकारके कारण मित्रता हुई हो। **–रत्न**–पु० नकली या बनावटी रत्न। **–वन**–पु० उद्यान, बगीचा।

कृत्रिमारिप्रकृति–पु० (सं०) वह विजित राजा जो जीतनेवाले राजाके विरुद्ध दूसरोंको उभाड़ता हो।

कृत्स–पु० (सं०) जल; समुदाय; पाप।

कृत्स्न–वि० (सं०) संपूर्ण। पु० जल; कुक्षि, पेट।

कृदंत–पु० (सं०) धातुमें कृत् प्रत्यय लगानेसे बना हुआ शब्द।

कृप–पु० (सं०) दे० 'कृपाचार्य'; एक राजर्षि।

कृपण–वि० (सं०) सूम, कंजूस; दीन; नीच; क्षुद्र; विवेकहीन। पु० कंजूस आदमी; कीड़ा। **–धी,–बुद्धि**–वि० छोटे दिलका, क्षुद्राशय। **–वत्सल**–वि० दीनोंपर दया करनेवाला।

कृपणता–स्त्री० (सं०) कंजूसी; दैन्य।

कृपणी(णिन्)–वि० (सं०) दुःखी, दीन।

कृपन*–वि०, पु० दे० 'कृपण'।

कृपनाई*–स्त्री० दे० 'कृपणता'।

कृपया–अ० (सं०) कृपापूर्वक, कृपा करके।

कृपा–स्त्री० (सं०) प्रत्युपकारकी अपेक्षा न रखते हुए परदुःख-निवारणकी इच्छा, अनुग्रह, दया। **–दृष्टि**–स्त्री० मेहरबानीकी निगाह, कृपाभाव। **–पात्र**–वि० जो कृपाके योग्य हो, अनुग्रह-भाजन। **–सिंधु**–वि० कृपाके समुद्र (भगवान्)।

कृपाचार्य–पु० (सं०) अश्वत्थामाके मामा और कौरवपक्षके एक महारथी।

कृपाण–पु० (सं०) तलवार; छुरी; कटारी; एक दंडक वृत्त।

कृपाणक–पु० (सं०) तलवार।

कृपाणिका–स्त्री० (सं०) छोटी तलवार; कटारी।

कृपाणी–स्त्री० (सं०) छोटी तलवार; कटार, कतरनी; छुरी।

कृपाल*–वि० दे० 'कृपालु'।

कृपालु–वि० (सं०) कृपायुक्त, दयालु।

कृपिन*–वि०, पु० दे० 'कृपण'।

कृपिनाई*–स्त्री० कृपणता।

कृपी–स्त्री० (सं०) कृपाचार्यकी बहन और द्रोणाचार्यकी पत्नी। **–सुत**–पु० अश्वत्थामा।

कृमि–पु० (सं०) कीड़ा; मकड़ा; चींटी; लाख। **–कंकट**–पु० विडंग; चित्रांग; उदुंबर। **–कर**–पु० एक विषैला कीड़ा। **–कर्ण,–कर्णक**–पु० कानका एक रोग। **–कोश,–कोष**–पु० रेशम-के कीड़ेका कोया, ककूना। **–घ्न**–वि० कीड़ोंका नाश करनेवाला। **–घ्नी**–स्त्री० हलदी। **–ज**–वि० कीड़ोंसे उत्पन्न। पु० रेशम; अगर। **–जा**–स्त्री० लाख। **–दंतक**–पु० कीड़ोंके कारण होनेवाला दाँतका रोग, दर्द। **–पर्वत,–शैल**–पु० बाँबी, बमौटा। **–फल**–पु० गूलर। **–भोजन**–पु० एक नरक। **–रिपु,–शत्रु**–पु० विडंग। **–रोग**–पु० आँतोंमें कीड़े या केंचुए पैदा हो जाना। **–ल**–वि० दे० 'कृमिण'। **–ला**–स्त्री० वह स्त्री जिसके बहुत बच्चे हों, बहुप्रसवा नारी। **–वर्ण**–पु० लाल कपड़ा। **–शुक्ति**–स्त्री० सीपी। **–शोधित दुग्ध**–पु० (पैस्टराइज्ड मिल्क) वह दूध जिसके हानिकर कीटाणु विशेष प्रक्रिया द्वारा नष्ट कर दिये गये हों, आंशिक निर्जीवीकृत।

कृमिक–पु० (सं०) छोटा कीड़ा।

कृमिण–वि० (सं०) जिसमें कीड़े हों, कृमियुक्त।

कृमीलक–पु० (सं०) जंगली मूँग।

कृश–वि० (सं०) दुबला, कमजोर; थोड़ा; अकिंचन। **–कूट**–पु० एक पक्षी। **–नास**–पु० शिव। **–भृत्य**–वि० नौकरोंको कम खिलानेवाला।

कृशता–स्त्री० (सं०) दुबलापन।

कृशताई*–स्त्री० दे० 'कृशता'।

कृशर–पु० (सं०) तिल-चावलकी खिचड़ी; खिचड़ी।

कृशरान्न–पु० (सं०) खिचड़ी।

कृशला–स्त्री० (सं०) सिरके बाल, केश।

कृशांग–वि० (सं०) दुबला। पु० शिव।

कृशांगी–स्त्री० (सं०) दुबली-पतली स्त्री; प्रियंगु लता।

कृशाक्ष–पु० (सं०) मकड़ा।

कृशानु–पु० (सं०) अग्नि; चित्रक। **–रेता(तस्)**–पु० शिव।

कृशाश्व–पु० (सं०) तृणबिंदु-वंशका एक राजर्षि।

कृशाश्वी(श्विन्)–पु० (सं०) नट, नाट्य करनेवाला।

कृशित–वि० (सं०) क्षीणकाय, दुवला-पतला।

कृशोदरी–वि०, स्त्री० (सं०) पतली कमरवाली (स्त्री)। स्त्री० अनंतमूल।

कृषक–पु० (सं०) हल जोतनेवाला, किसान; वैल; फाल। वि० खींचनेवाला।

कृषाण–पु० (सं०) किसान, खेतिहर।

कृषि–स्त्री० (सं०) जोतना-बोना, खेती; जमीन जोतना। **–कर्म(न्)**–पु० खेतीका काम। **–कार**–पु० कृषक। **–यंत्र**–पु० (ट्रैक्टर) पहियोंवाला एक तरहका इंजन जिसका प्रयोग कृषिसंबंधी अनेक कार्योंमें किया जाता है, ट्रैक्टर। **–जीवी(विन्)**–वि० खेतीसे निर्वाह करनेवाला (किसान)। **–दासता**–स्त्री० (सर्फडम) खेत जोतने-बोनेका काम दास द्वारा करानेकी प्रथा; वह प्रथा जिसके अनुसार कुछ व्यक्तियोंसे जबरन किसीकी भूमि जोतने-बोनेका काम कराया जाता था (रूस)।

कृषिक–पु० (सं०) कृषक।

कृषी–स्त्री० (सं०) खेत; *खेती, कृषि।

कृषीवल–पु० (सं०) किसान, खेतिहर।

कृष्कर–पु० (सं०) शिव।

कृष्ट–वि० (सं०) खींचा हुआ; जोता हुआ। **–पच्य,–पाक्य**–वि० खेतमें पकनेवाला। **–फल**–पु० किसी फसलकी उपज। **–भूमि**–स्त्री० कृषित (जोती बोयी) भूमि।

कृष्टि–स्त्री० (सं०) आकृष्ट करना, खींचना; जोतना। पु० विद्वान् व्यक्ति।

कृष्टोप्त–वि० (सं०) जोती-बोयी हुई (जमीन)।

कृष्ण–वि० (सं०) काला, श्याम; भूरा; नीला; कुत्सित या पापकर्म करनेवाला, दुष्ट। पु० काला या गहरा नीला रंग; यदुवंशी वसुदेव और देवकीके पुत्र जो विष्णुके आठवें अवतार माने जाते हैं; परब्रह्म; काला हिरन; कौआ; कोकिल; अशुभ या पापकर्म; अँधेरा पाख; कलियुग; वेदव्यास; अर्जुन; काला अगर; काली मिर्च; लोहा; सुरमा; करौंदा; एक मंत्रकार ऋषि; द्यूतसे प्राप्त धन। **–कंद**–पु० लाल कमल। **–कर्म(न्)**–पु० काली करतूत, पापकर्म। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० पापकर्म करनेवाला। **–काय**–वि० काले रंगवाला। पु० भैंसा। **–काष्ठ**–पु० काला अगर। **–केलि**-स्त्री० गुल अब्बास। **–कोहल**–पु० जुआरी। **–गंगा**–स्त्री० कृष्णा नदी। **–गंधा**–स्त्री० शोभांजन, सहिजन। **–गति**–पु० आग। **–गर्भ**–पु० कायफल। **–गिरि**–पु० नीलगिरि। **–गोधा**–स्त्री० एक विषैला कीड़ा। **–चंद्र**–पु० वासुदेव। **–चूड़ा,–चूड़िका**–स्त्री० घुँघची। **–चूर्ण**–पु० लोहेका मल। **–चैतन्य**–पु० चैतन्य महाप्रभु। **–च्छवि**–स्त्री० काले मृगका चमड़ा। **–जटा**–स्त्री० जटामासी। **–जीरक**–पु० स्याह जीरा। **–ताम्र**–पु० एक तरहका चंदन। **–तार**–पु० एक तरहका हिरन। **–देह**–वि० कृष्णकाय। पु० भौंरा। **–द्वैपायन**–पु० महाभारत और पुराणोंके रचयिता वेदव्यास। **–धन**–पु० जुए आदिसे कमाया हुआ धन, पापकी कमाई। **–पक्ष**–पु० अँधेरा पाख; अर्जुन। **–पर्णी,–मल्लिका**–स्त्री० काली पत्तियोंवाली तुलसी। **–पवि**–पु० अग्नि। **–पाक**–पु० करौंदा। **–पिंगला**–स्त्री० दुर्गा। **–पुच्छ**–पु० रोहू मछली। **–पुष्प**–पु० काला धतूरा। **–फल**–पु० करौंदा। **–फला**–स्त्री० मिर्चकी लता; एक जामुन। **–बीज**–पु० तरबूज। **–भक्त**–पु० कृष्णका भक्त, उपासक। **–भुजंग**–पु० करैत साँप। **–भूम**–पु० काली मिट्टीवाली जमीन। **–भेदा**–स्त्री० कुटकी। **–मंडल**–पु० आँखका काला भाग। **–मुख,–वक्त्र,–वदन**–वि० काले मुँहवाला। पु० लँगूर; एक दानव। **–मृग**–पु० काला या काले धब्बोंवाला हिरन। **–यजुर्वेद**–पु० यजुर्वेदके दो भेदोंमेंसे एक। **–याम**–पु० अग्नि। **–रक्त**–पु० गहरा लाल रंग। वि० गहरे लाल रंगका। **–रुहा,–वल्लिका**–स्त्री० एक पौधा, जतुका। **–लवण**–पु० काला नमक। **–लोह**–पु० चुंबक। **–वेणी**–स्त्री० कृष्णा नदी। **–सख,–सारथि**–पु० अर्जुन। **–सार**–पु० कृष्ण मृग; थूहड़; शीशम; खैरका पेड़। **–स्कंद**–पु० तमाल वृक्ष।

कृष्णक–पु० (सं०) काले मृगका चर्म; काली सरसों।

कृष्णल–पु०, **कृष्णला**–स्त्री० (सं०) गुंजा, घुँघची।

कृष्णा–स्त्री० (सं०) द्रौपदी; दक्षिण भारतकी एक नदी, कृष्णगंगा; काली दाख; दुर्गा; काली पत्तियोंवाली तुलसी; पिप्पली; काला जीरा; कुटकी; राई; अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक; एक तरहकी जोंक; एक गंधद्रव्य।

कृष्णाचल–पु० (सं०) रैवतक पर्वत; नीलगिरि।

कृष्णाजिन–पु० (सं०) काले मृगका चर्म।

कृष्णाभिसारिका–स्त्री० (सं०) अँधेरी रातमें अभिसार करनेवाली नायिका।

कृष्णायस–पु० (सं०) लोहा।

कृष्णार्जक–पु० (सं०) सुप्रसन्नक, गरुघ्न, जंगली बर्बरी।

कृष्णावास–पु० (सं०) अश्वत्थ वृक्ष।

कृष्णाष्टमी–स्त्री० (सं०) भाद्र-कृष्णा अष्टमी, कृष्णकी जन्मतिथि, जन्माष्टमी।

कृष्णिका–स्त्री० (सं०) काली सरसों; श्यामा पक्षी।

कृष्णिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) कालिमा।

कृष्णी–स्त्री० (सं०) अंधेरी रात।

कृष्णोदर–पु० (सं०) एक तरहका साँप।

कृष्णोदुंबरक–पु०, **कृष्णोदुंबरिका**, **कृष्णोदुंबरी**–स्त्री० (सं०) कठगूलर।

कृष्य–वि० (सं०) खेती करने योग्य (भूमि) (कल्टिवेबिल)।

कृसर–पु० (सं०) दे० 'कृशर'।

कें-कें–स्त्री० कुत्तेके पिल्लेकी आवाज। मु० **–करना**– पिल्लेकी तरह चीखना।

केंचुआ, केंचुवा–पु० एक बरसाती कीड़ा जिसकी देह बिना हड्डीकी और लगभग एक बित्ता लंबी होती है; आँतोंमें पैदा हो जाने और मलके साथ बाहर आनेवाला कीड़ा। **–छंद**–पु० वह छंद जिसके चरणोंकी मात्राएँ बराबर न हों, रबर छंद।

केंचुल–स्त्री० दे० 'केंचुली'।

केंचुली–स्त्री० साँपकी त्वचा जो जाड़ेमें सूखकर अपने आप खोलकी शकलमें गिर जाती है। वि० केंचुल-जैसा। **–लचका**–पु० एक तरहका लचका जो खींचनेसे बढ़ता है। मु० **–झाड़ना**–साँपका केंचुली छोड़ना। **–बदलना**–केंचुली झाड़ना; वेशभूषा बदलना।

केंता–पु० एक तरहका वेंत।

केंदु–पु० (सं०) तेंदूका पेड़।

केंदुक–पु० (सं०) गालव वृक्ष, एक तरहका तेंदू; एक माप।

केंदू–पु० दे० 'केंदु'।

केंद्र–पु० (सं०) (सेंटर) वृत्तका वह मध्य बिंदु जहाँसे परिधिके प्रत्येक बिंदुकी दूरी एक ही हो। नाभि; मध्यवर्ती स्थान; मुख्य स्थान; किसी वस्तुके उत्पादन, वितरण, प्रसारका स्थान, 'सेंटर'; जन्मकुंडलीमें लग्नसे पहला, चौथा, सातवाँ और दसवाँ स्थान। **–ग,–गामी(मिन्)**–वि० केंद्रकी ओर जानेवाला। **–स्थ**–वि० केंद्रमें स्थित। **–स्थान**–पु० केंद्ररूप स्थान।

केंद्रक–पु० (न्यूक्लियस, ऑव सेल) कोशिकाका महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय भाग। केंद्रकके ही अन्दर क्रोमैटिन मौजूद होता है जिससे क्रोमोंसोमका निर्माण होता है।

केंद्रापसारी(रिन्)–वि० (सं०) केंद्रसे दूर जानेकी प्रवृत्तिवाला। **–शक्तियाँ**–स्त्री० (सेंट्रिफ्यूगल फोर्सेज) केंद्रसे दूर हटानेवाली शक्तियाँ।

केंद्राभिमुख–वि० (सं०) केंद्रकी ओर जानेकी प्रवृत्तिवाला।

केंद्राभिसारी(रिन्)–वि० (सं०) केंद्रकी ओर जानेवाला। **–शक्तियाँ**–स्त्री० (सेंट्रिपेटल फोर्सेज) केंद्रकी ओर ले जानेवाली शक्तियाँ।

केंद्रित–वि० (सं०) केंद्रमें स्थित; स्थानाविशेषमें एकत्रीभूत।

केंद्री(द्रिन्)–वि० (सं०) केंद्रमें स्थित।

केंद्रीकरण–पु० (सं०) केंद्रित करना, एक जगह लाना; जमा

करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना ।

केंद्रीभूत–वि० (सं०) 'केंद्रित' ।

केंद्रीय–वि० (सं०) केंद्र संबंधी; केंद्रमें या मध्यमें स्थित; मुख्य । **–आवास-मंडल**–पु० (सेंट्रल हाउसिंग बोर्ड) नये-नये आवासों (घरों)का निर्माण करानेके लिए स्थापित केंद्रीय संस्था । **–करण**–पु० (सेंट्रलाइज़ेशन) एक स्थान या केंद्रपर लाना, केंद्रित करना, जमा करना; एक हाथमें, एक व्यवस्थामें लाना ।

केंद्रोन्मुख–वि० केंद्रकी ओर जाने या ले जानेवाला ।

के–पु० 'का' विभक्तिका बहु० । † सर्व० कौन ।

केउ†–सर्व० कौन; कोई ।

केउटा–पु० करैत साँप ।

केउर⁕–पु० दे० 'केयूर' ।

केऊ⁕–सर्व० कोई । वि० कई ।

केकड़ा–पु० एक गोलाकार क्षुद्र जलजंतु जिसके आठ टाँगें होती हैं । **–(ड़े)की चाल**–टेढ़ी-तिरछी चाल ।

केकय–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद, आधुनिक कक्का (कश्मीर); उस देशका निवासी; उक्त देशका एक राजा जो कैकेयी रानीका पिता था ।

केकयी–स्त्री० (सं०) केकय देशकी स्त्री; दशरथकी पत्नी और भरतकी माता ।

केकर–वि० (सं०) ऐंचाताना । पु० भेंगी या ऐंची आँख । † सर्व० किसका ।

केका–स्त्री० (सं०) मोरकी बोली ।

केकावल, केकिक, केकी(किन्)–पु० (सं०) मोर ।

केचित्–सर्व० (सं०) कोई, कोई-कोई ।

केड़ा–पु० कोंपल, कल्ला; नवयुवक (ला०) ।

केणिका–स्त्री० (सं०) खेमा; तंबू ।

केत–पु० (सं०) घर; स्थान; बसना; पताका; संकल्प; मंत्रणा; बुद्धि; निमंत्रण; धन, संपत्ति; आकाश; विवेक; ⁕ केतकी ।

केतक–पु० (सं०) केवड़ा; केवड़ेका फूल; पताका । ⁕ वि० कितना, बहुत । अ० कितना ही ।

केतकी–स्त्री० (सं०) एक फूल, केवड़ा ।

केतन–पु० (सं०) घर; स्थान; निमंत्रण; पताका; परिचायक चिह्न; धब्बा, चिह्न ।

केतली–स्त्री० (अं० 'केटिल') टोंटी और दस्तेदार बरतन जिसमें पानी गरम करते हैं ।

केता, केतिक⁕–वि० कितना । अ० कितना ही ।

केतित–वि० (सं०) आमंत्रित, आहूत; बसा हुआ ।

केतु–पु० (सं०) पताका; चिह्न; सौरमंडलका नवाँ ग्रह जो पुराणोंके अनुसार सैंहिकेय राक्षसका कबंध है और जिसका सिर राहु हुआ; पुच्छल तारा; श्रेष्ठ; सर्वोच्च स्थानका अधिकारी पुरुष ('रघुकुलकेतु'); चमक; किरण; दिनका समय; विवेक; बौनोंकी एक जाति; एक रोग; शत्रु । **–कुंडली**–स्त्री० १२ खानोंका एक चक्र जिससे ज्योतिषी वर्षविशेषके स्वामीका पता लगाते हैं । **–जा**–स्त्री० ताड़का । **–तारा**–पु० पुच्छल तारा । **–पताका**–स्त्री० वर्षेश निकालनेका नौ कोष्ठोंका एक चक्र (ज्यो०)। **–माल,–मालक**–पु० जंबूद्वीपका एक खंड । **–यष्टि**–स्त्री० ध्वज-दंड । **–रत्न**–पु० लहसुनिया । **–वसन**–पु० ध्वजा, पताका ।

केतुमान्(मत्)–वि० (सं०) ध्वजयुक्त; चिह्नयुक्त; तेजस्वी । पु० काशिराज दिवोदासके वंशका एक राजा ।

केतो⁕–वि० 'कितना' । अ० कितना ही ।

केदर–वि० (सं०) ऐंचाताना । पु० एक पौधा ।

केदली†–स्त्री० दे० 'कदली' ।

केदार–पु० (सं०) धानका खेत; कियारी; थाला; हिमालयकी एक चोटी या वहाँका शिवलिंग; एक राग । **–खंड**–पु० स्कंद-पुराणका एक खंड जिसमें केदारनाथका माहात्म्य वर्णित है; पानीका आना रोकनेके लिए बना हुआ बाँध । **–गंगा**–स्त्री० गढ़वालकी एक नदी । **–नट**–पु० एक संकर राग । **–नाथ**–पु० केदार पर्वतपर प्रतिष्ठित एक शिवलिंग ।

केदारा–पु० एक राग ।

केदारी–स्त्री० दीपक रागकी एक रागिनी ।

केन–स्त्री० बाँदा जिलेकी एक नदी जो यमुनामें गिरती है । पु० (सं०) ११ प्रधान उपनिषदोंमेंसे एक ।

केना⁕–पु० अनाज देकर खरीदी जानेवाली चीज (साग, भाजी आदि); † एक घास ।

केनार–पु० (सं०) सिर; कपोल; जोड़ा; कुंभीपाक नरक ।

केनिपात, केनिपातक, केनिपातन–पु० (सं०) डाँड़, अरित्र ।

केम, कैम⁕–पु० कदंब ।

केमद्रुम–पु० (सं०) चंद्रमाका एक योग (ज्यो०) ।

केमुक–पु० (सं०) वंडा ।

केयूर–पु० (सं०) बिजायठ, भुजबंद; एक रतिबंध ।

केयूरी(रिन्)–वि० (सं०) केयूरधारी ।

केर⁕–प्र० का; के । पु० केला ।

केरक–पु० (सं०) महाभारतमें उल्लिखित एक जनपद, केरल ।

केरल–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक जनपद या राज्य; केरल-निवासी ।

केरली–स्त्री० (सं०) केरल देशकी स्त्री । वि० केरल देशका, केरलीय ।

केरा⁕–पु० केला ।

केराना–पु० दे० 'किराना' ।

केराया–पु० दे० 'किराया' ।

केराव†–पु० मटरकी जातिका एक कदन्न, कलाय ।

केरि⁕–प्र० की । स्त्री० केलि ।

केरी⁕–प्र० की ।

केरोसिन–पु० (अं०) मिट्टीका तेल ।

केलक–पु० (सं०) तलवारकी धारपर नाचनेवाला ।

केला–पु० एक प्रसिद्ध फलवृक्ष, कदली; उसका फल; ⁕ केलि, क्रीडा ।

केलारी–स्त्री० (केलॉरी) ऊष्माकी मात्रा नापनेका मात्रक । एक ग्राम पानीके तापको एक डिग्री सेंटीग्रेड ऊँचा चढ़ानेके लिए एक केलारी ऊष्माकी आवश्यकता होती है; ऊष्मांक ।

केलास–पु० (सं०) स्फटिक । (क्रिस्टल) रासायनिक तत्त्वका रवा जैसा रूप, मणिभ ।

केलासन–पु० (क्रिस्टलाइजेशन) रवों या मणिभोंका रूप ग्रहण करनेकी क्रिया, **मणिभीकरण**, स्फटिकीकरण ।

केलि–स्त्री० (सं०) क्रीड़ा; कामक्रीड़ा, रति; हँसी-मजाक; धरती । **–कला**–स्त्री० केलि-कुशलता; कामकला; सरस्वतीकी वीणा । **–किल**–पु० विदूषक (ना०) । **–किला,–किलावती**–स्त्री० कामदेवकी स्त्री, रति । **–कीर्ण**–पु० ऊँट । **–कुंचिका**–स्त्री० पत्नीकी छोटी बहन । **–कोष**–पु० नट, नर्तक । **–गृह,–निकेतन,–मंदिर,–सदन**– पु० रतिगृह; क्रीड़ागृह । **–पर**–वि० क्रीड़ाप्रिय । **–पल्वल**–पु० जलक्रीड़ाका तालाव । **–मुख**–पु० मजाक, हँसी । **–रंग**–पु० क्रीड़ास्थान । **–वृक्ष**–पु० एक तरहका क़दंब । **–सचिव**–पु० नायकको कामक्रीड़ाके विषयमें सलाह देनेवाला, नर्मसचिव ।

केलिक–पु० (सं०) अशोक वृक्ष ।

केली†–स्त्री० एक तरहका केला; (सं०) क्रीड़ा; काम-क्रीड़ा । **–पिक**–पु० मनोरंजनके लिए पाली गयी कोयल । **–वनी**–स्त्री० प्रमोदोद्यान । **–शुक**–पु० मनोरंजनके लिए पाला गया तोता ।

केव–पु० एक पहाड़ी वृक्ष ।

केवका–पु० प्रसूताको दिया जानेवाला मसाला ।

केवट–पु० एक जाति, कैवर्त, मल्लाह ।

केवटी–स्त्री० दो या अधिक प्रकारकी दालें मिलाकर पकायी हुई दाल ।

केवड़ई–पु० एक तरहका रंग जो केवड़ेके रंगसे मिलता है । वि० केवड़ेके रंगका ।

केवड़ा–पु० एक छोटा वृक्ष जिसका फूल अपनी सुगंधके लिए प्रसिद्ध है, सफेद केतकी; उसका फूल; केवड़ेके फूलका अर्क ।

केवरा†–पु० दे० 'केवड़ा' ।

केवल–वि० (सं०) असंग, अकेला; संपूर्ण; शुद्ध; अमिश्र । अ० सिर्फ, मात्र । पु० विशुद्ध और भ्रांतिरहित अध्यात्म ज्ञान; प्राणा-

यामका एक प्रकार; स्तंभके आधारका कुंभीके ऊपरका ढांचा। **–व्यक्तिरेकी(किन्)**–पु० अनुमानका एक भेद, शेषवत्। वि० पार्थक्यसे संबंध रखनेवाला (न्या०)।

केवलात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) ईश्वर; शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य।

केवलान्वयी(यिन्)–पु० (सं०) अनुमानका एक भेद, पूर्ववत्।

केवली(लिन्)–पु० (सं०) केवल ज्ञानवाला; मुक्तिका अधिकारी साधु; तीर्थंकर।

केवाँच–स्त्री० एक लता जिसकी फलियोंके बीज खुजलाहट पैदा करनेवाले होते हैं।

केवा*–पु० कमल–'भौंर खोज जस पावै केवा'–प०; केवड़ा; बहाना; संकोच।

केवाड़–पु० दे० 'किवाड़'।

केश–पु० (सं०) सिरके बाल; वाल; घोड़े या सिंहकी गरदनपरके वाल; किरण; एक गंधद्रव्य; विष्णु; वरुण। **–कर्तनालय**–पु० (हेयर कटिंग हाउस) सिरके बाल कटवानेकी दुकान। **–कर्म(न्)**–पु० बाल सँवारना, कंघी-चोटी; मुंडन। **–कलाप**–पु० केश-राशि। **–कीट**–पु० जूँ। **–गर्भ**–पु० वरुण; कवरी। **–घ्न**–पु० गंजापन। **–पर्णी**–स्त्री० अपामार्ग। **–नली,**–स्त्री० (कैपिलरी ट्यूब) बहुत ही पतले (केशके सदृश) सूराखवाली नलिका। **–पाश**–पु० केश-समूह; लटकती हुई लटें, लटोंका फंदा; केशरूपी पाश। **–प्रसाधन**–पु० दे० 'केशविन्यास'। **–प्रसाधनी**–स्त्री०,**–मार्जक**–पु० कंघी। **–बंध**–पु० जूड़ा बाँधनेका फीता आदि; नृत्यका एक दस्तक। **–मथनी,–हंत्री**–स्त्री० शमी वृक्ष। **–मार्जन**–पु० बालोंको मलना, साफ करना; कंघी। **–रंजन**–पु० भँवरा। **–रचना**–स्त्री० बालोंको सँवारना, माँग-पट्टी। **–राज**–पु० भँगरा। **–रूपा**–स्त्री० पेड़का बाँदा। **–लुंचक**–पु० सिरके बाल नोचनेवाला, जैन साधु। **–वपन**–पु० बाल कटवाना या मुँड़वाना। **–विन्यास**–पु० बाल सँवारना, काटछाँटकर तथा कंघी आदिकर सजाना (बाल), माँग-पट्टी। **–वेश**–पु० कवरी-बंधन। **–वेष्ट**–पु० केश-विन्यास; सीमंत।

केशक–वि० (सं०) बालोंको सँवारने, केशरचनामें कुशल; बालोंपर विशेष रूपसे ध्यान देनेवाला।

केशट–पु० (सं०) बकरा; खटमल; जूँ; कामदेवका एक-बाण; विष्णु; टेंटू।

केशर–पु० (सं०) दे० 'केसर'।

केशव–पु० (सं०) विष्णु; परमेश्वर; विष्णुकी एक मूर्ति; हिंदीके एक सुप्रसिद्ध कवि। वि० सुंदर बालोंवाला।

केशवायुध–पु० (सं०) विष्णुका अस्त्र; आम।

केशवालय, केशवावास–पु० (सं०) अश्वत्थ वृक्ष।

केशांत–पु० (सं०) १६ संस्कारोंमेंसे एक जो उपनयन और समावर्तनके अवसरपर होता है; मुंडन; बालका सिरा।

केशाकेशि–स्त्री० (सं०) दो आदमियोंका झगड़ेमें एक-दूसरेके सिरके बाल पकड़कर खींचना, नोचना।

केशि–पु० (सं०) एक असुर जिसे कृष्णने मारा था।

केशिक–वि० (सं०) सुंदर बालोंवाला।

केशिका–स्त्री० (सं०) धमनी आदिसे निकलनेवाली सूक्ष्म-नलिकाएँ; दे० 'केशनली'; शतावरी।

केशिकात्व–पु० (कैपिलरिटी) द्रवका वह गुण जिसके कारण उसमें आंशिक रूपसे डुबायी गयी बारी कछद्रवाली नली(केशिका नली)-के अन्दर द्रव या तो ऊपर कुछ दूरतक चढ़ जाता है या कुछ नीचे चला जाता है। पौधोंके अन्दर भूमिका पानी बारीक सूराखोंसे केशिकात्वके गुणकी बदौलत ही ऊपर चढ़ता है।

केशिनी–स्त्री० (सं०) सुंदर बालोंवाली स्त्री; रावणकी माता कैकसी; एक अप्सरा; सगरकी एक रानी; दमयंतीकी दूती जो नलके पास उसका संदेश ले गयी थी; जटामासी; दुर्गा।

केशी–स्त्री० (सं०) चोटी; दुर्गा; अजलोमा; नीली; भूतकेशी।

केशी(शिन्)–पु० (सं०) सिंह; घोड़ा; कृष्ण; कृष्णके हाथों मारा गया एक अश्वरूप दानव; केवाँच; सुंदर बालोंवाला व्यक्ति। वि० सुंदर घने बालोंवाला।

केस*–पु० बाल; (अं०) खाना; बक्स; मामला, मुकदमा; लकड़ीकी खानेदार किश्ती जिसमें छापेके टाइप रखे जाते हैं; रोग, आघात आदिकी घटना।

केसर–पु० (सं०) फूलके बीचका सींका या रेशा; बाल; एक विशेष फूलका सींका जो पीलापन लिये लाल रंगका और सुगंधयुक्त होता है, कुमकुम, जाफरान; सिंह या घोड़ेकी गरदनपरका बाल, अयाल; नागकेसर; मौलसिरी; पुन्नाग; सोना; कसीस।

केसराचल–पु० (सं०) मेरु पर्वत।

केसराम्ल–पु० (सं०) बिजौरा नीबू।

केसरि–पु० (सं०) हनूमान्के पिता।

केसरिका–स्त्री० (सं०) सहदेई लता।

केसरिया–वि० केसरके रंगका; केसरमें रँगा हुआ; केसर मिला हुआ। पु० केसरका रंग; केसर जैसा रंग।

केसरी(रिन्)–पु० (सं०) सिंह; घोड़ा; पुन्नाग; बिजौरा नीबू; नागकेसर; हनूमान्के पिता। वि० सिंह जैसा पराक्रमी (समासांतमें–जैसे महाराष्ट्र-केसरी, पंजाब-केसरी इत्यादि)। **–(रि)किशोर**–पु० सिंहशावक; हनूमान्। **–तनय,–नंदन,–सुत**–पु० हनूमान्।

केसारी–स्त्री० मटरकी जातिका एक मोटा अन्न।

केसू*–पु० टेसू, पलासका फूल।

केहरि*–पु० केसरी। **–नहा**–पु० बघनहा।

केहरी*–पु० दे० 'केसरी'।

केहा*–पु० मोर; तीतर जैसा एक पक्षी।

केहि*–वि० किस। सर्व० किसे।

केहुनी–स्त्री० दे० 'कुहनी'।

केहुँ*–अ० किसी तरह।

केहू*–सर्व० कोई; किसीको।

कैंकर्य–पु० (सं०) दासत्व, सेवा-टहल।

कैंचा–पु० बड़ी कैंची। वि० ऐंचा-ताना।

कैंची–स्त्री० (तु०) कतरनी; दो लकड़ियाँ जो कैंचीकी शकलमें बँधी या जड़ी हों; कुश्तीका एक पेंच; मालखंभकी एक कसरत। **–का जँगला**–लकड़ीकी तीलियों या सलाखोंको नीचे-ऊपर तिरछे रखकर बनाया हुआ जँगला। **मु०–करना**–कैंचीसे काटना। **–काटना**–आँख बचाकर इधर-उधर हट जाना। **–बाँधना**–रानोंसे दबाना।

कैंड़ा–पु० खाका उतारनेका आला; पैमाना; मोटा अंदाजा; काम करनेका तरीका या कौशल, ढंग; ढाँचा; विशिष्ट परंपराके व्यक्तियोंका समूह (पिछले कैंडेके लेखक); चालाकी। **मु०–लेना**–खाका उतारना।

कैंप–पु० (अं०) सेनाका पड़ाव, शिविर; खेमों, झोपड़ों आदिका बना अस्थायी निवास।

कैंसर–पु० (कैन्सर) शरीरकी कोशिकाओंके अनियंत्रित विभाजनके फलस्वरूप कोशिकाओंकी संख्याकी असाधारण वृद्धि। इस बीमारीमें कैन्सर कोशिकाएँ शरीरके अन्य अंगोंके लिए आवश्यक पौष्टिक तत्वोंका उपयोग स्वयं कर लेती हैं, फलस्वरूप शरीरकी सामान्य क्रियाओंमें बाधा पहुँचती है।

कै–वि० कितने। अ० या, अथवा; * से, द्वारा–'दंपतिसुजान फूली कै फलित सदा'–घन०। प्र० की (संबंधकारक)।

क़ै–स्त्री० (अ०) उलटी, वमन।

कैकय–पु० (सं०) केकय-नरेश।

कैकस–पु० (सं०) राक्षस।

कैकसी–स्त्री० (सं०) रावणकी माता।

कैकेय–पु० (सं०) केकय-नरेशके वंशज।

कैकेयी–स्त्री० (सं०) केकय-नरेशकी बेटी, भरतकी माता।

कैट–वि० (सं०) कीट-संबंधी।

कैटभ–पु० (सं०) विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य, मधुका छोटा भाई। **–जित्,–रिपु**–पु० विष्णु।

कैटभा, कैटभी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

कैटभारि–पु० (सं०) विष्णु।

कैतक–पु० (सं०) केतकका पुष्प। वि० केतकसे प्राप्त या संबंध रखनेवाला।

कैतव–पु० (सं०) धोखा, छल; ठगी; जुआ; पण; लहसुनिया; धतूरा। **–प्रयोग**–पु० ठगी; धोखेबाजी।

कैतवक–पु० (सं०) जुएकी धोखेबाजी।

कैतवापह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नुति अलंकारका एक भेद जिसमें यथार्थ बातका निषेध प्रत्यक्ष रूपसे न किया जाकर मिस, व्याज आदि शब्दों द्वारा किया जाता है।

कैतुक–वि० केतु संबंधी; केतुयुक्त।

क़ैतून–पु० (तु०) जरी और रेशमकी बटी हुई डोरी जिसे कपड़ेके हाशियेपर लगाते हैं।

कैथ–पु० एक वृक्ष या उसका फल, कपित्थ।

कैथा–पु० कैथ।

कैथी–स्त्री० नागरी लिपिका एक भेद जिसमें कुछ अक्षर कम हैं और उनपर शिरोरेखा नहीं होती; छोटी जातिका कैथ।

कैथेटोमीटर्–पु० (कैथेटोमीटर) एक (ऊर्ध्वतामापी) यंत्र जिसमें सीधे खड़े सेमीमें अशांकित स्तम्भपर क्षैतिज तलमें एक दूरबीन लगी रहती है। इस दूरबीनको ऊपर नीचे खिसकाकर दो विन्दुओंके बीचकी ऊर्ध्व दूरीकी नाप यथार्थतापूर्वक की जा सकती है।

कैथोड–पु० (कैथोड) विद्युत अपघटनी सेलके अंदरकी वह प्लेट जो बैटरीके ऋणसिरेसे तार द्वारा जुड़ी रहती है। बैटरीसे इलेक्ट्रान कैथोडपर पहुँचते हैं तो इसपर ऋणआवेश आ जाता है; विद्युत विसर्जनके लिए प्रयुक्त; उक्त निर्वातनलीमें लगी धातुकी वह प्लेट जो बाहरके उच्च वोल्टता स्रोतके ऋणसिरेसे जुड़ी रहती है। **–किरण**–स्त्री० (कैथोड-रे) निर्वातनलीमें विद्युत विसर्जनके समय कैथोडसे उत्सर्जित होनेवाले इलेक्ट्रानोंका प्रवाह।

क़ैद–स्त्री० (अ०) बंधन; कारावास; शर्त, प्रतिबंध। **–ख़ाना**–पु० बंदीगृह, जेलखाना। **–तनहाई**–स्त्री० कैदीको अकेला बंद रखने, कालकोठरीकी सजा। **–महज़**–स्त्री० सादी कैद। **–सख्त**–स्त्री० कड़ी कैद।

कैदक–स्त्री० कागज रखनेका एक तरहका कागजका बंद।

कैदार–वि० (सं०) क्यारीमें उपजा हुआ। पु० धान; क्षेत्र-समूह, पद्मकाष्ठ।

क़ैदी–वि०, पु० (फा०) बँधुआ; बंदी, कैदकी सजा भोगनेवाला।

कैदु*–अ० कदाचित्।

कैधों*–अ० या, वा, किधौं।

कैन्नर–वि० (सं०) किन्नर संबंधी।

कैफ़–पु० (अ०) नशा, मस्ती; मादक वस्तु; लुत्फ, आनंद; हाल।

कैफ़ियत, कैफ़ीयत–स्त्री० (अ०) हाल, समाचार; विवरण; लुत्फ, आनंद। **–का ख़ाना**–वह खाना जिसमें विवरण-लेखक अपनी राय, घटनाविशेषका कारण इत्यादि लिखता है। मु० **–तलब करना**–जवाब माँगना; कारण आदिका विवरण पूछना।

कैफ़ी–वि० (अ०) नशेमें चूर, मस्त। पु० शराबी।

कैबर*–स्त्री० तीरकी गाँसी।

कैबा*–अ० कई बार–'कैबा आवत यह गली रहे चलाय चलै न'–वि०।

कैवार*–पु० किवाड़।

कैबिनेट–पु० (अं०) छोटा, खास लोगोंसे मिलनेका कमरा; मंत्रणागृह; मंत्रिमंडल; खानेदार अलमारी। **–फोटोग्राफ**–पु० फोटोका वह आकार जो कार्ड साइजका दूना होता है।

कैमा–पु० कदंबकी जातिका एक वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत चिकनी और हलके पीले रंगकी होती है; * कदंब।

कैमेरा–पु० (अं०) फोटो खींचनेका यंत्र।

कैया†–पु० एक औजार जिससे टीन आदि राँगेसे जोड़ते हैं।

कैरट–पु० (अं०) ३॥ ग्रेनका वजन, करात; सोनेकी शुद्धताका एक मान (खालिस सोना २४ कैरटका होता है)।

कैरव–पु० (सं०) कुमुद, कुईं; श्वेत कमल; शत्रु; ठग; जुआरी। **–बंधु**–पु० चंद्रमा।

कैरविणी–स्त्री० (सं०) कुमुदिनी; कुमुद-पुष्पोंका समूह; कुमुदयुक्त जलाशय।

कैरवी–स्त्री० (सं०) चाँदनी।

कैरवी(विन्)–पु० (सं०) चंद्रमा।

कैरा–पु० भूरा रंग; वह सफेदी जिसके भीतर सुर्खीकी झलक हो; ऐसे रंगका बैल। वि० भूरा, कंजा; भूरी आँखोंवाला।

कैराटक–पु० (सं०) एक तरहका वनस्पतिजन्य विष।

कैरात–वि० (सं०) किरात जाति या देशसे संबंध रखनेवाला। पु० किरातोंका राजा; बलवान् पुरुष; चिरायता; शबर चंदन; एक राग।

कैरातक, कैरातिक–वि० (सं०) किरात-संबंधी।

कैराल–पु० (सं०) विडंग नामक ओषधि।

कैरी–स्त्री० आमका छोटा फल, टिकोरा। वि० स्त्री० भूरे रंगका।

कैलंडर, कैलेंडर–पु० (अं०) अंग्रेजी तिथिपत्र; सूची।

कैल–पु० (सं०) क्रीड़ा; मनोविनोद।

कैलास–पु० (सं०) हिमालयकी एक चोटी जो पुराणोंमें शिव और कुबेरका वासस्थान मानी गयी है; * स्वर्ग। **–नाथ,–पति**–पु० शिव; कुबेर। **–निकेतन**–पु० शिव। **–वास**–पु० मृत्यु।

कैलासी–पु० कैलासपर रहनेवाले शिवजी। वि० कैलास संबंधी।

कैवर्त–पु० (सं०) केवट, निषाद। **–मुस्त,–मुस्तक**–पु० केवटीमोथा।

कैवर्तक–पु० (सं०) केवट।

कैवर्तिका–स्त्री० (सं०) एक लता जो दवाके काम आती है।

कैवल–पु० (सं०) दे० 'कैराल'।

कैवल्य–पु० (सं०) आत्माका असंग, अलिप्त भाव; स्वरूपमें स्थिति, मोक्ष; एक उपनिषद्। **–ज्ञान**–पु० संशय-विपर्यय-रहित ज्ञान।

कैवा*–अ० कई बार।

कैश–पु० (अं०) रुपया, सिक्का; नकद रुपया। **–बुक**–पु० रोकड़-वही। **–मेमो**–पु० मालका नकद दाम पानेकी रसीद, नकदी पुरजा।

कैशिक–वि० (सं०) केश जैसा; केश जैसा सूक्ष्म। पु० प्रणय; शृंगार रस; नृत्यका एक भाव; एक राग; केश-गुच्छ।

कैशिकी–स्त्री० (सं०) नाटककी चार वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें नृत्य, गीतादिका विशेष वर्णन हो; दुर्गा।

कैशोर–पु० (सं०) किशोरावस्था।

क़ैसर–पु० (अ०) सम्राट्, शाहंशाह; जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस आदिके पूर्व सम्राटोंकी उपाधि; प्रथम महायुद्धके समय जर्मनीका सम्राट्। **–(रे)हिंद**–पु० भारत-सम्राट् (भारत-सम्राट्के रूपमें ब्रिटिश नरेशकी उपाधि)। **–० पदक**–पु० एक पदक जो हिंदकी ब्रिटिश सरकारकी ओरसे सम्मानार्थ दिया जाता था।

क़ैसरा–स्त्री० (अ०) सम्राज्ञी।

कैसा–वि० किस तरहका। अ० किस तरह; कितना।

कैसिक*–अ० किस प्रकार।

कैसे–अ० किस प्रकार।

कैसो*–वि० कैसा; के सदृश, कासा, जैसा।

कोंइछा†–पु० स्त्रीके अंचलका वह हिस्सा जिसमें कुछ बाँधकर छोर कमरमें खोंस लिये जाते हैं।

कोंईं*–स्त्री दे० 'कुईं'।

कोंकण–पु० (सं०) सह्याद्रिके पच्छिमका प्रदेश; एक हथियार। **–स्थ**–वि० कोंकणमें रहनेवाला। पु० महाराष्ट्र ब्राह्मणोंकी एक जाति।

कोंकणा–स्त्री० (सं०) परशुरामकी माता, रेणुका। **–सुत**–पु० परशुराम।

कोंकणी–स्त्री० कोकणकी भाषा।

कोंचना–स० क्रि० दे० 'कोचना'।

कोंचफली–स्त्री० केवाँच।

कोंचा–पु० एक जलपक्षी; बालू निकालनेका भड़भूजेका कलछा; दे० 'खोंचा'; † लिट्टीकी तरह मोटी रोटी।

कोंछ–पु० आँचलका कोना। मु० **–भरना**–सौभाग्यवती स्त्रीके आँचलमें (बिदा देते समय) चावल-हल्दी आदि डालना।

कोंछना, कोंछियाना–स० क्रि० कोंछ भरकर आँचलके छोरोंको कमरमें पीछेकी ओर खोंस लेना; फुबती चुनना।

कोंछी†–साड़ीकी चुन्नटवाला हिस्सा जो नाभिके ऊपर खोंसा जाता

है, नीवी।

कोँढ़ा–पु० लोहे, पीतल आदिका छल्ला जिसमें जंजीर या कोई चीज अटकायी जाय।

कोँढ़ी–स्त्री० छोटा कोंढ़ा; मुँहबँधी कली।

कोँथना–अ० क्रि० दे० 'कूँथना'।

कोँप*–स्त्री० दे० 'कोँपल'।

कोँपना†–अ० क्रि० कोंपल निकलना।

कोँपर*–पु० डालका पका आम; कोपर, परात।

कोँपल–स्त्री० नयी कोमल पत्ती, कल्ला।

कोँवर, कोँवरा*–वि० कोमल, मुलायम।

कोँहड़ा†–पु० दे० 'कुम्हड़ा'।

कोँहड़ौरी†–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।

कोँहरा†–पु० कुम्हार; चने या मटरकी घुघरी।

कोँहार†–पु० दे० 'कुम्हार'।

को–प्र० कर्म और संप्रदानकी विभक्ति; व्रजभाषामें संबंधकी भी। * सर्व० कौन।

कोआ†–पु० दे० 'कोया'।

कोइड़ार, कोइरार†–पु० साग, तरकारी बोनेका खेत; बस्तीके बिलकुल पासका खेत।

कोइदा, कोइना†–पु० महुएका फल।

कोइरी–पु० एक खेतिहर जाति, काछी।

कोइल,† **कोइलिया***–स्त्री० दे० 'कोयल'।

कोइला†–पु० दे० 'कोयल'।

कोइलारी–स्त्री० पशुओंके गलेका रस्सीका फंदा।

कोइली–स्त्री० काले दागवाला कच्चा आम; आमकी गुठली; कोयल।

कोई–सर्व० अज्ञात, अनिर्दिष्ट वस्तु या व्यक्ति; चाहे जो एक। अ० लगभग। **–न कोई**–सर्व० चाहे जो एक; हर एक।

कोउ*–सर्व० दे० 'कोई'।

कोउक*–सर्व० कुछ लोग; कोई एक।

कोऊ*–सर्व० दे० 'कोई'।

कोक–पु० (फा०) कच्ची सिलाई, लंगर; (सं०) चकवा, चक्रवाक; कोयल; मेढक; कामशास्त्रके एक प्रसिद्ध आचार्य (कोकदेव); विष्णु; जंगली खजूर; भेड़िया; छिपकली। **–कला**–स्त्री० कामविद्या, कोकशास्त्र। **–देव**–पु० कबूतर; कामशास्त्रके एक आचार्य। **–नद**–पु० लाल कमल; लाल कुईं। **–० च्छवि**––वि० लाल। पु० लाल रंग। **–बंधु**–पु० सूर्य। **–शास्त्र**–पु० कामशास्त्र।

कोक–पु० (अं०) कार्बनका अपरूप जो नरम कोयलेके भंजक आसवनसे प्राप्त किया जाता है। कोयलेमें से जब सभी वाष्पशील पदार्थ बाहर निकल जाते हैं तब कोक बच रहता है।

कोकई–वि० गुलाबीकी झलक लिये हुए नीला। पु० ऐसा रंग। स्त्री० छोटी कँटिया।

कोकटी–स्त्री० दे० 'कुकटी'; लालिमायुक्त हलका पीला रंग।

कोकन–पु० आसाम और पूर्वी बंगालमें होनेवाला एक पेड़।

कोकना–स० क्रि० कच्ची सिलाई करना, लंगर डालना।

कोकनी–पु० एक तरहका रंग; एक तरहका तीतर।

कोकव–पु० (सं०) एक तरहका राग।

कोकहर–पु० चंद्रमा।

कोका–पु० दक्षिण अमेरिकामें होनेवाला एक झाड़ जिसकी पत्तियाँ उत्तेजनके लिए चबायी जाती हैं; एक ही धायका दूध पीनेवाले बच्चे, दूध भाई-बहिन; एक कबूतर; †हौवा। स्त्री० नीली कुईं। **–बेरी,–बेली**–स्त्री० नीली कुमुदिनी।

कोकामुख–पु० (सं०) महाभारतमें उल्लिखित एक तीर्थ।

कोकाह–पु० (सं०) सफेद घोड़ा।

कोकिल–पु० (सं०) कोयल; अंगारा; एक छंद; एक तरहका चूहा; एक तरहका साँप; एक जहरीला कीड़ा। **–कंठी**–वि०, स्त्री० कोयलकेसे गले, आवाजवाली। **–नयन**–पु० दे० 'कोकिलाक्ष'। **–रव**–पु० तालका एक भेद।

कोकिला–स्त्री० (सं०) कोयल।

कोकिलाक्ष–पु० (सं०) तालमखाना।

कोकिलावास, कोकिलोत्सव–पु० (सं०) आमका पेड़।

कोकिलेष्टा–स्त्री० (सं०) बड़ा जामुन।

कोकी–स्त्री० (सं०) मादा चकवा।

कोकीन–पु० दे० 'कोकेन'। **–ची,–बाज़**–पु० कोकीन खानेका आदी, कोकीन खानेवाला।

कोकुआ–पु० एक कँटीला पौधा, समष्ठिल।

कोकेन–पु० (अं०) कोकाकी पत्तियोंसे निर्मित द्रव्य जो लगानेसे कुछ देरके लिए अंगको सुन्न कर देता है और नशेके तौरपर पानमें खाया जाता है।

कोको–स्त्री० कौआ (बहकानेके लिए बच्चोंसे कहा जाता है 'कोको ले गयी')। पु० (अं०) उष्ण कटिबंधके देशोंमें पाया जानेवाला एक तरहका ताड़; उसके फलका चूर; उसके फलसे बनाया जानेवाला चाय जैसा पेय।

कोकोजेम–पु० साफ किया हुआ नारियलका तेल जो घीकी तरह काममें लाया जाता है।

कोख–स्त्री० पेटका दोनों पसलियोंके नीचेका भाग, कुक्षि; पेट; गर्भाशय। **–जली**–वि०, स्त्री० जिसके बच्चे न जीते हों (ऐसी स्त्री)। मु० **–उजड़ना**–बच्चेका मर जाना। **–खुलना**–बच्चा होना, बंध्यात्व दूर होना। **–बंद होना,–मारी जाना**–गर्भ न रहना; संतान न होना।

कोगी–पु० लोमड़ीकी शकलका एक जंगली जानवर, सोनहा।

कोच–वि० (सं०) संकुचित करनेवाला। पु० संकोच; एक संकर जाति; (अं०) एक तरहकी बग्घी–घोड़ागाड़ी; गद्देदार पलंग, कुरसी या बेंच। **–बकस,–बक्स**–पु० घोड़ागाड़ीमें हाँकनेवालेके बैठनेकी जगह। **–वान**–पु० घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचना–स० क्रि० कोई नुकीली चीज चुभोना; तंग करना। पु० पैना।

कोचनी–स्त्री० कोचनेका साधन–औजार; छोटा पैना; तलवारके म्यानका चमड़ा सीनेकी सुई।

कोचा–पु० नोकदार हथियारका घाव जो पार न हुआ हो; चुटीली बात, व्यंग्य (मारना)।

कोचिंडा–पु० जंगली प्याज।

कोचिला†–पु० दे० 'कुचला'।

कोचीन–पु० दक्षिण भारतके केरल राज्यका एक प्रदेश।

कोचीनचीन–पु० हिंदचीनका एक प्रदेश।

कोजागर–पु० (सं०) शरत्पूर्णिमाको होनेवाला एक त्योहार; शरत्पूर्णिमा।

कोट–पु० (सं०) गढ़, दुर्ग; परकोटा; राजप्रासाद; कुटिलता; दाढ़ी। **–चक्र**–पु० एक तंत्रोक्त चक्र जिससे (युद्धके पहले) दुर्गका शुभाशुभ परिणाम जाना जा सकता है। **––पाल**–पु० दुर्गरक्षक, किलेदार। **–वार***–पु० दुर्गरक्षक; शांतिरक्षक, चौकीदार।

कोट*–वि० दे० 'करोड़'। पु० यूथ, समूह; दे० 'करोड़'; (अं०) अंग्रेजी ढंगका एक पहनावा; रंग चढानेकी क्रिया या स्तर 'एक कोट नीले रंगका देकर...'। **–पतलून**–पु० यूरोपीय पहनावा, साहबी पोशाक।

कोटक–पु० (सं०) झोपड़े बनानेवाला, बढ़ई; एक जाति।

कोटर–पु० (सं०) पेड़के तनेका खोखला भाग; किलेके आसपासका जंगल जो उसके रक्षार्थ लगाया गया हो।

कोटरा–स्त्री० बाणासुरकी माताका नाम।

कोटरी, कोटवी–स्त्री० (सं०) नंगी स्त्री; दुर्गा।

कोटा–पु० (अं०) किसीको देने या किसीसे लेनेके लिए निर्धारित अंश।

कोटि–स्त्री० (सं०) धनुष्की नोक, सिरा; किसी चीजका सिरा; किसी हथियारकी नोक; दर्जा, वर्ग; वादका पूर्वपक्ष, परमोत्कर्ष; आखिरी दर्जा; करोड़की संख्या; अर्द्ध चंद्रका सिरा; राशिचक्रका तीसरा अंश; ९० अंशके चापके दो समान भागोंमेंसे एक। वि० सौ लाख, करोड़। **–च्युत**–वि० (डिग्रेडेड) जो अपनी कोटि, श्रेणी या पदसे नीचेकी कोटि, श्रेणी या पदपर भेज दिया गया हो। **–ज्या**–स्त्री० ग्रहोंकी स्पष्टताके लिए बनाये गये एक विशेष प्रकारके

क्षेत्रका एक अंश । **–ध्वज**–पु० करोड़पती । **–पात्र**–पु० पतवार । **–पाल**–पु० दुर्गरक्षक । **–फली(लिन्)**–पु० गोदावरी नदीके सागरसंगमके पासका एक तीर्थ । **–बंध**–पु० (ग्रेडेशन) कोटि या दरजेके अनुसार रखना, कोटियोंमें विभक्त करना; दे० 'क्रम-स्थापन', श्रेणीकरण । **–वेधी(धिन्)**–वि० कठिन काम करनेवाला । **–श्री**–स्त्री० दुर्गा ।

कोटिक–वि० (सं०) चरमोत्कर्ष, पराकाष्ठाको प्राप्त; करोड़; अगणित, अत्यधिक । पु० एक तरहका मेढक; इंद्रगोप ।

कोटिर–पु० (सं०) सींगके रूपमें बँधी हुई जटा; इंद्र; नेवला; बीरबहूटी ।

कोटिशः(शस्)–अ० (सं०) करोड़ों बार या तरहसे ।

कोटी–स्त्री० (सं०) दे० 'कोटि' ।

कोटीर–पु० (सं०) किरीट; जटा ।

कोटीश्वर, कोट्यधीश–पु० (सं०) करोड़पती ।

कोट्ट–पु० (सं०) कोट, किला । **–पाल**–पु० दुर्गरक्षक, किलेदार ।

कोट्टवी–स्त्री० (सं०) नंगी स्त्री; दुर्गा; बाणासुरकी माता ।

कोट्टार–पु० (सं०) किलेबंदीवाला नगर; किला; कुआँ; तालाबकी सीढ़ियाँ; लंपट ।

कोठ–पु० (सं०) एक तरहका कोढ़ । †वि० कुंठित (दाँत) ।

कोठर–पु० (सं०) अंकोल । **–पुष्पी**–स्त्री० वृद्धदारक नामक वृक्ष ।

कोठरिया, कोठरी–स्त्री० छोटा कमरा ।

कोठवाली–स्त्री० दे० 'कोठीवाली' ।

कोठा–पु० बड़ा कमरा, अटारी; बालाखाना; भंडार, कोठार; पेट; मेदा; खाना, घर (चौसर, शतरंज आदिका); मस्तिष्कका वृत्ति-विशेषका अधिष्ठानरूप विभाग । **–कुचाल**–पु० हाथियोंका एक उदररोग । **–दार**–पु० कोठारी, भंडारी । **–(ठे)वाली**–स्त्री० वेश्या । मु०**–बिगड़ना**–पाचन बिगड़ना ।**–साफ होना**–पेटका साफ होना; खुलकर दस्त आना । **–(ठे)पर बैठना**–वेश्यावृत्ति करना । **–(ठों) में चित्त जाना या भरमना**–अनेक प्रकारकी आशंकाएँ होना ।

कोठार–पु० भंडार, बखार ।

कोठारी–पु० भंडारी ।

कोठिला–पु० दे० 'कुठिला' ।

कोठी–स्त्री० पक्का और काफी ऊँचा-बड़ा मकान, हवेली, अमीर या रईसका आवास; वह मकान जहाँ लेन-देन या बड़े पैमानेपर कोई कारबार हो; थोक बिक्रीकी दुकान; कोठा; बखार; बंदूककी वह जगह जहाँ बारूद रहती है; एक जड़से निकले हुए बाँसोंका समूह; पुलके खंभे या कुएँकी दीवारकी पानीके अंदरकी जोड़ाई जो जमवटके ऊपर होती है; पत्थरके कोल्हूमें जाठके आसपासका स्थान जिसमें ईखकी गँड़ेरियाँ भरी जाती हैं । **–वाल**–पु० देन-लेन करनेवाला महाजन । **–वाली**–स्त्री० देन-लेनका काम; मुड़िया अक्षर । मु०**–गलाना**–जमवटके ऊपर होनेवाली जोड़ाईको नीचे धँसाना । **–चलना**–देन-लेनका कारबार होना ।

कोड–पु० (अं०) नियम-संग्रह; संकेत-लिपि; संकेत-प्रणाली ।

कोड़ना–स० क्रि० दे० 'गोड़ना' ।

कोड़ा–पु० चाबुक; सोंटा; लगनेवाली बात; कुश्तीका एक पेंच ।

कोड़ाई–स्त्री० कोड़नेका काम; कोड़नेकी मजदूरी ।

कोड़ी–स्त्री० बीसका समूह, बीसी । वि० बीस ।

कोढ़–पु० एक चर्म-रक्त-रोग जिसके एक उग्र भेदमें हाथ-पाँवकी उँगलियाँ गल-गलकर गिर जाती हैं; घृणित और विनाशकारी बुराई (ला०) । मु०**–की खाज,–में खाज**–कोढ़में खुजली होना; संकटपर संकट आना । **–चूना,–टपकना**–कोढ़के घावसे पीब बहना ।

कोढ़ा†–पु० खेतका वह स्थान जहाँ खादके लिए पशुओंको रखते हैं ।

कोढ़िया–पु० तंबाकूके पत्तोंका एक रोग ।

कोढ़ी–वि० कुष्ट रोगसे ग्रस्त । पु० कोढ़ रोगसे पीड़ित; काहिल, निकम्मा आदमी ।

कोण–पु० (सं०) कोना; एक-दूसरीसे मिलने, एक-दूसरीको काटनेवाली दो रेखाओंके बीचका झुकाव (एंगिल); अंतर्दिशा; सारंगीकी कमानी; तलवार आदिकी धार; डंडा, सोंटा; ढोल, नगाड़ा बजानेकी चोब; शनि ग्रह; मंगल ग्रह । **–कुण**–पु० खटमल । **–वादी(दिन्)**–पु० शिव ।

कोणप–पु० (सं०) दे० 'कौणप' ।

कोणाघात–पु० (सं०) दस हजार ढोलों और एक लाख हुडुकोंके एक साथ बजनेकी आवाज; अनेक वाद्योंकी तुमुल ध्वनि ।

कोणार्क–पु० (सं०) उड़ीसाका एक तीर्थ जहाँ सूर्यका भव्य मंदिर है ।

कोणि–वि० (सं०) टेढ़े हाथवाला ।

कोत*–स्त्री० बल; 'कोद', दिशा, तरफ ।

कोतरी†–स्त्री० एक छोटी मछली ।

कोतल–पु० (तु०) किसी राजा-रईसकी खास सवारीका घोड़ा; जुलूस आदिके साथ सजा-सजाया खाली चलनेवाला घोड़ा; वह घोड़ा जो खास मौकोंपर ही काममें लाया जाय । वि० जिसे कोई काम न हो, खाली ।

कोतल गारद–पु० छावनीका वह स्थान जहाँ हर समय गारद रहती है ।

कोतवाल–पु० नगरका पुलिस अफसर जिसके मातहत वहाँके सब थानेदार और थाने होते हैं; वह व्यक्ति जो पंडितोंकी सभा पंचायत आदिके लिए उनका परिचय देता और निमंत्रण-पत्र बाँटता है ।

कोतवाली–स्त्री० कोतवालका पद; कोतवालका दफ्तर; नगरका केंद्रीय थाना ।

कोतह–वि० (फा०) थोड़ा; छोटा; तंग । **–अंदेश**–वि० अदूरदर्शी, जो आगेकी बात न सोच सके, अल्पबुद्धि । **–क़द**–वि० नाटा, ठिंगना । **–गर्दन**–वि० जिसकी गर्दन तंग, कम ऊँची हो । **–नज़र**–वि० अदूरदर्शी ।

कोता*–वि० दे० 'कोताह' ।

कोताह–वि० (फा०) थोड़ा; छोटा; तंग । **–हिम्मत**–वि० छोटी हिम्मतवाला, पस्त-हिम्मत ।

कोताही–स्त्री० कमी, त्रुटि; कोर-कसर ।

कोति*–स्त्री० दिशा, ओर, तरफ ।

कोथ–पु० (सं०) आँखका एक रोग; मंथन; सड़ान । वि० पीड़ित; मथित ।

कोथला–पु० बड़ा थैला; पेट ।

कोथली–स्त्री० रुपये रखनेकी थैली जो कमरमें बाँधी जाती है; * कोठरी ।

कोथी–स्त्री० म्यानकी सामी ।

कोदंड–पु० (सं०) धनुष; धनु राशि; भौंह ।

कोदंडी(डिन्)–पु० (सं०) शिव ।

कोद*–स्त्री० दिशा, ओर–'एक कोद रघुनाथ उदार । भरत दूसरी कोद विचार'–रामचं०; कोना ।

कोदई†–स्त्री० 'कोदों' ।

कोदरा–पु० दे० 'कोदों' ।

कोदव–पु० दे० 'कोदों' ।

कोदवला–स्त्री० कोदोंके पौधे जैसी एक घास ।

कोदार–पु० (सं०) एक अन्न ।

कोदों, कोदो–पु० साँवाकी जातिका एक मोटा अन्न । मु०**–दलना**–अधिक श्रमवाला निकृष्ट काम करना । **–देकर पढ़ना**–सेंतमें पढ़ना, फलतः कुछ सीख न पाना, मूर्ख रह जाना ।

कोद्रव–पु० (सं०) कोदो ।

कोध*–स्त्री० दे० 'कोद'–'· ·दावा लग्यो चहुँ कोध'–सूर ।

कोन–पु० कोना; खेतका कोना जो जुताईमें छूट जाता है । मु०**–मारना**–जोतनेमें छूटे हुए कोनोंको गोड़ना ।

कोनसिला–पु० कोनियाकी छाजनमें धरनसे दीवारके कोनेतक लगायी जानेवाली लकड़ी ।

कोना–पु० कोण, गोशा; खूँट; कमरे आदिका वह स्थान जहाँ दो दीवारें मिलती हों; वह स्थान जहाँ जल्दी किसीकी निगाह न जाय; चहारुम (दलाल) । **–अँतरा**–पु० घरका कोना और अँतरा । **–(ने)दंड**–पु० दंडका एक प्रकार । मु०**–झाँकना**–भय या लज्जासे मुँह चुराना । **–दबना**–दे० 'कोर दबना' । **–(ने) में बैठ रहना**–एकांतमें छिप कर बैठ रहना ।

कोनालक–पु० (सं०) एक जलपक्षी ।

कोनिया–स्त्री० छाजनका एक प्रकार; घरके कोनेमें दीवारसे लगाकर बाँस,काठकी पटरी आदिसे बनाया हुआ छोटा तिकोना मचान; पानीके नलमें मोड़पर लगाया जानेवाला कुहनीके ढंगका टुकड़ा।

कोप–पु० (सं०) क्रोध, रोष; पित्तादि दोष या मलका बिगड़ना। **–पद**–पु० क्रोधका कारण। **–भवन**–पु० वह मकान या कमरा जिसमें कोई रूठी हुई स्त्री या नायिका जाकर बैठ रहे। **–लता**–स्त्री० कर्णस्फोटा लता।

कोपक–पु० (सं०) वह लाभ जो मंत्रियोंके उपदेश या राजद्रोही मंत्रियोंके अनादरसे हो।

कोपन–पु० (सं०) कोपना, कुपित होना। वि० कुपित; कुपित करनेवाला; शरीरमें विकार उत्पन्न करनेवाला।

कोपनक–पु० (सं०) चोवा। वि० क्रुद्ध।

कोपना*–अ० क्रि० कोप करना, क्रुद्ध होना। स्त्री० (सं०) क्रुद्ध स्त्री। वि०, स्त्री० कोप करनेवाली।

कोपयिष्णु–वि० (सं०) कोप करनेवाला।

कोपर†–पु० टपका आम; बड़े थाल जैसा गहरा बरतन जिसमें उठानेके लिए प्रायः दोनों ओर कुंडे लगे रहते हैं।

कोपल–स्त्री० दे० 'कोँपल'।

कोपली–वि० आमके नये पत्तेके रंगका, बैंगनी। पु० बैंगनी रंग।

कोपित–वि० (सं०) कोपयुक्त, क्रुद्ध।

कोपी*–वि० कोई भी (कोऽपि)।

कोपी(पिन्)–वि० (सं०) कोप करनेवाला; कोपकारक। पु० जलपारावत; संकीर्ण रागका एक भेद।

कोपीन–पु० दे० 'कौपीन'।

कोप्यापणयात्रा–स्त्री० (सं०) नकली सिक्कोंका चलना (कौ०)।

कोफ़्त–स्त्री० (फा०) दुःख, रंज, सदमा; परेशानी; लोहेपर सोने या चाँदीका जड़ाव। **–गर**–पु० लोहेकी चीजों-(तलवार आदि) पर चाँदी-सोनेकी पच्चीकारी करनेवाला। **–गरी**–स्त्री० कोफ्तगरका धंधा।

कोफ़्ता–वि० (फा०) जिसके दिलको चोट, सदमा पहुँचा हो। पु० कटा हुआ मांस; कुटे हुए मांसका कवाब।

कोबा–पु० (फा०) मुँगरी; चमड़ा कूटनेका औजार।

कोबिद–वि० दे० 'कोविद'।

कोबिदार–पु० दे० 'कोविदार'।

कोबी–स्त्री० गोभी।

कोमल–वि० (सं०) नरम, मुलायम; सुकुमार; अपरिपक्व; मधुर; मनोहर; दयार्द्र। पु० गानके तीन प्रकारके स्वरोंमेंसे एक; जल; गीली मिट्टी। **–चित्त**–वि० नरम दिलवाला, दयार्द्रचित्त।

कोमलक–पु० (सं०) मृणाल।

कोमलता–स्त्री० (सं०) नरमी; सुकुमारता, मृदुता।

कोमला–स्त्री० (सं०) एक वृत्ति या वर्णयोजना जिसमें य, र, ल, व, स, ह आदि कोमल अक्षरों तथा छोटे समासोंका प्रयोग किया जाय (सा०); खिरनी।

कोमलाई*–स्त्री० कोमलता।

कोमासिका–स्त्री० (सं०) फलका आरंभिक रूप, बतिया।

कोय*–सर्व० कोई; कौन।

कोयर†–पु० सब्जी; हरा चारा।

कोयल–स्त्री० काले रंगकी एक चिड़िया जो अपने बोलकी मिठासके लिए प्रसिद्ध है, कोकिल; अपराजिता लता।

कोयला–पु० पूरी तरह न जली हुई लकड़ीका बुझा हुआ अवशेष; कोयलेकी शकलका एक खनिज पदार्थ जो जलानेके काम आता है। **मु०–(ले)की दलालीमें हाथ काला**–बुरे कामसे बदनामी ही हाथ लगती है। **–(लों)पर मुहर**–छोटे, मामूली खर्चोंमें ही अधिक काट-छाँट, किफायतशारी होना; तुच्छ वस्तुओंकी बहुमूल्य वस्तुओंकी तरह रक्षा होना।

कोयष्टि, कोयष्टिक–पु० (सं०) जलकुक्कुभ पक्षी।

कोया–पु० आँखका डेला; आँखका कोना; रेशमके कीड़ेका घर या घोंसला; पके कटहलका बीजकोष।

कोरंजा†–पु० मजदूरी या सीधेके रूपमें दिया जानेवाला खड़ा अन्न।

कोर–पु० (सं०) वह संधि या जोड़ जिसपरसे अंग मोड़ा जा सके; कली। **–दूष,–दूषक**–पु० कोदो।

कोर*–वि० करोड़–'रुकत न खंजन नयन ये जतन कीजियत कोर'–रतनह०। स्त्री० किनारा, हाशिया; कोना; बैर, बुग्ज; हथियारकी धार; पंक्ति। **–कसर**–स्त्री० कमी, त्रुटि। **–दार**–वि० किनारदार; नुकीला। **मु०–दबना**–दबावमें होना।

कोर–पु० (अं०) सेनाका विभाग; पलटन; कार्यविशेषके लिए संघटित सैनिकदल। वि० (फा०) अंधा। **–बख़्त**–वि० वि० अभागा, बदनसीब। **–बातिन**–वि० अज्ञ, मूर्ख।

कोरक–पु० (सं०) कली; फूलकी कटोरी; मृणाल; शीतलचीनी; एक गंधद्रव्य।

कोरट–पु० दे० 'कोर्ट आव् वार्ड्स'। **–मु० छूटना**–जायदादका 'कोर्ट आव् वार्ड्स'के प्रबंधसे निकलना। **–बैठना,–होना**–किसी जायदादका 'कोर्ट आव् वार्ड्स'के प्रबंधमें लिया जाना।

कोरड़*–वि० कोरा; जो अनवाँसा न गया हो।

कोरना–स० क्रि० पत्थर या काठपर खुदाई करना, खोद-खुरचकर चित्रादि बनाना; कोर निकालना।

कोरनी–स्त्री० पत्थरपर खुदाईका काम या उसे करनेका औजार।

कोरम–पु० (अं०) किसी सभा-समितिके सदस्योंकी वह नियत संख्या जिससे कमकी उपस्थितिमें होनेवाली बैठक या कार्य विधिसंगत नहीं मानी जाती, गणपूर्ति।

क़ोरमा–पु० मसाला देकर भूना हुआ गोश्त जिसमें शोरबा न हो। **–पुलाव**–पु० बढ़िया स्वादिष्ठ भोजन, तर माल।

कोरवा†–पु० कोरा, गोद।

कोरहन–†पु० एक प्रकारका धान।

कोरा–वि० नया, न बरता हुआ; जो पछाड़ा न गया हो, माँड़ीदार (कपड़ा); जो धुला न हो; जिसपर पानी न पड़ा हो (मिट्टीका बरतन); सादा, अलिखित; रहित, वंचित; अपढ़, मूर्ख, अनभिज्ञ; खाली, केवल। † पु० गोद। **–उस्तरा,–छुरा**–पु० वह छुरा जो सान धरनेके बाद बरता न गया हो। **–जवाब**–पु० साफ इनकार। **–बरतन**–पु० मिट्टीका बरतन जिसमें पानी न पड़ा हो।

कोराहर*–पु० कोलाहल, शोर।

कोरि*–वि० करोड़।

कोरित–वि० (सं०) कलियाया हुआ; अंकुरित; चूर किया हुआ।

कोरिया*–पु० एक जंगली जाति। स्त्री० झोपड़ी–'ढूँढ़ि फिरे घर कोउ न बतावै स्वपच कोरिया लों'–सूर।

कोरी–पु० हिंदू जुलाहा। वि० 'कोरा'का स्त्री० रूप।

कोरी–स्त्री० कोड़ी, बीसका समूह।

कोरैया†–स्त्री० दे० 'कुरैया'।

कोर्ट–पु० (अं०) दरबार, राजसभा; अदालत, न्यायालय; न्यायासन; कोर्टपीसके खेलमें जीतका एक प्रकार। **–आव् वार्ड्स**–पु० नाबालिगों, विधवाओं, ऋणग्रस्तों आदिकी संपत्तिका प्रबंध करनेवाला सरकारी महकमा। **–इंस्पेक्टर**–पु० फौजदारी अदालतोंमें पुलिसकी ओरसे मुकदमोंकी पैरवी करनेवाला अफसर। **–पीस**–पु० ताशका एक खेल। **–फ़ीस**–स्त्री० दीवानी और मालके मुकदमोंमें लगनेवाला अदालती रसूम, न्याय-शुल्क। **–मार्शल**–पु० फौजी अफसरोंकी अदालत। –(**मार्शल होना**–फौजी अदालतमें विचार होना।) **–शिप्**–स्त्री० वर या विवाहार्थीका किसी किशोरी या युवतीको विवाहके लिए राजी करनेका प्रयत्न।

कोलंबक–पु० (सं०) तारोंको छोड़कर शेष वीणा।

कोलंबस, क्रिस्टाफर–पु० जिनोआ(इटली)का निवासी प्रसिद्ध नाविक जिसने १४९८ में दक्षिण अमेरिकाका पता लगाया (१४४५–१५०६)।

कोल–पु० (सं०) सूअर; बेड़ा; कूबड़; गोद; अँकवार, आलिंगन; एक तोलेकी तौल; शनि ग्रह; एक जंगली जाति; काली मिर्च; मिर्च; चित्रक; एक बेर। **–कंद**–पु० वाराही कंद। **–कर्कटिका,–कर्कटी**–स्त्री० एक खजूर। **–कुण**–पु० खटमल। **–गिरि**–पु० दक्षिण भारतका एक पर्वत, कोलाचल। **–दल**–पु० एक गंधद्रव्य, नखी। **–पुच्छ**–पु० सफेद चील, कंक पक्षी। **–मूल**–पु०

पिप्पलीमूल । **–वल्ली–**स्त्री० गजपिप्पली । **–शिवी–**स्त्री० एक लता, दधिपुष्पी ।

कोलक–पु० (सं०) काली मिर्च; अखरोट; शीतलचीनी ।

कोलतार–पु० (अं०) अलकतरा ।

कोलना–स० क्रि० लकड़ी या पत्थरको वीचसे काटकर पोला करना; छेद करना, नुकीली चीजसे खोदना–'निन्नीने रोका, मेरा सिर न कोल खाओ'–मृग० ।

कोला–स्त्री० (सं०) पिप्पली; वेरका पेड़ । पु० (अं०) पच्छिमी अफ्रिकामें होनेवाला एक वृक्ष जिसके वीज मसाले और ताकतकी दवाके तौरपर काममें लाये जाते हैं ।

कोलॉयड–पु० (कोलॉयड) विलयनमें पदार्थ जब नन्हे कणोंके रूपमें (साइज़ १ सेमीका लाखवाँ या करोड़वाँ भाग) मौजूद होता है तो यह कोलॉयड कहलाता है । नन्हे छिद्रोंवाली झिल्लीमेंसे कोलॉयड गुज़र नहीं सकता ।

कोलाहल–पु० (सं०) बहुतसे लोगोंके एक साथ वोलनेसे होनेवाला शोर, हंगामा, हल्ला; एक संकर राग ।

कोलि–स्त्री० (सं०) वृक्षविशेष, बदरी, कर्कंधु ।

कोलिया†–स्त्री० तंग रास्ता, कुलिया; वह छोटा खेत जो लंबा और बहुत कम चौड़ा हो ।

कोलियाना†–अ० क्रि० तंग रास्तेसे जाना । पु० कोलियोंके (कोरियों) रहनेका स्थान ।

कोली–पु० कोरी । स्त्री० अँकवार; सँकरी गली; (सं०) दे० 'कोलि' ।

कोलेस्टेरॉल–पु० (अं०) वसा तथा तेलमें पाये जानेवाले विशेष पदार्थ ।

कोलैंदा–पु० महुएका पका फल, कोइना ।

कोल्या–स्त्री० (सं०) पिप्पली ।

कोल्हाड़–पु० ईख पेरने और गुड़ वनानेका स्थान ।

कोल्हुआ–पु० कुश्तीका एक पेंच; † कोल्हू ।

कोल्हू–पु० ईख या तेल पेरनेका यंत्र । **मु०–काटकर मुँगरी बनाना–**छोटे लाभके लिए बड़ी हानि करना । **–का बैल–**कड़ी मेहनत करने, हर वक्त पिसनेवाला; एक ही जगह चक्कर खानेवाला ।

कोवंड*–पु० कोदंड, धनुष (रासो) ।

कोवत*–स्त्री० कूवत, शक्ति ।

कोविद–वि० (सं०) पंडित, विद्वान्; प्रवीण ।

कोविदार–पु० (सं०) कचनारका पेड़ या फूल ।

कोश–पु० (सं०) अंडा; गोलक (नेत्रकोष); पानपात्र; म्यान; धनागार, खजाना; सोना-चाँदी; संचित धन; शब्दकोश, लुगत; खोल, आवरण; रेशमका कोया; कटहल आदिका कोया; वेदांतमें माने हुए जीवात्माके पाँच (अन्नमय, प्राणमय आदि) आवरण; अंडकोश; कली; गुठली; वादल; योनि; मेहन; पादुका; एक तरहकी दिव्य या कठिन परीक्षा; अनाजकी वाल; घावपर बाँधनेकी एक पट्टी । **–कार–**पु० शब्दकोश वनानेवाला; म्यान वनानेवाला; रेशमका कीड़ा । **–कारक,–कीट–**पु० रेशमका कीड़ा । **–कीट-पालन–**पु० (सेरिकल्चर) रेशमके कीड़े पालनेका काम या उद्योग । **–ग्रहण–**पु० दिव्य परीक्षा देना । **–चंचु–**पु० सारस । **–ज–**पु० रेशम, सीप, मोती आदि । **–नायक–**पु० खजांची; कुवेर । **–पति–**पु० कोषाध्यक्ष । **–पान–**पु० अभियुक्तके अपराधी या निरपराध होनेकी जाँचकी एक प्राचीन विधि । **–पाल,–रक्षी (क्षन्)–**पु० दे० 'कोश-नायक' । **–पेटक–**पु० रुपये, रत्नादि रखनेकी पेटी, संदूक । **–फल–**पु० जायफल, तरोई, कद्दू, कुम्हड़ा, तरवूज आदि फल । **–फली–**स्त्री० तरोई, लौकी, ककड़ी आदिकी लता । **–वासी(सिन्)–**पु० कोशमें रहनेवाले–घोंघा, शंख आदि प्राणी । **–वृद्धि–**स्त्री० अंडवृद्धिका रोग; धनवृद्धि । **–शायिका–**स्त्री० म्यानके अंदर रखी हुई कटारी आदि । **–शुद्धि–**स्त्री० दिव्य परीक्षासे होनेवाली शुद्धि । **–संधि–**स्त्री० कोश देकर की जानेवाली संधि । **–स्थ–**पु० कोशवासी प्राणी । वि० कोशमें स्थित ।

कोशक–पु० (सं०) अंडा; अंडकोश ।

कोशल–पु० (सं०) एक राग; दे० 'कोसल' ।

कोशला–स्त्री० (सं०) दे० 'कोसला' ।

कोशलिक–पु० (सं०) घूस, रिश्वत ।

कोशांग–पु० (सं०) एक तरहका सरकंडा ।

कोशांड–पु० (सं०) अंडकोश ।

कोशिका–स्त्री० (सेल) जीवित पौदे या प्राणीकी वह क्षुद्रतम इकाई जो जनन तथा उपापचय क्रिया सम्पन्न कर सके । यह मुख्यतः 'प्रोटोप्लाज़्म' की वनी होती है ।

कोसांबी–स्त्री० (सं०) दे० 'कौशांबी' ।

कोशागार, कोषागार–पु० (सं०) खजाना, रुपया-पैसा रखनेका घर; तोशखाना ।

कोशाणु–पु० (सेल) वे सूक्ष्म सजीव कण जिनके योगसे पिंडका निर्माण होता है ।

कोशातक–पु० (सं०) यजुर्वेदकी कठ शाखा; तरोई; वाल ।

कोशातकी–स्त्री० (सं०) तरोई; चाँदनी रात ।

कोशातकी(किन्)–पु० (सं०) व्यापारी; व्यापार; वाडवाग्नि ।

कोशाधिप, कोशाध्यक्ष, कोषाधिप, कोषाध्यक्ष–पु० (सं०) खजांची ।

कोशाभिसंहरण–पु० (सं०) कोशकी कमी पूरी करना ।

कोशाम्र–पु० (सं०) कोसम नामक वृक्ष ।

कोशिका–स्त्री० (सं०) प्याला, गिलास ।

कोशिश–स्त्री० (फा०) श्रम; यत्न, उद्योग ।

कोशी, कोषी–स्त्री० (सं०) कली; अनाजका टूँड़; चप्पल, स्लिपर ।

कोशी(शिन्), कोषी(षिन्)–वि० (सं०) कोशयुक्त । पु० आमका पेड़ ।

कोष–पु० (सं०) दे० 'कोश' (समास भी) ।

कोषविपत्र–पु० (ट्रेजरी विल्स) दे० 'खजानेकी हुंडियाँ', राजकोषपत्र ।

कोष्ठ–पु० (सं०) घरका भीतरी भाग; कोठा; शरीरके भीतरका आमाशय, मूत्राशय, पित्ताशय जैसा कोई अंग; पेट; बड़ी आँत, मलाशय; शरीरके अंदरका एक चक्र; भंडार, बखार; चहारदीवारी; 'ब्रैकेट' । **–खंड–**पु० (पिजन होल) (किसी आलमारी आदिमें) कबूतरके दरवेकी तरह, बड़े खानेके भीतर बने हुए छोटे-छोटे खाने जिनमें कागज-पत्र रखे जाते हैं । **–पाल–**पु० भंडारी; कोषाध्यक्ष । **–बद्धता–**स्त्री० कब्ज, मलावरोध । **–शुद्धि–**स्त्री० पेटकी सफाई, आँतका मलरहित हो जाना ।

कोष्ठक–पु० (सं०) लकीरोंसे बनाया हुआ खाना; कई खानोंवाला चक्र, सारणी; चहारदीवारी; अंकों, शब्दों आदिको घेरनेमें व्यवहृत चिह्नोंका जोड़ा, 'ब्रैकेट' ।

कोष्ठागार–पु० (सं०) भंडार, कोषागार ।

कोष्ठागारिक–पु० (सं०) कोशवासी प्राणी; भंडारी ।

कोष्ठाग्नि–स्त्री० (सं०) पाचनशक्ति, आग्नेय रस ।

कोष्ठी–स्त्री० (सं०) जन्मपत्री ।

कोष्ण–वि० (सं०) कुनकुना, कदुष्ण । पु० उष्णता ।

कोस–पु० दूरीकी एक नाप जो लगभग दो मीलके बराबर होती है। **मु०–कोसों, काले कोसों–**बहुत दूर ।

कोसना–स० क्रि० निंदा करना; बुरा-भला कहना; गालियोंके रूपमें शाप देना । **मु० पानी पी-पीकर कोसना–**बहुत अधिक कोसना ।

कोसम–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी हल आदि बनाने और बीज दवाके काम आते हैं; दे० 'कौशांबी' ।

कोसल–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद, अवध; कोसलवासी । **–धनी*–**पु० कोशलके राजा, अवधपति, दशरथ 'कुसली रहैं कोसल-धनी'–रामा० ।

कोसला–स्त्री० (सं०) कोसल प्रदेशकी राजधानी, अयोध्या ।

कोसली–स्त्री० एक रागिनी ।

कोसा–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; मिट्टीका कसोरा; बददुआ; एक गाढ़ा अवलेह जो चिकनी सुपारी बनाते समय निकलता है (इससे रद्दी सुपारियोंको रँगा और स्वादिष्ठ बनाया जाता है) । **–काटी–**स्त्री० शापके रूपमें गाली ।

कोसिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा कसोरा ।

कोसिला*–स्त्री० दे० 'कौशल्या' ।

कोसी–स्त्री० एक नदी जो नेपालके पहाड़ोंसे निकलकर गंगामें मिलती है; † दानेके बाद बालमें लगे रहनेवाले दाने ।

कोहँड़ा–पु० दे० 'कुम्हड़ा' ।

कोहँड़ौरी–स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी' ।

कोह*–पु० क्रोध; (फा०) पहाड़, पर्वत । **–आतिश**–पु० ज्वालामुखी पहाड़ । **–कन**–वि० पहाड़ खोदनेवाला । पु० फरहाद । **–क़ाफ़**–पु० काफ पर्वत, काकेशस पर्वतमाला । **–जिगर**–वि० वीर, साहसी । **–सार**–पु० पहाड़ी स्थान, प्रदेश; पहाड़ । **–(हे) आदम**–पु० लंकाके एक पर्वतकी चोटी जिसपर बिहिश्तसे निकाले जानेके बाद आदमका उतरना माना जाता है । **–नूर**–पु० भारतका एक इतिहास-प्रसिद्ध हीरा जिसका एक हिस्सा ब्रिटेनके महाराजके और दूसरा महारानीके मुकुटमें जड़ा है ।

कोहनी–स्त्री० दे० 'कुहनी' ।

कोहबर–पु० वह घर या कमरा जिसमें विवाहके समय कुलदेवताकी स्थापना और कुछ रस्में अदा की जाती हैं ।

कोहरा–पु० दे० 'कुहरा' ।

कोहराम–पु० दे० कुहराम ।

कोहल–पु० (सं०) एक मुनि जो नाट्यशास्त्रके आदि आचार्य माने जाते हैं; एक बाजा; एक शराब । वि० अस्पष्टभाषी ।

कोहाँर–पु० दे० 'कुम्हार' ।

कोहा†–पु० छोटी नाँद ।

कोहान–पु० (फा०) ऊँटकी पीठपरका कूबड़ ।

कोहाना*–अ० क्रि० रूठना, रुष्ट होना; क्रुद्ध होना ।

कोहिल–पु० नर शाही बाज ।

कोहिस्तान–पु० (फा०) पहाड़ी प्रदेश; पर्वतमाला; ईरानी –इराक ।

कोहिस्तानी–वि० पहाड़ी । पु० पहाड़ी प्रदेशका रहनेवाला ।

कोही*–वि० क्रोधी; (फा०) पहाड़ी । † स्त्री० बाज पक्षीकी मादा ।

कौंक, कौंकण–पु० (सं०) कोंकण ।

कौंकिर*–स्त्री० हीरेकी कनी; काँचकी रेत ।

कौंकुम–वि० (सं०) केसर-संबंधी; केसरके रंगका; केसरमें रँगा हुआ । पु० एक केतुवर्ग ।

कौंच–पु० (सं०) हिमालयका एक पहाड़ ।

कौँच–स्त्री० सेम जैसी एक फली जिसकी तरकारी बनती और दवाके काम भी आती है; इसकी बेल, केवाँच ।

कौँचा†–पु० ऊखका ऊपरी भाग जो नीरस होता है ।

कौँछ–स्त्री० दे० 'कौँच' ।

कौंजर–वि० (सं०) हाथी-संबंधी । पु० बैठनेका एक ढंग ।

कौंठ्य–पु० (सं०) भोथरापन ।

कौंडल, कौंडलिक–वि० (सं०) कुंडलधारी ।

कौंडिन्य–पु० (सं०) कुंडिन ऋषिके गोत्रमें उत्पन्न व्यक्ति ।

कौंतल–वि० (सं०) कुंतल देशका ।

कौंतिक–पु० (सं०) भाला चलानेवाला, नेजाबरदार ।

कौंती–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

कौंतेय–पु० (सं०) कुंतिपुत्र–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन ।

कौँध–स्त्री० बिजलीकी चमक; चमक ।

कौँधना–अ० क्रि० बिजलीका चमकना ।

कौँधनी†–स्त्री० 'कौधनी', करधनी ।

कौँधा–स्त्री० बिजलीकी चमक; बिजली–'जनु कौँधा लौकहि दुइ कोने'–प०; चमक ।

कौंभ–वि० (सं०) कुंभमें रखा हुआ; घड़ेसे संबंध रखनेवाला ।

कौँल*–पु० कमल ।

कौँवरा*–वि० कोमल ।

कौँहर–पु०, **कौँहरी**–स्त्री० इंद्रायनकी जातिका एक फल जो पकनेपर बहुत लाल होता है ।

कौ*–प्र० कर्म, संप्रदान और संबंध कारककी विभक्ति । अ० कब ।

कौआ–पु० एक पक्षी जो अपने काले रंग, धूर्तता आदिके लिए प्रसिद्ध है; धूर्त मनुष्य (ला०); गलेके भीतरकी घाँटी; कनकुटकी; एक मछली । **–ठोंठी**–स्त्री० एक लता जिसके फूलकी शकल कौएकी चोंचकीसी होती है । **–परी**–स्त्री० काली, बदशकल स्त्री । **–रोर**–पु० हल्ला, कागारोल ।

कौआना†–अ० क्रि० चकपकाना; स्वप्नमें बड़बड़ाना ।

कौआर†–पु० दे० 'कौआरोर' ।

कौआल–पु० दे० 'क़ौवाल' ।

कौआली–स्त्री० दे० 'क़ौवाली' ।

कौकृत्य–पु० (सं०) कुकर्म करना; पश्चात्ताप ।

कौक्कुटिक–वि०, पु० (सं०) मुर्गे पालनेवाला; ढोंग करनेवाला ।

कौक्षेयक–पु० (सं०) तलवार ।

कौच–पु० (अं०) दे० 'कोच' ।

कौचुमार–पु० (सं०) कुरूपको सुंदर बनानेकी कला ।

कौट–पु० (सं०) छल; धोखा; जाल; कुटज वृक्ष । वि० अपने घर रहनेवाला, स्वतंत्र; घरेलू; छली; बेईमान; पाशयुक्त, जालवाला । **–साक्ष्य**–पु० झूठी गवाही ।

कौटकिक–पु० (सं०) पक्षी आदि फँसानेवाला, बहेलिया; मांसविक्रेता ।

कौटभी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

कौटल्य–पु० (सं०) दे० 'कौटिल्य' ।

कौटवी–स्त्री० (सं०) नंगी स्त्री ।

कौटिक–पु० (सं०) दे० 'कौटकिक' । वि० पाश-संबंधी; छली; बेईमान ।

कौटिलिक–पु० (सं०) व्याध, बहेलिया; लुहार ।

कौटिलीय–वि० (सं०) कौटिल्यकृत ।

कौटिल्य–पु० (सं०) कुटिलता, टेढ़ापन; फरेब, बेईमानी; अर्थशास्त्रके कर्ता और कूटनीतिके आचार्य चाणक्य ।

कौटीर–वि० (सं०) कुटीर पौधा-संबंधी; कुटीरका बना ।

कौटीर्या–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

कौटुंब–वि० (सं०) कुटुंब संबंधी; कुटुंबके भरणके लिए आवश्यक । पु० परिवार; रिश्ता ।

कौटुंबिक–वि० (सं०) कुटुंब-संबंधी; कुटुंबी, कुनबेवाला । पु० पिता; गृहस्वामी ।

कौड़ा–पु० बड़ी कौड़ी; अलाव; बूई नामक पौधा जिससे सज्जीखार बनाते हैं ।

कौड़िया–वि० कौड़ीके रंग-रूपका । * पु० दे० 'कौड़िल्ला' ।

कौड़ियाला–वि० कौड़ीके रंगका, कोकई । पु० कोकई रंग; एक जहरीला साँप; एक वनौषधि; कंजूस धनवान् ।

कौड़ियाली–स्त्री० कौड़ियाला पौधा ।

कौड़ियाही–स्त्री० मिट्टी, ईंटों आदिकी ढुलाई जो खेप पीछे कुछ कौड़ियोंके हिसाबसे दी जाती है । वि०, स्त्री० बहुत छोटी रकम लेकर काम करनेवाली ।

कौड़िल्ला–पु० एक मत्स्यभक्षी जलपक्षी ।

कौड़ी–स्त्री० घोंघे, शंख आदिके वर्गका एक कीड़ा; उस कीड़ेका अस्थिकोश जो विनिमयके साधनके रूपमें भी काममें लाया जाता है, वराटिका; पैसा, धन; कर, महसूल; जाँघ, काँख आदिमें निकलनेवाली छोटी गिलटी; आँखका डेला; सीनेकी वह हड्डी जिसपर नीचेकी पसलियाँ मिलती हैं; कटारकी नोक । **–का**–मूल्यरहित; तुच्छ, हेय । **–भर**–कौड़ी बराबर; बहुत थोड़ा । मु०–**कफनको न होना**–बिलकुल मुफलिस, मुहताज होना । **–के तीन,–के तीन-तीन**–बहुत सस्ता, जिसे कोई न पूछे । **–के तीन होना**–तुच्छ, हेय होना । **–के मोल**–बहुत सस्ता या सस्तेमें । **–०न पूछना,–०न लेना**–मुफ्तमें भी न लेना; एकदम निकम्मा समझना । **–०बिकना**–बहुत सस्ता बिकना; तुच्छ, बेकदर होना । **–कौड़ीका हिसाब**–छोटीसे छोटी रकमका, पाई-पाईका हिसाब । **–कौड़ीको मुहताज**–बिलकुल मुफलिस, अति निर्धन । **–कौड़ी चुका देना**–पूरा पावना, पाई-पाई बेबाक कर देना । **–कौड़ी जोड़ना**–एक-एक पैसा–थोड़ा-थोड़ा करके धन बटोरना । **–फिरना**–जुएमें अपना दाँव पड़ने लगना ।

कौड़ेना†–पु० बरतनपर नक्काशी करनेका एक औजार ।

कौणप–पु० (सं०) मुर्दाखोर; राक्षस। वि० पातकी, अधर्मी। **–दंत**–पु० भीष्म।

कौणपी–स्त्री० (सं०) राक्षसी।

कौणिक–वि० (सं०) जिसमें कोण हो, नुकीला।

कौतिक, कौतिग⁕–पु० दे० 'कौतुक'।

कौतुक–पु० (सं०) कुतूहल, उत्सुकता; कुतूहल जगानेवाली वस्तु; अचंभा; तमाशा; उत्सव; आनंद; हास्य-विनोद, हँसी-मजाक; विवाहका कंगन; कंगनकी विधि। **–प्रिय**–वि० जिसे खेल-तमाशा या हँसी-मजाक पसंद हो।

कौतुकित–वि० (सं०) उत्सुक।

कौतुकिया–वि० कौतुक करनेवाला; विनोदी; दे० 'कौतुकी'।

कौतुकी(किन्)–वि० (सं०) खेल-तमाशा करनेवाला, विनोदी; विवाह-संबंध करानेवाला–'तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं'–रामा०।

कौतूह⁕–पु० लीला, कौतुक।

कौतूहल–पु० (सं०) कुतूहल; त्योहार, उत्सव।

कौत्स–पु० (सं०) एक ऋषि, कुत्स ऋषिका पुत्र; कुत्सरचित साम।

कौथ†–स्त्री० कौनसी तिथि; कौन-सा नाता, संबंध।

कौथा†–वि० किस स्थानका, किस संख्याका।

कौथुम–पु० (सं०) कौथुमी शाखाका अध्ययन करनेवाला।

कौथुमी–स्त्री० (सं०) कुथुमीके गोत्रकी स्त्री; सामवेदकी एक शाखा।

कौदन–वि० (फा०) मंदबुद्धि, नासमझ।

कौदालिक, कौदालीक–पु० (सं०) एक संकर जाति, मल्लाह।

कौद्रविक–पु० (सं०) काला नमक।

कौधनी†–स्त्री० करधनी।

कौन–सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम (किसी व्यक्ति या वस्तु संबंधी जिज्ञासाके लिए प्रयुक्त)। वि० किस प्रकारका।

कौनप⁕–पु० दे० 'कौणप'।

कौप–वि० (सं०) कूप-संबंधी; कुएँका। पु० कुएँका पानी।

कौपीन–पु० (सं०) शरीरका गुह्य भाग; पुरुषका लिंग; गुह्य भागको ढकनेवाला वस्त्र-खंड, लँगोटी; चीथड़ा; कुकर्म, पाप।

कौपोदकी–स्त्री० (सं०) विष्णुकी गदा, कौमोदकी।

कौप्य–वि०, पु० (सं०) दे० 'कौप'।

कौबेर–वि० (सं०) कुबेर-संबंधी।

कौबेरी–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा; कुबेरकी शक्ति।

कौब्ज्य–पु० (सं०) कूबड़पन।

क़ौम–स्त्री० (अ०) मनुष्य-समूह; जाति; वंश, नस्ल; राष्ट्र। **–परस्त**–वि० राष्ट्रवादी।

कौमार–पु० (सं०) कुमार-(जन्मसे पाँच बरसतककी) अवस्था; कुँवारापन; सनत्कुमारादि-रचित सृष्टिविशेष; कुमारीका पुत्र; एक पर्वत। वि० कुमार-संबंधी; कोमल; युद्धदेव-संबंधी। **–चारी(रिन्)**–वि० ब्रह्मचारी। **–बंधकी**–स्त्री० वेश्या। **–भृत्य**–पु० बच्चोंका पालन-पोषण, दवा-इलाज; आयुर्वेदका शिशु-चिकित्सा-अंग। **–व्रत**–पु० अविवाहित रहनेका व्रत।

कौमारक–पु० (सं०) कुमारावस्था; एक राग।

कौमारिक–वि० (सं०) कुमार-संबंधी। पु० संपूर्ण जातिका एक राग; लड़कियोंका पिता।

कौमारिकेय–पु० (सं०) कुमारी स्त्रीका बेटा, कानीन।

कौमारी–स्त्री० (सं०) ऐसे पुरुषकी स्त्री जिसने दूसरा विवाह न किया हो; कार्त्तिकेयकी शक्ति; वाराहीकंद; एक रागिनी।

कौमार्य–पु० (सं०) कौमार, कुँवारापन; (प्रायः अविवाहिता लड़कीके संबंधमें प्रयुक्त)। **मु० –भंग करना**–किसी लड़की या अक्षतयोनि महिलासे प्रथम बार समागम करना।

क़ौमियत; क़ौमीयत–स्त्री० (अ०) जाति, कौमका भाव, जातीयता, राष्ट्रीयता।

क़ौमी–वि० कौमसे संबंध रखनेवाला, जातीय; राष्ट्रीय।

कौमुद–पु० (सं०) कार्त्तिकका महीना।

कौमुदिक–वि० (सं०) कुमुद-संबंधी; कुमुदपूर्ण।

कौमुदिका–स्त्री० (सं०) उमाकी एक सखी; चाँदनी।

कौमुदी–स्त्री० (सं०) चाँदनी; कार्त्तिककी पूर्णिमा; आश्विनकी पूर्णिमा; उत्सव; दीपोत्सव; कुमुद; व्याख्या, टीका (ग्रंथके नामके साथ)। **–चार**–पु० शरत्पूर्णिमा, आश्विनकी पूर्णिमा। **–पति**–पु० चंद्रमा। **–महोत्सव**–पु० कार्त्तिकी पूर्णिमाको होनेवाला उत्सव। **–वृक्ष**–पु० दीवट, चिरागदान।

कौमोदकी, कौमोदी–स्त्री० (सं०) विष्णुकी गदा।

कौर–पु० कवल, निवाला।

कौरना†–स० क्रि० हलका भूनना।

कौरव–पु० (सं०) कुरुका वंशज; कुरु-नरेश। वि० कुरुवंशियोंसे संबंध रखनेवाला (–सेना)।

कौरवेय–पु० (सं०) कुरुका वंशज।

कौरव्य–पु० (सं०) कौरव।

कौरा†–पु० दरवाजेके अगल-बगलकी, चौखटके पीछेकी दीवार; कुत्तेको दिया जानेवाला खाना; दे० 'कौड़ा'। **मु०–(रे) लगना**–किसीकी बातें सुननेके लिए दरवाजेकी बगलमें छिपकर खड़ा रहना; मुँह फुलाना; घातमें बैठना।

कौरी⁕–स्त्री० अंक, गाद; एक मिष्ठान्न; कौड़ी।

कौर्म–वि० (सं०) कूर्म-संबंधी; विष्णुके कूर्मावतार-संबंधी। पु० एक कल्प।

कौलंज–पु० पसलियोंके नीचे होनेवाला एक तरहका दर्द।

कौल–पु० कौर; ⁕कोर; कमल; (सं०) वाममार्गी, शाक्त। वि० कुलक्रमागत, खानदानी; कुलीन।

क़ौल–पु० (अ०) वचन, उक्ति; प्रतिज्ञा, इकरार; वह सूफियाना गीत या शेर जो कौवाल गाते हैं। **–(व) क़रार**–पु० परस्पर प्रतिज्ञा। **–(व)फेल**–पु० वचन और कर्म। **मु०–का पक्का**–बातका धनी। **–देना**–वचन देना।

कौलई–वि० संतरेके रंगका। पु० नारंगी रंग।

कौलटिनेय–पु० (सं०) भिक्षुकीका पुत्र; जारज पुत्र।

कौलटेय, कौलटेर–पु० (सं०) कुलटाका पुत्र, जारज पुत्र; भिक्षुकीका पुत्र।

कौलदुमा–पु० एक तरहका कबूतर।

कौलव–पु० (सं०) ११ करणोंमेंसे एक (ज्यो०)।

कौला–पु० एक तरहका संतरा; द्वारके इधर-उधरका, चौखटके पीछेका भाग।

कौलाचार–पु० (सं०) वाममार्ग।

कौलालक–वि० (सं०) कुम्हार-संबंधी या उसका बनाया हुआ। पु० मिट्टीका बरतन।

कौलिक–वि० (सं०) कुल-संबंधी; कुलपरंपरागत। पु० वाममार्गी; ढोंगी, पाखंडी; जुलाहा।

कौलीन–वि० (सं०) कुलीन; कुलक्रमागत। पु० वाममार्गी; भिक्षुकीका पुत्र; अपवाद, तुहमत; गुह्य अंग; पशुओं, मुर्गों आदिकी लड़ाई; युद्ध; कुलीनता।

कौलीन्य–पु० (सं०) कुलीनता।

कौलीरा–स्त्री० (सं०) कर्कटशृंगी।

कौलेयक–वि० (सं०) उच्च वंशका; वंश-संबंधी। पु० कुत्ता।

कौलौं⁕–अ० कबतक।

कौल्य–वि० (सं०) कुलीन; शाक्त मतका।

कौवल–पु० (सं०) कोलि, बेर।

कौवा–पु० दे० 'कौआ'।

क़ौवाल–पु० (अ०) कौवाली गानेवाला; गवैया।

क़ौवाली–स्त्री० सूफियाना गजल या गीत; संगीतमें एक ताल; क़ौवाल गानेवाला।

कौविंदी–स्त्री० (सं०) जुलाहेकी स्त्री।

कौवेर–वि० (सं०) दे० 'कौबेर'।

कौवेरी–स्त्री० (सं०) दे० 'कौबेरी'।

कौश–वि० (सं०) रेशमी; कुश-निर्मित (पवित्री आदि)। पु० कुशद्वीप; कान्यकुब्ज देश।

कौशल–पु० (सं०) कुशलता, दक्षता; कल्याण; कोशलवासी।

कौशलिक–पु० (सं०) घूस, रिश्वत।

कौशलिका, कौशिक–स्त्री० (सं०) कुशल-प्रश्न; भेंट, उपहार।

कौशलेय–पु० (सं०) कौशल्याके पुत्र, राम।

कौशल्य–पु० (सं०) दे० 'कौशल'।

कौशल्या–स्त्री० (सं०) दशरथकी पट्टमहिषी, रामकी माता; धृतराष्ट्रकी माता; जनमेजयकी मा।

कौशल्यायनि–पु० (सं०) कौशल्याके पुत्र, राम।

कौशांब–पु० (सं०) कुशके एक पुत्र।

कौशांबी–स्त्री० (सं०) वत्सदेशकी प्राचीन राजधानी जिसे कुशके पुत्र कौशांबने बसाया था, आधुनिक कोसम।

कौशिक–पु० (सं०) कुशिकका वंशज; विश्वामित्र; इंद्र; शिव; कोशकार; कोशाध्यक्ष; उल्लू; नेवला; शृंगार रस; मज्जा; गुग्गुल। वि० म्यानमें रखा हुआ; उल्लू-संबंधी; कुशिकवंशका; रेशमी। **–प्रिय**–पु० राम। **–फल**–पु० नारियलका पेड़।

कौशिका–स्त्री० (सं०) पानपात्र, गिलास, कटोरा।

कौशिकायुध–पु० (सं०) इंद्रका वज्र; इंद्रधनुष्।

कौशिकाराति, कौशिकारि–पु० (सं०) काक।

कौशिकी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; कोसी नदी; दृश्य काव्यकी चार वृत्तियोंमेंसे एक, दे० 'कैशिकी'; एक रागिनी; कुशिककी पौत्री। **–कान्हड़ा**–पु० (हिं०) कौशिकी और कान्हड़ाके योगसे बना एक संकर राग।

कौशीधान्य, कौषीधान्य –पु०(सं०) कोशसे उत्पन्न होनेवाला धान्य, तिलादि।

कौशीलव–पु० (सं०) नट, अभिनेताका पेशा।

कौशेय, कौषेय–पु० (सं०) रेशम; रेशमी कपड़ा; रेशमी साड़ी। वि० रेशमी।

कौषीतकि–पु० (सं०) एक ऋषि जो कुषीतक ऋषिके पुत्र और ऋग्वेदकी एक शाखाके प्रवर्तक थे।

कौषीतकी–स्त्री० (सं०) ऋग्वेदका एक ब्राह्मण; ऋग्वेदकी एक शाखा; एक उपनिषद्; अगस्त्य मुनिकी पत्नी।

कौष्ठेयक–पु० (सं०) केवल खजाना या भंडार भरनेके लिए जनतासे समय-समयपर लिया जानेवाला कर।

कौसल्या–स्त्री० (सं०) दे० 'कौशल्या'। **–नंदन**–पु० रामचंद्र।

कौसिक*–पु० दे० 'कौशिक'।

कौसिला*–स्त्री० दे० 'कौशल्या'।

कौसीद–वि० (सं०) ऋण-संबंधी; सूदखोर।

कौसीद्य–पु० (सं०) कुसीद-वृत्ति, महाजनी, सूदखोरी; आलस्य; तंद्रा।

कौसुंभ–वि० (सं०) कुसुमके फूलका बना या उससे रँगा हुआ। पु० वनकुसुम।

कौसुम–वि० (सं०) पुष्पयुक्त। पु० कुसुमांजन, पुष्पांजन; पराग।

कौसृतिक–पु० (सं०) छल करनेवाला; बाजीगर।

कौस्तुभ–पु० (सं०) समुद्र-मंथनसे निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु छातीपर धारण किये रहते हैं; उँगलियाँ मिलानेकी एक मुद्रा; एक तरहका तेल। **–लक्षण,–वक्षा(क्षस्),–हृदय**–पु० विष्णु।

कौह–पु० अर्जुन वृक्ष।

कौहर†–पु० 'कौँहर'।

क्या–सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम; कौनसी चीज, कौन बात या घटना। वि० कितना; बहुत; कैसा; बहुत बढ़िया। अ० किस लिए, किस कारण; प्रश्नसूचक शब्द।

क्यार*–प्र० दे० 'का'। †पु० पेड़का थाला।

क्यारी–स्त्री० बाग या खेतकी मेंड़ बनाकर प्रायः चौकोर खानेकी शकलमें किया हुआ विभाग।

क्याली*–स्त्री० दे० 'क्यारी'।

क्यूरी–(क्यूरी) रेडियो ऐक्टिवता नापनेका मानक। एक क्यूरीसे अभिप्राय है एक ग्राम रेडियमकी ऐक्टिवता; एक क्यूरीकी रेडियो ऐक्टिवतामें प्रति सेकन्ड ३७,०००,०००,००० विघटन होते हैं।

क्यों–अ० किस लिए, किस कारण। **–कर**–कैसे। **–कि**–कारण यह कि, इसलिए कि। **–नहीं**–अवश्य, बेशक। **–न हो**–क्या कहना, शाबाश।

क्योड़ा†–पु० केवड़ा।

क्रंदन–पु० (सं०) रोना, विलाप; युद्धके लिए आह्वान, ललकारना; मार्जार।

क्रंदित–वि० (सं०) ललकारा हुआ, आहूत।

क्रकच–पु० (सं०) आरा; एक बाजा; एक नरक; करीलका पेड़; ग्रंथिल वृक्ष; एक योग (ज्यो०)। **–पत्र**–पु० सागौन। **–पाद**–पु० गिरगिट। **–पृष्ठी**–स्त्री० एक मछली।

क्रकचा–स्त्री० (सं०) केतकी।

क्रकर–पु० (सं०) एक चिड़िया, किलकिला; आरा; करील; एक रोग; केकड़ा; दीन व्यक्ति।

क्रतु–पु० (सं०) यज्ञ; अश्वमेध यज्ञ; विष्णु; एक प्रजापति; संकल्प; इंद्रिय; योग्यता; प्रज्ञा, विवेक; आषाढ़ मास; इच्छा; प्रेरणा; देवताकी स्तुति आदि; प्यारकी अधिकता। **–द्रुट्(ह्)**–पु० असुर। **–ध्वंसी(सिन्)**–पु० (दक्षप्रजापतिका यज्ञ विध्वंस करनेवाले) शिव। **–पति**–पु० यज्ञ करनेवाला। **–पशु,–हय**–पु० यज्ञका घोड़ा। **–पुरुष**–पु० विष्णु। **–फल**–पु० यज्ञका उद्देश्य। **–भुक्(ज्)**–पु० हविष्य खानेवाला, देवता। **–यष्टि**–स्त्री० एक चिड़िया। **–राज**–पु० अश्वमेध यज्ञ; राजसूय यज्ञ। **–विक्रयी(यिन्)**–वि० धन लेकर यज्ञका फल बेचनेवाला।

क्रथकैशिक–पु० (सं०) एक प्राचीन देश।

क्रथन–पु० (सं०) काटना; वध; एक दानव।

क्रद्दम*–पु० कर्दम, कीचड़; कष्ट, विपत्ति।

क्रम–पु० (सं०) आगे बढ़नेके लिए कदम उठाना, डग भरना; डग, कदम; 'आरंभ; घटनाओं, वस्तुओं, व्यक्तियोंकी आगे-पीछे या ऊपर-नीचेके विचारसे यथास्थान अवस्थिति, तरतीब, सिलसिला; नियमित व्यवस्था; वेदपाठकी एक विशेष प्रणाली; शक्ति; आक्रमणकी मुद्रा; तैयारी; कल्प; विष्णु (वामनरूपमें); एक अर्थालंकार, दे० 'यथासंख्य'; *कर्म, कार्य, कृत्य। **–जटा**–स्त्री० वेदपाठका एक प्रकार। **–नासा***–स्त्री० दे० 'कर्मनाशा'। **–परिवर्तन**–पु० क्रम बदलना, विपर्यय। **–पाठ**–पु० वेदपाठका एक प्रकार। **–बद्ध**–वि० क्रमयुक्त, सिलसिलेवार। **–भंग**–पु० क्रम–तरतीबका टूट जाना। **–विकास**–पु० धीरे-धीरे, क्रमशः उन्नति, विकास होना, क्रमोन्नति। **–संख्या**–स्त्री० किसी वस्तु, व्यक्तिकी क्रमप्राप्त संख्या, सिलसिलेका नंबर। **–सन्न्यास**–पु० ब्रह्मचर्यादि आश्रमोंमें रह चुकनेके बाद लिया हुआ सन्न्यास। **–स्थापन**–पु० (ग्रेडिंग, ग्रेडेशन) श्रेणी, कोटि या क्रमके अनुसार रखना, श्रेणीकरण।

क्रमक–वि० (सं०) क्रमयुक्त; आगे बढ़नेवाला। पु० क्रम-पाठ जाननेवाला; नियमित अभ्यास करनेवाला विद्यार्थी।

क्रमण–पु० (सं०) एकसे दूसरे स्थानको, दूसरी स्थितिमें जाना; कदम उठाना; लाँघना; घोड़ा; पैर।

क्रमतः(तस्)–अ० (सं०) दे० 'क्रमशः'।

क्रमशः(शस)–अ० (सं०) यथाक्रम, सिलसिलेसे; धीरे-धीरे।

क्रमांक–पु० (सं०) क्रमसंख्या।

क्रमागत–वि० (सं०) क्रमप्राप्त; कुलक्रमागत, बाप-दादासे चला आता हुआ।

क्रमानुसार–अ० (सं०) यथाक्रम, सिलसिलेसे।

क्रमि–पु० (सं०) दे० 'कृमि'।

क्रमिक–वि० (सं०) क्रमागत; कुलक्रमागत।

क्रमु–पु० (सं०) सुपारीका पेड़।

क्रमुक–पु० (सं०) सुपारीका पेड़; नागरमोथा; पठानी लोध; शहतूतका पेड़; कपासकी ढोंड़ी।

क्रमुकी–स्त्री० (सं०) सुपारीका पेड़।

क्रमेल, क्रमेलक–पु० (सं०) ऊँट।

क्रमोद्वेग–पु० (सं०) बैल।

क्रय–पु० (सं०) मोल लेना, खरीदना। **–पंजी**–स्त्री० (परचेजेज जर्नल) प्रतिदिन खरीद की गयी वस्तुओं आदिका विवरण लिखनेकी बही, खरीद-बही। **–प्रपंजी**–स्त्री० (परचेजेज लेजर) वह प्रपंजी या खाता-बही जिसमें समय-समयपर खरीदी हुई विभिन्न वस्तुओंका हिसाब, हर एकका अलग अलग, क्रयपंजीसे उतारकर लिखा जाता है, खरीद खाता। **–लेख्य**–पु० बैनामा, कबाला। **–०पत्र**–पु० किसी वस्तुके क्रय-विक्रयसे संबंध रखनेवाला पत्र।

–विक्रय–पु० खरीद-विक्री, व्यापार। **–विक्रयिक**–पु० व्यापारी। **–विक्रयी (यिन्)**–वि० खरीद-विक्री करनेवाला। पु० व्यापारी। **–शक्ति**–स्त्री० (परचेजिंग पॉवर) बाजारमें उपलब्ध वस्तुओंको खरीद सकनेकी जनताकी सामर्थ्य या क्षमता।

क्रयण–पु० (सं०) खरीदना।

क्रयारोह–पु० (सं०) हाट, वाजार; मेला।

क्रयिक–वि० (सं०) खरीदनेवाला। पु० व्यापारी।

क्रयिम–पु० (सं०) किसी वस्तुके क्रय-विक्रयपर लिया जानेवाला कर (कौ०)।

क्रयी (यिन्)–पु० खरीदार, ग्राहक।

क्रयोपघात–पु० (सं०) क्रयवंधन, खरीदमें रुकावट डालना (कौ०)।

क्रय्य–वि० (सं०) जो खरीदा जा सके; बिक्रीके लिए रखा हुआ (माल)।

क्रवान*–पु० कृपाण, तलवार।

क्रव्य–पु० (सं०) कच्चा मांस; सड़ा मांस; मृत पशु। **–घातन**–पु० हिरन।

क्रव्याद, क्रव्याद्–वि० (सं०) कच्चा मांस खानेवाला। पु० राक्षस; मांसभक्षी जंतु–बाघ, भेड़िया आदि; चिताकी अग्नि।

क्रशित–वि० (सं०) कृश, क्षीणकाय, दुवला-पतला।

क्रांत–वि० (सं०) गया हुआ; बीता हुआ; लाँघा हुआ; आक्रांत; दवा हुआ; चढ़ा हुआ। पु० पाँव; घोड़ा; गमन; डग; चंद्रमाके किसी ग्रहके साथ योगकी स्थिति। **–दर्शी (शिन्)**–वि० भूत-भविष्य, अतींद्रिय विषयोंको जाननेवाला, सर्वज्ञ।

क्रांति–स्त्री० (सं०) क्रमण; गति, जाना; लाँघना; सूर्यका भ्रमण-मार्ग; स्थितिमें भारी उलट-फेर; पूर्ण परिवर्तन; राजव्यवस्थाका उलट दिया जाना, राजक्रांति। **–कक्ष**–पु० सूर्यका भ्रमणमार्ग। **–कारी (रिन्)**–वि० स्थिति, व्यवस्थामें भारी उलट-फेर कर देनेवाला। पु० राजक्रांतिका प्रयासी। **–क्षेत्र**–पु० क्रांति जाननेके लिए बनाया जानेवाला क्षेत्र। **–पात**–पु० वह विंदु जहाँ क्रांतिवलय विषुवत् रेखासे मिलता है। **–मंडल**–पु० सूर्यका भ्रमणमार्ग। **–वलय**–पु० क्रांतिवृत्त। **–वृत्त**–पु० दे० 'क्रांति-मंडल'; आकाशमें तारोंके सापेक्ष सूर्यकी वार्षिक आभासी परिभ्रमण कक्षा। यह वास्तवमें सूर्यके गिर्द पृथ्वीकी वार्षिक परिभ्रमण कक्षा ही है। **–साम्य**–पु० ग्रहोंकी तुल्य क्रांति।

क्राइस्ट–पु० (अं०) ईसाई धर्मके प्रवर्तक ईसा।

क्राकचिक–पु० (सं०) लकड़ी चीरनेवाला।

क्राथ–पु० (सं०) मारण, वध; स्कंदका एक अनुचर; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक नाग।

क्रायक, क्रायिक,–पु० (सं०) खरीदनेवाला; व्यापारी।

क्रिकेट–पु० (अं०) गेंदका एक खेल जो बल्लेसे खेला जाता है। **–वाल**–पु० क्रिकेट खेलनेका गेंद। **–मैच**–पु० क्रिकेटका दंगल।

क्रिमि–पु० (सं०) दे० 'कृमी'। **–घ्नी**–स्त्री० सोमराजी। **–ज**–पु० अगुरु। **–जा**–स्त्री० लाख। **–भक्ष**–पु० एक नरक। **–शैल**–पु० वल्मीक।

क्रिय–पु० (सं०) मेष राशि।

क्रियमाण–वि० (सं०) जो किया जा रहा हो, होता हुआ।

क्रिया–स्त्री० (सं०) कुछ किया जाना, कर्म, व्यापार, चेष्टा; काम करनेकी विधि; शिक्षण; ज्ञान; अभ्यास; रचना; धार्मिक संस्कार; प्रायश्चित्त; श्राद्ध; पूजन; उपचार; अध्ययन; साधन, उपकरण, अभियोगका विचार आदि। **–कर्म (न्)**–पु० मृतक-क्रिया, अंत्येष्टि। **–कलाप**–पु० संपूर्ण शास्त्रविहित कर्म; किसीके कृत्योंका समूह, कार्यावली, कारनामे, (ऐक्टिविटी) क्रियाशीलता, कर्मण्यता। **–कार**–पु० काम करनेवाला; शिक्षारंभ करनेवाला छात्र। **–चतुर**–पु० शृंगार रसमें वह नायक जो कार्य-व्यवहारमें चतुराई दिखलाकर अभीष्टसिद्धिमें समर्थ हो। **–द्वेषी (षिन्)**–पु० साक्षीका एक प्रकार; साक्ष्य, प्रमाण आदि न माननेवाला प्रतिवादी। **–निर्देश**–पु० साक्ष्य। **–निष्ठ**–वि० कर्मनिष्ठ। **–पंथ***–पु० कर्मकांड। **–पटु**–वि० कार्यकुशल। **–पथ**–पु० उपचार-विधि। **–पद**–पु० क्रियावाचक शब्द (व्या०)। **–पाद**–पु० व्यवहार (मुकदमे) के चार पादों या अंगोंमेंसे तीसरा जिसमें वादी अपने दावेकी पुष्टिमें सबूत-शहादत पेश करता है। **–फल**–पु० कर्मका परिणाम। **–योग**–पु० क्रियारूप योग–तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान (यो०); क्रियाके साथ संवंध (व्या०)। **–लोप**–पु० शास्त्रविहित नित्य-नैमित्तिक कर्मोंका न किया जाना। **–वाचक, –वाची (चिन्)**–वि० क्रियाका अर्थ देनेवाला (व्या०)। **–वादी (दिन्)**–पु० (मुकदमेमें) दावा पेश करनेवाला। **–विदग्धा**–स्त्री० क्रियाके द्वारा अपना अभिप्राय बतानेवाली नायिका। **–विशेषण**–पु० वह शब्द जो क्रियाकी विशेषता–उसका काल, स्थान, रीति आदि बताये (व्या०)। **–शक्ति**–स्त्री० ईश्वरकी सृष्टिकारिणी शक्ति। **–शील**–वि० कर्मनिष्ठ। **–शून्य**–वि० कर्महीन। **–संक्रांति** –स्त्री० शिक्षण, विद्यादान। **–स्नान**–पु० स्नानकी एक विशेष विधि जिसके अनुसार स्नान करनेसे तीर्थस्नानका फल प्राप्त होता है।

क्रियातिपत्ति–स्त्री० (सं०) एक काव्यालंकार।

क्रियात्मक–वि० (सं०) क्रियारूपमें किया हुआ, अमली।

क्रियापवर्ग–पु० (सं०) कार्यकी समाप्ति।

क्रियाभ्युपगम–पु० (सं०) दो व्यक्तियोंका किसी कामके संवंधमें आपसका समझौता; अधिया।

क्रियार्थ–वि० (सं०) क्रियाविधायक; कर्तव्यबोधक (वेदका वाक्य)।

क्रियार्थक संज्ञा–स्त्री० क्रियाका अर्थ देनेवाली संज्ञा जो क्रियाके मूल रूपमें होती है (जैसे मेरा 'कहना' वेकार है)।

क्रियावसन्न–वि० (सं०) गवाहोंके वयानके कारण मुकदमा हारनेवाला।

क्रियावान् (वत्)–वि० (सं०) कर्मनिष्ठ।

क्रियेंद्रिय–स्त्री० (सं०) कर्मेंद्रिय।

क्रिस्टल–पु० (अं०) विल्लौर, स्फटिक; शीरे, शकर आदिका रवादार टुकड़ा।

क्रिस्तान–पु० ईसाई।

क्रिस्तानी–वि० ईसाइयोंका।

क्रीट*–पु० दे० 'किरीट'।

क्रीड–पु० (सं०) क्रीडा, खेल-कूद; हँसी-मजाक।

क्रीडक–पु० (सं०) क्रीडा करनेवाला; द्वारपाल।

क्रीडन–पु० (सं०) खेलना; खेलनेका साधन, खिलौना।

क्रीडनक, क्रीडनीयक–पु० (सं०) खिलौना।

क्रीड़ना*–अ० क्रि० क्रीडा करना, खेल करना।

क्रीडा–स्त्री० (सं०) खेल-कूद, किलोल; हास्य-विनोद; तालके मुख्य भेदोंमेंसे एक। **–कानन, –वन**–पु० क्रीडाके लिए उपयुक्त उद्यान, प्रमोदवन। **–कोप**–पु० बनावटी गुस्सा। **–कौतुक**–पु० खेल-कूद; आमोद-प्रमोद। **–गृह, –मंदिर**–पु० केलिगृह। **–चक्र**–पु० वृत्तविशेष। **–नारी**–स्त्री० वेश्या। **–पर्वत, –शैल**–पु० उद्यान आदिमें बनाया जानेवाला कृत्रिम पर्वत। **–भूमि**–स्त्री०–वह नगर या क्षेत्र जहाँ किसीने अनेक क्रीड़ाएँ की हों, खेल-कूदमें दिन विताये हों; (प्लेग्राउण्ड) खेलका मैदान। **–मयूर**–पु० मनोरंजनके लिए पाला गया मोर। **–मृग**–पु० खेलने, जी बहलानेके लिए पाला हुआ हिरन। **–यान, -रथ**–पु० सैर-उत्सव आदिमें सवारीके उपयुक्त रथ, पुष्परथ। **–रत्न**–पु० रतिक्रिया। **–शील**–वि० खेलवाड़ी। **–स्थल**–पु०, **–स्थली**–स्त्री० क्रीड़ाभूमि।

क्रीडांगन–पु० (स्टेडियम) क्रिकेट, हाकी आदि खेलनेका आधुनिक ढंगका विस्तृत मैदान जिसमें दर्शकोंके वैठनेकी भी उचित व्यवस्था होती है।

क्रीडित–वि० (सं०) खेला हुआ, जो खेल चुका हो।

क्रीडी (डिन्)–वि० (सं०) क्रीडाशील।

क्रीत–वि० (सं०) क्रय किया हुआ, खरीदा हुआ। पु० माँ-बापको धन देकर खरीदा हुआ पुत्र; खरीदा हुआ दास। * स्त्री० कीर्ति, यश -'हौं कहा कहौं सूरके प्रभुकी निगम कहत जाकी क्रीत'–सूर।

क्रीतक–पु० (सं०) क्रीत पुत्र। वि० क्रय द्वारा प्राप्त।

क्रीतानुशय–पु० (सं०) खरीदी हुई चीजको लौटाना।

क्रीम–स्त्री० (अं०) दूधके ऊपरकी मलाई; दूधको जमाकर बनायी गयी विशिष्ट स्वादिष्ठ वस्तु; त्वचाको मुलायम करने-

वाली मलाई सदृश वस्तु जो अंगरागका काम दे।

क्रीलना*–अ० क्रि० क्रीड़ा करना।

क्रीला*–स्त्री० क्रीड़ा–'जा वनमें क्रीला करी, दाझत है वन सोइ' –साखी।

क्रुद्ध–वि० (सं०) क्रोधयुक्त, गुस्सेसे भरा; निर्दय।

क्रुश्वा(श्वन्)–पु० (सं०) गीदड़, स्यार।

क्रुष्ट–वि० (सं०) बुलाया हुआ, आहूत; जिसे बुरा-भला कहा गया हो। पु० रोदन; शोर।

क्रूजर–पु० (अ०) हलका और द्रुतगामी जंगी जहाज।

क्रूर–वि० (सं०) निर्दय, संगदिल, परपीडक; डरावना; हानिकारक; आहत; हिंस्र; अपक्व; अशुभ; गरम; अप्रिय। पु० बाज पक्षी; सफेद चील; पापग्रह; भात; वध; चोट; निर्दयता; भयंकर कार्य; भयंकर रूप। **–कर्म(न्)**–पु० निर्दयता; परपीड़नका काम; घोर भयावना कर्म। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० क्रूर कर्म करनेवाला। **–कोष्ठ**–वि० कड़े कोठेवाला, जिसपर मृदु विरेचनका असर न हो। **–गंध**–पु० गंधक। **–ग्रह**–पु० रवि, शनि, राहु, मंगल और केतुमेंसे कोई। **–चरित,–चेष्टित**–वि० निर्दय कार्य करनेवाला। **–दंती**–स्त्री० दुर्गा। **–दृक्(श्)**–वि० बुरी दृष्टिवाला; खल, दुष्ट। पु० शनि; मंगल। **–धूर्त**–पु० कृष्ण धत्तूरक। **–रव**–पु० शृगाल, गीदड़। **–रावी(विन्)**–पु० द्रोणकाक। **–लोचन**- पु० शनि; डोमकौवा।

क्रूरा–वि० स्त्री० (सं०) क्रूर स्वभाववाली। स्त्री० लाल फूलवाली गदहपुर्ना।

क्रूराकृति–वि० (सं०) डरावनी शकलवाला। पु० रावण।

क्रूरात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) शनि। वि० क्रूर स्वभाववाला।

क्रूराशय–वि० (सं०) कब्जवाला; जिसमें भयंकर जानवर हों (जैसे नदी); निष्ठुर स्वभाववाला।

क्रूस–(अं० 'क्रास') सूली, सलीब; ईसाइयोंका धर्मचिह्न जो सूलीसे मिलते-जुलते आकारका होता है। नवलेखनमें प्रयुक्त प्रतीक। हर ईमानदारकी ज़िन्दगी क्रूसपर चढ़नेके लिए अभिशप्त है।

क्रेणि, क्रेणी–स्त्री० (सं०) क्रय, खरीद।

क्रेता(तृ)–पु० (सं०) खरीदनेवाला। **–(तृ) संघर्ष**–खरीदारोंकी चढ़ा-उपरी (कौ०)।

क्रेय–वि० (सं०) खरीदने योग्य।

क्रोंच–पु० (सं०) क्रौंच पर्वत।

क्रोड–पु० (सं०) छाती, वक्षःस्थल; गोद, अंक; पेड़का खोखला; सूअर; शनि ग्रह; किसी वस्तुके बीच या अंदरका हिस्सा। **–कन्या**–स्त्री० वाराहीकंद। **–चूडा**–स्त्री० महाश्रावणिका नामक पौधा। **–पत्र**–पु० पुस्तकादि लिखनेमें छूटे हुए अंशकी पूर्तिके लिए अलगसे लिखकर रखा हुआ चिह्न सहित पत्र; समाचारपत्रके साथ अलगसे छापकर वितरित लेख, विज्ञापन आदि। **–पर्णी**–स्त्री० भटकटैया। **–पाद**–पु० कछुआ। **–पाली**–स्त्री० सीना। **–मुख**–पु० गैंड़ा।

क्रोडांक, क्रोडांघ्रि–पु० (सं०) कच्छप।

क्रोडीकरण–पु० (सं०) छातीसे लगाना, आलिंगन।

क्रोडीमुख–पु० (सं०) गैंड़ा।

क्रोडेष्टा–स्त्री० (सं०) मोथा।

क्रोध–पु० (सं०) किसी अनुचित कर्म, अपकार आदिसे दूसरेका अपकार करनेका तीव्र मनोविकार, कोप, गुस्सा; रौद्र रसका स्थायी भाव (सा०)। **–ज**-वि० क्रोधसे उत्पन्न। पु० मोह। **–मूर्च्छित**–वि० गुस्सेमें बदहवास, आपेसे बाहर। **–वर्जित**–वि० क्रोधरहित। **–वशा**–स्त्री० दक्षकी एक कन्या। **–हा(हन्)**–पु० विष्णु।

क्रोधन–वि० (सं०) क्रोधी स्वभाववाला, गुस्सेवर। पु० कौशिकका एक पुत्र; साठ संवत्सरोंमेंसे एक; क्रोध करना।

क्रोधना–वि०, स्त्री० (सं०) क्रोधी स्वभाववाली।

क्रोधवंत*–वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधा–स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या।

क्रोधालु–वि० (सं०) क्रोधी।

क्रोधित–वि० क्रुद्ध, कुपित।

क्रोधी(धिन्)–वि० (सं०) क्रोध करनेवाला, जिसे जल्द गुस्सा आ जाय। पु० भैंसा; कुत्ता; गैंड़ा; एक संवत्सर।

क्रोमोसोम–पु० (अं०) बारीक धागेके टुकड़ेकी शकलके दण्ड जो 'क्रोमैटिन' पदार्थके बने होते हैं। लैंगिक प्रजनन करनेवाले जीवोंके शरीरकी कोशिकाओंमें क्रोमोसोमके जोड़े मिलते हैं; प्रत्येक जोड़ेका एक क्रोमोसोम नर (पिता)से प्राप्त होताहै, दूसरा मादा (माता) से। क्रोमोसोम द्वारा ही आनुवांशिक गुण निर्धारित होते हैं।

क्रोश–पु० (सं०) रोना; जोरसे चिल्लाना; पुकारना; कोस। **–ताल,–ध्वनि**–पु० एक तरहका नगाड़ा, ढक्का।

क्रोशन–पु० (सं०) चिल्लाना।

क्रोशाधिदेय–पु० (माइलेज) किसी कामसे यात्रा करनेपर सरकारी या गैरसरकारी कर्मचारीको मीलोंके हिसाबसे मिलनेवाला भत्ता।

क्रोशिया–पु० स्वेटर, मोजे आदि बुननेकी सलाई।

क्रोष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) शृगाल।

क्रोष्टु–पु० (सं०) शृगाल। **–पुच्छिका,–मेखला,–विन्ना**–स्त्री० पृश्निपर्णी। **–फल**–पु० इंगुदी।

क्रोष्टुक–पु० (सं०) दे० 'क्रोष्टु'।

क्रोष्ट्री–स्त्री० (सं०) शृगाली; लांगली; श्वेत भूमिकुष्मांड; कृष्णविदारी।

क्रौंच–पु० (सं०) एक तरहका बगला, करांकुल; एक पर्वत जो पुराणोंमें हिमवान् (हिमालय)का पोता और मैनाकका बेटा बताया गया है; सात महाद्वीपोंमेंसे एक; मय दानवका पुत्र जो स्कंदके हाथों मारा गया। **–दारण**-पु० दे० 'क्रौंचरिपु'। **–रंध्र**–पु० हिमालयकी एक घाटी। **–रिपु,–शत्रु,–सूदन**–पु० कार्तिकेय; परशुराम।

क्रौंचादन–पु० (सं०) मृणाल।

क्रौंचादनी–स्त्री० (सं०) पद्मबीज।

क्रौंचाराति, क्रौंचारि–पु० (सं०) कार्तिकेय; परशुराम।

क्रौंचारुण–पु० (सं०) एक तरहकी व्यूहरचना।

क्रौंची–स्त्री० (सं०) मादा क्रौंच; कश्यप ऋषिकी एक कन्या।

क्रौड–वि० (सं०) शुकर-संबंधी; वराहावतार-संबंधी।

क्रौर्य–पु० (सं०) क्रूरता।

क्रौशशतिक–पु० (सं०) सौ कोस चलनेवाला सन्न्यासी; वह व्यक्ति जिससे सौ कोसकी दूरीसे आकर मिला जाय (शिक्षक)।

क्लब–पु० (अं०) साहित्य-संगीत आदिकी चर्चा या मनबहलावके कामोंके आयोजनके लिए स्थापित समिति।

क्लम, क्लमथु–पु० (सं०) थकावट, क्लांति।

क्लर्क–पु० (अं०) हिसाब, चिट्ठी आदि लिखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, मुंशी, किरानी, लिपिक।

क्लर्की–स्त्री० क्लर्कका धंधा, किरानीगिरी।

क्लांत–वि० (सं०) थका हुआ, श्रांत; मुरझाया हुआ; क्षीणकाय; हतोत्साह।

क्लांति–स्त्री० (सं०) थकावट।

क्लॉक–पु० (अं०) बड़े आकारकी घड़ी जो लंगरके सहारे चलती और प्रायः दीवारसे लगाकर रखी जाती है, दीवार घड़ी। **–टावर**–पु० घंटाघर।

क्लारनेट–पु० (अं०) शहनाईके ढंगका एक विलायती बाजा।

क्लास–पु० (अं०) दरजा, श्रेणी; विद्यार्थियोंका वर्ग, कक्षा। **–टीचर**–पु० किसी खास क्लास, दरजेका मुख्य अध्यापक।

क्लिन्न–वि० (सं०) गीला, आर्द्र। **–वर्त्म(न्)**–पु० आँखोंका एक रोग जिसमें पलकोंमें खुजली होती और उनसे पानी गिरता है। **–हृद्**–वि० कोमल हृदयवाला।

क्लिन्नाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखसे पानी गिरता हो।

क्लिप–स्त्री० (अं०) कागज-पत्रको इकट्ठा रखने, बालोंकी पटिया बैठाने, जूड़ा बाँधने आदिमें काम देनेवाला आला, पंजा।

क्लिशित–वि० (सं०) दे० 'क्लिष्ट'।

क्लिष्ट–वि० (सं०) क्लेशयुक्त, पीड़ित; क्लांत; पूर्वापर-विरुद्ध अर्थवाला (वाक्य); जिसका अर्थ बहुत सोचने या खींचतानसे निकले; क्षतिग्रस्त; लज्जित किया हुआ; मुरझाया हुआ।

–कल्पना–स्त्री० बहुत खींच-तान या घुमावफिराववाली कल्पना । **–घात**–पु० कष्ट देकर मारना । **–वर्त्म(न्)**–पु० पलकोंका एक रोग ।

क्लिष्टता–स्त्री०, **क्लिष्टत्व**–पु० (सं०) दुरूहता; कठिन शब्दावली या शैलीके कारण आया दुरूहताका दोष ।

क्लिष्टा–स्त्री० (सं०) आत्माको क्लेश पहुँचानेवाली चित्त-वृत्ति(यो०) ।

क्लिष्टि–स्त्री० (सं०) क्लेश, पीड़ा; नौकरी ।

क्लीत–पु० (सं०) विषैला कीड़ा ।

क्लीतक–पु० (सं०) जेठी मधु ।

क्लीतकिका–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा ।

क्लीतनक–पु० (सं०) अतिरसा; मधूलिका ।

क्लीब, क्लीव–वि० (सं०) हिजड़ा, षंड, नपुंसक, नामर्द; कमीना; कायर । पु० नपुंसक पुरुष; नपुंसकलिंग ।

क्लेद–पु० (सं०) गीलापन, आर्द्रता; दुःख; पसीना; सड़ना; फोड़ेका स्राव ।

क्लेदक–वि० (सं०) गीला करनेवाला; पसीना लानेवाला । पु० कफ; शरीरस्थ दस अग्नियोंमेंसे एक (दे० 'अग्नि') ।

क्लेदन–वि० (सं०) क्लेदक । पु० आयुर्वेदके अनुसार शरीरस्थ पाँच प्रकारके कफोंमेंसे एक जिससे पसीना निकलता है ।

क्लेदु–पु० (सं०) चंद्रमा; सन्निपात ।

क्लेश–पु० (सं०) दुःख, पीड़ा; अविद्या; अस्मिता; क्रोध; चिंता; राग, द्वेष और अभिनिवेशमेंसे कोई वृत्ति (यो०) । **–कर**–वि० क्लेश देनेवाला । **–मुक्ति**–स्त्री० (रीड्रेस) किसी क्लेश, कठिनाई, उत्पीड़न आदिसे छुटकारा पा जाना ।

क्लेशक–वि० (सं०) क्लेश देनेवाला ।

क्लेशित–वि० (सं०) पीड़ित, क्लेशयुक्त ।

क्लेशी(शिन्)–वि० (सं०) क्लेश देनेवाला; क्षतिकारक ।

क्लेष्टा(ष्टृ)–(सं०) क्लेश देनेवाला ।

क्लेस⁕–पु० दे० 'क्लेश' ।

क्लैतकिक–पु० (सं०) जेठी मधुसे तैयार की हुई शराब ।

क्लैब्य, क्लैव्य–पु० (सं०) क्लीवता, नपुंसकता; कायरपन ।

क्लोम–पु० (सं०) दाहना फेफड़ा ।

क्लोरोफार्म–पु० (अं०) एक तरल औषध जिसे सुँघाकर चीर-फाड़के लिए रोगीको बेहोश करते हैं ।

क्लोरोफिल (पर्णहरित्)–पु० (अं०) हरे पौधेके क्लोरोप्लास्टमें पाया जानेवाला हरे रंगका वर्णक । क्लोरोफिलकी सहायतासे ही सूर्यकी ऊर्जासे पौधे अपने लिए भोजनका निर्माण करते हैं ।

क्वंगु–पु० (सं०) कँगनी, काकुन ।

क्व–अ० (सं०) कहाँ । **–चित्**–अ० कहीं-कहीं; बहुत कम; कभी ।

क्वण–पु० (सं०) ध्वनि; वीणा, घुँघरू आदिकी आवाज ।

क्वणन–पु० (सं०) क्वण; वीणा, घुँघरू आदिका बजना; मिट्टीका छोटा बरतन ।

क्वणित–वि० (सं०) ध्वनित; गूँजता हुआ । पु० शब्द, ध्वनि ।

क्वणितेक्षण–पु० (सं०) गृध्र ।

क्वथ–पु० (सं०) काढ़ा, क्वाथ ।

क्वथन–पु० (सं०) औटना; काढ़ा करना ।

क्वथनांक–पु० (बॉइलिंग पॉइंट) वह विशेष तापक्रम जिसपर कोई द्रव वस्तु उबलने लगे ।

क्वथित–वि० (सं०) औटा हुआ; काढ़ा किया हुआ ।

क्वथिता–स्त्री० (सं०) आयुर्वेदमें कथित एक तरहकी कढ़ी जो बहुत रोचक, पाचक और अग्निदीपक बतायी गयी है ।

क्वांटम सिद्धान्त–पु० (क्वान्टम थियरी) मैक्स प्लाँक द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत जिसके अनुसार विकिरण ऊर्जाका उत्सर्जन सदैव ऊर्जाके अलग-अलग 'पैकेटों'की शकलमें होता है ।

क्वाँरा–वि० दे० 'क्वारा' ।

क्वाचित्क–वि० (सं०) क्वचित् होने, मिलनेवाला, विरल ।

क्वाड–पु० दे० 'क्वाड्रेट' ।

क्वाड्रेट–पु० (अं०) सीसेका आधेसे चार एमतककी चौड़ाईका चौकोर टुकड़ा जो कंपोज करनेमें लाइनकी खाली जगह भरनेके काम आता है ।

क्वाण–पु० (सं०) वीणा आदिका शब्द; क्वण ।

क्वाथ–पु० (सं०) काढ़ा, जोशाँदा; कष्ट, दुःख; व्यसन ।

क्वाथोद्भव–पु० (सं०) रसौत ।

क्वान⁕–पु० झनकार; क्वण ।

क्वारंटाइन–पु० (अं०) छुतहे रोगोंसे पीड़ित मुसाफिरों आदिको रोककर कुछ दिन अलग रखनेका प्रबंध; वह स्थान जहाँ ऐसे लोग रखे जायँ; छुतहा अस्पताल ।

क्वार–पु० आश्विन मास ।

क्वारछल, क्वारपन–पु० अविवाहित अवस्था, क्वारापन ।

क्वारा–वि० कुँआरा, अविवाहित ।

क्वार्टर–पु० (अं०) चौथाई, चौथा भाग; सालका चौथा हिस्सा, तिमाही; २८ पौंडका वजन; वर्गविशेषवालोंकी बस्ती; रेलवे, स्कूल, कालिज आदिके कर्मचारियोंके लिए संस्थाकी ओरसे बनवाया हुआ मकान; फौजके रहने या टिकनेका स्थान, पड़ाव । **–मास्टर**–पु० फौजका एक अफसर जिसका काम सैनिकोंके लिए रसद, मकान आदिका प्रबंध करना होता है; एक जहाजी अफसर जिसका काम मल्लाहोंको आवश्यक संकेत देना आदि होता है । **–०जेनरल**–पु० सैनिकोंके लिए रसद, आवासका प्रबंध करनेवाला विभागका सबसे बड़ा अफसर ।

क्वासर तारे–पु० अंतरिक्षमें स्थित वे सूक्ष्म तारे जो इतनी अधिक दूर हैं कि उनके प्रकाशको पृथ्वी तक पहुँचनेमें कई करोड़ वर्ष लग जाते हैं ।

क्वैला⁕–कोयला ।

क्षंतव्य–वि० (सं०) क्षमा करनेके योग्य, सहन करनेके योग्य ।

क्षंता(तृ)–वि० (सं०) क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्ष–'क्' और 'ष'के योगसे बना हुआ संयुक्त अक्षर । पु० (सं०) खेत; किसान; नाश, प्रलय; बिजली; एक राक्षस; विष्णुका चतुर्थ–नरसिंह–अवतार ।

क्ष-किरण–स्त्री० (एक्स-रे) विद्युत्-प्रवाहसे प्रभावित वे अदृश्य किरणें जो हाथ या शरीरके अन्य किसी भागके आर-पार पहुँचकर हड्डियोंके ढाँचेका छायाचित्र विशेष आग्राही काचपट्टपर अंकित कर देती है, पारदर्शी किरण ।

क्षण–पु० (सं०) छन, लमहा; ४।५ सेकेंड, निमेषका चौथाई या ३० कलाके बराबर काल; अवसर; अवकाश; शुभ काल; उत्सव; आनंद । **–द**–पु० ज्योतिषी; जल; रतौंधी । **–दा**–स्त्री० रात; हलदी । **–०कर**–पु० चंद्रमा । **–द्युति,–प्रकाशा,–प्रभा**–स्त्री० बिजली । **–निःश्वास**–पु० सूँस । **–भंग**–पु० दे० 'क्षणिक-वाद' (बौ०) । **–भंगु**⁕–वि० दे० 'क्षणभंगुर' । **–भंगुर**–वि० छनभरमें, थोड़ी ही देरमें मिट जानेवाला । **–मात्र**–अ० छनभर । **–मूल्य**–पु० नगद दाम । **–रामी(मिन्)**–पु० कबूतर । **–विध्वंसी (सिन्)**–वि० क्षणभरमें नष्ट होनेवाला । –पु० 'क्षणिकवाद' माननेवाला व्यक्ति (बौ०) ।

क्षणतु–पु० (सं०) जख्म, घाव ।

क्षणन–पु० (सं०) वध करना; आहत करना ।

क्षणिक–वि० (सं०) क्षणस्थायी । **–वाद**–पु० बौद्ध दर्शनका यह मत कि प्रत्येक वस्तु उत्पत्तिसे दूसरे ही क्षणमें नष्ट हो जाती अर्थात् प्रतिक्षण बदलती रहती है ।

क्षणिका–स्त्री० (सं०) बिजली ।

क्षणिनी–स्त्री० (सं०) रात ।

क्षणी(णिन्)–वि० (सं०) क्षणस्थायी; अवकाशप्राप्त ।

क्षत–वि० (सं०) घायल; कटा-फटा हुआ; क्षतिग्रस्त; खंडित, भग्न । पु० घाव, जख्म; चोटसे होनेवाला फोड़ा; दुःख; भय, खतरा । **–कास**–पु० क्षतज खाँसी । **–घ्न**–पु० कुकरौंधा । **–घ्नी**–स्त्री० लाख । **–ज**–पु० रक्त; पीव । वि० घावसे उत्पन्न; लाल, रक्तवर्ण, दे० 'छतज' । **–०कास**–पु० फेफड़ेमें जख्म होनेसे पैदा हुई खाँसी जिसमें कफके साथ खून मिला होता है । **–योनि**–वि०, स्त्री० जिस(स्त्री)का पुरुषसे समागम हो चुका हो, कौमार्य नष्ट हो चुका हो । **–रोहण**–पु० घावका भरना । **–विक्षत**–वि० जिसकी देह घावोंसे भरी हो, बहुत जगह कट-फट गयी हो ।

–वृत्ति–स्त्री० जीविकाका साधन न होना । **–व्रण–**पु० चोट पक जानेसे होनेवाला फोड़ा । **–व्रत–**वि० जिस(ब्रह्मचारी)का व्रत खंडित हो गया हो । **–सर्पण–**पु० गमनशक्तिका नाश । **–हर–**पु० अगुरु ।

क्षतचिह्न–पु० (स्कार) चोट लगने, जल जाने या फोड़े आदिके कारण पड़ा हुआ निशान ।

क्षता–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका कौमार्य ब्याहके पहले ही नष्ट हो चुका हो ।

क्षतारि–वि० (सं०) विजयी ।

क्षताशौच–पु० (सं०) घायल होनेका अशौच ।

क्षति–स्त्री० (सं०) हानि, ह्रास; घाटा; चोट । **–ग्रस्त–**वि० जिसकी हानि हुई हो । **–पूर्ति–**स्त्री० हानिका भर जाना, घाटेका पूरा हो जाना; (रिपरेशंस) क्षति या हानि पूरी करानेका कार्य या इसके वदले दी जानेवाली रकम ।

क्षतोदर–पु० (सं०) एक उदर-रोग जिसमें आँतें कोई कड़ी, नुकीली चीज निगल जाने आदिसे कट जाती हैं ।

क्षत्ता(त्तृ)–पु० (सं०) काटने, घाव करनेवाला; द्वारपाल; दासीपुत्र; शूद्र पिता और क्षत्रिय मातासे उत्पन्न संतान; नियोग करनेवाला पुरुष; सारथी; ब्रह्मा; मछली; रथी; कोषाध्यक्ष ।

क्षत्र–पु० (सं०) क्षत्रिय; क्षत्रिय जाति; योद्धा; वल; राज्य; देह; धन । **–कर्म(न्)–**पु० क्षत्रियोचित कर्म । **–धर्म–**पु० क्षत्रियका धर्म, क्षत्रियके कर्तव्य; शौर्य । **–धर्मा(र्मन्)–**वि० क्षात्रधर्मका पालन करनेवाला । पु० योद्धा, सिपाही । **–धृति–**स्त्री० एक यज्ञ; राजसूय यज्ञका एक अंग । **–प–**पु० प्राचीन पारसीक साम्राज्यके मांडलिक राजाओंकी उपाधि; प्रांताधिपति, राज्यपाल । **–पति–**पु० राजा । **–बंधु–**पु० क्षत्रिय; हीन, नाममात्रका क्षत्रिय । **–योग–**पु० एक योग (ज्यो०) । **–विद्या–**स्त्री० धनुर्विद्या, युद्धविद्या । **–वृक्ष–**पु० मुचकुंद । **–वेद–**पु० धनुर्वेद । **–सव–**पु० एक यज्ञ जिसे केवल क्षत्रिय कर सकता है ।

क्षत्रांतक–पु० (सं०) परशुराम ।

क्षत्राणी–स्त्री० वीर नारी; क्षत्रिया ।

क्षत्रान्वय–वि० (सं०) क्षत्रिय जातिका; क्षत्रिय-संबंधी ।

क्षत्रिय–पु० (सं०) हिंदुओंके चार वर्णोंमेंसे दूसरा; योद्धा जाति । **–हण–**पु० परशुराम ।

क्षत्रियका, क्षत्रियिका–स्त्री० (सं०) दे० 'क्षत्रिया' ।

क्षत्रिया–स्त्री० (सं०) क्षत्रिय स्त्री ।

क्षत्रियाणी, क्षत्रियी–स्त्री० (सं०) क्षत्रियकी पत्नी ।

क्षत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) क्षत्रिय ।

क्षदन–पु० (सं०) काटना; चीरना; फाड़ना; खाना ।

क्षप–पु० (सं०) जल ।

क्षपण–पु० (सं०) अशौच; ध्वंसन, दमन; वौद्ध या जैन सन्न्यासी ।

क्षपणक–पु० (सं०) वौद्ध या जैन सन्न्यासी; विक्रमादित्यकी राजसभाके नौ रत्नोंमेंसे एक ।

क्षपणी–स्त्री० (सं०) डाँड़ा; जाल ।

क्षपण्यु–पु० (सं०) अपराध ।

क्षपांत–पु० (सं०) क्षपा (रात्रि)का अंत, प्रभात ।

क्षपांध्य–पु० (सं०) रतौंधी ।

क्षपा–स्त्री० (सं०) रात; हलदी । **–कर–**पु० चंद्रमा; कपूर । **–धन–**पु० काला वादल । **–चर–**पु० निशाचर । **–नाथ,–पति–**पु० चंद्रमा; कपूर ।

क्षपाट–पु० (सं०) रात्रिकालमें चलनेवाला, निशाचर ।

क्षपित–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ; दवाया हुआ ।

क्षम–वि० (सं०) सहन करनेमें समर्थ; योग्य; उपयुक्त; (हिंदीमें यह शब्द केवल समासमें आता है–कार्यक्षम, अक्षम आदि) । पु० औचित्य, उपयुक्तता; युद्ध; शिव; एक तरहका गौरा पक्षी ।

क्षमणीय–वि० (सं०) क्षमा करने योग्य, क्षम्य ।

क्षमता–स्त्री० (सं०) शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता ।

क्षमना*–स० क्रि० माफ करना ।

क्षमनीय*–वि० दे० 'क्षमणीय' ।

क्षमवाना*–स० क्रि० 'क्षमना'का प्रेरणार्थक रूप ।

क्षमा–स्त्री० (सं०) परकृत अपकार, अपराधको विना क्रोध किये या दंड-प्रतिकारकी बात सोचे सह लेनेवाली चित्तवृत्ति, दरगुजर, माफी, सहनशीलता; धरती; दुर्गा; वेतवा नदी; दक्षकी एक कन्या; एककी संख्या; खदिर वृक्ष; एक वृत्त । **–ज–**पु० मंगल ग्रह । **–तल–**पु० धरातल । **–दंश–**पु० सहिजनका पेड़ । **–भुक्(ज्)–**पु० राजा । **–भृत्–**पु० पहाड़ । **–मंडल–**पु० भूमंडल । **–युक्त,–शील–**वि० क्षमा करनेवाला, सहनशील ।

क्षमाना*–स० क्रि० क्षमा कराना ।

क्षमान्वित–वि० (सं०) दे० 'क्षमायुक्त' ।

क्षमापन–पु० (सं०) क्षमा कराना, माफी माँगना ।

क्षमावान्(वत्)–वि० (सं०) दे० 'क्षमायुक्त' ।

क्षमित–वि० (सं०) क्षमा किया हुआ ।

क्षमिता(तृ)–वि० (सं०) क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्षमी(मिन्)–वि० (सं०) क्षमाशील; समर्थ ।

क्षम्य–वि० (सं०) क्षमा करने योग्य ।

क्षयंकर–वि० (सं०) नाश करनेवाला, क्षयकारक ।

क्षय–पु० (सं०) वासस्थान; छीजन, ह्रास; नाश; अर्थहानि; मूल्यादिका गिरना; प्रलय; यक्ष्मा रोग; रोग; ऋणराशि (ग०); ६० संवत्सरोंमेंसे अंतिम; वंश, जाति; यमालय । **–कर–**वि० दे० 'क्षयंकर' । **–काल**-पु० प्रलयकाल । **–कारी(रिन्)–**वि० क्षीण करनेवाला । **–०रोग–**पु० क्रमशः क्षीण या दुर्वल करता जानेवाला रोग (वेस्टिंग डिज़ीज़) । **–कास–**पु० क्षयरोगमें होनेवाली खाँसी । **–कासी(सिन्)–**वि० क्षयकास रोगसे पीड़ित । **–ग्रंथि–**स्त्री० क्षयरोगमें (आँतोंमें) होनेवाली गिलटी । **–तिथि–**स्त्री० वह तिथि जो व्यवहारमें लुप्त मानी जाय । **–नाशिनी–**स्त्री० जीवंतीका पेड़ । **–पक्ष–**पु० कृष्ण पक्ष । **–मास–**पु० दो संक्रांतियोंवाला चांद्र मास जो ३४१वें वर्ष और कभी-कभी १९वें वर्ष भी आता है, हीन मास । **–रोग–**पु० एक दुःसाध्य रोग जिसमें रोगीको सदा मंदज्वर वना रहता है और उसके फेफड़ेमें जख्म हो जाता है । **–रोगी(गिन्)–** वि० क्षयरोगसे पीड़ित, क्षयी । **–वायु–**स्त्री० प्रलयकालमें वहनेवाली वायु । **–संपद्–**स्त्री० वर्वादी, सर्वनाश ।

क्षयण–पु० (सं०) शांत जलाशय; खाड़ी या वंदर; निवास-स्थान । वि० नाश करनेवाला ।

क्षयथु–पु० (सं०) क्षयकी खाँसी ।

क्षयाह–पु० (सं०) वह चांद्र दिन जो चांद्र और सौर पंचांगमें मेल वैठानेके लिए छोड़ दिया जाता है ।

क्षयिक–वि० (सं०) क्षयरोगसे पीड़ित ।

क्षयित–वि० (सं०) नष्ट; क्षयप्राप्त; विभक्त (ग०) ।

क्षयिष्णु–वि० (सं०) क्षय होनेवाला, छीजनेवाला, नश्वर; नाशकारी ।

क्षयी(यिन्)–वि० (सं०) क्षय होनेवाला; नष्ट होनेवाला; क्षयरोगग्रस्त । (स्त्री० 'क्षयिणी' ।) पु० चंद्रमा ।

क्षय्य–वि० (सं०) जिसका क्षय हो सके ।

क्षर–वि० (सं०) चल; नाशमान । पु० जल; वादल; देह; अज्ञान; ईश्वर; कारण और कार्य ।

क्षरण–पु० (सं०) चूना, रसना; छूटना; उँगलियोंका पसीजना ।

क्षरित–वि० (सं०) स्रवित, चुआ हुआ ।

क्षरी(रिन्)–पु० (सं०) वर्षा ऋतु ।

क्षव–पु० (सं०) छींक; खाँसी; राई । **–पत्रा,–पत्री–**स्त्री० द्रोणपुष्पी ।

क्षवक–पु० (सं०) अपामार्ग; राई ।

क्षवथु–पु० (सं०) अधिक छींकें आना; खाँसी; गलेका दाह; गलेका दुखना ।

क्षविका–स्त्री० (सं०) एक तरहका बनभंटा; एक तरहका चावल; स्त्री ।

क्षांत–वि० (सं०) क्षमाशील, सहनशील; क्षमा किया हुआ; सहा हुआ । पु० शिव ।

क्षांता–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

क्षांति–स्त्री० (सं०) क्षमा, सहिष्णुता

क्षांतु–वि० (सं०) सहनशील, क्षमा करनेवाला । पु० पिता ।

क्षा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

क्षात्र–वि० (सं०) क्षत्रिय-संबंधी; क्षत्रियोचित । पु० क्षत्रियका कर्म; क्षत्रिय जाति; क्षत्रियका भाव, क्षत्रियत्व । **–तेज(स्)** –पु० क्षत्रियोचित तेज, पराक्रम ।

क्षात्रि–पु० (सं०) क्षत्रिय पुरुष और अन्य जातिकी स्त्रीसे उत्पन्न संतान ।

क्षाम–वि० (सं०) क्षीण, दुबला; कमजोर; अल्प । पु० विष्णुका एक नाम; क्षय, नाश ।

क्षामा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

क्षार–पु० (सं०) जड़ी-बूटियोंकी राख या खनिज द्रव्योंका रासायनिक विधिसे बनाया हुआ नमक, खार; नमक; शोरा; सुहागा; काला नमक; जवाखार; काँच; राख; गुड़; रस, सत; ठग; दुष्ट; जल । वि० खारा; क्षरणशील, रसनेवाला, बहनेवाला । **–कर्दम**–पु० एक नरक । **–गुण**–पु० खारापन । **–त्रय**–पु० सज्जी, शोरा और सुहागा । **–द्रु**–पु० मोरवा नामक वृक्ष । **–नदी**–स्त्री० खारे पानीकी नदी जिसका नरकमें होना माना जाता है । **–पत्र,–पत्रक**–पु० बथुएका साग । **–पत्रा**–स्त्री० चिल्की नामक साग । **–भूमि**–स्त्री० ऊसर । **–मृत्तिका**–स्त्री० रेह मिट्टी । **–मेह**–पु० प्रमेह रोगका एक भेद । **–लवण**–पु० खारी नमक । **–श्रेष्ठ**–पु० खारी मिट्टी; पलाश; मोरवा ।

क्षारक–पु० (सं०) खार; सज्जी; कलिका; धोबी; चिड़ियोंका पिजड़ा या ढावा; चिड़िया फँसानेका जाल; मछली पकड़नेकी खाँची ।

क्षारण–पु० (सं०) खार बनाना; टपकाना; पारेका १५वाँ संस्कार; अपवाद लगाना (खासकर व्यभिचारका) ।

क्षाराक्ष–पु० (सं०) काँचकी बनी हुई आँख ।

क्षारिका–स्त्री० (सं०) भूख ।

क्षारित–वि० (सं०) टपकाया हुआ; जिसपर (व्यभिचारका) मिथ्या अपवाद लगाया गया हो ।

क्षारीय–वि० (ऐलकलाइन) क्षार सम्बन्धी; क्षारयुक्त, क्षार-जैसा (स्वाद इ०) ।

क्षारोद, क्षारोदक, क्षारोदधि–पु० (सं०) लवण समुद्र ।

क्षाल–पु० (सं०) धोना; धुलाई ।

क्षालन–पु० (सं०) धोना, साफ करना ।

क्षालित–वि० (सं०) धोया हुआ, साफ किया हुआ ।

क्षित–वि० (सं०) छीजा हुआ, क्षयप्राप्त; दीन । पु० वध; क्षति ।

क्षिता–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

क्षिति–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; घर, वासस्थान; क्षय; प्रलयकाल; एककी संख्या । **–कंप**–पु० भूकंप । **–कण**–पु० धूलिकण । **–क्षम**–पु० खैरका पेड़ । **–क्षोद**–पु० धूलि । **–जंतु**–पु० केंचुवा । **–ज**–पु० वृक्ष; मंगल ग्रह; केंचुवा; वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं, दृष्टिसीमा; नरकासुर । **–जा** –स्त्री० सीता । **–तनय**–पु० मंगल ग्रह । **–तनया**–स्त्री० सीता । **–तल**–पु० धरातल । **–देव**–पु० ब्राह्मण । **–धर**–पु० पहाड़ । **–नंदन,–सुत**–पु० मंगल ग्रह । **–नाग**–पु० केंचुवा । **–नाथ,–पति–प्राण,–भुक्(ज्)**–पु० राजा । **–मंडल**–पु० भूमंडल । **–रुह**–पु० वृक्ष । **–वर्धन**–पु० शव । **–व्युदास**–पु० गुफा ।

क्षितींद्र, क्षितीश, क्षितीश्वर–पु० (सं०) राजा ।

क्षित्यदिति–स्त्री० (सं०) कृष्णकी माता देवकी ।

क्षित्यधिप–पु० (सं०) राजा ।

क्षिद्र–पु० (सं०) रोग; सूर्य; सींग ।

क्षिप–वि० (सं०) फेंकनेवाला; मारनेवाला । पु० फेंकना; अपमानित करना ।

क्षिपक–वि० (सं०) फेंकनेवाला । पु० तीरंदाज; योद्धा ।

क्षिपण–पु० (सं०) भेजना; फेंकना; आक्षेप करना ।

क्षिपणि–पु०, **क्षिपणी**–स्त्री० (सं०) डाँड़; जाल; हथियार; क्षेप्यास्त्र; कशाघात ।

क्षिपणु–पु० (सं०) बानैत; हथियार; हवा ।

क्षिपण्यु–वि० (सं०) सुगंधित । पु० शरीर; वसंत ऋतु; सुवास ।

क्षिपा–स्त्री० (सं०) भेजना; फेंकना; रात्रि ।

क्षिप्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; त्यागा हुआ; अवज्ञात, उपेक्षित; चंचल; बहिर्मुख (चित्त); वातरोगग्रस्त, पागल । पु० चित्तकी पाँच वृत्तियोंमेंसे एक (यो०) । **–कुक्कुर**–पु० पागल कुत्ता । **–चित्त**–वि० चंचल चित्तवाला ।

क्षिप्ता–स्त्री० (सं०) रात्रि ।

क्षिप्ति–स्त्री० (सं०) फेंकना; छिपे हुए अर्थका स्पष्टीकरण ।

क्षिप्र–वि० (सं०) तेज, शीघ्रगामी; लचीला । अ० जल्द, तत्काल । पु० अँगूठे और तर्जनीके बीचका स्थान; मुहूर्तका पंद्रहवाँ भाग । **–कारी(रिन्)**–वि० तेजीसे काम करनेवाला, मुस्तैद । **–हस्त**–वि० जिसका हाथ तेजीसे चले; तेज काम करनेवाला । **–होम**–पु० नित्यकर्मके रूपमें सायं-प्रातः किया जानेवाला होम ।

क्षिया–स्त्री० (सं०) हानि, बर्बादी; क्षय, अनौचित्य, आचार भेद ।

क्षीजन–पु० (सं०) बाँस, सरकंडे आदिकी सरसराहट ।

क्षीण–पु० (सं०) दुबला-पतला, कमजोर; घटा हुआ; क्षतिग्रस्त; क्षयप्राप्त; मृत; समाप्त; थोड़ा; निर्धन । **–काय**–वि० दे० 'क्षीणशरीर' । **–चंद्र**–पु० सात या इससे कम कलाओंवाला चंद्रमा । **–धन**–वि० जिसके पास पैसा न रह गया हो, निर्धन । **–पाप**–वि० जो पापकर्मोंका फल भोगकर निष्पाप हो गया हो । **–पुण्य**–वि० जो अपने सब पुण्यकर्मोंका फल भोग चुका हो । **–प्रकृति**–वि० जिस (राजा) की प्रजा दीन-हीन हो गयी हो या होती जा रही हो । **–मध्य**–वि० जिसकी कमर पतली हो । **–वासी(सिन्)**–वि० खँड़हरमें रहनेवाला । **–विक्रांत**–वि० पौरुषहीन । **–वित्त**–वि० दे० 'क्षीणधन' । **–वीर्य**–वि० जिसका वीर्य, पराक्रम घट गया हो, नष्ट हो गया हो । **–वृत्ति**–वि० जिसके पास जीविकाका सहारा न हो, बेरोजगार, बेकार । **–शक्ति**–वि० जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो । **–शरीर**–वि० दुबला-पतला, कमजोर । **–सार**–वि० जिसका रस सूख गया हो, सूखा (वृक्ष) ।

क्षीणार्थ–वि० (सं०) जिसकी संपत्ति नष्ट हो गयी हो, निर्धन ।

क्षीब–वि० (सं०) दे० 'क्षीव' ।

क्षीयमाण–वि० (सं०) जो बराबर घटता, छीजता जाय ।

क्षीर–पु० (सं०) दूध; बरगद, गूलर आदि वृक्षोंसे निकलनेवाला दुग्धरूप रस; जल । **–कंठ, –कंठक**–पु० दूध पीनेवाला बच्चा । **–कंद**–पु० क्षीरविदारी । **–कांडक**–पु० थूहड़; मदार । **–काकोलिका,–काकोली**–स्त्री० काकोलीका एक भेद जो अष्टवर्गके अंतर्गत है । **–घृत**–पु० दूध मथकर निकाला हुआ मक्खन । **–ज** –पु० चंद्रमा; दही; मक्खन; अमृत; कमल । वि० दूधसे उत्पन्न । **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी । **–जाल**–पु० एक तरहकी मछली । **–तुंबी** –स्त्री० लौकी । **–दल**–पु० मदार । **–द्रुम**–पु० पीपल । **–धात्री**–स्त्री० दूध पिलानेवाली धाय । **–धि,–निधि**–पु० समुद्र; क्षीरसागर । **–धेनु**–स्त्री० दूध देनेवाली गाय; कल्पित गाय (गायके स्थानमें दुग्धपूर्ण कलश) । **–नीर**–पु० दूध-पानी; गाढ़ा आलिंगन । **–प**–पु० दुधमुहा बच्चा । **–पर्णी**–स्त्री० मदार । **–पलांडु**–पु० सफेद प्याज । **–पाक**–वि० दूधमें पकाया हुआ । पु० पानी मिले हुए दूधमें औटकर तैयार की हुई दवा । **–पुष्पी**–स्त्री० शंख-पुष्पी । **–भृत**–वि० केवल दूधपर रहनेवाला, अपनी तनखाहमें केवल दूध लेनेवाला (चरवाहा) । **–वल्ली**–स्त्री० क्षीरविदारी । **–विकृति**–स्त्री० दूधसे बना पदार्थ । **–विदारी** –स्त्री० सफेद और अधिक दूधवाली विदारी । **–वृक्ष**–पु० वह वृक्ष जिससे दूध निकले–गूलर, पीपल, बरगद, महुआ इ० । **–व्रत** –पु० केवल दूध पीकर रहनेका व्रत । **–शर**–पु० मलाई, साढ़ी । **–शाक**–पु० कच्चा फटा हुआ दूध, छेना । **–षष्ठिक**–पु० दूधमें पकाया हुआ साठीका चावल । **–संतानिका**–स्त्री० एक तरहका बिगड़ा हुआ दूध, छेना । **–समुद्र,–सागर**–पु० पुराण-वर्णित सात समुद्रोंमेंसे एक । **–सार**–पु० मक्खन । **–स्फटिक**–पु० एक तरहका स्फटिक । **–हिंडीर**–पु० दूधका फेन ।

क्षीरस–पु० (सं०) मलाई ।

क्षीरा–स्त्री० (सं०) काकोली ।

क्षीराद–पु० (सं०) दुधमुहाँ बच्चा ।

क्षीराब्धि–पु० (सं०) क्षीरसागर ।

क्षीरिक–पु० (सं०) एक तरहका साँप ।

क्षीरिका–स्त्री० (सं०) पिंडखजूर; वंशलोचन ।

क्षीरिणी–स्त्री० (सं०) क्षीरकाकोली; खिरनी ।

क्षीरी(रिन्)–वि० (सं०) दुग्धयुक्त; जिससे दूध निकले ।

क्षीरोद–पु० (सं०) क्षीरसमुद्र । –**तनय**–पु० चंद्रमा । –**तनया** –स्त्री० लक्ष्मी ।

क्षीरोदक–पु० (सं०) एक वृक्ष; एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

क्षीरोदधि–पु० (सं०) क्षीरसागर ।

क्षीरौदन–पु० (सं०) दूधमें पका हुआ चावल, खीर ।

क्षीव–वि० (सं०) उन्मत्त, मतवाला ।

क्षुण–पु० (सं०) रीठा ।

क्षुणी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

क्षुण्ण–वि० (सं०) चूर किया हुआ; पिसा हुआ; खंडित; दलित; अनुगत; पराजित; अभ्यस्त । –**मना(नस्)**–वि० पश्चात्ताप करनेवाला ।

क्षुण्णक–पु० (सं०) अंत्येष्टिके समय बजाया जानेवाला एक तरहका ढोल ।

क्षुतक–पु० (सं०) राई ।

क्षुति–स्त्री० (सं०) छींकना ।

क्षुत्–स्त्री० (सं०) छींक ।

क्षुत्(ध्)–स्त्री० (सं०) दे० 'क्षुधा' । –**क्षाम**–वि० अन्न, आहार न मिलनेसे दुर्बल, क्षुधाक्षीण । –**पिपासा**–स्त्री० भूख-प्यास ।

क्षुद–पु० (सं०) आटा, मैदा ।

क्षुद्र–वि० (सं०) छोटा, नन्हा; तुच्छ; नीच, खोटा, ओछा; कंजूस । पु० चावलका कण, खुद्दी; मधुमक्खी या बर्रे । –**कुलिश** –पु० एक बहुमूल्य पत्थर, वैक्रांत मणि । –**घंटिका**–स्त्री० एक तरहकी करधनी जिसमें घंटियाँ या घुँघरू लगे रहते हैं । –**चंचु**–पु० एक क्षुप । –**चंदन**–पु० लाल चंदन । –**चूड़**–पु० एक छोटा पक्षी । –**जंतु**–पु० नन्हा, अस्थिरहित प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा; शतपदी । –**दंशिका**–स्त्री० डाँस । –**दुःस्पर्शा**–स्त्री० अग्निदमनी । –**दुरालभा**–स्त्री० एक काँटेदार पौधा । –**धात्री**–स्त्री० कर्कट वृक्ष । –**धान्य**–पु० तृणधान्य, कुधान्य (कँगनी, कोदो आदि) । –**नासिक**–वि० छोटी नाकवाला । –**पति**–पु० कुबेर । –**पत्रा**–स्त्री० नोनिया साग । –**पत्री**-स्त्री० बच । –**पनस**–पु० लकुच वृक्ष । –**पर्ण**–पु० तुलसी । –**पिप्पली**–स्त्री० वनपिप्पली । –**प्रकृति**–वि० खोटे, ओछे स्वभाववाला । –**फल**,–**फलक**–पु० जीवन नामक वृक्ष; भूमिजंबु नामक वृक्ष । –**फला**–स्त्री० गोपालकर्कटी; इंद्रवारुणी; कंटकारी; अग्निदमनी । –**बुद्धि**–वि० ओछे विचारवाला, जो सदा छोटी, ओछी बातें सोचे, देखे । –**भंटाकी** –स्त्री० कंटकारी । –**भ**–पु० एक परिमाण । –**मुस्ता**–स्त्री० कसेरू । –**रस**–पु० मधु; विषय-सुख । –**रोग**–पु० छोटा रोग, फोड़ा-फुंसी जैसी बीमारी (सुश्रुतमें ऐसे ४४ रोग गिनाये गये हैं) । –**वर्वणा**–स्त्री० बर्रे, भिड़; डाँस । –**वार्ताकिनी**–स्त्री० श्वेत कंटकारी । –**वार्ताकी**–स्त्री० वृहती । –**शार्दूल**–पु० चीता । –**शीर्ष**–पु० मयूरशिखा वृक्ष । –**श्यामा**–स्त्री० कटभी नामक वृक्ष । –**सुवर्ण**–पु० पीतल । –**हा(हन्)**–पु० शिव । –**हिंगूलिका**–स्त्री० कंटकारी ।

क्षुद्रक–वि० (सं०) क्षुद्र । पु० तोला; एक प्राचीन जनपद ।

क्षुद्रता–स्त्री० (सं०) छोटाई, नीचता, ओछापन ।

क्षुद्रल–वि० (सं०) बहुत छोटा (रोग, जानवर) ।

क्षुद्रांजन–पु० (सं०) रोगमें लगाया जानेवाला एक तरहका अंजन ।

क्षुद्रांत्र–पु० पेटके भीतरकी छोटी अँतड़ी (स्माल इन्टेस्टाइन) ।

क्षुद्रा–स्त्री० (सं०) मक्खी; मधुमक्खी; क्षुद्र विचारोंवाली स्त्री; वेश्या; लड़ाकी स्त्री; विकलांग स्त्री; अमलोनी; जटामासी; कंटकारी; हिचकी; प्राचीन समयकी एक नाव ।

क्षुद्राग्निमंथ–पु० (सं०) छोटी गनियारी ।

क्षुद्रात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) नीच, हीन विचारवाला ।

क्षुद्राम्र–पु० (सं०) कोशाम्र ।

क्षुद्रावली–स्त्री० (सं०) क्षुद्रघंटिका ।

क्षुद्राशय–वि० (सं०) छोटी, ओछी तबीयतका ।

क्षुद्रिका–स्त्री० (सं०) डाँस; छोटी घंटी ।

क्षुद्रेंगुदी–स्त्री० (सं०) जवासा ।

क्षुधा–स्त्री० (सं०) भूख; भोजनेच्छा । –**क्षीण**–वि० अनाहारसे सूखा हुआ, दुर्बल । –**निवृत्ति**–स्त्री० भूखकी शांति, पेट भरना ।

क्षुधातुर, क्षुधार्त्त–वि० (सं०) भूखा, भूखसे पीड़ित ।

क्षुधालु–वि० (सं०) जिसे प्रायः भूख लगी रहती हो, पेटू ।

क्षुधावंत*–वि० भूखा ।

क्षुधित–वि० (सं०) भूखा ।

क्षुप–पु० (सं०) छोटे तने, डालियोंवाला पेड़, झाड़; इक्ष्वाकुके पिता; कृष्णका एक पुत्र ।

क्षुपक–पु०, **क्षुपा**–स्त्री० (सं०) झाड़ी ।

क्षुब्ध–वि० (सं०) क्षोभयुक्त, उत्तेजित, अशांत; भीत; खफा; जिसमें जोरकी लहरें उठ रही हों, तूफानी (समुद्र) । पु० मथानीकी डाँड़ी; एक रतिबंध ।

क्षुभ–वि० (सं०) उत्तेजित करनेवाला; प्रवर्तक ।

क्षुभा–स्त्री० (सं०) एक तरहका हथियार ।

क्षुभित–वि० (सं०) अशांत; भीत; क्रुद्ध ।

क्षुमा–स्त्री० (सं०) रेशेदार पौधा–अलसी, सन, नील इ० ।

क्षुर–पु० (सं०) छुरा, उस्तुरा; (स्त्री० 'क्षुरी' ।) खुर; चारपाईका पावा; बाणकी छुरेकी धार जैसी गाँसी; गोखरू; तालमखाना । –**कर्म(न्)**–पु०,–**क्रिया**–स्त्री० छुरेसे मूँड़ना, क्षौर । –**चतुष्टय** –पु० क्षौरके लिए आवश्यक चार वस्तुएँ–उस्तुरा, कुशतृण, शलली (ब्रश) और जल । –**धान**, –**भांड**–पु० छुरा रखनेकी थैली, किसवत ।–**धार**–वि० छुरेकीसी धारवाला । पु० छुरेकी धार जैसी गाँसीवाला वाण; एक नरक । –**पत्र**–वि० छुरेकी धार जैसे पत्तोंवाला । पु० क्षुरधार वाण; शर नामका तृण । –**पत्रा**, –**पत्रिका**–स्त्री० पालक । –**प्र**–पु० खुरपा; खुरसे जैसे फलवाला वाण । –**मर्दी (र्दिन्)**–**मुंडी(डिन्)**–पुं० नाई ।

क्षुरक–पु० (सं०) छुरा; भूतांकुश; गोखरू; तालमखाना ।

क्षुरिका–स्त्री० (सं०) छुरी; पालक; एक तरहका मिट्टीका बरतन ।

क्षुरिणी–स्त्री० (सं०) नाइन ।

क्षुरी(रिन्)–पु० (सं०) नाई ।

क्षुल्ल–वि० (सं०) छोटा; थोड़ा, अल्प । –**तात**–पु० बापका छोटा भाई, छोटा चचा ।

क्षुल्लक–वि० (सं०) क्षुद्र, छोटा; थोड़ा; कुटिल; नीच; पीड़ित; कठिन । पु० क्षुद्र शंख ।

क्षुव–पु० (सं०) छींक; खाँसी ।

क्षेत्र–पु० (सं०) खेत; जमीन; स्थान; उत्पत्तिस्थान; घर; नगर; सिद्धस्थान; तीर्थस्थान; वह स्थान जहाँ भोजन बाँटा जाता है, सत्र; उर्वरा भूमि; पत्नी; कार्य(विशेष)का स्थान; मैदान; कार्यके लिए अवकाश; देह; अंतःकरण; राशि (कर्क, मिथुन आदि); रेखाओंसे घिरा स्थान; ज्ञानेंद्रियों, कर्मेंद्रियों, शब्द, स्पर्श आदि तथा मन, इच्छा, द्वेष आदिका समाहार (गीता) । –**कर**, –**कर्षक**–पु० किसान । –**गणित**–पु० खेत, जमीनका रकबा निकालनेकी विद्या, भूमिति । –**ज**–वि० खेतमें उपजा हुआ; शरीरसे उत्पन्न । पु० विधिवत् नियुक्त पुरुषसे उत्पन्न पुरुष (धर्मशास्त्रमें जायज माने हुए १२ प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक) । –**जा** –स्त्री० श्वेत कंटकारी; एक ककड़ी; गोमूत्रिका; शिल्पिका । –**जात**–वि० परपुरुष द्वारा उत्पन्न (संतान) । –**ज्ञ**–पु० जीवात्मा; परमात्मा; साक्षी; अंतर्यामी; वटुक भैरवका एक भेद; किसान । वि० ज्ञानी; दक्ष । –**दूतिका**,–**दूती**–स्त्री० श्वेत कंटकारी । –**दूरेक्षिका**–स्त्री० (फील्ड ग्लासेज) खेत या मैदान आदिमें प्रयुक्त होनेवाला दूरकी वस्तु देखनेका यंत्र, दूरबीन । –**पंजी**–स्त्री० दे० 'क्षेत्रमापपंजी' । –**पति**–पु० खेत, जमीनका मालिक । –**पाल**–पु० खेतकी रखवाली करनेवाला; भैरवका एक भेद । –**फल**–पु० खेत, स्थान, रेखागणितकी शकलका रकबा, उसकी लंबाई-चौड़ाईका गुणनफल । –**भक्ति**–स्त्री० खेतका बँटवारा । –**भूमि** –स्त्री० जोती-बोयी जानेवाली जमीन । –**माप-पंजी**–स्त्री० (फील्डबुक) खेतों, भूमि आदिकी माप या पैमाइश करते समय काममें आनेवाली पुस्तिका । –**मिति**–स्त्री० क्षेत्रगणित, भूमिति ।

–**रक्षक**–पु० (फील्डर) क्रिकेट, वेसवाल आदिके खेलमें क्षेत्ररक्षणका काम करनेवाला खेलाड़ी । –**रक्षण**–पु०, **क्षेत्ररक्षा**–स्त्री० (फील्डिंग) क्रिकेट, वेसबाल आदिके मैदानमें खड़े होकर बल्लेबाज द्वारा आहत गेंदको रोकने, लोकने तथा फेंकनेवालेके पास लौटा देने आदिका काम । –**रुहा**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी । –**विद्**–वि० दे० 'क्षेत्रज्ञ' । –**विखंडन**–पु० (फ्रेगमेंटेशन ऑफ होल्डिंग्ज) वँटवारेके कारण खेतका या जोतका छोटे-छोटे टुकड़ोंमें विभक्त हो जाना; जोत विखंडन । –**व्यवहार**–पु० क्षेत्रफल निकालना । –**सन्यास**–पु० स्थानविशेषकी सीमाके अंदर ही रहनेका व्रत । –**हिंसा**–स्त्री० खेतको हानि पहुँचाना ।

क्षेत्राजीव–पु० (सं०) किसान । वि० किसानीसे जीविका चलानेवाला ।

क्षेत्रादीपिक–पु० (सं०) खेत फूँकने, जलानेवाला ।

क्षेत्राधिकार–पु० (जूरिस्डिक्शन) किसी विशेष क्षेत्रके या विशेष प्रकारके मुकदमे सुननेका अधिकार ।

क्षेत्राधिदेवता–पु० (सं०) क्षेत्र, सिद्धस्थान-विशेषका अधिष्ठाता देवता ।

क्षेत्राधिप–पु० (सं०) खेतका मालिक; राशीश ।

क्षेत्रानुगत–वि० (सं०) घाटपर लगा हुआ (जहाज) ।

क्षेत्राभिरक्षक–पु० (वार्डन) नागरिक संघटनका वह अधिकारी जो हवाई हमलेके समय क्षेत्रविशेषके नागरिकोंकी रक्षाके काममें सहायता करे ।

क्षेत्रामलकी–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी ।

क्षेत्रिक–वि० (सं०) खेतवाला । पु० किसान ।

क्षेत्रिय–वि० (सं०) खेत-संबंधी; खेतमें उपजा हुआ; क्षेत्रवाला; असाध्य (रोग) । पु० असाध्य रोग; औषध; चरागाह; परदाररत पुरुष ।

क्षेत्रीय निरोध–पु० (इंटर्नमेंट) किसी व्यक्तिकी गति-विधि स्थान-विशेष या क्षेत्र-विशेषके भीतर ही सीमित कर देना, स्थानासेध ।

क्षेत्री (त्रिन्)–वि० (सं०) जो क्षेत्रका अधिकारी हो । पु० किसान; असाध्य रोग; आत्मा; परमात्मा; नाममात्रका पति ।

क्षेद–पु० (सं०) रोना-धोना, शोक करना ।

क्षेप–पु० (सं०) फेंकना; उछालना; भेजना; हिलाना; विताना; आघात; विलंब; डाँड़ खेना; निंदा; अपमान; आक्षेप; दर्प; लेपन; पुष्पगुच्छ ।

क्षेपक–वि० (सं०) फेंकनेवाला; मिलाया हुआ; अपमानजनक । पु० (पुस्तकादिमें) पीछेसे मिलाया, वढ़ाया हुआ अंश; कर्णधार; डाँड़ खेनेवाला ।

क्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; हिलाना; झटकना; फेंककर मारना; निंदा, आक्षेप करना; विताना; फेंकनेका साधन (ढेलवाँस आदि) ।

क्षेपणि–पु०, **क्षेपणी**–स्त्री० (सं०) डाँड़; मछली पकड़नेका जाल; ढेलवाँस या गुलेल ।

क्षेपणिक–पु० (सं०) मल्लाह । वि० नाशक ।

क्षेपणीय–वि० (सं०) फेंकने योग्य; जो फेंका जा सके (ढेला आदि) । पु० ढेलवाँस ।

क्षेप्ता (प्तृ)–वि० (सं०) फेंकनेवाला ।

क्षेप्य–वि० (सं०) फेंकने योग्य; रखे, पहने जाने योग्य; नष्ट करने योग्य; जोड़े जाने योग्य (ग०) ।

क्षेप्यास्त्र–पु० (सं०) (मिसाइल) अस्त्र जो यंत्रकी सहायतासे बहुत दूर तक प्रेषित किये जा सकें, जैसे राकेट ।

क्षेमंकर–वि० (सं०) क्षेम, मंगल करनेवाला ।

क्षेमंकरी–स्त्री० (सं०) देवी-विशेष ।

क्षेमंकरी (रिन्)–पु० (सं०) एक तरहकी सफेद चील जो शुभ मानी जाती है (हिंदीमें स्त्रीलिंग), 'छेमकरी' ।

क्षेम–पु० (सं०) कुशल, मंगल; सुरक्षा; प्राप्त वस्तुकी रक्षा (योगक्षेम); मुक्ति; आधार; विश्रामस्थान; नक्षत्र; चोवा । वि० कल्याणकारी, श्रेयस्कर; सुखी; सुरक्षायुक्त । –**कर,–कार**–वि० मंगलकारक । –**करी**–स्त्री० दुर्गाका एक रूप । –**कल्याण**–पु० एक संकर राग । –**फला**–स्त्री० गूलर । –**रात्रि**–स्त्री० वह रात जिसमें चोरी, हत्या आदि न हुई हो (कौ०) । –**वृत्ति**–स्त्री० वर्तमान स्थिति, व्यवस्था बनाये रखनेका भाव, परिवर्तन-भीरुता, 'कंसरवेटिव' मनोवृत्ति ।

क्षेमक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य; शिवका एक अनुचर; प्लक्ष द्वीपका एक खंड; परीक्षित्‌का अंतिम वंशज ।

क्षेमा–स्त्री० (सं०) दुर्गा; एक अप्सरा ।

क्षेमासन–पु० (सं०) एक प्रकारका आसन (तं०) ।

क्षेमी (मिन्)–वि० (सं०) क्षेमयुक्त, निरापद; * क्षेमकर; क्षेम चाहनेवाला ।

क्षेमेंद्र–पु० (सं०) संस्कृतके एक प्रसिद्ध कश्मीरी साहित्यकार ।

क्षेम्य–वि० (सं०) शांतिदायक; कल्याणकर; स्वास्थ्यकर; भाग्यवान् । पु० शिव; विश्राम ।

क्षेम्या–स्त्री० (सं०) दुर्गाका एक रूप ।

क्षेय–वि० (सं०) क्षय, नाश करने योग्य ।

क्षैण्य–पु० (सं०) दुवलापन, क्षीणता; क्षय ।

क्षैत्र–पु० (सं०) क्षेत्र; क्षेत्रसमूह ।

क्षैप्र–पु० (सं०) क्षिप्रता ।

क्षैमिक–वि० (सं०) क्षेम, लब्ध वस्तुके संरक्षणमें उपयोगी ।

क्षैरेय–वि० (सं०) दूधसे बना हुआ ।

क्षोड–पु० (सं०) हाथी बाँधनेका खूँटा ।

क्षोणि, क्षोणी–स्त्री० (सं०) धरती; एककी संख्या । –**देव**–पु० ब्राह्मण । –**पति,–पाल**–पु० राजा । –**रुद् (ह्)**–पु० वृक्ष ।

क्षोद–पु० (सं०) चूर्ण; धूल; चूर करना, पीसना; सिल । –**क्षम**–वि० परीक्षामें टिकनेवाला ।

क्षोदित–वि० (सं०) पीसा हुआ, चूर किया हुआ । पु० धूल; चूरन, बुकनी; आटा या कोई पीसी हुई चीज ।

क्षोदिमा (मन्)–स्त्री० (सं०) सूक्ष्मता; तुच्छता; अल्पता ।

क्षोभ–पु० (सं०) हलचल, खलबली; व्याकुलता; रोषयुक्त असंतोष । –**कारक,–कारी**–वि० खलबली या तीव्र असन्तोष उत्पन्न करनेवाला (वर्णन, आदि) । –**सीमा**–स्त्री० (ट्रोपोपॉज़) वायुमण्डलमें लगभग ६ से १० मीलकी ऊँचाईपर स्थित वायुकी एक पतली तह जो नीचेके क्षोभमंडल (ट्रोपोस्फियर)को ऊपरके समतापमंडल (स्ट्रैटोस्फियर)से अलग करती है ।

क्षोभक–वि० (सं०) क्षुब्ध करनेवाला । पु० कामाख्याका एक पर्वत ।

क्षोभण–वि० (सं०) क्षोभकारी । पु० क्षुब्ध करना; कामदेवका एक बाण; शिव; विष्णु ।

क्षोभना*–अ० क्रि० व्याकुल होना–'सोवत जागत नेकु न क्षोभै'–रामचंद्रिका; भीत या क्रुद्ध होना; चित्तका चलायमान होना ।

क्षोभिणी–स्त्री० (सं०) निषाद स्वरकी एक श्रुति ।

क्षोभित*–वि० क्षोभयुक्त ।

क्षोभी (भिन्)–वि० (सं०) क्षोभयुक्त, क्षुब्ध; व्याकुल ।

क्षोम–पु० (सं०) दुमंजिलेपरका कमरा; अटारी; अलसी आदिके रेशोंसे वना हुआ कपड़ा ।

क्षौणि, क्षौणी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; एककी संख्या । –**प्राचीर**–पु० समुद्र । –**भुक् (ज्),–पति**–पु० राजा । –**भृत्,–धर**–पु० पहाड़ ।

क्षौद्र–पु० (सं०) क्षुद्रता, चंपाका पेड़; छोटी मक्खीका शहद; जल; एक संकर जाति; धूलिकण । –**जा**–स्त्री० मधुशर्करा । –**धातु**–स्त्री० माक्षिक । –**मेह**–पु० मधुमेह नामक रोग । –**शर्करा**–स्त्री० मधुशर्करा ।

क्षौद्रक–पु० (सं०) मधु ।

क्षौद्रेय–पु० (सं०) मोम ।

क्षौम–वि० (सं०) अलसी आदिसे बना हुआ । पु० अलसी आदिके रेशोंसे बना हुआ कपड़ा; अलसी; रेशमी कपड़ा; छतके ऊपरका (हवादार) कमरा; अटारी ।

क्षौमक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, चोवा ।

क्षौमी–स्त्री० (सं०) अलसी; टाटकी गुदड़ी ।

क्षौर–पु० (सं०) सिर आदिके बाल मूँड़ना, कतरना, हजामत बनाना । –**कर्म (न्)**–पु० हजामत बनाना । –**मंदिर**–पु० दे० क्षौरालय ।

क्षौरालय–पु॰ (वार्वर्स सैलून) वाल वनवानेकी दूकान।

क्षौरिक–पु॰ (सं॰) नाई।

क्ष्मा–स्त्री॰ (सं॰) धरती। **–धर**–पु॰ पहाड़। **–धृति,–प,–पति**–पु॰ राजा।

क्ष्वेड–पु॰ (सं॰) ध्वनि; अव्यक्त ध्वनि; विष; कानका एक रोग; चिकनाई; त्याग। वि॰ कुटिल; नीच।

क्ष्वेडा–स्त्री॰ (सं॰) सिंहनाद; युद्धनाद; वाँसकी खूंटी।

क्ष्वेला–स्त्री॰ (सं॰) क्रीडा, खेल।

ख

ख–पु॰ देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका दूसरा वर्ण। इसका उच्चारणस्थान कंठ है।

खंकर–पु॰ (सं॰) वालोंकी लट, अलक।

खंख–वि॰ छूँछा, खाली; उजाड़; कंगाल।

खंखणा–स्त्री॰ (सं॰) घंटी आदिकी ध्वनि।

खंखर*–वि॰ वीरान, उजड़ा हुआ। पु॰ (सं॰) दे॰ 'खंकर'।

खँखरा–वि॰, पु॰ दे॰ 'खखरा'।

खँखार–पु॰ दे॰ 'खखार'।

खँखारना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'खखारना'।

खंग–पु॰ दे॰ 'खङ्ग'; * गैंड़ा। स्त्री॰ घाव।

खंगड़|–वि॰ अक्खड़, उजड्ड।

खंगनखार–पु॰ एक पेड़ जो अच्छे दर्जेका सज्जीखार वनानेके काम आता है।

खँगना*–अ॰ क्रि॰ घटना, कमी होना।

खंगर–वि॰ शुष्क; क्षीण।

खँगवा|–पु॰ खुर पकनेका रोग, खाँग।

खँगहा–वि॰ खाँगवाला, खँगैल। पु॰ गैंड़ा।

खँगार–पु॰ एक जाति।

खँगारना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'खँगालना'।

खँगालना–स॰ क्रि॰ मजे-धुले वरतनको पूरी सफाईके लिए फिरसे धोना; सव कुछ उठा ले जाना; साफ करना; खाली करना; झाड़ू फेर देना।

खँगी*–स्त्री॰ कमी।

खँगुवा–पु॰ गैंड़ेका सींग।

खँगैल–वि॰ खाँगवाला, दँतैला; जिसके खुर पके हों।

खँगोरिया|–स्त्री॰ (दरिद्र ग्रामीणोंके पहननेकी) चाँदीकी हँसुली।

खँघारना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'खँगालना'।

खँचना|–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'खचना'।

खँचाना|–स॰ क्रि॰ दे॰ 'खचाना'।

खँचिया–स्त्री॰ छोटा खाँचा, टोकरी।

खँचैया|–पु॰ खींचनेवाला।

खंज–वि॰ (सं॰) लँगड़ा। **–खेट,–खेल,–लेख**–पु॰ खँड़रिच, खंजन।

खंजक–वि॰ (सं॰) दे॰ 'खंज'।

खंजकारि–पु॰ (सं॰) खेसारी।

खँजड़ी–स्त्री॰ डफलीके ढंगका, आकारमें उससे छोटा, एक वाजा।

खंजन–पु॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया जो मैदानी प्रदेशोंमें केवल जाड़ेमें दिखाई देती है, खँड़रिच (साहित्यमें यह चंचल आँखका उपमान मानी गयी है); लँगड़ाते हुए चलना। **–रत**–पु॰ **–रति**–स्त्री॰ (सन्न्यासियोंका) गुप्त मैथुन।

खंजनक–पु॰ (सं॰) खँड़रिच।

खंजना–स्त्री॰ (सं॰) खंजनकी शक्लकी एक चिड़िया; सरसों।

खंजनाकृति–पु॰ (सं॰) खंजनके आकारका एक पक्षी।

खंजनासन–पु॰ (सं॰) तंत्रोक्त आसन।

खंजनिका–स्त्री॰ (स॰) एक प्रकारका खंजन।

खंजर–पु॰ (अ॰) कटार, एक तरहका बड़ा छुरा।

खँजरी–स्त्री॰ दे॰ 'खँजड़ी'।

खंजरीट, खंजरीटक–पु॰ (सं॰) खंजन; एक ताल।

खंजा–स्त्री॰ (सं॰) एक वर्णवृत्त।

खंड–पु॰ (सं॰) टुकड़ा; भाग; ग्रंथका विभाग; मकानकी मंजिल; देश; समूह; समीकरणकी एक क्रिया (ग॰); खाँड़, चीनी; काला नमक; रत्नका एक दोष; *दिशा; खाँड़ा। वि॰ खंडित; विभक्त; विकलांग; छोटा। **–कंद,–कर्ण**–पु॰ शकरकंद। **–कथा**–स्त्री॰ कथाका एक भेद, छोटी कथा। **–कालिक**–वि॰ (पार्ट टाइम) पूरे समयतक न चलकर उसके कुछ अंशमें ही किया जानेवाला (काम); जो पूरे समयके लिए नहीं, थोड़े समय ही काम करनेके लिए नियुक्त किया गया हो। **–काव्य**–पु॰ छोटा काव्य, वह काव्य जिसमें महाकाव्यके पूरे लक्षण न हों। **–ग्रहण**–पु॰ सूर्य या चन्द्रका ऐसा ग्रहण जिसमें उसके विम्वके केवल कुछ भागपर ही पृथ्वीकी छाया पड़े। **–ज**–पु॰ गुड़; एक तरहकी शर्करा। **–ताल**–पु॰ एकताला ताल। **–धारा**–स्त्री॰ कतरनी। **–पति**–पु॰ राजा। **–परशु**–पु॰ शिव; परशुराम; विष्णु। **–पर्शु**–पु॰ शिव; विष्णु; परशुराम; राहु; टूटे हुए दाँतवाला हाथी। **–पाल**–पु॰ हलवाई। **–पीठ**–पु॰ उच्चन्यायालयकी शाखा (वेंच)। **–प्रलय**–पु॰ व्रह्माका एक दिन–एक हजार चतुर्युगी–वीतनेपर होनेवाला आंशिक प्रलय जिसमें पुराणानुसार स्वर्गसे नीचेके सव लोगोंका नाश हो जाता है। **–प्रस्तार**–पु॰ एक ताल। **–फण**–पु॰ एक तरहका साँप। **–फुल्ल**–पु॰ कूड़ा-कर्कट। **–मेरु**–पु॰ पिंगलकी प्रस्तार-संवंधी एक रीति। **–मोदक**–पु॰ दे॰ 'खंडज'। **–ल**–पु॰ खंड; खंड धारण करनेवाला। **–लवण**–पु॰ काला नमक। **–लेखक**–पु॰ खंजरीट। **–वर्षा**–स्त्री॰ वह वर्षा जो नगरादिके एक भागमें हो, एकमें न हो। **–विकार**–पु॰ चीनी। **–विकृति**–स्त्री॰ मिसरी। **–वृष्टि**–स्त्री॰ खंडवर्षा। **–व्यायाम**–पु॰ नृत्यका एक भेद। **–शर्करा**–स्त्री॰ मिसरी। **–शाखा**–स्त्री॰ एक लता, महिषवल्ली। **–शीला**–स्त्री॰ स्त्री जिसका शील भंग हो चुका हो, व्यभिचारिणी स्त्री। **–सर**–पु॰ यवासशर्करा; चीनी। **मु॰ -खंड करना**–टुकड़े-टुकड़े करना, धज्जियाँ उड़ा देना।

खँड़–'खाँड़'का समासमें व्यवहृत रूप। **–पूरी**–स्त्री॰ मेवा, शक्कर मिली सूजी, खोया आदि भरकर वनायी हुई मोयनदार पूरी। **–वरा**–पु॰ खँड़ौरा। **–वानी**–स्त्री॰ खाँड़का शरवत; वरातियोंके सत्कारके लिए शरवत भेजे जानेकी एक रस्म (खंड–खाँड़+पानी)। **–सार,–साल**–स्त्री॰ देशी ढंगसे चीनी वनानेका कारखाना। **–सारी**–स्त्री॰ एक तरहकी देशी चीनी।

खंडक–वि॰ (सं॰) खंडन करनेवाला; काटनेवाला; हटानेवाला। पु॰ खंड; मिसरी; वह प्राणी जिसके नाखून न हों।

खँडचाल–स्त्री॰ चूना, सुर्खी आदिसे खंड या टुकड़े चालकर अलग कर देनेकी जाली।

खंडत*–वि॰ खंडित।

खंडन–पु॰ (सं॰) काटना; तोड़ना; नाश करना; हानि करना; निराश करना (प्रणय); वाधक होना; धोखा देना; विद्रोह; वर्खास्त करना; किसी वातको गलत वताना, रद करना; दूसरेके मतका युक्तिपूर्वक निराकरण। वि॰ तोड़ने, काटनेवाला। **–खंडखाद्य**–पु॰ श्रीहर्षकृत अद्वैत वेदांतका एक प्रसिद्ध खंडनप्रधान ग्रंथ। **–॰ कार**–पु॰ खंडन-खंडखाद्यके रचयिता श्रीहर्ष। **–मंडन**–पु॰ खंडन और मंडन; पक्ष-विपक्षमें तर्क देना; वहस, विवाद। **–रत**–वि॰ ध्वंसकार्यमें संलग्न या कुशल।

खंडना*–स॰ क्रि॰ खंडित करना; निराकरण करना; टुकड़े-टुकड़े करना।

खंडनी–स्त्री॰ मालगुजारीकी किश्त; दे॰ 'खंडिनी'।

खंडनीय–वि॰ (सं॰) खंडन करने योग्य।

खंडर–पु॰ खँडहर; (सं॰) मिठाई।

खँडरना–स॰ क्रि॰ खंड-खंड करना, टुकड़े-टुकड़े करना।

खँडरा–पु॰ वेसनका वना एक पकवान; एक तरहका मीठा वड़ा।

खँड़रिच–पु॰ खंजरीट।

खँड़रू–पु० फर्शपर बिछानेका कपड़ा, जाजिम ।

खँडला–पु० टुकड़ा, कतला ।

खँडवान*–पु० दे० 'खँडवानी' ('खँड'के साथ) ।

खंडशः (शस्)–अ० (सं०) खंड-खंड करके, कई खंडोंमें बाँटकर ।

खँडहर–पु० ढूह, गिरे हुए मकानका अवशेष; गिरा, ढहा हुआ मकान ।

खँड़हल†–पु० दे० 'खँडहर' ।

खंडाभ्र–पु० (सं०) विखरे हुए बादल; दंतक्षत (रतिक्रीड़ामें) ।

खंडाली–स्त्री० (सं०) तेलकी एक माप; ताल; तालाब; कामुककी स्त्री ।

खंडिक–पु० (सं०) केराव; काँख; विद्यार्थी; चीनी बनानेवाला ।

खंडिका–स्त्री० (सं०) केरावका भोजन; काँख; एक लय, अध्याय; टुकड़ा; किस्त; सोपानका डंडा ।

खंडित–वि० (सं०) तोड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ; टूटा हुआ, भग्न; गलत ठहराया हुआ, निराकृत । **–विग्रह**–वि० जिसके अंग भंग हो गये हों, विकलांग । **–वृत्त**–वि० दुश्चरित्र; परित्यक्त । **–व्यक्तित्व**–पु० मानसिक अशांतिसे उत्पन्न स्थिति जिससे मनुष्यकी चेतनाशक्ति विकृत हो जाती है ।

खंडिता–स्त्री० (सं०) नायकमें अन्य स्त्रीसे संभोगके चिह्न देखकर कुपित हुई नायिका ।

खंडिनी–स्त्री० (सं०) पृथिवी ।

खँडिया–पु० ऊँखकी गँड़ेरियाँ बनानेवाला । स्त्री० टुकड़ा ।

खंडी†–स्त्री० गल्लेका एक नाप (छत्तीसगढ़); मराठों द्वारा लिया जानेवाला चौथ नामक कर ।

खंडोद्भव, खंडोद्भूत–पु० (सं०) दे० 'खंडज' ।

खंडोष्ठ–पु० (सं०) ओठका एक रोग ।

खँडौरा–पु० मिसरीका लड्डू; दे० 'खँडवरा' ('खँड'के साथ) ।

खँतरा–पु० दरार, अँतरा, छोटा गड्ढा (प्रायः 'कोना'के साथ अंतमें आता है) ।

खंता†–पु० मिट्टी खोदनेका औजार; वह गड्ढा जिसमेंसे कुम्हार मिट्टी लाते हैं; गड्ढा ।

खंती–स्त्री० मिट्टी खोदनेका औजार; छोटा गड्ढा; मिट्टी खोदनेका काम करनेवाली एक जाति ।

ख़ंदक़–स्त्री० (अ०) खाई, गहरा गड्ढा ।

ख़ंदाँ–वि० (फा०) हँसनेवाला; हँसता हुआ ।

खंदा*–पु० खोदनेवाला ।

ख़ंदा–वि० (फा०) हँसता हुआ । पु० हँसी; खिलखिलाहट । **–पेशानी**–वि० हँसमुख ।

खँधवाना–स० क्रि० खाली कराना (पात्र) ।

ख़ंधा–पु० एक छंद ।

खंधार*–पु० तंबू; छावनी ।

खँधियाना†–स० क्रि० खाली करना (पात्र) ।

खंबायची–स्त्री० एक रागिनी; खम्माच ।

खंभ–पु० स्तंभ, खंभा; सहारा ।

खंभा–पु० पत्थर, लकड़ी, लोहे या ईंटों आदिका बना लंबा आधार; सहारा ।

खंभात–पु० अरब सागरकी एक खाड़ी; पश्चिमी गुजरातका एक राज्य ।

खँभार, खंभार–पु० चिंता; डर; घबड़ाहट; शोक–'फिरहु त सबकर मिटहि खँभारू'–रामा० । स्त्री० गंभारी नामक पेड़ ।

खँभारी, खंभारी–स्त्री० गंभारी नामक पेड़ ।

खंभावती–स्त्री० एक रागिनी ।

खँभिया–स्त्री० छोटा खंभा ।

खँसना–अ० क्रि० गिरना, खसकना ।

ख–पु० (सं०) शून्य स्थान, आकाश; सूर्य; शून्य; बिंदी; स्वर्ग; पुर, नगर; क्षेत्र; अभ्रक; ज्ञानेंद्रिय; ज्ञान; लग्नसे दसवाँ स्थान; ब्रह्म; सुख; कर्म; गड्ढा; छेद; निकास; श्वासनलिका; जख्म । **–कक्षा**–स्त्री० आकाशकी परिधि । **–कामिनी**–स्त्री० दुर्गा । **–कुंतल**–पु० व्योमकेश, शिव । **–खोल्क**–पु० सूर्यका एक नाम । **–गंगा**–स्त्री० आकाशगंगा । **–ग**–पु० पक्षी; सूर्य; ग्रह; वायु; बादल; चंद्रमा; बाण; देवता । **–०केतु,–०नाथ,–०पति**–पु० गरुड़ । **–०स्थान**–पु० पेड़का खोखला, घोंसला । **–गति**–स्त्री० एक वृत्त । **–गुण**–वि० जिस (राशि)का गुणक शून्य हो (ग०) । **–गोल,–गोलक**–पु० आकाशमंडल । **–गोल विद्या**–स्त्री० (ऐस्ट्रानामी) आकाशीय नक्षत्रों, ग्रहों आदिका वर्णन करनेवाला विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान । **–ग्रास**–वि० सर्वग्रास (ग्रहण) । **–चमस**–पु० चंद्रमा । **–चर,–चारी-(रिन्)**–वि०, पु० दे० 'खेचर' । **–चित्र**–पु० असंभव बात । **–जल**–पु० ओस । **–ज्योति(स्)**–पु० खद्योत; जुगनू । **–तमाल**–पु० बादल; धुआँ । **–तिलक**–पु० सूर्य । **–द्योत**–पु० सूर्य; जुगनू । **–द्योतक**–पु० सूर्य; एक जहरीले फलवाला वृक्ष । **–द्योतन**–पु० सूर्य । **–धूप**–पु० एक गंधद्रव्य; बान (आतशबाजीका) । **–पराग**–पु० अंधकार । **–पिंड**–पु० आकाशमें स्थित ग्रह । **–पुर**–पु० गंधर्वनगर; हरिश्चंद्रकी पुरी; सुपारीका पेड़; बघनखा; भद्रमुस्तक । **–पुष्प**,–पु० असंभव कल्पना, आकाशकुसुम । **–बाष्प,–वाष्प**–पु० ओस । **–भ्रांति**–स्त्री० चील । **–मणि**–पु० सूर्य । **–मध्य**–पु० आकाशका मध्य, सिरके ऊपरका बिंदु । **–मीलन**–पु० तंद्रा । **–मूर्ति**–पु० शिव । **–मूली**–स्त्री० कुंभी । **–वल्ली**–स्त्री० अकासबौर । **–वारि**–पु० ओस; कुहरा; वर्षाका जल । **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिष-विद्या । **–श्वास**–पु० वायु । **–सिंधु**–पु० चंद्रमा । **–स्तनी**–स्त्री० पृथ्वी । **–स्वस्तिक**–पु० शीर्षबिंदु । **–हर**–वि० जिस (राशि)का हर शून्य हो (ग०) ।

खई*–स्त्री० नाश, क्षय; युद्ध; झगड़ा,–'सुत सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निस दिन होत खई'–सूर ।

खक्खट–वि० (सं०) कठिन, ठोस; कर्कश । पु० खड़िया ।

खक्खर–पु० (सं०) भिक्षुककी छड़ी ।

खक्खा–पु० कहकहा, अट्टहास; अनुभवी व्यक्ति; बड़े डीलडौलका हाथी ।

खखरा–वि० झीना । पु० बाँसका बना टोकरा; देग ।

खखरिया†–स्त्री० एक नमकीन पकवान जो पापड़ जैसा होता है ।

खखसा–पु० दे० 'खेखसा' ।

खखानी†–वि० स्त्री० अधिक भूखी (भूमि) 'जमीन बड़ी खखानी है; बरसते ही सारा पानी सोख लिया' ।

खखार–पु० खखारनेसे निकलनेवाला गाढ़ा-लसदार बलगम ।

खखारना–अ० क्रि० खखार निकालना, थूकना, खरखराहटके साथ गलेमें चिपका हुआ कफ निकालना; संकेतरूपमें खाँसना ।

खखेटना*–स० क्रि० पीछा करके भगाना, खदेड़ना; दबाना; छेदना; घायल करना; व्याकुल करना ।

खखेटा, खखेट्यो*–पु० भगदड़; छिद्र; शंका, खटका–'सोच भयो सुरनायकके कल्पद्रुमके हिय माँझ खखेट्यौ'–सुदामाचरित्र ।

खखेना*–स० क्रि० दे० 'खखेटना' ।

खखोंडर†–पु० पेड़के कोटरमें बना हुआ उल्लू आदिका घोंसला ।

खगड़ा†–पु० दे० 'खङ्गट' ।

खगना*–अ० क्रि० गड़ना, चुभना; चित्तमें बैठना; अनुरक्त होना; चिह्नित होना, उपट आना; असर होना; अड़ रहना, उलझना ।

खगमगी*–स्त्री० धँसन ।

खगवार–पु० खँगौरिया, हँसुली ।

खगहा–पु० गैंड़ा ।

खगांतक–पु० (सं०) बाज पक्षी ।

खगासन–पु० (सं०) विष्णु; उदयगिरि ।

खगेंद्र, खगेश–पु० (सं०) गरुड़ ।

खग्ग–*पु० दे० 'खड्ग' ।

खचन–पु० जड़ने, उलझने या अंकित होनेकी क्रिया ।

खचना–अ० क्रि० जड़ा जाना; अंकित होना; उलझ जाना; रम जाना । स० क्रि० जड़ना; अंकित करना ।

खचरा–वि० दोगला; नीच ।

खचाखच–अ० बिलकुल (भरा हुआ), ठसाठस ।

खचाना–स० क्रि० चिह्न–लकीर बनाना, खचित करना; तेजीसे लिखना ।

खचावट–स्त्री० खचन; गठन।

खचित–वि० (सं०) अंकित; चिह्नित; आवद्ध; जड़ा हुआ।

खचिया¦–स्त्री० दे० 'खँचिया'।

खच्चर–पु० घोड़ेसे मिलता-जुलता एक जानवर जो घोड़े और गधेकी मिश्र संतति है।

खज–पु० (सं०) मथानी; मंथन; करछुल; युद्ध। * वि० खाद्य, खाने योग्य।

खजक–पु० (सं०) मथानी।

खजप–पु० (सं०) घी।

खजमजाना–अ० क्रि० (तबीयतका) कुछ अस्त-व्यस्त-सा होना, अस्वस्थता जैसी प्रतीति होना।

खजला–पु० खाजेकी तरहकी एक मिठाई।

खजहजा*–पु० खाने योग्य अच्छा फल; मेवा; खाजा।

ख़ज़ांची–पु० (फा०) खजानेका अधिकारी, कोषाध्यक्ष।

खजा–स्त्री० (सं०) मथानी; कलछी; मंथन; वध, विनाश; युद्ध।

खजाक–पु० (सं०) चिड़िया।

खजाका–स्त्री० (सं०) कलछी।

ख़ज़ानची–पु० दे० 'ख़ज़ांची'।

ख़ज़ाना–पु० (फा०) रुपया, सोना-चाँदी रखनेका स्थान, कोश, धनागार, भंडार; धन-माल; बंदूकमें बारूद रहनेका स्थान; राजस्व। **–अफसर**–पु० डिपटी कलक्टरके दरजेका अफसर जिसके यहाँ जिलेकी सरकारी आय जमा होती है और उसकी स्वीकृतिसे व्यय होता है। **–(ने)की हुंडियाँ**–स्त्री० (ट्रेजरी विल्स) वे अस्थायी हुंडियाँ जो तात्कालिक आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए धन प्राप्त करनेके निमित्त राज्यके खजानेसे जारी की जायँ, राजकोषपत्र।

खजिका–स्त्री० (सं०) दे० 'खजाका'।

ख़ज़िल–वि० (फा०) लज्जित।

ख़ज़ीना–पु० (फा०) खजाना, कोश।

खजुआ, खजुवा–पु० खाजा; खजला; भटवाँस।

खजुरहट, खजुरहटी¦–स्त्री० खजूरका बाग; एक तरहका खजूर।

खजुराही¦–स्त्री० खजूरका बाग।

खजुलाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'खुजलाना'।

खजुली–स्त्री० दे० 'खुजली'; एक मिठाई।

खजूर–पु० ताड़की जातिका एक पेड़ जिसका रस ताड़ीकी तरह पिया जाता है और उससे गुड़-शकर भी बनाते हैं; मैदेकी बनी एक मिठाई। **–छड़ी**–स्त्री० एक रेशमी कपड़ा जिसपर खजूरकी पत्तियोंकी-सी धारियाँ होती हैं।

खजूरी–वि० खजूरका; खजूरके (पत्तेके) आकारका (खजूरी चोटी)। * स्त्री० खजूर।

खजोहरा–पु० एक तरहका रोयेंदार कीड़ा जिसके स्पर्शसे खुजली पैदा होती है।

खट–पु० (सं०) बलगम; अंधा कुआँ; कुल्हाड़ी; घूँसा; हल; एक तृण जो छाजनके काम आता है। **–खादक**–पु० स्यार; कौआ; जानवर; खानेवाला; शीशेका बरतन।

खट–स्त्री० दो चीजोंके टकरानेकी ध्वनि। **–खट**–स्त्री० 'खट-खट'की आवाज; झमेला, खटराग; झगड़ा, अनबन, किचकिच। **–खटा**–पु० पक्षियोंको भगानेके लिए वृक्षोंमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा। **–पट**–स्त्री० 'खट-खट'की आवाज; अनबन, झगड़ा। **–पटिया**–वि० झगड़ालू; उपद्रवी। स्त्री० काठकी बनी चप्पल; चट्टी। **–से**–तुरत।

खट–'खाट'का समासमें व्यवहृत रूप। **–कीड़ा,–कीरा**–पु० खटमल। **–पाटी**–स्त्री० खाटकी पाटी। **–बुना**–पु० खाट बुननेवाला। **–मल**–पु० मैली खाट, बिस्तर आदिमें पैदा होनेवाला एक ऊष्मज कीड़ा जो आदमीका खून पीकर जीता है। **–मली**–वि० खटमलके रंगका। **–मुत्ता**–वि० सोते समय खाटपर पेशाब कर देनेवाला (बच्चा)। **मु०–पाटी,–वाट,–वाटी लेना**–(स्त्रीका) मान या क्रोधसे खाटपर, पाटीसे लगकर, पड़ रहना।

खट–वि० 'खट्टा'का समासमें व्यवहृत रूप। **–मिट्ठा,–मीठा**–वि० जिसमें खटास-मिठास दोनों हों; खट्टा-मीठा (फल)।

खट*–वि० छ। **–करम**–पु० टेढ़े विधि-विधानवाला पूजन, अनुष्ठान; झमेला, खटराग। **–करमी**–वि० खटकरम करने, खटराग फैलानेवाला। **–पद**–पु० दे० 'षट्पद'। **–पदी**–स्त्री० दे० 'षट्पदी'। **–मुख**–पु० दे० 'षण्मुख'। **–रस**–वि०, पु० दे० 'षड्रस'। **–राग**–पु० झंझट, झमेला; काठ-कबाड़ (फैलाना)।

खटक–स्त्री० खटकनेका भाव; चुभन, टीस; दुःख, शिकायत; खटका, आशंका (बेखटक)। पु० (सं०) घटक; आधी खुली मुट्ठी; मुष्टिका।

खटकना–अ० क्रि० खटक होना, चुभना, गड़ना; बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना; उचटना; अनबन, बिगाड़ होना; 'खट-पट' शब्द होना।

खटका–पु० 'खट-खट'की आवाज; आशंका; चिंता; पेच, पुरजा, (जिसे घुमाने, दवानेसे 'खट' शब्दके साथ बिजली, ताला आदि बंद हो या खुले); सिटकिनी; पक्षियोंको उड़ानेके लिए वृक्षमें बाँधा जानेवाला बाँसका टुकड़ा।

खटकाना–स० क्रि० खटखटाना, भड़काना; अनबन, बिगाड़ कराना।

खटकामुख–पु० (सं०) बाण चलानेमें हाथकी एक मुद्रा; इस मुद्रावाला आदमी।

खटक्किका–स्त्री० (सं०) खिड़की।

खटखटाना–स० क्रि० किसी चीजको पीट, हिलाकर 'खटखट'की आवाज निकालना; याद दिलाना, टोकना।

खटना–अ० क्रि० कठोर श्रम करना, पिसना; धनोपार्जन करना, कमाना।

खटपूरा¦–पु० ढेले तोड़नेकी मुँगरी।

खटला–पु० बाल-बच्चे, परिवार; पत्नी; कानमें बाली पहननेका छेद।

खटाई–स्त्री० खटास, तुर्शी; खट्टी चीज (आम, इमली आदि)। **मु०–में डालना**–गहना साफ करनेके लिए खटाई (इमली आदि) में डालना; (किसी कामको) टाल देना, लटकाये रखना, कुछ तै न करना। **–में पड़ना**–खटाईमें डाला जाना; पूरा होने या चुकाये जानेकी आशा न रह जाना।

खटाक, खटाका–पु० ऊपरसे मिट्टी, पत्थर आदि गिरनेकी 'खट'की आवाज।

खटाखट–पु० 'खट-खट'की आवाज। अ० 'खट-खट'की आवाज करते हुए; तुरत, तत्काल।

खटाना–अ० क्रि० खटास आना, खट्टा हो जाना; निबाह होना; टिकना; परखमें ठीक उतरना। स० क्रि० कसके काम लेना।

खटापट, खटापटी–स्त्री० झगड़ा, विरोध, अनबन।

खटाव–पु० निबाह, गुजर।

खटास–स्त्री० खट्टापन, तुर्शी। पु० गंधबिलाव, खट्टाश।

खटिक–पु० फल, तरकारी आदि बेचनेवाली एक हिंदू जाति; (सं०) आधी खुली मुट्ठी।

खटिका–स्त्री० (सं०) खड़िया मिट्टी; कानका छेद।

खटिनी, खटी–स्त्री० (सं०) खड़िया मिट्टी।

खटिया–स्त्री० छोटी चारपाई।

खटीक–पु० तरकारी बेचनेका काम करनेवाली एक हिंदू जाति; * खट्टिक, कसाई।

खटोलना–पु० दे० 'खटोला'।

खटोला–पु० छोटी खाट; बुंदेलखंडके अंतर्गत एक प्रदेश।

खटोली–स्त्री० छोटा खटोला।

खट्ट–वि० (सं०) खट्टा।

खट्टन–वि० (सं०) ठिंगना, खर्व। पु० ठिंगना आदमी, बौना।

खट्टा–स्त्री० (सं०) चारपाई; एक तृण। वि० (हिं०) जिसमें खटास हो, तुर्श, अम्ल। पु० गलगल नीबू (?)। **–चूक**–वि० बहुत खट्टा। **मु०–खाना**–नीचा देखना; विफल होना; दिल फिर जाना। **–होना**–अप्रसन्न होना।

खट्टाश–पु० (सं०) गंधबिलाव।

खट्टाशी–स्त्री० (सं०) मादा गंधबिलाव।

खट्टि–स्त्री० (सं०) अरथी, टिकठी ।

खट्टिक–पु० (सं०) कसाई; बहेलिया, चिड़ीमार ।

खट्टिका–स्त्री० (सं०) छोटी खाट; अरथी; मांस बेचनेवाली स्त्री ।

खट्टी–स्त्री० खट्टी नारंगी; गलगल नीबू; एक खटमीठा नीबू । **–मिट्ठी**–स्त्री० एक लता ।

खट्टेरक–वि० (सं०) ठिंगना ।

खट्वर–वि० (सं०) खट्टा ।

खट्वांग–पु० (सं०) पाया जड़ी हुई पाटी जो शिवका अस्त्र बतायी जाती है; दिलीपका एक नाम; एक मुद्रा (तं०); खड़ी लकड़ीपर आड़ी लकड़ी जड़कर बनायी हुई एक चीज जिसे सन्न्यासी प्रायः साथ रखते हैं; प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगनेका पात्र । **–धर**–पु० शिव ।

खट्वांगी(गिन्)–पु० (सं०) शिव ।

खट्वा–स्त्री० (सं०) खाट, चारपाई; झूला; सुश्रुतमें वर्णित एक तरहकी पट्टी ।

खट्वाका, खट्विका–स्त्री० (सं०) छोटी खाट ।

खड़ंजा–पु० ईंटोंकी खड़ी जोड़ाई ।

खड–पु० (सं०) घास, खर; पयाल; आयुर्वेदमें बताया हुआ एक तरहका पन्ना; सोनापाढ़ा ।

खड़कना–अ० क्रि० 'खड़-खड़'की आवाज होना; सूखे पत्तोंके परस्पर टकराने या दबनेकी आवाज होना; खाँड़े-तलवारके बख्तर आदिपर गिरनेकी आवाज होना; खटकना ।

खड़काना–स० क्रि० खटकाना ।

खडक्किका, खडक्की–स्त्री० (सं०) खिड़की ।

खड़खड़ाना–अ० क्रि० 'खड़-खड़'की आवाज होना, निकलना । स० क्रि० किसी चीजको पीट, बजाकर 'खड़-खड़' आवाज पैदा करना, खटखटाना ।

खड़खड़ाहट–स्त्री० 'खड़-खड़'की आवाज; 'खड़-खड़' आवाज होना ।

खड़खड़िया–स्त्री० एक तरहकी (घटिया) पालकी; घोड़ोंको शिक्षा देनेके काम आनेवाली एक प्रकारकी गाड़ी या गाड़ीका ढाँचा ।

खड़ग*–पु० दे० 'खड्ग' ।

खड़गी–वि० खड्गधारी । पु० गैंडा ।

खड़जी–पु० गैंड़ा ।

खड़बड़–स्त्री० पत्थर, धातु आदिकी चीजोंके टकराने, गिरने आदिकी आवाज; गड़बड़, गोलमाल; खलबली ।

खड़बड़ाना–अ० क्रि० घबराना; क्रम बिगड़ जाना; अस्त-व्यस्त हो जाना । स० क्रि० खड़बड़ करना; क्रम उलट-पुलट देना ।

खड़बड़ाहट–स्त्री० खड़बड़ी ।

खड़बड़ी–स्त्री० बेतरतीबी; खलबली; घबराहट ।

खड़बिड़ा–वि० ऊबड़-खाबड़ ।

खड़मंडल–पु० गड़बड़, गोलमाल ।

खड़सान–पु० दे० 'खर-सान' ।

खड़ा–वि० सीधा ऊपरको उठा हुआ, लंबरूप; पाँवोंके सहारे स्थित; स्थिर, ठहरा हुआ; रुका हुआ; तैयार; उपस्थित; उद्यत; बाकी, मौजूद; कच्चा, अपक्व; जारी; जो काटा न गया हो, खेतमें मौजूद (खड़ी फसल); समूचा, साबित; प्रतीक्षामें ठहरा हुआ । **–खेत**–पु० वह खेत जिसमें फसल मौजूद हो । **–(ड़े)-खड़े**–अ० खड़ा रहते हुए; (देरतक) खड़ा रहनेसे; जल्दी, तुरत; थोड़ी देर, कुछ क्षणके लिए । **–घाट**–अ० तुरत ।(**मु०–०धोना**–घाटपर ही कपड़ा लेकर बिना भट्ठी दिये धो देना; कुछ घंटोंमें ही कपड़ा धो देना ।) **मु०–करना**–तैयार करना; बनाना; ढाँचा बनाना; कच्ची सिलाई करना; गाड़ना (खंभा आदि); चुनावमें (मेंबरी आदिका) उम्मेदवार बनाना । **–होना**–तैयार होना; बनना; ढाँचा बनना; सहायक होना; चुनावमें उम्मेदवार होना ।

खड़ाऊँ–स्त्री० काठकी बनी खूँटीदार, खुली पादुका ।

खड़ाका*–पु० खड़कनेका शब्द ।

खड़ानन*–पु० कार्त्तिकेय ।

खड़िका–स्त्री० (सं०) खड़िया मिट्टी ।

खड़िया–स्त्री० सफेद, मुलायम मिट्टी या एक तरहके चूनेका पत्थर जो लिखने और सफेदी आदिके काममें आता है ।

खडी–स्त्री० (सं०) खड़िया मिट्टी ।

खड़ी–स्त्री० खड़िया मिट्टी । वि० स्त्री० दे० 'खड़ा' । **–चढ़ाई**–स्त्री० सीधी, बहुत कम ढालवाली चढ़ाई । **–तैराकी**–स्त्री० खड़े रहकर, केवल पाँव चलाते हुए तैरना । **–नियाज**–स्त्री० मनोरथ सिद्ध होनेपर तुरत दी जानेवाली नियाज । **–पाई**–स्त्री० सीधी, छोटी रेखा; मात्राएँ लिखनेमें अक्षरके आगे या पीछे बनायी जानेवाली सीधी लकीर; पूर्ण विरामका चिह्न । **–बोली**–स्त्री० दिल्ली-मेरठ प्रदेशकी बोली जो आधुनिक हिंदीका रूप है । **–लकीर**–स्त्री० लंबके रूपमें सीधी लकीर । **–सवारी**–अ० तुरत, खड़े-खड़े (–रुखसत करना) । **–हुंडी**–स्त्री० वह हुंडी जिसका रुपया चुकाया न गया हो । **मु० –पछाड़ें खाना**–खड़े हो-होकर गिर पड़ना, पछाड़ें खाना । **–सवारी आना**–तुरत लौट जानेको तैयार होना ।

खड़ु–पु०, **खड़ू**–स्त्री० (सं०) अरथी ।

खड्ग–पु० (सं०) तलवारकी शक्लका एक प्राचीन अस्त्र, खाँड़ा; तलवार; लोहा; गैंड़ेका सींग; गैंडा । **–कोश**–पु० खड्ग या तलवारका म्यान । **–धर**–पु० तलवार धारण करनेवाला । **–धार**–पु० बदरिकाश्रमका एक पर्वत । **–धारा**–स्त्री० तलवारका फल; (ला०) बहुत कठिन कार्य । **–धेनु,–धेनुका**–स्त्री० छोटा खड्ग, कटार; मादा गैंड़ा । **–पत्र**–पु० यमपुरीका एक कल्पित वृक्ष जिसमें पत्ररूपमें तलवारें लगी हुई बतायी जाती हैं; तलवारका फल । **–पिधान**–पु० तलवारका म्यान । **–पुत्रिका**–स्त्री० कटार । **–फल**–पु० खड्गकी धार, तलवारका काटनेवाला भाग । **–बंध**–पु० चित्रकाव्यका एक भेद जिसमें शब्द खड्गकी शक्लमें लिखे जाते हैं । **–लेखा**–स्त्री० तलवारोंकी कतार । **–हस्त**–वि० जिसके हाथमें खड्ग, तलवार हो; मारनेको उद्यत ।

खड्गट–पु० (सं०) एक तरहका बड़ा काँस ।

खड्गाधार–पु० (सं०) खड्गकोश ।

खड्गारीट–पु० (सं०) तलवारका फल; असिक्षाराव्रतधारी; ढाल ।

खड्गिक–वि० (सं०) खड्गधारी । पु० शिकारी; कसाई ।

खड्गी(ड्गिन्)–वि० (सं०) खड्गधारी । पु० गैंड़ा; शिव ।

खड्गीक–पु० (सं०) हँसिया ।

खड्ड, खड्ढा–पु० बहुत गहरा गड्ढा ।

खत–पु० क्षत; घाव । **–खोट**–स्त्री० खुरंड, सूखते हुए घावके ऊपर जमी हुई पपड़ी ।

ख़त, ख़त्त–पु० (अ०) लकीर, रेखा; चिह्न; लिखावट; पत्र, चिट्ठी; लेख, तहरीर; नयी उगती दाढ़ी-मूँछोंके रोयें जैसे बाल, रेख; सूरत-शक्ल, हुलिया । **–कश**–पु० वह आला जिससे बढ़ई चीरनेके लिए लकड़ीपर निशान लगाते हैं । **–कशी**–स्त्री० चित्र बनानेके लिए रेखाएँ खींचना । **–किताबत**–स्त्री० पत्र-व्यवहार, चिट्ठी-पत्री । **–ख़ूतूत**–पु० चिट्ठी-पत्री । **–(ते)गुलामी**–पु० सेवाका प्रतिज्ञापत्र । **–नस्तालीक़**–पु० सुंदर, गोल अक्षरोंवाली लिखावट जिसमें उर्दू लिपिवाली भाषाएँ आम तौरसे लिखी-छापी जाती हैं । **–शिकस्त, –शिकस्ता**–पु० (उर्दू-फारसीकी) घसीट लिखावट । **मु० –की पेशानी**–पत्र लिखनेमें ऊपर छोड़ी हुई खाली जगह । **–खींचना**–लकीर खींचना; काटना । **–निकलना**–दाढ़ीके बाल उगना । **–बनाना**–हजामत बनाना; दाढ़ी और कनपटीके बाल उस्तुरेसे ठीक करना ।

ख़तना–पु० (अ०) मुसलमान बच्चेके लिंगके अगले हिस्सेकी त्वचा काट देनेकी रस्म या संस्कार, सुन्नत ।

ख़तम–पु० दे० 'ख़त्म' ।

ख़तमी–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ और बीज दवाके काम आते हैं ।

ख़तर, ख़तरा–पु० (अ०) डर, भय; आशंका; जोखिम । **–(र)-नाक**–वि० खतरेवाला; खतरेसे भरा हुआ; भयजनक ।

खतरानी–स्त्री० खत्री स्त्री ।

खतरेटा–पु० खत्रीका बेटा; खत्री ।

खता*–पु० क्षत, घाव ।

ख़ता–स्त्री० (अ०) चूक; दोष, अपराध; धोखा–'जाहु जनि आगे,

खता खाहु मति यारो'–भूषण । **–कार**–पु० गलती, दोष करनेवाला । **–वार**–वि० दोषी, अपराधी । **मु०–होना**–कसूर होना; भूल जाना; (होश) ठीक-ठिकाने न रहना; अनजानमें निकल जाना (पेशावका) ।

खति*–स्त्री० दे० 'क्षति' ।

खतिया–स्त्री० छोटा गड्ढा । † पु० एक जाति जो जमीन खोदनेका धंधा करती है ।

खतियाना–स० क्रि० खातेमें चढ़ाना, लिखना ।

खतियौनी–स्त्री० दे० 'खतौनी' ।

ख़तीव–पु० (अ०) खुतवा पढ़नेवाला, धर्मोपदेशक (मुसल०) ।

खतौनी–स्त्री० वह कागज या वही जिसमें पटवारी हर काश्तकारकी जोतका रकवा, नवैयत (प्रकार), लगान आदि लिखता है; वही-खाता; खतियानेका काम । **–मु०–करना** खातेमें चढ़ाना, खतियाना ।

खत्ता–पु० गड्ढा; कोई चीज वनाने, रखने आदिके लिए वना गड्ढा; प्रांत, स्थान ।

खत्ती–स्त्री० छोटा खत्ता या खाता, वखार । पु० एक जातिके लोग (मितत्रियोंके पड़ोसी) ।

ख़त्म–पु० (अ०) अंत, समाप्ति; पूरा होना; कुरानका पाठ खतम होना ।

खत्री–पु० क्षत्रियोंके अंतर्गत एक जाति जो प्राय: व्यापार करती है ।

ख़दंग–पु० (फा०) तीर, वाण; केकड़ा; चनारका पेड़ ।

खदंगी*–स्त्री० तीर, वाण ।

खदखदाना, खदवदाना–अ० क्रि० किसी चीजका उवलते समय 'खदवद' शब्द करना ।

खदरा†–वि० निकम्मा, रद्दी । पु० गड्ढा ।

ख़दशा–पु० (अ०) डर, खटका, चिंता ।

खदान–स्त्री० खान ।

खदिका–स्त्री० (सं०) लाजा, लावा ।

खदिर–पु० (सं०) खैरका पेड़; इंद्र; चंद्रमा । **–पत्रिका,–पत्री** –स्त्री० लाजवंती । **–सार**–पु० कत्था ।

खदिरी–स्त्री० (सं०) लाजवंती; वराहक्रांता लता ।

ख़दीजा–स्त्री० (अ०) मुहम्मदकी प्रथम पत्नी जो इस्लाम ग्रहण करनेवाली पहली स्त्री और फातिमाकी माँ थी ।

ख़दीव–पु० (तु०) मांडलिक नरेश; मिस्रके वादशाहोंकी उपाधि ।

खदुका†–पु० ऋणी, कर्जदार ।

खदेड़ना–स० क्रि० भगाना; हटाना; पीछा करते हुए भगाना ।

खदेरना–स० क्रि० दे० 'खदेड़ना' ।

खद्दर–पु० हाथका कता-वुना कपड़ा, खादी ।

खन*–पु० छन; खंड, मंजिल; † वृक्षविशेष; चोली, कुरती बनानेका एक तरहका कपड़ा । अ० तुरत, तत्काल । स्त्री० रुपये-पैसे आदिके वजनेकी ध्वनि, खनक ।

खनक–स्त्री० खनकनेकी क्रिया, आवाज; रुपये, चूड़ियों आदिके वजनेकी आवाज । पु० (सं०) खोदनेवाला; खान खोदनेवाला; सेंध मारनेवाला; चूहा; खान ।

खनकना–अ० क्रि० 'खन-खन' करके वजना, खनखनाना ।

खनकाना–स० क्रि० 'खन-खन' ध्वनि उत्पन्न करना; रुपये आदिको परखनेके लिए वजाना ।

खनकार–स्त्री० खनक, झंकार ।

खनखजूरा–पु० दे० 'कनखजूरा' ।

खनखना–वि० जिसके हिलने-डुलने, वजनेसे 'खन-खन' ध्वनि निकले ।

खनखनाना–अ० क्रि० खनकना । स० क्रि० खनकाना, रुपया आदि वजाना ।

खनन–पु० (सं०) खोदना; गाड़ना ।

खनना–स० क्रि० खोदना ।

खनयित्री–स्त्री० (सं०) खोदनेका औजार, खंती ।

खनवाना, खनाना–स० क्रि० खोदनेका काम कराना ।

खनहन†–वि० संदर; दुबला-पतला ।

खनि, खनी–स्त्री० (सं०) खान; गड्ढा; गुफा । **–(नि)ज**–वि० खानसे निकला हुआ (सोना आदि) । **–०नमक**–पु० (रॉक साल्ट) प्राकृतिक क्रिस्टलीय साधारण नमक अर्थात् सोडियम क्लोराइड; सेंधा नमक । **–० विज्ञान**–पु० (मिनरेलॉजी) खनिज पदार्थोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान । **–भोग**–पु० खानोंवाला प्रदेश । **–वसति**–स्त्री० (माइनिंग सेटिलमेंट) लोहे, कोयले आदिकी किसी खानके पास बसे हुए लोगोंकी बस्ती ।

खनिता(तृ)–पु० (सं०) खोदनेवाला ।

खनित्र–पु० (सं०) खंता; फावड़ा ।

खनित्रक–पु०, **खनित्रिका**–स्त्री० (सं०) खंती; छोटी कुदाली ।

खनियाना–स० क्रि० (खानि) खोदना; खाली करना ।

खनोना*–स० क्रि० दे० 'खनना' ।

खन्ना–पु० चारा काटनेकी जगह; खत्रियोंका एक अल्ल ।

खपच–स्त्री० बाँसका टुकड़ा; फाँस ।

खपचा–पु० लकड़ीकी कलछी; बाँस आदिका नोकदार टुकड़ा ।

खपची–स्त्री० बाँसकी फट्टी; तीली; कबाब भूननेकी सीख; पकड़; गोद ।

खपच्ची–स्त्री० बाँसकी तीली या कमची । वि० (ला०) दुबला ।

खपटा–पु० तख्तेकी पट्टी; खपड़ा ।

खपटी–स्त्री० खपची; छोटा खपड़ा ।

खपड़ा–पु० मिट्टीका पकाया हुआ टुकड़ा जिससे मकान छाते हैं; मिट्टीका खप्पर; टूटे हुए वरतनका टुकड़ा; एक कीड़ा; चौड़े फलका वाण; घड़ेका नीचेका आधा भाग, कछुएकी पीठका ढक्कन ।

खपड़ी–स्त्री० मिट्टीकी कूँड़ी जिसमें भड़भूजे दाना भूनते हैं; ठीकरा, छोटा खपड़ा ।

खपड़ैल–पु०, स्त्री० दे० 'खपरैल' ।

खपड़ोइया, खपड़ोई†–स्त्री० नारियलका भीतरका कड़ा छिलका ।

खपत–स्त्री० खपनेका भाव; खर्च; मालकी विक्री; निवाह ।

खपती†–स्त्री० दे० 'खपत' ।

खपना–अ० क्रि० खर्च होना; लगना; विकना; मरना; नाश होना; निवाह होना ।

खपरट–पु० खपड़ेका टुकड़ा ।

खपरा–पु० दे० 'खपड़ा' ।

खपरिया–स्त्री० एक उपधातु जो सुरमे आदिमें पड़ती है; छोटा खपड़ा; सोना, चाँदी गलानेकी घरिया; चनेकी फसलका एक कीड़ा ।

खपरैल–पु०, स्त्री० खपड़ा; खपड़ेकी छाजन; खपड़ेसे छाया हुआ घर ।

खपाच–स्त्री० खपची; रेशम बुननेवालोंका एक औजार ।

खपाची–स्त्री० खपची ।

खपाट–पु० धौकनीके मुँहपर लगाये जानेवाले छोटे डंडे ।

खपाना–स० क्रि० खतम कर देना; तंग करना; मार डालना; काममें लाना; वेचना; निभाना ।

खपुआ*–वि० डरपोक । पु० दरवाजेके नीचे चूलको छेदमें ठीक तरहसे बैठानेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी; चिपटा, चौकोर खपड़ा, 'थपुआ' । * कायर व्यक्ति–'तुलसी करि केहरि नाद भिरे भट खग्ग खगे खपुआ खरके'–कवितावली ।

खप्पड़–पु० दे० 'खप्पर' ।

खप्पर–पु० मिट्टीका तसले जैसा वरतन; कालीके हाथमें रहनेवाला रुधिरपात्र; भिक्षापात्र; कपाल ।

ख़फ़क़ान–पु० (अ०) दिल धड़कना, धड़का; मस्तिष्क-विकृति; वहम ।

ख़फ़क़ानी–वि० जिसे खफकानकी शिकायत हो; वहमी ।

ख़फ़गी–स्त्री० (फा०) रोष, नाराजगी, क्रोध ।

ख़फ़ा–वि० (फा०) रुष्ट, नाराज, कुपित ।

ख़फ़ीफ़–वि० (अ०) हलका; थोड़ा; तुच्छ; लज्जित । **मु०–होना**–लज्जित होना ।

ख़फ़ीफ़ा–स्त्री० (अ०) छोटी रकमोंके दावे सुननेवाली अदालत, 'स्माल काज़ कोर्ट'; बदचलन औरत ।

ख़बर–स्त्री० (अ०) सूचना; जानकारी, पता; हाल, समाचार; सँदेसा; चेत, होश । **–गीर**–वि० खोज-खबर लेनेवाला; देखरेख रखनेवाला; सहायक । **–गीरी**–स्त्री० खोज-खबर लेना; देख-

रेख; सहायता। **–दार**–वि० सावधान, चौकन्ना। **–दारी** स्त्री० सावधानता, होशियारी। **–नवीस**–पु० (फा०) समाचार लिखनेवाला कर्मचारी। **–रसाँ**–पु० खबर पहुँचानेवाला, संदेश-वाहक। **मु०–लेना**–खोज-खबर लेना, हाल पूछना; जवाब तलब करना; डाँटना, फटकारना; दंड देना।

खबरि, खबरिया*–स्त्री० दे० 'खबर'।

ख़बीस–वि० (अ०) नापाक; दुष्ट; क्रूर। पु० भूत-प्रेत।

ख़बीसी–स्त्री० नापाकी; दुष्टता; खबीस स्त्री।

ख़ब्त–पु० (अ०) झक, सनक, धुन।

ख़ब्ती–वि० जिसे खब्त हो, सनकी।

ख़ब्तुलहवास–वि० (ऐबसेंट माइंडेड) जिसके होश-हवास ठिकाने न हों; जिसका ध्यान किसी दूसरी ओर हो।

खब्बा–वि० बायाँ; बायें हाथसे काम करनेवाला।

खभड़ना, खभरना†–स० क्रि० मिलाना; हलचल, खलबली मचाना।

खभरुआ–वि० पुंश्चलीसे उत्पन्न (लड़का)।

खभार*–पु० घबराहट, परेशानी–'देखि निविड़ तम दसहु दिसि, कपिदल भयेउ खभार'–रामा०; भय; दुःख।

ख़म–वि० (फा०) झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र। पु० घुमाव; टेढ़ापन; बाजू। **–दम**–पु० हिम्मत, जोश। **–दार**–वि० टेढ़ा; घुँघराले (बाल)। **मु०–खाना**–दबना, झुकना, हारना, नीचा देखना–'मुरक्यो तुरक वहाँ खम खाई'–छत्रप्रकाश। **–ठोंककर**–ललकारकर, निडर होकर। **–ठोंकना**– लड़नेके लिए ताल ठोंकना, ललकारना।

खमकना–अ० क्रि० 'खम-खम' शब्द करना।

ख़मसा–वि० (अ०) पाँचसे संबंध रखनेवाला; पाँचका समाहार, पंचक। पु० वह पद्य जिसके हर बंदमें पाँच-पाँच मिसरे हों; पाँचों उँगलियाँ; संगीतमें एक ताल।

खमा*–स्त्री० क्षमा; दया।

ख़मियाज़ा–पु० (फा०) अँगड़ाई; शिकंजेमें कसकर अंगोंको ताननेकी सजा; बदला, प्रतिफल; दंड; कष्ट; हानि। **मु०–उठाना**–बदला, दंड पाना।

ख़मीदगी–स्त्री० (फा०) टेढ़ापन, वक्रता।

ख़मीदा–वि० (फा०) झुका हुआ, टेढ़ा।

खमीर–पु० (अ०) गुँधे आटे आदिमें (देरतक रखनेसे) पैदा होनेवाली खटास और उभार; वह चीज जिसमें यह गुण पैदा हो गया हो, पाँस; (यीस्ट) एक-कोशीय कवक (फंगस); इससे 'जाइमेस' नामका एन्ज़ाइम उत्पन्न होता है जो आसव-उद्योग तथा बेकरीके लिए उपयोगी होता है। प्रकृति; बनावट। **मु०–उठना**–आटे आदिका खमीर पैदा हो जानेसे फूलकर उठना, फैलना।

ख़मीरा–वि० (फा०) खमीरवाला। पु० मिसरी या चीनीकी चाशनीमें पकायी हुई दवा; कटहल आदिका खमीर मिलाकर बनाया हुआ सुगंधित तंबाकू।

ख़मीरी–वि० स्त्री० खमीरवाली (रोटी)।

खमो–पु० एक सदाबहार पेड़।

ख़मोश–वि० (फा०) दे० 'ख़ामोश'।

ख़मोशी–स्त्री० (फा०) दे० 'ख़ामोशी'।

खम्माच–स्त्री० रातमें गायी जानेवाली एक रागिनी। **–कान्हड़ा**–पु० एक संकर राग। **–टोड़ी**-स्त्री० एक संकर रागनी।

खम्माची–स्त्री० दे० 'खम्माच'।

खय*–पु० दे० 'क्षय'।

खयना*–अ० क्रि० खिसक जाना, नीचेकी ओर हट जाना (खये सीस-पटडारि–वि०); कम हो जाना, क्षीण हो जाना।

खया*–पु० भुजमूल–'अंचल उड़त मन होत गहगहो फरकत नैन खये'–सूर।

ख़यानत–स्त्री० (फा०) अमानत रखी हुई चीज या रकमको चुरा, दबा लेना, गबन; बददयानती; बेईमानी।

ख़याल–पु० (फा०) ध्यान, चिंता, सोच-विचार; कल्पना; मत, विचार; लिहाज; याद; दे० 'ख्याल'। **–(ले)ख़ाम**–पु० असंगत, नासमझीका विचार। **मु०–में न लाना**–लिहाज, परवाह न करना। **–में समाना**–ध्यानमें चढ़ जाना, हर वक्त याद रहना। **–से उतरना**–याद न रहना, भूल जाना।

ख़याली–वि० कल्पित, सोचा-माना हुआ। **–पुलाव**–पु० मनसे गढ़ी हुई बात, मनोराज्य। **–मज़मून**–पु० मनसे सोचा हुआ, स्वतंत्र कल्पनासे उद्भूत विषय, लेख। **मु०–पुलाव पकाना**–कल्पनाके महल खड़े करना, अनहोनी बातें सोचना।

खरंजा–पु० झाँवाँ; खड़ंजा।

खर–वि० (सं०) कड़ा; तेज, तीक्ष्ण; घना; मोटा; अशुभ; हानिकर; तीक्ष्ण धारवाला; गरम; निष्ठुर। पु० गधा; खच्चर; बगला; कौआ; रामके हाथों मारा गया एक राक्षस; ६० संवत्सरोंमेंसे पचीसवाँ; कुरर पक्षी। **–कर,–रश्मि**–पु० सूर्य। **–कुटी**–स्त्री०,**–गृह**–पु० गधोंको रखनेका घर; नाईका घर। **–कोण**–पु० तीतर। **–कोमल**–पु० जेठका महीना। **–घातन**–पु० नागकेशर। **–च्छद**–पु० कुंदर तृण; भूमिसह वृक्ष। **–दंड,–नाल**–पु० कमल। **–दला**–स्त्री० कठगूलर। **–दूषण**–पु० खर और दूषण नामके राक्षस जो रावणके भाई थे; धतूरा। वि० बहुत दोषोंवाला। **–धार**–वि० प्रखर, तीक्ष्ण धारवाला। **–ध्वंसी(सिन्)**–पु० राम। **–नाद**–पु० गधेकी बोली, रेंकना। वि० गधेकी-सी आवाजवाला। **–नादिनी**–स्त्री० रेणुका नामक गंधद्रव्य। **–नादी(दिन्)**–वि० गधेके जैसा नाद करनेवाला। **–पात्र**–पु० लोहेका बना बरतन। **–पाल**–पु० काठका बरतन। **–पुष्प**–पु० मरवा। **–प्रिय**–पु० कबूतर। **–मंजरी**–स्त्री० अपामार्ग। **–मास**–पु० दे० 'खरवाँस'। **–यान**–पु० वह गाड़ी जिसमें गधा जोता जाय। **–रोमा(मन्),–लोमा(मन्)**–वि० कड़े रोएँवाला। **–वाँस**–पु० (हिं०) धनु-मकरकी संक्रांति (पूस) या मेष-वृषकी संक्रांति (चैत) जिसमें शुभ कार्यका निषेध है। **–वार**–पु० अशुभ दिन–रवि, मंगल आदि। **–शब्द**–पु० कुरर पक्षी। **–शाक**–पु० भार्गी। **–शाला**–स्त्री० गधे रखनेका घर। **–सान**–स्त्री० (हिं०) अधिक तेज सान,–'मानहु सकल जगत जीतनको काम बान खरसान सँवारे'–सूर। **–स्कंध**–पु० चिरौंजीका पेड़; खजूर। **–स्वरा**–स्त्री० जंगली चमेली, वनमल्लिका।

खर–वि० खरा, ज्यादा सिंका हुआ (सेंबरका उलटा)।

खर–पु० तृण, घास। **–खौकी***–स्त्री० आग (तृण खानेवाली)। **–दूषण***–पु० सूर्य। **–पात**–पु० घास-पात।

ख़र–पु० (फा०) गधा। वि० मूर्ख; बहुत बड़ा; भद्दा, बदशक्ल। **–गोश**–पु० चूहेकी शक्लका, लंबे कानवाला जंतु, खरहा। **–दिमाग़**–वि० नासमझ; हठी; घमंडी। **–दिमाग़ी**–स्त्री० नासमझी; हठ; घमंड। **–मंडल**–दे० क्रममें,**–मस्त,–मस्ता**–वि० मस्त; कामी; मूर्ख। **–मस्ती**–स्त्री० मस्ती; कामुकता; मूर्खता। **–सुमा**–वि० (घोड़ा) जिसके सुम गधेके सुम जैसे हों। **–(रे)ईसा**–पु० ईसाकी सवारीका गधा।

खरक–पु० बाँस, बल्लोंसे बनाया हुआ गाय रखनेका बाड़ा, गोठ; चरागाह। स्त्री० खड़क; खटक।

खरकना–अ० क्रि० दे० 'खड़कना'; 'खटकना'; खिसकना, चुपकेसे भाग जाना–'...खग्ग खगे खपुआ खरके'–कवितावली।

खरका–पु० सूखा कड़ा तिनका; दाँत खोदनेका तिनका; खरक।

खरखरा–वि० खुरखुरा।

ख़रख़शा–पु० (फा०) झगड़ा, विवाद; बखेड़ा, झंझट।

खरग*–पु० दे० 'खड्ग'।

खरच–पु० दे० 'खर्च'।

खरचना–स० क्रि० खर्च करना; काममें लाना।

खरचा–पु० दे० 'ख़र्चा'; खाना-कपड़ा आदिका खर्चा चलानेके लिए मिलनेवाला धन।

खरचाल–स्त्री० दे० 'खँडचाल'।

खरची–स्त्री० दे० 'ख़र्ची'; † रसद आदि।

खरज–पु० दे० 'षड्ज'।

खरजूर–पु० दे० 'खर्जूर'।

खरतनी, खरदनी–स्त्री० खरादनेका औजार।

खरतुआ–पु० एक निकम्मी घास।

खरदा–पु० अंगूरको लगनेवाला एक रोग।

खरदुक*–पु० एक पुराना पहनावा ।

खरपत–पु० एक पेड़ ।

खरपा–पु० एक तरहकी मिर्जई; † एक तरहका देहाती चप्पल जिसे केवल स्त्रियाँ पहनती हैं ।

खरब–वि० सौ अरब, खर्व । पु० सौ अरबकी संख्या ।

ख़रबुज़ा-पु० (फा०) दे० 'ख़रबूज़ा' ।

ख़रबूज़ा–पु० गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक प्रसिद्ध फल । **मु०–(ज़े) को देखकर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है**–आदमी जैसेका संग करे वैसा ही हो जाता है ।

ख़रबूज़ी–वि० खरबूजेके रंगका ।

खरभर*–पु० खलबली, हलचल; शोर, हल्ला ।

खरभरना, खरभराना–अ० क्रि० खलबलाना; हलचल मचना ।

खरभरी*–स्त्री० दे० 'खरभर' ।

खरमंडल–वि० तितर-बितर; अस्तव्यस्त 'सब काम खरमंडल हो गया' ।

खरल–पु० पत्थर या लोहेकी कूँड़ी जिसमें दवाएँ कूटते, घोटते हैं । **मु०–करना**–खरलमें बारीक पीसना, हल करना ।

खरली–स्त्री० खली; छोटा खल ।

खरस–पु० रीछ, भालू (कलंदरोंका शब्द) ।

खरसा*–पु० एक पकवान; खुजली ।

खरसैला–वि० खुजली रोगवाला (पशु) ।

खरहर–पु० हिमालयकी तराईमें होनेवाला एक पेड़; † दे० 'खरहरा' ।

खरहरना†–स० क्रि० खरहरेसे बहारना ।

खरहरा–पु० लोहेकी कई दंतपंक्तियोंवाली चौकोर कंघी जिससे घोड़ेके बदनकी गर्द साफ की जाती है; अरहरके डंठलोंकी झाड़ू ।

खरहरी*–स्त्री० एक मेवा, छुहारा ।

खरहरी–वि०, स्त्री० (खाट) जिसपर कोई कपड़ा आदि न बिछाया गया हो ('निखहर')–'नींद न जाने खरहरी खाट' ।

खरहा–पु० लोमड़ीकी जातिका, कदमें बिल्लीके बराबर, एक जंतु जिसके कान बहुत लंबे होते हैं, खरगोश ।

खरांडक–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर ।

खरांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

ख़रा–वि० विशुद्ध, खालिस; सच्चा; छल-कपटसे रहित; स्पष्टभाषी; व्यवहारमें सच्चा; नकद; खूब पका या तपा हुआ; खूब सिका हुआ; करारा । **–असामी**–पु० देन-लेनमें सच्चा, ईमानदार आदमी । **–ई**–स्त्री० खरापन, सचाई, ईमानदारी; दे० क्रममें । **–कहैया**–वि० खरी बात कहनेवाला । **–खेल**–पु० सच्चा खेल, व्यवहार । **–खोटा**–वि० अच्छा-बुरा । **मु०–खोटा परखना**-भले-बुरेकी पहचान करना ।

खराई†–स्त्री० भोरके समय कुछ खानेको न मिलनेके कारण तबीयतका कुछ खराब होना; दे० 'खरा'में ।

खरागरी–स्त्री० (सं०) देवताड़ वृक्ष ।

ख़राज–पु० (अ०) दे० 'ख़िराज' ।

ख़राद–पु० (फा०) खरादनेका आला, चरख; खरादनेका काम; गढ़न । **मु०–पर चढ़ाना**–खरादनेके लिए चरखपर चढ़ाना; सुधारना, दुरुस्त करना ।

खरादना–स० क्रि० चरखपर चढ़ाकर लकड़ी या धातुको चिकना, सुडौल करना; छील-छालकर दुरुस्त, सुडौल करना ।

ख़रादी–पु० खरादका काम करनेवाला ।

ख़राब–वि० (अ०) उजड़ा हुआ, वीरान; नष्ट, बरबाद; बुरा, हीन; जिसमें कोई दोष आ गया हो (स्वास्थ्य); जो कामके लायक न रह गया हो; दुश्चरित्र ।

ख़राबा–वि० (फा०) उजड़ा हुआ, वीरान; खेतीके अयोग्य ।

ख़राबात–पु० (फा०) शराबखाना; जुएका अड्डा; चकला ।

ख़राबाती–पु० (फा०) शराबी; जुआड़ी; रंडीबाज ।

ख़राबी–स्त्री० (फा०) दोष, बुराई; तबाही, बरबादी ।

खराब्दांकुरक–पु० (सं०) वैदूर्य मणि ।

खरारि–पु० (सं०) विष्णु; राम; कृष्ण; बलराम ।

खरारी*–पु० दे० 'खरारि' ।

खरालक, खरालिक–पु० (सं०) नाई, क़िसबत; लोहेका तीर; तकिया ।

ख़राश–स्त्री० (फा०) त्वचाका छिल जाना, खरोंच; खुजली ।

खराश्वा–स्त्री० (सं०) मयूरशिखा नामक लता ।

खराह्वा–स्त्री० (सं०) अजमोदा ।

खरिक*–पु० गोठ; चरागाह ।

खरिका–स्त्री० (सं०) चूर्ण की हुई कस्तूरी । * पु० दे० 'खरिक'; † दे० 'खरका' ।

खरिया–स्त्री० रस्सीकी बनी जाली जिसमें भूसा आदि बाँधकर ले जाते हैं; थैली; कंडेकी राख; एक जंगली जाति । दे० 'खड़िया' ।

खरियाना†–स० क्रि० झोलीमें भर लेना; प्राप्त, हस्तगत करना ।

खरिहान†–पु० दे० 'खलियान' ।

खरी–स्त्री० (सं०) गधी । **–जंघ**–पु० शिव । **–विषाण**–पु० ऐसी वस्तु जिसका खरीके सींगकी तरह, अस्तित्व न हो । **–वृष**–पु० गधा ।

खरी–वि०, स्त्री० दे० 'खरा' । † स्त्री० दे० 'खड़िया'; 'खली'; * खाड़ी । **–खोटी**–स्त्री० कड़वी-कसैली, कड़ी लगनेवाली बात । **मु०–खरी सुनाना**–साफ, दो टूक बात कहना; अप्रिय सत्य कहना । **–खोटी सुनाना**–सच्ची बात कहना; भला-बुरा कहना ।

खरी*–वि०, स्त्री० उत्कट–'खरी अभिलाषनि सुजान पिय भेंटिहौं'–घन० ।

खरीक*–पु० तिनका ।

ख़रीता–पु० (अ०) थैली; बड़ा लिफाफा जिसमें सरकारी आदेश भेजे जाते हैं; इस प्रकार प्रेषित सरकारी आदेश; जेब; सुई-धागा रखनेकी थैली ।

ख़रीद–स्त्री० (फा०) खरीदनेकी क्रिया या भाव; क्रय; खरीद की हुई वस्तु । **–फ़रोख़्त**–स्त्री० खरीदना-बेचना, लेवा-बेची । **–बही**–स्त्री० दे० 'क्रय-प्रपंजी' (परचेज लेजर) ।

खरीदना–स० क्रि० मोल लेना, दाम देकर लेना ।

ख़रीदा–वि० (फा०) खरीद किया हुआ; क्रीत । पु० दासपुत्र; अनबिधा मोती ।

ख़रीदार–पु० (फा०) खरीदनेवाला, ग्राहक; इच्छुक ।

ख़रीदारी–स्त्री० (फा०) खरीद, क्रय ।

ख़रीफ़–स्त्री० (अ०) वह फसल जो असाढ़-सावनमें बोयी और कातिक-अगहनतक काट ली जाय–धान, मकई, बाजरे आदिकी फसल ।

खरु–वि० (सं०) सफेद; मूर्ख; निष्ठुर; निषिद्ध वस्तुओंका इच्छुक । पु० घोड़ा; दाँत; घमंड; कामदेव; शिव; वर्जित वस्तुएँ लेनेकी इच्छा; सफेद रंग । स्त्री० अपना पति स्वयं चुननेवाली कन्या ।

खरेई, खरोई*–अ० सचमुच; अत्यंत ।

खरेरा–पु० दे० 'खरहरा' ।

खरैंटी–स्त्री० एक पौधा, बला, बरियारा ।

खरोंच–स्त्री० त्वचाका काँटे, नाखून आदिसे छिल जाना, खराश; छिल जानेका निशान ।

खरोंचना–स० क्रि० खुरचना; छीलना ।

खरोंट, खरोट–स्त्री० दे० 'खरोंच' ।

खरोच–स्त्री० दे० 'खरोंच' ।

खरोचना–स० क्रि० दे० 'खरोंचना' ।

खरोटना–स० क्रि० दे० 'खरोंचना' ।

ख़रोश–पु० (फा०) जोरकी आवाज, शोर ।

खरोष्ट्री, खरोष्ठी–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन लिपि जो फारसीकी तरह दाहनेसे बायें लिखी जाती थी और मौर्यकालमें पश्चिमोत्तर भारतमें चलती थी ।

खरौंट*–स्त्री० दे० 'खरोंच' ।

खरौंटना–स० क्रि० दे० 'खरोंचना' ।

खरोहाँ*–वि० कुछ-कुछ खारा ।

खर्खोद–पु० (सं०) एक तरहका इंद्रजाल ।

खर्ग*–पु० तलवार ।

ख़र्च–पु० (फ़ा०) पैसे, चीजका किसी काममें लगना, सर्फ होना, व्यय; आवश्यक कार्योंमें लगनेवाला पैसा। **खानगी**–स्त्री० निजी खर्च; घरेलू खर्च। **मु०–उठाना**–सर्फा वर्दाश्त करना, व्ययभार वहन करना। **–निकलना**–सर्फा, लागत निकल आना।

खर्चना–स० क्रि० दे० 'खरचना'।

ख़र्चा–पु० (फ़ा०) सर्फा, लागत; खर्च।

ख़र्ची–वि० खर्च करनेवाला। स्त्री० कसबकी उजरत।

ख़र्चीला–वि० वहुत खर्च करनेवाला, खर्राच।

खर्जन–पु० (सं०) खुजलाना।

खर्जिका–स्त्री० (सं०) उपदंश रोग, गरमीकी बीमारी; पानेच्छा उत्पन्न करनेवाला खाद्य पदार्थ, गजक।

खर्जु–स्त्री० (सं०) खुजली; जंगली खजूर; एक कीड़ा। **–घ्न**–पु० धतूरा; चक्रमर्द; आक।

खर्जुर–पु० (सं०) चाँदी; खजूरका एक भेद।

खर्जू–स्त्री० (सं०) खुजली; एक कीड़ा।

खर्जूर–पु० (सं०) खजूरका पेड़; उसका फल; चाँदी; हरताल; धतूरा; विच्छू। **–रस**–पु० ताड़ी। **–वेध**–पु० विवाहमें वर्जित एक योग, एकार्गल।

खर्जूरक–पु० (सं०) विच्छू।

खर्जूरी–स्त्री० (सं०) खजूर।

खर्पर–पु० (सं०) चोर; ठग; खल; खप्पर; कपाल, खोपड़ी; मिट्टीका फूटा हुआ बरतन; छाता; खपरिया।

खर्परिका–स्त्री० (सं०) छतरी!

खर्परी–स्त्री० (सं०) खपरिया।

खर्ब–वि० (सं०) विकलांग; बौना; ठिंगना; छोटा; दस अरव। पु० दस अरवकी संख्या (संस्कृत गणना); कुबेरकी ९ निधियोंमेंसे एक। **–शाख**–वि० ठिंगना।

खर्बट, खर्वट–पु० (सं०) पहाड़ी गाँव; बाजार, मंडी।

खर्बुज, खर्वुज–पु० (सं०) खरबूजा।

खर्रा–पु० लंबा लेख; विवरण; मसौदा; एक चर्मरोग।

ख़र्राच-वि० (फ़ा०) वहुत खर्च करनेवाला।

खर्राट–वि० होशियार; अनुभवी; वृद्ध।

खर्राटा–पु० सोतेमें नाकसे निकलनेवाली खर्र-खर्रकी आवाज। **मु०–(टे) भरना,–मारना,–लेना**–गहरी नींद, वेखवर सोना।

खर्रात–पु० (अ०) खरादका काम करनेवाला, खरादी।

खर्राती–स्त्री० (अ०) खरादीका पेशा।

ख़र्राद–पु० (फ़ा०) दे० 'ख़र्रात'।

खर्व–वि० (संस्कृत पद्धतिसे) दस अरव, दे० 'खर्ब'। पु० दस अरवकी संख्या।

खर्वित–वि० (सं०) खर्व, छोटा किया हुआ।

खर्विता–स्त्री० (सं०) चतुर्दशीयुक्त अमावस्या; वह तिथि जिसका भोगकाल पिछले दिनकी तिथिसे कम हो।

खलंक–पु० पृथ्वी, खलक (का०कौ० १५१)।

खलंत*–वि० स्खलित, गिरा हुआ।

खल–वि० (सं०) दुष्ट, खोटा; वेहया; नीच; चुगलखोर। पु० खलियान; खरल; धरती; स्थान; तलछट; धूलिराशि; सूर्य; युद्ध; धतूरा। **–धान,धान्य**–पु० खलियान। **–नायक**–दे० क्रममें। **–पू***–वि० सफाई करनेवाला। **–मूर्ति**–पु० पारा। **–यज्ञ**–पु० खलियानमें किया जानेवाला एक यज्ञ। **–संसर्ग**–पु० दुष्टका साथ।

खल नायक–पु० (सं०) (विलेन) नाटक या उपन्यासके मुख्य नायकका वह प्रतिद्वंद्वी जो उसकी लक्ष्यप्राप्तिमें बाधाएँ उपस्थित करता रहता है और जो दुष्प्रवृत्तियोंका प्रतीक होता है।

खलई*–स्त्री० दुष्टता।

खलक–पु० (सं०) घड़ा।

ख़लक़–पु० (अ०) जीवसमष्टि, लोकसमूह, जगत्। **–(क़े) ख़ुदा**–पु० ईश्वरका बनाया हुआ जगत्।

ख़लक़त*–स्त्री० दे० 'ख़िलक़त'।

खलखल–पु० तरल पदार्थको बोतल आदिसे उँडेलने या खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज।

खलड़ी–स्त्री० खाल।

खलति–वि० (सं०) खल्वाट।

खलतिक–पु० (सं०) पहाड़।

खलना–अ० क्रि० बुरा लगना, क्लेशकर होना, चुभना। स० क्रि० मोड़ना, झुकाना; घुँघरूमें गड्ढा बनाना; * खरलमें घोंटना।

खलबल–पु० दे० 'खलबली'।

खलबलाना–अ० क्रि० खौलना; क्षुब्ध, बेचैन होना।

खलबलाहट–स्त्री० खलवलानेका भाव, बेचैनी; खलवली।

खलबली–स्त्री० हलचल; बेचैनी, घबराहट; क्षोभ।

खलभल–पु०, **खलभली**–स्त्री० दे० 'खलवली'।

खलभलाना–अ० क्रि० दे० 'खलवलाना'।

खलभलाहट–स्त्री० दे० 'खलवलाहट'।

खलल–पु० धूम।

ख़लल–पु० (अ०) वाधा, अड़चन; बिगाड़; रोग। **–अंदाज़**–वि० वाधा डालनेवाला। **–अंदाज़ी**–स्त्री० वाधा, अड़चन डालना। **–दिमाग़**–पु० दिमागका विगड़ जाना; सनक, पागलपन। वि० जिसका दिमाग बिगड़ गया हो, सनकी।

खलसा–स्त्री० एक वड़ी मछली।

खलाई†–स्त्री० दुष्टता।

खलाधारा–स्त्री० (सं०) तेलचट्टा।

खलाना–स० क्रि० खाली करना; गड्ढा करना; धँसाना।

खलार†–वि० नीचा, गहरा। पु० नीची जमीन, दे० 'नीहल'।

खलाल–स्त्री०, पु० दे० 'ख़िलाल'।

ख़लास–पु० (अ०) छुटकारा, मुक्ति, निवृत्ति (पाना, होना)। वि० मुक्त; समाप्त।

खलासी–स्त्री० दे० 'ख़लास'। पु० जहाज, तोपखाने आदिमें छोटे-मोटे काम करनेवाला मजदूर; खेमा आदि खड़ा करनेवाला नौकर।

खलि–स्त्री० (सं०) खली।

खलित*–वि० स्खलित; चलित; हिला हुआ; गिरा हुआ।

खलिन–पु० (सं०) लगामका काँटा।

खलियान–पु० वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और माँडी जाय; ढेर। **मु०–करना**–काटी हुई फसलका ढेर लगाना; नष्ट करना।

खलियाना–स० क्रि० खाल उतारना (कटे बकरे आदिकी); † खाली करना।

ख़लिश–स्त्री० (फ़ा०) चुभन; खटक; रंजिश, बैर।

खलिहान–पु० दे० 'खलियान'।

खली–वि० खलनेवाला। स्त्री० (सं०) तेलहनकी सीठी।

खली(लिन्)–वि० (सं०) जिसमें तलछट हो। पु० शिव।

ख़लीज–स्त्री० (अ०) खाड़ी।

खलीता–पु० दे० 'ख़रीता'।

खलीन–पु० (सं०) दे० 'खलिन'।

ख़लीफ़ा–पु० (अ०) उत्तराधिकारी, जानशीन; पैगंवर(मुहम्मद)-का उत्तराधिकारी; नेता; गतके आदिके उस्तादका नायब; वूढ़ा दरजी; नाई; बावर्ची।

खलु–अ० (सं०) निश्चय, निषेध, जिज्ञासा, अनुनय इ० अर्थोंमें प्रयुक्त; अवश्य ही; सचमुच।

खलूरिका, खलूरी–स्त्री० (सं०) अस्त्र-संचालनके अभ्यासका स्थान।

खलेल–पु० तेलमें रह जानेवाला खलीका अंश।

ख़ल्त-मल्त–वि० गड्ड-मड्ड, मिला-जुला।

खल्या–स्त्री० (सं०) खलियानोंका समूह।

खल्ल–पु० (सं०) खाल, चमड़ा; मशक; खरल; गड्ढा; चातक; नहर; जलप्रणाली।

खल्लड़–पु० खलड़ी; मशक; अतिवृद्ध व्यक्ति (जिसकी खाल लटक गयी हो)।

खल्लिका–स्त्री० (सं०) कड़ाही।

खल्लिट, खल्लीट–पु० (सं०) सिरके बाल झड़नेका रोग, गंजापन । वि० गंजा ।

खल्ली–स्त्री० खली; (सं०) एक रोग जिसमें हाथ-पैरमें दर्द होता है ।

खल्वाट–वि० (सं०) गंजा । पु० गंजापन ।

खवा–पु० कंधा, भुजमूल । मु०–(वे)से **खवा छिलना**–वहुत भीड़, धक्कम-धक्का होना ।

खवाई†–स्त्री० खाने या खिलानेकी क्रिया ।

खवाना–स० क्रि० खिलाना ।

खवारा*–वि० खोटा, खराब–'कर्म खवारा पुट भरि लाई तातें बहु विधि भयो अचेत'–सुंदरदास ।

ख़वास–पु० (अ०)चुने हुए लोग, विशिष्ट जन(अवामका उल्टा); खास खिदमतगार; मुसाहब; सखा; गुण, तासीर; *नाई । स्त्री० लौंडी; सहेली ।

ख़वासी–स्त्री० (अ०) खवासका काम, पद; हौदे या गाड़ीमें खास टहलूके बैठनेकी जगह ।

खवैया–पु० खानेवाला; अधिक खानेवाला ।

खश–पु० (सं०) दे० 'खस' ।

ख़सख़ाश–पु० (फा०) पोस्तेका पौधा; पोस्तेका बीज, खसखस ।

खशी(शिन्)–वि० (सं०) पोस्तेके फूलके रंगका, हलका आसमानी । पु० उक्त रंग ।

ख़श्म–पु० (फा०) क्रोध, रोष । **–गीन,–नाक**–वि० गुस्सेसे भरा हुआ, क्रुद्ध ।

खष्य–पु० (सं०) क्रोध; हिंसा; निष्ठुरता ।

खस–पु० (सं०) गढ़वालके उत्तरका प्रदेश; उस प्रदेशका निवासी; नेपाल आदिमें बसनेवाली एक (व्रात्य) क्षत्रिय जाति, खासिया; खुजली; पोस्तेका पौधा । **–तिल**–पु० पोस्ता । **–फलक्षीर**–पु० अफीम ।

ख़स-पु० (फा०) सूखी घास; गाडर नामकी घासकी जड़ जिसकी टट्टियाँ गरमीके दिनोंमें कमरेको ठंढा रखनेके लिए खिड़कियों, दरवाजोंपर लगायी जाती हैं । **–ख़ाना**–पु० खसकी टट्टियोंसे घिरा हुआ स्थान, कमरा । **–पोश**–वि० सूखी घाससे ढँका हुआ ।

खसकना–अ० क्रि० दे० 'खिसकना' ।

खसकाना–स० क्रि० दे० 'खिसकाना' ।

खसखस–पु० पोस्तेका दाना; खशखाश ।

खसखसा–वि० भुरभुरा; वहुत छोटा; पोस्तेके दाने-सा ।

खसखास–पु० दे० 'ख़शख़ाश' ।

खसना*–अ० क्रि० खिसकना; गिरना 'खसी माल मूरति मुसकानी' –रामा० ।

खसनीव–पु० एक तरहका गंधाविरोजा ।

खसबो*–स्त्री० दे० 'ख़ुशबू' ।

ख-सम–वि० 'ख' (आकाश)के समान सब तरहके भावोंसे रहित ।

ख़सम–पु० (अ०) दुश्मन, लड़नेवाला; मालिक, पति । **–छुटी**–वि० स्त्री० जिसे पतिने छोड़ दिया हो, छिनाल (गाली) । **–पीटी**–वि०, स्त्री० विधवा (गाली) । मु० **–करना**–किसीको पति बनाना, (स्त्रीका) ब्याह करना ।

खसरा–पु० एक तरहकी खुजली ।

ख़सरा–पु० (फा०) पटवारीकी वही जिसमें गाँवके हर खेतका नंबर, रकबा, काश्तकारका नाम इ० लिखे रहते हैं; हिसाबका कच्चा चिट्ठा, खर्रा । **–आबादी**–पु० वह कागज जिसमें गाँवके हर मकानका नंबर, रकवा, मालिकका नाम आदि लिखे हों । **–तक़सीम**–पु० बटवारेका खसरा ।

ख़सलत–स्त्री० (अ०) आदत, स्वभाव; गुण ।

खसाना–स० क्रि० गिराना; फेंकना ।

ख़सारा–पु०, **ख़सारी**–स्त्री०, (अ०) घाटा, टोटा, हानि ।

ख़सासत–स्त्री० (अ०) खसीसपन, कंजूसी; क्षुद्रता, नीचता ।

खसिया–पु० आसामकी एक पहाड़ी; उस पहाड़ीके आसपासका प्रदेश । * वि०, पु० दे० 'ख़सी' ।

खसियाना–स० क्रि० खसी करना ।

ख़सी–वि० (अ०) बधिया; हिंजड़ा, नपुंसक । पु० बधिया बकरा । मु० **–करना**–वधिया करना ।

ख़सीस–वि० (अ०) कंजूस; क्षुद्रहृदय ।

खसोट–स्त्री० खसोटनेकी क्रिया या भाव ।

खसोटना–स० क्रि० नोचना, उखाड़ना; छीन लेना ।

खसोटा–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

खसोटी–स्त्री० दे० 'खसोट' ।

खस्खस–पु० (सं०) पोस्ता, खसखस ।

ख़स्तगी–स्त्री० (फा०) खस्तापन ।

ख़स्ता–वि० (फा०) घायल; खिन्न; क्लांत; संकटमय, दुर्दशाग्रस्त; जरा-सा दवानेसे टूट जानेवाला, वहुत नरम । **–कचौड़ी**–स्त्री० टिकियाकी शकलकी मोयनदार कचौड़ी । **–हाल**–वि० खिन्न; विपन्न, दुर्दशाग्रस्त, फटेहाल ।

ख़स्सी–वि०, पु० (अ०) दे० 'ख़सी' ।

खाँ–पु० दे० 'ख़ान' ।

खाँख†–स्त्री० सूराख ।

खाँखर†–वि० जिसमें वहुत सूराख हों; झीना ।

खाँग–पु० काँटा; जंगली सूअरका वह दाँत जो बाहर निकला रहता और शस्त्रका-सा काम देता है; गैड़ेके मुँहपर रहनेवाला सींग; तीतर, मुर्ग आदिके पैरका काँटा; गाय-वैल आदिके खुर पक जानेका रोग । *स्त्री० त्रुटि; कमी–'वरिस वीस लगि खाँग न होई'–प० ।

खाँगड़, खाँगड़ा–वि० जिसके माथेपर खाँग हो; जिसके पाँवमें खाँग रोग हो; हथियार बंद; वलवान् ।

खाँगना*–अ० क्रि० लँगड़ा हो जाना; घटना । स० क्रि० छेदना ।

खाँगी–स्त्री० कमी; घटी ।

खाँचना*–स० क्रि० दे० 'खीँचना'; चिह्नित करना; खचित करना ।

खाँचा–पु० अरहर आदिके डंठलका वना टोकरा; झावा; बड़ा पिंजड़ा ।

खाँची–स्त्री० छोटा खाँचा, खँचिया ।

खांड–पु० (सं०) खंडित होना; खाँड़से बनी चीज; मिसरी ।

खाँड़–स्त्री० गुड़का वह भेद जो गीला होता है और जिससे शकर बनाते हैं, राव; शकर, कच्ची चीनी; गड्ढा । **–सारी**–स्त्री० दे० 'खँड़सारी' ।

खाँड़ना†–स० क्रि० कुचलना; टुकड़े-टुकड़े करना; चबाना ।

खाँडर*–पु० खँडरा; कतला ।

खांडव–पु० (सं०) महाभारतमें वर्णित एक वन जिसे अग्निने अर्जुनकी सहायतासे जलाया; खाँड़से बनी चीज, मिसरी, मिठाई आदि । **–प्रस्थ**–पु० धृतराष्ट्रसे पांडवोंको मिला हुआ स्थान जहाँ उन्होंने इंद्रप्रस्थ नगर बसाया । **–राग**–पु० मिसरी; मिठाई ।

खांडविक–पु० (सं०) हलवाई ।

खाँड़ा–पु० खड्ग; सीधी और कुछ चौड़ी तलवार; भाग, खंड । मु० **–बजना**–तलवार चलना, युद्ध होना ।

खांडिक–पु० (सं०) हलवाई ।

खाँद†–पु० पदचिह्न, जानवरके खुर आदिके निशान–'जानवरोंके खाँद तो मिलते हैं, पर दिखलाई पूँछतक नहीं पड़ती'–मृग० ।

खाँधना*–स० क्रि० खाना–'...चोरि दधि कोनै खाँधो'–सूर ।

खाँप–स्त्री० फाँक, टुकड़ा ।

खाँभ*–पु० खंभा; दे० 'खाम' ।

खाँभना–स० क्रि० दे० 'खामना' ।

खाँवाँ–पु० दे० 'खावाँ' ।

खाँसना–अ० क्रि० गलेसे वलगम आदि निकालने या संकेतके लिए फेफड़ेसे झटके और आवाजके साथ हवाका बाहर निकलना ।

खाँसी–स्त्री० खाँसनेकी क्रिया; गले या श्वासनालीमें सुर-सुराहट होनेसे फेफड़ेसे झटके और आवाजके साथ हवाका बाहर निकलना; एक रोग जिसमें वार-वार यह क्रिया होती है ।

ख़ाइन–वि० (अ०) खयानत करनेवाला, रुपया खा जानेवाला, बेईमान ।

खाईं, खाई–स्त्री० किले, परकोटे आदिके चारों ओर रक्षार्थ खोदी हुई नहर, खंदक ।

खाऊ–वि० बहुत खानेवाला; घूस लेनेवाला । **–मीत**-पु० खानेके

लिए दोस्ती करनेवाला, मतलबका यार।

ख़ाक–स्त्री० (फा०) धूल; मिट्टी; राख, भस्म; तुच्छ वस्तु; मृतत्व। वि० तुच्छ; छोटा। अ० कुछ नहीं; किस लिए। **–अंदाज़**–पु० चूल्हेसे राख निकालनेका बरतन; किले आदिकी दीवारका वह छेद जिससे शत्रुपर गोली आदि चलाते हैं। **–दान**–पु० धूल-मिट्टी, कूड़ा फेंकनेकी जगह; दुनिया (ला०)। **–नाय**–पु० स्थल-डमरुमध्य। **–पत्थर**–अ० कुछ नहीं (ख़ाक-पत्थर समझना)। **–रोब**–पु० झाड़ू देनेवाला, भंगी। **–सार**–वि० तुच्छ, नाचीज; दीन; विनीत। पु० मुसलिम सेवकोंका एक दल। **–सारी**–स्त्री० दीनता; विनम्रता। **–साही**–*स्त्री० काली राख, छार (भू०)। **–(के)पा**–स्त्री० पदरज। वि० अतिदीन; विनीत। **मु०–उड़ना**–तबाह, बरबाद हो जाना; बदनामी, बेइज्जती होना। **–उड़ाना**–भटकते फिरना, खाक छानना। **–करना**–जलाकर राख कर देना, भस्म, कुश्ता बनाना; तबाह, बरबाद कर देना। **–का पुतला**–मनुष्य। **–का पैबंद होना**–दफन होना, मरना। **–चाटकर**–अति नम्रतापूर्वक (कोई बात कहना)। **–चाटना**–धूल चाटना; दीनता दिखाना; स्वीकार करना। **–छानना**–किसी चीजकी तलाशमें बहुत हैरान होना, मारा-मारा फिरना। **–डालना**–(ऐबपर) पर्दा डालना, छिपाना; भूल जाना। **–बरसना**–उजाड़ लगना, धूल उड़ना। **–में मिलना**–धूलमें मिलना; नष्ट, बरबाद होना। **–सियाह कर देना**–जलाकर राख कर देना; नष्ट कर देना। **–सिरपर उड़ाना**–मातम मनाना, शोकमें रोना-धोना।

खाकसी–स्त्री० (फा०) एक वनस्पतिका दाना जो दवाके काम आता है, खूबकलाँ।

खाकसीर–स्त्री० दे० 'खाकसी'।

ख़ाका–पु० (फा०) नकशे या चित्रपर पारदर्शी कागज रखकर बनाया हुआ नकशा या चित्र; कच्चा नकशा; रेखा-चित्र; ढाँचा; स्थूल योजना; एक तरहका कशीदा (उतारना; खींचना) **मु०–उड़ाना**–खिल्ली उड़ाना; बदनाम करना।

ख़ाक़ान–पु० (तु०) सम्राट्; चीनके पुराने सम्राटोंकी उपाधि।

ख़ाकी–वि० (फा०) मिट्टीका बना; मिट्टीके रंगका, मटियाला। पु० मटियाला रंग; इस रंगका कपड़ा; पुलिस या फौजकी वर्दी; साधुओंका एक संप्रदाय। **–अंडा**–पु० वह अंडा जिसमेंसे बच्चा न निकले, खाली, बिगड़ा अंडा; दोगला (ला०)।

खाख*–स्त्री० खाक, धूल; चूर्ण।

खाखरा*–पु० एक तरहका बाजा।

खाग–पु० दे० 'खाँग'।

ख़ाग–पु० (फा०) मुर्गीका अंडा।

खागना*–अ० क्रि० चुभना।

ख़ागीना–पु० (फा०) तले हुए अंडे या उनका सालन।

खाज–स्त्री० त्वचामें खुजली होनेका रोग, खारिश।

खाजा–पु० खाद्य, खानेकी चीज; मैदेकी बनी एक प्रसिद्ध मिठाई; एक जंगली वृक्ष।

खाजिक–पु० (सं०) भूना हुआ धान, लावा।

ख़ाज़िन–पु० (अ०) खजांची, कोशाध्यक्ष।

खाजी*–स्त्री० खाद्य पदार्थ।

खाट–पु० (सं०) टिखटी, अरथी। स्त्री० (हिं०) चारपाई, खटिया। **–खटोला**–पु० (हिं०) गृहस्थीका सामान, बोरिया-बधना। **मु०–कटना**–खाटपर ही मल मूत्र-त्यागका प्रबंध होना, सख्त बीमार होना। **–पर पड़ना**–बीमार होना। **–से उतारा जाना**–आसन्नमरण होना। **–से लगना**–रोगके कारण उठने-बैठनेमें अशक्त हो जाना।

खाटा, खाटो*–वि० खट्टा, अम्ल।

खाटि, खाटिका, खाटी–स्त्री० (सं०) अरथी।

खाड़*–पु० गड्ढा।

खाड़व–पु० छ स्वरोंवाला राग, षाडव।

खाड़ी–स्त्री० समुद्रका वह भाग जो तीन ओर खुश्कीसे घिरा हो, खलीज।

खात–पु० (सं०) खोदना; तालाब; कुआँ; गड्ढा; खाई। वि० खोदा हुआ। **–भू**–स्त्री० खाई। **–रूपकार**–पु० कुम्हार। **–व्यवहार**–पु० तालाब आदिका क्षेत्रफल निकालनेका गणित।

खातक–पु० (सं०) खोदनेवाला; खाई; कर्जदार।

ख़ातम–पु० (अ०) मुहर; मुहरवाली अँगूठी। **–बंद**–पु० मुहर खोदनेवाला; हड्डी, हाथी-दाँत आदिपर गुल-बूटे बनानेवाला।

ख़ातमा–पु० (अ०) दे० 'ख़ातिमा'।

खाता–स्त्री० (सं०) तालाब। पु० (हिं०) वह बही जिसमें हर एक ग्राहक, असामी आदिका अलग-अलग हिसाब लिखा जाय; लेखा, हिसाब; मद्द; बखार। **–बही**–स्त्री० वह पंजी या बही जिसमें अलग अलग व्यक्तियों या मद्दोंका लेखा दिया गया हो, लेखा बही। **मु०–खोलना,–डालना**–किसीसे लेन-देन आरंभ करना। **–(ते)में पड़ना**–किसीके नाम, किसीके हिसाबमें लिखा जाना; पक्की बहीमें लिखा जाना।

खाति–स्त्री० (सं०) खुदाई।

ख़ातिम–वि० (अ०) समाप्ति करनेवाला। पु० समाप्ति।

ख़ातिमा–पु० (अ०) अंत, समाप्ति; मृत्यु; पुस्तकका अंतिम अध्याय।

ख़ातिर–स्त्री० (अ०) मन, दिल; ध्यान, खयाल; आदर, लिहाज; सत्कार, आवभगत; इच्छा, मरजी। अ० वास्ते, लिए। **–ख़्वाह**–अ० इच्छानुसार, जैसा मन चाहे। **–जमा**–स्त्री० इतमीनान, दिलजमई। **–दारी**–स्त्री० आवभगत, सत्कार। **–नशीं**–वि० जो दिलमें बैठ, जम गया हो। **–शिकनी**–स्त्री० (किसीका), असंतुष्ट, अप्रसन्न होना। **मु०–में न लाना**–परवाह न करना, तुच्छ समझना।

ख़ातिरन्–अ० वास्ते; (किसीकी) प्रसन्नताके लिए।

ख़ातिरी†–स्त्री० दे० 'ख़ातिर'; तसल्ली।

खाती–स्त्री० गड्ढा; छोटा तालाब। पु० खतिया जाति; बढ़ई।

ख़ातून–स्त्री० (तु०) भद्र, कुलीन महिला। (स्त्रियोंके नामके साथ आदरार्थ भी प्रयुक्त होता है–'जुबेदा ख़ातून'।) **–(ने) अरब,–क़ाबा**–स्त्री० फातिमा। **–ख़ाना**–स्त्री० गृहिणी। **–फ़लक**–स्त्री० सूर्य।

खात्र–पु० (सं०) फावड़ा; तालाब; सूत; वन; भय।

खाद–स्त्री० जमीनका उपजाऊपन बढ़ानेवाली, पेड़-पौधोंके लिए खाद्यरूप वस्तु। पु० (सं०) खाना, भक्षण।

खादक–वि०, पु० (सं०) खानेवाला; कर्जदार।

खादन–पु० (सं०) खाना, भक्षण; दाँत; खाद्य पदार्थ।

खादर–पु० नीची जमीन जहाँ बरसातका पानी इकट्ठा हो जाय, कछार; † सड़ा हुआ गोबर आदि, खाद।

खादित–वि० (सं०) खाया हुआ।

खादिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) खानेवाला।

ख़ादिम–पु० (अ०) खिदमत करनेवाला, सेवक; दरगाहका रक्षक।

ख़ादिमा–स्त्री० (अ०) टहलुई, सेविका।

खादिर–वि० (सं०) खदिरसे उत्पन्न। पु० कत्था।

खादी–स्त्री० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गजी; हाथके कते सूतका हाथ-करघेपर बुना हुआ कपड़ा। **–केंद्र**–पु० खादी बुने जानेका केंद्र, वह स्थान जहाँ खादीका उत्पादन बड़े पैमानेपर हो। **–धारी**–वि० खादी पहननेवाला; केवल खादीका व्यवहार करनेवाला। **–भंडार**–पु० खादीकी दुकान।

खादी(दिन्)–वि०, पु० (सं०) खानेवाला।

खादुक–वि० (सं०) बुराई करनेवाला, हानिकारक।

खाद्य–वि० (सं०) खाने योग्य। पु० खानेकी चीज, भोजन। **–नलिका**–स्त्री० (एलिमेंटरी कैनाल) दे० 'पोषिका'। **–सम-वितरण**–पु० (फूड राशनिंग) नागरिकोंको निर्धारित मात्रामें खाद्यान्नोंका समान रूपसे वितरण।

खाद्योज–पु० (विटैमिन) प्राकृतिक खाद्य पदार्थोंमें पाया जानेवाला सूक्ष्म तत्त्व जो प्राणियोंके स्वास्थ्य एवं अभिवृद्धिके लिए आवश्यक माना जाता है (इसके कई भेद माने जाते हैं), पोषक तत्त्व, जीवन-तत्त्व, विटामिन।

खाध*–पु० दे० 'खाद्य'–'सीस न देइ पतंग होइ तब लगि लहै न खाध'–प०।

खाधु, खाधुक*–पु० खानेवाला, भक्षक।

खान–स्त्री० वह जगह जहाँसे धातु, कोयला आदि खोदकर या पत्थरकी सिलें तोड़कर निकाली जायँ; खानि, स्रोत; आकर, भंडार, खजाना। पु० (सं०) खोदना; हिंसा करना, पीड़न; खानेकी क्रिया; भोजन। **–पान**–पु० खाना-पीना; खाने-पीनेका ढंग; खाने-पीनेका व्यवहार, संबंध।

ख़ान–पु० (तु०) स्वामी, मालिक, सरदार; रईस; पठान; कुछ पठान शासकोंकी उपाधि; तातार और खताके पुराने वादशाहोंकी उपाधि। **–क़ाह,–गाह**–स्त्री० दरवेशोंके रहनेका स्थान, दरगाह। **–ख़ानान**–पु० सरदारोंका सरदार; प्रधान सेनापति; प्रधान मन्त्री (वैरम खाँ और उनके पुत्र अब्दुर्रहीम. (रहीम कविकी उपाधि)। **–ज़ादा**–पु० खाँका बेटा, शाहजादा। **–बहादुर**–पु० ब्रिटिश सरकारकी एक उपाधि या खिताब जो मुसलमानों और पारसियोंको दिया जाता था। **–सामाँ**–पु० शाही महलका भंडारी या पाकशालाका प्रवंधक; अंग्रेजोंका वावर्ची। **–साहब**–पु० एक उपाधि; पठान।

ख़ान–'ख़ाना'का समासगत रूप। **–गी**–वि० घरका, घरेलू, निजी, जाती। स्त्री० कसव, वेश्यावृत्ति करनेवाली स्त्री। **–दान**–पु० घराना, कुल; कुटुंव। **–दानी**–वि० कुलक्रमागत, पैतृक; ऊँचे कुलका, कुलीन।

खानक–पु० (सं०) खोदनेवाला; खान खोदनेवाला।

ख़ानम–स्त्री० (तु०) खाँकी पत्नी, वेगम; कुलीन, प्रतिष्ठित महिला।

खाना–स० क्रि० ठोस आहारको चवाकर निगलना, भक्षण करना; निगलना; मारकर भक्षण करना (हिंस्र जंतुओंका); चूसना, चवाना (पान, गँड़ेरियाँ); चाट जाना (कीड़ों आदिका); खर्च करना; नष्ट करना; कमजोर, खोखला करना; काटना; सहना, अँगेजना; लगने, पड़ने देना (धूप, हवा आदि); हड़पना, गवन करना; चोरी, वेईमानीसे हथियाना, पैदा करना। पु० भोजन। मु० **खा जाना, –खा डालना**–निगल जाना; मार डालना; खर्च कर देना; हजम, गवन कर लेना। **खाना-कमाना**–मेहनत-मजदूरीसे पैसा कमाकर गुजर-वसर करना। **–खिलाना**–अच्छी चीजें वनाकर खाने और दूसरोंको खिलानेका शौक रखना। **खाना-पीना**–भोजन-पान, खाने-पीनेका सुख भोगना। **–०लहू करना**–भोजनके समय या वाद कोई दुःख, संताप देनेवाली वात करके उसका सुख नष्ट कर देना। **–(ने) पीनेसे ख़ुश या सुखी**–खुशहाल। **खा-पी जाना**–खा-पीकर खतम करना, उड़ा डालना।

ख़ाना–पु० (फा०) घर, आलम; स्थान; डिविया, केस; अलमारी, संदूकका विभाग; कागज या कपड़ेपर रेखाओंसे वना विभाग, कोष्ठक। **–आवाद**–घर वसा, धन-धान्यसे भरा रहे (आशीर्वचन)। **–आवादी**–स्त्री० घर वसना; समृद्धि; व्याह। **–ख़राव**–वि० आवारा; वेघर-वारका; घरको वरवाद करनेवाला। **–ख़ुदा**–पु० मस्जिद; उपासना-स्थान। **–जंगी**–स्त्री० आपसी लड़ाई, गृहयुद्ध। **–ज़ाद**–वि० (किसीके) घरमें जनमा, पला हुआ (लौंडी या गुलामका वंशज)। पु० सेवक, दास। **–तलाशी**–स्त्री० घरकी तलाशी। **–दामाद**–पु० ससुरके घर रहनेवाला दामाद, घरजँवाई। **–दार**–वि० घर-गृहस्थीवाला, गृहस्थ। **–दारी**–स्त्री० घर-गृहस्थीका काम, गार्हस्थ्य। **–नशीन**–वि० जो घरमें ही वैठा रहे, कहीं जाये-आये नहीं; वेकार। **–पुरी, पूरी**–स्त्री० किसी नकशे, सारणीके खानोंको भरना। **–वदोश**–वि० जिसका कोई घर, ठौरठिकाना न हो, यायावर (नोमड)। पु० खेमों, सिरकियोंमें रहनेवाली, स्थायी आवासरहित जाति, जन। **–वरवाद**–वि० घर-उजाड़, उड़ाऊ। **–वरवादी**–स्त्री० घरका उजड़ना। **–शुमारी**–स्त्री० (किसी गाँव, नगरके) घरोंकी गिनती करना। **–साज़**–वि० घरका बना।

खानि–स्त्री० (सं०) खान; * खूंट; ओर; प्रकार, भेद।

खानिक–पु० (सं०) दीवारमें किया हुआ छेद, दरार; सेंध। * स्त्री० खानि, खान।

खानिल–पु० (सं०) सेंध मारनेवाला।

खानोदक–पु० (सं०) नारियलका पेड़।

खापगा–स्त्री० (सं०) आकाश गंगा।

खापट–स्त्री० काविस मिट्टीवाली जमीन।

खाव*–पु० दे० 'ख्वाव'; † खाना।

खाभा–पु० कोल्हूके नीचेके वरतनसे तेल निकालनेका मिट्टीका वरतन।

खाम–पु० लिफाफा; जोड़; * खंभा। * वि० घटनेवाला।

ख़ाम–वि० (फा०) कच्चा; जो पका-पकाया या पक्का न हो; अप्रौढ़, अनुभवहीन; पक्केसे कम, छोटा (वाट, तौल); अयुक्त, असंगत। **–इलाक़ा**–पु० वह इलाका या गाँव जिसकी तहसील सरकार, रियासत खुद करे। **–ख़याल**–वि० नासमझ, वेवकूफ। **–ख़याली**–स्त्री० नासमझी, नासमझीका, वुद्धि-विरुद्ध विचार। **–तहसील**–स्त्री० लगानकी वसूली जो सरकार खुद करे। मु०–पड़ना–घटना, कम पड़ना।

खामखाह–अ० दे० 'ख्वाहमख्वाह'।

खामना–स० क्रि० आटे आदिसे (घड़े आदिका) मुँह वंद करना; लिफाफेमें वंद करना।

ख़ामा–पु० (फा०) कलम, लेखनी।

ख़ामी–स्त्री० (फा०) कचाई; कमी; दोष; अनुभवहीनता।

ख़ामुश–वि० (फा०) दे० 'ख़ामोश'।

ख़ामुशी–स्त्री० (फा०) दे० 'खामोशी'।

ख़ामोश–वि० (फा०) चुप, मौन।

ख़ामोशी–स्त्री० (फा०) चुप्पी।

ख़ाया–पु० (फा०) अंडकोश, फोता; मुर्गीका अंडा। **–वरदार**–वि० चापलूस। **–वरदारी**–स्त्री० चापलूसी।

खार–पु० क्षार; क्षार गुण, खारापन; रेह; लोना; सज्जी; राख; * पोखरा; डवरा–'दई न जात खार उतराई चाहत चढ़न जहाज'–सूर; (सं०) दे० 'खारि'।

ख़ार–पु० (फा०) काँटा, फाँस; मुर्ग, तीतर आदिके पाँवमें निकला हुआ काँटा; काँटेकी तरह चुभनेवाला द्वेष, जलन। **–ज़ार**–पु० काँटोंसे भरी जगह; काँटोंका जंगल। **–दार**–वि० काँटेदार। **–पुश्त**–पु० पीठ खुजलानेका काँटा; कटहल; साही। **–वंद, –वस्त**–पु० काँटोंकी वाड़। मु० **–खाना**–जलना, द्वेष करना। **–देना**–कष्ट, क्लेश देना (क्व०)। **–निकलना**–खटक, जलन मिटना। **–निकालना**–वदला लेना, जलन मिटाना।

खारक*–पु० दे० 'ख़ारिक'।

खारा–वि० जिसमें खारापन हो, क्षार गुणवाला; नमकीन; वदमजा। पु० घास, पत्ते बाँधनेकी जाली; बड़ा टोकरा, झावा; एक धारीदार कपड़ा।

ख़ारा–पु० (फा०) कड़ा पत्थर, चट्टान; एक लहरदार रेशमी कपड़ा। **–शिगाफ़**–वि० पत्थरमें दरार डाल देने, पत्थरको–काट देनेवाला (तेग, तलवार)।

खारि–स्त्री० (सं०) १६ द्रोणकी एक तौल।

ख़ारिक–पु० (फा०) खजूर, छुहारा; फारसकी खाड़ीका एक टापू।

ख़ारिज–वि० (अ०) बाहर; वाहर किया हुआ, वहिष्कृत; अलग किया हुआ। **–क़िस्मत**–पु० भजनफल, लब्धि (ग०)। मु० **–करना**–वाहर करना, निकाल देना; विचारके अयोग्य मानना, 'डिस्मिस', नामंजूर करना (नालिश, दरखास्त आदि)।

ख़ारिजा–वि० (अ०) वाह्य; खारिजी, परराष्ट्र संवंधित।

ख़ारिजी–वि० (अ०) बाहरी, वाह्य; परराष्ट्र-संवंधी। पु० मुसलमानोंका एक संप्रदाय जो अलीकी खिलाफतको न्याय-संगत नहीं मानता। **–इलाज**–पु० ऊपरी उपचार; औषधके वाह्य प्रयोगवाला इलाज।

खारिश, खारिश्त–स्त्री० (फा०) खुजली; खुजलीकी वीमारी।

खारिश्ती–वि० (फा०) जिसे खुजलीका रोग हो।

ख़ारिस्तान–पु० दे० 'ख़ारज़ार'।

खारी–स्त्री० (सं०) दे० 'खारि'; (हिं०) खारी नमक। वि० खारा। **–नमक**–पु० लोना मिट्टीसे निकला हुआ नमक जो वैलों आदिको खिलाया जाता है।

खारुआँ, खारुआ–पु० एक तरहका गहरा लाल रंग; उक्त रंगमें रंगा कपड़ा ।

खारेजा–पु० जंगली कुसुम या बर्रे ।

खार्कार–पु० (सं०) गधेका रेंकना ।

खार्जूर–पु० (सं०) खजूरके रससे बनी शराब । वि० खजूर संबंधी या खजूरसे बना हुआ ।

खार्वा–स्त्री० (सं०) त्रेतायुग ।

खाल–स्त्री० त्वचा, चमड़ा; छिलका; धौंकनी; आधा चरसा; *मृत देह; नीची जमीन; गहरी जगह; खाड़ी । † वि० खाला । –**फूँका**–पु० धौंकनी चलानेवाला । **मु०–उधेड़ना**–इतना पीटना कि खाल उड़ जाय, बहुत मारना । –**खींचकर भूसा भर देना**–पुराने जमानेका एक कठोर दंड । –**खींचना**–जीवित शरीरपरसे चमड़ा अलग कर लेना । **(अपनी)–में मस्त होना**–अपनी स्थितिसे संतुष्ट होना; बेपरवा होना ।

ख़ाल–पु० (अ०) बदनपरका प्राकृतिक काला चिह्न, तिल; मामूँ ।

ख़ाल-ख़ाल–अ० (फा०) बहुत विरल, कहीं-कहीं ।

खालत्य, खालित्य–पु० (सं०) गंजापन ।

ख़ालसा–वि० दे० 'खालिसा' । पु० वह सरकारी जमीन या इलाका जिसका प्रबंध सरकार खुद करे और जो किसीकी जागीर, जमींदारी न हो; सिखोंका एक (प्रमुख) संप्रदाय । –**दीवान**–पु० सिखोंकी धर्मसभा । **मु०–करना**–सरकारका किसी जमीन, जायदादका प्रबंध अपने हाथमें ले लेना, जब्त कर लेना ।

खाला–वि० नीचा (ऊँचा-खाला) ।

ख़ाला–स्त्री० (फा०) माँकी बहन, मौसी । –**ज़ाद**–वि० मौसेरा (भाई-बहन) । –**(जी)का घर**–बहुत आसान काम ।

खालिक–वि० (सं०) खलियान जैसा ।

ख़ालिक–वि० (अ०) बनानेवाला, सृष्टिकर्ता । –**बारी**–स्त्री० अमीर खुसरो-रचित एक पद्य-पुस्तक जिसमें प्रचलित अरबी-फारसी शब्दोंके हिंदी पर्याय दिये गये हैं ।

ख़ालिस–वि० (अ०) शुद्ध, बेमेल; खरा, सच्चा ।

ख़ालिसा–वि० (अ०) शुद्ध, खालिस; जो राज्यके प्रबंधमें, राज्यकी संपत्ति हो ।

खालिसाना–अ० नेकनीयतीसे, शुद्ध, निस्स्वार्थ भावसे (–मश्विरा) ।

ख़ाली–वि० (अ०) जिसमें कुछ भरा-धरा न हो, रीता, रहित, शून्य; जिसमें कोई रहता न हो (मकान); जिससे काम न लिया जा रहा हो, अव्यवहृत; जिसके पास कोई काम न हो, सावकाश; व्यर्थ, बेकार । अ० केवल । पु० तबले आदि बजानेमें खाली छोड़ा हुआ ताल । –**दिन**–पु० शुभ कार्य या नये कामके लिए अनुपयुक्त दिन । –**पेट**–वि० जो कुछ खाये न हो, भूखा । अ० बिना कुछ खाये, बासी मुँह । –**हाथ**–वि० जिसके हाथमें, पास कुछ न हो, निर्धन; जिसके हाथमें कोई हथियार न हो । अ० हाथमें बिना कुछ लिये, बिना पैसे या हथियारके । –**का चाँद या महीना**–मुसलमानोंका ग्यारहवाँ महीना ज़ीकाद जो मनहूस समझा जाता है (इससे पहले महीनेमें ईद और बादके महीनेमें बकरीद पड़ती है) । **मु०–जाना**–निशानेपर न लगना, व्यर्थ होना । –**देना**–हट-बढ़कर वार बचाना । –**बैठना**–बेकार बैठना । –**हाथ लौटना**–बैरंग, विफल लौटना ।

ख़ालू–पु० (अ०) मौसा; मामूँ ।

खाले–अ० नीचे । –**खाले**–अ० नीचे-नीचे ।

खावाँ–पु० खेत या बागके चारों ओर खोदा हुआ गढ़ा या मेड़; कम चौड़ी, गहरी खाई ।

ख़ाविंद–पु० (फा०) मालिक, स्वामी, पति ।

ख़ाविंदी–स्त्री० कृपा, अनुग्रह ।

ख़ाशाक–पु० (फा०) कूड़ा-करकट ।

ख़ास–वि० (अ०) आमका उलटा, विशेष; विशिष्ट; चुना हुआ; मुख्य; व्यक्तिविशेषसे संबंध रखनेवाला; निजका; बढ़िया; प्रिय, प्यारा; ठेठ; ठीक । पु० विशिष्ट जन; प्रिय जन । –**कर**–अ० विशेषतः, खास तौरसे । –**क़लम**–पु० निजका मुंशी । –**ख़ास**–वि० चुने हुए, प्रमुख (लोग) । –**गी**–स्त्री० खासीयत; विशेषता । –**तराश**–पु० राजा, बादशाहकी हजामत बनानेवाला नाई । –**तहसील**–स्त्री० उस स्थानकी तहसील, मालगुजारी जहाँ राजा खुद रहता हो; वह मालगुजारी जिसे राजा, सरकार खुद वसूल करे । –**दान**–पु० पानदान । –**नवीस**–पु० ख़ासकलम । –**पसंद**–वि० खास लोगों, विशिष्ट जनोंको रुचनेवाला । –**बरदार**–पु० वह सिपाही जो बंदूक लेकर राजा, बादशाहकी सवारीके आगे-आगे चले; वह नौकर जो (राजा, रईसका) पानदान लेकर साथ चले । –**बाज़ार**–पु० राजमहलके सामने या पासका, उसकी आवश्यकताओंके लिए बसाया गया बाजार । –**महल**–पु० अंतःपुर, जनानखाना; प्रधान बेगम, पट्टमहिषी । –**महाल**–पु० वह जायदाद जिसका प्रबंध राज्य या सरकार खुद करे ।

खासगी–वि० मालिकका; खास, अपना, निजी ।

ख़ासा–वि० (अ०) काफी अच्छा, बढ़िया; औसत दरजेका; सुंदर । पु० रईसका खाना; राजाकी सवारीका घोड़ा; हाथी; मलमलकी किस्मका एक सूती कपड़ा; एक तरहकी पूरी ।

ख़ासियत–स्त्री० दे० 'ख़ासीयत' ।

खासिया–पु० दे० 'खसिया' ।

खासियाना–पु० एक तरहकी मजीठ ।

ख़ासी–वि०, स्त्री० दे० 'खासा' ।

ख़ासीयत–स्त्री० (अ०) गुण, प्रभाव; विशेषता; प्रकृति, स्वभाव ।

ख़ास्तई–पु० (फा०) कबूतरका एक रंग । –**टेंट**–पु० सफेद हलक़ जो खास्तई कबूतरकी गरदनके नीचे होता है ।

ख़ास्तगार–वि० (फा०) इच्छुक, प्रार्थी (दे० 'ख़्वास्तगार') ।

ख़ास्सा–पु० (अ०) गुणविशेष, स्वभाव, खासीयत ।

ख़ाह–अ० दे० 'ख़्वाह' । –**मख़ाह**–अ० दे० 'ख़्वाहमख़्वाह' ।

ख़ाहाँ–वि० दे० 'ख़्वाहाँ' ।

ख़ाहिश–स्त्री० दे० 'ख़्वाहिश' । –**मंद**–वि० इच्छुक ।

खिंकिर–पु० (सं०) लोमड़ी ।

खिंखिर–पु० (सं०) लोमड़ी; खाटका पावा; एक गंधद्रव्य ।

ख़िंग–पु० (फा०) सफेद । पु० सब्जा घोड़ा ।

खिंचना–अ० क्रि० खींचा जाना, तनना; किसी दिशामें बढ़ना, आकृष्ट होना; कसा जाना; (म्यान आदिसे) बाहर निकलना; विरक्त, अप्रसन्न होना; चित्रित होना, उतरना; दूर होना; सोखा जाना ।

खिंचवा–पु० (नावका गुण, खरादकी बद्धी आदि) खींचनेवाला ।

खिंचवाना–स० क्रि० 'खींचना'का प्रे० ।

खिंचाई–स्त्री० खींचनेकी क्रिया; खींचनेकी उजरत ।

खिंचाना–स० क्रि० 'खिंचवाना' ।

खिंचाव–पु० खींचे जानेका भाव, तनाव; विरक्ति; नाराजगी ।

खिंचावट, खिंचाहट–स्त्री० दे० 'खिंचाव' ।

खिंचिया–पु० दे० 'खिंचवा' ।

खिंड जाना†–अ० क्रि० छितरा जाना, बिखर जाना; बह जाना ।

खिआल†–पु० हँसी, मजाक, खियाल ।

खिखिंद*–पु० किष्किंध पर्वत; बीहड़ भूमि ।

खिखि–स्त्री० (सं०) लोमड़ी ।

खिचड़वार–पु० मकर-संक्रांति ।

खिचड़ा–पु० गेहूँ और कई तरहकी दालें मिलाकर पकायी हुई खिचड़ी जो प्रायः मुहर्रममें बाँटी जाती है ।

खिचड़ी–स्त्री० मिला हुआ या मिलाकर पकाया हुआ दाल-चावल; दो या अधिक चीजोंकी मिलावट; दो रंगकी चीजों (स्याह-सफेद बालों, रुपयों और अशर्फियों) की मिलावट; ब्याहकी एक रस्म जिसमें वर और उसके छोटे भाइयोंको खिचड़ी खिलाते हैं; मकर-संक्रांति; नाचकी साई । वि० मिला-जुला, खल्त-मल्त । –**बोली**,–**भाषा**–स्त्री० वह बोली, भाषा जिसमें दो या अधिक भाषाओंके शब्दोंका मिश्रण हो । **मु०–आना**–मकर-संक्रांतिके अवसरपर वधूके मैकेसे खिचड़ी, चूड़ा, तिलवा आदिका आना, भेजा जाना । –**खाते पहुँचा उतरना**–बहुत नाजुक होना; बहुत नजाकत दिखाना । –**पकना**–गुप्त मंत्रणा, साजिश होना । –**होना**–खल्त-मल्त होना; बालोंका पकने लगना ।

खिचना–अ० क्रि० दे० 'खिंचना'।

खिचाव–पु० दे० 'खिंचाव'।

खिजना–अ० क्रि० दे० 'खीजना'। † वि० चिड़चिड़ा।

खिजमत*–स्त्री० दे० 'ख़िदमत'।

खिजमति*–स्त्री० दे० 'ख़िदमत'। –**गार**–पु० दे० 'ख़िदमतगार'।

ख़िज़र, ख़िज्र–पु० (अ०) एक पैगंबर जो मुसलमानोंके विश्वासानुसार अमृत पीकर अमर हो गये हैं; पथ-प्रदर्शक। –**सूरत**–वि० संत-महात्मा जैसे रूप, वेशवाला। –(**रे**)**राह**–पु० पथ-प्रदर्शक।

खिजलाना–अ० क्रि० चिढ़ना। स० क्रि० चिढ़ाना, तंग करना।

ख़िज़ाँ–पु०, स्त्री० (फा०) पतझड़की ऋतु; ह्रास; ह्रासकाल; बुढ़ापा; बेरौनकी।

खिजाना–स० क्रि० दे० 'खिझाना'।

ख़िज़ाब–पु० (अ०) सफेद बालोंको स्याह कर देनेवाली दवा, केशकल्प (करना, लगाना)।

ख़िज़ाबी–वि० खिजाबका। पु० खिजाब लगानेवाला।

ख़िजालत–स्त्री० (अ०) लज्जित होना, शर्मिंदगी।

खिज्र–पु० एक पैगंबर जो भूलेभटकोंको ठीक मार्गपर लाते हैं, पथ-प्रदर्शक।

खिझ*–स्त्री० दे० 'खीझ'।

खिझना–अ० क्रि० दे० 'खीझना'। † वि० दे० 'खिजना'।

खिझाना–स० क्रि० चिढ़ाना, छेड़ना; गुस्सा दिलानेवाली बात करना।

खिझावना*–स० क्रि० दे० 'खिझाना'।

खिड़कना*–अ० क्रि० दे० 'खिसकना'।

खिड़काना–स० क्रि० हटाना, अलग करना; बेच देना।

खिड़की–स्त्री० मकान, रेल, जहाज आदिमें हवा और रोशनी आनेके लिए बनाया हुआ छोटा दरवाजा, झरोखा, वातायन, खड़क्की; किले या परकोटेका चोर-दरवाजा; मकानमें जाने-आनेका गौण या पीछेका द्वार। –**दार**–वि० जिसमें खिड़की या खिड़कियाँ हों। –**०अँगरखा**–पु० वह अँगरखा जिसमें छातीका कुछ हिस्सा खुला रहता है। –**०पगड़ी**–स्त्री० इस तरह बंधी हुई पगड़ी कि ऊपरका कुछ भाग खुला रहे। –**बंद**–वि० जो स्वतंत्र रूपसे, पूरा, किरायेपर लिया गया हो (मकान)।

खित*–स्त्री० दे० 'क्षिति'।

ख़िताब–पु० (अ०) किसीकी ओर मुँह करना, मुखातिब होना; बात-चीत; पदवी; राज्यकी ओरसे दी जानेवाली उपाधि।–**याफ्ता**–वि० जिसे खिताब मिला हो।

ख़िताबी–वि० जिसे खिताब मिला हो।

ख़ित्ता–पु० (अ०) भूखंड, प्रदेश।

ख़िदमत–स्त्री० (अ०) सेवा, टहल, चाकरी; काम; पद। –**गार**–पु० खिदमत करनेवाला, टहलू। –**गारी**–स्त्री० खिदमतगारका काम, टहल। –**गुज़ार**–पु० सेवा करनेवाला। –**में**–सामने, पास, सेवामें।

ख़िदमती–वि० खिदमत करनेवाला; खिदमतके बदलेमें प्राप्त (खिदमती जागीर)।

खिदिर–पु० (सं०) चंद्रमा; तपस्वी; दरिद्र; इंद्र।

खिद्र–पु० (सं०) निर्धन व्यक्ति; रोग।

खिन*–पु० छन, क्षण।

खिन्न–वि० (सं०) खेदयुक्त; दुःखी; कष्टयुक्त; उदास; चिंतित; क्लांत; दीन।

खिपना*–अ० क्रि० खपना; मिल जाना; निमग्न होना।

ख़िफ़्फ़त–स्त्री० (अ०) खफीफ होनेका भाव; हलका, छोटा होना, बनना; ओछापन; शर्मिंदगी; बेइज्जती।

खियरानि*–स्त्री० खेदभरी स्थिति।

खियानत–स्त्री० दे० 'खयानत'।

खियाना†–अ० क्रि० घिस जाना। स० क्रि० खिलाना।

खियाबाँ–पु० (फा०) क्यारी, रविश।

खियाल†–पु० खयाल, विचार; हँसी, मजाक।

ख़िरक़ा–पु० (अ०) गुदड़ी, कंथा; पुराना कपड़ा।

खिरका–पु० दे० 'खरक' गायोंका बाड़ा–'रांभति गौ खिरकनमें बछरा हित धाई'–सूर।

खिरकी†–स्त्री० दे० 'खिड़की'।

ख़िरद–स्त्री० (फा०) बुद्धि, अक्ल।–**मंद**–वि० बुद्धिमान्।

खिरनी–स्त्री० एक फलवृक्ष या उसका छोटा, पीला फल, क्षीरिणी।

ख़िरमन–पु० (फा०) खलियान, अंबार; फसल।

ख़िरस–पु० (फा०) रीछ, भालू।

ख़िराज–पु० (अ०) कर, मालगुजारी; अधीन राज्यकी ओरसे प्रभु राज्यको दिया जानेवाला कर। –**गुज़ार**–वि० करद (राज्य, राजा)।

ख़िराम–पु० (फा०) मटकते हुए, नाज-नखरेके साथ चलना; ऐसी चाल।

ख़िरामाँ–वि० (फा०) मटककर; नाज-नखरेके साथ चलनेवाला।

खिरिरना*–स० क्रि० अनाजको साफ करनेके लिए सूराखदार छाजमें रखकर छानना; खुरचना।

खिरिसा*–पु० एक मिष्ठान्न।

खिरैंटी–स्त्री० बरियारा।

खिरौरा–पु०, **खिरौरी***–स्त्री० केवड़ेमें सुवासित कत्थेकी टिकिया।

खिलंडरा–वि० दे० 'खिलंदरा'।

खिलंदरा–वि० खिलवाड़ करनेवाला।

खिल–पु० (सं०) परती जमीन, ऊसर; खाली जगह; परिशिष्ट, पूरक; शेषांश; विष्णु; ब्रह्मा।

ख़िलअत–पु०, स्त्री० (अ०) जोड़ा, पोशाक, वह पहनावा जो राजा, बादशाह किसीको सम्मानार्थ प्रदान करे।

ख़िलक़त–स्त्री० (अ०) सृष्टि, रचना; प्रकृति; जगत्, जनसमूह।

खिलकौरी†–स्त्री० खेल।

खिलखिलाना–अ० क्रि० आवाजके साथ खुलकर हँसना, कहकहा लगाना।

खिलखिलाहट–स्त्री० खिलखिलाकर हँसनेकी आवाज।

ख़िलजी–पु० पठानोंकी एक जाति; हिंदुस्तानका एक पठान राजवंश।

खिलत, खिलति, खिलवति*–स्त्री० दे० 'ख़िलअत'।

खिलना–अ० क्रि० कलीका विकसित होना, फूल बनना; फबना, भला लगना; प्रसन्न, प्रफुल्ल होना; पक-भुनकर अलग-अलग हो जाना (चावल, खीलें), फट जाना।

ख़िलवत–स्त्री० (अ०) एकांत; खाली, जनशून्य स्थान; तनहाई; सोनेका कमरा। –**ख़ाना**–पु० अकेलेमें मिलने, गुप्त मंत्रणाका स्थान। –**नशीं**–वि० एकांतवासी।

खिलवती*–पु० घनिष्ठ मित्र।

खिलवाड़–पु० दे० 'खेलवाड़'।

खिलवाना–स० क्रि० दूसरेसे परसवाकर, दूसरेके द्वारा किसीको भोजन कराना; प्रफुल्ल कराना; खीलें बनवाना; खीलें लगवाना।

खिलवार*–पु० दे० 'खिलवाड़'; खेलाड़ी।

खिलाई–स्त्री० खाने या खिलानेका काम; खिलानेका नेग (खिचड़ी खिलाई); बच्चा खेलानेपर नियुक्त मजदूरनी।

खिलाड़–वि०, स्त्री० चंचल, हाव-भावमें प्रवीण (स्त्री); बदचलन।

खिलाड़ी–वि० खेलनेवाला; किसी खास खेलमें कुशल; कुश्ती, गतका आदिमें कुशल। पु० खेलनेवाला; खेल करनेवाला; खेल-तमाशा, करतब दिखानेवाला, बाजीगर।

खिलाना–स० क्रि० भोजन कराना; दावत देना; खिलानेका कारण होना; विकसित, प्रफुल्ल करना। मु०–**पिलाना**–भोजन-पानसे सत्कार करना।

ख़िलाफ़–वि० (अ०) विरुद्ध; प्रतिकूल, उलटा। –**क़ानून**–वि० कानूनके विरुद्ध, गैरकानूनी। –**मरजी**–वि० मरजी, इच्छाके विरुद्ध। –**वरज़ी**–स्त्री० विरुद्धाचरण; आज्ञाका उल्लंघन। मु० –**होना**–विरुद्ध, विरोधी होना।

ख़िलाफ़त–स्त्री० (अ०) खलीफाका पद; पैगंबर या बादशाहका जानशीन या प्रतिनिधि होना; † दे० 'खिलाफ़ी'। –**आंदोलन**–पु० प्रथम महायुद्ध(१९१४-१८)के बाद भारतमें खिलाफतकी पुनः स्थापनाके लिए ब्रिटिश सरकारके विरुद्ध उठाया गया

आंदोलन ।

खिलाफ़ी–स्त्री० मुखालफत, विरोध (वादा–) ।

ख़िलाल–स्त्री० (अ०) दाँत खोदनेका तिनका; दो चीजोंके बीचका फासला; मात, (ताशके खेलमें) हार ।

खिलौना–पु० खेलनेकी चीज, साधन; काठ, मिट्टी आदिका बना हुआ हाथी, घोड़ा, आदि; मनबहलावकी चीज; शिशुजन्म तथा शिशुक्रीडा संबंधी विशिष्ट गीत ।

ख़िल्त–पु० (अ०) मिलावट; यूनानी वैज्ञानिकोंकी मानी हुई शरीरकी चार धातुओं (सफरा, सौदा, बलगम, खून)मेंसे कोई एक । **–मिल्त**–वि० मिला-जुला, एकमें मिला हुआ ।

खिल्य–पु० (सं०) खारी नमक । वि० परिशिष्टमें वर्णित, कथित ।

खिल्ली–स्त्री० हँसी, मजाक; कील; पानका बीड़ा । **–बाज़**–पु० खिल्ली उड़ानेवाला । मु० **–उड़ाना**–किसीका मजाक उड़ाना, उपहास करना ।

खिवना*–अ० क्रि० चमकना–'बिजुरी-सी खिवैं इकलौ छतियाँ'–घन० ।

ख़िश्त–स्त्री० (फा०) ईंट ।

ख़िश्तक–स्त्री० (फा०) छोटी ईंट; चौबगला ।

खिसना*–अ० क्रि० टपक पड़ना; खिसक जाना, चला जाना (सूर) ।

खिसकना–अ० क्रि० हटना, सरकना; चुपकेसे चल देना ।

खिसकाना–स० क्रि० हटाना, सरकाना; चुपकेसे हथिया लेना, उड़ाना ।

खिसलना–अ० क्रि० दे० 'फिसलना' ।

खिसलाहट–स्त्री० फिसलनेका भाव ।

खिसाना*–अ० क्रि० दे० 'खिसियाना' ।

खिसारा–पु० दे० 'ख़सारा' । † वि० खीसोंवाला (जंगली सुअर) ।

खिसारी–स्त्री० दे० 'खेसारी' ।

खिसिआना, खिसियाना–अ० क्रि० लज्जित होना; लज्जित होकर, बेवकूफ बनकर खीझना; कुढ़ जाना; खफा होना । वि० खिसियाया हुआ; लज्जित । (स्त्री० 'खिसियानी' ।) मु०–**(नी)-बिल्ली खंभा नोचे**–खिसियाया हुआ आदमी अपनी खीस दूसरोंपर उतारता है ।

खिसियाहट–स्त्री० खिसियानेका भाव ।

खिसिलना†–अ० क्रि० खिसलना, फिसलना ।

खिसी*–स्त्री० लज्जा; खीस, खीझ; धृष्टता ।

खिसौंहा*–वि० लज्जित-सा, खिसियाया हुआ या क्रुद्ध-सा ।

खींच–स्त्री० खींचनेकी क्रिया या भाव । **–तान**–स्त्री० खींचा-खींची, नोक-झोंक; किसी तरह, खींच-खाँचकर अर्थ लगाना ।

खींचना–स० क्रि० अपनी ओर आकृष्ट करना, ऐंचना; घसीटना; चूसना; सारपदार्थ निकाल लेना; चित्रित करना; रोक रखना; व्यापारिक वस्तुएँ मँगाना ।

खींचा-खींची–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए दो व्यक्तियोंका परस्पर विरोधी उद्योग, नोक-झोंक ।

खींचा-तान, खींचा-तानी–स्त्री० दे० 'खींचतान' ('खींच'में) ।

खीज–स्त्री० खीजनेका भाव, झुंझलाहट, कुढ़न, गुस्सा ।

खीजना–अ० क्रि० झुंझलाना, क्रुद्ध होना ।

खीझ*–स्त्री० दे० 'खीज' ।

खीझना*–अ० क्रि० दे० 'खीजना' ।

खीन*–वि० दे० 'क्षीण' । **–ता**–स्त्री० दे० 'खीनताई' ।

खीनताई*–स्त्री० दुर्बलता, सूक्ष्मता; घटी ।

खीप–पु० एक पेड़ जिसके रेशोंसे रस्सी बनायी जाती हैं; लज्जालु लता ।

ख़ीमा–पु० (अ०) खेमा, तंबू ।

खीर–स्त्री० दूधमें पकाया हुआ चावल; दूधमें पकायी हुई सूजी, लौकी, मखाना आदि । * पु० दूध । **–चटाई**–स्त्री० अन्नप्राशन । **–मोहन**–पु० छेनेकी एक मिठाई ।

खीरा–पु० ककड़ीकी जातिका एक फल । मु०–**(रे) ककड़ीकी तरह काटना**–धड़ाधड़, बिना प्रयास, काटना ।

खीरी–स्त्री० गाय, भैंस आदिके थनके ऊपरका मांस; * खिरनी ।

खील–स्त्री० भुना हुआ धान, लावा; † काँटा; मुहासे आदिसे निकलनेवाला मवादका कील जैसा अंश; चक्कीकी बीचकी खूंटी; चाककी खूँटी; छोटा नुकीला टुकड़ा ।

खीलना–स० क्रि० पानके बीड़े, दोने आदिमें तिनका गोदना ।

खीला†–पु० कील, खूँटी ।

खीली†–स्त्री० पानका बीड़ा या खिल्ली ।

खीवन, खीवनि*–स्त्री० मस्ती, मत्त होना ।

खीवर*–वि० वीर, बहादुर; मस्त ।

खीस–स्त्री० खिसियानेका भाव; लज्जा; खीझ; बाहर निकले हुए दाँत; खिसियाकर या दीनता दिखाते हुए दाँत बाहर कर देना; ऐसी हँसी जिसमें दाँत खुल जायँ; पेउस; * नुकसान, खराबी–'अब सलाह इन सों करे, कबू न ह्वैहै खीस'–छत्रप्रकाश; नाश । वि० नष्ट, विध्वस्त । मु०–**या खीसें काढ़ना या निकालना**–इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें; बेढंगी हँसी हँसना; गिड़गिड़ाकर माँगना, आजिजी करना ।

खीसना–अ० क्रि० नष्ट होना; खराब, बरबाद होना । * स० क्रि० नष्ट करना–'तुमहीं जु दीसि परी सोई देखौ पनहिं न खीसत हौं'–घन० ।

खीसा–पु० थैली, बटुआ, जेब ।

खीहना*–अ० क्रि० 'खीजना' ।

खुंखणी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी वीणा ।

खुंगाह–पु० (सं०) काला घोड़ा ।

खुँचकढ़वा–पु० कानका मैल निकालनेवाला ।

खुँटाना–स० क्रि० खूँटने, तोडनेका काम कराना ।

खुँटिला–पु० दे० 'खुटिला' ।

खुँडला–पु० झोपड़ा ।

खुँदवाना–स० क्रि० घोड़ेकी टापसे कुचलवाना, रौंदवाना ।

खुँदाना–स० क्रि० घोड़ा कुदाना ।

खुंबी, खुंभी–स्त्री० दे० 'खुभी' ।

खुआर*–वि०, पु० दे० 'ख़्वार' ।

खुआरी*–स्त्री० दे० 'ख़्वारी' ।

खुक्ख, खुक्खा–वि० खाली, छूँछा; नादार ।

खुखड़ी–स्त्री० तकुएपर लपेटा हुआ सूत. ऊन; एक तरहका बड़ा छुरा, नेपाली कटार, करौली; एक घासका सूखा डंठल जो कागकी तरह काममें लाया जाता है ।

खुगीर–पु० दे० 'ख़ोगीर' ।

खुचड़, खुचर, खुचुर–स्त्री० किसीके काममें खाहमखाह दोष निकालना, छिद्रान्वेषण (करना, लगाना) ।

खुचड़ी, खुचरी, खुचुरी–वि० खुचड़ निकालनेवाला ।

खुजलाना–अ० क्रि० खुजली मालूम होना, त्वचामें ऐसी चुलकन उठना जो सहलाने, रगड़नेसे मिटे; (अंगविशेषका) किसी कामके लिए बेचैन होना, फड़कना (हाथ, पीठ, मुँह खुजलाना) । स० क्रि० खुजली मिटानेके लिए त्वचाको मलना, रगड़ना, नाखूनसे खरोचना ।

खुजलाहट–स्त्री० खुजली ।

खुजली–स्त्री० त्वचामें अनुभव होनेवाली चुलकन या सुरसुरी जो रगड़ने, सहलानेसे मिटे, खाज; एक रोग जिसमें त्वचापर दाने निकलते और उनमें तीव्र खुजली होती है, खारिश; (किसी बातकी) तीव्र इच्छा या प्रवृत्ति ।

खुजाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'खुजलाना' ।

खुज्जाक–पु० (सं०) देवताड वृक्ष ।

खुज्जा–पु० † किवाड़ या पल्लेमें लगायी जानेवाली बाँसकी लकड़ीकी कील; दे० 'खूझा' ।

खुझड़ा*–पु० दे० 'खूझा' ।

खुझर–पु० वृक्षकी वह जड़ जो धरतीके अंदर न जाकर ऊपर ही ऊपर फैलती है ।

खुट–'खोट' या 'खोटा'का समासगत रूप । **–चाल***–स्त्री० खोटापन, दुष्टता । **–चाली***–वि० खोटा, दुष्ट । **–पन, –पना**–पु० खोटापन, दुष्टता, पाजीपन ।

खुटक*–स्त्री० खटका, शंका ।

खुटकना–स० क्रि० किसी पौधेकी फुनगी या ऊपरका भाग नोच लेना, खोंटना ।

खुटका।–पु० दे० 'खुटक' ।

खुटना*–अ० क्रि० 'खुलना'–'विकट जटे जौ लगि निपट खुटै न कपट कपाट'–वि०; समाप्त होना; घटना ।

खुटाई–स्त्री० खोटापन, दोष ।

खुटाना*–अ० क्रि० पूरा होना, समाप्त होना ।

खुटिला–पु० करनफूल ।

खुट्टी।–स्त्री० संबंध-विच्छेद सूचित करनेवाली वालकोंकी एक क्रिया जिसमें वे दूसरेकी कानी उँगलीसे अपनी कानी उँगली मिलाकर चूम लेते हैं; रेवडी ।

खुट्ठी–स्त्री० खुरंड ।

खुड्डी, खुड्ढी–स्त्री० पाखानेके चूल्हेका पायदान, कदमचा; पाखाना फिरनेका चूल्हा ।

ख़ुतबा–पु० (अ०) 'खुत्व:'; वह धार्मिक व्याख्यान जो जुमे या ईदकी नमाजके वाद इमाम मेंवरपर खड़ा होकर देता है और जिसमें अंतमें उस समय जो खलीफा होता है उसके लिए दुआ की जाती है; व्याख्यान; भाषण (पढ़ना); धर्मोपदेश; .पुस्तककी भूमिका ।

खुत्थ–पु० कटे हुए पेड़की जड़ और उसके ऊपरका भाग ।

खुत्थी–स्त्री० छोटा खुत्थ, खूँटी; धरोहर, थाती; कमरमें रुपये वाँधकर रखनेकी पतली लंवी थैली, वसनी ।

ख़ुद–अ० (फा०) स्वयं, आप । **–आराई**–स्त्री० बनाव-सिंगार । **–इख़्तियार**–वि० स्वतंत्र, स्वयं अधिकार रखनेवाला । **–इख़्तियारी**–स्त्री० स्वतंत्रता, मनचाहा करनेका अधिकार । **–काश्त**–वि० अपनी जमीनमें खुद खेती करनेवाला । स्त्री० वह (सीरसे भिन्न) जमीन जिसे जमींदार खुद जोते । **–कुशी**–स्त्री० आत्महत्या; आत्मघातक कार्य । **–ग़रज़**–वि० अपनी गरज, मतलब देखनेवाला, स्वार्थी, मतलबी । **–ग़रज़ी**–स्त्री० स्वार्थपरता । **–दार**–वि० आत्मसम्मानी; अपने ऊपर कावू रखनेवाला । **–दारी**–स्त्री० आत्मसम्मान । **–नुमाई**–स्त्री० अपने रूप, गुण, वड़प्पनका गर्व और उसकी नुमाइश । **–परस्त**–वि० घमंडी; स्वार्थी । **–पसंद**–वि० हठी, खुदराय; घमंडी । **–फ़रामोश**–वि० अपने आपको भूला हुआ, अचेत । **–फ़रोश**–वि० अपनी वड़ाई आप करनेवाला । **–व-ख़ुद**–अ० अपने आप, स्वतः । **–बीं**–वि० घमंडी, अपने रूप-गुणका गर्व रखनेवाला । **–बीनी**–स्त्री० गर्व, घमंड । **–मतलब**–वि० खुदगरज । **–मतलबी**–स्त्री० खुदगरजी । **–मुख़्तार**–वि० जिसपर किसीका दाव, नियंत्रण न हो, स्वतंत्र । **–मुख़्तारी**–स्त्री० खुदमुख्तार होना, स्वतंत्रता । **–रंग**–वि० सहज, स्वाभाविक रंगवाला । **–राई**–स्त्री० स्वेच्छाचारिता । **–राय**–वि० दूसरेकी राय, सलाह न माननेवाला, स्वेच्छाचारी । **–रो,–रौ**–वि० अपने आप उगा हुआ, जंगली (पेड़-पौधा) । **–सर**–वि० स्वतंत्र, खुदमुख्तार; हठी । **–सरी**–स्त्री० खुदमुख्तारी; हठीलापन । **–साख़्ता**–वि० अपना बनाया हुआ, स्वनिर्मित; स्वयंभू (नेता आदि) । **–सिताई**–स्त्री० आत्मप्रशंसा, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना ।

खुदका–पु० दे० 'कुतका' ।

खुदना–अ० क्रि० खोदा जाना ।

खुदरा–पु० दे० 'खुर्दा' ।

खुदवाई–स्त्री० खुदवानेका भाव या क्रिया; खुदवानेकी मजदूरी ।

खुदवाना–स० क्रि० 'खोदना'का प्रे० ।

ख़ुदा–पु० (फा०) स्वयंभू; ईश्वर, मालिक । **–ई**–स्त्री० ईश्वरता; ईश्वरकी महिमा, विभूति; सृष्टि, दुनिया । वि० ईश्वरीय; ईश्वरका दिया हुआ; ईश्वर-कृत । **–तर्स**–वि० ईश्वरसे डरनेवाला, धर्म-भीरु । **–दाद**–वि० ईश्वरका दिया हुआ, सहज, स्वाभाविक । **–परस्त**–वि० ईश्वरको मानने, पूजनेवाला, भक्त । **–रसीदा**–वि० ईश्वरके पास पहुँचा हुआ, पहुँचनेवाला, संत; नेक, धर्मनिष्ठ । **–वंद**–पु० मालिक, स्वामी; अ० (संबोधनमें) जी हजूर, श्रीमन् । **–वंदी**–स्त्री० मालिकी, वादशाहत; अनुग्रह । **–का क़हर,–का ग़ज़ब**–ईश्वरका कोप, विपत् । **–का कारख़ाना**–विश्व-प्रपंच, दुनिया । **–का घर**–अर्श, वैकुंठ; उपासनास्थल, मस्जिद । **–का नूर**–पु० दाढ़ीके लिए आदरसूचक शब्द । **–की मार**–ईश्वरका कोप पड़े (शाप) । **–की राह**–खुदाके नामपर, ईश्वरके प्रीत्यर्थ । **–की शान**–भगवान्‌की महिमा, विभूति । मु० **–के घर जाना**–मरना । **–को दरमियान देना**–ईश्वरको साक्षी वनाना । **–ख़ुदा करके**–वड़ी कठिनाईसे । **–ख़ैर करे**–ईश्वर कुशल करे, भगवान् रक्षा करें । **–गंजेको नाख़ुन न दे**–ईश्वर ओछे, कमीनेको धन, अधिकार न दे । **–न ख़्वास्ता**–ईश्वर न करे (ऐसा हो) । **–हाफ़िज़**–ईश्वर रक्षक है ।

खुदाई–स्त्री० खोदनेकी क्रिया, खोदा जाना; खोदनेकी उजरत । दे० 'ख़ुदा'में ।

खुदाव–पु० खुदाईका काम ।

ख़ुदी–स्त्री० (फा०) आपा, अहंता; गर्व, अहंकार ।

खुद्दी–स्त्री० चावल, दाल आदिके वहुत छोटे टुकड़े ।

ख़ुनक–वि० (फा०) ठंढा, सर्द ।

ख़ुनकी–स्त्री० (फा०) ठंढ, सरदी ।

खुनखुना–पु० दे० 'घुनघुना' ।

खुनस–स्त्री० रोष, क्रोध ।

खुनसाना–अ० क्रिं० क्रोध करना; विगड़ना ।

खुनसी–वि० क्रोधी, गुस्सावर ।

ख़ुफ़िया–वि० (फा०) छिपा हुआ, गुप्त । **–ख़ाना**–पु० चकला । **–नवीस**–पु० खुफिया रिपोर्ट लिखनेवाला, मुखविर । **–पुलिस**–स्त्री० गुप्त रूपसे काम करनेवाली पुलिस, सी. आई. डी.; खुफिया पुलिसका आदमी, जासूस ।

खुवना–अ० क्रि० दे० 'खुभना' ।

ख़ुब्बाज़ी–स्त्री० (अ०)एक पौधेका फल जो दवाके काम आता है ।

खुभना–अ० क्रि० चुभना, धँसना, गड़ना ।

खुभराना–अ० क्रि० इठलाते फिरना; उत्पात करनेके लिए घूमना ।

खुभिया।–स्त्री० दे० 'खुभी' ।

खुभी–स्त्री० कानमें पहननेकी कील या लौंग;–'मनमथ नेजा नोक-सी खुभी-खुभी जिय माँहि'–वि०; हाथीके दाँतपर चढ़ाया जानेवाला धातुका पोला ।

खुम–पु० (फा०) मटका, घड़ा; शरावका मटका; भट्ठी; ढील । **–ख़ाना**–पु० शरावखाना, मदिरालय । मु० **–चढ़ाना**–कपड़ेको धोनेसे पहले भट्ठी देना ।

ख़ुमरा–पु० (फा०) मुसलमान फकीरोंका एक भेद; एक मुसलमान जाति जो बोरिये बुननेका धंधा करती है ।

खुमान*–वि० आयुष्मान्, बड़ी आयुवाला । पु० शिवाजीकी उपाधि ।

ख़ुमार–पु० (अ०) नशा, मद; आँखोंमें छाया हुआ मद; नशेका उतार; नशा उतरते समय मालूम होनेवाली थकावट, सिर-दर्द आदि; जागरण, कच्ची नींद टूटनेसे आँखोंका चढ़ जाना । **–मु० –तोड़ना**–नशेके उतारका अवसाद दूर करनेके लिए थोड़ी-सी शराव फिर पी लेना ।

ख़ुमारी–स्त्री० दे० 'ख़ुमार' ।

खुमी–स्त्री० एक उद्भिद्वर्ग जिसके अंदर भुइँ-फोड़, कुकुरमुत्ता आदि पौधे आते हैं; दाँतमें जड़ी हुई सोनेकी कील; हाथीके दाँतपर चढ़ाया हुआ धातुका पोला ।

खम्हारि*–स्त्री० दे० 'ख़ुमार' ।

खुरंट–पु० दे० 'खुरंड' ।

खुरंड–पु० सूखते हुए घावके ऊपर जमनेवाली पपड़ी, खुट्ठी ।

खुर–पु० (सं०) सुम, नख; छुरा, उस्तुरा; चारपाईके पायेका निचला हिस्सा; एक गंधद्रव्य । **–णस**–वि० खुर जैसी चिपटी नाकवाला । **–तार***–पु० खुरका आघात । **–त्राण**–पु० नाल । **–न्यास**–पु० खुरका निशान, खुरवाले पशुका पदचिह्न । **–पका**–पु० (हिं०) गाय, बैल आदिका खुर और मुँह पक जानेका रोग **–पदवी**–स्त्री० घोड़ेके पैरका चिह्न । **–प्र**–पु० एक तरहका तेज धारवाला बाण । **–बंदी**–स्त्री० (हिं०) नालबंदी । **–हर**।–स्त्री० जंगल आदिमें पशुओंके चलनेसे बना हुआ रास्ता; पगडंडी ।

–हा–पु० पशुओंका एक रोग, खुर-पका ।

खुरक–पु० (सं०) नृत्यका एक प्रकार; तिल । †स्त्री० खटका, अंदेशा; खुजली ।

खुरखुर–स्त्री० साँस लेते समय, कफ आदि रहनेके कारण, होनेवाली आवाज, घरघराहट ।

खुरखुरा–वि० दे० 'खुरदरा' ।

खुरखुराना–अ० क्रि० साँससे घरघराहटकी आवाज निकलना; 'खुर-खुर' शब्द होना; खुरखुरा मालूम होना ।

खुरखुराहट–स्त्री० घरघराहट; खुरदरापन ।

खुरचन–स्त्री० खुरचकर निकाली हुई चीज; कड़ाही आदिमें नीचे जमा हुआ दूध जो खुरचकर निकाला जाय; कड़ाहीसे सूखी और खुरचकर निकाली हुई मलाईकी परत; कड़ाहीसे खुरचकर निकाला हुआ गुड़ ।

खुरचना–स० क्रि० बरतनमें जमी, चिपकी हुई चीजको छीलकर अलग करना; कुरेदना ।

खुरचनी–स्त्री० खुरचनेका आला ।

खुरचाल†–स्त्री० दे० 'खुटचाल' ।

खुरचाली†–वि० दे० 'खुटचाली' ।

खुरजी–स्त्री० बीचमें खुला लंबा थैला या झोला जिसमें जरूरी सामान रखकर घोड़े या बैलकी पीठपर लादते हैं; किवाड़के पल्लेमें लगनेवाली चौड़ाईकी लकड़ी ।

खुरट–पु० खुर-पका रोग ।

खुरदरा–वि० जिसकी सतह चिकनी, हमवार न हो; दानेदार, खुरखुरा ।

खुरपा–पु० घास काटने, छीलनेका एक औजार । **–जाली**–स्त्री० खुरपा और जाली, घास छीलने आदिका सामान । **मु०–जाली सँभालना**–घसियारेका धंधा करना ।

खुरपी–स्त्री० छोटा खुरपा ।

खुरफ–पु० दे० 'ख़ुरफ़ा' ।

खुरफ़ा–पु० (फा०) कुलफेका साग ।

ख़ुरमा–पु० (फा०) खजूर; छुहारा; एक मीठा या नमकीन पकवान ।

खुरली–स्त्री० (सं०) शस्त्राभ्यास या उसका स्थान ।

खुरहरा–वि० खुरदरा; दे० 'खरहरी' ।

खुरा–पु० खुर-पका रोग; फालकी दृढ़ताके लिए लगाया ज़ानेवाला काँटा ।

खुराई–स्त्री० पशुओंके आगेके पैर साथ बाँधनेकी रस्सी ।

खुराक–पु०, **खुराका**–स्त्री० (सं०)पशु ।

ख़ुराक–स्त्री० (फा०) खाना, आहार; एक आदमीका एक समयका (नियत) भोजन; दवाकी एक मात्रा । **–बंदी**–स्त्री० (राशनिंग) दे० 'समवितरण' ।

ख़ुराकी–वि० अधिक खानेवाला । स्त्री० खुराकके बदले दिया जानेवाला पैसा; खानेका खर्च, (दैनिक) भोजनव्यय ।

खुराघात–पु० (सं०) खुरका आघात; टापसे मारना ।

खुराफ़ात–स्त्री० (अ०) बेहूदा बातें, बकवास; शरारत, झगड़ा खड़ा करनेवाली बात; बखेड़ा ।

ख़ुराफ़ाती–वि० खुराफात करनेवाला; खुराफात संबंधी ।

खुरालक–पु० (सं०) लोहेका बाण, नाराच ।

खुरालिक–पु० (सं०) नाईकी किसबत; नाराच; तकिया ।

ख़ुरासान–पु० (फा०) एक देश जो अब ईरानका पूर्वी सूबा है ।

ख़ुरासानी–वि० (फा०) खुरासानका । पु० खुरासानका रहनेवाला; स्त्री० वहाँकी बोली ।

खुरिया–स्त्री० कटोरी; घुटनेके जोड़परकी हड्डी; खुरी ।

खुरी–स्त्री० घोड़े बैल आदिकी टापका चिह्न ।

खुरी(रिन्)–पु० (सं०) खुरवाला जानवर ।

खुरुचना–अ० क्रि० दे० खुरचना ।

खुरू–पु० खुरसे मिट्टी खोदनेकी क्रिया; उत्पात; टंटा, बखेड़ा; बर्बादी ।

ख़ुर्द–वि० (फा०) छोटा; उम्रमें छोटा, अल्पवयस्क । पु० खाना । **–बीन**–स्त्री० एक आला जिससे आँखोंसे न दिखाई देनेवाली छोटी चीजें देखी जा सकती हैं, अणुवीक्षण यंत्र । **–बुर्द**–पु० खा-पी जाना; गबन, खयानत । वि० नष्ट । **–साल**–वि० छोटा, कमसिन । **–साली**–स्त्री० कमसिनी, बचपन ।

ख़ुर्दनी–वि० खानेके योग्य । स्त्री० खानेकी चीज ।

ख़ुर्दा–वि० (फा०) खाया हुआ । पु० टुकड़ा, रेजा; रेजगारी; थोडी मात्रा (थोकका उलटा); बिसातखानेका सामान; छोटी-मोटी चीजें । अ० थोड़ी मात्रामें, तोड़कर, फुटकल (बिक्री) । **–फ़रोश**–पु० फुटकर बेचनेवाला, बिसाती । **–फ़रोशी**–स्त्री० फुटकल बेचनेका रोजगार । **मु०–करना**–रुपया भुनाना ।

ख़ुर्दी–स्त्री० (फा०) छुटाई ।

खुर्राँट, खुर्राट–वि० बूढ़ा; अनुभवी, चालाक, उस्ताद ।

खुर्राँटा, खुर्राटा–पु० दे० 'खर्राटा' ।

खुलता–वि० जो सामनेकी ओर खुला हो, जिसके बाहर खुली जगह हो; जो अधिक साँवला न होकर कुछ-कुछ गोराई लिये हो, निखरता (रंग) ।

खुलती–स्त्री० दे० 'कुलथी' ।

खुलना–अ० क्रि० रोक हटना; ढक्कन या आवरण हटना; बंधन छूटना, फंदेसे निकलना, बँधी हुई चीजका बंधन न रहना; कल-पुरजोंका हटाया जाना; फटना; छेद या दरार होना; प्रकट होना; बताया जाना; आरंभ होना, कायम होना; निकलना; बंद, रुके हुए कामका फिर जारी होना (स्कूल, दफ्तर); छूटना (रेल, नाव आदि); काममें आने लगना (लाइन, सड़क); उधड़ना (सिलाई); सजना; खिलना; मनकी बात कहना; निःसंकोच होकर बात करना; (रंग) साफ होना, साँवलापन घटना; जगना (भाग्य) । **खुलकर**–अ० निःसंकोच; स्पष्टतः; प्रकट रूपमें । **मु० खुल खेलना**–छिप-छिपाकर किये जानेवाले कामको खुलकर करने लगना; लज्जा, संकोच त्याग देना । **खुलता रंग**–हलका सोहावना रंग ।

खुलवाना–स० क्रि० खोलनेका काम कराना ।

खुला–वि० जो बँधा या बंद न हो; जिसमें रोक न हो; जो ढका-छिपा न हो, प्रकट; जाहिर; जो तंग, घिरा हुआ न हो; लंबा-चौड़ा (महल, मैदान); जहाँ काफी हवा-रोशनी आये । (स्त्री० 'खुली' ।) **–पल्ला**–पु० तबला बजानेका एक ढंग (संगीत) । **मु०–(ली)मुट्ठी होना**–दान देने, खर्च करनेमें उदार होना । **–(ले)आम,–ख़ज़ाने,–बंदाँ,–बाज़ार,–मैदान**–बे-धड़क, सबके सामने, अलानिया । **–दिलका**–उदार, साफदिल । **–दिलसे**–उदारतापूर्वक ।

ख़ुलासा–पु० (अ०) निचोड़, सार, संक्षेप । वि० संक्षिप्त; चुना, छाँटा हुआ; स्पष्ट । अ० खुलकर, साफ-साफ (बो०) ।

खुलित*–वि० खुला हुआ ।

खुलेड़ना–स० क्रि० खुरेदना, चलाना; उलट-पुलट करना ।

खुल्ल–वि० (सं०) छोटा; कमीना । **–तात**–पु० पिताका छोटा भाई ।

खुल्लम–पु० (सं०) सड़क ।

खुल्लमखुल्ला–अ० खुले आम, प्रकाश्य रूपसे ।

ख़ुवारी*–स्त्री० दे० 'ख़्वारी' ।

ख़ुश–वि० (फा०) मुदित, प्रसन्न; सुखी; प्रफुल्ल; अच्छा, भला । **–आमदीद**–अ० अच्छे आये, स्वागत (स्वागत-वाक्य) । **–आवाज़**–वि० अच्छी आवाजवाला, सुरीला । **–इंतिज़ाम**–वि० प्रबंधपटु, अच्छा इंतजाम करनेवाला । **–इंतिज़ामी**–स्त्री० सुप्रबंध । **–क़िस्मत**–वि० अच्छे भाग्यवाला, भाग्यवान् । **–क़िस्मती**–स्त्री० सौभाग्य । **–ख़त**–वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, सुलेखक । **–ख़बरी**–स्त्री० खुश करनेवाली खबर, शुभ समाचार । **–ख़िराम**–वि० सुंदर, मोहक गतिवाला । **–ख़िरामी**–स्त्री० सुंदर, मोहक चाल । **–ख़ुराक**–वि० अच्छा खाना खानेवाला, खानेका शौकीन । **–ख़ुश**–अ० खुशी-खुशी, प्रसन्नता-पूर्वक । **–ख़ू**–वि० अच्छी आदत, स्वभाववाला । **–गवार**–वि० प्रिय, रुचिकर; सुखद । **–गुज़रान**–वि० खाने-पीनेसे सुखी, सुखसे जीवन बितानेवाला । **–ज़ायक़ा**–वि० अच्छे स्वादवाला, मजेदार । **–दामन**–स्त्री० सास । **–दिल**–वि० प्रसन्नचित्त, आनंदी, हँसमुख । –

–दिली–स्त्री० खुशदिल होना। **–नवीस–**वि० सुंदर अक्षर लिखनेवाला, खुशखत। **–नवीसी–**स्त्री० सुंदर अक्षर लिखना, लिखनेकी कला। **–नसीब–**वि० भाग्यवान्, खुशकिस्मत। **–नसीबी–**स्त्री० सौभाग्य। **–नुमा–**वि० देखनेमें भला लगनेवाला, सुंदर। **–नुमाई–**स्त्री० सुंदरता। **–नूदी–**स्त्री० खुशीकी बात। **–बयान–**वि० सुवक्ता, भाषणपटु। **–बू–**स्त्री० सुगंध। **–०दार–**वि० सुगंधयुक्त। **–मज़ा–**वि० स्वादिष्ठ, मजेदार। **–मिज़ाज–**वि० प्रसन्नचित्त, हँसमुख। **–रंग–**वि० अच्छे, शोख रंगवाला। पु० अच्छा, शोख रंग। **–शक्ल–**वि० सुंदर, सुरूप। **–हाल–**वि० संपन्न, रुपये-पैसेसे सुखी। **–हाली–**स्त्री० संपन्नता, समृद्धि।

खुशकी–स्त्री० दे० 'ख़ुश्की'।

ख़ुशामद–स्त्री० (फा०) खुश करनेवाली बात, चापलूसी (ख़ुश+आमद = आदर-सत्कार, आवभगत)।

ख़ुशामदी–वि० (फा०) चापलूस, खुशामद करनेवाला। **–टट्टू–**खुशामदकी कमाई खानेवाला, जीहुजूर।

खुशियाली†**–**स्त्री० दे० खुशहाली; प्रसन्नता, खुशी।

ख़ुशी–स्त्री० (फा०) खुश होना, प्रसन्नता, हर्ष; इच्छा, मरजी। **–ख़ुशी–**अ० प्रसन्नतापूर्वक, खुशीके साथ। **–का सौदा–**वह काम जिसे करना-न करना अपनी मरजीकी बात हो। **मु० –से फूल उठना–**अति प्रसन्न होना, खिल उठना।

ख़ुश्क–वि० (फा०) सूखा; रूखा; अरसिक; जिसके साथ और कुछ न हो, खाली (–तनख्वाह, रोटी)। **–साली–**स्त्री० अवर्षण; अकाल।

ख़ुश्का–पु० (फा०) सादा, पानीमें पका हुआ चावल।

ख़ुश्की–स्त्री० (फा०) सूखापन; रूखापन; रसहीनता; अवर्षण; स्थल भाग, जमीन (तरीका उलटा)। **–की राह–**स्थलमार्गसे।

खुसफुसाना†**–**अ० क्रि० दे० 'फुसफुसाना'।

खुसामति*–स्त्री० दे० 'ख़ुशामद'।

खुसाल, खुस्याल*–वि० खुश, मगन।

ख़ुसिया–पु० (अ०) फोता, अंडकोश। **–बरदार–**वि० खुशामदी।

खुसुरफुसुर–स्त्री० कानाफूसी। अ० बहुत धीमी आवाजमें।

ख़ुसूमत–स्त्री० (अ०) शत्रुता, अदावत; झगड़ा।

ख़ुसूसियत–स्त्री० (अ०) खास गुण या विशेषता; मेल, सौहार्द।

ख़ुसूसी–वि० (अ०) विशेष, खास।

खुही–स्त्री० लबादेकी तरह ओढ़ा हुआ कंबल, घोघी।

खूँ–पु०, **खूँखार–**वि० दे० 'खून' के साथ।

खूँट–पु० कोना; मकानके कोनेपर लगाया जानेवाला पत्थर; ओर, दिशा; भाग; कानका मैल; छोटी पूरी; कानका एक गहना, ढार; रोक; कमी, त्रुटि।

खूँटना–अ० क्रि० घटना; चुकना–'मसि खूँटी कागर जल भीजे' –सू०; टूटना। स० क्रि० रोकना; टोकना, छेड़छाड़ करना; खोंटना, तोड़ना (मेहँदी)।

खूँटा–पु० लकड़ी या बाँसकी मेख जिसे गाड़कर गाय, बैल आदिको बाँधते हैं; खड़ी गड़ी हुई लकड़ी। **मु०–गाड़ना–**अड्डा बना लेना, जम जाना। **–(टे)के बल कूदना–**दूसरेके बल-बूतेपर कूदना, इतराना।

खूँटी–स्त्री० छोटी मेख; लकड़ीकी मेख जो कपड़े आदि टाँगनेके लिए दीवारमें गाड़ी जाय; जाँते या चक्कीकी किल्ली; सितार, सारंगी, खड़ाऊँ आदिमें जड़ी छोटी मेख,; अरहर, ज्वार आदिकी खुत्थी जो फसल काटनेके बाद खेतमें रह जाय; बालकी जड़ जो उस्तरेसे मूँड़नेके बाद रह जाय। **मु० –कसना–**सितार, सारंगी आदिके तार कसना। **–लेना–**इस तरह मूँड़ना कि बालोंकी खूँटियाँ निकल जायँ।

खूँथी–स्त्री० दे० 'खुत्थी'।

खूँद–स्त्री० खूँदनेकी क्रिया।

खूँदना–अ० क्रि० घोड़ेका बलात् रोके जानेपर उसी जगह हटना-बढ़ना, पाँव मारना, टापसे जमीन खोदना, रौंदना।

खूँरेज–दे० 'खून'के साथ।

ख़ू–स्त्री० (फा०) आदत, स्वभाव, चाल। **–गर–**वि० आदी। **–बू–**स्त्री० आदत, चाल।

खूक, खूखू*–पु० शूकर।

खूखी–स्त्री० रबीकी फसलको लगनेवाला एक कीड़ा, गेरुई।

खूझा–पु० फल, तरकारीका रेशेदार भाग; अधिक उलझा हुआ लच्छा।

खूटना*–अ० क्रि० घटना; चुकना; रुकना, अवरुद्ध होना। स० क्रि० टोकना, पूछताछ करना; छेड़ना।

खूद–पु० किसी तरल चीजको छानने, निथारनेसे निकलनेवाला मैल, तलछट।

खूदड़, खूदर†**–**पु० दे० 'खूद'।

ख़ून–पु० (फा०) रक्त, लहू; हत्या, कतल। **–ख़राबा–**पु० मार-काट, खून-कतल; एक लाल रंग जो लाल वार्निश बनाने और दवाके भी काम आता है। **(ख़ूँ)खार–**वि० दे० 'ख़ूँख़्वार'। **–ख़्वार –**वि० क्रूरकर्मा, जालिम; खूनी, हिंस्र; डरावना। **–दार–**पु० हत व्यक्तिका उत्तराधिकारी जो (शरीअतके अनुसार) खूनका बदला लेनेका अधिकारी हो। **–बहा–**पु० वह धन जो हत्याकारी हत व्यक्तिके वारिसोंको दे। **–रेज़–**वि० खून बहानेवाला, खूनी; मार-काट मचानेवाला। **–रेज़ी–**स्त्री० मारकाट, रक्तपात। **मु० ख़ून आँखोंमें उतरना–**क्रोधसे आँखें लाल हो जाना, अति क्रुद्ध होना। **–का जोश–**कुल, वंशके नाते उत्पन्न स्नेह, ममता, सगेपनकी मुहब्बत। **–का दौरा–**शरीरमें होनेवाला रक्तका संचार। **–का प्यासा–**जान लेनेपर तुला हुआ, जानी दुश्मन। **–के आँसू रोना–**बहुत शोक करना; अतिशय व्यथित होना। **–के घूँट पीना–**भारी गुस्सेको पी जाना, सह लेना। **–ख़ुश्क होना–**दे० 'खून सूखना'। **–खौलना–**अति क्रुद्ध होना, गुस्सेसे लाल हो जाना। **–गरदनपर होना–**(किसीके) कतलका जिम्मेदार होना। **–थूकना–**मुँहसे खून थूकना; क्षयादिसे पीड़ित होना। **–पानी एक करना–**खून पानीकी तरह बहाना। **–पानी होना–**बहुत गम होना; सख्त तकलीफ पहुँचना। **–पीना–**बहुत सताना; जान लेना, मार डालना। **–बहाना–**रक्तपात करना, खून-कतल करना। **–मुँह(को) लगना–**खूनका मजा मिलना, चाट लगना; काटनेकी आदत पड़ जाना। **–रुलाना–**बहुत पीड़ा, क्लेश देना। **–लगाकर शहीद बनना या शहीदोंमें दाखिल होना –**कामका नाम करके उसका यश चाहना। **–सिरपर चढ़कर बोलता है–**हत्याका पाप छिपा नहीं रहता। **–सिरपर चढ़ना–**खूनीके चेहरे, चेष्टा आदिसे भय, घबराहट प्रकट होने लगना; किसीका खून करनेपर आमादा हो जाना। **–सुफ़ैद होना–**प्रेम, आत्मीयताकी भावना न रहना, निठुर हो जाना। **–सूखना–**बहुत डर, घबरा जाना।

ख़ूनाब, ख़ूनाबा–पु० (फा०) रक्तमिश्रित जल; रक्तमिश्रित आँसू; लाल रंग।

ख़ूनीं–वि० (फा०) रक्तरंजित, रक्तपातमय; लाल; खूनी।

ख़ूनी–पु० (फा०)खून करनेवाला, कातिल। वि० क्रूर, जालिम; हत्या-सूचक, हत्याके भावसे पूर्ण (–आँख); रक्तपातमय, मार-काटवाला। **–बवासीर–**स्त्री० वह बवासीर जिसमें मस्सेसे खून निकलता है।

ख़ूब–वि० (फा०) अच्छा, बढ़िया; सुंदर। अ० अच्छी तरह, पूरी तरह; बहुत; साधु, बाह! **–रू–**वि० सुंदर, सुरूप। **–रूई–**स्त्री० सुंदरता। **–सूरत–**वि० सुंदर, रूपवान्। **–सूरती –**स्त्री० सुंदरता।

ख़ूबकलाँ–पु० (फा०) एक तरहकी घास जिसके बीज दवाके काम आते हैं।

ख़ूबानी–स्त्री० (फा०) एक प्रसिद्ध मेवा, जरदालू।

ख़ूबी–स्त्री० (फा०) भलाई, अच्छाई; गुण, विशेषता।

खूरन–स्त्री० हाथीके नाखूनका एक रोग।

खूराक–स्त्री० दे० 'ख़ूराक'।

ख़ूलंजान–पु० (फा०) पानकी जड़, कुलंजन।

खूसट–वि० जराजीर्ण; अरसिक; मनहूस। पु० उल्लू।

खूसर*–वि०, पु० दे० 'खूसट'।

खृष्टीय–वि० दे० 'खृष्टीय'।

खेकसा, खेखसा–पु० एक बेल जिसका फल तरकारीके काम आता है; † एक तरहके सफेद धारी जैसे चिह्न जो युवावस्थामें मनुष्यके पेट, जाँघ आदिपर प्रायः दिखाई देते हैं।

खेचर–वि० (सं०) आकाशमें चलनेवाला। पु० ग्रह; पक्षी; वायु; बादल; विमान; देवता; राक्षस; शिव; भूत-प्रेत; पारा; कसीस।

खेचरान्न–पु० (सं०) चावलसे बना एक व्यंजन, खिचड़ी।

खेचरी–वि०, स्त्री० (सं०) आकाशचारिणी। स्त्री० दुर्गा; परी। **–गुटिका**–स्त्री० एक तंत्र-वर्णित गोली जिसके संबंधमें यह माना जाता है कि मुंहमें रखनेवाला आकाशमें उड़ सकता है। **–मुद्रा**–स्त्री० योगकी अंगभूत एक मुद्रा जिसमें जीभ उलटकर तालुमें लगायी और दृष्टि त्रिकुटीपर स्थापित की जाती है।

खेट–पु० (सं०) किसानोंका गाँव, खेड़ा; घोड़ा; ढाल; आखेट; कफ; तृण; ग्रह; बलरामकी गदा; लाठी; खाल; चमड़ा। वि० शस्त्रधारी; नीच, अधम।

खेटक–पु० (सं०) छोटा गाँव, खेड़ा; ढाल; बलरामकी गदा; * आखेट, शिकार।

खेटकी–पु० भँड़ेरिया, ज्योतिषी; शिकारी।

खेटितान, खेटिताल–पु० (सं०) वैतालिक।

खेटी(टिन्)–वि०, पु० (सं०) नगरवासी; कामी, लंपट।

खेड–पु० (सं०) खेट, गाँव।

खेड़ा–पु० छोटा गाँव। **–पति**–पु० गाँवका मुखिया या पुरोहित। **–(ड़े)की दूब**–तुच्छ, बलहीन।

खेड़ी, खेढ़ी–स्त्री० एक तरहका इसपात; धातुमल; आँवल।

खेढ़ा†–पु० जमात (साधुओंका खेढ़ा)।

खेत–पु० जमीनका टुकड़ा जो जोता बोया जाय या जा सके, क्षेत्र; खेतमें खड़ी फसल (ला०); घोड़े-बैल आदिकी किसी जातिका उत्पत्तिस्थान, नस्ल; रणक्षेत्र; तलवारका फल। **मु०–आना**–वीरगति प्राप्त करना। **–कमाना**–जुताई, खाद आदिसे खेतको उपजाऊ बनाना। **–करना**–चाँद उगते समय चाँदनीका फैलना; युद्ध करना; * समतल करना। **–काटना**–खड़ी फसलकी चोरी करना। **–छोड़ना**–पीठ दिखलाना। **–पर चढ़े किसानी**–योग्यताका पता काम पड़नेपर लगता है। **–बदना**–लड़नेका स्थान, काल नियत करना। **–रखना**–युद्धमें मारना, शत्रुको जीता न जाने देना। **–रखाना**–खेतकी रखवाली करना। **–रहना,–होना**–युद्धमें मारा जाना।

खेतिहर–पु० किसान, खेती करनेवाला।

खेती–स्त्री० खेत जोतने-बोनेका काम, किसानी; बोआई, काश्त; फसल। **–बारी**–स्त्री० किसानी, कृषिकर्म।

खेद–पु० (सं०) कोई काम किसीके द्वारा ठीकसे न किये जाने या उपेक्षित करने आदिपर होनेवाला दुःख, रंज; उदासी, ग्लानि; थकावट; परिश्रम (उदा० दे० 'छुद्धित'); व्यथा; निर्धनता; रोग। **–जनक**–वि० खेद देनेवाला; शोचनीय। **–प्रकाश**–पु० भूल या अनुचित कार्य हो जानेपर प्रकट किया गया दुख।

खेदन–पु० (सं०) थकावट; व्यथा; ग्लानि, अफसोस; निर्धनता।

खेदना*–स० क्रि० शिकारका पीछा करना; दे० 'खदेड़ना'।

खेदा–पु० किसी जंगली जानवरको घेरकर शिकारकी जगह ले जाना, हँकवा; आखेट।

खेदित–वि० (सं०) खेदयुक्त, खिन्न; आहत; पीड़ित; क्लांत।

खेदिनी–स्त्री० (सं०) अशनपर्णी लता, पटसन।

खेदी(दिन्)–वि० (सं०) खेदजनक; क्लांत।

खेना–स० क्रि० नाव चलानेके लिए डाँड़ मारना; बिताना, गुजारना।

खेप–स्त्री० उतना माल या बोझ, जितना एक बारमें ढोया जा सके; एक बारका बोझ; बोझ ढोनेवाले (आदमी, चौपाये, गाड़ी आदि)का एक बार आना-जाना, एक फेरा; खोटा सिक्का। **मु० –लदाना**–इतना सामान देना जो बैलगाड़ी आदिपर ढोया जा सके। **–लादना**–बैलगाड़ी आदिपर माल लादना। **–हारना**–मालमें घाटा उठाना।

खेपना–स० क्रि० कष्टके साथ बिताना; विदा करना।

खेम*–पु० दे० 'क्षेम'।

खेमटा–पु० एक ताल; उस तालपर गाया जानेवाला गीत।

खेमा–पु० डेरा, तंबू। **मु०–(मे)डालना**–(सेनाका) पड़ाव करना, टिकना।

खेय–वि० (सं०) जो खोदा जा सके, खननीय। पु० पुल; खाई।

खेरा*–पु० दे० 'खेड़ा'।

खेरी–स्त्री० बंगालमें होनेवाला एक तरहका गेहूँ; एक घास। दे० 'खेड़ी'।

खेरौरा*–पु० एक तरहका लड्डू; दे० खिरौरा।

खेल–वि० (सं०) क्रीड़ाशील। पु० मनबहलाव या व्यायामके लिए या केवल चित्तके उल्लाससे किया जानेवाला काम, चेष्टा, क्रीड़ा; बाजी; करतब; तमाशा, अभिनय; लीला; चाल; कारसाजीका काम; बहुत आसान काम; कामकेलि। **–कूद**–स्त्री० (हिं०) खेल, क्रीड़ा; बच्चोंकी उछल कूद। **–पंच**–पु० (अंपायर) खेलोंमें, विशेषकर क्रिकेट आदिमें, विवाद उत्पन्न होनेपर अभिनिर्णय करनेवाला व्यक्ति। (रेफरी) फुटबाल, हाकी आदिमें पंचका काम करनेवाला। **–मध्यस्थ**–पु० (रेफरी) गेंद-बल्ला आदिके खेलमें खेलाड़ियोंके दोनों दलोंके खेलका निरीक्षण करने तथा विवाद या मतभेद उत्पन्न होनेपर पंच या निर्णायकका काम करनेवाला, अभिनिर्णायक। **मु०–करना**– किसी कामको तुच्छ समझकर हँसीमें उड़ाना। **–के दिन**–खेलने-खानेके दिन; लड़कपन। **–खेलना**–चाल चलना। **–खेलाना**–तंग, हैरान करना। **–जानना,–समझना**–बहुत आसान समझना। **–बनना**–काम बनना। **–बिगड़ना**–काम बिगड़ना।

खेलक–पु० खेलनेवाला, खेलाड़ी।

खेलन–पु० (सं०) हिलना-डोलना; खेलना; खेल, क्रीड़ा; खेलनेका साधन। **–प्रतियोगिता**–स्त्री० (टूर्नामेंट) ऊँची कुदान, लंबी कुदान, शतरंज, टेनिस आदिमें भाग लेनेवाले कुशल खेलाड़ियों या व्यक्तियोंके बीच होनेवाली प्रतियोगिता, टूर्नामेंट।

खेलना–अ० क्रि० मनबहलावके लिए या चित्तके उल्लाससे दौड़ना, नाचना, उछलना-कूदना, क्रीड़ा करना; कामकेलि करना; अभुआना; खेलवाड़ करना; मजाक, उपेक्षा या दुःसाहसका ऐसा काम करना जिसका परिणाम दुःखजनक हो; साहस, धूर्तता आदिका आचरण करना; * चला जाना–'हंस लजाइ मानसर खेलें'–प०; विचरना। स० क्रि० कोई खास खेल (ताश, शतरंज, जुआ आदि) खेलना; अभिनय करना। **मु०–खाना**–केवल खेलने-खानेसे मतलब रखना; निश्चित, निर्द्वंद्व रहकर जीवनके आनंद लेना। **–जानपर**–जोखिमका काम करना। **खेला-खाया** –वि० जो दुनियाको देखे, समझे हुए हो, अनुभवी। **खेली-खायी** –वि०, स्त्री० पुरुष-समागमका अनुभव रखनेवाली, खिलाड़।

खेलनी–स्त्री० (सं०) बिसात; गोट, मोहरा।

खेलवाड़–पु० खेल, क्रीडा; बच्चों जैसा काम। **–करना**–गंभीर मामलेमें उपेक्षा दिखलाना, निंदनीय आचरण करना।

खेलवाड़ी–वि० खेल-कूदमें अधिक रुचि रखनेवाला (लड़का)।

खेलवार*–पु० खेल करनेवाला, खिलाड़ी; शिकारी।

खेला–स्त्री० (सं०) खेल, क्रीड़ा; मनबहलाव (साकेत)।

खेलाड़ी–वि०, पु० दे० 'खिलाड़ी'।

खेलाना–स० क्रि० खेलमें प्रवृत्त या शामिल करना; खेलनेका अवसर देना–'एहि पापिहि मैं बहुत खेलावा'–रामा०; (बच्चेको) बहलाना, घुमाना-फिराना; शिकारको थकाने या क्रीड़ाके लिए दौड़ाना, नचाना आदि; व्यर्थमें दौड़ाना या उलझाये रखना। **मु० खेला-खेलाकर मारना**–साँसत देकर मारना।

खेलार*–पु० खिलाड़ी।

खेलि–स्त्री० (सं०) खेल, क्रीड़ा। पु० जानवर; पक्षी; सूर्य; बाण; गीत।

खेलुआ†–पु० चमड़ा रँगनेवालोंका काठका एक औजार।

खेलौना–पु० दे० 'खिलौना'।

खेवइया*–पु० दे० 'खेवैया'।

खेवक*–पु० खेनेवाला; केवट।

खेवट–पु० पटवारीका एक कागज या वही जिसमें गाँवके हर जमींदार या पट्टीदारके हिस्से, मालगुजारी आदिका ब्योरा रहता है; * खेनेवाला; केवट । **–दार**–पु० पट्टीदार ।

खेवटिया*–पु० मल्लाह, केवट ।

खेवनहार–पु० खेनेवाला; पार लगानेवाला ।

खेवना–स० क्रि० दे० 'खेना' ।

खेवरिया*–पु० खेनेवाला ।

खेवा–पु० नाव खेनेकी उजरत, नावका भाड़ा, उतराई; नावकी खेप; वार; एक ढंगके या एक ढंगसे आगे पीछे चलनेवाले व्यक्तियोंका समूह (पिछले खेवेके भोगवादी दार्शनिक) । * वोझ-लदी नाव ।

खेवाई–स्त्री० खेनेका काम; खेनेकी उजरत । **मु०–भी देना और वह भी जाना**–पैसे देकर वेवकूफ वनना ।

खेवैया–पु० नाव खेकर पार ले जानेवाला व्यक्ति, मल्लाह ।

खेस–पु० एक तरहकी मोटे सूतकी वुनी चादर ।

खेसर–पु० (सं०) खच्चर ।

खेसारी–स्त्री० केरावकी जातिका एक कदन्न, लतरी ।

खेह–स्त्री० धूल; राख । **मु०–खाना**–धूल फाँकना; दुर्दशाग्रस्त होना ।

खेहर*–स्त्री० दे० 'खेह' ।

खैँचना–स० क्रि० दे० 'खीँचना' ।

खैँचनी–स्त्री० औजार साफ करनेकी लकड़ीकी तख्ती ।

खैँचातान, खैँचातानी–स्त्री० दे० 'खीँचातानी' ।

खैनी–स्त्री० तंवाकूके सूखे पत्तेके साथ चूना मिलाकर बनाया गया चूर्ण जो अमलके रूपमें खाया जाता है ।

ख़ैबर–पु० हिंदुस्तान और अफगानिस्तानके वीच पड़नेवाला एक दर्रा जो उस दिशासे भारतका मुख्य प्रवेश-मार्ग है ।

ख़ैयात–पु० (अ०) सीनेवाला, दरजी ।

ख़ैयाम–पु० (अ०) खेमा सीने, वनानेवाला; फारसीका एक प्रसिद्ध कवि, उमर ख़ैयाम ।

खैर–पु० ववूलकी जातिका एक पेड़ जिसकी लकड़ी उवालकर कत्था वनाते हैं, खदिर, कत्था । **–सार**–पु० कत्था ।

ख़ैर–स्त्री० (अ०) भलाई, नेकी; कुशल, सलामती । अ० अच्छा, अस्तु । **–अंदेश**–वि० शुभचिंतक, खैरख्वाह । **–ख़ाह, –ख़्वाह**–वि० खैर, भलाई, चाहनेवाला, हितचिंतक । **–ख़्वाही**–स्त्री० शुभचिंतन, खैरअंदेशी । **–मक़दम**–पु० स्वागत (करना) । **–व आफ़ियत**–स्त्री० कुशल-क्षेम (पूछना-लिखना) । **–व (रो) वरकत**–स्त्री० भलाई, मंगल; समृद्धि । **–व (रो) सलाह**–स्त्री० कुशल-क्षेम, खैर व आफियत । **–सल्ला**–स्त्री० दे० 'ख़ैरोसलाह' । **मु०–बाद कहना**–'कुशलसे रहो' कहना, बिदा करना ।

खैभर, खैलभैल*–पु० खलवली, हलचल; शोरगुल ।

खैरा–वि० कत्थई । पु० कत्थई रंग; कत्थई रंगका कवूतर या घोड़ा; इस रंगका वगुला; धानके पौधोंका एक रोग ।

ख़ैरात–स्त्री० (फा०) (ख़ैर'का वहु०) पुण्यकर्म, दानपुण्य । **–ख़ाना**–पु० लंगरखाना, अन्नसत्र ।

ख़ैराती–वि० (फा०) खैरातका, धर्मार्थ संचालित; मुफ्तमें मिला हुआ । **–अस्पताल, दवाख़ाना**–पु० वह दवाखाना जहाँ धर्मार्थ, मुफ्त दवा दी जाय, दातव्य औषधालय । **–माल**–पु० मुफ्त मिली हुई चीज; रद्दी चीज ।

ख़ैरियत, ख़ैरीयत–स्त्री० (फा०) कुशल; भलाई; नेकी । **मु०–पूछना,–मिलना**–कुशल पूछना, मिलना ।

ख़ैल–पु० (अ०) समूह, दल ।

ख़ैलर, खैला*–स्त्री० मथानी ।

ख़ैला–वि०, स्त्री० (अ०) फूहड़; मूर्खा । **–पायँचा**–स्त्री० फूहड़, वौड़म स्त्री ।

खोँइचा, खोँइछा†–पु० मोड़ा हुआ आँचल; (विदाईके समय) आँचलमें डाला हुआ धन ।

खोँखना†–अ० क्रि० खाँसना ।

खोँखर†–वि० खोखला ।

खोँखी–स्त्री० खाँसी ।

खो-खोँ–पु० खाँसनेकी आवाज़; बंदरोंके घुड़कनेकी आवाज ।

खोंगाह–पु० (सं०) जरदी मायल सफेद रंगका घोड़ा ।

खोँच–स्त्री० खरोंच; कपड़ेकी चीर या छेद जो किसी नुकीली चीजसे उलझकर हो जाय । पु० मुट्ठीभर अन्न ।

खोँच*–पु० झोली, कोंछ । † स्त्री० सुतलीसे बनायी गयी जालीदार थैली जिसे, चरने न देनेके लिए, वैलोंके मुँहपर लगाते हैं ।

खोँचा–पु० लग्गी या बाँस जिसके सिरेपर लासा लगाकर वहेलिये चिड़िया फँसाते हैं; पेड़ोंसे फल तोड़नेकी लग्घी ।

खोँचिया†–पु० खोंची लेनेवाला, भिक्षुक ।

खोँची–स्त्री० वह अन्न, तरकारी आदि जो दुकानदार राशिमेंसे उठाकर भिखमंगेको दे दे ।

खोँटना–स० क्रि० किसी चीजका, खासकर साग-पातका, ऊपरका भाग, फुनगी नोच लेना ।

खोँड़र–पु० कोटर ।

खोँडरा–पु० दे० 'खोडरा' ।

खोँड़हा–वि० दे० 'खोँड़ा' ।

खोँड़ा–वि० विकलांग (सं० 'खोड'); जिसका दाँत टूट गया हो; खंडित ।

खोंडिया†–पु० गल्ला रखनेका मिट्टीका गोल, लंवोतरा पात्र; कुठला, डहरिया ।

खोँतल†–पु० दे० 'खोँता' ।

खोँता–पु० घोंसला ।

खोँप–स्त्री० दूर-दूर लगा हुआ टाँका; खोँच; खरोंच । † भूसा रखनेका छाजनदार घेरा ।

खोँपना†–स० क्रि० भोंकना, चुभा देना ।

खोँपा–पु० हलका वह भाग जिसमें फाल लगा रहता है; भूसा रखनेका छाजनदार घेरा; छाजनका कोना; जूड़ा, कवरी ।

खोँसना–स० क्रि० अटकाना, फँसाना ।

खोआ–पु० दे० 'खोया' ।

खोइया†–स्त्री० दे० 'खोई'; फलादिका छिलका; वारात चली जानेपर रातमें स्त्रियों द्वारा रचा जानेवाला नाटच, 'नकटा' ।

खोई–स्त्री० ईखका डंठल जिसका रस निकाल लिया गया हो; लाई; खुही, कंवलकी घोघी ।

ख़ोकंद–पु० उजवक (तुर्किस्तान)का एक नगर ।

खोखर–पु० एक राग । † वि० दे० 'खोखला' ।

खोखल†–वि० दे० 'खोखला' ।

खोखला–वि० भीतरसे खाली, पोला । पु० खोखली जगह; कोटर; वड़ा छेद ।

खोखा–पु० वह कागज जिसपर हुंडी लिखी हो; चुकायी हुई हुंडी; † वालक (वं०) ।

ख़ोगीर–पु० (फा०) जीनकी भरती; नमदा । **–की भरती**–रद्दी, निकम्मी चीज ।

खोज–स्त्री० खोजनेकी क्रिया, तलाश, अन्वेषण; शोध; निशान, चिह्न; पहियेकी लीक; पदचिह्न ।**–बत्ती**–स्त्री० तेज रोशनी फेंकनेवाला वह आला जिससे छिपे हुए या भागते हुए व्यक्तियों, चोरों, हिंस्र पशुओं, विमानों आदिका पता लगाया जाय, दे० 'अन्वेषक प्रकाश' । **–मिटा**–वि०, पु० जिसका नामोनिशान न रह गया हो, एक गाली । **मु० –ख़वर लेना**–हाल पूछना, पता लेना । **–मारना**–लीक या पदचिह्न मिटा देना (पहचानमें आने लायक न रहने देना) । **–मिटाना**–नाम-निशान मिटा देना; लीक, पदचिह्न मिटाना ।

खोजक*–वि०, पु० खोज करनेवाला ।

खोजना–स० क्रि० ढूँढ़ना, तलाश करना, पता लगाना ।

खोजवाना–स० क्रि० 'खोजना'का प्रे० ।

ख़ोजा–पु० (फा०) हिजड़ा; हिजड़ा सेवक जो मुसलमान वादशाहोंके हरममें रखा जाता था; एक तिजारत-पेशा मुसलमान जाति ।

खोजी, खोजू–वि० खोज करनेवाला, अन्वेषक ।

खोट–स्त्री० दोष, बुराई; खता, कुसूर; पाप; दुष्टता, खुटाई; द्वेषपूर्ण धारणा; सोने-चाँदीमें किसी घटिया धातुकी मिलावट; इस तरह मिलायी हुई चीज; खुरंड । वि० दुष्ट; ऐवी । **मु० –होना**

–दूषित होना, खराब होना ।

खोटता*–स्त्री० खुटाई, बुराई ।

खोटा–वि० जिसमें खोट हो, 'खरा'का उलटा; सदोष, बुरा, घटिया; नक़ली; मिलावटवाला; खल, दुरात्मा । **–ई**–स्त्री० दे० 'खुटाई' । **–खरा**–वि० भला-बुरा; सच्चा-झूठा; घटिया-बढ़िया । **–माल**–पु० घटिया, मिलावटी माल । **–सिक्का**–पु० जाली, अप्रामाणिक, न चलनेवाला सिक्का । **मु०–खाना***–बेईमानीकी कमाई खाना । **–(टी)खरी सुनाना**–बुरा-भला कहना, गालियाँ देना ।

खोटाई–स्त्री० खोटापन, बुराई; छल; दोष ।

खोटाना†–अ० क्रि० दे० 'खुटाना' ।

खोटि–स्त्री० (सं०) चालबाज औरत ।

खोड–वि० (सं०) विकलांग, लँगड़ा-लूला; खोँड़ा ।

खोड़–स्त्री० भूत-प्रेतका आवेश; दैवकोप । पु० खोखला ।

खोड़रा–पु० कोटर; दाँत आदिके भीतरका गड्ढा ।

खोद–पु० लोहेका बना टोप, शिरस्त्राण । पु० खोदनेकी क्रिया; छानबीन । **–पूछ**–स्त्री० छानबीन, पूछताछ । **–विनोद**†–स्त्री० छोटी-छोटी बातों तककी पूछताछ, तुच्छ छेड़छाड़ ।

खोदना–स० क्रि० खुरचना, कुरेदना; गड्ढा करना; खोदकर उखाड़ना; ढहाना; लकड़ी आदिको कुरेदकर चिह्न उरेहना, बनाना; नक्काशी करना; कोई नुकीली चीज धीरेसे चुभोना; उकसाना; उभारना । **मु० खोद-खोदकर पूछना**–पूरी बात जाननेके लिए जिरह करना, एक-एक बातपर शंका-प्रश्न करते हुए पूछना ।

खोदनी–स्त्री० खोदनेका औजार ।

खोदवाना–स० क्रि० 'खोदना'का प्रे० ।

खोदाई–स्त्री० दे० 'खुदाई' ।

खोन†–स्त्री० कश्मीरी मुसलमानोंकी टोपी ।

खोना–स० क्रि० गँवाना, अपनी चीज कहीं भूल, छोड़ आना; नष्ट, बरबाद करना । **मु० खो जाना**–गुम हो जाना; किसी चिंता-विचारमें डूब जाना; हक्का-बक्का हो जाना । **खोया-खोया रहना**–किसी चिंता-विचारमें निमग्न रहना; गुम-सुम रहना ।

खोन्चा–पु० बड़ा थाल जिसमें फेरीवाले मिठाइयाँ आदि रखकर बेचते हैं, 'ख़्वानचा' । **–फरोश**–पु० फेरीवाला ।

खोपड़ा–पु० कपाल, सिर; गरीका गोला; नारियल; भीख माँगनेका खप्पर ।

खोपड़ी–स्त्री० कपाल, सिर । **मु०–खा जाना,–चाट जाना**–बहुत बकवास करके कष्ट पहुँचाना । **–खाली हो जाना**–(किसीकी बकवास या अधिक श्रमसे) दिमागका थक जाना । **–खुजलाना**–मार खानेका उपाय करना, पिटनेको जी चाहना । **–गंजी होना**–इतनी मार खाना कि सिरके बाल झड़ जायँ, सिरपर खूब जूते पड़ना ।

खोपनि*–स्त्री० फटना–'हिय-खोपनि पोपनि-कोपनि झालरि' –घन० ।

खोपरा†–पु० दे० 'खोपड़ा' ।

खोपा–पु० छाजनका कोना; जूड़ा बँधी हुई चोटी, खोंपा; केश-विन्यासका एक भेद; गरीका गोला ।

खोभरना–अ० क्रि० बीचमें पड़ना, बाधाके रूपमें उभड़ना ।

खोभरा*–पु० गड़नेवाली चीज, खूँटी आदि ।

खोभारा–अ० क्रि० दे० 'खुभराना' ।

खोभार–पु० तंग दरवाजेवाला झोपड़ा जिसमें सूअर रातको बंद किये जाते हैं; तंग अँधेरी कोठरी; कूड़ा फेंकनेका गड्ढा ।

खोम*–पु० झुंड–'बसे खलनके खेरन खवीसनके ख़ोम हैं'–भूषण; जाति ।

खोय†–स्त्री० दे० 'खू', आदत, स्वभाव ।

खोया–पु० औटाकर लुगदीसा बनाया हुआ दूध, मावा; ईंट पाथनेका गारा ।

खोर–स्त्री० गली; गाय-बैलको चारा-पानी देनेकी नाँद; दे० 'खोरि' । वि० (सं०) लँगड़ा ।

खोरना†–अ० क्रि० नहाना । स० क्रि० खोलना; आग आदि खुलेड़ना ।

खोरनी–स्त्री० वह लकड़ी जिससे भड़भूँजे बाहर बचा हुआ ईंधन भाड़के भीतर करते हैं ।

खोरा†–पु० कटोरा; आबखोरा । * वि० खोंड़ा, विकलांग ।

खोराक–स्त्री० दे० 'ख़ुराक' ।

खोराकी–स्त्री० दे० 'ख़ुराकी' ।

खोरि, खोरी–स्त्री० गली, सँकरी गली; दोष, बुराई–'झूठे सुतहि लगावति खोरि'–सूर; कटोरी–'काहू हाथ चंदन कै खोरी'–प०; दे० 'खौरि'; दे० 'खोली' ।

खोली†–स्त्री० तंग कोठरी ।

खोरिया–स्त्री० कटोरी; बुंदेके रूपमें कटे हुए डाँकके टुकड़े ।

खोल–पु० गिलाफ, आवरण; बेठन; मोटी चादर; कीड़ोंकी ऊपरी त्वचा जो केंचुलकी तरह झड़ा करती है; (सं०) शिरस्त्राण, खोद । वि० विकलांग, लँगड़ा ।

ख़ोल–पु० (फा०) खोल; म्यान ।

खोलक–पु० (सं०) शिरस्त्राण; कपाल; सुपारीका छिलका; बाँबी; कड़ाही ।

खोलना–स० क्रि० आवरण, अवरोध हटाना; अनावृत करना, बंधनरहित करना; दरार, छेद करना; टाँके हटाना; कल-पुरजे अलग करना; चीरना, उधेड़ना; प्रकट, जाहिर करना; उद्घाटित करना, आरंभ करना, चलाना; स्थापित करना; कार्यारंभ करना । **खोलकर**–अ० खुले शब्दोंमें, साफ-साफ । **जी खोलकर**–मुक्त हस्तसे; निश्छल भावसे ।

खोलि–स्त्री० (सं०) तरकश ।

खोली–स्त्री० गिलाफ; थैली; दुलाई जैसा कपड़ा जिसमें रुई न भरी हो; कोठरी ।

खोवा–पु० दे० 'खोया' ।

ख़ोशा–पु० (फा०) अनाजकी बाल; फलोंका गुच्छा । **–चीँ**–वि० खेतमें गिरे हुए दाने चुननेवाला; दूसरेकी विद्या, पांडित्यसे लाभ उठानेवाला ।

खोसना*–स० क्रि० छीनना, लुचकना ।

खोह–स्त्री० गुफा, कंदरा; दो पहाड़ोंके बीचकी तंग जगह, दर्रा ।

खोही–स्त्री० पत्तोंकी छतरी; घोघी; पहाड़ोंके बीचका गहरा गड्ढा; * खेह, 'धूल'–'सूर सुवस्तुहिं छोड़ि अभागे हमहिं बतावत खोहि'–सूर ।

खौ–स्त्री० खात, गड्ढा; अन्न एकत्र करनेका गहरा गड्ढा ।

खौँचा–पु० साढ़े छका पहाड़ा; मिठाई आदि खानेकी चीजें रखनेका एक तरहका संदूक ।

खौँट*–स्त्री० खोंटनेकी क्रिया; खरोंच । पु० खुरंड ।

ख़ौज़–पु० (अ०) गंभीर-चिंतन, सोच-विचार, गौर ।

ख़ौफ़–पु० (अ०) डर, भय, आतंक । **–नाक**–वि० डरावना, भयानक ।

खौर–पु० चंदनका आड़ा तिलक, त्रिपुंड्र; स्त्रियोंका माथेपरका एक गहना; एक तरहका मछली पकड़नेका जाल ।

खौरना–स० क्रि० खौर करना, तिलक लगाना; † उलटना-पुलटना; * छेड़छाड़ करना–'मोही सों जबतब खौरत हौ सब मिलि करै चबाव'–घन० ।

खौरहा–वि० खौरा रोगवाला; गंजा ।

खौरा–पु० कुत्तों आदिको होनेवाली एक तरहकी खुजली । वि० खौरा रोगवाला ।

खौरि*–स्त्री० तिलक; गली ।

खौरी*–वि०, स्त्री० कष्टदायिनी, बुरी–'यह बैरिनि बँसुरिया अति ही खौरी है'–घन० ।

खौलना–अ० क्रि० उबलना, जोश खाना ।

खौलाना–स० क्रि० उबालना, औटाना; जलाना, क्रुद्ध करना ।

खौलाव–पु० खौल उठना, क्रुद्ध हो उठना 'खौलाव नेहरूकी प्राकृतिक विशेषता है'–हम हिन्दु० ।

खौहा–वि० अधिक खानेवाला, पेटू; दूसरेकी कमाई खानेवाला ।

ख्यात–वि० (सं०) प्रसिद्ध; कथित, वर्णित । पु० किसी विख्यात या वीर पुरुषकी कीर्तिगाथाका वर्णन करनेवाला काव्य । **–गर्हण,**

–गर्हित–वि० वदनामीसे मशहूर, वदनाम ।

ख्याति–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, शुहरत, नाम; ज्ञापन; प्रशंसा; वर्णन; ज्ञान ।

ख्यापक–वि०, पु० (सं०) ख्यापन करनेवाला ।

ख्यापन–पु० (सं०) शुहरत करना; प्रकट, प्रकाशित करना । ज्ञापन; दोष-पापको प्रकट रूपसे स्वीकार करना ।

ख्याल–पु० दे० 'ख़याल'; एक विशेष गान-पद्धति; * खेल; मजाक ।

ख्यालिया–पु० ख्याल गानेवाला ।

ख्याली–वि० दे० 'ख़याली'; खेल, क्रीड़ा-कौतुक करनेवाला; सनकी, वहमी ।

ख्रिष्टान–पु० ईसाई ।

ख्रिष्टीय–वि० ख्रीष्ट-संवंधी, ईसाई ।

ख्रीष्ट–पु० क्राइस्ट, ईसा ।

ख़्वाँदा–वि० (फा०) पढ़ा हुआ, शिक्षित ।

ख़्वाजा–पु० (फा०) मालिक, सरदार; कुछ मुसलमान जमातोंकी पदवी; हिजड़ा; खोजा जाति । **–ख़िज़्र**–पु० दे० ('खिज़र') । **–सरा**–पु० रनिवासका हिजड़ा सेवक; शाही महलका (हिजड़ा) दारोगा ।

ख़्वान–पु० (फा०) थाल, तश्त । **–चा**–पु० छोटा थाल, खोन्चा । **–पोश**–पु० ख्वान ढँकनेका कपड़ा ।

ख़्वाव–पु० (फा०) नींद; सपना । **–गाह**–पु० सोनेका कमरा, शयनागार । **–व(वो)ख़याल**–पु० कल्पना, भ्रम, वहम । **–(वे)ख़रगोश**–पु० खरगोशकी नींद, वेखवरीकी नींद । **–ग़फ़लत**–स्त्री० वेखवरीकी नींद; वेखवरी, अचेतपन ।

ख़्वार–वि० (फा०) जलील, वेइज्जत; तवाह, परेशान ।

ख़्वारी–स्त्री० (फा०) जिल्लत, वेइज्जती; खरावी, वरवादी ।

ख़्वास्त–स्त्री० (फा०) ख्वाहिश, इच्छा; प्रार्थना (केवल समासमें व्यवहृत) । **–गार**–वि० चाहनेवाला, इच्छुक; प्रार्थी ।

ख्वास्ता–वि० (फा०) चाहा हुआ, कांक्षित ।

ख़्वाह–अ० (फा०) चाहे, अथवा, या । **–मख़्वाह**–अ० चाहे या विना चाहे, मजबूरन; अवश्य ।

ख़्वाहाँ–वि० (फा०) चाहनेवाला, इच्छुक ।

ख़्वाहिर–स्त्री० (फा०) वहिन । **–ज़ादा**–पु० भानजा ।

ख्वाहिश–स्त्री० (फा०) इच्छा, चाह । **–मंद**–वि० इच्छुक, आकांक्षी ।

ग

ग–देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका तीसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान कंठ ।

गंग–स्त्री० गंगा । पु० भक्तिकालका एक प्रसिद्ध हिंदी कवि; एक मात्रिक छंद; (फा०) गंगा । **–वरार**–स्त्री० गंगा या दूसरी नदीकी धाराके नीचेसे निकली हुई (नयी) जमीन । **–शिकस्त**–स्त्री० वह जमीन जो नदीकी धारासे कट जाय ।

गंगई–स्त्री० मैनाकी जातिकी एक चिड़िया ।

गंगका–स्त्री० (सं०) गंगा ।

गंगला–पु० एक तरहका शलजम ।

गंगांबु–पु० (सं०) गंगाका जल; वर्षाका शुद्ध जल ।

गंगा–स्त्री० (सं०) भारतवर्षकी एक प्रधान और पवित्रतम नदी जिसका भगीरथके तपसे स्वर्गसे पृथ्वीपर आना माना गया है, जाह्नवी, भागीरथी । **–क्षेत्र**–पु० गंगाकी धारा और दोनों किनारोंसे दो-दो कोसतकका भूभाग । **–गति***–स्त्री० गंगालाभ, मुक्ति । **–चिल्ली**–स्त्री० (हिं०) एक जलपक्षी । **–जमुनी**–वि० (हिं०) दोरंगा; सोने-चाँदीका वना; सोने-चाँदीके कामवाला; काला-उजला । स्त्री० कानका एक गहना; घोड़ोंकी दोरंगी गरदनी; केवटी दाल; सुनहले-रुपहले कामकी जरतारी । **–जल**–पु० गंगाका पानी; पवित्र जल जिससे कसम खिलाते हैं; (हिं०) एक तरहका सफेद रेशमी कपड़ा–'गंगाजलकी पाग सिर सोहत श्री रघुनाथ'–रामचंद्रिका । **–जली**–स्त्री० (हिं०) धातु या शीशेकी सुराही जिसमें यात्री हरद्वार आदिसे गंगा-जल लाते हैं; धातुकी सुराही; लोटे जैसा पात्र जिसमें कड़ीदार ढक्कन लगा होता है; एक तरहका गेहूँ । **–दत्त**–पु० भीष्म । **–द्वार**–पु० हरिद्वार । **–धर**–पु० शिव; समुद्र; एक वर्णवृत्त । **–धार**–पु० समुद्र । **–पत्री**–स्त्री० एक वृक्ष, सुगंधा, गंधपत्रिका । **–पाट**–पु० (हिं०) घोड़ेके तंगके नीचे होनेवाली एक भौरी । **–पार**–पु० गंगाका दूसरा तट । **–पुत्र**–पु० भीष्म; कार्तिकेय; गंगा आदिके घाटोंपर बैठने और पंडोंका काम करनेवाला ब्राह्मण; एक संकर जाति । **–पूजैया**–स्त्री० (हिं०) दे० 'गंगा-पूजा' । **–पूजा**–स्त्री० व्याहके वाद वर-वधूको लेकर गाजे-वाजेके साथ होनेवाली गंगा, देवताओं आदिकी पूजा । **–यात्रा**–स्त्री० बीमारको गंगातटपर इसलिए ले जाना कि वहीं उसकी मृत्यु हो । **–राम**–पु० (हिं०) तोतेका प्यारका नाम जिससे पढ़ाते समय उसका संबोधन करते हैं । **–लहरी**–स्त्री० पंडितराज जगन्नाथ-रचित गंगास्तोत्र । **–लाभ**–पु० गंगाकी प्राप्ति, गंगातटपर मृत्यु या दाहकर्म होना; मृत्यु । **–वासी(सिन्)**–वि० गंगातटपर रहनेवाला । **–सागर**–पु० एक तीर्थस्थान जहाँ गंगा समुद्रसे मिलती है; दावत आदिके समय पानी परोसनेका धातुका टोंटीदार लंबोतरा या लोटे जैसा बर्तन, करवा । **–सुत**–पु० भीष्म; कार्त्तिकेय । मु० **–उठाना,–जली उठाना**–गंगाजल लेकर कसम खाना । **–नहाना**–किसी कठिन कार्यको पूरा कर लेना, कृतकार्य होना । **–पार करना**–देशसे निकालना । **–पीना**–झूठी कसम खाना ।

गंगाका, गंगिका–स्त्री० (सं०) गंगा ।

गंगाल–पु० कंडाल, वड़ा जलपात्र ।

गंगावतरण, गंगावतार–पु० (सं०) गंगाका उतरना, स्वर्गसे धरतीपर आना ।

गंगा सागर–दे० 'गंगा'में ।

गँगेटी–स्त्री० एक वनौषधि ।

गंगेय*–पु० दे० 'गांगेय' ।

गँगेरन, गँगेरू–पु० एक पौधा जो दवाके काम आता है ।

गँगेरुवा–पु० एक पहाड़ी पेड़ ।

गंगोझ*–पु० दे० 'गंगोदक' ।

गंगोत्तरी–स्त्री० हिमालयकी एक चोटी जहाँसे गंगा निकली है ।

गंगोदक–पु० (सं०) गंगाजल; एक वर्णवृत्त ।

गंगोद्भेद–पु० (सं०) गंगाका उद्‌गमस्थान ।

गंगोल–पु० (सं०) गोमेद मणि ।

गंगौटी*–स्त्री० गंगाके किनारेकी रेत या मिट्टी ।

गंगौलिया–पु० एक तरहका खट्टा नीबू ।

गंज–पु० सिरके वाल झड़ जानेका रोग, गंजापन, वालखोरा रोग; (सं०) खान, रत्नोंकी खान; खजाना, धनराशि; ढेर, भंडार; मंडी, बाजार; गोठ; पानपात्र; अवज्ञा, तिरस्कार; (फा०) खजाना, धनराशि, ढेर, भंडार; मंडी; वह चीज जिसमें कई उपयोगी चीजें एक साथ हों । **–गुबारा***–पु० बमगोला । **–गोला**–पु० तोपका वह गोला जिसमें बहुतसी चीजें भरी हों । **–बख़्श**–वि० खजाना लुटा देनेवाला, महादानी । **–का चाकू**–वह चाकू जिसमें साथ-साथ कैंची, मोचना आदि भी हों । **–वालटी**–स्त्री० वालटी जैसा वह वरतन जिसके भीतर गिलास, कटोरे, थालियाँ आदि हों ।

गंजन–पु० (सं०) अवज्ञा, तिरस्कार करना; हरा देना; नाश; नीचा दिखाना; संगीतके आठ तालोंमेंसे एक; * दुःख । वि० गंजनकर्ता, अवज्ञा करनेवाला; नाशक ।

गँजना–अ० क्रि० ढेर लगना, इकट्ठा होना; भरा जाना ।

गंजना*–स० क्रि० अवज्ञा करना; नष्ट करना ।

गंजनी–स्त्री० एक घास जिसमें नीबूकी-सी महँक होती है ।

गंजफ़ा–पु० (फा०) दे० 'गंजीफ़ा' ।

गंजा–वि० गंज रोगवाला, खल्वाट । पु० गंजापन; गंज रोग । स्त्री० (सं०) मदिरालय; झोपड़ी; पानपात्र; रत्नोंकी खान ।

गंजिका–स्त्री० (सं०) मदिरालय ।

गंजिया–स्त्री० रुपये रखनेकी जालीदार थैली; घास रखनेकी जाली; एक तरहका मिट्टीका बरतन; शकरकंद ।

गंजी–स्त्री० छोटा गंज, ढेर, राशि; एक बुना हुआ पहनावा जो बंडी-नीमास्तीन आदिकी तरह नीचे पहना जाता है, बनियायन; † शकरकंद । वि० गाँजा पीनेवाला ।

गंजीना–पु० (फा०) खजाना, गंज ।

गंजीफ़ा–पु० (फा०) ताश जैसा एक खेल जिसमें पत्ते गोल और संख्यामें ९६ होते थे ।

गँजेड़ी–वि० गाँजा पीनेवाला ।

गंटम–पु० एक तरहकी लोहेकी कलम जो ताड़पत्रपर लिखनेके काम आती थी ।

गँठ–'गाँठ'का समासमें व्यवहृत रूप । **–कटा**–पु० गिरहकट, पाकेटमार । **–जोड़ा,–बंधन**–पु० विवाहकी एक रीति जिसमें वर-वधूके कपड़ेके छोर एकमें बाँध दिये जाते हैं; पक्का नाता, अटूट संबंध; साँठगाँठ ।

गँठिवन–पु० दे० 'गठिवन' ।

गंड–पु० (सं०) गाल; कनपटी; गालसे कनपटीतकका मुख-भाग; हाथीकी कनपटी; फोड़ा, फुंसी; घेघा; योद्धा; गाँठ; गंडा; गैंड़ा; हलका; मंडलाकार रेखा; चिह्न, निशान; वीथि (नाटक) का अंगविशेष; एक अनिष्ट योग (ज्यो०) । **–कुसुम**–पु० हाथीकी कनपटीसे झरनेवाला मद । **–कूप**–पु० पहाड़की चोटीपर बना कुआँ । **–गात्र**–पु० एक मीठा फल, शरीफा । **–गोपालिका**–स्त्री० ग्वालिन नामक कीड़ा । **–ग्राम**–पु० बड़ा गाँव । **–दूर्वा**–स्त्री० गाँठवाली, दूरतक फैलनेवाली दूब । **–देश,–प्रदेश,–मंडल,–स्थल**–पु० कनपटी । **–भित्ति**–स्त्री० हाथीके गंडस्थलका छिद्र जिससे मद झरता है । **–मालक**–पु० गंडमाला । **–माला**–स्त्री० कंठमाला रोग । **–मालिका**–स्त्री० लज्जालु लता । **–माली(लिन्)**–वि० गंडमाला रोगसे ग्रस्त । **–मूर्ख**–वि० घोर मूर्ख । **–शिला**–स्त्री० विशाल चट्टान । **–सूचि**–स्त्री० नृत्यका एक भाव । **–स्थली**–स्त्री० 'गंडस्थल', कनपटी ।

गंडक–स्त्री० एक नदी जो हिमालयसे निकलकर गंगामें मिलती है । पु० (सं०) गंडा; गिरह; चार कौड़ियोंके मूल्यका एक सिक्का; गैंडा; निशान; बाधा; फोड़ा; पार्थक्य; ज्योतिषका एक अंग ।

गंडकी–पु० संगीतमें एक ताल । स्त्री० (सं०) गंडक नदी; मादा गैंड़ा । **–पुत्र**–पु०,**–शिला**–स्त्री० शालग्रामकी बटिया ।

गँड़तरा†–पु० वह मोटा और छोटा वस्त्र या कथरी जो छोटे बच्चोंके नीचे बिछा दी जाती है ताकि पेशाब-पाखानेसे बिस्तर न खराब हो ।

गंडनी–स्त्री० सरपोका नामक वनस्पति ।

गँडरा–पु० तर जमीनमें होनेवाली एक घास ।

गँडरी–स्त्री० गाँडर नामक घास ।

गंडली(लिन्)–पु० (सं०) शिव ।

गंडांत–पु० (सं०) ज्येष्ठा, अश्लेषा आदि कुछ नक्षत्रोंके अंतके तीन दंड ।

गंडा–पु० गाँठ; मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा जो जंतर-तावीजकी तरह पहना जाय; तोते आदिके गलेका रंगीन हलका कंठा; घोड़ेके गलेमें पहनानेका पट्टा; आड़ी धारी; चारका समूह (कौडी, पैसा), आना; † बोनेके लिए काटा हुआ ईखका टुकड़ा । **–तावीज**–पु० जंतर-मंतर, झाड़-फूंक ।

गंडारि–पु० (सं०) कचनार ।

गंडाली–स्त्री० (सं०) सफेद दूब ।

गँड़ासा–पु० एक हथियार जिसमें डंडेके सिरेपर लोहेका खमदार फलक लगा होता है, परशु; एक औजार जिससे चारा काटते हैं ।

गँड़ासी–स्त्री० एक औजार जिससे चौपायोंके लिए चारा काटते हैं ।

गंडि–स्त्री० (सं०) पेड़का धड़, तना; घेघा ।

गंडिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका छोटा पत्थर; एक पेय; ऐसी कोई चीज जो पहली अवस्था पार कर दूसरीमें पहुँच गयी हो ।

गंडिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

गंडीर–पु० (सं०) पोईका साग; सेंहुड़; वीर ।

गंडीरी–स्त्री० (सं०) सेंहुड़ ।

गंडु–पु० (सं०) गाँठ; हड्डी; तकिया । **–पद**–पु० केंचुआ ।

गंडुक*–पु० दे० 'गंडूष' ।

गंडू–वि० गाँड़ू । स्त्री० (सं०) दे० 'गंडु'; तेल ।

गंडूक–पु० दे० 'गंडूष' ।

गंडूल–वि० (सं०) गाँठवाला; टेढ़ा ।

गंडूष–पु० (सं०) चुल्लू; कुल्ली; हाथीकी सूँड़की नोंक ।

गँड़ेरी–स्त्री० ईख या गन्नेका कुछ लंबोतरा टुकड़ा जो चूसने या कोल्हूमें पेरनेके लिए काटा जाय; छोटा लंबोतरा टुकड़ा ।

गंडोपधान–पु० (सं०) तकिया ।

गंडोपल–पु० (सं०) बड़ा शिलाखंड ।

गँडोरा–पु० हरा कच्चा खजूर ।

गंडोल–पु० (सं०) गुड़; कौर; निवाला ।

गंतव्य–वि० (सं०) जहाँ किसीको जाना हो, जाने योग्य, गम्य ।

गंता(तृ)–पु० (सं०) जानेवाला; पानेवाला; सहवास करनेवाला ।

गंतु–पु० (सं०) मार्ग; पथिक, जानेवाला ।

गंत्र–पु० (एंजिन) यंत्रों, कल-पुरजों आदिको गति-प्रदान करनेवाला एक तरहका यांत्रिक साधन, इंजन ।

गंत्रिका–स्त्री० (सं०) छोटी गाड़ी ।

गंत्री–स्त्री० (सं०) घोड़ागाड़ी; बैलगाड़ी ।

गंद–स्त्री० (फा०) मलिनता; सड़ाँध, गंदगी; बुरी बात । मु०–**बकना**–गंदी बातें, गालियाँ बकना ।

गंदगी–स्त्री० (फा०) मलिनता, गिलाजत; मल; नापाकी; बदबू; सड़ाँध; भ्रष्टता ।

गंदना–पु० प्याज-लहसुनकी जातिका एक मसाला; एक विशेष घास, दंदना ।

गँदला–वि० गंदा, मैला-कुचैला ।

गंदा–वि० (फा०) मैला; नापाक; बदबूदार; बिगड़ा हुआ, खराब, बुरा । **–दहन**–वि० जिसके मुँहसे बदबू आये; गंदी बातें बकनेवाला । **–पानी**–पु० शराब; वीर्य या रज । **–बग़ल**–पु० वह घोड़ा जिसके दोनों बगल भौरियाँ हों ।

गँदीला–पु० एक तरहकी घास ।

गंदुम–पु० (फा०) गेहूँ । **–नुमा जौ फ़रोश**–पु० गेहूँ दिखाकर जौ बेचनेवाला, ठग, वंचक ।

गंदुमी–वि० (फा०) गेहुँए रंगका, दबती गोराईवाला ।

गंध–स्त्री० (सं०) बास, बू; पृथ्वीतत्त्वका गुण (न्या०); सुगंध; सुगंधित द्रव्य; घिसा हुआ चंदन; चंदन, केसर आदिका लेप; लेश, छुलाई, नाममात्र; गंधक । पु० सहजन । **–कंदक**–पु० कसेरू । **–कारिका**–स्त्री० सुगंधित उबटन आदि तैयार करने, कपड़े बसानेका काम करनेवाली दासी । **–कारिता**–स्त्री० सुगंधित द्रव्य तैयार करनेकी कला । **–कालिका,–काली**–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती । **–काष्ठ**–पु० अगर । **–कुटी**–स्त्री० मुरानामक गंधद्रव्य । **–कुसुमा**–स्त्री० गनिकारी । **–केलिका,–चेलिका**–स्त्री० कस्तूरी । **–कोकिला**–स्त्री० गंधद्रव्य-विशेष । **–गज**–पु० वह हाथी जिसके कुंभसे मद झरता हो, श्रेष्ठ, महाबली हाथी । **–गुण**–वि० गंध गुणवाला; गंधयुक्त । **–जल**–पु० सुवासित, सुगंधित जल । **–जात**–पु० तेजपात । **–ज्ञा**–स्त्री० नासिका । **–तंडुल**–पु० वासमती चावल । **–तूर्य**–पु० वाद्यविशेष, रणवाद्य । **–तृण**–पु० भूतृण, रूसा । **–तैल**–पु० सुगंधित द्रव्योंको पकाकर बनाया हुआ तेल, खुशबूदार तेल । **–त्राण**–पु० ज्वरांकुश । **–द**–पु० चंदन । **–दला**–स्त्री० अजमोदा । **–दारु**–पु० अगर । **–द्रव्य**–पु० सुगंधित द्रव्य (चंदन, केसर आदि) । **–धारी(रिन्)**–वि० जो सुगंधित द्रव्य लगाये या धारण किये हो । पु० शिव । **–धूलि**–स्त्री० कस्तूरी । **–नकुल**–पु० छछूंदर । **–नाकुली**–स्त्री० रास्ना । **–नाडी**–स्त्री० नाक । **–नामा(मन्)**–पु० लाल तुलसी । **–नाल***–पु० दे० 'गंधनाली' । **–नालिका,–नाली**–स्त्री० नाक । **–निलया**–स्त्री० एक तरहकी चमेली । **–निशा**–स्त्री० गंधपत्ता । **–प**–पु० एक पितृवर्ग । **–पत्र**–पु० सफेद तुलसी; मरुवा; बेल; नारंगी । **–पत्ता,–पत्रिका**–स्त्री० कपूरकचरी । **–पत्री**–स्त्री० अजमोदा । **–पर्ण**–पु० गंधयुक्त पत्तों-

वाली एक वनस्पति । **–पलाशिका**–स्त्री० हरिद्रा । **–पलाशी**–स्त्री० गंधपत्रा । **–पसार,–पसारी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'गंधप्रसारिणी' । **–पाषाण**–पु० गंधक । **–पिशाचिका**–स्त्री० धूनेका धुआँ । **–पुष्प**–पु० खुशबूदार फूल; बेत; केवड़ा; गनियारी । **–पुष्पा**–स्त्री० नीलका पौधा । **–प्रत्यय**–पु० नाक । **–प्रसारिणी**–स्त्री० दवाके उपयोगमें आनेवाली एक लता । **–फल**–पु० कपित्थ । **–फला**–स्त्री० प्रियंगु । **–फली**–स्त्री० प्रियंगु; चंपककली । **–बंधु**–पु० आम । **–बबूल**–पु० (हिं०) विलायती बबूल । **–बिलाव**–पु० (हिं०) नेवलेसे मिलता-जुलता एक जंतु जिसके अंडकोशसे एक सुगंधित द्रव निकलता है, मुश्कबिलाव । **–बीजा**–स्त्री० मेथी । **–बेन**–पु० (हिं०) गंधवेणु, एक सुगंधित घास । **–भांड**–पु० गर्दभांड । **–मांसी**–स्त्री० एक तरहकी जटामासी । **–माता(तृ)**–स्त्री० पृथ्वी । **–माद**–पु० राम-सेनाका एक प्रमुख बंदर; एक यादव जो अक्रूरका भाई था । **–मादन**–पु० एक पुराणवर्णित पर्वत जिसकी अवस्थिति इलावृत और भद्राश्व-खंडके बीच बतायी गयी है; उस पर्वतपर लगा हुआ सुगंधित वृक्षोंका जंगल; भौंरा । **–मादनी**–स्त्री० मदिरा । **–मादिनी**–स्त्री० लाख । **–मार्जार**–पु० गंध-बिलाव । **–मालती**–स्त्री० एक गंधद्रव्य । **–मुंड**–पु० गंधभांड । **–मूल**–पु० कुलंजन । **–मूलक**–पु०,**–मूला,–मूलिका,–मूली**–स्त्री० गंधपत्रा । **–मूषिक**–पु०,**–मूषी**–स्त्री० छछूंदर । **–मृग**–पु० कस्तूरीमृग; गंधबिलाव । **–मैथुन**–पु० साँड़ । **–मोदन**–पु० गंधक । **–मोहिनी**–स्त्री० चंपाकी कली । **–युक्ति**–स्त्री० गंधद्रव्य बनानेकी कला । **–रस**–पु० सुगंधसार; गुग्गुल । **–राज**–पु० मोगरा, बेला; चंदन; जवादि नामक गंधद्रव्य । **–राजी**–स्त्री० नखी नामक गंधद्रव्य । **–लता**–स्त्री० प्रियंगु लता । **–लुब्ध**–पु० भ्रमर । **–लोलुप**–पु० मक्खी, मच्छड़ । **–वणिक्(ज्)**–पु० गंधी, इत्रफरोश । **–वधू**–स्त्री० गंधपलाशी । **–वल्कल**–पु० दारचीनी । **–वल्लरी,–वल्ली**–स्त्री० सहदेई । **–वह**–पु० वायु । वि० गंध वहन करनेवाला । **–वहा**–स्त्री० नाक । **–वाह**–पु० वायु; कस्तूरी-मृग । **–वाहा, –वाही**–स्त्री० नाक । **–विह्वल**–पु० गेहूँ । **–वृक्ष**–पु० सालका पेड़ । **–वेणु**–पु० एक सुगंधित घास । **–व्याकुल**–पु० कंकोल वृक्ष । **–शालि**–पु० बासमती चावल । **–शुंडिनी**–स्त्री० छछूंदर । **–शेखर**–पु० कस्तूरी । **–सार**–पु० चंदन; मोगरा बेला । **–सुखी,–सूयी**–स्त्री० छछूंदर । **–सोम**–पु० कुमुद । **–हस्ती(स्तिन्)**–पु० गंधगज; वह हाथी जिसकी कनपटीसे मद बहता हो । **–हारिका**–स्त्री० गंधकारिका; स्वामिनीके पीछे-पीछे सुगंध लेकर चलनेवाली दासी ।

गंधक–पु० स्त्री०, (सं०) एक तीक्ष्ण गंधयुक्त पीतवर्ण खनिज पदार्थ जो दवा, बारूद आदि बनानेके काम आता है; शोभांजन; सुगंध । **–पेषिका**–स्त्री० गंधद्रव्य पीसनेवाली स्त्री । **–बटी**–स्त्री० एक प्रसिद्ध पाचक औषध (आ० वे०) ।

गंधकाम्ल–पु० (सं०) गंधकका तेजाब ।

गंधकी–वि० गंधकके रंगका । पु० गंधकी रंग । **–तेजाब**–पु० गंधकका तेजाब ।

गंधन–पु० दे० 'गंदना'; (सं०) गंधका प्रसार; एक चावल; अविराम प्रयत्न; वध; सोना; दोष-प्रदर्शन; संकेत, सूचना ।

गंधरब*–पु० दे० 'गंधर्व' ।

गंधरबिन*–स्त्री० गंधर्व स्त्री या गंधर्वकी स्त्री ।

गंधर्व–पु० (सं०) देवताओंका एक भेद जो देवलोकके गायक माने जाते हैं; गायक; कस्तूरीमृग; घोड़ा; जन्म-मरणके बीचकी अवस्थावाला जीव; सूर्य; कोकिल; एक हिंदू जाति जिसकी लड़कियाँ नाचने-गानेका पेशा करती हैं; एरंड; संत; एक ताल; एक मानस रोग या उन्माद । **–खंड**–पु० भारतवर्षके नौ भागोंमेंसे एक । **–ग्रह**–पु० गंधर्व रोग । **–तैल**–पु० एरंडका तेल । – **–नगर,–पुर**–पु० दृष्टिदोषसे आकाशमें दिखाई देनेवाला मिथ्या आभासरूप नगर, कल्पित नगर; महाभारतमें वर्णित मानसरोवरके पासका एक नगर । **–राज**–पु० गंधर्वोंका राजा चित्ररथ । **–रोग**–पु० एक प्रकारका साधारण उन्माद रोग । **–लोक**–पु० गुह्यक लोकके ऊपर और विद्याधर लोकके नीचे अवस्थित एक लोक । **–विद्या**–स्त्री० गानविद्या । **–विवाह**–पु० मनुस्मृतिमें जायज माने हुए आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक, वह विवाह जिसे वर-कन्या परस्पर प्रेमसे प्रेरित होकर माता-पिताकी अनुमति लिये बिना ही करें । **–वेद**–पु० चार उपवेदोंमेंसे एक, संगीत-शास्त्र । **–हस्त,–हस्तक**–पु० एरंड वृक्ष ।

गंधर्वा–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

गंधर्वास्त्र–पु० (सं०) एक दिव्यास्त्र ।

गंधर्विन–स्त्री० गंधर्वकी या गंधर्व जातिकी स्त्री ।

गंधर्वी–वि० गंधर्वका । स्त्री० (सं०) गंधर्वकी स्त्री; सुरभिकी पुत्री ।

गंधर्वोन्माद–पु० (सं०) दे० 'गंधर्वग्रह' ।

गंधवती–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; वरुणपुरी; व्यासकी माता; सुरा; बनमल्लिका; मुरा नामक गंधद्रव्य । वि०, स्त्री० गंधवाली ।

गँधाई*–पु० गंधी (चंदा०) ।

गंधाखु–पु० (सं०) छछूंदर ।

गंधाजीव–पु० (सं०) गंधी, इत्रफरोश ।

गंधाढ्य–वि० (सं०) खुशबूदार । पु० नारंगीका वृक्ष; चंदन; जवादि नामक गंधद्रव्य ।

गंधाढ्या–स्त्री० (सं०) गंधपत्रा, स्वर्णयूथी; रामतरुणी; आरामशीतला; गंधाली ।

गंधाधिक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

गंधाना†–अ० क्रि० महकना, दुर्गंध निकलना । पु० एक वृत्त ।

गंधाबिरोजा–पु० एक गोंद जिसका मरहम फोड़े आदिपर लगाते हैं ।

गंधाम्ला–स्त्री० (सं०) जंगली नीबू ।

गंधायित–वि० गंधयुक्त; सुवासित ।

गंधार–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद, कंधारके आसपासका देश; सप्तकका तीसरा स्वर; एक राग ।

गंधारी–स्त्री० दे० 'गांधारी' ।

गंधाला–स्त्री० (सं०) एक गंधयुक्त लता ।

गंधाली–स्त्री० (सं०) प्रसारिणी, गंधपसार; भिड़ ।

गंधालु–वि० (सं०) गंधयुक्त, खूशबूदार ।

गंधाशन–पु० (सं०) वायु ।

गंधाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) गंधक ।

गंधाष्टक–पु० (सं०) आठ गंधद्रव्योंका मिश्रण, अष्टगंध (भिन्न-भिन्न देवताओंके लिए यह योग भिन्न-भिन्न है) ।

गंधिक–वि० (सं०) गंधवाला । पु० इत्रफरोश; गंधक ।

गंधिनी–स्त्री० (सं०) मदिरा; एक गंधद्रव्य । वि०, स्त्री० गंधवाली ।

गंधिया–पु० दुर्गंध करनेवाला एक बरसाती कीड़ा; एक फनगा जो धान आदिकी फसलको नुकसान पहुँचाता है ।

गंधी(धिन्)–पु० (सं०) इत्रफरोश; खटमल; एक घास । वि० गंधवाला । **–(धि)पर्ण**–पु० गंधपर्ण ।

गंधीला*–वि० दुर्गंध करनेवाला, गंदा, मैला–'बहता पानी निर्मला, बँधा गँधीला होय'–साखी ।

गंधेंद्रिय–स्त्री० (सं०) घ्राणेंद्रिय, नाक ।

गंधेज–पु० एक तरहकी घास ।

गंधेल–पु० एक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ मसालेके और छाल, जड़ आदि दवाके काम आती हैं ।

गंधैला–पु० एक चिड़िया । † वि० दुर्गंध करनेवाला ।

गंधोत्कट–पु० (सं०) दौना; दमनक ।

गंधोत्तमा–स्त्री० (सं०) अंगूरी शराब ।

गंधोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) गंधी, इत्रफरोश ।

गंधोपल–पु० (सं०) गंधक ।

गंधोली–स्त्री० (सं०) भिड़; सोंठ; इंद्राणी ।

गंधोष्णीष–पु० (सं०) सिंह ।

गंधौतु–पु० (सं०) गंधबिलाव ।

गंध्य–पु० (सं०) सुगंधि; अच्छी गंधवाली वस्तु ।

गंभारिका, गंभारी–स्त्री० (सं०) एक पेड़ जिसकी छाल और फल दवाके काम आते हैं ।

गंभीर–वि० (सं०) गहरा; ऊँची और भारी (आवाज); मंद्र

(ध्वनि); गहन; गूढ़, दुर्बोध; सोच-विचारकर बोलने, काम करनेवाला; कम बोलने और हँसी-मजाकसे दूर रहनेवाला, संजीदा। पु० जंभीरी नीबू; कमल; एक राग। **–वेदी(दिन्)** –वि० अंकुशकी परवाह न करनेवाला, बार-बार अंकुश मारनेपर भी आदिष्ट कार्य न करनेवाला, हठीला (हाथी)।

गंभीरक–वि० (सं०) गहरा।

गंभीरा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

गंभीरिका–स्त्री० (सं०) एक नदी।

गँव–स्त्री० दे० 'गौँ'। **–हिँ***–अ० गाँसे, चुपकेसे।

गँवई–स्त्री० छोटा गाँव।

गँवर–'गँवार'का समासगत रूप। **–दल**–वि० गँवारों जैसा; भद्दा। **–मसला**–पु० गँवारोंकी उक्ति।

गँवाऊ–वि० गँवानेवाला, उड़ाऊ।

गँवाना–स० क्रि० खोना, नष्ट करना या हो जाने देना; (समय) काटना।

गँवार–वि० गाँवका रहनेवाला, देहाती; मूर्ख, अनाड़ी; उजड्ड। **–ता***–स्त्री० गँवारपन। **–का लट्ठ**–उजड्ड, बेशऊर।

गँवारिन–स्त्री० गँवार स्त्री।

गँवारी–वि० गँवारकी-सी, गँवारू। स्त्री० गँवार स्त्री।

गँवारू–वि० गँवारका-सा, बेढंगा; भोंड़ा।

गँवेली*–स्त्री० गँवार स्त्री।

गँवैयाँ†–पु० गँवार, देहाती 'गँवैयाँ फिरें नायँके मायँ'–बुंदेल०।

गंस*–पु०, स्त्री० दे० 'गाँस'।

गँसना*–स० क्रि० जकड़ना, कसना। अ० क्रि० कसा जाना; छा जाना।

गँसीला–वि० जिसमें गाँसी हो; चुभनेवाला; गँसा हुआ, गफ।

ग–पु० (सं०) गीत; गणेश, गुरु मात्रा; गंधर्व। वि० गमन करनेवाला; गानेवाला (समासके अंतमें व्यवहृत–'अध्वग' 'सामग', इ०)।

गइंद*–पु० दे० 'गयंद'।

गइनाही*–स्त्री० ज्ञान, जानकारी।

गई–वि०, स्त्री० ('गया'का स्त्री० रूप) जो चली गयी हो। **–बहोर***–वि० गयी, गँवायी हुई चीजको पुनः प्राप्त कराने, बिगड़ीको बनानेवाला। मु०**–करना**–तरह देना, खयाल न करना।

गऊ–स्त्री० गाय। वि० सीधा (ला०)–'ऐसो गऊ ससि प्यारो तऊ तुव आनन आगे न आदर पावै'–रघुनाथ। **–घाट**–पु० गायबैलोंके पानी पीनेके लिए बनाया हुआ ढालू, बिना सीढ़ियोंका घाट।

गकरियां–स्त्री० लिट्टी, बाटी।

गक्कर–पु० पंजाबके पश्चिमोत्तर भागमें रहनेवाली एक जाति।

गगन–पु० (सं०) आकाश, अंतरिक्ष; शून्य। **–कुसुम**–पु० आकाशकुसुम। **–गढ़***–पु० गगनस्पर्शी, बहुत ऊँचा महल। **–गति**–वि० आकाशचारी। पु० ग्रह; देवता। **–गिरा**–स्त्री० आकाशवाणी। **–चर**–वि० आकाशचारी। पु० पक्षी; शशिचक्र; राशिचक्र; नक्षत्र; देवता। **–चुंबी(बिन्)**–वि० आकाश छूनेवाला, बहुत ऊँचा। **–०भवन**–पु० (स्काई स्क्रेपर) बहुत ऊँचा मकान जो आकाशको छूता हुआ-सा जान पड़े, अभ्रंकष। **–धूलि**–स्त्री० केवड़ेके पेड़परकी धूल; एक तरहका कुकुरमुत्ता। **–ध्वज**–पु० बादल; सूर्य। **–पति**–पु० इंद्र। **–भेड़**–स्त्री० (हिं०) करांकुल नामक पक्षी। **–भेदी(दिन्)**–वि० आकाशका भेदन करनेवाला, बहुत ऊँचा, प्रचंड। **–रोमंथ**–पु० असंभव बात। **–वाटिका**–स्त्री० आकाशकी वाटिका, असंभव बात। **–विहारी-(रिन्)**–वि० आकाशमें विचरण करनेवाला। पु० प्रकाशपिंड; सूर्य; देवता। **–सिंधु**–स्त्री० आकाशगंगा। **–स्पर्शन**–पु० वायु, आठ मरुतोंमेंसे एक। **–स्पर्शी(र्शिन्)**–वि० दे० 'गगन-चुंबी'।

गगनांगना–स्त्री० (सं०) अप्सरा।

गगनांबु–पु० (सं०) वर्षाका जल।

गगनाध्वग–पु० (सं०) गगनचर; सूर्य; ग्रह; देवता।

गगनानंग–पु० (सं०) एक मात्रिक छंद।

गगनापगा–स्त्री० (सं०) आकाशगंगा।

गगनेचर–वि०, पु० (सं०) दे० 'गगनचर'।

गगनोल्मुक–पु० (सं०) मंगल ग्रह।

गगरा–पु० ताँबे, पीतल या लोहेका बना घड़ा, कलसा।

गगरिया*–स्त्री० दे० 'गगरी'।

गगरी–स्त्री० मिट्टीका घड़ा; छोटा गगरा, गर्गरी।

गगल–पु० (सं०) सर्पका विष।

गच–स्त्री० किसी नरम चीजमें कड़ी पैनी चीजके धँसने, घुसनेकी आवाज; पक्का फर्श; पक्की छत; छत बनानेका मसाला; संगजराहतका चूना। **–कारी**–स्त्री० पक्की छत या फर्श बनाना। **–गर**–पु० गच बनानेवाला। **–गीरी***–स्त्री० गचकारी।

गचना*–स० क्रि० गाँसना; ठूँसकर भरना।

गचपच–वि० दे० 'गिचपिच'।

गचाका–पु० गचसे गिरनेकी आवाज। स्त्री० जवान स्त्री। वि० भरपूर।

गच्छ–पु० (सं०) पेड़, गाछ; जैन साधुओंका मठ।

गच्छना*–अ० क्रि० जाना।

गछना*–अ० क्रि० जाना। स० क्रि० निबाहना; अपने ऊपर लेना; गूँथना–'...हरवा गछत भइल साँझ रे'–ग्रामगीत; बनाना।

गजंद, गजंदा*–पु० दे० 'गजेंद्र'।

ग़ज़ंद–पु० (फा०) सदमा; दुःख; चोट; कष्ट; हानि।

गज–पु० (सं०) हाथी; आठकी संख्या; लंबाईकी एक माप, ३० अंगुल; गजासुर; ८ दिग्गजोंमेंसे एक; नीवँ, पुश्ता। **–असन***–पु० दे० 'गजाशन'। **–कंद**–पु० एक वनौषधि, हस्तिकंद। **–कर्ण**–पु० एक यक्ष; † दाद, दद्रु। **–कर्णी**–स्त्री० एक वनौषधि। **–कुंभ**–पु० हाथीके मस्तकका उभरा हुआ भाग। **–कुसुम**–पु० नागकेसर। **–कूर्माशी(शिन्)**–पु० गरुड़। **–केसर**–पु० एक बढ़िया धान। **–क्रीडित**–पु० नृत्यका एक भाव। **–गति**–स्त्री० हाथीकी-सी मंद, गौरवभरी चाल; एक वर्णवृत्त; इस प्रकारकी चालवाली स्त्री। वि० गजगामी। **–गमन**–पु० हाथीकी-सी मंद चाल। **–गामिनी**–वि०, स्त्री० हाथीकी-सी मंद, गौरवभरी चालवाली। **–गाह***–पु० हाथीपर डाली जानेवाली झूल, पाखर। **–गौन***–पु० 'गजगमन'। **–गौनी***–वि०, स्त्री० दे० 'गजगामिनी'। **–गौहर**–पु० (हिं०) गजमोती। **–चर्म(र्मन्)**–पु० हाथीकी खाल; एक चर्मरोग। **–चिर्भटा,–चिर्भिटा**–स्त्री० इंद्रायन। **–चिर्भिट**–पु० एक तरहकी ककड़ी। **–च्छाया**–स्त्री० फलित ज्योतिषका एक योग जो श्राद्धके लिए प्रशस्त माना गया है। **–ढक्का**–स्त्री० हाथीपर रखकर बजाया जानेवाला बड़ा नगाड़ा। **–दंत**–पु० हाथीका दाँत; गणेश; कपड़े टाँगनेके लिए दीवारमें गाड़ी हुई खूँटी; एक तरहका घोड़ा; दाँतपर निकला हुआ दाँत; नृत्यका एक भाव। **–०फला**–स्त्री० चिचड़ा। **–दंती**–वि० (हिं०) हाथीदाँतका बना हुआ। **–दान**–पु० हाथीका दान; हाथीके गंडस्थलसे बहनेवाला मद। **–धर**–पु० स्थपति, मेमार। **–नक्र**–पु० गैंड़ा। **–नाल**–स्त्री० भारी तोप जिसे पहले हाथी खींचते थे। **–नासा**–स्त्री० हाथीकी सूँड़। **–निमीलिका**–स्त्री० न देखनेका बहाना; लापरवाही। **–पति**–पु० हाथी रखनेवाला; विशालकाय, गल्लेका सरदार हाथी; विजयनगरके राजाओंकी उपाधि। **–पादप**–पु० बेलिया पीपल। **–पाल**–पु० हाथीवान, महावत। **–पिप्पली**–स्त्री० गजपीपल। **–पीपर,–पीपल**–स्त्री० (हिं०) एक पौधा जिसकी मंजरी दवाके काम आती है। **–पुंगव**–पु० बड़ा हाथी। **–पुट**–पु० धातुको फूँककर रस बनानेके लिए बनाया हुआ नियत मानका गढ़ा; उस गढ़ेमें रखकर धातु आदिको फूँकना। **–पुर**–पु० हस्तिनापुर। **–पुष्पी**–स्त्री० नागदौन। **–प्रिया**–स्त्री० शल्लकी, चीड़। **–बंध**–पु० चित्रकाव्यका एक भेद। **–बंधन**–पु० हाथी बाँधनेका खूँटा। **–बंधनी,–बंधिनी**–स्त्री० हाथियोंका अस्तबल, हस्तिशाला। **–बदन***–पु० गणेश। **–बाँक,–बाग**–पु० (हिं०) हाथीका अंकुश। **–बेली**–स्त्री० (हिं०) एक तरहका फौलाद, कांतसार। **–भक्षक**–पु० पीपलका पेड़। **–भक्षा,–भक्ष्या**–स्त्री० शल्लकी, चीड़। **–मणि**–पु० गजमुक्ता। **–मद**–पु० गजदान। **–माचल,–मोटन**–पु० सिंह। **–मुक्ता**–स्त्री० कविसमय-सिद्ध मोती जिसका हाथीके मस्तकसे निकलना माना जाता है। **–मुख,–वक्त्र,–वदन**–पु० गणेश। **–मोचन**

–पु० विष्णुका एक रूप । **–मोती**–पु० (हिं०) गजमुक्ता । **–मौक्तिक**–पु० गजमुक्ता । **–यूथ**–पु० हाथियोंका झुंड । **–रथ**–पु० विशाल रथ जिसे हाथी खींचते थे । **–राज**–पु० बहुत बड़ा हाथी, गजेंद्र । **–लील**–पु० एक ताल । **–वल्लभा**–स्त्री० गिरिकदली । **–विलसिता**–स्त्री० एक वृत्त । **–वीथी**–स्त्री० रोहिणी, मृगशिरा और आर्द्रा नक्षत्रोंका समूह । **–व्रज**–पु० हाथियोंकी सेना । **–शाला**–स्त्री० फीलखाना । **–शिक्षा**–स्त्री० हाथियोंको सिखाने, साधनेकी विद्या, हस्तिशास्त्र । **–साह्वय**–पु० हस्तिनापुर । **–स्नान**–पु० हाथीका नहाना; निरर्थक कार्य (हाथी नहानेके बाद कीचड़, धूल देहपर डाल लेता है) ।

गज़–पु० (फा०) लंबाईका एक मान, १६ गिरह, ३६ इंच; सारंगी आदि बजानेकी कमानी; लोहेका छड़ या छड़ जैसी लकड़ी जिससे बंदूक भरी जाती है; एक तरहका तीर; घोड़ियाके ऊपर रखी जानेवाली लकड़ीकी पटरी । **–इलाही**–पु० अकबरी गज जो ४१ इंचका होता है ।

गज़क–पु० (फा०) वह चटपटी चीज जो शराबके साथ या शराब पीनेके बाद तुरत खायी जाय, चाट, खजिका; तिलशकरी, तिल पपड़ी, तिलकुट; कलेवा ।

गज़ट–पु० (अं०) सरकारी अखबार, वह सामयिक पत्र जिसमें सरकारी सूचनाएँ प्रकाशित हों; समाचारपत्र (अखबारोंके नाममें), 'गैज़ेट' । मु०**–होना**–किसी सूचना या वृत्तका गजटमें छप जाना ।

गजता–स्त्री० (सं०) हाथियोंका झुंड ।

ग़ज़नवी–पु० (फा०) गजनीका रहनेवाला; एक तुर्क राजवंश जिसमें प्रसिद्ध विजेता महमूद गजनवी हुआ ।

गजना*–अ० क्रि० गर्जन करना ।

ग़ज़नी–पु० (फा०) अफगानिस्तानका एक नगर जो महमूदकी राजधानी था ।

ग़ज़ब–पु० (अ०) क्रोध, कोप; विपत्, आफत; अंधेर, जुल्म । **–इलाही**–पु० ईश्वरीय कोप, दैवकोप । **–नाक**–वि० अतिक्रुद्ध, कुपित । **–का**–अतिशय, बेहद; बहुत बड़ा; अद्भुत, विलक्षण । **–ख़ुदाका**–ईश्वरका कोप । मु०**–टूटना,–पड़ना**–अचानक भारी विपत्ति आ पड़ना । **–ढाना**–आफत करना, जुल्म करना, भारी अनर्थ करना ।

गजबीला*–वि० गजब करने, गजब ढानेवाला ।

गजर–पु० पहर-पहरपर बजनेवाला घंटा; भोरका घंटा; जगानेकी घंटी; चार, आठ, बारह बजनेपर उतनी ही बार जल्द-जल्द बजनेवाला शब्द; लाल और सफेद मिला हुआ गेहूँ । **–दम**–अ० तड़के, पौ फटते । **–बजर**–पु० अंडबंड; भक्ष्याभक्ष्य ।

गजरभत्ता, गजरभात–पु० गाजरके साथ पकाया हुआ भात ।

गजरा–पु० फूलोंकी माला; हार; कलाईपर पहननेका एक गहना; एक रेशमी कपड़ा; गाजरका पत्ता ।

गजरी–स्त्री० कलाईपर पहननेका एक गहना; छोटी गाजर ।

गजरौट–स्त्री० गाजरकी पत्ती ।

ग़जल–स्त्री० (अ०) फारसी-उर्दूमें मुक्तक काव्यका एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है । **–गो**–वि० गजल रचने, बनानेवाला ।

गजवान्(वत्)–पु० (सं०) महावत ।

गजही†–स्त्री० वह मथानी जिससे कच्चा दूध मथकर मक्खन निकालते हैं ।

गजा*–पु० नगाड़ा बजानेका डंडा; एक बँगला मिठाई ।

गजाख्या–स्त्री० (सं०) चक्रमर्द नामक पौधा ।

गजाजीव–पु० (सं०) हाथीवान्, महावत ।

गजाधर†–पु० दे० 'गदाधर' । (केवल व्यक्तियोंके नाममें व्यवहृत) ।

गजानन–पु० (सं०) गणेश ।

गजायुर्वेद–पु० (सं०) हस्ति-चिकित्सा-शास्त्र ।

गजारि–पु० (सं०) शिव; सिंह; एक वृक्ष ।

गजारोह–पु० (सं०) महावत ।

गजाशन–पु० (सं०) पीपलका पेड़; कमलकी जड़ ।

गजासुर–पु० (सं०) एक दैत्य जो शिवके हाथों मारा गया ।

गजास्य–पु० (सं०) गणेश ।

गजाह्व–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली ।

गजिया†–स्त्री० बिटाईका एक औजार ।

गजी–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

गजी(जिन्)–वि०, पु० (सं०) गजारोही ।

गज़ी–पु० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गाढ़ा । **–गाढ़ा**–पु० मोटा, सस्ता कपड़ा ।

गजेंद्र–पु० (सं०) बड़ा हाथी, गजराज; ऐरावत; इंद्रद्युम्न नामक राजा जो अगस्त्यके शापसे हाथी हो गया और ग्राहग्रस्त होनेपर भगवान्को याद कर शापमुक्त हुआ ।

गजेष्टा–स्त्री० (सं०) विदारी कंद ।

गजोषणा–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली ।

गज्जूह*–पु० हाथियोंका झुंड, गज़यूथ ।

गझिन†–वि० घना, गाढ़ा ।

गट–स्त्री० किसी तरल पदार्थको निगलने या घोंटनेमें होनेवाली आवाज । **–गट**–अ० 'गट-गट'की आवाजके साथ; जल्दी-जल्दी; लगातार (पीना, निगलना) । स्त्री० 'गट-गट'की आवाज ।

गटई†–स्त्री० गला, गरदन ।

गटकना–स० क्रि० निगलना, उदरस्थ करना; हड़पना ।

गटकौला–वि० निगल जानेवाला, खा जानेवाला ।

गटना*–अ० क्रि० बँधना, जकड़ जाना ।

गटपट–स्त्री० दो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियोंका बिलकुल मिल-जुल जाना; सहवास ।

गटरमाला–स्त्री० बड़े दानोंकी माला ।

गटा†–पु० नेत्रगोलक, डेला ।

गटागट–अ० दे० 'गटगट' ।

गटापारचा–पु० एक तरहका गोंद जो रबरकी तरह कड़ा करके विभिन्न वस्तुएँ तैयार करनेमें प्रयुक्त होता है ।

गटी–स्त्री० गाँठ; समूह; * गठरी–'अघ ओघकी बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान-गटी'–राम० ।

गट्ट–पु० दे० 'गट' ।

गट्टा–पु० कलाई; घुट्टी, टखना; नैचेकी गाँठ जो फरशीके मुँहपर रहती है; गाँठ; बीज (कमलगट्टा); चीनी या गुड़की एक तरहकी मिठाई ।

गट्ठर–पु० बड़ी गठरी, गट्ठा । मु०**–साधना**–तैराकका गठरी बाँधकर ऊँचाईसे कूदना ।

गट्ठा–पु० बड़ी गठरी, गट्ठर; घास, लकड़ी आदिका बोझा; प्याज इत्यादिकी गाँठ; कट्ठा ।

गट्ठी–स्त्री० गाँठ ।

गठ–स्त्री० दे० 'गँठ' ।

गठन–स्त्री०, पु० बनावट, रचना; अंगोंका कसाव, दृढ़ता ।

गठना–अ० क्रि० जुड़ना; गाँठा जाना; सिला जाना, टाँका भरा जाना; ठीक तौरसे बनना; कसा हुआ, दृढ़ होना; अधिक हेल-मेल होना; किसी षड्यंत्रमें सम्मिलित होना; स्त्री-पुरुषका संयोग होना ।

गठरी–स्त्री० कपड़ेमें बँधा हुआ सामान, बुकचा; बोझ; संचित धन, जमा; बड़ी रकम; तैराकीमें घुटनोंको छातीसे लगाने और दोनों हाथोंसे बाँध देनेकी मुद्रा । **–मुटरी**–स्त्री० गठरीमें बँधा हुआ सामान, यात्रीका सामान । मु०**–कटना**–भारी रकम हाथसे निकल जाना, खर्च होना । **–बाँधना**–सफरकी तैयारी करना । **–मारना**–दूसरेका धन हड़प, हथिया लेना ।

गठरेवाँ†–पु० चौपायोंका एक रोग ।

गठवाँसी–स्त्री० कट्ठे (या बिस्वे)का २०वाँ भाग, बिस्वांसी ।

गठवाई–स्त्री० (जूता) गाँठनेकी उजरत ।

गठवाना, गठाना–स० क्रि० 'गाँठना'का प्रे० ।

गठा*–पु० दे० 'गट्ठा' ।

गठाव–पु० गठन ।

गठित–वि० ग्रथित, गठा हुआ, बना हुआ ।

गठिबंध*–पु० दे० 'गँठबंधन' ।

गठिया–पु० बैल आदिपर अनाज आदि लादनेका दुहरा थैला या

बोरा, खुरजी; छोटी गठरी; एक वातरोग, संधिवात।

गठियाना†–स० क्रि० गाँठ देना; गाँठमें बाँधना।

गठिवन–पु० एक पेड़ जिसकी कलियाँ दवाके काम आती हैं, ग्रंथिपर्णी।

गठीला–वि० गठा हुआ, कसा हुआ, दृढ़।

गठुआ, गठुवा†–पु० भूसेकी गाँठ।

गठौंद–स्त्री० गाँठकी बँधाई; धरोहर।

गठौत, गठौती–स्त्री० मेलजोल, दोस्ती; अभिसंधि।

गडंक, गडंग–पु० शस्त्रागार। पु० घमंड, डींग।

गड़ंत–स्त्री० टोटकेके लिए गाड़ी गयी वस्तु।

गड–पु० (सं०) ओट, घेरा; टीला; अंतर; व्यवधान; खाई; एक मछली; मालवाका एक भाग। **–देशज,–लवण**–पु० साँभर नमक।

गडक–पु० (सं०) एक मछली।

गड़कना*–अ० क्रि० 'गड़-गड़' शब्द करना; गर्क होना, डूबना।

गड़गंज–पु० दे० 'गरगज'।

गड़गड़ा–पु० एक तरहका हुक्का, बड़ी गुड़गुड़ी।

गड़गड़ाना–अ० क्रि० 'गड़-गड़' शब्द होना, गरजना (बादलका)। स० क्रि० 'गड़-गड़' शब्द उत्पन्न करना; हुक्का पीना।

गड़गड़ाहट–स्त्री० गड़गड़ाने, बादल गरजने आदिकी आवाज; हुक्केकी आवाज।

गड़गड़ी–स्त्री० नगाड़ा; डुगडुगी।

गड़गूदड़–पु० चीथड़ा।

गड़दार–पु० मतवाले हाथीके साथ भाला लेकर चलनेवाला; महावत।

गड़ना–अ० क्रि० चुभना, धँसना; चुभनेकी पीड़ा होना; घुसना, समाना; जमना, ठहरना, स्थिर होना; गाड़ा जाना, दफन होना; (झंडा आदि) खड़ा किया जाना। मु० **गड़ जाना**–लज्जासे सिर झुक जाना, अत्यधिक लज्जा अनुभव करना। **गड़ा धन या माल**–धरतीमें गाड़कर रखा हुआ धन, दफीना। **गड़ा मुर्दा या गड़े मुर्दे उखाड़ना**–पुरानी भूली हुई (अप्रिय) बातोंकी चर्चा करना, याद दिलाना।

गड़पंख–पु० किसीको पक्षी बनाकर बैठानेका लड़कोंका एक खेल; एक पक्षी।

गड़प–स्त्री० पानी, दलदलमें किसी चीजके जल्दीसे धँसने, डूबनेका शब्द; बिना चबाये झटकेसे निगलनेकी क्रिया। **–से**–'गड़प' आवाजके साथ; झट, तुरंत। मु०**–होना**–डूब जाना, धँस जाना।

गड़पना–स० क्रि० निगलना, गपकना।

गड़प्पा–पु० भारी गड्ढा, दलदल, पाल जिसमें चीज, आदमी धँस, डूब जाय; धोखेकी जगह (ला०)।

गड़बड़–वि० गड्ड-बड्ड, अस्त-व्यस्त। स्त्री० अव्यवस्था, गोलमाल; बद-अमली, उपद्रव; खराबी; रोगादिका प्रकोप। **–झाला**–पु० गोलमाल, अव्यवस्था, झमेला।

गड़बड़ा–पु० वह गड्ढा जिसका मुंह ऊपरसे घास आदि रखकर छिपा दिया गया हो।

गड़बड़ाध्याय–पु० गोलमाल, गड़बड़झाला।

गड़बड़ाना–अ० क्रि० गड़बड़ होना। स० क्रि० गड़बड़ करना।

गड़बड़िया–वि० गड़बड़ करनेवाला, अव्यवस्था उत्पन्न करनेवाला।

गडबड़ी–स्त्री० दे० 'गड़बड़'।

गडयंत, गडयित्नु–पु० (सं०) बादल।

गड़रिया–पु० एक हिंदू जाति जो भेड़ें पालती है।

गड़वांत–स्त्री० पहियेकी लीक।

गड़वाना–स० क्रि० 'गाड़ना'का प्रे०।

गड़हरी†–स्त्री० लात।

गड़हा–पु० दे० 'गड्ढा'।

गड़ही–स्त्री० छोटा गड्ढा।

गड़ा–पु० कटी हुई फसलका ढेर, गाँज, राशि। **–बटाई**–स्त्री० खेतकी उपजका बिना माँड़े हुए बाँटा जाना।

गड़ाकू–स्त्री० एक तरहकी मछली।

गड़ाना–स० क्रि० चुभाना, धँसाना; दे० 'गड़वाना'।

गड़ाप–पु० दे० 'गड़प'।

गड़ापा, गड़ाप्पा–पु० दे० 'गड़प्पा'।

गड़ायत*–वि० गड़ने, चुभनेवाला।

गड़ारी–स्त्री० वृत्त, घेरा; आड़ी लकीर; घिरनी, गोल चरखी; घिरनीके बीचका गड्ढा; एक घास। **–दार**–वि० आड़ी-धारियों-वाला, घेरदार; जिसमें गड़ारी जैसा गड्ढा हो।

गड़ावन–पु० एक तरहका नमक।

गड़ासा–पु० दे० 'गँड़ासा'।

गडि–पु० (सं०) बछड़ा; अड़ियल, गरियार बैल।

गड़ियार–वि० दे० 'गरियार'।

गडु–पु० (सं०) कूबड़; गलगंड, घेघा; गड़ुआ; बरछी; निरर्थक वस्तु; कूबड़वाला आदमी; केंचुवा। वि० कूबड़वाला।

गड़ुआ, गड़वा–पु० टोटीदार लोटा; झारी, गड्डुक; फूलका लोटा।

गडुई–स्त्री० छोटा गड़ुवा।

गडुक–पु० (सं०) गड़ुआ; अँगूठी।

गडुर, गडुल–वि० (सं०) कुबड़ा।

गडुरी–स्त्री० एक पक्षी।

गड़ुलना,–पु० बच्चोंको घुमानेकी छोटी गाड़ी।

गडेर–पु० (सं०) बादल।

गड़ेरदार–वि० घेरदार।

गड़ेरन, गड़ेरिन–स्त्री० गड़रिया स्त्री।

गड़ेरिया–पु० दे० 'गड़रिया'।

गड़ेरुआ†–पु० चौपायोंका एक रोग।

गड़ोना–स० क्रि० चुभाना, धँसाना।

गडोल–पु० (सं०) ग्रास; कच्ची चीनी।

गडोलना–पु० बच्चोंको घुमाने-फिरानेकी छोटी गाड़ी।

गड़ौना–पु० एक तरहका पान; * काँटा।

गड्ड–पु० एकपर एक रखी हुई चीजोंकी राशि; ताशके पत्तों, कागज आदिका ढेर; * गड्ढा। **–बड्ड,–मड्ड**–वि० बिना किसी क्रम-नियमके मिला हुआ, खल्त-मल्त। **–का गड्ड**–ढेरका ढेर, बहुत ज्यादा।

गड्डमगड्डा–वि० अनाप-सनाप मिला हुआ 'गड्डमगड्डा दै करो, तनु तनु सबको होय'।

गड्डमगोल–पु० गड़बड़झाला।

गड्डुर, गड्डुल–पु० (सं०) भेड़, मेष।

गड्डुरिक–पु० गडेरिया।

गड्डुरिका, गड्डुलिका–स्त्री० (सं०) भेड़ोंकी पाँत; अविच्छिन्न प्रवाह। **–प्रवाह**–पु० भेड़ियाधसान, अंधानुसरण।

गड्डामी–वि० पाजी, लुच्चा; नारकीय (गाड् डैम यी–ईश्वर तुझे नरक दे)। **–जूता**–पु० अंग्रेजी जूता, बूट। **–बोली**–स्त्री० अंग्रेजी, गोरोंकी बोली।

गड्डी–स्त्री० छोटा गड्ड, ढेर; नोटों, ताशके पत्तों, सोने-चाँदीके वरकों आदिका एकपर एक जमाकर रखा हुआ ढेर।

गड्डुक, गड्डूक–पु० (सं०) जलपात्र-विशेष, गड़ुवा।

गड्ढा–पु० गढ़ा, गर्त; पेट (ला०)।

गढ़ंत–वि० गढ़ा हुआ, कल्पित। स्त्री० गढ़ी हुई बात।

गढ़–पु० कोट, किला; अड्डा, केंद्र; खाई। **–कप्तान**–पु० किलेदार। **–पति,–पाल**–पु० गढ़का प्रधान अधिकारी, किलेदार। **–वार***–पु० गढ़वाल। **–वाल**–पु० गढ़पति; उत्तराखंडका एक प्रदेश। मु०**–जीतना,–तोड़ना**–किला फतह करना; कठिन, बड़ा काम करना।

गढ़त–स्त्री० गठन; बनावट।

गढ़न–स्त्री० बनावट, आकृति; गठन।

गढ़ना–स० क्रि० किसी चीज, उपादानभूत पदार्थसे औजारोंकी सहायतासे कुछ बनाना, रचना, निर्माण करना; काट-छाँट या ठोक-पीटकर सुडौल करना; कल्पना करना, मनसे उपजाना; पीटना, मरम्मत करना (ग्रा०)।

गढ़वाना–स० क्रि० गढ़ाना।

गढ़ा–पु० जमीनमें खोदकर बनाया हुआ या प्रकृति-निर्मित छेद, गर्त, गार; दबी, धँसी हुई जगह; पेट (ला०)। मु० (किसीके लिए)

–खोदना–किसीकी बुराईका, किसीको नुकसान पहुँचानेका, उपाय करना। **–भरना**–घाटा पूरा होना; पेट भरना। **–(ढ़े) में गिरना**–विपद्‌में फँसना; पतन होना।

गढ़ाई–स्त्री० गढ़नेका काम; गढ़नेकी उजरत।

गढ़ाना–स० क्रि० गढ़वाना, वनवाना। अ० क्रि० खलना; कष्टकर होना।

गढ़ास*–स्त्री० गढ़न–'मान-मवास गढ़ासकी घाटी' –घन०।

गढ़ासी*–वि०, पु० विद्रोही, विप्लवी–'बाँधि लिये कुलनेम गढ़ासी'–घन०।

गढ़िया–पु० गढ़नेवाला।

गढ़ी–स्त्री० छोटा गढ़, किला; किले जैसा बड़ा और मजबूत मकान; छोटा गढ़ा।

गढ़ीश, गढ़ीस*–पु० गढ़पति, किलेदार।

गढ़या–पु० गढ़नेवाला। स्त्री० गड़ही, छोटा तालाव।

गढ़ोई*–पु० गढ़पति।

गण–पु० (सं०) समूह; गरोह; वर्ग, श्रेणी; जाति; समान उद्देश्यवाले मनुष्योंका समूह, संघ; अनुचर या अनुयायिवर्ग; अक्षौहिणीका एक विभाग–२७ रथ, २७ हाथी, ८१ घोड़े और १३५ पैदल; छंदःशास्त्रमें तीन वर्णोंका समूह (भगण, यगण आदि); संख्या; समान लोप, आगम आदिवाले शब्दों, धातुओंका वर्ग (व्या०); शिवके सेवकोंका समुदाय; प्रमथ; सेवक, अनुचर; पक्षपोषक; नक्षत्रोंकी तीन कोटियोंमेंसे एक; गणेश। **–कर्णिका**–स्त्री० इंद्रवारुणी। **–कार**–पु० वर्गीकरण करनेवाला; भीमसेन। **–तंत्र**–पु० शासनका एक प्रकार जिसमें शासनका कार्य चुने हुए प्रतिनिधियोंके द्वारा होता है। **–०दिवस**–पु० गणतंत्र स्थापित होनेके स्मारकरूपमें माना जानेवाला दिन या उस संबंधमें होनेवाला समारोह (२६ जनवरी, भारत)। **–०वादी**–पु० (रिपब्लिकन) गणतंत्रके सिद्धांतोंका प्रतिपादन, अनुसरण या समर्थन करनेवाला; संयुक्त राष्ट्र, अमेरिकाका एक राजनीतिक दल जो व्यापारिक संरक्षण एवं केंद्रीय शक्तिके विस्तारका समर्थक माना जाता है। **–दीक्षा**–स्त्री० बहुतोंकी एक साथ, सामूहिक दीक्षा। **–दीक्षी(क्षिन्)**–वि०, पु० बहुतोंको एक साथ दीक्षा देने, साथ यज्ञ करानेवाला; गणेशकी दीक्षा लेनेवाला। **–देवता**–पु० संघभूत, समूहमें रहने, बिचरनेवाले देवता (आदित्य, वसु, रुद्र, मरुत् आदि)। **–द्रव्य**–पु० पंचायती धन, माल। **–धर**–पु० किसी वर्ग या समूहका मुखिया; जैन आचार्योंका एक वर्ग। **–नाथ, –नायक**–पु० गणस्वामी; गणेश; शिव। **–नायिका**–स्त्री० दुर्गा। **–प**–पु० गणेश। **–पति**–पु० गणस्वामी; गणेश; शिव। **–पर्वत**–पु० कैलास। **–पाठ**–पु० एक ही नियमके अंतर्गत आनेवाले शब्दोंका समूह। **–पीठक**–पु० सीना, वक्ष। **–पुंगव,–**पु० जातिका मुखिया। **–पूर्ति**–स्त्री० (कोरम) सदस्योंकी वह अल्पतम निर्धारित संख्या जो किसी सभाका कार्य संचालित करनेके लिए आवश्यक मानी गयी हो। **–भोजन**–पु० बहुतोंका एक साथ बैठकर खाना, सहभोज। **–मुख्य**–पु० 'गणपुंगव'। **–यज्ञ**–पु० सामूहिक यज्ञ। **–राज्य**–पु० वह राज्य जिसमें शासन चुने हुए मुखियोंके द्वारा होता हो; दक्षिणका एक राज्य। **–रूप**–पु० अकवन। **–वेश**–पु० वरदी, दिपरिधान। **–हास,–हासक**–पु० एक गंधद्रव्य।

गणक–पु० (सं०) गणना करनेवाला, ज्योतिषी; (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

गणकी–स्त्री० (सं०) ज्योतिषीकी पत्नी।

गणन–पु० (सं०) गिनना; हिसाब करना; मानना, समझना।

गणनक–पु० (टैबुलेटर) चुनावमें प्राप्त मतों या परीक्षामें प्राप्त अंकोंको क्रमसे रखकर जोड़नेवाला व्यक्ति या यंत्र।

गणना–स्त्री० (सं०) गिनना; गिनती; हिसाब, लेखा; लिहाज। **–पति**–पु० अंकशास्त्री; गणेश। **–महामात्र**–पु० अर्थमंत्री।

गणनाध्यक्ष–पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

गणनीय–वि० (सं०) गिननेलायक; मान्य; लिहाज करने योग्य।

गणाग्रणी–पु० (सं०) गणेश।

गणाचल–पु० (सं०) कैलास।

गणाधिप, गणाधिपति, गणाध्यक्ष–पु० (सं०) गणस्वामी; सेनानायक; गणेश; शिव।

गणान्न–पु० (सं०) बहुतसे व्यक्तियोंके लिए एक साथ बना हुआ भोजन।

गणि–स्त्री० (सं०) गणना।

गणिका–स्त्री० (सं०) वेश्या; धनके लोभसे नायकसे प्रेम करनेवाली नायिका; गनियारीका पेड़; हथिनी; एक फूल जो चमेलीसे मिलता है। **–दारिका**–स्त्री० वह लड़की जिसे वेश्या गाना, नृत्य सिखाकर वेश्यावृत्तिके लिए तैयार करती है।

गणिकारिका, गणिकारी–स्त्री० (सं०) गनियारी, छोटी अरनी।

गणित–पु० (सं०) संख्या, अवकाश, मात्रा आदिका विचार करनेवाला शास्त्र, अंकशास्त्र (मैथेमैटिक्स) हिसाव। वि० गिना हुआ; जोड़ा हुआ। **–ज्ञ**–वि० गणितशास्त्री, ज्योतिषी। **–विक्रय**–पु० चीजोंको गिनतीके हिसाबसे बेचना (कौ०)। **–विद्या**–स्त्री० अंकशास्त्र, इल्मेहिसाव।

गणेरु–पु० (सं०) कर्णिकार वृक्ष। स्त्री० वेश्या; हथिनी।

गणेरुक–पु० (सं०) दे० 'गणेरु'।

गणेरुका–स्त्री० (सं०) कुटनी; हथिनी।

गणेश–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध हिंदू देवता जो शिव-पार्वतीके पुत्र माने जाते हैं और पंचदेवोंमें परिगणित हैं; शिव; गणनायक। **–कुसुम**–पु० लाल कनेर। **–क्रिया**–स्त्री० गुदाका मल साफ करनेकी एक योगक्रिया। **–खंड**–पु० स्कंदपुराणका एक खंड जिसमें गणेशकी उत्पत्ति आदि बतायी गयी है। **–चतुर्थी**–स्त्री० किसी भी मासकी विशेषकर भाद्रपद और माघकी कृष्णा चतुर्थी जिस दिन गणेशका व्रत रखा और पूजन किया जाता है। **–चौथ**–स्त्री० (हिं०) दे० 'गणेश-चतुर्थी'। **–पुराण**–पु० गणेशकी उत्पत्ति, महिमा आदिका वर्णन करनेवाला एक उपपुराण। **–भूषण**–पु० सिंदूर। **–संहिता**–स्त्री० गाणपत्य संप्रदायका एक उपपुराण।

गण्य–वि० (सं०) गणनीय। **–मान्य**–वि० सम्मानित।

गत–वि० (सं०) गया हुआ; बीता हुआ; पिछला (गत सप्ताह, मास); मृत; पहुँचा हुआ, प्राप्त; स्थित; ...से संबद्ध; रहित; ज्ञात। **–कल्मप**–वि० पाप-दोपसे मुक्त। **–काल**–पु० बीता हुआ समय। **–कुल**–वि० लावारिस (माल, जायदाद)। **–क्लम**–वि० जिसकी थकावट दूर हो गयी हो। **–चेतन**–वि० नष्टचेतन, बेहोश। **–जीव**–वि० मृत। **–तोयद**–वि० बादलोंसे रहित। **–त्रप**–वि० लज्जा या भयसे मुक्त। **–दिन,–दिवस**–पु० बीता हुआ दिन। अ० कल। **–पार**–वि० चरम सीमापर पहुँचा हुआ। **–प्रत्यागत**–वि० जाकर लौटा हुआ। पु० तालका एक भेद (संगीत)। **–प्रत्यागता**–स्त्री० वह स्त्री जो पतिकी अनुमतिके विना घरसे चली जाय और कुछ दिन बाद फिर लौट आये। **–प्राण**–वि० मृत, बेजान। **–प्राय**–वि० गया, बीता हुआ-सा। **–भर्तृका**–स्त्री० विधवा। **–रस**–वि० जिसका रस, स्वाद चला गया हो। **–लक्ष्मीक**–वि० भाग्यहीन; घाटा उठानेवाला। **–लज्ज**–वि० निर्लज्ज। **–वयस्क,–वया(यस्)**–वि० अधिक अवस्थाका। **–व्यथ**–वि० पीड़ासे मुक्त। **–शैशव**–वि० आठ वर्षसे अधिक अवस्थाका। **–संग**–वि० अनासक्त, फलकामनारहित। **–सत्त्व**–वि० मुर्दा, बेजान; सत्त्वरहित। **–सौहृद**–वि० मैत्रीसे रहित; उदासीन। **–स्पृह**–वि० जिसे कोई चाह, इच्छा न हो।

गत–स्त्री० गति, हालत; बुरी गति; ढंग; रूप; सितार आदिपर बजाया जानेवाला रागका 'सरगम'; नृत्यमें विशेष अंगचेष्टा। मु०–**का**–ठिकानेका, अच्छा। **–बजाना**–सितार आदिपर रागका 'सरगम' बजाना। **–बनाना**–दुर्दशा करना; शक्ल बिगाड़ देना; खूब मरम्मत करना।

गतक–पु० (सं०) गमन, गति।

गतका–पु० लकड़ीका डेढ़-दो हाथ लंबा, चमड़ा चढ़ा, मुठियादार डंडा जिससे एक खास खेल खेला जाता है; गतका-फरीका खेल जो लाठी लड़नेसे मिलता-जुलता है।

गतांक–पु० (सं०) पिछला अंक, संख्या (सामयिक पत्र आदिकी)।

वि० गया-बीता ।

गतांत–वि० (सं०) जिसका अंत आ गया हो ।

गताक्ष–वि० (सं०) अंधा ।

गतागत–पु० (सं०) जाना-आना; जन्म-मरण । वि० आया-गया; आने-जानेवाला ।

गतागति–स्त्री० (सं०) मरना और फिर जन्म लेना ।

गताधि–वि० (सं०) निश्चिंत, चिंताविहीन ('तुमुल') ।

गतानुगत–पु० (सं०) प्रथाका अनुसरण ।

गतानुगतिक–वि० (सं०) आँख मूँदकर दूसरोंके पीछे चलनेवाला, अंधानुयायी; जो कुछ कहा या किया गया है, उसीका अनुसरण करनेवाला नकलची ।

गतानुगतिकता–स्त्री० (सं०) आँख मूँदकर किसीके पीछे चलने, अंधानुसरण,–की प्रवृत्ति ।

गतायात–पु० (सं०) जाना और आना ।

गतायु(स्)–वि० (सं०) जिसकी आयु समाप्त हो चली हो; कमजोर; बेजान ।

गतार, गतारि†–स्त्री० बोझ बाँधनेकी रस्सी; जूएसे बैलकी गरदन बाँधनेकी रस्सी ।

गतार्तवा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो ऋतुमती न होती हो, बुढ़िया ।

गतार्थ–वि० (सं०) अर्थहीन; समझा हुआ; निर्धन ।

गतालोक–वि० (सं०) आलोकरहित, महत्त्वहीन ।

गतासु–वि० (सं०) मृत ।

गति–स्त्री० (सं०) जाना, गमन; चाल, रफ्तार; हरकत; लीला; पहुँच, प्रवेश; जाने-पहुँचनेकी सामर्थ्यकी सीमा; दशा, हालत; स्थिति; रूप-रंग; मृत्युके बाद जीवात्माकी भली-बुरी दशा; सद्गति; मार्ग; ग्रहोंकी चाल; नासूर; ज्ञान; उपाय; अवलंब, सहारा ('अब मोहि शंभुचाप गति तोरी'–राम०); साधन; प्रवाह; नृत्य; पैंतरा; दे० 'गत' । **–भंग,–भेद**–पु० छंद, गान आदिमें पढ़ने, गानेकी लयका टूट जाना । **–रोध**–पु० दे० 'गत्यवरोध' । **–विज्ञान**–पु०,**–विद्या**–स्त्री०– विज्ञानका वह विभाग जिसमें द्रव्यादिकी गति और शक्ति-संबंधी सिद्धांतोंका निर्धारण किया जाता है, 'डायनैमिक्स' । **–विधि**–स्त्री० चेष्टा, हरकत; कार्य (क्व०) । **–शास्त्र**–पु०दे० 'गतिविज्ञान' । **–शील**–वि० गतिमान् । **–हीन**–वि० असहाय, परित्यक्त; गतिरहित ।

गतिक–पु० (सं०) गमन, चाल; मार्ग; अवस्था; आश्रय ।

गतिज ऊर्जा–स्त्री० (काइनेटिक इनर्जी) गतिके कारण उत्पन्न हुई ऊर्जा । यदि द्रव्यमान m का पिण्ड वेग v से गति करता है तो इसकी गतिज ऊर्जा $=\frac{1}{2}mv^2$ होगी ।

गतिपालक चक्र–पु० (फ्लाई ह्वील) बड़े आकारका भारीभरकम पहिया (चक्र) जो मशीनके धुरेसे जुड़ा रहता है । यह अपने जड़त्वगुण द्वारा मशीनकी घूर्णी गतिको एक समान बनाये रखनेमें सहायता पहुँचाता है ।

गतिमान्(मत्)–वि० (सं०) गतियुक्त, हरकत करनेवाला ।

गतिला–स्त्री० (सं०) परस्पर अभेद होना; एक नदी; एक पौधा ।

गत्ता–पु० एक तरहकी घटिया दफ्ती ।

गत्तालखाता–पु० बट्टाखाता ।

गत्थ*–पु० दे० 'गथ' ।

गत्यवरोध–पु० (डेडलॉक) किसी वार्त्ता आदिमें ऐसी जटिल स्थिति या बाधाका उत्पन्न हो जाना जिससे आगे बढ़ने आदिकी संभावना ही न जान पड़े, जिच, गतिरोध ।

गत्वर–वि० (सं०) जाता हुआ; गतिमान्; नाशमान ।

गथ*–पु० पूँजी, जमा; माल–'तुम्हरो गथ लादो गयंदपर हींग मिरचि पीपरि कह गावति'–सूर०; धन; झुंड ।

गथना*–स० क्रि० जोड़ना, एक साथ बाँधना; गढ़कर बातें करना ।

गद–पु० किसी नरम चीजपर कड़ी या कड़ी चीजपर नरम चीजके गिरनेकी आवाज; (सं०) रोग; एक विष; भाषण; अस्पष्ट भाषण, मेघध्वनि; बलरामका छोटा भाई; एक असुर; रामकी वानरी सेनाका एक नायक । **–चाम**–पु०–(हिं०) हाथीकी पीठपर घाव हो जाना । **–हा(हन्)**–पु० वैद्य; दे० क्रममें ।

गद*–पु० स्थूलता, मोटापन (रतन०) ।

गदका–पु० दे० 'गतका' ।

गदकारा–वि० गुलगुला, नरम । (स्त्री० 'गदकारी' ।)

गदगद*–वि० दे० 'गद्गद' ।

गदन–पु० (सं०) कथन, वर्णन ।

गदना*–स० क्रि० कहना, बोलना ।

गदबदा–वि० मुलायम, कोमल; भरे हुए शरीरवाला ।

गदम†–पु० नाव बनाते या उसकी मरम्मत करते समय उसे उठाये रखनेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी, थाम ।

गदयित्नु–वि० (सं०) वाचाल; कामी । पु० कामदेव ।

गदर–पु० ठाकुरजीको पहनायी जानेवाली रुईदार बगलबंदी ।

ग़दर–पु० (अ०) विप्लव, बगावत, विद्रोह ।

गदरा–वि० गदराया हुआ, अधपका ।

गदराना–अ० क्रि० पकनेपर होना; यौवनागममें अंगोंका भरना, खिलना, आँखमें कीचड़ आना, आँख दुखने आना । * वि० गदराया हुआ ।

गदला–वि० मैला, मिट्टी या कीचड़ मिला हुआ (पानी) ।

गदलाना†–अ० क्रि० गदला होना । स० क्रि० मैला करना ।

गदह–'गदहा'का समासमें व्यवहृत रूप । **–पचीसी**–स्त्री० १६ से २५ बरसतककी अवस्था, मस्ती और नासमझीके दिन । **–पन**–पु० मूर्खता । **–लोट**-पु० कुश्तीका एक पेंच । **–लोटन**–पु० थकान मिटानेके लिए गधेका धूलमें लोटना; वह जगह जहाँ गधेके लोटनेका निशान हो ।

गदहपूरन–स्त्री० एक पौधा जो दवाके काम आता है, पुनर्नवा ।

गदहरा*–पु० गधा; गद्दा ।

गदहा–पु० दे० 'गधा'; दे० 'गद'के साथ ।

गदहिला–पु० वह गधा जिसपर ईंट आदि लादते हैं; गोबड़ौरे जैसा एक विषैला कीड़ा ।

गदांतक–पु० (सं०) अश्विनीकुमार ।

गदांबर–पु० (सं०) बादल ।

गदा–स्त्री० (सं०) लोहेका बना एक पुराना हथियार जिसके एक सिरेपर नोकदार बड़ा लट्टू लगा होता था, गुर्ज; बाँसके डंडेमें पहनाया हुआ पत्थरका गोला जिसे मुद्गरकी तरह भाँजते हैं । **–धर**–वि० गदा धारण करनेवाला । पु० विष्णु । **–युद्ध**–पु० गदाकी लड़ाई ।

गदा–पु० (फा०) भिखारी, मँगता । वि० रंक, निर्धन । **–ई,–गरी**–स्त्री० भिक्षावृत्ति ।

गदाई–स्त्री० दे० 'गदा'में । † वि० तुच्छ, निकम्मा, रद्दी ।

गदाका†–पु० किसीको उठाकर जमीनपर दे मारना । वि० सुडौल शरीरवाला ।

गदाख्य–पु० (सं०) कुष्ठ ।

गदागद–अ० एकपर एक, लगातार (आघात करना) । पु० (सं०) अश्विनीकुमार ।

गदाग्रज–पु० (सं०) कृष्ण ।

गदाग्रणी–पु० (सं०) क्षय, यक्ष्मा ।

गदाराति–पु० (सं०) औषध ।

गदाला–पु० हाथीकी पीठपर कसा जानेवाला गद्दा ।

गदाह्व, गदाह्वय–पु० (सं०) कुष्ठ ।

गदि–स्त्री० (सं०) कथन, भाषण ।

गदित–वि० (सं०) कहा हुआ, उक्त ।

गदी(दिन्)–वि० (सं०) गदाधारी; रोगी । पु० विष्णु ।

गदेरी†–स्त्री० दे० 'गदेली', हथेली ।

गदेला–पु० गद्दा; * लड़का, बालक–'फिरे मुलकमें मुगल गदेले' –छत्र ।

गदेली†–स्त्री० हथेली–'लाखीने हाथकी गदेली पसार दी' –मृग०; लड़की ।

गद्गद–वि० (सं०) हर्ष, प्रेम आदिके अतिरेकसे जिसका गला भर आया हो, जिसके मुँहसे स्पष्ट शब्द न निकलते हों, पुलकित; आनंदित । पु० हकलाना । **–कंठ**–पु० हर्षादिसे भरा हुआ गला ।

–स्वर–पु० अस्पष्ट स्वर ।

गद्गदिका–स्त्री० (सं०) हकलाहट ।

गद्द–पु० मुलायम जगहपर किसी चीजके गिरनेका शब्द; जल्द न पचनेवाली चीज खानेके कारण पेटका भारी होना; एक कल्पित लकड़ी जिसके स्पर्शसे लोगोंका वशमें हो जाना माना जाता है । वि० मूर्ख ।

गद्दम†–पु० एक छोटी चिड़िया ।

गद्दर†–वि० अधपका । पु० मोटा गद्दा ।

गद्दा–पु० भारी, मोटा तोशक; टाटकी वनी मोटी गद्दी जिसे हाथीकी पीठपर रखकर हौदा कसते हैं; गदहिला; मुलायम चीजोंका बोझ; किसी मुलायम चीजकी मार ।

गद्दार–वि० विद्रोही; देश, संस्था या शासनके विरुद्ध होकर उसे हानि पहुँचानेवाला ।

गद्दी–स्त्री० छोटा गद्दा जिसपर दुकानदार, साहूकार वैठता है; अधिक सम्मानित व्यक्तिके वैठनेके लिए लगाया हुआ आसन; राजा, मठाधीश आदिका पद; रुई भरा हुआ कपड़ा जो जीन या काठीके नीचे रखते हैं; कई तह किया हुआ कपड़ा जो घाव आदिपर रखते हैं । **–नशीं**–वि० गद्दीपर वैठा हुआ; सिंहासनासीन । **–नशीनी**–स्त्री० गद्दीपर वैठना । **मु०–चलना**–वंशपरंपरा या शिष्यपरंपराका जारी रहना । **–पर बैठना**–राजगद्दीपर बैठना ।

गद्य–पु० (सं०) वह रचना जो छंदोवद्ध न हो, वार्तिक, पद्यका उलटा, नस्र । वि० कथनीय, कहने योग्य । **–काव्य**–पु० गद्यमें की गयी काव्यके गुणोंसे युक्त रचना । **–गंधी काव्य**–पु० लय-प्रधान ऐसा काव्य जिसमें कविताके सारे नियम तोड़ दिये गये हों । **–पद्य**–पु० वह रचना जिसमें गद्य और पद्य दोनों हों ।

गद्याणक, गद्यानक, गद्यालक–पु० (सं०) एक प्राचीन तौल ।

गधा–पु० घोड़ेकी जातिका एक चौपाया जो अधिकतर बोझ लादनेके लिए पाला जाता है, खर, रासभ । वि० नासमझ, मूर्ख, अहमक (ला०) । **–पन**–पु० मूर्खता, नासमझी । **मु०–पीटे घोड़ा नहीं होता**–मूर्ख सिखानेसे समझदार, कमीना भला आदमी नहीं हो सकता । **–(धे)को बाप बनाना**–काम निकालनेके लिए मूर्खकी खुशामद करना । **–पर चढ़ाना**–जलील, बेइज्जत करना । **–से हल चलवाना**–खुदवाकर जमीनको बराबर करा देना, बिलकुल उजाड़ देना ।

गधी–स्त्री० गधेकी मादा ।

गधीला–पु० एक जंगली जाति ।

गधूल†–पु० एक फूल ।

गन*–पु० दे० 'गण' । **–नायक, –पति**–पु० दे० 'गणनायक', 'गणपति' । **–प**–पु० दे० 'गणप' । **–राय**–पु० गणेश ।

गनक*–पु० दे० 'गणक', ज्योतिषी ।

गनकेरुआ†–पु० एक घास ।

गनगनाना–अ० क्रि० जाड़ेसे काँपना, रोमांच होना; दे० 'गिनगिनाना' ।

गनगौर–स्त्री० चैत्र-शुक्ला तृतीया ।

गनती*–स्त्री० गिनती ।

गनना*–स० क्रि० गिनना । स्त्री० दे० 'गणना' ।

गननाना*–अ० क्रि० गूंजना; † घूमना, फिरना ।

गन मेटल–पु० (अं०) कांस्यकी एक किस्म । इसमें ९० प्रतिशत ताँबा तथा १० प्रतिशत टिन होता है ।

गनाना*–स० क्रि० दे० 'गिनाना' । अ० क्रि० गिना जाना ।

गनाल*–स्त्री० एक तरहकी तोप ।

गनिका*–स्त्री० दे० 'गणिका' ।

गनियारी–स्त्री० एक झाड़ जिसकी लकड़ी रगड़नेसे आग निकलती है, छोटी अरनी ।

गनी–वि० दे० 'ग़नी' । स्त्री० (अं०) पटसनका बना मोटा टाट जिसके बोरे, थैले आदि बनते हैं । **–बैग**–पु० बोरा ।

ग़नी–वि० (अ०) धनी, मालदार; बेपरवा; संतुष्ट ।

ग़नीम–पु० (अ०) डाकू, लुटेरा; दुश्मन ।

ग़नीमत–स्त्री० (अ०) लूटका माल; मुफ्तका माल; बड़ी बात; संतोष करने योग्य बात (जानना, समझना, होना इत्यादि) ।

गनौरी–स्त्री० नागरमोथा ।

गन्ना–पु० ईख ।

गन्नी–स्त्री० दे० 'गनी' (अं०) ।

गप–पु० निगलने, गपकनेकी क्रिया । स्त्री० इधर-उधरकी वातें, निष्प्रयोजन बातें; मनवहलावके लिए की जानेवाली बातचीत; झूठी बात; झूठी खवर; डींग । **–शप**–स्त्री० इधर-उधरकी वातचीत; मनवहलावकी वातचीत । **मु०–उड़ना**–झूठी खवर फैलना । **–मारना,–हाँकना**–डींग मारना; लंबी-चौड़ी वातें करना, बकवास करना । **–लड़ाना**–गपशप करना ।

गपकना–स० क्रि० निगल लेना, झटसे खा लेना; * झूठ कहना ।

गपड़चौथ–पु० गड़बड़, गोलमाल; वेकारकी बकवास, गप । वि० ऊटपटाँग, अंडबंड ।

गपना*–स० क्रि० गप मारना ।

गपागप–अ० जल्दी-जल्दी (खाना) ।

गपिया–वि० गप मारनेवाला ।

गपिहा*–वि० गप्पी ।

गपोड़, गपोड़िया–वि० गप मारनेवाला ।

गपोड़ा–पु० झूठी और कल्पित बात; भारी गप । **–(ड़े)बाज़ी** झूटी वकवास ।

गप्प–स्त्री० दे० 'गप' ।

गप्पी–वि० गप हाँकनेवाला ।

गप्फा–पु० वड़ा ग्रास; नफा, लाभ ।

गफ–वि० ठस, घना (वुना हुआ), 'झीना'का उलटा ।

ग़फ़लत–स्त्री० (अ०) भूल; असावधानता, वेखबरी । **–की नींद** –वेखवरीकी, गाढ़ी नींद ।

गफिलाई*–स्त्री० गफलत ।

ग़फ़ूर–वि० (अ०) क्षमा करनेवाला, दयालु ।

गफ़्फ़ार–वि० (अ०) वड़ा क्षमाशील । पु० ईश्वर ।

गवड़ी*–स्त्री० कबड्डी ।

गबड्डी†–स्त्री० कबड्डी ।

गवद्द–वि० मूर्ख, जड़मति ।

ग़बन–पु० (अ०) अमानतकी रकम खा जाना, खयानत ।

गवर–पु० सव पालोंके ऊपर लगाया जानेवाला पाल ।

गवरगंड–वि० मूर्ख, जड़वुद्धि ।

गवरहा–वि० गोबर मिला या लगा हुआ ।

गवरा*–वि० दे० 'गब्बर' ।

गवरू–वि० नौजवान, जिसकी रेख भिन रही हो; भोला-भाला । † पु० दूल्हा ।

गवरून–पु० एक तरहका मोटा चारखाना ।

ग़बी–वि० (अ०) मंदवुद्धि, कुंदजेहन ।

गब्बर–वि० घमंडी; हठी; धनी; मट्ठर, सुस्त ।

गब्भा–पु० गद्दा, तोशक ।

गब्र–पु० (फा०) पारसी, अग्निपूजक ।

गभ–पु० (सं०) भग ।

गभरू*–वि० गबरू; प्रिय ।

गभस्ति–पु० (सं०) किरण; सूर्य; हाथ । स्त्री० अग्निकी पत्नी स्वाहा । **–कर,–पाणि,–माली(लिन्),–हस्त**–पु० सूर्य । **–नेमि**–पु० विष्णु ।

गभस्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) चमकवाला । पु० सूर्य; पाताल-का एक विभाग; भारतका एक खंड ।

गभीर–वि० (सं०) दे० 'गंभीर' ।

गभीरिका–स्त्री० (सं०) वड़ा ढोल ।

गभुआर, गभुवार–वि० पेटका, पैदाइशी (केश); जिसका मुंडन न हुआ हो; छोटा (वालक); प्रारंभिक अवस्थाका 'शायद फिर दगा दें बादल गभुआरे'–काद०, सितं०, १९६७ ।

गभोलिक–पु० (सं०) छोटा गावतकिया; मसूर ।

गम–स्त्री० पहुँच, गुजर । पु० (सं०) गमन; सड़क; राह; कूच, अभियान; लापरवाही; बिना ध्यान दिये पढ़ना; स्त्री-प्रसंग; पासे आदिका खेल । **मु० –करना***–खा जाना ।

ग़म–पु० (अ०) दुःख, शोक; मातम; चिंता, परवा । **–ख़ार–**

वि० सहनशील। **–ख़ारी–**स्त्री० सहनशीलता। **–खोर–**वि० दे० 'ग़मख़्वार'। **–खोरी–**स्त्री० दे० 'ग़मख़्वारी'। **–ख़्वार–**वि० दुःख बटानेवाला, हमदर्द; सहनशील। **–ख़्वारी–**स्त्री० हमदर्दी; सहनशीलता। **–गीन–**वि० खिन्न, उदास। **–गीनी–**स्त्री० खिन्नता, उदासी। **–गुसार–**वि० हमदर्द, दुःख बटानेवाला, दूसरेके दुःखसे दुःखी होनेवाला। **–ज़दा–**वि० खिन्न, दुःखी। **–नाक–**वि० दुःखभरा; दुःखद। **मु० –खाना–**क्षमा करना; सह लेना; दूसरेके दुःखसे दुःखी होना। **–गलत करना–**दुःख देनेवाली बातको भूलना; जी बहलाना।

गमक–स्त्री० वास, महँक; गूँजनेकी-सी आवाज। वि० (सं०) बोधक, सूचक। पु० गानेमें एक श्रुतिसे दूसरी श्रुतिपर जानेकी एक रीति।

गमकना†–अ० क्रि० महँकना; गूँजनेकी-सी आवाज उत्पन्न होना; * उत्साहपूर्ण होना (भू०)।

गमकीला†–वि० सुगंधित।

गमछा–पु० बदन पोंछनेका कपड़ा, अँगोछा।

गमत–पु० रास्ता; पेशा।

गमथ–पु० (सं०) पथिक, मुसाफिर; रास्ता।

गमन–पु० (सं०) जाना; पास जाना; चढ़ाई, विजययात्रा करना; संभोग करना।

गमनना*–अ० क्रि० जाना।

गमना, गमिना*–अ० क्रि० जाना; चलना; गम करना, ध्यान देना।

गमनागमन–पु० (सं०) आना-जाना, यातायात।

गमनीय–वि० (सं०) गमन करने योग्य, पास जाने योग्य; सुबोध; अभ्यास करने योग्य।

गमला–पु० बालटी जैसा मिट्टीका बरतन जिसमें फूलोंके पौधे लगाये जाते हैं; पाखाना फिरनेका चीनी मिट्टीका पात्र, कमोड।

गमागम–पु० (सं०) आना-जाना।

गमाना*–स० क्रि० दे० 'गँवाना'।

गमार*–वि० दे० 'गँवार'।

गमि*–स्त्री० दे० 'गम' (पहुँच)–'अगम अगोचर गमि नहीं तहाँ जगमगै जोति'–साखी।

गमी(मिन्)–वि० (सं०) जो जानेवाला हो। पु० पथिक।

ग़मी–स्त्री० मृत्युशोक, मातम; मृत्यु।

ग़म्मत†–स्त्री० मजेदार वात, घटना या कार्य जो हँसी उत्पन्न करे, दिल्लगी।

गम्य–वि० (सं०) गमन करने, जाने योग्य; जिसके पास जाया जा सके; जिससे संभोग किया जा सके; समझाने योग्य; वाद्य; लभ्य; व्यंग्य (अर्थ)।

गम्या–वि०, स्त्री० (सं०) जिसके साथ सहवास किया जा सके, संभोग्या।

गयंद–पु० दोहेका एक भेद; * गजेंद्र, बड़ा हाथी।

गय–पु० (सं०) घर; धन; प्राण; आकाश; संतति, पुत्र; एक राजर्षि जिनकी यज्ञभूमिका नाम, महाभारतके अनुसार, गया पड़ा; एक असुर जिसको ब्रह्मा, विष्णु आदिसे मिला हुआ वरदान गयाके तीर्थत्व और माहात्म्यका कारण हुआ। **–शिर(स्)–**पु० गयाके पासका एक पर्वत; गया; पश्चिमी क्षितिज।

गय*–पु० गज; हाथी। **–नाल–**स्त्री० दे० 'गजनाल'।

गयल*–स्त्री० गली; रास्ता।

गया–स्त्री० (सं०) मगधकी एक पुरी और प्रसिद्ध तीर्थस्थान जहाँ, वायुपुराणके अनुसार, पिंडदान आदि करनेवालेकी एक हजार पीढ़ियाँ तर जाती हैं। **–पुर–**पु० गया। **–वाल–**पु० गयाका पंडा। **मु०–करना–**गयामें जाकर पिंडदान आदि करना।

गया–अ० क्रि० 'जाना'का भूतकालिक रूप। वि० गया हुआ। (स्त्री० 'गयी'।) **–गुजरा,–बीता–**वि० खराब; निकृष्ट; फटे हालवाला, हीन दशाको प्राप्त।

गरंड–पु० बड़ी चक्कीके इर्द-गिर्द आटा गिरनेके लिए बना हुआ घेरा।

गरंथ*–पु० ग्रंथ, पुस्तक (प०)।

गर–पु० (सं०) एक कड़वा पेय; विष; रोग; निगलना; ११ करणोंमेंसे एक। **–घ्न–**वि० विष-नाशक; स्वास्थ्यकर। **–द–**वि० विष देनेवाला; अस्वास्थ्यकर। पु० विष; एक तरहका रेशमी कपड़ा। **–प्रिय–**पु० शिव। **–व्रत–**पु० मयूर। **–हा(हन्)–**पु० बनतुलसी; ममरी।

गर–प्र० (फा०) बनानेवाला। **गर***–पु० गला, गरदन। **–नाल**स्त्री० चौड़े मुँहकी तोप, घननाद; † मंडलाकार भारी लोहा या पत्थर जिसे गलेमें डालकर बैठक लगाते हैं। **–हर–**पु० नटखट चौपायोंके गलेमें बाँधा जानेवाला ठेंगा।

गरई–स्त्री० एक छोटी मछली।

ग़रक़–वि० (अ०) डूबा हुआ, निमग्न; नष्ट; लीन, तन्मय।

ग़रक़ाब–वि० (अ०) डूबा हुआ। पु० डूबनेभर पानी, डुबाव।

ग़रक़ी–स्त्री० (अ०) वह जमीन जो पानीमें डूब जाय या डूबी रहे; लँगोटी; बाढ़; गराड़ी। वि० डूब जानेवाला। **मु०–आना–**बाढ़ आना; फसलका पानीमें डूब जाना।

गरगज–पु० किलेकी चहारदीवारीपरका बुर्ज जिसपर तोप चढ़ी रहती है; युद्ध-सामग्री रखनेके लिए बना हुआ टीला; नावके ऊपरकी छत; टिकठी।

गरगाब*–वि० दे० 'ग़रक़ाब'।

गरचे–अ० यद्यपि, हालाँकि।

गरज–स्त्री० ऊँची, गंभीर आवाज; कड़ककर बोलनेकी आवाज; मेघध्वनि; शेरकी दहाड़।

ग़रज़–स्त्री० (अ०) मतलब, प्रयोजन; चाह, जरूरत। **–मंद–**वि० गरज रखनेवाला, अर्थी। **मु०–का आशना–**मतलबका दोस्त। **–का बावला–**अपनी गरज निकालनेके लिए सब कुछ करनेको तैयार। **–कि–**मतलब यह कि, खुलासा यह कि। **–बावली होती है–**गरजमंद आदमी सब कुछ करनेको तैयार होता है, भले-बुरेका विचार नहीं रख सकता।

गरजन*–पु० दे० 'गर्जन'।

गरजना–अ० क्रि० जोरसे कड़ककर बोलना; बादलोंका गड़गड़ाना; शेरका दहाड़ना; तड़कना। † वि० गर्जन करनेवाला।

ग़रज़ी–वि० गरजमंद।

गरजुआ–पु० एक तरहकी खुभी।

गरज़ू–वि० दे० 'ग़रज़ी'।

गरट्ट–पु० झुंड।

गरण–पु० (सं०) निगलना; छिड़कना; विष।

गरद–स्त्री० दे० 'गर्द'; एक मटमैला कपड़ा। वि०, पु० (सं०) दे० 'गर'में।

गरदन–स्त्री० (फा०) गला, ग्रीवा; घड़े, सुराही आदिका मुँहके नीचेका तंग, लंबोतरा भाग। **–घुमाव–**पु० कुश्तीका एक पेंच। **–ज़नी–**स्त्री० कतल करना। **–तोड़–**पु० कुश्तीका एक पेंच। **–०बुखार–**पु० एक संक्रामक, सांघातिक रोग। **–बंद–**पु० गलेमें पहननेका एक गहना, गुलूबंद। **–बाँध–**पु० कुश्तीका एक पेंच। **मु०–उठाना–**विरोध करना। **–उड़ाना–**सिर धड़से अलग कर देना, कतल करना। **–ऐंठी रहना**-घमंडमें चूर या नाराज रहना। **–काटना–**गला काटना; भारी अहित करना। **–झुकना–**अधीन होना; लज्जित होना; बेहोश होना। **–न उठाना–**लज्जित होना; बीमारीसे पड़े रहना; सब कुछ सह लेना। **–नापना**-धक्के देकर निकाल बाहर करना; बेइज्जती करना। **–पर छुरी फेरना–**हलाल करना; भारी जुल्म, अन्याय करना। **–पर जुवा रखना–**भारी काम सुपुर्द करना। **–पर होना–**ऊपर होना, जिम्मेदार होना (हत्या, पाप)। **–फँसना–**वशमें होना। **–मरोड़ना–**मार डालना। **–मारना–**सिर काटना, वध करना। **–में हाथ देना–**गरदनियाँ देना; बेइज्जत करना।

गरदना–पु० गरदन; गरदनपर लगाया जानेवाला झटका।

गरदनियाँ–स्त्री० निकाल बाहर करनेके लिए किसीके गलेमें हाथ लगाना, अर्द्धचंद्र (देना)।

गरदनी–स्त्री० घोड़ेकी गरदन और पीठपर उढ़ाया जानेवाला एक कपड़ा; गलेमें पहननेका एक गहना; गरेबान; कारनिस; गरदनियाँ; गरदनपर लगाया जानेवाला घस्सा।

गरदा–पु० दे० 'गर्द'।

गरदान–वि० (फा०) जो हिर-फिरकर अपनी जगहपर लौट

आये। पु० वह कबूतर जो घूम-फिरकर अपने अड्डेपर लौट आये। स्त्री० शब्दोंका रूपसाधन (व्या०); कुरानकी आवृत्ति।

गरदानना–स० क्रि० गरदान करना, शब्दोंके रूप साधना; दुहराना; कबूल करना, मानना; समझाना।

गरदिश–स्त्री० दे० 'गर्दिश'।

गरदी–वि० गरद कपड़ेकी तरह मटमैला। पु० मटमैला या टसरी रंग।

गरदुआ–पु० पशुओंको होनेवाला एक तरहका ज्वर।

गरना–अ० क्रि० निचोड़ा जाना; निचुड़ना; * दे० 'गलना'; टपकना, गिरना–'जबते बिछुरे कमल नयन सखि रहत न नयन नीरको गरिवों'–सूर; दे० 'गड़ना'।

गरब*–पु० दे० 'गर्व'; हाथीका मद। **–गहेला**–वि० गरबीला, घमंडी।

गरबई*–स्त्री० गर्व, घमंड।

गरबना, गरबाना*–अ० क्रि० गर्व करना, इतराना।

गरबा–पु० गुजराती स्त्रियोंका नृत्य, जिसमें वे सिरपर घड़ा रखकर घेरा बनाते हुए नाचती हैं।

गरबाहीँ†–स्त्री० दे० 'गलबाहीँ' ('गल'के साथ)।

गरबित*–वि० दे० 'गर्वित'।

गरबीला–वि० घमंडी, गर्वयुक्त।

गरभ*–पु० दे० 'गर्व'; (सं०) दे० 'गर्भ'। **–दान**–पु० ऋतुदान।

गरभाना*–अ० क्रि० गर्भ धारण करना; पौधोंमें बाल लगना।

गरभी*–वि० घमंडी।

गरम–वि० जिसे छूनेमें उष्णता या तापका अनुभव हो; ऊँचे तापक्रमवाला, जलता हुआ; तेज, तीखा; क्रुद्ध; शीघ्र उत्तेजित हो जानेवाला (खून, मिजाज); जो ताप बढ़ाने या उष्णता लानेवाला हो; जहाँ गरमी अधिक पड़ती हो (भूभाग); जोशीला; गरमी करनेवाला, उष्णवीर्य। **–कपड़ा**–पु० जाड़ेमें पहननेका कपड़ा, ऊनी या रुईदार कपड़ा। **–ख़बर**–स्त्री० वह खबर जिसकी बहुत चर्चा हो। **–ख़ाना,–घर**–पु० वह मकान जिसमें नाजुक पौधे जाड़ेके दिनोंमें रखे जायँ। **–चोट**–स्त्री० तुरतकी, ताजा चोट। **–मसाला**–पु० धनियाँ, मिर्च, लौंग, इलायची इत्यादि या इनका चूर्ण। **–मिज़ाज**–वि० जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाला; तीखे स्वभावका। **–मु०–(ब)सर्द उठाना, देखना, सहना**–दुनियाका भला-बुरा, दुःख-सुख देख लेना, दुनियाका अनुभव प्राप्त करना। **–होना**–क्रुद्ध होना।

गरमागरम–वि० तुरतका पका हुआ, तत्ता, ताजा; जिसमें गरमी या उत्तेजना हो (गरमागरम बहस)।

गरमागरमी–स्त्री० जोश, सरगर्मी; (दो आदमियों या पक्षोंका) उत्तेजित हो जाना, गुस्सेमें आ जाना।

गरमाना–अ० क्रि० गरमाहट अनुभव करना; गरम होना; मस्तीपर या तेजीपर आना; क्रुद्ध होना। † स० क्रि० गरम करना; गरमी पहुँचाना।

गरमी–स्त्री० गरम होनेका भाव, उष्णता; हरारत; तेजी; क्रोध; गुश्ताखी, आवेश; जोश, उमंग; ग्रीष्म ऋतु; गर्व, घमंड; उपदंश रोग, आतशक; हाथी-घोड़ोंका एक रोग। **–दाना**–पु० अम्हौरी या पित्ती। **मु०–निकलना,–पचना**–घमंड चूर हो जाना, ऐंठ ढीली हो जाना।

गररा*–पु० दे० 'गर्रा'।

गरराना*–अ० क्रि० गरजना, गंभीर ध्वनि करना; जोशमें आना। † गर्राना, गरियार या उद्दंड बन जाना (बुंदेल०)।

गररी–स्त्री० एक चिड़िया, सिरोही।

गरल–पु० (सं०) जहर, विष; सर्पविष; घासका पूला; एक माप। **–धर**–पु० साँप; शिव। **–व्रत**–पु० मयूर।

गरलारि–पु० (सं०) पन्ना।

गरली(लिन्)–वि० (सं०) जहरीला, विषयुक्त।

गरवा*–वि० दे० 'गरुआ', भारी। पु० गला।

गरवी*–वि०, स्त्री० गरुई।

गरह*–पु० दे० 'ग्रह'। **मु०–कटना**–अरिष्ट दूर होना, विपत टलना।

गरहन*–पु० दे० 'ग्रहण'।

गरहेँडुवा†–पु० कौड़िल्ला।

गराँ–वि० (फा०) भारी, वजनी; महँगा; कठिन; अप्रिय, नागवार। **–क़द्र**–वि० बड़े मरतबेवाला, सम्मानित। **–क़ीमत**–वि० बहुमूल्य। **–ख़ातिर**–वि० दूभर लगनेवाला, अप्रिय; अप्रसन्न। **–बार**–वि० बोझसे लदा हुआ। **मु०–गुज़रना**–भारी होना; नागवार होना।

गरांडील–वि० लंबा-तड़ंगा, ऊँचे कदका।

गराँव†–पु० फंदेदार रस्सी जो बैल आदिके गलेमें पहनायी जाती है।

गरा–स्त्री० (सं०) देवदाली लता।

गरागरी–स्त्री० (सं०) देवताड़।

गराज–पु० मोटरखाना, 'गैरेज'। *स्त्री० गर्जन।

गराड़ी–स्त्री० चरखी, घिरनी; रगड़से पड़ी हुई लकीर।

गराधिका–स्त्री० (सं०) लाखका कीड़ा; लाखका रंग।

गराना*–स० क्रि० गलाना; निचोड़ना।

गरानि, गरानी*–स्त्री० ग्लानि।

गरानी–स्त्री० भारीपन; महँगी; पेटका भारी होना, अजीर्ण।

गरामी–वि० (फा०) सम्मानित; पूज्य, बुजुर्ग। **–नामा**–पु० पूज्य पुरुष (गुरु, पिता आदि) का पत्र।

गरारा–वि० घमंडी; उद्धत।

ग़रारा–पु० अ०) गलेमें पानी लेकर 'गरगर' आवाजके साथ कुल्ली करना; कुल्ली करनेकी दवा; पशुओंका एक रोग; पाजामेकी ढीली मोहड़ी; शामियानेके चोबका गिलाफ। **'–(रे)दार**–वि० ढीली मोहड़ीका (पाजामा)।

गरास*–पु० दे० 'ग्रास'।

गरासना*–स० क्रि० ग्रसना; निगलना; कष्ट देना।

गरिका–स्त्री० (सं०) नारियलकी गरी।

गरित–वि० (सं०) विषाक्त, विषयुक्त।

गरिमता*–स्त्री० गरिमा, भारीपन।

गरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) गुरुता, भारीपन; गौरव, महत्त्व; गर्व; आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिससे अपना देह-भार चाहे जितना बढ़ाया जा सकता है।

गरियाना†–स० क्रि० गाली देना।

गरियार, गरियाल–वि० अड़ियल, मट्ठर (बैल); सुस्त।

गरियालू–पु० एक तरहका काला-नीला रंग।

गरिष्ठ–वि० (सं०) सबसे भारी; सबसे सम्मानित; बहुत कड़ा, दुष्पाच्य (भोजन); सबसे खराब। पु० एक दानव; एक तीर्थ।

गरी–स्त्री० नारियलका मग्ज, खोपरा; बीजका मग्ज, गिरी; (सं०) स्त्री० देवताड़।

ग़रीब–वि० (अ०) परदेसी; मुसाफिर; अनोखा; निर्धन, मुफलिस; दीन-हीन; बेचारा। **–ख़ाना**–पु० दीनकी कुटिया (नम्रतावश अपने घरको कहते हैं)। **–गुरबा**–पु० दीन-दरिद्र, गरीब लोग। **–निवाज़**–वि० दीनपर दया, अनुग्रह करनेवाला, दीनदयालु। **–परवर**–वि० गरीबोंका पालन करनेवाला।

गरीबान–पु० (फा०) अँगरखे, कुरते आदिका वह भाग जो गलेके नीचे और छातीके ऊपर रहता है। **–गीर**–वि० दावेदार, अभियोक्ता। **मु०–चाक करना,–फाड़ना**–उन्मादमें कपड़े फाड़ना; पागल होना। **–में मुँह डालना**–लज्जित होना; अपराध स्वीकार करना। **–में सिर डालना**–लज्जित होना, लज्जासे मुँह छिपाना।

ग़रीबाना–वि० निर्धनोचित। अ० निर्धनोचित रूपमें, गरीबी ढंगसे।

गरीबामऊ–वि० गरीबके योग्य, निर्धनोचित।

ग़रीबी–स्त्री० (अ०) निर्धनता, मुफलिसी; दीनता।

गरीयस्–वि० (सं०) अधिक भारी या महान्, गुरुतर।

गरीसा*–वि० दे० 'गरीयस्', '...सम अघ न गरीसा'–रामा०।

गरु*–वि० भारी, वजनदार; गंभीर, शांत।

गरुअ, गरुआ*–वि० वजनदार, भारी; गौरवयुक्त। (स्त्री० 'गरुई'।)–**(आ)ई**–स्त्री० भारीपन, गुरुत्व।

गरुआना*–अ० क्रि० भारी या वजनदार होना।

गरुड–पु० (सं०) विनताके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र जो

पक्षिराज और विष्णुके वाहन माने जाते हैं; उकाव; लंबी गरदनवाला एक पक्षी जो मछलियाँ पकड़कर खाता है; गरुडाकार –बीचमें चौड़ा, आगे-पीछे नोकदार प्रासाद; चौदहवाँ कल्प; एक प्रकारकी व्यूहरचना; एक वृत्त; नृत्यका एक स्थानक। **–केतु–**पु० कृष्ण। **–गामी(मिन्)–**पु० विष्णु। **–घंटा–**पु० वह घंटा जिसपर गरुड़की प्रतिमा बनी हो। **–ध्वज–**पु० विष्णु; वह खंभा जिसमें ऊपर गरुड़की मूर्ति बनी होती है; गुप्त सम्राटोंका राज-चिह्न। **–पक्ष–**पु० नृत्यमें एक विशेष भाव। **–पाश–**पु० पुराने समयमें आयुधरूपमें व्यवहृत एक तरहका फंदा। **–पुराण–**पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें नरकोंका वर्णन, प्रेतकर्मका विधान आदि है। **–प्लुत–**पु० नृत्यमें एक प्रकारका भाव। **–भक्त–**पु० प्राचीन कालका एक गरुडोपासक संप्रदाय। **–मंत्र–**पु० एक विषहारक मंत्र जिसके देवता गरुड हैं। **–यान–**पु० विष्णु, श्रीकृष्ण। **–रुत–**पु० वृत्तविशेष। **–व्यूह–**पु० वह व्यूह या सैन्य-रचना जिसमें सेनाका मध्यभाग चौड़ा और अगला-पिछला भाग पतला हो।

गरुडांक–पु० (सं०) विष्णु।

गरुडांकित–पु० (सं०) दे० 'गरुडाश्मा'।

गरुडाग्रज–पु० (सं०) सूर्यंका सारथि अरुण।

गरुडाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) पन्ना।

गरुता*–स्त्री० दे० 'गुरुता'।

गरुत्–पु० (सं०) पंख; निगलना, भक्षण।

गरुत्मान्(मत्)–पु० (सं०) पक्षी; गरुड; अग्नि।

गरुल–पु० (सं०) गरुड।

गरुवाई*–स्त्री० दे० 'गरुआई'।

गरू*–वि० गुरु, भारी; बड़ा।

ग़रूर–पु० (अ०) गर्व, घमंड।

गरूरत*–स्त्री० गरूर होनेका भाव।

गरूरताई*–स्त्री० मस्ती; घमंड।

गरूरा*–वि० मगरूर; मतवाला।

गरूरी*–वि० घमंडी, मगरूर।

गरेबान–पु० (फा०) दे० 'गरीबान'।

गरेरना*–स० क्रि० घेरना, मुहासिरा करना; रोकना।

गरेरा*–पु० घेरा। वि० घुमावदार।

गरेरी–स्त्री० चरखी, घिरनी; गँड़ेरी। * वि०, स्त्री० घुमावदार, चक्करदार।

गरैंठी*–वि०, स्त्री० टेढ़ी–'सोहै सुजान गुमान गरैंठी'–घन०।

गरेली†–स्त्री० दे० 'गरेरी'।

गरैयाँ†–पु० दे० 'गराँव'।

गरोह-पु० (फा०) समूह, जमात, दल, झुंड। **–बंदी–**स्त्री० दलबंदी, गुटबंदी।

गर्ग–पु० (सं०) एक मंत्रकार ऋषि; ब्रह्माका एक मानस पुत्र; एक प्राचीन ज्योतिषी; बैल, साँड़; केंचुआ; एक ताल। **–त्रिरात्र** –पु० एक योग।

गर्गर–पु० (सं०) भँवर; वैदिककालका एक बाजा; दही मथनेका मटका; गागर; एक तरहकी मछली।

गर्गरी–स्त्री० (सं०) घड़ा, कलसी; मथानी; दहेड़ी।

गर्ज–पु० (सं०) हाथीका चिग्घाड़ना; बादलोंका गरजना; गर्जन; (चिग्घाड़ता हुआ) हाथी।

ग़र्ज़–स्त्री० दे० 'ग़रज़'।

गर्जक–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

गर्जन–पु० (सं०) गरजनेकी क्रिया, गरजना; गरजनेकी आवाज; बादलोंकी गड़गड़ाहट; ध्वनि; गुस्सा; युद्ध; फटकार, भर्त्सना। **–तर्जन–**पु० गरज-तड़प; डाँटना-धमकाना।

गर्जना–स्त्री० (सं०) गर्जन।

गर्जर–पु० (सं०) गाजर।

गर्जा–स्त्री० (सं०) बादलोंका गर्जन। **–फल–**पु० विकंटक, जवास; युद्ध; भर्त्सना।

गर्जि–स्त्री० (सं०) बादलोंका गर्जन।

गर्जित–वि० (सं०) गरजा हुआ। पु० बादलोंका गर्जन; मदवाला हाथी।

गर्त–पु० (सं०) गढ़ा, खड्ड; बिल; नहर; कब्र, समाधि; कटिखात; एक रोग; त्रिगर्त देशका एक भाग।

गर्तकी, गर्तिका–स्त्री० (सं०) तंतुशाला, जुलाहेका घर।

गर्ता–स्त्री० (सं०) बिल; गुफा।

गर्ताश्रय–पु० (सं०) बिलमें रहनेवाला जंतु (चूहा, खरगोश आदि)।

गर्द–वि० (सं०) चिल्लानेवाला। स्त्री० (फा०) धूल, राख। वि० घूमनेवाला, भटकनेवाला (केवल समासमें–'आवारागर्द', 'जहाँगर्द')। **–ख़ार,–ख़ोर–**वि० धूलको जज्ब कर लेनेवाला, जल्दी मैला न होनेवाला। पु० दरवाजेके सामने पैर पोंछनेके लिए बिछायी हुई नारियल आदिकी चटाई, पाअंदाज, पापोश। **–भंग** –पु० एक तरहका गाँजा। **–(व) गुबार–**पु० खाक-धूल; धूल-धक्कड़। **मु०–को न पहुँचना,–न छू सकना–**बराबरी न कर सकना।

गर्दनाह्वय–पु० (सं०) कुमुद।

गर्दभ–पु० (सं०) गधा; सफेद कुई; गंध। **–गद–**पु० एक चर्मरोग। **–याग–**पु० ब्रह्मचर्यसे च्युत होनेके पापके प्रायश्चित्त-रूपमें किया जानेवाला यज्ञविशेष। **–शाक–**पु०, **–शाखा,–शाखी** –स्त्री० भारंगी; ब्रह्मयष्टि।

गर्दभक–पु० (सं०) एक कीड़ा, गुबरैला; एक चर्मरोग।

गर्दभांड–पु० (सं०) पाकड़; पीपल।

गर्दभा–स्त्री० श्वेत कंटकारि।

गर्दभिका–स्त्री० (सं०) एक चर्मरोग।

गर्दभी–स्त्री० (सं०) गधी; गर्दभिका रोग; एक कीड़ा, गुबरैला।

गर्दाना–स० क्रि० गर्दनियाँ देना। वि० धूलसे भरा हुआ।

गर्दाबाद–वि० (फा०) धूलसे भरा हुआ; उजाड़, वीरान; बेसुध।

गर्दालू–पु० आलू बुखारा।

गर्दिश–स्त्री० (फा०) घुमाव, फेरा; चक्कर, परिभ्रमण; गति; परिवर्तन; दिनका फेर, बिपत। **–(शे)ज़माना–**स्त्री० दिनका फेर, दुर्भाग्य।

गर्दुआ–पु० दे० 'गरदुआ'।

गर्दूं–पु० (फा०) आकाश; गाड़ी, रथ।

गर्ध–पु० (सं०) इच्छा; औत्सुक्य; लालच।

गर्धन, गर्धित–वि० (सं०) लालची।

गर्धी(र्धिन्)–वि० (सं०) चाहनेवाला; लोभी।

गर्नाल–स्त्री० दे० 'गरनाल'।

गर्ब–पु० दे० 'गर्व'।

गर्बीला–वि० घमंडी।

गर्भंड–पु० (सं०) नाभिकी वृद्धि; उभरी हुई नाभि।

गर्भ–पु० (सं०) शुक्र-डिंबके संयोगसे उत्पन्न मांस-पिंड, गर्भाशयमें स्थित बच्चा या भ्रूण, हमल; कोख, गर्भाशय; गर्भाधानकाल; किसी वस्तुका भीतरी, मध्यवर्ती भाग; बिल; नदीका पेटा; फल; आहार; सूर्य-किरणों द्वारा शोषित और आकाशमें संचित वाष्प-राशि; घर-मंदिरका भीतरी, केंद्रवर्ती भाग; अन्न; अग्नि; नाटककी ५ प्रकारकी संधियोंमेंसे एक; कटहलका कँटीला छिलका; संयोग; पद्मकोश। **–कर–**वि० गर्भ धारण करानेवाला। पु० पुत्रजीव वृक्ष। **–कारी(रिन्)–**वि० गर्भ धारण करानेवाला। **–काल–**पु० ऋतुकाल, गर्भ धारणसे प्रसव तकका समय। **–केसर–**पु० फूलके सूत जैसे रेशे जो गर्भनालके अंदर होते हैं। **–कोश,–कोष–**पु० गर्भाशय, बच्चादानी। **–क्लेश–**पु० प्रसव-पीड़ा। **–क्षय–**पु० गर्भपात। **–गुर्वी–**वि०, स्त्री० गर्भिणी। **–गृह–**पु० घरके बीचोबीचका कमरा, घरका मध्य भाग; मंदिरकी वह कोठरी जिसमें मुख्य देवताकी प्रतिमा हो। **–ग्रह–**पु० गर्भधारण। **–ग्राहिका–**स्त्री० धात्री, 'मिड्वाइफ'। **–घातिनी–**स्त्री० लांगलिका वृक्ष। **–घाती(तिन्)–**वि० गर्भपात करने-करानेवाला। **–चलन–**पु० गर्भाशयमें बच्चेका हिलना-डोलना। **–च्युति–**स्त्री० प्रसव; गर्भपात। **–ज,–जात–**वि० जन्मका, पैदाइशी। **–द–**वि० गर्भ देनेवाला। पु० पुत्रजीव वृक्ष। **–दा,–दात्री–**स्त्री० सफेद भटकटैया। **–दास–**पु० पैदाइशी

गुलाम, जन्मका दास। –**दिवस**–पु० गर्भकाल; मेघोंके बननेका समय। –**द्रुह्(ह्)**–वि० गर्भाधान न चाहनेवाला; गर्भपात करानेवाला। –**द्रुहा**–वि०, स्त्री० गर्भधारणकी विरोधिनी (स्त्री)। –**धरा**–वि०, स्त्री० गर्भवती। –**धारण**–पु० गर्भवती होना, हमल रहना। –**नाड़ी**–स्त्री० नाभिरज्जु। –**नाल**–स्त्री० फूलके भीतरकी पतली नाली जिसके सिरेपर गर्भकेसर होता है; दे० 'जरायुमूल'; अपरा। –**पत्र**–पु० कोंपल; फूलके अंदरके पत्ते। –**पाकी(किन्)**–पु० साठी धान। –**पात**–पु० गर्भका गिर जाना, चौथे महीनेके बादके गर्भका गिरना। –**पातक**–वि० गर्भपात करनेवाला। पु० लाल सहजन। –**पातन**–वि० गर्भपातकारी। पु० गर्भ गिराना; रीठा। –**पातिनी**–स्त्री० करियारी; विशल्या। –**भवन**–पु० गर्भगृह; सौरी। –**मंडप**–पु० शयनागार; गर्भगृह। –**मास**–पु० वह महीना जिसमें गर्भ रहे। –**मोक्ष**–पु० बच्चेकी पैदाइश। –**लक्षण**–पु० गर्भके चिह्न। –**वध**–पु० भ्रूणहत्या। –**वास**–पु० (बच्चेका) गर्भके भीतर रहना; कोख, गर्भाशय। –**विज्ञान**–पु० (एम्ब्रियोलॉजी) गर्भ-सम्बन्धी विज्ञान, गर्भ-स्थापना तथा भ्रूणके वृद्धि-विकास आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, भ्रूणविज्ञान। –**व्याकरण**–पु० गर्भकी उत्पत्ति और वृद्धि; (शरीर) आयुर्वेद का वह अंग जिसमें इनका वर्णन हो। –**व्यूह**–पु० एक व्यूह या सैन्य-रचना जिसमें सेना कमलके आकारमें खड़ी की जाती है। –**शंकु**–पु० एक तरहकी सँड़सी जिससे मरा हुआ बच्चा पेटसे निकाला जाता है 'फार्सेप्स'। –**शय्या**–स्त्री० गर्भाशय। –**संधि**–स्त्री० नाट्यशास्त्रमें कथित पाँच प्रकारकी संधियोंमेंसे एक–पूर्वसंधियोंमें कुछ-कुछ प्रकट हुए फलप्रधान उपायका जहाँ ह्रास और अन्वेषणसे युक्त बार-बार विकास हो। –**स्थ**–वि० गर्भमें स्थित। –**स्थापन**–पु० गर्भ धारण कराना। –**स्राव**–पु० गर्भपात, चार महीनेतकके गर्भका गिर जाना। –**स्रावी(विन्)**–वि० गर्भपात करनेवाला। पु० हिंताल वृक्ष। –**हत्या**–स्त्री० भ्रूणहत्या।

गर्भक–पु० (सं०) बालोंके बीच धारण की हुई माला; दो रातों और उनके बीचके दिनका समय।

गर्भवती–वि०, स्त्री० (सं०) गर्भवाली, गर्भिणी, हामिला।

गर्भांक–पु० (सं०) रूपकमें अंकके अंतर्गत अंक या दृश्य-विशेष।

गर्भागार–पु० (सं०) गर्भाशय; गर्भगृह; शयनागार; प्रसूतिगृह।

गर्भाधान–पु० (सं०) गर्भ रहना, गर्भ धारण कराना; १६ संस्कारोंमेंसे एक।

गर्भारि–पु० (सं०) छोटी इलायची।

गर्भाशय–पु० (सं०) स्त्रीके पेटकी वह थैली जिसमें बच्चा रहता है, बच्चादानी।

गर्भाष्टम–पु० (सं०) गर्भसे आठवाँ महीना या वर्ष।

गर्भिणी–वि०, स्त्री० (सं०) जिसे गर्भ हो, गर्भवती, हामिला। –**दोहद**–पु० गर्भवतीका कुछ खास चीजोंपर मन चलना।

गर्भित–वि० (सं०) गर्भयुक्त; भरा हुआ। पु० काव्यका एक दोष, किसी अतिरिक्त वाक्यका किसी वाक्यके बीचमें आ जाना।

गर्भी(भिन्)–वि० (सं०) गर्भयुक्त।

गर्भोपनिषद्–स्त्री० (सं०) अथर्ववेदसे संबद्ध एक उपनिषद्।

गर्म–वि० (फा०) गरम। –**जोशी**–स्त्री० उत्साह, उल्लास; सरगर्मी। –**बाजारी**–स्त्री० बहुत बिक्री, माँग होना; बहुत पूछ होना; चर्चा, शुहरत। –**मिज़ाज**–वि० जल्दी क्रुद्ध हो जानेवाला, उग्र स्वभावका। –**रफ्तार**–वि० तेज चलनेवाला, द्रुतगामी।

गर्मुटिका, गर्मोटिका–स्त्री० (सं०) एक कदन्न, जयाश्रया।

गर्मुत्–स्त्री० (सं०) एक घास; एक कदन्न; एक तरहका सरकंडा; सोना; एक तरहकी मधुमक्खी।

गरयारी*–स्त्री० दे० 'गलियारी'।

गर्रा–वि० लाखके रंगका। पु० लाखी रंग; लाखी रंगका घोड़ा जिसके कुछ बाल सफेद हों; लाखी रंगका कबूतर; गराड़ी; चरखी; पानीका आघात।

गर्रा–पु० (अ०) गरूर, घमंड।

गर्राना†–अ० क्रि० घमंडी बन जाना; बुरी आदतके कारण बिगड़ जाना, हठीला और उद्धत बन जाना (बुंदेल०)।

गर्व–पु० (सं०) घमंड, गरूर, रूप, धन, विद्या आदिमें अपनेको दूसरोंसे बढ़कर समझनेका भाव; एक संचारी भाव। –**प्रहारी(रिन्)**–वि० गर्वका नाश करनेवाला।

गर्वर–वि० (सं०) घमंडी। पु० घमंड।

गर्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

गर्ववंत*–वि० गर्वयुक्त।

गर्वाट–पु० (सं०) चौकीदार; द्वारपाल।

गर्वाना*–अ० क्रि० गर्व करना।

गर्वित–वि० (सं०) गर्वयुक्त, घमंडी।

गर्विता–स्त्री० (सं०) अपने रूप-गुणका गर्व करनेवाली नायिका।

गर्वी(विन्)–वि० (सं०) गर्व करनेवाला, घमंडी।

गर्वीला–वि० घमंडी, अभिमानी।

गर्हण–पु० (सं०) निंदा करना, दोष लगाना।

गर्हणा–स्त्री० (सं०) दे० 'गर्हण'।

गर्हणीय–वि० (सं०) निंदा करने योग्य, निंद्य।

गर्हा–स्त्री० (सं०) निंदा, कुत्सा।

गर्हित–वि० (सं०) निंदित, बुरा, दूषित।

गर्ह्य–वि० (सं०) गर्हणीय, निंद्य।

गलंतिका, गलंती–स्त्री० (सं०) छोटी कलसी; छेददार घड़ा जिससे शिवलिंग आदिपर पानी चूता रहता है।

गलंश–पु० वह संपत्ति जिसका मालिक या वारिस न हो।

गल–पु० (सं०) गला, कंठ; सालका गोंद; गड़ाकू मछली; एक बाजा; रस्सी; 'गला'का समासगत रूप। –**कंबल**–पु० गाय-बैलके गलेका नीचे लटकनेवाला भाग, झालर। –**गंड**–पु० गलेका एक रोग जिसमें एक गाँठ-सी निकल आती और कभी-कभी वह बढ़कर लटकने लगती है, घेघा। –**ग्रह**–पु० गला पकड़ना, घोंटना; गलेका एक रोग; मछलीका काँटा; कृष्ण पक्षकी कुछ तिथियाँ, वह चीज या विपत्ति जिससे जल्दी जान न छूटे; मछलीका रसा; अध्ययन आरंभ होनेपर उसमें बाधा पड़ना। –**जंदड़ा**–पु० (हिं०) पीछा न छोड़नेवाला; सहारेके लिए गलेसे बँधी हुई हाथपरकी पट्टी। –**जोड़**,–**जोत**–स्त्री० (हिं०) वह रस्सी जिससे दो बैल एक साथ बाँधे, जोते जायँ; गलेका हार। –**झंप**–पु० (हिं०) (युद्धमें) हाथीके गलेपर डाली जानेवाली लोहेकी झूल। –**तनी**–स्त्री० (हिं०) बैलोंके गराँवके साथ बाँधनेकी रस्सी। –**थन**–, **थना**–पु० (हिं०) गलस्तन। –**द्वार**–पु० मुख। –**फाँस**–स्त्री० (हिं०) मालखंभकी एक कसरत। –**फाँसी**–स्त्री० (हिं०) गलेकी फाँसी; फंदा; जंजाल, गलग्रह। –**फेड़**–पु० (हिं०) गलेकी गिलटी। –**बंदनी**–स्त्री० (हिं०) गलेका एक गहना, गुलूबंद। –**बहियाँ**,–स्त्री०, **बाहीं** (हिं०) गलेमें बाँह डालना, बगलसे आलिंगन। –**मेखला**–स्त्री० कंठहार। –**व्रत**–पु० मयूर। –**शुंडिका**, –**शुंडी**–स्त्री० छोटी जीभ, उपजिह्वा; एक रोग जिसमें तालूमें शोथ हो जाता है। –**शोथ**–पु० गलेके भीतर होनेवाली सूजन। –**सिरी**–स्त्री० (हिं०) गलेका एक गहना, कंठश्री। –**स्तन**–पु० बकरियोंके गलेसे लटकनेवाली थन जैसी थैली, गलथन। –**स्तनी**–स्त्री० गलस्तनवाली बकरी। –**हस्त**–पु० अर्द्धचंद्र, गरदनियाँ; अर्द्धचंद्राकार बाण।

गल–'गाल'का समासमें व्यवहृत रूप। –**कोड़ा**,–**खोड़ा** पु० एक तरहका चाबुक; मालखंभकी एक कसरत; कुश्तीका एक पेंच। –**गंज**—पु० शोर, हल्ला। –**गुच्छा**–पु० दे० 'गलमुच्छा'। –**चुमनी**–स्त्री० कानका एक गहना जो गालोंको छूता रहता है। –**छट**–पु० मछलीके गलफड़ेका एक भाग। –**तकिया**–पु० गालके नीचे रखनेका छोटा नरम तकिया। –**थैली**–स्त्री० बंदरके गालके अंदर रहनेवाली थैली। –**पट**–पु०,–**पटी**–स्त्री० कनपटीसे थोड़ा नीचेका हिस्सा। –**फड़ा**–पु० जलचरों आदिका वह अवयव जिससे वे साँस लेते हैं; गालका चमड़ा। –**फूट**–स्त्री० बड़बड़ानेकी लत। –**फूला**–वि० जिसके गाल फूले हों। –पु० गलसुआ। –**मंदरी**–स्त्री० दे० 'गलमुद्रा'। –**मुच्छा**–पु० गालोंपर दोनों ओर मूँछकी सीधमें रखे हुए बाल, गलगुच्छा। –**मुद्रा**–स्त्री० शिवकी पूजामें उन्हें प्रसन्न करनेके लिए गाल बजाना। –**सुआ**–पु० एक रोग जिसमें गालोंके नीचेके हिस्से सूज आते हैं और ज्वर रहता है।

–सुई*–स्त्री० गलतकिया ।

गलई–स्त्री० दे० 'गलही' ।

गलक–पु० (सं०) गला; गड़ाकू मछली ।

गलका–पु० हाथ या पाँवकी उँगलियोंमें होनेवाला एक तरहका छाले जैसा फोड़ा ।

गलगंजना†–अ० क्रि० दे० 'गलगाजना' ।

गलगल–पु० चकोतरेके आकारका एक बहुत खट्टा नीबू; चूना और अलसीका तेल मिलाकर बनाया हुआ एक तरहका मसाला; मैनासे मिलती-जुलती एक चिड़िया ।

गलगला*–वि० गीला, तर; मुलायम ।

गलगलाना†–अ० क्रि० गीला या तर होना; दयार्द्र होना ।

गलगाजना–अ० क्रि० खुशीसे फूलकर, इतराकर बड़ी-बड़ी बातें करना; जोर-जोरसे बोलना ।

गलगुथना–वि० मोटा-ताजा ।

गलतंस*–पु० ऐसे आदमीकी संपत्ति जो अपने पीछे किसीको छोड़ न गया हो; निःसंतान मृत व्यक्ति । **मु०–हो जाना–**निर्वंश हो जाना, वंशका नाश हो जाना ।

ग़लत–वि० (अ०) जो सही या ठीक न हो, नादुरुस्त; मिथ्या, असत्य । **–अंदाज़–**वि० जो ठीक जगह, ठीक निशानेपर न पड़े । **–कार–**वि० धोखा देनेवाला; दुराचारी । **–कारी–**स्त्री० ठगी, धोखेबाजी; अनाचार, दुराचार । **–नामा–**पु० शुद्धिपत्र । **–फ़हमी–**स्त्री० गलत समझना, कुछका कुछ समझना । **–बयानी–**स्त्री० अयथार्थ कथन ।

ग़लताँ–वि० (फ़ा०) लोटता, लुढ़कता हुआ; लोटनेवाला । **–वपेचाँ–**वि० लोटता और चक्कर खाता हुआ, परेशान ।

ग़लता–पु० (फ़ा०) रेशम और सूतकी मिलावटसे बना एक चमकदार कपड़ा ।

गलतान–वि० दे० 'ग़लताँ' ।

ग़लती–स्त्री० (अ०) गलत होना, अशुद्धि, भूल-चूक ।

ग़लतुलआम–पु० (अ०) वह असाधु प्रयोग जो आम होनेके कारण साधु मान लिया जाय ।

गलदश्रु-भावुकता–स्त्री० (सं०) (मॉडलिन सेंटिमेंटालिज्म) छोटी-छोटी बातमें भी आँसू ला देनेवाली भावुकता ।

गलन–पु० (सं०) चूना, क्षरण; झड़ना; गलना; सरकना ।

गलनहाँ–पु० हाथियोंका एक रोग जिसमें उनका नाखून गलने लगता है । वि० ऐसे रोगवाला (हाथी) ।

गलना–अ० क्रि० ठोस वस्तुका तरल होना, पिघलना; कड़ी चीजका पककर नरम होना, सीझना; घुलना; जीर्ण होना; सड़ना; दुबला होना; सूखना; ठिठुरना; नष्ट होना; गलाया जाना ।

गलबल*–पु० खलभल, कोलाहल–'भई भीर गलवल मच्यो' –छत्रप्रकाश ।

ग़लबा–पु० (अ०) प्रबलता; जीत, विजय (होना-पाना) । हुल्लड़, हंगामा; बलवा ।

गलवाना–स० क्रि० गलानेका काम कराना ।

गलही–स्त्री० नावका अगला हिस्सा जहाँ दोनों पार्श्व मिलते हैं ।

गलांकुर–पु० (सं०) गलेकी घंटीका सूज जाना, 'टौंसिल'का बढ़ना ।

गला–पु० सिरको धड़से जोड़नेवाला अंग, कंठ, हलक; सुर, आवाज; अँगरखे आदिका गरेबान; घड़े, लोटे आदिका मुँहके नीचेका तंग भाग । **–(ले)बाज़–**पु० अच्छे गलेवाला गवैया । **–बाज़ी–**स्त्री० ताल-सुरसे गाना; तान लेना । **मु०–उठाना, –करना–**घंटी बैठाना । **–कटना–**कतल किया जाना; (दूसरेके कामसे) भारी हानि होना, हकतलफी होना । **–कटवाना,–कटाना–**जान देना, कतल होना; अपनी भारी हानि करना । **–काटना–**गरदन मारना, बध करना; घोर अहित करना; गलेमें खुजली, चुनचुनाहट पैदा करना (जमीकंद आदिका) । **–खुलना –**पड़ी हुई आवाजका साफ हो जाना । **–ख़ुश्क होना–**गला सूखना; चिल्लाते-चिल्लाते गला बैठ जाना । **–घुंटना–**गला दबाये जानेसे साँस रुकना । **–घोंटना–**गलेको इस तरह दबाना कि साँस रुक जाय; गलेको इस तरह दबाकर जान लेना । **–छुड़ाना–**परेशान करनेवाले व्यक्ति या वस्तुसे पीछा छुड़ाना । **–दबाना–**गला घोंटना; दबाव डालना, जबरदस्ती करना । **–पकड़ना–**गलेमें चिपकना; गलेमें खुजली या जलन पैदा करना; सताना, तंग करना; मजबूर करना । **–पड़ना,–बैठना–**(शोथ, बहुत बोलने, गाने आदिसे) साफ आवाज न निकलना, स्वर विकृत हो जाना । **–फँसना–**बँधना, विवश होना; ऋणग्रस्त होना; साफ आवाज न निकलना । **–फाड़कर चिल्लाना,–फाड़ना–**चीखकर बोलना, इतने जोरसे बोलना कि गला बैठ जाय । **–रेतना–**गला काटना, हलाल करना; बहुत पीड़ा देना । **–(ले)का हार–**जो इतना प्यारा हो कि जुदा न किया जा सके, अति प्रिय; जिससे जान न छुड़ायी जा सके, हर वक्त साथ लगा रहनेवाला (बनना, बनाना, होना) । **–के नीचे उतरना–**घोंटा, निगला जाना; समझमें आना; ठीक लगना । **–पड़कर देना–**जबरदस्ती देना, मत्थे मढ़ना । **–पड़ना–**अनचाही, अरुचिकर वस्तुकी प्राप्ति होना, उसके ग्रहणके लिए विवश होना, मत्थे मढ़ा जाना । **–पर छुरी फेरना–**भारी अहित, अन्याय करना, गला काटना । **–मढ़ना–** –(किसीका) गले पड़कर कोई चीज देना; कोई काम सौंपना । **–मिलना,–लगना–**आलिंगन करना; बगलगीर होना; भेंटना । **–में अटकना–**घोंटा, निगला न जा सकना; मनमें न बैठना, बुद्धिको स्वीकार न होना । **–लगाना–**आलिंगन करना; गले मढ़ना ।

गलाऊ–वि० गलनेवाला ।

गलाना–स० क्रि० किसी ठोस चीजको तरल, किसी कड़ी चीजको नरम बनाना, घुलाना, पिघलाना; गाँठ, गिल्टी आदिको धीरे-धीरे गायब कर देना; (कोठी) धँसाना; खर्च कराना ।

गलानि*–स्त्री० दे० 'ग्लानि' ।

गलानिल, गलाबिल–पु० (सं०) मत्स्यविशेष ।

गलार–पु० वृक्षविशेष । † वि० झगड़ालू ।

गलारी–स्त्री० एक पक्षी, सिरोही, गलगलिया ।

गलावट–स्त्री० गलनेका भाव; गलानेवाली चीज ।

गलि–पु० (सं०) बछड़ा; सुस्त बैल ।

गलित–वि० (सं०) गला हुआ, पिघला हुआ; चुआ, गिरा हुआ; जीर्ण; क्षयप्राप्त; सरका हुआ; निगला हुआ; * परिपक्व । **–अभिमान–**वि० निरभिमान (रामा०) । **–कुष्ठ–**पु० वह कोढ़ जिसमें हाथ-पाँवकी उँगलियाँ आदि गलकर गिर जाती हैं । **–नखदंत–**वि० जिसके नख और दाँत गिर गये हों । **–नयन–**वि० जिसकी आँखें अंधी हो गयी हों, अंधा । **–यौवना–**वि०, स्त्री० जिस(स्त्री)की जवानी ढल गयी हो, ढलती उम्रवाली ।

गलितक–पु० (सं०) नृत्यका एक ढंग, अंगभंगी ।

गलियारा–पु०, **गलियारी–**स्त्री० सँकरा, गली जैसा रास्ता ।

गली–स्त्री० सँकरा, सड़कसे कम चौड़ा रास्ता जिसके दोनों ओर मकानोंकी कतार हो, कूचा; (किसीके) घरके आस-पासका स्थान, टोला । **–कूचा–**पु० गली । **–गली–**अ० हर गलीमें, इस गलीसे उस गलीमें; दर-बदर । **मु०–कमाना–**गलीमें झाड़ू लगाना; गलीकी मोरी, पाखाने साफ करना । **–गलियाँ छानना, झाँकना–**किसीकी खोजमें बहुत भटकना, हैरान होना ।

गलीचा–पु० सूत या ऊनके धागेसे बुना हुआ बिछौना, कालीन ।

ग़लीज़–वि० (अ०) गाढ़ा; गंदा, मैला । पु० मैला, विष्ठा ।

गलीत*–वि० गलित, जीर्ण; दुर्दशाको प्राप्त–'मीत न नीति, गलीत ह्वै जो धरिये धन जोरि'–वि०; क्षयप्राप्त ।

गलू–पु० एक तरहका कीमती पत्थर ।

गलेगंड–पु० (सं०) एक तरहका पक्षी ।

गलेफ–पु० गिलाफ; गिलेफ ।

गलेस्तनी–स्त्री० (सं०) बकरी ।

गलैचा†–पु० 'गलीचा' ।

गलौ*–पु० चंद्रमा ।

गलौआ–पु० बंदरोंके गालके अंदरकी थैली । वि० जिसे गलाना हो; जो गलाया गया हो ।

गलौघ–पु० (सं०) गलेका अर्बुद ।

गल्प–पु०, स्त्री० गप्प; डींग; कहानी; मृदंगका एक प्रबंध ।

गल्भ–वि० (सं०) ढीठ; घमंडी; वाचाल।

गल्ल–पु० (सं०) गाल; * हल्ला, शोर। –**चातुरी**–स्त्री० गलसुई।

गल्लई–वि० जो गल्लेके रूपमें हो। पु० उपजके रूपमें लिया जानेवाला लगान; बटाईपर जोता जानेवाला खेत।

गल्लक, गल्लर्क–पु० (सं०) मद्यपानपात्र।

गल्ला*–पु० शोर, हल्ला; दे० 'ग़ल्ला'; (फा०) जानवरोंका झुंड, खेड़। –**बान**–पु० भेड़, बकरी आदि चरानेवाला, चरवाहा, गड़रिया।

ग़ल्ला–पु० (अ०) अनाज; वह अनाज जिसका आटा पीसकर खाया जाय; रोजकी बिक्रीकी आमदनी, गोलक; गिरे या तोड़े हुए आमोंका ढेर। –**फ़रोश**–पु० अनाज बेचनेवाला।

गल्वर्क–पु० (सं०) स्फटिक; स्फटिक आदिका बना हुआ मद्यपानका पात्र।

गवँ–स्त्री० दे० 'गौं'।

गवन*–पु० गमन; गौना। –**चार**–पु० गौना।

गवनना*–अ० क्रि० जाना।

गवना†–पु० दे० 'गौना'। अ० क्रि० जाना।

गवय–पु० (सं०) मृग या वृषकी जातिका एक जानवर, नीलगायका नर; एक बंदर; एक छंद।

गवयी–स्त्री० (सं०) नीलगाय (?)।

गवरि*–स्त्री० गौरी, पार्वती।

गवर्नमेंट–स्त्री० (अं०) शासन, हुकूमत; शासन-मंडल, सरकार; शासन-पद्धति।

गवर्नर–पु० (अं०) शासक; देश, प्रदेश या नगरका राजा या राज्यकी ओरसे नियुक्त शासक; किसी सूबेका प्रधान शासक, राज्यपाल। –**जेनरल**–पु० प्रधान शासक; ब्रिटिश साम्राज्यके देशोंमें ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त सम्राट्का प्रतिनिधिरूप प्रधान शासक।

गवर्नरी–वि० गवर्नरका (शासन, फरमान इत्यादि)। स्त्री० गवर्नरका पद, कार्य या शासनकाल।

गवर्मेंट–स्त्री० दे० 'गवर्नमेंट'।

गवर्मेंटी–वि० सरकारी।

गवल–पु० (सं०) जंगली भैंसा; जंगली भैंसेका सींग।

गवाँना–स० क्रि० खोना।

गवाक्ष, गवाक्षक–पु० (सं०) छोटी खिड़की, झरोखा।

गवाक्षित–वि० (सं०) गवाक्षयुक्त, खिड़कीदार (मकान)।

गवाक्षी–स्त्री० (सं०) इंद्रवारुणी, अपराजिता।

गवाख, गवाछ*–पु० दे० 'गवाक्ष'।

गवाची–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मछली।

गवादन–पु० (सं०) घास।

गवादनी–स्त्री० (सं०) गाय-बैलको चारा देनेका पात्र, नाँद; घास।

गवाधिका–स्त्री० (सं०) लाक्षा, लाख।

गवामयन–पु० (सं०) दस या बारह महीनेमें पूरा होनेवाला एक वैदिक यज्ञ।

गवार–वि० (फा०) पचनेवाला; रुचनेवाला, अनुकूल (केवल समासमें–'खुशगवार', 'नागवार' इत्यादि)।

गवारा–वि० (फा०) पचनेवाला; रुचिकर, मनोनुकूल।

गवारिश–स्त्री० (फा०) पाचक, चूरन।

गवालूक–पु० (सं०) दे० 'गवय'।

गवाशन–वि० (सं०) गोभक्षी। पु० चमार; चांडाल।

गवास*–पु० गोभक्षी, कसाई। † स्त्री० गानेकी इच्छा।

गवाह–पु० (फा०) जिसने किसी घटनाको अपनी आँखों देखा हो या उसको जानता हो, साक्षी; अदालतमें किसी घटना, दावे, बयानकी सचाईकी शहादत देनेवाला।

गवाही–स्त्री० (फा०) गवाहकी हैसियतसे दिया जानेवाला बयान, साक्ष्य।

गविष्ठ–पु० (सं०) सूर्य।

गविष्ठि–स्त्री० (सं०) इच्छा; उत्सुकता; लड़नेकी इच्छा। वि० गायें चाहनेवाला; इच्छुक।

गवीधु–पु० (सं०) दे० 'गवेधु'।

गवीश–पु० (सं०) गायोंका मालिक, गोस्वामी; गोपालक; साँड़।

गवेजा*–स्त्री० बातचीत, बहस।

गवेडु–पु० (सं०) बादल; दे० 'गवेधु'।

गवेधु, गवेधुक–पु० (सं०) तृणधान्य-विशेष।

गवेधुका–स्त्री० (सं०) कथकु नामक कदन्न, दे० 'गवेधु'।

गवेरुक–पु० (सं०) गेरू।

गवेल*–वि० गँवार।

गवेश–पु० (सं०) दे० 'गवीश'।

गवेष, गवेषण–पु० (सं०) (हरी, चुरायी हुई) गायको ढूँढ़ना, खोजना; ढूँढ़ना; चाहना।

गवेषक छात्र–पु० (रिसर्च स्कॉलर) गवेषणा-कार्यमें लगा हुआ छात्र, शोध छात्र।

गवेषणा–स्त्री० (सं०) खोयी हुई गायको खोजना; छानबीन; स्त्री० (रिसर्च) किसी विषयका विशेष परिश्रम और सावधानीके साथ अध्ययन तथा छान-बीन; अन्वेषण। –**शाला**–स्त्री० (रिसर्च इंस्टिटयूट) अन्वेषण, छानबीन आदि करनेका स्थान।

गवेषित–वि० (सं०) तलाश किया हुआ, अन्वेषित।

गवेषी (षिन्)–वि० गवेषण करनेवाला, खोजी।

गवेसना*–स० क्रि० खोजना। स्त्री० दे० 'गवेषणा'।

गवेसी*–वि० दे० 'गवेषी'।

गवैंहाँ–वि० देहाती, ग्रामका।

गवैया–पु० गानेवाला।

गव्य–वि० (सं०) गायसे उत्पन्न, प्राप्त (दूध, दही, गोबर आदि); गोवंशके उपयुक्त। पु० गायोंका झुंड; दूध; चरागाह; ज्या; गोरोचन; * पंचगव्य।

गव्या–स्त्री० (सं०) गायोंका झुंड; दो कोसकी एक माप; ज्या; गोरोचना।

गव्यु–वि० (सं०) गो-जातिमें दिलचस्पी लेनेवाला; गाय या दूध चाहनेवाला; उत्सुक; युद्धका इच्छुक।

गव्यूत–पु०, **गव्यूति**–स्त्री० (सं०) लगभग एक कोसकी एक माप; दो कोसकी एक माप; चरागाह।

गश–पु० (अ०) बेहोशी, मूर्च्छा। मु०–**खाना**–मूर्च्छित होना।

गशी–स्त्री० बेहोशी।

गश्त–स्त्री० (फा०) फिरना, भ्रमण, चक्कर; पुलिस कर्मचारीका पहरेके लिए रातमें घूमना, रोंद (करना, लगाना)। –**सलामी**–स्त्री० दौरेपर गये हुए अफसरको मिलनेवाला नजराना। मु०–**नाचना**–वेश्याओंका बरातके आगे नाचते हुए चलना।

गश्ती–वि० गश्त करनेवाला; फिरनेवाला; एकसे दूसरेके पास जानेवाला (हुक्म, परवाना इ०)। –**चिट्ठी**–स्त्री०,–**हुक्म**–पु० वह चिट्ठी या हुक्म जो सब मातहत कर्मचारियोंके पास क्रमशः भेजा जाय।

गसना†–स० क्रि० पकड़ना, ग्रसना; कसना।

गसीला–वि० गठा हुआ; ठस बुना हुआ।

गस्सा–पु० ग्रास, निवाला।

गह*–स्त्री० टेक।

गहकना*–अ० क्रि० ललकना, लालसायुक्त होना।

गहगड्ड–वि० 'गहागड्ड'।

गहगह, गहगहा–वि० प्रफुल्ल, आनंद-उल्लाससे भरा हुआ। अ० धूमधामसे, हर्ष-उत्साहके साथ।

गहगहाना–अ० क्रि० खुशीसे भर उठना, बहुत आनंदित होना।

गहगहे–अ० धूमधामसे, हर्ष-उत्साहके साथ।

गहडोरना†–स० क्रि० गंदा करना।

गहथा†–वि० जिसे ग्रहण लगा हो (चंद्र, सूर्य)।

गहन–वि० (सं०) गहरा; घना, अभेद्य, निविड़; दुर्गम; कठिन। पु० गहराई; गुफा; जल; जंगल; दुर्गम स्थान; गहना; पीड़ा, परमेश्वर; * ग्रहण; विपद्; बंधक। * स्त्री० पकड़; हठ।

गहनता–स्त्री० (सं०) गंभीरता, गहराई; दुर्गमता।

गहना–पु० बंधक; (सं०) जेवर, आभूषण। * स० क्रि० पकड़ना; दे० 'गाहना'।

गहनि*–स्त्री० पकड़; हठ, जिद ।

गहनी–स्त्री० नावका छेद बंद करनेकी क्रिया; पशुओंका एक रोग; खेतकी घास निकालनेका एक औजार ।

गहने*–अ० बंधकके तौरपर ।

गहबर*–वि० दुर्गम; गह्वर; निकुंज, गुप्तस्थान; शोकविह्वल; आत्मविस्मृत; व्याकुल; ध्यानमग्न; गहरा; चटक; घना ।

गहबरना*–अ० क्रि० घबड़ाना, व्याकुल होना–'ततखन रतनसेन गहबरा'–प० ।

गहबरनि*–स्त्री० व्याकुलता, अफनाहट–'गहकि-गहकि गहबरनि गरें मचै'–घन० ।

गहबराना*–स० क्रि० घबड़ा देना । अ० क्रि० घबड़ाना ।

गहमह*–स्त्री० चहल-पहल–'गोकुल गरथारिनमैं महा गहमह माँची'–घन० ।

गहमहई*–स्त्री० प्रचुरता, धूमधड़क्का–'घर-घर चुहल चैनकी रहई । जित तित गोधनकी गहमहई'–घन० ।

गहर*–स्त्री० देर । वि० गहन, दुर्गम; गहरा ।

गहरना*–अ० क्रि० देर लगाना; लड़ना; कुपित होना; कुढ़ना ।

गहरवार–पु० एक क्षत्रिय-वंश ।

गहरा–वि० जिसकी सतह आसपासके स्थान या किनारेसे नीची हो, निम्नगामी, उथलाका उलटा; गंभीर; गाढ़ा; भारी; कठिन; बहुत ज्यादा; जिसके मनकी वात जल्दी जानी न जा सके, गंभीर स्वभावका; गूढ़, जो जल्दी समझमें न आ सके (चाल) । (स्त्री० 'गहरी') । पु० गड्ढा; भीतरका गुप्त स्थान 'मनके गहरेमें फकीरीका सपना दूर नहीं हो पाता' । **–ई**–स्त्री०–गहरापन, गहरा होना; गहरेपनकी माप । **मु०–असामी**–बड़ी पूँजी रखनेवाला आदमी, मालदार आदमी । **–पेट**–भेद न खोलनेवाला । **–हाथ मारना**–ऐसा वार करना कि गहरी चोट बैठे; भारी रकम, भारी मूल्यकी चीज हथियाना, उड़ाना । **–(री) घुँटना**–गाढ़ी भाँग पिसना; गाढ़ी मित्रता होना; खूब आमोद-प्रमोद होना । **–छनना**–गाढ़ी या अधिक भाँग पीना; दिली दोस्ती होना; घुल-घुलकर बात होना । **–साँस भरना**–ठंढी साँस लेना ।

गहराना†–अ० क्रि० गहरा होना; नाराज होना; बुदबुदाना । स० क्रि० गहरा करना ।

गहराव†–पु० गहराई ।

गहरु*–वि० दे० 'गहर' ।

गहरेबाजी†–स्त्री० एक्के, ताँगेको खूब तेज दौड़ाना; एक्के आदिको तेज दौड़ाने, आगे बढ़ जानेकी गहरी प्रतियोगिता ।

गहलौत–पु० राजपूतोंका एक वंश ।

गहवा†–पु० सँड़सी ।

गहवारा–पु० (फा०) पालना, बच्चेको सुलानेका झूला; वह स्थान जहाँ कोई चीज पाल-पोसकर बड़ी की जाय, विकासस्थल ।

गहाई*–स्त्री० गहन, पकड़ ।

गहागड्ड–वि० गहरा; खूब तेज ।

गहागह–अ० दे० 'गहगह' ।

गहाना–स० क्रि० पकड़ाना, 'गहना'का प्रे० ।

गहासना*–स० क्रि० ग्रसना, निगलना; पकड़ना ।

गहिरा†–वि० दे० 'गहरा' ।

गहिराव†–पु० दे० 'गहराई' ।

गहिरो*–वि० दे० 'गहरा' ।

गहिला*–वि० पागल, बावला ।

गहीर*–वि० दे० 'गहरा'; गंभीर ।

गहीला–वि० गर्वीला, घमंडी ।

गहुआ–पु० एक तरहकी सँड़सी ।

गहेजुआ*–पु० छछूंदर ।

गहेलरा*–वि० बावला; मूर्ख ।

गहेला–वि० हठी; घमंडी; पागल, बौड़म ।

गहैया†–पु० पकड़नेवाला, ग्रहण करनेवाला ।

गह्वर–वि० (सं०) गहरा; घना; निविड़; दुर्गम; गुप्त; व्याकुल । पु० गुफा, कंदरा; बिल; अँधेरी, छिपने लायक जगह; निकुंज; गड्ढा; दंभ; गंभीर विषय; जल ।

गह्वरी–स्त्री० (सं०) गुफा, कंदरा ।

गाँकर–स्त्री० लिट्टी, बाटी ।

गांग–वि० (सं०) गंगा-संबंधी; गंगाका । पु० भीष्म; कार्तिकेय; सोना; धतूरा; वर्षाका विशेष प्रकारका जल ।

गांगट, गांगटक, गांगटेय–पु० (सं०) एक तरहकी मछली ।

गांगायनि–पु० (सं०) भीष्म; कार्त्तिकेय ।

गांगी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

गांगेय–पु० (सं०) भीष्म; कार्त्तिकेय; सोना; कसेरू; एक राजवंश; हिलसा मछली । वि० गंगामें या गंगातटपर स्थित; गंगासे उत्पन्न ।

गांगेयी–स्त्री० (सं०) हिलसा मछली ।

गांगेरुका, गांगेरुकी–स्त्री० (सं०) नागवल्ली; एक कदन्न ।

गांगेष्ठी–स्त्री० (सं०) एक लता, कटशर्करा ।

गांग्य–वि० (सं०) गंगा-संबंधी ।

गाँछना–स० क्रि० गूँथना ।

गोँज–पु० ढेर; पयाल-पत्तों आदिका ढेर ।

गाँजना–स० क्रि० ढेर लगाना ।

गाँजा–पु० भाँगकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशेके लिए तंबाकूकी तरह पीते हैं ।

गांजिकाय, गांजीकाय–पु० (सं०) बतख ।

गाँठ–स्त्री० रस्सी, धागे आदिका फंदा कसने या जोड़नेसे पड़ी हुई गुत्थी, गिरह, ग्रंथि; कपड़ेके छोरमें कुछ रखकर लगायी हुई गिरह; जेब; टेंट; गठरी; उँगली, हाँथ-पाँव आदिके जोड़, ईख, बाँस आदिके पोरोंके जोड़, पर्व; गाँठकी शकलकी जड़; गट्ठा; गिलटी; वैर, बुग्ज । **–कट,–कतरा**–पु० जेब काटनेवाला, पाकेटमार; उचक्का; ठग । **–गोभी**–स्त्री० एक तरहकी गोभी जिसमें जड़से कुछ ऊपर गाँठ होती है । **–दार**–वि० गाँठवाला । **–का**–पासका, जो अपने पास हो । **मु०–कटना**–जेब कटना; गाँठका पैसा निकल जाना; ठगा जाना । **–कतरना,–काटना**–जेब कतरना । **–करना**–संग्रह करना । **–का पूरा**–पैसेवाला, मालदार । **–का पूरा, आँखका अंधा**–पैसेवाला, पर मूर्ख । **–खुलना**–उलझन दूर होना; दिलकी सफाई होना; मनकी बात खोलकर कह दिया जाना । **–छोड़ना**–कठिनाई दूर करना । **–जोड़ना**–गठबंधन करना । **(मनमें) – पड़ना** – बिगाड़ होना; (किसीके प्रति) मनमें वैर-बुराई पैदा होना । **–पर गाँठ पड़ना**–कठिनाई, पेचीदगी या बुराई-वैमनस्यका बढ़ते जाना । **–बाँधना**–(किसी बातको) अच्छी तरह याद कर लेना कि भूल जानेका डर न रहे ।

गाँठना–स० क्रि० गिरह लगाना; जोड़ना; जूता सीना, जूतेकी मरम्मत करना; मिलाना; हाथमें कर लेना, मनचाही बात करनेको तैयार कर लेना; कसना (पंजा, सवारी); निश्चय करना; बाँधना (मजमून, मंसूबा); दबाना; वार रोकना ।

गाँठि*–स्त्री० दे० 'गाँठ' ।

गाँठी–स्त्री० एक गहना; डंठलका गाँठदार टुकड़ा ।

गाँड़–स्त्री० गुदा; तला; पेंदा ।

गाँडर–स्त्री० एक घास जिसकी जड़को खस कहते हैं; एक दूब ।

गाँडा–पु० ईखका बोने या पेरनेके लिए काटा हुआ टुकड़ा; ईख; मेंड़री ।

गांडाली–स्त्री० (सं०) एक तरहकी घास ।

गांडिव–पु० (सं०) दे० गांडीव ।

गांडी–स्त्री० एक तरहकी घास जिसे चौपाये खाते हैं ।

गांडीर–वि० (सं०) गंडीर पौधेसे प्राप्त या उसका बना ।

गांडीव–पु० (सं०) अर्जुनका धनुष् जो उन्हें अग्निसे मिला था; धनुष् । **–धन्वा(न्वन्)**–पु० अर्जुन ।

गांडीवी(विन्)–पु० (सं०) अर्जुन ।

गाँडू–वि० जिसे गुदाभंजन करानेकी लत हो; कमजोर दिलका; निकम्मा; डरपोक ।

गाँती–स्त्री० दे० 'गाती' ।

गांतु–पु० (सं०) चलनेवाला, पथिक; गायक ।

गांत्री–स्त्री० (सं०) बैलगाड़ी ।

गाँथना–स० क्रि० गूँथना; गाँठना।

गांदिनी–स्त्री० (सं०) गंगा; अक्रूरकी माता। **–सुत**–पु० भीष्म; कार्त्तिकेय; अक्रूर।

गांदी–स्त्री० (सं०) दे० 'गांदिनी'।

गांधर्व–वि० (सं०) गंधर्व-संबंधी; गंधर्व-देशमें उत्पन्न। पु० गंधर्ववेद, गानविद्या; गंधर्व-विवाह; भारतवर्षका एक उपद्वीप; घोड़ा। **–वेद**–पु० दे० 'गंधर्व-वेद'; सामवेदका उपवेद।

गांधर्वक, गांधर्विक–पु० (सं०) गवैया।

गांधर्वी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; वाणी।

गांधार–पु० (सं०) भारतवर्षका एक प्राचीन जनपद, पेशावरसे कंधारतकका प्रदेश, कंधार; गांधार देशवासी; गांधारका राजा; सात स्वरोंमेंसे तीसरा; सिंदूर; एक राग; एक गंधद्रव्य। **–पंचम**–पु० एक राग। **–भैरव**–पु० एक राग।

गांधारि–पु० (सं०) दुर्योधनका मामा शकुनि।

गांधारी–स्त्री० (सं०) गांधारकी राजकुमारी, दुर्योधनकी माता; एक रागिनी; बायीं आँखकी एक नाड़ी; एक फनगा। पु० एक विद्यादेवी (जै०); जवासा; गाँजा।

गांधारेय–पु० (सं०) दुर्योधन।

गांधिक–पु० (सं०) गंधी, इत्रफरोश; गंधद्रव्य; एक गंधदार कीड़ा; लेखक।

गांधी–पु० गुजराती वैश्योंका एक अल्ल; हरे रंगका एक छोटा कीड़ा जिसमें तेज दुर्गंध होती है; एक घास; हींग; ईसाकी बीसवीं सदीके एक बहुत बड़े नेता जिन्होंने सत्य और अहिंसाके आधारपर राष्ट्रीय आंदोलन चलाकर भारतको स्वराज्य दिलाया (जन्म–२ अक्टूबर, १८६९, मृत्यु–३० जनवरी, १९४८)। **–टोपी**–स्त्री० खादीकी किश्तीनुमा टोपी। **–दर्शन**–पु० गांधीका जीवन-संबंधी दृष्टिकोण। **–वाद**–पु० सत्य और अहिंसाका सिद्धांत जिसका समर्थन, प्रतिपादन और बड़े पैमानेपर प्रयोग मोहनदास करमचंद गांधीने किया था।

गांभीर्य–पु० (सं०) गंभीरता, गहराई; चित्तकी स्थिरता, अचंचलता; जटिलता।

गाँव–पु० ग्राम, छोटी बस्ती।

गाँवही–वि० गाँवका; देहाती।

गाँस–स्त्री० रुकावट; भेदकी बात; वैर; गाँठ, फंदा; तीर, भाले आदिकी नोक; कष्ट देनेवाली चीज; * निगरानी; शासन; अधिकार।

गाँसना–स० क्रि० गूँथना; कसना; छेदना; † रोकना; वशमें रखना।

गाँसी–स्त्री० तीर आदिका फल, हथियारकी नोक; गाँठ; कपट; चुभनेवाली बात।

गाँहक*–पु० दे० 'गाहक'।

गाइ*–स्त्री० दे० 'गाय'।

गाइगर गणित्र–पु० (गाइगर काउण्टर) काँचकी नलीका बना यंत्र जो आयनकारी विकिरण (गामा, बीटा, या एल्फा किरण) की उपस्थितिका पता लगानेके लिए प्रयुक्त होता है।

गाइड–पु० (अं०) पथ-प्रदर्शक; यात्रियों, पर्यटकोंको किसी नगर या देशके दर्शनीय स्थान, वस्तुएँ आदि दिखानेवाला; वह पुस्तक जिसमें नगर, अजायबघर आदिका विवरण हो।

गाऊघप्प†–पु० दे० 'गावघप'।

गाकरी–स्त्री० लिट्टी, बाटी, गाँकर।

गाउन–पु० (अं०) अनेक पश्चिमी देशोंकी स्त्रियोंका एक लंबा पहनावा; वह विशिष्ट लंबा-सा परिधान जो वकालत, विज्ञान, गणित आदिकी उच्च परीक्षामें उत्तीर्ण करनेपर स्नातकों द्वारा विशेष अवसरोंपर पहना जा सकता है।

गागर*–स्त्री० घड़ा, कलसा। **मु०–में सागर भरना**–थोड़ेमें बहुत अधिक बातोंका समावेश करना।

गागरी*–स्त्री० दे० 'गगरी'।

गाच†–पु० एक तरहका जालीदार कपड़ा।

गाछ–पु० पेड़, पौधा।

गाछी–स्त्री० छोटा पेड़; बाग; गोनी, खुरजी।

गाज–स्त्री० गर्जन; बिजलीकी कड़क; बिजली। पु० फेन, झाग। **मु०–गिरना,–पड़ना**–बिजली गिरना; आफत आना।

गाजना–अ० क्रि० गरजना; खुशीके मारे जोर-जोरसे बोलना।

गाजर–स्त्री० (सं०) एक मीठा मूल जो कच्चा और अचार-मुरब्बे आदिके रूपमें भी खाया जाता है। **–मूली**–स्त्री० तुच्छ वस्तु।

गाज़ा–पु० (अ०) सुगंधित पाउडर जिसे स्त्रियाँ सौंदर्यवृद्धिके लिए गालोंपर मलती हैं।

गाज़ी–पु० (अ०) काफिरोंसे लड़नेवाला मुसलमान योद्धा; विजेता; शूर-वीर। **–मर्द**–पु० वीर पुरुष; घोड़ा। **–मियाँ**–पु० महमूद गजनवीका भांजा सालार मसऊद जो श्रावस्तीके राजा सुहृद्देवके हाथों बहराइचमें मारा गया।

गाटर–पु० गाड़ी या हलके जुएकी लकड़ी जिसके दोनों ओर बैल जोते जाते हैं। (अं० 'गर्डर') लोहेकी धन्नी या शहतीर।

गाटा†–पु० खेतका छोटा टुकड़ा; पयाल दाँनेके लिए बैलोंको नाधना।

गाड़–पु० गड्ढा; अनाज रखनेका गड्ढा, खत्ता, खत्ती; खेतकी मेंड़; कुएँकी ढाल।

गाड़ना–स० क्रि० गड्ढेमें रखकर मिट्टीसे ढकना, दफन करना; धरतीमें धँसाना; छिपाकर रखना।

गाडर*–स्त्री० भेड़। **–ताँती**–स्त्री० भेडकी नसोंसे बनी डोरी जैसी वस्तु 'बाज सुराग कि गाडर ताँती'–रामा०।

गाडव–पु० (सं०) बादल।

गाड़ा–पु० घातमें बैठनेका गड्ढा, कमीनगाह; * छकड़ा, बैलगाड़ी; कोल्हूके नीचेका गड्ढा जिसमें तेल आदि जमा करनेके लिए बरतन रखा जाता है।

गाड़ी–स्त्री० पहियेके सहारे चलनेवाली सवारी, शकट; रेलगाड़ी। **–खाना**–पु० गाड़ी या गाड़ियाँ रखनेका स्थान। **–वान**–पु० गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ–वि० (सं०) अवगाहन किया हुआ; गाढ़ा; गहरा; ठस; घना; खूब मजबूत; अत्यधिक; कठिन; तीव्र; दुर्गम। **–मुष्टि**–वि० कंजूस, जिसकी मुट्ठी न खुले।

गाढ़–पु० संकट, कठिनाई; करघा।

गाढ़ा–वि० जो अधिक पतला न हो, जिसकी तरलतामें ठोस पदार्थका अंश कुछ अधिक हो; घनिष्ठ; मोटा; ठस; गहरा; कठिन; विकट। * अ० दे० 'गाढ़े'। पु० हाथका बुना मोटा कपड़ा, गजी; मतवाला हाथी। **–मु०–(ढ़ी) छनना**–भंगका खूब पिया जाना; गहरी मित्रता होना; गुप्त मंत्रणा होना; विरोध होना। **–(ढ़े) का साथी**–विपत्कालमें साथ देनेवाला। **–दिन**–गाढ़, मुसीबतके दिन। **–पसीनेकी कमाई**–कड़ी मेहनतसे कमाया हुआ पैसा। **–में**–बिपतमें।

गाढ़े*–अ० कसकर; जोरसे; अच्छी तरह।

गाणपत–वि० (सं०) गणपति-संबंधी।

गाणपत्य–पु० (सं०) गणपतिका उपासक; गणपतिकी उपासना; गणनायकत्व।

गाणिक्य–पु० (सं०) वेश्याओंका समूह।

गाणेश–पु० (सं०) गणेशका उपासक।

गात*–पु० शरीर, गात्र; नारीका यौवन काल।

गातव्य–वि० (सं०) गाने योग्य।

गाता(तृ)–पु० (सं०) गायक, गवैया; गंधर्व।

गातानुगतिक–वि० (सं०) अंधानुसरणजन्य; अंधी नकल करनेवाला।

गाती–स्त्री० चादर आदि ओढ़नेका एक खास ढंग; उस ढंगसे ओढ़ा हुआ कपड़ा।

गातु–पु० (सं०) गीत; गवैया; कोयल; भौंरा।

गात्र–पु० (सं०) देह; अंग; हाथीके अगले पैरका ऊपरी भाग। **–कर्षण**–पु० शरीरका कमजोर होना। **–गुप्त**–पु० कृष्णके एक पुत्रका नाम। **–भंगा**–स्त्री० शूकशिबी, केवाँच; **–मार्जनी**–स्त्री० अँगोछा, तौलिया। **–यष्टि,–लता**–स्त्री० पतला बदन। **–रुह**–पु० बाल, रोआँ। **–विंद**–पु० लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न कृष्णके

एक पुत्रका नाम । **–संकोचनी**–स्त्री० साही । **–सम्मित**–वि० तीन महीनेसे ऊपरका (भ्रूण) । **–सौष्ठव**–पु० देह, अंगोंकी सुघड़ाई ।

गात्रक–पु० (सं०) शरीर ।

गात्रवर्ण–पु० (सं०) सुर साधनेकी एक पद्धति ।

गात्रवान्(वित्)–पु० (सं०) कृष्णके एक पुत्रका नाम । वि० सुंदर शरीरवाला ।

गात्रानुलेपनी–स्त्री० (सं०) अंगराग ।

गात्रावरण–पु० (सं०) जिरहबख्तर, कवच; ढाल ।

गाथ–पु० (सं०) स्तोत्र; गान । * स्त्री० गाथा; यश ।

गाथक–पु० (सं०) गायक; स्तोत्रका गान करनेवाला ।

गाथा–स्त्री० (सं०) अवैदिक स्तोत्र; प्रशंसा गीत; श्लोक; प्राकृतका एक भेद; कथा; छंदोबद्ध कथा; छंद; आर्या छंद । **–कार**–पु० महाकाव्यका रचयिता; गायक ।

गाथिक–पु० (सं०) दे० 'गाथक' ।

गाथिका–स्त्री० (सं०) गायिका, गानेवाली; गान ।

गाथी(थिन्)–वि० (सं०) गानोंसे परिचित । पु० सामवेदका गायक ।

गाद†–स्त्री० तलछट; कोई गाढी चीज ।

गादड़–पु० गरियार बैल; मेढ़ा; गीदड़ । वि० डरपोक ।

गादर–वि० डरपोक; गदराया हुआ; मट्ठर, सुस्त । पु० गीदड़; मट्ठर बैल ।

गादा†–पु० अधपका अनाज या फसल; महुएका फूल ।

गादी–स्त्री० गद्दी; एक पकवान ।

गादुर*–पु० चमगादड़ ।

गाध–वि० (सं०) जिसकी थाह मिल सके; हलकर पार करने लायक, उथला; स्वल्प । पु० वह जगह जहाँ नदी हलकर पार की जा सके, थाह; स्थान; प्राप्तिकी इच्छा, लिप्सा; तल ।

गाधि–पु० (सं०) विश्वामित्रके पिता जो इंद्रके अंशसे उत्पन्न माने जाते हैं । **–तनय,–नंदन,–पुत्र,–सुत,–सूनू**–पु० विश्वामित्र । **–नगर,–पुर**–पु० कान्यकुब्ज, आधुनिक कन्नौज ।

गाधेय–पु० (सं०) विश्वामित्र ।

गाधेया–स्त्री० (सं०) गाधिकी कन्या, सत्यवती ।

गान–पु० (सं०) गाना, गीत; बखान, स्तवन; शब्द; गमन । **–वाद्य**–पु० गाना-बजाना । **–विद्या**–स्त्री० संगीत-विद्या ।

गाना–स० क्रि० लय-तालके साथ शब्दोंका उच्चारण करना, किसी गीतको ताल-सुरके साथ कहना; वर्णन करना, बखानना (गुण गाना) 'पुर नर भरत प्रीति मैं गाई'–रामा० । स्तुति करना; मीठे बोल बोलना (कोयल आदिका) । पु० गीत, गान । मु०–**बजाना**–राग-रंग, गान-वाद्य; उत्सव; उत्सव मनाना ।

गानिनी–स्त्री० (सं०) वचा ।

गानी(निन्)–वि० (सं०) गानेवाला; जानेवाला ।

ग़ाफ़िल–वि० (अ०) गफलत करनेवाला, बेखबर, असावधान, लापरवा ।

गाभ–पु० दे० 'गाभा'; पशुका गर्भ ।

गाभा–पु० कल्ला, कोंपल; डाल; पेड़ आदिका हीर ।

गाभिन–वि०, स्त्री० गर्भवती (गाय, भैंस आदि) ।

गाम*–पु० दे० 'ग्राम'; (फा०) पाँव, पद; कदम, डग; लगाम । **–जन**–वि० चलनेवाला; तेज चलनेवाला ।

गामा किरण–स्त्री०(गामा किरण) उच्च ऊर्जाकी विद्युत चुम्बकीय तरंगें जिनका तरंग दैर्घ्य एक्सकिरणोंके तरंग दैर्घ्यके शतांशसे लेकर सहस्त्रांश तक होता है । प्राय· ये रेडियो ऐक्टिव पदार्थोंसे उत्सर्जित होती हैं ।

गामिनी–स्त्री० (सं०) प्राचीन कालकी एक समुद्री नाव ।

गामी(मिन्)–वि० (सं०) गमन करनेवाला, जाने, चलनेवाला; पहुँचनेवाला; संभोग करनेवाला (केवल समासांतमें व्यवहृत) । (स्त्री० 'गामिनी' ।)

गामुक–वि० (सं०) जानेवाला ।

गाय–पु० (सं०) गाना । स्त्री० (हिं०) गोजातीय मादा पशु जो दूध देनेवाले पशुओंमें सर्वप्रधान और हिंदूधर्ममें पूज्य मानी जाती है, धेनु । वि० बहुत सीधा, दीन (आदमी–ला०) । **–गोठ**–स्त्री० वह बाड़ा या छप्पर जिसमें गायें रखी, बाँधी जायँ, गोष्ठ । **–बगला**–पु० एक तरहका बगला जो पशुओंके झुंडके साथ रहकर कीड़ोंको खाता है । **–रौन**–पु० गोरोचन । मु०**–की तरह काँपना**–बहुत डरना ।

गायक–पु० (सं०) गानेवाला, गवैया; अभिनेता ।

गायकवाड़–पु० बड़ौदाके पुराने नरेशोंकी उपाधि ।

गायकी–स्त्री० गानेकी उच्च कला; गानेका पेशा ।

ग़ायत–स्त्री० (अ०) अंत, सीमा; मतलब, गरज । **–दरजा**–वि० बेहद, हद दरजेका ।

गायताल–पु० दे० 'गैताल' । रद्दी चीज । **–खाता**–पु० बट्टा खाता, जिसमें ऐसी रकमें लिखी जाती हैं जिनके वसूल होनेकी आशा न हो ।

गायत्र–पु० (सं०) (वैदिक) स्तोत्र; गायत्री छंदमें रचित स्तोत्र ।

गायत्री–स्त्री० (सं०) एक वैदिक छंद जिसमें आठ-आठ वर्णोंके तीन चरण होते हैं; उक्त छंदमें रचित एक वैदिक मंत्र जिसका उपदेश उपनयन संस्कारमें द्विज बालकको किया जाता है 'ओऽम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्'; सावित्री; दुर्गा; गंगा ।

गायत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) सामगायक; खैरका पेड़ । (स्त्री० 'गायत्रिणी' ।)

गायन–पु० (सं०) गाना; गवैया, गायक, गानोपजीवी ।

गायनी–स्त्री० (सं०) गानेका पेशा करनेवाली स्त्री ।

ग़ायब–वि० (अ०) छिपा हुआ; अनुपस्थित; लुप्त; अदृश्य । **–ग़ुल्ला**–वि० गायब, लापता । **–बाज़**–पु० मोहरे आदि बिना देखे शतरंज खेलनेवाला । मु० **–करना**–उड़ा लेना । **–खेलना**–बिना देखे शतरंज खेलना (उसका आदमी खिलाड़ीके बताये अनुसार चालें चलता है) ।

ग़ायबाना–अ० (अ०) अनुपस्थितिमें, पीठ-पीछे ।

गार*– स्त्री० गाली । प्र० (फा०) करनेवाला (खिदमतगार, गुनहगार); साधन (यादगार); योग्य (रुस्तगार) ।

ग़ार–पु० (अ०) गड्ढा, गर्त; गुफा, खोह; जंगली जानवरका बिल, माँद ।

गारडू*–पु० दे० 'गारुडी' ।

ग़ारत–स्त्री० (अ०) लूट-मार; तबाही, बरबादी (करना, होना) । वि० नष्ट, बरबाद; तबाह । **–गर**–पु० लूट-मार करनेवाला, लुटेरा; तबाह करनेवाला ।

ग़ारद–स्त्री० (अं० 'गार्ड') सिपाहियोंका छोटा दस्ता; सैनिकोंका दस्ता या टुकड़ी जो किसी स्थान, व्यक्ति आदिकी रक्षापर नियुक्त की गयी हो; पहरा; रक्षक, प्रहरी । मु० **–में करना,–में रखना**–पहरेमें रखना; हवालातमें बंद कर देना ।

गारना†– स० क्रि० निचोड़ना; * घिसना, रगड़ना (चंदनादि); गलाना; * त्यागना; नष्ट करना–'आछो गात अकारथ गारयो' –सूर० ।

गारा–पु० मिट्टी या चूने-सुर्खीका लेप जिससे ईंटें जोड़ी जाती हैं; पलस्तर करनेके लिए आलन देकर बनाया हुआ मिट्टीका लेप; मछली फँसानेका चारा । **–कान्हड़ा**–पु० एक राग ।

गारित्र–पु० (सं०) चावल; अन्न ।

गारी*–स्त्री० दे० 'गाली' ।

गारुड–वि० (सं०) गरुड़-संबंधी; गरुड़के आकारका । पु० वह मंत्र जिसका देवता गरुड़ हो; साँपका जहर दूर करनेवाला मंत्र; पन्ना; गरुड़ास्त्र; गरुड़-व्यूह; सोना ।

गारुडिक, गारुडी(डिन्)–पु० साँपका जहर उतारनेवाला, विष-वैद्य; सँपेरा ।

गारुत्मत–वि० (सं०) गरुड़-संबंधी; गरुड़का । पु० गरुड़का अस्त्र; पन्ना ।

गारो–पु० असमका एक पहाड़; वहाँ बसनेवाली एक जंगली जाति; * गर्व; गौरव; प्रतिष्ठा; घर–'गोबरको गारो सु तौ मोहिं लगै प्यारो...'–रसखानि ।

गार्ग–वि० (सं०) गर्ग-संबंधी ।

गार्गि–पु० (सं०) गर्ग मुनिका पुत्र ।

गार्गी–स्त्री० (सं०) गर्गकी पुत्री; उपनिषदोंमें प्रसिद्ध एक ब्रह्मवादिनी स्त्री (याज्ञवल्क्यकी पत्नी); दुर्गा ।

गार्गेय–पु० (सं०) गर्ग गोत्रमें उत्पन्न पुरुष; गर्ग द्वारा रचित ग्रंथ ।

गार्गेयी–स्त्री० (सं०) गर्ग गोत्रवाली स्त्री ।

गार्ग्य–पु० (सं०) गर्ग गोत्रमें उत्पन्न पुरुष; पाणिनिके पूर्ववर्ती एक वैयाकरण ।

गार्जर–पु० (सं०) गाजर ।

गार्ड–पु० (अं०) रक्षक, प्रहरी; ट्रेनकी रक्षाके लिए जिम्मेदार अधिकारी जो सबसे पीछेके डब्बेमें बैठता है ।

गार्डन–पु० (अं०) उद्यान । **–पार्टी**–उद्यानगोष्ठी ।

गार्दभ–वि० (सं०) गर्दभ–गधेसे संबंध रखनेवाला; गधेका ।

गार्द्धय–पु० (सं०) लालच ।

गार्ध्र–वि० (सं०) गृध्र-संबंधी । पु० लोभ; बाण । **–पक्ष,–वासा(सस्)**–पु० वह बाण जिसमें गिद्धके पर लगे हों ।

गार्भ–वि० (सं०) गर्भ-संबंधी; गर्भके पोषण-वर्धनके लिए कर्तव्य ।

गार्हपत–वि० (सं०) गृहपति-संबंधी । पु० गृहपतिका भाव, गृहपतित्व ।

गार्हपत्य–पु० (सं०) साग्निक गृहस्थ ।

गार्हपत्याग्नि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी अग्नि जो परिवारमें वंशानुगत चलायी जाती है ।

गार्हमेध–पु० (सं०) गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ ।

गार्हस्थ्य–पु० (सं०) गृहस्थाश्रम; गृहस्थके लिए कर्तव्य पंचयज्ञ; गिरस्ती; गृहकार्य । **–विज्ञान**–पु० (डोमेस्टिक साइंस) गृहस्थीके कार्यों (रसोई बनाना, कपड़े सीना आदि)का विवेचन करने तथा उनकी शिक्षा प्रदान करनेवाला शास्त्र ।

गाल–पु० चेहरेके दोनों ओरका ठुड्ढी और कनपटीके बीचका भाग, कपोल, रुखसार; मुँहजोरी, वाचालता; मध्य; मुँह(कालके गालमें); झींक । **–गूल***–पु० व्यर्थ बात । **–मसूरी***–स्त्री० एक पकवान । मु० **–करना***–बढ़-बढ़कर बात करना; मुँहजोरी करना–'गाल करब केहिकर बल पाई'–रामा० । **–पिचकना**–गालोंका धँस जाना; दुबला होना । **–फुलाना**–गर्व जताना; मुँह फुलाना, रूठना । **–बजाना**–बढ़-बढ़कर बात करना; बकवास करना । **–मारना**-डींग मारना; 'बालि कबहुँ अस गाल न मारा' –रामा०; मुँहमें ग्रास डालना । **–में जाना**-मुँहमें पड़ना ।

गालन-पु० (सं०) निचोड़ना; गलाना ।

गालना*–स० क्रि० बोलना ।

गालव–पु० (सं०) एक ऋषि जो विश्वामित्रके शिष्य थे; पाणिनिके पूर्ववर्ती एक वैयाकरण; लोध; तेंदू ।

गाला–पु० धुनी हुई नरम रुईका गोला, पूनी; * मुँहजोरी; ढेर, पुंज (कलस) ।

गालि–स्त्री० (सं०) गाली ।

गालित–वि० (सं०) निचोड़ा हुआ; गलाया हुआ ।

गालिनी–स्त्री० (सं०) तंत्रकी एक मुद्रा ।

ग़ालिब–वि० (अ०) जीतनेवाला, विजयी; प्रबल; बढ़ जानेवाला । पु० उर्दूके प्रसिद्ध कवि मिरजा असद अल्लाह खाँका उपनाम ।

ग़ालिबन्–अ० (अ०) संभवतः; अधिकतर संभव है कि ।

गालिम*–वि० दे० 'ग़ालिब' ।

गाली–स्त्री० गंदा या अश्लील शब्द, अपशब्द; चरित्रपर लांछन लगानेवाली बात; कलंक; विवाहादिमें गाया जानेवाला परिहासपूर्ण अश्लील गीत । **–गलौज,–गुफ्ता**–स्त्री० एक दूसरेको गालियाँ देना; अपशब्द, दुर्वचन । मु० **–चढ़ाना**–विवाहके पूर्व किसीको किसी लड़कीका पति, सास, ससुर आदि बताना । **–पड़ना**–किसी स्त्रीके बारेमें नातेके विरुद्ध बात कहना; वैसा मजाक करना । **गालियोंपर उतरना**–गालियाँ बकने लगना ।

गालू*–वि० गाल बजानेवाला; शेखी बघारनेवाला ।

गालोडित–वि० (सं०) नशेमें चूर; बीमार; मूर्ख । पु० परीक्षा; जाँच-पड़ताल ।

गालोड्य–पु० (सं०) कमलगट्टा ।

गाल्हना*–स० क्रि० बोलना, कहना ।

गाव–पु० (फा०) गाय-बैल; वृष राशि । **–कुशी**–स्त्री० गोवध । **–कोहान**–पु० वह घोड़ा जिसकी पीठपर बैलकी तरह कूबड़ हो । **–ख़ाना**–पु० मवेशीखाना; मुर्दा जानवरोंकी खाल उतारनेकी जगह । **–ख़ुर्द**–वि० गायब, नष्ट (होना) । **–घप, घप्प**–वि० दूसरेका माल-जमा हजम करनेवाला; बड़े पेटवाला (आदमी) । **–चेहरा**–वि० गाय-बैल जैसे चेहरेवाला । **–ज़बाँ,–ज़बान**–पु० एक प्रसिद्ध वनौषधि । **–ज़ोर**–वि० बलवान्; बलवान्, पर दाव पेंच न जाननेवाला । **–ज़ोरी**–स्त्री० बल; लड़नेकी इच्छा; हाथापाई । **–तकिया**–पु० बड़ा तकिया, मसनद । **–दश्ती**–पु० जंगली बैल । **–दी**–वि० मूर्ख, बुद्धू, जड़-बुद्धि । **–दुम,–दुमा** –वि० जो ऊपरसे नीचेको पतला होता जाय, ढालू । स्त्री० तुरही । **–दोश,–दोशा**–पु० दूध दुहनेका बरतन । **–पछाड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **–पैकर**–वि० साँड़ जैसे भारी-भरकम शरीरवाला । **–बहल**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **–मुख**–पु० पटेबाजीमें एक खास ढंगसे खड़ा होना । **–शुमारी**–स्त्री० पशुगणना । **–सुमा,–सुम्मा** –पु० वह घोड़ा जिसके खुर फटे हों । मु० **–ज़ोरी दिखाना**–बलके करतब दिखाना; बल-परीक्षा करना ।

गावडी*–स्त्री० गाय ।

गावदी–दे० 'गाव'के साथ ।

गावन*–स्त्री० गानेका ढंग ।

गावल–पु० दल्लाल ।

गावल्गणि-पु० (सं०) धृतराष्ट्रका मंत्री संजय ।

गास*–पु० दुःख, संकट ।

गासिया*–पु० जीनपोश ।

गाह–पु० (सं०) अवगाहन; गहराई; * ग्राहक; पकड़; मगर, ग्राह । वि० गाहन करनेवाला । स्त्री० (फा०) स्थान, जगह; समय; काल; बारी । **–बगाह**–अ० कभी-कभी; समयसमयपर । **–गाहे-गाहे, गाहे-बगाहे, गाहे-माहे**–अ० कभी-कभी; क्वचित् ।

गाहक–पु० ग्राहक, खरीदार; कद्रदाँ; (सं०) अवगाहन करनेवाला ।

गाहकताई*–स्त्री० खरीदारी; कद्रदानी ।

गाहकी–स्त्री० खरीदारी; बिक्री ।

गाहन–पु० (सं०) पानीमें धँसना, पैठना, गोता लगाना, निमज्जन; थाह लेना; छानना; बिलोड़ना ।

गाहना–स० क्रि० थाह लेना; अवगाहन करना; बिलोड़ना; पार करना–'फेरि भीमरा कृष्णा गाही'–छत्रप्रकाश; ग्रहण करना; अनाज माँड़नेमें दाना झाड़नेके लिए डाँठको डंडेसे उठाना–'बहुरि पयारहिं गाहत'–सूर ।

गाहनी–स्त्री० अनाजको डण्डेसे पीटकर दाना झाड़नेके लिए की जानेवाली क्रिया; एक मात्रिक छंद ।

गाहा*–स्त्री० कथा, गाथा, वृत्तांत ।

गाहित–वि० (सं०) गाहन किया हुआ ।

गाहिता(तृ)–वि० (सं०) गाहन करनेवाला ।

गाही–स्त्री० पाँच चीजोंका समूह; फल आदि गिननेका एक मान ।

गिँजना–अ० क्रि० गींजा जाना, दबाकर या मरोड़कर खराब कर देना ।

गिँजाई–स्त्री० गींजनेकी क्रिया; बरसातमें पैदा होनेवाला एक कीड़ा, ग्वालिन ।

गिँडुरी–स्त्री० दे० 'ईँडुरी' ।

गिंदुक–पु० (सं०) गेंद, कंदुक ।

गिँदौड़ा, गिँदौरा–पु० मोटी रोटीकी शकलमें जमायी हुई चीनी ।

गिआन*–पु० दे० 'ज्ञान' ।

गिउ*–स्त्री० ग्रीवा, गला ।

गिचपिच–वि० पास-पास लिखा हुआ, अस्पष्ट ।

गिचपिचा–स्त्री० कचपचिया ।

गिचर-पिचर–वि० दे० 'गिचपिच' ।

गिजगिजा–वि० गीला; पिलपिला ।

ग़िज़ा–स्त्री० (अ०) आहार, भोजन; खाद्य पदार्थ ।

गिजाई†–स्त्री० एक बरसाती कीड़ा, ग्वालिन ।

ग़िज़ाई–वि० आहार-संबंधी; जो आहार-रूपमें हो ।

गिटकिरी–स्त्री० तान लेनेमें स्वरको कँपाना ।

गिटकौरी–स्त्री० कंकड़ी, पत्थरका गोल छोटा टुकड़ा ।

गिटपिट–स्त्री० विकृत, अर्थहीन शब्दावली । **–बोली,–भाषा**–स्त्री० अंग्रेजी । **मु० –करना**– (टूटी-फूटी) अंग्रेजी बोलना ।

गिट्टक–पु० चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी; धातु, लकड़ी आदिका छोटा और मोटा टुकड़ा; गिटकिरीके कंपमें निकलनेवाले स्वरका सबसे छोटा अंश ।

गिट्टा–पु० चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी ।

गिट्टी–स्त्री० ईंट-पत्थरके छोटे तोड़े हुए टुकड़े जो छत बनाने आदिमें काम आते हैं; मिट्टीके बरतनका छोटा टुकड़ा; चिलमके छेदपर रखनेकी कंकड़ी; लकड़ीका गोल छोटा टुकड़ा जिसपर धागा लपेटा जाता है ।

गिड़गिड़ाना–अ० क्रि० दीन भावसे प्रार्थना करना, आजिजी करना; चिरौरी करना ।

गिड़गिड़ाहट–स्त्री० गिड़गिड़ानेका भाव ।

गिड्डा–वि० नाटा, ठिंगना ।

गितार*–पु० एक बाजा ।

गिद्दा†–पु० स्त्रियोंके गानेका एक गीत, नकटा ।

गिद्ध–पु० मरे जानवरोंका मांस खानेवाला एक बड़ा पक्षी जिसकी दृष्टि बड़ी तीक्ष्ण होती है; एक तरहकी बड़ी पतंग । **–राज**–पु० जटायु ।

गिनगिनाना†–अ० क्रि० देहका काँपना; रोमांच होना । स० क्रि० झकझोरना ।

गिनती–स्त्री० गिननेकी क्रिया, गणना; संख्या; मूल्य; महत्त्व; हाजिरी (सेना) ।**–के**-गिने हुए, थोड़ेसे । **मु०–पर जाना**–हाजिरी देने जाना । **–में आना,–में होना**–कुछ मूल्य, महत्त्वका होना, कुछ समझा जाना । **–होना**–महत्त्वका समझा जाना ।

गिनना–स० क्रि० संख्या, गिनती मालूम करना, गणन, गणना करना; हिसाब लगाना; समझना; कुछ मूल्य, महत्त्व रखनेवाला मानना । **मु० गिन-गिनकर**–गिनकर, गिनते, हिसाब करते हुए । **–० कदम रखना**–बहुत धीरे-धीरे चलना, छोटे-छोटे कदम रखना । **–०गालियाँ देना**–घरके हर आदमीका नाम ले-लेकर गालियाँ देना । **गिन देना**–तुरत चुकता कर देना । **गिने-गिनाये,–चुने**–थोड़ेसे, गिनतीके ।

गिनवाना–स० क्रि० दे० 'गिनाना' ।

गिनाना–स० क्रि० गिननेका काम दूसरेसे कराना ।

गिनी–स्त्री० (अं०) एक विलायती घास; सोनेका अंग्रेजी सिक्का जो २१ शिलिंगका होता है । **–गोल्ड**–पु० वह सोना जिसमें ताँबेका मेल हो ।

गिन्नी–स्त्री० चक्कर; † दे० 'गिनी' । **मु०–खाना**–(पतंगका) चक्कर खाना ।

गिब्बन–पु० (अं०) जावा, सुमात्रा आदिमें पाया जानेवाला एक तरहका बंदर ।

गिम*–स्त्री० गरदन ।

गिमटी–स्त्री० बिछानेके काम आनेवाला एक सूती कपड़ा ।

गिय*–स्त्री० गला, गरदन ।

गियाह–पु० एक तरहका घोड़ा ।

गिरंट–पु० एक रेशमी कपड़ा, 'ग्वारनट' ।

गिरंद*–पु० फंदा ।

गिरंदा*–वि० फंदा डालनेवाला, पकड़कर रखनेवाला ।

गिर*–पु० दे० 'गिरि' *स्त्री० गिरा, वाणी । **–धर,–धारन,–धारी**–पु० दे० 'गिरिधर' । **–वर***–पु० बड़ा, श्रेष्ठ पहाड़, गिरिवर । **–०धारी**–पु० कृष्ण, गिरिधारी ।

गिरई–स्त्री० एक छोटी मछली ।

गिरगिट–पु० छिपकलीकी जातिका एक जंतु जो कई तरहके रंग बदल सकता है । **मु०–की तरह रंग बदलना**–मत, वृत्ति बदलते रहना, कभी कुछ, कभी कुछ बनना ।

गिरगिटान†–पु० गिरगिट ।

गिरगिट्टी–स्त्री० एक पेड़ ।

गिरगिरी–स्त्री० चिकारेकी तरहका एक खिलौना ।

गिरजा–पु० ईसाइयोंका उपासनागृह; एक पक्षी । * स्त्री० दे० 'गिरिजा' ।

गिरद*–अ० दे० 'गिर्द' ।

गिरदा†–पु० चक्कर; तकिया; फरशीके नीचे रखनेका गीला कपड़ा; गलकेका प्रहार रोकनेकी ढाल, फरी । खँजड़ीका मेंडरा ।

गिरदान*–पु० गिरगिट ।

गिरदावर–वि० दे० 'गिर्दावर' ।

गिरना–अ० क्रि० ऊपरसे, अपनी जगहसे नीचे आना; खड़े रहनेमें असमर्थ होकर जमीनपर आ जाना; ढहना (घर, दीवार); उखड़ना; झड़ना; (नदी आदिका) दूसरी बड़ी नदी आदिमें मिलना; छीजना; अवनत होना; मंदा होना, घटना (भाव); बरसना; घायल होकर गिर जाना, हारना; मारा जाना या पतन होना; (शक्ति, प्रतिष्ठा आदिका) घटना, ह्रास होना; बीमार होना, खाट पड़ना; टूटना (बाजका शिकारपर); किसी चीजके लिए बहुत चाव दिखाना; सुस्त, उत्साहरहित होना; ऐसे रोगका होना जिसका सिर या दिमागसे नीचेकी ओर आना माना जाता हो (फालिज, नजला गिरना) । **गिरता-पड़ता**–अ० गिरते-उठते, बड़ी कठिनाईसे । **गिर-पड़कर**–अ० गिरते-पड़ते । **गिरा-पड़ा**–वि० जमीनपर पड़ा हुआ; छूटा-छटका हुआ; ढहा हुआ; जीर्ण-शीर्ण । **मु० गिरकर मामला, सौदा करना**–गरजमंद बनकर, दबकर मामला इ० करना ।

गिरनार–पु० गुजरातका एक पर्वत जो जैनोंका एक प्रधान तीर्थ है ।

गिरनारी–वि० गिरनार पर्वतपर रहनेवाला; गिरनारका ।

गिरफ्त–स्त्री० (फा०) पकड़; दोष, भूल पकड़ना; एतराज; मूठ ।

गिरफ़्तार–वि० (फा०) (जुर्म आदिके कारण) पकड़ा हुआ; फँसा हुआ; बँधा हुआ, बंदी ।

गिरफ़्तारी–स्त्री० (फा०) गिरफ्तार करना या होना; कैद ।

गिरबी–स्त्री० दे० 'गिरवी' ।

गिरमिट–पु० बड़ा बरमा; (अं० 'एग्रीमेंट') एकरारनामा, प्रतिज्ञापत्र; एकरार ।

गिरमिटिया–पु० किसी उपनिवेशमें गया हुआ शर्तबंद हिंदुस्तानी मजदूर (ब्रिटिश-कालमें) ।

गिरवान*–पु० दे० 'गीर्वाण'; दे० 'गरीबान' ।

गिरवाना–स० क्रि० 'गिराना'का प्रे० ।

गिरवी–स्त्री० बंधक, रेहन; बंधक रखी हुई चीज । **–गाँठा**–पु० बंधक । **–दार**–पु० बंधक रखनेवाला, रेहनदार । **–नामा**–पु० रेहननामा ।

गिरस्ती–स्त्री० दे० 'गृहस्थी' ।

गिरह–स्त्री० (फा०) गाँठ, बंधन; गुत्थी, उलझन; जेब, टेंट; ईख आदिके पोरोंका जोड़; बैर, बुराई जो अधिक दिनसे मनमें हो; कलाबाजी; बंदके आखिरका शेर; कुश्तीका एक पेंच; एक माप जो सवा दो इंचके बराबर होती है । **–कट**–पु० जेब कतरनेवाला, पाकिटमार । **–गीर**–वि० गाँठवाला; बल खाया हुआ, पेचदार । **–दार**–वि० जिसमें गाँठें हों । **–बाज़**–पु० वह कबूतर जो उड़ते हुए कलाबाजी करता है । **–०उड़ी**–स्त्री० उलटी कलाबाजी । **मु०–काटना,–खुलना**–दे० 'गाँठ कटना,–खुलना' इत्यादि । ('गाँठ' शब्दके प्रायः सभी मुहावरे इसके साथ भी लगते हैं ।)

गिरही*–वि०, पु० दे० 'गृही' ।

गिराँ–वि० दे० 'गराँ' ।

गिराँव†–पु० दे० 'गराँव', छोटा गाँव ।

गिरा–स्त्री० (सं०) वाणी, सरस्वती; वाक्य; बोली, जबान । **–पति**–पु० ब्रह्मा । **–पितु***-पु० ब्रह्मा ।

गिराना–स० क्रि० नीचे डालना; फेंकना; ढहाना; पटक देना; जमीनपर लुढ़का देना; बहाना; (नाली आदिके) गिरनेका उपाय करना; मूल्य, शक्ति, प्रतिष्ठा आदि घटाना; बुरी दशाको ले जाना; सहसा उपस्थित करना; युद्धमें मार डालना ।

गिरानी–स्त्री० दे० 'गरानी' ।

गिराव–पु० दे० 'गिरावट'।

गिरावट–स्त्री० गिरनेका भाव, पतन, अधःपात।

गिरास*–पु० दे० 'ग्रास'।

गिरासना*–स० क्रि० दे० 'ग्रासना'।

गिराह*–पु० दे० 'ग्राह'।

गिरि–पु० (सं०) पहाड़, पर्वत; सन्न्यासियोंकी एक उपाधि; आँखका एक रोग; पारेका एक दोष; गेंद; वादल; आठकी संख्या। स्त्री० चुहिया; निगरण। **–कंटक**–पु० इंद्रका वज्र, विजली। **–कंदर**–पु० पहाड़की गुफा। **–कच्छप**–पु० पहाड़की गुफामें रहनेवाला कछुवा। **–कदंव,–कदंवक**–पु० कदंवका एक भेद। **–कदली**–स्त्री० पहाड़ी केला। **–कर्णिका**–स्त्री० पृथ्वी; अपराजिता लता। **–कर्णी**–स्त्री० अपराजिता। **–काण**–वि० जिसकी एक आँख गिरि रोगसे नष्ट हो गयी हो। **–कानन**–पु० पहाड़के ऊपर लगाया हुआ वाग। **–कुहर**–पु० गिरिकंदर। **–कूट**–पु० पहाड़की चोटी। **–०क्षिप**–पु० स्वफल्कका एक पुत्र, अक्रूरका भाई। **–गुहा**–स्त्री० पहाड़की गुफा। **–चर**–पु० पर्वतवासी। **–ज**–पु० शिलाजतु; गेरू; लोहा; अभ्रक; महुआ। वि० पहाड़से उत्पन्न। **–जा**–स्त्री० पार्वती; गंगा; पहाड़ी केला; त्रायमाणा लता; मल्लिका। **–०पति**–पु० शिव। **–०मल**–पु० अभ्रक। **–जाल**–पु० पर्वतश्रेणी। **–ज्वर**–पु० वज्र। **–दुर्ग**–पु० पहाड़पर या पहाड़ोंके वीच वना हुआ किला। **–दुहिता(तृ)**–स्त्री० पार्वती। **–द्वार**–पु० दर्रा। **–धर,–धारी(रिन्)**–पु० कृष्ण। **–धरन,–धारन***–दे० 'गिरिधर'। **–धातु**–स्त्री० गेरू। **–ध्वज**–पु० वज्र। **–नंदिनी**–स्त्री० पार्वती; गंगा। **–नगर**–पु० गिरनार पर्वतपर वसा हुआ नगर। **–नदी**–स्त्री० पहाड़ी नदी। **–नाथ**–पु० शिव। **–निंव**–पु० वकायन। **-पथ**–पु० दो पहाड़ोंके वीचका सँकरा मार्ग, दर्रा। **–पीलु**–पु० फासला। **–पुष्पक**–पु० शिलाजतु; पथरफोड़। **–प्रस्थ**–पु० पहाड़के ऊपरका चौरस मैदान। **–प्रिया**–स्त्री० सुरा गाय। **–वांधव**–पु० शिव–। **–भिद्**–पु० इंद्र; पाषाणभेद। **–मल्लिका**–स्त्री० कुटज। **–मान**–पु० हाथी; विशालकाय हाथी। **–मृत्**–स्त्री० गेरू। **–मृद्भव**–पु० गेरू। **–मेद**–पु० विट्खदिर। **–राज**–पु० वड़ा पहाड़, हिमालय। **–वर्तिका**–स्त्री० एक पहाड़ी हंसिनी, वतख। **–व्रज**–पु० जरासंधकी राजधानी, राजगृह। **–श**–पु० शिव। **–शालिनी**–स्त्री० गिरिकर्णी। **–शिखर**–पु० गिरिकूट। **–शृंग**–पु० पहाड़की चोटी; गणेश। **–संभव**–पु० एक पहाड़ी चूहा। **–सानु**–पु० पठार, अधित्यका। **–सार**–पु० लोहा; राँगा; शिलाजतु; मलय पर्वत। **–सुत**–पु० मैनाक पर्वत। **–सुता**–स्त्री० पार्वती। **–स्रवा**–स्त्री० पहाड़ी नदी।

गिरिक–वि० (सं०) पर्वतसे उत्पन्न। पु० शिव; गेंद।

गिरिका–स्त्री० (सं०) चुहिया।

गिरियक, गिरियाक, गिरीयक, गिरीयाक–पु० (सं०) खेलनेका गेंद।

गिरिस्ती–स्त्री० दे० 'गृहस्थी'।

गिरींद्र–पु० (सं०) वड़ा पहाड़, हिमालय; शिव; आटकी संख्या।

गिरी–स्त्री० वीजके भीतरका गूदा, मग्ज।

गिरीश–पु० (सं०) हिमालय; शिव; बृहस्पति।

गिरेवा–पुं० छोटी पहाड़ी, टीला; चढ़ाईका रास्ता।

गिरेवान–पु० दे० 'गरीवान'।

गिरैयाँ*–स्त्री० गलेका छोटा रस्सा।

गिरो–वि० गिरवी, वंधक रखा हुआ।

गिरोही–पु० दलका आदमी, संगी, साथी–'काली सिंहका कोई गिरोही'–अमर०।

गिर्–स्त्री० (सं०) दे० 'गिरा'।

गिर्जा–पु० दे० 'गिरजा'।

गिर्द–अ० (फा०) आस-पास; पास। पु० गोलाई; घेरा। **–वाद**–पु० वगूला, ववंडर।

गिर्दागिर्द–अ० (फा०) चारों ओर, इर्द-गिर्द।

गिर्दाव–पु० (फा०) भँवर।

गिर्दावर–वि० (फा०) घूमनेवाला, दौरा करनेवाला। **–कानूनगो**–पु० एक माल कर्मचारी जिसका काम पटवारियोंके कागजोंकी जाँच करना है।

गिल–वि० (सं०) भक्षक, निगलनेवाला। पु० घड़ियाल; जँवीरी नीवू। **–गिल,–ग्राह**–पु० नक्र, नाक।

गिल–स्त्री० (फा०) मिट्टी; गीली मिट्टी; गारा। **–अंदाजी**–स्त्री० सड़क, बाँध आदिपर मिट्टी डालना; पुश्तावंदी; **–कार**–पु० मिट्टीका पलस्तर करनेवाला। **–कारी**–स्त्री० पलस्तर करनेका काम। **–हिकमत**–स्त्री० कपड़ौटी।

गिल–पु० (अं० गिल्स) मछली तथा इसी वर्गके अन्य जलीय जीवोंके शरीरका श्वसन अंग। गिलकी सहायतासे मछली पानीमें घुली आक्सीजनका प्रग्रहण करती है और कार्वन डाइआक्साइडका निष्कासन। (मछलियोंके फेफड़े नहीं होते।)

गिलगिलिया–स्त्री० सिरोही पक्षी।

ग़िलज़ई–स्त्री० भारतकी पश्चिमोत्तर सीमा और अफगानिस्तानमें रहनेवाली एक कवीली जाति।

गिलट–स्त्री० मुलम्मा, सोनेका पानी चढ़ानेका काम; चाँदीके रंगकी एक घटिया धातु।

गिलटी–स्त्री० शरीरके संधिस्थानकी गाँठ; एक रोग जिसमें यह गाँठ सूज जाती है या अन्यत्र गाँठ निकल आती है।

गिलन–पु० तरल पदार्थकी एक माप, 'गैलन'; (सं०) निगलना।

गिलना*–स० क्रि० निगलना–'कुंजर कूंकीरी गिल बैठी'–सुंदरदास; मनमें रखना।

गिलबिला–वि० पिलपिला।

गिलबिलाना–अ० क्रि० अस्पष्ट बोल वोलना।

गिलम–स्त्री० ऊनी कालीन; मोटा गद्दा–'गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं...'–पद्माकर। वि० मुलायम।

गिलमिल–पु० एक तरहका वढ़िया कपड़ा।

गिलहरा–पु० बाँसकी चपटी तीलियोंका वना पनडब्वा; एक कपड़ा।

गिलहरी–स्त्री० पेड़ोंपर रहनेवाला चूहे जैसा एक छोटा जंतु, गिलाई, चिखुरी।

गिला–पु० (फा०) शिकायत; उलाहना।

गिलाई–स्त्री० गिलहरी।

ग़िलाज़त–स्त्री० (अ०) गाढापन; गंदगी; नापाकी; मैला।

गिलान*–स्त्री० दे० 'ग्लानि'; घृणा–'लखि दरिद्र विद्वान्को जगजन करैं गिलान'–दीनदयाल।

गिलाफ़–पु० (फा०) तकियेकी खोली; सितार आदिकी खोली; लिहाफ; म्यान।

गिलाय–स्त्री० दे० 'गिलाई'।

गिलायु–पु० (सं०) गलेका एक रोग जिसमें उसके भीतर छोटीसी गाँठ हो जाती है।

गिलाव, गिलावा†–पु० गारा, कीचड़।

गिलास–पु० शीशे या धातुका बना पानी पीनेका गोल, लंबोतरा पात्र; कश्मीरमें होनेवाला एक वृक्ष या उसका स्वादिष्ठ फल, ओलची।

गिलित–वि० (सं०) निगला हुआ, खाया हुआ।

गिलिम*–स्त्री० दे० 'गिलम'।

गिली*–स्त्री० दे० 'गुल्ली'। वि० (फा०) मिट्टीका।

गिलेफा†–पु० दे० 'गिलाफ़'।

गिलोय–स्त्री० (फा०) गुडुच या गुडूची।

गिलोल–स्त्री० दे० 'गुलेल'।

गिलोला*–पु० गुलेलसे फेंकी जानेवाली मिट्टीकी गोली।

गिलोँदा†–पु० दे० 'गुलैँदा'।

गिलौरी–स्त्री० पानका तिकोना या चौकोना बीड़ा। **–दान**–पु० पनडब्वा।

गिल्टी–स्त्री० दे० 'गिलटी'।

गिल्यान*–स्त्री० दे० 'ग्लानि'।

गिल्ला–पु० दे० 'गिला'।

गिल्ली–स्त्री० गुल्ली।

गिष्णु–पु० (सं०) गायक; सामगायक।

गीँजना†–स० क्रि० नरम, नाजुक चीजको मसलकर खराब कर

देना; खानेकी चीजोंको भद्दे तरीकेसे एकमें मिलाना।

गींद*–पु० गेंद।

गींव†–स्त्री० ग्रीवा, गरदन।

गीड†–पु० दे० 'गीडर'।

गीडर†–पु० आँखका मैल, कीचड़–'थूकरु लार भर्‌यो मुख दीसत आँखिमें गीडर नाकमें सेढो'–सुंदरदास।

गीत–वि० (सं०) गाया हुआ; कथित, वर्णित; जिसका यश गाया गया हो। पु० वह जो गाया जाय, गानेकी चीज; गान; बड़ाई। **–कार**–पु० (सं०) गीत रचनेवाला। **–क्रम**–पु० किसी गीतका गानक्रम, स्वरोंका उतार-चढ़ाव; एक तरहकी तान। **–गोविंद**–पु० जयदेव-रचित संस्कृतका एक प्रसिद्ध गीतिकाव्य। **–प्रिय**–वि० जिसे गाना प्रिय हो। पु० शिव। **–प्रिया**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका। **–मोदी(दिन्)**–पु० किन्नर। **–शास्त्र**–पु० संगीतविद्या। **मु० (किसीके)–गाना**–बड़ाई, बखान करना।

गीतक–(सं०) गान; स्तोत्र।

गीता–स्त्री० (सं०) गुरु-शिष्य-संवाद-रूपमें आध्यात्म-तत्त्वका उपदेश करनेवाला पद्यग्रंथ, शिवगीता, रामगीता आदि; श्रीमद्भगवद्गीता; एक राग; एक मात्रिक छंद; * गाथा, कथा।

गीतायन–पु० (सं०) गीतका साधन, वीणा आदि।

गीति–स्त्री० (सं०) गीत; एक मात्रावृत्त। **–काव्य**–पु० गीतके रूपमें बना हुआ काव्य जो प्रायः आत्मपरक होता है। **–नाटच,–रूपक**–पु० वह नाटक जिसमें पद्य या गानेकी चीजोंकी प्रधानता हो।

गीतिका–स्त्री० (सं०) छोटा गीत; एक मात्रिक छंद जिसके प्रति चरणमें २६ मात्राएँ होती हैं; एक वर्णवृत्त।

गीती(तिन्)–वि० (सं०) गाकर पढ़ने, पाठ करनेवाला।

गीथा–स्त्री० (सं०) वाणी; गीत।

गीदड़–पु० भेड़ियेकी जातिका एक जानवर, स्यार, शृगाल। वि० डरपोक। **–भबकी**–स्त्री० दिखाऊ धमकी, डरानेके लिए झूठी धमकी देना। **–रूख**–पु० एक फलदार वृक्ष।

गीदड़ी–स्त्री० शृगाली, मादा गीदड़।

गीदर†–पु० दे० 'गीदड़'।

गीदी–वि० (फा०) डरपोक, कायर; बेहया, बेगैरत।

गीध–पु० दे० 'गिद्ध'।

गीधना*–अ० क्रि० परचना।

ग़ीबत–स्त्री० (अ०) अनुपस्थिति; पीठ पीछे बुराई करना, चुगलखोरी।

गीर*–स्त्री० वाणी, बोली; सरस्वती। **–बाण,–बान***–पु० दे० 'गीर्वाण'।

गीरथ–पु० (सं०) बृहस्पति।

गीर्–'गिर्'का समासगत रूप। **–देवी**–स्त्री० सरस्वती। **–पति**–पु० दे० 'गीष्पति'। **–भाषा**–स्त्री० दे० 'गीर्वाणी'। **–लता**–स्त्री० महाज्योतिष्मती, बड़ी मालकंगनी। **–वाण**–पु० देवता (जिसकी वाणी ही जिसका अस्त्र है)। **–० कुसुम**–पु० लौंग। **–वाणी**–स्त्री० देवभाषा, संस्कृत।

गीर्ण–वि० (सं०) निगला हुआ; वर्णित, कथित।

गीर्णि–स्त्री० (सं०) निगलना; वर्णन।

गीर्वि–वि० (सं०) निगलनेवाला।

गीला–वि० भीगा हुआ, नम, आर्द्र, अश्रुयुक्त। **–पन**–पु० नमी, आर्द्रता।

गीवँ, गीव*–स्त्री० दे० 'ग्रीवा'।

गीष्पति–पु० (सं०) बृहस्पति; पंडित।

गुंग†–वि० दे० 'गूँगा'। **–बहरी**–स्त्री० एक मछली।

गुंगा†–वि० दे० 'गूँगा'।

गुंगी–वि०, स्त्री० दे० 'गूँगी'।

गुंगुआना*–अ० क्रि० गूँगेकी तरह बोलना; धुआँ देना, अच्छी तरह न जलना।

गुंचा–पु० (फा०) कली; झुरमुट; भेड़, नाचरंग। वि० घना आबाद, गुंजन। **–देहन**–वि० कलीसे, छोटेसे मुँहका; सुंदर मुँहवाला; माशूक।

गुंची–स्त्री० गुंजा।

गुंज–स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना, गोप; * दे० 'गुंजा'। पु० (सं०) भौंरेका गुंजार; गुच्छा। **–निकेतन**–पु० भौंरा।

गुंजक–पु० (सं०) एक पौधा।

गुंजन–पु० (सं०) भौंरेका भनभनाना, गुंजार; गुनगुनाना; कलरव।

गुंजना–अ० क्रि० भौंरेका गुंजार करना; गुनगुनाना।

गुंजरना*–अ० क्रि० गुंजार करना; गरजना।

गुंजलिका–स्त्री० फेंट, शिकंजा–'वह अजगरकी तरह उसे अपनी गुंजलिकामें लपेटनेके लिए चल पड़ी'–गुनाहोंके देवता।

गुंजल्क–स्त्री० (फा०) शिकन, सिलवट; गाँठ, गुत्थी; उलझन।

गुँजहरा†–पु० बच्चोंके हाथका कड़ा।

गुंजा–स्त्री० (सं०) घुँघची; भनभनाहट; कलध्वनि; पटह; मदिरालय; चिंतन; एक विषैला पौधा।

गुंजाइश–स्त्री० (फा०) स्थान; अवकाश; समाई; बचतका अवकाश।

गुंजान–वि० (फा०) घना, सटा हुआ।

गुंजायमान–वि० (सं०) गूँजता हुआ।

गुंजार–पु० भौंरेकी भनभनाहट।

गुंजारना–अ० क्रि० गूँजना।

गुंजिका–स्त्री० (सं०) घुँघची।

गुंजित–वि० (सं०) गुंजनयुक्त।

गुँजिया–स्त्री० कानका एक गहना।

गुंजी(जिन्)–वि० (सं०) गुंजनयुक्त।

गुंठन–पु० (सं०) ढकना; छिपाना; लेपन।

गुंठा–पु० एक तरहका घोड़ा। † वि० नाटा, छोटे कदका।

गुंठित–वि० (सं०) ढका, छिपाया हुआ; लेप किया हुआ; पीसा हुआ।

गुंड–पु० मलार रागका एक भेद; (सं०) चूर्ण करना, पीसना; चूर्ण; कसेरू।

गुंडई–स्त्री० गुंडापन, दुष्टता।

गुंडक–पु० (सं०) धूलि; तैलपात्र; धूल मिला आटा; माधुर्यपूर्ण मंद स्वर।

गुंडन–पु० (सं०) गुंठन।

गुंडली–स्त्री० गेंडुरी; कुंडली।

गुंडा–वि०, पु० बदमाश, दुर्वृत्त, खोटे चाल-चलनवाला। **–गर्दी**–स्त्री० गुंडई, गुंडापन।

गुंडासिनी–स्त्री० (सं०) गुच्छमूलिका, गोंदला नामकी घास।

गुंडिक–पु० (सं०) आटा।

गुंडित–वि० (सं०) चूर्ण किया हुआ; धूल किया हुआ; धूलसे ढका हुआ।

गुंडी–स्त्री० गेंडुरी, सूतकी लच्छी; † पीतलका छोटा गगरा।

गुँथना–अ० क्रि० गूँथा जाना; गुँधना।

गुँदला–पु० नागरमोथा।

गुंद्र–पु० (सं०) शरतृण।

गुँधना–अ० क्रि० गूँधा जाना; गुँथना।

गुँधाई–स्त्री० गूँधनेकी क्रिया या भाव; गूँथनेकी उजरत।

गुँधावट–स्त्री० गूँधने या गूँथनेकी क्रिया या ढंग।

गुंफ–पु० (सं०) गूँथना; संयुक्त करना; सजावट; मूँछ, गलमुच्छा; बाजूबंद; 'कारणमाला' अलंकार।

गुंफन–पु० (सं०) गूँथना; सजाना, तरतीब देना।

गुंफना–स्त्री० (सं०) गूँथना; सुंदर, अर्थानुकूल शब्द-योजना, वाक्य-रचना।

गुंफित–वि० (सं०) गूँथा हुआ; सजाया हुआ।

गुंबज–पु० दे० 'गुंबद'।

गुंबद–पु० (फा०) मस्जिद आदिकी गोल छत जिसमें आवाज गूँजे; चोलीका कटोरीनुमा ऊपर उठा हुआ भाग जो पहननेपर स्तनके ऊपर पड़ता है।

गुंबदी–वि० गुंबदकी शकलका। पु० एक खंभेका गोल खेमा।

गुंबा†–पु० (चोट लगनेसे होनेवाली) कड़ी गोल सूजन, गूमड़ा।

गुंभी*–स्त्री० अंकुर; कोंपल।

गुआ*–पु० दे० 'गुवाक'।

गुआर–स्त्री० कुलथी। * पु० ग्वाला।

गुआरपाठा–स्त्री० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुआरि*–स्त्री० ग्वालिन।

गुआरी–स्त्री० कुलथी।

गुआलिन*–स्त्री० ग्वालिन।

गुइयाँ–पु० खेलका साथी। स्त्री० सखी।

गुखरू–पु० दे० 'गोखरू'।

गुग्गुर–पु० दे० 'गुग्गुल'।

गुग्गुल, गुग्गुलु–पु० (सं०) एक कँटीला पेड़; उस पेड़का गोंद जो गंधद्रव्य है और दवाके काममें भी आता है; दक्षिण भारतमें बोया जानेवाला एक पेड़ जिसकी राल वार्निश बनानेके काम आती है।

गुग्गुलक–पु० (सं०) गुग्गुलका व्यापारी।

गुचीं–स्त्री० आधी ढोली।

गुच्ची–स्त्री० गुल्ली आदि खेलनेके लिए जमीनमें बना हुआ बहुत छोटा गढ़ा। वि०, स्त्री० बहुत छोटी।

गुच्छ–पु० (सं०) गुच्छा; फूलोंका गुच्छा; गुलदस्ता; कलाप, मोरकी पूँछ; झाड़; ३२ लड़ियोंका मुक्ताहार। **–कणिश**–पु० रागी धान। **–करंज**–पु० करंजका एक भेद। **–दंतिका**–स्त्री० कदली। **–पत्र**–पु० ताड़का पेड़। **–फल**–पु० अंगूर; केला; मकोय; रीठा। **–फला**–स्त्री० अग्नि-दमनी; द्राक्षा; कदली; काकमाची। **–मूलिका**–स्त्री० एक घास, गुंडासिनी।

गुच्छक–(सं०) दे० 'गुच्छ'।

गुच्छल–पु० (सं०) एक तरहकी घास।

गुच्छा–पु० एक टहनीमें पास-पास लगे हुए फूल या फल; एकमें बँधे हुए फूल; एकमें लगी, बँधी छोटी चीजोंका समूह; झब्बा; फुँदना। **–तारा**–पु० कचपचिया। **–(च्छे)दार**–वि० गुच्छेवाला।

गुच्छार्द्ध–पु० (सं०) १६ या २४ लड़ियोंका मुक्ताहार।

गुच्छी–स्त्री० करंज; रीठा; कश्मीरकी तरफ होनेवाला एक फूल जो सुखाये जानेपर सब्जी बनानेके काम आता है और बड़ा स्वादिष्ठ होता है।

गुज़र–पु० (अ०) रास्ता; घाट; पहुँच, प्रवेश; जाना, निकलना; निर्वाह, गुजारा। **–गाह**–पु० रास्ता; आम रास्ता। **–नामा**–पु० राहदारीका परवाना, पारपत्र। **–बसर**–पु० निर्वाह, गुजारा। **–बान**–पु० रास्तेकी रखवाली करनेवाला; मल्लाह; घाटका महसूल वसूल करनेवाला। **मु०–करना**–निर्वाह करना; दिन काटना। **–होना**–निर्वाह होना; (किसी और रास्तेसे) निकलना; जा निकलना।

गुज़रना–अ० क्रि० बीतना, कटना; जाना, निकलना; गुजर होना; (नदी) पार होना; निभना; घटित होना; कष्ट, कठिनाइयाँ आना; भोगरूपमें प्राप्त होना; (दर्खास्त आदिका) पेश होना; (जीमें) आना (भाव, विचार)। (गुजर जाना = मर जाना।)

गुजरात–पु० भारतके दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक राज्य।

गुजराती–वि० गुजरातका; गुजरातका बना। पु० गुजरातमें बसनेवाला। स्त्री० गुजरातियोंकी भाषा।

गुज़रान–पु० (अ०) गुजर, निर्वाह।

गुज़रानना–स० क्रि० पेश करना।

गुजरिया†–स्त्री० दे० 'गूजरी'।

गुजरी–स्त्री० शामको सड़कके किनारे लगनेवाला बाजार; गुदड़ी; एक तरहकी पहुँची; दे० 'गूजरी'।

गुजरेटा–पु० गूजर बालक; गूजर पुरुष; ग्वाला।

गुजरेटी–स्त्री० गूजर कन्या; गूजरी।

गुज़श्ता–वि० (फा०) बीता हुआ, अतीत; पिछला (मास, वर्ष इत्यादि)।

गुज़ार–वि० (फा०) (समासांतमें) अदा करनेवाला ('शुक्रगुज़ार', 'खिदमतगुज़ार')।

गुज़ारना–स० क्रि० बिताना; काटना; अदा करना (नमाज); पेश करना (अरजी, नजर)।

गुज़ारा–पु० (फा०) रास्ता; घाट; पुल या नावसे नदी पार करना; निर्वाह; निर्वाहार्थ दी जानेवाली रकम। **–(रे)की नाव**–आर-पार जानेवाली नाव, घटहा। **–दार**–पु० वह व्यक्ति जिसे गुज़ारा मिलता हो।

गुज़ारिश–स्त्री० (फा०) निवेदन, अर्ज, प्रार्थना। **–नामा**–पु० निवेदनपत्र (छोटेकी ओरसे बड़ेको लिखे गये पत्रके लिए व्यवहृत)।

गुजी†–स्त्री० नाकका सूखा हुआ मल, नकटी।

गुज्जरी–स्त्री० (सं०) दे० 'गुर्जरी'।

गुज्झा–पु० बाँसकी कील, गोझा; रेशेदार गूदा। † वि० छिपा हुआ, गुप्त।

गुझबाती*–स्त्री० गुप्त या रहस्ययुक्त बात।

गुझरोट, गुझरौट*–पु० कपड़े या साड़ीका चुन्नट किया हुआ भाग –'कर उठाय घूँघट करत उसरत पट गुझरोट'–वि०; स्त्रियोंकी नाभिके आस-पासका भाग।

गुझिया–स्त्री० मैदेकी कुसलीमें मेवा, खोया आदि भरकर बनाया हुआ एक पकवान; खोयेकी बनी एक मिठाई।

गुझौट*–पु० दे० 'गुझरोट'।

गुट–पु० दे० 'गुट्ट'।

गुटकना–अ० क्रि० कबूतरका मस्त होकर गुटरगूँ करना। स० क्रि० निगलना।

गुटका–पु० गोली, गुटिका; छोटे आकार, पाकेट साइजकी पुस्तक; लट्टू; पानमें खानेका एक मसाला।

गुटकाना–स० क्रि० (तबला) बजाना।

गुटकी–स्त्री० छोटी गोली या टिकिया।

गुटबंदी–स्त्री० दे० 'गुट्ट'के साथ।

गुटरगूँ–स्त्री० कबूतरकी बोली।

गुटिका, गुटी–स्त्री० (सं०) बटी, गोली; रेशमका कोया; मोती; मंत्रसिद्ध गोली जिसे मुँहमें रखनेवालेका दूसरोंके लिए अदृश्य हो जाना माना जाता है; फुंसी, फुड़िया।

गुट्ट–पु० दल, समूह; थोड़ेसे आदमियोंका खास उद्देश्यसे बनाया गया दल। **–बंदी**–स्त्री० दल बनाना। **मु० –बाँधना**–दल बनाना।

गुट्टा–पु० लाखकी चौकोर गोटी जो लड़कियोंके खेलनेके लिए बनायी जाती है; 'चपेटा'–बुंदेल।

गुट्ठल–वि० गाँठ, गुठलीवाला; कठिन; भोथरा; जड़, मूर्ख। पु० रुई आदिके दबनेसे बनी हुई गाँठ; गिलटी।

गुट्ठी–स्त्री० मोटी गाँठ; टखना।

गुठलाना–अ० क्रि० कुंद, भोथरा हो जाना; खटाईके असरसे दाँतोंका काटने, चबाने लायक न रहना।

गुठली–स्त्री० (आम, जामुन आदि) फलका कड़ा और कुछ बड़ा बीज, कुसली; गिलटी; गुलथी।

गुडंबा–पु० गुड़की चाशनीमें डालकर पकाया हुआ कच्चा आम।

गुड–पु० (सं०) दे० 'गुड़'; गेंदा; ग्रास, निवाला; गोला पिंड; कपास; हाथीका सन्नाह। **–तृण,–दारु**–पु० ईख। **–त्वक् (च), –त्वचा**–स्त्री० दारचीनी। **–धाना**–स्त्री० दे० 'गुड़धनिया'। **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए बनायी हुई गुड़की गाय। **–पाक**–पु० गुड़की चाशनीमें डालकर औषध बनानेकी प्रक्रिया; उस प्रक्रियासे बनी औषध। **–पुष्प**–पु० महुआ। **–फल**–पु० पीलु वृक्ष। **–शर्करा**–स्त्री० शकर, चीनी। **–हरीतकी**–स्त्री० गुड़की चाशनीमें डुबोयी हुई हर्रें।

गुड़–पु० ईख या ताड़-खजूरके रसको गाढ़ा करके बनायी हुई बट्टी या भेली। **–धनिया,–धानी**–स्त्री० भुने हुए गेहूँको गुड़में पागकर बनाया हुआ लड्डू। **मु०–खाना, गुलगुलेसे परहेज करना**–बड़ी बुराई करना, छोटीसे बचना। **–गोबर करना**–चौपट करना, नष्ट करना। **–गोबर होना**–बरबाद होना, नष्ट होना–'तुम्हारी भूलसे ही सब गुड़ गोबर हो गया।' **–दिखाकर ढेला मारना**–लाभका लोभ दिखाकर कष्ट देनेवाला काम करना। **–भरा हँसिया**–टेढ़ा, साँपछछूँदरकी गतिवाला काम। **–से मरे तो ज़हर क्यों दे**–नरमीसे काम चले तो कड़ाई क्यों करे।

गुडक–पु० (सं०) गोलाकार पदार्थ; गेंदा; गुड़; गुडपक्व औषध।

गुड़गुड़–पु० हुक्का पीने या आँतोंमें वायुके संचारसे होनेवाला शब्द ।

गुड़गुड़ाना–अ० क्रि० 'गुड़गुड़'की आवाज होना, निकलना । स० क्रि० हुक्का पीना ।

गुड़गुड़ाहट–स्त्री० 'गुड़गुड़'की आवाज, वैसी आवाज होना ।

गुड़गुड़ी–स्त्री० काठकी निगालीवाला छोटा हुक्का ।

गुड़च–स्त्री० दे० 'गुडुच' ।

गुडची–स्त्री० (सं०) दे० 'गुड़ुच' ।

गुडरू–पु० एक चिड़िया, गडुरी ।

गुड़ला†–पु० नमक डालकर बनाया हुआ गीला भात ।

गुड़हर, गुड़हल–पु० अड़हुलका फूल, जपाकुसुम; एक छोटा पेड़ ।

गुडा–स्त्री० (सं०) कपास; गोली, गुटिका; थूहड़ ।

गुडाका–स्त्री० (सं०) आलस्य; नींद ।

गुडाकू, गुडाखू–पु० वह तंबाकू जिसमें गुड़ मिला हो ।

गुडाकेश–पु० (सं०) अर्जुन; शिव ।

गुड़िया–स्त्री० कपड़ेकी बनी हुई पुतली, छोटे-छोटे पाँव–'छोटी-छोटी गुड़ियाँ अँगुरियाँ छोटी छवीली'–सूर० ।**–सी**–नन्हीं-सी, सुंदर (लड़की, दुलहिन) । **मु०–सँवारना**–अपनी हैसियतके मुताबिक लड़कीकी शादी कर देना । **–(यों) का खेल**–बहुत आसान काम । **–का ब्याह**–गुड्डे और गुड़ियाका ब्याह जिसे लड़कियाँ खेलमें करती हैं; गरीवामऊ ब्याह ।

गुड़िला†–पु० बड़ी गुड़िया; मूर्ति, प्रतिमा ।

गुड़ी–स्त्री० सिकुड़न, सिलवट; * गुड्डी; गाँठ, कीना ।

गुड़ीला†–वि० गुड़ जैसा मीठा ।

गुडुच–स्त्री० एक बेल जिसका डंठल दवाके काम आता है, गुडूची, गिलोय ।

गुड़रू†–स्त्री० किवाड़की ठेहरी, चूर; छोटा गड्ढा, एक पत्ती ।

गुड़वा–पु० गुड्डा ।

गुडूची–स्त्री० (सं०) गुड़ुच, गुरुच, गिलोय ।

गुडेर, गुडेरक–पु० (सं०) गेंद; ग्रास ।

गुड्डा–पु० बड़ी गुड़िया, नर गुड़िया; बड़ी पतंग । **–मु० बाँधना**–भाटका किसी कंजूस जजमानको बदनाम करनेके लिए बाँसके सिरेपर उसका पुतला बाँधना और घूम-घूमकर उसकी निंदा करना ।

गुड्डी–स्त्री० पतंग, कनकौवा; एक छोटा हुक्का; उड़नेके पहले चिड़ियोंके पंखकी स्थिति; घुटनेकी हड्डी ।

गुड्डू–पु० एक छोटा कीड़ा । स्त्री० गुड़ुरू ।

गुढ़*–पु० छिपने, बचनेका स्थान ।

गुढ़ना*–अ० क्रि० छिपना ।

गुण–पु० (सं०) जाति-स्वभाव, धर्म; सद्गुण, अच्छी सिफत; निपुणता, कमाल; प्रभाव, असर; लाभ, फायदा; प्रशंसनीय बात; विशेषता; प्रकृतिका धर्म–सत्त्व, रज, तम; वीणा आदिका तार; धागा; डोरी, प्रत्यंचा; गौण वस्तु; नाव खींचनेकी डोरी; स्नायु; ज्ञानेंद्रियका विषय; बत्ती; गुणा, आवृत्ति; ए, ओ और अर् जो क्रमशः अ+इ, अ+उ तथा अ+ऋके स्थानपर होते हैं (व्या०); तीनकी संख्या; अतिशयता; रसका अंगरूप धर्म (सा०); पाचक, सूद; भीम; परित्याग; विभाग । **–कथन**–पु० गुणवर्णन, गुणगान; शृंगाररसमें नायककी दस दशाओंमेंसे एक (दे० 'दशा', 'स्मरदशा') । **–कर**–वि० लाभदायक । **–करी**–स्त्री० एक रागिनी । **–कर्म(न्)**–पु० गुण और कर्म; गौण कर्म । **–कली**–स्त्री० दे० 'गुणकारी' । **–कार**–वि० लाभदायक । पु० खानेकी छोटी-छोटी चीजें तैयार करनेवाला; भीम । **–कारक, –कारी(रिन्)**–वि० असर करनेवाला; लाभ करनेवाला । **–कीर्तन**–पु० गुणगान । **–गान**–पु० बखान, गुण-वर्णन । **–ग्रहण**–पु० (किसीका) गुण समझना, गुणका आदर करना । **–ग्राहक, –ग्राही(हिन्)**–वि०, पु० गुण समझने, गुणका आदर करनेवाला, कद्रदान । **–ग्राम**–पु० गुणोंका समूह । वि० गुणनिधान । **–घाती(तिन्)**–वि० द्वेष करनेवाला । **–चिह्न**–पु० किसी व्यापारिक वस्तुपर, उसकी उत्तमता, शुद्धता आदि सूचित करनेके लिए लगाया गया चिह्न । **–ज्ञ**–वि० गुण जानने, समझनेवाला, कद्रदान । **–तंत्र**–पु० गुणोंके आधारपर विचार करना । **–त्रय, –त्रितय**–पु० प्रकृतिके तीन गुण–सत्त्व, रज, तम । **–दोष**–पु० गुण और दोष, भलाई-बुराई । **–धर्म**–पु० विशेष गुणकी प्राप्तिके लिए आवश्यक धर्म । **–निधान, –निधि**–वि० जो गुणोंका खजाना हो । **–नियंत्रण**–पु० व्यापारिक वस्तुओंपर, उनकी उत्तमता या शुद्धता आदि बनाये रखने की दृष्टिसे, किया जानेवाला नियंत्रण (क्वालिटी कंट्रोल) **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० वस्तुओंके गुणका अनुभव करनेवाला । **–राग**–पु० दूसरोंके गुणमें आनंद माननेवाला । **–राशि**–वि० गुणनिधि । पु० शिव । **–लक्षण**–पु० आंतरिक गुणका परिचायक चिह्न । **–लयनिका, –लयनी**–स्त्री० खेमा, तंबू । **–वचन, –वाचक**– पु० गुणद्योतक शब्द, विशेषण । वि० गुणका बोध करानेवाला । **–वाद**–पु० अच्छे गुणोंको बतलाना । **–विधि**–स्त्री० वह विधि जिसमें गुण-कर्मका विधान हो (मी०) । **–वृक्ष, –वृक्षक**–पु० नाव बाँधनेका खूँटा । **–वृत्ति**–स्त्री० गौण वृत्ति । **–व्रत**–पु० मूल व्रतोंकी रक्षा करनेवाले तीन व्रत (जै०) । **–शब्द**–पु० विशेषण । **–संग**–पु० गुणोंके साथ मेल; विषयासक्ति । **–सागर**–वि० गुणनिधि । पु० ब्रह्म; गुणी व्यक्ति । **–हीन**–वि० गुणरहित, निर्गुण ।

गुणक–पु० (सं०) वह अंक जिससे गुणा करें ।

गुणचिह्नांकन–पु० (क्वालिटी मार्किंग) (वि० गुणचिह्नांकित) । घी, करघेके कपड़े आदिपर उनकी उत्तमताका सूचक अंक डालना, निशान बनाना ।

गुणन–पु० (सं०) गुणा करना–**चिह्न**–पु० गुणन या गुणाका सूचक चिह्नविशेष (×) । **–फल**–पु० एक अंकको दूसरेसे गुणन करनेसे उपलब्ध अंक, हासिल जरब

गुणनिका–स्त्री० (सं०) पूर्वरंग (ना०); आवृत्ति; नृत्त; नृत्त-विद्या; हार; शून्य; रत्न ।

गुणनीय–वि० (सं०) गुणन करने योग्य ।

गुणवान्(वत्)–वि० (सं०) गुणशाली, गुणी ।

गुणा–पु० गणितमें जोड़नेकी एक संक्षिप्त रीति जिससे कोई संख्या कई बार जोड़नेके बजाय एक बारमें ही उतनी गुनी बढ़ा ली जा सकती है ।

गुणाकर–वि० (सं०) जो गुणोंकी खान हो, गुणराशि ।

गुणाकार–अ० गुणनके चिह्न जैसा, उस तरह; एक-दूसरेको काटकर, स्पर्शकर जाते हुए–'नटने बाँसोंको गुणाकार गाड़कर रस्सेको कसकर तान लिया'–मृग० । वि० गुणितके चिह्न जैसा ।

गुणाग्र्य–पु० (सं०) तीन गुणोंमें सबसे अच्छा गुण, सत्त्वगुण ।

गुणाढ्य–वि० (सं०) बहुतसे अच्छे गुणोंवाला, सदगुणशाली । पु० 'बृहत् कथा'के रचयिता ।

गुणातीत–वि० (सं०) प्रकृतिके तीनों गुणोंसे अलिप्त, परे । पु० परमेश्वर ।

गुणानुरोध–पु० (सं०) अच्छे गुणोंके अनुकूल होना ।

गुणानुवाद–पु० (सं०) गुणगान, गुणकथन ।

गुणान्वित–वि० (सं०) गुणोंसे युक्त ।

गुणालय–वि० (सं०) बहुतसे गुणोंवाला ।

गुणिका–स्त्री० (सं०) अर्बुद, सूजन ।

गुणित–वि० (सं०) जिसका गुणन किया गया हो, राशीकृत; जिसकी गणना की गयी हो ।

गुणी(णिन्)–वि० (सं०) गुणयुक्त; कोई हुनर-कला जाननेवाला ।

गुणीभूत–वि० (सं०) मुख्य अर्थसे रहित; गौण बनाया हुआ । **–व्यंग्य**–पु० काव्यका वह भेद जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थसे अधिक चमत्कारवाला न हो ।

गुणेश्वर–पु० (सं०) परमेश्वर; चित्रकूट पर्वत ।

गुणोपेत–वि० (सं०) अच्छे गुणोंसे युक्त ।

गुण्य–वि० (सं०) गुणा करने योग्य; अच्छे गुणोंवाला; वर्णनीय । पु० वह अंक जिसे गुणा करना हो ।

गुण्यांक–पु० (सं०) वह अंक जिसका गुणन किया जाय ।

गुत्थमगुत्था–पु० गुथ जानेका भाव, भिड़ंत ।

गुत्थी–स्त्री० तागे आदिमें उलझनेसे पड़ी हुई गाँठ, उलझन; कठिनाई ।

गुत्स–पु० (सं०) गुच्छा; चँवर; ग्रंथका परिच्छेद; ३२ लड़ियोंका मुक्ताहार।

गुत्सक–पु० (सं०) गुच्छा; चँवर; ग्रंथपरिच्छेद।

गुथना–अ० क्रि० उलझना; लिपटना; भिड़ना; गूँथा जाना।

गुथवाना–स० क्रि० 'गूथना'का प्रे०।

गुथुवाँ–वि० गूथकर बनाया हुआ।

गुद–पु०, स्त्री० (सं०) गुदा, मलद्वार। **–कील,–कीलक**–पु० बवासीर। **–ग्रह**–पु० कब्ज, मलावरोध। **–निर्गम**–पु० गुदाका एक रोग, काँच निकलना। **–पाक**–पु० मलद्वारका पक जाना। **–भ्रंश**–पु० काँच निकलना। **–रोग**–पु० गुदामें होनेवाला रोग। **–वदन**–पु० गुदा। **–स्तंभ**–पु० कब्ज।

गुदकार, गुदकारा–वि० गूदेदार; भरा, फूला हुआ; गुदगुदा।

गुदगुदा–वि० भरा हुआ; नरम, गुलगुला, गुदाज।

गुदगुदाना–स० क्रि० बगल, तलवे आदिको उँगलियोंसे इस तरह सहलाना कि सुरसुराहट या सुखद खुजली मालूम हो; छेड़ना; उभारना।

गुदगुदाहट–स्त्री० गुदगुदी।

गुदगुदी–स्त्री० गुदगुदानेसे पैदा होनेवाली सुखद सुरसुराहट या हँसानेवाली खुजली; चाव, चुल।

गुदड़िया–पु० वह जो गुदड़ी ओढ़े या चीथड़े लपेटे हो; खेमा आदि भाड़ेपर देनेवाला; गूदड़ (रद्दी चीजें) बेचनेवाला। **–पीर**–पु० गाँवके पासका वह वृक्ष जिसमें चीथड़े लपेटकर गँवार मनौती मानते हैं। **–फ़कीर**–पु० गुदड़ी पहननेवाला फकीर।

गुदड़ी–स्त्री० चीथड़ों, रंग-बिरंगे टुकड़ोंको सीकर बनाया हुआ ओढ़ना, बिछावन, कंथा; खर्का; टूटी-फूटी चीजोंका ढेर; गुदड़ी बाजार। **–फ़रोश**–पु० फटे-पुराने कपड़े, टूटी-फूटी चीजें बेचनेवाला। **–बाज़ार**–पु० फटी-पुरानी, टूटी-फूटी चीजोंका बाजार। **मु० –का लाल**–साधारण घरमें जनमा हुआ, साधारण वेश-भूषामें रहनेवाला असाधारण गुणी। **–में लाल**–तुच्छ स्थानमें अच्छी वस्तु।

गुदनहारी–स्त्री० गोदनेवाली।

गुदना–अ० क्रि० गड़ना, चुभना। पु० गोदना।

गुदर*–पु० राजदरबारमें हाजिरी; निवेदन।

गुदरना*–अ० क्रि० त्यागना, अलग होना; निवेदन करना, गुजारिश करना; व्यतीत होना, गुजरना।

गुदराना*–स० क्रि० दे० 'गुजरानना'; निवेदन करना–'निकट विभीषण आय तुलाने। कपिपति सों तबही गुदराने'–रामचंद्रिका।

गुदरैन*–स्त्री० पाठ याद होनेकी परीक्षा देना; परीक्षा।

गुदवाना–स० क्रि० गुदाना।

गुदांकुर–पु० (सं०) बवासीर।

गुदा–स्त्री० (सं०) मलद्वार, गुद। **–भंजन**–पु० पुरुष-पुरुषका आपसी (अप्राकृतिक) मैथुन।

गुदाज़–वि० (फा०) नरम, गुदगुदा; (समासमें) पिघलानेवाला (दिलगुदाज़)। पु० गलाव; पिघलना; मनोव्यथा, वेदना।

गुदाना–स० क्रि० 'गोदना'का प्रे०।

गुदाम–पु० दे० 'गोदाम'।

गुदार†–वि० गूदेदार, मांसल; गुदाज।

गुदारना*–स० क्रि० सेवामें उपस्थित करना; सुनाना; पढ़ना–'मुलना तहाँ निवाज गुदारै'–छत्रप्रकाश।

गुदारा*–पु० नावपर नदी पार होना, गुजारा; दे० 'गुज़ारा'। वि० गूदेदार।

गुदावर्त–पु० (सं०) कोष्ठबद्धता।

गुदौष्ट–पु० (सं०) गुदाके मुखपरका चर्म।

गुद्दी*–स्त्री० मग्ज, मींगी; गलेका निचला भाग।

गुन*–पु० दे० 'गुण'। **–कारी**–वि० दे० 'गुणकारी'। **–गाहक**–वि०, पु० 'गुणग्राहक'। **–गौरि**–स्त्री० गौरी जैसी सौभाग्यवती, पतिव्रता स्त्री; स्त्रियोंका एक व्रत। **–वंत,–वान**–वि० गुणी, गुणवान्।

गुनगुना–वि० दे० 'कुनकुना'; नाकसे बोलनेवाला।

गुनगुनाना–अ० क्रि० नाकसे बोलना; बहुत धीमे स्वरमें, अस्पष्ट शब्दोच्चारण करते हुए गाना।

गुनना–स० क्रि० विचार करना, सोचना; * वर्णन करना; गाना

गुनह–पु० (फा०) 'गुनाह'का लघु रूप। **–गार**–वि० दोषी, अपराधी। **–गारी**–स्त्री० दोष, अपराध।

गुनही*–वि० गुनहगार।

गुना–वि० गुणित (यह शब्द संख्यावाचक शब्दोंके अंतमें लगकर विशेष्य शब्दकी संख्या या मात्रामें उतनी बारका अर्थ उत्पन्न करता है, जैसे–तिगुना, चौगुना इ०)। (स्त्री० 'गुनी')

गुना†–पु० बेसनका बना एक पकवान।

गुनावन*–पु० विचार।

गुनाह–पु० (फा०) पाप, दुष्कर्म; दोष, अपराध। **–गार**–वि० दोषी, अपराधी; जिसने पाप किया हो।

गुनाही*–वि० गुनहगार।

गुनिया†–पु० दे० 'गोनिया'; विचार करनेवाला। वि० गुणी।

गुनियाला*–वि० गुणोंवाला।

गुनी–वि० गुणोंवाला। पु० चतुर मनुष्य; झाड़-फूंक करनेवाला।

गुनीला*–वि० गुणोंवाला, गुणी।

गुनोवर–पु० एक तरहका देवदार।

गुन्नी–स्त्री० एक तरहका कोड़ा जिसे होलीके अवसरपर व्रजमें एक दूसरेपर मारते हैं।

गुपचुप–अ० छिपकर, गुप्त रीतिसे। स्त्री० एक मिठाई, गुलाबजामुन; लड़कोंका एक खेल; एक खिलौना।

गुपाल*–पु० दे० 'गोपाल'।

गुपिल–पु० (सं०) राजा; रक्षक।

गुपुत*–स्त्री० गूढ बात, रहस्य–'ऊधो बूझति गुपुत तिहारी'–सूर। वि० दे० 'गुप्त'।

गुप्त–वि० (सं०) रक्षित; छिपा या छिपाया हुआ; अदृश्य; गूढ़, दुरूह; संपृक्त, संयुक्त। पु० वैश्योंका उपनाम या वर्णसूचक उपाधि; भारतका एक प्राचीन राजवंश। **–काशी**–स्त्री० बदरिकाश्रमके रास्तेमें पड़नेवाला एक तीर्थस्थान। **–गति**–पु० गुप्तचर। **–गृह**–पु० शयनागार। **–गोदावरी**–स्त्री० एक तीर्थस्थान जो चित्रकूटके निकट है। **–चर**–पु० जासूस, छिपकर टोह लेनेवाला। **–दान**–पु० छिपाकर दिया जानेवाला दान; वह दान जिसे दाताके सिवा दूसरा न जाने; वह दान जिसका दाता प्रकट न हो। **–मार**–स्त्री० (हिं०) ऐसी मार जिसमें मारनेका कोई चिह्न ऊपर न देख पड़े। **–रजस्वला**–स्त्री० वह लड़की जिसका मासिक स्राव आरंभ हो गया हो। **–वेश**–वि० जो भेस बदले हो, छद्मवेश; बदला हुआ भेस। **–स्नेह**–वि० गुप्त रूपसे प्रेम करनेवाला। **–स्नेहा**–स्त्री० अंकोठ वृक्ष।

गुप्तक–पु० (सं०) रक्षा करनेवाला।

गुप्तांग–पु० (सं०) स्त्री या पुरुषके गुप्त अंग, उपस्थ।

गुप्ता–स्त्री० (सं०) परकीया नायिकाके ६ भेदोंमेंसे एक, सुरति छिपानेवाली नायिका; रखेली; वैश्य स्त्रीका उपनाम या वर्णसूचक उपाधि।

गुप्तासन–पु० (सं०) सिद्धासन।

गुप्ति–स्त्री० (सं०) ढकने, छिपानेकी क्रिया. गोपन; रक्षण; रक्षाका साधन; गड्ढा; गुफा; मलद्वार; कारागार; नाकका छेद।

गुप्ती–स्त्री० वह डंडा या छड़ी जिसके भीतर तलवार जैसा हथियार छिपा हो।

गुप्तोत्प्रेक्षा–स्त्री० (सं०) वाचकपद (मानो, जानो इत्यादि)-रहित उत्प्रेक्षा।

गुप्फा–पु० गुच्छा; फुँदना।

गुफा–स्त्री० पहाड़ या जमीनमें बना हुआ लंबा गढ़ा, खोह, गुहा।

गुफ्त–स्त्री० (फा०) कथन, उक्ति; बोल (केवल समासमें व्यवहृत)। **–गू**–स्त्री० बातचीत, बोलचाल। **–व(फ्तो) शनीद,–शनूद**–स्त्री० कहना-सुनना; बातचीत।

गुफ्तार–स्त्री० (फा०) बोलचाल, बातचीत।

गुबरैला–पु० सड़े गोबरमें पड़नेवाला एक कीड़ा।

गुबार–पु० (अ०) धूल, गर्द; मनमें संचित दुःख, शिकायत, मैल।

मु० **–निकालना**–मनमें भरी हुई बातें कह डालना, भड़ास निकालना ।

गुवारा–पु० दे० 'गुब्वारा' ।

गुंबिद*–पु० दे० 'गोविंद' ।

गुब्बाड़ा†–पु० दे० 'गुब्वारा' ।

गुब्वारा–पु० कागजका वना हुआ गोला थैला जो नीचेसे खुला रहता है और तारमें चीथड़े लपेटकर जला देनेसे हवामें उड़ता है; रेशम आदिका बना और हवासे हलकी गैससे भरा हुआ थैला जो आकाश-में उड़ सकता है, बैलून; गोलेकी शक्लकी एक आतिशबाजी जो गुब्वारेकी तरह उड़ायी जाती और ऊँचाईपर जाकर फटती है; झिल्ली जैसे रवरका बना एक खिलौना जिसे हवा भरकर फुलाते और तागेमें बाँधकर उड़ाते हैं ।

गुम–वि० (फा०) खोया हुआ, गायव, लुप्त, लापता । **–नाम**–वि० जिसका नाम प्रसिद्ध न हो, जिसे बहुत ही कम लोग जानते हों; विना नामका (पत्र, लेख) । **–राह**–वि० जो रास्ता भूल गया हो, भटका हुआ; बुरे रास्तेपर जानेवाला, पथभ्रष्ट । **–राही**–स्त्री० पथ-भ्रष्टता । **–शुदा**–वि० खोया हुआ, भूला हुआ । – **–सुम**–वि० चुप और निश्चेष्ट, स्तब्ध (होना) ।

गुमक–स्त्री० दे० 'गमक' ।

गुमकना–अ० क्रि० भीतर ही भीतर गूँजना, वाहर प्रकट न होना ।

गुमजी–स्त्री० छोटा गुंवद ।

गुमटा–पु० चोट आदिके कारण होनेवाली माथेपरकी गोल सूजन; कपासका एक कीड़ा ।

गुमटी–स्त्री० मकानमें सवसे ऊपर उठी हुई कमरे या सीढ़ीकी छत; रेलवे लाइनकी हिफाजत करनेवाले चौकीदारके रहनेके लिए लाइनके पास वनी हुई छोटी कोठरी । पु० नावका पानी बाहर फेंकनेवाला मल्लाह ।

गुमना†–अ० क्रि० खो जाना ।

गुमर–पु० घमंड; द्वेष, गुवार; कानाफूसी ।

गुमान–पु० (फा०) संदेह, शक; अनुमान; गर्व, घमंड; * बद-गुमानी, कुधारणा ।

गुमाना*–स० क्रि० खो देना, गँवाना ।

गुमानी–वि० गुमान करनेवाला, घमंडी ।

गुमाश्ता–पु० (फा०) किसी व्यापारी या कोठीकी ओरसे माल खरीदने-वेचनेवाला, एजेंटके रूपमें काम करनेवाला कर्मचारी । **–गिरी**–स्त्री० गुमास्ताका पद या काम ।

गुमिटना*–अ० क्रि० लिपटना, लपेटा जाना ।

गुमेटना*–स० क्रि० लपेटना ।

गुम्मट–पु० दे० 'गुंवद' ।

गुम्मर†–पु० वड़ा मसा, गुमटा, अर्बुद ।

गुरंवा, गुरंबु, गुरंभा†–पु० दे० 'गुड़ंवा' ।

गुरंभर*–पु० मीठे आमका पेड़ ।

गुर–पु० हिसाव निकालनेका संक्षिप्त और पक्का कायदा; कार्य साधनेकी युक्ति, उपाय; * दे० 'गुरु'; दे० 'गुल'; † दे० 'गुड़' । **–मुख**–वि० दे० 'गुरुमुख' । **–मुखी**–स्त्री० दे० 'गुरुमुखी' ।

गुरगा–पु० नौकर, टहलू; सेवक; जासूस ।

गुरगाबी–पु० मुंडा जूता ।

गुरच–स्त्री० दे० 'गुड़ुच' ।

गुरचियाना†–अ० क्रि० सिकुड़कर टेढ़ा हो जाना ।

गुरची†–स्त्री० बल, सिकुड़न ।

गुरज†–पु० दे० 'गुर्ज' ।

गुरझ*–स्त्री० गुत्थी गाँठ–'ममता गुरझै उरझावत क्यौं ?'–घन० ।

गुरझनि*–स्त्री० गाँठ–'राग भरे हियमैं विराग-गुरझनि है'–घन० ।

गुरझियाना*–अ० क्रि० दे० 'गुरचियाना' । स० क्रि० उलझाना, गाँठ डालना ।

गुरण–पु० (सं०) दे० 'गूरण' ।

गुरदा–पु० (फा०) शरीरके अंदर रीढ़के दोनों ओर अवस्थित अंग जिनका काम आहारसे पेशावको अलग करना और खूनसे वेकार 'नत्रजनीय' द्रव्यको निकालकर उसे साफ करना है, वृक्क; हिम्मत, जीवट; एक तरहकी छोटी तोप । **–(दे०)का दर्द**–एक रोग जिसमें गुरदेके भीतर पथरीं पैदा हो जाती है ।

गुरबरा–पु० गुड डालकर या गुडके घोलमें डुवाकर वनाया हुआ वड़ा ।

गुरबिनी*–स्त्री दे० 'गुर्विणी', गुरु पत्नी; गर्भिणी ।

गुरमुखी–स्त्री० दे० 'गुरुमुखी' (गुरुके साथ) ।

गुरवा*–वि० घमंडी ।

गुरसी†–स्त्री० अँगोठी, गोरसी ।

गुराइ, गुराउ*–पु० तोप ढोनेकी गाड़ी ।

गुराई*–स्त्री० दे० 'गोराई'; दे० 'गुराई' ।

गुराव–पु० तोप लादनेकी गाड़ी ।

गुराव–पु० चारा काटना; गँड़ासा ।

गुरंदा–पु० दे० 'गोइंदा'; जासूस ।

गुरिद*–पु० गुर्ज, गदा ।

गुरिया–स्त्री० छोटी गोली; मनका, मालाका दाना; (मांस आदिका) छोटा टुकड़ा, वोटी ।

गुरिल्ला–पु० दे० 'गोरिल्ला'; छापामार दस्तेका सैनिक, 'गोरिल्ला'। **–दस्ता**–पु० छोटा फौजी दस्ता जो मौका पाकर दुश्मनपर छापा मारता है । **–युद्ध**–पु० वह लड़ाई जिसमें छोटे-छोटे दस्तोंमें वँटी हुई सेना मौका पाकर दुश्मनपर छापे मारा करती है ।

गुरोरा*–वि० मीठा; सुंदर ।

गुरु–वि० (सं०) भारी, वजनदार; वड़ा; दुष्पाच्य, देरमें पचनेवाला; पूज्य; महत्; कठिन; दीर्घ या दो मात्राओंवाला (वर्ण, ताल); प्रिय; दर्पपूर्ण (उक्ति); दुर्दम; शक्तिशाली । पु० पिता; पूज्य पुरुष; वुजुर्ग; शिक्षक, विद्या देनेवाला, कोई कला, विद्या सिखानेवाला, उस्ताद; गायत्री मंत्रका उपदेश करनेवाला; वृहस्पति ग्रह; देवताओंके गुरु वृहस्पति; पुष्य नक्षत्र; द्रोणाचार्य; परमेश्वर; दो मात्राओंवाला वर्ण, ताल । **–कार्य**–पु० भारी, कठिन कार्य, महत्त्ववाला काम; आचार्यका पद या कार्य । **–कुंडली**–स्त्री० फलित ज्योतिषके अनुसार बनाया जानेवाला एक चक्र जिसके मध्यमें वृहस्पति होते हैं । **–कुल**–पु० गुरु या आचार्यका वासस्थान जहाँ रहकर शिष्य विद्याध्ययन करते हों, गुरुगृह; प्राचीन पद्धतिपर स्थापित विद्यापीठ । **–गंधर्व**–पु० एक ताल । **–गृह**–पु० गुरुकुल । **–घ्न**–पु० गौर सर्षप । वि० वि० गुरुको मारनेवाला । **–चर्या**–स्त्री० गुरुकी सेवा । **–चांद्रीय-योग**–पु० वृहस्पति और चंद्रमाके कर्क राशिमें एकत्र होनेसे पहलेवाला योग । **–जन**–पु० वड़ा, वुजुर्ग, पूज्य पुरुष, माता, पिता, आचार्य आदि । **–तल्प**–पु० गुरुका विस्तर (भार्या); गुरुपत्नीके साथ अनुचित संवंध । **–तल्पग,–तल्पी(ल्पिन्)**–वि०, पु० गुरुपत्नी या विमाताके साथ अनुचित संवंध करनेवाला । **–ताल**–पु० संगीतका एक ताल । **–तोमर**–पु० एक छंद । **–दक्षिणा**–स्त्री० पढ़ाने या मंत्रोपदेशके लिए गुरुको दी जानेवाली दक्षिणा । **–दैवत**–पु० पुष्य नक्षत्र । **–द्वारा**–पु० (हिं०) गुरुके रहनेका स्थान; सिखोंका मठ या मंदिर । **–पत्र,–पत्रक**–पु० वंग धातु, राँगा । **–पत्रा**–स्त्री० इमलीका पेड़ । **–पाक**–वि० देरमें पचनेवाला, भारी । **–पुष्य**–पु० एक योग, गुरुवारको पुष्य नक्षत्र पड़ना (ज्यो०) । **–पूर्णिमा**–स्त्री० आषाढ़की पूर्णिमा जिस दिन गुरुकी पूजाका विशेष विधान है । **–भ**–पु० पुष्य नक्षत्र, मीन राशि; धनु राशि । **–भाई**–पु० (हिं०) एक ही गुरुसे शिक्षा या दीक्षा पानेवाला, एक गुरुका शिष्य होनेके नाते भाई । **–मंत्र**–पु० गुरुसे प्राप्त मंत्र । **–मर्दल**–पु० एक तरहका ढोल या नगाड़ा । **–मुख**–वि० दीक्षाप्राप्त, दीक्षित । **–मुखी**–स्त्री० देवनागरी लिपिका एक रूप जिसमें पंजावी भाषा लिखी जाती है । **–रत्न**–पु० पुखराज । **–वार,–वासर**–पु० वृहस्पतिवार । **–वासी(सिन्)**–पु० गुरुगृहमें रहनेवाला शिष्य, अंतेवासी । **–वृत्ति**–स्त्री० गुरु, आचार्यके प्रति शिष्यके लिए कर्तव्य व्यवहार; गुरुआई । **–व्यथ**–वि० वहुत पीड़ित या शोकान्वित । **–शिखरी(रिन्)**–पु० हिमालय । **–सिंह**–पु० वृहस्पतिके सिंह राशिमें आनेपर लगनेवाला एक पर्व ।

गुरुअई, गुरुआई–स्त्री० गुरुका काम; मंत्रोपदेश देनेका काम; उस्तादी । दे० 'गुरुडम' ।

गुरुआइन†–स्त्री० दे० 'गुरुआनी' ।

गुरुआनी–स्त्री० गुरुपत्नी; शिक्षा देनेवाली स्त्री।

गुरुक–वि० (सं०) जो थोड़ा ही भारी हो; दीर्घ (छंदःशास्त्र)।

गुरुच†–स्त्री० दे० 'गुड़ुच'।

गुरुज*–पु० दे० 'गुर्ज़'।

गुरुडम–पु० साहित्यादिके क्षेत्रमें 'गुरुअई' फैलानेका यत्न।

गुरुता–स्त्री० (सं०) भारीपन, बोझ; महत्त्व, गौरव; गुरुका पद; गुरुत्वाकर्षण।

गुरुताई*–स्त्री० दे० 'गुरुता'।

गुरुत्व–पु० (सं०) गुरुता। **–केंद्र**–पु० पदार्थ या पिंडमें वह मध्य बिंदु जिसपर पूरे पदार्थका भार केंद्रित हो सके। **–०(त्रिभुजका)**–पु० (सेंट्रॉइड) त्रिभुजकी माध्यिकाओंका मिलन-बिंदु।

गुरुत्वाकर्षण–पु० (सं०) भारके कारण वस्तुका पृथ्वीके केंद्रकी ओर खींचा जाना; (ग्रैविटेशन) वह आकर्षण बल जो प्रत्येक कण दूसरे कणपर लगाता है। गुरुत्वाकर्षणका बल दोनों कणों (या पिण्डों) के द्रव्यमानोंके गुणनफलका अनुक्रमानुपाती होता है, तथा यह बल उनके बीचकी दूरीके वर्गका व्युत्क्रमानुपाती होता है।

गुरुविनी*–स्त्री० दे० 'गुर्विणी'।

गुरू†–पु० गुरु। **–कंटाल**–वि०, पु० बहुत चालाक, धूर्त, काइयाँ।

गुरेरना†–स० क्रि० आँखें फाड़कर सक्रोध देखना, घूरना।

गुरेरा*–पु० दे० 'गुलेला'; घूरनेकी क्रिया, देखादेखी–'अंत कंतसों भयो गुरेरा'–प०।

गुर्ग–पु० (फा०) भेड़िया। **–आशनाई**–स्त्री० दिखाऊ, कपटभरी मित्रता, ऊपरसे दोस्ती, भीतरसे दुश्मनी रखना।

गुर्गा–पु० दे० 'गुरगा'।

गुर्ज़–पु० (फा०) गदा; बुर्ज। **–बरदार**–पु० गदाधारी सैनिक। **–मार**–पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो हाथमें लोहेका गुर्ज लिये रहते हैं और भिक्षा न पानेपर अपने सिरपर मार लेते हैं, मुँड़चिरा।

गुर्जर–पु० (सं०) गुजरात देश; गुजरातका रहनेवाला, गुजराती।

गुर्जराट–पु० गुजरात।

गुर्जरी–स्त्री० (सं०) गुजरात देशकी स्त्री; एक रागिनी। **–टोड़ी**–स्त्री० (हिं०) एक राग।

गुर्दा–पु० दे० 'गुरदा'; * एक तरहकी छोटी तोप।

गुर्रा–पु० (अ०) मुसलमानोंके चांद्र मासकी प्रतिपदा (द्वितीया); नागा, अंझा।। **मु०–बताना**–टाल-मटूल करना।

गुर्राना–अ० क्रि० (कुत्ते-बिल्लीका) क्रोधमें मुँह बंद करके भारी आवाज निकालना; (ला०) क्रोधसूचक आवाजमें बोलना।

गुर्वादित्य–पु० (सं०) एक योग, बृहस्पति और सूर्यका एक राशि, एक नक्षत्रपर स्थित होना (ज्यो०)।

गुर्विणी, गुर्वी–स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री; गुरुपत्नी; श्रेष्ठ स्त्री। वि०, स्त्री० गर्भवती; विशाल, बहुत बड़ी।

गुलंच–पु० (सं०) एक कंद।

गुलंदाज–पु० दे० 'गोलंदाज'।

गुल–पु० (सं०) गुड़; (फा०) गुलाबका फूल; फूल; कपड़े आदिपर बना हुआ पुष्पाकार बूटा; गोल निशान; जलने या दागनेका निशान; बत्तीका सिरा जो बिलकुल जल गया हो; फूलके आकारकी कारचोबीकी बनी हुई बड़ी टिकली; हँसते समय भरे हुए गालोंमें पड़नेवाला गड्ढा; पशुओंके शरीरपरका भिन्न रंगका दाग; छाप, दाग; कनपटीपर लगायी जानेवाली चूनेकी बिंदी; एक चलता गाना; जलता हुआ कोयला, अंगारा; तंबाकूका जट्ठा; आँखका डेला; जूतेमें एड़ीके नीचेका चमड़ा; (ला०) सुंदर, सुकुमार स्त्री-पुरुष; * कनपटी। **–अंदाम**–वि० फूल-सी देहवाला, सुंदर, सुकुमार। **–अक़ीक़**–पु० एक फूलदार पौधा। **–अजायब**–पु० गुड़हलका फूल; उसका पौधा। **–अनार**–पु० अनारका फूल। **–अब्बास**–पु० एक फूल; उसका पौधा। **–अब्बासी**–पु० गुलअब्बासके फूलका रंग। वि० उस रंगका। **–अशर्फ़ी**–स्त्री० एक पीले रंगका फूल। **–आतशी,–आतिशी**–पु० गहरे लाल रंगका गुलाब। **–औरंग**–पु० एक तरहका गेंदा। **–कंद**–पु० गुलाबकी पँखड़ियोंमें शकर मिलाकर बनायी हुई एक सरस औषध। **–कट**–पु० कपड़ेपर बेल-बूटे छापनेका ठप्पा। **–कदा**–पु० फुलवारी, उद्यान। **–कार**–पु० गुलकारी करनेवाला; वह चीज जिसपर गुलकारी की गयी हो। **–कारी**–स्त्री० बेल-बूटे काढ़ने-बनानेका काम, कशीदाकारी। **–केश**–पु० कलगेका फूल; उसका पौधा, जटाधारी। **–ख़न**–पु० भट्ठी, भाड़; तनूर; अग्निकुंड। **–ख़रा,–ख़ैरू**–पु० एक फूल; उसका पौधा। **–गश्त**–स्त्री० बागकी सैर, उद्यान-भ्रमण। **–गीर**–पु० बत्तीका गुल काटनेकी कैंची। **–गूँ**–वि० गुलाबके रंगका, गुलाबी। **–गूना**–पु० एक तरहका उबटन जिसे सुंदरता बढ़ानेके लिए औरतें मुँहपर लगाती हैं। **–चश्म**–वि० जिसकी आँखमें फूली हो। **–चाँदनी**–स्त्री० एक सफेद फूल जो प्रायः चाँदनी रातमें खिलता है; उसका पौधा। **–चीँ**–पु० फूल चुननेवाला, माली; एक सदाबहार फूल; उसका पेड़। वि० लाभ उठानेवाला। **–चीन**–पु० एक तरहका वृक्ष जो हमेशा फूलता है। **–चीनी**–स्त्री० फूल चुनना। **–जलील**–पु० असबर्गका फूल। **–ज़ार**–पु० बाटिका, उद्यान। वि० खिला हुआ, प्रफुल्ल; चहल-पहलवाला। **–तराश**–पु० गुल कतरनेकी कैंची, गुलगीर; वह कैंची जिससे बगीचेके पौधोंकी काट-छाँट की जाय; पत्थरपर बेल-बूटे बनानेका औजार; चिरागका गुल काटने या पौधोंकी काट-छाँट करनेवाला आदमी। **–तुर्रा**–पु० कलगेका फूल। **–दस्ता**–पु० फूलोंका गुच्छा; चुनी हुई चीजों (पद्य आदि) का संग्रह, चयनिका। **–दान**–पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र, फूलदान। **–दाउदी,–दाऊदी**–स्त्री० शरद् ऋतुमें फूलनेवाला एक फूल; उसका पौधा। **–दार**–वि० दागदार; जिसपर फूल बने हों। पु० एक तरहका सफेद कबूतर जिसपर लाल या काले दाग होते हैं; एक तरहका कशीदा। **–दावदी**–स्त्री० दे० 'गुलदाउदी'। **–दुपहरिया**–स्त्री० गहरे लाल रंगका एक सुगंधित फूल; उसका पौधा। **–दुम**–स्त्री० एक तरहकी बुलबुल जिसकी दुमके नीचे लाल दाग होता है। **–नरगिस**–स्त्री० नरगिसका फूल; उसका पौधा। **–नार**–पु० अनारका फूल; एक तरहका अनार; अनारके फूल जैसा गहरा लाल रंग। **–पपड़ी**–स्त्री० एक तरहकी मिठाई। **–प्यादा**–पु० गुलाबका एक भेद जिसमें नाममात्रकी सुगंध होती है। **–फानूस**–पु० शोभाके लिए लगाया जानेवाला एक छोटा पेड़। **–फ़ाम**–वि० गुलाबके रंगका; सुंदर। पु० इंदर-सभाकी कहानीमें सब्ज परीका प्रेमपात्र। **–फ़िरंग**–पु० एक सदाबहार फूल जो सफेद और गुलाबी रंगका होता है। **–फिरकी**–स्त्री० एक पौधा जिसमें गुलाबी रंगके फूल लगते हैं। **–फ़िशाँ**–वि० फूल बखेरनेवाला; सुवक्ता, खुशबयान। पु० फुलझड़ी; गुलाब छिड़कनेकी शीशी। **–फ़िशानी**–स्त्री० फूल बखेरना; सुंदर शब्दावलीकी झड़ी लगाना, खुशबयानी। **–बकावली**–स्त्री० अमरकंटकके जंगलोंमें होनेवाला एक सफेद, सुगंधित फूल जो आँखोंके रोगोंकी अच्छी दवा बताया जाता है; उर्दूकी एक प्रसिद्ध कहानी और प्रबंध-काव्य। **–बदन**–वि० फूल-सी देहवाला, सुंदर। एक तरहका धारीदार रेशमी कपड़ा। **–बाज़ी**–स्त्री० फूलोंसे खेलना, एक-दूसरेपर फूल फेंकना। **–बादला**–पु० एक वृक्ष। **–बूटा**–पु० फूल-पत्ती, बेल-बूटा। **–मख़मल**–पु० पु० एक छोटा फूल; उसका पौधा। **–मेख**–स्त्री० वह कील जिसका सिरा फूल जैसा गोल होता है। **–मेहँदी**–स्त्री० एक निर्गंध फूल; उसका पौधा। **–रंग**–वि० गुलाबके रंगका, लाल, गुलाबी। **–रुख़,–रू**–वि० फूलसे मुखवाला, सुंदर। **–रेज़**–वि० फूल बखेरनेवाला। पु० कई रंगोंके फूल बखेरनेवाली फुलझड़ी, एक कपड़ा। **–लाला**–पु० एक फूल जो पोस्तेके फूलसे मिलता है; उसका पौधा। **–शकर**–स्त्री० गुलकंद। **–शकरी**–स्त्री० शकरमें गुलाबकी पँखड़ियाँ मलकर बनाया हुआ लड्डू जिससे शरबत बनाते हैं। **–शन**–पु० बाग, फूल वाटिका। **–शब्बो**–पु० एक फूल जिसकी सुगंध रातको अधिक होती है, रजनीगंधा, रातमें खेला जानेवाला एक खेल। **–सुम**–पु० नक्काशी करनेका सुनारोंका एक औजार। **–सौसन**–पु० एक फूल जो हलके आसमानी रंगका होता है। **–हज़ारा**–पु० गेंदा; दोहरा गुललाला। **मु०–कतरना**–कागज-कपड़े आदिके फूल कतरकर बनाना; बत्तीका गुल काटना; अचंभेकी बात करना। **–खाना**–बदनपर गरम धातुसे दाग लगवाना; जलना। **–खिलना**–भेद खुलना;

कोई अनोखी, मजेदार बात होना; बखेड़ा उठना। **–खिलाना** –कोई अद्भुत, अचंभेकी बात करना; बखेड़ा उठाना। **–बँधना** –बत्तीके सिरेका खूब जल जाना; आग सुलग जाना। **–होना–** –(दीपक) बुझना।

गुल–पु॰ दे॰ 'ग़ुल'। **–गपाड़ा**–पु॰ शोरगुल, हल्ला।

गुल–'गोला'का समासगत रूप। **–चला**–पु॰ गोला चलानेवाला, गोलंदाज।

ग़ुल–पु॰ (फा॰) शोर, हल्ला। **–गला**–पु॰ शोर, धूम।

गुलकुइयाँ†–स्त्री॰ दौड़नेमें प्रतिस्पर्द्धीसे कतराकर निकल जानेकी कला।

गुलगचिया–स्त्री॰ गिलगिलिया।

गुलगुल–वि॰ दे॰ 'गुलगुला'।

गुलगुला–वि॰ नरम, मुलायम, गुदाज़। पु॰ आटेमें गुड़, खाँड मिलाकर और तेल या घीमें तलकर बनाया जानेवाला पकौड़ीकी शक्लका एक पकवान।

गुलगुलाना†–स॰ क्रि॰ किसी गूदेदार चीजको दबाकर पिलपिला करना; * गुदगुदाना।

गुलगुली*–स्त्री॰ गुदगुदी; † एक तरहकी मछली। वि॰, स्त्री॰ मुलायम।

गुलगोथना–पु॰ वह नाटा आदमी जिसका शरीर खूब भरा और फूला हो।

गुलचना*–स॰ क्रि॰ गुलचेका आघात करना।

गुलचा–पु॰ मुट्ठी बाँधकर उँगलियोंकी पोरसे, प्रेममय विनोदमें गालोंपर आघात करना (मारना)।

गुलचाना, गुलचियाना†–स॰ क्रि॰ गुलचा मारना।

गुलची–स्त्री॰ बढ़इयोंका एक औजार।

गुलछर्रा–पु॰ मौज, चैन, ऐश। मु॰ (रें) **उड़ाना**-निर्द्वंद्व होकर सुख भोगना, मौज करना।

गुलझटी–स्त्री॰ धागे आदिमें उलझकर पड़ी हुई गाँठ, गुत्थी; शिकन। मु॰ **–निकलना**–मनोमालिन्य दूर करना। **–पड़ना** –मनमें गाँठ पड़ना।

गुलझड़ी–स्त्री॰ दे॰ 'गुलझटी'।

गुलटप्पा†–पु॰ गप्प।

गुलता–पु॰ गुलेलेसे फेंकी जानेवाली मिट्टीकी गोली।

गुलत्थी–स्त्री॰ अधिक गीला और गलाया हुआ चावल।

गुलथी–स्त्री॰ चोट लगनेसे शरीरमें होनेवाला गिलटी या गुठली जैसा शोथ; मैंदा आदि घोलनेसे बनी हुई गाँठ।

गुलफ*–पु॰ गुल्फ, टखना।

गुलमा–पु॰ सिरपर चोट लगनेसे होनेवाली गोल सूजन; मसालेदार कीमा भरी हुई बकरीकी आँत।

गुलरू–पु॰ (फा॰) सुंदर, सुडौल व्यक्ति, छैला। **–ज़रीना**–पु॰ फारसी लोक साहित्यमें उल्लिखित उत्कट प्रेमियोंका जोड़ा।

गुलहथी–स्त्री॰ दे॰ 'गुलत्थी'।

गुलाब–पु॰ (फा॰) एक कँटीला पौधा या झाड़; उसका फूल जो बहुत सुंदर और मीठी सुगंधवाला होता है; गुलाबके फूलोंका अरक, गुलाबजल। **–अफशाँ**–पु॰ गुलाबपाश। **–जल**–पु॰ गुलाबका अरक। **–जामुन**–पु॰ एक प्रसिद्ध मिठाई, जामुनकी शकलके घीमें छानकर शीरेमें डुबोये हुए खोयेके लड्डू; एक फलदार पेड़। **–पाश**–पु॰ गुलाबजल छिड़कनेका एक हजारादार यंत्र। **–बाड़ी** –स्त्री॰ गुलाबके फूलोंकी बाड़ी, वाटिका।

गुलाबाँस–पु॰ गुलअब्बास।

गुलाबा*–पु॰ एक बरतन।

गुलाबी–वि॰ गुलाबके रंगका, हलका लाल; हलका (जाड़ा, नशा); गुलाबमें बसाया हुआ (रेवड़ी आदि); गुलाब-संबंधी। पु॰ गुलाबकी पँखड़ियोंका-सा हलका लाल रंग। स्त्री॰ शराब पीनेकी प्याली; गुलाबकी पँखड़ियोंसे बनी एक मिठाई; एक तरह-की मैना।

ग़ुलाम–पु॰ (अ॰) खरीदा हुआ और मालिककी संपत्ति समझा जानेवाला नौकर, दास; नौकर; अधीन, वशवर्ती, पराधीन व्यक्ति; ताशका एक पत्ता। **–क़ादिर**–पु॰ एक रुहेला सरदार जिसने दिल्लीपर कब्जा करके शाह आलम (द्वितीय)की आँखें निकलवा ली थीं। **–गर्दिश**–पु॰ महल आदिके चारों तरफका बरामदा; जनानखानेके भीतरी दरवाजेके सामने आड़के लिए बनी हुई दीवार। **–चोर**-पु॰ ताशका एक खेल। **–ज़ादा**–पु॰ गुलामका बेटा (वक्ता नम्रतावश अपने बेटेके लिए कहता है)।

ग़ुलामी–स्त्री॰ दासता; चाकरी; पराधीनता।

गुलाल–पु॰ अबीर।

गुलाला–पु॰ दे॰ 'गुललाला'।

गुलिक–पु॰ (सं॰) गौरवा।

गुलिका–स्त्री॰ (सं॰) खेलनेका छोटा गेंद; दे॰ 'गुली'।

गुलिया–वि॰ महुएके बीजका।

गुलियाना†–स॰ क्रि॰ दे॰ 'गोलियाना'; चोंगेमें औषध आदि भरकर पशुको पिलाना।

गुलिस्ताँ–पु॰ (फा॰) पुष्पवाटिका, उद्यान; शेखसादीरचित फारसीका एक प्रसिद्ध नीतिग्रंथ।

गुली–स्त्री॰ (सं॰) गोली; चेचक; † दे॰ 'गुल्ली'।

गुलुंछ, गुलुच्छ–पु॰ (सं॰) गुच्छा।

गुलू–पु॰ (फा॰) गला, गरदन। **–ख़लासी**–स्त्री॰ गला छूटना, छुटकारा। **–बंद**–पु॰ सरदीसे बचनेके लिए गलेमें लपेटी जाने-वाली पट्टी; गलेमें पहननेका एक जेवर।

ग़लूला–पु॰ (फा॰) गुलेल; गोली।

गुलेँदा, गुलैँदा–पु॰ महुएका फल, कोलेंदा।

गुलेटन–पु॰ एक पत्थर जिसपर सिकलीगर अपना मसाला रगड़ते हैं।

गुलेनार–पु॰ दे॰ गुलनार।

गुलेराना–पु॰ सुंदर फूल; एक फूल जो भीतरकी ओर लाल और बाहर पीला होता है।

गुलेल–स्त्री॰ (अ॰) दो ताँतोंकी कमान जिसपर मिट्टीकी गोली रखकर फेंकते हैं। **–ची**–पु॰ गुलेल चलानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री॰ गुलेल चलाना; गुलेलसे चिड़िया आदि मारना।

गुलेला–पु॰ गुलेलसे फेंकनेकी मिट्टीकी गोली; गुलेल।

गुलोह–स्त्री॰ गुडुच, गिलोय।

गुलौर, गुलौरा†–पु॰ वह स्थान जहाँ रस पकाकर गुड़, राब बनायें।

गुल्फ–पु॰ (सं॰) एड़ीके ऊपरकी गाँठ; टखना, घुट्टी।

गुल्म–पु॰ (सं॰) बिना तनेका पौधा जिसमें जड़से ही कई शाखाएँ निकलती हैं (ईख, धान, सरकंडा इत्यादि); झाड़; सेनाका एक विभाग–९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल; नदीके घाटपर रक्षार्थ स्थापित चौकी; तिल्ली; एक उदररोग, पेटके भीतर गोला-सा बँध जाना; (अं॰, ट्यूमर) (अर्बुद)–शरीरके ऊतककी कोई भी अयाचित बाढ़। गुल्म प्रायः वक्षस्थल जैसी स्थितिमें एक छोटी गुठलीके आकारमें उभर आते हैं। (कुछ गुल्म निरापद होते हैं, कुछ कैन्सर-जनक होते हैं।) दुर्ग। **–केतु**–पु॰ अम्लवेतस। **–केश**–वि॰ झबरीले बालोंवाला। **–प**–पु॰ गुल्मका नायक। **–मूल**–पु॰ अदरक। **–वल्ली**–स्त्री॰ सोमलता। **–वात**–पु॰ प्लीहेका एक रोग। **–शूल**–पु॰ शूल रोगका एक भेद।

गुल्मी–स्त्री॰ (सं॰) खेमा; पेड़ोंका झुरमुट; आँवलेका पेड़; छोटी इलायचीका पेड़।

गुल्मी(ल्मिन्)–वि॰ (सं॰) गुल्म रोगसे पीड़ित; गुल्मके रूपमें उगनेवाला। (स्त्री॰ 'गुल्मिनी'।)

गुल्मोदर–पु॰ (सं॰) दे॰ 'गुल्मवात'।

गुल्य–पु॰ (सं॰) मिठास, मीठा स्वाद।

गुल्लक–पु॰ (सं॰) गोलक।

गुल्ला–पु॰ (फा॰) गुलेलपर फेंकी जानेवाली मिट्टीकी बनी गोली ('गुलूला'का लघु रूप); ईखकी गँडेरी; लकड़ीका छोटा टुकड़ा। * शोर, गुल (हल्ला-गुल्ला)।

गुल्लाला–पु॰ दे॰ 'गुललाला'।

गुल्ली–स्त्री॰ लंबोतरा टुकड़ा जिसके दोनों छोर नुकीले हों; काठका लंबोतरा टुकड़ा; सोने या चाँदीका डला; गुठली; महुएके फलकी गुठली; केवड़ेका फूल; छत्तेमें मधु रहनेका स्थान; मकईकी खुखड़ी; ऊखकी गँड़ेरी; एक तरहकी मैना; छोटा गोल पासा; एक औजार जिससे सिकलीगर जंग खुरचते हैं। **–डंडा**–पु॰

लड़कोंका एक खेल जिसमें गुल्लीको डंडेसे मारते हैं। मु० –डंडा खेलना–खेल-कूदमें समय नष्ट करना।

गुवा*–पु० दे० 'गुवाक'।

गुवाक–पु० (सं०) सुपारी; चिकनी सुपारी।

गुवार*–पु० दे० 'ग्वाल'।

गुवारपाठा–पु० दे० 'ग्वारपाठा'।

गुवाल*–पु० दे० 'ग्वाल'।

गुवालि*–स्त्री० 'ग्वालिन'।

गुविंद*–पु० दे० 'गोविंद'।

गुसल†–पु० दे० 'गुस्ल'। –खाना–पु० दे० 'गुस्लख़ाना'।

गुसाँई–पु० दे० 'गोस्वामी'।

गुसा*–पु० दे० 'ग़ुस्सा'।

गुसैयाँ*–पु० स्वामी; ईश्वर।

गुस्ताख़–वि० (फा०) ढीठ, अविनीत, बेअदब।

गुस्ताख़ाना–अ० (फा०) ढिठाईके साथ, अशिष्टतापूर्वक। वि० गुस्ताखीसे भरा हुआ (व्यवहार)।

गुस्ताख़ी–स्त्री० (फा०) ढिठाई, अशिष्टता, बेअदबी।

गुस्ल–पु० (अ०) सारे शरीरको धोना, स्नान; मुर्देको नहलाना। –ख़ाना–पु० नहानेकी कोठरी, स्नानागार। –(स्ले)सेहत–पु० बीमारीसे उठनेके बाद किया जानेवाला प्रथम स्नान।

ग़ुस्सा–पु० (अ०) क्रोध, रोष, कोप। –वर–वि० जिसे जल्दी गुस्सा आये। मु० –उतारना,–निकालना–क्रोधकी शांतिके लिए (किसीपर) बिगड़ना, मारना इत्यादि। –थूक देना–क्षमा कर देना, गुस्सेको पी जाना।

गुस्सैल–वि० गुस्सावर, क्रोधी।

गुह†–पु० दे० 'गू', मल। (सं०) कार्तिकेय; घोड़ा; शृंगवेरपुरका निषादराज जिसने वनगमनके समय रामको गंगा पार कराया; गुहा; विष्णु; बंगाली कायस्थोंकी एक उपजाति। –षष्ठी–स्त्री० मार्गशीर्ष-शुक्ला षष्ठी। * वि० गुंफित, गुह्य।

गुहज्य*–वि० गुह्य, छिपाने योग्य, गुप्त।

गुहना†–स० क्रि० गूँथना।

गुहराना†–स० क्रि० पुकारना।

गुहवाना–स० क्रि० 'गुहना'का प्रे०।

गुहाँजनी–स्त्री० आँखकी पलकपरकी फुंसी, बिलनी।

गुहा–स्त्री० (सं०) गुफा, खोह; माँद; छिपनेकी जगह; (ला०) हृदय, अंतःकरण; सिंहपुष्पी; शालपर्णी; बुद्धि। –चर–वि० गुहामें रहने, विचरनेवाला। पु० ब्रह्म। –शय–पु० माँदमें रहनेवाले जंतु, चूहा, सिंह आदि; परमात्मा।

गुहाई†–स्त्री० गुहनेकी क्रिया; गुहनेकी मजदूरी।

गुहाना–स० क्रि० 'गुहना'का प्रे०।

गुहार–स्त्री० दोहाई, रक्षाके लिए पुकार।

गुहारना–अ० क्रि० सहायताके लिए पुकारना।

गुहारि*–स्त्री० दे० 'गुहार'।

गुहाहित–वि० (सं०) गुहा, हृदयदेशमें स्थित। पु० परमात्मा।

गुहिन–पु० (सं०) वन, जंगल।

गुहिर*–वि० गहरा, गंभीर।

गुहिल–पु० (सं०) धन, संपत्ति।

गुहेर–पु० (सं०) अभिभावक, रक्षक; लोहार।

गुहेरा–पु० गोह; गुहनेवाला।

गुहेरी†–स्त्री० बिलनी।

गुह्य–वि० (सं०) छिपाने लायक; गुप्त; गूढ, कठिनतासे समझमें आनेवाला। पु० भेद, रहस्य; गुप्त अंग, उपस्थ; (गुदा क्व०); ढोंग, दंभ; कछुआ; विष्णु। –गुरु–पु० शिव। –दीपक–पु० जुगनू। –द्वार–पु० मलद्वार, गुदा। –निष्यंद–पु० मूत्र। –पुष्प–पु० पीपल। –बीज–पु० भूतृण। –भाषण,–भाषित–पु० गुप्त वार्ता; गुप्त मंत्रणा।

गुह्यक–पु० (सं०) कुबेरके खजानेकी रक्षा करनेवाले यक्षोंका वर्ग; गुझिया। –पति–पु० कुबेर।

गुह्यकेश्वर–पु० (सं०) कुबेर।

गूँ–पु० (फा०) रंग, वर्ण; ढंग (नीलगूँ)। –नागून–वि० रंग-बिरंगा।

गूँगा–वि० जो बोल न सके, मूक; न बोलनेवाला, जो मौन साधे हो। पु० गूँगा आदमी। मु० –(गे)का गुड़,–का सपना–वह बात जो अनुभव की जाय पर कही न जा सके, अकथनीय अनुभव।

गूँगी–वि०, स्त्री० न बोलनेवाली। स्त्री० न बोल सकनेवाली स्त्री; एक तरहकी बिछिया; दोमुँहा साँप। –पहेली–स्त्री० इशारोंमें कही जानेवाली पहेली।

गूँच–स्त्री० घुँघची।

गूँज–स्त्री० प्रतिध्वनि, टकराकर लौटनेवाली आवाज; देरतक बनी रहनेवाली ध्वनि; गुंजार; बाली या नथकी मुड़ी हुई नोक; लट्टूकी कील।

गूँजना–अ० क्रि० आवाजका टकराकर लौटना, प्रतिध्वनित हो जाना; किसी ध्वनिसे किसी स्थानका व्याप्त हो जाना; किसी ध्वनिका देरतक सुनाई देते रहना; भौंरे या मधु-मक्खीका गुंजार करना; गरजना।

गूँजा†–पु० दे० 'गुँजहरा'।

गूँठ†–पु० पहाड़ी टट्टू।

गूँथना–स० क्रि० दे० 'गूथना'; 'गूँधना'।

गूँदना–स० क्रि० दे० 'गूँधना'।

गूँदा–पु० दे० 'गोँदा'।

गूँदी–स्त्री० गँधेला नामक वृक्ष।

गूँधना–स० क्रि० आटेमें पानी डालकर उसे हाथोंसे मसलना, माँड़ना; धागों या बालोंकी लड़ी बनाना, चोटी करना; पिरोना।

गू–पु० (सं०) गंदगी; मैला, पाखाना, विष्ठा। –मूत–पु० (हि०) मलमूत्र। मु०–उछलना–कलंक उजागर होना, बदनामी फैलना। –उछालना–कलंककी शुहरत करना। –का कीड़ा–मैलेमें उसके सड़नेसे पैदा होनेवाला कीड़ा; बहुत मैला रहनेवाला, घिनौना आदमी। –का चोथ–भद्दा, घिनौना, निकम्मा आदमी। –का टोकरा–बदनामीका बोझ; भारी कलंक या बदनामी (उठाना)। –खाना–अत्यंत अनुचित, बहुत बुरा काम करना। –मूत करना–बच्चेका पालन-पोषण करना। –में घसीटना,–में नहलाना–बहुत जलील करना, दुर्दशा करना। –में ढेला फेँकना–कमीनेको छेड़ना, नीचके मुँह लगना।

गुगल, गूगुल–पु० दे० 'गुग्गुल'।

गूजर–पु० अहीरोंका एक भेद; क्षत्रियोंका एक भेद।

गूजरी–स्त्री० गूजर स्त्री; एक रागिनी; पैरका एक गहना।

गूझा–पुं० बड़ी गुझिया; † फलोंके भीतरका रेशा। * वि० गुप्त।

गूढ–वि० (सं०) छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त; समझनेमें कठिन; गहन; जिसमें कोई छिपा अर्थ या व्यंग्य हो (गूढ़ गिरा)। पु० एकांत स्थान; गुप्तांग; रहस्य; एक अलंकार (दे० 'सूक्ष्म' अलंकार)। –चारी(रिन्)–वि० छिपकर घूमने, टोह लेनेवाला। पु० भेदिया, जासूस। (स्त्री० 'गूढचारिणी')। –ज,–जात–पु० विवाहिता स्त्रीका जारज पुत्र। –जीवी(विन्)–वि० जिसकी आजीविकाका पता न हो। –नीड–पु० खँडरिच, खंजन। –पत्र–पु० करील; अंकोट वृक्ष। –पत्र–पु० (बैलट) दे० 'शलाका', 'मतदान-पत्र'। –पथ–पु० छिपा हुआ रास्ता; अंतःकरण; बुद्धि। –पांद,–पाद्–पु० साँप। –पुरुष–पु० जासूस, गुप्तचर। –पुष्पक–पु० बकुल, मौलसिरी। –फल–पु० बेर। –भाषित–पु० गुप्त वार्ता, सूचना। –मार्ग–पु० सुरंग; छिपा रस्ता। –मैथुन–पु० कौवा। –लेख–पु० (साइफर) लिखने या संवाद भेजनेकी गुप्त लिपि-प्रणाली। –व्यंग्य–पु० लक्षणाका एक भेद जिसमें व्यंग्यका अर्थ कठिनाईसे खुलता है। –संहिता–स्त्री० (साइफरकोड) गूढ़लेख-संबंधी नियमों, संकेतों आदिका संग्रह। –साक्षी(क्षिन्)–पु० वह गवाह जिसे अर्थी(वादी)ने स्वार्थसिद्धिके लिए प्रत्यर्थी (प्रतिवादी) का वचन सुना दिया हो।

गूढता–स्त्री०, गूढत्व–पु० (सं०) गूढ़ होना, गुप्त, गहन, गंभीर होना।

गूढ़ताकी शपथ–स्त्री० (ओथ ऑफ सीक्रेसी) दे० 'गोपनीयता-शपथ'।

गूढांग–पु० (सं०) गुप्तांग, उपस्थ; कछुआ।

गूढांघ्रि–पु० (सं०) साँप।

गूढ़ा–पु० नावकी लंबाईके हिसाबसे डेढ़-दो हाथकी दूरीपर लगायी जानेवाली लकड़ी।

गूढोक्ति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ कोई गुप्त वात जिससे उसका संवंध हो उसको छोड़कर किसी अन्यके प्रति लक्ष्यकर कही जाय, जिससे समीपवाले अन्य लोग उसे समझ न सकें।

गूढोत्तर–पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रश्नका उत्तर काई गूढ़ अर्थ लिये हुए दिया जाता है।

गूढोत्पन्न–पु० (सं०) गूढज पुत्र।

गूथ–पु० (सं०) मल, विष्ठा।

गूथना–स० क्रि० (मनका, फूल आदि) धागेमें पिरोना, लड़ी वनाना, गुंफन; टाँकना; मोटी सिलाई करना। † पु० गोफन, ढेलवाँस-'गूथने घुमा-घुमाकर चिड़ियोंको भगाना'–मृग०।

गूद†–पु० गूदा। स्त्री० गढ़ा; चिह्न।

गूदड़–पु० चोथड़ा। **–शाह,–साईं**–पु० गुदड़ीपोश साधु, फकीर।

गूदर*–पु० दे० 'गूदड़'।

गूदा–पु० फलका छिलकेके नीचेका खाद्य भाग; मगज, मींगी; मोटी रोटीका छिलकेके नीचेका नरम भाग; सारभाग। (स्त्री० 'गूदी'।)–**(दे)दार**–वि० जिसमें गूदा हो।

गून–स्त्री० वह रस्सी जिससे नाव खींची जाती है, गुण; एक घास।

गूना–पु० एक तरहका सुनहला रंग।

गूनी*–स्त्री० दे० 'गोनी'।

गूमड़ा–पु० सिरपर चोट लगनेसे होनेवाली गोल सूजन।

गूमा–पु० एक छोटा पौधा, द्रोणपुष्पी।

गूरण–पु० (सं०) प्रयत्न; अध्यवसाय।

गूर्द–पु० (सं०) कूदनेकी क्रिया, कुदान।

गूलर–पु० वरगद-पीपलकी जातिका एक पेड़, उदुंवर; उसका फल जो अंजीरसे मिलता-जुलता है। **–कवाव**–पु० एक तरहका कवाव। मु०**—का कीड़ा**–कूप-मंडूक। **–का फूल**–ऐसी चीज जो कभी देखनेमें न आये, अलभ्य वस्तु।

गूवाक–पु० (सं०) दे० 'गुवाक'।

गूषणा–स्त्री० (सं०) मोरकी पूँछपरके अर्द्धचंद्र जैसे चिह्न।

गूह–पु० दे० 'गू'।

गूहन–पु० (सं०) छिपाना।

गूहाँजनी–स्त्री० दे० 'गुहाँजनी'।

गूहाछीछी–स्त्री० गंदी कहा-सुनी; कलंक।

गृंजन–पु० (सं०) गाजर; शलजम; लाल लहसुन; गाँजा; विषाक्त वाणसे मारे हुए पशुका मांस।

गृंडिव, गृंडीव–पु० (सं०) एक तरहका शृगाल।

गृत्स–वि० (सं०) मेधावी; चतुर। पु० कामदेव।

गृधु–पु० (सं०) कामदेव। वि० कामी।

गृधू–वि० (सं०) दुष्ट, खल। स्त्री० अपान वायु; समझ, बुद्धि।

गृध्नु–वि० (सं०) लोभी, लोलुप।

गृध्य–पु०, **गृध्या**–स्त्री० (सं०) इच्छा; लोभ।

गृध्र–पु० (सं०) गिद्ध। वि० लोभी। **–कूट**–पु० राजगृहके पासका एक पर्वत। **–राज**–पु० जटायु। **–व्यूह**–पु० वह व्यूह जिसमें सेना गिद्धकी शकलमें खड़ी की जाय।

गृध्रसी–स्त्री० (सं०) एक वातरोग जिसमें कमरसे आरंभ होकर सारे पैरमें दर्द होता और गाँठें जकड़-सी जाती हैं।

गृध्रिका–स्त्री० (सं०) गिद्धोंकी आदिमाता जो ताम्रासे उत्पन्न कश्यपकी पुत्री थी।

गृध्री–स्त्री० (सं०) मादा गिद्ध।

गृष्टि–स्त्री० (सं०) एक बार व्यायी हुई गाय; वह स्त्री जिसे एक ही वच्चा हुआ हो, सकृत् प्रसूता।

गृह–पु० (सं०) घर, वासस्थान; पत्नी, गृहिणी; गृहस्थाश्रम; मेषादि राशि। **–उद्योग**–पु० घरमें किया जानेवाला धंधा। **–कन्या,–कुमारी**–स्त्री० घीकुवार।। **–कपोत,–कपोतक**–पु० पालतू कवूतर। **–कर्म(न्)**–पु० गृहकार्य; गृहस्थके लिए विहित कर्म। **–कलह**–पु० घरेलू झगड़ा, भाई-भाईकी लड़ाई। **–कारक**–पु० घर वनानेवाला, राज। **–कारी(रिन्)**–पु० घर वनानेवाला; एक तरहकी भिड़। **–कार्य**–पु० घरका काम-काज। **–खंड**–पु० मकानका हिस्सा जिसमें निवासके कमरोंके सिवा पृथक् रसोईघर आदि हो (फ्लैट)। **–गोधा,–गोधिका**–स्त्री० छिपकली। **–छिद्र**–पु० घरका छिपा दूषण, कलंक, अपवाद। **–ज,–जात**–वि० घरमें पैदा हुआ। पु० सात प्रकारके दासोंमेंसे एक, अपने घरमें पैदा दास (दे० 'दास')। **–जन**–पु० कुटुंवी; कुटुंव। **–जालिका** स्त्री० छल-छद्म। **–ज्ञानी(निन्)**–वि० जिसका ज्ञान, पांडित्य घरमें ही प्रकट हो सके, मूर्ख। **–तटी**–स्त्री० प्रवेश-पथ। **–त्याग**–पु० घर छोड़ना; गृहस्थाश्रमका त्याग। **–त्यागी(गिन्)**–वि० घर छोड़कर चला जानेवाला। पु० सन्यासी। **–दाह**–पु० घरमें आग लगना या लगाना। **–दीप्ति**–स्त्री० घरकी शोभा, सतीसाध्वी स्त्री। **–देवता**–पु० अग्निसे ब्रह्मातक ४५ देवता जिनकी गृहके विविध अंगोंमें स्थिति मानी जाती है। **–देवी**–स्त्री० जरा नामकी राक्षसी; गृहिणी। **–द्रुम**–पु० मेढ़शृंगी। **–नाशन**–पु० जंगली कवूतर। **–नीड**–पु० गौरैया। **–प**–पु० गृहपति; गृह-पाल; कुत्ता। **–पति**–पु० घरका मालिक; गृहस्थ; यजमान; अग्नि; (वार्डन) दे० 'छात्राभिरक्षक'। **–पत्नी**–स्त्री० गृहस्वामिनी। **–परिभाग**–पु० (प्रेमिसेज) मकान और उसके चारों ओरकी सीमाके भीतरका क्षेत्र, गृहोपांत, परिसर। **–पशु**–पु० कुत्ता। **–पाल**–पु० घरकी रखवाली करनेवाला; कुत्ता। **–पालित**–वि० घरमें पाला-पोसा हुआ। **–पोतक**–पु० गृहभूमि। **–प्रबंध**–पु० घर, गृहस्थीका प्रवंध, इंतजाम। **–प्रवेश**–पु० नये घरमें विधिपूर्वक प्रवेश करना। **–बलि**–स्त्री० घरमें दी जानेवाली वलि, वैश्वदेव। **–०प्रिय**–पु० वक पक्षी। **–०भुक्(ज)**–पु० काक; गौरैया। **–भद्रक**–पु० वैठक। **–भूमि**–स्त्री० वह जमीन जिसपर कोई मकान वना हो, वास्तु-स्थान। **–भेद**–पु० घरमें झगड़ा लगना; सेंध लगना। **–भेदी(दिन)**–वि० घरमें झगड़ा लगानेवाला; सेंध मारनेवाला। **मंत्रालय**–पु० (होम मिनिस्ट्री) गृहमंत्रीका कार्यालय। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० (होम मिनिस्टर) राज्यके भीतरी मामलों (शांतिरक्षा आदि) की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। **–मणि**–पु० दीपक। **–माचिका,–मोचिका**–स्त्री० चमगादड़। **–मृग**–पु० कुत्ता। **–मेघ**–पु० मकानोंका समूह। **–मेध**–पु० पंचयज्ञ; पंचयज्ञ करनेवाला, गृहस्थ। **–मेधी(धिन्)**–पु० गृहस्थ; गृहस्थ ब्राह्मण। **–यंत्र**–पु० उत्सव आदिके अवसरपर झंडा फहरानेका डंडा। **–युद्ध**–पु० घरका, भाई-भाईका झगड़ा; किसी देशके निवासियों या विभिन्न वर्गोंकी आपसकी लड़ाई, खानाजंगी। **–रंध्र**–पु० पारिवारिक कलह या फूट। **–रक्षक**–पु० (होमगार्ड) युद्ध या व्यापक अशांतिके समय नगर, मुहल्ले आदिकी रक्षा करनेवाली नागरिक सेनाका सदस्य। **–लक्ष्मी**–स्त्री० घरकी लक्ष्मी, सुशीला गृहिणी। **–वाटिका**–स्त्री० घरसे सटा हुआ वाग, पाईं वाग। **–वासी(सिन्)**–वि०, पु० घरमें रहनेवाला, गृही; घरमें घुसा रहनेवाला। **–विच्छेद**–पु० परिवारकी वरवादी। **–वित्त**–पु० घरका स्वामी। **–शायी(यिन्)**–पु० कपोत। **–शास्त्र**–पु० (डोमेस्टिक साइंस) दे० 'गार्हस्थ्य-विज्ञान'। **–सचिव**–पु०– दे० 'स्वराष्ट्रसचिव,' दे० 'शासनमंत्री'। **सज्जा**–स्त्री० घरका साज-सामान, असवाव। **–स्थ**–पु० ब्रह्मचर्य पालनेके वाद विवाह करके दूसरे आश्रममें प्रवेश करने या रहनेवाला, गृही; घर-वारवाला; खेती-वारी करनेवाला, किसान। वि० गृहवासी। **–स्वामिनी**–स्त्री० घरकी मालकिन, पत्नी।

गृहणी–स्त्री० (सं०) काँजी।

गृहस्थाश्रम–पु० (सं०) ब्रह्मचर्यके वादका आश्रम, गृहस्थ का जीवन; विवाहित जीवन।

गृहस्थी–स्त्री० गृहस्थका जीवन; गार्हस्थ्य, घर-वार; घरका काम-काज; घरका माल-असवाव; वाल-वच्चे, कुटुंव; खेती।

गृहाक्ष–पु० (सं०) गवाक्ष, खिड़की।

गृहागत–वि० (सं०) घर आया हुआ (अतिथि)।

गृहापण–पु० (सं०) वाजार।

गृहाम्ल–पु० (सं०) काँजी।

गृहाराम–पु० (सं०) गृहवाटिका।

गृहाश्रम–पु० (सं०) गृहस्थाश्रम ।

गृहासक्त–वि० (सं०) घर-गृहस्थी, वाल-बच्चोंसे वहुत अनुराग रखनेवाला ।

गृहिणी–स्त्री० (सं०) गृहस्वामिनी, पत्नी ।

गृही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) गृहस्थ, घर-वारवाला ।

गृहीत–वि० (सं०) ग्रहण किया हुआ; पकड़ा हुआ; स्वीकृत, प्राप्त; ज्ञात; संगृहीत; वादा किया हुआ । (स्त्री० 'गृहीता' ।) **–गर्भा**–वि०, स्त्री० गर्भवती ।

गृहीतार्थ–वि० (सं०) जिसने अर्थ समझ लिया है, अर्थज्ञाता ।

गृहोद्यान–पु० (सं०) गृहवाटिका ।

गृहोद्योग–पु० (सं०) दे० 'गृह-उद्योग' ।

गृहोपकरण–पु० (सं०) वरतन आदि घरका सामान ।

गृह्य–वि० (सं०) गृह-संवंधी; घरमें किया जानेवाला (कर्म); पालतू; आश्रित; ग्रहण करने योग्य । पु० पालतू पशु-पक्षी; गृहजन; गुदा; गृहाग्नि । **–कर्म(न्)**–पु० गृहस्थके लिए विहित कर्म, संस्कारादि । **–सूत्र**–पु० गृह्यकर्मों, संस्कारोंकी विधियाँ वतानेवाला वैदिक ग्रंथ ।

गृह्यक–वि० (सं०) पालतू; आश्रित । पु० पालतू जानवर ।

गृह्या–स्त्री० (सं०) नगरके पासका गाँव ।

गेँउड़ा†–पु० दे० 'गोँइड़ा' ।

गेँगटा†–पु० केकड़ा ।

गेँठी–स्त्री० वाराही कंद ।

गेँड़ना†–स० क्रि० दे० 'गेड़ना', मेंड वनाना; घेर देना ।

गेँड़ली–स्त्री० घेरा, फेंटा, चक्कर ।

गेँड़ा–पु० ईखके ऊपरके हरे पत्ते; गैंडा ।

गेँड़ी–स्त्री० वाँसके दो डंडे जिनमेंसे प्रत्येकपर खड़ाऊँ जैसा एक-एक पावदान लगा रहता है–इनपर चढ़कर लोग चलते-फिरते, कूदते-फाँदते हैं (अँग्रेजी 'स्टिल्ट') ।

गेंडु, गेंडूक–पु० (सं०) खेलनेका गेंद ।

गेँडुआ, गेंडुवा*–पु० तकिया; वड़ा गेंद ।

गेँडुरी, गेँडुली–स्त्री० इँडुरी; कुंडली ।

गेंती–स्त्री० दे० 'गैंती', कुदाली ।

गेँद–पु० कपड़े, रवर, काठ, कार्क आदिका बना गोला जिससे लड़के खेलते हैं, कंदुक; टोपी वनाने या पगड़ी वाँधनेका कालिव; तारकी जालियोंका वना गोला जिसमें दिया रखकर जलाते हैं । **–घर**–पु० क्रिकेट या टेनिस आदि खेलनेका स्थान; विलियर्ड-रूम । **–तड़ी**–स्त्री० लड़कोंका एक खेल । **–वल्ला**–पु० गेंद और वल्ला, क्रिकेट खेलनेकी सामग्री; क्रिकेटका खेल । **–बाज**–पु० (वोलर) गेंदवल्ले (क्रिकेट)के खेलमें वह व्यक्ति जो वल्लेवाजके सामने गेंद फेंकनेका काम करे । **–बाजी**–स्त्री० (वोलिंग) क्रिकेटके खेलमें (वल्लेवाजकी तरफ) गेंद फेंकनेकी क्रिया ।

गेँदई–वि० गेंदेके फूल जैसे रंगका, जर्द । पु० गेंदेके फूलसे मिलता रंग ।

गेँदवा*–पु० दे० 'गेँदुआ' ।

गेँदा–पु० एक पौधा; उसका फूल जो पीले रंगका होता है; एक आतिशवाजी; एक गहना; † गेंद, कंदुक ।

गेँदुआ, गेँदुवा–पु० गोल तकिया ।

गेंदुक–पु० (सं०) खेलनेका गेंद; गद्दा ।

गेँदौरा–पु० दे० 'गिँदौड़ा' ।

गेगला–पु० मसूरकी जातिका एक पौधा जो प्रायः गेहूँ आदिके साथ पैदा होता है । वि० मूर्ख ।

गेटिस–पु० मोजा वाँधनेका फीता ।

गेड़ना–स० क्रि० लकीर आदिसे घेरना । * अ० क्रि० चारों ओर फिरना ।

गेदा–पु० वेपरका चिड़ियाका वच्चा ।

गेदुर†–पु० चमगादड़से मिलता-जुलता एक पक्षी ।

गेय–वि० (सं०) गाने लायक, जो गाया जा सके ।

गेरना*–स० क्रि० गिराना; उँडेलना; डालना; आरोप करना । अ० क्रि० चारों ओर फिरना ।

गेराँव†–पु० चौपायोंके वंधनका वह भाग जो गलेमें रहता है ।

गेरुआ–वि० गेरूके रंगका; गेरूमें रँगा हुआ; जोगिया । पु० गेरूके रंगका एक कीड़ा; गेहूँके पौधोंका एक रोग । **–वाना**–पु० गेरुआ वस्त्र, सन्न्यासियोंका जोगिया पहनावा ।

गेरुई†–स्त्री० गेहूँ, जौ आदिकी फसलका एक रोग जिसमें उनके पत्ते लाल-से हो जाते हैं ।

गेरू–पु०, स्त्री० खानोंसे निकलनेवाली एक तरहकी लाल मिट्टी जो रँगने और दवाके भी काम आती है ।

गेला–पु० वड़ी गेली ।

गेली–स्त्री० (अं०) कालमकी नापकी लोहे या लकड़ीकी वनी छिछली किश्ती जिसपर कंपोज किया हुआ मैटर कालम-पेज आदि वनानेके लिए रखते हैं । **–प्रूफ**–पु० कंपोज किये हुए मैटरका पहला या पेजके रूपमें कसे जानेके पहलेका उठाया गया प्रूफ ।

गेल्हा–पु० तेल रखनेका चमड़ेका कुप्पा ।

गेष्ण, गेष्णु–पु० (सं०) गवैया, गायक; अभिनेता ।

गेसू–पु० (फा०) स्त्रियोंका लट; काकुल, पट्टा । **–दराज़**–वि० जिसके गेसू लंबे हों ।

गेह–पु० (सं०) घर, मकान । **–पति**–पु० गृहपति ।

गेहनी*–स्त्री० दे० 'गेहिनी' ।

गेहिनी–स्त्री० (सं०) गृहिणी, गृहस्वामिनी ।

गेही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) घरवाला; घर-वारवाला ।

गेहुँअन–पु० एक वहुत जहरीला साँप जिसका रंग गेहूँके रंगसे मिलता है ।

गेहुआँ–वि० गेहूँके रंगका, गंदुमी ।

गेहूँ–पु० एक अन्न जिसकी फसल चैतमें कटती है ।

गेहेनर्दी(र्दिन्)–वि० (सं०) दे० 'गेहेशूर' ।

गेहेमेही(हिन्)–वि० (सं०) आलसी, काहिल ।

गेहेशूर–वि० (सं०) जो घरमें ही वहादुरी दिखानेवाला हो, कायर ।

गैँड़ा–पु० भैंसेकी शकलका विशालकाय जंतु जिसकी नाकपर एक या दो सींग होते हैं और जिसके चमड़ेकी ढाल वनायी जाती है ।

गैँती–स्त्री० मिट्टी खोदनेका एक औजार; कुदाली ।

ग़ैज़–पु० (अ०) अति क्रोध, कोप । **–व(ज़ो)ग़ज़ब**–पु० अति क्रोध ।

गैताल–पु० निम्न कोटिका वैल; निकृष्ट पशु; वेकार, रद्दी चीज ।

गैन*–पु० रास्ता, गैल; गमन–'सुख पायो तो विरमियो नहि करि जैयो गैन'–चाचाहित वृंदावन; गगन; डग, पग; गयंद ।

गैना–पु० नाटा वैल ।

गैनी*–वि०, स्त्री० गामिनी ।

ग़ैब–पु० (अ०) छिपा होना, दृष्टिगोचर न होना; परोक्ष; परोक्ष विषय । **–दाँ**–वि० परोक्षदर्शी, भूत-भविष्य जाननेवाला ।

गैवर–† पु० एक पक्षी; * श्रेष्ठ हाथी ।

ग़ैबी–वि० (अ०) ईश्वरीय; गुप्त; अज्ञात; अज्ञेय ।

गैमीट–पु० (अं० गैमीट) लिंगी कोशिका जो अन्य लिंगी कोशिकाके संग संयोग करके निषेचित अण्ड कोशिका (ज़ाइगोट) वनाती है ।

गैयर*–पु० वड़ा हाथी, गजवर ।

गैया*–स्त्री० गाय ।

गैर–स्त्री० अंधेर; अन्यायपूर्ण वर्ताव; * गैल; निंदा । पु० वड़ा हाथी । वि० (सं०) पहाड़-संवंधी ।

ग़ैर–वि० (अ०) दूसरा, अन्य; भिन्न, वदला हुआ (हालत ग़ैर होना); वेगाना, पराया । **–आवाद**–वि० जो आवाद न हो, उजाड़; परती (जमीन) । **–इनसाफ़ी**–स्त्री० नाइंसाफी, अन्याय । **–इलाक़ा**–पु० दूसरा गाँव; दूसरेकी जमींदारी । – **–ज़रूरी**–वि० अनावश्यक । **–ज़िम्मेदार**–वि० (अपनी) जिम्मेदारी न समझनेवाला दायित्वहीन; जिसका भरोसा न किया जा सके । **–मज़रूआ**–वि० जो जोती-वोयी न गयी हो, परती (जमीन) । **–मनकूला**–वि० अचल, स्थावर (संपत्ति) । **–मर्द**–पु० पतिसे भिन्न पुरुष; वेगाना आदमी । **–मामूली**–वि० असाधारण । **–मिसिल***–वि० अनुचित, अयोग्य (स्थानमें) । **–मुकम्मल**–वि० अधूरा, अपूर्ण । **–मुनासिब**–वि० अनुचित, जो मुनासिब न हो । **–मुमकिन**–वि० असंभव, अशक्य, न हो सकनेवाला । **–मुल्की**–वि० विदेशी । **–मुस्तक़िल**–वि० अस्थिर; अस्थायी । **–मुस्तरका**–वि० बिना साझेका, एकजाई; जो एककी

ही संपत्ति हो। **–मौरूसी**–वि० जो बपौती न हो, जिसपर या जिसे मौरूसी हक हासिल न हो। **–वसूल**–वि० बिना वसूला हुआ, जो वसूला न गया हो, बाकी। **–वाजिब**–वि० जो वाजिब, मुनासिब न हो, अनुचित। **–सरकारी**–वि० जो सरकारी न हो। **–हाज़िर**–वि० अनुपस्थित, जो हाजिर, मौजूद न हो। **–हाज़िरी**–स्त्री० अनुपस्थिति, नागा।

ग़ैरत–स्त्री० (अ०) लज्जा, हया; आन। **–दार,–मंद**–वि० जिसे ग़ैरत हो, लज्जाशील।

गेरिक–पु० (सं०) गेरू; सोना। वि० पहाड़से उत्पन्न; गेरुए रंगका।

गैरिकाक्ष–पु० (सं०) जलमधूक।

ग़ैरियत–स्त्री० दे० 'ग़ैरीयत'।

गैरी–स्त्री० (सं०) लांगलिकी, विषलांगला; † खाद जमा करनेका गड्ढा।

ग़ैरीयत–स्त्री० (अ०) ग़ैर होना, बेगानगी, परायापन; आत्मीयताका अभाव।

गैरेय–वि० (सं०) गिरिसे या गिरिपर उत्पन्न; पहाड़ी। पु० गेरू; शिलाजतु।

गैल–स्त्री० रास्ता; गली। **मु० (किसीकी)–जाना**–किसीका अनुसरण करना। **–बताना**–दगाबाजी करना।

गैलन–पु० (अं०) तरल पदार्थका एक मान जो लगभग साढ़े तीन सेरका होता है।

गैलरी–स्त्री० (अं०) नाट्यशाला, व्याख्यानभवन आदिमें बैठनेके लिए बना हुआ सीढ़ीनुमा स्थान; असेंबली आदिमें दर्शकोंके बैठनेके लिए बना हुआ बारजा; वह मकान या कमरा जिसमें कलाकी वस्तुओंका प्रदर्शन किया जाय।

गैला, †गैलारा–पु० गाड़ीके लीक या गाड़ी जाने लायक रास्ता।

गैल्वानोदर्शी–पु० (गैल्वानोस्कोप) विद्युतधाराकी उपस्थिति ज्ञात करनेके लिए या उनकी तुलना करनेके लिए प्रयुक्त होनेवाला उपकरण।

गैस–स्त्री० (अं०) वायुरूप सूक्ष्म और चाहे जितना फैल सकनेवाला द्रव्य (ऐसे ही द्रव्योंके संयोगसे जल, वायु आदिकी उत्पत्ति होती है, आक्सिजन, हाइड्रोजन आदि)।

गोँइठा–पु० उपला।

गोँइड़†–पु० दे० 'गोँइड़ा'।

गोँइड़ा–पु० गाँवके पासका स्थान।

गोँच†–स्त्री० जोंक।

गोँछ–स्त्री० गलमुच्छा।

गोँठ–स्त्री० धोतीकी लपेट, मुर्री।

गोँठना–स० क्रि० रेखासे घेरना, (किसी चीजके) सब ओर रेखा खींचना; गुझिया, मीठी पूरी आदिकी नोक या कोर मोड़ना; नोक या कोर भोथरा कर देना।

गोँठनी–स्त्री० गुझियाकी कोर बनानेका औजार।

गोँठिया†–पु० जमींदार (छत्तीस०)।

गोंड–पु० (सं०) उभरी हुई नाभि; ऐसी नाभिवाला आदमी; एक जंगली जाति, गोंड़। **–किरी**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी। **–वाना**–पु० (हिं०) मध्यभारतका एक प्रदेश जो गोंड़ जातिका आदि वासस्थान है।

गोँड़–पु० भारतकी एक जंगली या आदि हिंदू जाति (उत्तरप्रदेश, बिहारमें इस जातिके लोग खासकर पत्थर गढ़ने और दाना भूननेका पेशा करते हैं); गौड़ देश; एक राग; गोठ।

गोँडरी–स्त्री० इँडुरी, मँडरा।

गोँड़ला–पु० लकीरका घेरा।

गोँडा†–पु० चहारदीवारीसे घिरा हुआ स्थान, बाड़ा; चहारदीवारीसे घिरा हुआ पाला; मोहल्ला; गोईंड़ा; चौड़ी सड़क; सहन; परछन।

गोँड़ी–स्त्री० मध्यभारतकी एक बोली, गोंडवानी।

गोँद–पु० पेड़का लसदार पसेव जो सूख गया हो, निर्यास। *स्त्री० एक वृक्ष, गोंदी। **–कश**–पु० कागजपर गोंद फैलानेका आला। **–दानी**–स्त्री० भिगोया हुआ गोंद रखनेका बरतन। **–पंजीरी**–स्त्री० प्रसूताको खिलायी जानेवाली वह पंजीरी जिसमें गोंद मिला रहता है। **–पाग**–पु० गोंद और चीनीके मेलसे बनी हुई एक मिठाई। **–मखाना**–पु० गोंद, मखाने आदिका पाक जो प्रसूताको पुष्टिके लिए खिलाया जाता है।

गोँदरी–स्त्री० एक जलीय पौधा जिसकी चटाई बनती है; पयालकी चटाई।

गोँदला–पु० बड़ा नागरमोथा; एक तृण जिससे चटाई बनती है।

गोँदा–पु० पानीमें गूँधा हुआ चनेका सत्तू जो बुलबुलोंको खिलाया जाता है; † मिट्टीका साना हुआ ढेर या पिंड, लोंदा।

गोँदी–स्त्री० इंगुदी; मौलसिरीसे मिलता हुआ एक पेड़।

गोँदीला–वि० (पेड़) जिससे गोंद निकले।

गो–स्त्री० (सं०) गाय; रश्मि, किरण; इंद्रिय; वाणी, सरस्वती; आँख; वृष राशि; धरती; माता; दिशा; जीभ। पु० बैल; पशु; आकाश; सूर्य; चंद्रमा; बाण; जल; स्वर्ग; वज्र; हीरा; शब्द; ९का अंक; रोम; गायक; गोमेध यज्ञ। **–कंटक**–पु० गायका खुर; गायके खुरका निशान; गोखरू। **–कन्या***–स्त्री० कामधेनु। **–कर्ण**–वि० गायके-से कानोंवाला। पु० खच्चर; साँप; बालिश्त, बित्ता; मलाबारमें स्थित शैवोंका एक तीर्थ; वहाँ स्थापित शिवकी मूर्त्ति; एक तरहका हिरन; एक तरहका बाण। **–कर्णी**–स्त्री० मूर्वा लता। **–किराटा,–किराटिका**–स्त्री० सारिका पक्षी। **–किल,–कील**–पु० हल, मूसल। **–कुंजर**–पु० मोटा-ताजा बैल; शिवका नंदी। **–कुल**–पु० गायोंका झुंड; गोशाला, गोठ; वृंदावनके पासका एक गाँव जो नंदका वासस्थान था और जहाँ कृष्ण तथा बलरामका पालन-पोषण हुआ। **–०नाथ,–०पति**–पु० कृष्ण। **–०स्थ**–वि० गोकुलवासी। पु० वल्लभ-कुलवाले गोस्वामियोंका एक भेद; तैलंग ब्राह्मणोंका एक भेद। **–कुलिक**–वि० पंकमें फँसी गायको सहायता न देनेवाला; ऐंचाताना। **–कुथी**–स्त्री० गोवध, गोहत्या। **–कृत**–पु० गोबर। **–कोस**–पु० (हिं०) उतनी दूरी जहाँतक गायकी आवाज सुनाई दे। **–क्षीर**–पु० गायका दूध। **–क्षुर,–क्षुरक**–पु० गायका खुर; गोखरू। **–खग***–पु० स्थल-चर प्राणी, पशु। **–खुर**–पु० गायका खुर; गायके खुरका निशान। **–खुरा**–पु० (हिं०) करैत साँप। **–गृष्टि**–स्त्री० सकृत् प्रसूता गौ। **–गृह**–पु० गोठ, गोशाला। **–ग्रंथि**–स्त्री० सूखा हुआ गोबर, करसी; गोठ; गोजिह्विका। **–ग्रास**–पु० भोजनका वह भाग जो गायके लिए अलग कर दिया जाता है; गायकी तरह मुँहसे उठाकर बिना चबाये भोजन करना। **–घात**–पु० गोहत्या। **–घातक,–घाती(तिन्)**–वि० गोवध करनेवाला। पु० कसाई। **–घृत**–पु० गायका घी; वर्षा। **–घ्न**–वि० गोवध करनेवाला; जिसके लिए गोवध किया जाय (अतिथि)। **–चंदन**–पु० एक तरहका चंदन। **–चंदना**–स्त्री० एक तरहकी जहरीली जोंक। **–चर**–वि० इंद्रिय द्वारा जानने योग्य, इंद्रियग्राह्य। पु० इंद्रियका विषय (रूप, रसादि); इंद्रियग्राह्य वस्तु; साक्षात्कार; चरागाह; व्यक्तिके नामके अनुसार निकाला हुआ ग्रह (फ० ज्यो०)। **–चरी**–स्त्री० भिक्षावृत्ति। **–चर्म(न्)**–पु० गायका चमड़ा; भूमिकी एक नाप, चरसा। **–चारक,–चारी(रिन्)**–पु० गाय चरानेवाला, ग्वाला। **–चारण**–पु० गाय चराना। **–ज**–वि० गौसे उत्पन्न। पु० दूधसे बना एक पदार्थ; अभिषेकके अनधिकारी एक प्रकारके क्षत्रिय। **–जल**–पु० गोमूत्र। **–जागरिक***–पु० मंगल, कल्याण; कंटकारिका; पाचक। **–जाति**–स्त्री० गो-वंश, सारी दुनियाके सारे गाय-बैल, गोसमष्टि। **–जिह्वा–जिह्विका**–स्त्री० बनगोभी। **–डुंबा**–स्त्री० तरबूज। **–तीर्थ**–पु० गोशाला, गोठ। **–त्र**–पु० दे० क्रममें। **–दंत**–पु० गोदंती हरताल। वि० कवचयुक्त। **–दान**–पु० गायका दान; विवाहके पहलेका एक संस्कार, केशांत। **–दारण**–पु० हल; कुदाल। **–दुद्(ह्),–दुह**–पु० गाय दुहनेवाला, ग्वाला। **–दोहन**–पु० गाय दुहना; गाय दुहनेका समय। **–दोहनी**–स्त्री० दूध दुहनेका बरतन। **–द्रव**–पु० गाय या बैलका मूत्र। **–धन**–पु० गायों, गाय-बैलोंका समूह; गाय-बैल रूप धन; चौड़े फलका बाण; * गोवर्द्धन पर्वत। **–धर,–ध्र**–पु० पर्वत। **–धर्म**–पु० पशुधर्म; पशुवत् विचारहीन संभोग। **–धूलि,–धूली**

–स्त्री० गायोंके चरकर लौटनेका समय; संध्या वेला। **-धेनु** –स्त्री० दूध देनेवाली सवत्सा गाय। **–नर्द,-नर्द्द**–पु० एक प्राचीन जनपद जो पतंजलिका जन्मस्थान था; शिव; नागरमोथा; सारस। **–नर्दीय**–पु० महाभाष्यकार पतंजलि मुनि। **–नस,-नास**–पु० एक तरहका साँप; वैक्रांतमणि। **–नाथ**–पु० बैल; गोस्वामी; भूस्वामी। **–नाय**–पु० ग्वाला। **–निष्यंद**–पु० गोमूत्र। **–प**–पु० गोपालक; ग्वाला, अहीर; गोष्ठका अध्यक्ष; रक्षक; एक पौधा; भूमिपति, राजा; प्राचीन हिंदू राज्यव्यवस्थामें गाँवकी सीमा, आबादी, खेती-बारी, क्रय-विक्रय आदिका लेखा रखनेवाला कर्मचारी; * गोपन, छिपाना; दे० क्रममें। **–०कन्या** –स्त्री० गोपकुमारी; ग्वालिन, गोपी। **–०कर्कटिका**–स्त्री० एक पौधा। **–०जा**–स्त्री० गोपकन्या; राधा। **–०दल**-पु० सुपारीका पेड़। **–०राष्ट्र**–पु० प्राचीन भारतका एक गोपप्रधान जनपद। **–०वधू,–०वधूटी**–स्त्री० गोप-पत्नी; गोप-युवती, ग्वालिन, गोपी। **–०वल्ली**–स्त्री० भद्रवल्लिका, अनंतमूल। **–पति**–पु० गायोंका मालिक, गोस्वामी; साँड़; ग्वाला; राजा; कृष्ण; शिव; विष्णु; सूर्य। **–पद**–पु० गायके खुरका निशान या उससे बना गढ़ा; चरागाह। **–पदी***–वि० गोपदके जितना छोटा। **–पा**–स्त्री० गोप स्त्री, ग्वालिन; श्यामा लता; बुद्धकी पत्नी, यशोधरा। **–पाल**–पु० गोपालक; ग्वाला, अहीर; राजा; कृष्ण; शिव। **–०कर्कटी**–स्त्री० एक पौधा, क्षुद्रफला। **–०तापन,–०तापनीय**–पु० एक उपनिषद्। **–०मंदिर**–पु० वल्लभ-संप्रदायवालोंका मंदिर। **–पालक**–पु० दे० 'गोपाल'। **–पालि** –पु० शिव। **-पालिका**–स्त्री० ग्वालिन; गोपवधू; ग्वालिन नामका कीड़ा। **–पाली**–स्त्री० ग्वालिन। **–पी**–स्त्री० गोपवधू, ग्वालिन; कृष्णकी बाललीलामें सम्मिलित वृंदावनकी गोपकन्याएँ या गोपवधुएँ; गोपन करनेवाली। **–०गीता**–स्त्री० श्रीमद्भागवत दशम स्कंधमें गोपियों द्वारा की हुई कृष्णस्तुति। **–०चंद**–पु० दे० क्रममें। **–०चंदन**–पु० एक तरहकी पीली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं। **–०जन**–पु० गोपियोंका समूह। **–०जनवल्लभ**–पु० कृष्ण। **–०नाथ**–पु० कृष्ण। **–पीत**–पु० खंजन-का एक भेद। **–पीता***–स्त्री० गोपी। **–पीथ**–पु० रक्षा; तीर्थस्थान, वह सरोवर जहाँ गौएँ जल पीती हों। **–पुच्छ**–पु० गायकी पूँछ; एक तरहका बंदर; एक तरहका हार; एक प्राचीन बाजा। **–पुटा**–स्त्री० बड़ी इलायची। **–पुत्र**–पु० बछड़ा; कर्ण। **–पुर**–पु० नगरद्वार, शहरका फाटक; महल या मंदिरका मुख्य द्वार; तोरण। **–पुरीष**–पु० गोबर। **–प्रचार**–पु० चरागाह। **–प्रवेश**–पु० गायोंके चरकर लौटनेका समय, गोधूलि। **–फणा** –स्त्री० ठुड्ढी, नाक आदिपर बाँधनेके लिए विशेष प्रकारसे बनायी हुई पट्टी; गोफन, ढेलवाँस। **–फन**–पु० (हिं०) ढेलवाँस। **–बंधन**–पु० गाय बाँधनेकी रस्सी। **–बर**–पु० (हिं०) दे० क्रममें। **–भुक्(ज्)**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़। **–मंत**–पु० सह्याद्रि पर्वतमालाके अंतर्गत एक पहाड़ी। **–मक्षिका**–स्त्री० कुकुरौंछी, डाँस। **–मत्स्य**–पु० सुश्रुतमें वर्णित एक तरहकी मछली। **–मथ** –पु० ग्वाला। **–मय**–दे० क्रममें। **–मर***–पु० गोघातक, कसाई। **–मल**–पु० गोबर। **–मांस**–पु० गाय बैलका मांस। **–माता(तृ)**–स्त्री० मातृस्थानीय गोजाति, गायरूपी माता; गोवंशकी आदिमाता, कश्यपकी पत्नी सुरभि। **–मायु**–पु० शृगाल; एक तरहका मेढक। **–मुख**–वि० गायकेसे मुखवाला। पु० एक तरहका शंख; नरसिंहा; नाक या घड़ियाल; एक तरहकी सेंध; गोमुखी। **–०नाहर,–०व्याघ्र**–पु० देखनेमें सीधा पर असलमें बहुत कुटिल मनुष्य। **–मुखी**–स्त्री० जपमाला रखनेकी गोमुखके आकारकी थैली जिसमें हाथ डालकर जप करते हैं; गंगोत्तरीकी गोमुखाकृति गुहा जिससे गंगा निकलती है। **–मूत्र**–पु० गायका मूत्र। **–मूत्रिका**–स्त्री० चित्र-काव्यका एक भेद; इस आकृतिकी बेल; एक मणि जिसका रंग लाली लिये हुए पीला होता है, पीत मणि; शीतलचीनी। **–मृग**–पु० नीलगाय। **–मेद**–पु० एक रत्न। **–मेदक**–पु० गोमेद; एक विष, काकोल; अंगराग लगाना। **–मेध**–पु० कलियुगके लिए निषिद्ध एक वैदिक यज्ञ जिसमें गोबलिका विधान है। **–यान**–पु० बहली, बैलगाड़ी। **–रंकु**–पु० एक जलपक्षी; कैदी; दिगंबर साधु; मंत्रपाठक। **–रक्ष**–पु० गोरक्षण; नारंगी; ग्वाला। **–०कर्कटी**–स्त्री० चिर्भिटा। **–०जंबू**–स्त्री० गोधूम; गोरक्षतंडुला। **–०तंडुला**–स्त्री० क्षुद्र लताविशेष। **–०तुंबी**–स्त्री० कुंभतुंबी। **–०दुग्धा** –स्त्री० एक झाड़ी। **–रक्षक**–पु० गौवोंकी रक्षा करनेवाला, गोपालक; ग्वाला। **–रक्षिणी**–वि०, स्त्री० गोरक्षा करनेवाली, गोरक्षाके लिए स्थापित (सभा)। **–रख**–पु० (हिं०) दे० क्रम-में। **–रज(स्)**–स्त्री० गायके खुरोंसे उड़ी हुई धूलि। **–रव**–पु० जाफरान। **–रस**–पु० दूध; दही; मठा; इंद्रियसुख। **–रसा**–वि० (हिं०) गायके दूधसे पला हुआ (बच्चा)। **–राटिका,–राटी**–स्त्री० मैना पक्षी। **–रुत**–पु० दो कोसकी दूरीकी एक माप। **–रूप**–वि० गायके रूपवाला। पु० गायका रूप, आकार; शिव। **–रोच**–पु० हरताल। **–रोचन**–पु० एक सुगंधित पदार्थ जिसकी उत्पत्ति गायके पित्तसे मानी जाती है। **–रोचना**–स्त्री० गोरोचन। **–लांगल**–पु० गायकी पूँछ जैसी पूँछवाला; एक तरहका बंदर। **–लोक**– पु० वैकुंठ; व्रज। **–०वास**–पु० स्वर्गवास, मृत्यु। **–लोकेश**–पु० कृष्ण। **–लोचन**–पु० दे० 'गो-रोचन'। **–लोमी**–स्त्री० वेश्या; वच; सफेद दूब। **–वत्स**–पु० बछड़ा। **–वध**–पु० गायकी हत्या करना, गावकुशी। **–वर**–पु० करसी, गोमलका चूर। **–वर्धन**–पु० वृंदावनका एक पहाड़ जिसे पुराणोंके अनुसार इंद्रके कोपसे व्रजभूमिकी रक्षा करनेके लिए भगवान्ने अपनी उँगलीपर उठा लिया था; दे० गोसंवर्धन। **–०धर,–०धारण, –०धारी(रिन्)**–पु० कृष्ण। **–विंद**–पु० गोपालक; गोशालाका अध्यक्ष; कृष्ण; बृहस्पति। **–०द्वादशी**–स्त्री० फाल्गुनके शुक्ल पक्षकी द्वादशी। **–०पद**–पु० मोक्ष। **–०पाद(पादाचार्य)**–पु० शंकराचार्यके गुरु। **–०सिंह**–पु० सिखोंके दसवें और अंतिम गुरु। **–विसर्ग**–पु० भोर, तड़का। **–वीथी**–स्त्री० चंद्रमाके भ्रमणपथका अंशविशेष। **–वृंद**–पु० गायोंका समूह, गोसमूह। **–वैद्य**–पु० पशुचिकित्सक; अनाड़ी वैद्य। **–व्रज**–पु० गोठ; गायोंका झुंड; चरागाह। **–व्रत**–पु० गोहत्याके प्रायश्चित-रूपमें किया जानेवाला एक व्रत। **–शकृत्**–पु० गोबर। **–शाला**–स्त्री० गायोंके रहनेका स्थान, बाड़ा, गोष्ठ। **–शीर्ष**–पु० ऋषभ पर्वत; उस पर्वतपर होनेवाला चंदन। **–शृंग**–पु० गायका सींग; दक्षिण भारतका एक पर्वत; एक ऋषि। **–ष्ठ**–पु० गोशाला, गोठ, पशु-शाला; अहीरोंका गाँव; गोष्ठी; कई आदमियोंके साथ मिलकर करनेका एक श्राद्ध। **–०पति**– गोष्ठका अध्यक्ष; ग्वालोंका सरदार। **–ष्ठी**–स्त्री० सभा, मंडली, समाज; वार्ता-लाप; समूह; पारिवारिक संबंध; नाटकका एक भेद जिसमें एक ही अंक होता है। **–संख्य**–पु० गोचारक। **–संवर्धन**–पु० (सं०) गायोंकी रक्षा, पोषण, नस्ल-सुधार आदिका काम। **–सर्ग**–पु० गायोंको चरनेके लिए छोड़नेका समय, भोर। **–सर्प** –पु० गोह। **–सव**–पु० गोमेध यज्ञ। **–सहस्र**–पु० एक हजार गायोंका महादान। **–सहस्री**–स्त्री० कार्तिक या ज्येष्ठकी अमावस्या। **–साईं**–पु० (हिं०) गोस्वामी; ईश्वर; गृहस्थ शैव साधुओंका एक संप्रदाय, अतीथ। वि० मालिक; श्रेष्ठ। **–सुत**–पु० बछड़ा। **–सूक्त**–पु० अथर्ववेदका एक सूक्त। **–सैयाँ**†–पु० मालिक, स्वामी। **–स्तना,–स्तनी**–स्त्री० अंगूर, द्राक्षा। **–स्थान**–पु० गोष्ठ। **–स्वामी(मिन्)**–पु० गायोंका मालिक; गायें रखनेवाला; जितेंद्रिय; वल्लभकुल, निंबार्क-संप्रदाय और मध्व-संप्रदायके आचार्योंकी पदवी। **–हत्या**–स्त्री० गोवध। **–हित**–वि० गोरक्षक। पु० विष्णु।

गो–वि० (फा०) (समासांतमें) कहनेवाला ('रास्तगो', 'खुशगो', 'कहानीगो')। पु० गेंद, तुकमा। अ० यद्यपि, अगरचे। **–कि** –यद्यपि। **–मगो**–न कहने लायक, गोपनीय; अस्पष्ट; संदिग्ध (रखना, रहना)।

गोइँठा–पु० उपला।

गोइँड़, गाइँड़ा†–पु० गाँवका सामीप्य, गाँवका किनारा।

गोइँड़े†–अ० समीप, पास।

गोइंदा–पु० दे० 'गोयंदा'।

गोइ*–पु० गेंद ।

गोइन–पु० एक तरहका हिरन ।

गोइयाँ–पु०, स्त्री० दे० 'गुइयाँ' ।

गोई*–स्त्री०, सखी, गोइयाँ ।

गोऊ†–वि० चुरानेवाला ।

गोका–स्त्री० (सं०) छोटी गाय; नीलगाय ।

गोक्ष–पु० जोंक ।

गोखरू–पु० एक क्षुप; उसका कँटीला फल जो दवाके काम आता है; गोखरूके फलके आकारके लोहे आदिके बने कँटीले टुकड़े; गोटें; पाँवमें पहननेका एक गहना; तलवे या हथेलीमें पड़ा हुआ घट्टा ।

गोखले–पु० महाराष्ट्र ब्राह्मणोंका एक अल्ल; कांग्रेसके नरम दलके नेता और भारत सेवक-समितिके संस्थापक स्व० गोपालकृष्ण गोखले ।

गोखा†–पु० झरोखा, गवाक्ष; ताक ।

गोगापीर–पु० एक मुसलमान पीर जिसकी समाधिपर बड़ा मेला लगता है और बहुसंख्यक भंगी, मेहतर आदि जिसकी पूजा करते हैं । **–की छड़िया**–भादों सुदी ८-९ को गोगापीरकी समाधिपर लगनेवाला मेला ।

गोचना–पु०, **गोचनी**–स्त्री० चना मिला हुआ गेहूँ ।

गोची–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मछली ।

गोच्छाल–पु० (सं०) कुलाहल नामक पौधा ।

गोज़–पु० (फ़ा०) अपान वायु । **–शुतुर**–वि० जिसका कोई मूल्य-महत्त्व न हो, बेवकत (बात) ।

गोजई–स्त्री० जौ मिला हुआ गेहूँ ।

गोजर–पु० कनखजूरा ।

गोजरा†–पु० दे० 'गोजई' ।

गोजिया–स्त्री० एक घास; बनगोभी ।

गोजी†–स्त्री० लाठी, डंडा ।

गोझा–पु० गुझिया; गुज्झा ।

गोट–स्त्री० कपड़ेकी दुहरी पट्टी जो सुंदरताके लिए कपड़ोंके किनारे लगाते हैं, मगजी, संजाफ; किनारी; चौसर, पचीसी आदि खेलनेकी लकड़ी आदिकी बनी गोटी, नर्द; मंडली; नगरके बाहरकी वह सैर जिसमें खाना-पीना भी हो, उद्यान गोष्ठी । पु० गाँव; तोपका गोला । **–बस्ती**–स्त्री० वह भूमि जिसपर बस्ती बसी हो ।

गोटा–पु० सुनहले या रुपहले और रेशमके तारोंको मिलाकर बुना फीता, पट्ठा; लचका; छोटे टुकड़ोंमें कतरी हुई गिरी, सुपारी, बादाम, इलायची आदि जो पानके बदले खाते हैं; धनियाकी गिरी; सूखा हुआ मल, कंडी; छोटा गोल टुकड़ा, टिकिया; गोला–'औ ज्यों छुटहि बज्रकर गोटा'–प० ।

गोटिया चाल–स्त्री० दाँव-घात भरी चाल, चालबाजी ।

गोटी–स्त्री० गोट, नर्द; कंकड़ या पत्थर, खपड़े आदिके छोटे टुकड़े जिनसे लड़के कई तरहके खेल खेलते हैं; गोटियोंकी सहायतासे पत्थर आदिपर कोष्ठक बनाकर खेला जानेवाला खेल; युक्ति, उपाय; प्राप्तिका डौल । मु०**–जमना,–बैठना**–युक्ति सफल होना; प्राप्तिका डौल बनना । **–मरना**–किसी गोटीका मृत मान लिया जाना, खेलमें काम न आ सकना । **–लाल होना**–चौसर या पचीसीकी गोटीका सब खानोंमें फिरकर उठ जाना; काम बनना; लाभ होना ।

गोठ–पु० गोष्ठ, गोशाला; गोष्ठी-श्राद्ध; गोष्ठी; सैर-सपाटा ।

गोठा*–पु० सलाह ।

गोठिला†–वि० भोथरा ।

गोड–पु० (सं०) मांसल नाभि ।

गोड़†–पु० पावँ, पैर । **–गाव**–पु० वह रस्सी जो पिछाड़ीवाली रस्सीके साथ लगाकर घोड़ेके पिछले पैरोंमें फँसायी जाती है । **–बाँस**–स्त्री० किसी पशुके पाँवमें बाँधनेकी रस्सी । मु० **–भरना**–पाँवमें महावर लगाना । **–लगना**–पावँ छूना ।

गोड़इत†–पु० गाँवका चौकीदार ।

गोड़ना–स० क्रि० मिट्टीको नरम और भुरभुरी करनेके लिए कुदाल आदिसे खोदना, कोड़ना; खोदना ।

गोड़वाना–स० क्रि० 'गोड़ना'का प्रे० ।

गोड़ा†–पु० चारपाई आदिका पाया; घोड़िया; थाला ।

गोड़ाई–स्त्री० गोड़नेकी क्रिया; गोड़नेकी मजदूरी ।

गोड़ाना–स० क्रि० 'गोड़ना'का प्रे० ।

गोड़ापाई†–स्त्री० बार-बार आना-जाना ।

गोड़िया–स्त्री० छोटा पैर; छोटा पाया । वि० युक्ति भिड़ानेवाला ।

गोड़ी–स्त्री० बकरे आदिके पैरकी नली; फायदा, प्राप्ति; †पाँव । मु०**–जमना,–लगना**–प्रयत्नका सफल होना । **–हाथसे जाना**–कुछ प्राप्ति न होना ।

गोणी–स्त्री० (सं०) गोनी; दो सूपकी माप; चीथड़ा ।

गोत–पु० वंश, गोत्र; समूह; दे० 'ग़ोत' ।

ग़ोत–पु० (अ०) गश, बेहोशी, मूर्च्छा ।

गोतम–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि, अहल्याके पति; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक गौतम मुनि । **–पुत्र**–पु० शतानंद । **–स्तोम**–पु० दानशील संतानकी कामनासे किया जानेवाला एक यज्ञ; एक सूक्त ।

गोतमी–स्त्री० (सं०) अहल्या ।

ग़ोता–पु० (अ०) पानीमें डूबना, डुबकी । **–ख़ोर**–वि०, पु० डुबकी लगानेवाला; कुएँसे गिरी हुई चीजें निकालनेवाला । **–मार**–पु० समुद्रसे सीप, मोती आदि निकालनेवाला, पनडुब्बा; पनडुब्बी नौका । वि० गोताखोर । मु०**–खाना**–डूबना; धोखा खाना । **–देना**–डुबकी देना, डुबोना; धोखा देना । **–मारना**–डुबकी लगाना; नागा करना, चुपकेसे गैरहाजिर हो जाना ।

गोतिया, गोती–वि० अपने गोत्रवाला, गोत्रज ।

गोतीत*–वि० अगोचर, जो इंद्रियग्राह्य न हो (गो+अतीत) ।

गोत्र–पु० (सं०) कुल, वंश; गोत्रप्रवर्तक माने हुए ऋषियोंकी संतानपरंपरा; आदि-पुरुषके नामसे प्राप्त वंशसंज्ञा; समूह; संघ; वृद्धि; धन; क्षेत्र; रास्ता; छत्र; पर्वत; गोष्ठ । **–कर्ता-(र्तृ),–कार,–कारी(रिन्)**–वि०, पु० गोत्रप्रवर्तक । **–कीला**–स्त्री० पृथ्वी । **–गमन**–पु० सगोत्रके साथ विवाह या शरीर-संबंध । **–ज**–वि० एक ही गोत्रका; गोती । **–पट**–पु० वंशवृक्ष । **–प्रवर्तक**–वि०, पु० गोत्र चलानेवाला, गोत्रकार । **–भिद्**–पु० इंद्र । **–सुता**–स्त्री० पार्वती । **–स्खलन**–पु० गलत नामसे संबोधन करना ।

गोत्रा–स्त्री० (सं०) पृथिवी; गायोंका समूह ।

गोत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) एक ही या अपने ही गोत्रमें उत्पन्न, गोती ।

गोत्रीय–वि० (सं०) गोत्रवाला; (अमुक) गोत्रमें उत्पन्न (गर्गगोत्रीय) ।

गोदंती हरताल–पु० सफेद हरताल ।

गोद–पु० (सं०) मस्तिष्क, भेजा । स्त्री० (हिं०) क्रोड़, पहलू; आँचल । **–नशीं**–वि० गोद लिया हुआ, दत्तक । **–नशीनी**–स्त्री० गोद लिया जाना । **–भरी**-वि०, स्त्री० बाल-बच्चेवाली । मु०**–का**–गोदमें खेलनेवाला; छोटा (बच्चा) । **–का बच्चा**–शिशु, दूध-पीता बच्चा । **–देना**–अपना लड़का दत्तक बनानेके लिए दूसरेको देना । **– बिठाना**–गोद लेना, दत्तक लेना । **–बैठना**–दत्तक बनना, गोद लिया जाना । **–भरना**–शुभ अवसरोंपर सौभाग्यवती स्त्रीके आँचलमें नारियल आदि डालना; संतान होना । **–लेना**-किसी लड़केको दत्तक बनाना ।

गोदनहर, गोदनहारी–स्त्री० गोदना गोदनेवाली स्त्री ।

गोदना–स० क्रि० चुभाना, गड़ाना; कचोके देना; ताना मारना; अंकुश देना; बदनमें सुई चुभोकर और सूराखमें नीलका पानी आदि भरकर सुंदरताके लिए बिंदी, फूल आदि बनाना । पु० सुई चुभाकर बदनपर बनायी हुई बिंदी आदि; खेत गोड़नेका औजार ।

गोदनी–स्त्री० गोदना गोदनेकी सुई; टीका लगानेकी सुई ।

गोदर*–वि० गदराया हुआ; यौवनके कारण भरा हुआ ।

गोदा–पु० बड़, पीपल या पाकड़का पका फल; नयी डाल । स्त्री० (सं०) गोदावरी नदी ।

गोदाम–पु० माल, विशेषकर तिजारती माल रखनेका स्थान; † बटन ।

गोदावरी–स्त्री० (सं०) दक्षिण भारतकी एक प्रधान नदी।

गोदी|–स्त्री० दे० 'गोद'; (डॉक) समुद्रके किनारेपर स्थित माल उतारने-चढ़ानेका स्थान।

गोध–स्त्री० गोह।

गोधना–पु० भ्रातृ द्वितीयाके दिन स्त्रियों द्वारा भाईके शत्रुकी गोवरकी शकल वनाकर मूसलसे कूटनेका कृत्य।

गोधा–स्त्री० (सं०) गोह; धनुष्के चिल्लेकी चोटसे वचनेके लिए वायीं कलाईपर वाँधनेका चमड़ा; घड़ियालकी मादा। **–पदिका,–पदी**–स्त्री० मूसली; हंसपदी। **–स्कंध**–पु० विट्खदिर।

गोधि–पु० (सं०) ललाट; घड़ियाल।

गोधिका–स्त्री० (सं०) छिपकली; घड़ियालकी मादा।

गोधिकात्मज–पु० (सं०) एक तरहका गिरगिट।

गोधूम–पु० (सं०) गेहूँ। **–चूर्ण**–पु० आटा। **–सार**–पु० गेहूँका सत्त।

गोधूमक–पु० (सं०) गेहुँअन साँप।

गोधेर–पु० (सं०) रक्षक, अभिभावक।

गोन–स्त्री० वैलपर अनाज आदि लादनेका दोनों ओर लटकानेवाला थैला, गोनी, वोरा; अनाजकी एक तौल; नाव खींचनेके लिए नावके मस्तूलमें वँधी हुई रस्सी, गुन; | एक घास जो साग वनानेके काम भी आती है। **–रखा**–पु० नावका मस्तूल।

गोनर|–पु० एक तृण जो पशुओंके खाने और चटाई वनानेके काम आता है।

गोना*–स० क्रि० छिपाना, गोपन करना।

गोनिया–पु० वैल लादनेवाला; वोरे ढोनेवाला; रस्सी वाँधकर नाव खींचनेवाला। स्त्री० दीवार आदिकी सीध नापनेका एक औजार।

गोनी–स्त्री० टाटका थैला, वोरा; पाट, सन।

गोप–पु० गलेमें पहननेका एक गहना; दे० 'गो'में।

गोपक–पु० (सं०) गोप; वहुतसे गाँवों, इलाकोंका अध्यक्ष; गोपनकर्ता; रक्षक। (स्त्री० 'गोपिका')।

गोपन–पु० (सं०) छिपाना, छिपाव; भर्त्सना, निंदा; संरक्षण; दीप्ति; भय, त्रास; द्वेष; घवड़ाहट।

गोपना–स्त्री० (सं०) रक्षण; दीप्ति। * स० क्रि० छिपाना।

गोपनीय–वि० (सं०) छिपाने लायक; रक्षणीय।

गोपनीयता-शपथ–स्त्री० (ओथ ऑफ सीक्रेसी) मंत्रियों आदि द्वारा सरकारकी गोपनीय वातें प्रकट न करनेके संवंधमें पदग्रहणके समय ली जानेवाली शपथ।

गोपयिता(तृ)–वि० (सं०) संरक्षक; छिपानेवाला।

गोपराष्ट्र–पु० ग्वालियरका पुराना नाम।

गोपांगना–स्त्री० (सं०) ग्वालिन; गोपवधू।

गोपाचल–पु० (सं०) ग्वालियरके पासका एक पर्वत; ग्वालियर।

गोपायक–वि० (सं०) रक्षक, रखवाला।

गोपायन–पु० (सं०) रक्षण; गोपन।

गोपाष्टमी–स्त्री० (सं०) कार्त्तिक-शुक्ला अष्टमी।

गोपिका–स्त्री० (सं०) ग्वालिन; गोपवधू।

गोपित–वि० (सं०) रक्षित; छिपाया हुआ।

गोपिनी–स्त्री० (सं०) श्यामा लता।

गोपिल–वि० (सं०) गोपनकर्ता; रक्षक।

गोपी–स्त्री० (सं०) शारिवा लता; छिपनेवाली; दे० 'गो'में।

गोपी(पिन्)–वि० (सं०) रक्षक; गोपनकर्ता। (स्त्री० 'गोपिनी')।

गोपीचंद–पु० एक मध्यकालीन राजा जो भर्तृहरिका भानजा वताया जाता है और जो राजपाट छोड़कर विरागी हो गया।

गोपेंद्र–पु० (सं०) कृष्ण।

गोप्ता(प्तृ)–वि० (सं०) गोपनकर्ता; रक्षक। पु० विष्णु।

गोप्य–वि० (सं०) गोपनीय (आयु, वित्त, गृहच्छिद्र, मंत्र, मैथुन, भेषज, तप, दान और अपमान–ये नौ विषय मुख्यतः गोप्य माने गये हैं)। पु० दासीपुत्र, दास।

गोफ–पु० एक तरहका कंठा, गोप।

गोफा–पु० कल्ला, गाभा। * स्त्री० गुफा, तहखाना–'गोफन माँही पौढ़ते परिमल अंग लगाय'–साखी।

गोवर–पु० गोमल; गोवर। **–गणेश**–वि० मूर्ख, वुद्धू; वेडौल। **–पत्थी**–स्त्री० गोवर पाथनेवाली स्त्री। **–हारा**–पु० गोवर उठानेवाला नौकर। मु० **–का चोथ**–वेडौल; मूर्ख। **–खाना**–प्रायश्चित्त करना। **–पाथना**–गोवरके कंडे, उपले वनाना।

गोवराना|–स० क्रि० गोवरी करना।

गोवरिया–पु० वछनागकी जातिका एक पौधा।

गोवरी–स्त्री० गोवरका लेप (करना); कंडा, उपला।

गोवरैला, गोवरौरा, गोवरौला–पु० दे० 'गुवरैला'।

गोवी–स्त्री० दे० 'गोभी'।

गोभ–पु० पौधोंका एक रोग। * स्त्री० लहर, तरंग।

गोभा*–स्त्री० लहर–'...उठति सखि आनंदकी गोभा'–गदाधर भट्ट। पु० अंकुर; प्राकट्य, अभिव्यक्ति।

गोभिल–पु० (सं०) एक गृह्यसूत्रकार ऋषि।

गोभी–स्त्री० एक प्रसिद्ध शाक जो फूलगोभी, पातगोभी या करमकल्ला और गाँठगोभीके भेदसे तीन तरहका होता है; वनगोभी; पौधोंका एक रोग।

गोम*–पु० स्थान। स्त्री० घोड़ोंकी एक भँवरी।

गोमती–स्त्री० (सं०) मध्यदेशकी एक नदी जो वनारस और गाजीपुर जिलेकी सीमापर गंगामें मिलती है; एक वृत्त।

गोमय–पु० (सं०) गोवर।

गोमा–स्त्री० गोमती नदी। पु० एक पेड़ तथा फूल।

गोयँड़|–पु० दे० 'गोइँड़'।

गोयंदा–वि० (फा०) कहने, वोलनेवाला। पु० जासूस, भेदिया।

गोय–पु० (फा०) गेंद।

गोयना*–स० क्रि० गोना, गोवना, छिपाना (उदा० दे० 'हेरना'में)।

गोया–वि० (फा०) वोलनेवाला, वक्ता; सदृश। अ० मानो, जैसे। **–ई**–स्त्री० वोलनेकी शक्ति, वक्तृत्व शक्ति।

गोर|–वि० दे० 'गोरा'। पु० (फा०) वह गढ़ा जिसमें मुर्देको दफन करें, कब्र। **–कन**–पु० कब्र खोदनेका धंधा करनेवाला। **–परस्त**–वि० कब्रकी पूजा करनेवाला, प्रेत-पूजक। **–(रे)-गरीवाँ**–पु० वह स्थान जहाँ परदेशी या मुसाफिर दफन किये जायँ।

ग़ोर–पु० (फा०) कंधारके पासका एक प्रदेश।

गोरख–पु० गोरखनाथ। **–इटली**–स्त्री० एक वड़ा पेड़। **–ककड़ी**–स्त्री० दे० 'गोरखी। **–धंधा**–पु० तार, कड़ियाँ आदि जो एकमें जोड़कर फिर अलग की जा सकें; गोरखपंथी साधुओंके हाथमें रहनेवाला डंडा जिसमें वहुत-सी कड़ियाँ जड़ी होती हैं; पेचपाचवाली, जल्दी समझमें न आनेवाली चीज, मामला, पहेली; झमेला। **–नाथ**–पु० १५वीं शतीके एक प्रसिद्ध हठयोगी और पंथप्रवर्तक संत। **–पंथ**–पु० गोरखनाथका चलाया हुआ एक शैव पंथ या संप्रदाय, नाथसंप्रदाय। **–पंथी**–वि०, पु० गोरखनाथका अनुगामी। **–मुंडी**–स्त्री० एक घास जो दवाके काम आती है।

गोरख़र–पु० (फा०) गधेकी जातिका एक जंगली जानवर।

गोरखा–पु० नेपालका एक प्रदेश या वहाँका निवासी।

गोरखाली–पु० नेपालकी एक जाति। स्त्री० इस जातिकी वोली।

गोरखी–स्त्री० एक ककड़ी, गोरक्षकर्कटी।

गोरखुल|–पु० दे० 'गोखरू'।

गोरटा*–वि० गोरा (गोरटी–गोरी युवती)।

गोरण–पु० (सं०) उद्यम; अध्यवसाय।

गोर-मदाइन–पु० इंद्रधनुष (रामचं०)।

गोरसर|–पु० वाँसके पंखे(वेने)की डंडीके साथ वँधी कमाची।

गोरसा–पु० गायका दूध पीकर पला वच्चा।

गोरसी–स्त्री० अँगीठी।

गोरा–वि० गौर, श्वेतवर्णवाला (मनुष्य), जिसके चमड़ेका रंग सफेद हो। **–ई**–स्त्री० गोरापन; सुंदरता। **–चिट्टा**–वि० खूव गोरा। **–पत्थर**–पु० एक मुलायम सफेद पत्थर; घीया पत्थर।

गोराधार|–वि० दे० 'गोलाधार'।

गोरिका–स्त्री० (सं०) दे० 'गो-राटिका', मैना।

गोरिल्ला–पु० अफ्रीकामें पाया जानेवाला विशालकाय, वलवान्,

हिंस्र बनमानुस; लुक छिपकर हमला करनेवाला, छापामार।

गोरी–वि०, स्त्री० गौर वर्णवाली। स्त्री० सुंदरी स्त्री।

ग़ोरी–वि० (फा०) गोरका। पु० गोरका रहनेवाला; शाहबुद्दीन गोरीका उपनाम।

गोरू†–पु० चौपाया, ढोर (गाय, बैल, भैंस आदि)।

गोर्की, मैक्सिम–पु० प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार (१८६८–१९३६)।

गोर्द, गोर्ध–पु० (सं०) मस्तिष्क।

गोलंदाज–पु० गोला चलानेवाला तोपची; क्रिकेट खेलमें अपनी ओर आती हुई गेंदपर बल्लेसे प्रहार करने तथा यदि अवसर हो तो पिचपर दौड़कर रन बनानेका प्रयास करनेवाला खिलाड़ी (बैट्समैन)।

गोलंदाजी–स्त्री० गोलंदाजका काम; क्रिकेटके खेलमें गेंदकी पिटाई कर रन बनानेकी क्रिया या कला।

गोलंबर–पु० गुंबद; गुंबद जैसी गोल उठी हुई कोई चीज; कालिब; बागमें बना हुआ गोल चबूतरा।

गोल–पु० (सं०) मंडल; गोलाकार पिंड, वृत्त; विधवाका जारजात पुत्र, मैनफल; धरतीका मंडल या गोला; आकाश-मंडल; गोलयंत्र; मुर नामक ओषधि; मिट्टीका गोल घड़ा। **–यंत्र**–पु० वह यंत्र जिससे ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति आदि जानी जा सकती है। **–योग**–पु० ज्योतिषका एक योग, एक राशिमें ६ या ७ ग्रहोंका एकत्र हो जाना; गोलमाल। **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिर्विद्याका अंग-विशेष; धरतीका आकार, विस्तार, गति आदि जाननेकी विधि।

गोल–वि० गोला, वृत्ताकार; ठिगना और मोटा; अस्पष्ट। **–कलम**–पु० बरतनपर नक्काशी करनेमें काम आनेवाली एक तरहकी छेनी। **–कली**–स्त्री० एक तरहका अंगूर। **–गप्पा**–पु० छोटी, खूब फूली हुई करारी पूरी जिसे चाटकी तरह खाते हैं, फुलकी, बताशा (लखनऊ)। फुचका। **–गोल**–वि० गोला; अस्पष्ट। **–पंजा**–पु० मंडा जूता। **–बात**–स्त्री० अस्पष्ट या विविधार्थक बात। **–मटोल**–वि० जिससे कोई साफ अर्थ न निकले, अस्पष्ट। **–माल**–पु० गड़बड़, घपला। **–मिर्च**–स्त्री० काली मिर्च। **–मेज कान्फ्रेंस**–स्त्री० सर्वपक्ष-सम्मेलन, ऐसा सम्मेलन जिसमें सभी पक्षोंके लोग एक साथ बैठकर विचार करें। **–करना**–(कोई चीज) गायब करना, चोरी चोरी हटा देना। **–होना**–चुपचाप चले जाना, खिसक जाना।

गोल–पु० दे० 'ग़ोल'; 'गोला'का समासगत रूप। **–चला**–पु० गोलंदाज।

गोल–पु० (अं०) फुटबाल आदिके खेलमें वह स्थान जहाँ गेंद पहुँचनेसे पक्ष-विशेषकी जीत होती है; इस तरह हुई जीत (करना, होना)। **–कीपर**–पु० गोलकी रक्षापर नियुक्त खिलाड़ी।

ग़ोल–पु० (फा०) मंडली, झुंड; भीड़। **मु०–बाँधना**–भीड़ लगाना।

गोलक–पु० वह संदूक या थैली जिसमें कार्यविशेषके लिए धन एकत्र किया जाय; इस तरह इकट्ठा हुआ धन; वह पेटी जिसमें रोजकी बिक्रीका रुपया रखते हैं, गुल्लक; गुंबद; (सं०) गोल पिंड; गोली; काठका गेंद; मटका; विधवाका जारज पुत्र; आँखका डेला; इत्र; कई ग्रहोंका योग; गुड़; गोलोक।

गोला–स्त्री० (सं०) गोली; मटकी; सहेली; दुर्गा; गोदावरी नदी; बच्चोंके खेलनेका काठका गेंद; मंडल; स्याही; मैनसिल। वि० (हिं०) गोलाईवाला, वृत्ताकार। पु० गोल वृत्ताकार वस्तु या पिंड; लोहेकी बड़ी गोली जिसे तोपमें भरकर दागते हैं; नारियलका साबित मग्ज; रस्सी आदिकी पिंडी; गल्ले, किराने आदिका बाजार जो किसी इहातेके अंदर हो; गोल शहतीर, बल्ला; घासका गट्ठा; वायुगोला रोग; जंगली बाँस जो भीतरसे पोला नहीं होता; जंगली कबूतर; एक तरहका बेत; गोली (दासी)का पुत्र; † एक तरहका बड़ा कंडा–'अँगीठीके पेटमें गोला डालो'–जिंदगी०; † पक्की सड़क (बुंदेल०)। **–ई**–स्त्री० गोलापन। **–धार**- वि० मूसलधार। **–बारी**–स्त्री० तोपसे की जानेवाली गोलोंकी वर्षा। **–बारूद**–स्त्री० गोला और बारूद; युद्धसामग्री।

गोलाकार, गोलाकृति–वि० (सं०) गोला, पिंडाकार।

गोलाध्याय–पु० (सं०) भास्कराचार्य-कृत एक ज्योतिष-ग्रंथ।

गोलार्द्ध–पु० (सं०) पृथ्वीका आधा भाग जो एक दूसरे ध्रुवतक रेखा खींचनेसे बने।

गोलास–पु० (सं०) छत्रक, कुकुरमुत्ता।

गोलासन–पु० (सं०) एक तरहकी तोप।

गोलिका–स्त्री० (ग्लोब्यूल) दवा आदिकी छोटी गोली।

गोलिकाकार–वि० (ग्लोब्यूलर) जो छोटी गोलीके रूपमें हो, छोटी गोली जैसा।

गोलियाना†–स० क्रि० गोल आकारका बनाना; गोल बाँधना; गुड़ या औषध बड़ी गोलीके रूपमें बनाना (पशुओंको खिलानेके लिए)।

गोली–स्त्री० छोटा गोला; मिट्टी, काँच आदिका बना छोटा गोला जिससे लड़के खेलते हैं; गोलीका खेल; सीसे या लोहेका छोटा गोला जिसे बंदूक, तमंचेमें भरकर छोड़ते हैं; गोलीके रूपमें बनायी हुई दवा, बटी; छोटा घड़ा; पशुओंका एक रोग; मदककी गोली। **–कांड**–पु० गोली चलानेकी घटना। **मु०–खाना**–बंदूककी गोलीसे घायल होना, गोलीकी चोट सहना। **–चलना**–बंदूकसे गोलीका चलाया जाना, फैर किया जाना। **–मारना**–गोलीसे घायल करना; उपेक्षापूर्वक त्याग देना, ठुकरा देना।

गोलीय–वि० (सं०) गोल-संबंधी।

गौलैंदा†–पु० महुएका फल, कोइँदा।

गोल्फ–पु० (अं०) डंडे और गेंदसे खेला जानेवाला एक अंग्रेजी खेल।

गोवना*–स० क्रि० छिपाना; ढकना।

गोवर्धन–पु० (सं०) दे० 'गो'में।

गोवा*–स्त्री० सुपारी।

गोविंदसिंह–पु० दे० 'गो'में।

गोश–पु० (फा०) कान। **–पेच**–पु० कानमें पहननेका एक गहना। **–मायल**–पु० पगड़ीमें लगी मोतियोंकी लड़ी जो कानके पास झूलती रहती है। **–माल,–माली**–स्त्री० कान मलना, उमेठना, कनैठी; ताड़न। **–माही**–स्त्री० सीप। **–वारा**–पु० बाला, कुंडल; बड़ा मोती; पगड़ीका कलाबत्तूसे बुना हुआ अंचल; कलगी; जोड़, मीजान; हिसाबका खुलासा; रजिस्टर आदिके खानोंका शीर्षक; एक पेड़का गोंद। **मु०–गुज़ार करना**–सुनाना। **–होना**–सुनना, कानमें पड़ना।

गोशम–पु० कोसम नामक पेड़।

गोशा–पु० (फा०) कोना, कोण; दिशा; एकांत स्थान; कमानकी नोक। **–ए-तनहाई**–स्त्री० एकांत स्थान। **–ए-दिल**–पु० दिल, हृदयका कोना। **–नशीं**–वि० एकांतवासी; संसारत्यागी। **–नशीनी**–स्त्री० एकांतवास।

गोश्त–पु० (फा०) मांस, सालन, लहम; गूदा। **–ख़्वार**–वि० गोश्त खानेवाला, मांसाहारी।

गोप*–पु० गवाक्ष, गोखा, खिड़की।

गोष्ठागार–पु० (सं०) सभागृह।

गोष्ठी–स्त्री० मित्रोंकी मण्डली या सभा; विचार-विमर्श, मनोरंजन आदिके लिए किया जानेवाला परिचितों आदिका जमाव (विचार-गोष्ठी, उद्यान-गोष्ठी) दे० 'गो'के साथ। **–कक्ष**–पु० (लॉबी) संसद् भवनके भीतर उपान्तमें स्थित वह स्थान या कक्ष जहाँ बैठकर सदस्य गण विभिन्न विषयोंपर परामर्श करते हैं और जहाँ कुछ विशिष्ट पत्रकार ही उनसे साक्षात्कारके लिए जा सकते हैं, उपान्तिका।

गोष्पद–पु० (सं०) दे० 'गोपद'।

गोस–पु० (सं०) भोर; ग्रीष्म ऋतु; लोबान।

गोसमावल–पु० दे० 'गोशमायल'।

गोसा–पु० कंडा, उपला।

गोसी†–स्त्री० एक समुद्रगामिनी नौका।

गोह–स्त्री० छिपकलीकी जातिका एक जहरीला जंतु जो आकारमें नेवलेके बराबर होता है।

गोहन–पु० (सं०) ढकना; छिपाना; † संग, साथ; संग लगा रहनेवाला, हरदम साथ रहनेवाला।

गोहने–अ० साथमें।

गोहर–पु० विसखोपड़ा ।

गोहरा–पु० उपला, कंडा ।

गोहराना*–स० क्रि०, अ० क्रि० आवाज देना; चिल्लाना; पुकारना ।

गोहरौर–पु० उपलोंका सजाकर लगाया हुआ ढेर; उपलोंका ढेर सँजोकर रखनेकी जगह ।

गोहलौत–पु० दे० 'गहलौत' ।

गोहार–स्त्री० पुकार; सहायताके लिए चिल्लाना; शोर-गुल; गुहार सुनकर एकत्र होनेवाली भीड़ ।

गोहारि, गोहारी†–स्त्री० दे० 'गोहार' ।

गोहिर–पु० (सं०) पादमूल, एड़ी ।

गोही–स्त्री० छिपाव, गोपन; गुप्त वात । †आम आदि फलोंकी गुठली ।

गोहुअन, गोहुवन–पु० एक अति विषधर साँप जिसके चमड़ेका रंग गंदुमी होता है ।

गोहूँ†–पु० दे० 'गेहूँ' ।

गोहेरा–पु० गोह; विसखोपड़ा ।

गौं–स्त्री० काम निकलनेका मौका, अवसर; घात; मतलब; युक्ति; * गति, पहुँच; ढंग, चाल । **मु०–का**–मतलबका, कामका । **–का यार**–मतलबका दोस्त । **–गाँठना**–काम निकालना, अपनी गरज देखना । **–निकलना**–काम निकलना । **–पड़ना**–काम पड़ना । **–से**–चुपकेसे ।

गौंच–स्त्री० दे० 'कौंच' ।

गौंजिक, गौंजिग–पु० (सं०) जौहरी; सुवर्णकार । वि० गुंजा (घुँघची) से जिसका संबंध हो ।

गौंट–पु० एक छोटा वृक्ष ।

गौंहाँ†–वि० गाँव-संबंधी; गाँवका ।

गौ–स्त्री० (सं०) गाय । **–चरी**–स्त्री० (हिं०) गाय चरानेका कर । **–द्रुमा***–वि० गावदुम, गायकी पूँछ जैसा । **–मुख**–वि०, पु० दे० 'गोमुख' । **–मुखी**–स्त्री० दे० 'गोमुखी' । **–शाला**–स्त्री० दे० 'गोशाला' ।

गौख†–स्त्री० गवाक्ष; द्वारके पासका दालान, चौपाल ।

गौखा†–पु० झरोखा, गवाक्ष; ताखा; गायका चमड़ा ।

गौग़ा–पु० (अ०) शोर-गुल, हल्ला; अफवाह । **–ई**–वि० हल्ला मचानेवाला ।

गौड–पु० (सं०) बंगालका पुराना नाम; गौड़ देशवासी; ब्राह्मणोंका एक वर्ग, पंच गौड़; भारतके ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; कायस्थोंकी एक उपजाति; एक राग; मिठाई । **–नट**–पु० एक संकर राग । **–पाद,–पादाचार्य**–पु० शंकराचार्यके गुरुके गुरु जिन्होंने मांडूक्य उपनिषद्‌पर कारिका लिखी । **–मल्लार**–पु० गौड़ और मल्लार रागके योगसे बना एक संकर राग । **–सारंग**–पु० एक संकर राग ।

गौडिक–वि० (सं०) गुड़-संबंधी; गुड़का । पु० ईख; एक तरहकी शराब जो चोटेसे बनायी जाती है ।

गौडिया–वि० गौड़ देशका । **–संप्रदाय**–पु० चैतन्य महाप्रभुका चलाया हुआ एक संप्रदाय ।

गौडी–स्त्री० (सं०) गुड़से बनायी हुई शराब; एक रागिनी; काव्य-नाटककी तीन रचना-रीतियोंमेंसे एक, दे० 'परुषा-वृत्ति' ।

गौडीय–वि० (सं०) गौड़ देशसंबंधी । पु० गौड़निवासी । **–भाषा**–स्त्री० बँगला भाषा; उत्तर बंगालकी भाषा ।

गौडेश्वर–पु० (सं०) चैतन्य महाप्रभु ।

गौण–वि० (सं०) अप्रधान; महत्त्वमें दूसरे दरजेका; गुण-संबंधी । **–पक्ष**–पु० वादका वह पक्ष जो अप्रधान या अपुष्ट हो ।

गौणिक–वि० (सं०) गुण-संबंधी; सत्त्व-रज-तमसे संबंध रखनेवाला; गौण; बोरे जैसा ।

गौणी–वि०, स्त्री० (सं०) गुण-संबंधिनी; अप्रधान । **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद जिसमें केवल एक वस्तुका गुण लेकर अन्यमें आरोपित किया जाता है (सा०) ।

गौतम–पु० (सं०) गोतमका वंशज; न्यायशास्त्रके प्रवर्तक अक्षपाद ऋषि; एक ऋषि जिन्होंने पुराणोंके अनुसार अपनी पत्नी अहल्याको शाप देकर पत्थर बना दिया था; गोतम ऋषिके पुत्र शतानंद; बुद्ध; कृपाचार्य; एक स्मृतिकार ऋषि; क्षत्रियोंका एक भेद; नासिकके पासका एक पर्वत जो गोदावरी नदीका उद्‌गम है; एक विष । **–संभवा**–स्त्री० गोदावरी नदी ।

गौतमी–स्त्री० (सं०) अहल्या; द्रोणाचार्यकी पत्नी; गोदावरी नदी; दुर्गा; गोरोचन; बुद्धकी शिक्षा ।

गौद, गौदा–पु० गुच्छा, घौद ।

गौधार, गौधेय, गौधेर–पु० (सं०) गोधिकात्मज ।

गौन*–पु० गमन; गौना । वि० चंचल ।

गौनर्द–पु० (सं०) गोनर्द देशमें उत्पन्न, पतंजलि ।

गौनहर–स्त्री० दे० 'गौनहारी' ।

गौनहाई†–स्त्री० वह वधू जिसका गौना हालमें आया हो, दुलहिन ।

गौनहार–स्त्री० दुलहिनके साथ उसकी ससुराल जानेवाली स्त्री ।

गौनहारिन–स्त्री० दे० 'गौनहारी' ।

गौनहारी–स्त्री० गानेका पेशा करनेवाली, तायफेके रूपमें गाने-बजानेवाली स्त्री ।

गौना–पु० विवाहके कुछ काल बाद दुलहिनका मैकेसे विदा होकर ससुराल जाना; द्विरागमन ।

गौपिक–पु० (सं०) गोपीका पुत्र ।

गौपुच्छ–वि० (सं०) गायकी पूँछके समान ।

गौपुच्छिक–वि० (सं०) गोपुच्छ-संबंधी ।

गौप्तेय–पु० (सं०) वैश्य स्त्रीका पुत्र ।

गौर–वि० (सं०) गोरा; श्वेत; पीला; लाल; स्वच्छ, विशुद्ध; चमकीला । पु० सफेद रंग; पीला रंग, लाल रंग; चंद्रमा; सोना; धवका पेड़; सफेद (पीली) सरसों; जाफ़रान; चैतन्य महाप्रभु; एक तरहका हिरन; एक तरहका भैंसा; पद्मकेसर, बृहस्पति ग्रह । **–चंद्र**–पु० चैतन्यदेव । **–वर्ण**–वि० गोरे रंगवाला, गोरा । पु० गोरा रंग । **–शाक**–पु० मधूक । **–शालि**–पु० एक तरहका धान । **–सर्षप**–पु० पीली सरसों । **–सुवर्ण**–पु० एक पत्रशाक ।

ग़ौर–पु० (अ०) सोच-विचार, चिंतन । **–तलब**–विचारणीय, विचारने योग्य । **–व ख़ौज़**–पु०,**–व फ़िक्र**–स्त्री० सोच-विचार । **–से**–ध्यान देकर, ध्यानपूर्वक ।

गौरक–पु० (सं०) एक तरहका धान ।

गौरक्ष्य–पु० (सं०) गोपालन, गोरक्षण (वैश्यके लिए विहित तीन विशेष कर्मोंमेंसे एक) ।

गौरव–पु० (सं०) गुरुता, भारीपन; महत्त्व, बड़प्पन; आदर सम्मान; प्रतिष्ठा, मर्यादा; गहराई; गांभीर्य । **–शाली (लिन्)**–वि० गौरवयुक्त; सम्मानित ।

गौरवा–पु० चटक पक्षी, चिड़ा ।

गौरवान्वित–वि० (सं०) गौरवयुक्त ।

गौरवासन–पु० (सं०) गौरवका आसन, सम्मानित पद ।

गौरवित–वि० (सं०) गौरवयुक्त; सम्मानयुक्त ।

गौरांग–पु० (सं०) चैतन्यदेव; कृष्ण; विष्णु । वि० गोरा; (गौरवर्णका) यूरोपीय या अमेरिकन । **–महाप्रभु**–पु० चैतन्यदेव ।

गौरांगी–वि०, स्त्री० (सं०) गोरी । स्त्री० यूरोपीय स्त्री, मेम ।

गौरा–पु० नर गौरैया पक्षी । स्त्री० (सं०) गोरी स्त्री; पार्वती; हल्दी; एक रागिनी ।

गौराटिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका कौवा ।

गौरार्द्रक–पु० (सं०) स्थावर विष ।

गौरास्य–पु० (सं०) एक तरहका गौर मुखवाला बंदर ।

गौराहिक–पु० (सं०) एक तरहका साँप ।

गौरिक–वि० (सं०) गोरा । पु० सफेद सरसों ।

गौरिका–स्त्री० (सं०) अविवाहिता कन्या, गौरी ।

गौरिल–पु० (सं०) सफेद सरसों; लोहेका चूरा ।

गौरी–स्त्री० (सं०) गोरी स्त्री; पार्वती, आठ वर्षकी अविवाहिता कन्या; धरती; वाणी; सफेद दूब; हल्दी; गोरोचन; भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर बहनेवाली एक प्राचीन नदी; वरुणकी पत्नी; मल्लिका; तुलसी; मंजिष्ठा । **–कांत,–नाथ**–पु० शिव । **–गुरु**–पु० हिमालय । **–चंदन**–पु० लाल चंदन । **–ज**–पु० कार्त्तिकेय;

गणेश; अभ्रक। –पट्ट–पु० शिवलिंगका अरघा। –पुष्प–पु० प्रियंगु नामक वृक्ष। –भर्ता(र्तृ)–पु० गौरीनाथ। –ललित–पु० हरताल। –वर–पु० शिव; गौरीका वरदान। –शंकर–पु० हिमालयकी सबसे ऊँची चोटी। –शिखर–पु० हिमालयकी वह चोटी जिसपर पार्वतीने तपस्या की थी। –सर–पु० हंसराज नामक बूटी।

गौरीश–पु० (सं०) शिव।

गौरुतल्पिक–पु० (सं०) गुरुपत्नीसे अनुचित संबंध रखनेवाला।

गौरैया–स्त्री० एक छोटी चिड़िया; † एक तरहका मिट्टीका हुक्का।

गौलक्षणिक–पु० (सं०) गाय-बैलोंके भले-बुरे लक्षण पहचाननेवाला।

गौला–स्त्री० (सं०) पार्वती।

गौलिक–पु० (सं०) मुष्कक नामक वृक्ष, एक प्रकारका लोध।

गौल्मिक–पु० (सं०) ३० सिपाहियोंका नायक, गुल्मनायक; गुल्मका सिपाही। वि० गुल्म, अर्बुद रोग-संबंधी।

गौल्य–पु० (सं०) शरबत; शराब।

गौशतिक–वि० (सं०) सौ गायें रखनेवाला।

गौष्ठीन–पु० (सं०) पुरानी गोशालाका स्थान।

गौसम–पु० कोसम नामका पेड़।

गौसहस्रिक–वि० (सं०) एक हजार गायोंका मालिक।

गौहर–पु० (फा०) मोती; जौहर। –ताब–पु० एक बहुत बारीक कपड़ा जिसके भीतरसे बदन झलकता रहता है।

ग्मा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

ग्याति*–स्त्री० जाति। पु० दे० 'ज्ञाति'।

ग्यान*–पु० दे० 'ज्ञान'।

ग्यारस–स्त्री० एकादशी।

ग्यारह–वि० दस और एक। पु० दस और एककी संख्या, ११।

ग्रंथ–पु० (सं०) ग्रंथन; पुस्तक, किताब; धन; अनुष्टुप् छंदमें रचित श्लोक। –कर्ता(र्तृ),–कार,–कृत्–पु० ग्रंथ लिखने, रचनेवाला। –कुटी,–कूटी–स्त्री० पुस्तकालय। –चुंबक–पु० पुस्तकके कुछ पन्ने पढ़कर ही, विषयका स्वल्प ज्ञान प्राप्त करके रह जानेवाला, पल्लवग्राही। –माला–स्त्री० कार्यालय-विशेषसे क्रमपूर्वक प्रकाशित पुस्तकें। –रचना–स्त्री० पुस्तक-रचना, किताब लिखना। –संधि–स्त्री० पुस्तकका अध्याय, परिच्छेद। –साहब–पु० (हिं०) सिखोंका धर्मग्रंथ, सिख गुरुओंके उपदेशोंका संग्रह।

ग्रंथन–पु० (सं०) गाँठ देकर बाँधना, गठियाना; गूँथना, गुंफन; रचना।

ग्रंथना*–स० क्रि० गूँथना।

ग्रंथांतर–पु० (सं०) अन्य ग्रंथ।

ग्रंथागार–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ विविध विषयोंकी पुस्तकें संगृहीत हों, पुस्तकालय, लाइब्रेरी।

ग्रंथागारिक–पु० (लाइब्रेरियन) ग्रंथागार (पुस्तकालय)में संगृहीत ग्रंथोंकी अभिरक्षा तथा उनके आदान-प्रदान, संग्रहादिकी व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति, पुस्तकाध्यक्ष।

ग्रंथालय–पु० (सं०) पुस्तकालय।

ग्रंथावलि, ग्रंथावली–स्त्री० (सं०) ग्रंथमाला।

ग्रंथावलोकन–पु० (सं०) पुस्तकाध्ययन।

ग्रंथि–स्त्री० (सं०) गाँठ, गिरह; गुठली; गुत्थी; ईख, बाँस आदिकी गाँठ; अंगोंका जोड़; शरीरका वह विशेष अंग जो शारीरिक क्रियाओंको जारी रखनेके लिए आवश्यक रासायनिक यौगिकोंका निर्माण करके उसे शरीरमें भेजता है; जैसे थायरायड ग्रंथि (ग्लैंड)। अंटी; कुटिलता; (ला०) माया-पाश। –च्छेदक–पु० गिरहकट। –दूर्वा–स्त्री० गाडर दूब। –पत्र–पु० चोरक नामक गंधद्रव्य। –पर्ण–पु० गठिवन। –पर्णक–पु० एक सुगंधित पौधा। –पर्णा–स्त्री० जतुका लता। –पर्णी–स्त्री० ग्रंथिदूर्वा। –फल–पु० कैथ, मैनफल। –बंधन–पु० गँठबंधन; वर वधूके कपड़ोंके छोरमें गाँठ लगाकर बाँधनेकी रस्म। –बर्हीं(र्हिन्)–पु० ग्रंथिपर्णक। –भेद,–मोचक–पु० गिरहकट। –मूल–पु० लहसुन, शलजम, गाजर, मूली इत्यादि। –हर–पु० मंत्री।

ग्रंथिक–पु० (सं०) पिपरामूल; गठिवन; करीर; गुग्गुल; दैवज्ञ; सहदेवका अज्ञातवासकालका नाम।

ग्रंथित–वि० (सं०) दे० 'ग्रथित'।

ग्रंथिमान्(मत्)–वि० (सं०) बँधा हुआ। पु० अस्थिसंहारक वृक्ष। –(मत्)फल–पु० लकुच।

ग्रंथिल–वि० (सं०) गाँठदार। पु० पिपरामूल; अदरक; विकंकत वृक्ष; करीर; चोरक नामक गंधद्रव्य; चौराईका साग; विकंटक वृक्ष; पिंडालू।

ग्रंथिला–स्त्री० (सं०) भद्रमुस्ता; मालादूर्वा; गाडर दूब।

ग्रंथी(थिन्)–वि० (सं०) जिसके पास बहुतसे ग्रंथ हों; जिसने बहुतसे ग्रंथ पढ़े हों, विद्वान्। पु० ग्रंथकर्ता; ग्रंथका पाठ करनेवाला।

ग्रंस*–पु० कुटिलता, छलछिद्र।

ग्रथन–पु० (सं०) गूँथना, ग्रंथन; रचना करना; जमना।

ग्रथित–वि० (सं०) गूँथा हुआ; इकट्ठा बाँधा हुआ; रचित; क्रमबद्ध किया हुआ; जो जम गया या ठोस हो गया हो; क्षत; गृहीत; विजित; आक्रांत। पु० कठिन गाँठवाला अर्बुद।

ग्रब्ब*–पु० गर्व, घमंड, दर्प। –हन–वि० गर्वघ्न, घमंड दूर करनेवाला, दर्पहारी।

ग्रसन–पु० (सं०) भक्षण, निगलना; पकड़ना; जकड़ना; ग्रास; ग्रहण; चंद्र-सूर्यका खंड-ग्रहण।

ग्रसना–स० क्रि० दबाकर पकड़ना; ग्रास करना; सताना।

ग्रसित–वि० दे० 'ग्रस्त'।

ग्रसिष्णु–वि० (सं०) निगलनेका आदी, ग्रसनशील। पु० परब्रह्म।

ग्रस्त–वि० (सं०) ग्रसा हुआ, पकड़ा, निगला हुआ; पीड़ित; ग्रहण लगा हुआ। पु० अर्द्धोच्चारित शब्द।

ग्रस्ता(स्तृ)–वि० (सं०) ग्रास करनेवाला, भक्षक।

ग्रस्तास्त–पु० (सं०) सूर्य या चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही अस्त हो जाना।

ग्रस्ति–स्त्री० (सं०) ग्रास; ग्रसन।

ग्रस्तोदय–पु० (सं०) सूर्य या चंद्रमाका ग्रहण लगे हुए ही उदय होना।

ग्रस्य–वि० (सं०) ग्रसनके योग्य, निगलने योग्य।

ग्रह–पु० (सं०) सूर्यकी परिक्रमा करनेवाला तारा; सौरमंडलके ९ प्रधान तारों—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु—मेंसे कोई एक; नौकी संख्या; ग्रहण; प्राप्ति; पकड़; चोरी; लूटका माल; नामादिका कथन; घड़ियाल; आशंका; अध्यवसाय; मकान; करछी; पात्र; धनुषका मध्य भाग; रोक रखना, वंचित करना; बोध; राहु; बालग्रह। –कल्लोल–पु० राहु। –गति–स्त्री० ग्रहोंकी गति; ग्रहदोष। –ग्रस्त–वि० प्रेताविष्ट; पापग्रह द्वारा प्रभावित। –ग्रामणी–पु० सूर्य। –चिंतक–पु० ज्योतिषी। –दशा–स्त्री० जन्मराशिकी दृष्टिसे ग्रहोंकी स्थिति; उनका शुभ या अशुभ फल देनेवाला होना; बुरे दिन, विपत्काल। –दाय–पु० ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार मनुष्यकी आयु। –देवता–पु० ग्रह-विशेषका अधिष्ठाता देवता। –दोष–पु० ग्रह-विशेषकी अशुभ, अरिष्टकारक दृष्टि। –द्रुम–पु० काकड़ासींगी। –नायक–पु० सूर्य; शनि। –नाश,–नाशन–पु० छतिवनका पेड़। –नेमि–पु० चंद्रमा। –पति–पु० सूर्य; चंद्र; आक। –पीडन–पु०,–पीडा–स्त्री० ग्रहजनित पीड़ा, ग्रहबाधा। –पुष–पु० सूर्य। –बाधा–दे० 'ग्रहपीड़ा'। –भीतिजित्–पु० चीड़ नामक गंधद्रव्य। –मर्द–पु० ग्रहयुद्ध। –मैत्री–स्त्री० वर-कन्याके ग्रह-स्वामियोंका परस्पर मित्र या अनुकूल होना। –यज्ञ,–याग–पु० ग्रहदोषकी शांतिके लिए किया जानेवाला यज्ञ। –युति–स्त्री०,–योग–पु० राशि-विशेषके एक ही अंशपर दो या अधिक ग्रहोंका आ जाना। –युद्ध–पु० ग्रहोंका परस्पर विरोध या संघर्ष। –राज–पु० सूर्य; चंद्र; बृहस्पति। –वर्ष–पु० वह समय जो किसी ग्रहको सूर्यकी परिक्रमा करनेमें लगे। –विचारी(रिन्)–पु० ग्रहचिंतक। –विप्र पु० ज्योतिषी। –वेध–पु० ग्रहोंकी स्थितिका ज्ञान प्राप्त करना। –शांति–स्त्री० जप, पूजन आदिके द्वारा ग्रह-दोषकी निवृत्तिका उपाय किया जाना। –शृंगाटक–पु० ग्रहोंका एक तरहका योग। –संगम–पु० कई

ग्रहोंका इकट्ठा हो जाना। **–स्वर**–पु० राग आरंभ करनेका स्वर।

ग्रहक–पु० (सं०) कैदी।

ग्रहण–पु० (सं०) पकड़नेकी क्रिया, पकड़ लेना, स्वीकार; प्राप्ति; धारण; वरण, चुनाव; समझना, अर्थबोध; ग्रह-विशेषका दूसरे ग्रहकी छायासे कुछ कालके लिए छिप जाना; सूर्य और पृथिवीके बीचमें चंद्रमाका या सूर्य और चंद्रमाके बीचमें पृथिवीका आ जाना (पौराणिक मतानुसार राहुका सूर्य या चंद्रमाको निगलनेकी कोशिश करना); हाथ; ज्ञानेंद्रिय; बंदी, कैदी; पाणिग्रहण; कैद करना; आकर्षण; सेवा; प्रशंसा; आमंत्रण।

ग्रहणांत–पु० (सं०) अध्ययनकी समाप्ति।

ग्रहणि, ग्रहणी–स्त्री० (सं०) उदर और पक्वाशयके बीचकी एक नाड़ी; एक तरहका अतिसार। **–हर**–पु० लौंग।

ग्रहणीय–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य।

ग्रहागम–पु० (सं०) प्रेतादिका आवेश।

ग्रहाग्रेसर–पु० (सं०) चंद्रमा।

ग्रहाचार्य–पु० (सं०) ग्रहविप्र, ज्योतिषी।

ग्रहाधार–पु० (सं०) ध्रुव नक्षत्र।

ग्रहाधीश–पु० (सं०) सूर्य।

ग्रहामय–पु० (सं०) मूर्च्छा, मृगी; ग्रहपीडा, प्रेतादिका आवेश।

ग्रहालुंचन–पु० (सं०) शिकारपर झपटकर उसे फाड़ डालना।

ग्रहावमर्दन–पु० (सं०) ग्रहयुद्ध; राहु।

ग्रहावर्त–पु० (सं०) जन्मपत्री।

ग्रहाशी(शिन्)–पु० (सं०) ग्रहनाश वृक्ष।

ग्रहाश्रय–पु० (सं०) ध्रुव तारा।

ग्रहाह्वय–पु० (सं०) भूतांकुश नामक पौधा।

ग्रहिल–वि० (सं०) दिलचस्पी लेनेवाला; हठी; भूताविष्ट।

ग्रहीत–वि० दे० 'गृहीत'।

ग्रहीतव्य–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य।

ग्रहीता(तृ)–वि०, पु० (सं०) ग्रहण करनेवाला; ग्राहक; कर्ज लेनेवाला; निरीक्षण करनेवाला। (स्त्री० 'ग्रहीत्री'।)

ग्रांडील–वि० वड़े डीलडौलका।

ग्राम–पु० (सं०) वस्ती; गाँव; जाति; समूह; एक षड्जसे दूसरे षड्जतकका स्वर-समूह, स्वर-सप्तक। **–कंटक**–पु० वह जो ग्राममें झगड़े-बखेड़े उठता है, ग्रामद्रोही। **–कुक्कुट**–पु० पालतू मुरगा। **–कूट,–कूटक**–पु० गाँवका मुखिया; शूद्र। **–गृह्य**–वि० गाँवके बाहर स्थित। **–गृह्यक**–पु० देहाती बढ़ई।**–घात**–पु० गाँवको लूटना। **–चर**–पु० ग्रामवासी। **–चर्या**–स्त्री० स्त्रीसंग। **–चैत्य**–पु० गाँवका पवित्र वृक्ष। **–ज,–जात**–वि० गाँवमें जनमा हुआ, देहाती; खेतमें उपजा हुआ। **–णी**–पु० गाँवका मुखिया; प्रधान, नायक; हज्जाम; विष्णु; कामी पुरुष, लंपट। स्त्री० वेश्या; नीलका पौधा। **–तक्ष**–पु० गाँवका बढ़ई। **–देव,–देवता**–पु० गाँवका अधिष्ठाता; गाँवकी रक्षा करनेवाला, देवता। **–द्रोही(हिन्)**–वि०, पु० ग्रामके नियमका भंग, ग्रामपंचायतके निर्णयका उल्लंघन करनेवाला। **–धर्म**–पु० मैथुन, स्त्री-संग। **–पंचायत**–स्त्री० (हिं०) गाँवके झगड़े सुनने और स्वास्थ्य, सफाई आदिका प्रबंध करनेवाला मंडल। **–पाठशाला**–स्त्री० गाँवकी पाठशाला, देहाती मदरसा। **–पाल**–पु० गाँवका रक्षक; ग्राम-रक्षक सेना। **–प्रेष्य**–पु० गाँवका दूत या सेवक। **–मुख**–पु० गाँवका बाजार। **–मृग**–पु० कुत्ता। **–याजक,–याजी(जिन्)**–पु० गाँवका पुरोहित; पुजारी। **–युद्ध**–पु० गाँवका दंगा, बलवा, मारपीट। । **–रथ्या**–स्त्री० गाँवकी गली। **–वास**–पु० गाँवमें वसना। **–वासी(सिन्)**–वि०, पु० गाँवमें बसनेवाला, देहाती। **–संकर**–पु० गाँवकी नाली, मोरी। **–संघटन**–पु० ग्राम-जीवनको संघटित, व्यवस्थित करनेका कार्य। **–सिंह**–पु० कुत्ता। **–सुधार**–पु० (हिं०) ग्रामके संपूर्ण जीवनको सुधारनेका काम। **–सेवक**–पु० ग्रामवासियोंकी सेवा, ग्राम-जीवनके सुधारका कार्य करनेवाला। **–हासक**–पु० भगिनीपति, बहनोई।

ग्राम–पु० (अं०) एक अंग्रेजी तौल (लगभग १ माशा)।

ग्रामटिका–स्त्री० (सं०) गया-बीता गाँव, खराब वस्ती।

ग्रामांत–पु० (सं०) गाँवकी सीमा, सिवाना; गाँवका बस्तीके बाहरका भाग।

ग्रामांतर–पु० (सं०) दूसरा गाँव।

ग्रामाचार–पु० (सं०) गाँवकी प्रथा, रीति।

ग्रामाधान–पु० (सं०) आखेट, शिकार; छोटा गाँव।

ग्रामाधिकृत, ग्रामाधिप, ग्रामाध्यक्ष–पु० (सं०) गाँवका मुखिया।

ग्रामिक–वि० (सं०) देहाती, गँवार; असभ्य; गीत-वाद्य-विषयक। पु० ग्रामके रक्षार्थ नियुक्त अधिकारी, मुखिया; ग्रामवासी।

ग्रामिणी–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा।

ग्रामी(मिन्)–वि० (सं०) गाँवका; गँवार; कामी, विषयी। पु० ग्रामस्वामी; ग्रामवासी।

ग्रामीण–वि० (सं०) ग्रामसंबंधी; गँवार; गाँवका। (स्त्री० 'ग्रामीणा'।) पु० ग्रामवासी; कुत्ता; कौवा; शूकर।

ग्रामीणा–स्त्री० (सं०) ग्रामीण स्त्री; पालकका साग; नीलका पौधा।

ग्रामीय–वि० (सं०) गाँवका। पु० ग्रामवासी।

ग्रामेय–वि० (सं०) गाँवमें जनमा हुआ; गँवार। (स्त्री० 'ग्रामेयी'।) पु० ग्रामवासी।

ग्रामेयी–स्त्री० (सं०) वेश्या।

ग्रामेश, ग्रामेश्वर–पु० (सं०) गाँवका प्रधान।

ग्रामोफोन–पु० (अं०) एक यंत्र जिसमें शब्दध्वनि भरकर जब चाहे प्रायः ठीक उसी रूपमें सुन सकते हैं।

ग्राम्य–वि० (सं०) ग्राम-संबंधी; ग्रामीण; मूर्ख, अनाड़ी; असभ्य, अशिष्ट; अश्लील (शब्द); पालतू (पशु); मैथुनसंबंधी। पु० काव्यका एक दोष जिसमें ग्राम्य शब्दोंका प्राधान्य हो; अशिष्ट, अश्लील शब्द; ग्रामधर्म; देहाती भोजन; पालतू कुत्ता; एक रतिबंध; मेष राशि; वृष राशि; स्वीकृति। **–कंद**–पु० स्थल-कंद। **–कर्कटी**–स्त्री० कुष्मांड। **–कर्म(न्)**–पु० ग्रामवासीका पेशा; स्त्रीप्रसंग। **–कुंकुम**–पु० बर्रे, कुसुंभ। **–दोष**–पु० काव्य या रचनामें गँवारू शब्द अधिक आना। **–धर्म**–पु० मैथुन। **–पशु**–पु० कौवा, कुत्ता, सूअर आदि। **–बुद्धि**–वि० गँवार, अनाड़ी। **–मद्गुरिका**–स्त्री० शृंगी मछली। **–मृग**–पु० कुत्ता। **–वल्लभा**–स्त्री० वेश्या, पालकका साग। **–सुख**–पु० मैथुन, स्त्री-प्रसंग।

ग्राम्या–वि०, स्त्री० (सं०) गाँवमें रहनेवाली; गँवार (स्त्री)। स्त्री० तुलसी; नीलका पौधा।

ग्राम्याश्व–पु० (सं०) गधा।

ग्राव*–पु० दे० 'ग्रावा'; ओला।

ग्रावा(वन्)–पु० (सं०) पत्थर; पहाड़; बादल। वि० कड़ा, सख्त।

ग्रास–पु० (सं०) कौर, निवाला; आहार निगलना; ग्रसना; आहार; चंद्र या सूर्यका ग्रस्तांश; अस्पष्ट उच्चारण; ग्रहण। **–कारी(रिन्)**–वि० ग्रसने, निगलनेवाला। **–शल्य**–पु० गलेमें चुभ, अटक जानेवाली चीज (मछलीका काँटा आदि)।

ग्रासना*–स० क्रि० दे० 'ग्रसना'।

ग्राह–पु० (सं०) ग्रहण; पकड़; आग्रह; मगर, घड़ियाल; कैदी; समझ, बोध; निश्चय; रोग; बड़ा मत्स्य; कार्यारंभ। वि० पकड़नेवाला; लेनेवाला।

ग्राहक–वि० (सं०) ग्रहण करनेवाला; मलरोधक। (स्त्री० 'ग्राहिका'।) पु० सौदा मोल लेनेवाला, खरीदार; कद्र करनेवाला; बाज पक्षी; पुलिस अफसर; विष-चिकित्सक।

ग्राहकयंत्र, ग्राहकांग–पु० (रिसीव्हर) टेलीफोन, रेडियो या तारकी वाणी अथवा ध्वनि ग्रहण करनेवाला यंत्र–वह यंत्र या यंत्रका भाग जिसकी सहायतासे दूरकी वाणी अथवा ध्वनि सुनाई दे सके; टेलीफोनका चोंगा।

ग्राहकी–स्त्री० ग्राहकों द्वारा की गयी खरीद 'अच्छी ग्राहकीसे गेंहूका भाव ऊँचा हो गया।'

ग्राहित्र–पु० दे० 'ग्राहकयंत्र'।

ग्राहिका–स्त्री० (सं०) त्रिवलीकी तीसरी वली।

ग्राही(हिन्)–वि० (सं०) ग्रहण करनेवाला; पकड़नेवाला; कब्ज

करनेवाला; ग्राहकयंत्र, ग्राहित्र। (स्त्री० 'ग्राहिणी'।)

ग्राहुक–वि० (सं०) ग्रहण करनेवाला, ग्राहक।

ग्राह्य–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; पकड़ने, लेने, समझने योग्य; मान्य।

ग्रिह*–पु० गृह, घर–'तुम देख्याँ विन कल न पड़त है ग्रिह अँगणो न सुहाई रे'–मीरा।

ग्रीक–वि० (अं०) ग्रीस, यूनान देशका। पु० ग्रीस-निवासी यूनानी। स्त्री० ग्रीस देशकी भाषा।

ग्रीखम*–पु० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीवा–स्त्री० (सं०) गरदन, गला। **–घंटा**–पु० वैल आदिके गलेसे लटकनेवाली घंटी।

ग्रीवालिका–स्त्री० (सं०) ग्रीवा।

ग्रीवी(विन्)–वि० (सं०) लंबी, सुंदर गरदनवाला। पु० ऊँट।

ग्रीषम*–पु० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीष्म–पु० (सं०) गरमीका मौसम (वैशाख, ज्येष्ठ या ज्येष्ठ, आषाढ़), गरमी, निदाघ। **–काल**–पु० गरमीके दिन। **–कालीन**–वि० ग्रीष्म ऋतु-संवंधी। **–जा,–भवा**–स्त्री० नवमल्लिका, नेवारी। **–धान्य**–पु० गरमीमें होनेवाला अनाज। **–पुष्पी**–स्त्री० करुणी पुष्पवृक्ष। **–प्रधान**–वि० जहाँ गरमी अधिक पड़ती हो। **–सुंदरक**–पु० शाकविशेष। **–हास**–पु० वुढ़िया-का सूत।

ग्रीष्मावकाश–पु० (समर वैकेशन) (शिक्षण-संस्थाओं, न्यायालयों आदिमें होनेवाली) गर्मीकी लम्बी छुट्टियाँ।

ग्रीष्मी–स्त्री० (सं०) नेवारी, नवमल्लिका।

ग्रीष्मोद्भवा–स्त्री० (सं०) नवमल्लिका।

ग्रेजुएट–पु० (अं०) जो किसी विश्वविद्यालयकी उपाधि-परीक्षा पास कर चुका हो, बी. ए. पास व्यक्ति; स्नातक।

ग्रेट–वि० (अं०) वड़ा, महान्। **–ब्रिटेन**–पु० इंगलैंड, स्काटलैंड और वेल्सका संयुक्त नाम।

ग्रेन–पु० (अं०) एक अंग्रेजी तौल (आधी रत्ती)।

ग्रेह*–पु० गेह।

ग्रेही*–वि० घरगृहस्थीवाला, संसारी–'जाका गुरु ग्रेही अहै, चेला ग्रेही होय'–साखी।

ग्रेव–वि० ग्रीवा संवंधी। पु० हार।

ग्रैवेय, ग्रैवेयक–वि० (सं०) गला-संबंधी। पु० हार; हाथीके गलेमें पहनायी जानेवाली शृंखला; दे० 'कंठवंध'।

ग्रैष्म, ग्रैष्मिक–वि० (सं०) ग्रीष्म-संवंधी।

ग्रैष्मक–वि० (सं०) गरमीमें वोया जानेवाला; गरमीमें चुकाया जानेवाला।

ग्लपन–वि० (सं०) थकाने या क्लांत करनेवाला। पु० मुरझाना; थकान या तनाव दूर करना।

ग्लपित–वि० (सं०) क्लांत; शिथिल।

ग्लान–वि० (सं०) रोगग्रस्त; थका हुआ; खिन्न, ग्लानियुक्त।

ग्लानि–स्त्री० (सं०) थकावट, शिथिलता; अपने किसी कार्यपर उत्पन्न खेद, पश्चात्ताप; अनुत्साह; एक संचारी भाव।

ग्लास–पु० (अं०) शीशा; दे० 'गिलास'।

ग्लूकोस–पु० (ग्लूकोस) शर्कराका विशेष रूप जो शहद और फलों में पाया जाता है। मानव शरीरमें यह सीधे ही ऊर्जा प्रदान करता है।

ग्लौ–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; पृथ्वी।

ग्वार–स्त्री० कुलथी। * पु० ग्वाल।

ग्वारनट–पु० एक वढ़िया रेशमी कपड़ा।

ग्वारपाठा–पु० घीकुआर।

ग्वारिन*–स्त्री० दे० 'ग्वार'; दे० 'ग्वालिन'।

ग्वारी–स्त्री० दे० 'ग्वार'; ग्वालिन।

ग्वाल–पु० दे० 'ग्वाला'। **–गीत**–पु० पशु चराते समय गाये जानेवाले गीत, गोपगीत (पैस्टोरल सांग)। **–बाल**–पु० अहीरोंके लड़के, कृष्णके वालसखा।

ग्वालककड़ी–स्त्री० जंगली चिचड़ा।

ग्वाला–पु० गोप, अहीर; एक छंद।

ग्वालिन–स्त्री० अहीरिन; ग्वार; एक छोटा, डेढ़ इंच लंबा वरसाती कीड़ा, जिसके वहुत-सी टाँगें होती हैं। गिजाई; एक तरकारी।

ग्वाह*–पु० दे० 'गवाह'।

ग्वैँठना*–स० क्रि० ऐंठना, मरोड़ना, टेढ़ा करना।

ग्वैँठा–पु० उपला। * वि० ऐंठा हुआ, टेढ़ा।

ग्वैँड़–स्त्री० गाँवका सीमांत; सीमा–'सुंदरताकी ग्वैंड़ ऐंड़ सो पैंड़ चलैया'–रत्नाकर।

ग्वैँड़ा*–पु० दे० 'गोइँड़ा'।

ग्वैँड़े†–अ० निकट, पास।

घ

घ–देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान जिह्वा-मूल या कंठ।

घँघरा–पु० दे० 'घघरा'।

घँघरी–स्त्री० दे० 'घघरी'।

घँघोना*–स० क्रि० दे० 'घँघोरना'।

घँघोरना, घँघोलना–स० क्रि० पानीको हिलाकर उसमें मिट्टी आदि घोलना; पानीको गंदा करना।

घंट–पु० प्रेतक्रियामें पीपलसे लटकाया जानेवाला घड़ा; घंटा; (सं०) एक व्यंजन; शिव।

घंटक, घंटाक–पु० (सं०) एक क्षुप।

घंटा–पु० (सं०) काँसेका गोल पट्ट जिसे मुँगरीसे पीटकर पूजनमें या समयकी सूचनाके लिए वजाते हैं, घड़ियाल; मंदिरों आदिमें लगाया जानेवाला काँसेका लंगरदार बाजा जो लंगर हिलानेसे बजता है; घंटा वजनेका शब्द; (हिं०) ६० मिनट या २॥ घड़ीका कालमान; ठेँगा (कुछ नहीं)। **–करन**–पु० (हिं०) एक घास। **–कर्ण**–पु० शिवका एक गण। **–घर**–पु० ऊँची मीनार जिसमें इतनी ऊँचाईपर धरम घड़ी लगी हो कि बहुत दूरसे दिखाई दे और उसके घंटा बजानेकी आवाज सुनाई दे। **–ताड**–पु० घंटा बजानेवाला, घड़ियाली। **–नाद**–पु० घंटेकी ध्वनि; कुवेरका एक मंत्री। **–पथ**–पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क (कौटिल्यके मतसे इसकी चौड़ाई १० धनु होनी चाहिये)। **–पाटलि**–पु० मुष्कक नामक वृक्ष। **–बीज**–पु० जमालगोटेका पौधा; उसका वीज। **–रव, स्वन**–पु० घंटेका शब्द; एक राग। **–रवा**–स्त्री० वृक्षविशेष। **–वादक**–पु० घंटा वजानेवाला। **–शब्द**–पु० घंटेकी आवाज; काँसा। मु०**–हिलाना**–ऐसा काम करना जिससे कुछ हाथ न लगे।

घंटिक–पु० (सं०) घड़ियाल, मगर।

घंटिका–स्त्री० (सं०) छोटी घंटी; घुँघरू; उपजिह्वा; रहँटकी घड़िया।

घंटी–स्त्री० बहुत छोटा घंटा; छोटा उपकरण जिसे दवाने, घुमानेसे 'टुनटुन' जैसी आवाज हो (मेजपर रखनेकी या साइकिलकी–); घुँघरू; घंटीकी आवाज; जीभकी जड़के ऊपर लटकनेवाला मांसखंड, कौआ; गलेकी वह छोटी हड्डी जो आगेकी ओर निकली रहती है; † लुटिया।

घंटी(टिन्)–वि० (सं०) घंटायुक्त; जिसमें घंटियाँ लगी हों; घंटेकी तरह वजनेवाला। पु० शिव।

घंटील–स्त्री० चारेके काम आनेवाली एक घास।

घंटु–पु० (सं०) ताप; प्रकाश; गजघंटा।

घंड–पु० (सं०) मधुमक्खी।

घई*–स्त्री० भँवर'...परयो मानो घोर घई है'–गीता०; प्रवाह, थूनी। वि० बहुत गहरा।

घघरबेल–स्त्री० वृक्षमें लगनेवाली एक तरहकी बेल, बंदाल।

घघरा–पु० स्त्रियोंका बड़े घेरेवाला एक पहनावा, लहँगा।

घघरी–स्त्री० छोटा लहँगा।

घट–पु० (सं०) घड़ा, कलसा; पिंड, देह; कुंभ राशि; हृदय,

अंतर; कुंभक; हाथीका कुंभ, २० द्रोणकी तौल; किनारा। **–कंचुकी**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक अनैतिक रीति। **–कर्कट**–पु० एक ताल। **–कर्ण**–पु० कुंभकर्ण। **–कर्पर**–पु० एक कवि जो विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमें थे; घटखंड, ठीकरा। **–कार**–पु० कुम्हार। **–ग्रह**–पु० पानी भरनेवाला। **–ज**–पु० कुंभज ऋषि, अगस्त्य। **–दासी**–स्त्री० कुटनी। **–पर्यसन**–पु० प्रायश्चित्त न करनेवाले पतित जनके ज्ञातिजनों द्वारा उसके जीवित रहते ही किया जानेवाला उसका प्रेतकर्म। **–पल्लव**–पु० घड़े और पत्ते जैसे सिरेवाला खंभा। **–योनि,–संभव**–पु० अगस्त्य। – **–स्थापन**–पु० पूजनमें किसी देवताके आवाहनार्थ घटकी स्थापना। **मु०–पट करना**–न्याय, वेदांतकी चर्चा करना या वहस करना।

घट–स्त्री० कमी। **–बढ़**–स्त्री० कमी-वेशी (संज्ञारूपमें 'घट'का प्रयोग इस समासमें ही होता है)। वि० कम-ज्यादा।

घटक–वि० (सं०) करानेवाला, साधक; मिलानेवाला; योजक। पु० व्याह तै करानेवाला, विचुआ, दलाल; वह वस्तु जिसके मेलसे कोई पदार्थ वना हो, अवयव-भूत वस्तु, वे अंग, दल या हिस्से जिनके मेलसे कोई यौगिक वस्तु या संयुक्त दल वना हो। (फैक्टर); वंशावली सुनानेवाला; वह वृक्ष जिसमें विना फूल लगे फल लगे; घड़ा।

घटकना*–स० क्रि० पीना, गलेके नीचे उतारना।

घटका–पु० आसन्नमरण व्यक्तिकी साँसका रुक-रुककर और घवराहटके साथ चलना, कफसे गलेका रुद्ध हो जाना (लगना)।

घटती–स्त्री० कमी; अवनति; हेठी, अप्रतिष्ठा।

घटन–पु० (सं०) होना, वनना; मिलाना, जोड़ना; गढ़ना; गति; कलह।

घटना–स्त्री० (सं०) जो वात हो या घटित हो, व्यापार, वाकिया; रचना; योजना; अचानक होनेवाली वात, हादिसा; समूहीकरण; गजदल। **–क्रम**–पु० घटनाओंका सिलसिला। **–चक्र**–पु० घटनाओंका सिलसिला, घटना-परंपरा।

घटना–अ० क्रि० घटित होना; लगना–'सपने नृप कहँ घटै विप्र वध...'–विनयपत्रिका। उक्ति या वचनका यथार्थ सिद्ध होना; काम आना; कम होना; छीजना; तौलमें कम होना; (किसी चीजकी) कमी, अभाव होना (उन्हें क्या घटा है)। **मु०–बढ़ना**–कम-वेश होना; छोटा-वड़ा होना। **घट-वढ़कर**–कुछ कमी-वेशी करके।

घटनावली–स्त्री० (सं०) घटनाओंका सिलसिला, समूह।

घटवाई*–वि० घाटवाला, घाटका कर उगाहनेवाला; रुकावट डालनेवाला–'आवन जान न पावत कोऊ तुम मगमें घटवाई'–सू०। स्त्री० घटवाने, कम कराने, की क्रिया या उजरत।

घटवाना–स० क्रि० 'घटाना'का प्रे०।

घटवार–पु० घाटका ठेकेदार, घाटकी नाव खेनेवाला; घाटिया।

घटवारिया, घटवालिया–पु० घाटिया; केवट; तीर्थका पंडा।

घटवाह–पु० घाटका ठेकेदार, घाटका महसूल लेनेवाला।

घटहा–पु० घाटका ठेकेदार; आर-पार जाने-आनेवाली वड़ी नाव।

घटा–स्त्री० (सं०) प्रयत्न; समूह; गोष्ठी; युद्ध आदिके लिए एकत्र हथियारोंका समूह; एक तरहका ढोल; संतरा; घटना; (हिं०) जलभरे काले वादलोंका समूह, मेघमाला। **मु०–उठना**–मेघमालाका उमड़ना। **–घिरना,–छाना**–आकाशका वादलोंसे ढँक जाना।

घटाई*–स्त्री० घटने या घटानेकी क्रिया या उजरत; अप्रतिष्ठा, मानहानि।

घटाकाश–पु० (सं०) आकाशका वह अंश जो घड़ेके भीतर आ जाय, घटसे अवच्छिन्न आकाश।

घटाग्र–पु० (सं०) वास्तुस्तंभका आठवाँ भाग (जिसमें देवताका आवाहन किया जाता है)।

घटाटोप–पु० (सं०) गाड़ी, पालकी आदिका ओहार जो उसे पूरी तरह ढक ले; कोई ढक लेनेवाली वस्तु, सामान; घनघटा, आडंवर। **–अंधकार,–अंधेरा**–पु० चारों दिशाओंको ढक लेनेवाला, गहरा अंधकार।

घटाना–स० क्रि० कम करना; वाकी निकालना; मान-प्रतिष्ठामें गिराना।

घटाव–पु० घटी, कमी; अवनति; वाढ़का घटना।

घटिघम–पु० (सं०) कुम्हार।

घटिक–पु० (सं०) घड़े, घड़नईके सहारे नदी पार करने-करानेवाला; घड़ियाल वजानेवाला; नितंव।

घटिका–स्त्री० (सं०) २४ मिनटका समय, घड़ी; छोटा घड़ा; एक छोटा घड़ा जिससे दिनकी घड़ियाँ मालूम की जाती थीं; घुटना। **–यंत्र**–पु० दे० 'घटीयंत्र'। **–शतक**–पु० घड़ी भरमें १०० श्लोक वनानेवाला या सौ काम करनेवाला व्यक्ति। **–स्थान**–पु० सराय, चट्टी।

घटिकानुक्रमसे–अ० (क्लाक वाइज) घड़ीका काँटा जिस तरह घमता है, उस तरह, दक्षिणावर्त्त रूपसे।

घटिकावधान–पु० (सं०) दे० 'घटिकाशतक'।

घटित–वि० (सं०) जो हुआ हो; जोड़ा, मिलाया हुआ; जो ठीक उतरा हो; रचित।

घटिताई*–स्त्री० घटित होनेकी क्रिया; कमी, त्रुटि।

घटिया–वि० जो वढ़िया न हो, खराव, निकृष्ट।

घटिहा–वि० धोखा देनेवाला, विश्वासघाती; नीच; मक्कार; लंपट।

घटी–स्त्री० कमी; घाटा, नुकसान; (सं०) २४ मिनटका कालमान, घड़ी; छोटा घड़ा, कलसी; रहँटकी घड़िया; समय जाननेके लिए काममें लाया जानेवाला जलपात्र। **–कार**–पु० कुम्हार। **–ग्रह,–ग्राह**–पु० पानी भरनेवाला। **–यंत्र**–पु० घड़ी, कालज्ञापक यंत्र; रहँट।

घटी(टिन्)–पु० (सं०) कुंभ राशि; शिव। **–(टि)घट**–पु० शिव।

घटका*–पु० घटोत्कच।

घटोत्कच–पु० (सं०) हिडिंबा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न भीमसेनका पुत्र।

घटोद्भव–पु० (सं०) अगस्त्य मुनि।

घटोर*–पु० मेढ़ा।

घट्ट*–स्त्री० घटा–'सुभट-ठट्ट घन-घट्ट सम, मर्दहिं रच्छन तुच्छ'।

घट्ट–पु० (सं०) घाट; चुंगी या महसूल लेनेकी जगह; क्षुब्ध करना। **–कर**–पु० (फेरी टॉल) नाव द्वारा या पुलपरसे नदी पार करने या सामान ले जाने आदिके कारण घाटपर लगनेवाला कर, घाटकर, घाटशुल्क। **–कुटी**–स्त्री० चुंगीकी चौकी। **–जीवी(विन्)**–वि० घाटके महसूलसे या घटहा नावके खेवेसे गुजर करनेवाला। पु० एक वर्णसंकर जाति।

घट्टन–पु० (सं०) हिलाना; चलाना (चाशनी आदि); घोंटना; संघटन।

घट्टना–स्त्री० (सं०) हिलाना, चलाना; रगड़ना; पेशा, वृत्ति।

घट्टा–पु० घटी; घाटा; छिद्र, दरार; घट्ठा; *घटा।

घट्टित–वि० (सं०) रगड़ा हुआ, चिकनाया हुआ; दवाया हुआ; हिलाया, चलाया हुआ; निर्मित। पु० नृत्यका एक ढंग।

घट्ठा–पु० लगातार रगड़ लगनेसे शरीरपर पड़नेवाला चिह्न। **मु०–खुलना**–फट जाना, दरार होना। **–पड़ना**–आदत पड़ना, अभ्यास होना।

घड़घड़–पु० वादलके गरजने, गाड़ी आदिके चलनेकी आवाज।

घड़घड़ाना–अ० क्रि० 'घड़-घड़' आवाज होना, निकलना।

घड़घड़ाहट–स्त्री० 'घड़-घड़' शब्द।

घड़त–स्त्री० दे० 'गढ़त'।

घड़नई–स्त्री० वाँसके ढाँचेमें घड़े वाँधकर बनायी हुई कामचलाऊ नाव।

घड़ना–स० क्रि० गढ़ना।

घड़नैल–स्त्री० दे० 'घड़नई'।

घड़ा–पु० धातु या मिट्टीका कलसा,-पानी रखनेका बरतन। **मु० घड़ों पानी पड़ जाना**–शर्मसे गड़ जाना, वहुत लज्जित होना।

घड़ाई–स्त्री० दे० 'गढ़ाई'।

घड़ाना–स० क्रि० दे० 'गढ़ाना'।

घड़िया–स्त्री० मिट्टीका बना घड़ेके आकारका छोटा बरतन, कुल्हिया; सोनारोंकी कुल्हिया या घरिया जिसमें सोना-चाँदी

गलाते हैं; रहँटमें लगी हुई ठिलिया; शहदका छत्ता; गर्भाशय ।

घड़ियाल–पु० घंटा, पहर आदि बतानेके लिए या पूजनके समय बजाया जानेवाला घंटा; छिपकलीकी शकलका एक हिंसक बड़ा जलजंतु, ग्राह । **–का कटोरा**–एक तरहका कटोरा जिससे पुराने समयमें घड़ीका काम लेते थे (उसकी पेंदीमें एक छोटा छेद बना रहता था । पानीकी नाँदमें छोड़ देनेसे घड़ी या घंटेभरमें उसमें इतना पानी आ जाता था कि वह डूब जाय) ।

घड़ियाली–पु० घड़ियाल बजानेवाला । स्त्री० पूजाके समय बजानेका एक तरहका घंटा, झालर ।

घड़ी–स्त्री० ६० पल या २४ मिनटका कालमान, घटी, दंड; समय, वक्त; अवसर; घंटा बतानेवाला एक यंत्र, 'जेबघड़ी' आदि; पानी, बिजली आदिके खर्चके परिमाणका सूचक यंत्र (मीटर); कपड़ों आदिकी तह । **–घड़ी**–अ० बार-बार; थोड़ी-थोड़ी देर बाद । **–भर**–अ० थोड़ी देर, क्षणभर । **–साज़**–पु० घड़ीकी सफाई, मरम्मत करनेवाला । **–साज़ी**–स्त्री० घड़ीसाजका काम, पेशा । **मु० घड़ियाँ गिनना**–बड़ी उत्कंठाके साथ प्रतीक्षा करना; आसन्नमरण होना । **–टलना**–समय बीतना, किसी बातका नियत काल, मुहूर्त टलना । **–में घड़ियाल है**–जिंदगीका भरोसा नहीं, छनभरमें न जाने क्या हो जाय । **–साइत का मेहमान**–थोड़ी देरका मेहमान, आसन्नमरण ।

घड़ीदिआ–पु० (खत्रियोंमें) मृत व्यक्तिके घर मृत्युके स्थानपर दस दिनोंतक रखा जानेवाला घड़ा जिसके पेंदेमें पानी चूनेके लिए छोटासा सूराख रहता है और मुँहपर दिया जलाया जाता है ।

घड़ोला–पु० छोटा घड़ा ।

घड़ौंची–स्त्री० घड़ा रखनेके लिए बना हुआ चबूतरा या तिपाई ।

घढ़ना*–स० क्रि० दे० 'घड़ना' ।

घतिया–पु० घाती, धोखा देनेवाला ।

घतियाना–स० क्रि० घातमें लाना; छिपाना ।

घन–वि० (सं०) घना, ठस; ठोस; अभेद्य; निविड़; दृढ़; गंभीर; निरंतर; पूर्ण; शुभ; विशाल । पु० मेघ, बादल; लुहारका बड़ा हथौड़ा; किसी अंकको उसी अंकसे दो बार गुणा करनेसे उपलब्ध गुणनफल, 'क्यूब'; लंबाई-चौड़ाई-मोटाई, विस्तार; दृढ़ता; घनत्व; वेदमंत्रोंके पाठकी एक विशेष विधि; धातुका बना झाँझ-करताल जैसा एक बाजा; घंटा; लोहा; त्वचा, छाल; शरीर; मध्यम नृत्य; श्लेष्मा; समूह; अभ्रक; अंधकार; * कपूर । **–कफ**–पु० ओला । **–काल**–पु० वर्षा ऋतु । **–कोदंड**–पु० इंद्रधनुष् । **–क्षेत्र**–पु० लंबाई, चौड़ाई और गहराईका विस्तार । **–गरज**–स्त्री० (हिं०) बादलकी गरज; एक पौधा; एक तरहकी तोप । **–गर्जित**–पु० बादलोंका गर्जन । **–गोलक**–पु० सोने और रूपेकी मिलावट । **–घटा**–स्त्री० बादलोंका जमाव; गहरी काली घटा । **–घोर**–वि० बहुत घना; जबरदस्त; गहरा; भयंकर । पु० डरावनी गड़गड़ाहट, आवाज । **–०घटा**–स्त्री० (हिं०) काली डरावनी घटा । **–चक्कर**–वि० (हिं०) मूर्ख, नासमझ; अस्थिरमति; आवारागर्द । पु० एक आतिशबाजी, चरखी; चक्कर; सूर्यमुखीका पेड़ या फूल । **–ज्वाला**–स्त्री० बिजली । **–ताल**–पु० करताल; चातक पक्षी । **–तोल**–पु० पपीहा । **–द्रुम**–पु० विकंटक वृक्ष । **–धातु**–स्त्री० लसीका । **–नाद**–पु० मेघगर्जन; मेघनाद । **–नाभि**–पु० धूम । **–पत्र**–पु० पुनर्नवा । **–पद**–पु० घनमूल । **–पदवी**–स्त्री० आकाश । **–पाषंड**,**–प्रिय**–पु० मोर । **–फल**–पु० लंबाई-चौड़ाई-मोटाईका गुणनफल; विकंटक वृक्ष । **–बान**–पु० (हिं०) एक तरहका बाण जो धुएँसे अँधेरा कर देता है 'चले चंदबान, घनबान औ कुहुकबान'–काव्यांग कौ०, ४५ । **–बेल***–वि० जिसपर घने बेल-बूटे बने हों । **–बेली**–स्त्री० बेलाका एक भेद । **–मूल**–पु० घन राशिका मूल अंक । **–रव**–पु० मेघगर्जन । **–रस**–पु० अर्क; जल; कपूर; मोरट नामक पौधा । **–रूपा**–स्त्री० मिसरी । **–वर**–पु० चेहरा, मुखड़ा । **–वर्ग**–पु० घनका वर्ग । **–वर्धनीय**–वि० (मैलियेबिल) (घनसे) पीटनेपर जो चपटा होकर बढ़ जाय, घातवर्धनीय । **–वर्धनीयता**–स्त्री० (मैलियेबिलिटी) किसी ठोसका पीटनेपर चपटा होकर बढ़ जानेका गुण, घातवर्धनीयता । **–वल्लिका**–स्त्री० बिजली । **–वल्ली**–स्त्री० अमृतस्रवा लता । **–वास**–पु० कुष्मांड । **–वाह**–पु० वायु; (हिं०) घन चलानेवाला । **–वाही**–स्त्री० (हिं०) घनसे पीटनेका काम; वह स्थान जहाँ घन चलानेवाला खड़ा होता है । **–वाहन**–पु० इंद्र; शिव । **–श्याम**–वि० जलभरे बादल जैसा काला । पु० काला बादल; कृष्ण; राम । **–श्रेणी**–स्त्री० मेघमाला । **–सार**–पु० जल; कपूर; एक वृक्ष । **–स्वन**–पु० मेघगर्जन; तंडुलीय शाक । **–हस्त**–पु० एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा क्षेत्र या एक हाथ मोटा पिंड; अन्नादि नापनेका एक मान ।

घनक*–स्त्री० गर्जन, गड़गड़ाहट; चोट, प्रहार–'घनकी घनक घन घंटा घनकत आली'–दीनदयाल ।

घनकना–अ० क्रि० गरजना, आवाज करना ।

घनकारा*–वि० ऊँची आवाज करनेवाला, गरजनेवाला ।

घनघनाना–अ० क्रि० 'घन-घन'की आवाज होना, निकलना ।

घनघनाहट–स्त्री० 'घन-घन'की आवाज ।

घनता–स्त्री० (सं०) घनापन; ठोसपन; दृढ़ता; लंबाई, चौड़ाई और मोटाईका भाव ।

घनत्व–पु० दे० 'घनता'; (डेन्सिटी) प्रति मात्रक आयतनका द्रव्यमान । अतः इसकी नाप 'ग्राम प्रति घन सेमी'में की जाती है ।

$$\text{घनत्व} = \frac{\text{द्रव्यमान}}{\text{आयतन}}$$

घनहर†–पु० दाना भुनानेवाला ।

घनांजनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

घनांत–पु० (सं०) शरत् ऋतु ।

घनांधकार–पु० (सं०) अँधेराकुप्प, निविड़ अंधकार ।

घना–वि० गुंजान, जिसके अवयव पास-पास सटे हों (जंगल, बाल); ठस, गाढ़ा; * बहुत अधिक, अतिशय; दृढ़ । * पु० जंगल, पेड़ोंका समूह । स्त्री० (सं०) माषपर्णी; रुद्रजटा; एक वाद्य ।

घनाकर, घनागम–पु० (सं०) वर्षा ऋतु ।

घनाक्षरी–स्त्री० दंडक छंद, कवित्त ।

घनात्यय–पु० (सं०) इंद्र; बरसनेवाला बादल; मस्त हाथी ।

घनात्यय–पु० (सं०) दे० 'घनांत' ।

घनानंद–पु० (सं०) गद्य काव्यका एक भेद; ब्रजभाषाके एक प्रमुख कवि ।

घनाभय–पु० (सं०) खजूर ।

घनाश्रय–पु० (सं०) आकाश ।

घनिष्ठ–वि० (सं०) बहुत घना; बहुत गाढ़ा; गहरा; बहुत निकटका; अंतरंग (मित्र) ।

घनिष्ठता–स्त्री० (सं०) घनिष्ठ होनेका भाव; गहरी दोस्ती ।

घनीभवन, घनीभाव–पु० (सं०) गाढ़ा, गहरा होना, जमना, ठोस बनना; केंद्रीभूत होना ।

घनीभूत–वि० (सं०) गाढ़ा; गहरा; जमकर ठोस बना हुआ; जो बढ़कर उग्र हो गया हो (–पीडा); केंद्रीभूत । **–खाद्य**–पु० (कंडेंस्ड फूड) किसी प्रकार छोटा या गाढ़ा किया हुआ खाद्यपदार्थ ।

घनेतर–वि० (सं०) तरल ।

घनेरा*–वि० दे० 'घना', बहुत ।

घनोत्तम–पु० (सं०) चेहरा, मुखड़ा ।

घनोदधि–पु० (सं०) एक नरक ।

घनोदय–पु० (सं०) वर्षा ऋतुका आरंभ ।

घनोपल–पु० (सं०) ओला ।

घन्नई†–स्त्री० दे० 'घड़नई' ।

घपचियाना†–अ० क्रि० घबराना; सिटपिटाना; घबराहटमें कर्तव्य स्थिर न कर सकना ।

घपची–स्त्री० दोनों हाथोंसे कसकर पकड़ लेना ।

घपला–पु० अव्यवस्थासे या कार्य करनेके गलत ढंगसे उत्पन्न गड़बड़, गोलमाल ।

घपुआ, घप्पू†–वि० मूर्ख, उल्लू ।

घबड़ाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'घबराना' ।

घबड़ाहट–स्त्री० दे० 'घबराहट' ।

घबराना–अ॰ क्रि॰ अधीर होना; भय, चितासे अस्थिर, उद्विग्न होना; बुद्धिसे काम न लेना; घपचियाना; हक्का-बक्का होना; उतावलीमें होना । स॰ क्रि॰ अस्थिर, अधीर करना; परेशान करना; उबाना; हड़बड़ीमें डालना ।

घबराहट–स्त्री॰ अधीरता, उद्विग्नता; परेशानी; हड़बड़ी ।

घमंका*–पु॰ घूँसा, मुक्का ।

घमंड–पु॰ गर्व, दर्प; शेखी; भरोसा, सहारा ।

घमंडी–वि॰ घमंड करनेवाला, मगरूर; शेखीबाज ।

घम–पु॰ नरम चीजपर कड़ी चीजके गिरनेकी आवाज, घमाका ।

घमक–स्त्री॰ घूँसा इत्यादिके प्रहारका शब्द; चोट ।

घमकना–स॰ क्रि॰ घूँसा मारना । * अ॰ क्रि॰ गरजना, घहराना ।

घमका–पु॰ दे॰ ‘घमाका’; ऊमस–‘. . .होत घमका विषम यों न पातु खरकतु है’–सेनापति ।

घमखोर†–वि॰ घाम सह सकनेवाला ।

घमघमाना–स॰ क्रि॰ लगातार घूँसे मारना । अ॰ क्रि॰ ‘घम-घम’ शब्द होना ।

घमर–पु॰ नगाड़े आदिकी आवाज, गंभीर ध्वनि ।

घमरा–पु॰ भँगरा, भृंगराज ।

घमरौल–स्त्री॰ ऊधम; हल्ला-गुल्ला; गड़बड़ ।

घमस–स्त्री॰ दे॰ ‘घमसा’ ।

घमसा–पु॰ ऊमस; घनापन ।

घमसान–पु॰ घोर युद्ध, भयानक मार-काट (होना, मचना) । **–की लड़ाई**–घोर युद्ध, विकट संग्राम ।

घमाका–पु॰ ‘घम’की आवाज; घूँसे या और किसी भारी आघातका शब्द ।

घमाघम–पु॰ ‘घम-घम’की आवाज; घमाका । अ॰ ‘घम-घम’के साथ ।

घमाघमी–स्त्री॰ दे॰ ‘घमाघम’; मारपीट ।

घमाना†–अ॰ क्रि॰ धूप खाना; धूपकी गरमीसे पकना, पीला हो जाना ।

घमायल–वि॰ घामसे पका हुआ; घाम खाया हुआ ।

घमासान–पु॰ दे॰ ‘घमसान’ ।

घमीला–वि॰ घामसे मुरझाया हुआ ।

घमोई–स्त्री॰ बाँसका एक रोग जिससे उसमें नये कल्ले नहीं निकलते ‘वेणु बंस सुत भयनु घमोई’–रामा॰ ।

घमोय–पु॰ एक पौधा जिसका रस नेत्ररोगकी दवा माना जाता है, भड़भाँड़ ।

घमोरी–स्त्री॰ अन्हौरी, पसीना मरनेसे उत्पन्न होनेवाली छोटी-छोटी फुंसियाँ ।

घर–पु॰ आदमीके रहनेकी जगह, आवास; दीवारसे घिरा और छाया हुआ स्थान, मकान; कमरा; स्थान, ठिकाना; पैतृक वासस्थान; स्वदेश, वतन; कुल, घराना; कार्यालय (तारघर); उत्पत्तिस्थान; जहाँ किसी चीजकी बहुतायत हो; वह स्थान जहाँ घरका-सा आराम, सुपास मिले; कोठा, खाना (चौरस, संदूक, सतरंज आदिका); म्यान, कोश; जन्मकुंडलीमें ग्रहविशेषका स्थान; चौखटा, फ्रेम, किसी चीजके जड़ने, बैठनेका स्थान; छेद; रागका स्थान; घरका माल-असबाब, घर-बार, घरका काम-काज, गृहस्थी; चोट मारनेका स्थान; आँखका गोलक; दाँव । **–गयी**–वि॰, स्त्री॰ जिसका घर उजड़ गया हो, निगोड़ी । **–गिरस्ती,–गृहस्थी**–स्त्री॰ घरका कामकाज । **–घर**–अ॰ हर घरमें, सबके यहाँ । **–घराना**–पु॰ कुल-कुटुंब । **–घाट**–पु॰ रंग-ढंग; ठौर-ठिकाना । **–घाल,–घालन**–वि॰ घर घालने, बिगाड़नेवाला । **–घुसड़ा,–घुसना**–वि॰ जो सदा घरमें घुसा, जनानखानेमें बैठा रहे । **–चित्ता**–पु॰ एक तरहका साँप जो प्रायः घरमें रहता है । **–जँवाई**–पु॰ वह दमाद जिसे सास-ससुर अपने घर रख लें । **–जाया**–पु॰ गुलाम, गृहदास । **–जुगत**–स्त्री॰ घर-गृहस्थीका ब्योंत, प्रबंध । **–जोत**–स्त्री॰ निजकी खेती, खुदकाश्त । **–झँकनी**–वि॰ स्त्री॰ जो अपने घर न रहकर पड़ोसियोंके घरमें घूमती रहे । **–दासी**–स्त्री॰ गृहिणी, पत्नी । **–द्वार**–पु॰ घर, वासस्थान; घरकी चीज-वस्तु, माल-असबाब; गृहस्थी । **–द्वारी**–स्त्री॰ घरपीछे लिया जानेवाला कर । **–पत्ती**–स्त्री॰ घरपीछे लगाया जानेवाला चंदा । **–फोड़नी**–वि॰ स्त्री॰ घरमें झगड़ा लगानेवाली । **–फोरी***–वि॰ स्त्री॰ दे॰ ‘घरफोड़नी’ । **–बसा**–वि॰ दे॰ ‘घर-घुसना’ । पु॰ उपपति । **–बसी**–स्त्री॰ उपपत्नी । वि॰ स्त्री॰ सौभाग्यवती; घर बसानेवाली; घरका नाश करनेवाली (व्यंग्य) । **–बार**–पु॰ घर, वासस्थान; गृहस्थी; बाल-बच्चे; घरकी चीज-वस्तु, माल-असबाब । **–बारी**–पु॰ बालबच्चोंवाला, गृहस्थ । **–बारू**–पु॰ दे॰ ‘घरबारी’ । **–बैठे**–अ॰ बिना काम किये । **–बात***–स्त्री॰ घरका सामान, चीज-वस्तु । **–वाला**–पु॰ गृहस्वामी, पति । **–वाली**–स्त्री॰ गृहस्वामिनी, गृहिणी, पत्नी । **–हाई***–वि॰ स्त्री॰ घरमें कलह कराने, घर बिगाड़नेवाली; घरकी बुराई फैलाने, बदनामी करानेवाली, चुगलखोर । मु॰–**आबाद होना**–दे॰ ‘घर बसना’ । **–उजड़ना**–घरका तबाह होना, घरके धन-जनका नाश होना; पत्नीका मर जाना । **–उठना**–घर बनना; घरपर तबाही आना । **–करना**–अपने लिए जगह निकालना– बसना; घर बनाना । **–का**–अपने घरका, कुटुंबका (आदमी); अपना, निजका; आपसका; स्वजनोंके बीचका; पति, घरवाला । **–का अच्छा**–खुशहाल । **–का आँगन हो जाना**–खँडहर हो जाना; संतान उत्पन्न होना । **–का उजाला**–घरभरका प्यारा, बहुत सुंदर (बेटा); घरकी शोभा, समृद्धिका कारण । **–का काटे खाना**–घरमें तनिक भी जी न लगना, घरका भयानक लगना । **–का घरौना करना**–सत्यानास करना । **–का चिराग़**–दे॰ ‘घरका उजाला’ । **–का न घाटका**–जो कहींका न हो; निकम्मा । **–का बोझ उठाना या सँभालना**–घरका कामकाज देखना, घर-बार सँभालना । **–का भेदिया,–का भेदी**–घरके सब भेद जाननेवाला । **–का मर्द,–का शेर**–जो घरमें ही बहादुरी दिखा सके, गेहेशूर । **–का रास्ता**–आसान काम । **–का रास्ता लेना**–चल देना, सिधारना; घरको वापस जाना । **–की**–घरवाली, स्त्री, पत्नी । **–की खेती**–अपने यहाँ पैदा होनेवाली चीज; अपना माल । **–की बात**–घरका मामला; स्वजनोंसे संबंध रखनेवाली बात; घरका भेद । **–की मुर्गी**–घरका लायक, पर बेकदर आदमी; पत्नी । **–की मुर्गी दाल या साग बराबर**–घरकी अच्छी चीजकी भी कद्र नहीं होती । **–के**–पति, घरवाला । **–के घर–घर** ही घरमें; अंदर ही अंदर । **–के घर रहना**–किसी सौदे या रोजगारमें न घाटा होना, न नफा । **–के जाले बुहारना**–घर-घर फिरना, भटकना । **–के लोग**–कुटुंबी; स्त्री-बच्चे । **–घरका हो जाना**–तितर-बितर हो जाना, मारे-मारे फिरना । **–घाममें छवाना**–कष्टमें डालना, सजा देना । **–घालना**–घर बिगाड़ना; नाश करना; घरकी मर्यादा, प्रतिष्ठा नष्ट करना । **–जमना**–गृहस्थी ठीक होना । **–डूबना**–घर तबाह होना । **–तक पहुँचना**–बाप-दादा बखानना; माँ-बहिनकी गाली देना; पूरा करना । **–देख लेना**–बार-बार कुछ माँगने आना; परच जाना । **(किसीके)–पड़ना**–पत्नी, बहू होकर जाना; ब्याहा जाना । **–पर गंगा आना**–बिना मेहनतके काम पूरा हो जाना । **–फूँक तमाशा देखना**–घरको बरबाद कर, घरकी दौलत लुटाकर, घर बेचकर मौज-चैन या धूमधाम करना । **–फोड़ना**–घरमें फूट डालना, झगड़ा लगाना । **–बंद होना**–शतरंज या चौसरमें किसी मोहरे या गोटका किसी घरमें न जा सकना । **–बसना**–घरका आबाद होना; घरमें स्त्रीका आना, ब्याह होना । **–बसाना**–घरको आबाद कराना; शादी करा देना । **–बिगाड़ना**–घरको बिगाड़ना, बर्बादीकी ओर ले जाना; घरमें फूट डालना । **–बेचिराग़ हो जाना**–बेटेका मर जाना; कोई नामलेवा न रह जाना । **–बैठना**–बाहर निकलना बंद कर देना; एकांतवासी होना; नौकरी छोड़ देना; वर्षासे मकानका ढह जाना । **(किसीके)–बैठना**–किसीकी पत्नी या रखेली बनना । **–बैठी रोटी**–घर बैठे मिलनेवाली रोजी, पेंशन । **–भरना**–घरका धन-जनसे भरा होना; घरको धन-धान्यसे भरना; धन जोड़ना; माल जमा करना । **–भाँय-भाँय करना**–सूनेपनके कारण घरका डरावना लगना । **–में**–पत्नी, घरवाली । **–में कहना**–ठीक स्वरके साथ गाना । **–में डालना**–रखेली बना लेना । **–में पड़ना**–दे॰ ‘घर पड़ना’ । **–सिरपर उठा लेना**–बहुत शोर,

ऊधम मचाना । –से–पाससे, गाँठसे । –सेना–वेकार वैठे रहना । –से पाँव निकालना–कुल-मर्यादाका अतिक्रमण करना, स्वच्छंदाचारी, वेकहा हो जाना । –होना–गृहस्थी चलना ।

घरघराना–अ० क्रि० 'घर-घर'की आवाज निकलना, घरघराहट होना ।

घरघराहट–स्त्री० 'घर-घर'की आवाज; गलेमें कफ होनेपर साँस लेनेमें होनेवाली आवाज ।

घरट्ट, घरट्टक–पु० (सं०) चक्की, जाँता ।

घरट्टिका–स्त्री० (सं०) चक्की ।

घरणी–स्त्री० घरनी; (सं०) वह स्त्री जिसके पास घर हो ।

घरन–स्त्री० एक तरहकी पहाड़ी भेड़ ।

घरनई†–स्त्री० दे० 'घड़नई' ।

घरनाल–स्त्री० एक तरहकी पुरानी तोप–'तिमि घरनाल और करनालैं, सुतुरनाल जंजालैं'–रघुराजसिंह ।

घरनी–स्त्री० गृहिणी, पत्नी ।

घरम*–पु० दे० 'घर्म' घाम, धूप । –कर–पु० सूर्य ।

घरयार*–पु० दे० 'घड़ियाल' ।

घरर-घरर–पु० रगड़नेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द ।

घररना–अ० क्रि० रगड़ खाना, पिसना ।

घरवा, घरवाहा–पु० छोटा घर; घरौंदा ।

घरसा*–पु० दे० 'घिस्सा' ।

घरा–पु० दे० 'घड़ा' ।

घराऊ–वि० घरू, घरेलू ।

घराती–पु० (व्याहमें) कन्यापक्षका आदमी; कन्यापक्षवाला, 'वराती'का उलटा ।

घराना–पु० कुल, वंश; किसी विद्या-कलाके लिए प्रसिद्ध कुल ।

घरिआ, घरियार†–पु० दे० 'घड़ियाल' ।

घरिणी–स्त्री० (सं०) दे० 'घरणी' ।

घरिया–स्त्री० दे० 'घड़िया' ।

घरियाना†–स० क्रि० घरी लगाना, तह करना ।

घरियारी*–पु० घंटा वजानेवाला ।

घरी†–स्त्री० दे० 'घड़ी'; छोटा घड़ा; घड़िया; तह, लपेट ।

घरीक*–अ० घड़ीभर, छनभर ।

घरुआ, घरुवा†–पु० घरका अच्छा प्रवंध; चश्मा आदि रखनेका डिव्वा ।

घरू–वि० घरका, खानगी ।

घरेला–वि० दे० 'घरेलू' ।

घरेलू–वि० घरका; घरसे संवंध रखनेवाला; पालतू ।

घरैत–पु० घरका मालिक; ऐसे घरका मालिक जिसमें किरायेदार रहते हों; वधूके घरवाले, घराती ।

घरैतिन–† स्त्री० घरवाली, गृहिणी ।

घरैया†–पु० घरका आदमी, स्वजन । वि० घरका; घनिष्ठ संवंधवाला ।

घरौंदा, घरौंधा–पु० खेलनेके लिए वच्चोंका वनाया हुआ मिट्टीका नन्हा-सा घर ।

घरौना–पु० घर; घरौंदा ।

घर्घर–पु० (सं०) गाड़ी, चक्की आदिके चलनेकी आवाज, घरघराहट; जलते समय लकड़ी आदिके चटकनेकी आवाज; हास्य; उलूक; भूसीकी आग; परदा; द्वार; पर्वतद्वार; दर्रा; मथानी; घाघरा नदी ।

घर्घरक–पु० (सं०) घर्घर शब्द; घाघरा नदी ।

घर्घरा–स्त्री० (सं०) क्षुद्र घंटिका, घुँघरूदार करधनी; घोड़ेके गलेकी घंटी; गंगा; एक तरहकी वीणा ।

घर्घरिका–स्त्री० (सं०) क्षुद्र घंटिका; एक वाद्य; लावा ।

घर्घरित–पु० (सं०) सूअरके घुरघुरानेका शब्द ।

घर्घरी–स्त्री० (सं०) दे० 'घर्घरा' ।

घर्म–पु० (सं०) धूप, घाम; ग्रीष्मकाल; पसीना; पतीली । –चर्चिका,–विचर्चिका–स्त्री० घमौरी, अम्हौरी । –जल,–तोय,–वारि–पु० पसीना । –दीधिति,–द्युति,–रश्मि–पु० सूर्य । –विंदु–पु० श्रमसीकर । –स्वेद–वि० जिसके शरीरसे तापके कारण पसीना निकल रहा हो ।

घर्मांत–पु० (सं०) ग्रीष्मकी समाप्ति तथा वर्षा ऋतुका आरंभ ।

घर्मांबु–पु० (सं०) पसीना ।

घर्मांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

घर्मार्द्र–वि० (सं०) पसीनेसे तर ।

घर्मोदक–पु० (सं०) पसीना ।

घर्रा–पु० एक तरहका अंजन; गलेकी घरघराहट (चलना) ।

घर्राटा–पु० खर्राटा (भरना) ।

घर्रामी–पु० छप्पर छानेवाला ।

घर्ष–पु० (सं०) रगड़, घर्षण; पसीना ।

घर्षक–वि०, पु० (सं०) घिसनेवाला; पालिश करनेवाला ।

घर्षण–पु० (सं०) घिसना, रगड़ना; माँजना; पीसना (सिल-वट्टेसे) ।

घर्षित–वि० (सं०) घिसा, पिसा, रगड़ा, माँजा हुआ ।

घलना–अ० क्रि० मारा, फेँका जाना (तीर आदिका); मार-पीट हो जाना ।

घलाघल, घलाघली*–स्त्री० परस्पर आघात, मारपीट ।

घलुआ†–पु० घाल, घाता ।

घवद†–पु० दे० 'घौद' ।

घवरि*–स्त्री० दे० 'घोरी' ।

घसकना†–अ० क्रि० खिसकना ।

घसखुदा–पु० घास छीलनेवाला ।

घसना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'घिसना' ।

घसिटना–अ० क्रि० घसीटा जाना ।

घसियारा–पु० घास खोदने, वेचनेवाला; तुच्छ, वेवकत आदमी ।

घसियारिन, घसियारी–स्त्री० घास खोदने, वेचनेवाली स्त्री ।

घसीट–स्त्री० घसीटनेका भाव; जल्दीमें लिखे हुए अक्षर जिनकी शुद्धि और सुंदरताका खयाल न रखा गया हो, शिकस्त लिखावट ।

घसीटना–स० क्रि० किसी चीजको इस तरह खीँचना कि वह जमीनसे रगड़ खाती हुई खिँचे; किसीको किसी मामलेमें उसकी इच्छाके विरुद्ध शामिल करना; जल्दी-जल्दी, घसीट लिखावट लिखना ।

घस्मर–वि० (सं०) पेटू । पु० भक्षक ।

घस्र–वि० (सं०) हानिकर । पु० शिव; दिन; सूर्य; केसर ।

घस्सा–पु० दे० 'घिस्सा' ।

घहनाना–अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहरना–अ० क्रि० दे० 'घहराना' ।

घहराना–अ० क्रि० गर्जन जैसा शब्द करना; गरजना, गड़गड़ाना ।

घहरानि*–स्त्री० घहरानेका भाव; गर्जन; गंभीर ध्वनि ।

घहरारा*–पु० घहरानेकी ध्वनि, गर्जन । वि० गरजनेवाला ।

घहरारी*–स्त्री० दे० 'घहरानि' ।

घाँ*–स्त्री० ओर, तरफ, दिशा; प्रकार, तरह–'कहिबो न छिपै किहि घाँ सुगमै'–घन० ।

घाँघरा–पु० लहँगा; वोड़ा, लोविया ।

घाँघरी–स्त्री० दे० 'घाँघरा' ।

घांटिक–पु० (सं०) स्तुतिपाठक; घंटी वजानेवाला; धतूरा ।

घाँटी†–स्त्री० गलेके अंदरकी घंटी, कौआ ।

घाँटो–पु० एक तरहका गीत जो चैतमें गाया जाता है ।

घाँह, घाँही*–स्त्री० ओर, तरफ ।

घा*–स्त्री० ओर, तरफ ।

घाइ*–स्त्री० दे० 'घाव' ।

घाइल*–वि० दे० 'घायल' ।

घाईँ*–स्त्री० ओर, तरफ; दो वस्तुओंके वीचकी जगह, संधि; भँवर; वार, दफा ।

घाई–स्त्री० दो उँगलियोंके वीचकी जगह, अंटी; * धोखा; दे० 'घाव' ।

घाउ*–पु० दे० 'घाव'; आघात, चोट, प्रहार ।

घाऊघप–वि० दूसरेका माल-जमा चुपचाप डकार जानेवाला; जिसका भेद जल्दी न खुले, भारी चंट ।

घाग–पु० दे० 'घाघ' ।

घाघ–पु० भोजपुरी बोलीके एक कवि जिनकी कृषिकर्म, नीति आदि संबंधी कहावतें बहुत प्रसिद्ध हैं; बहुत चालाक आदमी, काइयाँ; जादूगर; उल्लूकी जातिका एक पक्षी, घाघस ।

घाघरा–पु० लहँगा; एक तरहका कबूतर । स्त्री० सरजू नदी । **–पलटन**–स्त्री० स्काटलैंडवासी गोरोंकी पलटन जिसके घुटने (निकर)का घेरा लहँगे जैसा होता है ।

घाघस–पु० घाघ पक्षी ।

घाघी–स्त्री० मछली पकड़नेका बड़ा जाल ।

घाट–पु० (सं०) गरदनका पिछला भाग; घड़ा; नाव आदिसे उतरनेका स्थान; (हिं०) नदी, झील आदिमें वह स्थान जहाँ लोग नहायें-धोयें, जानवर पानी पियें, धोबी कपड़ा धोयें; वह स्थान जहाँसे नदी हलकर पार की जाये; पहाड़पर चढ़ने या उसके पार जानेका रास्ता; पहाड़; नाव या पुलकी उतराई, महसूल; ओर, तरफ; अँगियाका गला; तलवारका बाढ़से ऊपरका भाग; रंग-ढंग, चाल-ढाल; जौकी गिरी; लहँगा । * वि० न्यून, कम, थोड़ा । †स्त्री० कपट; कुकर्म । **–कपतान**–पु० बंदरगाहका बड़ा अफसर । **–बंदी**–स्त्री० नाव खोलनेकी मनाही । **–वाल**–पु० घाटिया, गंगापुत्र । मु० **–घाटका पानी पीना**–जगह-जगह फिरना, भटकना; कई घर बदलना; बहुतेरेकी बीवी बनना । **–धरना**–राह छेकना । **–नहाना**–जिस घाट या तालाब आदिपर प्रेतकर्म किया जा रहा हो वहाँ नहाकर तिलांजलि देना । **–मारना**–घाटका महसूल, उतराई न देना । **(किसी)–लगना**–कहीं ठिकाना लगाना, आश्रय मिलना ।

घाटा–पु० टोटा, घटी; नुकसान । स्त्री० (सं०) घड़ा; नाव आदिसे उतरनेका स्थान; गरदनके पीछेका भाग । **–(टे)का आयव्यक**–पु० (डेफिसिट बजट) वह आय-व्ययक जिसमें आयकी अपेक्षा व्यय अधिक दिखाया गया हो (और जिसमें अनुमानित घाटेकी पूर्तिके लिए करवृद्धि आदिका सहारा न लिया गया हो, कोई उपबंध न रखा गया हो), कमीका बजट ।

घाटारोह*–पु० घाटका अवरोध, घाटबंदी, घाटसे किसीको उतरने न देना ।

घाटि*–वि० कम, न्यून । स्त्री० नीच कर्म; बुराई; कपट ।

घाटिका–स्त्री० (सं०) गरदनका पिछला भाग ।

घाटिया–पु० घाटपर बैठकर स्नानार्थियोंसे दान लेनेवाला ब्राह्मण ।

घाटी–स्त्री० दो पहाड़ोंके बीचकी नीची जमीन, मैदान; दर्रा; पहाड़का ढाल; महसूली वस्तुएँ ले जानेका आज्ञापत्र । **–मार्ग**–पु० (गॉर्ज) पहाड़ियोंके बीचमें नदीकी धारा आदि द्वारा बनाया हुआ संकीर्ण पथ ।

घात–पु० (सं०) चोट, आघात, प्रहार; वध, हत्या; अहित; गुणनफल; बाण; जन्मनक्षत्रमें सातवाँ, सोलहवाँ या पचीसवाँ नक्षत्र; *टक्कर । **–कृच्छ्र**–पु० एक मूत्ररोग । **–तिथि**–स्त्री० अशुभ तिथि । **–नक्षत्र**–पु० अशुभ नक्षत्र । **–वर्धनीय,–वर्ध्य**–वि० जो (घन आदिसे) पीटनेपर चपटा होकर बढ जाय (मैलिएबिल) । **–वार**–पु० अशुभ वार । **–स्थान**–पु० वधस्थान ।

घात–स्त्री० कार्यसिद्धिका अच्छा अवसर, ताक; दाँव-पेंच; छल, विश्वासघात; घात लगानेका स्थान; चाल; तौर-तरीका । मु० **–पर चढ़ना,–में आना**–वशमें आना, दाँवपर चढ़ना । **–में फिरना**–ताकमें घूमना । **–में बैठना**–आक्रमण आदि करनेके लिए छिपकर बैठना । **–में रहना**–किसीके खिलाफ कोई काम करनेका मौका ढूँढ़ते रहना । **–लगना**–अच्छा मौका मिलना । **–लगाना**–ताकमें बैठना, आक्रमण आदिके अवसरकी खोजमें रहना । **–(तें) बताना**–चाल सिखाना, चालबाजी करना ।

घातक–वि० (सं०) घात करनेवाला, कतल करनेवाला, हत्यारा; हानिकर । पु० घात करनेवाला व्यक्ति; वह जो नुकसान पहुँचावे ।

घातन–वि० (सं०) वध करनेवाला । पु० मारना, वध करना । **–स्थान**–पु० वधस्थान ।

घातकी–वि० दे० 'घातक' ।

घातवर्धनीयता, घातवर्ध्यता–स्त्री० हथौड़े आदिसे पीटे जानेपर बढ जानेका धातुओंका गुण ।

घाता–पु० वह चीज जो ग्राहकको तौल या गिनतीके ऊपर दी जाय, घलुआ ।

घाति–स्त्री० (सं०) आघात, चोट; जख्म; पक्षियोंको फँसाना या मारना; चिड़िया फँसानेका जाल ।

घातिया–वि० दे० 'घाती' ।

घाती–वि० घातमें रहनेवाला; छली, विश्वासघाती ।

घाती(तिन्)–वि० (सं०) घात करनेवाला; नाशक ।

घातुक–वि० (सं०) घातक, हिंस्र, निष्ठुर; हानिकारक ।

घात्य–वि० (सं०) घात करने योग्य, वध्य ।

घान–पु० उतना अनाज जितना एक बार पीसनेके लिए चक्कीमें डाला जाय; उतना तेलहन जितना एक बार कोल्हूमें डाला जाय; उतनी चीज जितनी एक बार भाड़में भूनी या कड़ाहमें छानी जाय; आघात, चोट; बड़ा हथौड़ा; कठोर प्रहार; घ्राण, सूँघनेका कार्य; गंध, बास ।

घाना*–स० क्रि० मारना; नष्ट करना; पकड़ना । पु० प्रहार; युद्ध ।

घानी–स्त्री० घान; ढेर; तेल आदि पेरनेका कोल्हू । **–की सवारी**–मालखंभकी एक कसरत ।

घाम–पु० धूप; कठिनाई, विपत्ति; पसीना । **–निधि***–पु० सूर्य ।

घामड़–वि० मूर्ख; आलसी; धूपका सताया हुआ (पशु) ।

घामरी–स्त्री० धूप असह्य होनेपर होनेवाली व्याकुलता ।

घाय*–पु० दे० 'घाव' ।

घायक*–वि० नाश करनेवाला ।

घायल–वि० जो चोट खाये हो, जख्मी, क्षतयुक्त, आहत ।

घार–पु० (सं०) सिंचन, जलसे तर करना । † स्त्री० पानीके बहावसे बना हुआ गड्ढा ।

घारी†–स्त्री० खरक, बाड़ा, गोठ ।

घाल–पु० ग्राहकको तौल या गिनतीके ऊपर दी जानेवाली चीज, घलुआ । मु० **–न गिनना**–कुछ न समझना ।

घालक–वि० मारनेवाला, नाश करनेवाला । प्रहार ।

घालकता–स्त्री० विनाशक्रिया ।

घालना–स० क्रि० नाश करना; बिगाड़ना; फेंकना; प्रहार करना, मारना, चलाना–'घालति छुरी प्रेमकी बानी'–सूर०; डालना, रखना–'कबहुँ पालने घालि झुलावइ'–रामा०; करना ।

घाल-मेल–वि० गड्ड-मड्ड, खल्त-मल्त (करना, होना) ।

घाला†–पु० दे० 'घाल' ।

घालिका, घालिनी–स्त्री० नाश करनेवाली, घातिनी ।

घाव–पु० चोट, आघात; व्रण, क्षत । मु० **–खाना**–आहत होना । **–देना**–दुःख देना । **–पर नमक छिड़कना**–दुःखकी हालतमें कष्ट देना । **–पूजना,–भरना**–घावका भरकर सूख जाना ।

घावरिया*–पु० जर्राह, घावका इलाज करनेवाला ।

घास–स्त्री० एक तरहका रेशमी कपड़ा; ताजिये आदिमें लगाये जानेवाले पन्नीके टुकड़े; (सं०) खाद्य पदार्थ; मैदानमें उगनेवाला दूबकी जातिका चौपायोंका एक चारा, तृण । **–कुंद,–स्थान**–पु० चरागाह । **–कूट**–पु० तृणस्तूप । **–पात,–फूँस**–पु० (हिं०) खर-पतवार; कूड़ा-करकट । **–भूसा**–पु० पशुओंका खाद्य; रद्दी चीजें । मु० **–काटना,–खोदना,–छीलना**–तुच्छ, निरर्थक काम करना । **–खाना**–पशुतुल्य होना; घोर मूर्खताका परिचय देना ।

घासलेट–पु० मिट्टीका तेल; तुच्छ वस्तु ।

घासलेटी–वि० निकृष्ट; निकम्मा; गंदा, अश्लील (–साहित्य) ।

घासी*–स्त्री० घास । पु० घसियारा ।

घाह*–पु० दे० 'घाई' ।

घिअ, घिउ†–पु० घी ।

घिआँड़ा–पु० घी रखनेका मिट्टीका पात्र ।

घिआ–पु० दे० 'घिया' ।

घिग्घी–स्त्री० अधिक भयके कारण मुँहसे बोल या साफ आवाज न निकलना; रोते-रोते साँसका रुकने लगना, हिचकी (बँधना) ।

घिघियाना–अ० क्रि० रोते हुए बिनती करना, गिड़गिड़ाना ।

घिचपिच–स्त्री० थोड़ी जगहमें अधिक चीजों, आदमियोंका जमा हो जाना, भीड़; जगहकी कमी; आगा-पीछा । वि० मिला-जुला; अस्पष्ट, गिचपिच (लिखावट) ।

घिचपिचाना–अ० क्रि० आगा-पीछा करना, सिटपिटाना ।

घिन–स्त्री० घृणा, नफ़रत ।

घिनाना–अ० क्रि० घृणा करना ।

घिनावना–वि० दे० 'घिनौना' ।

घिनौची†–स्त्री० दे० 'घडौंची' ।

घिनौना–वि० घिन उपजानेवाला, घृणित ।

घिन्नी–स्त्री० दे० 'गिन्नी'; दे० 'घिरनी' ।

घिय†–पु० दे० 'घी' ।

घियरा*–पु० घी ।

घियाँड़ा–पु० घी रखनेका मिट्टीका बरतन, घृतपात्र ।

घिया–पु० कद्दू, लौकी; नेनुआँ । **–कश**–पु० कद्दूकश । **–तरोई,–तुरई,–तोरई,–तोरी**–स्त्री० एक बेल जिसके फल तरकारी-के काम आते हैं; नेनुआँ; सतपुतिया ।

घिरत, घिरित*–पु० दे० 'घृत' ।

घिरना–अ० क्रि० घेरेमें आना, घेरा जाना; छाना, फैलना, (घटा घिरना) ।

घिरनी–स्त्री० कुएँसे पानी खींचनेकी चरखी; रस्सी बटनेकी चरखी । पु० एक जलपक्षी; लोटन कबूतर । **–दार विमान**–पु० (जाइरोप्लेन) ऊपरकी ओर लगी हुई घिरनियोंकी सहायतासे आकाशमें उठनेवाला विमान ।

घिरवाना–स० क्रि० घेरनेका काम कराना; एकत्र कराना ।

घिराई–स्त्री० घेरनेकी क्रिया; पशुओंको चरानेका काम या उसकी मजदूरी ।

घिरायँद–स्त्री० मूत्रकी दुर्गंध ।

घिराव–पु० घेरनेकी क्रिया या भाव; घेरा; माँग पूरी करानेके लिए बहुतसे आदमियोंका किसी अधिकारीको देरतक घेरे रहना, उसे बाहर न जाने देना ।

घिरावना*–स० क्रि० दे० 'घिरवाना' ।

घिरिनि, घिरिनी*–स्त्री०, पु० दे० 'घिरनी' ।

घिरिया–स्त्री० शिकार घेरनेके लिए बनाया हुआ आदमियों-का घेरा ।

घिरौरा†–पु० घूसका बिल ।

घिर्री–स्त्री० (पुली) (लकड़ी या) लोहेका बना हुआ पहिया जिसका घेरा नालीदार होता, है और जो सुगमतापूर्वक स्वतंत्रतासे घूम सकता है, घिरनी ।

घिव†–पु० घी ।

घिवरा†–पु० नेनुआ ।

घिसकना–अ० दे० 'खिसकना' ।

घिसघिस–स्त्री० देर, ढिलाई; अनिश्चय ।

घिसना–स० क्रि० किसी कड़ी चीजको किसी कड़ी चीजपर इस तरह रगड़ना कि उसका कुछ अंश कटता जाय (पत्थर, चंदन घिसना) । अ० क्रि० रगड़से कटना, छीजना । **घिसा-पिटा, घिसा-घिसा**–वि० जो बहुत दिनोंसे चला आ रहा हो, चिरव्यवहृत, पुराना ।

घिसपिस†–स्त्री० घिसघिस; सट्टा-बट्टा ।

घिसवाना–स० क्रि० 'घिसना'का प्रे० ।

घिसाई–स्त्री० घिसनेकी क्रिया या भाव; घिसनेकी उजरत; घिसनेसे नष्ट हुआ अंश । **–कोश,–फंड**–पु० दे० 'मूल्यह्रास कोश' । (डीप्रियेशन फंड) ।

घिसाना–स० क्रि० 'घिसना'का प्रे० ।

घिसाव–पु० घिसनेका भाव, रगड़; छीज ।

घिसावट–स्त्री० दे० 'घिसाव' ।

घिसिआना†–स० क्रि० घसीटना ।

घिसिरपिसिर–स्त्री० घिसपिस ।

घिस्समघिस्सा–पु० धक्कमधक्का; लड़कोंका एक खेल ।

घिस्सा–पु० रगड़ा; एक पतंगकी डोरका दूसरी पतंगकी डोरसे रगड़ खाना, धक्का; कुश्तीमें प्रतिस्पर्द्धीकी गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीकी रगड़ देना, रद्दा ।

घीँच*–स्त्री० गरदन ।

घीँचना†–स० क्रि० खीँचना ।

घी–पु० मक्खनको खौलाकर बनाया हुआ चिकना पदार्थ जिसे रोटीमें लगाकर या दालभात आदिमें डालकर खाते हैं । **–कुआर, –कुवार**–पु० घृतकुमारी, ग्वारपाठा । **–का डोरा**–तपाये हुए घीकी धार । मु० **–का कुप्पा लुँढ़ना**–बड़े धनी या रईसकी मृत्यु होना; भारी हानि होना । **–के चिराग या दिये जलाना**–मनः-कामना पूरी होनेपर खुशी मनाना, उत्सव मनाना । **–खिचड़ी होना**–प्रगाढ़ प्रेम, गहरी दोस्ती होना ।

घीया–पु० कद्दू; लौकी । **–कस**–पु० एक उपकरण जिसपर कद्दू आदि रगड़नेसे उसके छोटे छोटे टुकड़े हो जाते हैं ।

घीया पत्थर–पु० गोरा पत्थर ।

घीसा*–पु० रगड़ ।

घुँघची, घुँघचू–स्त्री० एक बेल; उसका लाल या सफेद रंगका बीज, गुंजा ।

घुँघनी–स्त्री० उबाला या भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि ।

घुँघरारा*–वि० दे० 'घुँघराला' ।

घुँघराला–वि० बल खाया हुआ, छल्लेदार (केश), कुंचित ।

घुँघरू–पु० चाँदी, पीतल आदिका गोल, पोला दाना जिसके भीतर कंकड़ी भरी होती है और हिलनेसे बजता है, मंजीर; ऐसे दानोंका बना हुआ पाँवोंमें पहननेका गहना; गलेकी घुरघुर आवाज, घटका; चनेके ऊपरका खोल । **–दार**–वि० जिसमें घुँघरू लगे हों । **–बंद**–वि० नाचने-गानेका पेशा करनेवाली (वेश्या) । **–मोतिया**–पु० मोतिया बेलाका एक भेद । मु० **–बाँधना**–नाचनेको तैयार होना; नृत्यशिक्षामें शिष्य बनाना ।

घुँघवारा, घुँघुवारा–वि० दे० 'घुँघराला' ।

घुंट, घुंटक–पु० (सं०) टखना, गुल्फ ।

घुँटना–अ० क्रि० दे० 'घुटना' ।

घुंटिक–पु० (सं०) कंडा ।

घुंटिका–स्त्री० (सं०) दे० 'घुंट' ।

घुंडी–स्त्री० कपड़ेकी गोली जिससे बटनका काम लेते हैं; कड़े, जोशन आदिकी गुहनमें छोरपर बनी हुई गोल, नोकदार गाँठ; एक घास । **–दार**–वि० जिसमें घुंडी बनी हो ।

घुआ–पु० दे० 'घूआ' ।

घुइयाँ–स्त्री० एक शाक, अरुई ।

घुग्घी–स्त्री० घोघी; पंडुक ।

घुग्घू–पु० उल्लू ।

घुघरी, घुघुरी–स्त्री० घुँघनी ।

घुघुआ–पु० दे० 'घुग्घू' ।

घुघुआना–अ० क्रि० उल्लूका बोलना; उल्लूकी तरह बोलना; बिल्लीकी तरह गुर्राना ।

घुटकना†–स० क्रि० घूँट-घूँट करके पीना; निगल जाना ।

घुटकी–स्त्री० गलेकी वह नली जिससे होकर आहार पेटमें पहुँचता है; घटका । मु० **लगना**–प्राणका कंठगत होना ।

घुटन–स्त्री० साँस लेनेमें कठिनाईकी अनुभूति; साँस रुकने जैसी स्थिति, कष्ट और घबराहटकी अवस्था ।

घुटना–अ० क्रि० घोंटा जाना; पीसा जाना; घुल-मिल जाना, एक हो जाना; रगड़से चिकना होना; (सिर) मूँड़ा जाना; (साँस) रुकना, अटकना । मु० **घुट-घुट करके जान देना या मरना**–घुल-घुलकर असह्य कष्ट सहते हुए मरना । **घुटा हुआ**–मुँड़ा हुआ, सफाचट्ट (सिर); बहुत चालाक, काइयाँ ।

घुटना–पु० जाँघ और टाँगके बीचका जोड़ । मु० **–(ने) टेकना**–घुटने जमीनसे लगाना; अधीनता स्वीकार करना, पराजय स्वीकार कर लेना । **–(नों) के बल चलना**–बच्चेका बैयाँ-बैयाँ चलना । **–में सिर देना**–सोचमें बैठना, चिंतित, उदास होना; लज्जित होना । **–से लगकर बैठना**–हरदम पास रहना, सटे रहना ।

घुटनी†–स्त्री० घुटना ।

घुटन्ना–पु० घुटनेतकका पाजामा, निकुर; तंग मोहरीका पाजामा जो टखनोंसे ऊपर रहता है ।

घुटरूँ–अ० दे० 'घुटरुअन' ।

घुटरू, घुटुरू*–पु० घुटना ।

घुटवाना–स० क्रि० पिसवाना; रगड़वाना; सिर मुँडाना ।

घुटाई–स्त्री० घोंटनेकी क्रिया या भाव; घोंटनेकी उजरत ।

घुटाना–स० क्रि० 'घोँटने'का प्रे०।

घुटी*–स्त्री० दे० 'घुट्टी'; घूँट।

घुटुरुअन, घुटुरुन, घुटुरुवन*–अ० घुटनोंके बल (चलना)।

घुट्टी–स्त्री० नवजात शिशुको पिलायी जानेवाली एक रेचक-पाचक दवा। **मु०–में पड़ना**–स्वभावरूप होना।

घुड़–'घोड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप। **–चढ़ा**–वि० घोड़सवार। पु० घोड़सवारीका एक स्वाँग। **–चढ़ी**–स्त्री० ब्याहकी एक रीति, वरका घोड़ेपर चढ़कर वधूके घर जाना; देहाती या छोटे-मोटे बाजारमें रहनेवाली वेश्या जो प्रायः जाड़ेके दिनोंमें घोड़ेपर चढ़कर गाँव-गाँव घूमकर नाचती-गाती है; घुड़नाल। **–दौड़**–स्त्री० घोड़ोंकी दौड़; घोड़ोंकी वह दौड़ जो शर्त या बाजी बदकर की जाय; घोड़दौड़का मैदान; वह नाव जिसका अग्रभाग घोड़ेके मुँह जैसा हो; बच्चोंकी दौड़, उछल-कूद। अ० बड़ी तेजीसे। **–नाल**–स्त्री० घोड़ेपर ढोयी जानेवाली हल्की तोप। **–बहल**–पु०,**–बहली**–स्त्री० वह रथ जिसमें घोड़े जोते जायँ। **–मक्खी**–स्त्री० भूरे रंगकी बड़ी मक्खी जो घोड़ोंको काटती है। **–मुँहा**–वि० जिसका मुँह घोड़ेके जैसा अधिक लंबा हो। पु० एक कल्पित जाति जिसका मुँह घोड़ेका और शेष शरीर मनुष्यका माना जाता है, किन्नर। **–सवार**–पु० अश्वारोही। **–सार**–स्त्री० दे० 'घुड़साल'। **–साल**–स्त्री० अस्तबल, अश्वशाला।

घुड़कना–स० क्रि० धमकीके स्वरमें डाँटना, डपटकर बोलना।

घुड़की–स्त्री० घुड़कनेकी क्रिया या भाव; धमकी भरी डाँट।

घुड़ला–पु० छोटा घोड़ा; घोड़ेकी शकलका चीनी इत्यादिका खिलौना।

घुड़िया–स्त्री० दे० 'घोड़िया'।

घुड्कना–स० क्रि० दे० 'घुड़कना'।

घुण–पु० (स०) घुन। **–लिपि**–स्त्री० दे० 'घुणाक्षर'।

घुणाक्षर–पु० (सं०) घुनोंके खानेसे लकड़ीमें या दीमकके चाटनेसे पुस्तकमें बनी हुई लकीर। **–न्याय**–पु० किसी बातका बिना प्रयत्नके, संयोगवशात् हो जाना।

घुन–पु० अनाज, लकड़ी आदिमें लगनेवाला एक छोटा कीड़ा। **मु० –झड़ना**–घुन लगी हुई लकड़ीके चूरका छन-छनकर गिरना। **–लगना**–अनाज या लकड़ीको घुनका खाना; ऐसा रोग लगना जो भीतर-भीतर देहको खा जाय, वस्तुको धीरे-धीरे नष्ट कर डाले।

घुनघुना–पु० लकड़ी, टीन आदिका बना और हिलानेसे बजनेवाला एक खिलौना।

घुनना–अ० क्रि० लकड़ी, अनाज आदिको घुन लगना, घुन द्वारा खाया जाना।

घुन्ना–वि० चुप्पा, अपने मनके भावोंको गुप्त रखनेवाला।

घुन्नी–वि० स्त्री० अपने मनका भाव गुप्त रखनेवाली (स्त्री)। स्त्री० चुप्पी; थोड़ा अंश (घुन्नी भर—थोड़ा-सा)।

घुप–वि० गहरा, घोर (इस शब्दका प्रयोग 'अँधेराघुप' रूपमें ही होता है)।

घुमँड़ना*–अ० क्रि० दे० 'घुमड़ना'।

घुमंतू–वि० घुमक्कड़।

घुमक्कड़–वि० बहुत घूमनेवाला, सैर-सपाटेका शौकीन।

घुमटा–पु० सिरका चक्कर।

घुमड़ना–अ० क्रि० बादलोंका इधर-उधरसे आकर जमा होना, जाना।

घुमड़ाना*–अ० क्रि० दे० 'घुमड़ना'।

घुमड़ी–स्त्री० सिरका चक्कर खाना; परिक्रमा।

घुमना*–वि० घूमनेवाला, घुमक्कड़।

घुमनी†–वि० स्त्री० घूमनेवाली (केवल समासमें व्यवहृत–'घरघुमनी', 'मेलाघुमनी')। स्त्री० पशुओंका एक रोग; घुमड़ी।

घुमरना–अ० क्रि० दे० 'घुमड़ना'; गड़गड़ाना, बहुत जोरसे बजना।

घुमराना–अ० क्रि० दे० 'घुमरना'।

घुमरी†–स्त्री० दे० 'घुमड़ी'; पानीका भँवर; पशुओंका एक रोग, घुमनी।

घुमाना–स० क्रि० फिराना, चक्कर देना; मोड़ना; ऐंठना।

घुमाव–पु० घूमने, घुमानेका भाव; चक्कर, फेरा; उतनी जमीन जितनी एक जोड़ी बैल दिनभरमें जोत सकें; रास्तेका मोड़। **–दार**–वि० पेचदार, चक्करदार।

घुमेरी*–स्त्री० बेसुध होनेकी स्थिति, बेहोशी–'निसि-द्यौस घुमेरिनि भौंरि परचौं'–घन०।

घुम्मरना*–अ० क्रि० दे० 'घुमरना'।

घुर–'घूर'का समासगतरूप। **–बिन**†–वि० घूरेपर फेंके हुए दाने चुननेवाला; गलीमें पड़ी हुई टूटी-फूटी चीजें इकट्ठी करनेवाला। **–बिनिया**–स्त्री० घूरपर फेंके हुए दाने या सड़क-गलीमें पड़ी टूटी-फूटी चीजें इकट्ठी करनेकी क्रिया। पु० घूरपरके दाने या गली कूचेमें पड़ी टूटी-फूटी चीजें बटोरनेवाला व्यक्ति।

घुरकना*–स० क्रि० दे० 'घुड़कना'।

घुरका–पु० चौपायोंका एक रोग।

घुर-घुर–पु० गलेमें कफसंचय होनेपर साँस लेनेमें निकलनेवाली आवाज; बिल्ली, सुअर आदिके गलेसे निकलनेवाली आवाज।

घुरघुरा†–पु० गलेमें होनेवाला एक तरहका फोड़ा, कंठमाला।

घुरघुराना–अ० क्रि० गलेसे 'घुर-घुर' आवाज निकालना।

घुरघुराहट–स्त्री० 'घुर-घुर' आवाज निकालनेकी क्रिया या भाव।

घुरण–पु० (सं०) एक विशेष प्रकारका शब्द, 'घुर-घुर' आवाज।

घुरना*–अ० क्रि० घुरघुर शब्द करना, बजना–'घुरत निशान मृदंग संख धुनि भेरि झाँझ सहनाई'–सूर; कसना–'घुरि आसकी पास उसास-गरें जु परी'–घन०; घूमना; फहरना। दे० 'घुलना'।

घुरमना*–अ० क्रि० घूर्णित होना, चक्कर खाना।

घुराना–अ० क्रि० छाना, भर आना।

घुरिका–स्त्री० (सं०) खर्राटा।

घुरी–स्त्री० (सं०) सुअरका थूथन।

घुरहरी, घुरहुरी–स्त्री० जंगलमें ढोरोंके चलनेसे बना हुआ रास्ता; पगडंडी।

घुर्घुर–पु० (सं०) 'घुर-घुर'की आवाज; यमकीट।

घुर्घुरक–पु०, **घुर्घुरिका**–स्त्री० (सं०) 'गड़-गड़' या 'कल-कल' शब्द।

घुर्मित–वि० दे० 'घूर्णित'।

घुरुँवा–पु० पशुओंका एक रोग।

घुलंच–पु० (सं०) एक कदन्न, गवेधुका।

घुलघुलारव–पु० (सं०) एक तरहका कबूतर।

घुलनशीलता–स्त्री० (साल्यूबिलिटी) किसी द्रव पदार्थमें किसी स्थूल (या अन्य द्रव) पदार्थके घुलमिल जानेका गुण, विलेयता।

घुलना–अ० क्रि० किसी तरल वस्तुमें हल हो जाना, गलकर मिल जाना, गलना; पिघलना, पककर नरम होना; (रोगादिसे) सूखना, क्षीण होना; व्यतीत होना। **मु० घुलकर काँटा होना**–बहुत दुबला हो जाना। **घुल-घुलकर जान देना, मरना**–रोग-शोकसे क्रमशः छीजकर, सूखकर, बहुत दिनोंतक कष्ट उठाकर मरना। **घुल-मिलकर**–प्यार, मुहब्बतके साथ, हिल-मिलकर। **घुला हुआ**–खूब पका हुआ; पिलपिला; बूढ़ा।

घुलवाना–स० क्रि० 'घुलाना' या 'घोलना'का प्रे०।

घुलाना–स० क्रि० गलाना, पिघलाना; नरम, पिलपिला करना; चुभलाना; (सुरमा, काजल) लगाना, रचाना; बिताना।

घुलावट–स्त्री० नरमी, पिलपिलापन; काजल, सुरमेकी शोभा।

घुल्य–पु० (साल्यूट) वह स्थूल (या द्रव) पदार्थ जो किसी द्रव पदार्थमें डालनेसे उसमें बिलकुल घुलमिल जाय, जैसे नमक जो पानीमें डालनेसे घुल जाता है, विलेय।

घुवा–पु० दे० 'घूआ'।

घुषना†–अ० क्रि० याद होना।

घुषित, घुष्ट–वि० (सं०) जिसकी घोषणा की गयी हो, शब्दित।

घुष्ट्र–पु० (सं०) शकट, गाड़ी।

घुसना–अ० क्रि० भीतर जाना, दाखिल होना; बलपूर्वक प्रवेश करना; धँसना; किसी काममें दखल देना; दूर हो जाना; ध्यान देना।

घुस-पैठ–स्त्री० पहुँच, रसाई।

घुसवाना–स० क्रि० घुसानेका काम कराना।

घुसाना–स० क्रि० भीतर पहुँचाना, दाखिल करना; धँसाना।

घुसेड़ना–स० क्रि० भीतर पहुँचाना; धँसाना; ठूँसना।

घूंघट–पु० साड़ी, दुपट्टे या चादरका किनारा जो स्त्री लज्जावश परदेके लिए मुँहपर खींच लेती है, अवगुंठन; बाहरी दरवाजेके पीछेकी दीवार जो आँगनके परदेके लिए बनायी जाती है, गुलामगर्दिश; घोड़ेकी आँखपर डालनेका परदा, अँधेरी । **मु० –उठाना, –उलटना**–मुँह खोलनेके लिए घूंघटको ऊपर उठाना, परदा हटाना । **–करना,–काढ़ना,–निकालना**–साड़ी-दुपट्टे आदिसे मुँहको ढक लेना, परदा करना ।

घूंघर–पु० बालोंमें पड़ा हुआ छल्ला । **–वाला**–वि० घुंघराला (बाल) ।

घूंघरी*–स्त्री० घुंघरू, नूपुर ।

घूंचा–पु० घूंसा ।

घूंट–पु० जल या किसी पेय पदार्थकी वह मात्रा जो एक बारमें गलेके नीचे उतारी जा सके; किसी तरल पदार्थकी थोड़ी मात्रा; एक तरहका पहाड़ी टट्टू; एक पेड़, कठबेर । **मु०–फेंकना**–पीनेके पहले पेय पदार्थकी एक मात्रा, नजर आदिसे बचनेके लिए, जमीनपर गिरा देना ।

घूंटना–स० क्रि० किसी तरल पदार्थको गलेके नीचे उतारना ।

घूंटा†–पु० पैरके बीचका जोड़ ।

घूंटी–स्त्री० बच्चोंकी एक दवा ।

घूंस–स्त्री० दे० 'घूस' ।

घूंसा–पु० प्रहारके लिए बँधी हुई मुट्ठी, मुक्का; ऐसी मुट्ठीका प्रहार । **–(से)बाजी**–स्त्री० घूँसोंकी लड़ाई । **मु०–(सों)का क्या उधार ?** –मारका बदला तुरत लेना, मारनेवालेको तुरत मारना चाहिये ।

घूआ–पु० काँस, सरकंडे आदिका रुई जैसा फूल; कीचड़में रहनेवाला एक कीड़ा; चूल अटकानेका छेद ।

घूक–पु० (सं०) उल्लू, घुग्घू । (स्त्री० 'घूकी')**–नादिनी**–स्त्री० गंगा ।

घूका–पु० सँकरे मुँहकी बाँस आदिकी टोकरी ।

घूकारि–पु० (सं०) कौआ ।

घूघ–पु० युद्धमें सिरके रक्षार्थ पहनी जानेवाली लोहे या पीतलकी बनी टोपी, शिरस्त्राण; † घूंघट; उल्लू पक्षी ।

घूघी†–स्त्री० थैली; घुग्घी; पेंडुकी ।

घूघू*–पु० दे० 'घुग्घू' ।

घूटना*–स० क्रि० दे० 'घूंटना' ।

घूठन*–अ० घुटनोंके बल ।

घूड़ा–पु० दे० 'घूरा' ।

घूम–स्त्री० घुमाव, मोड़; घेरा; नींद, उनींदापन; मतवालापन । **–घुमारा**–वि० घेरदार; मतवाला; उनींदा । **–घुमाव**–वि० चक्करदार ।

घूमना–अ० क्रि० फिरना, चक्कर खाना; एक धुरीके चारों ओर चक्कर खाना; भ्रमण करना; मुड़ना; लौटना; * निद्रित या उन्मत्त होना; लीन होना ।

घूमनि*–स्त्री० घेरा ।

घूमरा*–वि० नशीला, मदयुक्त–'केसरि खौरि घूमरे नैना बिथुरी अलक बदन रँग भीनौ'–घन० ।

घूर–पु० दे० 'घूरा' ।

घूरघार–स्त्री० दे० 'घूराघारी' ।

घूरना–अ० क्रि० आँखें गड़ाकर, तीखी निगाहसे देखना; काम या क्रोधभरी दृष्टिसे देखना ।

घूरा–पु० कूड़ा-करकट फेंकनेकी जगह; कूड़े-करकटका ढेर ।

घूराघारी–स्त्री० घूरनेकी क्रिया, घूरना ।

घूर्ण–पु० (सं०) घूमना, चक्कर खाना । वि० घूमता हुआ; भ्रांत । **–वायु**–स्त्री० बवंडर ।

घूर्णन–पु०, **घूर्णना**–स्त्री० (सं०) घूमना, चक्कर खाना; भ्रमण; घुमाना ।

घूर्णाक्ष स्थापी–पु० (जाइरोस्कोप) विशेष प्रकार का यंत्र जिसका मुख्य पुर्जा एक तेजीसे नाचता हुआ पहिया होता है । यह भारी भरकम पहिया ऐसी धुरीपर आरोपित रहता है जो हर दिशामें गति करनेके लिए स्वतंत्र हो ।

घूर्णि–स्त्री० (सं०) घूर्णन ।

घूर्णित–वि० (सं०) घूमता हुआ, भ्रमित; घुमाया हुआ । **–जल**–पु० भँवर । **–वात**–पु० बवंडर ।

घूस–स्त्री० वह धन या वस्तु जो अपने अनुकूल, पर अनुचित, अवैध कार्य करानेके लिए किसीको दी जाय, रिश्वत (खाना, देना, लेना) । पु० एक तरहका बड़ा चूहा । **–खोर**–वि० घूस खानेवाला ।

घृणा–स्त्री० (सं०) घिन, नफरत; बीभत्स रसका स्थायी भाव; दया, करुणा । **–वास**–पु० कुष्मांड ।

घृणालु–वि० (सं०) दयालु ।

घृणास्पद–वि० (सं०) घृणा करने योग्य ।

घृणि–पु० (सं०) किरण; ज्वाला; जल; तरंग; सूर्य; क्रोध । वि० चमकदार; अप्रिय । **–निधि**–पु० सूर्य । स्त्री० गंगा ।

घृणित–वि० (सं०) घृणाका पात्र, घृणा करने योग्य; निंदित, तिरस्कृत, गर्हित ।

घृणी(णिन्)–वि० (सं०) घृणा करनेवाला; दयालु; दीप्त ।

घृण्य–वि० (सं०) घृणा करने योग्य, घृणापात्र ।

घृत–पु० (सं०) घी; जल । वि० सिंचित; तर किया हुआ; आलोकित ।**–करंज**–पु० एक तरहका करंज वृक्ष । **–कुमारी**–स्त्री० घीकुआर । **–कुल्या**–स्त्री० घीकी नदी; घीकी धारा । **–केश,–दीधिति**–पु० अग्नि । **–धारा**–स्त्री० घीकी धारा; एक पुराणवर्णित नदी । **–प**–वि० घी पीनेवाला । पु० आज्यप नामक पितृगण । **–पर्ण,–पर्णक**–पु० करंज । **–पूर,–पूर्णक,–वर**–पु० एक मिठाई, घेवर । **–प्रतीक,–योनि**–पु० अग्नि । **–प्रमेह**–पु० प्रमेह रोगका एक भेद । **–मंड**–पु० घी तपानेसे निकलनेवाला मैल । **–मंडा**–स्त्री० काकमाची, कौवाठोठी । **–लेखनी**–स्त्री० काठका चिमचा ।

घृताक्त–वि० (सं०) घी चुपड़ा हुआ ।

घृताची–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा; श्रुवा ।

घृतान्न–पु० (सं०) घृतयुक्त अन्न; अग्नि ।

घृतार्चि(स्)–पु० (सं०) अग्नि ।

घृताहवन–पु० (सं०) अग्नि ।

घृताहुति–स्त्री० (सं०) घीकी आहुति ।

घृती(तिन्)–वि० (सं०) घृतयुक्त, जिसमें घी हो ।

घृतेली–स्त्री० (सं०) एक कीड़ा, तैलपायिका ।

घृतोदंक–पु० (सं०) घीकी कुप्पी ।

घृतोद–पु० (सं०) घीका समुद्र (पु०) ।

घृष्ट–वि० (सं०) घिसा हुआ ।

घृष्टि–स्त्री० (सं०) घर्षण, घिसाई; स्पर्द्धा । पु० शूकर ।

घृष्टी–स्त्री० (सं०) शूकरी ।

घृष्ठिला–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी ।

घृष्वि–पु० (सं०) शूकर ।

घेंघ, घेंघा–पु० दे० 'घेघा' ।

घेंटा–पु० सुअरका बच्चा ।

घेंटी†–स्त्री० चना आदिका डोंडा जिसके भीतर दाना रहता है, ढेंढी–'खेतके चने हरी-पीली घेंटियोंसे लद गये'–अमर०; एक प्रकारका पक्षी ।

घेघा–पु० गला; गलेका एक रोग, गलगंड ।

घेड़ोंची–स्त्री० दे० 'घड़ौंची' ।

घेर–पु० घेरा, फैलाव; घेरने-फैलनेकी क्रिया । **–घार**–पु० घेरना, सब ओरसे जमना, इकट्ठा होना (बादलोंका घेर-घार); कार्यविशेषके लिए अनुनय-विनय, अति आग्रह । **–दार**–वि० बड़े घेरेवाला; चौड़ा ।

घेरना–स० क्रि० आवेष्टित करना; अवरोध करना; रोकना; छेंकना; रूँधना; किसी कामके लिए किसीके यहाँ बार-बार जाना; चराना(ढोर); ग्रस्त करना ।

घेरा–पु० घेरनेकी क्रिया या भाव; विस्तार, फैलाव; परिधिका मान; घेरनेवाली चीज, दीवार आदि; घिरा हुआ स्थान; अवरोध । **–बंदी**–स्त्री० (किसी देश या स्थानके) चारों तरफ घेरा डालकर निकास या विकास बन्द कर देनेका कार्य ।

घेराई–स्त्री० दे० 'घिराई' ।

घेराव–पु० दे० 'घिराव'।

घेवर–पु० मैदे, घी, चीनीके योगसे बनी हुई एक मिठाई।

घेवरना–स० क्रि० चुपड़ना, पोतना, लगाना।

घैंटा–पु० दे० 'घेंटा'।

घैया–स्त्री० थनसे निकलती हुई दूधकी धार; ताजा दूधके ऊपरका मक्खन; इस तरहका मक्खन एकत्र करनेका काम; चोट; प्रहार; ओर, दिशा।

घैर, घैरु*–पु० बदनामी; चुगली।

घैला†–पु० घड़ा, कलसा।

घैहा*–वि० घायल, आहत–'घूमन लगे समरमें घैहा'–छत्र०।

घोंघ–पु० (सं०) एक जानवर; बीचकी जगह; एक चिड़िया।

घोंघा–पु० शंखकी जातिका एक कीड़ा, शंबुक; गेहूँकी बालका कोश जिसमें दाना रहता है। वि० मूर्ख, बेवकूफ; खोखला, निःसार। –**वसंत**–वि० महामूर्ख।

घोंचवा–पु० वह बैल जिसके सींग नीचेकी तरफ मुड़े हों।

घोंचा–पु० घौद, गुच्छा; दे० 'घोंचवा'।

घोंची–स्त्री० वह गाय जिसके सींग नीचेकी तरफ मुड़े हों।

घोंचुआ*–पु० दे० 'घोसला'।

घोंचू–पु० मूर्ख व्यक्ति।

घोंटना–स० क्रि० घूंटना; गलेको इस तरह दबाना कि साँस रुक जाय; हजम करना; रगड़ना, पीसना; रटना, खूब पढ़ना।

घोंटा, घोंटी–स्त्री० (सं०) एक क्षुप; बेर; शृगाल-कोलि; सुपारीका पेड़।

घोंपना–स० क्रि० भोंकना, घुसेड़ना; चलती सिलाई करना।

घोंसला–पु० वृक्षादिपर तृणादिका बना हुआ पक्षीके रहनेका स्थान, नीड़, खोता।

घोंसुआ*–पु० दे० 'घोंसला'।

घोखना–स० क्रि० याद करनेके लिए बार-बार पढ़ना, रटना।

घोखवाना, घोखाना–स० क्रि० 'घोखना'का प्रे०।

घोघा–पु० फसलको क्षति पहुँचानेवाला एक छोटा कीड़ा।

घोघी†–स्त्री० दे० 'घुग्घी'।

घोट–पु० (सं०) दे० 'घोटक'।

घोटक–पु० (सं०) घोड़ा। –**मुख**–पु० किन्नरोंका एक भेद।

घोटकारि–पु० (सं०) भैंसा।

घोटना–स० क्रि० रगड़कर बारीक करना (भाँग); रगड़कर चिकना करना (तख्ती, कागज इत्यादि); हल करना; मूँड़ना (बाल); अभ्यास करना; घोंटना। पु० घोटनेका औजार।

घोटनी–स्त्री० घोटनेका छोटा औजार।

घोटवाना–स० क्रि० घोटनेकी क्रिया कराना।

घोटा–पु० घोटनेका साधन; भाँग घोटनेका सोंटा; घुटा हुआ चमकीला कपड़ा; पशुओंको दवा आदि पिलानेका बाँसका चोंगा; डाँक चमकीला करनेका एक औजार; घोटनेका काम; हजामत।

घोटाई–स्त्री० घोटनेकी क्रिया या भाव; घोटनेकी उजरत।

घोटाला–पु० घपला, गोलमाल, गड़बड़।

घोटिका, घोटी–स्त्री० (सं०) घोड़ी।

घोटू†–वि० घोटनेवाला।

घोठा†–पु० गोठ, गोष्ठ।

घोड़–'घोड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप। –**चढ़ा**–वि०, पु० दे० 'घुड़चढ़ा'। –**चढ़ी**–स्त्री० दे० 'घुड़चढ़ी'। –**दौड़**–स्त्री० दे० 'घुड़दौड़'। –**मुहाँ**–वि०, पु० दे० 'घुड़मुँहा'। –**वच**–पु० खुरासानी वचका एक भेद जो घोड़ोंको खिलाया जाता है। –**राई**–स्त्री० बड़े दानेकी राई जो घोड़ोंको खिलायी जाती है। –**रासन**–पु० रास्ना नामक ओषधिका एक भेद। –**रोज**–पु० एक तरहकी नीलगाय जो बहुत तेज दौड़ती है। –**साल**–स्त्री० दे० 'घुड़साल'।

घोड़ला*–पु० अश्विनी नक्षत्र (बीसल०)।

घोड़ा–पु० एक चौपाया जो गधेसे बड़ा होता है और सवारी आदिके काम आता है, अश्व, तुरंग; पशु, चौपाया (–अस्पताल); बंदूक, तमंचेका खटका जिसे दबानेसे वह दगता है; शतरंजका एक मोहरा; खूँटी; छज्जेके नीचे दीवारमें लगाया जानेवाला लकड़ी आदिका टोंटा। –**अस्पताल**–पु० पशुचिकित्सालय। –**करंज**–पु० एक तरहका करंज। –**गाड़ी**–स्त्री० वह गाड़ी जिसमें घोड़ा या घोड़े जोते जायँ, पालकी गाड़ी; डाकके थैले ढोनेवाली गाड़ी। –**चोली**–स्त्री० एक वनौषधि। –**डाक्टर**–पु० पशुचिकित्सक। –**नस**–स्त्री० एड़ीसे ऊपरकी ओर जानेवाली मोटी नस। –**नीम**–स्त्री० बकाइन। –**बच**–पु० दे० 'घोड़बच'। –**बाँस**–पु० एक तरहका बाँस। –**बेल**–स्त्री० एक लता जिसकी जड़को विलाईकंद कहते हैं। मु० –**उड़ाना**–घोड़ेको सरपट दौड़ाना। –**कसना**–घोड़ेपर जीन या चारजामा कसना। –**डालना,–फेंकना**–घोड़ेको किसी दिशामें तेजीसे दौड़ाना। –**फेरना**–घोड़ेको सधाना, सवारी या गाड़ीके लायक बनाना। –**बेचकर सोना**–बेफिक्र होकर सोना, खुर्राटे भरना। –(**ड़े**) **जोड़ेकी खैर**–दूल्हा-दूल्हन और उसकी सवारी सकुशल रहे। –**पर चढ़ आना**–लौटनेकी जल्दी मचाना।

घोड़िया–स्त्री० छोटी घोड़ी; छोटा टोड़ा; कपड़े टाँगनेकी खूँटी।

घोड़ी–स्त्री० घोड़ेकी मादा; पाटा; ब्याहकी एक रस्म; ब्याहमें वरपक्षकी ओरसे गाये जानेवाले गीत; जुलाहोंका एक औजार; धोबियोंकी अलगनी; पानीके घड़े रखनेके लिए खंभोंके सहारे लगायी हुई पटरी। मु० –**चढ़ना**–ब्याहमें दूल्हेका घोड़ीपर चढ़कर दुलहिनके घर जाना।

घोणस, घोनस–पु० (सं०) एक तरहका साँप।

घोणा–स्त्री० (सं०) नाक; घोड़े या शूकरका थूथन; उल्लूकी चोंच; एक पौधा जिसे सूँघनेसे छींक आती है।

घोणी(णिन्)–पु० (सं०) शूकर।

घोर*–स्त्री० ध्वनि, शब्द; पु० घोड़ा। वि० (सं०) डरावना, भयानक; घन, निबिड़; गाढ़ा, गहरा; कठिन, कठोर; भारी; बुरा। पु० शिव; विष; आतंक; जाफरान; पूजनीयता। –**घुष्य,–पुष्प**–पु० पीतल; काँसा। –**घोरतर**–पु० शिव। –**दंष्ट्र**–वि० डरावने दाँतोंवाला। –**दर्शन**–वि० डरावना, विकराल। पु० उल्लू। –**रासन,–रासी(सिन्),–वासन,–वासी (सिन्)**–पु० शृगाल। –**रूप**–पु० शिव।

घोरना*–स० क्रि० घोलना। अ० क्रि० गर्जन करना।

घोरमंझा†–पु० (कार्यमें) अनावश्यक विलंब; बार बार एक ही क्रिया करना, फिर भी कार्य असमाप्त रहना; उलझाव; विवादमें किसी नतीजेपर न पहुँचना।

घोरा–वि०, स्त्री० (सं०) घोर। स्त्री० रात; श्रवण, चित्रा आदि नक्षत्रोंमें बुधकी गति। * पु० घोड़ा; खूँटा; टोड़ा।

घोराकार, घोराकृति–वि० (सं०) डरावना।

घोरिया†–स्त्री० दे० 'घोड़िया'।

घोरिला*–पु० बच्चोंके खेलनेका मिट्टीका बना घोड़ा; घोड़े जैसे मुँहवाला खूँटा।

घोल–पु० (सं०) तक्र; बिना पानी डाले मथा हुआ दही, लस्सी; घोलकर बनायी हुई चीज; (सोल्यूशन) दे० 'द्रावण'।

घोलक–वि० (सालवेंट) जो घुला दे, घुला देनेवाला, विलायक। पु० वह द्रव-पदार्थ (पानी, मद्यसार आदि) जिसमें डालनेसे कोई स्थूल (या द्रव) पदार्थ बिलकुल घुल-मिल जाय।

घोलना–स० क्रि० किसी चीजको पानी आदिमें इस तरह मिलाना कि वह उसमें घुल जाय। मु० **घोलकर पी जाना**–पारंगत हो जाना; निगल जाना।

घोला–पु० घोलकर बनायी हुई चीज (अफीम आदि); खेतमें पानी ले जानेकी नाली। मु० –(**ले**)**में डालना**–खटाईमें डालना, उलझनमें डाल रखना।

घोलुवा†–वि० घोलकर बनाया हुआ। पु० घोली हुई पतली दवा; रसा, शोरबा; घोली हुई अफीम।

घोष–पु० (सं०) ध्वनिः घोषणा; नारा; अफवाह; बादलकी गरज, अहीरोंका गाँव, बस्ती; चरवाहा, ग्वाला; मच्छड़; काँसा; वर्णोंके उच्चारणके बाह्य प्रयत्नोंमेंसे एक; तट; तालका एक भेद; बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; शिव; * गोशाला।

घोषक–पु० (सं०) घोषणा, मुनादी करनेवाला।

घोषण–पु०, **घोषणा**–स्त्री० (सं०) जोरसे बोलकर जताना, मुनादी या एलान करना; सार्वजनिक रूपसे उद्घोषित राजकीय आदेश;

ध्वनि ।

घोषयित्नु–पु० (सं०) घोषणा करनेवाला; चारण; कोकिल ।

घोषवती–स्त्री० (सं०) वीणा ।

घोषा–स्त्री० (सं०) सौंफ; काकड़ासींगी ।

घोषाल–पु० बंगाली अहीरों और कायस्थोंकी एक उपजाति ।

घोसना*–स्त्री० दे० 'घोषणा' । स० क्रि० घोषित करना, उच्चारण करना ।

घोसी–पु० अहीर; मुसलमान अहीर ।

घोँर, घोँरा–पु० दे० 'घौद' ।

घौद–पु० फलोंका गुच्छा ।

घौर, घौरा–पु० दे० 'घौद' ।

घौरी–स्त्री० राशि; दे० 'घौद'–'काहु गही केरा कै घौरी ।'

घ्न–वि० (सं०) नष्ट करनेवाला (केवल समासांतमें–विघ्न) । (स्त्री० 'घ्नी' ।)

घ्राण–पु० (सं०) गंध; सूँघना; सूँघनेकी शक्ति; नाक । **–चक्षु-(स्)**–वि० अंधा; सूँघकर किसी वस्तुका ज्ञान प्राप्त करनेवाला (पशु) । **–तर्पण**–वि० सुगंधयुक्त; घ्राणेंद्रियको तृप्त करनेवाला । पु० सुगंध । **–पाक**–पु० नाकका एक रोग । **–पुटक**–पु० नासारंध्र ।

घ्राणेंद्रिय–स्त्री० (सं०) नाक ।

घ्रात–वि० (सं०) सूँघा हुआ ।

घ्रातव्य–वि० (सं०) सूँघने योग्य ।

घ्राता (तृ)–वि० (सं०) सूँघनेवाला ।

घ्राति–स्त्री० (सं०) घ्राण ।

घ्रेय–वि० (सं०) सूँघने योग्य ।

ङ

ङ–देवनागरी वर्णमालाके कवर्गका अंतिम वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है ।

ङ–पु० (सं०) इंद्रिय-विषय; विषयेच्छा; शिवका एक नाम (भैरव) ।

च

च–देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका पहला वर्ण । उच्चारण-स्थान तालु ।

चंक*–वि० समूचा । पु० उत्तर भारतके कृषकोंका एक उत्सव ।

चंकुर–पु० (सं०) रथ; सवारी; वृक्ष ।

चंक्रम, चंक्रमण–पु० (सं०) घूमना; टहलना; कूदना; टहलनेका स्थान ।

चंक्रमा–स्त्री० (सं०) घूमना; टहलना ।

चंक्रमित–वि० (सं०) घूमा या चक्कर खाया हुआ ।

चंग–वि० (सं०) स्वस्थ; सुंदर; चतुर । पु० (फा०) डफकी शकलका एक बाजा; गंजीफेकी एक बाजी; सितारका एक सुर । स्त्री० पतंग; वह पतंग जिसमें दिया बालकर उड़ाते हैं । **–नवाज़**–पु० चंग बजानेवाला । मु०–**उमहना,–चढ़ना**–जोर होना ।–**पर चढ़ाना**–मिजाज बढ़ा देना; अपने अनुकूल बनाना ।

चँगना*–स० क्रि० खीँचना, कसना; तंग करना ।

चँगला–स्त्री० एक रागिनी ।

चंगा–वि० स्वस्थ, नीरोग; निर्मल; भला ।

चंगु*–पु० दे० 'चंगुल' ।

चंगुल–पु० चिड़ियों, खासकर शिकारी चिड़ियोंका पंजा; हाथकी उंगलियोंके मोड़नेसे बनी मुद्रा, 'चुंगल' (चंगुल भर आटा); पकड़, काबू । मु०–**में फँसना**–पकड़में आना ।

चँगेर, चँगेरी–स्त्री० फूल रखनेकी डलिया; छिछली टोकरी; मशक; टोकरीका रस्सीसे बनाया हुआ झूला ।

चँगेरा–पु० दे० 'चँगेर' ।

चंगेरिक–पु०, **चंगेरिका**–स्त्री० (सं०) टोकरी, डलिया ।

चँगेली–स्त्री० दे० 'चँगेरी' ।

चंच–पु० (सं०) टोकरी, डलिया; पाँच अँगुलकी एक माप । * स्त्री० चोंच–'मरते दम जलमें पड़ा, तऊ न बोरी चंच'–कबीर ।

चंचत्क–वि० (सं०) उछलने, कूदनेवाला; गमनशील; काँपने, हिलनेवाला ।

चंचनाना–अ० क्रि० चुनचुनाना ।

चंचरी–स्त्री० (सं०) भ्रमरी; एक वर्णवृत; एक मात्रिक छंद; चाँचरि नामक गीत ।

चंचरी (रिन्), चंचरीक–पु० (सं०) भ्रमर ।

चंचरीकावली–स्त्री० (सं०) भ्रमरोंका समूह; एक वर्णवृत्त ।

चंचल–वि० (सं०) एक जगह, एक स्थितिमें न रहनेवाला, अस्थिर; डाँवाडोल; कंपित; चुलबुला, चपल; नटखट, शोख; कामुक । पु० वायु; प्रेमी; कामी । **–चित्त**–वि० अस्थिरचित्त ।

चंचलता–स्त्री० (सं०) अस्थिरता; चपलता ।

चंचलताई*–स्त्री० दे० 'चंचलता' ।

चंचला–स्त्री० (सं०) बिजली; लक्ष्मी; पिप्पली; एक वर्णवृत्त ।

चंचलाई*–स्त्री० चंचलता ।

चंचलाख्य–पु० (सं०) एक सुगंधित द्रव्य ।

चंचा–स्त्री० (सं०) बेत आदिकी बनी डलिया; चटाई । **–पुरुष**–पु० चिड़ियों आदिको डरानेके लिए बनाया जानेवाला पुआल आदिका पुतला; तुच्छ व्यक्ति ।

चंचु–पु० (सं०) एरंड; बरसातमें होनेवाला एक साग, चेंच; हिरन । स्त्री० चोंच । वि० चतुर; प्रसिद्ध । **–पत्र**–पु० एक साग । **–पुट**–पु० पक्षीकी बंद चोंच । **–प्रवेश**–पु० किसी विषयका अल्प ज्ञान । **–प्रहार**–पु० चोंचसे मारना । **–भृत्**–पु० पक्षी । **–सूचि**–पु० कारंडव पक्षी ।

चंचुका–स्त्री० (सं०) चोंच ।

चंचुता–स्त्री० (सं०) निपुणता, चतुरता ।

चंचुमान् (मत्)–पु० (सं०) पक्षी ।

चंचुर–वि० (सं०) दक्ष, चतुर ।

चंचुल–पु० विश्वामित्रका एक पुत्र ।

चंचू–स्त्री० (सं०) चोंच ।

चँचोरना–स० क्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना ।

चंट–वि० चतुर, चालाक, उस्ताद ।

चंड–वि० (सं०) तीक्ष्ण; उग्र; तीव्र; अति रोषशील; गरम; हानिकर; जिसका लिंगाग्रचर्म कटा हो । पु० उष्णता, गरमी; क्रोध; मुंड दैत्यका भाई; शिव; शिवका एक गण; कुबेरका एक पुत्र; स्कंद; इमलीका पेड़ । **–कर,–दीधिति,–भानु**–पु० सूर्य । **–कौशिक**–पु० एक ऋषि; संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक । **–घंटा**–स्त्री० दुर्गा । **–तुंडक**–पु० गरुड़का एक पुत्र । **–नायिका**–स्त्री० दुर्गा । **–भार्गव**–पु० एक ऋषि । **–मुंड**–पु० शुभ-निशुंभके दो सेनापति जो दुर्गाके हाथों मारे गये । **–मुंडा**–स्त्री० चामुंडा देवी । **–मुंडी**–स्त्री० एक तंत्रवर्णित देवी । **–रश्मि**–पु० सूर्य । **–रुद्रिका**–स्त्री० अष्टनायिकाओंके पूजनेसे प्राप्त होनेवाली सिद्धि (दे० 'अष्टनायिका') । **–रूपा**–स्त्री० एक देवी । **–विक्रम**–वि० प्रचंड पराक्रमवाला, प्रतापी । **–वृत्ति**–वि० हठी; विद्रोही । **–शक्ति**–वि० प्रचंड शक्ति, पराक्रमवाला । पु० बलिकी सेनाका एक दानव । **–शील**–वि० कामी ।

चंडता–स्त्री० (सं०) उग्रता; तीक्ष्णता ।

चंडवती–स्त्री० (सं०) दुर्गा; तांत्रिकोंकी अष्टनायिकाओंमेंसे एक ।

चंडांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

चंडा–वि० स्त्री० (सं०) उग्र स्वभाववाली, कोपनशीला (स्त्री) । स्त्री० दुर्गा; अष्टनायिकाओंमेंसे एक; एक गंधद्रव्य; सौंफ; सोवा; सफेद दूब ।

चंडाई*–स्त्री० उतावली; जोर-जबर्दस्ती ।

चंडाग्नि–स्त्री० (सं०) ब्रह्माग्नि (योगी नौ ब्रह्म द्वारोंको बन्दकर

केवल दसवें ब्रह्म द्वारको उद्घाटित कर इसे प्रज्वलित करता है) ।

चंडात–पु० (सं०) करवीर ।

चंडातक–पु० (सं०) छोटा लहँगा; साया ।

चंडाल–पु० (सं०) दे० 'चांडाल' । वि० क्रूरकर्मा । **–कंद**–पु० एक तरहका कंद । **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० कौआ । **–वाल**–पु० माथेपरका कड़ा, मोटा वाल (अशुभकारी) । **–वल्लकी,–वीणा**–स्त्री० एक तरहका तंबूरा या चिकारा ।

चंडालिका–स्त्री० (सं०) दुर्गा; चंडालवीणा; एक पेड़ ।

चंडालिनी–स्त्री० चांडाल, दुष्ट स्त्री ।

चंडावल–पु० सेनाका पृष्ठभाग; वीर सैनिक; पहरेदार ।

चंडि, चंडिका–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

चंडिक–वि० (सं०) तेज स्वरवाला; जिसका लिंगाग्रचर्म कटा हो । **–घंट**–पु० शिव ।

चंडिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) रोष; निष्ठुरता; ताप; जोश ।

चंडिल–पु० (सं०) रुद्र; हज्जाम; वथुआ साग ।

चंडी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; उग्र स्वभावकी, कर्कशा स्त्री । **–कुसुम**–पु० लाल कनेर । **–पति**–पु० शिव ।

चंडीश–पु० (सं०) शिव ।

चंडु–पु० (सं०) चूहा; एक छोटा वंदर ।

चंडू–पु० अफीमका किवाम जिसे नशेके लिए तंवाकूकी तरह पीते हैं । **–खाना**–पु० चंडू पीनेका स्थान । **–वाज़**–पु० चंडू पीनेवाला, जिसे चंडू पीनेकी लत हो । **मु०–ख़ानेकी गप**–झूठी, वेतुकी वात ।

चंडूल–पु० एक चिड़िया; भद्दी शकलका आदमी ।

चंडेश्वर–पु० (सं०) शिवका एक रक्तवर्ण रूप ।

चंडोग्रा–स्त्री० (सं०) दुर्गाकी एक शक्ति या नायिका ।

चंडोदरी–स्त्री० एक राक्षसी ।

चंडोल–पु० एक तरहकी पालकी; मिट्टीका एक खिलौना; चौवड़ा ।

चंद–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; पृथ्वीराजके दरवारी कवि चंदवरदाई जो पृथ्वीराजरासोके रचयिता माने जाते हैं । **–चूड**–पु० दे० 'चंद्रचूड़' । **–चूर***–पु० दे० 'चंद्रचूड' । **–सिरी**–स्त्री० (हिं०) हाथीके मस्तकपर पहनानेका एक गहना । **–वान**–पु० (हिं०) दे० 'चंद्रवाण' ।

चंद–वि० (फा०) कुछ, थोड़ेसे, दो-चार; (समासके अंतमें) गुणित (दोचंद, सेहचंद) । **–रोज़**–पु० थोड़े दिन, दो-चार दिन । **–रोज़ा**–वि० कुछ ही दिन टिकने, रहनेवाला । **–साला**–वि० कुछ वरसोंका ।

चंदक–पु० (सं०) चंद्रमा; चाँदनी; एक छोटी मछली; सिरपर पहननेका एक गहना । **–पुष्प**–पु० लौंग ।

चंदन–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी एक प्रधान गंधद्रव्य है, संदल; उसकी लकड़ी; चंदनको घिसकर वनवाया हुआ लेप । **–गिरि**–पु० मलयाचल । **–गोपा**–स्त्री० अनंतमूल लता । **–गोह**–स्त्री० (हिं०) एक तरहकी छोटी गोह । **–धेनु**–स्त्री० सौभाग्यवती मृत माताके उद्देश्यसे वृषोत्सर्गके स्थानपर दी जानेवाली चंदनांकित गाय । **–पुष्प**–पु० चंदनका फूल; लौंग । **–यात्रा**–स्त्री० अक्षय तृतीया । **–शारिवा**–स्त्री० दे० 'चंदनगोपा' । **–सार**–पु० घिसा हुआ चंदन; नौसादर, वज्रक्षार । **–हार**–पु० (हिं०) दे० 'चंद्रहार' ।

चंदना–स्त्री० (सं०) चंदनशारिवा । * पु० चंद्रमा ।

चंदनादि–पु० (सं०) चंदन, खस, कपूर, वकुची, इलायची, कपूर आदि पित्तशामक दवाओंका एक योग । **–तैल**–पु० दवाओंके योगसे वनाया जानेवाला आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध तेल ।

चंदनी–स्त्री० (सं०) रामायणमें वर्णित एक नदी; * चाँदनी । वि० चंदन संवंधी; चंदनकी सुगंधसे युक्त ।

चंदनी(निन्)–वि० (सं०) चंदनसे लिप्त । पु० शिव ।

चंदनीया–स्त्री० (सं०) गोरोचन ।

चँदनौता*–पु० एक तरहका लहँगा ।

चँदराना†–अ० क्रि० किसी वातको जानते हुए अनजानकी तरह पूछना, 'चिंदरना' ।

चँदला–वि० गंजा, खल्वाट ।

चँदवा–पु० गद्दी आदिके ऊपर खड़ा किया गया छोटा शामियाना, चँदोवा; गोल चकती; मोरपंखकी चंद्रिका; टोपीके ऊपरका गोल भाग; एक तरहकी मछली; तालावके भीतरका गड्ढा जिसमें मछली पकड़ी जाती है; एक शिरोभूषण ।

चंदाँ–वि० (फा०) इतना; अधिक; वहुत ।

चंदा–पु० वहुतोंसे उगहनी कर, थोड़ा-थोड़ा लेकर इकट्ठा किया हुआ धन, वेहरी; सदस्यताका शुल्क; सामयिक पत्र, पुस्तकका वार्षिक, छमाही आदि मूल्य; चाँद । **–मामा,–मामूँ**–पु० चाँद (वच्चोंको वहलानेके लिए कहा जाता है) ।

चंदावत–पु० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चंदावती–स्त्री० एक रागिनी ।

चंदावल–पु० दे० 'चंडावल' ।

चंदिका–स्त्री० दे० 'चंद्रिका' ।

चंदिनि, चंदिनी*–स्त्री० चाँदनी । वि० स्त्री० चाँदनीवाली ।

चँदिया–स्त्री० सिरका मध्य भाग, खोपड़ी; † पीछेकी छोटी रोटी; चाँदीकी टिकिया; तालका वह भाग जो अधिक गहरा हो । **मु० –खाना**–वकवाद करना । **–खुजाना**–सिर खुजलाना; मार खानेका काम करना । **–पर वाल न छोड़ना**–मारसे सिर गंजा कर देना; सव कुछ ले लेना । **–मूँड़ना**–हजामत वनाना; लूटकर खाना ।

चंदिर–पु० (सं०) चंद्रमा; हाथी; कपूर ।

चंदे–अ० (फा०) कुछ दिन, थोड़े दिन ।

चंदेरी–स्त्री० एक प्राचीन नगर । **–पति**–पु० चंदेरीनरेश, शिशुपाल ।

चंदेल–पु० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

चँदोया†–पु० दे० 'चंदवा' ।

चँदोवा–पु० छोटा शामियाना ।

चंद्र–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; जल; सोना; हीरा; चंद्रमा जैसा चिह्न; मोरपंखका अर्द्ध चंद्राकार चिह्न; अर्द्ध विसर्गका चिह्न; अर्द्ध अनुनासिकका चिह्न, चंद्रबिंदु; लाल रंगका मोती; चंद्रद्वीप; इड़ानाड़ी; मृगशिर नक्षत्र; (ला०) एककी संख्या; सुंदर, उज्ज्वल; आह्लादजनक वस्तु । वि० कमनीय; श्रेष्ठ (समासांतमें–पुरुषचंद्र) । **–कर**–पु० चंद्रकिरण, चाँदनी । **–कल**–वि० चंद्रमाकी-सी कांतिवाला । **–कला**–स्त्री० चंद्रमंडलका १६ वाँ भाग; चंद्रमाकी १६ कलाएँ (कामशास्त्रके अनुसार–पूषा, यशा, सुमनसा, रति, प्राप्ति, धृति, ऋद्धि, सौम्या, मरीचि, अंशुमालिनी, अंगिरा, शशिनी, छाया, संपूर्णमंडला, तुष्टि और अमृता); चंद्रमाकी किरण; माथेपर पहननेका एक गहना; एक वर्णवृत्त; एक सतताला ताल; छोटा ढोल; एक मछली; नखक्षत । **–०धर**–पु० महादेव । **–कांत**–पु० एक मणि जिसके विषयमें प्रसिद्धि है कि चंद्रकिरणके स्पर्शसे वह पसीज जाता है; चंदन; कुमुद; एक राग; एक नगर (चंद्रकांता) । **–कांता**–स्त्री० चंद्रमाकी पत्नी; रात; चाँदनी; लक्ष्मणके पुत्र चंद्रकेतुकी राजधानी; एक वर्णवृत्त । **–कांति**–स्त्री० चाँदनी; चाँदी । **–कुमार**–पु० चंद्रमाका पुत्र, वुध । **–कूट**–पु० कामरूप प्रदेशका एक पर्वत । **–केतु**–पु० लक्ष्मणका एक पुत्र जिसे रामने मल्लभूमिका राज्य दिया । **–क्रीड़**–पु० एक ताल । **–क्षय**–पु० अमावस्या । **–गिरि**–पु० काठमांडू (नेपाल)के पासका एक पर्वत । **–गुप्त**–पु० चित्रगुप्त; मौर्यवंशका प्रथम सम्राट् जो सिकंदरका समकालिक था; गुप्तवंशका प्रथम सम्राट्, समुद्रगुप्तका पिता; गुप्तवंशका सम्राट् जो समुद्रगुप्तका पुत्र था, द्वितीय चंद्रगुप्त । **–गृह**–पु० कर्क राशि । **–गोल**–पु० चंद्रमंडल । **–गोलिका**–स्त्री० चाँदनी । **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० पृथिवीकी छायासे चंद्रमंडलका छिप जाना, पौराणिक मतसे राहु द्वारा चंद्रमाका ग्रसन । **–घंटा**–स्त्री० एक देवी जिनकी गणना नौ दुर्गाओंमें है । **–चंचल**–पु०,**–चंचला**–स्त्री० चंद्रक नामक मछली । **–चूड**–पु० शिव । **–चूडामणि**–पु० शिव; ग्रहोंका एक योग । **–जनक**–पु० समुद्र । **–जोत**–स्त्री० (हिं०) चाँदनी; एक आतशवाजी, महतावी । **–ताल**–पु० एक ताल (संगीत) । **–दारा**–स्त्री० चंद्रमाकी पत्नी, अश्विनी इत्यादि २७ नक्षत्र । **–देव**–पु० चंद्रमा; महाभारतमें कौरवोंकी ओरसे लड़नेवाला एक

राजा । **–द्युति**–स्त्री० चाँदनी । पु० चंदन । **–द्वीप**–पु० पुराण-वर्णित १८ द्वीपोंमेंसे एक (पूर्व बंगालके बरीसाल, फरीदपुर और खुलना जिलोंका कुछ भाग) । **–धनु(स्)**–पु० चाँदनीमें दिखाई देनेवाला इंद्रधनुष् । **–धर**–पु० (चंद्रमाको धारण करनेवाले) शिव । **–निभ**–वि० चमकीला; सुंदर । **–पंचांग**–पु० चांद्र तिथि-मासके आधारपर निर्मित पंचांग । **–पर्णी**–स्त्री० प्रसारिणी लता । **–पाद**–पु० चंद्रकिरण । **–पाषाण**–स्त्री० पु० चंद्रकांत मणि या प्रस्तर । **–पुत्र**–पु० बुध ग्रह । **–पुष्पा**–स्त्री० चाँदनी; बकुची; सफेद भटकटैया । **–प्रभ**–वि० चाँदकी-सी प्रभा, कांतिवाला । पु० जैनोंके आठवें तीर्थंकर; एक बोधिसत्त्व । **–प्रभा**–स्त्री० चंद्रज्योति, चाँदनी; बकुची; कचूर । **–प्रमर्दन**–पु० राहुका एक भाई । **–प्रासाद**–पु० छतपरका कमरा, चंद्रशाला । **–बंधु**–पु० शंख; कुमुद । **–बधूटी***–स्त्री० बीरबहूटी । **–बाण**–पु० वह बाण जिसका फल चंद्राकार हो । **–बाला**–स्त्री० चंद्रमाकी पत्नी; चंद्रकिरण; बड़ी इलायची । **–बिंदु**–पु० सानुनासिक वर्णके ऊपर लगाया जानेवाला अर्द्धचंद्राकार चिह्न सहित बिंदु । **–बिंब**–पु० चंद्रमाका प्रकाशमय वर्तुलाकार रूप; संपूर्ण जातिका एक राग । **–बोड़ा**–पु० (हिं०) एक तरहका अजगर । **–भस्म**–पु० कपूर । **–भा**–स्त्री० दे० 'चंद्रपुष्पा' । **–भाग**–पु० चंद्रमाकी कला, अंश; हिमालयके अंतर्गत एक पर्वत । **–भागा**–स्त्री० चंद्रभाग पर्वतसे निकली हुई चनाब नदी । **–भाट**–पु० (हिं०) अर्द्ध गृहस्थ शैव संप्रदायका एक भेद । **–भानु**–पु० सत्यभामासे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र । **–भाल**–पु० शिव । **–भास**–पु० तलवार । **–भूति**–स्त्री० चाँदी । **–भूषण**–पु० शिव । **–मंडल**–पु० चंद्रमाका बिंब; चंद्रमाके चारों ओर कभी-कभी दिखाई देनेवाली गोलाकार परिधि । **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि; उल्लाला छंद । **–मल्लिका**–स्त्री० एक तरहकी चमेली । **–मह**–पु० कुत्ता । **–मात्रा**–स्त्री० तालका एक भेद । **–माला**–स्त्री० एक छंद । **–मुकुट**–पु० शिव । **–मुख**–वि० चंद्रमा जैसे मुँहवाला । **–मुखी**–वि० स्त्री० चंद्रमा जैसे मुखवाली, विधुवदनी, सुंदरी । **–मौलि**–पु० शिव । **–रत्न**–पु० मोती । **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० चंद्रकला; चंद्रकिरण; एक अप्सरा; बाणासुरकी कन्या उषाकी सखी; एक वर्णवृत्त । **–रेणु**–पु० काव्यचौर । **–लोक**–पु० चंद्रमाका लोक । **–वंश**–पु० भारतवर्षका दूसरा प्रधान राजवंश जिसका आरंभ बुधके पुत्र पुरूरवासे माना जाता है । **–वंशी**–वि० (हिं०) दे० 'चंद्रवंशीय' । **–वंशीय**–वि० चंद्रवंशमें उत्पन्न । **–वदन**–वि० चंद्रमा जैसे मुखवाला । (स्त्री० 'चंद्रवदनी' ।)**–वधू**–स्त्री० बीरबहूटी । **–वर्त्म(न्)**–पु० एक वर्णवृत्त । **–वल्लरी**–स्त्री० सोम लता । **–वल्ली**–स्त्री० सोम लता; माधवी लता । **–वार**–पु० सोमवार । **–विंदु**–पु० दे० 'चंद्रविंदु' । **–वेष**–पु० शिव । **–व्रत**–पु० चांद्रायण व्रत । **–शाला,–शालिका**–स्त्री० चाँदनी; छतके ऊपरका कमरा या बँगला जिससे चाँदनीका पूरा आनंद लिया जा सके । **–शिला**–स्त्री० चंद्रकांत मणि । **–शुल्क**–पु० जंबुद्वीपका एक उपद्वीप । **–शूर**–पु० चंसुर । **–शृंग**–पु० दूजके चंद्रमाके नुकीले छोर । **–शेखर**–पु० चंद्रमा है शेखर (शिरोभूषण) जिसका, शिव; एक पर्वत; आठ तालोंमेंसे एक । **–संज्ञ**–पु० कपूर । **–संभव**–पु० बुध । **–संभवा**–स्त्री० छोटी इलायची । **–सरोवर**–पु० ब्रजमंडलमें गोवर्द्धनके पासका एक तीर्थ-स्थान । **–सुत**–पु० बुध । **–हार**–पु० एक तरहका कंठहार । **–हास**–पु० तलवार, खड्ग; रावणकी तलवार । **–हासा**–स्त्री० सोम लता ।

चंद्रक–पु० (सं०) चंद्रमा; चाँदनी; मोरपंखपरका चंद्राकार चिह्न; नाखून; सफेद मिर्च; एक मछली; सहजन; एक राग; चंद्र जैसा गोल चिह्न ।

चंद्रकी(किन्)–वि० (सं०) चंद्रकवाला । पु० मोर ।

चंद्रगुप्त–पु० (सं०) दे० 'चंद्र'में ।

चंद्रपुरी, चंद्रपुलि–स्त्री० गरीके मेलसे बननेवाली एक बँगला मिठाई ।

चंद्रमा(मस्)–पु० (सं०) सौरमंडलका एक उपग्रह, चाँद (व्यास २१६२ मील, परिमाण पृथिवीका १।४९, पृथ्वीसे दूरी २३८८०० मील); मास; कपूर । **–ललाट,–ललाम**–पु० (हिं०) शिव ।

चंद्रांकित–पु० (सं०) महादेव ।

चंद्रांशु–पु० (सं०) चंद्रकिरण; विष्णु ।

चंद्रा–स्त्री० (सं०) चँदोवा; खुला दालान; छोटी इलायची; गुडुच ।

चंद्रागतिघात–पु० (सं०) मृदंगकी एक थाप ।

चंद्रातप–पु० (सं०) चाँदनी; चँदोवा, वितान; खुला दालान ।

चंद्रात्मज–पु० (सं०) बुध ।

चंद्रानन–वि० (सं०) चाँद-सा मुखड़ेवाला । पु० कार्त्तिकेय ।

चंद्रानना–वि० स्त्री० (सं०) चाँद जैसे मुखड़ेवाली, चंद्रमुखी ।

चंद्रापीड–पु० (सं०) शिव; कश्मीरका एक राजा, प्रतापादित्यका बड़ा बेटा; कादंबरी गद्यकाव्यका नायक ।

चंद्रायण*–पु० चांद्रायण ।

चंद्रायतन–पु० (सं०) चंद्रशाला ।

चंद्रार्द्ध–पु० (सं०) अर्द्धचंद्र । **–चूड़ामणि**–पु० शिव ।

चंद्रालोक–पु० (सं०) चाँदनी; जयदेवकृत एक प्रसिद्ध अलंकारग्रंथ ।

चंद्रावती–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

चंद्रावली–स्त्री० (सं०) राधाकी एक सखी; एक योगिनी ।

चंद्रिकांबुज–पु० (सं०) कुमुद ।

चंद्रिका–स्त्री० (सं०) चाँदनी; प्रकाश; चंद्रभागा नदी; बड़ी इलायची; मोर की पूँछ का अर्धचंद्राकार चिह्न; जूही या चमेली; चाँदा मछली; मेथी; एक गहना, बेंदी, बेंदा । **–द्राव**–पु० चंद्रकांत मणि । **–पायी(यिन्)**–पु० चकोर ।

चंद्रिकातप–पु० (सं०) चाँदनी ।

चंद्रिकाभिसारिका–स्त्री० (सं०) प्रियसे मिलनेके लिए चाँदनी रातमें संकेतस्थलकी ओर जानेवाली नायिका, शुक्लाभिसारिका नायिका ।

चंद्रिकोत्सव–पु० (सं०) शरत्पूर्णिमाको मनाया जानेवाला उत्सव ।

चंद्रिमा–स्त्री० (सं०) चाँदनी ।

चंद्रिल–पु० (सं०) हज्जाम; शिव; बथुएका साग ।

चंद्री(द्रिन्)–वि० (सं०) जिसके पास सुवर्ण हो ।

चंद्रेष्टा–स्त्री० (सं०) कुमुदिनी ।

चंद्रोदय–पु० (सं०) चंद्रमाका उदय; चँदोवा; आयुर्वेदकी एक प्रसिद्ध रसौषध ।

चंद्रोपराग–पु० (सं०) चंद्रग्रहण ।

चंद्रोपल–पु० (सं०) चंद्रकांत मणि ।

चंप–पु० (सं०) चंपा; कचनार । **–कली**–स्त्री० गलेमें पहननेका एक गहना, चंपाकली । **–कुंद**–पु० एक तरहकी मछली ।

चंपई–वि० चंपाके फूल जैसे रंगका । पु० उक्त रंग ।

चंपक–पु० (सं०) एक पुष्पवृक्ष, चंपा; उसका फूल; एक राग; चंपा-केला; एक गंधद्रव्य । **–माला**–स्त्री० चंपाके फूलोंकी माला; चंपाकली; एक वर्णवृत्त । **–रंभा**–स्त्री० चंपा केला ।

चंपकारण्य–पु० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ, आधुनिक चंपारन ।

चंपकालु–पु० (सं०) कटहल ।

चंपकावती–स्त्री० (सं०) चंपापुरी ।

चंपकोश–पु० (सं०) कटहल ।

चंपत–वि० चलता, गायब (इस शब्दका प्रयोग सदा 'बनना' या 'होना'के साथ मुहावरेकी तरह होता है) ।

चंपना*–स० क्रि० दबाना, चाँपना, चढ़ बैठना ।

चँपना–अ० क्रि० चाँपा जाना, दबना; लज्जा या उपकारके बोझसे दबना ।

चंपा–पु० एक पुष्पवृक्ष; उसका हलके, पीले रंगका फूल जो अपनी तीव्र गंधके लिए प्रसिद्ध है; एक तरहका मीठा केला; रेशमके कीड़ेका एक भेद; एक सदाबहार पेड़; घोड़ेकी एक जाति । **–कली**–स्त्री० एक तरहका हार जिसके दाने चंपाकी कलीके-से होते हैं ।

चंपा–स्त्री० (सं०) अंगदेशकी राजधानी, कर्णपुरी । **–पुरी**–स्त्री० कर्णकी राजधानी कर्णपुरी ।

चंपारण्य–पु० (सं०) दे० 'चंपकारण्य' ।

चंपालु–पु० (सं०) दे० 'चंपकालु' ।

चंपावती–स्त्री० (सं०) चंपापुरी ।

चंपी–स्त्री० किसी के सिर या अन्य अंगको बारबार दबानेकी क्रिया ।

चंपू–पु० (सं०) गद्य-पद्य-मय काव्य ।

चंबल–स्त्री० एक नदी जो विंध्याचलके पहाड़ोंसे निकलकर यमुनामें मिली है । पु० भीख माँगनेका प्याला; चिलमका सरपोश; पानीकी बाढ़; नहरके किनारे लगी हुई पानी चढ़ानेकी लकड़ी ।

चंबली–स्त्री० एक तरहका छोटा प्याला ।

चंबी–स्त्री० कपड़ेकी छपाईमें काम आनेवाला कागज या मोम-जामेका टुकड़ा ।

चँबेली–स्त्री० दे० 'चमेली' ।

चँवर–पु० सुरागायकी पूँछके बालोंका गुच्छा; घोड़े आदिके सिरपर लगानेकी कलँगी; † वह विस्तृत नीची जमीन जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा होता और धानकी खेती होती हो । **–ढार** –पु० चँवर डुलानेवाला ।

चँवरी–स्त्री० चँवरकी शकलका घोड़ेकी पूँछके बालोंका गुच्छा जिससे उसके बदनपरसे मक्खियाँ उड़ाते हैं; दे० 'चउरी' ।

चंसुर–पु० एक साग ।

च–पु० (सं०) शिव; चवाना; चंद्रमा; कछुआ; दुर्जन; चोर । अ० और । वि० बीजरहित; बुरा, नीच; विशुद्ध ।

चई–स्त्री० एक वृक्ष जिसकी जड़ और लकड़ी दवाके काम आती है ।

चउतरा, चऊतरा†–पु० दे० 'चबूतरा' ।

चउपाई*–स्त्री० दे० 'चौपाई' ।

चउर*–पु० दे० 'चँवर' ।

चउरा–पु० दे० 'चौरा' ।

चउरी*–स्त्री० विवाहमंडप ।

चउहट्ट*–पु० चौहट्ट, चौराहा ।

चउहान*–पु० दे० 'चौहान' ।

चक–पु० चकवा; चकई नामका खिलौना; पहिया; जमीनका बड़ा खंड; एक अस्त्र, चक्र; करघेमें लगनेवाला एक लकड़ी-का औजार, कलथरा; छोटा गाँव, पुरवा; एक गहना; आधिक्य; अधिकार । वि० भरपूर; भौचक्का, चकित । **–चाल**–स्त्री० चक्कर । **–डोर**–स्त्री० चकईकी डोरी । **–तराशी**–स्त्री० चकबंदी । **–फेरी**–स्त्री० परिक्रमा । **–बंदी**–स्त्री० छोटे छोटे खेतोंको मिलाकर उनके बड़े चक बनाना । **–बस्त**–वि० चकोंमें बँटा हुआ । पु० कश्मीरी ब्राह्मणोंकी एक उपजाति । मु० **–जमना**–रंग जमना ।

चकई–स्त्री० मादा चकवा; घिरनीके आकारका एक खिलौना जिसे डोर लपेटकर नचाते हैं । वि० गोल बनावटका ।

चकचकाना–अ० क्रि० रसना; गीला होना ।

चकचकी–स्त्री० करताल ।

चकचाना*–अ० क्रि० चौंधियाना ।

चकचाव*–पु० चकाचौंध ।

चकचून, चकचूर*–वि० पिसा हुआ, चकनाचूर–'टूटहिं परबत मेरु पहारा । होइ चकचून उड़हिं तेहि झारा'–प० ।

चकचूरना*–स० क्रि० चकनाचूर करना ।

चकचोढ़ा*–पु० चकाचौंध ।

चकचोही*–वि० स्त्री० चिकनी-चुपड़ी ।

चकचौंध–स्त्री० दे० 'चकाचौंध' ।

चकचौंधना–अ० क्रि० चौंधियाना । स० क्रि० आँखोंमें चकाचौंध पैदा करना ।

चकचौंधी, चकचौंह*–स्त्री० दे० 'चकाचौंध' ।

चकचौहना*–स० क्रि० आशाभरी दृष्टिसे देखना ।

चकड़बा–पु० दे० 'चकरबा' ।

चकत–पु० चकोटा ।

चकता–पु० दे० 'चकत्ता' ।

चकताई*–पु० दे० 'चग़ताई' ।

चकती–स्त्री० कपड़े या चमड़े आदिका छोटा टुकड़ा जो दूसरे कपड़े या चमड़े आदिमें जोड़की तरह लगाया गया हो, पैवंद; धज्जी; दुंबे मेढेकी दुम ।

चकत्ता–पु० त्वचापर पड़ा हुआ बड़ा निशान; दाँत काटनेका निशान; ददोरा; दे० 'चग़त्ता' (चग़ताई) ।

चकना*–अ० क्रि० चकित होना, चौंकना ।

चकनाचूर–वि० जो टूटकर चूर-चूर हो गया हो, चूर्णित; बहुत थका हुआ; शिथिल और लस्त ।

चकपक–वि० चकित, भौंचक ।

चकपकाना–अ० क्रि० भौंचक होना, चौंकना, चकित होना ।

चक़मक़–पु० (तु०) एक तरहका पत्थर जिसपर आघात करनेसे आग निकलती है (दियासलाईके आविष्कारके पहले इसीसे आग झाड़कर दिया बालते, आग सुलगाते थे) ।

चकमा–पु० ध्यान दूसरी ओर हटाकर दिया गया धोखा, भुलावा, जुल (खाना, देना); हानि; लड़कोंका एक खेल ।

चक़माक़–पु० (तु०) चकमक ।

चक़माक़ी–वि० जिसमें चकमक लगा हो । स्त्री० वह बंदूक जिसमें बारूदमें आग देनेके लिए चकमक लगा हो ।

चकर*–पु० चकवा; दे० 'चक्कर'; छोटी अँगूठी; पवित्री ।

चकरबा–पु० चक्कर, फेर; दुविधाकी या विकट स्थिति; झगड़ा, फसाद; दंगा ।

चकरा*–वि० चौड़ा । † पु० पानीका भँवर ।

चकराना–अ० क्रि० सिरका घूमना, चक्कर खाना; चकित, हैरान होना, चकपकाना ।

चकरानी–स्त्री० दे० 'चाकरानी' (नौकरानी) ।

चकरिया–पु० चाकरी करनेवाला, टहलुआ ।

चकरी–स्त्री० चक्की; चकई नामक खिलौना । वि० स्त्री० चौड़ी ।

चकल–पु० दूसरी जगह लगानेके लिए मिट्टीके साथ पौधेको उखाड़ना; ऐसे पौधेमें लगी हुई मिट्टीकी पींड़ी ।

चकलई–स्त्री० चौड़ाई, विस्तार ।

चकला–पु० रोटी बेलनेका पाटा, चौका; चक्की, प्रदेश, इलाका; व्यभिचारसे जीविका चलानेवाली स्त्रियोंका अड्डा, कसबीखाना । वि० चौड़ा । **–(ले)दार**–पु० चकलेका हाकिम; मालगुजारी वसूल करनेवाला अफसर ।

चकलाना–स० क्रि० चौड़ा करना; दूसरी जगह लगानेके लिए पींड़ीके साथ पौधा उखाड़ना ।

चकली–स्त्री० छोटा चकला; गड़ारी । वि० स्त्री० चौड़ी ।

चकल्लस–स्त्री० झगड़ा-टंटा; झंझट, बखेड़ा; मित्रोंका आपसमें हास-परिहास ।

चकवँड़–पु० एक बरसाती पौधा जिसकी छाल, पत्तियाँ आदि दवाके काम आती हैं, चक्रमर्द; कुम्हारोंका पात्र जो हाथ धोनेके लिए चाकके पास रखा रहता है ।

चकवा–पु० एक पक्षी जो भारतवर्षमें जाड़ेके दिनोंमें जलाशयोंके किनारे पाया जाता है और जिसके विषयमें यह प्रसिद्ध है कि रातमें जोड़ेसे उसका वियोग हो जाता है, चक्रवाक; † चपटी करके थोड़ी बढ़ाई हुई लोई ।

चकवाना*–अ० क्रि० चकित होना ।

चकवारि*–पु० कछुआ–'उर निरखि चकवारि बिथके, कटि निरखि बनराज'–सूर ।

चकवाह*–पु० दे० 'चकवा' ।

चकवी*–स्त्री० दे० 'चकई' ।

चकहा*–पु० चक्का, पहिया ।

चका*–पु० दे० 'चक्क', पहिया; चकवा । वि० चकित ।

चकाचक–वि० तर-बतर । अ० तृप्त होकर, अघाकर । स्त्री० तलवार आदिके लगातार आघातका शब्द ।

चकाचौंध–स्त्री० प्रकाशकी प्रखरतासे दृष्टिका स्थिर न रह सकना, आँखका झपकना, तिलमिलाहट; हैरानी ।

चकाचौंधी–स्त्री० दे० 'चकाचौंध' ।

चकाना*–अ० क्रि० चकित होना, हैरान होना ।

चकाबू, चकाबूह–पु० दे० 'चक्रव्यूह' । मु०**–में पड़ना, फँसना**–चक्करमें पड़ना ।

चकार–पु० (सं०) सहानुभूतिसूचक शब्द; च अक्षर या उसकी ध्वनि ।

चकासना*–अ० क्रि० चमकना, प्रकाशित होना–'आपने भावतें तारे अनंत जु आपने भावतें बीज चकासैं'–सुंदरदास ।

चकासित–वि० (सं०) प्रकाशित, दीप्तियुक्त ।

चकित–वि० (सं०) विस्मित, आश्चर्यित; हैरान, भौंचक; चौंका हुआ; शंकित; भीत; घवराया हुआ ।

चकितवंत*–वि० चकित, विस्मित ।

चकिता–स्त्री० (सं०) वर्णवृत्त ।

चकिताई*–स्त्री० अचंभा, विस्मय ।

चकुला*–पु० चिड़ियाका वच्चा ।

चकुलिया–स्त्री० एक तरहकी झाड़ी ।

चकृत–वि० दे० 'चकित' ।

चकेठ–पु० चाक घुमानेका डंडा ।

चकैया*–स्त्री० चकई । † वि० चिपटापन लिये हुए गोल ।

चकोटना*–स० क्रि० चिकोटी काटना, वकोटना ।

चकोतरा–पु० एक तरहका वड़ा नीबू, महानीबू ।

चकोता–पु० एक चर्मरोग ।

चकोर, चकोरक–पु० (सं०) तीतरकी जातिका एक पक्षी जो चंद्रमाका परम प्रेमी माना जाता है ।

चकोरी–स्त्री० (सं०) मादा चकोर ।

चकोह|–पु० पानीका भँवर ।

चकौंड़ा|–पु० चकवँड़ ।

चकौंध*–स्त्री० दे० 'चकाचौंध' ।

चक्क–पु० (सं०) कष्ट, पीड़ा; * चकवा; चाक; दिशा, खूँटा ।

चक्कर–पु० पहिये जैसी वस्तु; चाक; चक्र; घेरा, मंडल; (घोड़दौड़ आदिका) वृत्ताकार मार्ग; फेरा, परिक्रमा; घुमाव; फेर; हैरानी; पेच-पाच; सिरका घूमना; भँवर; कुश्तोका एक पेंच; एक अस्त्र । **–दार**–वि० घुमाव, पेच या फेरवाला । मु० **–काटना**–गोलाईमें घूमना; फेरा करना; भटकना । **–खाना** घूमना; पहिये या चाककी तरह घूमना; घुमावके रास्ते जाना । **–पड़ना**–गाज गिरना, वज्रपात होना । **–बाँधना**–इस तरह घूमना कि वृत्त वन जाय । **–मारना**–चक्कर लगाना; भटकना । **–में आना**–हैरान होना, भौंचक होना ।

चक्कल–वि० (सं०) गोल, वर्तुल ।

चक्कवइ*–वि०, पु० दे० 'चक्रवर्ती ।'

चक्कवत*–पु० चक्रवर्ती राजा ।

चक्कवा*–पु० दे० 'चकवा' ।

चक्कवै*–वि०, पु० दे० 'चक्रवर्ती' ।

चक्कस–पु० बुलबुल आदिके वैठनेका अड्डा ।

चक्का–पु० पहिया; थक्का; ढेला; वड़ा, जमा हुआ टुकड़ा; गिनतीके लिए क्रमसे लगाये हुए पत्थरों या ईंटोंका ढेर । **–व्यूह** *–पु० चक्रव्यूह ।

चक्की–स्त्री० पत्थरका बना आटा पीसने या दाल दलनेका यंत्र, जाँता; घुटनेकी गोल हड्डी; ऊँटके वदनपरका गोल घट्ठा । **–रहा**–पु० चक्कीको कूटकर खुरदरी करनेवाला । **–का पाट**–दो गोल, कुटे हुए पत्थरोंमेंसे एक जिससे चक्की वनती है । –मु० **–पीसना**–आटा पीसना, चक्की चलाना; कड़ी मेहनत करना ।

चक्खी–स्त्री० चाट, चटपटी चीज; बुलबुल आदिको लड़ाते समयकी चुगाई ।

चक्नस–पु० (सं०) वेईमानी; कुटिलता; छल-कपट ।

चक्र–पु० (सं०) चाका, पहिया; चाक; तेल पेरनेका कोल्हू; चक्की; पहियेके आकारका एक अस्त्र; भँवर; ववंडर; समूह; सेना; राज्य; सेनाका मंडलाकार व्यूह; (सशस्त्र पुलिसके) कई आदमियोंका एक साथ मिलकर गोली चलानेका दौर, वाढ़; एक समुद्रसे दूसरे समुद्रतक फैला हुआ प्रदेश; रेखाओंसे घिरे हुए खाने; ग्रामसमूह, मंडल; योगवर्णित देहके भीतरके ६ पद्म (मूलाधार, मणिपूर आदि, दे० 'षट्चक्र'); वृत्त, घेरा; हथेली, तलवेकी मंडलाकार रेखा; पक्षियोंका मंडलाकार उड़ना; भ्रमण, चक्कर (कालचक्र); वर्षसमूह; तगरका फूल; चित्रकाव्यका एक भेद; षड्यंत्र, साजिश; छल; चकवा; एक वर्णवृत्त; * दिशा । **–कारक**–पु० नाखून; नखी नामक गंधद्रव्य । **–कुल्या**–स्त्री० पिठवन । **–गंडु**–पु० गोल तकिया । **–गज**–पु० चकवँड़ । **–गति**–स्त्री० चक्राकार गति, गोलाईमें घूमना । **–गुच्छ**–पु० अशोक वृक्ष । **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० रथचक्रकी रक्षा करनेवाला; सेनापति; राज्यरक्षक । **–ग्रहणी**–स्त्री० दुर्गप्राचीर । **–चर**–पु० कुम्हार; तेली; वाजीगर । **–चारी(रिन्)**–पु० रथ । वि० मंडलाकार गमन करनेवाला (पक्षी) । **–जीवक,–जीवी(विन्)**–पु० कुम्हार । **–ताल**–पु० चौताला तालका एक भेद । **–तीर्थ**–पु० प्रभास क्षेत्रके अंतर्गत एक तीर्थ (देवासुर-संग्रामके वाद सुदर्शन चक्रमें लगा रुधिर धोनेसे इसकी उत्पत्ति मानी जाती है) । **–तुंड**-पु० गोल मुँहवाली एक मछली । **–दंड**–पु० एक तरहकी कसरत । **–दंती**–स्त्री० दंती वृक्ष; जमालगोटा । **–दंष्ट्र**–पु० सूअर । **–दत्त**–पु० चक्रपाणि-रचित एक वैद्यकग्रंथ । **–धर**–वि० चक्रधारण करनेवाला । पु० विष्णु; कृष्ण; राजा; मंडलाधिप; वाजीगर; सर्प; एक राग । **–धारा**–स्त्री० पहियेका घेरा । **–धारी(रिन्)**–दे० 'चक्रधर' । **–नख**–पु० व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य । **–नदी**–स्त्री० गंडकी नदी । **–नाभि**–स्त्री० चक्रकी नाभि, मध्य विंदु । **–नामा(मन्)**–पु० माक्षिक धातु; चकवा । **–नायक**–पु० व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य । **–नेमि**–स्त्री० चक्रकी परिधि । **–पद्माट** –पु० चकवँड़ । **–परिव्याध**–पु० आरग्वध नामक वृक्ष । **–पर्णी**–स्त्री० पिठवन । **–पाणि**–पु० विष्णु । **–पाद,–पादक**–पु० रथ; हाथी । **–पानि***–पु० चक्रपाणि । **–पाल**–पु० प्रदेश-विशेषका शासक, चकलेदार; सेनापति; व्यूहरक्षक; चक्रधर; वृत्त, मंडल; क्षितिज । **–पूजा**–स्त्री० एक तंत्रोक्त पूजा । **–फल**–पु० चक्र जैसे गोल फलवाला एक अस्त्र । **–बंध**–पु० चित्रकाव्यका एक भेद । **–बंधु,–बांधव**–पु० सूर्य । **–भृत्**–पु० चक्र धारण करनेवाला; विष्णु । **–भेदिनी**–स्त्री० (चकवा-चकवीको पृथक करनेवाली) रात्रि, रात । **–भोग**–पु० राशिचक्रका भोग, ग्रहका एक स्थानसे चलकर फिर उसी स्थानपर पहुँचना । **–भ्रम**–वि० चक्रकी तरह घूमनेवाला । पु० दे० 'चक्रभ्रमि' । **–भ्रमि**–स्त्री० खराद, सान । **–भ्रांति**–स्त्री० चक्रका घूमना । **–मंडल**–पु० नृत्यका एक प्रकार । **–मंडली(लिन्)**–पु० अजगर साँप । **–मर्द,–मर्दक**–पु० चकवँड़ । **–मुख**–पु० सूअर । **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक पूजनमें प्रयुक्त एक मुद्रा; शंख, चक्र आदिके चिह्न जो वैष्णव अपने शरीरपर छपवाते हैं । **–मेदिनी**–दे० 'चक्रभेदिनी' । **–यान**–पु० (वेहिकिल) सवारी या माल लाने, ले जानेकी कोई भी ऐसी गाड़ी जिसमें पहिये लगे हों । **–रक्ष**–पु० दे० 'चक्रगोप्ता' । **–रद**–पु० दे० 'चक्रदंष्ट्र' । **–लक्षणा**–स्त्री० गुड़ुच । **–लेखित्र**–दे० क्रममें । **–वर्तिनी**–स्त्री० जनी नामक गंधद्रव्य; अलक्तक; जटामासी । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० सार्वभौम । पु० सम्राट्, समुद्रपर्यंत पृथिवीका अधिपति; समूहका नायक; बथुआ । **–वाक**–पु० चकवा । **–वाट**–पु० सीमा; चिरागदान; कार्यमें प्रवृत्त होना । **–वाड**–पु० अग्नि; चक्रवाल । **–वात**–पु० चक्कर खाती हुई तेज हवा, ववंडर, वगूला । **–वाल**–पु० एक पुराणवर्णित पर्वत । **–वालधि**–पु० कुत्ता । **–वृद्धि**–स्त्री० वह व्याज जिसमें संचित व्याज भी मूलमें शामिल हो जाय, सूद-दर-सूद; गाड़ी आदिसे माल ढोनेका भाड़ा । **–व्यूह**–पु० चक्रके आकारमें सेनाकी स्थापना (महाभारतमें द्रोणाचार्यने इसी व्यूहकी रचना की थी जिसमें अभिमन्यु मारा गया) । **–शल्या**–स्त्री० सफेद घुँघची; काकतुंडी । **–श्रेणी**–स्त्री० अजश्रृंगी । **–संज्ञ**–पु० राँगा; चकवा । **–संवर**–पु० एक वुद्ध । **–साह्वय**–पु० चक्रवाक । **–स्वामी(मिन्),–हस्त**– पु० विष्णु ।

चक्रक–वि० (सं०) पहियेके आकारका, गोल, मंडलाकार । पु० एक तरहका साँप; युद्धका एक ढंग; एक प्रकारका तर्क ।

चक्रलेखित्र–पु० (साइक्लोस्टाइल) लेखनीकी नोकपर लगे हुए छोटेसे चक्रसे लिखे गये विशेष प्रकारके कागजसे वहुत-सी प्रतियाँ छाप देनेवाली मशीन ।

चक्रवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसमें चक्र, पहिया हो; चक्रधारी । पु० तेली; चक्रवर्ती ।

चक्रांक–पु० (सं०) वाहु आदिपर दगवाया हुआ चक्रका चिह्न ।

चक्रांकित–वि० (सं०) चक्रचिह्नयुक्त । पु० एक वैष्णव संप्रदाय ।

चक्रांकी–स्त्री० (सं०) हंसिनी ।

चक्रांग–पु० (सं०) रथ, गाड़ी; चकवा; हंस।

चक्रांगना–स्त्री० (सं०) चक्रवाकी।

चक्रांगा–स्त्री० (सं०) सुदर्शना लता; काकड़ासिंगी।

चक्रांगी–स्त्री० (सं०) हंसिनी; कुटकी; हुरहुर; मजीठ।

चक्रांत–पु० (सं०) दुरभिसंधि, षड्यंत्र।

चक्रांतर–पु० (सं०) एक बुद्ध।

चक्रांश–पु० (सं०) राशिचक्रका ३६० वाँ अंश।

चक्रा–स्त्री० (सं०) नागरमोथा; काकड़ासिंगी।

चक्राकी–स्त्री० (सं०) हंसिनी।

चक्राट–पु० (सं०) मदारी, सँपेरा; बाजीगर; ठग; स्वर्ण-मुद्रा, दीनार।

चक्राधिवासी(सिन्)–पु० (सं०) नारंगीका पेड़।

चक्रानुक्रमसे–अ० (इन रोटेशन) चक्रकी तरह बारीबारीसे, एकके बाद दूसरेके समुचित अनुक्रमसे।

चक्रायुध–पु० (सं०) विष्णु।

चक्रावल–पु० घोड़ोंके पाँवका एक रोग।

चक्राह्व, चक्राह्वय–पु० (सं०) चकवा; चकवँड़।

चक्रिक–वि० (सं०) चक्र धारण करनेवाला।

चक्रिका–स्त्री० (सं०) समूह; सेना; दुरभिसंधि; घुटनेपरकी गोल हड्डी।

चक्रित*–वि० दे० 'चकित'।

चक्रिय–वि० (सं०) रथपर जाता हुआ; यात्रा करता हुआ।

चक्री(क्रिन्)–वि० (सं०) चक्रयुक्त; चक्रधारी; गोल; रथादिपर सवार; सूचक। पु० चक्रवर्ती; कुम्हार; तेली; व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य; साँप; मुखबिर; षड्यंत्रकारी; विष्णु; शिव; मंडलाधीश, सम्राट्; बाजीगर; ठग; चकवा; कौवा; चकवँड़; बकरा; गधा। (स्त्री० 'चक्रिणी'।)

चक्रेश्वर–पु० (सं०) चक्रवर्ती; तांत्रिक; चक्रका अधिष्ठाता; विष्णु।

चक्रेश्वरी–स्त्री० (सं०) जैनोंकी एक महाविद्या।

चक्ष–पु० (सं०) नकली दोस्त।

चक्षण–पु० (सं०) चखना; चखनेकी चीज, चाट; कथन; अनुग्रह।

चक्षा(क्षस्)–पु० (सं०) बृहस्पति; आचार्य।

चक्षुः–'चक्षुस्'का समासगत रूप। **–पथ**–पु० दृष्टिपथ; क्षितिज। **–पीड़ा**–स्त्री० आँखका दर्द। **–श्रवा(वस्)**–पु० आँखोंसे सुननेवाला, साँप।

चक्षु(स्)–पु० (सं०) आँख; दृष्टि, देखनेकी शक्ति; रोशनी; तेज, कांति।

चक्षुर–'चक्षुस्'का समासगत रूप। **–अपेत**–वि० नेत्रहीन। **–इंद्रिय**–स्त्री० आँख। **–गोचर**–वि० दृष्टिगोचर। **–दान**–पु० प्राणप्रतिष्ठाके समय मूर्तिकी आँखोंमें रंग भरना। **–निरोध**–पु० आँखपर लगायी जानेवाली पट्टी। **–बंध**–पु० आँख ढकना। **–बहल,–वहन**–पु० अजश्शृंगी। **–भृत्**–वि० दृष्टिवर्द्धक। **–मल**–पु० आँखका मल, कीचड़। **–वन्य**–वि० नेत्ररोगसे ग्रस्त। **–विषय**–पु० दृष्टिपथ; दृष्टिका विषय; क्षितिज। **–हा(हन्)**–वि० दृष्टिमात्रसे नष्ट करनेवाला।

चक्षुष्–'चक्षुस्'का समासगत रूप। **–कर्ण**–पु० सर्प। **–पथ**–पु० दृष्टिपथ; क्षितिज।

चक्षुष्मान्(मत्)–वि० (सं०) आँखवाला; सुंदर आँखों, अच्छी निगाहवाला।

चक्षुष्य–वि० (सं०) आँखोंके लिए हितकर; सुंदर, प्रियदर्शन; नेत्रसे उत्पन्न। पु० अंजन; केवड़ा; सहिजन।

चक्षुष्या–स्त्री० (सं०) सुंदरी स्त्री; वनतुलसी; अजश्शृंगी; सुरमा।

चक्षू–'चक्षुस्'का समासगत रूप। **–राग**–पु० आँखकी लाली; आँखकी प्रिय वस्तु। **–रोग**–पु० नेत्ररोग।

चख*–पु० आँख।

चख़–स्त्री० (फा०) झगड़ा, तकरार; बैर। **–चख़**–स्त्री० झगड़ा, कहासुनी।

चखचौंध*–स्त्री० चकाचौंध।

चखना–स० क्रि० स्वाद लेना; रसास्वादन करना; स्वादके लिए खाना।

चखाचख–स्त्री० तलवारोंकी झनकार।

चखाचखी–स्त्री० विरोध, तनातनी; लाग-डाँट।

चखाना–स० क्रि० 'चखना'का प्रे०।

चखिया–वि० झगड़ालू, झकझक करनेवाला।

चखु*–पु० दे० 'चक्षु'।

चखोड़ा*–पु० दिठौना।

चखौती–स्त्री० चटपटी चीजें खाना; चटपटी चीजें, चिखना।

चगड़†–वि० चंट, चालाक।

चग़ताई–पु० (फा०) चंगेज खाँके बेटे चग़ताई खाँसे चला हुआ मंगोलवंश जिसमें बाबर, अकबर आदि हिंदुस्तानके मुगल बादशाह हुए।

चग़त्ता–पु० (तु०) दे० 'चग़ताई'।

चचर–स्त्री० वह परती जमीन जो एक सालसे जोतमें आयी हो।

चचा–पु० बापका भाई। **–ज़ाद**–वि० चचेरा। **मु० –बनाना**–खूब बदला लेना।

चचिया†–वि० चचेरा, चचा-संबंधी (ससुर, सास)।

चचीँड़ा–पु० दे० 'चिचिंडा'।

चची–स्त्री० चचाकी स्त्री, चाची।

चचेँड़ा†–पु० दे० 'चिचिंडा'।

चचेरा–वि० चचासे उत्पन्न, चचाज़ाद।

चचोड़ना–स० क्रि० दाँतोंसे दबाकर चूसना।

चचोड़वाना–स० क्रि० 'चचोड़ना'का प्रे०।

चच्चर*–पु० चाँचर, होलीके समय गाया जानेवाला गीत।

चच्छ–पु०, **चच्छि**–स्त्री० चक्षु, आँख।

चच्छु*–पु० दे० 'चक्षु'।

चट–अ० झट, तुरत। **–पट**–अ० झटपट, शीघ्र। **–से**–झट. तुरत।

चट–स्त्री० किसी चीजके टूटनेकी आवाज; उँगलियाँ फोड़नेका शब्द। **–चट**–स्त्री० 'चट-चट'की आवाज। **मु० –चट बलाएँ लेना**–उँगलियाँ चटकाते हुए (नजर लगानेवालेका नाश मनाते हुए) बलाएँ लेना।

चट–स्त्री० चाटनेका भाव। वि० चाट-पोंछकर खाया हुआ। **मु० –कर जाना**–चाट-पोंछकर खा जाना; निगल जाना।

चट*–पु० दाग, धब्बा; लांछन, कलंक; † पटसनका टाट। **–कल**–स्त्री० पटसनकी वस्तुएँ निर्मित करनेवाली फैक्टरी या मशीन। **–शाला**–स्त्री० छोटे बच्चोंकी पाठशाला। **–सार,–साल**–स्त्री० चटशाला; * रंगभूमि।

चटक–पु० (सं०) गौरवा। * वि० चटकीला; फुर्तीला; चटपटा। * अ० झटपट। स्त्री० चमक; रंगकी शोखी; भड़क; तेजी, फुरती; कलियोंके चटकनेकी क्रिया। **–दार**–वि० चटकीला, शोख। **–मटक**–स्त्री० ठसक, नाज-नखरा; सजधज। **–बाह†**–वि० फुरतीला। **–बाही†**–स्त्री० फुरती, शीघ्रता।

चटकई†–स्त्री० चटकीलापन, चमक; शीघ्रता, फुरती।

चटकका–स्त्री० (सं०) मादा चटक।

चटकन–पु० तमाचा।

चटकना–अ० क्रि० 'चट'की या हलकी आवाजके साथ टूटना, फूटना, जलना; फटना, तड़कना; कलीका खिलना; कपास, सेमलकी बोड़ीका फटना; झुँझलाना; बिगाड़ होना। पु० तमाचा।

चटकनी–स्त्री० किवाड़ बंद करनेकी कुंडी, सिटकिनी।

चटका†–पु० शीघ्रता; धब्बा; चरपरा स्वाद; चनेका अपुष्ट हरा ढोंढ़। स्त्री० (सं०) मादा चटक। **–मुख**–पु० एक प्राचीन अस्त्र। **–शिर(स्)**–पु० पीपरामूल।

चटकाना–स० क्रि० किसी चीजके चटकनेका कारण होना; 'चट'की आवाज पैदा करना; उँगलियाँ फोड़ना; तोड़ना; दूर करना; चिढ़ाना।

चटकारा–वि० चटकीला; चपल–'...मरकत मनि आँगन खेलत खंजरीट चटकारे'–सूर। पु० दे० 'चटखारा'।

चटकारी*–स्त्री० चुटकी।

चटकाली–स्त्री० (सं०) गौरैयोंकी पंक्ति; चिड़ियोंका झुंड।

चटकाहट–स्त्री० चटकनेका भाव; चटकने, कलियोंके खिलने आदिकी आवाज।

चटकिका–स्त्री० (सं०) मादा चटक।

चटकी–स्त्री० एक छोटी चिड़िया, गौरैया।

चटकीला–वि० चटकदार, चमकीला, शोख; चटपटा।

चटकोरा*–पु० बच्चोंका एक खिलौना।

चटखना–अ० क्रि० दे० 'चटकना'।

चटखनी–स्त्री० सिटकिनी।

चटखारा–पु० स्वादिष्ठ वस्तुको खाते समय जीभके तालूसे लगनेसे होनेवाली आवाज। मु०–**(रे)भरना**–स्वाद लेकर खाना, होंठ चाटना।

चटचटा–स्त्री० (सं०) हथियारोंके आपसमें लगने या लकड़ी आदिके जलनेसे उत्पन्न शब्द।

चटचटाना–अ० क्रि० 'चट-चट'की आवाजके साथ टूटना, फूटना, जलना; लस पैदा हो जाना, चिपकना।

चटचटायन–पु० (सं०) जलती लकड़ी या आगका चटचटाना।

चटचेटक–पु० जादू–'मोहन वसीकरन चटचेटक मंत्र जंत्र सब जानै हो'–गदाधर भट्ट।

चटन–पु० (सं०) फटना; दरकना; टुकड़े-टुकड़े होकर अलग होना।

चटनी–स्त्री० चाटनेकी चीज; नमक, मिर्च, खटाईके योगसे बना हुआ अवलेह जो स्वादके लिए भोजनके साथ खाया जाता है; चटनीके रूपमें बनी हुई दवा, अवलेह; काठका बना एक खिलौना जिसे बच्चे चाटा करते हैं। मु०–**करना**–बहुत बारीक पीसना; चाट जाना; निगल जाना।

चटपटा–वि० चरपरा, मिर्च-मसालेदार; मजेदार। पु० चटपटी चीज, चाट।

चटपटाना*–अ० क्रि० छटपटाना; † जल्दी करना, हड़बड़ी मचाना।

चटपटी–वि० स्त्री० दे० 'चटपटा'। स्त्री० घबड़ाहट, उतावली, छटपटी।

चटर–पु० 'चट-चट' शब्द।

चटरजी–पु० बंगाली ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, चट्टोपाध्याय।

चटरी†–स्त्री० एक कदन्न, केसारी।

चटवाना–स० क्रि० दे० 'चटाना'।

चटाई–स्त्री० घास, सींक, बेंतकी छाल आदिका बना बिछावन, साथरी; चाटनेकी क्रिया। –**दार**–वि० चटाई जैसी बुनावट-वाला (कपड़ा इ०)।

चटाक, चटाख–पु० चटाका; धब्बा, दाग, चकत्ता। –**पटाक, पटाख**–अ० झटपट; तेजीसे; 'चटपट' शब्दके साथ।

चटाका, चटाखा–पु० लकड़ी, चिमनी आदिके टूटने, उँगलीके चटकने, तमाचा आदि पड़नेकी आवाज; तमाचा, चाटा।

चटाचट–स्त्री० किसी वस्तुके टूटने, फूटनेकी 'चट-चट' आवाज। अ० 'चट-चट' आवाजके साथ।

चटान*–स्त्री० दे० 'चट्टान'।

चटाना–स० क्रि० चाटनेकी क्रिया कराना; थोड़ा-थोड़ा खिलाना; घूस देना; तलवार आदिपर सान धराना।

चटापटी–स्त्री० उतावली, जल्दी; संक्रामक रोगसे लोगोंका जल्दी-जल्दी मरना।

चटावन–पु० बच्चोंको पहली बार अन्न खिलाने या चटानेकी रस्म, अन्नप्राशन-संस्कार।

चटिक*–अ० चटपट, तत्काल।

चटिका–स्त्री० (सं०) मादा चटक; पिप्पलीमूल। –**शिर(स्)**–पु० पिप्पलीमूल।

चटियल–वि० पेड़-पौधोंसे रहित, सपाट (मैदान)।

चटी–स्त्री० चटशाला; एक तरहका जूता, चट्टी।

चटु–पु० (सं०) प्रियवाक्य, चापलूसी; पेट; आराधनाका एक आसन; चीत्कार। –**कार**–वि० खुशामदी। –**लालस**–वि० खुशामदपसंद।

चटुक–पु० (सं०) तरल पदार्थ रखनेके लिए बना हुआ काठका बरतन।

चटुल–वि० (सं०) चंचल; अस्थिर; सुंदर।

चटुला–स्त्री० (सं०) बिजली। वि० स्त्री० दे० 'चटुल'।

चटुलित–वि० (सं०) कंपित; हिलाया हुआ; सजाया हुआ।

चटुलोल, चटूल्लोल–वि० (सं०) सुचंचल; सुंदर; मधुरभाषी।

चटैल–वि० दे० 'चटियल'।

चटोर–वि० दे० 'चटोरा'। –**पन**–पु० चटोरापन, स्वादलोलुपता।

चटोरा–वि० स्वादिष्ठ, चटपटी चीजोंका शौकीन, स्वादलोलुप; खाने-पीनेमें रुपये उड़ानेवाला; लोभी।

चट्ट–वि० चाट-पोंछकर खाया हुआ; समाप्त, गायब।

चट्टा–पु० चेला, शागिर्द; चकत्ता; बाँसकी चटाई; मैदान।

चट्टान–स्त्री० वृहत् शिला, बड़ा पत्थर।

चट्टा-बट्टा–पु० काठके खिलौनों–चट्टू, झुनझुने आदिका समूह; (बहु० में) बाजीगरकी थैलीसे निकलनेवाले गोले या गोलियाँ। **मु० एक ही थैलीके चट्टे-बट्टे**–एक जैसे, एक ही विचार-स्वभावके मनुष्य। **चट्टे-बट्टे लड़ाना**–इधरकी उधर लगाकर झगड़ा कराना।

चट्टी–स्त्री० पड़ाव, यात्रियोंके टिकनेकी जगह; स्लिपर, एड़ीकी तरफ खुला हुआ जूता; हानि, टोटा; दंड।

चट्टू–वि० चटोरा। पु० काठका एक छोटा खिलौना जिसे छोटे बच्चे मुँहमें डालकर चाटते रहते हैं।

चड़–पु० लकड़ी आदिके फटनेका शब्द। –**चड़**–पु० सूखी लकड़ीके टूटने या जलनेका शब्द। –**से**–'चड़' शब्दके साथ।

चड़बड़–स्त्री० बक-बक, टर-टर।

चड़ाका†–पु० चटककर टूटनेका शब्द।

चड़ी†–स्त्री० उछलकर मारी हुई लात।

चड्डा, चड्ढा–पु० जाँघके ऊपरका जोड़; एक तरहका फोड़ा; मसखरा।

चड्डी–स्त्री० एक तरहका लँगोट।

चड्ढी–स्त्री० पीठकी सवारी; एक बच्चेका दूसरे बच्चेकी पीठपर सवार होनेका खेल। मु०–**गाँठना**–सवारी करना। –**देना**–हारकर पीठपर सवार कराना।

चढ़त–स्त्री० देवताको चढ़ायी हुई वस्तु, चढ़ावा।

चढ़ता–वि० बढ़ता, उठता, उभरता, आरंभ होता हुआ। (स्त्री० 'चढ़ती'।)

चढ़न*–स्त्री० चढ़नेकी क्रिया।

चढनदार–पु० राजकर ले जानेवालोंका संचालक (दे० 'रिसालदार)।

चढ़ना–अ० क्रि० नीचेसे ऊपरको जाना, ऊँचा होना; तेज, तीखा होना (स्वर); सवार होना; दलबलके साथ जाना, चढ़ाई करना; उठाना, उन्नति करना; बहावके विरुद्ध जाना; चढ़ाया जाना (कागज, खोल चढ़ना); तनना, कसा जाना; देवतादिको भेंट किया जाना; लगना, आरंभ होना (मास, नक्षत्र आदि); पावना होना, निकलना; लिखा जाना (नाम रकम); असर होना; आवेश होना (भूत); पोता जाना; पकनेके लिए चूल्हेपर चढ़ाया जाना; तेज, महँगा होना (भाव); मामला अदालतमें ले जाना; (नदीका) बढ़ना, बाढ़पर होना। **चढ़-बढ़कर, चढ़ा-बढ़ा**–वि० अधिक अच्छा, श्रेष्ठ। **मु० चढ़ दौड़ना**–चढ़ाई करना, चढ़ जाना। –**बनना**–मनचाही होना, बन आना। –**बैठना**––सवार हो जाना, दबा लेना।

चढ़वाना–स० क्रि० चढ़ने या चढ़ानेकी क्रिया कराना।

चढ़ाई–स्त्री० चढ़नेकी क्रिया, भाव; ऊँचाई या उत्तरोत्तर ऊँची होती जानेवाली भूमि; * चढ़ावा।

चढ़ा-उतरी–स्त्री० बार-बार चढ़ना-उतरना।

चढ़ा-उपरी, चढ़ा-चढ़ी–स्त्री० लाग-डाट, होड़, प्रतियोगिता।

चढ़ाना–स० क्रि० ऊपर ले जाना; लटकती हुई चीजको सिकोड़-सरकाकर ऊपर ले जाना (आस्तीन); तेज, ऊँचा, तीखा करना (भाव, स्वर); कसना; देवतादिको भेंट देना, अर्पण करना; (बही आदिमें) लिखना, दर्ज करना; खींचना, तानना (भौं, कमान); लादना (कर्ज); पोतना; मढ़ना; पी जाना, उदरस्थ करना; चढ़ने, चढ़ाई करनेको प्रेरित करना; खींचना (नाकसे पानी); प्रवेश कराना; ढीठ, शोख, घमंडी बना देना।

चढ़ानी–स्त्री० वह स्थान जो उत्तरोत्तर ऊँचा होता गया हो।

चढ़ाव–पु० चढ़नेका भाव, चढ़ाई; बढ़ाव; व्याहके समय वधूको वरपक्षकी ओरसे पहनाया जानेवाला गहना, चढ़ावा; धारा या वहावकी उलटी दिशा।

चढ़ावा–पु० पूजामें देवताको चढ़ायी जानेवाली सामग्री; चढ़ाव या डालका गहना या वधूको इसे पहनानेकी रस्म; वढ़ावा; चौराहे आदिपर रखी जानेवाली टोटकेकी सामग्री।

चढ़ैत–पु० चढ़नेवाला।

चढ़ैता–पु० घोड़ा फेरनेवाला सवार।

चढ़ौवाँ–पु० उठी हुई एड़ीका जूता।

चण–पु० (सं०) चना। **–द्रुम**–पु० क्षुद्र गोक्षुर। **–पत्री**–स्त्री० रुदंती नामक क्षुप।

चणक–पु० (सं०) चना; एक गोत्रकार ऋषि।

चणका–स्त्री० (सं०) तीसी।

चणकात्मज–पु० (सं०) चाणक्य, वात्स्यायन।

चणिका–स्त्री० (सं०) एक घास जो दवाके भी काम आती है।

चतरंग–पु० दे० 'चतुरंग'।

चतरभंग–पु० वैलोंका एक दोष।

चतरभंगा–वि० चतरभंग दोपवाला (वैल)।

चतुः–'चतुर्'का समासगत रूप। **–शफ**–वि० चार खुरोंवाला। **–शाख**–पु० शरीर। **–ष्टोम**–पु० दे० 'चतुष्टोम'। **–संप्रदाय**–पु० दे० 'चतुस्संप्रदाय'। **–सन**–पु० ब्रह्माके चार पुत्र–सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार; विष्णु। **–सम**–पु० दे० 'चतुस्सम'। **–समुद्र**–वि० चार समुद्रोंसे परिवेष्टित (पृथ्वी)। **–सीमा**–स्त्री० दे० 'चतुस्सीमा'। **–सूत्री**–स्त्री० दे० 'चतुस्सूत्री'।

चतुर–वि० (सं०) चालाक, होशियार, कार्यदक्ष; तेज, फुरतीला; सुंदर। पु० क्रिया-चतुर या वचन-चतुर नायक (सा०); हाथी-खाना; गोल तकिया; वक्र गति; होशियारी। **–क्रम**–पु० एक ताल (संगीत)। **–ग**–वि० तेज जानेवाला।

चतुरई*–स्त्री० दे० 'चतुराई'। मु० **–घोलना,–तौलना**–चालाकी करना–'जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहा चतुरई घोलत हो' –सूर।

चतुरक–वि० (सं०) दक्ष, होशियार।

चतुरपन, चतुरापन†–पु० चतुराई।

चतुरसम*–पु० दे० 'चतुस्सम'।

चतुरस्र–दे० 'चतुर्'के साथ।

चतुराई–स्त्री० होशियारी, चालाकी।

चतुर्–वि० (सं०) चार। पु० चारकी संख्या (इस रूपमें यह शब्द केवल समासमें व्यवहृत होता है)। **–अंग**–वि० चार अंगोंवाला। पु० चतुरंगिणी सेना; ऐसी सेनाका प्रधान अधिकारी; शतरंज; एक तरहका गाना जिसमें सरगम, तराना, तवले आदिके वोल वैठाये होते हैं। **–अंगिणी**–वि० स्त्री० चार अंगोंवाली (सेना)। स्त्री० हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल–इन चारों अंगोंसे युक्त सेना। **–अंगी(गिन्)**–वि० चार अंगोंवाला। **–अंगुल**–वि० चार अंगुल चौड़ा या लंबा। पु० अमलतास। **–अंगुला**–स्त्री० शीतली लता। **–अंत**–वि० चारों ओरसे सीमित। **–अंता**–स्त्री० पृथ्वी। **–अम्ल**–पु० अमलबेत, इमली, जंवीरी नीवू और कागजी नीवू–इन चार खट्टे फलोंका समाहार। **–अश्र,–अस्र**–वि० चौकोर, चतुष्कोण; सुडौल। पु० चौकोर आकृतिका क्षेत्र; चौथी या आठवीं राशि (ज्यो०); ब्रह्मसंतान नामका केतु। **–०पांडित्य**–पु०चौमुखी विद्वत्ता, चारों दिशाओंमें व्याप्त ज्ञान। **–०विकास**–पु० चारो तरफ होनेवाला, व्यापक, विकास। **–अह(न्)**–पु० चार दिनोंका काल; चार दिनोंमें पूरा होनेवाला एक सोमयज्ञ। **–आत्मा(त्मन्)**–पु० परमेश्वर; विष्णु। **–आनन**–वि० चार मुँहवाला; पु० ब्रह्मा। **–आश्रम**–पु० ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्न्यास–इन चार आश्रमोंका समाहार। **–इंद्रिय**–पु० चार इंद्रियोंवाले जीव। **–ऊषण**–पु० सोंठ, पीपल, मिर्च और पिपरा-मूल–इन चार गरम चीजोंका समाहार। **–गति**–पु० परमेश्वर; विष्णु; कछुआ। **–गव**–पु० वह गाड़ी जिसमें चार वैल जोते जायँ। **–गुण**–वि० चौगुना; जिसमें चार वंद या वंधन हों (वदनपर पहननेका कपड़ा)। **–जातक**–पु० इलायची, दारचीनी, तेजपत्ता, नागकेसर–इन चार चीजोंका समाहार। **–दंत**–वि० चार दाँतोंवाला। पु० ऐरावत हाथी। **–दंष्ट्र**–वि० चार दाँतों-वाला। पु० एक हिंस्र पशु; विष्णु; स्कंदका एक अनुचर; एक दानव। **–दश(न्)**–वि० चौदह; चौदहवाँ। पु० १४की संख्या। **–०पदी**–स्त्री० चौदह पदोंवाला एक छंद जो अंग्रेजीके 'सानेट'के अनुकरणपर चलाया गया है। **–०भुवन**–पु० भूः, भुवः, स्वः, महः, जन, तपः, सत्य–ये सात स्वर्ग और अतल, सुतल, वितल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल–ये सात अधोलोक। **–०विद्या**–स्त्री० चार वेद, ६ वेदांग और धर्मशास्त्र, पुराण, मीमांसा और तर्क (न्याय)–ये १४ विद्याएँ। **–दशी**–स्त्री० पक्षविशेषकी चौदहवीं तिथि। **–दिक्(श्)**–अ० चारों ओर, चौखूंट। स्त्री० चारों दिशाएँ। **–दिश**–पु० चारों दिशाओंका समाहार। अ० चारों ओर। **–दोल**–पु० चार आदमियोंसे ढोयी जानेवाली सवारी (पालकी, नालकी आदि); चंडोल; चार डंडोंका पालना। **–द्वार**–वि० (मकान) जिसमें चारों ओर दरवाजे हों। पु० चार दरवाजे। **–धाम(न्)**–पु० हिंदुओंके चार तीर्थ, दे० 'चारों धाम'। **–बाहु**–वि० चतुर्भुज। पु० विष्णु; शिव। **–बीज**–पु० काला जीरा, अजवायन, मेथी और चंसुर–इन चार चीजोंका समाहार। **–भद्र**–पु० धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–ये चारों पुरुषार्थ। **–भाक्(ज्)**–वि० चौथाई लेनेवाला। पु० प्रजाकी आयका चतुर्थांश कररूपमें लेनेवाला राजा। **–भाव**–पु० विष्णु। **–भुज**–वि० चार भुजाओंवाला। पु० (कॉड्रिलेटरल) वह समक्षेत्र जो चार सरल रेखाओंसे घिरा हो (तथा जिसमें चार कोण भी हों)। चतुष्कोण क्षेत्र; विष्णु। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा; गायत्री रूपा महाशक्ति। **–भुजी(जिन्)**–पु० वैष्णवोंका एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी। वि० चतुर्भुज। **–मास**–पु० वरसातका चौमासा; आषाढ़की पूर्णिमा या शुक्ला द्वादशीसे कार्त्तिक-शुक्ला द्वादशीतकका काल। **–मुख**–वि० चार मुँहोंवाला। पु० ब्रह्मा; चौताला तालका एक भेद। (स्त्री० 'चतुर्मुखी'।) अ० चारों ओर। **–मूर्ति**–पु० ब्रह्मा; स्कंद; विष्णु। **–युक्त**–वि० जिसमें चार घोड़े या वैल जोते जायँ (गाड़ी)। **–युग**–पु०,**–युगी**–स्त्री० चारों युगों–सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिका समाहार, चौकड़ी। **–वक्त्र**–पु० ब्रह्मा। वि० चार मुँहोंवाला। **–वर्ग**–पु० चारों पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। **–वर्ण**–पु० चारों वर्ण–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। **–वाही(हिन्)**–वि० दे० 'चतुर्युक्त'। पु० चौकड़ी। **–विद्य**–वि० चारों वेदोंका ज्ञाता। **–विद्या**–स्त्री० चारों वेद। **–विध**–वि० चार प्रकारका। **–वीर**–पु० चार दिन चलनेवाला एक सोमयज्ञ। **–वेद**–पु० ऋक, यजुः, साम और अथर्व–ये चारों वेद; परमेश्वर। वि० चारों वेदोंका ज्ञाता। **–वेदी(दिन्)**–वि० चारों वेदोंका ज्ञाता। पु० ब्राह्मणों-की एक उपजाति। **–व्यूह**–पु० चार पुरुषों, पदार्थोंका समुदाय [जैसे वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध; हेय (संसार), हेयहेतु, हान (मोक्ष), मोक्षका उपाय; रोग, रोग-निदान, आरोग्य, भैषज्य; इ०]; विष्णु। **–हायण,–हायन**–वि० चार वरसोंका चौसाला; चार वरसोंमें वना, उत्पन्न। [स्त्री० 'चतुर्हायिनी' (प्राणी), 'चतुर्हायना' (वस्तु)।] **–होता(तृ)**–पु० वेदोक्त चारों होम करनेवाला। **–होत्र**–पु० विष्णु।

चतुर्थ–वि० (सं०) चौथा। पु० एक ताल। **–काल**–पु० भोजनका विहित काल, दोपहर (अहोरात्रका चौथा भाग)। **–भाक्(ज्)**–वि० उपज आदिका चतुर्थांश पानेवाला (राजा)।

चतुर्थक–पु० (सं०) चौथिया बुखार।

चतुर्थांश–पु० (सं०) चौथा भाग, चौथाई। वि० चौथाईका मालिक (स्मृ०)।

चतुर्थांशी(शिन्)–वि० (सं०) चतुर्थांश पानेवाला।

चतुर्थाश्रम–पु० (सं०) सन्न्यास।

चतुर्थिका–स्त्री० (सं०) दवाकी एक तौल जो चार कर्षके बराबर होती थी।

चतुर्थी–वि० स्त्री० (सं०) चौथी। स्त्री० पक्ष-विशेषकी चौथी

तिथि; संप्रदान कारक (व्या०)। **–कर्म(न्)**–पु० व्याहके चौथे दिनका कर्म, ग्रामदेवतादिका पूजन आदि। **–क्रिया**–स्त्री० माता-पिताकी मृत्यु होनेपर विवाहिता कन्या द्वारा चौथे दिन किया जानेवाला श्राद्ध। **–तत्पुरुष**–पु० तत्पुरुष समासका वह भेद जिसमें संप्रदानकारककी विभक्तिका लोप हो (व्या०)।

चतुर्धा–अ० (सं०) चार प्रकारसे, चतुर्विध, चार खंडोंमें।

चतुल–पु० (सं०) स्थापयिता।

चतुश्–'चतुर्'का समासगत रूप। **–चरण**–वि० जिसमें चार भाग हों। पु० चौपाया। **–शृंग**–वि० चार सींगोंवाला। पु० कुश-द्वीपका एक पर्वत।

चतुष्–'चतुर्'का समासगत रूप। **–कर्ण**–वि० जो (बात) चार कानोंमें ही पड़ी हो, दो आदमियोंको ही मालूम हो। **–कर्णी**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–कल**–वि० चार कलाओं, मात्राओंवाला। **–कोण**–वि० चार कोनोंवाला, चौकोर। **–पथ**–पु० चौराहा; ब्राह्मण। **–पद**–वि० चार पैरोंवाला। (स्त्री० 'चतुष्पदी'।) पु० चौपाया जानवर; ११ करणोंमेंसे एक; अमावस्याका पूर्वार्द्ध। **–पदा**–स्त्री० चौपैया छंद। **–पदी**–स्त्री० चार चरणोंवाला पद्य; गीत; चौपाई छंद। **–पर्णी**–स्त्री० छोटी अमलोनी; सुसना। **–पाटी**–स्त्री० नदी। **–पाठी**–स्त्री० वह विद्यालय जिसमें चारों वेद पढ़ाये जाते हों। **–पाणि**–पु० विष्णु। **–पाद**–वि०, पु० दे० 'चतुष्पद'। **–पार्श्व**–वि० जिसमें चार पार्श्व या पहल हों, चौपहला। **–फला**–स्त्री० नागवला नामक ओषधि।

चतुष्क–पु० (सं०) चारका समाहार, चौकड़ी; चार खंभोंवाला मंडप; आयताकार आँगन; चौराहा; चार लड़ियोंका हार।

चतुष्की–स्त्री० (सं०) वड़ा चौकोर तालाव; चौकी; मसहरी; चवन्नी (पंडितमंडली)।

चतुष्टय–पु० (सं०) चारकी संख्या; चार वस्तुओं, व्यक्तियोंका समाहार (अंतःकरणचतु०, अनुवंधचतु०); जन्मकुंडलीमें लग्न और लग्नसे चौथा, सातवाँ तथा दसवाँ स्थान।

चतुष्टोम–पु० (सं०) एक वैदिक यज्ञ; अश्वमेधका एक अंग।

चतुस्–'चतुर्'का समासगत रूप। **–ताल**–पु० चौताला तालका एक भेद। **–संप्रदाय**–पु० वैष्णवोंके ये चार संप्रदाय–श्री, माध्व, रुद्र और सनक। **–सन**–पु० दे० 'चतुःसन'। **–सम**–पु० एक औषध जिसमें लौंग, जीरा, अजवायन और हड़के सम भाग होते हैं; एक गंधद्रव्य जो कस्तूरी, चंदन, कुंकुम और कपूरके योगसे वनता है। **–सीमा**–स्त्री० चौहद्दी। **–सूत्री**–स्त्री० ब्रह्मसूत्रके प्रथम चार सूत्र जो वड़े महत्त्वके समझे जाते हैं।

चतुस्तना, चतुस्तनी–वि० स्त्री० (सं०) चार स्तनोंवाली। स्त्री० गाय।

चतूरात्र–पु० (सं०) एक वैदिक यज्ञ जो चार रातोंमें पूरा होता है।

चत्वर–पु० (सं०) चौकोर स्थान; चौराहा, चौमुहानी, यज्ञके लिए साफ किया हुआ मैदान; चार रथोंका समूह। **–तरु**–पु० चौराहे-परका पेड़। **–वासिनी**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका।

चत्वाल–पु० (सं०) होमकुंड; कुश, दर्भ; गर्भ।

चदरा†–पु० दे० 'चादर'।

चदरिया*–स्त्री० दे० 'चादर'।

चदावल दस्ता–पु० (रीअर गार्ड) सेनाका वह दस्ता जो पृष्ठ भागमें रहकर रक्षाकार्यमें प्रवृत्त हो, दे० 'चंडावल'।

चदिर–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; हाथी; सर्प।

चदिरी–स्त्री० (सं०) हस्तिनी; भुजगी।

चद्दर–स्त्री० दे० 'चादर'; एक तरहकी घोड़ागाड़ी जिसे १६ घोड़े खींचते थे।* एक तरहकी तोप।

चनक*–पु० चना।

चनकट*–स्त्री० चपत, तमाचा।

चनकना†–अ० क्रि० चिटकना, दरकना; नाराज होना।

चनखना†–अ० क्रि० चिढ़ना; चनकना।

चनचना†–पु० तंवाकूकी फसलको लगनेवाला एक कीड़ा।

चनन*–पु० दे० 'चंदन'।

चनवर*–पु० ग्रास, कौर–'आपने हाथ लै देत है चनवर दूध दही घृत सानि'–अष्टछाप।

चना–पु० चैती फसलका एक प्रधान अन्न जो कई रूपोंमें खाया जाता है, रहिला। **–खार**–पु० चनेके डंठल, पत्तियों आदिको जलाकर निकाला हुआ खार।

चनाब–स्त्री० पंजावकी पाँच प्रधान नदियोंमेंसे एक जो लद्दाखके पहाड़ोंसे निकलकर सिंधमें गिरती है, चंद्रभागा।

चनार–पु० एक ऊँचा पेड़ जो कश्मीरमें वहुत होता है और बड़ा सुंदर होता है।

चनेठ†–पु० एक तरहकी घास।

चप–वि० (फा०) वायाँ। **–दस्त**–पु० वह घोड़ा जिसका अगला दाहना पैर सफेद हो। **–व रास्त**–वि० दाहना-वायाँ। अ० दाहने-वायें।

चपकन–स्त्री० एक तरहका अँगरखा; † एक तरहकी उलटी इमलिया।

चपकना–अ० क्रि० दे० 'चिपकना'।

चपक़लश–स्त्री० (तु०) तलवारकी लड़ाई; दंगा; झगड़ा; भीड़; जगहकी तंगी; अड़चन, कठिनाई।

चपका–पु० एक तरहका कीड़ा।

चपकाना–स० क्रि० दे० 'चिपकाना'।

चपकुलिस–स्त्री० दे० 'चपक़लश'।

चपट–पु० (सं०) दे० 'चपेट' (सं०)।

चपटना†–अ० क्रि० दे० 'चिपकना'।

चपटा†–वि० दे० 'चिपटा'।

चपटाना†–स० क्रि० चिपकाना, चिमटाना।

चपटी*–स्त्री० ताली; चुटकी; एक कीड़ा, किलनी; योनि। † वि० स्त्री० चिपटी।

चपड़क़नातिया–वि० चापलूस, खुशामदी।

चपड़गट्टू–वि० दे० 'चपरगट्टू'।

चपड़-चपड़–स्त्री० दे० 'चभड़-चभड़'।

चपड़ा–पु० साफ की हुई लाख; पत्तर; लाल रंगका एक कीड़ा।

चपत–स्त्री० तमाचा; धौल; धक्का, नुकसान। **–गाह**–पु० खोपड़ी। **–बाज़ी**–स्त्री० मनोविनोदके लिए किसीको चपत लगाना। मु० **–बैठना,–लगना**–नुकसान होना।

चपतियाना–स० क्रि० (किसीको) चपत लगाना।

चपती–स्त्री० छड़ जैसी काठकी पट्टी जिससे लड़के लकीर खींचते हैं।

चपना–अ० क्रि० दवना, कुचल जाना; दावमें पड़ना; लज्जित होना।

चपनी–स्त्री० कटोरी; वरतनका ढक्कन; दरियाई नारियलका कमंडलु; घुटनेकी हड्डी; हंडीका ढक्कन।

चपरगट्टू–वि० अभागा, विपद्ग्रस्त, गुत्थमगुत्था।

चपरना–स० क्रि० दे० 'चुपड़ना'; सानना। * अ० क्रि० फुरती करना।

चपरा–पु० दे० 'चपड़ा'।

चपरावना*–स० क्रि० वहकाना–'चोरी करि चपरावत सौ हनि काहे कौं इतनो फाँफट फाँकत'–घन०।

चपरास–स्त्री० सिपाही, अरदली आदिका धातुनिर्मित चिह्न जिसे पेटी या परतलेमें लगाकर पहनते हैं; मुलम्मा करनेकी कलम; मालखंभकी एक कसरत; कुरतेके मोढ़ेपरकी चौड़ी धज्जी।

चपरासी–पु० चपरास धारण करनेवाला, अरदली, सिपाही।

चपरि*–अ० झपटकर, फुरतीसे–'हठि न पिनाक काहू चपरि चढ़ायो है'–कवितावली।

चपरी†–स्त्री० एक कदन्न, केसारी।

चपरैला†–पु० एक घास।

चपल–वि० (सं०) चंचल, अस्थिर; तेज, जल्दवाज; अविचारी; क्षणिक। पु० पारा; मछली; पपीहा; एक तरहका चूहा; हवा; राई; एक तरहका गंधद्रव्य, चोरक; एक तरहका पत्थर; क्षय।

चपलक–वि० (सं०) अस्थिर; अविचारी।

चपलता–स्त्री० (सं०) चंचलता, अस्थिरता; तेजी; जल्दबाजी।

चपलस–पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ीसे सजावटकी चीजें, संदूक आदि वनते हैं।

चपला–वि० स्त्री० (सं०) चपल, चंचल (स्त्री)। स्त्री० लक्ष्मी;

विजली; पुंश्चली स्त्री; जीभ; भाँग; मद्य; पिप्पली।

चपलाई✻–स्त्री० चपलता।

चपलाना✻–अ० क्रि० हिलना, चलना। स० क्रि० चलाना, हिलाना।

चपवाना–स० क्रि० दववाना।

चपाक✻–अ० अचानक; चटपट।

चपाट–पु० वह जूता जिसकी एड़ी उठी न हो।

चपाती–स्त्री० पतली रोटी, फुलका। **–सा पेट**–भीतरकी ओर दवा, धँसा हुआ पेट।

चपाना–स० क्रि० दववाना; रस्सी या सूतको जोड़ना।

चपेट–स्त्री० धक्का; रगड़ा; दवाव; संकटकी स्थिति। पु० (सं०) चपत, तमाचा।

चपेटना–स० क्रि० दावना; पीछा करते हुए भगाना; डाँटना।

चपेटा–पु० धक्का; दवाव; रगड़ा; † लकड़ी, लाख आदिका छपहला छोटा टुकड़ा जिसे उछालकर लड़कियाँ खेल खेला करती हैं, गुट्टा। स्त्री० (सं०) चपत, तमाचा।

चपेटिका–स्त्री० (सं०) तमाचा।

चपेटी–स्त्री० (सं०) भाद्र-शुक्ला षष्ठी।

चपेरना✻–स० क्रि० दवाना, चाँपना।

चपौटी–स्त्री० छोटी टोपी; सिरमें जमी हुई टोपी।

चप्पड़–पु० दे० 'चिप्पड़'।

चप्पन–पु० छिछला कटोरा।

चप्पल–पु०, स्त्री० चपटी एड़ीका जूता जिसमें पंजा प्राय: खुला होता है।

चप्पा–पु० चार अंगुल या चार वित्ता स्थान; थोड़ा-सा स्थान; चतुर्थांश। **–चप्पा**–अ० रत्ती-रत्ती; हर जगह।

चप्पी–स्त्री० चाँपनेकी क्रिया; धीरे-धीरे पाँव दवाना।

चप्पू–पु० पतवारका काम देनेवाला एक तरहका डाँड़।

चवक†–स्त्री० टीस। वि० डरपोक।

चवकना†–अ० क्रि० टीसना, दर्द करना।

चवका✻–पु० चावुक (गोरखनाथ)।

चवर-चवर–स्त्री० † व्यर्थकी वातचीत, वकवास।

चववाना–स० क्रि० 'चवाना'का प्रे०।

चवाई✻–पु० दे० 'चवाई'।

चवाना–स० क्रि० दाँतोंसे कुचलना, चूर करना। **चवा-चवाकर**–रुक-रुककर, कुछ वातोंको छोड़ते, छिपाते हुए (वोलना)। **मु० चवा जाना**–खा जाना; काट खाना।

चवारा✻–पु० चौवारा।

चवाव✻–पु० दे० 'चवाव'।

चवावन✻–पु० दे० 'चवाव'।

चवूतरा–पु० मिट्टी, ईंटों आदिसे वैठनेके लिए वनाया गया थोड़ा ऊँचा स्थान।

चवेना, चवैना–पु० चवाकर खानेकी चीज, भुना हुआ चना, चावल आदि, भूँजा।

चवेनी, चवैनी–स्त्री० तली दाल, मिठाई आदि जलपानकी सामग्री; चवेना; जलपानके लिए दिया गया पैसा।

चभक–स्त्री० किसी चीजके पानीमें डूवनेसे निकलनेवाली आवाज।

चभड़-चभड़–स्त्री० कुत्ते-विल्ली आदिके पानी पीते या तरल वस्तु खाते समय मुँहसे निकलनेवाली आवाज; खाते समय मुँहसे उत्पन्न होनेवाला शब्द।

चभना–अ० क्रि० कुचला जाना, रौंदा जाना।

चभाना–स० क्रि० खिलाना; तर माल खिलाना; कुचलवाना।

चभोरना–स० क्रि० गोता देना, डुवोकर तर करना।

चमंकना✻–अ० क्रि० दे० 'चमकना'।

चम–'चाम'का समासगत रूप। **–गादड़,–गीदड़**–पु० चूहेकी शकलका स्तनपायी जीव जो चिड़ियोंकी तरह उड़ सकता है। **–चिच्चड़**–वि० किलनीकी तरह चिपटनेवाला, पिंड न छोड़नेवाला। **–जुई,–जोई**–स्त्री० एक तरहकी छोटी किलनी; चिमटनेवाली चीज। **–रख**–स्त्री० चमड़ेकी चकती जिसमेंसे होकर चरखेका तकला घूमता है। वि० स्त्री० दुवली-पतली (स्त्री)। **–रस**–पु० जूतेकी रगड़का घाव।

चमक–स्त्री० ओप, कांति; झलक (देना, मारना); भड़क, चौंक; लचक; झटके आदिसे कमर आदिमें अचानक पैदा होनेवाला दर्द। **–चाँदनी**–स्त्री० वहुत वनाव-सिंगारसे रहनेवाली स्त्री। **–ताई✻**–स्त्री० चमक, चमकीलापन। **–दमक**–स्त्री० क्रांति-दीप्ति; तड़क-भड़क। **–दार**–वि० चमकवाला, कांतियुक्त।

चमकना–अ० क्रि० चमक देना, झलकना, जगमगाना; प्रसिद्ध होना; उन्नति-समृद्धि प्राप्त होना; जोर पकड़ना; चौंकना; भड़कना; झटपट चल देना, खिसक जाना। रह-रहकर एकवारगी तीव्र पीड़ाका अनुभव होना, चमक होना, चिलकना।

चमकनी–वि० स्त्री० झट भड़क जानेवाली; चटक-मटकवाली।

चमकाना–स० क्रि० चमकदार वनाना, उज्ज्वल करना; चिढ़ाना; भड़काना; एड़ लगाकर घोड़ेको यकायक चंचल और तेज करना; धमकानेके लिए दिखाना, हिलाना, (छुरी, तलवार); मटकाना (उँगलियाँ, आँखें)।

चमकारा–पु० चमक; चकाचौंध पैदा करनेवाली रोशनी। वि० चमकीला।

चमकारी✻–स्त्री० दे० 'चमकारा'। वि० स्त्री० चमकीली।

चमकी–स्त्री० कारचोवीमें जमीन भरनेके काम आनेवाला वूटा, सितारा; नकली रेशमका कपड़ा।

चमकीला–वि० चमकदार।

चमकौवल–स्त्री० चमकानेकी क्रिया।

चमक्को–स्त्री० चमकानेवाली स्त्री; कुलटा स्त्री; झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़–पु० दे० 'चम'के साथ।

चमचम–पु० एक वँगला मिठाई। अ० 'चमाचम'।

चमचमाना–अ० क्रि० चमकना, इतना साफ-स्वच्छ होना कि चमक निकले। स० क्रि० चमकाना, चमाचम करना।

चमचा–पु० छिछली कलछी जैसा पात्र जिससे खाना परोसने और चावल आदि उठाकर खाने-पीनेका काम लेते हैं; चिमटा; कोयला निकालनेका फावड़ा।

चमची–स्त्री० छोटा चमचा; चौड़ी-चपटी नोकवाली सलाई जिससे कत्था-चूना निकालते और पानपर फैलाते हैं।

चमटा–पु० दे० 'चिपटा'।

चमड़ा–वि० प्राणिशरीरका नैसर्गिक आवरण, चर्म, त्वचा; शरीरसे अलग की हुई त्वचा, खाल; छिलका।

चमड़ी–स्त्री० चर्म, त्वचा।

चमत्करण–पु० (सं०) विस्मित, चमत्कृत करना; उत्सव; काव्योत्कर्ष।

चमत्कार–पु० (सं०) लोकोत्तर वस्तु देखकर मनमें उत्पन्न होनेवाला आनंदरूप विस्मय: अद्‌भुत वात, करामात; तमाशा; उत्सव; भीड़; काव्योत्कर्ष; अपामार्ग; डमरू।

चमत्कारक–वि० (सं०) चमत्कारी।

चमत्कारित–वि० (सं०) चमत्कृत, विस्मित।

चमत्कारी(रिन्)–वि० (सं०) विस्मित करनेवाला; चमत्कारयुक्त; करामाती।

चमत्कृत–वि० (सं०) अचंभेमें आया हुआ, विस्मित।

चमत्कृति–स्त्री० (सं०) चमत्कार।

चमन–पु० (सं०) पीना; खाना; (फा०) क्यारी; फुलवारी; हरा-भरा स्थान। **–बंदी**–स्त्री० वाग लगाना; क्यारियाँ आदि वनाना।

चमनिस्तान–पु० (फा०) पुष्पवाटिका; हरियाली और फूलोंसे शोभित स्थान।

चमर–पु० (सं०) सुरा गाय नामका एक पशु; चँवर। **–पुच्छ**–पु० गिलहरी; लोमड़ी; चँवर। **–शिखा**–स्त्री० घोड़ोंकी कलगी।

चमर–'चमार'का समासमें व्यवहृत रूप। **–जुलाहा**–पु० हिंदू जुलाहा, कोरी। **–बगली**–स्त्री० काले रंगका छोटा वगला। **–रग**–स्त्री० चमारका-सा स्वभाव, नीच प्रकृति।

चमरक–पु० (सं०) मधुमक्खी।

चमरखा–पु० एक सुगंधित जड़ जो उवटनमें डाली जाती है।

चमरस–पु० दे० 'चम'के साथ।

चमरावत–स्त्री० चमड़ा कमाने, मोट आदि बनानेकी मजदूरी ।

चमरिक–पु० (सं०) कचनारका पेड़ ।

चमरी–स्त्री० (सं०) सुरा गाय; चँवरी; मंजूरी ।

चमरौट–पु० चमारोंको उनके कामके बदले मिलनेवाला फसल आदिका भाग ।

चमरौटी–स्त्री० चमारोंकी बस्ती या टोली ।

चमरौधा–पु० देशी ढंगका बना, भारी, भद्दा जूता, चमौआ ।

चमला–पु०, **चमली**–स्त्री० दे० 'चम्मल' ।

चमस–पु० (सं०) सोमपान करनेका लकड़ीका बना चमचेके आकारका यज्ञपात्र; चमचा; धुआँस; पापड़; लड्डू ।

चमसि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पीठी ।

चमसी–स्त्री० (सं०) छोटा चमस; उरद, मूँग आदिकी पीठी ।

चमसी(सिन्)–वि० (सं०) चमस (सोमरससे पूर्ण) पानेका अधिकारी ।

चमाऊ*–पु० चँवर; † चमरौधा ।

चमाक*–स्त्री० चमक, कांति ।

चमाचम–अ० चमकके साथ । वि० चमचम करता हुआ ।

चमार–पु० चमड़ा कमाने, जूते आदि बनानेका धंधा करनेवाली एक जाति । **–चौदस**–स्त्री० चमारोंका जलसा; चार दिनकी धूमधाम; शोर-गुल, हल्ला ।

चमारिन–स्त्री० चमार स्त्री ।

चमारी–स्त्री० चमार स्त्री; चमारका धंधा ।

चमीकर–पु० (सं०) सोनेकी एक (प्राचीन) खान ।

चमुपति–पु० (सं०) दे० 'चमूपति' ।

चमू–स्त्री० (सं०) सेना; सेनाका एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे; कफन; कब्र । **–चर**–पु० सैनिक, सिपाही । **–नाथ,–नायक,–प,–पति**–पु० सेनानायक । **–हर**–पु० शिव ।

चमूरु–पु० (सं०) एक तरहका हिरन ।

चमेलिया–वि० चमेलीके रंगका ।

चमेली–स्त्री० एक झाड़ी या लता जिसके फूल अपनी सुगंधके लिए प्रसिद्ध हैं । **–का जाल**–एक तरहका कशीदा ।

चमोटा–पु० चमड़ेका टुकड़ा जिसपर छुरेकी धार तेज करनेके लिए रगड़ते हैं ।

चमोटी–स्त्री० चमोटा; चाबुक; पतली छड़ी; सान या खरादमें लपेटा जानेवाला तस्मा ।

चमौआ, चमौवा–पु० चमरौधा जूता ।

चम्मच–पु० दे० 'चमचा' ।

चम्मल–पु० भीख माँगनेका प्याला, भिक्षापात्र ।

चय–पु० (सं०) समूह, ढेर; नीवँ; ढूह, टीला; खाईकी मिट्टीसे बना हुआ बाँध या धुस्स, दुर्गप्राचीर; किलेका फाटक; तिपाई, चौकी; लकड़ीका ढेर; आवरण; वात, पित्त, कफमेंसे किसीका बढ़ जाना; अग्नि-चयन ।

चयक–वि० (सं०) चयन करनेवाला; चयन करनेमें कुशल ।

चयन–पु० (सं०) इकट्ठा करना; चुनना; फूल चुनना; क्रमसे लगाना; चुनी हुई वस्तुओंका संग्रह; यज्ञके लिए अग्निका एक संस्कार; लकड़ी जमा करना; * दे० 'चैन' । **–शील**–वि० संग्रह करनेवाला, संग्रही ।

चयनिका–स्त्री० (सं०) चुनी हुई कविताओं, कहानियों आदिका संग्रह; पत्र-पत्रिकाओंका विशिष्ट स्तंभ जिसमें अन्य पत्रोंसे लिये हुए लेखांश, टिप्पण आदि दिये जाते हैं ।

चयनीय–वि० (सं०) चयन करने योग्य ।

चर–पु० कपड़े आदिके फटनेका शब्द; (सं०) स्वराष्ट्र या परराष्ट्रकी छिपी बातें मालूम करनेपर नियुक्त व्यक्ति, गुप्तदूत, भेदिया; दूत; कौड़ी; पासेका खेल; खँडरिच; मंगल ग्रह; मंगलवार; मेष, कर्क, तुला, मकर राशियाँ; सातवाँ करण; करणोंका समाहार; वायु; दो देशांतर-रेखाओंके बीच पड़नेवाला समयका अंतर । वि० चल, अस्थिर; चलनेवाला; जीवधारी, सजीव । **–काल**–पु० दिनमान जाननेमें उपयोगी कालभेद । **–गृह,–भ,–भवन**–पु० चर राशि–मेष, कर्क, तुला और मकर । **–द्रव्य**–पु० चल पदार्थ, संपत्ति । **–नक्षत्र**–पु० स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा आदि नक्षत्र । **–पुष्ट**–पु० मध्यस्थ । **–मूर्ति**–स्त्री० वह मूर्ति जिसकी सवारी निकाली जाय ।

चरई–स्त्री० पशुओंको चारा या पानी देनेके लिए पत्थर आदिका बना हुआ हौज, चरनी; तारकी खूँटी (कबीर) ।

चरक–स्त्री० दे० 'चरकी' । पु० एक प्रकारका कुष्ठ जिसमें बदनपर सफेद दाग हो जाते हैं, फूल; (सं०) चर, दूत; आयुर्वेदके एक प्रधान आचार्य जिनका ग्रंथ 'चरकसंहिता' आयुर्वेदका प्रधान चिकित्सा ग्रंथ माना जाता है; चरकसंहिता; पित्तपापड़ा; भिक्षु । **–संहिता**–स्त्री० चरक मुनिका बनाया हुआ चिकित्साग्रंथ ।

चरकटा–पु० ऊँट, हाथी आदिके लिए चारा काटकर लानेवाला; तुच्छ जन; सियार जैसा एक जानवर–'बाघ चरकटेकी तरह दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ'–नवनीत, दिस० ६२ ।

चरकना*–अ० क्रि० टूटना, फूटना, दरकना ।

चरका–पु० हलका-सा जख्म, खरोंच; गरम लोहेसे दागनेका निशान; हानि, घाटा; चकमा, धोखा (खाना, देना) ।

चरकी–स्त्री० (सं०) एक विषैली मछली ।

चरख–पु० चाक; चरखी, घिरनी; खराद; चरखा; रेशम या कलाबत्तू लपेटनेकी चरखी; ढेलवाँस; तोप ढोनेवाली गाड़ी; लकड़बग्घा; एक शिकारी चिड़िया । **–कश**–पु० खरादकी डोरी खींचनेवाला, खरादी । **–पूजा**–स्त्री० चैत्रकी संक्रांतिको शिवको प्रसन्न करनेके लिए होनेवाली एक सामूहिक पूजा ।

चरखा–पु० हाथसे सूत कातनेका काष्ठनिर्मित यंत्र (कातना, चलाना); रहट; सूत लपेटनेकी चरखी; घिरनी; खड़खड़िया; कुश्तीका एक पेंच; ऊखका रस निकालनेकी कल; बेडौल पहिया; शिथिलांग वृद्ध व्यक्ति; झंझटवाला काम ।

चरखी–स्त्री० घूमनेवाला चक्कर; चाक; ओटनी; छोटा चरखा; सूत लपेटनेकी फिरकी; एक आतिशबाजी जो चक्कर खाती हुई छूटती है; जुलाहोंका एक औजार; कुएँसे पानी निकालनेकी गराड़ी; हिंडोला ।

चरग*–पु० चरख नामकी शिकारी चिड़िया; लकड़बग्घा ।

चरचना–स० क्रि० चंदन, केसर आदिका लेप करना; पहचानना; ताड़ना; भाँपना–'सैननि चरचि लई गौननि थकित भई नैननिमें चाह करै बैननिमें नहियाँ'–रस-विलास; पूजा करना–'सूरदास मुनि चरन चरचि करि सुरलोकन रुचि मानी'–सूर ।

चरचरा–पु० खाकी रंगकी एक चिड़िया जिसकी छाती सफेद होती है ।

चरचराना–अ० क्रि० 'चर चर'की आवाजके साथ टूटना या जलना; चर्राना; तनावके कारण दर्द होना ।

चरचराहट–स्त्री० चरचरानेकी क्रिया या भाव; किसी चीजके चरचरानेका शब्द ।

चरचित*–वि० दे० 'चर्चित' ।

चरचा*–स्त्री० दे० 'चर्चा' ।

चरचारी*–वि०, पु० चर्चा करनेवाला; निंदक ।

चरज*–पु० चरख पक्षी ।

चरजना–स० क्रि० बहकाना । अ० क्रि० अंदाजा लगाना ।

चरट–पु० (सं०) खँडरिच ।

चरण–पु० (सं०) पाँव, पग, कदम; श्लोकका चतुर्थांश, छंदका एक पाद, मिसरा; चौथाई, चतुर्थांश; (शतीका प्रथम, द्वितीय...) उपविभाग; वेदकी कोई शाखा–कठ, कौथुम आदि; मूल, जड़; स्तंभ; सहारा; पदाति; सूर्य, चंद्र आदिकी किरण; चलना, भ्रमण; भक्षण; अनुष्ठान; वर्गविशेषका विहित कर्म; आचरण; (ला०) चरणोंकी समीपता, आश्रय; गोत्र, जाति; क्रम । **–कमल,–पद्म**–पु० पादपद्म, सुंदर चरण । **–गत**–वि० चरणोंपर गिरा हुआ । **–गुप्त**–पु० चित्रकाव्यका एक भेद जिसमें कोष्ठक बनाकर अक्षर भरे जाते हैं । **–ग्रंथि**–स्त्री० गुल्फ, टखना । **–चिह्न**–पु० पाँवका निशान, पदचिह्न । **–तल**–पु० पैरका तलवा, पदतल । **–दास**–वि० चरणसेवी । पु० दिल्लीके रहनेवाले एक संप्रदाय-प्रवर्तक संत (सं० १७६०–१८३९) । **–दासी**–पु० (हिं०) चरणदासके अनुयायी । स्त्री० चरणोंकी दासी, सेविका;

पत्नी; जूती । **–न्यास**–पु० कदम; पदचिह्न । **–प**–पु० वृक्ष । **–पर्व(न्)**–पु० गुल्फ, टखना । **–पादुका**–स्त्री० खड़ाऊँ; पत्थर आदिपर बना चरणचिह्न । **–पीठ**–पु० खड़ाऊँ; पाँवड़ी । **–युग,–युगल**–पु० दोनों पैर, पादद्वय । **–रज(स्)**–स्त्री० चरण-धूलि । **–लग्न**–वि० दे० 'चरणगत' । **–व्यूह**–पु० वेदशाखाओंका विभाग करनेवाला ग्रंथविशेष । **–शुश्रूषा,–सेवा**–स्त्री० चरणगत होना; पाँव दवाना, पौचप्पी; सेवा, ख़िदमत । **–सेवी(विन्)**–पु० टहलू, सेवक; चरणोंमें रहनेवाला । मु० **–छूना**–पाँव छूकर प्रणाम करना; प्रणाम करना । **–देना**–पाँव रखना । **–पड़ना**–आगमन, प्रवेश होना । **–लेना**–पाँव पड़ना, चरण छूना ।

चरणाक्ष–पु० (सं०) अक्षपाद, गौतम ।

चरणाद्रि–पु० (सं०) चुनार ।

चरणानति–स्त्री० (सं०) चरणोंपर गिरना ।

चरणानुग–वि० (सं०) (किसीके) पीछे चलनेवाला, अनुगामी ।

चरणामृत–पु० (सं०) वह जल जिसमें किसी देवमूर्ति या पूज्य पुरुषके पाँव पखारे गये हों; देवमूर्तिको स्नान कराया हुआ जल या पंचामृत ।

चरणायुध–पु० (सं०) (पैरके पंजोंसे लड़नेवाला) मुरगा

चरणारविंद–पु० (सं०) दे० 'चरणकमल' ।

चरणार्द्ध–पु० (सं०) चरणका आधा भाग; वस्तुका आठवाँ भाग ।

चरणास्कंदन–पु० (सं०) पैरोंसे कुचलना, रौंदना ।

चरणोदक–पु० (सं०) चरणामृत ।

चरणोपधान–पु० (सं०) पैर रखनेकी चीज, पाँवदान ।

चरता–स्त्री० (सं०) चलनेका भाव; पृथ्वी ।

चरती–पु० व्रत न करनेवाला व्यक्ति ।

चरथ–वि० (सं०) जंगम; चलनेवाला ।

चरन*–पु० दे० 'चरण' । **–दासी**–स्त्री० जूती (साधु) । **–बरदार**–पु० जूता पहनाने या जूता लेकर चलनेवाला नौकर, कफश-बरदार ।

चरना–स० क्रि० पशुओंका मैदान या खेतमें घास, शस्यादि खाना; * लाँघना, दवाना–'. . .जो हठि जनकी सीव चरैं'–विनयपत्रिका । * अ० क्रि० चलना; व्यवहार करना; फिरना, विचरना । पु० काछा ।

चरनायुध*–पु० दे० 'चरणायुध' ।

चरनि*–स्त्री० चलनेकी क्रिया या ढंग; चाल ।

चरनी–स्त्री० मेंड़दार लंबोतरा चबूतरा जिसपर गाय-बैलको चारा-पानी दिया जाता है; गाय-बैलको चारा-पानी देनेके लिए गाड़ी हुई नाँद; * घास, चारा; चरागाह; चरनेकी क्रिया ।

चरन्नी†–स्त्री० चवन्नी ।

चरपट–पु० उचक्का; चपत, तमाचा; एक छंद ।

चरपर–वि० दे० 'चरपरा' ।

चरपरा–वि० तीखे स्वादवाला, झालदार; तेज, छटपट ।

चरपराना–अ० क्रि० चर्राना; घावमें खुश्कीके कारण तनावसे पीड़ा होना; चरपराहट होना ।

चरपराहट–स्त्री० स्वादका तीखापन, झाल; घावकी जलन; डाह, द्वेष ।

चरफरा†–वि० दे० 'चरपरा' ।

चरफराना*–अ० क्रि० तड़फड़ाना, व्याकुल होना ।

चरब–वि० (फा०) चरबीदार, चिकना; मोटा; तेज; चतुर । **–दस्त**–वि० कुशल, चतुर; कारीगर; (ला०) गठकतरा । **–ज़बान**–वि० जिसकी जबान तेजीसे चले; चिकनी-चुपड़ी वातें करनेवाला, चापलूस । **–ज़बानी**–स्त्री० बाचालता; चापलूसी । मु०**–करना**–घी-तेलमें तलना; घी-तेल लगाना; चिकनाना ।

चरबन–पु० चबैना ।

चरबाँक, चरबाक–वि० चतुर; ढीठ, निडर; चंचल ।

चरबा–पु० (फा०) वह चिकना, बारीक कागज या कपड़ा जिसे ऊपर रखकर चित्र या नक्शेका अक्स उतारते हैं, खाका (उतारना); प्रतिलिपि, नकल ।

चरबाना–स० क्रि० ढोलपर चमड़ा चढ़ाना ।

चरबी–स्त्री० (फा०) मांसके ऊपर और त्वचाके नीचे रहनेवाला सफेद या हलके पीले रंगका चिकना पदार्थ, वसा, मेद; मांसको पिघलाकर अलग की हुई चिकनाई; मोटाई । मु० **–चढ़ना**–मोटा होना; मद चढ़ना, घमंड होना । **(आँखोंमें)–छाना**–घमंड, लापरवाही आदिसे किसी वस्तुपर ध्यान न जाना ।

चरम–वि० (सं०) अंतिम, आखिरी; हद दरजेका; सबसे पीछेका; पश्चिमी; जरठ (अवस्था) । **–काल**–पु० मृत्युकाल । **–गिरि**–पु० अस्ताचल । **–चर्वणक**–पु० (विज़डम टुथ) वह आखिरी दाढ़ जो प्रायः २० वर्षकी उम्रके बाद निकलती है, प्रज्ञा दंत, अक्ल दाढ । **–पत्र**–पु० अंतिम चेतावनी, अंतिमेत्थम् । **–वया-(यस्)**–वि० वृद्ध । **–सीमा**–स्त्री० पराकाष्ठा ।

चरमर–पु० चलनेमें जूतेसे, चारपाईपर बैठने आदिसे होनेवाली आवाज ।

चरमरा–वि० 'चरमर' शब्द करनेवाला ।

चरमराना–अ० क्रि० 'चरमर' आवाज होना । स० क्रि० 'चरमर' शब्द उत्पन्न करना ।

चरमवती*–स्त्री० दे० 'चर्मण्वती' ।

चरमोत्पादन–पु० (पीक प्रॉडक्शन) अधिकतम मात्रामें किया गया उत्पादन ।

चरलीता–पु० एक काष्ठौषधि ।

चरवाँक–वि० दे० 'चरबाँक' ।

चरवाई–स्त्री० चरानेका काम; चरानेकी उजरत ।

चरवाना–स० क्रि० चरानेका काम कराना ।

चरवाहा–पु० गाय-भैंस चरानेका काम करनेवाला ।

चरवाही–स्त्री० चरवाहेका काम; पशु चरानेकी उजरत ।

चरवैया†–पु० चरनेवाला; चरानेवाला ।

चरव्य–वि० (सं०) जिससे चरु बनाया जाय (तंडुलादि) ।

चरस–पु० गाँजेके पेड़से निकला हुआ गोंद जो गाँजेकी ही तरह पिया जाता है; दे० 'चरसा' ।

चरसा–पु० बैल, भैंस आदिका चमड़ा; चमड़ेका बना बड़ा थैला; चमड़ेका डोल जिससे खेत सींचनेके लिए पानी निकालते हैं, पुर; जमीनकी एक नाप, गोचर्म ।

चरसिया, चरसी–पु० चरस पीनेवाला, चरसका व्यसनी; चरसके जरिये पानी निकालने या खेत सींचनेवाला ।

चरही†–स्त्री० दे० 'चरनी' ।

चराई–स्त्री० चरने या चरानेका काम; चरानेकी उजरत; चरानेका कर ।

चराग़–पु० (फा०) चिराग, दिया ।

चराग़ान–पु० (फा०) ('चराग़'का बहु०) बहुतसे दियोंका साथ जलना, दीपोत्सव ।

चरागाह–पु० (फा०) पशुओंके चरने-चरानेकी जगह, घासका मैदान ।

चराचर–वि० (सं०) चलनेवाला और न चलनेवाला, स्थावर और जंगम । पु० संपूर्ण जगत्; आकाश । **–गुरु**–पु० ब्रह्मा; परमेश्वर; शिव ।

चरान–पु० चरागाह; समुद्रतटके पास खारे पानीका दलदल जिसमें-से नमक निकाला जाता है ।

चराना–स० क्रि० गाय, बैल आदिको जंगल, मैदान आदिमें ले जाकर घास, चारा खिलाना; बेवकूफ बनाना, धोखा देना ।

चराव–पु० चरनी; चरागाह ।

चरावर*–स्त्री० बकवास ।

चरिंद–पु० (फा०) दे० 'चरिंदा' । **–व परिंद**–पु० पशु-पक्षी ।

चरिंदा–पु० (फा०) चरनेवाला प्राणी, जानवर, चौपाया ।

चरि–पु० (सं०) पशु ।

चरित–पु० (सं०) आचरण; कर्म; शील, स्वभाव; जीवनवृत्त । वि० आचरित, किया हुआ; प्राप्त; गत; ज्ञात । **–कार,–लेखक**–पु० जीवनचरित्रका लेखक । **–नायक**–पु० किसी कथा-कहानी-का प्रधान पात्र ।

चरितव्य–वि० (सं०) आचरण करने योग्य; जाने योग्य ।

चरितार्थ–वि० (सं०) जिसका अर्थ, प्रयोजन सिद्ध हो गया हो, कृतार्थ; संतुष्ट; जो ठीक उतरे, यथार्थ सिद्ध हो (उक्ति चरितार्थ

होना)।

चरितार्थता–स्त्री० (सं०) कृतार्थता; यथार्थ सिद्ध होना; घटित होना।

चरितार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) सफलताकी आकांक्षा करनेवाला।

चरितावली–स्त्री० (सं०) वह पुस्तक जिसमें बहुतोंके जीवन-चरित दिये गये हों, चरितमाला।

चरित्तर|–पु० चरित्र; छल, फरेब; ढोंग।

चरित्र–पु० (सं०) आचरण, व्यवहार; चाल-चलन; कर्तव्य, कर्म-कलाप; शील, स्वभाव; सदाचार; जीवनी, वृत्त; पैर; गमन। **–गठन**–पु० (हिं०) शील, सदाचार-वृत्तिका निर्माण। **–दोष**–पु० चाल-चलनकी खरावी, आचरणकी खुटाई। **–नायक**–पु० दे० 'चरितनायक'। **–पंजी**–स्त्री० (कैरेक्टर वुक, कैरेक्टर रॉल) दे० 'आचरण-पंजी'। **–बंधक**–पु० मैत्रीपूर्ण प्रतिज्ञा। **–हीन**–वि० दुश्चरित्र, खराव चालचलनवाला।

चरित्रवान्(वत्)–वि० (सं०) अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी। (स्त्री० 'चरित्रवती'।)

चरित्रा–स्त्री० (सं०) इमलीका पेड़।

चरिष्णु–वि० (सं०) चलने-फिरनेवाला, जंगम।

चरी–स्त्री० पशुओंके चरनेके लिए जमींदारकी ओरसे विला लगान मिली हुई जमीन, गोचारणभूमि; हरी ज्वार जो गाय-वैलोंको खिलानेके लिए वोयी गयी हो; (सं०) दूती; स्त्री जासूस; दासी; जवान स्त्री।

चरीत्र–पु० (सं०) दे० 'चरित्र'।

चरु–पु० गोचर भूमि; गोचर भूमिका कर; (सं०) यज्ञमें आहुति देनेके लिए पकाया हुआ अन्न, हव्यान्न; वह वरतन जिसमें चरु पकाया जाय; मेघ; यज्ञ। **–चेली(लिन्)**–पु० शिव। **–पात्र**–पु०, **–स्थाली**–स्त्री० चरु पकानेका वरतन। **–व्रण**–पु० एक तरहकी पीठी या पकवान।

चरुआ|–पु० चौड़े मुँहका मिट्टीका पात्र; वह पात्र जिसमें जच्चाके लिए औषध मिलाकर पानी खौलाया जाता है।

चरुखला*–पु० चरखा।

चरू*–पु० दे० 'चरु'।

चरेरा*–वि० खुरदरा; रूखा। पु० हिमालयका एक पेड़।

चरेरू*–पु० पक्षी (बुंदेल०); कोई छोटा जीव, प्राणी या जानवर।

चरेली–स्त्री० ब्राह्मी वूटी।

चरैया|–पु० चरनेवाला; चरानेवाला।

चरैला–पु० एक तरहका चूल्हा जिसपर चार चीजें एक साथ पकायी जा सकती हैं।

चरोखर|–पु० चरी, गोचर भूमि।

चरोतर–पु० किसीके निर्वाहार्थ जिंदगीभरके लिए दी गयी जमीन।

चर्ख़–पु० (फा०) घूमनेवाला चक्कर; चाक; आकाश; खराद; खिंची हुई कमान; चरखी; ढेलवाँस; चरखा; एक तरहका वाज। **–कश**–पु० खरादकी डोरी खींचनेवाला। **–ज़न**–पु० चरखा कातनेवाला।

चर्खा–पु० दे० 'चरखा'।

चर्खी–स्त्री० दे० 'चरखी'।

चर्च–पु० (सं०) विचारना; (अं०) ईसाइयोंका उपासना-मंदिर, गिरजा; ईसाई धर्म माननेवालोंकी समष्टि; ईसाई धर्मसंघ; ईसाई धर्मका कोई विशेष संप्रदाय।

चर्चक–पु० (सं०) चर्चा करनेवाला; आवृत्ति करनेवाला।

चर्चन–पु० (सं०) चर्चा; अध्ययन; आवृत्ति; चंदनादिका लेपन।

चर्चरिका–स्त्री० (सं०) नाटकमें एक परदा गिरनेके बाद और दूसरा उठनेके पहले गाया जानेवाला गाना; तालीसे ताल देना; आमोद-प्रमोदकी धूम; उत्सव; चापलूसी; घुँघराले बाल; दो आदमियोंका बारी-बारी कवितापाट करना।

चर्चरी–स्त्री० (सं०) चर्चरिका; चाँचर, फाग; रंगरलियाँ मनाना, हर्षक्रीड़ा, आमोद-प्रमोद; गाना-बजाना; करतल ध्वनि; तालका एक भेद; एक वर्णवृत्त; एक तरहका ढोल; अंगभंगी।

चर्चरीक–पु० (सं०) महाकालभैरव; बाल सँवारना; साग-भाजी।

चर्चा–स्त्री० (सं०) पाठ, आवृत्ति; वाद-विवाद; जिक्र, वयान; वार्तालाप; अफवाह; विचारणा; चंदनादिका लेपन; दुर्गा।

चर्चा(र्चस्)–पु० (सं०) कुवेरकी नौ निधियोंमेंसे एक।

चर्चि–स्त्री० (सं०) आवृत्ति; विचारणा।

चर्चिका–स्त्री० (सं०) दे० 'चर्चा'।

चर्चिक्य–पु० (सं०) चंदनादिका लेपन; अंगराग।

चर्चित–वि० (सं०) लेपित; विचारित; इच्छित; जिसकी चर्चा की गयी हो। पु० लेपन।

चर्चिल, विन्सटन–पु० ब्रिटिश राजनेता; जन्म १८७४; ब्रिटेनके प्रधान मंत्री १९४०-४५ तथा १९५१ से १९५५ तक; जनवरी १९६५ में मृत्यु।

चर्नार*–पु० दे० 'चरणाद्रि' (चुनार नामक स्थान)।

चर्पट–पु० (सं०) खुली, फैली हुई हथेली, चपत।

चर्पटी–स्त्री० (सं०) चपाती।

चर्परा–वि० दे० 'चरपरा'।

चर्वण–पु० (सं०) दे० 'चर्वण'।

चर्वित–वि० (सं०) दे० 'चर्वित'।

चर्वी–स्त्री० दे० 'चरवी'।

चर्भट–पु० (सं०) एक तरहकी ककड़ी।

चर्भटी–स्त्री० (सं०) आनंदमें उछलना-कूदना, हर्षक्रीड़ा; चर्चा; गर्वोक्ति।

चर्म–पु० (सं०) खाल; ढाल।

चर्म(न्)–पु० (सं०) चमड़ा, खाल; स्पर्शेंद्रिय; ढाल। **–करण**–पु० चमड़ेका काम करना। **–कशा,–कषा**–स्त्री० एक गंधद्रव्य, चमरखा। **–कार,–कारक**–पु० चमार, चमड़ेका काम करनेवाला, मोची। **–कारिणी**–स्त्री० वह स्त्री जिसके मासिक स्रावका दूसरा दिन चल रहा हो। **–कारी**–स्त्री० चर्मकषौषधि। **–कील**–पु० ववासीर; एक रोग जिसमें देहमें नुकीला मस्सा निकल आता है। **–कूप**–पु० चामकी कुप्पी। **–ग्रीव**–पु० शिवका एक अनुचर। **–घटिका**–स्त्री० जोंक। **–चक्षु(स्)**–पु० स्थूल दृष्टि। **–चटक**–पु०,**–चटका,–चटिका,–चटी**–स्त्री० चमगादड़। **–चित्रक**–पु० सफेद कोढ़, फूल। **–चेल**–पु० चमड़ा उलटकर बनाया हुआ पहनावा। **–ज**–वि० चमड़ेसे उत्पन्न। पु० रोआँ; रक्त। **–तरंग**–स्त्री० खालकी सिकुड़न, झुर्री। **–तिल**–वि० फुंसियोंसे भरा हुआ (शरीर)। **–दंड**–पु० चमड़ेका वना चावुक। **–दल**–पु० एक तरहका कोढ़। **–दूषिका**–स्त्री० दाद। **–द्रुम**–पु० भोजपत्रका पेड़। **–नालिका,–नासिका**–स्त्री० चमड़ेका बना चावुक। **–पट्टिका**–स्त्री० चमोटी। **–पत्रा**–स्त्री० चमगादड़। **–पादुका**–स्त्री० चमड़ेका जूता। **–पीड़िका**–स्त्री० एक तरहकी शीतला। **–पुट,–पुटक**–पु० चमड़ेका वना हुआ कुप्पा या थैला; धौंकनी। **–प्रसाधक**–वि० (टैक्सिडर-मिस्ट) पशु पक्षियोंके चमड़े या खालको पृथक्कर उसमें भूसा आदि भरकर सजाने या जीवित-सा रूप देनेका काम करनेवाला। **–प्रभेदिका**–स्त्री० सूजा, सुतारी। **–प्रसेवक**–पु०,**–प्रसेविका**–स्त्री० दे० 'चर्मपुट'। **–वंध**–पु० चमड़ेकी पट्टी, तस्मा। **–मसूरिका**–स्त्री० मसूरिका रोगका एक भेद। **–मुंडा**–स्त्री० दुर्गा। **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक पूजामें प्रयुक्त एक मुद्रा। **–यष्टि**–स्त्री० चमड़ेका चावुक। **–रंगा**–स्त्री० आवर्तकी नामक पौधा। **–वंश**–पु० एक प्राचीन बाजा। **–वसन**–पु० शिव। **–वाद्य**–पु० ढोल; नगाड़ा। **–वृक्ष**–पु० भोजपत्रका पेड़। **–शोधन**–पु० (टैनिंग) विशेष प्रकारके घोलोंमें डालकर या अन्य प्रक्रिया द्वारा चमड़ेको सिझाना, मुलायम बनाना। **–शोधनालय**–पु० (टैनरी) वह स्थान या कारखाना जहाँ विशेष प्रक्रिया द्वारा चमड़ेको सिझाने, मुलायम बनानेका काम किया जाता है। **–संभवा**–स्त्री० बड़ी इलायची। **–सार**–पु० देहमें आहारसे उत्पन्न होनेवाला रस, लसीका।

चर्मणा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मक्खी।

चर्मण्य–वि० (सं०) चमड़ेका बना। पु० चमड़ेका काम।

चर्मण्वती–स्त्री० (सं०) चंबल नदी।

चर्ममय–वि० (सं०) चमड़ेका बना हुआ।

चर्मरु–पु० (सं०) दे० 'चर्मार'।

चर्मांत–पु० (सं०) चर्मखंड, चमड़ेका टुकड़ा; चीर-फाड़के काम आनेवाला एक प्राचीन यंत्र।

चर्मांभ(स्)–पु० (सं०) लसीका।

चर्माख्य–पु० (सं०) कुष्ठ रोगका एक भेद।

चर्मानुरंजन–पु० (सं०) बदन रँगनेके काम आनेवाला सिंदूर जैसा एक द्रव्य।

चर्मार–पु० (सं०) चर्मकार, चमार।

चर्मारक–पु० (सं०) दे० 'चर्मानुरंजन'।

चर्मावकर्तन–पु० (सं०) चमड़ेका काम।

चर्मावकर्ता(र्तृ),चर्मावकर्ती(र्तिन्)–पु० (सं०) चर्मकार।

चर्मिक–वि० (सं०) जिसके पास ढाल हो।

चर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) ढालवाला, चर्मधारी; चमड़ेका बना हुआ। पु० भोजपत्रका पेड़; केला; चर्मधारी सैनिक।

चर्मोदक–पु० (लिफ) शरीरके चमड़े, या जख़्म इत्यादिसे निकलनेवाला एक तरहका लसीला पदार्थ, लसीका।

चर्य–वि० (सं०) गमन करने योग्य (स्थानादि); करने योग्य, कर्त्तव्य, आचरणीय।

चर्या–स्त्री० (सं०) आचरण; पालन; जीविका; नियमपूर्वक अनुसरण; गति गमन; भ्रमण; भोजन; चाल, प्रथा; दुर्गा।

चर्राना–अ० क्रि० खालमें खुश्कीसे तनाव या हलका दर्द होना; 'चर-चर' करके टूटना; (ला०) प्रवल इच्छा होना (शौक चर्राना)।

चर्री–स्त्री० लगनेवाली वात।

चर्वण–स्त्री० (सं०) कुछ देरतक दाँतोंसे बरावर कुचलते रहना, चवाना; रसास्वादन; चवेना; ठोस खाद्य पदार्थ।

चर्वणा–स्त्री० (सं०) चर्वण; रसास्वादन; चवानेवाला दाँत।

चर्वा–(सं०) चपत; चवाना।

चर्वित–वि० (सं०) चबाया हुआ। **–चर्वण**–पु० चवाये हुएको चवाना; (ला०) कही हुई वातको फिर-फिर कहना। **–पात्र, –पात्रक**–पु० चवाये हुएको उगलनेका पात्र, पीकदान।

चर्व्य–वि० (सं०) चवाने योग्य। पु० चवाकर खानेकी चीज।

चर्षणि–पु० (सं०) मनुष्य.।

चर्षणी–स्त्री० (सं०) कुलटा स्त्री।

चलंता–वि० चलनेवाला, चालू।

चलंदरी–स्त्री० पौसरा।

चल–वि० (सं०) गतिमान्; हिलता-डोलता; अस्थिर; जंगम; घवड़ाया हुआ; क्षणस्थायी। पु० पारा; कंप; वायु; भूल; दोष; छल; शिव; परमेश्वर; विष्णु; नृत्यमें एक विशेष चेष्टा। **–कर्ण**–पु० पृथ्वीसे ग्रहोंकी वास्तविक दूरी; हाथी। वि० जिसके कान सदा हिलते रहें। **–केतु**–पु० पच्छिममें उगनेवाला एक पुच्छल तारा। **–चंचु**–पु० चकोर। **–चित्त**–वि० अस्थिरचित्त, चंचल चित्तवाला। **–चित्र**–पु० सिनेमा, बाइसकोप (आ०)। **–चूक***–स्त्री० छल-कपट। **–दल,–पत्र**–पु० –पीपलका पेड़। **–बिचल**– वि०, स्त्री० (हिं०) दे० 'चलविचल'। **–मित्र**–पु० अस्थिर मित्र। **–विचल**–वि० जो अपनी जगहसे हट गया हो; अस्थिर, डावाँडोल; अव्यवस्थित। स्त्री० (हिं०) व्यतिक्रम, क्रमभंग।

चलकना–अ० क्रि० चिलकना; चमकना।

चलचलाव–पु० कूच; मौत; चलनेकी तैयारी; प्रस्थानकाल; प्रस्थानकी हड़बड़ी, रवारवी।

चलचाल–वि० चंचल, डावाँडोल।

चलता–स्त्री० (सं०) चल या गतिशील होनेका भाव; अस्थिरता। वि० (हिं०) चलता हुआ; गतिमान्; जिसका चलन हो, प्रचलित; जो सदा खुला, जारी रहे (खाता); चलनेवाला, काम देने लायक; बढ़ता, चमकता हुआ (चलती दुकान, वकालत); सरसरी, ऊपरी (चलती निगाह); चालाक (व्यवहारकुशल); कामचलाऊ (कार्य); हलका, अशास्त्रीय (गाना, चीज)। पु० एक विशाल वृक्ष। **–खाता**–पु० बंकका वह खाता जिसमें चाहे जब रुपया जमा किया और निकाला जा सके। **–पुरज़ा**–वि० चालाक, धूर्त। मु० **–करना**–हटाना, विदा करना; निपटाना। **–फ़िरता नज़र आना**–चलता बनना। **–बनना,–होना**–चल देना, खिसक जाना। **–(ते)बाज़ू,–हाथ**–जबतक अपने पास शक्ति-सामर्थ्य रहे।

चलती–स्त्री० जोर, असर।

चलतू†–वि० दे० 'चलता'।

चलत्पूर्णिमा–स्त्री० (सं०) चंद्रक नामकी मछली।

चलदंग, चलदंगक–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

चलद्विष–पु० (सं०) कोकिल।

चलन–पु० (सं०) हिलना-डोलना; गति, चाल; भ्रमण; चरण; हरिण। **–कलन**–पु० ज्योतिषका एक गणित जिसके द्वारा दिनमानका घटना-बढ़ना जाना जाता है। **–समीकरण**–पु० गणितकी एक विशेष क्रिया जिसके द्वारा ज्ञात राशिकी सहायतासे अज्ञात राशि निकाली जाती है।

चलन–पु० चलनेका भाव; व्यवहार, रिवाज; रीति; चाल, ढंग; प्रचार। **–सार**–वि० जिसका चलन या व्यवहार हो, प्रचलित (सिक्का); चलनेवाला, टिकाऊ।

चलनक–पु० (सं०) (नर्तकी आदिका) घाघरा।

चलनदरी†–स्त्री० दे० 'चलंदरी'।

चलना–पु० बड़ी चलनी; छन्ना। अ० क्रि० हिलना, हरकत करना; एकसे दूसरी जगह जाना, प्रस्थान करना; चलन होना, प्रचलित होना; आरंभ होना, छिड़ना (चर्चा, वात); विदा होना; मरना; जारी, कायम रहना (नाम, वंश); निभना; टिकना; वहना; काममें लाया जाना (तलवार, लाठी इ०); छूटना, फेंका जाना (तीर, गोली); हो सकना; उठना; बढ़तीपर होना, चमकना; चलती होना; काम देना, करना; असर करना; कारगर होना (जादू-मंत्र); जोर, वस चलना; आचरण करना; परसा जाना; पढ़ा जाना (पत्रादि); खाया जाना; गुजर होना; दायर होना (मुकदमा इ०)। स० क्रि० (शतरंज, चौसर आदिमें) मोहरे या गोटको एकसे दूसरे घरमें रखना, हटाना, बढ़ाना; (ताश, गंजीफेमें) कोई पत्ता खेलनेवालोंके सामने फेंकना। मु० **चल निकलना**–ठीक तौरसे चलने लगना; जमना; सफलताकी ओर बढ़ना (काम, वकालत आदि)। **चल बसना**–मृत हो जाना।

चलनि*–स्त्री० दे० 'चलन'।

चलनिका–स्त्री० (सं०) रेशमी झालर; घाँघरा।

चलनिक्षेप–पु० (करेंट डिपॉज़िट) बैंकके चलते या चालू खातेमें जमा की हुई रकम; चालू जमा।

चलनी–स्त्री० दे० 'छलनी'; (सं०) घँघरी; हाथी वाँधनेका रस्सा।

चलनौस†–पु० वह पदार्थ जो चालनेके बाद चलनीमें बच रहे, चोकर आदि।

चलवाँक–वि० दे० 'चरवाँक'; तेज चलनेवाला।

चलवंत*–पु० पैदल सैनिक।

चलवाना–स० क्रि० चलाने या चालनेका काम कराना।

चलवैया†–पु० चलनेवाला; चलानेवाला।

चल संपत्ति–स्त्री० (सं०) ऐसी संपत्ति जो एक स्थानसे हटाकर अन्यत्र ले जायी जा सके।

चला–स्त्री० (सं०) बिजली; पृथ्वी; लक्ष्मी; पिप्पली।

चलाऊ–वि० अधिक दिन चलनेवाला, टिकाऊ।

चलाक*–वि० चालाक, चतुर; चंचल।

चलाका*–स्त्री० बिजली।

चलाचल–वि० (सं०) चल और अचल; अस्थिर; क्षण-स्थायी; चंचल। पु० कौआ। * स्त्री० चलाचली; चाल।

चलाचली–स्त्री० चलचलाव; बहुतोंका एक साथ चलना। * वि० चलनेको उद्यत।

चलातंक–पु० (सं०) एक वातरोग, आमवात।

चलार्थ–पु० (करेंसी) वह सिक्का या मुद्रा जिसका प्रयोग या व्यवहार निरंतर होता रहता हो, जो एक आदमीके हाथसे दूसरेके हाथमें

जाता रहता हो। –पत्र–पु० (करेंसी नोट) सिक्केकी तरह व्यवहृत होनेवाली कागजकी मुद्रा।

चलान–पु० दे० 'चालान'। –दार–पु० दे० 'चालानदार'।

चलाना–स० क्रि० चलनेको प्रेरित करना, चलनेकी क्रिया कराना; हांकना; हिलाना; गति या हरकत देना; आचरण कराना; चलन कराना, चलनसार करना (रुपया, सिक्का); आरंभ करना; प्रचलन, प्रवर्तन करना (चर्चा, धर्म, वंश); कायम, जारी रखना; काममें लाना; छोड़ना, फेंकना (तीर, गोली); निभाना, गुजर करना; बढ़ाना, चमकाना (रोजगार, वकालत); परसना; दायर करना (मुकदमा इ०); बहाना।

चलापन*–पु० चंचलता–'है घन आनँद भौंह-चलापन'।

चलायमान–वि० (सं०) विचलित; डावाँडोल, चंचल; ललचता हुआ।

चलाव–पु० प्रस्थान, रवानगी; चलावा, गौना, द्विरागमन।

चलावा–पु० गौना, मुकलावा; चलन, रिवाज; ववाई बीमारीमें एक गाँवकी ओरसे दूसरे गाँवकी सीमामें किया जानेवाला उतारा।

चलि–पु० (सं०) आवरण; अँगरखा।

चलित–वि० (सं०) चलता हुआ; हिलता, काँपता हुआ; अस्थिर; गत; प्राप्त; ज्ञात; हटाया हुआ। पु० हिलना; गमन; नृत्यमें एक तरहकी चेष्टा। –ग्रह–पु० वह ग्रह जिसका कुछ फल भोगा जा चुका हो औ कुछ शेष हो।

चलित्र–पु० (लोकोमोटिव) (रेलगाड़ी आदिको) चलानेवाला इंजन; रेल-इंजन।

चलिष्णु–वि० (सं०) गमनशील; जानेको तैयार।

चलु–पु० (सं०) मुँहमें आनेभर पानी।

चलुक–पु० (सं०) चुल्लूभर पानी; एक छोटा पात्र।

चलैया†–पु० चलनेवाला।

चलौना–पु० दूध आदि चलानेकी करछी; वह लकड़ीका टुकड़ा जिससे चरखा चलाया जाता है।

चलौवा–पु० एक तरहका उतारा जो दूसरे गाँवकी सीमामें फेंक दिया जाता है।

चवना*–अ० क्रि० चूना, टपकना। स० क्रि० चुआना, स्रवित करना।

चवन्नी–स्त्री० चार आने मूल्य (२५ नये पैसे)का सिक्का, रुपयेका चतुर्थांश।

चवपैया–स्त्री० दे० 'चौपैया'।

चवरा–पु० लोबिया।

चवल–पु० (सं०) लोबिया।

चवा*–स्त्री० एक साथ चारों दिशाओंसे बहती जान पड़नेवाली हवा।

चवाई–पु० चुगलखोर, निंदक, चवाव करनेवाला; मिथ्याभाषी–'सुनहु कान्ह बलभद्र चवाई जनमत ही को धूत'–सूर। स्त्री० बदनामी; झूठी बात।

चवाउ*–पु० दे० 'चवाव'।

चवाव–पु० अफवाह; बुराईकी चर्चा, निंदा; चुगलखोरी।

चवि, चविका, चवी–स्त्री० (सं०) दे० 'चविक'।

चविक–पु० (सं०) वृक्षविशेष।

चव्य–पु० (सं०) दे० 'चविक'। –जा–स्त्री०, –फल–पु० गजपिप्पली।

चव्या–स्त्री० (सं०) वचा; कपास।

चशक–पु० यूरोपियनोंके वावर्चियोंको विशेष अवसरोंपर मिलनेवाला भोजन।

चशम–स्त्री० दे० 'चश्म'।

चशमा–पु० दे० 'चश्मा'।

चश्म–स्त्री० (फा०) आँख, नेत्र; नेत्राकार वस्तु। –क–स्त्री० छोटी आँख; आँखका इशारा, सैन; रंजिश, मनमोटाव। –०ज़न–पु० आँखसे इशारा करनेवाला। –ज़दन–पु० पलक झपकना; क्षण, निमेष। –दीद–वि० आँखों देखा; जिसने आँखों देखा हो, प्रत्यक्षदर्शी (गवाह)। –नुमाई–स्त्री० डरानेके लिए आँख दिखाना, तंबीह। –पोशी–स्त्री० किसीके दोष-दुर्गुण देखकर टाल जाना, उपेक्षा करना। –व चराग़–पु० आँख और ज्योति, बहुत प्यारा; (ला०) बेटा। –(मे)नम–स्त्री० गीली, आँसूभरी आँख। –बद–स्त्री० बुरी निगाह, डीठ।

चश्मा–पु० (फा०) सोता, स्रोत; ऐनक; सुईका छेद। –ए-ख़िज्र, –ए-हैवाँ–पु० अमृतका कुंड, स्रोत।

चष*–पु० दे० 'चक्षु'। –चोल–पु० आँखकी पलक।

चषक–पु० (सं०) शराब पीनेका प्याला, पानपात्र; एक तरहकी शराब; शहद।

चषण–पु० (सं०) भक्षण; हनन।

चषाल–पु० (सं०) यज्ञके खंभेमें पशु बाँधनेके लिए लगी हुई लकड़ी या लोहेकी फिरकी।

चसक–स्त्री० मगजीके आगे लगायी जानेवाली पतली गोट; हलकी पीड़ा, टीस। * पु० दे० 'चषक'।

चसकना–अ० क्रि० कसकना, हलका दर्द होना; चसका लगना।

चसका–पु० किसी चीजका मजा मिलनेसे उसे फिर करने, भोगनेकी इच्छा होना, चाट; इस तरह लगी हुई लत (पड़ना, लगना)।

चसकी–स्त्री० दे० 'चसका'।

चसना–अ० क्रि० मरना; छला जाना; चिपकना।

चसम*–स्त्री० दे० 'चश्म'।

चसमा†–पु० दे० 'चश्मा'।

चस्का–पु० दे० 'चसका'।

चस्पाँ–वि० (फा०) चिपका हुआ; उपयुक्त, मौजूँ (होना)।

चह–पु० नदीमें बल्ले गाड़कर तथा तख्ते बिछाकर बनाया हुआ अस्थायी पुल; (फा०) 'चाह'का समासगत रूप। –बच्चा–पु० गंदा पानी जमा होनेके लिए खोदा हुआ गढ़ा; रुपया-पैसा गाड़नेके लिए बनाया हुआ गढ़ेकी शकलका तहखाना।

चहक–स्त्री० चहकनेका भाव, चहचहा। † पु० पंक।

चहकना–अ० क्रि० चिड़ियोंका चहचहाना, आनंदमें भरकर कलरव करना; खुशीसे खिलकर बोलना; जलना। स० क्रि० जलाना, संतप्त करना–'··गाज ऐसे अरगजा चोआ लागे चहकन'–देव०।

चहका–पु० ईंटोंका फर्श; कीचड़; होलीपर गाया जानेवाला एक तरहका गीत; † लूका; लुआठी।

चहकार–स्त्री० चिड़ियोंकी चहक।

चहकारना†–अ० क्रि० चहकना।

चहकारा*–वि० चहकनेवाला, कलरव करनेवाला।

चहचहा–पु० चहचहानेका भाव; चिड़ियोंकी आनंद-भरी बोली, कलरव; हँसी-खुशी; कई आदमियोंका एक साथ हँसना, मुदित होकर बोलना; हँसी-मजाक। वि० 'चहचह' शब्दसे भरा हुआ; आनंद उत्पन्न करनेवाला; उल्लासयुक्त; ताजा।

चहचहाना–अ० क्रि० चिड़ियोंका उमंगमें आकर लगातार बोलना, चहकना।

चहचारा*–पु० चहल-पहल–'भोर भयो लागे बोलन सुक-सारौ है चहचारौ'–घन०।

चहनना†–स० क्रि० रौंदना; अच्छी तरह मिलाना।

चहना*–स० क्रि० देखना; चाहना।

चहनि*–स्त्री० दे० 'चाह', इच्छा; नज़र।

चहर*–स्त्री० चहल-पहल; आनंदका कोलाहल, शोर; उपद्रव। वि० बढ़िया; तेज; बया चिड़िया (मीरा)। –पहर–स्त्री० दे० 'चहल-पहल'।

चहरना*–अ० क्रि० मुदित होना।

चहरारा*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; चर्राना; फटना।

चहल*–स्त्री० दे० 'चहला'; आनंदोत्सव। –पहल–स्त्री० किसी स्थानमें अधिक आदमियोंके इकट्ठे होने, आने-जानेसे वायुमंडलमें पैदा हुई सजीवता, धूम-धाम; प्रसन्नता; आबादी; रौनक।

चहल–वि० (फा०) दे० 'चेहल'। –क़दमी–स्त्री० दे० 'चेहलक़दमी'।

चहला*–पु० कीचड़–'चहले परि निकसै नहीं मनो दूबरी गाय'–व्यासजी। –(ले)की भैंस–मोटा, भद्दा, ढीला-ढाला आदमी।

चहली†–स्त्री० कुएँसे पानी खींचनेकी गराड़ी।

चहलुम–पु० दे० 'चेहलुम'।

चहार–वि० (फा०) चार। पु० चारकी संख्या। **–गोशा**–वि० चौकोना। **–चंद**–वि० चौगुना। **–दह**–वि०, पु० चौदह। **–दीवारी**–स्त्री० किसी स्थानके चारों ओर, आड़-बचावके लिए खींची हुई दीवार, परकोटा। **–यारी**–पु० मुसलमानोंका सुन्नी संप्रदाय। **–शंबा**–पु० बुध।

चहारुम–वि० (फा०) चौथा। पु० चतुर्थांश, चौथाई।

चहुँ–वि० चार, चारों। **–ओर,–घा,–दिस**–अ० चारों ओर।

चहुँक–स्त्री० दे० 'चिहुँक'।

चहुटना*–स० क्रि० चोट पहुँचाना।

चहुरा–वि० चौहरा। पु० चौघरा।

चहुवान*–पु० दे० 'चौहान'।

चहूँ*–वि० दे० 'चहुँ'।

चहूँटना*–अ० क्रि० सटना।

चहेटना*–स० क्रि० दे० 'चपेटना'; भगाना; निचोड़ना।

चहेता–वि० प्यारा, प्रेमपात्र। (स्त्री० 'चहेती'।)

चहोड़ना, चहोरना†–स० क्रि० रोपना; सँभालना; चारो तरफसे पीटना।

चहोरा†–पु० अगहनी धान।

चाँड़याँ–वि० धूर्त, ठग।

चाँईं–वि० उचक्का, धूर्त, चालाक; गंजा। पु० ठग। स्त्री० सिरका एक रोग जिसमें फुंसियाँ होती और बाल गिरते हैं।

चाँक–पु० काठकी थापी जिससे खलियानमें अन्नकी राशि गोठते हैं; अन्नकी राशि गोंठनेका चिह्न; देहके पीड़ित स्थानके चारो तरफ खींच दिया जानेवाला घेरा।

चाँकना–स० क्रि० गोंठना, रेखाओंसे घेरना; अन्नकी राशिको गोबर आदिसे गोंठना।

चाँका–पु० दे० 'चाँक'।

चांग–पु० (सं०) दे० 'चांगेरी'; दाँतोंकी सफेदी।

चाँगला–वि० धूर्त, चालाक; हृष्टपुष्ट; बढिया, अच्छा (महा०)।

चांगेरी–स्त्री० (सं०) अम्ललोणिका शाक।

चाँचर, चाँचरि–स्त्री० होलीके अवसरपर गाया जानेवाला एक राग, फाग; परती जमीन; द्वारपर लगानेकी टट्टी। † पु० सालपान नामक क्षुप।

चांचल्य–पु० (सं०) चंचलता, चपलता।

चाँचिया–पु० चोरी, डाके आदिसे पेट पालनेवाली एक जाति; लुटेरा; धूर्त व्यक्ति।

चाँचु*–स्त्री० चोंच।

चाँटा–पु० चपत, तमाचा; * चींटा।

चाँची–स्त्री० कारीगरोंपर लगनेवाला एक पुराना कर; तबलेके ऊपर किनारेपर लगायी जानेवाली मगजी; इस मगजीपर आघात होनेसे निकलनेवाला शब्द; * चींटी।

चांड–पु० (सं०) चंडता, उग्रता, प्रचंडता।

चाँड़–स्त्री० भारी आवश्यकता, गरज; बेकली, प्रबल इच्छा–'तोरे धनुष चाँड़ नहि सरई'–रामा०; अधिकता; दबाव, थूनी। वि० प्रबल; उग्र, प्रचंड; बढ़-चढ़कर, श्रेष्ठ; तृप्त, अघाया हुआ। **मु०–सरना**–लालसा पूरी होना।

चाँड़ना–स० क्रि० रौंदना; दबाना; तोड़-फोड़कर नष्ट करना; खोद डालना।

चांडाल–पु० (सं०) अंत्यज-वर्गमें सबसे नीची मानी गयी जाति, श्वपच; निषाद; क्रूर, नीच कर्म करनेवाला व्यक्ति।

चांडालिका–स्त्री० (सं०) चंडालवीणा; दुर्गा; एक पौधा।

चांडालिनी–स्त्री० (सं०) एक तंत्रोक्त देवी।

चांडाली–स्त्री० (सं०) चांडाल स्त्री; लिंगिनी लता।

चाँडिला*–वि० चंड-प्रचंड; प्रबल; उद्धत; बहुत बढ़ा हुआ।

चाँड़ी†–स्त्री० चोंगी, कीप।

चाँडू†–पु० दे० 'चंडू'।

चाँद–पु० चंद्रमा; एक गहना जो दूजकी चाँदकी शकलका होता है; ढालपर जड़ा हुआ पुष्पाकार काँटा; चाँदमारीका निशान; कलाईपर गोदा जानेवाला एक तरहका गोदना। स्त्री० चाँदियाँ, खोपड़ी। **–टीका**–पु० माथेपर पहननेका एक गहना। **–तारा**–पु० बारीक मलमल जिसपर चाँद और तारेकी शकलकी बूटियाँ बनी होती हैं; एक तरहकी पतंग। **–बाला**–पु० अर्द्धचंद्राकार बाला। **–बीबी**–स्त्री० आदिलशाहकी विधवा पत्नी जिसने अकबरकी सेनाके अहमदनगर घेर लेनेपर असाधारण शौर्य और रणकौशलका परिचय दिया। **–मारी**–स्त्री० बंदूकसे निशाने लगानेका अभ्यास, कपड़ा मढ़े चौखटे या दीवारपर बने हुए गोल, काले निशानपर निशाना लगाना। **–सूरज**–पु० एक गहना जो चोटीमें गूँथकर पहना जाता है; बादलेके बने चाँद और सूरज जो कामदार टोपियोंमें लगाये जाते हैं। **–का कुंडल,–का मंडल**–हलकी बदलीपर प्रकाश पड़नेसे चंद्रमाके चारों ओर बना हुआ घेरा। मु० **–का टुकड़ा**–अति सुंदर। **–को गहन लगना**–अच्छी, सुंदर वस्तुमें दोष होना। **–गंजी हो जाना**–इतने जूते लगना कि चाँदपर बाल न रह जायँ। **–चढ़ना**–नया महीना चढ़ना; ऋतुका बीत जाना; गर्भ रहना (मुसल० स्त्रि०)। **–पर ख़ाक या धूल उड़ाना**–निर्दोष व्यक्ति या वस्तुमें दोष निकालना; साधुचरित जनपर दोष लगाना। **–पर थूकना**–साधुचरित या महान् पुरुषपर लांछन लगाकर स्वयं लांछित होना। **–सा मुखड़ा**–बहुत सुंदर, प्यारा मुख।

चाँदना–पु० उजाला, रोशनी; चाँदनी। मु० **–होना**–पौ फटना, सबेरा होना।

चांदनिक–वि० (सं०) चंदनका बना हुआ; चंदनसे प्राप्त; चंदनसे बासा हुआ।

चाँदनी–स्त्री० चाँदकी रोशनी, ज्योत्स्ना; फर्शपर बिछानेकी लंबी-चौड़ी सफेद चादर; छतगीर; गुलचाँदनी। **–का खेत**–चंद्रमाका चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। मु० **चार दिनकी चाँदनी**–क्षणिक सुख-वैभव। **–का खेत करना**–चाँदनी फैलना, छिटकना। **–मारना**–चाँदनीका बुरा असर पड़ना; घोड़ोंकी एक बीमारी।

चाँदा–पु० दूरबीनका लक्ष्य-स्थान; भूमिकी एक माप; चाँदकी शकलका एक आला जिससे कोण बनाते या नापते हैं।

चाँदी–स्त्री० सफेद रंगकी एक नरम चमकीली धातु जो गहने, सिक्के आदि बनानेके काममें आती है, रजत; आर्थिक लाभ; एक छोटी मछली; * दे० 'चँदिया'। मु० **–कटना**–गहरी आय होना, खूब रुपये मिलना। **–कर देना**–जलाकर राख कर देना। **–का जूता,–की जूती**–घूस, उत्कोच। **–का पहरा**–समृद्धिकाल। **–होना**–खूब लाभ होना, माल मिलना।

चांद्र–वि० (सं०) चंद्र-संबंधी। पु० चांद्र मास; शुक्ल पक्ष; चंद्रकांत मणि; चांद्रायण व्रत; मृगशिरा नक्षत्र; अदरक। **–मास**–पु० चंद्रमाकी गतिके अनुसार होनेवाला महीना। **–वत्सर, वर्ष**–पु० चंद्रमाकी गतिके अनुसार होनेवाला वर्ष (लगभग ३५५ दिनका)। **–व्रतिक**–वि० चांद्रायण व्रत करनेवाला।

चांद्रक–पु० (सं०) सोंठ। वि० चंद्र-संबंधी।

चांद्रभागा–स्त्री० (सं०) दे० 'चंद्रभागा'।

चांद्रमस–वि० (सं०) चंद्रमासे संबंध रखनेवाला। पु० मृगशिरा नक्षत्र।

चांद्रमसायन, चांद्रमसायनि–पु० (सं०) बुध ग्रह।

चांद्रमसी–स्त्री० (सं०) बृहस्पतिकी पत्नी।

चांद्राख्य–पु० (सं०) अदरक।

चांद्रायण–पु० (सं०) एक मासमें पूरा होनेवाला एक कृच्छ्र व्रत (इसमें कृष्ण पक्षमें आहार प्रतिदिन एक ग्रास घटाना और शुक्ल पक्षमें बढ़ाना होता है।)

चांद्रायणिक–वि० (सं०) चांद्रायण व्रत करनेवाला।

चांद्रि–पु० (सं०) बुध ग्रह।

चांद्री–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी पत्नी, चाँदनी; सफेद भटकटैया।

चाँप–पु० दे० 'चाप'; बंदूकका एक पुरजा; * चंपाका फूल। स्त्री० दे० 'चाप'।

चाँपना–स० क्रि० दबाना।

चाँपाकल–स्त्री० वह कल या यंत्र जिसे हाथसे दबानेपर पानी जमीनसे ऊपर चढ़कर बाहर निकलता है।

चांपिला–स्त्री० (सं०) चंपा नदी, चंबल नदी (?)।

चांपेय–पु० (सं०) चंपक; नागकेसर; किंजल्क; सुवर्ण; धतूरा।

चांपेयक–पु० (सं०) किंजल्क, केसर।

चाँयँ-चायँ, चाँवँ-चाँवँ–स्त्री० चिड़ियोंका, या चिड़ियों जैसा, शोर; बकबक।

चाँवर*–पु० चावल।

चांसलर–पु० (अं०) विश्वविद्यालयका सर्वोच्च अधिकारी, कुलपति।

चाइ, चाउ*–पु० दे० 'चाव'।

चाईं–वि० दे० 'चाँईं'।

चाउर†–पु० दे० 'चावल'।

चाक–पु० चक्राकार पत्थर जिसे फिराकर कुम्हार बरतन बनाता है; पहिया; चरखी; मिस्री जमानेकी घरिया; अन्नराशिपर लगाया जानेवाला चिह्न। (अं०) खरिया मिट्टी। (फा०) चीर; दरार; आस्तीन या दामनका खुला हुआ भाग। वि० फटा हुआ। **–(के)गरीबाँ**–पु० गरीबानका खुला हुआ हिस्सा।

चाक़–वि० (तु०) चुस्त, स्वस्थ; हृष्ट-पुष्ट; मले जानेके लिए तैयार (घोड़ा)। **–चौबंद**–वि० चुस्त, फुरतीला; हृष्ट-पुष्ट।

चाकचक–वि० सुदृढ़, सुरक्षित।

चाकचक्य–पु० (सं०) उज्ज्वलता; चमक-दमक; शोभा।

चाकचिक्य–पु० (सं०) चमक; चकाचौंध।

चाकचिच्चा–स्त्री० (सं०) श्वेतबुह्ना, वनतिक्ता नामक पौधा।

चाकना–स० क्रि० रेखाएँ खींचकर किसी चीजकी हद बनाना, रेखाओंसे घेरना; अनाजकी राशिपर मिट्टी या गोबरसे छापा लगाना; पहचानके लिए चिह्न बनाना।

चाकर–पु० (फा०) नौकर, सेवक।

चाकरनी, चाकरानी–स्त्री० नौकरानी।

चाकरी–स्त्री० (फा०) नौकरी, सेवा।

चाकलेट–पु० (अं०) एक तरहकी अंग्रेजी मिठाई।

चाकसू–पु० बनकुलथी।

चाका–पु० गाड़ी आदिका पहिया, चक्र।

चाकी–स्त्री० चक्की; बिजली; सिरपर की जानेवाली पटेकी चोट; † चक्कीके आकारका जमाया हुआ गुड़।

चाकू–पु० (तु०) छोटी छुरी, कलम बनाने, फल-तरकारी काटनेका छोटा औजार, कलमतराश।

चाक्र–वि० (सं०) चक्र-संबंधी; चक्राकार; चक्रसे किया जानेवाला (युद्ध)।

चाक्रिक–वि० (सं०) चक्र या मंडलसे संबंध रखनेवाला; चक्राकार। पु० मंडलाकार खड़े होकर स्तुति गानेवाले बंदीजन; कुम्हार; तेली; गाड़ीवान।

चाक्रिण–पु० (सं०) तेली या कुम्हारका लड़का।

चाक्रेय–वि० (सं०) चक्र-संबंधी।

चाक्षुष–वि० (सं०) चक्षु-संबंधी; चक्षुसे प्राप्त (ज्ञान); चक्षुग्राह्य। (स्त्री० 'चाक्षुषी'।) पु० चक्षुसे प्राप्त ज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाणका एक भेद; छठें मनु; छठा मन्वंतर। **–गवाह**–पु० (आई-विटनेस) वह गवाह जिसने स्वयं किसी घटनाको घटित होते देखा हो।

चाख–पु० दे० 'चाष', नीलकंठ पक्षी।

चाखना*–स० क्रि० चखना, स्वाद लेना।

चाचपुट–पु० (सं०) तालका एक भेद (संगीत)।

चाचर, चाचरि–स्त्री० दे० 'चाँचर'; होलीका स्वांग, हुरदंग।

चाचरी–स्त्री० योगकी एक मुद्रा।

चाचा–पु० बापका छोटा भाई, चचा; वृद्धजनोंके लिए एक आदरसूचक संबोधन।

चाची–स्त्री० स्त्री० चाचाकी स्त्री, चची।

चाट–स्त्री० चसका, लपका, लत; मिर्च, मसाला देकर तैयार किया हुआ तीखे स्वादवाला खाद्य (दही-बड़ा, गोलगप्पा आदि), चक्षण; गजक (पड़ना, लगना)। पु० (सं०) ठग, विश्वास उत्पन्न कर धन हरण करनेवाला।

चाटकैर–पु० (सं०) चटकका नर बच्चा।

चाटना–स० क्रि० चटनी जैसी चीजको जीभसे उठाकर या पोंछकर खाना; किसी चीजपर जीभ फिराना; स्वाद लेना (होंठ, हाथ चाटना); (गाय, कुत्ते आदिका प्यारसे) जीभसे सहलाना, जीभ फेरना; कीड़ोंका किसी वस्तुको खाना। **मु० चाट जाना**–खा डालना, साफ कर देना। **चाट-पोंछकर खा जाना**–सब खा जाना, कुछ न छोड़ना।

चाटु–पु० (सं०) प्रियवचन, मीठी बात; झूठी प्रिय बात; झूठी प्रशंसा, चापलूसी। **–कार**–पु० चापलूसी करनेवाला; एक तरहका मुक्ताहार। **–कारी**–स्त्री० (हिं०) चापलूसी। **–पटु**–वि० चापलूसीमें कुशल। पु० भाँड़। **–बटु, वटु**–पु० विदूषक; भाँड़। **–लोल**–वि० चापलूस; सुंदरतापूर्वक हिलनेवाला।

चाटुक–पु० (सं०) प्रिय वचन।

चाटूक्ति–स्त्री० (सं०) चापलूसी; चापलूसीसे भरा हुआ कथन।

चाटूल्लोल–वि० (सं०) चाटुकार।

चाड़*–स्त्री० दे० 'चाँड़'।

चाडिला–वि० दे० 'चाँडिला'।

चाड़ी†–स्त्री० चुगली।

चाढ़ा*–पु० प्रेमपात्र, प्यारा; प्रेमी। वि० आसक्त, मुग्ध।

चाणक्य–पु० (सं०) (चणक मुनिके वंशमें उत्पन्न) चंद्रगुप्त मौर्यके प्रधान मंत्री, अर्थशास्त्रके रचयिता विष्णुगुप्त, कौटिल्य। **–नीति**–स्त्री० चाणक्यरचित नीतिग्रंथ।

चाणाक्ष–वि० चाँइयाँ, धूर्त, चालाक (निबंधमाला)।

चाणूर–पु० (सं०) कृष्णके हाथों मारा गया कंसका एक मल्ल। **–मर्दन**–पु० कृष्ण।

चातक–पु० (सं०) पपीहा, सारंग। (कवि-संप्रदायके अनुसार यह पक्षी केवल वर्षा, बल्कि स्वाती नक्षत्रमें होनेवाली वर्षाका जल पीता है, फलतः सदा बादलोंकी ओर टकटकी लगाये रहता है); मन (रहस्य संप्रदाय)।

चातकनी*–स्त्री० मादा चातक, चातकी।

चातकानंदन–पु० (सं०) बादल; वर्षाकाल।

चातर–पु० मछली पकड़नेका जाल; साजिश।

चातुर–वि० (सं०) चारसे संबद्ध; चतुर; चापलूस; चारसे खींचा जानेवाला (रथ); शासन करनेवाला; दृश्य, गोचर। पु० चार पहियोंकी गाड़ी; छोटा गोल तकिया।

चातुरई†–दे० 'चातुरी'।

चातुरक–वि० (सं०) चापलूस; दृश्य, गोचर; शासन करनेवाला। पु० छोटा गोल तकिया।

चातुरक्ष–पु० (सं०) चार पासोंका खेल; छोटा गोल तकिया।

चातुरिक–पु० (सं०) सारथि, गाड़ीवान।

चातुरी–स्त्री० (सं०) चतुराई।

चातुर्जात, चातुर्जातक–पु० (सं०) चार द्रव्योंका समाहार।

चातुर्थक, चातुर्थिक–वि० (सं०) चौथे दिन होनेवाला, चौथिया। पु० चौथिया ज्वर।

चातुर्दश–वि० (सं०) चतुर्दशीको होने, पैदा होनेवाला। पु० राक्षस।

चातुर्दशिक–वि०, पु० (सं०) चतुर्दशीके दिन पढ़नेवाला।

चातुर्भद्र, चातुर्भद्रक–पु० (सं०) नागरमोथा, अतिविषा, मुस्ता और गुड़ूची–इन चार ओषधियोंका समाहार।

चातुर्महाराजिक–पु० (सं०) विष्णु; बुद्ध।

चातुर्मास–वि० (सं०) चार महीनेमें होनेवाला।

चातुर्मासिक–वि० (सं०) चार महीनेमें होनेवाला (यज्ञ, कर्म)।

चातुर्मासी–स्त्री० (सं०) एक यज्ञ; वह पूर्णिमा जिस दिन वह यज्ञ किया जाता है।

चातुर्मास्य–पु० (सं०) चार मासमें होनेवाला एक वैदिक यज्ञ; चौमासा, आषाढ़की पूर्णिमा या शुक्ला द्वादशीसे कार्त्तिककी पूर्णिमा या शुक्ला द्वादशीतकका समय; इस कालमें किया जानेवाला एक पौराणिक व्रत।

चातुर्य–पु० (सं०) चातुरी।

चातुर्वर्ण्य–पु० (सं०) चारों वर्ण–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र; चारों वर्णोंके धर्म, कर्तव्य। वि० चारों वर्णोंसे संबंध रखनेवाला।

चातुर्विद्य–पु० (सं०) चारों वेदोंका ज्ञाता; चारों वेद।

चातुर्होत्र–वि० (सं०) चार होताओं द्वारा किया जानेवाला। पु० चार होताओं द्वारा किया जानेवाला यज्ञ।

चात्र–पु० (सं०) अग्निमंथनमें व्यवहृत खैरकी १२ अंगुल लंबी लकड़ी।

चात्रिक, चात्रिग*–पु० चातक।

चादर–स्त्री० साड़ीके ऊपर ओढ़ा जानेवाला अधिक लंबा-चौड़ा दुपट्टा; विस्तरके ऊपर विछाने या ओढ़नेका लंबा-सा, आयताकार कपड़ा; लोहे-पीतल आदिका लंबा-चौड़ा पतला खंड, पत्तर; ऊँचे स्थानसे गिरनेवाली पानीकी चौड़ी धार; चादरके रूपमें गुँथे हुए फूल जो कब्र या मजारपर चढ़ाये जाते हैं; एक आतिशवाजी जिससे आगकी चादर निकलती है। मु० **–उतारना**–वेपर्द, वेइज्जत करना। **–ओढ़ाना,–डालना**–विधवाको घरमें डाल लेना, विधवासे व्याह करना। **–देखकर पाँव फैलाना**–वित्त, विसात देखकर खर्च करना। **–हिलाना**–युद्धमें आत्मसमर्पण या लड़ाई वंद करनेके लिए कपड़ा हिलाना।

चादरा–पु० मरदानी चादर।

चादरि*–स्त्री० आसन (वीसल०)।

चान*–पु० चंद्रमा (विद्या०)।

चानक*–अ० दे० 'अचानक'।

चानन* -पु० चंदन (विद्या०)।

चानस–पु० ताशका एक खेल (अंग्रेजीमें इसे 'चांस' कहते हैं)।

चाप–पु० (सं०) धनुष्; इंद्रधनुष्; धनु राशि; वृत्तकी परिधिका कोई अंश, 'आर्क'। **–कर्ण**–पु० दे० (कॉर्ड) 'जीवा'। स्त्री० (हिं०) दबाव; धक्का; पाँवोंकी आहट। **–जरीब**–पु० लंवाईकी नाप।

चाप–पु० (अं०) आलू, वेसन आदिकी घीमें तली टिकिया।

चापट–स्त्री० चोकर। वि० चपटा, समतल; चौपट।

चापड़–वि० जो दाव पड़नेसे चपटा हो गया हो; समतल; बरवाद, मटियामेट। स्त्री० चोकर।

चापना–स० क्रि० दबाना, दाब पहुँचाना।

चापर–स्त्री० चापड़, चोकर।

चापल–पु० (सं०) चपलता, चंचलता; अस्थिरता; उतावली; शोखी; क्षोभ। * वि० चपल।

चापलता*–स्त्री० दे० 'चपलता'।

चापलूस–वि० (फा०) खुशामदी, चाटुकार।

चापलूसी–स्त्री० (फा०) खुशामद, झूठी प्रशंसा।

चापल्य–पु० (सं०) दे० 'चापल'।

चापी(पिन्)–वि० (सं०) धनुर्धर। पु० शिव; धनु राशि।

चाफंद–पु० एक तरहका जाल।

चाब–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ और लकड़ी दवाके काम आती है; इस पौधेका फल; डाढ़। पु० एक तरहका बाँस।

चावना–स० क्रि० चवाना; खूब खाना।

चावी–स्त्री० कुंजी; पच्चड़। मु० **–देना**–कुंजी घुमाकर घड़ी आदिकी कमानीको कस देना।

चाबुक–वि० (फा०) फुरतीला, चुस्त, तेज। पु० कोड़ा। **–दस्त**–वि० शिल्पकुशल; दक्ष। **–दस्ती**–स्त्री० शिल्प-कुशलता; दक्षता। **–सवार**–पु० घोड़ेको सधाने, चाल सिखानेवाला। **–सवारी**–स्त्री० घोड़े सधानेका काम, पेशा।

चाबुका–स्त्री० (सं० (?)) छोटा तकिया।

चाबुकी–स्त्री० (फा०) चुस्ती, फुरती, तेजी।

चाभ–स्त्री० दे० 'चाब'।

चाभना–स० क्रि० खाना; तर माल खाना; † चूसना।

चाभा–पु० वैलोंका एक रोग।

चाभी–स्त्री० दे० 'चावी'।

चाम–पु० चमड़ा, खाल। **–चोर**–पु० गुप्त रूपसे परस्त्रीके पास जानेवाला। मु० **–के दाम**–चमड़ेके सिक्के; निजाम भिस्तीका चलाया हुआ सिक्का जिसे हुमायूंको डूबनेसे बचानेके बदले आधे दिनकी बादशाही मिली थी; व्यभिचारकी कमाई। **–०चलाना**–अंधेर करना।

चामर–पु० (सं०) चँवर; मोरछल; एक वर्णवृत्त। **–ग्राह,–ग्राहिक,–ग्राही(हिन्)**–पु० चँवर डुलानेवाला। (स्त्री० 'चामरग्राहिणी'।) **–पुष्प**–पु० कास; आम; सुपारीका पेड़; केतकी। **–व्यजन**–पु० चँवर।

चामरिक–पु० (सं०) चँवर डुलानेवाला।

चामरी(रिन्)–पु० (सं०) घोड़ा; सुरा गाय (?)।

चामीकर–पु० (सं०) सोना; धतूरा। **–प्रख्य**–वि० सोने जैसा।

चामीकराचल, चामीकराद्रि–पु० (सं०) मेरु पर्वत।

चामुंडा–स्त्री० (सं०) चंड-मुंडकी निपातिनी देवी, दुर्गा।

चाम्य–पु० (सं०) भोजन, खाद्य पदार्थ।

चाय*–पु० दे० 'चाव'। स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियोंका काढ़ा दूध-शकर मिलाकर पिया जाता है; उक्त पौधेकी सुखायी हुई पत्तियाँ, चायकी पत्तियोंको उवालकर बनाया हुआ पेय। **–दान**–पु०,**–दानी**–स्त्री० वह बरतन जिसमें चाय बनायी या बनाकर रखी जाय। **–पानी**–पु० सवेरेका जलपान जिसमें चाय भी हो।

चायक*–पु० चाहनेवाला।

चार–वि० तीन और एक; कुछ; कई, अनेक। पु० चारकी संख्या, ४। **–अबरू**–पु० सिर, भवें, दाढ़ी और मूँछ; एक तरहके मुसलमान फकीर जो सिर, भौं, दाढ़ी, मूँछ चारोंका सफाया कराये रहते हैं। **–आईना**–पु० एक प्रकारका कवच जिसमें छाती, पीठ और दोनों भुजाओंपर बाँधनेके लिए लोहेकी चार पटरियाँ होती हैं। **–काने**–पु० पासेका एक दाँव, पासेका इस तरह पड़ना कि एकका दो विंदियोंवाला और दोके एक-एक बिंदीवाले बल चित्त हों। **–ख़ाना**–पु० वह कपड़ा जिसमें रंगीन धारियोंके चौखूँटे खाने बने हों। **–गुर्देवाला**–वि० वहादुर, जीवटवाला। **–चंद**–वि० चौगुना। **–ताल**–पु० चौताला। **–दिन**–पु० थोड़े दिन, अल्प काल। **–दीवारी**–स्त्री० दीवारोंका घेरा, प्राचीर, परकोटा। **–पाई**–स्त्री० खाट, छोटा पलंग। (मु० **–०पर पड़ना**–लेटना; बीमार होना। **–०से पीठ लगना**–सख्त बीमार होना, उठनेबैठनेकी शक्ति न रह जाना।) **–पाया**–पु० चौपाया, पशु। **–बाग़**–पु० चौकोर बाग; जिसमें फलोंवाले वृक्ष हों; वह शाल या रूमाल जो रंगके जरिये चार हिस्सोंमें बँटा हो। **–बालिश**–पु० गद्दी; मसनद। **–बीसी**–वि० अस्सी। **–मग्ज़**–पु० अखरोट; बच्चोंके खेलनेकी मिट्टीकी गोली; खरबूज, खीरे, ककड़ी और कद्दूके बीजोंकी गिरी। **–मेख़**–स्त्री० अपराधीको लिटाकर उसके हाँथ-पाँव चार खूँटोंसे बाँध देनेकी सजा। **–यारी**–पु० सुन्नी संप्रदाय; चार मित्रोंकी गोष्ठी; चाँदीका चौकोर सिक्का जिसपर कलमा या मुहम्मदके चारों साथियोंके नाम खुदे होते हैं और जिसे मुसलमान ताबीजके तौरपर काममें लाते हैं। **–(रों)ओर**–अ० सब ओर, हर तरफ। **–धाम**–पु० चारों दिशाओंमें स्थित हिंदुओंके चार प्रधान तीर्थ–पुरी, बदरिकाश्रम, द्वारका और रामेश्वर। **–पदार्थ**–पु० मनुष्य जीवनके चार पुरुषार्थ–अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। मु०**–आँखें करना**–देखा-देखी; साक्षात्कार करना; निगाह मिलाना। **–आँखें होना**–आँखें चार होना, देखा-देखी होना। **–आदमी**–दो-चार भले आदमी। **–क़दम**–थोड़ा फासला। **–के कंधे या काँधे चढ़ना या चलना**–मर जाना, अरथी उठना। **–के कान पड़ना**–चर्चा होना, वातका फैलना। **–चाँद लगना**–शोभा, सुंदरता बढ़ना। **–दिनकी चाँदनी**–दो-चार ही दिन रहने, टिकनेवाली सुखभोगकी स्थिति। **–पाँच करना**–हीला-हवाला करना; हुज्जत करना। **–मेख़ा करना**– लिटाकर हाथ-पाँव खूँटोंसे बाँध देना। **–(रों)ख़ाने चित गिरना**–दे० 'चारों खाने चित गिरना'। **–फूटना**–दो स्थूल आँखें और दो हृदयकी, सबका फूट जाना, निपट निर्बुद्धि या अंधा होना। **–ख़ाने चित गिरना या होना**–(कुश्तीमें) इस तरह चित होना कि पूरी पीठ और हाथ-पाँव जमीनसे लग जायें; पूरी तरह परास्त हो जाना; (कोई शोक-संवाद सुनकर) स्तब्ध, बदहवास हो जाना; हिम्मत हार जाना।

चार–पु० आचार, रीति (द्वार-चार); * सेवक, टहलू; (सं०) गति; गुप्तचर, जासूस; कारागार; प्रियाल; कृत्रिम विष। **–कर्म**–पु० जासूसोंका काम; जासूसी; चार या जासूस नियुक्त कर उनसे काम लेना (एस्पियोनेज)। **–चंचु,–चण**–वि० सुंदर

चाल। **–चक्षु(स्)**–पु० (जासूस जिसकी आँख है) राजा। **–तूल**–पु० चँवरी। **–पथ**–पु० राजमार्ग। **–पाल**–पु० गुप्तचर। **–पुरुष**–पु० भेदिया। **–प्रचार**–पु० जासूस लगाना। **–भट**–पु० वीर सैनिक। **–वायु**–स्त्री० लू, गरमीकी हवा। **–व्यवस्था**–दे० 'चार कर्म'।

चार–'चारा' (उपाय)का लघु रूप। **–नाचार**–अ० मजबूरन, निरुपाय होकर।

चार सौ बीस–पु० भारतीय दंड विधानकी वह धारा जिसमें धोखा-देही, चालबाजी, छल-छंदादिका सहारा लेनेवालेको दंड देनेका विधान है। वि० धूर्त, धोखेबाज।

चार सौ बीसी–स्त्री० धोखेबाजी, छलप्रपंच, धूर्तता।

चारक–पु० (सं०) चरवाहा; चालक; अश्वारोही सैनिक; नायक; गुप्तचर; साथी; कारागार; हवालात; बंधन; हथकड़ी; प्रियाल; भ्रमणकारी ब्रह्मचारी।

चारचश्म–वि० बेहया; दुःशील।

चारज–पु० दे० 'चार्ज'।

चारजामा–पु० (फा०) कपड़ेका जीन जिसमें काठ नहीं लगा होता।

चारटिका–स्त्री० (सं०) नली नामक गंधद्रव्य, मालकंगनी; नीलका पौधा।

चारटी–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी; पद्मचारिणी वृक्ष।

चारण–पु० (सं०) तीर्थयात्री; भाट, बंदिजन; गुप्तचर; राजपूतानाकी एक जाति; चरानेका कार्य।

चारन*–पु० दे० 'चारण'।

चारना*–स० क्रि० दे० 'चराना'।

चारांतरित–पु० (सं०) गुप्तचर।

चारा–पु० चौपायोंके खानेकी चीज–घास, चरी आदि; चिड़ियों, मछलियों आदिको खिलायी जानेवाली चीज–सत्तू, आटेकी गोली आदि; मछलियाँ फँसानेके लिए कँटियाँमें लगाया जानेवाला गीला आटा आदि; प्रलोभनकी वस्तु। (फा०) उपाय, इलाज। **–जोई**–स्त्री० (अदालतसे) अन्यायके प्रतिकारकी प्रार्थना, नालिश, फरियाद। **–साज़**–वि० काम बनानेवाला; सहायक। **–साज़ी**–स्त्री० सहायता, मदद।

चारायण–पु० (सं०) कामशास्त्रके एक प्राचीन आचार्य।

चारि*–वि० चलनेवाला, आचरण करनेवाला; चार। पु० संदेश। स्त्री० दौत्य; चुगली।

चारिका–स्त्री० (सं०) सेविका, टहलुई; भिक्षाके लिए जाना; पदक्षेप–'उनके कुंठ नृत्यकी प्रत्येक चारिका'–हजारीप्र०।

चारिटी–स्त्री० (सं०) दे० 'चारटी'।

चारिणी–स्त्री० (सं०) करुणी नामक पौधा। वि० स्त्री० आचरण करनेवाली।

चारित–वि० (सं०) जो चलाया गया हो; भबकेसे खींचा हुआ। पु० आरा; * पशुओंका चारा, चरी।

चारितार्थ्य–पु० (सं०) अभीष्ट-सिद्धि; सफलता।

चारित्र–पु० (सं०) चरित्र, चाल-चलन; स्वभाव, शील; कुल-क्रमागत आचार, सदाचार; साधुता; सतीत्व; एक मरुत्। **–कवच**–वि० सदाचार ही जिसका कवच हो।

चारित्रवती–स्त्री० (सं०) योगमें एक विशेष समाधि।

चारित्रा–स्त्री० (सं०) इमली।

चारित्री(त्रिन्)–वि० (सं०) चरित्रवान्, सदाचारी।

चारित्र्य–पु० (सं०) दे० 'चारित्र'।

चारिवाक्(च्)–स्त्री० (सं०) काकड़ासिंगी।

चारी–स्त्री० (सं०) नृत्यका अंगविशेष, नृत्यके अंतर्गत शृंगारादि रसोंका उद्दीपन करनेवाली कुछ चेष्टाएँ; फंदा, जाल; दौत्य; जासूसी; * चुगली।

चारी(रिन्)–वि० (सं०) चलनेवाला, जानेवाला (व्योमचारी); आचरण करनेवाला। पु० पैदल सिपाही।

चारु–वि० (सं०) प्रिय; सुंदर, मनोहर। पु० बृहस्पति; केसर। **–केसरा**–स्त्री० नागरमोथा; सेवती। **–गुच्छा**–स्त्री० अंगूर। **–घोण**–वि० सुंदर नाकवाला (घोणा–नाक)। **–दर्शना**–वि० स्त्री० रूपवती (स्त्री)। **–धामा,–धारा,–रावा**–स्त्री० शची, इंद्राणी। **–नालक**–पु० रक्त पद्म। **–नेत्र**–वि० सुंदर नेत्रोंवाला। पु० हिरन। **–नेत्रा**–वि० स्त्री० दे० 'चारुलोचना'। **–पर्णी**–स्त्री० प्रसारिणी नामक लता। **–पुट**–पु० तालका एक भेद। **–फला**–स्त्री० अंगूर, द्राक्षा लता। **–लोचन**–वि० सुंदर नेत्रोंवाला। पु० हिरन। **–लोचना**–वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली। **–वर्धना**–स्त्री० स्त्री। **–वेश,–वेष**–वि० अच्छी पोशाकवाला। **–व्रता**–वि० स्त्री० महीनेभरका व्रत करनेवाली (स्त्री)। **–शिला**–स्त्री० एक रत्न। **–शील**–त्रि० सुंदर शीलवाला। (स्त्री० 'चारु-शीला'।) **–सार**–पु० सोना। **–हासिनी**–वि० स्त्री० मनोहर हँसी, मुसकानवाली (स्त्री)। स्त्री० एक वृत्त।

चारुक–पु० (सं०) सरपतका बीज।

चारेक्षण–पु० (सं०) राजा।

चार्चिक–वि० (सं०) वेदपाठमें कुशल।

चार्चिक्य–पु० (सं०) अंगरागका लेपन; अंगराग।

चार्ज–पु० (अं०) देख-रेख, सुपुर्दगी; कार्यभार; दाम; उजरत; खर्च; अभियोग; जोरका हमला, टूट पड़ना। **–शीट**–पु० अभियोगपत्र, फर्द जुर्म।

चार्म–वि० (सं०) चमड़ेका बना हुआ; चमड़ा मढ़ा हुआ (रथादि)।

चार्मण–वि० (सं०) चामसे ढँका हुआ। पु० खालों या ढालोंका समूह।

चार्मिक–वि० (सं०) चर्मनिर्मित।

चार्मिण–पु० (सं०) ढालवालोंका समूह।

चार्य–पु० (सं०) दौत्य; जासूसी; एक वर्णसंकर जाति।

चार्वाक–पु० (सं०) चार्वाक-दर्शनके रचयिता एक मुनि जो नास्तिक मतके प्रवर्तक और बृहस्पतिके शिष्य बताये जाते हैं; महाभारतमें वर्णित एक राक्षस जो दुर्योधनका मित्र था। **–दर्शन**–पु० चार्वाकरचित नास्तिक-दर्शन, ईश्वर, वेद, पुनर्जन्म, परलोक आदिको न माननेवाला दर्शन। **–मत**–पु० चार्वाक द्वारा प्रतिपादित मत, चार्वाक-दर्शन।

चार्वी–स्त्री० (सं०) चारुतायुक्त, सुंदरी स्त्री; बुद्धि; दीप्ति; चाँदनी; कुबेरकी पत्नी।

चाल–पु० (सं०) छप्पर, फूँस आदिकी छाजन; स्वर्णचूड़ पक्षी, नीलकंठ। स्त्री० (हिं०) चलनेकी क्रिया, गति; हिलना, घूमना, हरकत (घड़ीकी चाल); चलनेका ढंग; चलनेकी सायत; चलन, आचरण; रीति-रिवाज; ढब, बनावट; ढंग, प्रकार; छल, धोखा देनेवाली बात; कूटयुक्ति; ताश, शतरंज आदिमें पत्ते या मुहरेको चलना; आहट; * हलचल; इस ढंगसे बनाया हुआ भारी मकान जिसमें पचासों किरायेदार कुटुंब रह सकें (बंबई)। **–चलन**–पु० आचरण, चरित्र, नीति-संबंधी आचरण। **–ढाल**–स्त्री० तौर-तरीका, रहन-सहनका ढंग। **–बाज़**–वि० चालें चलनेवाला, छलिया, धूर्त। **–बाज़ी**–स्त्री० छल, धूर्तता, धोखा देना। **मु०–चलना**–धोखा देने, ठगनेका उपाय करना; चालका सफल होना। **–चूकना**–गलत, अपनी ही हानि करनेवाली चाल चलना। **–फँसना**–(शतरंज आदिमें) ऐसी चाल चलना कि अपना ही मुहरा फँस जाय; अपनी चालमें खुद फँस, बँध जाना।

चालक–वि० (सं०) चलानेवाला; यानों, विमानों आदिको चलानेवाला (पाइलट, विमान चालक); चालित या प्रवाहित करनेवाला (कंडक्टर)। *छली, चालबाज़। पु० अंकुश न माननेवाला हाथी; नृत्यकी एक मुद्रा।

चालकुंड–पु० (सं०) उड़ीसाकी चिलका झील।

चालन–पु० चलनौस; (सं०) चलाना; प्रचार करना; हिलाना; हिलना, गति; छानना; छलनी।

चालनहार–पु० चलने या चलानेवाला।

चालना–स० क्रि० छानना; * चलाना; हिलाना; * प्रसंग छेड़ना। अ० क्रि० दुलहिनका पहली बार सुसराल आना; * चलना।

चालनी–स्त्री० (सं०) छलनी।

चालनीय–वि० (सं०) चलाये, हिलाये जाने योग्य।

चाला–पु० रवानगी; प्रस्थानका मुहूर्त; दुलहिनका पहली बार

सुसराल आना, गौना; मृत व्यक्तिको आगे कौन योनि मिलेगी इसका पता लगानेके लिए षोडशीकी रातको की जानेवाली राख या बालू चालनेकी क्रिया; चलौवा।

चालाक–वि० (फा०) चुस्त, फुरतीला; चतुर; धूर्त।

चालाकी–स्त्री० (फा०) चतुराई; धूर्तता।

चालान–पु० भेजे हुए मालकी सूची, विवरण, बीजक; रवन्ना; मालका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; बाहर भेजा हुआ या वहाँसे आया हुआ माल; अभियुक्तका विचारके लिए मजिस्ट्रेटके पास भेजा जाना। **–दार**–पु० मालकी हिफाजतके लिए उसके साथ जानेवाला व्यक्ति; वह व्यक्ति जिसके पास चालानका कागज हो। **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें चालान किये जानेवाले मालका विवरण लिखा जाय।

चालिया–वि० चालबाज।

चाली–वि० चालबाज, छली; * नटखट। * स्त्री० चाल, चलनेका तरीका।

चालीस–वि० तीस और दस। पु० चालीसकी संख्या, ४०। **–वाँ**–वि० जो क्रममें ३९के बाद आये। पु० मृत व्यक्तिके चालीसवें दिनका कर्म, चेहलुम; चेहलुमकी फातिहा।

चालीसा–पु० चालीस वस्तुओंका समाहार; चालीस दिनका काल, चिल्ला; वह पुस्तक या काव्य जिसमें ४० पद्य हों (हनूमान्चालीसा)।

चालुक्य–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक प्रमुख राजवंश जिसने छठीसे तेरहवीं शती (वैक्रम)तक राज्य किया।

चालू–वि० जो इस समय चल रहा हो, जारी हो; जो बन्द, खत्म या बेकार न हो गया हो।

चाल्य–वि० (सं०) दे० 'चालनीय'।

चाल्ह, चाल्हा*–स्त्री० चेल्हवा मछली।

चाल्ही–स्त्री० नावके सिरेके पासका पटा हुआ स्थान जहाँ मल्लाह खेनेके लिए बैठता है।

चाव–पु० तीव्र इच्छा, चाह; शौक; प्रेम, अनुराग; उमंग; उत्साह; * निंदा, बदनामी। **–चोचला**–पु० लाड़-प्यार; नाज-नखरा।

चावड़ा–पु० राजपूतोंका एक भेद; खत्रियोंका एक वर्ग।

चावड़ी–स्त्री० चट्टी, पड़ाव; † कोतवाली।

चावण–पु० (सं०) गुजरातका एक प्राचीन राजपूत वंश।

चावना*–स० क्रि० चाहना।

चावर†–पु० दे० 'चावल'।

चावल–पु० धान, साँवाँ, कोदो आदिका सार भाग जो बीजसे भूसी अलग कर देनेपर बच रहता है, तंडुल; पकाया हुआ चावल, भात; रत्तीका आठवाँ भाग।

चाशनी–स्त्री० (फा०) चखनेकी चीज; खाद्य वस्तुका नमूना जो चखनेके लिए दिया जाय; चीनी-गुड़ आदिका शीरा; स्वाद, मजा; सोनेका छोटा टुकड़ा जो गाहक, सुनारको सोना देते वक्त, नमूनेके तौरपर अपने पास रखता है। **–गीर**–पु० राजाओं आदिके यहाँ भोज्य पदार्थोंको चखनेके लिए नियुक्त कर्मचारी।

चाष–पु० (सं०) नीलकंठ पक्षी; चाहा; * चक्षु, आँख।

चास–पु० (सं०) दे० 'चाष'। † स्त्री० जोत, खेती।

चासा†–पु० किसान; हलवाहा।

चाह–स्त्री० इच्छा, लालसा; प्रेम; जरूरत, गरज; पूछ, आदर; *खबर; भेद। पु० (फा०) कुआँ। **–कन**–पु० कुआँ खोदनेवाला। वि० अत्याचार, दूसरेकी बुराई करनेवाला। **–(हे) रुस्तम**–पु० वह कुआँ जिसमें तीर-तलवारें गाड़कर रुस्तम गिराया गया था।

चाहक*–पु० चाहनेवाला, प्रेमी।

चाहत*–स्त्री० चाह, प्रेम।

चाहना–स० क्रि० इच्छा करना, इरादा करना; माँगना; प्रेम करना; पसंद करना; यत्न करना; * चाहभरी दृष्टिसे देखना, निहारना–'सीय चकित चित रामहिं चाहा' –रामा०; ढूँढ़ना। * स्त्री० चाह।

चाहा–पु० बगलेकी तरहका एक छोटा पक्षी।

चाहि*–अ०···से बढ़कर, अधिक।

चाहिये–अ० उचित है, वाजिब है; अपेक्षित है, दरकार है।

चाही–वि० स्त्री० चहेती (ब्र०); (फा०) कूप संबंधी; कुएँसे सींची जानेवाली (जमीन)।

चाहे–अ० जी चाहे, मरजीमें आये (तो), ख़्वाह; या तो। मु० **–जो हो**–जो होना हो वह हो; जो भी स्थिति हो।

चिँआँ–पु० इमलीका बीज।

चिँउँटा–पु० दे० 'चीँटा'।

चिँउँटी–स्त्री० दे० 'चीँटी'। **चिँउँटिया रेँगान**–स्त्री० बहुत धीमी चाल।

चिंगट–पु० (सं०) झींगा मछली।

चिँगड़ा–पु० झींगा मछली।

चिँगना–पु० मुरगीका छोटा बच्चा, चूजा; छोटा बच्चा।

चिंगारी–स्त्री० दे० 'चिनगारी'।

चिँगुरना†–अ० क्रि० देरतक एक स्थितिमें रहनेसे अंगविशेषका, उसकी नसोंका न फैलना; सिकुड़ना।

चिंघाड़–स्त्री० हाथीके चिल्लानेका शब्द; चीत्कार, गर्जन।

चिँघाड़ना–अ० क्रि० हाथीका जोरसे बोलना; चीखना, चीत्कार करना; गरजना।

चिंचा–स्त्री० (सं०) इमली; इमलीका चिंआ; गुंजा। **–सार**–पु० दे० 'चिंचाम्ल'।

चिंचाटक–पु० (सं०) चेंच नामका साग।

चिंचाम्ल–पु० (सं०) चूका नामका साग।

चिंचिका–स्त्री० (सं०) दे० 'चिंची'।

चिंचिनी–स्त्री० (सं०) इमली।

चिंची–स्त्री० (सं०) गुंजा, घुँघची।

चिंचोटक–पु० (सं०) कौंचादन नामक पौधा।

चिंजा*–पु० बेटा, पक्षियों आदिका छोटा बच्चा।

चिंजी*–स्त्री० बेटी।

चिंड–पु० नृत्यका एक ढंग।

चिंत*–स्त्री० चिंता; खयाल, याद।

चिंतक–वि० (सं०) चिंतन करनेवाला; ध्यान करनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त)। पु० निरीक्षक; मनन करनेवाला; विचारक।

चिंतन–पु० (सं०) किसी वस्तु, व्यक्तिको बार-बार सोचना, याद करना; सोचना-विचारना, मनन।

चिंतना–स्त्री० (सं०) चिंतन। * स० क्रि० चिंतन करना; फिक्र करना; सोचना-समझना।

चिंतनीय–वि० (सं०) चिंता करने योग्य, विचारणीय; शोचनीय।

चिंतवन–पु० दे० 'चिंतन'।

चिंता–स्त्री० (सं०) चिंतन; सोच, फिक्र; ध्यान; परवाह; एक संचारी भाव। **–जनक**–वि० चिंताका कारणरूप, चिंतित कर देनेवाला। **–पर,–मग्न**–वि० चिंता, सोचमें डूबा हुआ। **–पल***–वि० दे० 'चिंतापर'। **–मणि**–पु० एक कल्पित रत्न जिसमें जो माँगो वह देनेकी सामर्थ्य मानी जाती है; सब कामनाएँ पूरी करनेमें समर्थ, परमेश्वर; यात्राका एक योग; घोड़ेकी एक शुभ भँवरी; उस भँवरीसे युक्त घोड़ा; सरस्वतीका बीजमंत्र जो नवजात शिशुकी जीभपर विद्याप्राप्तिके लिए लिखा जाता है। **–वेश्म(न्)**–पु० मंत्रणागृह। **–शील**–वि० जिसे सोच-विचारकी आदत हो, मननशील, मनीषी।

चिंताकुल–वि० (सं०) चिंतासे व्याकुल, उद्विग्न।

चिंतातुर–वि० (सं०) चिंतासे उद्विग्न।

चिंतिडी–स्त्री० (सं०) इमली।

चिंतित–वि० (सं०) चिंतायुक्त, सोचमें पड़ा हुआ।

चिंतिति, चिंतिया–स्त्री० (सं०) चिंता।

चिंत्य–वि० (सं०) चिंता करने योग्य, चिंतनीय, विचारणीय, शोचनीय।

चिंदरना†–अ० क्रि० मुँह बनाना, जानते हुए भी अनजान-सा बनना या पूछना, दौंदना (बुंदेल०), दे० 'चँदराना'।

चिंदी–स्त्री० छोटा टुकड़ा, धज्जी।

चिंपांजी–पु० अफ्रीकामें पाया जानेवाला एक वनमानुस जिसकी शकल आदमीसे बहुत मिलती है।

चिंयाँ–पु० दे० 'चिँआँ'।

चिउँटा–पु० दे० 'चीँटा।

चिउँटी–स्त्री० दे० 'चीँटी'। मु० **–की चाल**–वहुत धीमी चाल। **–के पर निकलना**–मरनेका समय आना; शामत आना। (चींटीके पर निकलनेपर वह उड़ती और गिरकर मर जाती या चिड़ियोंका भक्ष्य वनती है।) **–(टियों)से भरा कवाब**–झगड़े-झंझटकी चीज, मुसीवतका घर।

चिउड़ा–पु० दे० 'चिड़वा'।

चिउरा*–पु० दे० 'चिड़वा'।

चिउली–स्त्री० एक तरहका रेशमी कपड़ा; एक जंगली पेड़; चिकनी सुपारी।

चिक–पु० वकरकसाव, मांस-विक्रेता। † स्त्री० चिलक।

चिक़–स्त्री० (तु०) वाँसकी तीलियोंका वना हुआ झीना पर्दा जिसे खिड़की-दरवाजोंपर डालते हैं।

चिकट–वि० दे० 'चीकट'। पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा।

चिकटना–अ० क्रि० मैलसे ढककर चिपचिपा हो जाना।

चिकटा–वि० दे० 'चीकट'।

चिकन–पु० सूती कपड़ेपर सूईसे वेल-वूटे वनानेका काम; ऐसे कामवाला कपड़ा। **–कार,–गर,–दोज़**–पु० चिकन वनानेवाला। **–कारी,–दोज़ी**–स्त्री० चिकन वनानेका काम।

चिकना–वि० जिसकी सतह वरावर रगड़ी, रंदा की हुई हो, जो खुरदरा न हो; जिसपर हाथ-पाँव फिसले; साफ और चमकीला; तेल या घी लगा हुआ, स्निग्ध; * स्नेही। पु० घी या तेल। **–ई**–स्त्री० चिकनापन, स्निग्धता; घी, तेल आदि स्नेह। **–वट,–हट**–स्त्री० चिकनाई। मु० **–घड़ा**–जिसपर कहने-सुननेका असर न हो, वेहया।

चिकनाना–स० क्रि० चिकना करना, रूखापन, खुरदरापन मिटाना; तेल आदि लगाना। अ० क्रि० चिकना होना; मोटा होना, चरवी वढ़ना; चिकनी-चुपड़ी वातें करना; * स्नेहसे युक्त, अनुरक्त होना।

चिकनिया–वि० जो वना-ठना, रहे, सजधजवाला, छैला।

चिकनी–वि० स्त्री० दे० 'चिकना'। **–चुपड़ी वातें**–स्त्री० किसीको ठगने-फुसलानेके लिए कही जानेवाली मीठी वातें, चापलूसीकी वातें। **–डली,–सुपारी**–स्त्री० उवाली हुई चिपटी सुपारी। **–मिट्टी**–स्त्री० काली लसदार मिट्टी।

चिकरना–अ० क्रि० चिंघाड़ना।

चिकवा–पु० वूचड़, चिक; * एक रेशमी कपड़ा।

चिकार*–पु० चीत्कार, चीख।

चिकारना*–अ० क्रि० चीत्कार करना।

चिकारा–पु० एक तरहकी सारंगी; एक तरहका हिरन।

चिकारी–स्त्री० छोटा चिकारा; मच्छड़ जैसा एक छोटा कीड़ा।

चिकित–वि० (सं०) ज्ञात। पु० एक ऋषि।

चिकितान–पु० (सं०) एक ऋषि। वि० अभिज्ञ।

चिकित्सक–पु० (सं०) चिकित्सा करनेवाला, वैद्य।

चिकित्सन–पु० (सं०) चिकित्सा करना।

चिकित्सा–स्त्री० (सं०) रोग-निवारणका उपाय, इलाज; औषधोपचार। **–विज्ञान**–पु० वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें रोगोंके लक्षणों तथा उपचारादिका विवेचन हो। **–व्यवसाय**–पु० वैद्य, डाक्टरका पेशा। **–व्यवसायी(यिन्)**–पु० वैद्य, डाक्टरका पेशा करनेवाला। **–शास्त्र**–पु० दे०–'विज्ञान'।

चिकित्सालय–पु० (सं०) अस्पताल, शफाखाना।

चिकित्सित–वि० (सं०) जिसकी चिकित्सा, इलाज किया गया हो।

चिकित्सु–वि० (सं०) चिकित्सा, उपचार करनेवाला।

चिकित्स्य–वि० (सं०) चिकित्साके योग्य; जिसकी चिकित्सा होनेको है।

चिकिन–वि० (सं०) चिपटी नाकवाला।

चिकिल–पु० (सं०) कीचड़।

चिकीर्षक–वि० (सं०) चिकीर्षावाला, करनेकी इच्छा रखनेवाला।

चिकीर्षा–स्त्री० (सं०) करनेकी इच्छा।

चिकीर्षित–वि० (सं०) जिसे करनेकी इच्छा की गयी हो। पु० इच्छा, अभिप्राय, प्रयोजन।

चिकीर्षु–वि० (सं०) करनेकी इच्छा रखनेवाला।

चिकुटी*–स्त्री० चिकोटी, चुटकी।

चिकुर–पु० (सं०) केश, सिरके वाल; रेंगनेवाला जीव; पहाड़; गिलहरी; छछूंदर। **–कलाप,–निकर,–पक्ष,–पाश,–भार,– हस्त**–पु० केशकलाप, जुल्फ, लट।

चिकूर–पु० (सं०) वाल।

चिकोटी–स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिक्क–पु० (सं०) छछूंदर। वि० चिपटी नाकवाला।

चिक्कट–वि० वहुत मैला, गंदा। पु० जमा हुआ मैल।

चिक्कण–वि० (सं०) चिकना। पु० सुपारीका पेड़; उसका फल; हड़।

चिक्कणा–स्त्री० (सं०) वढ़िया गाय; सुपारी।

चिक्कणी–स्त्री० (सं०) सुपारी; चिकनी सुपारी।

चिक्करना–अ० क्रि० चीत्कार करना, चिंघाड़ना।

चिक्कस–पु० (सं०) जौका आटा; तेल और हलदी मिला हुआ जौका आटा जो वर और कन्याको उवटनकी तरह मला जाता है; (हिं०) वाज, मैना आदिको वैठानेका लोहे ,पीतलकी छड़का वना अड्डा। मु०**–न खाना**–अपने स्थानसे जरा भी चलायमान न होना, अडिग रहना।

चिक्का–स्त्री० (सं०) सुपारी; चुहिया। † पु० चक्का, कंकड़, ढेला; एक खेल।

चिक्कार–पु० चिकार।

चिक्कारा–पु० एक तरहका हिरन।

चिक्किण–वि० (सं०) चिक्कण।

चिक्किर–पु० (सं०) एक तरहका चूहा; गिलहरी।

चिक्लिद–पु० (सं०) नमी, आर्द्रता; चंद्रमा।

चिखना†–पु० मद्यपानके समय खायी जानेवाली चटपटी वस्तु, चाट।

चिखल्ल–पु० (सं०) पंक, कीचड़।

चिखुरन†–स्त्री० जोतने या निरानेसे निकली हुई घास।

चिखुरना†–स० क्रि० जोतनेके वाद या निराकर घास निकालना।

चिचुरा*–पु० गिलहरी।

चिखुराई†–स्त्री० चिखुरनेकी क्रिया या मजदूरी।

चिखुरी*–स्त्री० मादा गिलहरी।

चिग्घाड़*–स्त्री० दे० 'चिंघाड़'।

चिचड़ा–पु० एक पौधा जिसकी जड़-पत्तियाँ आदि दवाके काम आती हैं, अपामार्ग; किलनी।

चिचड़ी–स्त्री० किलनी; † अपामार्ग।

चिचान*–पु० वाज।

चिचाना*–अ० क्रि० चिल्लाना।

चिचावना*–अ० क्रि० दे० 'चिचियाना'–'काल चिचावत है खड़ा, जागु पियारे मिंत'–साखी।

चिँचिगा–पु० दे० 'चिँचिडा'।

चिँचिड–पु० (सं०) चिँचिडा।

चिँचिडा–पु० एक वेल जिसमें गोल लंवोतरे फल लगते और तरकारीके काम आते हैं; उसका फल।

चिचियाना†–अ० क्रि० चीखना, चिल्लाना।

चिचुकना–अ० क्रि० दे० 'चुचुकना'।

चिचोड़ना†–स० क्रि० दे० 'चचोड़ना'।

चिच्चिटिंग–पु० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

चिच्छक्ति–स्त्री० (सं०) चैतन्य, चेतनाशक्ति।

चिच्छिल–पु० (सं०) महाभारतमें वर्णित एक देश; उस देशका निवासी।

चिजारा*–पु० राज, मेमार।

चिट–स्त्री० कागजका छोटा टुकड़ा, पुरजा; कपड़ेकी धज्जी। **–नवीस**–पु० लेखक, मुहर्रिर।

चिटकना–अ० क्रि० सूखकर फटना, तड़कना; लकड़ीका जलते समय 'चिट-चिट' आवाज करना; चिढ़ना, खीझना।

चिटकाना–स० क्रि० चिटकनेका कारण होना; खिझाना, चिढ़ाना।

चिट्ट–स्त्री० दे० 'चिट'।

चिट्टा–वि० गोरा, सफेद (गोरा-चिट्टा) । † पु० हानिकर कार्यके लिए दिया जानेवाला चकमा, बढ़ावा (देना, लड़ाना) ।

चिट्ठा–पु० खाता; आय-व्यय आदिका वार्षिक विवरण; दैनिक, साप्ताहिक या मासिक मजदूरी, वेतनका हिसाब; उसे चुकानेके लिए बाँटा जानेवाला रुपया; फेहरिस्त, सूची; विवरण ।

चिट्ठी–स्त्री० पत्र, खत; पुरजा; आज्ञापत्र; निमंत्रणपत्र; पुरजे डालकर विशेष वस्तुके अधिकारीका नाम निश्चित करना, 'लाटरी'। **–पत्री**–स्त्री० पत्र; पत्रव्यवहार । **–रसाँ**–पु० चिट्ठियाँ बाँटनेवाला, डाकिया । **मु०–डालना**–लाटरी डालना ।

चिड़–स्त्री० दे० 'चिढ़'; जलनेकी आवाज (?) ।

चिड़चिड़ा–वि० जो जरा-सी बातपर चिढ़ जाय, झुंझला उठे, तुनक-मिजाज । पु० एक छोटा पक्षी । **–पन**–पु० चिड़चिड़ा स्वभाव, तुनक-मिजाजी ।

चिड़चिड़ाना–अ० क्रि० चिटकना, जलनेमें चिड़चिड़ आवाज होना; चिढ़ना, झुंझलाना ।

चिड़वा–पु० हरे या भिगोये हुए धानको भून और कूटकर चिपटा किया हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

चिड़ा–पु० गौरवा, चटक ।

चिड़ाना–स० क्रि० दे० 'चिढ़ाना' ।

चिड़िया–स्त्री० उड़नेवाला, पंखयुक्त प्राणी, पक्षी, पखेरू; चौबगला; अँगियाकी कटोरियोंके बीचकी सिलाई; पायजामे या लहँगेका नेफा; ताशका एक रंग, चिड़ी; बैसाखी आदिके सिरपर लगायी जानेवाली चिड़ियाकी शकलकी लकड़ी; एक प्रकारकी सिलाई । **–ख़ाना,–घर**–पु० पशु-पक्षियोंको रखनेका स्थान, जंतुशाला । **–चुनमुन**–पु० पक्षी, पखेरू । **–वाला**–वि० मूर्ख, उल्लू । **मु०–का दूध**–अलभ्य वस्तु, अनहोनी बात । **–फँसाना**–शिकार फँसाना; किसी सुंदरी युवती या मालदार असामीको फुसलाकर हाथमें कर लेना । **सोनेकी चिड़िया**–बहुत सुंदर स्त्री; बहुत पैसेवाला व्यक्ति ।

चिड़िहार*–पु० दे० 'चिड़ीमार' ।

चिड़ी–स्त्री० ताशका एक रंग; चिड़िया (केवल समासमें व्यवहृत) । **–मार**–पु० चिड़िया पकड़नेवाला, बहेलिया ।

चिढ़–स्त्री० चिढ़नेका भाव, खीझ; नाराजगी; नफरत । **मु०–निकालना**–चिढ़ाना ।

चिढ़ना–अ० क्रि० खफा, नाराज होना; किसी तात्कालिक बातपर क्रुद्ध हो जाना, बुरा मानना ।

चिढ़ाना–स० क्रि० नाराज करना; कुपित करनेवाली बात कहना, खिझाना, मुँह बनाना; छेड़ना; उपहास करना ।

चित–वि० (सं०) चुनकर इकट्ठा किया हुआ, जिसका चयन किया गया हो; संचित; आच्छादित । पु० मकान, इमारत; * चितवन; दे० 'चित्त' । **–चीता***–वि० मनचाहा, चाहा हुआ । **–चोर**–वि० चित्त चुरानेवाला, मनोहर । **–भंग**–पु० उचाट, जी न लगना; बुद्धि ठिकाने न रहना ।

चित–वि० जिसका मुँह-पेट ऊपरकी ओर हो, उत्तान, पटका उलटा, जिसकी पूरी पीठ जमीनसे लगी हो । अ० पीठके बल । **–पट**–पु० एक खेल; कुश्ती । **मु०–करना**–कुश्तीमें प्रतिपक्षीको पछाड़ना, उसकी पीठ लगा देना । **–पट करना**–इधर या उधर कुछ निर्णय करना, कुछ तै कर डालना । **–पट होना**–कुछ तै होना, कोई निर्णय होना । **–होना**–कुश्तीमें हार खाना, पछाड़ा जाना; बदहवास, हक्का-बक्का हो जाना ।

चितउर*–पु० चित्तौर ।

चितकबरा–वि० जिसमें एक रंगकी जमीनपर दूसरे रंगके धब्बे हों, चितला; रंग-बिरंगा ।

चितकूट*–पु० चित्रकूट ।

चितगुपित*–पु० दे० 'चित्रगुप्त' ।

चितबाहु–पु० तलवारका एक हाथ ।

चितरनहार–पु० चित्रण करनेवाला ।

चितरना*–स० क्रि० चित्र, बेल-बूटे बनाना, उरेहना ।

चितरवा,–चितरोख–पु० एक चिड़िया ।

चितला–वि० चितकबरा । पु० चित्तीदार खरबूजा; एक बड़ी मछली ।

चितवन–स्त्री० किसीकी ओर देखनेका ढंग, दृष्टि; कटाक्ष ।

चितवना*–स० क्रि० देखना, निरखना ।

चितवनि*–स्त्री० दे० 'चितवन' ।

चितवाना*–स० क्रि० दिखाना ।

चिता–स्त्री० (सं०) मुरदेको जलानेके लिए चुनकर रखी हुई लकड़ियाँ; ढेर, समूह; * श्मशान । **–पिंड**–पु० श्मशानमें शवदाहके पूर्व किया गानेवाला पिंडदान । **–प्रताप**–पु० जीते जी चितापर भस्म कर देनेका दंड (कौ०) । **–भूमि**–स्त्री० श्मशान । **–साधन**–पु० श्मशानमें बैठकर मंत्रका अनुष्ठान करना ।

चिताना–स० क्रि० चेत कराना, याद दिलाना; किसी खतरे-बुराईके बारेमें सावधान करना; ज्ञानोपदेश करना ।

चितारना*–स० क्रि० ध्यानमें लाना, याद करना–'रे पपइया प्यारे कबको बैर चितारयो'–मीरा ।

चितारी†–पु० दे० 'चितेरा' । ऐयार, 'लाये चार चितारी'–चन्द्रकान्ता ।

चितारोहण–पु० (सं०) (विधवाका) सती होनेके लिए चितापर जाना, आसीन होना ।

चितावनी–स्त्री० चितानेकी क्रिया; चितानेके लिए कही गयी बात, आगाही, तंबीह (देना) ।

चिति–स्त्री० (सं०) चयन, चुनाई; ढेर; चिता; चेतना; ईंटोंकी जोड़ाई; अग्निका एक संस्कार; समझ; दुर्गा; राष्ट्र या देशकी विशिष्ट चेतना । * चित्ती कौड़ी । **–व्यवहार**–पु० वह गणित जिससे किसी दीवारमें लगनेवाली ईंटों, ढोंकोंकी गिनती मालूम की जाय ।

चितिका–स्त्री० (सं०) ढेर; चिता; करधनी ।

चितेरा–पु० चित्रकार ।

चितेरिन, चितेरी–स्त्री० स्त्री चित्रकार; चित्रकारकी पत्नी ।

चितैना*–स० क्रि० दे० 'चितवना' ।

चितौन,–चितौनि*–स्त्री० दे० 'चितवन' ।

चितौना*–स० क्रि० दे० 'चितवना' ।

चितौनी–स्त्री० दे० 'चितावनी' ।

चित्–स्त्री० (सं०) चेतना; ज्ञान; आत्मा; ब्रह्म; चित्त; अग्नि । पु० चयनकर्ता, चुननेवाला; रामानुजके मतसे जीव-पदवाच्य पदार्थ । **–पर,–स्वरूप**–पु० परमात्मा ।

चित्कार–पु० दे० 'चीत्कार' ।

चित्त–पु० (सं०) अंतरिंद्रिय, अंतःकरण, मन; अंतःकरणकी चिंतना, अनुसंधानकारिणी वृत्ति (वे०) । वि० विचारित; अनुभूत; इच्छित; गोचर । **–कलित**–वि० जिसकी आशा की गयी हो । **–चारी(रिन्)**–वि० दूसरोंकी इच्छासे चलनेवाला । **–चौर**–पु० प्रेमी । **–ज,–जन्मा(न्मन्)**–पु० कामदेव; प्रेम । **–ज्ञ**–वि० दूसरोंका मन, इच्छा जाननेवाला । **–धारा**–स्त्री० विचारधारा । **–नाथ**–पु० प्रेमी । **–निवृत्ति**–स्त्री० संतोष, सुख । **–प्रसादन**–पु० योग-दर्शनमें वर्णित चित्तका एक संस्कार जिससे चित्तकी प्रसन्नता प्राप्त होती है । **–भंग**–पु० बदरिकाश्रम-स्थित एक पर्वत । **–भू**–पु० प्रेम; कामदेव । **–भूमि**–स्त्री० चित्तकी अवस्था; इन पाँचमेंसे चित्तकी कोई अवस्था–क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध (यो०); समाधिकी इन चार भूमियोंमेंसे कोई –मधुमती, मधुप्रतीका, विशोका और ऋतंभरा । **–भेद**–पु० मतभेद; मनकी अस्थिरता । **–भ्रम**–पु०,**–भ्रांति**–स्त्री० ज्वरके कारण होनेवाला प्रलाप; घबड़ाहट । **–योनि**–पु० कामदेव । **–ल**–पु० दे० 'चीतल' । **–विकृति**–स्त्री० (अनसाउंडनेस ऑफ माइंड) चित्त या मनका विकार या त्रुटि; मानसिक सदोषता । **–विक्षेप**–पु० चित्तकी अस्थिरता, अनेक विषयोंमें भटकते रहना । **–विद्**–पु० चित्तकी बात जाननेवाला । **–विप्लव**–पु० उन्माद । **–विभ्रंश,–विभ्रम**–पु० भ्रांति; उन्माद । **–विश्लेष**–पु० मैत्री-भंग । **–वृत्ति**–स्त्री० चित्तकी अवस्था; मनका भाव; चित्तका विषयाकार परिणाम । **–० निरोध**–पु० चित्तको बाह्य विषयोंसे हटाकर अंतर्मुख करना । **–शुद्धि**–स्त्री० चित्तका निर्मल, निर्विकार, कुवासनाओंसे रहित होना । **–हारी(रिन्)**–वि० मनको

हरण करनेवाला। **मु०–उचटना**–जी न लगना, मन उदास होना। **–चढ़ना**–दे० 'चित्तपर चढ़ना' 'तब चित चढेउ जो शंकर कहेऊ'–रामा०। **–चिहुँटना***–चित्तमें पीड़ा उत्पन्न करना। **–चुराना**–मन मोह लेना। **–देना**–मन लगाना; ध्यान देना। **–पर चढ़ना**–बराबर याद रहना या बराबर याद आना। **–बँटना**–मनका किसी एक विषयमें न लग सकना, चित्तमें बहुतसी चिंताएँ होना। **–से उतरना**–अप्रिय हो जाना; याद न रहना।

चित्तरंजनदास–पु० (देशबंधु), मोतीलाल नेहरूकी ही तरह आपने भी बिना पैतृक संपत्ति पाये वकालतसे लाखों रुपया कमाया। असहयोग आंदोलनके समय आपने भी वकालत छोड़ दी और सादा जीवन बिताने लगे। १९२२ में आप कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मृत्यु १९२५।

चित्तरसारी*–स्त्री० चित्रशाला।

चित्ताकर्षक–वि० (सं०) मनको अपनी ओर खींचने, लुभानेवाला।

चित्तापहारक–वि० (सं०) सुंदर।

चित्ताभोग–पु० (सं०) पूर्ण चेतनता; किसी विषयके प्रति मनकी आसक्ति।

चित्तासंग–पु० (सं०) प्रेम।

चित्ति–स्त्री० (सं०) प्रज्ञा, बुद्धि; चिंतन; ख्याति; कर्म; भक्ति; प्रयोजन।

चित्ती–स्त्री० छोटा धब्बा; रोटीमें जल जानेका दाग; चिपटी कौड़ी जिससे जुआ खेलते हैं; कुम्हारके चाकके किनारेका गढ़ा; इमलीका चिआँ जिसका एक ओरका छिलका रगड़कर दूर कर दिया गया हो; मुनिया चिड़िया। पु० चीतल या चित्तीदार साँप।

चित्तोद्रेक–पु० (सं०) गर्व, घमंड।

चित्तौर–पु० मेवाड़के महाराणाओंकी पुरानी राजधानी।

चित्य–वि० (सं०) चुनने योग्य, चयनीय; चिता-संबंधी। पु० श्मशान; समाधि।

चित्या–स्त्री० (सं०) चिता; चुनना, एकत्र करना; बनाना (वेदी आदि)।

चित्र–पु० (सं०) कागज, कपड़े आदिपर बनायी हुई किसी चीज़की प्रतिमूर्ति, तसवीर; आलेख्य; तिलक; शब्दचित्र; चित्रकाव्य; निम्न श्रेणीका काव्य; एक यम; चित्रगुप्त; चित्रक; अशोक; एरंड; आकाश; श्वेत कुष्ठ; कई वर्णोंका संयोग; चमकदार वस्तु। वि० रंग-बिरंगा; चितकबरा; चमकीला; कई वर्णोंवाला; दृश्य, गोचर; विचित्र; * ठीक, दुरुस्त। **–कंठ**–पु० कबूतर। **–कंबल**–पु० कालीन; दरी; हाथीकी झूल। **–कर**–पु० चित्रकार; अभिनेता; एक वर्णसंकर जाति; तिनिशका पेड़। **–कर्म(न्)**–पु० चित्र बनाना; आलेखन; बाजीगरी; विचित्र कार्य; अलंकरण। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० विचित्र कार्य करनेवाला; बाजीगर; चित्रकार; तिनिश वृक्ष। **–कला**–स्त्री० चित्रविद्या, चित्र बनानेकी कला। **–काय**–पु० चीता। **–कार**–पु० चित्र बनानेवाला, चितेरा। **–कारी**–स्त्री० (हिं०) चित्रकारका काम, धंधा; चित्रकला। **–काव्य**–पु० चित्र (छत्र, चमर आदि)के आकारमें लिखित काव्य। **–कुष्ठ**–पु० श्वेत कुष्ठ। **–कूट**–पु० बाँदा जिलेका एक पर्वत जिसपर वनवास-कालमें राम-सीता कई बरस रहे; हिमालयकी एक चोटी। **–कृत्**–वि० अद्भुत। पु० चित्रकार। **–केतु**–पु० लक्ष्मणका एक पुत्र। **–कोल**–पु० छिपकली। **–गंध**–पु० हरताल। **–गुप्त**–पु० १८ यमोंमेंसे एक; यमके दरबारके लेखक जो सब मनुष्योंका पाप-पुण्य लिखा करते हैं और जो कायस्थ जातिके आदिपुरुष माने जाते हैं। **–घंटा**–स्त्री० काशीमें स्थित एक देवी। **–जल्प**–पु० वाक्यका एक प्रकार; अनाप-शनाप इधर-उधरकी बात। **–तंडुल**–पु० बायविडंग। **–ताल**–पु० चौताला तालका एक भेद। **–त्वक्(च्)**–पु० भोजपत्रका पेड़। **–दंडक**–पु० सूरन; कपास। **–देवी**–स्त्री० महेंद्रवारुणी; देवीका एक भेद। **–धाम(न्)**–पु० यज्ञमें रेखाओंसे बनाया जानेवाला एक चौखूँटा चक्र, सर्वतोभद्र-मंडल। **–नेत्रा**–स्त्री० मैना। **–पक्ष**–पु० तीतर। **–पट**–पु० चित्र; वह कपड़ा, चमड़ा, या कागज जिसपर चित्र बनाया जाय, चित्राधार; सिनेमाकी फिल्म। **–पटी**–स्त्री० छोटा चित्रपट। **–पत्रिका**–स्त्री० कपित्थपर्णी; द्रोणपुष्पी। **–पत्री**–स्त्री० जलपिप्पली। **–पथा**–स्त्री० प्रभास तीर्थके अंतर्गत एक छोटी नदी। **–पदा**–स्त्री० लजालू; मैना; एक छंद। **–पर्णी**–स्त्री० मजीठ; जलपिप्पली; कर्णस्फोटा; द्रोणपुष्पी। **–पादा**–स्त्री० मैना। **–पिच्छक**–पु० मोर। **–पुंख**–पु० बाण। **–पुत्री**–स्त्री० कपड़े आदिकी पुतली, गुडिया। **–पुष्पी**–स्त्री० अंबष्ठा, अमड़ा। **–पृष्ठ**–पु० गौरवा। **–फल**–पु० चितल मछली; तरबूज। **–फलक**–पु० काठ, हाथीदाँत आदिकी पटिया जिसपर चित्र बनाया जाय या बनाया गया हो। **–फला**–स्त्री० लिंगिनी; कंटकारी; बैंगन; ककड़ी; महेंद्रवारुणी; एक मछली। **–बर्ह**–पु० मोर। **–भानु**–पु० सूर्य; अग्नि; भैरव; शिव; चित्रक; मदार; एक संवत्सर; चित्रांगदाके पिता। **–भेषजा**–स्त्री० काकोदुंबरिका, कठगूलर। **–भोग**–पु० राजाका वह सहायक जो समयपर अनेक प्रकारसे सहायता करे। **–मंच**–पु० एक ताल। **–मंडप**–पु० अर्जुनकी पत्नी चित्रांगदाके पिता; अश्विनीकुमार। **–मंडल**–पु० एक तरहका सर्प। **–मंदिर**–पु० चित्रशाला; सिनेमाघर। **–मति**–वि० विचित्र बुद्धिवाला। **–मृग**–पु० चीतल हिरन। **–मेखल**–पु० मयूर। **–युद्ध**–पु० नकली लड़ाई। **–योग**–पु० बूढ़ेको जवान, जवानको बूढ़ा बना देनेकी विद्या; ६४ कलाओंमेंसे एक। **–योधी(धिन्)**–वि० अद्भुत (असाधारण) योद्धा। पु० अर्जुन। **–रथ**–पु० सूर्य; कुबेरका सखा एक गंधर्व। **–रथा**–स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक नदी। **–रश्मि**–पु० ४९ मरुतोंमेंसे एक। **–रेखा**–स्त्री० बाणासुरकी कन्या उषाकी एक सहेली। **–रेफ**–पु० एक वर्ष या भूखंड। **–ल**–वि० चितकबरा। **–लता**–स्त्री० मजीठ। **–लिखित**–वि० चित्रित; गतिहीन; मूक। **–लिपि**–स्त्री० वह लिपि जिसमें अक्षरोंकी जगह सांकेतिक चित्र काममें लाये जायँ, 'पिक्टोग्राफी'। **–लेखक**–पु० चित्रकार। **–लेखनिका**–स्त्री० तूलिका। **–लेखा**–स्त्री० चित्र; बाणासुरके मंत्रीकी कन्या जो उषाकी एक सखी थी; एक अप्सरा; तसवीर बनानेकी कूँची। **–लोचना**–स्त्री० मैना। **–वन**–पु० एक पुराणवर्णित वन। **–विचित्र**–वि० रंग-बिरंगा; बेल-बूटेदार। **–विद्या**–स्त्री० चित्र बनानेकी विद्या, चित्रकला। **–विन्यास**–पु० चित्र बनाना, आलेखन। **–शार्दूल**–पु० चीता (जंतु)। **–शाला**–स्त्री० वह भवन, मंडप आदि जिसमें बहुतसे चित्र लगा रखे गये हों, जहाँ चित्रकलाका प्रदर्शन किया जाय, 'पिक्चर-गैलरी'; (स्टूडियो) चित्रकार, फोटोग्राफर आदिके काम करनेका स्थान (दे० रंगशाला)। भित्ति-चित्रोंसे भरा भवन, मंडप। **–शिखंडिज**–पु० बृहस्पति। **–शिखंडी(डिन्)**–पु० सप्तर्षि। **–शिल्पी(ल्पिन्)**–पु० चित्रकार। **–सर्प**–पु० चीतल सर्प। **–सारी**–स्त्री० (हिं०) चित्रशाला। **–हस्त**–पु० युद्धमें हाथोंकी एक विशेष स्थिति।

चित्रक–पु० (सं०) चीता, बाघ; चीता नामका क्षुप; एरंड; तिलक; चित्रकार; युद्धका एक ढंग; एक विशेष वन।

चित्रना*–स० क्रि० चित्र बनाना, उरेहना; रंग भरना।

चित्रमय–वि० (सं०) चित्रोंसे भरा हुआ, सचित्र।

चित्रवत्–वि० (सं०) चित्र जैसा; (ला०) स्थिर, गतिरहित; स्तब्ध।

चित्रवती–स्त्री० (सं०) गांधार ग्रामकी एक मूर्च्छना।

चित्रवदाल–पु० (सं०) पाठीन मत्स्य।

चित्रांकन–पु० (सं०) चित्र बनाने, चित्रके रूपमें अंकित करनेका कार्य।

चित्रांग–वि० (सं०) जिसका शरीर चित्तीदार हो। पु० एक तरहका साँप; अर्जुन; सिंदूर; हरताल; चित्रक।

चित्रांगद–पु० (सं०) शांतनुका एक पुत्र, विचित्रवीर्यका भाई; एक यक्षराज।

चित्रांगदा–स्त्री० (सं०) अर्जुनकी एक पत्नी जो मणिपुरके राजाकी बेटी थी।

चित्रांगी–स्त्री० (सं०) मजीठ; कनखजूरा।

चित्रा–स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रोंमेंसे एक; चितकबरी गाय; ककड़ी; खीरा; मजीठ; बायबिडंग; मूषिकपर्णी; एक अप्सरा

एक रागिनी; एक मूर्च्छना; एक सर्प; सुभद्रा। **–क्षुप**–पु० द्रोण पुष्पी।

चित्राक्ष–वि० (सं०) सुंदर नेत्रोंवाला।

चित्राक्षी–स्त्री० (सं०) मैना, सारिका।

चित्राटीर–पु० (सं०) चंद्रमा; घंटाकर्ण; वलि चढ़ाये हुए वकरेके रक्तसे रंजित ललाट।

चित्राधार–पु० (सं०) चित्रपट; (एलवम) चित्र, फोटो आदि सुरक्षित रूपसे रखनेकी किताव या मोटे पन्नोंकी खोली।

चित्रापूप–पु० (सं०) एक प्रकारका पूआ।

चित्रायस–पु० (सं०) इस्पात।

चित्रायुध–पु० (सं०) विचित्र अस्त्र; धृतराष्ट्रका एक वेटा। वि० विचित्र अस्त्रवाला।

चित्रालय–पु० (सं०) चित्रसंग्रहालय, चित्रशाला।

चित्रावसु–वि० (सं०) नक्षत्रमंडित (रात्रि)।

चित्राश्व–पु० (सं०) सत्यवान्।

चित्रिक–पु० (सं०) चैतका महीना।

चित्रिणी–स्त्री० (सं०) कामशास्त्रमें माने हुए स्त्रियोंके पद्मिनी आदि चार भेदोंमेंसे एक (यह कलानिपुण और वनाव-सिंगारकी शौकीन होती है)।

चित्रित–वि० (सं०) जिसका चित्र खींचा गया हो, उरेहा हुआ; चित्रयुक्त; चितकवरा।

चित्री(त्रिन्)–वि० (सं०) चित्रयुक्त; चितकवरा; उजले-काले वालोंवाला।

चित्रीकरण–पु० (सं०) विभिन्न वर्णोंसे रँगना; चित्रित करना; सजाना।

चित्रीकार–पु० (सं०) दे० 'चित्रीकरण'।

चित्रेश–पु० (सं०) चंद्रमा (चित्रा नक्षत्रके पति)।

चित्रोक्ति–स्त्री० (सं०) अद्भुत या आकाशवाणी; ओजस्वी भाषण; आश्चर्यजनक कहानी।

चित्रोत्तर–पु० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें प्रश्नके शब्दोंमें ही उसका उत्तर होता है।

चित्रोत्पला–स्त्री० (सं०) एक नदी।

चित्र्य–वि० (सं०) पूज्य; चित्रणके योग्य।

चिथड़ा–पु० फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़; कपड़ेकी धज्जी। **मु०–(ड़े) चिथड़े हो जाना**–बुरी तरह फट जाना, धज्जियाँ उड़ जाना। **–लगाना**–गरीवीके कारण फटे-चिथे कपड़े पहनने, चिथड़े लपेटनेको लाचार होना; वहुत गरीवी आना।

चिथाड़ना–स० क्रि० फाड़ना, चिथड़ा कर देना; (किसीके पक्षका) हर पहलूसे खंडन करना; लथेड़ना, जलील करना; धज्जियाँ उड़ाना।

चिद्–'चित्'का समासगत रूप। **–आकाश**–पु० शुद्ध ज्ञानस्वरूप व्रह्म। **–आभास**–पु० चित्स्वरूप परव्रह्मका अंतःकरणमें प्रतिविंवित आभास, जीव। **–घन**–वि० ज्ञानमय; ज्ञानरूप। पु० व्रह्म, परमात्मा। **–रूप**–वि० शुद्ध चैतन्यरूप, चिन्मय; ज्ञानी। पु० परव्रह्म। **–विलास**–पु० चित्स्वरूप परमेश्वरकी माया; आत्मा या व्रह्मस्वरूपमें रमण; शंकराचार्यके एक शिष्यका नाम।

चिन–पु० हिमालयपर होनेवाला एक सदावहार पेड़।

चिनक–स्त्री० जलनके साथ होनेवाली पीड़ा; सूजाकके रोगमें मूत्रनालीमें होनेवाली जलन और पीड़ा।

चिनग|–स्त्री० दे० 'चिनक'।

चिनगटा*–पु० चिथड़ा।

चिनगारी–स्त्री० जलते हुए कोयले आदिका वहुत छोटा टुकड़ा, अग्निकण, स्फुलिंग। **मु०–छोड़ना**–झगड़ा लगानेवाली बात कहना। **–डालना**–आग लगाना; झगड़ा लगाना।

चिनगी*–स्त्री० दे० 'चिनगारी'।

चिनना*–स० क्रि० दीवार उठाना; चुनना।

चिनाना*–स० क्रि० चुनवाना; दीवार उठवाना।

चिनाव–स्त्री० पंजावकी पाँच प्रधान नदियोंमेंसे एक, चंद्रभागा।

चिनिया–वि० चीनीके रंगका, सफेद; चीनी जैसे स्वादका मीठा; चीनी देशका। **–केला**–पु० वंगालमें होनेवाला एक तरहका केला जो अधिक मीठा होता है। **–पोत**–पु० एक तरहका कपड़ा। **–वादाम**–पु० मूंगफली।

चिनौटिया–वि० चुनटदार (कपड़ा)।

चिनौती|–स्त्री० चुनौती, ललकार (मृग०)।

चिन्मय–वि० (सं०) शुद्ध ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप। पु० परव्रह्म।

चिन्मात्र–पु० (सं०) शुद्ध चैतन्य। वि० शुद्ध ज्ञानस्वरूप।

चिन्ह–पु० दे० 'चिह्न'।

चिन्हवाना|–स० क्रि० पहचान कराना।

चिन्हाना|–स० क्रि० पहचान कराना। अ० क्रि० पहचाना जाना।

चिन्हानी|–स्त्री० चिह्न, पहचान; यादगार।

चिन्हार|–वि० परिचित।

चिन्हारि, चिन्हारी–*स्त्री० जान-पहचान।

चिन्हित–वि० दे० 'चिह्नित'।

चिपकना–अ० क्रि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजका दूसरीसे जुड़ना, सटना; लिपटना; किसी काममें लगे रहना; स्त्री-पुरुषका परस्पर आसक्त होना।

चिपकाना–स० क्रि० किसी लसदार चीजके योगसे एक चीजको दूसरीसे जोड़ना, साटना; लिपटाना।

चिपचिप–स्त्री० किसी लसदार वस्तुको छूनेसे होनेवाला शव्द या अनुभव।

चिपचिपा–वि० लसदार, चिपकनेवाला। **–हट**–स्त्री० चिपचिपा होनेका भाव, लस।

चिपचिपाना–अ० क्रि० लसदार होना; लगना।

चिपट–वि० (सं०) चिपटी नाकवाला। पु० चिड़वा।

चिपटना–अ० क्रि० दे० 'चिमटना'।

चिपटा–वि० जो उभरा हुआ न हो, वैठा या धँसा हुआ।

चिपटी–वि० स्त्री० दे० 'चिपटा'। स्त्री० एक तरहकी वाली; योनि (वाजारू प्रयोग)। **मु० –खेलना**–परस्पर योनिघर्षण।

चिपड़ा|–वि० जिसकी आँखमें खूव मैल (कीचड़) भरा हो।

चिपड़ी, चिपरी–स्त्री० उपली, छोटा पतला कंडा।

चिपिट–वि०, पु० (सं०) दे० 'चिपट'। **–ग्रीव**–वि० छोटी गरदनवाला। **–नास,–नासिक**–वि० चिपटी नाकवाला। पु० तातार या मंगोल देश; तातार या मंगोल।

चिपिटक–पु० (सं०) चिड़वा।

चिपुट–पु० (सं०) चिड़वा।

चिप्प, चिप्य–पु० (सं०) एक नखरोग, नखके नीचेके मांसमें जलन और पीड़ा होना।

चिप्पड़–पु० लकड़ीकी छाल आदिका टुकड़ा।

चिप्पिका–स्त्री० (सं०) एक रात्रिचर जंतु; एक चिड़िया।

चिप्पी–स्त्री० लकड़ी, धातु आदिका छोटा चिपटा टुकड़ा; उपली; सीधा तौलनेका वटखरा; कागजका छोटा टुकड़ा जो कहीं चिपका दिया जाय।

चिबि–स्त्री० (सं०) दे० 'चिवि'।

चिविल्ला|–वि० दे० 'चिलविला'।

चिवु, चिवुक–पु० (सं०) ठुड्डी।

चिमटना–अ० क्रि० चिपकना; लिपटना; गले या छातीसे लगना; गुथना; पिंड न छोड़ना।

चिमटा–पु० जलता कोयला आदि पकड़नेका आला, दस्तपनाह।

चिमटाना–स० क्रि० चिपकाना; लिपटाना।

चिमटी–स्त्री० छोटा चिमटा; वह आला जिससे छोटी चीज पकड़ने, उठाने, तार मोड़ने आदिका काम लेते हैं; चुटकी, चिकोटी।

चिमड़ा–वि० दे० 'चीमड़'।

चिमड़ापन–पु० (टेनेसिटी) ठोसके कणोंका परस्पर इस तरह चिपके रहना कि उन्हें पृथक् करनेके लिए वड़ी शक्तिकी आवश्यकता पड़े।

चिमनी–स्त्री० (अं०) इंजन आदिका धुआँ या भाप निकलनेके लिए वनी हुई नली जैसी वस्तु; धुआँ निकालनेके लिए घरकी छतमें छेद करके वनायी हुई लोहे, सीमेंट आदिकी नली; लंपके ऊपर लगी हुई शीशेकी नली जिससे लंपकी लौको हवा मिलती और उसका धुआँ वाहर निकलता है।

चिमाई|–स्त्री० मौन, चुप्पी–'मैं चिमाई साधे पड़ी थी'–टूटे काँटे ।

चिमाना|–अ० क्रि० चुप हो जाना, मौन रहना, (बुंदेल०) ।

चिमि, चिमिक–पु० (सं०) तोता ।

चिमोटा–पु० दे० 'चमोटा' ।

चिमोटी–स्त्री० दे० 'चमोटी' ।

चियाँ–पु० दे० 'चिँआँ' ।

चिरंजीव–अ० (सं०) चिरजीवी हो, बहुत दिन जियो (आशीर्वाद)। पु० कामदेव; (हिं०) बेटा, पुत्र । वि० दे० 'चिरजीवी' ।

चिरंजीवी (विन्)–वि० (सं०) चिरजीवी ।

चिरंटी–स्त्री० (सं०) सयानी हो जानेपर भी पिताके ही घर रहनेवाली लड़की; युवती ।

चिरंतन–वि० (सं०) बहुत दिनोंका, पुरातन ।

चिरंभ, चिरंभण–पु० (सं०) चील ।

चिर–वि० (सं०) जो बहुत दिनोंसे हो, दीर्घकालीन, पुराना, दिनी; जो बहुत दिन बना रहे, दीर्घकालस्थायी । अ० बहुत दिन, बहुत दिनोंतक, सदा । पु० तीन मात्राओंका गण जिसका पहला वर्ण लघु हो । **–कांक्षित**–वि० जिसकी चाह, कामना बहुत दिनोंसे रही हो । **–कार,–कारिक,–कारी (रिन्)**–वि० काममें देर लगानेवाला, दीर्घसूत्री । **–काल**–पु० दीर्घकाल । अ० बहुत दिनोंसे; बहुत दिनोंतक । **–कालार्जित**–वि० बहुत दिनोंमें कमाया, बटोरा हुआ । **–कालिक,–कालीन**–वि० बहुत दिनका, पुराना; जीर्ण (रोग) । **–कुमार**–वि० आजीवन क्वाँरा रहनेवाला । (स्त्री० 'चिरकुमारी' ।) **–क्रिय**–वि० दे० 'दीर्घसूत्री' । **–जीवक**–वि० चिरजीवी । पु० जीवक नामका पेड़ । **–जीवी (विन्)**–वि० बहुत दिन जीनेवाला, जिसकी आयु लंबी हो; अमर । पु० विष्णु, कौवा, हनूमान्, मार्कंडेय ऋषि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, बलि, विभीषण, परशुराम आदि; जीवक वृक्ष; सेमर । **–तिक्त**–पु० चिरायता । **–तुषार-रेखा**–स्त्री० पर्वत आदिकी वह ऊँचाई जहाँ बरफ कभी गलती नहीं, 'स्नो-लाइन' । **–नवीन**–वि० दे० 'चिरनूतन' । **–निद्रा**–स्त्री० महानिद्रा, मृत्यु । **–नूतन**–वि० जो सदा नया बना रहे । **–परिचित**–वि० जिसे बहुत दिनोंसे जानते-पहचानते हों । **–पाकी (किन्)**–वि० देरमें पकनेवाला । पु० कैथ । **–पुष्प**–पु० मौलसिरी । **–पोषित**–वि० जिसका बहुत दिनोंतक धारण, पोषण किया गया हो, चिरकांक्षित । **–प्रचलित**–वि० जो बहुत दिनोंसे चला आ रहा हो, पुराना । **–प्रतीक्षित**–वि० जिसकी बहुत दिनोंसे आस लगी हो, प्रतीक्षा की जा रही हो । **–प्रवृत्त**–वि० बहुत दिनोंतक या बराबर टिकनेवाला । **–प्रसिद्ध**–वि० जो बहुत दिनोंसे प्रसिद्ध हो । **–प्रसूता**–स्त्री० वह गाय जिसे बच्चा दिये बहुत दिन हो गये हों । **–बिल्व**–पु० करंज वृक्ष । **–मान्य**–वि० (टाइम ऑनर्ड) बहुत दिनोंसे जिसकी मान्यता रही हो, जिसका सम्मान होता आया हो । **–मित्र**–वि० बहुत दिनोंका मित्र, पुराना दोस्त । **–मेही (हिन्)**–पु० (देरतक पेशाब करनेवाला) गधा । **–रोगी (गिन्)**–वि० जो बहुत दिनोंसे बीमार हो; जो सदा रोगी रहे । (स्त्री० 'चिररोगिणी' ।) **–लब्ध**–वि० जो बहुत दिनोंकी चेष्टा, बहुत दिनोंतक आस लगाये रहनेके बाद मिला हो । **–वियोग,–विरह**–पु० चिरकालव्यापी वियोग, लम्बी जुदाई । **–विस्मृत**–वि० जो बहुत दिनोंसे भूल गया हो या भुला दिया गया हो । **–वीर्य**–पु० रक्त एरंड । **–वैर**–पु० पुरानी अदावत, चिरशत्रुता । **–शत्रु**–वि० पुराना दुश्मन, जिसके साथ बहुत दिनोंका या सदाका वैर हो । **–शत्रुता**–स्त्री० पुरानी अदावत । **–शांति**–स्त्री० दीर्घकालव्यापी शांति; स्थायी शांति –मुक्ति । **–संगी (गिन्)** वि० सदाका साथी, जन्मसंगी । (स्त्री० 'चिरसंगिनी' ।) **–संमानित**–वि० 'चिरमान्य' । **–सूता,–सूतिका**–स्त्री० दे० 'चिरप्रसूता' । **–सेवक**–पु० पुराना नौकर । **–स्थ**–वि० चिरस्थायी । **–स्थायी (यिन्)**–वि० बहुत दिनोंतक बना रहनेवाला, टिकाऊ । **–स्मरणीय**–वि० बहुत दिनोंतक याद रखने लायक ।

चिरईं|–स्त्री० चिड़िया; सुंदर स्त्री (बाजारू) ।

चिरकढांस–स्त्री० किसी-न-किसी रोगका हमेशा बना रहना; रगड़ा ।

चिरकना–अ० क्रि० थोड़ा-सा पाखाना करना; कई बार थोड़ा-थोड़ा पाखाना करना । वि० कई बार थोड़ा-थोड़ा पाखाना करनेवाला (बच्चा) ।

चिरकीन–वि० (फा०) मैला, गंदा; मैलेमें लिपटा हुआ । पु० बीभत्स रसके एक उर्दू कविका उपनाम ।

चिरकुट–पु० बहुत फटा हुआ कपड़ा, चिथड़ा ।

चिरचना*–अ० क्रि० क्रुद्ध होना, चिड़चिड़ाना ।

चिरचिटा–पु० चिचड़ा ।

चिरचिरा|–वि० दे० 'चिड़चिड़ा' । पु० चिचड़ा ।

चिरत्न–वि० (सं०) पुराना ।

चिरना–अ० क्रि० फटना; सीधा कट जाना । पु० चीरनेका औजार ।

चिरबत्ती–वि० टुकड़ा-टुकड़ा ।

चिरम, चिरमि, चिरमिटी*–स्त्री० घुँघची ।

चिरवल–पु० एक पौधा जिससे रंग निकलता है ।

चिरवाई–स्त्री० चिरवानेका काम या उजरत; पानी बरसनेके बादकी पहली जोताई ।

चिरवाना–स० क्रि० चीरनेका काम कराना ।

चिरहँटा*–पु० चिड़ीमार ।

चिराँदा–स्त्री० चमड़े, मांस, चरबी आदिके जलनेसे निकलनेवाली दुर्गंध, चिरायँध । (ला०) बदनामी । वि० चिड़चिड़ा ।

चिराइता–पु० दे० 'चिरायता' ।

चिराइन|–स्त्री० दे० 'चिराँदा' ।

चिराई–स्त्री० चीरनेकी क्रिया; चीरनेकी मजदूरी ।

चिराक*–पु०, स्त्री० दे० 'चिराग़'–'जेती और राजनिके राजनिमें संपति है, तेती रोज रावके चिराकैं जोति जागती'–ललित० ।

चिराग़–पु० (फा०) दिया, दीपक, लंप; (ला०) बेटा । **–गुल**–पु० (ब्लैक आउट) दे० 'अंधाकुप्प' । **–जले**–अ० दिया जलनेके समय, अँधेरा होनेपर । **–दान**–पु० दीवट, दीपाधार, शमादान । **–(ग़े) सहरी,–सुबह**–पु० (भोरका दिया) बुझता हुआ दिया; वह जिसके मरनेके दिन करीब हों, कुछ दिनोंका मेहमान । **मु० –उफ़ करना**–चिराग बुझाना । **–का हँसना**–चिरागसे फूल झड़ना । **–गुल करना**–दिया बुझाना । **–गुल, पगड़ी गायब**–निगाह झपते ही मालका गायब कर दिया जाना । **–गुल होना**–दिया बुझना । **–ठंढा करना**–दिया बुझाना । **–तले अँधेरा**–रखवालेके सामने चोरी; ज्ञानी, पंडितके घरमें घोर मूर्खताका या अशास्त्रीय आचरण होना । **–दिखाना**–रास्तेमें या सामने रोशनी करना । **–पा होना**–घोड़ेका अलफ होना । **–बढ़ाना**–दिया बुझाना । **–बत्ती करना**–दिया जलाना, लैंप आदि ठीक करना । **–बत्तीका वक्त**–दिया जलानेका वक्त, झुटपुटा । **–लेकर ढूंढ़ना**–बहुत कोशिशसे ढूंढ़ना, तलाश करना । **–से चिराग़ जलता है**–एकके गुण आदिसे दूसरेको लाभ पहुँचता है । **–से फूल झड़ना**–जलती हुई बत्तीसे फुचड़े झड़ना ।

चिराग़ी–स्त्री० दिया-बत्तीका खर्च; मजारपर दी जानेवाली भेंट जो प्रायः चिरागके नीचे रख दी जाती है; किसी मजारपर दिया-बत्ती करनेका खर्च; जुएके अड्डेपर दिया जलानेवालेको दिया जानेवाला पैसा ।

चिराटिका–स्त्री० (सं०) सफेद गदहपुरना; चिरायता ।

चिरातन*–वि० पुराना; फटा-पुराना ।

चिरातिक्त–पु० दे० 'चिरतिक्त' ।

चिराद–पु० (सं०) गरुड़; बतखकी जातिका एक पक्षी ।

चिरान|–वि० दे० 'चिराना' (प्रायः 'पुरान'के साथ व्यवहृत) ।

चिराना–स० क्रि० दे० 'चिरवाना' । अ० क्रि० बीचसे चिर जाना –'मकु गोहूँकर हिया चिराना'–प० । * वि० पुराना, बहुत दिनोंका ।

चिरायँध–स्त्री० दे० 'चिराँदा' ।

चिरायता–पु० कड़वे स्वादका एक छोटा पौधा जो दवाके काम आता है ।

चिरायु(स्)–वि० (सं०) बहुत दिन जीनेवाला, चिरजीवी । पु० देवता; कौवा ।

चिरारी–स्त्री० चिरौंजी ।

चिराव–पु० चीरनेका भाव; चीरनेका घाव, चीरा ।

चिरिंटी–स्त्री० (सं०) दे० 'चिरंटी' ।

चिरि–पु० (सं०) तोता ।

चिरिका–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन अस्त्र ।

चिरिया*–स्त्री० दे० 'चिड़िया' ।

चिरिहार*–पु० चिड़ीमार, बहेलिया ।

चिरी*–स्त्री० 'चिड़िया' । **–खाना**–पु० चिड़ियाघर ।

चिरु–पु० (सं०) कंधे और बाँहका जोड़, मोढ़ा ।

चिरेता, चिरैता†–पु० दे० 'चिरायता' ।

चिरैया*–स्त्री० चिड़िया; † पुष्य नक्षत्र; परिहतका सिरा ।

चिरौंटा–पु० गौरवा पक्षी ।

चिरौंजी–स्त्री० पियालके बीजकी गिरी जो मेवोंमें गिनी जाती है ।

चिरौरी–स्त्री० दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना ।

चिरौल–पु० एक पेड़–'रेंवजे, चिरौल इत्यादिके पेड़ इधर-उधर उगे थे'–अमर० ।

चिर्क–पु० (फा०) गंदगी; गू, मल; पीव ।

चिर्भटी–स्त्री० (सं०) ककड़ी ।

चिलक–स्त्री० चमक, झलक; हिलने आदिसे एकबारगी होनेवाली तीव्र पीड़ा; टीस, रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा ।

चिलकना–अ० क्रि० चमकना; चिलक मारना; टीसना, चीखना ।

चिलका–पु० चाँदीका चमचमाता सिक्का । स्त्री० उड़ीसाकी एक झील ।

चिलकाना†–स० क्रि० चमकाना; उज्ज्वल करना ।

चिलगोजा–पु० (फा०) एक मेवा जिसकी गिरी खायी जाती है ।

चिलचिल–स्त्री० अभ्रक ।

चिलचिलाना–अ० क्रि० चमकना ।

चिलड़ा†–पु० एक पकवान, उलटा, चीला ।

चिलता–पु० (फा०) एक तरहका कवच ।

चिलबिल–पु० एक जंगली पेड़ । † वि० दे० 'चिलबिला' ।

चिलबिला, चिलबिल्ला–वि० चंचल, शरारती, नटखट ।

चिलम–स्त्री० (फा०) मिट्टी या धातुका कटोरीनुमा नलीदार पात्र जिसपर तंबाकू-गाँजा आदि रखकर पीते हैं । **–गर्दा**–स्त्री० हुक्केमें लगी हुई वह नली जिसपर चिलम रखी जाती है । **–चट**–वि० (चिलम चाट जानेवाला) बहुत तंबाकू पीनेवाला । **–पोश**–पु० चिलमका ढक्कन; सरपोश । **–बरदार**–पु० हुक्का पिलाने या लेकर साथ चलनेवाला नौकर । **मु० –चढ़ाना,–भरना**–चिलमपर तंबाकू और आग रखना; खिदमतगारी करना । **–पीना**–हुक्का, तंबाकू पीना ।

चिलमची–स्त्री० एक बरतन जिसका किनारा थाल जैसा और बीचका भाग देगची जैसा होता है और जो हाथ-मुँह धोने, कुल्ली आदि करनेके काम आता है; हुक्केका वह भाग जिसपर चिलम रखी जाय ।

चिलमन–पु० (फा०) बाँसकी तिलियोंका बना हुआ पर्दा, चिक ।

चिलमिलिका, चिलमीलिका–स्त्री० (सं०) जुगनू; बिजली; एक तरहका कंठहार ।

चिलवाँस*–पु० चीलका मांस (जिसके खानेसे विक्षिप्त हो जानेकी बात कही जाती है); चिड़िया फँसानेका एक तरहका फंदा (?) ।

चिलहुल, चिलिया–स्त्री० एक तरहकी मछली ।

चिलुआ–स्त्री० चेल्हवा मछली ।

चिल्ल–पु० (सं०) चील । वि० कीचड़भरी आँखोंवाला । **–भक्ष्या**–स्त्री० नखी नामक गंधद्रव्य ।

चिल्लका–स्त्री० (सं०) झींगुर ।

चिल्लड़–पु० जूँ जैसा कीड़ा जो पसीना मरनेवाले गंदे कपड़ोंमें पड़ा करता है ।

चिल्ल-पों–स्त्री० चीख-पुकार, शोर-गुल ।

चिल्लवाँस–पु० नवजात शिशुका रोगके कारण चिल्लाना ।

चिल्लवाना–स० क्रि० चिल्लानेको प्रेरित, विवश करना ।

चिल्ला–पु० धनुषकी डोरी, कमानकी ताँत; चीला; पगड़ीका छोर (जिसमें कलाबत्तूका काम रहता है); (फा०) चालीस दिनोंका काल; चालीस दिनोंका व्रत, अनुष्ठान; प्रसूताका चालीसवें दिनका स्नान (मुसल०) । **–मु०–खींचना**–चालीस दिनोंका अनुष्ठान करना (मुसल०) । **–(ल्ले)का जाड़ा**–कड़ी सरदी, धनु (पूस)के १५ और मकर (माघ)के २५ दिनोंका जाड़ा ।

चिल्लाना–अ० क्रि० जोरसे बोलना, चीखना, शोर करना ।

चिल्लाभ–पु० (सं०) छोटी-छोटी चोरियाँ करनेवाला; गिरहकट ।

चिल्लाहट–स्त्री० चिल्लानेकी क्रिया, शोर, हल्ला ।

चिल्लिका–स्त्री० (सं०) भ्रुकुटी; झींगुर; बथुआ । **–लता**–स्त्री० भौं; * वज्र, बिजली ।

चिल्ली–स्त्री० (सं०) झींगुर; एक शाक, बथुआ; * बिजली ।

चिल्ही*–स्त्री० चील ।

चिल्होर, चिल्होरिया†–स्त्री० चील ।

चिवि–स्त्री० (सं०) ठुड्ढी ।

चिविट–पु० (सं०) चिड़वा ।

चिविल्लिका–स्त्री० (सं०) एक क्षुप ।

चिवुक–पु० (सं०) ठुड्ढी ।

चिहँक*–स्त्री० दे० 'चहक' ।

चिहकार*–स्त्री० चहचही ; चीत्कार ।

चिहुँक†–स्त्री० खटका, डर ।

चिहुँकना†–अ० क्रि० चौंकना ।

चिहुँटना*–स० क्रि० चुटकी काटना; लिपटना ।

चिहुँटनी, चिहुटनी*–स्त्री० घुँघची ।

चिहुँटी*–स्त्री० चुटकी ।

चिहुटना†–स० क्रि० चूस लेना (?) ।

चिहुर–पु० (सं०) दे० 'चिकुर' (उदा० दे० 'कुचील') ।

चिहुरार–पु० चिकुरभार, केशराशि ।

चिह्न–पु० (सं०) लक्षण, पहचान, निशान, छाप (पदचिह्न); लकीर; पद आदिकी सूचक वस्तु; ध्वजा; लक्ष्य; निशानी; यादगार । **–कारी(रिन्)**–वि० निशान बनानेवाला; घाव, जखम करनेवाला; वध करनेवाला; भयानक । **–धर**–वि० चिह्न धारण करनेवाला । **–धारिणी**–स्त्री० श्यामा लता ।

चिह्नांकन–पु० (पंक्चुएशन) किसी रचना, वाक्य, प्रस्तर आदिमें विराम-चिह्न लगाना (जहाँ आवश्यकता हो वहाँ उन्हें लिख देना) ।

चिह्नांकित–वि० (ग्रेजुएटेड) (वह गिलास, नली आदि) जिसपर नापके लिए चिह्न लगे हुए हों, अंशांकित ।

चिह्नित–वि० (सं०) चिह्नयुक्त, जिसपर चिह्न, निशान हो, अंकित; लक्षित ।

चीं–स्त्री० छोटी चिड़ियों या चिड़ियोंके बच्चोंकी बारीक आवाज; (फा०) शिकन, झुर्री, बल । **–चपड़,–चप्पड़**–स्त्री० कार्य या शब्द द्वारा विरोधका प्रदर्शन । **–चीं**–स्त्री० चीं-चींकी आवाज; चीं-चीं करना; छोटी चिड़ियों या चिड़ियोंके बच्चोंका बारीक आवाजमें बोलना । **मु० – बोलना**–हार मान लेना, असमर्थता स्वीकार कर लेना ।

चींटवा*–पु० दे० 'चींटा' ।

चींटा–पु० चिउँटीसे मिलता-जुलता, पर उससे बड़े आकारका कीड़ा, चिउँटा ।

चींटी–स्त्री० एक छोटा कीड़ा जो मीठेकी गंधसे उसके पास पहुँच जाता है, पिपीलिका । **–खोर**–पु० चींटी खानेवाला छोटा जन्तु ।

चींतना*–स० क्रि० चित्रित करना; लिखना ।

चींथना–स० क्रि० दे० 'चीथना' ।

चींयाँ–पु० दे० 'चिँआँ' ।

चीक–स्त्री० दे० 'चीख'; कीचड़ । † पु० कसाई ।

चीकट–पु० तेलका मैल, चिकट; सलार मिट्टी; † एक तरहका रेशमी कपड़ा; भांजे या भांजीकी शादीमें बहनको दिये जानेवाले कपड़े-गहने आदि । वि० जिसपर चिकनाईके साथ मैल जमा हो, बहुत मैला ।

चीकना–अ० क्रि० चीखना–'चीकैं चौंकि चौंकि अति रोवै नाहिं सोवैं रंच'–रामरसायन । * वि० चिकना ।

चीख़–स्त्री० चिल्लानेकी आवाज, चिल्लाहट । **–पुकार**–स्त्री०

शोर-गुल; शोर मचाकर की जानेवाली फरियाद । **मु०** **–मारना**–चिल्लाना; जोरसे कराहना ।

चीखना–स० क्रि० स्वाद जाननेके लिए किसी चीजको थोड़ी मात्रामें खाना ।

चीख़ना–अ० क्रि० चिल्लाना, शोर मचाना ।

चीखर, चीखल*–पु० कीचड़ ।

चीखुर–पु० गिलहरी ।

चीज़–स्त्री० (फा०) वस्तु, पदार्थ, शै; बहुमूल्य, अनूठी वस्तु; महत्त्वकी वस्तु; बात, काम; साहित्य या कलाकी वस्तु (गीत, रचना इ०) । **–वस्तु**–स्त्री० सामान; गहना-कपड़ा ।

चीठ*–स्त्री० मैल ।

चीठा*–पु० दे० 'चिट्ठा' ।

चीठी†–स्त्री० दे० 'चिट्ठी' ।

चीड़–पु० एक सुंदर सदाबहार पेड़ जो गंधद्रव्य माना जाता है और जिसका तना बहुत लंबा होता और लकड़ी संदूक आदि बनानेके काम आती है; एक तरहका देशी लोहा ।

चीढ़–पु० दे० 'चीड़' ।

चीत*–पु० दे० 'चित्त'; चित्रा नक्षत्र ।

चीतकार*–पु० दे० 'चीत्कार'; दे० 'चित्रकार' ।

चीतना*–स० क्रि० सोचना; चेत करना; चाहना; याद करना; चित्र बनाना ।

चीतर†–पु० दे० 'चीतल' ।

चीतल–पु० हिरनका एक भेद जिसकी खालपर सफेद चित्तियाँ होती है, चित्रमृग; चित्तीदार अजगर; एक सिक्का ।

चीतांबर–पु० चित्रांबर; विचित्र वस्त्रवाला ।

चीता–पु० एक तरहका बाघ जिसकी खालपर लंबी काली-पीली धारियाँ होती हैं (यह बहुत तेजीसे झपटकर हिरनोंको पकड़ लेता है); एक क्षुप जिसकी छाल और जड़ दवाके काम आती है; * चित्त । * स्त्री० चिंता–'मंदोदरी हृदयकरि चीता'–रामा० । * वि० चाहा हुआ; सोचा हुआ ।

चीत्कार–पु० (सं०) चीख, चिल्लाहट; शोर; चिंघाड़ ।

चीथड़ा–पु० दे० 'चिथड़ा' ।

चीथना–स० क्रि० फाड़ना, धज्जी-धज्जी करना; दाँतोंसे फाड़ना, क्षत-विक्षत कर देना (हिंस्र जंतुका) ।

चीथरा*–पु० दे० 'चिथड़ा' ।

चीदा–वि० (फा०) चुना हुआ; अच्छा, बढ़िया । **–चीदा**–वि० चुने हुए (व्यक्ति, वस्तु); अच्छे-अच्छे ।

चीन–पु० (सं०) दक्षिण-पूर्व एशियाका एक प्रसिद्ध महादेश; उस देशका निवासी, चीनी; एक तरहका हिरन; चीनका बना रेशमी कपड़ा; एक तरहका साँवा, चेना; सीसा; पताका; सूत । **–कर्पूर**–पु० चीनी कपूर । **–ज**–वि० चीनमें उत्पन्न । पु० चीनसे आनेवाला फौलाद । **–पिष्ट**–पु० सिंदूर; सीसा । **–वंग**–पु० सीसा । **–वास(स्)**–पु० चीनमें बनने या चीनसे आनेवाला रेशमी कपड़ा; रेशमी कपड़ा । **–की दीवार**–उत्तरी जातियोंके आक्रमणसे बचनेके लिए बनवायी हुई लगभग १५ सौ मील लंबी दीवार जो सप्ताश्चर्योंमें गिनी जाती है ।

चीनक–पु० (सं०) चीनी कपूर; चेना; कंगनी ।

चीनना*–स० क्रि० चीन्हना, पहचानना ।

चीनांशुक–पु० (सं०) चीनमें बनने या चीनसे आनेवाला रेशमी कपड़ा; रेशमी कपड़ा ।

चीना–वि० चीन देशका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध । पु० चीन देशवासी, चीनी; चीनी कपूर–'कीन्हेसि भीमसेन औ चीना'–प०; चिह्न; † चेना ।

चीनाक–पु० (सं०) चीनी कपूर ।

चीनिया–वि० चीनी, चीनका । **–केला**–पु० दे० 'चिनिया केला' । **–बादाम**–पु० मूँगफली ।

चीनी–स्त्री० ईख, खजूर आदिके रससे बना हुआ सफेद दानेदार चूर्ण जो गुड़-खाँड़की जगह काममें लाया जाता है, शकर । वि० चीन-संबंधी; चीनका; चीनमें उत्पन्न, उपलब्ध । पु० चीन देशवासी । **–कपूर**–पु० एक तरहका कपूर । **–चंपा**–पु० एक तरहका बढ़िया केला । **–मिट्टी**–स्त्री० पकायी हुई सफेद मिट्टी जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं । **–मोर**–पु० एक चिड़िया ।

चीन्हना†–स० क्रि० पहचानना ।

चीन्हा*–पु० चिह्न; पहचान, परिचय; निशानी ।

चीप†–स्त्री० एक बार कुदाल चलानेसे निकलनेवाला मिट्टीका खंड; चिप्पड़ ।

चीपड़–पु० आँखका कीचड़ ।

चीफ़–वि० (अं०) मुख्य, प्रधान । पु० मुखिया; जाति या कबीलेका नेता, सरदार; राजा । **–कमिश्नर**–पु० किसी छोटे सूबेका प्रधान शासक जो गवर्नरसे छोटा होता है । **–कोर्ट**–पु० किसी छोटे सूबेका हाईकोर्ट या प्रधान न्यायालय । **–जस्टिस**–पु० हाईकोर्टका प्रधान न्यायाधीश ।

चीमड़–वि० जो जल्दी फटे या टूटे नहीं; जल्द पीछा न छोड़नेवाला व्यक्ति । पु० एक पौधा जिसके बीज दवाके काम आते हैं, चाकसू ।

चीमर–वि, पु० दे० 'चीमड़' ।

चीमरी†–स्त्री० छत्तीसगढ़में पाया जानेवाला फूट जैसा फल जो प्रायः मीठा होता है ।

चीयाँ–पु० दे० 'चिंआँ' ।

चीया*–पु० चित्त ।

चीर–पु० (सं०) वस्त्रखंड; कम लंबा वस्त्रखंड, पट्टी, धज्जी; कपड़ा, वस्त्र; बौद्ध भिक्षुओंका पहनावा; पेड़की छाल; रेखा, लकीर; चोटी; सीसा; गायका थन; एक पक्षी; चार लड़ियोंकी मोतीकी माला । **–चरम***–पु० बाघंबर; मृगछाला । **–पत्रिका**–स्त्री० चेंच नामका साग । **–परिग्रह,–वासा(सस्)**–वि० जो छाल पहने हो, वल्कलधारी । पु० शिव । **–पर्ण**–पु० सालका पेड़ । **–हरण**–पु० कृष्णकी बाललीलाके अंतर्गत गोपियोंके वस्त्र चुरा लेनेकी लीला ।

चीर–स्त्री० चीरनेकी क्रिया या भाव; फटनेकी क्रिया या भाव; कुश्तीका एक पेंच । पु० दे० 'चीड़' । **–घर**–पु० (मॉरटुअरी) वह स्थान जहाँ दुर्घटनाओं आदिसे मरनेवालोंके शव, चीरफाड़ या परीक्षण द्वारा मृत्युका कारण ज्ञात करनेके उद्देश्यसे, कुछ समयके लिए भेज दिये जाते हैं; मुर्दाघर, लाशघर । **–फाड़**–स्त्री० चीरने-फाड़नेका काम; फोड़े आदिमें चीरा लगाना, जर्राही, शल्य-क्रिया ।

चीरक–पु० (सं०) लिखित प्रमाणका एक भेद, विकृत लेख ।

चीरना–स० क्रि० (कागज, कपड़े, लकड़ी आदिको) फाड़ना, टुकड़े करना; विभक्त, विदीर्ण करना; राह निकालना (भीड़, पानी) ।

चीरा–पु० चीरनेका घाव, फोड़ेका शिगाफ; पगड़ी बनानेके काम आनेवाला लहरियादार कपड़ा; गाँवकी सीमापर गाड़ा हुआ पत्थर; कौमार्य (उतारना, तोड़ना) । **–बंद**–पु० चीरा बाँधनेका काम करनेवाला । **–बंदी**–स्त्री० ताशके कपड़ेपर पगड़ी बनानेके लिए की जानेवाली बुनावट ।

चीरि–स्त्री० (सं०) आँखपर बाँधनेकी पट्टी; धोती आदिकी लाँग; झींगुर ।

चीरिका, चीरुका–स्त्री० (सं०) झींगुर ।

चीरित–वि० (सं०) फटा हुआ (केवल समासमें) ।

चीरी*–स्त्री० 'चिड़िया'; चिट्ठी; † एक तरहकी छोटी मछली; (सं०) झींगुर ।

चीरी(रिन्)–वि० (सं०) वल्कलधारी; चिथड़े लपेटनेवाला ।

चीरीवाक–पु० (सं०) झींगुर ।

चीर्ण–वि० (सं०) चीरा-फाड़ा हुआ; कृत, संपादित । **–पर्ण**–पु० खजूर; नीम ।

चील–स्त्री० बाजकी जातिकी प्रसिद्ध मांसाशी चिड़िया जो अकसर झपट्टा मारकर लोगोंके हाथसे खानेकी चीजें छीन ले जाती है । **–झपट्टा**–पु० किसी चीजको चीलकी तरह झपट्टा मारकर छीन लेना; बच्चोंका एक खेल ।

चीलड़, चीलर–पु० दे० 'चिल्लड़' ।

चीला–पु० तवापर घी लगाकर आटे या बेसनका गाढ़ा घोल फैलाकर बनाया गया मीठा या नमकीन पकवान; उलटा; चिल्ला ।

चीलिका–स्त्री० (सं०) झींगुर, झिल्ली ।

चील्लक–पु०,–**चील्लका**–स्त्री० (सं०) झींगुर।

चील्ह–स्त्री० चील।

चील्हड़, चील्हर–पु० चीलड़।

चील्ही*–स्त्री० एक तंत्रोपचार।

चीवर–पु० (सं०) वस्त्र, पहनावा; साधु-सन्न्यासियोंका पहनावा; बौद्ध भिक्षुओंका ऊपरी पहनावा; कंथा।

चीवरी(रिन्)–पु० (सं०) चीवरधारी, बौद्ध या जैन सन्न्यासी, भिक्षु; सन्न्यासी।

चीस–स्त्री० टीस।

चुंगना–स० क्रि० दे० 'चुगना'।

चुंगल–पु० पशु-पक्षियोंका, खासकर शिकारी चिड़ियों, जानवरोंका पंजा, चंगुल; वुकटा; पकड़। –**भर**–वि० चंगुलमें आनेभर, थोड़ा-सा, चुटकीभर।

चुंगाना–स० क्रि० दे० 'चुग़ाना'।

चुंगा–पु० दे० 'चोंगा'।

चुंगी–स्त्री० चुंगलभर चीज; अनाज आदि वेचनेवालोंसे इस रूपमें लिया जानेवाला महसूल; मालके म्युनिसिपल सीमामें आनेपर लिया जानेवाला महसूल। –**कचहरी**–स्त्री० म्युनिसिपलिटीका दफ्तर। –**घर**–पु० चुंगीका दफ्तर।

चुंघाना–स० क्रि० चुसाना।

चुंचु–पु० (सं०) छछूंदर; ब्राह्मण पुरुष और वैदेह स्त्रीसे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति; 'चिनियारी' पौधा।

चुंचुरी–स्त्री० (सं०) पासेके वदले इमलीके वीजोंसे खेला जानेवाला एक जुआ।

चुंटा, चुंडा–स्त्री० (सं०) छोटा कुआँ; कुएँके पासका हौज।

चुंडित*–वि० जिसके सिरमें चुटिया हो।

चुंडी†–स्त्री० दे० 'चुंदी'।

चुंदरी†–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चुंदी–स्त्री० चुटिया; (सं०) कुटनी; दूती।

चुंधलाना–अ० क्रि० चकाचौंध होना, चौंधना।

चुंधा–वि० छोटी आँखोंवाला; जिसकी दृष्टि क्षीण हो।

चुंधियाना–अ० क्रि० चौंधना।

चुंब–पु० (सं०) चुंवन।

चुंबक–पु० (सं०) चुंवन करनेवाला; कामुक; वह जो बहुतसे ग्रंथोंको जहाँ-तहाँसे पढ़कर, उलट-पुलटकर छोड़ दे, किसीको पूरी तरह पढ़े-समझे नहीं; धूर्त; घड़ेके मुँहपर लगाया जानेवाला फंदा; तराजूका ऊपरी या मध्य भाग; एक तरहका (प्राकृतिक या कृत्रिम) पत्थर जो लोहेको अपनी ओर खींचता है। –**वृत्ति**–स्त्री० ग्रंथोंको इधर-उधर पढ़कर छोड़ देनेकी आदत।

चुंबकत्व–पु० (सं०) चुंवकका गुण, आकर्षण।

चुंबकीय–वि० (सं०) जिसमें चुंवक या उसका गुण हो।

चुंबन–पु० (सं०) चूमनेकी क्रिया, वोसा; (ला०) छूना, स्पर्श।

चुंबना*–स० क्रि० चूमना।

चुंबा–स्त्री० (सं०) चुंवन।

चुंबित–वि० (सं०) चूमा हुआ; छूआ हुआ, स्पृष्ट।

चुंबी(बिन्)–वि० (सं०) चुंवन करनेवाला; छूनेवाला (गगन-चुंवी)।

चुंभना*–अ० क्रि० दे० 'चुभना'; † (ऊपर रखी हुई चीजतक) खड़े आदमीके हाथका पहुँचना (?)।

चुंवणी*–स्त्री० चुंवन (वीसल०)।

चुंहटना*–स० क्रि० चिकोटी काटना–'चुंहुटि जगाई अधराति औटपाई आनि'–घन०।

चुअना*–अ० क्रि० दे० 'चूना'।

चुआ–पु० दे० 'चोआ'।

चुआई–स्त्री० चुआनेका काम; चुआनेकी मजदूरी।

चुआन†–स्त्री० नहर; सोता; चुआई।

चुआना–स० क्रि० टपकाना; भवकेसे अर्क खींचना; * चुपड़ना।

चुआव–पु० चुआनेकी क्रिया या भाव।

चुकंदर–पु० (फा०) गाजर या शलजमकी शकलका एक मूल जो साग-भाजीके रूपमें खाया जाता है और जिसके रससे चीनी भी वनती है।

चुक–पु० नीवूके रससे वनाया हुआ एक खट्टा पदार्थ; चूक। *वि० किंचित्।

चुकचुकाना–अ० क्रि० रिसकर वाहर आना, पसीजना।

चुकचुहिया–स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

चुकट*–पु० दे० 'चुकटा'।

चुकटा–पु० चुटकी; चुटकीभर वस्तु।

चुकटी†–स्त्री० 'चुटकी'।

चुकता–वि० जो चुका दिया गया हो, अदा, वेवाक।

चुकती–वि०, स्त्री० दे० 'चुकता'।

चुकना–अ० क्रि० समाप्त होना, वाकी न रहना; निवटना; तै होना; अदा, वेवाक होना; * चूकना, खाली जाना। † वि० चूकनेवाला, भुलक्कड़।

चुकरैंड–पु० दोमुँहा साँप।

चुकवाना–स०क्रि० अदा कराना; दिलवाना।

चुकाई–स्त्री० चुकता होनेका भाव।

चुकाना–स०क्रि० अदा करना, चुकता करना; निवटाना, तै करना। अ० क्रि० चूकना, गलती करना–'तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं। देखु विचारि मातु मन माहीं'–रामा०।

चुकावरा†–पु० (ऋण) चुकानेकी क्रिया, चुकौता 'रिनके चुकावरेमें आये ऐसे वहुतसे दास थे'–भुवनविक्रम।

चुकिया†–स्त्री० कुल्हिया, छोटा पुरवा।

चुकौता–पु० कर्जका साफ, वेवाक हो जाना।

चुक्कड़–पु० पानी या शराव पीनेका मिट्टीका गोल-सा पात्र, पुरवा, कुल्हड़।

चुक्कार–पु० (सं०) गर्जन, सिंहनाद।

चुक्र–पु० (सं०) चूक; चूका साग; अमलवेत; काँजी। –**फल**–पु० इमली। –**वास्तुक**–पु० अमलोनी नामका साग। –**वेधक**––पु० एक तरहकी काँजी।

चुक्रक–पु० (सं०) चूका नामका साग।

चुक्रा, चुक्री–स्त्री० (सं०) इमली; अमलोनीका साग।

चुक्राम्ल–पु० (सं०) चूक; चूका नामका साग।

चुक्रिका–स्त्री० (सं०) नोनिया साग; इमली।

चुक्रिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) खट्टापन।

चुक्षा–स्त्री० (सं०) वध; प्रक्षालन।

चुखाना†–स० क्रि० चखाना; गायके पेन्हानेके लिए दुहते समय वछड़ेको दूध पीने देना।

चुग़द–पु० (फा०) उल्लूकी एक छोटी किस्म; मूर्ख व्यक्ति।

चुगना–स०क्रि० चिड़ियोंका चोंचसे चुनचुनकर दाना खाना; एक एक दाना उठाकर, वहुत थोड़ा-थोड़ा करके, खाना।

चुगल–पु० दे० 'चुग़ुल'। –**खोर**–पु० दे० 'चुग़ुलखोर'। –**खोरी**–स्त्री० दे० 'चुग़ुलखोरी'।

चुगला–पु० दे० 'चुग़ुलख़ोर'।

चुगली–स्त्री० परोक्षमें की हुई निंदा, बुराई। मु०–**खाना** –पीठ पीछे निंदा, बुराई करना।

चुगा–पु० चिड़ियोंके चुगनेके लिए डाली गयी चीज; वह चारा जो चिड़िया चोंचसे उठाकर बच्चेके मुँहमें दे; दे० 'चोग़ा'।

चुगाई–स्त्री० चुगनेकी क्रिया या भाव; चुगानेकी क्रिया।

चुगाना–स० क्रि० चिड़ियोंको दाना खिलाना।

चुग़ल–पु० चिलमकी गिट्टी; (फा०) पीठ पीछे निंदा-बुराई करनेवाला, चुगुली खानेवाला; मुखबिर। –**ख़ोर**–पु० चुगुली खानेवाला, पीठ पीछे निंदा, बुराई क़रनेवाला, लुतरा। –**ख़ोरी**––स्त्री० चुगली खाना।

चुगुली–स्त्री० दे० 'चुगली'।

चुग्गा–पु० दे० 'चुगा'।

चुचकना–अ० क्रि० सूखकर सिकुड़ना, पिचकना।

चुचकारना–स० क्रि० दे० 'चुमकारना'।

चुचकारी–स्त्री० दे० 'चुमकारी'।

चुचाना–अ० क्रि० चूना, रिसना।

चुचि–स्त्री० (सं०) स्तन।

चुचुआना–अ० क्रि० चुचाना।

चुचुक–पु० (सं०) दे० 'चूचुक'।

चुचुकना†–अ० क्रि० सूखकर सिकुड़ना।

चुचुकारना*–स० क्रि० दे० 'चुमकारना'।

चुच्चु–पु० (सं०) पालककी जातिका एक साग।

चुटक–पु० एक तरहका गलीचा।

चुटकना–स०क्रि० चाबुक मारना; चुटकीसे तोड़ना।

चुटकला–पु० दे० 'चुटकुला'।

चुटका–पु० बड़ी चुटकी; चुटकीभर चीज।

चुटकी–स्त्री० किसी चीजको पकड़ने, उठाने आदिके लिए अँगूठे और तर्जनी या बीचकी उँगलीको परस्पर सटाना; बीचकी उँगलीपर अँगूठेको दवाने और छटकानेसे होनेवाली आवाज; भिक्षुकको दिया जानेवाला चुंगलभर आटा आदि, भीख; अँगूठे और तर्जनीसे चमड़ेको पकड़कर दबाना या नाखून गड़ाना (काटना); कपड़ेमें रंग न चढ़ने देनेके लिए दी गयी गाँठ; पेचकश; कागज, नलिका आदिको पकड़ रखनेका आला, 'क्लिप'; पाँवकी उँगलियोंमें पहननेका एक गहना; दरीके तानेका सूत।–**बजाते**–अ० दमभरमें, बातकी बातमें।–**भर**–वि० चुंगलभर, थोड़ा-सा। **मु०**–**देना**–चुटकी बजाना; भीख देना। –**बजाना**–बीचकी उँगलीपर अंगूठेको दवा और छटकाकर आवाज निकालना। –**भरना**–चुटकी काटना; चुटकी लेना। –**माँगना**–भीख माँगना। –**लगाना**–चुटकीसे पकड़ना; मसलना; कपड़ेको दो उँगलियोंमें फँसाकर फाड़ना; (रुपया-पैसा चुरानेके लिए) उँगलियोंसे जेव फाड़ना। –**लेना**–हँसी उड़ाना, व्यंग्य, तानाजनी करना। **चुटकियों में**–चुटकी बजाते, दमभरमें। –० **उड़ाना**–बातकी बातमें कर डालना; खेल समझना।

चुटकुला–पु० छोटी-सी पर मनोरंजक उक्ति, लतीफा, अनूठी बात; छोटा-सा, सस्ता पर काम करनेवाला नुस्खा, दवा। **मु०**–**छोड़ना**–मनोरंजक, कुतूहलजनक बात कहना।

चुटला†–पु० चोटीपरका एक गहना; वेणी। वि० चुटीला।

चुटिया–स्त्री० सिरके बीचोबीच छोड़ रखे हुए लंबे वाल, चोटी, शिखा। **मु०**(**किसीकी**)–**हाथमें होना**–अपने वशमें, अपने कब्जेमें होना।

चुटियाना†–स०क्रि० चुटीला करना।

चुटीलना–स०क्रि० चोट पहुँचाना, जख्मी करना।

चुटीला–वि० जो चोट खाये हो, घायल, जख्मी; चोट करनेवाला –'··याके नयन चुटीले भारी'–चाचा हितवृंदावन; चोटीका, सबसे बढ़िया। पु० छोटी चोटी।

चुटुकी*–स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चुटुक्का†–पु० गुल्लीकी शकलके काठके दो छोटे टुकड़ोंसे बना हुआ एक बाजा जिसे लोहेके करतालकी तरह उँलियोंसे दबाकर बजाते हैं।

चुटैल–वि० चोट खाया हुआ, जख्मी; चोट करनेवाला।

चुड़िहारा–पु० चूड़ियाँ बनाने, बेचने, पहनानेवाला। (स्त्री० 'चुड़िहारिन'।)

चुडुक्का–पु० लालसे मिलती-जुलती एक छोटी चिड़िया।

चुड़ैल–स्त्री० भूतनी, डायन; काली, कुरूप स्त्री; क्रूर स्वभाववाली स्त्री।

चुत–पु० (सं०) गुदद्वार। * वि० च्युत।

चुत्थल–वि० मसखरा, ठट्ठेबाज। –**पना**–पु० ठट्ठेबाजी।

चुत्था–वि० (वह बटेर) जिसे दूसरे बटेरने घायल किया हो। –**बटेर**–पु० (ला०) वह आदमी जिसे जिसके जो दिलमें आये, कह ले।

चुदक्कड़–पु० दे० 'चोदक्कड़'।

चुदना–अ० क्रि० पुरुष द्वारा संभोग किया जाना; पुरुषसे संयुक्त होना।

चुदवाई–स्त्री० स्त्री-प्रसंग, संभोगकी क्रिया; संभोग करने या करानेके बदले मिलनेवाला धन।

चुदवाना–स० क्रि० पुरुषसे संभोग कराना, मैथुन कराना (अकर्मकके समान प्रयुक्त); किसी स्त्रीको पुरुषसे संयुक्त कराना।

चुदवास–स्त्री० संभोग करानेकी इच्छा।

चुदवासी–स्त्री० वह स्त्री जो संभोग करानेको आतुर हो।

चुदवैया–पु० मैथुन करनेवाला।

चुदाई–स्त्री० दे० 'चुदवाई'।

चुदाना–स० क्रि० दे० 'चुदवाना'।

चुदास–स्त्री० संभोग करानेकी प्रबल इच्छा।

चुदासा–वि० संभोगकी प्रबल कामनासे अभिभूत।

चुदैया–पु० दे० 'चुदवैया'।

चुदौवल–स्त्री० प्रसंग करनेकी क्रिया या भाव।

चुन–पु० चूर, चूर्ण (लोहचुन); आटा; चुगनेकी चीज।

चुनचुना–वि० चुनचुनाहट पैदा करनेवाला, लगनेवाला; चिड़चिड़ा, चिढ़नेवाला। पु० मलाशयमें पैदा होनेवाला सफेद, सूत जैसा कीड़ा जो मलके साथ निलकता है, चुन्ना।

चुनचुनाना–अ० क्रि० जलनके साथ खुजली पैदा होना या चुभना, लगना; (बच्चोंका) ठिनकना।

चुनचुनाहट–स्त्री० चुनचुनानेका अनुभव, जलनके साथ होनेवाली खुजली।

चुनट, चुनत–स्त्री० कपड़े, कागज आदिमें दाबसे पड़नेवाली या दबाकर डाली गयी शिकन, सिलवट।

चुनन–स्त्री० चुननेकी क्रिया या भाव; अनाजका वह कूड़ा, कंकड़ आदि जो चुनकर निकाला गया हो; दे० 'चुनट'। –**दार**–वि० जिसमें चुनट डाली गयी हो।

चुनना–स० क्रि० छोटी चीजोंको एक-एक करके इकट्ठा करना, बीनना; चिड़ियोंका चोंचसे दाना आदि उठाना; चुगना, तोड़ना, लोढ़ना (फूल, कली); बहुतोंमेंसे किसी खास चीजको, कार्यविशेषके लिए उपयुक्त या श्रेष्ठ मानकर अलग करना; छाँटना; पसंद करना; वोटके द्वारा दो या अधिक उम्मीदवारोंमेंसे पद या कार्यविशेषके लिए एकको पसंद करना; सजाना, तरतीबसे लगाना; जोड़ना (ईंटें–); चुनट डालना।

चुनरी–स्त्री० लाल जमीनका कपड़ा जिसपर सफेद या दूसरे रंगकी बूटियाँ बनी हों; चुन्नी।

चुनवाँ–वि० चुना हुआ, बढ़िया।

चुनवाना–स० क्रि० चुननेका काम कराना।

चुनाँ–वि० (फा०) ऐसा, इस तरहका (हिंदी-उर्दूमें अकेले व्यवहृत नहीं होता)। –**चुनीँ**–वि० ऐसा-वैसा। स्त्री० इधर-उधरकी बात; टाल-मटोल; बहस, विवाद (करना)। –(**नां**)**चे**–अ० इस प्रकार; अतः, निदान।

चुनाई–स्त्री० चुननेकी क्रिया या भाव; दीवारकी जोड़ाई; चुननेकी उजरत।

चुनाखा–पु० परकार, कंपास।

चुनाना-स० क्रि० दे० 'चुनवाना'।

चुनार–पु० वाराणसीके पासका एक स्वास्थ्यप्रद पहाड़ी स्थान, चरणाद्रि।

चुनाव–पु० चुननेकी क्रिया या भाव; (वोटके द्वारा) किसीका पद या कार्यविशेषके लिए पसंद किया जाना। –**याचिका**–स्त्री० (इलेक्शन पेटिशन) किसी प्रतिनिधिके चुनावमें अवैध तरीकोंका प्रयोग होनेके विरोधमें दी गयी याचिका (अर्जी)। **मु०**–**लड़ना**–चुनावके लिए उम्मीदवार होना; चुनावमें दूसरे उम्मीदवारोंसे प्रतियोगिता करना।

चुनावट–स्त्री० चुनट।

चुनिंदा–वि० चुना हुआ, छाँटा हुआ; बढ़िया, श्रेष्ठ (फा० 'चुनीदा')।

चुनियाँ*–स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनियागोंद–पु० ढाकका गोंद।

चुनी–स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनौटिया–पु० एक तरहका कत्थई या काकरेजी रंग। वि० उक्त रंगका–'पहिरे चीर चुनौटिया चटक चौगुनी होत'–बिहारी।

चुनौटी–स्त्री० पान या तंबाकूके लिए गीला चूना रखनेकी डिबिया, लुटिया।

चुनौती–स्त्री० बढ़ावा; युद्ध, शास्त्रार्थ आदिके लिए आह्वान,

ललकार (देना); किसीके कथन या किये गये निर्णय आदिकी सत्यता या औचित्य प्रमाणित करनेके लिए विरोधी द्वारा दी गयी ललकार; प्रचारणा; चुनौटी।

चुन्नट, चुन्नत–स्त्री० दे० 'चुनट'।

चुन्नन–स्त्री० दे० 'चुनन'।

चुन्ना–पु० दे० 'चुनचुना'।

चुन्नी–स्त्री० माणिक या लालका छोटा टुकड़ा; छोटा नग; चमकी; अरहर या और किसी दालके टुकड़े जिनमें भूसी मिली हो, कुनाई; ओढ़नी।

चुप–वि० जो बोलता न हो, मौन, खामोश। स्त्री० चुप्पी, मौन। **–चाप**–अ० बिना बोले, चुपकेसे; बिना हिले-डुले; गुप-चुप। **–चुप, –चुपाते**–अ० चुपचाप।

चुपका–वि० चुप, मौन; घुन्ना। मु०**–करना**–मौनावलंवन करना; मौनावलंवन कराना। **–साधना**–चुप हो रहना, मौनावलंवन करना। **–(के)से**–चुपचाप।

चुपकी–स्त्री० मौन, चुप्पी।

चुपड़ना–स० क्रि० तेल, घी या दूसरी तरल, चिकनी चीज लगाना, पोतना (रोटीमें घी चुपड़ना); चापलूसी करना; ढकना, छिपाना।

चुपड़ा–पु० वह जिसकी आँखें कीचड़से भरी हों। वि० चुपड़ा या पोता हुआ; चिकनी-चुपड़ी बात करनेवाला।

चुपड़ी–वि० स्त्री० तेल, घी पुती हुई (चीज)। स्त्री० घी पुती हुई रोटी (एक चुपड़ी और दो)।

चुपरना*–स०क्रि० दे० 'चुपड़ना'।

चुपाना*–अ० क्रि० चुप हो रहना। स० क्रि० चुप कराना।

चुप्पा–वि० चुप रहनेवाला, जो बहुत कम बोलता हो, घुन्ना। (स्त्री० 'चुप्पी'।)

चुप्पी–स्त्री० मौन, खामोशी। मु० **–साधना**–मौन हो रहना, चुप लगा लेना।

चुबलाना, चुभलाना–स० क्रि० किसी चीजको मुँहमें रखकर जीभसे थोड़ा हिलाते-डुलाते हुए स्वाद लेना।

चुब्र–पु० (सं०) चेहरा, मुखड़ा, मुँह।

चुभकना–अ० क्रि० बार-बार गोता खाना, डूबना-उतराना।

चुभकाना–स० क्रि० बार-बार गोता देना।

चुभकी–स्त्री० गोता, डुबकी।

चुभन–स्त्री० चुभनेका भाव; दर्द, खटक।

चुभना–अ० क्रि० धँसना, नुकीली चीजका भीतर घुसना; मनमें धँसना, बसना; खटकना, सालना; * तन्मय, लीन होना।

चुभर-चुभर–पु० बच्चोंके दूध पीनेकी आवाज। अ० यह आवाज करते हुए (दूध पीना)।

चुभवाना–स० क्रि० 'चुभाना'का प्रे०।

चुभाना–स०क्रि० धँसाना, गड़ाना।

चुभीला*–वि० चुभनेवाला; मनमें घर कर लेनेवाला, मोहक।

चुभोना–स० क्रि० दे० 'चुभाना'।

चुमकार–स्त्री० चुमकारनेकी आवाज, पुचकार।

चुमकारना–स०क्रि० बच्चोंको प्यार करने, पशुओंको बुलानेके लिए मुँहसे चूमने जैसी आवाज निकालना, पुचकारना।

चुमकारी–स्त्री० दे० 'चुमकार'।

चुमवाना–स० क्रि० चूमनेका काम कराना।

चुमाना–स० क्रि० चूमनेके लिए (दूसरेके) सामने करना, बैठाना।

चुम्मा†–पु० चुंबन।

चुर–वि० (सं०) चोरी करनेवाला; * अधिक, बहुत। पु० (हिं०) हिंस्र जंतुकी माँद; कुछ लोगोंके मिलकर बैठनेकी जगह; सूखे पत्ते या कागज आदिके टूटने, फटनेका शब्द। **–चुर**–पु० सूखे पत्तेके टूटनेकी आवाज। **–चुरा**–वि० जो जरा-सा दबानेसे 'चुर-चुर' शब्दके साथ टूट जाय (सूखा पत्ता, पापड़)। **–मुर**–पु० खरी, करारी चीजके टूटनेकी आवाज। * वि० कुरकुरा। **–मुरा**–वि० जो दबानेसे 'चुरमुर' करके टूट जाय, करारा। पु० भुने हुए चिड़वे और चनेको घीमें तलकर, नमक-मिर्च लगाकर बनाया हुआ चबेना या फुरनीदाना। मु० **–मुर होना**–'चुरमुर'की आवाजके साथ टूटना, चूर होना।

चुरकना†–अ०क्रि० चहकना; चूर होना।

चुरकी†–स्त्री० चुटिया।

चुरकुट, चुरकुस*–वि० चकनाचूर, चूर्णित; घबराया हुआ।

चुरगना–अ० क्रि० दे० 'चुरकना'।

चुरचुराना–अ० क्रि० 'चुरचुर' शब्द करते हुए टूटना।

चुरट–पु० दे० 'चुरुट'।

चुरना†–अ० क्रि० पानीमें पकना, सीझना; गुप्त मंत्रणा होना। पु० दे० 'चुनचुना'।

चुरमुराना–स० क्रि० 'चुरमुर' शब्दके साथ तोड़ना। अ० क्रि० 'चुरमुर' शब्दके साथ टूटना।

चुरवाना–स०क्रि० पकानेका काम कराना; चोरी कराना।

चुरस–स्त्री० कपड़े आदिकी शिकन।

चुरा–स्त्री० (सं०) चोरी। * पु० दे० 'चूरा'।

चुराई–स्त्री० चुरने या पकानेकी क्रिया या उसकी उजरत।

चुराना–स० क्रि० दूसरेकी चीजको उसकी जानकारी या अनुमतिके बिना ले लेना; छिपाना, बचाना (आँख, मुँह); करने, देनेमें कसर रखना, उचितसे कम करना या देना (गायका दूध चुराना); पानीमें पकाना।

चुरि, चुरी–स्त्री० (सं०) छोटा कुँआँ।

चुरिला–पु० काँचका टुकड़ा जिससे लड़के पटिया रगड़ते हैं।

चुरिहारा–पु० दे० 'चुड़िहारा'।

चुरी*–स्त्री० चूड़ी।

चुरुट–पु० तंबाकूके चूरेकी बड़ी बत्ती या बीड़ी, सिगरेट, सिगार।

चुरू*–पु० चुल्लू।

चुर्ट, चुर्स–पु० दे० 'चुरुट'।

चुल–स्त्री० खुजली; तीव्र इच्छा; कामोद्वेग (उठना, मिटना); माँद, चुर।

चुलचुलाना–अ०क्रि० चुल या खुजली उठना; (बच्चोंका) नटखटी करना।

चुलचुलाहट, चुलचुली–स्त्री० चुल, खुजली।

चुलबुल–स्त्री० चुलबुलापन, चंचलता। † वि० चुलबुला।

चुलबुला–वि० चंचल, नटखट, जो स्थिर न रह सके। **–पन**–पु० चंचलपन, नटखटी; शोखी।

चुलबुलाना–अ० क्रि० बार-बार हिलना, डोलना; स्थिर न रह सकना, चंचलता दिखाना।

चुलबुलिया†–वि० दे० 'चुलबुला'।

चुलहाई–वि० स्त्री० जिसमें संभोगकी इच्छा प्रबल हो। स्त्री० पुंश्चली।

चुलाना–स० क्रि० दे० 'चुआना'।

चुलाव–पु० बिना मांसका पुलाव; चुआनेकी क्रिया।

चुलियाला–पु० एक मात्रिक छंद।

चुलुंप–पु० (सं०) बच्चोंका लाड़-प्यार, लालन।

चुलुक–पु० (सं०) चुल्लू; नापनेके काम आनेवाला एक बरतन; गहरा कीचड़; एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; उड़दका धोवन।

चुलुका–स्त्री० (सं०) महाभारतमें वर्णित एक नदी।

चुलुकी(किन्)–पु० (सं०) सूँसके आकारका एक मत्स्य।

चुलुपा–स्त्री० (सं०) बकरी।

चुलूक*–पु० चुल्लू।

चुल्ल–वि० (सं०) जिसकी आँखोंमें कीचड़ भरा हो। पु० कीचड़-भरी आँख।

चुल्लक–पु० (सं०) चुल्लू।

चुल्लकी–स्त्री० (सं०) एक तरहका जलपात्र; सूँस।

चुल्ला†–वि० नटखट।

चुल्लि–स्त्री० (सं०) चूल्हा; चिता।

चुल्ली†–वि० चिबिल्ला, नटखट। स्त्री० (सं०) दे० 'चुल्लि'।

चुल्लू–पु० उँगलियोंको थोड़ा मोड़कर गहरी की हुई हथेली, आधी अंजली। **–भर**–वि० जितना चुल्लूमें आये, थोड़ा-सा। मु० **–भर पानीमें डूब मरना**–लज्जासे मुँह न दिखा सकना। **–भर लहू पीना**–दुश्मनको कतल कर चुल्लूभर खून पीना। **–में उल्लू बनना**–थोड़ीसी भाँग-शराब पीकर बदमस्त हो जाना। **चुल्लुओं**

रोना–बहुत रोना। –लहू पीना–बहुत सताना।

चुल्हौना*–पु० चूल्हा।

चुवना*–अ० क्रि० चूना, टपकना। स० क्रि० चुगना; टपकाना। वि० चूनेवाला।

चुवा*–पु० चौपाया, पशु–'चारु चुवा चहुँ ओर चलैं लपटैं झपटैं सो तमीचर तौंकी'–कवितावली; † मज्जा।

चुवाना–स० क्रि० दे० 'चुआना'।

चुसकी–स्त्री० तरल पदार्थको होंठोंसे हुक्केके कशकी तरह खींचकर पीना; हुक्केका कश; घूँट।

चुसना–अ० क्रि० होंठोंसे पिया जाना; चूसा जाना; निचुड़ना; खोखला, सत्तहीन हो जाना; पासमें पैसा न रह जाना।

चुसनी–स्त्री० एक खिलौना जिसे बच्चे मुँहमें डालकर चूसते हैं; बच्चोंको दूध पिलानेकी शीशी।

चुसवाना–स०क्रि० दे० 'चुसाना'।

चुसाई–स्त्री० चूसनेकी क्रिया या भाव।

चुसाना–स० क्रि० चूसनेका काम कराना।

चुसौअल, चुसौवल–पु० बहुतसे व्यक्तियोंका एक साथ चूसना; अधिक चूसना।

चुस्त–पु० (सं०) भूने हुए मांसका ऊपरी हिस्सा; भूना हुआ मांस; भूसी; छाल, छिलका। वि० (फा०) तेज, फुरतीला; तंग, कसा हुआ; दृढ़, मजबूत; चालाक; ठीक, उपयुक्त; फबता हुआ। –(व) **चालाक**–वि० तेज, फुरतीला और चतुर।

चुस्ता–पु० (फा०) बकरी या भेड़के बच्चेका आमाशय; सिलवट, सिकुड़न; बड़ी आँतका अंतिम भाग, मलाशय।

चुस्ती–स्त्री० (फा०) तेजी, फुरती; तंग होना, कसाव; मजबूती; चालाकी।

चुहँटी, चुहटी*–स्त्री० चुटकी।

चुहचुहा–वि० दे० 'चुहचुहाता'।

चुहचुहाता–वि० रसीला, मजेदार; फड़कता हुआ।

चुहचुहाना–अ०क्रि० चिड़ियोंका बोलना, चहचहाना; रस टपकना; भड़कीला लगना।

चुहचुही–स्त्री० एक छोटी चंचल चिड़िया जिसकी बोली बड़ी प्यारी होती है।

चुहट*–स्त्री० कसक–'तेरे नैन-सुभट चुहट-चोट लागें बीर'–घन०।

चुहटना*–स०क्रि० रौंदना, कुचलना।

चुहड़ा–पु० दे० 'चूहड़ा', भंगी।

चुहल–स्त्री० हँसी, ठिठोली, मजाक, विनोद। **–बाज़**–वि० हँसी-ठिठोली करनेवाला, विनोदी। **–बाज़ी**–स्त्री० हँसी, ठिठोली, मसखरापन।

चुहिया–स्त्री० मादा चूहा; छोटा चूहा।

चुहुटना*–अ० क्रि० चिमटना। वि० चिमटनेवाला।

चुहुटनी–वि० स्त्री० चिमटनेवाली। स्त्री० घुंघची।

चूँ–पु० छोटी चिड़िया या चिड़ियाके बच्चेकी बोली; 'चूँ'की आवाज। **–चूँ**–पु० चिड़ियोंकी बोली, आवाज; 'चीँ-चीँ', 'चूँ-चूँ'की आवाज; एक खिलौना जिसे दबानेसे 'चूँ-चूँ'की आवाज निकलती है। **मु० –चूँका मुरब्बा**–तरह-तरहकी बेमेल चीजोंका योग। **–न करना**–तनिक भी उज्र, एतराज न करना।

चूँ–अ० (फा०) जो, अगर; सदृश; क्यों, किसलिए। **–कि**–अ० इसलिए कि, यतः; क्योंकि। **–(व)चरा**–पु० उज्र, एतराज; विवाद।

चूँच*–स्त्री० चोंच।

चूँटना†–अ० क्रि० चींटीकी तरह चिपक जाना; चोंटना, चुटकीसे पकड़कर तोड़ना (बिहारी)।

चूँदरी*–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चूक–स्त्री० भूल, गलती, खता; अपराध; छल, धोखा। पु० नीबूका सुखाया हुआ रस जो बहुत खट्टा होता है; दे० 'चूका'। वि० बहुत खट्टा।

चूकना–अ० क्रि० भूल, गलती करना; खोना, गँवाना (अवसर); लक्ष्यपर न लगना, खता होना (निशाना); कोई बात करने, कहनेका अवसर आनेपर उसे न करना, न कहना; करने, कहनेसे बाज रहना (वह कब चूकनेवाला है?)।

चूका–पु० एक खट्टा साग।

चूची–स्त्री० स्तनका अग्रभाग, चूचुक; स्तन।

चूचुक, चूचूक–पु० (सं०) स्तनका अग्रभाग।

चूज़ा–पु० (फा०) मुरगीका बच्चा।

चूडक–पु० (सं०) कुआँ।

चूडांत–पु० (सं०) चरमसीमा। अ० बहुत ज्यादा। वि० चरम सीमापर पहुँचा हुआ।

चूडा–स्त्री० (सं०) बालोंकी चोटी, शिखा; मोर या मुरगेके सिरपरकी चोटी; पहाड़की चोटी; मस्तक; कलाईपर पहननेका एक गहना, कड़ा, कंकण; कुआँ; चूड़ाकरण संस्कार; छतपरका कमरा। **–करण,–कर्म(न्)**–पु० हिंदू बच्चेका पहली बार सिर मुँड़ाकर चोटी रखानेका संस्कार, मुंडन। **–मणि**–पु० सीसफूल; घुँघची। वि० सर्वश्रेष्ठ, अग्रगण्य। **–रत्न**–पु० सीसफूल।

चड़ा–पु० चिड़वा।

चूडाम्ल–पु० (सं०) इमली।

चूडार–वि० (सं०) कलगीदार, चूड़ायुक्त।

चूडाल–पु० (सं०) सिर। वि० चूडायुक्त।

चूडाला–स्त्री० (सं०) सफेद घुँघची; नागरमोथा; उच्चटा नामक तृण।

चूड़िया–पु० एक धारीदार कपड़ा।

चूड़ी–स्त्री० काँच, लाख, सोने, हाथीदाँत आदिका घना वृत्ताकार आभूषण जिसे स्त्रियाँ कलाईपर पहनती हैं; चूड़ीकी शक़लकी चीज; छड़ आदिके सिरेपर बनायी जानेवाली चूड़ीकी शकलकी गहरी रेखाएँ; पुरजा; ग्रामोफोनका रेकर्ड; ऐनकका हलका; रेशम साफ करनेवालोंका एक औजार; चूड़ीकी शकलका गोदना। **–अन्तराल**–पु० (पिच आव स्क्रू) किसी पेच (स्क्रू)पर कटी चूड़ियोंके बीच की दूरी। यदि पेंचपर १ सेमीमें १० चूड़ियाँ(थ्रेड) कटी हों तब इसका चूड़ी-अन्तराल १।१० सेमी = १ मिमी होगा। **–दार**–वि० जिसमें चूड़ियाँ हों; जिसमें पास-पास कई लकीरें हों। पु० तंग और लंबी मोहरीका पाजामा जिसे पहननेपर चूड़ियों जैसी सिलवटें पड़ जाती हैं। **मु० चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना**–स्त्री के विधवा होनेपर चूड़ियाँ तोड़ देना। **–पहनना**–जनाना भेस बनाना; स्त्री बनना (व्यं०); विधवाका फिरसे ब्याह करना या किसीके घर बैठ जाना। **–पहनाना**–विधवासे ब्याह करना।

चूत–स्त्री० भग, योनि। पु० (सं०) आमका पेड़; गुदा।

चूतक–पु० (सं०) आमका पेड़; छोटा कुआँ।

चूतड़–पु० कमरके नीचे और जाँघोंके ऊपर पीठकी ओरका मांसल, गुलगुला भाग, नितंब। **मु०–दिखाना**–भाग जाना। **–पीटना, –बजाना**–बहुत खुश होना।

चूति–स्त्री० (सं०) गुदा।

चूतिया–वि० मूर्ख, बुद्धू। **–खाता,–चक्कर**–पु० चूतिया, मूर्ख व्यक्ति। **–पंथी**–स्त्री० बेसमझी, मूर्खता, बुद्धूपन।

चून–पु० आटा; चूर्ण; चुगने या खानेकी वस्तु–'··· चोंच दई जिन चूनहि दैहैं'–सुंदर०; एक तरहका थूहड़; दे० 'चूना'।

चूनर,–चूनरी–स्त्री० दे० 'चुनरी'।

चूना–अ० क्रि० टपकना, बूंद-बूंद करके नीचे गिरना; पके या सूखे फलका झड़ पड़ना; * गर्भपात होना। † वि० चूनेवाला। पु० पत्थर, कंकड़, सीप आदिको फूंककर प्रस्तुत किया जानेवाला तीक्ष्ण क्षार जो पानमें खाने और पलस्तर, सफेदी करने आदिके काम आता है। **–दानी**–स्त्री० चुनौटी। **–पत्थर**–पु० (लाइम स्टोन) ऐसी चट्टान जिसमें मुख्यतः कैल्शियम-कार्बोनेट मौजूद रहता है, जैसे खड़िया, संगमर्मर आदि। **मु० –फेरना**–सफेदी करना। **–लगाना**–बेवकूफ बनाना; नीचा दिखाना; हानि पहुँचाना।

चूनी–स्त्री० अन्न, खासकर चने आदिकी दालके छोटे-छोटे टुकड़े, चुन्नी, अन्नकण। **–भूसी**–स्त्री० चुन्नी और भूसी या चोकर; मोटा-झोटा अन्न।

चूपरी*–स्त्री० घी लगी हुई रोटी–'देखि बिरानी चूपरी मत ललचावै जीव'।

चूमना–स०क्रि० स्नेहप्रकाशके लिए होंठोंसे किसी (प्रियजन)के होठों, गालों आदिका स्पर्श करना, दवाना; सम्मान-प्रकाशके लिए किसी (गुरुजन)के हाथ या पाँवकों होंठोंसे छूना; चुंवन करना, वोसा लेना; विवाह या उपनयनमें कुटुंवकी स्त्रियों, लड़कियोंका वर या ब्रह्मचारीके कंधे, माथे आदिको दूव, चावलसे छूना ।

चूमा–पु० चूमनेकी क्रिया, चुंवन । **–चाटी**–स्त्री० चूमना चाटना, चुंवन-आलिगन ।

चूर–पु० किसी ठोस वस्तुका कूटने-पीसने या रेतनेसे वहुत वारीक टुकड़ोंमें हुआ रूपांतर, चूर्ण, धूल; चूरा । वि० डूवा हुआ, निमग्न; वेसुध, वदमस्त (नशेमें चूर); शिथिल, पस्त (थककर चूर होना) । मु० **–चूर करना**–तोड़-फोड़कर रेजा-रेजा या टुकड़े-टुकड़े कर देना; नष्ट कर देना ।

चूरण–पु० दे० चूर्ण ।

चूरन–पु० दे० 'चूर्ण'; घीमें भूना हुआ आटा जिसमें चीनी मिली हो; पाचक दवाओंका चूर्ण ।

चूरनहार–पु० एक तरहकी जंगली वेल जो दवाके काम आती है ।

चूरना*–स० क्रि० चूर करना, तोड़ना–'वादशाह गढ़ चूरा, चितउर भा इसलाम'–प० ।

चूरमा–पु० वाटी, वाजरेकी मोटी रोटी आदिको मसलकर और घी-शकर मिलाकर वनाया हुआ खाद्य ।

चूरा–पु० किसी वस्तुका चूर्ण रूप, वुरादा, धूल; चिड़वा; *हाथका, या पैरका कड़ा, वेरवा–'तन झँगली सिर लाल चौतनी कर चूरा दुहुँ पाइ'–सूर । * स्त्री० चोटी, शिखा, मस्तक । **–मणि***–पु० दे० 'चूडामणि' ।

चूर्ण–पु० (सं०) चूर, धूल; चूरन; गंधद्रव्योंका चूर्ण; अवीर; खड़िया; चूना । **–कार**–पु० पीसनेवाला; चूना फूंकनेवाला, एक वर्णसंकर जाति । **–कुंतल**–पु० अलक, जुल्फ । **–खंड**–पु० कंकड़ । **–पारद**–पु० शिगरफ; सिंदूर । **–मुष्टि**–स्त्री० मुट्ठीभर सुगंधित चूर्ण । **–योग**–पु० गंध-द्रव्योंका चूर्ण । **–शाकांक**–पु० गौरसुवर्ण नामक शाक ।

चूर्णक–पु० (सं०) सत्तू; सुगंधित चूर्ण; वह गद्य जो सरल, कर्णकटु वर्णोंसे रहित तथा अल्पसमास हो; एक वृक्ष; एक तरहका शालिधान्य ।

चूर्णन–पु० (सं०) चूर्ण करना ।

चूर्णहार–पु० एक तरहकी वेल, चूरनहार ।

चूर्णा–स्त्री० (सं०) आर्या छंदका एक भेद ।

चूर्णि–स्त्री० (सं०) चूर्णन; १०० कौड़ियोंका समूह; कार्षापण; पाणिनिके सूत्रोंका पतंजलिकृत महाभाष्य । **–कृत्**–पु० पतंजलि, भाष्यकार । **–दासी**–स्त्री० पीसनेवाली, पिसनहारी ।

चूर्णिका–स्त्री० (सं०) सत्तू; एक गद्य-शैली ।

चूर्णित–वि० (सं०) चूर किया हुआ; नष्ट, ध्वस्त ।

चूर्णी–स्त्री० (सं०) दे० 'चूर्णि' ।

चूर्णी(र्णिन्)–वि० (सं०) चूर्णसे वना हुआ या चूर्ण मिलाया हुआ ।

चूर्ति–स्त्री० (सं०) गमन ।

चूर्मा–पु० दे० 'चूरमा' ।

चूल–पु० (सं०) वाल; चोटी । स्त्री० (हिं०) लकड़ी, वाँस आदिका पतला सिरा जो दूसरी लकड़ी, वाँस आदिके छेदमें ठोका जाय; पुराने ढंगके किवाड़का नीचे-ऊपरका गोल लंवोतरा भाग जिसपर वह घूमा करता है । मु० **–(लें) ढीली होना**–वहुत थक जाना, पस्त हो जाना ।

चूला–स्त्री० (सं०) चोटी, शिखा; वालाखानेका कमरा, चंद्रशाला ।

चूलिका–पु० (सं०) लुचुई, लूची ।

चूलिका–स्त्री० (सं०) मुर्गेकी चोटी, हाथीकी कनपटी; नेपथ्यसे किसी घटनाके होनेकी सूचना (ना०) ।

चूल्हा–पु० मिट्टी, ईंटों आदिकी वनी हुई तीन वाजुओंवाली अँगीठी जिसपर खाना पकाते हैं । मु० **–जलना**–खाना पकना, पकाया जाना । **–न्यौतना**–सारे घरको भोजनका निमंत्रण देना । **–फूँकना**–खाना पकाना । **–(ल्हे)में जाय,–में पड़े**–नष्ट हो जाय, भाड़में जाय (शाप) । **–से निकलकर भट्ठीमें पड़ना**–छोटी मुसीवतसे निकलकर वड़ीमें फँसना ।

चूषण–पु० (सं०) चूसना ।

चूषा–स्त्री० (सं०) चूसना; हाथीका हौदा कसनेका तस्मा, तंग; पेटी, कमरवंद ।

चूष्य–वि० (सं०) जो चूसा जा सके । पु० चूसनेकी चीज ।

चूसना–स०क्रि० होंठों और जीभके योगसे रसपान करना; रस, सार निचोड़ लेना, खोखला कर देना; धनका हरण करना, शोषण करना ।

चूहड़–पु० दे० 'चूहड़ा' ।

चूहड़ा–पु० भंगी; डोम । (स्त्री० 'चूहड़ी' ।)

चूहर–पु० दे० 'चूहड़ा' ।

चूहरा*–पु० दे० 'चूहड़ा' ।

चूहा–पु० घरों, खेतोंमें विल वनाकर रहनेवाला एक चतुष्पद जंतु जिसके दाँत वहुत तेज होते हैं, मूषक । **–दंती**–स्त्री० एक तरहकी पहुँची । **–दान**–पु० चूहे फँसानेका खटकेदार पिंजड़ा । **–(हे)-दानी**–स्त्री० दे० 'चूहादान' ।

चें–स्त्री० चिड़ियोंकी वोली । **–चें**–स्त्री० चीं-चीं; वक-वक । **–पें**–स्त्री० चीं-चपड़; वकवाद । मु० **–वुलवाना**–हार मनवाना; इतना हैरान करना कि कोई हार मान ले । **–वोलना**–हैरान हो जाना; हार मान लेना ।

चेंच–पु० वरसातमें उगनेवाला एक साग; † मुंडनके समय शिखाके रूपमें छोड़ दिये गये वाल ।

चेंटुआ*–पु० चिड़ियाका वच्चा ।

चेंथरी†–स्त्री० सिरका ऊपरी भाग, खोपड़ी (चेंथरीके वाल नोचना–वुंदेल) ।

चेंप–स्त्री० दे० चेप ।

चेंवर–पु० (अं०) कमरा; जजका कमरा जिसमें वह ऐसे मुकदमे सुनता है जिन्हें अदालतमें सुननेकी जरूरत न हो; सभागृह; परिषद् । **–आव् कामर्स**–पु० नगर, प्रदेश-विशेषके व्यापारिवर्गकी हितरक्षाके लिए संघटित मंडल, व्यापार-मंडल ।

चेक–पु० चारखाना (अं०) किसी वंकके नाम किसी व्यक्ति, संस्था या वाहकको रुपया देनेका लिखित आदेश; । **–वुक**–स्त्री० चेक-वही । **आदेशी**–वह चेक जिसपर वह व्यक्ति, जिसके नाम चेक काटा गया हो, अपना हस्ताक्षर कर यह लिखित आदेश दे कि उसका भुगतान अमुक व्यक्तिको कर दिया जाय । **उत्तरतिथित**–जिसपर वादकी तिथि या तारीख पड़ी हो । **खुला**–कोरा चेक, जिसपर धनराशिकी जगह रिक्त छोड़ दी गयी हो । **गतावधिक या पुराना**–'स्टेल चेक' जिसके भुगतानकी मीयाद वीत चुकी हो । **पूर्व-तारीखी, पूर्व दिनांकित**–जिसपर पहलेकी तारीख पड़ी हो । मु० **–काटना**–चेक लिखकर देना ।

चेकितान–पु० (सं०) शिव; महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़नेवाला एक यादव नरेश । वि० वहुत ज्ञानवान् ।

चेचक–स्त्री० एक छुतहा रोग जिसमें ज्वरके साथ सारी देहमें दाने निकल आते हैं, शीतला । **–रू**–वि० जिसके मुंहपर चेचकके दाग हों ।

चेजा*–पु० छेद, सूराख ।

चेजारा–पु० चुनाईका काम करनेवाला, राज–'कोई चेजारा चिणि गया मिल्या न दूजी वार'–साखी ।

चेट–पु० (सं०) दास, सेवक; पति; नायक और नायिकाको मिलानेवाला; भाँड़; एक मछली ।

चेटक–पु० इंद्रजाल, वाजीगरी; तमाशा; जादू; (सं०) दास, सेवक; उपपति; नायकको नायिकासे मिलानेवाला चतुर सेवक; चसका; शीघ्रता ।

चेटकनी*–स्त्री० चेटिका ।

चेटका–स्त्री० श्मशान; चिता ।

चेटकी–पु० इंद्रजाल करनेवाला, वाजीगर ।

चेटिका–स्त्री० (सं०) दासी, लौंडी ।

चेटिकी*–स्त्री० चेटिका ।

चेटिया*–पु० छात्र, शिष्य ।

चेटी–स्त्री० (सं०) दासी ।

चेटुवा–पु० चिड़ियांका वच्चा ।

चेड–पु० (सं०) दे० 'चेट'।

चेडक–पु० (सं०) दे० 'चेटक'।

चेडिका, चेडी–स्त्री० (सं०) दे० 'चेटिका', 'चेटी'।

चेतःपीडा–स्त्री० (सं०) दुःख, शोक।

चेत(स्)–पु० (सं०) होश, संज्ञा; याद; ज्ञान; चित्त; मन; इच्छा; सावधानी।

चेतक–वि० (सं०) चेत करानेवाला; चेतन। * जादूभरा–'घात लै अनूठी भरै चेतक चितौन-मूठी'–घन०। पु० दे० 'सचेतक' (ह्विप); महाराणा प्रतापके घोड़ेका नाम।

चेतकी–स्त्री० (सं०) हड़, हरीतकी; चमेली; एक रागिनी।

चेतन–पु० (सं०) आत्मा, जीव; परमेश्वर; मनुष्य; प्राणी; मन। वि० प्राणयुक्त, चैतन्य-विशिष्ट।

चेतनकी–स्त्री० (सं०) हड़।

चेतना–अ० क्रि० होशमें आना; बुद्धि-विवेकसे काम लेना, सावधान होना। स०क्रि० सोचना, विचारना (भला चेतना, आगम चेतना)। स्त्री० (सं०) चैतन्य; ज्ञान; होश; याद; बुद्धि; चेत; जीवनी शक्ति, जीवन।

चेतनीय–वि० (सं०) जानने योग्य, ज्ञेय।

चेतनीया–स्त्री० (सं०) ऋद्धि नामकी लता।

चेतवनि*–स्त्री० चितवन; चितावनी।

चेतव्य–वि० (सं०) चयन करने योग्य।

चेता†–पु० चेत, होश, याद।

चेतावनी–स्त्री० सावधान करने, किसी हानिकर कार्यसे रोकनेके लिए कही गयी बात, तंबीह, खतरेकी पूर्व सूचना।

चेतिका*–स्त्री० चिता।

चेतो–'चेतस्'का समासगत रूप। **–जन्मा(न्मन्)–भव,–भू**–पु० प्रणय; कामदेव। **–विकार**–पु० मानसिक विकार। **–हर**–वि० चित्त हरण करनेवाला।

चेत्–अ० (सं०) यदि, अगर; कदाचित्।

चेत्य–वि० (सं०) ज्ञातव्य।

चेदि–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद; वहाँके निवासी; वहाँका राजा। **–पति,–राज**–पु० उपरिचर वसु; शिशुपाल।

चेन–स्त्री० (अं०) जंजीर, सिकड़ी।

चेना–पु० कंगनी या साँवाँकी जातिका एक मोटा अनाज।

चेप–पु० गाढ़ा, लसदार रस; लासा; * उत्साह। **–दार**–वि० चेपवाला, लसदार।

चेबुला–पु० एक पेड़।

चेय–वि० (सं०) चयन करने योग्य, चयनीय।

चेयर–स्त्री० (अं०) कुरसी; सभापतिका पद, आसन; (ला०) सभापति, अध्यक्ष; विद्यापीठमें विषय-विशेषके अध्यापक-(प्रोफेसर)का पद। **–मैन**–पु० कमेटी, म्युनिसिपल बोर्ड आदिका स्थायी सभापति, अध्यक्ष।

चेर*–पु० दास, सेवक।

चेरा*–पु० दास, सेवक; चेला, शिष्य।

चेराई*–स्त्री० गुलामी, चाकरी; शागिर्दी।

चेरि, चेरी*–स्त्री० सेविका, दासी।

चेरू–पु० एक पुरानी जाति; एक तरहका हिरण।

चेल–पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र। वि० अधम (समासांतमें)। **–गंगा**–स्त्री० महाभारतमें वर्णित दक्षिण भारतकी एक नदी। **–प्रक्षालक**–पु० धोबी।

चेलकाई*–स्त्री० दे० 'चेलहाई'।

चेलबा†–स्त्री० दे० 'चेल्हवा'।

चेलहाई†–स्त्री० चेलोंका समूह; चेला बनानेका व्यवसाय; चेलोंके यहाँ घूमकर भेंट, पूजा लेना।

चेला–पु० शिष्य, शागिर्द; दीक्षा, गुरुमंत्र लेनेवाला। स्त्री० चेल्हवा मछली। मु० **–मूँड़ना**–चेला बनाना।

चेलाना, चेलाल–पु० (सं०) तरबूजका पौधा।

चेलाशक–पु० (सं०) कपड़े आदि खानेवाला कीड़ा।

चेलिका–स्त्री० (सं०) वस्त्र-विशेष; अँगिया, चोली।

चेलिन, चेली–स्त्री० गुरुदीक्षा या उपदेश प्राप्त करनेवाली स्त्री।

चेलुक–पु० (सं०) बौद्ध भिक्षुका चेला।

चेल्हवा–स्त्री० एक छोटी मछली।

चेवी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

चेष्टक–पु० (सं०) चेष्टा करनेवाला; एक रतिबंध।

चेष्टन–पु० (सं०) चेष्टा करना।

चेष्टा–स्त्री० (सं०) गति, हरकत; क्रियासाधक कायिक व्यापार; मनका भाव बतानेवाली अंगोंकी गति, भावभंगी; प्रयत्न, कोशिश। **–नाश**–पु० प्रलय; गतिहीन होना। **–निरूपण**–पु० किसी व्यक्तिकी गति-विधि देखना। **–बल** पु० ग्रहका स्थिति-विशेषमें अधिक बलवान् हो जाना।

चेष्टित–वि० (सं०) चेष्टायुक्त। पु० चेष्टा।

चेस–पु० (अं०) शतरंज; वह लोहेका फ्रेम जिसमें कंपोज किये हुए टाइप छापनेके लिए कसते हैं।

चेहरई–स्त्री० चित्रमें चेहरेकी रंगत; वह छड़ी जिसपर चेहरा बना हो। पु० हलका गुलाबी रंग।

चेहरा–पु० (फा०) सिरका सामनेका, माथेसे लगाकर ठुड्डीतकका भाग, मुखमंडल; शकल; सामनेका रुख, आगा; किसी देवदानवकी धातु, मिट्टी आदिकी मुखाकृति (लीला या स्वाँगमें प्रयुक्त), मुखौटा; रजिस्टर आदिमें लिखा जानेवाला हुलिया। **–ए-शाही**–वि० (वह सिक्का) जिसपर शाही चेहरा बना हो। पु० ऐसी मुद्रा। **–कुशा**–पु० चित्रकार। **–कुशाई**–स्त्री० चित्रकारी। **–दार**–वि०, पु० दे० 'चेहरा-ए-शाही'। **–नवीस**–पु० हुलिया लिखनेवाला। **–बंदी**–स्त्री० हुलिया। **–मुहरा**–पु० सूरत-शकल। मु०**–उतरना**–चेहरेसे सुस्ती, उदासी, गहरी चिंता आदि प्रकट होना, चेहरेपर तेज, प्रफुल्लता न रहना। **–पीला हो जाना**–रोग, भय आदिके कारण चेहरेपर पीलेपनकी झलक आ जाना। **–बिगाड़ना**–इतना मारना कि चेहरेका हुलिया बदल जाय। **–लिखाना**–(सेनामें) नौकरी करना। **–सफेद हो जाना**–रोग या भयके कारण चेहरेपर सफेदी आ जाना, उसकी चमक, सुर्खीका गायब हो जाना। **–(रे)पर हवाइयाँ उड़ना**–भय, घबराहटसे चेहरेका रंग उड़ जाना।

चेहल–वि० (फा०) चालीस। **–क़दमी**–स्त्री० धीरे-धीरे थोड़ा-सा टहलना; मुसलमानोंकी अंत्येष्टिकी एक रस्म।

चेहलुम–वि० (फा०) चालीसवाँ। पु० मुसलमानोंमें मृत्युके चालीसवें दिनका फातिहा और भोज; मुहर्रमके चालीसवें दिन होनेवाला करबलाके शहीदोंका फातिहा।

चैंपियन–पु० (अं०) खेलमें सब प्रतियोगियोंको हरा देनेवाला, खेलविजेता, सर्वजेता। **–शिप**–स्त्री० सर्वजेतृत्व, खेलविजेतृत्व।

चै*–पु० दे० 'चय'।

चैकितान–वि० (सं०) चेकितान वंशमें उत्पन्न।

चैत–पु० चैत्र मास, फाल्गुनके बादका महीना।

चैतन्य–पु० (सं०) चेतना, ज्ञान, संवित्; आत्मा; चित्स्वरूप परमात्मा; प्रकृति; वैष्णवोंके एक संप्रदायके प्रवर्तक कृष्ण चैतन्य गोस्वामी, गौरांग महाप्रभु। **–चरितामृत**–पु० कृष्णदास कविराज-रचित चैतन्य देवका जीवनचरित। **–भैरवी**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक भैरवी। **–वाहिनी नाडी**–स्त्री० इंद्रियोंसे प्राप्त ज्ञानको मस्तिष्कमें ले जानेवाली नाडी। **–संप्रदाय**–पु० चैतन्य देव द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय।

चैता–पु० एक पक्षी; चैती गीत।

चैती–वि० चैतमें होनेवाला (चैती गुलाब)। स्त्री० चैतमें पकनेवाली फसल, रबी; एक तरहका चलता गाना।

चैत्त, चैत्तिक–वि० (सं०) चित्त-संबंधी, मानसिक।

चैत्य–वि० (सं०) चिता संबंधी। पु० घर; देवालय; समाधि-मंदिर; यज्ञशाला; गाँवकी सीमापरका वृक्षसमूह; बुद्धमूर्ति; बौद्ध भिक्षु; बौद्ध विहार; पीपल; बेलका पेड़। **–तरु,–द्रुम,–वृक्ष**–पु० पीपल। **–पाल**–पु० चैत्यका रक्षक। **–मुख**–पु० कमंडलु। **–यज्ञ**–पु० एक वैदिक यज्ञ। **–वंदन**–पु० बौद्धों या जैनियोंकी मूर्ति; विहार; देव-मंदिरके धनका रक्षण। **–विहार**–पु० बौद्ध या जैन मठ। **–स्थान**–पु० वह स्थान जहाँ बुद्धदेवकी मूर्ति हो; पवित्र स्थान।

चैत्यक–पु० (सं०) पीपल; राजगृहके पासका एक पर्वत।

चैत्र–पु० (सं०) वह चांद्र मास जिसकी पूर्णिमा चित्रा नक्षत्रमें पड़ती है, चैत; सात वर्ष-पर्वतोंमेंसे एक; देवालय, चैत्य; बौद्ध भिक्षु; चित्रा नक्षत्रके गर्भसे उत्पन्न बुधका एक बेटा। **–गौडी**–स्त्री० एक रागिनी। **–मख**–पु० चैत्र मासमें मदनत्रयोदशी आदिको होनेवाला वसंतोत्सव। **–सख**–पु० कामदेव।

चैत्रक–पु० (सं०) चैत्र मास।

चैत्ररथ, चैत्ररथ्य–पु० (सं०) चित्ररथ गंधर्वका बनाया हुआ कुबेरका उद्यान।

चैत्रावली–स्त्री० (सं०) चैत्रकी पूर्णिमा; चैत्र-शुक्ला त्रयोदशी।

चैत्रि, चैत्रिक–पु० (सं०) चैत्र मास।

चैत्री–स्त्री० (सं०) चैत्रकी पूर्णिमा।

चैत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) चैत्र मास।

चैदिक–वि० (सं०) चेदि देशका; चेदि देशमें उत्पन्न। (स्त्री०, 'चैदिका', 'चैदिकी'।)

चैद्य–पु० (सं०) शिशुपाल।

चैन–पु० थकान या कष्ट दूर होनेपर मिलनेवाला सुख, आराम; कल या मानसिक शांति। मु० **–की बंसी बजाना**–बड़े आनंदसे दिन बिताना। **–पड़ना**–कल मिलना। **–से कटना,–से गुजरना**–आरामसे जिंदगी बसर होना।

चैनुआ†–पु० चिड़ियाका बच्चा (बुंदेल०)।

चैपला–पु० एक चिड़िया।

चैयाँ*–पु० बाँह।

चैल–पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र; पहनावा; महीना। वि० वस्त्र-निर्मित। **–धाव**–पु० धोबी।

चैलक–पु० (सं०) बौद्ध भिक्षु; एक वर्णसंकर जाति।

चैला–पु० जलानेके लिए चिरी हुई लकड़ी, फट्ठा।

चैलिक–पु० (सं०) वस्त्रखंड।

चैली–स्त्री० छोटा चैला; गरमीके कारण नाकसे निकलनेवाला जमा हुआ खून।

चोंक*–स्त्री० चुंबनका चिह्न।

चोंका†–पु० चूसने, होंठोंसे रसपान करनेकी क्रिया। मु० **–पीना**–बच्चोंका माँका स्तन-पान करना।

चोंगा–पु० बाँसकी खोखली नली जिसका एक सिरा बंद और दूसरा खुला हो; कागज आदिकी बनी हुई वैसी नली; टेलीफोन-यंत्रका ऊपरवाला वह हिस्सा जिसे कानमें लगाकर दूरसे बोलनेवाले किसी व्यक्तिकी बात सुनी जाती तथा उससे बातचीत की जाती है (टेलीफोन रिसीवर)।

चोंगी–स्त्री० भाथीकी नली जिससे होकर उसकी हवा निकलती है; छोटा चोंगा।

चोंघना*–स० क्रि० चुगना।

चोंच–स्त्री० चिड़ियोंके मुँहका अगला, नोकदार भाग, ठोर, टोंट; मुँह (व्यं०)। मु० **–बंद करना**–मुँह बंद करना, चुप हो जाना। **दो-दो–(चें) होना**–कहा-सुनी होना।

चोंचला–पु० दे० 'चोचला'।

चोंटना*–स० क्रि० हाथकी चुटकीसे फूल आदि तोड़ना, खोटना; चोंथना, नोचना।

चोंटली–स्त्री० सफेद घुंघची।

चोंड़ा–पु० सिंचाईके लिए खोदा गया छोटा कच्चा कुआँ; † सिर; झोंटा।

चोंड़ी–स्त्री० साड़ी।

चोंथ–स्त्री० गाय-बैल आदिका उतना गोबर जितना वह एक बारमें करे।

चोंथना†–स० क्रि० खोंटना; नोचना; चीथना।

चोंधर–वि० बहुत छोटी आँखोंवाला; मूर्ख।

चोंप–पु० चिपकनेवाली वस्तु, लासा; दे० 'चोप'।

चोंहका†–पु० गाय, भैंस आदिको दुहनेके पहले उनके बच्चेको दूध चुसाना; इस तरह चुसाया हुआ दूध; होंठ लगाकर रस चूसनेकी क्रिया।

चोआ–पु० कई गंधद्रव्योंको मिलाकर बनाया जानेवाला एक सुगंधित द्रव्य; किसी चीजकी कमी पूरी करनेके लिए उसके साथ रखी जानेवाली चीज; बाटकी कमी पूरी करनेके लिए पलड़ेपर रखा जानेवाला कंकड़ आदि; दे० 'चोटा'।

चोईं–स्त्री० मछलीके शरीरके खुरंड जैसे छोटे-छोटे गोल टुकड़े।

चोई–स्त्री० भिगोकर मलनेसे निकलनेवाला दालका छिलका।

चोक–पु० (सं०) भड़भाँड़की जड़ जो दवाके काम आती है।

चोकर–पु० गेहूँ, जौ आदिका छिलका जो आटेको छाननेसे छलनीमें रह जाता है।

चोका–वि० चोखा, अच्छा, साफ। पु० दे० 'चोंहका'।

चोक्ष–वि० (सं०) शुद्ध, स्वच्छ; सच्चा; दक्ष, चतुर; खरा; तीखा; तेज।

चोख*–स्त्री० तेजी, फुरती। वि० दे० 'चोखा'।

चोखना†–स० क्रि० थनसे मुँह लगाकर दूध पीना, चूसना।

चोखनि*–स्त्री० चोखनेकी क्रिया।

चोखा–वि० खालिस, बेमेल; सच्चा, खरा; चतुर; तीखी धारवाला, तेज; बढ़िया, उत्तम। पु० आलू, बैंगन आदिका भरता।

चोखाई–स्त्री० चोखापन; चूसनेकी क्रिया।

चोखाना–स० क्रि० दे० 'चुखाना'।

चोगद–पु० दे० 'चुग़द'।

चोगर–पु० उल्लूकी-सी आँखोंवाला घोड़ा।

चोगा–पु० चुगा, चिड़ियोंका चारा।

चोग़ा–पु० (फा०) लंबा, ढीला-ढाला अँगरखा जिसका आगा खुला होता है, 'गाउन'।

चोच–पु० (सं०) छाल; खाल; नारियल; फलका वह अंश जो खाने योग्य न हो; तेजपात; तालफल; केला।

चोचक–पु० (सं०) वल्कल, छाल।

चोचला–पु० नखरा, हाव-भाव। **–(ले)बाज़**–वि० नखरेबाज। **–बाज़ी**–स्त्री० चोचला करना, नखरेबाजी।

चोज–पु० चमत्कारपूर्ण उक्ति; व्यंग्यभरी हँसीकी बात।

चोट–स्त्री० आघात, प्रहार; वार; आघातसे या कटफट जानेसे हुआ घाव; हिंस्र पशुका आक्रमण; क्लेश, व्यथा; संताप; व्यंग्य, कटाक्ष; दफा; हानि पहुँचानेके लिए चली हुई चाल, दगा। **–चपेट**–स्त्री० घाव, ठेस। मु० **–उभरना**–चोट खाये हुए अंगका ठंढ लगने आदिसे फिर सूज आना, दर्द करना। **–करना**–वार, हमला करना; (हिंस्र जंतुका) काटना, डँसना। **–खाना**–घायल होना; आघात सहना। **–पर चोट पड़ना**–सदमेपर सदमा बैठना; हानिपर हानि होना। **–(टें)चलना**–दो आदमियोंका एक-दूसरे पर (शब्द या शस्त्रसे) वार करना।

चोटना-पोटना*–स० क्रि० मनाना, फुसलाना।

चोटहा–वि० जिसपर चोटका चिह्न हो। (स्त्री० 'चोटही'।)

चोटा–पु० राबके ऊपर उठ आनेवाला शीरा, जूसी।

चोटार*–वि० चोट करनेवाला; चोट खाया हुआ।

चोटारना*–स० क्रि० चोट करना।

चोटिका–स्त्री० (सं०) साया, लहँगा।

चोटिया†–स्त्री० चोटी, बालोंकी लट। पु० पाठशालामें पढ़नेवाला छात्र।

चोटियाना†–स० क्रि० चोट पहुँचाना; चोटी पकड़ना; चोटी गूँथना।

चोटी–स्त्री० (सं०) लहँगा, साया आदि; (हिं०) (हिंदुओंके) सिरके बीचोबीच छोड़ रखे हुए लंबे बाल, शिखा; स्त्रीके सिरके गुँथे हुए और पीठकी ओर या अगल-बगल लटकनेवाले बाल; वह रंगीन डोरा जो चोटी बाँधनेके काम आता है; चिड़ियोंके सिरपरकी कलगी; एक गहना जो जूड़ेमें बाँधकर पहना जाता है; पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, शिखर; (ला०) उत्कर्षकी सीमा। **–दार**–वि० चोटीवाला। **–वाला**–वि० जिसके चोटी हो। पु० भूत-प्रेत। मु०**–कटाना**–वसमें होना, गुलाम बनना। **–कतरना**–वसमें करना, अधीन करना। **–करना**–सिरके बाल सँवारकर गूँथना। **–का**–औवल दरजेका, सर्वोत्कृष्ट। **–दबाना,–हाथमें होना**–दबावमें होना, काबूमें होना।

चोटी-पोटी*–वि० चिकनी-चुपड़ी, बनावटी (बात)।

चोट्टा–पु० चोर, एक गाली ।

चोड–पु० (सं०) दुपट्टा, उपरना; कुरती; चोल देश ।

चोडक–पु० (सं०) कुरता; अँगिया ।

चोडा–स्त्री० (सं०) बड़ी गोरखमुंडी.।

चोडी–स्त्री० (सं०) साड़ी; कुरसी ।

चोढ़*–पु० चाव, उमंग ।

चोथ–पु० दे० 'चौंथ' ।

चोद–वि० (सं०) प्रेरक । पु० चाबुक, साँटी ।

चोदक–पु० (सं०) कर्ममें प्रवृत्त करनेवाला विधिवाक्य । वि० प्रेरक ।

चोदक्कड़–पु० अत्यधिक संभोग करानेवाला ।

चोदन–पु० (सं०) प्रेरणा; प्रवर्तन; विधि; उकसाना ।

चोदना–स० क्रि० मैथुन करना, संभोग करना । स्त्री० (सं०) प्रेरणा; प्रवर्तन; विधि, शास्त्रादेश ।

चोदवैया–वि० संभोग करनेवाला ।

चोदाई–स्त्री० संभोगकी क्रिया या भाव ।

चोदास–स्त्री० संभोगकी प्रबल कामना ।

चोदासा–वि० जो संभोगकी प्रबल कामनासे अभिभूत हो । (स्त्री० 'चोदासी' ।)

चोदित–वि० (सं०) प्रेरित; प्रेषित; आदिष्ट; तर्करूपमें पेश किया हुआ ।

चोदू–पु० संभोग करनेवाला ।

चोद्य–वि० (सं०) प्रेरणा करने योग्य; प्रेषणीय । पु० प्रश्न, पूर्व-पक्ष ।

चोप–पु० आमकी ढेपनी तोड़नेसे निकलनेवाला तेजाबी रस । स्त्री० दे० 'चोब'; * चाह; चाव; उमंग; बढ़ावा 'मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंह किसोरहिं 'चोप'–रामा० । **–दार**–पु० दे० 'चोबदार' ।

चोपन–पु० (सं०) हिलना-डुलना; मंद गतिसे जाना ।

चोपना*–अ० क्रि० मोहित होना; आसक्त होना ।

चोपी*–वि० चाव, चाह, उत्साह रखनेवाला । † स्त्री० आमकी ढेपनीपरसे निकलनेवाला तेजाबी रस ।

चोब–स्त्री० (फा०) लकड़ी; डंडा, सोंटा; खेमेका डंडा; ढोल, नगाड़ा आदि बजानेकी लकड़ी; सोना या चाँदी मढ़ा हुआ डंडा, असा । **–दस्त,–दस्ती**–स्त्री० लाठी । **–दार**–पु० असाबरदार ।

चोबा–पु० डंडा, लाठी; लोहेकी खूँटी; मीठे चावल जिनमें मेवे आदि पड़े हों ।

चोबी–वि० (फा०) लकड़ीका बना हुआ; खंभेवाला (दोचोबी खेमा) ।

चोभा–पु० दवाओंकी पोटली जिससे आँख या और कोई पीड़ित अंग सेंका जाय; कोंचनी । मु० **–देना**–दवाओंकी पोटलीसे सेंकना ।

चोभाना†–स० क्रि० चुभाना ।

चोम*–पु० जोम, घमंड ।

चोया–पु० दे० 'चोआ' ।

चोर–पु० (सं०) चोरी करनेवाला, छिपकर दूसरेकी चीज हथिया लेनेवाला, तस्कर; मोह लेनेवाला; उचितसे कम काम करने, कम माल देनेवाला, बेईमान; छिपकर काम करनेवाला; जो मनका भाव प्रकट न होने दे; मनमें छिपी बुराई, दुर्भाव; घाव आदिके भीतर छिपी विकृति, खराबी; खेलमें हारनेवाला लड़का जिससे और लड़के दाँव लें; ताश, गंजीफेका पत्ता जिसे कोई खिलाड़ी दबाये बैठा हो; एक गंध-द्रव्य, चोरक । वि० (हिं०) छिपा हुआ, गुप्त; जिसका बाह्यरूप धोखा देनेवाला हो । (चोर दरवाजा, चोर महल इत्यादि) । **–कंटक**–पु० चोरक नामका गंधद्रव्य । **–कट**–पु० (हिं०) चोर, चोट्टा । **–कर्म(न्)**–पु० चोरी । **–खाना**–पु० (हिं०) संदूक, आलमारीका छिपा खाना । **–खिड़की**–स्त्री० (हिं०) छोटा चोर दरवाजा । **–गढ़ा**–पु० (हिं०) छिपा हुआ गढ़ा । **–गली**–स्त्री० (हिं०) सँकरी गली जिसका पता कुछ ही लोगोंको हो; गलीके भीतर गली; पाजामेकी मियानी । **–चकार**–पु० (हिं०) चोर, उचक्का । **–छिद्र**–पु० संधि, दरार । **–जमीन**–स्त्री० (हिं०) वह दलदल जो ऊपरसे देखनेमें सूखा, कड़ी जमीन-सा जान पड़े । **–ताला**–पु० (हिं०) किवाड़के अंदर लगा हुआ गुप्त ताला जिसका पता ऊपरसे न लगे; वह ताला जो अनोखे, रहस्यमय ढंगसे खोला जाय । **–थन**–वि० स्त्री० (हिं०) दूहते समय दूध चुरा रखनेवाली । **–दंत**–पु० दे० 'चोरदंता' । **–दंता,–दाँत**–पु० (हिं०) शिशुके तालूमें निकलनेवाली दाँत जैसी चीज़ जिसके कारण उसे बड़ा कष्ट होता है । इसे औरतें प्रायः गरम राखसे दबा देती हैं । **–दरवाजा**–पु० (हिं०) मकानके पिछवाड़ेका छोटा दरवाजा जिसका पता कुछ खास लोगोंको ही हो । **–द्वार**–पु० चोर दरवाजा । **–धज**–पु० (हिं०) तलवारसे लड़नेका एक ढंग । **–पहरा**–पु० (हिं०) गुप्त पहरा । **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० शंखाहुली । **–पेट**–पु० (हिं०) ऐसा पेट जिसमें गर्भका पता अरसेतक न लगे; ऐसे आदमीका पेट जिसकी खूराक तगड़ी हो, यद्यपि देखनेमें उसका पेट छोटा हो । **–बजारिया**–पु० चोरबाजारी द्वारा रुपया कमानेवाला । **–बदन**–पु० (हिं०) वह मनुष्य जो ऊपरसे कमजोर मालूम हो, पर वस्तुतः बलवान् हो । **–बाज़ार**–पु० (हिं०) वह दुकान, स्थान जहाँ चोरीसे, नाजायज तरीकेसे माल बेचा, खरीदा जाय । **–बालू**–स्त्री०, पु० (हिं०) वह रेता जिसके नीचे दलदल हो । **–महल**–पु० (हिं०) वह महल जिसमें किसी राजा, रईसकी रखेलियाँ रहें । **–मिहीचनी***–स्त्री० आँख-मिचौनी । **–मूँग**–पु० (हिं०) मूँगका वह कड़ा दाना जो न दलनेसे दला जाय और न पकानेसे गले । **–रस्ता**–पु० (हिं०) चोरगली । **–रूप**–पु० चतुर चोर । **–सीढ़ी**–स्त्री० (हिं०) छिपी सीढ़ी । **–हटिया**†–पु० चोरोंसे माल खरीदनेवाला दुकानदार ।

चोरक–पु० (सं०) असबरग; एक तरहका गठिवन ।

चोरटा–पु० चोर । (स्त्री० चोरटी' ।)

चोरना*–स० क्रि० चोरी करना ।

चोरहुली–स्त्री० चोरपुष्पी ।

चोरा–स्त्री० (सं०) शंखाहुली, शंखपुष्पी ।

चोराख्य–पु० (सं०) चोरपुष्पी ।

चोरा-चोरी*–अ० दे० 'चोरी-चोरी' ।

चोराना–स० क्रि० दे० 'चुराना' ।

चोरिका–स्त्री० (सं०) चोरी ।

चोरित–वि० (सं०) चुराया हुआ ।

चोरितक–पु० (सं०) छोटी-मोटी चीजोंकी चोरी; चुरायी हुई चीज ।

चोरी–स्त्री० चोरका काम, चुरानेकी क्रिया; छिपाव, दुराव; ठगी, धोखेबाजी । **–चोरी**–अ० छिपे-छिपे; छिपाकर, बिना किसीको बताये । **–छिनाला**–पु० चोरी और व्यभिचार; दूषित कर्म । **–का काम,–की बात**–छिपाकर करनेका काम, बात । **–से**–छिपाकर । मु० **–और सीनाजोरी**–चोरी करना और ऊपरसे डाँट भी दिखाना या जबरदस्ती करना ।

चोलंडुक, चोलोंडुक–पु० (सं०) पगड़ी ।

चोल–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक प्राचीन जनपद, आधुनिक तंजौर; उक्त जनपदका निवासी; चोला; मजीठ; वल्कल; कवच । स्त्री० चोली–'पास वस्त्र ढाँकै नहीं क्या करै बपुरी चोल' –साखी । **–खंड**–पु० एक चोलीके ब्योंत भरका जरदोजीके कामका कपड़ा । **–रंग**–पु० मजीठका रंग । **–सुपारी**–स्त्री० (हिं०) चिकनी सुपारी ।

चोलक–पु० (सं०) चोली; कवच; छाल ।

चोलकी(किन्)–पु० (सं०) कवचधारी सैनिक; बाँसका कल्ला; नारंगीका पेड़; कलाई ।

चोलना*–पु० साधुओंका लंबा कुरता ।

चोला–पु० मुल्लाओं, फकीरों आदिके पहननेका लंबा, ढीला-ढाला कुरता; शिशुको पहली बार पहनाया जानेवाला कपड़ा; अँगरखेका ऊपरका भाग; देह, शरीर । मु० **–बदलना**–एक शरीर त्यागकर दूसरा धारण करना; रूप बदलना । **–(ले) दामनका साथ**–कभी न छूटनेवाला साथ ।

चोली–स्त्री० (सं०) वह अँगिया जिसमें पीछेकी ओर बंद न हो; चोला । **–मार्ग**–पु० वाममार्गका एक भेद । मु०**–दामनका साथ**

–कभी न छूटनेवाला साथ ।

चोल्ला*–पु० दे० 'चोला' ।

चोवा–पु० दे० 'चोआ' ।

चोष–पु० (सं०) चोषण; एक रोग जिसमें रोगीकी बगलमें बहुत तेज जलन होती है; सूखना ।

चोषक–पु० (सं०) चूसनेवाला ।

चोषण–पु० (सं०) चूसना ।

चोषना*–स० क्रि० दे० 'चोखना' ।

चोष्य–वि० (सं०) चूसने योग्य । पु० चूसकर खायी जानेवाली चीज ।

चोस्क–पु० (सं०) बहुत बढ़िया घोड़ा ।

चौंक–स्त्री० चौंकनेका भाव ।

चौंकना–अ० क्रि० भय, विस्मय या पीड़ाकी अचानक अनुभूतिसे चंचल हो जाना, हिल, काँप उठना; सोतेसे यकायक जाग उठना; चौकन्ना होना; झिझकना, भड़कना; चकित होना ।

चौंकाना–स० क्रि० दूसरेके चौंकनेका कारण होना ।

चौंटना*–स० क्रि० चुटकीसे तोड़ना (फूल आदि)–'मनु लुटि गो लौटनु चढ़त, चौंटत ऊंचे फूल'–वि० ।

चौंटली–स्त्री० सफेद घुँघची ।

चौंडेल–पु० वह डोला जिसपर पर्दा पड़ा हो ।

चौंतिस–वि०, पु० दे० 'चौंतीस' ।

चौंतीस–वि० तीस और चार । पु० तीस और चारकी संख्या, ३४ ।

चौंध–स्त्री० चकाचौंध ।

चौंधना–अ० क्रि० (बिजलीका) चमकना, कौंधना ।

चौंधियाना–अ० क्रि० चकाचौंध होना ।

चौंधी*–स्त्री० चकाचौंध ।

चौंप–स्त्री० इच्छा–'कबीर सोया क्या करै जागनकी करु चौंप' –साखी ।

चौंर–पु० चँवर; झालर; फुँदना; भड़भाँड़की जड़ । **–गाय**–स्त्री० सुरा गाय । **मु० –ढलना,–ढुरना**–सिरपर चँवर झला जाना ।

चौंरा–पु० अन्न रखनेका गड्ढा; सफेद पूँछवाला बैल ।

चौंराना*–स० क्रि० चँवर डुलाना; बुहारना ।

चौंरी–स्त्री० घोड़ेकी पूँछके बालोंका गुच्छा जिससे घुड़सवार मक्खियाँ उड़ानेका काम लेते हैं; चोटी बाँधनेकी डोरी; सफेद पूँछवाली गाय ।

चौंसठ–वि० साठ और चार । पु० चौंसठकी संख्या, ६४ ।

चौ–पु० मोती आदि तौलनेका बाट । वि० चार (केवल समासमें व्यवहृत) । **–आई,–बाई,–वाई**–स्त्री० चारों दिशाओंसे, कभी इस ओर कभी उस दिशासे बहनेवाली हवा; अफवाह । **–कठ**–स्त्री० दे० 'चौखट' । **–कठा**–पु० दे० 'चौखटा' । **–कड़**–वि० बढ़िया । **–कड़ा**–पु० दो-दो मोतियोंवाली बाली; बँटाईकी एक रीति जिसमें जमीनके मालिकको चतुर्थांश मिलता है । **–कड़ी**–स्त्री० चार चीजोंका समूह; चार आदमियोंकी मंडली; चार घोड़ोंकी गाड़ी; चौपायोंकी वह दौड़ या छलाँग जिसमें चारों पाँव एक साथ फेंके जायँ; हिरन आदिकी कुलाँच (भरना); चार युगोंका समूह; चारपाईकी वह बुनावट जिसमें सुतली या बानकी चार-चार लड़ियाँ एक साथ हों । (**मु०–०भूल जाना**–अकलका काम न करना; राह न सूझना; घबरा जाना ।) **–कन्ना**–वि० चारों ओर ध्यान रखनेवाला, सजग, सावधान, होशियार । **–करी***–स्त्री० दे० 'चौकड़ी' । **–कल**–पु० चार मात्राओंका समूह । **–कस**–वि० चौकन्ना, सावधान; ठीक, दुरुस्त । (**–कसाई,–कसी**–स्त्री० सावधानी; निगरानी ।) **–कोन**–वि० दे० 'चौकोना' । **–कोना**–वि० चौकोर, चतुष्कोण । **–कोर**–वि० चौकोना, चौखूँटा । **–खंड**–वि० चार खंडोंवाला (मकान), चौमंजिला । **–खट**–स्त्री० लकड़ीकी चौकोर ढाँचा जिसमें किवाड़के पल्ले जड़े जाते हैं; देहली । (**मु० ०न झाँकना**–(किसीके घर) कभी न आना ।) **–खटा**–पु० लकड़ीका ढाँचा जिसमें तसवीर या आईना जड़ा जाय; चौखटी; † देहयष्टि, शरीरका ढाँचा–'आपने भी क्या दिलकश चौखटा पाया है !' **–खना**–वि० चार खंडोंवाला (मकान) । **–खाना**†–पु० चौखूँटे खानोंवाला कपड़ा । **–खानि***–स्त्री० चार प्रकारकी सृष्टि, अंडज, पिंडज, ऊष्मज और उद्भिज–ये चार प्रकारके जीव । **–खूँट**–पु० चारों दिशाएँ । अ० चारों ओर । वि० दे० 'चौखूँटा' । **–खूँटा**–वि० चौकोना, चौकोर । **–गड़ा**–पु० दे० 'चौघड़ा'; खरगोश । **–गड्डा**–पु० चार चीजोंका समूह; वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ या चार रास्ते मिलते हों । **–गड्डी**–स्त्री० जानवर फँसानेके लिए बनाया हुआ बाँसकी फट्ठियोंका ढाँचा । **–गिर्द**–अ० चारों ओर । **–गुन***–वि० दे० 'चौगुना' । **–गुना**–वि० किसी वस्तुका चार गुना, चार बार उसके बराबर, चतुर्गुण । **–गून***–वि० दे० 'चौगुना' । **–गोड़ा**–वि० चार पैरोंवाला । पु० पशु; खरहा । **–गोड़िया**–स्त्री० चार पायोंकी ऊँची डंडेदार तिपाई जिसपर चढ़कर ऊँचे स्थानोंकी सफाई, सफेदी आदि की जाती है; बाँसकी तीलियोंका चिड़िया फँसानेका फंदा । **–गोशा**–वि० चार कोनोंवाला, चतुष्कोण । पु० चौखूँटी किश्ती या तश्त । **–गोशिया**–वि० चौगोशा । स्त्री० चार तिकोने टुकड़ोंकी बनी हुई टोपी । पु० तुर्की घोड़ा । **–घड़ा**–पु० चार खानोंवाला डिब्बा जिसमें लौंग, इलायची आदि रखते हैं; मसाला रखनेका चार खानोंका बरतन; मिट्टीका बना खिलौना जिसमें एक-दूसरीसे जुड़ी चार कुल्हियाँ होती हैं; चार बीड़े पानकी खोंगी; एक बाजा, चौडोल । **–घड़िया**–वि० चार घड़ियोंका । स्त्री० चार पायोंकी ऊँची तिपाई, चौगोड़िया । **–०मुहूर्त**–पु० जल्दीके कामोंके लिए शोधा जानेवाला दो-चार घड़ीका कामचलाऊ मुहूर्त । **–घर***–वि० सरपट (चाल) । **–घरा**–पु० पीतलकी दीयट; दे० 'चौघड़ा' । **–घोड़ी***–स्त्री० चार घोड़ोंकी गाड़ी; चौकड़ी । **–जुगी**–स्त्री० चतुर्युगी । **–डोल,–डोला**–पु० एक बाजा, चौघड़ा । **–तग्गी**–वि० चार सूत मिलाकर बटा हुआ (डोरा) । **–तनियाँ***–स्त्री० दे० 'चौतनी'; अँगिया, चोली । **–तनी**–स्त्री० बच्चोंकी चौगोशी टोपी । **–तरफा**–अ० चारों ओर, चौगिर्द । **–तरा***–पु० चार तारोंवाला एक बाजा; दे० क्रममें । **–तहा**–वि० चार तहोंवाला । **–तही**–स्त्री० एक लहरियादार कपड़ा जो चार तह करके बिछाया जाता है । **–ताल**–पु० मृदंगका एक ताल; होलीमें गाया जानेवाला एक गीत । **–ताला**–वि० जिसमें चार ताल हों । **–तुका**–वि० चार तुकोंवाला । पु० वह छंद जिसके चारों चरणोंमें अंत्यानुप्रास हो । **–दंता**–वि० चार दाँतोंवाला; अल्हड़ । पु० चार दाँतोंवाला हाथी । **–दंती**–स्त्री० अल्हड़पन । **–दस**–स्त्री० किसी पक्षकी चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी । **–दह**–वि० दस और चार । पु० चौदहकी संख्या, १४ । **–दाँत***–पु० दो हाथियोंकी लड़ाई । **–दाँवा**–वि० (खेल) जिसमें चार दाँव हों या लग सकें । **–दानिया**–स्त्री० दे० 'चौदानी' । **–दानी**–स्त्री० वह बाली जिसमें चार मोती या जड़ाऊ टिकड़ियाँ लगी हों । **–धारी***–स्त्री० चारखाना । **–पई**–स्त्री० एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें १५ मात्राएँ होती हैं । **–पट**–वि० चारों ओरसे खुला हुआ; नष्ट, तबाह । **–०चरण**–वि० जिसके कहीं पहुँचते ही तबाही आ जाय, सत्यानासी । **–पटहा**†–वि० दे० 'चौपटा' । **–पटा**–वि० चौपट करनेवाला, बिगाड़ू । **–पड़**–पु० चौसर । **–पत**–स्त्री० कपड़ेकी तह । पु० दे० क्रममें । **–पतिया**–स्त्री० एक साग; एक घास; चार पन्नोंकी पोथी, पुस्तिका; कशीदेकी चार पत्तियोंवाली बूटी । **–पथ**–पु० चौराहा, चतुष्पथ; दे० 'चौपत' । **–पद***–पु० चौपाया, चतुष्पद । **–पदा**–पु० चार चरणोंवाला एक विशेष छंद । **–पल**–पु० दे० 'चौपत' । **–पहरा**–वि० चार पहरका; चार पहरके अंतरसे होनेवाला । **–पहल**–वि० चार पहलों या पहलुओंवाला । **–पहला**–वि० दे० 'चौपहल' । पु० एक तरहकी हलकी, खुली पालकी, चौपाल । **–पहलू,–पहिलू**–वि० दे० 'चौपहल' । **–पहिया**–वि० चार पहियोंवाला । स्त्री० चार पहियोंवाली गाड़ी । **–पाई**–स्त्री० १६-१६ मात्राओंके चार चरणोंका एक प्रसिद्ध छंद । **–पाड़**–पु० दे० 'चौपाल' । **–पाया**–पु० चार पैरोंवाला पशु, जानवर, ढोर, गाय-भैंस आदि । **–पार***–पु० दे० 'चौपाल' । **–पाल**–पु० खुली या छायी हुई मंडपाकार बैठक जहाँ गाँवके लोग बैठकर

पंचायत आदि करते हों; छायादार बड़ा चबूतरा या दालान; एक तरहकी पालकी। **–पुरा**–पु० वह कुआँ जिसपर चार पुर एक साथ चल सकें। **–पैया**–पु० एक मात्रिक छंद। **–फला**–वि० चार फलोंवाला (चाकू)। **–फेर**–अ० चारों ओर। **–बंदी**–स्त्री० चुस्त, कम लंबा अँगरखा जिसके नीचे ऊपरके दोनों पल्लोंमें चार-चार बंद होते हैं, बगलबंदी, चौबगली; (घोड़ेके) चारों सुमोंकी नालबंदी। **–बंसा**–पु० एक वृत्त। **–बगला**–पु० कुरते, अँगरखे आदिकी बगलके नीचे और कलीके ऊपरका भाग। वि० चौतरफा। **–बगली**–स्त्री० चौबंदी। **–बरदी**†–स्त्री० चार बैलोंकी गाड़ी। **–बरसी**–स्त्री० चौथे बरस होनेवाला उत्सव या श्राद्ध। **–बाछा**–पु० मुगल शासनमें प्रचलित एक प्रकारका कर। **–बारा**–पु० बालाखानेका कमरा जिसमें चारों ओर खिड़कियाँ या दरवाजे हों; चौपाल। **–बीस**–वि० बीस और चार। पु० चौबीसकी संख्या, २४। **–बोला**–पु० ८+७ (या १६+१४) मात्राओंका एक छंद। **–मंजिला**–वि० चार मंजिलों या खंडोंवाला (मकान)। **–मग़ज़ा**–पु० अखरोट। **–मसिया**–वि० चौमासेमें होनेवाला। पु० चौमासेभर काम करनेके लिए रखा गया हलवाहा। **–महला**–वि० चौमंजिला। **–मार्ग***–पु० चौराहा। **–मास**–पु० दे० 'चौमासा'। **–मासा**–पु० बरसातके चार महीने, असाढ़से कुआरतकका काल; वह खेत जो चौमासेमें केवल जोतकर छोड़ दिया जाय, बोया न जाय; वर्षाॠतु-संबंधी कविता। **–मासी**–स्त्री० चौमासेमें गाया जानेवाला एक गाना। **–मुख**–अ० चारों ओर। **–मुखा**–वि० चार मुँहोंवाला; जिसके मुँह चारों ओर हों। **–०दिया,–०दीया**–पु० वह दिया जिसमें चारों ओर चार बत्तियाँ लगायी जायँ। **–मुखी**–वि० चारों ओर होनेवाला, जानेवाला (–प्रतिभा,–विकास)। **–मुहानी**–स्त्री० चौराहा, चतुष्पथ। **–मेंड़ा**–पु० वह जगह जहाँ चार डाँड़े या सरहदें मिलती हों। **–मेखा**–पु० पुराने समयका एक दंड जिसमें दंडनीय व्यक्तिके हाथ-पाँव पीठ या पेटके बल लिटाकर चार खूँटियोंसे बाँध दिये जाते थे (करना)। वि० चार मेखोंवाला। **–रंग**–वि० तलवारके आघातसे कई टुकड़ोंमें कटा हुआ। पु० तलवारका एक हाथ। (मु०–०उड़ाना,–०करना,–०काटना –किसी चीजपर तलवारका एक वार ऊपरसे नीचे और दूसरा दायेंसे बायें इस तेजीसे करना कि वह चार टुकड़े होकर गिर जाय, बड़ी सफाईसे काटना। –०हवाई करना–किसी चीजको हवामें उछालकर गिरनेसे पहले ही चार टुकड़े कर देना। **–रंगा**–वि० चार रंगोंवाला। **–रँगिया**–पु० मालखंभकी एक कसरत। **–रंगी**†–स्त्री० चौमुहानी, चौराहा। **–रस**–त्रि० चारों तरफ एक जैसा; समतल, चौपहल। पु० ठठेरोंका एक औजार; एक वर्णवृत्त। **–रसा**–वि० जिसमें चार रस, स्वाद हों। पु० चार रुपयेभरका बाट। (**–रसाई**–स्त्री० चौरस करनेका काम या उजरत। **–रसी**–स्त्री० चौरस करनेका औजार; बाँहका एक गहना।) **–रस्ता**–पु० चौराहा। **–राहा**–पु० वह जगह जहाँ चार रास्ते मिलें या दो सड़कें एक दूसरीको काटें, चौमुहानी। **–लड़ा**–वि० चार लड़ियोंवाला (हार इ०)। **–सर**–पु० गोटों और पासोंके सहारे बिसातपर खेला जानेवाला एक खेल, चौपड़; इस खेलकी बिसात; * चार लड़ियोंका हार। * वि० चार लड़ियोंवाला, चौलड़ा। **–सिंघा**–त्रि० चार सींगोंवाला। पु० दे० 'चौसिंहा'। **–सिहा**–पु० वह जगह जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएं मिलती हों। **–हट,–हट्ट***–पु० दे० 'चौहट्टा'। **–हट्टा**–पु० चौक; चौमुहानी। **–हद्दा**–पु० वह स्थान जहाँ चार गाँवोंकी सीमाएँ मिलती हों। **–हद्दी**–स्त्री० किसी स्थान या मकान आदिकी चारों सीमाएँ; एक अवलेह। **–हलका**–पु० कालीनकी एक तरहकी बुनावट।

चौआ–पु० चार अंगुलकी माप; चार उँगलियोंका समूह; ताशका चार बूटियोंवाला पत्ता, चौका; बल्लेके एक ही जोरदार प्रहारसे बनाये गये चार रनोंका समूह, चौका; चौपाया।

चौआना*–अ० क्रि० चकित होना। † स० क्रि० तागेको हाथकी चार उँगलियोंपर लपेटना (जनेऊ चौआना)।

चौक–पु० चौखूँटा सहन, आँगन; चौमुहानी; नगरका मुख्य बाजार; चौखूँटा चबूतरा; पूजन आदिमें आटे आदिकी रेखाओंसे बनाया जानेवाला क्षेत्र; चारका समूह; चौसरकी बिसात; सामनेके चार दाँतोंका समूह (दो ऊपरके, दो नीचेके); चार वस्तुएँ; † गर्भके आठवें मासका संस्कार; चलाव, गौना (बुंदेल०); गलेका चार लड़ियोंका एक गहना। **–चाँदनी**–स्त्री० भाद्रपदके कृष्ण पक्षमें पड़नेवाला एक त्योहार। **–निकास**–पु० चौकमें बैठनेवाले दुकानदारोंसे लिया जानेवाला कर।

चौका–पु० पत्थरकी चौकोर सिल; भूमिका चौखूँटा टुकड़ा; रोटी बेलनेका चकला; चार चीजोंका समूह; बल्लेके एक ही प्रहारसे बनाये गये चार रनोंका समूह (क्रिकेट); आगेके चार दाँतोंकी पंक्ति; हिंदूके खाना पकाने या खानेका, साधारणतः मेड़ोंसे घिरा हुआ, चौकोर स्थान; मिट्टी या गोबरका लेप; आटे आदिकी लकीरोंसे बना हुआ चौकोर चित्र; चौकोर ईंट; सीसफूल; ताशका वह पत्ता जिसपर चार बूटियाँ हों; चार सींगोंवाला एक जंगली बकरा; फर्शपर बिछानेके काम आनेवाला एक तरहका कपड़ा। **–बरतन**–पु० रसोईमें चौका लगानेका और बरतन माँजनेका काम (करना, होना)। मु०**–लगाना**–किसी स्थानको गोबर या मिट्टीसे लीपना; चौपट, सत्यानास करना।

चौकिया सुहागा–पु० चौकोर टुकड़ोंमें कटा हुआ सुहागा जो दवाके रूपमें खाया जाता है।

चौकी–स्त्री० लकड़ी या पत्थरका चार पायोंवाला, चौकोर आसन, छोटा तख्त; चार बूटियोंवाला ताशका पत्ता; वह स्थान जहाँ पुलिस या सेनाके थोड़ेसे सिपाही रक्षा, निगरानी आदिके लिए रखे जायँ; चुंगी वसूल करनेवालोंके रहनेका स्थान; पहरा (बिठाना, बैठना), रखवाली; पड़ाव, टिकान; गलेमें पहननेकी चौकोर पटरी; चकला; मंदिरमें मंडपके खंभोंके बीचका स्थान; किसी देवी-देवताको चढ़ायी जानेवाली भेंट; जादू; (द्वारपर बजनेवाले) शहनाई तथा अन्य बाजे, रोशनचौकी; मंदिर या महलके फाटकके ऊपरका स्थान जहाँ नौबत बजती हो; तेलके कोल्हूमें लगनेवाली एक लकड़ी। **–दार**–पु० पहरा देनेवाला; गाँवमें पहरा देनेके लिए नियुक्त पुलिस कर्मचारी, गोड़इत। (**–दारी**–स्त्री० चौकीदारका काम, रखवाली; चौकीदार रखनेके लिए लिया जानेवाला कर।) मु०**–भरना**–पहरेकी ड्यूटी पूरी करना; किसी देवी-देवता, पीर-पैगंबर आदिकी भेंट-पूजाकी मनौती पूरी करना।

चौक्ष–त्रि० (सं०) शुद्ध, साफ; मनोज्ञ; दक्ष; तीक्ष्ण।

चौगान–पु० (फा०) गेंद-बल्लेका खेल जो पोलोसे मिलता-जुलता है; चौगान खेलनेका बल्ला जो आगेकी ओर कुछ झुका हुआ होता है; नगाड़ा बजानेकी लकड़ी; * चौगान खेलनेका मैदान। **–गाह**–पु० चौगान खेलनेका मैदान। **–बाज़**–पु० चौगान खेलनेवाला।

चौगानी–स्त्री० हुक्केकी निगाली।

चौघड़–पु० दे० 'चौभड़'।

चौचँद*–पु० बदनामी, अपवाद; झगड़ा-फसाद–'बनि बनि बावन-बीर बढ़त चौचंद मचावत'–रत्नाकर; रसकेलि, क्रीडा, कौतुक–'कै रस चाँचरि चौचँदमैं छतियापर छैल नखच्छत छाए'–घन०।

चौचँदहाई–वि० स्त्री० जो दूसरोंकी निंदा, बदनामी करती फिरे।

चौज–पु० दे० 'चोज'।

चौड–वि० (सं०) कलगीदार; चूडा-संबंधी। पु० चूडाकर्म। **–कर्म(न्)**–पु० चूडाकर्म, मुंडन।

चौड़ा–वि० लंबाईके दोनों छोरोंके बीच विस्तृत, चकला, फराख। (स्त्री० 'चौड़ी'।) **–ई**–स्त्री० चौड़ापन, लंबाईके दोनों छोरोंके बीचका विस्तार, पाट। **–चकला**–वि० फैला हुआ, विस्तृत। पु० अनाज रखनेका गड्ढा।

चौड़ान–स्त्री० दे० 'चौड़ाई'।

चौड़ाना†–स० क्रि० चौड़ा करना।

चौडोल*–पु० पालकी। दे० 'चौ'के साथ।

चौतरा*–पु० चबूतरा–'आई बुलाय कै चौतरा ऊपर ठाढ़ी भई मुख सौरभ सानी'–रघुनाथ।

चौथ–स्त्री० पक्षकी चौथी तिथि, चतुर्थी; चौथाई; राजस्वका

चतुर्थांश जो मराठे दूसरे राज्योंसे करके रूपमें लिया करते थे। * वि० चौथा। **–पन***–पु० दे० 'चौथापन'। **–का चाँद**–भाद्र-शुक्ला चतुर्थीका चंद्रमा जिसके देखनेसे झूठा कलंक लगना माना जाता है।

चौथा–वि० जो क्रममें तीनके वाद, चारके स्थानपर हो। पु० दाहकर्म करनेवाले या मृत व्यक्तिकी विधवाको रुपये-कपड़े आदि देनेकी रस्म। **–पन**–पु० बुढ़ापा, जीवनकी चौथी अवस्था।

चौथाई–स्त्री० चौथा भाग, चतुर्थांश।

चौथि*–स्त्री० दे० 'चौथ'।

चौथिया–पु० चौथे दिन आनेवाला ज्वर; वह जो चौथाईका हकदार हो; अनाजकी एक नाप।

चौथी–वि० स्त्री० दे० 'चौथा'। स्त्री० विवाहके चौथे दिन दूल्हे-दुलहिनके कंगन खोलनेकी रीति; विवाहके चौथे दिन (या कुछ अधिक दिन वाद भी) कन्याके घरसे मिठाइयाँ, कपड़े आदि भेजे जानेकी रस्म; वँटाईकी वह रीति जिसमें जमींदार चौथाई और असामी तीन चौथाई फसल लेता है। मु० **–खेलना**–ब्याहके चौथे दिन दूल्हे-दुलहिनका एक-दूसरेपर या दूल्हे और उसके छोटे भाइयोंका ससुराल जाकर सालियों आदिपर मेवे आदि फेंकना। **–छूटना**–दूल्हे-दुलहिनके कंगन खुलना।

चौधराई–स्त्री० चौधरीका पद या काम।

चौधरात–स्त्री० दे० 'चौधराना'।

चौधराना–पु० चौधराई; चौधरीका पुरस्कार।

चौधरानी–स्त्री० चौधरीकी पत्नी।

चौधराहट–स्त्री० चौधरीका काम या पद या भाव।

चौधरी–पु० किसी जाति या समाजका मुखिया सरदार; जाटों, कुर्मियों आदिकी पदवी।

चौप–पु० दे० 'चोप'।

चौपत–पु० वह पत्थर जिसमें लगी कीलपर कुम्हारका चाक टिका रहता है।

चौपतना, चौपरतना–स० क्रि० तह लगाना।

चौबच्चा–पु० दे० 'चहबच्चा'।

चौबा–पु० दे० 'चौबे'।

चौबाइन–स्त्री० चौबेकी स्त्री।

चौबे–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति, चतुर्वेदी।

चौभड़–पु० चौड़ा, चपटा दाँत जो आहारको कुचलनेका काम करता है।

चौर–पु० (सं०) चोर; एक प्राचीन कवि। **–कर्म(न्)**– पु० चोरी।

चौरठ, चौरठा–पु० दे० 'चौरेठा'।

चौरसाना†–स० क्रि० चौरस करना।

चौरा–पु० चबूतरा; चौपाल; वह चबूतरा या वेदी जिसपर किसी देवी, सती या प्रेत आदिकी स्थापना हुई हो; लोबिया; सफेद पूँछवाला बैल।

चौराई†–स्त्री० भोजके निमंत्रणकी एक रीति जिसमें नाई न्योते जानेवाले कुटुंबके द्वारपर हल्दीमें रँगे चावल रख आता है; दे० 'चौलाई'; एक चिड़िया।

चौरानबे, चौरानवे–वि० नब्बे और चार। पु० चौरानबेकी संख्या, ९४।

चौराष्टक–पु० (सं०) एक संकर राग।

चौरासी–वि० अस्सी और चार। पु० चौरासीकी संख्या, ८४; चौरासी लाख योनि; एक तरहकी टाँकी; घुँघुरुओंका गुच्छा।

चौरी–स्त्री० छोटा चौरा; एक पेड़ जिसकी छालसे रंग बनाया जाता है; छोटी कंकड़ी; (सं०) चोर स्त्री।

चौरेठा–पु० चावलका आटा; पानी मिलाकर पीसा हुआ चावल।

चौर्य–पु० (सं०) चोरी, चोरका काम; छलछद्म; छिपाव। **–रत**–पु० गुप्त मैथुन। **–वृत्ति**–स्त्री० चोरीकी आदत; चोरीसे जीविका चलाना।

चौर्यक–पु० (सं०) चोरी।

चौर्योन्माद–पु० (क्लेप्टोमेनिया) चुरा लेने या छिपा रखनेकी दुष्प्रवृत्ति।

चौल–वि० (सं०) चूल-चूड़ा-संबंधी। पु० मुंडन, चूडाकर्म।

चौलाई–स्त्री० एक पत्रशाक।

चौलुक्य–पु० (सं०) चुलुक ऋषिका वंशज; चालुक्य।

चौवन–वि० पचास और चार। पु० चौवनकी संख्या, ५४।

चौवा–पु० दे० 'चौआ'।

चौवालीस–वि० चालीस और चार। पु० चौवालीसकी संख्या, ४४।

चौस–पु० चार वार जोता हुआ खेत।

चौहड़–पु० दे० 'चौभड़'।

चौहरा–वि० जिसमें चार तहें हों; चौगुना।

चौहत्तर–वि० सत्तर और चार। पु० ७४की संख्या।

चौहान–पु० अग्निकुलवाले क्षत्रियोंकी एक शाखा।

चौहैं*–अ० चारों ओर।

च्यवन–पु० (सं०) चूना, टपकना, क्षरण; (लीकेज) च्युति; एक ऋषि जिनके विषयमें प्रसिद्ध है कि अश्विनीकुमारोंने उन्हें च्यवनप्राश खिलाकर बूढ़ेसे जवान बना दिया। **–छूट**–स्त्री०, **–मोक**–पु० किसी द्रव पदार्थके चू जाने, वह जाने आदिके वदलेमें दी जानेवाली छूट। **–प्राश**–पु० आयुर्वेदका एक अवलेह जो श्वास-कास, क्षय आदि रोगोंकी प्रसिद्ध औषध है और अश्विनीकुमारोंका बताया, बनाया माना जाता है।

च्याङ् काई शेक–पु० फारमोसाकी चीनी राष्ट्रीय सरकारके अधिपति (जन्म १८८७)। पहले वे चीनकी पूर्ववर्ती राष्ट्रीय सरकारके राष्ट्रपति थे।

च्यावन–पु० (सं०) चुआना, टपकाना; निकाल देना।

च्युत–वि० (सं०) चुआ, झड़ा हुआ, क्षरित; गिरा हुआ; अपनी जगहसे हटा या हटाया हुआ, स्थानभ्रष्ट; चूका हुआ (कर्तव्य-च्युत)। **–मध्यम**–पु० एक विकृत स्वर। **–षड्ज**–पु० एक विकृत स्वर। **–संस्कारिता,–संस्कृति**–स्त्री० काव्यका एक दोष, व्याकरण-विरुद्ध पद-योजना।

च्युतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) बुरे विचारोंवाला, कुटिल।

च्युताधिकार–वि० (सं०) पदसे हटाया हुआ।

च्युति–स्त्री० (सं०) च्युत होना, चूना, झड़ना; अपने स्थानसे भ्रष्ट होना, स्खलित होना; चूक; लोप (वर्णच्युति); भग; गुदा।

च्युप–पु० (सं०) मुख, चेहरा।

च्यूँटा–पु० दे० 'चींटा'।

च्यूँटी–स्त्री० दे० 'चींटी'।

च्यूड़ा–पु० चिड़वा।

च्यूत–पु० (सं०) आमका पेड़।

च्योत–पु० (सं०) चूना, टपकना, गिरना।

च्योना*–पु० घरिया।

छ

छ–देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका दूसरा वर्ण। उच्चारण-स्थान तालु।

छंग*–पु० गोद, अंक।

छंगा, छंगू–वि० जिसके किसी पंजेमें छ उँगलियाँ हों।

छँगुनिया*–स्त्री० दे० 'छगुनी', कानी उँगली।

छँगुलिया, छँगुली–स्त्री० दे० 'छगुनी'।

छँछौरी–स्त्री० एक पकवान जो छाँछमें बनाया जाता है।

छँटना–अ० क्रि० छाँटा जाना; चुना जाना; कटना; दूर होना; अलग होना; बिखरना; क्षीण होना; साफ किया जाना। मु० **–(टा) हुआ**–चालाक, धूर्त। **–(टे) छँटे फिरना**–दूर-दूर रहना।

छँटनी–स्त्री० छाँटनेकी क्रिया; (कर्मचारी आदिको) हटानेका काम।

छँटवाना–स० क्रि० छाँटनेका काम कराना।

छँटा–वि० जिसके पिछले पैर छाने गये हों (घोड़ा)।

छँटाई–स्त्री॰ छाँटनेका काम; छाँटनेकी उजरत; (कर्मचारी आदिको) अलग करनेका काम।

छँटाना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'छँटवाना'।

छँटाव–पु॰ छँटाई।

छँटुआ–वि॰ छाँटा हुआ; बचा-खुचा।

छँटैल–वि॰ छँटा हुआ, धूर्त; छाँटकर अलग किया हुआ।

छँडना*–स॰ क्रि॰ छोड़ना, त्यागना; छाँटना, कूटकर रद्दी अंश छुड़ाना। अ॰ क्रि॰ कै करना।

छँड़ाना*–स॰ क्रि॰ छीनना, दूसरेके हाथसे बलपूर्वक ले लेना।

छँड़ुआ†–वि॰ छोड़ा हुआ। पु॰ देवता आदिके नामपर छोड़ा हुआ; पशु; सूदकी छूट।

छंदः–'छंदस्'का समासगत रूप। **–प्रबंध**–पु॰ छंद-रचना। **–शास्त्र**–पु॰ छंद-रचना-संबंधी शास्त्र। **–स्तुभ**–पु॰ अरुण; वे देवता जिनकी वेदोंमें स्तुति की गयी है; स्तुति करनेवाला।

छंद–पु॰ (सं॰) अभिलाष; नियंत्रण, वश्यता; रुचि; अभिप्राय; विष; शकल-सूरत; प्रसन्नता। वि॰ मनोरम; गुप्त। **–ज**–पु॰ वैदिक देवता। **–पातन**–पु॰ ठग, ढोंग करनेवाला।

छंद–पु॰ कलाईपर पहननेका एक गहना; दे॰ 'छंद(स्)'। **–प्रबंध**–पु॰ छंद-रचना। **–बंद**–पु॰ छल-कपट, धोखा।

छंद*–पु॰ उपाय–'छंदकी मृगीलौं छूटिबेको नेकौ नाहिं'–घन॰।

छंद(स्)–पु॰ (सं॰) इच्छा; अभिप्राय; स्वेच्छाचार; धोखा, छल; वेद; मात्रा, वर्ण, यति आदिके नियमोंसे युक्त वाक्य या पद्यात्मक रचना; छंदः शास्त्र।

छंदक–वि॰ छली। पु॰ (सं॰) रक्षक; वासुदेव; गौतम बुद्धका सारथि। **–पातन**–पु॰ ठग, ढोंग करनेवाला।

छंदन–पु॰ (सं॰) प्रसन्न करना, रिझाना।

छंदस्कृत–पु॰ (सं॰) वेद; वेदमंत्र।

छंदानुवृत्ति–स्त्री॰ (सं॰) रिझाना, प्रसन्न करना।

छंदित–वि॰ (सं॰) प्रसन्न; संतुष्ट।

छंदी–स्त्री॰ कलाईपर पहननेका एक गहना। वि॰ छलिया।

छंदो–'छंदस्'का समासगत रूप। **–ग**–पु॰ सामगायक। **–दोष**–पु॰ छंदमें वर्ण, मात्राके घट बढ़ जाने, यति आदिके इधर-उधर हो जानेका दोष–अधिकाक्षर, न्यूनाक्षर, यतिभंग और मात्रा-च्युतिमेंसे कोई एक। **–बद्ध**–वि॰ पद्य रूपमें रचित, श्लोकबद्ध। **–भंग**–पु॰ छंदमें वर्ण, मात्रा आदिके नियमका पूर्ण पालन न होना।

छंदोम–पु॰ (सं॰) द्वादशाह यागके अंतर्गत एक कृत्य।

छः–वि॰ पाँच और एक। पु॰ छकी संख्या, ६।

छ–पु॰ (सं॰) काटना; खंड; घर। वि॰ निर्मल; अस्थिर।

छ–वि॰ पाँच और एक। पु॰ छकी संख्या, ६। **–कड़िया**–स्त्री॰ वह पालकी जिसके ढोनेमें छ कहार लगें; वह अदवान जो छ जगह फँसे और छ जगह कसी जाय। **–कड़ी**–स्त्री॰ छका समूह; छकड़िया पालकी; चारपाईकी वह बुनावट जिसमें सुतलीके छ फेरे एक साथ बुने जायँ; एक तरहका चौसर जिसमें पासेका केवल छका दाँव गृहीत होता है। वि॰ छ अवयवोंवाला। **–कुर**–पु॰ फसलका वह बँटवारा जिसमें जमींदारको छठा भाग मिले। **–पद***–पु॰ भ्रमर, षट्पद, भँवरा। **–बुंदा**–पु॰ एक जहरीला कीड़ा जिसकी पीठपर छ बूंदे होते हैं। **–माशी**–स्त्री॰ छ माशेका बाट। **–मासी**–स्त्री॰ मृत्युके छ महीने बाद होनेवाला श्राद्ध। **–माही**–वि॰ छ महीनेपर होनेवाला (इम्तहान आदि)। **–मुख***–पु॰ कार्त्तिकेय।

छई–स्त्री॰ क्षयरोग। वि॰ क्षय होनेवाला; क्षय रोगवाला। †स्त्री॰ मचलना। **–मचाना**–अ॰ क्रि॰ अत्यधिक मचल जाना, आफत कर देना।

छक*–स्त्री॰ नशा; तृप्ति; लालसा–'मेरे छक है गुननकी सुनौ खोलिकै कान'–चाचा हितवृंदावन।

छकड़ा–पु॰ सग्गड़, बैलगाड़ी। वि॰ ढीले ढाँचेवाला। मु॰ **–लदाना**–इतना देना कि गाड़ीका बोझ हो जाय, बहुत अधिक सामान दे देना।

छकना–अ॰ क्रि॰ अघाना, तृप्त होना; नशेमें चूर, बदमस्त होना; हैरान होना; चतुरता, कौशल आदिमें परास्त होना; चकराना।

छकाछक–वि॰ तृप्त; परिपूर्ण; नशेमें चूर।

छकाना–स॰ क्रि॰ भरपेट खिलाना, तृप्त करना; खूब नशा पिलाकर बदमस्त कर देना; चाल चलकर हराना; हैरान करना, चक्करमें डालना।

छकिहारी*–स्त्री॰ छाक ले जानेवाली।

छकीला*–वि॰ छका हुआ; मस्त।

छकौंहीं*–वि॰, स्त्री॰ छका देनेवाली; संतुष्ट; मस्त कर देनेवाली–'प्यार सौं छकौंहीं ढरकौंहीं मृदुबानि-बस'–घन॰।

छक्का–पु॰ छ अवयवोंवाली वस्तु; छका समूह; जुएके चार दाँवोंमेंसे एक; ताशका पत्ता जिसपर छ बूटियाँ हों; पासेका वह बल जिसमें छ बिंदियाँ हों; उस बलके चित्त पड़नेसे पड़नेवाला दाँव; सीमाके उस पार तक गेंदको भेज देनेवाला बल्लेका प्रहार जिससे खेलाड़ीके छः रन माने जाते हैं (क्रिकेट); जुआ; होश। **–पंजा**–पु॰ दाँव-पेंच, छल-कपट। मु॰**–छूटना**–हिम्मत हारना, हैरान हो जाना। **–पंजा भूल जाना**–उपाय न चलना, अकलका काम न करना। **–(क्के) छुड़ाना**–हौसला पस्त कर देना, परेशान कर देना।

छग–पु॰ (सं॰) छाग, बकरा (स्त्री॰ 'छगी'।)

छगड़ा*–पु॰ बकरा।

छगण–पु॰ (सं॰) कंडा।

छगन–पु॰ छोटे बच्चोंके लिए प्यारका शब्द; नन्हा प्यारा बच्चा। **–मगन**–पु॰ हँसते-खेलते बच्चे, छोटे-छोटे बच्चे।

छगल–पु॰ (सं॰) बकरा; वह देश जहाँ बकरे अधिक हों; विधारा; अत्रि ऋषि; नीला कपड़ा।

छगलक–पु॰ (सं॰) बकरा।

छगलांत्रिका–स्त्री॰ (सं॰) वृक्षविशेष, अजांत्री।

छगलांत्री(त्रिन्)–पु॰ (सं॰) भेड़िया।

छगली–स्त्री॰ (सं॰) बकरी।

छगुनी–स्त्री॰ कानी उँगली।

छग्गर*–पु॰ सग्गड़, शकट।

छछंद*–वि॰ स्वच्छंद। पु॰ नखरा; फरेब।

छछिआ, छछिया–स्त्री॰ छाँछ नापने या रखनेका बरतन; छाँछ।

छछूँदर–पु॰ चूहेकी जातिका एक जंतु जिसकी बोलीमें 'छू-छू'की ध्वनि रहती है और देहसे तीव्र गंध निकलती है; एक आतिशबाजी; (ला॰) निष्प्रयोजन इधर-उधर चलता-फिरता, करता-धरता रहनेवाला व्यक्ति। मु॰ **–छोड़ना**–झगड़ा लगाना, खुराफात करना।

छजना–अ॰ क्रि॰ सजना, शोभा देना, फबना; ठीक जान पड़ना।

छज्जा–पु॰ छतका दीवारके बाहर निकला हुआ भाग; बारजा; दीवारके बाहर निकली हुई पत्थरकी पट्टी; हैटका, धूपसे बचानेके लिए, आगे निकला हुआ भाग। **–(ज्जे)दार**–वि॰ जिसका किनारा आगे निकला हो।

छटंकी–स्त्री॰ छटाँकका बाट। वि॰ छोटा, छटपट (बालक–बो॰); 'छटाँक' भरका, दुबला-पतला (व्यक्ति)।

छटकना–अ॰ क्रि॰ तेजीके साथ पकड़से निकल जाना, हाथसे सरक जाना; काबूसे निकल जाना; दूर-दूर, फटा-फटा रहना।

छटका†–पु॰ मछलियाँ पकड़नेके लिए दो खेतोंके बीचकी मेंड़पर बनाया हुआ गड्ढा।

छटकाना–स॰ क्रि॰ झटका देकर बंधन या पकड़से छुड़ा लेना, सरकाना।

छटना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'छँटना'।

छटपट–वि॰ तेज, फुरतीला; चंचल। स्त्री॰ छटपटानेकी क्रिया।

छटपटाना–अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, तड़पना; (किसी वस्तुके लिए) आतुर होना।

छटपटी–स्त्री॰ आकुलता, बेचैनी; छटपटानेका भाव।

छटाँक, छटाक–स्त्री॰ एक सेरका सोलहवाँ भाग।

छटा–स्त्री॰ (सं॰) शोभा, छवि; दीप्ति, झलक; बिजली; परंपरा, अविच्छिन्न शृंखला; लड़ी–'मोतिनकी बिथुरी शुभ छटैं'–राम॰; समूह, ढेर। **–फल**–पु॰ सुपारीका पेड़ और

फल। **–भा**–स्त्री० विजली; विजलीकी चमक; मुखकी कांति।

छटुआ–दे० 'छँटुआ'।

छटैल–वि० छटा हुआ; चालाक।

छट्ठी–स्त्री० दे० 'छठी'।

छठ–स्त्री० पक्षकी छठी तिथि, षष्ठी;† कार्त्तिक शुक्ला षष्ठीको होनेवाला एक व्रत।

छठवाँ–वि० दे० 'छठा'।

छठाँ, छठा–वि० जो क्रममें पाँचके वाद, छके स्थानपर हो। मु० **छठे-छमासे**–कभी-कभी, वहुत अरसेके वाद।

छठी–वि० स्त्री० 'छठा'का स्त्री० रूप (जैसे छठी चीज, छठी औरत इ०)। स्त्री० जन्मके छठे दिनका स्नान, पूजन, उत्सव; छठीके दिन पूजी जानेवाली एक देवी। **–वरही**–स्त्री० छठी और वरहीके उत्सव, जन्मोत्सव। मु०**–का दूध निकलना**–कड़ी मेहनत पड़ना; वचपनका खाया-पिया निकलना। **–का दूध याद आना**–कठिन मेहनत पड़ना; इतना कष्ट मिलना कि वचपनका सुख याद आ जाय। **–का राजा**–पुश्तैनी अमीर; (व्यं०) जन्मका दरिद्र। **–में न पड़ना**–प्रकृतिमें न होना; भाग्यमें न होना।

छड़–पु०, स्त्री० लोहे, पीतल वाँस आदिका पतला गोल डंडा (जो प्रायः खिड़की-जँगले आदिमें लगाया जाता है)।

छड़ना–स० क्रि० (चावल आदि) छाँटना;* छोड़ना।

छड़ा–पु० चाँदीके तारका वना चूड़ी जैसा गहना जो पाँवमें पहना जाता है; मोतियोंकी लड़ियोंका गुच्छा। वि० अकेला, तनहा।

छड़िया–पु० दरवान, छड़ीवरदार–'द्वार खड़े प्रभुके छड़िया··' –सुदामाचरित्र।

छड़ियाल–पु० एक तरहका भाला।

छड़ी–स्त्री० वाँस, वेत, लकड़ी आदिका वना पतला, छोटा डंडा; पीरोंके मजारपर चढ़ानेकी झंडी; गोखरू, चुटकी आदिकी सीधी टँकाई। वि० स्त्री० अकेली, एकाकिनी। **–छटाँक**–अ० अकेले, तनहा। **–दार**–वि० जो छड़ी लिये हो; सीधी धारियोंवाला (कपड़ा)। पु० छड़ीवरदार। **–वरदार**–पु० चोवदार, असावरदार।

छत–स्त्री० मकानकी पक्की पाटन या वालाखानेका पक्का, खुला फर्श; वह चादर जो छतके नीचे वाँधी जाय, छतगीर। * पु० क्षत, घाव। * अ० अछत, (किसीके) होते, रहते हुए। **–चीर**–पु० छतके नीचे वाँधनेकी चादर या चाँदनी। **–गीरी**–स्त्री० छतगीर। **–लोटन**–पु० एक तरहकी कसरत। **–वंत***–वि० घायल, क्षतवाला।

छतज*– वि० खूनके रंगका, रक्तवर्ण, लाल–'छतज नयन अरु वाहु विशाला'–रामा०।

छतना*–पु० पत्ते जोड़कर वनाया हुआ छाता; मधु-मक्खीका छाता। अ० क्रि० रहना; घाव होना।

छतना–स० क्रि० छाना। अ० क्रि० छाया जाना–'सड़कके किनारे छते हुए वस-स्टॉप हैं'–नाग और शवनम।

छतनार, छतनारा†–वि० (पेड़-पौधा) जिसकी डालियाँ, टहनियाँ दूरतक फैली हों; फैला हुआ।

छतराना–अ० क्रि० चारों ओर फैलना, विस्तार में वढ़ना; छितराना।

छतरिया विष–पु० एक तरहकी जहरीली खुमी।

छतरी–स्त्री० लोहेकी तीलियोंपर कपड़ा चढ़ाकर वर्षा या धूपसे वचनेके लिए वनाया हुआ आच्छादन जो फैलानेपर गोल चँदोवा-सा वन जाता है, छाता; पत्तोंका छाता; छोटा छाता; चँदोवा; ईखके पत्तों, सरपत आदिकी वनी हुई छत्राकार मँड़ई; किसीकी समाधि या चिताके स्थानपर वना हुआ मंडप; कवूतरोंके वैठनेका ठट्टर; डोलीके ऊपरका ठट्टर; वहली आदिके कमानीदार ढाँचेके ऊपरका आच्छादन; कुकुरमुत्ता, छत्रक। **–दार**–वि० जिसपर छतरी हो।

छता*–पु० छाता।

छति*–स्त्री० दे० 'क्षति', हानि।

छतिया*–स्त्री० दे० 'छाती'।

छतियाना–स० क्रि० छातीसे लगाना, सटाना (वोझ, वंदूकका कुंदा इ०)।

छतिवन–पु० एक पेड़।

छतीस*–पु० क्षितीश, राजा।

छतीसा–वि० चालाक, मक्कार।

छतीसी–वि०, स्त्री० ढोंग, नखरे करनेमें चतुर, छल-छंदमें पटु (स्त्री); छिनाल।

छतुरी*–स्त्री० दे० 'छतरी'।

छतौना–पु० छतरी; कुकुरमुत्ता।

छत्ता–पु० मधुमक्खियों, भिड़ों आदिका घर; चकत्ता; छतरी; छायी हुई गली या वाजार; कमलका वीज-कोष; छत्रसाल।

छत्तीस–वि० तीस और छ। पु० ३६ की संख्या।

छत्तीसगढ़–पु० मध्यप्रदेशका एक विभाग।

छत्तीसगढी–स्त्री० छत्तीसगढकी वोली।

छत्तीसा–पु० नाई। वि० दे० 'छतीसा'; जिसमें ३६ चीजें पड़ी हों।

छत्तीसी–वि० स्त्री० दे० 'छतीसी'।

छत्र–पु० (सं०) छतरी; राजाओंके ऊपर लगायी जानेवाली राजचिह्नरूप छतरी; छत्रक, कुकुरमुत्ता; छतरिया विष; गुरुका दोष गोपन। **–चक्र**–पु० ज्योतिषका एक चक्र जिससे शुभ-अशुभ फल जाने जा सकते हैं। **–च्छाया**–स्त्री० छत्रकी छाया, आश्रय। **–धर,–धार**–पु० छत्रधारी, राजा; राजाके ऊपर छत्र लगा रखनेवाला सेवक। **–धारी(रिन्)**–पु० दे० 'छत्रधर'। वि० छत्र धारण करनेवाला। **–पति**–पु० राजा; महाराज शिवाजीकी पदवी। **–पत्र**–पु० स्थलपद्म; भोजपत्रका पेड़; छतिवन; मानकच्चू। **–बंधु**–पु० (हिं०) नीच कुलोत्पन्न क्षत्रिय। **–भंग**–पु० राज्यका नाश; मृत्यु; स्वाधीनताका नाश; वैधव्य; ज्योतिषका एक योग जिसका फल राजा या राज्यका नाश माना जाता है।

छत्रक–पु० (सं०) छतरी; कुकुरमुत्ता; खुमी; शहदका छत्ता; शिवमंदिर; मछरंग नामकी चिड़िया। **–दंड**–पु० कुकुरमुत्तेका डंठल।

छत्रवती–स्त्री० (सं०) अहिच्छत्रा।

छत्रांग–पु० (सं०) गोदंती हरताल।

छत्रा–स्त्री० (सं०) कुकुरमुत्ता; धनिया; सोया।

छत्राक–पु० (सं०) कुकुरमुत्ता, छत्रक।

छत्राकी–स्त्री० (सं०) कुकुरमुत्ता।

छत्रिक–पु० (सं०) दे० 'छत्रधर'।

छत्रिका–स्त्री० (सं०) छत्रक।

छत्री*–स्त्री० महलकी वुर्जी (राम०)।

छत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) छत्रयुक्त, जो छाता लगाये हो। पु० नाई;* दे० 'क्षत्रिय'।

छत्वर–पु० (सं०) घर; कुंज।

छदंब, छदम*–पु० छल, वहाना।

छद, छदन–पु० (सं०) आवरण, ढकनेवाली चीज; खाल; छाल; गिलाफ. खोल; पत्ता; पंख। **–पत्र**–पु० भोजपत्र; तेजपत्ता।

छदाम–पु० दुकड़ा, पुराने पैसेका चौथा भाग।

छदि–स्त्री० (सं०) छत; गाड़ीका आच्छादन।

छद्म(न्)–पु० (सं०) छल, कपट; अपना असली रूप छिपाना; वदला हुआ भेस; मकानकी छाजन, छत। **–तापस**–पु० वना हुआ तपस्वी, कपटी साधु। **–नाम**–पु० (स्यूडोनिम) कोई लेख या पुस्तकादि लिखते समय लेखक द्वारा गृहीत वनावटी नाम। **–युद्ध**–पु० (शैम फाइट) नकली लड़ाई, दिखाऊ युद्ध। **–वेश**–पु० वनावटी भेस। **–वेशी(शिन्)**–वि० जो भेस वदले हो।

छद्मावरण–पु० (कैमूफ्लाज) शत्रुको धोखेमें डालनेके लिए विमानों, तोपों आदिको वृक्षोंकी पत्तियों, धूमपटल आदिसे ढक देना; प्रकृतिमें अनेक जीव जन्तु ऐसे पाये जाते हैं जो परिस्थितिके अनुसार अपना रूप-रंग इस तरह वदल लेते हैं कि आसपासके वातावरणसे अलग करके उन्हें पहचानना कठिन होता है। इस क्रियाको छद्मावरण कहते हैं।

छद्मिका–स्त्री० (सं०) गुड़ची।

छद्मी(द्मिन्)–वि० (सं०) छद्मवेशधारी, कपटी।

छन*–पु० क्षण, पल; पुण्यकाल; आनंद। **–छवि**–स्त्री०

बिजली, क्षणप्रभा। **–दा**–स्त्री० रात्रि; बिजली। **–भंगु❋**–वि० क्षणभंगुर। **–भर**–अ० एक क्षण, जरा देर।

छन–स्त्री० जलते हुए तवे आदिपर पानी, कड़कड़ाते घी-तेल आदिमें आटेकी लोई आदिके पड़नेसे निकलनेवाली आवाज; घुंघरू आदिके बजनेकी आवाज, झनकार; छंद नामक आभूषण। **–छन**–स्त्री० 'छन-छन'की आवाज।

छनक❋–पु० एक क्षण। अ० क्षणभर। स्त्री० 'छन-छन'की आवाज; झनकार; भड़क; † फुर्ती। **–मनक**–स्त्री० गहनोंकी झनकार; सजधज, नखरा।

छनकना–अ० क्रि० 'छन-छन' करना; 'छन-छन' करके उड़ जाना (जलते तवे आदिपर पानीकी बूंदका); उबलनेसे (पानी आदिका) कम हो जाना; झनकार होना; भड़कना।

छनकाना–स० क्रि० पानीको आँचपर रखकर उसका कुछ अंश जलाना; गरम किये हुए बरतनमें पानी डालना; भड़काना।

छनछनाना–अ० क्रि० 'छन-छन'की आवाज होना; झनकार होना; † लगना, जलन मालूम होना, छरछराना। स० क्रि० 'छन-छन' शब्द उत्पन्न करना।

छनन-मनन–पु० कड़कड़ाते घी-तेल आदिमें किसी गीली चीजके पड़नेसे होनेवाली आवाज। मु०–**होना**–पूरी, पकवान बनना।

छनना–अ० क्रि० छाना जाना, छाननेकी क्रिया होना; छोटे-छोटे छिद्रोंसे होकर निकलना; छिद जाना; मादक पदार्थका सेवन किया जाना; कड़ाहीके खौलते घी, तेल आदिमें सिक्त होकर पूरी आदिका निकलना। पु० छाननेका साधन, महीन कपड़ेका टुकड़ा जिससे दूध, पानी आदि छाने जायँ; चलनी, छलनी।

छनवाना–स० क्रि० छाननेका काम कराना।

छनाका–पु० 'छन'की आवाज ; झनकार।

छनाना–स० क्रि छनवाना; पिलाना (भाँग, शराब इ०)।

छनिक❋–वि० दे० 'क्षणिक'। अ० छनभर। पु० एक क्षण।

छनित–पु० (फिलट्रेट) वह द्रव जो छन्नापत्र आदिकी सहायतासे छनकर नीचे आ जाता है।

छन्न–पु० दे० 'छन'–स्त्री०। वि० (सं०) छिपा हुआ; ढका हुआ; लुप्त। **–मति**–वि० जडमति, अहमक।

छन्ना–पु० दे० 'छनना'। **–पत्र**–पु० (फिल्टर पेपर) तेल आदि छाननेका मसिशोष जैसा कागज।

छप–स्त्री० पानीमें किसी चीजके जोरसे गिरने या किसी गाढ़ी चीज (कीचड़, दही इ०)के किसी चीजपर गिरनेसे होनेवाली आवाज। **–छप**–स्त्री० 'छप'की आवाज बार-बार होना। अ० 'छप-छप' आवाजके साथ।

छपक❋–स्त्री० तलवार आदिसे कटनेकी आवाज। **–छपक**–स्त्री० 'छपक-छपक'की आवाज। अ० 'छपक-छपक'की आवाजके साथ।

छपकना–अ० क्रि० थोड़े पानीमें हाथ पैर मारना।

छपका–पु० सिरमें पहननेका एक गहना; खुर-पका रोग; पतली छड़ी; कबूतर फँसानेका जाल; पानीका छींटा; पानीमें हाथ-पैर मारना; † ठप्पेका छापा हुआ बड़ा फूल आदि; बड़ा-सा धब्बा; दे० 'छपाका'।

छपछपाना–अ० क्रि० पानीपर हाथ-पैर मारना। स० क्रि० पानीपर छड़ी आदि मारकर 'छप-छप'की आवाज निकालना।

छपटाना†–स० क्रि० चिपटाना, छातीसे लगाना।

छपद–दे० 'छ'के साथ।

छपन❋–पु० नाश, संहार। **–हार**–वि० नाश करनेवाला।

छपना–अ० क्रि० छापा जाना, मुद्रित होना; छपनेका काम होना; टीका लगना।

छपर–'छप्पर'का समासगत रूप। **–खट,–खाट**–स्त्री० वह पलंग जिसपर मसहरी लगानेके लिए डंडे लगे हों। **–बंद**–पु० दे० 'छप्परबंद'। **–बंदी**–स्त्री० छप्पर छानेका काम या उजरत।

छपरछपर❋–वि० तराबोर।

छपरा–पु० दे० 'छप्पर' (टूटे काँटे); पान रखनेका टोकरा।

छपरिया–स्त्री० छोटा छप्पर, छपरी।

छपरी❋–स्त्री० झोपड़ी।

छपवाना–स० क्रि० 'छपाना'।

छपवैया†–पु० छापनेवाला; छपानेवाला।

छपा❋–स्त्री० रात; हलदी। **–कर,–नाथ**–पु० चंद्रमा; कपूर।

छपाई–स्त्री० छापनेका काम या उसकी उजरत।

छपाका–पु० पानीपर किसी चीजके गिरनेकी आवाज; बड़ा-सा छींटा; पानी, दही, कीचड़ आदिके किसी चीजपर पड़नेकी आवाज।

छपाना–स० क्रि० छापनेका काम कराना; छापाखाने (प्रेस)में पुस्तक आदि मुद्रित कराना; टीका लगवाना; ❋ छिपाना। ❋ अ० क्रि० लगा रहना।

छपाव❋–पु० छिपाव, दुराव।

छप्पन–वि० पचास और छ। पु० छप्पनकी संख्या, ५६। **–भोग**–पु० छप्पन प्रकारके (तरह तरहके) खाद्यपदार्थ।

छप्पय–स्त्री० छ चरणोंवाला एक मात्रिक छंद।

छप्पर–पु० फूस, पताई आदिकी छाजन; तलैया। **–बंद**–पु० छप्पर छानेवाला। वि० जो (गाँवमें) बस गया हो, आबाद (पाहीका उलटा–'छप्परबंद असामी')। **–बंदी**–स्त्री० छप्पर छानेका काम या उजरत। मु० **–पर फूस न होना**–बहुत निर्धन होना। **–फाड़कर देना**–बिना कुछ श्रम किये, घर बैठे देना।

छब–स्त्री० दे० 'छवि'। **–जख़्ती**–स्त्री० देहकी सुंदर गठन, गात्र और वक्षःस्थलकी सुंदरता।

छबड़ा–पु० टोकरा, झाबा।

छबि–स्त्री० शोभा, सुंदरता। **–धर,–मार,–वंत**–वि० सुंदर।

छबीला–वि० छबिवाला, संदर, सजीला।

छब्बीस–वि० बीस और छ। पु० छब्बीसकी संख्या, २६।

छब्बीसी–स्त्री० फलोंकी गिनतीका सैकड़ा जो छब्बीस गाही या १३० का होता है।

छमंड–पु० (सं०) बिना माँ-बापका बच्चा, अनाथ।

छम–स्त्री० घुंघरू बजने या मेह पड़नेकी आवाज। † वि० योग्य, समर्थ। † पु० सामर्थ्य, शक्ति। **–छम**–स्त्री० घुँघरू, पायल आदिकी बार-बार होनेवाली आवाज; जोरका मेह पड़नेकी आवाज; छमाछम। अ० 'छमछम' शब्दके साथ।

छमक–स्त्री० ठसक, चाल-ढालकी बनावट (स्त्रियोंकी)।

छमकना–अ० गहने बजाना; घुँघरू आदि बजाकर आवाज करना; ठसक दिखाना।

छमछमाना–अ० क्रि० 'छम-छम' शब्द करना या 'छम-छम' करते हुए चलना।

छमना❋–स० क्रि० क्षमा करना।

छमवाना, छमाना❋–स० क्रि० क्षमा कराना।

छमा❋–स्त्री० दे० 'क्षमा'। **–पन**–पु० क्षमा करनेकी क्रिया। **–वान**–वि० सहनशील, क्षमा करनेवाला।

छमाई❋–स्त्री० छमा।

छमाका–पु० नृत्यमें (घुँघरुओंकी आवाजके साथ) पैरोंकी थिरकन 'कुन्ती द्रुत लयपर पैरोंको छमाके देने लगी'–अचल मेरा कोई।

छमाछम–स्त्री० 'छम-छम'की आवाज। अ० 'छम-छम' शब्दके साथ।

छय❋–पु० दे० 'क्षय'।

छयना❋–अ० क्रि० क्षय, नाश होना; छा जाना। स० क्रि० क्षय करना।

छर–स्त्री० छर्रों या कंकड़ियोंके गिरनेकी आवाज। ❋ वि० नाशवान्। ❋ पु० दे० 'छल'। **–छंद❋**–पु० दे० 'छलछंद'। **–छंदी❋**–वि० धूर्त, कपटी। **–छर**–स्त्री० छर्रों या कंकड़ियोंके लगातार गिरनेकी आवाज। अ० 'सट-सट', 'छर-छर' आवाजके साथ।

छरकना–अ० क्रि० बिखरना, छिटकना; दे० 'छलकना'।

छरकीला†–वि० लंबा और सुडौल, छहरीला।

छरछराना–अ० क्रि० घावपर नमक या खार लगने जैसी पीड़ा होना; कणों आदिका 'छर-छर' करते हुए गिरना।

छरछराहट–स्त्री० घावपर नमक या खार लगनेसे होनेवाली पीड़ा; कणोंके एक साथ 'छर-छर' करते हुए गिरनेकी क्रिया।

छरद❋–स्त्री० छर्दि, वमन–'जबतें अक्रूर लै गये मधुपुरी भई बिरह तन बाय छरद'–सूर।

छरना–अ० क्रि० चूना, रसना; चुचुवाना; नष्ट होना; क्षीण होना; छँटना, अलग होना; * छला जाना; भूत-प्रेतको देखकर मोहित, पीड़ित होना। * स० क्रि० छलना, ठगना; मोहना; भूत-प्रेतका बनावटी रूप दिखाकर मोहना. आतंकित करना।

छरपुरी–स्त्री० दे० 'छरीला'; वह पुड़िया जिसमें विवाहमें काम आनेवाले सुगंधित द्रव्य रखे जाते हैं।

छरभार*–पु० प्रबंधभार, कामका बोझ; झंझट।

छरहटा*–पु० छलकी हाट; छल, इंद्रजाल; जादू-तमाशेवाला बाजार।

छरहरा–वि० इकहरे बदनका, जो मोटा न हो; चुस्त, फुरतीला।

छरा*–पु० छड़ा; लड़ी; रस्सी; नीवी, इजारबंद।

छराय*–पु० दे० 'छलावा'।

छर्रिदा–वि० दे० 'छरीदा'।

छरिया*–पु० दे० 'छड़िया'।

छरियाना*–अ० क्रि० विखरना, छितराना 'आधे गये छरियाय, तिहाई सहेलिन लूट लयो री'।

छरिला–पु० दे० 'छरीला'।

छरी*–स्त्री० दे० 'छड़ी'। वि० दे० 'छली'। **–दार**–वि०, पु० दे० 'छड़ीदार'।

छरीदा–वि० अकेला, तनहा; जिसके पास कोई गठरी-मुठरी न हो।

छरीला–पु० एक परोपजीवी पौधा जो मसालेमें पड़ता और दवाके भी काम आता है, शैलेय, शिलापुष्प।

छरोरा†–पु० खरोंच।

छर्द–पु० (सं०) कै, वमन।

छर्दन–पु० (सं०) कै करना, वमन; अस्वस्थता; नीमका पेड़; मैनफल।

छर्दि(स्)–स्त्री० (सं०) कै, वमन; मतली; घेरा; मकान।

छर्दिका–स्त्री० (सं०) वमन; विष्णुक्रांता लता। **–घ्न**–पु० महानिंब, बकाइन। वि० छर्दिनाशक। **–रिपु**–पु० छोटी इलायची।

छर्रा–पु० कंकड़ी; घुँघरुओं, गहनोंमें भरी जानेवाली कंकड़ियाँ; सीसे, लोहेके टुकड़े जो बंदूकमें बारूदके साथ भरे जाते हैं। मु० **–पिलाना**–बंदूकमें छर्रे भरना।

छर्री–स्त्री० छोटा छर्रा।

छल–पु० (सं०) अपने असली रूपको छिपाना, यथार्थका गोपन; दूसरेको ठगने, धोखा देनेवाली बात; व्याज, बहाना; कपट, शठता, धूर्तता; दुश्मनपर युद्ध-नियमके विरुद्ध वार करना; शास्त्रार्थमें प्रतिपक्षीके शब्दों, वाक्योंका उसके अभिप्रायसे भिन्न अर्थ करना। **–कपट**–पु० मकर-फरेब, धोखेबाजी। **–छंद**–पु० छल-कपट। **–छंदी(दिन्)**–वि० छल-कपट करनेवाला, धोखेबाज। **–छात**–पु० (हि०) छलछिद्र। **–छाया**–स्त्री० कपट-जाल, माया। **–छिद्र**–पु० दे० 'छल-कपट'। **–छेव***–पु० दे० 'छल-छिद्र'। **–बल**–पु० कपट और जोरजबरदस्ती; धोखा देकर या दबाव डालकर काम निकालनेकी चाल। **–योजन**–पु० (मैनिपुलेशन) चतुराईसे अयथार्थ या बनावटी रूप दे देना; ऐसी चाल चलना जिससे कोई वस्तु मनोनुकूल रूप ग्रहण कर ले, क्रियाकौशल।

छलक–स्त्री० छलकनेका भाव। वि०, पु० (सं०) छल करनेवाला।

छलकन*–स्त्री० छलनेका भाव।

छलकना–अ० क्रि० मुँहतक भरे हुए जल या दूसरे तरल पदार्थका हिलनेके कारण बरतनके बाहर गिरना; उछलना; उमड़ना।

छलकाना–स० क्रि० बरतनमें भरे हुए जल आदिको हिलाकर गिराना।

छलछलाना–अ० क्रि० आँखोंका भर आना, आर्द्र हो जाना।

छलन–पु० (सं०) छलना, ठगना, कपट।

छलना–स० क्रि० धोखा देना, ठगना। स्त्री० (सं०) छल, धोखा, वंचना।

छलनी–स्त्री० छाननेका आला, झीना कपड़ा या चमड़े, लोहे, पीतल आदिकी जाली मढ़ी हुई खँजड़ीकी शकलकी चीज जिससे आटा, आदि चालते या छानते हैं। मु० **–कर देना**–छेदोंसे भर देना, जर्जर कर देना। **–में डालकर छाजमें उड़ाना**–(किसीके) थोड़ेसे दोषको लेकर बहुत ज्यादा बदनाम करना, तिलका ताड़ बनाना। **–हो जाना**–छेदोंसे भर जाना, फट, चिथकर बेकार हो जाना, जर्जर हो जाना।

छलमलना–*अ० क्रि० छलकना–'बंसीधुनि घनघोर रूप-जल छलमलै'–घन०।

छलहाया*–वि० छली। (स्त्री० 'छलहाई'।)

छलाँग–स्त्री० चौकड़ी, कुदान, उछाल।

छला*–पु० दे० 'छल्ला'; † कांति, दीप्ति।

छलाई*–स्त्री० कपटभाव, धूर्तता।

छलाना–स० क्रि० ठगवाना, धोखा दिलाना।

छलावा–पु० भूत-प्रेतकी छाया जो झट अदृश्य हो जाय; भूत-प्रेत; दलदल, श्मशान आदिमें रातको दिखाई देनेवाली रोशनी जो कुछ-कुछ क्षणपर दृश्य-अदृश्य होती रहती है, अगिया-बैताल; धोखा, जादू। मु० **–खेलना**–छलावे या अगिया बैतालका यहाँसे वहाँ दौड़ते दिखाई देना। **–हो जाना**–अदृश्य हो जाना।

छलिक–पु० (सं०) नाटच या नृत्यका एक भेद।

छलित–वि० (सं०) छला, ठगा हुआ।

छलितक–पु० (सं०) दे० 'छलिक'।

छलिया–वि० छली।

छली(लिन्)–वि० (सं०) छल करनेवाला, धोखेबाज।

छलौरी–स्त्री० नाखूनोंके भीतर छाला पड़ने या पक जानेकी बीमारी।

छल्ला–पु० बिना नग-नक्काशीकी, चाँदी-सोने आदिका तार मोड़कर बनायी हुई अँगूठी, कुंडली; नैचेमें रेशम या कलाबत्तूके तारसे बनाया हुआ गोल घेरा; कच्ची दीवारकी रक्षाके लिए उससे सटाकर बनायी हुई पक्की दीवार; कोई मंडलाकार वस्तु; कड़ी। **–(ल्ले)दार**–वि० जिसमें छल्ले हों, गिरहदार, हलकेदार, घूंघरवाले (बाल)। **–का गुल**–छल्लेका दाग जो प्रेमी प्रेयसीके छल्लेको गरम करके लगा लेता है।

छल्लि–स्त्री० (सं०) छाल; लता; संतति।

छल्ली–स्त्री० कच्ची दीवारके रक्षार्थ खड़ी की हुई पक्की दीवार; (सं०) दे० 'छल्लि'।

छवना–पु० दे० 'छौना'।

छवा*–पु० छौना, शावक; एड़ी–'छूटे छवानि लौं केस बिराजत तार बड़े तमतार हने-सें'–रसविलास।

छवाई–स्त्री० छानेका काम; छानेकी उजरत।

छवाना–स० क्रि० छानेका काम कराना।

छवि–स्त्री० (सं०) चर्म; चर्मका वर्ण; शोभा; सुंदरता; चमक, कांति; प्रकाशकी किरण।

छवैया–पु० छानेका काम करनेवाला।

छहर*–स्त्री० बिखरनेकी क्रिया।

छहरना*–अ० क्रि० बिखरना।

छहराना*–अ० क्रि० छहरना। स० क्रि० बिखराना, छिटकाना; छार, करना, भस्म करना।

छहरीला–वि० छितरानेवाला; लम्बा और सुडौल, चुस्त, छरहरा।

छहियाँ*–स्त्री० छाया।

छही–स्त्री० वह चिड़िया, खासकर कबूतर, जो दूसरी चिड़ियोंको बहकाकर अपने अड्डेपर लाये।

छाँ–स्त्री० छाया।

छाँगना–स० क्रि० काटना, छाँटना (डाल इ०)।

छाँगुर†–वि० (वह आदमी) जिसके किसी पंजेमें छ उँगलियाँ हों।

छाँछ–स्त्री० मट्ठा, मही।

छाँट–स्त्री० छाँटनेकी क्रिया या ढंग; कतरनेकी क्रिया या ढंग; कतरन; मांसके छिछड़े; छाँटकर अलग की हुई बेकार चीज; अनाज छाँटनेसे निकलनेवाला कना या भूसी; कै, वमन।

छाँटन–स्त्री० छाँटनेसे निकली हुई बेकार चीज; कतरन।

छाँटना–स० क्रि० काटना, कतरना; चुनना, बिलगाना; अनाजको साफ करनेके लिए कूटना, फटकना; कतरकर छोटा करना; निकालना, दूर करना (साबुनका मैल, दवाका कफ छाँटना); किसी चीजके ज्ञान, पांडित्यका प्रदर्शन करना (ज्ञान, कानून,

पंडिताई छाँटना)।

छाँड़चिट्ठी†–स्त्री० रिहाईका परवाना।

छाँड़ना†–स० क्रि० दे० 'छोड़ना'।

छाँद–स्त्री० छाननेकी रस्सी, छान; नोई।

छाँदना–स० क्रि० बाँधना, कसना; (चरनेके लिए) जानवरोंके अगले या पिछले पैर एक साथ बाँधना; हाथोंसे पैर पकड़कर बैठ जाना।

छांदस–वि० (सं०) छंद-संबंधी, वैदिक; वेदज्ञ, वेदपाठी। पु० वेदपाठी, ब्राह्मण, श्रोत्रिय।

छांदसीय–वि० (सं०) छंद-शास्त्रका ज्ञाता।

छाँदा†–पु० पकवान; हिस्सा; परोसा।

छाँदोग्य–पु० (सं०) सामवेदका एक ब्राह्मण; उक्त ब्राह्मणकी उपनिषद् जो मुख्य दस उपनिषदोंमेंसे है।

छाँवँ–स्त्री० दे० 'छावँ'।

छाँवड़ा*–पु० छौना, पशुशावक; छोटा बालक।

छाँस–स्त्री० छाँटनेसे निकाला हुआ कन आदि; निकम्मी चीज; कूड़ा-करकट।

छाँह–स्त्री० छाया; आश्रय-स्थान–'देखि दुपहरी जेठकी छाँहौं चाहत छाँह'–बि०; छायी हुई जगह; प्रतिबिंब, परछाईं। **–गीर**–पु० छत्र; आईना। **मु०–न छूने देना**–पास न आने देना। **–बचाना**–पास न जाना।

छाँही†–स्त्री० दे० 'छाँह'।

छा–स्त्री० (सं०) ढँकना, छिपाना। पु० शिशु; पशुशावक; पारा; चिह्न।

छाई†–स्त्री० राख; जले हुए पत्थरके कोयलेकी राख।

छाक–स्त्री० छकनेका भाव, तृप्ति; नशा; मस्ती; वह खाना जो हलवाहों, चरवाहों आदिके खानेके लिए दोपहरमें भेजा जाता है; चाट, चटपटी चीज।

छाकना*–अ० क्रि० दे० 'छकना'।

छाग–पु० (सं०) बकरा; बकरीका दूध; पुरोडाश; मेषराशि। वि० बकरा-संबंधी। **–भोजी(जिन्)**–वि० बकरेका मांस खानेवाला। पु० भेड़िया। **–मुख**–पु० कार्त्तिकेय; कार्त्तिकेयका एक अनुचर। **–रथ,–वाहन**–पु० अग्नि।

छागण–पु० (सं०) कंडेकी आग।

छागमय–पु० (सं०) कार्त्तिकेयका छठा मुख।

छागल–स्त्री० पाँवमें पहननेका एक गहना; चमड़ेकी छोटी मशक। पु० (सं०) बकरा; एक मछली। वि० छाग-संबंधी।

छागिका, छागी–स्त्री० (सं०) बकरी।

छाछ–स्त्री० मट्ठा, मही।

छाछट–वि०, पु० दे० 'छासठ'।

छाज–पु० सींक या बाँसके छिलकोंका बना पात्र जिससे अनाज फटकते हैं, सूप; छाजन; बग्घीके आगेका छज्जे जैसा भाग। **–सी दाढ़ी**–खूब लंबी-चौड़ी दाढ़ी। **मु०–(जों) मेह बरसना**–मूसलधार वर्षा होना।

छाजन–स्त्री० आच्छादन, कपड़ा–'छाजन भोजन प्रीतिसों दीजे साधु बुलाय'–कबीर; छप्पर छानेका काम, ढंग या मजूरी; छप्पर; एक तरहका कोढ़, अपरस।

छाजना–अ० क्रि० फबना, शोभा देना; सुशोभित होना।

छाजा*–पु० छज्जा; † छाजन।

छाजित*–वि० शोभित।

छात–वि० (सं०) छिन्न, कटा हुआ; दुबला। * पु० छत्र, छतरी; 'छात पाट औ टोपी छाजा'–चन्दा०; आश्रय।

छाता–पु० छतरी; बड़ी छतरी; ताड़के पत्तों या बाँसके छिलकोंकी बनी बड़ी छतरी; छत्ता; चौड़ी छाती।

छाती–स्त्री० धड़का, पेटके ऊपरका, पेट और गरदनके बीचका भाग, वक्षःस्थल, सीना; स्तन; हृदय; हिम्मत, हौसला। **मु० –का काँटा**–पु० हमेशा खटकने या दुःख देनेवाली चीज। **–कूटना**–दे० 'छाती पीटना'। **–के किवाड़ खुलना**–छाती फटना; गहरी चीख निकलना। **–छलनी होना**–क्लेश, आघात सहते-सहते ऊब जाना, कलेजा पक जाना। **–जलना**–दुःखसे मनका व्यथित, संतप्त होना; डाहसे मनमें जलन होना। **–जुड़ाना**†–दे० 'छाती ठंडी करना'; 'छाती ठंडी होना'। **–ठंडी करना**–किसी बेचैन कर रखनेवाली कामना, बदलेकी भावना आदिको तृप्तकर शांतिलाभ करना, जीकी जलन मिटाना। **–ठंडी होना**–जीकी जलन मिटना। **–ठोंककर कहना**–कोई कठिन कार्य करनेकी प्रतिज्ञा करना, विश्वास दिलाना। **–देना**–बच्चेके मुँहमें स्तन देना, बच्चेको दूध पिलाना। **–धड़कना**–किसी भय, आशंकासे हृदयका जोरसे उछलना। **–निकालकर चलना**–सीना तानकर, अकड़कर चलना। **–पकना**–आजिज आना, परेशान हो जाना; स्तनोंमें घाव हो जाना। **–पत्थरकी करना**–कोई भारी दुःख, आघात सहनेके लिए दिल कड़ा करना। **–परका जम**–हर घड़ी साथ लगा रहने या घेरे रहनेवाला आदमी। **–परका पत्थर**–वह चीज जिसकी चिंता सदा सिरपर सवार रहे। **–पर कोदो या मूँग दलना**–किसीको दिखा-दिखाकर उसे जलाने-कुढ़ानेवाली बात करना; सौत लाना। **–पर धरकर या लादकर ले जाना**–मरनेपर साथ ले जाना। **–पर पत्थर या सिल धर लेना**–दे० 'छाती पत्थरकी करना'। **–पर बाल होना**–ऊँचे हौसलेवाला, भरोसा करने लायक होना। **–पर साँप लोटना**–हृदयको गहरी वेदना होना; ईर्ष्यासे हृदय जल उठना। **–पीटना**–शोकसे व्याकुल होकर या ईर्ष्याके अतिरेकसे छातीपर बार-बार हाथ पटकना; मातम मनाना। **–फटना**–दुःखका असह्य हो जाना, हृदय विदीर्ण होना; डाहसे जलना। **–फुलाना**–गर्व करना, इतराना। **–से लगाना**–आलिंगन करना, गले लगाना। **–से लगा रखना**–पाससे हटने न देना।

छात्र–पु० (सं०) शिष्य, विद्यार्थी, अंतेवासी; एक तरहकी मधुमक्खी, सरघा; उस मक्खी द्वारा संचित मधु। **–गंड**–पु० वह विद्यार्थी जिसे श्लोकका पहला चरणभर याद हो, मंदबुद्धि शिष्य। **–दर्शन**–पु० ताजा मक्खन। **–नायक**–पु० (मॉनिटर) कक्षाका प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्त्तव्य कक्षामें अनुशासनकी रक्षा आदि करना होता है। **–वृत्ति**–स्त्री० विद्यार्थीको विद्याभ्यासमें सहायतार्थ मिलनेवाला धन, वजीफा। **–व्यंसक**–पु० दुष्ट या मंदबुद्धि छात्र।

छात्रक–पु० (सं०) छात्र; छात्र नामकी मक्खी द्वारा संचित मधु।

छात्राभिरक्षक–पु० (वार्डन) किसी विद्यालय, छात्रावासादिका अभिरक्षक; छात्रोंपर निगरानी रखनेवाला शिक्षाधिकारी; गृहपति।

छात्रालय, छात्रावास–पु० (सं०) किसी स्कूल, कालेजसे संबद्ध वह इमारत जिसमें विद्यार्थी रहते हों, 'होस्टेल'।

छात्रावासीय विश्वविद्यालय–पु० (रेज़िडेंशल यूनिवर्सिटी) वह विश्वविद्यालय जिसके विद्यार्थी प्रायः समीपस्थ छात्रावासोंमें, विश्वविद्यालयके वातावरणमें ही रहते हों।

छाद–पु० (सं०) छप्पर; छत।

छादक–वि०, पु० (सं०) छानेवाला, आच्छादन करनेवाला।

छादन–पु० (सं०) छाना; आच्छादन करना; आच्छादन; छिपाना; पर्दा; नीला कोरैया।

छादन–पु०, **छादनी**–स्त्री० (स्कम) कूड़े, मैल आदिकी वह पतली तह जो शीरे या चाशनीके ऊपर छा जाती है; मैली।

छादित–वि० (सं०) छिपा, ढका हुआ; आच्छादित।

छादिनी–स्त्री० (सं०) चमड़ा, खाल।

छादी(दिन्)–वि० (सं०) ढकनेवाला; आच्छादन करनेवाला।

छाद्मिक–वि० (सं०) छद्मवेशधारी, कपटी। पु० ठग।

छान–स्त्री० छाननेकी क्रिया या भाव (इस अर्थमें केवल छान-बिनान, छान-बीन जैसे कुछ समस्त पदोंमें ही व्यवहृत होता है); वह रस्सी जिससे किसी जानवरके पीछे या सामनेके पैर बाँधे जायँ, छाँद; † छप्पर। **–फटक,–बिनान,–बीन**–स्त्री० खोज, जाँच-पड़ताल; तहकीक।

छानना–स० क्रि० आटे आदिका मोटा अंश छलनीसे निकालना; दूध, पानी आदिको साफ करनेके लिए बारीक कपड़े या चलनीके पार निकालना; मिली-जुली चीजोंको अलग करना, बिलगाना; ढूँढ़ना, खोजना; जाँच-पड़ताल करना; नशा पीना; घीमें तलना;

दे० 'छाँदना'; * भेदना, पार करना।

छानबे–वि० नब्बे और छ। पु० छानवेकी संख्या, ९६।

छाना–अ० क्रि० ऊपर फैलना, पसरना, बसना, टिकना। स० क्रि० ढकना, आच्छादित करना; मकानपर छप्पर या खपरैल डालना; आच्छादन करनेवाली चीजको फैलाना; * बिछाना; छाया करना; आश्रय देना।

छानि*–स्त्री० छप्पर।

छानी†–स्त्री० घास फूसका आच्छादन, 'छप्पर'; बाँसकी फट्टियों आदिका ढक्कन (जिससे ईखके रसकी नाँद ढँकते हैं)। * वि० छन्न, छिपी हुई–'छानी बात उघाड़ै छै'–घन०।

छाने-छाने*–अ० चुपकेसे, छिपे-छिपे।

छाप–स्त्री० किसी वस्तुका चिह्न, निशान; मुहरका निशान; मुहरवाली अँगूठी; शंख, चक्र आदिके चिह्न जो वैष्णव अपने अंगोंको दगवाकर लगवाते हैं; विभिन्न कारखानोंमें बनी वस्तुओंपर पहचानके लिए छपा हुआ शब्द या चित्र, मार्का; असर, प्रभाव (पड़ना, डालना)।

छापना–स० क्रि० ठप्पा, मुहर, अक्षर आदिका चिह्न स्याही या रंगके योगसे कागज आदिपर उतारना; जोड़े हुए अक्षरों, ब्लाक आदिकी प्रतिकृति कागज आदिपर उतारना, पुस्तक आदि मुद्रित करना; छापकर प्रकाशित करना; टीका लगाना।

छापा–पु० साँचा, ठप्पा; मुहर; छपा हुआ चिह्न या अक्षर; शंख, चक्र आदिके दागे हुए चिह्न, मुद्रा; छाप, मार्का; हलदी या ऐपनसे दीवार आदिपर लगाया जानेवाला पंजेका चिह्न, छापेकी कल; वह हमला जो दुश्मनपर अचानक, बहुत तेजीसे किया जाय, यकायक टूट पड़ना; धावा (मारना)। **–ख़ाना**–पु० वह जगह जहाँ छपाईका काम हो, प्रेस। **–मार**–वि० छापा मारनेवाला, छापा मारकर दुश्मनोंको परेशान करनेवाला (सैनिक, दस्ता)। **–(पे)की कल**–छपाईकी मशीन, प्रेस।

छाम*–वि० क्षाम, दुबला-पतला, क्षीण।

छामोदरी*–वि० स्त्री० छोटे पेटवाली, कृशोदरी।

छायल–पु० स्त्रियोंका एक पहनावा।

छायांक–पु० (सं०) चंद्रमा।

छाया–स्त्री० (सं०) प्रकाशके अवरोधसे उत्पन्न हलका अँधेरा, छावँ, साया; प्रकाशका अवरोध करनेवाली वस्तुकी परछाई; वह स्थान जहाँ किसी चीजकी छाया पड़ती हो; वह स्थान जहाँ धूप न पहुँचती हो; प्रतिबिंब, अक्स; तद्रूप वस्तु, अनुकृति; सादृश्य; अँधेरा; कांति; चेहरेका रंग; सौंदर्य; रक्षा, आश्रय; चित्रका अपेक्षाकृत कम प्रकाशवाला भाग; भूत-प्रेतका प्रभाव, साया (परीकी छाया); एक रागिनी; दुर्गा; सूर्यकी पत्नी, संज्ञा। **–कर**–पु० किसीके पीछे छतरी लेकर चलनेवाला। **–गणित**–पु० गणितकी वह क्रिया जिससे छायाके सहारे ग्रहोंकी गति आदि जानी जा सकती है। । **–ग्रह**–पु० आईना। **–ग्राहिणी**–स्त्री० छायाके जरिये ग्रहण करनेवाली एक राक्षसी जिसने हनूमान्को पकड़ लिया था। **–चित्र**–पु० अक्सी तसवीर, फोटो। **–चित्रण**–पु० छाया चित्र उतारनेका काम, फोटोग्राफी। **तनय**–पु० शनि। **–तरु**–पु० वह वृक्ष जिसकी छाया दूरतक फैले और घनी हो; छतिवन। **–दान**–पु० ग्रहजनित अरिष्टकी शांतिके लिए किया जानेवाला एक विशेष दान जिसमें काँसेकी कटोरीमें घी या तेल भरकर और उसमें अपनी छाया देखकर सदक्षिण दान करते हैं। **–देह**–स्त्री० अशरीरी मूर्ति। **–द्रुम**–पु० दे० 'छाया तरु'। **–नट**–पु० एक राग। **–नाट्य**–पु० (शेडोफिगर) छाया कृति द्वारा अभिनीत पुत्तलिका नाट्य। **–पथ**–पु० आकाश-गंगा। **–पात्र**–पु० घी या तेलसे भरी हुई वह कटोरी आदि जिसमें अपने शरीरकी छाया देखी जाती है (अरिष्टनिवारणार्थ)। **–पुरुष**–पु० हठयोग तंत्रके अनुसार आकाशमें (साधना-विशेषसे) दिखाई पड़नेवाली द्रष्टाकी छायारूप आकृति। **–मान**–पु० चंद्रमा। **–मित्र**–पु० छतरी। **–मूर्ति**–स्त्री० छायारूप मूर्ति–आकृति; (एप्पैरिशन) वह छाया जो भ्रांतिवश किसी पुरुष या व्यक्ति जैसी प्रतीत हो; अस्पष्ट, अशरीरी मूर्ति। **–मृगधर**–पु० चंद्रमा। **–यंत्र**–पु० छायाके द्वारा कालका ज्ञान करानेवाला यंत्र; धूपघड़ी। **–लोक**–पु० अदृश्य जगत्, स्वप्नलोक। **–वाद**–पु० एक काव्यगत शैली जिसमें अज्ञेयके प्रति जिज्ञासा और प्राकृतिक विषयोंमें नराकार भावना व्यक्त की जाती है। **–सुत**–पु० शनि।

छायामय–वि० (सं०) छाया-युक्त, सायादार।

छायावान–पु० सायवान (अहिल्या०)।

छार–पु० क्षार; क्षार पदार्थ; खारी नमक; राख; धूल। **–छबीला**–पु० दे० 'छरीला'। **मु०–खार करना**–खाकसियाह कर देना; नष्ट-भ्रष्ट करना।

छाल–स्त्री० (सं०) पेड़के धड़, शाखा आदिपरका कड़ा छिलका, वल्कल; वल्कलवस्त्र; * एक मिठाई।

छालक, छालिक*–वि० धोकर साफ करनेवाला।

छालटी–स्त्री० एक कपड़ा जो सन या पटसनके रेशेसे बनता है।

छालना–स० क्रि० छानना, साफ करना; छेद करना; धोना।

छाला–पु० फफोला, आबला; छाल, चर्म (मृगछाला); शीशे आदिपर उभड़ा हुआ दाग; * पत्र–'तब उदंत छाला लिख दीन्हा'–पद्मावत।

छालित*–वि० धुला हुआ, प्रक्षालित।

छालिया–पु० छायादान करनेकी कटोरी। स्त्री० दे० 'छाली।'

छाली–स्त्री० सुपारी; कटी हुई सुपारी।

छाँव–स्त्री० छाया, परछाईं; शरण, आश्रय।

छावना*–स० क्रि० दे० 'छाना'।

छावनी–स्त्री० छप्पर; छप्परपोश मकान; वह स्थान जहाँ सेना रखी जाय, पड़ाव, शिविर; वह मकान जिसमें जमींदार तहसील-वसूलके लिए आकर ठहरे या उसके कारिंदे आदि रहें।

छावर–स्त्री० झुंडमें तैरनेवाले मछलियोंके छोटे बच्चे।

छावरा*–पु० छौना, शावक।

छावा–पु० बच्चा; बेटा; हाथीका पट्ठा।

छासठ–वि० साठ और छ। पु० छासठकी संख्या, ६६।

छाह–स्त्री० दे० 'छाछ'।

छिंकाना–स० क्रि० छींकनेमें प्रवृत्त करना।

छिँगुनिया, छिँगुनी–स्त्री० कानी उँगली।

छिँगुलिया, छिँगुली–स्त्री० दे० 'छिँगुनी'।

छिछ, छिछि*–स्त्री० छींटा–'सोनित छिछ उछरि आकासहिं, गज बाजिन सिर लागी'–सूर; फुहारा; धार। वि० छूंछा।

छिंटुआ, छिंटुवा–पु० छींटकर बीज बोनेका एक तरीका।

छिँड़ाना†–स० क्रि० छीन लेना।

छिः, छि–अ० घृणा, तिरस्कार या धिक्कारसूचक शब्द, छी।

छिउँका–पु० भूरे रंगका, साधारण चींटेसे कुछ छोटा चींटा।

छिउँकी–स्त्री० छिउँकेकी मादा; एक उड़नेवाला कीड़ा; एक औजार जो लकड़ी उठानेके काम आता है।

छिकना–अ० क्रि० रुकना, छेका जाना–'रूप अलबेली नवेली एरी तेरी आँखैं ताकि छाकि मारैं हुरिहाई न कहूँ छिकैं'–घन०; घेरा जाना; रद्द किया जाना।

छिकनी–स्त्री० एक बूटी जिसे सूंघनेसे बहुत छींकें आती हैं, नकछिकनी।

छिकरा–पु० एक तरहका हिरन।

छिक्कनी–स्त्री० (सं०) नकछिकनी बूटी।

छिक्कर–पु० (सं०) दे० 'छिक्कार'।

छिक्का–स्त्री० (सं०) छींक; छीका।

छिक्कार–पु० (सं०) एक तरहका हिरन, छिकरा।

छिक्किका–स्त्री० (सं०) नकछिकनी।

छिगुनी–स्त्री० कानी उँगली, कनिष्ठिका।

छिच्छ*–स्त्री० बूँद; छींटा।

छिछड़ा–पु० मांसका बेकार टुकड़ा जो कुत्तों-बिल्लियोंके खानेके लिए फेंक दिया जाता है, जानवरोंका मलाशय।

छिछड़ी–स्त्री० पुरुषेंद्रिय के मुंडका आवरण।

छिछयाना–स० क्रि० घृणा करना; निंदा करना।

छिछला–वि० उथला। (स्त्री० 'छिछली'।)

छिछोरपन–पु० छिछोरेका काम, ओछापन, क्षुद्रता।

छिछोरा–वि० ओछा, क्षुद्र; कमीना । –**पन**–पु० दे० 'छिछोरपन' ।

छिजाना–स० क्रि० छीजनेका कारण होना; छीजने देना ।

छिटकना–अ० क्रि० बिखरना, फैलना; किसी चीजकी ज्योति, खासकर चाँदनीका फैलना ।

छिटकाना–स० क्रि० बिखेरना, फैलाना ।

छिटकी†–स्त्री० छींटा ।

छिटनी–स्त्री० दे० 'छितनी' ।

छिटपुट, छिटफुट–क्रि० वि० छितराया हुआ, कुछ एक जगह कुछ दूसरी जगह, अलग-अलग समय या स्थानपर ।

छिटवा–पु० टोकरा, झावा ।

छिड़कना–स० क्रि० जल या दूसरे द्रव द्रव्यके छींटे फेंकना; भुरकना; न्योछावर करना (स्त्री०) ।

छिड़कवाना–स० क्रि० छिड़कनेका काम कराना ।

छिड़काई–स्त्री० छिड़काव; छिड़कनेकी उजरत ।

छिड़काव–पु० छिड़कनेकी क्रिया, छीटोंसे तर करना ।

छिड़ना–अ० क्रि० (बात या प्रसंगका) छेड़ा जाना, आरंभ होना, चल पड़ना; झगड़ा, लड़ाई शुरू होना ।

छित–वि० (सं०) दे० 'छात' । * सित, श्वेत ।

छितनी–स्त्री० बाँसकी फट्ठियों या तीलियोंसे बनी छोटी टोकरी ।

छितराना–अ० क्रि० बिखरना । स० क्रि० बिखराना, फैलाना; अलग-अलग करना ।

छिति*–स्त्री० दे० 'क्षिति' । –**कंत,**–**नाथ,**–**पाल**–पु० राजा । –**रुह**–पु० वृक्ष ।

छितीस*–पु० राजा ।

छित्ति–स्त्री० (सं०) छेदना, काटना ।

छित्वर–पु० (सं०) छेदनकर्ता; शत्रु; धूर्त ।

छिदक–पु० (सं०) वज्र; हीरा ।

छिदना–अ० क्रि० छेदा जाना, छेद होना; घायल होना; घावोंसे भर जाना; छलनी होना (कलेजा छिद गया) ।

छिदरा–वि० छेदोंवाला; जो घना न हो; फटा हुआ ।

छिदवाना–स० क्रि० दे० 'छिदाना' ।

छिदाना–स० क्रि० छेदनेका काम करना ।

छिदि–स्त्री० (सं०) कुल्हाड़ी; वज्र; काटना ।

छिदिर–पु० (सं०) कुल्हाड़ी; तलवार; अग्नि; रस्सी ।

छिद्र–पु० (सं०) छेद, सूराख; अवकाश; गड्ढा; दोष, ऐब, दूषण; दुर्बलताजनक, बाधक बात; दुर्बल पक्ष (शत्रुके छिद्र) । –**कर्ण**–वि० जिसके कान छिदे हों । –**दर्शी(शिन्)**–वि० दूसरेके दोष, ऐब ढूंढ़नेवाला । –**पिप्पली,**–**वैदेही**–स्त्री० गजपिप्पली ।

छिद्रण–पु० (पंचिंग) किसी नुकीली चीजसे छेद कर देनेका कार्य । –**मशीन**–स्त्री० कागज, चमड़े आदिमें छेद करनेकी मशीन ।

छिद्रल–वि० (परफोरेटेड) जिसमें नजदीक-नजदीक बहुतसे छेद एकसीधमें बना दिये गये हों; छिद्रित ।

छिद्रांतर–पु० (सं०) सरकंडा; नरकुल ।

छिद्रांश–पु० (सं०) सरकंडा ।

छिद्रात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) अपने दोष प्रकट करनेवाला ।

छिद्रानुजीवी(विन्)–वि० (सं०) दे० 'छिद्रान्वेषी' ।

छिद्रानुसंधानी(निन्)–वि० (सं०) दे० 'छिद्रान्वेषी' ।

छिद्रानुसारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'छिद्रान्वेषी' ।

छिद्रान्वेषण–पु० (सं०) दूसरेके दोष, ऐब ढूँढ़ना, खुचड़ निकालना ।

छिद्रान्वेषी(षिन्)–वि० (सं०) छिद्रान्वेषण करनेवाला ।

छिद्राफल–पु० (सं०) माजूफल ।

छिद्रित–वि० (सं०) जिसमें छेद हों, सूराखदार ।

छिद्रोदर–पु० (सं०) उदरका एक रोग, क्षतोदर ।

छिन*–पु० दे० 'छन' । –**छवि**–स्त्री० बिजली । –**दा**–स्त्री० क्षणदा, रात । –**भंग**–वि० क्षणभंगुर ।

छिनक*–पु० एक क्षण । अ० क्षणभर ।

छिनकना–स० क्रि० साँसके साथ नाकका मल बाहर निकालना, नाक साफ करना । † अ० क्रि० छनकना, भड़कना ।

छिनना–अ० क्रि० छीना जाना; सिल आदिका कुटना; पत्थरका छेनी आदिसे कटना ।

छिनरा–वि०, पु० परस्त्रीगामी, लंपट । (स्त्री० 'छिनरी' ।)

छिनवाना–स० क्रि० छीननेका काम कराना; पत्थर कटवाना; सिल कुटाना ।

छिनाना–स० क्रि० दे० 'छिनवाना'; * छीनना ।

छिनार, छिनाल–वि० स्त्री० पुंश्चली, बदकार, कुलटा (स्त्री) ।

छिनाला–पु० छिनालपन, व्यभिचार, बदकारी ।

छिनौछवि*–स्त्री० दे० 'छिनछवि', बिजली ।

छिन्न–वि० (सं०) कटा हुआ; काटकर अलग किया हुआ, खंडित; नष्ट किया हुआ; क्षीण; क्लांत । –**केश**–वि० जिसके बाल काट या मूँड़ दिये गये हों । –**द्वैध**–वि० जिसकी दुविधा, संशय मिट गया हो । –**नास,**–**नासिक**–वि० नकटा, जिसकी नाक कट गयी हो । –**पत्री**–स्त्री० पाठा । –**पुष्प,**–**रुह**–पु० तिलक वृक्ष । –**बंधन**–वि० जिसके बंधन टूट गये हों, मुक्त । –**भिन्न**–वि० कटा-फटा; नष्ट-भ्रष्ट; जो तितर-बितर हो गया हो । –**मस्त,**–**मस्तक**–वि० जिसका सिर कट गया हो । –**मस्तका,**–**मस्ता**–स्त्री० दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक देवी जो अपना सिर हथेलीपर धरे गलेसे निकलती रक्तधारा पीती हुई मानी जाती है । –**मूल**–वि० जड़से कटा हुआ । –**रुहा**–स्त्री० गुडुची । –**वेशिका**–स्त्री० पाठा । –**व्रण**–पु० किसी शस्त्रसे काटनेका घाव । –**श्वास**–पु० एक तरहका श्वास-रोग । –**संशय**–वि० जिसका संशय मिट गया हो, निवृत्तसंशय ।

छिन्नक–वि० (सं०) जिसका कुछ अंश कटा हो ।

छिन्नांत्र–पु० (सं०) एक उदररोग ।

छिन्ना–स्त्री० (सं०) गुडुची; व्यभिचारिणी स्त्री ।

छिन्नोद्भवा–स्त्री० (सं०) गुडुची ।

छिपकली–स्त्री० एक रेंगनेवाला जंतु जो अक्सर घरकी दीवारोंपर दिखाई देता और कीड़े-मकोड़े खाता है, गृह-गोधिका; कानका एक गहना; (ला०) दुबली-पतली स्त्री ।

छिपना–अ० क्रि० आड़ या परदेमें होना, ऐसी जगह होना जहाँ कोई देख न सके; दृश्य न होना; डूबना, अस्त होना । **छिपारुस्तम**–वि०, पु० असाधारण, किंतु अप्रसिद्ध गुणी, पंडित; वह बदमाश जो देखनेमें भला आदमी लगे । **छिपे-छिपे**–अ० छिपकर, गुप्त रूपसे ।

छिपाना–स० क्रि० आड़में करना, ऐसी जगह या स्थितिमें रखना जहाँ कोई देख न सके; ढकना; प्रकट न करना ।

छिपाव–पु० छिपानेकी क्रिया या भाव, गोपन ।

छिपी–पु० दे० 'छीपी'; दर्जी (बुंदेल०) ।

छिप्र*–वि०, अ० दे० 'क्षिप्र' ।

छिबड़ा–पु० झावा, चिपटे पेंदेका टोकरा ।

छिबड़ी–स्त्री० छोटा टोकरा; एक तरहकी डोली जो रेतीके मैदानोंमें काममें लायी जाती है ।

छिमा*–स्त्री० दे० 'क्षमा' ।

छियना*– स० क्रि० छूना–'देखि जियौ, न छियौ घन-आनँद' ।

छिया*–वि० मैला, गंदा; घृणित; तुच्छ–'··लागैं सब और छितिपाल छितिमें छिया'–भूषण । † पु० मैला, गू (बच्चोंकी बोली) । स्त्री० गंदी, घिनौनी चीज; लड़की । मु० – छरद करना–छी-छी करना ।

छियानवे–वि०, पु० दे० 'छानवे' ।

छियालीस–वि० चालीस और छ । पु० ४६ की संख्या ।

छियासी–वि० अस्सी और छ । पु० ८६ की संख्या ।

छिरकना*–स० क्रि० दे० 'छिड़कना' ।

छिरना*–अ० क्रि० दे० 'छिलना' ।

छिरहटा–पु० दे० 'छिरेटा' ।

छिरेटा–पु० एक लता जिसके पत्ते और फल दवाके काम आते हैं ।

छिलकना*–स० क्रि० दे० 'छिड़कना' ।

छिलका–पु० फल, मूल, अंडे आदिका ऊपरी आवरण ।

छिलछिला*–वि० छिछला ।

छिलना–अ० क्रि० चमड़े या छिलकेका कटकर अलग हो जाना या रगड़से उधड़ जाना ।

छिलवा–पु० (ऊखकी पत्तियाँ) छीलनेवाला ।

छिलवाई–स्त्री० छिलवानेकी मजदूरी ।

छिलवाना–स० क्रि० छीलनेका काम कराना ।

छिलहिंड–पु० (सं०) दे० 'छिरेटा' ।

छिलाई–स्त्री० छीलनेका काम; छीलनेकी मजदूरी ।

छिलाना–स० क्रि० दे० 'छिलवाना' ।

छिलाव–पु०, **छिलावट**–स्त्री० छीलनेकी क्रिया ।

छिलौरी–स्त्री० छोटा छाला ।

छिहत्तर–वि० सत्तर और छ । पु० छिहत्तरकी संख्या, ७६ ।

छिहरना†–अ० क्रि० फैलना, बिखरना ।

छिहानी*–स्त्री० मरघट, मसान ।

छींक–स्त्री० छींकनेकी क्रिया या आवाज । मु० **–होना**–अपशकुन होना ।

छींकना–अ० क्रि० नथुनोंमें खुजली, चुनचुनाहट पैदा करनेवाली या श्वासक्रियामें बाधक वस्तुको निकालनेके लिए भीतरकी वायुका वेग और आवाजके साथ बाहर आना । मु० **छींकते या छींकनेपर नाक कटना**–छोटेसे अपराधका बहुत बड़ा दंड मिलना ।

छींका–पु० दे० 'छीका' ।

छींट–स्त्री० वह कपड़ा जिसपर रंग-बिरंगी बूटियाँ छपी हों; दे० 'छींटा'–'आनन रहीं ललित पय-छींटैं छाजत छवि तृन तोरे'–सूर।

छींटना–स० क्रि० छितराना, बिखेरना ।

छींटा–पु० पानी या दूसरे द्रव द्रव्यकी बूंदें जो फेंकने, उछालनेसे किसी चीजपर पड़ें; छींटेका दाग; नन्हा-सा दाग; हलकी वर्षा; बौछार; हलका आक्षेप, व्यंग्योक्ति; हाथसे बखेरकर बोये हुए बीज; इस तरहकी बोआई; मदक आदिकी एक मात्रा; दे० 'छीटा' । **–कशी**–स्त्री० दे० 'आवाजाकशी' । मु० **–छोड़ना,–फेंकना**–आक्षेप करना, व्यंग्य करना । **–देना**–भड़काना, उकसाना ।

छींदा†–पु० छीमी, फली ।

छींबी–स्त्री० मटरकी छीमी ।

छी–अ० घृणा, तिरस्कार या धिक्कारका भाव प्रकट करता है, थू, धिक्कार । स्त्री० गू, मैला (बच्चोंकी बोली) । मु० **–छी करना**–घृणा प्रकट करना ।

छीका–पु० रस्सी, तार आदिकी बनी, झोली जैसी चीज जिसे छत आदिसे लटकाकर उसपर खाने-पीनेकी चीजें रखते हैं, सीका, सिकहर; जाबा, मोहरा; झूलेका पुल; छितनी । मु० **–टूटना**–संयोगसे बिना प्रयत्न किये कोई लाभ हो जाना ।

छीछड़ा–पु० दे० 'छिछड़ा' ।

छीछालेदर–स्त्री० दुर्दशा, फजीहत ।

छीज–स्त्री० छीजनेका भाव, क्षय, घटाव, ह्रास; * घाटा ।

छीजन–स्त्री० छीजने, खराब होने इत्यादिके कारण होनेवाली कमी; दे० 'छीज' ।

छीजना–अ० क्रि० क्षीण होना, घटना; नष्ट होना; खराब होना; हानि होना । * स० क्रि० छूना–'आनँद घन रसरासि पायकै क्यों जग-छीलर छीजैं' ।

छीट–स्त्री० दे० 'छींट' ।

छीटना–स० क्रि० दे० 'छींटना' ।

छीटा–पु० बाँसकी तीलियोंका बना टोकरा, बड़ी छितनी; चिक ।

छीतना–स० क्रि० बिच्छू, भिड़ आदिका डंक मारना; चोट पहुँचाना।

छीतस्वामी–पु० एक कृष्णभक्त कवि जो वल्लभाचार्यके शिष्य और अष्टछापके अंतर्गत माने जाते हैं ।

छीति*–स्त्री० हानि, घटी; संपर्क ।

छीतीछान†–वि० छिन्न-भिन्न ।

छीदा–वि० बहुतसे छेदोंवाला; विरल ।

छीन*–वि० दे० 'क्षीण' । स्त्री० छीननेकी क्रिया या भाव (केवल 'छीन-झपट'में व्यवहृत) । **–झपट**–स्त्री० दे० 'छीना-झपटी' ।

छीनना–स० क्रि० दूसरेसे जबरदस्ती ले लेना, उचक लेना, ऐंठ लेना; † छिन्न करना, काट देना; सिल आदि कूटना ।

छीना*–स० क्रि० छूना, स्पर्श करना–'स्वान प्रसादहिं छी गयो कौवा गयो बिटारि'–व्यासजी ।

छीना-खसोटी, छीना-छीनी, छीना-झपटी–स्त्री० एक-दूसरेके हाथसे छीन लेनेकी कोशिश; दूसरेके हाथसे चीज झपटकर ले लेना, लेकर चंपत होना ।

छीप–स्त्री० छाप, दाग; सेहुआँ; वह छड़ी जिसमें मछली फँसानेकी कँटिया बाँधी जाती है । * वि० तेज वेगवाला ।

छीपना–स० क्रि० कँटियामें मछलीके फँसनेपर छीपको झटका देकर उसे (मछलीको) बाहर निकालना ।

छीपा†–पु० एक तरहका दूधका भाँड़ा; थाली; छीपी ।

छीपी–पु० छींटें छापनेवाला; दर्जी, छिपी । स्त्री० धातुकी तश्तरी; कबूतर उड़ानेका लग्गा ।

छीबर*–स्त्री० छींटकी साड़ी, चुनरी; बेल-बूटेदार कपड़ा ।

छीमी–स्त्री० फली; मटरकी फली; † गाय-भैंस आदिकी चूची ।

छीर*–पु० दे० 'क्षीर' । **–ज**–पु० दही; चंद्रमा । **–धि**–पु० क्षीरसागर । **–प**–पु० दूध पीनेवाला बच्चा । **–फेन**–पु० दूधकी मलाई । **–समुद्र,–सागर,–सिंधु**–पु० दे० 'क्षीरसागर' ।

छीर†–पु० कपड़ेका छोर; कपड़ेका फटना ।

छीलक*–पु० छिलका ।

छीलना–स० क्रि० उतारना; खरोचना; खुरचकर अलग करना (घास, अक्षर इ०); गले आदिमें चुनचुनाहट पैदा करना ।

छीलर–पु० मोटका पानी उड़ेलनेके लिए कुएँके पास बना हुआ गड्ढा; छिछला गड्ढा, तलैया । वि० छिछला ।

छीव*–वि० दे० 'क्षीव' ।

छुंगली*–स्त्री० घुंघरूदार अँगूठी ।

छुअना†–स० क्रि० स्पर्श करना; सफेदी करना ।

छुआई–स्त्री० लेश; स्पर्श, लगाव; † सफेदी करनेकी क्रिया या उसकी उजरत ।

छुआछूत–स्त्री० छूतछातका खयाल; अस्पृश्यको छूना ।

छुआना†–स० क्रि० दे० 'छुलाना'; सफेदी कराना ।

छुईमुई–स्त्री० लज्जावती, लजालू; बहुत ही नाजुकमिजाज या चिड़चिड़ा आदमी; बहुत कमजोर चीज ।

छुगनू*–पुं घुंघरू ।

छुच्छा–वि० दे० 'छूंछा' ।

छुच्छी–वि० स्त्री० दे० 'छूंछी' । स्त्री० पतली, छोटी नली; जुलाहोंकी नरी; नाकमें पहननेका एक गहना, कीप ।

छुछहँड़†–स्त्री० छूछी हाँडी ।

छुछुंदर–पु०, स्त्री० (सं०) दे० 'छछूंदर' ।

छुछुआना–अ० क्रि० छछूंदरकी तरह 'छू-छू' करते फिरना; बेकार भटकना ।

छुट*–अ० छोड़कर, सिवाय । वि० 'छोटा'का लघु और केवल समासमें व्यवहृत रूप । **–पन**–पु० छोटापन, छुटाई; बचपन । **–भैया**–पु० छोटे दरजे, हैसियतका आदमी ।

छुटकाना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना; अलग करना; छुड़ाना ।

छुटकारा–पु० बंधनसे छूटना, रिहाई; निस्तार; छुट्टी, फुरसत ।

छुटना*–अ० क्रि० दे० 'छूटना' ।

छुटाई†–स्त्री० दे० 'छोटाई' ।

छुटाना†–स० क्रि० दे० 'छुड़ाना' । अ० क्रि० गाय-भैंसका दूध देना बंद करना; † पकड़से निकल जाना ।

छुटापा–पु० छोटा होनेका भाव; छुटपन; लड़कपन ।

छुटौती†–स्त्री० सूद या लगान जो छोड़ दिया जाय; छुड़ाने, रिहा करानेका कार्य या उसके बदले लिया जानेवाला धन,–'तब छोड़ा जब घरसे छुटौतीके पैसे मँगवाकर उन्हें दिये'–अहिल्या० ।

छुट्टा–वि० जो बँधा न हो; अकेला, बिना बाल-बच्चेका; फुटकर । **–पान**–पु० वह पान जिसका बीड़ा न लगा हो ।

छुट्टी–स्त्री० छुटकारा; अवकाशकाल, फुरसत; काम बंद रहनेका दिन, तातील; आये हुएको जानेकी अनुमति; मौकूफी । मु०**–मनाना**–अवकाशका आनंद लेना ।

छुड़वाना–स० क्रि० छोड़नेका काम कराना ।

छुड़ाई–स्त्री० छोड़ने या छुड़ानेकी क्रिया; छोड़नेके बदलेमें दिया जानेवाला धन; पतंगको कुछ दूर ले जाकर ऊपर उछालना (इससे उड़ानेवालेको उसे उड़ानेमें आसानी होती है) ।

छुड़ाना–स० क्रि० पकड़ रखी हुई वस्तु, व्यक्तिके छूटनेका उपाय

करना, छुटकारा दिलाना; रिहा कराना; बंधनसे निकालना; दूसरेके कब्जेसे निकालना (रेहन, खेत इ०); रेलवे, डाकसे आयी हुई चीजको महसूल आदि चुकाकर ले लेना; दूर करना (दाग, मैल इ०); नौकरीसे अलग करना; दे० 'छोड़वाना'। † अ० क्रि० दे० 'छुटाना'।

छुड़ैया–पु० छुड़ानेवाला; बचानेवाला; स्त्री० पतंगको कुछ दूर ले जाकर ऊपर उछालनेका काम जिससे उड़ानेवाला आसानीसे उड़ा सके।

छुड़ौती†–स्त्री० बंधन मुक्त करने, छोड़नेके लिए दिया जानेवाला धन; छुटौती।

छुतहा, छुतिहा†–वि० छूतवाला; जिसे छूत लगी हो। पु० शोरेका नमक। **–अस्पताल**–पु० वह अस्पताल जहाँ संक्रामक रोगोंसे पीड़ित रोगियोंका इलाज किया जाता है।

छुतिहर†–पु० वह घड़ा जो अशुद्ध हो गया हो; बुरा व्यक्ति।

छुत्*–स्त्री० दे० 'क्षुत्'।

छुद्धित*–वि० क्षुधित, भूखा 'खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत'–रामा०।

छुद्र*–वि० दे० 'क्षुद्र'। **–घंट**–पु०,**–घंटिका**–स्त्री० दे० 'क्षुद्रघंटिका'।

छुद्रावली*–स्त्री० दे० 'क्षुद्रघंटिका'।

छुधा*–स्त्री० भूख, क्षुधा। **–वंत***–वि० भूखा–'छुधावंत सब निशिचर मोरे'–रामा०।

छुधित*–वि० भूखा, क्षुधित।

छुनछुनाना–अ० क्रि० 'छुन-छुन' आवाज पैदा करना।

छुननमुनन, छुनमुन–पु० बच्चोंकी पैजनियों, कड़ों आदिकी आवाज।

छुप–पु० (सं०) क्षुप; स्पर्श; युद्ध; वायु। वि० चंचल, तेज।

छुपना–अ० क्रि० दे० 'छिपना'।

छुपाना–स० क्रि० दे० 'छिपाना'।

छुबुक–पु० (सं०) चिबुक, ठुड्डी (वै०)।

छुभित*–वि० दे० 'क्षुभित'।

छुभिराना*–अ० क्रि० क्षुब्ध होना।

छुरण–पु० (सं०) लेप करना, पोतना।

छुरधार*–स्त्री० छुरेकी धार।

छुरा–स्त्री० (सं०) चूना। पु० (हिं०) बड़ा चाकू जो बंद नहीं किया जा सकता और मांस काटने, आक्रमण करने आदिके काम आता है; बाल मूँड़नेका औजार, उस्तरा। **–(रे)बाजी**–स्त्री० छुरेकी लड़ाई; (दंगे आदिमें) छुरा भोंकनेकी घटनाएँ होना।

छुरिका–स्त्री० (सं०) छुरी।

छुरित–वि० (सं०) लेप किया हुआ, पुता हुआ; खचित; कटा हुआ। पु० लास्य नृत्यका एक भेद।

छुरी–स्त्री० (सं०) छोटा छुरा, कलमतराश चाकू। **–धार**–स्त्री० हाथीदाँतका बना एक औजार। मु०**–कटारी रहना**–वैर होना, लड़ाई-झगड़ा होते रहना। **–कटारी लिये रहना**–लड़नेको तैयार रहना। **–कटारी होना**–दे० 'छुरी-कटारी रहना'। **–चलाना**–बहुत सताना, कष्ट देना; भारी हानि करना। **–तले दम लेना**–अति क्लेश, विपत्तिमें धैर्य धारण करना। **–तेज करना**–अपकार, उत्पीड़नकी तैयारी करना। **–फेरना**–दे० 'छुरी चलाना'।

छुलकना–अ० क्रि० थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करना।

छुलछुल–पु० थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करनेकी आवाज।

छुलछुलाना–अ० क्रि० थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब करना। स० क्रि० थोड़ा-थोड़ा करके पानी गिराना।

छुलाना–स० क्रि० दूसरी चीजसे सटाना, स्पर्श कराना।

छुवाछूत–स्त्री० दे० 'छुआछूत'।

छुवाना*–स० क्रि० दे० 'छुलाना'।

छुहना*–स० क्रि० चूनेसे पोतना, सफेदी करना; रँगना, पोतना। अ० क्रि० रँगा, पोता होना।

छुहाना†–अ० क्रि० छीह उत्पन्न होना, स्नेहयुक्त होना; दया; अनुग्रह करना; रँगा, पोता जाना, सफेदी होना। स० क्रि० रँगवाना, पोतवाना, सफेदी कराना।

छुहारा–पु० खजूरका एक भेद जो रेगिस्तानी प्रदेशोंमें होता है, पिंडखजूर, खुरमा; उसका (सूखा) फल।

छुहारी–स्त्री० छोटा छुहारा।

छुही†–स्त्री० सफेद मिट्टी।

छूँछना†–पु० बाहर निकला हुआ दरी आदिका लंबा रेशा, फुचड़ा।

छूँछा–वि० खाली, रीता; साररहित, खोखला; जिनके पास कुछ न हो, निर्धन। मु०**–पड़ना***–व्यर्थ जाना, निष्फल होना 'तातें परेउ मनोरथ छूँछे'–रामा०।

छूँछी–वि० स्त्री० दे० 'छूँछा'-'अशुभ भरी शुभ छूँछी'–रामा०। स्त्री० दे० 'छुच्छी'।

छूँटा–पु० काँचके काले गुरियोंकी बनी कंठी या माला।

छू–पु० फूँकने, खासकर मंत्र पढ़कर फूँकनेकी आवाज। **–मंतर**–पु० मंत्र पढ़कर फूँकना; मंत्र, जादू। मु०**–करना**–मंत्र पढ़कर फूँकना। **–बनना**–चलता बनना, गायब होना। **–मंतर होना**–तुरत दूर होना, उड़ जाना (पीड़ा आदिका)। **–होना**–दे० 'छू बनना'।

छूछा–वि० दे० 'छूँछा'। '(स्त्री० 'छूछी'।)

छूछू–वि० बुद्धू, अहमक (बनना, बनाना)। स्त्री० धाय।

छूट–स्त्री० छूटनेका भाव, छुटकारा; अवकाश; (कुछ करनेकी) आजादी, रोक न होना; लगान, मालगुजारी या ऋणकी (अंशत.) माफी; बने, पटे आदिकी वह लड़ाई जिसमें चाहे जहाँ वार किया जा सके (लड़ना); खुला, अश्लील परिहास; कर्तव्य कर्मके करनेमें चूक, नागा; फक्कड़बाजी; तलाक। **–छुटाव**–पु० नातातोड़, विच्छेद।

छूटना–अ० क्रि० बंधन दूर होना, छुटकारा होना; बझी हुई चीजका खुल जाना; सटी, चिपकी हुई चीजका अलग होना, निकलना; खुलना, रवाना होना (रेल आदिका); चलना; वेगसे फेंका, मारा जाना (तीर, बंदूक इ०); बिछुड़ना, (से) जुदा, वियुक्त होना (घर, देह इ०); दूर होना, जाता रहना (रोग, ज्वर, आदत); धारारूपमें वेगसे निकलना (पिचकारी, फुहारा, आतिशबाजी); रसना, निचुड़ना (पानी छू०); बचना, बाकी रहना; बँधे हुए पशुका निकल भागना; बंधकसे निकलना; किसी काम या चीजको भूल जाना, चूक, प्रमाद होना; नौकरी आदिसे अलग किया जाना; चलना रुकना, बंद होना (नाड़ी, साँस); मिटना, उड़ना (दाग, रंग)। **छूटकर**–अ० आजादीके साथ, बिना किसी रोक या बंधनके।

छूत–स्त्री० छूने, छू जानेका भाव, स्पर्श; स्पर्शजनित अशुचिता, स्पर्शदोष; स्पर्शसे एकका रोग दूसरेको होना, लगना; स्पर्शसे होनेवाले रोगका विष; बिगाड़, बुराईकी ओर ले जानेवाला उदाहरण, प्रभाव; मनहूस आदमी या भूत-प्रेतकी छाया। **–का रोग,–की बीमारी**–वह रोग जो रोगी या उसके मल-मूत्र आदिके स्पर्शसे दूसरेको हो जाय। मु०**–उतारना,–झाड़ना**–मनहूस आदमी या भूत-प्रेतकी छायाको झाड़-फूँकसे दूर करना।

छूना-स० क्रि० किसी चीजसे सट, लग जाना, किसी चीजका हाथ या शरीरके किसी अंगसे स्पर्श करना; किसीके पास पहुँचना; दौड़ आदिमें (किसीको) पकड़ लेना; दानके लिए स्पर्श करना (खिचड़ी, सीधा छूना); हाथ लगाकर छोड़ देना, थोड़ा ही काममें लाना; बहुत हलकी चपत लगाना; पोतना, रंग करना। अ० क्रि० दो वस्तुओंके बीच व्यवधानका अभाव होना, एकका दूसरीसे सट जाना।

छूरा–पु० उस्तरा; बड़ा चाकू, छुरा।

छेँक–स्त्री० छेंकनेकी क्रिया; रोक–'सुना साहि गढ छेंका आई'–प०।

छेँकना–स० क्रि० घेरना; रोकना; जगह लेना; अक्षर आदि काट कर रद्द करना, मिटाना।

छेक–पु० (सं०) पालतू पशु; अनुप्रास अलंकारका एक भेद; मधुमक्खी, * छेद; कटाच। त्रि० पालतू; विदग्ध, चतुर; नागर।

छेकना–स० क्रि० दे० 'छेँकना'।

छेकानुप्रास–पु० (सं०) अनुप्रास अलंकारका वह भेद जिसमें एक या अधिक वर्णोंकी आवृत्ति एक ही बार होती है।

छेकापह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नुति अलंकारका एक भेद–दूसरेकी अनुमितिका बहाना बनाकर, अथवा यथार्थ बात कहकर खंडन।

छेकाल, छेकिल–वि० (सं०) दे० 'छेक'।

छेकोक्ति–स्त्री० (सं०) अर्थांतर-गर्भित लोकोक्ति।

छेटा*–स्त्री० रुकावट।

छेड़–स्त्री० छेड़नेकी क्रिया या भाव; उँगलीसे छू, कोंचकर या व्यंग्य, चुटकी द्वारा किसीको चिढ़ाने, खिजानेकी कोशिश; चिढ़ाने, खिजानेवाली वात; नोक-झोंक; एक दूसरेपर चोटें करना; सुर निकालनेके लिए वाजे (स्वरवाद्य) को छूने, दवानेकी क्रिया। **–खानी,–छाड़**–स्त्री० छेड़नेवाली वात, काम, हँसी-ठिठोली, नोक-झोंक; रोककर, टोककर कोई अनुचित वात कहना या अशिष्ट व्यवहार करना।

छेड़ना–स० क्रि० हँसाने, चिढ़ानेके लिए उँगली आदिसे छूना, कोंचना, व्यंग्य करना, चुटकी लेना; किसीको उत्तेजित करनेके लिए कुछ करना, कहना, छेड़छाड़ करना; आरंभ करना (काम, चर्चा); स्वर निकालनेके लिए वाजेको छूना, दवाना।

छेड़वाना–स० क्रि० छेड़नेकी क्रिया कराना।

छेत्ता(त्तृ)–वि० (सं०) छेदनकर्त्ता; नष्ट करनेवाला; निवारण करनेवाला (भ्रम आदि)। पु० लकड़ी काटनेवाला।

छेत्र*–पु० दे० 'क्षेत्र'।

छेद–पु० छोटे मुँहवाला गहरा गड्ढा, विल, सूराख; वह छिद्र जो किसी चीजके आर-पार हो गया हो, (सं०) छेदन; खंडन; नाश; कटनेका घाव; परिचायक चिह्न; अभाव; असफलता; भाजक (ग०)। **–कर**–पु० लकड़ी काटनेवाला।

छेदक–पु० (सं०) छेदनकर्त्ता; भाजक; हर (ग०)। वि० काटनेवाला। **–रेखा**–स्त्री० (सीकैंट) वह सरल रेखा जो वृत्तको दो विंदुओंपर काटती है।

छेदन–पु० (सं०) काटना, दो टुकड़े करना; दूर, निराकरण करना; नाश करना; काटने, छाँटनेका अस्त्र, औजार; कफ निकालनेवाली दवा; खंड; विभाजन। वि० छेदक, छेदनकर्ता।

छेदनहार*–वि० काटनेवाला; नाश करनेवाला।

छेदना–स० क्रि० छेद, सूराख करना, वेधना; घाव करना। पु० छेद करनेका औजार, सूजा आदि।

छेदनीय–वि० (सं०) छेदन करने योग्य।

छेदा–पु० घुन; घुन लगनेके कारण अनाजका खोखला होना; छिद्र।

छेदि–वि० (सं०) छेदनकर्ता। पु० वढ़ई; वज्र।

छेदिका–स्त्री० वक्ररेखाको कई भागोंमें काटनेवाली रेखा; दे० 'छेदक रेखा'।

छेदित–वि० (सं०) कटा हुआ, छिन्न।

छेदी(दिन्)–वि० (सं०) काटने या फाड़नेवाला; विभाजन करनेवाला; नष्ट करनेवाला; दूर करनेवाला।

छेद्य–वि० (सं०) काटने लायक, छेदनीय।

छेना–पु० फटे हुए दूधका पानी निचोड़ देनेपर वच रहनेवाला ठोस अंश, पनीर। स० क्रि० ताड़, खजूरके तने आदिको रस निकालनेके लिए छीलना; काटना। * अ० क्रि० क्षीण होना।

छेनी–स्त्री० पत्थर या कोई धातु काटने या उसपर खुदाई करनेका औजार, टाँकी; वह नहन्नी जिससे अफीम पाछी जाती है।

छेमंड–पु० (सं०) विना माँ-वापका वच्चा, अनाथ।

छेम*–पु० दे० 'क्षेम'। **–करी**–स्त्री० सफेद चील।

छेरना†–अ० क्रि० वार वार पतली टट्टी करना, पोंकना। स० क्रि० छेड़ना।

छेरा–पु० वक़रा; छोरा, वच्चा।

छेरी–स्त्री० वकरी।

छेलक–पु० (सं०) वकरा।

छेली†–स्त्री० दे० 'छेरी'।

छेव–पु० वार, चोट; घाव–'अरिनके उर माँहि कीन्हों इमि छेव है'–भूषण; काटने या छीलनेका घाव; छेद; अंत।

छेवन–पु० चाकपरका वरतन काटकर अलग करनेका तागा।

छेवना†–स० क्रि० काटना; चिह्नित करना; * फेंकना; मिलाना। पु० ताड़ी।

छेदनी†–स्त्री० छेनी।

छेवर, छेवरा†–पु० छिलका, त्वचा।

छेवला†–पु० पलाशका पेड़, जिसके पत्तोंसे पत्तल और दोने बनाये जाते हैं।

छेवा*–पु० दे० 'छेव'; हिसाब किताब, धोवीका कपड़ा या और किसी वस्तुकी वापसी या मिलानके समय उसके सामने लगाया जानेवाला चिह्न। मु०–**लगाना**–निशान लगाना।

छेवना†–अ० क्रि० चिह्न लगाना।

छेह*–पु० छेव; राख; धूल; नाश, अंत; नृत्यका एक भेद। वि० खंडित; न्यून।

छेहरा*–पु० छेह; विरह–'कह्यौ न परत कछु रह्यौ न परत है सह्यौ न परत छिन छेहरा'–घन०।

छै–वि०, पु० दे० 'छः'। * पु० क्षय, नाश।

छैदिक–पु० (सं०) वेत।

छैना*–अ० क्रि० छीजना, क्षय होना।

छैया*–पु० क्षयकारी, नाश करनेवाला; छोटा वच्चा (प्यारमें)।

छैल*–पु० दे० 'छैला'। **–चिकनियाँ,–छवीला**–वि० बनाव-सिंगारका शौकीन।

छैलना†–अ० क्रि० वच्चोंका मचलना।

छैला–पु० वह जो खूब वना-ठना रहे; बाँका, रंगीला पुरुष।

छोँकर, छोँकरा–पु० सफेद कीकर, शमी।

छोँड़ा–पु० मथानी; लड़का।

छोँड़ि–स्त्री० मथानी; वड़ा वरतन; * लड़की।

छोँड़ी–स्त्री० लड़की।

छो–पु० छोह; प्रेम; दया; गुस्सा।

छोआ–पु० जूसी, चोटा।

छोई–स्त्री० ईखकी सूखी पत्ती, पताई, खोई; निस्सार वस्तु।

छोकड़ा–पु० दे० 'छोकरा'।

छोकड़ी–स्त्री० दे० 'छोकरी'।

छोकरा–पु० कच्ची उम्र और अक्लका लड़का, लौंडा; दे० 'छोँकरा'। **–पन**–पु० वालकपन; नासमझी।

छोकरी–स्त्री० कच्ची उम्र और अक्लकी लड़की, लौंडिया।

छोटा–वि० ऊँचाई, लंबाई चौड़ाई, उम्रमें कम, लघु; पद, प्रतिष्ठा, योग्यतामें कम; महत्त्वरहित; तुच्छ; ओछा, कमीना, क्षुद्र। –**–आदमी**–पु० छोटी हैसियतका आदमी, साधारण जन। **–ई**–स्त्री० छोटापन; क्षुद्रता। **–कचूर**–पु० कपूरकचरी। **–कपड़ा**–पु० अँगिया, चोली, टोपी, रूमाल, गंजी जैसा कपड़ा; वच्चोंका कपड़ा। **–कुँआर,–कुँवार**–पु० घीकुआरका एक भेद। **–चाँद**–पु० एक लता जिसकी जड़ सर्पविषकी दवा मानी जाती है। **–चिल्ला**–पु० प्रसूताका प्रसवके दसवें, वीसवें या तीसवें दिनका स्नान (मुसल०)। **–पन**–पु० छोटाई; बचपन। **–पाट**–पु० रेशमके कीड़ेका एक भेद। **–बड़ा**–वि० अमीर-गरीव। पु० वच्चा-वूढ़ा; बड़ा आदमी और साधारण जन। **–मोटा**–वि० छोटा-सा, साधारण। **–(टे)मियाँ** पु० अमीर या बड़े आदमीका वेटा, छोटे बाबू (नौकर)। मु०**–मुँह बड़ी बात**–अपनी हैसियतसे बड़ी बात कहना; छोटे आदमीका बड़ेके दोष निकालना, निंदा करना।

छोटिका–स्त्री० (सं०) चुटकी (बजाना)।

छोटी–वि० स्त्री० 'छोटा'का स्त्री०। **–इलायची**–स्त्री० हरापन लिये सफेद और पतले छिलकेकी इलायची, गुजराती इलायची। **–जाति**–स्त्री० वह जाति जिसका दरजा समाजमें नीचा माना जाता हो, नीच जाति। **–बात**–स्त्री० मामूली बात; ओछेपन, क्षुद्रताका काम। **–माईँ**–स्त्री० एक ओषधि। **–सहेली**–स्त्री० एक छोटी सुंदर चिड़िया। **–हाज़िरी**–स्त्री० हिंदुस्तानमें रहनेवाले यूरोपियनोंका सबेरेका नाश्ता (वेरा, खानसामाँ)। मु० **–खूँटीका**–छोटे कदका, ठिँगना।

छोटी(टिन्)–पु० (सं०) मछुवा।

छोड़चिट्ठी–स्त्री० ऋण या बंधनसे मुक्तिकी चिट्ठी; तलाकनामा; फारिगखती।

छोड़छुट्टी–स्त्री० संबंधत्याग।

छोड़ना–स० क्रि० पकड़से निकाल देना, बंधन खोलना, छुटकारा देना; न लेना; मुआफ करना; पावनेमें छूट देना; त्यागना, अलग

होना; (घर, देशसे) प्रस्थान करना, बिदा होना; पड़ा रहने देना; साथ न लाना, न लेना; (किसी कामके लिए) रवाना करना, भेजना, दौड़ाना, चलाना; (किसीके) पीछे लगाना; वेगसे छूटने, निकलनेवाली चीजको फेंकना, मारना, चलाना (पिचकारी, आतिशबाजी इ०); दूरगामी अस्त्रोंको चलाना (तीर, तोप, बंदूक आदि); उपभोगसे बचा रहने देना, बाकी रखना (जूठन, काम, मरनेके बाद संतान, संपत्ति इ०); नीचे गिराना, डालना; न करना, करने, कहने, लिखनेमें भूलसे या जानकर छूट जाने देना (अक्षर, उल्लेख); करनेसे विरत होना, न करना (नौकरी, आदत); फुलझड़ी, पटाखा छोड़ना। **मु० छोड़-छाड़कर**–छोड़कर। **(किसीपर) छोड़ना**–किसीके भरोसे छोड़ना, किसीको सौंपना।

छोड़वाना–स० क्रि० छोड़नेका काम कराना।

छोड़ाना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'छुड़ाना'।

छोत*–स्त्री० दे० 'छूत'।

छोति*–स्त्री० स्पर्श।

छोनिप*–पु० क्षोणिप, राजा।

छोनी*–स्त्री० क्षोणी, भूमि।

छोप–पु० छोपनेकी क्रिया; मोटा लेप; छोपनेके काम आनेवाली गीली मिट्टी आदि; छिपाव; आघात। **–छाप**–पु० दीवारकी मरम्मत, टूट-फूट भरना।

छोपना–स० क्रि० किसी चीजकी लुगदीका लेप करना; दीवारपर पलस्तर करने, उसका गढ़ा आदि भरनेके लिए गिलावा लगाना; दबोचना, धर दबाना; ढकना; मत्थे मढ़ना।

छोपा†–पु० पालके कोनोंपर बँधी हुई रस्सियाँ जिनसे वह ऊपर चढ़ाया जाता है।

छोपाई–स्त्री० छोपनेकी क्रिया, भाव या उजरत।

छोभ*–पु० दे० 'क्षोभ'; नदी आदिका उमड़ना।

छोभना*–अ० क्रि० क्षुब्ध होना; चंचल, उद्विग्न होना।

छोभित*–वि० दे० 'क्षोभित'।

छोम*–वि० चिकना; मुलायम।

छोर–पु० सिरा, नोक; कोना; सीमा।

छोरटी*–स्त्री० लड़की, छोकरी।

छोरण–पु० (सं०) छोड़ना, परित्याग।

छोरना*–स० क्रि० अपहरण करना, छीनना–'चोरि सकै नहिं चोरऊ, छोरि सकै नहि भूप'–दीनदयाल; † दे० 'छोड़ना'। **छोरा-छोरी**–स्त्री० छीना-झपटी; बखेड़ा।

छोरा*–पु० लड़का, छोकरा। (स्त्री० 'छोरी'।)

छोलंग–पु० (सं०) नीबू।

छोल–स्त्री० छिलने या खरोंचका चिह्न; दाँत लगनेका चिह्न।

छोलदारी–स्त्री० छोटा तंबू।

छोलना*–स० क्रि० छीलना, खुरचना; फैलाना; दिखाना। पु० हथियारोंका मुरचा छुड़ानेका एक औजार।

छोलनी†–स्त्री० छीलनेका औजार, खुरचनी।

छोला–पु० चना; ऊख काटने और छीलनेवाला।

छोवन†–पु० वह धागा जिससे कुम्हार चाकपर चढ़े बरतनको काटकर अलग करता है।

छोह–पु० स्नेह, ममता; कृपा, दया। **–गर †**–वि० प्रेमी, छोह करनेवाला।

छोहना*–अ० क्रि० दे० 'छोभना'; दया या प्रेम करना।

छोहरा*–पु० लड़का, छोकरा।

छोहरिया*–स्त्री० दे० 'छोहरी'।

छोहरी*–स्त्री० लड़की, छोकरी।

छोहाना*–अ० क्रि० छोह करना, स्नेहयुक्त होना; दया, कृपा करना।

छोहारा–पु० दे० 'छुहारा'।

छोहिनी*–स्त्री० अक्षौहिणी।

छोही–वि० छोह करनेवाला, स्नेही। स्त्री० गँड़ेरीकी सीठी।

छौंक–स्त्री० छौंकनेकी क्रिया, बघार; वह चीज जिससे कोई वस्तु छौंकी जाय।

छौंकना–स० क्रि० बघारना, तड़का देना।

छौंड़ा†–पु० लड़का, छोकरा; गाड़, खत्ता।

छौंड़ी†–स्त्री० लड़की।

छौना–पु० जानवरका छोटा (प्यारा) बच्चा, शावक।

छौर–† पु० दे० 'क्षौर'; दे० 'छौरा'।

छौरा†–पु० ज्वार, बाजरेका चारेके काम आनेवाला डंठल; छोकरा।

छ्वाना*–स० क्रि० छुलाना।

ज

ज–देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका तीसरा अक्षर। उच्चारण-स्थान तालु; अल्पप्राण।

जंकशन–पु० (अं०) दो सड़कों, रास्तोंके मिलनेका स्थान; वह स्टेशन जहाँ दो या अधिक रेललाइनें मिलें।

जंग–स्त्री० (फा०) लड़ाई, युद्ध। **–आवर,–जू**–वि० योद्धा। **–बाज**–पु० युद्ध चाहनेवाला, युद्धको बढ़ावा देनेवाला। **–(गे) ज़रगरी**–स्त्री० दिखाऊ, झूठमूठकी लड़ाई। **–(गो) जदल,–जिदाल**–पु० युद्ध, लड़ाई।

ज़ंग–पु० (फा०) मोरचा, धातुका मैल; हबशियोंका देश, अफ्रीका; घंटी।

जंगम–वि० (सं०) चलनेवाला, चल; जिसे एकसे दूसरी जगह ले जा सकें, स्थावरका उलटा (जंगम संपत्ति); प्राणिजन्य; लिंगायत संप्रदायके गुरुओंकी उपाधि। पु० चल वस्तु। **–कुटी**–स्त्री० छतरी। **–गुल्म**–पु० पैदल सिपाहियोंका दस्ता। **–विष**–पु० चर प्राणियों (सर्पादि)का जहर।

जँगरैत–वि० जाँगरवाला, परिश्रमी।

जंगल–पु० (सं०) अपने आप उगनेवाले वृक्षों, झाड़ोंसे संकुल स्थान, वन; रेगिस्तान; एकांत स्थान; उजाड़ स्थान, बंजर; मांस। –**–जलेबी**–स्त्री० (हिं०) जलेबीकी शकलवाला गू। **–में मंगल**–उजाड़, जनशून्य स्थानमें राग-रंग (मनाना, होना)।

जँगला–पु० छत, बरामदे आदिके आगे लगी हुई बाड़ जिसमें लोहे या लकड़ीके छड़ या जाली जड़ी हो; छड़ या जाली लगी हुई खिड़की; दुपट्टे आदिके किनारेपर कढ़े हुए बेल-बूटे; एक राग; अनाजके डंठल जिनसे अनाज झाड़ लिया गया हो।

जंगली–वि० जंगलमें मिलने या पैदा होनेवाला, वन्य; बिना बोये उगनेवाला, खुदरो; जो पालतू न हो, बनैला; असभ्य, उजड्ड। पु० जंगलमें रहनेवाला, वनवासी। **–जानवर**–पु० वन्य पशु। **–बादाम**–पु० कतीलेकी जातिका एक पेड़; पून वृक्ष; हड़की जातिका एक पेड़।

जंगा–पु० घुँघरूका दाना।

ज़ंगार, ज़ंगाल–पु० (फा०) ताँबेका कसाव, तूतिया; एक रंग।

ज़ंगारी–वि० (फा०) बाँध, मेड़।

ज़ंगाली–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा। वि० दे० 'ज़ंगारी'।

जंगी–वि० (फा०) युद्ध-संबंधी; सेना-संबंधी, फौजी; युद्धोचित (जंगी काररवाई); युद्धोपयोगी (जंगी जहाज); विशालकाय, बड़े डील-डौलका; लड़ाकू, झगड़ालू। **–जवान**–पु० लंबा-चौड़ा, बड़े डील-डौलका जवान। **–जहाज**–पु० लड़ाईमें काम आनेवाला जहाज, युद्धपोत। **–बेड़ा**–पु० जंगी जहाजोंका बेड़ा। **–लाट**–पु० भारतका प्रधान सेनापति, 'कमांडर-इन-चीफ' (ब्रिटिश शासन)।

ज़ंगी–पु० (फा०) हबशी। **–हड़**–स्त्री० काली और छोटी हड़।

जंगुल–पु० (सं०) विष।

जंघा–पु० (सं०) जाँघ; पिंडली; कैंचीका दस्ता। **–कर,–कार**–पु० धावक, हरकारा। **–त्राण**–पु० जाँघपर बाँधनेका कवच।

जंघार–पु० जाँघमें होनेवाला फोड़ा।

जंघारा–पु० राजपूतोंकी एक उपजाति।

जंघाल–पु० (सं०) धावक, दूत; हिरन। वि० तेज चलनेवाला।

जंघिल–वि० (सं०) तेज दौड़नेवाला; फुर्तीला।

जँचना–अ० क्रि० जाँचमें ठीक आना; अच्छा मालूम होना, ठीक लगना; पसंद आना; जाँचा जाना।

जँचा–वि० जाँचा हुआ; सटीक, अचूक।

जंजपूक–पु० (सं०) मंद स्वरमें जप करनेवाला भक्त।

ज़ंजबील–स्त्री० (अ०) सोंठ।

जंजर, जंजल*–वि० टूटा-फूटा, जीर्ण; निकम्मा।

जंजार, * जंजाल–पु० संसारका बखेड़ा, माया; झंझट, फँसाव, झमेला; लंबी नलीकी भारी बंदूक (प्रा०); बड़े मुँहकी तोप (प्रा०)।

जंजालिया–वि० दे० 'जंजाली'।

जंजाली–वि० बखेड़िया, फसादी। स्त्री० वह रस्सी और घिरनी जिनसे पाल चढ़ाने-उतारनेका काम लेते हैं।

ज़ंजीर–स्त्री० (फा०) साँकल, शृंखला; लड़ी; बेड़ी; किवाड़की कुंडी। **–ख़ाना**–पु० कैदखाना।

जंजीरा–पु० जंजीरकी शकलमें बटा हुआ डोरा; कशीदेकी सिलाई जिससे जंजीर-सी बनती जाती है, लहरिया; लहरियादार कपड़ा। **–(रे)दार**–वि० लहरियादार (सिलाई)।

ज़ंजीरी–वि० (फा०) जंजीरमें बँधा हुआ, बंदी; जंजीरदार; हाथका एक गहना। **–गोला**–पु० जंजीरमें बँधे हुए गोले जो तोपमें एक साथ रखकर छोड़े जायँ।

जंत*–पु० जंतु, जीव, व्यक्ति।

जंतर–पु० यंत्र, तावीज; ताँबे-चाँदी आदिकी तावीज जिसमें यंत्र भरकर पहनाया जाय; गलेमें पहननेका एक गहना; वेधशाला; वीणा। **–मंतर**–पु० यंत्र-मंत्र; जादू-टोना; वेधशाला।

जंतरी–स्त्री० पंचांग, पत्रा; छोटा जंतर; सुनारोंका एक औजार। पु० जंतर-मंतर करनेवाला; दे० 'जंत्री'।

जँत–'जाँता'का समासगत लघु रूप। **–सर**–पु०,**–सारी**–स्त्री० वह गीत जो चक्की पीसते वक्त स्त्रियाँ गाती हैं। **–सार**–स्त्री० वह घर या स्थान जहाँ जाँता गड़ा हो।

जंता–पु० यंत्र; तार खींचनेका औजार। * वि० यंत्रणा देनेवाला; नियमन करनेवाला; दवा रखनेवाला, 'यंता'।

जँताना–अ० क्रि० जाँते आदिसे दबकर पिस जाना; कुचल जाना।

जंती–स्त्री० छोटा जंता।

जंतु–पु० (सं०) प्राणी, जीव; पशु; कीड़ा-मकोड़ा; जीवात्मा। **–कंबु**–पु० शंखका कीड़ा; शंख। **–घ्न**–पु० विडंग, हींग, बिजौरा नीबू आदि कृमिनाशक औषध। वि० कृमिनाशक, जंतुओंका नाश करनेवाला। **–घ्नी**–स्त्री० वायबिडंग। **–नाशन**–पु० हींग। **–पादप**–पु० कोषाम्र वृक्ष। **–फल**–पु० गूलर। **–मारी**–स्त्री० नीबू। **–ला**–स्त्री० काशतृण, काँस। **–विज्ञान**–पु० (जूलॉजी) जंतुओं-पशु-पक्षियों आदिकी उत्पत्ति, विकास, स्वभाव, वर्गीकरण इत्यादिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, प्राणिविज्ञान। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ प्रदर्शन या अध्ययनके लिए जीवित जंतु रखे जायँ, चिड़ियाघर। **–हंत्री**–स्त्री० वायविडंग।

जंतुका–स्त्री० (सं०) लाख, लाक्षा।

जंतुमती–स्त्री० (सं०) धरती।

जंत्र–पु० यंत्र, तावीज; ताला। **–मंत्र**–पु० दे० 'जंतर-मंतर'।

जंत्रना*–स० क्रि० ताला लगाना, जकड़ देना–'भरत भगति सबकै मति जंत्री'–रामा०। स्त्री० दे० 'यंत्रणा'।

जंत्रित*–वि० यंत्रित, जकड़ा हुआ; बंद।

जंत्री–पु० वीणा–'...बिना तार तंत्री जीभ जंत्रीसी बजत है'–रसविलास। वि० वीणा-वादक; जकड़बंद करनेवाला। स्त्री० तिथिपत्र।

ज़ंद–स्त्री० आर्योंकी ईरानी शाखाकी प्राचीन भाषा जो वैदिक संस्कृतसे बहुत मिलती है। पु० ज़रतुस्ती पारसियोंका प्रथम धर्मग्रंथ, जंद अवेस्ता। **–अवेस्ता**–पु० पारसियोंका जरतुस्त-रचित धर्मग्रंथ।

जंदरा–पु० जाँता; कल।

जंपती–पु० (सं०) दे० 'दंपती'।

जंपना*–स० क्रि० जल्पना, कहना।

जंब–पु० (सं०) पंक, कीचड़।

जंबाल–पु० (सं०) कीचड़; काई; सेवार; केवड़ा।

जंबालिनी–स्त्री० (सं०) नदी।

जंबीर–पु० (सं०) जँबीरी नीबू; मरुवा; वनतुलसी।

जँबीरी नीबू–पु० नीबूका एक भेद जो कागजीसे आकारमें बड़ा और अधिक खट्टा होता है।

जंबील–स्त्री० (फा०) फकीरों आदिकी भिक्षा रखनेकी एक तरहकी थैली।

जंबु, जंबू–पु० (सं०) जामुनका पेड़ और फल। **–खंड**–पु० दे० 'जंबुद्वीप'। **–द्वीप**–पु० पुराणानुसार धरतीके सात महाद्वीपों या प्रधान विभागोंमेंसे एक जिसके नौ खंडोंमेंसे एक भारतवर्ष भी है। **–नदी**–स्त्री० पुराणानुसार एक नदी जो जंबुद्वीपके नामकरणके हेतु जामुनके पेड़से चूनेवाले जामुनोंके रससे निकलती है; ब्रह्मलोकसे निकली हुई सात नदियोंमेंसे एक। **–प्रस्थ**–पु० वाल्मीकीय रामायणमें वर्णित एक नगर जो ननिहालसे लौटते समय भरतके रास्तेमें पड़ा था। **–वनज**–पु० सफेद अड़हुल। **–ल**–पु० जामुन; केवड़ा; केतकी; वर-कन्या-पक्षवालोंकी ओरसे एक-दूसरेके प्रति कहा जानेवाला परिहास-वचन।

जंबुक, जंबूक–पु० (सं०) जामुन; स्यार, शृगाल; केवड़ा; वरुण; नीच, धूर्त आदमी। (स्त्री० 'जंबुकी', 'जंबूकी'।)

जंबुमान्(मत्), जंबूमान्(मत्)–पु० (सं०) पहाड़।

जंबूका–स्त्री० (सं०) किशमिश।

जंबूनद*–पु० दे० 'जांबूनद' (सोना)।

ज़ंबूर–पु० (अ० ज़न्बूर) भिड़; शहदकी मक्खी; पुराने समयकी एक छोटी तोप। **–ख़ाना**–पु० भिड़ या शहदकी मक्खियोंका छत्ता। **–ची**–पु० तोपची।

ज़ंबूरक–पु० दे० 'ज़ंबूर'; तोपकी चर्ख; भँवरकली।

ज़ंबूरा–पु० दे० 'ज़ंबूरक'; एक औजार, बाँक।

जंभ–पु० (सं०) डाढ़; ठुड्डी; चबाना, भक्षण; अंश; जम्हाई; तर्कश; महिषासुरका बाप जो इंद्रके हाथों मारा गया; जँबीरी नीबू। **–द्विट्(ष)**,**–भेदी(दिन्)**,**–रिपु**–पु० इंद्र।

जंभक–वि० (सं०) जम्हाई लेनेवाला; जंभाई लानेवाला; भक्षण करनेवाला; हिंसक। पु० शिव; जँबीरी नींबू।

जंभका–स्त्री० (सं०) जम्हाई।

जंभन–पु० (सं०) जम्हाना; भक्षण; मैथुन।

जंभा–स्त्री० (सं०) जम्हाई।

जँभाई–स्त्री० दे० 'जम्हाई'।

जँभाना–अ० क्रि० दे० 'जम्हाना'।

जंभाराति–पु० (सं०) दे० 'जंभारि'।

जंभारि–पु० (सं०) इंद्र; वज्र; अग्नि।

जंभिका–स्त्री० (सं०) दे० 'जंभा'।

जंभी(भिन्), जंभीर–पु० (सं०) जँबीरी नींबू।

जँभीरी–पु० दे० 'जँबीरी नीबू'।

ज–पु० (सं०) मृत्युंजय, जन्म; पिता; विष्णु; शिव; विष; भुक्ति; तेज; पिशाच; वेग; विजेता; पिंगलका एक गण जिसका आदि-अंत वर्ण लघु और बीचका गुरु होता है। वि० वेगवान्; विजयी; समासांतमें 'में या से उत्पन्न'का अर्थ पैदा करता है। (जैसे–जलज, वातज, अंडज इ०)।

जई–स्त्री० जौकी जातिका एक अनाज जो प्रायः घोड़ोंको खिलाया जाता है, ओट; जौका अँखुआ; खीरे, कुम्हड़े आदिकी बतिया। मु० **–डालना**–किसी अन्नको अँखुए निकलनेके लिए भिगोना।

ज़ईफ़–वि० (अ०) बूढ़ा; दुर्बल।

ज़ईफ़ा–वि० स्त्री० (अ०) बूढ़ी, वृद्धा।

ज़ईफ़ी–स्त्री० बुढ़ापा; दुर्बलता।

जउवा†–पु० जौ।

जऊ*–अ० यद्यपि।

ज़क़ंद–स्त्री० (फा०) छलाँग, चौकड़ी।

जकंदना*–अ० क्रि० छलाँग मारना; झपटना।

जकंदनि*–स्त्री० दौड़धूप; उलझन।

जक–स्त्री० हठ; धुन, रटन। पु० यक्ष; कंजूस आदमी। **मु० –बँधना**–रट लगना।

जक–स्त्री० (अ०) हार, पराजय; नीचा देखना; हानि।

जकड़–स्त्री० जकड़ने, कसकर बाँधनेकी क्रिया या भाव। **–बंद**–वि० कसकर बाँधा हुआ। पु० कड़ा बंधन, पकड़।

जकड़ना–स० क्रि० कसकर बाँधना। अ० क्रि० (किसी अंगका) अकड़ना।

जकना*–अ० क्रि० भौचक्का होना, स्तंभित होना; बकना।

जकर–पु० (अ०) लिंग, पुरुषेंद्रिय; नर; फौलाद।

जकरना*–स० क्रि० दे० 'जकड़ना'।

जकात–स्त्री० देसावरसे आनेवाले मालपर लगनेवाला कर, आयातकर।

जकात–स्त्री० (अ०) दान, खैरात; बचतका चालीसवाँ भाग जिसे दान करना हर मुसलमानका कर्तव्य है।

जकाती–पु० जकात वसूल करनेवाला।

जकित*–वि० चकित, भौचक्का।

जकी*–वि० हठी; चकित।

जकुट–पु० (सं०) मलयाचल; बैंगनका फूल; कुत्ता; जोड़ा, युग्म।

जक्की–स्त्री० एक तरहकी बुलबुल। वि० झक्की।

जक्त*–पु० जगत्, संसार।

जक्ष*–पु० यक्ष।

जक्षण–पु० (सं०) भक्षण, खाना; भोजन।

जक्ष्म–पु० दे० 'यक्ष्म'।

जखनी–स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

जखम–पु० दे० 'ज़ख्म'।

जखमी–वि० दे० 'ज़ख्मी'।

ज़ख़ीरा–पु० (अ०) खजाना; भंडार; ढेर; बीजका काम देनेवाले पौधोंकी क्यारी या खेत; पेड़-पौधे या बीज मिलनेका स्थान। **–(रे)दार**–पु० जखीरेवाला; माल जमा रखकर बादमें महँगा बेचनेवाला, जमाखोर।

ज़ख़्म–पु० (फ़ा०) घाव, चोट; हानि। **–(मे)जिगर**–पु० दिलपर लगी हुई चोट, दुःख, मनोवेदना। **मु० –हरा होना**–बीते हुए कष्टका फिर लौट आना।

ज़ख़्मी–वि० (फ़ा०) घायल, जिसे जख्म लगा हो।

जग–पु० जगत्, दुनिया। **–कर**–पु० ब्रह्मा। **–कारन***–पु० जगत्के कारणरूप, जगत्कर्ता, परमेश्वर। **–जननी***–स्त्री० दे० 'जगज्जननी'। **–जामिनि***–स्त्री० संसाररूपी रात्रि। **–जाहिर**–वि० जगत्प्रसिद्ध, सर्वविदित। **–जीवन**–पु० जगत्के जीवनरूप परमेश्वर। **–जोनि***–पु० दे० 'जगद्योनि'। **–तारन***–पु० जगत्को तारनेवाला, परमेश्वर। **–निवास**–पु० दे० 'जगन्निवास', ईश्वर। **–प्रान**–पु० दे० 'जगत्प्राण', वायु। –'कोक कोकनद भे दुखी, अहित भये जगप्रान'–दीनद०। **–बंद***–वि० दे० 'जगद्वंद्य'। **–बंदन**–वि० जगद्वंद्य, सबके लिए पूज्य। **–बीती**–स्त्री० लोकवृत्त, किस्सा-कहानी। **–मोहनी**–वि० स्त्री० दुनियाको मोहनेवाली, सुंदरी। **–सूर***–पु० राजा। **–हँसाई**–स्त्री० बदनामी, लोकनिंदा।

जगच्चक्षु(स्)–पु० (सं०) सूर्य।

जगजगाना†–अ० क्रि० जगमगाना, चमचमाना।

जगज्–'जगत्'का समासगत रूप। **–जननी**–स्त्री० जगदंबा, परमेश्वरी। **–जयी(यिन्)**–वि० दुनियाको जीतनेवाला, विश्वविजयी।

जगझंप–पु० एक प्राचीन बाजा।

जगण–पु० (सं०) पिंगलके आठ गणोंमेंसे एक जिसमें आदिअंत वर्ण लघु और मध्य वर्ण गुरु होता है (जैसे, रमेश)।

जगत–स्त्री० कुएँका चबूतरा। पु० जगत्, दुनिया। **–गुरु**–पु० दे० 'जगद्गुरु'। **–जननि**–स्त्री० दे० 'जगज्जननी'। **–पति**–पु० दे० 'जगत्पति'। **–सेठ**–पु० राज्य-विशेषका सबसे बड़ा महाजन, वह महाजन जिसकी साख सर्वत्र मानी जाय। **मु० –सेठका साला**–वह आदमी जिसका धन, बड़प्पन दूसरेकी कृपाका फल हो।

जगती–स्त्री० (सं०) धरती; दुनिया, जगत्; मानवजाति; गाय; मकानकी जगह; जंबुवृक्षयुक्त स्थान; एक वैदिक छंद। **–चर**–पु० मनुष्य। **–जानि**–पु० राजा। **–तल**–पु० धरती; दुनिया। **–धर**–पु० पर्वत। **–पति, भर्ता(र्तृ)**–पु० राजा। **–रुह**–पु० वृक्ष।

जगत्–पु० (सं०) दुनिया, संसार; वायु। वि० जंगम, चल। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० परमेश्वर; ब्रह्मा। **–कारण**–पु० सृष्टिके कारणरूप परमेश्वर। **–तारण**–पु० परमेश्वर, जगत्को तारनेवाला। **–पति,–पिता(तृ)**–पु० परमेश्वर। **–परायण**–पु० विष्णु। **–प्रभु**–पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव। **–प्रसिद्ध**–वि० विश्वविख्यात। **–प्राण**–पु० वायु। **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० सूर्य। **–सेतु**–पु० परमेश्वर। **–स्रष्टा(ष्टृ)**–पु० दे० 'जगत्कर्ता'।

जगदीशचंद्र बसु–पु० सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक (१८५८-१९३७)। इन्होंने वैज्ञानिक ढंगसे प्रमाणित कर दिया कि पेड़-पौधोंमें भी चेतनत्व होता है।

जगद्–'जगत्'का समासगत रूप। **–अंतक**–पु० काल। **–अंबा,–अंबिका**–स्त्री० दुर्गा, जगज्जननी। **–आत्मा(त्मन्)**–पु० परमेश्वर; वायु। **–आदि**–पु० परमेश्वर; ब्रह्मा। **–आधार**–पु० परमेश्वर; वायु; काल। **–आनंद**–पु० परमेश्वर। वि० संसारको आनंद देनेवाला। **–आयु(स्)**–पु० वायु। **–ईश**–पु० जगत्पति, परमेश्वर; विष्णु। **–ईश्वर**–पु० परमेश्वर; शिव; इंद्र; राजा। **–गुरु**–पु० परमेश्वर; त्रिदेव; नारद; शंकराचार्यकी गद्दीपर बैठनेवालोंकी पदवी। **–गौरी**–स्त्री० दुर्गा, मनसादेवी। **–दीप**–पु० परमेश्वर; सूर्य। **–धाता(तृ)**–वि० जगत्को धारण करनेवाला। पु० परमेश्वर; ब्रह्मा। **–धात्री**–स्त्री० दुर्गा; सरस्वती। **–बल**–पु० वायु। **–बीज**–पु० शिव। **–योनि**–पु० परमेश्वर; त्रिदेव। **–वंद्य**–वि० सबका पूज्य। **–वहा**–स्त्री० पृथ्वी। **–विख्यात**–वि० जिसकी प्रसिद्धि सर्वत्र हो, विश्वविश्रुत। **–विनाश**–पु० प्रलय।

जगना–अ० क्रि० जागना, नींदसे उठना; सजग, सचेत होना; उभरना, उत्पन्न होना; बलना, प्रदीप्त होना (आग, ज्योति); शक्ति, तेजका अधिक परिचय देना (देवी, देवता, प्रेत आदिका); तंबाकू, गाँजे आदिका सुलगना, पूरा धुआँ देने लगना।

जगनु, जगन्नु–पु० (सं०) अग्नि; कीड़ा; जंतु।

जगन्–'जगत्'का समासगत रूप। **–नाथ**–पु० परमेश्वर; विष्णु; पुरीमें स्थापित विष्णुमूर्ति। **–०क्षेत्र,–०धाम(न्)**–पु० पुरी, जगन्नाथपुरी, जगन्नाथधाम, जगन्नाथतीर्थ। (**मु० –०का भात**–जगन्नाथजीका महाप्रसाद; वह वस्तु जो किसीके छूनेसे अपवित्र न हो, जिसे सभी ग्रहण कर सकें।) **–नियंता(तृ)**–पु० जगत्का नियमन करनेवाला, परमेश्वर। **–निवास**–पु० परमेश्वर; विष्णु। **–मंगल**–पु० कालीका एक कवच। **–माता(तृ)**–स्त्री० दुर्गा; लक्ष्मी। **–मोहिनी**–स्त्री० (सं०) महामाया; दुर्गा।

जगन्नाथदास 'रत्नाकर'–पु० (जन्म सं० १९२३; मृत्यु सं० १९८९)–ब्रजभाषाके अंतिम महाकवि। काव्यग्रंथ–घनाक्षरी-नियम रत्नाकर, गंगावतरण, उद्धवशतक, शृंगार-लहरी, रत्नाष्टक, वीराष्टक आदि।

जगन्मय–पु० (सं०) विष्णु।

जगन्मयी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।

जगमग–वि० चमकीला, जगमगाता हुआ, प्रकाशित। स्त्री० जगमगाहट।

जगमगा–वि० दे० 'जगमग'।

जगमगाना–अ० क्रि० अपनी या दूसरेकी रोशनीसे चमकना, प्रकाशके कंपनसे झलकना, दमकना, चमचमाना।

जगमगाहट–स्त्री० जगमगानेका भाव, चमक, दमक।

जगर–पु० (सं०) कवच, जिरह।

जगरन*–पु० दे० 'जागरण'।

जगर-मगर–वि० दे० 'जगमग'।

जगल–वि० (सं०) धूर्त, चालबाज। पु० गोबर; पीठीकी शराब; शराबकी सीठी; कवच।

जगवाना–स० क्रि० जगानेका काम कराना।

जगह–स्त्री० अवकाशका अंश-विशेष; अवकाशका वह अंश जिसमें

किसी वस्तु या व्यक्तिकी स्थिति हो, स्थान; वस्तु या व्यक्ति-विशेषका नियत स्थान; समाई, गुंजाइश; पद, उहदा; नौकरी; अवसर, मौका । **–जगह**–अ० हर जगह, सर्वत्र ।

जगाजोति* -स्त्री० जगमगाहट ।

जगात*–स्त्री० दे० 'ज़कात' ।

जगाती*–पु० जकात वसूल करनेवाला ।

जगाना–स० क्रि० सोतेसे उठाना, जागनेको प्रेरित करना; सजग, सावधान करना; सुलगाना; प्रदीप्त करना (ज्योति जगाना); यंत्र-मंत्र सिद्ध करना या उनका प्रभाव बनाये रखनेके लिए ग्रहण आदिपर उनका जप आदि करना; तंबाकू गाँजा आदि सुलगाना ।

जगार*–स्त्री० जागरण, जागर्ति ।

जगी–स्त्री० मोरकी जातिका एक पक्षी ।

जगीर*–स्त्री० दे० 'जागीर' ।

जगीला*–वि० उनीँदा ।

जगौटा–पु० योगपट्ट, योगियोंका कपड़ा जिसे वे ध्यान-जप करते समय सिरसे पैरतक डाल लेते हैं –'चकर जगौटा गूंथी कंथा'–चन्दा० ।

जग्ध–वि० (सं०) खाया हुआ, भक्त । पु० भोजन, आहार; वह स्थान जहाँ किसीने भोजन किया है ।

जग्य*–पु० यज्ञ ।

जग्धि–स्त्री० (सं०) भोजन, आहार; सहभोजन ।

जग्मि–वि० (सं०) चलता हुआ, जंगम । पु० वायु ।

जघन–पु० (सं०) स्त्रियोंका पेड़ू, श्रोणि; नितंब; सेनाका पिछला भाग । **–कूप,–कूपक**–पु० चूतड़के ऊपरका गड्ढा । **–गौरव**–पु० नितंब-भार । **–चपला**–स्त्री० कामुका, व्यभिचारिणी स्त्री; तेजीसे नाचनेवाली स्त्री; एक मात्रावृत्त ।

जघनी(निन्)–वि० (सं०) बड़े चूतड़ोंवाला ।

जघन्य–वि० (सं०) अंतिम, सबसे पीछेका; सबसे बुरा; अधम, नीच; निंदित, हेय; नीच जातिका । पु० शूद्र; लिंगेंद्रिय । **–ज**–पु० शूद्र; छोटा भाई ।

जघ्नि–पु० (सं०) हननका साधन, अस्त्र ।

जघ्नु–वि० (सं०) हननकर्ता, घातक ।

जघ्रि–पु० (सं०) सूँघनेवाला ।

ज़चगी–स्त्री० (फा०) प्रसव, प्रसूतावस्था ।

जचना–अ० क्रि० दे० 'जँचना' ।

ज़चा, ज़च्चा–स्त्री० (फा०) सद्यःप्रसूता; वह स्त्री जिसे प्रसव किये ४० दिन न हुए हों; शिशु जन्मके समयके गीत (मुसल०) । **–ख़ाना**–पु० प्रसवगृह, सौरी । **–गीरी**-स्त्री० सौरीका गीत, सोहर।

जच्छ*–पु० दे० 'यक्ष' ।

जज–पु० (अं०) वह अधिकारी जिसे मुकदमे सुनकर उनका फैसला करनेका अधिकार हो, विचारक; जिलेका प्रधान न्यायाधीश, जिला जज; निर्णायक । **–मेंट**–पु० फैसला, तजवीज ।

जजना*–स० क्रि० आदर करना, पूजना–'कलि पूजै पाखंडको जजै न स्रुति आचार'–दीनद० ।

जजमान–पु० दे० 'यजमान' ।

जजमानी–स्त्री० दे० 'यजमानी' ।

जज़ा–स्त्री० (अ०) बदला, फल; परलोकमें मिलनेवाला पुण्यफल ।

जज़िया–पु० दे० 'जिज़िया' ।

जजी–स्त्री० जजका पद या कार्य; जजकी कचहरी ।

जज़ीरा–पु० (अ०) टापू, द्वीप । **–नुमा**–पु० प्रायद्वीप ।

जज्ञ*–पु० दे० 'यज्ञ' ।

जज़्ब–पु० (अ०) सोखना; खिंचाव, आकर्षण ।

जज़्बा–पु० (अ०) भाव, मनोविकार; जोश; रोष ।

जज़्बाती–वि० भाव-संबंधी, भावात्मक ।

जट–पु० एक तरहका गोदना; दे० 'जाट' ।

जटना–स० क्रि० ठगना; * जड़ना; जकड़ना–'दिन दिन हीन छीन भई काया दुख जंजाल जटी'–सूर; जुड़ जाना–'करौसु ज्यौं चित चरन जटै'–घन० ।

जटल–स्त्री० बकवास, बेतुकी बात; गप । **–क़ाफ़िया**–पु० बेतुकी बात; गप । **–बाज़**–वि० बकवासी, गप हाँकनेवाला ।

जटल्ली–वि० जटलबाज ।

जटा–स्त्री० (सं०) उलझे और आपसमें चिपके हुए लंबे बाल; ब्रह्मचारी आदिके लंबे बाल जो बरगदका दूध लगाकर चिपका दिये गये हों; पेड़-पौधोंकी जड़; शाखा; उलझे हुए रेशे; जटामासी, बालछड़; वेदपाठकी एक प्रणाली (इसमें 'नमः रुद्रेभ्यः'का पाठ इस तरह किया जायगा–'नमो रुद्रेभ्यो, रुद्रेभ्यो नमो, नमो रुद्रेभ्यः'); सतावर; केवाँच । **–चीर**–पु० शिव । **–जूट**–पु० जूड़ेके रूपमें बँधी हुई जटा; शिवकी जटा । **–ज्वाल**–पु० चिराग, लैंप । **–टंक**–पु० शिव । **–धर**–वि० जटाधारी । पु० शिव; एक बुद्ध । **–धारी(रिन्)**–वि० जिसके सिरपर जटा हो । पु० साधु-सन्न्यासी । **–पटल**–पु० वेदपाठका एक जटिल क्रम । **–मंडल**–पु० जूड़ा । **–मांसी**–स्त्री० बालछड़ । **–माली(लिन्)**–पु० महादेव । **–मासी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'जटामांसी' । **–वल्ली**–स्त्री० रुद्रजटा; गंधमांसी ।

जटाजिनी(जिन्)–वि० (सं०) जटा और अजिन (मृगचर्म) धारण करनेवाला ।

जटाटीर–पु० (सं०) शिव ।

जटाना–अ० क्रि० जटा जाना, ठगाना । स० क्रि० जटनेके लिए प्रेरित करना ।

जटायु–पु० (सं०) रामायणमें वर्णित एक गिद्ध जिसने सीताको हरकर ले जाते हुए रावणसे सीताको छुड़ानेके लिए युद्ध किया था ।

जटाल–वि० (सं०) जटाधारी, जटिल । पु० बरगद; कचूर; मोखा; गुग्गुल ।

जटाला–स्त्री० (सं०) जटामासी ।

जटावती–स्त्री० (सं०) जटामासी ।

जटाशंकरी–स्त्री० शंकरकी जटामें रहनेवाली गंगा ।

जटासुर–पु० (सं०) एक राक्षस जो भीमके हाथों मारा गया ।

जटि–स्त्री० (सं०) जटा; समूह; जटामासी; बरगद; पाकड़ ।

जटित–वि० जड़ा हुआ ।

जटिल–वि० (सं०) जटाधारी; उलझा हुआ, पेचीदा; कठिन, दुर्बोध । पु० ब्रह्मचारी; साधु-सन्न्यासी; सिंह; बकरा; शिव ।

जटिलता–स्त्री० (सं०) पेचीदगी, उलझन; कठिनाई ।

जटिला–स्त्री० (सं०) जटामासी; पिप्पली; बच; दौना; ब्रह्मचारिणी (?) ।

जटी–स्त्री० (सं०) दे० 'जटि' ।

जटी(टिन्)–वि० (सं०) जटाधारी । पु० शिव; बरगद ।

जटुल, जड़ुल–पु० (सं०) त्वचापर पड़ा हुआ पैदाइशी दाग, लच्छन।

जट्टू|–वि० जटने, ठगनेवाला, उचितसे अधिक मूल्य ले लेनेवाला ।

जठर–पु० (सं०) पेट; कुक्षि, जरायु; एक पुराणोक्त पर्वत; महाभारत आदिमें वर्णित एक देश । वि० कड़ा, कठिन; बद्ध; बूढ़ा । **–गद**–पु० आँतका विकार । **–ज्वाला**–स्त्री० उदरज्वाला, भूखका कष्ट; शूल । **–नुत्(द्)**–पु० अमलतास । **–यंत्रणा,–यातना**–स्त्री० गर्भवासका कष्ट ।

जठरागि*–स्त्री० दे० 'जठराग्नि' ।

जठराग्नि–स्त्री० (सं०) उदरस्थित अग्नि जो आयुर्वेदके मतसे आहारको पचानेका काम करती है; आमाशयकी गिल्टियोंसे निकलनेवाला पाचक रस, 'गैस्ट्रिक जूस' ।

जठरानल–पु० (सं०) दे० 'जठराग्नि' ।

जठरामय–पु० (सं०) अतीसार; जलोदर रोग ।

जठाइन|–स्त्री० जले हुए या लहके हुए जैसा स्वाद ।

जठेरा*–वि० जेठा, बड़ा । पु० लड़का–'छल सों कछु करतु फिरतु महरिको जठेरो'–सूर ।

जड–वि० (सं०) अचेतन, चेतनारहित; निर्बुद्धि, मूर्ख; वेद पढ़नेमें असमर्थ (दायभाग); सर्दीसे ठिठुरा, अकड़ा हुआ; निश्चेष्ट, गति-क्रिया-रहित; बहरा; गूंगा । पु० दे० 'जड़', अचेतन पदार्थ; जल; सीसा । **–क्रिय**–वि० दीर्घसूत्री, ढीला । **–जगत्**–पु० जडप्रकृति, पांचभौतिक पदार्थोंकी समष्टि ।**–पदार्थ**–पु० अचेतन पदार्थ, भौतिक जगत्का उपादानरूप द्रव्य । **–प्रकृति**–स्त्री० जडजगत्, पंचभूत या पांचभौतिक पदार्थोंकी समष्टि । **–भरत**–पु० भागवतमें वर्णित एक योगी जो संसारकी आसक्तिसे बचनेके लिए जडवत् व्यवहार करते थे । **–वाद**–पु० चेतन आत्मा-

का अस्तित्व न माननेवाला दार्शनिक मत। **–वादी(दिन्)**–वि०, पु० जडवादका अनुयायी। **–विज्ञान**–पु० पदार्थ-विज्ञान, प्रकृति-विज्ञान।

जड़–स्त्री० पेड़-पौधोंका वह भाग जो जमीनके अंदर रहता और जिसके द्वारा वे धरतीसे पोषण प्राप्त करते हैं, मूल; नींवँ, आधार, मूल कारण। **मु०–उखाड़ना**–समूल नाश करना। **–काटना,–खोदना**–तबाह करनेकी कोशिश करना, भारी हानि पहुँचाना। **–जमना,–पकड़ना**–पौधेका अच्छी तरह जम जाना; दृढ़ होना, जमना। **–बुनियादसे,–मूलसे**–समूल, जड़से। **–में पानी देना**–जड़ खोदना।

जड़काला–पु० जाड़ेकी ऋतु।

जडता–स्त्री०, **जडत्व**–पु० (सं०) जड होनेका भाव; अचेतनता; अज्ञान, मूर्खता; एक संचारी भाव–यह उस स्तब्धता या चेष्टाहीनताका द्योतक है जो प्रिय व्यक्तिसे वियोग होने या घवराहट आदिकी स्थितिमें नायक या नायिकामें परिलक्षित होती हैं; (इनर्शिया) वस्तुकी विरामदशा या सीधी रेखाकी एक समानगतिको वनाये रखनेकी प्रवृत्ति। तेज भागती हुई मोटरकार जब अचानक रुकती है तो जड़त्व गुणके कारण मोटरमें वैठा व्यक्ति आगेको लुढ़क जाता है।

जड़ताई*–स्त्री० दे० 'जडता'।

जड़ना–स० क्रि० एक वस्तुको दूसरीमें वैठाना, जमाना, पच्ची करना; ठोंकना (कील, नाल); मारना, लगाना (धौल, चाँटा); किसीकी चुगली खाना या किसीके खिलाफ किसीके कान भरना, शिकायत करना।

जड़वाना–स० क्रि० दे० 'जड़ाना'।

जड़हन–पु० अगहनी धान।

जडा–स्त्री० (सं०) भुइँआमला; केवाँच।

जड़ाई–स्त्री० जड़नेका काम; जड़नेकी उजरत।

जड़ाऊ–वि० जिसपर नग या रत्न जड़ा हो, जड़ाववाला।

जड़ाना–स० क्रि० जड़नेका काम कराना। † अ० क्रि० जाड़ा लगना, जाड़ा खाना।

जड़ाव–पु० जड़नेका काम, पच्चीकारी।

जड़ावट–स्त्री० दे० 'जड़ाव'।

जड़ावर–पु० जाड़ेमें पहनने-ओढ़नेके गरम कपड़े।

जड़ावल†–पु० दे० 'जड़ावर'।

जड़ित*–वि० जड़ा हुआ; जड़ाऊ।

जडिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) जडता, स्तब्धता; संज्ञाहीनता; मूर्खता।

जड़िया–पु० नग जड़नेका काम करनेवाला।

जड़ी–स्त्री० वनौषधि, वूटी; वह वनौषधि जिसकी जड़ दवाके काममें लायी जाय। **–बूटी**–स्त्री० वनौषधि।

जडीकृत परिसंपत्–स्त्री० (फ्रोज़न एसेट्स) वह परिसंपत् जिसके विक्रय, हस्तांतरण आदिकी मनाही कर दी गयी हो; अवरुद्ध परिसंपत्ति।

जडीभूत–वि० (सं०) जडभावको प्राप्त, जो हिलता-डुलता न हो, निःस्पंद।

जड़ीला–पु० वह पौधा जिसकी जड़ खायी जाय, मूलशाक।

जड़ैया†–स्त्री० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी।

जढ़†–वि० दे० 'जड'।

जत*–वि०, अ० जितना।

जतन–पु० दे० 'यत्न'।

जतनी†–वि० यत्न करनेवाला; चालाक, चतुर।

जतलाना–स० क्रि० दे० 'जताना'।

जतसर–पु० दे० 'जँतसर'।

जताना–स० क्रि० वताना, अवगत कराना; आगाह करना।

जति*–पु० दे० 'यति'।

जती*–पु० दे० 'यति'।

जतु–पु० (सं०) गोंद; लाख; शिलाजतु। स्त्री० चमगादड़। **–कारी**–स्त्री० पर्पटी नामक लता। **–कृत्,–कृष्णा**–स्त्री० पपड़ी नामकी लता। **–गृह**–पु० लाखका वना घर (जैसा दुर्योधनने पांडवोंको जलवानेके लिए वनवाया था)। **–पुत्रक**–पु० लाखकी वनी पुतली; शतरंजका मुहरा; चौसरकी गोटी। **–मणि**–पु० दे० 'जटुल'। **–रस**–पु० लाख; महावर।

जतुक–पु० (सं०) हींग; लाख; दे० 'जटुल'।

जतुका–स्त्री० (सं०) लाख; चमगादड़; पर्पटी लता।

जतुनी–स्त्री० (सं०) चमगादड़।

जतू–स्त्री० (सं०) चमगादड़। **–कर्ण**–पु० एक ऋषिका नाम।

जतूका–स्त्री० (सं०) चमगादड़; रजनी नामक गंधद्रव्य।

जतेक*–वि०, अ० जितना।

जत्था–पु० वह संघटित छोटा दल जो कार्यविशेषसे कहीं जाता हो; यूथ। **–(त्थे)दार**–पु० जत्थेका नायक, दलनायक। **–बंदी**–स्त्री० जत्था वनाना, दलवंदी।

जत्रु, जत्रुक–पु० (सं०) कंधेके नीचेकी कमानी जैसी हड्डी, हँसली।

जत्वश्मक–पु० (सं०) शिलाजतु।

जथा*–अ० दे० 'यथा'। स्त्री० धन, पूँजी। पु० दे० 'जत्था'।

जथारथ*–वि० दे० 'यथार्थ'।

जद†–अ० जव; यदि।

ज़द–स्त्री० (फा०) चोट; आघात; निशाना, मार।

ज़दनी–वि० (फा०) मारनेके काविल, वध्य (गरदनज़दनी)। स्त्री० मारनेकी क्रिया।

जदपि*–अ० दे० 'यद्यपि'।

जदल–पु० (अ०) युद्ध, लड़ाई।

जदवार–पु० (अ०) एक विषनाशक ओषधि, निर्विषी।

ज़दा–वि० (फा०) मारा हुआ, पीड़ित (मुसीवतज़दा–विपतका मारा)।

जदि*–अ० यदि; जव।

जदीद–वि० (अ०) नया; हालका।

जदु*–पु० दे० 'यदु'। **–कुल**–पु० दे० 'यदुकुल'। **–नाथ,–पति**–पु० दे० 'यदुनाथ'। **–पुर**–पु० मथुरा। **–बंसी**–वि०, पु० दे० 'यदुवंशी'। **–राइ,–राय**–पु० यदुराज, कृष्ण। **–वर,–वीर**–पु० कृष्ण।

जद्द*–वि० प्रवल; अधिक। पु० (अ०) दादा, वापका वाप; इकवाल; दौलत। स्त्री० कोशिश। **–(द्दो)जेहद**–स्त्री० प्रयत्न, दौड़-धूप; आंदोलन।

जद्दपि*–अ० यद्यपि।

जद्दबद्द–पु० खराव वात, न कहने योग्य वात।

जद्दी–वि० वाप-दादाकी, मौरूसी (जायदाद)। स्त्री० कोशिश, दौड़-धूप, प्रयत्न।

जनंगम–पु० (सं०) चांडाल।

जन–पु० (सं०) मनुष्य; व्यक्ति; मनुष्य-समूह, लोक; जाति; जनलोक; सात महाव्याहृतियोंमेंसे एक; एक असुर; सेवक, दास। **–आंदोलन**–पु० किसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिए जनता द्वारा चलाया गया आंदोलन। **–कल्याणकेंद्र**–पु० (वेलफेयर सेंटर) जनताके स्वास्थ्य, उन्नति तथा भलाईके लिए किये जानेवाले कार्योंका केंद्र। **–कारी**–स्त्री०,**–कारी(रिन्)**–पु० अलक्तक। **–क्षय**–पु० लोकनाश; महामारी। **–गणना**–स्त्री० मर्दुमशुमारी, देशविशेषके सव मनुष्योंकी गणना। **–(चक्षुस)**–पु० सूर्य। **–चर्चा**–स्त्री० लोकवाद। **–जागरण**–पु० जन-साधारण, समस्त जनतामें अपने अधिकार, हिताहितका ज्ञान होना। **–जाति**–स्त्री० (ट्राइव) जंगलों या पहाड़ी स्थानों आदिमें रहनेवाले ऐसे लोगोंका समूह जो शिक्षा, सभ्यता आदिमें समीपवर्ती स्थानोंके लोगोंसे कुछ पिछड़े हुए हों और जो अपने-अपने मुखियों या सरदारोंके आदेशोंके अनुसार चलनेके आदी हों। **–जीवन**–पु० सार्वजनिक जीवन; जनताका जीवन, सर्वसाधारणके रहन-सहनका ढंग। **–तंत्र**–पु० वह शासनप्रणाली जिसमें देशका शासन जनता या उसके प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाय, लोकतंत्र, प्रजातंत्र। **–त्रा**–स्त्री० छतरी, छाता। **–देव**–पु० राजा। **–धन**–पु० आदमी और पैसा (जन-धनसे सहायता)। **–निर्देश**–दे० क्रममें। **–पद**–पु० वह स्थान जहाँ लोग वसे हों, देश, राज्य; राज्य-विशेषका ग्राम-भाग; लोक, प्रजा। **–०कल्याणी**–स्त्री० वेश्या। **–०धर्म**–पु० लोकाचार।

–पदी(दिन्)–पु० शासक। **–पाल**–पु० मनुष्यों या सेवकोंका पालन करनेवाला। **–प्रवाद**–पु० अफवाह, आम चर्चा; लोकापवाद। **–प्रिय**–वि० लोकप्रिय। पु० धनिया; सहिजन; शिव। **–मत**–पु० लोकमत, जनसाधारणकी राय। **–मरक**–पु० महामारी। **–यात्रा**–वहुतसे लोगोंका झुंड वनाकर प्रदर्शनके लिए वाजार आदिसे गुजरना, जुलूस। **–रंजन**–वि० लोकको सुख, आनंद देनेवाला। पु० लाकरंजन। **–रक्षा-अधिनियम**-पु० (पब्लिक सेफ्टी ऐक्ट) सर्वसाधारणकी रक्षाकी दृष्टिसे बनाया गया अधिनियम। **–रव**–पु० अफवाह, जनश्रुति; लोकापवाद। **–लोक**–पु० ऊपरके सात लोकोंमेंसे पाँचवाँ, महर्लोकके ऊपर स्थित लोक। **–वध**–पु० दे० 'वंश-संहार नीति' (जेनोसाइड)। **–वल्लभ**–पु० श्वेत रोहित वृक्ष। **–वाद**–पु० दे० 'जनरव'। **–वास**–पु० सर्वसाधारणके ठहरनेका स्थान; वरातियोंके ठहरनेकी जगह; सभा, समाज। **–वासा**–पु० (हिं०) वरातियोंके ठहरनेकी जगह। **–(से)की चाल**–स्त्री० धीरे-धीरे चलना। **–शून्य**–वि० आदमियोंसे खाली, सुनसान। **–श्रुत**–वि० प्रसिद्ध, जिसे वहुत लोग जानते हों। **–श्रुति**–स्त्री० जनरव; अफवाह। **–संख्या**–स्त्री० स्थान-विशेषमें वसनेवालोंकी संख्या, आवादी। **–संग्राम**–पु० वह युद्ध जिसमें सारी जनता शामिल हो। **–संघ**–पु० भारतका एक राजनीतिक दल। **–संपर्काधिकारी**–पु० (पब्लिक रिलेशन ऑफिसर) सरकारका जनतासे संपर्क बनाये रखनेवाला अधिकारी। **–संवाध**–वि० धना वसा हुआ। **–समाज**–पु० समाज; जन-साधारण। **–समुदाय**–पु० भीड़, मजमा। **–समुद्र**–पु० समुद्रवत् विशाल जनसमूह, भारी भीड़। **–समूह**–पु० भीड़, मजमा। **–साधारण**–पु० साधारण जन; जनसमाज; जनता। **–सेवा-आयोग**–पु० (पब्लिक सर्विस कमीशन) दे० 'लोकसेवा-आयोग'। **–स्थान**–पु० दंडकारण्यका वह भाग जहाँ सीताका हरण हुआ था। **–हरण**–पु० एक दंडक वृत्त। **–हित**–पु० लोकहित, जनताके लाभका काम। **–हितैषी राज्य**–पु० (वेलफेयर स्टेट) वह राज्य जहाँ जनताके स्वास्थ्य, शिक्षा, सुख-सुविधा आदिकी विशेष व्यवस्था हो तथा जीविका दिलाने एवं असमर्थतावृत्ति आदिका आयोजन हो। **–हीन**–वि० जनशून्य, विजन।

ज़न–स्त्री० (फा०) स्त्री, नारी; पत्नी। **–मुरीद**–वि० पत्नीके वसमें रहनेवाला, जोरूका गुलाम। **–व फ़रज़ंद**–पु० वीवी-वच्चे, पुत्र-कलत्र। **–व मर्द**–पु० स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी।

जनक–वि० (सं०) जन्म देनेवाला, उत्पादक। पु० पिता; मिथिलाका रामायण-कालीन राजवंश जिसमें कई बड़े ब्रह्मज्ञानी हुए; उक्त वंशके राजा सीरध्वज जो सीताके पिता थे। **–तनया**–स्त्री० सीता। **–दुलारी**–स्त्री० (हि०) सीता। **–नंदिनी**–स्त्री० सीता। **–पुर**–पु० मिथिलाकी पुरानी–जनकवंशकी–राजधानी। **–सुता**–स्त्री० सीता।

जनकात्मजा–स्त्री० (सं०) सीता।

जनकौर*–पु० जनकपुर; जनकवंश।

ज़नख़ा–पु० औरतोंकी तरह वोलने और चेष्टाएँ करनेवाला, स्त्रैण; हिजड़ा।

जनता–स्त्री० (सं०) जन-समूह, लोक; जन। **–जनार्दन**–पु० जनतारूप जनार्दन, भगवान्।

जनन–पु० (सं०) उत्पत्ति; जन्म; आविर्भाव, प्रकट होना; जनना, उत्पादन; वंश; जीवन; परमेश्वर; मंत्रके दस संस्कारोंमेंसे पहला (तं०), दे० 'मंत्रसंस्कार'; यज्ञमें होनेवाली दीक्षित व्यक्तिकी एक दीक्षा; पिता। **–गति**–स्त्री० (बर्थ रेट) आवादीके प्रति-सहस्र व्यक्तियोंके पीछे होनेवाले शिशु-जन्मकी गति; जन्मदर।

जनना–स० क्रि० वच्चेको जन्म देना, प्रसव करना; * जानना–'· · ·जो यह पीर जनै'–स्वामी हरिदास।

जननाशौच–पु० (सं०) प्रसवका अशौच, सौरीका सूतक।

जननि–स्त्री० (सं०) माता; जन्म; जनि नामक गंधद्रव्य।

जननिर्देश–पु० (रिफरेंडम) संसद्में पुरःस्थापित किसी महत्त्वपूर्ण विवादग्रस्त विषयको समस्त जनताके सामने मतदान द्वारा अपना निर्णय देनेके लिए उपस्थित करना, 'जनमत संग्रह'।

जननी–स्त्री० (सं०) जन्म देनेवाली, माता; दया; चमगादड़; लाख; जूही; मजीठ; कुटकी; जटामासी; पर्पटी; जनी।

जननेंद्रिय–स्त्री० (सं०) वह इंद्रिय जिससे संतानकी उत्पत्ति होती है, उपस्थ।

जनम–पु० जन्म; जीवन, जिंदगी। **–घूँटी**–स्त्री० नवजात बच्चेको पिलायी जानेवाली घूँटी। **–दिन**–पु० दे० 'जन्मदिन'। **–धरती**–स्त्री० जन्मभूमि। **–पत्री**–स्त्री० दे० 'जन्मपत्रिका'। **–संगी**–वि० जिसका साथ जन्मसे ही या जिंदगीभर रहे (पति या पत्नी)। **–संघाती*–**वि० जनमसंगी। मु० **–घूँटीमें पड़ना**–जन्मसे ही लगना।

जनमना–अ० क्रि० जन्म लेना, पैदा होना; स० क्रि० उत्पन्न करना–'सुंदर सुत जनमत भइँ ओऊ'–रामा०।

जनमाना–स० क्रि० जन्म देना; जनना।

जनमारो*–पु० जन्म; जीवन।

जनमेजय–पु० (सं०) परीक्षित्का पुत्र जिसने उनके सर्प-दंशसे मरनेके वाद सर्पोंके नाशके लिए सर्पसत्र किया; कुरुका एक पुत्र।

जनयिता(तृ)–वि० (सं०) जन्म देनेवाला, उत्पादक। पु० पिता।

जनयित्री–स्त्री० (सं०) जननी, माता। वि० स्त्री० जन्म देनेवाली, उत्पादिका।

जनयिष्णु–वि० (सं०) जनन करनेवाला; उत्पादक।

जनवरी–स्त्री० ईसवी सालका पहला महीना।

जनवाई–स्त्री० जनवानेकी क्रिया, उजरत या नेग।

जनवाना–स० क्रि० वच्चा जनाना, जननेमें मदद करना; † सूचित कराना।

जनसंख्यातिरेक–पु० (ओव्हर पॉपुलेशन) किसी देश या क्षेत्रकी आवादीका इतना अधिक वढ़ जाना कि उसके लिए वहाँ समुचित रूपसे निर्वाह करनेमें कठिनाई हो, अतिप्रजनन।

जनांत–पु० (सं०) प्रदेश, जिला; जनहीन स्थान; यम। वि० मनुष्योंका अंत करनेवाला।

जनांतिक–पु० (सं०) रंगमंचकी एक रूढ़ि, जब अभिनेता दर्शकोंकी ओर मुँह करके कोई वात कहता है जिसका उद्देश्य जिससे वार्तालाप हो रहा होता है, उससे दुराव और श्रोताओंपर उसका प्रकटीकरण होता है; मनुष्यका सामीप्य।

जना–वि० उत्पन्न किया हुआ। स्त्री० (सं०) उत्पत्ति।

ज़ना–पु० (अ०) दे० 'ज़िना'।

जनाई–स्त्री० जनानेकी उजरत या नेग; जनानेवाली स्त्री, दाई।

जनाउ*–पु० दे० 'जनाव'।

जनाकीर्ण–वि० (सं०) आदमियोंसे भरा हुआ; वहुत घनी आवादीवाला।

जनाचार–पु० (सं०) लोकाचार।

जनाज़ा–पु० (अ०) लाश; अरथी, तावूत (उठना, निकलना)। **–(ज़े)की नमाज़**–मुसलमानकी अंत्येष्टिके अवसरपर रास्तेमें या कब्रिस्तानमें पढ़ी जानेवाली नमाज।

जनातिग–वि० (सं०) असाधारण, लोकोत्तर।

जनाधिनाथ–पु० (सं०) राजा; विष्णु।

जनाधिप–पु० (सं०) राजा; विष्णु।

ज़नानख़ाना–पु० (फा०) घरका वह भाग या खंड जिसमें स्त्रियां रहें, अंतःपुर।

जनाना–स० क्रि० जताना; दे० 'जनवाना'।

ज़नाना–वि० (फा०) स्त्री-संबंधी (स्कूल, अस्पताल आदि); स्त्रीकी तरह (चाल, सूरत)। पु० जनानखाना; पत्नी, स्त्री; हिजड़ा; डरपोक आदमी। **–पन**–पु० हिजड़ापन, नामर्दी; स्त्रीसुलभ हाव-भाव।

ज़नानी–वि० स्त्री० दे० 'ज़नाना'।

जनाव–पु० (अ०) डेवढ़ी, चौखट; सम्मानित जनका संबोधन–श्रीमान्, महोदय, हुजूर! **–आली**–श्रीमन् (संबोधन)।

जनावा–स्त्री० (अ०) श्रीमति (संबोधन)!

जनाभिवक्ता–पु० (ट्राइब्यून) जनताके अधिकारोंके लिए लड़नेवाला तथा उनका समर्थक।

जनार्दन–पु० (सं०) विष्णु; परमेश्वर। वि० जनपीडक।

जनाव–पु० जनानेका काम; * जतानेका भाव, सूचना।

जनावर*–पु० जानवर, पशु ।

जनाशन–पु० (सं०) भेड़िया; मनुष्यका भक्षण करनेवाला; मनुष्यका भक्षण ।

जनाश्रम–पु० (सं०) धर्मशाला, सराय ।

जनाश्रय–पु० (सं०) शामियाना, मंडप; मकान; धर्मशाला, सराय ।

जनि*–अ० नहीं, मत (निषेधार्थक) । स्त्री० (सं०) जन्म; स्त्री; माता; पत्नी; पुत्रवधू; दासी; एक गंधद्रव्य; पर्पटी लता । **–नीलिका**–स्त्री० महानीली ।

जनिक–वि० (सं०) जन्म देनेवाला, उत्पादक ।

जनिका–स्त्री० (सं०) दे० 'जनि' ।

जनित–वि० (सं०) उत्पन्न, पैदा हुआ ।

जनिता(तृ)–पु० (सं०) पिता ।

जनित्र–पु० (सं०) जन्मस्थान; स्रोत ।

जनित्री–स्त्री० (सं०) माता, जननी ।

जनित्व–पु० (सं०) पिता ।

जनित्वा–स्त्री० (सं०) माता ।

जनिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) जन्म; संतति ।

जनियाँ|–स्त्री० दे० 'जानी' ।

जनी–वि० स्त्री० पैदा की हुई । स्त्री० (सं०) कन्या; माया; दे० 'जनि'; वधू; पत्नी; स्त्री ।

जनु–स्त्री० (सं०) जन्म । * अ० मानो, जैसे ।

जनू–स्त्री० (सं०) जन्म ।

जनून–पु० (अ०) पागलपन, उन्माद; (ला०) खब्त ।

जनूनी–वि० पागल ।

जनूब–पु० (अ०) दक्खिन ।

जनूबी–वि० दक्खिनी ।

जनेंद्र–पु० (सं०) राजा ।

जनेऊ–पु० यज्ञोपवीत; यज्ञोपवीत संस्कार । **मु० –का हाथ**–तलवारका ऐसा हाथ या वार जिससे विपक्षीका जनेवा कट जाय, अर्थात् तलवार बायें कंधेसे तिरछे काटती हुई निकल जाय ।

जनेत–स्त्री० बरात ।

जनेरा|–पु० मक्का, जोन्हरी ।

जनेव|–पु० दे० 'जनेऊ'; 'जनेवा' ।

जनेवा–पु० धड़का वह भाग जिसपर जनेऊ रहता है; लकड़ी आदिमें पड़ी हुई धारी; एक घास ।

जनेश–पु० (सं०) राजा ।

जनेष्ट–वि० (सं०) लोकप्रिय । पु० एक पुष्प; मुद्गर वृक्ष ।

जनेष्टा–स्त्री० (सं०) जतुका; वृद्धि नामक ओषधि; चमेली; हल्दी ।

जनैया*–पु० जाननेवाला; जनानेवाला ।

जनोपयोगी(गिन्)–वि० (सं०) लोकोपयोगी, जनसाधारणके लिए हितकर । **–सेवा**–स्त्री० (पब्लिक यूटिलिटि सरविस) दे० 'लोकोपयोगी सेवा' ।

जनौ*–अ० मानों, जानो ।

जनौघ–पु० (सं०) मनुष्योंका मजमा, भीड़ ।

जन्न–पु० (अ०) धारणा, गुमान, खयाल ।

जन्नत–पु० (अ०) उद्यान, बाग; स्वर्ग, वैकुंठ, बिहिश्त । **–(ते) अदन**–पु० वह बाग जिसमें आदम गेहूँ या सेब खानेसे पहले रखे गये थे ।

जन्नती–वि० जन्नतमें रहनेवाला, स्वर्गवासी; (ला०) सीधा, भोला ।

जन्म(न्)–पु० (सं०) गर्भसे बाहर आना; उत्पत्ति, पैदाइश; जीवन; जन्मलग्न । **–कील**–पु० विष्णु । **–कुंडली**–स्त्री० वह चक्र जिसमें जन्मकालके ग्रहोंकी स्थिति बतायी गयी हो । **–कृत्**–पु० पिता । **–क्षेत्र**–पु० जन्मस्थान । **–गत**–वि० जन्मसे प्राप्त, पैदाइशी । **–ग्रहण**–पु० उत्पत्ति, जन्म लेना । **–तिथि**–स्त्री० जन्मकी तिथि; बरसगाँठ । **–द,–दाता(तृ)**–वि० जन्म देनेवाला । पु० पिता । **–दर**–स्त्री० (बर्थरेट) आबादीके एक हजार व्यक्तियोंके पीछे एक वर्षमें जन्म लेनेवाले बच्चोंकी संख्या । **–दात्री**–स्त्री० माता । **–दिन,–दिवस**–पु० किसीके जन्म या पैदाइशका दिन, जन्मतिथि । **–नक्षत्र**–पु० वह नक्षत्र जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । **–नाम(न्)**–पु० वह नाम जो जन्मके समय या जन्मके बारहवें दिन रखा जाय । **–प,–पति**–पु० जन्मलग्न या जन्मराशिका स्वामी । **–पत्र**–पु०,**–पत्रिका**–स्त्री० वह पत्र या कागज जिसमें किसीके जन्मकालके ग्रह-नक्षत्रोंकी स्थिति, उनकी दशा, अंतर्दशा और उनके शुभाशुभ फल बताये गये हों, जायचा । **–पादप**–पु० वंशवृक्ष । **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० जन्मस्थान; माता । **–प्रमाणपत्र**–पु० (बर्थ-सर्टीफिकेट) वह प्रमाणपत्र जिसमें किसीकी जन्मतिथिका प्राधिकृत ब्योरा दिया गया हो । **–भाषा**–स्त्री० मातृभाषा । **–भूमि**–स्त्री० वह जगह–ग्राम, नगर, देश–जहाँ किसीका जन्म हुआ हो; जन्मस्थान । **–भृत्**–पु० प्राणी, जीव । **–योग**–पु० जन्मपत्रिका । **–राशि**–स्त्री० वह राशि जिसमें किसीका जन्म हुआ हो । **–रोगी(गिन्)**–वि० जन्मका रोगी, जिसे जन्मकालसे ही रोग लगा हो । **–लग्न**–पु० जन्मराशि । **–वर्त्म(न्)**–पु० योनि । **–वृत्तांत**–पु० जीवन-वृत्तांत, जीवन-चरित । **–शोधन**–पु० जन्मसे प्राप्त ऋणोंका परिशोधन । **–सिद्ध**–वि० जन्मतः प्राप्त, पैदाइशी । **–स्थान**–पु० जन्मभूमि । **मु० –गँवाना**–जीवनका सदुपयोग न करना । **–बिगड़ना**–धर्म नष्ट होना । **–हारना**–दास होकर रहना ।

जन्मना–अ० क्रि० दे० 'जनमना' । अ० (सं०) जन्मसे, जन्मतः (जन्मना ब्राह्मण) ।

जन्मांतर–पु० (सं०) दूसरा जन्म; पिछला जन्म; अगला जन्म; परलोक । **–वाद**–पु० पुनर्जन्मवाद ।

जन्मांध–वि० (सं०) जन्मका, पैदाइशी अंधा ।

जन्माधिप–पु० (सं०) जन्मराशिका स्वामी; शिव ।

जन्माष्टमी–स्त्री० (सं०) भाद्र कृष्णाष्टमी, कृष्णकी जन्मतिथि ।

जन्मास्पद–पु० (सं०) जन्मस्थान ।

जन्मी(मिन्)–पु० (सं०) प्राणी ।

जन्मेजय–पु० (सं०) दे० 'जनमेजय' ।

जन्मेश–पु० (सं०) दे० 'जन्माधिप' ।

जन्मोत्सव–पु० (सं०) बच्चोंकी बरही-छट्ठीका उत्सव; जन्मदिनका उत्सव, बरस-गाँठ ।

जन्य–वि० (सं०) जन्म लेनेवाला, जायमान; जात, उत्पन्न; (समासांतमें)···से उत्पन्न; जन-संबंधी; किसी जाति या वंशसे संबंध रखनेवाला; सामान्य; असभ्य । पु० जन्म; जनक, पिता; वरका सखा या संबंधी; बराती; साधारण जन; जो उत्पन्न हुआ हो वह, उत्पादित वस्तु; देह; जाति; लोक; अफवाह; निंदा, लोकापवाद; महादेव; हाट; युद्ध; पुत्र; जामाता ।

जन्या–स्त्री० (सं०) माताकी सखी; वधूकी सहेली; प्रीति; सुख, आनंद ।

जन्यु–पु० (सं०) जन्म; प्राणी; ब्रह्मा; अग्नि ।

जप–पु० (सं०) किसी मंत्र, स्तोत्र, ईश्वरके नाम आदिको धीमे स्वरसे बार-बार दुहराना; किसी शब्द, नाम आदिको बार-बार मुँहसे कहना । **–तप**–पु० पूजा-पाठ, व्रत-उपवास । **–माला**–स्त्री० जप करनेकी माला । **–यज्ञ**–पु० जपरूप यज्ञ । **–होम**–पु० यज्ञके रूपमें मंत्रादिका पाठ ।

जपजी–पु० सिखोंका एक धर्मग्रंथ –'जपुजी' ।

जपतव्य–वि० (सं०) दे० 'जपनीय' ।

जपन–पु० (सं०) जप करनेकी क्रिया, जप ।

जपना–स० क्रि० जप करना; यज्ञ करना ।

जपनी–स्त्री० माला; गोमुखी ।

जपनीय–वि० (सं०) जप करने योग्य ।

जपा*–वि० जप करनेवाला । स्त्री० (सं०) अड़हुल । **–कुसुम**–पु० अड़हुलका फूल ।

जपिया*–वि०, पु० दे० 'जपी' ।

जपी(पिन्)–वि०, पु० (सं०) जप करनेवाला ।

जप्त|–पु० दे० 'जब्त' ।

जप्ती|–स्त्री० दे० 'जब्ती' ।

जप्य–वि० (सं०) जपने योग्य । पु० जपा जानेवाला मंत्र ।

ज़फ़र–स्त्री० (अ०) विजय; सफलता । **–याब**–वि० विजय

पानेवाला।

जफ़ा–पु० (अ०) जुल्म, अत्याचार, सख़्ती। **–कश**–वि० कष्ट सहनेवाला; जुल्म सहनेवाला; कड़ी मेहनत करनेवाला, परिश्रमी। **–कशी**–स्त्री० सहिष्णु, परिश्रमी होना। **–कार,–शिआर**–वि० अन्याय, अत्याचार करनेवाला; निर्दय।

ज़फ़ीर, ज़फ़ील–स्त्री० (अ०) सीटी; मुँहसे निकाली जानेवाली सीटीकी आवाज।

ज़फीरी–स्त्री० (अ०) सीटी; मिस्रमें पैदा होनेवाली एक तरहकी कपास।

जब–अ० जिस समय, यदा। **–कभी**–अ० चाहे जब, किसी समय। **–कि**–अ० जब। **–जब**–अ० जिस-जिस समय। **–तब**–अ० कभी-कभी, यदा-कदा।

जबड़ा–पु० मुँहमें नीचे-ऊपरकी हड्डी जिसमें दाँत जड़े होते हैं, कल्ला। **–तोड़**–वि० जो मुँह तोड़ सके, बलवान्; (शब्द) जिसका उच्चारण कठिन हो।

ज़बर–वि० (फा०) ऊपरवाला; बलवान्; बलमें अधिक। पु० अरबी-फारसी लिखावटमें ह्रस्व आकारका चिह्न। अ० ऊपर। **–दस्त**–वि० बलवान्; प्रबल पड़नेवाला; विजयी; भारी; विशाल। **–दस्ती**–स्त्री० बलपूर्वक कराया गया काम, जुल्म; ज्यादती; धींगा-धींगी।

जबरजद–पु० (अ०) एक तरहका पन्ना, पुखराज।

जबरन्–अ० दे० 'जब्रन्'।

जबरा–वि० जबरदस्त, बलवान्।

जबराइल–पु० दे० 'जिब्रील'।

जबर्दस्त–वि० दे० 'ज़बरदस्त'।

जबर्दस्ती–स्त्री० दे० 'ज़बरदस्ती'।

जबल–पु० (अ०) पहाड़।

जबह–पु० दे० 'ज़ब्ह'।

जबहा–पु० हिम्मत, जीवट; (अ०) माथा, पेशानी। **–साई**–स्त्री० माथा घिसना।

ज़बान–स्त्री० (फा०) जीभ, रसना; वाणी, बोली; भाषा; वचन, बात। **–गीर**–वि० जासूस, भेदिया। **–ज़द**–वि० प्रसिद्ध, जो लोगोंकी जबानपर रहे। **–दराज़**–वि० बहुत बोलनेवाला; बोलनेमें धृष्ट, मुहफट; बदजबान। **–दराज़ी**–स्त्री० वाचालता, धृष्टता; बदजबानी। **–दाँ**–वि० भाषा (विशेष) का पंडित। **–दानी**–स्त्री० भाषा (विशेष) का पूर्ण ज्ञान, पांडित्य। **–बंद**–पु० यंत्र, तावीज; दुश्मनकी जबान बंद करनेवाला यंत्र। **–बंदी**–स्त्री० किसी मुकदमेके गवाहोंका बयान लिख लिया जाना; खामोशी। मु०**–खींचना**–बुरी बातें कहनेके कारण कड़ा दंड देना। **–खुलना**–बोलनेमें समर्थ होना, मुँहसे बात निकालना; बच्चेका बोलने लगना। **–खुलवाना**–बोलने, जवाब देने या कोई अप्रिय बात कहनेको विवश करना, मुँह खुलवाना। **–ख़ुश्क होना**–बहुत प्यासा होना; बहुत बातें करना। **–खोलना**–कुछ कहना, बोलना; उज्र या शिकायत करना। **–चलना**–मुँहसे शब्दोंका जल्दी-जल्दी निकलना, तेजीसे बोलना। **–चलाना**–तेजीसे बोलना; बदजबानी करना। **–चलायेकी रोटी खाना**–चापलूसीसे पेट पालना। **–चाटना**–ओठ चाटना। **–टूटना**–(बच्चेका) क्लिष्ट शब्दोंका शुद्ध, स्पष्ट उच्चारण करने लगना। **–थामना**–दे० 'जबान पकड़ना'। **–देना**–वचन देना, वादा करना। **–पकड़ना**–किसीको अपनी बात कहनेसे रोकना, बोलने न देना; वचनमें दोष, गलती निकालना; टोकना। **–पर आना**–किसी बातका मुँहसे निकालना, कहा जाना। **–पर ताला लगना**–दे० 'ज़बानमें ताला लगना'। **–पर मुहर होना**–जबान बंद होना, बोल न सकना। **–पर लाना**–कहना, बयान करना। **–पर होना**–हर वक्त याद रहना, कंठस्थ होना; चर्चाका विषय होना (यह बात आज बहुतोंकी जबानपर है)। **–पलटना**–बात कहकर मुकरना, वचन भंग करना। **–बंद होना**–बोल न सकना, चुप रहनेको विवश होना; बहसमें हार जाना। **–बदलना**–दे० 'ज़बान पलटना'। **–बिगड़ना**–अपशब्द कहने, गालियाँ बकनेकी आदत पड़ना; चटोरपनकी आदत लगना। **–में काँटे पड़ना**–जबानका सूखकर खुरदरी हो जाना। **–में खुजली होना**–लड़ने, उलझनेको जी चाहना। **–में ताला लगना**–चुप रहना, मौनावलंबन करना। **–में लगाम न होना**–बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार न होना, मुँहफट हो जाना। **(मुँहमें)–रखना**–बोलने, उत्तर देनेमें समर्थ होना। **–रुकना**–बोलनेमें अटकना, चुप होना। **–रोकना**–बोलना बंद करना, चुप हो रहना; जबान पकड़ना। **–सँभालना**–बोलनेमें उचित-अनुचितका विचार रखना, अनुचित शब्द मुँहसे न निकालना। **–से निकलना**–उच्चारित होना, कहा जाना। **–हारना**–वचनबद्ध होना, प्रतिज्ञा करना। **–हिलाना**–बोलनेकी कोशिश करना; बोलना। **–(ने) हालसे कहना**–बिना कहे, स्थितिसे, प्रकट होना।

ज़बानी–वि० (फा०) जो केवल जबानसे कहा गया हो, मौखिक; अलिखित (इजहार, सवाल, सँदेसा इ०); ऊपरी, दिखाऊ। –**–जमाख़र्च**–पु० वह बात जो कही जाय, पर की न जाय, दिखाऊ, मौखिक कारवाई।

ज़बून–वि० (फा०) ख़राब, निकृष्ट; निर्बल।

ज़बूर–स्त्री० (अ०) इलहामी किताब जो मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार दाऊदपर उतरी थी।

ज़ब्त–पु० (अं०) प्रबंध; निगरानी; सहन; धैर्य-धारण; राज्य द्वारा किसी वस्तु, संपत्तिका हरण (करना, होना)। **–शुदा**–वि० जब्त किया हुआ।

ज़ब्ती–स्त्री० किसी चीजका जब्त किया जाना, कुर्की।

जब्र–पु० (अ०) दबाव, मजबूरी; जबरदस्ती; सख़्ती, जुल्म। **–व मुकाबिला**–पु० बीजगणित।

जब्रन्–अ० (अ०) जबरदस्तीसे, दबाव देकर, बलात्। **–व कह्रन्**–अ० विवश होकर, मजबूरन्।

जब्री–वि० बलपूर्वक कराया जानेवाला, अनिवार्य (–भरती)।

जब्रीया–अ० (अ०) मजबूर करके, जबरदस्ती। पु० मुसलमानोंका एक फिर्का जो मानता है कि मनुष्य अपने कर्मोंमें सर्वथा नियति या ईश्वरेच्छाके अधीन है।

जब्रील–पु० (अ०) दे० 'जिब्रील'।

ज़ब्ह–पु० (अ०) गला काटकर जान लेनेका कार्य। मु० **–करना** बहुत तकलीफ देना।

जम*–पु० दे० 'यम'। **–कात,–कातर***–स्त्री० एक तरहका खाँड़ा, यमका खाँड़ा। पु० भँवर। **–घंट**–पु० दे० 'यमघंट'। **–ज**–वि० जुड़वाँ (बच्चे)। **–डाढ़,–दाढ़**–स्त्री० एक झुकी नोकवाली कटार या तलवार। **–दिसा***–स्त्री० दक्षिण दिशा। **–दूत**–पु० दे० 'यमदूत'। **–धर**–पु० दे० 'जमडाढ़'। **–बार***–पु० दे० 'यमद्वार'। **–राज**–पु० दे० 'यमराज'। मु० **–हो जाना**–न टलना, पीछा न छोड़ना।

जमई–वि० (अ०) जो जमाके रूपमें हो, (भूमि) जिसका लगान नगदी हो।

जमक*–पु० दे० 'यमक'।

जमघट,–जमघटा–पु० आदमियोंकी भीड़, जमाव, मजमा (लगाना, होना)।

जमघट्ट*–पु० दे० 'जमघट'।

जमजम–अ० सदा, हमेशा। **–नित-नित**–अ० सदा (स्त्रि०)।

ज़मज़म–पु० (अ०) काबाके पासका एक कुआँ।

ज़मज़मा–पु० (फा०) गाना; राग; गीत। **–ख़्वान,–संज**–पु० गायक, गवैया।

जमदग्नि–पु० (सं०) एक वैदिक ऋषि जो सप्तर्षियोंमें गिने और परशुरामके पिता माने जाते हैं।

जमन–पु० (सं०) भोजन; आहार; * दे० 'यवन'।

ज़मन–पु० (अ०) जमाना, काल।

जमना–स्त्री० दे० 'यमुना'। पु० पहली वर्षाके बाद पैदा होनेवाली घास। अ० क्रि० पतली चीजका गाढ़ी या ठोस होना (दही, पानी); किसी जगह देरतक बैठना; अपनी जगहपर डटा, बना रहना, टिकना, दृढ़तासे स्थित होना; जड़ मजबूत होना, ठीक तौरसे चलने लगना; नीचे बैठना (तलछट); जमा, इकट्ठा होना (भीड़); दिलमें बैठना; सुंदर, सफल, यथेष्ट रसोत्पादक होना (गाना, खेल, व्याख्यान); चल निकलना (दुकान इ०); ठीक

आना, बैठना (टोपी पगड़ी इ०); (घोड़ेका) ठुमुककर चलना, अड़ना; उगना (बीज, बाल)। **जमकर**–अ० दृढ़तापूर्वक।

जमनिका–स्त्री० दे० 'जवनिका'; * काई।

जमनोत्तरी–स्त्री० हिमालयकी वह चोटी जिससे यमुना निकलती है।

जमनौता–पु० जमानत करनेवालेको उसके बदलेमें दी जानेवाली रकम।

जमवट–स्त्री० लकड़ीका गोला चक्कर जिसके ऊपर पक्के कुएँकी जोड़ाई होती है।

जमशेद–पु० ईरानका एक प्राचीन बादशाह जिसके पास, कहते हैं, एक ऐसा प्याला था जिसमें सारी दुनियामें होनेवाली बातें दिखाई देती थीं।

जमहूर–पु० (अ०) दे० 'जुमहूर'।

जमहूरी–वि० दे० 'जुमहूरी'।

जमा–स्त्री० (अ०) समूह, जमात; जोड़ (ग०); बहुवचन (व्या०); पूँजी, धन; बही-खातेका वह भाग या मद जिसमें प्राप्ति या आमदनी लिखी जाय; लगान। **–कर्ता**–पु० (डिपाजिटर) दे० 'निक्षेपक'। **–ख़र्च**–पु० आमदनी और खर्च; आमदनी-खर्च-का हिसाब, ब्योरा। **–०नवीस**–पु० कचहरीका एक अहलकार। **–जथा**–स्त्री० पूँजी, धन-संपत्ति। **–दार**–पु० सिपाहियों आदिका मुखिया; पुलिसका हेडकांस्टेबल; भंगियोंके कामकी निगरानी करनेवाला कर्मचारी। **–पूँजी**–स्त्री० दे० 'जमाजथा'। **–बंदी** –स्त्री० लगानका हिसाब; पटवारीकी वह बही जिसमें गाँवके हर काश्तकारके लगानका हिसाब और ब्योरा लिखा होता है; गाँव, महाल या हिस्सेका कुल लगान। **–मार**–वि० दूसरेका पावना हजम कर जानेवाला, बेईमान। **मु०–ख़र्च करना**–हिसाब बराबर करनेके लिए किसी रकमको जमामें लिखकर फिर खर्चमें लिखना। **–मारना**–लगान, ऋण या अमानतके रूपमें दूसरेका पावना हजम कर जाना, दूसरेका पैसा मार लेना।

जमाअत–स्त्री० (अ०) समुदाय, जत्था; भीड़, मजमा; दल; कक्षा, श्रेणी; नमाजियोंकी पंक्ति।

जमाअती–वि० सामुदायिक।

जमाई–पु० दामाद, जामाता। स्त्री० जमानेकी क्रिया या मजदूरी।

जमात–स्त्री० 'जमाअ़त'।

ज़मानत–स्त्री० (अ०) जिम्मेदारी; किसीके कोई काम करने-(समयपर हाजिर होने, ऋण चुकाने, प्रतिज्ञाका पालन करने आदि)की जिम्मेदारी जो दूसरा आदमी अपने ऊपर ले; किसी बातके किये जानेके इतमीनानके लिए जमा की हुई रकम, जायदाद; इस तरहका इतमीनान दिलानेवाली चीज, गारंटी। **–दार**–पु० जमानत करनेवाला, जामिन। **–नामा**–पु० जामिन होनेकी लिखित स्वीकृति।

ज़मानती–वि० जिसमें या जिसकी जमानत हो सके, जमानतके काबिल (–वारंट)।

जमाना–स० क्रि० पतली चीजको गाढ़ी या ठोस बनाना (दही, बरफ आदि); मजबूतीसे बैठाना; दिलमें बैठाना; सजाकर रखना, चुनाई करना; जमानेका कारण, हेतु होना; जड मजबूत करना; ठीक तौरसे चलने लायक बनाना (कारबार, स्कूल आदि); बैठाना, स्थापित करना (असर, धाक, रोब आदि); जमा; इकट्ठा करना; मुँहमें रखना (पान, जर्दा इ०); खाना, उदरस्थ करना (भाँगका गोला); लगाना, रचना (मिस्सी); मारना, रसीद करना (थप्पड़, घूँसा, लाठी आदि); मश्क करना, बैठाना (हाथ); डालना, उगाना, उपजाना।

ज़माना–पु० (अ०) काल; युग; अरसा; अवधि, बहुत समय; राज्यकाल; कार्यकाल; दुनिया, संसार; क्रियाका काल (भूत, भविष्य, वर्तमान); चढ़तीके दिन, सौभाग्यकाल। **–साज़**–वि० बनावटी प्रेम, आदर दिखानेवाला, ठकुरसुहाती करनेवाला, चालाक। **–साज़ी**–स्त्री० बनावट, चापलूसी। **मु० –उलटना** –समयका यकबारगी बदल जाना, नया युग उपस्थित हो जाना। **–छानना**–बहुत तलाश करना। **–देखना**–अनुभव प्राप्त करना। **–देखे होना**–अनुभवी होना। **–पलटना,–बदलना**–अच्छे दिनसे बुरे या बुरेसे अच्छे दिन आना। **–(ने)की गर्दिश**–समयका उलट-फेर, दिनका फेर।

जमार*–पु० यमद्वार।

जमाल–पु० (अ०) सुंदरता, शोभा, हुस्न; ईश्वरका माधुर्य, ऐश्वर्य।

जमालगोटा–पु० एक फलका बीज जो तीव्र विरेचक होता है।

जमाली–वि० प्रिय, रमणीय; जिसमें ईश्वरकी शान पायी जाय।

जमाव–पु० जमनेका भाव; भीड़, मजमा।

जमावट–स्त्री० जमनेका भाव।

जमावड़ा–पु० जमाव, भीड़।

जमाही–स्त्री० दे० 'जम्हाई'।

ज़मीं, ज़मीन–स्त्री० (फा०) पृथ्वी (ग्रह); धरती, भूमि; धरतीका स्थल भाग; जमीनका टुकड़ा, खेत; यह लोक; मिट्टी; कागज, कपड़े आदिकी सादी या स्तर की हुई सतह जिसपर चित्र-कारी, नक्काशी या छपाई की जाय; वह तेल जिसपर कोई इत्र तैयार किया जाय, इत्रका माद्दा; गजलकी रदीफ, काफिया और छंद; नदी, तालाब आदिका तलभाग। **–कंद**–पु० सूरन। **–दार** –पु० जमीनका मालिक; काश्तकार, किसान। **–दारी**–स्त्री० जमींदारका हक; वह जमीन जिसपर किसी खास आदमीको जमींदारका हक हासिल हो; जमींदारका काम, पेशा। **–दोज़**–वि० जमीनमें धँसा हुआ, इस तरह बना हुआ कि जमीनके ऊपर न उभरा हो (किला, मकान); जो जमीनके बराबर कर दिया गया हो, पटपर। **–बोस**–पु० जमीन चूमनेवाला। **–बोसी**–स्त्री० जमीन चूमना। **मु० –आसमान एक करना**–अत्यधिक प्रयास या उद्योग करना; हलचल मचाना; दुनिया छान मारना। **–आसमानका फ़र्क़**–बहुत अधिक अंतर, आकाश-पातालका अंतर। **–आसमानके कुलाबे मिलाना**–बहुत डींग मारना, अत्युक्ति करना, झूठका पुल बाँधना; किसी कामके लिए बहुत प्रयत्न करना। **–का पाँव तलेसे खिसक या निकल जाना**–भय या घबराहटसे खड़ा न रह सकना, बदहवास हो जाना। **–का पैबंद होना**–दफन होना, मरना। **–चूमना**–इस तरह गिरना कि मुँह नाक जमीनसे लग जायँ; जमीनसे माथा टेककर (राजा, बादशाह आदिको) प्रणाम करना, जमींबोसी। **– दिखाना**–पटकना, गिराना। **–देखना**–पटका जाना; नीचा देखना। **–नापना**–अधिक यात्रा करना; बेकार फिरते रहना। **–पकड़ना**–जमकर बैठ जाना; (कुश्तीमें) चित न होना। **–पर आना**–गिरना, (कुश्तीमें) नीचे आना। **–पर पाँव न पड़ना या न रखना**–बहुत गर्व होना, बहुत इतराना। **–बाँधना**–अस्तर लगाकर चित्रकी जमीन तैयार करना; भूमिका बाँधना, पेशबंदी करना। **–में गड़ जाना**– अत्यंत लज्जित होना, लज्जासे सिर न उठा सकना।

जमी*–वि० संयमी, इंद्रियोंका निग्रह करनेवाला।

ज़मीनी–वि० (फा०) जमीनका; जमीनसे संबद्ध (–फर्श)।

ज़मीमा–पु० (अ०) परिशिष्ट; पूरक; क्रोडपत्र।

ज़मीर–पु० (अ०) हृदय; अंतरात्मा, भले-बुरेका विचार करनेवाली अंतःकरणकी वृत्ति, सत्-असत्-विवेक; सर्वनाम (व्या०)। **–दाँ** वि० मनकी बात जाननेवाला। **–फ़रोश**–वि० स्वार्थके लिए बुरेको भला मानने, कहनेवाला, ईमानफरोश।

जमील–वि० (अ०) सुंदर, जमालवाला।

जमीला–वि० स्त्री० (अ०) सुंदरी।

जमुआ, जम्हुआ†–पु० एक घातक बालरोग।

जमुकना*–अ० क्रि० पास आना, होना।

जमुना–स्त्री० उत्तर भारतकी एक प्रधान नदी जो जमनोत्तरीसे निकलकर प्रयागमें गंगामें मिलती है, यमुना।

जमुनियाँ†–वि० जामुनके रंगका, काला। पु० जामुनका रंग।

जमुरी–स्त्री० नालबंदोंका एक औजार।

जमुर्रद–पु० (फा०) पन्ना।

जमुर्रदी–वि० दे० 'जमुर्रदीन'।

जमुर्रदीन–वि० (फा०) जमुर्रदके रंगका, हरा। पु० ऐसा रंग।

जमुहाना*–अ० क्रि० जम्हाई लेना।

जमूरक*–पु० पुराने समयकी एक तोप जो घोड़े या ऊँटपर चलती थी।

जमूरा–पु० दे० 'जमूरक'।

जमैयत–स्त्री० (अ०) इकट्ठा होना; मजमा, समुदाय; सभा; परिषद् ।

जमैयतुल-उलेमा–स्त्री० (अ०) मुसलमान आलिमोंकी सभा या परिषद् ।

जमोग†–पु० जमोगनेकी क्रिया । **–दार**–पु० जमोगके तरीकेसे जमींदारका रुपया देनेवाला ।

जमोगना†–स० क्रि० हिसावकी जाँच कराना; मूल धनमें सूद जोड़ना; अपनी कोई जिम्मेदारी दूसरेको सौंपना और उससे इसकी हामी भरा लेना; किसीकी बातकी पुष्टि या तसदीक करना ।

जमोगवाना†–स० क्रि० जमोगनेका काम कराना ।

जमोगा†–पु० जमोगनेकी क्रिया ।

जमोट†–पु० कुँएँकी जोड़ाईके समय सबसे नीचेका घेरा, जो काठ, ईंट आदिका होता है ।

जमौआ†–वि० जमाकर बनाया हुआ ।

जम्मू–पु० कश्मीरका एक प्रांत और एक नगर; दे० 'जंबू' ।

जम्हाई–स्त्री० ऊँघ, ऊब, आलस्य आदिसे होनेवाली शरीरकी एक सहज क्रिया जिसमें मुँह पूरा खुल जाता और साँस जोरसे अंदर खिंचकर फिर धीरे-धीरे बाहर निकलती है, उबासी ।

जम्हाना–अ० क्रि० जम्हाई लेना ।

जयंत–पु० (सं०) इंद्रका पुत्र; शिव; विष्णु; चंद्रमा; कार्त्तिकेय; एक रुद्र; एक ताल; विराट् नगरमें अज्ञातवासके समय भीमसेन-का नाम; यात्राका एक योग । वि० विजयी; बहुरुपिया ।

जयंतिका–स्त्री० (सं०) हल्दी; दे० 'जयंती' ।

जयंती–स्त्री० (सं०) पताका; इंद्रकी कन्या, जयंतकी बहिन; दुर्गा; पार्वती; भाद्र-कृष्णा अष्टमीको आधी रातको रोहिणी नक्षत्र होनेसे पड़नेवाला एक योग (कृष्णका जन्म इसी योगमें हुआ था); किसीकी जन्मतिथि, वरसगाँठका उत्सव; जौकी जरई; हल्दी; वैजंती; वृक्षविशेष । वि० स्त्री० जय करनेवाली, विजयिनी ।

जय–स्त्री० (सं०) शत्रु या विपक्षीको हराना, पछाड़ना, जीत; वशमें करना, निग्रह (इंद्रियजय); मुकाबले, प्रतियोगितामें जीतना, दूसरोंसे बढ़ जाना । पु० विष्णुके दो द्वारपालों (जय, विजय)मेंसे एक; परमेश्वर; इंद्रका पुत्र जयंत; युधिष्ठिरका विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका नाम; सूर्य; महाभारत; अर्जुनका एक नाम; अग्निमंथ; साठ संवत्सरोंके अंतर्गत एक संवत्सर । वि० जीतनेवाला (समासमें) । **–कार**–पु० जय-ध्वनि । **–कोलाहल**–पु० पासेका एक तरहका (प्राचीन) खेल । **–गोपाल**–पु० हिंदुओंमें प्रचलित एक प्रकारका अभिवादन । **–घोष**–पु० जयध्वनि । **–जयकार**–पु० जयघोष; जयप्राप्तिका आशीर्वाद । **–जयवंती**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी । **–जीव***–पु० एक तरहका प्राचीन अभिवादन । **–ढक्का**–स्त्री० जीतका डंका । **–ताल**–पु० एक मुख्य ताल । **–दुंदुभी**–स्त्री० जयभेरी, जीतका डंका । **–दुर्गा**–स्त्री० तंत्रके अनुसार दुर्गाकी एक मूर्ति । **–देव**–पु० गीतगोविंदके रचयिता प्रसिद्ध बंगीय कवि जो महाराज लक्ष्मणसेनके सभापंडित थे । **–ध्वज**–पु० विजयपताका; अवंति-राज कार्तवीर्यार्जुनका पुत्र । **–ध्वनि**–स्त्री० जयघोष । **–पत*** –पु० दे० 'जयपत्र' । **–पत्र**–पु० पराजित राजा आदिका वह लेख जिसमें वह अपनी पराजय स्वीकार करे; मुकदमेमें जीतनेवाले पक्षको मिलनेवाला जयसूचक पत्र, डिगरी । **–पत्री**–स्त्री० जावित्री । **–पराजय**–स्त्री० जीत-हार । **–पाल**–पु० जमाल-गोटा; विष्णु; ब्रह्मा; राजा । **–पुत्रक**–पु० पुराने समयका एक तरहका पासा । **–प्रिय**–पु० राजा विराट्का भाई; तालके मुख्य भेदोंमेंसे एक । **–भेरी**–स्त्री० जीतका डंका । **–मंगल**–पु० राजाकी सवारीका हाथी; एक ताल; जयकार; एक वृक्ष । **–*रस**–पु० आयुर्वेदोक्त एक ज्वरनाशक रस । **–मल्लार**–पु० एक राग । **–माल**–स्त्री० (हिं०) दे० 'जयमाला' । **–माला**–स्त्री० विजेताको पहिनायी जानेवाली जयसूचक माला; वह माला जो स्वयंवरा कन्या स्वयंवर-विजयी या मनोनीत वरके गलेमें डाले (हिं०) । **–माल्य**–पु० जयमाल । **–यज्ञ**–पु० अश्वमेध यज्ञ । **–लक्ष्मी**–स्त्री० जयश्री । **–लेख**–पु० जयपत्र । **–वाहिनी**–स्त्री० इंद्राणी; विजयिनी सेना । **–शृंग**–पु० जयघोषणाके लिए बजाया जानेवाला सिंघा । **–श्री**–स्त्री० विजयकी अधिष्ठात्री देवी; विजय; एक रागिनी । **–स्तंभ**–पु० देशविजयके स्मारक-रूपमें संस्थापित स्तंभ । **–स्वामी(मिन्)**–पु० कात्यायन-कल्प-सूत्रके एक व्याख्याता । मु० **–मनाना**–(किसीकी) विजय या कल्याणकी कामना करना ।

जयक–वि०, पु० (सं०) जयकर्ता, जीतनेवाला ।

जयकरी–स्त्री० चौपाई नामक छंद ।

जयचंद–पु० पृथ्वीराजका एक रिश्तेदार जो कन्नौजका राजा था (कहा जाता है कि पृथ्वीराजपर आक्रमण करनेके लिए इसीने शहाबुद्दीन गोरीको आमंत्रित किया था); (ला०) देश-द्रोह करनेवाला व्यक्ति ।

जयति–पु० एक संकर राग । **–श्री**–स्त्री० एक रागिनी ।

जयती–स्त्री० श्रीरागकी एक रागिनी ।

जयतु–अ० (सं०) जय हो, आशीर्वाद ।

जयत्कल्याण–पु० (सं०) एक संकर राग ।

जयत्सेन–पु० (सं०) विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका नकुल-का नाम ।

जयद्बल–पु० (सं०) विराट् नगरमें अज्ञातवासके समयका सहदेव का नाम ।

जयद्रथ–पु० (सं०) सिंधु-सौवीरका राजा जो दुर्योधनका बहनोई था और जिसने चक्रव्यूहमें फँसे अभिमन्युका वध किया । **–वध**–पु० अभिमन्युके वधके बाद अर्जुनका अगले दिन सूर्यास्तके पहले जयद्रथके वधकी प्रतिज्ञा करना और कृष्णकी सहायतासे उसका पालन ।

जयन–पु० (सं०) जीतना, जय करना; घोड़े आदिपर बाँधनेका जिरह । वि० विजयी ।

जयना*–स० क्रि० विजय प्राप्त करना ।

जयनी–स्त्री० (सं०) इंद्रकी कन्या ।

जयशंकर 'प्रसाद'–पु० हिंदीके वर्तमान युगके प्रथम छायावादी कवि, जो नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार और निबंधकार भी थे । 'कामायनी' नामक महाकाव्य उनकी परम उत्कृष्ट रचना है । 'तितली' और 'कंकाल' नामक उपन्यास तथा 'चंद्रगुप्त' आदि नाटक इनकी अन्य रचनाएँ हैं । (संवत् १९४६–१९९४) ।

जया–स्त्री० (सं०) दुर्गा; दुर्गाकी एक सहचरी; पताका; हरी दूब; शमी; जैंत; हड़; भाँग; अड़हुलका फूल; दोनों पक्षोंकी तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी; एक प्राचीन बाजा । * वि० स्त्री० जय दिलानेवाली ।

जयापीड–पु० (सं०) कश्मीरका एक प्रतापी राजा जो आठवीं शतीमें हुआ था ।

जयावती–स्त्री० (सं०) एक संकर रागिनी; कार्त्तिकेयकी एक मातृका ।

जयावह–वि० (सं०) जय दिलानेवाला ।

जयावहा–स्त्री० (सं०) भद्रदंती वृक्ष ।

जयाश्रया–स्त्री० (सं०) जरडी नामक तृण ।

जयाह्वा–स्त्री० (सं०) भद्रदंती वृक्ष ।

जयिष्णु–वि० (सं०) जयशील, सदा, जीतनेवाला ।

जयी(यिन्)–वि० (सं०) जीतनेवाला, जयशील ।

जयेती–स्त्री० (सं०) एक संकर रागिनी ।

जयेत्–पु० (सं०) एक राग ।

जयेद्गौरी–स्त्री० (सं०) एक संकर रागिनी ।

जयोल्लास–पु० (सं०) विजयका उल्लास, जीतकी खुशी ।

जय्य–वि० (सं०) जीतने योग्य ।

जरंड–वि० (सं०) क्षीण; वृद्ध ।

जरंत–पु० (सं०) वृद्ध मनुष्य; भैंसा ।

जर–पु० (सं०) जरा; विनाश; *जल; ज्वर; दे० 'ज़र' । वि० वृद्ध; क्षीण; क्षय या वृद्ध होने या करनेवाला । * स्त्री० जड़; हैसियत, औकात । **–कस,–कसी***–वि० दे० 'ज़रकश' । **–वारा***–वि० पैसेवाला, धनी ।

ज़र–पु० (फा०) सोना; धन, दौलत । **–अस्ल**–पु० मूल धन । **–कश**–पु० कलाबत्तूके तार खींचनेवाला । वि० (कपड़ा) जिस-

पर जरी या कलावत्तूका काम हो । **–कार**–वि० जिसपर सोनेका मुलम्मा या काम हुआ हो । पु० सुनार । **–ख़रीद**–वि० रुपया देकर खरीदा हुआ, क्रीत (गुलाम, जमीन); जिसपर पूर्ण स्वामित्व प्राप्त हो । **–ख़ेज़**–वि० उपजाऊ (–ज़मीन) । **–ख़ेज़ी**–स्त्री० उपजाऊपन । **–गर**–पु० सुनार । **–डिगरी**–पु० डिगरीका रुपया; वह रकम जिसकी डिगरी मिले । **–तार**–वि० जिसपर जरीका काम हो । पु० जरी । **–तारी**–वि० दे० 'ज़रतार' । स्त्री० जरीका काम । **–दार**–वि० धनी, मालदार । **–दोज़**–वि० जिसपर जरीका काम हो । पु० जरी, कलावत्तूका काम करनेवाला । **–दोज़ी**–स्त्री० कलावत्तू या सलमे-सितारेका काम । **–नक़्द**–पु० नगद रुपया, रोकड़ । **–निगार**–वि० सुनहरे कामका, सुनहरा । **–निगारी**–स्त्री० सोनेका काम; सोनेका मुलम्मा । **–निशाँ**–पु० लोहेपर सुनहरे वेल-वूटे वनानेका काम । **–०गर**–पु० जरनिशाँ बनानेवाला । **–नीलाम**–पु० वह रुपया जो किसी चीजको नीलाम करनेसे मिले । **–परस्त**–वि० (पैसेकी पूजा करनेवाला) लोभी; कंजूस । **–पेशगी**–स्त्री० बयाना । **–वफ़्त**–पु० कलावत्तू और रेशमके तार मिलाकर वुना हुआ कपड़ा । **–बाफ़**–पु० जरबफ्त; जरबफ्त वुननेवाला । **–बाफ़ी**–वि० कलावत्तूके कामका । स्त्री० जरदोजी । **–याफ़्तनी**–पु० प्राप्य धन, पावना । **–(रे)ख़ालिस**–पु० खरा सोना ।

जरई–स्त्री० धान, जौ आदिका भिगोकर या मिट्टीमें गाड़कर उगाया हुआ अँखुआ; धानके अँखुआये हुए वीज ।

जरकटी–पु० एक शिकारी पक्षी ।

जरगा–पु० एक तरहकी घास ।

जरछार*–वि० जो जलकर राख हो गया हो ।

जरजर–वि० दे० 'जर्जर' ।

जरठ–वि० (सं०) कठोर, कर्कश; बूढ़ा; जीर्ण; झुका हुआ; जर्दी लिये हुए सफेद रंगका । पु० वुढ़ापा ।

जरठाई*–स्त्री० वुढ़ापा ।

जरडी–स्त्री० (सं०) तृणविशेष, गर्मोटिका, जयाश्रया ।

जरण–पु० (सं०) वुढ़ापा; जीरा; स्याह जीरा; हींग; कसौंजा; काला नमक; एक प्रकारका ग्रहण । वि० जीर्ण; वूढ़ा; पाचक । **–द्रुम**–पु० साखू; सागौन ।

जरणा–स्त्री० (सं०) वुढ़ापा; स्याह जीरा; प्रशंसा ।

जरतिका, जरती–स्त्री० वूढ़ी स्त्री ।

ज़रतुश्त–पु० (फा०) प्राचीन पारसीधर्मके प्रवर्तक और जंद-अवेस्ताके रचयिता ।

ज़रतुश्ती–वि० जरतुश्तका; जरतुश्त-प्रवर्तित ।

जरत्–वि० (सं०) बूढ़ा; जीर्ण । पु० वूढ़ा आदमी । **–कारु**–पु० एक मुनि जिन्होंने वासुकि नागकी वहन मनसा देवीसे व्याह किया था ।

जरद–वि० दे० 'ज़र्द' ।

ज़रदक–पु० (फा०) पीलू पक्षी ।

जरदष्टि–वि० (सं०) अति वृद्ध । स्त्री० वुढापा ।

ज़रदा–पु० (फा०) केसर देकर पकाये हुए मीठे चावल; पानके साथ खानेके लिए विशेष विधिसे वनायी हुई सुगंधित सुरती; पीले रंगका घोड़ा; पीली आँखोंवाला कबूतर । **–फ़रोश**–पु० जरदा वेचनेवाला ।

ज़रदालू–पु० (फा०) खूबानी ।

जरदी–स्त्री० दे० 'ज़र्दी' ।

ज़रदुश्त–पु० दे० 'ज़रतुश्त' ।

ज़रदोज़–दे० 'जर'के साथ ।

जरद्गव–पु० (सं०) वूढा वैल ।

जरन–स्त्री० दे० 'जलन' ।

जरना*–अ० क्रि० दे० 'जलना' । स० क्रि० दे० 'जड़ना' ।

जरनि*–स्त्री० दे० 'जलन' ।

जरनैल–पु० दे० 'जेनरल' ।

जरब–स्त्री० (अ०) चोट; मार, आघात; थाप; ठप्पा; गुणा (ग०); तोपका दगना, वाढ़ । **–ख़ाना**–पु० टकसाल । **–तक़सीम**–पु० गुणा-भाग । **–(बे)ख़फ़ीफ़**–स्त्री० हलकी चोट । **–शदीद**–स्त्री० गहरी चोट ।

जरबीला*–वि० भड़कीला, चमक-दमकवाला ।

जरबुलमसल–स्त्री० (अ०) कहावत, लोकोक्ति ।

जरमन–वि० (अं०) जरमनीका; जरमनी, जरमन जाति या जरमन भाषासे संवद्ध । पु० जरमनीका निवासी । स्त्री० जरमनीकी भाषा । **–सिलवर**–पु० जस्ते, ताँवे और निकलकी मिलावटसे वनी एक धातु जो वरतन आदि वनानेके काम आती है ।

जरमनी–पु० (अं०) मध्य यूरोपका एक प्रमुख देश ।

ज़रर–पु० (अ०) हानि; क्लेश, पीडा । **–रसाँ**–वि० नुकसान पहुँचानेवाला, हानिकर ।

जरस–पु० (अ०) घंटा, घड़ियाल ।

जरा–स्त्री० (सं०) बुढ़ापा; वुढ़ापेसे पैदा हुई कमजोरी; एक राक्षसी जिसने, कहते हैं, जरासंधकी देहके दो टुकड़ोंको जोड़कर एक कर दिया । पु० वह निषाद जिसका वाण तलवेमें लगनेसे कृष्णकी मृत्यु हुई; अग्नि (वै०) । **–कुमार**–पु० जरासंध । **–ग्रस्त**–वि० वूढा । **–जीर्ण**–वि० वुढ़ापेसे जिसके अंग और इंद्रियाँ शिथिल हो गयी हों, जरासे जर्जर । **–पुष्ट**–पु० जरासंध । **–बोध**–पु० स्तुति करके जगायी हुई अग्नि । **–भीत,–भीरु**–पु० कामदेव । **–शोष**–पु० शोष रोगका वह भेद जो वुढ़ापेके कारण होता है । **–संध,–सुत**–पु० मगधका राजा जो कंसका ससुर था और युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय भीमके हाथों मारा गया (पौराणिक कथाके अनुसार वह अपनी माँके पेटसे दो भागोंमें विभक्त उत्पन्न हुआ था और जरा नामकी एक राक्षसीने दोनों टुकड़ोंको जोड़ दिया । इसीसे उसका जरासंध नाम पड़ा ।) **–०जित्**–पु० भीम ।

ज़रा–वि० (अ०) थोड़ा, तनिक । अ० तनिक, थोड़ी देरके लिए । **–ज़रा**–अ० थोड़ा-थोड़ा । **–मना**–अ० थोड़ा-वहुत । **–सा**–थोड़ा-सा ।

ज़राअत–स्त्री० (अ०) दे० 'ज़िराअत' ।

जराउ*–वि० दे० 'जड़ाऊ'–'गोरे भाल विंद सेंदुरपर टीका धरचो जराउ'–सूर ।

जरातुर–वि० (सं०) जराग्रस्त, वूढ़ा ।

जराना*–स० क्रि० जलाना; ईर्ष्या उत्पन्न करना ।

ज़राफ़त–स्त्री० (अ०) हँसोड़पन; हँसी-मजाक । **–पसंद**–वि० परिहास-प्रिय, हँसोड़ । **–की पोट**–हँसोड़, मसखरा ।

ज़राफ़ा–पु० (अ०) दे० 'ज़िराफा' ।

जराय, जराव*–वि० जड़ाऊ । पु० पच्चीकारी ।

जरायणि–पु० (सं०) जरासंध ।

जरायम-पेशा–वि० अपराध करनेवाला, जुर्म करनेवाला ।

जरायु–पु० (सं०) वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ वच्चा माँके गर्भसे वाहर आता है, खेड़ी; गर्भाशय; केंचुली; समुद्र-फल; जटायु । **–ज**–पु० वह प्राणी जो खेड़ीमें लिपटा हुआ पैदा हो या जिसका जन्म गर्भाशयमें हो, पिंडज । **–मूल**–(प्लेसेंटा) जरायुका वह ऊपरवाला हिस्सा जो गर्भाशयसे चिपटा रहता है और जो बच्चेका जन्म हो जानेके वाद वाहर निकलता है, पुरइन, अपरा, गर्भनाल ।

जराह–पु० दे० 'जर्राह' ।

जरिणी–वि० स्त्री० (सं०) वुढ़िया ।

जरित–वि० (सं०) जरायुक्त, वूढ़ा ।

जरिया†–वि० जलाकर तैयार किया हुआ । * पु० दे० 'जड़िया' ।

ज़रिया–पु० दे० 'ज़रीया' ।

जरिश्क–पु० (फा०) एक पौधा जो दवाके काम आता है, दारुहल्दी ।

ज़रीं–वि० (फा०) सोनेका वना हुआ, सुनहरा ।

जरी*–स्त्री० दे० 'जड़ी' ।

ज़री–वि० (फा०) सुनहरे तारोंका वना हुआ । स्त्री० चाँदीका तार जिसपर सोनेका पानी चढ़ाया गया हो; ताश नामका कपड़ा । **–का काम**–कलावत्तू या सलमे-सितारेका काम ।

जरी(रिन्)–वि० (सं०) वूढ़ा ।

जरीदा–पु० (अ०) वही; पुस्तक; सरकारी गजट । वि० अकेला, तनहा ।

ज़रीफ़–वि० (अ०) हँसोड़, विनोदशील, परिहास-प्रिय ।

जरीब–स्त्री० (अ०) लाठी, डंडा; जमीन नापनेकी जंजीर जो ५५ या ६० गजकी होती है; रेशमकी डोरी जिससे शाही जुलूसोंके साथ रास्तेकी लंबाई नापा करते थे । **–कश**–पु० जमीनकी पैमाइशमें जरीब खींचनेका काम करनेवाला । **मु० –डालना**–जमीनको जरीबसे नापना ।

जरीबी–वि० जरीबसे नापा हुआ (–बीघा) ।

ज़रीया–पु० (अ०) लगाव, वसीला; साधन (...**के ज़रीये**=(किसी)के द्वारा) ।

जरूथ–पु० (सं०) मांस । वि० कटुभाषी ।

ज़रूर–वि० (अ०) आवश्यक, अवश्य-करणीय, जरूरी । अ० अवश्य, बेशक । **–ज़रूर**–अ० अवश्यमेव ।

ज़रूरत–स्त्री० (अ०) आवश्यकता, हाजत ।

ज़रूरतन्–अ० (अ०) आवश्यकतावश ।

ज़रूरियात–स्त्री० (अ०) (किसी वस्तु या कार्यके लिए) आवश्यक वस्तुएँ, क्रियाएँ । **–ज़िंदगी**–स्त्री० जीवनके लिए आवश्यक वस्तुएँ । **मु० –से फ़ारिग़ होना**–शौचादिसे निवृत्त होना ।

ज़रूरी–वि० (अ०) आवश्यक, वाजिब, जिसके बिना काम न चले ।

जरूला*–वि० गभुआरे केशवाला; जटुलयुक्त, लच्छनवाला ।

जरौट*–वि० जड़ाऊ ।

ज़र्क-बर्क़–वि० (अ०) चमक-दमकवाला, भड़कदार । स्त्री० चमक-दमक, ठाट-बाट ।

जर्जर–वि० (सं०) जीर्ण; टूटा-फूटा; क्षत; पीड़ित । पु० इंद्रकी ध्वजा; छरीला ।

जर्जरित–वि० (सं०) जो जीर्ण, जर्जर हो गया हो; अभिभूत ।

जर्जरीक–वि० (सं०) क्षीण; पुराना; छेदोंसे भरा हुआ ।

जर्ण–वि० (सं०) क्षीण; जीर्ण । पु० वृक्ष; (घटता हुआ) चंद्रमा ।

जर्तिल–पु० (सं०) जंगली तिल ।

जर्तु–पु० (सं०) हाथी; योनि ।

ज़र्द–वि० (फा०) पीला । **–चोब**–स्त्री० हल्दी । **मु० –पड़ना**–पीला हो जाना ।

ज़र्दा–पु० दे० 'ज़रदा' ।

ज़र्दालू–पु० दे० 'ज़रदालू' ।

ज़र्दी–स्त्री० (फा०) पीलापन; पीला रंग ।

ज़र्फ़–पु० (अ०) पात्र, बरतन; पात्रता, योग्यता ।

जर्फ़ीयत–स्त्री० (फा०) पात्रता ।

जर्मन सिलवर–पु० दे० 'जरमन'के साथ ।

ज़र्रा–पु० (अ०) अणु; वह कण जो सूर्य-प्रकाशमें उड़ता दिखाई देता है, त्रसरेणु; जौका सौवाँ भाग; रेतका कण । **–ज़र्रा**–अ० तिल-तिल; कण-कण । **–भर**–वि० तिलभर, तनिक-सा ।

जर्रार–वि० (अ०) वीर; बलिष्ठ; भारी, प्रचंड (सेना) ।

जर्राह–पु० (अ०) चीर-फाड़, शल्यक्रिया करनेवाला ।

जर्राही–स्त्री० चीर-फाड़का काम ।

जर्हिल–पु० (सं०) दे० 'जर्तिल' ।

जलंग–पु० (सं०) एक विरेचक पौधा, महाकाल लता । वि० जलीय ।

जलंगम–पु० (सं०) चांडाल ।

जलंधर–पु० (सं०) एक असुर; एक ऋषि; हठयोगके अंतर्गत एक बंध; † दे० 'जलोदर' ।

जलंबल–पु० (सं०) नदी; अंजन ।

जल–पु० (सं०) पानी; खस; पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र; सुगंधवाला । वि० दे० 'जड' । **–अलि**–पु० जलका भौंरा । **–कंटक**–पु० सिंघाड़ा; घड़ियाल । **–कंडु**–पु० बराबर भीगा रहनेके कारण पाँवमें होनेवाली खुजली । **–कपि**–पु० सूँस, शिशुमार । **–कपोत**–पु० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया, जलपारावत । **–करंक**–पु० नारियल, कमल; जललता; बादल; शंख । **–कर**–पु० पानीका कर, महसूल; जलाशयोंमें उत्पन्न पदार्थोंपर लगनेवाला महसूल । **–कल**–स्त्री० (हिं०) पानीका नल, पाइप । **–०विभाग**–पु० नगरपालिकाका वह विभाग जो नगरका जलप्रबंध करे, 'वाटरवर्क्स' । **–कल्क**–पु० कीचड़; सेवार । **–कल्मष**–पु० समुद्रमंथनसे प्राप्त विष । **–कष्ट**–पु० पानीकी कमीसे होनेवाली असुविधा । **–कांक्ष,–कांक्षी(क्षिन्)** –पु० हाथी । **–कांत**–पु० वायु । **–कांतार**–पु० वरुण । **–काक**–पु० जलकौआ । **–कामुक**–पु० कुटुंबिनी नामक वृक्ष । **काय**– पु० जलीय शरीरवाला जीव । **–किनार**–पु० (हिं०) एक तरहका रेशमी कपड़ा । **–किराट**–पु० ग्राह, घड़ियाल । **–कुंतल**–पु० सिवार । **–कुंभी**–स्त्री० पानीपर होने और फैलनेवाला एक पौधा, कुंभी । **–कुक्कुट**–पु० मुरगाबी । **–कुक्कुभ**–पु० एक जलपक्षी । **–कुब्जक**–पु० सिवार; काई । **–कूपी**–स्त्री० तालाब; भँवर । **–कूर्म**–पु० सूँस । **–केतु**–पु० एक तरहका पुच्छलतारा । **–केलि**–स्त्री० जलक्रीडा । **–केश**–पु० सिवार । **–कौआ**–पु० (हिं०) एक जलपक्षी जिसकी सारी देह काली और गरदन सफेद होती है । **–क्रिया**–स्त्री० तर्पण । **–क्रीडा**–स्त्री० नदी, तालाब आदिमें स्त्रियोंका परस्पर या नायक-नायिकाका एक-दूसरेपर पानीके छींटे फेंकना, जलकेलि; क्रीडाके लिए पानीमें तैरना आदि । **–खग**–पु० जलपक्षी । **–खर**†–पु० गाँवकी जमीनका जलभाग, ताल-तालाब आदि । **–गर्द**–पु० पानीमें रहनेवाला साँप, डेंड़हा । **–गुल्म**–पु० भँवर; कछुआ; आयताकार, चौकोर तालाब । **–घड़ी**–स्त्री० (हिं०) कालज्ञानका एक साधन, पानीपर तैरता हुआ कटोरा जिसके पेंदेमें छेद होता है और जो ठीक एक घड़ीपर पानीके बोझसे डूब जाता है । **–चत्वर**–पु० चौकोर तालाब । **–चर**–पु० जलमें रहनेवाला प्राणी, जलजंतु । वि० जलमें रहनेवाला । **–चरी**–स्त्री० मछली । **–चादर**–स्त्री० (हिं०) पानीकी चादर, ऊँचाईसे गिरनेवाली पानीकी काफी चौड़ी धार । **–चारी(रिन्)**–पु० जलचर; मछली । वि० जलमें रहनेवाला । **–जंतु**–पु० जलमें रहनेवाला जीव, जलचर । **–जंतुका**–स्त्री० जोंक । **–जंबुका, –जंबूका**–स्त्री० जलजामुन । **–ज**–वि० जलमें उत्पन्न । पु० कमल; शंख; मोती; चौलाई; मछली; सिवार; जलबेंत, समुद्रलवण; चंद्रमा; कुचला । **–जन्म(न्)**–पु० कमल । **–जात**–वि० जलमें उत्पन्न । पु० कमल । **–जामुन**–पु० (हिं०) एक तरहका जंगली जामुन । **–जिह्व**–पु० घड़ियाल । **–जीवशाला**–स्त्री० (ऐक्वैरियम) पानीसे भरा हुआ ऐसा पात्र या जलाशय जिसमें मछलियों या पौधोंको जीवित रखनेका प्रबन्ध किया गया हो । **–जीवी(विन्)**–पु० मछुआ । **–डमरूमध्य**–पु० दो समुद्रों, खाड़ियों आदिको जोड़नेवाली जल-प्रणाली । **–डिंब**–पु० घोंघा । **–तरंग**–पु० एक बाजा जिसमें पानीसे भरी कटोरियोंपर छड़ीसे आघात कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है । स्त्री० पानीकी लहर । **–तरोई**†–स्त्री० दे० क्रममें । **–ताडन**–पु० पानी पीटना; (ला०) बेकार काम । **–तापिक,–तापी(पिन्)** पु० हिलसा मछली । **–तिक्तिका**–स्त्री० सलईका पेड़ । **–त्रा**–स्त्री० छतरी, छाता । **–त्रास**–पु० जलातंक रोग । **–थंभ**–पु० (हिं०) जलस्तंभन । **–थल**–पु० (हिं०) जल और स्थल । **–द**–वि० जल देनेवाला । पु० बादल; कपूर; मोथा । **–०काल**–पु० वर्षाकाल । **–०क्षय**–पु० शरत्काल । **–०तिताला**–पु० (हिं०) तिताला तालका एक भेद । **–दर्दुर**–पु० एक वाद्य । **–दस्यु**–पु० समुद्री डाकू । **–दाता(तृ)**–पु० पानी देनेवाला । **–दान**–पु० प्रेतकर्मके अंतर्गत मृत व्यक्तिको तिलांजलि देना, तर्पण । **–द्विप**–पु० जलहस्ती । **–दुर्ग**–पु० नदी, झील आदिसे घिरा हुआ किला, जलवेष्टित दुर्ग । **–देव**–पु० पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र; वरुण । **–देवता**–पु० वरुण । **–द्रव्य**–पु० पानीमें पैदा होनेवाली चीजें (मोती, शंख आदि) । **–द्रोणी**–स्त्री० नावका पानी उलीचनेका हत्था; दोन । **–धर**–पु० बादल; समुद्र; मोथा; तिनिश वृक्ष । **–०केदारा**–पु० (हिं०) एक संकर राग । **–०माला**–स्त्री० मेघपंक्ति; एक छंद । **–धरी**–स्त्री० जलहरी । **–धार**–पु० शाकद्वीपका एक पर्वत । * स्त्री० जलधारा । **–धारा**–स्त्री० जलका प्रवाह । **– धारी***–पु० बादल । **– धि**–पु० समुद्र; चारकी संख्या । **–०गा**–स्त्री० नदी । **–०ज**–पु० चंद्रमा । **–०जा**–स्त्री० लक्ष्मी । **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए पानीके घड़ेमें कल्पित गाय । **–नकुल**–पु० ऊदबिलाव । **–नाडी,–नाली**–स्त्री० पानी निकलनेका रास्ता, नाला । **–निकासप्रणाली**–स्त्री०

(ड्रेनेज स्कीम) नालियाँ आदि बनाकर नगरका गंदा पानी बाहर निकालनेकी प्रणाली या योजना। **–निधि**–पु० समुद्र; चारकी संख्या। **–निर्गम**–पु० पानीका निकास, जलपथ। **–नीलिका, –नीली**–स्त्री० सिवार। **–पंप**–पु० (वाटर पंप) दे० 'जलोत्तोलन यंत्र'। **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० पानीके किनारे रहनेवाला, मछलियाँ आदि खानेवाला पक्षी। **–पटल**–पु० बादल। **–पति**–पु० समुद्र; वरुण; पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। **–पथ**–पु० जलमार्ग; नहर आदि, पानीका रास्ता। **–पद्धति**–स्त्री० नाला। **–परी**–स्त्री० एक कल्पित जंतु जिसका धड़ स्त्रीकी शकलका तथा निचला भाग मछली जैसा माना जाता है। **–पाटल***–पु० काजल। **–पात्र**–पु० पानी पीनेका बरतन; पानीका बरतन। **–पान**–पु० कलेवा, नाश्ता। **–०गृह**–पु० वह स्थान जहाँ जलपानका सामान (चाय, मिठाई आदि) मिले; जहाँ जलपान किया जा सके, 'रेस्तराँ'। **–पारावत**–पु० जलकपोत। **–पित्त**–पु० अग्नि। **–पिप्पली**–स्त्री० जलपीपल। **–पीपल**–पु० (हि०). पीपल(ओषधि)का एक भेद। **–पुष्प**–पु० पानीमें होनेवाला फूल (कमल, कुई इ०)। **–पृष्ठजा**–स्त्री० सिवार। **–प्रणाली**–स्त्री० (वाटर चैनल) जल भागों या दो समुद्रोंके बीचमें पड़नेवाला लंबा-सा जलमार्ग जो जलडमरूमध्यसे अधिक चौड़ा हो। **–प्रदान**–पु० प्रेतादिके लिए जलदान, तर्पण। **–प्रदानिक**–पु० महाभारतमें स्त्रीपर्वके अंतर्गत एक अवांतर पर्व। **–प्रपा**–स्त्री० पौसरा, प्याऊ। **–प्रपात**–पु० झरना; किसी नदी-नालेका पहाड़के ऊपरसे सीधे नीचे गिरना। **–प्रलय**–पु० संपूर्ण सृष्टिका जलमग्न हो जाना। **–प्रवाह**–पु० पानीका बहाव; पानीकी धारा; शवको नदी आदिमें बहा देना। **–प्रस्फोट**–पु० (डेप्थचार्ज) पानीमें फूटनेवाला प्रस्फोट (बम) जो किसी पनडुब्बीपर या उसके निकट गिराया जाता है; जलबम (दे० क्रममें)। **–प्रांगण**–पु० (टेरिटोरियल वाटर्स) दे० 'जलीय क्षेत्र'। **–प्रांत**–पु० नदी; झील आदिके पासकी जमीन। **–प्राय**–पु० जलबहुल प्रदेश। वि० जहाँ जल अधिक हो। **–प्रिय**–पु० चातक; मछली। **–प्रिया**–स्त्री० चातकी; पार्वती। **–प्रेत**–पु० वह मृतव्यक्ति जो जलमें डूबकर मरनेके कारण प्रेतयोनिको प्राप्त करे। **–प्लव**–पु० ऊदबिलाव। **–प्लावन**–पु० जलप्रलय; बाढ़। **–फल**–पु० सिंघाड़ा। **–बंध, –बंधक**–पु० पानीका बाँध; बाँधका काम देनेवाली चट्टान आदि। **–बंधु**–पु० मछली। **–बालक**–पु० विंध्य पर्वत। **–बालिका**–स्त्री० बिजली। **–बिंब**–पु० बुलबुला। **–बिडाल**–पु० ऊदबिलाव। **–बिल्व**–पु० तालाब; झील; केकड़ा; सूँस। **–बुद्बुद**–पु० बुलबुला। **–बेंत**–पु० (हिं०) लता जैसा एक प्रकारका बेंत जो नदी आदिके किनारे पैदा होता है। **–ब्राह्मी**–स्त्री० हुरहुरका साग, हिलमोची। **–भँवरा**–पु० (हिं०) पानीपर तैरनेवाला एक कीड़ा। **–भाजन**–पु० जलपात्र। **–भालू**–पु० (हिं०) सीलकी जातिका एक जंतु। **–भीति**–स्त्री० जलातंक रोग। **–भू**–वि० जलीय। पु० बादल; एक तरहका कपूर। स्त्री० पानी जमा कर रखनेका स्थान। **–भूषण**–पु० वायु। **–भृत्**–पु० बादल; पानी रखनेका बरतन, घड़ा आदि; एक तरहका कपूर। **–मंडूक**–पु० पुराने समयका एक बाजा, जलदर्दुर। **–मक्षिका**–स्त्री० पानीमें रहनेवाला एक कीड़ा। **–मग्न**–वि० पानीमें डूबा हुआ। **–मद्गु**–पु० एक जलपक्षी, कौड़िल्ला। **–मधूक**–पु० जलमहुआ। **–मर्कट**–पु० दे० 'जलकपि'। **–मल**–पु० फेन। **–मसि**–पु० बादल; एक तरहका कपूर। **–महुआ**–पु० (हिं०) महुएका एक भेद जो पानीके किनारे होता है। **–मातंग**–पु० जलहस्ती। **–मातृका**–स्त्री० एक जलदेवी। **–मानुष**–पु० एक कल्पित (?) प्राणी जिसकी नाभिसे नीचेकी देह मछलीकी और ऊपरकी मनुष्यकी मानी जाती है, जलपरी, 'परीरू'। **–मापक**–पु० पानी पहुँचानेवाले नलमेंसे निकलनेवाले जलकी मात्रा अंकित करनेवाला यंत्र (हाइड्रोमीटर, वाटरमीटर), पानीकी 'घड़ी'। **–मार्ग**–पु० जलपथ, जलप्रणाली। **–मार्जार**–पु० ऊदबिलाव। **–मुक्(च्)**–पु० बादल; एक प्रकारका कपूर। **–मूर्ति**–पु० शिव। **–मूर्तिका**–स्त्री० ओला। **–मोद**–पु० खस। **–यंत्र**–पु० फुहारा; कुएँ आदिसे पानी निकालनेका यंत्र (रहट आदि); जलघड़ी; पानी ऊपर खींचने या चढ़ानेवाला यंत्र। **–० गृह, –०मंदिर**–पु० वह मकान जिसमें या जिसके आस-पास फुहारे हों; वह मकान जिसके चारों ओर पानी हो। **–यात्रा**–स्त्री० जलमार्गसे नाव आदिके द्वारा यात्रा; तीर्थजल लानेके लिए यजमानकी सविधि यात्रा; कार्तिक-शुक्ला चतुर्दशीको होनेवाला राजपूतानाका एक उत्सव; ज्येष्ठ-शुक्ला पूर्णिमाको होनेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें जगन्नाथ ठंढे जलसे खूब नहलाये जाते हैं। **–यान**–पु० पानीकी सवारी–जहाज, नाव। **–युद्ध**–पु० पानीके ऊपर होनेवाला युद्ध, जहाजी लड़ाई। **–रंक, –रंज**–पु० बगला। **–रंकु**–पु० मुरगाबी। **–रंग**–पु० (वाटर-कलर) पानी मिलाकर तैयार किया गया रंग। **–रंड**–पु० भँवर; जलकण; साँप। **–रस**–पु० नमक; साँभर नमक या समुद्री लोन। **–राक्षसी**–स्त्री० लवण-समुद्रमें रहनेवाली सिंहिका नामकी राक्षसी जो ऊपर उड़नेवाले पक्षियोंकी छाया पकड़कर उन्हें खींच लेती थी और हनूमान्के लंका जाते समय उनके साथ भी वही करनेपर उन्हींके हाथों मारी गयी। **–राशि**–स्त्री० पानीका बहुत बड़ा ढेर; स्थानविशेषपर संचित अत्यधिक जल; कर्क, मकर आदि राशियाँ। पु० समुद्र। **–रुंड**–पु० भँवर; जलकण; साँप। **–रुह**–पु० कमल। **–रूप**–पु० मगर; मकर राशि। **–लता**–स्त्री० लहर, तरंग। **–वरंट**–पु० एक प्रकारका व्रण। **–वर्त्तिका**–स्त्री० एक जलपक्षी। **–वल्कल**–पु० जलकुंभी। **–वल्ली**–स्त्री० सिंघाड़ेका पौधा। **–वाद्य**–पु० एक वाद्य। **–वायस**–पु० कौड़िल्ला नामकी चिड़िया। **–वायु**–पु० दे० क्रममें। **–वालुक**–पु० विंध्य-श्रेणी। **–वास**–पु० खस; विष्णुकंद। **–वाह**–पु० बादल; जलवाहक। **–वाहक**–पु० पानी ढोनेवाला। **–विदुजा**–स्त्री० यावनाली शर्करा, जुआरकी चीनी। **–विषुव**–पु० तुलाकी संक्रांति। **–वृश्चिक**–पु० झींगा मछली। **–वेत(स्)**–पु० दे० जलबेंत। **–वैकृत**–पु० नदी आदिके जलमें अचानक अशुभ-सूचक विकार हो जाना। **–व्यथ, –व्यध**–पु० एक मछली, कंकत्रोट। **–व्याघ्र**–पु० सीलकी जातिका एक हिंसक जलजंतु। **–व्याल**–पु० पानीमें रहनेवाला साँप, डेंड़हा। **–शय, शयन, –शायी(यिन्)**–पु० विष्णु, नारायण। वि० पानीपर सोनेवाला। **–शर्करा**–स्त्री० ओला। **–शुक्ति**–स्त्री० घोंघा। **–शुनक**–पु० जल-नकुल। **–शूक**–पु० सेवार। **–शूकर** पु० घड़ियाल। **–शोष**–पु० सूखा। **–शोषित्र**–पु० (डेसिकेटर) प्रयोगशालाओंमें प्रयुक्त होनेवाला एक उपकरण जिसमें रखे जानेपर प्रस्वेदन करनेवाले पदार्थ शुष्क बने रहते हैं। **–संस्कार**–पु० स्नान; शवका जलप्रवाह। **–समाधि**–स्त्री० जलमें डूबकर प्राणत्याग; नदी, समुद्र आदिमें किसी चीजका डूबना या डुबाया जाना। **–समुद्र**–पु० पुराणोंमें माने हुए सात समुद्रोंमेंसे अंतिम, मीठे पानीका समुद्र। **–सर्पिणी**–स्त्री० जोंक। **–सिंह**–पु० सीलकी जातिका एक हिंस्र जलजंतु जिसकी गर्दनपर सिंहकी तरह अयाल होता है। **–सिक्त**–वि० जलसे सींचा हुआ, तर। **–सीप**–स्त्री० (हिं०) वह सीप जिसमें मोती पैदा हो। **–सुत**–पु० कमल; मोती। **–सूचि**–स्त्री० सूँस; कौवा; कंकत्रोट नामक मछली; कछुआ; सिंघाड़ा; जोंक। **–सूर्य, सूर्यक**–पु० जलपर पड़ा हुआ सूर्य-बिंब। **–सेक, –सेचन**–पु० पानी छिड़कना; सींचना, तर करना। **–सेना**–स्त्री० जंगी जहाजोंका बेड़ा; जंगी जहाजोंपरसे जलमें लड़नेवाली सेना, नौसेना। **–०पति**–पु० जलसेनाका सबसे बड़ा अफसर, नौसेनाध्यक्ष, 'एडमिरल'। **–०सचिव**–पु० मंत्रिमंडलका वह सदस्य जो जलसेनाका नियंत्रण करे। **–स्तंभ**–पु० जलस्तंभन; जलस्तंभन करनेवाला मंत्र; समुद्र, झील आदिमें बादलोंका खंभेके आकारमें झुक जाना। **–स्तंभन**–पु० मंत्रबलसे पानीको बाँध देना, उसकी गति अवरुद्ध कर देना (कहा जाता है कि दुर्योधन इस विद्याको जानता था। महाभारतके अंतमें वह इसीके बलसे व्यास सरोवरमें सोया था जहाँ भीम आदिने जाकर उसे ललकारा।) **–स्थल**–पु० जल और स्थल, तरी और खुश्की। **–स्था**–स्त्री० गंडदूर्वा। **–स्थान, –स्थाय**–पु० तालाब, जलाशय। **–स्राव**–पु० आँखका एक रोग। **–स्रोत**–पु० पानीका सोता; जलप्रवाह। **–हर***–वि० जलमय। पु० जलाशय–'वे जलहर हम मीन बापुरी'–सूर।

-हरण-पु० पानी ढोना; एक मात्रावृत्त । **-हरी**-स्त्री० (हिं०) शिवलिंग स्थापित करनेका अर्घा; गर्मीके दिनोंमें शिवलिंगके ऊपर लटकाया जानेवाला (जलपूर्ण) घड़ा जिसके पेंदेमें एक छेद होता है । **-हस्ती (स्तिन्)**-पु० सीलकी जातिका एक स्तनपायी जलजंतु जिसकी शकल हाथीसे थोड़ी-बहुत मिलती है; सिंधुघोटक । **-हार, हारक**-पु० पानी ढोने, भरनेवाला, पनिहारा । **-हारिणी**-स्त्री० पानी ढोनेवाली, पनिहारिन; नाली । **-हारी (रिन्)**-पु० पानी ढोने, भरनेवाला, पनिहारा । **-हास**-पु० फेन; समुद्रफेन । **-होम**-पु० एक प्रकारका होम जिसमें जलमें आहुति देते हैं । **मु०-थल एक होना**-चारों ओर पानी ही पानी दिखाई देना; घोर वृष्टि होना ।

जलक-पु० (सं०) शंख; कौड़ी ।

जलखरी-स्त्री० रस्सी या तागेकी जालीदार झोली ।

जलघरा-पु० पानीके घड़े रखनेका स्थान ।

ज़लज़ला-वि० क्रोधी, विगड़ैल, चिड़चिड़ा ।

ज़लज़ला-पु० (अ०) भूकंप, भूडोल ।

जलजलाना-अ० क्रि० नाराज होना ।

जलतरोई, जलतुरई-स्त्री० मछली (व्यंग्य) ।

जलताल-पु० (सं०) सलईका पेड़ ।

जलदागम-पु० (सं०) वर्षाकाल ।

जलदाभ-वि० (सं०) वादलके रंगका, काला ।

जलदाशन-पु० (सं०) शाल वृक्ष ।

जलन-स्त्री० जलनेकी पीडा, दाह; डाह; द्वेष; मनस्ताप, मनोव्यथा ।

जलना-अ० क्रि० किसी चीजका आग पकड़ना, अग्निसंयोगसे ज्योति या ज्वालाका रूप प्राप्त करना, वलना, धधकना; भस्म होना; दग्ध होना, झुलसना; सूखना; ईर्ष्या-द्वेष आदिसे कुढ़ना; संतप्त होना । **जलकर**-कुढ़कर, संतप्त होकर । **मु० जलकर, जल-भुनकर कवाव, कोयला, ख़ाक या राख होना**-वहुत क्रुद्ध होना; गुस्सेमें ऐंठना, उवलना, आग-ववूला होना । **जल वलना**-जलना । **जल भुनना**-जलना, कुढ़ना । **जल मरना**-डाहसे वुरी तरह कुढ़ना, जलकर मर जाना, आत्मघात करना । **जलती आगमें कूदना**-जान-वूझकर विपतमें फँसानेवाला काम करना । **जलती आगमें घी या तेल डालना**-झगड़ा वढ़ाना, ऐसी वात करना जिससे क्रुद्धका क्रोध और वढ़ जाय । **जला-वला, जला-भुना**-क्रोधमें उवलता हुआ, वहुत क्रुद्ध । **जली-कटी**-गुस्से या जलनसे भरी हुई वातें, तीखे व्यंग्य (सुनाना) । **जलेपर नमक छिड़कना**-जलेको जलाना, दुखियाको और दुःख देना । **जले पाँवकी बिल्ली**-वह स्त्री जो यहाँसे वहाँ फिरती रहे, कहीं स्थिर होकर वैठे नहीं । **जले फफोले फोड़ना**-भडास निकालना ।

जलपना*-अ० क्रि० डींग मारना । स० क्रि० डींग मारते हुए कहना; पुनः पुनः कहना । स्त्री० डींग; व्यर्थकी वात ।

जलवम-पु० (डेप्थचार्ज) दे० 'जलप्रस्फोट' ।

जलमय-वि० (सं०) पानीसे भरा हुआ, जलप्लावित; जलनिर्मित । पु० चंद्रमा; जीवका जलीय शरीर (पितृयान) ।

जलवा-पु० दे० 'जल्वा', तेज; कांति; प्रभुत्व ।

जलवायु-पु० (सं०) (क्लाइमेट) किसी स्थानकी गरमी, जाड़ा, वर्षा आदि सूचित करनेवाली वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्रभाव वहाँकी आवादी तथा वनस्पति आदिपर पड़ता है, आवहवा ।

जलसह-वि० (वाटरप्रूफ) दे० 'जलाभेद्य' ।

जलसा-पु० (अ०) वैठक; अधिवेशन; सभा; गाने-वजाने, नाच-रंगकी महफिल, गोष्ठी; नमाजमें सिजदा करके पहली बार वैठना । **-गाह**-पु० वह जगह जहाँ जलसा हो ।

जलांचल-पु० (सं०) पानीका सोता; सिवार ।

जलांजलि-स्त्री० (सं०) अंजलीभर पानी; प्रेत या पितरोंकी तृप्ति-के लिए किया जानेवाला जलदान, तर्पण ।

जलांटक-पु० (सं०) मगर, नक्रराज ।

जलांतक-पु० (सं०) जलसमुद्र; सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र ।

जलांविका-स्त्री० (सं०) कुआँ ।

जलाऊ-वि० जलानेके कामका, जो जलाया जाता हो ।

जलाक*-स्त्री० लू; पेटकी ज्वाला ।

जलाकर-पु० (सं०) समुद्र; जलराशि; झरना; कुआँ ।

जलाकांक्ष, जलाकांक्षी (क्षिन्)-पु० (सं०) हाथी ।

जलाका-स्त्री० (सं०) जोंक; * दे० 'जलाक' ।

जलाकाश-पु० (सं०) जलमें प्रतिविंवित, जलसे अवच्छिन्न आकाश।

जलाक्षी-स्त्री० (सं०) जलपिप्पली ।

जलाखु-पु० (सं०) ऊदविलाव ।

जलाजल-पु० गोट आदिकी झालर । वि० जलमय ।

जलाटन-पु० (सं०) कंक पक्षी ।

जलाटनी-स्त्री० (सं०) जोंक ।

जलातंक-पु० (सं०) पागल कुत्ते, पागल स्यार आदिके काटे हुएको होनेवाला एक तरहका उन्माद रोग जिसमें वह पानी देखकर डरता है--'हाइड्रोफोविया' ।

जलात्मिका-स्त्री० (सं०) जोंक ।

जलात्यय-पु० (सं०) शरत् ऋतु ।

जलाधार-पु० (सं०) जलाशय ।

जलाधिदैवत-पु० (सं०) वरुण; पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र ।

जलाधिप-पु० (सं०) वरुण; वह ग्रह जो संवत्सरविशेषमें जलका स्वामी हो ।

जलाना-स० क्रि० जलनेका कारण होना, किसी चीजको आग पकड़ाना, वालना; आग लगाना; गरमी या आँच पहुँचाकर सुखाना; झुलसाना; सताना, व्यथित, संतप्त करना । **मु० जला-जलाकर मारना**-वहुत सताना, घुला-घुलाकर मारना ।

जलापा-पु० डाहकी जलन ।

जलाभेद्य-वि० (वाटरप्रूफ) जिसपर पानीका असर न पड़े; जलसह ।

जलाभ्यंतरवाहिनी नौका-स्त्री० (सवमैरीन) एक तरहका रणपोत जो पानीकी सतहके नीचे डुवकी लगाकर भी अपना काम जारी रख सके और जो टारपीडो-गोलों, तोपों आदिसे सज्जित हो, पनडुव्वी, डुवकनी ।

जलायुका-स्त्री० (सं०) जोंक ।

जलार्क-पु० (सं०) जलमें प्रतिविंवित सूर्य ।

जलार्णव-पु० (सं०) जलसमुद्र; वर्षाकाल ।

जलार्द्र-वि० (सं०) पानीसे भींगा हुआ, गीला ।

जलार्द्रा-स्त्री० (सं०) गीला वस्त्र ।

जलाल-पु० (अ०) तेज; महत्ता; गौरव; रोव; ताकत; अख्तियार ।

जलाली-वि० (अ०) जिसमें जलाल हो; जलाल या जलालुद्दीनका चलाया हुआ । पु० मुसलमान फकीरोंका एक सम्प्रदाय; जलालुद्दीनका चलाया हुआ सन् ।

जलालुक-पु० (सं०) कमलकी जड़, पद्मकंद ।

जलालुका, जलालीका-स्त्री० (सं०) जोंक ।

जलाव-पु० खमीर; खमीरका उठना ।

जलावतन-पु० (अ०) निर्वासन, देसनिकाला । वि० निर्वासित, स्वदेशसे निष्कासित ।

जलावतरण-पु० (सं०) (लांचिंग) दे० 'पोतसंतरण'; तैयार हो जानेपर जलयानको पानीमें उतारना ।

जलावतार-पु० (सं०) नाव आदिपरसे उतरनेका घाट ।

जलावन-पु० जलानेके काममें आनेवाली चीजें, ईंधन ।

जलावर्त-पु० (सं०) भँवर ।

जलाशय-पु० (सं०) झील, तालाव, जलाधार; मछली; समुद्र; खस; सिंघाड़ा । वि० जलमें रहनेवाला; मूर्ख ।

जलाशया-स्त्री० (सं०) नागरमोथा ।

जलाशयोत्सर्ग-पु० (सं०) कुएँ, तालाव आदिकी प्रतिष्ठारूप पूजा ।

जलाश्रय-पु० (सं०) जलाशय; वृत्तगुंडी तृण; वलाक ।

जलाश्रया-स्त्री० (सं०) शूली तृण ।

जलाष्ठीला-स्त्री० (सं०) वड़ा चौकोर तालाव ।

जलासुका-स्त्री० (सं०) जोंक ।

जलाहल-वि० जलमय ।

जलाह्वय–पु० (सं०) कमल।

जलिका–स्त्री० (सं०) जोंक।

जलीय क्षेत्र–पु० (टेरिटोरियल वाटर्स) किसी देशके किनारेके आस-पासका समुद्र जिसपर उसकी सत्ता हो; समुद्री सीमा।

जलीय रंग–दे० 'जलरंग'।

ज़लील–वि० (अ०) अपमानित; शर्मिंदा; जिसकी बेकदरी की गयी हो।

जलुका, जलूका–स्त्री० (सं०) दे० 'जलौका'।

जलूस–पु० दे० 'जुलूस'।

जलेंद्र–पु० (सं०) वरुण; शिव; समुद्र।

जलेंधन–पु० (सं०) बडवानल; सूर्य।

जलेचर–वि०, पु० (सं०) दे० 'जलचर'।

जलेच्छया–स्त्री० (सं०) हस्तिशुंडा नामक पौधा।

जलेज, जलेजात–वि०, पु० (सं०) दे० 'जलज'।

जलेतन–वि० क्रोधी, जरा-सी बातपर आगबबूला हो जानेवाला।

जलेबा–पु० बड़ी जलेबी।

जलेबी–स्त्री० कुंडली; कुंडलीके आकारकी मैदेकी बनी एक मिठाई; एक पौधा; एक आतिशबाजी।

जलेभ–पु० (सं०) जलहस्ती।

जलेरुहा–स्त्री० (सं०) कुटंविनी; सूर्यमुखी।

जलेवाह–पु० (सं०) गोताखोर, पनडुब्बा, मरजिया।

जलेश–पु० (सं०) वरुण; समुद्र।

जलेशय–पु० (सं०) जलशायी, विष्णु; मत्स्य।

जलेश्वर–पु० (सं०) वरुण; समुद्र।

जलोका–स्त्री० (सं०) दे० 'जलौका'।

जलोच्छ्वास–पु० (सं०) (नदी आदिके) जलका किनारेसे ऊपर उठकर, छलककर बहना; अतिरिक्त जलका निकास।

जलोढ भूमि–स्त्री० (एल्यूवियल सॉइल) बाढ़ आदिके द्वारा बहन कर लायी गयी भूमि, पूर द्वारा आनीत भूमि, कछारी भूमि।

जलोत्तोलनयंत्र, जलोद्वहनयंत्र–पु० (वाटर पंप) पानी नीचेसे ऊपर खींचकर बाहर निकालनेवाला यंत्र, जलपंप।

जलोदर–पु० (सं०) एक रोग जिसमें पेटकी त्वचाके नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है।

जलोद्भवा–स्त्री० (सं०) छोटी ब्राह्मी; गुंदला।

जलोरगी–स्त्री० (सं०) जोंक।

जलौकस–पु० (सं०) जोंक।

जलौका(कस्)–स्त्री० (सं०) जोंक।

जल्द–वि० (अ०) तेज, फुरतीला; चालाक। अ० झटपट, शीघ्र। **–बाज़**–वि० उतावला, जल्दी मचानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० उतावलापन।

जल्दी–स्त्री० तेजी, शीघ्रता, उतावलापन। अ० जल्द।

जल्प–पु० (सं०) कथन; बकवाद; तर्क; बहस।

जल्पक, जल्पाक–वि० (सं०) बातूनी, वाचाल।

जल्पन–पु० (सं०) कथन; बकवास, बकवाद करना। वि० जल्पक।

जल्पना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'जलपना'। स्त्री० (सं०) दे० 'जल्पन'।

जल्पित–वि० (सं०) कथित; डींग या बकवादके रूपमें कहा हुआ।

जल्लाद–पु० (अ०) राजाज्ञासे दंडित जनकी गरदन मारनेवाला या उसे फाँसी चढ़ानेवाला, वधिक। वि० निर्दय, बेरहम (जलद –कोड़े मारना)।

जल्वा–पु० (अ०) प्रकाश, कांति; शोभा।

जव–पु० (सं०) वेग; † जौ। वि० वेगवान्।

जवन–पु० (सं०) वेग; घोड़ा; दे० 'यवन'। वि० वेगयुक्त, तेज।

जवनिका–स्त्री० (सं०) पर्दा; कनात; पाल।

जवनिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वेग।

जवनी–स्त्री० (सं०) अजवायन; दे० 'यवनी'; दे० 'जवनिका'।

जवस–पु० (सं०) घास।

जवाँ–'जवान'का समासगत रूप। **–मर्द**–पु० बहादुर, वीर, मर्दाना। **–मर्दी**–स्त्री० बहादुरी, मर्दानगी।

जवा†–पु० लहसुनका एक दाना; एक तरहकी सिलाई। स्त्री० (सं०) अड़हुल, जपा। **–कुसुम**–पु० अड़हुलका फूल।

जवाइन†–स्त्री० दे० 'अजवायन'।

जवाई†–स्त्री० जानेकी क्रिया या भाव, गमन।

जवाखार–पु० जौके पौधेको जलाकर निकाला जानेवाला खार।

जवादि–पु० (सं०) एक सुगंधित द्रव्य, मृगघर्मज।

जवाधिक–वि० (सं०) बहुत वेगवान्। पु० तेज घोड़ा।

जवान–वि० (फ़ा०) युवा, तरुण; वीर; बलवान्। पु० युवा पुरुष; सिपाही; योद्धा। **–बख़्त**–वि० सौभाग्यशाली। **–साल**–वि० नौजवान, नवयुवक।

जवानिल–पु० (सं०) आँधी।

जवानी–स्त्री० अजवायन; (फ़ा०) युवावस्था, यौवन; जवानीका जोश, मस्ती; सुंदरता। मु० **–की नींद**–गहरी, बेफिक्रीकी नींद। **–चढ़ना**–जवानी आना, मस्तीपर होना। **–ढलना**–जवानीसे बुढ़ापेकी ओर बढ़ना, गतयौवन होना। **–दीवानी है**–जवानीके जोशमें आदमी बहुत-सी भूलें करता है। **–फटी पड़ना**–यौवनका पूर्ण विकास होना, जवानीका खिल उठना। **–में माँझा ढीला**–भरी जवानीमें अशक्तता दिखाना।

जवाब–पु० (फ़ा०) प्रश्नका उत्तर; सवालका हल; पत्र लिखनेवालेको उत्तरमें लिखा गया पत्र; प्रत्यभिवादन; दावे या अभियोगके उत्तररूपमें कही गयी बात, प्रतिवाद; बचाव; बदलेमें किया हुआ काम; जोड़, बराबरी करनेवाली चीज; नौकरीसे अलग किये जानेकी सूचना; इनकार, नाहीं। **–तलब**–वि० पूछने, जवाब माँगने लायक। **–तलबी**–स्त्री० जवाब माँगा जाना। **–दावा**–पु० दावेका जवाब, प्रतिवादीका उत्तर। **–देह**–वि० (वह आदमी) जिससे किसी बातका जवाब माँगा जा सके; उत्तरदायी, जिम्मेदार। **–देही**–स्त्री० (दावेका) जवाब देना, लगाना; उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी। **–सवाल**–पु० प्रश्नोत्तर; बहस। मु० **–तलब करना**–(किसी बातका) कारण पूछना कैफियत तलब करना। **–देना**–नौकरीसे अलग करना; इनकार करना; छोड़ना, अलग होना; बेकार होना।

जवाबी–वि० (फ़ा०) उत्तररूपमें, बदलेमें किया हुआ; जिसका जवाब तुरत माँगा गया हो। **–कार्ड**–पु० जुड़े हुए दो कार्ड जिनमेंसे एक जवाबके लिए भेजा जाता है। **–तार**–पु० वह तार जिसके जवाबका खर्च भेजनेवाला पहले ही जमा कर दे।

जवार–पु० (अ०) पड़ोस; *दे० 'जवाल'। † स्त्री० दे० 'ज्वार'।

जवारा–पु० जौके अंकुर; नवरात्रके नवें दिन होनेवाला एक आयोजन जिसमें लोग दल बाँधकर देवीके गीत गाते हुए जवारे प्रवाहित करने जाते हैं।

जवारिश–स्त्री० (अ०) अवलेहके रूपमें बनायी हुई पाचक औषध।

जवारी–स्त्री० जौ, छुहारे आदिको एकमें गूँथकर बनाया हुआ हार; तारवाले बाजोंका एक पुरजा, घोड़ी। वि० पड़ोसी।

जवाल–पु० झंझट, जंजाल।

ज़वाल–पु० (अ०) ह्रास, घटाव, अवनति।

जवाशीर–पु० एक तरहका गंधा-बिरोजा।

जवास–पु० दे० 'जवासा'।

जवासा–पु० एक कँटीला क्षुप जो बरसातमें पत्रहीन हो जाता और शरद् ऋतुमें फिर पनपता है, यवासक।

जवाह–पु० आँखका एक रोग।

जवाहर–पु० दे० 'जवाहिर'। **–लाल**–पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम प्रधान मंत्री। जन्म १४ नवंबर, १८८९; इंगलैंडसे बैरिस्टरी पास कर इलाहाबाद उच्च न्यायालयमें बैरिस्टरी शुरू की, १९१२; होमरूल लीगके मंत्री बने, १९१८; कांग्रेसके महामंत्री १९२३ में तथा लाहौरमें राष्ट्रपति चुने गये (१९२९); १९३०, १९३६ में भी कांग्रेसके अध्यक्ष निर्वाचित; मई, सन् १९६४ में मृत्यु।

जवाहिर–पु० (अ०) रत्न, मणि ('जौहर'का बहु०, पर प्राय एकवचनमें प्रयुक्त)। **–ख़ाना**–पु० रत्नाभूषण रखनेका स्थान, तोशाखाना। **–निगार**–वि० रत्नजटित, जड़ाऊ।

जवाहिरात–पु० (अ०) कई प्रकारके रत्नमणि ('जौहर'का बहु०)।

जविन–वि० (सं०) दे० 'जवी'।

जवी(विन्)–वि॰ (सं॰) वेगवान् । पु॰ अश्व; ऊँट ।

जवैया|–पु॰ जानेवाला ।

जशन–पु॰ दे॰ 'जश्न' ।

जश्न–पु॰ (फा॰) उत्सव, खुशीका जलसा; गाना-वजाना (मनाना) ।

जस|–पु॰ दे॰ 'यश' । * अ॰ जैसा ।

जसद–पु॰ (सं॰) जस्ता, यशद ।

जसामत–स्त्री॰ (अ॰) मोटाई, शरीरकी स्थूलता ।

जसीम–वि॰ (अ॰) मोटा, स्थूलकाय ।

जसु–पु॰ (सं॰) आयुध, हथियार; अशक्तता, थकावट । * स्त्री॰ यशोदा ।

जसुरि–पु॰ (सं॰) वज्र ।

जसो*–स्त्री॰ यशोदा ।

जसोदा*–स्त्री॰ दे॰ 'यशोदा' ।

जसोमति, जसोवै*–स्त्री॰ दे॰ 'यशोदा' ।

जस्टिफाई–स॰ क्रि॰ (अं॰) कंपोज किये हुए मैटरकी पंक्ति वरावर करना ।

जस्टिस–पु॰ (अं॰) हाईकोर्टका जज, विचारपति । स्त्री॰ न्याय, इंसाफ ।

जस्त–पु॰ दे॰ 'जस्ता' । स्त्री॰ (फा॰) छलाँग, चौकड़ी, कुलाँच ।

जस्तई–वि॰ जस्तेके रंगका, खाकी । पु॰ जस्तेका रंग ।

जस्ता–पु॰ खाकी रंगकी एक धातु जिसे ताँवेके साथ मिलानेसे पीतल वनता है; दे॰ 'दस्ता' ।

जहँ*–अ॰ दे॰ 'जहाँ' ।

जहँड़ना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'जहँड़ाना' ।

जहँड़ाना*–अ॰ क्रि॰ ठगाना, गँवाना; हानि उठाना ।

जहक–वि॰ (सं॰) त्याग करनेवाला । पु॰ समय; शिशु; केंचुली ।

जहकना|–अ॰ क्रि॰ वहकना, विगड़कर अंड-वंड बकना ।

जहका–स्त्री॰ (सं॰) नेवलेकी जातिका एक जंतु, कटास ।

जहतिया*–पु॰ जकात-कर, लगान वसूल करनेवाला ।

जहत्स्वार्था–स्त्री॰ (सं॰) लक्षणाका एक भेद जिसमें पद या वाक्य वाच्यार्थका त्याग कर उससे संवद्ध दूसरा अर्थ प्रकट करता है ।

जहदजहल्लक्षणा–स्त्री॰ (सं॰) लक्षणाका एक भेद जिसमें कुछ अर्थों या विषयोंका त्याग कर किसी एकको ग्रहण किया जाता है ।

जहदना–अ॰ क्रि॰ कीचड़ होना; क्लांत हो जाना, थक जाना ।

जहदा*–पु॰ दलदल ।

जहद्दम*–पु॰ दे॰ 'जहन्नुम' ।

जहना*–स॰ क्रि॰ छोड़ना; नाश करना ।

जहन्नम–पु॰ (अ॰) दे॰ 'जहन्नुम' ।

जहन्नुम–पु॰ (अ॰) गहरा कुआँ; नरक; पहला नरक (मुसल॰) । **–रसीद**–वि॰ जहन्नुममें पहुँचा हुआ, नारकीय । मु॰ **–में जाना, –रसीद होना**–नष्ट होना, वरवाद होना ।

जहन्नुमी–वि॰ नरकमें जानेवाला, नारकीय ।

ज़हमत–स्त्री॰ (अ॰) कष्ट, तकलीफ; झंझट ।

ज़हर–पु॰ (फा॰) वह चीज जो देहमें पहुँचकर मृत्युका कारण हो या स्वास्थ्यकी हानि करे, विष; स्वादमें अति कटु वस्तु; अति अप्रिय, असह्य बात । वि॰ अति हानिकर, घातक; अति कटु; अप्रिय । **–दार**–वि॰ जहरीला, विपयुक्त । **–बाद**–पु॰ एक तरहका जहरीला और कष्ट-साध्य फोड़ा । **–मोहरा**–पु॰ एक तरहका पत्थर जिसमें साँपके और कुछ दूसरे विषोंको भी सोख लेनेका गुण होता है । **–० ख़ताई**–पु॰ खुतना देशके खता नगरसे आनेवाला जहरमोहरा जो बहुत अधिक गुणकारी माना जाता है । मु॰ **–उगलना**–लगनेवाली बात कहना, जली-कटी कहना । **–कर देना**–(खानेकी चीजको) इतना कड़वा, तीता कर देना कि निगला न जा सके; ऐसी कटु, कठोर या दुःखद बात कह देना कि भोजनका स्वाद-सुख जाता रहे । **–का घूंट**–अति अप्रिय असह्य वात । **–०पीकर रह जाना,–०पीना**–विवशताके कारण गुस्सेको अंदर ही दवा रखना, असह्यको सह लेना । **–की पुड़िया**–भारी उपद्रवी, फसादी । **(किसी बातपर)–खाना**–किसी बातसे खिन्न, दुःखी होकर आत्महत्याका यत्न करना । **–मार करना**–अच्छा न लगते हुए भी खाना, जबरदस्ती पेटमें डाल देना । **–मारना**–जहर का असर दूर करना । **–में बुझाना**–तीर-तलवार आदिको आगमें लाल करके विषमिश्रित जलमें बुझाना जिससे उनसे घायल होनेवालेके शरीरमें विष प्रवेश कर जाय; बातको मर्मभेदी, असह्य बना देना । **–होना**–किसी विशेष खाद्य पदार्थ या भोजनका (नमक-मिर्च आदिकी अधिकता या भोजनके समय कोई अति दुःखद बात सुननेसे) अखाद्य हो जाना, घोंटा, निगला न जा सकना ।

जहरी, जहरीला–वि॰ जिसमें जहर हो, विषयुक्त ।

जहल*–स्त्री॰ गरमी, ताप ।

जहल्लक्षणा–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'जहत्स्वार्था' ।

जहवाँ*–अ॰ दे॰ 'जहाँ' ।

जहाँ–अ॰ जिस जगह, जिस स्थानपर । **–तहाँ**–अ॰ इधर-उधर; अनेक स्थानोंपर । **–का तहाँ**–जहाँ था वहीं, अपनी जगहपर ।

जहाँ–'जहान'का समासमें व्यवहृत रूप । **–गर्द**–वि॰ घुमक्कड़, विश्वपर्यटक । **–गर्दी**–स्त्री॰ विश्वभ्रमण । **–गीर**–वि॰ दुनियापर राज्य करनेवाला, विश्वविजयी । पु॰ भारतका चौथा मुगल सम्राट्, अकबरका पुत्र (१६०५-२७ ई॰) । **–गीरी**–स्त्री॰ विश्वविजय, भूमंडलका राजत्व; कलाईपर पहननेका एक जड़ाऊ गहना । वि॰ जहाँगीरका, जहाँगीरसे संवद्ध । **–दीदा**–वि॰ जो दुनिया देखे हो, अनुभवी । **–नुमा**–वि॰ जिसमें दुनिया दिखाई दे या जिसपरसे सव कुछ देखा जा सके (आईना, ऊँची मीनार) । **–पनाह**–वि॰ दुनियाकी रक्षा करनेवाला, जगत्का आश्रयरूप । पु॰ वादशाह, सम्राट् (हिंदुस्तानके मुसलमान वादशाहोंका संवोधन) ।

जहाज़–पु॰ (अ॰) वड़ी और समुद्रमें चलने या चल सकनेवाली नाव, जलयान, पोत; (ला॰) वहुत लंवी-चौड़ी चीज; बहुत भारी वोझ । **–घाट**–पु॰ माल उतारने, चढ़ानेके लिए समुद्रतटके पास वनाया गया लकड़ी, पत्थर आदिका घाट । **–रान**–पु॰ जहाज चलानेवाला । **–रानी**–स्त्री॰ जहाज चलाना; जहाज चलानेका काम । मु॰ **–का कौआ**–समुद्रमें चलनेवाले जहाजपरका कौआ जो कहीं जमीन न देख बार-बार हिरफिरकर उसीपर आकर वैठता है; वह आदमी जिसके लिए एक ही ठिकाना हो ।

जहाज़ी–वि॰ जहाजका; जहाजसे होनेवाला (कारवार) । पु॰ जहाजसे यात्रा करनेवाला; जहाजका खलासी । **–डाकू**–पु॰ जहाजोंपर डाके डालनेवाला, जलदस्यु, समुद्री डाकू ।

जहान–पु॰ (फा॰) दुनिया, जगत्, लोक । **–आरा(नारा)**–वि॰ दुनियाको सजानेवाला, सृष्टिकी शोभा, शृंगार । **–०बेगम**–स्त्री॰ शाहजहाँकी वड़ी वेटी जो उसकी मृत्युतक उसके साथ कैदखानेमें रही । मु॰ **–आँखोंमें स्याह हो जाना**–सब ओर अँधेरा ही अँधेरा दिखाई देना ।

जहानक–पु॰ (सं॰) प्रलय ।

जहालत–स्त्री॰ (अ॰) अज्ञान, मूर्खता, जाहिलपन ।

जहिया*–अ॰ जब ।

जहीं*–अ॰ ज्योंही; जिस स्थानपर, जहाँ ही ।

ज़हीन–वि॰ (अ॰) जिसका जेहन तेज हो, तीक्ष्णवुद्धि, मेधावी ।

ज़हूर–पु॰ दे॰ 'ज़ुहूर' ।

जहेज़–पु॰ (अ॰) वह धन जो कन्या (या वर)को विवाहके समय उसके (कन्याके) माँ-बापसे मिले, दहेज; अंत्येष्टिका सामान, कफन-काठी ।

जह्नु–पु॰ (सं॰) विष्णु; एक राजर्षि जिन्होंने भगीरथके गंगा लाते समय उसे पी लिया और उनकी बिनतीपर फिर कानकी राह निकाल दिया था (पु॰) । **– कन्या,–तनया**–स्त्री॰ गंगा । **–सप्तमी**–स्त्री॰ वैशाख-शुक्ला सप्तमी, गंगासप्तमी (जह्नुके गंगा-पान और उद्गीरणकी तिथि) । **–सुता**–स्त्री॰ गंगा ।

ज़ह्र–पु॰ (फा॰) जहर, विष । **–(ह्रे) क़ातिल**–पु॰ घातक विष ।

जाँ–स्त्री॰ (फा॰) दे॰ 'जा'; दे॰ 'जान' । वि॰ दे॰ 'जा' । **–निसार**–वि॰ दे॰ 'जाननिसार' । **–निसारी**–स्त्री॰ दे॰ 'जाननिसारी' । **–फ़िशानी**–स्त्री॰ दे॰ 'जानफ़िशानी' । **–बख़्शी**–स्त्री॰ दे॰ 'जानबख़्शी' । **–बाज़**–वि॰ दे॰ 'जानबाज़' । **–बाज़ी**–स्त्री॰ दे॰ 'जानबाज़ी' ।

जाँउनि*–स्त्री० जामुन ।

जाँग*–पु० घोड़ोंकी एक जाति ।

जाँगर–पु० श्रमशक्ति, श्रमशीलता; पौरुष; † मटर, उरद आदिका वह डंठल जिससे दाना निकाल लिया गया हो । **–चोर**–वि०, पु० मेहनत न करनेवाला । मु० **–थकना**–शरीरका थकना, शिथिल होना; पौरुषका जवाब देना ।

जाँगरा–पु० भाट, बंदी ।

जांगल–वि० (सं०) जंगलका, जंगली । पु० वह प्रदेश जहाँ पानी कम बरसे, धूप-गरमी अधिक कड़ी हो, पेड़-पौधे कम हों; मांस; हिरन आदिका मांस; तीतर ।

जांगलि, जांगलिक–पु० (सं०) सँपेरा, मदारी; विषवैद्य ।

जांगली–स्त्री० (सं०) शूकशिंबी, केवाँच ।

जाँगलू–वि० असभ्य, उजड्ड, जंगली ।

जांगुल–पु० (सं०) विष; तोरई ।

जांगुलि, जांगुलिक–पु० (सं०) सँपेरा ।

जांगुली–स्त्री० (सं०) दुर्गा; विषविद्या ।

जाँघ–स्त्री० पाँवका कमर और घुटनेके बीचका भाग, ऊरु ।

जाँघा†–पु० गड़ारीका धुरा ।

जांघिक–पु० (सं०) हरकारा, धावन; ऊँट; एक मृग । वि० दौड़नेवाला ।

जाँघिया–पु० एक तरहका लँगोट; घुटनोंतकका पाजामा, घुटन्ना; मालखंभकी एक कसरत ।

जाँघिल–पु० एक जलपक्षी; पिछले पैरका लँगड़ा बैल ।

जाँच–स्त्री० जाँचनेकी क्रिया, परख, परीक्षा, छान-बीन, तहकीकात । **–पड़ताल**–स्त्री० छान बीन, तहकीकात, तफतीश ।

जाँचक*–पु० दे० 'याचक' ।

जाँचकता*–स्त्री० माँगनेका काम ।

जाँचना–स० क्रि० किसी बातके सही-गलत, खरी-खोटी होनेका पता लगाना, परख करना; ० दे० 'जाचना' ।

जाँजरा*–वि० जीर्ण, जर्जर ।

जाँझ, जाँझा†–पु० जोरकी हवाके साथ होनेवाली वर्षा, तूफ़ानी वर्षा ।

जाँत, जाँता–पु० आटा पीसनेकी चक्की ।

जांतव–वि० (सं०) जंतु-संबंधी; जंतुओंसे प्राप्त, उत्पन्न ।

जाँपना*–स० क्रि० दबाना, चाँपना ।

जांब*–पु० जामुनका फल ।

जांववंत–पु० दे० 'जांववान्' ।

जांबव–पु० (सं०) जामुनका फल; सोना ।

जांववती–स्त्री० (सं०) जांववान्‌की कन्या जिसका विवाह कृष्णसे हुआ था; नागदमनी लता ।

जांबवान्(वत्)–पु० (सं०) सुग्रीवका मंत्री जिससे लंका-विजयमें रामचंद्रको बहुत सहायता मिली । कहा जाता है कि वह कृष्णके समयतक जीवित रहा ।

जांववी–स्त्री० (सं०) नागदमनी ।

जांववोष्ठ, जांबवौष्ठ–पु० (सं०) सुश्रुतमें वर्णित एक औजार जिससे फोड़े आदि जलाये जाते थे ।

जांबीर–पु० (सं०) जँबीरी नीबू ।

जांबील–पु० (सं०) घुटनेके जोड़परकी गोल चिपटी हड्डी; जँबीरी नीबू ।

जांबुक–वि० (सं०) शृगाल-संबंधी ।

जांबुमाली(लिन्)–पु० (सं०) लंकाका एक राक्षस जो अशोक-वाटिका उजाड़ते समय हनूमान्‌के हाथों मारा गया ।

जांबुवान्(वत्)–पु० (सं०) दे० 'जांबवान्' ।

जांबू*–पु० दे० 'जंबू' ।

जांबूनद–पु० (सं०) सोना; धतूरा ।

जांबोष्ठ–पु० (सं०) दे० 'जांववोष्ठ' ।

जाँवत*–वि०, अ० दे० 'यावत्' ।

जाँवर*–पु० गमन, जाना ।

जा–स्त्री० (सं०) जाति; देवरानी; माता । वि० स्त्री० उत्पन्न करनेवाली; ··· में या ··· से जो उत्पन्न हुई हो (समासांतमें–गिरिजा, आत्मजा) । * सर्व० जिस । स्त्री० (फा०) जगह, स्थान; मौका । वि० उचित, मुनासिब । **–जरूर**–पु० पाखाना, शौचालय । **–नमाज़**–स्त्री० वह कपड़ा जिसे बिछाकर नमाज़ पढ़ते हैं, मुसल्ला । **–नशीन**–पु० किसीके स्थान, पदका अधिकारी; उत्तराधिकारी । **–नशीनी**–स्त्री० जानशीन होना । **–बजा**–अ० जगह-जगह, जहाँ-तहाँ । **–बेजा**–वि० उचित-अनुचित, बुरा-भला । अ० मौके-बेमौके, ठिकाने-बेठिकाने । (**–मार बैठना**, हाथ छोड़ देना ।)

जाइ*–वि० वृथा, बेकार ।

जाई–स्त्री० कन्या; चमेली ।

ज़ाईदा–वि० (फा०) जना हुआ; जात (नौज़ाईदा–नवजात) ।

जाउक*–पु० जावक, महावर ।

जाउर†–स्त्री० खीर ।

जाक*–पु० यक्ष ।

जाकड़–पु० नापसंद होनेपर लौटा देनेकी शर्तपर खरीदा हुआ सौदा (देना, लेना) । **–बही**–स्त्री० वह बही जिसमें जाकड़ बिक्रीका ब्योरा या याददाश्त लिखी जाय ।

जाकिट–स्त्री० एक तरहकी कुरती, 'जैकेट' ।

जाखिनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी' ।

जाग–स्त्री० जागनेका भाव, जाग उठनेकी क्रिया; जागरण; * जगह, स्थान । * पु० यज्ञ ।

जागत–पु० (सं०) जगती नामक वृत्त ।

जागता–वि० जागता हुआ; अपनी शक्तिका परिचय देनेवाला, तेजस्वी, प्रकट, प्रत्यक्ष ।

जागतिक–वि० (सं०) जगत् संबंधी, सांसारिक ।

जागती–वि० स्त्री० दे० 'जागता' । **–कला,–जोत**–स्त्री० जलता दीपक; जागती हुई देवी ।

जागना–अ० क्रि० नींदका त्याग करना; जगा हुआ होना; फलदायक होना (भाग्य, नसीब); सजग होना; चेतना; सक्रिय, प्रबुद्ध होना, उठना; बढ़ना; चमकना; प्रदीप्त होना; * उभरना, प्रसिद्ध होना ।

जागबलिक*–पु० दे० 'याज्ञवल्क्य' ।

जागर–पु० (सं०) जागरण; अंतःकरणकी वह अवस्था जिसमें सब वृत्तियाँ जाग्रत हों; कवच । वि० जागता हुआ, जाग्रत् ।

जागरक–वि० (सं०) जागता हुआ, असुप्त ।

जागरण–पु० (सं०) जगना; जाग; जगा हुआ होना; भजन-कीर्तन आदि करते हुए रात बिताना, रतजगा; पिछड़ेपनका ज्ञान और आगे बढ़नेकी आकांक्षा उत्पन्न होनेकी स्थिति ।

जागरन*–पु० दे० 'जागरण' ।

जागरा–स्त्री० (सं०) जागरण ।

जागरित–वि० (सं०) जागता हुआ, जाग्रत् ।

जागरिता(तृ)–वि० (सं०) जागता हुआ; सचेत, सावधान ।

जागरी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'जागरिता' ।

जागरूक–वि० (सं०) जागता हुआ; जागरणशील; स्वकर्तव्यके विषयमें सावधान ।

जागरूप†–वि० जागता हुआ (देवता, तेज); प्रत्यक्ष, स्पष्ट ।

जागर्ति–स्त्री० (सं०) जागरण ।

जागर्या–स्त्री० (सं०) जागरण ।

जागा*–स्त्री० दे० 'जगह' ।

जागी†–पु० बंदी, भाट ।

जागीर–स्त्री० (फा०) वह जमीन जो राज्यकी ओरसे किसीको किसी विशेष सेवाके पुरस्कारमें दी गयी हो; वह जमीन जो गाँवके नाई, कहार, कुम्हार आदिको उनकी सेवाके बदलेमें बिना लगान जोतनेको दी गयी हो । **–ख़िदमती**–स्त्री० सेवा-विशेषके लिए (कहार, कुम्हार आदिको) दी हुई जागीर । **–दार**–पु० जिसे जागीर मिली हो; सरदार; सामंत । **–दारी**–स्त्री० जागीरदार-का पद या जागीरदार होनेका भाव; रईसी । **–मंसबी**–स्त्री० वह जागीर जो किसी पदके साथ संबद्ध हो ।

जागीरी*–स्त्री० दे० 'जागीरदारी' ।

जागुड–पु० (सं०) केसर; एक प्राचीन जनपद; वहाँका निवासी ।

जागृति–स्त्री० जागरण ।

जागृवि–पु० (सं०) राजा; अग्नि। वि० जाग्रत्।

जाग्रति–स्त्री० जागरण, जाग्रत् होनेका भाव।

जाग्रत्–वि० (सं०) जागता हुआ; सजग, सावधान; प्रकाशमान। पु० वह अवस्था जिसमें जीव शब्द, स्पर्श आदि विषयोंको ग्रहण करे। **–स्वप्न**–पु० जागतेका सपना, कल्पनासृष्टि।

जाघनी–स्त्री० (सं०) जाँघ; पूँछ।

जाचक*–पु० दे० 'याचक'।

जाचकता*–स्त्री० याचकवृत्ति, भिखमंगी।

जाचना*–स० क्रि० माँगना; भीख माँगना।

जाजम–स्त्री० दे० 'जाज़िम'।

जाज मलार–पु० एक राग।

जाजरा*–वि० जीर्ण, जर्जर, टूटा-फूटा–'जैसे भँवर जाजरी नैया' –घन०।

जाजल–पु० (सं०) अथर्ववेदकी एक शाखा।

जाजलि–पु० (सं०) एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि।

जाज़िम–स्त्री० (तु०) दरीके ऊपर बिछानेकी छपी चादर।

जाजी(जिन्)–पु० (सं०) योद्धा।

जाज्वल्यमान–वि० (सं०) प्रज्वलित; प्रकाशमान; तेजोमंडित।

जाट–पु० पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, पंजाब, राजपूताना आदिमें बसनेवाली एक हिंदू जाति; उस जातिका जन।

जाटलि–पु०, स्त्री० (सं०) पलाशकी जातिका एक वृक्ष।

जाटू–स्त्री० जाटोंकी बोली, बाँगड़ू।

जाठ–पु० कोल्हूकी कूँड़ीमें रहनेवाला लकड़ीका गोल, चिकना बल्ला जिसके घूमनेसे पेरनेकी क्रिया होती है; तालाबके बीचमें गड़ा हुआ बल्ला।

जाठर–वि० (सं०) जठर–पेट-संबंधी; जठरसे उत्पन्न; जठरमें स्थित। पु० जठराग्नि; बच्चा।

जाठराग्नि–स्त्री० (सं०) जठराग्नि।

जाठरानल–पु० (सं०) दे० 'जठराग्नि'।

जाड़*–पु० दे० 'जाड्य'।

जाड़ा–पु० शीतकाल–हेमंत और शिशिर ऋतुएँ, (मोटे हिसाब) आधे कातिकसे आधे फागुनतकका समय; सरदी, ठंढ (पड़ना, लगना)। मु० **–खाना**–जाड़ेका कष्ट सहन करना। **–(ड़े)की चाँदनी**–बेकार चीज।

जाड्य–पु० (सं०) जडता; निश्चेष्टता; मूर्खता; स्वाद न मालूम होना।

जाड्यारि–पु० (सं०) जँबीरी नीबू।

जात–वि० (सं०) जनमा हुआ, जना हुआ; उत्पन्न; प्रकट, व्यक्त; घटित; संगृहीत। पु० जन्म; बेटा; बच्चा; वर्ग; समूह; प्राणी। **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० पुत्र-जन्मके अवसरपर किया जानेवाला एक संस्कार, हिंदुओंके सोलह संस्कारोंमेंसे चौथा। **–कलाप**–वि० पूँछवाला (जैसे मोर)। **–काम,–मन्मथ**–वि० जिसके मनमें काम जग गया हो, आसक्त। **–दंत**–वि० जिसके दाँत निकल आये हों (बच्चा)। **–दोष**–वि० दोषी। **–पक्ष**–वि० जिसके डैने निकल आये हों। **–पाश**–वि० बंधनयुक्त; जिसे हथकड़ी पहनायी गयी हो। **–पुत्रा**–स्त्री० वह स्त्री जो बेटा या बेटी जन चुकी हो। **–प्रत्यय**–वि० जिसके मनमें विश्वास, प्रतीति उत्पन्न हो चुकी हो। **–मात्र**–वि० तुरतका जनमा हुआ, सद्योजात। **–मृत**–वि० जो जनमते ही मर गया हो। **–रूप**–वि० सुंदर। पु० शोभा; धतूरा। **–विभ्रम**–वि० घबराया हुआ। **–वेदसी**–स्त्री० दुर्गा। **–वेदा(दस्)**–पु० अग्नि; मूर्ख; चित्रक; परमेश्वर। **–वेश्म(न्)**–पु० सौरी, सूतिकागृह।

जात–स्त्री० दे० 'जाति'। **–पाँत**–स्त्री० बिरादरी।

ज़ात–स्त्री० (अ०) वस्तुतत्त्व, स्वरूप; निजरूप; स्वभाव; देह; व्यक्ति; व्यक्तित्व, प्रकार। **–शरीफ़**–वि० दुष्ट, खोटा।

जातक–पु० (सं०) नवजात शिशु, बच्चा; भिक्षु; फलित ज्योतिषका वह अंग जिससे नवजात शिशुका शुभाशुभ फल कहा जाता है; जातकर्म; एक जैसी वस्तुओंका संग्रह; वह बौद्ध ग्रंथ जिसमें बुद्धके जन्मोंकी कथाएँ लिखी हैं। वि० जात, उत्पन्न। **–ध्वनि**–स्त्री० जोंक।

जातना, जातनाई*–स्त्री० 'यातना'।

जाता–स्त्री० (सं०) लड़की।

जाति–स्त्री० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; वंश, गोत्र; जीवश्रेणी; कुल, वर्ण या योनिका भेद सूचित करनेवाला वर्ग; वर्ण; वंश, भाषा, देश, इतिहास, संस्कृति आदिकी समानता रखनेवाला मानव-समुदाय, 'नेशन'; हिंदुओंके विभिन्न वर्णोंके अंतर्गत परस्पर रोटी-बेटीका संबंध रखनेवाला और सामान्यतः एक ही धंधा करनेवाला जन्मकृत जनसमुदाय; वर्गविशेषके विभिन्न व्यक्तियोंमें पाया जानेवाला समान धर्म (न्या०); आकृति, स्वभाव, परंपरा आदिकी समानता रखनेवाला मानव समूह, जैसे मंगोल जाति। छोटा आँवला; चमेली; जावित्री; जायफल; स्वर-सप्तक; एक शब्दालंकार, भाषासमक (?); मात्रिक छंद; अग्निकुंड। –**–कोश,–कोष**–पु० जायफल। **–कोशी,–कोषी**–स्त्री० जावित्री। **–च्युत**–वि० स्वजातिसे अलग किया हुआ। **–तत्त्व**–पु० मानवजातिके मूल विभागों और उनके परस्पर संबंधकी विवेचना करनेवाला शास्त्र, 'एथनॉलॉजी'। **–धर्म**–पु० जाति या वर्णविशेषका विशेष धर्म, आचार। **–पत्र,–पर्ण**–पु०,**–पत्री**–स्त्री० जावित्री। **–पाँति**–स्त्री० (हिं०) जाति-उपजाति, जाति-वर्ण। **–फल**–पु० जायफल। **–ब्राह्मण**–पु० वह ब्राह्मण जो केवल जन्मसे ब्राह्मण हो, गुण-कर्मसे न हो, तपःस्वाध्यायरहित ब्राह्मण। **–भ्रंश**–पु० जातिभ्रष्टता, जातिच्युति। **–०कर**–वि० जातिभ्रष्ट कर देनेवाला (पाप)। **–भ्रष्ट**–वि० जातिच्युत। **–लक्षण**–पु० जातिसूचक विशेषताएँ। **–वाचक**–वि० जाति बतानेवाला (संज्ञा)। **–वाद**–पु० (रेशलिज्म) जाति-विशेषको श्रेष्ठ बताने या जातिविशेषका पक्ष लेनेकी क्रिया अथवा प्रवृत्ति; (सेक्टेरियनिज्म) दे० 'संप्रदायवाद'। **–विद्वेष**–पु० जातिगत द्वेष; अन्य जातिके प्रति शत्रुभाव। **–वैर**–पु० सहज वैर, स्वाभाविक शत्रुता। **–व्यवसाय**–पु० जातिविशेषका सामान्य धंधा, पेशा। **–शस्य**–पु० जायफल। **–संकर**–पु० दो जातियोंका मिश्रण, दोगलापन। **–संहारनीति**–स्त्री० 'जेनोसाइड', दे० 'वंश संहार नीति'। **–सार**–पु० जायफल। **–स्मर**–वि० जिसे अपने पूर्वजन्मका वृत्तांत याद हो। **–स्वभाव**–पु० जातिप्राप्त स्वभाव; एक अर्थालंकार जिसमें किसीकी आकृति तथा गुणों आदिका चित्रण किया जाय। **–हीन**–वि० नीच जातिका; जातिच्युत।

जातिमान्(मत्)–वि० (सं०) कुलीन, सत्कुलमें उत्पन्न।

जाती–स्त्री० (सं०) चमेली; मालती; छोटा आँवला; जायफल। **–कोश,–कोष,–फल**–पु० जायफल। **–पत्री**–स्त्री० जावित्री। **–रस**–पु० एक गंधद्रव्य।

ज़ाती–वि० व्यक्तिगत, निजी, अपना; वस्तुगत, असली।

जातीय–वि० (सं०) जाति-संबंधी; जातिका।

जातीयता–स्त्री० (सं०) जातिविशेषसे संबद्ध होनेका भाव, कौमीयत; अपनी जातिका अभिमान; राष्ट्रीयता।

जातु–अ० (सं०) शायद, कदाचित्; कभी।

जातुक–पु० (सं०) हींग।

जातुधान–पु० यातुधान, राक्षस।

जातुष–वि० (सं०) जतु–लाखका बना हुआ; चिपकनेवाला, लसदार।

जातू–पु० (सं०) वज्र। **–कर्ण**–पु० एक ऋषि।

जातेष्टि–स्त्री० (सं०) जातकर्म।

जातोक्ष–पु० (सं०) कम उम्र बैल।

जात्यंध–वि० (सं०) जन्मांध।

जात्य–वि० (सं०) कुलीन; सुंदर; श्रेष्ठ; समकोण (ग०)। **–त्रिभुज**–पु० समकोण त्रिभुज।

जात्रा†–स्त्री० दे० 'यात्रा'।

जात्री†–पु० दे० 'यात्री'।

जाथका*–स्त्री० ढेर, राशि।

जादव*–पु० दे० 'यादव'। **–पति**–पु० कृष्ण।

जादसपति, जादसपती*–पु० वरुण।

जादा*–वि० दे० 'ज्यादा'। (फा०) से उत्पन्न, जैसे शहजादा,

नवावजादा ।

जादू–पु० (फा०) टोना, जंतर-मंतर; वशीकरण; मोहनी; इंद्रजाल, नजरबंदी; हाथकी सफाईका काम, वाजीगरी । **–गर**–पु० जादू करनेवाला । (स्त्री० 'जादूगरनी' ।) **–गरी**–स्त्री० जादूका काम; जादू करनेकी विद्या । **–नज़र,–निगाह**–वि० जिसकी दृष्टिमें मोहनी हो । **–वयान**–वि० जिसकी वाणीमें जादूका असर, मनको मोह लेनेकी शक्ति हो । **मु० –उतरना**–जादूका असर दूर होना । **–चलना**–जादूका असर होना; वातका असर होना । **–डालना,–मारना**–जादू करना । **–वह जो सिरपर चढ़कर बोले**–उपाय वही अच्छा है जो सफल हो और विरोधीको भी मानना पड़े ।

जादौं*–पु० दे० 'यादव' । **–राय**–पु० कृष्ण ।

जान–पु०, स्त्री० जाननेका भाव, ज्ञान, जानकारी; समझ, खयाल । (इस शब्दका प्रयोग '···की जानमें' जैसे अव्ययपदमें या समासोंमें ही होता है । प्राचीन कविता और वोलचालमें प्रायः पुलिंगमें ही प्रयोग मिलता है ।) † पु० यान; वारात (वीसल०) । वि० ज्ञानवान्, सुजान । **–कार**–वि० जाननेवाला, अभिज्ञ, विज्ञ । **–कारी**–स्त्री० परिचय; अभिज्ञता, विज्ञता । **–पना**–पु०,**–पनी***–स्त्री० जानकारी; चतुराई । **–पहचान**–स्त्री० परिचय, शनासाई । **–मनि,–राय***–वि० ज्ञानियोंमें मणिरूप, ज्ञानिश्रेष्ठ, ज्ञानिराज ।

जान*–स्त्री० जादू-टोना–'मेरे जान जानकी तू जानति है जान कछू' –कविप्रिया । पु० यान, वाहन; दे० 'जानु' ।

जान–स्त्री० (फा०) प्राण, जीव; जीवन; वल, दम; सार, सत्त्व; किसी चीजमें जान डालनेवाली चीज; रस, शोभा आदिका आधारभूत गुण, तत्त्व (यही वाक्य सारे निवंधकी जान है); अति प्यारी वस्तु; प्रियजनका संवोधन; (समासमें प्रायः 'जाँ'के रूपमें भी प्रयुक्त होता है) । **–जोखिम**–स्त्री० दे० 'जानजोखों' । **–जोखों**–स्त्री० जान जानेका डर, जिंदगीका खतरा । **–दार**–वि० जिसमें जान हो, सजीव; हिम्मतवाला; जिसमें वल या ओज हो । पु० प्राणी । **–निसार**–वि० जान देनेवाला; जो किसीके लिए मरनेको तैयार हो; स्वामिभक्त । **–निसारी**–स्त्री० वफादारी, स्वामिभक्ति । **–फ़िशानी**–स्त्री० जीतोड़ कोशिश, अति श्रम । **–वख़्शी**–स्त्री० प्राणदान; प्राणदंडके अपराधीको क्षमादान । **–वर**–वि० सुरक्षित, सही-सलामत । **–व-लव**–वि० जिसकी जान ओठोंपर आ गयी हो, आसन्नमरण । **–वाज़**–वि० जानपर खेलनेवाला, वीर, साहसी । **–वाज़ी**–स्त्री० साहस, वीरता, जानको खतरेमें डालनेका भाव । **–वीमा**–पु० जिंदगीका वीमा । **–लेवा**–वि० जान लेनेपर तुला हुआ, जानी दुश्मन । **–व माल**–पु० प्राण और धन, धन-जन । **–वर**–पु० प्राणी; पशु, हैवान । वि० मूर्ख; उजड्ड । **–(ने)जाँ**–वि० प्राणोंका प्राण, अति प्रिय; प्रियतमा । **–मन**–वि० प्रियजनका संवोधन, मेरी जान, प्राणप्यारे (प्यारी) । **मु० –आँखोंमें आ जाना**–आसन्नमरण होना । **–आना**–मन स्थिर होना । **–का अज़ाव**–जीका जंजाल, झंझट, वखेड़ा । **–का गाहक**–जो जान लेनेपर आमादा हो, जानका वैरी । **–का नुक़सान**–प्राणहानि, किसी दुर्घटनामें मनुष्योंका मरना या मारा जाना । **–का रोग**–कष्ट देनेवाली वस्तु, व्यक्ति जिससे जल्दी पीछा न छूटे, भारी जंजाल । **–का लागू**–जानका दुश्मन । **–की अमान**–प्राणरक्षा, प्राणदान (पाना, माँगना) । **–की ख़ैर**–प्राणरक्षा; कुशल । **–०मनाना**–प्राणरक्षाका उपाय करना; जान वच जाय इसको गनीमत मानना । **–की तरह रखना**–तनिक भी कष्ट न पहुँचने देना, सुख-सुपासका विशेष ध्यान रखना; वहुत सँभाल कर रखना । **–की पड़ना**–जान वचानेकी चिंता होना, प्राणभय होना । **–के लाले पड़ना**–जान वचना कठिन हो जाना, उवरनेकी आशा न रहना । **–को जान न समझना**–कष्ट, तकलीफकी परवाह न करना, निर्मम होकर काम लेना । **(किसीकी)–को रोना**–किसीसे, किसीके कारण पहुँचे हुए कष्ट, हानिको याद करके कुढ़ना । **–खपाना**–(किसी काममें) वहुत श्रम करना, कष्ट उठाना । **–खाना**–किसी वातके लिए वार-वार कहकर, किसी वातकी याचना या तकाजेसे परेशान कर देना । **–खोना**–जान देना; किसी दुःखमें घुलना । **–चुराना**–दे० 'जी चुराना' । **–छुड़ाना**–छुटकारेका उपाय करना-कराना, पीछा छुड़ाना । **–छूटना**–छुटकारा मिलना । **–देना**–मरना; मरनेको तैयार होना । **(किसी चीजके लिए)–देना**–दाँतसे पकड़े रहना, व्यय या हानि सह न सकना । **(किसीपर)–देना**–किसीके कार्यसे खिन्न, रुष्ट होकर प्राणत्याग, आत्महत्या करना; किसीपर वहुत अनुरक्त, आसक्त होना । **–निकलना**–अति कष्ट होना; जान सूखना । **–निसार करना**–दूसरेके लिए मरना, प्राणोत्सर्ग करना । **–पड़ना**–प्राणसंचार होना; शक्ति आना; हरा-भरा होना । **–पर आ वनना**–जान जानेका डर होना, भारी संकटमें पड़ना । **–पर खेलना**–जानजोखोंका काम करना; साहस, वीरताका काम करना जिसमें जान जानेका डर हो । **–पर नौवत आना**–दे० 'जानपर आ वनना' । **–वचाना**–किसी अप्रिय या कष्टसाध्य कामसे कतराना, भागना, पीछा छुड़ाना । **–वची लाखों पाये**–मरनेसे वचे यही परम लाभ है । **–भारी होना**–जीना दूभर हो जाना, जिंदगीसे ऊव जाना । **–मारना**–दे० 'जान लेना' । **–में जान आना**–ढाढ़स वँधना, इतमीनान होना । **–में जान होना**–जिंदा होना (जवतक जानमें जान है) । **–लड़ाना**–जी-जानसे, जीतोड़ कोशिश करना । **–लवोंपर आना**–दे० 'जान होंठोंपर आना' । **–लेना**–वध करना; वहुत कष्ट देना; वहुत कड़ी मेहनत लेना । **–सूखना**–डरसे होश गुम हो जाना, सुन्न हो जाना । **–सूलीपर होना**–जान खतरेमें होना; भारी परेशानीमें होना । **–से गुज़र जाना,–से जाना**–मर जाना । **–से तंग आना,–से वेज़ार होना**–जीना असह्य हो जाना, जीनेसे ऊव जाना । **–से मारना**–मार डालना, कतल कर देना । **–से हाथ धोना**–जान गँवाना, मरना । **–है तो जहान है**–दुनियाका सव सुख जिंदगीके साथ है । **–होंठोंपर आना**–आसन्नमरण होना, अवतव होना; प्राणांतक कष्ट, वेदना होना ।

जानकी–स्त्री० (सं०) जनककी पुत्री, सीता । **–जानि**–पु० (जानकी है जाया जिनकी) रामचंद्र । **–जीवन,–नाथ**–पु० रामचंद्र । **–मंगल**–पु० गोस्वामी तुलसीदासकी एक रचना जिसमें राम-सीताके विवाहका वर्णन है । **–रमण**–पु० रामचंद्र । **–रवन***–पु० दे० 'जानकीरमण' । **––वल्लभ**–पु० रामचंद्र ।

जाननहार*–पु० जाननेवाला ।

जानना–स० क्रि० किसी वस्तु, व्यक्ति, घटनाका अभिज्ञ, जानकार होना, ज्ञाता होना, पहचानना, नाम-धामसे परिचित होना, अवगत होना । **जानकर**–जानते हुए, जान-वूझकर । **मु० जानकर अनजान होना**–किसी वातको जानते हुए न जाननेका ढोंग करना, अनभिज्ञता दिखाना । **जानना वूझना**–जानना, समझना; अभिज्ञ होना । **जान पड़ना**–मालूम होना, दिखाई देना । **जानवूझकर**–जानते समझते हुए, सोच-समझकर । **जाने-अनजाने**–जानकर या विना जाने ।

जानपद–पु० (सं०) जनपदवासी, ग्रामवासी; जन, लोक; देश; जनपदसे प्राप्त कर आदि । वि० जनपद-संवंधी । **–सैन्य**–पु० (मिलीशिया) (युद्धकालमें) अपने नगर या आस-पासके स्थानोंमें उपद्रवादिका शमन करनेके लिए वनायी गयी नागरिकोंकी सेना ।

जानपदी–स्त्री० (सं०) वृत्ति; एक अप्सरा ।

जानहार*–वि० जानेवाला; नष्ट होनेवाला ।

जानहूँ†–अ० मानो, जानो ।

जानाँ–स्त्री० (फा०) ('जान'का वहु०) प्रेमपात्र, प्रेयसी ।

जाना–अ० क्रि० एकसे दूसरे स्थानपर पहुँचनेके लिए हरकत करना, गमन करना, रवाना होना; दूर होना; विदा होना; नष्ट होना; वीतना, गुजरना; खोना, नुकसान होना; विगड़ना (हमारा क्या जाता है ?), हाथसे निकल जाना; वहना, जारी होना; मरना; (किसी वात, शब्दों आदिपर) विश्वास करना, ठीक मान लेना; *पैदा होना । * स० क्रि० जनना, जन्म देना । **मु० जा धमकना**–एकाएक पहुँच जाना । **जा निकलना**–अचानक पहुँच जाना । **जाने देना**–छोड़ देना; माफ कर देना । **जा पड़ना**–अचानक जा पहुँचना । **जा रहना**–कहीं पहुँचकर टिकना, ठहरना । **जा लेना**–आगे जानेवालेके वरावर हो जाना; भागनेवालेको पकड़ लेना ।

जाना–वि० जाना हुआ (जाना पहचानां व्यक्ति) ।

जानि–स्त्री० (सं०) पत्नी, भार्या (केवल समासमें व्यवहृत–'जानकीजानि' । * वि० ज्ञानी ।

जानिब–स्त्री० (अ०) तरफ, दिशा । **–दार**–वि० पक्षपाती, तरफदार । **–दारी**–स्त्री० पक्षपात, तरफदारी ।

जानी–वि० (फा०) जानका; जानसे संबंध रखनेवाला । वि० स्त्री० प्राणप्रिया, प्यारी । **–दुश्मन**–पु० कट्टर शत्रु, जान लेनेको तैयार रहनेवाला शत्रु ।

जानु*–अ० दे० 'जानो' । पु० (सं०) घुटना । **–दघ्न**–वि० घुटनेतक ऊँचा या गहरा । **–पाणि**–अ० घुटनों और हाथके पंजोंके बल, घुटुरुवाँ । **–पानि***–अ० दे० 'जानुपाणि' । **–फलक,–मंडल**–पु० घुटनेके जोड़के ऊपरकी हड्डी । **–विजानु**–पु० तलवारका एक हाथ ।

ज़ानू–पु० (फा०) घुटना; जाँघ । **–पोश**–पु० वह कपड़ा जिसे (मुसलमान) खाते समय जाँघपर रख लेते हैं । मु० **–तह करना, –तोड़ना**–अदबसे, दो-जानू होकर बैठ रहना ।

जानो†–अ० मानो, जैसे ।

जाप–पु० (सं०) जप; * स्त्री० जपमाला 'कंठ ज़ाप रुदरा कैं मेली' –चन्दा० ।

जापक–वि० (सं०) जप करनेवाला ।

जापन–पु० (सं०) निरसन, निर्वर्तन ।

जापा–पु० सौरी, प्रसूतिगृह; प्रसव ।

जापान–पु० पूर्वी एशियाका एक प्रमुख देश ।

जापानी–वि० जापानका । पु० जापानवासी । स्त्री० जापानकी भाषा ।

जापी(पिन्)–वि० (सं०) जप करनेवाला ।

जाप्य–वि० (सं०) जप करने योग्य ।

ज़ाफ़त–स्त्री० दे० 'ज़ियाफ़त' ।

ज़ाफ़रान–पु० (अ०) केसर ।

ज़ाफ़रानी–वि० जिसमें केसर पड़ा हो; केसरिया, केसरके रंगका ।

जाफरी–स्त्री० खपचियों आदिका बना टट्टर, परदा या आड़ । पु० गेंदाका एक प्रकार ।

जावता–पु० दे० 'ज़ाविता' ।

जाबा–पु० सीके जैसी बनी हुई रस्सीकी जाली जिसे बैल आदिके मुँहपर पहनाते हैं, मुसका ।

जाबाल–पु० (सं०) एक ऋषि जिसकी माताका नाम जावाला था और जिनका आख्यान छांदोग्य उपनिषद्में वर्णित है ।

जाबालि–पु० (सं०) एक उप-स्मृतिकार मुनि; दशरथके एक पुरोहित जिन्होंने रामचंद्रको वनसे लौट जानेके लिए समझाया था ।

ज़ाबित–वि० (अ०) जब्त करने, रखनेवाला, सहनशील; नियामक; रक्षक । पु० पुलिस अफसर (अरब देश) ।

ज़ाबिता–पु० (अ०) नियम, कायदा; दस्तूर, व्यवहार, विधि, पद्धति । **–(तए) अदालत**–पु० अदालती कार्यविधि । **–दीवानी**–पु० दीवानी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड आव् सिविल प्रोसिड्योर) । **–फ़ौजदारी**–पु० फौजदारी अदालतोंकी कार्यविधि (कोड आव् क्रिमिनल प्रोसिड्योर) । **–माल**–पु० मालकी अदालतों, अफसरोंकी कार्यविधि ।

जाबिर–पु० (अ०) जब्र करनेवाला, अत्याचारी, जालिम ।

जाबी–स्त्री० छोटा जाबा ।

ज़ाब्ता–पु० दे० 'ज़ाबिता' ।

जाम–वि० (अं०) (भीड़ या सवारियों आदिकी कसमसाहटके कारण) अवरुद्ध (मार्ग आदि) । पु० (हिं०) पहर, याम; जामुन; † बिही, अमरूद (छत्तीस०)।(फा०) प्याला; शराबका प्याला; खुरासानका एक नगर । **–(मे) जम, –जमशेद**–पु० ईरानके बादशाह जमशेदके लिए वैज्ञानिकोंका बनाया हुआ प्याला (कहते हैं कि इसमें देखनेसे भविष्यमें होनेवाली बातों या सारी दुनियामें होनेवाली बातोंका ज्ञान हो जाता था) । **–जहाँनुमा**–पु० दे० 'जामे-जम' । **–सिहत**–पु० किसीकी स्वास्थ्य-कामनासे पिया जानेवाला शराबका प्याला । मु० **–चलना**–शराबका दौर चलना, प्यालेपर प्याला पीते जाना ।

जामगी–स्त्री० (फा०) तोपमें आग देनेका फलीता; बंदूकका तोड़ा ।

जामदग्न्य–पु० (सं०) जमदग्निके पुत्र, परशुराम ।

जामदानी–स्त्री० (फा०) कपड़ा रखनेका संदूक (जामादानी); चमड़ेका संदूक; शीशे या अबरककी बनी संदूकची; फूल काटकर टाँका हुआ ढाकेका महीन कपड़ा, बूटीदार अद्धी ।

जामन–पु० दूधको जमानेके लिए डाला जानेवाला दही या और कोई खट्टी चीज; जामुन; आलू बुखारेकी जातिका एक वृक्ष ।

जामना*–अ० क्रि० दे० 'जमना' ।

जामनी–स्त्री० यामिनी, रात; दे० 'यावनी' ।

जामल–पु० (सं०) एक प्रकारका तंत्र ।

जामवंत–पु० दे० 'जांववान्' ।

जामा–स्त्री० (सं०) बेटी; पुत्रवधू । पु० (फा०) कपड़ा, पहनावा; दूल्हेको पहनाया जानेवाला अँगरखा जिसका नीचेका घेरा पेशवाज जैसा होता है । **–ज़ेब**–वि० जिसकी देहपर कपड़े खिलें । **–दार**–पु० वह कर्मचारी जिसका काम कपड़ोंकी सँभाल हो । **–पोश**–वि० जो कपड़े पहने हो । **–(मे)वार**–पु० वह ऊनी शाल जिसकी सारी जमीनपर बूटे हों; एक तरहकी छींट जिसके बूटे दुशालेके बूटों जैसे हों । मु० **–(मे)में फूला न समाना**–बहुत खुश होना, इतराना । **–से बाहर होना**–आपेमें न रहना, अति क्रुद्ध या प्रसन्न होना ।

जामाता(तृ)–पु० (सं०) दामाद, कन्याका पति; स्वामी; हुरहुर ।

जामातु*–पु० दे० 'जामाता' ।

जामातृक–पु० (सं०) दामाद ।

जामि–स्त्री० (सं०) बहिन; बेटी; पतोहू; निकट संबंधवाली सपिंड स्त्री; कुलस्त्री ।

जामिक–पु० दे० 'यामिक' ।

जामित्र–पु० (सं०) कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ स्थान । **–वेध**–पु० एक अशुभ योग ।

ज़ामिन–पु० (फा०) जमानत करनेवाला; जिम्मा लेनेवाला; नैचेकी दोनों नलियोंको अलग रखनेके लिए बाँधी जानेवाली एक लकड़ी; जामन; वह चीज जो दूसरी चीजको उड़नेसे बचानेके लिए साथ रखी जाय (जैसे कपूरके साथ मिर्च) । **–दार**–पु० जामिन (असाधु) ।

जामिनी–स्त्री० दे० 'यामिनी' ।

ज़ामिनी–स्त्री० (फा०) जामिन होनेका भाव, जमानत ।

जामी–स्त्री० (सं०) दे० 'जामि'; * जमीन ।

जामुन–पु० एक खटमिट्ठा फल और उसका पेड़, जंबू ।

जामुनी–वि० जामुनके रंगका, स्याह ।

जामेय–पु० (सं०) भानजा, बहिनका बेटा ।

जायँ†–वि० मुनासिब ।

जाय*–अ०, वि० व्यर्थ, बेकार । स्त्री० (फा०) जगह, स्थान; मौका । **–पनाह**–स्त्री० पनाहकी जगह, आश्रयस्थान । **—रहाइश**–स्त्री० रहनेकी जगह, वासस्थान ।

जायक–पु० (सं०) पीला चंदन ।

ज़ायक़ा–पु० (अ०) स्वाद, मजा; रसग्रहणकी शक्ति; रसेंद्रिय । **–शिनास**–वि० जायका पहचाननेवाला, जिसे स्वादका अच्छा ज्ञान हो । **–(के)दार**–वि० स्वादिष्ट, मजेदार ।

ज़ायचा–पु० (फा०) जन्मपत्री; रमलमें बनायी जानेवाली कुंडली ।

जायज़–वि० (अ०) उचित; विहित, वैध; मानने योग्य ।

जायज़ा–पु० (अ०) परख; जाँच-पड़ताल (देना, लेना); किये गये कामोंका विवरण; अंदाज; सरसरी तौरसे लिया गया चित्र 'कमरेका जायजा ले वह आँगनकी ओर बढी' ।

ज़ायद–वि० (अ०) ज्यादा, अधिक; अतिरिक्त, फाजिल ।

जायदाद–स्त्री० (फा०) माल-असबाब, संपत्ति, जगह-जमीन । **–आबाई**–स्त्री० पैतृक संपत्ति । **–ग़ैरमनकूला**–स्त्री० अचल संपत्ति । **–ज़ौजीयत**–स्त्री० स्त्रीधन । **–मक़फूला**–स्त्री० रेहन या बंधक रखी हुई संपत्ति । **–मनकूला**–स्त्री० चल संपत्ति । **–शौहरी**–स्त्री० स्त्रीको पतिसे प्राप्त संपत्ति ।

जायपत्री–स्त्री० जावित्री ।

जायफल–पु० एक सुगंधित फल जो मसाले और दवाके रूपमें काममें लाया जाता है, जातीफल ।

ज़ायल–वि० (अ०) मिटनेवाला; नष्ट, लुप्त।

जायस–पु० रायबरेली जिलेका एक कसबा, मलिक मुहम्मद जायसीका वासस्थान।

जायसी–पु० जायस (रायबरेली)का रहनेवाला; अवधीके सुप्रसिद्ध सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी। वि० जायसका।

जाया*–वि० उत्पन्न किया हुआ। स्त्री० (सं०) विधिवत् व्याही हुई स्त्री (जिससे कोई बच्चा उत्पन्न हो चुका हो), पत्नी। **–जीव**–वि० पत्नीकी कमाई खानेवाला। पु० नट; नर्तक; वेश्याका पति। **–घ्न**–वि० पत्नीहंता। पु० जन्मकुंडलीमें सातवें स्थानपर मंगल या राहुके होनेसे पड़नेवाला एक योग जिसका फल पत्नीका घात माना गया है; ऐसे योगवाला पुरुष; शरीरका तिल।

जाया–वि० (अ०) नष्ट, वरवाद, व्यर्थ (करना, जाना, होना)।

जायानुजीवी(विन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'जायाजीव'।

जायी(यिन्)–वि० (सं०) जयशील, जीतनेवाला। पु० ध्रुपदकी जातिका एक ताल। (स्त्री० 'जायिनी'।)

जायु–वि० (सं०) जयशील। पु० औषध; वैद्य।

जार*–वि० जलानेवाला; नाशक। पु० जाल–'...सुंदर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है'–सुंदरदास; (सं०) परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला; उपपति, आशना। **–कर्म(न्)**–पु० व्यभिचार। **–ज, जन्मा(न्मन्),–जात**–वि० जारसे उत्पन्न। पु० उपपतिसे उत्पन्न संतान। **–ज योग**–पु० फलित ज्योतिषका एक योग जिसमें उत्पन्न संतानके जारज होनेका संदेह किया जाता है। **–भरा**–स्त्री० जारसे प्रेम करनेवाली स्त्री, कुलटा।

जारक–वि० (सं०) क्षय करनेवाला; पाचन वढ़ानेवाला।

जारण–पु० (सं०) गलाना; पचाना; जीर्ण करना; किसी धातुका शोधन, मारण; पारेका एक संस्कार।

जारणी–स्त्री० (सं०) सफेद जीरा।

जारना†–स० क्रि० दे० 'जलाना'।

जारिणी–स्त्री० (सं०) जारसे प्रेम करनेवाली स्त्री, कुलटा।

जारित–वि० (सं०) गलाया, पचाया हुआ; शोधित, मारित (धातु)।

जारी–स्त्री० जारकर्म। वि० (अ०) वहता हुआ; चलता हुआ, प्रचलित; वना हुआ। मु०**–करना**–निकालना, चलाना, आरंभ करना।

जारूथ्य–पु० (सं०) अश्वमेध यज्ञका एक भेद।

जारोव–स्त्री० (फा०) झाड़ू। **–कश**–पु० झाड़ू देनेवाला, भंगी।

जार्यक–पु० (सं०) दे० 'जाहक'।

जालंधर–पु० (सं०) एक ऋषि; जालंधर दैत्य; एक योगमुद्रा; त्रिगर्त देश (जालंधर और काँगड़ा जिले); त्रिगर्तवासी।

जालंधरी विद्या–स्त्री० इंद्रजाल।

जाल–पु० (सं०) सूत, सन आदिकी जालीदार वुनी हुई चीज जिसमें मछलियाँ, चिड़ियाँ आदि फँसाते हैं; जाली; रेल लाइनों, नहरों आदिका विस्तार; ठगने, फँसानेकी युक्ति; फंदा; दे० 'जाल' (अरवी) मकड़ीका जाला; समूह; झरोखा; क्षार; इंद्रजाल; कूष्मांड आदि क्षुद्र फल; अविकसित पुष्प, कली; तारकी जालियोंका वना शिरस्त्राण; कदंव; घमंड; एक नेत्ररोग। **–कर्म(न्)**–पु० मछुएका पेशा। **–कारक**–पु० जाल वनानेवाला; मकड़ा। **–कीट**–पु० मकड़ा; मकड़ीके जालेमें फँसा हुआ कीड़ा। **–गर्दभ**–पु० एक तरहका फोड़ा। **–गोणिका**–स्त्री० दही मथनेकी हाँड़ी, दहेंड़ी। **–ग्रथित**–वि० जाल या जालेमें फँसा हुआ या जालके द्वारा संवद्ध। **–जीवी(विन्)**–पु० मछुआ। **–दार**–वि० (हिं०) जालीदार; फंदेदार। **–पाद**–पु० हंस; जावाल ऋषिका एक शिष्य। **–प्राया**–स्त्री० कवच, जिरहवख्तर। **–वंद**–पु० (हिं०) वह कालीन जिसमें जाल जैसी वेल वनी हो। **–रंध्र**–पु० झरोखेकी जालीका छेद जिससे भीतर प्रकाश आये। **–वर्वुरक**–पु० एक तरहका ववूल। मु०**–डालना,–फेंकना**–पानीमें जाल फेंकना, फैलाना। **–फैलाना,–बिछाना**–फँसानेकी युक्ति रचना। **–में फँसना**–धोखा खाना, किसीके फरेवमें आना।

जाल–पु० (अ०) किसी चीजकी नकल जो धोखा देनेके लिए की जाय; दूसरेकी लिखावट या दस्तखतकी नकल। (करना, वनाना)। **–साज़**–पु० जाल करनेवाला। **–साजी**–स्त्री० जाल करना, नकली दस्तावेज, दस्तखत आदि वनाना।

जालक–पु० (सं०) केला; घोंसला; सिरका एक गहना; धोखा; दे० 'जाल' (सं०)।

जालकिनी–स्त्री० (सं०) भेड़, मेषी।

जालकी(किन्)–पु० (सं०) वादल।

जालना*–स० क्रि० जलाना।

जाला–पु० मकड़ीका वुना हुआ जाल; घास, भूसा आदि वाँधनेका जाल; आँखोंका एक रोग जिसमें पुतलीपर झिल्ली-सी चढ़ जाती है; एक तरहका सरपत।

जालाक्ष–पु० (सं०) झरोखा।

जालिक–पु० (सं०) मछुआ; वहेलिया; मकड़ा; मदारी; ठग; प्रदेश-विशेषका प्रधान शासक। वि० जालजीवी।

जालिका–स्त्री० (सं०) जाल; स्त्रियोंका मुखावरण, चेहरेपर डालनेकी जाली; जोंक; विधवा; जालीका वना कवच; मकड़ी; लोहा; केला; वस्त्र-विशेष; * समूह; जाल।

जालिनी–स्त्री० (सं०) चित्रशाला; तोरई आदि फल; प्रमेहमें होनेवाला फोड़ा।

ज़ालिम–वि० (अ०) जुल्म करनेवाला, अत्याचारी; क्रूर।

ज़ालिमाना–वि० अत्याचारपूर्ण।

जालिया–वि० जालसाज।

जाली–वि० नकली, झूठा (दस्तावेज, नोट आदि)। स्त्री० वह चीज जिसमें जाल जैसे छोटे-छोटे छेद वने हों; ऐसी वनावटकी लकड़ी या पत्थर जो खिड़कियों आदिमें जड़ा जाता है; ऐसी वुनावटका कपड़ा जो मसहरी आदिके काम आता है; वह कसीदा जिसमें वेल-वूटेके वीचमें छोटे-छोटे छेद हों; आम आदिकी गुठलीपरके रेशे। **–दार**–वि० जिसमें जाली हो। **–लेट,–लोट**–पु० एक कपड़ा जिसकी वुनावट जालकी-सी होती है।

जाली(लिन्)–वि० (सं०) जिसके पास जाल हो; जिसमें जालदार गवाक्ष हो (मकान); धोखा देनेवाला।

जाल्म–वि० (सं०) निष्ठुर, कठोर; विचारहीन। पु० दुष्ट व्यक्ति; नीच आदमी; वुरा पाठ करनेवाला।

जाल्मक–वि० (सं०) हेय; कमीना।

जाल्य–पु० (सं०) शिव। वि० जालमें फँसाये जाने योग्य।

जावक–पु० महावर, अलक्तक।

जावत–वि० अ० दे० 'यावत्'।

जावन*–पु० दे० 'जामन'।

जावन्य–पु० (सं०) वेग, तेजी; शीघ्रता।

जावा–पु० पूर्वी एशियाका एक वड़ा द्वीप, यवद्वीप; शराव वनानेका मसाला।

जावित्री–स्त्री० जायफलका छिलका जो मसाले और दवाके रूपमें काममें लाया जाता है।

जाषनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी'।

जासु*–सर्व० जिसका।

जासूस–पु० छिपकर भेद लेनेवाला, अपराध आदिका पता लगानेवाला, भेदिया।

जासूसी–स्त्री० जासूसका काम, मुखविरी। वि० जासूस संवंधी; जिसमें जासूसोंके कारनामोंका वर्णन हो।

जास्ती†–स्त्री० ज्यादती। वि० अधिक, ज्यादा।

जाह–पु० (फा०) पद; प्रतिष्ठा; गौरव। **–व जलाल,–व हशम**–पु० शान-शौकत।

जाहक–पु० (सं०) जोंक; खाट; ऊदविलावकी जातिका एक जंतु, खेखर।

जाहर*–वि० दे० 'ज़ाहिर'।

ज़ाहिर–वि० (अ०) प्रकट, खुला हुआ। पु० वाह्य रूप। **–ज़हूर**–वि० प्रकट, जाहिर। **–दारी**–स्त्री० दिखावा, वनावटी; ऊपरी शिष्टाचार। **–परस्त**–वि० ऊपरी वातोंपर दृष्टि रखनेवाला, उन्हींको महत्त्व देनेवाला, दुनियादार। **–परस्ती**–स्त्री० जाहिरपरस्त होना, दुनियादारी। **–पीर**–पु० भंगियोंमें पूजित एक पीर। **–वीं**–वि० ऊपरी वातोंको ही देखने, महत्त्व देनेवाला।

–बीनी–स्त्री० ज़ाहिरबीं होना। **–व बातिन**–बाहर-भीतर, ऊपर और मनमें।

ज़ाहिरा–अ० ऊपरसे, देखनेमें, प्रकटतः।

ज़ाहिरी–वि० ऊपरी, बाह्य, दिखाऊ।

जाहिल–वि० (अ०) अज्ञ; अपढ़; गँवार।

जाहिली–स्त्री० अज्ञता, मूर्खता।

जाहिलीयत–स्त्री० जाहिल होना, अज्ञता; अरबमें इसलामकी स्थापनाके पहलेका काल।

जाही–स्त्री० एक तरहकी चमेली; एक आतिशबाजी।

जाह्नवी–वि० (सं०) गंगा (जह्नु से जनमी हुई)।

जिंगिनी–स्त्री० (सं०) प्रमोदिनी, झिंगी।

जिंगी–स्त्री० (सं०) मंजिष्ठा।

जिंद*–स्त्री० फारसकी पुरानी भाषा, जंद; जिंदगी–'जिंद असाडी ज्यारी है'–घन०।

जिंदगानी–स्त्री० (फा०) जिंदगी।

ज़िंदगी–स्त्री० (फा०) जीवन, जीवित होना; जीवन काल; आयु; सजीवता। **–बख़्श**–वि० जीवनप्रद; स्फूर्तिदायक। **–भर**–अ० आजीवन। मु० **–बसर करना**–जीवन बिताना, जीवन-यापन करना। **–में मौत का मज़ा चखना**–बहुत कष्ट भोगना। **–से बेजार होना**–जीनेसे ऊब जाना, जीवनसे मृत्युको अधिक पसंद करना।

ज़िंदा–वि० (फा०) जीता हुआ, जीवित; सजीव; प्रफुल्ल, हरा-भरा; बलती, सुलगती हुई (आग)। **–जावेद**–वि० अमर। **–दरगोर**–वि० जीवन्मृत, जो जीते हुए भी मृतवत् हो। **–दार**–वि० जीता रहनेवाला; जागनेवाला। **–दिल**–वि० हँसोड़; प्रसन्नचित्त; उत्साही। **–दिली**–स्त्री० जिंदादिल होना। **–पीर**–पु० वह पुरुष जो जीवनमें ही पूजा-सम्मानका अधिकारी हो। **–बाद**–जीता रहे। **–बाश**–जीते रहो!

जिँवाना–स० क्रि० दे० 'जिमाना'।

जिंस–स्त्री० (अ०) वस्तु; व्यापारकी चीजें; गल्ला; असबाब; आभरण; वर्ग, किस्म; लिंग; जाति; परिवार; व्यवहार-गणित (अंक-गणित)। **–ख़ाना**–पु० भंडारघर। **–वार** वि० वर्गके अनुसार। पु० पटवारियोंका एक कागज जिसमें फसलका विवरण रहता है। **–वारी**–स्त्री० वर्गीकरण।

जिआना*–स० क्रि० जिलाना; पालना।

जिउ*–पु० दे० 'जीव'। **–लेवा**–वि० प्राण लेनेवाला, घातक। मु०**–तपना**–दे० 'जी जलना'।

जिउकिया–पु० बीहड़ वन-पर्वतोंपर प्राप्य वस्तुएँ (कस्तूरी, शिलाजतु इ०) लाकर बेचनेवाला; रोजगारी।

जिउतिया–स्त्री० आश्विन-कृष्णा अष्टमीको होनेवाला एक व्रत जिसे केवल पुत्रवती स्त्रियाँ रखती हैं, जीवत्पुत्रिका व्रत; उस व्रतमें पहना जानेवाला लाल-पीले धागेका गंडा।

जिकड़ी†–पु० होलीपर व्रजमें गाया जानेवाला एक गीत।

ज़िक्र–पु० (अ०) चर्चा; वर्णन; स्मरण; ईश्वरका नाम लेते हुए स्मरण। **–मज़कूर**–पु० चर्चा। **–ख़ैर**–पु० किसीके बारेमें अच्छी बात कहना।

जिगत्नु–पु० (सं०) प्राणवायु।

जिगमिषा–स्त्री० (सं०) जानेकी इच्छा।

जिगमिषु–वि० (सं०) जानेकी इच्छा करनेवाला।

जिगर–पु० (फा०) यकृत, कलेजा; जीवट, हिम्मत; सार-भाग। **–ख़राश**–वि० जिगरको छीलनेवाला, अति दुःखद। **–गोशा, –बंद**–पु० बेटा (ला०)। **–सोज**–वि० दिल जलानेवाला; दिलजला। मु० **–कबाब होना**–कलेजा पकना, बुरी तरह कुढ़ना। **–के टुकड़े होना**–दिलपर भारी सदमा होना; दुःख होना। **–थामकर बैठ जाना**–असह्य आघात, पीड़ासे व्याकुल होना।

जिगरा–पु० कठिन काम करनेका हौसला, जीवट, साहस।

जिगरी–वि० (फा०) जिगरका, दिली, अंतरंग (–दोस्त)।

जिगीषा–स्त्री० (सं०) जीतनेकी इच्छा, जयकी अभिलाषा; प्रकर्ष; उद्यम।

जिगीषु–वि० (सं०) जयकी इच्छा रखनेवाला।

जिघत्नु–वि० (सं०) वधका इच्छुक, शत्रु।

जिघत्सा–स्त्री० (सं०) भोजनकी इच्छा, भूख।

जिघत्सु–वि० (सं०) भोजनकी इच्छा करनेवाला, भूखा।

जिघांसक–वि० (सं०) वधका इच्छुक, शत्रु।

जिघांसा–स्त्री० (सं०) मार डालनेकी इच्छा; प्रतिहिंसा।

जिघांसु–वि० (सं०) मार डालनेकी इच्छा रखनेवाला, वैरी; घातक।

जिघृक्षा–स्त्री० (सं०) पकड़नेकी इच्छा।

जिघृक्षु–वि० (सं०) पकड़नेका इच्छुक।

जिघ्र–वि० (सं०) सूँघनेवाला; संदेह करनेवाला।

जिच–स्त्री० मजबूरी, विवशता; शतरंजमें बादशाहकी चालके लिए घर और इर्दब देनेके लिए कोई मुहरा न रह जाना या कोई मोहरा चलनेकी जगह न रह जाना; किसी मामलेमें आगे बढ़नेका रास्ता बंद हो जाना, गतिरोध।

जिजिया–स्त्री० बड़ी बहन, दीदी।

जिज़िया–पु० (अ०) वह कर जो मुसलमान शासक गैर-मुसलमान प्रजापर लगाते थे और उसके बदले उसके जान-मालकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेते और उसे सेनामें भरती होनेके कर्तव्यसे मुक्त कर देते थे।

जिजीविषा–स्त्री० (सं०) जीनेकी इच्छा।

जिजीविषु–वि० (सं०) जीनेकी इच्छा करनेवाला।

जिज्ञापयिषा–स्त्री० (सं०) जतानेकी इच्छा।

जिज्ञापयिषु–वि० (सं०) जतानेका इच्छुक।

जिज्ञासा–स्त्री० (सं०) जाननेकी इच्छा, ज्ञानकी चाह; ज्ञानप्राप्तिके लिए विचार, पूछ-ताछ, खोज।

जिज्ञासित–वि० (सं०) पूछा हुआ, जिसकी जिज्ञासा की गयी हो।

जिज्ञासु–वि० (सं०) जाननेका इच्छुक, ज्ञानार्थी; खोजी; मुमुक्षु।

जिज्ञास्य–वि० (सं०) जिज्ञासा करने योग्य।

जिठानी–स्त्री० दे० 'जेठानी'।

जित*–अ० जिधर, जिस ओर। वि० (सं०) जीता हुआ, पराजित; वशमें किया हुआ। **–कोप,–क्रोध**–वि० जिसने क्रोधको जीत लिया हो, क्रोधरहित। **–नेमि**–पु० पीपलका डंडा। **–मन्यु**–वि० दे० 'जितकोप'। पु० विष्णु। **–लोक**–वि० जिसने दुनियाको जीत लिया हो; जो पुण्यबलसे स्वर्गादिका अधिकारी हो गया हो। **–शत्रु**–वि० जिसने शत्रुको जीत लिया हो, विजयी। **–श्रम**–वि० जो थके नहीं। **–संग**–वि० जिसने मोह-मायापर विजय पा ली हो। **–स्वर्ग**–वि० पुण्यबलसे स्वर्ग प्राप्त करनेवाला।

जितना–वि० जिस मात्राका, जिस कदर। अ० जिस मात्रामें।

जितवना*–स० क्रि० जताना; जिताना।

जितवाना–स० क्रि० दे० 'जिताना'।

जितवार*–वि० जीतनेवाला।

जितवैया–पु० जीतनेवाला।

जिताक्ष–वि० (सं०) जितेंद्रिय।

जिताक्षर–वि० (सं०) अच्छा पढ़ने-लिखनेवाला।

जितात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसने अपने मन, अपनी इन्द्रियोंको वशमें कर लिया हो।

जिताना–स० क्रि० जीतनेका कारण होना, जीतनेमें समर्थ करना।

जितारि–वि० (सं०) जिसने अपने शत्रुओं या काम, क्रोध आदि–षड्रिपुओं–को जीत लिया। पु० बुद्ध।

जिताष्टमी–स्त्री० (सं०) जीवत्पुत्रिका व्रत।

जिताहार–वि० (सं०) जिसने भोजनकी इच्छापर विजय पा ली हो।

जिति–स्त्री० (सं०) जीत, जय; प्राप्ति।

जितुम–पु० (सं०) मिथुन राशि।

जितेंद्रिय–वि० (सं०) जिसने अपनी इंद्रियोंको वशमें कर लिया हो।

जिते*–वि० जितने।

जितै*–अ० जिस ओर।

जितैया*–पु० जीतनेवाला।

जितो*–वि० जितना।

जित्–वि० (सं०)...को जीतनेवाला (समासांतमें व्यवहृत–जैसे इंद्रजित् इ०)।

जित्तम, जित्म–पु० (सं०) मिथुन राशि ।

जित्य–वि० (सं०) जेय, जीतने योग्य । पु० बड़ा हल ।

जित्या–स्त्री० (सं०) फाल; सिरावन, पाटा ।

जित्वर, जित्वा(त्वन्)–वि० (सं०) जीतनेवाला, जयशील ।

ज़िद–वि० (अ०) उलटा । पु० विपरीत गुण-धर्मवाली वस्तु । स्त्री० हठ, दुराग्रह । **मु० –चढ़ना, –पर आना**–हठ पकड़ना ।

जिदियाना–अ० क्रि० जिद करना, हठपर अड़ जाना ।

ज़िद्दन–अ० (अ०) हठवश ।

ज़िद्दी–वि० हठी, जिद करनेवाला ।

जिधर–अ० जिस ओर; जहाँ । **–तिधर**–अ० जहाँ-तहाँ ।

जिन–सर्व० 'जिस'का वहु० । पु० (सं०) वुद्ध; जैन तीर्थंकर; विष्णु; अति वृद्ध व्यक्ति । वि० जयशील; राग-द्वेषादिको जीतनेवाला; अति वृद्ध । **–सद्म(न्)**–पु० जैनमंदिर, विहार ।

जिन, जिन्न–पु० (अ०) मुसलमानोंके विश्वासके अनुसार एक तैजस योनि; भूत, प्रेत; आसुरी वल-पौरुषवाला आदमी; हठी आदमी । **मु० –का साया**–जिनका सिरपर सवार होना । **–चढ़ना,–सवार होना**–गुस्सेमें पागल हो जाना ।

ज़िना–पु० (अ०) परस्त्रीगमन या परपुरुषगमन, व्यभिचार, वदकारी । **–कार**–वि० व्यभिचारी । **–विज्जब्र**–पु० वलात्कार, स्त्रीकी रजामंदीके विना किया हुआ संभोग ।

जिना (मुहम्मदअली)–पु० प्रसिद्ध भारतीय मुसलिम नेता (१८७६–१९४८), लगातार कई वर्षोंतक मुसलिम लीगके अध्यक्ष । पाकिस्तानकी स्थापनाका मुख्य श्रेय आपको ही है । १९४७ में पाकिस्तानके प्रथम गवर्नर जनरल वने ।

जिनि*–अ० दे० 'जनि' ।

जिनिस-स्त्री० दे० 'जिंस' ।

जिनेंद्र–पु० (सं०) एक वुद्ध; एक जैन संत ।

जिन्नात–पु० (अ०) भूत-प्रेतादि ('जिन'का वहु०) ।

जिन्नाती–वि० जिन या जिन्नातका । **–ख़त**–पु० वह लिखावट जो मुश्किलसे पढ़ी जाय ।

जिन्नी–पु० (अ०) जिनकी साधना करनेवाला, जिनको वशमें करनेवाला । वि० जिनसे संवद्ध ।

जिप्सी–पु० भारतीय मूलकी एक भ्रमणशील जाति जो यूरोपके कई देशोंमें पायी जाती है; इस जातिका व्यक्ति ।

जिवह–पु० गला काटना, हलाल करना ।

जिब्रील–पु० खुदाका एक फरिश्ता (मुसल०) ।

जिब्हा*–स्त्री० दे० 'जिह्वा' ।

जिभला–वि० चटोर, जिह्वालोलुप ।

जिभ्या*–स्त्री० दे० 'जिह्वा' ।

जिमखाना–पु० वह स्थान जहाँ जमा होकर खेलाड़ी व्यायाम करते तथा खेलोंका अभ्यास करते हैं ।

जिमाना–स० क्रि० खाना खिलाना ।

जिमि*–अ० जैसे, जिस प्रकार ।

जिमित–पु० (सं०) भोजन ।

जिमींदार†–पु० दे० 'जमींदार' ।

ज़िम्मा–पु० (अ०) प्रतिज्ञा, किसी वातके करने, किये जानेका भार; जमानत; सिपुर्दगी । **–(म्मे)दार**–वि० जवावदेह । **–दारी**–स्त्री० जवावदेही । **–वार**–वि० जिम्मेदार । **–वारी**–स्त्री० जिम्मेदारी । **मु०–लेना**–(किसी कामका) भार उठाना, हामी भरना । (**किसीके ज़िम्मे**–किसीके ऊपर, नाम, हवाले–करना, लगाना, निकालना ।)

ज़िम्मी–पु० (अ०) इसलामी राज्यका गैरमुसलिम (अहले-किताव) प्रजाजन जो जिजिया कर अदा करे ।

जिय*–पु० जी, जीव । **–वधा**–पु० जल्लाद । वि० हत्यारा ।

जियन*–पु० जीवन ।

जियरा*–पु० जीव; जी, हृदय, मन ।

जियांकार–वि० (फा०) हानि करने या पहुँचानेवाला ।

जिया†–स्त्री० जीजी, दीदी (वुंदेल०); धात्री (मुसल०) । पु० दे० 'जियरा' ।

ज़िया–स्त्री० (अ०) सूर्यका प्रकाश, प्रभा; रत्नकी कांति ।

ज़ियादत–स्त्री० (अ०) अधिकता; जुल्म, जवर्दस्ती ।

ज़ियादती–स्त्री० दे० 'ज़ियादत' ।

ज़ियादा–वि० (अ०) अधिक, वहुत, फाजिल । **–गो**–वि० वहुत वोलनेवाला, वकवासी । **–तर**–वि० अधिकतर । **–तलव**–वि० अधिक चाहने, माँगनेवाला, लोभी ।

ज़ियान–पु० (फा०) हानि, नुकसान, टोटा ।

जियाना*–स० क्रि० दे० 'जिलाना' ।

जियापोता–पु० एक पेड़, पतजिव ।

ज़ियाफ़त–स्त्री० (अ०) दावत, भोजनसे सत्कार; आतिथ्य ।

ज़ियारत–स्त्री० (अ०) साधु-संत, देवमूर्ति आदिके दर्शन करना या दर्शनार्थ जाना; तीर्थयात्रा । **–गाह**–पु० दर्शनीय स्थान, दरगाह ।

ज़ियारती–वि० दर्शनार्थी, जियारत करनेवाला ।

जियारी*–स्त्री० जीवन; जीवट; जीविका ।

जिरगा–पु० (फा०) मंडली, जमात; झुंड; सरहदी पठानोंकी सभा या पंचायत ।

जिरण–पु० (सं०) जीरा ।

जिरह–स्त्री० (अ० 'जरह') चीरा, घाव; वे प्रश्न जो प्रतिपक्षी या उसका वकील वयानकी सचाई जाँचनेके लिए करे ।

ज़िरह–स्त्री० (फा०) फौलादकी कड़ियोंका वना हुआ कवच । **–पोश**–वि० कवचधारी ।

ज़िरही–वि० कवचधारी । पु० कवचधारी सैनिक ।

ज़िराअत–स्त्री० (अ०) खेती, किसानी । **–पेशा**–वि० कृषिजीवी, खेतिहर ।

जिरात†–स्त्री० दे० 'ज़िराअत' ।

जिराफ़ा–पु० (अ० 'ज़राफा') अफ्रीकाके जंगलमें पाया जानेवाला एक जानवर जिसकी गरदन और अगली टाँगें ऊँटकी-सी और खालपर वड़े-वड़े लाल-पीले या भूरे धव्वे होते हैं (चौपायोंमें यह सवसे ऊँचा होता है । नरकी ऊँचाई तो कभी कभी १८ फुटसे भी अधिक होती है) ।

जिरिया–पु० एक वढ़िया धान ।

जिला–स्त्री० (अ०) चमक, ओप, पालिश; रगड़-माँजकर चमकानेका काम । **–कार,–साज़**–पु० जिला करनेवाला, सिकलीगर ।

ज़िला–पु० (अ०) पहलू, पार्श्व; देशका विभाग, प्रदेश; प्रांत या सूवेका वह भाग जो डिपटी कमिश्नर या कलक्टरके मातहत हो, 'डिस्ट्रिक्ट'; द्व्यर्थक वात, व्यंग्योक्ति, जुगत । **–अदालत**–स्त्री० जिला अफसरका इजलास, कचहरी । **–अफसर**–पु० कलक्टर । **–कचहरी**–स्त्री० दे० 'जिला-अदालत' । **–जज**–पु० जिलेका प्रधान न्यायाधिकारी, 'डिस्ट्रिक्ट जज' । **–जेल**–स्त्री०, पु० जिलेका जेलखाना । **–पालिका**–स्त्री० (डिस्ट्रिक्ट वोर्ड) जिलेके निर्वाचित प्रतिनिधियोंकी वह संस्था जो जिलेके समस्त निवासियोंकी शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदिकी व्यवस्था करती है, जिला वोर्ड । **– वोर्ड**–पु० दे० 'जिला पालिका' । **–मजिस्ट्रेट**–पु० जिलेका प्रधान प्रवंधाधिकारी । **–(ले)दार**–पु० जमींदारका कारिंदा जो गाँवका लगान वसूल करे; नहर-महकमेका एक कर्मचारी । **–दारी**–स्त्री० जिलेदारका पद, काम । **मु० –वोलना**–द्व्यर्थक वात कहना, व्यंग्योक्ति करना ।

जिलाट–पु० (सं०) प्राचीन कालका एक वाजा ।

जिलाधीश–पु० दे० 'जिला मजिस्ट्रेट' ।

जिलाना–स० क्रि० मरे हुएको जिंदा करना; पालना-पोसना; मरनेसे वचाना, जीवन देना ।

जिलाह, जिलाहा*–पु० जालिम, अत्याचार करनेवाला ।

जिल्द–स्त्री० (अ०) खाल, त्वचा; पुस्तककी रक्षाके लिए लगायी, चिपकायी हुई दफ्ती आदि; पुस्तकका अलग सिला, वँधा हुआ खंड; पुस्तककी प्रति । **–गर**–पु० दे० 'जिल्दवंद' । **–दार**–वि० जिसकी जिल्द वँधी हो । **–वंद**–पु० जिल्द वाँधनेवाला । **–वंदी**–स्त्री० जिल्द वाँधने, वनानेका काम । **–साज़**–पु० दे० 'जिल्दवंद' । **–साज़ी**–स्त्री० दे० 'जिल्दवंदी' ।

जिल्दी–वि० जिल्दका, त्वचा या खालका (रोग आदि) ।

ज़िल्लत–स्त्री० (अ०) वेइज्जती; हीनता, दुर्गति । **मु०–उठाना**

–लज्जित, अपमानित होना।

जिल्होर†–पु० एक अच्छा अगहनी धान।

जिव†–पु० दे० 'जीव'।

जिवड़ा*–पु० प्राण, हृदय (मीरा)।

जिवाँना†–स० क्रि० दे० 'जिमाना'।

जिवाजिव–पु० (सं०) चकोर पक्षी।

जिवाना*–स० क्रि० जिलाना।

जिवारी*–वि०, स्त्री० जिलानेवाली–'आई है दिवारी चीते काजनि जिवारी प्यारी'–घन०।

जिवावन*–वि० जिलानेवाला।

जिष्णु–वि० (सं०) जीतनेवाला, जयशील। पु० विष्णु; सूर्य; इंद्र; अर्जुन।

जिस–सर्व० 'जो'का विभक्ति लगनेसे बननेवाला रूप (जिसने, जिसको)।

जिसिम–पु० दे० 'जिस्म'।

जिस्ता–पु० दे० 'दस्ता'।

जिस्म–पु० (अ०) शरीर, बदन; ठोस चीज; वह चीज जिसमें लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई या मोटाई हो (ग०)।

जिस्मानी–वि० (अ०) शारीरिक, देहभव (तकलीफ, सजा)।

जिस्मी–वि० शारीरिक।

जिह*–स्त्री० जेह, धनुषकी ज्या, चिल्ला।

ज़िहन–पु० दे० 'जेह्न' बुद्धि। **–दार**–वि० समझदार, जो बातको जल्दी समझ ले।

जिहाद–पु० (अ०) (मुसलमानोंका) काफिरोंसे लड़ना; वह युद्ध जो धर्मकी रक्षाके लिए किया जाय। **–(दे) अकबर**–पु० इंद्रियोंका निग्रह, नफ़सकुशी (सूफी)।

जिहादी–वि० जिहाद करनेवाला।

जिहान–पु० (सं०) गमन; प्राप्ति।

जिहानक–पु० (सं०) प्रलय।

जिहालत–स्त्री० दे० 'जहालत', मूर्खता।

जिहासा–स्त्री० (सं०) त्यागने, छोड़नेकी इच्छा।

जिहासु–वि० (सं०) त्याग करनेका इच्छुक।

जिहीर्षा–स्त्री० (सं०) हरण करने, छीन लेनेकी इच्छा।

जिहीर्षु–वि० (सं०) हरणका इच्छुक।

जिहेज़–पु० (अ०) दे० 'जहेज़'।

जिह्म–वि० (सं०) टेढ़ा, कुटिल; दुष्ट; मंद। पु० कपट; तगरका फूल। **–ग, –गति**–वि० धीमा या टेढ़ा-मेढ़ा चलनेवाला। पु० साँप। **–प्रेक्षी(क्षिन्)**–वि० ऐंचा-ताना। **–मेहन**–पु० मेढक। **–योधी(धिन्)**–वि० कपट-युद्ध करनेवाला। पु० भीम। **–शल्य**–पु० खदिर वृक्ष।

जिह्माक्ष–वि० (सं०) ऐंचाताना।

जिह्मित–वि० (सं०) टेढ़ा; चकित।

जिह्व–पु० (सं०) तगरमूल; दे० 'जिह्वा'।

जिह्वक–पु० (सं०) वह सन्निपात जिसमें जीभमें काँटे पड़ जायँ और बोलनेमें लड़खड़ाहट हो।

जिह्वल–वि० (सं०) जिभला, चटोरा।

जिह्वा–स्त्री० (सं०) जीभ, रसना; आगकी लपट। **–जप**–पु० वह जप जिसमें केवल जीभ हिले। **–निर्लेखन,–निर्लेखनिक**–पु० जीभी। **–प**–पु० जीभसे पानी पीनेवाला पशु–कुत्ता, बाघ, बिल्ली, भालू इत्यादि। **–मल**–पु० जीभपर बैठा हुआ मैल। **–मूल**–पु० जीभकी जड़। **–मूलीय**–पु० जिह्वामूलसे उच्चरित वर्ण (व्या०)। **–रद**–पु० पक्षी। **–रोग**–पु० जीभका रोग। **–लिट्(ह्)**–पु० कुत्ता। **–लोलुप**–वि० चटोरा, जिभला। **–लौल्य**–पु० चटोरपन। **–शल्य**–पु० खैरका पेड़। **–स्वाद**–पु० जीभसे चाटना।

जिह्वाग्र–पु० जीभका अगला भाग। वि० जीभके अगले भागपर स्थित, जो अच्छी तरह याद हो, कंठस्थ हो।

जिह्विका–स्त्री० (सं०) जीभ (अल्प०)।

जिह्वोल्लेखनी–स्त्री० (सं०) जीभी।

जीँगन*–पु० जुगनू।

जी–अ० नाम, अल्ल या पदवोंके साथ जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द (गुरुजी, ठाकुरजी); बड़ोंके प्रति स्वीकृति, समर्थन, प्रश्न आदिमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द। **–हुजूरी**–स्त्री० 'जी-हुजूर, जी-हुजूर' कहते रहनेका भाव, खुशामद। पु० जान, जीव; मन, चित्त, तबीयत; जीवट। मु० (किसीपर) **–आना**–किसीपर आसक्त होना, आशिक होना। **–उचटना**–किसी काममें, किसी स्थानपर दिल न लगना। **–उड़ा जाना**–चित्तका अतिशय चंचल, उद्विग्न हो जाना, बहुत घबराहट होना। **–उलझना**–दिल घबराना। **–करना**–इच्छा होना, दिल चाहना; हिम्मत करना। **–का बुखार निकालना**–दिलका गुब्बार निकालना। **–का बोझ हलका हो जाना**–चिंता या आशंका दूर हो जाना। **–की अमान माँगना**–प्राणरक्षाकी प्रार्थना करना। **–की जीमें रहना**–चाही, सोची हुई बातका न होना, हौसला या अरमानका न निकलना। **–की पड़ना**–दे० 'जानकी पड़ना'। **–की लगी**–मनमें बसी हुई बात; मनोव्यथा। **–को रोग लगना**–किसी बातकी फिक्र करना। **–को लगना**–दिलपर असर होना, चोट पहुँचना। **–खट्टा करना**–किसीके दिलमें घृणा या विरक्तिका भाव भर देना। **–खट्टा होना**–मनमें घृणा उत्पन्न हो जाना। **–खोना**–जान देना; दिलका हाथमें न रहना। **–खोलकर**–जी भरकर, यथेष्ट। **–चाहना**–इच्छा होना। **–चाहे**–इच्छा हो, जीमे आये (तो)। **–चुराना**–किसी कामसे भागना, जान चुराना। **–छूटना**–हिम्मत टूटना, हताश होना। **–छोटा करना**–उत्साह कम करना; दिल छोटा करना। **–छोड़कर भागना**–बदहवास होकर भागना, साँस लेनेको भी न रुकना। **–छोड़ना**–हिम्मत हारना। **–जलना**–हृदयमें भारी दुःख, संताप होना, कुढ़ना। **–जलाना**–सताना; कुढ़ाना। **–जानता है (होगा)**–अपना ही दिल जानता-समझता है, बतानेसे दूसरा जान-समझ न सकेगा। **–जान लड़ाना**–दत्तचित्त होकर प्रयत्न करना; खूब मेहनत करना। **–जानसे**–पूरे दिलसे; पूरी शक्तिसे। **–०फ़िदा होना**–पूरे दिलसे आशिक होना, तन-मन वार देना। **–टँगा रहना या होना**–किसी बातकी चिंता लगी रहना, खटका बना रहना। **–टूट जाना**–हिम्मत या उत्साह न रह जाना। **–ठंडा होना**–दे० 'कलेजा ठंडा होना'। **–डूबना**–बेहोशी-सी होना, दिल-दिमागका बहुत सुस्त हो जाना। **–तरसना**–किसी चीजको पाने, भोगनेके लिए दिलका बेचैन होना। **–दहलना**–दे० 'दिल दहलना'। **–दुखाना**–चित्तको क्लेश पहुँचाना, दिल दुखाना। **–देना**–न्योछावर होना, प्राण दे देना; बहुत ज्यादा प्यार करना। **–धँसा जाना**–दे० 'जी बैठा जाना'। **–धक-धक करना**–भयसे घबराना, दिल धड़कना। **–निढाल होना**–चित्तका व्याकुल होना। **–पक जाना** किसी कष्टकर बातसे जी ऊब जाना, किसी कष्टका असह्य हो जाना। **–पर आ बनना**–प्राणोंकी रक्षा करना भी कठिन हो जाना। **–पर खेलना**–दे० 'जानपर खेलना'। **–पानी होना**–चित्तका दयासे द्रवित हो जाना। **–फट जाना**–दे० 'दिल फट जाना'। **–बँटना**–दिलका (किसी चिंता, सोचको भूलकर) दूसरी बातमें लग जाना, ध्यानका दूसरी ओर चला जाना। **–बढ़ना**–दे० 'दिल बढ़ना'। **–बढ़ाना**–दे० 'दिल बढ़ाना'। **–बहलना**–चित्तका किसी बातमें लगकर दुःख भूल जाना, प्रसन्नता अनुभव करना। **–बहलाना**–चित्तको किसी प्रिय, प्रसन्नताजनक कार्यमें लगाना। **–बिगड़ना**–जी मतलाना; घिन लगना। **–बैठ जाना**–दिल डूबना; चित्तका अति खिन्न होना। **–बैठा जाना**–चिंता, कमजोरी आदिसे साहसकी कमी या शिथिलताका अनुभव होना। **–भर आना**–दे० 'दिल भर आना'। **–भरकर**–जितना जी चाहे; यथेच्छ। **–भरना**–तृप्ति होना, अघाना; घिन न लगना; दिलजमई करना। **–भारी होना**–अनमना होना, तबीयत सुस्त होना। **–भिटकना**–घिन लगना। **–मतलाना**–मतली होना, वमनका उसवास होना। **–में आना**–इच्छा होना; विचार उठना। **–में खुभना,–में गड़ना**–मनमें बस जाना। **–में जलना**–मनमें कुढ़ना, जलना। **–में धरना**–दे० 'जीमें रखना'। **–में बसना**–दिलमें घर कर लेना, सदा याद रहना। **–में बैठना**–हृदयपर अंकित हो जाना; ठीक लगना। **–में रखना**–याद रखना; खयाल करना; बुरा मानना। **–लगना**

–दिल लगना । **–लगाना**–दिल लगाना । **–लगा होना**–ध्यान बना रहना, चिंता लगी रहना । **–लरजना**–कलेजा काँपना । **–ललचाना**–किसी चीजको पाने, भोगनेकी प्रबल इच्छा होना; मनमें लोभ या लालच पैदा करना । **–लेना**–मन टटोलना, रुख जाननेका यत्न करना; प्राण लेना । **–लोट जाना,–लोटना**–किसी चीजके लिए दिलका बेचैन हो जाना । **–सन्न होना**–चित्त स्तब्ध हो जाना, होश उड़ जाना । **–से जाना**–मर जाना ।

ज़ी–वि॰ (अ॰) मालिक, रखनेवाला । **–शऊर**–वि॰ समझदार, शऊरदार । **–शान**–वि॰ शानवाला ।

जीअ, जीउ*–पु॰ दे॰ 'जी', 'जीव' ।

जीअन*–पु॰ दे॰ 'जीवन' ।

ज़ीक़ाद–पु॰ (अ॰) हिजरी सन्‌का ग्यारहवाँ महीना ।

जीगन*–पु॰ दे॰ 'जीँगन' ।

जीग़ा–पु॰ (फा॰) कलगी, सिरपेच ।

जीजा–पु॰ बड़ी बहनका पति ।

जीजी–स्त्री॰ बड़ी बहन, दीदी ।

जीट–स्त्री॰ डींग ।

जीत–स्त्री॰ युद्ध, बाजीके खेल, मुकदमे, प्रतियोगिता आदिमें मिलनेवाली सफलता, जय, फतह; लाभ । **–हार**–स्त्री॰ दे॰ 'हार-जीत' ।

जीतना–स॰ क्रि॰ युद्ध, मुकदमा, खेल, प्रतियोगिता आदिमें शत्रु या विपक्षीको हराना, जयलाभ करना; दमन करना, वशमें लाना (मन, इंद्रिय आदिको) ।

जीता–वि॰ जीता हुआ; जिंदा; तौल या नापसे थोड़ा अधिक (तौलना) । (स्त्री॰ 'जीती' ।)**–जागता**–वि॰ भला-चंगा, सशक्त, सतेज, सजीव । **–नाखुन**–पु॰ मांससे लगा हुआ नाखुन । **–लहू**–पु॰ ताजा लहू । **–लोहा**–पु॰ चुंबक । **मु॰ जीती मक्खी निगलना**–जान बूझकर कोई दोष करना, न करने लायक बात करना । **जीते जी**–जिंदा रहते हुए, मौजूदगीमें; जिंदगीभर । **–॰मर जाना**–जीवन्मृत हो जाना, किसी भारी शोक, आघातसे मनका मर जाना, निरानंद, निरुत्साह हो जाना । **जीते-मरते**–किसी तरह, बड़ी कठिनाईसे । **जीते रहो**–बहुत दिन जियो (आशीर्वाद) ।

जीतालू–पु॰ आरारोट ।

जीति–स्त्री॰ (सं॰) विजय; क्षति, क्षय ।

जीन–वि॰ (सं॰) जीर्ण, क्षीण; वृद्ध । पु॰ चमड़ेका थैला ।

ज़ीन–पु॰ (फा॰) चारजामा, काठी; पलान; एक मोटा, कड़ा सूती कपड़ा । **–पोश**–पु॰ जीनके ऊपर डालनेका झालरदार कपड़ा, झूल । **–सवारी**–स्त्री॰ घोड़ेको सवारीके काममें लाना । **–साज**–पु॰ जीन बनानेवाला ।

जीन–पु॰ (अं॰) प्रत्येक स्पीशीज़के क्रामोसोममें एक नियत स्थिति पर पायी जानेवाली वंशानुगत क्रमसे प्राप्त नन्हीं इकाई ।

ज़ीनत–स्त्री॰ (अ॰) सजावट, शृंगार; शोभा । **–महल**–वि॰ महलकी शोभा, शृंगार-स्वरूप । **मु॰ –देना,–बख्शना**–शृंगार-रूप होना, शोभा बढ़ाना ।

जीना–अ॰ क्रि॰ जीवनकी अवस्थामें होना, देहमें प्राण या जीवका बना रहना, जिंदा होना; जीवनयात्रा करना (किसी चीजपर जीना –किसी चीजके सहारे जीना); प्रसन्न होना । **मु॰ जी उठना**–मरे हुएका जी जाना; सूखे हुएका हरा हो जाना । **जीना दूभर या भारी हो जाना**–जीवनका भाररूप या कठिन हो जाना । **जीनेका मज़ा**–जीवनका सुख ।

ज़ीना–पु॰ (फा॰) सीढ़ी, सोपान ।

जीप–स्त्री॰ (अं॰) एक तरहकी हलकी मोटरगाड़ी जो कच्चे मार्ग-पर भी ठिकानेसे चल सकती है ।

जीभ–स्त्री॰ मुँहके भीतर स्थित चपटा मांसल अंग जो रसज्ञान और मनुष्योंमें बोलनेकी क्रियाका साधन है, जिह्वा, रसना, जबान; कलमकी नोक जिससे लिखा जाता है । **मु॰–चलना**–तरह-तरहके स्वाद लेनेकी इच्छा होना । **–निकालना**–जबान बाहर करना; जबान खींचना । **–हिलाना**–बोलना, मुँह खोलना ।

जीभा†–पु॰ जीभ जैसी कोई वस्तु; चौपायोंकी जीभमें होनेवाला एक रोग; बैलोंकी आँखमें होनेवाला एक रोग ।

जीभी–स्त्री॰ ताँबे, पीतल आदिके पत्तरकी बनी चीज जिससे जीभका मैल साफ करते हैं; जीभ साफ करनेकी क्रिया; छोटी जीभ; चौपायोंका एक रोग; क़लमकी निब; लगामका एक भाग । **–चाभा**–पु॰ चौपायोंका एक रोग ।

जीमट–पु॰ पेड़-पौधोंकी शाखा, टहनी आदिके अंदरका गूदा ।

जीमना–स॰ क्रि॰ भोजन करना ।

जीमूत–पु॰ (सं॰) बादल; पर्वत; इंद्र; सूर्य; नागरमोथा; देवताड़ वृक्ष; पोषण करनेवाला; एक ऋषि । **–कूट**–पु॰ पर्वत । **–केतु**–पु॰ शिव । **–मुक्ता**–स्त्री॰ बादलसे पैदा होनेवाला मोती (संस्कृतके रत्नपरीक्षा-विषयक ग्रंथोंमें इसका वर्णनमात्र मिलता है) । **–मूल**–पु॰ शटी, गंधमूली । **–वाहन**–पु॰ इंद्र (मेघ है वाहन जिसका); शालिवाहनका पुत्र । **–वाही(हिन्)**–पु॰ धुआँ ।

जीय*–पु॰ दे॰ 'जी', 'जीव' । **–दान**–पु॰ प्राणदान ।

जीयट†–पु॰ दे॰ 'जीवट' ।

जीयति*–स्त्री॰ जीवन ।

जीर–पु॰ (सं॰) जीरा; फूलका जीरा; खड्ग; अणु; * जिरह, कवच । वि॰ क्षिप्र; तेज चलनेवाला; * जीर्ण, जर्जर ।

जीरक, जीरण–पु॰ (सं॰) जीरा ।

जीरण, जीरन*–वि॰ दे॰ 'जीर्ण' ।

जीरना*–अ॰ क्रि॰ जीर्ण होना; कुँभलाना; फटना ।

जीरा–पु॰ एक सुगंधित बीज जो मसाले और दवाके रूपमें भी काममें लाया जाता है (यह सफेद और स्याह दो तरहका होता है); इसका पौधा; जीरेकी शक्लका बीज; फूलका केसर ।

जीरिका–स्त्री॰ (सं॰) एक घास, वंशपत्री ।

जीर्ण–वि॰ (सं॰) बूढ़ा, जरायुक्त; पुराना, दिनी; फटा पुराना; ढहता हुआ, जर्जर, क्षयप्राप्त; पचा हुआ । पु॰ वृद्ध व्यक्ति; वृक्ष; जीरा; शिलाजतु; बुढ़ापा; क्षीणता । **–ज्वर**–पु॰ पुराना बुखार, अधिक दिनसे रहनेवाला मंदज्वर; बारह दिनसे अधिकका ज्वर (आ॰ वे॰) । **–दारु**–पु॰ विधारा । **–पत्र**–पु॰ पठानी लोध । **–पत्रिका**–स्त्री॰ वंशपत्री तृण । **–पर्ण**–पु॰ कदंब; पुराना पान । **–फंजी**–स्त्री॰ विधारा । **–बुध्न**–पु॰ जीर्णपत्र । **–वज्र**–पु॰ वैक्रांत मणि । **–वस्त्र**–पु॰ फटा-पुराना कपड़ा । वि॰ जो फटे-पुराने कपड़े पहने हो । **–वाटिका**–स्त्री॰ खँड़हर ।

जीर्णक–वि॰ (सं॰) करीब-करीब सूखा या मुरझाया हुआ ।

जीर्णा–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) वह स्त्री जो वृद्ध, जर्जर हो गयी हो । स्त्री॰ मोटा जीरा, स्याह जीरा (?) ।

जीर्णि–स्त्री॰ (सं॰) जीर्णता; पाचन ।

जीर्णोद्धार–पु॰ (सं॰) पुरानी, टूटी-फूटी चीजकी मरम्मत; पुराने मंदिर, कुएँ, तालाब आदिकी मरम्मत या सुधार ।

जीर्णोद्यान–पु॰ (सं॰) वह बगीचा जो पुराना हो जाने या सिंचाई आदि न होनेके कारण सूख, उजड़ रहा हो ।

जीर्वि–पु॰ (सं॰) कुठार; पशु; शरीर; शकट ।

जील–स्त्री॰ धीमी आवाज; तबले या ढोलका बायाँ ।

जीला*–वि॰ झीना, बारीक ।

जीलानी–वि॰ (फा॰) जीलान (गीलान)का । पु॰ एक तरहका लाल रंग ।

जीवंजीव–पु॰ (सं॰) चकोर; एक वृक्ष ।

जीवंत–वि॰ (सं॰) जीवित, जीता जागता; दीर्घायु । पु॰ प्राण; जीवन; औषध; जीवशाक, राजनि ।

जीवंतक–पु॰ (सं॰) जीवशाक ।

जीवंतिक–पु॰ (सं॰) दे॰ 'जीवंतक' ।

जीवंतिका–स्त्री॰ (सं॰) अन्य वृक्षोंपर रहकर फैलनेवाली लता, बाँदा; गुड़ुच; जीवंती; जीवशाक; पीली हड़; शमी ।

जीवंती–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) जीती हुई, जिंदा । स्त्री॰ दे॰ 'जीवंतिका' ।

जीव–पु॰ (सं॰) देहस्थित या देहावच्छिन्न चैतन्य, जीवात्मा; प्राण, जान; जीवन; प्राणी; लिंगदेह; जीविका; विष्णु; कर्ण; एक मरुत्; बृहस्पति; अश्लेषा और पुष्य नक्षत्र; बकायन;

जीवशाक। **–गृह**–पु० शरीर। **–घन**–पु० हिरण्यगर्भ। **–घाती(तिन्)**–वि० हिंसा करनेवाला (पशु)। **–जंतु**–पु० प्राणी; छोटे प्राणी, कीड़ा-मकोड़ा। **–जगत्**–पु० प्राणिसमष्टि। **–जीव**–पु० चकोर। **–तोका**–स्त्री० जीवत्पुत्रिका। **–द**–वि० जीवनदाता। पु० वैद्य; शत्रु; जीवंती। **–दान**–पु० प्राणदान। **–द्रव्य**–दे० क्रममें। **–धन**–पु० पशुधन, गाय-बैल, घोड़ा-हाथी आदि; प्रिय व्यक्ति। **–धानी**–स्त्री० धरती। **–धारी(रिन्)**–पु० प्राणी, जंतु। **–नेत्री**–स्त्री० सिंहली। **–न्यास**–पु० मंत्र द्वारा (मूर्ति आदिमें) प्राणप्रतिष्ठा। **–पति,–पत्नी**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीता हो। **–पत्र**–पु० नया पत्ता। **–पितृक**–वि० जिसका बाप जीता हो। **–पुत्रक**–पु० इंगुदी। **–पुत्रा,–वत्सा**–स्त्री० वह स्त्री जिसका बेटा जीता हो। **–पुष्पा**–स्त्री० बड़ी जीवंती। **–प्रभा**–स्त्री० आत्मा, रूह (केशवदास)। **–प्रिया**–स्त्री० हड़। **–बंद***–पु० दे० 'जीवबंधु'। **–बंधु**–पु० 'गुलदुपहरिया'। **–बलि**–स्त्री० पशु आदिकी बलि। **–भद्रा**–स्त्री० जीवंती लता। **–मंदिर**–पु० शरीर। **–मातृका**–स्त्री० सात देवियाँ जो माताके समान प्राणियोंका पालन-पोषण करनेवाली मानी जाती है (कुमारी, धनदा, नंदा, विमला, मंगला, बला और पद्मा)। **–याज**–पु० वह यज्ञ जिसमें पशुबलिका विधान हो। **–योनि**–स्त्री० जीवधारियोंकी योनि, जंगम योनि (मनुष्य, पशु-पक्षी आदि)। **–रक्त**–पु० स्त्रीका रज, आर्तव। **–ला**–स्त्री० सिंहपिप्पली। **–लोक**–पु० संसार, मर्त्यलोक, प्राणिजगत्। **–वल्ली**–स्त्री० क्षीरकाकोली। **–विज्ञान**–पु० जीव-जंतुओं तथा पौधोंकी रचना, वर्गीकरण, जीनेके ढंग आदिका विज्ञान, 'बायोलॉजी'। **–विषय**–पु० जीवन-विस्तार। **–वृत्ति**–स्त्री० पशुपालन, गाय-भैंस आदि पालनेका रोजगार; जीवके सहज गुण, (इच्छा, द्वेष, प्रयत्न आदि)। **–शाक**–पु० एक शाक जो मालव देशमें विशेष रूपसे होता है, सुसना। **–शुक्ला**–स्त्री० क्षीरकाकोली। **–शेष**–वि० जिसकी जानभर बची हो; जो सब कुछ छोड़कर केवल जान लेकर भाग आया हो। **–शोणित**–पु० स्वस्थ रक्त। **–श्रेष्ठा**–स्त्री० जीवभद्रा। **–संक्रमण**–पु० जीवका एक देह त्याग कर दूसरीमें जाना। **–संज्ञ**–पु० कामवृद्धि वृक्ष। **–साधन**–पु० धान्य, अनाज। **–सुता**–स्त्री० जीवत्पुत्रिका। **–सू**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी संतति जीती हो। **–स्थान**–पु० मर्मस्थान, हृदय। **–हत्या**–स्त्री० जीववध, जीवहिंसा। **–हिंसा**–स्त्री० प्राणिवध। **–हीन**–वि० जीवरहित, मुर्दा; जहाँ कोई जीव न हो, प्राणिशून्य।

जीव-ऊति परीक्षा–स्त्री० (बायोप्सी) जीवित प्राणीके शरीरके ऊतकोंकी डाक्टरी जाँच।

जीवक–पु० (सं०) प्राणधारक; अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि, क्षपणक; सेवक; सूदखोर; सँपेरा; एक वैद्य।

जीवट–पु० हिम्मत, साहस; बहादुरी।

जीवति*–स्त्री० जीविका।

जीवत्–वि० (सं०) दे० 'जीवन्'। **–तोका**–स्त्री० जीवत्पुत्रिका। **–पति, –पत्नी**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। **–पितृक**–पु० वह जिसका पिता अभी जीवित हो। **–पुत्रिका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पुत्र जीता हो; आश्विन-कृष्णाष्टमीका व्रत।

जीवथ–पु० (सं०) प्राण; कछुआ; मोर; मेघ; पुण्य, धार्मिकता। वि० धार्मिक; लंबी आयुवाला।

जीवद्–'जीवत्'का समासगत रूप। **–भर्तृका**–स्त्री० दे० 'जीवपत्नी'। **–वासा**–वि० स्त्री० जिसका पुत्र जीवित हो।

जीवद्रव्य–पु० (प्रोटोप्लाज्म) अर्द्धतरल, अर्द्धपारदर्शी, बिना रंगका पदार्थ जो ओषजन, उदजन, कार्बन तथा नत्रजनके मेलसे बनता है और जो ही जीवों तथा पौधोंमें जीवनका मूलाधार माना जाता है; अत्यन्त जटिल संरचनाका कोलाइडी पदार्थ जिसमें प्रोटीन सदृश यौगिक मौजूद होते हैं। यह सभी जीवोंकी कोशिकाओंमें अनिवार्य रूपसे पाया जाता है (प्रोटोप्लाज्म)।

जीवन–पु० (सं०) जीता रहना, प्राणधारण; जीवित दशा, जिंदगी; जीवनका आधाररूप वस्तु; प्राणी; जीविका; जल; वायु; पुत्र; परमात्मा; ताजा दूध; मक्खन; मज्जा; क्षुद्रफलक नामक पौधा; जीवक। वि० जीवनदाता, प्राणप्रद। **–कारण**–पु० जीवके वे कृत्य जो बिना इच्छाके स्वतः होते रहते हैं (न्या० द०)। **–क्रम**–पु० जीवनयात्रा, रहन-सहनका ढंग। **–चरित, चरित्र**–पु० जीवनवृत्तांत; वह पुस्तक जिसमें किसीका जीवनवृत्त लिखा हो। **–चर्या**–स्त्री० रहन-सहनका तरीका। **–तत्त्व**–पु० (विटामिन) दे० 'खाद्योज'। **–द**–वि० जीवनदाता। **–दर्शन**–पु० जीवन संबंधी विचार (उद्देश्य, व्यवहार, निर्वाह इ० विषयक)। **–दान**–पु० शत्रु या अपराधी आदिको प्राण न लेनेका वचन देना; देश या समाजकी सेवाके लिए जीवन अर्पित करना, लगाना। **–धन**–वि० जीवनका आधारभूत, सर्वस्वरूप (परमप्रिय, पति)। **–धर**–वि० जीवनरक्षक, जीवनदाता। **–नौका**–स्त्री० दे० 'जीवन-रक्षा-नौका'। **–बूटी**–स्त्री० (हिं०) सजीवनी बूटी। **–मरण**–पु० जीना-मरना, जिंदगी-मौत। **–मूरि**–स्त्री० (हिं०) संजीवनी बूटी; अति प्रिय वस्तु या जन। **–यापन-व्यय**–पु० (कॉस्ट ऑफ लिविंग) जीवन-निर्वाहका व्यय–भोजन, वस्त्र, निवास आदि-संबंधी वह सामान्य व्यय जो जीवनयापनके लिए आवश्यक होता है; निर्वाहव्यय। **–रक्षक नौका**–स्त्री० (लाइफ बोट) जहाज डूबते समय प्राण बचानेवाली विशेष प्रकारकी नौका, रक्षानौका। **–रक्षक पेटी**–स्त्री० (लाइफ बेल्ट) डूबनेसे बचनेके लिए बाँधी जानेवाली पेटी जिसमें हवा भरी रहती है या बड़ा-सा काग (कार्क) लटकता रहता है; रक्षापेटी। **–वृत्त,–वृत्तांत**–पु० जीवन-चरित। **–वृत्ति**–स्त्री० जीविका। **–संघर्ष**–पु० कठिन परिस्थितियोंमें अस्तित्व बनाये रखनेका भारी प्रयत्न। **–स्तर**–पु० (स्टैंडर्ड ऑफ लिविंग) रहन-सहनका वह तरीका, भौतिक सुख-सुविधाकी वह अल्पतम मात्रा, जिससे कोई व्यक्ति या वर्ग बुद्धिसंगत रूपसे संतुष्ट रह सके। **–हर**–वि० जीवनका हरण करनेवाला। **–हेतु**–पु० जीविका, रोजी।

जीवनक–पु० (सं०) अन्न; आहार।

जीवनांत–पु० (सं०) जीवनका अंत, मृत्यु।

जीवना–स्त्री० (सं०) मेदा नामकी जड़ी। * अ० क्रि० जीना।

जीवनाघात–पु० (सं०) विष।

जीवनार्ह–पु० (सं०) दूध, अन्न।

जीवनावास–पु० (सं०) वरुण; शरीर।

जीवनि*–स्त्री० संजीवनी बूटी; जिलानेवाली चीज; अति प्रिय वस्तु।

जीवनिका–स्त्री० (सं०) हरीतकी।

जीवनी–स्त्री० जीवनचरित; (सं०) मेदा; महामेदा; काकोली; डोडी; जीवंती।

जीवनीय–वि० (सं०) जीवनका आधाररूप। पु० जल; ताजा दूध। **–गण**–पु० पुष्टिकर औषधियोंका एक वर्ग (जीवंती, काकोली, मेदा, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, ऋषभक, जीवक और मधूक)।

जीवनीया–स्त्री० (सं०) जीवंती लता।

जीवनोपाय–पु० (सं०) जीविका।

जीवनौषध–स्त्री० (सं०) वह दवा जो मरतेको जिला दे।

जीवन्(त्)–वि० (सं०) जीता हुआ, जिंदा। **–मुक्त**–वि० जो जीवित दशामें ही आत्मज्ञान प्राप्त कर संसार-बंधनसे छूट गया हो। **–मुक्ति**–स्त्री० जीवन्मुक्तकी अवस्था, जीवित दशामें ही बंध-निवृत्ति। **–मृत**–वि० जो जीता हुआ भी मुर्दे जैसा हो, जिंदा-दरगोर।

जीवरा*–पु० जीव।

जीवरि*–स्त्री० जीवन धारण करनेकी शक्ति।

जीवांतक–पु० (सं०) बहेलिया। वि० जीवोंका वध करनेवाला।

जीवा–स्त्री० (सं०) धनुष्की डोरी; चापके दो सिरोंको मिलानेवाली रेखा जो केंद्रसे होकर न जाय, चापकर्ण, कॉर्ड; जल; पृथ्वी; जीविका; वचा; जीवंती; गहनेकी झनकार; जीवन।

जीवाजून*–पु० जीव-जंतु।

जीवाणु–पु० (सं०) क्षुद्रतम जीव; (बैक्टीरिया) विकारसे उत्पन्न होनेवाले अतिसूक्ष्म एक-कोषीय शाकाणु जिनमेंसे कितने ही तो रोगोंकी उत्पत्तिके कारण माने जाते हैं और कुछ शरीरके लिए लाभदायक भी होते हैं। **–नाशक**–वि० (बैक्टीरिसाइडल) जो

(रोगादि उत्पन्न करनेवाले) जीवाणुओंका नाश करनेमें समर्थ हो (दवा)। **-विज्ञान**-पु० (बैक्टीरियालॉजी) जीवाणुओंकी उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान। **-विद्, -वैज्ञानिक**-पु० (बैक्टीरियालॉजिस्ट) जीवाणुओं-संबंधी जानकारी रखनेवाला, जीवाणु-विज्ञान जाननेवाला।

जीवातु-पु० (सं०) आहार; जीवन, अस्तित्व; पुनर्जीवन; जीवनदायक औषध।

जीवात्मा(त्मन्)-पु० (सं०) जीव, देहस्थ चैतन्य, व्यष्टि आत्मा।

जीवादान-पु० (सं०) मूर्च्छा, बेहोशी।

जीवाधार-पु० (सं०) जीवका अधिष्ठान, हृदय।

जीवानुज-पु० (सं०) गर्गाचार्य।

जीवावशेष-पु० (फॉसिल) धरतीके भीतरी स्तरोंसे निकले हुए प्राचीन कालके जीवों, वनस्पतियों आदिके अवशिष्टांश, जीवाश्म।

जीवाश्म-पु० (फ़ॉसिल) प्रागैतिहासिक युगके पौधों तथा प्राणियोंके अवशेष जो बहुधा चट्टानोंमें दबी हुई अवस्थामें सुरक्षित रह गये।

जीवास्तिकाय-पु० (सं०) जीव या आत्माका एक प्रकार (जै०)।

जीविका-स्त्री० (सं०) जीवनयात्राकां साधन, रोजी, वृत्ति।

जीवित-वि० (सं०) जीता हुआ, जीवंत, जीवनयुक्त; जिसे पुनः जीवन मिला हो। पु० जीवन; जीवन-काल; जीविका; प्राणी। **-काल**-पु० आयु। **-ज्ञा**-स्त्री० धमनी। **-नाथ**-पु० पति। **-व्यय**-पु० जीवनकी आहुति। **-संशय**-पु० जीवनका खतरा।

जीवितव्य-वि० (सं०) जीवित रखने योग्य। पु० जीवित रहनेकी संभावना; जीवन।

जीवितांतक-पु० (स०) शिव।

जीवितेश-पु० (सं०) प्राणाधार; चंद्र; सूर्य; यम; एक जीवनदायक औषध; इड़ा, पिंगला नाड़ियाँ।

जीवितेश्वर-पु० (सं०) शिव।

जीवी(विन्)-वि० (सं०) जीनेवाला (-से जीनेवाला। केवल समासमें व्यवहृत-जैसे चिरजीवी, दीर्घजीवी, श्रमजीवी इ०)। पु० जीवधारी।

जीवेंधन-पु० (सं०) जलती हुई लकड़ी।

जीवेश-पु० (सं०) परमेश्वर।

जीवोपाधि-स्त्री० (सं०) जागर्ति, स्वप्न और सुषुप्तिकी अवस्थाएँ।

ज़ीस्त-स्त्री० (फा०) जीवन, ज़िंदगी।

जीह, जीहा*-स्त्री० दे० 'जीभ'-'...जो न उपारउँ तव दस जीहा' -रामा०।

जीहि, जीही*-स्त्री० दे० 'जीभ'।

जुंई-स्त्री० दे० 'जुईं'।

जुंग-पु० (सं०) वृद्धदारक या विधारा नामक वृक्ष।

जुंगित-वि० (स०) परित्यक्त। पु० चांडाल।

जुंबाँ-वि० (फा०) जुंबिश करनेवाला, हिलता हुआ।

जुंबिश-स्त्री० (फा०) गति, हरकत, हिलना।

जु*-अ०, सर्व० दे० 'जो'।

जुअती*-स्त्री० दे० 'युवती'।

जुआँ-पु० दे० 'जूँ'।

जुआ-पु० हल, बैलगाड़ी आदिमें जोते जानेवाले बैल या बैलोंके कंधेपर रखी जानेवाली लकड़ी, जाँतेकी मूठ; बाजी लगाकर खेला जानेवाला (ताश आदिका) खेल, द्यूत; सोलह चित्ती कौड़ियोंसे खेला जानेवाला इस तरहका खेल; दे० 'जूँ'। **-खाना**-पु० जुआ खेलनेका अड्डा। **-चोर**-पु० जीतकर भाग जानेवाला जुआड़ी; धोखेबाज। **-चोरी**-स्त्री० धोखेबाजी।

जुआठना†-स० क्रि० बैल इत्यादिको जुएमें जोतना, बाँधना।

जुआड़ी-पु० जुआ खेलनेवाला।

जुआर-स्त्री० दे० 'ज्वार'। * पु० दे० 'जुआड़ी'। **-भाटा**-पु० दे० 'ज्वारभाटा'।

जुआरा-पु० उतनी भूमि जितनी एक दिनमें एक हलसे जोती जा सके।

जुआरी-पु० जुआ खेलनेवाला।

जुईं-स्त्री० छोटी जूँ; मटर आदिमें लगनेवाला एक छोटा कीड़ा।

जुई-स्त्री० श्रुवा।

जुकाम-पु० (अ०) एक रोग जिसमें नाक बहती, कुछ ज्वर हो आता और सिर भारी हो जाता है, प्रतिश्याय। **मु०-बिगड़ना**-जुकामका सूख जाना।

जुकुट-पु० (सं०) कुत्ता; मलय पर्वत।

जुकिहारा-पु० जोंक लगानेवाला।

जुग-पु० युग; पीढ़ी; जोड़ा, युग्म; गुट्ट; चौसरकी गोटियोंका जोड़ा, एक घरमें बैठी हुई दो गोटियाँ। **-जुग**-अ० सदा, युगोंतक। **मु०-जुग जियो**-अनेक युगोंतक जीते रहो, लंबी आयु भोगो। **-टूटना, -फूटना**-दो इकट्ठी गोटियोंका अलग हो जाना; एका न रह जाना, फूट पड़ना।

जुगजुगाना-अ० क्रि० झिलमिलाना, टिमटिमाना; बढ़ना, संपन्नताकी ओर अग्रसर होना।

जुगजुगी-स्त्री० एक चिड़िया, शकरखोरा; जुगनू नामक आभूषण।

जुगत-स्त्री० युक्ति, उपाय; चतुराई। * वि० युक्त; संभव। **-बाक**-वि० जुगत बोलनेवाला। **मु०-लगाना**-जोड़-तोड़ भिड़ाना, युक्ति करना।

जुगती-वि० जोड़-तोड़ लगानेवाला, चतुर।

जुगनी-स्त्री० दे० 'जुगनू', * हार आदिमें लगा हुआ नग।

जुगनू-पु० एक कीड़ा, खद्योत (रातमें उड़नेपर इसकी दुमसे रोशनी निकलती है); गलेमें पहननेका एक गहना।

जुगम*-वि० दे० 'युग्म'।

जुगराफिया-(अं०) भूगोल।

जुगल-वि० दे० 'युगल'।

जुगवना-स० क्रि० थोड़ा थोड़ा बचा कर जोड़ना, इकट्ठा करना; सँभालकर रखना।

जुगाड़-पु० आवश्यक साधन या वस्तु जुटाने, कहींसे लाकर उपस्थित करनेकी क्रिया, कार्य-सिद्धिका उपाय या प्रयत्न।

जुगादरी-वि० बहुत पुराना, अति प्राचीन।

जुगाना†-स० क्रि० दे० 'जुगवना'।

जुगार-स्त्री० दे० 'जुगाली'।

जुगालना-अ० क्रि० जुगाली करना।

जुगाली-स्त्री० गाय-बैल आदिका निगले हुए चारेको थोड़ा-थोड़ा पेटसे मुँहमें लाकर फिरसे चबाना, रोमंथ, चर्वितचर्वण (व्यं०)।

जुगुत, जुगुति*-स्त्री० दे० 'युक्ति'।

जुगुप्सक-पु० (सं०) निंदा करनेवाला, निंदक।

जुगुप्सन-पु० (सं०) निंदा करना; घृणा करना।

जुगुप्सा-स्त्री० (सं०) निंदा; घृणा; बीभत्स रसका स्थायी भाव।

जुगुप्सित-वि० (सं०) निंदित; घृणित।

जुगुप्सु-वि० (सं०) निंदा, घृणा करनेवाला।

जुग्गिनी*-स्त्री० योगिनीपुरी, दिल्ली।

जुगुल*-वि० दे० 'युगल'।

जुगोना-स० क्रि० दे० 'जुगवना'।

जुज़-अ० (फा०)...के सिवा, वगैर, बिना। पु० (अ०) अंश, टुकड़ा; बहुत छोटा खंड; पुस्तकके अलग भाँजे और सिले हुए पन्ने, फार्म। **-दान**-पु० वह थैला जिसमें लड़के किताब बाँधकर मदरसे ले जाते हैं। **-बंदी**-स्त्री० किताबके जुजोंको जिल्दबंदीके लिए सीना; किताबकी सिलाई जिसमें एक-एक जुज या फार्म अलग-अलग सिला जाय। **-रस**-वि० सूक्ष्मदर्शी, तीक्ष्णबुद्धि; कंजूस; मितव्ययी। **-रसी**-स्त्री० सूक्ष्मदर्शिता; कंजूसी; किफायतशियारी। **-व कुल**-पु० अंश और संपूर्ण; सब, कुल।

जुजवी-वि० (अ०) बहुत थोड़ा; छोटा; आंशिक (-इख्तिलाफ़ -आंशिक मतभेद)।

जुज्झ*-पु० जूझना; युद्ध।

जुझवाना-स० क्रि० दे० 'जुझाना'।

जुझाऊ-वि० युद्ध-संबंधी; जूझनेको उत्साहित करनेवाला, मारू (-बाजा)।

जुझाना-स० क्रि० जूझनेको प्रेरित, उत्साहित करना।

जुझार*-वि० रणप्रिय, वीर। पु० युद्ध।

जुट-स्त्री० जोड़ा, युग्म; दो अभिन्न मित्र; गुट; दल, थोक।

जुटक-पु० (सं०) जटा; कबरी, जूड़ा।

जुटना–अ० क्रि० जुड़ना, संयुक्त होना; सटना, चिमटना, गुथना; जमा, इकट्ठा होना; पहुँचना; मयस्सर होना; (किसी काममें) मुस्तैदीसे लगना; संभोग करना; अभिसंधि करना ।

जुटली*–वि० वालोंकी लंवी लटोंवाला ।

जुटाना–स० क्रि० जोड़ना; पास पहुँचाना; इकट्ठा करना ।

जुटाव–पु० जमाव ।

जुटिका–स्त्री० (सं०) चुटैया; जूड़ा; एक तरहका कपूर ।

जुट्टी–स्त्री० पूला; गड्डी; जूड़ा; सूरन आदिका नया कल्ला ।

जुठारना, जुठालना–स० क्रि० जूठा कर देना; जूठा करके छोड़ देना ।

जुठिहारा–पु० जूठा खानेवाला ।

जुड़ना–अ० क्रि० जोड़ा जाना, संयुक्त होना; इकट्ठा होना, जुटना; किसी तरह उपलब्ध होना ।

जुड़पित्ती–स्त्री० एक रोग जिसमें वदनमें खुजली होती और वड़े-वड़े ददोरे निकल आते हैं, पित्ती; ('शीत'–वुंदेल०) ।

जुड़वाँ–वि० जुड़े हुए, यमल । पु० एक साथ पैदा हुए दो वच्चे ।

जुड़वाई–स्त्री० दे० 'जोड़वाई' ।

जुड़वाना†–स० क्रि० ठंडा करना; तृप्त करना; दे० 'जोड़वाना' ।

जुड़ाना†–अ० क्रि० ठंडा होना । स० क्रि० ठंडा करना ।

जुड़ावना*–स० क्रि० ठंडा करना ।

जुत*–वि० दे० 'युक्त' ।

जुतना–अ० क्रि० जोता जाना; लगना; जुटना ।

जुतवाना–स० क्रि० जोतनेका काम कराना; घोड़े, वैल आदिको नधवाना ।

जुताई–स्त्री० जोतनेकी क्रिया या भाव; जोतनेकी उजरत ।

जुताना–स० क्रि० दे० 'जोताना' ।

जुतिऔवल–स्त्री० आपसमें जूतोंसे मारपीट करना ।

जुतियाना–स० क्रि० जूते लगाना; वुरी तरह अपमानित करना, जलील करना ।

जुत्थ*–पु० दे० 'यूथ' ।

जुदा–वि० (फा०) अलग; भिन्न; निराला । **–ई**–स्त्री० पृथक्ता, वियोग, विलगाव । **–गाना**–अ० अलग-अलग ।

जुद्ध*–पु० दे० 'युद्ध' ।

जुनून–पु० (अ०) दे० 'जनून', पागलपन ।

जुनूव–पु० (अ०) दे० 'जनूव', दक्खिन ।

जुन्हरी†–स्त्री० ज्वार ।

जुन्हाई–स्त्री० चाँदनी, चंद्रिका ।

जुन्हैया*–स्त्री० दे० 'जुन्हाई' । पु० चंद्रमा–'···भैया मैया वोलत जुन्हैयाको लखावै री'–दीनदयाल ।

जुफ्त–पु० (फा०) जोड़ा, दो, समसंख्या ।

जुवराज*–पु० दे० 'युवराज' ।

जुवली–स्त्री० (अं० 'जुबिली') उत्सव; जयंती, (२५ वीं, ५० वीं, ६० वीं) वरस-गाँठका उत्सव (२५ वीं–सिल्वर जुवली, रजत-जयंती; ५० वीं–गोल्डेन जुवली, स्वर्ण-जयंती; ६० वी –डायमंड जुवली, हीरक-जयंती) ।

जुवाद*–पु० एक तरहकी कस्तूरी ।

ज़ुवान–स्त्री० दे० 'ज़वान' ।

ज़ुवानी–वि० दे० 'ज़वानी' ।

जुमला–वि० (अ०) कुल, तमाम, सव । पु० जोड़; वाक्य ।

जुमहूर–पु० (अ०) जनसमुदाय, जनता, लोक ।

जुमहूरी–वि० लोक-संचालित, लोकसत्तात्मक । **–सल्तनत**–स्त्री० लोकतंत्र, प्रजातंत्र राज्य ।

जुमा–पु० (अ०) शुक्रवार । **–मस्जिद**–स्त्री० वह मस्जिद जिसमें शुक्रवारको दोपहरमें सामूहिक नमाज पढ़ी जाय । **–(मे)रात**–स्त्री० गुरुवार । **–राती**–वि० जुमेरातको जनमा हुआ (मुसलमानोंमें प्रचलित नाम) । **मु०–जुमा आठ दिन**–थोड़े दिन, चंद रोज ।

जुम्मा†–पु० दे० 'जुमा' ।

जुयाँग–पु० उड़ीसाकी एक जंगली जाति ।

जुर*–पु० ज्वर ।

जुरअत–स्त्री० (अ०) वहादुरी, मर्दानगी; साहस (करना, दिखाना) ।

जुरना*–अ० क्रि० दे० 'जुड़ना'; भिड़ना–'लवसों न जुरो लवणासुर भोरें'–रामचंद्रिका ।

जुरमाना–पु० दे० 'जुर्माना' ।

जुरा*–स्त्री० जरा, वुढ़ापा; मृत्यु ।

जुराना*–अ० क्रि० ठंडा होना । स० क्रि० ठंडा करना; एकत्र करना ।

जुराफा–पु० दे० 'जिराफ़ा' (इसका जोड़ा विछुड़ते ही नर-मादा दोनोंकी मृत्यु हो जाती है) ।

जुराव–स्त्री० दे० 'जुर्राव', मोजा ।

जुरावना*–स० क्रि० दे० 'जुराना' ।

जुरी–स्त्री० जूड़ी; हरारत ।

जुर्म–पु० (अ०) अपराध, वह काम जो कानूनमें दंडनीय माना गया हो । **–ख़फ़ीफ़**–पु० छोटा, साधारण अपराध । **–शदीद**–पु० भारी अपराध ।

जुर्माना–पु० वह रकम जो किसी अपराधके दंडरूपमें देनी पड़े, अर्थदंड ।

जुर्रत–स्त्री० दे० 'जुरअत,' वहादुरी, साहस ।

जुर्रा–पु० (फा०) नर वाज ।

जुर्राव–स्त्री० (तु०) मोजा ।

जुल–पु० झाँसा, चकमा । **–वाज़**–वि० धोखा देनेवाला ।

जुलकरन*–पु० (अ० 'जुलकरनैन') सिकंदरकी उपाधि ।

जुलजुल–वि० अत्यन्त जर्जर, जीर्ण-शीर्ण (–वुढिया) ।

जुलना–अ० क्रि० मिलना (केवल मिलनाके साथ प्रयुक्त) ।

जुलपित्ती–स्त्री० एक रोग जिसमें शरीरपर लाल-लाल चकत्ते निकल आते हैं, दे० 'जुड़पित्ती' ।

जुलफ, जुलुफ*–स्त्री० दे० 'जुल्फ' ।

जुलाई–स्त्री० (अं०) ईसवी सनका सातवाँ महीना जो असाढ़-सावनमें पड़ता है ।

जुलाव–पु० दस्त लानेवाली दवा, विरेचन ।

जुलाहा–पु० कपड़ा वुननेवाला, तंतुवाय; पानीपर तैरनेवाला एक कीड़ा; एक वरसाती कीड़ा । (स्त्री० 'जुलाहिन' ।) **मु०** **–(हे)का तीर**–झूठी वात । **–की-सी दाढ़ी**–छोटी, नोकदार दाढ़ी ।

जुलुम–पु० जुल्म, अत्याचार ।

जुलूस–पु० (अ०) वैठना; तख्तनशीनी, राज्यारोहण (करना, फरमाना); राजा, वादशाहकी सवारी; वहुतसे लोगोंका इकट्ठा होकर समारोहके साथ कहीं जाना या नगरभ्रमण (निकलना, निकालना) ।

जुलोक*–पु० द्युलोक, सुरलोक, वैकुंठ ।

ज़ुल्फ–स्त्री० (फा०) पट्टा, काकुल, गेस । **–गिरहगीर**–स्त्री० घूंघरवाले वाल । **–परीशाँ**–स्त्री० विखरे हुए वाल ।

ज़ुल्फ़ी–स्त्री० दे० 'जुल्फ़' ।

ज़ुल्म–पु० (अ०) अन्याय; जवरदस्ती; अत्याचार, अंधेर; आफत । **–दोस्त,–पसंद** –वि० अत्याचारप्रिय, अत्याचारी । **–रसीदा**–वि० अत्याचार-पीड़ित । **–व(ल्मो)सितम**–पु० अत्याचार । **मु० –ढाना,–तोड़ना**–अत्याचार करना ।

ज़ुल्मत–स्त्री० (अ०) अँधेरा; अंधकारकी कालिमा ।

ज़ुल्मात–पु० (अ०) अंधकार ('जुल्मत'का वहु०); वह अंधकार-पूर्ण स्थान जहाँ अमृत रहता है (मुसल०) ।

ज़ुल्मी–वि० जालिम, अत्याचारी ।

जुल्लाव–पु० (अ०) जुलाव, विरेचन ।

जुवराज*–पु० दे० 'युवराज' ।

जुवा–पु० दे० 'जुआ' ।

जुवार–स्त्री० दे० 'ज्वार' । * पु० दे० 'जुआड़ी' । **–भाटा**–पु० दे० 'ज्वार-भाटा' ।

जुवारी–पु० दे० 'जुआरी' ।

जुव्वन*–पु० यौवन–'दिन-दिन अवद्धि जुव्वन घटय, कंत-वसंत न गम करहु'–रासो ।

जुष्ट–वि० (सं०) सेवित; युक्त; जूठा; प्रिय । पु० जूठन, उच्छिष्ट ।

जुष्य–वि० (सं०) पूज्य, सेव्य ।

जुसाँदा|–पु० दे० 'जोशाँदा' (काढ़ा) ।

जुस्तजू–स्त्री० (फा०) खोज, तलाश ।

जुहाना*–स० क्रि० इकट्ठा करना; संयोजन करना । अ० क्रि० एकत्र होना –'महाभीर भूपतिके द्वारे लाखन विप्र जुहाने'–रघुराज सिंह ।

जुहार–स्त्री० अभिवादनका एक प्रकार, प्रणाम ।

जुहारण*–पु० नमस्कार, प्रणाम (बीसल०) ।

जुहारना–स० क्रि० अभिवादन करना ।

जुहावना*–स० क्रि० एकत्र करना ।

जुही–स्त्री० दे० 'जूही' ।

जुहुराण–पु० (सं०) चंद्रमा । वि० कुटिलता करनेवाला ।

जुहुवान–पु० (सं०) अग्नि; वृक्ष; निष्ठुर व्यक्ति ।

जुहू–स्त्री० (सं०) पलासकी लकड़ीका बना हुआ यज्ञपात्र; पूर्वदिशा । **–राण,–वाण**–पु० अग्नि; अध्वर्यु; चंद्रमा ।

जुहूर–पु० (अ०) प्रकट होना; नुमाइश ।

जुहूवान्(वत्)–पु० (सं०) अग्नि ।

जूँ-स्त्री० मैल और पसीना मरनेसे सिरके बालोंमें पैदा हो जानेवाला एक नन्हा कीड़ा, ढील । मु० **(कानोँपर)–न रेँगना**–स्थितिपर ध्यान न जाना, होश न होना ।

जूँठ, जूँठा–वि० उच्छिष्ट । पु० उच्छिष्ट पदार्थ ।

जूँठन–स्त्री० दे० 'जूठन' ।

जूँरा*–स्त्री० जरा ।

जू–स्त्री० (सं०) वातावरण; राक्षसी; सरस्वती; वायु; बैल या घोड़ेके माथेपरका टीका; तीव्र गमन; वेग । * अ० नामके साथ लगाया जानेवाला आदरसूचक शब्द, 'जी'का व्रज, बुंदेलखंडी आदि भाषाओंमें प्रचलित रूप ।

जूआ–पु० दे० 'जुआ' ।

जूजू–पु० बच्चोंको डरानेके लिए कल्पित जीव, हौआ ।

जूझ*–पु० युद्ध ।

जूझना–अ० क्रि० लड़ना; लड़ते हुए मर जाना ।

जूट–पु० (सं०) जूड़ा, जटा; (अं०) पटसन; पटसनका बना कपड़ा । **–मिल**-स्त्री० दे० 'चटकल' ।

जूटना*–स० क्रि० जोड़ना, मिलाना । अ० क्रि एकत्र होना, प्रवृत्त, होना; लगना ।

जूटि*–स्त्री० संधि, मेल; जोड़ी ।

जूठन–स्त्री० खाकर छोड़ा हुआ भोजन, उच्छिष्ट; इस्तेमाल की हुई चीज ।

जूठा–वि० खाकर छोड़ा हुआ, जुठारा हुआ, उच्छिष्ट; जिसमें खाया-पिया गया हो (बरतन, चौका); जिसमें जूठा लगा हो (हाथ, मुँह); * झूठा । पु० जूठन । मु० **–(ठे) हाथसे कुत्ता न मारना**–पक्का मक्खीचूस होना ।

जूड़*–वि० शीतल; प्रसन्न । पु० दे० 'जूड़ा' ।

जूड़ा–पु० सिरके बाल जो लपेटकर बाँध दिये गये हों, जूट; चोटी; गेँडुरी; बच्चोंका एक रोग, हलफा ।

जूड़ी–स्त्री० जाड़े और कंपके साथ आनेवाला ज्वर, जड़ैया बुखार ।

जूता–पु० चमड़े, किरमिच, रबर आदिका बना हुआ पादत्राण, उपानह, पापोश । **–ख़ोर**–वि० पीटे जानेका आदी, लतख़ोर, बेहया । **चाँदीका**–घूस आदिके रूपमें दिया गया धन । मु०**–उछलना**–मार-पीट होना, जूती-पैजार होना । **–उठाना**–जूता मारनेको तैयार होना । **(किसीका)–उठाना**–नीच सेवा करना । **–(ते)खाना**–जूतेसे पीटा जाना; जलील होना । **–गाँठना**–जूतोंकी मरम्मत करना; नीच काम करना । **–चलना**–दे० 'जूता उछलना' । **–चाटना**–जलील खिदमत करना; चापलूसी करना । **–पड़ना,–बरसना**–जूतोंकी मार पड़ना । **–मारना**–जूते लगाना; जलील करना; मुँहतोड़ जवाब देना । **–लगना**–जूते पड़ना; नुकसान होना, घाटा पड़ना; अपमानित होना । **–लगाना**–जूते मारना; अपमानित करना, लथेड़ना । **–(ते, तोँ) से खबर लेना**–जूतेसे पीटना । **–से बात करना**–जूते लगाना ।

जूति–स्त्री० (सं०) वेग; तेजी; उत्तेजन, प्रोत्साहन; प्रवृत्ति ।

जूतिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका कपूर ।

जूतिया–पु० जीवत्पुत्रिका व्रत ।

जूती–स्त्री० जनाना जूता; जूता । **–कारी**–स्त्री० जूतोंकी मार । **–ख़ोर,–ख़ोरा**–वि० जूते खानेका आदी; लात-जूतोंकी परवाह न करनेवाला, निर्लज्ज । **–छिपाई,–छुपाई**–स्त्री० ब्याहमें, कोहबरमें या दुलहिनकी बिदाईके समय सालियोंका वरके जूते छिपा देना और नेग लेकर देना; जूते छिपाने और लौटानेका नेग । **–पैज़ार**–स्त्री० जूता चलना, मार-पीट; गंदी लड़ाई । मु० **–की नोकपर मारना**–कुछ न समझना । **–की नोकसे**–(मेरी) बलासे, कुछ परवाह नहीं (वह नहीं आते तो मेरी जूतीकी नोकसे–स्त्रि०) । **–के बराबर न समझना**–तुच्छ, हेय या कुछ न समझना । **–(तियाँ)उठाना**–नीच सेवा करना । **–गाँठना**–फटी-पुरानी जूतियोंकी मरम्मत करना; हीन कार्य करना । **–चटखाते फिरना**–मारा-मारा फिरना । **–बगलमें दबाना**–धीरेसे खिसक देना । **–मारना**–दे० 'जूते मारना' । **–लगाना**–दे० 'जूते लगाना' । **–सिरपर रखना**–चापलूसी करना । **–सीधी करना**–नीच सेवा करना । **(किसीकी)–(तियोँ)का सदका**–(किसीके) चरणोंका प्रसाद (कृतज्ञता-ज्ञापनका अति विनीत प्रकार) । **–दाल बँटना**–लड़ाई-झगड़ा होना, आपसमें जूती-पैजार होना ।

जूथ*–पु० दे० 'यूथ' ।

जूथका, जूथिका*–स्त्री० दे० 'यूथिका', जूही ।

जूद–वि० (फा०) तेज, द्रुत । अ० जल्दी, झट । **–फ़ह्म**–वि० बातको झट समझ लेनेवाला, तीक्ष्णबुद्धि ।

जून–पु० वेला, वक्त; दिनका अर्द्ध भाग; तृण; (अं०) ईसवी सन्‌का छठा महीना । * वि० जीर्ण, पुराना ।

जूना–पु० तिनके बटकर बनायी हुई रस्सी; उबसन; एक पौधा । वि० पुराना ।

जूप*–पु० जुआ, द्यूत; विवाहमें वर-वधूके जुआ खेलनेकी एक रीति; दे० 'यूप' ।

जूपी*–पु० यज्ञस्तंभ (यूप)से बँधा हुआ पशु, बलिपशु ।

जूमना*–अ० क्रि० जुटना, इकट्ठा होना । स० क्रि० इकट्ठा करना ।

जूर*–पु० जोड़; ढेर ।

जूरना*–स० क्रि० जोड़ना, इकट्ठा करना । अ० क्रि० इकट्ठा होना; जुरना, उपलब्ध होना ।

जूरा*–पु० दे० 'जूड़ा' ।

जूरी–स्त्री० पूला, जुट्टी; एक तरहकी पकौड़ी; (अं०) पंचोंका मंडल जो फौजदारी मुकदमेमें अभियुक्तके अपराधी होने या न होनेके संबंधमें जजको अपनी राय देता है । पु० इसके सदस्य ।

जूर्णाख्य–पु० (सं०) एक तृण, दर्भ ।

जूर्णाह्वय–पु० (सं०) देवधान्य ।

जूर्णि–स्त्री० (सं०) वेग; क्रोध; स्त्रियोंका एक रोग । पु० ब्रह्म; आदित्य । वि० वेगवान्; तपानेवाला; स्तुति-कुशल (वै०) ।

जूर्ति–स्त्री० (सं०) ज्वर ।

जूलाई–स्त्री० दे० 'जुलाई' ।

जूवा*–पु० युवा, तरुण ।

जूष–पु० (सं०) जूस ।

जूष्ण–पु० (सं०) एक पुष्पवृक्ष, धाय ।

जूस–पु० दाल या तरकारीको उबालकर निकाला हुआ पानी; रोगीको दिया जानेवाला पथ्य (देना, लेना); रसा; † दे० 'जुफ़्त' । **–ताक**–पु० लड़कोंका एक खेल ।

जूसी–स्त्री० राबके ऊपर छूटने या शकर बनानेमें उसके मैल और नमीके रूपमें निकलनेवाला शीरा, चोटा ।

जूह*–पु० दे० 'यूथ' ।

जूहर–पु० दे० 'जौहर' ।

जूही–स्त्री० एक पौधा जिसके फूल बहुत छोटे, सुकुमार और बड़ी मधुर गंधवाले होते हैं; एक आतिशबाजी; मटर आदिमें लगनेवाला एक कीड़ा ।

जृंभ–पु० (सं०) जम्हाई; फैलाव; खिलना ।

जृंभक–वि० (सं०) जंभाई लेनेवाला; सुस्त करनेवाला । पु० एक अस्त्र; एक रुद्रगण ।

जृंभकास्त्र–पु० (सं०) जृंभक नामक अस्त्र जिसका प्रयोग करनेसे शत्रुको जँभाई आने लगती है, वह शिथिल पड़ जाता है।

जृंभण–पु० (सं०) जम्हाई लेना; फैलना; खिलना।

जृंभा–स्त्री० (सं०) दे० 'जृंभ'; आलस्यसे उत्पन्न सात्विक अनुभाव।

जृंभिका–स्त्री० (सं०) जम्हाई; आलस्य।

जृंभिणी–स्त्री० (सं०) एलापर्णी लता।

जृंभित–वि० (सं०) जिसने जम्हाई ली हो; फैला हुआ; फैलाया हुआ; चेष्टित; खिला हुआ।

जृंभी(भिन्)–वि० (सं०) जम्हाई लेनेवाला; विकसित होनेवाला।

जेँगना*–पु० जुगनू–'जेंगनाकी जोति कहा रजनी बिलात है'–सुंदरदास।

जेंटिलमैन–पु० (अं०) कुलीन, शरीफ, नेक आदमी, सज्जन; टीमटामसे रहनेवाला, सभ्य वेश-भूषावाला आदमी, भद्र पुरुष।

जेंताक–पु० (सं०) गरम कमरा या इस प्रकारका अन्य साधन जिससे गरमी पहुँचाकर पसीना निकाला जाय।

जेँना*–स० क्रि० दे० 'जीमना'।

जेँवन–पु० खानेकी चीज या कार्य।

जेँवना–स० क्रि० दे० 'जीमना'। † पु० भोजन।

जेँवनार–स्त्री० दे० 'जेवनार'।

जेँवाना–स० क्रि० भोजन कराना।

जे*–सर्व० 'जो'का बहु०।

जेइ, जेउ, जेऊ*–सर्व० दे० 'जो'।

जेट–स्त्री० ढेर; गोद।

जेट इंजन–पु० (जेट इंजिन) जेट नोदन सिद्धान्तपर आधारित इंजन। इसमें सामनेसे वायु भीतर सुड़की जाती है जो पीछेके दहनकोष्टमें ईंधनका दहन करके तप्त गैस उत्पन्न करती है जो पीछे तीव्र वेगसे भागती है–इसकी प्रतिक्रियासे इंजन सामनेकी ओर भागता है।

जेट विमान–पु० वायुयान जो तेजीसे हवा फेंकते हुए आगे बढ़ता है।

जेटी–स्त्री० पानीके ऊपर बना हुआ लकड़ी आदिका चबूतरा जिसपरसे जहाजपर माल चढ़ाया-उतारा जाता है।

जेठंस–पु०, **जेठंसी**–स्त्री० बड़े भाईका हिस्सा; बड़े भाईका बपौतीमें बड़ा हिस्सा पानेका हक; ज्येष्ठांश।

जेठ–वि० ज्येष्ठ, उम्रमें बड़ा। पु० पतिका बड़ा भाई; वैसाख और असाढ़के बीच पड़नेवाला चांद्र मास।

जेठा–वि० बड़ा, ज्येष्ठ; श्रेष्ठ। **–ई**–स्त्री० जेठा होना, जेठापन।

जेठानी–स्त्री० पतिके बड़े भाईकी स्त्री।

जेठी–वि० जेठका; जेठमें होनेवाला (–धान, कपास इ०)। स्त्री० एक तरहका कपास; * जेठानी।

जेठीमधु–पु० मुलेठी।

जेठौत, जेठौता–पु० पतिके बड़े भाई याने जेठका लड़का।

जेतव्य–वि० (सं०) जीतने योग्य, जेय।

जेता*–वि० जितना।

जेता(तृ)–वि० (सं०) जीतनेवाला; विजयी। पु० विष्णु।

जेतिक*–अ० जितना।

जेते*–वि० जितने।

जेतो*–अ० जितना।

ज़ेन बौद्धधर्म–जापानी बौद्धधर्मकी एक विशिष्ट शाखा जो बाह्य पदार्थमूलक जीवनको नकार कर व्यक्तिचेतनाके विकास द्वारा आत्मसाक्षात्कारमें विश्वास रखती है। यूरोप, अमेरिका और एशियाके अनेक बौद्धिक इससे प्रभावित हैं।

जेनरल–वि० (अं०) आम, सामान्य; बड़ा, प्रधान (–पोस्ट आफिस,–हास्पिटल इ०)। पु० सेनानायक; फौजका एक अफसर जिसका पद प्रधान सेनापतिके नीचे होता है। **–इलेक्शन**–पु० आम चुनाव। **–मरचेंट**–पु० बहुत तरहका, बिसातखानेका सामान बेचनेवाला। **–सेक्रेटरी**–पु० प्रधान सचिव, महासचिव।

जेना–स० क्रि० दे० 'जीमना'।

जेप्लिन–पु० (अं०) विशाल, युद्धोपयोगी हवाई जहाज जिसे पहले पहल जर्मनीके काउंट जेप्लिनने बनाया।

जेब–पु० (अ०) गरेबान; कुरते, कमीज आदिमें रुपये-पैसे, घड़ी-रूमाल आदि रखनेके लिए लगी हुई थैली, खीसा, पाकिट; दे० 'ज़ेब'। **–कट, –कतरा**–पु० जेब कतरनेवाला, पाकिटमार। **–ख़र्च**–पु० निजी खर्च; निजी खर्चके लिए मिलनेवाली रकम। **–खास**–पु० राजा, बादशाहके निजी खर्चके लिए राज्यकोषसे दिया जानेवाला धन। **–घड़ी**–स्त्री० जेबमें रखनेकी (छोटी) घड़ी। मु० **–कतरना**–जेब काटकर रुपया-पैसा निकाल लेना, गाँठ काटना। **–खाली होना**–पासमें कुछ न होना, हाथ खाली होना। **–भरी होना**–हाथमें काफी पैसा होना।

ज़ेब–स्त्री० (फा०) सुंदरता, शोभा; शृंगार; समर्थन या बढ़ावा देना 'पंचमने जेब दी, दो-एक हाथ साफ किये कि···' अचल मेरा कोई। वि० (समासमें)···को शोभा देनेवाला, फबनेवाला (तनज़ेब, जामाज़ेब)। **–दार**–वि० सुंदर, सजनेवाला। **–व ज़ीनत**–स्त्री० बनाव-सिंगार, सजावट। मु० **–तन, बदन करना**–धारण करना, पहनना। **–देना**–फबना, शोभा देना।

ज़ेबरा–पु० (अं०) एक जंगली जानवर जिसके बदनपर धारियाँ होती और शक्ल घोड़े या खच्चरसे मिलती है।

ज़ेबा–वि० (फा०) सजने, फबनेवाला, शोभाजनक।

ज़ेबाइश, ज़ेबाई–स्त्री० (फा०) शोभा; सुंदरता; सजावट।

जेबी–वि० (अ०) जेबमें रखने लायक; छोटा। **–रूमाल**–पु० वह रूमाल जो हाथ-मुँह पोंछनेके लिए जेबमें रखा जाय।

जेबुन्निसा (बेगम)–स्त्री० (अ०) औरंगजेबकी बेटी जो फारसीकी अच्छी कवयित्री (उपनाम 'मख़फी') थी और आजीवन अविवाहित रही।

जेमन–पु० (सं०) भोजन करना, जीमना; भोजन, आहार।

जेय–वि० (सं०) जीतने योग्य, जेतव्य।

जेर–स्त्री० आँवल।

ज़ेर–अ० (फा०) नीचे, तले। वि० कमजोर, दबा हुआ। स्त्री० अरबी-फारसी लिखावटमें 'इ', 'ई' और 'ए'की मात्रा। **–जामा**–पु० वह कपड़ा जिसे घोड़ेकी पीठपर डालकर ऊपर जीन कसते हैं। **–तजवीज़**–वि० विचाराधीन, जिसपर विचार हो रहा हो, अनिर्णीत (मुकदमा)। **–दस्त**–वि० कमजोर, दबनेवाला; अधीन। **–पाई**–स्त्री० जनाना जूती; जूता। **–पेच**–पु० पगड़ीके नीचे बाँधी जानेवाली छोटी पगड़ी। **–बंद**–पु० वह तस्मा जिसका एक सिरा घोड़ेकी मोहरीमें और दूसरा तंगमें बाँधा जाता है। **–बार**–वि० बोझके नीचे दबा हुआ; ऋणग्रस्त; भारी खर्च, आर्थिक हानि उठानेवाला। **–बारी**–स्त्री० जेरबार होना; नुकसान; परेशानी। **–व ज़बर**–अ० नीचे-ऊपर। वि० उलट-पुलट, अस्त-व्यस्त; तहोंवाला। **–साया**–वि० किसीकी छाया, आश्रयमें रहनेवाला। **–हिरासत**–वि० जो हिरासतमें ले लिया गया हो, गिरफ्तार। **–हुकूमत**–वि० अधीन, शासनाधीन। **–(रे)ख़ाक**–अ० कब्रमें। वि० जो कब्रमें हो। **–(रो)ज़बर**–अ० दे० 'ज़ेर व ज़बर'। मु० **–करना**–हराना, पछाड़ना; अधीन करना।

जेरना*–स० क्रि० उत्पीड़ित करना, परेशान करना।

जेरिया, जेरी–स्त्री० चरवाहेका डंडा; खेतीका एक औजार।

जेल–पु० (अं०) कैदखाना, बंदीगृह; * जंजाल, बंधन। **–ख़ाना**–पु० कैदखाना, कारागार। मु० **–काटना**–कैदकी सजा भुगतना।

जेलर–पु० (अं०) जेलकी देखभाल करनेवाला अफसर।

जेली–स्त्री० भूसा इकट्ठा करनेका एक औजार।

जेवड़ी†–स्त्री० दे० 'जेवरी'।

जेवना–स० क्रि० दे० 'जीमना'।

जेवनार–स्त्री० भोज, दावत।

जेवर–पु० एक चिड़िया; दे० 'ज़ेवर'। स्त्री० रस्सी।

ज़ेवर–पु० (फा०) गहना, आभूषण; शोभारूप वस्तु, शृंगार।

जेवरा*–पु० फंदा, रस्सी।

ज़ेवरात–पु० (फा०) 'जेवर'का बहु०।

जेवरी*–स्त्री० रस्सी।

जेष्ठ–वि०, पु० दे० 'ज्येष्ठ'।

जेष्ठा–स्त्री० दे० 'ज्येष्ठा'।

ज़ेह–स्त्री० (फा०) कमानका चिल्ला, लैस; फीता; दीवारमें

नीचेकी ओर किया हुआ कुछ अधिक मोटा पलस्तर । अ० शाबाश ।

जेहन–पु० दे० 'जेह्न' । –**दार**–वि० पढ़ने-लिखनेमें तेज, तीक्ष्णबुद्धि ।

जेहर*–पु० पाजेब ।

जेहरि, जेहरी*–स्त्री० दे० 'जेहर' ।

जेहि*–सर्व० जिसे; जिससे ।

जेह्न–पु० (अ०) धारणाशक्ति; बुद्धि, समझ । मु०–**खुलना**–बुद्धिका तीक्ष्ण होना । –**नशीन होना**–समझमें आना; याद होना । –**में बैठना**–समझमें आना, मनमें बैठना । –**लड़ाना**–सोचना ।

जैंत–पु० जयंती वृक्ष ।

जै†–वि० जितने । * स्त्री० दे० 'जय' । –**कार**–पु० दे० 'जयकार' । –**कारा**–पु० जयकार, जयध्वनि । –**जैवंती**–स्त्री० दे० 'जयजयवंती । –**ढक**–पु० बड़ा ढोल । –**पत्र**–दे० 'जयपत्र' । –**मंगल**–पु० दे० 'जयमंगल' । –**माल,–माला**–स्त्री० दे० 'जयमाला' ।

जैगीषव्य–पु० (सं०) एक योगवेत्ता मुनि ।

जैजैवंती–स्त्री० एक रागिनी ।

जैत–पु० एक पेड़ । * स्त्री० जीत, जय । –**पत्र**–पु० जयपत्र । –**वार**–वि० जीतनेवाला, विजेता । –**श्री**–स्त्री० एक रागिनी ।

जैती–स्त्री० एक घास ।

जैतू–पु० (अ०) जैतूनका तेल ।

जैतून–पु० (अ०) एक सदाबहार पेड़ जिसका फल खाया और बीजोंका तेल खाने और दवाके काममें लाया जाता है ।

जैत्र–वि० (सं०) जयशील, विजयी; श्रेष्ठ । पु० पारा; औषध; विजय; श्रेष्टता । –**रथ**–पु० विजेता ।

जैत्री–स्त्री० (सं०) जयंती वृक्ष ।

जैन–पु० (सं०) जिनकी उपासना करनेवाला धर्म, भारतवर्षका एक निरीश्वरवादी धर्म-संप्रदाय जो अहिंसाको परम धर्म मानता है; जैनधर्मावलंबी ।

जैनी–पु० जैन धर्मको माननेवाला ।

जैनु*–पु० भोजन ।

जैन्य–वि० (सं०) जैन-संबंधी ।

जैमिनी–पु० (सं०) पूर्वमीमांसा दर्शनके प्रवर्तक एक मुनि जो वेदव्यासके शिष्य थे । –**दर्शन**–पु० पूर्वमीमांसा ।

जैमिनीय–वि० (सं०) जैमिनिकृत; जैमिनिका ।

जैयद–वि० (अ०) भारी, जबरदस्त (–आलिम) ।

जैल–पु० (अ०) दामन; नीचेका भाग; समुदाय; पंक्ति; इलाका । अ० नीचे । –**दार**–पु० वह कर्मचारी जिसके जिम्मे कई गाँवोंकी तहसील आदि हो ।

जैव–वि० (सं०) जीव-संबंधी, बृहस्पति-संबंधी । पु० पुष्य नक्षत्र ।

जैवातृक–वि० (सं०) दीर्घायु; दुबला-पतला । पु० चंद्रमा; कपूर; पुत्र; औषध; कृषक ।

जैविकी–स्त्री० दे० 'जीवविज्ञान' ।

जैवेय–पु० (सं०) बृहस्पतिके पुत्र कच ।

जैस*–वि० जैसा ।

जैसवार–पु० दे० 'जायसवाल' ।

जैसा–वि० जिस तरहका, यादृश; जितना; सरीखा, सदृश । मु० –**(से)का तैसा**–ज्योंका त्यों । –**को तैसा**–जो जैसा है उसके साथ वैसा (व्यवहार), तदनुरूप ।

जैसे–अ० जिस तरह, जिस रीतिसे; ज्यों । –**जैसे**–अ० ज्यों-ज्यों । –**ही**–अ० ज्योंही । मु० –**बने**–जिस तरह हो सके ।

जैसो*–वि० दे० 'जैसा' ।

जों–अ० दे० 'ज्यों' । –**जों**–अ० दे० 'ज्यों-ज्यों' । –**तों**–अ० दे० 'ज्यों-त्यों' ।

जोंक–स्त्री० पानीका एक कीड़ा जो प्राणियोंकी देहमें चिपककर उनका रक्त पीता है, जलौका, जलसर्पिणी ।

जोंकी–स्त्री० पानीके साथ जोंक पी जानेसे गाय-बैल आदिके पेटमें होनेवाली जलन; पानीका एक कीड़ा, जोंक ।

जोंग, जोंगक–पु० (सं०) अगुरु ।

जोंगट–पु० (सं०) गर्भिणीकी इच्छा, दोहद ।

जोंताला–स्त्री० (सं०) देवधान्य ।

जोंदरी,† जोंधरी–स्त्री० मक्का; छोटे दानेकी ज्वार ।

जोंधैया†–स्त्री० चाँदनी ।

जो–सर्व० संबंधवाचक सर्वनाम । अ० यदि, अगर । –**पै***–अ० अगर, यद्यपि ।

जोअना*–स० क्रि० दे० 'जोहना' ।

जोइ*–स्त्री० दे० 'जोय', पत्नी । सर्व० दे० 'जो' ।

जोइला†–पु० जनखा, हिजड़ा ।

जोइसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी' ।

जोउ*–सर्व० दे० 'जो' ।

जोख–स्त्री० जोखनेकी क्रिया या भाव; तौल ।

जोखना–स० क्रि० तौलना; * सोचना, विचारना ।

जोखम–स्त्री० दे० 'जोखिम' ।

जोखा–पु० हिसाब (प्रायः 'लेखा'के साथ प्रयुक्त) ।

जोखिउँ*–स्त्री० दे० 'जोखिम' ।

जोखिता*–स्त्री० दे० 'योषिता' ।

जोखिम–स्त्री० हानि, अनिष्ट, घाटेकी संभावना; खतरा; ऐसी चीज जो विपत्तिका कारण हो । –**का काम**–खतरेका काम । मु०–**उठाना,–लेना**–जोखिमवाला काम करना, हानि या अनिष्टका खतरा लेनेको तैयार होना ।

जोखिमी–वि० जिसमें जोखिम हो ।

जोखुआ–वि० जोखा हुआ । पु० जोखने, तौलनेवाला ।

जोखों–स्त्री० जोखिम, खतरा ।

जोगंधर–पु० शत्रुके अस्त्रसे बचावकी एक युक्ति ।

जोग*–पु० दे० 'योग' । वि० दे० 'योग्य' । अ० ···को, के लिए (···जोग लिखी···से···) । –**ता**–स्त्री० दे० 'योग्यता' । –**माया**–स्त्री० दे० 'योगमाया' । –**साधन**–पु० तपश्चर्या ।

जोगड़ा–पु० जोगी (तिरस्कारसूचक), नकली योगी ।

जोगन–स्त्री० दे० 'जोगिन' ।

जोगवना*–स० क्रि० हिफाजतसे रखना; इकट्ठा करना; ध्यान न देना; पूरा करना; आदर करना; रास्ता देखना ।

जोगानल*–पु० योगसे उत्पन्न अग्नि ।

जोगिंद*–पु० दे० 'योगींद्र' ।

जोगि*–स्त्री० दे० 'जोगिन' ।

जोगिन–स्त्री० जोगी स्त्री या जोगीकी स्त्री; योगियोंकी तरह नेम-व्रत एवं विरक्त भावसे रहनेवाली स्त्री; पिशाचिनी; एक रणदेवी ।

जोगिनी–स्त्री० दे० 'योगिनी'; दे० 'जोगिन' । † सहारा लेनेकी लकड़ी, ठकोरी ।

जोगिया–वि० जोगका; जोगीका; गेरूके रंगका, भगवा । पु० जोगिया रंग; जोगीडा; जोगी ।

जोगींद्र*–पु० दे० 'योगींद्र' ।

जोगी–पु० दे० 'योगी'; भिक्षाजीवी गृहस्थ साधुओंका एक संप्रदाय ।

जोगीड़ा–पु० वसंतमें गाया जानेवाला एक तरहका चलता गाना; इस प्रकारका गाना गानेवालोंका समाज ।

जोगीश्वर, जोगेश्वर*–पु० दे० 'योगीश्वर' ।

जोग्य*–वि० दे० 'योग्य' । –**ता***–स्त्री० दे० 'योग्यता' ।

जोजन*–पु० दे० 'योजन' । –**गंधा**–स्त्री० दे० 'योजनगंधा' ।

जोट*–पु० जोड़ा; साथी; झुंड । वि० बराबरीका ।

जोटा*–पु० जोड़ा; गोनी ।

जोटिंग–पु० (सं०) महादेव; महाव्रती, कठिन तप करनेवाला ।

जोठी*–स्त्री० जोड़ी; जोड़का साथी ।

जोड–पु० (सं०) बंधन ।

जोड़–पु० जोड़नेकी क्रिया; कई संख्याएँ जोड़नेसे आनेवाली संख्या, योगफल, मीजान; वह जगह जहाँ दो चीजें या दो टुकड़े जुड़ें, संधिस्थान; गाँठ; जोड़ा जानेवाला टुकड़ा, पैबंद; एक-सी या एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; जोड़ा; मेल; बराबरी करनेवाला, प्रतिभट; एक घरमें बैठी हुई दो गोटें; पूरा पहनावा, सिरसे पाँवतकके कपड़े; दो पहलवान जिनकी कुश्ती हो । –**जोड़**–पु० गाँठ-गाँठ, हर अंग । –**तोड़**–पु० दाव-पेंच (भिड़ाना,

लड़ाना)। **–दार**–वि० जोड़वाला। **मु० –का**–बराबरीका, प्रतिभट। **–का तोड़**–बराबरीका, जवाब। **–छूटना**–पहलवानोंके एक जोड़का कुश्तीके लिए अखाड़ेमें उतारा जाना। **–बदना**–दो पहलवानोंकी कुश्ती बदी जाना। **–मिलना**–बराबरका होना; तुक मिलना।

जोड़न†–पु० जामन।

जोड़ना–स० क्रि० दो चीजों, टुकड़ोंको एक-दूसरेके साथ चिपकाना, सीना, मिलाना आदि; टूटी हुई चीजके टुकड़ोंको मिलाना, बैठाना; तरतीबसे लगाना, बैठाना (ईंटें, अक्षर); संख्याओंको जमा करना; गिनतीमें शामिल करना; बटोरना, संचय करना; गढ़ना, मनसे उपजाना (बात); जलाना; पद्यरचना करना; स्थापित करना (मित्रता, नाता); जोतना। **मु० जोड़-जोड़कर धरना**–पैसा-पैसा करके धन बटोरना। **जोड़-बटोरकर**–कुल मिलाकर।

जोड़वाँ–वि०, पु० दे० 'जुड़वाँ'।

जोड़वाई–स्त्री० जोड़वानेकी क्रिया या उजरत।

जोड़वाना–स० क्रि० जोड़नेका काम कराना।

जोड़ा–पु० एक-सी या एक साथ काममें लायी जानेवाली दो चीजें; साथ पहने जानेवाले दो कपड़े (कुरता-पाजामा, लहँगा-दुपट्टा); पूरा पहनावा; दोनों पाँवोंके जूते; नर और मादा, स्त्री और पुरुष; वर-कन्या; ब्याहमें दुलहिनके लिए भेजा जानेवाला कपड़ा–लहँगा, साड़ी आदि; जोड़। **मु० –खाना**–(पशु-पक्षीका) मैथुन करना।

जोड़ाई–स्त्री० जोड़नेका काम या उजरत; दीवार बनानेके लिए ईंटोंको क्रमसे लगानेका कार्य या उसकी उजरत।

जोड़ी–स्त्री० जोड़ा; एक साथ जोते जानेवाले दो बैल या घोड़े; दो घोड़ोंकी गाड़ी, बग्घी; मुगदरका जोड़ा; मँजीरा; जोड़। **–दार**–वि० बराबरीका, जोड़का। **–वाल**–पु० गायकदलके साथ मँजीरा बजानेवाला। **मु० –की बैठक**–मुगदरकी जोड़ीपर हाथ टेककर की जानेवाली बैठक।

जोड़ू–स्त्री० दे० 'जोरू'।

जोत–स्त्री० जोतनेकी क्रिया; काश्त; उतनी जमीन जितनी एक काश्तकार जोतता हो; वह रस्सी या तस्मा जिससे बैल हलके और घोड़े गाड़ीके साथ जोते जायँ; तराजूके पलड़ोंको डाँड़ीसे बाँधनेवाली रस्सी; ज्योति। **–दार**–पु० काश्तकार। **मु०–में जोत समाना**–आत्माका परमात्मामें मिल जाना।

जोतना–स० क्रि० घोड़ों, बैलों आदिको गाड़ी, हल आदिसे इस तरह बाँधना कि वे उसे खींच सकें, नाँधना; गाड़ी आदिको घोड़े आदि जोतकर चलनेके लिए तैयार करना; हलसे जमीनको चीरना, बोने लायक बनाना; किसीको उसकी इच्छाके विरुद्ध काममें लगाना।

जोतनी–स्त्री० जोतते समय पशुके गलेमें बाँधनेकी रस्सी।

जोता–पु० जुआठेमें बँधी हुई रस्सी जिसमें हल या गाड़ीमें जोते जानेवाले बैलकी गरदन फँसायी जाती है; हलवाहा।

जोताई–स्त्री० जोतनेकी क्रिया या भाव; जोतनेकी मजदूरी।

जोताना–स० क्रि० जोतनेका काम कराना।

जोति*–स्त्री० जोतने लायक जमीन; दे० 'ज्योति'; देवताके प्रीत्यर्थ जलाया जानेवाला दीपक। **–वंत***–वि० ज्योतिर्मय।

जोतिक, जोतिखी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोतिस*–पु० दे० 'ज्योतिष'।

जोतिसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

जोती†–स्त्री० दे० 'जोति'; चक्कीकी कीली और हत्थेमें बँधी रहनेवाली रस्सी; तराजूकी वह रस्सी जिससे उसके पल्ले बँधे रहते हैं; लगाम।

जोत्स्ना–स्त्री० दे० 'ज्योत्स्ना'।

जोध, जोधा*–पु० दे० 'योद्धा'।

जोन*–स्त्री० दे० 'योनि'।

जोना*–स० क्रि० देखना।

जोनि*–स्त्री० दे० 'योनि'।

जोन्ह, जोन्हाई–स्त्री० चाँदनी।

जोन्हरी†–स्त्री० छोटे दानेकी ज्वार; मक्का।

जोन्हि–स्त्री० जुन्हाई, चाँदनी।

जोप*–पु० दे० 'यूप'।

ज़ोफ़–पु० (अ०) कमजोरी, निर्बलता। **–(फ़े)जिगर**–पु० जिगरकी कमजोरी; यकृतका अपना काम ठीक तौरसे न कर सकना। **–दिमाग़**–पु० दिमागकी कमजोरी। **–मेदा**–पु० पाचनशक्तिकी दुर्बलता, अग्निमांद्य।

जोबन–पु० जवानी, यौवन; उभरती, खिलती हुई जवानी; यौवनजनित सुंदरता; बहार, शोभा; उरोज, छाती। * वि० युवा–'सूर स्याम लरिकाई भूली जोबन भये मुरारी'–सूर। **मु० –पर आना**–सुंदरताका खिल उठना, बहारपर होना। **–लूटना**–(किसी स्त्रीकी) जवानीका सुख लूटना।

ज़ोम–पु० (अ०) गर्व, घमंड; स्त्री० धारणा, खयाल; उत्साह, उमंग–'करिहौं महि बिन बानरी बाढ़ी मन यह जोम'–रघु०; प्रबलता; समूह।

जोय*–स्त्री० पत्नी, जोरू। सर्व० जो।

जोयना*–स० क्रि० जलाना; दे० 'जोहना'।

जोयसी*–पु० दे० 'ज्योतिषी'।

ज़ोर–पु० (फा०) बल, शक्ति; प्रबलता; वेग, तेजी; वश, इख्तियार; सहारा, भरोसा; शतरंजके एक मुहरेको दूसरेसे मिलनेवाला बल, सहारा; बलप्रयोग, जबरदस्ती; मेहनत, श्रम। **–आज़माई**–स्त्री० बलपरीक्षा। **–ज़ुल्म**–पु० अन्याय-अत्याचार। **–दार**–वि० जोरवाला, प्रबल; आग्रह-युक्त (सिफ़ारिश)। **–शोर**–पु० तेजी, उग्रता; प्रबलता; जोश। **–(रे)क़लम**–पु० कलमका जोर, लेखन-शक्ति। **–तबीयत**–पु० कल्पनाशक्ति। **–बाज़ू**–पु० बाहुबल, भुजबल। **मु०–आज़माना**–बलपरीक्षा करना, भिड़ना, मुकाबला करना। **–करना**–बल लगाना; कोशिश करना; बढ़ना। **–का**–प्रबल, जोरदार। **–चलना**–बस चलना। **–डालना**–दबाव डालना, आग्रह करना। **–दिखाना**–शक्ति, अधिकारका परिचय देना। **–देकर**–आग्रहपूर्वक, दृढ़ताके साथ। **–देना**–शतरंजके मुहरेको दूसरे मुहरेका सहारा देना; आग्रह करना; बोझ डालना। **–पकड़ना**–बल प्राप्त करना; बढ़ना। **–पर होना**–बाढ़पर, बढ़ा हुआ, प्रबल होना। **–बाँधना**–प्रबल होना, बल प्राप्त करना। **–मारना**–बहुत जोर लगाना; बहुत कोशिश करना। **–(रों)से**–जोर देकर, बहुत आग्रहके साथ।

जोरन†–पु० दे० 'जोड़न'।

जोरना*–स० क्रि० दे० 'जोड़ना'।

जोराजोरी–अ० बलपूर्वक, जबरदस्ती। स्त्री० जबरदस्ती।

ज़ोरावर–वि० (फा०) बलवान्; जबरदस्त।

जोरी*–स्त्री० दे० 'जोड़ी'; जबरदस्ती।

जोरू–स्त्री० पत्नी, भार्या। **–जाँता**–पु० घर-बार।

जोल*–पु० समूह, झुंड,–'बिथके षट्पद जोल'–सूर।

जोलहा†–पु० दे० 'जुलाहा'।

जोलाहल*–स्त्री० ज्वाला।

जोलाहा–पु० दे० 'जुलाहा'।

जोली*–स्त्री० बराबरी; जोड़ी, बराबरीका आदमी।

जोलो*–पु० अंतर।

जोवना*–स० क्रि० दे० 'जोहना'।

जोश–पु० (फा०) उफान, उबाल; गरमी, उत्तेजना, उत्साह; आवेश। **–व खरोश**–पु० धूम, शोरगुल; उत्साह; आवेश। **–(शे)जवानी**–पु० जवानीका जोश। **–जुनून**–पु० उन्मादका जोर, सनक। **मु० –खाना**–उबलना। **–देना**–उबालना। **–मारना**–उबलना; उमड़ना; मथना। **–में आना**–क्रुद्ध होना; उत्तेजित होना।

जोशन–पु० (फा०) बाँहपर पहननेका एक गहना; जिरह-बख्तर, कवच।

जोशाँदा–पु० (फा०) काढ़ा, क्वाथ।

जोशिश–स्त्री० (फा०) जोश।

जोशी–पु० ज्योतिषी; गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; महाराष्ट्र ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; कमायूँ-गढ़वालमें बसनेवाले ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

जोशीला–वि० जोशमें भरा हुआ, ओजःपूर्ण।

जोष–पु० (सं०) सुख; आराम; संतुष्टि; मौन; सेवा। * स्त्री०

जोख, तौल; स्त्री ।

जोषण–पु०, **जोषणा**–स्त्री० (सं०) दे० 'जोष' (पु०) ।

जोषा–स्त्री० (सं०) स्त्री ।

जोषिका–स्त्री० (सं०) स्त्री; कलियोंका समूह ।

जोषिता, जोषित्–स्त्री० (सं०) स्त्री ।

जोषी–पु० दे० जोशी ।

जोसि*–पु० जोशी; पंडित (वीसल०) ।

जोह*–स्त्री० खोज; प्रतीक्षा; दृष्टि ।

जोहन*–स्त्री० देखनेकी क्रिया; खोज; प्रतीक्षा ।

जोहना*–स० क्रि० देखना; राह देखना, प्रतीक्षा करना; खोजना ।

जोहार–स्त्री० दे० 'जुहार' । पु० जौहर ।

जोहारना–स० क्रि० दे० 'जुहारना' ।

जोहि*–अ० ज्योंही ।

जौं*–अ० जो, यदि; ज्यों ।

जौंरा*–स्त्री० जरा । पु० यमराज ।

जौंरा-भौंरा–पु० खजाना रखनेका तहखाना; बराबर साथ रहने, या साथ पैदा होनेवाले, दो व्यक्ति ।

जौंरे*–अ० निकट, आस-पास ।

जौ–पु० रबीकी फसलका एक अनाज जिसका स्थान आटेके रूपमें व्यवहृत अनाजोंमें गेहूँके बाद ही है और जिसकी गिनती हविष्यान्नोंमें है, यव; इसका पौधा; एक पौधा जिसकी टहनियोंके टोकरे आदि बनते हैं; एक जौ या ६ राईकी मात्रा । –**कुट**–वि० इस तरह कुटा हुआ कि छोटे छोटे जौके बराबर टुकड़े हो जायँ । –**केराई**–स्त्री० मटर या कलाय मिला हुआ जौ । –**कोब**–वि० जौकुट ।

जौ*–अ० जो, यदि, अगर; जब । –**पै***–अ० अगर, यदि ।

जौक, जौख*–पु० समूह, झुंड; सेना ।

जौजा–स्त्री० (फा०) पत्नी, भार्या ।

जौजीयत–स्त्री० (फा०) पत्नीत्व ।

जौतुक–पु० दे० 'यौतुक' ।

जौधिक–पु० (सं०) तलवार या खड्गका एक हाथ ।

जौन*–सर्व० दे० 'जो' । पु० दे० 'यवन' ।

जौन्ह*–स्त्री० दे० 'जोन्ह' ।

जौवति*–स्त्री० दे० 'युवती' ।

जौबन, जौवन*–पु० दे० 'यौवन' ।

जौरा*–पु० यमराज ।

जौशन–पु० (फा०) दे० 'जोशन' ।

जौहर–पु० युद्धमें शत्रुकी विजय निश्चित हो जानेपर राजपूत स्त्रियोंका दहकती हुई विशाल चितामें एक साथ प्रवेश कर जल मरना; इस कार्यके लिए बनायी गयी चिता; (अ०) रत्न; सार, सत्त्व; गुण, खूबी (खुलना, दिखाना); तलवारपरकी बारीक धारियाँ जिससे लोहेकी अच्छाईका पता चलता है; आईनेकी चमक । –**दार**–वि० जिसमें जौहर हो ।

जौहरी–पु० (अ०) जवाहरातका रोजगार करनेवाला, रत्नव्यवसायी । वि० पारखी, गुण-दोष पहचाननेवाला, कद्रदाँ । –**बाजार**–पु० वह बाजार जहाँ जवाहरात बिकें, रत्नहाट ।

ज्ञ–'ज्' और 'ञ'के संयोगसे बना हुआ संयुक्त अक्षर । वि० (सं०) (संज्ञा आदिके अंतमें लगनेसे) जाननेवाला, ज्ञाता (गुणज्ञ, बहुज्ञ इ०) । पु० ज्ञानी, पंडित; जीवात्मा; ब्रह्मा; बुध ग्रह; मंगल ग्रह ।

ज्ञपित, ज्ञप्त–वि० (सं०) जताया हुआ, ज्ञापित ।

ज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) कोई बात जानने या जनानेकी क्रिया, ज्ञान; बुद्धि; तेज करना; तोषण; स्तुति; मारण ।

ज्ञात–वि० (सं०) जाना हुआ, विदित । –**यौवना**–स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे यौवनागमका ज्ञान हो । –**सिद्धांत**–वि० शास्त्रविशेषका पंडित ।

ज्ञातव्य–वि० (सं०) जानने योग्य, ज्ञेय ।

ज्ञाता(तृ)–वि० (सं०) जाननेवाला । पु० चतुर आदमी; परिचित व्यक्ति; जमानतदार ।

ज्ञाति–पु० (सं०) पिता; पितृवंशमें उत्पन्न व्यक्ति, गोतिया, भाई बंधु । स्त्री० जाति । –**कर्म(न्)**,–**कार्य**–पु० भाई-बंदका कर्तव्य । –**पुत्र**–पु० गोत्रजका पुत्र; जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी ।

ज्ञातृत्व–पु० (सं०) ज्ञाता होना; जानकारी ।

ज्ञातेय–पु० (सं०) ज्ञातित्व; कुल, वंशका होना ।

ज्ञान–पु० (सं०) जानना, बोध, जानकारी; सच्ची जानकारी, सम्यक् बोध; पदार्थका ग्रहण करनेवाली मनकी वृत्ति; शास्त्रानुशीलन आदिसे आत्मतत्त्वका अवगम, आत्मसाक्षात्कार; बुद्धिवृत्ति; वेद; परब्रह्म । –**कांड**–पु० वेदका वह विभाग जिसमें ब्रह्मपर विचार किया गया है । –**कृत**–वि० जानकर किया हुआ । –**कोश**–पु० वह कोश जिसमें ज्ञातव्य विषयोंका विवरण दिया गया हो । –**गम्य**–वि० जो जाना, समझा जा सके; जो केवल ज्ञानका विषय हो सके, जानाभर जा सके (परमेश्वर) । –**गर्भ**–वि० ज्ञानसे भरा हुआ । –**गोचर**–वि० ज्ञानगम्य । –**चक्षु(स्)**–पु० ज्ञानकी आँख, अंतर्दृष्टि । वि० ज्ञानदृष्टि रखनेवाला, विद्वान् । –**ज्येष्ठ**–वि० जो ज्ञानमें बड़ा, श्रेष्ठ हो । –**द**–पु० गुरु । –**दग्धदेह**–पु० चतुर्थाश्रमी, सन्न्यासी । –**दा**–स्त्री० सरस्वती । –**दाता(तृ)**–वि० ज्ञान देनेवाला । पु० गुरु । –**दात्री**–वि० स्त्री० ज्ञान देनेवाली । स्त्री० सरस्वती । –**निष्ठ**–वि० ज्ञानसाधन–श्रवण, मनन आदिसे युक्त; तत्त्वविद् । –**पति** पु० गुरु; परमेश्वर । –**पिपासा**–स्त्री० ज्ञानप्राप्तिकी तीव्र आकांक्षा । –**पिपासु**–वि० ज्ञानार्थी, जिज्ञासु । –**प्रभ**–पु० एक तथागत । –**मुद्र**–वि० ज्ञानवान्, चतुर । –**मुद्रा**–स्त्री० तंत्रसारमें कथित एक विशेष मुद्रा । –**यज्ञ**–पु० अभेदज्ञान । –**योग**–पु० शुद्ध ज्ञानकी प्राप्ति । –**लक्षण**–पु०,–**लक्षणा**–स्त्री० विशेषण द्वारा विशेष्यका ज्ञान । –**वापी**–स्त्री० काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ । –**वृद्ध**–वि० ज्ञानमें बड़ा । –**साधन**–पु० ज्ञानका साधनरूप इंद्रिय; तत्त्वज्ञानके साधन श्रवण, मनन आदि ।

ज्ञानतः(तस्)–अ० (सं०) जानते हुए, ज्ञानपूर्वक ।

ज्ञानमय–वि० (सं०) ज्ञानसे भरा हुआ; ज्ञानरूप; चिन्मय । पु० परब्रह्म; शिव ।

ज्ञानांजन–पु० (सं०) ब्रह्मज्ञान ।

ज्ञानाकार–पु० (सं०) बुद्ध ।

ज्ञानापोह–पु० (सं०) विस्मरणशीलता ।

ज्ञानावरण–पु० (सं०) ज्ञानप्राप्तिमें बाधक पापकर्म ।

ज्ञानाश्रयी शाखा–स्त्री० ज्ञान द्वारा भगवान्‌को प्राप्त करनेके सिद्धांतपर बल देनेवाली भक्त परंपरा; भक्तिकालकी एक शाखा या धारा ।

ज्ञानासन–पु० (सं०) योगका एक आसन ।

ज्ञानी(निन्)–वि० (सं०) ज्ञानवान्, जिसने आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है । पु० दैवज्ञ; ऋषि ।

ज्ञानेंद्रिय–स्त्री० (सं०) विषयबोधका साधन, इंद्रियाँ–आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ।

ज्ञानोदय–पु० (सं०) ज्ञानका उदय, उत्पत्ति ।

ज्ञाप–पु० (मेमो) दे० 'ज्ञापन', स्मार ।

ज्ञापक–वि० (सं०) जतानेवाला, सूचक, बोधक । पु० गुरु; स्वामी ।

ज्ञापन–प० (सं०) जताना, बताना; प्रकट करना; (मेमोरेंडम) वह पत्र जिसमें याद दिलानेके लिए आवश्यक बातें संक्षेपमें लिख दी गयी हों; घटनाओंका वह संक्षिप्त अभिलेख जो बादमें प्रयोगके लिए हो; स्मारक, स्मरणपत्र ।

ज्ञापयिता(तृ)–वि० (सं०) ज्ञापक ।

ज्ञापित–वि० जताया हुआ, सूचित; प्रकाशित ।

ज्ञाप्य–वि० (सं०) जताने योग्य ।

ज्ञेय–वि० (सं०) जानने योग्य; जो जाना जा सके ।

ज्या–स्त्री० (सं०) धनुष्की डोरी; चापके सिरोंकी मिलानेवाली सीधी रेखा; पृथ्वी; माता । –**मिति**–स्त्री० रेखागणित, क्षेत्रगणित ।

ज्यादती–स्त्री० अधिकता; जुल्म; जबरदस्ती ।

ज्यादा–वि० अधिक; फाजिल ।

ज्यान*–पु० दे० 'जियान' ।

ज्याना*–स० क्रि० दे० 'जिलाना' ।

ज्यानि–स्त्री० (सं०) बुढ़ापा; क्षय; परित्याग; नदी; उत्पीड़न; हानि ।

ज्याफ़त–स्त्री० दे० 'ज़ियाफ़त' ।

ज्यारना*–स० क्रि० जिलाना ।

ज्यारा*–वि० जिलानेवाला । (स्त्री० 'ज्यारी' ।)–'भानकी दुलारी घन आनंद जीवन-ज्यारी'–घन० ।

ज्यावना*–स० क्रि० जिलाना ।

ज्युति–स्त्री० (सं०) दे० 'ज्योति' ।

ज्यूँ–अ० दे० 'ज्यों' ।

ज्यूरी–स्त्री० दे० 'जूरी' (अं०) ।

ज्येष्ठ–वि० (सं०) सबसे बड़ा (भाई); श्रेष्ठ । पु० बड़ा भाई; जेठका महीना; परमेश्वर; सामगानका एक भेद; प्राण; टीन । **–तात**–पु० बापका बड़ा भाई । **–बला**–स्त्री० सहदेई बूटी । **–वर्ण**–पु० ब्राह्मण । **–श्वश्रू**–स्त्री० बड़ी साली ।

ज्येष्ठांबु–पु० (सं०) चावलका धोवन; माँड़ ।

ज्येष्ठांश–पु० (सं०) बड़े भाईका हिस्सा; बड़े भाईका बपौतीमें बड़ा भाग पानेका हक, जेठंसी ।

ज्येष्ठा–स्त्री० (सं०) बड़ी बहिन; १८ वाँ नक्षत्र; वह स्त्री जो पतिको औरोंसे अधिक प्यारी हो (सा०); लक्ष्मीकी बड़ी बहिन, अलक्ष्मी, दरिद्रा; गंगा; बिचली उँगली; छिपकली ।

ज्येष्ठाधिकार–पु० (सं०) (प्राइमोजेनीचर) पिताकी सम्पत्ति, राज्य आदि वरासतमें पानेका ज्येष्ठ पुत्रका अधिकार ।

ज्येष्ठाश्रम–पु० (सं०) गृहस्थाश्रम; गृहस्थ ।

ज्येष्ठाश्रमी(मिन्)–पु० (सं०) गृहस्थ ।

ज्येष्ठी–स्त्री० (सं०) छिपकली ।

ज्यों–अ० जैसे, जिस तरह; जिस क्षण । **–ज्यों**–अ० जैसे-जैसे, जिस क्रमसे । **–त्यों**–अ० जैसे-तैसे, किसी तरह; कठिनाईसे । (**–त्यों करके**–ज्यों-त्यों ।)–**ही**–अ० जैसे ही, जिस क्षण । मु० **–का त्यों**–जैसा था वैसा ही ।

ज्योतिःशास्त्र–पु० (सं०) ज्योतिर्विद्या ।

ज्योति(स्)–स्त्री० (सं०) प्रकाश, रोशनी; लौ; सूर्य; नक्षत्र; अग्नि; आँखकी पुतलीका मध्यविंदु; दृष्टि; आत्मा, चैतन्य; ज्योतिषशास्त्र; मेथी; विद्युत् ।

ज्योतिक*–पु० ज्योतिषी ।

ज्योतित–वि० (सं०) द्युतिमान्, प्रकाशित ।

ज्योतिमान–वि० दे० 'ज्योतिष्मान्' ।

ज्योतिर्–'ज्योतिस्'का समासगत रूप । **–इंग,–इंगण**–पु० जुगनू । **–गण**–पु० नक्षत्रमंडल, तारागण । **–बीज,–वीज**–पु० जुगनू । **–मंडल**–पु० नक्षत्रमंडल । **–लिंग**–पु० शिव; शिवके मुख्य–सोमनाथ, महाकाल, विश्वेश्वर, मल्लिकार्जुन, ओंकार, केदार, भीमशंकर, त्र्यंबक, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घृष्णेश्वर–इन १२ लिंगोंमेंसे कोई । **–लोक**–पु० ध्रुवलोक; परमेश्वर । **–विद्(त्)**–वि०, पु० ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला, ज्योतिषी । **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिषशास्त्र । **–हस्ता**–स्त्री० दुर्गा ।

ज्योतिर्मय–वि० (सं०) ज्योतिसे भरा हुआ, द्युतिमय ।

ज्योतिश्चक्र–पु० (सं०) नक्षत्रोंसे युक्त राशिचक्र ।

ज्योतिष–पु० (सं०) ग्रह-नक्षत्रोंकी गति, स्थिति आदिका विचार करनेवाला शास्त्र (गणित ज्यो०); ग्रह-नक्षत्रों आदिके शुभाशुभ फल बतानेवाला शास्त्र (फलित ज्यो०) ।

ज्योतिषिक–पु० (सं०) ज्योतिष जाननेवाला; ज्योतिष पढ़नेवाला । वि० ज्योतिष-संबंधी ।

ज्योतिषी–स्त्री० (सं०) ग्रह, नक्षत्र, तारा ।

ज्योतिषी(षिन्)–वि०, पु० (सं०) ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला, दैवज्ञ ।

ज्योतिष्क–पु० (सं०) ग्रह, नक्षत्रादि; चित्रक; मेरुकी एक चोटी; मेथी; देवताओंका वह वर्ग जिसमें ग्रह-नक्षत्र, सूर्य-चंद्र आदि आते हैं ।

ज्योतिष्का–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती लता, मालकंगनी ।

ज्योतिष्टोम–पु० (सं०) अग्निष्टोमका संस्थारूप एक यज्ञ ।

ज्योतिष्ना*–स्त्री० ज्योत्स्ना ।

ज्योतिष्पथ–पु० (सं०) आकाश, अंतरिक्ष ।

ज्योतिष्मती–वि० स्त्री० (सं०) ज्योतिर्मयी । स्त्री० रात्रि; मालकंगनी; एक नदी ।

ज्योतिष्मान्(मत्)–वि० (सं०) ज्योतिर्मय, आलोकयुक्त । पु० सूर्य; प्लक्षद्वीपका एक पर्वत; ब्रह्माका तृतीय चरण; प्रलयके समय उदित होनेवाले सात सूर्योंमेंसे एक ।

ज्योति–'ज्योतिस्'का समासगत रूप । **–रथ**–पु० ध्रुव नक्षत्र; एक सर्प । **–रस**–पु० एक रत्न ।

ज्योत्स्ना–स्त्री० (सं०) चाँदनी; चाँदनी रात; दुर्गा; सौंफ । **–प्रिय**–पु० चकोर । **–वृक्ष**–पु० दीयट ।

ज्योत्स्नी–स्त्री० (सं०) चाँदनी रात ।

ज्योत्स्नेश–पु० (सं०) चंद्रमा ।

ज्योनार–स्त्री० रसोई; भोज ।

ज्योहत*–पु० आत्महत्या ।

ज्योहर–पु० दे० 'जौहर' ।

ज्यौ*–अ० यदि, अगर । पु० जी, जान–'बूड़त ज्यौ घन आनंद सोचि'–घन० ।

ज्यौतिष–वि० (सं०) ज्योतिष-संबंधी ।

ज्यौतिषिक–पु० (सं०) ज्योतिषी ।

ज्यौत्स्न–वि० (सं०) चंद्रिकायुक्त । पु० शुक्ल पक्ष ।

ज्यौत्स्नी–स्त्री० (सं०) पूर्णिमाकी रात ।

ज्यौनार–स्त्री० दे० 'जेवनार' ।

ज्वर–पु० (सं०) एक साधारण रोग जिसका मुख्य लक्षण शरीरकी गरमीका स्वाभाविकसे अधिक हो जाना है, ताप, बुखार; मानसिक कष्ट; उत्तेजना (कामज्वर) । **–कुटुंब**–पु० ज्वरके साथ होनेवाले उपद्रव । **–घ्न**–वि० ज्वरनाशक । पु० गुडुच; बथुआ । **–चिकित्सा**–स्त्री० ज्वर-रोगका इलाज । **–हंत्री**–स्त्री० मंजिष्ठा; ज्वरघ्नी ।

ज्वरांकुश–पु० (सं०) एक तृण जो कुश जैसा होता है; ज्वरकी एक औषध ।

ज्वरांगी–स्त्री० (सं०) भद्रदंतिका ।

ज्वरांतक–पु० (सं०) एक तरहका नीम; चिरायता; आरग्वध । वि० ज्वरनाशक ।

ज्वरा–स्त्री० (सं०) ज्वर; *मृत्यु ।

ज्वरातिसार–पु० (सं०) ज्वरयुक्त अतिसार रोग ।

ज्वरापहा–स्त्री० (सं०) बिल्वपत्री ।

ज्वरित, ज्वरी(रिन्)–वि० (सं०) ज्वरयुक्त ।

ज्वर्रा*–पु० दे० 'जुर्रा' ।

ज्वलंत–वि० जलता हुआ, प्रकाशमान; स्पष्ट ।

ज्वल–वि० (सं०) जलता हुआ । पु० ज्वाला ।

ज्वलका–स्त्री० (सं०) आगकी लपट ।

ज्वलन–पु० (सं०) जलना; चमकना; अग्नि; चित्रक; तीनकी संख्या । वि० जलता हुआ; चमकता हुआ । **–कण**–पु० चिनगारी, स्फुलिंग । **–शील**–वि० (कंबस्टिबिल, इनफ्लैमेबिल) जो बड़ी आसानीसे, थोड़ेमें ही, जल उठे, भड़क उठे; ज्वलनीय, ज्वल्य, दहनशील ।

ज्वलनांक–पु० (बर्निंग पाइंट) तापकी वह मात्रा जो किसी वस्तुको जला देनेमें समर्थ हो ।

ज्वलनाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि ।

ज्वलित–वि० (सं०) जला हुआ; जलता-बलता हुआ, दीप्त ।

ज्वलिनी–स्त्री० (सं०) मूर्वा लता, मरोड़फली ।

ज्वल्य–वि० (कंबस्टिबिल) जल उठने या भभक उठने योग्य, दाह्य ।

ज्वान†–वि०, पु० दे० 'जवान' ।

ज्वानी†–स्त्री० दे० 'जवानी' ।

ज्वार–स्त्री० खरीफकी फसलमें होनेवाला एक मोटा अनाज; चंद्रमाके आकर्षणके कारण समुद्रके जलका ऊपर उठना, भाटाका उलटा । **–भाटा**–पु० (चंद्रसूर्यके आकर्षणसे) समुद्रके जलका ऊपर उठना और फिर नीचे आना, चढ़ाव-उतार ।

ज्वारी†–पु० दे० 'जुआरी' ।

ज्वाल–पु० (सं०) ज्वाला; मशाल । वि० जलता हुआ । **–माली(लिन्)**–पु० सूर्य ।

ज्वालक–पु० (बर्नर) जलानेवाला । दे० 'वर्तिग्रह', कल्ला ।

ज्वाला–स्त्री० (सं०) आगकी लपट, अग्निशिखा; ताप, दाह; दुःखसे उत्पन्न मनोव्यथा। **–जिह्व,–ध्वज**–पु० अग्नि। **–मुखी**–स्त्री० एक पीठस्थान; अग्नि, लावा आदि निकलनेका स्थान; * सुरांगना। पु० (हिं०) वह पहाड़ जिसकी चोटीके पास स्थित गर्तसे कोयला, राख, जलता हुआ तरल पदार्थ, जलती हुई गैस आदि बाहर निकले। **–वक्त्र**–पु० शिव।

ज्वाली(लिन्)–वि० (सं०) ज्वालायुक्त। पु० शिव।

ज्वैना*–स० क्रि० दे० 'जोहना'।

झ

झ–देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान तालु।

झंकना–अ० क्रि० दे० 'झीँखना'।

झंकार–स्त्री० (सं०) झनझनाहट; झाँझ, पायल आदिके बजनेसे होनेवाली ध्वनि; वीणा, सितार आदिकी ध्वनि; झनकार।

झंकारना–स० क्रि० 'झन-झन' आवाज करना। अ० क्रि० 'झन-झन' आवाज होना।

झंकारित–वि० (सं०) झंकारयुक्त। पु० झंकार।

झंकारिणी–स्त्री० (सं०) गंगा।

झंकारी(रिन्)–वि० (सं०) झंकार या गुंजन करनेवाला; झंकारयुक्त।

झंकृत–वि० (सं०) झंकारयुक्त, झंकार करता हुआ।

झंकृता–स्त्री० (सं०) तारा देवी।

झंकृति–स्त्री० (सं०) झंकार।

झंखना–अ० क्रि० दे० 'झीँखना'।

झंखाड़–पु० काँटेदार झाड़ी या पौधा; ऐसी झाड़ियों या पौधोंका समूह; रद्दी चीजोंका ढेर।

झँगा–पु० दे० 'झगा'।

झँगुला, झँगूला*–पु० ढीला कुरता; बच्चोंका ढीला कुरता।

झँगुलिया, झँगुली, झँगूली*–स्त्री० दे० 'झगा'।

झंझ*–पु० दे० 'झाँझ'।

झंझट–स्त्री० झमेला; झगड़ा-बखेड़ा; कठिनाई; परेशानी।

झंझटिया, झंझटी–वि० झंझटवाला (काम); झगड़ालू, बखेड़िया।

झंझन–पु० (सं०) झनकार।

झंझनाना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'झंकारना'।

झंझर–पु० दे० 'झज्झर'।

झँझरा–वि० खखरा, झीना।

झँझरी–स्त्री० जाली; जालीदार खिड़की; जालीदार चादर; चलनी। **–दार**–वि० जालीदार, सूराखदार।

झंझा–स्त्री० (सं०) तेज हवा, अंधड़; आँधी-पानी; बड़ी-बड़ी बूँदोंकी वर्षा; अंधड़ या अंधड़के साथ होनेवाली वर्षाकी आवाज; झंकार; खोयी हुई वस्तु। * वि० तेज, प्रबल। **–मरुत्,–मारुत,–वात**–पु० अंधड़; वर्षाके साथ बहनेवाली बहुत तेज हवा।

झंझानिल–पु० (सं०) दे० 'झंझावात'।

झंझार*–पु० आगकी ऊँची लपट, 'झंडाल', ज्वाला–'...उचटि अंगार झंझार छायो'–सूर।

झंझी–स्त्री० फूटी कौड़ी।

झँझोटी–स्त्री० दे० 'झिंझौटी'।

झँझोड़ना–स० क्रि० पकड़कर झटके देना, झकझोरना; बिल्ली आदिका शिकारको दाँतोंमें पकड़कर झटके देना, नोचना।

झंड*–पु० (बच्चेके) मुंडनसे पहलेके, पैदाइशी बाल।

झंडा–पु० बाँस या लकड़ीके डंडेके सिरेपर पहनाया हुआ तिकोना या चौकोना कपड़ा जो राष्ट्र आदिके प्रतीकके रूपमें या संकेत आदिके लिए काममें लाया जाता है, पताका, निशान। **–जहाज**–पु० बेड़ेके नायकका जहाज। **–बरदार**–पु० झंडा ले चलनेवाला। **–स्टेशन**–पु० छोटा स्टेशन जहाँ झंडी दिखानेपर ही ट्रेनें रुकें। मु० **–उड़ाना**–झंडा फहराना। **(किसी चीजका)–खड़ा करना**–किसी चीजके नामपर, किसी बातके लिए लोगोंको इकट्ठा करना, उनका आह्वान करना (बगावतका झंडा खड़ा करना)। **(किसी नगर, दुर्ग आदिपर)–गाड़ना**–...कब्जा करना; अपने अधिकारकी घोषणा करना। **–झुकाना**–किसीकी मृत्युपर राज्य या किसी दल, संस्थाकी ओरसे झंडा आधा झुकाकर शोकप्रकाश किया जाना। **(किसीके)–(डे)के नीचे,–तले आना या जमा होना**–किसीकी ओरसे लड़नेके लिए तैयार होना, एकत्र होना। **–तलेकी दोस्ती**–राह चलतेकी मुलाकात। **–पर चढ़ाना**–बदनाम करना।

झंडाल–स्त्री० † आगकी ऊँची लपट (बुंदेल०)।

झंडी–स्त्री० छोटा झंडा। **–दार**–वि० जिसमें झंडी लगी हो।

झँडूला–वि० जिसके सिरपर गर्भके बाल हों, जिसका मुंडन न हुआ हो; गर्भका; घनी पत्तियोंवाला। पु० वह बच्चा जिसके सिरपर गर्भके बाल हों; गर्भके बाल; घने पत्तोंवाला वृक्ष।

झंप–पु० (सं०) छलाँग, कुदान; घोड़ोंके गलेमें पहनानेका एक गहना।

झँपकना–अ० क्रि० दे० 'झपकना'।

झँपताल–पु० दे० 'झपताल'।

झँपना–अ० क्रि० छलांग मारना, उछलना; झपटना; ढकना; झेँपना; दे० 'झपना'।

झँपरिया, झँपरी*–स्त्री० पालकीका ओहार।

झंपाक–पु० (सं०) बंदर।

झंपाकी–स्त्री० (सं०) बँदरिया।

झंपान–पु० पहाड़की चढ़ाईमें काम आनेवाली एक तरहकी खुली डोली।

झंपारु–पु० (सं०) बंदर।

झंपित*–वि० ढका हुआ।

झँपिया–स्त्री० छोटा झाँपा, पिटारी।

झंपी (पिन्)–पु० (सं०) बंदर।

झँपोला–पु० छोटा झाँपा, पिटारा।

झंब*–पु० गुच्छा, समूह।

झँबकार, झँबकारा*–वि० कुछ कुछ काला, स्याह, श्यामवर्ण।

झँबराना–अ० क्रि० काला पड़ना; मुरझाना।

झँबा–पु० दे० 'झाँवाँ'।

झँवाना–अ० क्रि० गर्मी आदिके प्रभावसे कुछ स्याही आ जाना; मुरझाना; आगका जलकर बुझने लगना, कोयले, अंगारेपर राख चढ़ जाना; घटना; झाँवेसे रगड़ा जाना। स० क्रि० स्याही ला देना; आग ठंडी करना; घटाना; झाँवेसे रगड़ना या रगड़वाना।

झँवावना*–स० क्रि० दे० 'झँवाना'।

झँसना–स० क्रि० ठगना, धोखा देकर, बेवकूफ बनाकर पैसे ले लेना; सिर आदिमें धीरे-धीरे तेल मलना।

झ–पु० (सं०) झंझावात; अंधड़; तेज हवाके साथ वृष्टि; बृहस्पति; दैत्यराज; 'झन-झन'की आवाज; ताल; नष्ट वस्तु।

झइँ, झईँ*–स्त्री० दे० 'झाँईं'।

झउआ†–पु० मिट्टी ढोनेका छिछला टोकरा।

झक–स्त्री० सनक, खब्त, धुन; बड़बड़ाहट; आँच, ताप; दे० 'झख'। वि० चमकता हुआ, झकाझक। **–केतु**–पु० दे० 'झषकेतु'।

झकझक–स्त्री० हुज्जत, तकरार।

झकझका–वि० चमकदार, चमकीला। **–हट**–स्त्री० चमक।

झकझेलना–स० क्रि० दे० 'झकझोरना'।

झकझोर–पु० झकझोरनेका भाव, झकझोरा; झोंका। वि० झोंकेदार।

झकझोरना–स० क्रि० पकड़कर जोरसे हिलाना, झटका देना।

झकझोरा–पु० झकझोरनेका भाव, झोँका।

झकझोलना–स० क्रि० दे० 'झकझोरना'।

झकड़–पु० दे० 'झक्कड़', झकर।

झकना–अ० क्रि० बकवाद करना; बड़बड़ाना; मचलना; झगड़ा करना।

झकर†–स्त्री० तेज हवा; लू (बुंदेल०)।

झका*–वि० दे० 'झक'।

झकाझक–वि० खूब साफ और चमकता हुआ, चमाचम ।

झकुराना*–अ० क्रि० झकोरा खाना । स० क्रि० झकोरा देना ।

झकूटा|–पु० छोटी झाड़ी ।

झकोर–पु० दे० 'झकोरा' ।

झकोरना–अ० क्रि० हवाका झोंकेके साथ पेड़ोंको झकझोरते हुए बहना, झकोरा मारना ।

झकोरा–पु० हवाका तेज झोंका; झटका; पेड़ोंका हवाके झोंकेसे हिलना, झूमना ।

झकोल–पु० दे० 'झकोर' ।

झक्क–स्त्री०, वि० दे० 'झक' ।

झक्कड़–पु० अंधड़, तेज हवा । वि० दे० 'झक्की' ।

झक्की–वि० सनकी, खब्ती; वक्की, वकवादी ।

झक्खना*–अ० क्रि० दे० 'झीखना' ।

झख–पु० दे० 'झष' । स्त्री० झीखनेकी क्रिया । **–केतु**–पु० दे० 'झषकेतु' । **–निकेत**–पु० दे० 'झषनिकेत' । **–राज**–पु० दे० 'झषराज' । **–लग्न**–पु० दे० 'झषलग्न' । **मु०–मारना**–बेकार काम करना, वक्त बरबाद करना; मजबूर होना ।

झखना*–अ० क्रि० दे० 'झींखना' ।

झखी*–स्त्री० झष, मछली ।

झगड़ना–अ० क्रि० (दो आदमियोंका) झगड़ा करना, लड़ना ।

झगड़ा–पु० दो आदमियोंका विवाद या टंटा, तकरार; बखेड़ा । **मु०–मोल लेना**–जान-बूझकर झगड़ेमें पड़ना; झगड़ा खड़ा करनेवाली बात करना ।

झगड़ालू–वि० झगड़ा करनेवाला, कलहप्रिय ।

झगड़ी–वि० स्त्री० झगड़ा करनेवाली ।

झगर–पु० एक चिड़िया; * दे० 'झगड़ा' ।

झगरना*–अ० क्रि० दे० 'झगड़ना' ।

झगरा*–पु० दे० 'झगड़ा' ।

झगराऊ*–वि० दे० 'झगड़ालू' ।

झगरी–स्त्री० झगड़ा, रार । वि० दे० 'झगड़ी' ।

झगला*–पु० दे० 'झगा' ।

झगा–पु० (बच्चोंका) ढीला कुरता, अँगरखा–'सीस पगा न झगा तनमें'–सुदामा० ।

झगुलिया, झगुली–स्त्री० झगा ।

झज्जर, झज्झर–पु० मँहका छोटा घड़ा, झंझर ।

झज्झी–स्त्री० फूटी कौड़ी ।

झझक–स्त्री० झझकनेकी क्रिया या भाव; दे० 'झिझक' ।

झझकन*–स्त्री० दे० 'झझक' ।

झझकना–अ० क्रि० यकायक क्रुद्ध होकर बड़बड़ाने, जोर-जोरसे बोलने लगना; भड़क उठना; दे० 'झिझकना' ।

झझकाना|–स० क्रि० किसीके झझकनेका कारण होना ।

झझकार–स्त्री० झझकारनेकी क्रिया या भाव ।

झझकारना–स० क्रि० दुतकारना; तुच्छ समझना ।

झझिया–स्त्री० दे० 'झिंझिया' ।

झट–अ० बहुत जल्द, फुरतीसे । **–पट**–अ० बहुत जल्द, तुरत ।

झटकना–स० क्रि० झटका देना; झटकारना; छीन लेना; हथियाना, ऐंठना । | अ० क्रि० तेज चलना ।

झटका–पु० झोंकेके साथ दिया हुआ धक्का; (हवाका) झोंका; पशुबलिका वह प्रकार जिसमें पशुकी गरदन तलवार आदिके एक ही हाथमें अलग हो जाय; आकस्मिक और चंदरोजा बीमारी; अचानक आयी हुई विपत्ति; हानि; कुश्तीका एकपेंच । **–(के)-का मांस**–झटकेकी रीतिसे मारे हुए पशुका मांस ।

झटकारना–स० क्रि० चीजको इस तरह हिलाना कि वह खुल जाय और उसपर पड़ी हुई धूल आदि झड़ जाय, झटका देना ।

झटा–स्त्री० (सं०) भुइँआँवला; शीघ्रता ।

झटाका–अ० जल्दीसे, चटपट ।

झटि–स्त्री० (सं०) झाड़ी; झाड़ ।

झटिका–स्त्री० (सं०) झाड़ी; भुइँआँवला ।

झटिति–अ० (सं०) झटपट, तुरंत ।

झड़–स्त्री० दे० 'झड़ी' ।

झड़कना–स० क्रि० दे० 'झिड़कना' ।

झड़झड़ाना–स० क्रि० झटकना; हिलाना; फटकारना, बिगड़कर बोलना ।

झड़न–स्त्री० वह जो किसी चीजसे झड़कर गिरे; झड़नेकी क्रिया; खुरचन; ऊपरी आमदनी । **–झुड़न**–स्त्री० झड़न ।

झड़ना–अ० क्रि० टूटकर गिरना (पेड़से पत्तों, सिरसे बालोंका); बरसना; (शहनाईका) बजना (नौवत झड़ना); साफ किया जाना ।

झड़प–स्त्री० दो पक्षियों, दो व्यक्तियों आदिकी अल्पकालिक भिड़ंत; क्रोधपूर्ण कहासुनी; झड़पनेका भाव, आवेश; लपट; झटका ।

झड़पना–अ० क्रि० हमला करना, टूट पड़ना; उलझना । स० क्रि० झटकना, झटकेसे छीन लेना ।

झड़पा-झड़पी–स्त्री० गुत्थमगुत्था ।

झड़पाना–स० क्रि० (पक्षियोंको) आपसमें लड़ाना ।

झड़बेरी–स्त्री० जंगली बेर ।

झड़वाना–स० क्रि० झाड़नेका काम कराना; झाड़फूंक कराना ।

झड़ाई–स्त्री० झाड़नेकी क्रिया या उजरत ।

झड़ाका–पु० झड़प । अ० फौरन, तत्काल ।

झड़ाझड़–अ० लगातार, झड़ीके रूपमें, तेजीसे ।

झड़ी–स्त्री० लगातार झड़ना; हलकी किंतु लगातार वर्षा; झड़ीके रूपमें चलनेवाली बातें, अविराम वाग्धारा (बँधना, लगना; बाँधना, लगाना); तालेके भीतरका खटका ।

झणझण–पु०, **झणझणा**–स्त्री० (सं०) 'झन-झन'की आवाज, झनकार ।

झणत्कार–पु० (सं०) झनकार ।

झन–स्त्री० धातुखंडपर आघातसे उत्पन्न होनेवाली ध्वनि । **–झन**–स्त्री० 'झन'की लगातार होनेवाली ध्वनि ।

झनक–स्त्री० झनकार; झनझनाहट; पैरको झटकेके साथ उठाते हुए चलना । **–मनक**–स्त्री० पायल आदिकी मंद, मधुर ध्वनि । **–बात**–पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें वे पैरको झटकेके साथ उठाते हुए चलते हैं ।

झनकना–अ० क्रि० झनक होना; झुंझलाना, खींझना; पैरको झटका देते हुए चलना ।

झनकार–स्त्री० 'झन-झन'की आवाज; झींगुरों आदिके बोलनेसे होनेवाली ध्वनि ।

झनकारना–अ० क्रि० 'झन-झन'की आवाज निकलना । स० क्रि० 'झन-झन'की आवाज पैदा करना ।

झनझना–वि० 'झन-झन' शब्द उत्पन्न करनेवाला ।

झनझनाना–अ० क्रि० 'झन-झन'की ध्वनि होना । स० क्रि० 'झन-झन'की ध्वनि निकालना, उत्पन्न करना ।

झनझनाहट–स्त्री० 'झन-झन'की आवाज; झुनझुनी ।

झनाझन–स्त्री० झनझन । अ० 'झन-झन' ध्वनि सहित ।

झनिया*–वि० झीना ।

झन्नाना–अ० क्रि० झनझनाना ।

झन्नाहट–स्त्री० झनझनाहट ।

झप–स्त्री० किसी चीजका ऊँचाईसे अचानक गिर पड़ना । **–से**–अ० झट, तुरत ।

झपक–स्त्री० पलकोंका गिरना; पलक गिरनेमें लगनेवाला समय, निमेष; झपकी ।

झपकना–अ० क्रि० पलक गिरना; झपकी लेना; झपटना; झेंपना ।

झपकाना–स० क्रि० बार-बार पलक गिराना ।

झपकी–स्त्री० हलकी, थोड़ी देरकी नींद, आँख लगना; * चकमा, धोखा ।

झपकौहाँ*–वि० नींदसे झपकनेवाली (आँखें); नशेमें चूर ।

झपट–स्त्री० झपटनेकी क्रिया या भाव; टूट पड़ना ।

झपटना–अ० क्रि० किसी चीजको लेने, पकड़ने या किसी चीजपर हमला करनेके लिए तेजीसे उसकी ओर बढ़ना, टूटना, लपकना । स० क्रि० झपटकर छीन लेना, पकड़ लेना ।

झपटान–स्त्री० झपट ।

झपटाना–स० क्रि० झपटनेकी क्रिया कराना ।

झपट्टा–पु० झपटनेकी क्रिया । –मार–वि० झपटनेवाला, टूट पड़नेवाला (हवाई जहाज) । मु० –मारना–(चील आदिका) किसी चीजपर टूटना ।

झपड़ियाना–स० क्रि० झापड़ मार देना, चपत लगाना ।

झपताल–पु० दस मात्राओंका एक ताल ।

झपना–अ० क्रि० दे० 'झपकना' ।

झपलैया*–स्त्री० झँपोला ।

झपवाना–स० क्रि० 'झपाना'का प्रे० ।

झपसट†–स्त्री० धोखेबाजी ।

झपसना–अ० क्रि० पेड़-पौधोंका पत्ते, टहनियाँ फेंककर बढ़ना, फैलना ।

झपाका–अ० झटपट । पु० शीघ्रता(···से) ।

झपाटा–पु० झपट्टा; झपट ।

झपाना–स० क्रि० (पलकें) मूँदना, (आँखें) बंद करना । अ० क्रि० झेंपना ।

झपित*–वि० झपा हुआ, मुँदा हुआ; लज्जित ।

झपिया†–स्त्री० पिटारी; गलेमें पहननेका एक गहना ।

झपेट–स्त्री० दे० 'झपट' ।

झपेटना–स० क्रि० टूट पड़ना; दबोचना ।

झपेटा–पु० हमला; धक्का; प्रेतबाधा ।

झपोला–पु० दे० 'झँपोला' ।

झप्पड़–पु० थप्पड़ ।

झप्पर*–पु० दे० 'झप्पड़' ।

झप्पान–पु० दे० 'झंपान' ।

झप्पानी–पु० झंपान ढोनेवाला ।

झबरा–वि० लंबे और सब ओर बिखरे हुए बालोंवाला ।

झबरीला–वि० चारों ओर बिखरा हुआ (केश-समूह) ।

झबरैरा*–वि० दे० 'झबरीला' ।

झबला†–पु० बच्चोंका ढीला ढाला पहनावा; झौवा, टोकरी ।

झबा–पु० दे० 'झब्बा' ।

झबार, झबारि†–स्त्री० जंजाल, झंझट ।

झबिया–स्त्री० छोटा झब्बा; बाजूबंद आदिमें नीचे लटकनेवाली कटोरी ।

झबूकना*–अ० क्रि० चौंकना ।

झब्बा–पु० गुच्छा, फुँदना ।

झमक–स्त्री० ठसककी चाल; 'झम-झम'की आवाज; चमक ।

झमकड़ा–पु० दे० 'झमक' ।

झमकना–अ० क्रि० पाँवोंके गहनोंकी झनकार करते चलना; नाचना; 'झम-झम'की आवाज होना; 'झम-झम' करते हुए तेजीसे आना-जाना; सहसा सामने आना–'पावक झरसी झमकि कै गयी झरोखे झाँखि'–बि०; चमकना; छाना; अकड़ दिखाना ।

झमकाना–स० क्रि० चमकाना; मटकाना; 'झम-झम'की आवाज करना; युद्ध आदिमें हथियार खटखटाना ।

झमकारा–वि० 'झम-झम' करके बरसनेवाला (बादल) ।

झमकीला–वि० चंचल; चमकीला ।

झम-झम–स्त्री० घुँघरुओंके बजने या जोरसे वर्षा होनेकी आवाज, छम-छम । अ० 'झम-झम' करते हुए ।

झमझमाना–अ० क्रि० 'झम-झम' आवाज होना; चमकना । स० क्रि० 'झम-झम' ध्वनि उत्पन्न करना; चमकाना ।

झमना*–अ० क्रि० झुकना, दबना ।

झमाका–पु० 'झम-झम'की आवाज; ठसक ।

झमाझम–अ० 'झम-झम' करते हुए; चमकके साथ ।

झमाट–पु० झुरमुट ।

झमाना–अ० क्रि० छाना, घेरना; दे० 'झँवाना' (अ० क्रि०, स० क्रि० दोनों) ।

झमारना–स० क्रि० झाँवर कर देना; जलसे भर देना–'आनँदको घन रंग झलनि झमारई'–घन० ।

झमेला–पु० झगड़ा; बखेड़ा, झंझट; * भीड़-भाड़ ।

झमेलिया–वि० झमेला करनेवाला; झगड़ालू ।

झर–पु० (सं०) झरना; सोता । * स्त्री० झड़ी; झड़ी या जलप्रवाहकी ध्वनि; ज्वाला; आँच; तालेका कुत्ता; झुंड ।

झरक*–स्त्री० दे० 'झलक' ।

झरकना–अ० क्रि० झलकना । स० क्रि० डपटना ।

झर-झर–स्त्री० वर्षाकी झड़ी लगने, पानी या हवा बहनेकी आवाज ।

झरझराना–अ० क्रि० 'झर-झर' करते हुए बहना, गिरना, जलना । स० क्रि० 'झर-झर'की आवाजके साथ गिराना ।

झरन–स्त्री० दे० 'झड़न' ।

झरना–पु० पहाड़से नीचे गिरनेवाला सोता, निर्झर; छेददार पलटा या पौना जिससे पूरियाँ आदि छानी जाती हैं; अनाज छाननेकी बड़ी छलनी । † वि० झड़नेवाला । * अ० क्रि० जलधाराका पर्वत आदिसे नीचे गिरना; दे० 'झड़ना'; बजना–'नौबत झरत चली नागन महँ रव करताल अपारे'–रघुराजसिंह । स० क्रि० बजाना ।

झरनि*–स्त्री० दे० 'झरन' ।

झरनी*–वि० स्त्री० जिससे कुछ झड़े ।

झरप*–स्त्री० झोंका; वेग; चिक; सहारा; दे० 'झड़प' ।

झरपना*–अ० क्रि० झोंका देना; दे० 'झड़पना' ।

झरफ*–स्त्री० दे० 'झरिफ' ।

झरबेर, झरबेरी†–स्त्री० दे० 'झड़बेरी' ।

झरवाना–स० क्रि० दे० 'झड़वाना' ।

झरसना*–अ० क्रि० दे० 'झुलसना' । स० क्रि० दे० 'झुलसाना' ।

झरहरना*–अ० क्रि० 'झर-झर' ध्वनि करना ।

झरहरा*–वि० सूराखदार, जालीदार ।

झरहराना–अ० क्रि० पत्तोंका आवाजके साथ नीचे आना, खड़खड़ाना । स० क्रि० डाल हिलाकर पत्तों आदिको गिराना ।

झरहिल–स्त्री० एक चिड़िया ।

झराँ*–पु० खो जाने, चुरा जानेकी क्रिया या भाव–'सो धन झराँ गयो'–घन० ।

झरा–स्त्री० (सं०) झरना, सोता ।

झराझर–अ० 'झर-झर' ध्वनि करते हुए ; तेजीसे ।

झरापना*–अ० क्रि० झड़पना, हमला करना ।

झराहर*–पु० ज्वालाधर, सूर्य ।

झरि*–स्त्री० दे० 'झड़ी' ।

झरिफ*–स्त्री० चिक, परदा ।

झरी–स्त्री० (सं०) झरना, सोता; झड़ी; † वह कर जो बाजारमें अपना माल ले जाकर बेचनेवालोंसे बाजारके मालिकको या ठेकेदारको मिले; संधि, दरार ।

झरोखा–पु० छोटी खिड़की, गवाक्ष ।

झर्झर–पु० (सं०) झाँझ; डिंडिम; कलियुग; एक नद; झरना; झाँझन ।

झर्झरक–पु० (सं०) कलियुग ।

झर्झरा–स्त्री० (सं०) वेश्या; तारा देवी ।

झर्झरावती–स्त्री० (सं०) गंगा; कटसरैया ।

झर्झरिका–स्त्री० (सं०) दे० 'झर्झरा' ।

झर्झरी–स्त्री० (सं०) झाँझ ।

झर्झरी(रिन्)–पु० (सं०) शिव ।

झर्झरीक–पु० (सं०) शरीर; देश; चित्र ।

झर्प*–स्त्री० दे० 'झड़प' ।

झर्रा–पु० एक छोटी चिड़िया, बया ।

झल–पु० ज्वाला, जलन; क्रोध; उत्कट कामना; काम-वासना; समूह । –हाया–वि० डाह करनेवाला, जलनेवाला ।

झलक–स्त्री० चमक; आभास; क्षणिक, अधूरा दर्शन (दिखाना, मारना) । –दार–वि० चमकीला ।

झलकना–अ० क्रि० चमकना; भीतरसे चमकना; दिखाई देना; आभास होना ।

झलकनि*–स्त्री० दे० 'झलक' ।

झलका–पु० छाला ।

झलकाना–स० क्रि० चमकाना; झलकदार बनाना; * दिखाना; आभास देना । * अ० क्रि० दे० 'झलकना' ।

झलकियाँ–स्त्री०, बहुव० स्थिति या घटनाओंपर प्रकाश डालनेवाली

छोटी छोटी मनोरंजक वातें (कांग्रेस महा समितिकी–)।

झलज्झला–स्त्री० (सं०) बूँदोंकी झड़ीकी आवाज; हाथीके कान फटफटानेकी आवाज।

झल-झल–अ० साफ, पूरी झलकके साथ (–दिखाई देना)। स्त्री० चमक।

झलझलाना–अ० क्रि० चमकना, झलक मारना; भड़क उठना, झल्लाना। स० क्रि० चमकाना।

झलझलाहट–स्त्री० चमक।

झलना–स० क्रि० (पंखा आदि) हिलाकर हवा करना; हवा करनेके लिए हिलाना। अ० क्रि० हिलना।

झलमल–पु० झलमलानेका भाव (–करना)। वि० अस्थिर झलमलाता हुआ (प्रकाश)।

झलमला–वि० झलकता हुआ, चमकीला।

झलमलाना–अ० क्रि० रह-रहकर, कभी तेज, कभी धुँधली, हलकी रोशनी देना; रोशनीका इधर-उधर हिलना।

झलराना*–अ० क्रि० वढ़ना, फैलना; † हिलना, लहराना।

झलरी–स्त्री० (सं०) झाँझ।

झलवाना–स० क्रि० झलने या झालनेका काम कराना।

झला–स्त्री० (सं०) कन्या; धूप; कांति, चमक। * पु० हलकी, थोड़ी देरकी वर्षा; झालर; पंखा।

झलाझल–वि० चमकता हुआ, चमाचम। अ० चमकके साथ।

झलाझली*–वि० चमकदार। स्त्री० झलाझल होनेका भाव।

झलाना–स० क्रि० दे० 'झलवाना'।

झलावोर–पु० सुनहले-रुपहले तारोंसे वुना हुआ साड़ीका आँचल; कारचोवी। वि० चमकता हुआ, चमाचम।

झलामल†–स्त्री० चमक-दमक।

झलि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी सुपारी।

झल्ल–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति; भाँड़; हुडुक; ज्वाला। **–कंठ**–पु० कबूतर।

झल्लक–पु० (सं०) करताल; झाँझ।

झल्लकी–स्त्री० (सं०) दे० 'झल्लक'।

झल्लरा, झल्लरी–स्त्री० (सं०) हुडुक; झाँझ; पसीना; शुद्धता; घुँघराले वाल।

झल्ला–पु० बड़ा टोकरा; वौछार। वि० जो गाढ़ा न हो।

झल्लाना–अ० क्रि० वहुत विगड़ जाना, झुँझला उठना। स० क्रि० चिढ़ानेवाला काम करना, झुँझला देना।

झल्लिका–स्त्री० (सं०) उवटन लगानेपर निकलनेवाली झिल्ली या मैल; रंग, इत्र आदि लगानेमें व्यवहृत रुई या कपड़ेकी धज्जी; द्युति, चमक।

झल्ली–स्त्री० (सं०) एक वाजा, हुडुक।

झवर*–स्त्री० झगड़ा।

झवारि†–स्त्री० दे० 'झवर'।

झष–पु० (सं०) मछली; मगर; मीन राशि; मकर राशि; ताप; वन। **–केतन,–केतु,–ध्वज**–पु० कामदेव। **–निकेत**–पु० जलाशय। **–राज**–पु० मगर। **–लग्न**–पु० मीन लग्न।

झषना*–अ० क्रि० झखना।

झषांक–पु० (सं०) कामदेव।

झषा–स्त्री० (सं०) नागवला।

झषाशन–पु० (सं०) सूँस।

झषोदरी–स्त्री० (सं०) व्यासकी माता, मत्स्योदरी, सत्यवती।

झसना–स० क्रि० दे० 'झँसना'।

झहनना*–अ० क्रि० झन्नाना; सन्नाटेमें आना; रोमांच होना।

झहनाना–स० क्रि० झनकार पैदा करना, वजाना। अ०-क्रि० झनकार करना–'· ·मनहुँ घंट झहनावैं'–सूर।

झहरना*–अ० क्रि० दे० 'झहराना'। स० क्रि० झिड़कना।

झहराना*–अ० क्रि० कमजोर होकर गिर पड़ना (पत्तों आदिका); झल्लाना; तिरस्कृत होना। स० क्रि० झकझोरना; लथेड़ना।

झाँईं–स्त्री० छाया, परछाईं; अँधेरा; प्रतिध्वनि; धोखा; रक्त-विकारके कारण पड़ा हुआ काला धब्बा। **–माईं**–स्त्री० बच्चोंका एक खेल जिसमें वे कुछ गाते हुए अपने चारों ओर घूमते हैं। मु० **–आना**–आँखोंके सामने अँधेरा छा जाना।**–बताना**–धोखा देना।

झाँक–स्त्री० झाँकनेकी क्रिया (केवल 'ताक-झाँक' में व्यवहृत)।

झाँकना–अ० क्रि० आड़से, झरोखे आदिसे वाहरकी वस्तुको देखना; इधर-उधर देखना या झुककर देखना (कुआँ–)।

झाँकनी*–स्त्री० झाँकी; कुआँ।

झाँकर–पु० दे० 'झंखाड़'।

झाँका–पु० जालीदार खाँचा; झरोखा; अंतर–'· ·परन न पायो झाँको'–सूर।

झाँकी–स्त्री० (सजायी हुई देवमूर्तिका) दर्शन; कुछ दूरसे होनेवाला अपूर्ण दर्शन; दृश्य; झरोखा।

झांकृत–पु० (सं०) पैरका एक घुँघरूदार गहना; झरने आदिके गिरनेका शब्द।

झाँख*–पु० एक तरहका जंगली हिरन; अरहर आदिका डंठल।

झाँखना*–अ० क्रि० दे० 'झींखना'; झाँकना।

झाँखर–पु० झंखाड़; काँटेदार झाड़ियोंका समूह। वि० झीनी वुनावटवाला; जिसके पेंदेमें वहुतसे छेद हों।

झाँगला–वि० ढीला-ढाला (वस्त्र इ०)। पु० झगा।

झाँगा*–पु० दे० 'झागा'।

झाँझ*–स्त्री० काँसेके दो तश्तरी जैसे टुकड़ोंसे वना मँजीरे जैसा वाजा, झाल; शरारत; अड़ियलपन; झाँझन। **–दार**–वि० 'झन-झन' वजनेवाला।

झाँझ†–स्त्री० (भाँगका) नशा–'ऐसा न हो कि झाँझ हो जाये जरा गहरी'–जिंदगी०।

झाँझड़ी*–स्त्री० दे० 'झाँझ'।

झाँझन–स्त्री० पाँवमें पहननेका पोला कड़ा जो चलनेसे 'झन-झन' वजे, झाँझदार कड़ा, पैजनी।

झाँझर*–स्त्री० दे० 'झाँझन'। वि० जर्जर; छिद्रोंवाला।

झाँझरि*–स्त्री० दे० 'झाँझर'।

झाँझरी*–स्त्री० झाँझ; झाँझन।

झाँझा–पु० फसलको लगनेवाला एक कीड़ा; झाँझ; झंझट; † सेव छाननेका पौना।

झाँझिया–पु० झाँझ वजानेवाला।

झाँट–स्त्री० उपस्थके वाल, पशम।

झाँटि*–स्त्री० दे० 'झाँट'।

झाँप–पु० ढकनेके काम आनेवाली चीज; वाँसका टोकरा; वाँसका वना ख्वानपोश; खिड़की-दरवाजेके सामने, धूप-वर्षासे वचावके लिए लगाया जानेवाला टीन, लकड़ी आदिका बना परदा; वग्घीका टप; वाँसकी तीलियोंका वना मुर्गियोंका दरवा; उछल-कूद। * स्त्री० पर्दा, चिक; झपकी।

झाँपना–स० क्रि० ढकना, आवरण करना; छोप लेना। अ० क्रि० झेंपना।

झाँपी†–स्त्री० टोकरी; वाँस या मूँजकी पिटारी; झपकी।

झाँवना*–स० क्रि० झाँवेंसे रगड़ना (मैल छुड़ानेके लिए)।

झाँवर–स्त्री० नीची जमीन, डावर। † वि० जिसमें श्यामता हो; मुरझाया हुआ।

झाँवली–स्त्री० झलका; झाँईं; आँखका संकेत।

झाँवाँ–पु० जली हुई ईंट या उसका टुकड़ा जो मैल छुड़ानेके लिए देह रगड़नेके काम आती है।

झाँसना–स० क्रि० झाँसा देना, ठगना; वहकाना।

झाँसा–पु० धोखा, जल, वुत्ता। **–पट्टी**–स्त्री० दमवाजी, वुत्ता।

झाँसिया, झाँसू–वि० झाँसा देनेवाला।

झा–पु० मैथिल तथा गुजराती व्राह्मणोंकी एक उपाधि। स्त्री० (सं०) जलप्रपात।

झाईं–स्त्री० दे० 'झाँईं'।

झाइँ*–स्त्री० दे० 'झाईं'।

झाऊ–पु० एक छोटा झाड़ जो रेतीले मैदानोंमें अधिक होता है।

झाग–पु० फेन, गाज।

झाझ*–पु० जहाज–'राम नामका झाझ चलास्याँ भवसागर तर जास्याँ'–मीरा।

झागड़*–पु० दे० 'झगड़ा'।

झाट–पु० (सं०) कुंज; झाड़ी; घावको धोना ।

झाटल–पु० (सं०) एक तरहका लोध वृक्ष, घंटापाटलि ।

झाटा–स्त्री० (सं०) जूही; भूम्यामलकी ।

झाटास्त्रक–पु० (सं०) तरबूज ।

झाटिका, झाटी, झाटीका–स्त्री० (सं०) दे० 'झाटा' ।

झाड़–पु० छोटा पेड़ या पौधा जिसकी जड़से डालियों जैसे कई तने निकलकर झाड़ियोंकी शक्लमें फैल जायँ, छोटा, गुंजान, कँटीला पेड़; झाड़की शक्लका फानूस जो छत या शामियानेसे लटकाकर जलाया जाता है और जिसमें बहुत-सी मोमबत्तियाँ या बल्ब एक साथ जलाये जा सकते हैं; एक आतिशबाजी; ताँता । **–खंड**–पु० जंगल; दे० 'झारखंड' । **–झंखाड़**–पु० कँटीले पेड़ों, झाड़ियों-का समूह; टूटी-फूटी, रद्दी चीजें । **–दार**–वि० कँटीला; घना । पु० एक तरहका कशीदा । **–फ़ानूस**–पु० शीशेका बना रोशनी और सजावटका सामान ।

झाड़–स्त्री० झाड़नेकी क्रिया (केवल समासमें व्यवहृत); फटकार, भर्त्सना; मंत्रोपचार, मंत्र पढ़कर फूँकना । **–पौँछ**–स्त्री० सफाई । **–फूँक**–स्त्री० झाड़ना-फूँकना, मंतर-जंतर । **–बाकी**–स्त्री० देनकी पूरी सफाई, बेबाकी । **–बुहार**–स्त्री० सफाई ।

झाड़न–स्त्री० झाड़नेसे निकली हुई चीज; झाड़नेके काम आनेवाला कपड़ा ।

झाड़ना–स० क्रि० झटकारना, धूल-गर्द साफ करना; बुहारना, झाड़ू देना; मंत्र पढ़कर फूँकना; फटकारना; कंघी करना; (पेड़से फल) नीचे गिराना; (चिड़ियोंका पंख) छोड़ना; दूर करना, भगाना (शेखी, बदमाशी, घमंड); रोब जमानेके लिए उलटी सीधी, सहज ही समझमें न आनेवाली बातें कहते जाना (अंग्रेजी–, उर्दू–) । मु० **झाड़-पछोड़कर देखना**–जाँच-तौल करना; खूब आजमाना । **झाड़-पोंछकर**–कुल इकट्ठा करके, झाड़-बुहारकर ।

झाड़ा–पु० जामा-तलाशी; झाड़-फूँक; मैला, गू; शौच जानेकी इच्छा या क्रिया । मु०–**फिरना**–मलत्याग करना, शौच जाना ।

झाड़ी–स्त्री० कँटीले पौधों या झाड़ोंका समूह; एकमें मिले हुए कँटीले पौधे ।

झाड़ू–स्त्री० सीकों, तीलियों आदिका पूला जिससे धूल, गर्द आदिकी सफाई करते हैं, बुहारी, बढ़नी; पुच्छल तारा । **–कश**–पु० झाड़ू देनेका पेशा करनेवाला; भंगी । **–दुमा**–पु० वह हाथी जिसकी दुम झाड़ूकी तरह फैली हो । **–बरदार**–पु० दे० 'झाड़ूकश' । मु०–**फिरना**–कुछ बाकी न रहना, सब नष्ट हो जाना ।–**मारना**–तिरस्कार करना, ठोकर मारना (स्त्री०) ।

झापड़–पु० थप्पड़, जोरका तमाचा ।

झाबर–पु० दलदल; * खाँचा ।

झाबा–पु० टोकरा; कुप्पा; चमड़ेका गोल थाल जो पंजाबमें आटा छाननेके काम आता है; शीशेका बड़ा झाड़; झब्बा ।

झाबी–स्त्री० छोटा झाबा ।

झाम–पु० गहराईसे मिट्टी खोदकर निकालनेवाला एक यंत्र; एक बरतन जो भोज आदिमें दाल-तरकारी आदि परसनेके काम आता है; * गुच्छा; छल, धोखेबाजी; डाँट-डपट ।

झामक–पु० (सं०) झाँवाँ ।

झामर–पु० पाँवोंमें पहननेका एक गहना; (सं०) टेकुआ तेज करनेकी सिल्ली । वि० दे० 'झाँवर', साँवला । **–झमर**–पु० व्यर्थकी, सारहीन बात (कबीर) ।

झामी*–वि० छलिया, धोखेबाज ।

झायँ-झायँ–स्त्री० सुनसान जगहमें होनेवाली 'झन-झन' आवाज, हवाका शब्द । मु०–**करना**–सूना, डरावना लगना ।

झार*–स्त्री० जलन, ज्वाला; झाल । पु० दे० 'झाड़'; समूह; पौना । वि० निरा, निपट; सब । **–खंड**–पु० एक पर्वतमाला जो वैद्यनाथसे पुरीतक गयी है; छोटा नागपुर । **–झरस**–स्त्री० जलन, गरमी ।

झारन†–स्त्री० दे० 'झाड़न' ।

झारना†–स० क्रि० दे० 'झाड़ना' ।

झारा–पु० झरना, पौना, सूप; पतली छनी हुई भंग; * तलाशी ।

झारि–स्त्री०, वि० दे० 'झार' ।

झारी–स्त्री० पानी परसने, हाथ-मुँह धुलाने आदिके लिए काममें लाया जानेवाला टोंटीदार बरतन, गड़ुआ; * झाड़ी; एक खट्टा पेय । वि० 'झार', कुल, सब । 'गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी'–रामा० ।

झार्झर–पु० (सं०) हुडुक या ढोल बजानेवाला ।

झाल–पु० झाँझ; झलनेकी क्रिया । स्त्री० चरपराहट, तीखापन; लहर; ज्वाला; संभोगकी इच्छा; वर्षाकी झड़ी जो कई दिन लगी रहे । वि० दे० 'झार' ।

झालड़–स्त्री० दे० 'झालर' ।

झालना–स० क्रि० धातुकी बनी चीजको टाँकेसे जोड़ना; किसी चीजको ठंढा करनेके लिए बरफ या शोरेमें रखना ।

झालर–स्त्री० लटकनेवाला हाशिया; किनारा; एक तरहका घंटा या घड़ियाल; शिशुके गभुआरे, लहरीले बाल (बुंदेल०); * एक पकवान । **–दार**–वि० जिसमें झालर लगी हो ।

झालरना*–अ० क्रि० दे० 'झलराना'; पुष्पादियुक्त होना ।

झाला–पु० राजपूतोंका एक भेद । * बकवाद–'काहेको झाला लै मिलवत कौन चोर तुम डाँडे'–सूर ।

झालि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी काँजी; * झड़ी; झाल ।

झावँ-झावँ–स्त्री० हुज्जत, तकरार ।

झावर–पु० दे० 'झाबर' ।

झावु, झावुक–पु० (सं०) झाऊ ।

झिंगन–पु० सारस्वत ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; एक पेड़ ।

झिँगवा–पु० दे० 'झीँगा' मछली ।

झिंगाक–पु० (सं०) तोरई ।

झिंगिनी–स्त्री० (सं०) लुक; एक जंगली पेड़ ।

झिंगी–स्त्री० (सं०) जिंगिनी नामक वृक्ष ।

झिंगुलिया, झिँगुली*–स्त्री० दे० 'झगा' ।

झिंझरी–स्त्री० जालीदार खिड़की ।

झिंझिम–(सं०) जलता हुआ वन ।

झिँझिया–स्त्री० वह घड़ा जिसके पेंदेमें बहुतसे छेद होते हैं और जिसमें दिया बालकर घुमाया जाता है ।

झिंझिरिष्टा–स्त्री० (सं०) एक झाड़ी ।

झिंझिरीटा–स्त्री० एक क्षुप, झिंझिरिष्टा ।

झिंझी–(सं०) झींगुर, झिल्ली ।

झिँझौटी–स्त्री० एक रागिनी ।

झिंटी–स्त्री० (सं०) कटसरैया ।

झिगड़ना, झिगरना*–अ० क्रि० दे० 'झगड़ना' ।

झिगमिगाना*–अ० क्रि० जगमगाना, प्रकाशित होना (बीसल०) ।

झिझक–स्त्री० हिचक, भड़क; लज्जाजनित संकोच ।

झिझकना–अ० क्रि० भय या लज्जाके कारण कोई बात कहने, करनेमें हिचकना, ठिटकना; भड़कना ।

झिझकार–स्त्री० झिझकारनेकी क्रिया या भाव ।

झिझकारना–स० क्रि० दुतकारना; झिड़कना ।

झिड़कना–स० क्रि० डाँटना, फटकारना; तिरस्कारके साथ फेंक देना ।

झिड़की–स्त्री० झिड़कनेका भाव, डाँट, फटकार ।

झिनझिनी†–स्त्री० दे० 'झुनझुनी' ।

झिनवा–पु० एक बारीक धान । वि० दे० 'झीना' ।

झिनायिका–स्त्री० शंबूक, सुतुही; दीर्घकोशिका ।

झिपना–अ० क्रि० दे० 'झेँपना'; बंद होना ।

झिपाना–स० क्रि० लजवाना, शर्मिंदा करना ।

झिर–स्त्री० दे० 'झिरी' ।

झिरकना–स० क्रि० दे० 'झिड़कना' ।

झिर-झिर–अ० मंद गतिसे 'झिर-झिर' आवाजके साथ ।

झिरझिरा–वि० झीना ।

झिरझिराना–अ० क्रि० 'झिर-झिर' करते हुए बहाना ।

झिरना–अ० क्रि० दे० 'झरना' । पु० छेद; दे० 'झरना' ।

झिरहर*–वि० झीना, सूराखदार ।

झिरिका, झिरीका–स्त्री० (सं०) झींगुर ।

झिरिया†–स्त्री० छोटा झरना, छोटी कुइयाँ या गढ़ी जिसमें अपने-आप पानी झरता हो, झिरी।

झिरी–स्त्री० संधि, झरी; वह गढ़ा जिसमें पानी रिसकर इकट्ठा हो; पाला; (सं०) झींगुर।

झिलँगा–पु० पुरानी खाट जिसकी बुनावट ढीली हो गयी या टूट गयी हो; ऐसी खाटका वाध। † वि० झीना, ढीलाढाला।

झिलना–अ० क्रि० घुसना; तृप्त होना; मगन होना; झेला जाना। * स० क्रि० हमला करना। पु० झींगुर।

झिलम–स्त्री० लोहेका वना टोप या शिरस्त्राण। **–टोप**–पु० झिलम (उदा० दे० 'तवा'में)।

झिलमिल–स्त्री० हिलती, रह-रहकर चमकती हुई रोशनी; झिलमिलानेका भाव। पु० एक महीन वस्त्र। वि० झिलमिलाता हुआ।

झिलमिला–वि० झीना; जिससे झिलमिलाती हुई रोशनी निकले।

झिलमिलाना–अ० क्रि० रोशनीका हिलना, कभी चमकना, कभी न चमकना; टिमटिमाना।

झिलमिलाहट–स्त्री० झिलमिलानेकी क्रिया या भाव।

झिलमिली–स्त्री० खिड़कियों आदिमें जड़ा जानेवाला आड़ी पटरियोंका ढाँचा जो पीछे लगी हुई खड़ी लकड़ीको खींचनेसे खुलता या वंद होता है; चिक; चिलमन; एक तरहकी जाली; कानमें पहननेका एक गहना; झिलमिलाहट।

झिलवाना–स० क्रि० झेलनेका काम कराना, सहाना ('झेलना'-का प्रे०)।

झिली*–स्त्री० झींगुर।

झिल्लड़–वि० जिसकी वुनावट दूर-दूर हो, झीना, गफ नहीं।

झिल्लि–स्त्री० (सं०) एक वाजा; झींगुर।

झिल्लिका–स्त्री० (सं०) झींगुर; झींगुरकी झनकार; सूर्य-प्रकाश; दीप्ति; झिल्ली, उवटनका मैल।

झिल्ली–स्त्री० (सं०) झींगुर; सूर्यप्रकाश; दीप्ति; दीयेकी वत्ती; रंग लगानेका कपड़ा; एक वाजा। **–कंठ**–पु० पालतू कवूतर।

झिल्ली–स्त्री० चमड़े आदिकी पतली तह; वारीक छिलका; आँखका जाला; उवटन आदि लगानेसे शरीरसे छूटनेवाला मैल। **–दार**–वि० जिसपर झिल्ली हो।

झिल्लीक–पु० (सं०) झींगुर।

झिल्लीका–स्त्री० (सं०) झींगुर; सूर्यप्रकाश; उवटनका मैल।

झींक–पु० दे० 'झींका'।

झींकना–अ० क्रि० दे० 'झींखना'।

झींका–पु० अन्नकी वह मात्रा जो पीसनेके लिए चक्कीमें एक वार डाली जाय; छीका।

झींख–स्त्री० 'झींखना'का भाव।

झींखना–अ० क्रि० दुःखी होना, कुढ़ना; दुखड़ा रोना।

झींगा–पु० एक छोटी मछली जिसके मुँह और पूँछपर लंवे वाल होते हैं।

झींगुर–पु० एक कीड़ा जिसकी आवाज वहुत तेज होती और वरसातकी रातमें अक्सर सुनाई देती है।

झींवर*–पु० दे० 'झीमर'।

झींसी–स्त्री० नन्हीं-नन्हीं वूँदोंमें होनेवाली वर्षा; फुहार।

झीका–पु० छीका।

झीखना–अ० क्रि० दे० 'झींखना'।

झीट*–वि० झूट, मिथ्या।

झीड़ना*–अ० क्रि० घुसना; धँसना–'मानहुँ सुधा सिंधुमें झीड़त मकर पानके हेत'–सूर।

झीणा†, झीना–वि० बहुत वारीक; दूर-दूर बुना हुआ, झाँझर; दुर्वल।

झीनासारी*–पु० एक तरहका चावल।

झीम–स्त्री० उनींदे व्यक्तिका नींदपर कावू पानेके प्रयत्नमें झूम जाना, ऊँघ, झपकी, दे० 'झूम'।

झीमना†–अ० क्रि० दे० 'झूमना'।

झीमर–पु० धीवर, मछुआ।

झीरिका, झीरुका–स्त्री० (सं०) झींगुर।

झील–स्त्री० प्रकृति-निर्मित सरोवर; बहुत वड़ा ताल।

झीलर–पु० छोटी झील या ताल।

झीवर–पु० माझी, मछुआ।

झुँगना*–पु० जुगनू–'...सूरजके आगे जैसे झुंगना दिखाइये'–सुंदरदास।

झुँझना*–झुनझुना, एक खिलौना।

झुंझलाना–अ० क्रि० खीझना, चिढ़ना, विगड़ना।

झुंझलाहट–स्त्री० झुँझलानेका भाव, चिढ़, खफगी।

झुंट–पु० (सं०) विना तनेका पेड़; झाड़ी।

झुंड–पु० समूह, विशेपतः पशु-पक्षियोंका गिरोह, गिल्ला। **–के झुंड**–दलके दल; वहुत अधिक।

झुंडी–स्त्री० पौधोंकी खूँटी जो फसल काट लेनेके वाद खेतमें रह जाय; परदा टाँगनेका काँटा।

झुकना–अ० क्रि० टेढ़ा होना, लटकना; मुड़ना; नीचा होना (आँखोंका); दवना, नमित होना; हार या छुटाई स्वीकार करना; प्रवृत्त होना, लगना; किसी ओर पक्षपात करना; मानना; † मरना; * झुंझलाना; क्रुद्ध होना–'भैयन सों प्रभु झुकत हैं क्यों न कहो समुझाइ'–रामचंद्रिका, 'झुकी रानि अब रहु अरगानी'–रामा०।

झुकमुख*–पु० झुटपुटा।

झुकरना–अ० क्रि० झुंझलाना।

झुकराना*–अ० क्रि० झोंका खाना।

झुकवाना–स० क्रि० झुकानेका काम कराना।

झुकाई–स्त्री० झुकानेकी क्रिया या भाव; झुकानेकी उजरत।

झुकाना–स० क्रि० टेढ़ा करना, लटकाना; मोड़ना; नीचा करना; ...की ओर प्रवृत्त करना, लगाना।

झुकामुखी*–स्त्री० दे० 'झुकमुख'।

झुकाव–पु० झुकनेकी क्रिया या भाव; ढाल; प्रवृत्ति; चाह।

झुकावट–स्त्री० दे० 'झुकाव'।

झुग्गी†–स्त्री० पत्तोंका वना सिरका आवरण 'उस झुग्गीमें पानीका कतरा न जा सकता था'–कादं०, फर० ६३।

झुझकाना, झुझकावना*–स० क्रि० रेलना, आक्रमणके लिए प्रेरित करना।

झुटपुटा–पु० सवेरे या शामका समय जव प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज साफ दिखाई न दे, वह समय जव कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो।

झुटलाना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'।

झुटालना–स० क्रि० दे० 'जुठारना'।

झुटुंग–वि० झोंटेवाला, जटाधारी।

झुटकाना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'।

झुठलाना–स० क्रि० झूठा सावित करना; झूठी वात कहकर धोखा देना।

झुठवना*–स० क्रि० झूठा बनाना।

झुठाई–स्त्री० झूठापन, असत्यता।

झुठाना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'।

झुठालना–स० क्रि० दे० 'झुठलाना'; दे० 'जुठारना'।

झुणकार–स्त्री० रुनझुन, झनकार।

झुनक–स्त्री० घुँघरूकी आवाज।

झुनकना–अ० क्रि० 'झुन-झुन' वजना। पु० दे० 'झुनझुना'।

झुनकारा*–वि० झीना। (स्त्री० 'झुनकारी'।)

झुन-झुन–पु० नूपुर, पैजनी आदिके बजनेकी आवाज।

झुनझुना–पु० काठ, टिन आदिका वना खिलौना जो हिलानेसे 'झुन-झुन' बजता है, घुनघुना।

झुनझुनाना–अ० क्रि० 'झुन-झुन' ध्वनि होना। स० क्रि० 'झुन-झुन' शब्द उत्पन्न करना।

झुनझुनियाँ–स्त्री० 'झुन-झुन' शब्द करनेवाला गहना; बेड़ी; सनईका पौधा।

झुनझुनी–स्त्री० हाथ-पाँवके एक हालतमें देरतक रहने या दवनेसे पैदा होनेवाली सनसनाहट।

झुपझुपी†–स्त्री० दे० 'झुबझुबी'।

झुपरी*–स्त्री० दे० 'झोँपड़ी' ।

झुबझुबी†–स्त्री० कानका एक गहना ।

झुमका–पु० कानमें पहननेका एक गहना जो करनफूलकी तरकीसे लटकता रहता है; एक पौधा; उसका फूल ।

झुमरि–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

झुमरी†–स्त्री० मुँगरी; पिटना ।

झुमाना–स० क्रि० किसीको झूमनेमें प्रवृत्त करना ।

झुमिरना*–अ० क्रि० दे० 'झूमना' ।

झुरकुट–वि० सूखा हुआ; दुबला; भुरकस (गद्यभारती) ।

झुरकुन–पु० किसी वस्तुके बहुत छोटे टुकड़े, चूर; झड़कर निकली हुई चीज ।

झुरझुरी†–स्त्री० जूड़ी-बुखारकी कँपकँपी ।

झुरना*–अ० क्रि० सूखना; दुःख या चितासे क्षीण होना ।

झुरमुट–पु० पास-पास उगे हुए पेड़ या झाड़ जिनकी डालियाँ मिलकर कुंज-सा बना रही हों; समूह, मंडली; चादरको इस तरह ओढ़ना कि सारा शरीर ढक जाय ।

झुरवन†–स्त्री० दे० 'झुरावन' ।

झुरसना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'झुलसना' ।

झुरसाना*–स० क्रि० दे० 'झुलसाना' ।

झुरहुरी–स्त्री० दे० 'झुरझुरी' ।

झुराना*–अ० क्रि० सूखना । स० क्रि० सुखाना ।

झुरावन*–स्त्री० सूखनेसे वस्तुकी तौलमें होनेवाली कमी ।

झुर्री–स्त्री० सूखनेसे (चेहरे, देह आदिपर) पड़नेवाली शिकन ।

झुलका–पु० घुनघुना, झुनझुना ।

झुलना–पु० झूला; ढीला कुरता । † वि० झूलनेवाला ।

झुलनी–स्त्री० सोने, मोतियों आदिकी बनी लटकन जो नथमें लटकायी या अलगसे भी, बेसरकी तरह, नाकमें पहनी जाती है ।

झुलमुला*–वि० दे० 'झिलमिला' ।

झुलवाना–स० क्रि० झुलानेका काम करना ।

झुलसन–स्त्री० झुलसनेकी क्रिया; तेज गरमी जो शरीरको झुलसा दे ।

झुलसना–अ० क्रि० इतना जलना कि सतह स्याह हो जाय, वस्तुके केवल ऊपरी भागका जलना, अधजला होना; धूप, लू या पालेसे पौधों आदिका सूखना, मुरझाना । स० क्रि० दे० 'झुलसाना' ।

झुलसवाना–स० क्रि० झुलसनेका काम कराना ।

झुलसा–पु० पेड़ पौधोंके सूखते जाने, झुलस जानेका रोग ।

झुलसाना–स० क्रि० वस्तुका ऊपरी भाग, सतह जला देना, अधजला कर देना; झुलसनेका कारण होना ।

झुलाना–स० क्रि० झूलेको हिलाना, धकेलना; लटकाकर हिलाना; अटकाये रखना, आज-कल करते रहना ।

झुलावना*–स० क्रि० दे० 'झुलाना' ।

झुलावनि*–स्त्री० झुलानेकी क्रिया या भाव ।

झुलिया–स्त्री० बच्चोंका कुरता, झँगुलिया ।

झुलौआ, झुलौवा*–पु० स्त्रियोंका कुरता; झूला, झूलनेका साधन । वि० झूलनेवाला ।

झुल्ला*–पु० स्त्रियोंकी एक तरहकी बिना बाँहकी कुर्ती ।

झुहिरना*–अ० क्रि० लादा जाना ।

झूँक*–पु० दे० 'झोँका' । स्त्री० दे० 'झोँक' ।

झूँका*–पु० दे० 'झोँका' ।

झूँखना*–अ० क्रि० दे० 'झीँखना' ।

झूँझल–स्त्री० दे० झुँझलाहट ।

झूँटा–वि० झूठा । पु० पेंग; बालोंका समूह, झोंटा ।

झूँठा–वि० झूठा; जूठा । पु० जूठन ।

झूँकटी–स्त्री० छोटी झाड़ी ।

झूखना*–अ० क्रि० दुखी होना, संतप्त होना–'अवधि गनत इक टक मग जोवत तब एती नहिं झूखी'–सूर । दे० 'झूँखना' ।

झूझ*–पु० दे० 'युद्ध' ।

झूझना*–अ० क्रि० जूझना, युद्ध करना ।

झूट–वि०, पु० दे० 'झूठ' ।

झूठ–वि० जो सच न हो, अयथार्थ, मिथ्या । पु० झूठी बात, असत्य । **–मूठ**–अ० योंही, अकारण, बेकार । **–सच**–पु० कुछ झूठी और कुछ सच्ची बात, झूठ और सचकी खिचड़ी । मु० **–का दफ्तर**–मनगढ़ंत बातें, ऐसा कथन जो आदिसे अंततक झूठ हो । **–का पुतला**–बहुत झूठ बोलनेवाला, भारी झूठा । **–का पुल बाँधना**–झूठकी झड़ी लगा देना, झूठपर झूठ बोलना । **–की पोट**–सरासर, आदिसे अंततक झूठी बात । **–को सच बनाना** –झूठको इस तरह कहना कि सच जान पड़े; झूठी बातको सच्ची साबित कर देना । **–सच जोड़ना या लगाना**–सचमें झूठ मिलाकर कहना, झूठी शिकायतें करना ।

झूठन–स्त्री० दे० 'जूठन' ।

झूठा–वि० जो सच न हो, असत्य, मिथ्या; झूठ बोलनेवाला, मिथ्याभाषी; नकली, बनावटी; दिखाऊ (–फैर); जूठा । मु० **–पड़ना**–(किसी कल-पुरजे या अंगका) काम देने लायक न रहना, बेकार हो जाना । **–(ठे)का मुँह काला**–झूठा हर जगह जलील होता है । **–की क़ब्र या घरतक पहुँचना या हो आना**–झूठेका झूठ पकड़कर, साबित करके उसे लज्जित करना । **–को घर पहुँचा देना**–झूठेको कायल कर देना, उससे मनवा लेना कि उसने झूठी बात कही । **–(ठोँ)का पीर या बादशाह**–बहुत बड़ा झूठा ।

झूठोँ–अ० झूठ-मूठ, योंही, दिखानेके लिए (–न पूछना) ।

झूणि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी सुपारी; असगुन; अमंगल सूचक आकाशवाणी ।

झूना*–वि० दे० 'झीना' ।

झूम–स्त्री० झूमनेकी क्रिया या भाव; ऊँघ ।

झूमक–पु० झूमर; झूमरके साथ होनेवाला नृत्य; गुच्छा; साड़ी-दुपट्टेके माथेपर रहनेवाले भागपर टँका मोतियों आदिका गुच्छा; झुमका । **–साड़ी**–स्त्री० वह साड़ी जिसमें झूमक टँके हों ।

झूमका–पु० दे० 'झुमका'; दे० 'झूमक' ।

झूमड़–पु० दे० 'झूमर' । **–झामड़**–पु० अंडबंड, व्यर्थकी बात, ढकोसला ।

झूमड़ा–पु० दे० 'झूमरा' ।

झूमना–अ० क्रि० इधर-उधर हिलना, झोंके खाना; लहराना; (मस्ती, आनंदमें) सिर-धड़को आगे-पीछे या दाहने-बायें हिलाना; नशेमें लड़खड़ाना । **झूम-झूमकर**–झूमते हुए, सिर-धड़को हिलाते हुए ।

झूमर–पु० होलीमें नाचके साथ गाया जानेवाला एक गीत; उस गीतके साथ होनेवाला नाच; सिरमें पहननेका एक गहना; मंडलाकारमें खड़े स्त्री-पुरुष, नावें, आदि; दे० 'झूमरा' ।

झूमरा–पु० संगीतका एक ताल ।

झूमरी–स्त्री० शालक रागका एक भेद ।

झूरना*–अ० क्रि० सूखना ।

झूरा†–वि० सूखा, खुश्क; खाली । * पु० अवर्षण; कमी ।

झूरि*–स्त्री० जलन ।

झूरै–अ० व्यर्थ ही, बेकार । * वि० व्यर्थ; सूखा; खाली ।

झूल–स्त्री० हाथी-घोड़े आदिकी पीठपर सजावटके लिए डाला जानेवाला कपड़ा; ढीला-ढाला, भद्दा पहनावा । * पु० झूला, झूलनेका साधन । **–दंड**–पु० दंडकी एक कसरत जो झूलते हुए की जाती है ।

झूलन–पु० झूलनेका उत्सव; एक चलता गाना ।

झूलना–अ० क्रि० लटककर आगे-पीछे होना; पेंग लेना; झूलेपर बैठकर या लेटकर पेंग लेना; किसी आशामें लटके रहना; समाप्त हो जाना–'मति बावरी ह्वै रही झूलिहैं जू' –घन०। पु० हिंडोला; एक छंद । वि० झूलनेवाला ।

झूलनी–वि० स्त्री० झूलनेवाली । **–बगली**–स्त्री० मुगदरकी एक तरहकी कसरत । **–बैठक**–स्त्री० एक तरहकी बैठक ।

झूलरि*–स्त्री० दे० 'झुमका' ।

झूला–पु० झूलनेका साधन; पेड़की डाल, छतकी कड़ियों आदिमें बँधी हुई रस्सीके सहारे लटकता हुआ तख्ता आदि, हिंडोला; हवाका झटका; रस्सों, जंजीरों आदिका बना बिना खंभेका पुल; एक तरहकी बिना बाँहकी कुर्ती जिसे प्रायः देहातकी स्त्रियाँ पहनती हैं; झूल; एक गहना । **–पुल**–पु० पेड़की शाखाओं या ऊँचे खंभोंसे रस्सी बाँधकर या अन्य रूपसे लटकाकर बनाया

गया पुल ।

झूलि–स्त्री० (सं०) दे० 'झूणि' ।

झूली†–स्त्री० वह कपड़ा जिससे, हवा बंद होनेपर, हवा करके अनाज ओसाते हैं ।

झेंपना–अ० क्रि० लजाना, शर्मिंदा होना ।

झेंपू–वि० झेंपनेवाला, लज्जाशील ।

झेपना–अ० क्रि० दे० 'झेंपना' ।

झेपू–वि० दे० 'झेंपू' ।

झेर*–स्त्री० देर, विलंब; झंझट, वखेड़ा ।

झेरना–स० क्रि० झेलना; छेड़ना ।

झेरा*–पु० झगड़ा; झंझट; दे० 'झेर' ।

झेल–स्त्री० झेलनेकी क्रिया या भाव; हिलोरा; हलका धक्का; * देर, विलंब ।

झेलना–स० क्रि० सहना, बरदाश्त करना; ठेलना; पानीको हाथ-पाँवसे हटाना; हलकर पार करना; * मानना ।

झेलनी–स्त्री० चाँदी या सोनेकी जंजीर जो कानके गहनोंका बोझ सँभालनेके लिए बालोंमें अटकायी जाती है ।

झोंक–स्त्री० वेग, झोंका; बोझ; धुन, आवेश; * चोट, आघात; चाल, ढंग । मु० –मारना–तौलनेमें तराजूकी डाँड़ीको दवाना, डाँड़ी मारना ।

झोंकना–स० क्रि० आगेकी ओर फेंकना; धकेलना; भट्ठे, भाड़में ईंधन डालना, फेंकना; बुरी जगह डालना, ठेल देना; (···में झोंकना) उड़ाना, खर्च करना; (दोप) लगाना ।

झोंकरना†–अ० क्रि० दे० 'झुलसना' ।

झोंकवा†–पु० भाड़ आदि झोंकनेका काम करनेवाला ।

झोंकवाना–स० क्रि० झोंकनेका काम कराना ।

झोंका–पु० तेज हवाका धक्का, झटका; झकोरा; तेजीसे जानेवाली चीजका धक्का; पानीका हिलोरा; * ठाट, चाल; मुट्ठी ।

झोंकाई–स्त्री० झोंकनेकी क्रिया या भाव; झोंकनेकी उजरत ।

झोंकारना†–स० क्रि० झुलस देना ।

झोंकिया–पु० झोंकनेका काम करनेवाला, झोंकवा ।

झोंकी–स्त्री० बोझ, जवावदेही; जोखिम ।

झोंगी*–पु० योगी (चंदा०) ।

झोंझ†–पु० ढेक, गिद्ध आदिके गलेसे थैलीकी शक्लमें लटकता हुआ मांस; घोसला ।

झोंझल–पु० झुँझलाहट ।

झोंट–पु० झाड़ी; झुरमुट; जुट्टी; झोंटा ।

झोंटा–पु० खुले लंबे बाल; बिखरे हुए, रूखे, मैले, लंबे बाल, जटा; जुट्टा; * पेंग । –झोंटी–स्त्री० दो स्त्रियोंका परस्पर बाल खसोटते हुए लड़ना ।

झोंटी–स्त्री० दे० 'झोंटा' ।

झोंपड़ा–पु० घास-फूससे छाया हुआ छोटा कच्चा घर, कुटिया, मँड़ई ।

झोंपड़ी–स्त्री० छोटा झोंपड़ा ।

झोंपा–पु० झव्वा, गुच्छा ।

झोझर–पु० पेट; आमाशय ।

झोटिंग–वि०, पु० झोंटेवाला, जटाधारी ।

झोड–पु० (सं०) सुपारीका पेड़ ।

झोपड़ा–पु० दे० 'झोंपड़ा' ।

झोपड़ी–स्त्री० दे० 'झोंपड़ी' ।

झोर–पु० दे० 'झोल' । –ई * –वि० रसेदार । स्त्री० रसेदार तरकारी ।

झोरना*–स० क्रि० जोरसे हिलाना, झकझोरना; डालको इस तरह हिलाना कि फल झड़ जायँ; बटोरना; † छककर भोजन करना ।

झोरि*–स्त्री० दे० 'झोली' ।

झोरी*–स्त्री० झोली; पेट; एक तरहकी रोटी ।

झोल–पु० रसा; कढ़ी; कपड़ेके किसी अंशका ढीला या नापसे बड़ा होनेके कारण झूलना, लटकना; इस तरह लटकनेवाला अंश; मुलम्मा; * आँचल; ओट; वह झिल्ली जिसमें लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है, जरायु; गर्भ; जलन; राख–'तेहिपर बिरह जराइकै चहै उड़ावा झोल'–प०; † जाला । वि० ढीला; निकम्मा । –झाल–वि० ढीलाढाला । † पु० बहानेवाजी; अव्यवस्था । –दार –वि० जिसमें झोल हो, ढीला; रसेदार ।

झोलना*–स० क्रि० जलाना ।

झोला–पु० कपड़े, किरमिच आदिका थैला; खोली, गिलाफ; चोला; लकवा, अंगविशेषपर गिरा हुआ फालिज; * झोंका; इशारा । मु० –मारना–फालिज गिरना ।

झोली–स्त्री० चारों कोने बाँधकर कंधे आदिसे लटकाया हुआ कपड़ा जो झोले या थैलेका काम दे; सफरी बिस्तर; पुर, चरसा; घास बाँधनेका जाल; एक तरहका फंदा; राख । मु० –बुझाना –चीजके जल जानेके बाद उसकी राख बुझाना; करनेका समय बीत जानेके बाद कुछ करना ।

झौंझट–पु०, स्त्री० दे० 'झंझट' ।

झौंद–पु० पेट ।

झौंर–पु० झुंड, समूह; (फूलोंका) गुच्छा; कुंज, झुरमुट; एक गहना, झव्वा ।

झौंरना*–अ० क्रि० गुंजना । स० क्रि० झपटकर पकड़ना ।

झौंरा–पु० दे० 'झौंर' ।

झौंराना*–अ० क्रि० झूमना, झोंके खाना; झाँवर होना; मुरझाना ।

झौंसना†–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'झुलसना' ।

झौर*–पु० झगड़ा, हुज्जत, तकरार; डाँट; भगदड़; दे० 'झौंर' ।

झौरना*–स० क्रि० झपटकर दवोच लेना ।

झौरा†–पु० दे० 'झौर' ।

झौरे*–अ० पास, निकट; साथ ।

झौवा†–पु० खँचिया ।

झौहाना–अ० क्रि० गुस्सेमें आकर बोलना ।

ञ

ञ–देवनागरी वर्णमालामें चवर्गका पाँचवाँ वर्ण । उच्चारण-स्थान तालु ।

ञ–पु० (सं०) गायन; घर्घर ध्वनि; वृष; शुक्र; बाममत ।

ट

ट–देवनागरी वर्णमालामें टवर्गका पहला वर्ण । उच्चारण-स्थान मूर्द्धा ।

टंक–पु० (सं०) चार माशेकी एक तौल; पत्थर काटने या गढ़नेकी छेनी; कुल्हाड़ी; तलवार; म्यान; पहाड़ीकी ढाल; सोहागा; एक राग; क्रोध; दर्प; पैर; नील कपित्थ; सिक्का; दरार । –टीक–पु० शिव । –पति–पु० दे० 'टंककपति' । –शाला–स्त्री० (मिंट) ताँबे, चाँदी आदिके सिक्के ढालनेका स्थान, टकशाल ।

टंकक–पु० (सं०) चाँदीका सिक्का; टंकण यंत्रपर चिट्ठी आदि छापनेवाला (टाइप करनेवाला), टाइपिस्ट । –पति–पु० टकसालका अध्यक्ष । –शाला–स्त्री० सिक्के ढालनेकी जगह ।

टंकण–पु० (सं०) सोहागा; टाँकी देना; (काइनेज) तांबे, चाँदी आदिके सिक्कोंकी ढलाई; 'टाइप राइटर' पर पत्रादि छापने, टाइप करनेकी क्रिया । –क्षार–पु० सोहागा । –यंत्र–पु० दे० 'टाइप राइटर' ।

टंकन–पु० (सं०) सोहागा; टाँकी देना ।

टँकना–अ० क्रि० टाँका जाना; सिलना; सिलाई द्वारा अटकाया जाना; लिखा जाना; सिल आदिका कुटना ।

टँकवाना–स० क्रि० 'टाँकना'का प्रे० ।

टंका–पु० चाँदीकी एक पुरानी तोल; ताँबेका एक पुराना सिक्का । स्त्री० जंघा; एक रागिनी ।

टँकाई–स्त्री० टाँकनेका काम; टाँकनेकी उजरत ।

टंकानक–पु० (सं०) शहतूत ।

टंकाना–स० क्रि० सिक्केकी जाँच करना ।

टँकाना–स० क्रि० टाँके लगवाना; सिल आदि कुटवाना; याददाश्तके लिए लिखवा देना ।

टंकार–स्त्री० (सं०) धनुष्‌की चढ़ी हुई डोरीको खींचकर छोड़नेसे उत्पन्न ध्वनि; धातुखंड आदिपर आघात होनेसे उत्पन्न ध्वनि; चिल्लाहट; प्रसिद्धि; आश्चर्य; विस्मय ।

टंकारना–स० क्रि० धनुष्‌का रोदा तानकर आवाज पैदा करना; टनटन शब्द उत्पन्न करना ।

टंकारी–स्त्री० (सं०) एक झाड़ी ।

टंकारी(रिन्)–वि० सं० टंकार करनेवाला ।

टंकिका–स्त्री० (सं०) पत्थर काटनेकी छेनी, टाँकी ।

टंकी–स्त्री० पानी, तेल आदि रखनेके लिए बनाया हुआ बक्सके आकारका बड़ा पात्र; एक रागिनी ।

टंकोर–स्त्री० दे० 'टंकार' ।

टंकोरना–स० क्रि० दे० 'टंकारना' ।

टँकोरी, टँकौरी–स्त्री० सोना-चाँदी आदि तौलनेका छोटा तराजू ।

टंग–पु० (सं०) कुदाल, फरसा; चार माशेकी एक तौल; सोहागा; जंघा ।

टँगड़ी–स्त्री० टाँग, पैर ।

टंगण–पु० (सं०) सोहागा ।

टँगना–अ० क्रि० लटकना; लटकाया जाना; फाँसी चढ़ना । पु० अलगनी । **मु० टँग जाना**–फाँसीपर चढ़ना ।

टँगरी–स्त्री० दे० 'टँगड़ी' ।

टँगिनी–स्त्री० (सं०) पाठा ।

टँगिया–स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी ।

टंच–वि० तैयार; हृष्ट-पुष्ट; कंजूस; कठोरहृदय; दुष्ट; काँइयाँ, धूर्त, चंट ।

टंट-घंट–पु० पूजा-पाठका आडंबर, ढोंग; (भोजनादिका) आयोजन ।

टंटा–पु० झगड़ा, फसाद, कलह; व्यर्थका फैलाव ।

टंडल, टंडैल–पु० मजदूरोंका मेठ ।

टँड़िया–स्त्री० बाँहपर पहननेका एक गहना, बहूँटा ।

ट–पु० (सं०) टंकार जैसा शब्द; बौना; चतुर्थांश; नारियलका खोपड़ा ।

टई*–स्त्री० काम; काम निकालनेकी युक्ति; ताक ।

टक–स्त्री० एक ही ओर देरतक लगी हुई दृष्टि; लकड़ी आदि तौलनेका चौखूँटा पलड़ा । **मु० –बँधना**–दृष्टि जमाकर देरतक देखना । **–लगाना**–प्रतीक्षा करना; लालसापूर्ण दृष्टिसे देखना ।

टकटका*–पु० दे० 'टकटकी' । वि० एक जगह स्थित (दृष्टि) ।

टकटकाना†–स० क्रि० टकटकी लगाकर देखना । अ० क्रि० 'टक-टक' शब्द उत्पन्न करना ।

टकटकी–स्त्री० निर्निमेष दृष्टि ।

टकटोना*–स० क्रि० उँगलियोंसे छूकर किसी वस्तुका पता लगाना, टटोलना; ढूँढ़ना, खोजना–'पायो नहिं आनंद लेस मैं सबै देश टकटोये'–नागरीदास ।

टकटोरना*–स० क्रि० दे० 'टकटोलना' ।

टकटोलना–स० क्रि० स्पर्शसे पता लगाना या जाँचना ।

टकटोहन*–पु० टटोलकर देखनेका काम ।

टकटोहना*–स० क्रि० दे० 'टकटोलना' । † वि० इधर-उधर टटोलता रहनेवाला (चोर, लालची) ।

टकतंत्री–स्त्री० सितार जैसा एक पुराना बाजा ।

टकराना–अ० क्रि० दो वस्तुओंका एक-दूसरेसे भिड़ जाना; ठोकर लग जाना; छेड़ना, बाधा डालना; कार्यकी सिद्धिके लिए बार-बार आना-जाना; * मारा-मारा फिरना; इधर-उधर घूमना । स० क्रि० दो वस्तुओंको आपसमें लड़ा देना ।

टकराहट–स्त्री० ठोकर; नवलेखनमें प्रचलित एक शब्द जो लेखककी परिवेश, मूल्य, या स्थितिसे अपनी संवेदनाके संघर्षको अनिवार्य विशेषता मानता है (कंफ्रण्टेशन) ।

टकसार–स्त्री० दे० 'टकसाल' ।

टकसाल–स्त्री० सिक्कोंकी ढलाईका स्थान; * निर्दोष वस्तु । वि० चोखा, खरा । **–का खोटा**–नीच, कमीना ।

टकसाली–वि० टकसालका; प्रामाणिक; खरा; शिष्टों द्वारा अनुमोदित (भाषा, प्रयोग) । पु० टकसालका अध्यक्ष । **–बात**–स्त्री० ठीक बात, पक्की बात । **–बोली**–स्त्री० शिष्ट भाषा ।

टकहाई–वि० स्त्री० दे० 'टकाही' ।

टका–पु० चाँदीका पुराना सिक्का, रुपया; अंग्रेजी शासनकालमें प्रचलित दो पैसोंके बराबर ताँबेका सिक्का, अधन्ना; आधी छटाँककी तौल; सवा सेरका गढ़वाली परिमाण । **मु० –पास न होना**–निर्धन होना । **–भर**–जरा-सा । **–सा जवाब देना**–साफ इनकार कर देना । **–सा मुँह लेकर रह जाना**–लजा जाना ।

टकाटकी†–स्त्री० दे० 'टकटकी' ।

टकाना–स० क्रि० दे० 'टँकाना' ।

टकासी–स्त्री० रुपया-पीछे दो पैसेके हिसाबसे लिया गया सूद; प्रति व्यक्ति एक टकेके हिसाबसे लगाया गया चंदा या कर ।

टकाही–वि० स्त्री० एक-एक टकेपर अपना सतीत्व बेचनेवाली; निम्न श्रेणीकी (वेश्या) । स्त्री० दे० 'टकासी' ।

टकुआ–पु० सूत कातने और लपेटनेके काम आनेवाला सूआ, तकला; ओटनीका एक पुरजा; छोटे तराजूके पलड़ेमें लगा हुआ तागा ।

टकुली–स्त्री० पत्थर काटनेकी छेनी; नक्काशीके काम आनेवाला एक औजार ।

टकैत–वि० टकेवाला, धनी, मालदार ।

टकोर–स्त्री० टंकोर; डंकेकी चोट या शब्द; हलकी चोट; चरपराहट; सेंक ।

टकोरना–स० क्रि० धीरेसे आघात करना; बजाना; डंके आदिपर चोट करना; पोटलीसे सेंकना ।

टकोरा–पु० डंकेकी चोट; आघात ।

टकोरी*–स्त्री० टक्कर; चोट, आघात ।

टकौरी–स्त्री० छोटा तराजू; चाँदी-सोना तौलनेका काँटा; टकासी ।

टक्क–पु० (सं०) बाहीक जातिका व्यक्ति; कंजूस आदमी । **–देशीय**–वि० बाहीकोंके देशका । पु० बथुआ नामक साग ।

टक्कर–स्त्री० ठोकर, दो वस्तुओंका वेगके साथ आपसमें भिड़ जाना; मुकाबला; हानि । **मु० –का**–मुकाबलेका । **–खाना**–मारा-मारा फिरना; मुकाबलेका होना । **–झेलना**–घाटा सहना । **–मारना**–हैरान होना ।

टखना–पु० एड़ीके ऊपरकी हड्डीकी गाँठ ।

टग*–स्त्री० टकटकी–'टग लाय रहीं पल पाँवड़े कै'–घन० ।

टगण–पु० (सं०) छ मात्राओंका एक गण ।

टगर–पु० (सं०) सोहागा; तगरका वृक्ष; क्रीडा; मेंड़; टीला । वि० ऐंचा-ताना ।

टघरना†–अ० क्रि० टिघलना; द्रवीभूत होना ।

टच-टच*–अ० 'धाँय-धाँय' करते हुए (आगका जलना) ।

टचना–अ० क्रि० आगका जलना ।

टचनी†–स्त्री० बरतनोंपर नक्काशी करनेका एक औजार ।

टटका*–वि० ताजा; हालका; कोरा । **–ई**–स्त्री० ताजगी ।

टटल-बटल*–वि० बेसिर-पैरका; ऊटपटाँग । पु० काठकबाड़ ।

टटाना†–अ० क्रि० सूख जाना; सूखकर अकड़ना; भूखसे व्याकुल होना ।

टटावली–स्त्री० कुररी ।

टटिया–स्त्री० बाँस आदिकी टट्टी ।

टटीबा*–पु० घिरनी, चक्कर ।

टटीरी–स्त्री० कुररी ।

टटुआ–पु० टट्टू ।

टटोरना*–स० क्रि० दे० 'टटोलना' ।

टटोल–स्त्री० टटोलनेकी क्रिया या भाव ।

टटोलना–स० क्रि० उँगलियोंसे छूकर पता लगाना, दबाकर छूना;

वार्तालाप द्वारा विचारका पता लगाना, थाह लेना; आजमाना।

टटोहना–स० क्रि० दे० 'टटोलना'।

टट्टनी–स्त्री० (सं०) छिपकली।

टट्टर–पु० रक्षा या परदेके लिए लगाया हुआ बांस आदिकी फट्टियों-का पल्ला।

टट्टरी–स्त्री० (सं०) ठट्ठा; डींग; झूठी बात; एक बाजा, ढोल।

टट्टा–पु० बड़ी टट्टी।

टट्टी–स्त्री० छोटा टट्टर या पल्ला; पतला शीशा; ओट, परदा; पल्लेकी दीवार; अंगूर चढ़ानेके काम आनेवाली बाँसकी फट्टियोंकी दीवार; शिकार खेलनेकी आड़; पाखाना; बारातमें निकाली जानेवाली फुलवारीका तख्ता। **मु० –की आड़से शिकार खेलना**–छिपाकर चाल चलना, गुप्त रीतिसे विरुद्ध कार्य करना। **–की ओट बैठना**–छिपे तौरपर कोई कार्य करना। **–में छेद करना**–खुलेआम कुकर्म करना, निर्लज्ज हो जाना।

टट्टुर–पु० (सं०) नगाड़ेका शब्द।

टट्टू–पु० छोटे कदका घोड़ा। **मु० –पार होना**–काम निकल जाना।

टड़िया–स्त्री० बाँहपर पहननेका एक गहना।

टन–पु० (अं०) लगभग २८ मनका एक अँगरेजी परिमाण। स्त्री० (हिं०) घंटे, धातुके बरतन या टुकड़ेसे उत्पन्न शब्द। **–टन**–स्त्री० घंटा बजनेका शब्द। **–भार**–पु० दे० 'नौप्रभार' ('टनेज') **मु० – हो जाना**– झटसे मर जाना।

टनकना–अ० क्रि० 'टन-टन' बजना; धूप लगने आदिके कारण सिरमें दर्द होना; रह-रहकर पीड़ा होना।

टनटनाना–स० क्रि० घंटा, धातुके बरतन या टुकड़ेसे 'टन-टन'की ध्वनि निकालना। अ० क्रि० घंटे आदिका 'टन-टन' बजना।

टनमन–पु० जादू-टोना। वि० दे० 'टनमना'।

टनमना–वि० स्वस्थ, चंगा; सतेज, प्रसन्नचित्त, हरी-भरी तबीयतका।

टनमनाना†–अ० क्रि० भला-चंगा होना, स्वस्थ होना।

टना–पु० भग; भगका एक भाग।

टनाका–वि० तेज (धूप)। † पु० घंटेकी आवाज।

टनाटन–पु० लगातार घंटा बजनेकी आवाज। वि० ठीक हालतमें, पुष्ट। अ० 'टन-टन' आवाजके साथ।

टनेल–पु० (अं०) पहाड़ या नदीके नीचेसे निकाली गयी सुरंग; जमीनके भीतर रहनेवाले जानवरों द्वारा खोदा हुआ मार्ग; चिमनीका बड़ा चोंगा।

टन्नाना†–अ० क्रि० 'टनटन' आवाज करना। दे० 'टिन्नाना'।

टप–स्त्री० बूँद, फल इत्यादिके गिरनेका शब्द; टमटम आदिकी छतरी जो इच्छानुसार फैलायी या मोड़ी जा सकती है; पु० कानका एक गहना (टॉप)। **–से**–झटसे, बहुत जल्द।

टपक–स्त्री० टपकनेकी क्रिया या भाव; बूँदोंके गिरनेका शब्द; रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा।

टपकन–स्त्री० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, टीस।

टपकना–अ० क्रि० बूँद-बूँद गिरना; पके फलका आपसे आप गिरना; किसी भावका आभासित होना, झलकना; मुग्ध होना; घाव आदिमें रह-रहकर पीड़ा होना। **मु० टपक पड़ना**–किसी वस्तुका सहसा ऊपरसे गिरना; टूट पड़ना; अकस्मात् आ जाना।

टपका–पु० बूँद-बूँद गिरना; टपका हुआ फल आदि; रह-रहकर होनेवाली पीड़ा; चौपायोंके खुरकी पीड़ा, खुरपका रोग; मूर्ख बनाकर ठगनेकी कला। **–(के)की विद्या**–छीन-झपटकर लाने-की विद्या।

टपका-टपकी–स्त्री० फलका एक-एककर गिरना; बूँदा-बाँदी; कुछ लोगोंका महामारी आदिसे रोज मरना। वि० कोई-कोई, एक-आध।

टपकाना–स० क्रि० बूँद-बूँद गिराना, चुलाना।

टपकेबाज–पु० सीधे सादे व्यक्तियोंको धोखा देकर धन वसूलकर भाग जानेवाला, धूर्त।

टपना–अ० क्रि० बिना खाये-पीये पड़ा रहना; व्यर्थ किसीके भरोसे बैठा रहना; कूदना; पशुपक्षियोंका जोड़ा खाना। † स० क्रि० लाँघना; ढकना।

टपरा†–पु० घास-फूस, टीन आदिसे छाया छोटा घर, झोपड़ा–'टीनवाले टपरोंके सामने चौड़ा मैदान था'–अमर०।

टपरिया†–स्त्री० झोपड़ी, मँड़ैया–'कित गयी प्रभु मोरी टूटी टपरिया हीरा मोती लाल कसे'–मीरा।

टपाटप–अ० 'टप-टप'की आवाजके साथ; लगातार; शीघ्रतासे; एक-एक करके।

टपाना–स० क्रि० बिना खिलाये-पिलाये रखना; झूठ-मूठ हैरान करना, व्यर्थ आसरेमें रखना; † कुदाना, लँघाना।

टप्पर†–पु० छप्पर; छज्जा।

टप्पा–पु० उछलती हुई वस्तुका बीच-बीचमें पृथ्वी छूना; वह फासला जहाँतक कोई चीज पहुँचे; फलाँग; एक तरहका गाना जिसमें तानकी प्रधानता होती है; † अंतर; टिकान जहाँ पालकीके कहार बदलते हैं; भद्दी सिलाई; † तहसीलसे छोटा कस्बा 'ईसागढ कमिश्नरी बना, फिर जिला, तहसील और टप्पा है, जहाँका अधिकारी नायब तहसीलदार है'–कादं०, सितं० ६७। **मु० –मारना**–दूर-दूर सिलाई करना।

टब–पु० (अं०) स्नान आदिके कामका पानी रखनेका एक बड़ा बरतन, कंडाल।

टमकी–स्त्री० मुनादीकी डुग्गी।

टमटम–पु० (अं० 'टैंडेम') दो पहियोंकी एक खुली गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है।

टमटी*–स्त्री० एक बरतन।

टमस–स्त्री० तमसा नदी।

टमाटर–पु० (अं० 'टोमैटो') हरे, लाल रंगका खटमिट्ठा फल या उसका पौधा, विलायती बैंगन।

टमुकी–स्त्री० दे० 'टमकी'।

टर–स्त्री० कटु शब्द; मेढककी बोली; अकड़, घमंड; घमंडकी बात; हठ; ओछी बात; जोरका शब्द; बकवाद; ईदके दूसरे दिनका मेला। **मु० –टर करना,–टर लगाना**–बक-बक करना, ढिठाईसे बोलते ही जाना।

टरकना–अ० क्रि० खिसक जाना; * कर्कश स्वरसे बोलना।

टरकाना–स० क्रि० खिसका देना; टाल देना; चलता करना; बहाना करके लौटा देना।

टरकी–पु० (तु०) एक मुर्गा जिसके गलेके नीचे मांसकी लाल झालर होती है; एक देश, तुरकी।

टरटराना–अ० क्रि० अंड-बंड बकना, लगातार बेमतलबकी बातें बकना; बढ़बढ़कर, जोर जोरसे बोलना।

टरना*–अ० क्रि० दे० 'टलना'।

टरबाइन–स्त्री० (टरबाइन) ऐसा मोटर यंत्र जिसके अंदर धुरीको घुमानेके लिए विशेष प्रकारका चक्र प्रयुक्त होता है जिसके हाशिये-पर ब्लेड लगे होते हैं और इन ब्लेडोंपर वाष्प, जल, या वायु-की तेज धारा फेंकनेका प्रबंध रहता है। उच्च दाबपर जल, वाष्प, या वायु जेटसे बाहर निकलती है तो यह ब्लेडोंसे टकराती है जिसकी प्रतिक्रियासे ब्लेड तेजीसे घूमने लग जाते हैं।

टराना*–अ० क्रि० हटना, टलना।

टर्र-टर्र–स्त्री० मेढककी आवाज।

टर्रा–वि० ऐंठकर बातें करनेवाला; अविनयपूर्वक कठोर उत्तर देनेवाला; कटुभाषी; उद्दंडतासे बोलनेवाला; उजड्ड।

टर्राना–अ० क्रि० गर्वके साथ बात करना; सीधे न बोलना; कटु वचन कहना।

टर्रू–पु० टर्रा आदमी; मेढक; कौआ।

टल, टलन–पु० (सं०) घबड़ाहट, विह्वलता।

टलना–अ० क्रि० विचलित होना; खिसकना; अलग होना; अपने स्थानसे हटना, सरकना; मिटना; खंडित होना; अन्यथा होना; आगेके लिए समय आदि निश्चित होना, स्थगित होना; व्यथित होना।

टलमल–वि० हिलता हुआ।

टलवा–पु० बैल।

टलाटली*–स्त्री० टालमटोल, बहानेबाजी।

टल्ला–पु० ठोकर; टालमटोल।

टल्लेनवीसी–स्त्री० ठलुआपन; व्यर्थका काम; टालने या वहाना बनानेकी क्रिया या प्रवृत्ति ।

टवाई*–स्त्री० व्यर्थ घूमना ।

टस–स्त्री० भारी वस्तुके हटनेकी आवाज; कपड़े आदिके फटनेकी आवाज । **मु० –से मस न होना**–थोड़ा-सा भी न हिलना; कहने-सुननेसे थोड़ा-सा भी प्रभावित न होना ।

टसक–स्त्री० रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा, टीस ।

टसकना–अ० क्रि० किसी भारी चीजका अपनी जगहसे हटना; चले जाना, खिसक जाना; टीसना; प्रभावित होना ।

टसकाना–स० क्रि० किसी चीजको अपनी जगहसे हटाना ।

टसर–पु० एक तरहका कड़ा और मोटा रेशम या उसका वना कपड़ा ।

टहक†–स्त्री० टीस, कसक ।

टहकना†–अ० क्रि० टिघलना; रह-रहकर दर्द करना ।

टहना–पु० पेड़की डाली ।

टहनी–स्त्री० पतली और लचीली उपशाखा ।

टहरना*–अ० क्रि० दे० 'टहलना' ।

टहल–स्त्री० सेवा, शुश्रूषा; चाकरी । **–टई**–*–स्त्री० सेवा-शुश्रूषा । **मु० –बजाना**–सेवा करना ।

टहलना–अ० क्रि० मनोविनोद या स्वास्थ्यकी दृष्टिसे धीरे-धीरे चलना, घूमना, मंद गतिसे भ्रमण करना; मर जाना । **मु० टहल जाना**–चुपचाप चले जाना ।

टहलनी–स्त्री० दासी, नौकरानी; चिरागकी वत्ती उसकानेकी लकड़ी ।

टहलाना–स० क्रि० घुमाना-फिराना, सैर कराना, हवा खिलाना; धीरे-धीरे चलाना; हटा देना ।

टहलुआ, टहलुवा–पु० दे० 'टहलू' ।

टहलुई–स्त्री० दे० 'टहलनी' ।

टहलू–पु० खिदमत करनेवाला, चाकर, सेवक ।

टहूका–पु० चुटकुला; पहेली ।

टहोका–पु० हाथ या पैरसे दिया जानेवाला धक्का; ठेस ।

टांक–पु० (सं०) एक तरहकी शराव ।

टाँक–स्त्री० चार माशेकी एक तौल; जाँच; हिस्सा; * लिखावट; लेखनीकी नोक; कटोरा–'दहिने माछ रूपके टाँका'–प० ।

टाँकना–स० क्रि० सिलाई द्वारा जोड़ना या अँटकाना; सिलाई करके एक वस्तुको दूसरीपर दृढ़ करना; हलकी सिलाई करना; वहीपर चढ़ाना; सिल कूटना ।

टांकर–पु० (सं०) लंपट; कुटना ।

टाँका–पु० वह वस्तु जिसके द्वारा दो वस्तुएँ जोड़ी जायँ; धातुकी चद्दर जोड़नेका काम आनेवाला काँटा; सीवन; घावकी सिलाई; चिप्पी; डोभ; जोड़ (धातुका); एक तरहकी कील; हौज; कंडाल । **मु० –मारना**–दूर-दूरपर सिलाई करना ।

टांकार–पु० (सं०) टंकोर ।

टाँकी–स्त्री० पत्थर काटनेकी छेनी; तरबूज आदिपरका चौकोर कटाव; काटकर वनाया हुआ छेद; आरीका दाँत; घाव; सूजाक आदिका घाव; हौज; कंडाल । **–बंद**–वि० (वह जोड़ाई) जिसमें कीलों आदिके द्वारा पत्थर जोड़े गये हों ।

टाँग–स्त्री० जाँघसे लेकर एड़ीतकका भाग, वह अंग जिसके सहारे प्राणी चलते-फिरते हैं; कुश्तीका एक पेंच । **मु० –अड़ाना**–बिना अधिकारके किसी काममें हस्तक्षेप करना, वाधा डालना, दखल देना । **–उठाना**–जल्दी-जल्दी चलना; प्रसंग करना । **–तलेसे निकलना**–पराजय स्वीकार करना । **–पसारकर सोना**–बेखटके सोना; निर्द्वंद्व होकर चैनसे दिन विताना ।

टाँगन–पु० छोटे कदका घोड़ा ।

टाँगना–स० क्रि० खूँटी या अलगनी जैसे ऊँचे आधारसे अटकाना, लटकाना; फाँसी देना ।

टाँगा–पु० कुल्हाड़ा; दे० 'ताँगा' ।

टाँगी–स्त्री० कुल्हाड़ी ।

टाँगुन–स्त्री० वाजरे जैसा छोटे दानेका एक अनाज जो सावन-भादोंमें तैयार होता है ।

टाँघन*–पु० दे० 'टाँगन' ।

टाँच–स्त्री० ऐसी वात जिससे वनता हुआ काम बिगड़ जाय, भाँजी; टाँका; सिलाई; पैवंद; कुर्की; * काट-छाँट । **मु० –मारना**–कार्यनाशक वातें कहना ।

टाँचना–स० क्रि० टाँकना; सिलाई करना; काट-छाँट करना । अ० क्रि० फूला-फूला फिरना ।

टाँची–स्त्री० रुपये रखकर कमरमें बाँधनेकी थैली, वसनी; भाँजी (**–मारना**—काममें वाधा डालना) ।

टाँठ*–वि० कड़ा; दृढ़; वलवान् ; † गाढ़ा ।

टाँठा–वि० कड़ा; दृढ़; पुष्ट ।

टाँड़–स्त्री० सामान रखनेके लिए वनी हुई लकड़ीकी या ईंट-सीमेंटकी पाटन या अलमारी जैसा ढाँचा; मचान; वाहुपर पहननेका एक गहना । पु० समूह, राशि; टाँड़ा; घरोंकी कतार; † गुल्ली खेलनेका डंडा; गुल्लीपर डंडेकी चोट ।

टाँड़ा–पु० वैलोंपर लदी हुई व्यापारकी वस्तुएँ; ऐसी वस्तुओंसे लदे हुए वैलोंका झुंड; व्यापारियोंका समूह; परिवार; लकड़ीका एक कीड़ा; * लदकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जानेवाला माल । एक प्रकारका कीड़ा ।

टाँड़ी*–स्त्री० टिड्डी ।

टाँय-टाँय–स्त्री० 'टें-टें'का कर्कश शब्द; वकवाद । **मु० –फिस**–लंबी वातें, पर परिणाम कुछ नहीं; धूम-धामसे काम शुरू करना, पर अंतमें कुछ न हो सकना ।

टाँस–स्त्री० नसोंमें तनावके कारण होनेवाली क्षणिक पीड़ा ।

टाँसना†–स० क्रि० जोड़ना, टाँकना; राँगेसे वरतनका छेद वंद करना ।

टा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; शपथ ।

टाइटिल–स्त्री० (अं०) उपाधि (जैसे–बी० ए०, एम० ए० आदि); लेखादिका शीर्षक । **–पेज**–पु० पुस्तकका सवसे ऊपरका पृष्ठ ।

टाइप–पु० (अं०) छपाईके काम आनेवाला सीसेका ढला अक्षर । **–कास्टिंग मशीन,–फाउंड्री**–स्त्री० टाइप ढालनेकी मशीन । **–राइटर**–पु० वह छोटी मशीन जिसमें धातुकी पत्तियोंपर अक्षर खुदे होते हैं, जिन्हें दवाकर कागजपर टाइप जैसे अक्षर छापे जाते हैं ।

टाइपिस्ट–पु० (अं०) टाइपराइटर द्वारा छापनेवाला व्यक्ति ।

टाइम–पु० (अं०) समय, काल । **–टेवुल**–पु० वह कागज जिसपर भिन्न-भिन्न कार्योंके लिए नियत समय लिखा हो, समयसारिणी । **–पीस**–स्त्री० मेज आदिपर रखनेकी एक प्रकारकी घड़ी जिसमें प्रायः जगानेकी घंटी भी लगी रहती है ।

टाई–स्त्री० (अं०) अंगरेजी पहनावेमें गलेसे लटकायी जानेवाली कपड़ेकी पट्टी; कंठबंध, ग्रैवेय ।

टाउन–पु० (अं०) कसवा । **–हॉल**–पु० शहरकी वह सार्वजनिक इमारत जिसमें सरकार या जनतासे संबंध रखनेवाली सभाएँ या वैठकें हों, नगरभवन ।

टाकर*–स्त्री० ताकना, टकटकी; जगना ।

टाकू–पु० तकला, टकुआ ।

टाट–पु० विछाने या परदेके काम आनेवाला सन या पटसनका मोटा कपड़ा; (ला०) मोटा कपड़ा; विरादरी; महाजनकी गद्दी । **–बाफ़**–पु० टाट वुननेवाला; कपड़ोंपर सोने-चाँदीके काम करनेवाला । **–बाफ़ी**–स्त्री० कलावत्तूका काम; टाट वुननेका काम । **–०जूता**–पु० कामदार जूता । **मु० –उलटना**–दिवाला निकलना । **–पर मूँजका वखिया**–जैसी भद्दी चीज वैसी ही सजावट । **–वाहर होना**–विरादरीसे वहिष्कृत होना । **–में पाटका वखिया**–बेमेल सजावट ।

टाटर–पु० दे० 'टट्टर'; * ठठरी; खोपड़ी ।

टाटा, सर जमशेदजी–पु० प्रसिद्ध व्यवसायी और उद्योगपति । 'टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी लिमिटेड'के आप ही वास्तविक प्रतिष्ठाता थे (१८३९–१९०४) ।

टाटिका*–स्त्री० टट्टी ।

टाटी*–स्त्री० छोटा टट्टर; टट्टी ।

टाठी–स्त्री० थाली । (बुंदेल०)

टाड़*–पु० भुजापर पहननेका एक आभूषण ।

टान–स्त्री० खिँचाव, तनाव; खींचनेकी क्रिया; सितार बजानेका

एक तरीका । पु० टान, मचान ।

टानना–स० क्रि० खींचना ।

टाप–स्त्री० घोड़ेके पाँवका सबसे नीचेका भाग, सुम; घोड़ेके पाँवके पृथ्वीपर पड़नेसे उठी आवाज; चारपाईके पायेका नीचेका उभरा हुआ भाग; मछली पकड़ने, मुर्गियोंको बंद करनेका टोकरा या खाँचा । **मु० –देना**–छलाँग मारना ।

टापड़–पु० ऊसर मैदान ।

टापना–अ० क्रि० दे० 'टपना'; (घोड़ोंका) टाप मारना, खूँद करना; ताकते रह जाना । † स० क्रि० कूद जाना, लाँघना ।

टापा–पु० मैदान; उछाल; झावा; * टीका, तिलक–'राम नाम जाणै नहीं आये टापा दीन'–साखी । **मु० –देना**–फलाँग मारना ।

टापू–पु० पृथ्वीका वह भाग जो चारों ओरसे जलसे घिरा हो, द्वीप ।

टावर†–पु० लड़का; परिवार ।

टामक*–पु० डुग्गी ।

टामन*–पु० टोना, टोटका ।

टार–पु० (सं०) घोड़ा; लौंडा; कुटना; † एक तरहका हल जिसमें बीज गिराते जानेके लिए चोंगी लगी रहती है; † स्त्री० ढेर, राशि; टाल ।

टारना†–स० क्रि० दे० 'टालना' ।

टारपीडो–पु० (अं०) एक स्वतः चलनेवाला विध्वंसक पनडुब्बी जहाज जो दूसरे जहाजसे टकराते ही फट जाता है और टकरानेवाले जहाजमें छेद कर देता है ।

टाल–स्त्री० पुआल आदिका पुंज, अटाला; लकड़ीकी दूकान; टालनेकी क्रिया । पु० कुटना । **–टूल,–मटाल,–मटूल, –मटोल**–स्त्री० वहाना; टरकानेकी क्रिया ।

टालना–स० क्रि० किसी वस्तुको उसके स्थानसे हटाना, खिसकाना; टरकाना; स्थगित कर देना; * हटाना; व्यतीत करना; उसकाना; उल्लंघन करना । **मु० टाल देना**–दूर कर देना; वहाना कर देना, टरकाना; (ला०) नाश करना; किसी कामको दूसरे समयके लिए रख छोड़ना; समय निर्धारित करना । **किसी-पर टाल देना**–समय विताना; अपनी जान बचाते हुए दूसरेका निर्देश कर देना ।

टाली–स्त्री० बैल आदिके गलेकी घंटी; तीन वर्षसे कम उम्रकी बछिया जो बहुत उछलती-कूदती हो ।

टालसटाय, काउंट लिओ–पु० १८२८–१९१०, रूसी उपन्यास-लेखक तथा समाज-सुधारक ।

टाहली*–पु० सेवक, नौकर ।

टिंचर–पु० (अं० 'टिंक्चर') सुरासार (अलकोहल)की जमीनपर तैयार की गयी औषधका सार, एक एलोपैथिक औषध ।

टिंटिनिका–स्त्री० (सं०) अंबुशिरीषिका; जोंक ।

टिंड, टिंडा–पु० एक फल जो तरकारीके काम आता है ।

टिंडल प्रभाव–पु० (टिंडल एफेक्ट) प्रकाश किरणोंके मार्गमें नन्हे कण जब पड़ते हैं तो बगलकी दिशामें प्रकाशका प्रकीर्णन (बिखराव) हो जाता है जिसके फलस्वरूप किरण मार्ग दृष्टिगोचर होता है । उदाहरणके लिए अँधेरे कमरेमें खिड़कीके अन्दर पतले सूराखसे प्रवेश करनेवाली 'सूर्यकी किरन' का मार्ग टिंडल प्रभावके फलस्वरूप स्पष्ट दिखलाई देता है–यहाँ कमरेकी वायुमें तैरते हुए धूलिकणों द्वारा प्रकाशका प्रकीर्णन होता है ।

टिंडिश–पु० (सं०) टिंडेका फल, डेंडसी ।

टिक–स्त्री० (अं०) घड़ीके बोलनेकी हलकी ध्वनि; किसी शब्द, अंक या इबारतको जाँचते या मिलाते समय ठीक पाने आदिका सूचक यह चिह्न; दे० 'टिकटिक' ।

टिकट–पु० महसूल या कर चुकानेपर प्राप्त कागजका वह टुकड़ा जिससे थियेटर, लाटरी, ट्रेन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्राप्त होता है, प्रवेशपत्र; विशेष प्रकारका कर या फीस; स्टांप । **–घर**–पु० (बुकिंग आफिस) रेलके स्टेशनका या सिनेमा, सर्कस आदिके अहातेका वह स्थान या कमरा जहाँ गाड़ीमें बैठने, सरकस आदिमें प्रविष्ट होनेका अनुमतिपत्र पैसा देकर प्राप्त किया जा सकता है ।

टिक-टिक–स्त्री० घड़ीकी आवाज; घोड़ा हाँकनेका संकेत ।

टिकटिकी–स्त्री० टकटकी; अपराधीको बाँधकर बेंत लगानेके लिए बना हुआ ढाँचा; फाँसी देनेका तख्ता, टिकठी ।

टिकठी–स्त्री० फाँसीका तख्ता; तिपाई; * अरथी ।

टिकड़ा–पु० चिपटा, गोल टुकड़ा; धातु, पत्थर या खपड़े आदिका छोटा टुकड़ा; जडाऊ गहनोंमें लगा हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा, जिसमें नग जड़े हों या डेमल कटा हो; आँचपर सेंकी हुई बाटी ।

टिकड़ी–स्त्री० छोटा टिकड़ा ।

टिकना–अ० क्रि० ठहरना; थोड़े समयके लिए वास करना; अड़ना; विशेष अवधितक काम देना; स्थित रहना; जमना; युद्धमें डटना ।

टिकरी–स्त्री० एक नमकीन पकवान; टिकिया ।

टिकली–स्त्री० छोटी बिंदी; टिकिया; तकली ।

टिकस–पु० टैक्स, कर ।

टिकाऊ–वि० टिकनेवाला, कुछ दिनोंतक बना रहनेवाला ।

टिकान–स्त्री० टिकनेकी क्रिया; पड़ाव ।

टिकाना–स० क्रि० ठहराना; वासके लिए स्थान देना; सहारेपर खड़ा करना, अडाना ।

टिकिया–स्त्री० ठोस पदार्थका गोला, चिपटा टुकड़ा; गोल आकारकी एक मिठाई; तंबाकू पीनेके लिए कोयलेसे बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा; बिंदी ।

टिकुरी–स्त्री० तकली ।

टिकुली–स्त्री० तकली; चमकी, बिंदी ।

टिकैत–पु० युवराज, राजकुमार जो राजाके बाद तिलकका अधिकारी हो; सरदार ।

टिकोरा†–पु० आमका कच्चा छोटा फल, अँबिया ।

टिक्कड़–पु० बाटी, अंगाकड़ी; बड़ी टिकिया ।

टिक्की–स्त्री० टिकिया; बाटी; अँगूठे आदिका किसी रंगसे बना हुआ निशान, टिप्पी; ताशकी बूटी ।

टिख-टिख–स्त्री० दे० 'टिक-टिक' ।

टिघलना–अ० क्रि० पिघलना, ठोससे द्रवरूपमें परिवर्तित होना ।

टिघलाना–स० क्रि० पिघलाना ।

टिचन–वि० उद्यत, तैयार; दुरुस्त, ठीक ।

टिट*–स्त्री० हठ, टेक–'टिट टारिकै हारि गुपालसों हाय हवाल हमैं कहनोई परयो'–रत्नाकर ।

टिटकारना–स० क्रि० 'टिक-टिक' शब्द करके घोड़े आदिको चलनेके लिए प्रेरित करना ।

टिटकारी–स्त्री० मुँहसे निकलनेवाला 'टिक टिक' शब्द ।

टिटिह–पु० दे० 'टिट्टिभ' ।

टिटिहरी–स्त्री० पानीके किनारे रहनेवाली एक चिड़िया, कुररी ।

टिटिहा–पु० दे० 'टिट्टिभ' । **–रोर**–पु० शोरगुल; रोना-पीटना ।

टिट्टिभ–पु० (सं०) नर टिटिहरी ।

टिट्टिभा–स्त्री० (सं०) टिट्टिभकी मादा ।

टिट्टिभी–स्त्री० (सं०) दे० 'टिट्टिभा' ।

टिड्डा–पु० एक परदार कीड़ा ।

टिड्डी–स्त्री० एक परदार लाल रंगका कीड़ा जो दल बाँधकर चलता और फसलको हानि पहुँचाता है । **–दल**–पु० बड़ा झुंड ।

टिढ़बिंगा–वि० बेडौल, टेढ़ा-मेढ़ा ।

टिन–पु० दे० 'टीन' ।

टिन्नाना†–अ० क्रि० क्रुद्ध होना; (शिश्नका) उत्तेजित होना ।

टिप–स्त्री० सर्पदंशका एक प्रकार; होटल या जलपानगृहमें बेयराको दी जानेवाली बख्शीश ।

टिपका*–पु० बूँद ।

टिपकारी–स्त्री० ईंटों आदिकी जोड़ाईके संधिस्थानपर सीमेंट या बरीका मसाला लगाना ।

टिपटाप–वि० जीवनके हर क्षेत्रमें–वेशभूषा, रहन-सहन आदिमें–नियम और व्यवस्थाका कड़ाईसे पालन करनेवाला (आदमी) ।

टिप-टिप–स्त्री० बूँदोंके गिरनेका शब्द ।

टिपवाना–स० क्रि० दबवाना; प्रहार कराना; लिखवाना ।

टिपारा*–पु० मुकुटके आकारकी एक पुरानी टोपी ।

टिपुर–पु० ढोंग; घमंड ।

टिप्पण–पु० (सं०) अर्थ या आशय स्पष्ट करनेके लिए जोडी गयी संक्षिप्त टीका; किसी अधिकारीके प्रस्तावादिके संबंधमें अन्य

अधिकारी या सहायक द्वारा संक्षेपमें प्रकट की गयी राय, सुझाव या आपत्ति; देखी, सुनी या सोची हुई बातों, तथ्यों आदिका बादमें काम आनेके लिए लिखा गया संक्षिप्त विवरण ।

टिप्पणी, टिप्पनी–स्त्री० (सं०) संक्षिप्त टीका; दे० 'टिप्पण' ।

टिप्पन–पु० जन्मकुंडली; दे० 'टिप्पणी' ।

टिप्पस†–स्त्री० युक्ति, उपाय; प्रयोजन-सिद्धिका ढंग ।

टिप्पी–स्त्री० अंगूठे आदिका किसी रंगसे बना हुआ निशान ।

टिमटिमाना–अ० क्रि० क्षीण प्रकाशके साथ जलना; मरनेके करीब होना ।

टिमाक–स्त्री० बनाव, शृंगार ।

टिरफिस–स्त्री० विरोध; ढिठाई, व्यर्थकी अकड़, टर्रापन ।

टिर्राना–अ० क्रि० दे० 'टर्राना' ।

टिलवा–पु० ठिंगना या चापलूस आदमी; † दे० 'टीला' ।

टिल्ला–पु० धक्का, ठोकर । **–(ल्ले) नवीसी**–स्त्री० निठल्लापन बहाना ।

टिहुक†–स्त्री० चमक; चौंकना; रूठनेकी क्रिया ।

टिहुकना†–अ० क्रि० चौंकना; रूठना । * वि० रूठनेवाला ।

टिहुनी†–स्त्री० कुहनी; घुटना ।

टींड़सी–स्त्री० एक फल जिसकी तरकारी बनती है ।

टींड़ी*–स्त्री० टिड्डी ।

टी–स्त्री० (अं०) चाय । **–गार्डन**–पु० चायका बगीचा । **–पार्टी** –स्त्री० चायकी दावत ।

टीक–स्त्री० गलेका एक गहना; माथेपरका एक गहना, टीका, बेंदा ।

टीकन–पु० थूनी, चाँड़ ।

टीकना–स० क्रि० टीका या तिलक लगाना; उँगलीमें रंग लगाकर निशान बनाना ।

टीका–स्त्री० (सं०) व्याख्या । **–कार**–पु० किसी ग्रंथकी व्याख्या करनेवाला । **–टिप्पणी**–स्त्री० किसी घटना, प्रसंग आदिकी चर्चा होनेपर उसके संबंधमें प्रकट किये गये आलोचनात्मक विचार ।

टीका–पु० तिलक, मस्तकपर चंदन या रोली आदिका उँगलीसे बनाया हुआ चिह्नविशेष; विवाहके पूर्वकी एक रस्म; कलंक; युवराज; राजतिलक; संक्रामक रोगसे बचनेके लिए सूई द्वारा शरीरमें औषध प्रविष्ट करनेकी क्रिया; (सूक्ष्म जीवोंको किसी प्राणीके ऊतकों या रक्तमें प्रविष्ट कराना ताकि प्रतिपिंड (एंटी बॉडी) उत्पन्न करके किसी रोगके लिए प्रतिरक्षा उत्पन्न की जा सके; जैसे चेचकका टीका); सिरका एक आभूषण; * किसी कुल या समुदायका सर्वश्रेष्ठ पुरुष; भेंट, नजराना । मु० **–काढ़ना** –मुंडन या यज्ञोपवीतके अवसरपर संस्कार किये जानेवाले लड़केको टीका करके द्रव्य देना; माँगमें सिंदूर धारण करना । **–लगाना**–ललाटपर चंदन आदिसे चिह्न करना; सूई द्वारा औषध प्रविष्ट करना ।

टीका टीक–क्रि० वि० ठीकमठीक, ठीक, भरपूर, पूर्णतः, बिलकुल, ऐन 'टीका टीक दोपहरीमें उसे देखा'–टूटे काँटे ।

टीकी*–स्त्री० टिकुली, बिंदी–'काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बाँधन जूडो'–मीरा; टिकिया ।

टीटा–पु० स्त्रीकी योनिका ऊँचा मांसपिंड, टना ।

टीडी–स्त्री० दे० 'टिड्डी' ।

टीन–पु० (अं०) कलई की हुई लोहेकी चद्दर; राँगा; कनस्तर ।

टीप–स्त्री० हाथसे दबानेका काम; हलका आघात; ईंटोंके जोड़ोंपर लगाये गये मसालेकी लकीर; ऊँचा स्वर; तार-सप्तकमेंसे किसी एकपर अल्पकालीन ठहराव; जन्मपत्री; हुंडी; गचकी पिटाई; संक्षेपमें लिख लेने, टाँक लेनेकी क्रिया; समझाने या सूचित करनेके लिए थोड़ेमें लिखी गयी कोई बात, नोट या टिप्पणी; दस्तावेज । **–टाप**–स्त्री० ठाट-बाट, सजावट; छत, दीवार आदिकी छिटफुट मरम्मत ।

टीपन–पु० जन्मपत्री । स्त्री० घट्ठा, गाँठ ।

टीपना–स० क्रि० हाथ या उँगलीसे दबाना; हलका आघात करना; तारस्वरमें गाना; टाँक लेना; दीवार आदिपर टिपकारी करना; संक्षेपमें लिख लेना; चिह्न लगाना । † स्त्री० जन्मपत्री ।

टीबा–पु० भीटा, टीला ।

टीम–स्त्री० (अं०) क्रिकेट आदि खेलके किसी एक पक्षके समस्त खिलाड़ियोंका दल; दल ।

टीम-टाम–स्त्री० तड़क-भड़क; सजावट ।

टीला–पु० ऊँची जमीन, ढूह, मिट्टी या बालूका ऊँचा ढेर, छोटी पहाड़ी ।

टीस–स्त्री० रह-रहकर उठनेवाली जोरकी पीड़ा, कसक ।

टीसना–अ० क्रि० रह-रहकर पीड़ा होना ।

टुंग†–पु० पहाड़की गोल चोटी–'मदनमहलकी छाँहमें दो टुंगोंके बीच । जमा गड़ी कई लाखकी दो सोनेकी ईंट' ।

टुँगना–स० क्रि० (चौपायोंका) टहनीके पत्तों, छोटे पौधोंको ऊपरसे काटना; थोड़ा-थोड़ा काटकर खाना ।

टुंच–वि० कमीना, नीच; तुच्छ ।

टुंटा–वि० लूला, जिसके हाथ न हों; ठूँठा ।

टुंटुक–पु० (सं०) एक पक्षी; काला खैर; श्योणाक नामका वृक्ष । वि० क्रूर; अल्प ।

टुंडी–स्त्री० ढोंढी, नाभि; मुश्क ।

टुइयाँ–पु० एक तरहका छोटा तोता । वि० बहुत छोटा या नाटा ('ये टुइयाँ पहलवान') ।

टुइल–स्त्री० एक सूती कपड़ा ।

टुक–वि० थोड़ा, तनिक, अल्प । अ० थोड़ा, जरा ।

टुकड़–'टुकड़ा'का समासगत रूप । **–खोर**–वि० टुकड़ा माँगकर खानेवाला । **–गदा**–वि० घर-घर रोटीका टुकड़ा माँगनेवाला । पु० मँगता । **–गदाई**–स्त्री० टुकड़ा माँगनेका काम । **–तोड़**–वि० दूसरेके भरोसे जीनेवाला । पु० आश्रित व्यक्ति ।

टुकड़ा–पु० किसी वस्तुका एक खंड; (ला०) जूठन । मु० **–तोड़ जवाब देना**–साफ-साफ इनकार कर देना, दो-टूक जवाब देना । **–तोड़ना**–दूसरेके दिये हुए भोजनसे गुजर करना । **–माँगना**–भीख माँगना । **–सा जवाब देना**–दोटूक जवाब देना ।

टुकड़ी–स्त्री० छोटा टुकड़ा; छोटा झुंड या समुदाय; सैनिकोंका छोटा दल, 'कंपनी' ।

टुकनी–स्त्री० दे० 'टोकनी' ।

टुकुर-टुकुर–अ० टकटकी लगाकर ।

टुक्का†–पु० टुकड़ा; चतुर्थांश ।

टुक्की†–स्त्री० छोटा टुकड़ा; चतुर्थांश ।

टुघलाना–स० क्रि० मुँहमें रखकर चुभलाना ।

टुच्चा–वि० नीच, कमीना, दुष्ट ।

टुटका–पु० दे० 'टोटका' ।

टुटनी–स्त्री० झाड़ीकी टोंटी ।

टुटपुँजिया–वि० कम पूँजीवाला; थोड़ी विद्या, धन आदिवाला ।

टुटरूँ–पु० पेंडुकी नामक चिड़िया । **–टूँ**–स्त्री० पेंडुकीकी बोली । वि० अकेला; अशक्त; तुच्छ ।

टुड़ी–स्त्री० नाभि; ठोड़ी; टुकड़ी; डली ।

टुनगी–स्त्री० फुनगी; टहनीका सिरा ।

टुनहाया–वि०, पु० जादू टोना करनेवाला । (स्त्री० 'टुनहाई', 'टुनिहाई' ।)

टुनाका–स्त्री० (सं०) तालमूली, मुसली ।

टुन्ना–पु० तरकारी आदिका वह डंठल जिसमें फल लगकर लटकते हैं ।

टुपकना†–स० क्रि० धीरेसे काटना या डंक मारना; झगड़ा लगानेवाली बात धीरेसे कह देना ।

टुर्रा–पु० दाना; कण, टुकड़ा, डला ।

टूँगना–स० क्रि० दे० 'टुँगना'; कुतरना ।

टूँड़–पु० जौ, गेहूँ, धान आदिकी बालमें ऊपरकी ओर निकला हुआ नुकीला भाग; मच्छर आदि कीड़ोंके मुँहके आगे सूँड़की तरह निकली हुई पतली नली ।

टूँड़ी–स्त्री० गाजर-मूली आदिकी नोंक; लंबी नोक; जौ आदिके दानेके ऊपरका नुकीला हिस्सा; नाभि ।

टूअर†–वि० (वह बच्चा) जिसकी माँ मर गयी हो ।

टूक*–पु० टुकड़ा, खंड । **दो–जवाब देना**–साफ इनकार करना ।

टूका†–पु० दे० 'टुकड़ा'; चतुर्थांश ।

टूट*–वि० टूटा हुआ, खंडित ('टूट चाप...') । स्त्री० भूल, चूक,

त्रुटि–'टूट सँवारहु मेरवहु सजा'–प० ।

टूटदार–वि० जिसके हिस्से अलग-अलगकर एकमें मिला देनेसे पुन: समूची वस्तु तैयार हो जाय, मोड़दार, फोल्डिंग, सफरी (मेज, कुरसी इ०) ।

टूटन–स्त्री० टूटनेकी क्रिया; शरीरके अंगोंमें होनेवाली हलकी पीड़ा; टूटे हुए टुकड़े ।

टूटना–अ० क्रि० भग्न होना, खंडित होना, दो या अधिक टुकड़े हो जाना; हड्डियोंके जोड़का अलग हो जाना; गतिका रुक जाना; वेगसे किसी ओर झपटना, सहसा आक्रमण करना; च्युत होना; संबंध न रहना; कम हो जाना, नीचे गिरना (भाव, दाम); समाप्त हो जाना; अँगड़ाईके साथ पीड़ाका उठना; फलोंका तोड़ा जाना; अनायास कहींसे आ पड़ना; कृश होना; धनहीन होना । मु० **टूटकर बरसना**–मूसलधार वर्षा होना । **टूट जाना**–बंद हो जाना; चलना रुक जाना; गढ़का कब्जेमें आ जाना; दुर्बल या शक्तिहीन होना । **टूट पड़ना**–अचानक आ जाना; ऊपरसे नीचे गिरना ।

टूटा–वि० खंडित । (स्त्री० 'टूटी' ।) **–फूटा**–वि० जीर्णशीर्ण; (ला०) साधारण कोटिका; सजावटसे रहित । **–(टी)फूटी** –वि० स्त्री० जीर्ण-शीर्ण; अस्पष्ट, असंबद्ध (बात) ।

टूठना*–अ० क्रि० संतुष्ट होना; प्रसन्न होना ।

टूठनि*–स्त्री० संतुष्टि; प्रसन्नता ।

टूम–स्त्री० जेवर, गहना । **–टाम**–स्त्री० वस्त्राभूषण, साज-शृंगार ।

टूरनामेंट–पु० (अं०) विभिन्न खेलोंकी प्रतियोगिताका आयोजन ।

टूस–पु० एक तरहका बढ़िया ऊन या उसका बना कम्बल ।

टूसा†–पु० नुकीली कली; डोंडा; रेशा ।

टूसी†–स्त्री० दे० 'टूसा' ।

टें–स्त्री० तोतेकी बोली; कर्कश स्वर । **–टें**–स्त्री० बकवाद, व्यर्थकी बात । मु० **–बोलना**–चटपट मर जाना ।

टेंकिका–स्त्री० (सं०) तालका एक भेद ।

टेंकी–स्त्री० (सं०) एक शुद्ध राग; एक तरहका नृत्य ।

टेंगना†–स्त्री० एक मछली ।

टेंगर, टेंगरा–स्त्री० दे० 'टेंगना' ।

टेंट–स्त्री० धोतीका कमरमें मुड़ा हुआ हिस्सा जिसमें रुपये-पैसे रख लिये जाते हैं; कपासका फल या डोंडा; करीलका फल; पशुओंका एक घाव; † पु० दे० 'टेंटर' । मु० **(कानीके)–पर सिंदूर की बिंदी (बुंदेल०)**–कुरूप स्त्रीका अपनी सुदरता दूर करनेके प्रयत्नमें और अधिक असुंदर बन जाना; और भी भद्दी लगनेवाली चीज ।

टेंटर†–पु० विकारके कारण आँखमें उभड़ा हुआ मांस ।

टेंटा–पु० एक पक्षी ।

टेंटार–पु० दे० 'टेंटा' ।

टेंटिहा†–वि० झगड़ालू ; टंटा, बखेड़ा खड़ा करनेवाला ।

टेंटी–स्त्री० करीलका फल । वि० झगड़ालू; चिड़चिड़ा ।

टेंटु–पु० सोनापाठा ।

टेंटुआ, टेंटुवा–पु० गला, नटई ।

टेंडसी†–स्त्री० एक बेल जिसके फल तरकारीके काम आते हैं; टिंडा ।

टेउकन–पु० दे० 'टेउकी' ।

टेउकी–स्त्री० वह वस्तु जो किसी वस्तुको लुढ़कनेसे रोकनेके लिए उसके नीचे लगायी जाती है; साधुओंकी अधारी ।

टेक–स्त्री० थूनी, सहारा; चबूतरा; टीला; संकल्प; हठ; आदत; गीतका स्थायी पद; * आश्रय, अवलंब । मु० **–निबाहना**–संकल्पको पूरा करना । **–पकड़ना**–आग्रह करना, हठ पकड़ना ।

टेकन–पु० अड़काव, टेकनी; थूनी ।

टेकना–स० क्रि० थाम लेना; सहारा लेना; सहारेके लिए कोई वस्तु पकड़ना; * सहन करना; हठ पकड़ना ।

टेकनी–स्त्री० वह चीज जिसका सहारा दिया या लिया जाय ।

टेकनीक–स्त्री० (अं०) संगीत, चित्रकला, साहित्यादिमें प्रयुक्त विशिष्ट प्रविधि या शैली; शिल्प कौशल; रचनापद्धति ।

टेकर, टेकरा–पु० ऊँची भूमि, ढूह; छोटी पहाड़ी ।

टेकरी–स्त्री० दे० 'टेकर' ।

टेकला*–स्त्री० धुन, रटन ।

टेकान–पु० टेक, थंभ, थूनी; वह ऊँचा चबूतरा जिसपर बोझा ढोनेवाले अपना बोझा रखकर सुसताते हैं ।

टेकाना–स० क्रि० सहारा देना; हाथका सहारा देना, थामना ।

टेकानी–स्त्री० धुरीकी कील जो पहियेको गिरनेसे रोकती है; बैलगाड़ीके पीछेकी ओर लटकनेवाली वह लंबी-सी लकड़ी या थूनी जो गाड़ीको उलट जानेसे रोके, टेक ।

टेकी–वि० दृढ़प्रतिज्ञ; हठी, आग्रही ।

टेकुआ–पु० तकला; सहारेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी आदि ।

टेकुरी–स्त्री० तकली; रेशम फँसानेकी फिरकी; चमारोंका तागा खींचनेका सूजा; मूर्तिका तल चिकना करनेका एक औजार ।

टेढ़*–वि० दे० 'टेढ़ा' । स्त्री० टेढ़ापन; उजड्डपन; दुष्टता । **–बिडंगा**–वि० टेढ़ा-मेढ़ा ।

टेढ़ा–वि० वक्र, झुका हुआ, कुटिल, बाँका; कठिन, दुःसाध्य; पेचीदा; अनम्र, विनयरहित, उद्दंड, बुरे स्वभावका । **–ई**–स्त्री० टेढ़ा होनेका भाव, टेढ़ापन । **–पन**–पु० दे० 'टेढ़ाई' । **–मेढ़ा**–वि० जो सीधा न हो, वक्रता लिये हुए । मु०**–पड़ना**–रुखाईसे बात करना ।

टेढ़ी–वि०, स्त्री० दे० 'टेढ़ा' । **–खीर**–स्त्री० कठिन काम । मु० **–सीधी सुनाना**–बुरा-भला कहना ।

टेढ़े–अ० तिरछे । मु० **–टेढ़े जाना**–घमंड करना, इतराना ।

टेना–स० क्रि० पत्थर आदिपर धार तेज करना; मूँछके बालोंको ऐंठना ।

टेनिस–पु० (अं०) रबड़के गेंदको जालीदार डंडेसे मारनेका एक अंगरेजी खेल ।

टेनी†–स्त्री० छोटी उँगली । मु० **–मारना**–(सौदा) कम चढ़नेके लिए तराजूकी डाँड़ीको उँगलीसे दबा देना; कम तौलना ।

टेपारा†–दे० 'टिपारा'; बाँसकी तीलियों आदिसे बना डब्बा जैसा पात्र, पिटारा ।

टेबिल, टेबुल–पु० (अं०) मेज; नकशा, सारिणी । **–क्लाथ**–पु० मेजपोश ।

टेम–स्त्री० दीयेकी लौ । पु० (ग्रं० 'टाइम') समय ।

टेर–स्त्री० पुकार, हाँक; ऊँचा गायन; दूरसे पुकारनेका शब्द । वि० (सं०) ऐंचाताना ।

टेरक–वि० (सं०) ऐंचाताना ।

टेरना–स० क्रि० तार स्वरमें गाना; पुकारना, दूरसे बुलाना; मददके लिए पुकारना; बिताना, काटना; पूरा करना ।

टेरा–पु० अंकोल; तना, शाखा । वि० स्त्री० (सं०) ऐंचा-ताना ।

टेलीग्राफ–पु० (अं०) विद्युत्से शीघ्र समाचार भेजनेका एक साधन, तार, दूरलेख ।

टेलीग्राम–पु० (अं०) तार द्वारा भेजी गयी खबर ।

टेलीपैथी–स्त्री० (अं०) दूसरोंकी भावनाएँ जाननेकी मानसिक क्रिया ।

टेलीप्रिंटर–पु० (अं०) वह यंत्र जिसमें तार द्वारा प्राप्त संदेश स्वयं टाइप हो जाता है; दूरमुद्रक, तारलेखी ।

टेलीफोटोग्राफी–स्त्री० (अं०) दूरबीन द्वारा चित्र लेना ।

टेलीफोन–पु० (अं०) वह यंत्र जिसमें तारके संबंधसे दूरके शब्द ज्योंके त्यों सुनाई देते हैं, दूरभाष ।

टेलीविजन–पु० (अं०) दृश्य प्रतिबिम्बोंका लघु रेडियो तरंगों द्वारा प्रेषण तथा दूरस्थ स्टेशनोंपर उन्हीं प्रतिबिम्बोंका पुनर्निर्माण । दूरवीक्षण ।

टेलीस्कोप–पु० (अं०) दूरबीन, दूरदर्शक यंत्र ।

टेव–स्त्री० लत, आदत, स्वभाव । मु०**–पड़ना**–आदत पड़ जाना ।

टेवना†–स० क्रि० दे० 'टेना' ।

टेवा†–पु० जन्मपत्री 'लड़कीकी कुंडलीसे लड़केका टेवा टीकसे मिल गया है ।'

टेवैया*–पु० धार तेज करनेवाला ।

टेसुआ–पु० दे० 'टेसू' ।

टेसू–पु० पलाशका फूल; * लड़कोंका एक खेल ।

टेस्ट (टैस्ट)–पु० (अं०) परीक्षा; परीक्षण । **–मैच**–पु० क्रिकेट-

के खिलाड़ियों द्वारा घूम-घूमकर खेले गये मैचों या खेलोंकी निर्धारित संख्यामेंसे वह प्रत्येक खेल जिसका प्रभाव हारजीतके अंतिम निर्णयपर पड़ता है ।

टेहुनी†–दे० 'कुहनी' ।

टैंक–पु० (अं०) लड़ाईमें काम आनेवाली मोटरकार जैसी गाड़ी जो तोप आदिसे लैस और लोहेकी मोटी चद्दरसे ढकी रहती है ।

टैंठी*–वि०, स्त्री० चंचल (स्त्री)–'नाक चढ़ाएई डोलत टैंठी' –घन० ।

टैक्स–पु० (अं०) कर, महसूल, टिकस ।

टैक्सी–स्त्री० (अं०) किरायेपर चलनेवाली मोटर-कार ।

टैना†–पु० पशुपक्षियोंको डरानेके लिए खेतमें खड़ा किया जानेवाला पुतला, 'धोखा' ।

टेबलेट–पु० (अं०) छोटी टिकिया ।

टोंका†–पु० छोर, नोक ।

टोंचना–स० क्रि० गड़ाना; गोदना । पु० उलाहना; ताना ।

टोंट–स्त्री० चोंच ।

टोंटनी–स्त्री० जलपात्रमें लगी हुई टोंटी ।

टोंटा–पु० पानी गिरानेकी टोंटी; सिगरेट आदिका अधजला टुकड़ा जो पीनेके बाद जमीनपर फेंक दिया जाता है । दे० 'टोंड़ा', घोड़िया ।

टोंटी–स्त्री० बरतन आदिमें लगी हुई पानी गिरानेकी नली; थूथन ।

टोक–स्त्री० टोकनेकी क्रिया, रोक; पूछ-ताछ । –**टांक**–स्त्री० पूछ-ताछ ।

टोकना–स० क्रि० चलते समय यात्राके विषयमें पूछ-ताछ करना; किसी बातकी याद दिलाना; अशुद्धिपर बोल उठना; एतराज करना । पु० हंडा; टोकरा ।

टोकनी–स्त्री० टोकरी; देगची; छोटा हंडा ।

टोकरा–पु० बड़ी टोकरी, झाबा, खाँचा ।

टोकरी–स्त्री० घास, फल, तरकारी आदि रखनेका बाँस या झाऊ आदिका बना गोला, गहरा पात्र, खँचिया ।

टोकाटाकी–स्त्री० कोई काम करते समय या कहीं जानेका उपक्रम करने समय किसीको बीचमें टोक देनेकी क्रिया ।

टोट*–स्त्री० टोटा, कमी (त्रुटि)–'प्यासकी न टोट है'–घन० ।

टोटक*–पु० दे० 'टोटका' ।

टोटका–पु० टोना । –(**के**)**हाई**–स्त्री० टोना करनेवाली ।

टोटा–पु० कारतूस; बाँस आदिका टुकड़ा; घाटा, कमी ।

टोडरमल–पु० अकबरके अर्थ-मंत्री ।

टोड़ा–पु० पुराने ढंगके मकानोंमें दीवारमें गाड़ा जानेवाला विशेष बनावटका पत्थर या लकड़ीका टुकड़ा जो आगे बढ़ी हुई छाजनकी रोकके लिए लगाया जाता है ।

टोड़ी–स्त्री० संपूर्ण जातिकी एक रागिनी, भैरव रागकी स्त्री । पु० खुशामदी आदमी ।

टोन–'टोना'का समासगत रूप । –**हा**–पु० दे० 'टोनहाया' । –**हाई**–स्त्री० टोना, तंत्र-मंत्र करनेवाली स्त्री । –**हाया**–पु० टोना, जादू करनेवाला ।

टोना–पु० जादू, टोटका; * एक शिकारी पक्षी । स० क्रि० उँगलियोंसे दबाकर या छूकर मालूम करना, टटोलना ।

टोप–पु० बड़ी टोपी; शिरस्त्राण, लोहेकी टोपी; † बूंद ।

टोपन†–पु० टोकरा ।

टोपा–पु० बड़ी टोपी; शिरस्त्राण; † टोकरा ।

टोपी–स्त्री० सिरका एक पहनावा; मुकुट 'छात पाट औ टोपी छाजा'–चन्दा०; गोल और गहरा ढक्कन; धातुका गहरा ढक्कन जिसपर बंदूकके घोड़ेके गिरनेसे आग लगती है; शिकारी जानवरकी आँखपर लगानेकी पट्टी । –**दार**–वि० टोपीवाली (बंदूक); जिसमें टोपी लगाकर काम लिया जाय; जिसमें टोपी लगी हो । –**वाला**–वि०, पु० जिसके सिरपर टोपी हो; अंगरेज; यूरोपियन ।

टोभ*–पु० टाँका ।

टोर*–स्त्री० कटारी, कटार ।

टोरना*–स० क्रि० तोड़ना, इधर उधर फिराना ।

टोरा–पु० सूत तौलनेका तराजू; दे० 'टोड़ा' ।

टोरी†–स्त्री० दे० 'टोड़ी' । पु० (अं०) जेम्स द्वितीयके निष्कासन तथा १८३२ के 'रिफार्म बिल'का विरोध करनेवाले उस (सुधार-विरोधी) दलका सदस्य जिसका स्थान बादको कन्सरवेटिवोंने लिया ।

टोल–स्त्री० दल, समुदाय, झुंड; टुकड़ा, रोड़ा; पाठशाला । पु० एक राग; (अं०) यात्रियों आदिपर लगनेवाला एक कर । –**कलेक्टर**–पु० यह कर वसूल करनेवाला व्यक्ति ।

टोला–पु० छोटी बस्ती, महल्ला; एक पेशे या जातिवालोंकी बस्ती ।

टोली–स्त्री० छोटा महल्ला; मंडली; झुंड; सिल ।

टोह–स्त्री० खोज, अनुसंधान; पता; देख भाल । मु० –**में रहना** –खोज, फिराकमें रहना । –**लगाना**,–**लेना**–पता लगाना ।

टोहक विमान–पु० (रिकानेसेंस प्लेन) शत्रुकी स्थितिका पता लगाने, सैनिक आवश्यकता या पुल आदि बनानेकी दृष्टिसे आस-पासके भूक्षेत्रका पर्यवेक्षण करनेवाला विमान ।

टोहना–स० क्रि० खोजना, सुराग लगाना; टटोलना ।

टोहाटाई–स्त्री० खोज, छान-बीन; देख-भाल ।

टोहिया–वि०, पु० पता लगानेवाला, टोह लगानेवाला; खुफिया ।

टोही–वि०, पु० दे० 'टोहिया' ।

टौंडिक*–वि० शरारती ।

टौंस–स्त्री० अयोध्याके पश्चिमसे निकलकर बलियाके पास गंगामें गिरनेवाली एक नदी जिसका प्राचीन नाम तमसा है; विंध्य प्रदेशकी एक नदी ।

टौंड़िक*–वि० पेटू ।

टौनहाल–पु० दे० 'टाउनहाल' ।

टौर–स्त्री० पता लगानेकी क्रिया; पता, टोह; दाव ।

टौरना–स० क्रि० पता लगाना; जाँच करना ।

टौरिया†–स्त्री० छोटी पहाड़ी, बड़े बड़े पत्थरोंवाला टीला ।

ट्यूबवेल–पु० (अं०) दे० 'नलकूप' ।

ट्रंक–पु० (अं०) लोहे या टीनका कपड़े आदि रखनेका संदूक ।

ट्रंप–पु० (अं०) ताशके खेलमें नियत किया हुआ रंग जिससे बड़े पत्ते काटे जाते हैं ।

ट्रक–स्त्री० (अं०) भारी माल ढोनेकी चार या छ पहियोंकी गाड़ी ।

ट्रस्ट–पु० (अं०) दूसरेके लाभार्थ संपत्तिका प्रबंध सौंपना, 'न्यास'; ऐसी संपत्तिसे लाभ उठानेका अधिकार ।

ट्रस्टी–पु० (अं०) वह व्यक्ति जिसे पक्की लिखा-पढ़ी करके प्रबंधके लिए संपत्ति सौंपी जाय, 'न्यासी' ।

ट्रांजिस्टर–पु० (अं०) ऐसी युक्ति जिसमें जर्मेनियम (अर्द्धचालक) की सहायतासे धाराके प्रवर्धन, तथा निर्वात वाल्वके अन्य कार्य सम्पादित किये जा सकते हैं । छोटे साइज़के रेडियो, बहरे लोगोंके लिए सुननेके यंत्र तथा कृत्रिम भू-उपग्रहके यंत्रोंके परिचालनके लिए ट्रान्जिस्टरकी सहायता ली जाती है ।

ट्रांसफर–पु० (अं०) बदली, तबादला ।

ट्रान्सफॉर्मर–पु० (ट्रान्सफ़ॉर्मर) ऐसा विद्युत उपकरण जो उच्च वोल्टताकी प्रत्यावर्ती धाराको निम्न वोल्टताकी प्रत्यावर्ती धारामें परिवर्तित कर सके; या निम्न वोल्टताकी प्रत्यावर्ती धाराको उच्च वोल्टताकी प्रत्यावर्ती धारामें बदल सके ।

ट्राटस्की–पु० रूसकी बोलशेविक क्रांतिके एक प्रमुख नेता जो बादमें रूससे निर्वासित कर दिये गये थे । मेक्सिकोमें उनकी हत्या कर डाली गयी (१८७७-१९३७) ।

ट्राम–स्त्री० (अं०) बड़े-बड़े शहरोंमें बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाली यात्री गाड़ी । –**वे**–स्त्री० ट्रामकी लाइन ।

ट्रूप–पु० (अं०) सैनिकोंका दल; साठ घुड़सवारोंका दल जिसमें दो लेफ्टिनेंट और एक कप्तान हों ।

ट्रूस–स्त्री० (अं०) युद्ध स्थगित करनेकी अल्पकालीन संधि, विराम-संधि ।

ट्रेंड–वि० (अं०) कार्यविशेषके लिए शिक्षा पाया हुआ, प्रशिक्षित ।

ट्रेज़रर–पु० (अं०) खजांची, कोषाध्यक्ष ।

ट्रेज़री–स्त्री० (अं०) खजाना । –**अफ़सर**–पु० खजानेका अफसर ।

ट्रेजेडी–स्त्री० (अं०) विषादांत नाटक ।

ट्रेडमार्क–पु० (अं०) किसी व्यापारी द्वारा अपने मालपर लगाया गया विशेष चिह्न ।

ट्रेडिल मशीन–स्त्री० (अं०) छापनेकी छोटी कल जिसे एक व्यक्ति चलाता है ।

ट्रेन–स्त्री० (अं०) रेलगाड़ी ।

ट्रेनिंग–स्त्री० (अं०) कार्यविशेषकी शिक्षा, प्रशिक्षण । **–कालेज** –पु० कार्यविशेषकी शिक्षा देनेका कालेज । **–स्कूल**–पु० वह शिक्षालय जिसमें ट्रेनिंगकी पढ़ाई होती है ।

ट्रैक्टर–पु० (अं०) चार पहियोंवाला एक तरहका इंजन जिसका प्रयोग कृषिसंबंधी अनेक कार्योंमें किया जाता है, कृषियंत्र, संचालक इंजन ।

ठ

ठ–देवनागरी वर्णमालामें टवर्गका दूसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान मूर्द्धा ।

ठंठ–वि० (वृक्ष) जिसकी डालियाँ और पत्तियाँ सूख या कटकर गिर गयी हों, ठूँठा; अकिंचन; जो दूध न दे, ठाँठ ।

ठंठनाना–स० क्रि० 'ठं-ठं'की ध्वनि निकालना । अ० क्रि० 'ठं-ठं'की ध्वनि निकलना ।

ठंठार–वि० रिक्त, शून्य; छूँछा ।

ठंठी–स्त्री० पीटनेके बाद बालमें लगा अन्न । वि० स्त्री० ठाँठ, (गाय या भैंस) जो बच्चा और दूध न दे ।

ठंड–स्त्री० सरदी, जाड़ा ।

ठंडक–स्त्री० दे० 'ठंड' ।

ठंडा–वि० सर्द, शीतल; बुझा हुआ; बेरौनक, श्रीहत; जिसमें चोटके चिह्न दिखाई न दें । **–ई**–स्त्री० दे० 'ठंढाई' । **–युद्ध, ठंडी लड़ाई** –स्त्री० (कोल्ड वार) दे० 'शीतयुद्ध' ।

ठंढ–स्त्री० दे० 'ठंड' । **–ई**–स्त्री० दे० 'ठंढाई' ।

ठंढक–स्त्री० दे० 'ठंड'; (ला०) सुख; तृप्ति; संतोष, शांति ।

ठंढा–वि० दे० 'ठंडा' । **–ई**–स्त्री० तरी पहुँचानेवाली औषधियाँ; पेयविशेष । **–मुलम्मा**–पु० सोने-चाँदीका मुलम्मा जो विना आँचके चढ़ाया जाय । **–(ढे)ठंढे**–अ० आरामसे, धूप कड़ी होनेसे पहले; आनंदपूर्वक; चुपचाप । **मु०–करना**–क्रोध शांत करना । **–पड़ना**–क्रोध शांत होना; आवेशरहित होना । **–होना** –मर जाना ।

ठंढी–वि० स्त्री० दे० 'ठंडा' । **–आग**–स्त्री० पाला । **–साँस**–स्त्री० दुःखभरी साँस । **मु०–साँस लेना**–आह भरना ।

ठ–पु० (सं०) शिव; भारी शब्द; चंद्रमंडल; शून्यस्थान ।

ठअकन, ठअकनि*–स्त्री० ठुमक, रुक रुककर चलनेकी बच्चोंकी चाल ।

ठक–स्त्री० काठपर काठ बजानेका शब्द; * हठ । वि० भौचक्का, स्तब्ध । **–ठक**–स्त्री० मनमुटाव, झगड़ा; 'ठक-ठक' शब्द । **मु० –हो जाना**–स्तंभित हो जाना, भौचक्का हो जाना ।

ठकठकाना–स० क्रि० 'ठक-ठक'की ध्वनि उत्पन्न करना । † अ० क्रि० भौचक्का हो जाना ।

ठकठकिया–वि०, पु० झंझट खड़ा करनेवाला, छोटी-सी बातपर विवाद करनेवाला ।

ठकठौआ–पु० करताल; करताल बजाकर भीख माँगनेवाला ।

ठकुरई†–स्त्री० दे० 'ठकुराई' ।

ठकुरसुहाती–स्त्री० व्यक्तिविशेष वा स्वामीको प्रिय लगनेवाली बात, चापलूसी, चाटुकारिता ।

ठकुराइत–स्त्री० दे० 'ठकुरायत' ।

ठकुराइन†–स्त्री० स्वामिनी; ठाकुरकी स्त्री; * रानी; नाईकी पत्नी; क्षत्रियकी स्त्री ।

ठकुराई–स्त्री० स्वामित्व, प्रभुता; शासनाधीन प्रदेश, राज्य; मनमानीपन; उच्चता; ठाकुरपन; क्षत्रिय; स्वामी या जमींदार होनेका रोबदाब ।

ठकुराना–पु० ठाकुरोंकी बस्ती ।

ठकुरानी–स्त्री० जमींदार, ठाकुर या सरदारकी स्त्री; रानी; क्षत्रियकी पत्नी ।

ठकुराय*–पु० क्षत्रियोंका एक भेद ।

ठकुरायत–स्त्री० प्रभुता, स्वामित्व, अधीश्वरता; शासनाधीन प्रदेश ।

ठकोरी–स्त्री० सहारा लेनेकी एक विशेष लकड़ी ।

ठक्कर–स्त्री० दे० 'टक्कर' ।

ठक्कुर–पु० (सं०) देवता; देवप्रतिमा; मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

ठग–पु० धोखा देकर लूटनेवाला; धोखेबाज आदमी; धूर्त, वंचना करनेवाला । **–ई**†–स्त्री० धोखेबाजी; ठगनेकी क्रिया । **–पना** –पु० ठगहाई; ठगनेकी क्रिया; धूर्तता । **–मूरी**–स्त्री० ठगनेकी गरजसे बेहोश करनेके लिए सुँघाई जानेवाली एक जड़ी । **–मोदक** –पु० नशीली वस्तुओंसे युक्त मोदक जिसे खिलाकर ठग पथिकोंको बेहोश करते थे । **–लाडू**–पु० दे० 'ठगमोदक' । **–विद्या**–स्त्री० धोखा देनेका हुनर । **–हाई,–हारी**–स्त्री० ठगपना । **मु० –पना करना**–धूर्तताकी चाल चलना ।

ठगण–पु० (सं०) पाँच मात्रिक गणोंमेंसे एक ।

ठगना–स० क्रि० धोखा देकर लूटना; दगाबाजी करना, वंचना करना, धोखा देना, छलना; ग्राहकोंसे अधिक दाम लेना । * अ० क्रि० ठगा जाना; धोखा खाना; दंग रह जाना ।

ठगनी–स्त्री० ठगनेवाली स्त्री; ठगकी स्त्री; कुटनी; माया ।

ठगवाना–स० क्रि० दूसरे द्वारा धोखा दिलवाना ।

ठगहाई, ठगहारी–स्त्री० दे० 'ठग'में ।

ठगाई†–स्त्री० ठगपना ।

ठगाठगी–स्त्री० ठगपना, छल-कपट ।

ठगाना†–अ० क्रि० धोखा खा जाना, भुलावेमें आकर किसी वस्तुका अधिक मूल्य दे देना । स० क्रि० दे० 'ठगवाना' ।

ठगाही*–स्त्री० ठगपना ।

ठगिन–स्त्री० धोखा देनेवाली स्त्री, दगाबाज स्त्री; ठगकी पत्नी; लुटेरिन ।

ठगिनी–स्त्री० दे० 'ठगिन'; माया ।

ठगिया†–पु० ठग ।

ठगी–स्त्री० ठगनेकी क्रिया; ठगका पेशा; ठगपना ।

ठगोरी*–स्त्री० मोहित कर देनेवाली क्रिया, जादू; टोना ।

ठट–पु० वस्तुओं अथवा लोगोंका जमाव; एकत्र हुए लोगोंकी पंक्ति, समुदाय, भीड़; ठाट, सजावट । **–कीला**–वि० भड़कदार, सजा हुआ ।

ठटना–अ० क्रि० डटना; अड़ना; विरोधमें स्थित रहना; सन्नद्ध होना । स० क्रि० सजाना; तैयार करना; निर्धारित करना; छेड़ना ।

ठटनि*–स्त्री० सजधज; तैयारी; बनाव ।

ठटरी–स्त्री० ढाँचा; शरीरका ढाँचा, कंकाल; भूसा रखनेका जाल; अरथी । **मु० –होना**–अत्यंत कृश होना ।

ठटवारी*–स्त्री० टट्टी–'मुरली मधुर चेंपकर काँपो मोरचंद्र ठटवारी'–सूर ।

ठट्ट–पु० दे० 'ठट' ।

ठट्टी–स्त्री० ठटरी ।

ठट्ठई*–स्त्री० हँसी, परिहास ।

ठट्ठा–पु० खिलवाड़; परिहास । **–(ट्ठे)बाज़**–वि० दिल्लगीबाज । **मु० –मारना,–लगाना**–ठठाकर हँसना ।

ठठ–पु० दे० 'ठट' ।

ठठई*–स्त्री० दे० 'ठट्ठई' ।

ठठकना–अ० क्रि० दे० 'ठिठकना' ।

ठठना†–अ० क्रि० (काँटे, तीर आदिका) चुभकर रह जाना, गड़ जाना; दे० 'ठटना' ।

ठठरी–स्त्री० दे० 'ठटरी' ।

ठठाना–स० क्रि० आघात करना; जोरसे पीटना । अ० क्रि०

अट्टहास करना, जोरसे हँसना ।

ठठिरिन*–स्त्री० दे० 'ठठेरिन' ।

ठुकना†–अ० क्रि० दे० 'ठिठकना' ।

ठठेरा–पु० धातुके बरतन बनानेवाला; कसेरा । **मु०** –(रे)की बिल्ली–ढीठ, ऐसा व्यक्ति जिसपर किसी बातका प्रभाव न पड़े । –ठठेरे बदलाई–जोड़-तोड़का व्यवहार ।

ठठेरिन–स्त्री० ठठेरेकी स्त्री ।

ठठेरी–स्त्री० ठठेरेका काम; ठठेरेकी स्त्री । –बाज़ार–पु० वह बाजार जहाँ अधिकांश दुकानें ठठेरोंकी हों ।

ठठोल–वि० मसखरा, अधिक परिहास करनेवाला । पु० परिहास करनेवाला; परिहास ।

ठठोली–स्त्री० हँसी, मजाक, परिहास ।

ठड़ा, ठढ़ा†–वि० खड़ा, सीधा स्थित ।

ठढ़िया–पु० ऊँचा ओखल; † ढोरोंका एक रोग जिसमें वे दिनों-दिन सूखते जाते हैं; एक साग, मरसा ।

ठन–स्त्री० धातुके टुकड़े, बरतन या रुपयेके बजनेकी आवाज ।

ठनक–स्त्री० तबला, मृदंग आदिकी ध्वनि; टीस ।

ठनकना–अ० क्रि० 'ठन-ठन' करके बजना; शंका उत्पन्न होना; रुक-रुककर पीडा होना ।

ठनका–पु० दे० 'ठनक' ।

ठनकाना–स० क्रि० धातुखंड या तबला आदि बजाकर शब्द उत्पन्न करना । (रुपया ठनका लेना–रुपया वसूल कर लेना ।)

ठनकार–पु० धातुखंडसे उत्पन्न ध्वनि ।

ठनगन–पु० नेग पानेके लिए हठ करना; हठ, जिद ।

ठनगना†–अ० क्रि० ठनगन करना ।

ठन-ठन–स्त्री० धातुखंडके बजनेकी ध्वनि । –गोपाल–पु० वह जिससे जयगोपाल–कोरे शिष्टाचार–के अतिरिक्त कुछ न मिले, निःस्व व्यक्ति; निःसार वस्तु ।

ठनठनाना–स० क्रि० 'ठन-ठन'की ध्वनि उत्पन्न करना । अ० क्रि० 'ठन-ठन' करके बजना ।

ठनना–अ० क्रि० निश्चित होना; दृढ़ताके साथ कार्यका आरंभ होना, छिड़ना; प्रयुक्त होना; लगना; तैयार होना ।

ठनमनाना–अ० क्रि० दे० 'ढनमनाना' ।

ठनाका–पु० 'ठन-ठन'की ध्वनि ।

ठनाठन–अ० 'ठन-ठन' आवाजके साथ ।

ठप–वि० जो पूरी तरहसे बंद हो गया हो ।

ठपका*–पु० टक्कर, ठोकर, आघात ।

ठप्पा–पु० साँचा जो छापा या चिह्नविशेष लगानेके काम आता है; साँचेसे उखड़ी हुई छाप ।

ठमक–स्त्री० सहसा रुक जानेका भाव; इतराते हुए चलनेका भाव; नजाकतभरी चाल ।

ठमकना–अ० क्रि० भय, आश्चर्य आदिसे चलते-चलते रुक जाना; सहम जाना; इतराते हुए चलना, हाव-भावके साथ चलना ।

ठमका–वि० नाटा, जिसकी उँचाई कम हो ।

ठमकाना–स० क्रि० चलतेको सहसा रोक देना; * बजाना ।

ठमकारना–स० क्रि० दे० 'ठमकाना' ।

ठयना*–स० क्रि० ठानना; दृढ़ निश्चयके साथ आरंभ करना; तैयार करना; पूरा करना; स्थापित करना; लगाना । अ० क्रि० संकल्पपूर्वक आरंभ होना; ठनना; ठहरना, जमना; प्रयुक्त होना ।

ठरना†–अ० क्रि० सरदीसे गलना, ठिठुरना; अत्यंत अधिक शीत पड़ना; * स्तब्ध हो जाना ।

ठरुआ†–स्त्री० जिसे पाला मार गया हो ।

ठर्रा†–पु० कड़ा बटा हुआ मोटा सूत; एक तरहकी देशी शराब; भद्दा जूता; रद्दी पकी ईंट ।

ठलाना*–स० क्रि० गिराना; निकलवाना ।

ठलुआ–वि० जिसे कोई काम न हो, निठल्ला ।

ठवन–स्त्री० अंग-संचालनका ढंग; खड़े होने, बैठने आदिका ढंग; स्थिति; मुद्रा ।

ठवना*–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'ठयना' ।

ठवनि*–स्त्री० दे० 'ठवन' ।

ठस–वि० आलसी; कंजूस; जिससे कुछ निकलता न हो; घनी बुनावटका (कपड़ा), दबीज; (रुपया) जिसकी आवाज भारी हो; हठी; स्थिर; दृढ़ ।

ठसक–स्त्री० नखरा, चाल-ढालका बनावटीपन जिससे रूप, धन आदिका गर्व सूचित होता हो, ऐंठ, शान । –दार–वि० ठसकवाला ।

ठसका–पु० सूखी खाँसी; ठोकर, धक्का; फंदा ।

ठसाठस–अ० खचाखच; ठूँस-ठूँसकर (भरा) ।

ठस्सा†–पु० ठसक, अभिमानभरी चाल; शान; नक्काशी बनानेका एक औजार ।

ठहना*–अ० क्रि० ठनठनाना; हिनहिनाना; †काम करनेमें जमना ।

ठहनाना*–अ० क्रि० बजना; (घोड़ेका) हिनहिनाना; कार्यको सुचारु रूपसे संपन्न करनेके लिए सोचते-समझते हुए आगे बढ़ना; काम करनेमें जमना ।

ठहर*–पु० स्थान, जगह; चौका, लीपी हुई जगह ।

ठहरना–अ० क्रि० रुकना; टिकना; बना रहना; अस्थायी रूपसे रहना; पक्का होना; तय होना; थमना, प्रतीक्षा करना ।

ठहराई–स्त्री० ठहरानेकी क्रिया या मजदूरी; कब्जा ।

ठहराऊ–वि० ठहरनेवाला; टिकाऊ ।

ठहराना–स० क्रि० रोकना; रुकवाना; स्थिर करना; टिकाना; तय करना; पक्का करना । * अ० क्रि० ठहराना, टिकना, रुकना ।

ठहराव–पु० ठहरनेका भाव; स्वर या तानका विराम (संगीत); रुकाव; निर्णय; ठहरौनी; समझौता ।

ठहरौनी–स्त्री० दहेज आदिके लेन-देनकी प्रतिज्ञा या निश्चय ।

ठहाका–पु० जोरकी हँसी । **मु०** –लगाना–अट्टहास करना ।

ठहियाँ–स्त्री० स्थान, जगह ।

ठाँ, ठाईं*–स्त्री० दे० 'ठाँव' । अ० तईं, प्रति; पास ।

ठाउँ*–पु० दे० 'ठाँव' । अ० निकट, पास ।

ठाँठ–वि० रसहीन; (गाय आदि) जो दूध न देती हो ।

ठाँठर*–पु० ठठरी ।

ठाँयँ–पु० दे० 'ठाँव' । स्त्री० बंदूक छूटनेकी आवाज ।

ठाँव–पु० स्थान, जगह; अवसर, मौका ।

ठाँसना–स० क्रि० ठूँसना या कसकर भरना । अ० क्रि० ढाँसना ।

ठाँहीं†–स्त्री० दे० 'ठाईं' ।

ठाकुर–पु० देवप्रतिमा (विशेषकर विष्णुकी); परमेश्वर; अधीश्वर, स्वामी; नायक; पूज्य व्यक्ति; क्षत्रियोंकी उपाधि; जमींदार; प्रदेशविशेष या गाँवका मालिक; नाई । –द्वारा–पु० ठाकुरका मंदिर; पुरीस्थित जगन्नाथका मंदिर । –बाड़ी–स्त्री० देवस्थान । –सेवा–स्त्री० देवताका पूजन; देवोत्तर संपत्ति ।

ठाकुरी–स्त्री० दे० 'ठकुराई' ।

ठाट–पु० रोक या रक्षाके काम आनेवाला बाँसका ढाँचा; सजधज; शान; सितारका तार; डिल्ला; * तैयारी; 'करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू'–रामा०; आयोजन; जनसमूह, भीड़; वेशरचना; झुंड; अधिकता । –बंदी–स्त्री० छज्जे आदिके लिए ढाँचा बनानेकी क्रिया । –बाट–पु० तड़क-भड़क । **मु०** –बदलना–भेष बदलना; बड़प्पन जताना । –मारना–चैन करना ।

ठाटना*–स० क्रि० ठाट करना; सजाना; आयोजन करना; ठानना; सँवारना ।

ठाटर–पु० टट्टर; ठठरी; बाँसकी बनी कबूतरोंकी छतरी; * सजधज, सजावट ।

ठाटी*–स्त्री० दे० 'ठट्ट' ।

ठाठ–पु० दे० 'ठाट' ।

ठाठना*–स० क्रि० दे० 'ठाटना' ।

ठाठर–पु० दे० 'ठाटर' ।

ठाढ़, ठाढ़ा*–वि० खड़ा; उन्नत; बिना टुकड़ा किया हुआ; रचित; उत्पन्न; प्रस्तुत; शक्तिशाली । **मु०** –(ढ़ा) देना–टिकाना; ठहराना ।

ठाढ़ेश्वरी–पु० दिन-रात खड़े रहनेवाले साधु ।

ठादर*–पु० रार, झगड़ा–'देव आपनो नहीं सँभारत करत द्वंद्व सो ठादर'–सूर ।

ठान–स्त्री० ठाननेका भाव, करनेका दृढ़ निश्चय; हाव-भावके साथ अंगसंचालन; कार्यविशेषकी तैयारी; कार्यारंभ; शुरू किया हुआ कार्य ।

ठानना–स० क्रि० करनेका दृढ़ निश्चय करना; छेड़ना; कार्यविशेषको तत्परतासे प्रारंभ करना; (मनमें) निश्चित करना ।

ठाना*–स० क्रि० दे० 'ठानना'; दे० 'ठयना'; सत्य करके दिखला देना ।

ठाम*–पु० दे० 'ठाँउँ'; शरीरकी मुद्रा, अंगविन्यास ।

ठायँ–स्त्री० दे० 'ठाँयँ' । पु० दे० 'ठाँव' ।

ठार–पु० (सं०) पाला, अधिक सरदी ।

ठाल†–स्त्री० दे० 'ठाला'; फुरसन ।

ठाला–पु० बेकारी; आयकी कमी; काम-धंधेका मंद पड़ जाना । वि० बेकार, निठल्ला ।

ठालिनी–स्त्री० (सं०) कमरबंद, करधनी ।

ठाली–वि० बेकार, जिसे कुछ काम-धंधा न हो, निठल्ला । * स्त्री० धीरज, ढाढ़स–'...खाली देत सब ठाली हाय, मेरे बनमालीको न काली तें छुड़ावहीं'–रसखान ।

ठावँ–पु० दे० 'ठाँव' ।

ठावना*–स० क्रि० दे० 'ठाना' ।

ठासा–पु० लोहारोंका एक औजार ।

ठाह–स्त्री० गाने-बजानेकी विलंबित गति । **–रूपक**–पु० मृदंगका एक ताल ।

ठाहर*–पु० जगह; ठहरनेका स्थान; ठिकाना ।

ठिँगना–वि० कम ऊँचा, छोटे कदका, नाटा ।

ठिक*–स्थैर्य–'जासों नहीं ठहरै ठिक मानको'–घन० ।

ठिकठैन*–पु० व्यवस्था, प्रबंध ।

ठिकड़ा†–पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठिकना*–अ० क्रि० दे० 'ठिठकना' ।

ठिकरा†–पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठिकरौर†–वि० जिसमें ठीकरे अधिक हों (जमीन) । स्त्री० ऐसी जमीन ।

ठिकाना–पु० स्थान, जगह; वासस्थान; रहने या ठहरनेकी जगह, मुकाम; अवलंब; गुजर करनेका स्थान; नियन या अनुकूल स्थान; उपाय, व्यवस्था; सीमा; भरोसा; विश्वास; जागीर । **मु०–लगना**–आश्रयस्थान या जीविकाका अवलंब प्राप्त होना । **–लगाना**–नौकरी या रहनेका स्थान ठीक करना; प्रबंध करना । **–(ने) आना**–ठीक रास्तेपर आना, असलियतपर पहुँचना । **–की बात**–युक्ति-संगत बात, कामकी बात । **–न रहना**–चंचल बना रहना । **–पहुँचाना**–अभीष्ट स्थानतक पहुँचा देना । **–लगना**–उचित स्थानपर पहुँच जाना; काममें आना; मर जाना । **–लगाना**–मार डालना; खत्म कर देना ।

ठिठकना–अ० क्रि० चलते-चलते सहसा रुक जाना; बिलकुल स्थिर हो जाना; शरीर-संचालन न होना; स्तब्ध होना; ठक रह जाना ।

ठिठुरना–अ० क्रि० सर्दीसे सिकुड़ जाना ।

ठिठोली–स्त्री० दे० 'ठठोली' ।

ठिनकना–अ० क्रि० (बच्चोंका) बनावटी तौरसे रोना; मचलना; ठनकना ।

ठिया*–पु० जंगली पशुओंके रहने, ठहरनेका स्थान (मृग०) ।

ठिर–स्त्री० कड़ाकेकी सर्दी, पाला ।

ठिरना–अ० क्रि० बहुत अधिक सर्दी पड़ना; ठिठुरना, सर्दीसे अकड़ जाना ।

ठिलठिलाना†–अ० क्रि० जोरसे हँसना ।

ठिलना–अ० क्रि० बलपूर्वक ढकेला जाना; आगे खिसकाया या बढ़ाया जाना; तेजीसे घुसना; धँसना ।

ठिलाठिल*–अ० कसमसाते हुए; धक्कमधक्केके साथ ।

ठिलिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा घड़ा, गगरी ।

ठिलुआ–वि० निठल्ला, बेकार, जिसे कोई काम न हो ।

ठिल्ला–पु० मिट्टीका घड़ा ।

ठिल्ली–स्त्री० दे० 'ठिलिया' ।

ठिहारी*–वि० स्त्री० पक्की, स्थायी, न टूटनेवाली । स्त्री० निश्चय, ठहराव ।

ठीक–वि० उपयुक्त; युक्तिसंगत; यथार्थ; अच्छा; मनोनुकूल; उचित; अभ्रांत; शुद्ध, सही; दुरुस्त; जैसा चाहिये वैसा, न ढीला, न कसा; न कम, न ज्यादा; न इधर, न उधर; नियत, बँधा हुआ; पूरा-पूरा । अ० सीधे; मुनासिव ढंगसे, उचित रीतिसे; हुबहू । पु० निश्चय; व्यवस्था, प्रबंध; जोड़, योग । **–ठाक**–पु० व्यवस्था, प्रबंध, बंदोबस्त । वि० नियत; दुरुस्त । **मु० –देना**–दृढ़ संकल्प करना; पक्का विचार करना; जोड़ निकालना ।

ठीकड़ा–पु० दे० 'ठीकरा' ।

ठीकमठीक–अ० बिलकुल ठीक; पूर्णरूपसे, एकदम, बिलकुल ।

ठीकरा–पु० मिट्टीके बरतन या खपड़ेका टुकड़ा; पुराना बरतन; भिक्षापात्र; (ला०) रुपया-पैसा; निकम्मी चीज । **मु० (सिर-पर)–फोड़ना**–किसीके सिर दोष मढ़ना । **–समझना**–कुछ न समझना । **–होना**–अंधाधुंध खर्च होना ।

ठीकरी–स्त्री० छोटा ठीकरा; चिलमपर रखनेका मिट्टीका तवा; निकम्मी चीज ।

ठीका–पु० नियत समय अथवा दरपर कोई काम करने या करानेका इकरार; कर आदि वसूल करनेका जिम्मा । **–पत्र**–पु० ठीकेका इकरारनामा । **–(के)दार**–पु० ठीकेपर लेनेवाला, ठीकेपर काम करनेवाला, व्यक्ति ।

ठीकुरी*–स्त्री० पत्थर; परदा ।

ठी-ठी–स्त्री० हलकी आवाजवाली हँसी, बेहूदा हँसी । **मु० –करना** –इस प्रकारकी हँसी हँसना ।

ठीलना*–स० क्रि० दे० 'ठेलना' ।

ठीवन*–पु० थूक, खखार, श्लेष्मा ।

ठीहँ*–स्त्री० हिनहिनानेकी आवाज ।

ठीहा–पु० (पृथ्वीमें गड़ा) लकड़ीका टुकड़ा जिसपर रखकर कोई चीज गढ़ी या काटी जाती है; निहठा; ऊँची जगह; वेदी; गद्दी; हद ।

ठुंठ–पु० बिना डाल-पातका सूखा पेड़ या उसका तना । वि० लूला ।

ठुंड–पु०, वि० दे० 'ठुंठ' ।

ठुकना–अ० क्रि० पीटा जाना; ठोंका जाना; चोट खाकर भीतर धँसना; दायर होना (दावा); हानि होना । **मु० ठुक जाना**–ताड़ित होना, पिट जाना; हानि होना; धँस जाना ।

ठुकराना–स० क्रि० मारना, पैरके अग्र भागसे मारना; (ला०) पैरसे मारकर हटाना; तिरस्कार करना, उपेक्षा करना; दुतकारना ।

ठुकवाना–स० क्रि० पिटवाना, मार खिलाना; हानि कराना ।

ठुड्डी–स्त्री० ठोड़ी, होंठके नीचे निकली हुई हड्डी; भूना हुआ दाना जो खिला न हो, ठुर्री । **मु० –पकड़ना**–अनुनय-विनय करना, खुशामद करना ।

ठुनकना–अ० क्रि० दे० 'ठिनकना' । स० क्रि० दे० 'ठुनकाना' ।

ठुनकाना–स० क्रि० उँगलीसे धीरेसे आघात करना; हलके हाथसे ठोंकना ।

ठुन-ठुन–पु० बरतनों या धातुके टुकड़ोंकी आघातजन्य ध्वनि; बच्चोंके रह-रहकर रोनेकी आवाज ।

ठुमक–वि० ठसक भरी हुई; (चाल) जिसमें चलते समय थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटका जाय । **–ठुमक**–अ० शीघ्रता और उमंगके साथ थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए (छोटे बच्चोंका चलना); उछल-कूदके साथ (चलना) ।

ठुमकना–अ० क्रि० नाचते समय तालके अनुसार रह-रह कर पैर पटकना; थोड़ी-थोड़ी दूरपर पैर पटकते हुए चलना ।

ठुमका–वि० छोटे कदका, नाटा ।

ठुमकारना†–स० क्रि० पतंगकी डोरीको झटका देना ।

ठुमकी–वि० स्त्री० छोटे कदकी, नाटी । स्त्री० पतंगकी डोरीको उँगलीसे खींचकर दिया जानेवाला झटका; छोटी खरी पूरी; ठिठक ।

ठुमरी–स्त्री० एक तरहका छोटा मधुर गाना जिसे गाते समय प्रायः कई रागोंका मिश्रण कर दिया जाता है ।

ठुरियाना–अ० क्रि० सर्दीसे ठिठुर जाना; † ठुर्री हो जाना ।

ठुर्री–स्त्री० वह दाना जो भूननेपर खिला न हो ।

ठुसना–अ० क्रि० तंग जगहमें भर जाना, दबाकर भरा जाना ।

ठुसवाना–स० क्रि० तंग जगहमें कसकर भरवाना, घुसवाना ।

ठुसाना–स० क्रि० दे० 'ठुसवाना' ।

ठूँग–स्त्री० चंचुप्रहार; मुड़ी हुई उँगलीसे ठोकर मारनेकी क्रिया ।

ठूँठ, ठूँठा–पु० दे० 'ठुंठ' ।

ठूँठी–स्त्री० ज्वार, बाजरे, अरहर आदिके डंठलका नीचेका भाग जो खेत काटते समय पृथ्वीमें गड़ा छूट जाता है, खूँटी ।

ठूँसना–स० क्रि० दे० 'ठूसना' ।

ठूँसा–पु० ठेंगा; घूसा ।

ठूसना–स० क्रि० दबा-दबाकर भरना, कसकर रखना; जोरसे घुसाना; (ला०) बहुत अधिक खाना ।

ठेंगना†–वि० दे० 'ठिंगना' ।

ठेंगा–पु० अँगूठा; डंडा, लट्ठ । मु० –दिखाना–साफ इनकार करना; निराश करना । –बजना–लाठी चलाना । –(गे)से –बलासे ।

ठेंगुर†–पु० दौड़ने और उछल-कूद मचानेवाले चौपायोंके गलेमें बाँधी जानेवाली लकड़ी ।

ठेंघा–पु० थूनी, चाँड़ ।

ठेंठा–पु० दे० 'ठेंठी' ।

ठेंठी–स्त्री० कानका मैल; कानका छेद बंद करनेके लिए लगी रुई आदि; काग, डाट ।

ठेंपी†–स्त्री० बोतल आदिका मुँह वंद करनेकी लकड़ी आदि, काग, डाट ।

ठेक–पु० टेक, चाँड़; सहारा; पेंदा; पच्चड़ ।

ठेकना–स० क्रि० सहारा लेना, टेकना ।

ठेका–पु० अड्डा; टेक; ठोकर; तबलेका बायाँ; तबला वजानेका एक प्रकार; दे० 'ठीका' ।

ठेकाई†–स्त्री० कपड़ेके किनारेकी छपाई ।

ठेकाना*–पु० स्थान; ठहरनेकी जगह; निवास-स्थान ।

ठेकी–स्त्री० दे० 'टेक' ।

ठेकुआ†–पु० दे० 'ठोकवा' ।

ठेकेदार–पु० दे० 'ठीकेदार' ।

ठेगना*–स० क्रि० रोकना, मना करना; दे० 'टेकना' ।

ठेगनी†–स्त्री० टेकनेकी लकड़ी; सहारा ।

ठेघना*–स० क्रि० ठहराना; रोकना । अ० क्रि० ठहरना; रुकना– 'गगन साम भा धुआँ जो टेघा'–प० ।

ठेघनी†–स्त्री० दे० 'ठेगनी' ।

ठेघा*–पु० थूनी, स्तंभ ।

ठेठ–वि० एकदम, निरा; असाहित्यिक, साधारण बोलचालकी, जिसमें दूसरी (भाषा)का मेल न हो; शुद्ध; निर्विकार । स्त्री० सीधी-सादी बोली । –से–शुरूसे ।

ठेपी–स्त्री० बोतल, बरतन आदिका मुँह वंद करनेका काग आदि ।

ठेलना–स० क्रि० ढकेलकर आगे बढ़ाना या खसकाना; * उसकाना ।

ठेलमठेल–अ० कसमसके साथ । स्त्री० धक्कमधक्का ।

ठेला–पु० ठेलकर चलायी जानेवाली गाड़ी; धक्का, भीड़ । –ठेल, –ठेली–स्त्री० धक्कमधक्का ।

ठेवका†–पु० दे० 'ठीका' ।

ठेवकी†–स्त्री० अटकाव ।

ठेस–स्त्री० हलकी चोट; चलते समय पत्थर आदिसे पैरमें लगी चोट ।

ठेसना†–स० क्रि० दे० 'ठूसना' ।

ठेहरी–स्त्री० किवाड़की चूलके नीचे लगायी जानेवाली लकड़ी ।

ठेहुना†–पु० घुटना ।

ठैन*–स्त्री० स्थान, जगह ।

ठैयाँ*–स्त्री० दे० 'ठैन' ।

ठैल पैल–स्त्री० धक्कमधक्का, रेलपेल ।

ठोंक–स्त्री० ठोंकनेका भाव या क्रिया; आघात ।

ठोंकना–स० क्रि० भारी वस्तुसे आघात करना; प्रहार द्वारा भीतर घुसाना; मारना; पीटना; ताड़न करना; (मुकदमा) दायर करना; अधिकारपूर्वक लगाना. जड़ना (जुर्माना–); प्यार या तावसे थपथपाना; मजबूतीसे जड़ना; 'खट-खट' शब्द उत्पन्न करते हुए आघात करना; बेड़ी आदिमें जकड़ना । मु० (किसीकी) पीठ ठोंकना–अच्छा कार्य करनेपर तारीफ करते हुए बढ़ावा देना । ठोंक-ठोंककर लड़ना–डटकर या ललकारकर लड़ना । ठोंकना-बजाना–अच्छी तरह परख लेना ।

ठोंग–स्त्री० चोंच; चोंचकी मार; मुड़ी हुई उँगलीसे ठोकर मारना ।

ठोंगना–स० क्रि० चोंच मारना; मुड़ी हुई उँगलीसे ठोकर मारना ।

ठोंगा–पु० थैली जैसा कागजका पात्र जिसमें दुकानदार गाहकोंको सामान देते हैं ।

ठो†–अ० पूरबी हिंदीमें संख्यावाचक शब्दोंके साथ लगनेवाला एक शब्द (तीन ठो—तीन) ।

ठोकना–स० क्रि० दे० 'ठोंकना' ।

ठोकर–स्त्री० चलते समय कंकड़, पत्थर आदिसे टकरानेसे पैरमें लगी चोट; ऐसी वस्तु जिससे चोट लगनेकी संभावना हो; पैरसे किया गया आघात; धक्का; जूतेका अगला हिस्सा । मु० –उठाना–घाटा सहना; तकलीफ उठाना । –खाते फिरना–उद्योग-विशेषमें असफल होते रहना; मारा-मारा फिरना । –खाना–असावधानीका कुपरिणाम भोगना । –(रों)पर पड़ा रहना–अपमान सहकर रहना ।

ठोकवा†–पु० मीठा डालकर बनायी हुई मोटी पूरी ।

ठोट–वि० तत्त्वहीन; मूर्ख ।

ठोठ†–वि० ठूँठा; निराला ।

ठोठरा*–वि० पोपला, खाली ।

ठोड़ी, टोढ़ी–स्त्री० दे० 'ठुड्डी' ।

ठोप†–पु० पानीकी बूँद ।

ठोर–पु० पूरी जैसा चीनीमें एक पगा हुआ पकवान; स्त्री० * चोंच– 'तेइ ओहि मच्छ ठोर भरि लेहीं'–प० ।

ठोस–वि० जो पोला न हो, जो भीतर खाली न हो, ठस । पु० कुढ़न; डाह, ईर्ष्या ।

ठोसा†–पु० कुढानेके लिए की गयी या कही गयी बात; दे० 'ठेंगा' । मु० –दिखाना–साफ इनकार करना । –(से)से–बलासे, कुछ परवाह नहीं ।

ठोहना*–स० क्रि० स्थान ढूंढ़ना, खोजना ।

ठौका–पु० वह छोटा गड्ढा जहाँ सिंचाईके लिए दौरी आदिसे पानी गिराते हैं । वि० † ठीक, उचित (छत्तीस०) ।

ठौनि*–स्त्री० दे० 'ठवन' ।

ठौर–पु० स्थान, जगह; अवसर, मौका; उपयुक्त स्थान । मु०–ठिकाना–रहनेका स्थान । –कुठौर–अच्छी-बुरी जगह; बुरी जगह । –न आना–पास न आना । –रखना–मार डालना । –रहना–पड़ रहना; मर जाना ।

ड

ड–देवनागरी वर्णमालामें टवर्गका तीसरा वर्ण । उच्चारण-स्थान मूर्द्धा ।

डंक–पु० बिच्छू, मधुमक्खी, भिड़ आदिका जहरीला काँटा जिसे वे दूसरे प्राणियोंके शरीरमें चुभा देते हैं, दंश; डंक द्वारा किया गया भेदन; चुभनेवाली द्वेषपूर्ण बात या उक्ति; कलमकी जीभ, * डंका । –दार–वि० डंकवाला ।

डंकना*–अ० क्रि० भारी शब्द करना; तोपका गरजना ।

डँकारना†–अ० क्रि० दे० 'डकारना' ।

डंका–पु० नगाड़ा, धौंसा । मु० –बजना–अधिकार होना; चलती होना । (लड़ाईका)–बजना–युद्ध आरंभ होना । –बजाना–घोषित करना, जोर-जोरसे कहकर सबको सुनाना । –(के)की चोट कहना–निडर होकर सबके मुँहपर कहना, घोषित करना ।

डंकिनी–स्त्री० दे० 'डाकिनी' ।

डंकी†–स्त्री० एक कसरत । वि० डंकवाला ।

डंकीला†–वि० डंकवाला; डंक मारनेवाला।

डंकुर–पु० एक पुराना वाजा।

डंकोरी†–स्त्री० भिड़, हड्डा।

डंगर–पु० चौपाया, पशु (गाय, भैंस आदि)। वि० दुवला-पतला; (ला०) जड़, मूर्ख।

डँगरा*–पु० खरबूजा (बुंदेल०)।

डँगरी–स्त्री० वड़ी ककड़ी; डाइन।

डँगवारा–पु० किसानोंकी बैल आदिकी आपसकी सहायता।

डँटैया*–पु० डाँटनेवाला; धमकी देनेवाला।

डंठल–पु० गेहूँ, जौ, ज्वार आदिका तना जिसपर वाल लगती है, जड़ और वालके बीचका भाग।

डंठी†–स्त्री० दे० 'डंठल'।

डंड–पु० वाज़ू, बाँह; एक कसरत जो हाथ-पैरके पंजोंके सहारे पेटके वल की जाती है; दंड, सजा; जुरमाना; घाटा; समयका एक परिमाण घड़ी, (२४ मिनट)। **–पेल**–पु० अधिक डंड करनेवाला, पहलवान। मु० **–पेलना**–खूव खाना-पीना और मौज उड़ाना।

डंडक*–पु० दे० 'दंडक'।

डंडना*–स० क्रि० दंड देना।

डंडवत–पु०, स्त्री० दे० 'दंडवत्'।

डँड़वारा–पु०, **डँड़वारी**–स्त्री० रोक या घेरेके लिए बनी हुई कम ऊँची दीवार; चहारदीवारी।

डँड़वी*–वि० कर देनेवाला।

डंडा–पु० बाँस आदिका लंवा टुकड़ा, लाठी, सोंटा; लकड़ीकी सीढीमें पैर रखकर चढनेके लिए लगा लकड़ी या बाँसका गोल या चपटा-सा लंबोतरा टुकड़ा; सोपान; पर्व; चहारदीवारी। **–डोली**–स्त्री० लड़कोंका एक खेल। **–वेड़ी**–स्त्री० वह वेड़ी जिसमें छड़ लगे हों। मु० **–खाना**–डंडेसे पिटना। **–बजाते फिरना**–मारा-मारा फिरना।

डँडा*–पु० बाहु–'गोरे डँडा पहुँचानि बिलोकत'–घन०।

डंडाकरन*–पु० दंडकारण्य।

डंडाल†–पु० डंका. नगाड़ा।

डँड़िया*–स्त्री० ऐसी साड़ी जिसपर पड़ी धारियोंके रूपमें गोटे टँके हों; गेहूँके पौधेकी वह सींक जिसमें बाल लगी हो। पु० महसूल उगाहनेवाला।

डँड़ियाना–स० क्रि० दो कपड़ोंको लंबाईकी ओरसे मिलाकर सीना।

डंडी–स्त्री० छोटी, सीधी और पतली लकड़ी; छाते आदिमें लगी हाथमें पकड़नेकी लकड़ी जिसपर कमानी चढायी जाती है; तराज़ूकी लकड़ी जिसके दोनों ओर रस्सियोंसे पलड़े बँधे जाते हैं; तनेका ऊपरी भाग जिसपर फूल या फल स्थित रहते हैं, नाल; † शिश्न। **–मार**–वि० जो कम सौदा तौले। पु० वनिया। मु० **–मारना**–कम सौदा तौलना।

डँड़ोर–स्त्री० सीधी रेखा।

डंडूल*–स्त्री० आँधी–'करसेती माला जपै हिरदै बहै डंडूल'–साखी।

डँड़ोरना*–स० क्रि० उलट-पुलटकर ढूँढ़ना; हिलोरकर ढूँढ़ना।

डंडौत–पु०, स्त्री० दे० 'दंडवत्'।

डंफना–अ० क्रि० जोरसे चिल्लाना या रोना।

डंवर–पु० (सं०) आडंबर; चहल-पहल; समूह, राशि; सादृश्य; गर्व; आयोजन; भारी शब्द; सौंदर्य; विस्तार; एक प्रकारका बड़ा चँदोवा। वि० प्रसिद्ध।

डंबेल–पु० (अं०) लट्टू जैसे गोल सिरोंवाला लोहे या लकड़ीका उपकरण जिसे पंजेसे पकड़कर कसरत करते हैं; इसे हाथमें लेकर की जानेवाली कसरत।

डँवरुआ*–पु० गठिया, एक वातव्याधि जिसमें शरीरकी गाँठोंमें दर्द होता है।

डँवरू–पु० दे० 'डमरू'।

डँवाडोल–वि० अस्थिर, डगमगाता हुआ; बेचैन।

डंस–पु० दे० 'डाँस'।

डँसना–स० क्रि० दे० 'डसना'।

ड–पु० (सं०) शब्द; एक तरहका नगाड़ा; बडवाग्नि; भय; शिव।

डऊ–वि० बड़े डीलका; अधिक वयवाला; महा मूर्ख।

डक*–पु० खेलनेका स्थान; (अं० 'डॉक') सूती या सन आदिका बना कपड़ा जिससे छोटे पाल या अन्य पहनावे (विशेषकर नाविकोंके) बनते हैं; एक मोटा कपड़ा; समुद्र या नदीमें बना पत्थरका घाट जहाँ माल लादने और उतारनेके लिए जहाज ठहरते हैं; जहाजकी ऊपरी छत; अदालतका कठघरा जहाँ अभियुक्त खड़े किये जाते हैं।

डकइत–पु० दे० 'डकैत'।

डकरना–अ० क्रि० डकार लेना; खाकर तृप्त होना–'डकरी चमुंडा गोलकुंडाकी लड़ाईमें'–कालिदास त्रिवेदी; † दे० 'डकारना'।

डकराना–अ० क्रि० साँड़, वैल या भैंसेका जोरसे बोलना।

डकवाहा†–पु० डाक ढोनेवाला, डाकिया।

डकार–स्त्री० आवाजके साथ मुँहसे निकली हुई हवा, उद्ध्र्ववायु, उद्गार; दहाड़। मु० **–न लेना**–चुप्पी साध लेना।

डकारना–अ० क्रि० डकार लेना; खाकर तृप्त होना; किसीका माल पचा जाना; दहाड़ना।

डकैत–पु० डाकू, लुटेरा।

डकैती–स्त्री० डाका डालनेका काम, लूट, डाकाजनी।

डकोटा–पु० (अं०) एक तरहका वायुयान।

डकौत, डकौतिया†–पु० सामुद्रिक ज्योतिष आदिकी जानकारीका स्वाँग रचनेवाला; यह कार्य करनेवाली एक जाति।

डक्कारी–स्त्री० (सं०) चांडालवीणा।

डग–पु० चलनेमें दोनों पाँवोंके बीचका अंतर, फाल, कदम। मु० **–देना**–कदम रखना। **–भरना**–कदम वढ़ाना। **–मारना**–लंबे-लंबे डग डालना।

डगडगाना–अ० क्रि० अस्थिर होना, काँपना; इधर-उधर घूमते फिरना; डगमग होना।

डगडोलना*–अ० क्रि० दे० 'डगमगाना'।

डगडौर–वि० डाँवाडोल, अस्थिर।

डगना*–अ० क्रि० हिलना; विचलित होना; अपने स्थानसे हटना, खसकना; लड़खड़ाना; चूकना।

डगमग–अ० हिलते-डुलते; लड़खड़ाहटके साथ। वि० जिसके पाँव लड़खड़ाते हों, अस्थिर, डाँवाडोल। पु० अस्थिरता, लड़खड़ाहट।

डगमगना*–अ० क्रि० दे० 'डगमगाना'।

डगमगाना–अ० क्रि० इधर-उधर हिलना या झुकना; विचलित होना, डाँवाडोल होना; लड़खड़ाना। † स० क्रि० हिलाना-डुलाना; विचलित करना।

डगर–स्त्री० मार्ग, राह, रास्ता। मु० **–बताना**–उपाय वतलाना।

डगरना*–अ० क्रि० चलना, मंद गतिसे चलना; लुढ़कना; (ला०) काम आदिका किसी प्रकार चालू रहना।

डगरा*–पु० मार्ग, रास्ता; † बाँस आदिका बना एक छिछला वरतन।

डगा*–पु० चोब, डुग्गी आदि बजानेकी लकड़ी। मु० **–देना**–नगाड़ा वजाना।

डगाना–स० क्रि० विचलित करना; टसकाना; हिलाना।

डग्गर–पु० भेड़िये जैसा एक मांसाहारी जानवर जो रातमें शिकार करता है।

डच–पु० हालैंडका निवासी। वि० हालैंडका।

डटना–अ० क्रि० अड़ना, एक स्थानपर जमा रहना, स्थिर रहना; जगहसे न हटना; (कार्यमें) प्रवृत्त होना, लगना; * फबना। * स० क्रि० देखना।

डटाई–स्त्री० डटानेका काम; डटानेकी उजरत।

डटाना–स० क्रि० सामने रखना; अड़ाना, जमाना; सटाना, भिड़ाना।

डट्टा–पु० काग; नैचा; ठप्पा। (रिटॉर्ट स्टैंड) कोई चीज गरम करने, रखने आदिका पीछेकी ओर झुका या टेढ़ा-सा आला।

डड्ढार*–वि० लंबी डाढ़ीवाला; हिम्मती; मजबूत दिलवाला।

डढ़न–स्त्री० संताप; झुलसना।

डढ़ना*–अ० क्रि० जलना; झुलसना; संतप्त होना।

डढ़ार, डढ़ारा–वि० जिसके डाढ़ें हों; दाढ़ीवाला; साहसी।

डढ़ियल–वि० लंबी दाढ़ीवाला।

डढघोरा*–वि० दे० 'डड्ढार'।

डपट–स्त्री० झिड़क, फटकार, धौंस, डाँट; घोड़ेकी सरपट चाल।

डपटना–स० क्रि० झिड़कना; घुड़कना; डाँटना। अ० क्रि० सरपट दौड़ना।

डपोर–वि० वेबुनियाद; जोश या वकवाससे भरा हुआ (चौराहेकी –राजनीति)। **–शंख,–संख**–पु० डींग मारनेवाला, केवल वातें बनानेवाला; जड़ मनुष्य।

डफ–पु० कौव्वाली आदि गानेवालोंका एक वाजा; चमड़ा मढ़ा हुआ एक बड़ा वाजा जो लकड़ीसे बजाया जाता है।

डफला–पु० दे० 'डफ'।

डफली–स्त्री० छोटा डफ, खँजरी।

डफार*–स्त्री० गला फाड़कर रोने-चिल्लानेकी आवाज; चिग्घाड़।

डफारना*–अ० क्रि० चिग्घाड़ना; डाढ़ मारना; गला फाड़कर रोना 'खोलिन रोइ डफारा, वार जियावहु मोर'–चन्दा०।

डफालची–पु० दे० 'डफाली'।

डफाली–पु० डफ वजानेवाला; डफपर कौव्वाली, लावनी आदि गानेवाला मुसलमानोंका एक वर्ग।

डफोरना*–अ० क्रि० हाँकके साथ कहना, गरजना–'··तुलसी त्रिकुट चढ़ि कहत डफोरिकै'–कविता०।

डब–पु० धोती आदिका छोर जिसमें रुपये-पैसे लपेटकर रखे जाते हैं। जेव; थैला; चमड़ा जिसके कुप्पे आदि वनते हैं।

डबकना–अ० क्रि० टीसना, दर्द करना; आँखोंका अश्रुपूर्ण होना।

डबकौंहाँ*–वि० अश्रुपूर्ण, डवडवाया हुआ।

डबडबाना–अ० क्रि० आँखोंमें आँसू आ जाना, अश्रु-युक्त होना।

डबरा–पु० छिछला गड़हा, वह नीची जमीन जहाँ पानी लगता हो।

डबरी–स्त्री० छोटा गड़हा।

डबल–पु० एक तरहका ताँवेका सिक्का, पुराना पैसा। वि० (अं०) दूना; दोहरा। **–रोटी**–स्त्री० पावरोटी।

डबला†–पु० धातु या मिट्टीका चौड़े मुँहका छोटा वरतन।

डबिया–स्त्री० छोटा डिब्बा।

डबी*–स्त्री० दे० 'डिब्बी'।

डबुलिया†–स्त्री० छोटा डवला।

डबोना–स० क्रि० दे० 'डुवाना'।

डब्बा–पु० धातुका वना ढक्कनदार छोटा पात्रविशेष; रेलगाड़ीका वह कोठरीनुमा हिस्सा जो अलग किया जा सके।

डब्बू–पु० करछुल जैसा एक पात्र जो परसनेके काम आता है; छोटा डब्बा, ढक्कनदार छोटा बरतन।

डभकना–अ० क्रि० (नेत्रोंमें) आँसू भर आना; डूवना-उतराना; भर जानेसे वाहर गिरना; पेट भरकर खाना।

डभका†–पु० आधा भुना हुआ चना या मटर। वि० ऐसे ताजा निकला हुआ (पानी); तुरतका निकाला हुआ, ताजा।

डभकाना–स० क्रि० 'डभ'की आवाजके साथ डुवोना।

डभकोरि*–अ० अघाकर।

डभकौंहाँ–वि० दे० 'डवकौंहाँ'।

डभकौरी–स्त्री० उड़दकी पीठीकी वड़ी।

डम–पु० (सं०) 'लेट' और चांडालीसे उत्पन्न एक नीच संकर जाति, (ब्रह्मवै० पु०)।

डमर–पु० (सं०) दंगा; शोर मचाकर या डराकर शत्रुको भगाना; भयसे भाग खड़ा होना, भगदड़।

डमरु–पु० (सं०) चमड़ेसे मढ़ा जानेवाला एक छोटा वाजा जो वीचमें पतला होता है और हिलानेपर उसमें लगी घुंडियोंसे बजता है। **–मध्य**–पु० जल या स्थलके दो बड़े खंडोंको मिलानेवाला जल या स्थलका संकीर्ण भाग। **–यंत्र**–पु० अर्क खींचने तथा सिंगरफका पारा और कपूर उड़ानेका एक यंत्र।

डमरुआ–पु० दे० 'टँवरुआ'।

डमरुका–स्त्री० (सं०) हाथकी एक तांत्रिक मुद्रा।

डमरू–पु० दे० 'डमरु'। **–मध्य**–पु० दे० 'डमरु-मध्य'।

डयन–पु० (सं०) उड़नेकी क्रिया, उड़ान; पालकी।

डर–पु० भय, भीति, त्रास, खौफ; अंदेशा। **–पोक**–वि० कायर, वुजदिल, भीरु।

डरना–अ० क्रि० भय खाना, भीत होना, खौफ करना; सशंक होना।

डरपना*–अ० क्रि० दे० 'डरना'।

डरपाना*–स० क्रि० डराना, त्रस्त करना।

डरवाना–स० क्रि० दे० 'डराना'; † दे० 'डलवाना'।

डरा*–पु० डला, ढोका।

डराक–वि० डरपोक।

डराडरी*–स्त्री० भय, डर।

डराना–स० क्रि० भय दिखाना, भीत करना, सशंक करना। अ० क्रि० डरना, भयभीत होना।

डरापना*–वि० भयानक।

डरारी*–वि०, स्त्री० डरावनी–'पापिनि डरारी भारी'–घन०।

डरावना–वि० जिसे देखकर डर लगे, भयानक, भयोत्पादक।

डरावा–पु० फलवाले पेड़ोंमें वँधी लकड़ी जिससे डराकर चिड़ियोंको उड़ाते हैं; डरानेके लिए कही जानेवाली वात।

डराहुक†–वि० डरपोक।

डरिया*–स्त्री० दे० 'डाल'; डलिया; डली।

डरी*–स्त्री० डली, छोटा टुकड़ा।

डरीला*–वि० शाखायुक्त।

डरेला, डरैला*–वि० डरावना।

डल–पु० खंड, टुकड़ा; झील; कश्मीरकी एक झील।

डलक–पु० (सं०) वाँस आदिका वना पात्र, डला।

डलना–अ० क्रि० डाला जाना, छोड़ा जाना, लटकाया जाना (झूला–); घुसेड़ा जाना (सुईमें डोरा–); पड़ना।

डलवा–पु० एक तरहका बाँसका बना गोला, गहरा वरतन, दौरा।

डलवाना–स० क्रि० डालनेका काम कराना; डालने देना।

डला–पु० टुकड़ा, खंड, (नमक, मिसरी आदिका) ढेला; वाँस आदिका गोला, गहरा, वड़ा वरतन।

डलिया–स्त्री० वाँसका वना एक पात्र जो डलेसे छोटा होता है।

डली–स्त्री० छोटा टुकड़ा; सुपारी; दे० 'डलिया'।

डल्लक–पु० (सं०) दे० 'डलक', डला।

डवँरुआ, डवरुआ–पु० दे० 'डँवरुआ'।

डवँरू–पु० दे० 'डमरु'।

डवरा–पु० एक तरहका वड़ा कटोरा।

डवा*–पु० थैला (कटोरा ?)–'विषको डवा है कै उदेगको अँवा है' –घन०।

डवित्थ–पु० (सं०) काठका बना मृग।

डसन–स्त्री० डसनेकी क्रिया; डसनेका ढंग।

डसना–स० क्रि० साँप आदि जहरीले जंतुओंका दाँतसे काटना; डंक मारना।

डसवान–स० क्रि० दे० 'डसाना'।

डसाना–स० क्रि० सर्प आदि द्वारा दाँतसे कटवाना; * बिछाना।

डस्टर–पु० (अं०) झाड़न।

डहकना*–स० क्रि० वंचना करना; छलना; किसी वस्तुका लालच देकर उसे आत्मसात् करना। * अ० क्रि० धोखा खाना; फूट-फूटकर रोना; चिग्घाड़ना; फूलना; फैलना, छाना (चाँदनी)।

डहकाना*–स० क्रि० खोना, गँवाना, वरवाद करना–'...कतहूँ जाइ जन्म डहकावै'–सूर; वहुत सताना या रुलाना। अ० क्रि० ठगा जाना; धोखा खाना।

डहडहा*–वि० ललहाता हुआ; हरा-भरा; प्रफुल्ल; प्रसन्न; ताजा।

डहडहाट*–स्त्री० ताजगी; प्रसन्नता।

डहडहाना–अ० क्रि० हरा-भरा होना; प्रसन्न होना।

डहडहाव–पु० हरा-भरा होनेका भाव, प्रफुल्लता।

डहन*–पु० पर, पाँख। स्त्री० जलन, दाह, संताप।

डहना–पु० डैना। अ० क्रि० जलना, दग्ध होना; ईर्ष्या करना; वुरा मानना। स० क्रि० जलाना; (ला०) कष्ट देना।

डहर*–स्त्री० दे० 'डगर'।

डहरना*–अ० क्रि० चलना, घूमना।

डहराना*–स० क्रि० चलाना, घुमाना।

डहरिया, डहरी†–स्त्री० अनाज रखनेकी मिट्टीका बड़ा बरतन, कुठिला।

डहार*–वि० कष्ट देनेवाला, तंग करनेवाला।

डाँक–स्त्री० चाँदी या ताँबेका अत्यंत पतला पत्तर जो नगीनोंके तले बैठाने और टिकली आदि बनानेके काम आता है; † उछाल, उलटी। * पु० डंक; डंका।

डाँकना†–स० क्रि० फाँदना, लाँघना; पुकारना। अ० क्रि० वमन करना।

डांकृति–स्त्री० (सं०) घंटिका आदिके बजनेकी आवाज।

डाँग*–पु० डंका; पहाड़की चोटी; घना जंगल; † लाठी, डंडा; फलाँग।

डाँगर†–पु०, वि० दे० 'डंगर'।

डाँट–स्त्री० फटकार, झिड़क; दवाव, शासन। **मु०–में रखना**–शासन द्वारा वशमें रखना।

डाँटना–स० क्रि० झिड़कना, फटकारना, भय दिखानेके लिए जोरसे वोलना।

डाँठ†–पु० दे० 'डंठल'।

डाँड़–पु० डंडा; नाव खेनेका वाँस; विना चमड़ेका गदका; खेतकी सीमा, मेंड़; ऊँची जमीन; कमर; दंड या जुरमाना; खोयी या नष्ट हो गयी वस्तुका वदला।

डाँड़ना–स० क्रि० जुरमाना करना, अर्थदंड देना; हरजाना लेना।

डाँड़ा–पु० डंडा; खड्ग; नाव खेनेका डंडा; मेंड़; सीमा। **–मेंड़ा**–पु०,**–मेंड़ी**–स्त्री० दो सीमाओंके बीचकी मेंड़; (ला०) घनिष्ठता; एका; अनवन।

डाँड़ी–स्त्री० लंवी, पतली लकड़ी; सीधी रेखा; तराजूकी डंडी; एक झोली जैसी पहाड़ी सवारी जिसमें दो और दो डंडे लगे रहते हैं; तनेका वह भाग जिसपर फूल या फल स्थित रहता है, टहनी; रस्सियाँ या लकड़ियाँ जिनसे हिंडोलेकी पटरी लटकती रहतीहै; * रस्सी; पालकी। **मु० –मारना**–कम तौलना।

डाँवर†–पु० डामर, अलकतरा।

डाँवरा*–पु० दे० 'डावरा', वेटा, लकड़ा।

डाँवरी*–स्त्री० दे० 'डावरी'।

डाँवरू†–पु० वाघका वच्चा।

डाँवाँडोल–वि० चंचल, अस्थिर, हिलता हुआ।

डाँस–पु० एक तरहका वड़ा मच्छड़; कुकुरौंछी।

डा–स्त्री० (सं०) डाकिनी; वहँगीसे ढोयी जानेवाली टोकरी।

डाइन–स्त्री० चुड़ैल; जादू करनेवाली स्त्री; डरावनी आकृतिवाली या दुष्ट स्त्री।

डाई–स्त्री० (अं०) पासा; कागज, सिक्के, पदक आदिपर चिह्न-विशेष वनानेका ठप्पा; रंग। **–प्रेस**–पु० ठप्पा उठानेकी कल।

डाक*–पु० डंका। स्त्री० पत्रादि पहुँचाने या सवारीका ऐसा प्रवंध जिसमें स्थान-स्थानपर थके हुए मनुष्यों तथा घोड़ोंके वदलनेकी व्यवस्था हो; चिट्ठियों आदिके आने-जानेका सरकारी प्रवंध; कागज-पत्र जो डाकसे आये, डाक द्वारा आनेवाली वस्तु; पुकार; नीलामकी वोली. † वमन। **–ख़ाना**–पु० पोस्टआफिस। **–गाड़ी**–स्त्री० डाक ढोनेवाली तेज सवारी गाड़ी। **–घर**–पु० पोस्ट-आफिस। **–चौकी**–स्त्री० वह स्थान जहाँ सवारीके घोड़े आदि वदलें। **–पाल**–पु० डाकखानेका प्रधान अधिकारी, 'पोस्ट मास्टर'। **–बँगला**–पु० अफसरों या परदेशियोंके टिकनेका सरकारी मकान। **–महसूल**–पु० डाक द्वारा भेजी, मँगायी जानेवाली वस्तुपर लगनेवाला खर्च। **–मुंशी**–पु० पोस्ट-मास्टर। **–व्यय**–पु० दे० 'डाक-महसूल'। **–शुल्क**–पु० (पोस्टेज) चिट्ठी-पत्री आदिपर टिकटके रूपमें लगनेवाला महसूल। **मु०–बैठाना**–शीघ्र पहुँचनेके लिए स्थान-स्थानपर सवारी वदलनेकी व्यवस्था करना।

डॉक–पु० (अं०) दे० 'डक' (अं०)।

डाकना–स० क्रि० फाँदना, लाँघना। अ० क्रि० वमन करना।

डाका–पु० माल लूटनेके लिए लुटेरों द्वारा किया गया धावा, छापा। **–ज़नी**–स्त्री० डाका मारनेकी क्रिया, लूट, डकैती।

डाकिन–स्त्री० दे० 'डाकिनी'।

डाकिनी–स्त्री० (सं०) कालीकी एक अनुचरी; चुड़ैल।

डाकिया–पु० डाक ढोनेवाला।

डाकी–स्त्री० वमन। वि० पेटू।

डाकीय आदेश–पु० (पोस्टल आर्डर) डाकखाने द्वारा रुपया लेकर दिया जानेवाला एक तरहका धनादेश या चेक जो वैंकके चेककी ही तरह रेखांकित किया जा सकता है पर जो पृष्ठांकितकर अन्य किसीके नाम हस्तांतरित नहीं किया जा सकता।

डाकीय प्रमाणपत्र–पु० (पोस्टल सर्टीफिकेट) डाकखानेके कर्मचारी द्वारा दिया गया इस आशयका प्रमाण-पत्र कि अमुक पतेपर अन्यत्र भेजनेके लिए अमुक पत्र या पैकेट आदि उसको प्राप्त हुआ।

डाकू–पु० डाका डालनेवाला, लुटेरा।

डाक्टर–पु० (अं०) किसी विषयका आचार्य, पारंगत विद्वान्, किसी विषयका सर्वोच्च उपाधिप्राप्त व्यक्ति; एलोपैथी या होमियोपैथीके अनुसार चिकित्सा करनेवाला।

डाक्टरी–स्त्री० एलोपैथी, होमियोपैथी आदि पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र; डाक्टरका काम या पेशा। वि० डाक्टरका (–जाँच)।

डाक्तर–पु० दे० 'डाक्टर'।

डाख*–पु० पलाश, ढाक।

डागल*–पु० ऊबड़-खावड़ भूमि–'डागल ऊपरि दौड़णाँ सुख नींदड़ी न सोइ'–साखी।

डागा–पु० दे० 'डगा'।

डाट–स्त्री० टेक; मेहरावके वीचका पत्थर या ईंट; अटकाव; काग; चाँड; फटकार।

डाटना–स० क्रि० डाट या टेक लगाना; किसी वस्तुको दूसरी वस्तु भिड़ाकर आगे ढकेलना; जोरसे भिड़ाना; छेद आदि बंद करना; * ठूँस-ठूँसकर खाना; पहनना (कोट–) (व्यं०)। (आँखें) मिलाना।

डाढ़–स्त्री० चवानेके दाँत, चौभड़; सूअरका निकला हुआ दाँत; वट आदि वृक्षोंकी शाखासे निकलकर नीचे लटकनेवाली जटा, वरोह।

डाढ़ना*–स० क्रि० जलाना, दग्ध करना–'. . .अरु पाँय पखारिहौं भ्भुरि डाढ़ें'–कवितावली।

डाढ़ा*–पु० वनाग्नि, दावानल; ताप, जलन।

डाढा*–वि० गहरा, दृढ़।

डाढ़ी–स्त्री० ठुड्डी; ठुड्डीपरके बाल।

डाब–पु० दे० 'डाभ'।

डावक, डाभक–वि० ताजा (पानी)।

डाबर–पु० गड्ढा; गड़ही; मैला पानी; चिलमची। वि० गँदला, मिट्टी मिला।

डाबा*–पु० डव्वा, ढक्कनदार गहरा वरतन।

डाभ–पु० कुश जैसी एक घास; कुश; (आमकी) बौर–'जउलहि अंवहि डाभ न होई'–प०; हरा नारियल।

डामर–पु० (सं०) शिव द्वारा उपदिष्ट तंत्रविशेष; होहल्ला; दंगा; हलचल; अद्भुत दृश्य, चमत्कार; एक संकर जाति। (हि०) सालका गोंद, राल; राल बनानेवाली एक मधुमक्खी; अलकतरा; निर्वासनका दंड, देश-निकाला, डामल 'उनका सिर खोलूंगा, फिर चाहे डामर जाना पड़े'—अचल मेरा कोई। वि० भयंकर; अनुरूप; दंगा करनेवाला।

डामल–पु० आजीवन कारावासका दंड; देशनिर्वासन।

डायन–स्त्री० दे० 'डाइन'।

डायनमो-पु० (अं०) विजली पैदा करनेकी एक मशीन।

डायनासौर–पु० (डायनासौर) विशालकाय सरीसृप (रेप्टाइल) जो पृथ्वीपर लगभग ६ करोड़ वर्ष पूर्व पाया जाता था।

डायरी–स्त्री० (अं०) वह पुस्तिका जिसमें दैनिक कार्योंका विवरण हो, रोजनामचा, दैनंदिनी, दैनिकी।

डायोड–पु० (अं०) दो एलेक्ट्रोड युक्त वैकुअम नली (वाल्व) जो प्रत्यावर्ती धाराको दिष्ट धारामें परिवर्तित करने तथा रेडियो परिपथमें संसूचक (डिटेक्टर) के कार्यके लिए प्रयुक्त होती है।

डार*–स्त्री० डाल; फूल आदि रखनेकी डलिया; समूह, झुंड; पल्ले या किवाड़में लगनेवाली लंबाईकी लकड़ी।

डारना*–स० क्रि० दे० 'डालना'।

डार्विनवाद–पु० (डार्विनिज्म) जीवोंके विकासका डार्विनका

सिद्धान्त, जिसके अनुसार केवल 'योग्यतमकी ही उत्तरजीविता'।

डाल–स्त्री० शाखा; शीशेका फानूस लगानेके लिए दीवारमें लगी हुई खूँटी; विवाहकी एक रस्म जिसमें वरकी ओरसे वधूको कपड़े और गहने दिये जाते हैं; बाँसकी बनी वस्तु जिसमें ये चीजें रखी जाती हैं; डलिया; थाल या डलियामें सजाकर भेजी जानेवाली खाने पीनेकी चीजें।

डालना–स० क्रि० गिराना; ऊपरसे नीचे पहुँचाना; फेंकना; छोड़ना; मिलाना; घुसाना, प्रविष्ट कराना; अंकित करना; पहनाना; मत्थे मढ़ना; उपयोगमें लाना; रखना। **मु० डाल देना**–त्याग करना; छोड़ना; याद न रखना; दिलसे उतारना; फैलाना; पर्देके रूपमें कोई वस्तु लटकाना; ओढ़ना।

डालर–पु० एक अमेरिकन सिक्का जो लगभग पाँच रुपयेके बराबर होता है।

डालिम–पु० (सं०) दे० 'दाडिम'।

डाली–स्त्री० भेंटके रूपमें भेजे हुए फल, मिठाई आदि, नजर; पेड़की छोटी शाखा; दे० 'डलिया'। **मु०– भेजना,–लगाना**–मेवे आदि भेंट करना।

डावरा*–पु० पुत्र, बेटा; लड़का।

डावरी*–स्त्री० पुत्री, बेटी; लड़की।

डासन–पु० बिछावन, बिस्तर।

डासना–स० क्रि० बिछाना; (सर्पादिका) काटना।

डासनी–स्त्री० खाट; बिछावन।

डाह–स्त्री० ईर्ष्या, जलन।

डाहना–स० क्रि० जलाना; संतप्त करना; तंग करना।

डाहुक–पु० (सं०) एक जलपक्षी; नीलकंठ; चातक।

डिंगर–पु० रोक न माननेवाली गाय आदिके गलेमें बाँधी जानेवाली लकड़ी; (सं०) धूर्त; नीच व्यक्ति; सेवक; मोटा आदमी; फेंकनेकी क्रिया; अपमान।

डिंगल–स्त्री० राजपूतानाके चारणों या भाटोंकी काव्यभाषा। वि० नीच, कमीना।

डिंड़स–पु०, **डिंड़सी**–स्त्री० एक तरकारीवाला फल।

डिंडिभ–पु० (सं०) जलसर्प, डोंड़हा।

डिंडिम–पु० (सं०) डुगडुगी, डुग्गी; कृष्णपाक फल। **–घोष**–पु० डुग्गी पिटवाना, डुगडुगी पिटवाकर घोषित करना।

डिंडिमी–स्त्री० डुगडुगी।

डिंडिर, डिंडीर–पु० (सं०) समुद्रफेन; झाग। **–मोदक**–पु० लहसुन।

डिंडिश–पु० (सं०) डिंड़सी।

डिंब–पु० (सं०) भय; कोलाहल; दंगा; भयकी ध्वनि; प्लीहा; फुफ्फुस; विप्लव; अंडा; गेंद; आरंभिक अवस्थाका भ्रूण; (ओव्हम) स्त्रीका वह कोशाणु जिसमें शुक्राणुके प्रवेश करने और गर्भाशयमें पहुँचनेपर गर्भाधान होता है; गर्भाशय। **–युद्ध**–पु० दे० 'डिंबाहव'।

डिंबाशय–पु० (ओव्हरी) स्त्रीके गर्भाशयकी वे दो ग्रंथियाँ जिनमें डिंब रहते और परिपक्व होते हैं।

डिंबाहव–पु० (सं०) मामूली लड़ाई, झड़प; वह युद्ध जिसमें राजाके न रहनेसे भयध्वनि होती हो।

डिंबिका–स्त्री० (सं०) कामुकी; बुलबुला; सोनापाठा।

डिंभ–पु० (सं०) छोटा बच्चा; शावक; मूर्ख; एक उदररोग; † दंभ; आडंबर, पाखंड। **–चक्र**–पु० शुभाशुभ-द्योतक एक तांत्रिक चक्र।

डिंभक–पु० (सं०) छोटा बच्चा; (लार्वा) कीट जैसे प्राणीकी अण्डेसे बाहर निकलनेपर प्रथम शिशु अवस्था।

डिंभिया–वि० दंभी, पाखंडी।

डिक्करी–स्त्री० (सं०) युवती।

डिक्शनरी–स्त्री० (अं०) शब्द-कोश।

डिगंबर*–पु० दे० 'दिगंबर'।

डिगना–अ० क्रि० हटना; हिलना; वचनभंग करना।

डिगरी–स्त्री० (अं०) अंश, कला; विश्वविद्यालयसे मिलनेवाली उपाधि; † वादीको संपत्ति आदिपर अधिकार दिलानेवाला फैसला, डिक्री। **–दार**–वि० वह जिसके पक्षमें अदालतका हक दिलानेवाला फैसला हुआ हो।

डिगलाना, डिगुलाना*–अ० क्रि० हिलना; डगमगाना। स० क्रि० डिगाना।

डिगाना–स० क्रि० हटाना; सरकाना; हिलाना।

डिग्गी–स्त्री० तालाब; बावली; हिम्मत।

डिज़ाइन–स्त्री० (अं०) बनावट, तर्ज।

डिठार–वि० दृष्टिवाला।

डिठिआरा, डिठियारा*–वि० दे० 'डिठार'।

डिठोहरी–स्त्री० एक फलका बीज जो बच्चोंको नजर लगनेसे बचानेके लिए पहनाते हैं।

डिठौना–पु० नजर लगनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला काजलका टीका।

डिडकार–स्त्री० (साँड़ आदिके) डकरने, जोरसे बोलनेकी आवाज, दहाड़–'अरनेने जोरकी डिडकार लगायी'–मृग०।

डिडकारी*–स्त्री० ढाड़ मारकर रोना।

डिडिका–स्त्री० (सं०) जवानीमें ही बाल पकनेका रोग।

डिढ़*–वि० दे० 'दृढ'।

डिढ़ाना*–स० क्रि० दृढ़ या मजबूत करना;. मनमें पक्का निश्चय करना। अ० क्रि० दृढ़, मजबूत होना।

डित्थ–पु० (सं०) काठका हाथी; योग्य और सुंदर व्यक्ति।

डिप्टी–पु० (अं० 'डिप्युटी') नायब। **–कलक्टर**–पु० कलेक्टरका नायब (अफसर)।

डिफेंस–पु० (अं०) रक्षा, बचाव; किसी देशकी रक्षाकी व्यवस्था; सफाई (पक्ष)। **–आव् इंडिया ऐक्ट**–पु० भारतरक्षा-कानून।

डिबिया–स्त्री० छोटा डिब्बा।

डिब्बा–पु० दे० 'डब्बा'।

डिब्बी -स्त्री० छोटा डब्बा।

डिभगना*–स० क्रि० छलना, प्रतारित करना।

डिम–पु० (सं०) चार अंकोंका एक रौद्र रस-प्रधान रूपक जिसमें माया, इंद्रजाल, लड़ाई तथा पिशाचलीला आदिका चित्रण रहता है। (इसमें शांत, शृंगार और हास्य रस वर्जित है।)

डिमडिमी–स्त्री० डिंडिम, डुगडुगी।

डिमरेज–पु० (अं०) जहाजको समयपर न बोझने या खाली न करनेका हरजाना; स्टेशनपर मालके अधिक समयतक पड़े रहनेका हरजाना जो छुड़ानेवालोंको देना पड़ता है।

डिमाई–स्त्री० (अं०) १८×२२ इंचकी कागजकी नाप।

डिलिवरी–स्त्री० (अं०) चिट्ठियों, पार्सलों आदिको उन्हें पानेके अधिकारी व्यक्तियों तक पहुँचा देनेका कार्य; बच्चेको जन्म देनेकी क्रिया, प्रसव; भाषण या वाचन; मालका छड़ाना या अदा करना ('चाँदीकी साप्ताहिक डिलिवरीसे भाव टूटे')।

डिल्ला–पु० एक छंद; बैलके कंधेपरका कूबड़।

डिस्ट्रिब्यूट(करना)–स० क्रि० (अं०) छपाई हो जानेके बाद टाइपोंको अलग-अलग उनके खानोंमें रखना।

डिस्ट्रिब्यूटर–पु० (अं०) डिस्ट्रिब्यूट करनेवाला।

डिस्पेंसरी–स्त्री० (अं०) खैराती दवाखाना; औषधालय।

डिहरी–स्त्री० अनाज रखनेका मिट्टीका बड़ा बरतन, कुठिला।

डींग–स्त्री० लंबी-चौड़ी आत्मप्रशंसा; अभिमान द्योतक कोरी गप; शेखी। **मु० –हाँकना**–लंबी-चौड़ी बातें कहना।

डीठ–स्त्री० दृष्टि, नजर; सूझ। **–बंध**–पु० ऐसा जादू जिससे सामनेकी वस्तु अन्य रूपमें देख पड़े, नजरबंदी। **मु०–चुराना, –छिपाना**–सामने न ताकना। **–बाँधना**–जादू द्वारा दृष्टिमें भ्रम उत्पन्न करना। **–मारना**–नजर डालना। **–रखना**–देखरेख करना। **–लगाना**–अच्छी वस्तुको इस प्रकार देखना कि उसपर बुरा प्रभाव पड़े, नजर लगाना।

डीठना*–स० क्रि० देखना। अ० क्रि० देख पड़ना।

डीठि*–स्त्री० दे० 'डीठ'। **–मूठि**–स्त्री० जादू, टोना।

डी० डी० टी०–पु० (अं०) रासायनिक यौगिक जो श्वेत चूर्ण होता है। यह कीटनाशक दवाकी तरह प्रयुक्त किया जाता है।

डीन–पु० (सं०) उड़ान; पक्षियोंकी एक प्रकारकी गति; इससे

उत्पन्न शब्द । **–डीनक**–पु० बीचमें रुक-रुककर उड़नेकी क्रिया ।

डीबी–स्त्री० शक्ति; कुंडलिनी ।

डीवुआ*–पु० पैसा ।

डीमडाम*–पु० आडंबर; आटोप; धूमधाम; गर्व, टसक ।

डील–पु० कद, शरीरकी उँचाई-चौड़ाई आदि; देह, शरीर; व्यक्ति । **–डौल**–पु० लंबाई-चौड़ाई आदि, शरीरका विस्तार ।

डी वेलरा–पु० (जन्म १८८२) (**ईमन**) आयरलैंडकी फियेनाफेन पार्टीका नेता; प्रधान मंत्री १९५१; परराष्ट्रमंत्री १९३२ से १९४८; राष्ट्रपति १९५९ ।

डीह–पु० बस्ती; गाँव; गाँवका वड़ा ऊँचा टीला जो पहली वस्तीके उजड़ जानेसे बना होता है; ग्रामदेवता । **–दारी**–स्त्री० जमींदारी वेचनेवाले जमींदारका एक तरहका हक ।

डुँग–पु० राशि, ढेर; ढूह, टीला ।

डुँगवा*–पु० दे० 'डुँग' ।

डुंड*–पु० दे० 'टूँठ' ।

डुंडु–पु० दे० 'डिंडिभ' ।

डुंडुभ, डुंडुम–पु० (सं०) दे० 'डिंडिभ', पानीका साँप ।

डुंडुल–पु० (सं०) छोटा उल्लू ।

डुंडुक–पु० (सं०) दे० 'डाहुक' ।

डुंब–पु० (सं०) डोम ।

डुंबर–पु० (सं०) दे० 'डंबर' ।

डुक–पु० घूँसा ।

डुकरिया–स्त्री० डोकरी, वुढ़िया; स्त्री, माया ।

डुकिया–स्त्री० दे० 'डोकिया', काठका वरतन ।

डुकियाना–स० क्रि० घूँसे जमाना ।

डुगडुगाना–स० क्रि० डुग्गी आदिको लकड़ीसे वजाना ।

डुगडुगी–स्त्री० दे० 'डुग्गी' । **मु० –पीटना**–मुनादी करना ।

डुग्गी–स्त्री० चमड़ेसे मढ़ा, चौड़े मुँहका एक छोटा वाजा ।

डुपटना–स० क्रि० दोहरा करना; चुनियाना; तह लगाना ।

डुपट्टा†–पु० दे० 'दुपट्टा' ।

डुबकनी–स्त्री० (सबमेरीन) दे० 'जलाभ्यंतरवाहिनी नौका', पनडुब्बी ।

डुबकी–स्त्री० पानीमें डूबनेकी क्रिया, गोता; एक तरहकी विना तली हुई वड़ी ।

डुबवाना–स० क्रि० डुबानेका काम कराना ।

डुबाना–स० क्रि० पानी या अन्य तरल पदार्थमें सतहसे नीचे पहुँचाना, गोता देना, वोरना; कलंकित करना, (कुल आदिपर) धब्बा लगाना; किसीकी प्रतिष्ठा नष्ट करना; वरवाद करना ।

डुबाव–पु० (किसीके) डूबनेभरकी गहराई ।

डुबोना–स० क्रि० दे० 'डुबाना' ।

डुब्बा–पु० पानीमें डुबकी लगानेवाला, पनडुब्बा ।

डुब्बी–स्त्री० गोता ।

डुभकौरी–स्त्री० दे० 'डभकौरी', पीठीकी सुखाई हुई बड़ी ।

डुलना*–अ० क्रि० दे० 'डोलना' ।

डुलाना–स० क्रि० हिलाना, चालित करना; झलना, दूर भगाना, हटाना; इधर-उधर घुमाना-फिराना ।

डुलि–स्त्री० (सं०) कछुई ।

डुलिका–स्त्री० (सं०) खंजनके आकारकी एक चिड़िया ।

डुली–स्त्री० (सं०) चिल्ली नामक साग ।

डूँगर–पु० ऊँची जमीन, टीला, ढूह; छोटा पर्वत । **–फल**–पु० देवदालीका फल ।

डूँगरी–स्त्री० छोटी पहाड़ी ।

डूँगा–पु० चम्मच; * दे० 'डूँगर' ।

डूँडा–वि० जिसका एक सींग टूट गया हो (वैल) । पु० एक सींग-वाला बैल ।

डूबना–अ० क्रि० पानी या अन्य तरल पदार्थकी सतहके नीचे चला जाना, मग्न होना; गोता खाना; लीन होना; अस्त होना; कलंकित होना; किसी काम लायक न होना; बिगड़ना; वरबाद होना; मारा जाना । **मु० डूबतेको तिनकेका सहारा होना**–अवलंबहीनको थोड़ा सहारा मिलना । **डूबना-उतराना**–चिंतामें लीन होना, किसी उलझनमें पड़ा रहना । **डूब मरना**–लज्जाके मारे मर जाना; लज्जाके मारे मुँह न दिखाना ।

डेँड़सी–स्त्री० पपीते जैसी एक तरकारी, डिंडिश, तिंदिश ।

डेक–पु० (अं०) लकड़ीके तख्तों या लकड़ीसे ढके लोहेकी वनी जहाजकी पाटन; † वकायन ।

डेक्रॉन–पु० (डेक्रॉन) रासायनिक विधिसे संश्लेषित एक प्रकारका रेशा जो बुनावटके काम आता है ।

डेग–पु० दे० 'देग़'; † डग, कदम । **–ची**–स्त्री० दे० 'देग़ची' ।

डेढ़–वि० एक और आधा । पु० डेढ़की संख्या, १॥ । **मु० –ईँटकी मस्जिद चुनना या बनाना,–चावलकी खिचड़ी अलग पकाना**–सबसे अलग राय कायम करना या काम करना ।

डेढ़ा–वि० डेढ़गुना । पु० डेढ़का पहाड़ा ।

डेढ़िया–पु० (अनाज) उधार देनेका वह प्रकार जिसमें फसलपर मूलका डचोढ़ा वसूल किया जाता है ।

डेढ़ी–स्त्री० वीजके देन-लेनकी एक रीति जिसमें फसल काटनेपर लेनेवालेको डेढ़ा लौटाना पड़ता है ।

डेपुटेशन–पु० (अं०) किसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए उच्च अधिकारीसे मिलनेवाला शिष्टमंडल, प्रतिनिधि-मंडल ।

डेबरी†–स्त्री० टीन या शीशे आदिकी डिब्बी जिससे दीपकका काम लेते हैं ।

डेरा–पु० टिकाव, पड़ाव; अल्पकालिक निवास; विस्तर, वरतन आदि ठहरनेकी सामग्री; ठहरनेके लिए फैलाया हुआ सामान; टिकनेकी जगह; खेमा, रावटी आदि जिसमें टिका जाय; रहनेकी जगह, घर, मकान । * वि० वायाँ । **–डंडा**–पु० डेरेका सामान । **–मु०–डालना**–सामानके साथ टिकना ।

डेराना*–अ० क्रि० डरना 'अभय होय जो तुम्हहि डेराई'–रामा० ।

डेरी–स्त्री० (अं०) वह स्थान जहाँ दूध देनेके लिए गायें-भैंसें रखी जाती हों और दही-मक्खन आदि तैयार किये जाते हों; दूध, मक्खन आदिकी दुकान । **–फार्म**–पु० कृषि-संबंधी विभाग जहाँ दूध आदिका कारवार होता हो ।

डेल†–स्त्री० रवीकी फसलके लिए जोतकर छोड़ी हुई भूमि । * पु० उल्लू; ढेला; निस्सार वस्तु; पिंजड़ा; डलिया ।

डेलटा–पु० (अं०) बहायी हुई मिट्टी, वालू आदिसे नदियोंके मुहानेपर बनी तिकोनी भूमि जो इधर-उधर बहनेवाली धाराओंसे घिरी होती है ।

डेला–पु० रोड़ा, ढेला; आँखका गोलक; ठेंगुर ।

डेली*–स्त्री० डलिया, झाँपा ।

डेवढ़–पु० क्रम, सिलसिला । * वि० डेढ़गुना ।

डेवढ़ना–स० क्रि० (कपड़ा इ०) मोड़ना, तह लगाना । अ० क्रि० रोटीका फूलना ।

डेवढ़ा–वि० डेढ़गुना । पु० एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे प्रत्येक अंककी डेढ़गुनी संख्या पढ़ी जाती है । **–दरजा**–पु० इंटर क्लास ।

डेवढ़ी–स्त्री० दे० 'डचोढ़ी' ।

डेस्क–पु० (अं०) लिखने-पढ़नेके काम आनेवाली ढालुआँ मेज ।

डेहरी†–स्त्री० अन्न रखनेका कच्ची मिट्टीका बना बड़ा वरतन; दे० 'देहली' ।

डेहल–पु० दे० 'देहली' ।

डैगना†–पु० ठेंगुर ।

डैन*–पु० दे० 'डैना' ।

डैना–पु० पंख, पर; नाव खेनेका डंडा ।

डैरूँ*–पु० डमरू ।

डैश–पु० (अं०) विरामसूचक आड़ी लकीर जो हाइफनसे कुछ बड़ी होती है ।

डोँगर–पु० ढूह, टीला, भीटा; पहाड़ी ।

डोँगा–पु० बड़ी नाव ।

डोँगी–स्त्री० छोटी नाव ।

डोँड़ा*–पु० कारतूस; फल; बोंडी; बड़ी इलायची ।

डोँड़ी–स्त्री० पोस्तेका फल; टोंटी; डोंगी; डौंड़ी, डुगडुगी ।

डोंब–पु० (सं०) दे० 'डोम' ।

डोई–स्त्री० काठकी डाँड़ीवाली एक तरहकी कलछी जिससे दूध

आदि चलाते हैं।

डोकरा–पु० बूढ़ा आदमी।

डोकरी–स्त्री० बूढ़ी स्त्री।

डोका–पु० काठका बरतन जो तेल आदि रखनेके काम आता है।

डोकिया, डोकी–स्त्री० छोटा डोका।

डोगरी–स्त्री० जम्मू आदि अंचलोंमें रहनेवाले डोगरा लोगोंकी उपभाषा।

डोड़हा।–पु० जलसर्प।

डोड़ी–स्त्री० जीवंती।

डोब, डोबा–पु० डुबानेकी क्रिया; गोता, डुबकी।

डोबा–स० क्रि० गोता देना, डुबाना।

डोम–पु० (सं०) एक जाति जो श्मशानमें मृतकोंके लिए आग देनेका काम करती है। **–काक,–काग**–पु० दे० 'डोमकौआ'। **–कौआ**–पु० (हिं०) बड़ा कौआ।

डोमड़ा–पु० दे० 'डोम'।

डोमनी, डोमिन–स्त्री० डोमकी या डोम जातिकी स्त्री; ढाढ़ीकी स्त्री।

डोमिनियन–पु० (अं०) औपनिवेशिक राज्य; उपनिवेश। **–स्टेट्स**–पु० औपनिवेशिक स्वराज्यका दरजा।

डोर–स्त्री० (सं०) धागा, तागा, सूत; (ला०) बंधन, लगाव। **मु० –पर लगाना**–रास्तेपर लाना।

डोरक–पु० (सं०) डोरा, सूत्र, धागा।

डोरा–पु० सूत, तागा; धारी; आँखकी पतली लाल नसें; वह वस्तु जिसके सहारे किसीका अनुसंधान किया जा सके, सूत्र, सुराग।

डोरिया–पु० धारीदार कपड़ा।

डोरियाना*–स० क्रि० घोड़ों आदिको रस्सी बाँधकर ले जाना।

डोरिहार।–पु० पटवा।

डोरी–स्त्री० रस्सी; (ला०) सूत्र; बंधन; फाँस; लगन।

डोरे*–अ० साथ-साथ।

डोल–पु० पानी भरनेका लोहेका गोल बरतन; * झूला, झूलनेका साधन; पालकी; झूला या विमान जिसपर सजाकर देवमूर्ति बाहर निकाली जाती है; हलचल। वि० डोलनेवाला, हिलनेवाला; चंचल। **–ची**–स्त्री० छोटा डोल; फल-फूल ढोनेका हाथमें लटकाने योग्य बाँसका गोला, गहरा बरतन।

डोलक–पु० (सं०) एक प्राचीन बाजा।

डोल-डाल।–पु० चलना-फिरना; पाखाने जाना।

डोलना–अ० क्रि० हिलना; गतिमान् होना; दोलित होना; इधर-उधर घूमना, चलना फिरना; अपनी जगहसे हटना; (मनका) अस्थिर होना, डिग जाना, विचलित होना।

डोला–पु० स्त्रियोंकी एक सवारी जिसे कहार ढोते हैं; एक तरहकी पालकी। **मु० –देना**–लड़की वरके घर ले जाकर ब्याह देना; किसी राजाको भेंटके रूपमें अपनी लड़की देना।

डोलाना–स० क्रि० हिलाना, चलायमान करना; झलना (पंखा, चँवर); दूर करना, हटाना।

डोली–स्त्री० एक तरहकी स्त्रियोंकी पालकी, शिविका।

डोसा–पु० पिसे हुए चावल या उड़दकी दालसे बननेवाला एक दक्षिण भारतीय पकवान।

डोही*–स्त्री० दे० 'डोई'।

डौंड़ी–स्त्री० डुग्गी, मुनादी।

डौंरू–पु० दे० 'डमरू'।

डौआ*–पु० काठकी बनी बड़ी करछी।

डौकी–स्त्री० पंडुकी; स्त्री, पत्नी (छत्तीस०)।

डौर*–पु० तागा, धागा।

डौल–पु० किसी वस्तु या व्यक्तिकी बाहरी आकृति या ढाँचा; बनावटका तर्ज; ढब; रूपरेखा, गठन; (ला०) स्वरूप; कार्य-साधनका उपाय; प्रबंध, युक्ति। **–डाल**–पु० उपाय; कोशिश। **–दार**–वि० सुडौल; सुंदर। **मु० –डालना**–रूपरेखा तैयार करना। **–पर लाना**–कतर-ब्योंत कर दुरुस्त करना; रास्तेपर लाना, अनुकूल बनाना।

डौलना।–स० क्रि० सुडौल बनाना, सुघड़ बनाना।

डौवा–पु० दे० 'डौआ'।

ड्यूटी–स्त्री० (अं०) कर्तव्य; कर्म; बँधा हुआ काम; चुंगी, शुल्क।

ड्यूटरॉन–पु० (अं०) ड्यूटीरियम (भारी हाइड्रोजन) परमाणुका नाभिक जिसमें एक प्रोटान तथा एक न्यूट्रॉन मौजूद होते हैं।

ड्योढ़ा–वि०, पु० दे० 'डेढ़ा'।

ड्योढ़ी–स्त्री० दहलीज; पौरी। **–दार**–पु० पौरिया, ड्योढ़ीपर रहनेवाला पहरेदार। **–बान**–पु० द्वारपाल।

ड्रा–पु० (अं०) पुरस्कारके लिए लाटरीके टिकटोंमेंसे कुछ टिकटोंका सार्वजनिक रूपसे निकाला या उठाया जाना; क्रिकेट आदिके खेलका हारजीतका फैसला हुए बिना समाप्त घोषित किया जाना।

ड्राइंग–स्त्री० (अं०) रेखाओं द्वारा चित्र बनानेकी कला। **–रूम**–पु० बैठका।

ड्राइवर–पु० (अं०) मोटरगाडी, इंजन आदि चलानेवाला।

ड्राम–पु० (अं०) तीन माशेका एक परिमाण जो पानी आदि नापनेके काम आता है।

ड्रामा–पु० (अं०) नाटक।

ड्रावर–पु० (अं०) कागज आदि रखनेका वह बक्स जैसा ढाँचा जो मेजमें लगा रहता है, दराज।

ड्रिल–स्त्री० (अं०) कवायद।

ड्रेन–स्त्री० (अं०) गंदे पानी, मल, मूत्र आदिके बहनेकी नाली। **–इंस्पेक्टर**–पु० नगरकी गंदगीके बहावकी व्यवस्थाका निरीक्षण करनेवाला अफसर।

ड्रेस–पु० (अं०) वेश-भूषा, पोशाक।

ढ

ढ–देवनागरी वर्णमालामें टवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारणस्थान मूर्द्धा।

ढँकन।–पु० दे० 'ढक्कन'।

ढँकना–पु०, स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'ढकना'।

ढंख*–पु० पलाश, ढाक।

ढंग–पु० रीति, शैली, तरीका; तर्ज; चलन; तरह, प्रकार; रूप, बनावट; उपाय; कुशलता; आचरण; पाखंड; लक्षण; स्थिति।

ढँगलाना–अ० क्रि० लुढ़कना, ढनमनाना, फिसलना। स० क्रि० लुढ़काना, धक्का देकर गिराना।

ढंगी–वि० धूर्त, चालाक, कुशल; जिसे काम निकालनेका ढंग हो।

ढँढरच।–पु० दे० 'ढंढस'।

ढंढस–पु० ढोंग, पाखंड; बहाना।

ढंढार–वि० बेडौल।

ढँढोर*–पु० आगकी ऊँची लपट।

ढँढोरची–पु० ढँढोरा पीटनेवाला; मुनादी करनेवाला।

ढँढोरना*–स० क्रि० ढूँढ़ना, एक-एक वस्तुपर ध्यान देते हुए खोजना।

ढँढोरा–पु० डुग्गी, मुनादी। **मु० –पीटना**–घोषित करना।

ढँढोरिया–पु० ढँढोरा पीटनेवाला।

ढँपना–पु०, स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'ढकना'।

ढ–पु० (सं०) बड़ा ढोल; कुत्ता; कुत्तेकी पूँछ; सर्प; अनुकरण-का शब्द।

ढई।–स्त्री० ढहनेकी क्रिया या स्थिति; धरना। **मु० –देना**–जबतक काम न हो जाय तबतक किसीके यहाँ डटा रहना, धरना देना।

ढकना–पु० ढक्कन। स० क्रि० छिपाना, आच्छादित करना। अ० क्रि० छिपना, आच्छादित होना।

ढकनियां*–स्त्री० ढाँकनेकी वस्तु, ढक्कन।

ढकनी।–स्त्री० ढाँकनेकी वस्तु; कसोरा।

ढका–पु० तीन सेरकी एक तौल, आढक; * धक्का, प्रहार; बड़ा ढोल।

ढकिल*–स्त्री० आक्रमण, चढ़ाई ।

ढकेलना–स० क्रि० ठेलकर गिराना; धक्का देकर आगे बढ़ाना या बाहर करना ।

ढकोसना–स० क्रि० अत्यधिक मात्रामें पीना; जल्दी-जल्दी पीना ।

ढकोसला–पु० झूठा दिखावा; स्वार्थसाधनके लिए किया हुआ आडंबर, पाखंड ।

ढक्क–पु० (सं०) बड़ा मंदिर; एक स्थानका नाम ।

ढक्कन–पु० ढकना, ढाँकनेकी वस्तु ।

ढक्का–स्त्री० (सं०) बड़ा ढोल; डंका; छिपाव; लोप; * धक्का ।

ढक्कारी–स्त्री० (सं०) तारा देवी ।

ढगण–पु० (सं०) तीन मात्राओंका एक मात्रिक गण ।

ढचर–पु० पहलेसे तैयार किया गया किसी वस्तुका ढाँचा; आयोजन; आडंबर; बखेड़ा, झंझट ।

ढटीँगड़, ढटीँगड़ा, ढटीँगर–पु० मोटा-ताजा आदमी ।

ढट्ठी–स्त्री० दाढ़ी बाँधनेकी पट्टी; काग ।

ढड्ढा–वि० अनावश्यक विस्तारवाला; जिसमें दिखावा अधिक हो । पु० बाँस आदिका बना ढाँचा जिसपर खड़े होकर राज ऊँची दीवार बनाते हैं; आडंबर, दिखावटी ठाटबाट ।

ढनमनाना–अ० क्रि० लुढ़कना; चक्कर खाकर गिरना ।

ढप, ढफ*–पु० दे० 'डफ' ।

ढपना–पु० ढक्कन । अ० क्रि० छिपा होना । स० क्रि० ढाँकना, छिपाना ।

ढपला†–पु० दे० 'डफला' ।

ढपली†–स्त्री० दे० 'डफ्ली' ।

ढब–पु० ढंग, तौर, तरीका; तरह; बनावट; आदत; युक्ति ।

ढबका*–पु० उपाय, युक्ति ।

ढबरा†–वि० गंदा, मटमैला ।

ढबरी–स्त्री० दे० 'ढिबरी' ।

ढबीला†–वि० ढबवाला, चालाक ।

ढबुआ†–पु० पैसा ।

ढबैला†–वि० गँदला, मिट्टी मिला हुआ ।

ढम-ढम–पु० ढोल आदिकी ध्वनि ।

ढमकाना†–स० क्रि० बजाना ।

ढमलाना†–अ० क्रि० लुढ़कना । स० क्रि० लुढ़काना ।

ढयना–अ० क्रि० ढहना, मकान आदिका गिरना ।

ढरकना*–अ० क्रि० नीचेकी ओर जाना; ढालकी ओर बहना; जल आदिका पात्रमेंसे गिरना; ढलना ।

ढरका†–पु० आँखोंसे बराबर पानी बहनेका रोग; सिरेपर कलमकी तरह कटा हुआ बाँसका चोंगा जिससे चौपायोंको दवा आदि पिलाते हैं; चौपायोंको ढरकेसे दवा पिलानेकी क्रिया ।

ढरकाना*–स० क्रि० जल आदिको पात्रसे गिराना ।

ढरकी–स्त्री० जुलाहोंका एक औजार जिससे वे बानेका सूत फेंकते हैं, भरनी; † छोटा ढरका ।

ढरकीला†–वि० ढरकने या लुढ़कनेवाला ।

ढरकौंहाँ*–वि० ढरक जानेवाला, अनुकूल–'ढरकौंहैं देखि बिबस बकि परी मौन'–घन० ।

ढरना*–अ० क्रि० दे० 'ढलना' ।

ढरनि*–स्त्री० गिरनेका भाव या क्रिया, झुकाव; किसी ओर ढलना; हिलनेकी क्रिया; दीन दशा देखकर किसीकी ओर झुकनेकी क्रिया ।

ढरहरना*–अ० क्रि० ढलना; खिंचना, प्रसन्न होकर किसी ओर झुकना ।

ढरहरा†–वि० ढालुवाँ । * अनुकूल, द्रवीभूत–'कहा कहौं कृपाकी ढरनि ढरहरे हौं'–घन० ।

ढरहरी†–वि० स्त्री० ढालुईं । स्त्री० पकौड़ी ।

ढराना†–स० क्रि० दे० 'ढलाना' । अ० क्रि० आँसू बहाना ।

ढरारा–वि० ढलनेवाला; द्रवित होनेवाला; सहजमें अनुरक्त होनेवाला; ढालू ।

ढरैया†–पु० ढालनेवाला ।

ढर्रा–पु० मार्ग, रास्ता; शैली; आदत; उपाय ।

ढलकना–अ० क्रि० दे० 'ढलना' ।

ढलका–पु० आँखोंसे पानी गिरनेका रोग ।

ढलकाना-स० क्रि० (पानी आदि) लुढ़काना ।

ढलकी–स्त्री० दे० 'ढरकी' ।

ढलनशीलता–स्त्री० (प्लैस्टिसिटी) ढलनशील होनेका गुण, गलाकर ढाले जानेकी शक्ति या गुण, नम्यता, सुघटयता ।

ढलना–अ० क्रि० ढरकना; लुढ़कना; बीतना; नीचेकी ओर जाना; अस्ताचलकी ओर जाना; साँचेमें ढाला जाना; समाप्ति या अंतकी ओर जाना; चँवर आदिका विशेष ढंगसे इधर-उधर हिलाया जाना; द्रवित होना, अनुरक्त होना; उड़ेला जाना ।

ढलमल–वि० शिथिल; ढुलमुल, अस्थिर ।

ढलवाँ–वि० ढाला हुआ, ढालवाँ ।

ढलवाना–स० क्रि० ढालनेका काम कराना ।

ढलवाहि*–स्त्री० हँसी ठट्ठा ।

ढलाई–स्त्री० ढालनेकी क्रिया या उजरत ।

ढलाना–स० क्रि० दे० 'ढलवाना' ।

ढलुवाँ†–वि० दे० 'ढलवाँ' ।

ढलैत–पु० ढाल धारण करनेवाला व्यक्ति, सैनिक ।

ढबरी*–स्त्री० ढलने या झुकनेका भाव; लगन, धुन ।

ढसक–स्त्री० सूखी खाँसी ।

ढहना–अ० क्रि० मकान आदिका गिरना, ध्वस्त होना ।

ढहरना*–अ० क्रि० लुढ़कना, गिर पड़ना ।

ढहराना†–स० क्रि० लुढ़काना; गिराकर अलग करना ।

ढहरी*–स्त्री० देहली; मटकी ।

ढहवाना–स० क्रि० ढहानेका काम कराना ।

ढहाना–स० क्रि० गिराना, ध्वस्त करना ।

ढाँक–पु० पलाश; कुश्तीका एक पेंच ।

ढाँकना–स० क्रि० दे० 'ढकना' ।

ढाँख*–पु० पलाश ।

ढाँचा–पु० किसी वस्तुकी बनावटका आरंभिक या स्थूल रूप; पंजर; बनावट; तरह; तरीका ।

ढाँपना–स० क्रि० दे० 'ढकना' ।

ढाँस–स्त्री० सूखी खाँसी; खाँसनेकी आवाज ।

ढाँसना–अ० क्रि० सूखी खाँसी खाँसना ।

ढाँसी–स्त्री० सूखी खाँसी ।

ढाई–वि० दो और आधा । पु० ढाईकी संख्या, २॥ । **मु० –दिनकी बादशाहत**–चंद दिनोंकी मौज; दूल्हा बनना ।

ढाक–पु० पलाश; बड़ा ढोल । **–के तीन पात**–हमेशा तंगदस्त रहनेकी स्थिति ।

ढाका–पु० सूती कपड़ोंके लिए प्रसिद्ध बंगालका एक पुराना नगर; †खाँचा । **–पाटन**–पु० एक महीन कपड़ा जिसपर फूल कढ़े होते हैं ।

ढाटा, ढाठा–पु० दाढ़ी बाँधनेकी कपड़ेकी पट्टी ।

ढाठी†–स्त्री० 'ढट्ठी' ।

ढाड़, ढाढ़–स्त्री० चीत्कार, चीख; चिग्घाड़ । **मु० –मारना**–चीत्कार करते हुए रोना ।

ढाढ़ना*–स० क्रि० दे० 'डाढ़ना' ।

ढाढ़स–पु० कष्टमें भी बनी रहनेवाली हिम्मत, धीरज; दिलासा, सांत्वना । **मु० –बँधाना**–सांत्वना, दिलासा देना ।

ढाढ़िन–स्त्री० ढाढ़ी जातिकी स्त्री ।

ढाढ़ी–पु० घूम-घूमकर जन्मोत्सवके गीत गानेवाली एक जाति; मुसलमान गवैयोंकी एक जाति ।

ढाढ़ौन–पु० जलसिरिस नामका पेड़ ।

ढाना–स० क्रि० गिराना; मकान आदिको गिराना, ध्वस्त करना ।

ढापना–स० क्रि० दे० 'ढकना' ।

ढाबर*–वि० गँदला, गंदा, मटमैला ।

ढाबा–पु० मुर्गियों आदिको बंद करनेका टोकरा या खाँचा; जाल; ओलती; परछत्ती; रोटीकी दुकान ।

ढामक–पु० नगाड़ा, ढोल; डंके, ढोल आदिका शब्द ।

ढामरा–स्त्री० (सं०) हंसकी मादा, हंसी ।

ढार*–पु० ढालुईं जमीन; उतार; ढाँचा; मार्ग । स्त्री० कानका एक गहना; फलक ।

ढारना*–स० क्रि० दे० 'ढालना' ।

ढारस–पु० दे० 'ढाढ़स'।

ढाल–स्त्री० आगेकी ओर क्रमशः नीची होती गयी जमीन; उतार; ढंग, प्रकार; (सं०) तलवार, भाले आदिके आघातको रोकनेका लोहे या गैंड़ेके चमड़ेका बना कछुएकी पीठ जैसा एक साधन।

ढालना–स० क्रि० पानी आदिको गिराना, उड़ेलना; शराब पीना; पिघली हुई धातु आदिको साँचे द्वारा विशेष रूप देना; ठेलना; हिलाना।

ढालवाँ–वि० जो आगेकी ओर क्रमशः नीचा होता गया हो, ढालू।

ढालिया–पु० बरतन ढालनेवाला; गहने बनानेवाला; ढाली।

ढाली(लिन्)–पु० (सं०) ढाल धारण करनेवाला, सैनिक।

ढालुआँ–वि० दे० 'ढालवाँ'।

ढालू–वि० दे० 'ढालवाँ'।

ढास*–पु० डाकू, लुटेरा।

ढासना–पु० टेक, आधारकी वस्तु, सहारा; तकिया।

ढाहना*–स० क्रि० 'ढाना'।

ढिँढोरना*–स० क्रि० दे० 'ढँढोरना'।

ढिँढोरा–पु० मुनादी, डुग्गी; डुग्गी बजाकर की गयी घोषणा।

ढिग–अ० पास, समीप, नजदीक। * स्त्री० तट; (कपड़ेका) किनारा।

ढिठाई–स्त्री० धृष्टता, बेअदबी; दुःसाहस।

ढिपनी–स्त्री० पत्ते, फूल आदिका गोल छिद्र जैसा भाग, जहाँसे वह टहनीसे जुड़ा रहता है; उभरी हुई घुंडी; चूचुक।

ढिपुनी–स्त्री० चूचुक, स्तनका अग्रभाग।

ढिबरी–स्त्री० दीपकके काम आनेवाली टीन, शीशे, मिट्टी आदिकी बनी डिबिया; बाल्टूके ऊपर कसा जानेवाला लोहेका छल्ला।

ढिमका, ढिमाका†–सर्व० अमुक, फलाँ।

ढिमरिया†–स्त्री० कहारिन, पानी लानेवाली।

ढिलढिल, ढिलढिला–वि० ढीला-ढाला; गाढ़ा नहीं।

ढिलाई–स्त्री० ढीलापन; सुस्ती, शिथिलता; छूट।

ढिलाना–स० क्रि० ढीला कराना; बंधनसे छुड़ाना; *ढीला करना; बंधनसे मुक्त करना।

ढिल्लड़–वि० ढिलाई करनेवाला; आलसी।

ढिल्ली*–स्त्री० दिल्ली नामकी प्राचीन नगरी। –वै–पु० दिल्लीपति।

ढिल्लेस*–पु० दिल्लीश्वर, दिल्लीपति।

ढिवरना*–अ० क्रि० फिसल पड़ना; प्रवृत्त होना; झुकना।

ढीँगर*–पु० अधिक लंबा-चौड़ा व्यक्ति; जार।

ढीँढ़–पु० गर्भ; बड़ा पेट।

ढीँढ़स–पु० दे० 'टिंडिश'।

ढीँढ़ा–पु० दे० 'ढीँढ़'।

ढी†–स्त्री० (नदी, नालोंका) ऊँचा किनारा।

ढीच*–स्त्री० कूबड़; सफेद चील।

ढीट*–स्त्री० रेखा, लकीर। वि० धृष्ट।

ढीठ–वि० धृष्ट, बेअदब; संकोचरहित; चपल; निडर; साहसी। –ता*–स्त्री० ढिठाई।

ढीठा†–वि० दे० 'ढीठ'।

ढीठो, ढीठ्यो*–पु० ढिठाई।

ढीम*–पु० दे० 'ढीमा'।

ढीमर†–पु० धीवर; पानी भरनेवाली एक जाति, कहार।

ढीमा†–पु० मिट्टीका ढोका; ईंट, पत्थर आदिका टुकड़ा।

ढील–स्त्री० ढिलाई, सुस्ती; शिथिलता, तनावका अभाव; व्यर्थकी देर; फ़ुरसत, छुट्टी। † पु० बालोंमें पड़नेवाला एक छोटा कीड़ा, जूँ। † वि० दे० 'ढीला'। मु० –देना–स्वच्छंद होने देना; किसी वस्तुके तनावको कम करना; बंधनमुक्त करना।

ढीलना–स० क्रि० ढीला करना; बंधन-मुक्त करना; सरकने देना; पानी आदि देकर पतला करना।

ढीला–वि० जिसमें तनाव, खिंचाव न हो; जो कसा न हो; जो कसकर बैठा या बँधा न हो; जो पहननेमें अधिक लंबा-चौड़ा हो; ज्यादा गीला; काहिल, सुस्त; नामुस्तैद; शांत, नरम। (स्त्री० 'ढीली'।) —(ली)आँख–आधी खुली आँख; मदपूर्ण दृष्टि। मु० –पड़ना–सुस्त हो जाना, लापरवाही करना।

ढीह–पु० टीला, ढूह।

ढुंढ*–पु० उचक्का, ठग, लुटेरा।

ढुंढन–पु० (सं०) खोज, पता लगाना।

ढुंढपाणि, ढुंढपानि*–पु० दंडपाणि भैरव।

ढुँढ़वाना–स० क्रि० खोजवाना, पता लगवाना।

ढुंढा–स्त्री० (सं०) हिरण्यकशिपुकी बहिन जो प्रह्लादको गोदमें लेकर आगमें बैठनेपर जल मरी।

ढुंढि–पु० (सं०) काशीस्थ एक गणेश। –राज–पु० दे० 'ढुंढि'।

ढुंढित–वि० (सं०) जिसकी खोज की गयी हो, जो ढूँढ़ा गया हो।

ढुंढी–स्त्री० बाँह, भुजुक; नाभि।

ढुकना–अ० क्रि० घुसना; ताकमें बैठना; छिपे तौरसे कुछ सुनने या देखनेके लिए आड़में बैठना; टूट पड़ना।

ढुकास–स्त्री० तेज प्यास।

ढुक्का–पु० दे० 'ढूँका'।

ढुटौना*–पु० ढोटा, लड़का।

ढुनमुनिया†–स्त्री० कजली गानेका एक ढंग जिसमें स्त्रियाँ गोलाईमें घूमती और बीच-बीचमें झुकती हैं; लुढ़कनेकी क्रिया।

ढुरकना*–अ० क्रि० लुढ़कना; नीचे सरकना; फिसलना; झुकना।

ढुरना*–अ० क्रि० ढरना; ढरकना; फिसलना; नीचेकी ओर बहना; डोलना; प्रसन्न होकर किसीकी ओर झुकना, प्रवृत्त होना।

ढुरहुरी*–स्त्री० ऊपर-नीचे होते हुए गिरनेकी क्रिया; तंग रास्ता; नथमें लगी मोतियों आदिकी लड़।

ढुराना, ढुरावना–स० क्रि० ढरकाना; ढुलकाना; गिराना; डुलाना।

ढुरुकना*–अ० क्रि० दे० 'ढुलकना'।

ढुर्री–स्त्री० पगडंडी।

ढुलकना–अ० क्रि० नीचेकी ओर बहना, उलटते-पुलटते गिरना; किसीपर प्रसन्न होना।

ढुलकाना–स० क्रि० लुढ़काना।

ढुलढुल–वि० लुढ़कनेवाला।

ढुलना–अ० क्रि० दे० 'ढुरना'; ढोया जाना।

ढुलमुल–वि० दे० 'ढलमल', अस्थिर।

ढुलवाई–स्त्री० ढोनेका काम या उजरत।

ढुलवाना–स० क्रि० ढोनेका काम कराना।

ढुलाई–स्त्री० ढोनेकी क्रिया या उजरत।

ढुलाना–स० क्रि० दे० 'ढुराना'; दे० 'ढुलवाना'; * पोतना।

ढुलुआ–स्त्री० खजूरकी चीनी।

ढूँकना–अ० क्रि० दे० 'ढुकना'; झाँकना।

ढूँका–पु० कुछ देखने-सुनने या किसीको पकड़ने आदिके लिए चुपचाप आड़में छिपना।

ढूँढ़–स्त्री० खोज, तलाश।

ढूँढ़ना–स० क्रि० खोजना, तलाश करना।

ढूँढला–स्त्री० ढुंढा नामकी राक्षसी।

ढूँढ़ी†–स्त्री० भूने हुए आटेका लड्डू।

ढूकना*–अ० क्रि० दे० 'ढूँकना'।

ढूका–पु० दे० 'ढूँका'; † डंठल आदिके बोझका एक मान।

ढूढिया–पु० श्वेतांबर जैनोंका एक भेद।

ढूह–पु० ढेर, अटाला; टीला।

ढूहा†–पु० दे० 'ढूह'।

ढेंक–पु० (सं०) एक जलीय पक्षी जिसकी चोंच और गरदन लंबी होती है। † दे० 'झोंझ'।

ढेँकली–स्त्री० सिंचाईके लिए पानी निकालनेका एक यंत्र; धान कूटनेका एक यंत्र, ढेंकी; अर्क निकालनेका एक यंत्र; सिरके बल उलटनेकी क्रिया; सिलाईका एक प्रकार।

ढेँका–पु० बड़ी ढेंकी; कोल्हूमें जाटके सिरेसे लगाया जानेवाला बाँस।

ढेँकिका–स्त्री० (सं०) एक ताल।

ढेँकिया–स्त्री० कपड़ेकी एक काट जिसमें लंबाई घट जाती और चौड़ाई बढ़ जाती है।

ढेंकी–स्त्री० (सं०) नृत्यका एक प्रकार।

ढेँकी–स्त्री० धान कूटनेका एक यंत्र।

ढेंकर†–स्त्री० दे० 'ढेंकली'।

ढेंकुली–स्त्री० दे० 'ढेंकली'।

ढेंटी–स्त्री० धवका पेड़।

ढेंढ़*–पु० फली; एक जाति; मूर्ख आदमी; कपास आदिका डोंड़ा।

ढेंढ़र–पु० आँखका एक रोग, दे० 'टेंटर'।

ढेंढ़वा†–पु० लंगूर।

ढेंढ़ा–पु० दे० 'ढेंढ़'।

ढेंढ़ी–स्त्री० कपास, सेमर, पोस्ते इत्यादिका डोंड़ा; † छीमी; कानका एक गहना।

ढेंप–स्त्री० फल या पत्तेके मुँहपरका वह पतला भाग जिसके बल वह पेड़की टहनीसे लटकता रहता है, ढिपनी।

ढेंपनी, ढेंपी–स्त्री० दे० 'ढेंप'।

ढेउआ†–पु० पैसा; (ला०) धन।

ढेकला–पु० दे० 'ढेंकली'।

ढेढ़स–पु० दे० 'डेंड़सी'।

ढेपनी†–स्त्री० दे० 'ढेंप'।

ढेबरी–स्त्री० दे० 'ढिबरी'।

ढेबुआ†–पु० दे० 'ढेबुक'।

ढेबुक*–पु० ताँबेका एक सिक्का, पैसा।

ढेर–पु० राशि, अटाला, टाल, पुंज। † वि० बहुत, अधिक। **मु० –करना**–मार डालना। **–हो जाना**–मर जाना।

ढेरा†–पु० सुतली आदि बटनेका लकड़ीका एक औजार; एक वृक्ष, निकोचक।

ढेरी–स्त्री० दे० 'ढेर'।

ढेल*–पु० दे० 'ढेला'।

ढेलवाँस–पु० ढेला फेंकनेकी रस्सी जिसमें उसे रखनेके लिए फंदा बना होता है, गोफना।

ढेला–पु० मिट्टी, पत्थर आदिका टुकड़ा; एक वृक्ष। **–चौथ**–स्त्री० भादों सुदी चौथ जब चंद्रमाको देखनेपर दोष निवारणार्थ लोग दूसरेके घरपर ढेला फेंकते हैं। **मु०–ढेंगलाना**–अ० क्रि० कार्यको बेमनसे करना, बेगारी टालना।

ढेलेबाज–पु० ढेला फेंककर मारनेवाला, ढेलेसे निशाना मारनेवाला।

ढेलेबाजी–स्त्री० ढेला फेंककर घायल करनेकी क्रिया।

ढेव्वुका–स्त्री० (सं०) एक पुराना सिक्का, पैसा।

ढैया–पु० ढाई सेरका बटखरा; एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी ढाईगुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढोआई†–स्त्री० दे० 'ढुलाई'।

ढोंक–स्त्री० ढेर; एक मछली।

ढोंका–पु० पत्थर आदिका बड़ा टुकड़ा जो गढ़ा न गया हो; बड़ा डला।

ढोंग–पु० आडंबर, पाखंड; छल। **–बाज**–वि० दे० 'ढोंगी'। **–बाजी**–स्त्री० पाखंड, आडंबर।

ढोंगी–वि० ढोंग करनेवाला, पाखंडी।

ढोंटा–पु० दे० 'ढोटा'।

ढोंढ़–पु० पोस्ते, कपास आदिका डोंड़ा, ढेंढ़ी।

ढोंढ़ी–स्त्री० नाभि; † दे० 'ढूंढ़ी'; कली; एक तरहका सरकंडा।

ढोक–स्त्री० दे० 'ढोंक'।

ढोका–पु० दे० 'ढोंका'।

ढोटा*–पु० पुत्र, बेटा; बालक।

ढोटी*–स्त्री० पुत्री, बेटी; बालिका।

ढोटोना*–पु० दे० 'ढोटा'।

ढोना–स० क्रि० बोझको एक स्थानसे दूसरेपर पहुँचाना; किसी वस्तुको ले चलना, उठाकर या लादकर ले जाना।

ढोर–पु० चौपाया, मवेशी; *छटा; अंगोंका मोहक संचालन, अदा।

ढोरना*–स० क्रि० दे० 'ढरकाना'; हिलाना; पीछे लगाना; झलना (पंखा)।

ढोरा–पु० दे० 'ढोर'।

ढोरी–स्त्री० ढरकनेकी क्रिया या भाव; रटन, धुन, लौ–'हरिदरसनकी ढोरी लागी'–सूर।

ढोल–पु० (सं०) हाथसे बजानेका एक बाजा जो दोनों ओर चमड़ेसे मढ़ा होता है; कानका भीतरका परदा, कर्ण-पटह। **–ढमक्का**–पु० (हिं०) चहल-पहल, धूम-धाम; बाजा-गाजा। **मु० –पीटना**–चारों ओर कहते फिरना।

ढोलक–स्त्री० छोटा ढोल।

ढोलकिया–पु० ढोल बजानेवाला। स्त्री० छोटा ढोल, ढोलकी।

ढोलकी–स्त्री० छोटा ढोल।

ढोलन–पु० दे० 'ढोलना'।

ढोलना–पु० ढोलकी शक्लका गलेमें पहननेका जंतर; पालना; † बड़ा बेलन। * स० क्रि० ढरकाना, गिराना।

ढोलनी–स्त्री० छोटा पालना।

ढोला–पु० फल आदिमें पड़नेवाला एक सफेद कीड़ा; मेहराबका लदाव; शरीर; पति; एक तरहका गीत; मूर्ख व्यक्ति; सीमासूचक चिह्न।

ढोलिनी*–स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री।

ढोलिया–पु० दे० 'ढोलकिया'।

ढोली–स्त्री० दो सौ पानोंकी गड्डी; हँसी, परिहास, दिल्लगी।

ढोव*–पु० मांगलिक अवसरपर राजा आदिको नजर की जानेवाली वस्तु, डाली, भेंट–'लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भाँति-भाँति भरि भार'–गीतावली।

ढोवा–पु० ढोये जानेकी क्रिया; लूट; दे० 'ढोव'।

ढोवाई†–स्त्री० दे० 'ढुलाई'।

ढोहना*–स० क्रि० ढूंढ़ना–'सूर सुबैद बेगि ढोहो किन, भये मरनेके जोग'–सूर; ढोना।

ढौंचा–पु० एक पहाड़ा जिसमें क्रमसे अंकोंकी साढ़े चारगुनी संख्या पढ़ी जाती है।

ढौंसना*–अ० क्रि० धूमधाम मचाना; हर्षध्वनि करना।

ढौकन–पु० (सं०) डाली, भेंट, उपहार; रिश्वत।

ढौकित–वि० (सं०) पास लाया हुआ।

ढौरी*–स्त्री० धुन, लगन; ढंग, ढब–'गौरी गाय ढौरी सों बुलावै गौरी गायको'–घन०।

ढौली*–स्त्री० दे० 'ढौरी'।

ण

ण–देवनागरी वर्णमालामें टवर्गका पाँचवाँ वर्ण। उच्चारण-स्थान मूर्द्धा।

ण–पु० (सं०) बिंदुदेव–बुद्धका एक नाम; भूषण; निर्णय; ज्ञान; शिव; अस्वीकृतिसूचक शब्द; भेंट; कुटिल व्यक्ति; जलीय भवन। वि० गुणहीन।

णगण–पु० (सं०) दो मात्राओंका एक गण।

त

त–देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका पहला वर्ण। उच्चारण-स्थान दंत।

तंक–पु० (सं०) भय; कष्टमय जीवन; पहननेका कपड़ा; प्रियके वियोगका दुःख; टाँकी, छेनी।

तंकन–पु० (सं०) कष्टमय जीवन बिताना।

तंग–पु० (फा०) जीन कसनेकी पेटी। वि० संकीर्ण, विस्तारमें कम; चुस्त, कसा हुआ; दिक; परेशान। **–दस्त**–वि० जिसके पास पैसेकी कमी हो, अर्थकष्टमें पड़ा हुआ। **–दस्ती**–स्त्री० पैसेकी कमी, अर्थकष्ट। **–हाल**–वि० तंगदस्त; विपद्ग्रस्त। **मु० –आना**–परेशान होना। **–करना**–आजिज करना; दुःख

पहुँचाना; हैरान करना।

तँगिया–स्त्री० तनी, बंद।

तंगी–स्त्री० तंग होना; संकीर्णता; चुस्ती; परेशानी; गरीबी।

तंज़ेब–स्त्री० दे० 'तनजेब'।

तंड–पु० (सं०) एक ऋषि; * नाच।

तंडक–पु० (सं०) बाजीगर; खंजन; फेन; सजावट; वह वाक्य जिसमें अधिक समास हों; पेड़का धड़।

तंडव*–पु० दे० 'तांडव'।

तंडा–स्त्री० (सं०) वध।

तंडि–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि।

तंडु–पु० (सं०) नंदी या नंदिकेश्वर।

तंडुरीण–पु० (सं०) चावलका धोवन; माँड़; कीट-पतंग; बर्बर।

तंडुल–पु० (सं०) धान्य; चावल; सरसोंकी एक तौल।

तंडुलांबु–पु० (सं०) चावलका धोवन; माँड़।

तंडुला–स्त्री० (सं०) बायविडंग; चौलाईका साग।

तंडुली–स्त्री० (सं०) यवतिक्ता नामकी लता; चौलाई; एक ककड़ी।

तंडुलीक–पु० (सं०) चौलाईका साग।

तंडुलीय, तंडुलीयक–पु० (सं०) वायविडंग; चौलाईका साग।

तंडुलीयिका–स्त्री० (सं०) बायबिडंग।

तंडुलु–पु० (सं०) बिडंग।

तंडुलेर, तंडुलेरक–पु० (सं०) दे० 'तंडुलीक'।

तंडुलोत्थ–पु० (सं०) माँड़; चावलका धोवन।

तंडुलोदक–पु० (सं०) चावलका धोवन; माँड़।

तंडुलौघ–पु० (सं०) चावलका ढेर; एक बाँस।

तंत*–पु० ताँत; तत्त्व; तारवाला बाजा; उपाय–'आवनको तंत तेरो भयो ना वसंत माँहि'–कलस; तंत्रशास्त्र; अभिलाषा; अधीनता। स्त्री० उतावली, जल्दबाजी। **–मंत** पु० दे० 'तंत्र-मंत्र'।

तंतरी*–पु० तारवाला बाजा बजानेवाला। स्त्री० तारवाला बाजा; बाजेका तार।

तंति–स्त्री० (सं०) लंबी रस्सी (जिसमें कई बछड़े बँधे हों); गौ; कतार; फैलाव। पु० जुलाहा। **–पाल**–पु० गोरक्षक; विराट् नगरमें अज्ञातवासके समय सहदेवका नाम।

तंतु–पु० (सं०) सूत; तागा; रेशा; ग्राह; संतान; परमेश्वर; मकड़ीका जाला। **–काष्ठ**–पु० ताना साफ करनेका जुलाहोंका एक औजार। **–कीट**–पु० रेशमका कीड़ा; मकड़ी। **–नाग**–पु० बड़ा घड़ियाल। **–नाभ**–पु० मकड़ी। **–निर्यास**–पु० ताड़का पेड़। **–पर्व(न्)**–पु० श्रावणकी पूर्णिमा जिस दिन रक्षाबंधनका पर्व होता है। **–भ**–पु० सरसों; बछड़ा। **–वर्द्धन**–वि० संततिकी वृद्धि करनेवाला। पु० विष्णु; शिव। **–वादक**–पु० तारवाला बाजा बजानेवाला। **–वाद्य**–पु० तारवाला बाजा। **–वाप,–वाय**–पु० जुलाहा; ताँती; मकड़ा। **–० दंड**–पु० करघा। **–विग्रहा**–स्त्री० केला। **–शाला**–स्त्री० ताँतघर, कपड़े बुननेकी जगह। **–संतत**–वि० बुना हुआ। **–सार**–पु० सुपारीका पेड़।

तंतुक–पु० (सं०) सरसों; रस्सी; एक सर्प।

तंतुकी–स्त्री० (सं०) नाड़ी।

तंतुण, तंतुन–पु० (सं०) एक जलजंतु, मगर।

तंतुमान्(मत्)–पु० (सं०) अग्नि।

तंतुर, तंतूल–पु० (सं०) मृणाल, कमलकी नाल।

तंत्र–पु० (सं०) तंतु; ताँत; कौटुंबिक नृत्य; सिद्धांत; ओषधि; प्रधान; जुलाहा; वस्त्र; वेदकी एक शाखा; हेतु; राष्ट्र; राज्य; सेना; प्रबंध; शासन-प्रबंध; शासनकी विशिष्ट प्रणाली; समूह; सुख; शपथ; धन; गृह; व्यवहार; सजावट; नियम; कुल; परिवारका भरण-पोषण; नीतिका एक अंग; करघा; अधीनता; विज्ञान-संबंधी सिद्धांत, रचना या नियम; शैली या विशिष्ट संरचनात्मक स्थिति (नवलेखनमें प्रयुक्त); ऐसी रचनाका एक अध्याय; शिव-शक्तिकी पूजा और अभिचार आदिका विधान करनेवाला शास्त्र; आगम; वीणा आदिका तार। **–काष्ठ**–पु० दे० 'तंतुकाष्ठ'। **–धारक**–पु० कर्मकांडमें वह व्यक्ति जो पद्धति-ग्रंथोंको लिये रहता है। **–मंत्र**–पु० जादू-टोना; उपाय-युक्ति। **–युक्ति**–स्त्री० अशुद्धियोंको दूर करते हुए अर्थको स्पष्ट करनेकी युक्ति (अधिकरण, योग, पदार्थ आदि)। **–वाद**–पु० भूतप्रेत, जादू-टोना आदिमें विश्वास। **–वाद्य**–पु० वीणा, सारंगी आदि तारवाले बाजे, तंतुवाद्य। **–वाप,–वाय**–पु० दे० 'तंतुवाप'। **–संस्था**–स्त्री० मंत्रिमंडल, शासकसभा। **–स्कंद**–पु० गणित ज्योतिष। **–होम**–पु० तंत्रशास्त्रके अनुसार किया जानेवाला होम।

तंत्रक–पु० (सं०) कोरा, नया कपड़ा।

तंत्रण–पु० (सं०) शासन-प्रबंध।

तंत्रता–स्त्री० (सं०) कोई ऐसा कार्य करना जिससे अनेक उद्देश्योंकी पूर्ति हो (जैसे तर्पण, पूजन आदिके निमित्त बार-बार स्नान न करके एक ही बार स्नान करना–धर्मशास्त्र); अधीनता।

तंत्रा–स्त्री० (सं०) दे० 'तंद्रा'।

तंत्रायी(यिन्)–पु० (सं०) सूर्य।

तंत्रि–स्त्री० (सं०) ताँत; वीणा; वीणाका तार; नस; पूँछ; विचित्र गुणोंवाली स्त्री। **–पाल**–पु० दे० 'तंतिपाल'। **–पालक**–पु० जयद्रथ।

तंत्रिका–स्त्री० (सं०) गुडुची; ताँत। स्त्री० (नर्व) शरीरके अन्दर पायी जानेवाली श्वेत, चमकदार डोरी जैसी संरचना, जो लगभग १।२०० इंचकी मोटाईके रेशोंकी लच्छी जैसी होती है।

तंत्री–स्त्री (सं०) वीणा आदिमें लगा तार; गुडुची; देहकी नस; एक नदी; रस्सी; नाडी; तारवाला बाजा; वीणा। **–भांड**–पु० एक तारवाला बाजा, वीणा। **–मुख**–पु० हाथकी एक मुद्रा।

तंत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) तारोंवाला; तंत्रका अनुसरण करनेवाला। पु० गवैया; सैनिक।

तंदरा*–स्त्री० दे० 'तंद्रा'।

तंदुरुस्त–वि० (फा०) स्वस्थ, जिसका स्वास्थ्य ठीक हो।

तंदुरुस्ती–स्त्री० स्वास्थ्य, आरोग्य।

तंदुल*–पु० दे० 'तंडुल'।

तंदुलीयक–पु० दे० 'तंडुलीयक'।

तंदूर–पु० एक तरहका चूल्हा जिसे गरम करके रोटियाँ पकाते हैं।

तंदूरी–पु० एक प्रकारका रेशम। वि० तंदूर-संबंधी; तंदूरमें पका हुआ।

तंदेही–स्त्री० दे० 'तनदिही', तल्लीनता, तत्परता।

तंद्र–वि० (सं०) क्लांत, शिथिल; आलसी।

तंद्रवाय–पु० (सं०) दे० 'तंतुवाप'।

तंद्रा–स्त्री० (सं०) ऊँघ; क्लांति; वैद्यकमें शरीरके भारी और इंद्रियोंके शिथिल होनेकी दशा।

तंद्रालु–वि० (सं०) तंद्रायुक्त, उनींदा।

तंद्रि–स्त्री० (सं०) तंद्रा।

तंद्रिक–पु० (सं०) एक प्रकारका ज्वर।

तंद्रिका–स्त्री० (सं०) तंद्रा।

तंद्रिल–वि० (सं०) तंद्रावाला, तंद्रालु; तंद्रासे संबद्ध।

तंद्री–स्त्री० (सं०) दे० 'तंद्रि'।

तंद्री(द्रिन)–वि० (सं०) क्लांत; काहिल।

तंपा–स्त्री० (सं०) गाय।

तंबा–पु० एक तरहका चौड़ी मोहरीका पायजामा। स्त्री० (सं०) गाय।

तंबाकू–पु० सुरतीसे बनायी हुई एक नशीली चीज जिसे चिलम आदिपर रखकर पीते हैं; जर्दा। **–फ़रोश**–पु० तंबाकू बेचनेवाला।

तंबिका–स्त्री० (सं०) गाय।

तँबिया–वि० तांबे का बना। पु० ताँबेका छोटा तसला।

तंबियाना–अ०क्रि० ताँबेके रंगका या तांबेके स्वादका हो जाना।

तंबीर–पु० (सं०) ज्योतिषका एक योग।

तंबीह–स्त्री० (फा०) चेतावनी, सजा।

तंबू–पु० शामियाना, खेमा।

तंबूर–पु० (फा०) एक तरहका ढोल। **–ची**–पु० तंबूर बजानेवाला।

तंबूरा–पु० सितार जैसा एक बाजा जिसे सुर कायम रखनेके लिए बजाते हैं, तानपूरा।

तंबूल*–पु० पान, तांबूल।

तंबोल–पु० तांबूल, पान।

तँबोलिन–स्त्री० पान बेचनेवाली स्त्री, बरइन।

तँबोली–पु० पान बेचनेवाला, बरई।

तंभ* पु० एक सात्विक अनुभाव; स्तंभ।

तंभन*–पु० दे० 'तंभ'; स्तंभन।

तंभावती–स्त्री० संपूर्ण जातिकी एक रागिनी।

तँवार, तँवारी–स्त्री० घुमटा, चक्कर; हरारत।

तँवारा*–पु० दे० 'तँवारी'।

त–पु० (सं०) चोर; अमृत; पूँछ (विशेषकर स्यारकी); गोद; म्लेच्छ; गर्भ; शठ; रत्न; योद्धा; बुद्धदेव; (भवसागर तरनेकी) नौका–पुण्य; एक गण (पिंगल)। * अ० तो।

तअज्जुब–पु० (अ०) आश्चर्य, अचंभा।

तअम्मुल–पु० (अ०) सोच-विचार; आगा-पीछा; देर, अटकाव; धैर्य।

तअल्लुक़–पु० (अ०) संबंध, लगाव।

तअल्लुक़ा–पु० (अ०) बड़ा इलाका। **–(क़े) दार**–पु० तअल्लुकेका मालिक। **–दारी**–स्त्री० तअल्लुकेदारका पद।

तअस्सुब–पु० (अ०) पक्षपात; धर्म-संबंधी पक्षपात; कट्टरपन।

तइसा*–वि० तैसा।

तईं–प्र० को, प्रति, से। अ० वास्ते।

तई–स्त्री० जलेबी आदि बनानेकी छिछली कड़ाही।

तउ*–अ० तब; त्यों।

तऊ*–अ० तो भी, तथापि।

तक–अ० सीमा या अवधि सूचित करनेवाला अव्यय, पर्यंत। * स्त्री० टक, निर्निमेष दृष्टि; तराजू। * पु० तक्र, मही। वि० (सं०) निंदित (वै०); सहनशील।

तक़दमा–पु० (अ०) अंदाजा, तखमीना; पेश करना; फैसला।

तक़दीर–स्त्री० (अ०) भाग्य, किस्मत। **–वर**–वि० भाग्यवान्। मु०–**आज़माना**–भाग्यके भरोसे कोई काम करना। **–ऊँची जगह लड़ना**–अमीर घरमें शादी होना। **–का खेल**–भाग्यके करिश्मे। **–का धनी**–भाग्यवान्। **–जागना**–भाग्यका उदय होना। **–फूटना**–किस्मत खराब होना।

तक़दीरी–वि० भाग्य-संबंधी।

तकना*–स० क्रि० देखना; ताकमें रहना; आश्रय लेना।

तकनीक–स्त्री० दे० 'टेकनीक'।

तकबीर–स्त्री० (अ०) अल्लाका नाम लेना या उसकी बड़ाई करना।

तकब्बुर–पु० (अ०) घमंड, गर्व।

तकमा†–पु० तमगा; मुद्धी।

तकमील–स्त्री० (अ०) पूरा होना; पूरण, पूर्णता।

तकरार–स्त्री० (अ०) बार-बार कहना; हुज्जत, विवाद, झगड़ा।

तकरारी–वि० तकरार करनेवाला।

तक़रीब–स्त्री० (अ०) समीप आना या आने देना; वजह; विवाहादि-संबंधी जलसा, उत्सव। **–में**–उपलक्ष्यमें।

तक़रीबन्–अ० (अ०) लगभग।

तक़रीर–स्त्री० (अ०) बोलना, बातचीत, भाषण।

तक़रीरी–वि० तकरीरके रूपमें होनेवाला; मौखिक; विवादग्रस्त।

तकला–पु० सूत कातने और लपेटनेके काम आनेवाली चर्खेसे लगी लोहेकी सलाई, टेकुआ।

तकली–स्त्री० छोटा तकला; बिना चर्खेके सूत कातने और लपेटनेका एक आला।

तकलीफ़–स्त्री० (अ०) दुःख, कष्ट, क्लेश।

तकल्लुफ़–पु० (अ०) तकलीफ उठाना; शिष्टाचार, बनावट।

तकवाना–स० क्रि० किसीको ताकनेमें प्रवृत्त करना।

तक़वीयत–स्त्री० (अ०) ताकत पहुँचाना; तसल्ली, आश्वासन, ढाढ़स।

तक़सीम–स्त्री० (अ०) बाँटना; बँटवारा; एक संख्यासे दूसरी संख्याको भाग देना (ग०)।

तक़सीर–स्त्री० (अ०) क़ुसूर, अपराध, गुनाह, दोष, भूल।

तकाई–स्त्री० ताकनेकी क्रिया।

तक़ाज़ा–पु० (अ०) तगादा, पावना माँगना; इच्छा; स्वाभाविक परिणाम या प्रेरणा; आवश्यकता; आदेश; अनुरोध; कोई काम करनेके लिए किसीसे बार-बार कहना।

तकान–स्त्री० दे० 'थकान'।

तकाना–स० क्रि० किसी ओर दृष्टि डलवाना, देखनेमें प्रवृत्त करना; दिखाना।

तक़ावी–स्त्री० (अ०) बीज, बैल आदि खरीदने या कष्ट निवारणके लिए किसानोंको सरकारकी ओरसे दिया जानेवाला ऋण।

तकिया–पु० (फा०) रुईसे भरी थैली जैसी चीज जो लेटते समय सिरके नीचे रख ली जाती है, उपधान, बालिश; भरोसा, सहारा–'...मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारियै'–कवितावली; आश्रय-स्थान; छज्जे आदिपर रोकके लिए लगायी जानेवाली पत्थरकी पटिया; फकीरोंके रहनेकी जगह। **–कलाम**–पु० सखुनतकिया। **–गाह**–स्त्री० फकीरके रहनेकी जगह। **–दार**–पु० तकियामें रहनेवाला फकीर, तकियानशीन।

तकिल–वि० (सं०) धूर्त; दुष्ट।

तकिला–स्त्री० (सं०) औषध; एक जड़ी।

तकुआ–पु० दे० 'तकला'; देखनेवाला।

तक्कोल–पु० (सं०) एक वृक्ष।

तक्र–पु० (सं०) मट्ठा जिसमें एक चौथाई भाग जलका हो, छाछ। **–कूर्चिका**–स्त्री० मट्ठेके योगसे फाड़ा हुआ दूध, छेना। **–पिंड**–पु० छेना। **–भिद्**–पु० कैथका फल, कपित्थ। **–मांस**–पु० मट्ठेके योगसे पका मांस। **–वामन**–पु० नागरंग। **–संधान**–पु० एक तरहकी काँजी। **–सार**–पु० नवनीत; मक्खन।

तक्राट–पु० (सं०) मथानी।

तक्रारिष्ट–पु० (सं०) तक्रसे बना अरिष्ट (वैद्यक)।

तक्राह्वा–स्त्री० (सं०) एक झाड़ी।

तक्वा(क्वन्)–पु० (सं०) चोर; शिकारी चिड़िया।

तक्ष–पु० (सं०) रामके भाई भरतका ज्येष्ठ पुत्र; एक नाग। वि० काटनेवाला (समासांतमें)। **–शिल**–पु० तक्षशिलाका निवासी। वि० तक्षशिला-संबंधी। **–शिला**–स्त्री० एक प्राचीन नगरी।

तक्षक–पु० (सं०) आठ नागोंमेंसे एक जिसने परीक्षित्को काटा था (दे० 'नाग'); विश्वकर्मा; सूत्रधार; एक जाति, बढ़ई; दस वायुओंमेंसे एक (दे० 'वायु'); एक वृक्ष; भागवतोक्त प्रसेनजित्का पुत्र। वि० लकड़ी आदि काटने, छीलनेवाला।

तक्षण–पु० (सं०) लकड़ी आदि छीलना या काटना; काटनेवाला।

तक्षणी–स्त्री० (सं०) लकड़ी तराशनेका औजार, बसूला; रंदा।

तक्षा(क्षन्)–पु० (सं०) बढ़ई; विश्वकर्मा। वि० दे० 'तक्षक'।

तखड़ी†, **तखरिया**†–स्त्री० तराजू।

तख़फ़ीफ़–स्त्री० (अ०) कमी, न्यूनता। **–(फ़े) लगान**–स्त्री० लगान कम करना।

तख़मीनन्–अ० (अ०) अंदाजन्, अनुमानतः।

तख़मीना–पु० (अ०) अंदाजा; आमद या खर्चका अंदाजा; अटकल।

तख़लिया–पु० (अ०) निर्जन स्थान; तनहाई; खाली करना।

तखल्लुस–पु० (अ०) कवि या लेखकका उपनाम।

तख़सीर–पु० (अ०) विजय।

तख़सीस–पु० (अ०) विशेषता, खसूसियत।

तख़्त–पु० (फा०) सिंहासन; लकड़ीकी बड़ी चौकी। **–गाह**–स्त्री० राजधानी। **–नशीन**–वि० सिंहासनारूढ़। **–पोश**–पु० तख्तपर बिछानेकी चादर। **–बंदी**–स्त्री० तख्तोंकी बनी हुई दीवार; ऐसी दीवार बनानेकी क्रिया। **–ताऊस**–पु० शाहजहाँका प्रसिद्ध सिंहासन जो मोरके आकारका था (इसे १७३९ में नादिरशाह लूटकर ले गया)। **–(ख़्ते) रवाँ**–पु० वह तख्त जिसपर बादशाहकी सवारी निकलती है; उड़नखटोला। **–सुलेमान**–पु० सुलेमानका तख्त जिसपर वह उड़ा करते थे। मु०–**का तख़्ता हो जाना**–बरबाद हो जाना।

तख़्ता–पु० (फा०) ऊँची चौकी; लकड़ीका लंबा और कम मोटा चौकोर टुकड़ा, पल्ला; कागजका विशेष नापका टुकड़ा, ताव; अरथी, टिकटी। **–ए-तालीम**–पु० वह तख्ता जिसपर खड़ियासे लिखकर विद्यार्थियोंको आवश्यक बातें समझायी जाती हैं।

–ए-मश्क–पु० अभ्यास करनेका तख्ता; अभ्यासका साधन। मु० **–उलट जाना**–वरवाद हो जाना, नष्ट-भ्रष्ट हो जाना, तवाह हो जाना। **–(ख़्ते)के तख़्ते स्याह करना**–वहुत लिखना।

तख्ती–स्त्री० लकड़ी, धातु आदिका छोटा, चौकोर टुकड़ा; छोटा तख्त; पटिया।

तगड़ा–वि० हट्टा-कट्टा. मोटा-ताजा; मजवूत।

तगण–पु० (सं०) तीन वर्णोंका एक मात्रिक गण।

तगदमा–पु० दे० 'तक़दमा'।

तगना–अ० क्रि० तागा जाना।

तगमा–पु० दे० 'तमग़ा'।

तगर–पु० (सं०) एक वृक्ष जो कोंकण, अफगानिस्तान आदिमें होता है और जिसकी जड़ गंधद्रव्यके रूपमें काम देती है; मदन-वृक्ष; एक औषध।

तगला–पु० तकला; जुलाहोंका एक औजार।

तगा*–पु० तागा।

तगाई–स्त्री० तागनेका काम या उजरत।

तगाड़–पु० जोड़ाईके लिए मसाला, गारा आदि तैयार करनेका हौजकी तरह वना हुआ घेरा; गारा आदि ढोनेका तसला; दाल, तरकारी आदि पकानेका पीतलका वड़ा वरतन।

तगादा–पु० दे० 'तक़ाज़ा'।

तगाना–स० क्रि० तागनेका काम कराना।

तगार–पु० दे० 'तगाड़'।

तगियाना–स० क्रि० दे० 'तागना'।

तगीर*–पु० स्थिति-परिवर्तन, तवदीली।

तगीरी–स्त्री० दे० 'तगीर'।

तचना*–अ० क्रि० अत्यंत तप्त होना, तपना; दुःखी होना।

तचा*–स्त्री० त्वचा, चमड़ा।

तचाना*–स० क्रि० संतप्त करना, तपाना।

तचित*–वि० तपा हुआ, संतप्त; दुःखी।

तच्छ*–पु० दे० 'तक्ष'।

तच्छक*–पु० दे० 'तक्षक'।

तच्छिन*–अ० तत्क्षण, उसी समय।

तज–पु० दारचीनीकी जातिका एक वृक्ष जिसकी छाल दवाके काम आती है (इसके पत्तेको 'तेजपत्ता' कहते हैं)।

तज़किरा–पु० (अ०) जिक्र, चर्चा; जीवन-चरित।

तजदीद–पु० (अ०) नया करना; (पट्टे आदि) वदलना।

तजन*–पु० त्याग; चावुक।

तजना–स० क्रि० छोड़ना, त्यागना।

तजरवा–पु० (अ०) अनुभव; किसी वस्तुके वारेमें ज्ञान प्राप्त करनेके लिए की गयी परीक्षा; आजमाइश। **–कार**–वि० अनुभवी।

तजरुवा–पु० दे० 'तजरवा' (समास भी)।

तजल्ली–स्त्री० (अ०) प्रकट होना; दिव्य ज्योतिका दर्शन; झाँकी।

तजवीज़–स्त्री० (अ०) सलाह, राय; फैसला, निर्णय; निर्देश; विचार। **–सानी**–स्त्री० किसी फैसलेका उसी अदालतमें पुर्नविचार।

तज्–'तत्'का समासगत रूप। **–जनित, –जन्य**–वि० उससे उत्पन्न। **–जातीय**–वि० उस जातिका।

तज्ञ–वि० जानकार; तत्त्वविद्।

तज्वी–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्री।

तटंक*–पु० कानका एक गहना, कर्णफूल।

तट–पु० (सं०) पहाड़की ढाल; क्षितिज; किनारा, कूल, तीर; नदीके किनारेकी भूमि; प्रदेश; क्षेत्र; शिव। अ० पास, समीप। **–कर**–पु० जलमार्ग द्वारा आयात या निर्यात वस्तुओंपर लगनेवाला कर। **–स्थ**–वि० जो समीप रहता हो, निकटस्थ; जो मतलव न रखता हो, उदासीन; जो गुटवंदीसे पृथक् हो। पु० उदासीन व्यक्ति। **–०लक्षण**–पु० वह लक्षण जिसमें लक्ष्यके अस्थायी और परिवर्तनशील गुणोंका निरूपण हो। **–स्थित**–वि० दे० 'तटस्थ'।

तटक–पु० (सं०) नदी आदिका किनारा।

तटका*–वि० ताजा, तुरंतका।

तटग–पु० (सं०) तडाग।

तटनी*–स्त्री० दे० 'तटिनी', नदी।

तटस्थ–दे० 'तट'के साथ।

तटस्थता–स्त्री० उदासीनता; नवलेखनमें प्रचलित वह स्थिति जिसमें साहित्यकार किसी मतवाद या दवावको स्वीकार न करे।

तटस्थीकरण–पु० (न्यूट्रेलिजेशन) किसी देश या स्थानको तटस्थ वना देने, घोषित कर देनेकी क्रिया; प्रतिकूल गुण, शक्ति आदि द्वारा किसीके गुण या शक्तिका फल अथवा प्रभाव वेकार कर देनेकी क्रिया, निराकरण।

तटाक–पु० (सं०) तडाग, ताल।

तटाकिनी–स्त्री० (सं०) वड़ा तालाव।

तटाघात–पु० (सं०) पशुओंकी सीगोंसे मिट्टी खोदकर उछालनेकी क्रीडा, खूंद।

तटिनी–स्त्री० (सं०) नदी। **–पति**–पु० समुद्र।

तटी–स्त्री० (सं०) तीर, किनारा; * नदी; समाधि 'जीव जतीनकी छूटी तटी'।

तटच–वि० (सं०) पर्वतकी ढालपर रहनेवाला। पु० शिव।

तड़–पु० जातिका उपविभाग, विरादरी; थप्पड़ मारने या कड़ी चीज तोड़नेकी आवाज। **–बंदी**–स्त्री० जातीयताकी दृष्टिसे गुट वनानेकी क्रिया; दलवंदी।

तड़क–स्त्री० तड़कनेकी क्रिया या भाव; तड़कनेका चिह्न; अचार, चटनी आदि, चाट; छाजनके नीचे दीवारसे वँड़ेरतक लगायी जानेवाली एक लकड़ी। **–भड़क**–पु० ठाट-वाट।

तड़कना–अ० क्रि० आँच पाकर 'तड़'की आवाजके साथ फटना या टूटना; कर्कश स्वरमें वोलना; झुँझलाना; उमंगके साथ जोरसे उछलना।

तड़का–पु० प्रभात, सवेरा; वघार; वह मसाला जिससे दाल या सव्जी छौंकी जाती है।

तड़काना–स० क्रि० 'तड़' शव्दके साथ तोड़ना; किसीको खिजाना।

तड़कीला†–वि० भड़कीला, चमकीला; तड़कनेवाला।

तड़क्का*–अ० शीघ्र, झटपट।

तडग–पु० (सं०) दे० 'तडाग'।

तड़तड़ाना–अ० क्रि० 'तड़-तड़' शव्द होना। स० क्रि० 'तड़-तड़' शव्द उत्पन्न करना।

तड़तड़ाहट–स्त्री० तड़तड़ानेकी क्रिया या भाव।

तड़प–स्त्री० तड़पनेकी क्रिया या भाव; वेचैनी; विजलीकी कड़क; विजलीकी चमक। **–दार**–वि० भड़कीला, चमकीला।

तड़पना–अ० क्रि० अत्यंत दुःखी होना, कलपना, छटपटाना, गरजना; कूदना-फाँदना।

तड़पवाना–स० क्रि० तड़पानेका काम कराना।

तड़पाना–स० क्रि० अत्यधिक कष्ट पहुँचाना, कलपाना, सताना।

तड़फड़ाना–अ० क्रि० वेचैन होना। स० क्रि० व्याकुल करना, कष्ट पहुँचाना।

तड़फना–अ० क्रि० दे० 'तड़पना'।

तडाक–पु० (सं०) दे० 'तडाग'।

तड़ाक–स्त्री० तड़ाकेका शव्द, कड़ी चीजके जोरसे टूटनेका शव्द। † अ० झटपट। **–पड़ाक,–फड़ाक**–अ० चटपट, फौरन। **–से**–'तड़ाक' शव्दके साथ।

तडाका–स्त्री० (सं०) आघात; कूल; कांति, चमक।

तड़ाका–पु० 'तड़'की आवाज। अ० चटपट।

तडाग–पु० (सं०) तालाव, सरोवर; हिरन फँसानेका फंदा।

तड़ागना*–अ० क्रि० डींग मारना–'अव ही कहा तड़ागिये वेड़ी पायन वीच'–साखी; उछल-कूद मचाना; कोशिश करना।

तडाघात–पु० (सं०) दे० 'तटाघात'।

तड़ातड़–अ० 'तड़-तड़'की ध्वनिके साथ। मु०**–जवाव देना**–निःसंकोच होकर, वेधड़क जवाव देना। **–पड़ना**–लगातार मार पड़ना।

तड़ाना–स० क्रि० ताड़नेका काम कराना।

तड़ावा–पु० दिखावटी तड़क-भड़क।

तडि–स्त्री० (सं०) आघात। वि० आघात करनेवाला।

तड़ित, तड़िता*–स्त्री० दे० 'तडित्'।

तडित्–स्त्री० (सं०) आकाशीय विद्युत। विद्युत् आवेशित वादल जव एक दूसरेके निकट आते हैं तो दोनोंके वीच वायुमें विद्युत्-विसर्जन होता है जिससे विद्युत् कौंध उत्पन्न होती है तथा तेज़ आवाज भी उत्पन्न होती है—यही तड़ित् है; विजली, विद्युत्; हिंसा। **–कुमार**–पु० जैनोंके एक देवता। **–पति**–पु० मेघ, वादल। **–प्रभा**–स्त्री० विजलीकी चमक; कार्त्तिकेयकी एक मातृका। **–रक्षक,–रोधक**–पु० मंदिरों, ऊँचे मकानों आदिपर लगाया जानेवाला एक उपकरण जो विजलीको गिरनेसे रोककर या उसकी दिशा वदलकर उन्हें नष्ट या क्षत होनेसे वचाता है।

तडित्वान्(वत्)–पु० (सं०) मेघ; मोथा। वि० विजलीवाला।

तडिद्गर्भ–पु० (सं०) मेघ, वादल।

तडिन्मय–वि० (सं०) विजलीकी कौंधवाला।

तड़िपाना*–अ० क्रि० दे० 'तड़पना'।

तडिल्–'तडित्'का समासगत रूप। **–लता**–स्त्री० विजलीकी वह कौंध जिसमें वहुत-सी लहरें हों। **–लेखा**–स्त्री० विजलीकी लीक।

तड़ी–स्त्री० चपत, थप्पड़; मारपीट; वंचना, छल, धोखा; धमकी; घाटा। मु०**–देना**–धोखा देना; वेवकूफ वनाना; हारकी ताली वजाना। **–वताना**–धोखा देना। **–में आना**–धोखा खाना।

तड़ीत*–स्त्री० दे० 'तडित्'।

तण*–पु० तृण, घास (वीसल०); अ० की ओर।

तत–पु० (सं०) तारवाला वाजा–जैसे वीणा, सारंगी आदि; वायु; एक वृत्त; संतान; * तत्त्व; सार वस्तु; तंतु। वि० विस्तारित; ढका हुआ; झुका हुआ; * तप्त; उतना। **–पत्री**–स्त्री० केला। **–वाउ***–पु० दे० 'तंतुवाय'। **–सार***–स्त्री० लोहा आदि तपानेकी जगह।

ततकार, ततकाल*–अ० दे० 'तत्काल'।

ततखन*–अ० दे० 'तत्क्षण'।

ततछन*–अ० दे० 'तत्क्षण'।

ततपर*–वि० दे० 'तत्पर'।

ततबीर*–स्त्री० दे० 'तदवीर'।

तताई*–स्त्री० गरमी–'वरनि न जाई छिति व्योमकी तताई'–सेनापति।

ततारना–स० क्रि० गरम जलसे धोना।

तति–स्त्री० (सं०) श्रेणी, पंक्ति, समूह; विस्तार।

ततुबाउ*–पु० दे० 'तंतुवाय'।

ततुरि–वि० (सं०) हिंसक; विजयी; तारनेवाला, पार करनेवाला। पु० अग्नि; इंद्र।

ततूरी†–स्त्री० पैरोंमें तप्त भूमिके स्पर्श या गरम धूल लग जानेके कारण होनेवाली तापकी अनुभूति–'मजदूर लू और ततूरीमें काम कर रहे थे'–मृग०। (संस्कृत 'ततुरि'—अग्नि।)

ततैया–स्त्री० वर्रें, भिड़, हड्डा; पतली तेज मिर्च। वि० तेज; चालाक।

ततोधिक–वि० (सं०) उससे अधिक।

तत्–पु० (सं०) ब्रह्म; वायु। सर्व० वह। **–काल**–अ० तत्क्षण, तुरत, उसी समय। **–०धी**–वि० प्रत्युत्पन्नमति। **–कालीन**–वि० उस या उसी समयका। **–क्षण**–अ० दे० 'तत्काल'। **–तत्**–वि० भिन्न-भिन्न। सर्व० वह-वह। **–तद्देशीय**–वि० उस-उस या भिन्न-भिन्न देशका। **–पदार्थ**–पु० जगत्का कारणभूत परमात्मा। **–पर**–वि० कार्य-विशेषमें लगा हुआ, तल्लीन, सन्नद्ध। **–परता**–स्त्री० तत्पर होनेकी क्रिया या भाव, मुस्तैदी; सन्नद्धता; तल्लीनता। **–परायण**–वि० जिसका मन किसी एकमें ही लगा हो। **–पश्चात्**–अ० उसके वाद, पीछे। **–पुरुष**–पु० परम पुरुष; एक समास (व्या०)। **–फल**–पु० कूट नामकी दवा; नील कमल; चौर नामका गंधद्रव्य। **–सदृश**–वि० उसके समान, उसके जैसा। **–सम**–वि० उसके समान। पु० किसी भाषाका वह शब्द जो अन्य भाषामें मूल रूपमें प्रयुक्त हो ('तद्भव'से भिन्न)।

तत्त*–पु० दे० 'तत्त्व'।

तत्ता*–वि० गरम, उष्ण।

तत्ताथेई–स्त्री० नाचके शब्द या बोल।

तत्तोथंबो–पु० वीचवचाव; दिलासा; वहकावा।

तत्त्व–पु० (सं०) यथार्थता, वस्तुस्थिति, असलियत; सार; स्वरूप; ब्रह्मा; नृत्य, गीत, वाद्यका भेदविशेष जिसे विलंवित कहते हैं; त्रिगुण; सांख्यशास्त्रोक्त प्रकृति आदि पचीस पदार्थ; स्वभाव; वस्तु; मन; पंचभूत; ऐसे मूल पदार्थ जिन्हें किसी भी रासायनिक विधिसे सरलतर पदार्थोंमें विश्लेषित नहीं किया जा सकता। इनकी कुल संख्या १०३ है। **–ज्ञ**–वि० ब्रह्मको जाननेवाला; जिसे सार वस्तुका ज्ञान हो; अध्यात्मवेत्ता; दार्शनिक। **–ज्ञान**–पु० ब्रह्म, आत्मा और जगद्विषयक यथार्थ ज्ञान, ब्रह्मज्ञान। **–ज्ञानार्थ-दर्शन**–पु० तत्त्वज्ञानका आलोचन। **–ज्ञानी(निन्)**–वि० जिसे ब्रह्म, आत्मा और जगत्के संवंधमें यथार्थ ज्ञान हो, ब्रह्मज्ञानी। **–दर्श**–वि० तत्त्वज्ञानी। पु० सावर्णि मन्वंतरमें हुए एक ऋषि। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दे० 'तत्त्वदर्श'। पु० रैवत मनुके एक पुत्र। **–दृष्टि**–स्त्री० तत्त्वज्ञान प्राप्त करानेवाली दृष्टि। **–निष्ठ**–वि० सिद्धांतका पक्का। **–न्यास**–पु० विष्णुकी तंत्रोक्त पूजामें विहित एक अंगन्यास। **–भाव**–पु० स्वभाव, प्रकृति। **–भाषी(षिन्)**–वि० यथार्थवक्ता, जो राग-द्वेषके वशमें आकर भी अन्यथा न कहे। **–भूत**–वि० साररूप। **–वाद**–पु० दर्शनशास्त्र-संवंधी विचार। **–विद्**–वि० दे० 'तत्त्वज्ञ'। पु० परमेश्वर। **–विद्या**–स्त्री० दर्शनशास्त्र, अध्यात्मविद्या। **–वेत्ता(त्तृ)**–वि० तत्त्वज्ञ; दार्शनिक। **–शास्त्र**–पु० दर्शनशास्त्र।

तत्त्वतः(तस्)–अ० (सं०) यथार्थ रूपमें, वास्तवमें।

तत्त्वान्तरण–पु० (ट्रान्समुटेशन आव एलिमेन्ट्स) एक मूल तत्त्वका अन्य तत्त्वमें परिणत होना। यह क्रिया दिये हुए तत्त्वके परमाणु नाभिककी संरचनामें परिवर्तन करके पूरी की जाती है।

तत्त्वावधान–पु० (सं०) देखरेख; निरीक्षण। (के तत्त्वावधानमें—अंडर दि आस्पिसीज़)।

तत्त्वावधानक–पु० (सं०) निरीक्षक।

तत्र–अ० (सं०) वहाँ, उस जगह। **–भवान्**–पु० सम्मान्य व्यक्ति।

तत्रक†–पु० एक पेड़।

तत्रत्य–वि० (सं०) वहाँ रहनेवाला।

तथा–अ० (सं०) और, व; वैसा; वैसा ही। **–कथित**–वि० 'तथोक्त'। **–गत**–पु० वुद्धका एक नाम। **–भद्र**–पु० नागार्जुनके एक शिष्यका नाम। **–राज**–पु० वुद्धका एक नाम। **–विध**–वि० उस प्रकारका।

तथापि–अ० (सं०) तो भी, तिसपर भी, वैसा होनेपर भी।

तथास्तु–अ० (सं०) वैसा ही हो; एवमस्तु।

तथैव–अ० (सं०) उसी प्रकार।

तथोक्त–वि० (सं०) जो कहने भरके लिए हो, नाममात्रका।

तथ्य–पु० (सं०) सत्य, सचाई, सच्ची वात, यथार्थता; सार। **–भाषी(षिन्),–वादी(दिन्)**–वि० सच्ची, सारगर्भ वात कहनेवाला। **–सामग्री**–स्त्री० किसी मूल्यांकनके लिए आधारभूत उपलब्ध सामग्री। ('डेटा')।

तद्–'तत्'का समासगतरूप। **–अनंतर**–अ० उसके वाद। **–अनुरूप**–वि० उसीके रूपका, उसीके जैसा। **–अनुसार**–अ० उसके अनुसार। **–अपि**–अ० वह भी; * तो भी, तथापि। **–अर्थ**–अ० उसके लिए। **–०समिति**–स्त्री० (एडहॉक कमिटी) किसी विशेष कार्यके लिए वनी हुई समिति जो कार्य-संपादनके वाद स्वतः विघटित हो जाती है। **–आकार**–वि० उसके आकारका, उसकी तरहका। **–०वृत्ति**–स्त्री० चित्तकी वह वृत्ति जो उसके (विषय-विशेषके) आकारकी हो गयी हो। **–उपरांत**–अ० उसके वाद। **–उपरि**–अ० उसके ऊपर या वाद। **–गत**–वि० उसमें स्थित; तल्लीन; उससे संवद्ध। **–गुण**–वि० जिसमें वे गुण हों; उसके जैसे गुणोंवाला। पु० अर्थालंकारका एक भेद जिसमें किसी एक वस्तु द्वारा अपने गुणका परित्याग कर निकटकी दूसरी वस्तुका गुण ग्रहण कर लिया जाना दिखाया जाता है। **–देशीय**–वि० उस देशका। **–धन**–वि० कंजूस। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० जिसका वह धर्म हो। **–वल**–पु० एक प्रकारका वाण। **–भव**–वि० उससे उत्पन्न। पु० किसी भाषाके वे शब्द जो देशी भाषामें कुछ विकृत

रूपमें प्रयोगमें आते हैं। **–रूप**–वि० उसी प्रकारका, वैसा ही। **–०रूपक**–पु० रूपकालंकारका एक भेद जहाँ उपमेयको उपमानसे भिन्न रखकर भी उसीका रूप या उसीका कार्य करनेवाला कहा जाय। **–रूपता**–स्त्री० सादृश्य, समानता।

तदबीर–स्त्री० (अ०) उद्योग, यत्न, प्रयास; उपाय; प्रबंध। **–(ए) सल्तनत**–स्त्री० राज्यप्रबंध।

तदा–अ० (सं०) उस समय, तब।

तदारुक–पु० (अ०) प्रतिबंध; रोक-थाम; उपाय; दंड।

तदीय–वि० (सं०) उसका।

तद्धित–पु० (स०) संज्ञा-शब्दोंमें लगनेवाला एक प्रकारका प्रत्यय (व्या०); उस प्रत्ययसे बना शब्द। वि० उसके लिए उपयुक्त।

तद्यपि*–अ० तथापि, तिसपर भी।

तद्वत्–वि० (सं०) वैसा, उसके समान। अ० वैसे ही, उसी प्रकार।

तन–पु० शरीर, देह; योनि। * अ० ओर, तरफ। **–त्राण,–त्रान**–पु० कवच। **–पात**–पु० मृत्यु। **–रुह***–पु० दे० 'तनूरुह'। **–सुख**–पु० तनजेब जैसा फूलदार कपड़ा। मु०**–मनसे**–जी-जान लगाकर।

तन–पु० (फा०) शरीर। **–ज़ेब**–पु० बढ़िया महीन मलमल। **–तनहा**–अ० बिलकुल अकेले। **–दिही**–स्त्री० मुस्तैदी, तत्परता; मिहनत; कोशिश।

तनक–स्त्री० एक रागिनी। * वि० थोड़ा। * अ० जरा।

तनकना*–अ० क्रि० दे० 'तिनकना'।

तनकीद–स्त्री० (अ०) समीक्षा, आलोचना, भले-बुरेकी परख।

तनक़ीह–स्त्री० (अ०) साफ करना, परिष्कृत करना; वाद या अभियोगमें विरोधके आधारभूत विषयोंका निर्धारण।

तनख्वाह–स्त्री० दे० 'तनख्वाह'। **–दार**–पु० दे० 'तनख़्वाहदार'।

तनख़्वाह–स्त्री० (फा०) वेतन, तलब। **–दार**–पु० वेतन पानेवाला, जो वेतन लेकर काम करता हो।

तनगना*–अ० क्रि० दे० 'तिनकना'।

तनज–पु० (अ० 'तंज') ताना; मज़ाक।

तनज़ील–स्त्री० (अ०) आतिथ्य करना; उतारना।

तनज्जुल–पु० (अ०) नीचे उतरना, अवनति, ह्रास।

तनज्जुली–स्त्री० दे० 'तनज्जुल'।

तनजेब–पु० दे० 'तन'के साथ।

तनतनाना–अ० क्रि० झुंझलाना।

तनना–अ० क्रि० खिंचकर कड़ा होना; फैलना; खड़ा होना; खिंचना, रुष्ट होना। पु० ताननेके लिए प्रयुक्त की जानेवाली रस्सी आदि।

तनमय*–वि० दे० 'तन्मय'।

तनमात्रा*–स्त्री० दे० 'तन्मात्रा'।

तनय–पु० (सं०) पुत्र, बेटा; कुल; जन्मलग्नसे पाँचवाँ स्थान।

तनया–स्त्री० (सं०) पुत्री, लड़की।

तनवाना–स० क्रि० ताननेका काम कराना, तनाना।

तनसीख़–स्त्री० (अ०) रद्द करना।

तनहा–वि० (फा०) अकेला। अ० अकेले।

तनहाई–स्त्री० अकेलापन, तनहा होना; एकांत स्थान।

तना–पु० (फा०) पेड़का जमीनके ऊपरका मोटा भाग जहाँसे शाखाएँ निकलती हैं, धड़। * अ० ओर, तरफ।

तनाउ*–पु० दे० 'तनाव'।

तनाकु*–अ० जरा-सा।

तनाज़ा–पु० (अ०) झगड़ा, लड़ाई; शत्रुता।

तनाना–स० क्रि० दे० 'तनवाना'।

तनाय*–पु० दे० 'तनाव'।

तनाव–पु० तननेका भाव या क्रिया; खींचतान, द्वेष या विकर्षणकी स्थिति; (टेंशन) कहानी या उपन्यासमें गृहीत वह स्थिति जो भिन्न मूल्यों, तत्त्वों या परिप्रेक्ष्य आदिकी टकराहटसे उत्पन्न होती है; रस्सी।

तनासुख़–पु० (अ०) आवागमन।

तनि, तनिक*–वि० थोड़ा, अल्प; छोटा–'इहाँ हुती मेरी तनिक मड़ैया को नृप आइ छर्‌यो'–सूर। अ० जरा।

तनिका–स्त्री० (सं०) कोई चीज बाँधनेकी रस्सी।

तनिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) दुबलापन; सुकुमारता; कृशता; यकृत।

तनियाँ, तनिया*–स्त्री० कछनी; तनीदार कुरता।

तनी–स्त्री० बंद, बंधन। * वि०, अ० दे० 'तनि'।

तनु–पु० (सं०) शरीर, काय; स्वभाव, प्रकृति; चर्म; लग्न-स्थान। वि० विरल; अल्प; सुकुमार, कृश; तुच्छ; छिछला। **–कूप**–पु० रोमकूप। **–केशी**–स्त्री० सुंदर बालोंवाली स्त्री। **–क्षीर**–पु० आमड़ा। **–गृह**–पु० अश्विनी नक्षत्र। **–च्छद**–पु० कवच; वस्त्र। **–च्छाय**–पु० बबूल। वि० कम छायावाला। **–ज**–पु० पुत्र; रोआँ; जन्मकुंडलीमें लग्नसे पाँचवाँ स्थान। **–जा**–स्त्री० पुत्री। **–त्याग**–वि० कंजूस। पु० शरीर-त्याग। **–त्र, त्राण**–पु० कवच, वर्म। **–त्वक्(च्)**–पु० एक पेड़। वि० पतले चमड़ेवाला; जिसकी छाल पतली हो। **–धारी(रिन्)**–वि० देहधारी। **–पत्र**–पु० गोंदीका पेड़, इंगुदी। **–पात**–पु० मृत्यु। **–प्रकाश**–वि० धुँधले या मंद प्रकाशवाला। **–बीज**–पु० राजबेर। वि० जिसके बीज छोटे हों। **–भव**–पु० पुत्र, बेटा। **–भवा**–स्त्री० पुत्री, बेटी। **–भस्त्रा**–स्त्री० नासिका। **–भूमि**–स्त्री० बौद्ध श्रावकके जीवनका एक विभाग। **–भृत्**–वि० शरीरधारी। **–मध्य**–पु० कमर। वि० पतली कमरवाला। **–मध्यमा**–वि० स्त्री० पतली कमरवाली। **–माया**–स्त्री० एक वर्णवृत्त। वि० स्त्री० पतली कमरवाली। **–रस**–पु० पसीना, स्वेद। **–राग**–पु० एक सुगंधित उबटन जिसमें केसर आदि छोड़ते हैं; इस उबटनके कामके गंधद्रव्य। **–रुह**–पु० रोम, रोआँ। **–लता**–स्त्री० लता जैसी लोचवाली सुकुमार देह। **–वात**–पु० एक नरक। वि० वह स्थान जहाँ कम हवा हो। **–वार**–पु० कवच। **–व्रण**–पु० वल्मीक रोग, फीलपाँव। **–शिरा(रस्)**–पु० उष्णिक् छंदका एक भेद। वि० छोटे सिरवाला। **–संचारिणी**–स्त्री० बालिका। **–सर**–पु० पसीना, स्वेद। **–स्थान**–पु० दे० 'तनुगृह'। **–ह्रद**–पु० गुदा।

तनुक–वि० (सं०) पतला; छोटा। * वि०, अ० दे० 'तनिक'। पु० शरीर।

तनुता–स्त्री०, **तनुत्व**–पु० (सं०) पतलापन, कृशता।

तनुल–वि० (सं०) फैला हुआ।

तनू–पु० (सं०) शरीर; पुत्र; प्रजापति; गौ। **–करण**–पु० (डाइल्यूशन) तीव्रता, चटकीलापन आदि कम करनेकी क्रिया, क्षीणीकरण, गाढ़ापन या तीक्ष्णता कम करनेके लिए किसी (तरल) पदार्थमें पानी मिलाने या घोलनेकी क्रिया। **–ज**–पु० बेटा। **–जा**–स्त्री० बेटी। **–तल**–पु० लंबाईका एक मान। **–ताप**–पु० क्लांति; शारीरिक कष्ट। **–नपात्**–पु० अग्नि; घी; चित्रक वृक्ष। **–नप्ता(प्तृ)**–पु० वायु। **–पा**–पु० जठराग्नि। **–पृष्ठ**–पु० सोमयागका एक भेद। **–रुह**–पु० रोम, रोआँ; पंखा; पुत्र। **–ह्लद**–पु० गुदा।

तनूनप–पु० (सं०) घी।

तनूर–पु० तंदूर।

तनेना*–वि० तिरछा, वक्र; खिंचा हुआ; रुष्ट।

तनेनी*–वि० स्त्री० दे० 'तनेना'।

तनै*–पु० दे० 'तनय'।

तनैया*–स्त्री० दे० 'तनया'। वि० ताननेवाला।

तनोज*–पु० रोम; पुत्र।

तनोरुह*–पु० दे० 'तनूरुह'।

तन्ना–पु० तानेका सूत।

तन्नि–स्त्री० (सं०) चक्रकुल्या, चित्रपर्णी।

तन्नी–स्त्री० वह रस्सी जिससे तराजूका पलड़ा बँधा होता है।

तन्–'तत्'का समासगत रूप। **–मनस्क**–वि० तन्मय, तल्लीन। **–मात्र**–पु० पंचभूतोंके मूल सूक्ष्म रूप। **–मात्रा**–स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।

तन्मय–वि० (सं०) दत्तचित्त, तल्लीन।

तन्यता–स्त्री० (डक्टिलिटी) तारके रूपमें खींचे जा सकनेका ठोस वस्तुओं (धातुओं)का गुण।

तन्यतु–पु० (सं०) वायु; रात्रि; गर्जन; वज्र।

तन्वंग–वि० (सं०) दुर्वल, सुकुमार शरीरवाला।

तन्वंगी–स्त्री० (सं०) शालिपर्णी लता। वि० स्त्री० दुवली, नाजुक, सुकुमार अंगोंवाली।

तन्वी–वि० स्त्री० (सं०) कृशांगी, सूक्ष्मांगी। स्त्री० पतली, सुकुमार स्त्री; एक वर्णवृत्त।

तपः–'तपस्'का समासगत रूप। **–कर**–पु० तप करनेवाला; एक मछली। **–कृश**–वि० तपसे क्षीण। **–पूत**–वि० जो तपस्या करके तन-मनसे पवित्र हो गया है। **–प्रभाव**–पु० तपसे प्राप्त अलौकिक शक्ति। **–साध्य**–वि० तपसे सिद्ध होनेवाला। **–सुत**–पु० युधिष्ठिर। **–स्थल**–पु० तप करनेका स्थान। **–स्थली**–स्त्री० काशी।

तप–पु० (सं०) तपस्या; ताप, दाह; सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; ज्वर; अग्नि; इंद्र। वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला; कष्टकर। **–च्छद**–पु० मदारका पेड़। **–भूमि**–स्त्री० दे० 'तपोभूमि'। **–रितु***–स्त्री० ग्रीष्मकाल।

तप(स)–पु० (सं०) ताप; सूर्य; अग्नि, कष्ट; विषयत्यागपूर्वक कष्टदायक व्रत, नियम, उपासना आदिका आचरण; भूख-प्यास, शीत-उष्ण आदि सहनेकी क्रिया; मौन आदि व्रत; चांद्रायण, प्राजापत्य आदि प्रायश्चित्त; मन, इंद्रियोंको एकाग्र रखनेकी क्रिया; एक विशेष काल-मान, कल्प; लग्नसे नवीं राशि; फाल्गुन मास; अग्नि; शिशिर; ग्रीष्म।

तपकना–अ० क्रि० धड़कना; टपकना; चमकना।

तपती–स्त्री० (सं०) सूर्यकी एक कन्या; ताप्ती नदी।

तपन–वि० (सं०) तपाने, जलानेवाला; प्रचंड। स्त्री० तपनेकी क्रिया या भाव; प्रियके विरहसे उत्पन्न संताप; ताप, गरमी। पु० कष्ट देना; सूर्य; भल्लातक वृक्ष; एक नरक; ग्रीष्म; सूर्यकांत-मणि; मदार; अग्निका एक भेद; शिव; अगस्त्य।**–कर,–दीधिति**–पु० सूर्य; सूर्यरश्मि। **–च्छद**–पु० सूर्यमुखी फूल। **–तनय**–पु० यम; शनि; कर्ण; सुग्रीव; शमीवृक्ष। **–तनया**–स्त्री० यमुना। **–मणि**–पु० सूर्यकांत मणि।

तपनांशु–पु० (सं०) सूर्य; सूर्यरश्मि।

तपना–अ० क्रि० धूप, आँच आदिसे गरम होना; तापमें पड़ा रहना, तप्त होना; किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए कष्ट सहना; सूर्यका प्रखर होना; किसीका प्रभुत्व छाना या आतंक फैलना; * तप करना। * स० क्रि० पकाना–'सूरज जेहिकै तपै रसोई'–प०।

तपनि*–स्त्री० ताप, जलन।

तपनी–स्त्री० (सं०) गोदावरी नदी; ताप; † कौड़ा, अलाव।

तपनीय–पु० (सं०) सोना (विशेषकर तपाया हुआ)। वि० तप्त करने योग्य; सहन करने योग्य।

तपनीयक–पु० (सं०) सोना।

तपनेष्ट–पु० (सं०) ताँबा।

तपनोपल–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि।

तपवाना–स० क्रि० तप्त कराना।

तपश्–'तपस्'का समासगत रूप। **–चरण**–पु०,**–चर्या**–स्त्री० तपस्या।

तपस–पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा; पक्षी। † तपस्वी।

तपसा–स्त्री० ताप्ती नदीका दूसरा नाम।

तपसाली–वि० तपसे शोभित होनेवाला; जिसने बहुत तपस्या की हो।

तपसी*–पु० दे० 'तपस्वी'। स्त्री० एक मछली।

तपसोमूर्ति–पु० (सं०) बारहवें मन्वंतरके एक ऋषि।

तपस्–पु० (सं०) दे० 'तप(स्)'। **–तंक,–तक्ष**–पु० इंद्र। **–पति**–पु० विष्णु।

तपस्य–पु० (सं०) फाल्गुन मास; अर्जुन; तपश्चर्या; तापस मनुका एक पुत्र।

तपस्या–स्त्री० (सं०) तप; (ला०) किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए उठाया जानेवाला कष्ट; कष्टमय प्रतीक्षा।

तपस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) तपस्या करनेवाला; दीन; दुखिया; बेचारा; कष्ट सहन करनेवाला। पु० नारद; सन्न्यासी; गौरवा; घीकुआर; दरिद्र मनुष्य; एक मत्स्य। **–(स्वि)पत्र**–पु० दौना; सूर्यमुखी।

तपस्विनी–स्त्री० (सं०) तपस्या करनेवाली स्त्री; जटामासी।

तपा*–पु० तपस्वी। वि० तपश्चर्यामें संलग्न।

तपाक–पु० (फा०) प्रेम; उत्साह।

तपात्यय–पु० (सं०) वर्षा ऋतु।

तपानल–पु० (सं०) तपसे उत्पन्न तेज।

तपाना–स० क्रि० गरम करना, तप्त करना; (ला०) कष्ट पहुँचाना।

तपावंत*–पु० तपस्वी।

तपाव–पु० तपनेकी क्रिया या भाव, गरम होना।

तपित–वि० (सं०) गरम किया हुआ; शुद्ध किया हुआ (सोना)।

तपिया†–पु० एक वृक्ष; * तप करनेवाला।

तपिश–स्त्री० (फा०) गरमी, तपन।

तपी(पिन्)–पु० (सं०) तपस्वी, साधु। वि० तप करनेवाला; गरम।

तपु(स्)–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; शत्रु। वि० तापयुक्त, उष्ण; तपानेवाला।

तपुरग्रा–स्त्री० (सं०) (जिसकी नोक तपती हो) भाला।

तपेदिक–स्त्री० (फा०) लंबे अरसेतक चलनेवाला ज्वर-खाँसीका क्षयकारी रोग, यक्ष्मा।

तपेला*–पु० भठ्ठी।

तपो–'तपस्'का समासगत रूप। **–द्युति**–पु० बारहवें मन्वंतरके एक ऋषि। **–धन**–वि० तप ही जिसका धन हो, तपस्वी। **–धाम(न्)**–पु० एक तीर्थ। **–निधि**–वि० तपस्वी। पु० धर्मप्राण व्यक्ति। **–निष्ठ**–वि० तपमें जिसकी निष्ठा हो। **–बल**–पु० तप द्वारा प्राप्त शक्ति। **–भंग**–पु० विघ्न-बाधाके कारण तपश्चर्याका भंग होना। **–भूमि**–स्त्री० तप करनेका स्थान। **–मूर्ति**–पु० परमेश्वर; तपस्वी; ऋषियोंका एक भेद। **–राज**–पु० चंद्रमा। **–लोक**–पु० भूर्, भुवर्, स्वर् आदि ऊपरके सात लोकोंमेंसे छठा लोक। **–वट**–पु० ब्रह्मावर्त देश (मध्यभारत)। **–वन**–पु० तपस्वी लोगोंके रहने, तपस्या करनेका वन; तपस्या करने योग्य वन। **–वृद्ध**–वि० जिसे तपस्याके कारण श्रेष्ठता प्राप्त हुई हो। **–व्रत**–पु० तपस्या-संबंधी व्रत। वि० जिसने तपस्याका व्रत धारण किया हो।

तपोमय–वि० (सं०) तपवाला; तपस्या करनेवाला।

तपौनी–स्त्री० मुसाफिरोंको लूट चुकनेपर ठगोंका देवीको प्रसाद चढ़ानेका रिवाज।

तप्त–वि० (सं०) तपाया हुआ; गरम; दुःखित; जिसने तपस्या की है; पिघला हुआ; क्रुद्ध। पु० गरम पानी। **–कांचन**–पु० तपाया हुआ सोना। **–कुंभ**–पु० एक नरक, जहाँ पापियोंको तप्त तेलके कड़ाहेमें डाल दिया जाता है। **–कूप**–पु० एक नरक। **–कृच्छ्**–पु० प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक व्रत। **–पाषाण-कुंड**–पु० एक नरक। **–माष**–पु० किसीकी सचाई-झूठाईके निर्णयके लिए की जानेवाली एक प्राचीन कठोर परीक्षा। **–मुद्रा**–स्त्री० धातुकी तपायी हुई मुद्राओं द्वारा दागकर अंगोंपर बनाये हुए विष्णुके शंख, चक्र आदिके चिह्न। **–रूप,–रूपक**–पु० तपायी हुई शुद्ध चाँदी। **–वालुक**–पु० एक नरक। **–शूर्मी**–पु० एक नरक। **–सुराकुंड**–पु० एक नरक।

तप्तक–पु० (सं०) कड़ाही।

तप्ता(प्तृ)–वि०, पु० (सं०) गरमी पहुँचानेवाला; गरम करनेवाला।

तप्ताभरण–पु० (सं०) शुद्ध सोनेका आभूषण।

तप्तायन–पु० (सं०) कष्टपीड़ितोंका निवासस्थान (पृथ्वी)।

तप्ति–स्त्री० (सं०) ताप, गरमी।

तप्प*–पु० तप।

तप्य–पु० (सं०) शिव। वि० तपाने योग्य; शुद्ध करने योग्य।

तफ़तीश–स्त्री० (अ०) छान-बीन; जाँच-पड़ताल।

तफ़रक़ा–पु० (अ०) अंतर, भेदभाव, फूट। **–अंदाज़**–वि० फूट डालनेवाला। **–अंदाज़ी**–स्त्री० फूट डालना।

तफ़रीक़–स्त्री० (अ०) अलग करना, फर्क करना; घटाना (ग०)।

तफ़रीह–स्त्री० (अ०) मनबहलाव; दिल्लगी, हँसी; सैर; ताजगी।

तफ़रीहन्–अ० मनबहलावके रूपमें; हँसीमें ।

तफ़सीर–स्त्री० (अ०) व्याख्या या टीका करना; कुरानकी व्याख्या या भाष्य ।

तफ़सील–स्त्री० (अ०) अलग करना; व्याख्या; ब्योरा ।

तफ़ावत–पु० (अ०) अंतर, फर्क; मन-मुटाव; फासला ।

तब–अ० उस समय; बादमें; इस वजहसे । **–भी**–अ० फिर भी, तिसपर भी ।

तबक़–पु० (अ०) तल, तह; परत; सोने-चाँदी आदिका बरक; बड़ी रकाबी; घोड़ोंकी एक बीमारी; वह फूल, दीप आदि जो मुसलमान स्त्रियाँ भूतप्रेत या परियोंको समर्पित करती हैं । **–गर**–पु० सोने-चाँदी आदिके पत्तर बनानेवाला ।

तबका–पु० (अ०) तख्ता; मंजिल; तह; खंड; पृथ्वीके नीचे या ऊपरका लोक; आदमियोंका समूह या वर्ग; जमीनका छोटा-सा टुकड़ा; पद, दरजा । **–(ए) बाला**–पु० ऊपरकी छत । मु० **–उलट जाना**–तबाह हो जाना ।

तबकिया–पु० दे० 'तवक़गर' । वि० जिसमें परत हो । **–हरताल**–पु० एक हरताल ।

तबदील–स्त्री० (अ०) बदलना, एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाना।

तबदीली–स्त्री० कर्मचारीका एक जगहसे दूसरी जगह भेजा जाना; फेरफार, परिवर्तन ।

तबर–पु० (फा०) कुल्हाड़ी; एक शस्त्र । **–दार**–वि० जिसके पास तबर हो ।

तबर्रा–पु० (अ०) किसीके प्रति घृणा प्रकट करना; धिक्कारना; शियोंका अलीसे पहलेके तीन खलीफाओंको कोसना; इस तरहके घृणासूचक शब्द ।

तबर्रुक–पु० (अ०) आशीर्वादरूप वस्तु, प्रसाद ।

तबल–पु० (अ०) बड़ा ढोल; नगाड़ा ।

तबलची–पु० तबला बजानेवाला ।

तबला–पु० ताल देनेका चमड़ेसे मढ़ा एक बाजा । **–वादक**–पु० तबला बजानेकी कला जाननेवाला, तबलिया, तबलची । **–वादन**–पु० तबला बजानेका कार्य या कला । मु०**–खनकना,–ठनकना**–तबला बजना; नाच-रंग, गाना-बजाना होना ।

तबलिया–पु० तबला बजानेवाला, तबलची ।

तबलीग़–स्त्री० (अ०) धर्मप्रचार; दूसरोंको अपने धर्ममें मिलाना ।

तबस्सुम–पु० (अ०) मुस्कराहट ।

तबाह–वि० (फा०) बरबाद, नष्ट ।

तबाही–स्त्री० (फा०) नाश, बरबादी ।

तबीअत, तबीयत–स्त्री० (अ०) जी, मन, दिल; शरीर या मनकी स्थिति; समझ । **–दार**–वि० भावुक, सहृदय । मु०**–आना**–(कोई वस्तु) पानेकी इच्छा होना; आसक्त होना । **–पर ज़ोर डालना**–खास तौरसे ध्यान देना । **–फिरना**–जी हटना ।

तबीब–पु० (अ०) चिकित्सक, हकीम ।

तबेला–पु० अस्तबल, घुड़साल, "···रारि-सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें"–भूधर । † ताँबेका एक पात्र, तसला ।

तबेली*–स्त्री० दे० 'तलबेली' ।

तब्बर*–पु० दे० 'तबर'; पुत्र ।

तभी–अ० उसी समय; इसीलिए ।

तमंग–पु० (सं०) मंच; रंग-मंच ।

तमंगक–पु० (सं०) छत या छाजनका बाहर निकला हुआ हिस्सा, छज्जा ।

तमंचा–पु० (फा०) पिस्तौल ।

तमः–'तमस्'का समासगत रूप । **–प्रभ**–पु०,**–प्रभा**–स्त्री० एक नरक । **–प्रवेश**–पु० अँधेरेमें टटोलना; किंकर्तव्यविमूढ़ता ।

तम–पु० (सं०) अंधकार; पैरका अगला भाग; तमोगुण; राहु; तमाल वृक्ष । **–प्रभ**–पु०,**–प्रभा**–स्त्री० दे० 'तमःप्रभ', 'तमःप्रभा' ।

तम(स्)–पु० (सं०) अंधकार; राहु; भ्रम; सत्त्वादि तीन गुणोंमेंसे एक; अविद्याके पाँच रूपोंमेंसे एक (सां०) ।

तमअ–स्त्री० (अ०) इच्छा; लालच ।

तमक–पु० आवेश; उद्वेग; रोष; झुँझलाहट; जोश; (सं०) एक श्वासरोग, दमेका एक भेद ।

तमकना–अ० क्रि० आवेशमें आना; रुष्ट होना; क्रोधका आधिक्य दिखलाना ।

तमकिनत–स्त्री० (अ०) इज्जत, प्रतिष्ठा; गौरव ।

तमग़ा–पु० (तु०) विद्यार्थी, सिपाही आदिको पुरस्कारके रूपमें दिया जानेवाला सोने, चाँदी आदिका खंड जो सिक्केकी या अन्य शकलका होता है, पदक ।

तमगेही–वि० तम ही जिसका घर हो । पु० फतिंगा ।

तमचर–पु० निशाचर; उल्लू ।

तमचुर, तमचूर, तमचोर*–पु० कुक्कुट, मुरगा ।

तमत–वि० (सं०) इच्छुक ।

तमतमाता–वि० चमकता हुआ; गरम ।

तमतमाना–अ० क्रि० क्रोध या धूपके कारण चेहरेका लाल हो जाना।

तमन–पु० (सं०) दम घुट जाना, मरण ।

तमन्ना–स्त्री० (अ०) इच्छा, ख्वाहिश, आकांक्षा ।

तमयी*–स्त्री० रात ।

तमरंग†–पु० एक प्रकारका नीबू ।

तमर–पु० (सं०) टीन; राँगा ।

तमराज–पु० (सं०) दे० 'तवराज' ।

तमलेट–पु०टीनका बरतन जिसपर चीनी मिट्टीकी कलई की गयी हो।

तमस–पु० (सं०) अंधकार; कुआँ । वि० काले रंगका । * स्त्री० तमसा नदी, टौंस ।

तमसा–स्त्री० (सं०) एक नदी, टौंस ।

तमस्क–पु० (सं०) अंधकार ।

तमस्–पु० (सं०) दे० 'तम (स्)' । **–कांड**–पु० घना अँधेरा । **–तति**–स्त्री० दे० 'तमस्कांड' ।

तमस्वती–स्त्री० (सं०) रात; हलदी । वि० स्त्री० अंधकारमयी ।

तमस्वान्(वत्)–वि० (सं०) अंधकारमय ।

तमस्विनी–स्त्री० (सं०) रात; हलदी ।

तमस्वी(विन्)–वि० (सं०) तमोयुक्त, अंधकारपूर्ण ।

तमस्सुक–पु० (अ०) ऋणपत्र; दस्तावेज, विधिक लेख्य ।

तमहीद–स्त्री० (अ०) भूमिका, प्रस्तावना ।

तमा–स्त्री० (सं०) रात्रि; *दे० 'तमअ' । **–चारी**–पु० निशाचर।

तमा(मस्)–पु० (सं०) राहु ।

तमाई†–स्त्री० फसलके लिए खेत जोतनेके पहले उसमेंकी घास आदि निकालनेकी क्रिया; अंधकार ।

तमाकू–पु० दे० 'तंबाकू' ।

तमाचा–पु० थप्पड़, झापड़ ।

तमादी–स्त्री० (अ०) लेन देन या मुकदमेकी सुनवाई आदिकी अवधिका बीत जाना । वि० जिसकी मीयाद बीत चुकी हो ।

तमाम–वि० (अ०) कुल, सारा; समाप्त, खतम ।

तमामी–स्त्री० समाप्ति; एक जरीदार कपड़ा ।

तमारि–पु० (सं०) सूर्य । * स्त्री० तँवार, घुमटा, चक्कर ।

तमाल–पु० (सं०) पहाड़ोंपर और यमुनाके किनारे होनेवाला एक सदाबहार पेड़; सांप्रदायिक तिलक; एक प्रकारकी तलवार; वरुण वृक्ष; काला खैर; तेजपात; बाँसकी छाल; सुरती । **–पत्र**–पु० तमाल वृक्षका पत्ता; सुरतीका पत्ता; सांप्रदायिक चिह्न ।

तमालक–पु० (सं०) तमाल; बाँसकी छाल; तेजपात; एक साग ।

तमालिका–स्त्री० (सं०) ताम्रवल्ली लता; भूम्यामलकी ।

तमालिनी–स्त्री० (सं०) वह भूमि जहाँ तमालके वृक्षोंकी अधिकता हो; भुइँआँवला ।

तमाली–स्त्री० (सं०) ताम्रवल्ली लता; वरुण वृक्ष ।

तमाशगीर–पु० दे० 'तमाशबीन' ।

तमाशबीन–पु० तमाशा देखनेवाला; ऐयाश ।

तमाशबीनी–स्त्री० ऐयाशी ।

तमाशा–पु० (अ०) मनोरंजक दृश्य; खेलकूद या हँसी आदिकी घटना; अद्भुत बात ।

तमाशाई–पु० दे० 'तमाशबीन' ।

तमाह्वय–पु० (सं०) तालीशपत्र ।

तमि, तमी–स्त्री० (सं०) रात्रि; मोह, मूर्च्छा; हल्दी। **–(मी)-चर**–पु० राक्षस, निशाचर। **–नाथ**–पु० चंद्रमा। **–पति**–पु० चंद्रमा। **–वीचि**–स्त्री० अप्सराओंका एक भेद।

तमिल–स्त्री० द्रविड़ भाषाकी एक प्राचीन और प्रधान शाखा जो दक्षिणपूर्वी मद्रासमें बोली जाती है।

तमिस्र–पु० (सं०) अंधकार; अज्ञान; मोह; क्रोध; असित पक्ष; एक नरक। **–पक्ष**–पु० कृष्ण पक्ष।

तमिस्रा–स्त्री० (सं०) अँधेरी रात; निविड़ अंधकार।

तमीज़–स्त्री० (अ०) अच्छे-बुरेकी पहचान, विवेक; अदब।

तमीश–पु० (सं०) चंद्रमा।

तमूरा–पु० दे० 'तंबूरा'।

तमेरा–पु० ताँबेके बरतन बनानेवाला।

तमो–'तमस्'का समासगत रूप। **–गुण**–पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक जो अज्ञान, आलस्य, क्रोध, भ्रम आदि, का कारण है। **–गुणी(णिन्)**–वि० तामस वृत्तिवाला। **–घ्न**–पु० अंधकार या अज्ञानको हरनेवाला, सूर्य; अग्नि; चंद्रमा; विष्णु; शिव; एक बुद्ध; ज्ञान। वि० जिससे अँधेरा दूर हो। **–ज्योति(स्)**–पु० जुगनू। **–दर्शन**–पु० पित्तज्वरका एक भेद। **–नुद**–पु० सूर्य; चंद्र; परमेश्वर। **–नुद्**–पु० सूर्य; चंद्र; अग्नि; दीप। **–भिद्**–पु० जुगनू। **–मणि**–पु० जुगनू; गोमेदक मणि। **–विकार**–पु० रोग। **–हंत**–पु० अंधकार या मोह दूर करनेवाला। **–हर**–पु० सूर्य; चंद्र। वि० अंधकार दूर करनेवाला।

तमोमय–वि० (सं०) तमोगुणसे भरा हुआ: ज्ञानहीन; अंधकारपूर्ण।

तमोर, तमोल*–पु० तांबूल, पान।

तमोलिन–स्त्री० बरइन।

तमोली–पु० बरई, पान बेचनेवाला।

तय–वि० (अ०) पूरा किया हुआ, समाप्त; निश्चित, निर्णीत।

तयना*–अ० क्रि० तपना, गरम होना; संतप्त होना, दुःखी होना; स० क्रि० तपाना, संतप्त करना–'आनँद घन जग सुजस छाइकै पतित पपीहै निपट न तैयै'।

तयार*–वि० दे० 'तैयार'।

तरंग–स्त्री० (सं०) पानीकी लहर, मौज; उमंग; उछाल; हिलना-डोलना; इधर-उधर घूमना; स्वरोंका आरोह-अवरोह। पु० वस्त्र; ग्रंथका खंड। अनुप्रस्थ तरंगमें एक शृंगसे निकटवर्ती शृंग तककी दूरी; या अनुदैर्घ्य तरंगमें एक संपीडनसे निकटवर्ती संपीडन तककी दूरी। **–माली(लिन्)**–पु० समुद्र।

तरंगक–पु० (सं०) पानीकी लहर; स्वरलहरी।

तरंगवती–स्त्री० (सं०) नदी।

तरंगायित–वि० (सं०) तरंगयुक्त।

तरंगिणी–स्त्री० (सं०) नदी। वि० स्त्री० तरंगोंवाली। **–नाथ, –भर्ता(र्तृ)**–पु० समुद्र।

तरंगित–वि० (सं०) लहराता हुआ; ऊपरसे बहता हुआ; कंपायमान।

तरंगी(गिन्)–वि० (सं०) तरंगयुक्त; मौजी; अस्थिर।

तरंड–पु० (सं०) बंसीकी डोरीमें बाँधी जानेवाली छोटी लकड़ी जो ऊपर उतराती रहती है; डाँड़; नाव; बेड़ा। **–पादा**–स्त्री० एक तरहकी नाव।

तरंडा, तरंडी–स्त्री० (सं०) नाव; बेड़ा।

तरंत–पु० (सं०) समुद्र; मेढक; राक्षस; भक्त; मुसलधार वृष्टि।

तरंती–स्त्री० (सं०) नौका।

तरंबुज–पु० (सं०) तरबूज।

तर–पु० (सं०) पार करनेकी क्रिया; बढ़ जाना; पराभूत करना; अग्नि; वृक्ष; गति; मार्ग; घाटवाली नाव; नावका भाड़ा; तद्धितका एक प्रत्यय जो गुणाधिक्य प्रकट करनेके लिए लगाया जाता है (जैसे–स्थूलतर,–व्या०)। **–पण्य**–पु० नावका भाड़ा। **–पण्यिक**–पु० नावका भाड़ा लेनेवाला। **–स्थान**–पु० नावसे उतरनेका घाट।

तर*–पु० तरु, पेड़। अ० नीचे, तले। **–छट**†–स्त्री० तलछट।

तर–वि० (फा०) आर्द्र; अत्यंत सिक्त; ठंढा; ठंडक पैदा करनेवाला; मालदार। **–बतर**–वि० भीगा हुआ, सराबोर। **–बताज़ा**–वि० तुरंतका।

तर(स्)–पु० (सं०) बल; वेग; वानर; तीर; रोग; तट; नदी पार करनेका घाट; नाव; बेड़ा।

तरई*–स्त्री० तारा, नक्षत्र।

तरक*–पु० सोच-विचार, ऊहापोह; 'मनमहुँ तरक करैं कपि लागा'–रामा०; चुटीली बात; चातुर्यपूर्ण उक्ति। स्त्री० दे० 'तड़क'।

तरकना*–अ० क्रि० तर्क करना; अनुमान लगाना; कल्पना करना; उछलना; झपटना; दे० 'तड़कना'। वि० भड़कनेवाला–'बैल तरकना, टूटी नाव'।

तरकश–पु० (फा०) तीर रखनेका चोंगा, तूणीर, निषंग।

तरकस*–पु० दे० 'तरकश'।

तरकसी*–स्त्री० छोटा तरकश।

तरका–पु० उत्तराधिकारीको मिलनेवाली संपत्ति; † दे० 'तड़का'।

तरकारी–स्त्री० वह पौधा जिसके पत्ते, फूल, फल, कंद आदि पकाकर भोज्य पदार्थके साथ खानेके काम आते हैं, सब्जी, शाक; तड़का देकर पकाया हुआ शाक, सब्जी आदि।

तरकी–स्त्री० फूलकी तरहका कानका एक गहना।

तरकीब–स्त्री० (अ०) मिलाना; मिलावट; रचना; उपाय; ढंग, तरीका, युक्ति।

तरकुल†–पु० ताड़।

तरकुला–पु०, **तरकुली***–स्त्री० कानका एक गहना, तरकी।

तरक्की–स्त्री० (अ०) उन्नति, बढ़ती; पद-वृद्धि, नीचेके दरजेसे ऊपरके दरजेमें जाना।

तरक्ष, तरक्षु–पु० (सं०) एक छोटी जातिका बाघ।

तरखा†–पु० पानीका तेज बहाव।

तरखान–पु० तक्षक या बढ़ई।

तरछाना*–अ० क्रि० आँखसे इशारा करना।

तरज–पु० दे० 'तर्ज़'।

तरजना–अ० क्रि० डाँटकर बोलना; घुड़कना।

तरजनी–स्त्री० अँगूठेके पासकी उँगली, तर्जनी; * भय, डर।

तरजीला*–वि० क्रोधयुक्त; उग्र।

तरजीह–स्त्री० (अ०) प्रधानता; बढ़-चढ़कर होना, महत्त्वमें अधिक होना; वरीयता।

तरजुई†–स्त्री० छोटा तराजू।

तरजुमा–पु० (अ०) अनुवाद, उल्था।

तरजुमान–पु० (अ०) अनुवाद करनेवाला।

तरजौंहाँ*–वि० क्रुद्ध; उग्र।

तरण–पु० (सं०) नदी आदि पार करनेकी क्रिया, तरना; उद्धार; स्वर्ग; छोटी नाव; बेड़ा; डाँड़; पराभूत करना।

तरणि–पु० (सं०) सूर्य; किरण; मदार; ताँबा। स्त्री० छोटी नौका। वि० शीघ्रगामी; तेज; उत्साही। **–जा, –तनया, –तनूजा**–स्त्री० यमुना; एक वर्णवृत्त। **–तनय**–पु० दे० 'तरणि-सुत'। **–धन्य**–पु० शिव। **–पेटक**–पु० नावका पानी उलीचनेका पात्र। **–रत्न**–पु० माणिक्य। **–सुत**–पु० यम, शनि, कर्ण, सुग्रीव आदि। **–सुता**–स्त्री० यमुना।

तरणी–स्त्री० (सं०) बेड़ा; नौका; घीकुआर; पद्मचारिणी लता।

तरतराता–वि० (पकवान) जिससे घी चूता हो।

तरतराना*–अ० क्रि० दे० 'तड़तड़ाना'; † बहना।

तरतीब–स्त्री० (अ०) क्रम, सिलसिला।

तरत्–स्त्री० (सं०) प्लव, बेड़ा; कारंडव पक्षी।

तरदी–स्त्री० (सं०) एक कँटीला पेड़।

तरदीद–स्त्री० (अ०) रद करना; खंडन।

तरद्दुद–पु० (अ०) झंझट; परेशानी; चिंता; सोच, फ़िक्र, अंदेशा।

तरद्वटी–स्त्री० (सं०) एक पकवान।

तरन*–पु० दे० 'तरण'; तरौना। **–तारन**–पु० उद्धार करनेवाला (ईश्वर); उद्धार।

तरना–अ० क्रि० पार होना; तैरना; भवबंधनसे छुटकारा पाना। स० क्रि० पार करना; * दे० 'तलना'।

तरनाग–पु० एक पक्षी।

तरनि*–पु० दे० 'तरणि'। स्त्री० दे० 'तरणी'। **–जा,–तनूजा**–स्त्री० दे० 'तरणिजा', 'तरणि-तनूजा', यमुना।

तरनी–स्त्री० खोन्चा रखनेका डमरूकी शकलका आसन।

तरन्नि*–पु०, स्त्री० दे० 'तरणि'।

तरन्नुम–पु० (अ०) आलाप।

तरप*–स्त्री० दे० 'तड़प'।

तरपट–वि० जिसमें टेढ़ापन हो (खटिया)। पु० टेढ़ापन।

तरपत*–पु० सुभीता; आराम।

तरपन*–पु० दे० 'तर्पण'।

तरपना*–अ० क्रि० दे० 'तड़पना'।

तरपर–अ० नीचे-ऊपर; निरंतर।

तरपरिया†–वि० नीचे-ऊपरका; क्रममें पहले और पीछेका।

तरपीला*-वि० तड़पदार, चमकीला।

तरफ़–स्त्री० (अ०) ओर; बगल। **–दार**–वि० पक्षपाती, सहायक। **–दारी**–स्त्री० पक्षपात।

तरफराना*–अ० क्रि० दे० 'तड़फड़ाना'।

तरब–पु० सारंगीके तार।

तरबहना–पु० देवप्रतिमाको नहलानेकी थाली।

तरबियत–स्त्री० (अ०) पालन-पोषण करना, परवरिश करना; तालीम, शिक्षा।

तरबूज–पु० (फा०) बलुई जमीनपर फैलनेवाली एक बेलका फल जो गोल आकारका, बड़ा, हरा और तासीरमें ठंढा होता है।

तरबूजा*–पु० ताजा फल; † तरबूज।

तरबूजिया–वि० तरबूजेके रंगका, गहरा हरा।

तरबोना*–स० क्रि० तराबोर करना, भिगोना। अ० क्रि० तराबोर होना।

तरभर*–स्त्री० 'तड़ातड़'की आवाज; खलबली–'बजी वँदूखैं तरभर माची'–छत्रप्रकाश।

तरमाना†–अ० क्रि० तर होना; क्रुद्ध होना, किसीपर बिगड़ना। स० क्रि० तर करना; क्रुद्ध करना।

तरमीम–स्त्री० (अ०) दुरुस्ती, संशोधन, हेर-फेर।

तरराना*–स० क्रि० ऐंठना। अ० क्रि० ऐंठ दिखाना।

तरल–वि० (सं०) ऐसे पदार्थ जो बह सकते हैं, द्रव (पानी, तेल आदि) तथा गैसें (वायु आदि); द्रव; हिलता-डुलता; चपल; तीव्रगामी; क्षणभंगुर; अस्थिर; चमकीला; पोला; लंपट; विस्तृत। पु० हारके बीचका मणि; हार; हीरा; लोहा; धतूरा; सतह; तल; एक जनपद; उस जनपदके निवासी; घोड़ा। **–नयन**–पु० एक वर्णवृत्त। **–नयना,–लोचना**–वि० स्त्री० चपल नेत्रोंवाली।

तरला–स्त्री० (सं०) यवागू; सुरा; मधुमक्खी।

तरलाई–स्त्री० तरलता, द्रवत्व।

तरलायित–वि० (सं०) कँपाया या हिलाया हुआ। पु० बड़ी तरंग; अस्थिरता।

तरलित–वि० (सं०) हिलता हुआ, अस्थिर; प्रवाहशील।

तरवट–पु० (सं०) एक क्षुप, आहुल्य, दंतकाष्ठक।

तरवन–पु० कानका एक आभूषण, तरकी।

तरवर*–पु० तरुवर, उत्तम वृक्ष।

तरवरिया*–पु० तलवार चलानेवाला, धारण करनेवाला।

तरवरिहा†–पु० दे० 'तरवरिया'।

तरवार*–स्त्री० दे० 'तलवार'।

तरवारि–स्त्री० (सं०) तलवार।

तरस–पु० पीडित या भाग्यहीन व्यक्तिको देखकर उत्पन्न होनेवाली करुणा, दया, रहम; (सं०) मांस। मु० **–खाना**–दया करना।

तरसना–अ० क्रि० किसी वस्तुको पाने या प्रिय व्यक्तिको देखनेके लिए बेचैन रहना; पीडित होना। * स० क्रि० तराशना, काटना।

तरसान–पु० (सं०) नौका।

तरसाना–स० क्रि० किसी वस्तुके लिए किसीको व्याकुल करना या ललचाना, आशा दिलाकर तमन्ना पूरी न करना।

तरसौंहाँ*–वि० तरसनेवाला।

तरस्–पु० (सं०) गति, वेग; शक्ति, बल (दे० 'तरस्वान्'); क्षमता; प्लवग, बंदर।

तरस्वान्(वत्)–वि० (सं०) तेज, वेगशील; शूर; बली।

तरस्वी(विन्)–वि० (सं०) तेज; बली; साहसी। पु० दूत, धावन; वीर; वायु; गरुड़; शिव।

तरह–स्त्री० (अ०) प्रकार, भाँति, ढंग; बनावट; स्थिति। **–दार**–वि० अच्छे ढंग या तर्जका; सजीला। **–दारी**–स्त्री० तरहदार होनेका भाव। मु० **–देना**–बचा जाना; जान-बूझकर उपेक्षा करना।

तरहटी–स्त्री० दे० 'तलहटी'।

तरहर, तरहारि, तरहुँड़*–अ० नीचे, तले।

तरहेल*–वि० पराजित, परास्त; वशीभूत।

तरांधु–पु० (सं०) चौड़े पेंदेकी नाव।

तराई–स्त्री० पहाड़के आस-पासकी निम्न भूमि जहाँ सदा तरी बनी रहती है; * तरई, तारा।

तराज़ू–पु० तौलनेका एक यंत्र जिसमें डाँड़ीके दोनों सिरोंसे तन्नियों द्वारा दो पलड़े बँधे रहते हैं।

तराटक*–पु० दे० 'त्राटक'।

तराना–पु० (फा०) एक प्रकारका गाना। † स० क्रि० दे० 'तरियाना', नीचे करना; तैराना।

तराप*–स्त्री० तोपकी आवाज।

तरापा*–पु० हाहाकार।

तराबोर–वि० सराबोर, तर-बतर।

तराभर*–स्त्री० 'तड़ातड़'की आवाज; तेजीसे कोई काम करना।

तरामल–पु० छाजनके नीचे लगाये जानेवाले मूँजके मुठ्ठे; जुवेके नीचेकी लकड़ी।

तरायल, तरायला*–वि० चंचल; तेज।

तरारा–पु० लगातार गिरनेवाली जलकी धारा; छलाँग।

तरालु–पु० (सं०) दे० 'तरांधु'।

तरावट–स्त्री० तरी; शरीरमें ठंढक लानेवाली चीजें।

तराश–स्त्री० (फा०) तराशनेकी क्रिया; काट, बनावट; तर्ज। **–ख़राश**–स्त्री० तर्ज-बनावट, काट-छाँट।

तराशना–स० क्रि० काटना, फाँक-फाँक करना।

तरास*–पु० त्रास, भय, डर, आतंक।

तरासना*–स० क्रि० त्रस्त करना।

तराही*–अ० नीचे।

तरिंदा–पु० पानीमें तैरता हुआ पीपा, आदि; तरेंदा।

तरि–स्त्री० (सं०) नौका; वस्त्र रखनेकी पेटारी; कपड़ेका छोर। **–रथ**–पु० डाँड़।

तरिक–पु० (सं०) बेड़ा, नौका; उतराई वसूल करनेवाला (माँझी)।

तरिका–स्त्री० (सं०) नौका; भलाई।

तरिकी(किन्)–पु० (सं०) मल्लाह, माँझी।

तरिको*–पु० तरकी।

तरिणी–स्त्री० (सं०) दे० 'तरणी'।

तरिता–स्त्री० (सं०) तर्जनी उँगली; गाँजा; एक दुर्गा; * दे० 'तडित्'।

तरित्र–पु०, **तरित्री**–स्त्री० (सं०) नौका, पोत।

तरियाना†–स० क्रि० नीचे करना; ढाँकना; लेवा लगाना; तर करना (ईंटें)। अ० क्रि० तले बैठना, नीचे जमना।

तरिवन–पु० कर्णफूल, तरकी।

तरिवर*–पु० दे० 'तरुवर'।

तरिहँत*–अ० नीचे।

तरी–स्त्री० तरावट; गीलापन; कछार; तराई; * तरकी; जूतेका तला; जूती; (सं०) नौका; गदा; धुँआ।

तरीक़ा–पु० (अ०) काम करने या व्यवहारका ढंग; उपाय।

तरीष–पु० (सं०) सूखा गोबर, कंडा; नाव; कुशल व्यक्ति; समुद्र; व्यवसाय; सजावट; स्वर्ग; सुंदर आकृति; एक विशेष प्रकारकी नौका।

तरीषी–स्त्री० (सं०) इंद्रकी एक कन्या।

तरु–पु० (सं०) वृक्ष, पेड़। **–कोटर**–पु० वृक्षका खोखला भाग।

-खंड-षंड-पु० वृक्षोंका समूह। **-जीवन**-पु० पेड़की जड़। **-तूलिका**-स्त्री० चमगादड़। **-नख**-पु० (पेड़का) काँटा। **-पतिका**-स्त्री० लता। **-बाहीँ***-स्त्री० शाखा, डाल। **-मुक्-(ज्)**-पु० एक लता, बंदाक (परगाछा)। **-मृग**-पु० बंदर। **-राग**-पु० नवपल्लव; कली। **-राज**-पु० पारिजात; कल्पवृक्ष; तालवृक्ष। **-रुहा**-स्त्री० बंदाक। **-रोपण**-पु० दे० 'वृक्षरोपण'। **-रोहिणी**-स्त्री० बंदाक। **-वर**-पु० उत्तम वृक्ष। **-वल्ली**-स्त्री० बंदाक। **-विटप**-पु० शाखा। **-विलासिनी**-स्त्री० नवमल्लिका। **-शायी(यिन्)**-पु० पक्षी। **-सार**-पु० कपूर। **-स्था**-स्त्री० बंदाक।

तरुआ|-पु० पैरका तलवा; भुजिया चावल।

तरुण-वि० (सं०) सोलह वर्षसे ऊपरकी अवस्थावाला, युवा; चढ़ती जवानीवाला; जो पूर्ण विकासको न प्राप्त हुआ हो (पौधा, रोग)। पु० युवा पुरुष; कुज नामक पुष्प; स्थूल जीरक; एरंड; अंकुर; कोमलास्थि। **-ज्वर**-पु० वह ज्वर जो एक सप्ताहसे कमका न हो। **-दधि**-पु० पाँच या अधिक दिनका दही। **-पीतिका**-स्त्री० मैनसिल।

तरुणक-पु० (सं०) अंकुर।

तरुणाई-स्त्री० युवावस्था।

तरुणास्थि-स्त्री० (सं०) कोमलास्थि, वह हड्डी जो कड़ी न हो।

तरुणिमा(मन्)-स्त्री० (सं०) तारुण्य, जवानी।

तरुणी-स्त्री० (सं०) युवती; दंती वृक्ष; एक पुष्प; चीड़ा नामका गंधद्रव्य; सेवती। **-कटाक्षमाल**-पु० तिलक वृक्ष।

तरुन*-वि० दे० 'तरुण'। **-ई**- स्त्री० दे० 'तरुणाई'।

तरुनाई-स्त्री०, **तरुनापन**, **तरुनापा***-पु० तारुण्य।

तरुट-पु० (सं०) कमलकी गठीली, गूदेदार जड़, भसींड।

तरेंदा-पु० पानीमें उतरानेवाली वह वस्तु जिसके सहारे पार हुआ जा सके।

तरें|-अ० नीचे, तले।

तरेट-पु० पेंड़।

तरेटी-स्त्री० तलहटी; पहाड़के नीचेकी भूमि।

तरेड़-स्त्री० दरार-'आत्मविश्वासमें संदेहकी तरेड़ डाल दी'-जिंदगी०।

तरेरना*-स० क्रि० तिरछे देखना; बरजने या डाँट बतानेके लिए (नेत्र) तिरछे (कर) देखना; थपेड़ा देना-'उपावकी नाव तरेरति तोरति' -घन०।

तरैया-पु० तरनेवाला; तारनेवाला। स्त्री० तारा।

तरैला-पु० किसी स्त्री या पतिका वह पुत्र जो उसके पहलेके पुरुष या स्त्रीसे उत्पन्न हो।

तरोंच-स्त्री० दे० 'तरौंछ'।

तरोई-स्त्री० दे० 'तुरई'।

तरोता-पु० एक लंबा वृक्ष।

तरोवर*-पु० दे० 'तरुवर'।

तरौंछ-स्त्री० तलछट।

तरौंटा-पु० चक्कीका निचला पत्थर।

तरौंदा-पु० मार्गकी बाधाओं आदिकी सूचना देनेके लिए समुद्र तलपर तैराये जानेवाले पीपे आदि (ब्याव)।

तरौंस*-पु० तट, किनारा।

तरौना-पु० कानका एक गहना, तरकी।

तर्क-पु० (सं०) ऊहा, जिसके द्वारा कारणका उपपादन करते हुए किसी वस्तुके अज्ञात तत्त्वको जाना जाय; न्यायशास्त्र; युक्ति, दलील; विवेचन; इच्छा; छकी संख्या; कारण। **-ग्रंथ**-पु० तर्कशास्त्र संबंधी ग्रंथ। **-मुद्रा**-स्त्री० तांत्रिक उपासनामें हाथकी एक मुद्रा। **-वितर्क**-पु० ऊहापोह। **-विद्या**-स्त्री० न्यायशास्त्र। **-शास्त्र**-पु० वह शास्त्र जिसमें तर्कके नियम, सिद्धांत आदि निरूपित हों (गौतम और कणाद इसके प्रधान आचार्य माने जाते हैं)। **-संगत**-वि० जो तर्कपर आधारित हो; जो तर्ककी दृष्टिसे उचित हो, युक्तियुक्त।

तर्क-पु० (अ०) छूटना; परित्याग, किनाराकशी। स्त्री० वह वाक्य आदि जो छूट जानेके कारण हाशियेपर लिखा गया हो। **-(र्के) अदब**-पु० गुस्ताखी। **-दुनिया**-पु० फकीर हो जाना। **-मवालात**-पु० असहयोग।

तर्कक-वि०, पु० (सं०) तर्क करनेवाला, तर्कशास्त्री; वादी; पूछताछ करनेवाला।

तर्कण-पु० (सं०) तर्क करनेकी क्रिया।

तर्कणा-स्त्री० (सं०) तर्क करनेकी क्रिया, विचार।

तर्कना-स्त्री० विचार; युक्ति। * अ० क्रि० विचार या तर्क करना।

तर्कश-पु० दे० 'तरकश'।

तर्कसी-स्त्री० दे० 'तरकसी'।

तर्काभास-पु० (सं०) गलत तर्क, गलत परिणाम निकालना; ऐसा तर्क जो ऊपरसे सही जान पड़े, पर दरअसल गलत हो, हेत्वाभास।

तर्कारी-स्त्री० (सं०) जयंती वृक्ष।

तर्किण-पु० (सं०) चकवँड़।

तर्कित-वि० (सं०) अनुमित; जिसपर तर्क किया गया हो; परीक्षित।

तर्किल-पु० (सं०) चकवँड़।

तर्की(किन्)-वि०, पु० (सं०) तर्क करनेवाला; मीमांसक।

तर्कु-पु० (सं०) तकला, टेकुआ। **-पिंड**-पु० तकलेकी फिरकी।

तर्कुक-पु० (सं०) वादी, प्रार्थी।

तर्कुटी-स्त्री० (सं०) दे० 'तर्कु'।

तर्क्य-वि० (सं०) तर्क करने योग्य, विचारने योग्य।

तर्क्षु-पु० (सं०) तेंदुआ।

तर्क्ष्य-पु० (सं०) जवाखार।

तर्ज़-पु० (अ०) रीति, शैली, ढंग; बनावट।

तर्जन-पु० (सं०) धमकाना; डाँटना; डराना; क्रोध।

तर्जना-स्त्री० (सं०) दे० तर्जन। * स० क्रि० डाँटना, डपटना। * अ० क्रि० क्रोधमें तड़पना।

तर्जनी-स्त्री० (सं०) अँगूठेके पासकी उँगली। **-मुद्रा**-स्त्री० तांत्रिक उपासनामें हाथकी एक मुद्रा।

तर्जित-वि० (सं०) अपमानित; जो फटकारा गया हो।

तर्जुमा-पु० (अ०) दे० 'तरजुमा', अनुवाद।

तर्ण-पु० (सं०) बछड़ा।

तर्णक-पु० (सं०) हालका पैदा हुआ बछड़ा; बच्चा।

तर्णि-पु० (सं०) सूर्य; बेड़ा।

तर्तरीक-पु० (सं०) एक प्रकारकी नौका। वि० पार जानेवाला।

तर्दू-स्त्री० (सं०) डोई।

तर्पण-पु० (सं०) तृप्त करनेकी क्रिया; देवताओं, ऋषियों और पितरोंको तिल या तंडुलमिश्रित जल देनेकी क्रिया; यज्ञाग्निका इंधन; आहार; आँखोंमें तेल भरना।

तर्पणी-स्त्री० (सं०) एक वृक्ष; गंगा।

तर्पणेच्छु-वि० (सं०) जो तर्पणका इच्छुक हो। पु० भीष्म।

तर्पित-वि० (सं०) तृप्त किया हुआ; जिसका तर्पण हुआ हो।

तर्पी(पिन्)-वि०, पु० (सं०) तृप्त करनेवाला; तर्पण करनेवाला।

तर्बट-पु० (सं०) चकवँड़; चांद्र वर्ष।

तर्बूज-पु० दे० 'तरबूज़'।

तर्य्योना*-पु० दे० 'तरौना'।

तर्ष-पु० (सं०) अभिलाष; तृष्णा; समुद्र; नौका; सूर्य।

तर्षण-पु० (सं०) पिपासा, तृषा; इच्छा।

तर्षित-वि० (सं०) प्यासा; इच्छुक।

तर्षुल-वि० (सं०) दे० 'तर्षित'।

तल-पु० (सं०) निचला भाग; वह भाग जिसके बल कोई वस्तु स्थित हो; पेंदा, पेटा; सतह; लंबी-चौड़ी वस्तुका ऊपरी भाग; (सरफेस) किसी वस्तुका ऊपरी पृष्ठ जिसमें लंबाई और चौड़ाई हो, पर मोटाई न हो; जंगल; प्रत्यंचाके आघातसे बचनेके लिए बायें हाथपर पहना जानेवाला चमड़ेका खोल; मकानकी छत; थप्पड़; हथेली; तलवा; तलवार आदिकी मूठ; बायें हाथसे वीणा बजाना; निम्नता; गड्ढा, माँद; ताड़; शिव; नरकका एक भाग; एक अधोलोक; तालाब; कारण, हेतु। **-कर**-पु० तालाब आदिपर लगनेवाला कर। **-कीट**-पु० एक वृक्ष। **-घर**-पु०

(हिं०) तहख़ाना। -घात-पु० चपत। -छट-स्त्री० (हिं०) पानी आदि द्रव पदार्थोंमें नीचे बैठनेवाला मैल। -ताल-पु० हाथसे बजाया जानेवाला एक बाजा; थपोड़ी। -त्राण-पु० युद्धमें हथेलीकी रक्षाके लिए पहना जानेवाला चमड़ेका दस्ता। -प्रहार-पु० चपत। -मल-पु० दे० 'तलछट'। -मीन-पु० मछली। -लोक-पु० पाताल। -वारण-पु० तलत्राण; तलवार। -सारक-पु० तोबड़ा; तंग। -हृदय-पु० तलवेका केन्द्र।

तलक-पु० (सं०) तालाब; मिट्टीका बरतन; एक तरहका नमक। * अ० तक।

तलक़ीन-स्त्री० (अ०) शिक्षा, तामील।

तलख़-वि० (फा०) कड़वा; उग्र।

तलख़ी-स्त्री० (फा०) कड़ुवाहट; उग्रता।

तलना-स० क्रि० घी या तेलमें पकाना।

तलप*-पु० दे० 'तल्प'।

तलपना*-अ० क्रि० दे० 'तलफना'।

तलफ़-वि० (अ०) नष्ट, बरबाद, तबाह। * स्त्री० कष्ट।

तलफना-अ० क्रि० पीड़ासे व्याकुल होना, छटपटाना।

तलफ़ी-स्त्री० बरबादी, तबाही; हानि।

तलफ़्फ़ुज़-पु० (अ०) उच्चारण।

तलब-स्त्री० (अ०) माँग; इच्छा; आवश्यकता; चाह; बुलावा; वेतन। -गार-वि० माँगने या चाहनेवाला। -दार-वि० दे० 'तलबगार'। -दास्त-पु० समन। -नामा-पु० समन, अदालतमें हाज़िर होनेकी लिखित आज्ञा। मु० -करना-बुलाना।

तलबल*-वि० पूरा, लबालब।

तलबाना-पु० (फा०) अदालतमें जमा किया जानेवाला गवाहोंको तलब करनेका खर्च; समयपर मालगुजारी जमा न करनेपर लगनेवाला दंड, तावान।

तलबी-स्त्री० (फा०) बुलाहट; माँग।

तलबेली*-स्त्री० व्यग्रता; बेचैनी-'··तन परी तलबेली महा लायो मैन सरु है'-सुखदेव; तीव्र लालसा।

तलमलाना†-अ० क्रि० दे० 'तिलमिलाना'।

तलमलाहट†-स्त्री० दे० 'तिलमिलाहट'।

तलवकार-पु० (सं०) सामवेदकी एक शाखा; उससे संबद्ध एक उपनिषद्।

तलवा-पु० खड़े होने या चलनेमें पृथ्वीपर पड़नेवाला पैरका नीचेका भाग। मु० -(वे) चाटना-बहुत अधिक खुशामद करना। -सहलाना-खुशामद करना। -(वों)से आग लगना-बहुत अधिक क्रोध चढ़ना।

तलवार-स्त्री० लोहे (चाँदी आदि) का वह हथियार जिससे किसीका सिर या अन्य अंग काटनेके लिए प्रहार किया जाता है, खड्ग। मु०-का खेत-लड़ाईका मैदान। -की आँच-तलवारके वारका मुकाबला। -के घाट उतारना-तलवारसे मार डालना। -खींच लेना-लड़नेके लिए म्यानसे तलवार बाहर निकाल लेना। -सौंतना-वार करनेके लिए म्यानसे तलवार निकालना।

तलहटी-स्त्री० पहाड़के नीचेकी भूमि।

तलांगुलि-स्त्री० (सं०) पैरकी उँगली।

तला-पु० पेंदा; जूतेका नीचेका भाग। स्त्री० (सं०) तलत्राण।

तलाई-स्त्री० छोटा ताल; तलनेकी क्रिया या उजरत।

तलाक़-पु० (अ०) वैधानिक रीतिसे विवाह-संबंधका विच्छेद।

तलाची-स्त्री० (सं०) चटाई।

तलातल-पु० (सं०) सात अधोलोकोंमेंसे एक।

तलाफ़ी-स्त्री० हानिका बदला, क्षतिपूर्ति।

तलाब†-पु० दे० 'तालाब'।

तलाबेली-स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलामली*-स्त्री० दे० 'तलबेली'।

तलाव*-तालाब।

तलाश-स्त्री० (तु०) खोज; चाह।

तलाशना-स० क्रि० खोजना, ढूँढ़ना।

तलाशी-स्त्री० छिपायी या गुम की हुई वस्तुको ऐसी जगह खोजनेकी क्रिया जहाँ उसके छिपाकर रखे होनेका संदेह हो। मु० -देना-तलाशी लेनेवालेको घर-बार आदि ढूँढ़ने देना। -लेना-जिसपर किसी वस्तुके गुम करने या छिपानेका संदेह हो उसके घर-बार आदिमें उसकी खोज करना।

तलिका-स्त्री० (सं०) तोबड़ा; तंग।

तलित-वि० (सं०) तेल या घीमें भूना हुआ; पेंदेवाला; स्थिर बैठा हुआ। पु० भूना हुआ मांस।

तलित-स्त्री० (सं०) दे० 'तडित्'।

तलिन-वि० (सं०) विरल; दुर्बल; थोड़ा; स्वच्छ; निम्नस्थ; पृथक्। पु० शय्या, पलंग।

तलिम-पु० (सं०) वह भूमि जिसपर पत्थरके टुकड़े बिछाये गये हों; पाटन; पक्का फ़र्श; शय्या; खड्ग; वितान, चँदोवा।

तली-स्त्री० पेंदी; तलछट; हथेली; तलवा।

तलुन-पु० (सं०) वायु; युवा पुरुष, तरुण।

तलुनी-स्त्री० (सं०) तरुणी, युवती।

तले-अ० नीचे। -ऊपर-अ० एकके ऊपर दूसरा। मु० -की दुनिया ऊपर होना-महान् परिवर्तन होना।

तलेक्षण-पु० (सं०) शूकर।

तलेटी-स्त्री० पेंदी; तलहटी।

तलैया-स्त्री० छोटा ताल।

तलोदर-वि० (सं०) तोंदवाला।

तलोदरी-स्त्री० (सं०) पत्नी, भार्या।

तलोदा-स्त्री० (सं०) नदी।

तलौंछ-स्त्री० दे० 'तलछट'।

तलौवन-पु० (अ०) रंग बदलना; छिछोरपन; एक बातपर कायम न रहना, मत-परिवर्तन।

तल्क-पु० (सं०) वन, जंगल।

तल्ख़-वि० (फा०) कटु, कड़वा।

तल्ख़ी-स्त्री० कड़वापन, कटुता।

तल्प-पु० (सं०) शय्या, सेज, पलंग; अटारी; (ला०) पत्नी। -कीट-पु० खटमल। -ज-पु० नियोगसे उत्पन्न पुत्र।

तल्पक-पु० (सं०) पलंग बिछानेवाला नौकर।

तल्पन-पु० (सं०) हाथीकी पीठ या पीठका मांस।

तल्पल-पु० (स०) हाथीकी रीढ़।

तल्ल-पु० (सं०) बिल, छिद्र; तालाब।

तल्लज-पु० (सं०) श्रेष्ठतासूचक शब्द। वि० श्रेष्ठ।

तल्ला-पु० जूतेका वह भाग जो पैरके नीचे रहता है; (मकानकी) मंजिल; * सामीप्य।

तल्लिका-स्त्री० (सं०) ताली, कुंजी।

तल्ली-स्त्री० नाककी लौंग या करनफूलको नीचेसे फँसाये रखनेवाला एक पुर्जा या पेंच; (सं०) तरुणी; नौका; वरुणकी पत्नी।

तल्लीन-वि० (सं०) उसमें मग्न, लगा हुआ।

तल्व-पु० (सं०) गंधद्रव्यको रगड़नेसे निकलनेवाली सुगंध।

तल्वकार-पु० (सं०) सामवेदकी एक शाखा।

तवँचुर*-पु० मुर्गा।

तव-सर्व० (सं०) तुम्हारा।

तवक्क़ा-पु० (अ०) आशा, उम्मेद, भरोसा।

तवक्कुफ़-पु० (अ०) देर; ढील।

तवक्षीर-पु० (सं०) तीखुर।

तवज्जुह-स्त्री० (अ०) किसीकी ओर रुख करना, ध्यान देना।

तवना*-अ० क्रि० दे० 'तयना'।

तवनी-स्त्री० छोटा तवा, तई।

तवराज-पु० (सं०) यवासशर्करा।

तवा-पु० रोटी सेंकनेका एक गोल छिछला पात्र; चिलमपर रखकर तंबाकू पीनेका गोल ठीकरा; छातीके बचावका साधन जो तवेके आकारका होता है-'योधा झिलमटोप तवे चढ़ाये हुए थे'-मृग०। मु० -सिरसे बाँधना-सिरपर चोट सहनेके लिए प्रस्तुत होना। -(वे) की बूँद-आवश्यकतामे बहुत कम; क्षणस्थायी।

तवाख़ीर-पु० वंसलोचन।

तवाज़ा-स्त्री० (अ०) आदर-सत्कार; सम्मान; दावत।

तवाना–स० क्रि० गरम कराना; † कोई चीज चिपकाकर किसी पात्रका मुँह बंद करवाना। वि० (फ़ा०) मोटा-ताजा।

तवायफ़–स्त्री० (अ०) रंडी, वेश्या (तायफ़ाका बहु०, पर हिंदीमें एकवचनमें प्रयुक्त)।

तवारा–पु० जलन, ताप।

तवारीख़–स्त्री० (अ०) इतिहास।

तवालत–स्त्री० (अ०) लंबाई; विस्तार; झंझट, झमेला।

तविष–पु० (सं०) स्वर्ग; समुद्र; व्यवसाय; शक्ति। वि० बलवान, शक्तिशाली; पूज्य; उत्साही।

तविषी–स्त्री० (सं०) शक्ति; पृथ्वी; नदी; इंद्रकी एक पुत्री।

तवी†–स्त्री० दे० 'तई'; छोटा तवा।

तवीष–पु० (सं०) स्वर्ग; समुद्र; सोना।

तशख़ीस–स्त्री० (अ०) जाँच-पडताल; निश्चय; रोगका निदान; लगान निर्धारित करनेकी क्रिया।

तशद्दुद–पु० (अ०) आक्रमण करना; सख्ती, ज्यादती।

तशरीफ़–स्त्री० (अ०) इज्जत करना; महत्त्व; आदर, सम्मान; बुजुर्गी। मु० **–रखना**–विराजना, आसनस्थ होना। **–लाना**–पधारना। **–ले जाना**–चला जाना।

तशरीह–स्त्री० (अ०) व्याख्या।

तश्त–पु० (फ़ा०) थाली, परात जैसा हलका, छिछला बरतन।

तश्तरी–स्त्री० छोटी रकाबी।

तष्ट–वि० (सं०) छीला हुआ; दला हुआ।

तष्टा(ष्ट)–पु० (सं०) छीलनेवाला, बढ़ई, रथकार; विश्वकर्मा; एक आदित्य।

तष्टी*–स्त्री० एक तरहकी रकाबी।

तस*–वि० वैसा। अ० वैसे ही।

तसकीन–स्त्री० (अ०) सांत्वना, तसल्ली।

तसदीक़–स्त्री० (अ०) प्रमाणित करना, पुष्टि, समर्थन।

तसदीह–स्त्री० पीड़ा, कष्ट।

तसद्दुक़–पु० (अ०) क़ुर्बानी; भक्ति; दान, खैरात।

तसनीफ़–स्त्री० (अ०) ग्रंथरचना; साहित्यिक कृति।

तसफ़ीया–पु० (अ०) परिष्कार; समझौता; फ़ैसला।

तसबी–स्त्री० दे० 'तसबीह'।

तसबीह–स्त्री० (अ०) माला, सुमिरनी।

तसमा–पु० (फ़ा०) चमड़े या सूतकी चौड़ी पट्टी जो किसी वस्तुको कसनेके काम आती है।

तसर–पु० (सं०) दे० 'टसर'; जुलाहोंकी ढरकी।

तसला–पु० कटोरेकी शक्लका कुछ बड़ा और गहरा बरतन।

तसली–स्त्री० छोटा तसला।

तसलीम–स्त्री० (अ०) अभिवादना; अंगीकार करनेकी क्रिया।

तसल्ली–स्त्री० (अ०) ढाढ़स, दिलासा, सांत्वना।

तसवीर–स्त्री० (अ०) चित्र।

तसू–पु० इमारती कामकी एक माप।

तस्कर–पु० (सं०) चोर; एक शाक; मदन वृक्ष; कान; दो देशों या प्रदेशोंकी सीमापर चुंगी आदि दिये बिना चोरीसे माल पहुँचाने या ले आनेवाला (स्मगलर)। **–वृत्ति**–पु० पाकेटमार। **–व्यापार**–पु० चोरीसे या अवैध रूपसे माल मँगाने या भेजनेका व्यापार। **–स्नायु**–पु० काकनासा, कौवाठोंठी।

तस्करी–स्त्री० (सं०) चोरकी स्त्री; चोरी करनेवाली स्त्री; उग्र स्वभावकी स्त्री। (हि०) चोरी; चोरीसे सीमापार माल ले जानेकी क्रिया। वि० तस्कर संबंधी; चोरीसे लाया हुआ (माल)।

तस्थु–वि० (सं०) स्थावर, अचल।

तस्वीर–स्त्री० दे० 'तसवीर'।

तहँ, तहँवाँ*–अ० वहाँ।

तह–स्त्री० (फ़ा०) परत; किसी चीजका बिलकुल नीचेका भाग। **–ख़ाना**–पु० जमीनके नीचे बना हुआ कमरा या घर। **–ज़र्द, दर्ज़**–वि० बिलकुल नया (कपड़ा आदि), जिसकी तह न खुली हो। **–नशीं**–वि० पानी आदिमें नीचे बैठनेवाली (चीज)। **–निशाँ**–पु० तलवारके कब्ज़ेपर होनेवाला सोने आदिका काम। **–पेच**–पु० पगड़ीके नीचे सिरमें लपेटा जानेवाला कपड़ा। **–पोशी**–स्त्री० साड़ीके नीचे पहननेका पायजामा। **–बंद**–पु० लुंगी जो प्रायः मुसलमान पहनते हैं। **–बाज़ारी**–स्त्री० वह बँधी हुई रकम जो जमींदार या ठेकेदार बाजारमें सौदा बेचनेवालोंसे वसूल करता है। **–मत**–पु० लुंगी। **–(हो) बाला**–अ० उलट-पुलट। मु० **–देना**–इत्र तैयार करनेमें जमीन देना। **–(हे) दिलसे**–सच्चे दिलसे।

तहक़ीक़–स्त्री० (अ०) असलियत मालूम करना, किसी वस्तुके सम्बन्धमें सचाईकी खोज करना, जाँच-पड़ताल।

तहक़ीक़ात–स्त्री० किसी मामले या घटनाके विषयमें सरकारकी ओरसे होनेवाली जाँच-पड़ताल; दे० 'तहक़ीक़'। मु० **–आना**–किसी मामले या घटनाकी जाँचके लिए विशेष अधिकारीका आना।

तहज़ीब–स्त्री० (अ०) सभ्यता, शिष्टता। **–याफ़्ता**–वि० सभ्य, शिष्ट।

तहना*–अ० क्रि० तपना; क्रुद्ध होना।

तहम्मुल–पु० (अ०) सब्रके साथ सहना, बर्दाश्त।

तहरी–स्त्री० खिचड़ी जो चावलमें चना, मटर आदि डालकर बनायी गयी हो।

तहरीक–स्त्री० (अ०) गति; उत्तेजन ; उसकाना, बढ़ावा देना।

तहरीर–स्त्री० (अ०) लिखावट, लिखाई, लिखनेका ढग; लिखित प्रमाण; लिखनेकी उजरत।

तहरीरी–वि० लिखित, लिपिबद्ध।

तहलका–पु० (अ०) खलबली, बहुत बड़ी हलचल।

तहलील–स्त्री० (अ०) अभिशोषण, पाचन, हज़म।

तहवाँ*–अ० वहाँ।

तहवील–स्त्री० (अ०) बदलना; हवाले करना; अमानत; किसी मदका रुपया जो किसीके पास जमा हो। **–दार**–पु० वह जिसके पास किसी मदका रुपया जमा रहता हो।

तहसनहस–वि० बरबाद, सर्वथा नष्ट।

तहसील–स्त्री० (अ०) वसूल करनेकी क्रिया; मालगुजारी वसूल करना; मालगुजारी जो किसी विशेष प्रदेशसे उगाही जाती है; जिलेका वह भाग जो तहसीलदारके अधीन रहता है; तहसीलदारकी कचहरी। **–दार**–पु० सरकारी मालगुजारी वसूल करनेवाला; तहसीलका मुख्य अधिकारी। **–दारी**–स्त्री० तहसीलदारका पद; तहसीलदारका काम। **–वार**–अ० एक-एक तहसील करके।

तहसीलना–स० क्रि० मालगुजारी, चंदा आदि वसूल करना।

तहाँ–अ० वहाँ।

तहाना–स० क्रि० तह लगाना, लपेटना।

तहाशा–पु० (अ०) परवाह, डर, भय। (दे० बे-तहाशा)।

तहिया*–अ० उस दिन; उस समय।

तहियाना–स० क्रि० तह करना।

तहीं–अ० वहीं।

तही–स्त्री० तह; एकके ऊपर एक रखी हुई वस्तुओंका ढेर; जमा हुआ थक्का।

ताईं*–अ० तक; वास्ते, निमित्त; के प्रति; पास।

ताँगा–पु० पीछेकी ओर लटकी एक प्रकारकी गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है।

तांडव–पु० (सं०) पुरुषोंका नृत्य; शिवका उग्र नृत्य; एक तृण; उग्र तथा औद्धत्यपूर्ण क्रिया कलाप। **–तालिक**–पु० नंदीश्वर। **–प्रिय**–पु० शिव।

तांडि–पु० (सं०) (तंडिमुनिकृत) नृत्यशास्त्र।

तांड्य–पु० (सं०) सामवेदका एक ब्राह्मणग्रंथ।

तांत–वि० (सं०) श्रांत, थका हुआ; कष्टयुक्त; मुरझाया हुआ; जिसके अंतमें 'त' हो।

ताँत–स्त्री० भेड़-बकरी आदिके चमड़े या नसोंको बटकर बनायी हुई धागे जैसी वस्तु, तंती; धनुषकी डोरी; जुलाहोंका राछ नामक औजार।

ताँतड़ी–स्त्री० ताँत।

तांतव–वि० (सं०) तंतुओंसे बना हुआ। पु० सूत कातना; बुनना; जाल; बुनकर तैयार किया हुआ कपड़ा।

ताँतवा–पु० आँत उतरनेका रोग।

ताँता–पु० अटूट पाँत या सिलसिला; कतार। मु० **–लगना**–तार न टूटना, एकके बाद एकका इस तरह आना कि पंक्ति भंग न हो।

ताँतिया–वि० ताँत जैसा दुबला-पतला।

ताँती–स्त्री० पंक्ति; सिलसिला। पु० जुलाहा।

तांतुवायि, तांतुवाय्य–पु० (सं०) जुलाहेका लड़का।

तांत्रिक–पु० (सं०) शास्त्रतत्त्वज्ञ; तंत्रशास्त्रका ज्ञाता; तंत्रका प्रयोग करनेवाला; एक प्रकारका सन्निपात। वि० तंत्र-संबंधी।

ताँबई–वि० ताँबेके रंगका। पु० ताँबे जैसा रंग।

ताँबा–पु० लाल रंगकी एक प्रसिद्ध धातु।

ताँबिया–वि० ताँबेके रंगका; ताँबेका। पु० एक तरहका बरतन।

तांबूल–पु० (सं०) पान (पत्ता या बीड़ा)। **–करंक**–पु०,**–पेटिका**–स्त्री० पान रखनेका पात्र, पनडब्बा। **–द,–धर**–पु० पान रखने और बनाकर देनेवाला नौकर। **–पत्र**–पु० पानका पत्ता; पानके-से पत्तोंवाली एक लता, पिंडालू, सुथनी नामका कंद। **–राग** पु० मसूर; पान खानेसे उत्पन्न लाली। **–वल्ली**–स्त्री० पानकी बेल, नागवल्ली। **–वाहक**–पु० पान खिलानेवाला और साथ-साथ पान लेकर चलनेवाला। **–वीटिका**–स्त्री० पानका बीड़ा।

तांबूलिक–पु० (सं०) पान बेचनेवाला, तमोली।

तांबूली–स्त्री० (सं०) पानकी बेल।

तांबूली(लिन्)–पु० (सं०) पान बनाकर देनेवाला; पान बेचनेवाला। वि० तांबूल-संबंधी।

ताँवरा–पु० दे० 'ताँवरी'।

ताँवरी*–स्त्री० झाँई, चक्कर, मूर्च्छा; जूड़ी; ज्वर।

ताँसना*–स० क्रि० धमकाना; डराना; डाँटना; तंग करना।

ता–प्र० (सं०) एक भाववाचक प्रत्यय। अ० (फा०) तक; *तो। * सर्व०, वि० उस।

ताईं*–अ० दे० 'ताँईं'।

ताई–स्त्री० जेठी चाची; हलका ज्वर; ताप, आग; जलेबी आदि बनानेकी छिछली कड़ाही, तई।

ताईद–स्त्री० (अ०) समर्थन, पुष्टि। पु० मुंशी, नायब।

ताउ*–पु० ताप, ताव; क्रोध; आवेश।

ताउल–पु० उतावली, जल्दी।

ताऊ–पु० पिताका बड़ा भाई। मु० **बछियाका**=अत्यंत मूर्ख व्यक्ति।

ताऊन–पु० (अ०) प्लेगकी बीमारी।

ताऊस–पु० (अ०) मोर; कमानीसे बजाया जानेवाला सितार जैसा एक बाजा जिसपर मोरकी शक्ल बनी होती है; एक तरहका इसराज।

ताऊसी–वि० मोर जैसा; मोरके रंगका।

ताक–स्त्री० ताकनेकी क्रिया; अचल दृष्टि; अवसरकी प्रतीक्षा, घात; खोज, टोह। **–झाँक**–स्त्री० किसीकी प्रतीक्षा या खोजमें रह-रहकर ताकने या झाँकनेकी क्रिया; छिपकर बुरी नीयतसे ताकनेकी क्रिया। मु० **–में रहना**–मौका देखते रहना। **–लगाना**–मौका देखना, घातमें रहना।

ताक़–पु० (अ०) ताखा, आला। वि० जो दोसे विभाजित न हो सके–जैसे एक, तीन, पाँच आदि; अद्वितीय। **–जुफ्त**–पु० जुएका एक खेल जिसमें मुट्ठीमें कौड़ियाँ आदि लेकर उनकी सम या विषम संख्या पूछते हैं। मु० **–पर धरना या रखना**–काममें न लाना। **–भरना**–देवस्थानपर मनौती चढ़ाना (मुसल०)।

ताक़त–स्त्री० (अ०) बल, शक्ति। **–वर**–वि० बलवान्, शक्तिशाली।

ताकना–स० क्रि० देखना; स्थिर दृष्टिसे या बुरे भावसे देखना; नजर रखना; घातमें रहना; चाहना; निश्चय करना; ताड़ लेना।

ताकरी–स्त्री० नागरीसे मिलती-जुलती एक लिपि।

ताकां†–वि० तिरछे ताकनेवाला।

ताकि–अ० (फा०) इसलिए कि, जिसमें, जिससे।

ताकीद–स्त्री० (अ०) किसी कार्यके लिए बार-बार चेतानेकी क्रिया।

ताक्षण्य, ताक्षण–पु० (सं०) बढ़ईका लड़का।

ताखा†–पु० दे० 'ताक़'।

ताखड़ी–स्त्री० तराजू ('तखरिया'–बुंदेल)।

ताखा–पु०, वि० आला, ताक़।

ताखी–वि० जिसकी आँखें एक जैसी न हों।

ताग*–पु० तागा। स्त्री० तागनेकी क्रिया। **–पाट**–पु० रेशमका एक विशेष धागा जिसे विवाहके समय वरका बड़ा भाई वधूको पहनाता है। (कहीं-कहीं इसमें सोनेके जंतर भी पिरोये जाते हैं।) मु० **–पाट डालना**–वरके बड़े भाईका वधूको तागपाट पहनाना या देना।

तागड़ी–स्त्री० करधनी, क्षुद्रघंटिका।

तागना–स० क्रि० रजाई आदिमें दूर-दूरपर सिलाई करना जिससे रुई न खिसके।

तागा–पु० सूत, डोरा।

ताज–पु० (फा०) राजाका मुकुट; कलगी; शिखा; गंजीफेका एक रंग; चाबुक; छज्जा; बुर्जी; ताजमहलका संक्षिप्त नाम। **–ख़रुस**–पु० मुर्गेके सिरपरकी कलगी। **–दार**–पु० बादशाह। वि० ताजके ढंगका। **–पोशी**–स्त्री० राज्याभिषेक; सिंहासनारूढ़ होने या ताज धारण करनेके समयका उत्सव। **–बख्श**–पु० वह सम्राट् जो बादशाह बनाये या हारे हुए बादशाहको फिर बादशाह बनाये। **–बीबी**–स्त्री० शाहजहाँकी प्रसिद्ध बेगम मुमताजमहल जिसके मकबरेके रूपमें ताजमहलका निर्माण हुआ। **–महल**–पु० शाहजहाँकी बेगम मुमताजमहलका आगरास्थित प्रसिद्ध रौजा (इसकी गणना संसारके सप्ताश्चर्योंमें है)।

ताज़क–पु० (फा०) एक ईरानी जाति; ज्योतिषका अरबीमें लिखित एक ग्रंथ।

ताज़गी–स्त्री० (फा०) ताजा होनेका भाव; नयापन; सूखापन या कुम्हलाहटका अभाव; श्रांति या शैथिल्यका उलटा।

ताजन, ताजना*–पु० दे० 'ताज़ियाना'; उत्तेजन देनेवाली वस्तु; चाबुक; दंड।

ताज़ा–वि० (फा०) हरा-भरा; जो सूखा या मुरझाया हुआ न हो; पौधे या पेड़से तत्कालका तोड़ा हुआ (पुष्प, फलादि); तुरतका तैयार किया हुआ; तुरतका निकाला हुआ; जो अधिक दिनोंका या बासी न हो।

ताज़िया–पु० (अ०) बाँसकी तिल्लियों, रंगीन कागजों आदिका बना हुआ वह ढाँचा जो इमाम हसन और इमाम हुसेनके मकबरोंकी आकृतिका बनाया और नियत स्थानपर दफनाया जाता है। मु० **–ठंढा होना**–ताजियेका दफनाया जाना; किसी बड़े आदमीका देहांत होना।

ताज़ियाना–पु० (फा०) चाबुक, कोड़ा।

ताज़ी–वि० (फा०) अरबी, अरबका। पु० अरबी घोड़ा; शिकारी कुत्ता। स्त्री० अरबी भाषा।

ताज़ीम–स्त्री० (अ०) दूसरेको बड़ा समझना; बड़ोंके प्रति आदर-भाव प्रदर्शित करना।

ताज़ीमी सरदार–पु० (फा०) वह सरदार जिसकी ताजीम बादशाह भी करे।

ताज़ीर–स्त्री० (अ०) दंड, सजा।

ताज़ीरात–स्त्री० (अ०) 'ताज़ीर'का बहु०। **–हिंद**–स्त्री० भारतमें प्रयोगमें आनेवाले फौजदारी कानूनोंका संग्रह, भारतीय दंडविधान।

ताज़ीरी–वि० दंडात्मक; दंडरूपमें तैनात या लगाया हुआ। (पुलिस, कर आदि)।

ताज्जुब–पु० दे० 'तअज्जुब'।

ताटंक–पु० (सं०) कानका एक आभूषण; एक छंद।

ताटस्थ्य–पु० (सं०) सामीप्य; तटस्थता, निरपेक्षता, उदासीनता।

ताडंक–पु० (सं०) दे० 'ताटंक'।

ताड–पु० (सं०) ताड़न, 'दस लौं ताड़ विशेष'। आघात; शब्द, ध्वनि; पर्वत; तृणादिका पूला। **–घ,–घात**–पु० हथौड़ा चलानेवाला, लोहार। **–पत्र**–पु० ताटंक।

ताड़–पु० एक लंबा वृक्ष जिसमें शाखाएँ नहीं होतीं, सिर्फ सिरेपर पत्तियाँ होती हैं।

ताडक–पु० (सं०) वधिक, जल्लाद। वि० ताडन करनेवाला।

ताडका–स्त्री० (सं०) एक राक्षसी जिसे रामने मारा था। –फल –पु० बड़ी इलायची।

ताडकायन–पु० (सं०) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।

ताडकारि–पु० (सं०) (ताड़काको मारनेवाले) रामचंद्र।

ताडकेय–पु० (सं०) ताडकाका पुत्र, मारीच।

ताडन–पु० (सं०) आघात; मार; फटकार; अनुशासन; दीक्षाके मंत्रका एक संस्कार; खंड ग्रहण; गुणन।

ताडना–स्त्री० (सं०) मार; आघात; मारने-पीटनेकी क्रिया; डाँट-डपट।

ताड़ना–स० क्रि० भाँपना, जान लेना, समझ लेना; सुधारके उद्देश्यसे मारना; सजा देना; डाँटना-डपटना, कष्ट देना; दुर्वचन कहना।

ताडनी–स्त्री० (सं०) कोडा, चाबुक।

ताडनीय–वि० (सं०) दंडनीय।

ताडि, ताडी–स्त्री० (सं०) एक छोटी जातिका ताड़; एक आभूषण।

ताडित–वि० (सं०) जिसपर मार पड़ी हो; जिसे दंड दिया गया हो।

ताड़ी–स्त्री० ताड़के वृक्षसे निकलनेवाला सफेद मादक रस; ध्यान, समाधि, तारी।

ताडुल–वि० (सं०) मारने-पीटनेवाला।

ताड़ू–वि० ताड़ जानेवाला।

ताड्य–वि० (सं०) ताडनाके योग्य; दंडनीय।

ताड्यमान–वि० (सं०) जिसपर मार पड़ती हो। पु० लकड़ीसे बजाया जानेवाला एक तरहका ढोल।

तात–पु० (सं०) पिता; आदरणीय व्यक्ति; एक संबोधन जो बराबरके लोगों या अपनेसे छोटोंके लिए प्रयुक्त होता है। वि० पूज्य; प्रशस्त; * तप्त, गरम। –गु–पु० चाचा। वि० पिताके लिए उपयुक्त; पैतृक।

तातन–पु० (सं०) खंजन।

तातल–पु० (सं०) रोग; लोहेकी गदा; ताप; पकाना, पक्कापन। वि० पितृतुल्य; पैतृक; संबंधी; उष्ण।

ताता*–वि० तप्त, गरम।

ताताथेई–स्त्री० नृत्यका एक बोल; नृत्य।

तातार–पु० (फा०) मध्य एशियाका एक देश।

तातारी–पु० तातार देश-निवासी; तातारकी भाषा। वि० तातार देशका।

ताति–पु० (सं०) पुत्र। स्त्री० वंशपरंपरा।

तातील–स्त्री० (अ०) अवकाश, छुट्टी।

तात्कालिक–वि० (सं०) तत्कालका, उसी या उस समयका।

तात्त्विक–वि० (सं०) तत्त्व-संबंधी; जिसमें तत्त्वपर विशेष ध्यान दिया गया हो; वास्तविक।

तात्पर्य–पु० (सं०) आशय, अभिप्राय, मंशा।

तात्पर्यार्थ–पु० (सं०) वाक्यार्थसे भिन्न अर्थ जो वाक्य-विशेषमें वक्ताका अभिप्राय समझा जाय।

तात्स्थ्य–पु० (सं०) एक वस्तुमें दूसरी वस्तुके स्थित रहनेका भाव।

ताथेई–स्त्री० दे० 'ताताथेई'।

तादर्थ्य–पु० (सं०) उद्देश्यकी एकरूपता; अर्थकी समानता; उद्देश्य।

तादात्म्य–पु० (सं०) अभिन्नता, दो वस्तुओंके परस्पर अभिन्न होनेका भाव। –संबंध–पु० अभेद संबंध।

तादात्विक–वि० (सं०) (राजा) जिसका कोष रिक्त रहा करता हो।

तादाद–स्त्री० (अ०) वस्तुओं, व्यक्तियोंकी कुल संख्या।

तादृश–वि० (सं०) वैसा, उसके समान।

ताधा–स्त्री० 'ताताथेई' जैसा नृत्यका एक बोल।

तान–स्त्री० संगीतमें स्वरका विस्तार; ताननेकी क्रिया या भाव; खिँचाव। पु० (सं०) सूत्र; विस्तार; ज्ञानका विषय। –तरंग–स्त्री० (हिं०) तानकी लहर। –पूरा–पु० (हिं०) सितारके आकारका एक बाजा जो गाते समय स्वर देनेके काम आता है।

तानना–स० क्रि० खींचकर कड़ा करना; फैलाना; खड़ा करना; समेटी हुई चीजको फैलाकर व्यवहारयोग्य स्थितिमें लाना; खींचकर कुछ अंतरपर स्थित दो आधारोंमें फँसाना; खिंचाव पैदा करना; किसीको लक्ष्य करके मारनेके लिए हाथ या अस्त्र आदि उठाना। मु० तानकर सोना–निश्चित होकर सोना।

तानबान*–पु० ताना-बाना।

तानव–पु० (सं०) तनुता, कृशता।

तानसेन–पु० अकबरके दरबारका एक प्रसिद्ध गायक।

ताना–पु० करघेमें लंबाईके बल फैलाया हुआ सूत; (अ०) व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात। * स० क्रि० तपाना; परीक्षाके लिए तपाना; ढाँकना, मुँह बंद करना। –पाई–स्त्री० घूम-फिरकर आते-जाते रहना। –बाना–पु० लंबाईके बल ताने और चौड़ाईके बल बुने जानेवाले तागे। मु०–मारना–चुटीली बात कहना।

तानारीरी–स्त्री० नौसिखियेका गाना।

तानाशाह–पु० एक बादशाहका उपनाम; (ला०) स्वेच्छाचारी शासक।

तानाशाही–स्त्री० अधिनायकत्व; स्वेच्छाचारिता।

तानी†–स्त्री० बुनावटमें लंबाईके बल रखा हुआ सूत; * बंद, तनी।

तानूर–पु० (सं०) पानीका भँवर।

तान्व–पु० (सं०) औरस पुत्र।

ताप–पु० (सं०) गर्माहटके लिहाज़से किसी वस्तु की दशा—वह दशा जो एक वस्तुसे दूसरी वस्तुमें ऊष्माके प्रवाह की दिशा निर्धारित करती है। ऊष्माका प्रवाह सदैव ऊँचे तापवाली वस्तुसे नीचे ताप की वस्तुमें होता है; उष्णता, गरमी; ज्वर; दुःख; मानसिक व्यथा, आधि। –क्रम–पु० शरीर या वायुमंडलकी उष्णताका उतार-चढ़ाव; (टेंपरेचर) वस्तुओंके तापका क्रम या स्थिति सूचित करनेवाली संख्या। –तरंग–स्त्री० (हीटवेव्ह) अत्यंत गरम हवाकी लहर जो कुछ स्थानोंसे अन्य स्थानोंकी ओर प्रवाहित होती जान पड़े। –तिल्ली–स्त्री० (हिं०) प्लीहा। –त्रय–पु० आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक दुःख। –द–वि० कष्टकारक। –दुःख–पु० दुःखका एक भेद (योगदर्शन)– –नियंत्रण–पु० (एयर कंडीशनिंग) दे० 'वातानुकूलन'। नियंत्रित–वि० (एयरकंडीशंड) जिसके भीतरका तापमान कृत्रिम उपायों द्वारा समस्थितिमें रखा गया हो। –मान–पु० थरमामीटर द्वारा मापी गयी शरीर या वायुमंडलके तापकी मात्रा। –मापक यंत्र–पु० थरमामीटर। –लेखी (खिन्)–पु० (थर्मोग्राफ) वह तापमापक यंत्र जिसमें तापका घटाव-बढ़ाव स्वयमेव अंकित हो जाता है। –विकिरण–पु० (रेडियेशन ऑफ हीट) तापलहरियोंका किसी एक केंद्रसे चारों दिशाओंमें प्रसारित या विकसित किया जाना। –वैद्युत युग्म–पु० (थर्मोकपुल) विशेष प्रकारका थर्मामीटर जो दो विभिन्न धातुओंके बने दो तारोंका बना होता है। –सह–वि० जिसमें अधिक ताप सहने की क्षमता हो (हीटप्रूफ)। –स्वेद–पु० उष्णता पहुँचनेसे उत्पन्न पसीना। –हर–वि० तापनाशक। –हरी–स्त्री० एक व्यंजन।

तापक–वि० (सं०) तापोत्पादक। पु० (हीटर) (कमरे आदिमें) गरमी पहुँचाने या उत्पन्न करनेका यंत्र। रजोगुण; ज्वर।

तापती–स्त्री० (सं०) सूर्यकी कन्या; एक नदी।

तापतोटी*–तापजन्य व्याकुलता–'परम मरम अपरस तापतोटीके' –घन०।

तापत्य–पु० (सं०) अर्जुनका एक नाम। वि० तापती-संबंधी।

तापन–पु० (सं०) सूर्य; ग्रीष्म ऋतु; कामदेवका एक बाण; सूर्यकांत मणि; आकका पेड़, मदार; एक नरक; सुवर्ण; जलानेवाला; कष्ट देनेवाला। वि० तापकारक; कष्टदायक।

तापना–अ० क्रि० आँच या तापसे शरीर गरमाना। स० क्रि० धूनी आदिके सामने बैठकर ताप सहना (धूनी–); नष्ट करना, उड़ाना; * तपाना।

तापनीय–पु० (सं०) एक उपनिषद्; एक निष्क वजनका सोना। वि० सुवर्णमय, सुनहला।

तापमापी–पु० दे० 'तापमापक यंत्र' ('ताप'के साथ)।

तापश्चित–पु० (सं०) एक यज्ञ।

तापस–पु० (सं०) तपस्वी; बगला; तेजपात; दौना। वि० तपस्या या तपस्वी-संबंधी; तपस्वी। –ज–पु० तेजपात। –तरु,–द्रुम–पु० इंगुदी, हिंगोट। –प्रिय–पु० प्रियाल वृक्ष। वि० जो तपस्वियोंको प्रिय लगे; जिसे तपस्वी प्रिय हों। –प्रिया–स्त्री०

दाख, मुनक्का । **–व्यंजन**–पु० साधुके वेशमें घूमनेवाला गुप्तचर (कौ०) ।

तापसेक्षु–पु० (सं०) एक प्रकारकी ईख ।

तापसेष्टा–स्त्री० (सं०) दाख, मुनक्का ।

तापस्य–पु० (सं०) तापस धर्म ।

तापावरोधक–पु० (सं०) तापका प्रभाव रोकनेवाला ।

तापिंछ–पु० (सं०) तमाल; माक्षिक धातु ।

तापिंज–पु० (सं०) दे० 'तापिच्छ' ।

तापिच्छ–पु० (सं०) तमाल वृक्ष ।

तापित–वि० (सं०) तपाया हुआ; पीड़ित ।

तापी–स्त्री० (सं०) सूर्यपुत्री ताप्ती, ताप्ती नदी; यमुना नदी । **–ज**–पु० माक्षिक धातु ।

तापी(पिन्)–वि० (सं०) आधिसे पीड़ित; तप्त करनेवाला; गरम ।

ताप्ती–स्त्री० तापती नदी ।

ताप्य–पु० (सं०) माक्षिक धातु ।

ताफ्ता–पु० (फा०) धूपछाँ रेशमी कपड़ा ।

ताब–स्त्री० (फा०) ताप, गरमी; चमक; हिम्मत; सामर्थ्य; मजाल; धैर्य ।

ताबड़तोड़–अ० लगातार; तुरंत ।

ताबूत–पु० (अ०) मुरदा ले जानेका संदूक ।

ताबे–वि० वशवर्ती, अधीन । **–दार**–वि० आज्ञाकारी । पु० नौकर । **–दारी**–स्त्री० सेवा; नौकरी ।

ताम–पु० (सं०) भयका कारण, भीषण वस्तु; दोष, त्रुटि; चिंता; उद्वेग; ग्लानि; इच्छा; क्लांति;* अँधेरा; क्रोध–'कंसको निर्वंश ह्वै है करत इनपर ताम'–सूर । –वि० भयानक; व्याकुल ।

तामजान, तामझाम, तामदान–पु० एक तरहकी खुली पालकी ।

तामड़ा–वि० ताँबेके रंगका । पु० अधिक पका हुआ ईंटा; एक तरहका मोटा कागज ।

तामर–पु० (सं०) घी; पानी ।

तामरस–पु० (सं०) कमल; सुवर्ण; ताँबा; धतूरा; एक छंद ।

तामरसी–स्त्री० (सं०) कमलोंवाला ताल या सरोवर ।

तामलकी–स्त्री० (सं०) भूम्यामलकी ।

तामलूक–पु० बंगालके अंतर्गत एक भूखंड जिसका प्राचीन नाम ताम्रलिप्त था ।

तामलेट, तामलोट–पु० टीनका वह पात्र जिसपर चीनी मिट्टी आदिकी कलई हो ।

तामस–पु० (सं०) आततायी, खल; उल्लू; चतुर्थ मनुका नाम; राहुका एक पुत्र; सर्प; क्रोध; चिढ़; अज्ञान; अंधकार । वि० जिसमें तमोगुणकी प्रधानता हो, तमोगुणसे युक्त; ज्ञानहीन; कुटिल; पापी; अँधेरा । **–कीलक**–पु० एक प्रकारके केतु जो राहुके पुत्र माने जाते हैं (इनकी संख्या तैंतीस है) ।

तामसिक–वि० (सं०) तमोगुण-संबंधी; अँधेरा ।

तामसी–स्त्री० (सं०) महाकाली; अँधरी रात; जटामासी; मायाविद्या जो मेघनादको शिवसे प्राप्त हुई थी । वि० स्त्री० तमोगुणवाली ।

तामियाँ†–वि० ताँबे जैसा, लाल, तामड़ा ।

तामिल–स्त्री० दे० 'तमिल' ।

तामिस्र–पु० (सं०) एक नरक; घृणा; द्वेष; क्रोध; असित पक्ष; एक राक्षस ।

तामीर–स्त्री० (अ०) मकान बनाना या मरम्मत करना; मकान, इमारत; निर्माण ।

तामीरात विभाग–पु० (पी० डब्लू० डी०) भवन-निर्माण-विभाग ।

तामील–स्त्री० (अ०) अमल करना; (हुक्म) बजा लाना; तलब किये गये व्यक्तिका समनपर हस्ताक्षर करना या अँगूठेका निशान लगाना ।

तामोल*–पु० दे० 'तांबूल' ।

ताम्मुल–पु० दे० 'तअम्मुल', सोचविचार; संकोच ।

ताम्र–पु० (सं०) ताँबा; एक प्रकारका कोढ । वि० ताँबेका बना हुआ; ताँबेकी तरह लाल रंगका । **–कर्णी**–स्त्री० पश्चिमके दिग्गज अंजनकी पत्नी । **–कार,–कुट्ट**–पु० ठठेरा, ताँबेके बरतन आदि बनाकर जीविकोपार्जन करनेवाला । **–कुंड**–पु० ताँबेका बना कुंड । **–कूट**–पु० एक क्षुप, तंबाकूका पौधा । **–कृमि,–क्रिमि**–पु० बीरबहूटी नामक कीड़ा । **–गर्भ**–पु० तुत्थ, तूतिया । **–चूड**–पु० मुर्गा; कुँकरौंधा । **–तुंड**–पु० एक तरहका बंदर । **–त्रपुज**–पु० पीतल । **–दुग्धा**–स्त्री० गोरखदुद्धी । **–द्रु**–पु० लाल चंदन । **–द्वीप**–पु० सिहल । **–पट्ट**–पु० दानपत्र आदि खुदवानेका ताँबेका पत्तर (प्राचीन कालमें इसका बहुत व्यवहार होता था); ताँबेकी चद्दर । **–पत्र**–पु० वे वृक्ष जिनके पत्ते लाल हों; दे० 'ताम्रपट्ट' । **–पर्ण**–पु० भारतका एक खंड । **–पर्णी**–स्त्री० दक्षिण भारतकी एक नदी । **–पल्लव**–पु० अशोक वृक्ष । **–पाकी (किन्)**–पु० पाकड़का पेड़ । **–पात्र**–पु० ताँबेका बरतन । **–पादी**–स्त्री० हंसपदी । **–पुष्प**–पु० कचनार । **–पुष्पिका**–स्त्री० निसोत । **–पुष्पी**–स्त्री० धातकी; धवका पेड़; पाटल; पाढ़रका पेड़ । **–फल**–पु० अंकोठ । **–फलक**–पु० ताँबेका पत्तर, ताम्रपट्ट । **–मुख**–वि० जिसका मुख ताँबेके रंगका हो । पु० यूरोपीय । **–मूला**–स्त्री० छुईमुई । **–मृग**–पु० एक तरहका लाल हिरन । **–युग**–पु० इतिहासका वह आरंभिक काल जब लोग ताँबेके औजार, पात्र आदि काममें लाते थे । **–योग**–पु० एक रासायनिक औषध । **–लिप्त**–पु० दे० 'तामलूक' । **–लेख**–पु० दे० 'ताम्रपत्र' । **–वर्ण**–वि० ताँबेके रंगका, रक्तवर्ण । पु० सिहल । **–वल्ली**–स्त्री० मजीठ । **–बीज**–पु० कुलथी । **–वृंत**–पु० कुलथी । **–वृक्ष**–पु० कुलथी; लाल चंदनका वृक्ष । **–शासन**–पु० ताम्रपट्टपर खुदा हुआ धर्मलेख आदि । **–शिखी (खिन्)**–पु० मुर्गा, कुक्कुट । **–सार**–पु० दे० 'ताम्रवृक्ष' । **–सारक**–पु० रक्त चंदनका वृक्ष; खैर, कत्था ।

ताम्रक–पु० (सं०) ताँबा ।

ताम्रा–स्त्री० (सं०) प्रजापति कश्यपकी एक पत्नी; सैंहली ।

ताम्राक्ष–पु० (सं०) कोकिल । वि० जिसकी आँखें लाल हों ।

ताम्राभ–पु० (सं०) रक्त चंदन । वि० लाल चमकवाला ।

ताम्रार्द्ध–पु० (सं०) काँसा ।

ताम्राश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) पद्मराग मणि ।

ताम्रिक–पु० (सं०) दे० 'ताम्रकार' ।

ताम्रिका–स्त्री० (सं०) घुँघची, गुंजा ।

ताम्रिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) लालिमा ।

ताम्री–स्त्री० (सं०) एक बाजा; जलघड़ीका पात्र ।

ताम्रेश्वर–पु० (सं०) ताँबेका भस्म (आ० वे०) ।

ताम्रोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) दे० 'ताम्रकार' ।

तायँ*–अ० से; तक ।

ताय*–पु० ताप; जलन; धूप । सर्व० उसको ।

तायदाद†–स्त्री० दे० 'तादाद' ।

तायना*–स० क्रि० तपाना; संताप पहुँचाना ।

तायनि*–स्त्री० तपन, जलन; पीड़ा ।

तायफ़ा–स्त्री० (अ०) वेश्या; वेश्या और उसके समाजियोंकी मंडली ।

ताया–पु० बापका बड़ा भाई, ताऊ ।

तार–पु० (सं०) अपने उपासकोंको तारनेवाला; ॐकार; महादेव; एक वानर; आबदार मोती; मोतीकी स्वच्छता; नदीतट, तीर (दिशावाची शब्दके साथ समास होनेपर 'तीर'का 'तार' हो जाता है, जैसे–'दक्षिणतार'); विष्णु; चाँदी; रक्षण; आठ सिद्धियोंमेंसे एक (सां०); पार करना; तारा; आँखकी पुतली; उच्च स्वर; सबसे ऊँचे स्वरमें गाया जानेवाला सप्तक; एक वर्णवृत्त । वि० उच्च; स्वच्छ; निर्मल; जिससे किरणें निकल रही हों । **–कूट**–पु० पीतल-चाँदी मिली नकली धातु । **–तंडुल**–पु० सफेद ज्वार । **–तार**–पु० एक गौण सिद्धि (सां०) । **–पट्टक**–पु० एक तरहकी तलवार । **–पतन**–पु० उल्कापात । **–पुष्प**–पु० कुंद पुष्प । **–माक्षिक**–पु० चाँदीके योगसे बनी एक उपधातु । **–वायु**–स्त्री० वह वायु जिससे जोरकी आवाज उठती हो । **–विमला**–स्त्री० दे० 'तारमाक्षिक' । **–शुद्धिकर**–पु० सीसा । **–सार**–पु० एक उपनिषद् । **–स्वर**–पु० उच्च स्वर । **–हार**–पु० सुंदर मोतियोंका

हार। **–हेमाभ**–पु० एक धातु।

तार–पु० तागेकी तरह गोल या चौकोर, कम मोटी, लोचदार वस्तु जो तपायी धातुओंको पीटकर या खींचकर बनायी जाती है; वह तार जिसके द्वारा बिजलीकी शक्तिसे समाचार भेजे जाते हैं; तार द्वारा भेजी हुई खबर; ताँता, अनवरत क्रम; नाप; युक्ति; सुभीता; सूत्र; ताल; करताल; तल; कानका एक गहना, ताटंक; ताड़। **–कमानी**–स्त्री० नगीना काटनेका धनुष् जैसा एक औजार जिसमें तारकी डोर लगी रहती है। **–कश**–पु० तार खींचनेवाला। **–कशी**–स्त्री० तार खींचनेका काम। **–घर**–पु० तार द्वारा संदेश भेजने या पानेका सरकारी दफ्तर। **–घाट**–पु० व्यवस्था, उपाय। **–तोड़**–पु० कारचोबी। **–बर्क़ी**–स्त्री० वह तार जिसके द्वारा बिजलीकी शक्तिसे समाचार भेजे जाते हैं। मु० **–तार करना**–धज्जियाँ उड़ाना। **–होना**–चिथड़े-चिथड़े हो जाना।

तारक–पु० (सं०) तारनेवाला; नक्षत्र; आँखकी पुतली; इंद्रका शत्रु एक दैत्य जिसे नपुंसकका रूप धारण कर विष्णुने मारा था; एक असुर जिसे कार्त्तिकेयने मारा था; कान; नौका; महादेव; भिलावाँ; तरनेका उपाय (हठयोग); कर्णधार, नाविक; रामका षडक्षर मंत्र (ॐ रामाय नमः); एक उपनिषद्; एक वर्णवृत्त; छपाईमें तारे जैसा चिह्न (*)। **–चिह्न**–पु० (ऐस्टरिस्क) पादटिप्पणी या अभिनिर्देशके लिए अथवा महत्त्व प्रदर्शित करनेके लिए छापे या लिपिमें प्रयुक्त तारा जैसा चिह्न (*)। **–जित्**–पु० कार्त्तिकेय। **–टोड़ी**–स्त्री० (हिं०) एक राग। **–तीर्थ**–पु० गया तीर्थ। **–ब्रह्म**–पु० रामका षडक्षर मंत्र।

तारका–स्त्री० (सं०) नक्षत्र; उल्का; आँखकी पुतली; बृहस्पतिकी स्त्रीका नाम; एक छंद।

तारकाक्ष–पु० (सं०) तारकासुरका बड़ा लड़का।

तारकामय–पु० (सं०) शिव।

तारकायण–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र।

तारकारि-पु० (सं०) कार्त्तिकेय।

तारकासुर-पु० (सं०) तारक नामक असुर।

तारकिणी–स्त्री० (सं०) तारोंसे युक्त रात्रि।

तारकित–वि० (सं०) तारोंसे खचित।

तारकी(किन्)–वि० (सं०) तारकोंसे युक्त।

तारकेश्वर–पु० (सं०) शिव; एक रसौषध (आ० वे०)।

तारकोल–पु० अलकतरा।

तारण–पु० (सं०) तारने या उद्धार करनेकी क्रिया; तारनेवाला; विष्णु; शिव; नौका; पार करना; विजय। वि० उद्धार करनेवाला; पार करानेवाला।

तारणी–स्त्री० (सं०) नौका; कश्यपकी एक पत्नी।

तारतम्य–पु० (सं०) तर और तमका भाव, दो वस्तुओंके परस्पर घट-बढ़कर होनेका भाव; न्यूनाधिक्यके अनुसार क्रम या सिलसिला।

तारत्व–पु० (पिच, इन साउण्ड) ध्वनिका वह गुण जो उसके सुरका तीखापन बतलाता है।

तारन–स्त्री० छत या छज्जेकी ढाल; कड़ियोंके नीचे रहनेवाला बाँस। * वि०, पु० तारनेवाला; उद्धार करनेवाला।

तारना-स० क्रि० पार करना; उद्धार करना; भवबंधनसे छुड़ाना; तैराना; ताड़ना; देखना।

तारपीन-पु० वारनिश, चित्रकारी, औषध आदिके काम आनेवाला चीड़के गोंदसे तैयार किया हुआ तेल।

तारयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) तारक, तारनेवाला।

तारल–वि० (सं०) अस्थिर, चंचल; लंपट। पु० विट।

तारल्य–पु० (सं०) तरल होनेका भाव; तरलता; कामुकता, लंपटता।

तारांकित–वि० (स्टार्ड) (वह शब्द, वाक्य, प्रश्न आदि) जिसके साथ सितारे (*)का चिह्न दिया गया हो। **–प्रश्न**–पु० विधानसभा आदिके अधिवेशनमें प्रश्नोत्तरके समय मौखिक उत्तर पानेकी दृष्टिसे पूछा गया प्रश्न।

तारा–पु० (सं०) रातको आकाशमें चमकनेवाला ज्योतिर्पिंड, नक्षत्र, सितारा; भाग्य; आँखकी पुतली; मोती; * (हिं०) ताला–'टरें टारें नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोहके तारे'–घन०। स्त्री० तंत्रोक्त दस महाविद्याओंमेंसे एक; बृहस्पतिकी पत्नी जिसे चन्द्रमाने भी कुछ दिनोंतक रख लिया था; बालिकी पत्नी जिसने पतिकी मृत्युके बाद सुग्रीवसे विवाह किया था। **–कुमार**–पु० अंगद। **–कूट**–पु० ज्योतिषमें विवाहके शुभाशुभ फलके ज्ञानके लिए विचारा जानेवाला एक कूट। **–गण**–पु० तारोंका समूह। **–ग्रह**–पु० सूर्य और चंद्रमाके अतिरिक्त पाँच छोटे ग्रहोंमेंसे एक। **–चक्र**–पु० तंत्रमें एक चक्र जिससे दीक्षाके मंत्रके शुभाशुभ फलका निर्णय किया जाता है। **–नाथ,–पति**–पु० चंद्रमा; बृहस्पति; बालि; सुग्रीव। **–पथ**–पु० आकाश। **–पीड**-पु० चंद्रमा; कश्मीरके एक प्राचीन राजा। **–भूषा**–स्त्री० रात्रि। **–मंडल**-पु० तारोंका समूह; एक कपड़ा। **–मंडूर**–पु० एक प्रकारका मंडूर। **–मृग**-पु० मृगशिरा नक्षत्र। **–वर्ष**–पु० टूटनेवाले तारे। मु० **–(रे) गिनना**–नींद न आना, रातभर जागते रहना। **–तोड़ लाना**–कोई कठिन काम कर दिखाना। **–दिखाई दे जाना**–तिलमिलाहट होना। **–(रों)की छाँह**–तड़के।

ताराज–पु० (फा०) विनाश, बरबादी, तबाही।

ताराधिप–पु० (सं०) चंद्रमा; शिव; बृहस्पति; बालि; सुग्रीव।

ताराधीश–पु० (सं०) चंद्रमा।

ताराभ–पु० (सं०) पारद, पारा। वि० तारे जैसी चमकवाला।

ताराभ्र–पु० (सं०) कपूर।

तारायण–पु० (सं०) आकाश; वटवृक्ष।

तारारि–पु० (सं०) एक उपधातु।

तारावटी–स्त्री० (सं०) एक दुर्गा।

तारावली–स्त्री० (मं०) तारोंकी पंक्ति, तारोंका समूह।

तारिक–पु० (सं०) मल्लाह; नावका किराया।

तारिका–स्त्री० (सं०) ताड़ी; * नक्षत्र; सिनेमाकी अभिनेत्री (आ०)।

तारिणी–वि० स्त्री० (सं०) तारनेवाली, सद्गति देनेवाली।

तारित–वि० (सं०) पार कराया हुआ; जिसका उद्धार किया गया हो।

तारी*–स्त्री० करतलध्वनि, ताली; कुंजी; बलवती इच्छा, लगन; समाधि, ध्यान –'सूनि समाधि लागि गई तारी'–प०; टकटकी; † ताड़ी।

तारी(रिन्)–वि० (सं०) तरने योग्य बनानेवाला; उद्धारक।

तारीक–वि० (फा०) अँधेरा, अंधकारमय; काला।

तारीकी–स्त्री० अंधेरापन, अंधकार; स्याही।

तारीख़–स्त्री० (अ०) तिथि; मिति; वह तिथि जिसमें कोई ऐतिहासिक या महत्त्वपूर्ण घटना घटी हो; कार्यविशेषके लिए नियत किया हुआ दिन; इतिहास। मु० **–टलना**–नियत दिनका और आगे बढ़ जाना। **–डालना**–तारीख निश्चित करना। **–पड़ना**-तारीख निश्चित होना।

तारीख़ी–वि० (अ०) ऐतिहासिक।

तारीफ़–स्त्री० (अ०) परिचय; लक्षण, परिभाषा; प्रशंसा, बड़ाई; विशेषता।

तारु, तारू*–पु० दे० 'तालु'।

तारुण–वि० (सं०) जवान, युवा।

तारुण्य–पु० (सं०) जवानी, यौवन।

तारुण्यागम-पु० (प्युबर्टी) तरुणावस्थाका आगमन, यौवनारंभ, उस स्थितिका आरंभ जब स्त्री या पुरुषमें संतानोत्पत्तिकी क्षमताका आगमन हो जाता है; यौवनारंभ; प्रौढ़ता।

तारेय–पु० (सं०) ताराका पुत्र–अंगद; बुध।

तारेश–पु० (सं०) चंद्रमा।

तार्किक–वि० पु० (सं०) तर्कशास्त्रका ज्ञाता, तर्कवेत्ता, नैयायिक।

तार्क्ष-पु० (सं०) कश्यप ऋषि।

तार्क्षी–स्त्री० (सं०) पातालगरुड़ी लता।

तार्क्ष्य–पु० (सं०) तृक्ष मुनिके गोत्रज; गरुड़; गरुड़के भाई अरुण; अश्व; सर्प; रसांजन; साखूका पेड़; सुवर्ण; अश्वकर्ण वृक्ष; रथ; एक पर्वत; पक्षी; शिव। **–ज**-पु० रसांजन, रसौत। **–ध्वज**–पु० विष्णु। **–नायक**–पु० गरुड़। **–प्रसव**–पु० अश्वकर्ण वृक्ष।

–शैल–पु० दे० 'तार्क्ष्यज'। **–साम(न्)**–पु० सामवेद।

तार्क्ष्यी–स्त्री० (सं०) एक वनलता।

तार्प्य–पु० (सं०) वैदिक कालका एक वस्त्र जो तृपा नामकी लतासे तैयार किया जाता था।

तार्य–वि० (सं०) पार करने योग्य; विजित करने योग्य। पु० नाव आदिका किराया।

तालंक–पु० (सं०) ताटंक।

ताल–पु० (सं०) हाथका तल, हथेली; हाथपर हाथ मारनेसे उत्पन्न शब्द; संगीतमें नियत मात्राओंपर हथेलीसे स्वर उत्पन्न करना; हाथीका कान फटफटाना; मँजीरा; ताड़का पेड़ या फल; जंघा या बाजूपर हथेली ठोंककर उत्पन्न किया हुआ शब्द; हरताल; तालीशपत्र; दुर्गाका सिंहासन; बालिश्त; तलवारकी मूठ; एक नृत्य; ताला या सिटकिनी; पिंगलमें एक गण; (हिं०) लंबा-चौड़ा प्राकृतिक गड्ढा जिसमें बरसाती पानी जमा रहता है; तालाब; चश्मे इ०के शीशेका पल्ला। **–कंद**–पु० तालमूली। **–कट**–पु० दक्षिणका एक प्राचीन देश। **–केतु**–पु० भीष्म; बलराम। **–क्षीर**–पु० ताड़ी। **–गर्भ**–पु० ताड़ी। **–चर**–पु० एक देश; वहाँका निवासी; वहाँका राजा। **–जंघ**–पु० एक देश; वहाँका निवासी या राजा; एक प्रकारका ग्रह; महाभारतमें वर्णित एक वीर जातिका पूर्वपुरुष। **–जटा**–स्त्री० दे० 'ताल-प्रलंब'। **–ज्ञ**–पु० (संगीतमें) तालका जानकार। **–धारक**–पु० नर्तक। **–ध्वज**–पु० बलराम। **–नवमी**–स्त्री० भाद्र-शुक्ला नवमी। **–पत्र**–पु० ताड़का पत्ता (यह पहले कागजके स्थानपर लिखनेके काम आता था); कानका एक गहना, ताटंक। **–पत्रिका**–स्त्री० तालमूली। **–पत्री**–स्त्री० मूषिकपर्णी। **–पर्ण**–पु० एक गंधद्रव्य। **–पर्णी**–स्त्री० वनसौंफ। **–पुष्पक**–पु० प्रपौंडरीक, पुंडरिया। **–प्रलंब**–पु० ताड़की जटा। **–बेताल**–पु० (हिं०) दो प्रेत जिन्हें, कहते हैं, राजा विक्रमादित्यने सिद्ध किया था। **–मखाना**–पु० (हिं०) एक पौधा; मखाना। **–मर्दक**–पु० एक वाद्य (संगीत)। **–मूली**–स्त्री० मुसली। **–मेल**–पु० (संगीतमें) तालोंका मिलान; संगति। **–यंत्र**–पु० चीरफाड़का एक प्राचीन औजार (सुश्रुत)। **–रस**–पु० ताड़ी। **–रेचनक**–पु० नर्तक; अभिनेता। **–लक्षण**–पु० बलराम। **–वन**–पु० ताड़के पेड़ोंका जंगल; यमुनाके किनारेपर स्थित व्रजका ताड़ वन। **–वृंत,–वृंतक**–पु० ताड़का पंखा। **–स्कंध**–पु० एक प्राचीन अस्त्र।

तालक–पु० (सं०) हरताल; ताड़का पेड़ या फल; ताला; अरहर; * दे० 'तअल्लुक़'।

तालकाभ–वि० (सं०) हरा। पु० हरा रंग।

तालकी–स्त्री० (सं०) ताड़ी।

तालकेश्वर–पु० (सं०) एक औषध (आ० वे०)।

तालव्य–वि० (सं०) तालु-संबंधी; तालुसे उच्चारित होनेवाला (वर्ण)।

तालांक–पु० (सं०) बलराम; लिखनेके काम आनेवाला ताड़का पत्ता; पुस्तक; आरा; शिव; शुभ लक्षणोंवाला मनुष्य।

तालांकुर–पु० (सं०) मैनसिल।

ताला–पु० किवाड़, संदूक आदिको मजबूतीसे बंद रखनेका लोहे-पीतल आदिका एक यंत्र जो खास कुंजीसे बंद होता और खुलता है; * छातीपर पहननेका लोहेका तवा; (अ०) नसीब, किस्मत, भाग्य। वि० चढ़नेवाला। **–बंदी**–स्त्री० (लॉक आउट) कर्मचारियोंपर दबाव डालनेके लिए मालिकोंका कारखानेके फाटकपर ताला लगाकर उन्हें बाहर रखनेका कार्य। **–(ले) मंद,–वर**–वि० भाग्यवान्; धनी। **–मंदी,–वरी**–स्त्री० खुशकिस्मती, भाग्यशालिता। मु० **–जकड़ना**–कसकर ताला बंद करना।

तालाख्या–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य।

तालाब–पु० पोखरा, सरोवर।

तालाबेलिया, तालाबेली*–स्त्री० व्याकुलता, बेचैनी।

तालावचर–पु० (सं०) नर्तक; अभिनेता।

तालिक–पु० (सं०) चपत, तमाचा; प्रतल; ताली; कागजका पुलिंदा या हस्तलिखित प्रति बाँधनेका बेठन या बंधन।

तालिका–स्त्री० (सं०) सूची; कुंजी; तालमूली; मजीठ; दे० 'तालिक'।

तालित–पु० (सं०) रंगीन कपड़ा; वाद्य (संगीत); रस्सी, डोरी।

तालिब–पु० (अ०) चाहनेवाला; ढूँढनेवाला; शिष्य। **–इल्म**–पु० विद्यार्थी।

तालिश–पु० (सं०) पहाड़।

ताली–स्त्री० (सं०) ताला बंद करने और खोलनेका एक विशेष प्रकारका औजार; ताड़ी; छोटा ताड़; तालमूली; तालीशपत्र; एक छंद; अरहर; हथेलियोंका परस्पर आघात; इससे उत्पन्न शब्द, करतलध्वनि; छोटा ताल, तलैया; एक सुगंधित मिट्टी। मु०**–पीटना**–उपहास करना। **–बज जाना**–उपहास होना।

ताली(लिन्)–पु० (सं०) शिव।

तालीक़ा–पु० (अ०) माल-असबाबकी जब्ती; मकानकी कुर्की; परिशिष्ट; कुर्क किये हुए मालकी सूची।

तालीम–स्त्री० (अ०) शिक्षा।

तालीशपत्र–पु०, **तालीशपत्री**–स्त्री० (सं०) एक पहाड़ी वृक्ष जिसका पत्ता औषधके काम आता है; भुइँआँवला।

तालु–पु० (सं०) ऊपरके दाँतों और कौवेके बीचका गड्ढा। **–कंटक**–पु० बच्चोंको होनेवाला तालुका एक रोग। **–ज**–वि० तालुसे उत्पन्न। **–जिह्व**–पु० घड़ियाल, मगर। **–पाक**–पु० एक रोग जिसमें तालु बहुत पक जाता है। **–पुप्पुट**–पु० तालुका एक रोग जिसमें मांस बढ़ जाता है, पर पीड़ा नहीं होती। **–शोष**–पु० एक रोग जिसमें तालु सूखकर फटने लगता है।

तालुक–पु० (सं०) तालु; तालुका एक रोग।

तालू–पु० दे० 'तालु'; दिमाग। **–फाड़**–पु० हाथियोंका एक रोग जिसमें तालुमें घाव हो जाता है। मु०**–चटकना**–प्याससे मुंह सूखना। **–से जीभ न लगना**–चुप न रहना, बोलते जाना।

तालूर–पु० (सं०) पानीका भँवर।

तालूषक–पु० (सं०) दे० 'तालु'।

ताल्लुक़–पु० दे० 'तअल्लुक़'।

ताल्वर्बुद–पु० (सं०) एक रोग जिसमें तालुमें कमलके आकारका गोला निकल आता है।

ताव–पु० किसी धातुको तपाने या पकानेके लिए पहुँचायी जानेवाली गरमी, ताप, आँच; द्वारा पहुँचायी हुई गरमीका मान; अहंकारयुक्त रोषका आवेश; अहंकारकी झोंक; कागजका बड़ा, चौकोर, बिना कटा-फटा टुकड़ा। **–बंद**–पु० वह औषध जिसके प्रयोगसे चाँदीका खोटापन उसके तपाये जानेपर भी जाहिर नहीं होता। मु०**–आना**–यथेच्छ गरमी पहुँचाना। **–खा जाना**–पकायी जाती हुई वस्तुका अधिक गरम हो जाना या जल जाना; लू लग जाना। **–दिखाना**–आवेशमें आकर क्रोधपूर्ण शब्दोंका प्रयोग करना। **–पर**–मौकेपर। **–बिगड़ना**–कम या अधिक गरम होना। **–में आना**–क्रोध या आवेशमें आकर कुछ कर डालनेको प्रवृत्त होना।

तावत्–अ० (सं०) तब; उस अवधितक, तबतक; उतनी मात्रामें, उस परिमाणतक।

तावना*–स० क्रि० तपाना, जलाना; संतप्त करना।

तावर*–स्त्री० दे० 'तावरी'। पु० (सं०) कमानका चिल्ला।

तावरा*–पु० ताप, गरमी; गरमीसे उत्पन्न सिरका चक्कर; घाम।

तावरी–स्त्री० ताप; ज्वर; धूप; मूर्च्छा; सिर चकराना।

तावान–पु० (फा०) हरजाना; जुरमाना, दंड।

ताविष–पु० (सं०) दे० 'तविष'।

ताविषी, तावीषी–स्त्री० (सं०) इंद्रकन्या; नदी; पृथिवी।

तावीज़–पु० (अ०) कागज या भोजपत्र आदिपर अंकित मंत्र या चक्र आदि जिसे सोने-चाँदी आदिके संपुटमें बंद कर गले, बाँह, कमर आदिमें धारण करते हैं; सोने-चाँदी आदिका विशेष आकारका एक आभूषण।

तावीष–पु० (सं०) समुद्र; सोना; स्वर्ग।

तावुरि–पु० (सं०) वृष राशि।

ताश–पु० खेलनेके कामका मोटे कागजका चौकोर टुकड़ा जिसपर पान, ईंट आदि रंगोंके छापे हों; एक विशेष प्रकारका दफ्तीका टुकड़ा जिसपर तागा लपेटा जाता है; ताशका खेल; एक प्रकारका

जरदोजीका कपड़ा ।

ताशा–पु० चमड़ेसे मढ़ा चौड़े मुँहका एक बाजा जो गलेमें लटकाकर लकड़ीसे बजाया जाता है ।

तास*–पु० एक तरहका कपड़ा, ताश ।

तासन, तासों*–सर्व० उससे ।

तासा–पु० दे० 'ताशा' ।

तासीर–स्त्री० (अ०) असर करना; प्रभाव, गुण, असर ।

तासु*–सर्व० उसका ।

तास्कर्य–पु० (सं०) चोरी ।

तास्सुब–पु० दे० 'तअस्सुब' ।

ताहम–अ० (फा०) तथापि ।

ताहि, ताही*–सर्व० उसे, उसको ।

तिंतिड–पु० (सं०) इमलीका पेड़ या उसका फल; इमलीकी चटनी; एक दैत्य ।

तिंतिडिका, तिंतिडी–स्त्री० (सं०) इमली । **–(डी)द्यूत**–पु० इमलीके बीज हाथमें लेकर खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ ।

तिंतिडीक–पु० (सं०) इमली ।

तिंतिलिका, तिंतिली, तिंतिलीका–स्त्री० (सं०) इमली ।

तिंदिश–पु० (सं०) डिड़सी ।

तिंदु–पु० (सं०) तेंदूका पेड़ ।

तिंदुक–पु० (सं०) तेंदूका पेड़; तौल, कर्ष ।

तिंदुकी–स्त्री० (सं०) तेंदूका पेड़ ।

तिंदुल–पु० (सं०) तेंदूका पेड़ ।

ति*–स्त्री० तिया, स्त्री । सर्व० वे, वह । वि० तीन (समासमें व्यवहृत) । **–कोन**†–वि० तिकोना । **–कोना**–वि० जिसमें तीन कोने हों, त्रिभुजाकार । पु० समोसा । **–कोनिया**–वि० दे० 'तिकोना' । स्त्री० कोनोंको नापनेका एक आला । **–खटी***–स्त्री० तिपाई; तीन पैरोंवाला काठका आसन । **–खूँटा**–वि० जिसमें तीन खूँट हों, तिकोना । **–गलिया**–दे० क्रममें । **–गुना**–वि० तीन गुना, जो आकार या परिमाणमें दो बार और अधिक हो । **–जरा**–पु० एक दिन नागा देकर आनेवाला ज्वर । **–जारी**–स्त्री० दे० 'तिजरा' । **–तारा**–पु० तीन तारोंवाला एक बाजा । **–दरी**–स्त्री० तीन दरवाजोंवाला कमरा । **–धारा**–पु० एक तरहका सेंहुड़ । **–पल्ला**–वि० जिसमें तीन पल्ले हों । **–पाई**–स्त्री० चौकी जैसा लकड़ीका तीन पायोंका एक आधार । **–पाड़***–वि० तीन पाटोंका । **–बद्धी**–वि० (चारपाईकी एक बुनावट) जिसमें बाध तिरसुत करके लगाया गया हो । **–बारा**–अ० तीसरी बार । पु० तीन बार उतारी हुई शराब; तीन द्वारोंवाला कमरा । **–मंजिला**–वि० तीन मंजिलवाला (मकान) । **–माशी**–स्त्री० तीन माशेकी एक तौल । **–मुहानी**–स्त्री० तीन नदियों, सड़कों, या गलियोंके एकमें मिलनेकी जगह । **–रंगा**–वि० तीन रंगोंवाला । **–राहा**–पु० तीन रास्तोंके मिलनेकी जगह । **–लड़ा**–वि० तीन लड़ोंका । † पु० पत्थर गढ़नेकी एक छेनी । **–लड़ी**–स्त्री० गलेमें पहननेकी तीन लड़ियोंकी एक माला । **–लोक***–पु० दे० 'त्रिलोक' । **–०पति**–पु० विष्णु । **–लोचन**†–पु० दे० 'त्रिलोचन' । **–वास***–पु० तीन दिन । **–वासा, –वासी**–वि० तीन दिनोंका ।

तिआ*–स्त्री० तिया, स्त्री ।

तिआह†–वि० जिसका तीसरा विवाह होनेको हो; मृत्युके ४५ वें दिन होनेवाला एक श्राद्ध ।

तिउरा†–पु० केसारी नामक मोटा अन्न ।

तिउहार†–पु० दे० 'त्योहार' ।

तिकड़म–पु० छलमय चातुर्य या युक्ति ।

तिकड़मी–वि० तिकड़म करनेवाला ।

तिक्की–स्त्री० ताश या गंजीफेका वह पत्ता जिसपर किसी रंगकी तीन बूटियाँ हों ।

तिक्ख*–वि० तीक्ष्ण, तीखा; तेज, चालाक ।

तिक्खा†–वि० तिरछा ।

तिक्खे†–अ० तिरछे ।

तिक्त–वि० (सं०) तीता, चरपरा, जो स्वादमें मिर्च आदिके समान हो; सुगंधयुक्त । पु० ६ रसोंमेंसे एक (वह स्वाद स्वयं अरुचिकर होता है, पर अन्य वस्तुओंमें रुचि उत्पन्न करता है । इससे गलेमें जलन-सी पैदा होती और मुंह साफ होता है); सुगंध; पित्तपापड़ा; कुटज; वरुण वृक्ष । **–कंदिका**–स्त्री० गंधपत्रा; बनकचूर । **–कांड**–पु० चिरायता । **–गंधा, –गंधिका**–स्त्री० वराही कंद, वराहक्रांता; सरसों । **–गुंजा**–स्त्री० करंज । **–घृत**–पु० तिक्त औषधोंके योगसे तैयार किया हुआ घृत जो कुष्ठ, विषम-ज्वर आदिमें दिया जाता है । **–तंडुला**–स्त्री० पीपर । **–तुंडी**–स्त्री० कटुतुंबी लता । **–तुंबी**–स्त्री० तितलौकी । **–दुग्धा**–स्त्री० खिरनी, स्वर्णक्षीरी । **–धातु**–स्त्री० पित्त धातु । **–पत्र**–पु० काकरोल, खेखसा । **–पर्णी**–स्त्री० पेंहटा । **–पर्वा**–स्त्री० दूब; हुरहुर; जेठीमधु, मुलहठी; गुड़ुच । **–पुष्पा**–स्त्री० पाठा । वि० स्त्री० जिसके फूलका स्वाद तिक्त हो । **–फल**–पु० कतक वृक्ष; यवतिक्ता लता । **–फला**–स्त्री० यवतिक्ता लता; वार्ताकी; खरबूजा । **–बीजा**–स्त्री० तितलौकी । **–भद्रक**–पु० परवल । **–मरिच**–पु० कतक । **–यवा**–स्त्री० शंखिनी । **–रोहिणी**–स्त्री० कुटकी । **–वल्ली**–स्त्री० मूर्वा लता । **–शाक**–पु० वरुण वृक्ष; खैरका पेड़; पत्रसुंदर वृक्ष । **–सार**–पु० खैरका पेड़; दीर्घरोहिष नामकी घास ।

तिक्तक–पु० (सं०) परवल; चिरायता; काला खैर; इंगुदी वृक्ष; तिक्त रस । वि० तीता ।

तिक्तका–स्त्री० (सं०) दे० 'तिक्तिका' ।

तिक्तता–स्त्री० (सं०) तिताई, तीतापन ।

तिक्तांगा–स्त्री० (सं०) पातालगरुडी लता ।

तिक्ता–स्त्री० (सं०) कटुरोहिणी; पाठा; यवतिक्ता लता; नकछिकनी; खरबुजा ।

तिक्ताख्या–स्त्री० (सं०) दे० 'तिक्तिका' ।

तिक्तिका–स्त्री० (सं०) तितलौकी; कुटकी ।

तित्तिरी–स्त्री० (सं०) तूमड़ी ।

तिक्ष*–वि० तीक्ष्ण, तेज, तीखा ।

तिक्षता*–स्त्री० तेजी ।

तिखाई–स्त्री० तीक्ष्णता, तेजी ।

तिगलिया†–पु० वह स्थान जहाँ तीन रास्ते या तीन गलियाँ आकर मिलती हों, तिराहा ।

तिग्म–वि० (सं०) तीक्ष्ण; प्रखर, प्रचंड, तेज; तप्त करनेवाला । पु० ताप; तीखापन । **–कर**–पु० सूर्य । **–केतु**–पु० एक ध्रुववंशीय राजा । **–जंभ**–पु० अग्नि । **–दीधिति**–पु० सूर्य । **–मन्यु**–पु० शंकर, रुद्र । **–मयूखमाली(लिन्)**–पु० सूर्य । **–रश्मि**–पु० सूर्य ।

तिग्मांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

तिच्छ*–वि० तीक्ष्ण ।

तिच्छन*वि० तीक्ष्ण ।

तिजहरिया, तिजहरी†–स्त्री० अपराह्न, दिनका तीसरा पहर ।

तिजारत–स्त्री० (अ०) व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय; सौदागरी, रोजगार ।

तिजिल–पु० (सं०) चंद्रमा; राक्षस ।

तिजोरी–स्त्री० लोहेकी मजबूत अलमारी जिसमें रुपये, गहने आदि रखे जाते हैं ।

तिड़ी–स्त्री० दे० 'तिक्की' । मु० **–करना**–गायब करना ।

तिड़ी-बिड़ी–वि० अस्त-व्यस्त, छितराया हुआ ।

तित*–अ० वहाँ, तहाँ; उधर । वि० 'तीता'का समासगत रूप । **–लौआ**–पु० कड़ुए स्वादका कद्दू । **–लौकी**–स्त्री० दे० 'तितलौआ' ।

तितउ–पु० (सं०) चलनी; छाता ।

तितना*–वि० उतना । अ० उस मात्रामें ।

तितर-बितर–वि० इधर-उधर फैला हुआ, बिखरा हुआ, विकीर्ण; विघटित ।

तितरोखी–स्त्री० एक छोटी चिड़िया ।

तितली–स्त्री० सुंदर पंखोंवाला एक प्रसिद्ध फतिंगा; एक घास; (ला०) बहुत तड़क-भड़कसे रहनेवाली स्त्री ।

तिंतिबा–पु० ढोंग, ढकोसला; परिशिष्ट ।

तितिक्ष–वि० (सं०) जो गरमी-सरदी आदि द्वंद्वोंको सहे, सहिष्णु, सहनशील। पु० एक ऋषि।

तितिक्षा–स्त्री० (सं०) सरदी-गरमी आदि द्वंद्वोंको सहनेकी क्रिया या शक्ति; बिना प्रतीकार या विकलताके सभी दुःखोंको सहना, सहनशीलता; क्षमा।

तितिक्षु–वि० (सं०) तितिक्षायुक्त, सहन-शील; क्षमावान्।

तितिभ–पु० (सं०) बीरबहूटी; जुगनू।

तितिम्मा–पु० (फा०) पूरक अंश; पुस्तकका परिशिष्ट।

तितिर, तितिरि–पु० (सं०) तीतर पक्षी।

तितिल–पु० (सं०) तिलकी खली; नाँद; बालटी; सात करणों-मेंसे एक (ज्यो०)।

तितीर्षा–स्त्री० (सं०) तरने या पार करनेकी इच्छा।

तितीर्षु–वि० (सं०) तरने या पार होनेका इच्छुक।

तिते*–वि० उतने। अ० उस परिमाणमें।

तितेक*–वि० उतना।

तितै*–अ० तहाँ; उधर।

तितो*–वि० उतना। अ० उस परिमाणमें।

तित्तिर–पु० (सं०) तीतर नामका पक्षी; महाभारतमें वर्णित एक जनपद।

तित्तिरि–पु० (सं०) तीतर; नृत्यमें पाँव रखनेका एक ढंग; यजुर्वेदकी एक शाखा; इसके प्रवर्तक मुनि जिन्होंने तीतर बनकर याज्ञवल्क्य द्वारा उगले हुए यजुर्वेदको चुगा था।

तिथ–पु० (सं०) कामदेव; अग्नि; समय; वर्षाकाल; पतझड़।

तिथि–स्त्री० (सं०) वह कालविशेष जिसमें चंद्रमा एक कला बढ़ता या घटता है, १-२ आदि संख्याओं द्वारा निर्दिष्ट चांद्र मासका प्रत्येक दिन; मिति, तारीख; मृत्युदिवस; पंद्रहकी संख्या। **–कृत्य**–पु० तिथिविशेषपर किया जानेवाला धार्मिक कार्य। **–क्षय**–पु० चांद्रगणनाके अनुसार पक्षमें किसी तिथिका घट जाना, तिथिकी हानि। **–देवता**–पु० तिथिका अधिष्ठाता देवता। **–पति**-पु० वह देवता जिसके पूजनके लिए कोई एक तिथि प्रशस्त मानी गयी हो। **–पत्र**–पु० पंचांग। **–प्रणी**–पु० चंद्रमा। **–युग्म**–पु० दो विशेष तिथियोंका योग। **–वृद्धि**–स्त्री० जो तिथि दो सूर्योदयोंतक चले। **–संक्रामी**–वि० (डिफाल्टर), (न्यायालयमें उपस्थित होने, ऋणकी किस्त आदि जमा करनेकी) निर्धारित तिथिका संक्रमण करनेवाला (उस तिथिको उपस्थित न होनेवाला, चूककर्ता, किस्त न चुकानेवाला आदि, बाकीदार)। **–संधि**–स्त्री० दो तिथियोंकी संधि।

तिथित–वि० (डेटेड) (वह पत्रादि) जिसपर कोई तिथि या महीनेकी तारीख लिखी या डाली गयी हो, दिनांकित।

तिथ्यर्ध–पु० (सं०) करण।

तिधर†–अ० उधर, उस ओर।

तिन*–सर्व० 'तिस'का बहु०। पु० तृण, तिनका।

तिनउर*–पु० तृणराशि।

तिनकना–अ० क्रि० झल्लाना, बिगड़ना, रूठना।

तिनका–पु० तृण, घास-फूस। **–तोर***–पु० नाता-तोड़। मु० **–तोड़ना**–बलैया लेना, अपनेको न्यौछावर करना। **–दाँतोंमें पकड़ना**–दयाकी भिक्षा माँगना। **–(के) का सहारा**–थोड़ी-सी सहायता। **–की ओट पहाड़**–छोटी-सी वस्तुमें बहुत बड़े रहस्यका छिपा होना। **–चुनना**–विक्षिप्त होना। **–चुनवाना**–विक्षिप्त कर देना।

तिनगना–अ० क्रि० दे० 'तिनकना'।

तिनगरी*–स्त्री० एक पकवान।

तिनपहला–वि० तीन पहलोंवाला।

तिनस, तिनसुना–पु० दे० 'तिनिश'।

तिनाशक–पु० (सं०) तिनिश वृक्ष।

तिनास–पु० दे० 'तिनिश'।

तिनिश–पु० (सं०) शीशमकी जातिका एक वृक्ष।

तिनुका, तिनूका*–पु० दे० 'तिनका'।

तिन्ना–पु० तिन्नीके धानका पौधा।

तिन्नी–स्त्री० स्वयं उत्पन्न होनेवाला एक धान जिसका चावल फलाहारके काम आता है, नीवार।

तिन्ह–सर्व० दे० 'तिन'।

तिपति*–स्त्री० तृप्ति।

तिब–स्त्री० दे० 'तिब्ब'।

तिब्ब–स्त्री० (अ०) चिकित्साशास्त्र; यूनानी चिकित्साशास्त्र, हकीमी।

तिब्बत–पु० हिमालय और चीनके बीचका एक देश।

तिब्बती–वि० तिब्बत-संबंधी; तिब्बतका। पु० तिब्बतका निवासी। स्त्री० तिब्बतकी भाषा।

तिब्बिया–वि० (अ०) तिब्ब-संबंधी; यूनानी चिकित्साशास्त्र संबंधी। **–कालेज**–पु० यूनानी चिकित्साशास्त्रकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय।

तिब्बी–वि० (अ०) तिब्ब-संबंधी।

तिमिंगिल–पु० (सं०) एक समुद्री जंतु जो तिमि मत्स्यको भी निगल सकता है। **–गिल**–पु० तिमिंगिलको भी निगल जानेवाला समुद्री जंतु।

तिमि–अ० उस प्रकार। पु० (सं०) समुद्र; बहुत बड़े आकारका एक समुद्री मत्स्य; मत्स्य। **–कोष**–पु० समुद्र। **–ज**–पु० एक तरहका मोती। **–ध्वज**–पु० एक दैत्य जिसे इंद्रने दशरथकी सहायतासे मारा था।

तिमित–वि० (सं०) भीगा हुआ; गतिहीन, स्थिर, शांत।

तिमिर–पु० (सं०) अंधकार; आँखका एक रोग; तिरमिरा; लोहेका मोरचा। **–नुद्**–वि० अंधकारनाशक। पु० सूर्य। **–भिद्**–वि० अंधकारका भेदन करनेवाला। पु० सूर्य। **–रिपु**–पु० अंधकारका शत्रु, सूर्य। **–हर**-पु० सूर्य; दीपक।

तिमिर*–पु० तैमूर–'तिमिर-वंस-हर अरुनकर आयो सजनी भोर'-भू०।

तिमिरमय–पु० (सं०) ग्रहण; राहु। वि० अंधकारसे भरा हुआ।

तिमिरारि–पु० (सं०) अंधकारका शत्रु, सूर्य।

तिमिरारी*–स्त्री० (तिमिराली) अंधकार-पुंज; अँधेरा। पु० सूर्य।

तिमिला–स्त्री० एक संगीत-वाद्य।

तिमिश–पु० (सं०) 'तिनिश' वृक्ष।

तिमिष–पु० (सं०) ककड़ी, फूट।

तिय*–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

तियला†-पु० स्त्रियोंका एक पहनावा।

तिया–स्त्री० दे० 'तिक्की'; * दे० 'तिय'।

तियाग*–पु० दे० 'त्याग'।

तियागी*–वि० त्यागी।

तिर–'त्रि'का बिगड़ा हुआ समासमें व्यवहृत रूप। **–कुटा**–पु० दे० 'त्रिकटु'। **–खूँटा**–वि० जिसमें तीन खूँट हों। **–पाई**–स्त्री० दे० 'तिपाई'। **–पौलिया**–वि० जिसमें तीन द्वार हों। **–फला**†–पु० दे० 'त्रिफला'। **–बेनी***–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'। **–मुहानी**–स्त्री० दे० 'तिमुहानी'। **–लोक**†–पु० दे० 'त्रिलोक'। **–सठ**–वि० साठ और तीन। पु० तिरसठकी संख्या, ६३। **–सुत**–वि० तीन सूत एकमें मिलाकर बटा हुआ। **–सूल***–पु० दे० 'त्रिशूल'; तापत्रय। **-हुत**–पु० मिथिला-मुजफ्फरपुर और दरभंगा। **–हुतिया**–वि० तिरहुतका। पु० तिरहुतका निवासी, मैथिल। स्त्री० तिरहुतकी बोली।

तिरकना–अ० क्रि० दे० 'तड़कना'।

तिरखा*–स्त्री० दे० 'तृषा'।

तिरखित*–वि० दे० 'तृषित'।

तिरछा–वि० जो एक ओर कुछ झुका हुआ हो, वक्र, कज, बाँका, कुटिल। **–ई**–स्त्री०,**–पन**–पु० तिरछा होनेका भाव।

तिरछाना–अ० क्रि० तिरछा होना।

तिरछे–अ० तिरछेपनके साथ; तिरछी गतिसे।

तिरछौंहाँ–वि० कुछ-कुछ तिरछा।

तिरछौंहैं*–अ० दे० 'तिरछे'।

तिरना–अ० क्रि० दे० 'तरना'; उतराना।

तिरनी*–स्त्री० नीवी, फुफुँदी।

तिरप–स्त्री० नाचका एक ताल।

तिरपट†–वि० एक बगल कुछ झुका हुआ, कज, तिरछा; कठिन ।

तिरपन–वि० पचास और तीन । पु० तिरपनकी संख्या, ५३ ।

तिरपाल–पु० पानीसे बचावके कामका एक मोटा कपड़ा; छाजनके नीचे लगाया जानेवाला सरकंडेका मुट्ठा ।

तिरपित*–वि० दे० 'तृप्त' ।

तिरमिरा–पु० आँखका एक रोग जिसमें देखनेकी शक्ति क्षीण हो जाती है, सामने धुंध छाया रहता है, प्रकाश असह्य हो जाता है और कुछका कुछ दिखाई देता है; चकाचौंध ।

तिरमिराना–अ० क्रि० दे० 'तिलमिलाना' ।

तिरश्चीन–वि० (सं०) तिरछा, वक्र ।

तिरस्–अ० (सं०) एक शब्द जो अंतर्धान, तिरछापन, तिरस्कार आदि अर्थोंका बोध कराता है । **–कर**–पु० आच्छादक । वि० बढ़ा-चढ़ा हुआ । **–करिणी**–स्त्री० कपड़ेका बना आच्छादन, परदा, कनात; अदृश्य होनेकी विद्या । **–करी(रिन्)**–पु० दे० 'तिरस्करिणी' । **–कार**–पु० अपमान, अनादर; अवज्ञा । **–कृत**–वि० अपमानित, अनादृत, जिसकी अवहेलना की गयी हो; आच्छादित, परदेमें छिपाया हुआ । **–क्रिया**–स्त्री० आच्छादित करनेकी क्रिया; दे० 'तिरस्कार' ।

तिरहुत–पु० दे० 'तिर'के साथ ।

तिरहेल–वि० तीसरा; तीसरी बार आया हुआ ।

तिरानबे–वि० नब्बे और तीन । पु० तिरानबेकी संख्या, ९३ ।

तिराना–स० क्रि० पानीपर पैराना या ठहराना; पार करना; उद्धार करना ।

तिरासी–वि० अस्सी और तीन । पु० तिरासीकी संख्या, ८३ ।

तिरिजिह्लिक–पु० (सं०) एक वृक्ष ।

तिरिन*–पु० दे० 'तृण' ।

तिरिम, तिरिय–पु० (सं०) एक धान ।

तिरिया*–स्त्री० स्त्री, औरत । **–चरित्तर**–पु० स्त्रीकी पुरुषको ठगने या बेवकूफ बनानेकी चतुराई ।

तिरीछा*–वि० दे० 'तिरछा' ।

तिरीट–पु० (सं०) लोधका पेड़; किरीट ।

तिरीफल–पु० दंती वृक्ष ।

तिरेंदा–पु० समुद्रमें तैरता हुआ पीपा जो खतरेकी सूचनाके लिए लगाया जाता है; बंसीकी डोरीमें लगी हुई छोटी लकड़ी जो उतराती रहती है; उतरानेवाला काठ या इस तरहकी कोई चीज जिसके सहारे नदी आदि पार की जाय ।

तिरो–'तिरस्' का समासगत रूप । **–धान**–पु० तिरोहित या दृष्टिसे ओझल होने या करनेकी क्रिया, अंतर्धान, लोप । **–धायक**–पु० अदृश्य या ओझल करनेवाला, छिपानेवाला, लुप्त करनेवाला । **–भाव**–पु० दे० 'तिरोधान' । **–भूत**–वि० अंतर्हित, लुप्त; ओझल; गुप्त । **–हित**–वि० दे० 'तिरोभूत', छिपा हुआ; आच्छादित, ढका हुआ ।

तिरौंछा–वि० तिरछा ।

तिरौंदा–पु० दे० 'तिरेंदा' ।

तिर्यंची–स्त्री० (सं०) पशु-पक्षीकी मादा ।

तिर्यक्(र्यंच्)–वि० (सं०) तिरछा; आड़ा; वक्र । अ० वक्रता-पूर्वक; तिरछे; आड़े । पु० पशु; पक्षी । **–पाती(तिन्)**–वि० बेंड़े गिरनेवाला । **–प्रमाण**–पु० चौड़ाई । **–प्रेक्षण**–पु० तिरछी चितवन । **–स्रोता(तस्)**–पु० वह प्राणी जिसका आहार पेटमें तिरछे पहुँचता हो–पशु, पक्षी ।

तिर्यक्ता–स्त्री० (सं०) पशु-प्रकृति, चौड़ाई ।

तिर्यग्–'तिर्यक्'का समासगत रूप । **–अयन**–पु० सूर्यकी वार्षिक परिक्रमा । **–ईक्ष**–वि० तिरछे देखनेवाला । **–ईश**–पु० कृष्ण । **–गति**–स्त्री० तिरछी चाल; पशुयोनिकी प्राप्ति । **–गामी(मिन्)**–पु० केकड़ा । वि० तिरछे जाने, चलनेवाला । **–दिक्(श्)**–स्त्री० उत्तर दिशा । **–यान**–पु० केकड़ा । **–योनि**–स्त्री० पशु-पक्षीकी योनि । **–रेखा**–स्त्री० (ट्रांसवर्सल) वह रेखा जो दो या अधिक दी हुई रेखाओंको काटती है ।

तिलंगसा–पु० बलूतका एक भेद ।

तिलंगा–पु० तिलंगानेका निवासी; अंगरेजी फौजका हिंदुस्तानी सिपाही ।

तिलंगाना–पु० तैलंग देश ।

तिलंगी–स्त्री० गुड्डी, पतंग । पु० तिलंगानाका निवासी ।

तिलंतुद–पु० (सं०) तेली ।

तिल–पु० (सं०) काले या सफेद रंग का एक छोटे दानेका तेलहन; इसका पौधा; तिलके आकारका काला दाग जो शरीरपर होता है; तिलके बराबर एक गोदना; किसी पदार्थका बहुत छोटा टुकड़ा या कण; आँखकी पुतलीके बीचका बिंदु; (हिं०)* क्षण –'से ही पिरीत अनुराग बखानइत तिले तिले नूतन होइ'–विद्यापति । **–कट**–पु० तिलका चूर्ण । **–कण**–पु० तिलका दाना । **–कल्क**–पु० तिलके चूर्णसे बननेवाली एक तरहकी पीठी; तिलकुट । **–कार्षिक**–पु० तिल बोनेवाला । **–कालक**–पु० तिलके बराबर काला दाग जो शरीरपर होता है; एक रोग । **–किट्ट**–पु० तिलकी खली । **–कुट**–पु० (हिं०) तिल और चीनी या गुड़के मेलसे बननेवाली एक मिठाई । **–खली**–स्त्री० तिलकी खली । **–चटा**–पु० (हिं०) एक प्रकारका झींगुर । **–चतुर्थी**–स्त्री० माघके कृष्ण पक्षकी चतुर्थी । **–चाँवरी***–स्त्री० दे० 'तिल-चावली' । **–चावली**–स्त्री० (हिं०) तिल और चावलकी खिचड़ी । **–चित्रपत्रक**–पु० तैलकंद । **–चूर्ण**–पु० तिलका चूर्ण । **–तंडुल**–पु० तिल और चावल; (ला०) ऐसा संयोग जिसमें मिलनेवाले घटकोंका अस्तित्व स्पष्टतः दिखलाई दे । **–तंडुलक**–पु० मिलन, आलिंगन । **–तैल**–पु० तिलका तेल । **–धेनु**–स्त्री० तिलकी बनी गाय जो दानमें दी जाय । **–पट्टी,–पपड़ी**–स्त्री० (हिं०) खाँड़ या गुड़की चासनीमें पगे तिलकी बनी रोटी जैसी वस्तु । **–पर्ण**–पु० चंदन; तिलका पत्ता । **–पर्णी**–स्त्री० रक्त चंदन; एक नदी । **–पिंज**–पु० तिलका वह पौधा जो न फूले, न फले । **–पिच्चट**–पु० तिलकी पीठी; तिलकुट । **–पीड**–पु० तिल पेरनेवाला, तेली । **–पुष्प**–पु० तिलका फूल; नाक । **–पुष्पक**–पु० तिलका फूल; बहेड़ेका पेड़; नासिका । **–पेज**–पु० दे० 'तिलपिंज' । **–भाविनी**–स्त्री० मल्लिका । **–भृष्ट**–वि० तिलके साथ भूना हुआ । **–भेद**–पु० पोस्तेका दाना । **–मयूर**–पु० एक मोर जिसके पर तिलके फूलके-से होते हैं । **–रस**–पु० तिलका तेल । **–शकरी**–स्त्री० (हिं०) तिलमें चीनी मिलाकर बनायी हुई मिठाई । **–शिखी(खिन्)**–पु० तिल-मयूर । **–शैल**–पु० तिलकी पर्वताकार राशि जो दानमें दी जाय । **–स्नेह**–पु० तिलका तेल । मु० **–का ताड़ करना**–छोटी-सी बातको बड़ा रूप देना । **–की ओट पहाड़**–छोटी बातके अंदर बहुत बड़ी बात होना । **–तिल करके**–थोड़ा-थोड़ा करके । **–धरनेकी जगह न होना**–थोड़ा-सा भी स्थान रिक्त न होना, ठसाठस भरा होना । **–भर**–थोड़ा-सा भी, रंचमात्र; थोड़ी देर । **–(लों)में तेल न होना**–शील-संकोच न होना, मुरौवत न होना ।

तिलक–पु० (सं०) धार्मिकता या शोभाकी दृष्टिसे घिसे हुए चंदन, केसर या रोली आदिसे ललाटपर बनाया हुआ विशेष आकारका चिह्न, टीका; सिंहासनारूढ़ होते समय युवराजके मस्तकपर लगाया जानेवाला टीका; वसंतमें फूलनेवाला एक वृक्ष; तिलका पौधा; किसी कुल या समुदायका सर्वश्रेष्ठ पुरुष (समासांतमें); विवाह-संबंधी एक रस्म जिसमें कन्यापक्षके लोग वरके मस्तकपर टीका लगाते और कुछ द्रव्य आदि चढ़ाते हैं; स्त्रियोंका एक शिरोभूषण; पेटके भीतरकी तिल्ली; फुफ्फुस; सौंचर नमक; एक प्रकारका घोड़ा; एक रोग; मदन वृक्ष; मरुवक; पीपलका एक भेद; शरीरपरका तिल; ध्रुवकका एक भेद जिसमें प्रत्येक चरणमें पचीस अक्षर होते हैं; किसी ग्रंथपर लिखी गयी टीका, भाष्य–'स्वतंत्र ग्रंथ नहीं, टीकापर टीका, तिलकपर तिलक, लिखे जा रहे थे' –हजारीप्र०; सूथनके ऊपर पहननेका बिना आस्तीनका ढीला जनाना कुरता । लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, भारतीय स्वराज्यके अग्रगण्य नेता (जन्म १८५६, मृत्यु १९२०); सन् १८८९ में कांग्रेसके मंचसे घोषणा की–'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।' 'केसरी' द्वारा एक अंग्रेजकी हत्याके कृत्यका समर्थन करनेके कारण आपको कालेपानीकी सजा हुई । आप मांडलेमें रखे गये जहाँ आपने 'ऑर्किटिक होम ऑफ दि

वेदाज'की रचना की। 'गीतारहस्य' आपकी एक और अमर कृति है। –कामोद–पु० एक रागिनी। –हरू†–पु० दे० 'तिलकहार'। –हार–पु० तिलक चढ़ानेके लिए भेजा जानेवाला व्यक्ति।

तिलकना–अ० क्रि० गीली मिट्टी या जमीनका सूखकर फटना।

तिलका–स्त्री० (सं०) हारका एक भेद; एक वर्णवृत्त।

तिलकावल–वि० (सं०) चिह्नोंवाला।

तिलकाश्रय–पु० (सं०) ललाट।

तिलकित–वि० (सं०) चिह्नवाला।

तिलगिया, तिलगी†–स्त्री० चिनगारी (बुंदेल०)।

तिलछना–अ० क्रि० व्याकुल होना, छटपटाना।

तिलदानी–स्त्री० सूई, अंगुश्ताना आदि रखनेकी दर्जियोंकी छोटी थैली।

तिलबढ़ा–पु० पशुओंका एक रोग।

तिलमिल–स्त्री० तिलमिलाहट; चकाचौंध।

तिलमिलाना–अ० क्रि० बेचैन होना; चौंधियाना।

तिलमिलाहट–स्त्री० तिलमिलानेकी क्रिया या भाव; चकाचौंध; बेचैनी।

तिलमिली–स्त्री० दे० 'तिलमिलाहट'; चकाचौंध।

तिलवट–पु० तिलपट्टी।

तिलवा–पु० तिलका लड्डू।

तिलस्म–पु० दे० 'तिलिस्म'।

तिलस्मी–वि० दे० 'तिलिस्मी'।

तिलहन–पु० फसलके रूपमें बोये जानेवाले तेलके पौधे।

तिलांकितदल–पु० (सं०) तैलकंद।

तिलांजलि–स्त्री० (सं०) औद्ध्र्वदेहिक कृत्यका एक अंग जिसमें हिंदू मृतकके नाम तिलमिश्रित जलकी अंजलि देते हैं।

तिलांबु–पु० (सं०) दे० 'तिलांजलि'।

तिला–पु० नपुंसकता नष्ट करनेवाला एक तेल।

तिलाक़–पु० दे० 'तलाक़'।

तिलान्न–पु० (सं०) तिलकी खिचड़ी।

तिलापत्या–स्त्री० (सं०) काला जीरा।

तिलिंग–पु० (सं०) देश-विशेष।

तिलित्स–पु० (सं०) अजगर; गोनस सर्प।

तिलिस्म–पु० (अ०) जादू; इंद्रजाल; ऐंद्रजालिक रचना; गाड़े हुए धन आदिपर बनायी हुई सर्प आदिकी भयावनी आकृति; जादूकी रेखा या चिह्न। मु०– तोड़ना–जादू या करामातका भेद खोल देना।

तिलिस्मी–वि० जिसमें तिलिस्मके चमत्कारका वर्णन हो; तिलिस्म-संबंधी।

तिली–स्त्री० तितली; † तिल; तिल्ली।

तिलेती–स्त्री० तेलहन काट लेनेपर खेतमें बची हुई खूँटी।

तिलोत्तमा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा जिसे पानेके लिए सुंद और और उपसुंद आपसमें लड़ मरे थे।

तिलोदक–पु० (सं०) दे० 'तिलांजलि'।

तिलोनी*–वि०, स्त्री० फुलेलसे सुगंधित–'अंग अति लोनी लहै ललित तिलोनी सारी'–घन०।

तिलोरी*–स्त्री० एक प्रकारकी मैना; तिलौरी।

तिलौँछना–स० क्रि० तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौँछा–वि० तेलके-से स्वादवाला; चिकना।

तिलौरी–स्त्री० तिल मिलाकर बनायी हुई उर्द या मूँगकी बरी।

तिल्य–वि० (सं०) तिलकी खेतीके योग्य। पु० तिलका खेत।

तिल्ला–पु० कलाबत्तू आदिका काम; दुपट्टा; पगड़ी आदिका वह भाग जिसपर कलाबत्तू आदिका काम हो; 'तिलका' वृत्त।

तिल्ली–स्त्री० प्लीहा; तिल।

तिल्व–पु० (सं०) तिलका तेल; लोध।

तिल्वक–पु० (सं०) तिनिश।

तिवाड़ी, तिवारी–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, त्रिपाठी।

तिशना–पु० ताना, व्यंग्य। *स्त्री० तृष्णा।

तिष्ट*–वि० बनाया हुआ, रचित।

तिष्ठद्गु–पु० (सं०) दोहनकाल; संध्या।

तिष्ठना*–अ० क्रि० टिकना, ठहरना।

तिष्ठा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

तिष्य–पु० (सं०) पुष्य नक्षत्र; पौष मास; कलियुग; सम्राट् अशोकके एक भाईका नाम। वि० शुभ; तिष्य नक्षत्रमें उत्पन्न; भाग्यशाली। –केतु–पु० शिव। –पुष्पा,–फला–स्त्री० आमलकी। –रक्षिता–स्त्री० सम्राट् अशोककी पत्नीका नाम।

तिष्यक–पु० (सं०) पौष मास।

तिष्या–स्त्री० (सं०) आमलकी।

तिष्यन*–वि० तीक्ष्ण।

तिस†–सर्व० 'ता'का एक रूप जो कई विभक्तियोंमें प्रयुक्त होता है। –पर–अ० उसके बाद; ऐसी स्थितिमें; तथापि, इतना होनेपर भी।

तिस*–स्त्री० तृष्णा, लालसा; प्रेम–'तिस उपजावति प्यासहि नासि'–घन०।

तिसना*–स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसरायत–स्त्री० तीसरा होनेका भाव।

तिसरैत–पु० वह व्यक्ति जो दो पक्षोंमेंसे किसी एकका भी न हो; तीसरा व्यक्ति; मध्यस्थ, पंच; तीसरे भागका अधिकारी।

तिसाना*–अ० क्रि० प्यासा होना, तृषित होना।

तिस्रा–स्त्री० (सं०) शंखपुष्पी।

तिहत्तर–वि० सत्तर और तीन। पु० तिहत्तरकी संख्या, ७३।

तिहरा–वि० दे० 'तेहरा'।

तिहराना–स० क्रि० दे० 'तेहराना'।

तिहरी–स्त्री० तीन लड़ोंकी माला; दही जमानेका मिट्टीका छोटा बरतन।

तिहवार–पु० दे० 'त्योहार'।

तिहवारी–स्त्री० दे० 'त्योहारी'।

तिहा(हन्)–पु० (सं०) रोग, व्याधि; सद्भाव; चावल; धनुष्।

तिहाई–स्त्री० तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा; फसल।

तिहाउ*–पु० दे० 'तिहाव'।

तिहार, तिहारा, तिहारो*–सर्व० तुम्हारा।

तिहाव–पु० क्रोध, रोष; बिगाड़।

तिहिं*–सर्व० दे० 'तेहिं'।

तिहूँ*–वि० तीनों।

तिहैया–पु० तीसरा भाग; तबलेकी एक विशेष थाप।

ती*–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

तीकुर–पु० तीन हिस्सोंमें फसलका बँटवारा।

तीक्षण, तीक्षन*–वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण–वि० (सं०) तेज नोक या तेज धारवाला; तीव्र, कुशाग्र; प्रखर; तेज, चोखा, चुभता हुआ; मर्मभेदी; उग्र, तीखा; तीखे या चरपरे स्वादका; उत्कट गंधवाला; कठोर; आत्मत्यागी; आलस्यरहित; तिग्म, असह्य तापवाला। पु० विष, जहर; इस्पात, लोहा; युद्ध; मरण; मरी; शस्त्र; त्वरा; समुद्री नमक; जवाखार; लोधका एक भेद, मुष्कक; श्वेत कुश; कुंदरुक; मूल, आर्द्रा, ज्येष्ठा और अश्लेषा नक्षत्रोंका गण। –कंटक–पु० धतूरेका पेड़; इंगुदीका पेड़; बबूलका पेड़; करीलका पेड़। –कंटका–स्त्री० कंथारीका पेड़। –कंद–पु० पलांडु, प्याज। –कर्मा(र्मन्)–वि०, पु० उत्साही। –कल्क–पु० तुंबुरूका पेड़। –कांता–स्त्री० एक देवी, उग्रतारा। –गंध–पु० सहजनका पेड़; लाल तुलसी; कुंदुरू नामक गंधद्रव्य। –गंधक–पु० सहजन। –गंधा–स्त्री० वच; राई; कंथारीका पेड़; जीवंती; छोटी इलायची। –तंडुला–स्त्री० पिप्पली, पीपल। –ताप–पु० शिव। –तैल–पु० सेंहुड़का दूध; मद्य; राल। –दंष्ट्र–पु० बाघ। वि० तेज दाँतोंवाला। –दृष्टि –वि० जिसकी दृष्टि तीखी हो; सूक्ष्मदर्शी। –धार–पु० खड्ग, तलवार। वि० तेज धारवाला। –पत्र–पु० तुंबुरु वृक्ष। –पुष्प –पु० लौंग। –पुष्पा–स्त्री० केतकी। –प्रिय–पु० जौ। –फल –पु० तुंबुरूका पेड़। वि० जिसका फल कड़वा हो। –बुद्धि–वि० जिसकी बुद्धि प्रखर हो। –मंजरी–स्त्री० नागवल्ली, पानका पौधा। –मार्ग–पु० तलवार। –मूल–पु० सहजन; कुलंजन। वि० जिसकी जड़ उत्कट गंधवाली हो। –रश्मि–पु० सूर्य। वि० जिसकी किरणें प्रखर हों। –रस–पु० जवाखार; विष। वि०

जिसका रस चरपरा हो। **–लौह**–पु० इस्पात। **–शूक**–पु० जौ। वि० जिसका टूँड़ चोखा हो। **–शृंग**–वि० जिसके सींग नुकीले हों। **–सार**–पु० लोहा। **–सारा**–स्त्री० शीशमका पेड़।

तीक्ष्णक–पु० (सं०) पीली सरसों; मुष्कक।

तीक्ष्णता–स्त्री० (सं०) तीक्ष्ण होनेका भाव; प्रखरता; चोखापन।

तीक्ष्णांशु–पु० (सं०) सूर्य।

तीक्ष्णा–स्त्री० (सं०) वच; केवाँच; सर्पकंकाली; महाज्योतिष्मती; अत्यम्लपर्णी।

तीक्ष्णाग्नि–स्त्री० (सं०) अजीर्ण रोग; प्रबल जठराग्नि; अग्निरस।

तीक्ष्णायस–पु० (सं०) इस्पात।

तीख*–वि० तीखा।

तीखन*–वि० तीक्ष्ण।

तीखर, तीखल–पु० दे० 'तीखुर'।

तीखा–वि० तीक्ष्ण; कठोर; कटु। **–पन**–पु० तीक्ष्णता।

तीखुर, तीखुल–पु० एक कंद जिसका सत्त मिठाई, खीर आदि बनानेके काम आता है।

तीछन*–वि० तीक्ष्ण।

तीछनता*–स्त्री० तीक्ष्णता।

तीछा*–वि० तीक्ष्ण।

तीज–स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि; भाद्र-शुक्ला तृतीयाको होनेवाला एक व्रत, हरतालिका व्रत (यह विवाहिता स्त्रियोंका एक प्रधान व्रत है)।

तीजा–पु० मुसलमानोंमें मृत्युके बादका तीसरा दिन (इस दिन मृतककी यादगारमें उसके संबंधी एकत्र होते और गरीबोंको खाद्य पदार्थ बाँटे जाते हैं)। वि० तीसरा।

तीत*–वि० दे० 'तीता'।

तीतर–पु० एक प्रसिद्ध पक्षी जिसे लोग लड़ानेके लिए पालते हैं, अर्द्धपारावत।

तीता–वि० तीखे, चरपरे स्वादका, तिक्त; गीला।

तीतुर, तीतुल*–पु० दे० 'तीतर'।

तीतुरी*–स्त्री० दे० 'तितली'।

तीन–वि० दो और एक। पु० तीनकी संख्या, ३; सरयूपारी ब्राह्मणोंमें तीन गोत्रों (गर्ग, गौतम, शांडिल्य)का एक समुदाय; † तिन्नीका चावल। **–काने**–पु० चौपड़में ऐसा दाँव पड़ना, जिसमें तीनों पासोंपर एक ही एक बिन्दी ऊपर आवे। **–चार**–वि० तीन या चार; कुछ। **–पाँच**–स्त्री० इधर-उधरकी बात; मकर, दगा; झगड़ा, तकरार। **–लड़ी**–स्त्री० फेरवट; तिलड़ी। **मु०–तेरह करना**–अस्त-व्यस्त करना, तितर-बितर करना। **–तेरह होना**–तितर-बितर होना, छितरा जाना। **–पाँच करना**–फेरवटकी बात करना, टालमटोल करना। **–(न)में, न तेरहमें**–नगण्य, सर्वथा उपेक्षित, जिसकी कहीं पूछ न हो; सब झगड़ोंसे अलग, किसी भी पक्षमें नहीं (सरयूपारी ब्राह्मणोंमें ३ और १३ घरके ब्राह्मण होते हैं, इसीपर आधारित)।

तीनि*–वि० तीन।

तीनी–स्त्री० तिन्नीका चावल।

तीमार–पु० (फा०) सेवा-शुश्रूषा, हिफाजत। **–दार**–पु० रोगीकी सेवा करनेवाला। **–दारी**–स्त्री० रोगीकी सेवाका कार्य।

तीय, तीया*–स्त्री० स्त्री, औरत।

तीरंदाज़–पु० (फा०) तीर चलानेवाला, धनुर्धर।

तीरंदाज़ी–स्त्री० (फा०) तीर चलानेकी क्रिया या विद्या।

तीर–पु० (सं०) नदीका किनारा, तट, कूल; गंगा-तट; सीसा; राँगा; बाण। **–ज**–पु० तटवर्ती वृक्ष। **–भुक्ति**–पु० तिरहुत, मिथिला। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० तीरपर स्थित, जो किनारेपर रहता हो।

तीर–पु० (फा०) बाण। **–गर**–पु० बाण बनानेवाला।

तीरथ*–पु० दे० 'तीर्थ'।

तीरित–वि० (सं०) तै किया हुआ; जिसका फैसला हो गया हो। पु० कार्य-समाप्ति; रिश्वत आदिके जरिये दंडसे बचा रहना।

तीरु–पु० (सं०) शिव।

तीर्ण–वि० (सं०) जो पार कर चुका हो; जो पार किया जा चुका हो। **–पदी**–स्त्री० तालमूली, मुसली। **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली हो।

तीर्णा–स्त्री० (सं०) एक छंद।

तीर्थंकर–पु० (सं०) जैनियोंके २४ महान् व्यक्ति; विष्णु; शास्त्रकार।

तीर्थ–पु० (सं०) वह पुण्यस्थान जहाँ विशेष धर्मके अनुयायी पूजा, स्नान आदिके लिए जाते हों–जैसे काशी, प्रयाग, मथुरा आदि (इसके तीन भेद हैं–जंगम, मानस और स्थावर), पुण्य क्षेत्र; हाथमेंके कुछ खास स्थान जिनसे आचमन आदि करते हैं; मंत्री, पुरोहित, युवराज, भूपति, द्वारपाल, अंतर्वेशिक, काराधिकारी, द्रव्यसंचयकृत्, कृत्याकृत्य अर्थका विनियोजक, प्रदेष्टा, नगराध्यक्ष, कार्यनिर्माणकारक, धर्माध्यक्ष, सभाध्यक्ष, दंडपाल, दुर्गपाल, राष्ट्रांतपाल, अटवीपाल–राजकी ये अठारह संपत्तियाँ; शास्त्र; यज्ञ; क्षेत्र; रोगका निदान; उपाय; मूल; उपयुक्त स्थान या समय; घाट; घाटकी सीढ़ी; स्त्रीका रज; ऋषियों द्वारा सेवित जल; उपाध्याय; गुरु; योनि; दर्शन; ब्राह्मण; आगम; अग्नि; संन्यासियोंकी एक उपाधि। **–कमंडलु**–पु० वह कमंडलु जिसमें किसी तीर्थका जल हो। **–कर**–पु० जिन; विष्णु; शास्त्रकार। **–काक**–पु० तीर्थका कौआ; (ला०) तीर्थयात्रियोंको ठगनेवाला। **–कृत्**–पु० शास्त्रकार; जिन। **–देव**–पु० शिव। **–पति**–पु० दे० 'तीर्थराज'। **–पुरोहित**–पु० तीर्थका पंडा। **–यात्रा**–स्त्री० तीर्थ करनेके लिए की गयी यात्रा, तीर्थाटन। **–राज**–पु० प्रयाग ('राजा' या 'पति'का समानार्थक कोई भी शब्द 'तीर्थ' शब्दके बाद जुड़नेसे उस समस्त शब्दका अर्थ प्रयाग-बोधक हो जाता है)। **–राजी**–स्त्री० काशी। **–वाक**–पु० सिरके बाल। **–व्यास**–पु० दे० 'तीर्थकाक'। **–शिला**–स्त्री० घाटतक जानेवाली सीढ़ियाँ। **–शौच**–पु० तीर्थमें घाट आदिका परिष्कार करने या करानेकी क्रिया। **–सेनि**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–सेवी(विन्)**–वि० तीर्थमें धर्मभावनासे वास करनेवाला। पु० बक, बगला।

तीर्थाटन–पु० (सं०) तीर्थभ्रमण, तीर्थयात्रा।

तीर्थिक–पु० (सं०) तीर्थका ब्राह्मण, पंडा; तीर्थंकर; तीर्थयात्री।

तीर्थोदक–पु० (सं०) तीर्थका जल।

तीर्थ्य–पु० (सं०) एक रुद्र; सहपाठी, गुरुभाई। वि० तीर्थ-संबंधी।

तीर्न*–वि० दे० 'तीर्ण'।

तीली–स्त्री० सलाई, मोटी सींक या खपची; रेशम लपेटनेका पटवोंका एक औजार।

तीवई*–स्त्री० स्त्री, औरत–'तीवइ कवँल सुगंध शरीरू'–प०।

तीवट–पु० दोपहरमें गाया जानेवाला एक राग; एक ताल।

तीवर–पु० (सं०) समुद्र; मछुआ; बहेलिया; एक वर्णसंकर जाति।

तीव्र–वि० (सं०) तेज, तीक्ष्ण; अत्युष्ण; कटु; असह्य; जोरका; नितांत; अत्यधिक; द्रुत; भयंकर; कुछ ऊँचा (स्वर)। पु० तीक्ष्णता; इस्पात; राँगा; लोहा; शिव; तीर, कूल। **–कंठ, –कंद**–पु० सूरन, ओल। **–गंधा,–गंधिका**–स्त्री० अजवायन। **–गति**–वि० जिसकी चाल तेज हो। पु० पवन, हवा। स्त्री० तेज चाल, द्रुत गति। **–ज्वाला**–स्त्री० धवका फूल। **–दारु**–पु० वृक्षविशेष। **–द्युति**–पु० सूर्य। **–बंध**–पु० तमोगुण। **–वेदना**–स्त्री० घोर यातना। **–संवेग**-पु० तीव्र वैराग्य। **–सव**–पु० एक दिनमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ, एकाह यज्ञ।

तीव्रा–स्त्री० (सं०) राई; खुरासानी अजवायन; तुलसी; गाँडर-दूब; कुटकी; महाज्योतिष्मती; तरदी वृक्ष; पद्मावती नदी; एक श्रुति (संगीत)।

तीव्रानंद–पु० (सं०) शिव, महादेव।

तीव्रानुराग–पु० (सं०) एक तरहका अतिचार (जै०); उत्कट प्रेम।

तीस–वि० बीस और दस। पु० तीसकी संख्या, ३०। **–मार खाँ**–वि० बाँका वीर (व्यं०)। **–(सों)दिन**–अ० सदा, सर्वदा।

तीसर*–वि० तीसरा।

तीसरा–वि० दूसरेके बादका, जो क्रममें दोके बाद पड़े, जो गिनतीमें तीनके स्थानपर हो; जो दोमेंसे किसी पक्षका न हो, गैर। पु० दे० 'तिसरैत'। **–पहर**–पु० अपराह्न।

तीसी–स्त्री० एक तेलहन, अलसी; तीस वस्तुओंका एक मान।

तोहा|–पु० धीरज, ढाढ़स; तिहाई, तृतीयांश ।

तुंग–वि० (सं०) ऊँचा, उन्नत; उग्र; प्रधान । पु० पुन्नागका पेड़; नारियल; पर्वत; बुध ग्रह; शिव; गैंड़ा; किंजल्क; ग्रहोंकी उच्च राशि; एक वृत्त; एक छोटा पहाड़ी पेड़; ऊँचाई; चतुर व्यक्ति; सिंहासन । **–नाथ**–पु० हिमालयपर स्थित एक शिवलिंग तथा एक तीर्थस्थान । **–नाभ**–पु० एक जहरीला कीड़ा । **–नास**–वि० लंबी नाकवाला । **–बाहु**–पु० तलवारका एक हाथ । **–बीज**–पु० पारा । **–भद्र**–पु० मत्त हाथी । **–भद्रा**–स्त्री० दक्षिण भारतकी एक नदी । **–मुख**–पु० गैंड़ा । **–रस**–पु० एक गंधद्रव्य । **–वेणा**–स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक नदी । **–शेखर**–पु० पर्वत ।

तुंगक–पु० (सं०) पुन्नाग वृक्ष; नागकेसर; एक पवित्र वन जहाँ सारस्वत मुनि ऋषियोंको वेद पढ़ाया करते थे ।

तुंगा–स्त्री० (सं०) वंशलोचन; शमीका पेड़; एक वृत्त; मैसूरकी एक नदी ।

तुंगारण्य–पु० (सं०) ओड़छाके समीप वेतवाके किनारेका एक तीर्थ (यहाँ अबतक जंगल हैं और अब भी मेला लगता है) ।

तुंगिनी–स्त्री० (सं०) महाशतावरी ।

तुंगिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) ऊँचाई ।

तुंगी–स्त्री० (सं०) हलदी; रात्रि; वनतुलसी । **–नास**–पु० एक जहरीला कीड़ा । **–पति**–पु० चंद्रमा ।

तुंगी(गिन्)–वि० (सं०) ऊँचा । पु० उच्चस्थ ग्रह ।

तुंगीश–पु० (सं०) शिव; कृष्ण; सूर्य; चंद्र ।

तुंज–पु० (सं०) आघात; आक्रमण; वज्र ।

तुंड–पु० (सं०) मुख; मुखका आगेकी ओर निकला हुआ भाग, थूथन; चोंच; हथियारकी नोक; तलवारका अग्र भाग; शिव; एक राक्षस; हाथीकी सूँड़ । **–केरिका**–स्त्री० कपास ।

तुंडि–पु० (सं०) मुँह; चोंच; बिंबाफल । स्त्री० नाभि । **–केरी**–स्त्री० तालुका फोड़ा; बिंबाफल । **–केशी**–स्त्री० कुँदरू । **–चेल**–पु० एक कीमती कपड़ा ।

तुंडिक–वि० (सं०) थूथनवाला ।

तुंडिका–स्त्री० (सं०) नाभि; टोंटी; चोंच; गलेकी घंटी । **–शोथ**–गलेकी घंटीका बढ़ जाना, सूज जाना (टांसिलाइटीज) ।

तुंडिभ–वि० (सं०) उभरी हुई नाभिवाला; जिसकी तोंद निकली हुई हो ।

तुंडिल–वि० (सं०) बहुत बोलनेवाला; जिसकी नाभि निकली या उभरी हुई हो; तोंदवाला ।

तुंडी–स्त्री० (सं०) नाभि; एक तरहका कुम्हड़ा ।

तुंडी(डिन्)–वि० (सं०) मुँह, चोंच, थूथन या सूँड़से युक्त । पु० शिवका नंदी; * गणेश ।

तुंद–वि० (फा०) तीव्र; उग्र, प्रचंड; तेज । पु० (सं०) नाभि; पेट, तोंद । **–कूपिका,–कूपी**–स्त्री० नाभिका गड्ढा ।

तुंदि–स्त्री० (सं०) पेट; नाभि । **–कर**–पु० नाभि ।

तुंदिक–वि० (सं०) जिसका उदर बड़ा हो; जिसे तोंद हो ।

तुंदिका–स्त्री० (सं०) नाभि ।

तुंदित, तुंदिभ–वि० (सं०) दे० 'तुंदिक' ।

तुंदिल–वि० (सं०) दे० 'तुंदिक' । **–फला**–स्त्री० ककड़ी; खीरा ।

तुंदिलीकरण–पु० (सं०) फुलाना; बढ़ाना ।

तुंदी–स्त्री० (सं०) नाभि ।

तुंदी(दिन्)–वि० (सं०) दे० 'तुंदिक' ।

तुंदैल, तुंदैला–वि० तुंदिल, तोंदवाला ।

तुंब–पु० (सं०) लौकी, लौआ; तूँबा; आँवला ।

तुंबर–पु० (सं०) तानपूरा; तुंबुरु नामक गंधर्व ।

तुंबरी–स्त्री० दे० 'तूँबी'; (सं०) एक अन्न ।

तुंबा–स्त्री० (सं०) कद्दू; दुधार गाय; दुग्धपात्र । पु० कडुए कद्दूसे बना पात्र ।

तुंबिका–स्त्री० (सं०) कड़ुई लौकी; तूँबी ।

तुंबी–स्त्री० (सं०) कड़ुई लौकी; कड़ुआ घीया; इसका बना हुआ छोटा पात्र ।

तुंबुरु–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध गंधर्व; जैनमतमें पंचम अर्हत्‌का उपासक; धनिया ।

तुअ* -सर्व० तुम्हारा ।

तुअना*–अ० क्रि० चूना, टपकना, रुक न सकना; गर्भपात होना ।

तुअर–स्त्री० अरहर ।

तुई*–सर्व० तू ही ।

तुक–स्त्री० किसी छंदके चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल, अंत्यानुप्रास; सामंजस्य । **–बंदी**–स्त्री० तुक मिलानेकी क्रिया; साधारण पद्यरचना; भद्दी कविता । मु०**–बैठाना**–छंदके चरणोंके अंतमें ऐसे शब्दोंकी योजना करना जिनकी तुक मिल जाय, तुकबंदी करना ।

तुकमा–पु० (फा०) फंदा जिसमें घुंडी फँसाते हैं ।

तुकांत–पु० अंत्यानुप्रास, चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल ।

तुका*–पु० दे० 'तुक्का'; व्यर्थका उपाय ।

तुकार–पु० 'तू-तू' करके संबोधित करनेकी क्रिया; 'तू-तू' करके किया गया संबोधन ।

तुकारना–स० क्रि० 'तू-तू' करके संबोधित करना ।

तुकारी*–स्त्री० दे० 'तुकार' ।

तुक्कड़–वि०, पु० तुकबंदी करनेवाला, साधारण पद्य रचनेवाला ।

तुक्कल–स्त्री० मोटी डोरसे उड़ायी जानेवाली बड़ी पतंग ।

तुक्का–पु० (फा०) शल्यरहित बाण, बिना फलका बाण; कोई लंबी-सी चीज या उसका टुकड़ा ।

तुक्खार–पु० (सं०) दे० 'तुखार' ।

तुख*–पु० दे० 'तुष' ।

तुखार–पु० (सं०) एक प्राचीन देश; वहाँका घोड़ा–'स्यामकरन अरु बाँक तुखारा'–प०; वहाँका निवासी; * दे० 'तुषार' ।

तुख़्म–पु० (अ०) बीज । मु०**–तासीर सोहबते असर**–बीजमें अपनी तासीर होती है और संसर्गका प्रभाव अवश्य पड़ता है ।

तुगा–स्त्री० (सं०) वंशलोचन । **–क्षीरी**–स्त्री० वंशलोचन ।

तुच, तुचा*–स्त्री० दे० 'त्वचा' ।

तुचार*–वि० पैना, चोखा–'परिगो दाग अधरवा चोंच तुचार'–गुलाब ।

तुच्छ–वि० (सं०) हीन, क्षुद्र, ओछा; नगण्य; निकृष्ट; अल्प; निःसत्त्व, असार; शून्य, रिक्त; मंद; दीन; परित्यक्त । पु० तुष, भूसी; तूतिया; नीलका पौधा । **–द्रु**–पु० एरंडका वृक्ष । **–धान्यक**–पु० तुष, भूसी ।

तुच्छक–वि० (सं०) खोखला, रिक्त, निःसार ।

तुच्छा–स्त्री० (सं०) कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी; नीलका पौधा; तूतिया ।

तुच्छातितुच्छ–वि० (सं०) एकदम गया-गुजरा, अत्यंत निकृष्ट ।

तुजनूँ*–सर्व० तुझको ।

तुज़ुक–पु० (तु०) वैभव, शान-शौकत, ऐश्वर्य; विधान, व्यवस्था; आत्मचरित; अभिनंदन ।

तुझ–सर्व० 'तू'का वह रूप जो उसे कर्ता तथा संबंध कारकके अतिरिक्त अन्य कारकोंमें प्रयुक्त होनेके पहले प्राप्त होता है–जैसे तुझे, तुझसे ।

तुझे–सर्व० 'तू'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप, तुझको ।

तुट*–त्रि० अत्यल्प, थोड़ा-सा ।

तुटि–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची ।

तुटितुट–पु० (सं०) शिव ।

तुटुम–पु० (सं०) चूहा ।

तुट्ठना*–अ० क्रि० तुष्ट होना, प्रसन्न होना । स० क्रि० तुष्ट, प्रसन्न करना ।

तुड़वाना–स० क्रि० दे० 'तोड़वाना' ।

तुड़ाई–स्त्री० दे० 'तोड़ाई' ।

तुड़ाना–स० क्रि० तोड़वाना; बंधन तोड़ना; संबंध-विच्छेद करना; अलग करना, बड़ा सिक्का भुनाना; मूल्य घटवाना ।

तुडी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

तुणि–पु० (सं०) तूनका पेड़ ।

तुतमलंगा–पु० दे० 'तूतमलंगा' ।

तुतरा*–वि० दे० 'तोतला' ।

तुतराना*–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना' ।

तुतरौंहाँ*–वि० दे० 'तोतला' ।

तुतलाना–अ० क्रि० बच्चोंका शब्दों तथा वर्णोंका अस्फुट और कुछका कुछ उच्चारण करते हुए बोलना ।

तुतली–वि० स्त्री० दे० 'तोतली' ।

तुत्थ–पु० (सं०) अग्नि; पत्थर; तूतिया, नीला थोथा ।

तुत्थांजन–पु० (सं०) एक उपधातु, तुत्थ ।

तुत्था–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; छोटी इलायची ।

तुदन–पु० (सं०) पीड़ित करने या चुभानेकी क्रिया, पीड़न; भेदन; कष्ट, पीड़ा, व्यथा ।

तुन–पु० वृक्ष-विशेष ।

तुनक–वि० (फा०) थोड़ा; छोटा; सूक्ष्म; दुर्बल; नाजुक । **–मिज़ाज**–वि० जो झटपट या छोटी-छोटी बातोंपर नाराज हो जाय, चिड़चिड़ा; नाजुकमिजाज । **–मिज़ाजी**–स्त्री० चिड़चिड़ापन; नाजुकमिजाजी । **–हवास**–वि० तीक्ष्णधी ।

तुनकना–अ० क्रि० छोटी-छोटी बातोंपर चिढ़ जाना, 'तिनकना' ।

तुनतुनी–स्त्री० 'तुन-तुन' बजनेवाला एक बाजा ।

तुनी–स्त्री० दे० 'तुन' ।

तुनीर*–पु० दे० 'तूणीर' ।

तुनुक–वि०, स्त्री० दे० 'तुनक' ।

तुन्न–पु० (सं०) तुनका पेड़ । वि० छिन्न, कटा हुआ; फटा हुआ । **–वाय**–पु० कपड़ा काटकर सीनेवाला, दरजी, सौचिक ।

तुपक–स्त्री० (तु०) छोटी तोप; बंदूक । **–ची**–पु० तुपक चलानेवाला, गोलंदाज ।

तुफ़ंग–स्त्री० (फा०) एक प्रकारकी लंबी नली जिसके द्वारा फूंकके जोरसे कंकड़ी, तीर आदि छोड़े जाते हैं; हवाई बंदूक ।

तुफ–पु० थूक । मु०**–है–थू है**, लानत है ।

तुफान†–पु० दे० 'तूफान' ।

तुफ़ैल–पु० (अ०) जरिया, वसीला । **–से**–...के जरिये,...की कृपासे ।

तुवक*–स्त्री० दे० 'तुपक' (तोप) ।

तुभना*–अ० क्रि० स्तब्ध हो जाना; थक जाना; मुग्ध होकर अचल हो जाना ।

तुम–सर्व० वह सर्वनाम जिसका प्रयोग उस पुरुषके लिए होता है जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाता है ।

तुमड़ी–स्त्री० सूखा कद्दू; सूखे कद्दूका गूदा आदि निकालकर बनाया हुआ पात्र; सूखे कद्दूसे बनाया जानेवाला एक बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं ।

तुमरी†–स्त्री० दे० 'तुमड़ी' ।

तुमल–वि०, पु० दे० 'तुमुल' ।

तुमाना–स० क्रि० तूमनेका काम कराना, उँगलियोंसे नुचवाकर रूईको साफ और पुलपुली कराना ।

तुमुर–वि०, पु० (सं०) दे० 'तुमुल' ।

तुमुल–वि० (सं०) जिसमें शोरगुल हो; कई तरहकी ध्वनियोंके मेलसे उत्पन्न (ध्वनि); भयंकर; क्षुब्ध; घबड़ाया हुआ । पु० घोर युद्ध, घमासान, भीषण युद्ध, गहरी लड़ाई; बहेड़ेका पेड़ ।

तुम्ह*–सर्व० दे० 'तुम' ।

तुम्हारा–सर्व० 'तुम'का संबंध कारकका रूप, उसका जिससे वक्ता बोलता हो ।

तुम्हीं–सर्व० 'तुम'का 'ही'के योगसे बना हुआ रूप ।

तुम्हें–सर्व० 'तुम'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप ।

तुरंग–पु० (सं०) घोड़ा; मन, चित्त; सातकी संख्या । **–गंधा**–स्त्री० अश्वगंधा, असगंध । **–गौड**–पु० एक राग । **–दानव**–पु० अश्वरूपधारी केशी नामका दैत्य जिसे कंसने कृष्णको मारनेके लिए भेजा था । **–द्विषणी,–द्वेषिणी**–स्त्री० भैंस । **–प्रिय**–पु० जौ । **–ब्रह्मचर्य**-पु० स्त्री न मिलनेसे धारित ब्रह्मचर्य व्रत । **–मुख**–पु० किन्नर । **–मेध**–पु० अश्वमेध । **–यायी(यिन्)**–पु० अश्वारोही । **–रक्ष**–पु० साईस । **–लीलक**-पु० एक ताल । **–वक्त्र, –वदन**–पु० किन्नर । **–शाला**–स्त्री०,**–स्थान**–पु० घुड़साल, अस्तबल । **–सादी(दिन्)**–पु० अश्वारोही ।

तुरंगक–पु० (सं०) घोड़ा; बड़ी तोरई ।

तुरंगम–पु० (सं०) घोड़ा; एक वर्ण वृत्त । वि० जल्द चलनेवाला ।

तुरंगमी–स्त्री० (सं०) घोड़ी; असगंध ।

तुरंगमी(मिन्)–पु० (सं०) अश्वारोही, घुड़सवार ।

तुरंगारि–पु० (सं०) भैंसा; कनेर ।

तुरंगारूढ–पु० (सं०) अश्वारोही ।

तुरंगिका–स्त्री० (सं०) देवताली लता ।

तुरंगी–स्त्री० (सं०) घोड़ी; असगंध ।

तुरंगी(गिन्)–पु० (सं०) अश्वारोही, घुड़सवार ।

तुरंज–पु० चकोतरा नीबू; दुशालेके किनारों तथा कुरते आदिके मोढ़ोंपर सूईसे काढ़कर बनाया हुआ बड़ा बूटा । **–बीन**–स्त्री० नीबूके रसका शर्बत; ऊँटकटारेके पौधोंपर जमनेवाली एक प्रकारकी चीनी ।

तुरंत–अ० दे० 'तुरत' । **–पत्र**–पु० (एक्सप्रेस लेटर) डाकसे भेजा जानेवाला ऐसा पत्र जो गन्तव्य स्थानपर पहुँचनेके बाद शीघ्र ही पानेवालेके पास भेज दिया जाता है । इसपर मामूलीसे अधिक टिकट लगाना पड़ता है ।

तुरंता–पु० गाँजा (जिसका नशा पीते ही चढ़ जाता है) ।

तुर-अ० (सं०) शीघ्र, जल्द, वेगके साथ । वि० वेगवान् । (हिं०) बुना हुआ कपड़ा लपेटनेकी करघेकी लकड़ी ।

तुरई-स्त्री० एक बेल जिसके फलोंकी तरकारी बनती है ।

तुरक–पु० (फा०) दे० 'तुर्क' ।

तुरकाना–वि० (फा०) तुर्क जैसा, तुर्ककी तरहका । पु० तुर्कोंका देश; तुर्कोंकी बस्ती; मुसलमान ।

तुरकानी–स्त्री० (फा०) तुर्क औरतोंका एक ढीला-ढाला पहनावा; तुर्ककी या तुर्क जातिकी स्त्री । वि० स्त्री० तुर्कोंकीसी ।

तुरकिन–स्त्री० तुर्ककी या तुर्क जातिकी स्त्री ।

तुरकिस्तान–पु० (फा०) दे० 'तुर्किस्तान' ।

तुरकी–वि० (फा०) तुर्क देशका; तुर्क देश-संबंधी । स्त्री० तुर्कोंके देशकी भाषा; † तुर्कों जैसी ऐंठ; खड़ी बोली ।

तुरग–पु० (सं०) दे० 'तुरंग' (समास भी) ।

तुरगारोह–पु० (सं०) अश्वारोही ।

तुरगास्तरण–पु० घोड़े की पीठपर बिछाया जानेवाला कपड़ा, जीन, पलान ।

तुरगी–स्त्री० (सं०) दे० 'तुरंगी' ।

तुरगी(गिन्)–पु० (सं०) अश्वारोही ।

तुरगोपचारक–पु० (सं०) साईस ।

तुरत–अ० शीघ्र, तत्काल, चटपट ।

तुरपई–स्त्री० दे० 'तुरपन' ।

तुरपन–स्त्री० तुरपनेकी क्रिया; एक तरहकी सिलाई ।

तुरपना–स० क्रि० बखिया करनेके लिए लंबाईके बल सीधे सीना ।

तुरपवाना–स० क्रि० तुरपनकी सिलाई कराना ।

तुरपाना–स० क्रि० दे० 'तुरपवाना' ।

तुरम–पु० तुरही ।

तुरमती–स्त्री० एक शिकारी चिड़िया ।

तुरय*–पु० घोड़ा ।

तुरसीला*–वि० खट्टा; पैना; कड़ा, तीखा–'फूलछरी-सी नरम करम करधनी शब्द है तुरसीले'–नारायण स्वामी ।

तुरही–स्त्री० फूंककर बजानेका एक पतले मुँहका बाजा जो दूसरे सिरेकी ओर बराबर चौड़ा होता जाता है ।

तुरा*–स्त्री० दे० 'त्वरा' । **–ई**–स्त्री० उतावली, जल्दी; दे० क्रममें ।

तुराइ, तुराय*–अ० आतुरताके साथ ।

तुराई*–स्त्री० तोशक; दे० 'तुरा'में । अ० तुरंत ।

तुराना*–अ० क्रि० शीघ्रता या उतावली करना । स० क्रि० दे० 'तोड़ाना' ।

तुरायण–पु० (सं०) एक यज्ञ; अनासक्ति, असंग ।

तुरावती*–वि० स्त्री० वेगवती, तीव्र गतिसे चलने या बहनेवाली ।

तुरावान*–वि० वेगयुक्त, त्वरायुक्त ।

तुराषाट्(ह्)–पु० (सं०) इंद्र; विष्णु ।

तुरास*–अ० वेगसे । पु० वेग ।

तुरिया–स्त्री० जुलाहोंका एक औजार; वह गाय या भैंस जिसका

बच्चा मर गया हो; * तुरीयावस्था।

तुरी*–पु० घोड़ा; सवार। स्त्री० घोड़ी; लगाम; फूलोंका गुच्छा; मोतीकी लड़ियोंका झब्बा; तुरही; * तुरीयावस्था। (सं०) जुलाहोंका कपड़ा बुननेका काठका एक औजार जिससे बानेका सूत भरा जाता है; जुलाहोंकी कूची; चित्रकारकी कूची, तूलिका; वसुदेवकी एक पत्नीका नाम। **–यंत्र**–पु० सूर्यकी गति जाननेका एक यंत्र।

तुरीय–वि० (सं०) गतियुक्त; चतुर्थ; चार खंडोंवाला; श्रेष्ठ; शक्तिशाली। पु० वेदांतके अनुसार एक अवस्था जिसमें आत्मा ब्रह्ममें लीन हो जाती है। **–वर्ण**–पु० चतुर्थ वर्ण, शूद्र।

तुरुक–पु० दे० 'तुर्क'।

तुरुप–पु० ताशका एक खेल जिसमें प्रधान माने हुए रंगका छोटेसे छोटा पत्ता अन्य रंगोंके बड़ेसे बड़े पत्तेको काट सकता है, 'ट्रंप'; सेनाका दस्ता; सवारोंका दल।

तुरुपना–स० क्रि० दे० 'तुरपना'।

तुरुष्क–पु० (सं०) तुर्क जाति; तुर्क जातिका मनुष्य; तुर्किस्तानका निवासी; तुर्किस्तान; एक गंधद्रव्य, लोबान। **–गौड**–पु० एक राग।

तुर्क–पु० (फा०) तुर्कीका रहनेवाला। **–चीन**–पु० सूर्य। **–मान**–पु० तुर्कीकी एक जाति; तुर्की घोड़ा। **–रोज़**–पु० सूर्य।

तुर्किन, तुर्किनी–स्त्री० दे० 'तुरकिन'।

तुर्किस्तान-पु० (फा०) तुर्कोंका देश जो रूसके दक्षिण तथा एशियाके पश्चिममें पड़ता है।

तुर्की–वि०, स्त्री० दे० 'तुरकी'। **–टोपी**–स्त्री० एक झब्बेदार, गोल, ऊँची टोपी।

तूर्य–वि० (सं०) चौथा, तुरीय। पु० तुरीयावस्था। **–गोल**–पु० एक कालज्ञापक यंत्र। **–वाट्(ह्)**–पु० चार वर्षका बछड़ा।

तुर्याश्रम–पु० (सं०) चतुर्थ आश्रम, सन्न्यासाश्रम।

तुर्रा–पु० (अ०) जुल्फ; पगड़ी या टोपी आदिमें लगा हुआ फुँदना या पर, कलगी; पक्षियोंकी शिखा; मुर्गकेश नामका फूल, जटाधारी; कोड़ा, चाबुक; एक बुलबुल। वि० (फा०) अनोखा। मु० **–यह कि**–ऊपरसे इतनी बात और कि।

तुर्वसु–पु० (सं०) राजा ययातिका एक पुत्र जिसने पिताको अपना यौवन देनेमे इनकार कर दिया था।

तुर्श–वि० (फा०) खट्टा; रूखा; कड़ा; अप्रसन्न; क्रुद्ध। **–रू**–वि० तुनकमिजाज, कटुभाषी।

तुर्शाना–अ० क्रि० खट्टा हो जाना।

तुर्शी–स्त्री० खटाई, खट्टापन; रुष्टता।

तुलक–पु० (सं०) राजमंत्री।

तुलन–पु० (सं०) तौलना; तौल; तुलना, बरावरी करना। **–पत्र**–पु० दे० 'देयादेयफलक', पक्का चिट्ठा (बैलेंस शीट)।

तुलना–अ० क्रि० तौला जाना, मापित होना; तौल या मापमें समान होना; किसी आधारपर इस प्रकार स्थित या आसीन होना कि किसी ओर थोड़ा-सा भी झुकाव न हो, सधकर स्थित होना (जैसे–तुलकर बैठना); सधना, ठीक अंदाजके अनुसार अभ्यस्त होना; सन्नद्ध, उतारू होना; धुरीका औंगा जाना; * पहुँचना। स्त्री० (सं०) न्यूनाधिक्यका विचार, समता, बरावरी, मिलान; उटाना; अंदाजा लगाना; जांच करना।

तुलनात्मक–वि० (सं०) तुलनायुक्त; जिसमें किसीसे तुलना की जाय।

तुलनी–स्त्री० तराजूकी डाँड़ीका काँटेके दोनों ओरका हिस्सा।

तुलवाई–स्त्री० तौलनेकी क्रिया या मजदूरी।

तुलवाना–स० क्रि० दे० 'तौलाना'।

तुलसारिणी–स्त्री० (सं०) तूणीर।

तुलसी–स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध पौधा (हिंदू, विशेषतः वैष्णव इसे बहुत पवित्र मानते हैं)। **–घरा,–चौरा**–पु० आँगनके मध्यमें बनी वह ऊँची (प्रायः चौकोर) जगह जहाँ तुलसीका पौधा लगाया जाता है और जिसके चारों तरफ परिक्रमा आदिके लिए स्थान छुटा रहता है। **–दल**–पु० तुलसीकी पत्ती। **–दाना**–पु० (हिं०) एक गहना। **–दास**–पु० उत्तरी भारतके एक सुप्रसिद्ध भक्त कवि (ये रामके अनन्य भक्त थे। इनके जन्मकालके संबंधमें दो प्रसिद्ध मत हैं। मिरजापुरके प्रख्यात रामायणी पं० रामगुलाम द्विवेदीके अनुसार इनका जन्म-संवत् १५८९ तथा शिवसिंह-सरोजके अनुसार १५८३ है। ये सरयूपारीण ब्राह्मण थे। चित्रकूटके पास राजापुर ग्राम इनका जन्मस्थान ठहरता है। कहते हैं कि पत्नी द्वारा धिक्कारे जानेके कारण ये विरक्त हुए थे। इनकी प्रसिद्ध रचना रामचरितमानसका घर-घरमें प्रचार है। इसके अतिरिक्त इनके ११ ग्रंथ और हैं। इनका देहावसान काशीमें संवत् १६८० में असीघाटपर हुआ)। **–द्वेषा**–स्त्री० बर्व्वरी, बनतुलसी। **–पत्र**–पु० तुलसीकी पत्ती। **–बास**–पु० (हिं०) एक महकदार धान। **–वन**–पु० तुलसीके पौधोंका समूह। **–विवाह**–पु० तुलसीके पौधेके साथ विष्णुकी मूर्तिका विवाह। **–वृंदावन**–पु० तुलसीका पौधा लगानेका चबूतरा।

तुला–स्त्री० (सं०) तराजू, काँटा; समानता; नाप, तौलमें बराबरी, तुलना; १०० पल–लगभग ५ सेरका एक प्राचीन परिमाण; भांड; सातवीं राशि (ज्यो०); एक प्रकारकी सहतीर; एक दिव्य परीक्षा। **–कूट**–पु० तोलमें की गयी कमी; कम तौलनेवाला। **–कोटि**–स्त्री० तराजूकी डंडीके दोनों छोर; नूपुर। **–कोश,–कोष**–पु० तोल द्वारा दिव्य परीक्षा; तराजू रखनेकी जगह। **–दंड**–पु० तराजूकी डंडी। **–दान**–पु० एक दान जिसमें दाता द्वारा तौलके बराबर अन्न-द्रव्यादिका दान किया जाता है। **–धट**–पु० डाँड़; तराजूका पलड़ा। **–धर**–पु० तुला राशि; सौदागर। **–धार**–पु० तुला राशि; वणिक्; सौदागर; तराजूकी तन्नी; एक वणिक् जिसने जाजलिको उपदेश दिया था। **–परीक्षा**–स्त्री० एक दिव्य परीक्षा जिसमें मिट्टी आदिसे तौला हुआ व्यक्ति यदि दूसरी बार तौलनेमें घट जाता था तो दोषी ठहराया जाता था। **–पुरुषकृच्छ्र**–पु० एक व्रत जिसमें पिण्याक (तिलकी खली), भात, मट्ठा, जल और सत्तूमेंसे प्रत्येक तीन-तीन दिन खाकर पंद्रह दिनोंतक रहना होता है। **–पुरुषदान**–पु० दे० 'तुलादान'। **–प्रग्रह,–प्रगाह**–पु० दे० 'तुलासूत्र'। **–बीज**–पु० गुंजा, घुँघची। **–मान**–पु० तराजूकी डंडी, तुलादंड; बाट, बटखरा। **–मानांतर**–पु० ग्राहकोंको ठगनेके लिए हलके बाट रखना (कौ०)। **–यंत्र**–पु० तराजू। **–यष्टि**–स्त्री० तुलादंड। **–सूत्र**–पु० तराजूकी डंडीमें बीचोबीच छेद करके लगाया हुआ मोटे सूत या रस्सीका टुकड़ा। **–हीन**–पु० टेनी मारना, कम तौलना।

तुलाई–स्त्री० दे० 'तौलाई'; हलकी रजाई, दुलाई; गाड़ीकी धुरीमें तेल देनेकी क्रिया।

तुलाना*–अ० क्रि० आ पहुँचना; बराबर होना। स० क्रि० धुरीमें तेल दिलाना।

तुलि–स्त्री० (सं०) जुलाहोंकी कूची; तूलिका। **–फला**–स्त्री० शाल्मली।

तुलिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका खंजन।

तुलित–वि० (सं०) किसीके साथ मापा हुआ; समान, सदृश।

तुलिनी–स्त्री० (सं०) शाल्मली।

तुली–स्त्री० (सं०) जुलाहोंकी कूची; तूलिका।

तुल्य–वि० (सं०) समान, सदृश, बराबर; अभिन्न। **–कक्ष**–वि० बराबर दर्जेका। **–कर्मक**–वि० (क्रियाएँ) जिनका कर्म एक हो। **–काल,–कालीय**–वि० समसामयिक, समकालीन। **–कुल्य**–वि० एक ही कुलका। पु० संबंधी। **–गुण**–वि० समान गुणोंसे युक्त। **–जातीय**–वि० एक ही जातिका; जो जातिकी दृष्टिसे समान हो। **–तर्क**–पु० तथ्यकी कोटिका तर्क, वह तर्क जो यथार्थसे मिलता-जुलता हो। **–दर्शन**–वि० जो सबको समान दृष्टिसे देखता हो, समदृष्टि, समदर्शी। **–नामा(मन्)**–वि० एक ही नामका। **–पान**–पु० सजातियोंका एकत्र मद्य आदि पीना। **–योग**–पु०,**–योगिता**–स्त्री० अर्थालंकारका एक भेद जहाँ कई उपमेयों या उपमानोंका एक ही समान धर्म कहा जाय अथवा जहाँ हित तथा अहितमें एक ही वृत्ति दिखाई जाय। **–रूप**–वि० एक जैसा, एक ही रूपका। **–लक्षण**–वि० समान लक्षणोंवाला। **–वृत्ति**–वि० वही पेशा करनेवाला।

तुल्ल*–वि० तुल्य, वरावर।

तुवर–वि० (सं०) कसैला; विना दाढ़ी या विना मूँछका। पु० कषाय रस; अरहर।

तुवरिका–स्त्री० (सं०) अरहर; फिटकरी; एक सुगंधित मिट्टी, गोपीचंदन।

तुवरी–स्त्री० (सं०) दे० 'तुवरिका'। **–शिव–**पु० चक्रमर्दक, चकवँड़।

तुवि–स्त्री० (सं०) तुंबी।

तुष–पु० (सं०) अन्नके ऊपरका छिलका, भूसी; अंडेके ऊपरका छिलका; वहेड़ेका पेड़। **–ग्रह,–सार–**पु० अग्नि। **–धान्य–**पु० छिलकेवाला अन्न।

तुषांवु-पु० (सं०) चावल या जौकी काँजी।

तुषाग्नि–स्त्री० (सं०) दे० 'तुषानल'।

तुषानल–पु० (सं०) भूसीकी आग; एक तरहका प्राण-दंड जिसमें वदनपर तिनके लपेटकर आग लगा दी जाती थी।

तुषार–पु० (सं०) हवामें मिली भाप जो जमकर श्वेत कणोंके रूपमें पृथ्वीपर गिरती है, हिम, वरफ; चीनिया कपूर; घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध हिमालयके उत्तरका एक प्राचीन देश। वि० जो छूनेमें वरफकी तरह ठंडा हो। **–कण**-पु० तुषारका कण, हिम-कण। **–कर–**पु० चंद्रमा; कपूर। **–गिरि,–पर्वत–**पु० हिमालय पहाड़। **–गौर–**पु० कपूर। वि० तुषारकी तरह सफेद रंगका। **–द्युति–**पु० चंद्रमा। **–पाषाण–**पु० ओला; वरफ। **–मूर्ति–**पु० चंद्रमा। **–रश्मि–**पु० चंद्रमा। **–शिखरी(रिन्), –शैल–**पु० हिमालय।

तुषारर्तु–स्त्री० (स०) जाड़ेका मौसम।

तुषारांशु–पु० (सं०) चंद्रमा।

तुषाराद्रि–पु० (सं०) हिमालय पर्वत।

तुषित–पु० (सं०) एक प्रकारके गणदेवता (इनकी संख्या वारह है, कोई-कोई ३६ मानते हैं); विष्णु।

तुषिता–स्त्री० (सं०) तुषित नामक गणदेवताओंकी माता।

तुषोत्थ–पु० (सं०) दे० 'तुषांवु'।

तुषोदक–पु० (सं०) दे० 'तुषांवु'।

तुष्ट–वि० (सं०) तोषयुक्त, प्रसन्न, तृप्त, खुश। पु० विष्णु।

तुष्टना*–अ० क्रि० तुष्ट होना, प्रसन्न होना।

तुष्टि–स्त्री० (सं०) संतोष, प्रसन्नता, भोग्य वस्तुओंके प्रति ऐसी वृत्ति जिसमें और अधिककी लालसा न हो; जितना प्राप्त हो उससे अधिककी इच्छा न होना। (सांख्यके अनुसार तुष्टि नौ प्रकारकी है।)

तुष्टीकरण–पु० (अपीज़मेंट) किसी क्रुद्ध या झगड़ेपर उतारू व्यक्तिको रिआयत देकर, अनुनय-विनय द्वारा संतुष्ट करना, मनुहार।

तुष्टु–पु० (सं०) कर्णमणि।

तुस–पु० (सं०) दे० 'तुष', भूसी।

तुसाडाँ*–सर्व० तुम्हारा।

तुसार–पु० (सं०) दे० 'तुषार'।

तुसी*–स्त्री० दे० 'तुष'।

तुस्त–पु० (सं०) धूल, गर्द; भूसी।

तुहमत–स्त्री० (फा०) बुरी राय; इलजाम; झूठी वदनामी।

तुहमती–वि०, पु० इलजाम लगानेवाला (आदमी)।

तुहिन–पु० (सं०) तुषार, हिम; वरफ; चंद्रमाकी ज्योति, चंद्रिका; कपूर। **–कण–**पु० ओस; वरफका गोला। **–कर,–किरण,–गु,–द्युति,–रश्मि–**पु० चंद्रमा; कपूर। **–गिरि,–शैल–**पु० हिमालय पर्वत। **–शर्करा–**स्त्री० वरफ।

तुहिनांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

तुहिनाचल–पु० (सं०) हिमालय पर्वत।

तुहिनाद्रि–पु० (सं०) हिमालय पर्वत।

तूँवड़ा–पु० तूँवा।

तूँवा-पु० कटुतुंवी; कड़वे कद्दूको खोखला कर वनाया हुआ (साधुओंका) पात्र।

तूँवी–स्त्री० छोटा तूँवा; रक्त या वायु खींचनेका एक औजार।

तू–सर्व० एक सर्वनाम जो उस व्यक्तिके लिए आता है जिसे संवोधित करके कुछ कहा जाता है; 'तुम'का एकवचन रूप (इसका प्रयोग छोटों या नीचों तथा कभी-कभी अत्यंत प्रिय और आदरणीय व्यक्तियों एवं ईश्वरके लिए भी होता है)। स्त्री० कुत्तोंको बुलानेका शब्द। **–तू, मैं-मैं–**स्त्री० वाक्कलह, वोल-ठोल, गाली-गलौज। मु०**–तू, मैं-मैं करना–**कहा-सुनी करना, गाली-गलौज करना।

तूअर–पु० अरहरका पौधा या बीज।

तूख*–पु० खरका, सींक।

तूखना*-अ० क्रि० संतुष्ट होना।

तूटना–अ० क्रि० दे० 'टूटना'।

तूठना*–अ० क्रि० तुष्ट, प्रसन्न होना।

तूण–पु० (सं०) दे० 'तूणीर'। **–क्ष्वेड–**पु० वाण।

तूणक–पु० (सं०) एक छंद जिसका प्रत्येक पाद पंद्रह अक्षरोंका होता है।

तूणव–पु० (सं०) बाँसुरी, वेणु। **–ध्म–**पु० बाँसुरी वजानेवाला।

तूणि–वि० (सं०) शीघ्र, तेज। स्त्री० वेग। पु० मन; श्लोक; गर्द; मल।

तूणी–स्त्री० (सं०) तरकश; नीलका पौधा; गुदा आदिका एक भीतरी रोग। **–धर,–धार–**पु० तरकश धारण करनेवाला, कमनैत।

तूणी(णिन्)–वि० (सं०) तरकश धारण करनेवाला, धनुर्धर। पु० तुनका पेड़।

तूणीक–पु० (सं०) तुनका पेड़।

तूणीर–पु० (सं०) वाण रखनेका चोंगा, तरकश, निषंग।

तूत-पु० (फा०) एक मीठे फलोंवाला पेड़; इसका फल।

तूतक–पु० (सं०) तूतिया।

तूतमलंगा–पु० एक तरहके बीज जो दवाके काम आते हैं।

तूतिया–पु० गंधकाम्लके योगसे बना हुआ ताँबेका क्षार, नीला थोथा।

तूती–स्त्री० एक छोटी चिड़िया जिसकी बोली बहुत मीठी होती है; छोटी जातिका तोता; बाँसुरी जैसा एक बाजा; मिट्टी की बनी टोंटीदार छोटी घरिया। मु० **(नक्क़ारख़ानेमें)–की आवाज़–**शोरगुल होते समयकी धीमी आवाज जो सुनाई नहीं पड़ती; वड़ोंके सामने छोटोंकी वात (जिसकी कदर नहीं होती)। **(किसीकी)–वोलना–**(किसीकी) धाक जमना, खूब चलती होना।

तूद–पु० (सं०) शाल्मली वृक्ष; (फ़ा०) दे० 'तूदा'।

तूदा–पु० (फा०) ढेर; पुश्ता, टीला; हदवंदीका निशान; वह दीवार जिसपर बैठकर तीरंदाज निशाना लगाते हैं; चाँदमारीका अभ्यास करनेका मिट्टीका टीला।

तून-पु० एक पेड़, तुन; लाल वस्त्र-विशेष; * तूण, तूणीर।

तूना–अ० क्रि० चूना, टपकना; गिरना; गर्भपात होना।

तूनीर*–पु० तूणीर।

तूफ़ान–पु० (अ०) जोरकी बाढ़, सैलाव; आँधी, अंधड़ जिसमें हवा-पानी आदिका भीषण उत्पात हो; भारी आपत्ति, कहर; हंगामा; उपद्रव, दंगा-फसाद। मु०**–उठाना या खड़ा करना–**बखेड़ा मचाना।

तूफ़ानी–वि० तूफान-संवंधी; तूफान जैसा प्रचंड; फसादी; ऊधमी, उपद्रवी। **–दस्ता–**पु० दे० 'उड़ाका दल'।

तूवर-पु० (सं०) शृंगहीन वृषभ; श्मश्रुहीन पुरुष, हिजड़ा; कषाय रस। वि० कषाय रसवाला।

तूवरक–पु० (सं०) क्लीव, हिजड़ा।

तूवरी–स्त्री० (सं०) दे० 'तुवरिका'।

तूमड़ी-स्त्री० दे० 'तुमड़ी'।

तूमना–स० क्रि० उँगलियोंसे नोच-नोचकर रुईके रेशोंको अलग करना; ऐव निकालना; भद्दी गालियाँ देना; पीटना; नाकमें दम करना।

तूमरी*–स्त्री० दे० 'तुमड़ी'।

तूमा–पु० तूँवा। **–पलटी,–फेरी–**स्त्री० इसकी चीज उसको देना; इधरकी चीज उधर करना।

तूमार-पु० (अ०) छोटी बातको बेकार बहुत बढ़ा देना; *बातका*

बतंगड़ ।

तूर–स्त्री० अरहर; अन्न । वि० (सं०) शीघ्रता करनेवाला । पु० हरकारा; एक तरहका बाजा; * तुरही; ताना लपेटनेकी जुलाहोंकी एक लकड़ी ।

तूरज*–पु० दे० 'तूर्य' ।

तूरण, तूरन*–अ० दे० 'तूर्ण' ।

तूरना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ना' । पु० तुरही ।

तूरा–स्त्री० (सं०) वेग, त्वरा । * पु० तुरही ।

तूरान–पु० (फा०) तातार देश ।

तूरानी–वि० तूरानका; तूरान-संबंधी । पु० तूरानका निवासी या वहाँकी भाषा ।

तूरी–स्त्री० (सं०) धतूरा ।

तूर्ण–वि० (सं०) तेज; शीघ्रता करनेवाला । अ० तेजीसे, शीघ्र ।

तूर्णक–पु० (सं०) एक प्रकारका चावल ।

तूर्त–वि० (सं०) तेज, फुर्तीला । अ० शीघ्र, तुरत ।

तूर्य–(सं०) तुरही; मुरज, मृदंग । **–खंड**–पु० एक तरहका ढोल ।

तूल–पु० (सं०) आकाश; रुई; तूतका पेड़; तृणका सिरा; धतूरा । **–कार्मुक,- चाप, -धनुष्**–पु० धुनकी । **–नालिका, –नाली**–स्त्री० प्यूनी । **–पिचु**–पु० रुई । **–वृक्ष**–पु० सेमरका पेड़, शाल्मली । **–शर्करा**-स्त्री० कपासका बीज, बिनौला । **–सेचन**–पु० सूत कातना ।

तूल* -वि० समान, सदृश । पु० लाल रंगका कपड़ा; गाढ़ा लाल रंग; (अ०) लंबाई, विस्तार; ढेर । **–अर्ज़**–पु० लंबाई-चौड़ाई । चौड़ाई । **–तवील**–वि० बहुत लंबा । **–तूफान**–पु० हो-हल्ला, उत्पात । मु०**–पकड़ना**–किसी बातका बहुत अधिक बढ़ जाना या उग्र रूप धारण करना ।

तूलक–पु० (सं०) रुई ।

तूलता*–स्त्री० समता, सादृश्य ।

तूलना*–अ० क्रि० समान होना, समता करना । स० क्रि० धुरीमें तेल देना या इस कार्यके लिए पहियेको लकड़ीके सहारे टिकाना ।

तूलमतूल*–अ० आमने-सामने, समक्ष ।

तूला-स्त्री० (सं०) कपास; दीपककी बत्ती ।

तूलि–स्त्री०(सं०) चित्रकारकी कूची ।**–फला**–स्त्री० शाल्मली वृक्ष ।

तूलिका–स्त्री० (सं०) चित्रकारोंकी रंग भरनेकी कूची; लेखनी; रुई-भरा गद्दा, तोशक; दुलाई; नील; बरमा; साँचा ।

तूलिनी–स्त्री० (सं०) शाल्मली; लक्ष्मणा कंद ।

तूली–स्त्री० (सं०) रुई; चिरागकी बत्ती; जुलाहेकी कूची; चित्रकारकी कूची; नीलका पौधा ।

तूवर–पु० (सं०) दे० 'तूबर' ।

तूवरक–पु० (सं०) दे० 'तूबरक' ।

तूवरिका, तूवरी–स्त्री० (सं०) अरहर; गोपीचंदन ।

तूष–पु० (सं०) कपड़ेकी किनारी ।

तूष्णी–वि० मौन, चुप, खामोश । * स्त्री० चुप्पी, खामोशी ।

तूष्णीक–वि० (सं०) मौन रहनेवाला ।

तूष्णीम्–अ० (सं०) चुप-चाप, बिना बोले । **–(ष्णीं)दंड**–पु० गुप्त दंड । **–भाव**–पु० मौनावलंबन । **–युद्ध**–पु० वह युद्ध जिसमें शत्रुपक्षके प्रमुख व्यक्ति फोड़ लिये जायँ (कौ०) । **–शील** –वि० चुप रहनेवाला ।

तूस–पु० तुष, भूसी; भूसा; एक प्रकारका उम्दा ऊन, पशमीना; गहरे लाल रंगका कपड़ा, तूल ।

तूसदान–पु० कारतूस ।

तूसना*–स० क्रि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना । अ० क्रि० प्रसन्न या संतुष्ट होना ।

तूसा–पु० भूसी ।

तूसी–वि० स्लेटके रंगका; तूस या तूलके रंगका, गहरा लाल । पु० इस तरहका रंग ।

तूस्त–पु० (सं०) धूल, गर्द; बालोंकी चोटी, जटा; पाप; अणु, सूक्ष्म कण । वि० सूक्ष्म ।

तृकुटी*–स्त्री० दे० 'त्रिकुटी' ।

तृक्ष–पु० (स०) कश्यप ऋषि ।

तृख–पु० (स०) जातीफल, जायफल ।

तृखा*–स्त्री० दे० 'तृषा' ।

तृजग*–वि०, पु० दे० 'तिर्यक्' ।

तृण–पु० (सं०) तिनका; घास; खर-पात । **–कांड**–पु० तृण-समूह । **–कुंकुम,–गौर**–पु० एक गंधद्रव्य । **–कुटी,**–स्त्री०, **-कुटीर,–कुटीरक**–पु० घास-फूसकी बनी कुटिया । **–कूट**–पु० घासका ढेर । **–कूर्चिका**–स्त्री० झाड़ू । **–केतु,–केतुक**–पु० बाँस; ताड़ । **–गोधा**– स्त्री० एक तरहका गिरगिट । **–ग्रंथी**–स्त्री० स्वर्णजीवंती । **–ग्राही(हिन्)**–पु० नील मणि । **–चर**–पु० गोमेद मणि; तृणमें रहनेवाला जंतु । **–जलायुका,–जलौका**–स्त्री० एक कीड़ा । **–जलौका न्याय**–पु० तृण और जलौका-संबंधी न्याय (आत्माके दूसरे शरीरमें प्रविष्ट होनेका दृष्टांत देते समय नैयायिक इसका प्रयोग करते हैं । अर्थात् जिस प्रकार एक तिनकेके सिरेतक पहुँचकर यह कीड़ा दूसरे तिनकेके सिरेपर चढ़ जाता है और पहले तिनकेसे कोई वास्ता नहीं रखता उसी प्रकार आत्मा एक शरीरको छोड़कर दूसरे शरीरमें प्रविष्ट हो जाती है और पहलेसे उसे कुछ भी मतलब नहीं रहता) । **–ज्योति(स्)**–स्त्री० ज्योतिष्मती लता । **–द्रुम,–वृक्ष**–पु० नारियल; ताड़; सुपारीका पेड़; केतकीका पेड़; खजूरका पेड़; भुइँआँवला । **–धान्य**–पु० तिन्नी नामक धान, नीवार; सावाँ । **–ध्वज**–पु० बाँस; ताड़ । **–निंब**–पु० चिरायता । **–पत्रिका, –पत्री**–स्त्री० इक्षुदर्भा । **–पीड**–पु० दस्त-ब-दस्त लड़ाई । **–पुष्प**–पु० एक गंधद्रव्य; सिंदूर-पुष्पी नामकी घास; गठिवन । **–पुष्पी**–स्त्री० सिंदूरपुष्पी । **–पूली**–स्त्री० नरकटकी चटाई । **–बीज**–पु० सावाँ । **–मणि**–पु० दे० 'तृणग्राही' । **–मत्कुण**–पु० जामिन, जमानत करनेवाला । **–राज**–पु० ताड़; नारियल; खजूर । **–शय्या**–स्त्री० घासका बिछौना; साथरी । **–शीत**–पु० एक सुगंधित घास । **–शीता**–स्त्री० जल-पिप्पली । **–शून्य**–वि० तृणरहित । पु० (तृणकी तरह फलहीन) केतकी; मल्लिका । **–शूली**–स्त्री० एक लता । **–शोषक**–पु० एक सर्प । **–षट्पद**–पु० भिड़, बर्रे । **-संवाह**–पु० वायु । **–समान**–वि० दे० 'तृणवत्' । **–सारा**–स्त्री० कदली, केला । **–सिंह**–पु० कुठार । **–हर्म्य**–पु० झोपड़ी । मु०**–गहना या पकड़ना**–शरणमें जाना; दैन्य प्रकट करना । **–गहाना या पकड़ाना**–दयाकी भीख मँगवाना; वशीभूत करना । **(किसी वस्तुपर)–टूटना**–किसी वस्तुका इतना सुंदर होना कि देखनेवाले उसपर अपनेको न्योछावर कर दें । **(किसीसे) –तोड़ना**–संबंधविच्छेद करना, नाता तोड़ना । **–तोड़ना**–बलैया लेना; अपनेको न्योछावर करना ।

तृणक–पु० (सं०) निकम्मा तृण ।

तृणकीया–स्त्री० (सं०) घासवाली जमीन ।

तृणमय–वि० (सं०) तृणनिर्मित, घासका बना हुआ ।

तृणवत्–वि० (सं०) तिनकेके बराबर, अत्यंत तुच्छ ।

तृणांजन–पु० (सं०) एक तरहका गिरगिट ।

तृणाग्नि–स्त्री०, **तृणानल**–पु० (सं०) तिनकेकी आग ।

तृणान्न–पु० (सं०) तिन्नी नामक धान ।

तृणाम्ल–पु० (सं०) एक घास जिसमें नमकका अंश होता है, नोनिया; इससे निकाला हुआ नमक ।

तृणावर्त–पु० (सं०) वात्याचक्र, बवंडर; एक दैत्य जो कंसकी आज्ञासे बवंडरका रूप धारण कर कृष्णको मारने गया था ।

तृणेंद्र–पु० (सं०) ताड़का पेड़ ।

तृणोत्तम–पु० (सं०) उखर्वल नामक तृण ।

तृणोद्भव–पु० (सं०) नीवार, तिन्नी ।

तृणोल्का–स्त्री० (सं०) तिनकोंकी मशाल ।

तृणौक(स्)–पु० (सं०) तृणकुटीर ।

तृणौषध–पु० (सं०) एलवालुक नामक गंधद्रव्य ।

तृण्या–स्त्री० (सं०) घास-पातका ढेर ।

तृतीय–वि० (सं०) तीसरा । **–प्रकृति**–पु० नपुंसक, हिजड़ा । **–सवन**–पु० अग्निष्टोम आदि यागोंका तीसरा सवन, सायंसवन ।

तृतीयक–पु० (सं०) दे० 'तिजरा' ज्वर ।

तृतीयांश–पु० (सं०) तीसरा भाग ।

तृतीया–वि० स्त्री० (सं०) तीसरी । स्त्री० पक्षकी तीसरी तिथि, तीज; करण कारककी विभक्ति ।

तृतीयाश्रम–पु० (सं०) तीसरा आश्रम, वानप्रस्थ ।

तृतीयी(यिन्)–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसे किसी संपत्तिका तृतीयांश मिले, किसी संपत्तिके तृतीयांशका अधिकारी । वि० तीसरे दरजेका ।

तृन*–पु० दे० 'तृण' ।

तृपति*–स्त्री० दे० 'तृप्ति' ।

तृपत्–पु० (सं०) चंद्रमा ।

तृपल–पु० (सं०) उपल, पत्थर । वि० संतुष्ट; व्याकुल, बेचैन ।

तृपला–स्त्री० (सं०) लता; त्रिफला ।

तृपित*–वि० दे० 'तृप्त' ।

तृपिता*–स्त्री० दे० 'तृप्ति' ।

तृप्त–वि० (सं०) अघाया हुआ, संतुष्ट ।

तृप्ताना*–अ० क्रि० तृप्त होना । स० क्रि० तृप्त करना ।

तृप्ति–स्त्री० (सं०) तृप्त होनेका भाव, भोजन आदिकी प्राप्तिसे उत्पन्न संतोष या शांति; इच्छित वस्तुकी प्राप्तिसे जीका भरना ।

तृप्र–पु० (सं०) पुरोडाश; तर्पण करनेवाला; तृप्त करनेवाला; दुःख; घृत ।

तृफला–स्त्री० (सं०) दे० 'त्रिफला' ।

तृफू–स्त्री० (सं०) एक सर्प-जाति ।

तृषा–स्त्री० (सं०) प्यास; तीव्र इच्छा, अभिलाष; लोभ । **–भू**–स्त्री०,**–स्थान**–पु० क्लोम । **–ह**–पु० जल । **–हा**–स्त्री० सौंफ ।

तृषालु–वि० (सं०) प्यासा, पिपासित, पिपासार्त ।

तृषावंत*–वि० तृषावान् ।

तृषावान्(वत्)–वि० (सं०) तृषालु ।

तृषित–वि० (सं०) प्यासा ।

तृषितोत्तरा–स्त्री० (सं०) अशनपर्णी ।

तृष्णा–स्त्री० (सं०) प्यास; अप्राप्त वस्तुको पानेकी तीव्र इच्छा; लोभ; भोगेच्छा । **–क्षय**–पु० संतोष, इच्छाका अंत; शांति, विरक्ति ।

तृष्णारि–पु० (सं०) पर्पट, पित्तपापड़ा ।

तृष्णालु–वि० (सं०) तृष्णासे युक्त, तृष्णावान्, प्यासा; लोभी ।

तृष्य–वि० (सं०) इच्छा या लोभ करने योग्य । पु० लोभ; प्यास ।

तें*–प्र० से; द्वारा ।

तेंतालीस–वि० चालीस और तीन । पु० तैंतालीसकी संख्या, ४३ ।

तेंतीस–वि० तीस और तीन । पु० तैंतीसकी संख्या, ३३ ।

तेंदुआ–पु० चीतेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः पीलापन लिये भूरा-सा होता है और इसकी देहपर काले-काले गोल धब्बे या चित्तियाँ-सी होती हैं ।

तेंदुस†–पु० डेंड़सी ।

तेंदू–पु० एक पेड़ जिसका हीर आबनूसके नामसे बिकता है ।

ते*–अ० से । सर्व० (सं०) वे, वे लोग ।

तेइ*–सर्व० वे ही ।

तेईस–वि० बीस और तीन । पु० तेईसकी संख्या, २३ ।

तेखना*–अ० क्रि० रुष्ट, नाराज होना ।

तेग़–स्त्री० (फा०) बड़ी तलवार ।

तेगा–पु० दे० 'तेग़'; कुश्तीका एक दाँव । स्त्री० (सं०) एक देवी ।

तेजःफल–पु० (सं०) वृक्षविशेष, तेजफल ।

तेज–पु० (सं०) तीखापन; शस्त्रकी तीक्ष्णता; चमक; उत्साह । **–पत्ता,–पात**–पु० (हिं०) मसालेके काम आनेवाला एक प्रकारका पत्ता । **–पत्र**–पु० तेजपात ।

तेज(स्)–पु० (सं०) तीक्ष्णता; तीक्ष्ण धार; दिव्य ज्योति; दीप्ति, प्रभा, चमक, जलाल; बल, पराक्रम; वीर्य; उग्रता; अधीरता; प्रभाव; प्राणभय उत्पन्न होनेपर भी अपमान या अधिक्षेपको न सहनेका गुण; उष्ण प्रकाश, ताप; नवनीत, मक्खन; सोना; अग्नि; पंचमहाभूतोंमेंसे तीसरा; पित्त; मज्जा; सार, ओज (सुश्रुत); भेजा; दूसरोंको अभिभूत करनेकी सामर्थ्य; सत्त्व गुणसे उत्पन्न लिंग-शरीर; घोड़ेका वेग; रजोगुण; तेजसे युक्त व्यक्ति; आँखकी स्वच्छता ।

तेज़–वि० (फा०) जिसकी धार तीक्ष्ण हो, पैनी धारका; द्रुतगामी, वेगवान्; फुर्तीला; तीक्ष्ण बुद्धिवाला; तीखे स्वादका; जल्द असर करनेवाला; महँगा; जिसका मूल्य चढ़ गया हो; प्रखर, प्रचंड; उग्र; चपल, चंचल ।

तेजक–पु० (सं०) मूँज, सरपत ।

तेजन–पु० (सं०) दीप्ति या तेज उत्पन्न करनेकी क्रिया या भाव; चाकू आदि तेज करना; बाणकी नोक; शस्त्रकी धार; बाँस; मूँज । वि० तेज उत्पन्न करनेवाला; शीघ्र जलने या जलानेवाला ।

तेजनक–पु० (सं०) शर, सरपत ।

तेजना*–स० क्रि० तजना, छोड़ना ।

तेजनी–स्त्री० (सं०) चटाई; गुच्छा; घोड़ेके सिरपरके बाल, अयाल; मूर्वा; ज्योतिष्मती ।

तेजल–पु० (सं०) चातक, पपीहा ।

तेजवंत*–वि० दे० 'तेजोवान्' ।

तेजवान्–वि० तेजसे युक्त; पराक्रमी; बलिष्ठ; ओजस्वी; कांतिमान् ।

तेजस–पु० (सं०) तेज; शक्ति ।

तेजसी*–वि० तेजस्वी ।

तेजस्–पु० (सं०) दे० 'तेज(स्)'–केवल समासमें व्यवहृत । **–कर**–वि० तेज बढ़ानेवाला, जिसके सेवनसे तेज बढ़े; कांतिवर्द्धक । **–काम**–वि० शक्ति, प्रताप आदिका इच्छुक ।

तेजस्वान्(वत्)–वि० (सं०) तेजसे युक्त, तेजवाला ।

तेजस्विता–स्त्री० (सं०) तेजस्वी होनेका भाव ।

तेजस्विनी–स्त्री० (सं०) तेजसे युक्त स्त्री; मालकँगनी, महाज्योतिष्मती । वि० स्त्री० तेजवाली ।

तेजस्वी(विन्)–वि० (सं०) तेजवाला; प्रतापी; शक्तिशाली; प्रभावशाली ।

तेजा–पु० एक तरहका काला रंग । † वि० तेजी, महँगी ।

तेज़ाब–पु० (फा०) किसी क्षार पदार्थका अम्ल जिसमें दूसरी वस्तुओंको गलानेकी शक्ति रहती है (यह प्रायः धातुओंको गलाने और दवाओंके काम आता है), 'एसिड' ।

तेज़ाबी–वि० तेजाब-संबंधी । **–सोना**–पु० तेजाबसे साफ किया हुआ सोना ।

तेजिका–स्त्री० (सं०) मालकँगनी ।

तेजित–वि० (सं०) तेज किया हुआ; उत्तेजित ।

तेजिनी–स्त्री० (सं०) दे० 'तेजनी'; 'तेजोवती' ।

तेज़ी–स्त्री० तेज होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीव्रता; प्रखरता; शीघ्रता, जल्दी; महँगी, सस्तीका उलटा; सफरका महीना । **–का चाँद** –सफर महीनेका चाँद ।

तेजी*–पु० ताजी, घोड़ेकी एक जाति (बीसल०) ।

तेजो–'तेजस्'का समासगत रूप । **–ज**–पु० रक्त । **–जल**–पु० आँखका ताल जैसा भाग, 'लेंस' । **–बल**–पु० एक कँटीला जंगली पेड़ जिसका छिलका मसाले और दवाके काम आता है । **–बीज**–पु० मज्जा । **–भंग**–पु० अपमान, बेइज्जती । **–भीरु**–स्त्री० छाया । **–मंथ**–पु० अग्निमंथ वृक्ष, गनियारी । **–मूर्ति**–पु० सूर्य । वि० जिसमें तेजकी प्रचुरता हो, तेजस्वरूप । **–रूप**–पु० वह जिसका रूप सर्वप्रकाशक चैतन्य हो; ब्रह्म । वि० दे० 'तेजोमूर्ति' । **–विंदु**–पु० एक उपनिषद् । **–वृक्ष**–पु० क्षुद्र अग्निमंथ, छोटी अरणीका वृक्ष । **–हत**–वि० जिसका तेज नष्ट हो गया हो । **–ह्वा**–स्त्री० तेजस्विनी लता ।

तेजोमय–पु० (सं०) तेजसे परिपूर्ण; जिसके शरीरसे तेज निकलता हो, ज्योतिर्मय ।

तेजोवती–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली; चविका; महाज्योतिष्मती । वि० स्त्री० दे० 'तेजोवान्' ।

तेजोवान्(वत्)–वि० (सं०) तेजसे युक्त, तीखा; तेज; उत्साही ।

तेता*–वि० उतना, जो परिमाणमें उसीके बराबर हो ।

तेतालीस–वि०, पु० दे० 'तेंतालीस' ।

तेतिक*–वि० उतना ।

तेती*–वि० स्त्री० उतनी ।

तेतीस–वि०, पु० दे० 'तेंतीस' ।

तेतो*–वि० उतना ।

तेन–पु० (सं०) गानका आरम्भिक स्वर, तोम-नोम ।

तेम–पु० (सं०) आर्द्र होना ।

तेमन–पु० (सं०) व्यंजन; पका हुआ भोजन; आर्द्र करनेकी क्रिया, आर्द्रता ।

तेमनी–स्त्री० (सं०) आग रखनेकी जगह; एक तरहका चूल्हा ।

तेमरू–पु० तेंदूका वृक्ष, आबनूस या उसकी लकड़ी ।

तेरस–स्त्री० दे० 'त्रयोदशी' ।

तेरह–वि० दस और तीन । पु० तेरहकी संख्या, १३ ।

तेरहीं–स्त्री० मरनेकी तिथिसे तेरहवीं तिथि जिस दिन और्ध्वदेहिक क्रियाकी समाप्ति होती है और ब्राह्मणभोजनके बाद मरणाशौचका अंत होता है ।

तेरा–सर्व० 'तू'का संबंध कारकका रूप । (स्त्री० 'तेरी') । मु० तेरी-सी–तेरे हितकी, तेरे अनुकूल बात ।

तेरुस*–पु० पिछला या आगेका तीसरा साल (विशेषणरूपमें भी प्रयुक्त–तेरुस साल ।) स्त्री० तेरस ।

तेरे*–प्र० से ।

तेरौ*–सर्व० दे० 'तेरा' ।

तेल–पु० बीजों, बनस्पतियों आदिसे निकलने या विशेष उपाय द्वारा निकाला जानेवाला स्निग्ध तरल पदार्थ; वर-वधूको विवाहके पूर्व हल्दी मिला हुआ तेल लगानेकी एक रीति । **–हँड़ा**–पु० तेल रखनेका मिट्टीका बड़ा पात्र । **–हँड़ी**–स्त्री० छोटा तेलहँड़ा । मु० **–चढ़ना**–विवाह-संबंधी तेलकी रस्म पूरी होना । **–चढ़ाना** –तेलकी रस्म पूरी करना ।

तेलगू–स्त्री० तैलंग या आंध्र देशकी भाषा ।

तेलहन–पु० वे बीज जिनसे तेल निकाला जाता है ।

तेलहा†–वि० तेलसे संबद्ध;तेलका, तेलमें बना हुआ; जिसमें तेल हो ।

तेला–पु० तीन दिनतक का उपवास ।

तेलिन–स्त्री० तेलीकी स्त्री ।

तेलिया–वि० जो तेलकी तरह चिकना हो; जिसका रंग तेलके रंग जैसा हो । पु० एक रंग; इस रंगका घोड़ा; एक विष । स्त्री० एक मछली । **–कंद**–पु० एक प्रकारका कंद । **–कत्था**–पु० कत्थेका एक भेद । **–काकरेजी**–पु० कालापन लिये हुए गहरा लाल रंग । **–कुमैत,–सुरंग**–पु० घोड़ेका कालिमा-मिश्रित लाल रंग; इस रंगका घोड़ा । **–पखान**–पु० एक तरहका काला, चिकना पत्थर । **–पानी**–पु० बहुत खारा पानी । **–मसान**–पु० कंजूस आदमी । **–सुहागा**–पु० एक प्रकारका चिकना सुहागा ।

तेली–पु० हिंदुओंकी एक जाति जो तेल पेरने और बेचनेका पेशा करती है । मु०**–का बैल**–रात-दिन पिसनेवाला व्यक्ति ।

तेली†–स्त्री० पेउसी (बुंदेल०) ।

तेवड़ा, तेवरा–पु० एक तरहका ताल । दे० 'तिउरा' ।

तेवन–पु० (सं०) क्रीड़ा; क्रीडोद्यान; नजरबाग ।

तेंवर–पु० क्रोधसूचक भ्रूभंग, क्रोधभरी दृष्टि, कोप प्रकट करनेवाली तिरछी नजर; भौंह । मु० **–चढ़ना**–क्रोधके मारे भौंहोंका तन जाना । **–बदलना**–क्रुद्ध होना ।

तेवरी–स्त्री० दे० 'त्योरी' ।

तेवहार–पु० दे० 'त्योहार' ।

तेवान*–पु० सोच, चिंता ।

तेवाना*–अ० क्रि० सोचमें पड़ना, चिंता-मग्न होना ।

तेह*–पु० क्रोध, कोप; स्वाभिमान, ऐंठ; ताव; प्रखरता, तिग्मता, तेजी ।

तेहरा–वि० तीन परत किया हुआ, तीन तहोंका; जिसकी तीन प्रतियाँ एक साथ हों; तीसरी बार किया हुआ ।

तेहराना–स० क्रि० तीन परतों या तहोंका बनाना; तीसरी बार करना; तीसरी बार पढ़ना ।

तेहा*–पु० दे० 'तेह' ।

तेहिं*–सर्व० उसको, उसे ।

तेही*–वि० क्रोधी, गुस्सैल; अभिमानी । सर्व० दे० 'तेहिं' ।

तैं*–सर्व० तू । प्र० से ।

तैंड़ा*–सर्व० तेरा ।

तैंतालीस–वि०, पु० दे० 'तेंतालीस' ।

तैंतिडीक–वि० (सं०) इमलीकी कांजीसे बनाया हुआ ।

तैंतीस–वि०, पु० दे० 'तेंतीस' ।

तै–वि० दे० 'तय' । † अ० उतने ।

तैक्त–पु० (सं०) तिक्त होनेका भाव, तिक्तता, तिताई ।

तैक्ष्ण्य–पु० (सं०) तीक्ष्ण होनेका भाव, तीक्ष्णता, तीखापन; भयंकरता; उग्रता ।

तैखाना–पु० तहखाना ।

तैजस–वि० (सं०) चमकीला; तेजसे उत्पन्न; जिसमें तेज हो; तेज-संबंधी; रजोगुणसे उत्पन्न, राजस; साहसी; उत्साही; शक्तिशाली । पु० तेजका विकार; धातु, मणि आदि तेजसे युक्त पदार्थ; धातु-द्रव्य; शक्ति, पराक्रम; घी; गंभीरता ।

तैजसावर्तनी–स्त्री० (सं०) सोना-चाँदी आदि गलानेकी घरिया, मूषा ।

तैजसी–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली ।

तैतिक्ष–वि० (सं०) सहिष्णु, सहनशील ।

तैतिर–पु० (सं०) तीतर पक्षी ।

तैतिल–पु० (सं०) बव आदि करणोंमेंसे चौथा करण (ज्यो०); देवता; गैंड़ा ।

तैत्तिर–पु० (सं०) तीतरोंका समूह; तीतर; गैंड़ा ।

तैत्तिरि–पु० (सं०) कृष्ण यजुर्वेदके प्रवर्तक एक ऋषि ।

तैत्तिरिक–पु० (सं०) तीतर पकड़नेवाला ।

तैत्तिरीय, तैत्तिरीयक–पु० (सं०) यजुर्वेदकी एक शाखा; इस शाखाका अनुयायी या अध्ययन करनेवाला ।

तैत्तिरीयारण्यक–पु० (सं०) तैत्तिरीय शाखा-संबंधी आरण्यक ।

तैना*–स० क्रि० तपाना, जलाना । अ० क्रि० तप्त होना; दुःखी होना ।

तैनात–वि० किसी कामके लिए नियत या नियुक्त किया हुआ, मुकर्रर ।

तैनाती–स्त्री० नियुक्ति, मुकर्ररी ।

तैमिर–पु० (सं०) आँखका एक रोग जिसमें धुँधलापन आ जाता है ।

तैयार–वि० जो बनकर बिलकुल ठीक हो गया हो; जो पककर खाने योग्य हो गया हो; पूर्णतः व्यवहारके योग्य, हर प्रकारसे दुरुस्त; उद्यत, कटिबद्ध; मुस्तैद; प्रस्तुत, मौजूद; मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट; शिक्षा आदिके द्वारा कामके योग्य बनाया हुआ ।

तैयारी–स्त्री० तैयार होनेकी क्रिया या भाव; तत्परता, मुस्तैदी; आयोजन; सज-धज; शरीरकी पुष्टता; अभ्याससे प्राप्त कुशलता । वि० † पका हुआ, जो पककर खाने योग्य हो गया हो (–आम) ।

तैयो*–अ० तो भी, फिर भी ।

तैरना–अ० क्रि० किसी जीवका हाथ-पाँव आदि चलाते हुए पानीपर चलना, बढ़ना; पानीके ऊपर-ऊपर फिरना; उतराना ।

तैरनी–स्त्री० (सं०) एक क्षुप ।

तैराई–स्त्री० तैरनेकी क्रिया या भाव; तैरने-तैरानेके बदले प्राप्त द्रव्य ।

तैराक–वि० तैरनेमें कुशल । पु० वह व्यक्ति जो अच्छी तरह तैरना जानता हो ।

तैराकी–स्त्री० तैरनेका कार्य या भाव । **–प्रतियोगिता**–स्त्री० वह समारोह जिसमें तैराकी या पानीमें खेले जानेवाले खेलोंकी प्रतियोगिताका आयोजन हो ।

तैराना–स० क्रि० तैरनेका काम कराना; दूसरेको तैरनेमें लगाना ।

तैर्थ–वि० (सं०) तीर्थ-संबंधी । पु० तीर्थमें किया जानेवाला कृत्य ।

तैर्थिक–वि० (सं०) पवित्र; तीर्थ-संबंधी; तीर्थदर्शन करनेवाला । पु० सन्यासी; नया दार्शनिक या धार्मिक मत चलानेवाला, शास्त्रकार; तीर्थस्थानका जल ।

तैलंग–पु० आंध्र देश, तैलंग देशका रहनेवाला ।

तैलंगी–वि० तैलंग देशका; तैलंग देश-संबंधी । पु० तैलंग देशका निवासी । स्त्री० तैलंग देशकी भाषा ।

तैल–पु० (सं०) तिलको पेरकर निकाला हुआ तेल; कोई तेल;

पत्थरफूल। **–कंद**–पु० तेलियाकंद। **–कल्कज**–पु० खली। **–कार**–पु० तेली। **–किट्ट**–पु० तेलके नीचे बैठा हुआ मैल; खली। **–कीट**–पु० एक कीड़ा। **–चित्र**–पु० (आइल पेंटिंग) तेल मिले हुए रंगोंसे बना हुआ चित्र जो अधिक स्थायी होता है। **–चौरिका**–स्त्री० तेलचट्टा। **–द्रोणी**–स्त्री० काठका बना मनुष्यके बराबर एक पात्र जिसमें प्राचीन कालमें तेल भरकर रोगी लिटाये जाते थे तथा सड़नेसे बचानेके लिए मुर्दे रखे जाते थे। **–धान्य**–पु० उन धान्योंका एक वर्ग जिनसे तेल निकलता है (–तिल, अलसी, तोरी, तीनों प्रकारकी सरसों, खस और कुसुमके बीज)। **–पर्णक**–पु० गठिवन। **–पर्णिक**–पु० हरिचंदन; एक वृक्ष। **–पर्णिका, –पर्णी**–स्त्री० चंदन; धूप; तारपीन। **–पायिका**–स्त्री० एक कीड़ा, मुखविष्ठा। **–पायी(यिन्)**–पु० झींगुर, चपड़ा; तलवार। **–पिंज**–पु० सफेद तिल। **–पिपीलिका**–स्त्री० एक तरहकी चींटी। **–पिष्टक**–पु० खली। **–पोत**–पु० (आइल टैंकर) खनिज तेल ढोनेवाला जहाज। **–फल**–पु० इंगुदी; बहेड़ा; तिलका पौधा। **–भाविनी**–स्त्री० चमेलीका पेड़। **–माली**–स्त्री० दीपककी बत्ती। **–यंत्र**–पु० कोल्हू। **–वल्ली**–स्त्री० छोटी सतावर। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ तेल पेरा जाता हो। **–साधन**–पु० कक्कोल नामक गंधद्रव्य। **–स्फटिक**–पु० तृणमणि। **–स्यंदा**–स्त्री० श्वेत गोकर्णी; काकोली।

तैलक–पु० (सं०) थोड़ा तेल।

तैलवाहक पोत–पु० (टैंकर) दे० तैलपोत।

तैलांबुका–स्त्री० (सं०) तैलपायिका, तिलचटा।

तैलाक्त–वि० (सं०) जिसमें तेल लगा हो; जिसने तेल सोखा हो।

तैलाख्य–पु० (सं०) शिलारस नामक गंधद्रव्य।

तैलागुरु–पु० (सं०) अगरकी लकड़ी।

तैलाभ्यंग–पु० (सं०) शरीरमें तेल मलनेकी क्रिया, तेलकी मालिश।

तैलिक–पु० (सं०) तेली। वि० तेल-संबंधी। **–यंत्र**–पु० कोल्हू।

तैलिनी–स्त्री० (सं०) बत्ती।

तैली(लिन्)–पु० (सं०) तेली। वि० तैल-संबंधी। **–(लि)शाला**–स्त्री० तेल पेरनेका स्थान।

तैलीन–पु० (सं०) तिलका खेत।

तैल्वक–वि० (सं०) लोध्रका बना हुआ; लोध्र-संबंधी।

तैश–पु० (अ०) आवेगपूर्ण क्रोध, क्रोधकी झिझक। मु०**–में आना**–बहुत क्रुद्ध होना।

तैष–पु० (सं०) चांद्र पौष मास।

तैषी–स्त्री० (सं०) पुष्य नक्षत्रवाली पूर्णिमा, पूसकी पूर्णिमा।

तैसा–वि० दे० 'वैसा'।

तैसे–अ० दे० 'वैसे'।

तों*–अ० त्यों, उस प्रकार; उस समय।

तोंअर*–पु० भाले जैसा एक अस्त्र, तोमर।

तोंद–स्त्री० पेटका आगेकी ओर बढ़ा हुआ भाग। मु०**–पचकना**–मोटाई दूर होना।

तोंदल–वि० तोंदवाला, जिसका पेट निकला हुआ हो।

तोंदी–स्त्री० नाभि।

तोंदीला–वि० तोंदवाला।

तो–अ० तब, उस स्थितिमें; एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्दपर जोर देनेके लिए अथवा यों ही किया जाता है; * था। * सर्व० तुझ, 'तू'का वह रूप जो उसे विभक्ति लगनेके पहले प्राप्त होता है।

तोइ*–पु० तोय, जल।

तोई–स्त्री० मगजी, गोट।

तोक–पु० (सं०) कृष्णके एक सखा; अपत्य, शिशु।

तोकक–पु० (सं०) चातक, पपीहा।

तोक्म–पु० (सं०) जौ आदिकी हरी बाल; हरा रंग; मेघ; कानका मैल।

तोख*–पु० दे० 'तोष'।

तोखना*–स० क्रि० संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।

तोखार*–पु० दे० 'तुखार'।

तोटक–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें चार सगण होते हैं; आचार्य शंकरके एक पट्ट शिष्य।

तोटका–पु० दे० 'टोटका'।

तोटना*–अ० क्रि० टूटना।

तोड़–पु० तोड़नेकी क्रिया या भाव; नदी आदिके जलका जोरदार बहाव; कुश्तीमें एक दाँवके जवाबमें किया गया दूसरा दाँव; अप्रभावी या बेकार कर देनेवाला उपाय या साधन; झोंक; बार, दफा; दहीका पानी। **–जोड़**–पु० दाँव-पेंच; उपाय, युक्ति। **–फोड़**–स्त्री० तोड़ने-फोड़ने, जान-बूझकर नष्ट-भ्रष्ट करने या क्षति पहुँचानेकी क्रिया (सैबोटाज)।

तोड़क–पु० तोड़नेवाला।

तोड़न–पु० (सं०) भेदन; फाड़ना; चोट पहुँचाना।

तोड़ना–स० क्रि० आघात, झटके या दबावसे किसी वस्तुके दो या अधिक टुकड़े करना; किसी वस्तुके अंगको या उसमें लगी हुई दूसरी वस्तुको नोचकर या और तरहसे आधारसे पृथक् करना; किसी वस्तुका कोई अंग खंडित या बेकाम करना; बल, प्रभाव आदिको निःशेष या नष्ट करना; फुसला लेना, फोड़ना; किसी संस्था या कार-बार आदिको सदाके लिए बंद कर देना; किसी नियमको रद करना या कायम न रखना; किसी आज्ञाका उल्लंघन करना; संबंध या नातेको आगेके लिए न निभाना; बातपर कायम न रहना; दूर करना।

तोड़र*–पु० तोड़ा, पैरका एक गहना।

तोड़वाना–स० क्रि० तोड़नेका कार्य कराना; तोड़नेमें प्रवृत्त करना; तोड़ने देना।

तोड़ा–पु० रुपये रखनेकी टाट आदिकी थैली जिसमें एक हजार रुपये अँट सकें; पैर या कलाईमें पहननेका एक गहना; टोटा; नाचका एक हिस्सा; तोड़कर अलग किया हुआ खंड; हरिस; पलीता। **–(ड़े)दार**–वि० जिसमें तोड़ा (पलीता) लगा हो। **–०बंदूक**–स्त्री० पलीता दागकर छोड़ी जानेवाली बंदूक। मु०**–(ड़े) उलटना या गिनना**–किसीको बहुत अधिक द्रव्य देना।

तोड़ाई–स्त्री० तोड़ानेकी क्रिया या भाव; तोड़नेकी क्रिया या भाव; तोड़नेकी उजरत।

तोड़ाना–स० क्रि० तोड़नेका काम कराना; रस्सीके बंधनसे अपनेको मुक्त करना; किसी सिक्केको भुनाना।

तोण*–पु० तरकश, तूणीर।

तोत*–पु० राशि, समूह।

तोतई–वि० तोतेके रंगका। पु० तोतेका-सा रंग।

तोतक*–पु० पपीहा।

तोतर†–वि० दे० 'तोतला'।

तोतरा–वि० दे० 'तोतला'।

तोतराना–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना'।

तोतला–वि० जो तुतलाकर बोलता हो; तुतलानेका-सा।

तोतलाना–अ० क्रि० दे० 'तुतलाना'।

तोता–पु० हरे रंगका एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी चोंच लाल होती है; बंदूकका घोड़ा। **–चश्म**–वि० जो तोतेकी भाँति आँखें फेर ले, बे-वफा; जिसमें थोड़ी-सी भी मुरौवत न हो। **–चश्मी**–स्त्री० बेमुरौवती; बेवफाई। **–परी**–पु० एक प्रकारका आम। मु० **–पालना**–किसी दुर्व्यसनका आदी होना; किसी बीमारी या बुराईको बढ़ने देना। **–(ते)की तरह आँखें फेरना**–एकदम बेमुरौवत होना, पुराने संबंधको एकदम भुला देना। **–की तरह रटना**–बिना अर्थ समझे कंठ करना।

तोती–स्त्री० मादा तोता; रखेली।

तोत्त्र–पु० (सं०) जानवरोंको हाँकनेकी छड़ी, कोड़ा, अंकुश, चाबुक आदि। **–वेत्र**–पु० विष्णुके हाथका दंड।

तोद–पु० (सं०) व्यथा, पीड़ा, कष्ट; सूर्य; तीव्र वेदना, शूल; हाँकना, चलाना।

तोदन–पु० (सं०) पीडन; दे० 'तोत्त्र'; तुंड; एक पेड़; उसका फल।

तोदरी–स्त्री० (फा०) फारसका एक पेड़ जिसके बीज दवाके काम आते हैं; खतमीका बीज।

तोन*–पु० तूण, तूणीर।

तोप–स्त्री० (तु०) युद्धमें गोलाबारी करनेका एक प्रसिद्ध यंत्र। –

ख़ाना–पु० वह स्थान जहाँ तोपें और उनके आवश्यक उपकरण हों; युद्धके लिए सुसज्जित तोपोंका समूह। **–ची**–पु० तोप चलानेवाला, गोलंदाज। **–विद्या**–स्त्री० (गनेरी) वड़ी तोपोंके निर्माण तथा प्रबंधादिका काम।

तोपना*–स० क्रि० ढाँकना, छिपाना।

तोफगी–स्त्री० खूबी, अच्छापन।

तोफा†–वि० दे० 'तोहफ़ा'।

तोबड़ा–पु० घोड़ेको दाना खिलानेका चमड़े या टाटका थैला। मु० **–चढ़ाना**–बोलने न देना, मुँह बंद करना।

तोबा–पु० (अ० 'तौबः') घृणित या निंद्य कर्म पुनः न करनेकी पश्चात्ताप या शपथपूर्वक की गयी दृढ़ प्रतिज्ञा (कभी-कभी किसी व्यक्ति या पदार्थके प्रति घृणा प्रकट करनेके लिए इसका प्रयोग होता है); अफ़सोस, पछतावा, पश्चात्ताप। मु०–**तिल्ला मचाना**–चीखना, चिल्लाना; किसी नुकसानपर हाय-हाय करना। **–तोड़ना**–कौलसे फिर जाना, अपनी वातपर कायम न रहना; तोवा किये हुए कामको पुनः करना। **–बुलवाना**–किसीको इतना तंग करना कि वह पनाह माँगने लगे।

तोम–पु० समूह, राशि।

तोमड़ी–स्त्री० तूंबड़ी; एक आतिशबाजी।

तोमनोम–पु० गानका आरंभिक स्वर, तेन।

तोमर–पु० (सं०) भालेकी तरहका एक प्रसिद्ध अस्त्र; वारह मात्राओंका एक छंद; एक छंद जिसका प्रत्येक पाद नौ अक्षरोंका होता है; राजपूतोंका एक प्राचीन राजवंश (पृथ्वीराजके नाना अनंगपाल इसी वंशके थे)। **–ग्रह**–पु० तोमरधारी सैनिक। **–धर**–पु० अग्नि; तोमरग्रह।

तोमरिका–स्त्री० (सं०) दे० 'तुवरिका', अरहर; गोपीचंदन।

तोमरी*–स्त्री० तुमड़ी; कड़ुआ कद्दू।

तोय–पु० (सं०) जल, पानी; पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। **–कर्म(न्)**–पु० तर्पण। **–काम**–पु० जलमें होनेवाला वेंत; वानीर। वि० जलका इच्छुक, प्यासा। **–कुंभ**–पु० सेवार। **–कृच्छ्र**–पु० एक कठिन व्रत जिसमें महीनेभर केवल जल पीकर रहते हैं। **–क्रीडा**–स्त्री० जल-क्रीड़ा। **–गर्भ**–पु० नारियल। **–डिंभ**–पु० ओला, वर्षोपल, करका। **–द**–पु० मेघ, वादल; घी। **–धर,–धार**–पु० मेघ, वादल; मोथा। **–धि**–पु० सागर, समुद्र; चारकी संख्या। **–प्रिय**–पु० लौंग। **–निधि**–पु० दे० 'तोयधि'। **–नीवी**–स्त्री० पृथिवी। **–पर्णी**–स्त्री० करेला। **–पिप्पली**–स्त्री० एक शाक, लांगली, जलपिप्पली। **–पुष्पी, प्रष्ठा**–स्त्री० पाटला वृक्ष। **–प्रसादन**–पु० निर्मली। **–फला**–स्त्री० ककड़ीकी वेल। **–मल**–पु० समुद्रका फेन। **–मुक्(च्)**–पु० वादल; मोथा। **–यंत्र**–पु० जलघड़ी; फौवारा। **–राज**–पु० समुद्र; वरुण। **–राशि**–पु० ताल; झील; समुद्र। **–वल्ली**–स्त्री० करेला। **–वृक्ष, –शूक**–पु० सेवार। **–शुक्तिका**–स्त्री० सीपी। **–सर्पिका**–स्त्री० मेढ़की। **–सूचक**–पु० मेढक; ज्योतिषमें एक वर्षासूचक योग।

तोयदागम–पु० (सं०) वर्षा ऋतु।

तोयात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परब्रह्म।

तोयाधार–पु० (सं०) जलाशय।

तोयाधिवासिनी–स्त्री० (सं०) पाटला वृक्ष।

तोयालय–पु० (सं०) समुद्र।

तोयाशय–पु० (सं०) दे० 'तोयाधार'।

तोयेश–पु० (सं०) वरुण; शतभिषा नक्षत्र; पूर्वाषाढा नक्षत्र।

तोयोत्सर्ग–पु० (सं०) वर्षा।

तोर–पु० अरहर; * दे० 'तोड़'। * सर्व० तेरा।

तोरई–स्त्री० तुरई।

तोरण–पु० (सं०) किसी घर या नगरका वाहरी दरवाजा, वहिर्द्वार; दीवारों, खंभों आदिकी सजावटके लिए लगायी जानेवाली मालाएँ आदि, वंदनवार (कहीं-कहीं रस्सीमें पत्तियाँ आदि बाँधकर भी दीवारों आदिपर लगाते हैं); शिव; गला। **–माल**–पु० अवंतिकापुरी। **–स्फटिका**–स्त्री० दुर्योधनका सभाभवन।

तोरन*–पु० दे० 'तोरण'।

तोरना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ना'; दूर करना।

तोरा*–सर्व० तेरा; तुम्हारा। पु० तुर्रा, कलगी।

तोराई*–अ० वेगपूर्वक; शीघ्रतापूर्वक, तेजीसे।

तोराना*–स० क्रि० दे० 'तोड़ाना'।

तोरावान्*–वि० वेगवान्, तेज। (स्त्री० 'तोरावती'।)

तोरी–स्त्री० काले रंगकी सरसों; तुरई।

तोल–पु० (सं०) अस्सी रत्तियोंके वरावर एक तौल; तौल।

तोलक–पु० (सं०) वारह माशेकी एक तौल।

तोलन–स्त्री० चाँड़। पु० (सं०) तौलनेकी क्रिया; उठाना।

तोलना*–स० क्रि० पहियेकी धुरीमें तेल देना; तौलना; धनुष् आदि सँभालना; उठाना।

तोलवाना–स० क्रि० 'तौलवाना'।

तोला–पु० वारह माशेकी एक तौल; इस तौलका वाट।

तोलिया–पु०, स्त्री० दे० 'तौलिया'।

तोल्य–वि० (सं०) तौले जाने योग्य। पु० तौलनेकी क्रिया।

तोशक–स्त्री० (तु०) रुई भरा विछावन, छोटा गद्दा। **–ख़ाना**–पु० अमीरोंके वस्त्र, जेवर आदि रखनेका स्थान; खानेपीनेका सामान रखनेकी जगह, भंडारगृह।

तोशदान–पु० पाथेय रखनेकी थैली; कारतूस रखनेकी थैली।

तोशा–पु० (फा०) संवल, पाथेय। **–ख़ाना**–पु० दे० 'तोशकख़ाना'। **–(शे)आक़वत**–पु० सुकृत, पुण्य (जिससे परलोक वने)।

तोष–पु० (सं०) मनकी वह वृत्ति जिसमें प्राप्त वस्तु, सुख आदिसे अधिककी लालसा न हो, तुष्टि, लिप्साका अभाव; प्रसन्नता, प्रसाद; कृष्णके एक सखा।

तोषक–वि० (सं०) संतुष्ट या तृप्त करनेवाला।

तोषण–पु० (सं०) संतुष्ट करनेकी क्रिया या भाव; तोष।

तोषणी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

तोषना–स० क्रि० संतुष्ट करना, तृप्त करना; प्रसन्न करना। अ० क्रि० संतुष्ट होना, तृप्त होना।

तोषल–पु० (सं०) एक अस्त्र; मूसल; कंसका एक मल्ल जिसे कृष्णने धनुर्यज्ञमें मारा था।

तोषित–वि० (सं०) तुष्ट किया हुआ, प्रसादित।

तोषी(षिन्)–वि० (सं०) (समासांतमें)...से संतुष्ट या प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला।

तोस*–पु० दे० 'तोष'।

तोसक†–स्त्री० दे० 'तोशक'।

तोसल*–पु० दे० 'तोषल'।

तोसा*–पु० दे० 'तोशा'। **–खाना**–पु० 'तोशाख़ाना'।

तोसागार*–पु० दे० 'तोशाख़ाना'।

तोहफ़गी–स्त्री० भलाई; अच्छाई, खूवी।

तोहफ़ा–वि० (अ०) नायाव; वढ़िया, अच्छा। पु० सौगात, नजर, भेंट; सुंदर या वढ़िया चीज।

तोहमत–स्त्री० (अ०) मिथ्या आरोप, लांछन।

तोहमती–वि० मिथ्या आरोप करनेवाला, लांछन लगानेवाला।

तोहरा†–सर्व० तुम; तुम्हारा; तुम्हें।

तोहार†–सर्व० तुम्हारा।

तोहि*–सर्व० तुझे, तुम्हें।

तौंकना*–अ० क्रि० आँचसे तपना।

तौंस–स्त्री० धूप खानेसे लगी तेज प्यास; ताप, ऊमस।

तौंसना*–अ० क्रि० तप जाना; गरमीसे झुलस जाना।

तौंसा–पु० कड़ी गरमी, भीषण ताप।

तौ*–अ० तो। * अ० क्रि० था।

तौक़–पु० (अ०) हँसुली; मन्नत पूरी करनेके लिए वच्चोंको पहनायी हुई हँसुली; कैदियों आदिके गलेमें पहनाया जानेवाला लोहेका घेरा; कवूतर आदि पक्षियोंके गलेका हँसुली जैसा चिह्न। **–(क़े)-गुलामी**–पु० हँसुली जो गुलामोंके गलेमें पहनाते थे।

तौकी*–स्त्री० गलेका एक गहना।

तौक्षिक–पु० (सं०) धनु राशि।

तौतातिक–पु० (सं०) कुमारिल भट्टकृत मीमांसाशास्त्र।

तौतिक–पु० (सं०) मोती; मोतीका सीप।

तौन†–सर्व० वह, सो ।

तौनी–स्त्री० छोटा तवा ।

तौफ़ीक़–पु० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य; हिम्मत, हौसला; खुदाका बंदेके शुभ संकल्पकी पूर्तिके साधन जुटा देना; अनुग्रह; साधन ।

तौवा–स्त्री० दे० 'तोवा' ।

तौर–पु० (सं०) एक यज्ञ; (अ०) चाल, ढंग; तरह, भाँति । **–तरीक़,–तरीक़ा**–पु० चाल-चलन, चाल-ढाल, वात-व्यवहार ।

तौरश्रवस–पु० (सं०) एक साम ।

तौरि*–स्त्री० घुमटा, चक्कर ।

तौरीत–पु० दे० 'तौरेत' ।

तौरेत–पु० (इव०) यहूदियोंका प्रधान धर्मग्रंथ ।

तौर्य–पु० (सं०) मृदंग आदिकी ध्वनि ।

तौर्यत्रिक–पु० (सं०) गीत, वादन, नृत्य आदि कार्य ।

तौल–स्त्री० तौलनेकी क्रिया या भाव; माप, जोख, वजन, परिमाण –जैसे मन, सेर, छटाँक, तोला, माशा आदि । पु० (सं०) तराजू; तुला राशि ।

तौलना–स० क्रि० किसी पदार्थका परिमाण या भारीपन जाननेके लिए उसे तराजू या काँटेपर रखना, जोखना; साधना; गाड़ीकी धुरीमें तेल लगाना ।

तौलवाई–स्त्री० दे० 'तौलाई' ।

तौलवाना–स० क्रि० तौलनेका काम कराना ।

तौला–पु० मटका; गल्ला तौलनेवाला; महुएकी शराव ।

तौलाई–स्त्री० तौलनेकी क्रिया या भाव; तौलनेकी उजरत ।

तौलाना–स० क्रि० दूसरेको तौलनेमें प्रवृत्त करना, तौलनेका काम कराना ।

तौलिक, तौलिकिक–पु० (सं०) चित्रकार ।

तौलिया–पु०, स्त्री० शरीर पोंछनेका विशेष प्रकारका अँगोछा ।

तौली(लिन्)–पु० (सं०) तौलनेवाला; तुला राशि ।

तौल्य–पु० (सं०) वजन, तौल; सादृश्य, समानता ।

तौषार–पु० (सं०) पाला, टंढ । वि० वर्फीला, तुषारयुक्त ।

तौसना*–अ० क्रि० दे० 'तौंसना' । स० क्रि० ताप या गरमी पहुँचाकर वेचैन करना ।

तौहीन–स्त्री० (अ०) अनादर, अपमान, वेइज्जती ।

तौहीनी†–स्त्री० दे० 'तौहीन' ।

त्यक्त–वि० (सं०) त्यागा, छोड़ा हुआ, जिसका त्याग कर दिया गया हो । **–जीवित,–प्राण**–वि० जिसने जीवनकी आशा छोड़ दी है; मरनेको प्रस्तुत । **–लज्ज**–वि० निर्लज्ज, वेहया । **–विधि**–वि० नियम भंग करनेवाला । **–श्री**–वि० लक्ष्मी द्वारा परित्यक्त, श्रीहीन, भाग्यहीन ।

त्यक्तव्य–वि० (सं०) छोड़ने, त्यागने योग्य ।

त्यक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) छोड़नेवाला, त्यागनेवाला ।

त्यक्ताग्नि–वि० (सं०) गृहाग्निकी उपेक्षा करनेवाला (ब्राह्मण) ।

त्यक्तात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) हताश, निराश ।

त्यग्नायि(स्)–पु० (सं०) एक साम ।

त्यजन–पु० (सं०) छोड़ने, त्यागनेकी क्रिया ।

त्यजनीय–वि० (सं०) त्याज्य, जो छोड़ने योग्य हो ।

त्यजित–वि० (सं०) दे० 'त्यक्त' ।

त्यज्यमान–वि० (सं०) जो छोड़ा जा रहा हो ।

त्याग–पु० (सं०) किसी वस्तुपरसे अपना स्वत्व हटा लेने अथवा अपनेपनका भाव मिटाकर उसे छोड़ देनेकी क्रिया, उत्सर्ग; किसीसे नाता तोड़ देनेकी क्रिया; सांसारिक विषयों तथा भोगोंमें लिप्त न रहनेकी क्रिया या भाव; ममत्वका उच्छेद; परहितसाधन अथवा उच्च लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए की गयी स्वार्थकी उपेक्षा, कुरबानी; किसी पद या स्थानसे संबंध न रखना । **–पत्र**–पु० इस्तीफा । **–युत,–शील**–वि० उदार, त्यागी ।

त्यागना–स० क्रि० छोड़ना, त्याग करना ।

त्यागी(गिन्)–वि० (सं०) जो सांसारिक सुखोंमें लिप्त न हो; जिसने स्वार्थ, भोगकी इच्छा आदिका त्याग कर दिया हो, विरक्त ।

त्याजित–वि० (सं०) जिससे परित्याग कराया गया हो; जिसकी उपेक्षा करायी गयी हो ।

त्याज्य–वि० (सं०) छोड़ने, त्यागने योग्य ।

त्यार*–वि० दे० 'तैयार' ।

त्यूँ†–अ० दे० 'त्यों' ।

त्यों–अ० उस प्रकार, उस तरह, वैसे; उसी वक्त, उसी समय, तत्क्षण; * ओर, तरफ ।

त्योनार*–पु० दे० 'त्यौनार' ।

त्योर*–पु० दे० 'त्योरी' ।

त्योरस, त्योरुस†–पु० बीता हुआ या आगेका तीसरा वर्ष ।

त्योरी–स्त्री० माथेका बल, माथेकी सलोट; भौंह; निगाह, दृष्टि । मु० **–चढ़ना या बदलना**–क्रोधसे माथेमें बल पड़ना, कोपसे भ्रुकुटीका ऊपरकी ओर खिच जाना । **–चढ़ाना या बदलना**–क्रोध व्यक्त करनेके लिए पेशानीपर बल डालना । **–में बल पड़ना**–त्योरी चढ़ना ।

त्योहार–पु० प्रतिवर्ष निश्चित तिथिको मनाया जानेवाला कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव, पर्व ।

त्योहारी–स्त्री० वह वस्तु जो त्योहारके उपलक्ष्यमें छोटों या नौकरोंको दी जाय ।

त्यौं–अ० दे० 'त्यों' ।

त्यौनार*–पु० ढंग, तरीका ।

त्यौर*–पु० दे० 'त्योरी' ।

त्यौराना–अ० क्रि० सिर घूमना, सिरमें चक्कर आना ।

त्यौरी–स्त्री० दे० 'त्योरी' ।

त्यौरुस†–पु० दे० 'त्योरुस' ।

त्यौहार–पु० दे० 'त्योहार' ।

त्यौहारी–स्त्री० दे० 'त्योहारी' ।

त्र–वि० (सं०) (समासांतमें) रक्षा करनेवाला; तीन । प्र० सप्तमी विभक्तिके रूपमें प्रयुक्त होनेवाला एक प्रत्यय; साधन, उपकरण या यंत्रका सूचक (प्रेषित्र, खनित्र) ।

त्रपा–स्त्री० (सं०) लज्जा, लाज, शर्म; कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; कीर्ति, यश; कुल, वंश, जाति । * वि० लज्जित । **–निरस्त, –हीन**–वि० निर्लज्ज । **–रंडा**–स्त्री० वेश्या ।

त्रपित–वि० (सं०) नम्र, विनयी; लज्जित ।

त्रपु–पु० (सं०) सीसा, राँगा । **–कर्कटी**–स्त्री० ककड़ी; खीरा ।

त्रपुटी–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची ।

त्रपुल–पु० (सं०) राँगा ।

त्रपुष, त्रपुस–पु० (सं०) राँगा; खीरा ।

त्रपुषी, त्रपुसी–स्त्री० (सं०) खीरेकी वेल; वड़ा इंद्रायन ।

त्रप्सा–स्त्री० (सं०) जमा हुआ कफ ।

त्रप्स्य–पु० (सं०) मट्ठा ।

त्रय–वि० (सं०) तीन ।

त्रयी–स्त्री० (सं०) तीनका समाहार (जैसे–वेदत्रयी, वृहत्त्रयी); ऋक्, यजुः और सामवेद; वह स्त्री जिसका पति तथा संतानें जीवित हों, पुरंध्री; बोध, समझ । **–तनु**–पु० वह जिसके तीनों वेद शरीर हों; सूर्य; शिव । **–धर्म**–पु० वैदिक धर्म । **–मुख**–पु० ब्राह्मण ।

त्रयीमय–पु० (सं०) सूर्य; परमेश्वर ।

त्रयोदश–वि० (सं०) तेरह; तेरहवाँ ।

त्रयोदशाह–पु० (सं०) मृत्युके बाद तेरहवें दिन होनेवाला कृत्य, तेरहीं ।

त्रयोदशी–स्त्री० (सं०) किसी पक्षकी तेरहवीं तिथि, तेरस । वि० स्त्री० तेरहवीं ।

त्रष्टा*–पु० एक प्रकारकी थाली या तश्तरी जो प्रायः ठाकुर-पूजनके काम आती है; बढई ।

त्रस–पु० (सं०) जैन मतके अनुसार जीवोंका एक प्रकार; हृदय; वन, जंगल; जंगम सृष्टि, मनुष्य तथा पशु-पक्षी । वि० जंगम, चल । **–रेणु**–स्त्री० धूलका वह सूक्ष्म कण जो छिद्रसे आनेवाले प्रकाशमें दिखाई देता है; सूक्ष्म कण; सूर्यकी एक पत्नी ।

त्रसन–पु० (सं०) भय; चिंता; व्याकुलता ।

त्रसना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना ।

त्रसर–पु० (सं०) जुलाहोंका एक औजार, ढरकी; सूत लपेटनेकी

क्रिया ।

त्रसरैनि*–स्त्री० दे० 'त्रसरेणु' ।

त्रसाना*–स० क्रि० डराना, भय दिखाना ।

त्रसित–वि० डरा हुआ, भीत, त्रस्त; ग्रस्त, आक्रांत ।

त्रसुर–वि० (सं०) भीरु, डरपोक ।

त्रस्त–वि० (सं०) भीत, डरा हुआ; चकित, अचंभेमें पड़ा हुआ; काँपता हुआ; तेज (संगीत) ।

त्रस्नु–वि० (सं०) दे० 'त्रसुर' ।

त्राटक–पु० (सं०) हठयोगमें किसी विंदुपर दृष्टि जमानेकी क्रिया ।

त्राण–पु० (सं०) भयके हेतुका निवारण, रक्षा, बचाव; आश्रय; रक्षा या बचावका साधन (केवल समासमें–जैसे पादत्राण); त्रायमाणा लता; कवच । वि० रक्षित । **–कर्ता(र्तृ)**, **–कारी-(रिन्)**–वि० पु० रक्षक, बचानेवाला ।

त्राणक–पु० (सं०) रक्षक ।

त्रात–वि० (सं०) रक्षित, बचाया हुआ ।

त्रातव्य–वि० (सं०) रक्षा करने योग्य, रक्षणीय ।

त्राता(तृ)–वि०, पु० (सं०) रक्षक, बचानेवाला ।

त्रातार*–पु० रक्षक ।

त्रापुष–पु० (सं०) राँगेका बना पात्र या अन्य वस्तु । वि० राँगेका बना हुआ ।

त्रायंती–स्त्री० (सं०) त्रायमाणा लता ।

त्रायमाण–पु० (सं०) एक औषधोपयोगी लता ।

त्रायमाणा, त्रायमाणिका–स्त्री० (सं०) त्रायमाण लता ।

त्रास–पु० (सं०) भय, डर, खौफ; मणिका एक दोष । वि० चल; भयंकर । **–कर**–पु० दे० 'त्रासक' । **–दायी(यिन्)**–वि० भयदायक ।

त्रासक–वि०, पु० (सं०) डरानेवाला; नाशक; दूर करनेवाला ।

त्रासदी–स्त्री० (अं० ट्रैजेडी) दुःखान्त नाटक; (जीवनकी) कोई दुःखद घटना ।

त्रासन–पु० (सं०) डराने या त्रस्त करनेकी क्रिया; भयका कारण; त्रासक ।

त्रासना*–स० क्रि० डराना, भय दिखाना ।

त्रासित–वि० (सं०) त्रस्त किया हुआ, डराया हुआ ।

त्रासी(सिन्)–वि० (सं०) भयदायक ।

त्राहि–अ० (सं०) बचाओ, रक्षा करो, पाहि । मु० **–त्राहि करना**–दैन्यपूर्वक रक्षाके लिए प्रार्थना करना, बेबस होकर बचानेके लिए किसीको पुकारना । **–त्राहि मचना**–विपद्ग्रस्तोंके मुँहसे 'त्राहि-त्राहि'की पुकार निकलना ।

त्रिंश–वि० (सं०) तीसवाँ ।

त्रिंशत्–वि० (सं०) तीस । **–पत्र**–पु० कुमुद ।

त्रि–वि० (सं०) तीन (यह यौगिक शब्दोंके आरंभमें जोड़ा जाता है, जैसे–त्रिकाल, त्रिदेव, त्रिलोक इ०) । **–कंट,–कंटक**–पु० गोखरू; सेहुँड़; टेँगरा मछली । वि० जिसमें तीन काँटे या नोकें हों । **–ककुद्**–पु० त्रिकूट पर्वत; विष्णु; दस दिनोंमें किया जानेवाला एक याग; प्रधान । वि० जिसे तीन डील या सींग हों । वि० तीन चोटियोंवाला । **–ककुभ्**–पु० इंद्र; उदान वायु; नौ दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ । **–कट**–पु० गोखरूका पेड़ । **–कटु, –कटुक**–पु० तीन कड़ुए पदार्थोंका समाहार–सोंठ, पीपर और मिर्च । **–कर्मा(र्मन्)**–पु० दान, याग और अध्ययन–इन तीन कर्मोंको करनेवाला, ब्राह्मण । **–कल**–पु० तीन मात्राओंका शब्द; ६ गुरु और ३० लघु अक्षरोंका एक दोहा । वि० जिसमें तीन कलाएँ हों, तीन कलाओंवाला । **–कांड**–पु० अमरकोश; निरुक्त (ये दोनों ग्रंथ तीन-तीन कांडोंमें विभक्त हैं) । वि० तीन कांडों-वाला । **–०शेष**–पु० तीन कांडोंके अतिरिक्त अमरकोशका शेषांश जो पुरुषोत्तमकृत है । **–कांडी(डिन्)**–पु० तीन कांडोंका समाहार । वि० तीन कांडोंवाला । **–काय**–पु० बुद्ध । **–कार्षिक**–पु० सोंठ, अतीस और मोथा–इन तीनोंका समाहार । **–काल**–पु० तीनों काल–भूत, वर्तमान और भविष्य; तीनों समय–प्रातः, मध्याह्न और सायं । अ० प्रातः, मध्याह्न और सायं–तीनों समय । **–०ज्ञ**–वि०, पु० तीनों कालोंकी बातें जाननेवाला । **–०दर्शक**–पु० ऋषि । वि० जिसे तीनों कालोंकी बातें ज्ञात हों । **–०दर्शिता**–स्त्री० त्रिकालदर्शी होनेकी शक्ति या भाव । **–०दर्शी-(र्शिन्)**–वि०, पु० दे० 'त्रिकालज्ञ'; तीनों कालोंकी बातें बताने, दिखलानेवाला (–आइना) । **–कुटा**–स्त्री० (हि०) दे० 'त्रिकटु' । **–कुटी**–स्त्री० भौंहोंके मध्यके कुछ ऊपरका स्थान जहाँ त्रिकूट-चक्रकी स्थिति मानी जाती है । **–कुल**–पु० तीनों कुल–पितृकुल, मातृकुल तथा श्वशुरकुल । **–कुला**–स्त्री० यवतिक्ता । **–कूट**–पु० वह पर्वत जिसपर लंका बसी थी; तीन शृंगोंवाला पर्वत; एक पर्वत जो सुमेरुका पुत्र माना जाता है (वामन पु०); योगमें एक चक्र जिसकी स्थिति त्रिकुटीमें मानी जाती है; समुद्री लवण । **–०लवण**–पु० समुद्री नमक । **–कूटा**–स्त्री० तंत्रके अनुसार एक भैरवी । **–कूर्चक**–पु० चीर-फाड़ करनेका एक शस्त्र (यह विशेष-कर बाल, वृद्ध, नारी, भीरु, राजा आदिकी चिकित्साके लिए विहित है–सुश्रुत) । **–कोण**–पु० तीन कोनोंका क्षेत्र, त्रिभुज △; काम-रूपका एक सिद्ध पीठ; जन्मकुंडलीमें लग्नस्थानसे पाँचवाँ और नवाँ स्थान; मोक्ष; योनि । वि० जिसमें तीन कोने हों, तिकोना । **–०फल**–पु० सिंघाड़ा । **–०भवन**–पु० जन्मकुंडलीमें लग्नस्थानसे पाँचवाँ और नवाँ घर । **–०मिति**–स्त्री० ज्यामिति, रेखागणित । **–कोणक**–पु० त्रिभुज । **–क्षार**–पु० तीन क्षारोंका समाहार–जवाखार, सज्जी तथा सुहागा । **–क्षुर**–पु० तालमखाना । **–ख**–पु० खीरा । **–गंधक**–पु० दे० 'त्रिजातक' । **–गंभीर**–पु० गंभीर स्वर, सत्त्व तथा नाभिवाला व्यक्ति । **–गण**–पु० धर्म, अर्थ और काम । **–गर्त**–पु० उत्तरभारतका वह प्राचीन प्रदेश जिसमें वर्तमान पंजाबके जालंधर और काँगड़ा आदि जिले सम्मिलित हैं; इस प्रदेशका निवासी । **–गर्ता**–स्त्री० व्यभिचारिणी; मोती; एक तरहका झींगुर । **–गुण**–पु० सत्त्व, रज, तम–इन तीन गुणों-का समाहार । वि० तीन गुना, तिगुना; जिसमें सत्त्वादि तीनों गुण हों; तीन धागोंवाला । **–गुणा**–स्त्री० माया; दुर्गा । **–गुणातीत**–वि० जो सत्त्वादि तीनों गुणोंसे परे हो । पु० परमात्मा । **–गुणात्मक**–वि० जिसमें सत्त्वादि तीनों गुण हों । **–गुणित**–वि० तिगुना किया हुआ । **–गुणी**–स्त्री० बेलका पेड़ । **–गुणी(णिन्)**–वि० तीन गुणोंवाला । **–गूढ,–गूढक**–पु० स्त्रियोंके वेशमें पुरुषोंका एक नाच । **–चक्र**–पु० अश्विनीकुमारोंका रथ । **–चक्रयान**–पु० तीन पहियोंकी गाड़ी; (ट्राइसिकिल) एक तरहकी तीन पहियोंवाली गाड़ी जो प्रायः बाइसिकिलकी तरह पैंडल मारने-से चलती है । **–चक्षु(स्)**–पु० शिव । **–चित**–पु० गार्हपत्य अग्नि । **–जग***–पु० तीनों लोक–स्वर्ग, पृथिवी और पाताल; दे० क्रममें । **–जगती**–स्त्री०,**–जगत्**–पु० तीनों लोक । **–जट**–पु० शिव । **–जटा**–स्त्री० अशोकवाटिकामें जानकीके साथ रहने-वाली एक राक्षसी (इसके हृदयमें सीताके प्रति विशेष पक्षपात था) । **–जात,–जातक**–पु० इलायची, दारचीनी और तेजपत्ता–इन तीनोंका समाहार (नागकेसर मिलाकर इसे चतुर्जातक कहते हैं) । **–जामा***–स्त्री० दे० 'त्रियामा' । **–जीवा,–ज्या**–स्त्री० वृत्तके केंद्रसे परिधितक खिंची हुई सीधी रेखा (यह लंबाईमें व्यास-की आधी होती है) । **–णता**–स्त्री० (वह जो तीन जगह नत हो) धनुष् । **–णाचिकेत**–पु० वह जिसने तीन बार नाचिकेत अग्निका आधान किया हो; कृष्ण यजुर्वेदकी काठक संहिताका अध्ययन या अनुगमन करनेवाला; नारायण । **–णीता**–स्त्री० पत्नी । **–तंत्रिका**–स्त्री० तीन तारोंवाली एक वीणा । **–ताप**–पु० दे० 'तापत्रय' । **–दंड**–पु० वह दंड जिसे कुटीचक और बहूदक सन्न्यासी धारण करते हैं (यह बाँसके तीन डंडोंको एकमें बाँधकर बनाया जाता है); वाणी, मन और शरीर–इन तीनोंका संयमन । **–दंडी(डिन्)**–पु० वह जिसने वाणी, मन और शरीर इन तीनोंको वशमें कर लिया हो, सन्न्यासी, परिव्राजक । **–दल**–पु० बेलका पेड़ । **–दला**–स्त्री० गोधापदी लता । **–दलिका**–स्त्री० चर्मकषा नामक लता । **–दश**–पु० देवता; जीव । **–०गुरु**–पु० देवगुरु, बृहस्पति । **–०गोप**–पु० बीरबहूटी । **–०दीर्घिका**–स्त्री० आकाश-गंगा, मंदाकिनी । **–०पति**–पु० इंद्र । **–०पुंगव**–पु० विष्णु । **–०पुष्प**–पु० लौंग । **–०मंजरी**–स्त्री० तुलसी । **–०वधू**–स्त्री० अप्सरा । **–दिनस्पृक्(श्)**–पु० वह तिथि जिसका

भोग तीन दिनोंमें समाप्त हो । –दिव–पु० स्वर्ग; आकाश; सुख । –दृक्(श्)–पु० शिव । –देव–पु० ब्रह्मा, विष्णु और महेश–ये तीनों देव । –दोष–पु० तीनों दोष–वात, पित्त और कफ; इन तीनोंके प्रकोपसे उत्पन्न रोग, सन्निपात । –०ज–पु० सन्निपात । वि० तीनों दोषोंसे उत्पन्न । –धनी–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी । –धर्मा(र्मन्)–पु० शिव । –धा–दे० क्रममें । –धातु–पु० गणेश । स्त्री० तीनों धातुएँ–सोना, चाँदी और ताँबा । –धामा(मन्)–पु० शिव; विष्णु; अग्नि; मृत्यु (?) । –धारक–पु० गुंडतृण । –धारा–स्त्री० गंगा; सेहुँड़ । –नयन–पु० शिव। –नयना–स्त्री० दुर्गा, पार्वती । –नाभ–पु० विष्णु। –नेत्र–पु० शिव । –०चूडामणि–पु० चंद्रमा । –नेत्रा–स्त्री० वाराही कंद । –पट–पु० काँच, शीशा । –पताक–पु० हाथकी वह मुद्रा जिसमें तीन उँगलियाँ फैली हों; त्रिपुंड्र । –पत्र–पु० बेलका पेड़ । –पत्रक–पु० पलाशका पेड़; तुलसी, कुंद और बेलके पत्तोंका समाहार । –पथ–पु० ज्ञान, कर्म और उपासना–ये तीनों मार्ग; आकाश, पृथ्वी और पाताल; वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिले हों । –०गा,–०गामिनी–स्त्री० (स्वर्ग, मर्त्य और पाताल–तीनों लोकोंमें बहनेवाली) गंगा । –पथा–स्त्री० मथुरा । –पद–वि० जिसमें तीन पाये हों; जिसमें तीन चरण या पद हों; तीन पदोंका (शब्द-समूह) । –०स्तंभ–पु० (ट्राइपॉड स्टैंड) एक तरहकी तिपाई या तीन पाँवोंवाला आला जिसपर रखकर कोई वस्तु गरम की जाय । –पदा–स्त्री० गायत्री छंद; हंसपदी वृक्ष । –पदिका–स्त्री० तिहाई; तिपाईकी तरहका एक धातु-निर्मित आधार (तं०) । –पदी–स्त्री० गायत्री छंद; हाथीका पैर या पलान बाँधनेका रस्सा; अर्घ्यपात्र रखनेका तिपाई जैसा आधार (तं०); गोधापदी लता; एक छंद । –पन्न–पु० चंद्रमाका एक घोड़ा । –परिक्रांत–वि० जिसने काम, क्रोध और लोभ–तीनोंको जीत लिया हो; (ब्राह्मण) जो जीविकार्थ यज्ञ कराये, अध्यापन करे और दान ले । –पर्ण–पु० पलाशका पेड़ । –पर्णा–स्त्री० बनकपास । –पर्णिका–स्त्री० कंदालू । –पर्णी–स्त्री० शालपर्णी; बनकपास । –पाठी(ठिन्)–वि० तीनों वेदोंका ज्ञाता । पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि–तिवारी, त्रिवेदी । –पाण–पु० तीन बार भिगोया हुआ सूत; वल्कल । –पादधानी–स्त्री० (ट्राइपॉड स्टैंड) दे० 'त्रिपदस्तंभ' । –पादिका–स्त्री० तिपाई; गोधापदी लता । –पाद्(त्)–पु० परमेश्वर; ज्वर । –पिंड–पु० पिता, पितामह और प्रपितामहको दिये गये तीन पिंड; पार्वण श्राद्ध । –पिटक–पु० बौद्धोंका मूल ग्रंथ जो विनय, सुत्त और अभिधम्म–तीन पिटकों (भागों)में विभक्त है । –पिब–पु० वह बकरा जिसके दोनों कान पानी पीते-समय पानीसे छू जाते हों । –पिष्टप–पु० स्वर्ग; आकाश । –पुंड–पु० (हिं०) दे० 'त्रिपुंड्र' । –पुंड्र–पु० एक तिलक जिसमें ललाट आदिपर भस्म अथवा चंदनकी तीन आड़ी या अर्धचंद्राकार रेखाएँ बनाते हैं । –पुट–पु० खेसारी; ताल; तलेथी; एक हाथकी लंबाई; किनारा; बाण; गोखरू; छोटी इलायची; बड़ी इलायची; मल्लिका; फोड़ेका एक आकार (सुश्रुत) । –पुटक–पु० त्रिभुज; खेसारी । वि० त्रिभुजाकार (फोड़ा) । –पुटा–स्त्री० दुर्गा; इलायची; मोतिया; निसोथ । –पुटी–स्त्री० छोटी इलायची; ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान; ध्याता, ध्येय और ध्यान; द्रष्टा, दृश्य और दर्शन आदि तीन-तीनका समाहार; रेंड; खेसारी; * दे० 'त्रिकुटी' । –पुर–पु० मयनिर्मित स्वर्ग, अंतरिक्ष तथा पृथ्वीपरके नगर जिन्हें शंकरने जलाया था; बाणासुर । –०घ्न,–०दहन, –०हर–पु० शिव । –०भैरवी–स्त्री० दे० 'त्रिपुरा' । –०मल्लिका–स्त्री० मल्लिकाका एक भेद । –०सुंदरी–स्त्री० दुर्गा । –पुरा–स्त्री० एक देवी (तं०) । –पुरुष,–पूरुष–पु० तीन पुरुषोंका समाहार–पिता, पितामह और प्रपितामह; वह संपत्ति जिसका भोग पितामह और पिताके बाद पुत्र करे । वि० उतना लंबा जितना तीन पुरुषोंके मिलनेपर हो; जिसके तीन व्यक्ति सहायक हों । –पुष्कर–पु० ज्योतिषमें एक योग । –पृष्ठ–पु० विष्णु; जैनोंके अनुसार प्रथम वासुदेव । –पौरुष–वि० तीन पीढ़ियोंतक चलनेवाला; तीनको अर्पित; तीनसे उत्तराधिकारमें प्राप्त ।–पौलिया–स्त्री० (हिं०) हाथी, ऊँट आदिके जाने योग्य बराबरके तीन फाटकोंसे युक्त स्थान । –प्रश्न–पु० दिशा, देश और काल-संबंधी प्रश्न (ज्यो०) । –प्रस्रुत–वि० जिस (हाथी)-से मदका स्राव हो रहा हो । –प्लक्ष–पु० एक अत्यंत प्राचीन देश । –फला–स्त्री०, पु० आँवला; हड़ और बहेड़ा । –बली–स्त्री० पेटपर पड़नेवाले तीन बल । –बलीक–पु० वायु; गुदा । –बाहु–पु० रुद्रका एक अनुचर; एक प्रकारका असियुद्ध । –बीज–पु० सावाँ । –बेनी*–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी' । –भंग–वि० तीन जगहोंसे झुका हुआ; जिसमें तीन जगह टेढ़ापन हो, जो तीन जगह बल खाये हो । पु० खड़े होनेकी एक मुद्रा जिसमें गरदन, कमर और दाहिने पाँवमें बल पड़ता है (कृष्णके वंशी बजानेका वर्णन इसी रूपमें मिलता है) । –भंगी–स्त्री० एक वृत्त । –भंगी(गिन्)–वि० दे० 'त्रिभंग' । पु० तालका एक भेद । –भंडी–स्त्री० निसोथ । –भ–वि० तीन नक्षत्रोंवाला । –०जीवा,–०ज्या–स्त्री० दे० 'त्रिज्या' । –भद्र–पु० स्त्री-प्रसंग । –भुक्ति–स्त्री० तिरहुत, मिथिला । –भुज–पु० तीन भुजाओंसे घिरा क्षेत्र । (ट्राइएंगिल) वह समक्षेत्र जो तीन भुजाओंसे घिरा हो तथा जिसमें तीन कोण हों, त्रिकोण । –०लंब–पु० (ऐल्टिटयूड) त्रिभुजके शीर्षसे आधारतक सीधी जानेवाली वह सरल रेखा जो आधारपर लंब (परपेंडिक्यूलर) हो, त्रिभुजकी उँचाई, शीर्षलंब । –भुवन–पु० स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल–इन तीन भुवनोंका समाहार । –०गुरु–पु० शिव । –०नाथ,–०पति–पु० परमेश्वर । –०सुंदरी–स्त्री० दुर्गा, पार्वती । –भूम–पु० तिमंजिला मकान । –मंडला–स्त्री० एक विषैली मकड़ी । –मद–पु० मोथा, चीता और बायबिडंग–इन तीनोंका समूह; विद्या, धन और कुटुंबसंबंधी मद । –मधु,–मधुर–पु० ऋग्वेदका एक अंश; दूध, चीनी और मधु–इन तीनोंका समाहार । –मात*–वि० दे० 'त्रिमात्र' । –मात्र,–मात्रिक–वि० जिसमें तीन मात्राएँ हों, प्लुत । –मार्गगामिनी–स्त्री० दे० 'त्रिपथगामिनी' । –मार्गा–स्त्री० गंगा । –मुंड–पु० त्रिशिरा राक्षस; ज्वर । –मुकुट–पु० त्रिकूट पर्वत । –मुख–पु० शाक्यमुनि; गायत्री जपनेकी एक मुद्रा । –मुखा,–मुखी–स्त्री० बुद्धकी माता; मायादेवी । –मुनि–पु० पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि–ये तीनों मुनि, मुनित्रय । –मुहानी–स्त्री० दे० 'तिमुहानी' । –मूर्ति–पु० वह जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और शिव–ये तीन मूर्तियाँ हैं, परमेश्वर; सूर्य । स्त्री० ब्रह्मकी एक शक्ति; बौद्धोंकी एक देवी । –०भवन–पु० नयी दिल्ली स्थित वह भवन जहाँ पहले प्रधानमंत्रीका निवास था पर अब नेहरू संग्रहालय है । –यष्टि–पु० पित्तपापड़ा; तीन लड़ियोंका हार । –यान–पु० बौद्धधर्मके अंतर्गत महायान, हीनयान तथा मध्यमयान –ये तीन यान । –यामक–पु० पाप । –यामा–स्त्री० रात्रि; हल्दी; यमुना; नील; काला निसोथ । –युग–पु० तीन पीढ़ियाँ; तीनों ऋतुएँ–वसंत, वर्षा तथा शरद्; तीनों युग–सत्य, द्वापर और त्रेता; विष्णु । –यूह–पु० कपिल वर्णका घोड़ा । –योनि–वि० तीन कारणों (क्रोध, लोभ, मोह)से होनेवाला (मुकदमा) । –रत्न–पु० (बौद्ध धर्ममें) बुद्ध, बौद्ध धर्म और संघका समाहार । –रसक–पु० एक तरहकी शराब । –रात्र–पु० तीन रातों (तथा दिनों)का समय; एक व्रत जिसमें तीन दिन उपवास करते हैं; गर्ग-त्रिरात्र नामका याग; मृत्युसे तीसरे दिन होनेवाला प्रेतकर्म. । –राव–पु० गरुड़का एक पुत्र । –रूप–पु० अश्वमेध यज्ञमें बलिके लिए निर्धारित घोड़ा । वि० तीन आकृतियों या रंगोंका । –रेख–पु० शंख । वि० जिसमें तीन रेखाएँ हों, तीन रेखाओंसे युक्त । –लघु–पु० (वह जिसमें तीनों वर्ण लघु हों) नगण । –लवण–पु० सेंधा, साँभर और सोंचर नमक । –लोक–पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल–ये तीनों लोक । –०नाथ,–०पति–पु० तीनों लोकोंका स्वामी, ईश्वर; राम, कृष्ण आदि विष्णुका कोई अवतार; सूर्य । –लोकी–स्त्री० दे० 'त्रिलोक' । –०नाथ–पु० दे० 'त्रिलोकनाथ' । –लोचन–पु० शिव । –लोचना–स्त्री० दुर्गा; असती, व्यभिचारिणी स्त्री । –लोचनी–स्त्री० दुर्गा । –लोह,–लोहक,–लौह–पु० सोना, चाँदी और ताँबा । –वर्ग–पु० धर्म, अर्थ और काम; त्रिफला; त्रिकटु; सत्त्व, रज और तम (सां०); ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; क्षय, स्थिति और वृद्धि (राजनीति) । –वर्ण

–वि० तीन रंगोंवाला। पु० गिरगिट। **–वर्णक**–पु० गोखरू; त्रिफला; त्रिकूट; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य–ये तीन जातियाँ; काला, लाल और पीला–ये तीन रंग। **–वर्त्मा(र्त्मन्)**–पु० जीव। वि० तीन मार्गोंसे जानेवाला। **–वली**–स्त्री० दे० 'त्रिवली'। **–वाचा**–पु० तीन बार कहवाकर करायी गयी प्रतिज्ञा 'हाथपर गंगाजली रख दी और त्रिवाचा भरवा लिया कि वे कभी मेरे घर न आयँगे'–कादं०, अगस्त ६९। **–वार**–पु० गरुडका एक पुत्र। **–विक्रम**–पु० तीन डग (विष्णुके); विष्णु; वामन। **–विद्य**–पु० ऋक्, यजुः और साम–तीनों वेदोंका ज्ञाता द्विज। **–विध**–वि० तीन प्रकारका। **–०बहिष्कार**–दे० क्रममें। **–विनत**–वि० देवता, ब्राह्मण और गुरुके प्रति श्रद्धालु। **–विष्टप**–पु० स्वर्ग; तिब्बत। **–वृत्**–पु० एक याग; तीन लड़ियोंकी करधनी। स्त्री० एक लता, निसोथ। **–वृता**–स्त्री० एक लता, निसोथ, 'त्रिवृत्'। **–वृत्करण**–पु० तेज, जल और अन्नका योग। **–वृत्त**–वि० तिगुना। **–वृत्पर्णी**–स्त्री० हुरहुर, हिलमोचिका। **–वेणी**–स्त्री० वह स्थान जहाँसे तीन नदियाँ तीन ओर बही हों; तीन नदियोंके मिलनेका स्थान; प्रयागमें गंगा, यमुना और सरस्वतीके मिलनेका स्थान; इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियोंका संगम-स्थल। **–वेणु**–पु० रथ। **–वेद**–पु० तीनों वेद–ऋक्, यजुः और साम; इन तीनों वेदोंका ज्ञाता। **–वेदी(दिन्)** पु० तीनों वेदोंका ज्ञाता; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति, त्रिपाठी। **–वेनी***–स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'। **–वेला**–स्त्री० निसोथ। **–शंकु**–पु० एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो हरिश्चंद्रके पिता थे। (इनके बारेमें कहा जाता है कि स्वर्ग और पृथ्वीके बीच उलटे लटके हुए हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि विश्वामित्र इन्हें अपने तपोबलसे सदेह स्वर्ग भेजना चाहते थे, पर इंद्रके ढकेल देनेसे उलटे नीचे गिरने लगे। विश्वामित्रने इन्हें वहीं रोक दिया और तभीसे ये वहीं वैसे ही लटके बताये जाते हैं। कर्मनाशा नदी इनकी लारसे उत्पन्न मानी जाती है।) **–०ज**–पु० त्रिशंकुके पुत्र, सत्यव्रती हरिश्चंद्र। **–०याजी(जिन्)**–पु० विश्वामित्र। **–शक्ति**–स्त्री० (तंत्रमें वर्णित) काली, तारा और त्रिपुरा–ये तीन देवियाँ। **–शत**–वि० तीन सौ। **–शरण**–पु० बुद्ध; एक जैन आचार्य। **–शर्करा**–स्त्री० गुड़, चीनी और मिश्री। **–शला**–स्त्री० जैनियोंके अंतिम तीर्थंकर महावीरकी माता। **–शाख**–वि० जिसमें तीन शाखाएँ हों। **–शाल**–पु० तीन कमरोंवाला मकान। **–शालक**–पु० वह मकान जिसके उत्तर कोई दूसरा मकान न हो (बृ० सं०); त्रिशाल। **–शिख**–वि० तीन शिखाओंवाला पु० त्रिशूल; किरीट; रावणका एक पुत्र। **–शिखर**–पु० तीन शिखरोंवाला पर्वत, त्रिकूट। **–शिरा(रस्)**–पु० एक राक्षस जिसे रामने दंडकारण्यमें मारा था; कुबेर; ज्वर-पुरुष जिसके तीन पैर, तीन सिर, छ भुजाएँ और नौ आँखें मानी गयी हैं। **–शीर्ष**–पु० शिव। **–शीर्षक**–पु० त्रिशूल। **–शुक्(च्)**–पु० वह जिसकी प्रभा स्वर्ग, अंतरिक्ष और पृथ्वी–तीनों जगह फैली हो, धर्म; तीनों तापों या दुःखोंसे पीड़ित व्यक्ति। **–शूल**–पु० तीन फलोंका एक प्रसिद्ध अस्त्र जो शिवका प्रधान अस्त्र है। **–०धारी(रिन्)**–पु० शिव। **–०मुद्रा**–स्त्री० तंत्रमें हाथकी एक मुद्रा। **–शूली(लिन्)**–पु० शिव। **–शृंग**–पु० त्रिकूट पर्वत; त्रिकोण। **–शोक**–पु० (तीन प्रकारके शोकों–तापोंसे पीडित) जीव; कण्व ऋषिके एक पुत्र। **–षष्ठ**–वि० तिरसठवाँ। **–षष्ठि**–स्त्री० तिरसठकी संख्या, ६३। वि० साठ और तीन। **–षुपर्ण**–पु० दे० 'त्रिसुपर्ण'। **–ष्टुप(भ्)**–स्त्री० एक वैदिक छंद जिसका प्रत्येक चरण ग्यारह अक्षरोंका होता है। **–ष्टोम**–पु० एक याग। **–ष्ठ**–पु० तीन पहियोंवाला रथ। **–संधि**–स्त्री० एक फूल, फगुनियाँ। **–संध्य**–पु० दिनके तीन भाग–प्रातः, मध्याह्न और सूर्यास्त। **–०व्यापिनी**–वि० स्त्री० प्रातःकालसे संध्याकाल तक रहनेवाली (तिथि)। **–संध्या**–स्त्री० तीनों संध्याएँ। **–सप्तति**–स्त्री० तिहत्तरकी संख्या, ७३। वि० सत्तर और तीन। **–सम**–पु० सोंठ, गुड़ और हड़का समाहार। वि० जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों (ज्या०)। **–सर**–पु० तीन लड़ियोंका मुक्ताहार; खिचड़ी। **–सर्ग**–पु० सत्त्व, रज और तम–इन तीनोंका सर्ग या सृष्टि। **–सिता**–स्त्री० दे० 'त्रिशर्करा'। **–सुगंधि**–स्त्री० दारचीनी, इलायची और तेजपातका समाहार। **–सुपर्ण**–पु० ऋग्वेदके दशम मंडलके तीन विशिष्ट मंत्र (१०।११४।३,४,५)। **–सौपर्ण**–पु० त्रिसुपर्णका ज्ञाता; परमेश्वर। **–स्कंध**–पु० (संहिता, तंत्र तथा होरा–इन तीनों स्कंधोंसे युक्त) ज्योतिःशास्त्र। **–स्तनी**–स्त्री० एक राक्षसी। **–स्तावा**–स्त्री० अश्वमेध यज्ञकी वेदी जो आकारमें साधारण वेदीकी तिगुनी होती थी। **–स्थली**–स्त्री० काशी, गया और प्रयाग। **–स्नान**–पु० त्रिकाल स्नान। **–स्पृशा**–स्त्री० वह एकादशी जो एक ही दिन और दो तिथियोंसे युक्त होकर पड़े (इसमें दशमीके दूसरे दिन थोड़ी-सी एकादशीके उपरांत द्वादशी हो जाती है और रात्रिके अंतमें त्रयोदशी पड़ती है)। **–स्रोता(तस्)**–स्त्री० गंगा। **–हायणी**–स्त्री० तीन वर्षकी गाय; द्रौपदी। **–हुत***–पु० दे० 'त्रिभुक्ति'।

त्रिक–पु० (सं०) तीनका समाहार; रीढ़का अधोभाग जहाँ कूल्हेकी हड्डियाँ मिलती हैं, कटिदेश; कंधेकी हड्डियोंके बीचका भाग; त्रिफला; त्रिकटु; त्रिमद; तीन मार्गोंके मिलनेका स्थान; तीन प्रतिशत सूद या लाभ (मनु०)। वि० तेहरा; तीन प्रतिशत; तीसरी बार होनेवाला। **–त्रय**–पु० त्रिफला, त्रिमद, और त्रिकटुका समूह–(१) आँवला, हड़ और बहेड़ा, (२) मोथा, चीता और बायबिडंग तथा (३) सोंठ, मिर्च और पीपल। **–वेदना**–स्त्री०, **–शूल**–पु० वातके प्रकोपसे कूल्हों और रीढ़की हड्डीके संधिस्थानमें होनेवाली पीड़ा।

त्रिका–स्त्री० (सं०) रस्सीके आने-जानेके लिए कुएँपर लगाया हुआ लकड़ी आदिका यंत्र; कुएँका ढक्कन।

त्रिखा*–स्त्री० दे० 'तृषा'।

त्रिजग*–पु० दे० 'तिर्यक्'; दे० 'त्रि'में। **–जोनि**–स्त्री० दे० 'तिर्यग्योनि'।

त्रिज्या–स्त्री० (रेडिअस) दे० 'त्रि'के साथ।

त्रिण, त्रिन*–पु० दे० 'तृण'।

त्रित–पु० (सं०) गौतम, प्रजापति या ब्रह्माका एक पुत्र; मनु चाक्षुषके १२ पुत्रोंमेंसे एक।

त्रितय–वि० (सं०) तीन भागोंवाला। पु० त्रिगुट, तीनका समूह।

त्रिदशांकुश–पु० (सं०) वज्र।

त्रिदशाचार्य–पु० (सं०) (त्रिदशः देवताओंके आचार्य) बृहस्पति।

त्रिदशाधिप–पु० (सं०) इंद्र।

त्रिदशाध्यक्ष–पु० (सं०) विष्णु।

त्रिदशायन–पु० (सं०) विष्णु।

त्रिदशायुध–पु० (सं०) वज्र।

त्रिदशारि–पु० (सं०) असुर।

त्रिदशालय–पु० (सं०) सुमेरु; स्वर्ग।

त्रिदशाहार–पु० (सं०) अमृत।

त्रिदशेश्वर–पु० (सं०) इंद्र।

त्रिदशेश्वरी–पु० (सं०) दुर्गा।

त्रिदिवाधीश–पु० (सं०) इंद्र; देव।

त्रिदिवेश–पु० (सं०) देवता; इंद्र।

त्रिदिवोद्भवा–स्त्री० (सं०) गंगा; बड़ी इलायची।

त्रिदिवौका(कस्)–पु० (सं०) देवता।

त्रिदोषना*–अ० क्रि० तीनों दोषोंसे ग्रस्त होना; काम, क्रोध और लोभके वशमें होना।

त्रिधा–अ० (सं०) तीन तरहसे; तीन भागोंमें। वि० तीन प्रकारका। **–मूर्ति**–पु० परमेश्वर जिसकी ब्रह्मा, विष्णु और महेश–तीन मूर्तियाँ हैं। **–सर्ग**–पु० दैव, तैर्यक और मानुष–ये तीन सर्ग (सां०)।

त्रिपिताना*–अ० क्रि० तृप्त होना। स० क्रि० तृप्त या संतुष्ट करना।

त्रिपुरांतक, त्रिपुरारि–पु० (सं०) शिव।

त्रिपुरासुर–पु० (सं०) बाणासुर।

त्रिय, त्रिया*–स्त्री० स्त्री, नारी। **–(या) चरित्र**–पु० दे० 'तिरिया-चरित्तर'।

त्रिलोकेश–पु० (सं०) परमेश्वर; सूर्य।

त्रिवट–पु० दे० 'त्रिवण'।

त्रिवण–पु० (सं०) संपूर्ण जातिका एक राग ।

त्रिवणी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

त्रिविध वहिष्कार–पु० (ट्रिपिल वॉयकॉट) तीन तरफका या तीन चीजोंका वहिष्कार (भारतके असहयोग आंदोलनके समय इसका अर्थ विदेशी अदालतों, विदेशी शिक्षालयों तथा विदेशी वस्त्रोंका वहिष्कार लिया जाता था) ।

त्रिशंकु–पु० (सं०) दे० 'त्रि'में ।

त्रिषा*–स्त्री० दे० 'तृषा' ।

त्रिषित*–वि० दे० 'तृषित' ।

त्रिसित*–वि० दे० 'तृपित' ।

त्रीष्टक–पु० (सं०) एक प्रकारकी अग्नि ।

त्रुटि–स्त्री० (सं०) दारण; कमी, कसर; भूल, चूक; छोटी इलायचीका पौधा; संशय; कालका एक सूक्ष्म विभाग जो दो क्षण और किसी-किसीके मतसे क्षणके चतुर्थांशके बराबर होता है; अंगहीनता; प्रतिज्ञा-भंग; स्कंदकी एक मातृका । **–बीज**–पु० अरुई, घुइयाँ ।

त्रुटित–वि० (सं०) टूटा हुआ; खंडित ।

त्रुटी–स्त्री० (सं०) दे० 'त्रुटि' ।

त्रेता–पु० (सं०) चार युगोंमें दूसरा युग (इसकी अवधि १२९६००० वर्ष मानी गयी है । परशुराम और दाशरथि राम इसी युगमें अवतीर्ण हुए थे) । स्त्री० दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय–ये तीन अग्नियाँ; पासेका एक दाँव । **–युग**–पु० त्रेता नामका युग ।

त्रेताग्नि–स्त्री० (सं०) दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय–ये तीन अग्नियाँ ।

त्रेतिनी–स्त्री० (सं०) दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय–इन तीनों अग्नियोंसे की जानेवाली क्रिया ।

त्रेधा–अ० (सं०) तीन प्रकारसे; तीन भागोंमें ।

त्रै*–वि० तीन ।

त्रैकालिक–वि० (सं०) त्रिकाल-संबंधी; तीनों कालोंमें होनेवाला; त्रिकालवर्ती ।

त्रैकाल्य–पु० (सं०) तीनों काल–भूत, भविष्यत् और वर्तमान; प्रातः, मध्याह्न और सूर्यास्त; वृद्धि, स्थिति और क्षय ।

त्रैकोणिक–वि० (सं०) तीन कोणोंवाला; तिपहला ।

त्रैगुणिक–वि० (सं०) त्रिगुण-संबंधी; तीन बार किया हुआ ।

त्रैगुण्य–पु० (सं०) तीनों गुणोंका समाहार; तीनों गुणोंका धर्म या भाव ।

त्रैदशिक–वि० (सं०) दैविक 'ईश्वरीय' । पु० उँगलीका अगला भाग जो पवित्र माना जाता है ।

त्रैध–वि० (सं०) तेहरा । अ० तीन प्रकारसे ।

त्रैपिष्टप–वि०, पु० (सं०) दे० 'त्रैविष्टप' ।

त्रैपुरुष–वि० (सं०) तीन पीढ़ियोंतक चलनेवाला ।

त्रैमातुर–पु० (सं०) लक्ष्मण ।

त्रैमासिक–वि० (सं०) तीन महीनोंका; तीन महीनोंमें होनेवाला; हर तीसरे महीने निकलनेवाला ।

त्रैमास्य–पु० (सं०) तीन मासका समय ।

त्रैयंबक–पु० (सं०) एक होम । वि० त्र्यंबक-संबंधी; त्र्यंबकका ।

त्रैराशिक–पु० (सं०) तीन ज्ञात राशियोंके सहारे चौथी अज्ञात राशि निकाल लेनेकी रीति (ग०) ।

त्रैलोक -पु० (सं०) इंद्र ।

त्रैलोक्य–पु० (सं०) दे० 'त्रिलोक' । **–कर्ता(तृ)**–पु० शिव । **–नाथ**–पु० राम; परमेश्वर । **–बंधु**–पु० सूर्य । **–विजया**–स्त्री० भंग ।

त्रैवर्गिक–पु० (सं०) धर्म, अर्थ और कामका साधक कर्म ।

त्रैवर्णिक–पु० (सं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य–इन तीनों वर्णोंका धर्म; ये तीनों वर्ण । वि० त्रिवर्ण-संबंधी ।

त्रैवर्षिक–वि० (सं०) जो तीन वर्षोंमें हो (भविष्यत्) ।

त्रैवार्षिक–वि० (सं०) तीन वर्षोंका; तीन वर्षोंमें होनेवाला; तीन वर्षोंके अंतरसे होनेवाला (अभविष्यत्) ।

त्रैविक्रम–वि० (सं०) त्रिविक्रम-संबंधी; विष्णुका । पु० विष्णुके तीन डग ।

त्रैविद्य–पु० (सं०) तीनों वेदोंका ज्ञाता; तीनों वेद; तीनों वेद जाननेवाले ब्राह्मणोंकी मंडली; तीनों वेदोंका अध्ययन ।

त्रैविष्टप–वि० (सं०) स्वर्गमें रहनेवाला । पु० देवता ।

त्रैशंकव–पुं० (सं०) (त्रिशंकुपुत्र) हरिश्चंद्र ।

त्रैस्वर्य–पु० (सं०) तीनों स्वर–उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ।

त्रैहायण–वि० (सं०) दे० 'त्रैवार्षिक' ।

त्रोटक–पु० (सं०) एक शृंगारप्रधान नाटक; एक विषैला कीड़ा; एक राग; एक छंद ।

त्रोटि, त्रोटी–स्त्री० (सं०) चोंच; कायफल । **–(टि)हस्त**–पु० पक्षी ।

त्रोण–पु० (सं०) तरकश ।

त्रोतल–वि० (सं०) तोतला, तुतलानेवाला ।

त्रोत्र–पु० (सं०) पशुओंको हाँकनेकी छड़ी; चाबुक; एक अस्त्र; एक व्याधि ।

त्रोन*–पु० दे० 'त्रोण' ।

त्र्यंगुल–वि० (सं०) तीन अंगुलका ।

त्र्यंजन–पु० (सं०) कालांजन, रसांजन और पुष्पांजन ।

त्र्यंबक–पु० (सं०) त्रिनेत्र, शिव । **–सख**–पु० कुबेर ।

त्र्यंबका–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

त्र्यंबुक–पु० (सं०) एक तरहकी मक्षिका ।

त्र्यक्ष–पु० (सं०) त्रिनेत्र, शिव; एक दैत्य ।

त्र्यक्षक–पु० (सं०) शिव ।

त्र्यक्षर, त्र्यक्षरक–वि० (सं०) तीन अक्षरोंवाला ।

त्र्यध्वगा–स्त्री० (सं०) दे० 'त्रिपथगा' ।

त्र्यमृतयोग–पु० (सं०) ज्योतिषमें एक योग ।

त्र्यवरा–स्त्री० (सं०) तीन सदस्योंकी शासन-परिषद् (मनु०) ।

त्र्यशीत–वि० (सं०) तिरासीवाँ ।

त्र्यशीति–वि० (सं०) तिरासीकी संख्या, ८३ । वि० अस्सी और तीन ।

त्र्यश्र, त्र्यस्र–पु० (सं०) त्रिकोण । वि० त्रिभुजाकार ।

त्र्यह–पु० (सं०) तीन दिनोंका समाहार । **–स्पर्श**–पु० वह सावन दिन जिसमें तीन तिथियाँ पड़ती हों । **–स्पृक्(श्)**–पु० दे० 'त्रिदिनस्पृक्' ।

त्र्यहैहिक–पु० (सं०) वह गृहस्थ जिसके यहाँ तीन दिनतक निर्वाह करनेभरको सामग्री हो । (मनु०) ।

त्र्यार्षेय–पु० (सं०) तीन प्रवरोंवाला गोत्र; अंध, बधिर और मूक (यज्ञमें इनका प्रवेश निषिद्ध है) ।

त्र्याह्निक–पु० (सं०) तिजरा । वि० तीन दिनोंमें होनेवाला ।

त्र्युषण, त्र्यूषण–पु० (सं०) सोंठ, पीपर और मिर्च–त्रिकटु ।

त्वक–पु० दे० 'त्वक्' ।

त्वक्(च्)–पु० (सं०) छिलका, वल्कल; चर्म; दारचीनी; चर्ममें व्याप्त रहनेवाली एक बाह्य ज्ञानेंद्रिय जो स्पर्श द्वारा अपने विषयका ज्ञान कराती है । **–कंडुर**–पु० घाव । **–क्षीरा,–क्षीरी**–स्त्री० बंसलोचन । **–छेद**–पु० खरोंच, क्षत । **–छेदन**–पु० चर्मकर्तन; सुन्नत । **–तरंगक**–पु० झुर्री । **–पंचक**–पु० बरगद, गूलर, पीपल, सिरीस और पाकड़की छाल । **–पत्र**–पु० तेजपत्ता; दारचीनी । **–पत्री,–पर्णी**–स्त्री० हिंगुपत्री । **–पाक**–पु० एक व्याधि । **–पारुष्य**–पु० चमड़ेका सूखापन । **–पुष्प**–पु० रोमांच; सेहुआँ नामक रोग । **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० दे० 'त्वक्पुष्प' । **–सार**–पु० बाँस; दारचीनी । **–०भेदिनी**–स्त्री० क्षुद्रचंचु । **–सारा**–स्त्री० बंसलोचन । **–सुगंध**–पु० नारंगी । **–सुगंधा**–स्त्री० एलवालुक नामक गंधद्रव्य, मुसब्बर ।

त्वग्–'त्वक्'का समासगत रूप । **–अंकुर**–पु० रोमांच । **–आक्षीरी**–स्त्री० दे० 'त्वक्क्षीरी' । **–इंद्रिय**–स्त्री० स्पर्शेंद्रिय । **–गंध**–पु० नारंगी । **–ज**–पु० बाल; रक्त । **–जल**–पु० पसीना । **–दोष**–पु० एक प्रकारका चर्मरोग; कुष्ठ । **–दोषापहा**–स्त्री० बकुची । **–दोषारि**–पु० हस्तिकंद । **–भेदन**–पु० चर्मकर्तन ।

त्वङ्मय–वि० (सं०) चमड़े या छालका बना हुआ ।

त्वच–पु० (सं०) छाल; दारचीनी; तेजपत्ता ।

त्वचकना*–अ० क्रि० पचकना, भीतरकी ओर धँसना; पुराना पड़ना ।

त्वचा–स्त्री० (सं०) चर्म, चमड़ा । **–पत्र**–पु० दारचीनी ।

त्वचिसार–पु० (सं०) बाँस ।

त्वचिसुगंधा–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची ।

त्वदीय–वि० (सं०) तुम्हारा ।

त्वम्–सर्व० (सं०) तुम । **–पदवाच्य**–पु० जीव ।

त्वरण–पु० (सं०) शीघ्रतापूर्वक करना; (एक्सिलरेशन) किसी कार्य, योजना आदिकी पूर्तिमें शीघ्रता करना या होना; यंत्रादिकी गतिमें तेजी लाना; वेगके बढ़नेकी दर प्रति समय मात्रक । यदि प्रारंभमें वेग ३ सेमी प्रति सेकण्ड है, एक सेकण्ड बाद वेग ५ सेमी प्रति सेकण्ड हो, दो सेकण्ड बाद ७ सेमी प्रति सेकण्ड, तीन सेकण्ड बाद वेग ९ सेमी प्रति सेकण्ड हो, तो त्वरण २ सेमी प्रति सेकण्ड होगा ।

त्वरणीय–वि० (सं०) जिसे तेजीसे करना हो ।

त्वरा–स्त्री० (सं०) शीघ्रता, जल्दी । **–लिपि**–स्त्री० (शार्टहैंड) दे० 'शीघ्रलिपि' ।

त्वरारोह–पु० (सं०) कबूतर ।

त्वरावान्(वत्)–वि० (सं०) शीघ्रता करनेवाला; द्रुतगामी; तेज; प्रखर । (स्त्री० 'त्वरावती' ।)

त्वरि–स्त्री० (सं०) शीघ्रता ।

त्वरित–वि० (सं०) तीव्र गतिवाला, तेज । अ० तेजीसे, तुरत, शीघ्रतापूर्वक । **–गति**–पु० एक वर्णवृत्त ।

त्वरिता–स्त्री० (सं०) तंत्रमें एक देवी ।

त्वलग–पु० (सं०) एक जलसर्प ।

त्वष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) देवशिल्पी, विश्वकर्मा; ग्यारहवें आदित्य; एक वैदिक देवता जो पशुओं और मनुष्योंके शरीरका निर्माण करते हैं; बढ़ई ।

त्वष्टि–स्त्री० दारुकर्म । पु० एक संकर जाति ।

त्वाच–वि० (सं०) त्वचा-संबंधी ।

त्वाष्टी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

त्वाष्ट्र–पु० (सं०) वज्र; वृत्रासुर; विश्वरूप; एक छोटा रथ ।

त्वाष्ट्री–स्त्री० (सं०) चित्रा नक्षत्र; विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञा जो सूर्यको ब्याही गयी ।

त्विट्(ष्)–स्त्री० (सं०) प्रभा; छवि; द्युति, दीप्ति; इच्छा; वजन; प्रचंडता; वाणी । **–(ट्)पति**–पु० सूर्य ।

त्विषांपति–पु० (सं०) सूर्य ।

त्विषा–स्त्री० (सं०) दे० 'त्विट्' ।

त्विषामीश–पु० (सं०) सूर्य ।

त्विषि–स्त्री० (सं०) किरण; दीप्ति; प्रभा; शक्ति ।

त्वेष(स्)–वि० (सं०) दीप्त; प्रकाशित ।

त्वेष्य–वि० (सं०) भयंकर, डरावना ।

त्सरु–पु० (सं०) तलवारकी मूठ, खड्गमुष्टि; सरीसृप, रेंगनेवाला कीड़ा । **–मार्ग**–पु० तलवार चलानेका अभ्यास ।

त्सारुक–पु० (सं०) वह व्यक्ति जो तलवार चलानेमें सिद्ध-हस्त हो ।

थ

थ–देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका दूसरा वर्ण । उच्चारणस्थान दंत ।

थंडिल*–पु० यज्ञवेदी; यज्ञके लिए साफ की हुई भूमि, स्थंडिल ।

थंब–पु० दे० 'थंभ', टेक ।

थंबी–स्त्री० चाँड, थूनी ।

थंभ–पु० स्तंभ, खंभा–'अति अद्भुत थंभनकी दुगई'–राम०; सहारा ।

थंभन–पु० रुकावट; एक तांत्रिक प्रयोग; स्तंभन करनेवाली औषध ।

थँभना*–अ० क्रि० सँभलना; ठहरना, रुकना ।

थंभा*–पु० दे० 'थंभ' ।

थंभित–वि० रुका हुआ; टिका हुआ; स्तब्ध ।

थ–पु० (सं०) पहाड़; रक्षक; खतरेका चिह्न; एक रोग; भक्षण; रक्षा; भय; मंगल ।

थइली†–स्त्री० दे० 'थैली' ।

थक–पु० थाक, समूह ।

थकन–स्त्री० दे० 'थकान' ।

थकना–अ० क्रि० श्रमके कारण शिथिल होना, श्रांत होना; तंग आना; सुध-बुध भूल जाना; लुभा जाना; छकना; धीमा पड़ना । **थका-माँदा**–वि० थका, हारा हुआ, श्रमसे शिथिल । मु० **थक जाना**–तंग आ जाना, परेशान हो जाना; वृद्धावस्थाके कारण शक्तिहीन हो जाना; अशक्त हो जाना ।

थकरी–स्त्री० स्त्रियोंके बाल झाड़नेकी खस आदिकी कूँची ।

थकान–स्त्री० थकनेका भाव, थकावट, श्रांति, शैथिल्य ।

थकाना–स० क्रि० श्रांत करना; हराना; शिथिल बना देना । मु० **थका डालना, थका देना**–श्रांत कर देना, अशक्त बना देना ।

थकाव–पु० दे० 'थकान' ।

थकावट, थकाहट–स्त्री० दे० 'थकान' ।

थकित–वि० श्रांत, शिथिल, थका हुआ; मुग्ध ।

थकिया–स्त्री० थक्का ।

थकौंहाँ*–वि० कुछ थका हुआ, थोड़ा शिथिल ।

थक्का–पु० किसी चीजका जमा हुआ टुकड़ा, लोंदा ।

थगित*–वि० रुका हुआ; शिथिल ।

थणुसुत*–पु० शिवपुत्र–गणेश तथा कार्तिकेय ।

थति*–स्त्री० थाती; पूँजी ।

थत्ती–स्त्री० राशि, ढेर ।

थथोलना†–स० क्रि० टटोलना ।

थन–पु० गाय-भैंस आदिका स्तन, गाय-भैंस आदिका थैली जैसा अंग जिसमें दूध रहता है ।

थनी–स्त्री० दे० 'गलस्तन' ।

थनेला–पु० स्त्रियोंके स्तनपर होनेवाला फोड़ा; गुबरैलेकी जातिका एक कीड़ा ।

थनेली–स्त्री० स्त्रियोंके स्तनपर होनेवाला फोड़ा ।

थनैत–पु० गाँवका मुखिया; जमींदारका कारिंदा ।

थपकना–स० क्रि० प्यार या लाड़-चावसे किसीकी पीठ आदिपर हथेलीसे हलका आघात करना, थपकी देना, हथेलीसे धीरे-धीरे ठोकना ।

थपका†–पु० थक्का; थपकी ।

थपकी–स्त्री० हथेलीका हलका आघात । मु० **–देना,–लगाना**–हाथसे धीरे-धीरे ठोकना ।

थपड़ी–स्त्री० ताली, करतलध्वनि । मु० **–पीटना,–बजाना**–हथेलियोंके परस्पर आघात द्वारा शब्द उत्पन्न करना; उपहास करना ।

थपथपी–स्त्री० दे० 'थपकी' ।

थपन*–पु० स्थापन, स्थापित करनेकी क्रिया । **–हार**–पु० पुनः स्थापित करनेवाला, प्रतिष्ठापक ।

थपना*–अ० क्रि० स्थापित होना, स्थापित किया जाना । स० क्रि० स्थापित करना, स्थिर करना, दृढ़ करना; जमाना; ठोकना । पु० थापी; ठोकनेका साधन, पिटना ।

थपाना–स० क्रि० स्थापित कराना ।

थपुआ–पु० चौड़ा-चिपटा खपड़ा जिसके ऊपर नरिया रखी जाती है ।

थपेड़ना–स० क्रि० चपत जमाना; आघात करना, ठोकर देना ।

थपेड़ा–पु० चपत, चपेटा; घात-प्रतिघात, दरेरा, धक्का ।

थपोड़ी–स्त्री० दे० 'थपड़ी' ।

थपोरी*–स्त्री० दे० 'थपड़ी' ।

थप्पड़–पु० तमाचा, झापड़, चपेटा । मु० **–कसना या लगाना**–तमाचा मारना ।

थम*–पु० स्तंभ; केलेकी पेड़ी ।

थमकारी*–वि० रोकनेवाला, थामनेवाला ।

थमना–अ० क्रि० रुकना, ठहरना, चालू न रहना; बंद होना, होता न रहना, रुक जाना; प्रतीक्षा करना; ठहरा रहना, धैर्य रखना।

थमाना–स० क्रि० सँभलाना, पकड़ाना; टिकाना।

थर–पु० राजपूतानाके उत्तरमें एक रेगिस्तान; * स्थल, जमीन; जगह। स्त्री० दीवारमें ईंटोंकी जोड़ाईकी पंक्ति, रद्दा, तह; शेरकी माँद।

थरकना*–अ० क्रि० भयसे कंपित होना; थर्राना।

थरकाना†–स० क्रि० भयसे कँपाना।

थरकौंहाँ*–वि० काँपता हुआ; चंचल; स्थिर।

थरथर–अ० इस प्रकार कि सभी अंगोंमें कंपन हो जाय; थरथराहटके साथ। **–कँपनी**–स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

थरथराना–अ० क्रि० भयके मारे काँपना; काँपना।

थरथराहट–स्त्री० कँपकँपी।

थरथरी–स्त्री० भय आदिके कारण होनेवाली कँपकँपी।

थरना†–स० क्रि० दे० 'थुरना', पीटना; थूरना; ठगना।

थरसना*–अ० क्रि० त्रस्त होना, थहरना–'आवरी वावरी ह्वै थरसै' –घन०। स० क्रि० त्रस्त करना।

थरसल*–वि० थहराया हुआ, स्तब्ध, हक्का-बक्का।

थरहर*–स्त्री० दे० 'थरथरी'।

थरहराना–अ० क्रि० दे० 'थरथराना'।

थरहरी–स्त्री० दे० 'थरथरी'।

थरहाई*–स्त्री० निहोरा।

थरि, थरी*–स्त्री० सिंह, बाघ आदिकी माँद, चुर।

थरिया†–स्त्री० दे० 'थाली'।

थरु*–पु० दे० 'स्थल'।

थरुहट†–पु० थारुओंकी वस्ती।

थर्ड–वि० (अं०) तीसरा। **–इंटरनेशनल**–पु० दे० 'इंटरनेशनल'। **–क्लास**–पु० तीसरी कक्षा; ट्रेनमें तीसरा दरजा; तीसरी श्रेणी। वि० सेयम दर्जेका, घटिया, रद्दी। **–डिवीज़न**–पु० तृतीय श्रेणी।

थर्मस–पु० (अं०) एक प्रकारकी बोतल जिसमें गरम चीज देरतक गरम और ठंडी चीज देरतक ठंडी रहती है।

थर्मामीटर–पु० (अं०) शीशेकी नलीमें थोड़ा पारा भरकर बनाया जानेवाला गरमी मापनेका एक यंत्र जिसमें पारेके चढ़ाव या उतारके अनुसार तापकी मात्रा जानी जाती है, तापमापकयंत्र।

थर्राना–अ० क्रि० काँप उठना, दहलना। स० क्रि० भयभीत करना।

थल–पु० स्थल, स्थान, जगह, ठौर; जलरहित भूमि, खुश्की; फोड़ेका घेरा, थाला। **–चर**–पु० पृथ्वीपर रहनेवाले जीव। **–चारी**–वि० पृथ्वीपर विचरण करनेवाला। **–ज**–पु० गुलाव। **–पति**–पु० राजा, भूपति। **–बेड़ा**–पु० नाव या जहाजके किनारे लगनेकी जगह; (ला०) ठिकाना। **–रुह**–पु० पृथ्वीपर उगनेवाले वृक्ष आदि।

थलकना–अ० क्रि० मोटाई या ढीलेपनके कारण चलने आदिमें हिलना; मांसका लटकना; काँपना।

थलथल–वि० मोटाई या झोलके कारण हिलता हुआ।

थलथलाना–अ० क्रि० शरीरकी स्थूलताके कारण मांसका ऊपरनीचे हिलना।

थलिया–स्त्री० दे० 'थाली'।

थली–स्त्री० स्थान; प्रदेश; भूमि; जलके नीचेका तल; बैठक; रेतीली जमीन; वह भूखंड जो अपने प्रकृत रूपमें हो।

थवई–पु० राजगीर, मकान बनानेवाला कारीगर।

थसकना–अ० क्रि० नीचेकी ओर दबना या बैठना।

थहना–स० क्रि० थाह लेना; आंतरिक अभिप्रायका पता लगाना।

थहरना–अ० क्रि० हिलना, काँपना।

थहराना–अ० क्रि० भयसे काँपना; हिलना। स० क्रि० हिलाना; भयसे कँपाना।

थहाना–स० क्रि० थाह लेना, गहराईका पता लगाना; अवगाहन करना; किसीके मनकी थाह लेना।

थाँग–पु० चोरोंका गुप्त अड्डा; खोज, सुराग; भेद।

थाँगी–पु० चोरोंका मुखिया; चोरीका माल लेनेवाला; चोरोंको पता देनेवाला; चोरीका पता लगानेवाला, जासूस; चोरोंको आश्रय देनेवाला। **–दारी**–स्त्री० थाँगीका पेशा।

थाँभ*–पु० खंभा।

थाँभना*–स० क्रि० दे० 'थामना'।

थाँवरा*–पु० दे० 'थाँवला' (थाला)।

थाँवला–पु० थाला।

था–अ० क्रि० 'होना'का भूतकालिक रूप, रहा (अन्य क्रियाओंके भूतकालिक रूपोंके साथ भी इसका संयुक्त प्रयोग होता है)। (स्त्री० 'थी'।)

थाई*–वि० जो बहुत कालतक बना रहे, स्थायी। स्त्री० जगह; बैठक, अथाई। **–भाव**–पु० स्थायी भाव।

थाक–पु० सीमा; राशि, समूह; थकान।

थाकना*–अ० क्रि० दे० 'थकना' 'रथ समेत रवि थाकेउ...' रामा०।

थाकि*–स्त्री० थकावट, क्लांति–'कबीर हरिरस यों पिया, बाकी रही न थाकि'–साखी।

थाट–पु० वह राग या स्वरसमूह जो कई रागोंका आधार हो, जनकराग (संगीत); ठट्ठ, समूह।

थात*–वि० बैठा या ठहरा हुआ, स्थित।

थाति*–स्त्री० स्थिरता, स्थायित्व; ठहरने या रहनेकी क्रिया, थाती।

थाती–स्त्री० धरोहर, अमानत, किसीके पास जमा की हुई वस्तु; संचित धन, पूंजी।

थान–पु० स्थान; रहनेकी जगह; देवता, ब्रह्म आदिका स्थान; पशुओंके बाँधे जानेकी जगह; बँधी हुई लंबाईका कपड़ेका बड़ा टुकड़ा; गहनों आदिकी संख्या या अदद।

थानक–पु० स्थान; नगर; फेन; थाला।

थाना–पु० पुलिसकी चौकी; केंद्र; निवासस्थान; बाँसकी कोठी। **–पति**–पु० ग्रामदेवता, स्थानका रक्षक देवता। **–(ने)दार**–पु० थानेका प्रधान अफसर, दारोगा। **–दारी**–स्त्री० थानेदारका पद या पेशा।

थानु*–पु० स्थाणु। **–सुत**–पु० गणेश।

थानैत–पु० किसी स्थानका स्वामी, अधिपति या देवता।

थाप–स्त्री० 'थप'की ध्वनिके साथ तबले आदिपर किया गया हथेलीका आघात; खुले हुए हाथका पूरा आघात, थप्पड़; आदर, सम्मान; मर्यादा, गौरव; धाक; हाथ आदिका पूरा-पूरा पड़ा हुआ चिह्न; विश्वास, ठिकाना; शपथ।

थापन–पु० पुनः स्थापित करने या स्थायी बनानेकी क्रिया, स्थापन; उखड़ी हुई जड़को जमानेवाला।

थापना–स० क्रि० स्थापित करना; उखड़ी हुई जड़को मजबूत करना; गोबर, गीली मिट्टी आदिको हाथसे पीटकर या साँचे आदिमें भरकर कोई वस्तु तैयार करना। स्त्री० स्थापना, प्रतिष्ठा।

थापर*–स्त्री०, पु० दे० 'थप्पड़'।

थापा–पु० गीली हल्दी, मेहँदी आदिसे बनाया हुआ हाथका छापा; पूजाका चंदा; चिह्न डालनेका छापा; साँचा; राशि, ढेर; नेपालियोंकी एक जाति।

थापी–स्त्री० गच पीटनेकी चिपटी मुँगरी, पिटना, कच्चा घड़ा पीटनेका कुम्हारोंका चौड़े सिरेका लकड़ी या मिट्टीका एक औजार; पीठ थपथपानेकी क्रिया।

थाम–स्त्री० थामनेकी क्रिया; पकड़; अवरोध। * पु० खंभा।

थामना–स० क्रि० अवरुद्ध करना, किसी वस्तुको गतिसे निवृत्त करना; गिरने, लुढ़कने आदिसे बचाना, रोके रहना; पकड़ना, हाथमें लेना; सँभालना; किसी कार्यको अपने जिम्मे लेना, किसी कामका उत्तरदायित्व स्वीकार करना।

थाम्हना†–स० क्रि० दे० 'थामना'।

थायरॉइड ग्रन्थि–स्त्री० (थायरॉइड ग्लैन्ड) मानव शरीरके गलेमें लेरिंक्सके ठीक नीचे स्थित वाहिनीहीन ग्रन्थि। यह शरीरमें थायराक्सिन हार्मोन स्रावित करती है जिसमें आयडीन रहता है।

थायी*–वि० स्थायी। **–भाव**–पु० स्थायी भाव।

थार–पु० थाल, **थारा**–पु० दे० 'थाल'। † सर्व० तुम्हारा।

थारी†–स्त्री० 'थाली'। सर्व० तुम्हारी।

थारू–पु॰ नेपालकी तराईमें बसनेवाली एक जंगली जाति।

थाल–पु॰ काँसे या पीतलका थालीकी शक्लका बड़ा बरतन।

थाला–पु॰ पौधे या वृक्षकी जड़के चारों ओर बनाया गया क्यारीकी तरहका घेरा, आलवाल; फोड़ेकी सूजन।

थालिका–स्त्री॰ थाला, आलवाल।

थाली–स्त्री॰ काँसे, पीतल आदिका गोलाकार छिछला पात्र जिसमें भोजन करते हैं, बड़ी तश्तरी; नाचकी एक गत। **मु॰ –का बैंगन** –वह जो किसी एक मतका न हो, कभी इस पक्षमें, कभी उस पक्षमें हो जानेवाला।

थावर*–वि॰ अचल, स्थिर, जंगमका उलटा, स्थावर।

थावरा*–पु॰ थाला।

थाह–स्त्री॰ नदी, ताल, समुद्र आदिका तल या नीचेकी धरती; नदी आदिमें वह स्थान जहाँ बिना डूबे पाँव टिक जाय या तल छूआ जा सके; गहराईकी सीमा, गाध; पार; सीमा; इंतिहा; किसी वस्तुकी इयत्ताका अनुमान; छिपे तौरसे लगाया गया पता। वि॰ कम गहरा, उथला। **मु॰–लगना**–गहराईका पार मिलना। **–लेना** –गहराईका अंदाज लगाना; किसी वस्तुकी परिमिति या रहस्यकी जाँच करना।

थाहना–स॰ क्रि॰ थाह लेना, पार पानेका यत्न करना; गहराईका पता लगाना; मनकी टोह लेना, अंदाज लेना।

थाहरा*–वि॰ उथला, कम गहरा।

थिएटर–पु॰ (अं॰) वह भवन जहाँ नाटकका अभिनय किया जाता है, रंगशाला; अभिनय।

थिएट्रिकल–वि॰ (अं॰) थिएटर-संबंधी।

थिगली–स्त्री॰ छेद बंद करनेके लिए टाँका गया कपड़े, चमड़े आदिका टुकड़ा, पैवंद, चकती।

थित*–वि॰ बैठा या ठहरा हुआ, स्थित।

थिति*–स्त्री॰ स्थिति, ठहराव; बने रहनेकी क्रिया या भाव; पालन; दशा, परिस्थिति; स्थिरता, शांति। **–भाव***–पु॰ स्थायी भाव।

थियोसाफ़ी–स्त्री॰ (अं॰) ब्रह्मविद्या; एक संप्रदाय।

थिर–वि॰ स्थिर, गतिहीन, एक ही जगह अड़ा या रुका हुआ; अचल, न डिगनेवाला; अचंचल; एक ही स्थितिमें रहनेवाला। **–जीह** *–पु॰ मछली। **–थानी***–वि॰ एक स्थानमें स्थिर रहनेवाला।

थिरक–स्त्री॰ नृत्यमें चंचलताके साथ पैरोंका उठना, गिरना तथा हिलना।

थिरकना–अ॰ क्रि॰ चंचलताके साथ पैरोंको उठाते, गिराते या हिलाते हुए नाचना; नाचनेमें अंगको हाव-भावके साथ संचालित करना; आगे-पीछे डोलना।

थिरकौंहाँ*–वि॰ थिरकनेवाला; स्थिर।

थिरता, थिरताई*–स्त्री॰ स्थिरता, ठहराव; अचंचलता; स्थायित्व; शांति।

थिरना–अ॰ क्रि॰ पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना रुक जाना; क्षुब्ध या आलोडित जलका स्थिर होना; पानीमें मिली मिट्टी आदिका नीचे बैठना; मैल आदिके नीचे जमनेसे पानीका निर्मल होना; ठहरना।

थिरा*–स्त्री॰ पृथ्वी।

थिराना–स॰ क्रि॰ पानी आदि द्रव पदार्थोंका हिलना बंद करना, आलोडित या क्षुब्ध जलको स्थिर होने देना; गंदे पानीको मैल छँटकर निर्मल होने देना। अ॰ क्रि॰ दे॰ 'थिरना'।

थीकरा*–पु॰ स्थिति या काम सँभालनेकी जिम्मेदारी।

थीता*–पु॰ स्थिरता, शांति, चैन।

थीती*–स्त्री॰ दे॰ 'थीता'।

थीर*–वि॰ स्थिर।

थुकनी–स्त्री॰ वारवार थूकनेकी प्रवृत्ति या बीमारी जो प्रायः मसूढे या मुँहके भीतर जख्म हो जानेपर देख पड़ती है।

थुकवाना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'थुकाना'।

थुकहाई–वि॰ स्त्री॰ (ऐसी स्त्री) जिसे सभी धिक्कारें।

थुकाई–स्त्री॰ थूकनेका काम।

थुकाना–स॰ क्रि॰ थूकनेमें प्रवृत्त करना; थूकनेका काम कराना; किसी वस्तुको उगलवाना; निंदा करना।

थुक्काफजीहत–स्त्री॰ धिक्कार और तिरस्कार।

थुड़ी–अ॰ धिक्कारसूचक शब्द, छिः। स्त्री॰ वेइज्जती, लानत। **मु॰–थुड़ी करना**–धिक्कारना, थू-थू करना। **–थुड़ी होना**–सवकी दृष्टिमें गिर जाना।

थुतकारना–स॰ क्रि॰ 'थू-थू' करना; किसी चीजपर बारबार थूकना; घोर घृणा प्रकट करना।

थुत्कार–पु॰ (सं॰) थूकनेकी आवाज; थूकनेकी क्रिया।

थुथना–पु॰ दे॰ 'थूथन'।

थुथराई*–स्त्री॰ थोड़ा होना, कम पड़ना–'जान महागरुवै-गुन मैं घन आनँद हेरि रह्यो थुथराई'–घन॰।

थथराना*–अ॰ क्रि॰ थोड़ा होना, कम पड़ना।

थुनी*–स्त्री॰ दे॰ 'थुन्नी'।

थुनेर–पु॰ एक तरहका गठिवन।

थुन्नी–स्त्री॰ खंभा, थूनी।

थुपथुपी–स्त्री॰ थपकी; झोंका।

थुरना–स॰ क्रि॰ कूटना; (ला॰) पीटना। अ॰ क्रि॰ कम पड़ना।

थुरहथा*–वि॰ छोटे हाथका; जिसकी हथेलीमें थोड़ी वस्तु अँट सके; कमखर्च। (स्त्री॰ 'थुरहथी'।)–'कन दैवो सौंप्यो ससुर वह थुरहथी जानि'–वि॰।

थुलथुल–वि॰ मोटाईके कारण ढीला या हिलता हुआ (शरीर)।

थुलमा–पु॰ एक तरहका पहाड़ी कंबल जिसमें ऊपरसे बाल जमाये गये होते हैं।

थुली†–स्त्री॰ दलिया।

थू–पु॰ थूकनेका शब्द, थूकनेमें मुँहसे निकलनेवाला शब्द। अ॰ घृणा और धिक्कार-सूचक शब्द, छिः। स्त्री॰ थुड़ी, लानत। **–थू करना**–थुड़ी-थुड़ी करना, घृणा और तिरस्कार सूचित करना। **–थू होना**–चारों ओर निंदा होना।

थूक–पु॰ लारकी तरहका रस जो मुँहसे अपने आप छूटा करता है, ष्ठीवन। स्त्री॰ थूकनेकी क्रिया। **मु॰–लगाना**–नीचा दिखाना। **थूकों सत्तू सानना**–अत्यंत कृपणतासे काम चलाना; थोड़ी सामग्रीसे बड़ा काम करने लगना।

थूकना–अ॰ क्रि॰ मुँहसे थूक वाहर निकालना या फेंकना; धिक्कारना, छिः-छिः करना। स॰ क्रि॰ उगलना; निंदा करना। **मु॰ थूककर चाटना**–त्यक्त वस्तुको पुनः ग्रहण करना; वचन देकर मुकर जाना।

थूत्कार, थूत्कृत–पु॰ (सं॰) दे॰ 'थुत्कार'।

थूथन–पु॰ लंबे मुँहका आगेकी ओर निकला हुआ भाग।

थूथनी–स्त्री॰ थूथन।

थूथुन†–पु॰ थूथन।

थून*–पु॰ दे॰ 'थूनी'।

थूनी–स्त्री॰ बोझको रोकनेके लिए लगाया जानेवाला छोटा खंभा, स्तंभ, टेक।

थूमा†–पु॰ लकड़ीका अनगढ़ खंभा, टेक ('टूटे काँटे')।

थूरना*–स॰ क्रि॰ कूटना, अच्छी तरह पीटना; (ला॰) तोड़ देना; चूर करना; ठूँस-ठूँसकर खाना।

थूल*–वि॰ स्थूल।

थूला*–वि॰ मोटा, हृष्ट-पुष्ट। (स्त्री॰ 'थूली'।)

थूली–स्त्री॰ थुली, दलिया।

थूवा–पु॰ ढूह, टीला।

थूहड़–पु॰ दे॰ 'थूहर'।

थूहर–पु॰ सेहुँडका पेड़।

थूही–स्त्री॰ मिट्टीका ढूह; गड़ारीकी लकड़ी रखनेके मिट्टीके खंभे जो कुएँपर बने होते हैं।

थेँथर†–वि॰ हैरान; थका हुआ; हेहर, वेहया।

थेई-थेई–स्त्री॰ नाचका एक ढंग और ताल।

थेगली*–स्त्री॰ कंथा; दे॰ 'थिगली'।

थेट–वि॰ सीधी, बिना बदले, जानेवाली (गाड़ी या डब्बा)।

थैं*–अव्य॰ से।

थैथै–स्त्री॰ (सं॰) वाद्यका अनुकरणात्मक शब्द।

थैला–पु० कपड़े, टाट आदिका बना बटुएके आकारका बड़ा आधान जिसमें चीजें रखी और बंद की जा सकें; रुपयोंका तोड़ा; जंघासे घुटनेतकका पायजामेका भाग।

थैली–स्त्री० छोटा थैला; रुपयोंकी थैली; थैली जैसी कोई वस्तु। **–दार**–पु० रोकड़ रखनेवाला; खजानेमें रुपये उठानेवाला। **–बरदार**–पु० थैली ढोनेवाला। **–बरदारी**–स्त्री० थैली ढोनेका पेशा या मजदूरी। **–मु०–खोलना**–तोड़े गिनना; थैलीके सब रुपये दे देना; उदारतापूर्वक धन देनेको तैयार होना 'तुरत देव मैं थैली खोली'–रामा०।

थोक–पु० राशि, ढेर; फुटकर या खुदराका उलटा; एकत्र किया हुआ माल; मालकी बड़ी राशि। **–दार,–फरोश**–पु० थोक माल बेचनेवाला व्यापारी। **मु०–करना***–जमा करना, एकत्र करना।

थोड†–स्त्री० कमी, अपर्याप्तता।

थोडन–पु० (सं०) ढाँकने या लपेटनेकी क्रिया।

थोड़ा–वि० न्यून मात्राका, जो परिमाणमें कम हो, जरा-सा, अल्प, कुछ, किंचित्। अ० जरा-सा। **–बहुत**–अ० जरा-मना, कुछ-कुछ। **–सा**–तनिक, जरा-सा। **–(ड़े)ही**–एकदम नहीं (काकु)।

थोथ–स्त्री० निःसारता, खोखलापन; तोंद।

थोथरा–वि० निःसार; बेकाम।

थोथा–वि० तत्त्वरहित, निःसार; भीतरसे खाली; खोखला; निकम्मा; भोथरा। पु० मिट्टीका साँचा जिसमें बरतन ढालते हैं।

थोपड़ी, थोपी†–स्त्री० चपत।

थोपना–स० क्रि० मिट्टी आदिके लोंदेको किसी वस्तुपर इस प्रकार रखना कि वह उसपर चिपक जाय; दोष या जिम्मेदारी किसीपर डालना, मढ़ना; आरोपित करना; रोटी बनानेके लिए गीले आटेको तवेपर यों ही फैला देना; आक्रमण आदिसे रक्षा करना।

थोबड़ा–पु० थूथन; तोबड़ा।

थोर, थोरा†–वि० दे० 'थोड़ा'; छोटा–'कछु बात बड़ी न कहूँ मुख थोरे'–रामचंद्रिका।

थोरिक*–वि० थोड़ा-सा।

थौंद*–स्त्री० दे० 'तोंद'।

थ्यावस†*–पु० स्थिरता, चैन, कल, धीरज।

द

द–देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका तीसरा वर्ण। उच्चारण-स्थान दंत।

दंग–वि० (फा०) चकित, आश्चर्यमें पड़ा हुआ; हक्का-बक्का; बेवकूफ; लापरवाह। *पु० खौफ,डर; घबराहट। **मु०–रह जाना**–चकित हो जाना।

दंगई–वि०, पु० दंगा करनेवाला, फसादी, लड़ाका।

दंगल–पु० (फा०) कुश्ती आदिकी प्रतिद्वंद्विता; अखाड़ा; मजमा, समूह; गद्दा। **मु० –बाँधना**–हलका बाँधना। **–मारना**–कुश्ती जीतना। **–लड़ना**–कुश्ती लड़ना।

दंगली–वि० दंगल मारनेवाला; दंगलमें जाने या भेजनेके योग्य; लड़ने, युद्ध करनेवाला।

दंगवारा–पु० किसानोंकी हल-बैल आदिके द्वारा पारस्परिक सहायता।

दंगह*–वि० दंग करनेवाला, अद्भुत (रासो)।

दंगा–पु० झगड़ा-फसाद, बलवा, विप्लव, उत्पात; हल्ला, कोलाहल। **–ई**–पु० दंगा करनेवाला, बलवाई। **–(गे)बाज़**–वि०, पु० दे० 'दंगई'।

दंगैत–वि०, पु० दे० 'दंगई'।

दंड–पु० (सं०) डंडा, लगुड; ब्रह्मचारियों, संन्यासियोंके धारण करनेका बाँस, पलाश आदिका डंडा; राजाके हाथमें रहनेवाला खड्ग या डंडा जो अधिकार और सजाका सूचक होता है; डंडेकी तरह कड़ी और सीधी वस्तु; बाजा बजानेकी कमानी या डंडा; आक्रमण; दमन; भूमिकी एक माप, लट्ठा; व्यूहका एक भेद; शरणागत-रक्षण आदि कर्म; शासन; सजा, जुरमाना, डाँड़; साठ पल (२४ मिनट)का कालका एक सूक्ष्म विभाग, घड़ी; राजाओंकी चार नीतियोंमेंसे एक; सूर्यका एक पार्श्वचर; यम; अभिमान; अश्व; कोण; मथानीका डंडा; तराजूकी डंडी; वह बाँस या डंडा जिसमें पताका लगी रहती है; हलमें लगी लंबी लकड़ी, हरिस; दंडवत्; एक कसरत; पेड़का धड़; कमल आदिकी नाल; हाथीकी सूँड़; जहाज या नावका मस्तूल; इक्ष्वाकुका एक पुत्र; सूर्यकिरणोंका संघात; सेना; शिव; विष्णु; नृप। **–कंदक**–पु० भूमिकंद। **–कर**–पु० (प्यूनिटिव टैक्स) दे० 'दंडात्मक कर'। **–कर्म(न्)**–पु० सजा देनेका काम; सजा। **–कल**–पु० ३० मात्राओंका एक छंद। **–काक**–पु० डोमकौआ। **–काष्ठ**–पु० लकड़ीका डंडा। **–खेदी(दिन्)**–पु० वह व्यक्ति जो कठोर दंड पानेके कारण दुःख झेल रहा हो। **–गौरी**–स्त्री० एक अप्सरा। **–ग्रहण**–पु० सन्न्यासग्रहण। **–घ्न**–वि०, पु० डंडेसे प्रहार करनेवाला; डंडेसे मारकर जान लेनेवाला; दंडको न माननेवाला। **–चक्र**–पु० सेनाका एक विभाग। **–चारी(रिन्)**–पु० सेनापति। **–च्छदन**–पु० बरतन रखनेका कमरा। **–ढक्का**–स्त्री० दमामा, नगाड़ा। **–ताडन**–पु० अभियोगीको डंडेसे पीटनेकी सजा, बेंतकी सजा। **–ताम्री**–स्त्री० ताँबेके पात्रोंवाला बाजा (जलतरंग)। **–दास**–पु० वह व्यक्ति जो अर्थदंड न चुकानेके बदले दास बना लिया गया हो। **–देवकुल**–पु० न्यायालय। **–धर**–पु० वह व्यक्ति जो डंडा लिये हो, डंडा धारण करनेवाला; यम; राजा; शासक; सन्न्यासी। **–धार**–पु० वह व्यक्ति जिसके हाथमें डंडा हो; यम; राजा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–धारक**–पु० न्याय करनेवाला। **–धारणा**–स्त्री० वह स्थान जहाँ शासनकी सुव्यवस्थाके लिए सेना रखनी पड़े। **—नायक**–पु० सेनापति, सेनानी; न्यायाधीश, दंडविधायक; राजा। **–नीति**–स्त्री० शत्रुओं या अपराधियोंको दंड देकर वशमें करनेकी नीति। **–नेता(तृ)**–पु० राजा; यम; विचारपति। **–न्यायालय**–पु० (क्रिमिनल कोर्ट) (विधि-विधानोंका भंग करनेवाले) अपराधोंका विचार, निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-व्यवस्था करनेवाला न्यायालय। दे० 'फौजदारी अदालत'। **–प**–पु० राजा। **–पांशुल,–पांसुल**–पु० द्वारपाल। **–पाणि**–पु० यम; काशीस्थ एक भैरव-मूर्ति; वह व्यक्ति जिसके हाथमें दंड हो। **–पात**–पु० ज्वारका एक भेद; नृत्यमें पैरकी एक मुद्रा। **–पारुष्य**–लात-घूँसे आदिसे आघात कर किसीके शरीरपर धूल या दूसरी गंदी वस्तु फेंकनेका कुकृत्य (स्मृति); कड़ा दंड। **–पाल,–पालक**–पु० दंडनायक; द्वारपाल; एक मछली। **–पाशक,–पाशिक**–पु० पुलिसका प्रधान कर्मचारी; जल्लाद। **–प्रणाम**–पु० साष्टांग प्रणाम, वह प्रणाम जो पृथ्वीपर डंडेकी भाँति पड़कर किया जाय। **–बालधि**–पु० हाथी। **–भंग**–पु० दंडाज्ञाका बरता न जाना। **–भय**–पु० सजाका डर। **–भृत्**–पु० यम; वह व्यक्ति जो लाठी लिये हो; कुम्हार। **–मत्स्य**–पु० एक मछली। **–माणव,–मानव**–पु० बालक जिसे प्रायः दंड देना पड़ता है। **–माथ**–पु० राजमार्ग, मुख्य मार्ग। **–मुख**–पु० सेनानायक। **–मुद्रा**–स्त्री० तंत्रके अनुसार एक मुद्रा जिसमें मुट्ठी बाँधकर बीचकी उँगली ऊपरकी ओर सीधी खड़ी करते हैं; साधुओंका दंड और मुद्रा। **–यात्रा**–स्त्री० दिग्विजयके लिए प्रयाण; शत्रुपर की गयी चढ़ाई; बरयात्रा, बरात। **–याम**–पु० यम; दिन; अगस्त्य मुनि। **–वध**–पु० फाँसी, प्राणदंड। **–वासी(सिन्)**–पु० द्वारपाल; वह व्यक्ति जिसे एक ग्रामका दंड-संबंधी अधिकार प्राप्त हो। **–वाही(हिन्)**–पु० पुलिस कर्मचारी। **–विकल्प**–पु० दंड-संबंधी विकल्प (प्रायः कैद या जुरमानेकी सजा दी जाती है और अभियुक्तको दोनोंसे चाहे जिसे चुन लेनेकी आजादी दी जाती है)। **–विज्ञान**–पु० (पीनॉलॉजी) अपराधके अनुरूप दंड देने तथा कारागृहकी व्यवस्था आदि-संबंधी विद्या। **–विधान**–पु० दंडकी व्यवस्था, जुर्म और सजाका कानून। **–विधि**–स्त्री० दे०

'दंडविधान'। **–विष्कंभ**–पु० मथानीकी रस्सी बाँधनेका खंभा। **–वृक्ष**–पु० सेहुँड़। **–व्यूह**–पु० एक प्रकारकी व्यूहरचना जिसमें सेनाके विविध अंग पास-पास कतारोंमें स्थित किये जाते थे। **–शास्त्र**–पु० जुर्म और सजाका कानून; दंडविज्ञान। **–संधि**–स्त्री० सेना या लड़ाईका सामान लेकर की जानेवाली संधि। **–स्थान**–पु० शरीरके उदर, उपस्थ आदि दस स्थान जहाँ दंड देकर कष्ट पहुँचाया जा सकता है; वह स्थान या प्रदेश जहाँ फौजी शासन हो (कौ०); सेनाका एक विभाग। **–हस्त**–पु० द्वारपाल; यम; तगरका फूल।

दंडक–पु० (सं०) डंडा, सोंटा; हरिस; झंडेका डंडा; दंड देनेवाला, शासित करनेवाला; एक पौधा; कतार; इक्ष्वाकु राजाका एक पुत्र; वह छंद जिसके प्रत्येक चरणमें २६ से अधिक अक्षर हों; दे० 'घनाक्षरी'; दंडकारण्य।

दंडका–स्त्री० (सं०) दंडकारण्य; दण्डकवनकी भूमि।

दंडकारण्य–पु० विंध्यके दक्षिण एक प्राचीन वन जहाँ वनवासकालमें रामने निवास किया था (सीताहरण यहीं हुआ था); जनस्थान।

दंडन–पु० (सं०) दंड देनेकी क्रिया, सजा देना, निग्रह।

दंडना*–स० क्रि० दंडित करना, दंड देना।

दंडनीय–वि० (सं०) दंड देने योग्य, जिसे दंड देना न्यायसंगत हो।

दंडमान*–वि० दंडनीय।

दंडरी–स्त्री० (सं०) ककड़ीका एक भेद।

दंडवत्–पु० (सं०) डंडेकी तरह पृथ्वीपर पड़कर किया जानेवाला प्रणाम, साष्टांग प्रणाम। वि० डंडेके सदृश सीधा या खड़ा।

दंडात्मक–वि० (प्यूनिटिव) (सार्वजनिक उपद्रव आदिके कारण) क्षेत्र-विशेषके लोगोंको दंड देना ही जिसका उद्देश्य हो; दंड देनेकी गरजसे लगाया गया या बैठाया गया। **–कर**–पु० (प्यूनिटिव टैक्स) दंड या सजाके रूपमें लगाया गया कर, दंडकर, ताजीरी कर।

दंडादंडि–स्त्री० (सं०) लाठियोंकी मार-पीट, वह मार-पीट जिसमें दोनों ओरसे लाठी चलती हो।

दंडादेश–पु० (सेंटेंस) किसी अपराधीको दंड देनेका न्यायाधीश द्वारा सुनाया जानेवाला आदेश या निर्णय।

दंडादेशित–वि० (सेंटेंस्ड) जिसे किसी अपराधके कारण न्यायालयने दंडका आदेश दिया हो।

दंडाधिकारी–पु० (मजिस्ट्रेट) फौजदारी मुकदमे सुनने और शासन-प्रबंधका काम करनेवाला अफसर।

दंडाधिप–पु० (सं०) स्थानाविशेषका प्रधान शासक।

दंडानीक–पु० (सं०) सेनाका एक विभाग।

दंडापतानक, दंडावतानक–पु० (सं०) एक रोग जिसमें शरीर कड़ा हो जाता है।

दंडापूप–पु० (सं०) डंडा और पूआ। **–न्याय**–पु० एक तर्क-प्रणाली जिसके अनुसार आधेयरूप बात उसी प्रकार स्वतः सिद्ध मानी जा सकती है जिस प्रकार किसी डंडेके गायब हो जानेपर उसमें बँधे हुए पूएका गायब होना।

दंडायमान–वि० (सं०) जो डंडेकी भाँति सीधा स्थित हो।

दंडार–पु० (सं०) रथ; नाव; कुम्हारका चाक; धनुष्; मदस्राव करता हुआ हाथी।

दंडार्ह–वि० (सं०) दंड पाने योग्य।

दंडालय–पु० (सं०) अदालत, न्यायाधिकरण; दंडकका छंद।

दंडालसिका–स्त्री० (सं०) हैजा।

दंडाश्रम–पु० (सं०) तीर्थयात्रीकी अवस्था।

दंडाश्रमी(मिन्)–पु० (सं०) सन्यासी।

दंडाहत–वि० (सं०) डंडेसे पीटा हुआ। पु० छाछ, मट्ठा।

दंडितक–पु० (सं०) दंडधारक, छड़ीबरदार; एक तरहकी मछली; पुलिस कर्मचारी।

दंडिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; छड़ी; पंक्ति; रस्सी; मोतियोंकी लड़ी।

दंडित–वि० (सं०) जिसे दंड दिया गया हो, सजायाफ्ता।

दंडिनी–स्त्री० (सं०) एक पौधा, दंडोत्पल।

दंडी(डिन्)–पु० (सं०) यम; राजा; द्वारपाल; पुलिस-कर्मचारी; नाविक; सूर्यका एक पार्श्वचर; एक जिन; शिव; दौनेका पौधा; दंडधारी सन्यासी; मंजुश्री; संस्कृतके एक विख्यात कवि जिनकी रचनाएँ दशकुमार-चरित और काव्यादर्श है। **–(डि) मुंड**–पु० शिव।

दंडोत्पल–पु० (सं०) एक पौधा, कुकरौंधा।

दंडोत्पला–स्त्री० (सं०) एक पौधा; एक मछली।

दंडोपनत–वि० (सं०) पराजित करके वशमें किया हुआ (राजा)।

दंडोपबंध–पु० (सैंक्शन) किसी अधिनियम या अंतरराष्ट्रीय संधि आदिके साथ लगा हुआ यह उपबंध कि उसका पालन न करनेपर उल्लंघनकारीको क्या दंड मिलेगा; शास्ति।

दंड्य–वि० (सं०) दे० 'दंडनीय'। **–षड्यंत्र**–पु० (क्रिमिनल कांस्पिरेसी) ऐसा षड्यंत्र जो देशकी विधि-व्यवस्थाके अनुसार दंडनीय हो, अपराद्ध षड्यंत्र।

दंत–पु० (सं०) दाँत; पठार; कुंज; ३२ की संख्या; पर्वतका शिखर; बाणकी नोक। **–कथा**–स्त्री० किंवदंती, जनश्रुति। **–कर्षण**–पु० एक नीबू (जमीरी)। **–कार**–पु० हाथीदाँतका काम करनेवाला; नकली दाँत बनानेवाला। **–काष्ठ**–पु० दातौन। **–काष्ठक**–पु० आहुल्य वृक्ष, तरवट। **–क्रूर**–पु० संग्राम, लड़ाई, समर। **–क्षत**–पु० कविप्रसिद्धिके अनुसार कामकेलिमें कपोलों, अधरोंपर दाँत काटनेसे पड़नेवाला चिह्न। **–खोदनी**–स्त्री० दाँतोंकी संधिमेंसे जूठन आदि निकालनेकी ताँबे आदिकी सींक जैसी वस्तु। **–घर्ष**–पु० दाँतोंका किरकिराना; दाँत पीसना। **–घात**–पु० दाँतोंसे काटना। **–चिकित्सक**–पु० (डेंटिस्ट) दाँतोंकी चिकित्सा करनेवाला तथा हिलते, टूटे दाँत उखाड़ने, नकली दाँत लगानेवाला। **–चिकित्सा**–स्त्री० (डेंटिस्ट्री) दाँतोंकी दवा करनेकी विद्या या कला। **–च्छद**–पु० ओष्ठ, होंठ। **–च्छदोपमा**–स्त्री० बिंबाफल; कुँदरू। **–छत**–*–पु० दे० 'दंत-क्षत'। **–छद***–दंतछत; ओंठ। **–जात**–पु० वह बच्चा जिसके दाँत निकल आये हों; दाँत निकलनेका समय। **–जाह**–पु० दाँतकी जड़। **–ताल**–पु० ताल देनेका एक प्राचीन बाजा। **–दंश**–पु० दे० 'दंतक्षत'। **–दर्शन**–पु० लड़ाई-झगड़े आदिमें ओठ फड़फड़ाते हुए दाँत पीसनेकी क्रिया। **–धावन**–पु० दाँत साफ करनेका काम, दंतमार्जन; दातौन; खैरका पेड़; करंजका पेड़; मौलसिरीका पेड़। **–पत्र**–पु० दाँतके बराबर पत्तोंवाला कानका एक आभूषण। **–पत्रक**–पु० कुंदका फल। **–पवन,–पावन**–पु० दाँत साफ करनेका काम; दातौन। **–पांचालिका**–स्त्री० हाथीदाँतकी पुत्तलिका। **–पात**–पु० दाँत गिरना। **–पार**–पु० (हिं०) दंतपीड़ा, दाँतका दर्द। **–पालि**–स्त्री० हाथीदाँतकी (तलवारकी) मूठ। **–पाली**–स्त्री० मसूड़ा। **–पुप्पुट**–पु० एक रोग जिसमें मसूड़ोंमें शोथके कारण पीड़ा होती है। **–पुर**–कलिंग राज्यकी राजधानी जहाँ ब्रह्मदत्त नामके एक राजाने बुद्धदेवके एक दाँतकी स्थापना करके उसके ऊपर एक विशाल मंदिर बनवाया था। **–पुष्प**–पु० निर्मली; कुंदका फूल। **–प्रक्षालन**–पु० दे० 'दंत-पवन'। **–फल**–पु० निर्मली; कैथ। **–फला**–स्त्री० पीपर। **–बीज,–बीजक,–वीज,–वीजक**–पु० अनार। **–मध्य**–पु० हाथीके दाँतोंके बीचकी दूरी। **–मल**–पु०,**–रज(स)**–स्त्री० दाँतकी पपड़ी। **–मांस**–पु० मसूड़ा। **–मूल**–पु० दाँतकी जड़; एक औषध; दाँतका एक रोग। **–मूलिका**–स्त्री० दंती वृक्ष। **–मूलीय**–वि० जिसका उच्चारण दंतमूलसे होता हो–जैसे तवर्ग। **–लेखक**–पु० दाँतोंकी रँगाईसे जीविका चलानेवाला। **–वक्र**–पु० शिशुपालका भाई जिसे कृष्णने मारा था। **–वल्क**–पु० दाँतके ऊपरका इनामेल; मसूड़ा। **–वस्त्र**–पु० ओठ। **–वीणा**–स्त्री० दाँत कटकटाना; एक प्रकारका बाजा। **–वेष्ट**–पु० दाँतका एक रोग; मसूड़ा; हाथीदाँतपर चढ़ाया जानेवाला छल्ला। **–वैदर्भ**–पु० दाँतका एक रोग; आघातसे दाँतका टूटना। **–व्यसन**–पु० दाँतका टूटना या क्षय। **–शंकु**–पु० दाँत उखाड़नेका एक औजार। **–शठ**–पु० नीबू; कैथ; कमरख; नारंगी; चुक; खटाई–जिनके खानेसे दाँत गुठले हो जाते हैं। **–शर्करा**–स्त्री० दाँतपर जमनेवाली पपड़ी। **–शाण**–पु० दाँतोंपर लगानेका एक रंगीन मंजन, मिस्सी। **–शूल**–पु० दाँतका दर्द। **–शोफ**–पु० मसूड़ोंकी सूजन। **–श्लिष्ट**–वि० दाँतोंमें अँटका हुआ। **–हर्ष**–पु० ठंडा पानी लगनेसे होनेवाली

दाँतकी पीड़ा, दाँतका खट्टा होना। 'अम्ल रसका अधिक सेवन दंत-हर्ष उत्पन्न करता है'–कादं०, अप्रैल'६४। **–हर्षक**–पु० जँबीरी नीबू। **–हीन**–वि० विना दाँतका, जिसके दाँत न हों।

दंतक–पु० (सं०) दाँत; पर्वतका शिखर; पर्वतकी चोटीके पास आगेकी ओर निकला हुआ पत्थर; दीवारसे निकली हुई खूँटी।

दंतांतर–पु० (सं०) दाँतोंके वीचका स्थान।

दंताघात–पु० (सं०) दाँतों द्वारा किया गया आघात; नीवू।

दंतादंति–स्त्री० (सं०) लड़ाई-झगड़ेमें एक-दूसरेको दाँतसे काटना।

दंतायुध–पु० (सं०) सूअर (जिसका एकमात्र आयुध उसका दाँत है)।

दंतार–वि० बड़े दाँतोंवाला। पु० हाथी।

दंतारा–वि० दे० 'दंतार'।

दंतार्वुद–पु० (सं०) मसूड़ोंमें होनेवाला फोड़ा।

दंताल–पु० हाथी।

दंतालय–पु० (सं०) मुख।

दंतालि, दंतावली–स्त्री० (सं०) दंतपंक्ति।

दंतालिका, दंताली–स्त्री० (सं०) लगाम।

दंतावल–पु० (सं०) हाथी।

दंति*–पु० हाथी।

दंतिका–स्त्री० (सं०) जमालगोटा।

दँतिया–स्त्री० छोटे-छोटे दाँत।

दंती–स्त्री० (सं०) एरंडकी जातिका एक वृक्ष।

दंती(तिन्)–वि० (सं०) दाँतवाला। पु० हाथी; गणेश; पहाड़। **–(ति) चक्र**–पु० (गीअर) साइकिल या किसी यंत्रादिका दाँतोंसे युक्त पहिया अथवा पहियोंका समूह जो गति प्रदान करनेमें सहायक होता है, गियर। **–जा**–स्त्री० दे० 'दंतिका'। **–मद**–पु० हाथीके मस्तकसे चूनेवाला मद। **–वक्त्र**–पु० गणेश।

दंतुर–वि० (सं०) जिसके दाँत आगेकी ओर निकले हो, दाँतोंवाला; ऊवड़-खावड़; टँका हुआ; ऊपर उठा हुआ; वदनुमा, भद्दा। **–चक्र**–पु० 'गीअर'–दे० 'दंतिचक्र'। **–च्छद**–पु० जमीरी नीबू।

दंतुरक–वि० (सं०) जिसके दाँत निकले हों।

दंतुरित–वि० (सं०) दे० 'दंतुर'; लिप्त, ढका हुआ।

दँतुरिया*–स्त्री० बच्चोंके नये-नये दाँत।

दंतुल–वि० (सं०) दाँतोंवाला।

दँतुला–वि० जिसके दाँत वड़े या आगेकी ओर निकले हों।

दंतोद्भेद–पु० (सं०) दाँतोंका निकलना। **–काल**–पु० (टीथिंग पीरियड) वह समय जव वच्चेके दाँत निकल रहे हों।

दंतोलूखलिक, दंतोलूखली(लिन्)–पु० (सं०) एक प्रकारके साधु जो धान आदिको यों ही चवाकर खा जाते हैं।

दंतोष्ठ्य–वि० (सं०) दाँत और ओठसे उच्चारित होनेवाला (वर्ण–जैसे 'व')।

दंत्य–वि० (सं०) जिसका उच्चारणस्थान दंत हो–जैसे तवर्ग; दाँतोंके लिए हितकर।

दंद*–पु० द्वंद्व, झगड़ा, उपद्रव। स्त्री० गरमी।

दंदन*–वि० दमन करनेवाला। (स्त्री० 'दंदनी')।

दंदश–पु० (सं०) दाँत।

दंदशूक–पु० (सं०) सर्प; कीड़ा; एक राक्षस; सर्पोंसे पूर्ण एक नरक। वि० काटनेवाला; विषैला; हानिकर।

दंदान–पु० (फा०) दाँत। **–साज़**–पु० दाँत बनानेवाला।

दंदाना†–अ० क्रि० गरमी मालूम होना; गरम चीजके पास रहनेसे गरम होना। पु० (फा०) आरा, कंघी आदिका दाँत। **–(ने)-दार**–वि० जिसमें दंदाने हों।

दंदारू–पु० छाला, फफोला।

दंदी*–वि० झगड़ालू, उपद्रवी।

दंपति*–पु० दे० 'दंपती'।

दंपती–पु० (सं०) पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष।

दंपा*–स्त्री० विद्युत्, विजली।

दंभ–पु० (सं०) पाखंड, आडंवर; ढकोसला; अभिमान; कपट; शाठ्य; इंद्रका वज्र; शिव।

दंभक–वि०, पु० (सं०) पाखंडी; वंचक; कपटी।

दंभन–पु० (सं०) ढोंग करना, पाखंड करना।

दंभान*–पु० पाखंड; घमंड–'हौं जु कहत लै चलो जानकी छाँड़ि सवै दंभान'–सूर।

दंभी(भिन्)–वि० (सं०) दंभ करनेवाला, पाखंडी; अभिमानी।

दंभोलि–पु० (सं०) इंद्रका वज्र; हीरा।

दँवरी–स्त्री० अनाज निकालनेके लिए सूखे डंठलोंको वैलोंसे रौंदवाना।

दँवारि*–स्त्री० दवाग्नि।

दंश–पु० (सं०) दाँत काटने या डंक मारनेकी क्रिया; दाँत काटनेका घाव; विषैले जंतुके काटने या डंक मारनेका घाव; चुभनेवाली वात; एक प्रकारकी बड़ी मक्खी जो वहुत तेज काटती है, डाँस, वनमक्षिका; दाँत; कवच, वर्म; (रत्नका) दोष; तीखापन; शरीरकी संधि; द्वेष; आक्षेप। **–नाशिनी**–स्त्री० एक तरहका कीड़ा। **–भीरु,–भीरुक**–पु० भैंसा। **–मूल**–पु० सहजनका पेड़। **–वदन**–पु० एक तरहका वगला, कंक।

दंशक–वि० (सं०) दाँतसे काटनेवाला; डंक मारनेवाला। पु० कुत्ता; डाँस; मच्छड़; भिड़।

दंशन–पु० (सं०) दाँतसे काटने या डंक मारनेकी क्रिया; कवच।

दंशना*–स० क्रि० दाँतसे काटना या डंक मारना।

दंशित–वि० (सं०) जो डँसा गया हो, जिसे किसीने दाँतसे काट लिया हो; जिसने कवच धारण किया हो, सन्नद्ध, वर्मित; रक्षित।

दंशी–स्त्री० (सं०) छोटा डाँस, छोटी वनमक्षिका।

दंशी(शिन्)–पु० (सं०) दे० 'दंशक'; वैरी; लगनेवाली वात कहनेवाला।

दंशूक–वि० (सं०) जिसका डँसने या डंक मारनेका स्वभाव हो।

दंशेर–वि० (सं०) काटने या डंक मारनेवाला; हानिकारक।

दंष्ट्रा–स्त्री० (सं०) मोटा और वड़ा दाँत, दाढ़, चौभर। **–कराल**–वि० भयंकर दाँतोंवाला। **–दंड**–पु० सूअरका दाँत। **–नखविष**–पु० वह जंतु जिसके नखों और दाँतोंमें विष हो। **–विष**–पु० एक प्रकारका साँप। **–विषा**–स्त्री० एक प्रकारकी मकड़ी।

दंष्ट्रायुध–पु० (सं०) शूकर, वराह।

द्रंष्टाल–वि० (सं०) दाढ़ोंवाला।

दंष्ट्रास्त्र–पु० (सं०) शूकर, वराह।

दंष्ट्रिक–वि० (सं०) दाढ़ोंवाला।

दंष्ट्रिका–स्त्री० (सं०) दे० 'दंष्ट्रा'।

दंष्ट्री(ष्ट्रिन्)–पु० (सं०) शूकर; एक प्रकारका साँप; वड़े दाँतोंवाला जंतु; एक हिंस्र जंतु। वि० वड़े दाँतोंवाला; दाँतोंसे घाव करनेवाला; मांसाहारी।

दंस*–पु० दे० 'दंश'।

द–वि० (स०) (समासांतमें) देनेवाला; उत्पन्न करनेवाला। पु० दान; पर्वत; कलत्र; काटकर अलग करना।

दइत*–पु० दे० 'दैत्य'।

दइमारा*–वि० दे० 'दई-मारा'।

दई–पु० दैव, भाग्य, विधि, विधाता। **–जार**–वि० (दैव द्वारा जलाया हुआ), अभागा, शैतान (स्त्रियों द्वारा गालीके रूपमें प्रयुक्त –'सवेरे ही दईजारी मशीनोंको देखने निकली'—अमर०)। **–दई**–अ० हा दैव! हा दैव!, ईश्वरकी दुहाई। वि० स्त्री० ईश्वरकी दी हुई 'दई दई सो कवूल'। **—मारा**–वि० दैवका मारा हुआ, हतभाग्य।

दक–पु० (सं०) जल।

दकन–पु० दक्खिन; दक्षिणी भारत।

दकनी–वि० दकनका। स्त्री० उर्दूका दक्षिण (हैदराबाद)में प्रचलित रूप।

दकार्गल–पु० (सं०) दे० 'दगार्गल'।

दक़ियानूस–पु० एक रोमन सम्राट् जो ३४९ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ था। वि० पुराने खयालका।

दक़ियानूसी–वि० पुराना, कदीमी; पुराने खयालका, पुराणपंथी।

दक़ीक़ा–पु० (अ०) सूक्ष्म वस्तु, वहुत छोटी चीज, नुक्ता; युक्ति, कसर, उपाय; क्षण। मु०**–उठा न रखना,–बाकी न छोड़ना–**

कोई कसर न छोड़ना।

दक्क़ाक़–पु० (अ०) आटा पीसनेवाला; कूटनेवाला।

दक्खिन–पु० सूर्यकी ओर मुंह करके खड़े होनेपर दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाली दिशा; भारतवर्षका दक्षिणी भाग, दक्षिण देश। अ० दक्षिण दिशामें।

दक्खिनी–वि० दक्खिनकी ओर पड़नेवाला, दक्षिण दिशामें स्थित; दक्षिण देशका; जिसकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें हुई हो; दक्षिण देश-संबंधी। पु० दक्षिण देशका निवासी, दाक्षिणात्य। स्त्री० दक्षिण देशकी भाषा।

दक्ष–वि० (सं०) जिसमें किसी विषयको तत्काल समझने तथा कोई कार्य शीघ्र करनेकी शक्ति हो, कुशल, निपुण, सिद्धहस्त, माहिर, चतुर; ईमानदार; दाहिना, दक्षिण। (स्त्री० 'दक्षा'।) पु० एक प्रजापति जो ब्रह्माके दाहिने अँगूठेसे उत्पन्न हुए थे; मुरगा; दक्षसंहिताके निर्माता मुनि; नंदी; अग्नि; शिव; वह नायक जिसके कई नायिकाएँ हों; उशीनरके एक पुत्र; विष्णु; वीर्य; शक्ति, योग्यता; बुरा स्वभाव। **–कन्या–स्त्री०** दक्ष प्रजापतिकी कन्या, सती; दुर्गा; अश्विनी आदि नक्षत्र। **–क्रतु-ध्वंसी(सिन्)–पु०** शिव; शिवके अनुचर। **–जा–स्त्री०** दे० 'दक्ष-कन्या'। **–०पति–पु०** शिव; चन्द्रमा। **–तनया–स्त्री०** 'दक्ष-कन्या'। **–सावर्णि–पु०** नवें मनु। **–सुत–पु०** देवता। **–सुता–स्त्री०** नक्षत्र; सती।

दक्षता–स्त्री० कुशलता, योग्यता। **–अर्गल–पु०, –रोक–स्त्री०** (एफिसिएंसी बार) (सरकारी या अर्द्ध-सरकारी) नौकरीमें वेतनवृद्धिके मार्गमें आनेवाली वह बाधा जो आवश्यक योग्यता या दक्षता की कमी से उत्पन्न हो।

दक्षांड–पु० (सं०) मुर्गीका अंडा।

दक्षा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

दक्षाय्य–पु० (सं०) गरुड़; गृध्र।

दक्षिण–पु० (सं०) उत्तरके सामनेकी दिशा, दक्खिन; विष्णु; शिव; एक तंत्रोक्त आचार; सभी प्रेमिकाओंसे समान प्रेम करनेवाला नायक; दाहिना हाथ; दाहिना पार्श्व; रथका दाहिना घोड़ा; दकन। वि० दाहिना; दक्षिण दिशामें स्थित; दूसरेकी इच्छाके अनुसार कार्य करनेवाला, अनुकूल; ईमानदार, सच्चा; अपनी सभी नायिकाओंमें तुल्य अनुराग रखनेवाला (नायक); पटु। अ० दक्खिनकी ओर, दक्षिण दिशामें। **–कालिका–स्त्री०** वह काली जिनका दाहिना पैर शिवके वक्षःस्थलपर रहता है; दुर्गाका वह रूप जिसे तांत्रिक पूजते हैं। **–गोल–पु०** विषुवत् रेखाके दक्षिणमें स्थित तुला आदि ६ राशियोंका समूह। **–पवन–पु०** दक्षिण या मलयगिरिकी ओरसे आनेवाली हवा। **–प्रवण–वि०** जो दक्षिणकी ओर ढालुआँ हो। **–मार्ग–पु०** एक तंत्रोक्त आचार; पितृयान। **–स्थ–पु०** सारथि।

दक्षिणा–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा; यज्ञ, दानकर्म आदिके अंतमें ब्राह्मणों और पुरोहितोंको दिया जानेवाला द्रव्य। वि० स्त्री० (वह नायिका) जो दूसरे नायकमें अनुरक्त रहती हुई भी पूर्व नायकके प्रति प्रेम और सद्भाव रखती है। **–काल–पु०** दक्षिणा पानेका समय। **–पथ–पु०** भारतका दक्षिण भाग।

दक्षिणाग्नि–स्त्री० (सं०) गार्हपत्य अग्निके दक्षिण रखी जानेवाली अग्नि।

दक्षिणाग्र–वि० (सं०) जिसका अग्रभाग दक्षिणकी ओर हो।

दक्षिणाचल–पु० (सं०) मलयगिरि।

दक्षिणाचार–पु० (सं०) शुद्ध आचरण; तंत्रमें एक आचार जिसमें अपनेको शिव मानकर पंचतत्त्वों द्वारा शिवाके पूजनका विधान है।

दक्षिणाचारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) शुद्ध आचरणवाला; शक्तिपूजक।

दक्षिणापरा–स्त्री० (सं०) नैर्ऋत्य कोण।

दक्षिणाभिमुख–वि० (सं०) जिसका मुँह दक्षिणकी ओर हो; दक्षिण दिशाकी ओर बहनेवाला।

दक्षिणामूर्ति–पु० (सं०) वह शिव जिनकी मूर्ति अनुकूल हो।

दक्षिणायन–पु० (सं०) सूर्यका विषुवत् रेखाकी ओरसे मकर रेखाकी ओर गमन; ६ महीनोंका समय जिसमें सूर्य विषुवत् रेखासे दक्षिणकी ओर रहता है। वि० दक्षिणकी ओर गया हुआ।

दक्षिणावर्त–पु० (सं०) वह शंख जिसमें हवा निकलनेका मार्ग दाहिनी ओर हो। वि० दक्षिण दिशामें स्थित; जिसका घुमाव घड़ीके काँटेकी तरह दाहिनी ओर हो (क्लॉक वाइज़)।

दक्षिणावह–पु० (सं०) दे० 'दक्षिणपवन'।

दक्षिणाशा–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा। **–पति–पु०** यम; मंगल ग्रह।

दक्षिणी–पु० दक्षिण देशका निवासी। वि० दक्षिण देशका; दक्षिण देश-संबंधी।

दक्षिणीय–वि० (सं०) जो दक्षिणा पाने योग्य हो।

दक्षिण्य–वि० (सं०) दे० 'दक्षिणीय'।

दक्षिन*–पु० दे० 'दक्षिण'।

दक्षिनी*–वि० दे० 'दक्षिणी'।

दखन–पु० दे० 'दकन'।

दखमा–पु० वह स्थान जहाँ पारसी अपने मुर्दे पक्षियोंके खा जानेके लिए रख आते हैं।

दख़ल–पु० (अ०) प्रवेश, घुसना; कब्जा, अधिकार, अख़्तियार; अनुचित हस्तक्षेप, टोक। **–दिहानी–स्त्री०** कानूनी ढंगसे दखल दिलाना। **–नामा–पु०** वह सरकारी आज्ञापत्र जिसमें किसीको किसी वस्तुको स्वायत्त करनेकी आज्ञा दी गयी हो, दखल पानेका परवाना। **मु०–देना**–बीचमें बोलना, हस्तक्षेप करना।

दखिनहा†–वि० दक्षिणका, दक्षिणी।

दख़ील–वि० (अ०) दखल देनेवाला; काबिज, जिसके अधिकारमें हो। **–कार–पु०** जमीनपर स्थायी कब्जेका अधिकारी काश्तकार; कारबारमें दखल देनेवाला; सलाहकार। **–कारी–स्त्री०** दखीलकारका पद या हक; दखीलकारके अधिकारकी जमीन; कब्जा।

दगड़–पु० लड़ाईका डंका।

दग़दग़ा–वि० चमकता हुआ; आलोकमय। पु० एक तरहकी छोटी कंडील; (अ०) खौफ, डर, भय; अंदेशा; संदेह।

दग़दग़ाना–अ० क्रि० चमकना; रौशन होना। स० क्रि० चमकना; रौशन करना।

दग़दग़ाहट–स्त्री० चमक-दमक; तमतमाहट।

दगधना*–अ० क्रि० जलना; पीड़ित होना। स० क्रि० जलाना; कष्ट देना; ठगना।

दगना–अ० क्रि० (बंदूक, तोप आदिका) छूटना या चलाया जाना, दागा जाना; जलना; चिह्नयुक्त होना; प्रसिद्ध होना। * स० क्रि० दे० 'दागना'।

दगरा*–पु० देर, विलंब; मार्ग, डगर।

दगल*–पु० दे० 'दगला'।

दग़ल–पु० (अ०) सड़ना, गलना; मकर, फरेब।

दगला–पु० एक लंबा ढीला पहनावा, लबादा।

दगली–स्त्री० दे० 'दगला'।

दगवाना–स० क्रि० दागनेका काम कराना, दूसरेको दागनेमें लगाना।

दगहा–वि० दागा हुआ, दागदार। पु० मृतक संस्कार करनेवाला।

दग़ा–स्त्री० (फा०) धोखा, फरेब, छल। **–दार–वि०** फरेब करनेवाला, धोखेबाज, छलिया। **–दारी–स्त्री०** दगा करनेका काम, धोखा, छल। **–बाज़–वि०** धोखा देनेवाला, कपटी। **–बाज़ी–स्त्री०** धोखेबाजी, फरेब, छल।

दगाती*–वि० दगाबाज–'छल बल करि नहिं काहू पकरत दौरि दगाती'–घन०।

दगार्गल–पु० (सं०) निर्जल भूभागके ऊपरी लक्षणोंको देखकर पृथ्वीके भीतर जलकी स्थिति आदिका पता लगानेकी विद्या।

दग़ैल–वि० दागदार; जिसे दाग लगा हो; खोटा; दगाबाज, छली, कपटी।

दग्ध–वि० (सं०) जला या जलाया हुआ, भस्मीकृत; पीड़ित, संतप्त; धूर्त; अशुभ; नीरस; तुच्छ, निकृष्ट। पु० एक घास। **–काक–पु०** डोमकौआ। **–जठर–पु०** भूखापेट। **–योनि–वि०** जिसका उद्गमस्थान नष्ट हो गया हो। **–रथ–पु०** चित्ररथ गंधर्व। **–रुह–पु०** तिलकका पेड़। **–रुहा–स्त्री०** कुरुह नामक

वृक्ष। –**वर्णक**–पु० एक घास। –**व्रण**–पु० जलनेका घाव।

दग्धव्य–वि० (सं०) जलाने योग्य।

दग्धा–स्त्री० (सं०) वह दिशा जिसमें सूर्य बराबर सिरपर रहता है; कुछ विशेष तिथियाँ जो अशुभ मानी जाती हैं; दग्धरुहा वृक्ष।

दग्धा(ग्धृ)–वि०, पु० (सं०) जलानेवाला।

दग्धाक्षर–पु० (सं०) कुछ अक्षर–झ, ह, र, भ और ष–जिनका छंदके आरंभमें प्रयोग करना निषिद्ध है।

दग्धिका–स्त्री० (सं०) जला हुआ भात; जला हुआ अन्न।

दग्धित*–वि० दे० 'दग्ध'।

दग्धेष्टका–स्त्री० (सं०) अधिक पका हुआ ईंटा, झावाँ।

दघ्न–वि० (सं०) .. तक पहुँचनेवाला (समासांतमें–जानुदघ्न)।

दचक–स्त्री० दचकनेकी क्रिया; दचका; धक्का; दबाव।

दचकना–अ० क्रि० दबना; नीचे-ऊपर होना; झटका खाना। स० क्रि० धक्का लगाना; दबाना।

दचका–पु० सवारीके नीचे-ऊपर होनेसे लगनेवाला धक्का; ठोकर।

दचना*–अ० क्रि० पड़ना, गिरना।

दच्छ*–पु० दे० 'दक्ष'। –**कुमारी,**–**सुता**–स्त्री० दे० 'दक्षकन्या'।

दच्छना, दच्छिना†–स्त्री० दक्षिणा, ब्राह्मणोंको दिया जानेवाला दान; भेंट।

दच्छिन*–वि०, पु०, अ० दे० 'दक्षिण'।

दच्छिनता*–स्त्री० दक्षिणता, अपनी सभी नायिकाओंसे समान प्रेम रखनेका गुण।

दज्जाल–पु० (अ०) एक आँखका काना आदमी; दगाबाज आदमी।

दझ्झना*–अ० क्रि० दग्ध होना।

दढ़ना*–अ० क्रि० जलना।

दढ़ियल–वि० दाढ़ीवाला।

दतना†–अ० क्रि० किसी काममें लगना या जुटना।

दतवन–स्त्री० दातौन।

दतारा*–वि० बड़े दाँतोंवाला (हाथी)।

दतिया–स्त्री० दाँतका अल्प०, छोटा दाँत; झाँसीके पासकी एक रियासत जिसे अब जिलाका रूप दे दिया गया है। एक पहाड़ी तीतर।

दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन–स्त्री० दे० 'दातौन'।

दत्त–पु० (सं०) दत्तात्रेय; सातवें वासुदेव (जै०); बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; दत्तक (पुत्र); दान। वि० दिया हुआ; दान किया हुआ; सुरक्षित। –**चित्त**–वि० जिसका मन किसी कार्यमें अच्छी तरह लगा हो, एकाग्र। –**दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि किसी एक वस्तुपर लगी हो, कृतेक्षण। –**शुल्का**–स्त्री० वह कन्या जिसके लिए शुल्क दिया गया हो। –**हस्त**–वि० जिसे हाथका सहारा दिया गया हो।

दत्तक–पु० (सं०) जो औरस पुत्र न होनेपर शास्त्र-विधिसे पुत्र बना लिया गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र, मुतबन्ना। –**ग्रहण**–पु० (एडॉप्शन) किसीको दत्तक (गोद लिया हुआ पुत्र) बनानेका कार्य, दत्तक ग्रहण करने या स्वीकार करनेका कार्य।

दत्तात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) वह जो माता-पिताके निधनके कारण अथवा उनके द्वारा त्यागे जानेपर स्वयं किसीके यहाँ जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।

दत्तात्रेय–पु० (सं०) अत्रि ऋषिके पुत्र जो विष्णुके चौबीस अवतारोंमेंसे एक अवतार माने जाते हैं।

दत्ताप्रदानिक–पु० (सं०) दान की हुई वस्तुको वापस लेनेका यत्न।

दत्तावधान–वि० (सं०) सावधान, सुसमाहित।

दत्ति–स्त्री० (सं०) दान।

दत्तेय–पु० (सं०) इंद्र।

दत्तोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

दत्तोलि–पु० (सं०) पुलस्त्य ऋषि।

दत्त्रिम–वि० (सं०) दानसे प्राप्त। पु० बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक दत्तक पुत्र (या दास)।

ददन–पु० (सं०) दान देना; दान।

ददा*–पु० दे० 'दादा'।

ददिऔरा†–पु० दे० 'ददिहाल'।

ददिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) देनेवाला।

ददियाल–पु० दे० 'ददिहाल'।

ददिया ससुर–पु० ससुरका पिता।

ददिया सास–स्त्री० ससुरकी माता, ददिया ससुरकी पत्नी, सासकी सास।

ददिहाल–पु० दादाका कुल या घर।

ददोड़ा–पु० दे० 'ददोरा'।

ददोरा–पु० चकत्ता जो मच्छर आदिके काटनेकी जगहको खुजलानेसे अथवा जुड़पित्ती आदिके कारण शरीरपर पड़ जाता है।

दद्रु–पु० (सं०) एक प्रकारका कुष्ठ, दाद नामका रोग; कच्छप। –**घ्न**–पु० चक्रमर्द, चकवँड़।

दद्रुक–पु० (सं०) दे० 'दद्रु'।

दद्रुण, दद्रूण–वि० (सं०) दद्रु रोगसे ग्रस्त।

दद्रू–स्त्री० (सं०) दे० 'दद्रु'।

दध–वि० (सं०) देनेवाला; धारण करनेवाला। * पु० दे० 'दधि'। –**सार***–पु० दे० 'दधिसार'।

दधना*–अ० क्रि० दे० 'दहना'।

दधि–पु० (सं०) दही; घर; वस्त्र। वि० धारण करनेवाला। –**काँदो**–पु० (हिं०) कृष्णजन्माष्टमीके बाद पड़नेवाला एक उत्सव जिसमें लोग हल्दी मिला हुआ दही एक-दूसरेपर फेंकते हैं (कृष्णजन्मके उपलक्ष्यमें गोकुलमें यह उत्सव मनाया गया था और तभीसे चला आ रहा है)। –**कूर्चिका**–स्त्री० दही और उबाले हुए दूधके योगसे बना हुआ एक पेय; छेना। –**चार**–पु० मथानी। –**ज,**–**जात**–पु० मक्खन। –**धानी**–स्त्री० दधिपात्र। –**धेनु**–स्त्री० मटकेमें भरे दहीपर गोत्वका आरोप करके विशेष प्रकारके दानके लिए कल्पित की गयी गौ (पु०)। –**नामा(मन्)**–पु० कैथका पेड़। –**पुष्पिका**–स्त्री० श्वेत अपराजिता। –**पुष्पी**–स्त्री० सेम। –**पूप**–पु० एक पकवान जो दहीमें फेंटे हुए शालिचूर्णको घीमें तलकर बनाया जाता है। –**फल**–पु० कैथ। –**मंड,**–**स्नेह**–पु० दहीसे छूटा हुआ पानी। –**मंडोद**–पु० दधिसमुद्र। –**मंथन**–पु० दही मथना। –**मुख,**–**वक्त्र**–पु० रामकी वानरी सेनाका एक सेनापति; एक तरहका साँप; एक नाग। –**वारि**–पु० दहीका पानी। –**शर**–पु० दे० 'दधिमंड'। –**शोण**–पु० वानर। –**संभव**–पु० नवनीत। –**सागर**–पु० दहीका समुद्र (पु०)। –**सार**–पु० दहीसे निकाला हुआ मक्खन। –**स्वेद**–पु० छाँछ।

दधि*–पु० उदधि, समुद्र। –**ज,**–**जात**–पु० चंद्रमा। –**सुत**–पु० कमल; चंद्रमा; मोती; विष; हलाहल; जलंधर नामक दैत्य। –**०सुत**–पु० पंडित, विज्ञ (?)। –**सुता**–स्त्री० सीप, शुक्ति।

दधित्थ–पु० (सं०) कपित्थ, कैथ। –**रस**–पु० लोबान।

दधित्थाख्य–पु० (सं०) लोबान।

दधिषाय्य–पु० (सं०) घी।

दधीच–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि जिनकी हड्डीसे इंद्रका वज्र बना था (एक पुराण इन्हें अथर्व ऋषि तथा कर्दम ऋषिकी कन्या शांतिका पुत्र बतलाया है और दूसरा शुक्राचार्यका)।

दधीचास्थि–स्त्री० (सं०) दे० 'दधीच्यस्थि'।

दधीचि–पु० (सं०) दे० 'दधीच'।

दधीच्यस्थि–स्त्री० (सं०) वज्र; हीरा।

दध्न–पु० (सं०) चौदह यमोंमेंसे एक।

दध्यानी–स्त्री० (सं०) सुदर्शन, मदनमस्त।

दध्युत्तर, दध्युत्तरक, दध्युत्तरग–पु० (सं०) दे० 'दधिमंड'।

दनदनाना–स० क्रि० 'दन-दन' शब्द करना; खुशी मनाना।

दनादन–अ० 'दन-दन'की आवाजके साथ; लगातार।

दनु–स्त्री० (सं०) कश्यप ऋषिकी एक पत्नी जिसके पुत्र दानव कहलाये। -**ज**-पु० दानव, असुर। –**०दलनी**–स्त्री० दुर्गा। –**०द्विट्(ष्)**–पु० देवता। –**०राय***–पु० हिरण्यकशिपु। –**०पति**–पु० रावण। –**पुत्र,**–**संभव,**–**सूनु**–पु० दे० 'दनुज'।

दनुजारि–पु० (सं०) देवता, सुर।

दनुजेंद्र–पु० (सं०) रावण; हिरण्यकशिपु।

दनुजेश–पु० (सं०) दे० 'दनुजेंद्र'।

दनू*–स्त्री० दे० 'दनु'।

दन्न–पु० 'दन्न'की आवाज जो तोप आदिके छूटनेसे होती है।

दपट–स्त्री० डाँटने-डपटनेकी क्रिया, घुड़की।

दपटना–स० क्रि० घुड़कना, डाँटना।

दपु*–पु० दर्प, अहंकार।

दप्प*–पु० दर्प, घमंड।

दफ़ती–स्त्री० दे० 'दफ़्ती'।

दफ़न–पु० (अ०) गाड़ना; किसी वस्तु या मुरदेको जमीनमें गाड़नेका काम।

दफ़नाना–स० क्रि० मुरदेको जमीनमें गाड़ना; कोई बात इस तरह छिपा देना कि वह आसानीसे प्रकट न हो सके।

दफा–स्त्री० बार, मर्तबा; किसी कानूनकी किताबका वह अंश जिसमें एक नियमका उल्लेख हो, कानूनका एक नियम, धारा। **–दार**–पु० चौकीदारोंका मुखिया। **–दारी**–स्त्री० दफादारका काम या पद। **मु० –लगना**–कानूनकी किसी खास दफाके अनुसार अभियुक्त ठहराया जाना।

दफ़ा–पु० (अ०) दूर करना, हटाना, ढकेलना। वि० तिरस्कारके साथ हटाया हुआ।

दफ़ीना–पु० (अ०) पृथ्वीमें गाड़ा हुआ धन, दफन किया हुआ खजाना।

दफ्तर–पु० (अ०) हिसाब-किताबके कागज, वही, रजिस्टर; वह स्थान जहाँ किसी संस्था या कंपनी आदिके कर्मचारी लिखा-पढ़ी, लेन-देन आदिका कार्य करते हों; किसी अधिकारीका निजी कमरा जहाँ वह अपने कार्यकी देख-रेख करता हो; वह स्थान जहाँ किसी बड़े महकमेकी किसी शाखाका लिखा-पढ़ी आदिका कार्य होता हो, आफिस, कार्यालय; बड़ा चिट्ठा, लंवी कहानी। **–शाही**–स्त्री० दफ्तरमें काम करनेवाले वाबुओं द्वारा की जानेवाली ढील-ढाल, वाधा आदि।

दफ्तरी–पु० वह जो दफ्तरमें जिल्दवंदी, रूल खींचने आदिका काम करता हो; जिल्दवंदी करनेवाला; दफ्तर दुरुस्त करनेवाला। **–ख़ाना**–पु० दफ्तरीके काम करनेका स्थान।

दफ्ती–स्त्री० (फा०) कई कागजोंको आपसमें चिपकाकर वनाया हुआ मोटा कागज जो जिल्द बाँधनेके काम आता है, कुट।

दफ्तीन–स्त्री० दे० 'दफ़्ती'।

दबंग–वि० जो किसीसे दवता न हो; जिसका दूसरोंपर प्रभाव हो, प्रभावशाली; रोबीला।

दब*–स्त्री० दाब, दबाव, रोब, शासन–'कहा करौं कछु बनि नहिं आवै अति गुरुजनकी दब री'–घन०।

दबक–स्त्री० दबकनेकी क्रिया, सिमटना; धातुको पीटकर लंबा करनेकी क्रिया। **–गर**–पु० धातुको पीटकर लंबा करनेवाला।

दबकना–अ० क्रि० भयके मारे सिमटकर तंग जगह या आड़में छिपना; दबका रह जाना। स० क्रि० पीटकर लंबा करना; * डाँटना, डपटना।

दबकनी–स्त्री० भातीका वह हिस्सा जिससे हवा भीतर जाती है।

दबकवाना–स० क्रि० दबकानेका काम कराना, दबकानेमें दूसरेको प्रवृत्त करना।

दबका–पु० धातुको पीटकर लंबा किया तार।

दबकाना–स० क्रि० छिपाना; ओटमें करना, डाँटना।

दबकी–स्त्री० दबकानेकी क्रिया।

दबकैया–पु० दे० 'दबकगर'।

दबदबा–पु० आतंक; रोब-दाव।

दबना–अ० क्रि० भार या दावके नीचे पड़ना; ऐसी स्थितिमें होना जिसमें किसी ओर विशेष भार पड़े; प्रवल शत्रु द्वारा आक्रांत होकर पीछे हटना; किसीसे त्रस्त या अधिक प्रभावित होकर उसके अनुकूल आचरण करना, किसीसे डरकर उसका विरोध न करनेके लिए बाध्य होना; फीका पड़ना; किसी बात या मामलेका गुप्त रह जाना अथवा आगे न बढ़ना; जोर न पकड़ना, शांत रहना; ठंडा पड़ना; किसी वस्तुका दूसरेके हाथमें इस प्रकार पड़ जाना कि वह फिर मिल न सके; (किसी अभावके कारण) अधिक लाचार हो जाना; झेंप खाना, संकुचित होना।

दबवाना–स० क्रि० दबानेकी क्रियामें दूसरेको लगाना, दूसरेको दबानेमें प्रवृत्त करना।

दबा–वि० भारसे आक्रांत; किसी ओरको झुका हुआ। (स्त्री० 'दबी'।) **–(बी)आवाज**–स्त्री० धीमा स्वर। मु०**–(बी)-ज़बानसे कहना**–डरते-डरते अस्पष्ट शब्दोंमें कहना। **–(बे)दबाये रहना**–चुपचाप पड़ा रहना। **–पाँव**–इस प्रकार कि किसीको पैरकी आहट मालूम न हो, आहिस्ते, चुपके।

दबाना–स० क्रि० भार या दबावके नीचे लाना; भार या जोर पहुँचाना; थकान या पीड़ा दूर करनेके लिए किसी अंगपर जोर पहुँचाना; दमन करना; सामने टिकने न देना, बलपूर्वक पीछे हटाना; किसीको इतना त्रस्त या प्रभावित करना कि वह विरुद्ध आचरण न कर सके, किसीपर रोब जमाकर उसे स्वच्छंद आचरण न करने देना; निजी गुणों द्वारा किसीको मात करना; किसी बात या मामलेको आगे न बढ़ने देना, ज्योंका त्यों रहने देना; भड़कने न देना, शांत करना, जोर न पकड़ने देना; किसीकी कोई वस्तु हड़पना; लाचार बना देना, विवश करना; दफन करना; छिपाना।

दबाव–पु० दबानेकी क्रिया या भाव; चाँप, दाब। मु०**–डालना**–प्रभावित करना।

दबीज–वि० (फा०) मोटा, गफ; ठस, मजबूत।

दबीर–पु० (अ०) कातिब, मुंशी, मुहर्रिर, क्लर्क।

दबैल–वि० जिसपर दबाव पड़ा हो; दब्बू, दबनेवाला।

दबोचना–स० क्रि० झपटकर दबा बैठना, धर दबाना; छिपाना।

दबोरना*–स० क्रि० बलपूर्वक पीछे हटा देना; दबाना।

दबौनी†–स्त्री० बरतनोंपर फूल-पत्ते आदि उभारनेका कसेरोंका एक औजार।

दभ्र–वि० (सं०) स्वल्प, थोड़ा; सूक्ष्म, कृश, तनु। पु० समुद्र।

दमंकना*–अ० क्रि० चमकना।

दम–पु० (सं०) दंड, दमन; बाह्येंद्रियोंको उनके विषयोंसे निवृत्त करना, बाह्य वृत्तियोंका निग्रह; कुकर्मोंसे मनको हटाना; कर्दम, कीचड़; दमयंतीका एक भाई; विष्णु। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० स्वामी, शासक। **–घोष**–पु० शिशुपालका पिता। **–शरीरी(रिन्)**–वि० शरीरको अपने वशमें रखनेवाला। **–स्वसा(सृ)**–स्त्री० दमयंती।

दम–पु० (फा०) श्वास, साँस; पल, लहजा, क्षण; जान, जिंदगी; ताकत, जोर; चरस, गाँजे आदिका धुआँ साँसके साथ मुँहके भीतर खींचनेकी क्रिया; धोखा, फरेब; पानीका घूंट; तलवारकी धार; नेजेकी नोक; समय, वक्त; कुछ कच्ची खाद्य वस्तुको पकनेके लिए पात्रका मुँह बंद करके धीमी आँचपर रखनेकी क्रिया। **–आलू**–पु० आलूकी मसालेदार तरकारी जिसमें आलू खड़े रहते हैं। **–कल**–पु० एक या अधिक नलोंवाला यंत्र-विशेष जिसमें भरा हुआ तरल पदार्थ विशेषतः पानी हवाके बलसे उक्त नलों द्वारा किसी ओर झोंकेसे फेंका जा सके; उक्त ढंगका आग बुझानेका प्रसिद्ध यंत्र, अग्निशामक यंत्र, अग्निशामक दल। **–कला**–पु० दमकलके नमूनेपर बना हुआ महफिल आदिमें गुलाबजल छिड़कनेका एक यंत्र; दमचूल्हा। **–ख़म**–पु० शक्ति और दृढ़ता। **–चूल्हा**–पु० लोहेका एक प्रकारका चूल्हा जिसमें कोयला जलता है। **–ज़नी**–स्त्री० चुप रहना। **–झाँसा**–पु० मिथ्या आश्वासन, झूठी सांत्वना। **–दार**–वि० दृढ़; जिसमें जीव-शक्ति अधिक हो; तेज। **–दिलासा**–पु० कोरी आशा; फ़ुसलावा। **–पट्टी**–स्त्री०,**–बुत्ता**–पु० झाँसा-पट्टी। **–पुख़्त**–पु० भोज्य वस्तुका भापसे पकना; पकनेमें थोड़ी-सी कसर रह जानेके कारण बरतनका मुँह ढँककर धीमी आँचपर पकायी गयी भोज्य वस्तु। **–बाज़**–वि० दम देनेवाला, झूठा आश्वासन देनेवाला; फरेबी; दे० 'दममार'। **–बाज़ी**–स्त्री० दम या झूठा आश्वासन देनेका काम; धोखा; फरेब। **–मार**–पु० गाँजे, चरस आदिका दम लगानेवाला। **–साज़**–पु० गाते समय गवैयेके साथ सुर भरनेवाला। **–मु० –अटकना**–श्वासका अवरुद्ध होना। **–खींचना**–चुप्पी साधना, कोई हरकत न करना; श्वासको ऊपर चढ़ाना। **–घुटना**–हवाकी कमीसे श्वास न लिया जाना, श्वास-प्रश्वास-क्रियाका बंद होना। **–घोंटना**–किसीकी श्वास-

क्रिया रोक देना, साँस न लेने देना; गला दबाकर या अन्य प्रकारसे किसीका साँस लेना बंद करना। **–चुराना**–श्वासको इस प्रकार रोक लेना कि शरीर जडवत् मालूम हो, साँस रोककर अपनेको मरा हुआ-सा जाहिर करना। **–टूटना**–साँस रुक जाना; दौड़ने आदिमें अधिक श्रांत होकर हाँफने लगना। **–तोड़ना**–आसक्तिवश किसीसे वियुक्त होनेपर जान जानेका-सा अत्यधिक कष्ट होना; मर जाना। **–नाकमें (या नाकमें दम) आना**–बहुत परेशान होना। **–निकलना**–प्राण निकलना, मृत होना। **–पचना**–किसी श्रमके कार्यमें इतना अभ्यस्त होना कि साँस न फूले। **–पर आ बनना**–दे० 'जानपर आ बनना'। **–पर दम**–दे० 'दम-ब-दम'। **–फ़ना होना**–मर जाना; जी सूख जाना। **–फूलना**–अधिक श्रांत होने या दमेके कारण साँसका भारीपन और वेगके साथ चलना। **–बंद होना**–भय आदिके कारण बिलकुल चुप रह जाना। **–ब-दम**–प्रतिक्षण; बार-बार। **–भरना**–साँस चढ़ना; हर वक्त किसीकी तारीफ करना; मुहब्बतका दावा करना; भरोसा करना; यकीन करना। **–मारना**–थकावट दूर करनेके लिए थोड़ी देर रुक जाना, सुस्ताना। **–में दम रहना या होना**–जान रहना, प्राण रहना। **–लगाना**–गाँजा, चरस आदिका कश लेना या धुआँ खींचना। **–लेना**–दे० 'दम मारना'। **–साधना**–श्वास रोकनेका अभ्यास करना; मौन ग्रहण करना, चुप लगाना; साँस रोकना। **–सूखना**–जी सन्न होना, होश उड़ना; खौफ खाना। **–सूलीपर होना**–बहुत परेशान होना; जान खतरेमें होना। **–होंठोंपर आना**–मरनेकी स्थितिमें होना; मरणासन्न होना।

दमक–स्त्री० चमक, चाकचिक्य, प्रभा। पु० (सं०) दमन करनेवाला, दबानेवाला।

दमकना–अ० क्रि० चमकना, द्योतित होना; सुलग उठना।

दमड़ी–स्त्री० पैसेका आठवाँ हिस्सा; एक पक्षी। मु०–**के तीन**–बहुत सस्ता।

दमथ, दमथु–पु० (सं०) आत्मनियंत्रण; दंड, सजा।

दमदमा–पु० थैलोंमें बालू आदि भरकर की गयी मोरचेबंदी; नक्कारेकी आवाज; तोपोंकी आवाज; शोर-गुल; दिखावा; शोहरत; धोखा; फरेब।

दमन–पु० (सं०) दबाने या बलपूर्वक शांत करनेका काम; आत्म-नियंत्रण; विद्रोह, उपद्रव आदिका कठोरतापूर्वक दबाया जाना, दंड देना; वध; इंद्रियोंकी बाह्य वृत्तियोंका निरोध; विष्णु; शिव; सारथि; सैनिक; योद्धा; दौना; कुंद; चैत्र-शुक्ला द्वादशीको मनाया जानेवाला एक उत्सव; एक ऋषि जिनके आशीर्वादसे दमयंतीकी उत्पत्ति हुई थी। वि० दमन करनेवाला; अनुशासित करनेवाला; पराजित करनेवाला; शांत। **–शील**–वि० जिसका स्वभाव दमन करनेका हो, जो बराबर दमन किया करता हो।

दमनक–पु० (सं०) एक छंद; दौना या द्रोणलता।

दमना*–स० क्रि० दमन करना, दबाना; दूर करना। * पु० द्रोणलता, दौना।

दमनी–स्त्री० (सं०) अग्निदमनी नामक क्षुप; * संकोच; लज्जा।

दमनीय–वि० (सं०) दमन करने योग्य, जिसका दमन किया जा सके; (ला०) तोड़ने योग्य।

दमयंती–स्त्री० (सं०) विदर्भ-नरेश भीमसेनकी कन्या और राजा नलकी पत्नी।

दमयिता(तृ)–पु० (सं०) दमन करनेवाला; दंड देनेवाला; विष्णु; शिव।

दमरी*–स्त्री० दे० 'दमड़ी'।

दमा–पु० एक प्रसिद्ध श्वासरोग जिसमें साँस लेनेमें बहुत कष्ट होता है और कफ रुक-रुककर बहुत जोर लगानेपर निकलता है।

दमाग़–पु० (अ०) दे० 'दिमाग'।

दमाद–पु० पुत्रीका पति, जामाता।

दमादम–अ० 'दम-दम' शब्दके साथ; लगातार।

दमानक*–स्त्री० तोपोंकी बाढ़, गोलों, तीरों आदिकी लगातार होनेवाली मार।

दमामा–पु० डंका, नगाड़ा।

दमामी–वि० बहुत दिनों तक चलनेवाला, स्थायी (–बंदोबस्त)।

दमारि*–स्त्री० वनकी आग, दावानल।

दमावती*–स्त्री० दमयंती।

दमाह–पु० बैलोंका एक रोग। † वि० जिसे दमा हुआ हो।

दमित–वि० (सं०) जिसका दमन किया गया हो; विजित, पराभूत।

दमी–वि० दमवाला; दम लगानेवाला; गाँजा, चरस आदिका दम खींचनेवाला; दमा रोगसे ग्रस्त। स्त्री० (फा०) एक तरहका नैचा।

दमी(मिन्)–वि० (सं०) दमनशील; जितेंद्रिय।

दमुना(नस्)–पु० (सं०) अग्नि।

दमैया*–पु० दमन करनेवाला; मिटानेवाला; हरनेवाला।

दमोदर–पु० दे० 'दामोदर'।

दम्य–वि० (सं०) दे० 'दमनीय'। पु० वह बैल जो बोझ लादने योग्य हो गया हो।

दय–पु० (सं०) दया।

दयनीय–वि० (सं०) दया करने योग्य।

दया–स्त्री० (सं०) किसी विपन्नके प्रति हृदयमें उत्पन्न होनेवाला सहानुभूतिका भाव जो उसका दुःख दूर करनेके लिए प्रेरित करे, करुणा, अनुकंपा, रहम; दक्ष प्रजापतिकी एक कन्या जिसका विवाह धर्मसे हुआ था। **–कर**–वि० दयालु। पु० शिव। **–कूट,–कूर्च**–पु० बुद्धदेव। **–दृष्टि**–स्त्री० दयापूर्ण दृष्टि, करुणाभरी दृष्टि। **–निधान**–पु० दयाका भांडार, वह व्यक्ति जिसमें कूट-कूटकर दया भरी हो। **–निधि**–पु० परमेश्वर; दे० 'दयानिधान'। **–पात्र**–वि० जो कृपा करनेके योग्य हो, जिसपर दया की जा सके; जिसपर किसीकी दया हो। **–वीर**–पु० वह नायक जिसके हृदयमें दया करनेका अधिक उत्साह हो; वीर रसका एक भेद। **–शील**–वि० जिसका स्वभाव दया करनेका हो, जो बहुत दया करता हो। **–सागर**–पु० दयालु व्यक्ति।

दयानंद, स्वामी–पु० आर्यसमाजके संस्थापक। आपने वैदिक धर्मका प्रचार किया और बतलाया कि श्राद्ध, मूर्तिपूजा आदि बातें वेदविरुद्ध हैं, आपने बालविवाहका विरोध किया तथा बालविधवा-विवाहका समर्थन किया (सन् १८२४–१८८३)।

दयानत–स्त्री० (अ०) ईमानदारी, सचाई। **–दार**–वि० ईमानदार। **–दारी**–स्त्री० दे० 'दयानत'।

दयाना*–अ० क्रि० दयार्द्र होना, कृपायुक्त होना।

दयामय–पु० (सं०) परमेश्वर। वि० दयासे पूर्ण, अत्यंत कृपालु।

दयार–पु० देवदार। * वि० दयालु।

दयार्द्र–वि० (सं०) जिसका हृदय दयासे द्रवित हो, दयालु।

दयाल*–वि० दे० 'दयालु'।

दयालु–वि० (सं०) कृपायुक्त।

दयावंत*–वि० दयावान्।

दयावना*–वि० दयनीय, दयाके योग्य।

दयावान्(वत्)–वि० (सं०) दयालु, कृपायुक्त। (स्त्री० 'दयावती'।)

दयित–वि० (सं०) प्रिय, मनचाहा। पु० प्रिय व्यक्ति; पति।

दयिता–स्त्री० (सं०) पत्नी, प्रेयसी।

दयित्नु–वि० (सं०) दयाशील।

दर–पु० (सं०) भय; विदारण; गड्ढा; कंदरा, गुहा; शंख; स्रोत। **–कंटिका**–स्त्री० सतावर। **–तिमिर**–पु० भयजन्य अंधकार। **–द**–वि० भयजनक। पु० सिंदूर; भय; एक देश; एक म्लेच्छ जाति। **–वर**–पु० विष्णुका शंख, पांचजन्य।

दर*–पु० दल, सैन्किों या पार्श्वचरोंका समूह; ईख। स्त्री० भाव; गौरव, गरिमा, महत्ता। वि० अल्प, थोड़ा; दारण करनेवाला (समासांतमें)। **–कटी,–बंदी**–स्त्री०–भाव ठहराना।

दर–पु० (फा०) द्वार, दरवाजा, फाटक, दहलीज। अ० में, अंदर। **–असल**–अ० असलमें, वास्तवमें। **–कार**–वि० आवश्यक, जरूरी। **–किनार**–वि० अलग, जुदा। अ० बगलमें; एक तरफ़। **–कूच**–अ० पड़ाव बदलते हुए, बराबर आगे बढ़ते हुए। **–खास्त**–स्त्री० दे० 'दरख़्वास्त'। **–ख़्वास्त**–स्त्री० प्रार्थना; प्रार्थनापत्र, अर्जी। **–गह,*–गाह**–स्त्री० चौखट; (शाही) दरबार–'घणी सहैगा सासना जमकी दरगह माँह'–कबीर; मकबरा, मजार;

मस्जिद । **–गुज़र**–वि० अलग । **–दर**–अ० दरवाजे-दरवाजे, प्रतिगृह । **–परदा**–अ० परदेकी ओटमें, गुप्त रीतिसे । **–पेश**–अ० सामने, आगे । **–बान**–पु० ड्योढ़ीदार, फाटकपर रहनेवाला, चौकीदार । **–बानी**–स्त्री० दरबानका काम या पद । **–बार**–पु० वह स्थान जहाँ बादशाह या सरदारकी कचहरी लगती हो, आस्थानमंडप, राजसभा; * द्वार, दरवाजा, ड्योढ़ी । **–०दारी**–स्त्री० किसीके पास जा-जाकर देरतक बैठने और खुशामद करनेका काम । **–०विलासी***–पु० द्वारपाल, ड्योढ़ीदार । **–बारी**–वि० दरबार-संबंधी, दरबारका । पु० दरबारमें सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति, राजसभाका सदस्य । **–०कान्हड़ा**–पु० एक राग । **–बारे आम**–पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें सर्वसाधारण सम्मिलित हो सकें । **–बारे ख़ास**–पु० बादशाह या राजाका वह दरबार जिसमें गिने-चुने लोग ही सम्मिलित हों । –**–माहा**–पु० मासिक वेतन, तनख्वाह । **–मियान**–पु० बीच, मध्य । अ० बीचमें, भीतर । **–मियानी**–वि० भीतरी, आंतरिक । **–हक़ीक़त**–अ० दे० 'दरअसल' । **–हाल**–अ० आजकल, वर्तमान समयमें । मु० **–गुज़रना**–छोड़ देना; बाज आना; माफ कर देना ।

दरक–स्त्री० दरकनेकी क्रिया; दरार, चीर । वि०, पु० (सं०) डरनेवाला, कायर ।

दरकच†–स्त्री० कुचलनेकी चोट ।

दरकचना†–स० क्रि० कुचलना ।

दरकना–अ० क्रि० खिचाव या दबावसे फटना, विदीर्ण होना, मसकना ।

दरका*–पु० चीर, दरार ।

दरकाना–स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना । * अ० क्रि० विदीर्ण होना, फटना ।

दरकार–दे० 'दर'के साथ ।

दरकीला–वि० आसानीसे टूट-फूट जानेवाला, भुरभुरा ।

दरखत*–पु० दे० 'दरख़्त' ।

दरख़्त–पु० (फा०) पेड़, वृक्ष ।

दरख्वास्त–दे० 'दर'के साथ ।

दरज–स्त्री० दरार, चीर ।

दरजन–वि०, पु० दे० 'दर्जन' ।

दरजा–पु० दे० 'दर्जा' ।

दरजिन–स्त्री० दे० 'दर्जिन' ।

दरजी–पु० दे० 'दर्ज़ी' ।

दरण–पु० (सं०) विदीर्ण करने या चीरनेकी क्रिया, विदारण ।

दरणि, दरणी–स्त्री० (सं०) भँवर; लहर; प्रवाह; दारण ।

दरत्(द्)–स्त्री० (सं०) हृदय; भय; पर्वत; बाँध; प्रपात; तीर; एक म्लेच्छ जाति ।

दरथ–पु० (सं०) गड्ढा; गुफा; पलायन; चारेकी तलाशमें भ्रमण करना ।

दरद–पु० दर्द, पीडा; करुणा, तरस; (सं०) दे० 'दरत्' । वि० दे० 'दर'में । **–मंद**–वि० दे० 'दर्दमंद' । **–वंत,–वंद***–वि० करुणायुक्त, दयालु; दुःखित, पीडित ।

दरदरा–वि० जिसके कण बारीक न हों; जो मोटा पीसा गया हो ।

दरदराना–स० क्रि० ऐसा पीसना कि बारीक न हो, मोटा पीसना ।

दरद्द*–पु० दे० 'दर्द' ।

दरदील्प–वि० जिसमें पीड़ा हो; दूसरोंका दर्द समझनेवाला ।

दरन*–पु० दे० 'दलन' ।

दरना*–स० क्रि० दलना; नष्ट करना; पीसना; मलना ।

दरप*–पु० दे० 'दर्प' ।

दरपक*–पु० दे० 'दर्पक' ।

दरपन–पु० दे० 'दर्पण' ।

दरपना–अ० क्रि० दृप्त होना, अभिमान करना, गर्वित होना ।

दरपनी–स्त्री० छोटा दर्पण ।

दरब–पु० द्रव्य, धन; खरी धातु; किनारदार मोटी चादर ।

दरबर*–स्त्री० उतावली–'अहो हरि आये महा हरबरमैं, कहा बनि आवै टहल दरबरमैं'–घन० ।

दरबराना*–स० क्रि० दरदरा पीसना; दबाव डालना । अ० क्रि० छटपटाना–'देखनकौ दृग दरबरात'–घन० ।

दरबा–पु० कबूतरोंके रहनेके कामका लकड़ीका खानेदार संदूक; पेड़ आदिका खोखला भाग जिसमें कोई पक्षी या अन्य जीव रहे ।

दरबी*–स्त्री० करछुल, दर्वी ।

दरभ–पु० बंदर; दे० 'दर्भ' ।

दरमन–पु० (फा०) इलाज; दवा, औषध ।

दरया–पु० (फा०) दे० 'दरिया' ।

दररना–स० क्रि० रगड़ना; धक्का देना; दलना; पीसना; नष्ट करना ।

दरराना*–अ० क्रि० वेगपूर्वक आना ।

दरवाज़ा–पु० (फा०) द्वार; कपाट, किवाड़ ।

दरवी–स्त्री० दे० 'दर्वी' ।

दरवेश–पु० (फा०) फ़कीर; भिखारी, मंगन ।

दरशन–पु० दे० 'दर्शन' ।

दरशाना–स० क्रि० दिखलाना; बतलाना, समझाना । अ० क्रि० देख पड़ना ।

दरस–पु० दर्शन, साक्षात्कार; रूप, सौंदर्य ।

दरसन–पु० दे० 'दर्शन' ।

दरसना*–अ० क्रि० दिखाई देना, देख पड़ना, दृष्टिगत होना । स० क्रि० देखना ।

दरसनिया†–पु० मरीकी शांतिके लिए पूजा करनेवाला ।

दरसनी*–स्त्री० दर्पण, आईना ।

दरसनीय*–वि० दे० 'दर्शनीय' ।

दरसनी हुंडी–स्त्री० दे० 'दर्शनी हुंडी' ।

दरसाना–स० क्रि० दिखाना, दृष्टिगत करना; (ला०) बतलाना । अ० क्रि० दिखाई पड़ना, दृष्टिगत होना ।

दराई†–स्त्री० दलनेकी क्रिया या उजरत ।

दराज–स्त्री० दरार; दे० 'ड्रावर' । वि० दे० 'दराज़' ।

दराज़–वि० (फा०) लंबा, दीर्घ, विशाल । अ० बहुत, अधिक ।

दरार–स्त्री० रेखाकी तरहका लंबा छिद्र जो सूखी धरती, दीवार या लकड़ी आदिमें फटनेके कारण पड़ जाता है ।

दरारना*–अ० क्रि० फटना, विदीर्ण होना ।

दरारा–पु० दरेरा, घात-प्रतिघात, धक्का । वि० दरारवाला, फटा हुआ ।

दरिंद, दरिंदा–पु० (फा०) फाड़ खानेवाला, हिंस्र जंतु ।

दरि–स्त्री० (सं०) दे० 'दरी' ।

दरित–वि० (सं०) भीत; डरपोक; विदीर्ण ।

दरिद्दर–पु०दे० 'दलिद्दर' ।

दरिद्र–वि० (सं०) निर्धन, कंगाल, गरीब । पु० निर्धन मनुष्य; * दरिद्रता, निर्धनता । **–नारायण**–पु० कँगला ।

दरिद्राण–पु० (सं०) निर्धनता, गरीबी ।

दरिद्रायक–वि० (सं०) दरिद्र, निर्धन ।

दरिद्रावसति–स्त्री० (स्लम) गरीबोंकी बस्ती, मलिनावास, गंदी बस्ती ।

दरिद्रित–वि० (सं०) दरिद्र, कंगाल; संकटापन्न ।

दरिया–पु० नदी; समुद्र; दलिया । **–ई**–स्त्री०, वि० दे० क्रममें । **–दासी**–पु० निर्गुणपंथियोंका एक संप्रदाय । **–दिल**–वि० उदार । **–दिली**–स्त्री० उदारता । **–बरामद,–बरार**–पु० नदी द्वारा छोड़ी हुई जमीन । **–बार**–वि० बहुत बरसनेवाला; (ला०) अत्यंत उदार । **–बुर्द**–पु० नदी द्वारा काटकर बहायी हुई भूमि । मु० **–को कूजेमें बंद करना**–थोड़ेमें बहुत कह जाना ।

दरियाई–स्त्री० (फा०) एक तरहका रेशमी कपड़ा । वि० नदीसंबंधी; जो नदीमें रहता हो; नदीके किनारेका; समुद्र-संबंधी । **–घोड़ा**–पु० अफ्रीकाका एक मोटे चमड़ेवाला गैंडे जैसा जानवर जो नदियोंके किनारे रहता है । **–नारियल**–पु० अफ्रीका, अमेरिका आदिमें समुद्रके किनारे होनेवाला एक प्रकारका नारियल । (साधुसन्न्यासियोंका कमंडलु इसीका बना होता है ।)

दरियाउ*–पु० दे० 'दरिया', समुद्र ।

दरियाफ़्त–स्त्री० (फा०) ज्ञात करना, पता लगाना; जाँच, पड़ताल । वि० जिसकी जाँच की गयी हो, ज्ञात ।

दरियाव–पु० दे० 'दरिया' ।

दरी–स्त्री० मोटे सूतोंका एक बिछावन, शतरंजी; (फा०) ईरानकी एक प्राचीन भाषा; (सं०) कंदरा, गुफा, खोह; सर्पोंका एक भेद । **–भृत्**–पु० पर्वत, पहाड़ । **–मुख**–पु० गुफाका द्वार ।

दरी(रिन्)–वि० (सं०) कायर, डरपोक; विदारणशील ।

दरीख़ाना–पु० वह घर जिसमें अनेक द्वार हों ।

दरीचा–पु० (फा०) छोटा दरवाजा; खिड़की; मोखा ।

दरीची–स्त्री० छोटा दरीचा, खिड़की ।

दरीबा–पु० पानका बाजार ।

दरेँती–स्त्री० अनाज दलनेकी चक्की ।

दरेंद्र–पु० (सं०) विष्णुका शंख ।

दरेक–पु० बकाइन ।

दरेग़–पु० (अ०) पछतावा, खेद; घृणा; कोर-कसर, कोताही ।

दरेरना–स० क्रि० रगड़के साथ धक्का देना, तीव्र आघात करना ।

दरेरा–पु० रगड़, जोरका धक्का; धावा; बहावका तोड़ ।

दरेस–स्त्री० एक छीँट ।

दरेसी–स्त्री० काट-छाँटकर दुरुस्त करना; समतल करना; सजाना, 'ड्रेसिंग' ।

दरैया*–पु० दरनेवाला; दलन करनेवाला; नाशक; अपहर्ता ।

दरोग़–पु० (अ०) असत्य, मिथ्या, झूठ । **–हलफ़ी**–स्त्री० झूठा हलफ ।

दरोगा|–पु० दे० 'दारोग़ा' ।

दरोदर–पु० (सं०) पासा; दाव; जुआ; जुआरी ।

दर्ज–स्त्री० दे० 'दरज' । वि० (अ०) लिखा हुआ, अंकित, उल्लिखित ।

दर्जन–वि० बारह । पु० बारह (वस्तुओं)का समाहार ।

दर्जा–पु० (अ०) तारतम्यकी दृष्टिसे निर्धारित स्थान, श्रेणी, कोटि; योग्यताके अनुसार पढ़ाईके लिए निर्धारित किया गया विद्यार्थियोंका वर्ग, कक्षा; पद, ओहदा; खाना । अ० गुना ।

दर्जिन–स्त्री० दर्जी जातिकी स्त्री; दर्जीकी स्त्री ।

दर्ज़ी–पु० (फा०) कपड़ा सीनेवाला, वह व्यक्ति जिसका व्यवसाय कपड़ा सीना हो । मु०**–की सुई**–हर तरहका काम करनेवाला आदमी ।

दर्द–पु० (फा०) पीड़ा, व्यथा; कष्ट, दुःख, तकलीफ; तर्स, रहम; सहानुभूति; शोक । **–अंगेज़**–वि० दर्द उठानेवाला, मनको व्यथित करनेवाला । **–आमेज़**–वि० दे० 'दर्द-अंगेज़' । **–नाक**–वि० दर्दसे भरा हुआ । **–मंद**–वि० पीडित, जिसे पीडा हो; दूसरेकी व्यथाको समझनेवाला, करुणाशील, हमदर्द । **–(र्दे) दिल**–पु० मनोव्यथा ।

दर्दर–वि० (सं०) फटा हुआ । पु० पहाड़; थोड़ा टूटा हुआ कलसा ।

दर्दराम्र, दर्दुराम्र–पु० (सं०) एक व्यंजन; एक वृक्ष ।

दर्दरीक–पु० (सं०) मेढक; बादल; एक तरहका वाद्य (संगीत) ।

दर्दुर–पु० (सं०) मेढक; एक बाजा; मेघ; एक पर्वत जो मलय पर्वतके समीप है; उस पर्वतका निकटवर्ती प्रदेश; नगाड़ेकी आवाज; एक तरहका चावल; ग्रामसमूह, जिला; प्रांत; एक राक्षस । **–च्छदा,–पर्णी**–स्त्री० ब्राह्मी बूटी । **–पुट**–पु० बाँसुरी आदिका मुँह ।

दर्दुरक–पु० (सं०) मेढक; एक वाद्य ।

दद्रु–पु० (सं०) दद्रु, दाद । **–घ्न**–पु० चकवँड़ । **–रोगी (गिन्)**–पु० दे० 'दद्रुण' ।

दद्रुण, दद्रूण–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसे दादका रोग हुआ हो ।

दद्रू–स्त्री० (सं०) दे० 'दद्रु' ।

दर्प–पु० (सं०) चित्तका वह भाव जिसके कारण मनुष्य दूसरोंकी अवज्ञा करे और गुरु, स्वामी, राजा आदिको भी कुछ न समझे, अहंकार; हर्षसे उत्पन्न गर्व; मृगमद, कस्तूरी; ऊष्मा; उच्छृंखलता; उत्साह । **–कल**–वि० दर्पभरी बातें बोलनेवाला । **–च्छिद**–वि० दर्प हरण करनेवाला । **–द,–हा(हन्)**–पु० विष्णु । **–पत्रक**–पु० एक घास । **–ह,–हर**–वि० दर्प नष्ट करनेवाला ।

दर्पक–वि० (सं०) दर्प उत्पन्न करनेवाला । पु० कामदेव; दर्प ।

दर्पण–पु० (सं०) आकृति देखनेका शीशा, आईना, मुकुर, आरसी; नेत्र; एक पर्वत जो कुबेरका निवासस्थान था; प्रज्वलित करना; गर्वयुक्त करना ।

दर्पित, दर्पी(पिन्)–वि० (सं०) दर्पयुक्त, अहंकारी ।

दर्ब*–पु० द्रव्य, धन-दौलत; खरी धातु (सोना, चाँदी आदि) ।

दर्बान–पु० दे० 'दरबान' ।

दर्बार–पु० दे० 'दरबार' ।

दर्भ–पु० (सं०) कुश, डाभ; कुशासन । **–कुसुम**–पु० एक कीड़ा । **–केतु**–पु० राजा जनकके भाई कुशध्वज । **–चीर**–पु० दर्भका बना हुआ वस्त्र । **–तरुणक**–पु० दर्भका गोफा । **–पत्र**–पु० काश, काँस । **–पुष्प**–पु० एक साँप; दे० 'दर्भकुसुम' । **–बटु**–पु० दर्भका बना पुतला । **–लवण**–पु० दर्भ या घास काटनेका औजार, हँसिया आदि । **–संस्तर**–पु० कुशका विस्तर । **–सूची**–स्त्री० डाभकी नोक ।

दर्भट–पु० (सं०) भीतरका एकांत कमरा ।

दर्भण–पु० (सं०) कुशकी चटाई ।

दर्भांकुर–पु० (सं०) डाभका नोकदार गोफा ।

दर्भासन–पु० (सं०) कुशका बना हुआ आसन, कुशासन ।

दर्भाह्वय–पु० (सं०) मूंज ।

दर्भि, दर्भी(र्भिन्)–पु० (सं०) एक ऋषि ।

दर्भेषिका–स्त्री० (सं०) कुशका डंठल ।

दर्मियान–पु०, अ० दे० 'दरमियान' ('दर'के साथ) ।

दर्याव*–पु० दे० 'दरिया' ।

दर्रा–पु० मोटा आटा; रविश आदिपर डाली जानेवाली कँकरीली मिट्टी; (फा०) दो पहाड़ोंके बीचसे होकर जानेवाला तंग रास्ता, घाटी; दरार, दरजा ।

दर्राना*–अ० क्रि० दे० 'दरराना' ।

दर्व–पु० (सं०) आततायी; राक्षस; हिंसा करनेवाला; हिंस्र जंतु; करछुल; साँपका फन; क्षति, चोट; महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन जंगली जाति ।

दर्वट–पु० (सं०) गाँवका चौकीदार; पुलिस-कर्मचारी; द्वारपाल ।

दर्वरीक–पु० (सं०) इंद्र; वायु; एक तरहका वाद्य (संगीत) ।

दर्विक–पु०, **दर्विका**–स्त्री० (सं०) करछुल ।

दर्विदा–स्त्री० (सं०) कठफोड़वेकी जातिकी एक चिड़िया ।

दर्वी–स्त्री० (सं०) बड़ी करछुल; साँपका फन । **–कर**–पु० फनवाला साँप ।

दर्श–पु० (सं०) अवलोकन, दर्शन; दृश्य; अमावास्या; अमावास्याके दिन किया जानेवाला एक याग; चाक्षुष प्रमाण । **–प**–पु० एक देववर्ग । **–पौर्णमास**–पु० दर्श और पौर्णमास याग । **–यामिनी**–स्त्री० अमावास्याकी रात्रि; अँधेरी रात । **–विपत् (द्)**–पु० चंद्रमा ।

दर्शक–वि० (सं०) देखनेवाला, दर्शन करनेवाला, द्रष्टा; दिखानेवाला; निर्देश करनेवाला । पु० कहीं बैठकर या खड़े होकर नाटक, तमाशा आदि देखनेवाला; द्वारपाल; कुशल व्यक्ति । **–दीर्घा**–स्त्री० संसद् या विधान सभा भवनमें दर्शकों आदिके बैठनेके लिए उँचाईपर बना हुआ स्थान (विजिटर्स गैलरी) । **–पंजी, –पुस्तिका**–स्त्री० किसी बड़ी संस्था आदिमें रखी वह पंजी या रजिस्टर जिसमें वहाँ जानेवाले दर्शक संस्थाके संबंधमें अपने विचार प्रकट करते हैं ।

दर्शन–पु० (सं०) चाक्षुष प्रत्यक्ष, साक्षात्कार; जानना; वह शास्त्र जिसमें आत्मा, अनात्मा, जीव, ब्रह्म, प्रकृति, पुरुष, जगत्, धर्म, मोक्ष, मानव-जीवनके उद्देश्य आदिका निरूपण हो, तत्त्वज्ञान करानेवाला शास्त्र (छ आस्तिक–सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा (पूर्व मीमांसा) और वेदांत (उत्तर मीमांसा) तथा छ नास्तिक–चार्वाक, जैन, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रांतिक और वैभाषिक–प्रधान माने जाते हैं); नेत्रदृष्टि; बुद्धि; स्वप्न; प्रदर्शन; परीक्षण; शास्त्र; दर्पण; धर्म; रूपरंग; राय; नीयत; यज्ञ; उपस्थिति (न्यायालयमें) । **–गृह**–पु० सभा-भवन । **–गोचर,–पथ**–पु० दृष्टिपथ; क्षितिज । **–प्रतिभू**–पु० वह प्रतिभू जो महाजनकी इच्छाके अनुसार ऋणीको किसी भी समय या किसी भी स्थानपर उपस्थित करनेका भार स्वीकार करे; जमानतदार ।

–प्रातिभाव्य–पु० दे० 'दर्शन-प्रतिभू'।

दर्शनाग्नि–स्त्री० (सं०) शरीरकी वह अग्नि जो नेत्रेंद्रियको कार्यमें प्रवृत्त करती है।

दर्शनीय–वि० (सं०) देखने, दर्शन करने योग्य; मनोहर; दिखाने योग्य।

दर्शनी हुंडी–स्त्री० ऐसी हुंडी जिसका भुगतान तत्काल करना पड़े; (ला०) ऐसी वस्तु जिसके द्वारा कोई वस्तु तत्काल प्राप्त की जा सके।

दर्शनेदेय–वि० (पेयेबिल ऐट साइट) जिसका भुगतान देखते ही, तुरंत करना पड़े।

दर्शयिता(तृ)–वि० (सं०) दिखानेवाला; मार्गप्रदर्शन करनेवाला। पु० द्वारपाल।

दर्शाना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'दरसाना'।

दर्शित–वि० (सं०) दिखाया हुआ; प्रकटित, प्रकाशित; प्रमाणित; प्रकट।

दर्शी(र्शिन्)–वि० (सं०) (समासांतमें) साक्षात्कार करनेवाला; विवेचन करनेवाला; प्रदर्शित करनेवाला।

दल–पु० (सं०) उन दो बराबर भागोंमेंसे एक जिनमें अन्नके दाने या फल आदिके बीज दबाव पड़नेपर अपने आप विभक्त हो जायँ; कटा हुआ टुकड़ा; अंश; म्यान; पत्ता, पत्र; तमालपत्र; फूलकी पँखड़ी; एक विचारके या एक साथ कार्य करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, गुट, झुंड, गिरोह, टोली; हमराही; पार्श्वचर; सैनिकोंका समूह, सेना, फौजका दस्ता; मिश्रण; आधारभूत परत। **–कपाट**–पु० कलीके ऊपरकी पँखड़ियाँ। **–कोमल**–पु० कमल। **–कोश**–पु० कुंदका पौधा। **–गंजन**–वि० व्यक्तियोंके समूहका नाश करनेवाला, (हाथी, वीर), भारी वीर। पु० एक तरहका धान। **–गंध**–पु० सप्तपर्ण वृक्ष। **–थंभ**†–पु० सेनापति। **–दार**–वि० (हि०) मोटे दलवाला। **–निर्मोक**–पु० भोजपत्रका वृक्ष। **–नेता**–पु० (कैप्टन) खेलमें सम्मिलित होनेवाले दो पक्षों या दलोंमेंसे किसी एकका नेता, कप्तान; सेनाकी टुकड़ी (कंपनी या ट्रूप)का नायक। **–प**–पु० दलका नायक; हथियार; सोना; शास्त्र। **–पति**–पु० दलका मुखिया या सरदार। **–पुष्पा**–स्त्री० केतकी। **–बदलू,–बदलुआ**–पु० अपना दल छोड़कर दूसरे दलमें चला जानेवाला व्यक्ति, परपक्षग्राही (टर्नकोट)। **–बल**–पु० लाव-लश्कर, जत्था। **–बादल**–पु० (हि०) बादलोंका समूह; बहुत बड़ी सेना; बड़ा खेमा। **–वीटक**–पु० कानका एक गहना। **–सायसी**–स्त्री० श्वेत तुलसी। **–सारिणी**–स्त्री० बंडा, कच्चू। **–सूची**–स्त्री० काँटेदार पत्तोंवाला पौधा; काँटा। **–स्नसा**–स्त्री० पत्रशिरा, पत्तेकी नस।

दलक–स्त्री० गुदड़ी; टीस, चमक; आघातसे उत्पन्न कंप। पु० (सं०) दल, पत्ता; * दुःख, कष्ट।

दलकन–स्त्री० दलकनेकी क्रिया; दलक, टीस।

दलकना–अ० क्रि० इस तरह फटना कि दरार पड़ जाय, चिर जाना; कंपित होना, काँपना; डगमगाना। स० क्रि० त्रस्त कर देना; कँपा देना। मु० **दलक उठना**–कंपित हो उठना, क्षुब्ध हो जाना।

दलदल–पु०, स्त्री० (अ०) कीचड़, पंक; दूरतक गीली जमीन जिसमें पाँव धँसता चला जाय। मु०**–में फँसना**–ऐसी मुसीबतमें फँसना जिससे उबरना बहुत मुश्किल हो।

दलदला–वि० दलदलवाला। (स्त्री० 'दलदली'।)

दलन–पु० (सं०) चूर्ण करना, पीसना, कुचलना; नाश, संहार, उच्छेद; विदारण। वि० नाशकारक।

दलना–स० क्रि० चक्कीमें डालकर दो या अधिक टुकड़े करना; कुचलना, मसलना; नष्ट करना, बरबाद करना; तोड़ना; चूर करना।

दलनी–स्त्री० (सं०) ढेला।

दलमलना–स० क्रि० रौंद डालना, कुचल डालना; छिन्न-भिन्न करना; मसल डालना।

दलवाना–स० क्रि० दलनेका काम कराना, दलनेमें दूसरेको प्रवृत्त करना।

दलवाल*–पु० सेनानी।

दलवैया–पु० दलनेवाला; जीतनेवाला।

दलहन–पु० वह अन्न जिससे दाल तैयार की जाय।

दलहरा–पु० दाल तैयार करनेवाला, दाल बेचनेवाला।

दलाढक–पु० (सं०) जंगली तिल; गेरू; नागकेसर; कुंद; शिरीष; फेन; खाई; शूद्र; बवंडर; गाँवका मुखिया; हाथीका कान।

दलाढ्य–पु० (सं०) पंक।

दलादली–स्त्री० दलोंकी होड़। अ० होड़ करके।

दलान†–पु० दे० 'दालान'।

दलाना–स० क्रि० दे० 'दलवाना'।

दलामल–पु० (सं०) दौना, मरुआ; मैनफरका पेड़।

दलाम्ल–पु० (सं०) लोनिया साग।

दलाल–पु० सौदे आदिको पटानेमें मध्यस्थता करनेवाला, बिचवई; कुटना; पारसियोंकी एक जाति।

दलाली–स्त्री० दलालका काम; दलालका काम करनेके बदलेमें ली जानेवाली रकम।

दलाह्वय–पु० (सं०) तेजपत्ता।

दलि–स्त्री० (सं०) दे० 'दलनी'।

दलिक–पु० (सं०) काष्ठ।

दलित–वि० (सं०) रौंदा, कुचला, दबाया हुआ, पदाक्रांत। **–वर्ग**–पु० हिंदुओंमें वे शूद्र जिन्हें अन्य जातियोंके समान अधिकार प्राप्त नहीं है।

दलिद्दर†–पु० दरिद्रता; कूडाकरकट, व्यर्थकी चीजें। वि० दरिद्र; निकम्मा। मु०**–खदेड़ना,–भगाना**–दीवालीके दूसरे दिन, प्रातःके पूर्व, सूप बजाते हुए घरके कोनेकोनेसे घूमकर बाहर कुछ दूर तक जाना, जिसका आशय यह समझा जाता है कि इस तरह दरिद्रताका निष्कासन हो जायगा।

दलिया–पु० दला हुआ अनाज जो दरदरा हो।

दली(लिन्)–वि० (सं०) दलयुक्त; पत्तोंवाला। पु० वृक्ष।

दलील–स्त्री० (अ०) युक्ति, तर्क; बहस।

दलेगंधि–पु० (सं०) सप्तपर्ण, छतिवन।

दलेल–पु० सिपाहियोंसे सजाके तौरपर करायी जानेवाली कड़ी कवायद। मु० **–बोलना**–सजाके लिए कड़ी कवायदकी आज्ञा देना।

दलैया†–पु० नाशक, निहंता।

दल्भ–पु० (सं०) चक्र, पहिया; धोखा; बेईमानी; पाप।

दल्मि–पु० (सं०) शिव; इंद्रका वज्र।

दल्लाल–पु० (अ०) दे० 'दलाल'।

दवँरी–स्त्री० दे० 'दँवरी'।

दव–पु० (सं०) वन, जंगल; जंगलमें स्वतः लगनेवाली आग, दावानल; अग्नि; ज्वर; पीड़ा। **–दग्धक**–पु० एक तृण। **–दहन**–पु० दे० 'दवाग्नि'। **–दान**–पु० जंगलमें आग लगाना।

दवथु–पु० (सं०) दाह, जलन; संताप।

दवन*–पु० दमन; दौना। वि० दमन या नाश करनेवाला।

दवनपापड़ा–पु० पित्तपापड़ा।

दवना*–पु० दे० 'दौना'। स० क्रि० जलाना, झुलसना।

दवनी†–स्त्री० दे० 'दँवरी'।

दवरंती*–स्त्री० दमयंती।

दवरिया*–स्त्री० दे० 'दवारि'।

दवा*–स्त्री० दावानल; (फा०) औषध, इलाज; उपचार, चिकित्सा; शमनका उपाय; ठीक करनेका तरीका, रास्तेपर लानेका उपाय। **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ बेचनेके लिए दवा रखी हो, औषधालय। **–दरपन**–पु०,**–दारू**– स्त्री० इलाज, चिकित्सा, उपचार।

दवाई†–स्त्री० दे० 'दवा'। **–खाना**–पु० दे० 'दवाख़ाना'।

दवागि, दवागिन*–स्त्री० दे० 'दवाग्नि'।

दवाग्नि–स्त्री० (सं०) वनमें स्वतः लगनेवाली आग, वनाग्नि, दावानल।

दवात–स्त्री० (अ०) स्याही रखनेका बरतन, मसिधान, मसिपात्र।

दवान*–पु० एक हथियार–'तोप बान अरु रहकला चौकस करौ दवान'–सुजान।

दवानल–पु० (सं०) दे० 'दवाग्नि'।

दवाम–अ० (अ०) हमेशा। पु० हमेशगी, सातत्य।

दवामी–वि० स्थायी, कायमी। **–बंदोवस्त**–पु० जमीनका वह प्रबंध जिसमें मालगुजारी हमेशाके लिए निश्चित कर दी जाती है, उसमें कभी वृद्धि नहीं होती।

दवार, दवारि*–स्त्री० दे० 'दवाग्नि'; संताप।

दश(न्)–वि० (सं०) नौ और एक। पु० दसकी संख्या, १०। **–कंठ**–पु० दशानन, रावण। **–०जहा***–पु० राम। **–०जित्**–पु० राम। **–कंधर**–पु० दे० 'दशकंठ'। **–कर्म(न्)**–पु० गर्भाधानसे लेकर (अंत्येष्टिक्रिया या) विवाहतकके दस कर्म–गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकरण, निष्क्रामण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन तथा विवाह। **–कुलवृक्ष**–पु० तंत्रमें गृहीत दस वृक्ष–लसोड़ा, करंज, वेल, पीपल, कदंव, नीम, वरगद, गूलर, आँवला और इमली। **–कोपी**–स्त्री० एक ताल (संगीत)। **–क्षीर**–पु० दस जीवों–गाय, भैंस, भेड़, वकरी, ऊँटनी, घोड़ी, स्त्री, हथिनी, हरिनी और गधीका दूध। **–गात***–पु० दे० 'दशगात्र'। **–गात्र**–पु० शरीरके मुख्य दस अंग; मृत्युके दसवें दिन पूरा होनेवाला एक और्ध्वदैहिक कृत्य (इस कर्मके अंतर्गत प्रतिदिन दिये गये पिंडसे क्रमशः प्रेतके दस गात्रों–अंगोंका निर्माण होता है)। **–ग्रामपति,–ग्रामिक,–ग्रामी(मिन्)**–पु० वह जिसे राजाकी ओरसे दस गाँवोंके शासनका भार सौंपा गया हो। **–ग्रीव**–पु० रावण। **–दिक्पाल**–पु० दे० 'दिक्पाल'। **–द्वार**–पु० दे० 'अंगद्वार'। **–धर्म**–पु० मनु द्वारा सभी वर्णोंके लिए उपदिष्ट दशविध धर्म। **–नामी**–पु० (हिं०) शंकराचार्यके दस प्रशिष्योंसे चला सन्न्यासियोंका एक संप्रदाय (इसीके अनुसार सन्न्यासियोंके दस भेद–तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी–किये गये हैं)। **–पंचतपा(पस्)**–पु० दसों इंद्रियोंको वशमें रखते हुए पंचाग्नि तप करनेवाला तपस्वी। **–प**–पु० दे० 'दशग्रामिक'। **–पारमिताधर**–पु० बुद्धदेव। **–पुर**–पु० एक तरहका सुगंधित मोथा; मालवाका एक प्राचीन खंड जिसमें दस नगर सम्मिलित थे। **–पेय**–पु० एक याग। **–वल**–पु० वुद्धदेव। **–बाहु**–पु० शिव। **–भुज**–पु० (डेकेगॉन) वह आकृति जिसमें दस भुजाएँ हों। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा। **–भूमिग,–भूमीश**–पु० वुद्धदेव। **–महाविद्या**–स्त्री० दे० 'महा-विद्या'। **–मास्य**–वि० जो दस महीनोंतक गर्भमें स्थित रहा हो। **–मुख**–पु० रावण। **–मूत्र,–मूत्रक**–पु० दस जीवों–हाथी, घोड़ा, ऊँट, गाय, भैंस, भेंड़, बकरा, गधा, पुरुष और स्त्री–का मूत्र। **–मूल**–पु० दस पेड़ों–सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बड़ी कटाई, गोखरू, बेल, सोनापाठा, गंभारी, गनियारी और पाठा–की जड़ या छाल। **–मौलि**–पु० रावण। **–रथ**–पु० अयोध्याके एक प्राचीन सूर्यवंशी सम्राट जो रामके पिता थे। **–०सुत**–पु० राम। **–रश्मिशत**–पु० सूर्य। **–रात्र**–पु० दस रातोंमें समाप्त होनेवाला एक याग। **–रूपक**–पु० एक ग्रंथ जिसमें दस प्रकारके रूपकोंका निरूपण है। **–रूपभृत्**–पु० विष्णु। **–वक्त्र,–वदन**–पु० रावण। **–वाजी(जिन्)**–पु० चंद्रमा (जिसके रथमें दस घोड़े हैं)। **–वीर**–पु० एक सत्र। **–व्रज**–पु० एक ऋषि। **–शिर,–शीर्ष**–पु० रावण। **–शीश,–सीस***–पु० रावण। **–स्यंदन**–पु० राजा दशरथ। **–हरा**–पु०, स्त्री० (दस पापोंका हरण करनेवाली) ज्येष्ट-शुक्ला दशमी जिस दिन गंगाका जन्म हुआ था और सेतुवंधमें रामने रामेश्वरकी स्थापना की थी; विजयादशमी। स्त्री० गंगा।

दशकंठारि–पु० (सं०) राम।

दशक–पु० (सं०) दसका समाहार; दस वर्षोंका समय, दशाब्द।

दशग्राम–पु० (डेका ग्राम) दस ग्रामका वजन, एक तोलेसे कुछ कम।

दशति–स्त्री० (सं०) सौ, शत।

दशधा–अ० (सं०) दस प्रकारसे; दस भागोंमें।

दशन–पु० (सं०) दाँत; दाँतसे काटनेकी क्रिया; कवच; शृंग, चोटी। **–च्छद,–वास(स्)**–पु० ओष्ठ, होंठ। **–पद**–पु० दंतक्षतका स्थान और चिह्न। **–बीज**–पु० अनार।

दशनांशु–पु० (सं०) दाँतोंकी चमक।

दशनाढ्या–स्त्री० (सं०) लोनिया साग।

दशनोच्छिष्ट–पु० (सं०) अधर आदिका चुंबन; निःश्वास; होंठ।

दशम–वि० (सं०) दसवाँ। पु० दसवाँ भाग। **–दशा**–स्त्री० कामकी अंतिम दशा जिसमें वियोगी प्राण त्याग देता है। **–भाव**–पु० फलित ज्योतिषके अनुसार जन्म-लग्नसे दसवाँ घर। **–लव**–पु० भिन्नका एक भेद जिसमें हर दस या उसका कोई घात होता है (ग०)।

दशमांश–पु० (सं०) दसवाँ भाग।

दशमिक प्रणाली–स्त्री० मूल्य, नाप, तौल आदिकी वह पद्धति जिसमें हर मान अपनेके ठीक नीचे मानका, दसगुना तथा अपनेसे ठीक ऊँचे मानका दसवाँ भाग होता है।

दशमिक-भग्नांश–पु० (सं०) दशमलव।

दशमी–स्त्री० (सं०) चांद्र मासके प्रत्येक पक्षकी दसवीं तिथि; नब्वे वर्षसे आगेकी अवस्था, मरणावस्था; शताब्दीका अंतिम दशक।

दशमी(मिन्)–वि० (सं०) लगभग सौकी अवस्थाका, बहुत बूढ़ा।

दशमीटर–पु० (डेकामीटर) दस मीटरकी लंबाई, ३२.८ फुट।

दशमुखांतक–पु० (सं०) राम।

दशरथ–पु० (सं०) दे० 'दश'में।

दशहरा–पु० दे० 'दश'में।

दशांग–पु० (सं०) गुग्गुल, चंदन, जटामासी, शिलारस, लोबान, राल, खस, नख, भीमसेनी कपूर तथा कस्तूरी, इन गंधद्रव्योंके योगसे संपन्न एक हवनीय धूप (यह अवग्रह तथा पिशाच आदिका नाशक भी माना जाता है)। **–क्वाथ**–पु० दस औषधियों–अड़ूसा, गुडुच, पित्तपापड़ा, चिरायता, जलभँगरा, नीमकी छाल, हड़, बहेड़ा, आँवला और कुलथी–का काढ़ा।

दशांगुल–पु० (सं०) खरबूजा। वि० जो मापमें दस अंगुलका हो।

दशांत–पु० (सं०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा; दीयेकी वत्तीका छोर; पिछला भाग।

दशांतर–पु० (सं०) जीवनकी विभिन्न अवस्थाएँ।

दशांशग्राम–पु० (डेसीग्राम) एक ग्रामका दसवाँ भाग।

दशांशमीटर–पु० (डेसीमीटर) एक मीटरका दसवाँ भाग।

दशा–स्त्री० (सं०) अवस्था, स्थिति, हालत; जीवनकी कालकृत विशेष अवस्था–जैसे गर्भवास, जन्म, वाल्य, कौमार, पौगंड, यौवन, स्थाविर्य, जरा, प्राणरोध और नाश; विरहियोंकी दस अवस्थाओंमेंसे कोई एक–असौष्ठव, संताप आदि (दे० स्मरदशा) या अभिलाषा, चिन्ता, स्मरण, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता और मरण; ज्योतिषके अनुसार ग्रहविशेषका भाग्यकाल; दीयेकी वत्ती; किसी वस्त्र या अँगरखेका छोर; चित्त। **–पवित्र**–पु० श्राद्धादिमें दिया जानेवाला वस्त्रखंड। **–पाक,– –विपाक**–पु० भाग्यफलका पूरा होना; जीवनकी परिवर्तित अवस्था। **–विपर्यास**–पु० दुर्भाग्य।

दशाकर्ष–पु० (सं०) दीपक, चिराग, दीया; कपड़ेका छोर।

दशाकर्षी(र्षिन्)–पु० (सं०) दे० 'दशाकर्ष'।

दशाक्षर–पु० (सं०) एक छंद।

दशाधिपति–पु० (सं०) विशिष्ट दशाका स्वामी ग्रह (ज्यो०); दस पैदल सिपाहियोंका नायक।

दशानन–पु० (सं०) रावण।

दशानिक–पु० (सं०) दंती वृक्ष, जमालगोटा।

दशाब्द–पु०, (डिकेड) दस वर्षोंका समय, दशक शतीका दसवाँ भाग।

दशामय–पु० (सं०) रुद्र।

दशारुहा–स्त्री० (सं०) एक लता जिसके पत्तोंका रस कपड़ा रँगनेके काम आता है।

दशार्ण–पु० (सं०) एक प्राचीन देश जो मध्यदेशके दक्षिणपूर्वमें था; उस देशका राजा या निवासी।

दशार्णा–स्त्री० (सं०) विंध्यश्रेणीसे निकली धसान नदी।

दशार्द्ध–वि० (सं०) दसका आधा, पाँच। पु० पाँचकी संख्या; बुद्धदेव।

दशार्हं–पु० (सं०) एक लड़ाकू जाति; राजा वृष्णिका पौत्र; वृष्णिवंशका राजा; वृष्णिवंशियों द्वारा अधिकृत देश; विष्णु; बुद्ध।

दशावतार–पु० (सं०) विष्णुके दस अवतार–मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि ।

दशावरा–स्त्री० (सं०) दस सदस्योंकी शासन-सभा ।

दशाश्व–पु० (सं०) चंद्रमा ।

दशास्य–पु० (सं०) रावण ।

दशाह–पु० (सं०) दस दिनोंका समाहार; और्ध्वदेहिक कृत्यका दसवाँ दिन ।

दशी–स्त्री० दे० 'दशाब्द' ।

दशेंधन–पु० (सं०) दीपक ।

दशेर–पु० (सं०) हिंस्र प्राणी ।

दशेरक, दशेरुक–पु० (सं०) मरुदेश या वहाँका निवासी; कम अवस्थाका ऊँट ।

दशेश–पु० (सं०) दस ग्रामोंका नायक ।

दष्ट–वि० (सं०) काटा या डंक मारा हुआ ।

दस–वि०, पु० दे० 'दश' । **–माथ,–मौलि***–पु० रावण । **–रंग**–पु० मालखंभकी एक कसरत । **–रान**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **–वाँ**–वि० जो क्रममें नौके बाद या दसके स्थानपर हो । पु० मृत्यु तिथिसे दसवाँ दिन; उस दिन होनेवाला प्रेतकृत्य ।

दसखत†–पु० दे० 'दस्तख़त' ।

दसठौन†–पु० प्रसवके वाद दसवें दिन प्रसूताका स्नानकर सौरी गृहसे बाहर निकलना (बुंदेल०) ।

दसन–पु० (सं०) क्षय, नाश; प्रक्षेपण; वर्खास्तगी; * दे० 'दशन' ।

दसना–अ० क्रि० विछना, बिछाया जाना, विस्तर आदिका फैलाया जाना । स० क्रि० बिछाना, बिस्तर आदि फैलाना । पु० दे० 'डासन' ।

दसमी–स्त्री० दे० 'दशमी' ।

दसहरी–पु० एक तरहका वढिया क़लमी आम ।

दसा–पु० अगरवाल वैश्योंका एक प्रधान भेद । * स्त्री० दे० 'दशा' ।

दसाना*–स० क्रि० विछाना ।

दसारन–पु० दे० 'दशार्ण' ।

दसी–स्त्री० कपड़ेका छोर या अंचल; कपड़ेके सिरेपरका सूत; चमड़ा छीलनेका एक औजार; चिह्न ।

दसेरक, दसेरुक–पु० (सं०) दे० 'दशेरक' ।

दसोतरा–वि० जिसमें दस और जुड़ा हो, दस अधिक । पु० सौ पीछे दसकी रकम ।

दसौंधी–पु० चारणोंकी एक जाति, भाट ।

दस्तंदाज़–वि० (फा०) दखल देनेवाला, हस्तक्षेप करनेवाला ।

दस्तंदाज़ी–स्त्री० (फा०) हस्तक्षेप, छेड़छाड़ ।

दस्त–वि० (सं०) क्षीण, नष्ट; फेंका या उछाला हुआ; वर्खास्त । पु० (फा०) हाथ; पंजा; पतला पाखाना; एक हाथकी माप; मौका; तादाद; प्रिय मेहमानोंको वैठानेकी जगह; प्रधान मंत्री; ताकत; खूबी; तौर-तरीका; पहलू; हद; काम । **–कार**–पु० हाथसे कारीगरीका काम करनेवाला व्यक्ति । **–कारी**–स्त्री० दस्तकारका काम; हाथकी कलापूर्ण कृति, हाथसे वनायी हुई कलापूर्ण वस्तु । **–ख़त**–पु० हस्ताक्षर । **–ख़ती**–वि० हस्ताक्षरयुक्त । **–गीर**–वि० हाथ पकड़नेवाला; सहारा देनेवाला, सहायक । **–दराज़**–वि० ढीठ; हथछुट; हथलपक; परायी चीजपर हाथ मारनेवाला; परायी वहू-वेटीपर हाथ डालनेवाला । **–दराज़ी**–स्त्री० हथछुटपन; हथलपकी; परायी वहू-बेटीपर हाथ डालना । **–पनाह**–पु० चिमटा । **–बंद**–पु० स्त्रियोंका हाथमें पहननेका मोतियों और जवाहरातका लच्छा । **–वदस्त**–अ० हाथोंहाथ । **–वरदार**–वि० हाथ हटा लेनेवाला, वाज आनेवाला, जिसने किसी वस्तुपरसे अपना स्वत्व हटा लिया हो, जो बेदावा हो गया हो । **–वरदारी**–स्त्री० दस्तबरदार होनेकी क्रिया, बेदावा होना । **–बुर्द**–स्त्री० नोच-खसोट; अपहरण । **–याव**–वि० हस्तगत, लब्ध, प्राप्त ।

दस्तक–स्त्री० (फा०) ताली; दरवाजा खटखटानेकी क्रिया, हाथका हलका आघात या धक्का; माल आदिके आने-जानेकी लिखित आज्ञा या स्वीकृति; राहदारीका परवाना; मालगुजारी वसूल करनेके लिए निकाला गया आज्ञापत्र; राजस्व, महसूल; समन तामील करनेका शुल्क ।

दस्तरख़्वान–पु० (फा०) खाना रखनेका फर्श, चौकी आदिपर फैलाया जानेवाला कपड़ा ।

दस्ता–पु० (फा०) औजार आदिकी मूठ या वेंट; खरलका मूसल; गुच्छा; सैनिकोंकी टोली; जत्था; कागजके चौबीस तख्तोंकी गड्डी; फूलोंका गुच्छा; चपरास; डंडा; रूमाल, तौलिया; एक कपड़ा जो पगड़ीके साथ बाँधा जाता है ।

दस्ताना–पु० (फा०) हाथमें पहननेका सूत आदिका बना हुआ गिलाफ; हाथपर पहननेकी लोहेकी जिरह; तलवारका कब्जा ।

दस्तावर–वि० (फा०) जिसके खानेसे दस्त आये, रेचक ।

दस्तावेज़–स्त्री० (फा०) वह पत्र जो दो या अधिक आदमियोंके वीच होनेवाले व्यवहारके संबंधमें लिखा गया हो; तमस्सुक; तहरीर; किवाला; सनद ।

दस्तावेज़ी–वि० दस्तावेज-संबंधी; दस्तावेजका ।

दस्ती–वि० (फा०) हाथका; जो हाथसे ले जाया जाय (–खत); स्त्री० छोटा वेंट; छोटा रूमाल; कुश्तीका एक दाँव; मशाल; छोटा कलमदान ।

दस्तूर–पु० (फा०) रीति, तौर, तरीका; प्रणाली; चाल; कायदा; नेग; पारसियोंका पुरोहित ।

दस्तूरी–स्त्री० वह बँधी हुई रकम जो अमीरोंके नौकर सौदा खरीदनेपर दूकानदारोंसे लेते हैं ।

दस्म–पु० (सं०) यजमान; चोर; खल; अग्नि ।

दस्यु–पु० (सं०) डाकू, लुटेरा; खल; चारों वर्णोंके अतिरिक्त एक प्राचीन छोटी जाति (मनु); अनार्य जो प्राचीन कालमें यज्ञविध्वंस आदि करते थे । **–वृत्ति**–स्त्री० डाकूका पेशा, लुटेरापन । **–हा-(हन्)**–पु० इंद्र ।

दस्र–पु० (सं०) अश्विनीकुमार; गर्दभ; दोकी संख्या, युगल; अश्विनी नक्षत्र; शिशिर, दस्यु । वि० हिंस्र; भयंकर; ध्वंसक । **–देवता**–पु० अश्विनी नक्षत्र । **–सू**–स्त्री० सूर्यपत्नी संज्ञा ।

दह–पु० नदीका वह भाग जहाँ पानी वहुत गहरा हो; कुंड; हौज; नदी किनारेका (मटमैले पानीका) छिछला गड्ढा–'सुअर और अरने भैंसे नदी किनारे किसी दहमें लोट रहे होंगे'–मृग० । स्त्री० अग्निशिखा, ज्वाला । वि० (फा०) दस ।

दहक–स्त्री० आगका दहकना; लपट, ज्वाला ।

दहकन–स्त्री० दहकनेकी क्रिया ।

दहकना–अ० क्रि० लपट फेंकते हुए जलना, इस प्रकार जलना कि आँच या लपट बाहर निकले; तप्त होना; दुःखी होना ।

दहक़ान–पु० (फा०) देहात या गाँवका रहनेवाला, किसान, काश्तकार । वि० गँवार, उजड्ड, जाहिल ।

दहकाना–स० क्रि० इस रूपमें जलाना कि आँच या लपट बाहर निकले; भड़काना, उत्तेजित करना; † स्थानीय मानके अनुसार अंकोंको पढ़ाना ।

दहक़ानियत, दहक़ानीयत–स्त्री० (फा०) गँवारपन ।

दहक़ानी–पु० दे० 'दहक़ान' ।

दहड़-दहड़–अ० धधक-धधककर ।

दहन–पु० (सं०) जलना, दाह; किसी पदार्थका ऑक्सीजनके संयोगसे जलना जिसके फलस्वरूप ऊष्मा, प्रकाश तथा लौ उत्पन्न होती हैं (कम्वश्चन), आग, अग्नि; जलानेवाला; तप्त लोहेसे जलाना; कृत्तिका नक्षत्र; दुष्ट व्यक्ति; चित्रक, चीता; भिलावाँ; एक तरहकी काँजी; कवूतर; तीनकी संख्या (ज्यो०); एक रुद्र; ज्योतिषके अनुसार एक योग । वि० जलानेवाला, विनाशक । **–केतन**–पु० धूम, धुआँ । **–गर्भ**–वि० क्रोधाग्निसे भरा हुआ । **–प्रिया**–स्त्री० अग्निकी पत्नी, स्वाहा । **–शील**–वि० दे० 'ज्वलनशील'; जलानेवाला, दाहक । **–सारथि**–पु० वायु ।

दहनर्क्ष–पु० (सं०) कृत्तिका नक्षत्र ।

दहना*–अ० क्रि० जलना, दग्ध होना, भस्म होना; धँसना । स० क्रि० जलाना; भस्म करना; कष्ट देना, संतप्त या पीड़ित करना । वि० दाहिना ।

दहनागुरु–पु० (सं०) दाहागुरु, धूप ।

दहनाराति–पु० (सं०) पानी ।

दहनि*–स्त्री० जलानेकी क्रिया, दग्ध होना ।

दहनीय–वि० (सं०) जलने योग्य; जलाये जाने योग्य ।

दहनोपल–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि; आतशी शीशा ।

दहनोल्का–स्त्री० (सं०) लूका, लुआठा ।

दहपट–वि० ढहाकर धूलमें मिलाया हुआ, ध्वस्त; कुचला हुआ; पादक्रांत ।

दहपटना–स० क्रि० ढहाना, ध्वस्त करना; कुचल डालना; किसीका गर्व आदि चूर्ण करना ।

दहर–पु० (सं०) चूहा; भ्राता; बालक, शिशु; नरक; वरुण; हृदयका खात; * दह; कुंड । * स्त्री० धधक । वि० स्वल्प, थोड़ा; अत्यन्त सूक्ष्म; जो कठिनाईसे समझमें आये ।

दहर-दहर*–अ० धधकते हुए ।

दहरना*–अ० क्रि० दे० 'दहलना' । स० क्रि० दे० 'दहलाना' ।

दहराकाश–पु० (सं०) ईश्वर; चिदाकाश, हृदयाकाश ।

दहरौरी–स्त्री० एक तरहका गुलगुला ।

दहल–स्त्री० थरथराहट; डरसे काँप उठना ।

दहलना–अ० क्रि० डरके मारे काँपना, थर्राना ।

दहला–पु० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगके दस चिह्न बने हों; * थाला, आलवाल ।

दहलाना–स० क्रि० डराकर कँपा देना, अत्यंत भीत करना ।

दहली*–स्त्री० दे० 'देहरी' ।

दहलीज़–स्त्री० (फा०) चौखटकी नीचेवाली लकड़ी जो जमीनसे सटी रहती है, देहली । मु० **–का कुत्ता**–पालतू कुत्ता; मुफ्तखोर । **–की मिट्टी ले जाना**–बहुतसे फेरे करना, बार-बार जाना । **–झाँकना**–किसीके पास किसी कामके लिए जाना । **–न झाँकना**–बहुत अधिक परदेमें रहना ।

दहशत–स्त्री० (फा०) भय, डर, आतंक ।

दहा–पु० ताजिया; मुहर्रमका समय ।

दहाई–स्त्री० अंकोंकी गिनती करते समय दाहिनी ओरसे दूसरा स्थान ।

दहाड़–पु० शेर या बाघका घोर गर्जन; जोरकी चिल्लाहट, गर्जन; रोते समय जोरसे चिल्लानेकी आवाज । मु०**–मारना**–रोते समय जोर-जोरसे चिल्लाना ।

दहाड़ना–अ० क्रि० शेर या बाघका गरजना; डपटकर, चिल्लाकर बोलना; चिल्ला-चिल्लाकर रोना ।

दहाना–पु० (फा०) मुँह; मशकका मुँह; नदीके दूसरी नदी या समुद्रमें गिरनेकी जगह; नाली; लगामका मुँहमें रहनेवाला हिस्सा; एक कीमती पत्थर । † स० क्रि० स्थानीय मानके अनुसार अंकोंको पढ़ना ।

दहार†–स्त्री० नदीके बीचमें बनी प्राकृत झील ।

दहिगल†–पु० एक छोटा पक्षी ।

दहिऔरी†–स्त्री० दही डालकर बनाया हुआ गुलगुला ।

दहिना†–वि० दे० 'दाहिना' ।

दहिने†–अ० दे० 'दाहिने' ।

दही–पु० खटाई या जामन डालकर जमाया हुआ दूध । **–दही**–स्त्री० दहिगल नामक पक्षीकी बोली । मु० **–दही करना**–बेचनेके लिए किसी वस्तुका प्रचार करते फिरना । (हाथ, मुँहमें) **–जमा रहना**–निष्क्रिय हो जाना या रहना; परस्पर बातचीत न होना–'७-८ दिनतक दोनोंके मुँहमें दही जमा रहा'–प्रेम० ।

दहुँ–अ० कदाचित्, शायद; अथवा, या ।

दहेँगर†–पु० दहीका पात्र ।

दहेँड़ी–स्त्री० दही रखनेका मिट्टीका पात्र ।

दहेज–पु० विवाहके अवसरपर कन्यापक्षकी ओरसे वरपक्षको दिया जानेवाला धन और सामान, दायजा ।

दहेला*–वि० दग्ध, जला हुआ; परितप्त, पीडित; दुःखी, आर्द्र । (स्त्री० 'दहेली' ।)

दहोटरसो–वि० एक सौ दस । एक सौ दसकी संख्या, ११० ।

दह्यो*–पु० दही ।

दह्र–वि० (सं०) छोटा; बारीक । पु० हृदयका खात; हृदय; अग्नि; दावाग्नि ।

दाँ–पु० बार, दफा । वि० (फा०) जानकार, विज्ञ, वेत्ता (समासांतमें) ।

दाँक*–स्त्री० किसी जंतुका भीषण गर्जन, घोर शब्द ।

दाँकना*–अ० क्रि० गरजना, दहाड़ना ।

दाँग–स्त्री० (फा०) छ रत्तीकी तौल; दिशा, ओर; किसी वस्तुका छठा भाग । * पु० टीला, छोटी पहाड़ी; डंका ।

दाँगर†–पु० दे० 'डागर' ।

दाँज–स्त्री०, **दाँजा**–पु० समानता, तुलना, बराबरी; स्पर्द्धा ।

दांड–वि० (सं०) दंडसे संबंध रखनेवाला ।

दांडक्य–पु० (सं०) छड़ीबरदार या पुलिसका काम या पद ।

दाँड़ना†–स० क्रि० दंड देना ।

दांडाजिनिक–पु० (सं०) वह जिसने लोगोंको भरमाकर पैसा ऐंठनेके लिए दंड और मृगचर्म धारण किया हो; कपटी साधु । वि० (दिखानेके लिए) दंड-चर्म धारण करनेवाला; ढोंगी, कपटी ।

दांडिक–वि०, पु० (सं०) दंड देनेवाला ।

दांत–वि० (सं०) दंत-संबंधी; जिसने बाह्येंद्रियोंका दमन किया हो; दमित; शांत, धीर; उदार । पु० दाता; दमनक ।

दाँत–पु० प्राणीके जबड़ोंमें स्थित वे छोटे-छोटे पंक्तिबद्ध अस्थिखंड जिनसे काटने, चबानेका काम लेते हैं, रदन, दंत; आरी, कंघी आदिका दाँता । मु०**–काटी रोटी**–गहरी मित्रता । **–काढ़ना**–गिड़गिड़ाना । **–किरकिरे होना**–हार मानना । **–कुरेदनेको तिनका न रहना**–पासमें कुछ न होना । **–खट्टे करना**–परास्त करना; नाकमें दम करना । **–गड़ना**–किसी वस्तुके लिए बहुत अधिक लालायित होना । **–चबाना**–दे० 'दाँत पीसना' । **–तले उँगली दबाना**–दे० 'दाँतों उँगली काटना' । **–तोड़ना**–परास्त करना । **–दिखाना**–घुड़कना; अपना बड़प्पन दिखलाना । **–निकालना,–निपोरना**–गिड़गिड़ाना; टें बोल देना; व्यर्थ हँसना । **–पर मैल न होना**–अकिंचन होना, इतना दरिद्र होना कि खानेको कुछ न मिले । **–पीसना**–बहुत अधिक क्रुद्ध होना । **–बजना**–ठंडके मारे दाँतोंका किटकिटाना । **–बैठना**–बेहोशीके कारण ऊपर-नीचेके दाँतोंका इस प्रकार सट जाना कि मुँह न खुल सके । **–लगना**–दे० 'दाँत गड़ना'; दे० 'दाँत बैठना' । **–लगाना**–(किसी वस्तुको) हड़प जानेकी ताकमें रहना, आत्मसात् करनेकी प्रबल इच्छा रखना । **–(तोँ) उँगली काटना**–आश्चर्यमें पड़ जाना, दंग हो जाना । **–चढ़ना**–आँखमें चुभने लगना (स्त्रि०) । **–चढ़ाना**–बुरी दृष्टिसे देखना (स्त्रि०) । **–धरती पकड़कर**–बड़ी कठिनाईसे, बड़ी दिक्कतसे । **–पसीना आना**–बहुत अधिक श्रम पड़ना । **–में जीभ-सा होना**–प्रतिक्षण शत्रुओंके बीचमें रहना । **–से उठाना**–बड़ी कंजूसीसे (द्रव्य आदि) संचित करना ।

दांतक, दांतिक–वि० (सं०) हाथीदाँतका बना हुआ ।

दाँतना–अ० क्रि० (पशुओंका) जवान होना; (हथियारका) कुंठित होना ।

दाँतली–स्त्री० काग, डाट ।

दाँता–पु० दे० 'दंदाना', दाँत जैसा नुकीला सिरा ।

दाँता किटकिट, दाँता किलकिल–स्त्री० तकरार, तू-तू-मैंमैं ।

दांति–स्त्री० (सं०) आत्मनिग्रह; अवनमन; तप; क्लेश-सहिष्णुता ।

दाँतिया–पु० रेहका नमक ।

दाँती–स्त्री० घास आदि काटनेका हँसिया; नाव बाँधनेका खूँटा; दंतपंक्ति; दर्रा ।

दाँना–स० क्रि० डंठलसे दाना अलग करनेके लिए फसलको बैलोंसे रौंदवाना ।

दांपत्य–पु० (सं०) पति-पत्नीका संबंध, दंपती-संबंधी कृत्य । वि० दंपतीका; पतिपत्नी-संबंधी ।

दांभ–वि० (सं०) ढोंगी, कपटी ।

दांभिक–वि० (सं०) दे० 'दांभ' । पु० ढोंग करनेवाला व्यक्ति ।

दाँयँ*–स्त्री० दे० 'दँवरी' ।

दाँयाँ–वि० दे० 'दाहिना' ।

दाँवँ–पु० दे० 'दावँ' ।

दाँवना–स० क्रि० दे० 'दाँना'।

दाँवनी–स्त्री० एक गहना।

दाँवरी–स्त्री० रस्सी, डोरी।

दा–पु० सितारका एक बोल। स्त्री० (सं०) ताप; पश्चात्ताप; शोधन; दान; रक्षा। वि० स्त्री० देनेवाली (समासांतमें)।

दा*–प्र० का–'नंददा सोहना'–घन०।

दाइ*–पु० दे० 'दाय'।

दाइज, दाइजा*–पु० दे० 'दायज'।

दाईं–वि० स्त्री० दाहिनी। स्त्री० बार, दफा।

दाई–स्त्री० वह स्त्री जो अपना दूध पिलाकर दूसरेके बच्चेको पाले, उपमाता, धाय; बच्चा जनानेवाली स्त्री; बच्चोंकी देखरेख करनेवाली दासी; (बर्तन माँजनेवाली) नौकरानी। * वि० दे० 'दायी'। **मु०–से पेट छिपाना**–ऐसे व्यक्तिसे कोई बात छिपाना जिसे सारा भेद मालूम हो।

दावँ*–पु० दे० 'दावँ'।

दाउ* -स्त्री० दावानल।

दाऊ–पु० बड़ा भाई, दादा; कृष्णके ज्येष्ठ भ्राता बलराम।

दाऊद–पु० (अ०) ईसाई, मुसलमान और यहूदी धर्मके एक पैगंबर।

दाऊदखानी–पु० (फा०) एक तरहका चावल, एक तरहका गेहूँ।

दाऊदिया–पु० सफेद छिलकेवाला एक उम्दा गेहूँ; एक फूल; एक तरहकी आतिशबाजी।

दाऊदी–पु० एक तरहका गेहूँ।

दाक–पु० (सं०) यजमान; दाता।

दाक्ष–वि० (सं०) दक्ष-संबंधी। पु० दक्षिण दिशा।

दाक्षायण–पु० (सं०) एक यज्ञ जिसे दक्ष प्रजापतिने किया था; सुवर्ण; आभूषण; दक्ष गोत्रका पुरुष। वि० दक्ष गोत्रका; दक्ष गोत्रमें उत्पन्न।

दाक्षायणी–स्त्री० (सं०) अश्विनी, रेवती आदि नक्षत्र; सती; दुर्गा; दंती वृक्ष; कश्यपकी पत्नी अदिति; कद्रु या विनता; दक्ष गोत्रकी कन्या। **–पति**–पु० शिव; चंद्र।

दाक्षायणी(णिन्)–पु० (सं०) स्वर्णकुंडलधारी ब्रह्मचारी।

दाक्षायण्य–पु० (सं०) सूर्य।

दाक्षाय्य–पु० (सं०) गृध्र।

दाक्षि–पु० (सं०) दक्षका पुत्र।

दाक्षिण–पु० (सं०) एक होम; दक्षिणा-संग्रह। वि० दक्षिणा-संबंधी; दक्षिण दिशा-संबंधी।

दाक्षिणक–पु० (सं०) वह बंधन जिसमें कामनावश इष्टापूर्त आदि कर्म करनेवाला पड़ता है। वि० इष्टापूर्त आदिके द्वारा चंद्रलोकको प्राप्त करनेवाला।

दाक्षिणात्य–पु० (सं०) दक्षिण देशका निवासी; नारियल। वि० दक्षिण देशका, दक्षिणी।

दाक्षिणिक–वि० (सं०) दक्षिणा-संबंधी।

दाक्षिण्य–पु० (सं०) अनुकूलता; निपुणता, पटुता; उदारता; सरलता; नायक द्वारा नायिकाका अनुवर्तन (सा०)। वि० दक्षिणा-संबंधी।

दाक्षी–स्त्री० (सं०) दक्षकी पुत्री; पाणिनिकी माता। **–पुत्र**–पु० पाणिनि।

दाक्षेय–पु० (सं०) पाणिनि मुनि।

दाक्ष्य–पु० (सं०) दक्षता, निपुणता, कार्यपटुता।

दाख–स्त्री० अंगूर; मुनक्का।

दाखि*–स्त्री० दे० 'दाख'।

दाख़िल–वि० (फा०) भीतर घुसा हुआ; प्रविष्ट; शामिल। **–ख़ारिज**–पु० किसी सरकारी कागजपरसे एक व्यक्तिका नाम हटाकर उसके नाम लिखी जायदादपर दूसरेका नाम चढ़ानेकी कानूनी काररवाई। **–दफ्तर**–वि० दफ्तरमें बिना किसी निर्णयके अलग रख दिया हुआ (कागज)। **मु० –करना**–अदा या जमा करना। **–होना**–अदा या जमा किया जाना।

दाख़िला–पु० (अ०) प्रवेश; प्रवेश-शुल्क; जमा करनेका कार्य, अदायगी; वह रजिस्टर जिसमें किसी दाखिल या जमा की जानेवाली वस्तुका लेखा हो; महसूल या चुंगीकी रसीद; मालगुजारीकी रसीद।

दाख़िली–वि० आभ्यंतर, भीतरी, अंदरूनी।

दाग–पु० दग्ध करनेकी क्रिया; दाह; दाहकर्म; दे० 'दाग़'; * जलन।

दाग़–पु० (फा०) किसी प्राणीके शरीरपरका जन्म-जात अथवा घाव या जलने आदिका चिह्न; रंग आदिके लग जानेसे कपड़े आदिपर पड़ जानेवाला चिह्न, धब्बा; (दुराचरण, अपराध आदिके कारण) चरित्र या कीर्तिपर लगनेवाला कलंक, लांछन; सड़न आदिका सूचक चिह्न। **–दार**–वि० जिसपर दाग हो, धब्बेदार। **–बेल**–स्त्री० (हिं०) सड़क, नहर, नीवँ आदि खुदवानेके स्थानपर फावड़ेसे खोदकर लगाया हुआ निशान। **मु० –लगाना**–कलंकित करना; कलुषित करना।

दागना–स० क्रि० जलाना; संतप्त करना; तपाये हुए लोहे या अन्य धातुकी मुद्रासे किसीके शरीरपर विशेष प्रकारका चिह्न अंकित करना; अधिक तेज दवा लगाकर फोड़े आदिको जला या सुखा देना; बंदूक आदि छोड़ना; धब्बा लगाना।

दाग़ी–वि० (फा०) जिसपर दाग लगा हो, दागदार; कलंकित; कलुषित; चरित्रहीन; सजा भुगता हुआ।

दाघ–पु० (सं०) ताप, दाह।

दाजन, दाझन*–स्त्री० जलन; पीड़ा।

दाजना, दाझना*–अ० क्रि० दग्ध होना, जलना; संतप्त होना; ईर्ष्या करना। स० क्रि० जलाना; संतप्त करना।

दाझणा*–पु० जलन, दाह–'आठ पहरका दाझणा मोपै सह्या न जाइ' –कबीर।

दाडक–पु० (सं०) दाढ़; दाँत।

दाड़स–पु० एक तरहका साँप।

दाडिंब–पु० (सं०) अनारका वृक्ष।

दाडिम–पु० (सं०) अनार; इलायची। **–पत्रक**–पु० रोहितक वृक्ष। **–पुष्प**–पु० रोहितक वृक्ष; अनारका फूल। **–प्रिय,–भक्षण**–पु० शुक, तोता।

दाडिमीसार–पु० (सं०) दे० 'दाडिम'।

दाढ़–पु० जबड़ेके भीतरके वे दाँत जिनसे खाते समय अन्न आदि चबाते हैं, चौभड़; सूअरका आगेकी ओर निकला हुआ दाँत। स्त्री० घोर शब्द; गरज, दहाड़।

दाढ़ना*–अ० क्रि० जलना; संतप्त होना; गरजना। स० क्रि० जलाना, झुलसाना; संतप्त करना, कष्ट पहुँचाना।

दाढा–स्त्री० (सं०) दंष्ट्रा, बड़ा दाँत; समूह; इच्छा।

दाढ़ा|–पु० वनाग्नि, दावाग्नि; अग्नि; जलन; लंबी दाढ़ी। वि० जलाया हुआ; संतप्त।

दाढिका–स्त्री० (सं०) दाढ़ी; दाँत।

दाढ़ी–स्त्री० ठुड्डी; ठुड्डीपरके बाल, डाढ़ी। **–जार**–पु० एक गाली जो स्त्रियाँ पुरुषोंको देती हैं। वि० जिसकी दाढ़ी जल गयी हो।

दात*–पु० दान; दाता। वि० (सं०) विभक्त, छिन्न; धुला हुआ, मार्जित।

दातन–स्त्री० दे० 'दातौन'।

दातव्य–वि० (सं०) देने योग्य; जिसका देना आवश्यक हो; दानसे चलनेवाला; लौटाया जानेवाला; जहाँ दानके रूपमें कोई चीज दी जाती हो। * पु० दानशीलता; दान।

दाता(तृ)–पु० (सं०) देनेवाला, दान देनेवाला; ईश्वर; महाजन, उत्तमर्ण; शिक्षक; काटनेवाला।

दातार–पु० देनेवाला; प्रदान करनेवाला।

दाति–स्त्री० (सं०) देना; संपत्ति आदिका विधिवत् सौंप दिया जाना; छिन्न-भिन्न करना; विनाश; विभाग, वितरण। **–तारीख**–स्त्री० किसी संपत्ति, माल आदिके सौंप दिये जानेकी तारीख (डिलीवरी डेट)। **–क्लर्क**–पु० रेलवेमें पार्सल आदिकी डिलीवरी देनेवाला कर्मचारी।

दाती*–स्त्री० देनेवाली, दात्री।

दातुन, दातून–स्त्री० दे० 'दातौन'।

दातुरी*–स्त्री० दानकी वृत्ति–'दानी बड़े पै न माँगै बिन ढरै दातुरी' –घन०।

दातृता–स्त्री०, **दातृत्व**–पु० (सं०) दान देनेकी प्रवृत्ति, दान-शीलता, वदान्यता ।

दातौन–स्त्री० नीम, बबूल आदिकी गीली टहनीका वह टुकड़ा जो दाँत साफ करनेके काममें लाया जाता है ।

दात्यूह–पु० (सं०) चातक, पपीहा; जलकाक; मेघ, बादल ।

दात्योनि*–स्त्री० दे० 'दातौन' ।

दात्योह–पु० (सं०) दे० 'दात्यूह' ।

दात्र–पु० (सं०) काटनेका औजार, दाँती, हँसिया ।

दात्री–वि० स्त्री० (सं०) देनेवाली; दान करनेवाली । स्त्री० हँसिया ।

दात्व–पु० (सं०) दाता; यज्ञका अनुष्ठान; यज्ञ ।

दाद–पु० (सं०) दान । **–द**–वि०, पु० दान देनेवाला ।

दाद–स्त्री० एक प्रसिद्ध चर्मरोग । **–मर्दन**–पु० चकवँड़ ।

दाद–स्त्री० (फा०) इंसाफ, न्याय । **–ख़्वाह**–वि० फरियादी, न्यायका प्रार्थी । **–ख़्वाही**–स्त्री० फरियाद, न्यायकी प्रार्थना । **–रसी**–स्त्री० इंसाफ पाना, न्यायप्राप्ति । **मु० –देना**–न्याय करना; न्यायोचित प्रशंसा करना ।

दादनी–स्त्री० (फा०) दी जानेवाली रकम या वस्तु; पेशगी दी जानेवाली रकम ।

दादरा–पु० एक चलता गाना; एक ताल ।

दादस|–स्त्री० ददिया सास ।

दादा–पु० पिताके पिता, पितामहके लिए प्रयुक्त आदरसूचक शब्द; बड़ा भाई; गुरुजन ।

दादि*–स्त्री० 'दाद'; फरियाद ।

दादी–स्त्री० पिताकी माता, पितामही । पु० फरियाद करनेवाला ।

दादुर*–पु० मेढ़क, दर्दुर ।

दादू–पु० 'दादा' शब्दका संबोधन कारकका एक रूप; एक पंथप्रवर्तक साधु । **–दयाल**–पु० दादू । **–पंथी**–वि०, पु० दादूके मतको माननेवाला, दादूका अनुयायी ।

दाध*–स्त्री० जलन; ताप ।

दाधना*–स० क्रि० जलाना; तपाना; पीड़ा देना ।

दाधिक–वि० (सं०) दहीसे बना हुआ या जिसमें दही डाला गया हो । पु० दही बेचनेवाला; दहीके साथ कोई चीज खानेवाला; एक तरहका तक्र ।

दाधीच–पु० (सं०) दधीचिके गोत्रका व्यक्ति, दधीचिका वंशज ।

दान–पु० (सं०) देनेकी क्रिया; धर्मकी दृष्टिसे या दयावश किसीको कोई वस्तु देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु; शिक्षण; शत्रुपर विजय पानेके साम आदि चार उपायोंमेंसे एक, कुछ देकर शत्रुको वशमें करनेकी नीति; कर, महसूल; उदारता; हाथीके गंडस्थलसे निकलनेवाला मदजल; पालन; छेदन; शुद्धि; चरागाह; जोड़ । **–काम**–वि० उदार, दानशील । **–कुल्या**–स्त्री० हाथीका मद । **–तोय**–पु० दे० 'दान-वारि' । **–धर्म**–पु० दानरूप धर्म । **–पति**–पु० अक्रूर नामके एक यादव; बहुत दानी व्यक्ति । **–पत्र** पु० वह लेख या पत्र जिसमें किसी वस्तुके दानरूपमें दिये जानेका उल्लेख हो । **–पात्र**–पु० दान देने योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसे दान दिया जा सके । **–प्रतिभाव्य**–पु० ऋण दिलानेकी जमानत । **–प्रतिभू**–पु० वह प्रतिभू जो ऋण वसूल करा देनेकी जमानत ले । **–भिन्न**–वि० रिश्वत देकर फोड़ा हुआ । **–योग्य**–वि० दानरूपमें देने योग्य । **–लीला**–स्त्री० कृष्णकी एक लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनोंसे कररूपमें गोरस वसूल किया था । **–वज्र**- पु० देवताओं और गंधर्वोंके एक प्रकारके घोड़े जो अत्यंत वेगवान् होते और सदा एकरूप रहते हैं; वैश्य । **–वारि**–पु० हाथीका मदजल; दे० क्रममें । **–वीर**–पु० बहुत दानी व्यक्ति; वीर रसका एक भेद (सा०) । **–शील,–शूर**–वि० जिसका स्वभाव दान देनेका हो, जो बराबर दान दिया करता हो । **–शौंड**–वि० दे० 'दानशील' । **–सागर**–पु० बंगालमें प्रचलित एक महादान जिसमें भूमि, आसन आदि सोलह वस्तुओंमेंसे प्रत्येक वस्तु सोलह-सोलह की संख्यामें दी जाती है ।

दान–पु० (फा०) रखनेकी चीज या पात्र, आधार (समासमें–जैसे कलमदान, पानदान, पीकदान) ।

दानक–पु० (सं०) कुत्सित दान, तुच्छ दान ।

दानव–पु० (सं०) कश्यपके पुत्र जो दनुके गर्भसे उत्पन्न हुए थे । **–गुरु**–पु० शुक्राचार्य ।

दानवारि–पु० (सं०) विष्णु; इंद्र; देवता; दे० 'दान' में ।

दानवी–वि० दानव-संबंधी; दानवोचित । स्त्री० (सं०) दानवकी स्त्री ।

दानवेंद्र–पु० (सं०) दानवपति बलि ।

दानांतराय–पु० (सं०) दानमें विघ्न डालनेवाला पापकर्म ।

दाना–पु० (फा०) अनाजका एक कण; अन्न; भोजन; चबेना; अनार, पोस्ता आदिका एक-एक बीज; मनका, गुरिया; एकमें पिरोकर या एक साथ जोड़कर काममें लायी जानेवाली गोल या पहलदार वस्तुओंमेंसे एक-एक; अदद, रवा; फुंसी । **–पानी**–पु० अन्न-जल; खाना-पीना । **–बंदी**–स्त्री० खड़ी खेतीकी कूत । **–(ने)दार**–वि० जिसमें दाने या रवे हों, रवादार । **मु० –पानी उठना**–जीविका न रहना, रोजी खत्म होना । **–(ने) दानेको तरसना**–भूखों मरना । **–दानेको मुहताज**–जिसे एक दाना भी मयस्सर न हो, अति निर्धन ।

दाना–वि० (फा०) बुद्धिमान्, समझदार । **–ई**–स्त्री० बुद्धिमत्ता, समझदारी । **–(ने)दार**–वि० बुद्धिमान् (हिंदीमें प्रयुक्त) ।

दानाध्यक्ष–पु० (सं०) वह राजकर्मचारी जिसके हाथमें राज्यकी ओरसे दिये जानेवाले दानका प्रबंध हो ।

दानि*–वि०, पु० दे० 'दानी' ।

दानिनी–स्त्री० (सं०) दान करनेवाली स्त्री ।

दानिया|–वि० दे० 'दानी'; दानी, दान देनेवाला; कर वसूल करनेवाला; दान लेनेवाला ।

दानिश–स्त्री० (फा०) अक्ल, बुद्धि । **–मंद**–वि० बुद्धिमान् ।

दानी–स्त्री० (समासके अंतमें) कोई वस्तु रखनेका छोटा आधान (सुरमादानी) ।

दानी(निन्)–वि० (सं०) दान करनेवाला; दानशील, उदार । पु० दान करनेवाला पुरुष, दाता; कर उगाहनेवाला ।

दानीय–वि० (सं०) दान करने योग्य; दान पानेवाला । पु० दान ।

दानु–वि० (सं०) वीर; विजयी । पु० दाता; अभ्युदय; संतुष्टि; वायु; दानव; दान; बूँद ।

दानो*–पु० दे० 'दानव' ।

दाप–पु० दर्प, अहंकार, घमंड; प्रताप; रोब; शक्ति; उत्साह; क्रोध, रोष; जलन, दुःख ।

दापक–पु० दबानेवाला; दलन करनेवाला; दूर करनेवाला; मिटानेवाला, नाशक ।

दापन–पु० (सं०) किसीको देनेके लिए प्रेरित करना ।

दापना*–स० क्रि० दबाना; वर्जित करना ।

दापित–वि० (सं०) जो देनेके लिए बाध्य किया गया हो; जिसपर अर्थदंड लगाया गया हो; जिसका निर्णय या फैसला किया गया हो ।

दाब–पु० दबने या दबानेका भाव, दबाव, चाँप, भार; शासन; नियंत्रण; रोब, अधिकार, प्रभुत्व; दे० 'दाबा' । **–दार**–वि० प्रभावशाली; मस्त । **–मापी**–पु० (मैनोमीटर) गैसका दाब नापनेवाला यंत्र । **मु० –दिखाना**–रोब जमाना, प्रभुताका भय दिखाना । **–मानना**–प्रभुता स्वीकार करना, किसीकी प्रबलतासे भय खाना; वशवर्ती होकर रहना ।

दाबना–स० क्रि० दे० 'दबाना', चापना ।

दाबा–पु० कलम लगानेके लिए वृक्षकी टहनीको मिट्टीमें गाड़ना या दबाना । **–लगाना**–(लेअरिंग) कुछ नन्हे पौधोंकी टहनियोंको भूमिमें दबा देनेकी क्रिया जिससे उसी स्थानपर जड़ें फूट निकलें और उसका स्वतंत्र पौधेकी तरह संवर्धन किया जा सके ।

दाबिल–पु० एक चिड़िया ।

दाभ–पु० दे० 'दर्भ' ।

दाम–पु० दमड़ीका तृतीयांश; समूह; माला; मूल्य, कीमत; द्रव्य, रुपया-पैसा; सिक्का; शत्रुपर विजय पानेके चार उपायोंमेंसे एक ।

दाम(न्)–पु० (सं०) रज्जु, रस्सी; पशुओं आदिको बाँधनेकी रस्सी; लड़ी; माला; रेखा, लीक; फंदा ।

दामणी*–स्त्री० दामिनी, बिजली–'चहुँदिस चमकै दामणी गरजै घन

भारी हों'–मीरा।

दामन–पु० (फा०) अँगरखेका नीचे लटकता हुआ भाग; पहाड़के नीचेकी जमीन; पाल। **–गीर**–वि० पल्ला पकड़नेवाला; दावेदार; मदद चाहनेवाला।

दामनी–स्त्री० (सं०) वह लंवी रस्सी जिसमें छोटी-छोटी रस्सियाँ बाँधकर बछड़े या पशु वाँधे जाते हैं; (फा०) वह कपड़ा जो घोड़ेकी पीठपर पड़ा रहता है; वह कपड़ा जो मुसलिम स्त्रीके शवपर ओढ़ाया जाता है।

दामरि, दामरी*–स्त्री० रस्सी; जाल।

दामांचल, दामांजन–पु० (सं०) वह रस्सी जिसे घोड़ेके पिछले पैरोंमें फँसाकर खूँटेमें बाँधते हैं।

दामा–स्त्री० (सं०) रस्सी; * दावाग्नि।

दामाद–पु० पुत्रीका पति, जामाता।

दामासाह–पु० वह दिवालिया जिसकी जायदाद उसके पावनेदारोंमें बँट जाय।

दामिनी–स्त्री० (सं०) विद्युत्; बिजली; स्त्रियोंका सिरमें पहननेका एक गहना।

दामी–वि० कीमती। स्त्री० कर, मालगुजारी।

दामोदर–पु० (सं०) कृष्ण (जिनकी कमरमें एक वार यशोदाने रस्सी वाँध दी थी), नारायण।

दायँ*–पु० दे० 'दावँ'। स्त्री० दे० 'दँवरी'।

दाय–पु० (सं०) देने योग्य धन; वह जिसे किसीको देना हो; विवाहके समय कन्या और जामाताको दिया जानेवाला द्रव्य आदि, दायजा; वह पैतृक या संवंधीकी संपत्ति जो पानेवालोंमें बाँटी जा सके; दान; खंडन; विभाग; क्षति; स्थान; * दे० 'दाव'। **–कर**–पु० (इनहेरिटेंस टैक्स) उत्तराधिकारमें प्राप्त धन या संपत्तिपर लगाया जानेवाला कर, रिक्थकर। **–वंधु**–पु० दायमें साथ-साथ हिस्सा बँटानेवाला, भाई। **–भाग**–पु० पैतृक या संवंधीकी संपत्तिका उत्तराधिकारियोंमें विभाजन, वरासतकी मिलकियतका बँटवारा; इसकी व्यवस्था या कानून; दायाधिकार।

दायक–पु० (सं०) देनेवाला, दाता; दायाद, उत्तराधिकारी। (स्त्री० 'दायिका'।)

दायज, दायजा–पु० विवाहके समय वरपक्षको दिया जानेवाला धन आदि, यौतुक, दहेज।

दायवी*–वि० दावँ, अवसरकी खोजमें रहनेवाला–'मन वसमैं न रोकैं रहै दायवी'–घन०।

दायम–अ० (अ०) सदा, हमेशा, उम्रभर।

दायमी–वि० (अ०) सदा रहनेवाला, सार्वकालिक; स्थायी (वंदोवस्त)।

दायमुलहब्स–पु० (अं०) आजीवन कारावास (का दंड), डामल।

दायर–वि० (अ०) चलनेवाला, फिरनेवाला, जो निर्णयके लिए हाकिमके सामने पेश किया गया हो। मु०**–करना**–निर्णयके लिए मुकदमा अदालतमें पेश करना।

दायरा–पु० (अ०) गोल घेरा, वृत्त; कार्य या अधिकारका क्षेत्र।

दायाँ–वि० दाहिना।

दाया*–स्त्री० दे० 'दया'; (फा०) दे० 'दाई'। **–गरी**–स्त्री० दाईका काम।

दायागत–वि० (सं०) जो मौरूसी हिस्सेमें पड़ा हो। पु० दायके रूपमें प्राप्त दास।

दायाद–पु० (सं०) दायका अधिकारी, ज्ञाति; सपिंड संवंधी; पुत्र।

दायादा, दायादी–स्त्री० (सं०) कन्या; दायकी अधिकारिणी।

दायाद्य–पु० (सं०) वह संपत्ति जिसपर सपिंड कुटुंवियोंका अधिकार पहुँचे, दाय।

दायाधिकारी होना–अ० क्रि० (सक्सीड) किसीकी मृत्युके वाद उसकी संपत्ति पानेका अधिकारी होना, उत्तराधिकारी वनना।

दायापवर्तन–पु० (सं०) उत्तराधिकारमें मिली हुई जायदादकी जब्ती।

दायित–वि० (सं०) दे० 'दापित'।

दायित्व–पु० (सं०) दायी या जिम्मेदार होनेका भाव, जिम्मेदारी।

दायी(यिन्)–वि० (सं०) देनेवाला; पहुँचानेवाला (इस अर्थमें इस शब्दका प्रयोग समासमें उत्तरपदके रूपमें होता है); उत्तरदायी।

दायें–अ० दाहिनी तरफ।

दार–पु० (सं०) चीरना, विदारण; दरार, छिद्र। स्त्री० स्त्री, पत्नी। **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० विवाह। **–ग्रहण,–परिग्रह**–पु० विवाह। **–वलिभुक्(ज्)**–पु० वगला।

दार–वि० (फा०) रखनेवाला; ···से युक्त (दूकानदार, किनारदार)। * पु० दारु, काष्ठ। † स्त्री० दाल।

दारक–पु० (सं०) वालक; पुत्र; शावक; ग्राम-शूकर। वि० चीरनेवाला, विदीर्ण करनेवाला।

दारचीनी–स्त्री० एक प्रकारका तज जिसका छिलका दवा और मसालेके काम आता है।

दारण–पु० (सं०) निर्मली; वह अस्त्र आदि जिससे कुछ चीरा जाय; चीरनेकी क्रिया, भेदन; औषधका एक भेद। वि० चीरने या विदीर्ण करनेवाला।

दारणी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

दारद–पु० (सं०) एक प्रकारका विष; पारा; ईंगुर; समुद्र।

दारन*–वि० दे० 'दारुन'; 'दारण'। पु० दे० 'दारण'।

दारना*–स० क्रि० चीरना, फाड़ना; नष्ट कर देना, मिटा देना।

दारमदार–पु० (फा०) किसी कार्यके होने या न होने अथवा वनने-विगड़नेकी पूरी जिम्मेदारी; कार्यभार।

दारव–वि० (सं०) दारु-संवंधी, लकड़ीका।

दारा–स्त्री० स्त्री, पत्नी, भार्या। पु० (फा०) मालिक; शाह।

दाराई–स्त्री० (फा०) एक तरहका लाल रेशमी कपड़ा; हुकूमत।

दाराचार्य–पु० (सं०) अध्यापक।

दारि–स्त्री० (सं०) विदारण, छेदन; * दे० 'दाल'।

दारिउँ*–पु० दे० 'दाडिम'।

दारिका–स्त्री० (सं०) कन्या, पुत्री।

दारित–वि० (सं०) चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

दारिद*–पु० दे० 'दारिद्रय'।

दारिद्र*–पु० दे० 'दारिद्रय'।

दारिद्रय–पु० (सं०) दरिद्रता, निर्धनता, गरीवी।

दारिम*–पु० दे० 'दाडिम'।

दारी–स्त्री० (सं०) दरार; एक क्षुद्र रोग जिसमें वायुके प्रकोपसे तलवेका चमड़ा फट जाता है और दर्द करने लगता है, बेवाई; † दासी; पुंश्चली (स्त्रियोंको दी जानेवाली एक गाली–बुंदेल०) कुलटा नारी–'अपनी पति छाँड़ि औरनिसों रति, ज्यों दारनिमें दारी'–स्वामी हरिदास।

दारी(रिन्)–पु० (सं०) पति; वह पुरुष जिसके कई पत्नियाँ हों।

दारु–पु० (सं०) काष्ठ, काठ; पीतल; देवदारु; शिल्पी, कारीगर; उदार व्यक्ति। वि० दानशील; चटपट टूट या फूट जानेवाला; विदारण करनेवाला। **–कदली**–स्त्री० कठकेला। **–कृत्य**–पु० लकड़ीका काम। **–गंधा**–स्त्री० विरोजा। **–गर्भा**–स्त्री० कठपुतली। **–चीनी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'दारचीनी'। **–ज**–पु० एक तरहका ढोल। वि० लकड़ीका बना हुआ। **–जोषित***–स्त्री० दे० 'दारुयोषित्'। **–नटी,–नारी**–स्त्री० कठपुतली। **–निशा**–स्त्री० दारुहल्दी। **–पत्री**–स्त्री० हिंगुपत्री। **–पात्र**–पु० लकड़ीका वना हुआ पात्र, काठका वरतन। **–पीता**–स्त्री० दारुहल्दी। **–पुत्रिका,–पुत्री**–स्त्री० कठपुतली। **–फल**–पु० पिस्ता। **–मत्स्याह्वय,–मुख्याह्वय**–पु० गोह। **–मुच**–पु० एक विष। **–मूषा**–स्त्री० एक ओषधि। **–यंत्र**–पु० काठका वना हुआ यंत्र; कठपुतली। **–योषा,–योषित्,–योषिता**–स्त्री० कठपुतली। **–वधू**–स्त्री० काठकी गुड़िया। **–सार**–पु० चंदन। **–सिता**–स्त्री० दारचीनी। **–स्त्री**–स्त्री० कठपुतली। **–हरिद्रा**–स्त्री० दारुहल्दी। **–हल्दी**–स्त्री० (हिं०) एक पीली लकड़ी जो दवाके काम आती है। **–हस्त,–हस्तक**–पु० काठकी करछी।

दारुक–पु० (सं०) देवदारु; कृष्णका सारथि।

दारुका–स्त्री० (सं०) काठकी पुतली; काठकी मूर्ति।

दारुजात–पु० भ्रमर, भौंरा (सूर)।

दारुण–वि० (सं०) कड़ा, कठोर; निर्दय; भयंकर; उग्र; घोर;

तीव्र; कँपा देनेवाला। पु० भयानक रस; चित्रक; विष्णु; एक नरक।

दारुणक–पु० (सं०) बालोंकी जड़में होनेवाला एक रोग, रूसी।

दारुण्य–पु० (सं०) कठोरता, निर्दयता।

दारुन*–वि० दे० 'दारुण'।

दारुमय–वि० (सं०) काठका; काठका बना हुआ।

दारुल्शफा–पु० चिकित्साका स्थान, चिकित्सालय, आरोग्यशाला।

दारू–स्त्री० (फा०) दवा; बारूद; शराब। **–दरमन**–पु० उपचार, इलाज।

दारूड़ा–पु०, **दारूड़ी**–स्त्री० शराब।

दारो*–पु० अनारका दाना या बीज।

दारोगा–पु० (फा०) हिफाजत करनेवाला; निगरानी करनेवाला; थानेका प्रधान अधिकारी, थानेदार। **–ई,–गरी**–स्त्री० दारोगाका काम या ओहदा।

दार्ढ्य–पु० (सं०) दृढ़ होनेका भाव, दृढ़ता।

दार्दुर–वि० (सं०) मेढ़क-संबंधी। पु० एक तरहका शंख; पानी; लाख।

दार्दुरक–वि० (सं०) मेढ़क-संबंधी।

दार्दुरिक–पु० (सं०) कुम्हार। वि० मेढ़क-संबंधी।

दार्भ–वि० (सं०) दर्भ-संबंधी; कुशका बना।

दारचों*–पु० अनार; अनारका दाना।

दार्वंड–पु० (सं०) (जिसका अंडा लकड़ीकी तरह कड़ा हो) मोर।

दार्व–वि० (सं०) काष्ठ-संबंधी; काठका बना हुआ।

दार्वट–पु० (सं०) मंत्रणा करनेका गुप्त स्थान; मंत्रणागृह।

दार्वाघाट, दार्वाघात–पु० (सं०) कठफोड़वा नामक पक्षी।

दार्विका–स्त्री० (सं०) दारुहल्दीसे तैयार किया हुआ तूतिया; गोजिह्वा।

दार्विपत्रिका–स्त्री० (सं०) गोजिह्वा।

दार्वी–स्त्री० (सं०) दारुहल्दी; गोजिह्वा; देवदारु; हरिद्रा। **–क्वाथोद्भव**–पु० रसांजन।

दार्श–वि० (सं०) दर्श–अमावस्याके दिन होनेवाला।

दार्शनिक–पु० (सं०) दर्शन शास्त्रका जानकार, तत्त्ववेत्ता। वि० दर्शनशास्त्र-संबंधी।

दार्षद–वि० (सं०) पत्थरपर पीसा हुआ; प्रस्तरमय; खनिज।

दार्षद्वत–पु० (सं०) एक यज्ञ जिसे दृषद्वती नदीके किनारे करनेका विधान है।

दार्ष्टांत, दार्ष्टांतिक–वि० (सं०) दृष्टांतयुक्त; दृष्टांत-संबंधी; दृष्टांत द्वारा जिसका स्पष्टीकरण किया गया हो।

दाल–स्त्री० दली हुई अरहर, मूँग आदि जिसे सिझाकर भात-रोटी आदिके साथ खाते हैं; पकायी हुई दाल; सालन; खुरंड। पु० (सं०) एक तरहका वन्य मधु; कोदो। **–मोठ**–स्त्री० (हिं०) घी या तेलमें तली हुई दाल जिसमें नमक, मिर्च आदि मिलाते हैं। मु०**–गलना**–युक्तिका सफल होना। **–में काला होना**–कोई दोष छिपा होना। **–रोटी चलना**–निर्वाह होना।

दालचीनी–स्त्री० दे० 'दारचीनी'।

दालन–पु० (सं०) दाँतका एक रोग, दंतक्षय।

दालना*–स० क्रि० दे० 'दलना'–'पय पीवत पूतना दाली'–सूर।

दालव–पु० (सं०) एक स्थावर विष।

दाला–स्त्री० (सं०) महाकाल नामक लता।

दालान–पु० बरामदा, ओसारा।

दालिम–पु० (सं०) अनारका पेड़।

दाली–स्त्री० (सं०) देवदाली नामक पौधा।

दाल्मि–पु० (सं०) इंद्र।

दावँ–पु० बार, मर्तबा; कार्यसिद्धिका उपयुक्त अवसर, मौका, सुयोग; इष्टसाधनका उपाय, युक्ति; कुश्तीका पेंच; कपटपूर्ण युक्ति, छलनेकी चाल; जुए आदिके खेलमें जितानेवाली चाल; खेलनेकी बारी; † जगह, रिक्त स्थान।

दावँना–स० क्रि० दे० 'दाँना'।

दावँरी–स्त्री० दे० 'दाँवरी'।

दाव–पु० (सं०) वन, जंगल; वनमें लगनेवाली अग्नि; दाह; पीडा, क्लेश; † एक हथियार; जगह, रिक्त स्थान।

दावड़ी*–स्त्री० छोकरी, लड़की (बीसल०)।

दावत–स्त्री० (अ०) भोजका निमंत्रण; कोई काम करनेका बुलावा; भोज। **–तवाजा**–पु० खान-पान, आदर-सत्कार आदि। मु० **–देना**–भोज आदिके लिए निमंत्रित करना।

दावन*–पु० दमन; संहार; नाश; हँसिया। वि० नाश करनेवाला।

दावना–स० क्रि० दमन करना; नष्ट करना; मिटा देना; दाँना।

दावनी–स्त्री० स्त्रियोंका एक शिरोभूषण। *वि० स्त्री० नष्ट करनेवाली।

दावरी*–स्त्री० दे० 'दाँवरी'।

दावा*–स्त्री० दे० 'दावाग्नि'। पु० (अ०) स्वत्वकी रक्षा या अन्यायके प्रतीकारके लिए न्यायालयमें दिया हुआ प्रार्थनापत्र; किसी वस्तुको अपनी बताकर उसकी जोरदार माँग करना; अधिकार, हक; हाँक, जोर; किसी बातकी यथार्थताके विषयमें दृढ़ आत्मविश्वास; गर्वोक्ति। **–गीर**–पु० दावा करनेवाला, अधिकारकी माँग करनेवाला। **–(वे)दार**–पु० दे० 'दावागीर'।

दावाग्नि–स्त्री० (सं०) वनकी आग जो बाँस आदिके रगड़ खानेसे स्वतः लग जाती है।

दावात–स्त्री० दे० 'दवात'।

दावानल–पु० (सं०) दे० 'दावाग्नि'।

दावित–वि० (सं०) पीड़ित।

दाश–पु० (सं०) धीवर, मछुआ, केवट; भृत्य, चाकर। **–ग्राम,–पुर**–पु० वह पुर या गाँव जहाँ प्रधानतया धीवर बसते हों। **–नंदिनी**–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती।

दाशरथ–वि० (सं०) दशरथका; दशरथ-संबंधी। पु० दशरथके पुत्र, राम आदि।

दाशरथि–पु० (सं०) दशरथके पुत्र, राम, भरत आदि।

दाशरात्रिक–पु० (सं०) दस दिनोंमें समाप्त होनेवाला याग। वि० दशरात्र-संबंधी।

दाशार्ण–पु० दशार्ण देश या वहाँका निवासी। वि० दशार्ण देशका।

दाशेय–पु० (सं०) धीवरीसे उत्पन्न संतान।

दाशेयी–स्त्री० (सं०) सत्यवती।

दाशेर–पु० (सं०) 'दाशेय'।

दाशेरक–पु० (सं०) मालवदेश; मालवनरेश; मालवनिवासी।

दाश्त–स्त्री० (फा०) परवरिश, भरण-पोषण, खबरगीरी; कुम्हारका आवाँ।

दाश्ता–स्त्री० (अ०) उपपत्नीके रूपमें रखी हुई स्त्री, रखेली।

दाश्व–वि० (सं०) देनेवाला; उदार।

दास–पु० (सं०) वह जो दूसरेकी सेवाके लिए अपनेको समर्पित कर दे; भृत्य, किंकर, नौकर; खरीदा हुआ नौकर, गुलाम (दास सात प्रकारके माने गये हैं–ध्वजाहृत, भक्त, गृहज, क्रीत, दत्त्रिम, पैतृक, दण्डदास); शूद्रोंकी एक उपाधि; बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि; दस्यु; वृत्रासुर; ज्ञातात्मा, आत्मज्ञानी; शूद्र; धीवर; प्रतिगृहीता, दानपात्र; * बिछावन। **–जन**–पु० दास, सेवक। **–नंदिनी**–स्त्री० व्यासकी माता, सत्यवती। **–भाव**–पु० दासता।

दासक–पु० (सं०) दास, सेवक; एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

दासता–स्त्री०, **दासत्व**–पु० (सं०) दास होनेका भाव, दासभाव, गुलामी, परतंत्रता; दासवृत्ति।

दासन*–पु० दे० 'डासन'।

दासा–पु० दीवारसे सटाकर उठाया हुआ पुश्ता; दरवाजे या दीवारकी कुरसीके ऊपर लगायी हुई लकड़ी या पत्थर; हँसिया।

दासानुदास–पु० (सं०) दासोंका दास; (ला०) अत्यंत विनम्र सेवक।

दासायन–पु० (सं०) दासी-पुत्र।

दासिका–स्त्री० (सं०) दे० 'दासी'।

दासी–स्त्री० (सं०) सेवा-टहल करनेवाली स्त्री, सेविका; धीवरकी स्त्री; काकजंघा; नीलाम्ला, नीलझिंटी; वेदी।

दासेय–पु० (सं०) दासीका पुत्र; दास।

दासेर, दासेरक–पु० (सं०) दासीका पुत्र; शूद्र; धीवर; ऊँट ।

दास्ताँ, दास्तान–स्त्री० (फा०) वृत्तांत; कहानी; विवरण ।

दास्य–पु० (सं०) भक्तिका एक भेद (अपनेको ईश्वरका दास समझना); दे० 'दासता' ।

दास्र–वि० (सं०) अश्विनी नक्षत्र-संबंधी ।

दाह–पु० (सं०) जलाना; जलन, ताप; चमकता हुआ लाल रंग (आकाशका); एक रोग जिसमें शरीरमें विशेष जलन होती है; संताप; मुर्दा जलाना; शव जलानेका कृत्य । **–कर्म(न्)**–पु० शवसंस्कार, शव जलानेका कृत्य । **–काष्ठ**–पु० अगर । **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'दाहकर्म' । **–ज्वर**–पु० एक ज्वर जिसमें शरीरमें बहुत जलन होती है । **–सर,–स्थल**–पु० श्मशान । **–हर,–हरण**–पु० खस ।

दाहक–पु० (सं०) अग्नि; चित्रक वृक्ष, चीता; लाल चीता । वि० जलानेवाला; तप्त करनेवाला । (स्त्री० 'दाहिका' ।) **–प्रस्फोट (बम)**–पु० (इनसेंडिअरी बम) आग लगा देनेवाला प्रस्फोट या बम, अग्नि बम, आगलगाऊ बम ।

दाहन–पु० (सं०) जलाने या जलवानेका काम; जलाना या जलवाना; तप्त लोहेसे जलाना ।

दाहना–स० क्रि० जलाना, भस्मसात् करना; नष्ट करना; कष्ट पहुँचाना, संतप्त करना । वि० दाहिना ।

दाहा–पु० दे० 'दहा', मुहर्रमके दस दिन; ताजिया ।

दाहागुरु–पु० (सं०) अगर ।

दाहिन*–वि० दाहिना; अनुकूल ।

दाहिना–वि० शरीरके उस ओरका जो पूर्वकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर दक्षिण दिशाकी ओर पड़े, बायाँका उलटा, दक्षिण; दाहिने हाथकी ओर पड़नेवाला; अनुकूल । (स्त्री० 'दाहिनी' ।) **मु०** **–(नी)देना,–लाना**–प्रदक्षिणा, परिक्रमा करना ।

दाहिने–अ० दाहिने हाथकी ओर । **मु०** **–होना**–अनुकूल होना ।

दाहिमा*–पु० दक्षिण दिशा; दक्षिण देश (बीसल०) ।

दाही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) जलानेवाला; कष्ट देनेवाला ।

दाहुक–वि० (सं०) दे० 'दाही' ।

दाह्य–वि० (सं०) जलाने योग्य; जल उठनेवाला ।

दिंक–पु० (सं०) जूं आदिका अंडा ।

दिंडि–पु० (सं०) दे० 'दिंडिर'; त्रिपुरांतक ।

दिंडिर–पु० (सं०) एक प्राचीन बाजा ।

दिंडीर–पु० (सं०) समुद्रफेन; दे० 'हिंडीर' ।

दिअना†–पु० दे० 'दीया' ।

दिअरी†–स्त्री० दे० 'दिअली' ।

दिअली–स्त्री० छोटा दीया ।

दिआ–पु० दे० 'दीया' । **–बत्ती**–दे० 'दीया-बत्ती' । **–सलाई**–स्त्री० दे० 'दियासलाई' ।

दिउला–पु०, **दिउली**†–स्त्री० सूखे हुए चेचकके दानोंके ऊपरकी पपड़ी, खुरंड; छोटा दीया; मछलीकी चोईं या सेहरा ।

दिक़–पु० (अ०) एक प्रकारका ज्वर जो यक्ष्माके रोगीको होता है, तपेदिक । वि० तंग आया हुआ, परेशान, आजिज ।

दिकदाह*–पु० दे० 'दिग्दाह' ।

दिकली†–स्त्री० चनेकी दाल ।

दिक्(श्)–स्त्री० (सं०) दिशा; आदेश, प्रश्न; दृष्टिकोण; दूरवर्ती क्षेत्र; स्थान; दंतक्षत; दसकी संख्या; संकेत; हवाला; उदाहरण; श्रोत्रकी अधिष्ठात्री देवी । **–कन्या**–स्त्री० दिशारूपिणी कन्या । **–कर**–वि० जवान । पु० जवान आदमी; शिव । **–करिका,–करी**–स्त्री० युवती । **–करी(रिन्)**–पु० दिग्गज । **–कांता,–कामिनी**–स्त्री० दे० 'दिक्कन्या' । **–कुंजर**–पु० दिग्गज । **–कुमार**–पु० एक देववर्ग । **–चक्र**–पु० दिङ्मंडल; दिशाओंका समूह; क्षितिज । **–पति**–पु० आठ ग्रह जो आठ दिशाओंके स्वामी माने जाते हैं (ज्यो०); दिक्पाल । **–पति,–पाल**–पु० दस दिशाओंके रक्षक देवता–इंद्र (पूर्व), अग्नि (अग्निकोण), यम (दक्षिण), नैर्ऋत (नैर्ऋत कोण), वरुण (पश्चिम), मरुत् (वायुकोण), कुबेर (उत्तर), ईश (ईशानकोण), ब्रह्मा (ऊर्ध्वदिशा) और अनंत (अधोदिशा); एक छंद । **–पात कोण**–पु० (ऐंगिल आंव डेक्लिनेशन) चुम्बकीय याम्योत्तर तथा भौगोलिक याम्योत्तरके बीचका कोण । **–प्रेक्षण**–पु० (भयसे) चारों ओर देखना । **–शिखा**–स्त्री० पूर्वदिशा । **–शूल**–पु० वह समय जब किसी विशेष दिशामें जाना वर्जित हो । **–साधन**–पु० वह उपाय जिससे दिशा जानी जाय । **–सिंधुर**–पु० दिग्गज । **–सुंदरी**–स्त्री० दिशारूपी सुंदरी । **–स्वामी(मिन्)**–पु० दे० 'दिक्पति' ।

दिक्क–पु० (सं०) करभ, हाथीका बच्चा ।

दिक़्क़त–स्त्री० (अ०) मुश्किल, तंगी, परेशानी, कठिनाई । **–तलब**–वि० जिसमें दिक्कतें पड़ें, कठिनाईसे होनेवाला, कठिन ।

दिखना–अ० क्रि० दिखाई देना ।

दिखराना*–स० क्रि० दे० 'दिखाना' ।

दिखरावना*–स० क्रि० 'दिखलाना' ।

दिखरावनी†*–स्त्री० दिखानेका काम या भाव; (नववधू आदिका) मुँह देखनेका नेग ।

दिखलवाई–स्त्री० दिखलवानेकी क्रिया या भाव; दिखलवानेकी उजरत ।

दिखलवाना–स० क्रि० दिखलानेका काम कराना, दिखलानेमें दूसरेको प्रवृत्त करना ।

दिखलाई–स्त्री० दिखलानेका काम या भाव; दिखलानेकी उजरत ।

दिखलाना–स० क्रि० देखनेका काम कराना, दूसरेको देखनेमें लगाना; किसी वस्तुका चाक्षुष प्रत्यक्ष कराना; प्रदर्शित करना; प्रकट करना, जाहिर करना ।

दिखलावा–पु० दे० 'दिखावा' ।

दिखवैया†–पु० दिखलानेवाला; देखनेवाला ।

दिखहार*–पु० देखनेवाला ।

दिखाई–स्त्री० दिखानेकी क्रिया या भाव; दिखानेकी उजरत; देखनेकी क्रिया या भाव; देखनेके बदलेमें दिया जानेवाला धन ।

दिखाऊ–वि० देखने योग्य; दिखाने योग्य; जो केवल देखनेभरको हो, दिखौआ ।

दिखाना–स० क्रि० दे० 'दिखलाना' ।

दिखाव–पु० देखनेकी क्रिया; दृश्य ।

दिखावट–स्त्री० दिखानेका भाव या तर्ज; बाह्य आडंबर ।

दिखावटी–वि० जो देखनेभरको अच्छा लगे, दिखौआ, बनावटी; जो केवल ऊपर-ऊपरसे देखनेमें सुंदर या अच्छा हो ।

दिखावा–पु० आडंबर, ढोंग ।

दिखैया†*–पु० देखनेवाला; दिखानेवाला ।

दिखौआ, दिखौवा–वि० दिखावटी ।

दिग्–'दिक्'का समासगत रूप । **–अंगना**–स्त्री० दे० 'दिक्कन्या' । **–अंत**–पु० दिशाका अंत, छोर; क्षितिज । **–अंतर**–पु० दो दिशाओंके बीचकी जगह । **–अंबर**–पु० शिव, शंकर; जैनियोंका एक संप्रदाय; अंधकार (जो दिशाओंके लिए वस्त्र-तुल्य है) । वि० जिसके लिए दिशाएँ ही वस्त्ररूप हों, नग्न, नंगा । **–अंबरी**–स्त्री० दुर्गा । **–अंश**–पु० क्षितिजवृत्तका ३६० वाँ अंश । **–अधिप**–पु० दिक्पति । **–अवस्थान**–पु० वायु । **–आगत**–वि० दूरसे आया हुआ । **–इभ**–पु० दिग्गज । **–ईश,–ईश्वर**–पु० दे० 'दिक्पति' । **–गज**–पु० वह हाथी जो पृथ्वीको सँभालनेके लिए किसी दिशामें स्थित माना जाता है (आठों दिशाओंमें आठ दिग्गजोंकी स्थिति मानी गयी है) । **–गयंद***–पु० दिग्गज । **–जय**–स्त्री० दे० 'दिग्विजय' । **–ज्या**–स्त्री० दे० 'दिगंश' । **–दंती(तिन्)**–पु० दिग्गज । **–दर्शकयंत्र**–पु० दिशाका ज्ञान करानेवाला एक यंत्र जिसकी सूईकी नोक सदा उत्तरकी ओर रहती है, कुतुबनुमा, कंपास । **–दर्शन**–पु० सामान्य परिचय, सामान्य ज्ञान; दिशाका ज्ञान कराना; कुतुबनुमा । **–दाह**–पु० एक उत्पात जिसमें असमयमें दिशाओंमें ललाई छा जाती है और ऐसा ज्ञात होता है जैसे आग लगी हो । **–देवता,–दैवत**–पु० दे० 'दिक्पति' । **–द्योतकयंत्र**–पु० दे० 'दिग्दर्शकयंत्र' । **–बल**–पु० वह बल जो ग्रहोंको विशिष्ट दिशामें स्थित होनेसे मिलता है । **–बली(लिन्)**–पु० दिग्बलसे युक्त ग्रह । **–भ्रम**–पु० दिशासंबंधी भ्रम, दिशाओंका न पहचाना जाना; दिशा भूल जाना । **–वसन,–वस्त्र,–वासा(सस्)**–पु०, वि० दे० 'दिगंबर' । **–वारण**–पु० दिग्गज । –

विजय–स्त्री० किसी राजाका दलबलके साथ भूमंडलके अन्य समस्त राजाओंको घूम-घूमकर परास्त करना; किसी विशिष्ट विद्वान्, मतप्रचारक या गुणीका सभी प्रतिद्वंद्वियोंको हराकर संसारमें अपनी धाक जमाना। **–विजयी(यिन्)**–वि० दिग्विजय करनेवाला, जिसने दिग्विजय की हो। (स्त्री०) 'दिग्विजयिनी')। **–विभाग**–पु० दिशा। **–विभावित**–वि० जिसकी ख्याति सभी दिशाओंमें फैली हो। **–व्याप्त**–वि० सभी दिशाओंमें व्याप्त। **–व्रत**–पु० किसी विशेषदिशामें कोई सीमा पार न करनेका व्रत (जै०)।

दिगदंति*–पु० दे० 'दिग्गज'।

दिग्घ*–वि० दे० 'दीर्घ'।

दिग्ध–वि० (सं०) विषाक्त, विषमें बुझाया हुआ; लिप्त; गंदा किया हुआ। पु० विषमें बुझाया बाण; तेल; आग; आख्यायिका।

दिङ्–'दिक्'का समासगत रूप। **–नक्षत्र**–पु० वे सात-सात विशिष्ट नक्षत्र जो चार प्रसिद्ध दिशाओंमेंसे एक-एकसे संबद्ध माने जाते हैं। **–नाग**–पु० दिग्गज; ई० सन् ३४५-४२५ के आस-पासके एक प्रकांड बौद्ध आचार्य। **–नाथ**–पु० दे० 'दिक्पति'। **–मंडल**–पु० दिक्चक्र। **–मात्र**–पु० संकेत मात्र। **–मूढ**–वि० जिसे दिग्भ्रम हो गया हो। **–मोह**–पु० दिग्भ्रम।

दिगर–वि० (फा०) दूसरा, अन्य।

दिच्छा†–स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

दिच्छित, दिछित*–वि० दे० 'दीक्षित'।

दिजराज*–पु० दे० 'द्विजराज'।

दिजोत्तम*–पु० दे० 'द्विजोत्तम'।

दिट्ठि*–स्त्री० दृष्टि।

दिठवन–स्त्री० दे० 'देवोत्थान' (एकादशी)।

दिठादिठी*–स्त्री० देखा-देखी, साक्षात्कार।

दिठौना–पु० वह चिह्न जो बच्चोंको कुदृष्टिसे बचानेके लिए काजलसे उनके गाल या मस्तकपर बना दिया जाता है।

दिढ़*–वि० दे० 'दृढ़'।

दिढ़ता*–स्त्री० दे० 'दृढ़ता'।

दिढ़ाई*–स्त्री० दे० 'दृढ़ता'।

दिढ़ाना*–स० क्रि० दृढ़ करना, पक्का करना।

दिढ़ाव*–पु० दृढ़ बनाना; समर्थन करना; दृढ़ता।

दित–वि० (सं०) कटा हुआ, खंडित; विभक्त।

दितवार†–पु० आदित्यवार, रविवार।

दिति–स्त्री० (सं०) दैत्योंकी माता जो दक्ष प्रजापतिकी कन्या और कश्यपकी पत्नी थी; किसी वस्तुके दो या अधिक टुकड़े करनेकी क्रिया, खंडन। पु० राजा। **–ज,–तनय,–पुत्र,–सुत**–पु० असुर, दैत्य।

दित्य–पु० (सं०) असुर, दैत्य। वि० जो छेदने, काटने योग्य हो।

दित्सा–स्त्री० (सं०) देने या दान करनेकी इच्छा। **–पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जिसमें यह लिखा होता है कि मेरी मृत्युके बाद मेरी संपत्ति अमुक व्यक्तियोंको दी जाय, वसीयतनामा, इच्छापत्र। **–प्रस्ताव**–पु० (ऑफर) किसीको कोई सहायता, धन या अन्य वस्तु देनेको तैयार हो जाना, जिसे स्वीकार करना, न करना उसकी इच्छापर निर्भर हो।

दित्सु–वि० (सं०) जिसे देने या दान करनेकी इच्छा हो।

दित्स्य–वि० (सं०) जिस (वस्तु)को दान कर देनेकी इच्छा हो।

दिदृक्षा–स्त्री० (सं०) देखनेकी इच्छा।

दिदृक्षु–वि० (सं०) देखनेका इच्छुक।

दिदृक्षेण्य, दिदृक्षेय–वि० (सं०) देखने योग्य, दर्शनीय।

दिद्यु–पु० (सं०) आकाश।

दिधि–स्त्री० (सं०) धैर्य, दृढ़ता, स्थिरता।

दिधिषु–पु० (सं०) वह पुरुष जिसके साथ किसी स्त्रीका दूसरा विवाह हुआ हो; पति।

दिधिषू, दिधीषू–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके दो विवाह हुए हों; वह कन्या जो अपनी बड़ी बहनके पहले ही ब्याह दी गयी हो। **–पति**–पु० अपने बड़े भाईकी विधवा स्त्रीसे अनुचित संबंध रखनेवाला व्यक्ति।

दिन–पु० (सं०) वह समय जिसका आरंभ सूर्योदय और अंत सूर्यास्तसे होता है; सूर्योदयसे सूर्योदयतकका चौबीस घंटेका समय; समय, काल; मिति, तिथि; तारीख; नियत समय; कालविशेष। * अ० सदा। **–अर***–पु० सूर्य; आक, मदार। **–कंत***–पु० सूर्य। **–कर,–कर्ता(र्तृ),–कृत्**–पु० सूर्य; आक, मदार। **–०कन्या,–०तनया**–स्त्री० यमुना; तापती। **–०तनय,–०सुत**–पु० शनि; यम; कर्ण; सुग्रीव। **–केशर,–केशव**–पु० अंधकार। **–क्षय,–पात,**–पु० तिथिक्षय; सायंकाल। **–चर्या**–स्त्री० दिनभरका कार्य। **–चारी(रिन्)**–पु० सूर्य। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० दिनका उजाला, धूप। **–दहाड़े**–क्रि० वि० दिनमें उस समय जब चारों तरफ पूरा प्रकाश हो; ठीक या भरपूर दिनमें। **–दानी***–पु० वह जो प्रतिदिन दान करता हो। **–दिन**–अ० प्रतिदिन; कालक्रमसे। **–दीप**–पु० सूर्य। **–दुःखित**–पु० चक्रवाक, चकवा पक्षी। **–नाथ,–नायक**–पु० सूर्य। **–नाह***–पु० सूर्य। **–प**–पु० सूर्य; आक, मदार। **–पंजी**–स्त्री० (डायरी) वह रजिस्टर (पंजी), कापी इत्यादि जिसमें प्रतिदिन किये गये कार्यादिका विवरण लिखा जाय, दैनंदिनी। **–पति**–पु० सूर्य; अर्क; बलवान् ग्रह; वारेश। **–पाल**–पु० सूर्य। **–प्रणी,–बंधु**–पु० सूर्य; आक, मदार। **–बल**–पु० दिनमें सबल पड़नेवाली राशि। (वे छ हैं–सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीन।)**–भृति**–पु० दैनिक वेतनपर काम करनेवाला मजदूर। **–मणि,–मयूख**–पु० सूर्य; आक, मदार। **–मल**–पु० मास, महीना। **–मान**–पु० सूर्योदयसे सूर्यास्ततकके समयका मान। **–मुख**–पु० प्रातःकाल, सबेरा। **–मूर्धा(र्धन्)**–पु० उदयाचल। **–यौवन**–पु० मध्याह्न। **–रत्न**–पु० सूर्य; आक, मदार। **–राइ,–राउ***–पु० सूर्य। **–राज**–पु० सूर्य। **–रात–(हिं०),–रैन***–अ० सदैव, सर्वदा। **–विकृति-विवरण**–दे० क्रममें। **–शेष**–पु० संध्या, सायंकाल, शाम। मु० **–कटना**–किसी तरह समय बीतना। **–काटना**–किसी तरह निर्वाह करना। **–को तारे दिखाई देना**–दुःखकी प्रबलताके कारण होश ठिकाने न रहना। **–को तारे नजर आना**–बहुत तेज नजर होना; घोर अंधकार होना। **–को दिन, रातको रात न समझना**–काम करनेकी धुनमें अपने स्वास्थ्य आदिका खयाल न करना। **–को रात कहना**–उलटी बात कहना। **–गिनना**–प्रतीक्षा करना। **–चढ़ना**–उदयके पश्चात् सूर्यका आकाशमें कुछ और ऊपर आना; ऋतुकाल बीते कई दिन हो जाना, गर्भाधान होना। **–चढ़ाना**–सवेरेका समय बिताना। **–चढ़े**–सवेरा होनेके काफी देर बाद। **–डूबना**–संध्या होना, सूर्यास्त होना। **–ढलना**–सूर्यका अस्ताचलगामी होना। **–दहाड़े**–दिनमें खुले तौरपर, खुले खजाने। **–दूना, रात चौगुना होना या बढ़ना**–शीघ्रतासे और बहुत अधिक उन्नति करना। **–धरना**–दिन नियत करना, तारीख मुकर्रर करना। **–धराना**–दिन नियत कराना, तारीख मुकर्रर कराना। **–निकलना या होना**–सूर्योदय होना, सबेरा होना। **–फिरना**–भले दिन आना, सुखके दिन आना। **–बढ़ना**–दे० 'दिन धरना'।

दिन-विकृति-विवरण–पु० (वेदर रिपोर्ट) दिन-रातमें होनेवाले ताप, शीत, वर्षादि-संबंधी विकारोंका विवरण, मौसिमका हाल।

दिनांक–पु० (डेट) गणनाके अनुसार किसी वर्षके किसी महीनेका वह दिन जब कोई घटना हुई हो, हो रही हो या होनेवाली हो अथवा कोई पत्र, लेखादि लिखा गया हो, लिखा जा रहा हो या लिखा जानेवाला हो, तिथि।

दिनांकित–वि० (डेटेड) दे० 'तिथित'।

दिनांड–पु० (सं०) अंधकार।

दिनांत–पु० (सं०) संध्या, शाम।

दिनांतक–पु० (सं०) अंधकार।

दिनांध–वि० (सं०) जिसे दिनको दिखाई न देता हो, दिवांध। पु० उल्लू पक्षी।

दिनाइ†–स्त्री० दे० 'दिनाय', दद्रु।

दिनाई*–स्त्री० प्राणांत करनेवाली विषैली चीज–'ऊधो, दीनी प्रीति दिनाई'–सूर। दद्रु रोग।

दिनागम–पु० (सं०) प्रातःकाल, सबेरा।

दिनाती–स्त्री० मजदूरोंका एक दिनका काम या उजरत।

दिनात्यय–पु० (सं०) सूर्यास्त ।

दिनादि–पु० (सं०) प्रातःकाल, सवेरा ।

दिनाधीश–पु० (सं०) सूर्य ।

दिनानुदिन–अ० (सं०) दिन प्रतिदिन ।

दिनाय–स्त्री० एक चर्मरोग, दाद ।

दिनार*–पु० दे० 'दीनार' ।

दिनार्द्ध–पु० (सं०) मध्याह्न, दोपहर ।

दिनास्त–पु० (सं०) सूर्यास्त ।

दिनिका–स्त्री० (सं०) एक दिनकी मजदूरी, दिनाती ।

दिनियर*–पु० सूर्य ।

दिनी–वि० बहुत दिनोंका, पुराना, प्राचीन ।

दिनेर*–पु० सूर्य ।

दिनेश–पु० (सं०) सूर्य; आक, मदार; दिनके स्वामी ग्रह ।

दिनेशात्मज–पु० (सं०) दे० 'दिनकरतनय' ।

दिनेशात्मजा–स्त्री० (सं०) यमुना; तापती ।

दिनेश्वर–पु० (सं०) दे० 'दिनेश' ।

दिनेस*–पु० दे० 'दिनेश' ।

दिनौंधी–स्त्री० एक रोग जिसमें सूर्यके प्रकाशमें बहुत कम दिखाई देता है, दिवांधता ।

दिपति*–स्त्री० दे० 'दीप्ति' ।

दिपना*–अ० क्रि० देदीप्यमान होना, चमकना ।

दिपाना*–अ० क्रि० चमकना । स० क्रि० चमकाना ।

दिब*–पु० दिव्य परीक्षा ।

दिमाक*–पु० दे० 'दिमाग़' । –**दार**–वि० दे० 'दिमाग़दार' ।

दिमाग़–पु० (अ०) सिरके भीतरका गूदा या मग्ज, भेजा, मस्तिष्क; सोचने, समझनेकी शक्ति, बुद्धि, समझ; अभिमान । –**चट**–वि० बकवादी; खोपड़ी चाट जानेवाला । –**दार**–वि० अच्छी समझवाला, बुद्धिमान्; अभिमानी, मगरूर । –**दारी**–स्त्री० दिमागदार होनेका गुण । –**रौशन**–पु० सुँघनी । मु० –**आसमानपर होना**–अत्यधिक अभिमान होना । –**खाना**–बहुत बकवाद करना । –**ख़ाली करना**–किसीको समझाते-समझाते थक जाना; दे० 'दिमाग़ खाना' । –**चढ़ना**–अत्यधिक अभिमान होना । –**चाटना**–दे० 'दिमाग़ खाना' । –**चौथे फ़लकपर होना**–बहुत अधिक घमंड होना । –**में ख़लल होना**–मस्तिष्कमें कोई विकार होना । –**सातवें आसमानपर होना**–बहुत अधिक घमंड होना ।

दिमाग़ी–वि० दिमागदार; दिमागका; दिमाग-संबंधी ।

दिमात*–वि० दो माताओंवाला; दो मात्राओंवाला ।

दिमाना*–वि० दे० 'दीवाना' ।

दिमौर†–पु० दीमकका घर ।

दियट–स्त्री० दे० 'दीवट' ।

दियरा*–पु० दीया; एक पकवान ।

दिया–पु० दे० 'दीया' । –**बत्ती**–स्त्री० दीया जलानेका कार्य । –**सलाई**–स्त्री० एक सिरेपर गंधक आदि मसाले लगाकर बनायी हुई छोटी, पतली तीली जो रगड़नेसे जल उठती है; लकड़ीका छोटा बक्स जिसमें ऐसी तीलियाँ रखी रहती हैं । मु० –**सलाई लगाना**–आग लगाना ।

दियानत–स्त्री० दे० 'दयानत' । –**दार**–वि० दे० 'दयानतदार' । –**दारी**–स्त्री० दे० 'दयानतदारी' ।

दियारा–पु० कछार; प्रदेश; लुक ।

दियासा*–पु० मृगतृष्णा ।

दिरद*–पु० दे० 'द्विरद' ।

दिरम–पु० (फा०) चाँदीका एक सिक्का जो मिस्रमें चलता है; एक तौल ।

दिरमान†–स्त्री० चिकित्सा ।

दिरमानी*–पु० चिकित्सक, वैद्य । स्त्री० चिकित्साशास्त्र– 'जस आमय भेषज न कीन्ह तस दोष कहा दिरमानी'–विनय० ।

दिरहम–पु० दे० 'दिरम' ।

दिरानी*–स्त्री० देवरानी ।

दिरिपक–पु० (सं०) खेलनेका गेंद ।

दिरिस*–पु० दे० 'दृश्य' ।

दिल–पु० (फा०) एक अवयव जिसके द्वारा मनुष्यके शरीरमें रुधिरका संचार होता रहता है; हृदय, मन, जी; हिम्मत; हौसला; इच्छा । –**आज़ार**–वि० दिल दुखानेवाला, ज़ालिम । –**आज़ारी**–स्त्री० दिल दुखाना, जुल्म, अत्याचार । –**आरा**–वि० माशूक, प्रियतम । –**आराई**–स्त्री० दिलको लुभाना । –**आराम**–वि० माशूक, प्रियतम । –**आवेज़**–वि० जी लुभानेवाला । –**आवेज़ी**–स्त्री० जी लुभाना । –**कश**–वि० मनको खींचनेवाला, चित्ताकर्षक । –**कुशा**–वि० चित्तको प्रसन्न करनेवाला । –**कुशाई**–स्त्री० चित्तको प्रसन्न करना । –**कुशी**–स्त्री० जीको लुभाना, चित्तको अपनी ओर खींचना । –**ख़ुश**–वि० मनको प्रसन्न करनेवाला । –**ख़्वाह**–वि० मनचाहा । –**गीर**–वि० शोकग्रस्त, उदास, रंजीदा । –**गीरी**–स्त्री० उदासी, रंज । –**गुर्दा**–पु० साहस, उत्साह, जीवट । –**चला**–वि० मनमौजी; साहसी, उत्साही, बहादुर । –**चस्प**–वि० जिसमें मन रमे, रुचिकर । –**चस्पी**–स्त्री० चाव, शौक । –**चोर**–वि० भीरु, कायर; कामचोर; मन हरनेवाला । –**जमई**–स्त्री० चित्तका समाधान, इतमीनान, तसल्ली । –**जला**–वि० दुःखी । –**जोई**–स्त्री० ढाढ़स, दिलासा, सांत्वना । –**दरिया**–वि० दे० 'दरियादिल' । –**दार**–वि० जिससे प्रेम किया जाय, जो प्रेमपात्र हो; रसिक; उदार । –**दारी**–स्त्री० प्रेमपात्रता; रसिकता; उदारता । –**पज़ीर**,– **पिज़ीर**–वि० जिसे मन चाहे या स्वीकार करे, मनोवांछित । –**पसंद**–वि० जो जीको अच्छा लगे, जिसे मन चाहे । –**फेंक**–वि० बिना समझेबूझे चाहे जिसे दिल दे डालनेवाला, रूपलोभी । –**बर**–वि० दे० 'दिलदार' । –**बस्त**–वि० जिसका दिल कहीं लगा हुआ हो । –**बस्तगी**–स्त्री० मनबहलाव । –**रुबा**–वि० मनको लुभानेवाला; प्यारा, जो प्रेमपात्र हो; पु० एक बाजा । –**रुबाई**–स्त्री० मनको लुभाना । –**शिकन**–वि० दिल तोड़नेवाला, हिम्मत पस्त करनेवाला । –**शिकस्त**–वि० उदास, चिंतित । –**शुदा**–वि० आशिक, दीवाना । –**सोज़**–वि० परदुःखकातर, हमदर्द । –**सोज़ी**–स्त्री० हमदर्दी, सहानुभूति । –**हर***–वि० दिल हरनेवाला, मनोमोहक । मु० –**अटकना**– किसीसे प्रेम हो जाना । –**अटकाना**–किसीसे प्रेम करना । –**कड़ा करना**–मनको घबराने न देना, मनमें दृढ़ता लाना । –**कबाब होना**–मनका जल-भुन जाना । –**का खोटा**–कपटी, दगाबाज ।–**का गवाही देना**–अंतरात्माका कोई काम करना स्वीकार करना । –**का गुबार निकालना**–मनका मलाल दूर करना । –**का बादशाह**–अति उदार; मनमौजी । –**की आग बुझना**–जी ठंडा होना; इच्छा पूरी होना । –**की कली खिलना**–जी खुश होना, चित्त प्रसन्न होना । –**की दिलमें रहना**–मनोरथका पूर्ण न होना । –**की फाँस**–आंतरिक वेदना । –**के फफोले फूटना**–मनका उद्वेग शांत होना । –**के फफोले फोड़ना**–किसीको खरी-खोटी सुनाकर मनका उद्वेग शांत करना । –**को क़रार होना**–मनका आश्वस्त होना, मनमें चैन होना । –**खट्टा होना**–मन फिर जाना । –**चुराना**–काममें मन न लगाना । –**जमना**–दिल लगना । –**जलना**–रंज होना, गम होना । –**जलाना**–सताना; गम खाना । –**डूबना**–बेहोश होना; बेचैन होना । –**तोड़ना**–हिम्मत तोड़ना । –**दहलना**–कलेजा काँपना । –**दुखाना**–कष्ट पहुँचाना, सताना । –**देना**–प्रेमासक्त होना । –**दौड़ना**–प्रबल इच्छा होना । –**दौड़ाना**–मन चलाना; सोचना, विचारना । –**धड़कना**–दे० 'कलेजा धड़कना' । –**पक जाना**–दिलमें सख्त रंज होना; ताने सुन-सुनकर दिलको कष्ट होना । –**पर नक्श होना**–किसी बातका मनमें घर कर लेना; अच्छी तरह याद होना । –**पर साँप लोटना**–दे० 'कलेजेपर साँप लोटना' । –**फट जाना या फटना**–दे० 'दिल खट्टा होना' । –**फटा जाना**–बेचैन होना, व्याकुल होना; करुणार्द्र होना । –**बढ़ना**–उत्साहित होना, जोश आना । –**बढ़ाना**–उत्साहित करना, जोश दिलाना । –**बैठा जाना**–व्याकुल होना; बेहोश होना । –**भर आना**–करुणा आदिसे विचलित होना । –**मिलना**–दे० 'मन मिलना' । –**में आना**–इच्छा होना, विचारमें आना । –**में गाँठ या गिरह पड़ना**–द्वेष होना; फूट पैदा होना । –**में घर करना**,–**में जगह करना**–किसी बातका हृदयमें अच्छी तरह जम जाना । –**में फफोले पड़ना**–बहुत

अधिक मानसिक कष्ट होना । **–में फ़र्क़ आना**–मनमोटाव होना । **–मैला करना**–दे० 'मन मैला करना' । **–लगना**–दे० 'जी लगना' । **–लगाना**–दे० 'जी लगाना' । **–से उतरना**–स्नेह या श्रद्धाका पात्र न रह जाना । **–से दूर करना**–भुला देना । **–हट जाना**–मन फिर जाना । **–ही दिलमें**–मन ही मन ।

दिलवाना–स० क्रि० दे० 'दिलाना' ।

दिलवैया–पु० दिलानेवाला ।

दिलहा†–पु० दे० 'दिल्ला' । **–(हे)दार**–वि० दे० 'दिल्लेदार' ।

दिलाना–स० क्रि० देनेका काम कराना, देनेमें दूसरेको प्रवृत्त करना ।

दिलावर–वि० (फा०) साहसी, हिम्मती; वहादुर, दिलेर ।

दिलावरी–स्त्री० (फा०) दिलावर होनेका गुण, वहादुरी ।

दिलासा–पु० आश्वासन, सांत्वना, धीरज ।

दिली–वि० जिससे किसी प्रकारका भेदभाव न हो, अभिन्न; हार्दिक ।

दिलीप–पु० (सं०) इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा जिन्होंने नंदिनीकी सेवा करके उसके आशीर्वादसे पुत्र प्राप्त किया था ।

दिलीर–पु० (सं०) छत्रक ।

दिलेर–वि० (फा०) साहसी, जीवटवाला, जवाँमर्द ।

दिलेरी–स्त्री० हिम्मत; वहादुरी ।

दिल्लगी–स्त्री० हँसी, परिहास, मजाक । **–बाज़**–वि०, पु० हँसी-परिहास करनेवाला, मसखरा ।

दिल्ला–पु० किनारोंकी ओर कुछ ढालुआँ गढ़ा हुआ लकड़ीका चौकोर टुकड़ा जिसे किवाड़ या खिड़कीके पल्लेके ढाँचेमें शोभाके लिए जड़ देते हैं, दिलहा । **–(ल्ले)दार**–वि० जिसमें दिल्ला लगा हो (किवाड़) ।

दिल्ली–स्त्री० यमुनाके किनारे वसी हुई उत्तर भारतकी प्रसिद्ध नगरी जो आजकल भारतकी राजधानी है (यह हिंदू राजाओं तथा मुसलमान वादशाहोंके समयमें भी भारतकी राजधानी रह चुकी है) । **–वाल**–वि० दिल्लीका; दिल्लीका बना हुआ । पु० दिल्लीका निवासी; एक विशेष प्रकारका जूता ।

दिवंगत–वि० (सं०) स्वर्गगत ।

दिवंगम–वि० (सं०) स्वर्गगामी ।

दिव–पु० (सं०) स्वर्ग; आकाश; दिन; वन; नीलकंठ पक्षी (?) । **–राज**–पु० इंद्र ।

दिवस–पु० (सं०) दिन, वार, रोज । **–अंध***–पु० दे० 'दिवांध' । **–कर,–नाथ**–पु० सूर्य; मदार । **–क्षय**–पु० सूर्यास्त । **–भर्ता-(र्तृ),–मणि**–पु० सूर्य । **–मुख**–पु० प्रभात, सुवह । **–मुद्रा**–स्त्री० दिनभरकी मजदूरी, एक दिनका पारिश्रमिक । **–विगम**–पु० सायंकाल । **–संजात**–पु० दिनभरका काम । **–स्वप्न**–पु० दे० 'दिवास्वप्न' ।

दिवसांतर–वि० (सं०) जो सिर्फ एक दिनका हो ।

दिवसेश, दिवसेश्वर–पु० (सं०) सूर्य ।

दिवस्पति–पु० (सं०) इंद्र ।

दिवस्पृक्(श्)–पु० (सं०) वामन-रूपधारी विष्णु (जिन्होंने वलिको छलते समय एक पाँवसे स्वर्गको छू दिया था) ।

दिवांध–पु० (सं०) उल्लू । वि० जिसे दिनमें दिखाई न दे ।

दिवांधकी, दिवांधिका–स्त्री० (सं०) छछूंदर ।

दिवा–पु० (सं०) दिन, वार; एक वर्णवृत्त; † दीया, चिराग । **–कर**–पु० सूर्य; मदार; कौआ; सूर्यमुखी नामका फूल । **–कीर्ति**–पु० चांडाल; नाई; उल्लू । **–चर**–पु० चांडाल; एक पक्षी, श्यामा । **–चारी(रिन्)**–वि०, पु० दिनमें संचरण करनेवाला । **–पुष्ट**–पु० सूर्य । **–भीत,–भीति**–पु० उल्लू; रातमें खिलनेवाला एक प्रकारका कमल; चोर । **–मणि**–पु० सूर्य । **–मध्य**–पु० मध्याह्न, दोपहर । **–रात्र**–अ० दिन-रात । **–वसु**–पु० सूर्य । **–शय**–वि० दिनमें सोनेवाला । **–स्वप्न**–पु० दिनको सोना, दिवस-निद्रा; मनोराज्य, हवाई किला । (मु०–**स्वप्न देखना**–हवाई किले बनाना ।)**–स्वाप**–पु० दिवसनिद्रा; उल्लू ।

दिवाटन–पु० (सं०) कौआ ।

दिवातन–वि० (सं०) दिन-संबंधी; एक दिनका ।

दिवान–पु० दे० 'दीवान'; राजाका छोटा भाई; समूह । * स्त्री० मर्यादा–'दिल्ली दल दाबिकै दिवान राखी दुनीमें'–भू० ।

दिवाना*–वि० दे० 'दीवाना' । स० क्रि० दे० 'दिलाना' ।

दिवानी†–स्त्री० दे० 'दीवानी'; पु० वरमामें पाया जानेवाला एक वृक्ष ।

दिवाभिसारिका–स्त्री० (सं०) दिनमें अभिसार करनेवाली नायिका ।

दिवार†–स्त्री० दे० 'दीवार' ।

दिवारी*–स्त्री० दे० 'दीवाली' ।

दिवाल–†स्त्री० दे० 'दीवार' ।

दिवाला–पु० अर्थहीनताकी वह दशा जिसमें कोई व्यक्ति अथवा संस्था अपना ऋण न चुका सके; सर्वथा अभाव हो जाना । मु० **–निकलना**–दिवाला होना । **–निकालना या मारना**–दिवालिया होनेकी सूचना देना ।

दिवालिया–वि० जिसके पास अपना ऋण चुकानेके लिए कुछ न रह गया हो, जिसका दिवाला निकला हो ।

दिवाली–स्त्री० दे० 'दीवाली' ।

दिवि–पु० (सं०) नीलकंठ पक्षी ।

दिविज–पु० (सं०) देवता ।

दिविता–स्त्री० (सं०) प्रभा, दीप्ति ।

दिविषद्(त्)–पु० (सं०) स्वर्गमें रहनेवाला, देवता ।

दिविष्ठ–पु० (सं०) स्वर्गमें स्थित, देवता ।

दिविस्थ–पु० देवता ।

दिवैया–पु० देनेवाला ।

दिवोदास–पु० (सं०) महाभारतमें उल्लिखित काशीके एक राजा जो धन्वंतरिके अवतार माने जाते हैं ।

दिवोद्भवा–स्त्री० (सं०) इलायची ।

दिवोल्का–स्त्री० (सं०) दिनमें गिरनेवाली उल्का ।

दिवौका(कस्)–पु० (सं०) स्वर्गमें निवास करनेवाला; देवता; चातक पक्षी; मधुमक्खी; हिरन; हाथी ।

दिव्य–वि० (सं०) स्वर्ग-संबंधी; स्वर्गीय; आकाशीय; अलौकिक; लोकातीत; दैवोचित; चमकीला, दीप्तियुक्त; अतिसुंदर, भव्य, बढ़िया । पु० आकाशमें होनेवाला उत्पातविशेष; एक परीक्षा जिससे प्राचीन कालमें अपराधीकी सदोषता या निर्दोषताका निर्णय करते थे (इसके दस भेद वर्णित हैं); नायकके तीन भेदोंमेंसे एक–लोकोत्तर नायक, जैसे–राम; यम; शाक्ततंत्रगत तीन प्रकारके भावोंमेंसे एक; यव; हरिचंदन; शपथ; लौंग; जलका एक भेद; धूप रहते होनेवाली वृष्टिसे स्नान; तत्त्ववेत्ता; महामेदा; गुग्गुल; आँवला; ब्राह्मी; बड़ा जीरा; हड़; सफेद दूब । **–कट**–पु० महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन देश । **–कुंड**–पु० कामरूप पीठका एक कुंड । **–क्रिया**–स्त्री० दिव्य परीक्षा लेनेका कार्य । **–गंध**–पु० लौंग; गंधक; बड़ी इलायची । **–गंधा**–स्त्री० बड़ी इलायची; बड़ी चेंच । **–गायन**–पु० गंधर्व । **–चक्षु(स्)**–वि० दिव्य नेत्रों-वाला; सुंदर आँखोंवाला; अंधा । पु० दिव्य दृष्टि; बंदर; चश्मा; एक गंधद्रव्य । **–तेजा(जस्)**–स्त्री० ब्राह्मी बूटी । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० अलौकिक पदार्थोंका द्रष्टा । **–दृष्टि**–स्त्री० सूक्ष्म दृष्टि, आंतरिक दृष्टि । **–दोहद**–पु० अभीष्ट सिद्धिके लिए देवताको समर्पित की जानेवाली वस्तु । **–नदी**–स्त्री० मंदाकिनी । **–नारी**–स्त्री० अप्सरा; देववधू । **–पंचामृत**–पु० पाँच पदार्थों–गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, मधु एवं शर्कराके योगसे तैयार किया हुआ पंचामृत । **–परीक्षा**–स्त्री० अपराधका पता लगानेके लिए ली जानेवाली कोई विकट शारीरिक परीक्षा (प्राचीन भारत); कोई विकट स्थिति जिसमेंसे गुजरकर किसीको अपने धैर्य, बुद्धि आदिकी परीक्षा देनी पड़े (ऑरडियल) । **पुष्प**–पु० करवीर, कनेर । **–पुष्पा**–स्त्री० महाद्रोणा नामका पौधा । **–पुष्पिका**–स्त्री० लाल मदार । **–यमुना**–स्त्री० कामरूप देशकी एक पुराणोक्त नदी । **–रत्न**–पु० चिंतामणि । **–रथ**–पु० देवताओंका विमान । **–रस**–पु० पारा । **–लता**– स्त्री० मूर्वालता । **–वस्त्र**–पु० सूर्यका प्रकाश; एक तरहका फूल, सूर्यमुखी । वि० जिसने सुंदर वस्त्र धारण किया हो । **–वाक्य**–पु० आकाशवाणी । **–सरित्**–स्त्री० मंदाकिनी । **–सार**–पु० साखूका पेड़ । **–स्त्री**–अप्सरा; देववधू ।

दिव्यक–पु० (सं०) सर्पविशेष; एक जंतु ।

दिव्यांगना–स्त्री० (सं०) अप्सरा; देववधू ।

दिव्यांशु–पु० (सं०) सूर्य ।

दिव्या–स्त्री० (सं०) लोकोत्तर गुणोंसे युक्त नायिका; हरीतकी; वंध्या कर्कोटकी; शतावरी; महामेदा; ब्राह्मी; श्वेतदूर्वा; स्थूलजीरक ।

दिव्यादिव्य–पु० (सं०) तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक, वह नायक जिसमें लोकोत्तर गुण भी हों (जैसे–नल आदि) ।

दिव्यादिव्या–स्त्री० (सं०) नायिकाओंका एक भेद, वह नायिका जिसमें लोकोत्तर गुण भी हों (जैसे–दमयंती आदि) ।

दिव्यासन–पु० (सं०) एक आसन (तं०) ।

दिव्यास्त्र–पु० (सं०) देवताओं द्वारा प्रयुक्त होनेवाला अस्त्र; मंत्रशक्तिसे चलाया जानेवाला अस्त्र ।

दिव्येलक–पु० (सं०) साँपका एक भेद ।

दिव्योदक–पु० (सं०) वर्षाका जल ।

दिव्योपपादुक–पु० (सं०) देवता ।

दिव्यौषधि–स्त्री० (सं०) मैनसिल ।

दिशा–स्त्री० (सं०) ओर, तरफ; क्षितिज मंडलके चार–पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर–भागोंमेंसे कोई (विदिशाओं या कोणों और ऊर्ध्व-अधरको मिलाकर इनकी संख्या दस मानी गयी है); दसकी संख्या । **–गज**–पु० दिग्गज । **–चक्षु(स्)**–पु० गरुड़के एक पुत्रका नाम (पु०) । **–जय**–स्त्री० दिग्विजय । **–पाल**–पु० दिक्पाल । **–भ्रम**–पु० दिशा भूल जाना, दिग्भ्रम । **–शूल**–पु० दे० 'दिक्-शूल' । **–सूल***–पु० दे० 'दिक्-शूल' ।

दिशावकाश–पु० (सं०) दो दिशाओंके बीचका भाग ।

दिशेभ–पु० (सं०) दिग्गज ।

दिश्य–वि० (सं०) दिशा-संबंधी; दिशाविशेषमें होनेवाला ।

दिष्ट–पु० (सं०) भाग्य; आदेश; उद्देश्य; दारुहल्दी; काल, समय; वैवस्वत मनुका एक पुत्र । वि० दे० 'उपदिष्ट'; वर्णित; नियत, निश्चित ।

दिष्टांत–पु० (सं०) मृत्यु, मरण ।

दिष्टि–स्त्री० (सं०) भाग्य; सौभाग्य; हर्ष; लंबाईकी एक माप; आदेश; उत्सव; उपदेश ।

दिष्णु–वि० (सं०) देनेवाला, दाता ।

दिसंतर*–पु० देशांतर, विदेश । अ० बहुत दूरतक ।

दिसंबर*–पु० (अं०) अंग्रेजी सालका अंतिम मास ।

दिस*–स्त्री० दे० 'दिशा' ।

दिसना*–अ० क्रि० दे० 'दिखना' ।

दिसा†–स्त्री० दे० 'दिशा'; मलत्याग । **–दाह***–पु० दे० 'दिग्दाह' । **–सूल**–पु० दे० 'दिक्-शूल' ।

दिसावर–पु० परदेश, अन्य देश ।

दिसावरी–वि० बाहरसे लाया या आया हुआ, दूसरी जगहका, बाहरी ।

दिसि*–स्त्री० दे० 'दिशा' । **–दुरद***–पु० दिग्गज । **–नायक,–प,–राज***–पु० दिक्पाल ।

दिसिटि*–स्त्री० दे० 'दृष्टि' ।

दिसैया*–पु० देखनेवाला; दिखानेवाला ।

दिस्टि*–स्त्री० दे० 'दृष्टि' । **–बंध***–पु० 'दृष्टिबंध', जादू ।

दिस्ता–पु० कागजके चौबीस तख्तोंकी गड्डी ।

दिहंद, दिहंदा–वि० (फा०) देनेवाला (इसका प्रयोग यौगिक शब्दों-में प्रायः उत्तरपदके रूपमें होता है) ।

दिहकानियत–स्त्री० दे० 'देहकानियत' ('देह'के साथ) ।

दिहरा†–पु० देवस्थान, देवायतन ।

दिहली–स्त्री० दे० 'दहलीज' ।

दिहात–स्त्री० दे० 'देहात' ।

दिहाती–वि० दे० 'देहाती' । **–पन**–पु० दे० 'देहातीपन' ।

दिहि*–स्त्री० दृष्टि, नजर (बीसल०) ।

दीअट–स्त्री० दे० 'दीवट' ।

दीआ–पु० दे० 'दीया' ।

दीक्षक–पु० (सं०) दीक्षा देनेवाला, गुरु, मंत्रोपदेष्टा ।

दीक्षण–पु० (सं०) दीक्षा देनेकी क्रिया; यज्ञ समाप्त होनेपर उसकी त्रुटियोंकी शांतिके लिए किया जानेवाला यजन; उपनयन ।

दीक्षांत–पु० (सं०) पहले यज्ञमें हुए दोषोंके मार्जनके लिए किया जानेवाला पूरक-यज्ञ; दीक्षाका अंत, विशिष्ट अध्ययनकालकी समाप्ति । **–भाषण**–पु० उपाधि या प्रमाणपत्रादि देनेके समय समुत्तीर्ण स्नातकोंको संबोधन कर दिया गया किसी विद्वान् या सम्मान्य नेताका भाषण ।

दीक्षा–स्त्री० (सं०) याग; उपनयन संस्कार; तंत्रके अनुसार किसी देवताके मंत्रका उपदेश; तंत्रोक्त रीतिसे किसी देवताका मंत्र ग्रहण करनेकी क्रिया; (कोई धार्मिक) कृत्य; नियम । **–गुरु**–पु० मंत्र देनेवाला गुरु । **–पति**–पु० (दीक्षा–यज्ञका रक्षक) सोम ।

दीक्षित–वि० (सं०) जिसे दीक्षा दी गयी हो या जिसने गुरुसे दीक्षा ली हो; जिसने सोम आदि याग किये हों । पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

दीखना–अ० क्रि० दिखाई देना, दृष्टिगत होना ।

दीघी–स्त्री० दे० 'दीर्घिका' ।

दीच्छा*–स्त्री० दे० 'दीक्षा' ।

दीठ–स्त्री० दे० 'दृष्टि'; बुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली निगाह जो किसी सुंदर या बहुमूल्य वस्तुपर डाली जाय–'दूनी ह्वै लागी लगन दियें दिठौना दीठ'–विहारी । **–बंद**–पु०,**–बंदी**–स्त्री० (इंद्रजाल आदिसे) नजर बाँधनेकी क्रिया । **–वंत***–वि० दृष्टियुक्त; समझदार । **मु० –खा जाना**–ऐसे व्यक्ति द्वारा देखा जाना जिसकी दृष्टि अच्छी न हो । **–जलाना**–बुरी दृष्टिका प्रभाव दूर करना । **– पर चढ़ना**–दे० 'नजरपर चढ़ना' ।**– फिरना**–दृष्टिका दूसरी ओर प्रवृत्त होना; कृपा न बनी रहना । **–फेरना**–दूसरी ओर नजर कर लेना; किसीपर कृपादृष्टि न रहने देना । **–बचाना**–देखा-देखीसे बचना । **–बाँधना**–दे० 'नजर बाँधना' । **–बिछाना**–आशापूर्ण दृष्टिसे किसीके आनेकी प्रतीक्षा करना; बड़ी श्रद्धासे आवभगत करना । **–मारना**-आँखसे संकेत करना । **–मारी जाना**–देखनेकी शक्ति नष्ट होना । **–में समाना**–नेत्रोंको सुखद होनेके कारण सदा ध्यानमें बना रहना । **–लगना**–कुदृष्टि पड़ जाना । **–लगाना**–टकटकी लगाकर देखना, ध्यानपूर्वक देखना ।

दीठना*–स० क्रि० देखना–'सो खुसरो मैं आँखों दीठा' ।

दीठि*–स्त्री० दे० 'दीठ' ।

दीद–वि० (फा०) देखा हुआ ।

दीदा–पु० (फा०) आँख, दृष्टि, निगाह; धृष्टता (स्त्रि०) । **–धोई**–स्त्री० निर्लज्ज स्त्री । **मु० –लगना**–काममें तबीयत लगना ।

दीदार–पु० (फा०) मुँह, चेहरा; नज्जारा; दर्शन, साक्षात्कार ।

दीदी–स्त्री० बड़ी बहनको संबोधित करनेका शब्द; बड़ी बहिन ।

दीधिति–स्त्री० (सं०) किरण; उँगली ।

दीन–वि० (सं०) दरिद्र, निःस्व; विपन्न, दुर्दशाग्रस्त; दयनीय दशा-में पड़ा हुआ; दुःखपूर्ण, करुण; विकलतासे भरा हुआ । पु० तगरपुष्प । **–दयाल**–वि०, पु० (हिं०) दे० 'दीनदयालु' । **–दयालु**–वि० दीनोंपर दया करनेवाला । पु० परमेश्वर । **–बंधु**–वि० दीनोंकी सहायता, रक्षा करनेवाला । पु० परमेश्वर । **–लोचन**–पु० बिल्ली । **–वत्सल**–वि० दीनदयालु ।

दीन–पु० (अ०) धर्म, मजहब, पंथ । **–इलाही**–पु० अकबरका चलाया हुआ एक मजहब जो कुछ ही समयतक चलकर रह गया । **–ता**–स्त्री० (सं०) अर्थहीनता, दरिद्रता; विपन्नता, दुरवस्था । **–ताई***–स्त्री० दीनता । **–दार**–वि० अपने धर्ममें आस्था रखने-वाला, धर्मनिष्ठ । **–दुनिया**–स्त्री० इहलोक तथा परलोक । **–दुनी**–स्त्री० लोक-परलोक ।

दीनक–वि० (सं०) दुःखित, दीन ।

दीना–स्त्री० (सं०) मूषिका, चुहिया ।

दीनानाथ–पु० दीनोंके नाथ–स्वामी, रक्षक, सहायक, परमेश्वरका एक नाम ।

दीनार–पु० (सं०) सोनेका भूषण; निष्कका परिमाण; सोनेका एक सिक्का जो प्राचीन समयमें एशिया और यूरोपमें चलता था (देश और कालभेदसे इसकी तौल और मूल्यमें भिन्नता होती थी); सोनेकी मुद्रा, अशरफी ।

दीपंकर–पु० (सं०) बुद्धका एक अवतार ।

दीप–पु० (सं०) दीया, चिराग; किसी कुल या समुदायका श्रेष्ठ

पुरुष, शिरोमणि; * द्वीप। **–कलिका,–कली**–स्त्री० दीपककी लौ। **–काल**–पु० दीपक जलानेका समय, संध्या। **–किट्ट**–पु० कज्जल, काजल। **–कूपी,–खोरी**–स्त्री० दीपककी बत्ती। **–दान**–पु० आराध्य देवताके सामने दीप जलाना। **–दानी**–स्त्री० (हिं०) घी, बत्ती आदि दीपका सामान रखनेकी डिबिया। **–ध्वज**–पु० कज्जल; दीवट। **–पादप**–पु० दीपाधार, दीवट। **–पुष्प**–पु० चंपाका वृक्ष। **–माला,–मालिका**–स्त्री० जलते हुए दीपकोंकी पंक्ति या श्रेणी; दीवालीका त्योहार। **–माली**–स्त्री० दीवाली। **–वर्ति**–स्त्री० दीयेकी बत्ती। **–वृक्ष**–पु० दे० 'दीपपादप'। **–शत्रु**–पु० पतंग, फतिंगा। **–शलभ**–पु० जुगनू–'दीप-शलभने जिसे मिचौनी खेल-खेलकर हुलसाया'–वीणा (पंत)। **–शिखा**–स्त्री० दे० 'दीपकलिका'; कज्जल, काजल। **–श्रृंखला**–स्त्री० दीयोंकी कतार। **–स्तंभ**–पु० दीपाधार, दीवट; (लाइट हाउस) दे० 'प्रकाश-स्तंभ'।

दीपक–पु० (सं०) दीया; एक मात्रिक छंद; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ वर्ण्य-अवर्ण्य या उपमेय और उपमानका एक ही धर्म कहा जाय अथवा जहाँ क्रियापदोंकी आवृत्ति हो, या जहाँ एक ही कर्ताके साथ बहुतसे क्रियापदोंकी आवृत्ति हो (दे० कारकदीपक)। एक राग; एक ताल; अजवायन; कुंकुम; बाज पक्षी; मोरकी शिखा। वि० दीप्त करनेवाला; आलोकित करनेवाला; अग्निवर्द्धक; उत्तेजक। **–माला**–स्त्री० दीपकालंकारका एक भेद जिसमें एकावली तथा दीपकका मेल होता है; एक वर्णवृत्त। **–सुत**–पु० कज्जल, काजल।

दीपकावृत्ति–स्त्री० (सं०) दीपक अलंकारका एक भेद जिसमें एक ही क्रियापद भिन्न-भिन्न अर्थोंमें कई बार आवे या एक ही अर्थके विभिन्न क्रियापदोंका प्रयोग हो; पनसाखा।

दीपत, दीपति*–स्त्री० चमक; शोभा; प्रताप।

दीपन–पु० (सं०) दीप्त करना, प्रज्वलित करना; आलोकित करना; अग्निवर्द्धन; उत्तेजित करना; तगरकी जड़; कुंकुम; मयूरशिखा नामकी ओषधि; कासमर्द, कसौंदा; प्याज; ग्राह्यमंत्रका एक संस्कार। वि० उत्तेजित करनेवाला; अग्निवर्द्धक। **–गण**–पु० चीता, धनिया आदि अग्निवर्द्धक ओषधियोंका समुदाय।

दीपना*–अ० क्रि० दीप्त होना; चमकना। स० क्रि० चमकाना; प्रदीप्त करना।

दीपनी–स्त्री० (सं०) मेथी; अजवायन; पाठा।

दीपनीय–वि० (सं०) दीप्त करने योग्य; उत्तेजित करने योग्य। पु० अजवायन; एक ओषधिवर्ग जिसमें पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चीता और नागर है।

दीपांकुर–पु० (सं०) दीपककी लौ।

दीपाग्नि–स्त्री० (सं०) दीयेकी आँच।

दीपाधार–पु० (सं०) दीवट।

दीपान्विता–स्त्री० (सं०) कार्त्तिक मासकी अमावास्या जिस दिन दीवाली पड़ती है।

दीपाराधन–पु० (सं०) आरती उतारना।

दीपालि, दीपाली–स्त्री० (सं०) दीपमाला, दीवाली।

दीपावती–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

दीपावलि, दीपावली–स्त्री० (सं०) दे० 'दीवाली'।

दीपिका–स्त्री० (सं०) छोटा दीपक; एक रागिनी; चाँदनी। वि० स्त्री० (समासांतमें) अर्थ स्पष्ट करनेवाली।

दीपित–वि० (सं०) दीप्त, प्रज्वलित, प्रभासित; उत्तेजित।

दीपी(पिन्)–वि० (सं०) जलता हुआ, चमकता हुआ।

दीपोत्सव–पु० (सं०) दीवाली।

दीप्त–वि० (सं०) दे० 'दीपित'। पु० सुवर्ण, सोना; सिंह; हींग; नीबू; नाकका एक रोग। **–किरण**–पु० सूर्य; मदार। **–कीर्ति**–पु० कार्त्तिकेय। वि० विमल यशवाला। **–जिह्वा**–स्त्री० शृगाली, सियारिन; (ला०) झगड़ालू, कर्कशा स्त्री। **–पिंगल**–पु० सिंह। **–मूर्ति**–पु० विष्णु। वि० जिसका शरीर प्रभायुक्त हो। **–रस**–पु० केचुआ। **–रोमा(मन्)**–पु० एक विश्वदेव। **–लोचन**–पु० विडाल, बिलाव। **–लौह**–पु० काँसा। **–वर्ण,–शक्ति**–पु० कार्त्तिकेय। वि० जिसके शरीरकी प्रभा तपाये हुए सुवर्णकी-सी हो।

दीप्तक–पु० (सं०) सुवर्ण, सोना; नाकका एक रोग।

दीप्तांग–पु० (सं०) मोर। वि० प्रभायुक्त शरीरवाला।

दीप्तांशु–पु० (सं०) सूर्य; मदार।

दीप्ता–स्त्री० (सं०) जलपिप्पली। वि० स्त्री० द्युतिमती, प्रभायुक्ता।

दीप्ताक्ष–पु० (सं०) विडाल, बिलाव। वि० जिसकी आँखें चमकती हों।

दीप्ताग्नि–पु० (सं०) अगस्त्य मुनि। स्त्री० प्रज्वलित अग्नि। वि० जिसकी जठराग्नि तीव्र हो।

दीप्ति–स्त्री० (सं०) प्रभा, द्युति, चमक; कांति, छटा; बाणका विद्युद्गतिसे चलना; (ज्ञानकी) अभिव्यक्ति, ज्ञानका प्रकाश (यो०); लाक्षा; लाख; काँसा। पु० एक विश्वदेव। **–प्रसारण,–विकिरण**–पु० (रैडियेशन ऑफ लाइट) प्रकाशकी किरणें चारों ओर प्रसारित करना, फैलाना।

दीप्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) द्युतियुक्त, प्रभायुक्त, सप्रभ; कांतिमान्, शोभन। पु० कृष्णके एक पुत्र।

दीप्तोद–पु० एक प्राचीन तीर्थ जहाँ भृगुने तपस्या की थी।

दीप्तोपल–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि।

दीप्य–वि० (सं०) जिसे प्रज्वलित करना हो; प्रज्वलित करने योग्य; जो जठराग्निको तीव्र करे, अग्निवर्द्धक। पु० अजमोदा; अजवायन; मयूरशिखा; रुद्रजटा।

दीप्यक–पु० (सं०) दे० 'दीप्य'।

दीप्यमान–वि० (सं०) प्रकाशमान, चमकता हुआ।

दीप्या–स्त्री० (सं०) पिंडखजूर।

दीप्र–वि० (सं०) दीप्तिमान्, चमकता हुआ। पु० अग्नि।

दीमक–स्त्री० एक तरहकी सफेद चींटी जो कागज, लकड़ी आदिके लिए बहुत हानिकर है। मु० **–का खाया हुआ**–जो गड्ढेदार होनेसे अभव्य दिखाई देता हो।

दीयट–स्त्री० दे० 'दीवट'।

दीयमान–वि० (सं०) जो दिया जानेको हो, जो दिया जाता हो।

दीया–पु० तेल या घीके योगसे जलनेवाली बत्तीका आधार; मिट्टीका छोटा छिछला पात्र जिसमें बत्ती जलाते हैं। **–बत्ती**–स्त्री० दीया जलानेका कार्य। **–सलाई**–स्त्री० आग जलानेके कामकी लकड़ीकी छोटी सींक जिसके सिरेपर ऐसा मसाला लगा रहता है जो रगड़ खाते ही जल उठता है; वह बक्स जिसमें ये तीलियाँ रखी रहती हैं। मु० **–जलनेके समय**–संध्या समय। **–ठंडा करना**–दीपकको बुझा देना। **–ठंडा होना**–दीपकका बुझना। **–दिखाना**–(किसीके) सामने आलोक करना। **–बत्तीका समय**–दीया जलानेका समय, सायंकाल। **–लेकर ढूँढ़ना**–बड़े परिश्रमसे खोजना।

दीरघ*–वि० दे० 'दीर्घ'।

दीर्घ–वि० (सं०) (देश और काल दोनोंकी दृष्टिसे) बड़ा; ऊँचा; आयत; गहरा (जैसे श्वास); विस्तृत; लंबा; गुरु (मात्रा)। पु० ऊँट; गुरु मात्रा (आ, ई, ऊ आदि); पाँचवीं, छठी, सातवीं और नवीं राशियाँ; एक तरहका सरपत। **–कंटक**–पु० बबूलका पेड़। **–कंठ,–कंठक**–पु०, वि० दे० 'दीर्घकंधर'। **–कंद**–पु० मूली। **–कंदिका**–स्त्री० मुसली, तालमूली। **–कंधर**–पु० बगुला। वि० लंबी गरदनवाला। **–कणा**–स्त्री० सफेद जीरा। **–कांड**–पु० पातालगरुड़ी लता, तिक्तांगा; गुंडतृण। **–कांडा**–स्त्री० पातालगरुड़ी लता। **–काय**–वि० लंबा तगडा, डीलडौलवाला। **–काष्ठ**–पु० शहतीर। **–कील,–कीलक**–पु० अंकोलका पेड़। **–कुल्या**–स्त्री० गजपिप्पली। **–कूरक**–पु० एक तरहका चावल, राजान्न। **–केश**–पु० भालू; एक देश जो कूर्म विभागके उत्तर-पश्चिममें है (बृ० सं०)। वि० जिसके बाल लंबे हों। **–कोशा,–कोशिका,–कोशी,–कोषिका**–स्त्री० झिनायिका, घोंघा (?)। **–गति**–पु० ऊँट (जिसके डग बहुत लंबे होते हैं)। **–ग्रंथि, ग्रंथिका**–स्त्री० गजपिप्पली। **–ग्रीव**–पु० ऊँट; नीलक्रौंच पक्षी, सारस। वि० लंबी गरदनवाला। **–घाटिक**–पु० ऊँट। वि० लंबी गरदनवाला। **–च्छद**–पु० ईख, गन्ना। वि० बड़े-बड़े पत्तोंवाला। **–जंगल**–पु० एक तरहकी मछली। **–जंघ**–पु०

वक, बगला; ऊँट। वि० लंबी जाँघवाला। **–जिह्व**–पु० सर्प; दानवोंका एक भेद; राक्षसोंका एक भेद। वि० जिसकी जीभ बड़ी हो। **–जिह्वा**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी मातृकाओंमेंसे एक; एक राक्षसी जो विरोचनकी पुत्री थी और जिसे इंद्रने मारा था। **–जिह्वी(ह्विन्)**–पु० कुत्ता। **–जीवी(विन्)**–वि० जो बहुत दिनोंतक जीये, चिरजीवी। **–तपा (पस्)**–वि० जिसने दीर्घकालतक तपस्या की हो। पु० हरिवंशके अनुसार एक आयुवंशीय राजा; अहल्यापति गौतम। **–तमा(मस्)**–पु० उतथ्यके पुत्र एक ऋषि जो गुरुके शापसे अंधे हो गये थे। **–तरु**–पु० ताड़का पेड़; लंबा पेड़। **–तिमिषा**–स्त्री० ककड़ी। **–तुंडा,–तुंडी**–स्त्री० छछूंदर। **–दंड,–दंडक**–पु० रेंड़; ताड़। **–दंडी**–स्त्री० गोरक्षी। **–दर्शिता**–स्त्री० दूरतककी वात सोचनेका गुण या शक्ति, दूरदर्शिता। **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० भालू; गीध। वि० जो बहुत दूरतककी वात सोचे या सोच सके, दूरदर्शी। **–दृष्टि**–पु० गीध; स्त्री० (लाँग साइट या हाइपरमेट्रोपिया) दृष्टि दोष जिसके कारण निकटकी वस्तु स्पष्ट नहीं दीखती बल्कि दूरकी वस्तु ही स्पष्ट दीख पाती है। वि० जो दूरकी चीज भी देख सके, जिसकी दृष्टि दूरतक जाय; दूरदर्शी। **–द्रु**–पु० दे० 'दीर्घ-तरु'। **–द्रुम**–पु० सेमलका पेड़। **–नाद**–पु० शंख; मुर्गा; कुत्ता। वि० जिसकी आवाज दूरतक फैल जाय या गूंज उठे; जिससे जोरकी आवाज निकले। **–नाल**–पु० गुंडतृण; यावनाल; दे० 'दीर्घरोहिषक'। **–निद्रा**–स्त्री० वहुकालव्यापी निद्रा; चिरशयन, मृत्यु। **–निःश्वास**–पु० शोक या दुःखके कारण ली जानेवाली लंबी साँस। **–पक्ष**–पु० कलिंग पक्षी। वि० वड़े परोंवाला। **–पत्र**–पु० ताड़का पेड़; कुशका एक भेद; लाल प्याज; विष्णुकंद; कुचला; रेंड़; लाल लहसुन; वेंत; करीरका पेड़; जलमहुआ। **–पत्रा**–स्त्री० चित्रपर्णी; कठजामुन; केतकी; गंधपत्रा। **–पत्रिका**–स्त्री० श्वेतवचा; शालपर्णी; घीकुआर। **–पत्री**–स्त्री० पलाशी लता। **–पर्ण**–वि० वड़े पत्तोंवाला। **–पर्णी**–स्त्री० पृश्निपर्णी। **–पर्वा(र्वन्)**–पु० ईख आदि। **–पल्लव**–पु० सनका पौधा। वि० बड़े पत्तोंवाला। **–पवन**–पु० हाथी। **–पाद,–पाद्**–पु० कंक पक्षी, सारस। वि० जिसकी टाँगें वड़ी हों। **–पादप** पु० ताड़का पेड़; सुपारीका पेड़। **–पृष्ठ**– पु० साँप। **–पृष्ठी**–स्त्री० सर्पिणी। **–प्रज्ञ**–वि० दूरदर्शी। **–फल**–पु० आरग्वध, अमलतास। **–फलक**–पु० अगस्त्यका पेड़। **–फला, –फलिका**–स्त्री० कपिलद्राक्षा; जतुका। **–बाला**–स्त्री० चमरी, सुरही गाय। **–बाहु**–पु० शिवका एक अनुचर; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। वि० जिसकी भुजा लंबी हो। **–मारुत**–पु० हाथी। **–मुख**–पु० हाथी; शिवका एक अनुचर। वि० जिसका मुंह वड़ा हो। **–मुखी**–स्त्री० छछूंदरी। **–मूल**–पु० मोरटलता; लामज्जक। **–मूली**–स्त्री० दुरालभा। **–यज्ञ**–वि० जिसने दीर्घकालतक यज्ञ किया हो। **–रंगा**–स्त्री० हरिद्रा। **–रत**–पु० कुत्ता। **–रद**–पु० शूकर। वि० जिसके दाँत बड़े हों। **–रसन**–पु० साँप। **–रागा**–स्त्री० हल्दी। **–रोमा(मन्)**–पु० शिवका एक अनुचर; भालू। **–रोहिषक**–पु० एक सुगंधित तृण। **–वंश**–पु० नरकट। **–वक्त्र**–पु० हाथी। वि० जिसका मुंह लंबा हो। **–वर्चिका**–स्त्री० मगर। **–वल्ली**–स्त्री० पलाशी लता; पातालगरुडी लता; महेंद्रवारुणी। **–वृंत,–वृंतक**–पु० श्योनाक। **–वृंता**–स्त्री० इंद्रचिर्भटी लता। **–वृंतिका**–स्त्री० एलापर्णी। **–वृत्ताकार**–वि० (इलिप्टिकल) लंबोतरे या दबाये हुए, खिंचे हुए वृत्तकी तरह जिसका आकार हो, अंडाकार। **–शर**–पु० यावनाल। **–शाख**–पु० सनका पेड़; साखूका पेड़। **–शाखिका**–स्त्री० नीलाम्ली नामकी एक झाड़ी। **–शिंबिक**–पु० क्षव, राई। **–सत्र**–पु० बहुत दिनोंतक चलनेवाला यज्ञ; ऐसा यज्ञ करनेवाला व्यक्ति; जीवनपर्यंत किया जानेवाला अग्निहोत्र; एक तीर्थ। **–सुरत**–पु० कुत्ता। **–सूक्ष्म**–पु० एक प्रकारका प्राणायाम। **–सूत्र**–वि० जिसमें लंबे-लंबे तंतु हों; दे० 'दीर्घसूत्री'। **–सूत्रता**–स्त्री० प्रत्येक कार्यको देरमें करनेकी आदत। स्त्री० (रेड टेपिज्म) सार्वजनिक कार्योंके संबंधमें सरकारी कर्मचारियों द्वारा अत्यधिक औपचारिकताके कारण की जानेवाली देर, लालफीतेकी काररवाई, फीताशाही। **–सूत्री(त्रिन्)**–वि० जो प्रत्येक कार्यको देरमें करे, जो आरंभ किये हुए कार्यमें उचितसे अधिक समय लगाये। **–स्कंध**–पु० ताड़का पेड़। **–स्वर**–पु० दो मात्राओंवाला स्वर।

दीर्घा–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी, पिठवन; लंवा तालाव; लंवी नाव; (गैलरी) भवनके भीतर (दर्शकोंके) वैठनेके लिए वना हुआ लंवा-सा ऊँचा स्थान।

दीर्घाकार–वि० (सं०) वड़े आकारका।

दीर्घाध्वग–पु० (सं०) दूत, हरकारा।

दीर्घायु(स्)–पु० (सं०) कौआ; सेमरका पेड़; मार्कंडेय ऋषि। वि० दीर्घजीवी, लंबी आयुवाला।

दीर्घायुध–पु० (सं०) भाला; सूअर; साही। वि० जिसके पास वड़ा अस्त्र हो।

दीर्घायुष्य–पु०, वि० (सं०) दे० 'दीर्घायु'।

दीर्घालर्क–पु० (सं०) श्वेत मंदारक।

दीर्घावकाश–पु० (वैकेशन) न्यायालयों या विद्यालयोंके दो सत्रोंके वीचकी लंवी छुट्टी।

दीर्घास्य–पु० (सं०) हाथी; शिवका एक अनुचर। वि० जिसका मुँह वड़ा हो।

दीर्घिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका जलाशय, वापी (जलाशयोत्सर्गतत्त्वके अनुसार दीर्घिका ३०० धनुष् लंबी होती है); जलाशय; एक प्रकारकी वड़ी नाव।

दीर्घेर्वारु–पु० (सं०) एक तरहकी ककड़ी।

दीर्ण–वि० (सं०) विदारित, फाड़ा हुआ; फटा हुआ; डराया हुआ; डरा हुआ।

दीवँका–स्त्री० दे० 'दीमक'।

दीवट–स्त्री० दीपक रखनेका लकड़ी, लोहे पीतल आदिका वना आधार।

दीवा*–पु० दे० 'दीया'।

दीवान–पु० (फा०) शाही दरवार या अदालत, आस्थान-मंडप; राजा या वादशाहकी वैठक; प्रधान मंत्री; पुलिस सिपाहियोंका उपनायक जो दारोगासे छोटा होता है, हेडकांस्टेविल; थानेका मुंशी जिसके जिम्मे लिखापढ़ीका काम होता है; वह पुस्तक जिसमें गजलें संगृहीत हों। **–आम,–आलम**–पु० वादशाह या राजाका वह दरवार जिसमें सर्वसाधारण प्रवेश पा सकें। **–ख़ाना**–पु० वैटक; वाहरी लोगोंसे मुलाकात करनेकी जगह। **–ख़ालसा**–पु० वह राजकर्मचारी जिसके पास वादशाह या राजाकी मुहर हो। **–ख़ास**–पु० वादशाह या राजाका वह दरवार जिसमें गिने-चुने लोग सम्मिलित हों।

दीवानगी–स्त्री० (फा०) दे० 'दीवानापन'।

दीवाना–वि० (फा०) पागल, विक्षिप्त, सनकी। **–पन**–पु० दीवाना होनेका भाव, पागलपन, सनक।

दीवानी–स्त्री० (फा०) वह अदालत जिसमें रुपये और जायदादके मुकदमोंकी सुनवाई होती है; दीवानका पद। वि० रुपये और जायदाद-संवंधी (मुकदमा)।

दीवार–स्त्री० (फा०) मिट्टी, ईंट आदिका वनाया हुआ परदा या घेरा, भीत। **–गीर**–स्त्री० दीवारमें लगाया हुआ दीया रखनेका आधार; दीवारमें लगानेका लैंप। **–गीरी**–स्त्री० दीवारमें लगानेका एक तरहका छपा कपड़ा। **–चीन**–स्त्री० दे० 'चीनकी दीवार'।

दीवाल–स्त्री० (फा०) दे० 'दीवार'।

दीवाली–स्त्री० कार्त्तिककी अमावास्याको पड़नेवाला हिंदुओंका एक त्योहार जिसमें दीपक जलाये जाते हैं और लक्ष्मीका पूजन होता है; खुशी मनानेकी घड़ी, आनंदोत्सव (ला०)।

दीवि–पु० (सं०) दे० 'दिवि'।

दीसना*–अ० क्रि० दिखाई देना, दृष्टिगत होना।

दीह*–वि० दीर्घ; लंवा; वड़ा।

दुंडुक–वि० (सं०) वेईमान; कुटिल; छली।

दुंडुभ–पु० (सं०) एक तरहका निर्विष सर्प।

दुंद*–पु० दो व्यक्तियोंका युद्ध या कलह; ऊधम, उत्पात; युगल,

जोड़ा; नगाड़ा, डंका। अ० ठक-ठक।

दुंदभ*–पु० जन्म-मरणादिका क्लेश।

दुंदम–पु० (सं०) एक तरहका नगाड़ा।

दुंदु–पु० (सं०) एक तरहका नगाड़ा; कृष्णके पिता वसुदेव;* जन्म-मरण आदि कष्ट।

दुंदुभ–पु० (सं०) डंका, दुंदुभि; पानीमें रहनेवाला साँप, डोंड़हा; शिव।

दुंदुभि–स्त्री० (सं०) डंका, नगाड़ा, धौंसा। पु० वरुण; एक दैत्य; एक राक्षस; एक विष; पासा; विष्णु। **–स्वन–**पु० नगाड़ेकी आवाज; सुश्रुतके अनुसार एक तरहकी विष-चिकित्सा; प्रेतादिकी बाधा दूर करनेका एक मंत्र।

दुंदुभिक–पु० (सं०) एक विषला कीड़ा।

दुंदुभी–स्त्री० नगाड़ा; (सं०) एक गंधर्वी; पासा फेंकनेका एक ढंग।

दुंदुभ्याघात–पु० (सं०) नगाड़ा बजानेवाला।

दुंदुमा–स्त्री० (सं०) नगाड़ेकी ध्वनि।

दुंदुमार–पु० (सं०) दे० 'धुंधुमार'; एक तरहका लाल कीड़ा; विडाल; मकानसे निकलनेवाला धुआँ।

दुंदुर*–पु० चूहा–'दुंदुर राजा टीका वैठे'–कवीर।

दुंदुह*– पु० दे० 'डुंडुभ', पानीका साँप।

दुंवक–पु० (सं०) एक प्रकारका मेढ़ा, दुंवा।

दुंवा–पु० एक प्रकारका मेढ़ा जिसकी पूँछ सिरेपर गोल, मोटी और चौड़ी होती है।

दुंवाल, दुंवाला–पु० दुम, पूँछ; नोक; पतवार।

दुंवुर–पु० गूलरका पेड़।

दुःकुंत*–पु० दे० 'दुष्यंत'।

दुःख–पु० (सं०) कष्ट, क्लेश, तकलीफ। **–कर–**वि० दुःख पहुँचानेवाला, कष्टप्रद। **–ग्राम–**पु० संसार; दुःखोंका समूह, अनेक दुःख। **–छिन्न,–छेद्य–**वि० जो कठिनतासे काटा जा सके; कठिनतासे काटा हुआ, कठिन; कष्टग्रस्त; सख्त। **–त्रय–**पु० आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक–ये तीन प्रकारके दुःख। **–द–**वि० दुःख पहुँचानेवाला, क्लेशकर। **–दग्ध–**वि० जो वहुत दुःखमें हो, भीषण कष्टमें पड़ा हुआ। **–दाता(तृ)–**पु० वह व्यक्ति जो कष्ट पहुँचाये। **–दात्री–**स्त्री० कष्ट पहुँचानेवाली स्त्री। **–दायक,–दायी(यिन्)–**वि० दुःख देनेवाला; जिससे कष्ट पहुँचे।**–दोह्या–**स्त्री० गाय, जो वड़ी कठिनाईसे दुही जा सके। **–प्रद–**वि० दे० 'दुःखद'। **–प्राय,–वहुल–**वि० जिसमें दुःखका आधिक्य हो, दुःखपूर्ण, कष्टसंकुल। **–लभ्य–**वि० दुर्लभ; दुष्प्राप्य। **–लोक–**पु० संसार (जहाँ दुःखोंकी ही अधिकता है)। **–शील–**वि० जिसे दुःखके अनुभवका अभ्यास हो। **–सागर–**पु० दुःखका समुद्र, संसार। **–साध्य–**वि० दे० 'दुःसाध्य'। मु०**–उठाना–**तकलीफ सहना। **–देना–**कष्ट पहुँचाना। **–पहुँचना–**कष्ट होना। **–पाना–**तकलीफ सहना, झेलना। **–बँटाना–**विपत्तिमें साथ देना, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार द्वारा दुःख हलका करना। **–मानना–**खिन्न होना, दुःखी होना।

दुःखमय–वि० (सं०) दुःखोंसे भरा हुआ, दुःखपूर्ण।

दुखांत–वि० (सं०) जिसका अंत दुःखमय हो; जिसका पर्यवसान दुःखमें हो। पु० वह नाटक जिसकी समाप्ति दुःखमयी घटनासे हो; दुःखका अंत या नाश।

दुःखातीत–वि० (सं०) कष्टसे मुक्त।

दुःखान्वित–वि० (सं०) दे० 'दुःखार्त'।

दुःखायतन–पु० (सं०) संसार, जगत्।

दुःखार्त–वि० (सं०) दुःखी, कष्टमें पड़ा हुआ।

दुःखित–वि० (सं०) जिसे कष्ट हो, पीड़ित; जिसे दुःख पहुँचा हो, खिन्न।

दुःखिनी–वि० स्त्री० (सं०) (वह स्त्री) जिसपर विपत्ति पड़ी हो, दुःखमें पड़ी हुई।

दुःखी(खिन्)–वि० (सं०) जिसे दुःख हो; जो कष्टमें हो, दुःखान्वित।

दुःशकुन–पु० (सं०) बुरा शकुन; अनिष्ट फलका सूचक लक्षण।

दुःशला–स्त्री० (सं०) धृतराष्ट्रकी एकमात्र पुत्री जो जयद्रथको व्याही थी।

दुःशासन–पु० (सं०) बुरा शासन; दुर्योधनका छोटा भाई जिसने भरी सभामें द्रौपदीको विवस्त्र करनेका प्रयत्न किया था। वि० जिसपर शासन करना कठिन हो।

दुःशील–वि० (सं०) जो सुशील न हो, वुरे स्वभावका; दुर्विनीत, उद्धत।

दुःशोध–वि० (सं०) जिसका शोधन, प्रतीकार सुगम न हो।

दुःश्रव–पु० (सं०) काव्यमें एक दोष, श्रुति-कटु दोष। वि० श्रुतिकटु, कर्णकटु, सुननेमें अप्रिय।

दुःश्रेय–पु० (सं०) अपयश, वदनामी 'रामको वन भेजनेका दुःश्रेय कैकेयीको है'।

दुःषम–वि० (सं०) निंद्य।

दुःषेध–वि० (सं०) जिसका निषेध करना कठिन हो, जिसका कठिनतासे निषेध किया जा सके।

दुःसंग–पु० (सं०) वुरा साथ, कुसंगति।

दुःसंधान–पु० (सं०) आचार्य केशवके मतानुसार एक रस।

दुःसह–वि० (सं०) जिसे सहना कठिन हो, जो सहनशक्तिसे वाहर हो, असह्य।

दुःसहा–स्त्री० (सं०) नागदमनी।

दुःसाध–वि० (सं०) दे० 'दुःसाध्य'।

दुःसाधी(धिन्)–पु० (सं०) द्वारपाल।

दुःसाध्य–वि० (सं०) जो कठिनतासे सिद्ध किया जा सके; जिसका करना कठिन हो, दुष्कर; जिसका प्रतीकार कठिन हो, असाध्य।

दुःसाहस–पु० (सं०) असंभव या दुष्कर कार्यकी सिद्धिके लिए किया गया साहस; ऐसा साहस जिससे कुछ भी लाभ न हो; हानिकर या अनुचित साहस; धृष्टता।

दुःसाहसिक–वि० (सं०) (कार्य) जिसके लिए साहस करना ठीक न हो; दे० 'दुःसाहसी'।

दुःसाहसी(सिन्)–वि० (सं०) व्यर्थका साहस करनेवाला, अनुचित साहस करनेवाला।

दुःस्थ–वि० (सं०) जिसकी अवस्था अच्छी न हो, दुर्गत; निर्धन; मूर्ख।

दुःस्पर्श–पु० (सं०) करंज; केवाँच; दुरालभा। वि० जिसे छूना कठिन हो।

दुःस्पर्शा–स्त्री० (सं०) केवाँच; आकाशवल्ली; कंटकारी; दुरालभा।

दुःस्फोट–पु० (सं०) एक तरहका शस्त्र।

दुःस्वप्न–पु० (सं०) बुरा स्वप्न, डरावना स्वप्न; बुरे फलवाला स्वप्न।

दुःस्वभाव–वि० (सं०) बुरे स्वभावका, खोटे स्वभावका, दुष्ट, नीच, कुटिल। पु० वुरा स्वभाव, दुष्ट प्रकृति।

दु–'दो'का संक्षिप्त रूप जो समस्त पदोंमें पूर्वपदके रूपमें प्रयुक्त होता है। **–अन्नी–**स्त्री० दो आनेका सिक्का जो पहले चलता था। **–आव,–आबा–**पु० दो नदियोंके मध्यका भूखंड। **–ई–**स्त्री० दे० क्रममें। **–कूलिनी*–**स्त्री० जिसके दो किनारे हों, नदी। **–खंडा–**वि० दो खंडोंवाला (मकान)। **–गना–**वि० दे० 'द्विगुण'। **–गाड़ा–**पु० दोनाली बंदूक। **–गाना–**पु० दे० 'दोगाना'। **–गुण,*–गुन,–गुना,–**वि० दे० 'द्विगुण'। **–घड़िया –**वि० दो घड़ीका; दो घड़ीके हिसाबसे निकाला हुआ। **–०मुहूर्त –**पु० दो-दो घड़ीके हिसाबसे निकाला हुआ मुहुर्त। **–घरी*–**स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त। **–चंद–**वि० दुगना। **–चित*–**वि० जिसका मन किसी एक बातपर जमता न हो, संशय या दुविधामें पड़ा हुआ, अस्थिरचित्त; अनमना, चिंताग्रस्त, फिक्रमंद। **–चितई,–चिताई*–**स्त्री० एक बातपर मन न जमना, द्विविधा; संदेह; चिंता। **–चित्ता–**वि० दे० 'दुचित'। **–ज*–**पु० दे० 'द्विज'। **–०पति*–**पु० दे० 'द्विजपति'। **–०राज*–**पु० दे० 'द्विजराज'। **–जन्मा*–**पु० दे० 'द्विजन्मा'। **–जाति*–**पु०, स्त्री० दे० 'द्विजाति'। **–जीह*–**पु० दे० 'द्विजिह्व'। **–जानू*–**अ० दो घुटनोंके बल। **–टूक*–**वि० दो टुकड़ों या खंडोंमें विभक्त,

जिसके दो टुकड़े कर दिये गये हों; स्पष्ट शब्दोंमें कहा हुआ या दिया हुआ (कथन, उत्तर)। **–तरफा,–तर्फा**–वि० दोनों ओरका; जो दोनों तरफ हो; दुरंगा। **–तारा**–पु० सितारकी तरहका एक बाजा जिसमें दो तार लगे रहते हैं। **–दल**–पु० दे० 'द्विदल'; एक पहाड़ी पौधा। **–दामी**–स्त्री० एक प्रकारका सूती कपड़ा जो पहले मालवामें बहुत अधिक बनता था। **–दिला***–वि० दे० 'दुचित'। **–धारा**–वि० दोनों ओर धारवाला। पु० एक प्रकारकी तलवार जिसमें दोनों ओर धार रहती है। (स्त्री० 'दुधारी'।) **–नाली**–वि० स्त्री० जिसमें दो नल हों, दो नलोंवाली (बंदूक)। **–पटा**–पु० दे० 'दुपट्टा'। **–पटी***–स्त्री० छोटा दुपट्टा। **पट्टा**–पु० ओढ़नेकी चादर, उत्तरीय। **–पट्टी***–स्त्री० छोटा दुपट्टा। **–पद**–पु० दे० 'द्विपद'। **–पर्दी**–स्त्री० एक तरहकी मिर्जई जिसमें दोनों ओर पर्दे लगे रहते हैं, बगलबंदी। **–पलिया**–वि० स्त्री० दो पल्लोंवाली। स्त्री० एक तरहकी टोपी। **–पहर**–स्त्री० दे० 'दोपहर'। **–पहरिया**–स्त्री० एक छोटा पौधा जिसमें लाल-लाल फूल लगते हैं; † दोपहर, मध्याह्न। **–पहरी**–स्त्री० दे० 'दोपहरी'। **–फसली**–वि० रबी और खरीफ दोनोंमें पैदा होनेवाला; संदिग्ध। **–बगली**–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत। **–बधा**–स्त्री० दे० 'दुविधा'। **–बारा**–अ० दे० 'दोबारा'। **–बाल**–वि० दे० 'दोबाला'। **–बिधा**–स्त्री० चित्तकी किसी एक बातपर न जमनेकी क्रिया या भाव, निश्चयका अभाव, द्वैधीभाव; भेदभाव–'सो दुविधा पारस नहि राखत कंचन करत खरो'–सूर०; संशय, संदेह, अंदेशा; संकल्प-विकल्प, असमंजस। **–बीचा**†–पु० संदेह, खटका। **–भाखी,–भाषिया,–भाषी**–पु० वह दो भाषाएँ जाननेवाला मध्यस्थ जो उन भाषाओंके बोलनेवाले दो व्यक्तियोंकी बातके अवसरपर एकको दूसरेका अभिप्राय समझाये। **–मंजिला**–वि० जिसमें दो मंजिलें हों। **–माही**–वि० दो महीनेपर होनेवाला। **–मुँहा**–वि० जिसके दो मुँह हों, दो मुखोंसे युक्त। **–रंग,–रंगा**–वि० दो रंगोंवाला, जिसमें दो रंग हों; दो प्रकारका, जिसमें एकरूपता न हो; चालबाजीसे भरा हुआ, कपटपूर्ण। **–रंधा***–वि० जिसमें दो रंध्र हों; जिसमें आरपार छेद हो। **–रद,*–रदाल***–पु० दे० 'द्विरद'। **–रस**–पु० दे० क्रममें; † दे० 'दोमट'। वि० दे० 'दोरसा'। **–राज**–पु० एक ही देशमें दो राजाओंका शासन, दो अमली शासन; बुरा शासन, दोषपूर्ण शासन। **–राजी***–वि० जिसमें दो राजा राज्य करते हों, जिसपर दो राजाओंका शासन या अधिकार हो। **–रुखा**–वि० दो रुखोंवाला; जिसके दोनों ओर दो रंग हों। **–रेफ**–पु० दे० 'द्विरेफ'। **–लड़ा**–वि० दो लड़ोंका, दो लड़ोंवाला। **–लड़ी**–वि० स्त्री० दे० 'दुलड़ा'। स्त्री० दो लड़ोंकी माला। **–लत्ती**–स्त्री० घोड़े आदि चौपायोंका पीछेके दोनों पैरोंसे मारना। **–वाह***–वि० जिसका दूसरा विवाह हुआ या होनेवाला हो। **–शाला**–पु० एक तरहकी पशमीनेकी चादर जो दोहरी होती है और किनारेपर बेल-बूटे होते हैं। **–०पोश**–वि० जो दुशाला ओढ़े हो। **–०फ़रोश**–पु० दुशाला बेचनेवाला। **–साखा**–वि० दो शाखाओंवाला। पु० दो शाखाओंवाला समादान। **–सार***–पु० एक ओरसे दूसरी ओरतक जानेवाला छेद। **–साला**†–पु० दे० 'दुशाला'। **–सूती**–वि० जिसमें ताने और बाने दोनोंमें दोहरा सूत लगा रहे। स्त्री० इस प्रकारका मोटा कपड़ा। **–सेजा***–पु० दो आदमियोंके सोने लायक बड़ी चारपाई, पलंग। **–हत्था**–वि० जिसमें दोनों हाथ काममें लाये जायँ; दो मूठोंवाला। **–हत्थी**–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत। वि०, स्त्री० दे० 'दुहत्था'।

दुअन–पु० दे० 'दुवन'।

दुअरवा*–पु० दे० 'द्वार'।

दुअरिया*–स्त्री० छोटा दरवाजा।

दुआ–स्त्री० (अ०) ईश्वरसे माँगना; प्रार्थना, याचना; आशीर्वाद। **–ए-खैर**–स्त्री० शुभाशीर्वाद। **–गो**–वि० दुआ करनेवाला; आशीर्वाददाता; शुभचिंतक। **–गोई**–स्त्री० दुआ देना। **मु०–करना**–दे० 'दुआ माँगना'। **–कहना**–आशीर्वाद देना। **–माँगना**–ईश्वरसे किसीकी भलाईकी प्रार्थना करना। **–लगना**–दुआका सफल होना।

दुआदस*–वि० दे० 'द्वादश'।

दुआर, दुआरा†–पु० दे० 'द्वार'।

दुआरी†–स्त्री० छोटा द्वार।

दुआल–स्त्री० (सं०) चमड़ेका तसमा; रिकाबका तसमा।

दुआली–स्त्री० चमड़ेकी बद्धी जिससे खराद, सान आदि घुमाये जाते हैं।

दुइ†–वि० दे० 'दो'।

दुइज*–स्त्री० दे० 'दूज'। पु० द्वितीयाका चंद्रमा।

दुई–स्त्री० दो होना, दोकी भावना, द्वैत, गैर, पराया समझना। **मु०–का परदा**–द्वैतजनित अज्ञान या आवरण।

दुऔ†–वि० दोनों।

दुकड़हा–वि० जिसकी कीमत एक दुकड़ा हो; एक-एक दुकड़ेके लिए लालायित रहनेवाला, अधम कोटिका, तुच्छ।

दुकड़ा–पु० युग्म; जोड़ा; एक पैसेका चौथा हिस्सा। वि० जिसमें कोई चीज दो-दो करके लगी हो।

दुकड़ी–स्त्री० ताशकी वह पत्ती जिसपर किसी रंगकी दो बूटियाँ छपी हों; वह बग्घी जिसमें दो घोड़े जुते हों।

दुकना*–अ० क्रि० छिपना, लुकना।

दुकान–स्त्री० (फा०) वह स्थान जहाँ बेचनेकी चीजें सजाकर रखी हों, सौदा बेचने और खरीदनेकी जगह। **–दार**–पु० दुकानका स्वामी, दुकानवाला; वह व्यक्ति जिसने अर्थोपार्जनके लिए ढकोसला रच रखा हो, पाखंडी, ठग। **–दारी**–स्त्री० दुकानदारका धंधा; दुकानदारका पद; धन कमानेके लिए रचा गया ढकोसला।

दुकाल–पु० दे० 'अकाल' (हिं०)–'यहि निसिचर दुकाल सम अहई'–रामा०।

दुकूल–पु० (सं०) रेशमी वस्त्र; चिकना और बारीक कपड़ा, क्षौम वस्त्र, पट्ट वस्त्र। **–पट्ट**–पु० अच्छे कपड़ेका साफा।

दुकेला–वि० जिसके साथ कोई और भी हो।

दुकेले–अ० किसी औरके साथ।

दुक्कड़–पु० शहनाईके साथ बजाया जानेवाला तबले जैसा एक बाजा।

दुक्का–पु० ताशका वह पत्ता जिसपर किसी रंगकी दो बूटियाँ छपी हों। वि० जो एक जोड़ेके रूपमें हो; दे० 'दुकेला'। **–तिक्का**–अ० दो या तीनकी संख्यामें; एक या दो औरके साथमें।

दुक्की–स्त्री० दे० 'दुक्का'।

दुखंत*–पु० दे० 'दुष्यंत'।

दुख–पु० दे० 'दुःख'। **–द**–वि० दे० 'दुःखद'। **–दाई***–वि० दे० 'दुःखदायी'। **–दुंद***–पु० दुःख तथा द्वंद्व–सुख-दुःख, राग-द्वेष, शीत-उष्ण आदि परस्पर विरोधी भाव और अनुभूतियाँ।

दुखड़ा–पु० दुःख, दुःखका वृत्तान्त, दुःखगाथा। **मु० –रोना**–दूसरेसे अपनी करुण गाथा कह सुनाना; दूसरेको अपनी विपन्नावस्थाका वृत्तांत सुनाना।

दुखदागर–पु० दुःखका नाश करनेवाला–'पालागौं द्वारका सिधारौ विरहिनिके दुःखदागर'–सूर।

दुखना–अ० क्रि० दर्द करना, पीड़ा होना।

दुखरा*–पु० दे० 'दुखड़ा'।

दुखवना*–स० क्रि० दे० 'दुखाना'–सुतहिं दुखवत विधि न बरज्यो, कालके घर जात'–विनयपत्रिका।

दुखहाई*–वि०, स्त्री० दुःखकी मारी–'न खुली मुँदी जानि परैं कछु ये दुखहाई जगेपर सोवति हैं'–घन०।

दुखाना–स० क्रि० पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना; स्पर्श आदिके द्वारा फुंसी, घाव आदिमें व्यथा उत्पन्न करना। अ० क्रि० दुखना।

दुखारा, दुखारी*–वि० दुःखी, व्यथित।

दुखित–वि० दे० 'दुःखित'।

दुखिया–वि० दुःखमें पड़ा हुआ, विपद्ग्रस्त।

दुखियारा–वि० दुखिया, संकटापन्न।

दुखी–वि० जिसे मानसिक व्यथा हो; खिन्न; रुग्ण।

दुखीला†–वि० दुःखयुक्त, जिसे दुःखका अनुभव हो रहा हो।

दुखौहाँ*–वि० दुःखकर, कष्टप्रद।

दुगई*–स्त्री० वरामदा–'अति अद्‌भुत थंभनकी दुगई'–रामचंद्रिका।

दुगदुगी–स्त्री० सीनेपरका गड्ढा; धुकधुकी; धुकधुकी नामक गहना।

दुगध*–पु० दुग्ध, दूध। –नदीस*–पु० दुग्धसमुद्र, क्षीरसागर– 'इंद्रको अनुज हेरै दुगध-नदीसको'–भू०।

दुगना*–अ० क्रि० छिपना।

दुगासरा*–पु० दुर्गके पासका गाँव; छिपनेका स्थान।

दुगूल–पु० (सं०) दे० 'दुकूल'।

दुग्ग*–पु० दे० 'दुर्ग'।

दुग्ध–पु० (सं०) दूध; पौधोंका दूध जैसा रस। वि० दुहा हुआ; चूसा हुआ; भरा हुआ, प्रपूर्ण। –कूपिका–स्त्री० एक पकवान। –तालीय–पु० दूधका फेन; मलाई। –दा–स्त्री० दूध देनेवाली गाय। वि० स्त्री० दूध देनेवाली। –पाचन–पु० दूध औटानेका पात्र। –पाषाण–पु० एक वृक्ष। –पुच्छी–स्त्री० वृक्षविशेष। –पुष्पी–स्त्री० दुग्धपेया नामक वृक्ष। –पेया–स्त्री० एक वृक्ष। –पोष्य–वि० माताका दूध पीकर रहनेवाला (बच्चा)। –फेन–पु० दूधका फेन, मलाई। –फेनी–स्त्री० एक झाड़ीदार पौधा। –बंध,–बंधक–पु० वह खूँटा जिसमें दुहनेके समय गाय बाँधी जाय। –बीजा–स्त्री० ज्वार, जोन्हरी। –मापी–पु० (लैक्टोमीटर) एक यंत्र जिससे दूधकी विशुद्धता जाँची जाती है। –शर्करा–स्त्री० (शुगर ऑफ मिल्क) दूधसे प्राप्त होनेवाली शर्करा। –शाला–स्त्री० दे० 'डेरी'। –समुद्र–पु० पुराणोक्त सात समुद्रोंमेंसे एक, क्षीरसागर।

दुग्धांक–पु० (सं०) एक प्रकारका पत्थर जिसपर दूधके रंगके सफेद छींटे होते हैं।

दुग्धाक्ष–पु० (सं०) दे० 'दुग्धांक'।

दुग्धाग्र–पु० (सं०) मलाई।

दुग्धाब्धि–पु० (सं०) क्षीरसागर। –तनया–स्त्री० लक्ष्मी।

दुग्धाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) दे० 'दुग्धपाषाण'।

दुग्धिका–स्त्री० (सं०) दुद्धी नामकी घास, दुधिया, क्षीरावी।

दुग्धिनिका–स्त्री० (सं०) लाल चिचिड़ा।

दुग्धी–स्त्री० (सं०) दे० 'दुग्धपाषाण'; दे० 'दुग्धिका'।

दुग्धी(ग्धिन्)–वि० (सं०) दूधवाला; जिसमें दूध हो, दुग्धयुक्त।

दुग्धोद्योग–पु० (डेअरी इंडस्ट्री) दूध तथा उससे बननेवाले विभिन्न पदार्थ–मक्खन, घी आदि–तैयार करानेका उद्योग।

दुघ–पु० (सं०) (प्रायः समासांतमें) देनेवाला।

दुघा–स्त्री० (सं०) वह गाय जो दूध दे रही हो।

दुच्छक–पु० (सं०) मुरा नामक एक गंधद्रव्य; मनोरंजनकाल; गंधकुटी।

दुज*–पु० दे० 'द्विज'।

दुजेश*–पु० दे० 'द्विजेश'।

दुडि–स्त्री० (सं०) कच्छपी।

दुड़ी–स्त्री० दे० 'दुक्की'।

दुत–अ० घृणा या तिरस्कारसूचक एक शब्द (बच्चोंको प्यार करते समय भी कभी-कभी इसका प्रयोग करते हैं)। –कार–पु० 'दुत-दुत' कहकर किया गया तिरस्कार; इस प्रकार प्रकट की गयी घृणा।

दुतकारना–स० क्रि० 'दुत-दुत' कहकर तिरस्कार करना, धिक्कारना।

दुति*–स्त्री० दे० 'द्युति'। –मान–वि० दे० 'द्युतिमान्।' –वंत–वि० प्रभायुक्त, कांतिमान्।

दुतिय*–वि० दे० 'द्वितीय'।

दुतिया*–स्त्री० दे० 'द्वितीया'।

दुतीय*–स्त्री० दे० 'द्वितीय'।

दुतिया*–स्त्री० दे० 'द्वितीया'।

दुदलाना*–स० क्रि० दे० 'दुतकारना'।

दुदहँड़ी–स्त्री० दे० 'दुधहँड़ी'।

दुदुकारना†–स० क्रि० दे० 'दुतकारना'।

दुद्धी–स्त्री० एक प्रकारकी घास जिसमें दूध होता है; खड़िया मिट्टी।

दुद्रुम–पु० (सं०) प्याजका हरा पौधा।

दुध–'दूध'का समासगत रूप। –कट्टू–वि० (शिशु) जो माँके गर्भवती हो जाने या जल्द ही अन्य बच्चा हो जानेसे उचित समयतक दूध न पी सका हो। –पिट्ठी–स्त्री०,–पिठवा†–पु० एक प्रकारका पकवान जो गुँधे हुए मैदेके छोटे-छोटे और पतले-पतले टुकड़ोंको दूधमें पकानेसे तैयार होता है। –मुख,–मुँहा*–वि० दे० 'दूध-मुँहा'। –हँड़ी–स्त्री० दूध गरम करनेका मिट्टीका पात्र।

दुधाँड़ी–स्त्री० (दूध हाँड़ी) दे० 'दुधहँड़ी' (टूटे काँटे)।

दुधार–वि० जिसमें दूध हो; दूध देनेवाली; जिससे अधिक मात्रामें दूध निकलता हो; जो अधिक दूध देती हो।

दुधारू*–वि० दे० 'दुधार'।

दुधित–वि० (सं०) कष्टयुक्त, पीड़ित; व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

दुधिया–स्त्री० दुद्धी नामकी घास; ज्वारकी एक किस्म; खड़िया मिट्टी; एक चिड़िया; एक प्रकारका विष। वि० दूध मिला हुआ; जिसका रंग दूधकी तरह सफेद हो। –कंजई–वि० नीलापन लिये हुए भूरे रंगका। पु० इस तरहका रंग। –पत्थर–पु० एक तरहका सफेद पत्थर। –विष–पु० पौधेसे निकलनेवाला एक विष।

दुधैल–वि० स्त्री० जो बहुत दूध देती हो, दुधार।

दुध्र–वि० (सं०) दुर्धर, दुर्धर्ष; हिंसक।

दुनवना*–अ० क्रि० किसी लोचदार चीजका इतना झुक जाना कि उसके दोनों सिरे मिल जायँ। स० क्रि० किसी लोचदार चीजको इतना झुका देना कि उसके दोनों सिरे आपसमें मिल जायँ।

दुनियवी–वि० दुनियाका, संसार-संबंधी।

दुनिया–स्त्री० (अ०) संसार, जगत्; संसारमें रहनेवाले लोग, लोक; संसारका प्रपंच, संसारका झंझट। –ई–वि० सांसारिक। स्त्री० संसार। –दार–वि० संसारके धंधोंमें फँसा हुआ, संसारी; जो लोकव्यवहारमें कुशल हो, लोकचतुर। पु० गृहस्थ। –दारी–स्त्री० सांसारिक प्रपंच, संसारका जंजाल; दुनियादार होनेका गुण, व्यवहार-कुशलता, लोकचातुरी; बनावटी व्यवहार। –परस्त–वि० कंजूस। –साज–वि० दिखावटी व्यवहार करनेवाला, मक्कार, धूर्त। –साजी–स्त्री० बनावट, मक्कारी, धूर्तता, जाहिरदारी। मु०–की हवा लगना–सांसारिक बातोंकी जानकारी होना, संसारका अनुभव होना; दुनियाके तौर-तरीके अपना लेना, संसारके दूसरे लोगोंकी तरह आचरण करने लगना। –के परदेपर–संसारमें। –भरका–बहुत अधिक। –से उठ जाना–मर जाना।

दुनियावी–वि० दे० 'दुनियवी'।

दुनी*–स्त्री० दुनिया, संसार।

दुनोना, दुनौना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'दुनवना'।

दुबकना†–अ० क्रि० दे० 'दबकना', सिमटकर रह जाना; छिपना।

दुबरा†–वि० दुर्बल, कृश, क्षीण शरीरवाला, दुबला-पतला। –ई†–स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता; शक्तिहीनता, कमजोरी।

दुबराना*–अ० क्रि० दुर्बल होना, कृश होना।

दुबला–वि० जिसका शरीर क्षीण हो, कृश।

दुबाइन–स्त्री० दुबेकी पत्नी।

दुबिद*–पु० दे० 'द्विविद'।

दुबिधा–स्त्री० दे० 'दु'के साथ।

दुबे–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, द्विवेदी।

दुम–स्त्री० (फा०) पूँछ, पुच्छ; दुमकी तरह पीछेकी ओर जुड़ी हुई वस्तु, पिछला हिस्सा; वह जो बराबर पीछे लगा रहे, पिछलग्गू; डिग्री, उपाधि (व्यं०)। –ची–स्त्री० घोड़ोंके साजमें दुमके नीचे रहनेवाला चमड़ा; पुट्ठोंके बीचकी हड्डी। –दार–वि० जिसके पूँछ हो; जिसके पीछे पूँछकी तरह कोई वस्तु लगी हो या जुड़ी हो। मु०–के पीछे फिरना–पीछे-पीछे घूमा करना, साथ लगा रहना। –दबाकर भागना–मारे डरके इस तरह भागना जैसे कोई कुत्ता अपनेसे मजबूत कुत्ता देखकर भाग खड़ा होता है। –दबा जाना–डरकर भाग जाना; मारे डरके किसी कामसे पृथक् हो जाना। –में घुसना–लुप्त हो जाना। –में घुसा रहना–खुशामदमें सदा पीछे लगा रहना।

दुमन–वि० अनमना, उदास, विषण्ण।

दुमात†–स्त्री० दे० 'दुमाता'।

दुमाता–स्त्री० खराब माता; विमाता।

दुरंत–वि० (सं०) जिसका परिणाम बुरा हो, जो उत्तरकालमें दुःख पहुँचाये; जिसका पार पाना कठिन हो, दुरतिक्रम; प्रबल, प्रचंड; अति गंभीर, दुर्ज्ञेय।

दुरंतक–पु० (सं०) शिव।

दुर–पु० दे० 'दुर्र'। अ० किसीको तिरस्कारपूर्वक हटानेके लिए प्रयोगमें लाया जानेवाला शब्द। –दुर–अ० कुत्तेको तिरस्कार-पूर्वक हटानेका शब्द।

दुरक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें कमजोर हों; बुरी निगाहवाला। पु० जुएमें बेईमानी करनेके लिए खास तौरसे तैयार किया गया पासा; बेईमानीका जुआ।

दुरजन*–पु० दे० 'दुर्जन'।

दुरजोधन*–पु० दे० 'दुर्योधन'।

दुरतिक्रम–वि० (सं०) जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन बड़ी कठिनाईसे हो सके; जिसका उल्लंघन शक्तिके बाहर हो, दुर्लंघ्य।

दुरत्यय–वि० (सं०) दुरतिक्रम, दुस्तर।

दुरथल*–पु० बुरा स्थान, कुठाँव।

दुरदाम*–वि० प्रबल; कठिन; निकट।

दुरदुराना–स० क्रि० तिरस्कार करना; अनादरपूर्वक दूर भगाना या हटाना।

दुरदृष्ट–पु० (सं०) दुर्भाग्य; पाप।

दुरधिगम–वि० (सं०) जिसे प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य; जिसे समझना बहुत कठिन हो, दुर्ज्ञेय, दुर्बोध।

दुरधिष्ठित–वि० (सं०) बुरे तौरसे किया गया; अव्यवस्थित।

दुरधीत–पु० (सं०) अशुद्ध उच्चारण तथा स्वरके साथ किया गया (वेदका) अध्ययन।

दुरध्व–पु० (सं०) कुमार्ग, उत्पथ।

दुरना*–अ० क्रि० दूर होना; आँखोंसे ओझल होना, छिपना।

दुरन्वय–वि० (सं०) जिसका अनुसरण करना कठिन हो; दुष्प्राप्य; दुर्ज्ञेय। पु० अशुद्ध निष्कर्ष।

दुरपदी*–स्त्री० दे० 'द्रौपदी'।

दुरपवाद–पु० (सं०) निंदा, कुत्सा।

दुरवचा–पु० एक मोतीवाली वाली।

दुरबल*–वि० दे० 'दुर्बल'।

दुरबार*–वि० जिसका निवारण न किया जा सके।

दुरबास*–स्त्री० बुरी गंध, दुर्गंध।

दुरबासा*–पु० दे० 'दुर्वासा'।

दुरबीन–स्त्री० दे० 'दूरबीन'।

दुरबेस*–पु० दरवेश, फकीर।

दुरभिग्रह–पु० (सं०) अपामार्ग, चिचड़ी। वि० जो बड़ी कठिनाई-से पकड़ा जा सके।

दुरभिग्रहा–स्त्री० (सं०) जवासा; केवाँच।

दुरभियोजन–पु० (प्लॉट) किसीको हानि पहुँचाने आदिकी दृष्टिसे की जानेवाली गुप्त काररवाई, षड्यंत्र।

दुरभिसंधि–स्त्री० (सं०) बुरे उद्देश्यसे की गयी गुप्त मंत्रणा, कुचक्र।

दुरभेवां†–पु० दुर्भाव; खटका, आशंका।

दुरमुट, दुरमुस–पु० सड़क आदिपर बिछाया गया कंकड़ पीटकर बराबर करनेका एक औजार।

दुरलभां†–वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुरवग्रह–वि० (सं०) जिसे रोकना या काबूमें करना कठिन हो, जिसका नियंत्रण कष्टसाध्य हो।

दुरवस्थ–वि० (सं०) जो बुरी दशामें हो, बुरी दशामें पड़ा हुआ।

दुरवस्था–स्त्री० (सं०) बुरी हालत, कष्टपूर्ण दशा; दारिद्र्य आदिकी दयनीय दशा, दुर्गति।

दुरवाप–वि० (सं०) दे० 'दुष्प्राप्य'।

दुरस*–वि० दुरुस्त, सही, ठीक; दे० 'दु'में। पु० दे० 'दु'में।

दुरस्सां†–वि० दो तरहके मौसिमवाला, रातमें गरमी तथा सवेरे पहर ठंडवाला (दिन)। दे० 'दोरसा' ('दो'के साथ)।

दुराउ*–पु० दे० 'दुराव'।

दुराक–पु० (सं०) म्लेच्छ-भेद; म्लेच्छोंका एक देश।

दुराकृति–वि० (सं०) बदशकल।

दुराक्रंद–वि० (सं०) दाढ़ मारकर रोता हुआ।

दुराक्रम–वि० (सं०) दुर्जय।

दुराक्रमण–पु० (सं०) कपटपूर्ण आक्रमण; वह स्थान जहाँ जाना कठिन हो।

दुरागम–पु० (सं०) बुरे या अवैध रूपसे प्राप्त होना।

दुरागमन–पु० दे० 'द्विरागमन'।

दुरागौन*–पु० दे० 'द्विरागमन'।

दुराग्रह–पु० (सं०) अनुचित रीतिसे किसी बातपर अड़ जाना, हठ, जिद।

दुराग्रही (हिन्)–वि० (सं०) जो दुराग्रह करे, हठी, जिद्दी।

दुराचरण–पु० (सं०) दे० 'दुराचार'।

दुराचार–पु० (सं०) निंद्य आचरण, कदाचार, कुकृत्य। वि० कुत्सित आचरणवाला।

दुराचारी (रिन्)–वि० (सं०) निंद्य कर्म करनेवाला, कुत्सित आचरणवाला, कुकर्मी।

दुरात्मा (त्मन्)–वि० (सं०) जिसका अंतःकरण शुद्ध न हो, हृदयका खोटा, नीच प्रकृतिका।

दुरादुरी–स्त्री० छिपाव, दुराव। –करके–गुप्त रूपसे।

दुराधन–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

दुराधर–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

दुराधर्ष–पु० (सं०) पीली सरसों; विष्णु। वि० जिसका लेशमात्र भी पराभव न हो सके; विकट; प्रचंड, उग्र।

दुराधर्षा–स्त्री० (सं०) कुटुंबिनी नामकी लता।

दुराधार–पु० (सं०) शिव।

दुरानम–वि० (सं०) जिसे झुकाना बहुत कठिन हो, जो बड़ी मुश्किल-से झुकाया जा सके।

दुराना–स० क्रि० दूर करना; आँखोंसे ओझल करना, छिपाना। * अ० क्रि० दे० 'दुरना'–'नाम लेत नियरात सुख दुख दुरात दरसात'–रसिकबिहारी।

दुराप–वि० (सं०) दे० 'दुरवाप'।

दुराबाध–पु० (सं०) शिव।

दुराराध्य–वि० (सं०) जिसे संतुष्ट या प्रसन्न करना बहुत कठिन हो; जिसका आराधन कष्टसाध्य हो।

दुरारुह–पु० (सं०) बेल; खजूर; नारियल। वि० जिसपर चढ़ना बहुत कठिन हो।

दुरारुहा–स्त्री० (सं०) खजूरका पेड़।

दुरारोह–पु० (सं०) ताड़का पेड़। वि० जिसपर चढ़ना कठिन हो।

दुरारोहा–स्त्री० (सं०) सेमरका पेड़; खजूरका पेड़।

दुरालंभ, दुरालभ–वि० (सं०) जिसे छूना या पाना बहुत कठिन हो।

दुरालंभा–स्त्री० (सं०) जवासा; कपास।

दुरालभा–स्त्री० (सं०) दे० 'दुरालंभा'।

दुरालाप–पु० (सं०) बुरी बातचीत, कुवार्ता; दुर्वचन, गाली।

दुरालोक–वि० (सं०) जो कठिनाईसे देखा जा सके; जिसकी ओर देखनेमें आँखें झँप जायँ। पु० चकाचौंध पैदा करनेवाली चमक।

दुराव–पु० दुरानेकी क्रिया, छिपाव, गोपन; भेदभाव; छल।

दुरावार–वि० (सं०) जिसे ढकना या रोकना बहुत कठिन हो।

दुराश–वि० (सं०) जिसे दुराशा हो, दुराशावाला।

दुराशय–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसके विचार निम्न कोटिके हों, कुत्सित विचारोंवाला व्यक्ति, दुष्टात्मा; बुरा विचार; बुरा स्थान। वि० जिसकी नीयत खराब हो, निंद्य विचारका, नीच हृदयका, खोटा।

दुराशा–स्त्री० (सं०) ऐसी आशा जिसका पूरा होना कठिन हो, झूठी आशा।

दुरासद–वि० (सं०) जिसके पास पहुँचना कठिन हो, दुर्गम; दुष्प्राप्य, दुर्लभ; दुर्जय; अद्वितीय। पु० शिव।

दुरासा*–स्त्री० दे० 'दुराशा'।

दुरित–पु० (सं०) पाप, दुष्कृत, किल्विष; खतरा; संकट। वि० कठिन; पापी, पातकी। **–दमनी**–स्त्री० शमी वृक्ष। वि० स्त्री० पापनाशिनी।

दुरियाना†–स० क्रि० दुरदुराना; दूर करना, हटाना।

दुरिष्ट–पु० (सं०) मारण, मोहन, उच्चाटन आदि अभिचारोंके लिए किया जानेवाला यज्ञ; अभिशाप।

दुरिष्टि–स्त्री० (सं०) अशास्त्रीय याग।

दुरीषणा, दुरेषणा–स्त्री० (सं०) शाप।

दुरुक्त–पु०, **दुरुक्ति**–स्त्री० (सं०) दुर्वचन।

दुरुच्छेद–वि० (सं०) जिसका उच्छेद कठिनतासे हो सके, दुर्वार।

दुरुत्तर–पु० (सं०) बुरा उत्तर। वि० जिसका उत्तर न दिया जा सके; दुस्तर।

दुरुत्साहन–पु० (एवेटमेंट) अपराधीको अपराध करनेमें सहायता या प्रोत्साहन देना, अवप्रेरण।

दुरुद्वह–वि० (सं०) जिसका वहन या सहन न किया जा सके।

दुरुपयोग–पु० (सं०) अनुचित उपयोग, बुरा इस्तेमाल।

दुरुपयोजन–पु० (मिसऐप्रोप्रियेशन) (किसी सौंपी हुई वस्तु, धन आदिका) दुरुपयोग करना, अनुचित काममें लगा देना।

दुरुफ–पु० (सं०) नीलकंठ ताजिकके अनुसार ज्योतिषका एक योग।

दुरुस्त–वि० (फा०) जो अच्छी स्थितिमें हो, ठीक; जिसमें कोई खामी न हो, दोषरहित; उचित, यथार्थ, युक्तियुक्त। मु०**–करना**–दंड देकर ठीक रास्तेपर लाना, सुधारना; दंड देना।

दुरुस्ती–स्त्री० दुरुस्त करनेकी क्रिया, सुधारना।

दुरूह–वि० (सं०) बहुत माथापच्ची करनेपर भी जल्द समझमें न आनेवाला, कठिनतासे समझमें आने योग्य, कठिन।

दुरोदर–पु० (सं०) द्यूतकार, जुआरी; पासा; जुआ, द्यूत; बाजी।

दुरौंधा–पु० भरेठा, दरवाजेके ऊपर लगायी जानेवाली लकड़ी, करगहना।

दुर्–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो संज्ञापदों और क्रियापदोंके पहले इन अर्थोंमें जोड़ा जाता है–(१) सदोषता, (२) निंदा, (३) निषेध, (४) दुःख या संकट।

दुर्कुल*–पु० दे० 'दुष्कुल'।

दुर्गंध–स्त्री० (सं०) बुरी गंध, बदबू। पु० काला नमक; प्याज; आम्र वृक्ष। वि० जिससे दुर्गंध निकलती हो, बुरी गंधवाला।

दुर्ग–पु० (सं०) गढ़, किला, कोट (मत्स्यपुराण तथा मनुस्मृतिमें छ प्रकारके दुर्गोंका उल्लेख है–(१) धन्वदुर्ग–जिसके इर्द-गिर्द पाँच योजनतक मरुभूमि हो, (२) महीदुर्ग–जिसके चारों ओर ऊँची-नीची भूमि हो, (३) नरदुर्ग–जो चारों ओरसे सेनाओंसे घिरा हो, (४) वृक्षदुर्ग–जिसके चारों ओर वृक्ष लगे हों, (५) अंबुदुर्ग–जो चारों ओरसे जलसे वेष्टित हो, (६) गिरिदुर्ग–जो पर्वत या पहाड़ीपर बना हो); कठिन या तंग रास्ता; ऊबड़-खाबड़ जमीन; एक असुर जिसका वध करनेके कारण आद्या शक्तिका 'दुर्गा' नाम पड़ा; महाविघ्न; भवबंधन; कुकर्म; शोक; दुःख; नरक; यमदंड; जन्म; महाभय; अतिरोग; गुग्गुल; परमेश्वर। वि० दुर्गम; दुर्बोध। **–कर्म(न्)** पु० दुर्ग रचनारूप कार्य। **–कारक**–पु० दुर्ग बनानेवाला, दुर्गकर्ता; एक वृक्ष। **–घ्नी**–स्त्री० दुर्गा। **–तरणी**–स्त्री० एक देवी, सावित्री। **–पति**–पु० दुर्गका स्वामी, दुर्गाध्यक्ष। **–पाल**–पु० दुर्गकी रक्षा करनेवाला, दुर्गरक्षक। **–पुष्पी**–स्त्री० वृक्षविशेष। **–लंघन**–पु० ऊँट (जो बीहड़ और रेतीली भूमिको सुगमतासे पार करता है); आरोहण-संबंधी कठिनाई। **–संचर,–संचार**–पु० दुर्गम स्थानोंतक पहुँचनेका मार्ग (जैसे–पुल आदि)। **–संस्कार**–पु० दुर्गकी मरम्मत।

दुर्गत–वि० (सं०) बुरी दशामें पड़ा हुआ, विपन्न; दरिद्र।

दुर्गति–स्त्री० (सं०) दुर्दशा; दरिद्रता; नरक।

दुर्गम–पु० (सं०) परमेश्वर; एक असुर। वि० जहाँ पहुँचना कठिन हो, बीहड़; जो शीघ्र समझमें न आये, दुर्बोध, सुगमका उलटा।

दुर्गमनीय–वि० (सं०) दे० 'दुर्गम'।

दुर्गल–पु० (सं०) एक देश।

दुर्गा–स्त्री० (सं०) आद्या शक्ति, भगवती, देवी, पार्वती; नीलका पौधा; अपराजिता लता; श्यामा पक्षी; नववर्षीया कन्या। **–नवमी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला नवमी जो दुर्गा-पूजनके लिए प्रशस्त मानी गयी है; आश्विन-शुक्ला नवमी; चैत्र-शुक्ला नवमी।

दुर्गाढ, दुर्गाध, दुर्गाह्य–वि० (सं०) जिसकी थाह जल्दी न मिल सके, जिसे थहाना कठिन हो, दुरवगाह्य।

दुर्गाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) दे० 'दुर्गपति'।

दुर्गाध्यक्ष–पु० (सं०) दे० 'दुर्गपति'।

दुर्गाह्व–पु० (सं०) भूमिगूगुल; दैत्यमेदज।

दुर्गुण–पु० (सं०) बुरा गुण, दोष।

दुर्गेश–पु० (सं०) दे० 'दुर्गपति'।

दुर्गोत्सव–पु० (सं०) दुर्गापूजा जो नवरात्रमें होती है।

दुर्ग्रह–वि० (सं०) जिसे पकड़ना कठिन हो; जो बड़ी कठिनाईसे प्राप्त किया जा सके, दुष्प्राप्य; जो शीघ्र समझमें न आये, दुर्ज्ञेय; जिसे जीतना या वशवर्ती बनाना कठिन हो। पु० दुराग्रह; बुरा ग्रह।

दुर्ग्रहा–स्त्री० (सं०) अपामार्ग।

दुर्ग्राह्य–वि० (सं०) जिसे पकड़ना या धारण करना दुष्कर हो।

दुर्घट–वि० (सं०) जिसका होना कठिन हो, दुःसाध्य।

दुर्घटना–स्त्री० (सं०) अशुभ घटना; क्लेशकर घटना।

दुर्घोष–पु० (सं०) दुःश्रव शब्द; भालू। वि० जो कर्णकटु ध्वनि उत्पन्न करे; जिससे कर्णकटु ध्वनि उत्पन्न हो।

दुर्जन–पु० (सं०) दुष्ट मनुष्य, खल।

दुर्जय–पु० (सं०) परमेश्वर। वि० जो कठिनाईसे जीता जा सके, जिसपर विजय पाना कठिन हो।

दुर्जर–वि० (सं०) जो देरमें या कठिनतासे पचे।

दुर्जरा–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती लता, मालकँगनी।

दुर्जात–पु० (सं०) अनौचित्य; व्यसन; विपत्ति। वि० जिसका जन्म अकारथ हो, जिसने व्यर्थ जन्म लिया हो; नीच; दोगला; विपन्न।

दुर्जाति–स्त्री० (सं०) नीच जाति, दुष्कुल; दुर्भाग्य। वि० बुरी या नीच जातिका; बुरे स्वभावका।

दुर्जीव–पु० (सं०) निंद्य जीवन, घृणित जीवन। वि० परान्न खाकर निर्वाह करनेवाला, परान्नभोजी।

दुर्जेय–वि० (सं०) दे० 'दुर्जय'।

दुर्ज्ञेय–वि० (सं०) जो कठिनाईसे जाना जा सके, दुर्बोध। पु० शिव।

दुर्दम, दुर्दमन, दुर्दमनीय, दुर्दम्य–वि० (सं०) जिसे दबाना या वशमें करना कठिन हो, जिसका दमन दुष्कर हो, प्रबल।

दुर्दर*–वि० दे० 'दुर्धर'।

दुर्दर्श–वि० (सं०) जिसे देखना कठिन हो; चकाचौंध पैदा करनेवाला।

दुर्दर्शन–वि० (सं०) जो देखनेमें भद्दा हो, बदसूरत।

दुर्दशा–स्त्री० (सं०) बुरी हालत, दुरवस्था, दुर्गति।

दुर्दांत–वि० (सं०) दे० 'दुर्दम'।

दुर्दिन, दुर्दिवस–पु० (सं०) बुरा दिन, मेघाच्छन्न दिन; घना अंधकार; वर्षण, वृष्टि; विपत्काल।

दुर्दुरूट–वि०, पु० (सं०) नास्तिक।

दुर्दृश–वि० (सं०) जो देखनेमें अच्छा न लगे, अप्रियदर्शन।

दुर्दृष्ट–वि० (सं०) (व्यवहार–मुकदमा) जिसपर पक्षपातपूर्ण दृष्टिसे विचार किया गया हो, जिसका फैसला ठीक न हुआ हो।

दुर्दैव–पु० (सं०) फूटा हुआ भाग्य, दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

दुर्धर–पु० (सं०) एक नरक; ऋषभ नामक ओषधि; पारा; भल्लातक, भिलावाँ; महिषासुरका एक सेनापति; परमेश्वर; विष्णु। वि० दे० 'दुर्ग्रह'।

दुर्धर्ष–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र; रावणकी सेनाका एक राक्षस। वि० जिसका पराभव न किया जा सके, जिसे वशवर्ती बनाना कठिन हो; उग्र, प्रबल।

दुर्धर्षा–स्त्री० (सं०) कंथारी; नागदौना।

दुर्धी–वि० (सं०) दे० 'दुर्बुद्धि'।

दुर्धुरूट, दुर्धुरूढ–पु० (सं०) वह शिष्य जो गुरुकी युक्तियुक्त बात भी जल्द न माने।

दुर्द्रुम–पु० (सं०) प्याज।

दुर्नय–पु० (सं०) बुरी नीति, कुनीति; अविनय, औद्धत्य; अन्याय।

दुर्नाम(न्)–पु० (सं०) बुरा नाम; दुर्वचन; घोंघा, सीप; बवासीर।

दुर्नामक–पु० (सं०) अर्श रोग, बवासीर।

दुर्नामा(मन्)–पु० (सं०) घोंघा; सीप; अर्श, बवासीर। वि० बुरे नामवाला; बदनाम।

दुर्नामारि–पु० (सं०) ओल, शूरण।

दुर्नाम्नी–स्त्री० (सं०) घोघा; सीप।

दुर्निग्रह–वि० (सं०) जिसे वशमें लाना कठिन हो।

दुर्निमित्त–पु० (सं०) अपशकुन; बुरा बहाना।

दुर्निरीक्ष्य–वि० (सं०) दे० 'दुरालोक'।

दुर्निवार, दुर्निवार्य–वि० (सं०) जिसका निवारण करना कठिन हो; जो सहसा रोका न जा सके; जिसे दूर करना या टालना दुष्कर हो।

दुर्नीत–वि० (सं०) नीतिविरुद्ध आचरण करनेवाला। पु० दुष्कर्म; दुर्भाग्य।

दुर्नीति–स्त्री० (सं०) नीतिविरुद्ध आचरण, कुनीति।

दुर्बल–वि० (सं०) शक्तिहीन, कमजोर; क्षीणकाय, कृश; शिथिल।

दुर्बला–स्त्री० (सं०) जलसिरीसका पेड़।

दुर्बाल–वि० (सं०) जिसका सिर गंजा हो; कुटिल केशवाला।

दुर्बुद्धि–वि० (सं०) दुष्ट बुद्धिवाला, कुबुद्धि; हतबुद्धि; मूर्ख।

दुर्बोध–वि० (सं०) जो शीघ्र समझमें न आये, गूढ, क्लिष्ट।

दुर्भक्ष–वि० (सं०) जिसे खाना कठिन हो; ज़िसका स्वाद अच्छा न हो। पु० दुर्भिक्ष, अकाल।

दुर्भग–वि० (सं०) हतभाग्य, मंदभाग्य, अभागा, बदकिस्मत।

दुर्भगा–स्त्री० (सं०) ऐसी स्त्री जिसे उसका पति न चाहता हो; कर्कशा स्त्री। वि० स्त्री० मंदभाग्य, अभागिन।

दुर्भर–वि० (सं०) जिसे धारण करना, ढोना या निभाना कठिन हो; भारी।

दुर्भागी–वि० भाग्यहीन।

दुर्भाग्य–पु० (सं०) प्रतिकूल दैव, फूटी किस्मत, बदकिस्मती। वि० भाग्यहीन, अभागा।

दुर्भाव–पु० (सं०) बुरा भाव, कुभाव; तुच्छ विचार।

दुर्भावना–स्त्री० (सं०) बुरी भावना, कुविचार।

दुर्भाव्य–वि० (सं०) जिसकी कल्पना करना कठिन हो।

दुर्भिक्ष–पु० (सं०) अकाल, क़हत।

दुर्भिच्छ*–पु० दे० 'दुर्भिक्ष'।

दुर्भिद, दुर्भेद, दुर्भेद्य–वि० (सं०) जो कठिनाईसे भेदा या छेदा जा सके, अति दृढ़।

दुर्भृत्य–पु० (सं०) ऐसा नौकर जो यथोचित रीतिसे आज्ञाका पालन न करे, दुष्ट नौकर।

दुर्मंत्र–पु०, **दुर्मंत्रणा**–स्त्री० (सं०) बुरी राय।

दुर्मति–पु० (सं०) एक संवत्सरका नाम। स्त्री० दे० 'कुमति'। वि० दुष्ट; मंदबुद्धि, मूर्ख।

दुर्मद–वि० (सं०) प्रमत्त; मदांध, मदोद्धत, गर्वसे भरा हुआ।

दुर्मना(नस्)–वि० (सं०) दुष्ट हृदयवाला; उद्विग्न चित्तवाला; जिसका मन खिन्न हो, उदास।

दुर्मनुष्य–पु० (सं०) दुष्ट मनुष्य, खल।

दुर्मर–पु० (सं०) बुरी मौत; अप्राकृतिक मृत्यु। वि० जो बड़ी दुर्दशासे या कष्टसे मरे।

दुर्मरा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी दूब।

दुर्मल्लिका, दुर्मल्ली–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका उपरूपक (इसमें चार अंक होते हैं और हास्यरसकी प्रधानता रहती है)।

दुर्मर्ष, दुर्मर्षण–वि० (सं०) दे० 'दुःसह'।

दुर्मित्र–पु० (सं०) बुरा मित्र, कुमित्र।

दुर्मिल–वि० (सं०) अनमेल; कठिनतासे मिलनेवाला। पु० एक मात्रिक छंद; एक प्रकारका सवैया।

दुर्मुख–पु० (सं०) घोड़ा; महिषासुरकी सेनाका एक सेनापति; रावणकी सेनाका एक भट; एक नाग; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक संवत्सर; एक राक्षस; एक यक्ष; रामका एक गुप्तचर; एक यज्ञ। वि० कटुभाषी, कड़ुआ बोलनेवाला; बदसूरत।

दुर्मुट, दुर्मुस–पु० दे० 'दुरमुस'।

दुर्मुहूर्त–पु० (सं०) बुरी सायत, अप्रशस्त मुहूर्त।

दुर्मूल्य–वि० (सं०) अधिक दामका, बहुमूल्य; महँगा।

दुर्मेधा(धस्)–वि० (सं०) मंदबुद्धि, मूर्ख। पु० मंदबुद्धि व्यक्ति।

दुर्मोह–पु० (सं०) काकतुंडी, कौआठोंठी।

दुर्मोहा–स्त्री० (सं०) कौआठोंठी; सफेद घुंघची।

दुर्यश(स्)–पु० (सं०) कुख्याति, अपयश, बदनामी।

दुर्योग–पु० (सं०) दुर्भाग्यसूचक ग्रहयोग, ग्रहोंका बुरा फेर।

दुर्योध–वि० (सं०) जो भीषण युद्धमें भी डटकर लड़ता रहे; अजय।

दुर्योधन–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका ज्येष्ठ पुत्र जिसके कारण कौरवों और पांडवोंके बीच इतिहासप्रसिद्ध महाभारत युद्ध हुआ। वि० दे० 'दुर्योध'।

दुर्योनि–वि० (सं०) नीच जातिका; अधम कुलका।

दुर्र–पु० (अ०) मोती; कानमें पहननेका एक गहना।

दुर्रा–पु० (फा०, अ०) चमड़ेका चाबुक।

दुर्रानी–पु० अफगानोंकी एक जाति जो कंधारके समीप बसी है।

दुर्लंघ्य–वि० (सं०) जिसे लाँघना या पार करना कठिन हो, जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण दुष्कर हो।

दुर्लक्ष्य–पु० (सं०) बुरा उद्देश्य, बुरा ध्येय। वि० जो कठिनाईसे देखा जा सके।

दुर्लभ–पु० (सं०) कचूर; विष्णु। वि० जिसका मिलना कठिन हो, दुष्प्राप्य; अति प्रशस्त; प्रिय। **–मुद्रा**–स्त्री० (हार्ड करेंसी) उस देशकी मुद्रा जिसका माल अन्य देश खरीदना तो चाहते हों, पर व्यापार तुला अपने विपक्षमें होनेके कारण उक्त मुद्रा यथेष्ट संख्यामें प्राप्त करनेमें कठिनाईका अनुभव करें; वह मुद्रा जिसका शीघ्र और अधिकमात्रामें अवपात (अवमूल्यन) न हो, यथा डालर। **–क्षेत्र**–पु० (हार्ड करेंसी-एरिया) दुर्लभ मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र।

दुर्लभा–स्त्री० श्वेतकंटकारी; दुरालभा।

दुर्ललित–वि० (सं०) अधिक प्यारसे बिगाड़ा हुआ; दुष्ट चेष्टा-वाला; नटखट। पु० औद्धत्य।

दुर्लेख्य–वि० (सं०) जिसकी लिखावट इतनी बुरी हो कि पढ़ी न जा सके। पु० जाली कागज।

दुर्वच–पु० (सं०) कटूक्ति, कटु वचन; गाली। वि० जो कठिनाई-से कहा जा सके, जिसे कहना क्लेशकर हो।

दुर्वच(स्)–पु० (सं०) कटु वचन।

दुर्वचन–पु० (सं०) कटुवचन; गाली।

दुर्वचा(चस्)–वि० (सं०) कटुभाषी।

दुर्वर्ण–पु० (सं०) रजत, चाँदी; खराब अक्षर। वि० जिसे श्वेत कुष्ठ हुआ हो; निंद्य वर्णवाला।

दुर्वर्णा–स्त्री० (सं०) चाँदी; एलुवा।

दुर्वस–वि० (सं०) जहाँ मुश्किलसे रहा जा सके।

दुर्वसति–स्त्री० (सं०) बुरा निवासस्थान।

दुर्वह–वि० (सं०) जिसे ढोना कठिन हो; असह्य, दुःसह।

दुर्वाक्(च्)–स्त्री० (सं०) दे० 'दुर्वचन'। वि० कटुभाषी।

दुर्वाद–पु० (सं०) अपवाद, अपयश, कुख्याति, स्तुतिके रूपमें कहा गया दुर्वचन, निंदित वाक्य।

दुर्वादी(दिन्)–वि० (सं०) दुर्वचन कहनेवाला।

दुर्वार, दुर्वारण, दुर्वार्य–वि० (सं०) दे० 'दुर्निवार'।

दुर्वासना–स्त्री० (सं०) बुरी वासना, चित्तकी कुवृत्ति; ओछी कामना; विषयोंका चित्तपर पड़ा हुआ कुसंस्कार।

दुर्वासा(सस्)–पु० (सं०) एक महाक्रोधी मुनि (ये अत्रिके पुत्र थे। ये जिसपर क्रोध करते थे उसे चटपट शाप दे दिया करते थे। एक बार इन्होंने विष्णुभक्त राजा अंबरीषको भी शाप दे डाला जिसपर इन्हें नीचा देखना पड़ा)। वि० जिसकी पोशाक बुरी हो; नंगा।

दुर्वाहित–पु० (सं०) भारी बोझ ।

दुर्विगाह, दुर्विगाह्य–वि० (सं०) दे० 'दुर्गाढ' ।

दुर्विज्ञेय–वि० (सं०) जो सरलतासे न जाना जा सके, जिसे जानना या समझना कठिन हो ।

दुर्विदग्ध–वि० (सं०) छिछले ज्ञानवाला, जो थोड़े ज्ञानपर फूल बैठा हो; गर्वित ।

दुर्विध–वि० (सं०) मूर्ख; खल; दरिद्र ।

दुर्विनय–स्त्री० (सं०) अविनय, औद्धत्य, उद्दंडता ।

दुर्विनीत–वि० (सं०) अविनीत, उद्दंड ।

दुर्विपाक–पु० (सं०) कुपरिणाम, दुष्परिणाम, कुफल ।

दुर्विभाव्य–वि० (सं०) जिसकी कल्पनातक न हो सके ।

दुर्विलसित–पु० (सं०) दुष्कृत्य; उजड्डपन; नटखटी ।

दुर्विलास–पु० (सं०) किस्मत खराब होना ।

दुर्विवाह–पु० (सं०) निंदित विवाह ।

दुर्विष–पु० (सं०)महादेव (जिनपर विषका कुछ भी असर नहीं हुआ) । वि० बुरे स्वभाववाला ।

दुर्विषह–पु० (सं०) शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० दुःसह ।

दुर्वृत्त–पु० (सं०) निंदित आचरण । वि० जिसका आचरण बुरा हो, दुराचारी । –फलक-पु० (हिस्ट्रीशीट) दे० 'वृत्तपत्र' 'वृत्तफलक' ।

दुर्वृत्ति–स्त्री० (सं०) बुरी वृत्ति, खराब पेशा; बुरा काम; दुराचरण; धोखा; छल ।

दुर्वृष्टि–स्त्री० (सं०) अपर्याप्त वृष्टि; अनावृष्टि, सूखा ।

दुर्वेद–वि० (सं०) जिसे समझना कठिन हो; दुर्लभ; वेदाध्ययन न करनेवाला (ब्राह्मण) ।

दुर्व्यवस्था–स्त्री० (सं०) कुप्रबंध, बदइंतजामी ।

दुर्व्यवहार–पु० (सं०) बुरा व्यवहार, बुरा बर्ताव; वह मुकदमा जिसका राग-द्वेषादिके कारण उचित निर्णय न हुआ हो ।

दुर्व्यसन–पु० (सं०) किसी हानिकर वस्तुके सेवनका अभ्यास; बुरी लत, खराब आदत ।

दुर्व्यसनी(निन्)–वि० (सं०) जिसे किसी वस्तुका दुर्व्यसन हो, दुर्व्यसनवाला ।

दुर्व्रत–वि० (सं०) नियम या आज्ञाका पालन न करनेवाला ।

दुर्हृदय–वि० (सं०) दुरात्मा, कुटिल, दिलका खोटा ।

दुर्हृद्(त्)–पु० (सं०) अमित्र, शत्रु । वि० कुटिल हृदयवाला, दुष्टहृदय, दुरात्मा; तुच्छ विचारोंवाला, नीच ।

दुर्हृषीक–वि० (सं०) जिसकी ज्ञानेंद्रियाँ विकारग्रस्त हों ।

दुलकना, दुलखना–अ० क्रि० इनकार करना ।

दुलकी–स्त्री० घोड़ेकी कुछ-कुछ उछलते हुए मध्य गतिसे दौड़नेकी एक चाल ।

दुलदुल–पु० (अ०) वह खच्चर जिसे इस्कंदरिया (मिस्र) के हाकिमने मुहम्मदको भेंटमें दिया था; मुहर्रमके अवसरपर निकाला जानेवाला घोड़ेके आकारका ताजिया; बिना सवारका घोड़ा जो मुहर्रमके आठवें और नवें दिन अब्बास और हुसेनके नामसे निकाला जाता है ।

दुलन†–पु० दे० 'दोलन' ।

दुलना*–अ० क्रि० दे० 'डोलना' ।

दुलभ*–वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुलरा*–वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुलराना*–अ० क्रि० लाड़ले बच्चोंके समान रूठना, मचलना आदि, दुलारे बच्चोंके समान आचरण करना । स० क्रि० लाड़-चाव करना, प्यारकी चेष्टाओं द्वारा बच्चोंको बहलाना या प्रसन्न करना ।

दुलरुवा†–वि०, पु० दे० 'दुलारा' ।

दुलहन, दुलहिन–स्त्री० नवोढा स्त्री, नयी बहू; भ्रातृवधू, पुत्रवधू आदिका संबोधन ।

दुलहा–पु० दे० 'दूल्हा' । –ई*–स्त्री० विवाहका गीत ।

दुलहिया*–स्त्री० दे० 'दुलहन' ।

दुलही†–स्त्री० दे० 'दुलहन' ।

दुलहेटा–पु० लाड़ला बेटा, दुलारा लड़का ।

दुलाई–स्त्री० रुई भरा हुआ हलका ओढ़ना, हलकी रजाई ।

दुलाना*–स० क्रि० दे० 'डुलाना' ।

दुलार–पु० दुलारनेकी क्रिया या भाव, लाड़-चाव, प्यार ।

दुलारना–स० क्रि० अनेक प्रकारकी स्नेहसूचक चेष्टाएँ (शरीरपर हाथ फेरना, छातीसे लगाना, चूमना आदि) करते हुए बच्चों या प्रेमपात्रको प्यार करना, लाड़-चाव करना; अनुचित प्यारसे बच्चेको बिगाड़ना ।

दुलारा–वि० जिसका बहुत दुलार या लाड़-चाव होता हो, लाड़ला । पु० लाड़ला पुत्र, प्यारा बेटा ।

दुलारी–स्त्री० लाड़ली बेटी, प्यारी पुत्री; † 'दुलाई' । वि० स्त्री० जिसका अधिक लाड़-प्यार होता हो, लाड़ली ।

दुलारो–स्त्री० एक तरहकी छोटे दानोंकी माता (चेचक) ।

दुलि–स्त्री० (सं०) कच्छपी ।

दुलीचा*–पु० कालीन, गलीचा; छोटा आसन ।

दुलैचा†–पु० दे० 'दुलीचा' ।

दुल्लभ*–वि० दे० 'दुर्लभ' ।

दुव*–वि० दो ।

दुवन–पु० खोटे दिलका आदमी, दुर्जन, दुष्ट, खल; शत्रु; राक्षस ।

दुवाज–पु० एक प्रकारका घोड़ा । वि० दे० 'दुवाह' ।

दुवादस*–वि० दे० 'द्वादश' । –बानी–वि० खरा, खालिस; कांतियुक्त (सोना) ।

दुवादसी*–स्त्री० दे० 'द्वादशी' ।

दुवार†–पु० दे० 'द्वार' ।

दुवारिका†–स्त्री० दे० 'द्वारका' ।

दुवाल–पु० (फा०) चमड़ेका तसमा; रिकाबका तसमा; कमरमें लपेटनेका चमड़ेका चौड़ा फीता, चपरास । –बंद–पु० तसमा बाँधनेवाला सिपाही ।

दुवाह–वि० दे० 'दु'में ।

दुविद*–पु० दे० 'द्विविद' ।

दुवो*–वि० दोनों ।

दुशमन–पु० दे० 'दुश्मन' ।

दुशवार–वि० (फा०) कठिन, मुश्किल ।

दुशवारी–स्त्री० कठिनता, मुश्किल; कठिनाई या संकटकी स्थिति ।

दुशासन*–पु० दे० 'दुःशासन' ।

दुश्चर–वि० (सं०) जिसे करना कठिन हो, जो कठिनाईसे किया जा सके, कठिन, कष्टसाध्य, दुष्कर ।

दुश्चरित–पु० (सं०) बुरा आचरण, कदाचार; दुष्कृत, पाप । वि० बुरे आचरणका, दुर्वृत्त ।

दुश्चरित्र–पु० (सं०) बुरा चालचलन । वि० जिसका चरित्र बुरा हो, चरित्रहीन, बदचलन ।

दुश्चर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) वह पुरुष जिसके शिश्नके अगले भागपर जन्मसे ही चमड़ा न हो ।

दुश्चिकित्स्य–वि० (सं०) जिसकी चिकित्सा करना बहुत कठिन हो; जो अच्छा न किया जा सके, असाध्य ।

दुश्चिक्य–पु० (सं०) लग्नसे तीसरी राशि (ज्यो०) ।

दुश्चेष्टा–स्त्री० (सं०) बुरी चेष्टा ।

दुश्चेष्टित–पु० (सं०) कुकृत्य, निंद्य कर्म, नीच काम ।

दुश्च्यवन–पु० (सं०) इंद्र । वि० जो जल्दी च्युत या विचलित न किया जा सके, अविचाल्य ।

दुश्च्याव–पु० (सं०) शिव । वि० दे० 'दुश्च्यवन' ।

दुश्मन–पु० (फा०) शत्रु, वैरी, अहित चाहनेवाला, अपकारी ।

दुश्मनी–स्त्री० शत्रुता, वैर ।

दुष्कर–पु० (सं०) कठिन कार्य; आकाश । वि० जिसे करना कठिन हो, कष्टसाध्य, सुकरका उलटा ।

दुष्कर्ण–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

दुष्कर्म(न्)–पु० (सं०) बुरा काम; पाप ।

दुष्कर्मा(मन्)–वि० (सं०) कुकर्मी; पापी ।

दुष्कर्मी–वि० कुकर्मी, बुरा कार्य करनेवाला; पापी ।

दुष्काल–पु० (सं०) बुरा समय, ऐसा समय जिसमें लोगोंको तरह-तरहके कष्ट हों; प्रलय; दुर्भिक्ष; शिव ।

दुष्कीर्ति–स्त्री० (सं०) अपयश, बदनामी ।

दुष्कुल–पु० (सं०) नीच कुल, तुच्छ घराना। वि० नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका।

दुष्कुलीन–वि० (सं०) नीच कुलमें उत्पन्न, नीच कुलका।

दुष्कुलेय–वि० (सं०) दे० 'दुष्कुलीन'।

दुष्कृत–पु० (सं०) नीच कर्म; पाप। वि० बुरे तरीकेसे किया हुआ; पापी।

दुष्कृति–स्त्री० (सं०) पाप। वि० नीचकर्म करनेवाला; पापी।

दुष्कृती(तिन्)–वि० (सं०) कुकर्मी; पापी।

दुष्क्रीत–वि० (सं०) मोल लेते समय जिसके रूप, संख्या आदिकी पूरी परीक्षा न की गयी हो; महँगा।

दुष्खदिर–पु० (सं०) खैरका एक भेद।

दुष्ट–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त; निकम्मा; दोषयुक्त, दूपित, संदोष; तर्कशास्त्रमें व्यभिचार आदि दोषोंसे युक्त (हेतु); पित्त आदिके प्रकोपसे विकारग्रस्त (नेत्र आदि); खल, पिशुन, खोटा, नीच, बदमाश। पु० कुष्ठ, कोढ़; पाप; अपराध। **–चारी(रिन्)**–वि० दे० "दुराचारी'। **–चेता(तस्)**,**–धी**,**–बुद्धि**–वि० खोटे हृदयका, दुष्ट स्वभावका। **–वृष**–पु० कामका कच्चा या मजबूत होते हुए ठीक काम न करनेवाला बैल। **–व्रण**–पु० वह घाव जो जल्द अच्छा न हो; नासूर। **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० वह साक्षी जिसमें साक्षियोंमें न होने योग्य दोष वर्तमान हों, अयोग्य गवाह।

दुष्टर–वि० (सं०) दे० 'दुस्तर'।

दुष्टा–स्त्री० (सं०) बुरी, असती स्त्री; वेश्या।

दुष्टाचार–पु० (सं०) दे० 'दुराचार'।

दुष्टाचारी(रिन्)–वि० (सं०) दे० 'दुराचारी'।

दुष्टात्मा(त्मन्), **दुष्टाशय**–वि० (सं०) दे० 'दुरात्मा'।

दुष्टान्न–पु० (सं०) सड़ा हुआ अन्न; पापकी कमाईका अन्न।

दुष्टि–स्त्री० (सं०) दोष, विकार, खामी, ऐब।

दुष्पच–वि० (सं०) जो शीघ्र न पचे, जो देरमें पके।

दुष्पत्र–पु० (सं०) चोर नामक गंधद्रव्य।

दुष्पद–वि० (सं०) दे० 'दुष्प्राप्य'।

दुष्पराजय–वि० (सं०) दे० 'दुर्जय'।

दुष्परिग्रह–वि० (सं०) जिसे पकड़ना, वशवर्ती बनाना कठिन हो।

दुष्पर्श–वि० (सं०) जिसे छूना कठिन हो; जो छूआ न जा सके।

दुष्पर्शा–स्त्री० (सं०) जवासा।

दुष्पार–वि० (सं०) जिसे पार करना कठिन हो; दुष्कर; दुःसाध्य।

दुष्पूर–वि० (सं०) जो शीघ्र पूर्ण न हो सके; जिसका भरना कठिन हो; जिसका निवारण न किया जा सके।

दुष्प्रकृति–स्त्री० (सं०) बुरा स्वभाव, खोटी आदत। वि० बुरे स्वभावका, नीच प्रकृतिका।

दुष्प्रधर्ष, **दुष्प्रधर्षण**–वि० (सं०) दे० 'दुर्धर्ष'।

दुष्प्रधर्षणी, **दुष्प्रधर्षिणी**–स्त्री० (सं०) कंटकारी, भटकटैया।

दुष्प्रधर्षा–स्त्री० (सं०) जवासा; बनखजुरी।

दुष्प्रवृत्ति–स्त्री० (सं०) दुःखद समाचार (रघु०); बुरी प्रवृत्ति। वि० बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुष्प्रवेशा–स्त्री० (सं०) कंथारी वृक्ष।

दुष्प्राप, **दुष्प्रापण**, **दुष्प्राप्य**–वि० (सं०) जिसका मिलना कठिन हो, जो कठिनतासे प्राप्त हो सके।

दुष्प्रेक्ष्य–वि० (सं०) जिसे देखना कठिन हो, जिसकी ओर ताका न जा सके; जिसकी ओर देखनेका साहस न हो।

दुष्मंत, **दुष्यंत**–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध पुरुवंशी राजा जिनके पुत्र भरतके नामपर आर्यावर्तका भारत नाम पड़ा (इन्होंने ही कण्व ऋषि द्वारा पाली हुई शकुंतला नामकी दिव्य-कन्यकासे गांधर्व विवाह किया था। इन्हीं दुष्यंत तथा शकुंतलाकी कथाको कालिदासने अपने प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतल'का उपजीव्य बनाया है)।

दुष्योदर–पु० (सं०) एक उदररोग।

दुसराना*–स० क्रि० दुहराना।

दुसरिहा*–वि० दूसरा, अन्य; साथ रहनेवाला; सहाय; बराबरीका दावा करनेवाला, प्रतिद्वंद्वी।

दुसह*–वि० दे० 'दुःसह'।

दुसही*–वि० कठिनाईसे सहनेवाला; विद्वेषी, डाह करनेवाला।

दुसाध–पु० एक जाति जो सूअर पालती है।

दुसासन*–पु० दे० 'दुःशासन'।

दुस्तर–वि० (सं०) जिसे पार करना कठिन हो; कठिन।

दुस्त्यज–वि० (सं०) जिसे छोड़ा न जा सके; जिसे छोड़ना कठिन हो।

दुस्थ, **दुस्थित**–वि० (सं०) शोचनीय दशामें पड़ा हुआ; दुष्ट; मूर्ख; लुभाया हुआ, लुब्ध।

दुस्थिति–स्त्री० (सं०) दुर्दशा, दुरवस्था।

दुस्पर्श–वि० (सं०) दे० 'दुष्पर्श'।

दुस्पर्शा–स्त्री० (सं०) जवास; केवाँच; भटकटैया।

दुस्पृष्ट–पु० (सं०) जिह्वाका ईषत् स्पर्श जिससे य्, र्, ल्, व् का उच्चारण होता है।

दुस्सह–वि० (सं०) दे० 'दुःसह'।

दुहता–पु० नाती, दौहित्र।

दुहना–स० क्रि० स्तन और चूचुकको उँगलियोंसे दबाकर दूध निकालना; निचोड़ना, सार भाग निकालना; (किसीका) धन अपहरण करना; (किसीको) चूसना। मु० **दुह लेना**–सर्वस्व अपहरण कर लेना; किसीसे अधिकसे अधिक लाभ उठाना।

दुहनी–स्त्री० दूध दुहनेका पात्र, दोहनी।

दुहरना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'दोहरना'।

दुहरा–वि० दे० 'दोहरा'।

दुहराना–स० क्रि० दे० 'दोहराना'।

दुहाई–स्त्री० घोषणा, मुनादी; रक्षाके लिए की गयी पुकार; आपत्तिके समय रक्षाके लिए किसी समर्थ व्यक्ति या देवताको पुकारना; प्रताप, ऐश्वर्य आदिकी प्रसिद्धि (–फिरना); शपथ, कसम; दुहनेका काम; दुहनेकी उजरत।

दुहाग–पु० दुर्भाग्य; वैधव्य।

दुहागिन*–वि० स्त्री० दुर्भाग्यवती, अभागिन, विधवा (स्त्री)।

दुहागिल†–वि० अभागा, भाग्यहीन; शून्य, खाली।

दुहागी*–वि० भाग्यहीन, अभागा।

दुहाना–स० क्रि० दुहनेमें दूसरेको प्रवृत्त करना, दुहनेका काम दूसरेसे कराना।

दुहावनी–स्त्री० दूध दुहनेकी उजरत।

दुहिता(तृ)–स्त्री० (सं०) पुत्री, कन्या। **–(तृ) पति**–पु० जामाता।

दुहितृका–स्त्री० (सं०) पुत्रिका; पुतली, गुड़िया।

दुहिन*–पु० दे० 'द्रुहिण', ब्रह्मा।

दुहेल*–पु० क्लेश, संकट।

दुहेला–पु० विकट खेल; कठिन कार्य; क्लेशकर कर्म। वि० दुःखमें पड़ा हुआ, दुःखी; कठिन, कष्टसाध्य; दुःखबहुल। (स्त्री० 'दुहेली'।)

दुहोतरा–पु० बेटीका बेटा, नाती। वि० दो और, दो अधिक।

दुह्य–वि० (सं०) दुहने योग्य; जिसे अभी दुहना हो।

दूँद*–पु० दे० 'द्वंद्व', उपद्रव।

दूँदना–अ० क्रि० द्वंद्व मचाना, झगड़ा करना।

दूँदि*–स्त्री० दे० 'दूँद'।

दू†–वि०, पु० दे० 'दो'। **–गुन**†–वि० द्विगुण, दुगना। **–मुँहा**†–वि० दे० 'दुमुँहा'।

दूआ–पु० दे० 'दुक्का'; पासेका वह दाँव जिसमें दो बिंदियाँ ऊपर हों; कौड़ियोंके जुएमें दो कौड़ियोंका चित्त पड़ना।

दूइ†–वि० दे० 'दो'।

दूइज†–स्त्री० दे० 'दूज'।

दूई†–वि० दे० 'दो'।

दूक*–वि० दो-एक, कुछ।

दूकान–स्त्री० दे० 'दुकान'। **–दार**–पु० दे० 'दुकानदार'। **–दारी**–स्त्री० दे० 'दुकानदारी'।

दूखन–पु० दे० 'दूषण'।

दूखना*–अ० क्रि० दे० 'दुखना'। स० क्रि० दोषारोपण करना; दोष लगाना।

दूखित†–वि० दे० 'दुःखित'; 'दूषित'।

दूज–स्त्री० पक्षकी दूसरी तिथि, द्वितीया । **मु०–का चाँद होना**–बहुत कम दिखाई पड़ना ।

दूजा*–वि० दूसरा ।

दूडाश–वि० (सं०) जिसपर मुश्किलसे शासन किया जा सके; अधार्मिक ।

दूत–पु० (सं०) एक जगहसे दूसरी जगह चिट्ठी-पत्री, संदेश आदि पहुँचानेके लिए नियुक्त व्यक्ति, हरकारा; किसी राजा या राष्ट्रका वह प्रतिनिधि जो राजनीतिक कार्यसे अन्य राष्ट्रमें भेजा गया हो या स्थायी रूपसे रहता हो; राजदूत; प्रेमी-प्रेमिकाका संदेश एक-दूसरेके पास पहुँचानेवाला व्यक्ति; इधरकी बात उधर कहकर झगड़ा लगानेवाला व्यक्ति । **–कर्म(न्)**–पु० दूतका कर्म । **–काव्य**–पु० वह काव्य जिसमें दूत द्वारा प्रेमपात्रके पास विरह संदेश भेजनेका वर्णन हो । **–मुख**–वि० दूतके जरिये बोलनेवाला ।

दूतक–पु० (सं०) दे० 'दूत' ।

दूतता–स्त्री०, **दूतत्व**–पु० दूतका कार्य या पद ।

दूतर*–वि० दुस्तर, कठिन ।

दूतालय, दूतावास–पु० (सं०) राजदूतके रहनेका स्थान और उसका कार्यालय ।

दूतिका, दूती–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो प्रेमी और प्रेमिकाको मिलाये या एकका संदेश दूसरेके पास पहुँचाये; कुटनी ।

दूत्य–पु० (सं०) दूतका भाव या कर्म ।

दूद–पु० (फा०) धुआँ । **–कश**–पु० धुआँ निकलनेका सूराख, चिमनी ।

दूदुह*–पु० दे० 'दुंदुभ' ।

दूध–पु० स्त्री०, गाय, भैंस आदिके स्तनसे निकलनेवाला सफेद रंगका प्रसिद्ध तरल पदार्थ जिसपर उनके बच्चे अधिक दिनोंतक रहते हैं; कच्चे अन्नके दानों तथा कुछ पौधोंसे निकलनेवाला दूधके रंगका रस । **–चढ़ी***–वि० स्त्री० जिसका दूध बढ़ गया हो, जिसके स्तनमें अधिक दूध भर आया हो । **–पिलाई**–स्त्री० एक विवाहसंबंधी रस्म जिसमें बरातके रवाना होनेके पहले वरके पालकी आदिपर चढ़ते समय उसकी माता उसे दूध पिलानेकी-सी मुद्रा करती है; इस कार्यके उपलक्ष्यमें माताको दिया जानेवाला नेग; दूध पिलानेवाली धाय । **–पूत**–पु० धन-धान्य, पुत्र पौत्रादि । **–फेनी**–स्त्री०, दूधके साथ खाया जानेवाला एक पकवान । **–बहन**–स्त्री० एक ही स्त्रीका दूध पीनेके नाते मानी जानेवाली बहन । **–भाई**–पु० ऐसे दो बालकों या व्यक्तियोंमेंसे एक जो सहोदर न हों पर एक ही स्त्रीका दूध पीकर पले हों । **–मुँहा**–वि० जो अभी माताके दूधपर रहता हो; जिसके दूधके दाँत अभी न टूटे हों, अल्पवयस्क । **–मुख**–वि० दे० 'दूधमुँहा' । **–वाला**–पु० ग्वाला, दूध बेचनेवाला । **मु० –उछालना**–खौलते दूधको ठंडा करनेके लिए छोटे बरतनमें बार-बार निकालकर ऊँचेसे पतली धारमें कड़ाही आदिमें गिराना । **–उतरना**–स्तनोंमें दूध आना । **–का दूध और पानीका पानी**–ठीक-ठीक, सच्चा-सच्चा न्याय । **–का बच्चा**–केवल दूधके आधार पर रहनेवाला बच्चा, अति शिशु । **–की मक्खी**–अत्यंत तुच्छ या घृणित वस्तु । **–की मक्खीकी तरह निकालना या निकाल फेंकना**–अत्यंत तुच्छ वस्तुकी तरह एकदम अलग कर देना । **–के दाँत**–शैशवावस्थामें निकले दाँत । **–के दाँत न टूटना**–कमसिन या अनुभवहीन होना । **–चढ़ना**–स्तनोंमें कम दूध उतरना; स्तनमें दूध अधिक उतर आना । **–चढ़ाना**–दुहनेके समय गाय आदिका अपने स्तनोंमें कुछ दूध चुरा रखना । **–छुड़ाना**–माताके दूधपर ही निर्भर रहनेकी बच्चोंकी आदत धीरे-धीरे कम कराना । **–तोड़ना**–दूध देना बंद कर देना या कम दूध देने लगना । **–पड़ना**–कच्चे दानोंमें रस भर आना । **–पीता बच्चा**–एक दम नन्हा बच्चा । **–फटना**–खटाई पड़ने आदिसे दूधके सार-भाग तथा जल भागका अलग-अलग हो जाना । **–फाड़ना**–खटाई आदि डालकर दूधके सार और जलभागको अलग-अलग कर देना । **दूधों नहाना, पूतों फलना**–धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादिसे संपन्न होना ।

दूधा†–पु० दूधके-से रंगका रस जो अन्नके कच्चे दानोंमेंसे निकलता है ।

दूधाधारी–वि० केवल दूधके सहारे रहनेवाला; दूधाहारी ।

दूधा-भाती†–स्त्री० एक वैवाहिक प्रथा जिसमें वर-कन्या एक-दूसरेको अपने हाथों दूध-भात खिलाते हैं ।

दूधिया–स्त्री० एक तरहका सफेद पत्थर; खरिया मिट्टी; एक सफेद घास । वि० दूध-संबंधी; दूध मिला हुआ; दूधके रंगका, सफेद; कच्चा होनेके कारण जिसमें अभी दूध हो, बहुत कच्चा । **–खाकी**–पु० सफेद राख जैसा रंग ।

दून–स्त्री० दूनेका भाव; दो पहाड़ोंके बीचकी जगह, घाटी (अमर०); ताशके खेलमें बदी हुई संख्यामें सर या हाथ बनानेमें असफल होनेपर किसी खिलाड़ी या पक्षका दूनी हारका भागी होना । वि० दुगुना, दोहरा; (सं०) क्लांत; पीड़ित; क्षुब्ध; उपतप्त । **मु० –की लेना या हाँकना**–डींग मारना । **–की सूझना**–शक्तिसे बाहरकी बातका मनमें आना ।

दूनर*–वि० जो झुककर दोहरा हो गया हो ।

दूना–वि० दुगुना, दो गुना ।

दूनौ*–वि० दोनों ।

दूप्र–वि० (सं०) बलवान् ।

दूब–स्त्री० एक प्रसिद्ध घास, दूर्वा ।

दूबदू–अ० मुकाबलेमें, मुँहपर ।

दूबरा*–वि० दुर्बल, कृश; दीनहीन; अशक्त ।

दूबा†–स्त्री० दूब ।

दूबिया–पु० एक तरहका रंग । वि० दूबके-से रंगका ।

दूबे–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; दुबे, द्विवेदी ।

दूभर–वि० भारी, बोझिल; कठिन; असह्य; दुष्कर ।

दूमना*–अ० क्रि० हिलना, डोलना ।

दूयन–पु० (सं०) शरीरका ताप, ज्वर ।

दूरंगम–वि० (सं०) दे० 'दूरगामी' ।

दूरंदेश–वि० (फा०) दे० 'दूरदर्शी' ।

दूरंदेशी–स्त्री० दे० 'दूरदर्शिता' ।

दूर–अ० (सं०) देश-काल आदिकी दृष्टिसे अधिक अंतरपर; विशिष्ट स्थान-समय आदिसे बहुत हटकर, फासलेपर; अलग, पृथक् । वि० जो दूर हो, असमीपस्थ । **–गामी(मिन्)**–वि० दूरतक जानेवाला । **–ग्रहण**–पु० दूरस्थ वस्तुओंको देखनेकी दिव्य शक्ति । **–दर्शक**–पु० पंडित, प्राज्ञ । वि० दूरतक देखनेवाला; जिसके द्वारा दूरतककी चीज देखी जाय; दूरतक सोचनेवाला, बुद्धिमान् । **–०यंत्र**–पु० दे० 'दूरबीन' । **–दर्शन**–पु० गीध; पंडित; दूरबीन दे० क्रममें । **–दर्शिता**–स्त्री० दूरकी बात सोचनेका गुण या शक्ति; दूरदर्शी होनेका भाव, दूरंदेशी । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दूरकी बात सोचनेवाला, दूरंदेश, परिणामदर्शी । पु० गीध; पंडित । **–दृक्(श्)**–वि०, पु० दे० 'दूरदर्शी' । **–दृष्टि**–स्त्री० दूरदर्शिता, दूरंदेशी । **–निरीक्षण**–पु० दूरबीन । **–पात**–पु० लंबी उड़ान; अधिक ऊँचाईसे गिरना । वि० दूरसे बाण चलानेवाला । **–पार**–वि० जिसका दूसरा किनारा दूर हो, बहुत चौड़ा । **–प्रभावी, –प्रहारी आदि**–दे० क्रममें । **–भिन्न**–वि० जो बहुत जख्मी हो गया हो । **–मूल**–पु० मूंज । **–यायी(यिन्)**–वि० दूरगामी । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० दूरीपर रहनेवाला, जो दूर हो । **–वस्त्रक**–वि० नग्न । **–वासी(सिन्)**–वि० दूर रहनेवाला । **–वीक्षण**–पु० दे० क्रममें । **–वेधी(धिन्)**–वि० दूरसे ही लक्ष्यका भेदन करनेवाला । **–स्थ, –स्थित**–वि० जो निकट न हो, असमीपस्थ । **मु० –करना**–हटाना; अलग करना; नष्ट करना । **–की कहना**–बड़े मार्केकी बात कहना, बड़ी सूझकी बात कहना । **–की बात**–असंभव बात; मार्केकी या सूक्ष्म बात । **–की सोचना**–दूरंदेशीकी बात सोचना । **–क्यों जाइये या जायँ**–दूरके दृष्टांतको छोड़कर निकटके ही दृष्टांतपर विचार करें । **–भागना**–बहुत बचना, अपनेको किसीसे बहुत अलग रखना । **–होना**–मिट जाना, बना न रहना (भ्रम, शंका); हट जाना ।

दूर–अ०, वि० (फा०) दे० 'दूर' (सं०) । **–बीन**–स्त्री० एक उपकरण जिसके द्वारा दूरकी वस्तुएँ बड़ी और समीपस्थ दिखाई देती हैं ।

दूरदर्शक यंत्र, दूरदर्शी–पु० (टेलिस्कोप) वह यंत्र जिससे देखनेपर दूरकी वस्तुएँ निकटस्थ जैसी तथा आकारमें अपेक्षाकृत बड़ी एवं स्पष्टतर दिखाई पड़ें, दूरबीन ।

दूरप्रभावी, दूरव्यापी–वि० (फार-रीचिंग) जिसका प्रभाव बहुत दूरतक पड़े।

दूरप्रहारी, दूरमार-तोप–स्त्री० (लांगरेंज गन) दूरतक गोला फेंकनेवाली, लंबा निशाना मारनेवाली तोप।

दूरबा†–स्त्री० दूर्वा, दूब।

दूरभाष–पु० (टेलीफोन) वह यंत्र जिसमें, प्रायः बिजलीकी सहायतासे, दूरके शब्द या दूरकी वाणी ज्योंकी त्यों सुनाई दे, टेलीफोन। **–मिलानकेंद्र**–पु० (टेलीफोन एक्सचेंज) किसी नगर या जिलेका प्रधान दूरभाष-कार्यालय जहाँ स्थानीय व्यक्तियोंसे या बाहरके लोगोंसे दूरभाष यंत्रों द्वारा बातचीत करानेके लिए दोनों ओरके यंत्रोंमें संबंध स्थापित करनेकी व्यवस्था की जाती है।

दूरमुद्रक–पु० (टेलीप्रिंटर) एक यंत्र जिसकी सहायतासे दूरके समाचार, संदेश आदि अन्यत्र रखी हुई अन्य मशीनपर अपने आप छपते चले जाते हैं।

दूरलेख–पु० दे० 'टेलीग्राम'।

दूरविक्षेपक–पु० (ट्रांसमिटर) एक स्थानपर उत्पन्न की गयी ध्वनि, गति आदिको विद्युत्तरंगों, प्रकाशलहरी आदिकी सहायतासे दूर-दूरतक फैलानेवाला यंत्र, प्रेषित्र।

दूरविक्षेपण–पु० (ट्रांसमिशन) एक स्थानपर उत्पन्न ध्वनि आदिको दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी क्रिया, संचारण, **पारेषण**। **–केंद्र**–पु० (ट्रांसमिटिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँसे दूरविक्षेपण-यंत्र द्वारा कोई ध्वनि (भाषण, नाटक, संगीत आदि) दूर-दूरतक फैलाने, पहुँचानेकी व्यवस्था हो। **–यंत्र**–पु० (ट्रांसमिटिंग एपैरेटस) दे० 'दूरविक्षेपक', प्रेषित्र।

दूरवीक्षण–पु० (टेलीविज़न) वह यंत्र जिससे व्यवधान रहते हुए भी दूरकी वस्तुएँ, अभिनय, कथन, घटनाएँ आदि स्पष्ट देखी या सुनी जा सकें; सचित्र रेडियो।

दूर-संचार–पु० (टेली-कम्युनिकेशन)–तार टेलीफोन आदिकी सहायतासे दूरतक समाचार, संदेश आदि पहुँचानेका कार्य या व्यवस्था।

दूरांतरित–वि० (सं०) दूरस्थ।

दूरागत–वि० (सं०) दूरसे आया हुआ।

दूरान्वय–पु० (सं०) कर्ता-क्रिया, विशेष्य-विशेषण आदिका एक दूसरेसे दूर होना; रचनाका एक दोष (सा०)।

दूरापात–वि० (सं०) (अस्त्र) जो दूरसे फेंका जा सके।

दूरारूढ–वि० (सं०) काफी ऊँचाईपर चढ़ा हुआ; बहुत आगे बढ़ा हुआ; तीव्र; बद्धमूल; प्रगाढ़।

दूरि*–अ०, वि० दूर।

दूरी–स्त्री० अंतर, फासला।

दूरीकरण–पु० (सं०) दूर करना।

दूरेचर–वि० (सं०) दूरवर्ती।

दूरेबांधव–पु० (सं०) दूरका रिश्तेदार।

दूरेरितेक्षण–वि० (सं०) ऐंचाताना।

दूरेश्रवा(वस्)–वि० (सं०) बहुत प्रसिद्ध।

दूरोह–पु० (सं०) आदित्यलोक जहाँतक पहुँचना मुश्किल है। वि० दे० 'दुरारोह'।

दूरोहण–पु० (सं०) सूर्य।

दूर्य–पु० (सं०) विष्टा, मैला; कचूर।

दूर्वा–स्त्री० (सं०) दूब। **–क्षेत्र**–पु० (लॉन) किसी गृह, प्रासाद आदिके सामने, पीछे या बगलका वह खुला मैदान जो दूर्वासे आच्छादित हो, शाद्वल भूमि। **–सोम**–पु० सोमलताका एक भेद।

दूर्वाष्टमी–स्त्री० (सं०) भादों सुदी अष्टमी जिस दिन व्रत आदि रखते हैं।

दूर्वेष्टका–स्त्री० (सं०) यज्ञकी वेदी बनानेमें ईंटकी तरह काम आनेवाली घास।

दूलन*–पु० दे० 'दोलन'।

दूलभ†–वि० दे० 'दुर्लभ'।

दूलह–पु० दे० 'दूल्हा'।

दूलिका–स्त्री० (सं०) नील।

दूलित*–वि० दे० 'दोलित'।

दूली–स्त्री० (सं०) नील।

दूल्हा–पु० वह व्यक्ति जिसका ब्याह होने जा रहा हो या कुछ ही दिनों पहले हुआ हो, वर, नौशा; पति; नायक, नेता; मुख्य व्यक्ति।

दूश्य–पु० (सं०) खेमा।

दूषक–पु० (सं०) दोषारोपण करनेवाला व्यक्ति, दोष लगाने या आक्षेप करनेवाला मनुष्य; दुष्ट व्यक्ति। वि० दोषजनक; सदोष बनानेवाला; कलंकित करनेवाला; अपराध करनेवाला; बुरा (कार्य)।

दूषण–पु० (सं०) दोष, ऐब, खराबी, दुर्गुण; त्याज्य बात; दोष लगानेका कार्य या भाव, दोषारोपण; बहकाना; विरोध करना; समझौता भंग करना; प्रतिवाद; अपराध; रावणका एक भाई। * वि० विनाशकारी, संहारक।

दूषणारि–पु० (सं०) राम जिन्होंने दूषणको मारा था।

दूषणीय–वि० (सं०) जिसपर दोष लगाया जा सके, दोषारोपणके योग्य।

दूषन*–पु० दे० 'दूषण'।

दूषना*–स० क्रि० दोष लगाना; दूषित बनाना।

दूषि, दूषिका, दूषीका–स्त्री० (सं०) आँखका मैल; चित्रकारकी कूची।

दूषित–वि० (सं०) दोषयुक्त, बुरा, गंदा; कलंकित।

दूषी–स्त्री० (सं०) आँखका मैल। **–विष**–पु० स्थावर, जंगम या कृत्रिम विषका वह अंश जो शरीरमें बच रहनेके कारण कालांतरमें जीर्ण होकर धातुओंको दूषित बना देता है।

दूष्य–पु० (सं०) वस्त्र; खेमा; हाथी बाँधनेका रस्सा; पूय; विष। वि० दोष लगाने, दूषित बनाने योग्य; निंद्य; राष्ट्रका अहित करनेवाला। **–महामात्र**–पु० राजद्रोही मंत्री।

दूसना*–स० क्रि० दोष लगाना।

दूसर*–वि० दे० 'दूसरा'।

दूसरा–वि० जो गिनतीमें दोके स्थानपर हो, पहलेके बादका; पराया; भिन्न, दिगर; अतिरिक्त; जिसका चर्चाके विषय या आदमीसे कोई लगाव न हो।

दूहना–स० क्रि० 'दुहना'।

दूहनी–स्त्री० दे० 'दोहनी'।

दूहा*–पु० दे० 'दोहा'।

दृक–पु० (सं०) छेद, छिद्र।

दृक्(श्)–पु० (सं०) आँख, दृष्टि; दोकी संख्या; देखना; द्रष्टा; ज्ञान। **–कर्ण**–पु० सर्प। **–क्षय**–पु० आँखोंका कमजोर होना, देखनेकी शक्तिका ह्रास। **–क्षेप**–पु० किसी ओर दृष्टि डालना, दृष्टिपात। **–पथ**–पु० दे० 'दृष्टिपथ'। **–पात**–पु० दे० 'दृक्क्षेप'। **–प्रिया**–स्त्री० सौंदर्य; कांति। **–शक्ति**–स्त्री० प्रकाशरूप चैतन्य; सबको प्रकाशित करनेवाला चेतन पुरुष। **–श्रुति**–पु० सर्प।

दृग*–पु० आँख, दृष्टि; देखनेकी शक्ति। **–मिचाव**–पु० आँखमिचौनी।

दृग्–'दृश'का समासगत रूप। **–अंचल**–पु० पलक; चितवन। **–अध्यक्ष**–पु० सूर्य। **–गति**–स्त्री० दृष्टिकी गति या पहुँच। **–गोच्चर**–वि० दे० 'दृष्टिगोचर'। **–विष**–पु० एक प्रकारका साँप जिसकी आँखोंमें विष रहता है। **–वृत्त**–पु० क्षितिज।

दृढ–वि० (सं०) जो विचलित न हो, जो डिग न सके, धीर, कड़े दिलका; कसकर बँधा हुआ; अशिथिल; गाढ; मजबूत, सबल, बलिष्ठ; पुष्ट; जो हिल-डुल न सके; जिसमें कोई फेरफार न हो सके; पक्का, अटल; कठिन; स्थूल; स्थायी, टिकाऊ। पु० अधिकता; दुर्ग; विष्णु; लोहा; तेरहवें मनुका पुत्र; संगीतका एक रूपक। **–कंटक**–पु० क्षुद्रफलक नामक वृक्ष। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० दृढ़तापूर्वक अपने काममें लगा रहनेवाला, अपने कामसे मुँह न मोड़नेवाला। **–कांड**–वि० जिसकी गाँठें मजबूत हों। पु० बाँस; एक खुशबूदार घास। **–कारी(रिन्)**–वि० दृढ़निश्चय, अध्यवसायी; दृढ बनानेवाला। **–गात्रिका**–स्त्री० राब। **–ग्रंथि**–वि०, पु० दे० 'दृढकांड'। **–चेता(तस्)**–वि० कड़े दिल, पक्के इरादेवाला। **–च्युत**–पु० अगस्त्य मुनिका एक पुत्र। **–तर**

–पु० धवका पेड़ । **–त्वक्(च्)**–पु० ज्वारका पेड़; एक तरहका सरकंडा । वि० कड़ी छालवाला । **–दंशक**–पु० एक हिंस्र जलजंतु । **–धन**–पु० बुद्ध । **–धन्वा(न्वन्), –धन्वी(न्विन्)**–वि० जिसका धनुष मजबूत हो; अच्छा कमनैत । **–नाभ**–पु० ऐंद्रजालिक अस्त्रोंका एक तरहका प्रतिकार (वा० रामा०) । **–निश्चय**–वि० संकल्पका पक्का । **–नीर**–पु० नारियल । **–नेमि**–वि० जिसकी धुरी दृढ़ हो; एक राजा जो सत्यधृतिके पुत्र थे । **–पत्र**-वि०, पु० दे० 'दृढकांड' । **–पत्री**–स्त्री० वल्वजा तृण । **–पद**–पु० एक मात्रिक छंद । **–पाद**–पु० ब्रह्मा । वि० दृढ़ निश्चयवाला । **–पादा**–स्त्री० यवतिक्ता । **–पादी**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–प्रतिज्ञ**–वि० जो प्रतिज्ञासे न डिगे, सत्यसंध, सत्यप्रतिज्ञ । **–प्ररोह**–पु० बरगदका पेड़ । **–फल**–पु० नारियल । **–बंधिनी**–स्त्री० श्यामा लता । **–बीज**–पु० चकवँड़; बरगद; बबूल; अमरूद; बेर । वि० जिसके बीज कड़े हों । **–भूमि**–स्त्री० योगशास्त्रमें मनको एकाग्र बनानेवाला एक प्रकारका अभ्यास । **–मुष्टि**–वि० जिसकी मुट्ठी जल्दी न खुल सके; कृपण, कंजूस । पु० तलवार । **–मूल**–पु० मूँज; नारियल । **–रंगा**–स्त्री० फिटकरी । **–लता**–स्त्री० पातालगरुड़ी लता । **–लोमा(मन्)**–पु० बनैला सूअर । वि० जिसके रोयें कड़े हों । **–वल्कल**–पु० सुपारीका पेड़; लकुचका पेड़ । वि० कड़ी छालवाला । **–वल्का**–स्त्री० अंबष्ठा । **–वीज**–पु० दे० 'दृढबीज' । **–व्रत**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० संकल्पका पक्का, दृढनिश्चय, दृढप्रतिज्ञ । **–संध**–वि० दृढ़व्रत, दृढप्रतिज्ञ । **–संधि**–वि० जो जुड़कर या सटकर एक हो गया हो । **–सूत्रिका**–स्त्री० मूर्वा लता । **–स्कंध**–पु० खिरनीका पेड़ । **–हस्त**–वि० जो मजबूतीसे तलवार आदि पकड़ सके ।

दृढता–स्त्री०, **दृढत्व**–पु० (सं०) दृढ़ होनेका भाव ।

दृढांग–पु० (सं०) हीरा । वि० बलिष्ठ अंगोंवाला, हट्टा-कट्टा ।

दृढ़ाई*–स्त्री० दृढ़ता, मजबूती ।

दृढ़ाना–अ० क्रि० दृढ़ होना, पुष्ट होना; स्थिर होना । स० क्रि० दृढ़ बनाना, मजबूत करना, पक्का करना ।

दृढायुध–पु० (सं०) शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० दृढतापूर्वक अस्त्र चलानेवाला ।

दृढीकरण–पु० (सं०) दृढ बनाना; पुष्टि ।

दृढेषुधि–वि० (सं०) जिसका तरकश मजबूत हो या कसकर बँधा हो।

दृत–वि० (सं०) आदृत, सम्मानित; विदीर्ण ।

दृता–स्त्री० (सं०) जीरा ।

दृति–स्त्री० (सं०) चमड़ा; चमड़ेका पात्र, मशक; मछली; वह चमड़ा जो गाय-बैल आदिके गलेके नीचे झूलता रहता है, गलकंबल; मेघ । **–धारक**–पु० एक पौधा । **–हरि**–वि० गलकंबल या झोंझवाला (पशु) । पु० कुत्ता (जो चमड़ेकी चीजें चुराता है) । **–हार**–पु० मशकमें पानी ढोनेवाला, भिश्ती ।

दृन्फू–स्त्री० (सं०) सर्प; वज्र; पहिया । पु० सूर्य ।

दृन्भू–पु० (सं०) वज्र; सूर्य; यम; राजा ।

दृप्त–वि० (सं०) गर्वित; उन्मत्त; हर्षयुक्त; तेजोयुक्त; दीप्त । पु० विष्णु ।

दृप्र–वि० (सं०) घमंडी; बलवान् ।

दृब्ध–वि० (सं०) ग्रथित; भीत । पु० डर; धागा, डोरी ।

दृशद्(त्)–स्त्री० (सं०) दे० 'दृषद्' ।

दृशद्वती–स्त्री० (सं०) दे० 'दृषद्वती' ।

दृशा–स्त्री० (सं०) आँख ।

दृशाकांक्ष्य–पु० (सं०) कमल ।

दृशान–पु० (सं०) आध्यात्मिक गुरु; ब्राह्मण; लोकपाल; चमक, आभा ।

दृशि–स्त्री० (सं०) आँख, दृष्टि; देखना; प्रकाश; शास्त्र ।

दृशी–स्त्री० (सं०) आँख, दृष्टि; शास्त्र; प्रकाश ।

दृशीक–वि० (सं०) ध्यान देने योग्य; सुंदर । पु० प्रत्यक्ष होना ।

दृशोपम–पु० (सं०) श्वेत कमल ।

दृश्य–पु० (सं०) जो कुछ देखा जाय, वह सब कुछ जो दर्शकको दृष्टि-गोचर हो, नजारा; तमाशा । वि० देखने योग्य, दर्शनीय; मनोरम, शोभन; जानने योग्य, ज्ञातव्य; जो दर्शकोंको अभिनय द्वारा दिखाया जाय (काव्य) ।

दृश्यता–स्त्री० दृश्य होनेकी, दिखाई पड़नेकी स्थिति, वह स्थिति जिसमें देखनेकी शक्ति काम कर सके (विजिबिलिटि) ।

दृश्यमान–वि० (सं०) जो देखा जा रहा हो, देखा जाता हुआ ।

दृश्याभास–पु० (स्पेक्ट्रम) देखी हुई किसी वस्तु किंवा दृश्यका वह चित्र, प्रतिबिंब या आभास जो आँखें बंद कर लेनेके बाद भी सामने विद्यमान-सा प्रतीत हो ।

दृषद्(त्)–स्त्री० (सं०) शिला; सिल; चक्की ।

दृषद्वती–स्त्री० (सं०) एक नदी जिसका उल्लेख ऋग्वेदतकमें मिलता है । (मनुस्मृतिमें इसे ब्रह्मावर्तकी सीमापर स्थित बताया गया है); विश्वामित्रकी एक पत्नी ।

दृष्ट–पु० (सं०) अनुभूति; साक्षात्कार, दर्शन; राजाको अपनी तथा शत्रुकी सेनासे होनेवाला भय; डाकुओं आदिका भय । वि० देखा हुआ; जाना हुआ; साक्षात् देखा या भोगा जानेवाला, ऐहिक (विषय); प्रत्यक्ष (सां०) । **–कूट**–पु० पहेली; एक प्रकारकी पहेली जैसी दुरूह कविता जिसका अर्थ बहुत सोच-सोचकर निकाला जाता है । **–पृष्ठ**–वि० लड़ाईके मैदानसे भागनेवाला । **–रजा(जस्)**–स्त्री० वह कन्या जो रजस्वला हो गयी हो । **–वत्**–वि० प्रत्यक्षके समान, प्रत्यक्षतुल्य ।

दृष्टमान*–वि० दे० 'दृश्यमान' ।

दृष्टांत–पु० (सं०) प्रस्तुत विषयको समझानेके लिए समान अभिप्रायवाली किसी दूसरी बातका कथन; उदाहरण, मिसाल; अर्थालंकारका एक भेद जहाँ उपमेय वाक्य और उपमान वाक्योंमें तथा उन दोनोंके धर्मोंमें बिंब-प्रतिबिंबभाव दिखाया जाय; शास्त्र; मरण ।

दृष्टार्थ–वि० (सं०) जिसका अर्थ या विषय स्पष्ट हो; व्यावहारिक।

दृष्टि–स्त्री० (सं०) देखना, अवलोकन; देखनेकी शक्ति; दीठ, टक, नजर; प्रकाश; ज्ञान; मत, विचार, खयाल; उद्देश्य, अभिप्राय; सोचने-विचारनेका पहलू; आशाभरी नज़र । **–कूट**–पु० दे० 'दृष्टकूट' । **–कृत,–कृत्**–पु० स्थलपद्म । **–कोण**–पु० देखने–सोचने-विचारनेका पहलू । **–क्रम**–पु० चित्रित वस्तुओंमें वही सापेक्ष्य छोटाई-बड़ाई, ऊँचाई-निचाई आदि दिखाई देना जो स्थानविशेषसे प्रत्यक्ष दर्शनमें दिखाई देती है । **–क्षेप**–पु० दृष्टि डालनेकी क्रिया, नजर डालना, अवलोकन । **–गत**–वि० जो देखनेमें आया हो, जो देख पड़ा हो । **–गुण**–पु० निशाना, लक्ष्य । **–गोचर**–वि० जिसका चाक्षुष प्रत्यक्ष हो सके, जो देखा जाय, निगाहमें पड़नेवाला, दिखाई पड़नेवाला । **–दोष**–पु० नजरका बुरा असर; देखनेमें त्रुटि होना । **–निपात**–पु० दे० 'दृष्टिक्षेप' । **–पथ**–पु० नेत्रव्यापारका क्षेत्र । **–पात**–पु० दे० 'दृष्टिक्षेप' । **–पूत**–वि० जो देखनेमें शुद्ध हो; भली भाँति देखा-भाला हुआ । **–बंध**–पु० नजरबंदी । **–बंधु**–पु० खद्योत, जुगनू । **–बिंदु**–पु० किसी भी रचना प्रक्रियाके दौरसे गुजरते हुए लेखककी वह केन्द्रीय धारणा, जो उसे अपने हिसाबसे अनुभूतियोंके चयनमें सहायता पहुँचाती है । **–भ्रम**–पु० (हेलूसिनेशन) ऐसी किसी वस्तुका आभास होना जिसका वस्तुतः कोई बाह्य अस्तित्व न हो, आधारहीन या अस्तित्वहीन वस्तु देखने-समझनेका धोखा, भ्रांति । **–मांद्य**–आँखोंसे कम दिखाई देना । **–रोध**–पु० देखनेकी क्रियाका रुकना या रोका जाना; देखनेके काममें होनेवाली रुकावट । **–विक्षेप**–पु० तिरछी चितवन, कटाक्ष; दृष्टिपात । **–विद्या**–स्त्री० आलोक-विज्ञान । **–विभ्रम**–पु० प्रेमभरी चितवन, नेत्रविलास । **–विष**–पु० एक प्रकारका साँप । मु०–**फिरना**–दे० 'आँखें फिर जाना' । **–फेरना**–दे० 'आँख फेरना' । **–बचाना**–दे० 'आँख बचाना' । **–बिछाना**–दे० 'आँख बिछाना' । **–भर देखना**–तृप्तिपर्यंत देखना, जी भरकर देखना । **–मारी जाना**–अंधा होना, नेत्रहीन होना । **–मिलाना**–देखा-देखी करना । **–में समाना**–दे० 'आँखोंमें समाना' । **(किसीपर)–रखना**–निगरानी करना, देखरेखमें रखना, देख-भाल करना । **–लगाना**–एकटक देखना, देरतक देखते रहना; नेह जोड़ना, प्रीति लगाना ।

दृष्टिवंत–वि० ज्ञानवान्, बुद्धिमान्; दीठवाला ।

दे–पु० बंगाली कायस्थोंकी एक उपाधि। * स्त्री० देवीका लघु रूप।

देई*–स्त्री० दे० 'देवी'।

देउ†–पु० दे० 'देव'।

देउर†–पु० दे० 'देवर'।

देउरानी†–स्त्री० दे० 'देवरानी'।

देख–स्त्री० देखनेकी क्रिया या भाव। **–भाल,–रेख**–स्त्री० निगरानी, निरीक्षण; संरक्षण।

देखन*–स्त्री० देखनेकी क्रिया या भाव; चितवन, विलोकन। **–हारा**–पु० देखनेवाला, दर्शक।

देखना–स० क्रि० नेत्रों द्वारा किसीका ज्ञान प्राप्त करना; तलाश करना, खोजना; परीक्षा करना, परखना; निगरानी करना या रखना; सम्हालना; प्रबंध करना; सोचना-समझना; निरीक्षण करना; अनुभव करना, भोगना; पढ़ना, बाँचना; संशोधन करना; प्रतीकार करना; निबटना (हमारा मौका आयेगा तो हम भी देख लेंगे); किसी ओर दृष्टि फेरना, ध्यान देना।

देखनि*–स्त्री० दे० 'देखन'।

देखराना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

देखरावना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

देखाऊ–वि० जो केवल देखनेभरको हो, नकली, बनावटी, दिखावटी।

देखादेखी–स्त्री० एक-दूसरेको देखनेकी क्रिया, साक्षात्कार। अ० (किसीको) करते देखकर, अनुकरणके रूपमें।

देखाना*–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

देखाव–पु० दिखलानेका भाव या ढंग; सज-धज, तड़क-भड़क, बनाव-सिंगार।

देखावट–स्त्री० दे० 'देखाव'।

देखावना–स० क्रि० दे० 'दिखलाना'।

देखौआ–वि० दे० 'देखाऊ'।

देग–पु० (फा०) खाना पकानेका ताँबेका बड़ा बरतन। **–अंदाज**–पु० बावर्ची। **–चा**–पु० छोटा देग। **–ची**–स्त्री० छोटा देगचा।

देदीप्यमान–वि० (सं०) खूब चमकता हुआ, जाज्वल्यमान।

देन–स्त्री० देनेकी क्रिया या भाव; दी हुई वस्तु; वह उपयोगी या अमूल्य वस्तु जो किसीको दी जाय या दी गयी हो–'जगत्को जो हम सबसे बड़ी देन दे सकते हैं, वह यही आदर्श है'–राजेंद्र प्र०। पु० (अ०) कर्ज। **–दार**–वि० कर्जदार, ऋणी; आभारी। **–दारी**–स्त्री० देनदार होनेकी स्थिति। **–लेन**–पु० सूदपर रुपया देनेका व्यवहार, महाजनीका व्यवसाय। **–हार, हारा**–*–वि० देनेवाला।

देना–स० क्रि० किसी वस्तुपरसे अपना स्वामित्व हटाकर दूसरेको उसका स्वामी बनाना, प्रदान करना, समर्पित करना; सौंपना; मिलाना, डालना; लगाना; रखना; मारना, रसीद करना (थप्पड़–); पैदा करना, जनना (बिल्लीने काले बच्चे दिये हैं); हवाले करना, थमाना; अनुभव कराना; पहुँचाना। (यह क्रिया अन्य क्रियाओंके साथ प्रायः संयोजिका क्रियाके रूपमें प्रयुक्त होती है।) पु० कर्ज, ऋण।

देमान*–पु० दे० 'दीवान'।

देय–वि० (सं०) देने योग्य, दातव्य। **–धर्म**–पु० दानरूप धर्म।

देयादेय-फलक–पु० (बैलेंस-शीट) किसी व्यापारिक संस्था आदिका, समय-समयपर तैयार किया जानेवाला, समस्त देयों और आदेयों (पावनों तथा संपत्ति)का संक्षिप्त लेखा जिससे उसकी आर्थिक स्थितिका पता चले, पक्का चिट्ठा।

देयासिनि*–स्त्री० झाड़-फूंक करनेवाली (विद्यापति)।

देर–स्त्री० (फा०) उचितसे अधिक समय, विलंब, कालातिपात; समय, वक्त। **–फीस**–स्त्री० (लेट फी) नियत समयके दो-चार मिनट बाद डाकमें छोड़ी जानेवाली चिट्ठियोंपर लगनेवाला अतिरिक्त डाकव्यय।

देरानी*–स्त्री० देवरानी।

देरी†–स्त्री० दे० 'देर'।

देवँक†–स्त्री०, **देवँका**†–पु० दीमक।

देव–पु० (फा०) दैत्य, दानव; भीमकाय मनुष्य; (सं०) स्वर्गमें विचरण करनेवाला दिव्य शक्ति-संपन्न अमर प्राणी, देवता; परमात्मा; इंद्र; भविष्यत् उत्सर्पिणीके २२वें अर्हत्; मेघ; राजा; भव्य शरीरवाला व्यक्ति; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; पूज्य व्यक्तियों तथा राजाओंके लिए आदरसूचक संबोधन; प्रेम करनेवाला; स्पर्द्धा; क्रीड़ा; ज्ञानेंद्रिय; मूर्ख; शिशु; पारा; देवदारु, ३३ की संख्या; * देवर–'तात मातु जन सोदर जानौं। देव जेठ सब संगिहु मानौं'–रामचंद्रिका। वि० स्वर्ग-संबंधी; देव-संबंधी; चमकदार; सम्मान्य, पूज्य। **–ऋण**–पु० एक प्रकारका शास्त्रीय ऋण जिससे मुक्त होनेके लिए देवताओंके निमित्त यज्ञ, उपवास, व्रत आदि करना विहित है। **–ऋषि**–पु० नारद आदि देवकल्प ऋषि (इनमें कुछके नाम ये हैं–नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, भृगु)। **–कन्यका,–कन्या**–स्त्री० देवताकी पुत्री; (ला०) अत्यंत रूपवती तरुणी। **–कर्दम**–पु० चंदन, अगर, कपूर और केसरके मिश्रणसे तैयार किया जानेवाला एक गंधद्रव्य। **–कर्म(न्),–कार्य**–पु० देवताओंकी तुष्टिके लिए किये जानेवाले हवन-पूजनादि कृत्य; देवाभिलषित कार्य। **–काँड़र**–स्त्री० (हिं०) नदियोंके किनारे होनेवाला एक छोटा पौधा। **–काष्ठ**–पु० देवदारु। **–कुंड**–पु० प्राकृतिक जलाशय; किसी देवताके नामसे प्रसिद्ध या खुदवाया हुआ जलाशय; देवस्थानके निकटका जलाशय। **–कुट**–पु० देवमंदिर। **–कुरुंबा**–स्त्री० महाद्रोणी। **–कुरु**–पु० जंबूद्वीपका एक खंड। **–कुल**–पु० एक प्रकारका मंदिर, देवल; देवताओंका समुदाय; देव-वंश। **–कुल्या**–स्त्री० आकाशगंगा। **–कुसुम**–पु० लौंग; लवंग। **–कूट**–पु० एक प्राचीन आश्रम; कुबेरका एक पुत्र। **–कृच्छ्र**–पु० एक व्रत। **–खात,–खातक**–पु० गुफा; दे० 'देवकुंड'। **–गंधर्व**–पु० नारद; गानेका एक विशेष ढंग। **–गंधा**–स्त्री० महामेदा। **–गण**–पु० देवताओंका समूह; आदित्य, विश्व, वसु आदि विशिष्ट देववर्ग; देवताका अनुचर; अश्विनी, रेवती, पुष्य आदि नक्षत्रोंका एक समूह। **–गणिका**–स्त्री० अप्सरा। **–गति**–स्त्री० ऐसी सद्गति जिसे प्राप्त कर मृत व्यक्ति देवरूप हो जाता है। **–गन***–पु० दे० 'देवगण'। **–गर्जन**–पु० मेघका गर्जन। **–गर्भ**–पु० देवताके वीर्यसे उत्पन्न मनुष्य। **–गांधार**–पु० एक राग। **–गांधारी**–स्त्री० एक एक रागिनी। **–गायन**–पु० गंधर्व। **–गिरा**–स्त्री० देववाणी, संस्कृत। **–गिरि**–पु० एक पर्वत; दक्षिण भारतका एक प्राचीन नगर जिसका आधुनिक नाम दौलताबाद है। **–गिरी**–स्त्री० एक रागिनी। **–गुरु**–पु० कश्यप; बृहस्पति। **–गुही**–स्त्री० सरस्वती। **–गुह्य**–पु० केवल देवताओंको ज्ञात रहस्य; मृत्यु। **–गृह**–पु० देवालय; राजप्रासाद। **–चर्या**–स्त्री० देवताका पूजन-अर्चन। **–चिकित्सक**–पु० अश्विनीकुमार; दोकी संख्या। **–च्छंद**–पु० एक प्रकारका हार जिसमें १०० या १०८ अथवा किसी-किसीके मतसे ८१ लड़ियाँ होती हैं। **–ज**–पु० सामका एक भेद। वि० देवतासे उत्पन्न। **–जग्ध,–जग्धक**–पु० रोहिष तृण। **–जुष्ट**–वि० देवताको समर्पित किया हुआ। **–ठान**–पु० (हिं०) दे० 'देवोत्थान'। **–तरु**–पु० देववृक्ष–इनके नाम हैं–मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन; पीपल। **–तर्पण**–पु० देवताओंको जल देनेकी क्रिया। **–ताड,–ताडक**–पु० वृक्षविशेष; एक लता; राहु; अग्नि। **–तात**–पु० कश्यप; यज्ञ। **–तीर्थ**–पु० देवार्चनके लिए अनुकल समय; उँगलियोंकी नोक। **–तुमुल**–पु० मेघगर्जन। **–तुष्टिपति**–पु० पुजारी। **–त्रयी**–स्त्री० तीन देवताओंका–ब्रह्मा, विष्णु और महेशका–समूह। **–दंडा**–स्त्री० नागबला। **–दत्त**–पु० अर्जुनके शंखका नाम; गौतम बुद्धका चचेरा भाई (यह उनका द्रोही था और आजीवन विरोध करता रहा); वह शरीरसंचारी वायु जिससे जम्हाई आती है; देवताको समर्पित की हुई संपत्ति। वि० देवताको दिया हुआ, देवताको समर्पित; देवताका दिया हुआ। **–दर्शन**–पु० देवताका दर्शन; नारद। वि० देवताओंके दर्शन करनेवाला। **–दार**–पु० (हिं०) दे० 'देवदारु'। **–दारु**–पु० एक प्रसिद्ध पहाड़ी पेड़ जिसकी लकड़ी कड़ी, हल्की और पीले रंगकी होती है। **–दालिका,–दाली**–स्त्री० एक तरहका कद्दू, महाकायफला। **–दास**–पु० देवालयमें काम करनेवाला नौकर। **–दासी**–स्त्री० नाच-गाकर देवता या देवालयकी सेवा करनेवाली स्त्री, देवमंदिरकी नर्तकी; वेश्या; बिजौरा

नीवू ।–दीप–पु० देवताके निमित्त जलाया जानेवाला दीप; नेत्र, लोचन । –दुंदुभि–स्त्री० लाल तुलसी; देवताओंका नगाड़ा । पु० इंद्र । –दूत–पु० देवता या ईश्वरका दूत, पैगंवर; फरिश्ता । –दूती–स्त्री० अप्सरा । –देव–पु० देवोंके स्वामी–शिव; ब्रह्मा; विष्णु; इंद्र । –द्रुम–पु० दे० 'देवतरु' । –द्रोणी–स्त्री० देवमूर्तिकी शोभा यात्रा; शिवलिंगका अरघा । –धन–पु० देवताके नामपर निकाला हुआ धन ।–धानी–स्त्री० इंद्रपुरी ।–धान्य–पु० ज्वार । –धाम(न्)–पु० तीर्थस्थान । –धुनी–स्त्री० गंगा; कोई पवित्र नदी । –धूप–पु० गुग्गुल । –धेनु–स्त्री० कामधेनु । –नंदी-(दिन्)–पु० इंद्रका द्वारपाल । –नदी–स्त्री० गंगा; पुण्य तोया नदी ।–नल–पु० एक तरहका नरकट, सुरनाल । –नागरी–स्त्री० एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं । –०वर्णमाला–स्त्री० क्रमवद्ध 'अ', 'आ' आदि स्वर वर्ण तथा 'क', 'ख', 'ग' आदि व्यंजन वर्ण जो देवनागरी लिपिके आधार हैं । –नाथ–पु० शिव । –नायक–पु० इंद्र । –नाल–पु० दे० 'देवनल' । –निंदक–वि० पु० नास्तिक, देवताओंकी निंदा करनेवाला । –निकाय–पु० स्वर्ग; देव-समूह । –निर्मित–वि० देवता द्वारा रचित; प्राकृतिक । –पति–पु० इंद्र । –पत्नी–स्त्री० देवताओंकी स्त्री; एक कंद, मध्वालुक । –पथ–पु० छायापथ, आकाश; देवस्थानकी ओर जानेवाला मार्ग । –पद्मिनी–स्त्री० आकाशगंगा । –पर–वि० दुःखमें पुरुषार्थहीन होकर भगवान्के भरोसे वैठा रहनेवाला । –पशु–पु० देवताके नामपर स्वच्छंद छोड़ा हुआ पशु । –पात्र–पु० अग्नि । –पाद–पु० राजाके लिए आदरसूचक संवोधन । –पालित–वि० देवता द्वारा रक्षित; दे० 'देवमातृक' । –पुत्र–पु० देवताका पुत्र; शिव ।–पुत्रिका–स्त्री० पृक्का । –पुत्री–स्त्री० देवताकी पुत्री; इलायची; पृक्का ।– –पुर–पु०,–पुरी–स्त्री० इंद्रकी नगरी, अमरावती ।–पूज्य–पु० वृहस्पति । –प्रतिकृति,–प्रतिमा–स्त्री० देवताकी मूर्ति । –प्रयाग –पु० उत्तर भारतका एक तीर्थस्थान जो गंगा और अलकनंदाके संगमपर है । –प्रश्न–पु० ग्रहादि-संवंधी जिज्ञासा, भविष्यसंवंधी प्रश्न; भविष्यकी वातें वतलाना । –प्रिय–पु० अगस्तका पेड़; पीली भँगरैया; शिव । वि० जो देवताओंको प्रिय लगे; जिसे देवता प्रिय हों । –वधू–स्त्री० देवताकी स्त्री; अप्सरा । –वला –स्त्री० सहदेई नामकी वूटी । –ब्रह्मा(ह्मन्)–पु० नारद । –ब्राह्मण–पु० वह ब्राह्मण जिसकी जीवनवृत्ति देवपूजा हो । –भवन –पु० देवस्थान; पीपलका पेड़; स्वर्ग । –भाग–पु० यज्ञादिमें देवविशेषको दिया जानेवाला भाग; संपत्तिका वह भाग जो देवकार्यके लिए अलग कर दिया गया हो । –भाषा–स्त्री० संस्कृत । –भिषक्(ज्)–पु० अश्विनीकुमार । –भू–स्त्री० स्वर्ग । पु० देवता । –भूति–स्त्री० आकाशगंगा; देवताओंका ऐश्वर्य । –भूमि–स्त्री० स्वर्ग । –भृत्–पु० (देवताओंका भरण-पोषण करनेवाले) इंद्र; विष्णु । –भोज्य–पु० अमृत । –मणि–पु० कौस्तुभ मणि; सूर्य; एक प्रकारकी वालोंकी भँवरी जो घोड़ोंकी गरदनपर होती है; महामेदा । –माता(तृ)–स्त्री० देवताओंकी माता, अदिति । –मातृक–वि० (वह देश) जिसे कृषिकार्यके लिए केवल वर्षाका जल लभ्य हो; जहाँ खेतोंकी सिंचाईके लिए वर्षाका ही जल पर्याप्त हो जाता हो । –मादन–पु० देवताओंको मत्त करनेवाला, सोम । –मान–पु० काल गणनाका वह मान जो देवताओंके संवंधमें काममें लाया जाता है–जैसे मनुष्यका एक सौर वर्ष देवताओंके एक दिनके वरावर होता है । –मानक–पु० कौस्तुभ मणि । –माया–स्त्री० देवताओंकी माया; परमेश्वरकी अविद्यारूपिणी माया जो जीवोंके वंधनका कारण है । –मार्ग–पु० दे० 'देवयान' । –मास–पु० गर्भका आठवाँ महीना; देवताओंका महीना जो तीस सौर वर्षके वरावर होता है । –मीढ–पु० राजा जनकके एक पूर्वज । –मीढुष–पु० वसुदेवके पितामह । –मुख्या–स्त्री० कस्तूरी । –मुनि–पु० देवर्षि नारद । –मूर्ति–स्त्री० देवताकी मूर्ति । –यजन–पु० यज्ञ करनेका स्थान । –यजनी–स्त्री० पृथ्वी ।–यजि–पु० देवपूजक ।–यज्ञ–पु० वह हवन जो गृहस्थों के पाँच नैत्यिक यज्ञोंमेंसे एक है । –यात्रा–स्त्री० किसी देवताकी सवारी निकालनेका उत्सव । –यान–पु० वह मार्ग जिससे जीवात्मा शरीरसे निकलनेपर ब्रह्मलोकको जाता है; देवताओंका विमान । –यानी–स्त्री० शुक्राचार्यकी कन्या जो कचके शापवश ययातिको व्याही गयी थी । –युग–पु० सतयुग । –योनि–स्त्री० देवता-जाति; देवताओंकी कोटिमें गिने जानेवाले विद्याधर, अप्सरा आदि दस उपदेव; आग जलानेके काममें लायीं जानेवाली लकड़ी । –योषा–स्त्री० देवताकी स्त्री; अप्सरा । –रक्षित–वि० देवताओं द्वारा रक्षित । पु० राजा देवकका एक पुत्र । –रथ –पु० सूर्यका रथ; देवताओंका यान, विमान । –राज–पु० इंद्र; राजा; बुद्ध । –रात–पु० (विष्णु द्वारा रक्षित) राजा परीक्षित; याज्ञवल्क्यके पिता; सारस पक्षी । –रानी*–स्त्री० इंद्राणी, शची; दे० 'क्रममें' । –राय*–पु० इंद्र । –रिपु–पु० असुर । –लता–स्त्री० नवमल्लिका, नेवारी । –लांगुलिका–स्त्री० वृश्चिकाली । –लोक–पु० देवताओंका लोक; स्वर्ग; भूः, भुवः आदि सात लोक । –वक्त्र–पु० अग्नि (जो देवताओंके लिए मुँहके तुल्य है) ।–वधू–स्त्री० देवताकी स्त्री; देवी; अप्सरा । –वर्त्म(न्)–पु० आकाश । –वर्द्धकि–पु० विश्वकर्मा । –वर्ष–पु० एक द्वीप; दे० 'दैववर्ष' । –वल्लभ–पु० सुरपुन्नाग वृक्ष । वि० देवताओंको प्रिय लगनेवाला । –वाणी–स्त्री० संस्कृत भाषा; (ओरेकिल) किसी देवी, देवताके मुँहसे निकली समझी जानेवाली वात; आकाशवाणी । –वाहन–पु० अग्नि (जो देवताओंके पास हव्य पहुँचाती है) । –विद्या–स्त्री० निरुक्त । –विभाग–पु० उत्तर दिशा । –विहाग–पु० एक राग; देवताओंका प्रिय भोजन । –वृक्ष–पु० गुग्गुल; छतिवन; दे० 'देवतरु' । –व्रत–पु० भीष्म-पितामह; कार्त्तिकेय; कोई धार्मिक संकल्प । –शत्रु–पु० असुर, दैत्य । –शिल्पी(ल्पिन्) –पु० विश्वकर्मा । –शुनी–स्त्री० देवताके समान प्रभाववाली सरमा नामकी कुतिया । –शेखर–पु० दौनेका पौधा । –शेष–पु० यज्ञका वचा हुआ अंश । –श्री–पु०, –यज्ञा–स्त्री० लक्ष्मी । –श्रुत–पु० ईश्वर; नारद; शास्त्र; एक जिन । –श्रेष्ठ–वि० देवताओंमें श्रेष्ठ । –संघ–वि० दैवी । –सदन–पु० स्वर्ग; पीपलका पेड़; मंदिर । –सभा–स्त्री० देवताओंकी सभा, सुधर्मा; राजसभा । –सभ्य–पु० जुआ खेलने या खेलानेवाला; देवसेवक । –सरि,–सरित्–स्त्री० दे० 'देवनदी' । –सर्षा–पु० एक सरसों । –सहा–स्त्री० दंडोत्पल । –सायुज्य–पु० किसी देवतामें मिलकर एक हो जाना; देवत्व प्राप्ति । –सार्वणि–पु० भागवतके अनुसार तेरहवें मनु । –सिंह–पु० शिव । –सृष्टा–स्त्री० मदिरा । –सेना–स्त्री० देवताओंकी सेना; देव-सेनापति स्कंदकी पत्नी । –०पति,–०प्रिय–पु० स्कंद; पीला भँगरा । –स्थान–पु० स्वर्ग; मंदिर । –स्व–पु० देवार्पित संपत्ति । –हवि(स्)–पु० वलिपशु । –हूति–स्त्री० देवताओंका आवाहन; कर्दम ऋषिकी पत्नी जिससे सांख्यके आचार्य कपिल उत्पन्न हुए थे । –हेडन–पु० देवताओंके प्रति किया जानेवाला अपराध । –हेति–स्त्री० दिव्य अस्त्र । –ह्रद–पु० महाभारतोक्त श्रीशैलपरका एक सरोवर ।

देवक–पु० (सं०) देवता; एक यदुवंशी राजा जिनकी पुत्री देवकीसे कृष्ण उत्पन्न हुए थे । वि० क्रीड़ाशील; देवता जैसा; देवता संवंधी ।

देवका†–स्त्री० दीमक ।

देवकी–स्त्री० (सं०) वसुदेवकी पत्नी और कृष्णकी माता । –नंदन,–पुत्र,–सूनु–पु० कृष्ण ।

देवकीय, देवक्य–वि० (सं०) देवताका; देवता-संवंधी ।

देवट–पु० (सं०) शिल्पी ।

देवढ़ी–स्त्री० ड्योढ़ी; चौखट ।

देवता–पु० (सं०) स्वर्गमें वास करनेवाला दिव्य शक्ति-संपन्न अमर प्राणी; देवप्रतिमा; ज्ञानेंद्रिय । –गृह–पु० देवमंदिर । –प्रतिमा –स्त्री० देवमूर्ति । –वेश्म(न्),–स्थान–पु० देवमंदिर । मु०–कूच कर जाना–अत्यन्त भीत हो जाना, होश गायव हो जाना ।

देवतागार–पु० (सं०) दे० 'देवागार' ।

देवतात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) देवस्वरूप; पीपलका पेड़ ।

देवताधिप–पु० (सं०) दे० 'देवाधिप' ।

देवताध्याय–पु० (सं०) सामवेदका एक ब्राह्मण ।

देवन–पु० (सं०) पासेका एक खेल, जुआ; जुआ खेलना, क्रीड़ा;

सौंदर्य; कांति; प्रमोदोद्यान; कमल; स्पर्द्धा; व्यवहार, व्यापार, स्तुति; गमन, मति; शोक।

देवना–स्त्री० (सं०) जुआ; क्रीड़ा; शोक।

देवयु–वि० (सं०) धार्मिक, धर्मात्मा। पु० देवता।

देवर–पु० (सं०) पतिका अनुज; पतिका भाई (जेठा या छोटा)।

देवरा*–पु० कोई साधारण देवता या उसका मंदिर।

देवरानी–स्त्री० देवरकी पत्नी; दे० 'देव' में।

देवरी–स्त्री० छोटी-मोटी देवी।

देवर्द्धि–पु० (सं०) जैनसिद्धांतको लिपिबद्ध करनेवाले एक प्रसिद्ध जैन स्थविर।

देवर्षि–पु० (सं०) दे० 'देवऋषि'।

देवल–पु० देवालय; मंदिर; (सं०) देवपूजाकी आयसे जीविका चलानेवाला ब्राह्मण; देवर; धार्मिक व्यक्ति; नारद मुनि; एक स्मृतिकार; एक ऋषि।

देवलक–पु० (सं०) देवताका पुजारी।

देवस*–पु० दिवस, दिन (चन्दा)।

देवहरा†–पु० देवालय।

देवांगना–स्त्री० (सं०) अप्सरा; देवताकी स्त्री।

देवांध(स्)–पु० (सं०) 'देवान्न'।

देवांश–पु० (सं०) देवताका भाग; परमेश्वरका अंशावतार।

देवा–स्त्री० (सं०) पद्मचारिणी लता; पटसन। वि० (हिं०)† देनेवाला।

देवाक्रीड–पु० (सं०) देवोद्यान, नंदनवन।

देवागार–पु० (सं०) मंदिर, देवस्थान; स्वर्ग।

देवाजीव, देवाजीवी(विन्)–पु० (सं०) पुजारी।

देवाट–पु० (सं०) हरिहर क्षेत्र।

देवातिदेव–पु० (सं०) विष्णु; शिव।

देवात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) दे० 'देवतात्मा'।

देवाधिदेव–पु० (सं०) विष्णु; शिव।

देवाधिप–पु० (सं०) परमेश्वर; इंद्र; द्वापरयुगीन एक राजा जो निकुंभासुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था।

देवान–पु० दीवान, मंत्री; राजदरबार।

देवानांप्रिय–पु० (सं०) अशोककी उपाधि; बकरा। वि० देवप्रिय; मूर्ख।

देवाना*–वि० पागल।

देवानीक–पु० (सं०) देवसेना; सावर्णि मनुके एक पुत्र।

देवानुग–पु० (सं०) देवताओंके पीछे-पीछे चलनेवाले विद्याधर, यक्ष आदि दस उपदेव; देवताका सेवक।

देवानुचर–पु० (सं०) 'देवानुग'।

देवानुयायी(यिन्)–पु० (सं०) दे० 'देवानुग'।

देवान्न–पु० (सं०) अमृत; चरु।

देवापगा–स्त्री० (सं०) सुरसरित्, गंगा।

देवापि–पु० (सं०) एक राजा जो प्रतीपका पुत्र था।

देवाभियोग–पु० (सं०) अनुचित कर्म करनेवाले देवताका शरीरमें प्रवेश (जै०)।

देवाभीष्टा–स्त्री० (सं०) तांबूली।

देवायतन–पु० (सं०) दे० 'देवागार'।

देवायु(स्)–स्त्री० (सं०) देवताकी आयु जो बहुत लंबी होती है।

देवायुध–पु० (सं०) दिव्य अस्त्र; इंद्रधनुष्।

देवारण्य–पु० (सं०) देवताओंका उपवन, नंदनवन।

देवाराधन–पु० (सं०) देवताको प्रसन्न करनेके लिए किया जानेवाला पूजा-पाठ आदि।

देवारि–पु० (सं०) असुर, दैत्य।

देवारी†– स्त्री० दीपावली; श्मशानादिमें देख पड़नेवाला क्षणिक प्रकाश, छलावा।

देवाली†–स्त्री० दीपावली।

देवार्चन–पु०, **देवार्चना**–स्त्री० (सं०) देवताका पूजन।

देवार्पण–पु० (सं०) देवताके निमित्त किसी वस्तुका उत्सर्ग; इस कर्मके फलका त्याग।

देवाल–पु० देनेवाला; (ला०) बेचनेवाला। † स्त्री० दीवार।

देवालय–पु० (सं०) 'देवागार'।

देवाला–पु० दे० 'दिवाला'।

देवा-लेई–स्त्री० देन-लेन।

देवावसथ–पु० (सं०) दे० 'देवागार'।

देवावास–पु० (सं०) दे० 'देवागार'।

देवाश्व–पु० (सं०) इंद्रका घोड़ा, उच्चैःश्रवा।

देवाहार–पु० (सं०) अमृत; देवोंके योग्य आहार, चरु।

देविक, देविल–वि० (सं०) देव-संबंधी; स्वर्गीय; धर्मात्मा।

देविका–स्त्री० (सं०) देवियोंका एक गौणवर्ग; युधिष्ठिरकी पत्नी और यौधेयकी माता; एक नदी; धतूरा; एक देश।

देविता(तृ)–पु० (सं०) जुआरी।

देवी–स्त्री० (सं०) देवताकी पत्नी; आद्या शक्ति, दुर्गा; सरस्वती; सावित्री, उच्चवर्गकी विवाहिता स्त्रियोंकी एक उपाधि; राजमहिषी, पटरानी; (ला०) सुशीलता, सदाचार आदिसे युक्त स्त्री; सूर्यसंक्रांति जो देवीस्वरूप मंगलमयी मानी जाती है; श्यामा पक्षी; नागरमोथा; पाठा; हड़; अलसी, तीसी; शालपर्णी, सरिवन। **–कोट**–पु० वाणासुरकी नगरी, शोणितपुर। **–गृह**–पु० भगवतीका मंदिर; राजमहिषीका निजी कमरा। **–पुराण**–पु० एक पुराण जिसमें दुर्गाका माहात्म्य वर्णित है। **–भागवत**–पु० इस नामका एक पुराण जिसमें भगवती दुर्गाका माहात्म्य आदि वर्णित है (कुछ विद्वान् इसे महापुराण तथा कुछ उपपुराण मानते हैं)। **–सूक्त**–पु० ऋग्वेदमें एक देवी-विषयक सूक्त; दुर्गासप्तशतीके अंतर्गत एक देवीस्तोत्र।

देवी(विन्)–पु० (सं०) दे० 'देविता'। क्रीड़ा करनेवाला; जुआरी।

देवेंद्र–पु० (सं०) देवताओंके अधिपति इंद्र।

देवेज्य–पु० (सं०) बृहस्पति।

देवेश, देवेश्वर–पु० (सं०) इंद्र; शिव; विष्णु।

देवेशय–पु० (सं०) परमेश्वर, विष्णु।

देवेशी–स्त्री० (सं०) देवी; पार्वती।

देवेष्ट–वि० (सं०) देवताको प्रिय। पु० महामेदा; गुग्गुल।

देवेष्टा–स्त्री० (सं०) बिजौरा नीबू।

देवै*–स्त्री० देवकी।

देवैया†–पु० देनेवाला।

देवोत्तर–पु० (सं०) देवताके लिए अलग की हुई जायदाद।

देवोत्थान–पु० (सं०) छ मासकी योग-निद्राके बाद विष्णुका कार्तिक-शुक्ला एकादशीको शेषकी शय्यासे उठना।

देवोद्यान–पु० (सं०) देवताओंके उद्यान–नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र (त्रिकांडशेषके मतसे इनके नाम हैं–वैभ्राज, चैत्ररथ, मैत्ररथ, मैश्रक और शिध्रकावण)।

देवोन्माद–पु० (सं०) देवताके कोपसे होनेवाला उन्माद।

देवौक(स्)–पु० (सं०) देवताओंका वासस्थान, सुमेरु।

देश–पु० (सं०) सर्वत्र व्याप्त वह अवकाश जिसके भीतर दिखाई पड़नेवाली सभी वस्तुएं रहती हैं (स्पेस); स्थान; एक शासनपद्धतिके अंतर्गत रहनेवाला भूखंड, जो प्राकृतिक सीमा, जाति, भाषा आदिके आधारपर अन्य भागोंसे पृथक् हो, मुल्क; क्षेत्र; विभाग; एक राग। **–कली**–स्त्री० एक रागिनी। **–कार**–पु० एक राग। **–कारी,–पाली**–स्त्री० एक रागिनी। **–गांधार**–पु० एक राग। **–चारित्र**–पु० जैनमतके अनुसार गार्हस्थ्य-धर्म जिसके बारह भेद हैं। **–ज**–वि० देशमें उत्पन्न; जो बोलचालकी भाषासे स्वतः उत्पन्न हो गया हो (वह शब्द)। **–धर्म**–पु० देशके अनुरूप धर्म, देशविशेषके लिए उचित धर्म; देशविशेषमें प्रचलित आचार-विचार। **–निकाला**–पु० (हिं०) निर्वासनका दंड। **–भक्त**–पु० देशका हित एवं उन्नति चाहनेवाला, देशानुरागी व्यक्ति। **–भक्ति**–स्त्री० देशहितकी कामना, देशप्रेम। **–भाषा**–स्त्री० देशविशेषकी भाषा, किसी देशकी प्रचलित भाषा। **–मल्लार**–पु० एक राग। **–रूप**–पु० औचित्य, उपयुक्तता। **–व्यवहार**–पु० स्थानविशेषकी प्रथा; देशका रिवाज। **–स्थ**–पु० महाराष्ट्र ब्राह्मणोंका एक भेद। वि० देशमें स्थित।

देशक–पु० (सं०) शासक; शिक्षक; मार्गप्रदर्शक।

देशना–स्त्री० (सं०) शिक्षा, उपदेश, निदेश, हिदायत।

देशरक्षक सेना–स्त्री० (मिलीशया) दे० 'जानपद सैन्य'।

देशांकी–स्त्री० एक रागिनी।

देशांतर–पु० (सं०) दूसरा देश, विदेश; (लांजिच्यूड) किसी स्थानसे गुजरनेवाला भौगोलिक याम्योत्तर (मिरीडियन) का वृत्त, तथा ग्रीनिचसे गुजरनेवाले भूगोलिक याम्योत्तर वृत्तके बीचका कोण उस स्थानका देशान्तर कहलाता है। देशान्तरकी नाप ग्रीनिच याम्योत्तरसे पूर्वकी ओर १८०° तक और इसी प्रकार पश्चिमकी ओर भी १८०° तक की जाती है। **–गमन**–पु० (माइग्रेशन) बीचके देश या समुद्रादि लाँघकर अन्य देशमें चले जाना, प्रव्रजन।

देशांतरण–पु० (सं०) दे० 'देशांतरगमन'।

देशांतरित–वि० (सं०) जो दूसरे देशमें चला गया हो या भेज दिया गया हो; जो अन्य देशमें जाकर वस गया हो।

देशांतरी(रिन्)–वि० पु० (सं०) विदेशी।

देशाक्ा–पु० (सं०) एक रागिनी।

देशाचार–पु० (सं०) देशविशेषमें प्रचलित रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार।

देशाटन–पु० (सं०) भिन्न-भिन्न देशोंमें भ्रमण, पर्यटन करना।

देशातिथि–पु० (सं०) विदेशी, अन्य देशका निवासी।

देशिक–पु० (सं०) पथिक; उपदेशक; गुरु; स्थानसे परिचित व्यक्ति।

देशित–वि० (सं०) जिसे आदेश दिया गया हो, आदिष्ट; जिसे वतलाया गया हो।

देशिनी–स्त्री० (सं०) तर्जनी उँगली।

देशी–वि० स्वदेशमें उत्पन्न या वना हुआ; अपने देशका; स्वदेश-संवंधी; देशका; देश-संवंधी। स्त्री० (सं०) एक रागिनी; स्थान या देशविशेषकी बोली।

देशीय–वि० (सं०) दे० 'देशी'।

देश्य–वि० (सं०) जिसे प्रमाणित करना हो; स्थानीय; प्रांतीय; ··से दूर नहीं; देशमें उत्पन्न। पु० प्रत्यक्षदर्शी, चश्मदीद गवाह; देशका निवासी; प्रमाणित किया जानेवाला विषय, पूर्वपक्ष।

देष्णु–वि० (सं०) वहुत उदार; उद्दंड। पु० धोवी।

देस–पु० दे० 'देश'। **–निकाला**–पु० दे० 'देशनिकाला'। **–वाल**–वि० अपने देशका, स्वदेशी।

देसड़ा, देसड़*–पु० दे० 'देस'।

देसावर–पु० अन्य देश, विदेश, परदेश।

देसावरी–वि० देसावरका, विदेशी।

देसी–वि० दे० 'देशी'।

देहंभर–वि०, पु० (सं०) शरीरमात्रका पोषण करनेवाला; पेटू।

देह–स्त्री० (सं०) शरीर, तन; जीवन, जिंदगी। पु० लेपन। **–कर**–पु० पिता। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० पंचमहाभूत; सूर्य; ईश्वर; पिता। **–कृत्**–पु० पंचमहाभूत; परमेश्वर। **–कोष**–पु० पंख, डैना; चर्म। **–क्षय**–पु० शरीरका नाश; रोग। **–ज**–पु० पुत्र। **–जा**–स्त्री० पुत्री। **–त्याग**–पु० मृत्यु। **–द**–पु० पारा। **–दीप**–पु० आँख। **–धारक**–पु० अस्थि, हड्डी; शरीरी, शरीर धारण करनेवाला; आत्मा। **–धारण**–पु० शरीर धारण करना, जन्म लेना; प्राणरक्षा। **–धारी(रिन्)**–पु० वह जिसने शरीर धारण किया हो, शरीरी, प्राणी। **–धि**–पु० डैना, पंख। **–धृक्(ष्)**–पु० वायु। **–पात**–पु० देहांत, मृत्यु। **–बंध**–पु० शरीरका ढाँचा। **–बद्ध**–वि० जिसने शरीर धारण किया हो, वपुष्मान्; मूर्तिमान्। **–भाक्(ज)**–पु० शरीरी, विशेषतः मनुष्य। **–भुक्(ज्)**–पु० जीव; सूर्य। **–भृत्**–पु० दे० 'देहधारी'। **–यात्रा**–स्त्री० जीवका शरीर छोड़कर दूसरे लोकमें जाना; शरीरत्याग, मरण; शरीररक्षा; जीवन-यापन; भोजन। **–लक्षण**–पु० शरीरपरका काला दाग, तिल। **–संचारिणी**–स्त्री० पुत्री, कन्या। **–सार**–पु० मज्जा। मु० **–छूटना**–मृत्यु होना। **–छोड़ना**–मरना। **–धरना**–शरीर धारण करना। **–विसरना**–सुध-बुध खो देना, अपनेको भूल जाना।

देह–पु० (अ०) गाँव। **–क़ान**–पु० ग्रामवासी; किसान। वि० गँवार, उजड्ड। **–क़ानियत**–स्त्री० गँवारपन; देहाती होनेका भाव। **–क़ानी**–वि० देहाती; गँवार।

देहर–पु० नदीके पासकी नीची भूमि।

देहरा–पु० देवालय, मंदिर–'कबीर दुनिया देहरे सीस नवावन जाय'–साखी; * देह, मनुष्यशरीर।

देहरि, देहरी–स्त्री० दे० 'देहली'।

देहला–स्त्री० (सं०) मदिरा, शराव।

देहलि, देहली–स्त्री० (सं०) दरवाजेकी चौखटमेंकी नीचेवाली लकड़ी जिसे लाँघकर घरमें घुसते-निकलते हैं। **–दीप,–दीपक**–पु० देहलीपर रखा हुआ दीया (जो बाहर-भीतर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है); अर्थालंकारका एक भेद जहाँ बीचमें पड़नेवाले शब्दका अर्थ दोनों ओर लगाया जाय। **–०न्याय**–पु० एक तर्कप्रणाली जिसके अनुसार किसी वस्तुसे दो कार्य एक साथ उसी प्रकार सिद्ध हो सकते हैं जिस प्रकार देहलीपर रखे दीपकसे बाहर-भीतर दोनों ओर उजाला हो जाता है।

देहवंत*–वि० शरीरवाला। पु० देहधारी।

देहांत–पु० (सं०) मृत्यु, मरण।

देहांतर–पु० (सं०) दूसरा शरीर। **–प्रवेश**–पु० (ट्रांसमाइग्रेशन) (आत्माका) एक देह या योनि त्यागकर दूसरी देह या योनि धारण कर लेना। **–प्राप्ति**–स्त्री० जीवात्माका एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना।

देहात–स्त्री० गाँव, गँवई।

देहाती–वि० गाँवका; गाँव-संबंधी; गाँवमें होनेवाला; देहातियों जैसा। पु० गँवार। **–पन**–पु० देहाती होनेका भाव; गँवारपन।

देहातीत–वि० (सं०) जो देहसे परे हो; देहाभिमानसे रहित, विदेह।

देहात्म–पु० (सं०) शरीर और आत्मा। **–ज्ञान,–प्रत्यय**–पु० देह और आत्माके अभेदका ज्ञान। **–वाद**–पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जिसके अनुसार देह ही आत्मा है, देहसे भिन्न आत्मा नामका कोई पदार्थ नहीं। **–वादी(दिन्)**–पु० देहात्मावादको माननेवाला, चार्वाकमतका पोषक।

देहाध्यास–पु० (सं०) देहको आत्मा या देहधर्म (मनुष्य, पशु, दुबला, मोटा आदि होना) को आत्माका धर्म समझनेका भ्रम।

देहावरण–पु० (सं०) जिरह, कवच; वस्त्र।

देहावसान–पु० (सं०) देहांत, मृत्यु।

देही*–स्त्री० शरीर।

देही(हिन्)–पु० (सं०) देहधारी जीव, जीवात्मा, शरीरी।

देहेश्वर–पु० (सं०) देहका स्वामी, आत्मा।

देहोद्भव, देहोद्भूत–वि० (सं०) सहज, जन्मजात।

दैउ*–पु० आकाश; दैव।

दैजा†–पु० दे० 'दायजा'।

दैतेय–पु० (सं०) असुर; दैत्य। **–गुरु,–पुरोधा(धस्),–पूज्य**–पु० शुक्राचार्य। **–निषूदन**–पु० विष्णु। **–माता(तृ)**–स्त्री० दिति। **–मेदजा**–स्त्री० पृथिवी।

दैत्य–पु० (सं०) कश्यपके वे क्रूरकर्मा पुत्र जो उनकी पत्नी दितिके गर्भसे उत्पन्न हुए, दितिकी संतान (पुराणानुसार ये देवताओंके शत्रु गिने जाते हैं); भीमकाय और अत्यंत बलशाली मनुष्य। **–गुरु**–पु० शुक्राचार्य। **–देव**–पु० वरुण; वायु। **–धूमिनी**–स्त्री० तारा देवीके अर्चनमें एक करमुद्रा। **–पति**–पु० हिरण्यकशिपु। **–पुरोधा(धस्),–पूज्य**–पु० शुक्राचार्य। **–माता(तृ)**–स्त्री० दिति। **–मेदज**–पु० गुग्गुल। **–मेदजा**–स्त्री० पृथिवी। **–युग**–पु० दैत्योंका युग जो देवमानसे बारह हजार वर्षोंका होता है। **–सेना**–स्त्री० प्रजापतिकी कन्या जो देवसेनाकी भगिनी थी।

दैत्या–स्त्री० (सं०) दैत्यजातिकी स्त्री; मदिरा; सुरा नामक गंधद्रव्य; चंडौषधि।

दैत्यारि–पु० (सं०) विष्णु; देवता।

दैत्येंद्र–पु० (सं०) दैत्योंका राजा।

दैत्येज्य–पु० (सं०) शुक्राचार्य।

दैनंदिन–अ० (सं०) दिनोंदिन; प्रतिदिन। वि० प्रतिदिन होने-

वाला, नित्यका।

दैनंदिनी–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'दैनंदिन'। स्त्री० रोजनामचा, डायरी।

दैन–पु० (सं०) दीनता; शोक; निर्बलता; नीचता। वि० दिन-संबंधी, देनेवाला। * स्त्री० देनेकी क्रिया; दी हुई वस्तु।

दैनिक–वि० (सं०) प्रतिदिनका; प्रतिदिन होने या निकलनेवाला; दिनसंबंधी। **–पंजी**–स्त्री० (जर्नल) दैनिक घटनाओं (या लेन-देन, क्रय-विक्रय) आदिका विवरण लिखनेकी बही; दैनंदिनी, डायरी।

दैनिकी–स्त्री० (डेली रिपोर्ट) दिन-प्रतिदिन होनेवाली या प्रत्येक दिनकी घटनाओंका विवरण; (डायरी) दे० 'दैनंदिनी'।

दैन्य–पु० (सं०) दीनता, दरिद्रता, कातरता; एक संचारी भाव।

दैयत*–पु० दे० 'दैत्य'–'है राकस दससीसको दैयत वाहु हजार'–रामचंद्रिका।

दैया*–पु० दैव, दई। स्त्री० दाई। अ० एक आश्चर्य या शोक-सूचक शब्द।

दैर्घ, दैर्घ्य–पु० (सं०) दीर्घता, लंबाई, वड़ाई।

दैव–पु० (सं०) पूर्व जन्ममें उपार्जित कर्म जिसका शुभाशुभ फल वर्तमान जन्ममें भोगते हैं, भाग्य, नियति, अदृष्ट, होनहार; देवता; ईश्वर; विधाता; आकाश; आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक; एक प्रकारका श्राद्ध; तर्पणके लिए विहित तीन प्रकारके तीर्थोंमेंसे एक, देवतीर्थ। वि० देवता-संबंधी; देवताका; देवता द्वारा प्रेरित। **–कृत**–वि० होनहार; प्राकृतिक। **–कोविद**–पु० ज्योतिषी। **–गति**–स्त्री० ईश्वरीय प्रेरणा; भाग्यका फेर। **–चिंतक**–पु० ज्योतिषी। **–ज्ञ**–पु० ज्योतिषी। **–तंत्र**–वि० भाग्याधीन। **–तीर्थ**–पु० दे० 'देवतीर्थ'। **–दीप**–पु० आँख। **–दुर्विपाक**–पु० विधिकी प्रतिकूलता, भाग्यका बुरा फेर, दुर्भाग्य। **–दोष**–पु० भाग्यकी खोटाई। **–पर**–वि० जो भाग्यकी दुहाई दे; जो भाग्यके भरोसे बैठा रहे, नियतिवादी। **–प्रमाण**–वि० भाग्यके भरोसे रहनेवाला। **–प्रश्न**–पु० भावी शुभाशुभ संबंधी जिज्ञासा; ज्यौतिष; भावी शुभाशुभकी सूचिका एक प्रकारकी आकाशवाणी; भविष्यकथन। **–युग**–पु० देवताओंका युग जो देवमानसे बारह हजार वर्षोंका होता है। **–योग**–पु० संयोग, इत्तिफाक। **–लेखक**–पु० ज्योतिषी। **–वर्ष**–पु० देवताओंका वर्ष जो १३१५२१ सौर दिनोंका होता है। **–वश,–वशात्**–अ० संयोगसे, अकस्मात्। **–वाणी**–स्त्री० आकाशवाणी; संस्कृत भाषा। **–वादी(दिन्)**–वि० दे० 'दैवपर'। **–विद्**–पु० ज्योतिषी। **–विवाह**–पु० वह विवाह जिसमें कन्या यज्ञ करानेवाले ऋत्विक्‌को ब्याह दी जाय। **–श्राद्ध**–पु० देवनिमित्तक श्राद्ध। **–सर्ग**–पु० देवताओंकी सृष्टि जिसके आठ भेद होते हैं–ब्राह्म, प्राजापत्य, ऐंद्र, पैत्र, गांधर्व, याक्ष, राक्षस और पैशाच। **–हीन**–वि० अभागा, मंदभाग्य।

दैवत–पु० (सं०) देवता; देवताओंका समूह; देवप्रतिमा; निरुक्तका तीसरा कांड। वि० देवता-संबंधी। **–पति**–पु० इंद्र।

दैवत्य–पु० (सं०) देवता।

दैवल, दैवलक–पु० (सं०) प्रेतपूजक।

दैवाकरि–पु० (सं०) (दिवाकर पुत्र) शनि; यम।

दैवाकरी–स्त्री० (सं०) यमुना।

दैवागत–वि० (सं०) आकस्मिक, जो दैवयोगसे हुआ हो।

दैवात्–अ० (सं०) संयोगवश; दैवयोगसे।

दैवात्यय–पु० (सं०) दैवी उत्पात, आकस्मिक अनर्थ।

दैवाधीन, दैवायत्त–वि० (सं०) दैवके अधीन, ईश्वराधीन।

दैवारिप–पु० (सं०) शंख।

दैवासुर–पु० (सं०) देवताओं और असुरोंका वैर।

दैविक–वि० (सं०) देवता-संबंधी; देवताके निमित्त किया हुआ; देवकृत।

दैवी–वि० देव-संबंधी; ईश्वरीय, आकस्मिक। स्त्री० (सं०) दैवविवाहकी विधिसे विवाहित स्त्री। वि० स्त्री० दे० 'दैव'।

दैवी(विन्)–पु० (सं०) ज्योतिषी।

दैवोपहत–वि० (सं०) अभागा, मंदभाग्य

दैव्य–वि० (सं०) देवता-संबंधी। पु० भाग्य; दैवी शक्ति।

दैशिक–वि० (सं०) देश-संबंधी; देशजनित; स्थान-विशेषसे परिचित; बतलाने या दिखानेवाला। पु० शिक्षक, गुरु; मार्गदर्शक।

दैष्टिक–वि० (सं०) वदा हुआ। पु० भाग्यवादी।

दैहिक–वि० (सं०) देह-संबंधी, शारीरिक; देहजनित।

दैह्य–वि० (सं०) शारीरिक। पु० आत्मा।

दोँचना*–स० क्रि० दवाना; दवावमें डालना।

दोः(दोस्)–पु० (सं०) बाहु, भुज। **–शिखर**–पु० कंधा। **–सहस्रभृत्**–पु० कार्तवीर्यार्जुन।

दो–वि० एक और एक, एकसे एक अधिक; कुछ–'शिवशंकर चलेरी कैलास बरस गयी दो बुंदियाँ'। पु० दोकी संख्या, २। **–अमली**–स्त्री० एक स्थानपर दो राजाओंका शासन, द्वैध शासन। **–आतशा**–वि० दुवारा खींचा या चलाया हुआ। **–आब,–आबा**–पु० दो नदियोंके बीचका भूखंड। **–एक**–वि० कुछ, थोड़े, संख्यामें कम। **–कोहा**–पु० दो कोहान (कूबड़) वाला ऊँट। **–गला**–वि० वर्णसंकर। **–गाना**–पु० दे० क्रममें। **–गुना**–वि० दे० 'द्विगुण'। **–चंद**–वि० दुगुना। **–चार**–अ० दे० 'दो-एक'। **–चित्ता**–वि० जिसका ध्यान इधर-उधर बँटा हो। **–चित्ती**–स्त्री० चित्तका एकाग्र न रहना, व्यग्रता। **–जर्बी**–स्त्री० दोनली बंदूक। **–जानू**–अ० घुटनोंके बल। **–जीवा**–स्त्री० गर्भिणी। **–टूक**–वि० खरा, साफ-साफ। **–तरफ़ा**–वि० दोनों ओरका; दोनों पक्षोंके अनुकूल। **–तला,–तल्ला**–वि० दो तल्लोंवाला; दो-मंजिला। **–तही**–स्त्री० दुहरा मोटा कपड़ा जो दरी और चादरके बीचमें बिछाया जाता है। **–तारा**–पु० एक तरहका दुशाला; दो तारोंवाला एक बाजा। **–दरी**–स्त्री० दुनिया जिसके दो द्वार हैं–जन्म और मरण। **–दल**–पु० दे० 'द्विदल'। **–दस्ती**–स्त्री० तलवारका दोहत्था वार; कुश्तीका एक पेंच। वि० दोनों हाथोंका; दोनों हाथोंसे किया हुआ (वार)। **–दामी**–पु० दे० 'दुदामी'। **–दिला**–वि० दे० 'दोचित्ता'। **–दिली**–स्त्री० दे० 'दोचित्ती'। **–धारा**–वि० जिसमें दोनों ओर धार हो। स्त्री० एक पौधा। **–नली**–वि० स्त्री० जिसमें दो नालें हों। **–पलका**–वि० दो पल्लोंवाला (नगीना)। **–पलिया,**\u2020**–पल्ली**–वि० स्त्री० जिसमें दो पल्ले हों (टोपी आदि)। **–पहर**–स्त्री० दिनका वह समय जब सूर्य सिरपर आ जाता है, मध्याह्न। **–पहरी**–स्त्री० दे० 'दोपहर'। **–पीठा**–पु० कागज आदिका एक ओर छपनेके बाद दूसरी ओर छपना। **–पौवा**–पु० आधी ढोली पान। **–फसली**–वि० जिसमें दो फसलें उपजायी जायँ। **–बारा**–अ० एक बार और। **–बाला**–वि० दुगना। **–भाषिया**–पु० दे० 'दुभाषिया'। **–मंजिला**–वि० दो तल्लोंवाला। **–मट**–स्त्री० बालू मिली हुई मिट्टी। **–महला**–वि० दो मंजिलोंवाला, दोतल्ला। **–मुँहा**–वि० जिसके दो मुँह हों। **–०साँप**–पु० एक साँप जिसकी दुम मोटी होनेके कारण दूसरे मुँहकी-सी जान पड़ती है; वह मनुष्य जो दो तरहकी बातें करे, कपटी मनुष्य। **–रंगा**–वि० दे० 'दुरंगा'। **–रसा**–वि० जिसमें दो प्रकारके स्वाद या रस हों; दे० 'दुरस्सा'। **–रुखा**–वि० कभी एक तरहका, कभी दूसरी तरहका (व्यवहारादि); दोनों तरफ समान रंग या बेल-बूटेवाला। **–लड़ा**–वि० दो लड़ोंवाला। **–शाखा**–पु० दो डालोंवाला शमादान। **–सखुना**–पु० वह पहेली जिसमें दो प्रश्नोंका एक ही उत्तर होता है। **–साला**–वि० दो वर्षका; दो वर्षका पुराना। **–सूती**–स्त्री० दे० 'दुसूती'। **–हत्थड़**–पु० दोनों हाथोंसे मारा हुआ थप्पड़। **–हत्था**–वि० जिसमें दोनों हाथोंसे काम लिया जाय; जिसमें दोनों हाथोंका उपयोग हो। **–हरफ़**–पु० धिक्कार, लानत। मु० **–आँखों देखना**–समान दृष्टिसे न देखना। **–दिनका**–हालका; बहुत कम उम्रका। **–नावोंपर चढ़ना या पैर रखना**–दो पक्षोंका अवलंबन करना; दो वस्तुओंका सहारा लेना। **–सिर होना**–मरनेको तैयार होना, मौतको न्यौता देना।

दोइ\u2020–वि०, पु० दे० 'दो'।

दोउ, दोऊ–वि० दोनों।

दोकड़ा\u2020–पु० दुकड़ा।

दोख*–पु० दे० 'दोष'।

दोखना*–स० क्रि० दोषारोपण करना, दोषी ठहराना, ऐव लगाना।

दोखी*–वि० दे० 'दोषी'।

दोगला–दे० 'दो' के साथ।

दोगा–पु० एक तरहका छपा हुआ लिहाफ; पानीमें घोला हुआ चूना, सीमेंट आदि।

दोगाना–पु० (डूएट) वह गाना जिसका कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा और कुछ अन्य व्यक्ति द्वारा क्रम-क्रमसे गाया या वजाया जाय।

दोग्धा(ग्धृ)–पु० (सं०) ग्वाला; दुहनेवाला; वछड़ा; चारण; स्वार्थवश कोई कार्य करनेवाला व्यक्ति।

दोग्ध्री–स्त्री० (सं०) दूध देनेवाली गाय या धाय।

दोघ–पु० (सं०) दुहनेवाला।

दोच*–स्त्री० संकट, क्लेश; द्वैविध्य, असमंजस, पशोपेश; दवाव।

दोचन*–स्त्री० दोच; दवाव डालना; दवावमें पड़ना।

दोचना–स० क्रि० दवाव डालना।

दोज*–स्त्री० दूज, द्वितीया तिथि।

दोज़ख़–पु० (फा०) इस्लाम धर्मके अनुसार वह स्थान जहाँ कयामतके वाद पापी जायेंगे, जहन्नुम, नरक।

दोज़ख़ी–वि० दोजख संवंधी; दोजखका, नारकीय; दोजखमें भेजने योग्य (पापी); वहुत वड़ा पापी।

दोजग*–पु० दे० 'दोज़ख'।

दोदना†–स० क्रि० किसीके सामने कही हुई वातसे मुकर जाना; किसीकी कही हुई वात सुनकर भी कहना कि तुमने ऐसा नहीं कहा था।

दोदाना†–स० क्रि० दोदनेका काम किसी दूसरेसे कराना।

दोध–पु० (सं०) वछड़ा; दोग्धा, ग्वाला; पुरस्कारके लोभसे कविता करनेवाला।

दोधक–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त।

दोन–पु० दोआव; दो पहाड़ोंके वीचका भूभाग; दो नदियोंका संगम; दो वस्तुओंका मेल; काठका खोखला किया हुआ वह लंवा टुकड़ा जिससे धानके खेतमें पानी पहुँचाते हैं; अनाजकी एक माप, द्रोण।

दोना–पु० पत्तोंका वना हुआ कटोरेकी शक्लका पात्र; दौना।

दोनिया, दोनी–स्त्री० छोटा दोना।

दोनों–वि० पूर्वकथित या ऐसे दो जिनमेंसे एक भी छोड़ा न जाय, उभय।

दोवल*–पु० दोष, लांछन–'दोवल देत सवै मोहीको उन पठयो मैं आयो'–सूर।

दोवा–पु० दुविधा; दो स्थितियोंके वीचकी अवस्था।

दोय*–वि० दोनों।

दोयम–वि० (फा०) दूसरे दर्जेका, दूसरे नंवरका।

दोर–पु० (सं०) रज्जु, डोर। † स्त्री० दूसरी वार जोती हुई जमीन।

दोरक–पु० (सं०) वीणाके तारोंको वाँधनेका ताँत; डोरी।

दोर्–'दोस्'का समासगत रूप। **–ग्रह**–वि० वलवान्। पु० वाहुस्तंभ रोग। **–दंड**–पु० भुजदंड; लंवी, मजवूत वाँह। **–मूल**–पु० भुजमूल, कक्ष। **–युद्ध**–पु० वाहुयुद्ध, कुश्ती।

दोल–पु० (सं०) झूला; झूलना; दोलोत्सव; चंडोल, डोली। **–यात्रा**–स्त्री० दे० 'दोलोत्सव'।

दोलन–पु० (सं०) झूलना।

दोला–स्त्री० (सं०) झूला, हिंडोला; अनिश्चय या अस्थिर विचारोंकी स्थिति; वड़ी डोली; नीलका पौधा; अर्क खींचनेका भवका। **–यंत्र**–पु० झूला; अर्क उतारनेका भवका। **–युद्ध**–पु० वह युद्ध जिसमें जीत-हार अनिश्चित हो।

दोलाधिरूढ–वि० (सं०) झूलेपर चढ़ा हुआ; (ला०) जिसका निश्चय न हो।

दोलायमान–वि० (सं०) झूलता हुआ; अस्थिर, ढुलमुल; संशय-ग्रस्त।

दोलायित–वि० (सं०) दे० 'दोलित'।

दोलिका–स्त्री० (सं०) झूला; डोली।

दोलित–वि० (सं०) झूलता हुआ; अस्थिर।

दोली–स्त्री० (सं०) डोली; पालना; झूला।

दोलोत्सव–पु० (सं०) फाल्गुनकी पूर्णिमाको पड़नेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें हिंडोलेपर कृष्णकी प्रतिमाको झुलाते हैं।

दोशीज़गी–स्त्री० (फा०) कौमारावस्था, कौमार्य; अल्हड़पन।

दोशीज़ा–स्त्री० (फा०) कुमारी कन्या।

दोष–पु० (सं०) अपराध, कसूर; अवगुण, ऐव; विकार, खरावी; लांछन, कलंक; पाप, कलुष; त्रुटि; अशुद्धि; वछड़ा; गोधूलि; किसी वातका खंडन; रसको अपकृष्ट वनानेवाली काव्यगत त्रुटि; विधिके अतिक्रमणसे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकारका अदृष्ट (मी०), अभक्ष्य-भक्षण आदिसे उत्पन्न होनेवाला पाप; शरीरमें रहनेवाले वात, पित्त और कफ जिनके कोपसे शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है; इन दोषोंसे उत्पन्न विकार; राग-द्वेषादि जो मनुष्यको सुकर्म या दुष्कर्ममें प्रवृत्त करते हैं। **–कर, कारी(रिन्)**,**–कृत्**–वि० वुराई करनेवाला, अनिष्टकर। **–ग्राही(हिन्)**–वि० खल, दुर्वृत्त। **–घ्न**–वि० वात, पित्त और कफके दोषोंको शान्त करनेवाला। पु० ऐसी दवा आदि। **–ज्ञ**–वि० विद्वान्, मनीषी। **–त्रय**–पु० वात, पित्त और कफ–ये तीन दोष। **–दृष्टि**–वि० ऐव ढूँढ़नेवाला। **–पत्र**–पु० वह कागज जिसपर अपराधीके अपराधोंका व्यौरा लिखा हो। **–प्रमाणित**–वि० (कॉनविक्टेड) जिसका अपराध न्यायालयमें प्रमाणित हो गया हो, दे० 'अभिशंसित'। **–वेचक**–पु० (सेंसर) वह सरकारी कर्मचारी जो पत्र, पुस्तक, फिल्म आदिका तथा सेना-संवंधी सूचनाओंका परीक्षण कर आपत्तिजनक अंश निकाल देता है। **–वेचन**–पु० (सेंसरशिप) पत्र, पुस्तकादिसे उत्तेजक या आपत्तिजनक अंशोंका, निरीक्षणके वाद, हटा दिया जाना। **–सिद्ध**–वि० (कानविक्टेड) जिसका दोष या अपराध प्रमाणित हो गया हो, दोषप्रमाणित, अभिशंसित। **–सिद्धि**–स्त्री० (कानविक्शन) दोष या अपराधका प्रमाणित हो जाना। **–भाक्(ज्)**–वि० दोषी, अपराधी।

दोषक–पु० (सं०) दोष; वछड़ा।

दोषण–पु० (सं०) दोषारोप।

दोषन*–पु० दोष, अपराध, दूषण।

दोषना*–स० क्रि० दोष लगाना, ऐव लगाना।

दोषल–वि० (सं०) सदोष, दोषयुक्त।

दोषा–स्त्री० (सं०) रात्रि; भुजा। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–क्लेशी**–स्त्री० वनवर्वरिका, वनतुलसी। **–तिलक**– पु० प्रदीप, दीपक।

दोषाकर–पु० (सं०) दे० दोषोंका समूह; दे० 'दोषा' के साथ। वि० जिसमें अनेक दोष हों।

दोषारोपण–पु० (सं०) दोष लगाना।

दोषावह–वि० (सं०) दोषपूर्ण, दोषोंसे भरा हुआ।

दोषास्य–पु० (सं०) प्रदीप, दीपक।

दोषिक–पु० (सं०) रोग। वि० दोषयुक्त।

दोषित*–वि० दोषयुक्त।

दोषी(षिन्)–वि०, पु० (सं०) अपराधी, अभियुक्त; ऐवी; पापी।

दोषैकदृक्(श्)–वि० (सं०) छिद्रान्वेषी, ऐव ढूंढ़नेवाला।

दोस*–पु० दोष; † मित्र। **–दारी**†–मित्रता, दोस्ती।

दोसत*–पु० दोस्त, मित्र (साखी)।

दोसा*–स्त्री० दे० 'दोषा'।

दोस्त–पु० (फा०) मित्र, सुहृद्। **–दार**–पु० दोस्त। **–दारी**–स्त्री० दोस्ती। **–नवाज़**–पु०, वि० मित्रोंके प्रति सहानुभूति रखनेवाला।

दोस्ताना–पु० (फा०) मित्रता; मित्रताका व्यवहार। वि० दोस्तीका, दोस्तों जैसा, मित्रोचित।

दोस्ती–स्त्री० मित्रता, सौहार्द। † दो लोइयाँ एक साथ वेलकर वनायी हुई रोटी।

दोस्थ–पु० (सं०) सेवक; सेवा; क्रीड़ा; क्रीडक।

दोह*–पु० दे० 'द्रोह'; (सं०) दुहनेकी क्रिया, दोहन; दूध; दुग्धपात्र; किसी चीजसे लाभ उठाना। **–ज**–पु० दूध।

दोहगा†–स्त्री॰ दुर्भगा; वह विधवा जिसे किसी दूसरेने रख लिया हो, उपपत्नी ।

दोहता†–पु॰ लड़कीका लड़का, नाती ।

दोहद–पु॰ (सं॰) गर्भ; लालसा; गर्भिणीकी इच्छा; ज्योतिषके अनुसार कुछ विशिष्ट पदार्थ जिनका सेवन दिशा, वार तथा तिथि-संबंधी यात्रिक दोषोंको शांत करता है; कवि-समयके अनुसार रमणियोंके स्पर्श, पदाघात, दृष्टिपात आदि जिनसे प्रियंगु, अशोक, तिलक आदि वृक्षोंमें फूल लगते हैं । **–लक्षण**–पु॰ गर्भ-संबंधी लक्षण; भ्रूण; जीवनकी एक अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश ।

दोहदवती–स्त्री॰ (सं॰) वह गर्भिणी जिसे किसी वस्तुकी इच्छा हो ।

दोहदान्विता–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'दोहदवती' ।

दोहदी(दिन्)–वि॰ (सं॰) जिसे प्रबल इच्छा हो ।

दोहन–पु॰ (सं॰) दुहनेका काम; दुग्धपात्र; (ला॰) चूसना, शोषण करना ।

दोहनी–स्त्री॰ (सं॰) दूध दुहनेका पात्र; दुहनेकी क्रिया ।

दोहर†–स्त्री॰ एक तरहकी दोहरी चादर जिसमें मगजी लगायी जाती है ।

दोहरना–अ॰ क्रि॰ दो परत होना, दोहरा होना; दुबारा होना । स॰ क्रि॰ दोहरा करना ।

दोहरा–वि॰ दो परतोंका; दुगना । पु॰ दोहा ।

दोहराना–स॰ क्रि॰ किसी बातको बार-बार कहना; पुनरावृत्ति करना; अशुद्धि दूर करनेके लिए एक बार और देखं जाना; * दोहरा करना ।

दोहरी–वि॰ स्त्री॰ दो तह की हुई; दो परतोंकी ; दुगुनी । **–बात**–स्त्री॰ दो तरहकी बात ।

दोहल–पु॰ (सं॰) इच्छा; गर्भिणीकी इच्छा, दोहद; अशोक वृक्ष ।

दोहलवती–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'दोहदवती' ।

दोहली–स्त्री॰ (सं॰) अशोक; आक ।

दोहा–पु॰ (सं॰) एक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरणमें १३-१३ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें ११-११ मात्राएँ होती हैं; एक संकीर्ण राग ।

दोहाई–स्त्री॰ दुहाई, गुहार, पुकार; * कविता ।

दोहाग*–पु॰ दुर्भाग्य, बदकिस्मती ।

दोहापनय–पु॰ (सं॰) दूध ।

दोहित*–पु॰ दौहित्र, लड़कीका लड़का । वि॰ (सं॰) जिसे दुहा गया हो ।

दोही–स्त्री॰ एक छंद; * दुहाई–'फिरी दृग रावरे रूपकी दोही' –घन॰ ।

दोह्य–वि॰ (सं॰) दुहने योग्य । पु॰ दूध ।

दोह्या–स्त्री॰ (सं॰) गाय ।

दौँ*–अ॰ दे॰ 'धौं' । स्त्री॰ दे॰ 'दौ' ।

दौँकना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'दमकना' ।

दौँगड़ा, दौँगरा†–पु॰ तपी हुई धरतीपर होनेवाली ग्रीष्म ऋतुकी अल्प वृष्टि, तेजीसे आकर निकल जानेवाली वर्षा, तेज बौछार –'आते ही उन्होंने गालियों और धमकियोंका दौंगड़ा-सा पिताजी-पर बरसा दिया'–जिंदगी; शोरगुल ।

दौँचना*–स॰ क्रि॰ दबाव डालकर लेना । अ॰ क्रि॰ हठपकड़-कर लेना ।

दौँची†–स्त्री॰ ठोकर लगनेसे धातुके बरतनमें पड़ी हुई पचकन, चिपटापन ।

दौँरी–स्त्री॰ दँवरी, दाँय ।

दौःशील्य–पु॰ (सं॰) दुःशील होनेका भाव, बुरा स्वभाव; दुष्टता ।

दौःसाधिक–पु॰ (सं॰) द्वारपाल; ग्राम-निरीक्षक ।

दौ*–स्त्री॰ दव, वनाग्नि; आग; संताप ।

दौकूल, दौगूल–वि॰ (सं॰) दुकूल-संबंधी; दुकूलका । पु॰ बारीक रेशमी कपड़ा; रेशमी कपड़ेसे ढका हुआ रथ ।

दौड़–स्त्री॰ दौड़नेकी क्रिया या भाव; द्रुतगमन; अपराधीको पकड़ने या तलाशीके लिए कई सिपाहियोंका एकाएक जा पहुँचना; उड़ान; गति, पहुँच; बुद्धिकी पहुँच या सीमा; सवेग आक्रमण, जोरदार हमला; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए बहुत अधिक चक्कर लगानेकी क्रिया; दौड़नेकी प्रतियोगिता । **–धूप**–स्त्री॰ बार-बार इधरसे उधर आना-जाना; जोरदार कोशिश, भरपूर उद्योग । **मु॰–मारना, –लगाना**–दूरतक जाना या पहुँचना; दूरतककी यात्रा करना; उद्योगमें कहीं बार-बार आना-जाना; दौड़ना ।

दौड़ना–अ॰ क्रि॰ अति वेगसे चलना, ऐसी द्रुत गतिसे गमन करना कि पाँव पृथ्वीपर पूरा न जमे; बहुत तेजीसे चलना; किसी कामके लिए बार-बार इधर-उधर आना जाना, हैरान होना; फैलना; जाना ।

दौड़ादौड़ी–स्त्री॰ त्वरा, जल्दबाजी; दौड़धूप ।

दौड़ान–स्त्री॰ दौड़नेकी क्रिया, दौड़; दौड़नेका क्रम; दौड़नेका फेरा; आक्रमण; वेग; सिलसिला ।

दौड़ाना–स॰ क्रि॰ दौड़नेके काममें लगाना; फेरना, चलाना (जैसे–दीवारपर कूँची दौड़ाना, मजमेपर नजर दौड़ाना) ।

दौत्य–पु॰ (सं॰) दूतत्व, दूतका कार्य; संदेश ।

दौन*–पु॰ दमन । वि॰ दमन करनेवाला ।

दौना–पु॰ एक पौधा जिसकी पत्तियोंमें विशेष प्रकारकी तीव्र सुगंध होती है; * दोना; द्रोणगिरि । * स॰ क्रि॰ दमन करना, दबाना; तपाना ।

दौनागिरि–पु॰ दे॰ 'द्रोणगिरि' ।

दौनाचल–पु॰ दे॰ 'द्रोणगिरि' ।

दौर–पु॰ (अ॰) फेरा, चक्कर, घुमाव; समयका फेर, जमानेकी गर्दिश; चढ़ाई, आक्रमण; समय, युग; उन्नतिकाल; हाँक; धाक, प्रभाव; पारी । *स्त्री॰ दौड़; आक्रमण; छापामार पुलिस (दे॰ दौड़); **–दौरा**–पु॰ बोलबाला, प्राधान्य, चलती । **मु॰–चलना**–शराबके प्यालेका बारी-बारीसे पीनेवालोंके पास पहुँचाया जाना ।

दौरना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'दौड़ना' ।

दौरा†–पु॰ बाँस, बेत आदिका टोकरा; (अ॰ 'दौर') चारों ओर घूमना, चक्कर; इधर-उधर आना-जाना; गश्त, जाँच-पड़ताल या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना; समय-समयपर होने या उभरनेवाली बीमारीका आक्रमण, जब-तब आना-जाना; हमला । **–जज**–पु॰ सत्र-न्यायालयका मुख्य न्यायाधीश । **मु॰–करना**–जाँच-पड़ताल या निरीक्षणके लिए अफसरका अपने इलाकेमें घूमना । **–सिपुर्द करना**–विचार या निर्णयके लिए अभियुक्त या मुकदमेको सेशन जजके यहाँ भेजना । **–सिपुर्द होना**–विचार या निर्णयके लिए अभियुक्तका सेशन जजके यहाँ भेजा जाना । **–(रे)पर रहना या होना**–अपने हलकेके निरीक्षण आदिके लिए अफसरका सदरसे बाहर रहना या होना ।

दौरात्म्य–पु॰ (सं॰) दुरात्मा होनेका भाव, दुर्जनता; अंतःकरण, बुद्धि, स्वभाव आदिकी सदोषता ।

दौरादौरी*–स्त्री॰ दे॰ 'दौड़ादौड़ी' ।

दौरान–पु॰ (अ॰) चक्कर, दौरा, जमाना; दौर या प्रबलताका समय; हेरफेर; भाग्य; उम्र ।

दौराना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'दौड़ाना' ।

दौरित–पु॰ (सं॰) बुराई; हानि, क्षति ।

दौरी†–स्त्री॰ छोटा दौरा, छोटी टोकरी, चँगेरी ।

दौर्गंध्य–पु॰ (सं॰) बुरी गंध, बदबू ।

दौर्ग–वि॰ (सं॰) दुर्गका; दुर्ग संबंधी ।

दौर्गत्य–पु॰ (सं॰) दुर्गति; निर्धनता; कष्ट ।

दौर्ग्य–पु॰ (सं॰) कठिनता ।

दौर्ग्रह–पु॰ (सं॰) अश्वमेध यज्ञ ।

दौर्जन्य–पु॰ (सं॰) दुर्जनता, दुष्टता ।

दौर्जीवित्य–पु॰ (सं॰) कष्टमय जीवन ।

दौर्बल्य–पु॰ (सं॰) दुर्बलता ।

दौर्भागिनेय–पु॰ (सं॰) ऐसी स्त्रीका पुत्र जिसका पति उसे चाहता न हो ।

दौर्भाग्य–पु॰ (सं॰) भाग्यकी खोटाई, दुर्भाग्य ।

दौर्भ्रात्र–पु॰ (सं॰) भाइयोंका आपसका झगड़ा ।

दौर्मनस्य–पु॰ (सं॰) दुर्मना होनेका भाव; बुरा स्वभाव; मानसिक

कष्ट; शोक; नैराश्य।

दौर्य–पु० (सं०) दूर होनेका भाव, दूरत्व ।

दौर्वृत्य–पु० (सं०) दुराचारिता ।

दौर्हार्द–पु० (सं०) दुर्हृद् होनेका भाव, शत्रुता ।

दौर्हृद–पु० (सं०) दुर्हृद् होनेका भाव, कुटिलता, दुष्टता; शत्रुता; दोहद ।

दौर्हृदय–पु० (सं०) मनकी खोटाई; शत्रुता ।

दौर्हृदिनी–स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री ।

दौलत–स्त्री० (अ०) धन, संपत्ति । **–ख़ाना**–पु० वासस्थान, घर (इसका प्रयोग वार्तालापमें किसीका घर पूछते समय करते हैं। उत्तरदाता 'गरीबख़ाना' शब्दका प्रयोग करता है) । **–मंद**–वि० धनाढ्य, मालदार । **–मंदी**–स्त्री० धनाढ्यता, मालदारी ।

दौलति*–स्त्री० दौलत ।

दौलेय–पु० (सं०) कच्छप, कछुआ ।

दौल्मि–पु० (सं०) इंद्र ।

दौवारिक–पु० (सं०) प्रतिहार, द्वारपाल ।

दौवारिकी–स्त्री० (सं०) प्रतिहारिणी, द्वारपालिका ।

दौश्चर्य–पु० (सं०) दुराचरण; दुष्कर्म; दुष्टता ।

दौष्कुल–वि० (सं०) हीनवंशमें उत्पन्न ।

दौष्ट्य–पु० (सं०) दुष्टता ।

दौष्मंत, दौष्मंति–पु० (सं०) दे० 'दौष्यंति' ।

दौष्यंति–पु० (सं०) दुष्यंतके पुत्र, भरत ।

दौहित्र–पु० (सं०) बेटीका बेटा, नाती; कपिला गौका घृत; तिल; खड्ग, तलवार ।

दौहित्रायण–पु० (सं०) दौहित्रका पुत्र ।

दौहित्री–स्त्री० (सं०) बेटीकी बेटी, नतिनी ।

द्याना, द्यावना*–स० क्रि० दे० 'दिलाना' ।

द्यु–पु० (सं०) दिन; स्वर्ग; आकाश; अग्नि; तीक्ष्णता । **–ग**–पु० पक्षी । वि० आकाशमें गमन करनेवाला । **–गण**–पु० दे० 'अहर्गण' । **–चर**–पु० ग्रह; पक्षी । **–धुनि, नदी**–स्त्री० स्वर्गंगा, मंदाकिनी । **–निवासी(सिन्)**–पु० देवता । **–पति**–पु० इंद्र; सूर्य; मंदार वृक्ष । **–पथ**–पु० आकाशमार्ग । **–मणि**–पु० सूर्य; मदारका पेड़ । **–योषित्**–स्त्री० अप्सरा । **–लोक**–पु० स्वर्ग लोक । **–षत्(द्),–सत्(द्)**–पु० देवता; ग्रह । **–सरित्**–स्त्री० स्वर्गंगा, मंदाकिनी ।

द्युक–पु० (सं०) उल्लू ।

द्युकारि–पु० (सं०) कौआ ।

द्युति–स्त्री० (सं०) शरीरकी सहज कांति, आभा, छवि; चमक, दीप्ति । **–कर**–पु० ध्रुव । **–धर**–पु० विष्णु ।

द्युतित–वि० (सं०) दे० 'द्योतित' ।

द्युतिमंत–वि० दे० 'द्युतिमान्' ।

द्युतिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) कांति, प्रभा, तेज ।

द्युतिमान्(मत्)–वि० (सं०) द्युतिवाला, प्रभायुक्त ।

द्युत्–पु० (सं०) किरण ।

द्युन–पु० (सं०) लग्नसे सातवाँ स्थान ।

द्युमत्सेन–पु० सत्यवान्के पिता तथा सावित्रीके श्वसुर, एक राजा ।

द्युमयी–स्त्री० (सं०) विश्वकर्माकी एक कन्या जो सूर्यकी पत्नी है ।

द्युमान्(मत्)–वि० (सं०) कांतियुक्त ।

द्युम्न–पु० (सं०) वित्त, धन; बल; कांति; प्रेरणा ।

द्युवा(वन्)–पु० (सं०) सूर्य ।

द्यूत–पु० (सं०) जुआ । **–कर**–पु० जुआ खेलनेवाला, जुआरी । **–कार,–कारक**–पु० जुएका खेल करानेवाला, सभिक; जुआरी । **–कृत**–पु० द्यूतकर । **–क्रीड़ा**–स्त्री० जुएका खेल । **–दास**–पु० जुएमें जीता हुआ दास । **–पूर्णिमा**–स्त्री० आश्विनकी पूर्णिमा । **–प्रतिपदा**–स्त्री० कार्तिक-शुक्ला प्रतिपदा । **–फलक**–पु० पासा खेलनेका तख्ता । **–बीज**–पु० कौड़ी, कपर्दक । **–भूमि**–स्त्री० जुआ खेलनेकी जगह । **–मंडल,–समाज**–पु० द्यूतकारोंकी मंडली । **–वृत्ति**–पु० वह जिसका जुआ खेलना पेशा हो गया हो; जुआ खेलानेवाला ।

द्यून–पु० (सं०) दे० 'द्युन' ।

द्यो–स्त्री० (सं०) स्वर्ग; आकाश । **–कार**–पु० थवई, राजगीर ।

द्योत–पु० (सं०) प्रकाश; धूप; ताप ।

द्योतक–वि०, पु० (सं०) प्रकाश करनेवाला, प्रकाशक; सूचक ।

द्योतन–पु० (सं०) प्रकाश; प्रकाश करना, प्रकाशन; प्रकाशक; सूचित या व्यक्त करना; दीपक; प्रभात । वि० प्रकाशशील, चमकनेवाला; सूचक ।

द्योतनिका–स्त्री० (सं०) व्याख्या, टीका ।

द्योति(स्)–स्त्री० (सं०) ज्योति, प्रकाश; आभा; तारा ।

द्योतित–वि० (सं०) प्रकाशित, व्यक्त किया हुआ ।

द्योतिरिंगण–पु० (सं) ज्योतिरिंगण, खद्योत, जुगनू ।

द्योस, द्यौस*–पु० दिन, दिवस ।

द्योहरा*–पु० देवालय ।

द्यौ(दिव)–स्त्री० (सं०) स्वर्ग; आकाश; दिन; प्रकाश; अग्नि; चमक ।

द्रंक्षण–पु० (सं०) एक मान जो तोलेके बराबर होता था ।

द्रंग–पु० (सं०) नगरका एक भेद, पुरी ।

द्रकट, द्रगड–पु० (सं०) एक बाजा, डुग्गी ।

द्रग*–पु० दृग, नेत्र ।

द्रढिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) दृढता ।

द्रप्पन*–पु० दर्पण–'द्रप्पनसम आकास स्रवत जल अमृत हिमकर' –रासो ।

द्रप्स–पु० (सं०) पतला दही; रस; शुक्र; बूंद; चिनगी । वि० चूनेवाला ।

द्रप्स्य–पु० (सं०) दे० 'द्रप्स' ।

द्रम्म–पु० (सं०) एक प्राचीन सिक्का ।

द्रवंती–स्त्री० (सं०) मूसाकानी; नदी ।

द्रव–पु० (सं०) तरल होना, पिघलना; तरल पदार्थ; पदार्थकी वह अवस्था जब वह जिस पात्रमें रखा जाय उसीका रूप धारण कर ले । अतः द्रवका आयतन तो निश्चित रहता है किन्तु इसकी शक्ल निश्चित नहीं होती; तरल होकर बहनेकी क्रिया; क्षरण; किसी पदार्थका तरल रूपांतर; रस; आसव; भागना, पलायन; द्रवत्व नामक गुण; परिहास; वेग; गति; क्रीडा । वि० तरल, पिघला हुआ; दौड़ता हुआ; चूता हुआ; बहता हुआ । **–गतिविज्ञान**–दे० 'द्रवगतिकी' । **–चालित दाबक**–पु० (हाइड्रॉलिक प्रेस) ऐसा यंत्र जिसमें छोटे क्षेत्रफलके पिस्टनपर थोड़ा बल लगाकर उसे द्रवके माध्यमसे बड़े क्षेत्रफलवाले पिस्टनपर पहुँचाते हैं। इस प्रकार बड़े पिस्टनपर बहुत अधिक दाब बल उत्पन्न हो जाता है। यह कारखानोंमें रुईकी गाँठ आदि दबानेके काम आता है । **–ज**–पु० गुड़ । **–रसा**–स्त्री० लाख; गोंद । **–शील**–वि० पिघलनेवाला ।

द्रवक–वि० (सं०) बहनेवाला; क्षरण-शील; पलायनशील ।

द्रवगतिकी–स्त्री० द्रवप्रवाहके नियंत्रण या उससे उत्पन्न शक्तिसे संबंधित विज्ञान (हाइड्रोडाइनैमिक्स), नदीप्रवाह विज्ञान ।

द्रवण–पु० (सं०) पिघलनेकी क्रिया; तरल होना; ठोसका द्रव बनना; गैसका द्रव रूप धारण करना; बहना; क्षरण; रिसना; भागना; दयार्द्र होना । वि० दे० 'द्रवक' ।

द्रवणांक–पु० (मेल्टिंग पॉइंट) तापकी वह मात्रा जिसपर कोई वस्तु पिघलने–ठोससे द्रव-रूपमें परिणत होने लगे ।

द्रवना*–अ० क्रि० तरल होना; पिघलना; पसीजना; दयार्द्र होना ।

द्रवाधार–पु० (सं०) छोटा पात्र; अंजलि, चुल्लू ।

द्रविड–पु० (सं०) भारतका एक दक्षिणी प्रदेश; इस देशका निवासी; ब्राह्मणोंका एक वर्ग । **–प्राणायाम**–पु० दे० 'द्राविड-प्राणायाम' ।

द्रविण–पु० (सं०) धन; सोना; बल, पराक्रम; पदार्थ; वह जिससे कोई वस्तु बनायी जाय; इच्छा । **–नाशन**–पु० सहिजन । **–प्रद**–पु० विष्णु ।

द्रविणाधिपति–पु० (सं०) कुबेर ।

द्रविणोदा(दस्)–पु० (सं०) अग्नि । वि० धन देनेवाला ।

द्रवीभूत–वि० (सं०) पिघला हुआ; जो द्रव हो गया हो, तरलित; दयार्द्र ।

द्रवेतर–वि० (सं०) ठोस, कठिन ।

द्रवोत्तर–वि० (सं०) वहुत तरल।

द्रव्य–पु० (सं०) पदार्थ, वस्तु; द्रव्य मैटर वह है जिसका 'भार' हो तथा जिसमें 'जड़त्व' हो, अर्थात् जो विरामावस्था या गतिकी दशाके परिवर्तनका विरोध करे। द्रव्य तीन अवस्थाओंमें पाया जाता है–ठोस, द्रव तथा गैस; वह वस्तु जो गुण और क्रिया या केवल गुणका आश्रय हो (वैशेषिक दशनके अनुसार नौ द्रव्य होते हैं–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक, आत्मा और मन); वह मूल वस्तु, जिससे दूसरी वस्तुएँ तैयार की जाती हैं, उपादान; सामान, उपकरण; धन-दौलत; पीतल; औषध; लाख; गोंद; मद्य; लेप; विनम्रता; पण। वि० वृक्ष-संबंधी; वृक्षसे उत्पन्न; वृक्ष जैसा। **–कृश**–वि० संपत्तिहीन। **–गण**–पु० सुश्रुतके अनुसार सैंतीस विशिष्ट औषधियोंका एक समूह। **–पति**–पु० राशियाँ जिनमेंसे प्रत्येक कुछ विशिष्ट द्रव्योंकी महार्घता-का कारण होनेसे उनकी स्वामिनी मानी जाती हैं–जैसे कंवल, मसूर, जौ आदिकी स्वामिनी मेष राशि; धनी, पूंजीपति। **–परिग्रह**–पु० धनका संचय। **–मान**–पु० (मास) किसी पिण्ड-पर बल लगाएँ तो उसमें उत्पन्न होनेवाला त्वरण बलका समानुपाती होता है। इस अनुपातका नियतांक ही द्रव्यमान कहलाता है;

$$\text{द्रव्यमान} = \frac{\text{बल}}{\text{त्वरण}}$$

–वाचक–वि० जिससे किसी द्रव्यका वोध हो। **–शुद्धि**–स्त्री० द्रव्य या वस्तुकी सफाई। **–संस्कार**–पु० यज्ञ-सामग्रीकी शुद्धि।

द्रव्यक–पु० (सं०) द्रव्य या वस्तुका वाहक।

द्रव्यमय–वि० (सं०) किसी द्रव्यका वना हुआ; धन-संपत्तिसे परिपूर्ण।

द्रव्यवान्(वत्)–वि० (सं०) द्रव्यवाला, धनी।

द्रव्यांतर–पु० (सं०) दूसरा द्रव्य।

द्रव्यार्जन–पु० (सं०) धन कमाना, धनोपार्जन।

द्रव्याश्रित–वि० (सं०) द्रव्यमें निहित।

द्रष्टव्य–वि० (सं०) देखने या दिखाने योग्य, दर्शनीय; साक्षात्कार करने योग्य; विचारणीय; जो देखनेमें अच्छा लगे, नेत्रसुखद, नयनाभिराम।

द्रष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) देखनेवाला, दर्शक; साक्षात्कार करने-वाला; प्रकाशक।

द्रष्टार–पु० (सं०) विचार करनेवाला; निर्णायक, विचारपति।

द्रह–पु० (सं०) वहुत गहरी झील, दह।

द्राक्षशर्करा–स्त्री० (ग्लूकोज) द्राक्षा (अंगूर)के रससे वनी हुई चीनी।

द्राक्षा–स्त्री० (सं०) दाख, अंगूर; मुनक्का।

द्राघिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) दीर्घता, लंवाई।

द्राण–पु० (सं०) निद्रा; पलायन, भागना। वि० सोया हुआ; भागा हुआ।

द्राप–पु० (सं०) कीचड़; आकाश; मूर्ख व्यक्ति; शिव; कौड़ी।

द्रामिल–पु० (सं०) चाणक्य।

द्राव–पु० (सं०) तरल होनेकी क्रिया, पिघलने, पसीजनेकी क्रिया; गल या पिघलकर वहनेकी क्रिया; क्षरण; दया या करुणासे आर्द्र होनेकी क्रिया, अनुताप; ताप; पलायन; गति, वेग। **–कर**–पु० सुहागा।

द्रावक–वि० (सं०) तरल वनानेवाला, द्रवीभूत करनेवाला; गलाने, पिघलानेवाला; दया, करुणाका भाव उत्पन्न करनेवाला। पु० चंद्रकांत मणि; सुहागा; चोर; मोषक; भगानेवाला; मोम। **–कंद**–पु० तैलकंद।

द्रावण–पु० (सं०) द्रव वनानेकी क्रिया या भाव, गलाना, पिघलाना; भगानेका कार्य; निर्मली; (सॉल्यूशन) पानी, मद्यसार आदिमें किसी स्थूल (या अन्य द्रव) पदार्थके घुल-मिल जानेसे वना हुआ पारदर्शी और समरूप (होमोजीनस) मिश्रण, घोल।

द्राविका–स्त्री० (सं०) लार।

द्राविड–पु० (सं०) द्रविड देश; इस देशका वासी। वि० द्रविडका; द्रविड-संवंधी। **–प्राणायाम**–पु० आसानी और सीधे तरीकेसे किये जानेवाले कामको टेढ़े, उलटे ढंगसे करना।

द्राविडक–पु० (सं०) काला नमक; कचूर।

द्राविडी–स्त्री० (सं०) द्राविड देश या जातिकी स्त्री; छोटी इलायची। वि० द्रविड़ संवंधी।

द्रावित–वि० (सं०) द्रव किया हुआ; गलाया, पिघलाया हुआ; भगाया हुआ।

द्राव्य–वि० (सं०) भगाये जाने योग्य; गलाये जाने योग्य।

द्राह्यायण–पु० (सं०) सामवेदके कल्प, श्रौत तथा गृह्यसूत्रोंके रचयिता एक ऋषि।

द्रु–पु० (सं०) वृक्ष; शाखा; लकड़ी; काष्ठनिर्मित यंत्र। **–किलिम**–पु० देवदारु। **–घण**–पु० लोहेका मुग्दर; मुग्दरके आकारका एक अस्त्र; कुठार, फरसा; भूचंपा। **–घ्नी**–स्त्री० कुल्हाड़ी। **–णस**–वि० लंवी नाक वाला। **–नख**–पु० काँटा। **–सल्लक**–पु० पियाल।

द्रुग्ध–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त; जिसके विरुद्ध दुरभिसंधि की गयी हो। पु० अपराध; वुराईका काम।

द्रुण–पु० (सं०) धनुष्; खड्ग; भृंग; विच्छू; दुष्ट व्यक्ति। **–ह**–पु० म्यान।

द्रुणा–स्त्री० (सं०) धनुष्की डोरी।

द्रुणि, द्रुणी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका काठका पात्र; कच्छपी; कनखजूरा।

द्रुत–वि० (सं०) जो द्रव हो गया हो, द्रवीभूत, गला या पिघला हुआ; शीघ्रतायुक्त; भागा हुआ; तीव्र गतिवाला, तेज; अस्पष्ट; विखरा हुआ। पु० तालकी एक मात्राका आधा; मध्यमसे कुछ तेज लय; विच्छू; वृक्ष; विल्ली। **–गति**–वि० तीव्र गतिवाला। स्त्री० तीव्र गति, तेज चाल। **–गामी(मिन्)**–वि० तीव्र गतिसे चलनेवाला। **–पद**–पु० एक वर्णिक वृत्त। वि० तेज चलनेवाला। **–मध्या**–स्त्री० एक अर्द्धसम वर्णवृत्त। **–विलंवित**–पु० एक वर्णवृत्त।

द्रुति–स्त्री० (सं०) द्रव होना; भागना; जाना।

द्रुतै*–अ० शीघ्रतासे।

द्रुपद–पु० (सं०) पांडवोंकी पत्नी द्रौपदीके पिता जो पांचाल देशके राजा थे (इनका दूसरा नाम यज्ञसेन था)।

द्रुपदात्मज–पु० (सं०) शिखंडी; धृष्टद्युम्न।

द्रुम–पु० (सं०) वृक्ष, पेड़; पारिजात; कुवेर। **–कंटिका**–स्त्री० सेमर। **–नख,–मर**–पु० काँटा। **–व्याधि**–स्त्री० पेड़में लगने-वाला रोग; गोंद; लाख। **–शीर्ष**–पु० पेड़का सिरा, वृक्षका अग्रभाग। **–श्रेष्ठ**–पु० प्रधान वृक्ष; ताड़का पेड़। **–षंड**–पु० वृक्षसमूह, पेड़ोंका झुंड। **–सार**–पु० दाडिम, अनार।

द्रुमामय–पु० (सं०) दे० 'द्रुम-व्याधि'।

द्रुमारि–पु० (सं०) हाथी।

द्रुमालय–पु० (सं०) जंगल।

द्रुमाश्रय–पु० (सं०) गिरगिट।

द्रुमिणी–स्त्री० (सं०) जंगल।

द्रुमिला–स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद।

द्रुमेश्वर–पु० (सं०) पारिजात; ताड़; चंद्रमा।

द्रुमोत्पल–पु० (सं०) कर्णिकार वृक्ष।

द्रुवय–पु० (सं०) एक माप।

द्रुह–पु० (सं०) पुत्र; झील, द्रह।

द्रुहण, द्रुहिण–पु० (सं०) ब्रह्मा।

द्रुही–स्त्री० (सं०) पुत्री।

द्रुह्य–पु० (सं०) शर्मिष्ठाके गर्भसे उत्पन्न ययातिका एक पुत्र।

द्रू–पु० (सं०) सोना।

द्रूघण–पु० (सं०) हथौड़ा।

द्रूण–पु० (सं०) विच्छू; धनुष्।

द्रोण–पु० (सं०) द्रोणाचार्य; वत्तीस सेरकी एक प्राचीन माप; लकड़ीका एक पात्र; चार सौ धनुष् लंवा-चौड़ा जलाशय; डोम-कौआ; लकड़ीका रथ; नाव; विच्छू; दोना; एक पुष्पवृक्ष; पेड़; द्रोणाचल पर्वत; मेघोंका एक नायक। **–कलश**–पु० एक यज्ञपात्र जो लकड़ीका होता है। **–काक**–पु० काला कौआ,

डोमकौआ। **–गंधिका**–स्त्री० रास्ना। **–गिरि**–पु० एक वर्ष-पर्वत (रामायणके अनुसार हनुमान् इसी पर्वतपर संजीवनी बूटी लानेके लिए भेजे गये थे)। **–घा,–दुग्धा,–दुघा**–वि० स्त्री० द्रोणभर दूध देनेवाली (गाय)। **–पदी**-स्त्री० कुंभपदी। **–पुष्पी**–स्त्री० गूमा। **–माना**–वि० स्त्री० दे० 'द्रोणदुग्धा'। **–मुख**–पु० चार सौ ग्रामोंके बीचका प्रधान ग्राम। **–मेघ**–पु० बहुत अधिक पानी बरसानेवाला बादल।

द्रोणाचार्य–पु० (सं०) महाभारतके अनुसार एक प्रसिद्ध ब्राह्मण योद्धा जिन्होंने कौरवों और पांडवोंको धनुर्विद्याकी शिक्षा दी थी।

द्रोणि, द्रोणी–स्त्री० (सं०) डोंगी; पानी रखनेका केलेकी छाल आदिका बना एक प्रकारका पात्र; पत्तोंका बना पात्र, दोना; कठवत; टब; पर्वतोंके बीचकी भूमि; द्रोणाचार्यकी पत्नी; दो सूर्प–१२८ सेरका एक प्राचीन परिमाण; एक प्रकारका नमक; केलेका पेड़; नीलका पौधा। **–दल**–पु० केतकीका पौधा। **–मुख**–पु० दे० 'द्रोणमुख'। **–लवण**–पु० कर्नाटकके आसपास होनेवाला एक प्रकारका नमक।

द्रोणिका–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; कटवत; कंडाल।

द्रोन*–पु० द्रोण।

द्रोह–पु० (सं०) दूसरेका अनिष्ट चाहना; हिंसा; अपराध; वैर; विद्रोह। **–चिंतन**–पु० अनिष्ट करनेका विचार या प्रयत्न करना। **–बुद्धि**–वि० बुराई करनेपर तुला हुआ। स्त्री० बुराई करनेकी नीयत।

द्रोहाट–वि० (सं०) जो ऊपरसे सीधा जान पड़े पर भीतरका क्रूर हो, वैड़ालव्रतिक। पु० मृगलुब्धक, शिकारी; ढोंगी आदमी; नकली आदमी।

द्रोही(हिन्)–वि० (सं०) द्रोह करनेवाला, अहितचिंतन करनेवाला; विद्रोह करनेवाला। पु० वह व्यक्ति जो द्रोह करे।

द्रौणायन, द्रौणायनि–पु० (सं०) द्रोणाचार्यका पुत्र, अश्वत्थामा।

द्रौणि–पु० (सं०) अश्वत्थामा।

द्रौणिक–वि० (सं०) जिसमें एक द्रोण बीज बोया जा सके; द्रोण-संबंधी।

द्रौणिकी–स्त्री० (सं०) एक द्रोण मापका पात्र।

द्रौणी–स्त्री० (सं०) कठवत; कंडाल।

द्रौपंद–पु० (सं०) द्रुपदका पुत्र।

द्रौपदी–स्त्री० (सं०) द्रुपदकी पुत्री, पाण्डव-पत्नी।

द्रौपदेय–पु० (सं०) द्रौपदीका पुत्र।

द्वंद–पु० (सं०) घंटा बजानेका घड़ियाल; युग्म; जोड़ा; दे० 'द्वंद्व'। *स्त्री० दुंदुभी।

द्वंदर*–वि० झगड़ा करनेवाला; उलझनेवाला। पु० संसार।

द्वंद्व–पु० (सं०) युगल, युग्म, जोड़ा; दो व्यक्तियोंका परस्पर युद्ध; कलह, संघर्ष, झगड़ा; स्त्री-पुरुषका, नर-मादाका जोड़ा, मिथुन; दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं या भावोंका जोड़ा–जैसे शोक-मोह, शीत-उष्ण आदि; संदेह; अनिश्चय; दुर्ग; रहस्य; एक रोग; मिथुन राशि; समासका एक भेद (व्या०)। **–चर,–चारी-(रिन्)**–पु० चकवा। वि० युग्मरूपमें चलनेवाला; जो सदा अपनी मादाके साथ रहे। **–ज**–वि० वात, पित्त, कफमेंसे किन्हीं दोके विकारसे उत्पन्न; कलहजन्य; राग-द्वेष आदि परस्पर विरोधी भावोंसे उत्पन्न। **–मोह**–पु० संदेहजन्य कष्ट। **–युद्ध**–पु० दो व्यक्तियोंका पारस्परिक युद्ध।

द्वंद्वी(द्विन्)–वि० (सं०) युग्म बनानेवाला; परस्पर विरोधी (सुख–दुःख); झगड़ालू।

द्वय–वि०(सं०) दो। पु० युग्म, जोड़ा (समासांतमें)। **–वादी-(दिन्)**–वि० दुरंगी बात कहनेवाला। **–हीन**–वि०(पुंलिंग, स्त्रीलिंग) दोनोंसे अलग नपुंसक (शब्द)।

द्वाःस्थ, द्वाःस्थित–पु० (सं०) द्वारपाल।

द्वा–'द्वि'का समासगत रूप। **–चत्वारिंशत्**–वि० बयालिस। पु० ४२ की संख्या। **–ज**–पु० जारज पुत्र। **–दश**–वि० बारह; बारहवाँ। **–०कर**–पु० कार्त्तिकेय; कार्त्तिकेयका एक अनुचर। **–०पत्र**–पु० विष्णुका द्वादशाक्षर मंत्र–'ॐनमो भगवते वासुदेवाय'। **–०भाव**–पु० तनु, धन आदि बारह भाव जिनपर जन्मकुंडली देखनेमें विचार करते हैं (ज्यो०)। **–०रात्र**–पु० बारह दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ। **–०लोचन**–पु० कार्त्तिकेय। **–०वर्गी**–स्त्री० नीलकंठ ताजिकके अनुसार क्षेत्र, होरा आदि बारह वर्गोंका समूह जिसके आधारपर ग्रहोंका बलाबल जाना जाता है। **–०वार्षिक**–पु० ब्रह्महत्यासे मुक्त होनेके लिए बारह वर्षतक वनमें रहकर किया जानेवाला एक व्रत। **–दशी**–स्त्री० पक्षकी बारहवीं तिथि। **–दस**–वि० (हिं०) दे० 'द्वादश'। **–०बानी**–वि० दे० 'बारहबानी'। **–पर**–पु० संदेह, संशय; तीसरा युग जो त्रेताके बाद आता है; दो बिंदियोंवाला पासेका पहल।

द्वादशांग–पु० (सं०) गुग्गुल, चंदन, तेजपात आदि बारह वस्तुओंके योगसे बना हुआ एक हवनीय द्रव्य। वि० बारह अंगोंवाला।

द्वादशांगुल–पु० (सं०) बारह अंगुलकी माप, बित्ता, बालिश्त।

द्वादशाक्ष–पु० (सं०) कार्त्तिकेय; बुद्ध।

द्वादशाक्षर–पु० (सं०) विष्णुका बारह अक्षरोंका मंत्र–'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'।

द्वादशाख्य–पु० (सं०) बुद्धदेव।

द्वादशात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) सूर्य; मदार।

द्वादशायतन–पु० (सं०) बौद्ध दर्शनके अनुसार मन, बुद्धि आदि पूजास्थान।

द्वादशाह–पु० (सं०) बारह दिनोंका समुदाय; बारह दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ; मरण-तिथिसे बारहवें दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

द्वापर–पु० दे० 'द्वा'के साथ।

द्वाभा–स्त्री० सबेरे या संध्याके समयका वह मंद प्रकाश जब सूर्य क्षितिज रेखाके नीचे हो (ट्वाइलाइट)।

द्वामुष्यायण–पु० (सं०) वह जो एक व्यक्तिका औरस और दूसरेका दत्तक पुत्र हो (ऐसा व्यक्ति शास्त्रानुसार दोनों पिताओंकी संपत्ति पाने तथा उन्हें पिंडदान करनेका अधिकारी होता है); गौतम मुनि।

द्वार–पु० (सं०) मकान, कमरे आदिकी दीवारमें बनाया हुआ भीतर-बाहर आने-जानेका विशेष मार्ग या खुला स्थान, दरवाजा; वह मार्ग जिसके द्वारा इंद्रियाँ अपने विषयोंका ग्रहण करती हैं; माध्यम, साधन। **–कंटक**–पु० दरवाजेकी किल्ली, सिटकिनी। **–कपाट**–पु० दरवाजेका पल्ला। **–गोप**–पु० दे० 'द्वारपाल'। **–चार**–पु० (हिं०) विवाहके अवसरपर लड़कीवालेके दरवाजेपर होनेवाली एक रस्म। **–छेंकाई**–स्त्री० (हिं०) एक वैवाहिक रीति जिसमें बहन कोहबरके द्वारपर विवाहोपरांत वधू सहित घर लौटे हुए भाईका मार्ग रोकती है; इस रीतिके उपलक्ष्यमें बहनको मिलनेवाला नेग। **–ताल**–पु० (लॉकआउट) दे० 'तालाबंदी'। **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० द्वारपाल। **–दारु**–पु० सागवानकी लकड़ी। **–नायक,–प**–पु० द्वारपाल। **–पंडित**–पु० राजाका प्रधान पंडित। **–पटी**–स्त्री० दरवाजेपर लगा हुआ परदा; चिक। **–पट्ट**–पु० दरवाजेका परदा; पल्ला। **–पाल,–पालक**–पु० ड्योढ़ीपर नियुक्त सिपाही या पहरेदार, द्वाररक्षक, ड्योढ़ीदार। **–पिंडी**–स्त्री० देहली, दहलीज। **–पिधान**–पु० किल्ली, अरगल। **–पूजा**–स्त्री० विवाहके पहले दिनकी एक रीति जिसमें कन्यादान करनेवाला व्यक्ति बरातके साथ द्वारपर आये हुए वरकी पूजा करता है। **–बलिभुक्(ज्)**–पु० कौआ; गौरैया। **–बाधा**–स्त्री० द्वारके पास होनेवाला अनिष्ट; उँचाईसे गिर पड़नेका योग (ज्योतिष)। **–यंत्र**–पु० ताला; अरगल। **–समुद्र**–पु० दक्षिणका एक प्राचीन नगर जो कभी कर्णाटकके राजाओंकी राजधानी रहा। **–स्थ**–पु० द्वारपाल। मु०**–खुलना**–किसी बातके जारी रहनेका रास्ता निकल आना। **–खुला होना**–प्रवेश आदिमें कोई हिचक या बाधा न होना।

द्वारका, द्वारिका–स्त्री० (सं०) काठियावाड़की एक प्राचीन नगरी जिसे कृष्णने बसाया था। (इसकी गणना चारों धामोंमें है)। **–नाथ,–पति**–पु० कृष्ण; द्वारिकामें स्थित उनकी मूर्ति।

द्वारकाधीश–पु० (सं०) दे० 'द्वारकानाथ'; मथुरामें स्थित कृष्णका प्रसिद्ध मंदिर।

द्वारकेश–पु० (सं०) कृष्ण।

द्वारवती, द्वारावती–स्त्री० (सं०) दे० 'द्वारका' ।

द्वारा–अ० (सं०) साधक होनेसे या साधक बनानेसे, कर्तृत्वसे, जरिये, मारफत । *पु० दे० 'द्वार' ।

द्वाराचार–पु० (सं०) दे० 'द्वारचार' ।

द्वाराधिप–पु० (सं०) द्वारपाल ।

द्वाराध्यक्ष–पु० (सं०) द्वारपाल ।

द्वारिक–पु० (सं०) द्वारपाल ।

द्वारी*–स्त्री० छोटा द्वार ।

द्वारी(रिन्)–पु० (सं०) द्वारपाल ।

द्वाल–पु० दे० 'दुवाल' ।

द्विः(द्विर्)–अ० (सं०) दो बार ।

द्वि–वि० (सं०) दो । **–ककार**–पु० काक (कौआ); कोक (चकवा) । **–ककुद्**–पु० (दो कोहानवाला) ऊँट । **–कर्मक**–वि० दो कर्मोंसे युक्त (क्रिया) । **–कल**–पु० पिंगलमें दो मात्राओं-का समाहार । **–क्षार**–पु० शोरा और सज्जी, ये दो क्षार । **–गु**–पु० समासका एक उपभेद (व्या०) । वि० दो गायोंवाला । **–गुण**–वि० दुगना, दूना । **–गुणित**–वि० दुगना किया हुआ । **–गूढ**–पु० एक तरहका गाना । **–चक्रयान**–पु० (वाइसिकिल) रवड़के टायरोंवाली दो पहियोंकी गाड़ी जो पैडल घुमानेसे चलती है, वाइ साइकिल, पैरगाड़ी । **–चरण**–पु० मनुष्य आदि दो पैरोंवाले जीव । **–ज**–पु० दे० 'क्रममें' । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० दे० 'द्विज' । **–जा**–स्त्री० ब्राह्मण या द्विजकी पत्नी । **–जाति**–पु०, स्त्री० दे० 'द्विज' । **–जानि**–पु० वह पुरुष जिसके दो स्त्रियाँ हों । **–जिह्व**–पु० सर्प; सूचक, चुगलखोर; खल, दुष्ट । **–दल**–वि० दो दलोंवाला; दो पत्तोंवाला; दो दलों द्वारा संचालित । पु० दो दलोंवाला अनाज–जैसे अरहर, मटर, चना आदि; दाल । **–०शासन-प्रणाली**–स्त्री० वह शासनप्रणाली जिसमें दो दल मिलकर शासन करते हों । **–दाम्नी**–स्त्री० दो रस्सियोंसे बाँधने योग्य दुष्ट गाय । **–देवत**–वि० (चरु आदि) जो दो देवताओंके लिए हो । पु० विशाखा नक्षत्र । **–देह**–पु० गणेश (जिनक शरीर मनुष्य और हाथी दोनोंसे मिलकर बना है) । **–धातु**–वि० जो दो धातुओंसे मिलकर बना हो । पु० गणेश । स्त्री० काँसा, पीतल आदि जिनमें दो धातुओंका मिश्रण रहता है । **–धातुकता, –धातुता**–स्त्री०, **धातुत्व**–पु० (बाइमेटलिज्म) सोने तथा चाँदी दोनों ही धातुओंकी मुद्राका समान विधि-ग्राह्य मुद्राके रूपमें प्रचलन । **–धात्वीय प्रणाली**–स्त्री० (बाइमेटलिक सिस्टम) सोना-चाँदी दोनों धातुओंके सिक्कोंको निश्चित अनुपातके साथ, विधिग्राह्य मुद्रा माननेकी प्रणाली । **–नग्नक**–पु० वह मनुष्य जिसकी सुन्नत हुई हो; दुश्चर्मा । **–नेत्रभेदी(दिन्)**–पु० वह व्यक्ति जिसने दोनों आँखें फोड़ दी हो । **–नेत्री**–पु० युद्ध क्षेत्रमें प्रयुक्त ऐसी दूरबीन जिसमें दोनों आँखोंसे देखनेके लिए दो ताल होते हैं (वाइनाक्यूलर) । **–पंचमूली**–स्त्री० दशमूली । **–प**–पु० हाथी; नागकेसर । **–पक्ष**–वि० जिसके दो पर हों; जिसमें दो पक्ष हों । पु० पक्षी; महीना । **–पक्षीय संविदा**–स्त्री० (वाइ-लेटरल कांट्रैक्ट) दो पक्षोंके बीच होनेवाला इकरार या समझौता । **–पथ**–पु० दो रास्तोंके मिलनेका स्थान । **–पत्नीत्व**–पु० (वाइ-गैमी) दो पत्नियोंसे विवाह करना, एक पत्नीके विद्यमान रहते हुए ही दूसरीसे विवाह करना । **–पद**–वि० दो पैरोंवाला; जिसमें दो चरण या पद हों । पु० दो पैरोंवाला जीव, मनुष्य आदि; वास्तुमंडलका एक कोष्ठ । **–पदा**–स्त्री० दो चरणोंवाली ऋचा । **–पदी**–स्त्री० एक प्रकारकी गीति जिसमें दो चरण होते हैं; एक मात्रिक वृत्त । **–पाद**–वि० दे० 'द्विपद' । **–पाद्य**–पु० (शास्त्रोक्त दंडसे) दुगना दंड । **–पायी(यिन्)**–पु० हाथी । **–विंदु**–पु० विसर्ग (:) । **–भाव**–पु० दुराव । वि० कपटी । **–भाषी-(षिन्)**–पु० दुभाषिया । वि० दो भाषाएं बोलनेवाला । **–भुज**–वि० दो भुजाओंवाला, जिसके दो हाथ हों । पु० कोण; मनुष्य । **–भूम**–वि० दे० 'दोतल्ला' । **–मातृ,–मातृज**–पु० गणेश; जरासंध । **–मात्र**–वि० जिसमें दो मात्राएँ हों, दीर्घ । **–माष्य**–वि० जो परिमाणमें दो माशेका हो । **–मुख**–वि० जिसे दो मुँह हों । पु० एक सर्प जिसे दो मुँह होते हैं; एक प्रकारका कृमिरोग । **–मुखा**–स्त्री० जोंक । **–मुखी**–स्त्री० वह गाय जो बच्चा दे रही हो और जिसके बच्चेका मुँह और दो पैर ही पेटसे वाहर निकल पाये हों । **–र**–पु० दे० 'द्विरेफ' । **–रद**–वि० जिसके दो दाँत हों । पु० हाथी । **–रसन**–पु० सर्प । वि० दो जीभोंवाला । **–रात्र**–पु० दो दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ । **–रूप**–वि० जिसके दो रूप हों; जो दो प्रकारसे लिखा जाय । **–रेता(तस्)**–पु० दोगला जानवर–जैसे खच्चर । **–रेफ**–पु० भ्रमर ('भ्रमर' शब्दमें रकार दो बार आया है) । **–वक्त्र**–वि०, पु० दे० 'द्विमुख' । **–वचन**–पु० व्याकरणमें दोका बोध करानेवाला वचन । **–वज्रक**–पु० वह घर जिसमें सोलह कोने हों । **–वाहिका**–स्त्री० दोला, झूला । **–विंदु**–पु० विसर्ग । **–विध**–वि० दो प्रकारका । **–विधा**–स्त्री० (हिं०) दुविधा । **–वेद**–वि० दो वेदोंको जानने या पढ़नेवाला । **–वेदी(दिन्)**–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि, दुबे । **–वेशरा**–स्त्री० एक तरहकी छोटी गाड़ी जिसमें खच्चर जोते जाते हैं । **–व्रण**–पु० शारीरिक और आगंतुक ये दो प्रकारके घाव । **–शत**–वि० दो सौ । **–शत्य**–वि० जो दो सौ देकर खरीदा गया हो । **–शफ**–पु० दो खुरोंवाला पशु । **–शिर**–वि० (हिं०) दो सिरों-वाला । **–शीर्ष**–वि० जिसके दो सिर हों । पु० अग्नि । **–ष्ठ**–वि० जो दोमें स्थित या शामिल हो । **–सदनात्मक**–वि० (वाइ-केमरल) दे० क्रममें । **–समत्रिभुज**–पु० वह त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों । **–सहस्र**–वि० दो हजार; जो दो हजारमें खरीदा गया हो । **–साहस्र**–वि० दे० 'द्विसहस्र' । **–सीत्य,–हल्य**–वि० दो बार जोता हुआ (खेत) । **–हा(हन्)**–पु० हाथी । **–हायन**–वि० जिसकी उम्र दो वर्षकी हो; दो वर्षका । पु० दो वर्ष । **–हायनी**–स्त्री० दो वर्षकी गाय । **–हृदया**–स्त्री० गर्भिणी स्त्री ।

द्विक–वि० (सं०) दुगुना; युग्म बनानेवाला; जिसमें दो हों; द्वितीय; दूसरी बार होनेवाला; दो प्रतिशत बढ़ा हुआ । पु० दे० 'द्विककार', काक; चक्रवाक ।

द्विज–पु० (सं०) संस्कृत ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार दूसरे जन्मके समान माना जाता है; पक्षी आदि अंडज जीव; दाँत; चंद्रमा । वि० जिसने दो बार जन्म लिया हो । **–दास**–पु० शूद्र । **–पति**–पु० ब्राह्मण; गरुड़; चंद्रमा; कपूर । **–प्रपा**–स्त्री० आल-बाल; पक्षियों आदिको पानी पिलानेके लिए बना हुआ गड्ढा आदि । **–प्रिया**–स्त्री० सोमलता । **–बंधु,–ब्रुव**–पु० कर्महीन द्विज, जो कहनेभरको द्विज हो । **–राज**–पु० ब्राह्मण; श्रेष्ठ ब्राह्मण; चंद्रमा; गरुड; कपूर । **–लिंगी(गिन्)**–पु० किसी अन्य वर्णका व्यक्ति जिसने ब्राह्मणका वेश बना लिया हो । **–वाहन**–पु० विष्णु । **–व्रण**–पु० दाँतका एक रोग । **–सेवक**–पु० शूद्र ।

द्विजांगिका, द्विजांगी–स्त्री० (सं०) कुटकी ।

द्विजाग्रज, द्विजाग्र्य–पु० (सं०) ब्राह्मण ।

द्विजायनी–स्त्री० (सं०) यज्ञोपवीत ।

द्विजालय–पु० (सं०) द्विजका घर; घोंसला ।

द्विजेंद्र, द्विजेश–पु० (सं०) दे० 'द्विजराज' ।

द्विजेंद्रलालराय–पु० बँगलाके प्रसिद्ध कवि और नाटचकार; रचनाएँ –शाहजहाँ, चंद्रगुप्त, उसपार आदि–(१८६३-१९१३) ।

द्विजोत्तम–पु० (सं०) द्विजोंमें श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

द्विट्(ष्)–वि० (सं०) शत्रु-भाव रखनेवाला । पु० शत्रु, दुश्मन । **–सेवा**–स्त्री० द्रोह, विश्वासघात ।

द्विठ–पु० (सं०) विसर्ग; स्वाहा ।

द्वितय–वि० (सं०) दो अवयवोंवाला; जो दोसे मिलकर बना हो । सर्व० दोनों ।

द्वितीय–वि० (सं०) दूसरा । पु० पुत्र (जिसके रूपमें आत्मा ही दूसरी बार जन्म लेती है); मित्र; सहाय; सहायक (जैसे चाप-द्वितीय); जोड़, मुकाबिला करनेवाला; वर्गका दूसरा वर्ण; उत्तरार्द्ध ।

द्वितीयक–वि० (सं०) दूसरा; दूसरी बार होनेवाला ।

द्वितीया–स्त्री० (सं०) पक्षकी दूसरी तिथि; पत्नी ।

द्वितीयाकृत–वि० (सं०) दो बार जोता हुआ (खेत) ।

द्वितीयाभा–स्त्री० (सं०) दारुहल्दी ।

द्वितीयाश्रम–पु० (सं०) गृहस्थाश्रम ।

द्वित्व–पु० (सं०) दो अथवा दोहरा होनेका भाव–जैसे 'सूर्य्य'में 'य' का दोहरा होना; युग्म; दोकी संख्या ।

द्विध–वि० (सं०) दो खंडोंमें विभक्त ।

द्विधा–अ० (सं०) दो प्रकारसे; दो भागोंमें । **–करण**–पु० दो भागोंमें विभाजन । **–गति**–पु० केकड़ा; मगर; उभयचर जंतु ।

द्विधात्मक–पु० (सं०) जातीकोष, जायफल ।

द्विपास्य–पु० (सं०) गणेश ।

द्विरदांतक–पु० (सं०) सिंह ।

द्विरदाशन–पु० (सं०) सिंह ।

द्विर्–अ० (सं०) दे० 'द्विः' । **–आगमन**–पु० पुनरागमन; विवाहके बाद वधूका पुनः पतिके घर आना, गौना । **–आप**–पु० हाथी । **–उक्त**–वि० जो दो बार कहा या लिखा गया हो, दो बार कथित; जो दो प्रकारसे कहा गया हो; अनावश्यक । पु० पुनः कथन । **–उक्ति**–स्त्री० दो बार कहने या उल्लेख करनेकी क्रिया, दो बार कहना; आवश्यक न होना । **–ऊढा**–स्त्री० वह स्त्री जिसने पूर्व पतिके मरने आदिपर दूसरेको अपना पति स्वीकार कर लिया हो ।

द्विविद–पु० (सं०) सुग्रीवका एक मंत्री ।

द्विषंतप–वि० (सं०) शत्रुओंको ताप पहुँचानेवाला, परंतप ।

द्विष, द्विषत्–पु० (सं०) द्वेष रखनेवाला; शत्रु, वैरी ।

द्विष्ट–वि० (सं०) जिससे द्वेष हो । पु० ताँवा ।

द्विसदनात्मक–वि० (सं०) (लोकतंत्रका वह प्रकार) जिसमें संसद या विधानमंडलमें दो सदन हों (बाइकेमरल) ।

द्विसदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र–पु० वह क्षेत्र जहाँसे सदनके लिए दो सदस्य प्रतिनिधि रूपसे चुने जाते हों ।

द्विसहस्राक्ष–पु० (सं०) शेष, अनंत ।

द्वींद्रिय–पु० (सं०) दो इंद्रियोंवाला जीव ।

द्वीज*–स्त्री० दूइज, द्वितीया ।

द्वीप–पु० (सं०) स्थलका वह भाग जिसके चारों ओर पानी हो; पुराणोंके अनुसार जंबू आदि बड़े भूभागोंमेंसे हर एक; व्याघ्रचर्म; आश्रय, अवलंब, सहारा; व्याघ्र । **–कर्पुर**–पु० चीनी कपूर । **–कुमार**–पु० एक प्रकारका देवता (जै०) । **–खर्जूर**–पु० महापारेवत । **–शत्रु**–पु० सतावर ।

द्वीपवती–स्त्री० (सं०) नदी; भूमि ।

द्वीपवान्(वत्)–वि० (सं०) द्वीपोंसे पूर्ण । पु० नद; समुद्र ।

द्वीपांतरण–पु० (ट्रांसपोर्टेशन) भारी अपराध करनेवाले किसी वंदीको समुद्रके उस पार किसी अन्य स्थान या द्वीपमें रखनेके लिए भेज देना; काला पानी (भारतमें ऐसे बंदी अब बाहर नहीं भेजे जाते) ।

द्वीपिका–स्त्री० (सं०) सतावर ।

द्वीपी(पिन्)–पु० (सं०) बाघ; चीता । **–(पि)नख**–पु० व्याघ्रनख; एक गंधद्रव्य । **–शत्रु**–पु० शतमूली ।

द्वीप्य–वि० (सं०) द्वीपमें उत्पन्न । पु० द्वीपनिवासी; व्यास; एक तरहका कौआ; रुद्र ।

द्वेष–पु० (सं०) चित्तका वह भाव जो अप्रिय वस्तु या व्यक्तिका नाश करनेकी प्रेरणा करता है, रागका विरोधी भाव; शत्रुता, वैर; रूप, रस आदि चौबीस गुणोंमेंसे एक जो आत्माकी वृत्ति माना जाता है, दुःखकर वस्तुको नष्ट करनेकी इच्छा (न्या०); अविद्या आदि पाँच क्लेशोंमेंसे एक (यो०); बुद्धिका एक धर्म; वह क्षोभ या अमर्षको दूर करनेकी इच्छा जो दुःख तथा उसके कारणके प्रति हो (सां०) । **–पक्ष**–पु० क्रोध, ईर्ष्या आदि द्वेषके अवांतर भेद ।

द्वेषण–पु० (सं०) द्वेष करनेकी क्रिया, घृणा; शत्रुता, वैर; शत्रु । वि० घृणा करनेवाला ।

द्वेषाग्नि– स्त्री०, **द्वेषानल**–पु० द्वेषकी अग्नि, जलन या उग्रता ।

द्वेषी(षिन्)–वि० (सं०) द्वेष-भाव रखनेवाला । पु० शत्रु, विरोधी ।

द्वेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) द्वेष करनेवाला; वैरी ।

द्वेष्य–वि० (सं०) द्वेष करने योग्य । पु० द्वेषका पात्र; शत्रु ।

द्वै*–वि० दो; दोनों ।

द्वैक*–वि० दो-एक ।

द्वैगुणिक–वि० (सं०) जो दूना ब्याज ले । पु० शत-प्रतिशत सूद लेनेवाला महाजन ।

द्वैगुण्य–पु० (सं०) दूनी रकम या परिमाण; द्वैत; तीनों गुणों–सत्त्व, रज और तममेंसे किन्हीं दोसे युक्त होना ।

द्वैज*–स्त्री० द्वितीया, दूज ।

द्वैत–पु० (सं०) दो होनेका भाव; जोड़ा, युगल; भेददृष्टि, भेदभावना; द्वैतवाद; अज्ञान, मोह । **–वन**–पु० एक वन जिसमें पांडवोंने कुछ समयतक निवास किया था । **–वाद**–पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जो जीव और ब्रह्म तथा भूत और चिच्छक्तिमें भेद मानता है (वेदांतको छोड़कर शेष पाँचों आस्तिक दर्शन इसी सिद्धांतके पोषक हैं) । **–वादी(दिन्)**–वि०, पु० द्वैतवादको माननेवाला ।

द्वैती(तिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'द्वैतवादी' ।

द्वैतीयीक–वि० (सं०) दूसरा ।

द्वैत्रिज्य–पु० (सेक्टर ऑफ ए सरकिल) वह आकृति जो दो त्रिज्याओं और उनके बीच पड़नेवाले चापसे घिरी रहती है ।

द्वैध–पु० (सं०) दो प्रकारका होनेका भाव; भिन्नता; परस्पर विरुद्ध होनेका भाव; राजनीतिमें दुरंगी नीति बरतनेका गुण (इसकी गणना संधि आदि छ गुणोंमें है); संदेह, अनिश्चय । **–शासनप्रणाली**–स्त्री० वह शासन-पद्धति जिसमें सत्ता दो वर्गोंमें विभक्त हो ।

द्वैधीकरण–पु० (सं०) दो भागोंमें बाँटना ।

द्वैधीभाव–पु० (सं०) दे० 'द्वैध'; निश्चयका अभाव, दुविधा ।

द्वैप–वि० (सं०) टापू-संबंधी; व्याघ्र-संबंधी; बाघका । पु० व्याघ्रचर्म; व्याघ्रचर्मसे आवृत रथ ।

द्वैपायन–पु० (सं०) महाभारत, पुराणों आदिके रचयिता वेदव्यास (इनका जन्म एक द्वीपमें हुआ था इसीसे इनका यह नाम पड़ा) ।

द्वैप्य–वि० (सं०) टापूसे संबद्ध ।

द्वैमातुर–पु० (सं०) गणेश; जरासंध । वि० जिसके दो माताएँ हों ।

द्वैमातृक–वि० (सं०) (वह देश) जो देवमातृक भी हो और नदीमातृक भी, जहाँ नदी तथा वर्षा दोनोंका जल खेतीके काम आता हो ।

द्वैयह्निक–वि० (सं०) जो दो दिनोंमें हो; जिसमें दो दिन लगें ।

द्वैराज्य–पु० (सं०) दुराज, दो-अमली; दो राजाओंमें विभक्त देश; (कांडोमीनियम) एक ही देशपर दो राष्ट्रोंका प्रभुत्व होना (जैसे सूदानपर मिस्र तथा ब्रिटेनका रहा है), सहराज्य ।

द्वैविध्य–पु० (सं०) दो तरहका होनेका भाव; भिन्नता; दुविधा ।

द्वैषणीया–स्त्री० (सं०) नागवल्लीका एक भेद ।

द्वैसमिक–वि० (सं०) दो वर्षोंका ।

द्वैहायन–पु० (सं०) दो वर्षका समय ।

द्वौ*–वि० दोनों ।

द्व्यक्ष–वि० (सं०) दो नेत्रोंवाला, द्विनेत्र ।

द्व्यणुक–पु० (सं०) दो अणुओंके योगसे बना हुआ द्रव्य ।

द्व्यर्थ, द्व्यर्थक–वि० (सं०) जिसके दो अर्थ हों, जिससे दोहरा अर्थ निकले ।

द्व्यष्ट–पु० (सं०) ताँबा ।

द्व्याग्नि–पु० (सं०) एक वृक्ष, लाल चीता ।

द्व्यांतिग–वि० (सं०) रजोगुण-तमोगुणसे रहित, सत्त्वगुणयुक्त ।

द्व्यात्मक–पु० (सं०) द्विविध प्रकृतिवाला, दो प्रकारके स्वभावसे युक्त ।

द्व्यामुष्यायण–पु० (सं०) वह व्यक्ति जो एक आदमीका दत्तक होते हुए भी दूसरेका औरस पुत्र हो, वह दत्तक जिसके विषयमें उसके पिता और प्रतिगृहीताने आपसमें तय कर लिया हो कि यह हम दोनोंका पुत्र रहेगा ।

ध

ध–देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान दंत।

धंका*–पु० धक्का; आघात, चोट।

धंगर–पु० चरवाहा; अहीर।

धंध*–पु० बखेड़ा, झंझट, झमेला।

धंधक–पु० जंजाल, झंझट।

धंधरक*–पु० दे० 'धंधक'। –धोरी–पु० दुनियाके जंजालमें लगा रहनेवाला।

धँधला–पु० छल-कपट; ढोंग।

धँधलाना–अ० क्रि० ढोंग करना; छल करना।

धंधा–पु० काम-काज; पेशा, रोजगार, व्यवसाय; † बरतन माँजने, चौका धोने आदिका काम।

धंधार*–स्त्री० ज्वाला ('झंडाल', बुंदेल०)। † पु० भारी पत्थर आदि उठानेका एक औजार।

धंधारि*–स्त्री० दे० 'धंधारी'।

धंधारी–स्त्री० गोरखधंधा; अकेलापन।

धंधाला–स्त्री० कुटनी।

धँधोर–स्त्री० ज्वाला, आगकी लपट; होली।

धँवना*–स० क्रि० धौंकना–'बिरहा पूत लोहारका धँवै हमारी देह'–साखी।

धँसन–स्त्री० धँसनेकी क्रिया या ढंग।

धँसना–अ० क्रि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुका दबाव पाकर भीतर घुसना, गड़ना; बैठना, प्रवेश करना, भीतर घुसना; नीचेकी ओर दब जाना या बैठ जाना (जमीन, नेत्र); उतरना; नीचे खसकना; नष्ट होना; तबाह होना।

धँसनि*–स्त्री० दे० 'धँसन'।

धँसान–स्त्री० धँसनेकी क्रिया या ढंग; ऐसी धरती जिसमें पाँव धँसें, दलदल; ढालू जमीन।

धँसाना–स० क्रि० किसी कड़ी या नुकीली वस्तुको जोर देकर भीतर घुसाना, गाड़ना; प्रविष्ट करना, पैठाना; नीचेकी ओर उतारना।

धँसाव–पु० दे० 'धँसान'।

ध–पु० (सं०) धर्म; कुबेर; ब्रह्मा; धन; धैवत स्वरका संकेत (संगीत)।

धउरहर†–पु० दे० 'धरहरा'।

धक–स्त्री० हृदयका संवेग स्पंदन, दिलकी जोरकी धड़कन; * उमंग, उल्लास। * अ० एक-ब-एक, सहसा। –पक–स्त्री० दे० 'धकधकी'; भय। अ० डरते हुए।

धकधकना–अ० क्रि० दे० 'धकधकाना'।

धकधकाना–अ० क्रि० भय, घबराहट आदिके कारण कलेजेका तेजीसे धड़कना; * धधकना, सुलगना; चमकना।

धकधकाहट–स्त्री० धकधकानेकी क्रिया, धड़कन।

धकधकी–स्त्री० धड़कना; धुकधुकी; खटका, अंदेशा। मु० –धरकना*–दिल धड़कना, सहसा आशंका उत्पन्न होना।

धकना*–अ० क्रि० तप्त होना, धिकना–'जरनि बुझी दुख-जाल धकौं'–घन०।

धकपकाना–अ० क्रि० भय खाना, आतंकित होना।

धकपेल–स्त्री० धक्कमधक्का, रेलपेल।

धका*–पु० धक्का, झोंका; आघात। –धूम–स्त्री० रेलपेल; चढ़ाऊपरी। –पेल–स्त्री० दे० 'धकपेल'।

धकाधकी†–स्त्री० धक्कमधक्का।

धकाना*–स० क्रि० जलाना, दहकाना।

धकारा*–पु० धकधकी; खटका, अंदेशा।

धकियाना†–स० क्रि० धक्का देना, ढकेलना।

धकेलना–स० क्रि० ढकेलना, धक्का देना।

धकैत–वि० धक्का देनेवाला।

धक्का†–स्त्री० दे० 'धक'। –पक्क †–स्त्री०, अ० दे० 'धकपक'।

धक्कमधक्का–पु० भारी भीड़में मनुष्योंका परस्पर बहुत अधिक धक्का देना; कसमसाती हुई भीड़, ठेलाठेल, रेलपेल।

धक्का–पु० वह दबाव जो किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानसे दूसरी ओर हटानेके लिए उसपर डाला जाय; दो वस्तुओं या व्यक्तियोंमें एकके दूसरेसे या दोनोंके परस्पर वेगपूर्वक गमनक्रियामें छू जाने या टकरा जानेसे एक या दोनोंके प्रति होनेवाला आघात, टक्कर; हानि, घाटा; विपत्ति; कष्टका आघात, मार्मिक पीड़ा। –मुक्की–स्त्री० वह लड़ाई जिसमें दो व्यक्ति एक-दूसरेको धक्का दें और घूँसोंसे मारें। मु० –खाना–धक्का सहना; ठोकर खाना, अपमानित होना; भटकते रहना।

धक्काड़–वि० जिसकी धाक खूब जमी हो।

धक्याना*–अ० क्रि० जलना–'जियरा उड्यौ सो डोलै हियरा धक्यौई करै'–घन०।

धगड़–पु० उपपति, जार। –बाज़–वि० स्त्री० कुलटा।

धगड़ा–पु० उपपति, जार।

धगड़ी–स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

धगधागना*–अ० क्रि० (दिल) धड़कना।

धगरिन–स्त्री० बच्चोंका नाल काटनेवाली स्त्री, चमाइन जो बच्चोंका नाल काटती है; धँगरिन, अहीरिन।

धगरी*–स्त्री० व्यभिचारिणी या पतिकी मुँहलगी स्त्री।

धगा*–पुं० धागा, डोरा, सूत।

धचका–पु० धक्का, झोंका।

धज–स्त्री० बनाव-सिंगार; तड़क-भड़क; बैठने-उठने आदिका ढंग; ठसक, नाज़-अदा; शकल-सूरत–'क्या धज बना रखी है'–कर्मभूमि। (इसका प्रयोग प्रायः 'सज' शब्दके साथ होता है–(सजधज))।

धजा–स्त्री० दे० 'ध्वजा'; कपड़ेकी धज्जी; धज।

धजी*–स्त्री० धज्जी, टुकड़ा।

धजीला–वि० धजवाला, सजीला, आकर्षक।

धज्जी–स्त्री० कपड़े, कागज आदिका लंबा पतला टुकड़ा। मु० धज्जियाँ उड़ना–कट या फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाना। –उड़ाना–चीर या फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देना; पूर्णतः ध्वस्त या खंडित कर देना।

धट–पु० (सं०) तराजू; तुला राशि; तुलापरीक्षा।

धटक–पु० (सं०) बयालीस रत्तियोंकी एक पुरानी तौल।

धटिका–स्त्री० (सं०) पाँच सेरका एक परिमाण, पंसेरी; कौपीन, लँगोटी; चीर, चीवर।

धटी–स्त्री० (सं०) लँगोटी; चीर; गर्भाधानके उपरांत प्राचीन कालमें स्त्रियोंको पहननेके लिए दिया जानेवाला वस्त्र।

धटी(टिन्)–पु० (सं०) शिव; तुला राशि; तराजूसे तौलनेवाला; व्यापारी।

धड़ंग–वि० नंगा (प्रायः 'नंग'के साथ इसका प्रयोग होता है)।

धड़–पु० शरीरका कमरसे गलेतकका भुजा-रहित भाग; सिर, हाथ, पैर, पूँछ और पंखको छोड़कर पशु-पक्षियोंके शरीरका शेष भाग; वृक्षका जमीनके ऊपरसे वहाँतकका भाग जहाँसे शाखाएँ फूटती हैं, तना; 'धड़'की आवाज (इसका प्रयोग प्रायः 'से'के साथ होता है)। –टूटा–वि० जिसकी कमर झुक गयी हो। –धड़–स्त्री० किसी भारी वस्तुके गिरने, छूटने आदिसे लगातार उत्पन्न होनेवाली ध्वनि। अ० धड़-धड़' ध्वनि उत्पन्न करते हुए; बिना रुके, बेरोक। –प्रतिमा–स्त्री० (टारसो) हस्त-पाद विहीन तथा मुंडरहित प्रतिमा। –से–'धड़' शब्दके साथ; बेखटके; बिना रुके, जल्दीसे।

धड़क–स्त्री० हृदयका स्पंदन; खटका, हिचक, रुकावट।

धड़कन–स्त्री० हृदयका स्पंदन, कलेजेकी धकधक।

धड़कना–अ० क्रि० हृदयका स्पंदन करना; जीका 'धक-धक' करना; 'धड़-धड़' शब्द उत्पन्न करना।

धड़का–पु० हृदयकी धड़कन; खटका, आशंका; गिरने आदिका शब्द; चिड़ियोंको डराकर भगानेका पुतला, 'धोखा'।

धड़काना–स० क्रि० धड़क पैदा करना; मनमें खटका या आशंका उत्पन्न करना; किसी भारी वस्तुको फेंक या गिराकर अथवा छोड़कर शब्द उत्पन्न करना।

धड़धड़ाना–अ० क्रि० 'धड़-धड़' शब्द उत्पन्न करना या होना।

धड़ल्ला–पु० धड़ाका, वेगसे गिरने आदिकी आवाज। **–(ल्ले)से**–बेखटके, बेधड़क।

धड़वाई–पु० धड़ा करनेवाला, तौलनेवाला।

धड़ा–पु० बाट; वजन; चार या पाँच सेरकी एक तौल; तराजू; पसँगा; दल। **–बंदी**–स्त्री० धड़ा करना या बाँधना; दलबंदी; युद्धके लिए प्रस्तुत दो दलोंका अपना सैन्यबल बराबर करना। मु० **–उठाना**–तौलना। **–करना**–किसी वस्तुको बरतन सहित तौलनेके पूर्व तराजूके एक पलड़ेपर बरतन और दूसरेपर बाट आदि रखकर पलड़ोंको बराबर करना।

धड़ाका–पु० किसी चीजके जोरसे गिरने, फटने आदिसे उत्पन्न होनेवाला घोर शब्द। **–(के)से**–फुर्तीसे, चटपट।

धड़ाधड़–अ० लगातार 'धड़-धड़' शब्द करते हुए; जल्दी-जल्दी, बिना रुके।

धड़ाम–पु० जमीन, पानी आदिपर जोरसे गिरने, कूदने आदिकी आवाज। **–से**–एकबारगी।

धड़ी–स्त्री० एक वजन जो पाँच सेर और कहीं-कहीं दस सेरका होता है; पाँच सौ रुपयेकी रकम; लकीर; होंठोंपर पड़नेवाली मिस्सी या पानकी लकीर; कपड़ेका किनारा या झालर। मु०**–जमाना, –लगाना**–होंठोंपर मिस्सीकी तह जमाना। **–धड़ी(करके) लूटना**–सब कुछ लूट लेना। (धड़ियों–बहुतायतसे)।

धत–स्त्री० बुरी आदत, लत।

धतकारना–स० क्रि० दुतकारना; धिक्कारना।

धता–वि० गया हुआ, हटा हुआ। मु०**–करना**–हटाना, भगाना। **–बताना**–चलता करना; टाल देना।

धतींगड़, धतींगड़ा–पु० भीमकाय मनुष्य; बेडौल आदमी; दोगला।

धतूर*–पु० तुरहीकी तरह फूँककर बजाया जानेवाला एक टेढ़ा बाजा, नरसिंहा, 'रमतूला'। † दे० 'धतूरा'।

धतूरा–पु० एक प्रसिद्ध विषैला पौधा या उसका फल। मु० **–खाये फिरना**–पागल बना घूमना।

धतूरिया–पु० पथिकोंपर धतूरेका प्रयोग करनेवाला ठगोंका दल।

धत्–अ० दुतकारने, धिक्कारनेका शब्द।

धत्ता–पु० एक छंद। **–नंद**–पु० एक छंद।

धत्तूर, धत्तूरक–पु०, **धत्तूरका**–स्त्री० (स०) धतूरा।

धधक–स्त्री० धधकनेकी क्रिया या भाव; लपट, लौ।

धधकना–अ० क्रि० आगका इस प्रकार जलना कि उसमेंसे ऊँची लपटें उठें, धायँ-धायँ जलना; सुलगना, भड़कना।

धधकाना–स० क्रि० आगमें लपट पैदा करना; दहकाना।

धधाना†–अ० क्रि० दे० 'धधकना'; इतराना।

धनंजय–पु० (सं०) अर्जुन; विष्णु; शरीरमें रहनेवाली पाँच वायुओंमेंसे एक; अग्नि; अर्जुन नामक वृक्ष; चीतेका पेड़; एक नाग।

धन*–वि० जिसमें (कुछ) जोड़ा जाय; (अमुक संख्यासे) युक्त; दे० 'धन्य'। स्त्री० स्त्री; नायिका; युवती। पु० (सं०) ऐहिक सुखके साधनभूत द्रव्य, भूमि आदि; वित्त, संपत्ति; पूँजी; गोधन; लूटका माल; पुरस्कार; मुकाबला, प्रतिद्वंद्विता; आवाज, शब्द; प्रिय व्यक्ति, स्नेहभाजन; धनिष्ठा नक्षत्र; गणितमें योगका चिह्न; कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान। **–काम,–काम्य**–वि० लोभी। **–कुबेर**–पु० वह व्यक्ति जो कुबेरके समान धनी हो, जिस व्यक्तिके पास प्रचुर धन हो। **–केलि**–पु० कुबेर। **–तेरस**–स्त्री० (हिं०) कार्त्तिक-कृष्णा त्रयोदशी (इस दिन लक्ष्मीकी पूजा की जाती है और प्रायः लोग नये बरतन खरीदते हैं)। **–दंड**–पु० जुरमाना, अर्थदंड। **–द**–वि० उदार। पु० उदार व्यक्ति; कुबेर; अग्नि; धनंजय नामकी शरीरस्थ वायु; चीतेका वृक्ष। **–०दिशा**–स्त्री० उत्तर दिशा। **–दा**–वि० स्त्री० धन देनेवाली। स्त्री० आश्विन-कृष्णा एकादशी। **'–दायी(यिन्)**–पु० अग्नि। **–देव**–पु० कुबेर। **–धानी**–स्त्री० खजाना। **–धान्य**–पु० रुपया-पैसा, अन्न आदि। **–धाम(न्)**–पु० रुपया-पैसा और घर-बार। **–धारी-(रिन्)**–पु० कुबेर; बहुत बड़ा धनी। **–नाथ**–पु० कुबेर। **–पक्ष**–पु० (क्रेडिट साइड) हिसाब या खातेकी वह पक्ष (पार्श्व) जिसमें बाहरसे आनेवाले या बिक्री आदिके कारण अन्य लोगोंसे मिलनेवाले रुपयोंका ब्यौरा लिखा जाता है; रोकड़बही आदिके पृष्ठका जमावाला (बायीं तरफका) हिस्सा। **–पति**–पु० कुबेर; खजांची। **–पत्र**–पु० बही-खाता। **–पात्र**–पु० धनी मनुष्य, धनाढ्य व्यक्ति। **–पाल**–पु० धनका रक्षक; खजांची; कुबेर। **–पिशाच**–पु० दे० 'अर्थपिशाच'। **–पिशाचिका,–पिशाची**–स्त्री० धनसंचयकी प्रबल तृष्णा। **–प्रयोग**–पु० लाभकी इच्छासे किसी व्यापारमें धन लगाना; सूदपर रुपया देना। **–मद**–पु० धनका गर्व। **–मूल**–पु० मूल धन, पूँजी। **–वाद**–पु० (मनीसूट) वह मुकदमा जिसमें धनके लिए दावा किया गया हो। **–विद्युदणु**–पु० (प्रोटॉन) धन-विद्युत्-शक्तिकी वह इकाई जो परमाणुका मध्य बिंदु मानी जाती है और जिसके चारों ओर ऋण-विद्युदणु चक्कर लगाते हैं, प्रोटॉन। **–विधेयक**–पु० (मनी बिल) संसद या विधानसभा आदिमें पुरःस्थापित किया जानेवाला यह विधेयक जिसका उद्देश्य राज्यकी आय बढ़ाना अथवा धन-संबंधी अन्य माँग स्वीकृत कराना हो; दे० 'वित्तविधेयक'। **–शाली(लिन्)**–वि० धनवाला, जिसके पास धन हो, धनी। **–स्थान**–पु० कुंडलीमें लग्नसे दूसरा स्थान जिसमें पड़े ग्रहोंकी स्थितिके अनुसार किसीका धनवान् या निर्धन होना जाना जाता है; खजाना। **–स्वामी-(मिन्)**–पु० कुबेर। **–हर**–वि० धन हरण करनेवाला। पु० चोर; उत्तराधिकारी; एक गंधद्रव्य। **–हार्य**–वि० जो धन देकर वशमें किया जा सके। **–हीन**–वि० निर्धन, दरिद्र।

धन–'धान'का समासगत रूप। **–कटी**–स्त्री० धानकी कटाई; एक तरहका कपड़ा। **–कर**–पु० वह खेत या भूमि जिसमें धान बोया जाता है; धानके खेतकी कड़ी मिट्टी। **–कुट्टी**–स्त्री० धान कूटनेका औजार; लाल रंगका एक कीड़ा। **–सार**–स्त्री० धान्य रखनेका स्थान।

धनक–पु० (सं०) धनकी इच्छा, वित्तकी कामना।

धनदाक्षी–स्त्री० (सं०) एक लता।

धनमान–वि० धनवान्।

धनवंत*–वि० धनवान्।

धनवती–वि० स्त्री० (सं०) धनवाली। स्त्री० धनिष्ठा नक्षत्र।

धनवान्(वत्)–वि० (सं०) धनवाला, धनी।

धनस्यक–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसे धनकी लालसा हो; गोखरू।

धना*–स्त्री० युवती; वधू।

धनाढ्य–वि० (सं०) धनवान्, दौलतमंद।

धनादेश–पु० (मनीआर्डर) डाकखानेका एक तरहका चेक जिसके जरिये अन्यत्र स्थित व्यक्तिके पास रुपया भेजा जाता है, मनीआर्डर।

धनाधिप–पु० (सं०) कुबेर।

धनाध्यक्ष–पु० (सं०) कुबेर; खजांची।

धनाना†–अ० क्रि० गायका गाभिन होना।

धनापहार–पु० (सं०) अर्थदंड; लूट।

धनार्चित–वि० (सं०) भेंट द्वारा सम्मानित या संतुष्ट किया हुआ।

धनार्थी(र्थिन्)–वि०, पु० (सं०) धन चाहनेवाला।

धनाशा–स्त्री० (सं०) धनकी आशा, अर्थप्राप्तिकी आशा।

धनाश्री–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

धनि*–स्त्री० युवती; वधू। वि० धन्य। **–धनि***–अ० धन्य-धन्य।

धनिक–वि० (सं०) धनवान्; धनी। पु० धनाढ्य मनुष्य; ऋणदाता, उत्तमर्ण; स्वामी, पति; ईमानदार वणिक्, व्यापारी; प्रियंगु वृक्ष; धनिया। **–तंत्र**–पु० (प्लूटार्की) वह शासन-व्यवस्था जिसमें धनिक-वर्गका प्राधान्य हो। **–लोकतंत्र**–पु० (प्लुटोक्रैटिक डिमोक्रेसी) वह 'लोकतंत्र' जिसमें शासनसत्ता प्रायः धनिकोंके ही प्रतिनिधियोंके हाथमें हो।

धनिका–स्त्री० (सं०) वणिक्की स्त्री; वधू; युवती; प्रियंगु वृक्ष।

धनिया–स्त्री० एक प्रसिद्ध मसाला; युवती; वधू, स्त्री।

धनियामाल–पु० गलेका एक गहना।

धनिष्ठा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र।

धनी, धनीका–स्त्री० (सं०) युवती स्त्री ।

धनी(निन्)–वि० (सं०) धनवाला, दौलतमंद; कुशल, सिद्धहस्त –जैसे 'कलमका धनी' । पु० धनवान् मनुष्य; उत्तमर्ण; किसी वस्तुका स्वामी; पति । **–धोरी**–पु० पूछनेवाला, फिकर करनेवाला (उसका कोई–नहीं); मालिक या संरक्षक; कद्र करनेवाला । **–मानी**–वि० (हिं०) धनवान् और प्रतिष्ठित । **–(बातका)**–दे० 'बातका धनी' ।

धनीयक–पु० (सं०) धनिया ।

धनुः–'धनुस्'का समासगत रूप । **–पट**–पु० पियाल वृक्ष । **–शाखा**–स्त्री० मूर्वा लता । **–श्रेणी**–स्त्री० मूर्वा; महेंद्रवारुणी ।

धनु–पु० (सं०) धनुष्; धनुर्धर; मेष आदि बारह राशियोंमेंसे एक; एक लग्न; प्रियंगु वृक्ष; चार हाथकी एक माप; रेतीला तट । **–कार***–पु० धनुर्धर ।

धनुआ–पु० रुई धुननेका औजार; धनुष् ।

धनुई†–स्त्री० दे० 'धनुही' ।

धनुक–पु० धनुष्; इंद्रधनुष् ।

धनुर्–'धनुस्'का समासमें प्रयुक्त रूप । **–गुण**–पु० प्रत्यंचा, धनुष्की डोरी । **–गुणा**–स्त्री० मूर्वा लता । **–ग्रह**–पु० धनुर्धर; धनुर्विद्या; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । **–ग्राह**–पु० धनुर्धर । **–ज्या**–स्त्री० प्रत्यंचा । **–द्रुम**–पु० बाँस । **–धर**–पु० धनुष् धारण करनेवाला; वह व्यक्ति जो धनुर्विद्या जानता हो, तीरंदाज । **–धारी(रिन्)**–वि० जो धनुष् धारण करे । पु० दे० 'धनुर्धर' । **–भृत्**–पु० दे० 'धनुर्धर' । **–मख**–पु० दे० 'धनुर्यज्ञ' । **–मध्य**–पु० धनुष्का वह भाग जो तीर चलाते समय बायें हाथकी मुट्ठीमें पकड़ा जाता है । **–मार्ग**–पु० धनुष्की तरह वक्र रेखा । **–माला**–स्त्री० मरोरफली, मूर्वा । **–यज्ञ**–पु० एक यज्ञ जिसे सीताके लिए वर चुननेके निमित्त जनकने किया था; एक यज्ञ जिसे कृष्णको धोखा देनेके लिए कंसने किया था । **–यास**–पु० जवासा । **–लता**–स्त्री० सोमलता । **–वात**–पु० एक वातरोग । **–विद्या**–स्त्री० तीर चलानेकी विद्या, बाणविद्या, तीरंदाजी । **–वृक्ष**–पु० बाँस; पीपलका पेड़; भिलावाँ । **–वेद**–पु० यजुर्वेदका उपवेद जिसमें मुख्यतः धनुर्विद्याका और अंशतः अन्य शास्त्रोंका वर्णन है ।

धनुष्–पु० (सं०) दे० 'धनुस्'; हठयोगका एक आसन; रहस्य संप्रदायमें परमात्माका ध्यान; पयाल । **–आकार**–वि० धनुष्के आकारका, आकारमें धनुष् जैसा । **–कर**–पु० धनुष् बनानेवाला; धनुर्धर । **–कार**–पु० धनुष् बनानेवाला । **–कोटि**–पु० धनुष्का छोर; एक तीर्थ जो बदरिकाश्रमके मार्गमें पड़ता है; एक तीर्थ जो रामेश्वरके दक्षिण-पूर्वमें स्थित है । **–टंकार**–पु० धनुषकी प्रत्यंचापर किये गये आघातसे होनेवाला शब्द; शरीरका जकड़कर धनुषके समान टेढ़ा हो जानेकी व्याधि (टिटैनस) । **–पट**–पु० पियाल वृक्ष । **–पाणि**–वि० जिसके हाथमें धनुष हो ।

धनुष्मान्(मत्)–पु० (सं०) धनुर्धर; उत्तर दिशाका एक पर्वत ।

धनुस्–पु० (सं०) तीर चलानेका एक प्रसिद्ध साधन; कमान ।

धनुहा†–पु० धनुष ।

धनुहाई*–स्त्री० धनुष्की लड़ाई, बाणयुद्ध ।

धनुहिया–स्त्री० दे० 'धनुही' ।

धनुही*–स्त्री० छोटा धनुष् जिससे लड़के खेलते हैं ।

धनू–स्त्री० (सं०) धनुष् । पु० अन्नका भंडार ।

धनेयक–पु० (सं०) धनिया ।

धनेश, धनेश्वर–पु० (सं०) कुबेर; खजांची; विष्णु; लग्नसे दूसरा स्थान ।

धनेस–पु० बगला जैसा एक पक्षी; * धनेश, कुबेर ।

धनैषणा–स्त्री० (सं०) धनकी इच्छा ।

धनैषी(षिन्)–वि० (सं०) धन चाहनेवाला; अपना रुपया माँगनेवाला (महाजन) ।

धनोष्मा(मन्)–स्त्री० (सं०) धनकी गरमी ।

धन्ना–पु० धरना, किसी बातके लिए अड़कर बैठना ।

धन्नासेठ–पु० बहुत धनी मनुष्य (व्यंग्य) ।

धन्नी–स्त्री० पंजाबमें पायी जानेवाली गायों-बैलोंकी एक जाति; घोड़ेकी एक जाति ।

धन्य–वि० (सं०) कृतार्थ; प्रशंसनीय; पुण्यात्मा, सुकृति; भाग्यशाली; धन देनेवाला; धनी । अ० साधुवाद देनेके लिए बोला जानेवाला एक शब्द । पु० भाग्यवान् व्यक्ति; नास्तिक; विष्णु; अश्वकर्ण वृक्ष; धन; धनिया । **–वाद**–पु० 'धन्य-धन्य' कहना, साधुवाद; वाहवाही; कृतज्ञताप्रकाश । अ० कृतज्ञता प्रकट करनेका एक शब्द ।

धन्यम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको धन्य, भाग्यशाली माननेवाला ।

धन्या–स्त्री० (सं०) उपमाता, धात्री; ध्रुवकी माता; छोटा आँवला; धनिया । वि० स्त्री० प्रशंसनीया; भाग्यशालिनी; पुण्यवती (स्त्री) ।

धन्याक–पु० (सं०) धनिया ।

धन्वंग–पु० (सं०) दे० 'धनुर्वृक्ष' ।

धन्वंतर–पु० (सं०) चार हाथकी एक माप ।

धन्वंतरि–पु० (सं०) देववैद्य जिनकी गणना चौदह रत्नोंमें है; विक्रमादित्यकी सभाके नौ रत्नोंमेंसे एक । **–ग्रस्ता**–स्त्री० कटुकी ।

धन्व–पु० (सं०) धनुष् । **–धि**–पु० धनुष्की खोली ।

धन्व(न्)–पु० (सं०) मरुस्थल; तट; आकाश । **–ज**–वि० मरु देशमें उत्पन्न । **–दुर्ग**–पु० वह दुर्ग जिसके चारों ओर पाँच योजनकी दूरीमें मरुभूमि हो । **–यवास,–यवासक,–यास**–पु० दुरालभा ।

धन्वन–पु० (सं०) वृक्ष-विशेष, धनुर्वृक्ष ।

धन्वा(न्वन्)–पु० (सं०) दे० 'धन्व(न्)'; चाप ।

धन्वाकार–वि० (सं०) धनुष्के आकारका ।

धन्विन–पु० (सं०) सूअर ।

धन्वी(न्विन्)–वि० (सं०) जिसने धनुष् धारण किया हो; धूर्त; विदग्ध । पु० धनुर्धर; अर्जुन; विष्णु; शिव; अर्जुन वृक्ष; बकुल, मौलसिरी; दुरालभा; धनु राशि ।

धप–स्त्री० 'धप'की आवाज, किसी भारी चीजके गिरनेकी आवाज; चपत ।

धपना–अ० क्रि० वेगसे आगे बढ़ना, झपटना; † अ० क्रि० मारना, पीटना ।

धप्पा–पु० थप्पड़, तमाचा; टोटा, नुकसान ।

धब-धब–स्त्री० किसी मोटी और नरम चीजके गिरने या उसपर आघात करनेसे होनेवाला शब्द । अ० 'धब-धब'की आवाजके साथ ।

धबला–स्त्री० कमरके नीचेका ढीला पहनावा; घाँघरा ।

धब्बा–पु० किसी वस्तुपर पड़ा हुआ भद्दा और बेमेल चिह्न, दाग; कलंक; ऐब, दोष । मु० **–लगना**–कलंकित करना, बदनाम करना ।

धम–पु० (सं०) चंद्रमा; कृष्ण; यम; ब्रह्मा । स्त्री० (हिं०) किसी भारी वस्तुके गिरने या पृथिवी, छत आदिपर दबाव डालते हुए चलनेसे होनेवाला शब्द । **–गजर**–पु० उत्पात; लड़ाई । **–धम**–स्त्री० देरतक होती रहनेवाली 'धम'की आवाज । अ० 'धम-धम' शब्दके साथ । **–से**–दे० 'धड़ामसे' ।

धमक–स्त्री० दे० 'धम'; भारी वस्तुके आघात या चलने, दौड़नेसे उत्पन्न कंप । पु० (सं०) (धौंकनेवाला) लोहार ।

धमकना–अ० क्रि० 'धम' शब्द उत्पन्न करते हुए गिरना; रुक-रुककर पीड़ा देना, प्रहार करना; झपटना । † स० क्रि० हथिया लेना; जड़ देना, लगा देना (घूँसा, जुर्माना) । मु० **धमक पड़ना (या आ धमकना)**–वेगसे आ पहुँचना, चटपट आ जाना ।

धमका–स्त्री० हवाके रुक जानेसे उत्पन्न गरमी, उमस, 'धमका विषम ज्यों न पात खरकत हैं'–सेना० ।

धमकाना–स० क्रि० धमकी देना, डराना, अहितकी चेतावनी देना ।

धमकी–स्त्री० धमकानेकी क्रिया; घुड़की ।

धमक्का†–पु० धक्का, आघात; मुष्टिप्रहार; धमाका ।

धमधमाना–अ० क्रि० 'धम-धम' शब्द करना ।

धमधूसर–वि० मोटा और बेडौल (आदमी) ।

धमन–पु० (सं०) हवा फूंकनेका काम; भाथी चलानेवाला मनुष्य; नरकट । वि० फूंकनेवाला; निष्ठुर । **–भट्ठी**–स्त्री० धातु गलानेकी भट्ठी जिसमें हवा तेजीसे पहुँचायी जाती है 'ब्लास्ट फर्नेस' ।

धमना–स० क्रि० धौंकना; हवा भरना ।

धमनि, धमनी–स्त्री० (सं०) नांडी, सिरा; (आर्टरी) शरीरके अंदरकी वाहिकाएँ जो रक्तको हृदयसे केशिकाओं तक ले जाती हैं। गरदन; एक गंधद्रव्य; हल्दी; फुँकनी।

धमनिका–स्त्री० (सं०) तुरही।

धमसा†–पु० दे० 'धौंसा'।

धमाका–पु० भारी वस्तुके गिरनेका गंभीर शब्द; धक्का।

धमाचौकड़ी–स्त्री० उछल-कूद, कूद-फाँद; ऊधम।

धमाधम–अ० लगातार 'धम-धम' शब्दके साथ।

धमार, धमाल–पु० फागका एक भेद (संगीत), फागके गीत; एक ताल। स्त्री० उपद्रव; उछल-कूद; कलाबाजी।

धमारिया–वि० उपद्रव, उछल-कूद मचानेवाला; कलाबाज। पु० धमार गानेवाला।

धमारी–वि० धमाचौकड़ी मचानेवाला। * स्त्री० होलीकी क्रीड़ा।

धमाला†–पु० चूल्हेके ऊपर बना मीनारके ढंगका मार्ग जिसमेंसे धुआँ बाहर निकलता है, धुआँकश।

धमासा†–पु० जवासा।

धमि–स्त्री० (सं०) फूँकनेकी क्रिया।

धमिका–स्त्री० (सं०) लोहारकी स्त्री।

धमका–पु० आघात; घूँसा।

धमेख–पु० एक स्तूप जो काशीसे उत्तर सारनाथमें उस स्थानपर बनाया गया है जहाँ बुद्धने 'धर्म-चक्रप्रवर्तन' आरंभ किया था।

धम्मल, धम्मिल–पु० (सं०) जूड़ा, केशकलाप; फूलों, मोतियों आदिसे सजाया हुआ जूड़ा।

धयना*–अ० क्रि० दौड़ना, धावा मारना–'ये सुजानके संग धये धरि धीर हैं'–सुजानच०।

धरंता*–वि०, पु० धारण करनेवाला।

धर–वि० (सं०) धारण करनेवाला, ग्रहण करनेवाला (इस अर्थमें इस शब्दका प्रयोग केवल समासमें होता है)। पु० पर्वत; कपासकी रुई; कूर्मराज, कच्छपरूपधारी विष्णु; एक वसु; विट। स्त्री० (हि०) धरने, पकड़नेकी क्रिया; * पृथिवी–'धर अंबर दिसि विदिसि बढ़े अति सायक किरन समान'–सूर। **–पकड़**–स्त्री० गिरफ्तारी।

धरक*–स्त्री० दे० 'धड़क'।

धरकना*–अ० क्रि० दे० 'धड़कना'।

धरका*–पु० दे० 'धड़का'।

धरकार–पु० एक नीच जाति जो बाँसकी डलिया आदि बनानेका काम करती है, बँसोर।

धरण–पु० (सं०) धारण करनेकी क्रिया; एक प्राचीन तौल; पुल, सेतु; सहारा; पहाड़का किनारा; लोक; स्तन; सूर्य; धान; हिमालय।

धरणि, धरणी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; सेमरका पेड़; शहतीर; नस, नाड़ी। **–कंद**–पु० एक कंद। **–कीलक**–पु० पर्वत। **–ज,–पुत्र, –सुत**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–जा,–पुत्री,–सुता**–स्त्री० जनककी पुत्री सीता। **–धर**–पु० महाकच्छप; शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा; एक हस्ती जो पृथ्वीका धारण करनेवाला माना जाता है। **–धृत्**–पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु। **–पति**–पु० राजा। **–पूर,–प्लव**–पु० समुद्र। **–भृत्**–पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा। **–मंडल**–पु० भूमंडल। **–रुह**–पु० वृक्ष।

धरणीय–वि० (सं०) धारण करने योग्य; सहारा देने योग्य।

धरणीश्वर–पु० (सं०) शिव; विष्णु; राजा, भूपति।

धरता–पु० धारण करनेवाला; ऋणी, कर्जदार।

धरती–स्त्री० पृथ्वी, भूमंडल, संसार। **–का फूल**–कुकुरमुत्ता; मेढक; नया अमीर। **–पुत्र**–पु० मातृभूमिकी रक्षा या गौरव-वृद्धिके लिए साहसपूर्ण तथा प्रशंसनीय कार्य करनेवाला व्यक्ति।

धरधर*–पु० दे० 'धराधर'। स्त्री०, अ० दे० 'धड़धड़'।

धरधरा*–पु० धकधकी, धड़कन।

धरधराना–अ० क्रि० दे० 'धड़धड़ाना'।

धरन–स्त्री० धरनेकी क्रिया या ढंग; गर्भाशय या उसका आधार; हठ; शहतीर; † जमीन। पु० दे० 'धरना'।

धरना–स० क्रि० पकड़ना, थामना, रखना; स्थापन करना; धारण करना, पहनना; पास रखना, (किसीकी) देखरेखमें रखना; ग्रहण करना; सहायक बनाना, (किसीका) पल्ला पकड़ना; रखेलीकी भाँति रख लेना, पत्नी बना लेना; गिरवी या बंधक रखना; पक्का करना, ठहराना। पु० प्रार्थना या माँग पूरी न होनेतक किसीके यहाँ अड़कर बैठना या खड़े रहना। मु० **धरा-ढका**–अवसर विशेषके लिए संचित वस्तु। **धरा रह जाना**–प्रयोगमें न आना।

धरनि–स्त्री० दे० 'धरणी'; * टेक–'ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी'–सूर; † शहतीर।

धरनी–स्त्री० दे० 'धरणी'; शहतीर; * टेक–'हिये धर चातककी धरनी'–कवितावली।

धरनेत–पु० धरना देनेवाला।

धरम*–पु० दे० 'धर्म'। **–सार**–पु०, स्त्री० धर्मशाला; सदावर्त।

धरवाना–स० क्रि० 'धरना'का प्रे०।

धरषना*–स० क्रि० धर्षण करना, दबाना, दमन करना, पराभव करना; डराना; चूर्ण करना; फाड़ना।

धरसना–अ० क्रि० दब जाना, आक्रांत हो जाना; डरना, सहम जाना। स० क्रि० दबाना, डाँटना।

धरसनी*–स्त्री० दे० 'धर्षणी'।

धरहर*–स्त्री० बीचमें पड़कर लड़ने-झगड़नेवालोंको लड़ाईसे विरत करना; बचाव, रक्षा; धैर्य, धीरज।

धरहरना*–अ० क्रि० 'धड़धड़' शब्द करना; धड़धड़ाना।

धरहरा–पु० मीनार, धौरहर।

धरहरिया–पु० वह जो बीचमें पड़कर लड़ने-झगड़नेवालोंको विरत करे, बीच-बचाव करनेवाला; रक्षक; † बीच-बचाव; * दृढ़ विश्वास, निश्चित मति।

धरा–स्त्री० धड़ा, चार सेरकी एक तौल; तौलकी बराबरी, बाट; (सं०) पृथ्वी, धरती, जमीन; गर्भाशय; मज्जा; नाडी; भेंट-स्वरूप ब्राह्मणोंको दी जानेवाली स्वर्णराशि आदि; एक वर्णवृत्त। **-कदंब**–पु० कदंबका एक भेद। **–तल**–पु० पृथ्वीकी सतह; पृथ्वी; क्षेत्रफल। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–धर**–पु० शेषनाग; पर्वत; विष्णु; राजा। **–धरन***–पु० दे० 'धराधर'। **–धार**–पु० शेषनाग। **–पति**–पु० राजा; विष्णु। **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–भुक्(ज्)**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़। **–शायी(यिन्)**–वि० धरतीपर सोया, गिरा हुआ; युद्धमें निहत। **–सुर**–पु० ब्राह्मण। **–सूनु**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर।

धराऊ–वि० जो सुरक्षित रखा रहे और विशेष अवसरोंपर ही काममें लाया जाय।

धराक, धराका*–पु० धड़ाकेकी आवाज।

धरात्मज–पु० (सं०) मंगल ग्रह; नरकासुर।

धरात्मजा–स्त्री० (सं०) सीता।

धराधिप, धराधिपति–पु० (सं०) राजा, भूपति।

धराधीश–पु० (सं०) राजा, भूपति।

धराना–स० क्रि० पकड़ाना, थमाना, निश्चित कराना।

धरामर–पु० (सं०) ब्राह्मण।

धरास्त्र–पु० (सं०) एक अस्त्र।

धराहर–पु० दे० 'धरहरा'।

धरित्री–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

धरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) तराजू; रूप, शकल।

धरी–स्त्री० चार सेरकी एक तौल; उपपत्नी; अवलंब।

धरुण–पु० (सं०) ब्रह्मा; स्वर्ग; पानी; मत, राय; वह स्थान जहाँ कोई वस्तु सुरक्षित रखी जाय; अग्नि; दूध पीनेवाला बछड़ा; टेक, सहारा; हौज; दृढ़ धरती।

धरेचा–पु० उपपति, विना ब्याह किये पतिरूपमें स्वीकार किया हुआ पुरुष।

धरेजा–पु० (विधवा) स्त्रीको रखेली बनाकर रखना। स्त्री० रखेली, उपपत्नी।

धरेला–पु० दे० 'धरेचा', उपपति।

धरेल, धरेली–स्त्री० रखेली, उपपत्नी।

धरेश–पु० (सं०) राजा, भूपति।

धरेस*–पु० दे० 'धरेश'।

धरैया|–पु० धरनेवाला, पकड़नेवाला; रखेल या रखेली बनानेकी प्रथा।

धरोहर–स्त्री० वह वस्तु या द्रव्य जो कुछ समयके लिए किसी दूसरेके पास इस विश्वाससे रखा गया हो कि माँगनेपर पुनः उसी रूपमें मिल जायगा, थाती, अमानत।

धरौली|–स्त्री० एक छोटा पेड़।

धरौवा–पु० उपपत्नी रखनेकी चाल; दे० 'धरैया'।

धर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) धारण करनेवाला, टेकनेवाला।

धर्त्तर–पु० (सं०) धतूर।

धर्त्र–पु० (सं०) घर, गृह; सहारा, टेक; यज्ञ; पुण्य; नैतिकता।

धर्म–पु० (सं०) अभ्युदय और निःश्रेयसका साधनभूत वेदविहित कर्म (जैसे यज्ञ); एक प्रकारका अदृष्ट जिससे स्वर्गकी प्राप्ति होती है (मी०); लौकिक, सामाजिक कर्तव्य; वह कर्म जिसे वर्ण, आश्रम, जाति आदिकी दृष्टिसे करना आवश्यक हो (इसके पाँच भेद हैं–(१) वर्णधर्म, (२) आश्रमधर्म, (३) वर्णाश्रमधर्म, (४) गौणधर्म तथा (५) नैमित्तिक धर्म); मनुने धर्मके दस लक्षण माने हैं–धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध; उपमेय और उपमान दोनोंमें रहनेवाला साधारण धर्म; ऋषि, मुनि या आचार्य द्वारा निर्दिष्ट वह कृत्य जिससे पारलौकिक सुख प्राप्त हो; किसी वस्तु या व्यक्तिमें सदा बनी रहनेवाली सहज वृत्ति, स्वभाव, प्रकृति; ईश्वर या सद्गतिकी प्राप्तिके लिए किसी महात्मा या पैगंबर द्वारा प्रवर्तित मतविशेष; आप्त, आचार्य, राजा या सरकार द्वारा निर्दिष्ट लोकव्यवहार-संबंधी नियम; यम; पुण्य; निष्पक्षता; औचित्य; सत्संग; तरीका, ढंग; युधिष्ठिर; आचार; याग; अहिंसा; उपनिषद्; न्याय; धनुष्; सोमपायी; आत्मा; कुंडलीमें लग्नसे नवाँ स्थान; (हिं०) ईमान। **-कथक**–पु० विधान, नियमकी व्याख्या करनेवाला।–**(कर्मन्)**-पु० धार्मिक कृत्य। **–काम**–वि० जो कर्तव्यबुद्धिसे धार्मिक कृत्य करे। **–काय**–पु० वुद्ध। **–कार्य**–पु० धार्मिक कृत्य। **–कील**–पु० राजशासन। **–कृच्छ्र**–पु० धर्मकी दृष्टिसे किसी कार्यके उचित तथा अनुचित दोनों प्रतीत होनेसे उत्पन्न द्वैधीभाव, ऐसी स्थिति जिसमें धर्मपालन करना वहुत कठिन हो। **–केतु**–पु० वुद्ध। **–कोष**-पु० धर्मरूपी कोष; विधानकोप। **–क्रिया**–स्त्री० धार्मिक कृत्य। **–क्षेत्र**–पु० भारतवर्ष जो धर्मोपार्जनकी कर्मभूमि माना गया है; कुरुक्षेत्र। **–गुप्त**–पु० विष्णु। **–ग्रंथ**–पु० धर्मविशेषका आधारभूत ग्रंथ, वह ग्रंथ जिसमें किसी धर्मसे संबद्ध शिक्षाएँ दी गयी हों। **–घट**–पु० सुगंधित जलसे भरा हुआ घड़ा जिसे कुछ भोज्य वस्तुओंके साथ वैशाखभर दान करना पुण्यकर गया है; धर्मार्थ अन्नादि इकट्ठा करनेका घर घरमें रखा जानेवाला घड़ा; हड़ताल (वंगाल)। **–घड़ी**–स्त्री० (हिं०) ऐसी जगह टँगी घड़ी जिसे सभी लोग देख सकें। **–घ्न**–वि० अनैतिक, अविहित। **–चक्र**–पु० धर्मसंघ; वुद्धदेव; धर्मशिक्षा रूपी चक्र जिसका प्रवर्तन वुद्धने काशीमें किया था, वुद्धकी शिक्षा; एक अस्त्र जो प्राचीन कालमें प्रयुक्त होता था। **–चरण**–पु०,**–चर्या**–स्त्री० धर्मका पालन या आचरण। **–चारी(रिन्)**–पु० तपस्वी; सन्न्यासी। वि० जो धर्मानुकूल आचरण करे। **–चिंतन**–पु०, **–चिंता**–स्त्री० धार्मिक विषयोंका मनन। **–च्युत**–वि० धर्मसे भ्रष्ट, पतित। **–ज**–पु० प्रथम औरस पुत्र; युधिष्ठिर; एक वुद्ध। वि० धर्मसे उत्पन्न। **–जन्मा(न्मन्)**–पु० युधिष्ठिर। **–जन्य**–वि० जिसकी उत्पत्ति धर्माचरणसे हो। **–जिज्ञासा**–स्त्री० धार्मिक विषयोंको जाननेकी इच्छा; धर्मके साधनभूत कर्मोंकी जिज्ञासा। **–जीवन**–पु० वह ब्राह्मण जिसकी जीविका धार्मिक कृत्य कराने और दान लेने आदिसे चलती हो। वि० धर्मानुसार कार्य करनेवाला। **–ज्ञ**–पु० वुद्धदेव। वि० जिसे धर्मके स्वरूपका ज्ञान हो। **–तंत्र**–पु० (थियोक्रैसी) वह शासन-व्यवस्था जिसमें राज्यका कार्य ईश्वर या धर्मके नामपर पुरोहितों, धर्माध्यक्षों आदि द्वारा ही संचालित हो। **–त्याग**–पु० धर्मको छोड़ देना, धर्मविशेषके ऊपरसे विश्वास हटा लेना। **–त्राता(तृ)**–पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला। **–द**–वि० जो अपने धर्मका फल दूसरेको दे दे। पु० कार्त्तिकेयका एक अनुचर। **–दान**–पु० सात्त्विक दान, निष्काम दान। **–दार**–स्त्री० धर्मपत्नी। **–दुधा**-स्त्री० वह गाय जिसका दूध केवल धार्मिक कृत्योंके लिए दुहा जाता हो। **–देशक**–पु० धर्मोपदेशक। **–द्रवी**–स्त्री० गंगा। **–द्रोही(हिन्)**–पु० दैत्य। वि० अधर्मी। **–धक्का**–पु० (हिं०) धर्मके लिए उठाया जानेवाला कष्ट; व्यर्थकी परेशानी। **–धातु**–पु० वुद्धदेव। **–धुर्य**–वि० जो धर्मपालनमें बढ़-चढ़कर हो। **–ध्वज,–ध्वजी(जिन्)**-पु० वह जिसने धार्मिकताका ढोंग रचा हो, पाखंडी। **–नंदन**-पु० युधिष्ठिर। **–नाथ**–पु० जैनोंके पंद्रहवें तीर्थंकर। **–नाभ**–पु० विष्णु। **–निरपेक्ष राज्य**–पु० (सेक्यूलर स्टेट) वह राज्य जिसकी सरकारी नीति धर्मके मामलेमें निरपेक्ष या तटस्थ रहनेकी हो, असांप्रदायिक राज्य, लौकिक राज्य। **–निवेश**–पु० धर्ममें भक्ति। **–निष्ठ**–वि० जो धर्ममें आस्था रखता हो, धर्मपरायण; जो धर्मानुकूल आचरण करता हो। **–निष्ठा**–स्त्री० धर्ममें आस्था, विश्वास, श्रद्धा। **–निष्पत्ति**–स्त्री० धर्म या कर्तव्यका पालन। **–पट्ट**–पु० राजा या अधिकारीकी ओरसे दिया गया व्यवस्थापत्र। **–पति**–पु० वरुण। **–पत्तन**–पु० श्रावंती नगरी; गोल मिर्च। **–पत्नी**–स्त्री० धर्मशास्त्रके नियमोंके अनुसार व्याही हुई स्त्री। **–पत्र**-पु० गूलर। **–पथ**-पु० धर्मका मार्ग। **–पर**–वि० धर्मपरायण। **–परायण**–वि० धर्ममें निष्ठा रखनेवाला। **–परिणाम**–पु० एक धर्मके अनंतर दूसरे धर्ममें प्रवेश (यो०)। **–पाठक**–पु० धर्मशास्त्र पढ़ने या पढ़ानेवाला। **–पाल**–पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला; दंड (जिसके डरसे लोग धर्मविरुद्ध आचरण नहीं करते); राजा दशरथके एक मंत्री। **–पिता**–पु० (गॉड फादर) वह व्यक्ति जो वपतिस्मा लेनेपर किसी वच्चेको धर्मकी शिक्षा देनेकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले (ईसाई); पितृ-कर्तव्यका पालन करनेवाला या पितृतुल्य व्यक्ति। **–पीठ**–पु० धर्मका मुख्य स्थान; वह स्थान जहाँ धर्मकी व्यवस्था दी जाय; काशी। **–पीडा**–स्त्री० धर्म या न्यायका उल्लंघन। **–पुत्र**–पु० युधिष्ठिर; धार्मिक भावनासे उत्पन्न या माना हुआ पुत्र। **–पुरी**–स्त्री० यमपुरी; न्यायालय। **–पुस्तक**–स्त्री० दे० 'धर्मग्रंथ'। **–प्रतिरूपक**–पु० किसी संपन्न मनुष्य द्वारा दुःख भोगते हुए स्वजनोंकी उपेक्षा करके केवल यशके लिए दूसरोंको दिया गया दान (स्मृ०) (ऐसा दान धर्मका आभासमात्र है)। **–प्रभास**–पु० वुद्धदेव। **–प्रवक्ता(क्तृ)**–पु० धर्मनिर्णायक राजकर्मचारी। **-प्रवचन**–पु० वुद्धदेव; कर्तव्यशास्त्र। **–वल**–पु० धर्माचरणका वल। **–वाह्य**–वि० धर्मविरुद्ध। **–वुद्धि**–स्त्री० धर्मकी ओर प्रवृत्त वुद्धि; धर्म-अधर्मका विवेक करनेवाली वुद्धि। वि० जिसकी वुद्धि धर्मकी ओर प्रवृत्त हो; जो धर्म-अधर्मका विचार करे। **–भगिनी**–वि० वह स्त्री जो धर्मके नाते वहिन लगे; गुरुकन्या। **–भागिनी**–स्त्री० धर्मपरायणा पत्नी। **–भाणक**–पु० कथावाचक। **–भिक्षुक**–पु० धर्मार्थ भिक्षा माँगनेवाला। (मनुस्मृतिके अनुसार नौ प्रकारके भिक्षुक माने गये हैं)। **–भीरु**–वि० जिसे धर्म छूटनेका भय वना हो; जो अधर्मसे डरता हो। **–भृत्**–पु० राजा; धर्मपरायण व्यक्ति। **–भ्रष्ट**–वि० धर्मसे गिरा हुआ, पतित। **–भ्राता(तृ)**–पु० वह मनुष्य जो धर्मके नाते भाई लगे; गुरुपुत्र। **–मति**–स्त्री०, वि० दे० 'धर्मवुद्धि'। **–महामात्र**–पु० धर्मविभागका मंत्री। **–मूल**–पु० धर्मका प्रामाणिक आधार–(१) वेद, (२) धर्मज्ञोंका आचार, (३) आत्मतुष्टि। **–मेघ**–पु० योगमें एक समाधि जिसमें चित्त वृत्तियोंसे मुक्त हो जाता है। **–यज्ञ**–पु० वह यज्ञ जिसमें किसीकी वलि न हो। **–युग**–पु० सत्ययुग। **–युद्ध**–पु० वह युद्ध जिसमें किसी प्रकारका अन्याय या छल-कपट न हो, न्यायपूर्ण युद्ध। **–यूप,–योनि**–पु० विष्णु। **–रक्षक**–पु० दे० 'धर्मत्राता'। **–रक्षित**–पु० एक वौद्ध उपदेशक जिसे अशोकने धर्मोपदेश करनेके लिए वलूचिस्तान भेजा था। **–रत**–वि० धर्मपरायण। **–रति**–वि० धर्मरत। स्त्री० धर्मानुराग। **–राइ,–राय***–पु० दे० 'धर्मराज'। **–राज**–पु० युधिष्ठिर; यमराज; वुद्धदेव; राजा। **–रोधी(धिन्)**–वि० धर्मविरुद्ध, अन्याय्य। **–लक्षण**–पु० वेद। **–लुप्तोपमा**–स्त्री० उपमालंकारका एक भेद, जिसमें धर्मका (उपमेय-उपमानमें समान रूपसे पायी जानेवाली वातका) कथन न किया गया हो। **–वत्सल**–वि० जिसे धर्म प्यारा हो। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० जो धर्मानुकूल आचरण

करे। **–वर्धन**–पु० शिव। **–वर्मा(र्मन्)**–पु० धर्मरक्षक। **–वाद**–पु० धार्मिक नियमपर वाद-विवाद। **–वासर**–पु० पूर्णिमा। **–वाहन**–पु० शिव; धर्मराजका वाहन–भैंसा। **–वित्(द्)**–वि० धर्मज्ञ। **–विद्या**–स्त्री० धर्मका ज्ञान करानेवाली विद्या–जैसे मीमांसा। **–विप्लव**–पु० धर्मका व्यतिक्रम। **–वीर**–पु० वह जिसे धर्मपालनके प्रति इतना अदम्य उत्साह हो कि किसी भी स्थितिमें अपने धर्मसे न डिगे; वीर रसका एक भेद। **–वृद्ध**–वि० जो धर्माचरणकी दृष्टिसे श्रेष्ठ हो। **–वैतंसिक**–पु० वह जो बुरे मार्गसे पैसा कमाकर अपनेको धार्मिक सिद्ध करनेके लिए बहुत दान-पुण्य करता हो। **–व्याध**–पु० मिथिलावासी एक व्याध जिसने कौशिक नामके तपस्वीको धर्मका तत्त्व समझाया था। **–व्रत**–वि० धर्मपरायण। **–व्रता**–स्त्री० मरीचि ऋषिकी पत्नी जो परम साध्वी थी। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ धर्मार्थ अन्नादि बँटता हो, धर्मसत्र; न्यायालय; यात्रियोंके निःशुल्क ठहरनेके लिए बनवाया हुआ स्थान। **–शास्त्र**–पु० वह आप्त ग्रंथ जिसमें मनुष्यके कर्तव्याकर्तव्य, दायविधान आदिकी व्यवस्था हो (मनु, याज्ञवल्क्य आदिकी स्मृतियाँ)। **–शास्त्री(स्त्रिन्)**–पु० धर्मशास्त्रका पंडित। **–शील**–वि० जो धर्मके अनुसार आचरण करे; जो धर्मानुष्ठानमें बराबर लगा रहे। **–संकट**–पु० दे० 'धर्मकृच्छ्र'। **–संग**–पु० धर्ममें लगन; ढोंग। **–संगीति**–स्त्री० धर्म-संबंधी वाद-विवाद; बौद्धोंका धर्मसम्मेलन जो बुद्धकी मृत्युके बाद धार्मिक विषयोंपर विचारके लिए छ बार हुआ था। **–संघ**–पु० किसी धर्मके अनुयायियोंका संघ। **–संहिता**–स्त्री० वह ग्रंथ जिसमें धार्मिक विषयोंका प्रतिपादन हो। **–सभा**–स्त्री० न्यायालय, कचहरी। **–सहाय**–पु० धार्मिक कृत्योंमें साथ देनेवाला, जैसे ऋत्विक् आदि। **–सार**–पु० उत्तम, पुण्य कर्म। **–सारी***–स्त्री० धर्मशाला। **–सावर्णि**–पु० ग्यारहवें मनु। **–सुत**–पु० युधिष्ठिर। **–सू**–स्त्री० धूम्याट पक्षी। **–सूत्र**–पु० जैमिनिरचित धर्ममीमांसा-विषयक एक ग्रंथ। **–सेतु**–पु० धर्मकी रक्षा करनेवाला; शिव। **–स्थ**–पु० विचारपति। **–स्व**–पु० (एंडाउमेंट्स) किसी मंदिरादिका खर्च चलाने या किसी धार्मिक कृत्यादिके निर्वाहार्थ स्थायी व्यवस्थाको करनेके उद्देश्यसे दी गयी संपत्ति, धर्मोत्तरसंपत्ति, धर्मादा। **–स्वामी(मिन्)**–पु० बुद्धदेव। मु० **–बिगाड़ना**–किसीका धर्म नष्ट करना, किसीको धर्मच्युत करना; स्त्रीका सतीत्व नष्ट करना। **–रखना**–धर्मच्युत होनेसे बचना या बचा लेना।

धर्म(न्)–पु० (सं०) दे० 'धर्म'।

धर्मण–पु० (सं०) धामिन साँप; धामिन वृक्ष; धामिन पक्षी।

धर्मतः(तस्)–अ० (सं०) धर्मके अनुसार; धर्मको साक्षी देकर।

धर्मवान्(वत्)–वि० (सं०) धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ।

धर्मस्थीय–पु० (सं०) न्यायालय।

धर्मांग–पु० (सं०) बक, बगला।

धर्मांतर–पु० (सं०) अन्य धर्म।

धर्मांतरण–पु० (सं०) अपना धर्म त्यागकर अन्य धर्म स्वीकार करना।

धर्मांध–वि० (सं०) स्वधर्ममें अंधश्रद्धा और दूसरे धर्मोंके प्रति तिरस्कार या द्वेषका भाव रखनेवाला; धर्मके नामपर लड़नेवाला।

धर्मागम–पु० (सं०) धर्मग्रंथ।

धर्माचरण–पु० (सं०) धार्मिक या पुण्य कार्य करना; धर्मके अनुसार आचरण करना।

धर्माचार्य–पु० (सं०) धर्मकी शिक्षा देनेवाला गुरु।

धर्मातिक्रमण–पु० (सं०) धर्म या न्यायका उल्लंघन।

धर्मात्मज–पु० (सं०) युधिष्ठिर।

धर्मात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) धर्मनिष्ठ, धर्मशील, धार्मिक।

धर्मादा–पु० धर्मार्थ निकाला हुआ धन।

धर्माधर्म–पु० (सं०) धर्म और अधर्म। **–वित्(द्)**–पु० मीमांसक।

धर्माधिकरण–पु० (सं०) न्यायालय; न्यायाधीश।

धर्माधिकरणिक–पु० (सं०) धर्म-अधर्मका निर्णय करनेवाला राजकर्मचारी, न्यायाधीश, विचारक।

धर्माधिकरणी(णिन्)–पु० (सं०) न्यायाधीश।

धर्माधिकार–पु० (सं०) धार्मिक कृत्योंका निरीक्षण; न्यायव्यवस्था; न्यायाधीशका पद।

धर्माधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) दे० 'धर्माधिकरणिक'।

धर्माधिकृत–पु० (सं०) दे० 'धर्माध्यक्ष'।

धर्माधिष्ठान–पु० (सं०) न्यायालय।

धर्माध्यक्ष–पु० (सं०) न्यायाधीश; विष्णु।

धर्मानुष्ठान–पु० (सं०) दे० 'धर्माचरण'।

धर्मानुस्मृति–स्त्री० (सं०) धर्मका अनुचिंतन।

धर्मापेत–वि० (सं०) जो धर्मसंगत न हो, अधार्मिक; अन्याय्य। पु० पाप; अन्याय।

धर्माभास–पु० (सं०) श्रुति-स्मृतिसे भिन्न शास्त्रों द्वारा उक्त असद्धर्म।

धर्मारण्य–पु० (सं०) तपोवन; गयाके अंतर्गत एक तीर्थ; कूर्मविभागके मध्यका एक देश।

धर्मार्थ–अ० (सं०) मंके लिए, धर्म या परोपकारके निमित्त।

धर्मावतार–पु० (सं०) एक आदरसूचक संबोधन; परम धर्मात्मा व्यक्ति; युधिष्ठिर।

धर्मावसथि, धर्मावस्थायी(यिन्)–पु० (सं०) धर्मविभागका अधिकारी।

धर्माश्रित–वि० (सं०) धर्मसम्मत; न्याय्य।

धर्मासन–पु० (सं०) वह आसन जिसपर बैठकर धर्म-अधर्मका निर्णय किया जाय, न्यायाधीशका आसन।

धर्मास्तिकाय–पु० (सं०) जीव आदि बहुप्रदेश-व्यापी पदार्थोंमेंसे एक पदार्थ (जै०)।

धर्मिणी–स्त्री० (सं०) पत्नी, जाया। वि० स्त्री० धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ–वि० (सं०) अत्यंत धार्मिक, अत्यंत पुण्यात्मा।

धर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) धर्म करनेवाला, पुण्यात्मा; जिसमें कोई विशिष्ट धर्म या वृत्ति हो, धर्मविशेषसे युक्त; (किसी) मत या धर्मका अनुयायी। पु० वह जिसमें कोई धर्म या वृत्ति रहे, धर्मका आश्रय या आधार; धार्मिक मनुष्य; विष्णु।

धर्मीपुत्र–पु० (सं०) अभिनेता।

धर्मेंद्र–पु० (सं०) यमराज; युधिष्ठिर।

धर्मेयु–पु० (सं०) एक पुरुवंशी राजा।

धर्मेश, धर्मेश्वर–पु० (सं०) यमराज।

धर्मोत्तर–वि० (सं०) जो धर्ममें बढ़-चढ़कर हो; जो धर्म-अधर्मका बहुत ध्यान रखे, अति धार्मिक; परम न्यायी।

धर्मोन्माद–पु० (सं०) एक तरहका उन्माद जिसमें मनुष्य धर्मकृत्यों और धर्मचिंतनमें ही डूबा रहता है; वह मानसिक स्थिति जिसमें धर्मकी आडमें अच्छे बुरेका भेद भी भुला दिया जाय।

धर्मोपदेश–पु० (सं०) धर्मका उपदेश, वह प्रवचन जिसमें धर्मकी शिक्षा दी गयी हो, धर्मकी शिक्षा; धर्मशास्त्र।

धर्मोपदेशक–पु० (सं०) धर्मकी शिक्षा देनेवाला धर्म-शिक्षक।

धर्मोपाध्याय–पु० (सं०) पुरोहित।

धर्म्य–वि० (सं०) धर्मसंगत; पुण्यकर; न्याय्य; जो धर्म करनेसे प्राप्त हो। **–विवाह**–पु० स्मृतिमें उल्लिखित ब्राह्म आदि विवाह।

धर्ष–पु० (सं०) ढिठाई, संकोचका अभाव, अविनय; घमंड; असहिष्णुता; हिंसा; अपमान; पराभव; सतीत्वहरण; नपुंसक, हिजड़ा। **–कारिणी**–वि० स्त्री० असती, व्यभिचारिणी (स्त्री)। **–कारी(रिन्)**–वि०, पु० ढिठाई करनेवाला; अपमान करनेवाला।

धर्षक–वि० (सं०) ढिठाई करनेवाला; अपमान करनेवाला; व्यभिचारी। पु० नट, अभिनेता।

धर्षण–पु० (सं०) पराभव; अनादर; असहिष्णुता; औद्धत्य, धृष्टता; सतीत्वहरण; रति; हिंसा; शिव।

धर्षणि, धर्षणी–स्त्री० (सं०) असती, कुलटा स्त्री।

धर्षणीय–वि० (सं०) धर्षण करने योग्य।

धर्षित–वि० (सं०) अपमानित; पराभूत। पु० रति; अभिमान; असहिष्णुता।

धर्षिता–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी स्त्री; वेश्या। वि० स्त्री० जिसका सतीत्वहरण किया गया हो।

धर्षी(र्षिन्) -वि० (सं०) घमंडी; असहिष्णु, आक्रमण करनेवाला; दबानेवाला; अपमान करनेवाला; धृष्ट; मैथुन करनेवाला।

धलंड–पु० (सं०) दृढकंटक वृक्ष, अंकोल।

धव–पु० (सं०) एक वन्य वृक्ष जिसकी जड़, पत्ती, फूल आदि दवाके काम आते हैं; पति, स्वामी; पुरुष; धूर्त मनुष्य; हिलना-डोलना, कंपन।

धवई–स्त्री० एक वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं।

धवनी–स्त्री० भाथी, धौंकनी।

धवर-पु० एक पक्षी। * वि० दे० 'धवल'।

धवरहर, धवराहर–पु० दे० 'धरहरा'।

धवरा†–वि० दे० 'धवल'।

धवरी–स्त्री० सफेद रंगकी गाय; धवर पक्षीकी मादा। वि० स्त्री० सफेद रंगकी।

धवल–वि० (सं०) श्वेत, सफेद; स्वच्छ, निर्मल; सुंदर। पु० सफेद रंग; धवका पेड़; बड़ा बैल, महोक्ष; एक पक्षी; चीनिया कपूर; सफेद मिर्च; एक राग; एक छंद। **–गिरि**–पु० हिमालय-की एक चोटी। **–गृह**–पु० चूना पुता हुआ मकान; प्रासाद। **–पक्ष**–पु० शुक्ल पक्ष; हंस। **–मृत्तिका**–स्त्री० खड़िया मिट्टी, दुधिया। **–श्री**–स्त्री० एक रागिनी।

धवलना*–स० क्रि० उज्ज्वल करना; विशद बनाना।

धवलांग–वि० जिसके अंग सफेद हों; जिसका सारा शरीर, भौंहें, बाल आदि अप्राकृतिक रूपसे, जन्मसे ही, सफेद हों, सूरजमुखी (एलबिनो)।

धवला–वि० उजला, सफेद। † पु० सफेद बैल। स्त्री० (सं०) उजली गाय; गौर वर्णकी स्त्री। वि० स्त्री० सफेद रंगकी, उजली।

धवलाई–स्त्री० सफेदी।

धवलागिरि–पु० दे० 'धवलगिरि'।

धवलित–वि० (सं०) सफेद किया हुआ; सफेद बनाया हुआ।

धवलिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) श्वेतता, सफेदी।

धवली–स्त्री० (सं०) सफेद गाय; बालोंका एक रोग; सफेद मिर्च।

धवलोत्पल–पु० (सं०) कुमुद।

धवा–पु० दे० 'धव'।

धवाणक–पु० (सं०) वायु।

धवाना*–स० क्रि० दौड़ाना–'यहि विधि देखत कहत चार ते जात तुरंग धवाये'–रघुराज सिंह।

धवित्र–पु० (सं०) मृगचर्मका पंखा।

धस*–पु० जल आदिमें पैठना; गोता, डुबकी।

धसक–स्त्री० सूखी खाँसी; दहलनेकी क्रिया; डर; ईर्ष्या।

धसकन–स्त्री० दलहने, डरनेकी क्रिया; दबना या धँसना; जलन; ईर्ष्या।

धसकना–अ० क्रि० नीचेकी ओर बैठना, दब जाना; डाह करना, ईर्ष्या करना।

धसका–पु० चौपायोंका एक रोग।

धसना*–अ० क्रि० ध्वस्त होना, नष्ट होना; † नीचेको खसना; घुसना, प्रवेश करना।

धसमसाना*–अ० क्रि० धँसना, नीचेकी ओर बैठना; धरतीमें समाना।

धसान–स्त्री० दे० 'धँसान'।

धसाना–स० क्रि० दे० 'धँसाना'।

धसाव–पु० दे० 'धँसाव'।

धाँक–पु० एक जंगली जाति।

धाँगड़, धाँगर–पु० एक अनार्य जाति; इस जातिका आदमी; कुआँ आदि खोदनेका काम करनेवाली एक जाति; इस जातिका आदमी।

धाँगना†–स० क्रि० कुचलना, रौंदना।

धाँधना–स० क्रि० बंद करना; ठूँस-ठूँसकर खा लेना।

धाँधल–स्त्री० ऊधम, शैतानी; धूर्तता, दगा, छल; त्वरा, जल्दबाजी।

धाँधली–वि० ऊधमी, उपद्रवी; दगाबाज, धूर्त। स्त्री० मनमाना व्यवहार; अनीति, अत्याचार; ज्यादती; धोखा; जल्दबाजी।

धांधा–स्त्री० (सं०) इलायची।

धाँय–स्त्री० दे० 'धायँ'।

धाँस–स्त्री० तंबाकू आदिकी गंधसे उठनेवाली खाँसी; खाँसी लाने-वाली तेज गंध।

धाँसना–अ० क्रि० घोड़े आदिका खाँसना।

धाँसी–स्त्री० कुत्ते आदिकी खाँसी।

धा–पु० धैवत स्वरका संकेत (संगीत); तबलेका एक बोल; (सं०) ब्रह्मा; बृहस्पति; धारण करनेवाला। प्र० एक प्रत्यय जो संख्या-वाचक विशेषणोंके पीछे प्रकार, खंड, बारके अर्थमें जोड़ा जाता है–जैसे बहुधा, शतधा आदि।

धाइ†–स्त्री० दे० 'धाय'।

धाई–स्त्री० दे० 'धाय'।

धाउ–पु० एक प्रकारका नाच।

धाऊ-† पु० धव वृक्ष; * हरकारा।

धाक–स्त्री० दबदबा, आतंक; ख्याति, शोहरत। पु० ढाक, पलाश; (सं०) बैल; हौज; पात्र; आहार, भात; खंभा; सहारा, अवलंब; ब्रह्मा। मु० **–जमना, -बँधना**–रोब जमना।

धाकना*–अ० क्रि० धाक जमाना।

धाकर–पु० अकुलीन ब्राह्मण; राजपूतोंकी एक जाति; पंजाबका एक गेहूँ जो बिना पानीके पैदा होता है।

धागा–पु० डोरा, तागा।

धाटी-स्त्री० (सं०) आक्रमण, हमला।

धाड़–स्त्री० चिल्लाकर रोनेका शब्द; विलाप; दहाड़; दाढ़; झुंड, जत्था; डाकुओंका छापा या धावा। मु० **–मारना**– चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

धाड़ना–अ० क्रि० दहाड़ना।

धाड़स–पु० ढाढ़स, तसल्ली, सांत्वना।

धाड़ी-पु० दे० 'ढाढी'।

धाणक–पु० (सं०) एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा, दीनारका अंश।

धात-स्त्री० दे० 'धातु'।

धातकी–स्त्री० (सं०) धवका फूल।

धातविक–वि० (सं०) धातुसे बना हुआ; धातु-संबंधी।

धाता(तृ)–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु; शिव; सप्तर्षि; आत्मा; वायुके ४९ भेदोंमेंसे एक; सूर्यके १२ भेदोंमेंसे एक; भृगु ऋषिके एक पुत्र; ब्रह्माके एक पुत्र; व्यवस्था करनेवाला; रक्षक; उपपति। वि० धारण करनेवाला; पोषण करनेवाला। **–(तृ)पुत्र**–पु० सनत्कुमार। **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० धातकी।

धातु-स्त्री० (सं०) सोना, चाँदी आदि अपार-दर्शक खनिज पदार्थ; रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र–ये सात शरीरस्थ पदार्थ; वात, पित्त और कफ; वीर्य; शब्द आदि जो आकाशके गुण हैं; पंचमहाभूत; पदोंकी प्रकृति, शब्दोंका मूल रूप–जैसे 'भाव'की भू, 'कर्ता'की कृ(व्या०); परमात्मा; अस्थि; इंद्रिय; भाग, खंड। **-कर्म**–पु० धातु सम्बन्धी विज्ञान; विशेषतया अयस्कसे शुद्ध अवस्थामें धातुको प्राप्त करनेका तकनीकी ज्ञान; दे० 'धातुविज्ञान'। **–काशीस,–कासीस**–पु० कसीस। **–कुशल**–वि० धातुके काममें निपुण। **-क्षय**–पु० शरीरके तत्त्वोंका क्षय; वीर्य हानि; क्षयरोग। **–गर्भ,-गोप**-पु० बुद्ध आदि महात्माओंकी अस्थि रखनेका डिब्बा (बौ०)। **–घ्न**–वि० जो धातुओंका मारक हो। पु० काँजी। **–ज**–पु० खनिज या शैलज तेल। **–द्रावक**–पु० सुहागा। **–नाशक**–वि०, पु० दे० 'धातुघ्न'। **–प**-पु० शरीरमें खाद्य पदार्थसे बननेवाला पहला रस। **–पुष्टि**–स्त्री० धातुओंका पोषण। **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० धवका फूल। **–भृत्**-पु० पर्वत। **–मर्म**–पु० दे० 'धातुवाद'। **–मल**–पु० केश, नख, कफ आदि जो शरीरस्थ धातुओंके मलके रूपांतर हैं; सीसा, धातुओंको गलानेपर निकलनेवाला निरर्थक पदार्थ (स्लैग)। **–माक्षिक**–पु० एक उपधातु, सोनामक्खी। **-मारिणी**–स्त्री० सुहागा। **–मारी(रिन्)**–पु० गंधक। **-राग**-पु० धातुओंसे निकला हुआ रंग जैसे–गेरू। **–राजक**–पु० (शरीरस्थ) धातुओं-का राजा, वीर्य। **–रेचक**–वि० जो वीर्यका रेचन करे। **–वर्द्धक**-वि० वीर्यको बढ़ानेवाला। **–वल्लभ**–पु० सुहागा। **–वाद**–पु० रासायनिक क्रिया द्वारा सोना-चाँदी आदि बनानेकी विद्या, कीमियागरी। **–वादी(दिन्)**-पु० धातुवादका ज्ञाता, कारंधमी। **–विज्ञान**–पु० (मेटलर्जी) धातु तैयार करने, उन्हें परिष्कृत या शुद्ध करने आदिका वर्णन करनेवाला शास्त्र। **–वैरी(रिन्)**-पु०

गंधक। **–शेखर**-पु० कसीस; सीसा। **–शोधन,–संभव**–पु० सीसा। **–संज्ञ**–पु० सीसा। **–साम्य**–पु० वात, पित्त, कफकी समावस्था; अच्छा स्वास्थ्य। **–स्तंभक**-वि० जो वीर्यका स्तंभन करे। **–हा(हन्)**–पु० गंधक।

धातुक–पु० (ओर) अपरिष्कृत या कच्ची धातु, अयस्क।

धातुमत्ती–स्त्री० (सं०) धातुमान् होनेका भाव।

धातुमय–वि० (सं०) जिसमें खनिज पदार्थोंका प्राचुर्य हो; खनिज पदार्थोंसे भरा हुआ।

धातुमान्(मत्)–वि० (सं०) जिसमें या जिसके पास धातुएँ हों।

धातू–स्त्री० दे० 'धातु'।

धातूपल -पु० (सं०) खड़िया मिट्टी, दुधिया।

धात्र–पु० (सं०) पात्र।

धात्रिका–स्त्री० (सं०) आमलकी।

धात्री–स्त्री० (सं०) धाय, उपमाता; पृथ्वी; माता; आँवला। **–कर्म(न्)**–पु० धायका काम। **–पत्र**–पु० तालीशपत्र; आँवलेका पत्ता। **–पुत्र**–पु० धायका बेटा; नट। **–फल**–पु० आँवला। **–विद्या**–स्त्री० प्रसव करानेकी विद्या।

धात्रेयिका, धात्रेयी–स्त्री० (सं०) धायकी बेटी; धाय।

धात्वर्थ–पु० (सं०) धातु (पद या शब्दकी प्रकृति)से निकलनेवाला अर्थ।

धात्विक मूल्य–पु० (इंट्रिंजिक वैलू) किसी सिक्के आदिका वास्तविक मूल्य–वह मूल्य जो बाजारभावके अनुसार उसमें मिली हुई धातुका मूल्य हो और जो उसपर अंकित मूल्यसे कम या अधिक हो सकता है।

धात्वीय–वि० (सं०) धातुका बना हुआ; धातु-संबंधी।

धान–पु० (सं०) आधार; पोषण; (हिं०) एक प्रसिद्ध अन्न जिसका चावल प्रधान खाद्योंमें गिना जाता है, तुषयुक्त चावल, शालि; इसका पौधा। **–जई**–स्त्री० (हिं०) धानका एक भेद। **–पान**–पु० (हिं०)विवाहके पहलेकी एक रस्म जिसमें वरपक्षकी ओरसे कन्याके घर धान और हल्दी भेजते हैं।

धानक–पु० (सं०) धनिया; एक प्राचीन परिमाण; ✻ धनुर्द्धर, धानुष्क; धुनिया।

धाना–स्त्री० (सं०) भूना हुआ जौ या चावल; सत्तू; धनिया; अनाज; अंकुर। **-चूर्ण**–पु० सत्तू। **–भर्जन**–पु० अनाज भूनना।

धाना✻–अ० क्रि० दौड़ना; (ला०) वेगसे चलना; दौड़धूप करना।

धानाका–स्त्री० (सं०) दे० 'धाना'।

धानी–वि० धानकी हरी पत्तीके रंगका, जो रंगमें धानकी हरी पत्ती जैसा हो, हलके हरे रंगका। पु० धानकी हरी पत्तीके रंगका एक रंग, तोतई। स्त्री० एक रागिनी; ✻ धान्य; भूना हुआ जौ; (सं०) आधार, पात्र; अधिष्ठान, स्थान (जैसे राजधानी, यमधानी); पीलूका पेड़; धनिया।

धानुक–पु० धनुर्धर, कमनैत; एक छोटी जाति; इस जातिका आदमी।

धानुर्दंडिक–पु० (सं०) दे० 'धानुष्क'।

धानुष्क-पु० (सं०) धनुर्धर, धन्वी, तीरंदाज।

धानुष्का–स्त्री० (सं०) अपामार्ग, चिचड़ा।

धानुष्य–पु० (सं०) बाँस।

धानेय, धानेयक–पु० (सं०) धनिया।

धान्य–पु० (सं०) अन्न, अनाज; सतुष अन्न; धान; धनिया; चार तिलका एक प्राचीन परिमाण; नागरमोथेका एक भेद। **–कल्क**–पु० अन्नके दानेका छिलका। **–कूट,–कोश,–कोष्टक**–पु० बखार। **–क्षेत्र**–पु० धान्यका खेत। **–चमस**–पु० चूड़ा, चिपिटक। **-चारी(रिन्),–जीवी(विन्)**–पु० पक्षी। **–तुषोद**– पु० काँजी। **–त्वक्(च्)**–पु० अनाज या धानका छिलका। **–धेनु**–स्त्री० अन्नकी राशि जिसे धेनु मानकर दान करते हैं। **–पंचक**–पु० अन्नके पाँच भेद (शालि, व्रीहि, शूक, शिंबी, क्षुद्र); आम, बेल, नागरमोथा और धान्यपंचकको एक साथ उबालकर तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका पाचक पानी जो अतिसारमें दिया जाता है (आ० वे०)। **–पति**–पु० चावल; जौ। **–पानक**-पु० धनियाका पन्ना। **–बीज**–पु० धनिया। **–भोग**–पु० बहुत उपजाऊ भूमि या जागीर (कौ०)। **–माय**–पु० अन्न तौलनेवाला; अनाजका व्यापारी। **–माष**–पु० एक प्राचीन परिमाण। **–मुख**–पु० चीर-फाड़के कामका एक पुराना औजार (सुश्रुत)। **–मूल,–यूष**-पु०,**–योनि**–स्त्री० काँजी। **-राज**–पु० यव, जौ। **–वनि**–स्त्री० अन्नकी राशि। **–वर्ग**–पु० दे० 'धान्यपंचक'। **–वर्धन**–पु० अन्न उधार देनेका व्यवहार जिसमें दिये हुएका सवाया या ड्योढ़ा लेते हैं। **–वाप**–पु० अत्यंत उर्वरा भूमि (कौ०)। **–वीर**–पु० उरद। **–शर्करा**–स्त्री० चीनी मिलाकर तैयार किया हुआ धनियाका पानी। **–शीर्षक**–पु० अनाजके पौधेकी मंजरी। **–शूक**–पु० टूँड़। **–शैल**–पु० अनाजकी बहुत बड़ी राशि जिसे अन्नके पर्वतकी भावनासे दान करते हैं। **–संग्रह**–पु० अन्नका भंडार। **–सार**–पु० कूटा हुआ अनाज, चावल।

धान्या–स्त्री०, **धान्याक**–पु० (सं०) धनिया।

धान्याचल–पु० (सं०) दे० 'धान्य-शैल'।

धान्याम्ल–पु० (सं०) काँजी।

धान्यारि–पु० (सं०) चूहा।

धान्यार्थ–पु० (सं०) धानके रूपमें संपत्ति।

धान्यास्थि–स्त्री० (सं०) भूसी, तुष।

धान्योत्तम-पु० (सं०) शालि, धान।

धान्वंतर्य-वि० (सं०) धन्वंतरि देवताके निमित्त दिया या किया जानेवाला।

धान्व-वि० (सं०) धन्व देशका; धन्व देश-संबंधी।

धान्वन–वि० (सं०) मरुदेशस्थ; मरुदेश-संबंधी।

धाप–पु० कोसका आधा, एक मील; वह फासला जो एक साँसमें दौड़कर पार किया जा सके। स्त्री० तृप्ति, संतोष। **धापभर**–थोड़ी ही दूर।

धापना✻–अ० क्रि० तेज चलना; दौड़ना; तृप्त होना, अघाना–'बातोंके पकवानसे धापा नाहीं कोय'–साखी। स० क्रि० तृप्त करना, संतुष्ट करना।

धाबा–पु० मकानकी हमवार छत; ऐसी छतवाला मकान; बासा, होटल, 'ढाबा'।

धाभाई–पु० दूध-भाई।

धाम–पु० (सं०) एक देववर्ग।

धाम(न्)–पु० (स०) गृह, घर; वासस्थान, अधिष्ठान; किरण, तेज, प्रभा; प्रताप, प्रभाव; वह स्थान या लोक जहाँ किसी देवताका निवास हो; देवस्थान; पारिवारिक सदस्य; सेना; समूह; अवस्था; वर्ग; शरीर, तन; जन्म; परमेश्वर; फालसेकी जातिका एक वृक्ष। **–केशी(शिन्)**–पु० सूर्य। **–अच्छद**–पु० अग्नि। **–निधि**-पु० सूर्य। **–भाक(ज्)**–पु० यज्ञस्थानमें भाग लेनेवाला देवता। **–श्री**–स्त्री० एक रागिनी।

धामक–पु० (स०) एक तौल, माशा।

धामक-धूमक–स्त्री० धूम-धाम, ठाट-बाट।

धामन -पु० एक पेड़; एक प्रकारका बाँस।

धामनिका, धामनी–स्त्री० (सं०) दे० 'धमनी'।

धामस-धूमस–स्त्री० धूम-धाम; जंजाल।

धामार्गव–पु० (सं०) चिचड़ा; घीयातोरी।

धामिन–पु० एक तरहका साँप जिसकी पूँछमें विष रहता है।

धामिया–पु० एक पंथ; इस पंथका आदमी।

धायँ–स्त्री० गोला-गोली दगनेका शब्द (इसका प्रयोग प्रायः 'से'के साथ होता है)। **–धायँ**–अ० लगातार 'धायँ'की आवाजके साथ; इस प्रकार (जलना) कि लपटें ऊपर उठें (जैसे–चिता 'धायँ-धायँ' जल रही है)।

धाय–स्त्री० बच्चेको दूध पिलाने और उसकी देख-भाल करनेके लिए नियुक्त स्त्री, उपमाता, धात्री। पु० धव वृक्ष। वि० (सं०) दे० 'धायक'।

धायक–वि० (सं०) धारण करनेवाला; धावक।

धाया-स्त्री० दे० 'धाय'; (सं०) एक अग्निमंत्र।

धाय्य–पु० (सं०) पुरोहित।

धार–पु० (सं०) जमा किया हुआ वर्षाका जल जो बड़ा गुणकारी होता है; धाराके रूपमें जलका बरसना, जोरकी वर्षा; ऋण; विष्णु; ओला; सीमा; एक तरहका पत्थर; गहरा स्थान। वि०

धारण करनेवाला; सहारा देनेवाला; बहनेवाला । स्त्री० (हिं०) तलवार आदिका वह तेज किनारा जिससे कुछ काटते हैं, बाढ़; किसी द्रव पदार्थके गिरने या बहनेकी परंपरा, प्रवाह, स्रोत; आक्रमण, छापा, डाका; सेना, फौज; देवी या पवित्र नदी आदिको दिया जानेवाला अर्घ्य; इस अर्घ्यकी सामग्री । * अ० ओर, तरफ–'महरि पैठत सदन भीतर छींक बाईं धार'–सूर । **–दार–**वि० (हिं०) धारवाला, जिसमें धार हो । मु० **–बँधना–**इस प्रकार गिरना कि धार बन जाय; मंत्र आदिके प्रयोगवश किसी हथियारकी काटनेकी शक्तिका कुंठित हो जाना । **–बाँधना–**इस प्रकार गिराना कि धार बँध जाय; मंत्र आदिकी शक्तिसे किसी हथियारकी काटनेकी शक्तिको कुंठित कर देना ।

धारक–वि० (सं०) धारण करनेवाला । पु० वह जो धारण करे; ऋण लेनेवाला, कर्जदार; वह वस्तु जिसमें कोई वस्तु रखी जाय, पात्र; कलश, घड़ा; संदूक आदि ।

धारका–स्त्री० (सं०) योनि, भग ।

धारण–पु० (सं०) किसी वस्तुको ग्रहण करना या उसका आधार बनना, पकड़ना, थामना या लेना, आधान; पहनना; ऋण या उधार लेना; अवलंबन, ग्रहण या स्वीकार करना; खाना या पीना; सुरक्षित रखना, बनाये रखना, रक्षण, पालन; स्मरण रखना, मस्तिष्कमें सुरक्षित रखना; मनका निरोध; शिव; स्तन ।

धारणक–पु० (स०) ऋणी, कर्जदार ।

धारणा–स्त्री० (सं०) ग्रहण, रक्षण, पालन आदि करनेकी क्रिया; मस्तिष्कमें कोई वस्तु धारण करनेकी शक्ति; यम, नियम आदि योगके आठ अंगोंमेंसे एक; पूरक, रेचक और कुंभक प्राणायामों द्वारा प्राणका निरोध; न्यायपक्षमें स्थित रहना, मर्यादा, स्थिति; विचार, निश्चित मति; एक वृष्टिसूचक योग (वृ० सं०) । **–योग–**पु० प्रगाढ़ समाधि । **–शक्ति–**स्त्री० मस्तिष्कमें ग्रहण करनेकी शक्ति ।

धारणावधि–स्त्री० (टेन्यूर) वह समय या अवधि जबतक कोई पद, संपत्ति आदि धारण की जाय या उसका उपभोग किया जाय, भूधृति, पदावधि ।

धारणावान्(वत्)–वि० (सं०) मेधावी ।

धारणिक–पु० (सं०) ऋण, कर्जदार; धन जमा करनेकी कोठी ।

धारणी–स्त्री० (सं०) स्थिरता; सिरा; धमनी; श्रेणी, पंक्ति; बुद्धोंका एक मंत्र ।

धारणीय–वि० (सं०) धारण करने योग्य । पु० धरणीकंद ।

धारन*–वि०, पु० धारण करनेवाला, धारक ।

धारना*–स० क्रि० धारण करना; ऋण लेना ।

धारयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) धारणकर्ता, धारण करनेवाला, धारक ।

धारयित्री–वि० स्त्री० (सं०) धारण करनेवाली । स्त्री० पृथ्वी ।

धारयिष्णु–वि० (सं०) धारण करनेमें समर्थ ।

धारस॑–पु० दे० 'ढाढ़स' ।

धारांकुर–पु० (स०) जलका कण; ओला; बढ़कर सैन्य-दलके आगे जाना ।

धारांग–पु० (सं०) तलवार ।

धारा–स्त्री० (सं०) किसी द्रव पदार्थके बहने या गिरनेकी परंपरा, प्रवाह, धार; वर्षण; तलवार आदिका तेज किनारा; घड़ेमें बना हुआ छेद; घोड़ेकी चाल; सेनाका अग्रभाग; अति वृष्टि; पहाड़का किनारा; उद्यानका घेरा; ख्याति; रात्रि; हरिद्रा; कानका सिरा; वाणी; ऋण; एक प्रकारका पत्थर; समूह; रथका पहिया; उत्कर्ष; मालवनरेश भोजकी राजधानी; जनप्रवाद, अफवाह । **–कदंब–**पु० कदंबका एक भेद । **–गृह–**पु० स्नानागार; वह घर जिसमें फौवारा लगा हो । **–धर–**पु० बादल; तलवार । **–निपात,–पात–**पु० जलधारका गिरना; भारी वृष्टि । **–नियंत्रक–**पु० (रीऑस्टैट) विद्युत् पथमें प्रवाहित होनेवाली धाराको घटाने बढ़ानेके निमित्त प्रयुक्त होनेवाला विद्युत् उपकरण । **–प्रवाह–**वि० धारारूपमें अविराम गतिसे बहने या चलनेवाला (भाषण इ०) । अ० अविराम गतिसे; अविच्छिन्न रूपमें । **–फल–**पु० मदन नामका वृक्ष । **–यंत्र–**पु० फौवारा; पिचकारी । **–वर्ष,–वर्षण–**पु० अविरल वर्षा, महावृष्टि । **–वाहिक,–वाही-(हिन्)–**वि० अविच्छिन्न गतिवाला; लगातार होने या जारी रहनेवाला । **–विष–**पु० तलवार । **–वेगमापी–**पु० (करेंट-मीटर) नदीकी धाराका वेग सूचित करनेवाला यंत्र । **–संपात–**पु० अविरल वर्षा, महावृष्टि । **–स्नुही–**स्त्री० तिधारा थूहर (सेहुँड़) ।

धारा–स्त्री० दफा; (सेक्शन) किसी अधिनियम आदिका वह स्वतंत्र अंग या भाग जिसमें किसी एक विषयकी सब बातें या आदेश एक साथ सन्निविष्ट हों । **–सभा–**स्त्री० व्यवस्थापिका सभा, कौंसिल ।

धाराग्र–पु० (सं०) बाणका चौड़ा सिरा ।

धाराट–पु० (सं०) चातक पक्षी; घोड़ा; बादल; मतवाला हाथी ।

धारापूत–पु० (सं०) एक प्रकारका पूआ ।

धाराल–वि० (सं०) जिसमें धार हो; धारदार (तलवार आदि) ।

धारावनि–स्त्री० (सं०) वायु ।

धारासार–पु० (सं०) महावृष्टि ।

धारि*–स्त्री० धार; समुदाय, झुंड; सेना ।

धारिणी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; सेमरका पेड़ । वि० स्त्री० धारण करनेवाली; जिसपर किसीका ऋण हो, कर्जदार (स्त्री) ।

धारित–वि० (सं०) धारण किया हुआ; सँभाला हुआ ।

धारिता–स्त्री० (सं०) धारण करनेकी योग्यता, क्षमता; समाई (कैपेसिटी) ।

धारी*–पु० एक वर्णवृत्त । स्त्री० कपड़े आदिपरकी लकीर; * समूह; सेना । **–दार–**वि० जिसमें धारियाँ हों ।

धारी(रिन्)–वि० (सं०) धारण करनेवाला (इसका प्रयोग किसी अन्य शब्दके साथ ही होता है–जैसे जीवधारी, देहधारी); जिसमें पढ़ी हुई बातोंको धारण करनेकी शक्ति हो, धारणावान्; जिसमें धार या किनारा हो । पु० ऋणी, कर्जदार; पीलुका पेड़ ।

धारोष्ण–वि० (सं०) तुरतका दुहा हुआ, ताजा और गरम (दूध) ।

धार्तराष्ट्र–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका पुत्र; धृतराष्ट्र-वंशोद्भव नाग; काली चोंच और काले पैरोंवाला हंस । **–पदी–**स्त्री० हंसपदी लता ।

धार्म–वि० (सं०) धर्म-विषयक, धर्म-संबंधी ।

धार्मपत-वि० (सं०) धर्मपति-संबंधी ।

धार्मिक–वि० (सं०) धर्म-संबंधी; धर्म करनेवाला; क्षमा, दया आदिसे युक्त, पुण्यात्मा, धर्मात्मा, धर्मशील । (स्त्री० 'धार्मिकी ।)

धार्मिण–पु० (सं०) धार्मिक व्यक्तियोंकी मंडली ।

धार्मिणेय–पु० (सं०) धर्मवती स्त्रीका पुत्र ।

धार्मिणेयी–स्त्री० (सं०) धर्मवती स्त्रीकी पुत्री ।

धार्य–वि० (सं०) धारण करने योग्य; सह्य; स्मरण रखने योग्य । पु० पोशाक, वस्त्र ।

धार्ष्टर्य–पु० (सं०) धृष्टता, ढिठाई, उद्दंडता, अविनय ।

धावक–पु० (सं०) धोबी; दूत, हरकारा; हर्षके समयके एक संस्कृत कवि । वि० धोनेवाला, धोबी; बहनेवाला; दौड़नेवाला; तेज चलनेवाला ।

धावन–पु० (सं०) दौड़ना; बहना; हमला करना; धोना; शुद्ध करना; साफ कराना; वह वस्तु जिससे कोई चीज साफ की जाय; दूत, हरकारा । (रन) क्रिकेटमें गेंदपर प्रहार करनेके बाद बल्लेबाज तथा उसके साथीका एक ओरके यष्टित्रयसे दूसरी ओरके यष्टित्रयतक बिना बहिर्गत (आउट) हुए दौड़ लगानेकी क्रिया; इस प्रकार लगायी गयी दौड़की क्रम-संख्या; रन । **–स्थली–**स्त्री० (पिच) क्रिकेटमें दोनों ओरके यष्टित्रयोंके बीचकी भूमि जिसपर, गेंदपर प्रहार करनेके बाद, बल्लेबाज तथा उसका सहयोगी धावन करनेका उपक्रम करता है । **–पथ,–मार्ग–**पु० (रनवे) दे० 'अवतरणपथ' ।

धावना*–अ० क्रि० तेजीसे चलना, दौड़ना ।

धावनि–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी, पिठवन; कटकारी, भटकटैया; * तेजीसे चलने या दौड़नेकी क्रिया अथवा ढंग; आक्रमण, धावा ।

धावनिका–स्त्री० (सं०) कंटकारी ।

धावनी–स्त्री० (सं०) पिठवन; कंटकारी; धातकी ।

धावर*–वि० धवल, सफेद ।

धावरी*-स्त्री० धौरी, श्वेत वर्णकी गाय। वि० स्त्री० उजले रंगकी।

धावल्य–पु० (सं०) श्वेतता, सफेदी।

धावा-पु० किसीको जीतने, लूटने आदिके लिए बहुतसे लोगोंका एक साथ दौड़ पड़ना, चढ़ाई, हमला; दौड़कर जाना। **मु० –करना**–आक्रमण करना, चढ़ाई करना। **–बोलना**-अफसरका फौजको हमला करनेका हुक्म देना; हमला करना। **–मारना**–दूरतक चढ़ाई करना; दूरतक तेज चलकर जाना।

धावित–वि० (सं०) धोया हुआ, मार्जित; गत; दौड़ा हुआ; दौड़ता हुआ।

धाह*–स्त्री० धाड़, चिल्लाकर रोना, विलाप। † आगकी गरमी; छाया। **–देना**–दे० 'धाड़ मारना'।

धाही*–स्त्री० धाय; † आगकी गरमी; छाया।

धिंग*-स्त्री० धींगाधींगी, उपद्रव, शरारत।

धिँगरा–पु० दे० 'धीँगरा'।

धिंगाई*–स्त्री० ऊधम, उपद्रव, शैतानी; कुटिलता, खोटाई।

धिँगाधिंगी–स्त्री० दे० 'धीँगा-धीँगी।

धिंगाना†–अ० क्रि० धींगाधींगी करना, उपद्रव करना।

धिंगी–स्त्री० ऊधम मचानेवाली स्त्री।

धि–पु० (स०) आधार, भांडार (केवल समासांतमें प्रयुक्त–जैसे जलधि)।

धिआ†–स्त्री० वेटी, पुत्री; बालिका।

धिआन*–पु० दे० 'ध्यान'।

धिआना*–स० क्रि० दे० 'ध्याना'।

धिक–अ० दे० 'धिक्'।

धिकना*-अ० क्रि० तपना, गरम होना; तपकर लाल होना।

धिकाना†–स० क्रि० गरम करना, तपाना।

धिक्–अ० (सं०) भर्त्सना, निंदा और घृणाके अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द। **–कार**–पु० 'धिक्' कहकर की गयी भर्त्सना, निंदा या घृणा। **–कृत**–वि० जिसकी भर्त्सना, लानत-मलामत की गयी हो। **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'धिक्कार'। **–पारुष्य**–पु० निंदा, भर्त्सना।

धिक्कारना–स० क्रि० अनुचित बातके लिए किसीके प्रति निंदा और घृणासूचक शब्दोंका प्रयोग करना, लानत-मलामत करना।

धिग*–अ० दे० 'धिक्'।

धिग्दंड–पु० (सं०) दंडरूपमें की गयी भर्त्सना।

धिग्वण–पु० (सं०) एक संकर जाति, ब्राह्मण पिता और आयोगवी मातासे उत्पन्न मनुष्य।

धिप्सु–वि० (सं०) छल करनेकी इच्छा करनेवाला।

धिय*–स्त्री० वेटी, पुत्री; बालिका।

धियांपति–पु० (सं०) बृहस्पति।

धिया–स्त्री० पुत्री, कन्या।

धिरकार†–पु० दे० 'धिक्कार'।

धिरयना*–स० क्रि० दे० 'धिरवना', डाँटना –'सूर नंद बलरामहिं धिरयो, सुनि मन हरप कन्हैया'–सूर।

धिरवना*–स० क्रि० धमकी देना, धमकाना; डाँटना।

धिराना*–स० क्रि० धमकाना, डराना। अ० क्रि० धीमा होना; कम होना, घटना; धैर्य धारण करना।

धिषण–पु० (स०) बृहस्पति; वासस्थान।

धिषणा–स्त्री० (स०) बुद्धि, प्रज्ञा; स्तुति; वाणी; पृथ्वी; प्याली, कटोरी।

धिषणाधिप–पु० (सं०) बृहस्पति।

धिष्ठ्य–पु० (सं०) दे० 'धिष्ण्य'।

धिष्ण्य–पु० (सं०) स्थान; गृह; अग्नि; नक्षत्र; शक्ति; शुक्र ग्रह; शुक्राचार्य; प्राणाभिमानी देवता (वै०); उल्काका एक भेद।

धीँग–पु० दे० 'धीँगरा'।

धीँगड़ा–पु० दे० 'धीँगरा'।

धीँगरा–पु० हृष्ट-पुष्ट मनुष्य; गुंडा। वि० दुष्ट, खल, पाजी।

धीँगा–वि० दुष्ट, पाजी। **–धीँगी,–मुस्ती**–स्त्री० शरारत, दुष्टता।

धींद्रिय–स्त्री० (सं०) दे० 'ज्ञानेंद्रिय'।

धीँवर–पु० दे० 'धीवर'।

धी–स्त्री० वेटी, लड़की; (सं०) बुद्धि, प्रज्ञा; समझ; ज्ञान; कल्पना; विचार; अभिप्राय; भक्ति; यज्ञ; मनोवृत्ति (वै०); न्यायमार्गमें प्रवृत्ति, कर्म; मन (वै०)। **–गुण**–पु० शुश्रूषा, श्रवण आदि बुद्धिके आठ धर्म। **–दा**–स्त्री० मनीषा; पुत्री, कन्या। वि० बुद्धि देनेवाली। **–पति**–पु० बृहस्पति। **–मंत्री-(त्रिन्)**–पु० राय देनेवाला मंत्री, सलाहकार। **-शक्ति**–स्त्री० दे० 'धीगुण'। **–सख,–सचिव**–पु० चतुर मंत्री।

धीआ–स्त्री० वेटी, लड़की।

धीजना*–स० क्रि० विश्वास करना–'उज्जल देखि न धीजिये बग ज्यों माँड़े ध्यान'–साखी; स्वीकार करना। अ० क्रि० धैर्य धरना; संतुष्ट होना; ठहरना–'चाह बढ्यौ चित चाक चढ्यौ सो फिरै तित ही इत नेकु न धीजै'–घन०।

धीत–वि० (सं०) जो पिया गया हो; जिसपर विचार किया गया हो; जो संतुष्ट किया गया हो।

धीति–स्त्री० (स०) पीना, पान; प्यास।

धीम*–वि० दे० 'धीमा'।

धीमर–पु० दे० 'धीवर'।

धीमा–वि० कम वेगवाला, कम गतिवाला, जिसकी चाल तेज न हो, वेगरहित, मंद, मंथर; प्रखरता या तीव्रतासे रहित, प्रचंडका उलटा; (स्वर) जो उच्च या तीव्र न हो, दबा हुआ; जिसका वेग या तेजी कम हो गयी हो; जो बढ़तीपर न हो, कुछ शांत या उतरा हुआ। (स्त्री० 'धीमी'।)

धीमान्(मत्)-वि० (सं०) बुद्धिमान्, प्रज्ञावान्।

धीय†–स्त्री० दे० 'धीया'।

धीया–स्त्री० वेटी, लड़की।

धीर–वि० (सं०) जिसका चित्त विकारजनक कारणोंके रहते हुए भी विचलित न हो, जो जल्दी विचलित न हो सके, धैर्ययुक्त, स्थिर-चित्त; दृढ़; गंभीर; मंद; सबल; उत्साही; नम्र, विनीत; मनोज्ञ, सुंदर। पु० समुद्र; केसर; कुंकुम; पंडित; राजा बलि; ऋषभ नामकी ओषधि; चिदात्मा; बुद्ध; * धैर्य, धीरज, चित्तकी दृढ़ता; संतोष, सब्र। **–चेता (तस्)**–वि० दृढ़, स्थिरचित्त। **–पत्नी**–स्त्री० जमीकंद, धरणीकंद। **–प्रशांत,–शांत**–पु० वह नायक जो वीर और शांत हो। **–ललित**-पु० वह नायक जो धीर और वीर होनेके साथ ही क्रीड़ाप्रिय और चिंतारहित हो।

धीरक*–पु० धीरज, धैर्य।

धीरज*–पु० दे० धैर्य। **-मान**–वि० धैर्यवान्।

धीरता–स्त्री०, **धीरत्व**–पु० (सं०) धीर होनेका भाव या गुण; चित्तकी अविचलता, धैर्य; गंभीरता; संतोष, सब्र; पांडित्य; चातुर्य।

धीरय*–पु० धीरज, धैर्य (बीसल०)।

धीरा–स्त्री० (सं०) व्यंग्य द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०); काकोली; मालकँगनी।

धीराधी–स्त्री० (सं०) शीशमका पेड़।

धीराधीरा–स्त्री० (सं०) रुदन और मुखकी मुद्रा द्वारा कोप प्रकट करनेवाली नायिका (सा०)।

धीरे–अ० मंद गतिसे; मंद स्वरसे; चुपके।

धीरोदात्त–पु० (सं०) आत्मश्लाघासे रहित, क्षमाशील, धीर, विनम्र और दृढ़व्रत नायक–जैसे रामचंद्र, युधिष्ठिर आदि (सा०)।

धीरोद्धत–पु० (सं०) क्रोधी, चपल, अहंकारी और विकत्थन नायक (सा०)।

धीरोष्णी(ष्णिन्)–पु० (सं०) एक विश्वदेव।

धीर्य–वि० (सं०) कातर (वै०)। * पु० दे० 'धैर्य'।

धीलटि, धीलटी–स्त्री० (सं०) पुत्री, कन्या।

धीवर–पु० (सं०) मछुआ, मल्लाह; लोहा; सेवक; एक प्राचीन देश।

धीवरक–पु० (सं०) मल्लाह।

धीवरी–स्त्री० (सं०) धीवरकी स्त्री; बड़ी मछली मारनेका एक तरहका बर्छा; मछलीकी टोकरी।

धुँआँ–पु० दे० 'धुआँ'।

धुँआरा–वि० धूमिल, जो धुएँसे मैला हो गया हो; धुआँ निकलनेके

लिए छतमें बना छिद्र, धुंधका ।

धुंई†-स्त्री० दे० 'धूनी' ।

धुंकार–स्त्री० दे० 'धुकार' ।

धुंगार–स्त्री० बघार, छौंक ।

धुंगारना–स० क्रि० बघारना, छौंकना; खूब पीटना ।

धुंज*–वि० अस्पष्ट, धुंधला; मंद ज्योतिवाला ।

धुंद-स्त्री० दे० 'धुंध' ।

धुंध–स्त्री० आकाशमें बहुत अधिक गर्द छा जानेसे होनेवाला अँधेरा; आँखका एक रोग जिसमें ज्योति मंद पड़ जानेसे चारों ओर धुंध जैसा दिखाई देता है ।

धुंधका-पु० धुआँ निकलनेका छिद्र, धुआँकश ।

धुंधकार–पु० अंधकार; गर्जन ।

धुंधमार, धुंधमाल–पु० दे० 'धुंधुमार' ।

धुंधर, धुंधरि* -स्त्री० गर्द; धुएँ, धूल आदिके कारण होनेवाला अंधकार ।

धुँधराना, धुँधलाना*-अ० क्रि० धुँधला पड़ना; काला या अंधकार-युक्त होना ।

धुँधला–वि० धुएँके रंगका, हलका स्याह; अस्पष्ट, अँधेरा । **–ई**–स्त्री०,**–पन**–पु० धुँधला होनेका भाव ।

धुँधली–स्त्री० अँधेरा; नजरकी कमजोरी ।

धुँधाना*–अ० क्रि० धुआँ देना ।

धुँधार*–वि० धूमिल; धुआँधार ।

धुंधि*–स्त्री० दे० 'धुंध' ।

धुँधियारा*–वि० दे० 'धुँधला' ।

धुंधु–पु० (सं०) एक राक्षस जिसे कुवलयाश्व नामके राजाने मारा था (हरिवंश) । **–मार**–पु० राजा वृहदश्वके पुत्र कुवलयाश्व जिन्होंने धुंधु राक्षसका वध किया था; इंद्रगोप; मकानसे निकलनेवाला धुआँ ।

धुँधुकार–पु० धुंकार; अँधेरा, धुँधलापन ।

धुंधुरि*–स्त्री० धुएँ, धूल आदिके कारण छाया हुआ अंधकार ।

धुंधुरित–वि० धुंधला बनाया हुआ; जिसकी नेत्रज्योति कम हो गयी हो, मंददृष्टि ।

धुँधुरी–स्त्री० धुंध; धुँधलापन; आँखका एक रोग ।

धुंधुवाना*–अ० क्रि० धुआँ देना; थोड़ा-थोड़ा करके जलना ।

धुंधेरी–स्त्री० दे० 'धुंधुरि' ।

धुँवाँ–पु० दे० 'धुआँ' । **–कश**–पु० दे० 'धुआँकश' । **–दान**–पु० धुंधका । **–धार**–वि०, अ० दे० 'धुआँधार' ।

धु–स्त्री० (सं०) कंपन ।

धुअ*-पु० दे० 'ध्रुव' ।

धुआँ–पु० सुलगती या जलती हुई लकड़ी आदिसे निकलनेवाला भाप जैसा हलका काला पदार्थ, धूम; * विनाश–'धुआँ देखि खरदूखन केरा'–रामा० । **–कश**–पु० दे० 'स्टीमर', अगिनबोट; धुआँ निकलनेके लिए छतमें बनाया गया छेद, चिमनी । **–धार**–वि० जोरदार, घोर, भीषण (वर्षा, भाषण); धुएँसे भरा हुआ; काला । अ० लगातार और बड़े वेगसे, बड़े जोरसे । मु० **–देना**–धुआँ छोड़ना या निकालना; धुआँ पहुँचाना । **–निकालना या काढ़ना**–लंबी-चौड़ी बातें करना । **–सा मुँह होना**–विवर्ण होना, चेहरेका रंग उतर जाना; अत्यंत लज्जित होना । **–होना (किसी वस्तुका)**–एकदम काला हो जाना । **–(एँ)का धौरहर**–क्षणस्थायी वस्तु । **–के वादल उड़ाना**–लंबी-चौड़ी बातें करना ।

धुआँना–अ० क्रि० धुएँसे बस जाना, अधिक धुएँवाली आँचसे पकनेके कारण धुएँकी गंधसे व्याप्त हो जाना ।

धुआँयँध–वि० जिसमें धुएँकी-सी गंध हो ।

धुआँरा–पु० दे० 'धुआँकश', धुंधका ।

धुआँस†–स्त्री० दे० 'धुवाँस' ।

धुआँसा–पु० धुएँकी कालिख, धुआँ लगनेसे पड़नेवाली कालिख । वि० धुआँया हुआ ।

धुकड़ पुकड़–पु० भय, शंका आदिसे मनका डावाँडोल होना, धकधकी ।

धुकधुकी–स्त्री० छाती और पेटके बीचका कुछ गहरा स्थान जहाँ धड़कन होती रहती है, कलेजा–'मिलनि विलोकि भरत रघुबरकी । सुर गन सभय धुकधुकी धरकी'–रामा०; धड़कन; गलेका एक गहना, पदिक ।

धुकना*–अ० क्रि० झुकना, नत होना; काँपना; टूट पड़ना, झपटना ।

धुकनी†–स्त्री० दे० 'धूनी'; धूकनेकी क्रिया ।

धुकान*–स्त्री० दे० 'धुकार' ।

धुकाना*–स० क्रि० गिराना; नवाना, झुकाना; धुआँ देकर गरमी पहुँचाना । अ० क्रि० काँपना, डरना ।

धुकार*–स्त्री० नगाड़ेकी आवाज; गड़गड़ाहट ।

धुकारी*–स्त्री० दे० 'धुकार' ।

धुक्कना*–अ० क्रि० झुकना; झपटना ।

धुक्कारना*–स० क्रि० गिराना; झुकाना ।

धुगधुगी–स्त्री० दे० 'धुकधुकी' ।

धुज*–पु० दे० 'ध्वज' ।

धुजा*–स्त्री० दे० 'ध्वजा' ।

धुजिनी*–स्त्री० ध्वजिनी, सेना, फौज ।

धुड़ंगी*–वि० नंगा (व्यक्ति); जिसके शरीरमें धूल पुती हो; धूलिधूसर और नंगा (व्यक्ति) ।

धुत–वि० (सं०) हिलाया हुआ, कंपित; त्यक्त । अ० (हिं०) दे० 'दुत' । **–कार**–पु० (हिं०) दे० 'दुतकार' ।

धुतकारना–स० क्रि० दे० 'दुतकारना' ।

धुताई*-स्त्री० धूर्तता ।

धुतारा*-वि० दे० 'धूर्त' ।

धुतू-पु० दे० 'धूतू' ।

धुतूरा–पु० दे० 'धतूरा' ।

धुत्त†–वि० निश्चेष्ट, बुत, नशेमें बेसुध–'पियें और धुत्त पड़े रहें'–जिंदगी ।

धुधुका†–पु० सिंगा ।

धुधुकार–स्त्री० 'धू-धू'की आवाज; घोर शब्द ।

धुधुकारी–स्त्री० दे० 'धुधुकार' ।

धुधुकी–स्त्री० दे० 'धुधुकार' ।

धुन–स्त्री० किसी कार्यमें बराबर लगे रहनेकी प्रवृत्ति, लगन; मनकी लहर, मौज; विचार, चिंतन; स्वरके आरोह-अवरोहकी दृष्टिसे गानेका विशेष ढंग, स्वरभंगी; एक राग; दे० 'ध्वनि' । मु० **–का पक्का**–आरंभ किये हुए कामको पूरा करके छोड़नेवाला, फलोदयतक कर्म करनेवाला ।

धुनक* -पु० धनुष; धनुर्धर ।

धुनकना-स० क्रि० दे० 'धुनना' ।

धुनकी–स्त्री० धुनियोंका रुई धुननेका धनुष्के आकारका औजार, फटका; लड़कोंके खेलने या थोड़ी-बहुत रुई धुननेके कामका छोटा धनुष् ।

धुनना–स० क्रि० रुईकी धुनकीसे इस प्रकार फटकारना कि गंदगी निकल जाय और रेशोंके फैलनेसे वह फुलफुली हो जाय; बेतरह पीटना; बिना रुके कहते जाना (कुछ मेरी भी सुनोगे, या अपनी ही धुनते जाओगे ?); बिना रुके कोई काम करते जाना ।

धुनवाना–स० क्रि० 'धुनना'का प्रे० ।

धुनाई–स्त्री० धुननेका काम या मजदूरी; गेंदपर बार बार बल्लेसे इतना जबर्दस्त प्रहार जिससे रनोंकी संख्या शीघ्रतासे बढ़े (क्रिकेट); पिटाई; मरम्मत ।

धुनि–स्त्री० 'ध्वनि'; (सं०) नदी । पु० एक असुर; सात मरुतों-मेंसे एक, दे० 'मरुत्' ।

धुनियाँ, धुनिया–पु० रुई धुननेका काम करनेवाला । † स्त्री० धुनकी–'सोनेकी धुनिया रेसमकी है ताँत'–ग्रामगीत ।

धुनी–वि० जिसे किसी बातकी धुन हो, जो किसी धुनमें हो । * स्त्री० दे० 'ध्वनि'; दे० 'धूनी'; (सं०) नदी । **–नाथ**–पु० समुद्र ।

धुपधूप*–वि० दगदगा, साफ, चोखा–'मेरो मन, मेरो अलि, लोचन लै जो गये धुपधूप'–सूर ।

धुपना*–अ० क्रि० धुलना ।

धुपाना†–स० क्रि० धूप दिखाना, सूखने आदिके लिए धूपमें रखना; धूपके धुएँसे सुवासित करना ।

धुपेली–स्त्री० पसीनेसे होनेवाली फुंसी ।

धुप्पस–स्त्री० डराने या धोखेमें डालनेके लिए किया गया काम, झाँसा-पट्टी ।

धुमिलना*–स० क्रि० धूमिल बनाना ।

धुमिला–वि० धुएँके रंगका; धुंधला ।

धुमैला–वि० धूमिल, धुएँके रंगका ।

धुरंधर–वि० (सं०) भार वहन करनेवाला; जोते जाने योग्य; जिसके ऊपर किसी कार्यका भार हो; किसी कामके होनेमें जिसका सबसे अधिक हाथ हो; उत्तम गुणोंसे युक्त; श्रेष्ठ; अग्रगण्य; प्रधान । पु० बैल आदि जो गाड़ीमें जोते जाते हैं; नेता, अग्रणी; शिव; धवका वृक्ष ।

धुर–पु० (सं०) धुरा; गाड़ीका जूआ; भार, बोझ; धुरेके छोरपर लगनेवाली कील; जमीनकी एक नाप, बिस्वांसी; * ऊँचा स्थान; किला–'धीर धरती न फौज कुतुबके धुरकी'–भूषण; मूल, आरंभ। वि० (हिं०) पक्का । अ० एकदम, (किसीकी) चरम सीमापर । **–ऊपर**–अ० एकदम ऊपर । **–किल्ली**–स्त्री० धुरीमें लगायी जानेवाली एक कील ।

धुरजटी*–पु० दे० 'धूर्जटि' ।

धुरड्डी†–स्त्री० दे० 'धुरेंडी' ।

धुरना*–स० क्रि० पीटना; बजाना; भूसा बनानेके लिए पयालको फिरसे दाँना ।

धुरपद–पु० दे० 'ध्रुवपद' ।

धुरवा*–पु० बादल ।

धुरा–पु० (सं०) लकड़ी या लोहेका वह डंडा जिसके सहारे पहिया घूमा करता है, अक्ष; भार, बोझ ।

धुराधुर*–पु० आधार–'प्रान पपीहनिके घन आनँद होत आए हौ धुराधुर' ।

धुरियाना†–स० क्रि० धूलसे ढँकना ।

धुरियामल्लार–पु० मल्लारका एक भेद ।

धुरी–स्त्री० छोटा धुरा । **–देश,–राष्ट्र**–पु० (एक्सिस कंट्रीज) द्वितीय महायुद्धके पूर्व बनाया गया नात्सी जर्मनी तथा फासिस्ट इटलीका गुट, जिसमें बादमें जापान भी शामिल हो गया था । **–हीनता**–किसी भी निश्चित सिद्धान्तपर अडिग न रहनेकी ढुलमुल स्थिति ।

धुरीण–वि० (सं०) अग्रगण्य, श्रेष्ट, प्रमुख; धुरा धारण करनेवाला; जोते जाने योग्य; (किसी काममें) आगे रहनेवाला; जिसपर किसी कार्यका भार हो । पु० घोड़े आदि जो रथ आदिमें जोते जाते हैं; जिस व्यक्तिपर कार्यका भार हो; अग्रणी, प्रधान पुरुष ।

धुरीन*–वि०, पु० दे० 'धुरीण' ।

धुरीय–वि०, पु० (सं०) दे० 'धुरीण' ।

धुरेंडी, धुलेंडी†–स्त्री० होलिका जलनेके बाद होनेवाले वसंतोत्सवका एक अंग, धूलिवंदन, मदनोत्सव ।

धुरेटना*–स० क्रि० लगाना, पोतना; धूलसे ढकना ।

धुर्–स्त्री० (सं०) बैलों आदिके कंधेपर रखा जानेवाला जूआ; भार, बोझ; रथ आदिका अग्रभाग; चोटी, शीर्षस्थान, अग्रभाग ।

धुर्य–वि० (सं०) दे० 'धुरीण' । पु० विष्णु; बैल; ऋषभ नामकी ओषधि; दे० 'धुरीण' ।

धुर्रा–पु० किसी वस्तुका चूर; कण । मु० **–(र्रे)उड़ा देना**–धज्जी उड़ाना, सर्वथा नष्ट कर देना, मटियामेट कर देना ।

धुलना–अ० क्रि० पानी आदिके योगसे स्वच्छ किया जाना, धोया जाना; पानी पड़नेसे कटकर बह जाना ।

धुलवाना–स० क्रि० दे० 'धुलाना' ।

धुलाई–स्त्री० धोनेकी क्रिया, धोनेकी उजरत ।

धुलाना–स० क्रि० धोनेका काम कराना ।

धुव*–वि०, पु० दे० 'ध्रुव' ।

धुवका–स्त्री० (सं०) गीतका पहला पद, टेक, स्थायी ।

धुवन–पु० (सं०) अग्नि । वि० कंपित करनेवाला ।

धुवाँ–पु० दे० 'धुआँ' । **–कश**–पु० दे० 'धुआँकश' । **–धार**–वि०, अ० दे० 'धुआँधार' ।

धुवाँरा–पु० छतमें बना हुआ धुआँ निकलनेका छेद ।

धुवाँस–स्त्री० उरदका पिसान ।

धुवाना–स० क्रि० दे० 'धुलाना' ।

धुवित्र–पु० (सं०) याज्ञिकोंका अग्नि दहकानेका मृगचर्म आदिका पंखा; ताड़का पंखा ।

धुस्तूर–पु० (सं०) धतूरा ।

धुस्स–पु० ढहे हुए मकानकी मिट्टी-ईंट आदिका ढेर; टीला; नदी आदिके किनारेका बाँध ।

धुस्सा–पु० ऊनका भारी कंबल ।

धूँध*–स्त्री० दे० 'धुंध' ।

धूँधर, धूँधुर*–वि० धुँधला । पु० अँधेरा; उड़ती हुई धूल-राशि ।

धू*–वि० स्थिर । पु० ध्रुव; ध्रुवतारा ।

धूआँ–पु० दे० 'धुआँ' । **–दान**–पु० दे० 'धुवाँरा' ।

धूई–स्त्री० दे० 'धूनी' ।

धूक–पु० कलाबत्तू बटनेकी सलाई; (सं०) वायु; अग्नि; धूर्त मनुष्य; काल, समय ।

धूकना†–अ० क्रि० वेगसे आगे बढ़ना । स० क्रि० धुआँ देना; धुआँ पहुँचाकर केले आदिको पकाना ।

धूजट*–पु० दे० 'धूर्जटि' ।

धूजना–अ० क्रि० हिलना, काँपना ।

धूत*–वि० धूर्त, छली, पाखंडी, वंचक; (सं०) हिलाया हुआ; छोड़ा हुआ, दूर किया हुआ, त्यक्त; डाँटा हुआ, झिड़का हुआ, धमकाया हुआ, भर्त्सित; विचारित । **–कल्मष,–पाप**–वि० पापरहित, निष्पाप । **–पापा**–स्त्री० काशीखंडोक्त एक नदी ।

धूतना*–स० क्रि० धूर्तता करना, दगा करना, छलना, वंचना करना ।

धूता–स्त्री० (सं०) पत्नी ।

धूताई*–स्त्री० धूर्तता, चालाकी–'साँची कहहु देहु स्रवननि सुख, छाँडहु जिया कुटिल धूताई'–सूर ।

धूति–स्त्री० (सं०) हिलना, कंपन; हवा करना; हठयोगमें शरीर-शुद्धिकी एक क्रिया ।

धूती–स्त्री० एक चिड़िया ।

धूतुक, धूतू–पु० तुरही; नरसिंगा ।

धूधू–पु० आगके जोरसे जलनेका शब्द ।

धून–वि० (सं०) हिलाया हुआ, कँपाया हुआ; प्यास या तापसे ग्रस्त ।

धूनक–पु० (सं०) हिलानेवाला; कंपित करनेवाला; राल ।

धूनन–पु० (सं०) हवा; कंपन; क्षोभ ।

धूनना–स० क्रि० रुई साफ और फुलफुली करना, धुनना; * देवता आदिके निमित्त धूप आदिको आगमें जलाना, धूनी आदि ।

धूना–पु० एक पेड़ या उसका गोंद जो धूनी देने तथा वारनिश तैयार करनेके काम आता है ।

धूनि–स्त्री० (सं०) कँपाने, हिलानेकी क्रिया ।

धूनी–स्त्री० किसी देवताके आघ्रापणके निमित्त आगमें डाले गये गुग्गुल आदिका धुआँ; ठंडसे बचने या शरीरको तपानेके लिए साधुओं द्वारा अपने पास जलायी जानेवाली आग । मु० **–जगाना, –रमाना**–साधुओंका तपके लिए आगको अपने पास जलाये रखना; योगी होना, विरक्त होना ।

धूप–पु० (सं०) देवताके आघ्रापणके लिए या सुगंधके निमित्त जलाये गये गुग्गुल आदिका धुआँ; गुग्गुल आदि गंधद्रव्य (इसके पाँच भेद हैं–(१) निर्यास, (२) चूर्ण, (३) गंध, (४) काष्ठ और (५) कृत्रिम) । **–दान**–पु० (हिं०) धूप रखने या देनेका बरतन । **–दानी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'धूपदान' । **–पात्र**–पु० दे० 'धूपदान' । **–बत्ती**–स्त्री० (हिं०) सुगंधके लिए जलायी जानेवाली एक प्रकारकी मसाला लगी हुई सींक । **–वास**–पु० गंध-द्रव्यके धुएँसे वासना । **–वृक्ष**–पु० एक पेड़ जिससे गुग्गुल निकलता है, सरल वृक्ष ।

धूप–स्त्री० आतप, घाम, सूर्यका प्रकाश, सूर्यकी गरमी; दौड़ (दौड़के साथ प्रयुक्त) । **–घड़ी**–स्त्री० एक यंत्र जिससे धूपके सहारे समयका ज्ञान होता है । **–छाँह**–स्त्री० एक तरहका कपड़ा जिसमें कई रंग दिखाई देते हैं । मु० **–खाना**–धूपमें सूखना अथवा सुखाया या फैलाया जाना; धूप लगनेके लिए बाहर बैठना आदि । –

खिलाना,–दिखाना–धूप लगनेके लिए बाहर रखना । **–निकलना**–सूर्यका प्रकाश फैलना ।

धूपक, धूपिक–पु० (सं०) धूप बेचनेवाला; गंधी ।

धूपन–पु० (सं०) धूप देनेका कार्य; गंधद्रव्य ।

धूपना–अ० क्रि० दौड़ना (समासमें प्रयुक्त) । * स० क्रि० धूप देना, गंधद्रव्य जलाना; धूपसे वासना ।

धूपांग–पु० (सं०) सरल वृक्ष ।

धूपायित-वि० (सं०) दे० 'धूपित' ।

धूपित–वि० (सं०) धूपसे बासा हुआ; तप्त; थका हुआ ।

धूम–पु० (सं०) धुआँ; कुहरा; धूमकेतु; उल्कापात; बादल; अपचके कारण आनेवाली डकार; मकान बनानेके लिए तैयार किया गया स्थान; एक ऋषि । **–केतन**–पु० अग्नि (जिसके अस्तित्वके अनुमानका चिह्न धुआँ है); धूमकेतु । **–केतु**–पु० अग्नि; पुच्छल तारा; केतु ग्रह; रावणकी सेनाका एक भट । **–गंधिक**-पु० रोहिष तृण । **–ग्रह**–पु० राहु । **–ज**–पु० बादल; मोथा । **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० वह मनुष्य जिसे चारों ओर धुँधला दिखाई देता हो । **–ध्वज**–पु० अग्नि । **–प**–वि० केवल होमका धुआँ पीकर रहनेवाला (तपस्वी) । **–पट**–पु० दे० 'धूमावरण' । **–पथ**–पु० धुआँ निकलनेका झरोखा; पितृयान । **–पान**–पु० दंतरोग, नेत्ररोग, व्रण आदिमें विशिष्ट वस्तुओं, ओषधियोंको चिलमपर चढ़ाकर गाँजे आदिकी तरह पीना; तमाकू, गाँजा आदि पीना । **–पोत**–पु० जहाज, अग्निबोट । **–प्रभा**–स्त्री० एक नरक । **–प्राश**–वि० दे० 'धूमप' । **–महिषी**–स्त्री० कुहरा, कुज्झटिका । **–यान**-पु० रेलगाड़ी । **–योनि**–पु० बादल । **–ल**–वि० धुएँके रंगका, मटमैला । पु० एक तरहका वाद्ययंत्र । **–लता**–स्त्री० कुंचित धूमराशि । **–संहति**–स्त्री० धूमराशि । **–सार**–पु० मकानका धुआँ ।

धूम–स्त्री० तैयारीके साथ किये जानेवाले किसी बड़े काम या उत्सवका शोर; हल्लागुल्ला, उपद्रव; शुहरत, प्रसिद्धि; चर्चा; ठाट; तैयारी, समारोह । * अ० तेजीसे । **–धड़क्का**–पु०, **-धाम**–स्त्री० ठाट-बाट, चहल-पहल, समारोह ।

धूमजांगज–पु० (सं०) वज्रक्षार, नौसादर ।

धूमर, धूमरा*–वि० दे० 'धूमल' ('धूम'के साथ) ।

धूमला-वि० दे० 'धूमल' ।

धूमवान्(वत्)-वि० (सं०) जिससे धुआँ उठता या निकलता हो ।

धूमसी–स्त्री० (सं०) उरदका बड़ा; उरदका पिसान ।

धूमांग–पु० (सं०) शीशमका पेड़ । वि० जिसका अंग धुएँके रंगका हो ।

धूमाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें धुएँके रंगकी हों । (स्त्री० 'धूमाक्षी' ।)

धूमाग्नि–स्त्री० (सं०) वह आग जिसमें धुआँ ही धुआँ हो, ज्वाला न हो ।

धूमाभ–वि० (सं०) धुएँके रंगका ।

धूमायन–पु० (सं०) धुआँ देना, वाष्प निकलना; ताप ।

धूमायमान–वि० (सं०) धूमसे पूर्ण; जो धुआँ दे रहा हो ।

धूमावती–स्त्री० (सं०) दस महाविद्याओंमेंसे एक ।

धूमावरण-पु० (स्मोक स्क्रीन) तोपें, टैंक तथा सेनाकी गतिविधि आदि छिपानेके लिए फैलाये गये धुएँके बादल ।

धूमिका–स्त्री० (सं०) कुहरा ।

धूमित–वि० (सं०) जिसमें धुआँ लगा हो; जो धुआँ लगनेसे धुँधला हो गया हो । पु० साढ़े बारह अक्षरोंका एक मंत्र (यह दोषयुक्त माना गया है–तं०) ।

धूमिता–स्त्री० (सं०) वह दिशा जिधर सूर्य पहले मुड़ता है ।

धूमिनी–स्त्री० (सं०) अग्निकी एक जिह्वा, अजमीढकी पत्नी (हरिवंश) ।

धूमिल–वि० (सं०) दे० 'धूमल' ।

धूमी(मिन्)–वि० (सं०) जिससे बहुत अधिक धुआँ उठता या निकलता हो । (स्त्री० 'धूमिनी' ।)

धूमोत्थ–वि० (सं०) धुएँसे उत्पन्न । पु० नौसादर ।

धूमोद्गार–पु० (सं०) अपचमें आनेवाली डकार; धुएँका उठना ।

धूमोपहत–पु० (सं०) एक रोग ।

धूमोर्णा–स्त्री० (सं०) यमकी पत्नी ।

धूम्या–स्त्री० (सं०) धूमपुंज ।

धूम्याट–पु० (सं०) एक पक्षी, कलिंग, भृंग ।

धूम्र–पु० (सं०) ललाई लिये काला रंग, कृष्ण-लोहित वर्ण; सिह्लक; लोबान; शिव; एक असुर; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक योग (ज्यो०); पाप; दुष्टता । वि० ललाई लिये काले रंगका; धुँधला । **–कांत**–पु० एक रत्न । **–केश**–पु० राजा पृथुका एक पुत्र । वि० जिसके बाल धुएँके रंगके हों । **–पत्रा**–स्त्री० एक क्षुप, गृध्रपत्रा । **–पान**–पु० (हिं०) दे० 'धूमपान' (असाधु) । **–मूलिका**–स्त्री० शूली नामक तृण । **–रुक्(च्)**––वि० कृष्णलोहित वर्णका । **–लोचन**–पु० कबूतर; शुंभ नामक असुरका एक सेनापति । वि० जिसकी आँखें धूम्रवर्णकी हों । (स्त्री० 'धूम्रलोचना' ।)**–लोहित**–पु० शिव । वि० गाढ़ा लाल । **–वर्ण**–वि० धुएँके रंगका । पु० लोबान; ललाई लिये काला रंग । **–वर्णक**–पु० माँदमें रहनेवाला एक जानवर, लोमड़ी । **–वर्णा**–स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । **–शूक**–पु० ऊँट ।

धूम्रक–पु० (सं०) ऊँट ।

धूम्रा–स्त्री० (सं०) सूर्यकी बारह कलाओंमेंसे एक; दुर्गा; एक तरहकी ककड़ी ।

धूम्राक्ष–वि० (सं०) जिसके नेत्र धूम्रवर्णके हों । (स्त्री० 'धूम्राक्षी' ।) पु० रावणकी सेनाका एक राक्षस ।

धूम्राक्षि-पु० (सं०) वह मोती जिसका रंग भद्दा हो ।

धूम्राट–पु० (सं०) एक शिकारी चिड़िया ।

धूम्राभ-पु० (सं०) वायु; वातावरण ।

धूम्रार्चि–स्त्री० (सं०) अग्निकी (ऊष्मा, ज्वलिनी आदि) दस कलाओंमेंसे एक ।

धूम्राश्व–पु० (सं०) इक्ष्वाकु वंशका एक राजा ।

धूम्रिका–स्त्री० (सं०) शीशमका पेड़ ।

धूम्रीकरण–पु० (फ्यूमिगेशन) (रोगके कीटाणुओंसे मुक्त करनेके लिए या हवाकी गंदगी दूर करनेके लिए) किसी कमरे आदिमें सुगंधित धूम, संक्रमणनाशक गैस आदि प्रसारित करना, प्रधूमन ।

धूर*–स्त्री० दे० 'धूल' । अ० दे० 'धुर' । **–धान**–पु०,**–धानी**–स्त्री० धूलका ढेर ।

धूरजटी*–पु० दे० 'धूर्जटि' ।

धूरत*–वि० दे० 'धूर्त' ।

धूरा–पु० धूल; चूर्ण ।

धूरि*-स्त्री० दे० 'धूल' ।

धूरे*–अ० निकट, पास ।

धूर्जटि–पु० (सं०) शिव ।

धूर्त–वि० (सं०) वंचक, दगाबाज, छल करनेवाला, ठगड़ा, मायावी; लंपट; क्षतिग्रस्त । पु० जुआरी; शठ नायक; खारी नमक; धतूरा; लौहकिट्ट; क्षति पहुँचाना । **–कितव**–पु० जुआरी । **–कृत्**–पु० धतूरा । वि० मक्कार, बे-ईमान । **–चरित**–पु० धूर्तोंका चरित; एक प्रकारका नाटक जिसमें शठ नायकके चरितका वर्णन रहता है, संकीर्ण नाटक । **–जंतु**–पु० मनुष्य । **–मानुषा**–स्त्री० रास्ना लता । **–रचना**–स्त्री० छल-कपट, दुष्टता ।

धूर्तक–पु० (सं०) गीदड़; जुआरी; एक नाग ।

धूर्तता–स्त्री० (सं०) धूर्तका गुण, वंचना, प्रतारणा, छल, दगाबाजी ।

धूर्धर–वि०, पु० (सं०) दे० 'धुरंधर' ।

धूर्वह–वि०, पु० (सं०) भार वहन करनेवाला; कार्यभार सँभालनेवाला । पु० बोझ ढोनेवाला पशु ।

धूर्वी–स्त्री० (सं०) रथका अग्रभाग ।

धूल–स्त्री० मिट्टी आदिका चूर, रज, रेणु; (ला०) अति तुच्छ वस्तु । **–धानी**–स्त्री० धूलका ढेर । मु० (कहीं) **–उड़ना**–तबाह या बरबाद होना, उजड़ जाना, सर्वनाश होना; सुनसान हो जाना । **–उड़ाते फिरना**-मारा-मारा फिरना; जीविकाकी तलाशमें घूमना । **–की रस्सी बटना**–असंभव बातके लिए श्रम करना । **–चाटना**-बहुत दीनता प्रकट करना । **–झाड़ना**–हारकी लाज छोड़ देना । **-फाँकना**–जीविकाके अभावमें दीनावस्थामें इधर-

उधर घूमते फिरना। **–में मिलना**-सर्वथा नष्ट होना; बरबाद होना। **–में मिलाना**–नष्ट करना, मटियामेट करना, बरबाद करना।

धूलक–पु० (सं०) विष, जहर।

धूलि-स्त्री० (सं०) धूल, गर्द, रज। **–कदंब**–पु० कदमका एक भेद, नीप। **–कुट्टिम,–केदार**–पु० जोता हुआ खेत (जिसमें धूलकी प्रधानता रहती है); धुस्स। **–गुच्छक**–पु० अबीर। **–धूसर,–धूसरित**–वि० जो धूल लगनेसे भूरे रंगका हो गया हो। **–ध्वज**–पु० वायु। **–पटल**–पु० धूलका बादल। **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० केतकी।

धूलिका–स्त्री० (सं०) कुहरा, कुज्झटिका; फुहार।

धूवाँ–पु० दे० 'धुआँ'।

धूसर–वि० (सं०) भूरे रंगका, मौलसिरीके रंगका, मटमैला; धूलमें सना हुआ। पु० भूरा रंग; गधा; ऊँट; कबूतर; तेली; भूरे रंगकी कोई वस्तु। **–च्छदा**–स्त्री० श्वेत बुह्ना। **–पत्रिका**–स्त्री० हस्तिशुंडी नामक क्षुप।

धूसरा-वि० धूलके रंगका; धूलसे सना हुआ। धूल लगनेसे मैला। स्त्री० (सं०) पांडुरफली नामक क्षुप।

धूसरित–वि० (सं०) धूसर किया हुआ, धूलमें लिपटा हुआ; भूरे रंगका।

धूसरी–स्त्री० (सं०) किन्नरीका एक भेद।

धूसला*–वि० दे० 'धूसरा'।

धूस्तुर, धूस्तूर–पु० (सं०) धतूरा।

धूहा–पु० दे० 'ढूह', वह पुतला जो चिड़ियों आदिको डरानेके लिए बनाया जाता है।

धृक, धृग*–अ० दे० 'धिक्'।

धृत–वि० (सं०) धारण या ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ; रखा हुआ; गिरा हुआ, पतित; स्थित; तौला हुआ; तैयार किया हुआ। पु० गिरना; स्थिति; ग्रहण; धारण; लड़नेका एक ढंग। **–दंड**–वि० दंड देनेवाला; दंडित। **–दीधिति**-पु० अग्नि। **–राष्ट्र**–पु० दुर्योधनके पिता; वह देश जहाँका राजा या शासक अच्छा हो; एक नाग; काले पैरों और चोंचवाला हंस। **–राष्ट्री**–स्त्री० कश्यपकी एक पुत्री जिससे हंस आदि पक्षी उत्पन्न हुए। **–लक्ष्य**–वि० अपना लक्ष्य प्राप्त करनेके प्रयत्नमें लगा हुआ। **–वर्मा(र्मन्)**–वि० जिसने कवच धारण किया हो। पु० त्रिगर्तनरेश केतुवर्माका अनुज जिसने अर्जुनसे युद्ध किया था। **–व्रत**–वि० जिसने कोई व्रत धारण किया हो। पु० इंद्र; वरुण; अग्नि।

धृतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दृढ़ चित्तवाला, धीर। पु० विष्णु।

धृति–स्त्री० (सं०) धारणा; ग्रहण; पकड़ना; ठहराव; स्थैर्य; धैर्य; तुष्टि; प्रीति; एक योग (ज्यो०); गौरी आदि सोलह मातृकाओंमेंसे एक; मनकी धारणा (इसके तीन भेद हैं–(१) सात्त्विकी, (२) राजसी; (३) तामसी): एक व्यभिचारी भाव (सा०); दक्षकी एक कन्या जो धर्मकी पत्नी है; चंद्रमाकी एक कला।

धृतिमान्(मत्)-वि० (सं०) धैर्यवाला, धीर; संतुष्ट। (स्त्री० 'धृतिमती'।)

धृत्वरी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

धृत्वा(त्वन्)–पु० (सं०) विष्णु; ब्रह्मा; धर्म; आकाश; समुद्र; चतुर आदमी।

धृषित–वि० (सं०) वीर, बहादुर, निर्भीक।

धृषु–वि० (सं०) वीर, बहादुर; दक्ष, चतुर। पु० राशि, समूह।

धृष्ट–वि० (सं०) साहसी; लज्जारहित; ढीठ, उद्दंड; निर्दय; जो अपराध करके भी निःशंक बना रहे, झिड़कनेपर भी लज्जित न हो और दोष प्रकट होनेपर भी बातें बनाता जाय। पु० अपराध करके निःशंक बना रहनेवाला नायक। **–द्युम्न**–पु० राजा द्रुपदका पुत्र जिसने कुरुक्षेत्रमें अश्वत्थामाके शोकमें मग्न द्रोणाचार्यका वध किया था। **–धी**–वि० ढीठ, निर्लज्ज। **–मानी(निन्)**–वि० अपनेको बहुत बड़ा समझनेवाला; ढीठ।

धृष्टता–स्त्री० (सं०) ढिठाई, उद्दंडता; निर्लज्जता; निर्दयता।

धृष्टा–वि० स्त्री० (सं०) असती (स्त्री)।

धृष्टि–पु० (सं०) हिरण्याक्षका एक पुत्र; दशरथके एक मंत्री; एक यज्ञपात्र।

धृष्णक्(ज्)–वि० (सं०) दे० 'धृष्ट'।

धृष्णि–स्त्री० (सं०) किरण।

धृष्णु–वि० (सं०) दे० 'धृष्ट'।

धृष्य–वि० (सं०) धर्षण करने योग्य; आक्रमण करने योग्य, जीतने योग्य।

धेन-पु० (सं०) समुद्र; नद। * स्त्री० दे० 'धेनु'।

धेना–स्त्री० (सं०) नदी; वाणी।

धेनिका–स्त्री० (सं०) धनिया।

धेनु–स्त्री० (सं०) हालकी ब्यायी हुई गाय, दूध देनेवाली गाय; पृथ्वी; भेंट। **–दुग्ध**–पु० गोक्षीर; चिर्भिट। **–दुग्धकर**–पु० गाजर। **–मक्षिका**–स्त्री० दंश, डाँस। **–मुख**–पु० गोमुख नामक बाजा।

धेनुक–पु० (सं०) एक असुर जिसे बलरामने मारा था। **–सूदन**–पु० बलराम।

धेनुका–स्त्री० (सं०) धेनु; हस्तिनी स्त्री; भेंट, उपहार; मादा पशु; धनिया।

धेनुमती–स्त्री० (सं०) गोमती नदी।

धेनुष्या–स्त्री० (सं०) ऋणके बदलेमें बंधक रखी हुई गाय।

धेय–वि० (सं०) धारण करने योग्य, धारणीय; पोषण करने योग्य, पोष्य; पीने योग्य। पु० ग्रहण; पान; पोषण।

धेयना*–स० क्रि० ध्यान करना।

धेरिया†, **धेली**†–स्त्री० लड़की, बेटी–'बड़ेरे बाभनकी धेरिया बड़े बोल बोले'–ग्राम्यगीत।

धेलचा†–पु० दे० 'अधेला'। वि० अधेलेके मूल्यका।

धेला†–पु० दे० 'अधेला'।

धेली†–स्त्री० आधे रुपयेका सिक्का, अठन्नी।

धैत*–स्त्री० धेनु।

धैनव–पु० (सं०) बछड़ा। वि० गायसे उत्पन्न।

धैना*–स्त्री० धंधा; आदत, टेव, रंगढंग।

धैनुक–पु० (सं०) गोसमूह; एक रतिबंध।

धैर्य–पु० (सं०) धीर होनेका भाव, धीरता; विकारोंके कारणोंके रहते हुए भी चित्तके विकृत न होनेका भाव, चित्तकी दृढ़ता, स्थिरता, धीरज; साहस; धृष्टता।

धैवत–पु० (सं०) सप्तकका छठा स्वर (संगीत)।

धैवत्य–पु० (सं०) चातुर्य।

धोंकना*–अ० क्रि० काँपना–'···सिद्धि कँपी ब्रह्मनायक धोंको'–सुदामाचरित्र। स० क्रि० दे० 'धौंकना'।

धोंडाल–वि० ढेलोंसे भरी (जमीन)।

धोंधा–पु० मिट्टीका लोंदा; बेडौल शरीर।

धोई–स्त्री० उड़द या मूँगकी दाल जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो। * पु० राजगीर।

धोकड़ा†–वि० मोटा-ताजा।

धोका–पु० दे० 'धोखा'।

धोख*–पु० दे० 'धोखा'।

धोखा–पु० वस्तुस्थितिको छिपाकर दूसरोंको भ्रममें डालनेका व्यापार, वंचना; वचन, आश्वासन देकर भी अन्यथा आचरण करनेकी क्रिया, विश्वासघात, दगा; झूठी बात या नकली चीजमें विश्वास करनेसे होनेवाला भ्रम, भुलावा; कुछको कुछ समझ लेनेका भाव, मिथ्या प्रतीति; भ्रममें डालनेवाली वस्तु; भूल; गैर-जानकारी; खतरा, जोखिम; खटका, अंदेशा, संशय; कसर, त्रुटि; चिड़ियोंको डरानेके लिए खेतोंमें खड़ा किया जानेवाला मनुष्यके आकारका लकड़ी, पयाल आदिका पुतला, धूहा। **–(खे)बाज**–वि० धोखा देनेवाला, दगा करनेवाला, छलिया, वंचक। **–बाजी**–स्त्री० धोखा देनेका काम या दुर्गुण, छलनेकी चाल; छल, प्रतारणा। मु० **–खाना**–छला जाना, भुलावेमें पड़ना, प्रतारित होना; कुछको कुछ समझ लेना; हानि सहना, नुकसान उठाना। **–देना**–छलना, भुलावेमें डालना; विश्वासघात करना; (ला०) असमय मरकर या नष्ट होकर आशाओंपर पानी

फेर देना या बनती बात बिगाड़ देना। **–पड़ना**–सोचे हुएका उलटा होना, कुछका कुछ होना। **–लगना**–त्रुटि या कसर होना। **–लगाना या लाना**–त्रुटि या कसर करना। **–(खे)की टट्टी**–वह परदा जिसकी आड़में शिकारी किसी जानवरको मारता है; झूठ-मूठमें फँसा रखनेवाली चीज, मायाजाल। **–में आना**–दे० 'धोखा खाना'।

धोटा–पु० दे० 'ढोटा', बेटा।

धोड–पु० (सं०) एक तरहका साँप, डुंडुभ।

धोतर–पु० एक तरहका मोटा कपड़ा। † स्त्री० धोती।

धोतरा*–पु० धतूरा।

धोती–स्त्री० कमर तथा उसके नीचेका शरीरका भाग ढँकनेका लंबा कपड़ा जो लपेटकर पहना जाता है। दे० 'धौति'। मु० **–ढीली होना**–हिम्मत छूटना; भयभीत होना, डर जाना।

धोना–स० क्रि० पानीके योगसे किसी वस्तुपरका मैल दूर करना, जलसे स्वच्छ करना; अलग करना, दूर हटाना, छोड़ देना। मु० **धो बहाना**–दूर करना, हटाना। **(किसी चीजसे) हाथ धो बैठना**–हमेशाके लिए खो देना। **हाथ धोकर पीछे पड़ना**–किसीको तंग करनेके लिए सतत प्रयत्नशील रहना; पूरी तरहसे किसी काममें जुट जाना।

धोप–*स्त्री० तलवार।

धोब–पु० धोये जानेकी क्रिया, धुलाई।

धोबन†–स्त्री० दे० 'धोबिन'।

धोबिघटा–पु० धोबियोंका कपड़ा धोनेका घाट।

धोबिन–स्त्री० धोबीकी स्त्री; धोबी जातिकी स्त्री; एक चिड़िया।

धोबी–पु० कपड़ा धोनेका पेशा करनेवाला, रजक। **–घास**–स्त्री० बड़ी दूब। **–पछाड़,–पाट**–पु० कुश्तीका एक पेच। मु० **–का कुत्ता**–उठल्लू आदमी। **–का छैला**–परायी वस्तुपर गर्व करनेवाला आदमी।

धोम*–पु० धूम, धुआँ।

धोर–पु० नैकट्य; किनारा।

धोरण–पु० (सं०) सवारी, यान, वाहन; तीव्र गमन; घोड़ेकी एक चाल।

धोरणि, धोरणी–स्त्री० (सं०) अविच्छिन्न क्रम, परंपरा।

धोरित–पु० (सं०) घोड़ेकी दुलकी चाल; क्षति पहुँचाना; गमन।

धोरी–पु० धुरा धारण करनेवाला, धुरंधर, साज-सँभार करनेवाला; गाड़ी आदिमें जोते जानेवाले बैल आदि, धुर्य; अग्रणी, धुरीण।

धोरे*–अ० समीप, निकट, किनारे।

धोवत*–पु० धोबी।

धोवती*–स्त्री० धोती।

धोवन–पु० धोनेकी क्रिया या भाव; वह पानी जिसमें या जिससे कोई वस्तु धोयी गयी हो।

धोवा*–पु० धोवन; जल।

धोवाना*–स० क्रि० धुलाना। अ० क्रि० धुलना।

धौं*–अ० एक शब्द जो संशय, विकल्प, आदेश आदिमें प्रयुक्त होता है, न मालूम, न जाने, पता नहीं, कुछ ठीक नहीं, क्या मालूम; या, अथवा, कि; भला, तो।

धौंक–स्त्री० धौंकनेकी क्रिया; गरम हवा।

धौंकना–स० क्रि० आगको तेज करनेके लिए उसपर भाथी, पंखे आदिके द्वारा हवाका झोंका पहुँचाना; भार डालना।

धौंकनी–स्त्री० सोनारोंकी आग दहकानेकी लोहे या बाँसकी नली; भाथी, फुकनी।

धौंका†–पु० लू; गरम हवा।

धौंकिया–पु० भाथी चलानेवाला; भाथी आदि लेकर घूम-घूमकर बरतनोंकी मरम्मत करनेवाला कारीगर।

धौंकी–स्त्री० दे० 'धौंकनी'।

धौंज–स्त्री० दौड़धूप; बेकली, परेशानी, उद्विग्नता।

धौंजना–स० क्रि० रौंदना, पाँवसे कुचलना। अ० क्रि० दौड़-धूप करना।

धौंटा†–बैल, घोड़े आदिकी आँखें ढँकनेकी पट्टी या आवरण, 'अँधियारी'।

धौंस–स्त्री० डाँट-डपट, घुड़की, धमकी; झाँसा-पट्टी; धाक; दे० 'धुवाँस'। **–पट्टी**–स्त्री० भुलावा, झाँसा-पट्टी।

धौंसना–स० क्रि० डाँटना-डपटना, धमकाना, घुड़कना; दंड देना; दबाना; पीटना।

धौंसा–पु० बड़ा नगाड़ा–'प्रकट युद्धके धौंसा बाजें'–छत्र-प्रकाश; बूता, सामर्थ्य।

धौंसिया–पु० धौंसा बजानेवाला; धोखेबाजी करनेवाला; धौंस जमानेवाला।

धौत–वि० (सं०) धोया हुआ, प्रक्षालित; धवल; दीप्त। पु० चाँदी; प्रक्षालन। **–कट**–पु० थैला; सूतका बना थैला। **–कोषज, –कौशेय**–पु० धुला या साफ किया हुआ रेशम। **–खंडी**–स्त्री० मिश्री। **–शिल**–पु० स्फटिक।

धौतय, धौतेय–पु० (सं०) सेंधा नमक।

धौताल*–वि० शरारती–'होरीके दिन चारिकतें तुम भये हो निपट धौताल हो'–घन०।

धौति, धौती–स्त्री० (सं०) आँत साफ करनेकी हठयोगकी एक क्रिया जिसमें कपड़ेकी चार अंगुल चौड़ी और दस पंद्रह हाथ लंबी गीली पट्टीको निगलते और फिर बाहर निकालते हैं; इस क्रियामें काम आनेवाली कपड़ेकी पट्टी।

धौम्य–पु० (सं०) एक ऋषि जो पांडवोंके पुरोहित थे; आयोद ऋषि जिनके शिष्य उपमन्यु, आरुणि और वेद थे; एक ऋषि जो पश्चिम दिशामें तारारूपमें स्थित हैं।

धौम्र–वि० (सं०) धूम्रवर्णवाला, धुएँके रंगका। पु० धूम्र वर्ण।

धौर*–वि० धवल, सफेद। पु० एक पक्षी; सफेद कबूतर।

धौरहर*–पु० दे० 'धरहरा'।

धौरा–वि० धवल, श्वेत, सफेद। पु० सफेद बैल, धव वृक्ष; एक पक्षी।

धौराहर–पु० दे० 'धरहरा'।

धौरितक–पु० (सं०) घोड़ेकी दुलकी चाल।

धौरिय*–पु० गाड़ीमें जोता जानेवाला बैल, धुर्य।

धौरी–स्त्री० उजली गाय; धौरा पक्षीकी मादा। वि० स्त्री० उजली, सफेद।

धौरे*–अ० दे० 'धोरे'।

धौरेय–वि० (सं०) जो धुरा धारण करने योग्य हो; बोझ ढोने योग्य। पु० गाड़ी खींचनेवाला बैल; घोड़ा; प्रधान, नायक।

धौर्तक, धौर्तिक, धौर्त्य–पु० (सं०) दे० 'धूर्तता'।

धौर्य–पु० (सं०) घोड़ेकी दुलकी चाल।

धौल–स्त्री० सिर, कंधे, पीठ आदिपर किया जानेवाला घूँसेकी तरहका भारी आघात; चपत; चपेट, हानि। पु० धवका पेड़; * धौराहर। * वि० धवल। **–धक्कड़**–पु० उपद्रव, दंगा। **–धक्का***–पु० आघात, दबाव, चपेट। **–धप्पड़,–धप्पा**–पु० मारपीट; उपद्रव। **–धूत***–वि० धवल धूर्त, पक्का धूर्त।

धौलहर, धौलहरा*–पु० धरहरा।

धौला–वि० दे० 'धवल'। पु० धव वृक्ष; सफेद बैल। **–ई**–स्त्री० धवलता, उजलापन। **–खैर**–पु० बबूलकी जातिका एक सफेद छिलकेवाला पेड़। **–गिरि**–पु० दे० 'धवलगिरि'।

धौली†–स्त्री० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी खिलौना आदि बनानेके काम आती है।

ध्मांक्ष–पु० (सं०) कौआ; बगुला; बढ़ई; भिक्षुक; निर्लज्ज व्यक्ति। **–जंघा**–स्त्री० काकजंघा, कौआठोंठी। **–जंबु**–पु० काकजंबु। **–तुंडी**–स्त्री० काकनासा लता। **–दंती,–नखी**–स्त्री० काकतुंडी। **–नाशिनी**–स्त्री० हपुषा, हाऊबेर। **–नासा**–स्त्री० काकनासा। **–पुष्ट**–पु० कोकिल। **–माची**–स्त्री० काकमाची। **–वल्ली**–स्त्री० काकनासा।

ध्मांक्षादनी–स्त्री० (सं०) काकतुंडी।

ध्मांक्षाराति–पु० (सं०) उलूक।

ध्मांक्षी–स्त्री० (सं०) कौएकी मादा; शीतलचीनी।

ध्मांक्षोली–स्त्री० (सं०) काकोली।

ध्माकार–पु० (सं०) लोहार।

ध्मात–वि० (सं०) (फूँककर) बजाया हुआ; फुलाया हुआ; क्षुब्ध

किया हुआ।

ध्मान–पु० (सं०) (फूंककर) बजानेकी क्रिया।

ध्मापन–पु० (सं०) फूंककर फुलाना; जलाकर राख करना।

ध्मापित–वि० (सं०) जलाकर राख किया हुआ।

ध्यात–वि० (सं०) ध्यान किया हुआ, सोचा हुआ।

ध्यातव्य–वि० (सं०) दे० 'ध्येय'।

ध्याता(तृ)–वि०, पु० (सं०) ध्यान करनेवाला।

ध्यान–पु० (सं०) किसीके स्वरूपका चिंतन; विषय-विशेषमें चित्तकी एकाग्रता, गौर; सोच, विचार, चिंतन; बुद्धि, समझ; स्मृति, याद, ख्याल; किसी एक विषयपर मनको स्थिर करनेकी क्रिया; चिंतन या धारण करनेकी वृत्ति; चित्त, मन; ध्येय विषयके साथ चित्तके प्रत्ययकी एकतानता (यो०)। **–गम्य**–वि० केवल ध्यानसे प्राप्त होनेवाला। **–तत्पर,–निष्ठ,–पर,–मग्न,–रत**–वि० ध्यानमें लीन, ध्यानमें लगा हुआ। **–योग**–पु० ध्यानरूपी योग; वह योग जिसमें ध्यानकी प्रधानता हो। **–साध्य**–वि० ध्यानसे सिद्ध होनेवाला। **–स्थ**–वि० ध्यानमग्न, ध्यान करता हुआ। मु० **–आना**–स्मरण होना। **–छूटना**–ध्यान भंग होना, चित्तकी एकाग्रता नष्ट होना। **–देना**–चित्तको किसी ओर प्रवृत्त करना; खयाल करना। **–धरना**-किसीके स्वरूपका चिंतन करना; एकाग्रभावसे ईश्वर आदिका चिंतन करना। **–पर चढ़ना**–स्मरण होना, याद होना। **–बँधना**–किसी ओर चित्तका लगा रहना, किसीके चिंतनमें चित्तका एकाग्र होना। **–में न लाना**–चिंता न करना; न विचारना। **–लगाना**–दे० 'ध्यान धरना'। **–से उतरना**–भूलना, विस्मृत होना।

ध्यानना, ध्याना*–स० क्रि० ध्यान करना, बराबर स्मरण करना।

ध्यानाभ्यास–पु० (सं०) ध्यानका अभ्यास, समाधि।

ध्यानावस्थित–वि० (सं०) ध्यानमें लगा हुआ, ध्यानमग्न।

ध्यानिक–वि० (सं०) ध्यान द्वारा सिद्ध होने योग्य, ध्यानसाध्य।

ध्यानी(निन्)–वि० (सं०) ध्यान करनेवाला; जो बराबर परमात्मचिंतन किया करता हो, ध्यानशील।

ध्याम–वि० (सं०) गंदा, मैला; काला। पु० एक तरहका गंधतृण; दमनक।

ध्यामक–पु० (सं०) रोहिष तृण।

ध्येय–वि० (सं०) ध्यान करने योग्य; (वह विषय) जिसका ध्यान रखकर प्रयत्न किया जाय। पु० ध्यानका विषय; उद्देश्य, लक्ष्य।

ध्रम्म*–पु० दे० 'धर्म'।

ध्रुपद–पु० दे० 'ध्रुवपद'।

ध्रुव–वि० (सं०) स्थिर, अचल; निश्चित; अटल, पक्का; सदा एकरूप रहनेवाला, नित्य, शाश्वत। पु० एक प्रसिद्ध बालतपस्वी जो विष्णुके वरसे उत्तर दिशामें अचल ताराके रूपमें मेरुके ऊपर प्रतिष्ठित है; ध्रुवतारा जो सदा उत्तर दिशामें एक स्थानपर स्थित रहता है; पृथ्वीके उत्तरी और दक्षिणी सिरे; आकाश; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; वटवृक्ष; आठ वसुओंमेंसे एक; शरारि नामक पक्षी; स्थाणु, ठूंठ; रोमावर्त, भँवरी; बारहवाँ योग (ज्यो०); उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपदा और रोहिणी नक्षत्र; नासिकाका अग्रभाग; एक यज्ञपात्र; गीतका आरंभिक अंश। **–केतु**–पु० केतु ताराका एक भेद। **–चरण**–पु० रुद्र तालका एक भेद। **–तारक,–तारा**–पु० उत्तर दिशामें मेरुके ऊपर सदा एक स्थानपर स्थित रहनेवाला एक तारा। **–दर्शक**–पु० एक दिशासूचक यंत्र जिसकी सुई बराबर उत्तर दिशाकी ओर रहती है, कुतुबनुमा। **–दर्शन**–पु० एक वैवाहिक प्रथा जिसमें विवाहके बाद वर ध्रुवकी ओर संकेत करते हुए कुछ मंत्र पढ़ता है जिनका अभिप्राय वधूके पक्षमें यह होता है कि तुम ध्रुवकी भाँति अचल रूपसे मेरे गृहमें सुख भोगो। **–धेनु**–स्त्री० दोहनकालमें चुपचाप खड़ी रहनेवाली गाय। **–पद**–पु० एक तरहका गीत। **–मत्स्य**–पु० ध्रुवदर्शक। **–रत्ना**–स्त्री० एक मातृका। **–लोक**–पु० ध्रुवका लोक, वह लोक जहाँ ध्रुवका निवास है।

ध्रुवक–पु० (सं०) गीतका वह आरंभिक अंश जो बराबर दुहराया जाता है, टेक; स्थाणु, ठूंठ।

ध्रुवता–स्त्री०, **ध्रुवत्व**–पु० (सं०) ध्रुव होनेका भाव, अचलता, स्थिरता; निश्चय।

ध्रुवा–स्त्री० (सं०) एक यज्ञपात्र; सरिवन, मूर्वा, मरोडफली; साध्वी स्त्री। वि० स्त्री० दे० 'ध्रुव'।

ध्रुवाक्षर–पु० (सं०) विष्णु।

ध्रुवावर्त–पु० (सं०) घोड़ेके शरीरपरकी बालोंकी भँवरी।

ध्रुवीय–वि० (सं०) ध्रुव संबंधी; ध्रुव प्रदेशका। **–ज्योति**–स्त्री० (ऑरोरा) रंगीन प्रकाशकी चमकका आलोक प्रवाह जो मुख्यतः लाल और हरे वर्णका होता है और उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव प्रदेशोंमें दिखलाई देता है।

ध्रौव्य–पु० (सं०) दे० 'ध्रुवता'।

ध्वंस–पु० (सं०) नाश; मकान या इमारतका ढहना; अभावका एक भेद (न्या०)।

ध्वंसक–वि० (सं०) नाश करनेवाला; ढाहनेवाला।

ध्वंसन–पु० (सं०) ध्वस्त करनेकी क्रिया; ध्वस्त होने या किये जानेकी क्रिया या भाव, नाश; क्षय; गमन।

ध्वंसावशेष–पु० (सं०) खँडहर; (रेकेज) विमान, पोतादिके टूटे-फूटे टुकड़े।

ध्वंसित–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ; हटाया हुआ।

ध्वंसी(सिन्)–वि० (सं०) नाश करनेवाला, नाशक; नष्ट होनेवाला, नश्वर। पु० पीलु वृक्ष।

ध्वज–पु० (सं०) सेना, रथ, देवता आदिका चिह्नभूत पताकायुक्त या पताका-रहित बाँस; पलाश आदिका लंबा डंडा; झंडा, पताका; निशान, चिह्न; व्यापारिक चिह्न; एक खटवांग; योगियोंका वह डंडा जिसके ऊपर वे खोपड़ी औंधाये रहते हैं; ढोंग; दर्प, घमंड; पूरबकी ओरका घर; मद्यव्यवसायी, कलाल; पुरुषेंद्रिय; सीमा-सूचक चिह्न; श्रेष्ठ व्यक्ति आदि (समासांतमें)। **–गृह**–पु० झंडे रखनेका कमरा। **–ग्रीव**–पु० एक राक्षस। **–द्रुम**–पु० ताड़का पेड़। **–पट**–पु० झंडा। **–पात**–पु० नपुंसकता, क्लीवता। **–पोत**–पु० (फ्लैगशिप) बेड़ेका वह जहाज जिससे नौबलाध्यक्ष (नौसेनापति) यात्रा कर रहा हो और जिसपर उसका झंडा फहरा रहा हो। **–प्रहरण**–पु० वायु। **–भंग**–पु० दे० 'ध्वजपात'। **–मूल**–पु० चुंगीघरकी सीमा (कौ०)। **–यष्टि**–स्त्री० वह डंडा जिसमें पताका लगी रहती है।

ध्वजवान्(वत्)–वि० (सं०) चिह्नविशेषसे युक्त, जिसका कोई विशेष चिह्न हो; जिसके पास या हाथमें ध्वज हो, ध्वजवाला। (स्त्री० 'ध्वजवती'।) पु० ध्वज लेकर चलनेवाला, ध्वजवाहक; वह ब्राह्मण जो ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्तके रूपमें मारे गये व्यक्तिकी खोपड़ी लेकर तीर्थोंमें भिक्षाटन करता फिरे (स्मृ०); मद्यव्यवसायी, शौंडिक।

ध्वजांशुक–पु० (सं०) दे० 'ध्वज-पट'।

ध्वजा–स्त्री० पताका, झंडा।

ध्वजारोपण–पु० (सं०) झंडा गाड़ना या लगाना।

ध्वजारोहण–पु० दे० 'ध्वजोत्तोलन'।

ध्वजाहृत–पु० (सं०) विजित राजाके यहाँसे जीतकर लाया गया दास; विजयके बाद शत्रुके यहाँसे लाया गया धन।

ध्वजिक–पु० (सं०) दांभिक, पाखंडी।

ध्वजिनी–स्त्री० (सं०) सेना। वि० स्त्री० ध्वजवाली, जिस-(स्त्री) के पास ध्वज हो।

ध्वजी(जिन्)–वि० (सं०) ध्वजवाला, जिसके पास या हाथमें ध्वज हो; जिसका कोई विशेष चिह्न हो; सुरापात्रके चिह्नवाला। पु० ध्वजा धारण करनेवाला; ब्राह्मण; पर्वत; रथ; घोड़ा; सर्प; मोर; मद्यव्यवसायी, कलाल।

ध्वजोत्तोलन–पु० (सं०) (हॉइस्टिंग ऑफ दि फ्लैग) किसी विशिष्ट अवसरपर झंडेको खंभे आदिकी ऊँचाईतक उठाकर-चढ़ाकर झटकेके साथ फहराना।

ध्वजोत्थान -पु० (सं०) इंद्रध्वज महोत्सव।

ध्वन–पु० (सं०) शब्द; गुंजार। **–मोदी(दिन्)**–पु० भ्रमर।

ध्वनन–पु० (सं०) शब्द करना; शब्दका वह व्यापार जिससे व्यंग्यार्थकी प्रतीति होती है, व्यंजन, प्रत्ययन; अस्पष्ट शब्द; भुनभुनाना।

ध्वनि–स्त्री० (सं०) शब्द, आवाज; ऐसा शब्द जिसका वर्णात्मक रूपमें ग्रहण न हो, मृदंग आदिसे उत्पन्न शब्द (न्या०); शब्दका स्फोट (व्या०); गीतका लय; वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थसे अधिक चमत्कारवाला हो (सा०); वह अर्थ जो सीधे शब्दोंसे न निकलता हो, व्यंग्यार्थ; गूढ़ आशय; स्वर। **–काव्य**–पु० व्यंग्य-प्रधान काव्य, वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ प्रधान हो। **–कृत्**–पु० 'ध्वन्यालोक' ग्रंथके रचयिता आनंदवर्धनाचार्य। **–ग्रह**–पु० कान (जिससे ध्वनिका ग्रहण होता है)। **–घनत्व**–पु० (फ्रीक्वेंसी) प्रति सेकंडमें उत्पन्न की जानेवाली ध्वनिकी आवर्तनीके अनुसार मानी जानेवाली ध्वनिकी घनता। **–नाला**–स्त्री० वंशी; वीणा। **–विकार**–पु० भयादिजन्य स्वरपरिवर्तन; काकु।

ध्वनिक्षेपक यंत्र–पु० (माइक्रोफोन) एक यंत्र जिसकी सहायतासे किसी स्थानपर किये गये भाषण आदिकी ध्वनि वैद्युत प्रक्रियासे चारों तरफ फैलायी जा सकती है।

ध्वनिवर्द्धक, ध्वनिविस्तारक–पु० (लाउडस्पीकर) ध्वनि या आवाजकी तीव्रता बढ़ानेवाला यंत्र।

ध्वनिविक्षेपक–पु० (ट्रांसमिटर) दे० 'दूरविक्षेपक'।

ध्वनिविक्षेपण–पु० (ट्रांसमिशन) दे० 'दूरविक्षेपण'।

ध्वनिसंग्राहक, ध्वन्यभिलेखक–पु० (साउंड रिकार्डर) ध्वनिका संग्रहण या अभिलेखन करनेवाला यंत्र अथवा साधन।

ध्वनित–वि० (सं०) जो ध्वनिके रूपमें व्यक्त हुआ हो, जिसकी ध्वनि हुई हो, व्यंजित; शब्दित। पु० शब्द; मेघगर्जन।

ध्वन्य–वि० (सं०) ध्वनित होने योग्य; ध्वनित होनेवाला; व्यंग्य।

ध्वन्यात्मक–वि० (सं०) ध्वनिरूप, ध्वनिमय; (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ–पु० (सं०) वह अर्थ जिसका बोध व्यंजनावृत्तिसे होता हो।

ध्वस्त–वि० (सं०) ढहा हुआ, नष्ट; गिरा हुआ, पतित; खसका हुआ, स्रस्त, गलित; ग्रस्त।

ध्वस्ति–स्त्री० (सं०) ध्वंस, नाश।

ध्वांक्ष -पु० (सं०) दे० 'ध्मांक्ष'।

ध्वांत–पु० (सं०) अंधकार; एक नरक जहाँ सदा अँधेरा छाया रहता है; एक मरुत्। **–चर**–पु० राक्षस। **–वित्त**–पु० खद्योत, जुगनू। **–शात्रव**–पु० सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; श्वेत वर्ण।

ध्वांताराति–पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; श्वेत वर्ण।

ध्वांतोन्मेष–पु० (सं०) खद्योत, जुगनू।

ध्वान–पु० (सं०) शब्द, आवाज, नाद; गुंजन; भुनभुनाहट।

न

न–देवनागरी वर्णमालामें तवर्गका पाँचवाँ वर्ण। उच्चारणस्थान दंत और नासिका।

नंग–पु० (सं०) जार, उपपति; (हिं०) नंगापन, नग्नता। वि० नंगा; पाजी, लुच्चा। **–धड़ंग**–वि० जो सिरसे पैरतक वस्त्ररहित हो, एकदम नंगा।

नंग–पु० (फा०) शर्म, हया, लज्जा। **–ए-ख़ानदान**–पु० कुल-कलंक। **–व नामूस**–पु० इज्जत, मर्यादा।

नंगा–वि० जिसकी देहपर कोई कपड़ा न हो, विवस्त्र; पाजी; निर्लज्ज, बेहया; जिसपर कोई आच्छादन न हो, निरावरण, जो किसी ढकने या छिपानेवाली चीजसे ढका या छिपा न हो। पु० शिव, महादेव। **-झोरी,-झोली**–स्त्री० छिपायी हुई चीजका पता लगानेके लिए किसीके कपड़ों आदिको टटोलकर या और तरहसे भली भाँति देखना, कपड़ोंकी तलाशी। **–नाच**–पु० खुलकर किया गया अभद्र आचरण; निर्लज्ज और मनमाना कृत्य। **–बुंगा**–वि० दे० 'नंग-धड़ंग'। **–बुच्चा,–बूचा**–वि० अकिंचन। **–भूखा**–वि० अन्न-वस्त्रके कष्टसे पीड़ित। **–मादरजाद**–वि० जन्मके समय जैसा नंगा। **–मुंगा,–मुनंगा**-वि० बिलकुल नंगा। **–लुच्चा**–वि० नंगा और लुच्चा, पाजी, बदमाश।

नँगियाना–स० क्रि० नंगा करना; सब कुछ ले लेना।

नँग्याना, नँग्यावना*–स० क्रि० दे० 'नँगियाना'।

नंचना*–अ० क्रि० नाचना।

नंदंत–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला। पु० पुत्र; मित्र; राजा।

नंदंती–स्त्री० (सं०) पुत्री।

नंद–स्त्री० पतिकी बहन, ननद। पु० (सं०) हर्ष; परमेश्वर, विष्णु; गोकुलके प्रमुख गोप जिनके यहाँ कृष्णका पालन हुआ था; मगधके एक प्राचीन राजा जिनसे नंदवंश चला; मेढक; नौकी संख्या; एक तरहकी बाँसुरी; कुबेरकी एक निधि; एक प्रकारका मृदंग; मदिरा नामकी पत्नीसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र; एक प्रकारका बाँस; एक राग। **–किशोर**–पु० कृष्ण। **–कुँवर**–पु० (हिं०) कृष्ण। **–कुमार**–पु० कृष्ण। **–गोपिता**–स्त्री० रास्ना। **–द**–वि० आनंद-दायक, हर्षप्रद। पु० आनंद देनेवाला; पुत्र। **–नंद,–नंदन**-पु० कृष्ण। **–नंदिनी**-स्त्री० योगमाया, दुर्गा। **–पाल**–पु० वरुण। **–पुत्री**–स्त्री० योगमाया, दुर्गा। **–प्रयाग**–पु० बदरिकाश्रमके मार्गमें एक तीर्थ। **-रानी**–स्त्री० (हिं०) नंदकी पत्नी, यशोदा। **–रुख**–पु० (हिं०) एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ रेशमके कीड़ोंको खिलायी जाती हैं। **–लाल**–पु० (हिं०) कृष्ण। **–वंश**–पु० मगधका एक प्रसिद्ध राज-कुल जिसका विनाश चाणक्यने किया।

नंदक–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला, हर्षप्रद; संतोषप्रद। पु० विष्णुका खड्ग; नंद नामक गोप जिनके यहाँ कृष्णका पालन हुआ था; एक नाग; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; मेढक; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; प्रसन्नता।

नंदकि–स्त्री० (सं०) पिप्पली।

नंदकी(किन्)–पु० (सं०) विष्णु।

नंदथु–पु० (सं०) आनंद, प्रसन्नता।

नंदन–वि० (स०) आनंद देनेवाला, हर्षप्रद। पु० इंद्रका उद्यान; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; शिव; विष्णु; आनंदित होना; आनंद, हर्ष; पुत्र; कामाख्याका एक पर्वत; २६ वाँ संवत्सर; मेघ; एक छंद; मेढक; एक अस्त्र। **–कानन**–पु० नंदन नामका इंद्रका उद्यान। **–ज**–पु० हरिचंदन। **–प्रधान**–पु० इंद्र। **–माला**–स्त्री० एक प्रकारकी माला जिसे कृष्ण पहना करते थे। **–वन**–पु० दे० 'नंदनकानन'।

नंदनक–पु० (सं०) पुत्र।

नंदना–स्त्री० (सं०) पुत्री। * अ० क्रि० आनंदित होना।

नंदलाल बसु–पु० प्रसिद्ध चित्रकार श्री अवनींद्रनाथ ठाकुरके शिष्य, १९२४ में कलाभवन, शांतिनिकेतनके आचार्य नियुक्त हुए (जन्म १८८३)।

नंदा–स्त्री० (सं०) आनंद; दुर्गाका एक विग्रह; ननद; किसी पक्षकी प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि, एक प्रकारकी संक्रांति (ज्यो०); मूर्च्छनाका एक भेद (संगीत); संपत्ति; मिट्टीकी नाँद। **-देवी**–स्त्री० हिमालयकी २५००० फुटसे भी अधिक ऊँची एक चोटी। **–पुराण**–पु० एक उपपुराण जिसमें नंदाका माहात्म्य वर्णित है।

नंदात्मज–पु० (सं०) कृष्ण।

नंदात्मजा–स्त्री० (सं०) योगमाया।

नंदि–पु० (सं०) आनंद; परमानंद-स्वरूप विष्णु; शिव; एक गंधर्व; शिवका वाहन, नंदिकेश्वर; नाटकमें नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति; द्यूत। स्त्री० आनंद। **-ग्राम**–पु० वह गाँव जहाँ भरतने रामके वनसे लौटनेतक निवास किया था। **–घोष**–पु० अर्जुनका रथ; हर्षध्वनि; मंगलघोष; वंदिजनका घोष। वि० जिसकी ध्वनि हर्षप्रद हो, जिसकी ध्वनि सुनकर प्रसन्नता हो। **–तरु**–पु० धवका पेड़। **–तूर्य**–पु० एक प्राचीन बाजा। **–पुराण**–पु० नंदि द्वारा उक्त एक उपपुराण। **–मुख**-पु० एक पक्षी; शिव। **–रुद्र**–पु० शिव। **–वर्धन**–पु० शिव; मित्र; पुत्र; पक्षांत। वि० आनंद बढानेवाला। **–वृक्ष**–पु० दे० 'नंदीवृक्ष'।

नंदिक–पु० (सं०) आनंद; तुनका पेड़; नंदनकानन; छोटा कलश; शिवका एक अनुचर।

नंदिका–स्त्री० (सं०) मिट्टीकी नाँद या जलपात्र; नंदनकानन;

किसी पक्षकी प्रतिपदा, षष्ठी या एकादशी तिथि।

नंदिकावर्त–पु० (सं०) एक मणि।

नंदिकेश, नंदिकेश्वर–पु० (सं०) शिवका वाहन, नंदी; नंदी द्वारा उक्त एक उपपुराण; शिव।

नंदित–वि० (सं०) आनंदयुक्त, हृष्ट, प्रसन्न; * बजता हुआ।

नंदिन*–स्त्री० पुत्री।

नंदिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; पुत्री, बेटी; गंगा; तुलसीका पौधा; रेणुका नामक गंधद्रव्य; कामधेनुकी पुत्री जिसके प्रसादसे दिलीपके यहाँ रघुका जन्म हुआ; ननद; एक वर्णवृत्त; व्याडि मुनिकी माता। **-तनय,–सुत**–पु० व्याडि मुनि।

नंदिषेण–पु० (सं०) कात्तिकेयका एक अनुचर।

नंदी(दिन्)–पु० (सं०) पुत्र; नाटकमें नांदीपाठ करनेवाला व्यक्ति; शिवका वाहन; शिवका गणविशेष; विष्णु; बरगदका पेड़; धवका पेड़; दागकर छोड़ा हुआ साँड़; बंगाली कायस्थों और तेलियोंकी एक उपाधि। **–(दि)गण**–पु० शिवके द्वारपाल, बैल, साँड़। **–पति**–पु० शिव, शंकर। **–मुखी**–स्त्री० तंद्रा। **–वृक्ष**–पु० तुनका पेड़।

नंदीमुख*–पु० दे० 'नांदीमुख'।

नंदीश, नंदीश्वर–पु० (सं०) शिव; शिवके पार्श्वचरोंका अधिपति; तालका एक भेद (संगीत)।

नंदेऊ*-पु० दे० 'नंदोई'।

नंदोई, नंदोसी–पु० ननदका पति, पतिका बहनोई।

नंद्यावर्त–पु० (सं०) एक प्रकारका मकान जिसमें पश्चिम ओर दरवाजा बनाना वर्जित है।

नंबर–पु० (अं०) संख्या, गिनती; अंक; ३६ इंचकी एक माप। **–दार**-पु० एक तरहका जमींदार। **–वार**–अ० क्रमानुसार; सिलसिलेवार।

नंबरी-वि० नंबरवाला; मशहूर, कुख्यात। **–गज**–पु० कपड़ा नापनेकी एक माप जो ३६ इंचकी होती है। **–सेर**–पु० तौलका एक मान जो ८० रुपयेभर होता है।

नंशुक–वि० (सं०) नाश करनेवाला, हानिकारक; भटकनेवाला; खो जानेवाला; बहुत छोटा, सूक्ष्म।

नंस*–वि० नष्ट।

न–अ० (सं०) निषेध, वितर्क आदिका सूचक एक शब्द, नहीं, मत; कि नहीं, या नहीं। वि० पतला; रिक्त; वही, अनुरूप; अक्लांत; अविभक्त; प्रशंसित। पु० मोती; गणेश; ऋद्धि, ऐश्वर्य; बंध, गाँठ; युद्ध; दान; सादृश्य।

नइहर†-पु० स्त्रियोंका पितृगृह, मायका।

नई–वि० स्त्री० नयाका स्त्री०। * वि० नीतिज्ञ; नीतिपालक; नीतिवान्। * स्त्री० नदी।

नउँजी*–स्त्री० लीची।

नउ*–वि० नया; नौ।

नउआ*–पु० नाऊ।

नउका*–स्त्री० दे० 'नौका'।

नउज† -पु० दे० 'नौज'।

नउत*–वि० झुका हुआ, नत।

नउलि*–वि० नया, ताजा।

नओढ़* -स्त्री० दे० 'नवोढा'।

नक–'नाक'का समासमें व्यवहृत रूप। **–कटा**–वि० जिसकी नाक कट गयी हो; (ला०) जिसका बहुत अपमान हुआ हो; निर्लज्ज, बेशर्म। (स्त्री० 'नककटी'।)**–घिसनी**–स्त्री० जमीनपर नाक रगड़ना; बहुत अधिक दीनता प्रकट करना। **–चढ़ा**–वि० चिड़चिड़ा, तुनकमिजाज। **–छिकनी**–स्त्री० एक घास जिसके फूलोंको सूंघनेसे छींकें आने लगती हैं। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–तोड़ा** -पु० नखरा करना। **-फूल**–पु० नाकमें पहननेका फूलके आकारका गहना। **–बानी*** -स्त्री० दे० 'नकवानी'। **–बेसर** -स्त्री० दे० 'बेसर'। **–मोती** -पु० नाकमें पहननेका मोती। **--बानी*** -स्त्री० नाकमें दम -'तिन रंकन्हको नाक सँवारत हौं आयो नकबानी'–विनयपत्रिका। **–सीर**–स्त्री० नाकसे खून निकलनेका रोग।

नकटा–वि० दे० 'नककटा'। पु० एक प्रकारका गीत; इस गीतके गानेका उत्सव; एक तरहका नाटक या प्रहसन जो बारात चली जानेपर लड़केके घरकी स्त्रियाँ रात भर जागकर करती हैं, खोइया, 'बाबा' (बुंदेल०)।

नकटी -वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी नाक कटी हो या जो बेहया हो। † स्त्री० नाकका मैल।

नकड़ा–पु० बैलोंका एक रोग; नाकका एक रोग।

नक़द–पु०, वि० दे० 'नक्द'।

नक़दी–स्त्री० दे० 'नक्दी'।

नकना*–अ० क्रि० दे० 'नकाना'; नाँघा जाना। स० क्रि० लाँघना, फाँदना; छोड़ना; नाकमें दम करना।

नक़ब–स्त्री० (अ०) सेंध। **–जन**-पु० सेंध मारनेवाला। **-जनी**–स्त्री० सेंध लगाना, सेंध मारकर चोरी करना।

नक़ल–स्त्री० (अ०) एक जगहसे दूसरी जगह ले जाना, कूच, रवानगी; वह जो किसीसे रूप, बनावट आदिमें हूबहू मिलता-जुलता हो, प्रतिरूप, अनुकृति; लेख आदिकी प्रतिलिपि, कापी; मनोरंजन या परिहासके लिए किसीके वेश, वाणी आदिका यथावत् अनुकरण, स्वाँग; परीक्षामें दूसरेकी कापी देखकर, या छिपाकर लायी हुई पुस्तक आदिसे, अनुचित रूपसे कुछ अंश लेकर अपनी उत्तर-पुस्तिकामें लिखना। **–ची**–पु० नकल करनेवाला। **–नवीस**–पु० कागजातकी नकल करनेवाला कर्मचारी। **–नवीसी**–स्त्री० नकलनवीसका कार्य या पद। **–वही**–स्त्री० वह वही जिसपर हुंडियों आदिकी नकल की जाय।

नक़ली–वि० जो किसीका अनुकरणमात्र हो, अवास्तव, असलीका उलटा; खोटा, जाली; जिसने किसीका स्वाँग बना लिया हो, झूटा, बना हुआ।

नकश–पु० दे० 'नक़्श'। **–मार**–पु० दे० 'नक़्शमार'।

नकशा -पु० दे० 'नक़्शा'। **–नवीस**–पु० दे० 'नक़्शबंद'।

नकशी–वि० दे० 'नक़्शी'।

नकस–पु० दे० 'नक़्श'। **–मार**–पु० दे० 'नक़्शमार'।

नकसा–पु० दे० 'नक़्शा'।

नकाना*–अ० क्रि० आजिज आना, तंग आना। स० क्रि० आजिज करना, परेशान करना, नाकमें दम करना; लाँघनेमें प्रवृत्त करना।

नक़ाब–स्त्री०, पु० मुंह ढकनेका सिरसे गलेतकका रंगीन या जालीदार कपड़ा; घूंघट। **–पोश**–वि० जिसने नकाब धारण किया हो, जिसका चेहरा नकाबसे ढका हो।

नकार -पु० (सं०) 'न' अक्षर; निषेध या अस्वीकृति-सूचक शब्द; अस्वीकृति, इनकार।

नकारची–पु० दे० 'नक़्क़ारची'।

नकारना–अ० क्रि० अस्वीकृत करना, इनकार करना।

नकारा†–पु० नगाड़ी। वि० निकम्मा।

नकारात्मक–वि० (उत्तर या कथन) जिसमें किसी बातसे इन्कार किया गया हो या कोई बात अस्वीकृत की गयी हो।

नकाश–पु० दे० 'नक़्क़ाश'।

नकाशना†–स० क्रि० नक़्क़ाशी करना।

नकाशी–स्त्री० दे० 'नक़्क़ाशी'। **–दार**–वि० 'नक़्क़ाशीदार'।

नकास†–पु० दे० 'नक़्क़ाश'।

नकासना†–स० क्रि० दे० 'नकाशना'।

नकासी–स्त्री० दे० 'नक़्क़ाशी'। **–दार**–वि० दे० 'नक़्क़ाशीदार'।

नकिंचन–वि० (सं०) दे० 'अकिंचन'।

नकियाना†–अ० क्रि० नाकसे बोलना; नाकोंदम होना। स० क्रि० आजिज कर देना, बहुत तंग करना।

नक़ीब–पु० (अ०) वह व्यक्ति जो पुराने जमानेमें राजाओं आदिकी सवारीके आगे-आगे उनके वंशका यश गाता चलता था, वंदी, चारण।

नकुच–पु० (सं०) मदारका पेड़।

नकुट–पु० (सं०) नाक।

नकुड़ा†–पु० नाक; नथना।

नकुरा†–पु० नाक।

नकुल–पु० (सं०) नेवला; युधिष्ठिरके एक छोटे भाई; शिव; पुत्र। वि० कुलरहित। **–कंद**–पु० रास्ना।

नकुलक–पु० (सं०) एक प्राचीन आभरण; रुपया रखनेकी एक तरहकी थैली ।

नकुलांधता–स्त्री० (सं०) एक नेत्ररोग ।

नकुला–स्त्री० (सं०) पार्वती ।

नकुलाढ्या–स्त्री० (सं०) गंधनाकुली ।

नकुली–स्त्री० (सं०) नेवलेकी मादा, नेवली; केसर; जटामासी ।

नकुलीश, नकुलेश–पु० (सं०) भैरवका एक विग्रह (तं०) ।

नकुलेष्टा–स्त्री० (सं०) रास्ना ।

नकेल–स्त्री० ऊँट, भालू आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी जिसके सहारे उन्हें इधरसे उधर ले जाते हैं । **मु० –हाथमें होना** –किसीका पूर्णतया वशमें होना ।

नक्कटैया–स्त्री० रामलीलामें सूर्पणखाकी नाक काटी जानेके बाद निकलनेवाला खर, दूषणादिकी सेनाका जुलूस जिसमें तरह तरहके स्वाँग, लागें तथा विमानादि निकाले जाते हैं (पूर्वी उ० प्र०) ।

नक्का–पु० सुईका छेद; ताशका एक्का; कौड़ी । **–दूआ**–पु० कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक जुआ ।

नक़्क़ारख़ाना–पु० (फा०) नगाड़ा रखने और वजानेकी जगह, नौबतखाना । **मु० –(ने)में तूतीकी आवाज़**–दे० 'तूती'में ।

नक़्क़ारची–पु० (फा०) नगाड़ा बजानेवाला ।

नक़्क़ारा–पु० (अ०) नगाड़ा, डुगडुगी । **मु० –बजाके**–खुल्लमखुल्ला । **–बजाते फिरना**–मशहूर करते फिरना । **–(रे)की चोट**–खुल्लमखुल्ला ।

नक़्क़ाल–पु० (अ०) (दूसरेके माल इ० की) नकल करनेवाला; नकली माल वेचनेवाला, स्वाँग बनानेवाला, भाँड़ ।

नक़्क़ाली–स्त्री० नक्कालका काम ।

नक़्क़ाश–पु० (अ०) लकड़ी आदिपर वेल-बूटे बनानेवाला; चित्रकार; रंगसाज ।

नक़्क़ाशी–स्त्री० वेल-बूटे खोदने, चित्र बनाने आदिका काम; चित्रकारी; रंगसाजी । **–दार**–वि० जिसपर वेलबूटे खुदे या चित्र बने हों ।

नक्की–स्त्री० एकका चिह्न; एकके चिह्नसे जीता जानेवाला दाँव । **–पूर**–पु०,**–मूठ** -स्त्री० कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक जुआ ।

नक्कू–वि० जिसकी नाक बड़ी हो, बड़ी नाकवाला; अपनेको बहुत बड़ा समझनेवाला; जिसकी ओर सभी उँगली उठायें, दोषभाजन, दोषी ठहराया जानेवाला, बदनाम; सबके विपरीत आचरण करनेवाला ।

नक्तंचर–वि० (सं०) रातको विचरनेवाला, रातको निकलनेवाला । पु० राक्षस; चोर; उल्लू; गुग्गुल ।

नक्तंचरी–वि० (सं०) राक्षसी ।

नक्तंचारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'नक्तचारी' ।

नक्तंदिन, नक्तंदिव–अ० (सं०) रात-दिन ।

नक्त–पु० (सं०) वह समय जब संध्या होनेमें केवल एक क्षणकी देर हो; रात; एक व्रत जिसमें केवल रातको तारे देखकर भोजन करते हैं । वि० लज्जित । **–चर्या**–स्त्री० रात्रिकालमें भ्रमण करना । **–चारी(रिन्)**–वि० रातमें विचरण करनेवाला; रातको निकलनेवाला । पु० चोर; बिल्ली; उल्लू; राक्षस; शिव । **–भोजन**–पु० ब्यालू, रातका भोजन । **–भोजी(जिन्)**–वि० रातको भोजन करनेवाला; नक्त व्रत करनेवाला । **–माल**–पु० करंज । **–मुखा**–स्त्री० रात । **–व्रत**–पु० एक व्रत जिसमें केवल रातको तारे देखकर भोजन करते हैं; रात्रिकालमें किया जानेवाला कोई व्रत ।

नक्तक–पु० (सं०) गंदा कपड़ा; फटा-पुराना कपड़ा ।

नक्तमाश–पु० (सपर) रातमें किया जानेवाला भोजन, ब्यालू ।

नक्तांध–वि० (सं०) जिसे रातको दिखाई न दे ।

नक्तांध्य–पु० (सं०) रातमें न दिखाई देनेका रोग, रतौंधी ।

नक्ता -स्त्री० (सं०) कलिकारी ।

नक़द-पु० (अ०) वह धन जो सिक्कोंके रूपमें हो; वह रकम जो फौरन अदा की जाय । वि० प्रस्तुत; अच्छा । अ० तुरंत रुपये देकर । **–ए-जाँ**–स्त्री० जान, रूह । **–व जिंस**–स्त्री० रुपया और माल या सामान ।

नक़दी–स्त्री० (अ०) रोकड़ । **–चिट्ठा**–पु० रोकड़वही ।

नक्र–पु० (सं०) नाक; घड़ियाल, मगर; नासिका; भरेठ, पटाव । **–राज,–हारक**–पु० नाक या कोई बहुत बड़ा जलजंतु ।

नक्रा–स्त्री० (सं०) नाक; मधुमक्खियों या भिड़ोंका झुंड ।

नक्राश्रु–पु० (क्रोकोडाइल टियर्स) झूठे आँसू, मिथ्याविलाप, दिखावटी दुःख ।

नक़्श–पु० (अ०) तसवीर बनाना; तसवीर, चित्र; फूल-पत्ती या वेल-बूटे आदिका काम; मुहर या ठप्पेका निशान; सिक्का; जुएका खेल जो ताशसे खेला जाता है; तावीज; जादू; एक तरहका राग; असर; पदचिह्न । वि० अंकित; चित्रित; लिखा हुआ । **–दार**–वि० जिसपर नक्श हो । **–बंद**–पु० नक्शा, चित्र बनानेवाला । **–बंदी**–स्त्री० नक्शा या चित्र बनानेका काम । **–मार** –पु० ताशके पत्तोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ । **–(शे)पा**–पु० पदचिह्न, सुराग । **–(शो)निगार**–पु० फूल-पत्ती, वेल-बूटा, नक्काशी । **मु० –होना**–अंकित हो जाना ।

नक़्शा–पु० (अ०) तसवीर, चित्र; प्राकृतिक या किसी और तरहकी स्थिति सूचित करनेवाला पृथ्वीके किसी भाग या खगोलका चित्र; चेहरा-मोहरा, आकृति; मकान, सड़क आदिका चित्र; ढंग, तर्ज; स्थिति, दशा, अवस्था; रूपरंग, बनावट, शक्ल । **–नवीस**–पु० दे० 'नक़्शबंद' । **–नवीसी**–स्त्री० दे० 'नक़्शबंदी' । **–बंद**–पु० साड़ियों आदिके वेल-बूटेके नक़्शे बनानेवाला ।

नक़्शी–जिसपर वेल-बूटे बने हों ।

नक्षत्र–पु० (सं०) तारा; अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती–ये सत्ताईस तारकपुंज; मोती; २७ मोतियोंका हार । **–कल्प**–पु० अथर्ववेदका एक कल्प जिसमें कृत्तिका आदि नक्षत्रोंकी पूजाका वर्णन है । **–कांतिविस्तार**–पु० श्वेत यावनाल, सफेद ज्वार । **–गण**–पु० नक्षत्रोंके कुछ विशिष्ट समूह जिनके अलग-अलग नाम और फल हैं । **–चक्र**–पु० राशिचक्र, एक प्रकारका पूजन करनेका चक्र । **–चिंतामणि**–पु० एक कल्पित रत्न । **–दर्श**–पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी । **–दान**–पु० एक प्रकारका दान जिसमें भिन्न-भिन्न नक्षत्रोंमें भिन्न-भिन्न पदार्थोंके दानका विधान है । **–नाथ**–पु० चंद्रमा । **–नेमि**–पु० ध्रुव तारा; चंद्रमा; विष्णु । स्त्री० रेवती । **–प,–पति**–पु० चंद्रमा । **–पथ**–पु० नक्षत्रोंके भ्रमणका मार्ग । **–पदयोग**–पु० एक योग जिसमें युद्धके लिए प्रस्थान करनेपर राजा विजयी होता है । **–पाठक**–पु० ज्योतिषी । **–पुरुष**–पु० एक व्रत; मनुष्यकी आकृति जिसके अंगोंपर विभिन्न नक्षत्र अंकित रहते हैं (ज्यो०) । **–भोग** –पु० नक्षत्रविशेषके रहनेका समय । **–माला**–स्त्री० वह माला जिसमें मोतीके सत्ताईस दाने हों; तारा-समूह; हाथीके गलेका एक गहना । **–याजक**–पु० नक्षत्रसंबंधी दोषोंके शमनके लिए पूजन, हवन आदि करानेवाला अधम ब्राह्मण (म० भा०) । **–योग**–पु० नक्षत्रविशेषमें क्रूर ग्रहोंका योग । **–योनि**–पु० विवाहके लिए निषिद्ध नक्षत्र । **–राज**–पु० चंद्रमा । **–लोक**–पु० वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित हैं, नक्षत्रोंका लोक; आकाश । **–वर्त्म(न्)** –पु० आकाश । **–विद्या**–स्त्री० ज्योतिषविद्या । **–वीथि**–स्त्री० तीन-तीन नक्षत्रोंके बीचका रिक्त स्थान जो वीथि जैसा प्रतीत होता है (ऐसी नौ वीथियाँ हैं–ज्यो०। **–वृष्टि**–स्त्री० तारा टूटना, उल्कापात । **–व्यूह**–पु० पदार्थों आदिके स्वामी नक्षत्रोंका सूचक चक्र (ज्यो०) । **–व्रत**–पु० नक्षत्र-विशेषके निमित्त किया जानेवाला व्रत । **–शूल**–पु० विशिष्ट दिशामें विशिष्ट नक्षत्रोंके रहनेका दुष्काल जिसमें यात्रा करना निषिद्ध है । **–संधि**–स्त्री० चंद्रमा आदि ग्रहोंका पूर्व नक्षत्रसे उत्तर नक्षत्रपर जाना । **–सत्र**–पु० नक्षत्रोंके निमित्त किया जानेवाला यज्ञविशेष । **–साधक**–पु० शिव, शंकर । **–साधन**–पु० विशिष्ट नक्षत्रपर विशिष्ट ग्रहका स्थितिकाल जाननेकी गणना । **–सूचक,–सूची(चिन्)**–पु० वह व्यक्ति जो बिना शास्त्र पढ़े ही ज्योतिषी बन बैठा हो, अयोग्य ज्योतिषी ।

नक्षत्रामृत–पु० (सं०) किसी विशिष्ट दिनको कुछ विशिष्ट नक्षत्रोंके

पड़नेका योग जो यात्राके लिए प्रशस्त माना जाता है (ज्यो०)।

नक्षत्रिय–वि० (सं०) नक्षत्र-संबंधी; सत्ताईस; क्षत्रिय नहीं।

नक्षत्री–वि० जो किसी अच्छे नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ हो, भाग्यशाली।

नक्षत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) चंद्रमा; विष्णु।

नक्षत्रेश–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

नक्षत्रेश्वर–पु० (सं०) चंद्रमा; शिवका एक लिंग।

नक्षत्रेष्टि–स्त्री० (सं०) नक्षत्रोंके निमित्त किया जानेवाला यज्ञ।

नख–पु० (सं०) नाखून; एक गंधद्रव्य; २० की संख्या; खंड, टुकड़ा। **–कुट्ट**–पु० नाखून काटनेवाला; नापित, नाई, हज्जाम। **–क्षत**–पु० नाखूनके गड़नेसे पड़नेवाला चिह्न; पुरुष द्वारा किये गये मर्दन, स्पर्श आदिसे स्त्रीके स्तन आदिपर पड़नेवाला नखका चिह्न (सा०)। **–खादी(दिन्)**–पु० दाँतोंसे नख कुतरनेवाला। **–चारी(रिन्)**–पु० पंजेके बल चलनेवाला प्राणी। **–च्छत,–छोलिया***–पु० दे० 'नखक्षत'। **–जाह**–पु० नखकी जड़। **–दारण**–पु० नहरनी; बाज पक्षी। **–निकृंतन**–पु०,**–रंजनी**–स्त्री० नहरनी। **–निष्पाव**–पु० सेम। **–पद**–पु० नाखून गड़नेका चिह्न। **–पर्णी**–स्त्री० वृश्चिका नामक क्षुप। **–पुष्पी**–स्त्री० पृक्का। **–फलिनी**–स्त्री० सेम। **–बिंदु**–पु० मेंहदी या महावर लगाकर नाखूनोंपर बनाया गया गोल या चंद्राकार चिह्न। **–मुच**–पु० धनुष्। **–रेख***–स्त्री० दे० 'नखक्षत'। **–लेखक**–पु० नख रँगनेवाला। **–लेखा**–स्त्री० नखचिह्न; नखकी रँगाई। **–विष**–पु० वह जीव जिसके नाखूनोंमें विष हो–जैसे मनुष्य, कुत्ता, बंदर, बिल्ली आदि। **–विष्किर**–पु० अपने शिकारको नाखूनसे फाड़कर खानेवाला पक्षी आदि। **–वृक्ष**–पु० नीलका पौधा। **–व्रण**–पु० नाखूनकी खरोंच। **–शंख**–पु० छोटा शंख। **–शस्त्र**–पु० नहरनी। **–शिख**–पु० पैरके नाखूनसे लेकर सिरतकके अंग; इन अंगोंका वर्णन (सा०)। **–शूल**–पु० नाखूनमें होनेवाली पीड़ा।

नख़–स्त्री० (फा०) रेशमका बटा हुआ तागा; पतंगकी डोर।

नखत*–पु० दे० 'नक्षत्र'। **–राज,–राय**–पु० चंद्रमा।

नखतर*–पु० दे० 'नक्षत्र'।

नखतेस*–पु० चंद्रमा।

नखत्र*–पु० दे० 'नक्षत्र'।

नखना–स० क्रि० नष्ट करना; पार करना। अ० क्रि० ढाँका जाना, पार किया जाना।

नखबान*–पु० नाखून।

नखर–पु० (सं०) नख, पंजा; एक प्राचीन अस्त्र।

नख़रा–पु० (फा०) विलास चेष्टा, हाव-भाव; नाज-अदा; दिखावटी इनकार; बनना। **–तिल्ला**–पु० दे० 'नाज-नखरा'। **(रे)बाज़**–वि० नखरा करनेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० नखरा करनेकी किया।

नखरायुध–पु० (सं०) दे० 'नखायुध', मुर्गा; सिंह।

नखराह्व–पु० (सं०) करवीर, कनेर।

नखरौट*–स्त्री० नखक्षत।

नखांक–पु० (सं०) नाखून गड़नेका चिह्न; व्याघ्रनखी।

नखांग–पु० (सं०) नख नामका गंधद्रव्य।

नखाघात–पु० (सं०) दे० 'नखक्षत'; लड़ाईमें नख द्वारा किया गया आघात।

नखानखि–स्त्री० (सं०) वह लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरेपर नखसे आघात करें।

नखायुध–पु० (सं०) सिंह; बाघ; मुर्गा।

नखारि–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर।

नखालि–पु० (सं०) छोटा शंख।

नखालु–पु० (सं०) नीलका पौधा।

नखाशी(शिन्)–पु० (सं०) उल्लू पक्षी।

नख़ास–पु० पशुओंका बाजार; घोड़ोंका बाजार; बाजार।

नखियाना*–स० क्रि० नाखूनसे ख़रोंचना; (किसीमें) नाखून धँसाना।

नखी–स्त्री० (सं०) नख नामक गंधद्रव्य।

नखी(खिन्)–वि० (सं०) जिसके नाखून बड़े-बड़े हों; कटीला। पु० सिंह; बाघ।

नखेद*–पु० दे० 'निषेध'।

नखोटना*–स० क्रि० नाखूनसे खरोचना या नोचना।

नखोरा–पु० निमोना।

नग–पु० अँगूठी आदिमें जड़ा जानेवाला बहुमूल्य पत्थर, नगीना; काँचका टुकड़ा; संख्या, थान; (सं०) पर्वत; वृक्ष; सूर्य; सर्प; सातकी संख्या। वि० जो गमन न करता हो, न चलने-फिरनेवाला, अचल, स्थिर। **–ज**–वि० पर्वतसे उत्पन्न। पु० हाथी। **–जा**–स्त्री० पार्वती; क्षुद्र पाषाणभेदा नामक लता। **–दंती**–स्त्री० विभीषणकी पत्नी। **–धर**–पु० कृष्ण जिन्होंने गोवर्धन पर्वतको धारण किया था। **–धरन***–पु० कृष्ण। **–नंदिनी**–स्त्री० पार्वती। **–नदी**–स्त्री० पहाड़से निकलनेवाली नदी। **–पति**–पु० हिमालय; चंद्रमा (जो ओषधियोंका अधिपति है); शिव; सुमेरु। **–भिद्**–पु० पत्थर तोड़नेका एक प्राचीन अस्त्र; कुठार; इंद्र; कौआ। **–भू**–वि० पहाड़पर या पहाड़से उत्पन्न। पु० क्षुद्र पाषाणभेदा। **–मूर्धा(र्धन्)**–पु० पहाड़की चोटी। **–रंध्रकर**–पु० कार्त्तिकेय। **–वाहन**–पु० शिव।

नग*–'नाग'का समासगत लघु रूप। **–फनी**–स्त्री० दे० 'नागफनी'। **–फाँस,–वासी**–स्त्री० दे० 'नगवास'। **–वास**–पु० नागपाश।

नगड़िया–स्त्री० एक तरहका छोटा-सा नगाड़ा, डुग्गी।

नगण–पु० (सं०) एक गण जिसमें तीनों अक्षर लघु होते हैं (।।।)।

नगणा–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती, माल-कँगनी।

नगण्य–वि० (सं०) जो गणनामें न आ सके, तुच्छ, निकृष्ट।

नगद–वि०, पु० दे० 'नक़द'। पु० नागदमनी।

नगदी–स्त्री० दे० 'नक़दी'।

नगन*–वि० नग्न, निरावरण।

नगनिका–स्त्री० एक छंद जिसके प्रत्येक पादमें चार अक्षर होते हैं; एक संकीर्ण राग।

नगनी–स्त्री० वह कन्या जो रजोधर्मकी अवस्थाको न पहुँची हो; वह कम अवस्थाकी कन्या जो बिना ऊपरका शरीर ढके भी रह सकती हो; वस्त्रहीन स्त्री।

नगफंग|–वि० ऊधमी, उपद्रवी, नटखट।

नग़मा–पु० (अ०) सुरीली आवाज; गान, गीत; राग। **–संज**–वि० गवैया। **–संजी**–स्त्री० गीत, गाना।

नगर–पु० (सं०) कस्बेसे बड़ी और समृद्ध बस्ती जिसमें अनेक जातियों और पेशोंके लोग बसते हों, शहर। **–आयोजन**–पु० (टाउन प्लैनिंग) सोच-विचारकर तैयार की गयी योजनाके अनुसार चौड़ी सड़कों, उद्यानों, उपवनों (पार्कों), विद्यालयों, खेलके मैदानों आदिसे युक्त नगर बसानेका आयोजन करना, नगर-निर्माण-योजना, पुरनिवेश। **–काक**–पु० तुच्छ व्यक्ति। **–कीर्तन**–पु० नगरमें घूम-घूमकर किया जानेवाला कीर्तन; गाजे-बाजेके साथ किया जानेवाला धर्मप्रचार। **–घात**–पु० हाथी; नगरवासियोंका वध। **–जन**–पु० नगरमें रहनेवाले लोग, नागरिक। **–तीर्थ**–पु० गुजरातका एक प्राचीन तीर्थ। **–नायिका,–नारी,–मंडना**–स्त्री० वारांगना, वेश्या। **–निगम**–पु० (म्यूनिसिपल कारपोरेशन) राज्यके किसी बड़े नगरकी नगरपालिका जिसे ऋणादि लेनेका तथा कुछ अन्य अधिकार भी प्राप्त होते हैं। **निगमाध्यक्ष**–पु० (मेयर) किसी नगर-निगमका अध्यक्ष, महापौर। **–पाल**–पु० वह जिसका काम सभी बाधाओंसे नगरकी रक्षा करना हो (सिटीफादर), दे० 'नगरपिता'। **–पालिका**–स्त्री० (म्यूनिसिपलिटी) नगरकी सफाई, रोशनी, सड़कों, पानी आदिकी व्यवस्था करनेवाली संस्था जिसके सभी या अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। **–पिता**–पु० (सिटीफादर) नगरपालिकाका सदस्य, नगर-शासक। **–प्रदक्षिणा**–स्त्री० जुलूसके साथ मूर्ति आदिको नगरमें घुमाना। **–प्रमुख**–पु० (सं०) (मेयर) नगरकी महापालिकाका प्रधान या अध्यक्ष, निगमाध्यक्ष, महापौर। **–प्रांत**–पु० उपनगर। **–भवन**–पु० (टाउनहाल) नगरका वह सार्वजनिक भवन जहाँ समवेत होकर किसी विषयपर विचार किया जाय या जहाँ सभाओं, भाषणों आदिका आयोजन किया जा सके। **–भाग**–पु० (वार्ड) स्थानीय प्रशासनकी सुविधा-

की दृष्टिसे किये गये नगरके भागोंमेंसे कोई भाग, हलका। **–महापालिका**–स्त्री० (म्युनिसिपल कारपोरेशन) दे० 'नगर-निगम'। **–मर्दी(र्दिन्)**–पु० (नगरको क्षति पहुँचानेवाला) मतवाला हाथी। **–मार्ग**–पु० राजमार्ग, चौड़ी सड़क। **–मुस्ता**–स्त्री० नागरमोथा। **–रक्षा**–स्त्री० नगरकी देखभाल या शासन प्रबंध। **–रक्षी(क्षिन्)**–पु० नगरका निरीक्षक या शासक; नगरका पहरेदार। **–वासी(सिन्)**–पु० नगरमें रहनेवाला, नागर, पुरवासी। **–विवाद**–पु० संसारके पचड़े। **–वृद्ध**–पु० (आल्डरमैन) नगर-निगमका मेयरसे छोटा पदाधिकारी। **–सेठ**–पु० नगरका सबसे धनी व्यक्ति; कोई बड़ा महाजन। **–स्थ**–पु० नगरवासी। **–हार**–पु० भारतका एक प्राचीन नगर (यह वर्तमान जलालाबादके आसपास बसा था)।

नगरहा–पु० नगरवासी।

नगराई*–स्त्री० नागरिकता; चतुरता, चालाकी।

नगरादिसन्निवेश–पु० (सं०) नगर आदिका स्थापन, नगर आदि बसाना।

नगराधिकृत–पु० (सं०) दे० 'नगराधिप'।

नगराधिप–पु० (सं०) वह कर्मचारी जिसके ऊपर नगरकी रक्षा आदिका दायित्व हो।

नगराधिपति–पु० (सं०) दे० 'नगराधिप'।

नगराध्यक्ष–पु० (सं०) दे० 'नगराधिप'।

नगराभ्याश, नगराभ्यास–पु० (सं०) नगरका पड़ोस।

नगरी–स्त्री० (सं०) नगर। **–काक**–पु० बगुला। **–बक**–पु० कौआ।

नगरीय–वि० (सं०) नगर-संबंधी, नागरिक।

नगरेतर क्षेत्र–पु० (मोफसिल) केंद्रस्थ नगरके आसपासके स्थान।

नगरोत्था–स्त्री० (सं०) नागरमोथा।

नगरोपांत–पु० (सं०) उपनगर।

नगरौका(कस्)–पु० (सं०) नागरिक, नगरवासी।

नगरौषधि–स्त्री० (सं०) केला।

नगाटन–पु० (सं०) पर्वतपर भ्रमण करनेवाला; बंदर।

नगाड़ा–पु० डुगडुगीकी शक्लका एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध बाजा।

नगाधिप, नगाधिपति–पु० (सं०) हिमालय; सुमेरु।

नगाधिराज–पु० (सं०) हिमालय; सुमेरु।

नगारा–पु० दे० 'नगाड़ा'।

नगारि–पु० (सं०) इंद्र।

नगावास–पु० (सं०) मोर।

नगाश्रय–वि० (सं०) पर्वतपर रहनेवाला। पु० हस्तिकंद।

नगिचाना*–अ० क्रि० पास आना, निकट पहुँचना।

नगी–स्त्री० रत्न; छोटा रत्न; पार्वती; पहाड़ी स्त्री।

नगीच†–अ० दे० 'नज़दीक'।

नगीना–पु० (फा०) शोभावृद्धिके लिए अँगूठी आदिमें जड़ा जानेवाला पत्थर या शीशेका रंगीन टुकड़ा। **–गर, –साज़**–पु० नगीना बनाने या जड़नेवाला।

नगेंद्र–पु० (सं०) हिमालय; सुमेरु।

नगेश–पु० (सं०) दे० 'नगेंद्र'।

नगेसरि*–पु० नागकेसर।

नगोच्छ्राय–पु० (सं०) पहाड़की ऊँचाई।

नगौका(कस्)–पु० (सं०) सिंह; पक्षी, चिड़िया; कौआ; शरभ। वि० वृक्ष या पर्वतपर रहनेवाला, जिसका वासस्थान वृक्ष या पर्वत हो।

नग्नंकरण–पु० (सं०) नंगा करना।

नग्न–वि० (सं०) जिसके शरीरपर एक भी वस्त्र न हो, विवस्त्र, नंगा, दिगंबरा; जिसपर कोई आवरण न हो, निरावरण; जो जोतमें न आता हो; जो आबाद न हो। पु० दिगंबर जैन; क्षपणक; ढोंग करनेवाला; वह जिसके कुलमें किसीने वेद-शास्त्रका अध्ययन न किया हो (ऐसे व्यक्तिका धान्य ग्राह्य नहीं है); वह जिसने गृहस्थाश्रमके बाद सीधे सन्न्यास ग्रहण कर लिया हो; सेनाके साथ रहनेवाला या भ्रमण करनेवाला चारण; शिव। **–क्षपणक**–पु० एक प्रकारका बौद्ध भिक्षु। **–जित्**–पु० गांधारका एक प्राचीन राजा; कोशलका एक प्राचीन राजा। **–मुषित**–वि० जो इस प्रकार लुट गया हो कि उसके पास शरीर ढकनेभरको वस्त्र भी न रह गया हो। **–वाद**–पु० दे० 'नग्नतावाद'।

नग्नक–वि० (सं०) नंगा, विवस्त्र, निरावरण। पु० दिगंबर जैन या बौद्ध; नंगा सन्न्यासी; चारण।

नग्नका, नग्निका–स्त्री० (सं०) नंगी, निर्लज्ज स्त्री; वह लड़की जो रजस्वला न हुई हो।

नग्नतावाद–पु० (न्यूडिज्म) पश्चिममें प्रचलित एक सिद्धांत जिसके अनुयायी धूप और खुली हवाके समुचित सेवनकी दृष्टिसे विवस्त्र रहते हैं।

नग्ना–स्त्री० (सं०) वह कन्या जो रजोधर्मको प्राप्त न हुई हो; दस या बारह वर्षसे कम अवस्थाकी कन्या जो बिना ऊपरके शरीरको ढके भी घूम-फिर सकती हो; नंगी या बेहया स्त्री।

नग्नाट, नग्नाटक–पु० (सं०) वह जो बराबर नंगा घूमा करे, बराबर नंगा रहनेवाला; दिगंबर संप्रदायका जैन या बौद्ध।

नग्मा–पु० दे० 'नग़मा'।

नग्र*–पु० दे० 'नगर'।

नग्रोध–पु० दे० 'बटवृक्ष'।

नघना–स० क्रि० लाँघना, पार करना।

नघाना–स० क्रि० पार कराना, लाँघनेका काम कराना।

नचना†–अ० क्रि० नाचना, नृत्य करना; इधर-उधर भटकना। वि० नाचनेवाला, जो नाचे; जो बराबर इधर-उधर घूमा करे, जो किसी एक स्थानपर न रहे।

नचनि*–स्त्री० नाचनेकी क्रिया या ढंग; नाच।

नचनिया*–पु० नाचनेका पेशा करनेवाला; नाचनेवाला।

नचनी–वि० स्त्री० नचानेवाली; किसी एक स्थानपर न रहनेवाली (स्त्री)।

नचवैया–पु० नाचनेवाला।

नचाना–स० क्रि० नाचनेमें प्रवृत्त करना; हैरान करना, परेशान करना; किसीसे तरह-तरहके काम कराना, किसीसे जो काम चाहे वह काम कराना; गोलाईमें घुमाना; इधरसे उधर घुमाना या फेरना।

नचिकेता(तस्)–पु० (सं०) उद्दालक ऋषिका पुत्र जिसने मृत्युसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था; अग्नि।

नचिर–वि० (सं०) क्षणस्थायी।

नचीला*–वि० नाचता हुआ, चंचल। (स्त्री० 'नचीली'।)

नचौंहा*–वि० जो इधरसे उधर घूमा करे, चपल, चंचल, विलोल–'बिहँसौंहे से बदनमें लसत नचौंहे नैन'–मतिराम।

नछत्र*–पु० दे० 'नक्षत्र'।

नछत्री*–वि० जिसने किसी अच्छे नक्षत्रमें जन्म लिया हो, भाग्यशाली।

नज़दीक–अ० (फा०) समीप, पास।

नज़दीकी–वि० (फा०) निकटका। पु० निकटका संबंधी। स्त्री० समीप होने या रहनेका भाव, समीपता।

नज़म–स्त्री० दे० 'नज़्म'।

नज़र–स्त्री० (अ०) दृष्टि, निगाह; कृपा, दया; निगरानी, देखभाल; कुदृष्टि, टोना; परख; ध्यान; उपहार, उपायन, भेंट; वह रुपया, अशरफी आदि जिसे अधीनस्थ राजा या प्रजावर्गके लोग राजाओं या बड़े जमींदारोंको दरबार, त्योहार या किसी अन्य विशिष्ट अवसरपर भेंट करते हैं; चढ़ावा, फातेहा। **–अंदाज़**–वि० जाँचा हुआ; उपेक्षित, जिसपर ध्यान न दिया गया हो। **–अंदाज़ी**–स्त्री० जाँच, परख; उपेक्षा। **–बंद** वि० जो किसी स्थानमें कड़ी निगरानीमें रखा गया हो और जिसे निश्चित सीमाके बाहर जानेकी आज्ञा न हो, जिसे नजरबंदीकी सजा दी गयी हो। पु० नजरबंदीका खेल दिखानेवाला जादूगर। **–बंदी**–स्त्री० वह सजा जिसके अनुसार किसीको किसी स्थानमें कड़ी निगरानीमें रखा जाता है और निश्चित सीमाके बाहर नहीं जाने दिया जाता; नजरबंद होनेकी स्थिति; जादूका एक खेल जिसे जादूगर दर्शकोंकी नजर बाँधकर किया करता है। **–बाग़**–पु० घरसे मिला हुआ बाग। **–बाज़**–वि० नेकबद परखनेवाला; घूराघारी करनेवाला।

–वनियाज–पु० भेंट-उपहार । **–सानी**–स्त्री० सुधार या संशोधनके लिए किसी कार्य या लेखको फिरसे देखना, पुनरीक्षण । **–हाया**–वि० नजर लगानेवाला । **मु० –अंदाज़ करना**–नजरसे छोड़ना, दृष्टि न डालना; नापसंद करना । **–आना**–दिखाई देना । **–करना**–देखना; भेंट, उपहार देना । **–पर चढ़ना**–(किसीका) कोपभाजन होना; पसंद आ जाना । **–फिसलना**–किसी चीजके बहुत सुंदर होनेके कारण उसपर निगाह न टिकना । **–बदलना**–रुष्ट होना; इरादा बदलना । **–बाँधना**–नजरबंदी करना, जादूसे ऐसी चीजें दिखाना जिनका अस्तित्व न हो । **–लगना**–बुरी दृष्टिका असर होना । **–लगाना**–टोना करना ।

नजरना*–अ० क्रि० देखना । स० क्रि० नजर लगाना ।

नजरानना*–स० क्रि० नजर करना, भेंटमें देना, उपायनके रूपमें देना; नजर लगाना ।

नज़राना–पु० नजरके तौरपर भेंटमें दी जानेवाली वस्तु या द्रव्य, उपायन, उपहार । अ० क्रि० नजर लग जाना । स० क्रि० नजर लगाना ।

नजरि*–स्त्री० दे० 'नज़र' ।

नज़ला–पु० (अ०) जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी; सिरका विकारयुक्त पानी नाक, आँख आदिके जरिये बहनेका रोग ।

नज़ाक़त–स्त्री० (फा०) सुकुमारता; अंग चालनकी मनोहर चेष्टा ।

नजात–स्त्री० (अ०) मुक्ति, छुटकारा ।

नज़ामत–स्त्री० नाजिमका पद, नाजिमका महकमा या दफ्तर; प्रबंध, इंतजाम ।

नज़ारत–स्त्री० नाजिरका पद; नाजिरका महकमा या दफ्तर ।

नज़ारा, नज्ज़ारा–पु० (अ०) दृश्य; नजर; देखना । **–बाज़**–वि० दे० 'नज़रबाज़' ।

नजिकाना*–अ० क्रि० पास पहुँचना, निकट पहुँचना ।

नजीक*–अ० समीप, पास ।

नज़ीर–स्त्री० (अ०) उदाहरण, दृष्टांत, मिसाल; किसी मुकदमेका वह फैसला जो उसी ढंगके दूसरे मुकदमेमें मिसालके तौरपर पेश किया जाय ।

नज़ूम–पु० (अ०) ज्योतिष ।

नज़ूमी–पु० ज्योतिषी ।

नज़ूल–पु० (अ०) सरकारी जमीन; दे० 'नज़ला' ।

नज्म–पु० (अ०) तारा, सितारा (समासमें) ।

नट–पु० (सं०) नाट्य करनेवाला, नाटक खेलनेवाला व्यक्ति, अभिनेता; गा-बजाकर या तरह-तरहकी कसरतें या खेल-तमाशे आदि दिखाकर जीवनयापन करनेवाली एक जाति; एक क्षत्रिय जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य क्षत्रियोंसे है (स्मृ०); एक संकर जाति; एक राग; नर्तक; अशोक वृक्ष; श्योनाक वृक्ष; एक तरहका नरकुल । **–चर्या**–स्त्री० अभिनय । **–नारायण**–पु० एक राग । **–पत्रिका**–स्त्री० बैंगन । **–भूषण,–मंडन**–पु० हरताल । **–मल**–पु० एक राग । **–मल्लार**–पु० एक राग । **–रंग**–पु० रंगमंच । **–राज**–पु० कृष्ण; शिव; कुशल नट । **–वर**–पु० प्रधान नट, सूत्रधार; अति कुशल नट; कृष्ण जो नाट्यके आचार्य माने जाते हैं । वि० चतुर, चालाक । **–संज्ञक**–पु० गोदंती हरताल; अभिनेता । **–सार, -सारा***–स्त्री० दे० 'नाट्यशाला' । **–सारी***-स्त्री० बाजीगरी । **–सूत्र**–पु० शिलाली द्वारा रचित नाट्यग्रंथ ।

नटई†–स्त्री० गला; गलेकी घंटी ।

नटक–पु० (सं०) अभिनेता ।

नटखट–वि० उपद्रवी, शरीर, पाजी ।

नटखटी–स्त्री० पाजीपन, शरारत ।

नटता–स्त्री० (सं०) नटका भाव या कार्य ।

नटन–पु० (सं०) नाचना; अभिनय करना ।

नटना*–अ० क्रि० अभिनय करना; नाचना; एक बार कहकर फिर इनकार कर देना; मुकरना; नष्ट होना । स० क्रि० बिगाड़ना, नष्ट करना ।

नटनि*–स्त्री० नर्तन, नृत्य; इनकार, मुकरना ।

नटनी–स्त्री० दे० 'नटिन' ।

नटवा–पु० नाटा या कम उम्रका बैल ।

नटसाल*–पु० चुभे हुए काँटेका वह हिस्सा जो निकल न सका हो; नष्ट शल्य, बाणकी गाँसी जो शरीरमें ही रह गयी हो; किसी-किसी समय उठनेवाली पीड़ा, टीस, कसक–'उठै सदा नटसाल लौं सौतिनके उर सालि'–वि० ।

नटांतिका–स्त्री० (सं०) लज्जा; नम्रता ।

नटित–पु० (सं०) अभिनय ।

नटिन, नटिनी -स्त्री० नटकी स्त्री; नट जातिकी स्त्री ।

नटी–स्त्री० (सं०) नाट्य करनेवाली स्त्री, अभिनेत्री; प्रधान अभिनेत्री, सूत्रधारकी स्त्री; नट, अभिनेताकी स्त्री; वेश्या; नट जातिकी स्त्री; एक रागिनी; नखी नामक गंधद्रव्य ।

नटेश, नटेश्वर–पु० (सं०) शिव ।

नटैया*–स्त्री० गला, गरदन ।

नट्या–स्त्री० (सं०) नटोंकी मंडली ।

नठना*–अ० क्रि० नष्ट होना ।

नड–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; नरकट; चूड़ी बनानेका पेशा करनेवाली जाति । **–प्राय**–वि० (वह स्थान) जहाँ नरकटकी बहुतायत हो । **–भक्त**–पु० नरकटसे पूर्ण स्थान । **–मीन**–पु० झींगा मछली । **–वन**–पु० नरकटकी झाड़ी । **–संहति**–स्त्री० नरकटकी राशि ।

नडक–पु० (सं०) हड्डीके अंदरका छेद; कंधोंके बीचकी हड्डी ।

नडकीय–वि० (सं०) दे० 'नडश' ।

नडश–वि० (सं०) नरकटसे ढका हुआ; जहाँ नरकट ज्यादा हो ।

नडह–वि० (सं०) सुंदर, ललित, कांत ।

नड़हर†–दे० 'नरहड़' ।

नडिनी–स्त्री० (सं०) वह नदी जिसमें नरकटकी अधिकता हो; नरकटका ढेर ।

नडिल–वि० (सं०) दे० 'नडप्राय' ।

नड्या–स्त्री० (सं०) नरकटका ढेर ।

नड्वत, नड्वल–वि० (सं०) दे० 'नडप्राय' ।

नड्वला–स्त्री० (सं०) वैराज मनुकी पत्नी; नरकटका ढेर ।

नढ़ना*–स० क्रि० गूँथना, पिरोना; कसना ।

नत–वि० (सं०) नम्रीभूत, झुका हुआ; टेढ़ा, कुटिल । पु० मध्यंदिन रेखासे किसी ग्रहकी दूरी; तगरमूल । **–द्रुम**–पु० लताशाल नामक वृक्ष । **–नाडिका,–नाडी**–स्त्री० मध्याह्न और अर्द्ध रात्रिके बीचका कोई जन्मकाल । **–नासिक**–वि० चिपटी नाकवाला । **–पाल**–पु० शरणागतका पालन करनेवाला, प्रणतपाल । **–भ्रू**–वि० स्त्री० तिरछी भौहोंवाली । **–मस्तक**–वि० जिसका सिर झुका हुआ हो ।

नत*–अ० दे० 'न तु', नहीं तो ।

नतइत†–पु० दे० 'नतैत' ।

नतकुर†–पु० लड़कीका लड़का, नाती, दौहित्र ।

नतर, नतरक*–अ० दे० 'नतरु' ।

नतरु*–अ० नहीं तो, अन्यथा ।

नतांग–वि० (सं०) जिसका बदन झुका हो ।

नतांगी–स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी ।

नति–स्त्री० (सं०) नम्र होना, झुकना; नम्रता; नमन, नमस्कार; टेढ़ापन; झुकाव । **–कोण**–पु० (डिप ऐंगिल) चुम्बकीय याम्योत्तर (मैग्नेटिक मिरीडियन) में यदि चुम्बकीय सुई इस तरह लटकायी जाय कि वह ऊर्ध्वाधर तलमें स्वतंत्रतापूर्वक घूम सके, तो सामान्यतः यह क्षैतिज तलसे झुकी हुई दिशामें स्थिर होगी । क्षैतिज तलसे यह जितना कोण बनाये, वह उस स्थानका नतिकोण कहलाता है ।

नतिनी†–स्त्री० बेटीकी बेटी ।

नतीजा–पु० (फा०) फल, परिणाम; परीक्षाफल ।

न तु*–अ० नहीं तो, अन्यथा ।

नतैत–पु० रिश्तेदार, नातेदार, वह व्यक्ति जो नातेमें कुछ लगता हो ।

नतैनी*-स्त्री० नाता, संबंध, रिश्ता ।

नतोदर–वि० (कॉन्केव) जिसका ऊपरी भाग चारों ओरसे भीतरकी ओर झुका हो, अवतल, न्युब्ज ।

नतोहू–स्त्री० नातीकी स्त्री, पौत्रवधू, प्रस्नुषा।

नत्थी–स्त्री० कागज या कपड़ेके बहुतसे टुकड़ोंको एकमें गूँथना; एकमें गूँथे हुए कागज या कपड़ेके टुकड़े; मिसिल।

नत्यूह–पु० (सं०) कठफोड़वा पक्षी।

नथ–स्त्री० नाकमें पहननेका बालीकी शक्लका एक प्रसिद्ध गहना।

नथना–अ० क्रि० नत्थी होना, नाथा जाना; छेदा जाना। पु० नाकके छेदोंका आगेकी ओरका ऊपरी पर्दा जो साँस खींचने और छोड़नेमें पचकता और फूलता रहता है; बैल आदिकी नाक।

नथनी-स्त्री० छोटी नथ; बैल, भैंसकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; तलवारकी मूँठपरका छल्ला; नथके आकारकी वस्तु।

नथिया†–स्त्री० दे० 'नथ'। **–बंद**–वि० वह वेश्या पुत्री जिसका अभी किसी पुरुषसे संपर्क न हुआ हो।

नथुना†–पु० दे० 'नथना'।

नथुनी†–स्त्री० छोटी नथ।

नद–पु० (सं०) बड़ी नदी–जैसे सोन, ब्रह्मपुत्र, सिंधु; समुद्र; एक ऋषि। **–पति,–राज**–पु० समुद्र।

नदथु–पु० (सं०) शोर, चिल्लाहट; साँड़का डँकरना।

नदन–पु० (सं०) शब्द करना; गंभीर शब्द करना, जोरकी आवाज करना।

नदना*–अ० क्रि० पशुओंका बोलना; आवाज करना; बजना।

नदनु–पु० (सं०) सिंह; आवाज; गर्जन; युद्ध; बादल।

नदर–वि० (सं०) (वह देश) जो नदीके पास हो; निर्भय, निडर।

नदान*–वि० नादान, बेसमझ, अबोध।

नदारद–वि० (फा०) खाली; गैरमौजूद; गायब, लुप्त।

नदाल–वि० (सं०) भाग्यवान्।

नदिका–स्त्री० (सं०) छोटी नदी।

नदिया–पु० बंगालका एक प्रसिद्ध नगर। *स्त्री० नदी; † पतीलीके आकारका एक छोटा मिट्टीका पात्र।

नदी–स्त्री० (सं०) जलकी वह बड़ी प्राकृतिक धारा जो किसी पहाड़, झील आदिसे निकलकर विशिष्ट मार्गसे बहती हुई दूसरी नदी, झील या समुद्रमें जा मिली हो; किसी तरल पदार्थकी बड़ी धारा। **–कदंब**–पु० महाश्रावणिका, बड़ी गोरखमुंडी; नदियोंका समूह। **–कांत**–पु० समुद्र; इज्जल, सिंधुवार वृक्ष; समुद्रफल। **–कांता**–स्त्री० जामुनका पेड़; काकजंघा लता। **–कूल**–पु० नदीका किनारा, तट। **–०प्रिय**–पु० जलबेत। **–गर्भ**–पु० नदीके तटोंके बीचका स्थान। **–घाटी-योजना**–स्त्री० (रिव्हर व्हैली स्कीम) वह योजना जिसके अनुसार उपयुक्त स्थानोंपर नदीका बाँध आदि बनाकर नहरों द्वारा सिंचाईकी व्यवस्था की जाय। **–ज**–वि० नदीमें उत्पन्न। पु० समुद्रफल; पद्म; अर्जुन वृक्ष; भीष्म; काला सुरमा। **–जा**–स्त्री० अग्निमंथ। **–जामुन**–पु० (हिं०) छोटा जामुन। **–तरस्थान**–पु० घाट। **–दुर्ग**–पु० नदी या द्वीपमें बना हुआ दुर्ग। **–दोह**–पु० पार उतरनेका किराया। **–धर**–पु० शिव (जिनके सिरपर गंगा है)। **–निष्पाव**–पु० धानका एक भेद. बोरो। **–पति**–पु० समुद्र; वरुण। **–प्रवाहविज्ञान**–पु० (हाइड्रो-डाइनेमिक्स) नदी-प्रवाहके या जलादिके प्रवाहके नियंत्रण या उससे उत्पन्न शक्तिसे संबंधित विज्ञान, द्रवगति विज्ञान। **–भव**–वि० जो नदीमें उत्पन्न हुआ हो। पु० सेंधा नमक। **-मातृक**–वि० (वह देश) जहाँ केवल नदीके जलसे सिंचाई होती हो। **–मुख**–पु० समुद्रमें नदीके गिरनेका स्थान, मुहाना। **–रय**–पु० नदीका प्रवाह। **–वंक**–पु० नदीका मोड़। **–वट**–पु० नदीके किनारेका वटवृक्ष; वटी वृक्ष। **–सर्ज**-पु० अर्जुनका वृक्ष। **मु० –नाव संयोग**–संयोगसे थोड़ी देरके लिए होनेवाली खुशी या साथ।

नदीन–पु० (सं०) समुद्र; वरुण।

नदीश–पु० (सं०) समुद्र; वरुण। **-नंदिनी**–स्त्री० लक्ष्मी।

नदीष्ण–वि० (सं०) जो नदीकी स्थितिसे परिचित हो, जिसे नदीके भीतरके सुगम या दुर्गम स्थलोंका ज्ञान हो।

नदेयी–स्त्री० (सं०) भूमिजंबु।

नद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ; ढका हुआ; मिलाया हुआ। पु० बंधन; गिरह, गाँठ।

नद्धि–स्त्री० (सं०) बाँधनेकी क्रिया।

नद्ध्री–स्त्री० (सं०) ताँत, चमड़ेकी डोरी; चमड़ेकी पट्टी।

नद्य–वि० (सं०) नदी-संबंधी, नदीका।

नद्याम्र–पु० (सं०) समष्ठिला।

नद्यावर्तक–पु० (सं०) एक यात्रा-योग (ज्यो०)।

नद्युत्सृष्ट–पु० (सं०) नदी द्वारा छोड़ी हुई भूमि, दरियाबरार, गंगबरार।

नधना–अ० क्रि० नाधा जाना, जोता जाना; किसी कार्यका आरंभ होना; किसी काममें लगना या जुटना।

ननंद–स्त्री० दे० 'ननंदा'।

ननंदा(दृ), ननांदा(दृ)–स्त्री० (सं०) ननद, पतिकी बहन।

नन*–अ० मत–'नन करहु गवन नन भवन तजि, कंतदुसह दारुन सरद'–रासो।

ननका†–वि० उम्रमें छोटा, नन्हा।

ननकारना*–अ० क्रि० अस्वीकार करना, इनकार करना।

ननद–स्त्री० दे० 'ननंदा'।

ननदी†-स्त्री० ननद।

ननदोई–पु० ननदका पति।

ननसार*–स्त्री० दे० 'ननिहाल'।

ननिअउरा, ननिआउर*–पु० दे० 'ननिहाल'।

ननियाससुर–पु० पति या पत्नीका नाना।

ननियासास–स्त्री० पति या पत्नीकी नानी, ननियाससुरकी पत्नी।

ननिहाल-पु० नानाका घर।

ननु-नच–पु० हलका विरोध, छोटी मोटी आपत्ति।

नन्हा-वि० छोटा। **–ई***-स्त्री० छोटापन, लड़कपन।

नन्हैया*–वि० दे० 'नन्हा'।

नपराजित्-पु० (सं०) शिव।

नपाई–स्त्री० नापनेकी क्रिया या भाव; नापनेकी उजरत।

नपाक*–वि० दे० 'नापाक'।

नपात–पु० (सं०) देवयानमार्ग।

नपुंस-पु० (सं०) क्लीव, हिजड़ा।

नपुंसक–पु० (सं०) वह पुरुष जिसमें कामशक्ति न हो, हिजड़ा। वि० (शब्द) जो न स्त्रीलिंग हो, न पुंलिंग; क्लीव; कायर। **–मंत्र**–पु० वह मंत्र जिसके अंतमें 'नमः' शब्द हो (जै०)।

नपुंसकता–स्त्री०, **नपुंसकत्व**–पु० (सं०) नपुंसक होनेका भाव; नपुंसक होनेका रोग, नामर्दी।

नपुआ†–पु० मापनेके काम आनेवाला बरतन, मापदंड।

नपुत्री*–वि० दे० 'निपुत्री'।

नप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) नाती; पोता।

नप्तृका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी।

नप्त्री–स्त्री० (सं०) पुत्र या पुत्रीकी लड़की, पौत्री।

नफ़र–पु० (अ०) मजदूर; नौकर, सेवक; व्यक्ति (अदद)।

नफ़रत–स्त्री० (अ०) किसी चीजसे भागना; घृणा; अरुचि। **–अंगेज़**–वि० घृणा करने योग्य; घृणोत्पादक।

नफरीँ–पु० (फा०) लानत, धिक्कार।

नफ़री–स्त्री० मजदूरकी दिनभरकी कमाई या काम।

नफ़स–पु० (अ०) साँस, दम; क्षण। दे० 'नपस'।

नफ़ा–पु० (अ०) फायदा, लाभ; हासिल, प्राप्ति।

नफ़ासत–स्त्री० नफीस–उम्दा होनेका भाव, बढ़ियापन, सुंदरता।

नफ़ीरी–स्त्री० (फा०) शहनाई।

नफ़ीस–वि० (अ०) उम्दा, बढ़िया, सुंदर; स्वच्छ।

नफ़्स–पु० (अ०) जान; आत्मा; व्यक्ति; कामना, वासना; भोगेच्छा; शिश्न; स्वार्थ। **–कुश**–वि० कामनाओंका दमन करनेवाला। **–कुशी**–स्त्री० वासनाओंका दमन। **–परस्त**–वि० विषयी, ऐयाश; स्वार्थी। **–परस्ती**–स्त्री० विलासिता, ऐयाशी; स्वार्थपरता। **–मज़मून**–पु० मजमून–लेखका अभिप्राय।

नफ़्सानफ़्सी–स्त्री० आपाधापी; अपना ही हित देखना।

नफ़्सानियत–स्त्री० स्वार्थपरता; अपनेको बहुत लगाना; विषयासक्ति, विलासिता, ऐयाशी।

नफ़्सानी–वि० स्वार्थमय; स्वार्थप्रेरित; भोगेच्छा-संबंधी, भोग-

विलास-संबंधी ।

नबी–पु० (अ०) ईश्वरका दूत, पैगंबर ।

नबी*–वि० नवीन ।

नबेड़ना–स० क्रि० दे० 'निवेड़ना' ।

नबेढ़ा–पु० दे० 'निबेड़ा' ।

नबेरना†–स० क्रि० दे० 'निबेड़ना' ।

नबेरा†–पु० दे० 'निबेड़ा' ।

नबेला–वि० दे० 'नवेला' ।

नब्ज़–स्त्री० (अ०) नाड़ी; हाथकी वह रग जिसपर उँगली रखकर वैद्य रोगकी हालत समझते हैं । मु० **–छूटना,–न रहना**–नाड़ीकी गति रुक जाना ।

नब्बे–वि० अस्सी और दस । पु० नब्बेकी संख्या, ९० ।

नभः–'नभस्'का समासगत रूप । **–केतन**–पु० सूर्य । **–क्रांत,–क्रांती(तिन्)**–पु० सिंह । **–पांथ**–पु० सूर्य । **–प्राण,–श्वास**–पु० वायु । **–सद्**–पु० पक्षी; देवता, ग्रह आदि जो आकाशमें विचरते हैं । **–सरित्**–स्त्री० आकाशगंगा । **–सुत**–पु० वायु । **-स्थल**–पु० आकाशरूपी स्थान; शिव । **–स्थित**–वि० आकाशमें स्थित । पु० एक नरक । **–स्पृक्(श्)**–वि० दे० 'नभोलिट्' ।

नभ–वि० (सं०) हिंसक । पु० सावनका महीना; आकाश । **–ग**–पु० वैवस्वत मनुका पुत्र; पक्षी इत्यादि । वि० गगनगामी । **–०नाथ**–पु० गरुड़ । **–गामी**–वि०, पु० दे० 'नभोगामी' । **–चर**–वि० पु० दे० 'नभश्चर । **–धुज***–पु० दे० 'नभोध्वज' । **–ध्वज**–पु० दे० 'नभोध्वज' । **–नीरप**–पु० दे० 'नभोंबुप' ।

नभ(स्)–पु० (सं०) आकाश, आसमान; पृथ्वी आदि पाँच तत्त्वोंमेंसे एक; सावनका महीना; मेघ; जल; कुंडलीमें लग्नसे दसवाँ स्थान; चाक्षुष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि; वर्षा; विषसूत्र; आश्रय; पास (नंददास) ।

नभग–वि० (सं०) भाग्यहीन; दे० 'नभ'में ।

नभगेश–पु० (सं०) गरुड़ ।

नभश्-'नभस्'का समासगत रूप । **–चक्षु(स्)**–पु० सूर्य । **–चमस**–पु० चंद्रमा; चित्रापूप; इंद्रजाल । **–चर**–वि० आकाशमें विचरनेवाला । पु० पक्षी; देवता, गंधर्व आदि जो आकाशमें विचरते हैं; बादल; वायु ।

नभसंगम–पु० (सं०) पक्षी ।

नभस–पु० (सं०) दसवें मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ।

नभस्तल–पु० (सं०) वायुमंडल; आकाशका निम्न भाग ।

नभस्य–वि० (सं०) वाष्पपूर्ण; कुहरेसे भरा हुआ । पु० भाद्रपद, भादोंका महीना; स्वारोचिष मनुका एक पुत्र ।

नभस्वान्(वत्)–वि० (सं०) बादलों या कुहरेसे भरा हुआ । पु० वायु ।

नभा–स्त्री० (सं०) पीकदान ।

नभाक–पु० (सं०) अंधकार ।

नभोंबुप–पु० (सं०) चातक ।

नभो–'नभस्'का समासगत रूप । **–ग**–वि० जो आकाशमें विचरण करता हो; जो कुंडलीमें लग्नस्थानसे दसवें स्थानमें हो । पु० पक्षी; देवता, गंधर्वादि; दसवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक । **–गज**–पु० बादल । **–गति**–स्त्री० आकाशमें विचरना, उड़ना । वि० दे० 'नभोग' । **–गामी(मिन्)**–वि०, पु० दे० 'नभश्चर' । **–द**–पु० एक विश्वदेव । **–दुह**–पु० मेघ, बादल । **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि आकाशकी ओर हो; अंधा । **–द्वीप,–धूम,–ध्वज**–पु० बादल । **–नंदिनी**–दे० क्रममें । **–नदी**–स्त्री० आकाशगंगा । **–मंडल**–पु० मंडलाकार आकाश । **–मणि**–पु० सूर्य । **–योनि**–पु० शिव । **–रज(स्)**–पु० अंधकार । **–रूप**–वि० आकाशके रंगका, नीला । **–रेणु**–पु० कुहरा । **–लय**–वि० आकाशमें लीन हो जानेवाला । पु० धुआँ । **–लिट्(ह्)**–वि० आकाशको छूनेवाला, बहुत ऊँचा, गगनचुंबी । **–वीथी**–स्त्री० दे० 'छायापथ' ।

नभोनंदिनी–स्त्री० प्रतिध्वनि (विरहिणीव्रजा०) ।

नभौका(कस्)–पु० (सं०) पक्षी; देवता, ग्रह आदि जो आकाशमें विचरते हैं ।

नभ्य–वि० (सं०) पहियेकी नाभिके लिए आवश्यक । पु० धुरा; धुरेमें लगाया जानेवाला तेल ।

नभ्राट्(ज्)–पु० (सं०) काला बादल ।

नमः(मस्)–अ० (सं०) प्रणाम, समर्पण आदिके अवसरपर व्यवहृत किया जानेवाला एक शब्द । पु० नमन; वज्र; त्याग; भेंट (संस्कृतमें ये अर्थ भी अव्ययमें ही होते हैं ।)

नम–वि० (फा०) तर, सीला, आर्द्र ।

नमक–पु० (फा०) विशेष प्रकारके स्वादके लिए भोज्य वस्तुओंमें छोड़ा जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण; लावण्य, सलोनापन । **–ख़्वार**–वि० नमक खानेवाला । **–दान**–पु० नमक रखनेका पात्र । **–सार**–स्त्री० नमक निकलने या बननेकी जगह । **–हराम**–वि० स्वामी या पालकसे छल या द्रोह करनेवाला, कृतघ्न । **–हरामी**–वि० कृतघ्न । स्त्री० स्वामी या पालकसे छल या द्रोह करनेकी क्रिया या दुर्गुण, कृतघ्नता । **–हलाल**–वि० स्वामी या पालककी यथोचित सेवा करनेवाला । **–हलाली**–स्त्री० नमकहलाल होनेका भाव या गुण, कृतज्ञता । मु० **–अदा करना**–स्वामी या पालककी यथोचित सेवा करना, उसके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना । **(किसीका)–खाना**–(किसीकी) कृपासे निर्वाह करना, (किसीकी) सेवा करके जीविका चलाना । **(कटेपर)–छिड़कना**–दुःखीको और दुःख देना । **–फूटकर निकलना**–नमकहरामीका कुफल मिलना । **–मिर्च मिलाना**–किसी बातको आकर्षक या प्रभावोत्पादक बनानेके लिए उसमें अपनी ओरसे कुछ और जोड़ देना; कोई बात बढ़ाचढ़ाकर कहना ।

नमकीन–वि० (फा०) जिसमें नमक छोड़ा गया हो; जिसमें नमकका स्वाद हो; लावण्ययुक्त, सलोना, सुंदर । पु० नमक डालकर तैयार किया गया व्यंजन या पकवान ।

नमत–वि० (सं०) नत, झुका हुआ; वक्र । पु० अभिनेता; धुआँ; स्वामी; बादल; ऊनी वस्तु ।

नमदा–पु० (फा०) जमाया हुआ ऊनी कपड़ा ।

नमन–पु० (सं०) नमस्कार करना; नमस्कार, प्रणाम; झुकनेकी क्रिया । वि० दूसरेको झुकानेवाला ।

नमना*–अ० क्रि० नत होना; प्रणाम करना ।

नमनि*–स्त्री० दे० 'नमन' ।

नमनीय–वि० (सं०) नमस्कार या प्रणाम करने योग्य, पूज्य ।

नमश–स्त्री० (फा०) दूधका थोड़ा जमा हुआ फेन जो जाड़ेके दिनोंमें बिकता है, मलैया ।

नमस–वि० (सं०) अनुकूल, प्रसन्न ।

नमसकारना*–स० क्रि० नमस्कार करना ।

नमसित, नमस्यित-वि० (सं०) जिसे नमस्कार किया गया हो, पूजित ।

नमस्–अ० (सं०) दे० 'नमः' । **–करण**–पु० नमस्क्रिया । **–कार**–पु० किसीके प्रति विनय सूचित करनेके लिए सिर नवाना, हाथ जोड़ना आदि । **–कारी**–स्त्री० लजाधुर, लाजवंती । **–कार्य**–वि० नमस्कार करने योग्य, वंदनीय, पूज्य । **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'नमस्कार' । **–ते**-एक वाक्य जिसका अर्थ है–'आपको नमस्कार है ।'

नमस्य–वि० (सं०) पूज्य, सम्मान्य; नम्र, विनयी ।

नमस्या–स्त्री० (सं०) पूजा, अर्चा ।

नमाज़–स्त्री० (फा०) मुसलमानोंकी ईशप्रार्थना या उपासनाकी पद्धति । **–गाह**–पु०, स्त्री० मस्जिदमें नमाज पढ़नेकी जगह । **–बंद**-पु० कुश्तीका एक पेंच । मु० **–क़ज़ा होना**–नमाजका ठीक समयपर न पढ़ा जा सकना ।

नमाज़ी–वि० (फा०) नमाज पढ़नेवाला; नियमित रूपसे नमाज पढ़नेवाला । **–कपड़ा**–पु० वह शुद्ध वस्त्र जिसे केवल नमाज पढ़नेके समय पहनें ।

नमाना*–स० क्रि० झुकाना; वशमें लाना, काबूमें करना ।

नमित–वि० (सं०) झुका हुआ; झुकाया हुआ ।

नमी–स्त्री० (फा०) तरी, आर्द्रता, सीलन ।

नमुचि–पु० (सं०) कामदेव; एक दानव जिसे इंद्रने मारा था । **–द्विट्(ष्),–रिपु,–सूदन**–पु० इंद्र ।

नमूदार–वि० (फा०) प्रकट, जाहिर ।

नमूदारी–स्त्री॰ प्रकट होना, जाहिर होना।

नमूना–पु॰ (फा॰) किसी वस्तुका वह छोटा या थोड़ा अंश जिससे अंशीका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय, बानगी; वह वस्तु जिससे उस ढंग या जातिकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; वह जिसका अनुकरण करके उसी ढंगकी कोई चीज तैयार की जाय; खाका।

नमेरु–पु॰ (सं॰) सुरपुन्नाग वृक्ष; रुद्राक्षका पेड़।

नमोगुरु–पु॰ (सं॰) आध्यात्मिक गुरु; ब्राह्मण।

नम्य–वि॰ (सं॰) दे॰ 'नमस्य'; जो बिना टूटे झुकाया जा सके, लचीला (फ्लेविसबिल)।

नम्र–वि॰ (सं॰) झुका हुआ, नत; विनीत; वक्र। **–मूर्ति**–वि॰ झुका हुआ।

नम्रक–पु॰ (सं॰) बेंत। वि॰ झुका हुआ।

नम्रांग–वि॰ (सं॰) झुका हुआ।

नम्रित–वि॰ (सं॰) दे॰ 'नमित'।

नय–पु॰ (सं॰) ले जाने या नेतृत्व करनेकी क्रिया; नीति; राजनीति; नम्रता; व्यवहार, बरताव; सिद्धांत, मत; दूरदर्शिता; नैतिकता, नीति; योजना; विधि, ढंग; एक प्रकारका जुआ; विष्णु। वि॰ नेतृत्व करनेवाला; उपयुक्त, उचित। ✻ स्त्री॰ नदी (बिहारी)। **–कोविद,–ज्ञ**–वि॰ नीति जाननेवाला, नीतिनिपुण। **–चक्षु(स्)**–वि॰ दूरदर्शी, नीतिज्ञ। **–नागर**–वि॰ नीतिनिपुण। **–नेता(तृ)**–पु॰ बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ। **–पीठी**–स्त्री॰ शतरंजकी बिसात। **–प्रयोग**–पु॰ नीतिकौशल। **–वादी(दिन्)**–वि॰, पु॰ राजनीतिका ज्ञाता। **–विद्,–विशारद**–वि॰, पु॰ राजनीतिका ज्ञाता। **–शास्त्र**–पु॰ राजनीतिशास्त्र। **–शाली(लिन्)**–वि॰ विनयी; सदाचारी। **–शील**–वि॰ विनयी; नीतिज्ञ।

नयक–पु॰ (सं॰) कुशल व्यवस्थापक; राजनीतिनिपुण व्यक्ति।

नयकारी✻-पु॰ नर्तकोंका मुखिया।

नयन–पु॰ (सं॰) ले जाना या नेतृत्व करना; शासन करना; बिताना, यापन; आँख, दृष्टि। **–गोचर**–वि॰ दे॰ 'दृष्टिगोचर'। **–च्छद**–पु॰ पलक। **–जल**–पु॰ आँसू। **–पट**–पु॰ पलक। **–पथ**–पु॰ दे॰ 'दृष्टिपथ'। **–पुट**–पु॰ नेत्र-कोटर। **–वारि,–सलिल**-पु॰ आँसू। **–विषय**–पु॰ दृश्य वस्तु; क्षितिज; दृष्टिपथ।

नयना–स्त्री॰ (सं॰) आँखकी पुतली, कनीनिका। ✻ अ॰ क्रि॰ झुकना, नम्र होना; नमस्कार करना। पु॰ दे॰ 'नयन'।

नयनाभिघात–पु॰ (सं॰) नेत्रका एक रोग।

नयनाभिराम–वि॰ (स॰) जो देखनेमें सुंदर हो, नेत्रप्रिय, प्रियदर्शन।

नयनामोषी(षिन्)–वि॰ (सं॰) नेत्रको दृष्टिहीन करनेवाला।

नयनी-स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'नयना'।

नयनू–पु॰ नवनीत, मक्खन; एक तरहकी बूटीदार मलमल।

नयनोत्सव–पु॰ (सं॰) दीपक; प्रियदर्शन वस्तु।

नयनोपांत–पु॰ (स॰) आँखकी कोर, अपांग।

नयनौषध–पु॰ (सं॰) पुष्पकासीस।

नयर✻- पु॰ नगर।

नया–वि॰ जिसका उत्पादन, निर्माण, प्रकाशन, वयन, प्रवर्तन, ज्ञान या आविष्कार कुछ ही समय पूर्व हुआ हो, नवीन, नूतन, ताजा, पुरानाका उलटा; कम उम्रका; जिससे पहले-पहल साक्षात्कार या परिचय हुआ हो; जो कुछ ही समय पहले प्रकट हुआ, देखा गया, मिला या पाया गया हो; हालका बना या बसा हुआ; पहलेवालेका स्थानापन्न; जिसका उपयोग पहले-पहल किया जा रहा हो, जिससे किसी दूसरेने कभी काम न लिया हो; जिसका आरंभ या पुनरारंभ अभी हालमें हुआ हो। (स्त्री॰ 'नयी'।) **–पन**–पु॰ नया होनेका भाव, नवीनता। **–(ये) सिरेसे**-फिरसे और आरंभसे।

नयाम–पु॰ (फा॰) तलवारका म्यान।

नरंग–पु॰ (सं॰) पुरुषेंद्रिय; मँहासा।

नरंधि–पु॰ (सं॰) संसार; भौतिक जीवन। **–प,–ष**–पु॰ विष्णु।

नर-पु॰ (सं॰) पुरुष, मर्द; नरसिंहके शरीरके नरभागसे उत्पन्न एक दिव्य महर्षि; स्वायंभुव मन्वंतरमें धर्म और दक्ष प्रजापतिकी कन्या सूतीसे उत्पन्न एक ऋषि जो ईश्वरके अंशावतार माने जाते थे; नरदेव; नरदेवके अवतार अर्जुन; विष्णु; घोड़ा; शतरंजका मोहरा; एक प्रकारका क्षुप; छाया-व्यवहारमें छाया द्वारा समय जाननेके लिए सीधी गाड़ी जानेवाली लकड़ी, शंकु; सेवक; दोहेका एक भेद; एक प्रकारका छप्पय; ✻ पानी बहनेका नल 'नर वर जर ऊँचो चढ़ै'–वि॰। वि॰ पुरुष जातिका (मर्द)। **–कंत**✻–पु॰ राजा, नृप। **–कपाल**–पु॰ मनुष्यकी खोपड़ी। **–कीलक**–पु॰ धर्म-गुरुकी हत्या करनेवाला। **–केशरी(रिन्),–केसरी(रिन्)**–पु॰ विष्णुके अवतार नृसिंह; सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य। **–केहरी**✻–पु॰ दे॰ 'नरकेशरी'। **–कौतुक**–पु॰ मदारीका खेल। **–गण**-पु॰ नक्षत्रसमूह-विशेष; इस गणमें जन्म लेनेवाला व्यक्ति। **–तात**–पु॰ राजा। **–त्राण**–पु॰ राजा; कृष्ण। **–दारा**✻-पु॰ जनखा, नपुंसक। **–देव**–पु॰ राजा; ब्राह्मण। **–द्विट्(ष्)**–पु॰ राक्षस। **–धि**–पु॰ संसार। **–नाथ,–नायक**–पु॰ राजा। **–नारायण**–पु॰ नर और नारायण–अर्जुन और कृष्ण जिन्हें एक ही सत्त्वके दो रूप मानते हैं। **–नारी**–स्त्री॰ (नर) अर्जुनकी स्त्री द्रौपदी; पुरुष-स्त्री। **–नाह**✻–पु॰ राजा। **–नाहर**–पु॰ (हिं॰) दे॰ 'नरकेशरी'। **–पति**–पु॰ राजा। **–पद**–पु॰ दे॰ 'जनपद'। **–पशु**–पु॰ पशु-तुल्य मनुष्य। **–पाल**–पु॰ राजा। **–पिशाच**-पु॰ पिशाचकी तरह क्रूर स्वभाववाला मनुष्य, बहुत बड़ा नीच मनुष्य। **–पुंगव**–पु॰ श्रेष्ठ मनुष्य। **–पुर**-पु॰ मर्त्यलोक। **–प्रिय**–पु॰ नील वृक्ष। **–बलि**–स्त्री॰ मनुष्योंकी बलि। **–भक्षी(क्षिन्),–भुक्(ज्)**–पु॰ मनुष्योंको खानेवाला; राक्षस। **–भू,–भूमि**–स्त्री॰ भारतवर्ष। **–मानिका,–मानिनी**–स्त्री॰ (पुरुषकी भाँति) दाढ़ी-मूँछवाली स्त्री। **–माला**–स्त्री॰ मनुष्योंकी खोपड़ियोंकी माला। **–मालिनी**-स्त्री॰ दे॰ 'नरमानिका'; नरमाला धारण करनेवाली स्त्री। **–मेध**-पु॰ वह यज्ञ जिसमें मनुष्योंकी बलि दी जाती थी; मनुष्योंका सामूहिक संहार। **–यंत्र**–पु॰ समय जाननेका एक प्रकारका प्राचीन यंत्र, धूपघड़ी। **–यान,–रथ**–पु॰ मनुष्य द्वारा खींची या ढोयी जानेवाली सवारी (डोली, पालकी, रिक्शा इ॰)। **–लोक**–पु॰ मर्त्यलोक; मनुष्यजाति। **–वध**–पु॰ नरहत्या। **–वर**–पु॰ श्रेष्ठ मनुष्य। **–वाहन**-पु॰ कुबेर; दे॰ 'नरयान'। वि॰ नरयानपर चलनेवाला। **–विष्वण**–पु॰ राक्षस। **–वीर**–पु॰ वीर पुरुष, योद्धा। **–व्याघ्र**–पु॰ श्रेष्ठ पुरुष; एक जलजंतु जिसका ऊर्द्ध्वभाग बाघ जैसा और अधोभाग मनुष्य जैसा होता है। **–शक्र**–पु॰ राजा। **–शार्दूल**–पु॰ दे॰ 'नरव्याघ्र'। **–शृंग**-पु॰ एक अलीक कथन (मनुष्यका सींग जिसका होना असंभव है)। **–संसर्ग**–पु॰ मानवसमाज। **–सख**–पु॰ नारायण। **–सार**–पु॰ नौसादर। **–सिंघ**✻–पु॰ दे॰ 'नरसिंह'। **–सिंह**–पु॰ विष्णुका वह विग्रह जिसे उन्होंने चौथे अवतारमें धारण किया था, विष्णुका चौथा अवतार (इस अवतारमें विष्णुके शरीरका आधा भाग सिंह जैसा था और आधा मनुष्य जैसा)। **–॰ज्वर**–पु॰ एक प्रकारका ज्वर जो तीन दिनतक बना रहता और चौथे दिन उतर जाया करता है। **–॰पुराण**–पु॰ एक पुराण जिसमें नरसिंहका माहात्म्य वर्णित है। **–स्कंध**-पु॰ जनसमूह। **–हत्या**-स्त्री॰ मनुष्यको मार डालना, नरवध। **–हरि हय**-पु॰ घोड़े और मनुष्यमें होनेवाली लड़ाई या शत्रुता। **–हरि**–पु॰ दे॰ 'नरसिंह'। **–हरी**–पु॰ (हिं॰) एक छंद। **–हीरा**-पु॰ (हिं॰) बड़ा हीरा।

नरई–स्त्री॰ भैंस, घोड़े आदिको खिलानेके कामकी तालमें होनेवाली एक घास; घास आदिका पोला डंठल।

नरक–पु॰ (सं॰) धर्मशास्त्रके अनुसार वह स्थान जहाँ पापियोंकी आत्माओंको अपने कुकृत्योंका फल भोगनेके लिए जाना पड़ता है; बहुत गंदी जगह; वह स्थान जहाँ बहुत कष्ट हो; कलिका एक पौत्र; एक असुर। **–कुंड**–पु॰ नरकमें स्थित एक कुंड जिसमें यातनाके लिए आत्माएँ छोड़ दी जाती हैं। **–गति**–स्त्री॰ वह कर्म जिसके कारण नरक भोगना पड़े (जै॰)। **–गामी(मिन्)**–वि॰ नरकमें जानेवाला। **–चतुर्दशी**–स्त्री॰ दिवालीके ठीक पहले पड़नेवाली चतुर्दशी। **–जित्**–पु॰ दे॰ 'नरकांतक'। **–देवता**–पु॰ निर्ऋति। **–भूमि**–स्त्री॰ यमपुरीकी भूमि। **–भूमिका**–स्त्री॰ नरकलोक (जै॰)। **–स्था**–स्त्री॰ वैतरणी नदी।

नरकचूर–पु० कचूर।

नरकट–पु० पतली लंबी पत्तियों तथा पतले गाँठदार डंठलवाला एक पौधा जो कलम, चटाई आदि बनानेके काम आता है।

नरकल, नरकुल–पु० नरकट।

नरकस–पु० नरकट।

नरकांतक-पु० (सं०) (नरकासुरका नाश करनेवाले) कृष्ण।

नरकामय-पु० (सं०) प्रेत; नरकरूपी रोग।

नरकारि–पु० (सं०) कृष्ण।

नरकावास–पु० (सं०) नरकमें वास; नरकमें बसनेवाला।

नरकासुर–पु० (सं०) पृथ्वीके गर्भसे उत्पन्न एक असुर जिसका वध कृष्णने किया था।

नरकी–वि० दे० 'नारकी'।

नरगिस–पु० (फा०) हलके पीले रंगका एक प्रसिद्ध फूल जो उर्दू-फारसी साहित्यमें आँखका उपमान है।

नरगिसी-पु० एक प्रकारका कपड़ा जिसपर नरगिस जैसे फूल बने रहते हैं। वि० नरगिसके आकार या रंगका।

नरतक*-पु० दे० 'नर्तक'।

नरद–स्त्री० दे० 'नर्द'।

नरदन–पु० दे० 'नर्दन'।

नरदवाँ–पु० नावदान।

नरदा†–पु० नावदान।

नरबदा–स्त्री० दे० 'नर्मदा'।

नरम–वि० दे० नर्म। * पु० नर्म, परिहास।

नरमट–स्त्री० मुलायम मिट्टीवाली जमीन।

नरमदा–स्त्री० दे० 'नर्मदा'।

नरमा–स्त्री० एक प्रकारकी कपास; सेमरकी रुई; एक तरहका मुलायम कपड़ा।

नरमाई*–स्त्री० दे० 'नर्मी'।

नरमाना–अ० क्रि० नरम होना, मुलायम होना; कम होना; शांत होना। स० क्रि० नरम करना; कम करना; शांत करना।

नरमी–स्त्री० दे० 'नर्मी'।

नरर्षभ–पु० (सं०) राजा।

नरवा†-पु० नाला।

नरवाई–स्त्री० दे० 'नरई'।

नरवै*–पु० नरपति, राजा (रासो)।

नरसिंगा, नरसिंघा–पु० टेढ़े आकारका एक बाजा जो फूँककर बजाया जाता है, 'रमतूला', सिंगा।

नरसों–अ० बीते हुए परसोंके पहले या आनेवालेके पीछे। पु० बीते हुए परसोंके पहले या जानेवालेके पीछेका दिन।

नरहड़, नरहर–स्त्री० पिंडलीके ऊपरी भागकी लंबी हड्डी।

नरांग–पु० (सं०) पुरुषेंद्रिय; मुँहासा।

नरांतक पु० (सं०) रावणका एक पुत्र।

नराच-पु० बाण, तीर; (सं०) एक वर्णवृत्त।

नराज–वि० दे० 'नाराज'।

नराजना*–स० क्रि० नाराज करना, क्रुद्ध करना, अप्रसन्न करना। अ० क्रि० नाराज होना, अप्रसन्न होना।

नराट*–पु० राजा।

नराधम–पु० (सं०) नीच मनुष्य।

नराधार–पु० (सं०) शिव।

नराधिप, नराधिपति-पु० (सं०) राजा।

नरायण–पु० (सं०) विष्णु।

नरायन†–पु० दे० 'नारायण'।

नराश, नराशन–पु० (सं०) मनुष्योंको खा जानेवाला, राक्षस।

नरिंद*–पु० नरेंद्र, राजा।

नरिअर, नरियर†–पु० दे० 'नारियल'।

नरिअरी†–स्त्री० दे० 'नरेली'।

नरिया†-स्त्री० एक तरहका अर्द्धवृत्ताकार लंबा खपड़ा जो 'थपुआ' खपड़ोंके ऊपर औंधाकर रखा जाता है।

नरियाना†–अ० क्रि० चिल्लाना।

नरी–स्त्री० (सं०) स्त्री; (फा०) बकरी या बकरेका रँगा हुआ चमड़ा; नरई घास; † नली, छुच्छी; सुनारोंकी बाँसकी बनी फुँकनी।

नरुवा†–पु० अनाजवाले पौधोंका (पोला) डंठल।

नरेंद्र–पु० (सं०) राजा; विषवैद्य। **–मंडल**–पु० (प्रिंसेज चेंबर्स) ब्रिटिश शासनकालमें स्थापित देशी राजाओंकी परामर्शदात्री समिति। **–मार्ग**–पु० राजमार्ग।

नरेतर–पु० (सं०) मनुष्यसे भिन्न श्रेणीका प्राणी; जानवर।

नरेली–स्त्री० छोटा नारियल; नारियलकी खोपड़ी या उसका बना हुक्का।

नरेश, नरेश्वर–पु० (सं०) राजा।

नरेस*–पु० राजा।

नरों†–अ०, पु० दे० 'नरसों'।

नरोत्तम–पु० (सं०) श्रेष्ठ मनुष्य; विष्णु।

नर्क–पु० (सं०) नाक; * दे० 'नरक'।

नर्कट–पु० दे० 'नरकट'।

नर्कुट, नर्कुटक–पु० (सं०) नाक।

नर्गिस–पु० दे० 'नरगिस'।

नर्त–वि० (सं०) नाचनेवाला। पु० नाच, नर्तन।

नर्तक–पु० (सं०) नाचने या नृत्त करनेका पेशा करनेवाला; अभिनेता; शिव; राजा; एक संकर जाति (स्मृ०); चारण, भाट; हाथी; मोर।

नर्तकी–स्त्री० (सं०) नाचने या नृत्त करनेका पेशा करनेवाली स्त्री; अभिनेत्री; हथिनी; मोरनी; नलिका नामका गंधद्रव्य।

नर्तन–पु० (सं०) नाचनेवाला; नाच, नृत्त; नाचना या नृत्त करना। **–गृह**–पु०, **–शाला**–स्त्री० नाचनेके लिए बनाया गया या केवल नाचके काममें आनेवाला घर, नाचघर। **–प्रिय**–वि० जिसे नाच अच्छा लगे। पु० शिव; मोर।

नर्तना*–अ० क्रि० नाचना, नृत्त करना।

नर्तयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) नचानेवाला; नाचना सिखलानेवाला।

नर्तित–वि० (सं०) नचाया हुआ; नाचता हुआ; जो नाच चुका हो।

नर्तु–पु० (सं०) तलवारकी धारपर नाचनेवाला।

नर्तू–स्त्री० (सं०) नर्तकी; अभिनेत्री।

नर्द–वि० (सं०) डँकरने या गरजनेवाला। स्त्री० (फा०) चौंसरकी गोटी।

नर्दन-पु० (सं०) गर्जन; ऊँचे स्वरमें गुण-गान करना।

नर्दा†–पु० दे० 'नरदा'।

नर्दित–वि० (सं०) गरजा हुआ। पु० एक तरहका पासा या पासेका हाथ।

नर्दी(दिन्)–वि० (सं०) गरजनेवाला।

नर्बदा–स्त्री० दे० 'नर्मदा'।

नर्म(न्)–पु० (सं०) हँसी, परिहास, विनोद। **–कील**–पु० पति। **–गर्भ**–वि० परिहासपूर्ण, विनोदयुक्त। पु० गुप्त प्रेमी। **–द**–वि० हँसानेवाला, परिहासजनक, विनोदकर, आह्लादकारी। पु० नर्मसचिव, विदूषक। **-दा**–स्त्री० मध्य प्रदेशकी एक नदी जो अमरकंटकसे निकलकर खंभातकी खाड़ीमें गिरती है; पृक्का नामक गंधद्रव्य। **–द्युति**–स्त्री० किसी परिहाससे उत्पन्न आनंद या दोषको छिपानेके लिए किया गया परिहास (ना०)। **–सचिव, –सुहृद्**–पु० राजाको हँसाने, प्रसन्न रखनेके लिए उसके साथ रहनेवाला व्यक्ति, राजाका हँसी-परिहासका सखा, विदूषक।

नर्म–वि० (फा०) गुदगुदा, मुलायम, कोमल; आसान, सहल; सस्ता; जो तेज न हो, धीमा; विनम्र, विनययुक्त; खोटा, नाकिस; मंदा। **–गर्म**–वि० सस्ता-महँगा; बुरा-भला। **–दिल**–वि० कोमल हृदयवाला।

नर्मट–पु० (सं०) सूर्य; मिट्टीका एक पात्र, खप्पर।

नर्मठ–पु० (सं०) परिहास-कुशल मनुष्य, मसखरा; जार, उपपति; ठुड्डी; स्तनका अग्रभाग।

नर्मदा–स्त्री० (सं०) दे० 'नर्म' (सं०)में।

नर्मदेश्वर–पु० (सं०) नर्मदा नदीमें पाया जानेवाला एक शिवलिंग।

नर्मी–स्त्री० नर्म होनेका भाव।

नर्स–स्त्री० (अं०) धात्री, धाय; वह स्त्री जिसने रोगियोंकी परिचर्याकी शिक्षा प्राप्त की हो या जो इस कार्यके लिए नियुक्त की गयी हो ।

नल–पु० पानी; वाष्प आदिको एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेके लिए धातु, काठ आदिका बना डंडेके आकारका पोला लंबोतरा टुकड़ा; एकमें जोड़े हुए ऐसे बहुतसे टुकड़े; चीनी मिट्टी या ईंटों आदिसे गोल बनी वह नाली जिसके द्वारा घरोंका गंदा पानी आदि बहाया जाता है; पेशाबकी नली; * नर, आदमी; (सं०) निषध देशके एक प्राचीन और प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा जिनका विवाह विदर्भनरेश भीमकी कन्या दमयंतीसे हुआ था; रामकी सेनाका एक भट जिसने नीलके सहयोगसे समुद्रपर पत्थरका पुल बाँधा था; विप्रचित्ति दानवका चौथा पुत्र; एक नद; नरकट; कमल; एक प्रकारके पितृदेव; गंध । **–कील**–पु० घुटना । **–कूबर,–कूवर**–पु० कुबेरका पुत्र । **–कूप**–पु० (हिं०) (ट्यूबवेल) खेतों, मैदानों, घरों आदिमें भूमिके नीचे प्रविष्ट कराया जानेवाला वह नोकदार नल जिसके यथेष्ट गहराईतक पहुँच जानेपर पानी ऊपर निकाला जा सकता है । **–द**–पु० खस; पुष्पमधु, मकरंद; जटामासी; एक तृण । **–पट्टिका**–स्त्री० नरकटकी बनी चटाई । **–बाँस**–पु० (हिं०) हिमालयकी तराईमें पाया जानेवाला एक प्रकारका बाँस । **–मीन**–पु० झिंगा मछली । **–सेतु**–पु० रामकी सेनाके पार उतरनेके लिए नलका बनाया हुआ पुल ।

नलक–पु० (सं०) नलके आकारकी शरीरकी हड्डी ।

नलकिनी–स्त्री० (सं०) पैर; जंघा ।

नलदंबु–पु० (सं०) नीमका पेड़ ।

नलनी*–स्त्री० दे० 'नलिनी' ।

नलवा–पु० बैलोंको घी आदि पिलानेका बाँसका चोंगा ।

नला–पु० पेशाबकी नली; मूत्रनलिका; हाथ या पैरकी लंबी हड्डी ।

नलिका–स्त्री० (सं०) नली नामका गंधद्रव्य; जुलाहोंका कपड़ा बुननेका एक औजार; एक प्राचीन अस्त्र; छोटा और पतला नल, नली (आ०) ।

नलित–पु० (सं०) एक साग ।

नलिन–पु० (सं०) कमल; कुमुद; सारस; नील; जल; कृष्णपाक फल, पनियाला ।

नलिनी–स्त्री० (सं०) कमलिनी; वह जलाशय जिसमें कमलकी प्रचुरता हो; कमलोंका समूह; नली नामका गंधद्रव्य; नदी; नारियल; एक छंद; देवगंगा । **–खंड,–षंड**–पु० कमलिनियोंका समूह । **–नंदन**–पु० एक देवोद्यान । **–रुह**–पु० कमलकी नाल, मृणाल; ब्रह्मा ।

नलिनेशय–पु० (सं०) विष्णु; ब्रह्मा ।

नली–स्त्री० छोटा और पतला नल; बंदूकमें वह लंबा छेद जिसमेंसे होकर गोली बाहर आती है; नलके आकारकी पतली हड्डी; (सं०) मैनसिल; नलिका नामक गंधद्रव्य ।

नलुआ–पु० पशुओंका एक रोग; छोटा नल; बाँसकी पोर ।

नलोत्तम–पु० (सं०) देवनल, बड़ा नरकट ।

नलोपाख्यान–पु० (सं०) राजा नलकी कथा; महाभारतके वनपर्वका एक अवांतर पर्व ।

नल्लिका–स्त्री० (पिपेट) किसी द्रव पदार्थका थोड़ा-सा अंश एक पात्रसे निकालकर दूसरे पात्रमें डालने, गिरानेके लिए प्रयुक्त पतली छोटी नली (रसा० वि०), पिपेट ।

नल्व–पु० (सं०) चार सौ हाथकी या किसी-किसीके मतसे एक सौ हाथकी एक प्राचीन माप । **–वर्मगा**–स्त्री० काकाक्षी लता ।

नल्ह–पु० दे० 'नाल्ह' ।

नवंबर–पु० (अं०) ईसवी सालका ग्यारहवाँ महीना ।

नव–वि० (सं०) नया, नूतन, जीर्णका उलटा । पु० काक; स्तव, स्तुति; रक्त पुनर्नवा । **–कारिका,–कालिका**–स्त्री० नवोढा स्त्री; वह स्त्री जिसका रजोधर्म हालमें ही शुरू हुआ हो । **–च्छात्र**–पु० वह विद्यार्थी जिसने हालमें ही पढ़ना आरंभ किया हो । **–जागर्ति**–स्त्री० (रिनेसाँ) दे० 'पुनर्जागरण' । **–जात**–वि० तुरंतका पैदा हुआ, नया । **–ज्वर**–पु० वह ज्वर जो अभी हालमें आरंभ हुआ हो, तरुण ज्वर । **–दंडक**–पु० एक प्रकारका राजच्छत्र । **–दल**–पु० नया पत्ता; कमलकी केशरके पासकी पँखड़ी । **–नी**–स्त्री० ताजा मक्खन । **–नीत**–पु० दे० 'नवनी' । **–०धेनु**–स्त्री० धेनुरूप मानकर दान की जानेवाली मक्खनकी राशि जिसके दानसे शिवसायुज्य और विष्णुलोककी प्राप्ति होती है (पु०) । **–नीतक**–पु० ताजा मक्खन; घी । **–पाठक**–पु० नौसिखुआ अध्यापक । **–प्रसूता**–स्त्री० वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो । **–प्राशन**–पु० नये अन्नको पहले-पहल खाना, नवान्नभोजन । **–फलिका**–स्त्री० वह स्त्री जिसे पहले-पहल रजोदर्शन हुआ हो । **–मल्लिका**–स्त्री० नेवारी नामका फूल; इसका झाड़ । **–मालिका**–स्त्री० एक छंद; दे० 'नव-मल्लिका' । **–युवक**–पु० नौजवान । (स्त्री० 'नवयुवती') । **–युवा**–पु० नौजवान । **–योनिन्यास**–पु० तंत्रमें एक प्रकारका न्यास । **–यौवन**–पु० नयी जवानी, चढ़ती जवानी । **–यौवना**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी चढ़ती जवानी हो, तरुणी । **–रंग**–वि० (हिं०) खिलते हुए सौंदर्यवाला, अभिनव छविसे युक्त; नवीन रूप या शोभासे युक्त । **–रंगी**–वि० (हिं०) नित्य नये रंगमें रँगा रहनेवाला, रँगीला । **–रजा(जस्)**–स्त्री० दे० 'नवकारिका' । **–राष्ट्र**–पु० एक प्राचीन देश । **–लेखन**–सन्' ५० के बादसे प्रचलित एक विशिष्ट प्रकारकी रचना जो अपनेको परम्परासे विच्छिन्न मानती है । **–वधू**–स्त्री० नवविवाहिता स्त्री, नयी दुलहिन । **–वरिका**–स्त्री० नवोढा । **–वर्ष**–पु० नया वर्ष; नये वर्षका प्रथम दिन । **–वल्लभ**–पु० अगरका एक भेद । **–शशिभृत्**–पु० शिव । **–शशी(शिन्)**–पु० द्वितीयाका चंद्रमा । **–शिक्षित**–वि० जिसने अभी हालमें कोई कला या विद्या सीखी हो, जो अभी हालमें कोई कला या विद्या सीखकर आया हो, जिसने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की हो । **–शोभ**–वि० नयी छविवाला; तरुण । **–संगम**–पु० पति और पत्नीका प्रथम मिलन, प्रथम समागम । **–ससि***–पु० द्वितीयाका चंद्रमा । **–सिखा**–वि० (हिं०) दे० 'नौसिखुआ' । **–सूति,–सूतिका**–स्त्री० दूध देनेवाली गाय; वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो ।

नव(न्)–वि० (सं०) नौ । पु० नौकी संख्या, ९ । **–कुमारी**–स्त्री० नवरात्रमें पूजी जानेवाली नौ कुमारियाँ–कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा । **–खंड**–पु० पृथ्वीके नौ विभाग–भारत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश । **–ग्रह**–पु० नौ ग्रह–सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु । **–च्छिद्र**–पु० दे० 'नवद्वार' । **–दीधिति**–पु० मंगल ग्रह । **–दुर्गा**–स्त्री० दुर्गाके नौ विग्रह–शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री । **–द्वार**–पु० शरीरके नौ छिद्र जो प्राणके निकलनेके नौ मार्ग हैं–दो नेत्र, नाकके दोनों छिद्र, मुख, दो कान और दो गुप्तेंद्रियाँ । **–द्वीप**–पु० बंगलाका एक प्राचीन विद्याकेंद्र, नदिया । **–धातु**–स्त्री० नौ प्रकारकी धातुएँ–सुवर्ण, रजत, अशोधित लोहा, सीसा, तांबा, राँगा, तीक्ष्णक (पारा ?), काँसा, कांतलोह–शब्दचिंतामणि । **–निधि**–स्त्री० कुबेरकी नौ निधियाँ–पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व । **–पत्रिका**–स्त्री० बेल, अशोक, केला, अनार, धान्य (शालि ?), हलदी, मानक, अरुई, जयंती, इन नौ वृक्षोंकी पत्तियाँ जिनका उपयोग दुर्गापूजनमें करते हैं । **–भक्ति**–स्त्री० दे० 'नवधा-भक्ति' । **–भाग**–पु० राशिका नवाँ भाग । **–रत्न**–पु० नौ प्रकारके रत्न–मोती, मानिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, मूँगा, पद्मराग, पन्ना और नीलम; राजा विक्रमादित्यकी सभाके प्रख्यात नौ विद्वान्–धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि; नौ प्रकारके रत्नोंवाला हार । **–रस**–पु० साहित्यमें प्रसिद्ध नौ प्रकारके रस–शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत और शांत । **–रात्र**–पु० नौ दिनोंमें समाप्त होनेवाला यज्ञ, व्रत, अनुष्ठान आदि; चैत्र और आश्विनमें शुक्ला प्रतिपदासे नवमीतकके नौ दिन जिनमें दुर्गाकी विशिष्ट पूजा की जाती है । **–वासुदेव**–पु० जैनोंके नौ वासुदेव । **–विध**–वि० नौ प्रकारका । **–विष**–पु० नौ प्रकारके विष–वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र । **–व्यूह**–

पु० विष्णु। **–शक्ति**–स्त्री० शक्तिके नौ विग्रह–प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा। **–शायक**–पु० ये नौ जातियाँ–ग्वाला, तेली, माली, जुलाहा, हलवाई, वरई, कुम्हार, कमकर और नाई। **–श्राद्ध**–पु० प्रेतके निमित्त मृत्युके दिन तथा उससे तीसरे, पाँचवें, सातवें, नवें और ग्यारहवें दिन किया जानेवाला श्राद्ध। **–सत***–वि०, पु० दे० 'नवसप्त'। **–सप्त**–वि० सोलह। पु० सोलह शृंगार। **–सर**–पु० (हिं०) नौ लड़ोंका हार। * वि० नयी उम्रका। **मु०–सत सजना या साजना**–सोलहों शृंगार करना।

नवक–वि० (सं०) जिसमें नौ हों। पु० नौ सजातीय वस्तुओंका समाहार–जैसे (नौ) रत्नोंका नवक, (नौ) श्लोकोंका नवक।

नवका*–स्त्री० नौका।

नवत–पु० (सं०) कंबल; हाथीकी झूल; आवरण।

नवतन*–वि० नूतन, नया।

नवता–स्त्री०, **नवत्व**–पु० (सं०) नया होनेका भाव, नयापन।

नवति–वि० (सं०) अस्सी और दस। स्त्री० नब्बेकी संख्या, ९०।

नवतिका–स्त्री० (सं०) तूलिका; दे० 'नवति'।

नवधा–अ० (सं०) नौ प्रकारसे; नौ भागोंमें, नौ टुकड़ों या खंडोंमें। **–भक्ति**–स्त्री० नौ प्रकारकी या नौ प्रकारसे की जानेवाली भक्ति––श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।

नवन–पु० (सं०) प्रशंसा करना; * झुकना, नमन।

नवना*–अ० क्रि० झुकना; नम्र होना।

नवनि*–स्त्री० झुकनेकी क्रिया या भाव, झुकना, नमन; विनय-भाव, नम्रता।

नवम–वि० (सं०) नवाँ।

नवमी–स्त्री० (सं०) पक्षकी नवीं तिथि।

नवल–वि० नवीन, नया; रँगीला, सुंदर; नयी उम्रका, युवा; शुभ्र, स्फीत, विमल। **–अनंगा**–स्त्री० एक प्रकारकी मुग्धा-नायिका। **–किशोर**–पु० कृष्ण। **–वधू**–स्त्री० दे० 'नवल-अनंगा'।

नवला–स्त्री० (सं०) नयी उम्रकी स्त्री, तरुणी।

नववर, नववरि–स्त्री० दे० निछावर।

नवसर–वि० नयी उम्रका दे० 'नव'के साथ।

नवाँ–वि० नवम, आठवेंके ठीक बादका।

नवांग–पु० (सं०) सोंठ, पीपल, मिर्च, हड़, बहेड़ा, आँवला, चाव, चीता और वायविडंग, ये नौ पदार्थ।

नवांगा–स्त्री० (सं०) काकड़ासिंगी।

नवा|–वि० नया।

नवाई*–वि० नया। स्त्री० नम्रता।

नवागत–वि० (सं०) नया नया या हालका आया हुआ। **–सैन्य**–पु० रंगरूटोंकी सेना (कौ०)।

नवाज़–वि० (फा०) कृपा करनेवाला, कृपालु, दयावान्।

नवाजना*–अ० क्रि० कृपा दिखलाना, रहम करना।

नवाज़िश–स्त्री० (फा०) कृपा, मेहरबानी।

नवाड़ा|–पु० एक तरहकी नाव।

नवाना–स० क्रि० झुकाना, नम्र होनेके लिए प्रेरित करना।

नवान्न–पु० (सं०) घरमें आया हुआ नया अन्न; हालमें तैयार हुआ अन्न; नये अन्नके आगमके निमित्त किया जानेवाला कृत्यविशेष।

नवाब–पु० (अ० 'नव्वाब') मुसलमानोंके राजत्व-कालमें किसी बड़े प्रदेश या सूबेके शासनके लिए नियुक्त किया जानेवाला राज-कर्मचारी; मध्यम श्रेणीके वर्तमान मुसलमान अधीश्वरोंकी एक उपाधि; मुसलमान रईसोंको अंग्रेजी सरकार द्वारा दी जानेवाली एक उपाधि। वि० बड़े ठाट-बाटसे रहनेवाला; फजूलखर्च, अपव्ययी। **–ज़ादा**–पु० नवाबका पुत्र; बेहद शौकीन आदमी। **–पसंद**–पु० एक धान।

नवाबी–स्त्री० नवाबका पद; नवाबका काम; नवाब होनेकी स्थिति; नवाबोंका शासनकाल; नवाबोंका-सा शासन या ठाट-बाट; नवाबोंका-सा रहन-सहन, बहुत अधिक अमीरी। **मु०–करना**–नवाबोंकी तरह शान-शौकतसे रहना।

नवारा|–पु० एक प्रकारकी बड़ी नाव।

नवारी–स्त्री० दे० 'नेवारी'।

नवार्चि(स्)–पु० (सं०) मंगल ग्रह।

नवासा–पु० (फा०) लड़कीका लड़का, दौहित्र; मामाके न रहनेपर नानाकी जायदाद पानेका नातीका अधिकार।

नवासी–वि० अस्सी और नौ। पु० नवासीकी संख्या, ८९।

नवाह–पु० (सं०) नौ दिन; नवाँ दिन; नौ दिनोंमें समाप्त किया जानेवाला (रामायण आदिका) अनुष्ठानरूप पाठ; किसी सप्ताह, पक्ष आदिका प्रथम दिन।

नवीकरण–पु० (रिनोवेशन) फिरसे नया कर देना, पुनः भली और चंगी स्थितिमें ला देना।

नवीन–वि० (सं०) जो कभी पहले देखा, सुना या किया न गया हो, अपूर्व; नया; मौलिक। (स्त्री० 'नवीना'।)

नवीनीकरण–पु० (रिन्यूअल) किसी संधि, अनुज्ञापत्र आदिका, अवधि समाप्त होनेपर, फिरसे जारी किया जाना।

नवीस–पु० (फा०) लिखनेवाला, लेखक (इस शब्दका प्रयोग यौगिकोंमें ही उत्तरपदके रूपमें होता है)।

नवीसी–स्त्री० नवीसका काम, लिखाई।

नवेद–पु० निमंत्रण; निमंत्रण-पत्र।

नवेला–वि० नवीन, नया; नयी उम्रका, युवा। (स्त्री० 'नवेली'।)

नवैयत–स्त्री० (टेन्यूर) भूमि या संपत्ति रखनेकी अवधि और शर्तें।

नवोढा–स्त्री० (सं०) नवविवाहिता स्त्री; युवती; लज्जा और भयके मारे नायकके पास जानेमें सकुचानेवाली नायिका।

नवोत्थान–पु० (रिनेसाँ) दे० 'पुनर्जागरण', नवजागर्ति।

नवोदक–पु० (सं०) पहली वर्षाका पानी; खोदते समय धरतीके भीतरसे पहले-पहल निकलनेवाला पानी।

नवोद्धृत–पु० (सं०) ताजा मक्खन।

नवोद्भाव, नवोद्भावन–पु० (इनवेंशन) दे० 'उद्भावन'।

नव्य–वि० (सं०) नया, नवीन; स्तुति करने योग्य, स्तुत्य। पु० रक्त पुनर्नवा। **–शास्त्रीय**–पुराने शास्त्रीय विचारोंका विरोध करनेवाली आलोचनापद्धति जो नये मूल्योंपर आधृत अपना नया काव्यशास्त्र गढ़ती है।

नव्वाब–पु० (अ०) दे० 'नवाब'।

नव्वाबी–स्त्री० दे० 'नवाबी'।

नशन–पु० (सं०) नष्ट होना, नाश।

नशना*–अ० क्रि० नष्ट होना, बरबाद होना।

नशा–पु० (अ०) भाँग, अफीम, शराब आदि मादक द्रव्योंके सेवनसे उत्पन्न दशा जिसमें कभी-कभी इंद्रियाँ और बुद्धि काबूके बाहर हो जाती हैं; मादक द्रव्य, नशीली चीज; मद, गर्व। **–ख़ोर**–वि० किसी मादक द्रव्यका बराबर सेवन करनेवाला। **–पानी**–पु० नशीली चीजें खाना या पीना (साधारणत भंगके लिए प्रयुक्त)। **-(शे) बाज़**–वि० नशाखोर। **मु०–उतरना**–नशा दूर होना; गर्व नष्ट होना। **–किरकिरा होना**–किसी कारणवश नशेका मजा जाता रहना। **–चढ़ना**–नशा होना, नशीली चीजका असर होना। **–छाना**–दे० 'नशा चढ़ना'। **–टूटना**–दे० 'नशा उतरना'।

नशाना*–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'नसाना'।

नशावन*–पु० नष्ट करना, नाशन। वि० नष्ट करनेवाला, नाशक (केवल समासमें प्रयुक्त)।

नशीं, नशीन–वि० (फा०) बैठनेवाला (केवल समासमें प्रयुक्त-जैसे तख्तनशीं, परदानशीं)।

नशीनी–स्त्री० बैठनेकी क्रिया या भाव (केवल समासमें प्रयुक्त जैसे –तख्तनशीनी, परदानशीनी)।

नशीला–वि० नशा लानेवाला, जिसके सेवनसे नशा छा जाय, मादक; जिसमें नशा छाया हो, मदभरा। (स्त्री० 'नशीली'।)

नशेड़ी|–वि० नशेबाज।

नशोहर*–वि० नाशक।

नश्तर–पु० (फा०) छुरे जैसा चीर-फाड़ करनेका आला। **मु०–देना**–नश्तरसे फोड़ा या घाव चीरना। **–लगना**–नश्तरसे फोड़े या घावका चीरा जाना। **–लगाना**–दे० 'नश्तर देना'।

नश्यत्प्रसूतिका–स्त्री० (सं०) वह प्रसूता स्त्री जिसका बच्चा मर

गया हो, मृतवत्सा ।

नश्वर–वि० (सं०) नष्ट हो जानेवाला, नाशशील, नाशधर्मी, क्षण-भंगुर; हानिकारक; नाश करनेवाला ।

नष*–पु० नाखून, नख । **–शिष,–सिष***–पु० दे० 'नख-शिख' ।

नषत*–पु० दे० 'नक्षत्र' ।

नष्ट–वि० (सं०) जिसका अदर्शन या तिरोभाव हो गया हो, तिरोहित; जिसकी सत्ता समाप्त हो चुकी हो, जिसकी स्थिति अब न हो, नाशप्राप्त; पलायित; नीच, अधम; बरबाद, तबाह; खराब, चौपट; * व्यर्थ । पु० नाश, क्षय (समासमें यह शब्द पूर्व-पद होकर आता है) । (स्त्री० 'नष्टा' ।) **–चंद्र**–पु० भाद्रपद-के दोनों पक्षोंकी (अब केवल शुक्ल पक्षकी) चौथका चाँद जिसका दर्शन निषिद्ध है । **–चित्त**–वि० उन्मत्त, पागल । **–चेतन,–चेष्ट**–वि० मूर्च्छित, बेहोश । **–चेष्टता**–स्त्री० मूर्च्छा, बेखबरी; प्रलय; मूर्च्छा नामक सात्त्विक भाव । **–जन्म(न्),–जातक**–पु० जानकारी न रहनेपर प्रश्नके लग्न आदिके अनुसार किसी व्यक्तिके जन्मका समय जाननेकी एक क्रिया (ज्यो०) । **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि मारी गयी हो, अंधा । **–धन**–वि० जो धनहीन हो गया हो । **–निधि**–पु० (बैंक्रप्ट) दिवालिया । **–प्रभ**–वि० आभारहित, तेजोरहित, कांतिहीन । **–बीज**–वि० फलरहित (शस्य) । **–बुद्धि**–वि० बुद्धिहीन, प्रज्ञारहित । **–भ्रष्ट**–वि० बरबाद, चौपट । **–राज्य**–पु० एक प्राचीन देश । **–रूपा**–स्त्री० अनुष्टुप् छंदका एक भेद । **–विष**-वि० (वह जानवर) जिसके शरीरमें विष न रह गया हो । **–शल्य**–पु० बाणकी गाँसी जो शरीरमें ही रह गयी हो । **–शुक्र**–वि० जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो । **–संज्ञ**–वि० दे० 'नष्टचेतन' । **–स्मृति**–वि० जिसकी स्मरणशक्ति नष्ट या क्षीण हो गयी हो ।

नष्टता–स्त्री० (सं०) नष्ट होनेका भाव ।

नष्टा–स्त्री० (सं०) नष्ट (भ्रष्ट) चरित्रवाली स्त्री, वेश्या; व्यभिचारिणी ।

नष्टाग्नि–पु० (सं०) वह ब्राह्मण जिसके यहाँकी श्रौत विधिसे स्थापित अग्नि लुप्त हो गयी हो ।

नष्टात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) अधम, नीच ।

नष्टाप्तिसूत्र–पु० (सं०) ऐसा चिह्न जिससे चुरायी हुई चीजका पता लग जाय; लूटका माल ।

नष्टार्थ–वि० (सं०) दे० 'नष्टधन' ।

नष्टाशंक–वि० (सं०) भयरहित; निरापद ।

नष्टाश्वदग्धरथन्याय–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध दृष्टांत जिसका तात्पर्य है–(१) दो व्यक्तियोंका अपनी वस्तुओंका विनिमय करके या पारस्परिक सहयोग द्वारा कोई कार्य सिद्ध कर लेना; (२) विधिवाक्य तथा अर्थवाक्यका और प्रधानवाक्य तथा अंगवाक्यका एक-दूसरेकी आकांक्षा होनेसे एकवाक्यता प्राप्त कर प्रवृत्त होना (मी०) ।

नष्टि–स्त्री० (सं०) नाश ।

नष्टेंदुकला–स्त्री० (सं०) प्रतिपदा; कुहू ।

नष्टेंद्रिय–वि० (सं०) संज्ञाहीन ।

नसंक*–वि० निःशंक, निर्भय, निडर ।

नस–स्त्री० रग, पेशियोंको बाँधनेवाला तंतु; रुधिरवाहिनी नलिका; † सुँघनी, नस्य । **–कट**–वि० नस काटनेवाला, जिससे नसें कटती हों 'नसकट खटिया, बतकट जोय'–घाघ । **–कटा**–पु० हिजड़ा, नामर्द । **–तरंग**-पु० शहनाईके ढंगका बाजा । **–फाड़**–पु० हाथियोंका पाँव फूलनेका एक रोग । **–बंदी**-स्त्री० हलकी शल्यक्रिया द्वारा जनन शक्तिसे संबंध रखनेवाली नसका बंद या अप्रभावी कर दिया जाना । **मु०–चढ़ना**–अपने स्थानसे हटनेके कारण नसका तन जाना । **–नस फड़क उठना**–सारी देहमें प्रसन्नताका संचार होना, बहुत अधिक हर्ष होना । **–भड़कना**–दे० 'नस चढ़ना' । **–(सें)ढीली करना**–हौसला पस्त करना, बल तोड़ देना । **–ढीली होना**–हौसला पस्त होना, बल टूट जाना ।

नसतालीक़–पु० (अ०) फारसी, अरबीकी ऐसी लिखावट जिसमें प्रत्येक अक्षर आवश्यक मात्राओं आदिके साथ साफ-साफ और सुंदर ढंगसे लिखा गया हो, 'शिकस्त'का उलटा; बालबोध लिपि; शिष्ट पुरुष, पाकसाफ आदमी ।

नसना*–अ० क्रि० नष्ट होना; खराब होना, चौपट होना; भागना, पराना ।

नसबनामा–पु० (फा०) वंशवृक्ष, कुरसीनामा, शजरा ।

नसर-स्त्री० (अ०) गद्य (नज़्म-पद्यका उलटा) ।

नसल–स्त्री० दे० 'नस्ल' ।

नसवार–स्त्री० नास, सुँघनी ।

नसहा†–वि० नसोंवाला; जिसमें नसें अधिक हों ।

नसा–स्त्री० (सं०) नासिका, नाक । † पु० दे० 'नशा' ।

नसाना*–स० क्रि० नष्ट करना । अ० क्रि० नष्ट होना, बिगड़ना 'अब लौं नसानी, अब न नसैहौं' -तुलसी० ।

नसी-स्त्री० हलके फालकी नोक । **–पूजा**–स्त्री० हलकी पूजा जिसे फसल बो जानेके बाद करते हैं ।

नसीत*-स्त्री० दे० 'नसीहत' ।

नसीनी†–स्त्री० सीढ़ी, जीना; दे० 'नशीनी' ।

नसीब–पु० (अ०) हिस्सा; किस्मत, भाग्य, दैव, अदृष्ट । **–जला**–वि० जिसका भाग्य फूट गया हो, अभागा, भाग्यहीन । **-वर**–वि० भाग्यशाली, भाग्यवान् । **मु०-आजमाना**–भाग्यके भरोसे कोई काम करना । **–खुल जाना,–चमकना,–जागना,–सीधा होना**–भाग्यका उदय होना । **–टेढ़ा होना**–बुरे दिन आना, किस्मतका साथ न देना । **–पलटना**–अच्छेसे बुरा या बुरेसे अच्छा दिन आना । **–फूट जाना,–सो जाना**–किस्मत बिगड़ना । **–में लिखा होना**-किस्मतमें बदा होना । **-लड़ना**–भाग्यका साथ देना । **-होना**–मिलना, प्राप्त होना ।

नसीबा†–पु० दे० 'नसीब' । **मु० –उलटना**–भाग्यका पलटा खाना । **–खुल जाना,–चमकना,–जागना,–फिरना**–भाग्योदय होना । **–सो जाना**–दुर्भाग्यग्रस्त होना । **–(बे)का फेर**– भाग्यका फेर ।

नसीम-स्त्री० (अ०) ठंढी, धीमी और स्वच्छ हवा, शीतल-मंद समीर । **–(मे)बहर**–स्त्री० समुद्रकी हलकी और ठंडी हवा । **–सहर**–स्त्री० सवेरेकी ठंडी, धीमी और स्वच्छ हवा ।

नसीला†–वि० नसोंवाला; नशीला ।

नसीहत–स्त्री० (अ०) शिक्षा, उपदेश; लाभप्रद सम्मति, अच्छी राय ।

नसूड़िया†–वि० मनहूस; अशुभकारी ।

नसूर–पु० दे० 'नासूर' ।

नसेनी–स्त्री० सीढ़ी, जीना ।

नस्त–पु० (सं०) नाक; सुँघनी ।

नस्तक–पु० (सं०) पशुओंकी नाकमें किया हुआ छेद ।

नस्ता–स्त्री० (सं०) नाकका छेद ।

नस्तित–वि० (सं०) (वह बैल) जिसकी नाकमें नाथ पहनाया गया हो; नत्थी किया हुआ । पु० ऐसा बैल ।

नस्तित पत्रसमूह–पु० (फाइल) तार आदिमें नत्थी कर एक जगह रखे गये कागज-पत्रोंका समूह ।

नस्तिपंजी–स्त्री० (फाइल रजिस्टर) तार, टीनकी पत्ती, क्लिप आदिमें फँसाकर कागजपत्र एक जगह रखनेकी पंजी, फाइल, मिसिल ।

नस्तिपत्री-स्त्री० (फाइल) वह पोथी या कापी जैसा ढाँचा जिसके भीतर महत्त्वके कागज-पत्र नत्थी करके रखे जायँ, फाइल, मिसिल ।

नस्य–पु० (सं०) नास, सुंघनी; सुँघनेकी एक विशेष प्रकारकी औषध या विशिष्ट औषधोंके योगसे तैयार किया हुआ तेल आदि; नाकके बाल । वि० नाकसे निकलनेवाला; नाक-संबंधी ।

नस्या–स्त्री० (सं०) नासिका, नाक; बैल आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी ।

नस्याधार–पु० (सं०) नासदानी ।

नस्योत-वि० (सं०) दे० 'नस्तित' । पु० नाथके जरिये चलाया जानेवाला बैल या पशु ।

नस्ल–स्त्री० (अ०) वंश, कुल; जाति ।

नस्वर*–वि० दे० 'नश्वर' ।

नहँ†–पु० नख ।

नह†–पु० नख, नाखून । –छू–पु० तेल-हलदीके बादकी विवाहकी एक रस्म जिसमें वरकी हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और महावर आदि लगाते हैं (पुरानी प्रथा माननेवालोंमें इसी अवसरपर पहले पहल पैरके नाखून काटे जाते हैं); द्वारपूजाके बादकी एक रस्म जिसमें कन्याके नाखून काटे जाते हैं और स्नान कराया जाता है । –सुत*–पु० नखचिह्न; † फरहदका पेड़ । –सुर†–पु० नाखूनके ऊपरी किनारेके पासका चमड़ा उधड़ जाना ।

नहट्टा–पु० नखक्षत ।

नहन, नहनि*–स्त्री० मोट खींचनेकी मोटी रस्सी ।

नहना*–स० क्रि० नाधना, काममें लगाना ।

नहन्नी†–स्त्री० दे० 'नहरनी' ।

नहर–स्त्री० यातायात या सिंचाईके लिए किसी नदी या जलाशयमेंसे निकाला गया जलमार्ग ।

नहरनी–स्त्री० हज्जामोंका नाखून काटनेका प्रसिद्ध आला; इसीके ढंगका एक आला जिससे पोस्तेका ढोंढ़ चीरते हैं ।

नहरी–स्त्री० नहरके पानीसे सींची जानेवाली जमीन ।

नहरुआ, नहरुवा, नहरू–पु० दे० 'नारू' ।

नहला–पुं० नौ बूटियोंवाला ताशका पत्ता; नक्काशी आदि बनानेकी राजगीरोंकी छोटी करनी ।

नहलाई–स्त्री० नहलानेकी क्रिया या भाव; नहलानेकी मजदूरी ।

नहलाना, नहवाना–स० क्रि० स्नान कराना ।

नहाँ†–पु० पहियोंका वह छेद जिसमें धुरी पहनाते हैं; नाखून (बघनहाँ); नहला ।

नहान–पु० नहानेकी क्रिया, स्नानका पर्व ।

नहाना–अ० क्रि० सिरपरसे पानी उँडेलकर, नदी आदिमें गोता लगाकर या ऊपरसे गिरती हुई धारके नीचे बैठकर मैल या थकान दूर करनेके लिए शरीरको मलकर धोना; सिरसे पैरतक किसी तरल पदार्थसे सराबोर हो जाना; रजोधर्मके पश्चात् स्त्रीका स्नान करना ।

नहार–वि० जो बासी मुँह हो, जो सबेरेसे बिना कुछ खाये (निराहार) ही हो । –मुँह–अ० बासी मुँह । मु०–तोड़ना–जलपान करना । –रहना–बिना कुछ खाये रहना, निराहार रहना ।

नहारी–स्त्री० सबेरेका हलका भोजन, जलपान, नाश्ता; नौकरोंको जलपानके बदले दिया जानेवाला धन; शोरबेदार सालन जिससे मुसलमान सबेरे खमीरी रोटी खाते हैं ।

नहिं, नहिंन*–अ० दे० 'नहीं' ।

नहिअन, नहिंयन†–पु० पैरकी छोटी उँगलीमें पहना जानेवाला बिछिया जैसा एक गहना ।

नहियाँ–स्त्री० दे० 'नहियन'; 'नहीं' या इन्कारका शब्द ।

नहीं–अ० निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला एक शब्द । –तो–अ० यदि ऐसा न हुआ तो, ऐसा न होनेकी स्थितिमें, अन्यथा ।

नहुष–पु० (सं०) एक प्राचीन चंद्रवंशी राजा जिसे अगस्त्यके शापवश सर्पयोनिमें प्रविष्ट होना पड़ा था; एक वैदिक ऋषि, एक नाग; एक कुशिकवंशी ब्राह्मण राजा; एक वेदोक्त राजर्षि; एक मरुत्; विष्णु ।

नहुषाख्य–पु० (सं०) तगरपुष्प ।

नहुषात्मज–पु० (सं०) ययाति ।

नहूसत–स्त्री० (अ०) मनहूसी ।

नाँउँ*–पु० नाम । –गाँउँ–पु० नाम और पता ।

नाँगा–वि० दे० 'नंगा' । पु० नागा साधु ।

नाँघना*–स० क्रि० लाँघना ।

नाँठना–अ० क्रि० नष्ट होना, खराब होना, बरबाद होना; विपरीत होना ।

नाँद–स्त्री० एक प्रकारका (पशुओंको चारा-पानी देनेका) मिट्टीका गोला, गहरा और चौड़े मुँहका बड़ा बरतन; इस प्रकारका पीतल आदिका पात्र ।

नाँदना*–अ० क्रि० शब्द करना; गंभीर शब्द करना; छींकना; हृष्ट होना, प्रसन्न होना ।

नांदिकर–पु० (सं०) दे० 'नांदीकर' ।

नांदी–स्त्री० (सं०) समृद्धि, धन-संपत्ति; अभ्युदय; वह मंगलात्मक श्लोक जिसका पाठ सूत्रधार नाटकके आरंभमें करता है । –कर–पु० नांदीका पाठ करनेवाला; नाटकके आरंभमें मंगलके रूपमें भेरी आदि बजानेवाला । –घोष–पु० भेरी आदिका शब्द । –नाद,–निनाद–पु० हर्षातिरेकसे चिल्लाना । –पट–पु० कुएँका ढकना । –मुख–पु० जन्म, उपनयन, विवाह आदि मांगलिक अवसरोंपर किया जानेवाला एक आभ्युदयिक श्राद्ध; कुएँका ढक्कन । वि० (वे पितर) जिनके निमित्त नांदीमुख श्राद्ध किया जाय । –०श्राद्ध–पु० नांदीमुख नामक श्राद्ध । –मुखी–स्त्री० एक वर्णवृत्त; नांदीमुख श्राद्धमें भाग पानेवाली पुरखिन । –रव–पु० दे० 'नांदी-नाद' । –वादी(दिन्)–पु० नांदीका पाठ करनेवाला; नाटकके आरंभमें मंगलके रूपमें भेरी आदि बजानेवाला । –श्राद्ध–पु० दे० 'नांदीमुख' ।

नादी(दिन्)–पु० (सं०) दे० 'नांदीकर' ।

नांदीक–पु० (सं०) नांदीमुख श्राद्ध; तोरणस्तंभ ।

नांव–पु० (सं०) स्वतः उत्पन्न धान्य ।

नाँयँ*–पु० नाम । अ० नहीं ।

नाँवँ†–पु० नाम ।

नाँवरा*–पु० नाम ।

नाँसी*–स्त्री० मारनेका स्वभाव–'जा मुख हाँसी लसी घन आनँद कैसें सुहाति बसी तहाँ नाँसी'–घन० ।

नाँह*–पु० दे० 'नाह' ।

ना–अ० (सं०) एक निषेधसूचक शब्द; (फा०) एक निषेध, अस्वीकृति या अभाव सूचित करनेवाला शब्द, न, नहीं ।–आगाह–वि० जिसे जानकारी न हो । –आज़मूदा–वि० अनुभवहीन, अनाड़ी । –इत्तिफ़ाक़ी–स्त्री० मन मुटाव, विरोध, बिगाड़ । –इन्साफ़–वि० जो न्याय न करे, अन्यायी । –इन्साफ़ी–स्त्री० अन्याय, अत्याचार । –उम्मेद–वि० निराश । –उम्मेदी–स्त्री० निराश होनेका भाव, निराशा । –कंद–वि० (बछड़ा) जिसके दूधके दाँत अभी हों; अशिक्षित; मूर्ख । –क़दर,–कदरा–वि० कदर या गुण न समझनेवाला, नालायक । –कदरी–स्त्री० उचित सम्मान न होनेकी स्थिति, अनादर, उपेक्षा । –क़ाबिल–वि० अयोग्य । –काम–वि० जो काम लायक न हो, खराब । –कारा–वि० जो कामका न हो, निकम्मा । –कारी–वि०, पु० दे० क्रममें । –किस–वि० नीच, बुरा; निकम्मा, नालायक । –ख़ुश–वि० अप्रसन्न, रुष्ट । –ख़ुशी–स्त्री० अप्रसन्नता, नाराजगी । –ख़्वाँदा–वि० अनपढ़ । –गवार–वि० जो गवारा न किया जा सके, असह्य; अप्रिय । –गहाँ–अ० सहसा, अकस्मात् । –गहानी–स्त्री० वह जो अचानक घटित हो । –चाक़–वि० दुर्बल; अस्वस्थ । –चार–वि० विवश, बेबस; गरीब; निराश; अपाहिज । अ० लाचार होकर । –चीज़–वि० नगण्य, तुच्छ । –जायज़–वि० अनुचित, जिसे करना, लेना, कहना आदि उचित न हो । –तजर्बाकार–वि० दे० 'ना-आज़मूदा' । –तमाम–वि० अधूरा । –तराश–वि० उजड्ड, गँवार । –तवाँ–वि० क्षीण; शक्तिहीन । –तवानी–स्त्री० कमजोरी, दुर्बलता । –ताक़त–वि० शक्तिहीन, अशक्त । –ताक़ती–स्त्री० शक्तिहीनता, कमजोरी । –दान–वि० नासमझ, अबोध, मूर्ख । –दानी–स्त्री० नासमझी, मूर्खता । –दार–वि० जिसके पास कुछ न हो, अकिंचन, मुफलिस । –दारी–स्त्री० नादार होनेका भाव, मुफलिसी । –दिहंद–वि० लेकर अदा न करनेवाला, जो ली हुई रकम न दे । –दुरुस्त–वि० जो ठीक न हो । –देहंद–वि० 'नादिहंद' । –नुकर,–नुक्कड़– स्त्री० अस्वीकृति, इनकार । –पसंद–वि० जो पसंद न हो, जिसे जी न चाहे, अप्रिय । –पाक–वि० अपवित्र, अशुचि; मैला, गंदा, पाकका उलटा । –पाकी–स्त्री० नापाक होनेका भाव, अपवित्रता; मैलापन । –पायदार–वि० जो टिकाऊ न हो, अस्थिर, क्षणस्थायी, कमजोर, पायदारका उलटा । –पायदारी–स्त्री० नापायदार होनेका भाव, अस्थिरता, क्षणस्थायित्व । –पुरसाँ–वि० लापरवाह, प्रमादी । –पुरसानी–स्त्री० लापरवाही, प्रमाद । –पैद–वि० जो पैदा न होता हो; अप्राप्य । –फ़रमाँ–वि० जो हुक्म न

माने, सरकश। **–फ़रमानी**–स्त्री० नाफरमाँ होनेका भाव। **–बालिग़**–वि० जिसने होश न सँभाला हो, अवयस्क (प्रायः १८ वर्षकी अवस्थामें आदमी बालिग होता है), बालिगका उलटा। **–बालिग़ी**–स्त्री० नाबालिग होनेकी अवस्था या स्थिति। **–बूद**–वि० जिसकी सत्ता न हो, नष्ट। **–मंज़ूर**–वि० जो मंजूर न हो, मंजूरका उलटा, अस्वीकृत। **–मर्द**–वि० नपुंसक; डरपोक, कायर। **–मर्दी**–स्त्री० नपुंसकता; कायरता, भीरुता। **–माकूल**–वि० अनुपयुक्त; अनुचित; अयोग्य। **–मालूम**–वि० जो मालूम न हो, अज्ञात। **–मुआफ़िक़**–वि० प्रतिकूल, खिलाफ, विरुद्ध, मुआफिकका उलटा। **–मुनासिब**–वि० अनुचित, अयुक्त। **–मुमकिन**–वि० असंभव। **–मुराद**–वि० जिसकी कामना पूर्ण न हुई हो। **–मुलायम**–वि० जो नर्म न हो, कठिन, कठोर। **–मेहरबान**–वि० अकृपालु। **–मौज़ूँ**–वि० बेमेल। **–याब**–वि० जो मिलता न हो, अप्राप्य। **–रवा**–वि० अनुचित। **–रसाई**–स्त्री० पहुँचका न होना। **–राज़**–वि० क्रुद्ध, अप्रसन्न, रुष्ट। **–राज़गी**–स्त्री० दे० 'नाराज़ी'। **–राज़ी**–स्त्री० नाराज होनेका भाव, अप्रसन्नता। **–लायक़**–वि० अयोग्य; नीच, अधम (हिं०)। **–वाकिफ़ीयत**–स्त्री० अनभिज्ञता। **–वाक़िफ़**–वि० अनभिज्ञ, वाकिफका उलटा। **–वाजिब**–वि० अनुचित, गैरवाजिब। **–शाइस्ता**–वि० नालायक, नामौजूं, अशिष्ट। **–शाद**–वि० अप्रसन्न, रंजीदा; चिंतित। **–समझ**–वि० जिसे समझ न हो, प्रज्ञारहित, बुद्धिहीन, मूर्ख। **–समझी**–स्त्री० नासमझ होनेका भाव या दुर्गुण, बुद्धिहीनता, मूर्खता। **–साज़**–वि० अस्वस्थ। **–साज़ी**–स्त्री० अस्वस्थता। **–हक़**–अ० अकारण, बेसबब; व्यर्थ, बेमतलब। **–हमवार**–वि० ऊँचा-नीचा, विषम, ऊबड़-खाबड़।

नाइक*–पु० दे० 'नायक'।

नाइट्रोजन–पु० (अं०) रंग, स्वाद तथा गंधसे रहित एक गैस जो वायुमंडलका ४।५ भाग है।

नाइन–स्त्री० नाईकी स्त्री; नाई जातिकी स्त्री।

नाइब*–वि०, पु० दे० 'नायब'।

नाइलॉन–पु० (नाइलॉन) एडीपिक अम्लका हेक्सामेथिलीन-डायमीनके साथ बहलकीकरण करनेपर प्राप्त यौगिक। यह बहुलक (पॉलीमर) ठोस अवस्थामें होता है जिसे पिघलाकर बारीक छिद्रके साँचेसे गुजारते हैं तो नाइलॉनके धागे तैयार होते हैं जो मोजे, बनिआइन आदि बनानेके काम आते हैं।

नाईं–अ० भाँति, तरह, प्रकार (से)।

नाई–पु० एक जाति जिसका व्यवसाय हजामत बनाना है। * स्त्री० नाव।

नाउँ*–पु० नाम।

नाउ*–स्त्री० नाव।

नाउत–पु० भूत, प्रेत आदि झाड़नेवाला, ओझा, सोखा।

नाउन†–स्त्री० दे० 'नाइन'।

नाऊ†–पु० दे० 'नाई'।

नाक–पु० (सं०) स्वर्ग; अंतरिक्ष। वि० खुश; कष्टरहित। **–चर**–पु० देवता। **–नटी**–स्त्री० अप्सरा। **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० इंद्र। **–पृष्ठ**–पु० स्वर्ग। **–वनिता**–स्त्री० अप्सरा। **–वास**–पु० स्वर्गमें निवास। **–सद्**–पु० देवता।

नाक–पु० मगर जैसा एक जलजंतु। स्त्री० वह दो छेदोंवाला प्रसिद्ध अवयव जिससे साँस लेते और बाहर निकालते हैं; नाकसे बहनेवाला तरल मल, रेंट। चरखेमेंकी वह लकड़ी जिसे पकड़कर उसे चलाते हैं; वह जिससे किसीकी प्रतिष्ठा बनी रहे, इज्जत रखनेवाला; वह जो किसी समुदायमें प्रधान या सबसे बढ़कर हो; मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत; नाशपातीकी जातिका, नाकके आकारका, एक फल, 'नाख'। **–घिसनी**–स्त्री० गिड़गिड़ाहट। **–बुद्धि**–वि० जो पशुओंकी तरह सूंघकर ही भक्ष्याभक्ष्य पहचान सके; महामूर्ख, तुच्छबुद्धि। मु०**–इधर कि नाक उधर**–हर तरहसे एक ही बात। **–ऊँची होना**–इज्जत बढ़ना। **–कटना**–लाज या प्रतिष्ठा जाती रहना, बेइज्जती होना, मान-मर्यादा नष्ट होना। **–काटना**–इज्जत उतार लेना, प्रतिष्ठा नष्ट करना, बेइज्जती करना। **–का बाल**–अत्यंत अंतरंग या प्रिय। **–की सीधमें**–ठीक सामने। **–घिसना**–दे० 'नाक रगड़ना'। **–चढ़ना**–क्रोधवश नथनोंका ऊपरकी ओर खिंच जाना। **–चढ़ाना**–क्रोधमें नथनोंको ऊपरकी ओर खींचना; घृणा प्रकट करना। **–छेदना**–हैरान करना, चें बुलवाना। **–तक खाना**–ठूँस-ठूँसकर खाना। **–तक भरना**–(बरतन आदिको) ऊपरतक भरना; ठूँस-ठूँसकर खाना। **–न दी जाना**–असह्य दुर्गंध मालूम होना, तीव्र दुर्गंध आना। **–पकड़ते दम निकलना**–अति शक्तिहीन होना। **(चाहे इधरसे)–पकड़ो चाहे उधरसे**–हर पहलूसे, हर तरहसे। **–पर गुस्सा होना**–बहुत जल्द क्रोध आना। **–पर दीया बालकर आना**–जीतकर या सफल होकर आना। **–पर पहिया फिर जाना**–नाक चिपटी होना। **–पर मक्खी न बैठने देना**–बहुत सतर्क रहना; किसीका थोड़ा-सा भी कृतज्ञ न होना; बहुत पाक-साफ रहना। **–पर रख देना**–माँगनेके साथ ही दे देना या अदा कर देना। **(किसीकी)–पर सुपारी तोड़ना**–बहुत परेशान करना। **–फटने लगना**–दे० 'नाक न दी जाना'। **–बहना**–नाकमेंसे श्लेष्मा निकलना। **–बैठना**–नाक चिपटी होना। **–भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**–क्रोध प्रकट करना, नाराज होना; घृणा प्रकट करना। **–में तीर करना या डालना**–बहुत हैरान करना। **–में दम करना**–खूब परेशान करना। **–में बोलना**–नकियाना। **–रख लेना**–इज्जत बचाना। **–रगड़ना**–दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना, आरजू-मिन्नत करना। **–लगाकर बैठना**–बहुत इज्जतदार बनकर बैठना। **–सिकोड़ना**–घृणा प्रकट करना। **–(कों) आना**–आजिज आना, परेशान हो जाना। **–चने चबवाना**–परेशान करना, तंग कर मारना। **–दम करना**–दे० 'नाकमें दम करना'।

नाकड़ा–पु० नाकका एक रोग।

नाकना*–स० क्रि० लाँघना, डाँकना; प्रतियोगितामें बढ़ जाना, बढ़कर होना; चारों ओरसे घेरना।

नाका–पु० किसी नगर, बस्ती आदिमें पैठनेका प्रमुख स्थान, प्रवेश-द्वार; रास्ते आदिका वह मोड़ जहाँसे दूसरी ओर मुड़ें, निकलें या घुसें; दुर्ग आदिमें घुसने और बाहर निकलनेका मार्ग या द्वार; वह प्रमुख स्थान जहाँ पहरा देने या किसी तरहका महसूल वसूल करनेके लिए सिपाही नियुक्त हों; जुलाहोंका तानेका तागा बाँधनेका एक औजार; (सुईका) छेद; नाक नामका जलजंतु। **–बंदी**–स्त्री० नाकेपर सिपाहियोंकी तैनाती, नाकेपर पहरा बैठाना; अवरोध। **–(के) दार**–पु० नाकेपर तैनात किया जानेवाला सिपाही। वि० छेदवाला।

नाकारी–वि० तथा पु० ('नोज') किसी प्रस्तावके विरोधमें 'ना' करनेवाले (सदस्य)।

नाकिह–पु० (अ०) निकाह करनेवाला, ब्याह करनेवाला।

नाकी(किन्)–पु० (सं०) देवता (जिसका निवासस्थान स्वर्ग है)।

नाकु–पु० (सं०) बिमौट, वल्मीक; पर्वत; एक मुनि।

नाकुल–वि० (सं०) नेवले जैसा; नकुल-संबंधी। पु० नकुलकी संतान।

नाकुलक–वि० (सं०) नकुलकी पूजा करनेवाला।

नाकुलि–पु० (सं०) नकुलका पुत्र; नकुल गोत्रका मनुष्य।

नाकुली–स्त्री० (सं०) रास्ना; चविका; यवतिक्ता; श्वेत कंटकारि; एक कंद जो सर्पदंशका विष दूर करता है।

नाकू–पु० दे० 'नक्र'।

नाकेश–पु० (सं०) इंद्र।

नाक्षत्र–वि० (सं०) नक्षत्र-संबंधी; जिसका काल नक्षत्रचक्रके परिवर्तनके अनुसार निर्धारित हो। पु० चांद्रमास। **–दिन**–पु० नाक्षत्र मासका एक दिन, चंद्रमाके एक नक्षत्रपरसे दूसरे नक्षत्रपर जानेका काल। **–मास**–पु० उतना काल जितनेमें चंद्रमा २७ नक्षत्रोंपर एक बार घूम जाता है।

नाक्षत्रिक–वि० (सं०) दे० 'नाक्षत्र'। पु० नाक्षत्रमास।

नाक्षत्रिकी–स्त्री० (सं०) नक्षत्रसे प्रभावितमनुष्यकी दशा। वि० स्त्री० नक्षत्र-संबंधिनी।

नाख–स्त्री० एक तरहकी नासपाती।

नाखना*–स० क्रि० नष्ट करना; फेंकना, डालना–'तृन ऊपर मृतिका नाखी, तब ऊपर हथिनी राखी'–सुंदरदास; गिराना;

लाँघना, डाँकना।

नाख़ुदा–पु० (फा०) जहाजका कप्तान। वि० खुदाको न माननेवाला।

नाख़ुन–पु० (फा०) दे० 'नाख़ून'।

नाख़ुना–पु० (फा०) दे० 'नाख़ूना'।

नाख़ून–पु० (फा०) उँगलियोंके ऊपरी सिरेपरका कठिन और चिपटा आवरण; चौपायोंकी टाप या खुरकी बढ़ी हुई कोर। **–तराश**–पु० नाखून काटनेका आला, नहरनी। मु०–**लेना**-नाखून तराशना; घोड़ेका ठोकर खाना।

नाख़ूना–पु० (फा०) एक नेत्ररोग जिसमें आँखोंमें सफेद झिल्ली पड़ जाती है और जो धीरे-धीरे पुतलियोंतकको ढाँक लेती है; लाल डोरे जो घोड़ोंकी आँखोंमें पड़ जाते हैं; एक प्रकारका कपड़ा जो रुई और रेशमके योगसे बनता है।

नाग–पु० (सं०) मनुष्यके आकारके पातालवासी सर्प जिनकी गणना देवयोनिमें है (इनमें मुख्य ये हैं–अनंत, वासुकि, पद्म, महापद्म, तक्षक, कुलीर, कर्कोटक और शंख); साँप; एक प्रकारका काला साँप जिसके सिरपर दो चरण-चिह्न होते हैं; पर्वत; हाथी; बादल; नागकेशर; पुन्नाग; शरीरमेंका एक प्रकारका पवन; एक देश; उस देशमें बसनेवाली एक जाति; राँगा; सीसा; नागरमोथा; नागवल्ली; (ला०) क्रूर मनुष्य; अश्लेषा नक्षत्र; खूँटी; आठकी संख्या। **–कंद**–पु० हस्तिकंद। **–कन्यका,–कन्या**–स्त्री० नागजातिकी कन्या (पुराणोंमें नागकन्याओंके सौंदर्यकी बड़ी प्रशंसा की गयी है)। **–कर्ण**–पु० हाथीका कान; रेंड (जिसका पत्ता हाथीके कानकी तरह होता है)। **–किंजल्क**-पु० नागकेशर। **–कुमारिका**–स्त्री० गुडुच; मजीठ। **–केशर**–स्त्री० सफेद, महँकदार फूलोंवाला एक सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी होती है, नागचंपा, वज्रकाठ। **–खंड**–पु० भारतके नौ खंडोंमेंसे एक। **–गंधा**–स्त्री० नाकुलीकंद। **–गति**–स्त्री० अश्विनी, भरणी या कृत्तिका नक्षत्रपर रहनेके समयकी किसी ग्रहकी गति। **–गर्भ**–पु० सिंदूर। **–चंपा**–स्त्री० नागकेशर। **–चूड**–पु० शिव। **–च्छत्रा**–स्त्री० नागदंतीका पेड़। **–ज**–पु० सिंदूर; राँगा। **–जिह्वा**–स्त्री० अनंतमूल; सारिवा। **–जिह्विका**–स्त्री० मैनसिल। **–जीवन**–पु० राँगा। **–झाग***–पु० अहिफेन, अफीम। **–दंत,–दंतक**-पु० हाथीदाँत; दीवारकी खूँटी। **–दंतिका**–स्त्री० वृश्चिकाली। **–दंती**–स्त्री० हस्तिशुंडी, कुंभा नामक ओषधि। **–दमन**–पु० नागदौनेका पौधा। **–दमनी** स्त्री० दे० 'नागदमन'। **–दला**–स्त्री० एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। **–दलोपम**-पु० फालसा। **–दुमा**–वि० (हिं०) (वह ऐबी हाथी) जिसकी पूँछका सिरा साँपके फनके आकारका हो। **–दौन**–पु० (हिं०) एक छोटा पहाड़ी पेड़। **–दौना**–पु० (हिं०) एक पौधा जिसमें टहनियोंकी जगह जड़के ऊपरसे केवल बड़ी-बड़ी पत्तियाँ लगती हैं; एक तरहका कड़ुआ और काँटेदार दौना। **–द्रु,–द्रुम**–पु० सेहुँड़; नागफनी। **–द्वीप**–पु० भारतवर्षका एक खंड (पु०)। **–धर**–पु० शिव। **–ध्वनि**–स्त्री० एक रागिनी। **–नक्षत्र**–पु० अश्लेषा नक्षत्र। **–नग***–पु० गजमुक्ता। **–नामक**–पु० टीन, राँगा। **–नामा-(मन्)**–पु० तुलसी। **–नायक**-पु० अश्लेषा नक्षत्र; अनंत आदि आठ प्रमुख नाग। **–निर्यूह**–पु० दीवारकी बड़ी खूँटी। **–पंचमी**–स्त्री० श्रावण-शुक्ला पंचमी जिस दिन सनातनी हिंदू नाग देवताकी पूजा करते हैं। **–पति**–पु० सर्पराज वासुकि; हस्तिराज ऐरावत। **–पत्रा**–स्त्री० नागदमनी। **–पत्री**–स्त्री० लक्ष्मणा। **–पद**–पु० एक रतिबंध। **–पाश**-पु० वरुणका अस्त्रभूत पाश; ढाई फेरेका फंदा; साँपोंका फंदा। **–पाशक**–पु० एक रतिबंध। **–पुर**–पु० पाताल, हस्तिना नामक पुर जहाँ पर्वतके रूपमें स्वलील दानवने गंगाका मार्ग रोका था; महाराष्ट्रका एक प्रसिद्ध नगर जो पहले मध्यप्रदेशकी राजधानी थी। **–पुष्प**–पु० चंपक, नागकेशर; पुन्नाग वृक्ष। **–०फला**–स्त्री० पेठा। **–पुष्पिका**–स्त्री० पीली जूही; नागदौना। **–पुष्पी**–स्त्री० नागदमनी; मेढासींगी। **–पूत**–पु० (हिं०) एक लता। **–फनी**–स्त्री० (हिं०) थूहरकी जातिका एक पौधा जिसमें टहनियोंकी जगह केवल साँपके फनके आकारके काँटेदार दल होते हैं। **–फल**–पु० परवल। **–फाँस**–स्त्री० (हिं०) दे० 'नागपाश'। **–फेन**–पु० अफीम। **–बंधक**-पु० हाथी फँसानेवाला। **–बंधु**–पु० पीपलका पेड़। **–बल**–पु० भीम (जिन्हें दस हजार हाथियोंका बल था)। वि० जो हाथीकी तरह बलवान् हो। **–बला**–स्त्री० गांगेरुकी, गंगेरन। **–बेल**–स्त्री० (हिं०) पानकी बेल। **–भगिनी**–स्त्री० वासुकि नागकी बहन, मनसा। **–भिद्**–पु० एक तरहका भारी साँप। **–भूषण**–पु० शिव। **–मंडलिक**-पु० सँपेरा। **–मरोड़**–पु० (हिं०) कुश्तीका एक पेंच। **–मल्ल**–पु० ऐरावत। **–माता(तृ)**–स्त्री० नागोंकी माता कद्रु, सुरसा; मैनसिल; आस्तीककी माता मनसा देवी। **–मार**–पु० काला भँगरा। **–मुख**–पु० गणेश। **–यज्ञ**-पु० एक यज्ञ जिसमें परीक्षित्के पुत्र जनमेजयने नागोंका विनाश किया था। **–यष्टि**–स्त्री० पोखरे या तड़ागमें बीचोबीच धँसाया जानेवाला पुन्नाग, बकुल आदिका लंबा खंभा। **–रंग**–पु० नारंगी। **–रक्त**–पु० सेंदुर; हाथी या साँपका रक्त। **–राज**–पु० शेषनाग; बहुत बड़ा साँप; ऐरावत; भीमकाय हाथी; छंदःशास्त्रके प्रवर्तक पिंगल। **–रुक**–पु० नारंगीका पेड़। **–रेणु**–पु० सेंदुर। **–लता**–स्त्री० पानकी बेल; मेहन, लिंग। **–लोक**–पु० पाताल। **–वंश**-पु० नागोंका वंश; शक जातिकी एक शाखा। वि० नागवंशका; नागवंशमें उत्पन्न। **–वल्लरी,–वल्ली**–स्त्री० पानकी बेल। **–वारिक**–पु० राजकुंजर; फीलवान, महावत; गरुड़; हाथियोंका यूथप; मंडलीका प्रधान व्यक्ति। **–वीथी**–स्त्री० चंद्रमाका वह मार्ग जिसमें अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र पड़ते हैं; कश्यपकी एक पुत्री। **–वृक्ष**–पु० नागकेशरका पेड़। **–शुंडी**–स्त्री० डंगरी फल। **–संभव,–संभूत**–पु० सेंदुर। **–साह्वय**–पु० हस्तिनापुर। **–सुगंधा**–स्त्री० भुजंगाक्षी, एक प्रकारकी रास्ना। **–स्तोकक**–पु० वत्सनाभ विष। **–स्फोता**-स्त्री० नागदंती; दंती। **–हंत्री**–स्त्री० बाँझ ककोड़ा, वंध्या कर्कोटकी। **–हनु**–पु० नख नामका गंधद्रव्य।

नागमती–स्त्री० (सं०) एक लता; पद्मावतमें वर्णित चित्तौरके राजा रत्नसेनकी परिणीता पत्नी।

नागर–वि० (सं०) नगर-संबंधी; नगरमें रहनेवाला; चतुर, चालाक; बुरा, जिसमें नगर-संबंधी दोष हों; नगरमें बोला जानेवाला; नग्न; नामहीन। पु० नगरवासी, पौर; चतुर, सभ्य पुरुष; देवर; जानकारीसे इनकार करना; सोंठ; नारंगी; नागरमोथा; व्याख्याता; क्लांति, कष्ट; मोक्षकी इच्छा; एक रतिबंध; गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; नागरी लिपिके अक्षर; एक प्रकारका गृहयुद्ध; (हिं०) दीवारका टेढ़ापन। **–घन**–पु० नागरमोथा। **–मुस्ता**–स्त्री० नागरमोथा। **–मोथा**–पु० (हिं०) एक प्रकारका सुगंधित तृण जिसकी जड़ मसाले और दवाके काम आती है।

नागरक–पु० (सं०) शिल्पी; कारीगर; चोर; नगरका शासन चलानेवाला राजकर्मचारी; एक रतिबंध; सोंठ। वि० दे० 'नागर'।

नागरता–स्त्री० (सं०) नागरिकता, शहरातीपन; शिष्टता, सभ्यता; चालाकी, चतुरता।

नागरिक–वि० (सं०) नगर-संबंधी; नगरका; नगर या नागरिकोंकी ओरसे किया जानेवाला (–अभिनंदन); जो नगरमें रहे, शहराती। पु० नगरवासी, पौर; किसी राज्यका वह निवासी जिसे उस राज्यमें रहने, व्यापारादि करने तथा संपत्ति रखनेका अधिकार प्राप्त होता है; नगरपर लगनेवाला कर। **–उड्डयन-विभाग**–पु० (सिविल ऐवियेशन डिपार्टमेंट) नागरिकोंकी हवाई यात्रा आदिकी देखभाल करनेवाला विभाग। **–शास्त्र**–पु० नागरिकोंके कर्त्तव्यों, अधिकारों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

नागरिकता–स्त्री० (सं०) नागरिक होनेका भाव; नागरोचित स्वत्व, आचार या शिष्टता; नागरिक जीवन।

नागरबेल–स्त्री० नागवल्ली, पान।

नागराह्व–पु० (सं०) सोंठ।

नागरी–स्त्री० (सं०) नगरमें रहनेवाली स्त्री, शहरकी औरत,

नगरवासिनी; चतुर स्त्री; सेहुँड़; संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाओंकी लिपि; पत्थरकी मोटाईकी एक बड़ी नाप; पत्थरकी भारी पटिया।

नागरीट, नागवीट–पु० (सं०) जार, उपपति; व्यभिचारी, लंपट; विवाह करानेवाला, घटक।

नागरेयक–वि० (सं०) नगरमें उत्पन्न।

नागरोत्थ–पु० (सं०) नागरमोथा।

नागर्य–पु० (सं०) नागर होनेका भाव, नागरता; विदग्धता।

नागल‡–पु० हल; बैलोंको जुएमें जोड़नेकी रस्सी।

नागांग–पु० (सं०) हस्तिनापुर।

नागांगना–स्त्री० (सं०) हथिनी।

नागांचला–स्त्री० (सं०) नागयष्टि।

नागांजना–स्त्री० (सं०) नागयष्टि; हथिनी।

नागांतक–पु० (सं०) गरुड़; मोर; सिंह।

नागा–पु० एक शैव संप्रदाय जिसमें साधु लोग नंगे रहते हैं; इस संप्रदायका साधु; आसाममें बसनेवाली एक जंगली जाति; आसामका एक पहाड़; बरावर चलनेवाले काममें पड़नेवाला अंतर, बीच। । * वि० खाली; नंगा।

नागाख्य–पु० (सं०) नागकेशर।

नागानंद–पु० (सं०) हर्षवर्द्धनका एक संस्कृत नाटक।

नागानन–पु० (सं०) गणेश।

नागाभिभु–पु० (सं०) एक बुद्ध।

नागाराति, नागारि–पु० (सं०) दे० 'नागांतक'।

नागार्जुन–पु० (सं०) शून्यवाद या माध्यमिक सिद्धांतके प्रवर्तक एक बौद्ध आचार्य (इनकी प्रधान रचना 'माध्यमिक शास्त्र' या 'माध्यमिक कारिका' है)।

नागार्जुनी–स्त्री० (सं०) दुधिया घास।

नागालाबु–पु० (सं०) गोल कद्दू।

नागाशन–पु० (सं०) गरुड़; मोर; सिंह।

नागाश्रय–पु० (सं०) हस्तिकंद।

नागाह्व–पु० (सं०) नागकेशर।

नागाह्वा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मणा नामक कंद।

नागिन–स्त्री० साँपकी मादा, सर्पिणी; नाग नामक साँपकी मादा जो बहुत विषैली होती है; क्रूर या दुष्ट स्वभाववाली स्त्री; पीठ या गरदनपरकी लंबी रोमावली; बैलोंकी पीठपर होनेवाली साँपके आकारकी लंबी रोमराजि जिसकी गणना ऐबोंमें है।

नागिनी–स्त्री० दे० 'नागिन'।

नागी–स्त्री० (सं०) 'हस्तिनी'।

नागी(गिन्)–पु० (सं०) शिव।

नागुला–पु० नेवला; नाकुली ओषधि।

नागेंद्र–पु० (सं०) बड़ा साँप; शेष आदि प्रमुख नाग; महाकाय हाथी, गजराज; ऐरावत।

नागेश–पु० (सं०) शेष नाग; संस्कृतके एक प्रसिद्ध वैयाकरण, नागेश भट्ट; पतंजलि।

नागेश्वर–पु० (सं०) शेष नाग; ऐरावत; नागकेशर।

नागेसर*–पु० दे० 'नागेश्वर'। वि० नागकेशरके रंगका, पीला।

नागोद, नागोदर–पु० (सं०) शस्त्राघातसे बचनेके लिए उदर या सीनेपर धारण किया जानेवाला लोहेका तवा, उदरत्राण या उरस्त्राण।

नागोदरिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका दस्ताना जिसे युद्धमें हाथकी रक्षाके लिए पहनते हैं।

नागोद्भेद–पु० (सं०) मेरुगिरिपर एक स्थान जहाँ सरस्वतीकी गुप्त धारा ऊपर देख पड़ती है।

नागौर–पु० मारवाड़में एक नगर जहाँके गाय-बैल बहुत प्रसिद्ध हैं।

नागौरा–वि० नागौरका; अच्छी जातिका; मजबूत।

नागौरी–वि० दे० 'नागौरा'। वि० स्त्री० नागौरकी (गाय)।

नाच–पु० ताल और लयपर आश्रित अंगविक्षेप; आनंदातिरेकमें मचायी जानेवाली उछल-कूद; खेल, क्रीड़ा; काम-धंधा। **–कूद**–स्त्री० उछल-कूद; नाच-तमाशा। **–घर, –महल**–पु० दे० 'नर्तनशाला'। **–रंग**–पु० आमोद-प्रमोद। मु०**–काछना**–नाचनेको उद्यत होना। **–दिखाना**–किसीके सामने उछल-कूद मचाना। **–नचाना**–परेशान करना; किसीसे इच्छानुसार काम कराना।

नाचना–अ० क्रि० ताल और लयके अनुसार गात्रविक्षेप करना; नृत्त करना; आनंदातिरेकमें उछलना-कूदना; प्रत्यक्ष-सा प्रतीत होना; इधरसे उधर आना-जाना, दौड़-धूप मचाना; काँपना, थर्राना; क्रोधावेशमें उछलना-कूदना।

नाचिकेत–पु० (सं०) एक ऋषि; अग्नि।

नाचीन–पु० (सं०) दक्षिणका एक प्राचीन देश; इस देशका राज्य (म० भा०)।

नाज*–पु० अनाज, अन्न; खाद्य वस्तु, खाद्य पदार्थ।

नाज़–पु० (फा०) हाव-भाव, विलास-चेष्टा; प्रशंसात्मक ढंगका अभिमान, गर्व; लाड-प्यार और सम्मानसे की गयी देखरेख। **–नख़रा**–पु० हाव-भाव, मोहक चेष्टा। **–नीं**–स्त्री० रूपवती स्त्री; नाजुकवदन औरत, कोमलांगी। **–बरदार**–वि० नाज वर्दाश्त करनेवाला, आशिक। **–बरदारी**–स्त्री० नाज वर्दाश्त करना। **–बू**–पु० मरुवेका पौधा। **–व (ओ) अदा,–नख़रा**–पु० दे० 'नाज़-नखरा'।

नाज़रीन–पु० (उपस्थित) दर्शकगण, नाजिरीन।

नाज़ाँ–वि० (फा०) अभिमानयुक्त, गर्वित, गर्वीला।

नाज़िम–वि० (अ०) प्रबंध करनेवाला, प्रबंधकर्ता। पु० मुसलमानोंके समयका एक राजकर्मचारी जिसके ऊपर किसी देश या राज्यके सब प्रकारके प्रबंधका पूर्ण दायित्व रहता था।

नाज़िर–वि० (अ०) देखनेवाला, दर्शक। पु० वह जो देख-भाल करे, निरीक्षक; लिपिकों आदिका मुख्य अधिकारी। * स्त्री० अंतःपुरकी मुख्य परिचारिका।

नाज़िरीन–पु० दर्शकगण (नाजिरका बहु०)।

नाज़िल–वि० (अ०) उतरनेवाला, नीचे आनेवाला; गुजरनेवाला। मु०**–होना**–नीचे आना, अवतरित होना।

नाज़ी–पु० दे० 'नात्सी'।

नाज़ुक–वि० (फा०) कोमल, सुकुमार, मृदु; महीन, बारीक; जो जल्दी टूट जाय, फूट जाय या नष्ट हो जाय; सूक्ष्म; गंभीर; संकटपूर्ण, खतरेका; मार्मिक। **–ख़याल**–वि० अच्छे विचारोंवाला। **–दिमाग़**–वि० दे० 'नाजुक-मिजाज'। **–बदन**–वि० कोमल शरीरवाला, कोमलांग, सुकुमार। पु० एक तरहका वारीक कपड़ा। **–मिज़ाज**–वि० जो किसी बातसे बहुत जल्द प्रभावित हो जाय, जिसे कोई बात बहुत जल्दी लग जाय; चिड़चिड़ा, तुनुकमिजाज; घमंडी।

नाजो, नाजौ*–स्त्री० नाजनी; चटक मटकसे रहनेवाली स्त्री। प्रियतमा।

नाट–पु० (सं०) नृत्य; नाटक, अभिनय; एक राग; कर्नाटक देश; *काँटे या कीलकी नोक जो चुभकर भीतर रह गयी हो। **–वसंत**–पु० एक राग।

नाटक*–पु० (सं०) दृश्य काव्य या रूपकके दस भेदोंमेंसे एक जो प्रथम और सर्वप्रधान है (साहित्यदर्पणके अनुसार इसमें प्रायः ५ से १० अंकतक होते हैं। इसका आधार कोई प्रसिद्ध घटना या आख्यान होता है और नायक कोई प्रतापी पुरुष, अच्छे प्रसिद्ध कुलमें उत्पन्न व्यक्ति या राजर्षि आदि होता है। शृंगार या वीर रस ही इसमें प्रायः प्रधान होते हैं); रूपक; अभिनय; दृश्य काव्य; अभिनेता; नर्तक। **–कार**–पु० नाटक बनाने, लिखनेवाला। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान या गृह जहाँ नाटक खेला जाता हो।

नाटकावतार–पु० (सं०) एक नाटकके अंतर्गत दूसरा नाटक।

नाटकिया–पु० अभिनेता; बहुरुपिया।

नाटकी–स्त्री० इंद्रकी सभा। पु० नाटक खेलनेवाला अभिनेता।

नाटकीय–वि० (सं०) नाटक-संबंधी; नाटक जैसा; आश्चर्यजनक रूपसे होनेवाला या किया जानेवाला।

नाटना–अ० क्रि० दे० 'नटना'। स० क्रि० अस्वीकार करना, इनकार करना।

नाटा–वि० छोटे कदका। पु० छोटे कदका बैल। **–करंज**–पु० करंजका एक भेद।

नाटाम्र–पु० (सं०) तरवूज ।

नाटार–पु० (सं०) अभिनेत्रीका पुत्र ।

नाटिका–स्त्री० (वं०) उपरूपकका एक भेद (इसमें चार अंक होते हैं और कथा कल्पित होती है) ।

नाटित–वि० (सं०) जिसका अभिनय किया गया हो, अभिनीत । पु० अभिनय ।

नाटितक–पु० (सं०) अनुकृति, किसीकी चेष्टादिका अनुकरण, स्वाँग ।

नाट्य–पु० नृत्य; नाटकादिका अभिनय; नृत्यकला; अभिनयकला; अभिनेताकी वेशभूषा; अभिनेता । **–कार**–पु० नाटक करनेवाला, नट । **–धर**–वि० अभिनेताकी पोशाक पहननेवाला । **–धर्मिका**–स्त्री० अभिनय-संबंधी नियमावली । **–प्रिय**–पु० शिव । **–मंदिर**–पु० दे० 'नाट्यशाला' । **–रासक**–पु० उपरूपकका एक भेद (यह प्रायः एक ही अंकका होता है और इसमें गानों तथा नृत्यकी प्रधानता होती है) । **–वेद**–पु० अभिनय आदि-संबंधी विद्या । **–शाला**–स्त्री० नाटक खेलनेका घर या स्थान । **–शास्त्र**–पु० दे० 'नाट्यवेद' ।

नाट्यागार–पु० (सं०) नाट्यशाला ।

नाट्याचार्य–पु० (सं०) अभिनय, नृत्यादिकी शिक्षा देनेवाला ।

नाट्यालंकार–पु० (सं०) नाटककी शोभावृद्धि करनेवाला विशेष प्रकारका अलंकार ।

नाट्यालाबु–पु० (सं०) एक तरहका कद्दू ।

नाट्योक्ति–स्त्री० (सं०) नाटकीय वाक्य-विन्यास; नाटकों में प्रचलित कुछ विशिष्ट कथन या वचन, जैसे पतिको 'आर्यपुत्र' कहना ।

नाट्योचित–वि० (सं०) अभिनय करने योग्य ।

नाठ–पु० नाश; सत्ताका अभाव; लावारिस जायदाद ।

नाठना*–स० क्रि० नष्ट, ध्वस्त करना । अ० क्रि० नष्ट, ध्वस्त होना; हटना; भाग जाना ।

नाठा*–पु० वह जिसके आगे-पीछे कोई न हो ।

नाड–पु० नाल, पोला डंठल ।

नाड़–स्त्री० गर्दन; नाल ।

नाड़ा–पु० स्त्रियोंका घाँघरा वाँधनेकी सूतकी मोटी डोरी, नीवी; हवन या पूजाके समय प्रयुक्त लाल या पीले रंगका गंडेदार सूत ।

नाडिंधम–वि० (सं०) नलीको फूंकनेवाला; नाड़ियोंमें गति उत्पन्न करनेवाला, (भय आदि) । पु० सोनार ।

नाडिंधय–वि० (सं०) नाडीके जरिये पान करनेवाला ।

नाडि–स्त्री० (सं०) नाड़ी; नली; पोला डंठल । **–चीर**–पु० ढरकी । **–पत्र**–पु० एक शाक ।

नाडिका–स्त्री० (सं०) नाड़ी; नली; एक कालमान, घटिका; पोला डंठल; नासूर; सूर्य-रश्मि; घड़ियाल (जिसपर आघात कर समय सूचित किया जाता है) ।

नाडिकेल–पु० (सं०) नारियल ।

नाड़िया–पु० (नाड़ी पकड़नेवाला) वैद्य ।

नाडी–स्त्री० (सं०) नली; शरीरकी रक्तवाहिनी शिराएँ; वे नलियाँ जिनके द्वारा हृदयका शुद्ध रक्त शरीरके सब अंगोंमें पहुँचता है; धमनीकी दीवारपर नियमित रूपसे रक्त प्रवाहके दावका बढ़ना घटना । हर बार जब हृदय पंप करके रक्तको धमनीमें भेजता है तब धमनीकी दीवारोंका क्षणिक फैलाव होता है । नाड़ीकी गति नापकर हृदयकी धड़कन गति नापी जा सकती है । शरीरकी ज्ञानवाहिनी, शक्तिवाहिनी और श्वास-प्रश्वासवाहिनी नलियाँ (हठयोग); फोड़ेका छेद; किसी तृण या पौधेका पोला डंठल; पद्मदंड; ६ क्षणोंका एक कालमान; घड़ी; फूंककर बजाया जानेवाला वाद्य (बाँसुरी आदि); हाथ या पैरकी नब्ज; वंशपत्री; गंडदूर्वा; छल, छद्म; कल्पित चक्रोंमें पड़नेवाले नक्षत्र जिनके अनुसार वर-वधूकी गणना बैठाते हैं (ज्यो०) । **–कलापक**–पु० एक घास, सर्पाक्षी । **–कूट**–पु० नाड़ी-नक्षत्र । **–चक्र** पु० नाभि-प्रदेशमें स्थित मुर्गीके अंडेके आकारका चक्र-विशेष जिसमेंसे सभी नाडियाँ निकली हैं (हठयोग) । **–चरण**–पु० पक्षी । **–जंघ**–पु० कौआ; एक मुनि; एक चिरजीवी बगुला जो इंद्रद्युम्न नामके जलाशयमें रहता है (म० भा०); कश्यपका पुत्र राजधर्म नामका बगुला (म० भा०) । **–तरंग**–पु० काकोल; हिंडक; ज्योतिषी; लंपट । **–तिक्त**–पु० नेपाली नीम । **–देह**–पु० शिवका द्वारपाल भृंगी जो अत्यंत कृशकाय है । **–नक्षत्र**–पु० जन्म-नक्षत्र । **–परीक्षा**–स्त्री० (वैद्यका) नब्ज देखना । **–पात्र**–पु० एक तरहकी जल घड़ी । **–मंडल**–पु० आकाशीय विषुवत् रेखा, क्रांतिवृत्त । **–यंत्र**–पु० शरीरमें चुभी या धँसी हुई वस्तुको निकालनेका एक प्राचीन यंत्र (सुश्रुत) । **–वलय,–वृत्त**–पु० क्रांतिवृत्त; समय जाननेका एक प्राचीन यंत्र । **–विग्रह**–पु० दे० 'नाडीदेह' । **–व्रण**–पु० वह पुराना घाव जिसमें भीतर ही भीतर छेद हो जाता और मवाद निकला करता है, नासूर । **–शाक**–पु० पटुआ नामका साग । **–संस्थान**–पु० नाडियोंका जाल । **–स्नेह**–पु० दे० 'नाडीदेह' । **–हिंगु**–पु० एक वृक्ष जिससे एक तरहकी हींग प्राप्त होती है ।

नाडीक–पु० (सं०) एक प्रकारका साग, कालशाक ।

नाडीका–स्त्री० (सं०) श्वासनलिका ।

नाडीकेल–पु० (सं०) नारियल ।

नाडीच–पु० (सं०) पटुआ नामका साग ।

नाणक–पु० (सं०) सिक्का; एक प्राचीन सिक्का (मृच्छकटिक) ।

नात*–पु० संबंधी, रिश्तेदार; संबंध, नाता; प्रशंसा; स्तुति-गीत (नअत) ।

नातर, नातरि, नातरु*–अ० दे० 'नतरु' ।

नाता–पु० संबंध, रिश्ता; लगाव, संपर्क । **–(ते)दार**–पु० रिश्तेदार । वि० सगा, संबंधी ।

नातिन–स्त्री० लड़कीकी लड़की; लड़केकी लड़की ।

नाती–पु० लड़कीका लड़का; लड़केका लड़का; * नातेदार, संबंध (मीरा) ।

नाते–अ० संबंधसे, रिश्ता होनेसे; के बहाने; लिए, वास्ते ।

नात्र–पु० (सं०) शिव; ऋषि; स्तुति, प्रशंसा; आश्चर्य ।

नात्सी–पु० (ज०) जर्मनीका एक राजनीतिक दल जो द्वितीय विश्वयुद्धके पहले बहुत प्रबल हो गया था ।

नाथ–पु० (सं०) प्रभु, अधीश्वर, स्वामी; पति; बैल आदिकी नाकमें पहनायी जानेवाली रस्सी; (हिं०) गोरखपंथी साधुओंकी एक उपाधि; सँपेरा । * स्त्री० दे० 'नथ' । **–द्वारा**–पु० (हिं०) उदयपुर राज्यमें वल्लभमतानुयायी वैष्णवोंका एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथकी मूर्ति है । **–हरि**–पु० पशु ।

नाथता–स्त्री० (सं०) नाथ या स्वामी होनेका भाव, प्रभुता ।

नाथत्व–पु० (सं०) दे० 'नाथता' ।

नाथना–स० क्रि० बैल आदिकी नाकको छेदकर उसमें नाथ पहनाना; कई वस्तुओंको एक साथ छेदकर उनमें रस्सी या तागा पहनाना, नत्थी करना; एक सूत्रमें बद्ध करना; (ला०) वशवर्ती बनाये रखना ।

नाथवान्(वत्)–वि० (सं०) पराधीन; सनाथ ।

नाद–पु० (सं०) शब्द, ध्वनि; अव्यक्त शब्द; वर्णोंके उच्चारणमें एक प्रकारका वाह्य प्रयत्न; अनुनासिक वर्ण, भारी शब्द, गर्जन; एक बाजा; स्तुति करनेवाला । **–मुद्रा**–स्त्री० एक तांत्रिक मुद्रा जिसमें दाहिनी मुट्ठी बँधी रहती है पर अँगूठेको अलग रखते हैं ।

नादना*–स० क्रि० बजाना । अ० क्रि० बजना; गरजना; प्रसन्न होकर हिलना-डुलना ।

नादली–स्त्री० दे० 'नादेअली' ।

नादि–वि० (सं०) शब्द करनेवाला; गरजनेवाला ।

नादित–वि० (सं०) बजाया हुआ ।

नादिम–वि० (अ०) लज्जित, शर्मिंदा ।

नादिया–पु० नंदी; वह बैल जिसे साथमें घुमा-घुमाकर योगी भीख माँगते हैं ।

नादिर–वि० (अ०) अद्भुत, असाधारण । **–शाह**–पु० फारसका एक नृशंस शासक जिसने सन् १७३८ में दिल्लीके तत्कालीन बादशाह मुहम्मद शाहको हराकर नगरमें कतलेआम कराया था; निरंकुश तथा क्रूर शासक (ला०) । **–शाही**–वि० नादिरशाह संबंधी; नादिरशाहके अत्याचार जैसा । स्त्री० *निरंकुश शासन;*

पाशविक अत्याचार।

नादिरी–स्त्री० (अ०) मुगलकालका सदरी जैसा एक पहनावा जिसके किनारोंपर कुछ काम किया रहता था; गंजीफेका वह पत्ता जिसे खेलके समय निकालकर अलग रख देते हैं।

नादी(दिन्)–वि० (सं०) नाद करनेवाला; बजनेवाला; गरजनेवाला। (स्त्री० 'नादिनी'।)

नादेअली–स्त्री० (अ०) रोगबाधासे बचनेके लिए यंत्रकी तरह गलेमें पहनी जानेवाली संगयशब नामक पत्थरकी चौकोर टिकिया जिसपर कुरानकी एक विशिष्ट आयत, जो 'नाद अलियन' इन शब्दोंसे आरंभ होती है, खुदी रहती है।

नादेय–वि० (सं०) नदी-संबंधी; नदीका; नदीमें उत्पन्न; ग्रहण न करने योग्य, अग्राह्य; जो अदेय न हो, देय, देने योग्य। पु० सेंधा नमक; कास; वानीरका पेड़।

नादेयी–स्त्री० (सं०) जलबेंत; भुइँजामुन, नारंगी; वैजयंती; अग्निमंथ वृक्ष, अँगेथू।

नाधन–स्त्री० सूतकी रोकके लिए तकलेमें लगायी जानेवाली गोल टिकिया।

नाधना–स० क्रि० बैल, धोड़े आदिको रस्सी या तस्मेके द्वारा सवारी, हल आदिसे जोड़ना या बाँधना, जोतना; जोड़ना, लगाना; आरंभ करना; ठानना; गूँथना, पिरोना; नाथना।

नाधा–पु० हल, कोल्हू आदिकी हरिससे जुएको बाँधने या फँसानेकी रस्सी या चमड़ेकी पट्टी।

नान–स्त्री० (फा०) रोटी, चपाती; तंदूरमें पकायी जानेवाली एक प्रकारकी मोटी खमीरी रोटी। **–ख़ताई**–स्त्री० एक प्रकारकी टिकियाकी शक्लकी मिठाई। **–ख़्वाह**–पु० अजवायन। **–पज़**–पु० नानबाई। **–पज़ी**–स्त्री० नानबाईका पेशा। **–पाव**–पु० एक प्रकारकी खमीरी रोटी। **–फरोश**–पु० नानबाई। **–बाई**–पु० रोटी और शोरबा बेचनेका पेशा करनेवाला।

नानक–पु० सिक्खोंके आदि गुरु जिनका जन्म कार्तिक-शुक्ला पूर्णिमा, संवत् १५२६ को और परलोकवास आश्विन-कृष्णा दशमी, संवत् १५९७ को हुआ (ये मूर्तिपूजा तथा बहुदेवोपासनाके विरोधी और एकेश्वरवादके प्रतिपादक थे)। **–पंथ**–पु० नानक द्वारा चलाया हुआ संप्रदाय। **–पंथी**–पु० नानक मतका अनुयायी। **–शाह**–पु० गुरु नानक। **–शाही**–वि० गुरु नानकसे संबद्ध, जिसका लगाव गुरु नानकसे हो; नानकके मतको माननेवाला।

नानकार–पु० वह माफी जिसके अनुसार जमींदार कुछ जमीनके लगानसे बरी रहते हैं। **–इस्मी**–स्त्री० वह नानकार जो किसी एक आदमीके नामसे हो। **–देही**–स्त्री० किसी गाँव या ताल्लुकेमें सदासे चली आती हुई वह माफी जिसमें सभी हिस्सेदारोंको हक हो।

नानकीन–पु० एक प्रकारका मटमैले रंगका सूती कपड़ा जो पहले चीनमें बनता था पर अब अन्य देशोंमें भी बनने लगा है।

नानस†–स्त्री० ननिया सास।

नानसरा†–पु० ननिया ससुर, पति या पत्नीका नाना।

नाना–पु० माताका पिता, मातामह; (अ०) पुदीना (जैसे अर्क-नाना)। *स० क्रि० डालना; घुसाना; झुकाना। वि० (सं०) अनेक प्रकारके, कई तरहके, विविध; अनेक, बहुत। अ० बिना। **–कंद**–पु० पिंडालू। वि० जिसमेंसे बहुत जड़ें निकली हों। **–ध्वनि**–पु० अनेक स्वर उत्पन्न करनेवाला वाद्य-यंत्र (वीणा आदि)। **–रस**–वि० विभिन्न स्वादोंका। **–रूप**–पु० अनेक प्रकारके रूप। वि० जिसके अनेक रूप हों; बहुविध। **–वर्ण**–पु० ब्राह्मण आदि चार वर्ण। वि० अनेक रंगोंके। **–विध**–वि० अनेक प्रकारके।

नानात्मवादी(दिन्)–वि० (सं०) सांख्यमत माननेवाला।

नानार्थ–वि० (सं०) अनेक अर्थोंवाला; जो कई तरहके कामोंमें आ सके, जिससे अनेक प्रयोजन सिद्ध हो सकें।

नानिहाल–पु० नानीका घर।

नानी–स्त्री० नानाकी पत्नी, माताकी माता, मातामही। मु० **–मर जाना**–होश उड़ जाना, हौसला पस्त हो जाना।

नान्ह*–वि० नन्हा, छोटा; नीच, अधम; बारीक, महीन। मु० **–कातना**–दुःसाध्य कार्य करना।

नान्हरिया*–वि० छोटा, नन्हा।

नान्हा*–वि० दे० 'नान्ह'। पु० नन्हा बच्चा।

नाप–स्त्री० किसी मानदंडके अनुसार स्थिर की गयी किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई, गहराई, ऊँचाई, मात्रा आदि, परिमाण, माप; किसी मानदंडके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई आदिका निर्धारण करनेकी क्रिया; लंबाईका मानदंड, वह स्थिर किया हुआ पैमाना जिसके अनुसार किसी वस्तुकी लंबाई निर्धारित की जाय। **–जोख,–तौल**–स्त्री० नापने और तौलनेकी क्रिया; नापकर या तौलकर निर्धारित की गयी मात्रा या परिमाण।

नापदान†–पु० दे० 'नाबदान'।

नापना–स० क्रि० किसी मानदंडके अनुसार किसी वस्तुके विस्तार, परिमाण, मात्रा आदिका निर्धारण करना।

नापित–पु० (सं०) नाई, हज्जाम। **–शाला,–शालिका**–स्त्री० हज्जामकी दुकान।

नापितायनि–पु० (सं०) हज्जामका लड़का।

नापित्य–पु० (सं०) हज्जामका पेशा; हज्जामका लड़का।

नाफ़–स्त्री० (फा०) नाभि; मध्यस्थान, केंद्रस्थान, मध्यभाग।

नाफ़ा–पु० (फा०) कस्तूरी मृगकी नाभिके भीतरकी कस्तूरीकी थैली।

नाबदान–पु० घरके गलीज, गंदे पानी आदिके बहनेकी नाली। मु० **–में मुँह मारना**–घृणित कार्य करना।

नाभक–पु० (सं०) हरीतकी।

नाभस–वि० (सं०) नभ-संबंधी, आकाशीय।

नाभाग–पु० (सं०) इक्ष्वाकु-वंशीय राजा अजके पिता, दशरथके पितामह; अंबरीषके पिता; कारुष वंशके एक राजा।

नाभागारिष्ट–पु० (सं०) वैवस्वत मनुके एक पुत्र।

नाभादास–पु० एक प्रसिद्ध वैष्णव साधु जिन्होंने 'भक्त-माल' लिखा है।

नाभि–स्त्री० (सं०) पहियेके बीचोबीच बेलनके आकारका वह छिद्र जिसमें धुरी पहनायी जाती है, चक्रमध्य, पिंडिका; जरायुज जंतुओंके पेटके बीचोबीच भँवरीकी तरहका गड्ढा, ढोंढ़ी, तुंदकूपी; कस्तूरी, लकड़ी आदिमें देख पड़नेवाला नाभि जैसा छोटा गड्ढा। पु० मुख्य राजा; प्रधान, नायक; क्षत्रिय; आग्नीध्र राजाके पुत्र और ऋषभदेवके पिता (पु०); राजराजेश्वर। **–कंटक,–गुडक,–गोलक**–पु० उभरी हुई ढोंढ़ी। **–च्छेदन**–पु० नाल काटनेकी क्रिया। **–ज,–जन्मा(न्मन्)**–पु० ब्रह्मा (जिनकी उत्पत्ति विष्णुकी नाभिसे है)। **–नाडी**–स्त्री० दे० 'नाभिनाली'। **–नाली**–स्त्री० नाभिकी नाली। **–पाक**–पु० एक रोग जिसमें बच्चोंकी नाभि पक जाती है। **–भू**–पु० ब्रह्मा। **–मूल**–पु० शरीरका वह भाग जो नाभिके बाद ठीक उसके नीचे हो। **–वर्धन**–पु० नाल काटनेकी क्रिया; मोटापा। **–वर्ष**–पु० जंबूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक। **–संबंध**–पु० एक ही उदरसे या एक ही गोत्रमें उत्पन्न होनेका नाता।

नाभिक–पु० (न्यूक्लियस) परमाणुका केन्द्रीय भाग, जो प्रोटानों तथा न्यूट्रानों का बना होता है। परमाणुका लगभग समस्त द्रव्यमान नाभिकमें ही निहित है।

नाभिका–स्त्री० (सं०) कटभीका पेड़; नाभि जैसा खात।

नाभिकीय रिऐक्टर–पु० (न्यूक्लियर रिऐक्टर) यह एक ऐसा संयंत्र है जिसमें परमाणु नाभिक (युरैनियम २३५ या प्लेटोनियम) का विखण्डन करके उससे विभुक्त होनेवाली ऊर्जाकी अतुल राशिके नियंत्रण और उसके उपयोगकी व्यवस्था रहती है। इसे परमाणु-पाइल या परमाणु भट्टी भी कहते हैं।

नाभिल–वि० (सं०) नाभि-संबंधी; जिसकी नाभि उभरी हुई हो।

नाभील–पु० (सं०) नाभिका गड्ढा; (स्त्रीके शरीरमें) नाभि और जंघाके बीचका खात; कष्ट; पीड़ा; उभरी हुई नाभि।

नाभ्य–पु० (सं०) शिव। वि० नाभि संबंधी।

नाम–पु० (फा०) दे० 'नाम' (सं०); प्रसिद्धि; धाक; इज्जत; नस्ल; कुल; लांछन; यादगार। **–ज़द**–वि० जिसका नाम किसी बातके लिए विशेष रूपसे अंकित किया गया हो; प्रसिद्ध। **–ज़दगी**–स्त्री० किसी कामके लिए चुनने या निश्चित करनेकी क्रिया, नामांकन। **–दार**–वि० नामवर, प्रसिद्ध। **–निशान,–व निशान**–पु० चिह्न, पता। **–वर**–वि० नामी, प्रसिद्ध, विख्यात। **–वरी**–स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि। मु० **–आसमानपर होना**–

प्रसिद्धि होना। **–उछलना**–अपयश फैलना, बदनामी होना। **–उछालना**–अपयश फैलाना, बदनाम करना। **–उठ जाना**–अस्तित्व न रह जाना, स्मृतितक बनी न रहना। **–कमाना**–दे० 'नाम करना'। **–करना**–प्रसिद्धि पाना, ख्याति प्राप्त करना। **(किसी दूसरेका)–करना**–किसीको दोषी ठहराना, किसीके मत्थे दोष मढ़ना। **(किसी बातका)–करना**–नाममात्रके लिए करना, कहनेभरके लिए करना, जितना या जिस तरह चाहिये उतना या उस तरह न करना। **–का**–नामवाला; नाममात्रके लिए, कहनेभरको। **(किसीके)–का कुत्ता पालना**–किसीका अत्यधिक अपमान करना, किसीको अत्यंत नीच समझना। **(किसीके)**–किसीके पक्षमें; किसीके पास, किसीके प्रति; सरकारी या अन्य प्रामाणिक कागजमें किसीके नामके सामने (दर्ज); कानूनी, प्रामाणिक लेख द्वारा किसीके पक्षमें। **–के लिए**–केवल देखने या कहने सुननेके लिए, कहनेभरको; जरा-सा; किसी काम या उपयोगके लिए, नहीं। **–को**–कहनेभरको; केवल काम चलानेभरको, अपर्याप्त, अत्यल्प; ख्यातिके लिए। **–को नहीं**–कहनेभरको भी नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं, एक भी नहीं। **–चलना**–लोकमें स्मृति बनी रहना। **–चारको**–कहनेभरको, नाममात्रको। **(किसीके)–डालना**–(किसीके) नामके सामने दर्ज करना। **-डुबाना**–मान-मर्यादा मिटाना, कलंक लगाना। **–डूबना**–मान-मर्यादा नष्ट होना, कलंक लगना। **(किसीका)–धरना**–नामकरण करना; दोषारोपण करना, दोषी ठहराना; बदनामी करना। **–धराना**–'नाम धरना'का प्रे०। **–न लेना**–स्मरणतक न करना, भय, घृणा, खिन्नता आदिके कारण प्रसंगतक न छेड़ना; दूर भागना, बहुत अधिक बचना। **(···तो मेरा)–नहीं–तो** मुझे गया-गुजरा समझना। **–निकलना**–किसी बातके लिए नाम प्रसिद्ध होना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट होना। **–निकलवाना**–अपकीर्ति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट कराना। **–निकालना**–सुख्याति या कुख्याति फैलाना; तंत्र-मंत्रकी क्रिया द्वारा चोरका नाम प्रकट करना। **(किसीके)–पड़ना**–(किसीके) नामके सामने लिखा जाना या लिखा रहना। **(किसीके)–पर**–(किसीके) निमित्त, (किसीकी) स्मृतिमें; (किसीके) भरोसे। **–पैदा करना**–ख्याति प्राप्त करना। **–बिकना**–प्रसिद्धिके कारण लोकमें बहुत अधिक सम्मान होना, इतनी ख्याति होना कि नाम सुननेभरसे लोगोंके हृदयमें आदरका भाव जाग उठे। **–बेचना**–किसीका नाम लेकर दूसरोंकी सहानुभूति, आदर या कृपाका पात्र बनना। **–मिट जाना**–दे० 'नाम उठ जाना'। **–मिटना**–अस्तित्वका एक भी चिह्न न रहना, नामतक न बच रहना। **–रखना**–प्रतिष्ठाकी रक्षा करना। **–लगना**–दोषी ठहराया जाना। **–लगाना**–दोषी ठहराना। **–लिखना**–भरती करना। **–लिखाना**–भरती होना। **(किसीका)–लेकर**–(किसीके) नामके प्रभावसे; (किसीका) कहलाकर; (किसीका) स्मरण करके। **–लेना**–नाम पुकारना; याद करना; आदर, कृतज्ञताके भावसे स्मरण करना, तारीफ करना; चर्चा चलाना, विचार करना। **(किसीके)–से**–(किसीका) नाम लेकर; नाम कहनेभरसे, नाम सुनते ही। **–होना**–ख्याति या यश फैलना; नाम लिया जाना। **–(मो) निशान बाकी न रहना या मिट जाना**–एकदम बरबाद हो जाना, इस प्रकार नष्ट होना कि अस्तित्वका कोई चिह्न ही न रह जाय।

नाम(न्)–पु० (सं०) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूहका बोध हो, वाचक शब्द, संज्ञा शब्द, आख्या, अभिधान, आह्वा। **–करण**–पु० नाम रखनेका संस्कार। **–कर्म(न्)**–पु० नामकरण संस्कार। **–कीर्तन**–पु० गाने-बजानेके साथ या यों ही ईश्वरका नाम जपना। **–कृत**–पु० किसी वस्तुका असली नाम छिपाकर दूसरा नाम बतलाना (कौ०)। **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० नामके साथ संबोधन या उल्लेख करना। **-ग्राम**–पु० नाम और ठिकाना, नाम और पता। **–देव**–पु० एक प्रसिद्ध कृष्णोपासक। **–द्वादशी**–स्त्री० अगहन सुदी तीजको होनेवाला एक व्रत जिसमें गौरी, काली आदि बारह देवियोंकी पूजा होती है। **–धन**–पु० एक राग। **–धरता**–पु० (हिं०) नामकरण करनेवाला, पिता। **–धराई**–स्त्री० (हिं०) अपयश, कुख्याति। **–धातु**–स्त्री० संज्ञापदसे बनायी हुई धातु (व्या०)। **–धारक**–वि० कहनेभरको कोई नाम धारण करनेवाला, जिसका कोई विशिष्ट नाम लेनेभरके लिए हो, जो अपने नामके अनुरूप कार्य न करता हो; विहित कर्म न करनेवाला (ब्राह्मण)। **–धारी(रिन्)**–वि० नामका, नामक; नामधारक, तथाकथित। **–धेय**–पु० नाम, आख्या, संज्ञा; नामकरण। **–नामिक**–पु० विष्णु। **–निक्षेप**–पु० नामस्मरण (जै०)। **–निर्देश**–पु० नामका उल्लेख करना। **–निर्देशनपत्र**–पु० (नॉमिनेशन पेपर) दे० 'नामांकन-पत्र', नामज़दगीका पर्चा; नामनपत्र। **–पट्ट**–पु० (साइनबोर्ड) लकड़ी, लोहे आदिका वह पट्ट या तख्ती जिसपर किसी व्यक्ति, संस्था, दूकान आदिका नाम लिखा रहता है और जिसे प्रायः दूकान, मकान आदिके सामने टाँग देते हैं। **–पत्र**–पु० (लेबल) किसी शीशी· बोतल, डब्बे आदिपर लगा हुआ कागजका वह टुकड़ा जिसपर उसके भीतरकी दवा आदिका नाम लिखा या छपा हो। **–पत्रित**–वि० (लेबल्ड) जिसपर नामपत्र (लेबल) लगा हुआ हो। **–बोला**–वि० (हिं०) नाम जपनेवाला। **–मात्र**–वि०, अ० कहनेभरको, अत्यल्प। **–माला**–स्त्री०,**–संग्रह**–पु० संज्ञाशब्दोंका कोश। **–मुद्रा**–स्त्री० वह मुद्रा या मुद्रिका जिसपर नाम खुदा हो। **–यज्ञ**–पु० दिखावटी यज्ञ। **–रासी**–वि० (हिं०) समान नामवाला, हमनाम। **–रूप**–पु० नाम और रूप। **–लेवा**–पु० (हिं०) नाम लेनेवाला; उत्तराधिकारी। **–वर्जित**–वि० नामहीन; मूर्ख। **–वाचक**–वि० नाम बतलानेवाला। पु० व्यक्तिवाचक संज्ञा। **–शेष**–वि० जिसका केवल नाम रह गया हो; गत, मृत। पु० मृत्यु। **–सत्य**–पु० गुण न होते हुए भी गुणद्योतक नामका कथन। **–हँसाई** (हिं०) बदनामी।

नामक–वि० (सं०) नामका, नामवाला (समासांतमें)।

नामघर–पु० असमियोंका पूजा मंदिर।

नामतः(तस्)–अ० (सं०) नामसे, नामके द्वारा।

नामलेखनशुल्क–पु० (एनरोलमेंट फी) नाम लिखने, भरती करने, सदस्य बनाने आदिका शुल्क।

नामांक–वि० (सं०) दे० 'नामांकित'।

नामांकनपत्र-पु० (नॉमिनेशन पेपर) वह आवेदनपत्र जो विधानसभा, नगरपालिका आदिके चुनावमें उम्मेदवारकी हैसियतसे खड़े होनेवाले व्यक्ति द्वारा अपनी अर्हता, नाम, प्रामाणिकता आदिका स्पष्टीकरण करते हुए चुनावके उपयुक्त अधिकारीके सामने उपस्थित किया जाय।

नामांकित–वि० (सं०) जिसपर नाम लिखा या खुदा हो।

नामांतर–पु० (सं०) दूसरा नाम, उपनाम।

नामा–पु० नामदेव।

नामा(मन्)–वि० (सं०) नामवाला, नामक (केवल बहुव्रीहि समासमें और उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त)।

नामानुशासन–पु० (सं०) कोश।

नामापराध–पु० (सं०) किसी सम्मानित व्यक्तिका नामोल्लेख कर अशिष्ट शब्दोंका प्रयोग करना।

नामाभिधान–पु० (सं०) कोश।

नामावली–स्त्री० (सं०) नामोंकी सूची; † वह कपड़ा जिसपर किसी देवताका नाम सर्वत्र अंकित हो, रामनामी।

नामि–पु० (सं०) विष्णु।

नामिक–वि० (सं०) नाम-संबंधी।

नामिका–स्त्री० कुछ ऐसे लोगोंकी सूची जिनमेंसे, किसी विषयके विवेचनके लिए, एक दोको चुन लेना हो (पैनेल)।

नामित–वि० (सं०) झुकाया हुआ।

नामी–वि० नामवाला, नामका; प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर, जिसका बड़ा नाम हो। **–गिरामी**–वि० प्रसिद्ध, मशहूर, नामवर।

नामोल्लेख–पु० (नेमिंग) किसी कदाचरण, अवज्ञा या असंसदीय कार्यके लिए अध्यक्ष द्वारा सदनमें सदस्यके नामका उल्लेख किया जाना।

नाम्य–वि० (सं०) झुकाने योग्य; लचीला।

नायँ*–पु० दे० 'नाम'। अ० नहीं; † यहाँ (बुंदेल०) 'गवैयाँ फिरे

नायकके मायँ'।

नाय–पु० (सं०) नेता; नेतृत्व; नय, नीति; उपाय, युक्ति।

नायक–पु० (सं०) ले जाने या पहुँचानेवाला, राह दिखानेवाला; किसी समुदाय या जनताको विशिष्ट उद्देश्यकी पूर्तिका मार्ग निर्देश करनेवाला प्रभावशाली व्यक्ति या अधिकारी, अग्रेसर; वह सेनापति जिसके अधीन दस और सेनापति हों; बीस हाथियों और घोड़ोंके दलका अध्यक्ष; प्रभु, अधीश्वर; हारका प्रधान मणि; श्रेष्ठ पुरुष, किसी समुदायका अग्रगण्य व्यक्ति; शृंगारका आलंबन रूप-यौवन आदिसे संपन्न पुरुष (नायकके चार भेद ये हैं–धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित, धीरप्रशान्त। इनमेंसे प्रत्येकके चार-चार भेद ये हैं–दक्षिण, धृष्ट, अनुकूल, शठ–इस तरहसे १६ भेद हुए। इनके तीन भेद और हैं–उत्तम, मध्य, अधम); वह पुरुष जिसके चरितको लेकर किसी काव्य या नाटक आदिकी रचना की गयी हो; एक वर्णवृत्त; एक राग; शाक्य मुनि।

नायका–स्त्री० नायिका; वेश्याकी माता; कुटनी।

नायकाधिप–पु० (सं०) राजा।

नायकी–पु० एक राग। –**कान्हड़ा**–पु० एक राग। –**मल्लार**–पु० एक राग।

नायन–स्त्री० दे० 'नाइन'।

नायब–वि० (अ०) प्रतिनिधित्व करनेवाला, स्थानापन्न, सहायक। पु० सहायक; मुनीम।

नायबी–स्त्री० नायबका काम; नायबका पद।

नायिका–स्त्री० (सं०) ले जाने या पहुँचानेवाली, राह दिखानेवाली; यौवन तथा रूप-गुणसंपन्न स्त्री; नायककी पत्नी; वह स्त्री जिसका चरित किसी काव्यमें वर्णित हो; नाटक, उपन्यास आदिकी प्रधान पात्री; एक तरहकी कस्तूरी; दुर्गाकी कोई शक्ति, दे० 'अष्टनायिका'।

नारंग–पु० (सं०) नारंगीका पेड़ या फल; विट; यमज; प्राणी; गाजर; पिप्पली-रस।

नारंगी–स्त्री० एक तरहका मीठा नीबू, संतरा। वि० नारंगीके रंगका।

नार–वि० (सं०) नर-संवंधी, मनुष्य-संबंधी; आध्यात्मिक। पु० नरसमुदाय; जल; हालका पैदा हुआ वछड़ा; सोंठ। –**कीट**–पु० अश्मकीट; छल करनेवाला; आशा दिलाकर उसे भंग करनेवाला। –**जीवन**–पु० सोना।

नार–स्त्री० गर्दन; स्त्री; जुलाहोंकी ढरकी। † पु० नाला; घाँघरा आदि वाँधनेकी सूतकी डोरी; मोटा रस्सा; आँवल। –**बेवार**–पु० नाल, खेड़ी आदि, नारा-पोटी। **मु०**–**नवाना,–नीची करना**–लज्जा, संकोच आदिके कारण सिर नीचा कर लेना।

नारक–वि० (सं०) नरक-संवंधी। पु० नरक; नरकमें पड़ा हुआ जीव।

नारकिक–वि०, पु० (सं०) दे० 'नारकी'।

नारकी(किन्)–वि० (सं०) नरकभोगी; नरकमें जाने योग्य। पु० नरकमें रहनेवाला।

नारकीय–वि० (सं०) नरक-संवंधी; नरक-भोगीकी तरहका, ऐसा जैसा नरक भोगीका हो; अति निकृष्ट, अति अधम।

नारद–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्माके मानस-पुत्र माने जाते हैं (पुराणोंका कथन है कि ये वीणा वजाते और हरिका गुणगान करते हुए एक लोकसे दूसरे लोकमें घूमा करते हैं। ये वड़े कलह-प्रेमी भी हैं और इसीलिए झगड़ा लगानेवालेको लोग 'नारद' कहा करते हैं। इनका एक नाम 'कलहप्रिय' भी है); विश्वमित्रके एक पुत्र; एक प्रजापति; एक गंधर्व। –**पुराण**–पु० एक महापुराण जिसमें सनकादिकने नारदको संवोधित करके कथा कही है और उन्हें उपदेश दिया है।

नारदीय–वि० (सं०) नारद-संबंधी; नारदका।

नारना*–स० क्रि० ताड़ना, समझना, भाँपना।

नारसिंह–वि० (सं०) जिसमें नरसिंहका वर्णन हो; नरसिंह-संवंधी; नरसिंहका। पु० विष्णु।

नारा–पु० पूजा या कथा आदिमें प्रयुक्त लाल रंगका डोरा, रक्षासूत्र; चोटीवंधन, इजारवंद; नवजात शिशुका नाल; पेटकी अँतड़ी; बरसाती पानीकी मोटी धारा या उससे बना हुआ गड्ढा, नाला–'चहुँदिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा'–रामा०; किसी माँग या शिकायतकी ओर ध्यान दिलानेके लिए वार-वार बुलंद की जानेवाली सामूहिक आवाज। –**मूलक साहित्य**–किसी राजनीतिक या सामाजिक मतवादके प्रचारके लिए लिखा गया साहित्य। स्त्री० (सं०) जल (स्मृ०)।

नाराइन–पु० नारायण, विष्णु।

नाराच–पु० (सं०) लोहेका वाण; वाण; एक वर्णवृत्त; २४ मात्राओंका एक छंद; जलहस्ती।

नाराचिका–स्त्री० (सं०) सुनारों आदिका काँटा; छोटा नाराच।

नाराची–स्त्री० (सं०) दे० 'नाराचिका'।

नाराज़–वि० दे० 'ना'के साथ।

नारायण–पु० (सं०) विष्णु, भगवान्, परमात्मा; अजामिलका पुत्र; नारायणकी सेना; एक अस्त्र, धर्मराज और दक्ष प्रजापतिकी एक कन्यासे उत्पन्न एक पौराणिक ऋषि जो ईश्वरके अंशावतार और 'नर'के भाई माने जाते हैं; एक उपनिषद्। –**क्षेत्र**–पु० गंगाके किनारेकी चार हाथतककी भूमि। –**प्रिय**–पु० शिव; पीत चंदन। –**बलि**–स्त्री० आत्मघात आदिसे मरे हुए प्राणीकी और्ध्वदेहिक क्रिया करनेके पूर्व प्रायश्चित्तके रूपमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव; यम और प्रेतके निमित्त दी जानेवाली वलि।

नारायणी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; दुर्गा; सतावर; मुद्गल मुनिकी पत्नी; कृष्णकी सेना जिसे उन्होंने कुरुक्षेत्रमें दुर्योधनकी सहायताके लिए दिया था। वि० नारायण संवंधी; नारायणकी (–माया, –सेना)।

नारायणीय–वि० (सं०) नारायण-संबंधी; नारायणका। पु० नारद और नारायण ऋषिका संवादरूप उपाख्यान (म० भा०)।

नाराशंस–पु० (सं०) ऊम, और्व और आव्य–ये तीन पितृगण; वह चमस (चमचा) जिसमें इन पितरोंको सोमरस दिया जाता है; पितरोंके निमित्त चमचेमें रखा हुआ सोमरस; रुद्र-दैवत्य मंत्र जिनमें मनुष्योंकी प्रशंसा है (वै०)।

नाराशंसी–स्त्री० (सं०) मनुष्योंकी प्रशंसा।

नारि*–स्त्री० दे० 'नारी', स्त्री; गरदन।

नारिक–वि० (सं०) जलका, जलीय; आध्यात्मिक।

नारिकेर, नारिकेल–पु० (सं०) नारियल। –**क्षीरी**–स्त्री० एक प्रकारकी गिरीकी खीर।

नारिकेरी, नारिकेली–स्त्री० (सं०) नारियल; नारियलके पानीके खमीरसे वननेवाला एक मद्य।

नारिदान*–पु० पनाला।

नारियल–पु० लंबोतरे और तिपहले फलोंवाला एक ताड़की तरहका पेड़ जो गरम देशोंमें समुद्रका किनारा लिये हुए होता है; इस पेड़में लगनेवाला फल। –**पूर्णिमा**–स्त्री० वंवई प्रांतका एक त्योहार जिसमें लोग समुद्रमें नारियल फेंकते हैं।

नारियली–स्त्री० नारियलका खोपड़ा; नारियलकी ताड़ी; नारियलका हुक्का।

नारी–स्त्री० हरिसमें जूआ वाँधनेकी रस्सी या तस्मा; * 'नाड़ी'; दे० 'नाली'; † एक पक्षी; (सं०) स्त्री, औरत। –**कवच**–पु० एक सूर्यवंशी राजा। –**तरंगक**–पु० स्त्रियोंको फँसानेवाला पुरुष, जार, व्यभिचारी। –**तीर्थ**–पु० एक तीर्थ जहाँ विप्रशापसे ग्राह वनी हुई पाँच अप्सराओंका अर्जुनने उद्धार किया था (म० भा०)। –**दूषण**–सुरापान, दुर्जन-संसर्ग आदि जो स्त्रियोंके लिए दुर्गुणरूप हैं। –**मुख**–पु० एक प्राचीन देश (वृ० सं०)। –**रत्न**–पु० नारीरूप रत्न, अति गुणवती स्त्री।

नारीकेल–पु०, **नारीकेली**–स्त्री० (सं०) नारियल।

नारीच–पु० (सं०) नालिता नामक शाक।

नारीष्टा–स्त्री० (सं०) चमेली।

नारू–पु० जूँ; अधिकतर गरम देशके लोगोंको होनेवाला एक रोग जिसमें विशेषकर शरीरके निचले भागमें फुंसियाँ हो जाती हैं और उनमेंसे डोरेकी तरहकी पतली-पतली सफेद चीज निकलती है, नहरुवा।

नारोपजीवी–पु० समाजमें उभरते नारोंको पकड़कर अपने को नकली

ढंगसे आधुनिक दिखानेवाला लेखक ।

नार्पत्य–वि० (सं०) नृपति-संबंधी ।

नार्मद–वि० (सं०) नर्मदा-संबंधी; नर्मदाका । पु० नर्मदामें पाया जानेवाला शिवलिंग ।

नार्मल स्कूल–पु० (अं०) वह स्कूल जहाँ अध्यापन-कलाकी शिक्षा दी जाय ।

नार्यंग–पु० (सं०) नारंगीका पेड़ ।

नार्यतिक्त–पु० (सं०) चिरायता ।

नालंदा–पु० एक प्राचीन बौद्ध विश्वविद्यालय जो मगधमें था ।

नालंबी–स्त्री० (सं०) शिवकी वीणा ।

नाल–वि० (सं०) नरकुल-संबंधी या उससे बना हुआ । स्त्री० कमल आदिकी डंडी; पौधेका पोला तना, कांड; नली; नाड़ी; बंदूककी नली । पु० आँवल; हरताल; मूठ; नाला; (हिं०) कसरत करनेके लिए बना हुआ भारी गोल पत्थर; जमवट; जुएका अड्डा; जुआ खेलानेवालेको दी जानेवाली रकम; एक जलीय पौधा । **–कटाई**–स्त्री० (हिं०) नाल काटनेका काम; नाल काटनेकी उजरत । **–बाँस**–पु० (हिं०) एक प्रकारका बाँस । **–वंश**–पु० नरकट, नरसल । **मु०** **(क्या किसीका)–काटा है ?** –क्या किसीकी बड़ी-बूढ़ी है (स्त्री०) । **(कहीं पर)–गड़ा होना**–किसी स्थानका जन्मभूमिकी भाँति प्रिय होना, किसी स्थानसे बहुत अधिक प्रेम होना; किसी स्थानपर स्वत्व होना ।

नाल–पु० (अ०) रगड़से बचानेके लिए घोड़ेकी टाप और जूतेकी एड़ीके नीचे लगाया जानेवाला लोहेका अर्द्धचंद्राकार टुकड़ा । **–बंद**–पु० वह जो घोड़ेकी टाप या जूतेकी एड़ीमें नाल जड़नेका काम करे । **–बंदी**–स्त्री० नाल जड़नेका काम, नालबंदका पेशा । **–शतीरी**–पु० एक प्रकारकी लकड़ीकी मेहराब जिसमें कई छोटी मेहराब कटी होती हैं ।

नालकी–स्त्री० एक तरहकी लंबी खुली पालकी ।

नाला–पु० दूरतक गया हुआ लंबा-चौड़ा गड्ढा जिसमें होकर बरसातका पानी किसी नदी आदिमें पहुँचता है; उससे होकर बहनेवाली जलकी धार; रंगीन गंडेदार सूत, नारा । स्त्री० (सं०) कमल-दंड; पौधेका पोला तना ।

नालि–स्त्री० (सं०) कमल आदिकी डंडी; पद्मपुष्प; एक प्रकारका शाक; नाडी, सिरा; घटिका, २४ मिनट; हाथीका कान छेदनेका आला; पानी बहनेका नाला; घंटा बजानेका घड़ियाल । **–जंघ**–पु० डोमकौआ ।

नालि*–स्त्री० चिता–'विरहिणि थी तो क्यू रही, जली न पिवके नालि'–साखी ।

नालिक–पु० (सं०) कमल; भैंसा; एक तरहकी बाँसुरी ।

नालिका–स्त्री० (सं०) पद्मदंड; नाली; हाथीका कान छेदनेका औजार; घटिका; चमड़ेका चाबुक; जुलाहोंकी सूत लपेटनेकी नली; नालिता नामका शाक, पटुआ साग; एक गंधद्रव्य ।

नालिकेर–पु०, **नालिकेली**–स्त्री० (सं०) दे० 'नारिकेर' ।

नालिता–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका पटुआ जिसके पत्ते सागके काम आते हैं ।

नालिश–स्त्री० (फा०) किसी प्रकारकी क्षति या कष्ट पहुँचानेवालेके विरुद्ध ऐसे व्यक्ति या अधिकारीके निकट किया गया आवेदन जो दोषीको उचित दंड दे सके, फरियाद, अभियोग । मु० **–दागना**–नालिश करना ।

नाली–स्त्री० (सं०) करेमूका साग; कमल; कमलकी डंडी; रक्तवाहिनी शिरा, धमनी; दंडभरका समय, घटी; हाथीका कान छेदनेका आला; एक वाद्य; (हिं०) मोरी । **–व्रण**–पु० नासूर ।

नालीक–पु० (सं०) पोला बाण जिसमें केवल मुँहपर लोहा लगा रहता है; भाला; कमलोंका समूह; कमलदंड; कमंडलु ।

नालीकिनी–स्त्री० (सं०) पद्म-समूह; कमलोंसे पूर्ण जलाशय ।

नालीप–पु० (सं०) कदंब ।

नालुक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

नालेर*–पु० नारिकेल, नारियल (बीसल०) ।

नालौट, नालौर–वि० कहकर बदल जानेवाला, मुकर जानेवाला ।

नाल्ह (नरपति)–पु० बीसल देव रासोके रचयिता एक प्रसिद्ध राजस्थानी कवि ।

नावँ–पु० नाम ।

नाव–स्त्री० जलके ऊपर तैरनेवाला काठ या टिनका लंबोतरा खुला यान जो नदी, नाला आदि पार करने, मछली मारने, जलयात्रा करने आदिके काम आता है, तरणि, वहित्र, नौका । **–घाट**–पु० वह घाट जहाँ नावें लगें या ठहरें । **मु०** **(सूखेमें)–चलाना**–असंभव कार्य करने चलना । **–में धूल उड़ाना**–एकदम झूठी बातें कहना, सफेद झूठ बोलना ।

नावक–पु० (फा०) एक प्रकारका छोटा तीर; मधुमक्खीका डंक; * मल्लाह, केवट ।

नावना*–स० क्रि० झुकाना, नवाना; डालना; घुसाना ।

नावनीत–वि० (सं०) मुलायम, मृदुल ।

नावर, नावरि*–स्त्री० नाव, नौका; नावकी क्रीड़ा–'जनु नावरि खेलहिं सर माहीं'–रामा० ।

नावाधिकरण–पु० (एडमिरलटी) राज्यके जहाजी बेड़े, नौसेना आदिका संचालन करनेवाला अधिकारिवर्ग या उनका विभाग अथवा प्रधान कार्यालय ।

नाविक–पु० (सं०) कर्णधार, माँझी, मल्लाह; पोतारोही, नावपर यात्रा करनेवाला ।

नावी(विन्)–पु० (सं०) केवट, मल्लाह ।

नावेल–पु० (अं०) उपन्यास ।

नाव्य–वि० (सं०) नावसे पार करने योग्य; नौगम्य, (नेविगेबिल) दे० 'नौतरणीय' । प्रशंसनीय । पु० नावसे पार करने योग्य जल; नयापन, नवीनता । **–जलमार्ग** –पु० (नेविगेबिल वाटर-वेज़) वे नदियाँ, नहरें आदि जिनमें नावों या जहाजों द्वारा यात्रा की जा सके ।

नाश–पु० (सं०) अस्तित्व न रहना, सत्ता न रहना; प्रध्वंस, लय, संहार, बरबादी; त्याग; अदर्शन, लोप; पलायन; संकट । **–कारी(रिन्)**–वि० नाश करनेवाला ।

नाशक–वि० (सं०) नष्ट करनेवाला, मिटा देनेवाला; मारनेवाला, संहार करनेवाला; दूर करनेवाला ।

नाशन–पु० (सं०) नष्ट करना; हटाना; मृत्यु; विस्मरण । वि० नष्ट करने या करानेवाला ।

नाशना*–स० क्रि० दे० 'नासना' ।

नाशपाती–स्त्री० एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़ ।

नाशवान्(वत्)–वि० (सं०) जो नष्ट हो जाय, भंगुर, नश्वर, अशाश्वत ।

नाशित–वि० (सं०) जो नष्ट किया गया हो ।

नाशी(शिन्)–वि० (सं०) नाशशील, नश्वर; नाशक ।

नाश्ता–पु० (फा०) जलपान, कलेवा ।

नाश्य–वि० (सं०) नाश-योग्य ।

नाष्टिक–वि० (सं०) जिसकी कोई वस्तु खो गयी हो (स्मृ०); खोयी हुई वस्तु-संबंधी । पु० खोयी हुई वस्तुका मालिक । **–धन**–पु० खोया हुआ धन ।

नास*–पु० दे० 'नाश' । स्त्री० नाकसे सुरकी या सूंघी जानेवाली औषध; सुँघनी । **–दान**–पु० सुँघनी रखनेका पात्र ।

नासत्य–पु० (सं०) अश्विनीकुमार ।

नासना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना, मिटा देना; मार डालना ।

नासपाल–पु० (फा०) कच्चे अनारका छिलका; एक तरहकी आतिशबाजी ।

नासपाली–वि० (फा०) नासपालके रंगका ।

नासा–स्त्री० (सं०) नाक; घ्राणेंद्रिय; दरवाजेके ऊपर लगायी जानेवाली आड़ी लकड़ी, भरेटा; अड़ूसा; हाथीकी सूंड़; स्वर । **–छिद्र**–पु० नाकका छेद । **–ज्वर**–पु० नाकमें फोड़ा निकलनेसे होनेवाला ज्वर । **–दारु**–पु० भरेटा । **–नाह**–पु० एक रोग जिसमें नाकके छेद कफसे रुंधे जाते हैं । **–परिस्राव**–पु० सर्दीसे नाकका बहना । **–पाक**–पु० नाक पक जानेका रोग । **–पुट**–पु० नथना । **–बेध**–पु० नाकका वह छेद जिसमें कील या नथ पहनी जाती है । **–रंध्र**–पु० नाकका छेद । **–रोग**–पु० नाक-

का रोग। **–वंश**–पु० नाककी हड्डी। **–विवर**–पु० नाकका छेद। **–शोष**–पु० नाकका कफ सूखनेका एक रोग। **–स्राव**–पु० सर्दीसे नाकका बहना।

नासाग्र–पु० (सं०) नाकका अग्र भाग, नाककी नोक।

नासालु–पु० (सं०) कायफल।

नासिकंधम–वि० (सं०) नाकसे फूंकने या स्वर करनेवाला।

नासिकंधय–वि० (सं०) नाकसे पीनेवाला।

नासिक–पु० महाराष्ट्रमें गोदावरीके उद्‌गमस्थानके समीपका एक तीर्थ। † इमारतमें दो दीवारोंके मिलनेसे बननेवाले कोणका दोनों ओरका हिस्सा। * स्त्री० नासिका, नाक।

नासिका–स्त्री० (सं०) नाक; घ्राणेंद्रिय; नाककी शक्लकी कोई चीज; हाथीकी सूंड़; भरेटा। **–मल**–पु० नाकसे निकलनेवाला श्लेष्मा।

नासिक्य–वि० (सं०) नासिकासे उत्पन्न। पु० नाक; अश्विनीकुमार; नासिक; अनुनासिक स्वर।

नासिक्यक–पु० (सं०) नाक।

नासिर–पु० (अ०) नस्र (गद्य) लिखनेवाला; सहायक; विजेता।

नासी*–वि० दे० 'नाशी'।

नासीर–वि० (सं०) आगे जानेवाला, अग्रेसर; आगे बढ़कर लड़नेवाला। पु० सेनाका अग्र, हरावल।

नासूर–पु० (अ०) पुराना घाव जिसमें लंबा छेद हो गया हो और जिसमेंसे प्रायः मवाद बहा करता हो, नाडीव्रण।

नास्तिक–पु० (सं०) वह जिसे ईश्वर, परलोक आदिमें विश्वास न हो, वेद-निंदक, आस्तिकका उलटा (नास्तिकोंके अपने छ दर्शन हैं। चार्वाक, बौद्ध और जैन नास्तिक माने जाते हैं। इनमें चार्वाक घोर नास्तिक हैं)। वि० ईश्वरादिमें विश्वास न करनेवाला। **दर्शन**–पु० छ नास्तिक दर्शन–चार्वाक, योगाचार, माध्यमिक, सौत्रांतिक, वैभाषिक और जैन।

नास्तिकता–स्त्री०, **नास्तिकत्व**–पु० (सं०) नास्तिक होनेका भाव, ईश्वर, परलोक आदिमें अविश्वासबुद्धि।

नास्तिक्य–पु० (सं०) दे० 'नास्तिकता'।

नास्तिद–पु० (सं०) आमका पेड़।

नास्तिभाव–पु० किसी वस्तुका अभाव। हेडगर द्वारा प्रयुक्त 'नहींत्व' का समानान्तर।

नास्तिमंत–वि० (हैव-नॉट) जिसके पास रुपया-पैसा कुछ भी न हो, अकिंचन, गरीब, निःस्व।

नास्तिवाद–पु० (सं०) नास्तिकता; किसी भी वस्तुमें विश्वास न करनेवाली विचारधारा।

नास्य–वि० (सं०) नाकका; नासिकासे संबद्ध; नासिकासे उत्पन्न। पु० (बैल आदिका) नाथ, नकेल।

नाह–पु० पहियोंकी नाभि; * नाथ, अधीश्वर; पति; (सं०) बंधन; फंदा, पाश; कोष्टबद्धता।

नाहक–अ० दे० 'ना'के साथ।

नाहट†–वि० नटखट।

नाहनह†–स्त्री० इनकार।

नाहर–पु० शेर, सिंह। **–साँस**–पु० घोड़ोंका दम फूलनेका रोग।

नाहरू–पु० नहरुवा, नारू रोग; * सिंह–'मारसि गाइ नाहरू लागी'–रामा०।

नाहिन*–अ० नहीं।

नाहिनै*–वा० नहीं है।

नाहीं–अ० दे० 'नहीं'; स्त्री० नहीं करने या कहनेकी क्रिया, इन्कार।

नाहुष, नाहुषि–पु० (सं०) नहुषके पुत्र, ययाति।

निंडिका–स्त्री० (सं०) मटर, कलाय।

नित*–अ० नित्य, हमेशा।

निंद*–वि० दे० 'निंद्य'।

निंदक–वि० (सं०) निंदा, बदगोई करनेवाला।

निंदन–पु० (सं०) निंदा करना, निंदा करनेकी क्रिया, गर्हण।

निंदना*–स० क्रि० निंदा करना, शिकायत करना।

निंदनीय–वि० (सं०) निंदा करने योग्य, गर्हणीय।

निँदरना*–निंदा करना; निरादर करना।

निँदरिया*–स्त्री० निद्रा, नींद।

निंदा–स्त्री० (सं०) किसीके दोषका वर्णन; झूठमूठ किसीमें दोष निकालना, किसीमें ऐसा दोष बताना जो वास्तवमें न हो (स्मृ०); अपवाद, शिकायत, बदनामी। **–प्रस्ताव**–पु० (वोट ऑफ सेंशर) (शासन-संबंधी) किसी नीति या कार्यके प्रति असंतोष प्रकट करने, उसकी निंदा करनेके उद्देश्यसे राज्यके प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री या किसी संस्थाके सभापति, अध्यक्ष आदिके विरुद्ध लाया जानेवाला प्रस्ताव। **–स्तुति**–निंदा और प्रशंसा; व्याजस्तुति, निंदाके व्याजसे की गयी प्रशंसा।

निँदाई–स्त्री० निरानेका काम; निरानेकी उजरत।

निँदाना–स० क्रि० दे० 'निराना'।

निँदासा–वि० जिसे नींद लग रही हो; अलसाया हुआ।

निंदित–वि० (सं०) जिसकी निंदा की गयी हो या की जाती हो, गर्हित, दूषित।

निँदिया†–स्त्री० नींद, निद्रा।

निंदु–स्त्री० (सं०) मृतवत्सा; मरा बच्चा जननेवाली स्त्री।

निंद्य–वि० (सं०) निंदा करने योग्य, जिसकी निंदा की जाय, निंदनीय।

निंब–पु० (सं०) नीमका पेड़। **–तरु**–पु० नीमका पेड़; मदारका पेड़; बकायनका पेड़। **–बीज**–पु० राजादन, पियाल, चिरौंजी।

निँबकौड़ी, निँबकोरी–स्त्री० नीमका फल।

निँबरिया†–स्त्री० नीमके पेड़ोंका बाग।

निंबादित्य–पु० (सं०) निंबार्क संप्रदायके आदि आचार्य जो राधिकाके कंकणके अवतार माने जाते हैं।

निंबार्क–पु० (सं०) निंबादित्य; एक वैष्णव संप्रदाय जिसका प्रवर्तन निंबादित्यने किया था।

निंबू, निंबूक–पु० (सं०) कागजी नीबू।

निःकपट–वि० (सं०) दे० 'निष्कपट'।

निःकासित–वि० (सं०) दे० 'निष्कासित'।

निःक्रामित–वि० (सं०) दे० 'निष्क्रामित'।

निःक्षत्र–वि० (सं०) क्षत्रियोंसे रहित।

निःक्षेप–पु० (सं०) दे० 'निक्षेप'।

निःप्रभ–वि० (सं०) दे० 'निष्प्रभ'।

निःशंक–वि० (सं०) जिसे किसी प्रकारका खटका न हो, निडर। अ० बिना किसी खटके या डरके।

निःशत्रु–वि० (सं०) शत्रुरहित।

निःशब्द–वि० (सं०) शब्दरहित, जहाँ किसी प्रकारका शब्द न होता हो; जो किसी प्रकारका शब्द न करे।

निःशम–पु० (सं०) क्रोध; बेचैनी; अशांति।

निःशरण–वि० (सं०) अरक्षित।

निःशलाक–वि० (सं०) एकांत, निर्जन।

निःशल्य–वि० (सं०) शल्यरहित; कष्टरहित; प्रतिबंधसे रहित।

निःशल्या–स्त्री० (सं०) दंती वृक्ष।

निःशाख–वि० (सं०) शाखाहीन।

निःशील–वि० (सं०) दे० 'निश्शील'।

निःशुक्र–वि० (सं०) शक्तिहीन; निरुत्साह।

निःशूक–पु० (सं०) एक प्रकारका बिना टूँड़का धान।

निःशून्य–वि० (सं०) बिलकुल खाली।

निःशेष–वि० (सं०) जिसमें कुछ बच न जाय, सारा, समूचा; जिसमें कुछ करनेको न रह गया हो, पूर्ण, समाप्त।

निःशोक–वि० (सं०) शोक या चितासे रहित।

निःशोध्य–वि० (सं०) जिसका परिमार्जन करना आवश्यक न हो; साफ, स्वच्छ।

निःश्रयणी, निःश्रयिणी–स्त्री० (सं०) काठकी सीढ़ी; सीढ़ी।

निःश्रीक–वि० (सं०) कांतिहीन, शोभाशून्य।

निःश्रेणी–स्त्री० (सं०) काठकी सीढ़ी, सीढ़ी, निसेनी; खजूरका पेड़; एक तरहकी घास।

निःश्रेयस–पु० (सं०) मोक्ष, कल्याण; मंगल; विद्या, विज्ञान; भक्ति; प्रभाव; विशेष असर; शिव। वि० सर्वोत्तम।

निःश्वसन–पु० (सं०) साँस बाहर फेंकना।

निःश्वास–पु० (सं०) प्राणवायुके नासिका द्वारा बाहर निकलनेका व्यापार, साँसका बाहर निकलना; लंबी साँस ।

निःसंकोच–अ०, वि० (सं०) दे० 'निस्संकोच' ।

निःसंख्य–वि० (सं०) अनगिनत, बेशुमार ।

निःसंग–वि० (सं०) दे० 'निस्संग' ।

निःसंचार–वि० (सं०) गतिहीन; घर न छोड़नेवाला ।

निःसंज्ञ–वि० (सं०) संज्ञाहीन, बेहोश ।

निःसंतान–वि० (सं०) दे० 'निस्संतान' ।

निःसंदेह–वि० (सं०) दे० 'निस्संदेह' ।

निःसंधि–वि० (सं०) संधिरहित, जिसमें छेद आदि न हो; घना, कसा हुआ; मजबूत, दृढ़ ।

निःसंपात–पु० (सं०) आधी रात (जब लोगोंका आना-जाना बंद हो जाता है) ।

निःसंबल–वि० (सं०) संबलहीन; असहाय ।

निःसंबाध–वि० (सं०) विस्तृत ।

निःसत्त्व–वि० (सं०) दे० 'निस्सत्त्व' ।

निःसपत्न–वि० (सं०) जिसके शत्रु न हों, शत्रुओंसे रहित; निष्कंटक; जिसका प्रतिद्वंद्वी न हो; अद्वितीय; केवल एकका ।

निःसरण–पु० (सं०) बाहर आना, निकलना; घर आदिका निकास (द्वार); मरण; बचनेका रास्ता, उपाय; निर्वाण ।

निःसार–वि० (सं०) दे० 'निस्सार' ।

निःसारण–पु० (सं०) बाहर करना, निकालना, बहिष्करण; घर आदिका निकास ।

निःसारा–स्त्री० (सं०) कदली ।

निःसारित–वि० (सं०) निकाला हुआ; बाहर किया हुआ ।

निःसीम–वि० (सं०) दे० 'निस्सीम' ।

निःसुकि–पु० (सं०) एक प्रकारका गेहूँ जिसकी बालोंमें टूँड़ नहीं होते ।

निःसृत–वि० (सं०) बाहर आया हुआ; निकला हुआ ।

निःस्नेह–वि० (सं०) दे० 'निस्स्नेह' ।

निःस्नेहा–स्त्री० (सं०) अलसी, तीसी ।

निःस्पंद–वि० (सं०) दे० 'निस्पंद' ।

निःस्पृह–वि० (सं०) जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो, निरीह, आशारहित ।

निःस्रव–पु० (सं०) बचत, अवशेष ।

निःस्राव–पु० (सं०) माँड़ ।

निःस्व–वि० (सं०) दे० 'निस्स्व' ।

निःस्वादु–वि० (सं०) दे० 'निस्स्वादु' ।

निःस्वार्थ–वि० (सं०) दे० 'निस्स्वार्थ' ।

निःस्वामिक भूमि–स्त्री० (नोमेंस लैंड) वह परती भूमि जो किसीके अधिकारमें न हो, लावारिस जमीन; दो देशोंकी सीमाओंके बीचकी वह भूमि जो स्पष्टतया किसीके स्वामित्वमें न हो ।

नि–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो अधोभाव (निपात), समह (निकर), घनता (निकाम), आदेश (निदेश), नित्यता (निवेश), कौशल (निपुण), बंधन (निबंध), सामीप्य (निकट), अपमान (निकृति), दर्शन (निदर्शन), आश्रय (निलय), अंतर्भाव (निपीत) आदिकी विशेषताका द्योतन करनेके लिए संज्ञा, क्रिया आदिके पूर्व जोड़ा जाता है । पु० निषाद स्वरका संकेत (संगीत) ।

निअर*–अ० समीप, निकट, पास । † वि० समान ।

निअराना*–अ० क्रि० निकट, नजदीक आना, पास आना; निकट होना । स० क्रि० पास पहुँचना ।

निअरे–अ० निकट, समीप ।

निआउ*–पु० दे० 'न्याय' ।

निआन*–अ० निदान, अंतमें, अंततोगत्वा । पु० निदान, परिणाम; अंत ।

निआमत–स्त्री० (अ०) दे० 'नेमत' ।

निआरा†–वि० दे० 'न्यारा' ।

निआर्थी*–स्त्री० अर्थहीनता, दरिद्रता, गरीबी ।

निऋति–स्त्री० (सं०) दक्षिण-पश्चिम कोणकी अधिष्ठात्री देवी; अधर्मकी पत्नी; अधर्मकी पुत्री; लक्ष्मीकी बहिन अलक्ष्मी, दरिद्रा देवी; भारी विपत्ति; मृत्यु; क्षय, नाश; (शाप); पृथ्वीका नीचेका तल ।

निकंटक–वि० दे० 'निष्कंटक' ।

निकंदन–पु० (सं०) नाश, संहार । वि० नाशकर्ता ।

निकंदना*–स० क्रि० नाश करना ।

निकट–अ० (सं०) पास, नजदीक । वि० पासका, समीपवर्ती, नजदीकी, जो दूर या दूरका न हो । **–दृष्टि**–स्त्री० (शार्ट साइट या मायोपिया) दृष्टिदोष, जिसके कारण केवल निकटकी वस्तुएँ ही स्पष्ट देखी जा सकती हैं । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० पासका, समीप रहनेवाला, जो दूर न हो; जिससे नजदीकका नाता हो । **–स्थ**–वि० समीपस्थ, पासका, नजदीकी ।

निकटता–स्त्री० (सं०) समीप होनेका भाव, समीपता ।

निकटपना–पु० दे० 'निकटता' ।

निकती–स्त्री० छोटा तराजू, काँटा ।

निकम्मा–वि० जिसका किया कुछ न हो, जो कुछ भी कर-धर न सके; जो किसी काम न आये; जो एकदम बेकार हो, व्यर्थका ।

निकर–पु० (सं०) समूह, झुंड; राशि; निधि, खजाना; सार; (अं०) घुटन्ना, जाँघिया ।

निकरना*–अ० क्रि० दे० 'निकलना' ।

निकर्तन–पु० (सं०) काटना; फाड़ना ।

निकर्मा–वि० अकर्मण्य, जो कुछ न करे ।

निकर्षण–पु० (सं०) खेल-कूदका मैदान; घरके प्रवेशद्वारके पासका आँगन; पड़ोस; वह जमीन जो जोतमें न आयी हो, परती ।

निकलंक–वि० कलंकरहित, बेदाग, निर्दोष, लांछनहीन ।

निकलंकी–पु० कल्कि अवतार । वि० कलंकहीन ।

निकल–स्त्री० (अं०) एक धातु जो चाँदी जैसी सफेद होती है ।

निकलना–अ० क्रि० बाहर होना या आना, प्रकट होना; प्रवाहित होना, गिरना, बहना; उदय होना; व्याप्त या अन्य वस्तुओंके साथ मिली हुई वस्तुका पृथक् होना; जमना, उगना; जड़ी या सटी हुई वस्तुका आधारसे पृथक् होना; दल-बल या बाजे-गाजेके साथ एक स्थानसे चलकर दूसरे स्थानतक जाना; किसी ओरको बढ़ा होना; उत्पन्न होना; बीचसे होकर बाहर आ जाना या पहुँच जाना; पार होना; शरीरपर उत्पन्न होना, उभर आना; पास होना, शिक्षा समाप्त करके पृथक् होना; स्थिर किया जाना, सोचा जाना, ठहराया जाना; दूर होना, जाता रहना, नष्ट होना; प्राप्त होना, मिलना; व्यक्त होना, खुलना; सिद्ध होना, पूर्ण होना; चलना, आरंभ होना, छिड़ना; अलग होना, पृथक् किया जाना; हल होना; निर्मित होना, तैयार किया जाना; (नदी आदिका) उद्गत होना, बहना आरंभ करना; खोजा जाना, आविष्कृत या ईजाद होना; फँसा, बँधा या जुड़ा न रहना; प्रचलित होना, जारी होना; प्रवर्तित होना; अपनेको दायित्वसे मुक्त करना, पृथक् होना, गला छोड़ाना; प्रकाशित होना; बिकना, खपत होना; सिद्ध होना, साबित होना; बिना दंड पाये बच जाना, अपनेको मुक्त करना; पकड़, बंधन आदिसे मुक्त होना; हिसाब होनेपर रकम जिम्मे आना, पावना होना; फटकर अलग होना; पकड़ा जाना, बरामद होना, पाया जाना; समाप्त होना, बीतना, गुजरना; सवारी ढोने या जोताईके लिए शिक्षित होना । मु० **निकल जाना**–चला जाना, पहुँच जाना; कम हो जाना, घट जाना; जाता रहना, खो जाना; उपयोगमें न लाया जाना; छिन जाना; भाग जाना, पकड़में न आना; (स्त्रीका) अपना घर छोड़कर किसी प्रेमीके साथ चला जाना ।

निकलवाना–स० क्रि० निकालनेका काम कराना ।

निकष–पु० (सं०) कसौटी; कसौटीपर कसनेकी क्रिया; सान जिसपर चढ़ाकर हथियार तेज करते हैं; (ला०) कसौटीका काम करनेवाला; कसौटीपर सोना रगड़नेसे बनी हुई रेखा ।

निकषण–पु० (सं०) कसौटी; सानपर चढ़ानेकी क्रिया; घिसना, रगड़ना ।

निकषा–स्त्री० (सं०) रावण आदिकी माता या राक्षसोंकी माता; कसौटी 'गद्यं कवीनां निकषा वदंति' । अ० निकट ।

निकषात्मज–पु० (सं०) राक्षस ।

निकषोपल–पु० (सं०) सोना कसने या सान चढ़ानेका पत्थर ।

निकस–पु० (सं०) दे० 'निकष' ।

निकसना*–अ० क्रि० दे० 'निकलना' ।

निकाई–पु० दे० 'निकाय' । स्त्री० भलाई; अच्छापन, बढ़ियापन; सज्जनता; सुंदरता ।

निकाज–वि० निकम्मा, बेकार ।

निकाना–स० क्रि० दे० 'निराना' ।

निकाम–वि० बेकाम, निकम्मा; खराब (सं०); पर्याप्त, काफी; अभीष्ट; इच्छुक । अ० अत्यंत, भूरि, वहुत खूब । पु० अभिलाषा; आधिक्य ।

निकामन–पु० (सं०) इच्छा, अभिलाषा ।

निकाय–पु० (सं०) समूह, समुदाय; सजातीय प्राणियोंका समूह; वासस्थान; परमात्मा; शरीर; लक्ष्य, निशाना । (वॉडी) समान उद्देश्यसे काम करनेवाले व्यक्तियोंका समूह, संस्था; जन-प्रतिनिधियोंकी वह स्थानीय संस्था जो नगर, जिले या तहसील आदिकी स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि-संबंधी बातोंकी देखभाल करती है । **–समाजवाद**–पु० (गिल्ड सोशलिज्म) एक तरहका संघ-समाजवाद जो ब्रिटेनमें प्रचलित था (इसका सिद्धांत था कि श्रमिक संघोंके निकाय बनाये जायँ और उन्हींके हाथमें कारखानों आदिका नियंत्रण सौंप दिया जाय, पर सरकारके अन्य विभागोंका नियंत्रण राज्यकी संसदके ही अधीन रहे), **श्रेणी समाजवाद** ।

निकाय्य–पु० (सं०) घर, गृह ।

निकार–पु० निकालनेका काम, वहिष्कार, निष्कासन; निकलनेका द्वार या मार्ग, निकास; (सं०) अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार; पराभव; अनाज ओसाना या फटकना; उठाना; मारण, वध; दुष्टता; द्वेष; विरोध ।

निकारण–पु० (सं०) मारण, वध ।

निकारना*–स० क्रि० दे० 'निकालना' ।

निकाल–पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; कुश्तीका एक पेंच; कठिनाईसे निकलनेका उपाय; पेंचका काट ।

निकालना–स० क्रि० बाहर करना या लाना; प्रकट करना; प्रवाहित करना, गिराना, वहाना; व्याप्त या अन्य वस्तुओंके साथ मिली हुई वस्तुको पृथक् करना; जमाना, उगाना; गड़ी या सटी हुई वस्तुको आधारसे पृथक् करना; दल-बल या गाजे-बाजेके साथ एक स्थानसे चलाकर दूसरे स्थानतक ले जाना; किसी ओरको वढ़ा हुआ करना; उत्पन्न करना, पैदा करना; बीचसे ले जाकर बाहर ले जाना या पहुँचाना, पार करना; शरीरपर उत्पन्न करना, उभारना; पास करना, शिक्षा समाप्त करके पृथक् करना; स्थिर करना, सोचना, ठहराना; दूर करना; नष्ट करना; प्राप्त करना; व्यक्त करना, खोलना; संपन्न करना, पूर्ण करना; चलाना, आरंभ करना, छेड़ना; अलग करना, पृथक् करना; हल करना; निर्माण करना, तैयार करना; (नदी आदिको) उद्गत करना, वहाना आरंभ करना; खोजना, आविष्कार करना, ईजाद करना; फँसा, बँधा, या जुड़ा न रहने देना; प्रचलित करना, जारी करना, प्रवर्तित करना; प्रकाशित करना; वेचना, खपत करना; सिद्ध करना, साबित करना; दंड पानेसे बचाना, मुक्त करना; पकड़, बंधन आदिसे मुक्त करना; रकम जिम्मे ठहराना; फाड़कर अलग करना; बरामद करना; बिताना, गुजारना; सवारी ढोने या जोताईकी शिक्षा देना ।

निकाला–पु० निकालनेकी क्रिया; वहिष्कार; निर्वासन ।

निकाश–पु० (सं०) क्षितिज; सामीप्य; सादृश्य (समासांत-में); दृश्य ।

निकाष–पु० (सं०) खुरचना; रगड़ना ।

निकास–पु० निकलने, निकालनेकी क्रिया या भाव; द्वार, दरवाजा, निकलनेका मार्ग या स्थान; बाहर या सामनेकी खुली जगह, इर्द-गिर्दका मैदान, सहन; उद्गम, मूलस्थान; गुजारेका रास्ता, निर्वाहका उपाय, सिलसिला; वंशका मूल स्रोत; त्राणका उपाय, बचावका रास्ता, रक्षाकी युक्ति; आयका रास्ता; आय, आमदनी; (सं०) दे० 'निकाश' । **–पत्र**–पु० (हिं०) जमा-खर्च और बचतके हिसाबकी बही ।

निकासना†–स० क्रि० दे० 'निकालना' ।

निकासी–स्त्री० निकालनेकी क्रिया या भाव; प्रस्थान; आय, प्राप्ति; वह रकम जो मालगुजारी आदि बेबाक करनेके बाद जमींदारके पास बचे, मुनाफा; मालकी रवानगी या लदाई; रवन्ना; चुंगी; खपत ।

निकाह–पु० (अ०) मुसलमानोंकी विवाहपद्धति; उस पद्धतिके अनुसार किया गया विवाह । **–नामा**–पु० वह कागज जिसमें निकाहकी शर्तें लिखी जाती हैं । **–(हे) बेवगाँ**–पु० विधवा-विवाह । **–शानी**–पु० गवना, द्विरागमन ।

निकाही–वि० स्त्री० निकाह करके लायी हुई; (वह स्त्री) जिसने स्वेच्छासे किसीसे विवाह कर लिया हो ।

निकियाई†–स्त्री० निकियानेकी क्रिया; उसकी उजरत ।

निकियाना†–स० क्रि० नोचकर धज्जियाँ अलग करना; नोचकर साफ करना; बाल या पंखको नोचकर अलग करना ।

निकिष्ट*–वि० दे० 'निकृष्ट' ।

निकुंच–पु० (सं०) ताली, कुंजी ।

निकुंचक–पु० (सं०) एक प्राचीन परिमाण; जलबेंत ।

निकुंचन–पु० (सं०) संकुचन; दे० 'निकुंचक' ।

निकुंचित–वि० (सं०) संकुचित ।

निकुंज–पु० (सं०) सघन वृक्षों और लताओंसे आवृत स्थान, लतामंडप ।

निकुंजिकाम्रा, निकुंजिकाम्ला–स्त्री० (सं०) एक लता ।

निकुंभ–पु० (सं०) एक असुर जिसे कृष्णने मारा था; कुंभकर्णका एक पुत्र; प्रह्लादका एक पुत्र; एक विश्वदेव; एक कौरव-सेनापति; कुमारका एक अनुचर; शिवका एक अनुचर; दंती वृक्ष ।

निकुंभाख्यबीज–पु० (सं०) जमालगोटा ।

निकुंभित–पु० (सं०) नृत्यकी एक क्रिया ।

निकुंभिला–स्त्री० (सं०) लंकाके पश्चिमी द्वारके पास स्थित एक गुफा; इस गुफामें वास करनेवाली देवी, जिसकी उपासना मेघनाद किया करता था; तर्पण आदि करनेका स्थान ।

निकुंभी–स्त्री० (सं०) दंती वृक्ष ।

निकुरंब, निकुरुंब–पु० (सं०) समूह ।

निकुलीनिका–स्त्री० (सं०) वंशपरंपरागत कला; जाति-विशेषकी कला ।

निकृंतन–पु० (सं०) काटनेकी क्रिया, छेदन; विदारण; काटनेका यंत्र । वि० काटनेवाला, छिन्न करनेवाला ।

निकृत–वि० (सं०) वहिष्कृत; तिरस्कृत; पराभूत; पतित, नीच; शठ; वंचित, प्रतारित । **–प्रज्ञ,–मति**–वि० दुश्चेता, कमीना ।

निकृति–स्त्री० (सं०) वहिष्कार; तिरस्कार; पराभव; दीनता, दैन्य; नीचता; पृथ्वी; एक वसु; प्रतारणा, वंचना । वि० नीच, कमीना ।

निकृती(तिन्)–वि० (सं०) नीच, अधम ।

निकृत्त–वि० (सं०) काटा हुआ, छिन्न; विदीर्ण ।

निकृष्ट–वि० (सं०) जाति, आचार आदिसे हीन, नीच, अधम; तुच्छ । पु० नैकट्य, सामीप्य ।

निकेचाय–पु० (सं०) ढेर लगाना ।

निकेत, निकेतक–पु० (सं०) घर, वासस्थान, निवास; चिह्न ।

निकेतन–पु० (सं०) घर, वासस्थान; प्याज ।

निकोचक, निकोठक–पु० (सं०) अंकोलका पेड़ ।

निकोचन–पु० (सं०) संकुचन ।

निकोटना–स० क्रि० नोचना, बकोटना ।

निकोसना†–स० क्रि० दाँत निकालना; दाँत पीसना ।

निकौड़िया–पु० जिसके पास एक कौड़ी भी न हो; अत्यंत दरिद्र व्यक्ति ।

निकौनी–स्त्री० दे० 'निराई' ।

निक्रीड–पु० (सं०) क्रीडा, खेल ।

निक्वण, निक्वाण–पु० (सं०) वीणा आदिका शब्द; स्वर ।

निक्षण–पु० (सं०) चुंबन ।

निक्षा–(सं०) लिक्षा, लीख ।

निक्षालन–पु० (लीचिंग) किसी मिश्रणमेंसे घुलनशील अवयवको उपयुक्त द्रवकी सहायतासे घोलकर पृथक् करना; **अपक्षालन** ।

निक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; रखा हुआ; डाला हुआ; धरोहर रखा हुआ; भेजा हुआ; परित्यक्त ।

निक्षुभा–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी; ब्राह्मणी ।

निक्षेप–पु० (सं०) फेंकने, डालने, रखने, भेजने, चलाने, त्यागने या अर्पण करनेकी क्रिया या भाव; धरोहर, अमानत; धरोहर रखना; वह धन जो किसीके पास या बैंक आदिमें जमा किया गया हो, डिपॉजिट । मरम्मत या सफाई करनेके लिए किसी कारीगरको कोई वस्तु देना । **–निधि**–स्त्री० (सिंकिंग फंड) दे० 'ऋण-परिशोध-कोष'; शोधन-निधि । **–निर्णय**–पु० (टॉस) सिक्का आदि हवामें फेंककर उसके नीचे गिरनेकी स्थितिसे कोई निश्चय करना, जैसे कौन पक्ष पहली पालीका खेल आरंभ करेगा, **मुद्रोत्क्षेपण** ।

निक्षेपक–पु० (सं०) निक्षेपकर्त्ता; धरोहर रखनेवाला; (डिपाज़िटर) बैंक आदिमें रुपया जमा करनेवाला, **जमाकर्ता** ।

निक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; डालना; रखना; त्यागना; चलाना; अर्पण करना; धरोहर रखना ।

निक्षेपित–वि० (सं०) लिखवाया हुआ; बंधक या धरोहर रखवाया हुआ ।

निक्षेपी(पिन्)–वि० (सं०) निक्षेप करनेवाला; किसीके पास धरोहर रखनेवाला ।

निक्षेप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) दे० 'निक्षेपक' ।

निक्षेप्य–वि० (सं०) निक्षेप करने योग्य ।

निखंग*–पु० दे० 'निषंग' ।

निखंगी*–वि० दे० 'निषंगी' ।

निखंड–वि० मध्य; इधर-उधर नहीं, बिलकुल ठीक ।

निखट्टर†–वि० कठोरहृदय, निष्ठुर, निर्दय ।

निखट्टू–वि० जो कहीं न टिके, जो इधर-उधर मारा फिरे; सब जगह झगड़ा-फसाद करनेवाला; जो मन लगाकर कोई काम न करे; जिससे कुछ करते-धरते न बने, निकम्मा; बेकार ।

निखनन–पु० (सं०) खोदना; गाड़ना ।

निखरक*–अ० बेखटक–'निधरक जाना अलबेले निखरक ओर'–घन० ।

निखरना–अ० क्रि० निर्मल होना, मैल आदि दूर हो जानेसे साफ होना; (किसी वस्तुपर) और अधिक रंग चढ़ना; परिमार्जित होना ।

निखरवाना–स० क्रि० स्वच्छ कराना, साफ कराना ।

निखरहर, निखहर–वि० बिछौनेसे रहित ।

निखरी–स्त्री० पक्की रसोई, 'सखरी'का उलटा ।

निखर्व–वि० (सं०) संस्कृत गणनपद्धतिसे दस हजार करोड़ या हिंदीका एक खरब; ठिंगना, छोटे कदका । पु० दस हजार करोड़की संख्या ।

निखवख*–अ० बिलकुल; केवल ।

निखात–वि० (सं०) खोदा हुआ; जमाया हुआ; गाड़ा हुआ । **–निधि**–स्त्री० (ट्रेजर ट्रोव) भूमिके भीतर गड़ी हुई संपत्ति जो बादमें खोदकर निकाली गयी हो ।

निखाद*–पु० दे० 'निषाद' ।

निखार–पु० सफाई; सजावट ।

निखारना–स० क्रि० स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल बनाना; पवित्र करना, शुद्ध करना, पापसे रहित करना ।

निखारा -पु० शकर तैयार करनेका कड़ाहा ।

निखालिस†–वि० बिना मिलावटका, विशुद्ध, पवित्र ।

निखिल–वि० (सं०) सारा, संपूर्ण, सब ।

निखुटना, निखूटना*–अ० क्रि० घट जाना; समाप्त हो जाना–'बाती सूखी तेल निखूटा'–कबीर ।

निखेध*–पु० दे० 'निषेध' ।

निखेधना*–स० क्रि० निषेध करना, मना करना ।

निखोट–वि० जिसमें किसी प्रकारका खोटापन न हो, दोषरहित, निष्कलंक, विशुद्ध; स्पष्ट, साफ । अ० निःशंक होकर, बेखटके; खुल्लमखुल्ला ।

निखोड़ना†–स० क्रि० नाखूनसे नोचना ।

निखोड़ा–वि० कठोर हृदयवाला, निष्ठुर ।

निगंद–पु० एक बूटी जो दवाके काम आती है ।

निगंदना–स० क्रि० रजाई आदि तागना ।

निगंध*-वि० जिसमें गंध न हो, गंध-रहित ।

निगड–स्त्री० (सं०) बेड़ी, शृंखला; हाथी बाँधनेकी जंजीर । वि० बेड़ीमें जकड़ा हुआ । **–हस्त**–वि० (हैंडकफ्ड) जिसके हाथमें हथकड़ी पड़ी हो ।

निगडन–पु० (सं०) बेड़ी डालना; जंजीरसे बाँधना ।

निगडित -वि० (सं०) बेड़ी या जंजीरसे बँधा या जकड़ा हुआ ।

निगण–पु० (सं०) यज्ञाग्निका धुआँ ।

निगद–पु० (सं०) भाषण, कथन; बोल-बोलकर किया हुआ जप; इस प्रकार जपा जानेवाला मंत्र; उल्लेख करना; भाषण; बिना अर्थ समझे याद करना ।

निगदन–पु० (सं०) याद की हुई चीजका पाठ करना; कथन ।

निगदित–वि० (सं०) कहा हुआ, उक्त ।

निगम–पु० (सं०) वेद; वेदका कोई अंश; पथ, मार्ग; वणिक्पथ, हाट, बाजार; मेला; कारवाँ; बनजारा; निश्चय, अनुमानके पाँच अवयवोंमेंसे एक, निगमन (न्या०); न्यायशास्त्र; वेदसम्मत ग्रंथ; वेदके अर्थका बोध करानेवाला ग्रंथ; कायस्थोंका एक भेद; (कॉरपोरेशन) वह निकाय या संस्था जो विधि (कानून)के अनुसार एक व्यक्तिकी तरह काम करनेके लिए प्राधिकृत हो; महापालिका । **–कर**–पु० (कॉरपोरेशन टैक्स) व्यापारिक या औद्योगिक निगमों (संस्थाओं) पर लगनेवाला कर । **–निवासी(सिन्)**–पु० विष्णु, नारायण ।

निगमन–पु० (सं०) हेतु, उदाहरण और उपनयके उपरांत सिद्ध की गयी प्रतिज्ञाका पुनः कथन (न्या०); वेदके शब्दोंका उद्धरण; अंदर जाना ।

निगमागम–पु० (सं०) वेद और शास्त्र ।

निगमाध्यक्ष–पु० (मेयर) नगर महापालिका या निगमका अध्यक्ष, महापौर ।

निगमित–वि० (इनकॉरपोरेटेड) निगमरूपमें परिणत या संघटित ।

निगमी(मिन्)–वि० (सं०) वेदज्ञ ।

निगर–पु० (सं०) निगलना, भक्षण, भोजन; होमका धुआँ; * समूह । * वि० सब, समस्त ।

निगरण–पु० (सं०) निगलना, भक्षण; गला; (ला०) पूरा-पूरा ग्रहण कर लेना; होमका धुआँ ।

निगराँ–वि० (फा०) देखरेख करनेवाला, निगरानी रखनेवाला, निरीक्षक, रखवाला ।

निगरा–वि० (ऊखका रस) जिसमें जल न मिलाया गया हो, खालिस । पु० मोतीके ५५ दाने जो तोलमें ३२ रत्ती हों ।

निगराना†–स० क्रि० निर्णय करना; छाँटकर अलग करना; स्पष्ट करना । अ० क्रि० पृथक् होना; स्पष्ट होना ।

निगरानी -स्त्री० (फा०) देख-भाल, निरीक्षण ।

निगरु*–वि० जो गुरु अर्थात् भारी न हो, हलका; निगुरा ।

निगल–पु० (सं०) दे० 'निगाल' ।

निगलन–पु० (सं०) दे० 'निगरण' ।

निगलना–स० क्रि० गलेसे नीचे उतार देना, घोंट जाना; खा जाना; रुपया या धन हड़प लेना या दबा बैठना ।

निगह–स्त्री० (फा०) निगाह, दृष्टि । **–बान**–वि० देख-रेख करनेवाला, रखवाला, रक्षक । **–बानी**–स्त्री० देख-रेख, रखवाली ।

निगाद–पु० (सं०) दे० 'निगद' ।

निगार–पु० (सं०) निगलना, भक्षण; (फा०) नक्काशी, बेल-बूटा; एक फारसी राग; लिखनेवाला (**नामानिगार**—संवाद-दाता; पत्र-लेखक) ।

निगारक, निगालक–वि० (सं०) निगलने, भक्षण करनेवाला ।

निगाल–पु० (सं०) दे० 'निगार'; घोड़ेकी गरदन; † हिमालयपर पाया जानेवाला एक प्रकारका बाँस ।

निगालवान्(वत्)–पु० (सं०) घोड़ा ।

निगालिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

निगाली–स्त्री० नैंचेका वह भाग जो मुंहमें रहता है।

निगाह–स्त्री० (फा०) दृष्टि, नजर; दयादृष्टि, कृपा, मेहरबानी; विचार, समझ; चितवन, अवलोकन; ध्यान; परख; निरीक्षण। **–बान**–वि० दे० 'निगहबान'। **–बानी**–स्त्री० दे० 'निगहबानी'। मु० **–रखना**–देखरेख रखना, रखवाली करना; ख्याल रखना। **–रूबरू**–नकीबोंकी एक पुकार जिसे वे बादशाहके सामने किसीको पेश करते वक्त किया करते थे। इसका अर्थ है–'सरकार, इधर ध्यान दें।'

निगिभ*–वि० बहुत प्यारा, परम प्रिय; अत्यंत गोप्य।

निगीर्ण–वि० (सं०) निगला हुआ; जिसका अंतर्भाव हो गया हो या किया गया हो।

निगुंफ–पु० (सं०) घनी गुंथाई; चुस्त रचना।

निगु–वि० (सं०) मनोज्ञ। पु० मन; मल; मूल; चित्रण।

निगुड़वा*–वि० दे० 'निगोड़ा'।

निगुण, निगुन, निगुना*–वि० दे० 'निर्गुण'।

निगुनी*–वि० जो गुणी न हो, गुणीका उलटा, गुणहीन।

निगुरा–वि० जिसने गुरुसे दीक्षा न ली हो, अदीक्षित; अशिक्षित।

निगूढ–वि० (सं०) अति गुप्त; रहस्यपूर्ण, जो जल्दी समझमें न आये। पु० वनमुद्ग।

निगूढार्थ–वि० (सं०) जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, जिसका अर्थ छिपा हो।

निगूहन–पु० (सं०) छिपाना, गोपन।

निगृहीत–वि० (सं०) पकड़ा हुआ, गिरफ्तार किया हुआ; वशमें लाया गया; दबाया हुआ, जिसका दमन किया गया हो; विवादमें पराजित; जो बातमें पकड़ गया हो; आक्रांत; पीडित।

निगृहीति–स्त्री० (सं०) रोक; पराभव।

निगेटिव–पु० (अं०) वह प्लेट जिसपर प्रकाश और छायाका अवस उलटा पड़ा हो अर्थात् जिसमें खुलते और सफेदकी जगह काला और गहरा हो और काले-गहरेकी जगह खुलता और सफेद हो, 'पाजिटिव'का उलटा। वि० ऋणात्मक, ऋणरूप; नकारात्मक, जो निषेध या अस्वीकृति सूचित करे।

निगोड़ा–वि० अभागा, निराश्रय; जिसके कोई न हो, जो एकदम अकेला हो; निकम्मा; *.दुष्ट, नीच।

निगोरा*–वि० दे० 'निगोड़ा'।

निग्रह–पु० (सं०) रोक, अवरोध; वशमें लाना; दंड देना, दबाना, दमन; बाँधना, बंधन; अनुग्रहका अभाव; प्रवृत्तिसे निवारित करना; अभ्यास और वैराग्य द्वारा चित्तवृत्तिका निरोध; सीमा; भर्त्सना; परमात्मा। **–स्थान**–पु० वादविवादमें वह स्थल जहाँ असंगत या अज्ञानकी बातें करनेसे वादीको मूर्ख कहकर चुप कर दिया जाय (न्या०)।

निग्रहण–पु० (सं०) रोक-थाम करनेकी क्रिया; बंधन; दबाने, दंड देनेका काम; पराभव। वि० रोकने या दमन करनेवाला।

निग्रहना*–स० क्रि० पकड़ना; रोकना; दंड देना, दमन करना।

निग्रही(हिन्)–वि० (सं०) निग्रह करनेवाला, दमन करनेवाला, दंड देनेवाला।

निग्राह–पु० (सं०) शाप; दंड।

निग्राहक–वि० (सं०) जो अपराधियोंको अनुचित या न्यायविरुद्ध दंड दे।

निघंटिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका कंद।

निघंटु–पु० (सं०) वह ग्रंथ जिसमें शब्दोंके पर्यायोंका संग्रह हो (जैसे अमरकोश, हलायुध, वैजयंती इ०); वैदिक शब्दकोश जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्तमें की है।

निघ–वि० (सं०) जिसकी लंबाई और चौड़ाई या मोटाई दोनों बराबर हों, जो जितना लंबा हो उतना ही चौड़ा या मोटा हो। पु० पाप; गेंद।

निघटना*–अ० क्रि० घटना, कम होना–'निघटत नीर मीनगन जैंसें'–रामा०; बीतना। स० क्रि० मिटाना, नष्ट करना।

निघरघट–वि० बिना घर-घाटका, बिना घर-बारका; जो घूम-फिरकर एक ही जगहपर रहे और हटानेसे भी न हटे; बेशर्म, निर्लज्ज। मु० **–देना**–लज्जित किये जानेपर सफाई देनेके लिए बातें बनाना।

निघरा–वि० बिना घर-बारका; निगोड़ा, कमीना, नीच।

निघर्ष, निघर्षण–पु० (सं०) रगड़, घिसावट; पीसना।

निघस–पु० (सं०) भोजन, आहार।

निघात–पु० (सं०) आघात, प्रहार; अनुदात्त स्वर।

निघाति–स्त्री० (सं०) निहाई; हथौड़ा।

निघाती(तिन्)–वि० (सं०) प्रहार करनेवाला, आघात करनेवाला; मारनेवाला, वध करनेवाला। (स्त्री० 'निघातिनी'।)

निघुष्ट–पु० (सं०) शब्द, आवाज; शोरगुल।

निघृष्ट–वि० (सं०) रगड़ा हुआ; रगड़ खाया हुआ; पराभूत।

निघृष्व–पु० (सं०) खुर; खुरका चिह्न; हवा; गधा या खच्चर; शूकर; सड़क। वि० रगड़ा हुआ; छोटा, तुच्छ।

निघ्न–वि० (सं०) अधीन, वशवर्ती, आयत्त; गुणित, गुणा किया हुआ।

निचय–पु० (सं०) समूह; संचय; निश्चय।

निचल*–वि० अचल, अटल।

निचला–वि० नीचेका, नीचेवाला; अचल, स्थिर, शांत।

निचाई–स्त्री० नीचा होनेका भाव, नीचापन, ऊँचाईका उलटा; नीचेकी ओरका विस्तार; नीचता, खोटाई।

निचान–स्त्री० नीचापन; ढालुआँपन।

निचाय–पु० (सं०) ढेर, राशि।

निचिंत–वि० दे० 'निश्चिंत'।

निचिकी–स्त्री० (सं०) अच्छी गाय।

निचित–वि० (सं०) ढका हुआ; व्याप्त; पूरित; संकीर्ण; संचित; ऊपर उठाया हुआ; ढेर लगाया हुआ।

निचीता*–वि० निश्चिंत।

निचुड़ना–अ० क्रि० निचोड़ा जाना, गरना; सारहीन होना, बल या शक्ति निकल जानेसे क्षीण होना।

निचुल–पु० (सं०) वेंत; हिज्जलका वृक्ष; ऊपरका वस्त्र, निचोल।

निचुलक–पु० (सं०) उरस्त्राण; निचोल।

निचै–पु० दे० 'निचय'।

निचोड़–पु० निचोड़नेपर निकली हुई वस्तु, निचोड़ा हुआ जल, रस आदि; सारांश, निष्कर्ष; तत्त्व, सार।

निचोड़ना–स० क्रि० दबाकर या ऐंठकर किसी गीली या रसवाली वस्तुओंसे पानी या रस निकालना, गारना; किसी वस्तुमेंका तत्त्व निकाल लेना; किसीकी सारी पूँजी हर लेना, किसीका सब कुछ ले लेना।

निचोना*–स० क्रि० निचोड़ना।

निचोर*–पु० दे० 'निचोड़'।

निचोरना*–स० क्रि० दे० 'निचोड़ना'।

निचोल–पु० (सं०) वह कपड़ा जिससे कोई वस्तु ढकी जाय, आच्छादन-वस्त्र, ढकनेका कपड़ा; चदरा; बिछावनकी चादर; ओहार; उत्तरीय; स्त्रियोंकी ओढ़नी।

निचोलक–पु० (सं०) सदरी; चोली; कवच, उरस्त्राण।

निचोवना*–स० क्रि० दे० 'निचोड़ना'।

निचौहाँ–वि० नीचेकी ओर किया हुआ, नीचेकी ओर झुका या झुकाया हुआ; नीचा।

निचौहैं–अ० नीचेकी ओर।

निच्छवि–पु० (सं०) एक प्राचीन जिला, आधुनिक तिरहुत।

निच्छिवि–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति।

निछक्का–पु० निर्जन स्थान, निर्मक्षिक, एकांत स्थान। † वि० निरा।

निछत्र–वि० जिसके सिरपर छत्र न हो, जो छत्रधारी न हो, निश्छत्र, बिना छत्रका, छत्ररहित; राजचिह्नरहित; राज्यहीन; जिसमें क्षत्रिय न हों, क्षत्रियहीन, निःक्षत्रिय।

निछद्म†–पु० एकांत स्थान।

निछनियाँ*–अ० दे० 'निछान'।

निछल*–वि० निश्छल, कपटरहित।

निछला†–वि० जिसमें मिलावट न हो, एकमात्र, केवल।

निछान†–वि० जिसमें मिलावट न हो, विशुद्ध, खालिस, केवल, एकमात्र। अ० एकदम, बिलकुल।

निछावर–स्त्री० किसी वस्तुको किसीके सिर या शरीरके ऊपरसे घुमाकर दान कर देने या कहीं रखने, छोड़ने आदिका एक टोटका (यह इस भावनासे किया जाता है कि शरीरकी बाधा उस वस्तुमें चली जाय या कष्टकारक ग्रहादि उस वस्तुको पाकर ही तृप्त हो जायँ); निछावर की जानेवाली वस्तु; नेग; बलि; उत्सर्ग; इनाम। मु० **–करना**–समर्पण करना; त्यागना। **–होना**–सर्मापित किया जाना; त्याग दिया जाना। **(किसीका किसीपर) –होना**–किसीके लिए जान देना।

निछावरि†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

निछोह–वि० जिसमें प्रेम, दया न हो, निर्मम, निठुर।

निछोही–वि० दे० 'निछोह'।

निज–वि० (सं०) अपना, स्वकीय, जो पराया न हो (इस शब्दके साथ प्रायः 'का' विभक्तिका प्रयोग करते हैं); खास, प्रधान; पक्का; सच्चा। अ० बिलकुल; प्रधानतः, अधिकतर; यथार्थमें, निश्चयपूर्वक। **–सचिव**–पु० (प्राइवेट सेक्रेटरी) किसी राज्यपाल, मुख्य मंत्री या अन्य बड़े आदमीके साथ रहकर उसके निजी कामोंकी देखभाल तथा पत्र-व्यवहारादि करनेवाला सचिव। **–स्व**–पु० अपना भाग। **–करके**–निश्चित रूपसे, अवश्य। **–का**–खास अपना, व्यक्तिगत।

निजकाना*–अ० क्रि० पास पहुँचाना; नजदीक आना या जाना।

निजकारी–स्त्री० बँटाईकी फसल; वह जमीन जिसके लगानके बदले उसमें उपजी हुई चीज ही ली जाय।

निजन*–वि० जनरहित, निर्जन, सुनसान।

निजस्वता–स्त्री० निजीपन, अपनी विशेषता 'गुप्तजीकी शैली अपनी निजस्वता लिये रहती है'–सुधीन्द्र।

निजात–स्त्री० दे० 'नजात'।

निज़ाम–पु० (अ०) सिलसिला, तरतीब; बंदोबस्त; हैदराबादके नवाबकी उपाधि; प्रबंधक; काव्यरचना।

निजि–वि० (सं०) शुद्ध।

निजी–वि० निजका। **–उपचारगृह**–पु० (क्लिनिक) किसी डॉक्टर आदिका वह निजी चिकित्सा-गृह जहाँ रोगियोंका निदान तथा उपचार किया जाता है; निदानगृह।

निजु–वि०, अ० दे० 'निज'।

निजू†–वि० निजका।

निजूठा–वि० जो किसीके द्वारा जुठारा न गया हो; उक्ति या कल्पना जो पहले किसीके मुखसे न निकली हो।

निजोर*–वि० बलहीन, कमजोर।

निझनक*–वि० निर्जन, नीरव।

निझरना–अ० क्रि० एकदम झड़ जाना, लगा न रहना; लगी हुई वस्तुसे रिक्त हो जाना, खाली हो जाना–'भुवपर एक बुंद नहिं पहुँची निझरि गये सब मेह'–सूर; सारहीन हो जाना; अपनेको निर्दोष बताना, सफाई देना।

निझाटना†–स० क्रि० झपटकर ले लेना।

निझाना†–अ० क्रि० लुक-छिपकर देखना, छिपे तौरसे देखना; † (आगका) बुझना। † स० क्रि० आग बुझाना।

निटल, निटिल–पु० (सं०) मस्तक, ललाट।

निटलाक्ष, निटिलाक्ष–पु० (सं०) शंकर, महादेव।

निटलेक्षण, निटिलेक्षण–पु० (सं०) दे० 'निटलाक्ष'।

निटोल–पु० टोला, मुहल्ला।

निट्ठि*–अ० दे० 'नीठि'; बड़ी कठिनाईसे।

निठल्ला, निठल्लू–वि० बिना काम-धंधेका, खाली बैठा हुआ, बेकार; जो बेकार बैठा रहे, अकर्मण्य।

निठाला–पु० बेकारीका समय; आय या जीविकाका अभाव।

निठुर–वि० दे० 'निष्ठुर'। **–ई, –ता***–स्त्री० निष्ठुरता, निर्दयता।

निठुराई–स्त्री० क्रूरता, दयाहीनता, निष्ठुरता।

निठुराव†–पु० निष्ठुरता।

निठौर–पु० बुरा स्थान, कुठाँव; कुदाँव, शोचनीय अवस्था, दुर्दशा–'जिनको पिय परदेस सिधारो सो तिय परी निठौर'–सूर। मु० **–पड़ना**–विषम स्थितिमें पड़ना, दुर्दशा-ग्रस्त होना।

निडर–वि० निर्भय, निर्भीक; साहसी, हिम्मती; ढीठ। **–पन, –पना**–पु० निडर होनेका भाव, निर्भयता।

निड़ाना–स० क्रि० दे० 'निराना'।

निडीन–पु० (सं०) पक्षी या विमानका (धीरे-धीरे या तेजीसे) ऊपरसे नीचेकी ओर आना।

निड़ै*–अ० निकट, पास–'कबिरा चंदनके निड़ै नींब भि चंदन होइ'–कबीर।

निढाल–वि० थककर चूर, शिथिल, श्रांत; पस्त, बिना उत्साहका।

नितंत–अ० दे० 'नितांत'।

नितंब–पु० (सं०) स्त्रियोंके शरीरका कमरसे नीचेका भाग, कटिका अधोभाग, चूतड़; कमर; पहाड़की ढाल; नदीका ढालुवाँ किनारा; कंधा। **–बिंब**–पु० मंडलाकार नितंब।

नितंबिनी–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर और भारी नितंबवाली। स्त्री० सुंदर और भारी नितंबवाली स्त्री।

नित–अ० नित्य, प्रतिदिन, सदा। **–नित**–अ० हर रोज, अनुदिन।

नितराम्–अ० (सं०) बहुत अधिक, अत्यंत, अतिशय रूपमें; एकदम; पूर्णतः; निरंतर; हमेशा; हर हालतमें; निश्चयपूर्वक।

नितल–पु० (सं०) सात अधोलोकोंमेंसे एक।

नितांत–अ० (सं०) अत्यंत, बहुत अधिक; एकदम, बिलकुल।

निति*–अ० दे० 'नित'; निमित्त, लिए 'मोहि निति पिता तजेउ भगवाना'–रामा०; 'मीन जिअन निति बारि उलीचा'–रामा०।

नित्य–वि० (सं०) सदा बना रहनेवाला, जो कभी नष्ट न हो, अक्षर, अविनाशी, अनश्वर, शाश्वत; उत्पत्ति और विनाशसे रहित; प्रतिदिन किया जानेवाला या होनेवाला, प्रतिदिनका; (वह विहित कर्म) जो नित्य किया जाय। पु० समुद्र; अनिवार्य कर्म। अ० प्रतिदिन, हर रोज; सदा, हमेशा। **–कर्म(न्), –कृत्य**–पु० प्रतिदिन किया जानेवाला कार्य; प्रतिदिन किया जानेवाला विहित कर्म जिसके न करनेसे पाप होता है (जैसे–संध्या, पंचयज्ञ, शौच, स्नान आदि)। **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'नित्यकर्म'। **–गति**–पु० वायु, हवा। **–चर्या**–स्त्री० प्रतिदिन नियमित रूपसे किया जानेवाला काम। **–जात**–वि० नित्य उत्पन्न होनेवाला (गी०)। **–दान**–पु० प्रतिदिन दान देनेका कर्म। **–नर्त्त**–पु० शंकर, महादेव। **–नियम**–पु० कभी भंग न होनेवाला नियम। **–नैमित्तिक**–वि० (वह कर्म) जो नित्य भी हो और नैमित्तिक भी–जैसे पार्वण श्राद्ध। **–प्रति**–अ० प्रतिदिन, हर रोज। **–प्रमुदित**–वि० सदा प्रसन्न रहनेवाला। **–प्रलय**–पु० नित्य होनेवाला प्रलय, सुषुप्ति (वे०)। **–बुद्धि**–स्त्री० किसी वस्तुको नित्य समझना। **–भाव**–पु० नित्यत्व। **–मित्र**–पु० प्रीति या संबंधकी निःस्वार्थ भावसे रक्षा करनेवाला मित्र। **–मुक्त**–पु० परमात्मा (जो तीनों कालोंमें बंधनसे रहित रहता है)। वि० जो सदाके लिए मुक्त हो गया हो। **–यज्ञ**–पु० प्रतिदिन किया जानेवाला यज्ञ–जैसे अग्निहोत्र। **–युक्त**–वि० बराबर तत्पर रहनेवाला। **–यौवना**–वि० स्त्री० जिसका यौवन स्थायी हो। स्त्री० द्रौपदी। **–वैकुंठ**–पु० सत्यलोकके अंतर्गत विष्णुका निवासस्थान। **–व्रत**–पु० वह व्रत जिसका सदा पालन किया जाय। **–शंकित**–वि० जो सदा सशंक रहे, जिसे सदा शंका लगी रहे। **–श्री**–स्त्री० स्थायी कांति। **–संबंध**–पु० दो वस्तुओं या दो शब्दोंमें होनेवाला, देख पड़नेवाला नित्य संबंध, जैसे 'जब' तथा 'तब' में। **–सत्त्वस्थ**–वि० जो कभी धैर्य न छोड़े; सदा सत्त्वगुणसे युक्त रहनेवाला, जो रजोगुण और तमोगुणको छोड़कर सदा सत्त्वगुणका अवलंबन करे। **–सम**–पु० जातिके २४ भेदोंमेंसे एक (न्या०)। **–समास**–पु० वह समास जिसका विग्रह कर देनेपर उसके पदोंसे अभीष्ट अर्थ न निकाला जा सके (जैसे–जमदग्नि, जयद्रथ)। **–सिद्ध**–पु० आत्मा। **–सेवक**–वि० जो सदा दूसरोंकी सेवा करे। **–स्नायी(यिन्)**–वि० प्रतिदिन नियमपूर्वक स्नान करनेवाला। **–स्वाध्यायी(यिन्)**–वि० निरंतर नियमपूर्वक वेदाध्ययन करनेवाला। **–होता(तृ)**–वि० जो नित्य हवन करे। **–होम**–पु० सदा किया जानेवाला होम।

नित्यता–स्त्री०, **नित्यत्व**–पु० (सं०) नित्य होनेका भाव, अविना-

क्षिता, अक्षरता ।

नित्यदा–अ० (सं०) सर्वदा ।

नित्यर्तु–वि० (सं०) प्रत्येक ऋतुमें यथासमय होने या आनेवाला ।

नित्यशः(शस्)–अ० (सं०) हर रोज, प्रतिदिन; सदा, हमेशा ।

नित्या–स्त्री० (सं०) दुर्गाकी एक शक्ति; मनसादेवी ।

नित्याचार–पु० (सं०) बराबर बना रहनेवाला सदाचार, ऐसा सदाचार जिसके आचरणमें कभी त्रुटि न हुई हो ।

नित्यानंद–पु० (सं०) वह आनंद जो सदा बना रहे । वि० वह जो सदा आनंदसे रहे ।

नित्यानध्याय–पु० (सं०) ऐसा अवसर जब वेदका अध्ययन-अध्यापन सर्वथा त्याग दिया जाय ।

नित्यानित्य–वि० (सं०) नित्य और अनित्य, नश्वर और अनश्वर । **–वस्तुविवेक**–पु० ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या–यह विवेचन या निश्चय ।

नित्याभियुक्त–वि० (सं०) प्राणरक्षा मात्रके लिए कुछ खाकर और शेष सभी वस्तुओंको त्यागकर सदा योग-साधनमें लगा रहनेवाला (योगी) ।

नित्यामित्राभूमि–स्त्री० (सं०) ऐसी भूमि जहाँके रहनेवाले सदा शत्रुता रखें या जिसमें प्रबल शत्रु बसें ।

नित्यारित्र–वि० (सं०) (पोतादि) जो स्वतः चले ।

नित्योदित–वि० (सं०) सदा उदित होनेवाला; जिसका उदय अपने आप हुआ हो ।

नित्योद्युक्त–पु० (सं०) एक बोधिसत्व ।

नियंभ*–पु० स्तंभ, खंभा ।

नियरना–अ० क्रि० पानी या किसी अन्य तरल पदार्थका इस प्रकार स्थिर होना कि उसमें घुला हुआ मैल आदि नीचे बैठ जाय, घुले हुए मैल आदिके नीचे बैठ जानेसे जल आदिका स्वच्छ हो जाना ।

नियार–पु० वह जल जो नियर गया हो; नियरे हुए पानीमें नीचे बैठी हुई वस्तु ।

नियारना–स० क्रि० पानी या किसी अन्य तरल पदार्थको इस रूपमें लाना कि उसमें घुला हुआ मैल आदि नीचे बैठ जाय ।

नियालना*–स० क्रि० दे० 'नियारना' ।

निदंड–वि० (सं०) जिसने दंड (डंडा) अलग रख दिया हो; जो दंड न देता हो ।

निद–पु० (सं०) विष । वि० निंदा करनेवाला ।

निदई*–वि० दे० 'निर्दय' ।

निदद्रु–पु० (सं०) मनुष्य । वि० जिसे दादका रोग न हो ।

निदरना*–स० क्रि० अपमान करना, अनादर करना; तिरस्कार करना, त्यागना; हेठी करना, मात करना, तुच्छ बनाना, नीचा दिखाना ।

निदर्शक–वि० (सं०) दिखलाने-बतलानेवाला ।

निदर्शन–पु० (सं०) प्रदर्शन; उदाहरण, दृष्टांत ।

निदर्शना–स्त्री० (सं०) अर्थालंकारका एक भेद जहाँ दो पदार्थोंमें भिन्नता होते हुए भी उपमा द्वारा उनके संबंधकी कल्पना की जाय ।

निदलन*–पु० दे० 'निर्दलन' ।

निदहना*–स० क्रि० जलाना ।

निदाघ–पु० (सं०) गरमी; घाम; ग्रीष्म ऋतु; पसीना, स्वेद; पुलस्त्य ऋषिका एक पुत्र (विष्णु पु०) । **–कर**–पु० सूर्य । **–काल**–पु० ग्रीष्म ऋतु । **–सिंधु**–स्त्री० गरमीके महीनोंकी सूखी-सी नदी ।

निदान–पु० (सं०) आदि कारण; कारण; रोगका कारण; रोगका निर्णय, लक्षणों द्वारा यह निर्णय करना कि कौन रोग हुआ है; बछड़ा बाँधनेकी रस्सी; अंतःशुद्धि । अ० अंतमें, आखिर । वि० निकृष्ट, तुच्छ, गया-गुजरा । **–गृह**–पु० (क्लिनिक) वह स्थान जहाँ रोगियोंका परीक्षण इत्यादि कर उन्हें चिकित्सा-संबंधी उचित सलाह दी जाती है; चिकित्सालय । **–शास्त्री**–पु० (पैथेलाजिस्ट) रोगोंका निदान करनेवाला विशेषज्ञ, दे० 'विकृतिविज्ञानी' ।

निदारुण–वि० (सं०) कठिन; निर्दय; असह्य ।

निदाह*–पु० दे० 'निदाघ' ।

निदिग्ध–वि० (सं०) जिसपर लेप किया गया हो; प्रवर्द्धित ।

निदिग्धा, निदिग्धिका–स्त्री० (सं०) इलायची ।

निदिध्यास, निदिध्यासन–पु० (सं०) अनवरत चिंतन, बार-बार स्मरण करना ।

निदिष्ट–वि० (सं०) निर्दिशित; आदिष्ट ।

निदेश–पु० (सं०) आज्ञा; शासन; कथन; पु० (डाइरेक्शन) रास्ता या ढंग बतानेका काम; करने या किये जानेका आदेश देना, हिदायत; समीपता, निकटता; पात्र, बरतन ।

निदेशक–पु० निदेश करनेवाला (डाइरेक्टर); कहाँ क्या काम हुआ है, क्या करना है आदिकी सूचना, आदेश या निदेश (हिदायत) देनेवाला अधिकारी; चलचित्रोंमें पात्रोंकी वेशभूषा, कथोपकथन आदि निर्धारित करनेवाला (निर्देशक) ।

निदेशालय–पु० (डाइरेक्टरेट) निदेशकका कार्यालय ।

निदेशिका–स्त्री० (डाइरेक्टरी) किसी नगर, प्रदेश आदिके प्रमुख नागरिकों, व्यापारियों, संस्थाओं आदिका नाम, पता तथा अन्य बातोंका ब्यौरा देनेवाली पुस्तक ।

निदेशिनी–स्त्री० (सं०) दिशा । वि० स्त्री० आज्ञा देनेवाली ।

निदेशी(शिन्)–वि० (सं०) आज्ञा देनेवाला ।

निदेष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) निदेश करनेवाला ।

निदेस*–पु० दे० 'निदेश' ।

निदोष*–वि० दे० 'निर्दोष' ।

निद्धि*–स्त्री० दे० 'निधि' ।

निद्र–पु० एक अस्त्र ।

निद्रा–स्त्री० (सं०) विश्राम करनेकी प्राणियोंकी वह अवस्था जिसमें संज्ञावहा नाडियोंका काम रुक जाता, आँखें बंद हो जातीं, शरीर शिथिल पड़ जाता और चेतना जाती-सी रहती है, नींद; आलस्य; मीलन । **–भंग**–पु० जागरण । **–योग**–पु० ध्यानकी वह अवस्था जो निद्रा-सी हो । **–वृक्ष**–पु० अंधकार । **–संजनन**–पु० कफ, श्लेष्मा ।

निद्राचार, निद्राभ्रमण–पु० (सोमनैंबूलिज्म) निद्रा-ग्रस्त रहते हुए भी चलना-फिरना या अन्य कार्य करना ।

निद्राण–वि० (सं०) सोता हुआ; मीलित ।

निद्रायमाण–वि० (सं०) जो सो रहा हो; जिसे नींद आ रही हो ।

निद्रालस–वि० (सं०) तंद्रालु; सोया हुआ ।

निद्रालु–वि० (सं०) सोनेवाला; निद्राशील । पु० विष्णु; भंटा; बनतुलसी; नली नामक गंधद्रव्य ।

निद्रित–वि० (सं०) सोया हुआ, सुप्त ।

निधड़क–अ० बेखटके, निःशंक होकर; बिना रुके, बेरोक; बिना हिचकके ।

निधन–पु० (सं०) नाश, मरण; अंत, समाप्ति; कुंडलीमें आठवाँ स्थान; जन्म-नक्षत्रसे सातवाँ, सोलहवाँ और तेईसवाँ नक्षत्र; पाँच या सात अवयवोंवाले सामका अंतिम अवयव जिसे उद्‌गाता, प्रस्तोता और प्रतिहर्ता मिलकर गाते हैं; गीतका अंतिम भाग; परिवार, कुल; परिवारका मुखिया । वि० वित्तहीन, गरीब, दरिद्र । **–कारी(रिन्)**–वि० घातक, नाशक । **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टिक्रिया । **–पति**–पु० शिव ।

निधनी–वि० धनहीन, दरिद्र ।

निधरक†–अ० दे० 'निधड़क' ।

निधातव्य–वि० (सं०) रखने योग्य, निधान करने योग्य ।

निधान–पु० (सं०) रखना, स्थापन; आधार, आश्रय; आकर, खजाना; संपत्ति; घर; किसी वस्तुके लीन होनेका स्थान, लयस्थान ।

निधि–स्त्री० (सं०) किसी वस्तुका आधार या आश्रयस्थान (करुणानिधि, जलनिधि); खजाना; किसी विशेष कार्य या उद्देश्यसे अलग रखा या संचित किया हुआ धन, जैसे भविष्यनिधि; वह गड़ा हुआ धन जिसके स्वामीका पता न हो; कुबेरके नौ रत्न (पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व); नौकी संख्या; समुद्र; विष्णु; शिव; जीवक नामकी ओषधि; नलिका नामका गंधद्रव्य; किसी विशेष कार्यके निमित्त अलग की हुई धनराशि, फंड; बहुगुण-संपन्न व्यक्ति; (लोकस) किसी चलायमान बिंदुकी वह रेखा जिसपर उस बिंदुकी वे सब स्थितियाँ

हों जो किसी दिये हुए नियमका पालन करती हों (गणित) । **–गोप**–पु० वह जिसने छहों अंगोंके साथ वेदका अध्ययन किया हो, अनूचान । **–नाथ,–प,–पति, –पाल**–पु० कुबेर ।

निधीश, निधीश्वर–पु० (सं०) कुबेर ।

निधुवन–पु० (सं०) मैथुन; केलि, क्रीड़ा; आमोद प्रमोद; कंपन ।

निधेय–वि० (सं०) रखने योग्य, स्थापन करने योग्य ।

निध्यात–वि० (सं०) विचारित, जिसपर मनन किया गया हो ।

निध्यान–पु० (सं०) देखना, दर्शन ।

निध्रुव–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

निध्वान–पु० (सं०) ध्वनि या शब्द ।

निनंक्षु–वि० (सं०) जो मरना या भागना चाहता हो ।

निनद–पु० (सं०) दे० 'निनाद' ।

निनदित, निनादित–वि० (सं०) ध्वनित, शब्दित । पु० शब्द ।

निनदी(दिन्), निनादी(दिन्)–वि० (सं०) शब्द करनेवाला ।

निनयन–पु० (सं०) निष्पादन; छिड़कना, परिषेक करना ।

निनरा*–वि० न्यारा, जुदा ।

निनर्द–पु० (सं०) वेदके शब्दोंका विशेष प्रकारका उच्चारण ।

निनाद–पु० (सं०) शब्द, गुंजार; रथके पहियोंकी आवाज ।

निनादना*–अ० क्रि० निनाद करना ।

निनान*–पु० निदान, अंत; लक्षण । अ० अंतमें, आखिर । वि० आखिरी दर्जेका, घोर; बुरा, तुच्छ ।

निनाया†–पु० खटमल ।

निनार, निनारा*–वि० न्यारा, जुदा–'वे हरि जल हम मीन बापुरी कैसे जिवहिं निनारे'–सूर०; दूर; चोखा, नुकीला ।

निनावाँ–पु० फुंसीकी तरहके लाल दाने जो जीभ, मसूड़े तथा मुँहके भीतरी भागों आदिमें निकल आते हैं ।

निनौना*–स० क्रि० नवाना, झुकाना ।

निनौरा–पु० ननिहाल ।

निन्नानबे–वि०, पु० दे० 'निन्यानबे' ।

निन्यानबे–वि० नब्बे और नौ । पु० निन्यानबेकी संख्या, ९९ । मु० **–का चक्कर या फेर**–धन बढ़ानेकी धुन ।

निन्यारा*–वि० दे० 'निनारा' ।

निपंग*–वि अपंग, पंगु, अपाहिज ।

निप–पु० (सं०) कलस; कदमका पेड़ ।

निपज–स्त्री० कारखानेका समस्त उत्पादन; उपज ।

निपजना*–अ० क्रि० उपजना, उत्पन्न होना, जमना; पुष्ट होना, परिपक्व होना; निकलना; बनना ।

निपजी*–स्त्री० उपज; फायदा, मुनाफा ।

निपट–अ० एकदम, बिलकुल, नितांत, निरा ।

निपटना–अ० क्रि० दे० 'निबटना' ।

निपटाना–स० क्रि० दे० 'निबटाना' ।

निपटारा–पु० दे० 'निबटेरा' ।

निपटेरा–पु० दे० 'निबटेरा' ।

निपठ, निपाठ–पु० (सं०) पाठ, अध्ययन ।

निपतन–पु० (सं०) नीचे आना, उतरना; गिरना, पतन ।

निपतित–वि० (सं०) नीचे उतरा हुआ; गिरा हुआ ।

निपत्या–स्त्री० (सं०) पिच्छल भूमि; युद्धभूमि ।

निपत्र–वि० जिसमें या जिसपर पत्ते न हों, पत्रहीन ।

निपलाश–पु० (सं०) वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गये हों ।

निपाँख*–वि० पंखसे हीन; सहायकसे रहित (ला०)–'निपाँख करि छोरि देहु–' घन० ।

निपाँगुर–वि० पंगु, जिसके हाथ-पाँव बेकाम हो गये हों, अपाहिज ।

निपाक–पु० (सं०) बहुत अधिक पक जाना, अत्यधिक पाक ।

निपात–वि० दे० 'निपत्र' । पु० (सं०) गिरना, पतन, अधःपतन; आक्रमण; चलाना, फेंकना; मृत्यु; विनाश; दूसरा सिरा; वह शब्द जो वर्णागम आदिके द्वारा किसी प्रकार बन जाता हो और व्याकरणके नियम (सूत्र)से निष्पन्न न होते हुए भी चल पड़ा हो । (व्या०) ।

निपातक–पु० (सं०) पाप, दुष्कर्म ।

निपातन–पु० (सं०) गिरानेका काम; मारना, पीटना; नाश करना, विनाशन; नीचे गिरना या उड़कर नीचे आना; शब्दका अनियमित रूपसे निष्पन्न होना ।

निपातना*–स० क्रि० गिराना; नाश करना; वध करना, मार डालना; काटकर गिराना; काट डालना ।

निपातित–वि० (सं०) गिराया हुआ; हत या नष्ट किया हुआ; अनियमित रूपसे बना हुआ ।

निपाती–वि० दे० 'निपत्र' ।

निपाती(तिन्)–वि० (सं०) गिरानेवाला; फेंकनेवाला; मारनेवाला, नाशक ।

निपान–पु० (सं०) कूप; पशुओंके पानी पीनेके लिए कुएँके पास बनाया जानेवाला हौज; दूध दुहनेका बरतन; गड्ढा; खत्ता; इस प्रकार पीना कि कुछ बच न रहे, निःशेष पान ।

निपीडक–वि० (सं०) बहुत अधिक पीड़ा पहुँचानेवाला; निचोड़नेवाला, पेरनेवाला; मलने या दबानेवाला ।

निपीडन–पु० (सं०) बहुत अधिक पीडा पहुँचाना; निचोड़ना, गारना; पेरना; दबाना या मलना ।

निपीडना–स्त्री० (सं०) दे० 'निपीडन' । * स० क्रि० पीडा पहुँचाना; दबाना, मलना; गारना; पेरना ।

निपीडित–वि० (सं०) बहुत अधिक पीड़ित; दबाया हुआ; निचोड़ा हुआ, गारा हुआ; पेरा हुआ ।

निपीत–वि० (सं०) पान किया हुआ; शोषित ।

निपीति–स्त्री० (सं०) पीनेकी क्रिया ।

निपुड़ना–अ० क्रि० (दाँत) उघरना या दिखाना ।

निपुण–वि० (सं०) चतुर, प्रवीण, कुशल; ठीक; पूर्ण ।

निपुणता–स्त्री० (सं०) निपुण होनेका भाव या क्रिया ।

निपुणाई*स्त्री० चतुरता, प्रवीणता, कुशलता ।

निपुत्री–वि०–जिसे पुत्र न हो; संतानरहित ।

निपुन*–वि० दे० 'निपुण' ।**–ई,–ता**–*–स्त्री० निपुणता, कुशलता, प्रवीणता ।

निपुनाई*–स्त्री० दे० 'निपुणाई' ।

निपूत*–वि० जिसे पुत्र न हो, पुत्रहीन ।

निपूता–वि० दे० 'निपूत' । (स्त्री० 'निपूती' ।)

निपेटी*–वि०, स्त्री० भुक्खड़–'अघाति न आँखि निपेटी'–घन० ।

निपोड़ना–स० क्रि० (दाँत) उघारना या दिखाना ।

निफन*–वि० संपूर्ण, पूरा । अ० पूर्ण रूपसे, पूरे तौरसे ।

निफरना*–अ० क्रि० धँसकर आर-पार होना; स्पष्ट होना, साफ होना ।

निफल*–वि० दे० 'निष्फल' ।

निफला–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती लता ।

निफ़ाक़–पु० (अ०) अनबन, झगड़ा ।

निफारना–स० क्रि० आर-पार छेद करना, धँसाकर आर-पार करना; स्पष्ट करना, साफ करना ।

निफालन–पु० (सं०) देखना, अवलोकन ।

निफ़ोट–वि० स्पष्ट, व्यक्त ।

निबंध–पु० (सं०) बंधन; संलग्नता; संग्रह-ग्रंथ; वह विचारपूर्ण लेख जिसमें किसी विषयका सम्यग् विवेचन किया गया हो (एसे.); गीत; पेशाब रुकनेकी बीमारी; प्रतिबंध; हथकड़ी; कारण; नीम; वह वस्तु जिसे देनेकी प्रतिज्ञा की गयी हो; बाँधने या जोड़नेकी क्रिया; सरकारी आज्ञा (कौ०) ।

निबंधक–पु० (रजिस्ट्रार) दे० 'पंजीयक' ।

निबंधन–पु० (सं०) बाँधनेकी क्रिया; बंधन; वीणा या सितारकी खूँटी; रचना; रोकना, अवरोध करना; बंधन या लगावका आश्रय, आधार; संबंध, जुड़ाव; हेतु, कारण; शासनपट्ट आदि । (रजिस्ट्रेशन) दे० 'पंजीयन' ।

निबंधनी–स्त्री० (सं०) बंधनका साधन ।

निबंधा(धृ)–पु० (सं०) बाँधनेवाला; लेखक, रचयिता ।

निबंधी(धिन्)–वि० (सं०) बाँधनेवाला; जुड़ा हुआ, संबद्ध; कारणस्वरूप; उत्पन्न करनेवाला ।

निब–स्त्री० (अ०) कलमके होल्डरमें खोंसी जानेवाली लोहे आदिकी नुकीली वस्तु जिससे लिखा जाता है, जीभी ।

निबकौड़ी, निबकौरी|–स्त्री० नीमका फल या बीज ।

निबटना–अ० क्रि० निवृत्त होना, छुटकारा पाना, फुरसत पाना, फरागत होना; करनेको बाकी न रह जाना, समाप्त होना, खत्म होना, निःशेष होना; निबटाया जाना, फैसल होना, तय होना; समाप्त होना; शौचक्रियासे निवृत्त होना ।

निबटाना–स० क्रि० समाप्त करना, खत्म करना; पूरा अदा कर देना, चुका देना; तय करना, फैसला करना, निर्णय करना ।

निबटारा, निबटाव–पु० दे० 'निबटेरा' ।

निबटेरा–पु० निबटनेका भाव या कार्य, फुरसत, अवकाश, छुट्टी; समाप्ति, खातमा; निर्णय, फैसला ।

निबड़*–वि० दे० 'निविड' ।

निबड़ना*–अ० क्रि० दे० 'निबटना' ।

निबद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ; गूँथा हुआ, ग्रथित; लिखा हुआ, लिखित, प्रणीत, रचित; जुड़ा हुआ, संबद्ध; जड़ा हुआ, खचित, जटित; रोका हुआ, अवरुद्ध; आवृत; (रजिस्टर्ड) (वह लेख, समझौता आदि) जो सरकारी पंजीमें विधिवत् चढ़ा दिये जानेके कारण पक्का और प्रामाणिक हो गया हो, पंजीबद्ध, पंजीकृत ।

निबर*–वि० दे० 'निर्बल' ।

निबरना-अ० क्रि० बँधा, फँसा या लगा न रहना, बंधन या लगावसे मुक्त होना; छुटकारा पाना, मुक्त होना, त्राण पाना; बचा रह सकना; निवृत्त होना, फरागत होना, फुरसत पाना; पूरा होना, निभना; निबटना, तय होना; पृथक् होना, उलझा न रहना, सुलझना; बना न रहना, खत्म होना, मिट जाना–'जूझि कुँवर सब निबरे, गोरा रहा अकेल'–प० ।

निबर्हण–पु० (सं०) मारने या नाश करनेकी क्रिया, मारण । वि० नाश करनेवाला ।

निबल*–वि० दे० 'निर्बल' ।

निबलाई*–स्त्री० निर्बलता, क्षीणता ।

निबह–पु० दे० 'निवह' ।

निबहना–अ० क्रि० बच निकलना, त्राण पाना, पार पाना; छुट्टी पाना; निर्वाह होना; ज्योंका त्यों बना रहना, कभी भंग न होना, किसी स्थिति, संबंध आदिमें फर्क न पड़ना; किया जा सकना; पूरा होता रहना, चालू रह सकना, निभना; पूरा होना, पालन होना ।

निबहुर*–वि० (वह स्थान) जहाँ पहुँचकर कोई बहुर न सके, लौट न सके (यमद्वार) ।

निबहुरा|–वि० जो सदाके लिए चला जाय (गाली) ।

निबारना–स० क्रि० निवारण करना, रोकना; मना करना; चुकाना; दे० 'निवारना' ।

निबाह–पु० निबाहनेका काम या भाव; निर्वाह, खपत, गुजारा; किसी स्थिति, संबंध आदिको बनाये या जारी रखनेका काम, रक्षा, पालन; पूर्ति; छुटकारेका उपाय, त्राणका मार्ग, बचनेका रास्ता, बचाव ।

निबाहक–वि० निबाह करनेवाला ।

निबाहना–स० क्रि० निर्वाह करना, ज्योंका त्यों बनाये रखना, कभी भंग न होने देना, किसी स्थिति, संबंध आदिकी रक्षा किये जाना; किये जाना, पूरा करते रहना, चालू रखना, निभाना; पूरा करना, पालन करना; निकालना, साधना ।

निबिड–वि० (सं०) घना, गहरा; कठिन ।

निबुआ*–पु० दे० 'नीबू' ।

निबुकना*–अ० क्रि० बच निकलना, मुक्त होना, छुटकारा पाना, बंधनसे मुक्त होना; बंधनका ढीला होना, खिसकना; संपन्न होना ।

निबेड़ना–स० क्रि० बंधनरहित करना, मुक्त करना, छुड़ाना; एकमें मिली हुई वस्तुओंको पृथक्-पृथक् करना, छाँटना; सुलझाना, उलझा न रहने देना; निबटाना, फैसला करना; दूर करना, पृथक् करना; पूरा करना, समाप्त करना ।

निबेड़ा–पु० छुटकारा; त्राण, बचाव; एकमें मिली वस्तुओंके पृथक् होने या किये जानेका काम या भाव; सुलझाव; निबटारा, निर्णय; दूरीकरण, हटाव; पूर्ति, पूरा करना ।

निबेरना–स० क्रि० दे० 'निबेड़ना'; छोड़ना, त्यागना; वसूल करना –'सूर मूर अक्रूर गये लै ब्याज निबेरत ऊधो'–सूर ।

निबेरा–पु० दे० 'निबेड़ा' ।

निबेसित*–वि० निवेशित ।

निबेहना*–स० क्रि० दे० 'निबेरना' ।

निबोध–पु० (सं०) समझना; सीखना; बतलाना, समझाना ।

निबोधन–पु० (सं०) समझने या समझानेकी त्रिया ।

निबौरी*–स्त्री० दे० 'निमकौड़ी' ।

निबौली–स्त्री० दे० 'निमकौड़ी' ।

निभ–वि० (सं०) बहुत चमकदार, प्रखर प्रकाशवाला; समान, सदृश (समासांतमें) । पु० प्रकाश; ब्याज; छल-कपट; प्रकट होना ।

निभना–अ० क्रि० दे० 'निबहना' ।

निभरम*–वि० जिसे या जिसमें किसी प्रकारका खटका न हो, भ्रमरहित । अ० बेखटके, निःशंक ।

निभरमा–वि० जिसका भरम या विश्वास उठ गया हो; जिसकी पोल खुल गयी हो ।

निभरोस|–वि० जिसे भरोसा न हो; बिना सहारेका, निराधार ।

निभरोसी*–वि० जिसे कोई सहारा न रह गया हो, असहाय, आश्रयहीन ।

निभाऊ, निभाव–पु० दे० 'निबाह' । वि० भावरहित ।

निभागा–वि० भाग्यहीन, अभागा ।

निभाना–स० क्रि० दे० 'निबाहना' ।

निभालन–पु० (सं०) देखना, दर्शन; मालूम करना ।

निभूत–वि० (सं०) बीता हुआ, भूत; जो बहुत डर गया हो, अति भीत ।

निभृत–वि० (सं०) रखा या धरा हुआ; छिपा हुआ, गुप्त, अंतर्हित; जो अस्त होने जा रहा हो; नम्र, विनीत; अचल, स्थिर; पूर्ण, भरा हुआ; निर्जन, सूना; चुप, शांत; जो जोरदार न हो, धीमा; मंद; बंद किया हुआ; आवृत; धीर, धैर्यवान् । पु० नम्रता ।

निभृतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) धीर, दृढ़ ।

निभ्रांत*–वि० दे० 'निर्भ्रांत' ।

निमंत्रण–पु० (सं०) किसी कार्य, उत्सव आदिमें या श्राद्ध, भोज आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन, बुलावा, दावत, न्योता (निमंत्रण वह है जिसका पालन न करनेपर मनुष्य दोषका भागी होता है–सिद्धांतकौमुदी) । **–पत्र**–पु० वह पत्र जिसमें किसी कार्य, उत्सव आदिमें सम्मिलित होनेका निवेदन किया गया हो, निमंत्रणका पत्र ।

निमंत्रना*–स० क्रि० निमंत्रण देना, न्योता देना ।

निमंत्रित–वि० (सं०) जो आमंत्रित किया गया हो, आहूत ।

निम–पु० (सं०) कील, खूँटी; शलाका ।

निमक|–पु० दे० 'नमक' ।

निमकी–स्त्री० नीबूका अचार; नमकीन टिकिया ।

निमकौड़ी–स्त्री० नीमका फल या उसका बीज ।

निमग्न–वि० (सं०) डूबा हुआ, तल्लीन, गर्क ।

निमज्जथु–पु० (सं०) डुबकी लगाना; शयन करना ।

निमज्जन–पु० (सं०) डुबकी लगाना; डुबकी लगाकर स्नान करना, अवगाहन करना; किसी चीजको तरल पदार्थमें डुबाना; किसी विषयमें निमग्न होना ।

निमज्जना*–अ० क्रि० डुबकी लगाना, अवगाहन ।

निमज्जित–वि० (सं०) डूबा हुआ; स्नात ।

निमटना–अ० क्रि० दे० 'निबटना' ।

निमटाना–स० क्रि० दे० 'निबटाना' ।

निमटेरा–पु० दे० 'निबटेरा' ।

निमता*–वि० जो माता हुआ या मत्त न हो; शांत ।

निमद–पु० (सं०) स्पष्ट, पर मंद स्वरमें किया जानेवाला उच्चारण ।

निमय–पु० (सं०) विनिमय ।

निमाज–स्त्री० दे० 'नमाज़' ।

निमान–पु० (सं०) माप; मूल्य; * नीची जगह, ढाल, खाल; जलाशय ।

निमाना–वि० नीचा, निम्न, ढालुआँ; नम्र, विनयशील ।

निमि–पु० (सं०) एक ऋषि जो दत्तात्रेयके पुत्र थे; इक्ष्वाकुवंशके

एक राजा जो मिथिलाके विदेहवंशके प्रवर्तक थे; पलकोंका गिरना, निमेष। **–राज***–पु० राजा जनक।

निमिख*–पु० दे० 'निमिष'।

निमित्त–पु० (सं०) कारण; साधनभूत कारण; चिह्न, लक्षण; लक्ष्य, उद्देश्य, फल; शकुन; दिखावटी कारण, बहाना। **–कारण, –हेतु**–पु० समवायी और असमवायी कारणसे भिन्न कारण–जैसे घटनिर्माणमें कुम्हार, चाक, दंड आदि (न्या०)। **–कृत्**–पु० कौआ। **–वध**–पु० बाँधने आदिके कारण होनेवाली (गायकी) मृत्यु। **–विद्**–वि० शकुन जाननेवाला। पु० ज्योतिषी।

निमित्तक–वि० (सं०) (किसीके) निमित्त होने या किया जानेवाला; उत्पन्न, जनित।

निमिष–पु० (सं०) आँख बंद करना, पलक मारना; पलकोंका गिरना; उतना समय जितना एक बार पलक गिरनेमें लगे, क्षण; फूलका संकुचन; पलकोंका एक रोग; परमेश्वर। **–क्षेत्र**–पु० नैमिषारण्य।

निमिषांतर–पु० (सं०) पलभरका अंतर।

निमिषित–वि० (सं०) निमीलित। पु० पलक गिराना, निमिष।

निमीलन–पु० (सं०) आँखें मूँदना या झपकाना; मरण; खग्रास ग्रहण (ज्यो०)।

निमीला, निमीलिका–स्त्री० (सं०) निमीलन; देखते हुए न देखना; छल।

निमीलित–वि० (सं०) मुँदा हुआ, बंद (नेत्र); जो जड या सुन्न हो गया हो; अंधकाराच्छन्न; लुप्त।

निमुँहा–वि० जिसे बोलनेका साहस न हो, जो दृढ़तापूर्वक कुछ बोल न सके, चुप रहनेवाला।

निमूँद–वि० बंद।

निमूल–वि० दे० 'निर्मूल'।

निमेख*–पु० दे० 'निमेष'।

निमेट*–वि० जो मिट न सके, अमिट, जो बना रहे।

निमेय–पु० (सं०) दे० 'निमय'।

निमेष*–स्त्री० पलक। पु० (सं०) दे० 'निमिष'; आँखोंके फड़कनेका रोग; एक यक्ष (म० भा०)। **–कृत्**–स्त्री० बिजली। **–रुक्(च)**–पु० जुगनू।

निमेषक–पु० (सं०) पलक; जुगनू।

निमेषण–पु० (सं०) पलक मारना।

निमोना–पु० चने या मटरके पिसे हुए कच्चे दानोंसे तैयार की हुई मसालेदार दाल।

निमोनिया–पु० (अं०) सरदीसे फेफड़ेमें श्लेष्माके जमा हो जानेसे होनेवाली सूजन या प्रदाह, दे० 'फुप्फुसदाह'।

निमौनी†–स्त्री० ईख कटनेका पहला दिन।

निम्न–वि० (सं०) गहरा; नीचा। पु० गहराई; नीची जमीन; ढाल; दरार। **–ग**–वि० नीचेकी ओर जानेवाला। **–गत**–पु० नीची जमीन। वि० नीचे गया हुआ। **–गा**–स्त्री० नदी; पहाड़ी झरना। वि० स्त्री० नीचे जानेवाली। **–तापिकी**–स्त्री० (क्रायोजेनिक्स) भौतिक विज्ञानकी वह शाखा जो अत्यन्त निम्न तापपर वस्तुओंके आचरणके अध्ययनसे सम्बन्ध रखती है। **–योधी(धिन्)**–वि० जो किलेके नीचेसे या नीची जमीनपरसे लड़े। **–लिखित**–वि० नीचे लिखा हुआ। **–सदन**–पु० (लोअर हाउस) दे० 'अवरागार'।

निम्नांकित–वि० (सं०) नीचे अंकित या नीचे लिखा हुआ।

निम्नारण्य–पु० (सं०) घाटी।

निम्नोन्नत–वि० (सं०) विषम, नीचा-ऊँचा, ऊबड़-खाबड़।

निम्लुक्ति–स्त्री० (सं०) सूर्यास्त।

निम्लोच–पु० (सं०) सूर्यका अस्त होना।

निम्लोचिनी–स्त्री० (सं०) वरुणकी वह पुरी जहाँ सूर्य अस्त होता है।

नियंतव्य–वि० (सं०) नियमन करने योग्य।

नियंता(तृ)–वि०, पु० (सं०) नियमन करनेवाला, नियंत्रणमें रखनेवाला; शासनकर्त्ता; दंड देनेवाला; विशिष्ट नियमके अनुसार संचालन करनेवाला, संचालक; चलानेवाला, हाँकनेवाला। पु० सारथि; परमेश्वर। (स्त्री० 'नियंत्री'।)

नियंत्रण–पु० (सं०) नियमोंमें बाँधकर रखना; वशमें रखना, स्वच्छंद न रहने देना; किसीकी गतिविधिपर, किसी वस्तुकी बिक्री आदिपर बंधन लगाना, प्रतिबंधन।

नियंत्रित–वि० (सं०) नियंत्रणमें रखा हुआ, प्रतिबद्ध; प्रतिबंध द्वारा जिसका व्यापार या कार्य सीमित कर दिया गया हो।

निय*–वि० निज।

नियत–स्त्री० दे० 'नीयत'। वि० (सं०) नियमबद्ध, बँधा हुआ; नियुक्त, तैनात; स्थिर किया हुआ, पक्का किया हुआ, तय किया हुआ, निश्चित, मुकर्रर, संयत। **–कालिक पलीता**–पु० (टाइम फ्यूज) वह पलीता जिसमें ज्वलनशील वस्तुएँ भरी हों या जो उनमें डुबाकर, संलिप्त कर बनाया गया हो, अतः जो निर्धारित समयके बाद जल उठे, मियादी फ्यूज। **–०प्रस्फोट**–पु० (टाइम-बम) दे० 'सावधिक प्रस्फोट'। **–तापी प्राणी**–पु० (वार्म ब्लडेड ऐनिमल) ऐसे प्राणी जिनमें यह क्षमता मौजूद रहती है कि बाह्य वातावरण के तापसे निष्प्रभावित बने रहकर वे अपने शरीरका ताप नियत बनाये रख सकें। (स्तनपायी नियततापी होते हैं–मछली नियततापी नहीं होती।) **–भागी**–पु० (एलॉटी) वह व्यक्ति जिसे कोई वस्तु या कोई हिस्सा निर्दिष्ट किया गया हो, दे० 'आवंटच'। **–व्यावहारिक काल**–पु० व्रत, यात्रा, श्राद्ध, विवाह आदिके लिए नियत काल (ज्यो०)।

नियतन–पु० (अलॉटमेंट) किसीके लिए भूमि आदिका कोई हिस्सा निर्धारित करना, आवंटन।

नियतांश–पु० (कोटा) समूची राशिका वह अंश जो किसी व्यक्तिसे लेने या उसे देनेके लिए निर्धारित किया जाय।

नियतात्मा(त्मन्)–वि०, पु० (सं०) अपने ऊपर नियंत्रण रखनेवाला, संयमी, वशी।

नियताप्ति–स्त्री० (सं०) नाटककी पाँच अवस्थाओंमेंसे एक जिसमें फलप्राप्तिका निश्चय होता है।

नियति–स्त्री० (सं०) नियत होनेकी क्रिया या भाव; नियमन; ईश्वर या प्रकृतिका विधान जो स्थिर और नियत होता है, अदृष्ट, भाग्य, भवितव्यता; आत्मसंयम; प्रकृति (जै०)। **–वाद**–पु० दे० 'भाग्यवाद'। **–वादी(दिन्)**–वि० दे० 'भाग्यवादी'।

नियती–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

नियतेंद्रिय–वि० (सं०) इंद्रियोंको वशमें रखनेवाला, जितेंद्रिय।

नियम–पु० (सं०) विधान या निश्चयके अनुकूल नियंत्रण; स्थायी कार्यक्रम, दस्तूर; निश्चित व्यवस्था; रीति, पद्धति, कायदा; अनुशासन, नियंत्रण; वह संकल्प जिसका सदा निर्वाह किया जाय, प्रतिज्ञा; कार्यविशेषके संपादन या संचालनके लिए निश्चित सिद्धांत या आधार, विधि, विधान; योगके आठ अंगोंमेंसे एक जिसके अंतर्गत शौच, संतोष, तप आदि हैं; कवियोंकी एक वर्णन-पद्धति; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें किसी बातका एक ही स्थानपर होना वर्णित किया जाय; वह विधि जो अप्राप्त अंशका पूरण करे (मी०); शर्त; परमेश्वर; परिभाषा, लक्षण। **–तंत्र**–वि० नियमबद्ध, नियमाधीन। **–निष्ठा**–स्त्री० नियमोंका कड़ाईके साथ पालन। **–पत्र**–पु० प्रतिज्ञापत्र, शर्तनामा। **–पर**–वि० नियमका पालन करनेवाला; नियमके अधीन। **–बद्ध**–वि० नियमोंसे जकड़ा हुआ; नियमोंके अनुसार चलने या होनेवाला, नियमोंके अनुकूल। **–विधि**–स्त्री० दैनिक धार्मिक कृत्य। **–सेवा**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला एकादशीसे आरंभ कर कार्त्तिकभर की जानेवाली विष्णुकी उपासना। **–स्थिति**–स्त्री० तपस्या।

नियमन–पु० (सं०) नियममें बाँधनेका कार्य, अनुशासन या वशमें रखना, नियंत्रण, शासन; निग्रह, दमन; ऐसा विधान जिससे दूसरेका निवारण हो।

नियमवती–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका मासिक स्राव नियमित रूपसे होता हो।

नियमापत्ति–स्त्री० (पाइंट ऑफ आर्डर) किसी सभासमितिमें कार्यप्रणाली की मानी हुई परंपरा या स्वीकृत नियमोंके विरुद्ध कोई बात होनेपर उठायी गयी या की गयी आपत्ति।

नियमावली–स्त्री० (सं०) किसी संस्थाके संचालन, प्रवेश आदि संबंधी नियमोंका संग्रह; सदस्यों या कार्यकर्ताओंके अनुशासन

आदि संबंधी नियम।

नियमित–वि० (सं०) बँधा हुआ, निश्चित; नियमोंसे जकड़ा हुआ, नियमबद्ध; नियमके अनुसार, बाकायदा।

नियमी(मिन्)–वि० (सं०) नियमके अनुसार चलनेवाला, नियमोंका पालन करनेवाला।

नियम्य–वि० (सं०) नियमन करने योग्य, शासन या निग्रह करने योग्य; नियमबद्ध होने योग्य।

नियर†–अ० निकट, पास।

नियराई*–स्त्री० समीपता, निकटता।

नियराना*–अ० क्रि० पास आना। स० क्रि० पास पहुँचना।

नियरे*–अ० दे० 'नियर'।

नियाज़–पु० (फा०) इच्छा; आवश्यकता; प्रार्थना; भेंट, दर्शन। स्त्री० चढ़ावा; फातिहा; प्रसाद। **–नामा**–पु० पत्र (विनम्रता प्रदर्शित करनेके लिए अपने पत्रके लिए प्रयुक्त)। **–मंद**–वि० कुछ चाहनेवाला; प्रार्थी; विनीत (वक्ता विनय-प्रकाशनार्थ, विनयवश अपनेको कहता है)। **मु०–हासिल करना**–(बड़ेसे) मिलना, दर्शन या परिचय होना।

नियातन–पु० (सं०) दे० 'निपातन'।

नियान–पु० (सं०) घोठा, गोष्ठ (वै०); * निदान; परिणाम। * अ० दे० 'निदान'।

नियाम–पु० (सं०) नियम।

नियामक–पु० (सं०) नियम करने या बनानेवाला; व्यवस्था करनेवाला, विधायक; नियमन करनेवाला, नियंता, अनुशासक; दूर करनेवाला, नाशक; सारथि; माँझी, मल्लाह। (स्त्री० 'नियामिका')। वि० नियंत्रण करनेवाला; दमन करनेवाला; शासन करनेवाला। **–गण**–पु० पारेको मारनेवाली ओषधियोंका समुदाय (आ० वे०)।

नियामत–स्त्री० दे० 'नेमत'।

नियार–पु० जौहरी या सुनारकी दुकानका कूड़ा-कतवार; † मैकेसे वधूकी रुखसतीके लिए उसकी ससुरालसे तिथि नियत करनेके लिए भेजा जानेवाला पत्र।

नियारना*–स० क्रि० जौहरी, सुनार आदिकी दुकानके कूड़े कतवारसे सोने चाँदीके टुकड़े बीनकर अलग करना; अलग करना, दूर करना–'गुप्त प्रीति परगट करौं कुलकी कान नियारि री'–सूर।

नियारा*–वि० पृथक्, जुदा।

नियारिया–पु० एकमें मिली हुई वस्तुओंको छाँटनेवाला; नियारमेंसे माल निकालनेवाला, चतुर व्यक्ति।

नियारे*–अ० दे० 'न्यारे'।

नियाव*–पु० दे० 'न्याय'।

नियुक्त–वि० (सं०) लगाया हुआ; जोता हुआ, नियोजित; जिसे प्रेरणा दी गयी हो, प्रेरित; जो नियोग करे या जिससे नियोग कराया जाय; तैनात किया हुआ, जो किसी पदपर रखा गया हो, अधिष्ठापित, अधिकृत।

नियुक्ति–स्त्री० (सं०) नियुक्त होने या करनेकी क्रिया, तैनाती, मुकर्ररी।

नियुत–वि० (सं०) संस्कृत गणनपद्धतिसे दस लाख। पु० एक या दस लाखकी संख्या।

नियुद्ध–पु० (सं०) हाथा-बाँही, बाहुयुद्ध, कुश्ती।

नियोक्तव्य–वि० (सं०) नियोजित करने योग्य।

नियोक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) लगाने या जोतनेवाला, नियोजित करनेवाला, नियुक्त करनेवाला; नियोग करनेवाला। पु० (एंप्लॉयर) वेतन, मजदूरी आदि देकर अपने कारखाने, मिल आदिमें किसीको काम करनेके लिए नियुक्त करनेवाला, नियोजक।

नियोग–पु० (सं०) लगाना या जोतना; नियुक्त करनेकी क्रिया; प्रेरणा करना, प्रेरण; प्रवृत्त करना, प्रवर्तन; आशा; उद्योग; एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार निःसंतान स्त्री पतिके रोगी, नपुंसक या मृत होनेकी दशामें देवर या किसी अन्य गोत्रके द्वारा संतान उत्पन्न करा सकती थी (मनु०); वह उपाय जिससे बचनेके लिए एक ही उपायका निश्चय हो सके, दूसरेका नहीं (कौ०)।

नियोगी(गिन्)–वि० (सं०) जो नियुक्त किया गया हो; जिसे कोई पद या अधिकार दिया गया हो; नियोग करनेवाला। पु० कर्मसचिव; बंगालियोंकी एक उपाधि।

नियोग्य–वि० (सं०) नियोग करने योग्य। पु० मालिक, प्रभु।

नियोजक–पु० (सं०) नियोजित करनेवाला, प्रवृत्त करनेवाला; तैनात करनेवाला; दे० 'नियोक्ता'।

नियोजन–पु० (सं०) नियुक्त करनेकी क्रिया, किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरण; तैनात या मुकर्रर करना। (एंप्लॉयमेंट) वेतन, मजदूरी देकर किसीको किसी कामपर नियुक्त करने या करानेका कार्य, सेवा-योजन। **–केंद्र**–पु० (एंप्लॉयमेंट एक्सचेंज) बेकार व्यक्तियोंके नाम, पता आदिका ब्योरा पंजीबद्ध कर उन्हें उपयुक्त नौकरी, काम-धंधा आदि प्राप्त करानेमें सहायता करनेवाला कार्यालय, कामदिलाऊ दफ्तर, रोजगार-दफ्तर।

नियोजनालय–पु० (एंप्लॉयमेंट ब्यूरो) लोगोंको काम या नौकरी दिलानेमें सहायता करनेवाला दफ्तर, सेवा-योजनालय, कामदिलाऊ दफ्तर, रोजगार कार्यालय।

नियोजित–वि० (सं०) नियुक्त किया हुआ; प्रवृत्त किया हुआ, व्यापृत; तैनात; (एंप्लॉयड) वेतन, मजदूरी आदिपर किसी काममें नियुक्त। पु० (एंप्लॉई) वह व्यक्ति जो वेतन या मजदूरीपर कारखाने आदिमें कामपर नियुक्त हो।

नियोज्य–वि० (सं०) नियोजित करने योग्य; जो नियुक्त किया जाय। पु० नौकर, सेवक; कर्मचारी।

नियोद्धा(द्धृ)–पु० (सं०) मल्ल, पहलवान; मुर्गा।

नियोधक–पु० (सं०) मल्ल, पहलवान।

निरंक धनादेश–पु० (सं०) (ब्लैंक चैक) वह धनादेश जिसपर रकमका अंक न दिया गया हो, उसका स्थान इस उद्देश्यसे छोड़ दिया गया हो कि पानेवाला आवश्यकताके अनुसार रकम स्वयं भर ले; कोरा चेक।

निरंकार*–वि०, पु० दे० 'निराकार'।

निरंकुश–वि० (सं०) जिसपर किसी तरहका दबाव न हो, मनमानी करनेवाला, स्वेच्छाचारी। **–शासन**–पु० वह शासन जिसमें समस्त अधिकार ऐसे व्यक्तिके हाथमें हो जिसपर जनताके प्रतिनिधियोंका कोई नियंत्रण न हो; स्वेच्छाचारी शासन।

निरंग–वि० बदरंग, फीका; (सं०) बिना अंगका, अंगहीन; साधनहीन; निरा, विशुद्ध, खालिस। **–रूपक**–पु० रूपक अलंकारका एक भेद जहाँ उपमेयमें उपमानका इस तरह आरोप हो कि उपमानके और सब अंगोंकी चर्चा न आवे।

निरंजन–वि० (सं०) जिसमें आँजन न हो, बिना आँजनका, अंजनरहित; निर्दोष; अज्ञानसे रहित; सादा। पु० परमात्मा; शिव।

निरंजना–स्त्री० (सं०) पूर्णिमा; दुर्गा।

निरंजनी(निन्)–वि० (सं०) निरंजनी संप्रदायका (साधु)। पु० निर्गुण ब्रह्मका उपासक, साधुओंका एक संप्रदाय।

निरंतर–वि० (सं०) जिसके बीचमें कोई व्यवधान न हो, अव्यवहित, बिना अंतर या फासलेका; देश-कालकी दृष्टिसे अविच्छिन्न, जिसका क्रम टूटा न हो, अखंड, लगातार होनेवाला; सदा बना रहनेवाला, अक्षय; भेदरहित, अभिन्न; सदा आँखोंके सामने रहनेवाला, कभी अंतर्हित न होनेवाला। अ० लगातार, बराबर, सर्वदा।

निरंतराभ्यास–पु० (सं०) सदा की जानेवाली (पाठकी) आवृत्ति, बराबर किया जानेवाला अभ्यास; स्वाध्याय।

निरंतराल–वि० (सं०) जिसमें अवकाश न हो, घना; तंग।

निरंध–वि० (सं०) भारी अंधा; निपट मूर्ख, महामूर्ख; बहुत अँधेरा।

निरंबर–वि० (सं०) नंगा, दिगंबर।

निरंबु–वि० (सं०) दे० 'निर्जल'।

निरंभ–वि० (सं०) निर्जल; जो पानीतक न पिये।

निरंश–वि० (सं०) जिसे अपना अंश प्राप्त न हुआ हो, जो अपने भागसे वंचित रह गया हो।

निरकार*–वि०, पु० दे० 'निराकार'।

निरकेवल†–वि० बिना मिलावटका; खालिस; स्वच्छ, शुद्ध।

निरक्ष–वि० (सं०) बिना पासेका; जो पृथ्वीके मध्य भागमें हो। **–देश**–पु० विषुवत् रेखापरके देश। **–रेखा**–स्त्री० क्रांतिवृत्त,

नाडीमंडल ।

निरक्षन*–पु० दे० 'निरीक्षण' ।

निरक्षर–वि० (सं०) अपढ़; गँवार, मूर्ख ।

निरखना*–स० क्रि० देखना; निरीक्षण करना ।

निरग*–पु० दे० 'नृग' ।

निरगुन*–वि० दे० 'निर्गुण' । पु० एक पंथ ।

निरगुनिया–वि०, पु० 'निरगुन' पंथको माननेवाला ।

निरगुनी*–वि० दे० 'निर्गुण' ।

निरग्नि–वि० (सं०) जिसने अग्निहोत्र त्याग दिया हो; जो अग्निहोत्र न करता हो ।

निरघ–वि० (सं०) निर्दोष, पापरहित, निष्कलुष ।

निरचू–वि० सावकाश; निश्चित; खाली ।

निरच्छ*–वि० नेत्रहीन, अंधा ।

निरज*–वि० रजोहीन, निर्मल ।

निरजर*–पु० देवता । वि० जो कभी जीर्ण न हो, जरारहित ।

निरजल–वि० दे० 'निर्जल' ।

निरजी†–स्त्री० संगमर्मरपर काम बनानेकी संगतराशोंकी एक प्रकारकी महीन टाँकी ।

निरजास*–पु० दे० 'निरजोस'–'लह्यौ परम रसको निरजास । श्री व्रज वृंदा विपिन बिलास'–घन० ।

निरजोस–पु० निष्कर्ष, सारांश; निर्णय ।

निरजोसी–वि०, पु० निष्कर्ष निकालनेवाला; निर्णय करनेवाला ।

निरझर*–पु० दे० 'निर्झर' ।

निरझरनी*–स्त्री० दे० 'निर्झरिणी' ।

निरझरी*–स्त्री० दे० 'निर्झरी' ।

निरत–वि० (सं०) लगा हुआ, तत्पर, लीन; प्रसन्न; विश्रांत । * पु० नृत्य । * अ० निरंतर, लगातार ।

निरतना*–अ० क्रि० नृत्य करना, नाचना ।

निरति–स्त्री० (सं०) विशेष रति या अनुराग; आसक्ति ।

निरतिशय–वि० (सं०) जिससे बड़ा या बढ़कर दूसरा न हो, अद्वितीय । पु० परमेश्वर ।

निरत्यय–वि० (सं०) बाधारहित, सुरक्षित, निरापद; निर्दोष, जिसमें कोई त्रुटि न हो; पूर्णतः सफल । पु० बाधाका अभाव ।

निरदई, निरदय, निरदयी*–वि० दे० 'निर्दय' ।

निरदोषी*–वि० दे० 'निर्दोष' ।

निरधन*–वि० दे० 'निर्धन' ।

निरधातु–वि० दे० 'निर्धातु' ।

निरधार*–पु० निश्चय करने या ठहरानेकी क्रिया, निर्धारण । वि० आधाररहित । अ० निश्चयपूर्वक–'ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार'–छत्रप्रकाश ।

निरधारना–स० क्रि० निश्चय करना, तय करना; सोचना, समझना ।

निरधिष्ठान–वि० (सं०) आश्रयहीन; बिना आधारका ।

निरध्व–वि० (सं०) जो रास्ता भूल गया हो ।

निरनउ, निरनय*–पु० दे० 'निर्णय' ।

निरना–वि० दे० 'निरन्ना' ।

निरनुक्रोश–वि० (सं०) निर्दय, निष्ठुर । पु० निर्दयता ।

निरनुग–वि० (सं०) जिसका कोई अनुयायी न हो ।

निरनुनासिक–वि० (सं०) अनुनासिकसे भिन्न, जिसके उच्चारणमें नाकका योग न हो (व्या०) ।

निरनुमोदन–पु० (डिसऐप्रूवल) किसीके किये हुए प्रस्ताव, कार्य या नीति आदिका समर्थन न करने, उसके संबंधमें अपनी सहमति या स्वीकृति न देनेका कार्य या भाव; अननुमोदन; (–करना) ।

निरनुरोध–वि० (सं०) सद्भावशून्य, अमैत्रीपूर्ण ।

निरनै*–पु० दे० 'निर्णय' ।

निरन्न–वि० (सं०) बिना अन्नका; जिसमें अन्नका सेवन न हो; जिसने अन्न न खाया हो, निराहार ।

निरन्ना–वि० जिसने अन्न न खाया हो, निराहार ।

निरन्वय–वि० (सं०) निःसंतान; असंबद्ध; (वह चोरी) जिसमें स्वामीकी अनुपस्थितिमें माल चुराया गया हो; असंगत; दृष्टिसे परे ।

निरपत्रप–वि० (सं०) निर्लज्ज, धृष्ट ।

निरपना*–वि० जो अपना न हो, परकीय ।

निरपराध–वि० (सं०) जिसने अपराध न किया हो, बेकसूर । अ० बिना अपराध किये, बिना किसी कसूरके ।

निरपराधी*–वि० दे० 'निरपराध' ।

निरपवर्त, निरपवर्तन–वि० (सं०) जिसका अपवर्तन न हो सके ।

निरपवाद–वि० (सं०) निर्दोष, अपकीर्तिसे रहित; कभी अन्यथा न होनेवाला, जो ऐसा न हो कि कहीं लगे और कहीं न लगे, सर्वत्र एक-सा लगनेवाला–जैसे निरपवाद नियम ।

निरपाय–वि० (सं०) जो सदा बना रहे, जिसका कभी नाश न हो, चिरस्थायी; दोषरहित, हानिरहित; अच्छा ।

निरपेक्ष–वि० (सं०) किसी औरकी अपेक्षा न रखनेवाला; जिसे अपने अर्थका बोध करानेके लिए किसी दूसरे पद, वाक्य आदिकी आवश्यकता न हो, जो स्वतः अपने अर्थका सम्यक् बोध करा ले; जो अपने ही ऊपर अवलंबित हो, केवल अपना भरोसा करनेवाला; आशा, तृष्णासे मुक्त, विरक्त; जो किसी बातकी परवा न करे; उदासीन, तटस्थ ।

निरपेक्षा–स्त्री० (सं०) उपेक्षा; उदासीनता ।

निरपेक्षित–वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा न की गयी हो ।

निरपेक्षी (क्षिन्)–वि० (सं०) उपेक्षा करनेवाला; उदासीन ।

निरफल*–वि० दे० 'निष्फल' ।

निरबंध*–वि० बंधनरहित । पु० परमात्मा–'कर सेवा निरबंधकी, पलमें लेत छुड़ाय'–साखी ।

निरबंसी–वि० जिसे कोई संतान न हो, लावल्द ।

निरबर्त्ती*–वि०, पु० विरागी, त्यागी ।

निरबल*–वि० दे० 'निर्बल' ।

निरबहना–अ० क्रि० निर्वाह होना, निबहना; समाप्त होना (निर्वहण), बीत जाना 'कहतेउँ तोहि समय निरबहा'–रामा० ।

निरबान*–पु० दे० 'निर्वाण' ।

निरबाहना–स० क्रि० दे० 'निबाहना' ।

निरबिसी*–स्त्री० दे० 'निर्विषी' ।

निरबेरा–पु० दे० 'निबेड़ा' ।

निरभय*–वि० दे० 'निर्भय' ।

निरभर*–वि० दे० 'निर्भर' ।

निरभिमान–वि० (सं०) जिसमें अहंभाव न हो, गर्वरहित ।

निरभिलाष–वि० (सं०) जिसे किसी वस्तुकी चाह न हो, निरीह ।

निरभ्र–वि० (सं०) जिसमें बादल न हो, मेघरहित ।

निरमना*–रा० क्रि० निर्माण करना, बनाना, रचना करना–'...रामायन जेहि निरमयेउ'–(रामा०)

निरमर, निरमल–वि० दे० 'निर्मल' ।

निरमली–स्त्री० दे० 'निर्मली' ।

निरमान*–पु० दे० 'निर्वाण' ।

निरमाना*–स० क्रि० निर्माण करना, बनाना ।

निरमायल*–पु० दे० 'निर्माल्य' ।

निरमित्र–वि० (सं०) जिसका कोई शत्रु न हो । पु० नकुलका पुत्र (म० भा०) ।

निरमूल*–वि० दे० 'निर्मूल' ।

निरमूलना*–स० क्रि० जड़से उखाड़ना, उन्मूलन करना; समूल नष्ट करना ।

निरमोल–वि० दे० 'अनमोल' ।

निरमोलिक, निरमोलिका*–वि० अनमोल, बहुमूल्य ।

निरमोही*–वि० दे० 'निर्मोह' ।

निरय–पु० (सं०) नरक ।

निरयण–पु० (सं०) ज्योतिषमें वह काल-गणना जो अयन अर्थात् राशिचक्रकी गतिपर आधारित नहीं होती (सायनका प्रतिलोम) ।

निरर्गल–वि० (सं०) अर्गलारहित; जिसपर कोई रोक न हो, प्रतिबंधरहित; जिसकी गति, प्रवाह अवरुद्ध न हो, स्वच्छंद, अबाध; निर्विघ्न ।

निरर्थ–वि० (सं०) दे० 'निरर्थक' ।

निरर्थक–वि० (सं०) जिसका कुछ अर्थ न हो, बेमतलब; जिससे कोई

प्रयोजन न सिद्ध हो, निष्प्रयोजन, निष्फल, व्यर्थ, बेकाम। पु० एक काव्यदोष जहाँ छंदकी पूर्तिके लिए अनावश्यक शब्द रख दिया गया हो (सा०); एक निग्रहस्थान (न्या०)।

निरर्बुद–पु० (सं०) एक नरक।

निरलस–वि० (सं०) आलस्यहीन।

निरवकाश–वि० (सं०) जिसे या जिसमें अवकाश न हो, अवकाश-रहित, जिसे फ़ुरसत न हो।

निरवग्रह–वि० (सं०) दे० 'निरर्गल'।

निरवच्छिन्न–वि० (सं०) जिसका सिलसिला न टटे, निरंतर।

निरवद्य–वि० (सं०) दोषरहित, विशुद्ध; उत्कृष्ट; अज्ञानसे रहित। पु० राग आदिसे रहित परमात्मा; तीन योगशक्तियोंमेंसे एक (शेष दो सावद्य और सूक्ष्म हैं)।

निरवधि–वि० (सं०) जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, निःसीम।

निरवयव–वि० (सं०) अंगरहित, पूर्ण; निराकार; जिसका विभाग न हो सके।

निरवलंब–वि० (सं०) जिसे कोई सहारा न हो, असहाय, आश्रयहीन।

निरवशेष–वि० (सं०) संपूर्ण, समग्र।

निरवसाद–वि० (सं०) प्रसन्न, हृष्ट।

निरवसित–वि० (सं०) जिसके भोजन किये हुए पात्र फिर शुद्ध न हो सकें (चांडाल आदि)।

निरवहानिका, निरवहालिका–स्त्री० (सं०) वाड़ा; चहारदीवारी, प्राचीर।

निरवाना–स० क्रि० निरानेका काम कराना।

निरवार–पु० टालने या दूर करनेकी क्रिया, निस्तार, त्राण, वचाव; निवटारा; सुलझाव।

निरवारना*–स० क्रि० निवारण करना, हटाना, प्रतिवंधभूत वस्तुको दूर करना; मुक्त करना, छुड़ाना; खोलना, उलझी हुई वस्तुको सुलझाना; छितराना; अलग करना, तजना, त्यागना; तय करना, फैसला करना।

निरवाह*–पु० दे० 'निर्वाह'।

निरवाहना–स० क्रि० दे० 'निवाहना'।

निरवेद*–पु० दे० 'निर्वेद'।

निरव्यय–वि० (सं०) शाश्वत, अनश्वर।

निरशन–वि० (सं०) जिसने कुछ खाया-पिया न हो। पु० भोजनका अभाव, उपवास।

निरसंक*–वि० दे० 'निःशंक'।

निरस–वि० (सं०) जिसमें रस न हो, रससे रिक्त; विना स्वादका, स्वादहीन, फीका, बेमजा; सारहीन; जो आनंद न दे; रूखा-सूखा, सरसका उलटा; रागहीन।

निरसन–पु० (सं०) फेंकना, दूर हटाना, अपसारण; निवारण; खंडन, प्रत्याख्यान; –पु० (रिपील) किसी विधि आदिको अधिकारपूर्वक या वैध रीतिसे रद्द कर देना। वमन करना; थूकना; दूर करना, निराकरण; नाश करना, नाशन।

निरसित–वि० (रिपील्ड) विधि, अधिनियम आदि जिसका निरसन कर दिया गया हो।

निरस्त–वि० (सं०) दूर हटाया हुआ, जिसका निवारण किया गया हो, निवारित; वमन किया हुआ; थूका हुआ; फेंका हुआ; अलग किया हुआ, त्यक्त; खंडित; जिसका नाश किया गया हो; जिसका उच्चारण शीघ्रताके साथ किया गया हो। पु० फेंका या छोड़ा हुआ वाण; अस्वीकार; परित्याग; त्वरायुक्त उच्चारण; फेंकना। **–भेद**–वि० जिसका अंतर दूर कर दिया गया हो, अनुरूप। **–राग**–वि० विरक्त।

निरस्त्र–वि० (सं०) जिसके पास हथियार न हो, विना हथियारका, निहत्था।

निरस्त्रीकरण–पु० (डिस-आर्मामेंट) अस्त्रविहीन करना; युद्ध या संघर्षकी आशंका दूर करनेके उद्देश्यसे देशोंकी सेना या शस्त्रास्त्रोंकी संख्या घटाना।

निरस्त्रीकृत–वि० (डिस-आर्म्ड) जिसके हथियार छीन लिये गये हों, जो अस्त्रहीन कर दिया गया हो।

निरस्थि–वि० (सं०) जिसमेंसे हड्डी निकाल दी गयी हो; विना हड्डीका।

निरहंकार, निरहंकृत, निरहंकृति–वि० (सं०) जिसमें अभिमान न हो; जिसमें शरीर, इंद्रिय आदिके प्रति 'यह मेरा है' यह भावना न हो।

निरहम्–वि० (सं०) अहंकाररहित।

निरहेतु*–वि० दे० 'निर्हेतु'।

निरहेल*–वि० जिसकी अवहेलना हो, जिसका आदर न हो, तुच्छ, निकृष्ट।

निरा–वि० बिना मिलावटका, विशुद्ध, जिसमें किसी दूसरी वस्तुका संसर्ग या पुट न हो; एकमात्र; एकदम, कोरा, निपट। (स्त्री० निरी।)

निराई–स्त्री० निरानेकी क्रिया; निरानेकी उजरत।

निराक–पु० (सं०) पाचन-क्रिया; पसीना; वुरे कर्मका विपाक।

निराकरण–पु० (सं०) दूर हटाना, निवारण; दूर करना, परिहार; खंडन, निरसन; पु० (एब्रोगेशन) राजा, प्रधान शासक या अधिकारी द्वारा किसी विधि, अध्यादेश, संधि आदिका रद्द कर दिया जाना।

निराकांक्ष–वि० (सं०) जिसे किसीकी अपेक्षा, इच्छा न हो, इच्छा-रहित, निरपेक्ष।

निराकार–वि० (सं०) जिसका कोई आकार या रूप न हो, साकारका उलटा; भद्दा, कुरूप; विनम्र। पु० परमात्मा; शिव; विष्णु।

निराकाश–वि० (सं०) जिसमें थोड़ी-सी भी जगह खाली न हो, एकदम भरा हुआ।

निराकुल–वि० (सं०) व्याप्त, भरा हुआ; जो घबराया न हो, धीर; शांत; * वहुत घवराया हुआ–'व्याकुल वाहु, निराकुल बुद्धि, थक्यो बल विक्रम लंकपतीको'–रामचंद्रिका।

निराकृत–वि० (सं०) जिसका निराकरण किया गया हो।

निराकृति–स्त्री० (सं०) निराकरण। वि० बिना आकारका, निराकार; कुरूप; जो पंचमहायज्ञ न करे (स्मृ०)।

निराकृती(तिन्)–वि० (सं०) जो निराकरण करे।

निराक्रंद–वि० (सं०) जो चिल्लाये नहीं, जो शिकायत न करे; जिसकी पुकार न सुनी जाय; जो पुकार न सुने। पु० वह स्थान जहाँ कोई शब्द न सुना जा सके।

निराखर*–वि० दे० 'निरक्षर'।

निराग–वि० (सं०) रागहीन, विरक्त।

निराग(स्)–वि० (सं०) निष्पाप; निरपराध।

निराचार–वि० (सं०) आचारहीन।

निराजी–स्त्री० जुलाहोंके करघेकी एक लकड़ी।

निराट*–वि० निरा, कोरा; एकमात्र; विलकुल–'...कोउक होत निराट दिगंवर'–सुंद०।

निराडंबर–वि० (सं०) जिसमें ढोंग न हो; विना नगाड़ेका।

निरातंक–वि० (सं०) भयरहित, निडर; नीरोग, स्वस्थ; अनियंत्रित। पु० शिव।

निरातप–वि० (सं०) जिसमें धूप या गरमी न हो; छायादार।

निरातपा–स्त्री० (सं०) रात।

निरादर–वि० (सं०) अपमानजनक; आदररहित। पु० आदरका अभाव; अपमान।

निरादान–पु० (सं०) वुद्धदेव।

निरादिष्ट–वि० (सं०) जो पूरा-पूरा अदा कर दिया गया हो (कर्ज)।

निरादेश–पु० (सं०) ऋण-परिशोध।

निराधार–वि० (सं०) बिना आश्रयका, जो किसीपर आश्रित न हो; जिसे कोई सहारा न प्राप्त हो, असहाय; जो किसी प्रमाणपर आश्रित न हो, वेबुनियाद, अयथार्थ, अमूल; † बिना अन्नजलका; निराहार।

निराधि–वि० (सं०) मनोव्यथासे रहित; नीरोग।

निरानंद–वि० (सं०) आनंदरहित। पु० आनंदका अभाव; दुःख।

निराना–स० क्रि० पौधोंकी बढ़तीको रोकनेवाली अनावश्यक घास, तृण आदिको खुरपीसे खोदकर दूर करना। * अ० क्रि० दे०

'नियराना'।

निरापद–वि० (सं०) आपत्तिसे रहित, निर्विघ्न, सुरक्षित।

निरापन, निरापुन*–वि० जो अपना न हो, परकीय।

निराबाध–वि० (सं०) जिसके साथ छेड़छाड़ न हो; बाधारहित।

निरामय–वि० (सं०) जिसे कोई रोग न हो, नीरोग; निर्दोष; निर्मल। पु० जंगली बकरा; सूअर; रोगराहित्य।

निरामालु–पु० (सं०) कैथका पेड़।

निरामिष–वि० (सं०) मांसरहित; वासनारहित; पारिश्रमिक आदि न पानेवाला; * मांस न खानेवाला। **–भोजनालय**–पु० (वेजिटेरियन रिफ्रेशमेंट रूम, वेजिटेरियन होटल) दाल, भात, रोटी आदि निरामिष भोजन प्रस्तुत करनेवाला भोजनालय। **–भोजी(जिन्)**–वि० मांस न खानेवाला; शाकाहारी।

निरामिषाशी(शिन्)–वि० (सं०) जो मांस न खाय, शाकाहारी।

निराय–वि० (सं०) जिससे या जिसे कुछ आय न हो।

निरायत–वि० (सं०) जो फैलाया या बढ़ाया न हो, सिकोड़ा हुआ।

निरायास–वि० (सं०) जिसमें परिश्रम न लगे, सुकर, आसान। अ० विना परिश्रम किये, अनायास।

निरायुध–वि० (सं०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था।

निरार, निरारा*–वि० अलग, जुदा।

निरालंब–वि० (सं०) दे० 'निरवलंब'। पु० ब्रह्म।

निरालंब नारीसदन–पु० (सं०) (डेस्टिट्यूट-वीमेंस होम) असहाय नारियोंकी सहायताके लिए स्थापित संस्था।

निरालंबा–स्त्री० (सं०) छोटी जटामासी।

निरालक–पु० (सं०) एक समुद्री मछली।

निरालस–वि० दे० 'निरालस्य'।

निरालस्य–वि० (सं०) जिसमें आलस्य न हो, आलस्य-रहित। पु० आलस्यका न होना।

निराला–पु० निर्जन स्थान, एकांत स्थान। वि० जहाँ कोई वस्ती या मनुष्य न हो, विजन, एकांत; जो अपने ढंगका अकेला हो, विलक्षण, अजीव; जिसके समान कोई दूसरा न हो, वेजोड़, अनुपम, अद्वितीय।

निरालोक–वि० (सं०) प्रकाशरहित, अँधेरा; अदृश्य; दृष्टिहीन। पु० शिव।

निरावरण–वि० (सं०) आवरण-रहित, खुला हुआ।

निरावना*–स० क्रि० दे० 'निराना'।

निरावृत–वि० (सं०) जो ढका न हो, खुला हुआ।

निराश–वि० (सं०) जिसे आशा न हो, आशारहित, हताश।

निराशक, निराशी(शिन्)–वि० (सं०) दे० 'निराश'।

निराशा–स्त्री० (सं०) आशाका अभाव, नाउम्मेदी। **–वाद**–पु० (पैसिमिज़्म) संसारको दुःखमय मानने तथा प्रत्येक वस्तुको निराशामय दृष्टिकोणसे देखनेका सिद्धांत। **–वादी(दिन्)**–वि० (पैसिमिस्ट) जीवनके दुःखमय पहलूपर जोर देनेवाला, संसारको निराशाकी दृष्टिसे देखनेवाला।

निराशिष–वि० (सं०) आशीर्वादसे रहित; उदासीन।

निराश्रय–वि० (सं०) दे० 'निरवलंब'।

निरास–पु० (सं०) दूर करना; प्रत्याख्यान, खंडन; वमन; विरोध। * वि० दे० 'निराश'।

निरासन–पु० (सं०) दे० 'निरसन'। वि० आसनरहित।

निरासा*–स्त्री० दे० 'निराशा'।

निरासी*–वि० हताश, नाउम्मेद, विरक्त; उदास, कांतिहीन; जहाँ या जिसमें उदासी छायी हो।

निरास्वाद–वि० (सं०) बिना स्वादका, अस्वादिष्ट, बेमजा।

निराहार–वि० (सं०) जिसने कुछ खाया-पिया न हो, उपोषित, उपासा; जिसे करनेमें कुछ खाया न जाय (जैसे–निराहार व्रत)। पु० उपवास।

निरिंग–वि० (सं०) अचल, स्थिर।

निरिंगिणी, निरिंगिनी–स्त्री० (सं०) परदा, झिलमिली।

निरिंद्रिय–वि० (सं०) जो किसी इंद्रियसे रहित हो, जिसकी कोई इंद्रिय बेकाम हो; कमजोर।

निरिच्छ–वि० (सं०) जिसे कोई चाह न हो, निरीह।

निरिच्छन*–पु० दे० 'निरीक्षण'।

निरिच्छना*–स० क्रि० निरीक्षण करना, ध्यानपूर्वक देखना।

निरिनि*–अ० निकट–'निरिनि रहत व्रजमंडन जिनके। हरि-हित-सहित मनोरथ इनके'–घन०।

निरीक्षक–पु० (सं०) निरीक्षण करनेवाला, ध्यानसे देखनेवाला; किसी कामकी देखभाल करनेवाला (इंस्पेक्टर); परीक्षा-भवनमें परीक्षार्थियोंकी निगरानी करनेवाला, परीक्षा-निरीक्षक (इनविजिलेटर)। (स्त्री० 'निरीक्षिका'।)

निरीक्षण–पु० (सं०) गौरसे देखना; देखरेख करना; मुआइना करना, जाँच करना; चितवन; आशा।

निरीक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'निरीक्षण'।

निरीक्षित–वि० (सं०) गौरसे देखा हुआ; देखाभाला हुआ; जिसकी जाँच की गयी हो, मुआइना किया हुआ।

निरीक्ष्य–वि० (सं०) निरीक्षण करने योग्य, देखरेख करने योग्य।

निरीक्ष्यमाण–वि० (सं०) जिसका निरीक्षण किया जा रहा हो, जिसकी निगरानी की जा रही हो।

निरीति–वि० (सं०) अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि ईतियोंसे रहित।

निरीश–वि० (सं०) दे० 'निरीश्वर'। पु० दे० 'निरीष'।

निरीश्वर–वि० (सं०) जिसमें ईश्वरके अस्तित्वका खंडन हो, जिसमें ईश्वरके अभावका प्रतिपादन हो; ईश्वरको न माननेवाला, नास्तिक। **–वाद**–पु० ईश्वरके अस्तित्वका खंडन करनेवाला सिद्धांत। **–वादी(दिन्)**–पु० निरीश्वरवादको माननेवाला।

निरीष–पु० (सं०) हलका फाल।

निरीह–वि० (सं०) जिसे किसी वस्तुकी इच्छा न हो, इच्छा, तृष्णासे रहित, उदासीन, विरक्त; जो क्रियाशील न हो, चेष्टा-रहित; नम्र और शांत; उद्यमहीन।

निरीहता–स्त्री०, **निरीहत्व**–पु० (सं०) निरीह होनेका भाव, चेष्टाहीनता; उदासीनता।

निरीहा–स्त्री० (सं०) दे० 'निरीहता'।

निरुआर†–पु० दे० 'निरवार'।

निरुआरना†–स० क्रि० दे० 'निरवारना'।

निरुक्त–वि० (सं०) जिसका निर्वचन किया गया हो; स्पष्ट रूपसे कहा या समझाया हुआ; नियोग करानेवाला; नियोगमें प्रवृत्त किया हुआ। पु० वेदके छ अंगोंमेंसे एक; यास्क मुनि-रचित एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें वैदिक शब्दोंकी विशद व्याख्या की गयी है। **–कार**–पु० निरुक्तके रचयिता यास्क मुनि। **–ज**–पु० पुत्रके बारह भेदोंमेंसे एक।

निरुक्ति–स्त्री० (सं०) ऐसी व्याख्या जिसमें प्रकृति-प्रत्यय आदि अवयवोंका अर्थ समझाते हुए शब्दोंका अर्थ स्पष्ट किया गया हो; एक काव्यालंकार जहाँ किसीके नामका प्रसिद्ध अर्थ छोड़कर युक्तिपूर्वक कोई मनमाना अर्थ किया जाय।

निरुच्छ्वास–वि० (सं०) जो श्वास न लेता हो, जिसकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया बंद हो; जहाँ साँस लेनेतककी जगह न हो, तंग सँकरा।

निरुज*–वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर–वि० (सं०) जो कोई उत्तर न दे सके, जिसके पास कोई उत्तर न हो; जिसकी जवान बंद हो गयी हो, चुप; जिससे बड़ा कोई और न हो।

निरुत्सव–वि० (सं०) बिना उत्सवका।

निरुत्साह–वि० (सं०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साहरहित। पु० उत्साहका अभाव।

निरुत्सुक–वि० (सं०) जो उत्सुक न हो; उत्सुकतारहित।

निरुदक–वि० (सं०) जिसमें या जहाँ जल न हो, जलरहित।

निरुद्देश्य–वि० (सं०) उद्देश्यरहित। अ० बिना किसी उद्देश्यके।

निरुद्ध–वि० (सं०) जिसका निरोध किया गया हो, विशेष रूपसे रोका हुआ; विशेष रूपसे रुका हुआ, प्रतिबद्ध, रुँधा हुआ; चित्तकी पाँच भूमियोंमेंसे एक (यो०)। **–कंठ**–वि० जिसका गला रुँध गया हो। **–गुद**–पु० एक रोग जिसमें मलद्वार बंद-सा हो जाता है। **–प्रकश,–प्रकस**–पु० मूत्रद्वार बंद-सा हो जाने और फलतः मूत्रके रुक-रुककर निकलनेका रोग।

निरुद्यम–वि० (सं०) जो उद्यम न करे, चुपचाप बैठा रहनेवाला, आलसी, बेकार, निकम्मा ।

निरुद्योग–वि० (सं०) दे० 'निरुद्यम' ।

निरुद्वेग–वि० (सं०) उद्वेगरहित, शांत ।

निरुपजीव्य–वि० (सं०) (भूमि) जिससे गुजर न हो सके ।

निरुपद्रव–वि० (सं०) जिसमें या जहाँ कोई उत्पात न हो, शांतिमय, विघ्नरहित, सुरक्षित; जो किसी प्रकारकी बाधा या कष्ट न पहुँचाये; शुभ, मंगलकारी ।

निरुपधि–वि० (सं०) विशुद्ध, पवित्र; सच्चा, निश्छल, निष्कपट ।

निरुपपत्ति–वि० (सं०) उपपत्तिरहित ।

निरुपप्लव–वि० (सं०) दे० 'निरुपद्रव' ।

निरुपम–वि० (सं०) बेजोड़, अतुलनीय ।

निरुपमा–स्त्री० (सं०) गायत्री ।

निरुपयोग–वि० (सं०) जिसका कोई उपयोग न हो, जो किसी काम न आये ।

निरुपयोगी–वि० बेकार, निरर्थक ।

निरुपसर्ग–वि० (सं०) उपद्रवसे रहित ।

निरुपस्कृत–वि० (सं०) विशुद्ध, पवित्र, शुचि ।

निरुपहत–वि० (सं०) जिसे क्षति न पहुँची हो, अनाहत; शुभ, मंगलकारी ।

निरुपाख्य–वि० (सं०) जिसकी सत्ता न हो; असंभव (जैसे–वंध्यापुत्र, गगनारविंद); बिना स्वरूपका, नीरूप; जो मन और वचनके परे हो (जैसे–ब्रह्म) ।

निरुपाधि–वि० दे० 'निरुपधि'; जो उपद्रव न करता हो, शांत; जिसमें बाधा या विघ्न न हो । अ० बिना बाधाके । '··प्रभु पादिका बैठारीं निरुपाधि'–रामा०

निरुपाय–वि० (सं०) जिसके पास कोई उपाय न हो, जो कोई उपाय करनेमें असमर्थ हो; जिसका कोई उपाय न हो, जिसका कोई प्रतीकार न किया जा सके । अ० लाचार होकर ।

निरुपेक्ष–वि० (सं०) उपेक्षासे रहित, जो उपेक्षा न करे; छल-हीन ।

निरुवरना*–अ० क्रि० कठिनाई दूर होना, सुलझना ।

निरुवार†–पु० दे० 'निरवार' ।

निरुवारना*–स० क्रि० दे० 'निरवारना' ।

निरूढ–वि० (सं०) अत्यंत रूढ, अधिक प्रसिद्ध; जिसका अधिक व्यवहार होता हो; अविवाहित; साफ किया हुआ । पु० एक पशुयाग । –**लक्षणा**–स्त्री० वह लक्षणा जिसमें शब्दका प्रसिद्ध अर्थ रूढ हो गया हो ।

निरूढा–स्त्री० (सं०) निरूढ-लक्षणा ।

निरूढि–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि; दक्षता; निरूढ-लक्षणा ।

निरूप–वि० बिना रूपका, रूपरहित; बुरी शक्लका, कुरूप । पु० वायु; आकाश; देवता ।

निरूपक–वि०, पु० (सं०) निरूपण करनेवाला । (स्त्री० 'निरूपिका') ।

निरूपण–पु० (सं०) ढूँढना, जाँचना, अन्वेषण; किसी विषयको इस रूपमें रखना कि वह साफ-साफ समझमें आ जाय, मौखिक रूपसे या लेख द्वारा किसी विषयको ठीक-ठीक समझा देना; आलोक; रूप; दृष्टि ।

निरूपणा–स्त्री० (सं०) दे० 'निरूपण' ।

निरूपना*–स० क्रि० निरूपण करना, स्पष्ट शब्दोंमें समझा देना; प्रतिपादन करना, वर्णन करना ।

निरूपित–वि० (सं०) जिसका निरूपण किया गया हो ।

निरूपिति–स्त्री० (सं०) व्याख्या, परीक्षण ।

निरूप्य–वि० (सं०) निरूपण करने योग्य ।

निरूह–पु० (सं०) वस्तिका एक भेद; तर्क; निश्चय; पूर्ण वाक्य ।

निरूहण–पु० (सं०) वस्तिका प्रयोग; तर्क करना; निश्चय करना ।

निरेखना*–स० क्रि० देखना, निरखना ।

निरेभ–वि० (सं०) शब्दहीन ।

निरै*–पु० निरय, नरक ।

निरैठी*–वि०, स्त्री० मस्त–'लाड़नि निरैठी मति बोलनि हरैं हरी'–घन० ।

निरोग, निरोगी†–वि० जिसे कोई रोग न हो, स्वस्थ ।

निरोद्धव्य–वि० (सं०) निरोध करने योग्य, घेरने या आवृत करने योग्य ।

निरोध–पु० (सं०) रोक, रुकावट, प्रतिबंध; वशमें लाना, निग्रह; छेंकना, घेरना; नाश; अरुचि; नैराश्य; चित्तकी वह अवस्था जिसमें सभी वृत्तियों और संस्कारोंका लय हो जाता है । पु० (डिटेंशन) किसी संदिग्ध या उपद्रवी व्यक्तिको अभिरक्षा आदिमें रोक रखना जिससे वह बाहर निकलकर किसी तरहका उपद्रव या अनिष्ट न कर सके । (कंडोम) गर्भ-स्थिति रोकनेके लिए संभोगके समय प्रयुक्त किया जानेवाला टोपी या थैली जैसा रबड़का बना एक आला । –**परिणाम**–पु० चित्तवृत्तिकी एक विशेष अवस्था (यो०) ।

निरोधक–वि० (सं०) निरोध करनेवाला, रोकनेवाला । (स्त्री० 'निरोधिका' ।)

निरोधन–पु० (सं०) दे० 'निरोध'; पारेका छठा संस्कार (आ० वे०) । –**शिविर**–पु० (कांसेंट्रेशन कैंप) विरोधियों या शंकास्पद समझे जानेवाले व्यक्तियोंको सैकड़ों, हजारोंकी संख्यामें एक ही स्थानपर नजरबंद रखनेका शिविर (हिटलरने नात्सी-विरोधियोंके लिए जर्मनीमें और भारतमें अंग्रेजी सरकारने १९४१ में देवलीमें ऐसा शिविर साम्यवादियोंके लिए खोला था), **नजरबंदी-शिविर** ।

निरोधा–स्त्री० (क्वारैंनटीन) किसी ऐसे स्थानमें जहाँ संक्रामक रोग फैला हो, आनेवाले व्यक्तियों (या जहाजों) आदिके कुछ समयतकके लिए बिलकुल पृथक् स्थान, घर आदिमें आबद्ध किये जानेका कार्य; संगरोध; वह स्थान जहाँ उन्हें इस प्रकार आबद्ध होकर रहना पड़े ।

निरोधी(धिन्)–वि० (सं०) निरोध करनेवाला, रोकनेवाला । (स्त्री० 'निरोधिनी' ।)

निर्–उप० (सं०) दे० 'निस्' ।

निर्ऋत–वि० (सं०) क्षीण; शीर्ण; निर्बल ।

निर्ऋति–स्त्री० (सं०) दे० 'निऋति' ।

निर्ख–पु० (फा०) दर, भाव । –**दारोगा**–पु० मुसलमानी शासन-कालमें बाजारमें चीजोंके भावकी देखरेख करते रहनेके लिए नियुक्त किया जानेवाला एक प्रकारका दारोगा । –**नामा**–पु० मुसलिम शासनकालकी एक प्रकारकी सूची जिसमें प्रत्येक विक्रेय वस्तुका भाव लिखा रहता था । –**बंदी**–स्त्री० किसी चीजकी दर ठहरानेका कार्य ।

निर्गंध–वि० (सं०) जिसमें गंध न हो, गंधरहित । –**पुष्पी**–स्त्री० सेमरका पेड़ ।

निर्गंधन–पु० (सं०) मारना, वध करना ।

निर्ग–पु० (सं०) देश; भूभाग; स्थान ।

निर्गत–वि० (सं०) जो बाहर आया हो, निकला हुआ, निःसृत, निष्क्रांत । पु० दे० 'निर्यात' ।

निर्गम–पु० (सं०) बाहर जाना, निकलना; निकास, निकलनेका मार्ग, द्वार । –**द्वार**–पु० (एक्सिट) बाहर जानेका रास्ता । –**निषेधाज्ञा**–स्त्री० (करफ्यूआर्डर) दंगा-फसाद या उपद्रवादिके समय आरक्षाधिकारियों द्वारा घरसे बाहर निकलनेकी मनाही करनेवाली आज्ञा । –**मूल्य**–पु० (इशू प्राइस) कोई सार्वजनिक ऋण लेते समय सरकार जिस मूल्यपर उसके हिस्से जारी करे वह मूल्य अथवा किसी बैंक, व्यापारिक संस्थाओं आदिके हिस्सोंका उनके जारी किये जानेके समयका मूल्य ।

निर्गमन–पु० (सं०) बाहर जाना, निकलना, निःसरण; बाहर जाने या निकलनेका रास्ता, दरवाजा; प्रतिहारी । –**मार्ग**–पु० बाहर निकलनेका मार्ग ।

निर्गमना*–अ० क्रि० निकलना, बाहर आना ।

निर्गमित पूँजी–स्त्री० (इशूड कैपिटल) वह पूँजी जो कारखाने आदिकी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए निधिमेंसे बाहर निकाली गयी हो ।

निर्गर्व–वि० (सं०) अभिमानरहित ।

निर्गवाक्ष–वि० (सं०) जिसमें खिड़की न हो ।

निर्गुंठी, निर्गुंडी,–स्त्री० (सं०) सिंदुवार।

निर्गुण–वि० (सं०) जो सत्त्व, रज, तम–इन तीनों गुणोंसे परे हो, त्रिगुणातीत; जो गुणवान् न हो, गुणरहित; जिसमें डोरी न हो (धनुष्)। पु० त्रिगुणातीत परमात्मा। **–भूमि**–स्त्री० वंजर भूमि।

निर्गुणिया, निर्गनिया-वि० निर्गुण ब्रह्मकी उपासना करनेवाला।

निर्गूढ–वि० (सं०) अत्यंत गूढ, बहुत गुप्त। पु० कोटर।

निर्ग्रंथ–वि० (सं०) मूर्ख; असहाय; विरक्त; वंधनमुक्त; निर्धन; वस्त्रहीन; निष्फल। पु० वौद्ध या दिगंवर जैन साधु, क्षपणक; जुआड़ी; एक ऋषि; बुद्धिहीन व्यक्ति; वध।

निर्ग्रंथक-वि० (सं०) चतुर, दक्ष; एकाकी; परित्यक्त; फलहीन। पु० क्षपणक; दिगंवर सन्न्यासी; जुआड़ी।

निर्ग्रंथन–पु० (सं०) मारण, वध।

निर्ग्रंथिक–वि० (सं०) विना गाँठका; कुशल, दक्ष। पु० क्षपणक।

निर्ग्रंथिका–स्त्री० (सं०) वौद्ध संन्यासिनी।

निर्ग्राह्य–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; अनुभव करने योग्य; साक्षात्कार करने योग्य।

निर्घंट–पु० (सं०) ग्रंथोंका सूचीपत्र; शब्दसंग्रह, निघंटु।

निर्घंट–पु० (सं०) वह वाजार जहाँ दुकानदारोंसे पण्यकर न लिया जाता हो; वड़ा वाजार या मेला।

निर्घात–पु० (सं०) ध्वंस, नाश; तूफान; हवाके झोंकोंके टकरानेसे उत्पन्न शब्द; वज्राघात; आघात, प्रहार; भूकंप।

निर्घातन–पु० (सं०) वाहर निकालना; अस्त्रचिकित्साकी एक क्रिया।

निर्घृण–वि० (सं०) घृणारहित; निर्दय, निष्ठुर; निर्लज्ज, वेहया।

निर्घृणा–स्त्री० (सं०) निष्ठुरता; धृष्टता।

निर्घोष–पु० (सं०) शब्द, निनाद। वि० शब्दरहित।

निर्छल*–वि० छल या कपटसे रहित।

निर्जन–वि० (सं०) जहाँ कोई न हो, एकांत, सुनसान। पु० मरुभूमि; उजड़ी हुई या गैर-आवाद जमीन।

निर्जनीकरण–पु० (डीपॉपुलेशन) किसी स्थानका आवादीसे रहित कर दिया जाना, किसी क्षेत्रमें वसे हुए लोगोंको युद्धादिकी आवश्यकताके कारण वहाँसे हटा देना।

निर्जय, निर्जिति–स्त्री० (सं०) पूर्ण विजय।

निर्जर–वि० (सं०) जो कभी वुड्ढा न हो, सदा युवा वना रहनेवाला। पु० देवता; अमृत। **--सर्षप**–पु० देवसर्षप नामका पौधा।

निर्जरा–स्त्री० (सं०) गुडुच; तालपर्णी।

निर्जल–वि० (सं०) जलरहित, जहाँ पानी न हो; जिसमें जलका प्रयोग न हो (ड्राई); जिसमें जलतक न ग्रहण किया जाय, जिसमें जल पीनेका निषेध हो (व्रत)। पु० मरुभूमि। (स्त्री० 'निर्जला'।) **–(ला)एकादशी**-स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला एकादशी जिस दिन व्रती जलतक ग्रहण नहीं करते।

निर्जलीकरण, निर्जलीभवन–पु० (डीहाइड्रेशन) रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वनस्पतियों आदिमेंसे जलका अंश निकाल लेना या उसे सुखा देना; शरीर, वनस्पति आदिमें जलकी कमी हो जाना।

निर्जात–वि० (सं०) आविर्भूत, प्रकट।

निर्जित–वि० (सं०) जो अच्छी तरह जीत लिया गया हो, जो पूर्ण रूपसे वशमें कर लिया गया हो।

निर्जितेंद्रियग्राम-पु० (सं०) यति।

निर्जिह्व-पु० (सं०) मेंढक। वि० जिह्वाहीन।

निर्जीव-वि० (सं०) जिसमें जान न हो, गतप्राण; शक्ति या उत्साहसे रहित, मुर्दादिल।

निर्झर–पु० (सं०) झरना, प्रपात; सूर्यका एक घोड़ा, भूसीकी आग; हाथी।

निर्झर लेखनी-स्त्री० (सं०) दे० 'फाउंटेनपेन'।

निर्झरिणी, निर्झरी–स्त्री० (सं०) झरनेसे निकलनेवाली नदी।

निर्झरी(रिन्)–पु० (सं०) पहाड़। वि० जिससे झरने झरते हों।

निर्णय–पु० (सं०) हटाना; किसी विषयपर अच्छी तरह विचार करके उसके दो पक्षोंमेंसे किसी एकको उचित ठहराना; किसी विषयके पूर्वपक्ष और उत्तरपक्षका विमर्श करके ठीक मत स्थिर करना; इस तरह स्थिर किया हुआ मत या निश्चय; विचारपतिका किसी विवादके विषयमें अपना मत स्थिर करना, किसी विचारपति द्वारा किसी विवादके विषयमें स्थिर किया गया मत, फैसला, निवटारा। **–पाद**–पु० व्यवहारके चार पादोंमेंसे एक; विचार-निष्पत्ति।

निर्णयन–पु० (सं०) निश्चय या निपटारा करना।

निर्णयोपमा–स्त्री० (सं०) अर्थालंकारका एक भेद जिसमें उपमेय तथा उपमानके गुणों तथा दोषोंका विवेचन किया जाय।

निर्णर–पु० (सं०) सूर्यका एक अश्व।

निर्णायक–वि०, पु० (सं०) निर्णय करनेवाला। **–मत**–पु० (कास्टिंग वोट) किसी सभा आदिके सभापतिका वह मत जो किसी प्रश्नके संवंधमें मतदानके समय पक्ष-विपक्षमें समान मत आनेपर वह देता है और जिससे ही उसके स्वीकृत-अस्वीकृत होनेका निर्णय होता है।

निर्णायन–पु० (सं०) निश्चय करनेकी क्रिया; हाथीकी आँखके वाहरी कोणके पासका हिस्सा जहाँसे मद बहता है।

निर्णिक्त–वि० (सं०) धुला हुआ, शोधित; जिसके लिए प्रायश्चित्त किया गया हो।

निर्णिक्ति–स्त्री० (सं०) धोना, शोधन; प्रायश्चित्त।

निर्णीत-वि० (सं०) जिसका निर्णय किया गया हो, फैसल।

निर्णेक, निर्णेजन–पु० (सं०) धोना, साफ करना; स्नान; प्रायश्चित्त।

निर्णेजक–पु० (सं०) धोबी, रजक।

निर्णेता(तृ)–वि० (सं०) निर्णायक। (स्त्री० 'निर्णेत्री'।) पु० विचारपति; साक्षी; मार्गप्रदर्शक।

निर्णोद–पु० (सं०) निष्कासन।

निर्त*–पु० नृत्त, नाच।

निर्तक*–पु० नर्तक, नट; भाँड़।

निर्तना*–अ० क्रि० नाचना।

निर्दंड–वि० (सं०) जिसे सभी तरहके दंड दिये जा सकें; दंड देने योग्य। पु० शूद्र।

निर्दंत–वि० (सं०) जिसे दाँत न हों, विना दाँतका।

निर्दंभ–वि० (सं०) दंभरहित।

निर्दई, निर्दयी*–वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दग्ध–वि० (सं०) जला हुआ; जो न जला हो।

निर्दट–वि० (सं०) निष्ठुर; ईर्ष्यालु; निकम्मा; उग्र; प्रमत्त।

निर्दय–वि० (सं०) दयारहित, कठोर हृदयवाला; निष्ठुर; प्रचंड; उग्र।

निर्दयता–स्त्री० (सं०) निर्दय होनेका भाव, कठोरहृदयता, निष्ठुरता।

निर्दर–पु० (सं०) निर्झर; सार; गुफा। वि० कठिन; निर्दय।

निर्दल–वि० (सं०) पत्रहीन; दलहीन; दलवंदीसे अलग।

निर्दलसम्मेलन–पु० (सं०) ऐसे नेताओं, कार्यकर्ताओं आदिका सम्मेलन जिनका संवंध किसी दल-विशेषसे न हो।

निर्दलन–पु० (सं०) नाश करना; भंग करना। वि० दलन करनेवाला।

निर्दलीय–वि० (सं०) जिसका सम्वन्ध किसी दल-विशेषसे न हो, स्वतंत्र (सदस्य)।

निर्दशन–वि० (सं०) दे० 'निर्दंत', विना दाँतका।

निर्दहन–पु० (सं०) भिलावेंका पेड़; जलानेकी क्रिया। वि० अग्निसे रहित; जिसमें दाह न हो, दाहशून्य; जलानेवाला।

निर्दहना*–स० क्रि० जला देना, दग्ध करना।

निर्दहनी–स्त्री० (सं०) मूर्वा नामकी लता।

निर्दाता(तृ)–पु० (सं०) दाता; निरानेवाला; किसान; काटनेवाला।

निर्दारित–वि० (सं०) दे० 'विदारित'।

निर्दिग्ध–वि० (सं०) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा; लिप्त; निर्लिप्त।

निर्दिष्ट–वि० (सं०) जिसका निर्देश किया गया हो, बतलाया हुआ; वर्णित; निर्णीत।

निर्दूषण–वि० (सं०) दे० 'निर्दोष' ।

निर्देश–पु० (सं०) बतलाना, दिखाना, संकेत करना, जताना; नियत करना; आज्ञा, हुक्म, आदेश, हिदायत; कथन; उल्लेख; सामीप्य । –**ग्रंथ**–पु०, –**पुस्तक**–स्त्री० (रेफरेंस बुक) वह पुस्तक जो साधारणतः अध्ययनके लिए न लिखी गयी हो, वरन् जिसका उपयोग विशेष अवसरोंपर कुछ बातोंकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए किया जाय, संदर्भ ग्रंथ ।

निर्देशक–वि० (सं०) जो निर्देश करे; (डाइरेक्टर) दे० 'निदेशक' ।

निर्देशन–पु० (रेफरेंस) किसी अन्य स्थानपर आयी या कही हुई बातका उल्लेख या उसकी ओर संकेत करनेकी क्रिया ।

निर्देशिका–स्त्री० (डाइरेक्टरी) दे० 'निदेशिका' ।

निर्देष्टा(ष्टृ)–वि०, पु० (सं०) निर्देश करनेवाला । (स्त्री० 'निर्देष्ट्री' ।)

निर्दैन्य–वि० (सं०) सुखी ।

निर्दोष–वि० (सं०) जिसमें कोई दोष न हो, निष्कलंक, दोषरहित; निरपराध ।

निर्दोषता–स्त्री० (सं०) निर्दोष होनेका भाव, दोषराहित्य, निष्कलंकता ।

निर्दोषी–वि० दे० 'निर्दोष' ।

निर्द्रव बैरोमीटर–पु० (एनीरायड बैरोमीटर) वायुमण्डलका दाब नापनेवाला ऐसा यंत्र जिसमें द्रवका उपयोग नहीं किया जाता। यह धातुकी डिबियाका बना होता है जिसके अन्दर आंशिक निर्वात उत्पन्न किया रहता है । वायुमण्डलके दाबके घटने बढ़नेपर क्रमशः इसकी ऊपरी सतह ऊपर या नीचे हो जाती है तो इससे सम्बद्ध उत्तोलकों द्वारा यह गति सुईतक पहुँचती है जो डायलपर वायुमण्डलका दाब सीधे सेंटीमीटर या इंचोंमें अंकित करती है ।

निर्द्वंद–वि० दे० 'निर्द्वंद्व' ।

निर्द्वंद्व–वि० (सं०) हर्ष-विषाद आदि द्वंद्वोंसे रहित, जिसका कोई विरोधी न हो; सब तरहसे स्वच्छंद ।

निर्धन–वि० (सं०) धनहीन, दरिद्र ।

निर्धर्म–वि० (सं०) धर्मसे रहित, जो धर्मका पालन न करे ।

निर्धातु–वि० (सं०) जिसकी धातु क्षीण हो गयी हो, वीर्यहीन, शक्तिरहित ।

निर्धार, निर्धारण–पु० (सं०) समान जाति, गुण, क्रिया आदिवाले बहुतोंमेंसे एकको छाँटना, चुनना या अलग करना; नियत करना; निर्णय या निश्चय करना; निर्णय, निश्चय ।

निर्धारना*–स० क्रि० निर्धारण करना ।

निर्धारित–वि० (सं०) जिसका निर्धारण किया गया हो ।

निर्धार्य-वि० (सं०) निर्धारण करने योग्य; दृढ़; उत्साही; निर्भीक।

निर्धूत-वि० (सं०) हिलाया हुआ; फेंका हुआ, दूर किया हुआ; त्यागा हुआ, परित्यक्त; नष्ट किया हुआ, नाशित । पु० संबंधियों आदि द्वारा परित्यक्त व्यक्ति ।

निर्धूम-वि० (सं०) धुएँसे रहित ।

निर्धौत–वि० (सं०) जो धुल गया हो; चमकाया हुआ ।

निर्नर–वि० (सं०) मनुष्यों द्वारा परित्यक्त, जिसमें मनुष्य न हों ।

निर्नाथ–वि० (सं०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो ।

निर्नाथता–स्त्री० (सं०) रक्षाका अभाव; वैधव्य; अनाथ होनेकी अवस्था ।

निर्निमित्त, निर्निमित्तक–वि० (सं०) विना कारणका, अकारण ।

निर्निमेष–वि० (सं०) जिसमें पलक न मारी जाय । अ० विना पलक गिराये, टकटकी लगाकर ।

निर्पक्ष*–वि० दे० 'निष्पक्ष' ।

निर्फल*–वि० दे० 'निष्फल' ।

निर्बंध–पु० (सं०) आग्रह, हठ; अभिनिवेश; रुकावट; होड़, (रेस्ट्रिक्शन) रोक, रुकावट, बाधा । वि० बंधनरहित ।

निर्बंधन–पु० (रेस्ट्रिक्शन) शर्तें लगाकर किसी बात, विषय, व्यक्ति आदिको नियंत्रित या क्षेत्रविशेषतक सीमित करना ।

निर्बंधित, निर्बद्ध–वि० (रेस्ट्रिक्टेड) जो रोका गया हो या जिसमें बाधा डाली गयी हो, प्रतिबंधित ।

निर्बरा†–वि० धुंधला, अस्पष्ट–'एक आकार दिखलाई पड़ा साफ नहीं, निर्बरा'–मृग० ।

निर्बर्हण–पु० (सं०) दे० 'निर्वहण' ।

निर्बल–वि० (सं०) शक्तिहीन, कमजोर ।

निर्बहना*–अ० क्रि० पार पाना; त्राण पाना; निबहना, निभना । स० क्रि० निभाना ।

निर्बाध–वि० (सं०) बिना बाधा या रोकका, प्रतिबंधरहित; जहाँ या जिसमें कोई उपद्रव न हो, निरुपद्रव; एकांत, निर्जन ।

निर्बाधित–वि० बाधारहित ।

निर्बीज–वि० (सं०) जिसका बीज नष्ट कर दिया गया हो; जिसकी जननशक्ति नष्ट हो गयी हो ।

निर्बुद्धि–वि० (सं०) बुद्धिहीन, मूर्ख, बेवक़ूफ़ ।

निर्बोध–वि० (सं०) जिसे थोड़ा-सा भी ज्ञान न हो, अज्ञान, नासमझ ।

निर्भग्न–वि० (सं०) खंडित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; झुकाया हुआ ।

निर्भट–वि० (सं०) दृढ़, कठिन ।

निर्भय–वि० (सं०) जो किसीसे भय न खाय, निडर; निरापद ।

निर्भर–वि० (सं०) अत्यंत, बहुत अधिक 'सबके उर निर्भर हरषु पूरित पुलक शरीर'–रामा०; तीव्र, गाढ; पूर्ण, 'निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी'–रामा०; भरा हुआ; अवलंबित । पु० बेगारमें काम करनेवाला आदमी; अतिशयता ।

निर्भर्त्सन–पु०, **निर्भर्त्सना**–स्त्री० (सं०) अनिष्ट करनेकी धमकी देना; डाँट-डपट, झिड़क; तिरस्कार, अधिक्षेप; बुरा-भला कहना ।

निर्भाग्य–वि० (सं०) अभागा ।

निर्भास–पु० (सं०) प्रकट होना; चमकना ।

निर्भिन्न–वि० (सं०) छिदा हुआ; फाड़ा हुआ; जो प्रकट हो गया हो, उद्‌घाटित ।

निर्भीक–वि० (सं०) दे० 'निर्भय' ।

निर्भृति–वि० (सं०) बेगारमें काम करनेवाला ।

निर्भेद–पु० (सं०) फाड़ना; छेदना, बेधना; प्रकट करना, उद्‌घाटन; स्पष्ट कथन या उल्लेख ।

निर्भ्रम–वि० (सं०) भ्रमरहित, जिसमें या जिससे कोई भ्रम न हो । * अ० बेखटके, स्वच्छंद होकर ।

निर्भ्रांत–वि० (सं०) दे० 'निर्भ्रम' ।

निर्मंथ्य–पु० (सं०) अरणिकी लकड़ी जिसे रगड़कर आग पैदा करते हैं ।

निर्मक्षिक–वि० (सं०) जहाँ कोई (एक मक्खीतक) न हो, निर्जन, एकांत ।

निर्मज्ज–वि० (सं०) दुबला-पतला ।

निर्मथ–पु० (सं०) अरणि जिसके मंथनसे यज्ञके लिए अग्नि उत्पन्न की जाती है ।

निर्मद–वि० (सं०) अभिमानरहित; हर्षरहित; (वह हाथी) जिसके गंडस्थलसे मद न बहता हो, मदजलसे रहित ।

निर्मध्या–स्त्री० (सं०) नली नामक गंधद्रव्य ।

निर्मना*–स० क्रि० निर्मित करना; बनाना, उत्पन्न करना ।

निर्मनुज, निर्मनुष्य, निर्मानुष–वि० (सं०) मनुष्योंसे रहित; गैर-आबाद; मनुष्यों द्वारा परित्यक्त ।

निर्मम–वि० (सं०) ममतारहित, निष्ठुर ।

निर्मर्याद–वि० (सं०) जिसने मर्यादाका अतिक्रमण कर दिया है; उद्दंड, अशिष्ट ।

निर्मल–वि० (सं०) जिसमें मल न हो, स्वच्छ; शुद्ध, पवित्र; रागादि दोषोंसे रहित; अकलुष । पु० अभ्रक; निर्माल्य ।

निर्मली–स्त्री० एक वृक्ष या उसका फल जो पानी साफ करने और दवाके काम आता है ।

निर्मलीकरण–पु० शुद्धीकरण ('कांग्रेस समितिका निर्मलीकरण') ।

निर्मलोपल–पु० (सं०) स्फटिक ।

निर्मांस–वि० (सं०) मांसरहित; जो पर्याप्त भोजन न करने या न मिलनेसे क्षीण हो गया हो ।

निर्माण–पु० (सं०) बनाने या रचनेकी क्रिया, रचना; मापन; रूप; भवन; अंश; सार, मज्जा । –**विद्या**–स्त्री० मकान आदि बनानेकी विद्या, वास्तुविद्या ।

निर्माणी–स्त्री० (मिल) वह निर्माणशाला जिसमें यंत्रोंकी सहायतासे सूत, वस्त्र, रेशम आदि तैयार किया जाता है, कारखाना। –**अधिनियम**–पु० (फैक्टरी-ऐक्ट) कारखानों-संबंधी कानून।

निर्माता(तृ)–वि०, पु० (सं०) बनानेवाला, रचना करनेवाला, स्रष्टा।

निर्मात्रिक–वि० (सं०) मात्रारहित।

निर्मान–वि० (सं०) अपार, असीम; अभिमानरहित।

निर्माना*–स० क्रि० बनाना, रचना करना; पैदा करना।

निर्मायल*–पु० दे० 'निर्माल्य'।

निर्मार्जन–पु० (सं०) धोना, साफ करना।

निर्माल्य–पु० (सं०) किसी देवताको समर्पित किया हुआ पदार्थ (विसर्जनके बाद देवार्पित वस्तुको 'निर्माल्य' कहते हैं)।

निर्माल्या–स्त्री० (सं०) असवर्ग।

निर्मित–वि० (सं०) बनाया हुआ, रचा हुआ, रचित।

निर्मिति–स्त्री० (सं०) दे० 'निर्माण'।

निर्मुक्त–वि० (सं०) विशेष रूपसे मुक्त, जो पूरे तौरसे छुटकारा पा चुका हो; बंधनोंसे रहित। पु० वह साँप जो केंचुल छोड़ चुका हो।

निर्मुक्ति–स्त्री० (सं०) मुक्ति, छुटकारा।

निर्मूल–वि० (सं०) मूलरहित, बिना जड़का; जो मूल सहित उखाड़ दिया गया हो, जो मूल सहित नष्ट कर दिया गया हो, सर्वथा नष्ट।

निर्मूलन–पु० (सं०) मूलरहित होना या करना; विनाश।

निर्मृष्ट–वि० (सं०) धुला या साफ किया हुआ; मिटाया हुआ।

निर्मेघ–वि० (सं०) बादलोंसे रहित, निरभ्र।

निर्मेध–वि० (सं०) मूर्ख, बुद्धिहीन।

निर्मोक–पु० (सं०) साँपकी केंचुल; छोड़ना, त्यागना, मोचन; शरीरके ऊपरका चमड़ा, खाल; कवच; आकाश; सावर्णि मनुके एक पुत्र।

निर्मोक्ष–पु० (सं०) पूर्ण मोक्ष।

निर्मोचन–वि० (सं०) मुक्ति, छुटकारा।

निर्मोल*–वि० अनमोल, बहुमूल्य।

निर्मोह–वि० (सं०) मोह या अज्ञानसे रहित; ममता, दयासे शून्य, निष्ठुर, बेदर्द। पु० रैवत मनुके एक पुत्र; शिव।

निर्मोहिया†–वि० दे० 'निर्मोह'।

निर्मोही–वि० जिसे किसीसे मोह या प्रेम न हो, निर्मम, निर्दय।

निर्यंत्रण–वि० (सं०) अनियंत्रित, अबाधित।

निर्याण–पु० (सं०) निकलना, बाहर जाना, कूच, प्रस्थान (विशेषतः सेनाका); प्राणका निकलना; पशुओंको बाँधने या छाननेकी रस्सी; हाथीकी आँखके कोनेके पासका हिस्सा जहाँसे मद निकलता है; मोक्ष; लोहा।

निर्यात–वि० (सं०) जो बाहर गया हो, जिसने प्रस्थान किया हो। पु० बेचनेके लिए बाहर भेजा जानेवाला माल; बाहर जाना या भेजना। –**कर**–पु० निर्यातपर लगाया जानेवाला कर।

निर्यातक–पु० (एक्सपोर्टर) व्यापारिक वस्तुएँ विदेशोंको भेजनेवाला व्यापारी।

निर्यातन–पु० (सं०) बदला लेना, प्रतिशोध; प्रतीकार; विनिमय; किसीकी धरोहर उसे लौटा देना, प्रतिदान; ऋण आदि चुकाना; मारण, वध; उत्पीड़न, कष्ट देना–'यह निर्यातन अब और न सहेंगे'–पथके दावेदार।

निर्याति–स्त्री० (सं०) प्रस्थान, गमन; मृत्यु; मोक्ष।

निर्याम–पु० (सं०) पोतवाह, नाविक।

निर्यास–पु० (सं०) स्वतः या काटनेपर वृक्षों आदिमेंसे निकलनेवाला रस; गोंद; किसी वस्तुमेंसे निकलनेवाला पानी, रस आदि; काढ़ा, क्वाथ; अर्क।

निर्यूथ–वि० (सं०) जो अपने दलसे बिछुड़ गया हो।

निर्यूष–पु० (सं०) दे० 'निर्यास'।

निर्यूह–पु० (सं०) सिरपर भूषणकी तरह धारण की जानेवाली वस्तु, शिरोभूषण; काढ़ा; खूँटी; द्वार, दरवाजा।

निर्लज्ज–वि० (सं०) लज्जारहित, बेशर्म, बेहया।

निर्लिंग–वि० (सं०) जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो।

निर्लिप्त–वि० (सं०) दे० 'निर्लेप'।

निर्लुंचन–पु० (सं०) छिलका या भूसी अलग करना।

निर्लुंठन–पु० (सं०) लूट लेना; फाड़कर अलग करना।

निर्लेखन–पु० (सं०) किसी चीजपरका मैल आदि खुरचना; वह वस्तु जिससे किसी चीजपरका मैल खुरचा जाय।

निर्लेप–वि० (सं०) जिसपर कलई न की गयी हो; जो किसी वस्तु या विषयमें आसक्त न रहे, आसक्तिरहित; जो किसीसे कुछ संबंध न रखे, उदासीन, निःसंग; निष्पाप। पु० संत, ऋषि।

निर्लोभ–वि० (सं०) लोभरहित, संतोषी।

निर्लोम–वि० दे० 'निर्लोमा'।

निर्लोमा(मन्)–वि० (सं०) जिसे रोयें न हों। (स्त्री० 'निर्लोम्नी'।

निर्वंश–वि० (सं०) जिसकी वंशपरंपरा उसीके शरीरसे समाप्त हो जाय, जिसका वंश उच्छिन्न हो गया हो, निःसंतान।

निर्वक्तव्य–वि० (सं०) दे० 'निर्वचनीय'।

निर्वचन–वि० (सं०) मौन, चुप; आपत्तिरहित; निर्दोष। पु० निरुक्ति; उच्चारण; उक्ति, कहावत; शब्द-सूची; (इंटरप्रेटेशन) किसी शब्द, पदसमूह या वाक्यादिका अपनी समझके अनुसार अर्थ लगाना, व्याख्या करना।

निर्वचनीय–वि० (सं०) निर्वचन करने योग्य, जिसका निर्वचन किया जा सके, जो लक्षण आदिके द्वारा समझाया जा सके।

निर्वण, निर्वन–वि० (सं०) वनसे रहित; वनसे बाहर; खुला हुआ।

निर्वनीकरण–पु० (सं०) (डीफॉरेस्टेशन) दे० 'वन-नाशन'।

निर्वपण–पु० (सं०) पितृतर्पण; देना, दान; बाँटना, अन्न आदिका वितरण।

निर्वपनी–स्त्री० (सं०) साँपकी केंचुली।

निर्वर–वि० (सं०) निर्लज्ज, बेहया; निडर।

निर्वर्णन–पु० (सं०) देखना, दर्शन; ध्यानसे देखना।

निर्वर्त्तन–पु० (सं०) दे० 'निष्पत्ति'।

निर्वर्त्तित–वि० (सं०) दे० 'निष्पन्न'।

निर्वर्हण–पु० (सं०) दे० 'निर्वहण'।

निर्वसन–वि० (सं०) वस्त्रहीन।

निर्वसु–वि० (सं०) वसु (धन) रहित, दरिद्र।

निर्वहण–पु० (सं०) समाप्ति; निबाहना, निर्वाह; नाटककी प्रस्तुत कथाकी समाप्ति। –**संधि**–स्त्री० नाटकमें प्रयुक्त होनेवाली पाँच संधियोंमेंसे एक।

निर्वाक्(च)–वि० (सं०) मौन, चुप।

निर्वाचक–पु० (सं०) निर्वाचन करनेवाला, वह जो निर्वाचन करे, वह जिसे मताधिकार प्राप्त हो। –**गण, वर्ग**–पु० (इलेक्टरेट) निर्वाचकोंका समूह या वर्ग। –**मंडल**–पु० (इलेक्टोरल कॉलेज) जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंका वह दल या समूह जो बादमें लोक-सभा आदिके निर्दिष्टसंख्यक सदस्योंका अप्रत्यक्ष निर्वाचन करे। -**संघ,–समूह** पु० निर्वाचकोंका समुदाय, 'इलेक्टरेट'। –**सूची**–स्त्री० (इकेक्टोरल रोल) निर्वाचनमें भाग लेनेकी अर्हता रखनेवाले मतदाताओंके नाम, पेशे, उम्र आदिका ब्योरा बतानेवाली सूची, मतदाता-सूची।

निर्वाचन–पु० (सं०) 'वोट' द्वारा चुनना, चुनाव। –**केंद्राध्यक्ष**–पु० (प्रिजाइडिंग ऑफिसर) किसी एक निर्वाचन-केंद्रमें मतदान आदिकी देखभाल तथा व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। –**क्षेत्र**–पु० चुनावका हलका। –**पदाधिकारी**–पु० (रिटर्निंग ऑफिसर) किसी निर्वाचन-क्षेत्रके निर्वाचनकी निगरानी, व्यवस्था आदि करनेवाला तथा मतोंकी गणना कराकर उसका परिणाम प्रकट करनेवाला अधिकारी, चुनाव-अधिकारी।

निर्वाचित–वि० (सं०) जिसका निर्वाचन किया गया हो, 'वोट' द्वारा चुना हुआ।

निर्वाच्य–वि० (सं०) न कहने योग्य; निर्दोष; जिसपर आपत्ति न की जा सके।

निर्वाण–वि० (सं०) बुझा हुआ (दीपक आदि); मृत; जो अस्त हो गया हो, अस्तंगत; मुक्त; शांत; अचल, स्थिर। पु० बुझना; अस्त होना, अस्तंमन; (हाथीको) नहलाना, धोना, गजमज्जन; मोक्ष, परम गति; शांति; विनाश; संगम; सुख, निर्वृति; एक

मात्रागण (छंद); परम आनंद। (यह शब्द बौद्धदर्शनमें मुक्तिके अर्थमें पारिभाषिक रूपमें प्रयुक्त होता है।)–**प्रिया**–स्त्री० एक गंधर्वी। –**भूयिष्ठ**–वि० लुप्त। –**मस्तक**–पु० मोक्ष। –**रुचि**–वि० मुमुक्षु, मोक्षसाधनमें रत।

निर्वात–वि० (सं०) जहाँ हवा न चलती हो, वायुसे रहित; शांत। पु० (वेकुअम) ऐसी जगह जहाँ वायुका एक भी अणु मौजूद न हो, यद्यपि सर्वश्रेष्ठ पम्प द्वारा भी किसी पात्रके अन्दरसे वायुके समस्त अणुओंको बाहर निकाल सकना संभव नहीं होता।

निर्वाद–पु० (सं०) लोकापवाद, लोकनिंदा; अफवाह; वाद-ग्रस्त विषयका निपटारा; वादाभाव।

निर्वाप–पु० (सं०) दान; पितरोंके निमित्त किया जानेवाला दान; बुझाना (आग आदि)।

निर्वापण–पु० (सं०) दान; मारण; वध; बुझाना; उडेलना; शांत करना।

निर्वार्य–वि० (सं०) जो निःशंक होकर परिश्रमपूर्वक कर्म करे; जिसका निवारण न हो सके, जो रोका न जा सके।

निर्वास–वि० (सं०) वासस्थानसे रहित, अगेह; वासरहित, गंधरहित। पु० दे० 'निर्वासन'।

निर्वासन–पु० (सं०) देसनिकाला; मारण, हिंसन; विसर्जन; प्रवास।

निर्वासित-वि० (सं०) नगर या देशसे निकाला हुआ।

निर्वास्य–वि० (सं०) निर्वासित करने योग्य।

निर्वाह–पु० (सं०) किसी चली आती हुई वस्तुका बना रहना; किसी कार्यको पूरा करना, निष्पादन; पूरा किया जाना, समाप्ति; (प्रतिज्ञा आदिको) पूरा करना, पालन, निवाहना; गुजारा। –**भृति**–स्त्री० (लिविंग वेज) वह भृति या वेतन जिसपर कर्मचारी और उसका परिवार सुखसे जीवन-निर्वाह कर सके, निर्वाह मजूरी। –**व्यय**–पु० (कॉस्ट ऑफ मेनटेनेंस) जीवन-निर्वाहका–भोजन वस्त्रादिका–व्यय।

निर्वाहक–वि० (सं०) निर्वाह करनेवाला।

निर्वाहण–पु० (सं०) पूरा करना, निभाना; ऐसी वस्तुओंको नगरमें ले जाना जिनके आयातपर प्रतिबंध लगा हो।

निर्वाहना* -स० क्रि० दे० 'निबाहना'।

निर्वाहिका–स्त्री० दे० 'निर्वाहभृति'।

निर्विकल्प–वि० (सं०) विकल्पसे रहित। पु० ज्ञाता-ज्ञेय आदिके भेद तथा विशेष्य-विशेषणके संबंधसे रहित वह ज्ञान जिसमें केवल ब्रह्म और आत्माकी एकरूपताका अखंड बोध होता हो (वे०); एक प्रकारका प्रत्यक्ष ज्ञान जिसमें किसी विषयका केवल इसी रूपमें ज्ञान होता है कि यह कुछ है, नाम, जाति आदिसे संसृष्ट रूपमें नहीं (न्या०)। –**समाधि**–स्त्री० एक प्रकारकी समाधि जिसमें एक ही अभिन्न तत्त्व ब्रह्म दिखाई देता है और ज्ञाता, ज्ञेय तथा ज्ञानके विभेदका बोध नहीं रह जाता।

निर्विकल्पक–वि० (सं०) दे० 'निर्विकल्प'।

निर्विकार–वि० (सं०) विकाररहित, अपरिवर्तित; उदासीन। पु० परब्रह्म।

निर्विकास–वि० (सं०) जो खिला न हो, अविकसित।

निर्विघ्न–वि० (सं०) विघ्नरहित, जिसमें कोई बाधा न हो। अ० बिना विघ्न बाधाके।

निर्विचार–वि० (सं०) विचारशून्य। पु० समाधिका एक प्रकार (यो०)।

निर्विण्ण–वि० (सं०) निर्वेदयुक्त; खिन्न; जिसे वैराग्य हो गया हो, विरक्त; नम्र; ज्ञात; निश्चित।

निर्वितर्क–वि० (सं०) जिसपर तर्क न किया जा सके। –**समाधि**–स्त्री० एक तरहकी समाधि जो स्थूल आलंबनमें तन्मय होनेसे प्राप्त होती है (यो०)।

निर्विद्य–वि० (सं०) विद्याविहीन, मूर्ख, अपढ़।

निर्विभागीय–वि० जिसका संबंध (शासनके) किसी विभागसे न हो; जिसके जिम्मे कोई विभाग न हो (–मंत्री)।

निर्विरोध–वि० (सं०) विरोधरहित। अ० बिना विरोधके।

निर्विवाद–वि० (सं०) विवादरहित, जिसके विषयमें कोई विवाद न हो, बिना झगड़े, बखेड़ेका।

निर्विवेक–वि० (सं०) विवेकशून्य।

निर्विशेष–वि० (सं०) समान, तुल्य; सदा एक रूप रहनेवाला (परब्रह्म)। पु० अंतरका अभाव।

निर्विष–वि० (सं०) विषरहित।

निर्विषय–वि० (सं०) घरसे निकाला हुआ।

निर्विषा–स्त्री० (सं०) दे० 'निर्विषी'।

निर्विषी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी घास जिसके सेवनसे साँप, बिच्छू आदिका विष दूर होता है।

निर्विष्ट–वि० (सं०) जो भोग चुका हो; जो वेतन पा चुका हो; जिसका विवाह हो चुका हो; जिसने अग्निहोत्र किया हो।

निर्वीज–वि० (सं०) बीजरहित; कारणरहित; नपुंसक। –**समाधि**–स्त्री० समाधिकी एक अवस्था जिसमें बीज या आलंबन विलीन हो जाता है (यो०)।

निर्वीजा–स्त्री० (सं०) किशमिश।

निर्वीर–वि० (सं०) वीरसे रहित, वीरविहीन।

निर्वीरा–स्त्री० (सं०) पति और पुत्रसे रहित स्त्री।

निर्वीर्य–वि० (सं०) वीर्यरहित, शक्तिहीन, निर्बल; नपुंसक।

निर्वृति–स्त्री० (सं०) सुख; मोक्ष।

निर्वृत्त–वि० (सं०) जो पूरा किया जा चुका हो, निष्पन्न।

निर्वृत्ति–स्त्री० (सं०) निष्पत्ति।

निर्वेग–वि० (सं०) वेगरहित, शांत।

निर्वेतन–वि० (सं०) जिसे वेतन न मिलता हो, अवैतनिक, बिना वेतनका।

निर्वेद–वि० (सं०) नास्तिक। पु० अपने प्रति अवज्ञा; वैराग्य; शांत रसका स्थायी भाव; खेद।

निर्वेश-पु० (सं०) भोग; वेतन; मूर्च्छित होना, मूर्च्छन; विवाह।

निर्वेष्टन–पु० (सं०) सूत लपेटनेकी जुलाहोंकी नरी; ढरकी।

निर्वैर–वि० (सं०) वैरभावसे रहित, जो वैरभाव न रखे। पु० वैर या शत्रुताका अभाव।

निर्व्यथन–पु० (सं०) घोर पीडा; छेद। वि० पीड़ासे मुक्त।

निर्व्यलीक–वि० (सं०) बिना कपटका, निश्छल; जो किसी प्रकारका कष्ट या दुःख न पहुँचावे; प्रसन्न।

निर्व्याज–वि० (सं०) छल-कपटसे रहित, सच्चा; विशुद्ध।

निर्व्याधि–वि० (सं०) व्याधिसे रहित, नीरोग।

निर्व्यापार–वि० (सं०) जिसे कोई काम न हो, बेकार; गतिहीन।

निर्व्यूढ–वि० (सं०) पूरा या समाप्त किया हुआ; बढ़ा हुआ, वृद्धिप्राप्त, उपचित; चरितार्थ किया हुआ; त्यागा हुआ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्व्यूढि–स्त्री० (सं०) अंत; समाप्ति; कलगी; द्वार; खूँटी; काढ़ा।

निर्व्रण–वि० (सं०) व्रणरहित।

निर्हरण–पु० (सं०) मुर्देको घरसे बाहर निकालना या उसे श्मशान ले जाना; निकालना; नष्ट करना, नाशन।

निर्हाद–पु० (सं०) मल आदिका त्याग।

निर्हार–पु० (सं०) धँसे हुए काँटे आदिको निकालना; मल-मूत्र आदिका त्याग; अपने लिए अलग धन इकट्ठा करना (स्मृ०); निर्हरण।

निर्हारक–पु० (सं०) वह जो मुर्देको घरसे बाहर निकाले या श्मशान ले जाय।

निर्हारी(रिन्)–पु० (सं०) निर्हरण करनेवाला; दूरतक फैलनेवाली गंध; सुगंध।

निर्हेतु-वि० (सं०) अकारण, बिना कारणका।

निर्ह्राद–पु० (सं०) शब्द, ध्वनि, आवाज; गुंजन; गर्जन।

निर्ह्रास–पु० (सं०) अत्यंत ह्रास।

निर्ह्रीक–वि० (सं०) निर्लज्ज; धृष्ट।

निलंब खाता,–लेखा–पु० (सस्पेंस अकाउंट) दे० 'उचंत खाता'।

निलंबन–पु० (सस्पेंशन) किसी कर्मचारीके अपराधी या दोषी होनेका संदेह उत्पन्न होनेपर उसे तबतकके लिए अपने पदसे हटा देना जबतक उस संबंधमें यथोचित छानबीन या जाँच न हो ले;

कोई नियम, अधिवेशन, कार्य आदि कुछ समयके लिए उठा रखना, टाल देना या अप्रभावी कर देना ।

निलंबित–वि० (सस्पेंडेड) (वह कर्मचारी) जो अपने किसी तथाकथित अपराध या दोषके कारण, अंतिम निर्णय होनेतक, अस्थायी रूपसे पदच्युत कर दिया गया हो; कुछ समयके लिए रोका हुआ; मुअत्तल ।

निलज†–वि० दे० 'निर्लज्ज' ।

निलजई, निलजता*–स्त्री० निर्लज्जता, बेशर्मी ।

निलजी*–वि० दे० 'निर्लज्ज' ।

निलज्ज*–वि० स्त्री० दे० 'निर्लज्ज' ।

निलय–पु० (सं०) वासस्थान, रहनेकी जगह; घर; माँद; घोंसला; सर्वथा नष्ट या लुप्त हो जाना, लोप, अदर्शन; छिपना ।

निलयन–पु० (सं०) वास करना, बसेरा लेना; वासस्थान, आश्रयस्थान, घर; बाहर जाना; उतरना, नीचे आना ।

निलहा–वि० जिसका संबंध नीलसे हो, नीलवाला; नीलका कारोबार करनेवाला (जैसे–निलहा साहब) ।

निलाम–पु० दे० 'नीलाम' ।

निर्लिप–पु० (सं०) देवता । **–निर्झरी**–स्त्री० स्वर्गंगा ।

निर्लिपा, निर्लिपिका–स्त्री० (सं०) गाय ।

निलीन–वि० (सं०) पिघला हुआ; छिपा हुआ; विशेष रूपसे या बहुत अधिक लीन; नष्ट; परिवर्तित ।

निवचन–पु० (सं०) बराबर कहते जाना; वचनाभाव ।

निवछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

निवडिया†–स्त्री० एक प्रकारकी नाव ।

निवना*–अ० क्रि० नवना, झुकना ।

निवपन–पु० (सं०) पितरों आदिके निमित्त किया जानेवाला दान; बिखेरना; बोना ।

निवर–वि० (सं०) निवारण करनेवाला । पु० रोकनेवाला; रक्षण; आवरण, परदा ।

निवरा–स्त्री० (सं०) जिसका वर न हो, कुमारी ।

निवर्तक–वि० (सं०) लौटनेवाला; रुकनेवाला; दूर करनेवाला; लौटानेवाला ।

निवर्तन–पु० (सं०) रोकना, निवारण; जमीनकी एक पुरानी नाप, बीघा; पीछे हटना या हटाना; लौटना या लौटाना; चेतनाका क्रमशः अंतर्निहित होना ।

निवर्तमान–वि० नौकरी या पदसे हट जानेवाला, अवकाश ग्रहण कर लेनेवाला (रिटायरिंग) ।

निवर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) लौटनेवाला; भाग जानेवाला; परहेज करनेवाला; लौटने देनेवाला ।

निवर्हण–वि०, पु० (सं०) दे० 'निबर्हण' ।

निवसति–स्त्री० (सं०) वासस्थान, घर ।

निवसथ–पु० (सं०) गाँव, ग्राम ।

निवसन–पु० (सं०) गृह, वासस्थान; वस्त्र; अधोवस्त्र ।

निवसना*–अ० क्रि० वास करना, रहना ।

निवह–पु० (सं०) समूह, समुदाय; सात वायुओंमेंसे एक; दे० 'अनिल'; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; वध ।

निवाई*–वि० नवीन; अद्भुत । स्त्री० गरमी; ज्वर ।

निवाकु–वि० (सं०) मौन, चुप ।

निवाज–वि० दया करनेवाला, रहम करनेवाला (समासमें उत्तर-पदके रूपमें प्रयुक्त) ।

निवाजना*–स० क्रि० कृपा करना; कृपापात्र बनाना ।

निवाजिश–स्त्री० दे० 'नवाजिश', कृपा ।

निवाड़–पु०, स्त्री० दे० 'निवार' ।

निवाड़ा†–पु० एक प्रकारकी छोटी नाव; नावमें बैठकर की जानेवाली एक प्रकारकी जलक्रीडा जिसमें नावको बीचधारामें ले जाकर नचाते हैं, नावरि ।

निवाड़ी–स्त्री० दे० 'निवारी' ।

निवात*–पु० नवनीत, मक्खन (बीसल०) । वि० (सं०) जहाँ हवा न चलती हो; जहाँ हवाकी पहुँच न हो; शस्त्रोंसे सुसज्जित, सुरक्षित । पु० वह कवच जो शस्त्रों द्वारा भेदा न जा सके; आश्रय-स्थान; घर; वायुसे रक्षित स्थान; वायुका अभाव; शांति; सुरक्षित स्थान । **–कवच**–पु० हिरण्यकशिपुके पुत्र संह्लादका पुत्र; एक प्रकारके दानव ।

निवान*–पु० पानी या कीचड़से भरी रहनेवाली नीची जमीन; जलाशय ।

निवाना*–स० क्रि० दे० 'नवाना' ।

निवान्या*–स्त्री० (सं०) वह मृतवत्सा गौ जो दूसरी गायके बछड़ेको लगाकर दुही जाय ।

निवाप–पु० (सं०) दान; पितरोंके उद्देश्यसे किया जानेवाला दान ।

निवार–पु० (सं०) एक प्रकारका धान जिसका चावल व्रत आदिमें खाया जाता है, तिन्नी, पसही; निवारण; † एक तरहकी मोटी मूली । स्त्री० (हिं०) कुएँकी नीवँमें दिया जानेवाला लकड़ी आदिका चक्का जिसके ऊपरसे कोठीकी जोड़ाई की जाती है, जमवट; पलंग बुनने आदिके काम आनेवाली मोटे सूतकी बनी हुई चौड़ी पट्टी । **–बाफ़**–पु० निवार बुननेवाला ।

निवारक–वि० (सं०) निवारण करनेवाला, रोकनेवाला; दूर करनेवाला । **–नजरबंदी क़ानून,–निरोध-अधिनियम**–पु० (प्रिवेंटिव डिटेंशन ऐक्ट) वह अधिनियम जिसके अनुसार किसी तरहका समाजविरोधी कार्य या उपद्रवादि करनेवाले व्यक्तियोंका या जिनके संबंधमें ऐसी आशंका हो उनका निरोध–उन्हें ऐसा करनेसे रोकनेके लिए–किया जा सके ।

निवारण–पु० (सं०) रोकना; हटाना; दूर करना, मिटाना ।

निवारन*–पु० दे० 'निवारण' ।

निवारना*–स० क्रि० रोकना; हटाना; बरजना; बचाना; दूर करना; चुकाना–'पिछलो देहु निवारि आज सब पुनि दीजो जब जानो कालि'–सूर ।

निवारी–स्त्री० जूहीकी जातिका एक पौधा; इस पौधेका फूल ।

निवार्य–वि० (सं०) जो रोका जा सके, टाला या हटाया जा सके ।

निवाला–पु० (फा०) कवल, ग्रास, लुकमा ।

निवास–पु० (सं०) रहनेका भाव या कार्य, रहना; रहनेका स्थान, घर, आश्रय; रात्रि व्यतीत करना; पोशाक ।

निवासन–पु० (सं०) घर, गृह; कुछ कालके लिए ठहरना; काल-यापन ।

निवासी(सिन्)–वि० (सं०) निवास करनेवाला, रहनेवाला; वस्त्र धारण करनेवाला । पु० रहने, बसनेवाला ।

निविड–वि० (सं०) घना; कसा हुआ; घोर; बड़े आकारका; स्थूल; भद्दा; चपटी या टेढ़ी नाकवाला ।

निविडीश, निविडीस–वि० (सं०) दे० 'निविरीश' ।

निविदा–स्त्री० (टेंडर) आवश्यक रकम लेकर वांछित वस्तुएँ जुटा देने, पहुँचा देने या काम पूरा करा देनेका लिखित वादा ।

निविद्धान–पु० (सं०) एक ही दिनमें समाप्त होनेवाला यज्ञ आदि ।

निविरीश, निविरीस–वि० (सं०) घना, गहरा; भद्दा ।

निविरीसा–स्त्री० (सं०) चपटी या टेढ़ी नाक ।

निविशमान–पु० (सं०) उपनिवेश बसानेके काम आनेवाले लोग (कौ०) ।

निविशेष–वि० (सं०) भेदरहित, समान । पु० भेदराहित्य; एकरूपता ।

निविष†–वि० दे० 'निर्विष' ।

निविष्ट–वि० (सं०) स्थित; एकाग्र; घुसा हुआ; व्यवस्थित । **–पण्य**–पु० बोरोंमें कसा हुआ माल ।

निवीत–पु० (सं०) यज्ञोपवीत; ओढ़नेका वस्त्र, ओढ़नी, प्रावरण ।

निवीती(तिन्)–वि० (सं०) जो यज्ञोपवीत धारण किये हो ।

निवीर्य–वि० (सं०) दे० 'निर्वीर्य' ।

निवृत–पु० (सं०) ओढ़नी, उत्तरीय । वि० घिरा हुआ; वेष्टित ।

निवृति–स्त्री० (सं०) घेरा; आवरण ।

निवृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; जो भाग आया हो; पूरा या समाप्त किया हुआ; हटाया हुआ; विरत; जो अवकाश या छुटकारा पा चुका हो, मुक्त । पु० प्रत्यागमन; रागरहित मन । **–कारण**–वि० जिसका और कोई कारण न हो । **–यौवन**–वि० जिसकी जवानी लौट आयी हो । **–राग**–वि० विरक्त । **–वृत्ति**

–वि० अपना पेशा छोड़नेवाला । **–वृद्धिक आधि**–स्त्री० किसीके यहाँ जमा किया हुआ वह धन जिसपर ब्याज न लिया जाय ।

निवृत्तात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) विषयोंसे विरत । पु० विष्णु ।

निवृत्ति–स्त्री० (सं०) निवृत्त होनेकी क्रिया; प्रवृत्तिका अभाव; छुटकारा; मुक्ति; लौटना; समाप्ति; विरत होना; हटना; विश्राम । स्त्री० (रिटायरमेंट) दे० 'अवकाश-ग्रहण' । **–पूर्व छुट्टी**–स्त्री० (लीव बिफोर रिटायरमेंट) सेवासे अवकाश-ग्रहण करनेके ठीक पूर्व ली गयी छुट्टी । **–वेतन**–पु० (पेंशन) वह वेतन या वृत्ति जो किसी कर्मचारीको कामसे अवकाश-ग्रहणके बाद उसकी पूर्व-सेवाके विचारसे जीवन-निर्वाहके लिए मिले ।

निवृत्तिका–स्त्री० (सं०) दे० 'निवृत्तिवेतन', पेंशन ।

निवेद*–पु० दे० 'नैवेद्य' ।

निवेदक–वि०, पु० (सं०) निवेदन करनेवाला ।

निवेदन–पु० (सं०) किसीसे कुछ कहना; प्रार्थना; समर्पित करना, समर्पण; शिव ।

निवेदना*–स० क्रि० निवेदन करना; प्रार्थना करना; समर्पित करना ।

निवेदित–वि० (सं०) निवेदन किया हुआ; प्रार्थनारूपमें कहा हुआ; अर्पण किया हुआ, समर्पित ।

निवेद्य–पु० (सं०) दे० 'नैवेद्य' ।

निवेरना|*–स० क्रि० दे० 'निबेरना' ।

निवेरा*–वि० चुना हुआ; नूतन; अद्भुत । (स्त्री० 'निवेरी' ।)

निवेश–पु० (सं०) प्रवेश; आसन, स्थापन; पड़ाव डालना, सैन्य-विन्यास; पड़ाव डालनेकी जगह; शिविर, खेमा; वासस्थान, गृह; विवाह; सजावट । (प्रॉविजन) किसी विधि, अधिनियम आदिमें कोई वाक्यखंड या उपधारा आदि रख देना, जोड़ देना, जो किसी विशेष स्थिति आदिमें काम दे सके–(विधि-निवेश—प्रावीजन आॅफ लॉ) ।

निवेशन–पु० (सं०) निविष्ट करनेकी क्रिया; स्थापन; गृह; नगर; पड़ाव, खेमा; घोंसला ।

निवेशनी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

निवेष्ट–पु० (सं०) आवरण; ढकनेका कपड़ा ।

निवेष्टन–पु० (सं०) ढकना, वेठन ।

निवेष्य–पु० (सं०) व्याप्ति; भँवर; ओस (वै०); रुद्र (वै०) । वि० चक्कर खाता हुआ ।

निव्याधी(धिन्)–पु० (सं०) एक रुद्र ।

निव्यूढ–पु० (सं०) उत्साह; अध्यवसाय ।

निशंक–वि० दे० 'निःशंक' ।

निश*–स्त्री० रात । **–चर***–पु० दे० 'निशाचर' ।

निशठ–वि० (सं०) सच्चा, ईमानदार । पु० बलदेवके एक पुत्र ।

निशब्द–वि० (सं०) चुप, मौन ।

निशमन–पु० (सं०) देखना, अवलोकन, दर्शन; सुनना, श्रवण; परिचय प्राप्त करना, अवगत होना ।

निशरण–पु० (सं०) मारण, वध ।

निशल्या–स्त्री० (सं०) दंती वृक्ष ।

निशांत–पु० (सं०) रात्रिका अंत; भवन; प्रातःकाल । वि० बहुत शांत ।

निशांध–वि० (सं०) जिसे रातको दिखाई न दे, रतौंधी रोगवाला ।

निशांधा–स्त्री० (सं०) जतुका लता ।

निशा–स्त्री० (सं०) रात, रात्रि; हल्दी; दारुहल्दी; स्वप्न; दे० 'निशावल' । **–कर**–पु० चंद्रमा; एककी संख्या; मुरगा; कपूर । **–०कलामौलि**–पु० शिव । **–कांत**–पु० चंद्रमा । **–केतु**–पु० चंद्रमा । **–क्षय**–पु० रात्रिका अंत । **–गृह**–पु० शयनागार । **–चर**–वि० रातमें निकलने या घूमने-फिरनेवाला । पु० राक्षस; गीदड़; उल्लू; साँप; चोर; भूत; पिशाच; शिव; चक्रवाक; एक गंधद्रव्य । **–०पति**–पु० रावण; शिव । **–चरी**–स्त्री० राक्षसी; कुलटा, पुंश्चली; अभिसारिका । **–चर्म(न्)**–पु० अंधकार । **–चारी**|–पु० दे० 'निशाचर' । **–जल**–पु० ओस । **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० उल्लू (जो रातको देखता है) । **–नाथ,–पति**–पु० चंद्रमा; कपूर । **–पुत्र**–पु० नक्षत्र आदि खेचर; एक दानववर्ग । **–पुष्प**–पु० कुमुद । **–बल**–पु० मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर राशियाँ जो रातको विशेष सबल मानी जाती हैं । **–भंगा**–स्त्री० दुग्धपुष्पी । **–मणि**–पु० चंद्रमा । **–मुख**–पु० संध्याकाल । **–मृग**–पु० शृगाल, गीदड़ । **–रत्न**–पु० चंद्रमा । **–वन**–पु० सन । **–विहार**–पु० राक्षस । **–वेदी(दिन्)**–पु० मुरगा । **–हस**–पु० कुमुद ।

निशाखातिर|–स्त्री० दिलजमई, तसल्ली ।

निशाख्या–स्त्री० (सं०) हल्दी ।

निशाट, निशाटन–पु० (सं०) उल्लू; राक्षस । वि० दे० 'निशाचर' ।

निशाटक–पु० (सं०) गुग्गुल । वि० दे० 'निशाचर' ।

निशात–वि० (सं०) सानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; चमकाया हुआ ।

निशातिक्रम, निशात्यय–पु० (सं०) रातका बीतना; प्रातःकाल ।

निशाद–पु० (सं०) रातको खानेवाला; दे० 'निषाद' ।

निशादि–पु० (सं०) सायं, संध्या ।

निशाधीश–पु० (सं०) दे० 'निशानाथ' ।

निशान–पु० (सं०) सानपर चढ़ाना, तेज करना; (फा०) वह लक्षण जिससे किसीकी पहचान की जा सके, परिचायक लक्षण, चिह्न; किसी पदार्थको सूचित करनेवाला उसका स्थानापन्न चिह्नविशेष; हस्ताक्षरके स्थानपर कागज आदिपर बनाया जानेवाला चिह्न; किसी प्राचीन या पूर्ववर्ती पदार्थ या घटनाका परिचायक चिह्न; किसी विशेष कार्य या पहचानके लिए नियत किया जानेवाला चिह्न; यादगार; लक्ष्य; झंडा; पता, ठिकाना । **–ची**–पु० दे० 'निशान-बरदार' । **–दिही,–देही**–स्त्री० किसी व्यक्ति या उसकी किसी वस्तुकी पहचान करानेका काम । **–पट्टी**–स्त्री० हुलिया । **–बरदार**–पु० किसी राजा, सेना या दलके आगे उसका झंडा लेकर चलनेवाला व्यक्ति । मु० (किसी बातका)–**उठाना या खड़ा करना**–किसी आंदोलनका नेतृत्व करना । **–देना**–पता बताना; सम्मन तामील कराने आदिके लिए पहचान कराना ।

निशाना–पु० (फा०) वह जिसको दृष्टिमें रखकर कोई अस्त्र चलाया जाय, लक्ष्य; निशाना साधनेके कामका मिट्टीका ढेर या कोई अन्य वस्तु; वह जिसके प्रति कोई चुटकुली बात कही जाय । मु० -**बाँधना**–अस्त्र आदिको इस तरह साधना कि वह चलानेपर ठीक लक्ष्यपर वार करे । **–मारना या लगाना**-लक्ष्यको दृष्टिमें रखकर अस्त्र आदिका वार करना । **–साधना**-दे० 'निशाना बाँधना'; निशाना मारनेका अभ्यास करना ।

निशानी–स्त्री० किसीकी याद करानेवाला चिह्न, यादगार; वह चिह्न जिससे किसी वस्तुकी पहचान हो सके ।

निशारण–पु० (सं०) दे० 'निशरण' ।

निशावसान–पु० (सं०) रात्रिका बीतना; प्रभात ।

निशारुक–पु० (सं०) एक प्रकारका रूपक ताल जिसमें दो लघु और दो गुरु मात्राएँ होती हैं; नृत्यके साथ कहा जानेवाला बोल । वि० बहुत हिंसा करनेवाला ।

निशास्ता–वि० (फा०) जमाया हुआ; बैठा हुआ । पु० गेहूँका गूदा; माँड़ी ।

निशाह्वा–स्त्री० (सं०) हल्दी ।

निशि*–स्त्री० रात । **–कर**–पु० दे० 'निशाकर' । **–चर**–पु० दे० 'निशाचर' । **–०राज**-पु० विभीषण; रावण । **–दिन**–अ० रात-दिन, सदैव । **–नाथ,–नायक,-पति**–पु० दे० 'निशानाथ' । **–वासर**–अ० रात-दिन, सदैव ।

निशि–अ० (सं०) रातमें । **–पाल,-पालक**–पु० एक छंद; प्रहरी (जो रातमें पहरा देता है) । **–पुष्पा,–पुष्पिका,-पुष्पी**–स्त्री० सिंदुवार, निर्गुंडी ।

निशित–वि० (सं०) सानपर चढ़ाया हुआ, तेज किया हुआ; तेज, तीक्ष्ण । पु० लोहा ।

निशिता–स्त्री० (सं०) रात्रि ।

निशीथ–पु० (सं०) शयन-काल; आधी रात; रात; रात्रिका एक कल्पित पुत्र ।

निशीथिनी–स्त्री० (सं०) रात्रि, रात । **–पति**–पु० चंद्रमा ।

निशीथिनीश–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

निशीथ्या–स्त्री० (सं०) रात्रि।

निशुंभ–पु० (सं०) वध; हिंसा करना, हिंसन; तोड़ना; झुकाना; एक असुर जो शुंभका भाई था और जिसका वध दुर्गाने किया था। **–मथनी,–मर्दिनी**–स्त्री० भगवती, दुर्गा।

निशुंभन–पु० (सं०) मारण, वध करना।

निशुंभी(भिन्)–पु० (सं०) एक बुद्ध।

निशेश–पु० (सं०) दे० 'निशानाथ'।

निशैत–पु० (सं०) बगला।

निशोत्सर्ग–पु० (सं०) प्रभात, सवेरा।

निश्चंद्र–वि० (सं०) चंद्रमासे रहित।

निश्चक्रिक–वि० (सं०) छल-छद्मसे रहित, सच्चा, ईमानदार।

निश्चक्षु(स्)–वि० (सं०) नेत्रहीन।

निश्चय–पु० (सं०) संदेहरहित ज्ञान; दृढ़ विचार; विश्वास; निबटारा, निर्णय, फैसला; जाँच; अर्थालंकारका एक भेद जिसमें अन्य विषयका निषेध होकर यथार्थ विषयका स्थापन हो।

निश्चयात्मक–वि० (सं०) संदेहरहित, जिसमें किसी प्रकारका संशय न हो।

निश्चल–वि० (सं०) जो चल न हो, थोड़ा-सा भी न हिलने-डुलनेवाला, अचल, स्थिर।

निश्चलांग–पु० (सं०) बगला; पर्वत आदि जो सदा अचल बने रहते हैं। वि० जिसके अंग हिल-डुल न सकें।

निश्चला–स्त्री० (सं०) शालपर्णी; पृथ्वी।

निश्चायक–वि०, पु० (सं०) निश्चय करनेवाला, निर्णायक।

निश्चारक–पु० (सं०) वायु; पुरीष-त्याग; स्वच्छंदता।

निश्चिंत–वि० (सं०) जिसे किसी प्रकारकी चिंता न हो, चिंतारहित, बेफिक्र।

निश्चितई*–स्त्री० निश्चिंत होनेका भाव, बेफिक्री।

निश्चित–वि० (सं०) जिसके बारेमें निश्चय किया जा चुका हो, निश्चय किया हुआ; जो इधर-उधर न हो सके, जिसमें किसी प्रकारका हेर-फेर न हो सके, पक्का।

निश्चिति–स्त्री० (सं०) निश्चय या निर्णय करनेकी क्रिया; संकल्प।

निश्चित्त–पु० (सं०) एक प्रकारकी समाधि (यो०)।

निश्चुक्कण–पु० (सं०) मिस्सी; दंतमंजन।

निश्चेतन–वि० (सं०) संज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित।

निश्चेष्ट–वि० (सं०) चेष्टारहित; अचेत, मूर्च्छित; अचल, स्थिर।

निश्चेष्टाकरण–पु० (सं०) कामदेवका एक बाण।

निश्चै*–पु० दे० 'निश्चय'।

निश्च्यवन–पु० (सं०) एक प्रकारकी अग्नि (म० भा०); वैवस्वत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक।

निश्छंदा(दस्)–वि० (सं०) जिसने वेदका अध्ययन न किया हो।

निश्छल–वि० (सं०) छलरहित, शुद्ध हृदयवाला, सच्चा, निष्कपट।

निश्छाय–वि० (सं०) छायारहित।

निश्छिद्र–वि० निर्दोष 'निश्छिद्र आदर्श शासनके प्रतीक श्रीराम'–वागीश शास्त्री।

निश्छेद–पु० (सं०) अविभाज्य राशि (ग०)।

निश्रम–पु० (सं०) विशेष श्रम, अध्यवसाय।

निश्रयणी, निश्रेणि, निश्रेणी–स्त्री० (सं०) सीढ़ी।

निश्वास–पु० (सं०) बहिर्मुख श्वास, प्राणवायुके नाकसे बाहर आनेकी क्रिया; लंबी साँस।

निश्शंक–वि० (सं०) दे० 'निःशंक'।

निश्शील–वि० (सं०) शीलरहित, दुष्ट स्वभावका।

निश्शेष–वि० (सं०) दे० 'निःशेष'।

निषंग–पु० (सं०) तरकश, तूणीर; तलवार; मुँहसे फूँककर बजाया जानेवाला प्राचीन कालका एक बाजा; विशेष आसक्ति। **–धि**–पु० तलवारका म्यान।

निषंगथि–पु० (सं०) आलिंगन; धनुर्धर; सारथि; रथ; कंधा, घास।

निषंगी(गिन्)–वि० (सं०) जिसके पास तरकश हो; जिसने धनुष् धारण किया हो; खड्ग धारण करनेवाला; अत्यंत आसक्तिवाला। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

निषक्त–वि० (सं०) विशेष रूपसे आसक्त।

निषण्ण–वि० (सं०) बैठा हुआ, स्थित, उपविष्ट; सहारा दिया हुआ; विषण्ण।

निषण्णक–पु० (सं०) आसन।

निषद–पु० (सं०) संगीतका एक स्वर, निषाद।

निषदन–पु० (सं०) बैठना; निवास करना; आसन; घर।

निषद्–स्त्री० (सं०) यज्ञ करनेके लिए ली जानेवाली दीक्षा। **–वर**–पु० पंक, कीचड़; कामदेव। **–वरी**–स्त्री० रात्रि।

निषद्या–स्त्री० (सं०) बाजार, हाट; छोटी खाट।

निषध–पु० (सं०) एक पर्वत (पु०); लवके भाई कुशके पौत्र; जनमेजयके पुत्र; एक प्राचीन देश जहाँके राजा नल थे (पु०); कुरुका एक पुत्र; निषाद स्वर (संगीत)।

निषाद–पु० (सं०) एक पुरानी अनार्य जाति (मनुके अनुसार इसकी उत्पत्ति ब्राह्मण पिता और शूद्रा मातासे है); एक प्राचीन देश जिसका उल्लेख रामायण आदिमें मिलता है; संगीतके सप्तकका अंतिम स्वर जिसका संक्षिप्त रूप 'नि' है। **–कर्ष**–पु० एक प्राचीन देश।

निषादित–वि० (सं०) बैठाया हुआ; पीड़ित।

निषादी(दिन्)–पु० (सं०) पीलवान, महावत। वि० बैठने या आराम करनेवाला।

निषिक्त–वि० (सं०) अति सिक्त; भीतर पहुँचाया हुआ। पु० वीर्यसे जनित गर्भ।

निषिद्ध–वि० (सं०) निषेध किया हुआ, जिसपर रोक लगायी गयी हो, जिसे करना आदि मना हो; तुच्छ कोटिका; दूषित; बुरा, खोटा।

निषिद्धि–स्त्री० (सं०) मनाही, रोक; बचाव।

निषूदन–वि० (सं०) मारनेवाला, वध करनेवाला; नाशक (प्रायः समासमें व्यवहृत)। पु० मारण, वध; मारनेवाला।

निषेक–पु० (सं०) विशेष रूपसे सींचना; गर्भ रहना, गर्भाधान; चूना, टपकना; गर्भाधानके अवसरपर होनेवाला एक संस्कार; धोनेका पानी, धोवन; गंदा पानी; वीर्यकी अशुद्धता।

निषेचन–पु० (सं०) छिड़कना; सींचना; (फर्टिलाइज़ेशन) शुक्राणु-कोशिका तथा अंड-कोशिकाका सम्मिलन जिसके फलस्वरूप ज़ाइगोट (निषेचित अण्ड) बनता है जिसके अन्दर नये जीवका विकास होता है; गर्भधारण कराना।

निषेध–पु० (सं०) निषिद्ध करनेका कार्य, मनाही, रोक लगाना, बरजना; रोक, बाधा, प्रतिबंध; विधिका विलोम; इनकार; वह आज्ञा या नियम जिसके द्वारा किसी बातकी मनाही की गयी हो। **–पत्र**–पु० वह लिखित आदेश जिसमें किसी बातकी मनाही हो। **–विधि**–स्त्री० विधिरूप निषेध–जैसे 'एकादशीको भोजन न करे।' यहाँ भोजनके निषेधका तात्पर्य यह है कि भोजनके अभावमें इष्टका साधन होता है।

निषेधक–वि० (सं०) निषेध करनेवाला, रोकनेवाला।

निषेधन–पु० (सं०) निषेध करनेकी क्रिया, मनाही, वर्जन।

निषेधाज्ञा–स्त्री० (सं०) वह आज्ञा जो कोई होता हुआ अन्यायपूर्ण कार्य रोकनेके लिए किसी न्यायालय द्वारा दी जाय (इन्जंकशन)।

निषेधाधिकार–पु० (वीटो) किसी देशके राष्ट्रपति या प्रधान शासकका विधान-सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावको अमान्य ठहरानेका अधिकार; सुरक्षा-परिषद् द्वारा स्वीकृत किसी प्रस्तावको न मानने या कार्यान्वित होनेसे रोक देनेका पाँच महान् राष्ट्रोंमेंसे प्रत्येकको प्राप्त विशेषाधिकार।

निषेवण–पु० (सं०) विशेष रूपसे किया गया सेवन; विशेष प्रकारकी सेवा; पूजा; अनुष्ठान; लगाव, लगन; रहना, बसना।

निषेवा–स्त्री० (सं०) दे० 'निषेवण'।

निषेवित–वि० (सं०) पूजित; सेवित; अनुष्ठित।

निषेवी(विन्)–पु० (सं०) विशेष रूपसे सेवन करनेवाला।

निषेव्य–वि० (सं०) विशेष रूपसे सेवन करने योग्य।

निष्कंटक–वि० (सं०) बाधा, आपत्ति आदिसे रहित, जिसमें किसी प्रकारका खटका या बखेड़ा न हो, निर्द्वंद्व, निर्विघ्न।

निष्कंठ–वि० (सं०) बिना कंठका, कंठहीन । पु० वरुण वृक्ष ।

निष्कंप–वि० (सं०) जिसमें कंपन न हो, जो हिलता-डुलता न हो, जो चंचल न हो, अचल, स्थिर ।

निष्क–पु० (सं०) सोनेका एक प्राचीन सिक्का जो प्रायः सोलह माशेका होता था; १०८ या १५० सुवर्णोंकी एक प्राचीन तौल; गलेका एक प्रकारका सोनेका आभूषण; सोना; सोनेका पात्र; चार सुवर्णोंके बराबर एक प्राचीन तौल; दीनार; चांडाल ।

निष्कपट–वि० (सं०) छल-छद्मसे रहित, सच्चा, शुद्ध हृदयवाला ।

निष्कर–वि० (सं०) जिसपर कर न लगा हो ।

निष्करुण–वि० (सं०) दयारहित, कठोर हृदयवाला, निष्ठुर, निर्दय ।

निष्कर्तन–पु० (सं०) फाड़कर या काटकर अलग करना ।

निष्कर्म–वि० दे० 'निष्कर्मा' ।

निष्कर्मण्य–वि० (सं०) निकम्मा; कर्म न करनेवाला ।

निष्कर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) जो लिप्त होकर कर्म न करे, आसक्तिरहित होकर कर्म करनेवाला; निकम्मा ।

निष्कर्ष–पु० (सं०) तत्त्व, सारभूत अर्थ, निचोड़; निश्चय; किसी वस्तुके विषयमें यह कैसा है और कितना है, इस प्रकारका विचार; नतीजा; बाहर करना, निःसारण, निकालना; मापन ।

निष्कर्षण–पु० (सं०) बाहर करना; दूर करना; मिटाना; घटाना ।

निष्कलंक–वि० (सं०) जिसमें कोई कलंक न हो, दोष, पाप आदिसे रहित, बेदाग, विमल, विशुद्ध, बिना ऐबका ।

निष्कल–वि० (सं०) कलारहित; निरवयव, संपूर्ण; नष्टवीर्य; क्षीण । पु० ब्रह्मा; आधार ।

निष्कला, निष्कली–स्त्री० (सं०) वह वृद्धा स्त्री जिसका रजोधर्म होना बंद हो गया हो, गतरजस्का ।

निष्कषाय–वि० (सं०) विशुद्ध चित्तवाला । पु० एक जिन ।

निष्काम–वि० (सं०) सब प्रकारकी कामना या आसक्तिसे रहित, जिसे किसी प्रकारकी कामना न हो, निरीह । **–कर्म(न्)**–पु० फलप्राप्तिकी इच्छा त्यागकर किया जानेवाला कर्म ।

निष्कामी*–वि० दे० 'निष्काम' ।

निष्कारण–वि० (सं०) कारणरहित, बिना किसी कारणका; बिना किसी कारणके होनेवाला, अहेतुक । पु० हटाना, ले जाना; मारण । अ० बिना किसी कारणके, अकारण । **–बंधु**–पु० वह जो बिना किसी प्रकारके स्वार्थके बंधुता रखे, स्वार्थरहित बंधु । **–वैरी(रिन्)**–पु० वह जो अकारण वैरभाव रखे, वह जो बिना किसी कारणके शत्रु बन बैठे ।

निष्कालक–पु० (सं०) वह जिसके बाल, रोयें आदि मूँड़ दिये गये हों ।

निष्कालन–पु० (सं०) चलाना; भगाना (पशु); मार डालना, वध करना ।

निष्कालिक–वि० (सं०) जो कुछ ही दिन और जी सके, जिसका अंत निकट हो; अजेय ।

निष्काश, निष्कास–पु० (सं०) बाहर करना, निकालना; प्रासाद आदिका बाहरकी ओर निकला हुआ हिस्सा; प्रभात; लोप ।

निष्काष–पु० (सं०) दूधका वह भाग जो उसके अधिक औटे जानेके कारण बरतनमें ही सटकर रह गया हो, दूधकी खुरचन (वै०) ।

निष्कासन–पु० (सं०) बाहर करना; हटाना; निकालना, निःसारण ।

निष्कासित–वि० (सं०) बाहर किया हुआ, निकाला हुआ, निःसारित; रखा हुआ; नियुक्त; विकसित; जिसकी भर्त्सना की गयी हो ।

निष्कासिनी–स्त्री० (सं०) वह दासी जिसपर स्वामिनीने कोई प्रतिबंध न लगाया हो ।

निष्किंचन–वि० (सं०) दे० 'अकिंचन' ।

निष्किल्बिष–वि० (सं०) पापरहित, निर्दोष ।

निष्कीटन–पु० (स्टेरिलाइजेशन) रासायनिक प्रक्रिया आदिकी सहायतासे किसी वस्तुको जीवाणुओं या कीटाणुओंसे रहित कर देना; (दे० वंध्यीकरण) ।

निष्कीटित–वि० (स्टेरेलाइज्ड) किसी प्रक्रिया द्वारा जिसके कीटाणु नष्ट कर दिये गये हों; वंध्यीकृत ।

निष्कुंभ–पु० (सं०) दंती वृक्ष । वि० कुंभरहित ।

निष्कुट–पु० (सं०) घरसे लगा हुआ बगीचा, नजरबाग; क्यारी; राजाओंका अंतःपुर, रनिवास; एक पर्वत; फाटक, दरवाजा; कोटर ।

निष्कुटि, निष्कुटी–स्त्री० (सं०) बड़ी इलायची ।

निष्कुल–वि० (सं०) जिसके कुलमें कोई न रह गया हो ।

निष्कुलीकरण–पु० (सं०) किसीके कुलका नाश करना; छिलका अलग करना ।

निष्कुलीन–वि० (सं०) नीच कुलका ।

निष्कुषित–वि० (सं०) निष्कासित; छीला हुआ; जिसकी खाल अलग कर दी गयी हो; जहाँ-तहाँ काटा या खाया हुआ (जैसे–कीटनिष्कुषित); खुरेदकर निकाला हुआ ।

निष्कुह–पु० (सं०) पेड़का खोंड़र, कोटर ।

निष्कूज–वि० (सं०) शब्दरहित, शांत ।

निष्कूट–वि० (सं०) छलरहित, निष्कपट ।

निष्कृत–वि० (सं०) निकाला हुआ; मुक्त; हटाया हुआ; उपेक्षित; क्षमित । पु० प्रायश्चित्त; मिलनस्थान ।

निष्कृति–स्त्री० (सं०) निस्तार, पाप आदिसे मुक्ति, छुटकारा; उद्धार; प्रायश्चित्त; उपेक्षा; दुराचरण । **–धन**–पु० (रैनसम) किसीको छुटकारा या मुक्ति देनेके बदले दबाव डालकर वसूल किया जानेवाला धन, छुड़ौती, निष्क्रयण ।

निष्कृप–वि० (सं०) जिसमें दया न हो, निर्दय, निष्ठुर; तेज ।

निष्कृष्ट–वि० (सं०) निचोड़कर निकाला हुआ, सारभूत ।

निष्केवल–वि० विशुद्ध, एकनिष्ठ, अनन्य, 'राम कृपा नहिं करहिं तस जस निष्केवल प्रेम'–रामा० ।

निष्कैवल्य–वि० (सं०) विशुद्ध, पूर्ण; मोक्षरहित ।

निष्कोष, निष्कोषण–पु० (सं०) छीलना; भूसी निकालना; फाड़कर, खुरेदकर या खींचकर बाहर निकालना ।

निष्क्रम–वि० (सं०) बिना क्रमका, अक्रम । पु० बाहर निकलना; चार मासके बच्चेको पहले-पहल घरसे बाहर निकलनेके निमित्त किया जानेवाला एक संस्कार; जातिच्युति । **–पत्र**–पु० (पासपोर्ट) दे० 'पारपत्र' । **–मार्ग**–पु० बाहर निकलने या जानेका रास्ता ।

निष्क्रमण–पु० (सं०) दे० 'निष्क्रम' ।

निष्क्रय–पु० (सं०) खरीद, क्रय; वेतन, भृति; भाड़ा; पुरस्कार; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली रकम या वस्तु, बदला, प्रतिफल; बिक्री; सामर्थ्य; प्रत्युपकार; छुटकारेके लिए दिया जानेवाला द्रव्य (कौ०) ।

निष्क्रयण–पु० (सं०) छुटकारेके लिए दी जानेवाली रकम ।

निष्क्रांत–वि० (सं०) जिसका निष्क्रमण हो चुका हो; निर्गत ।

निष्क्रांतोंकी संपत्ति–स्त्री० (इवैकुई प्रापर्टी) (जान-मालके संकटसे बचनेके लिए) जो लोग अपना पूर्व-स्थान छोड़कर अन्यत्र चले गये हों, उनके द्वारा अपने पीछे छोड़ी हुई संपत्ति ।

निष्क्रामित–वि० (सं०) निकाला हुआ; हटाया हुआ; भगाया हुआ, दबाया हुआ ।

निष्क्राम्य–पु० (सं०) मालका निर्यात (कौ०) । **–शुल्क**–पु० निर्यातकर (कौ०) ।

निष्क्रिय–वि० (सं०) कोई काम-धाम न करनेवाला, जो कुछ भी न करे-धरे; विहित कर्मोंको न करनेवाला; जिसमें या जिससे कार्य या व्यापार न हो, क्रियारहित । **–प्रतिरोध**–पु० शासककी ओरसे होनेवाले दमनका प्रतिकार न कर उसकी अनुचित आज्ञा या कानूनका उल्लंघन, 'पैसिव रेसिस्टेंस' ।

निष्क्रियता–स्त्री० (सं०) निष्क्रिय होनेकी दशा या भाव ।

निष्क्लेश–वि० (सं०) क्लेशरहित, जो सब प्रकारके कष्टोंसे छुटकारा पा चुका हो; दस क्लेशोंसे मुक्त (बौद्धधर्म) ।

निष्क्वाथ–पु० (सं०) मांस आदिका रसा, झोल, शोरबा ।

निष्चेतक–पु० (अनेस्थेटिक) ऐसे पदार्थ जो चिकित्साके क्षेत्रमें रोगीको संवेदना-शून्य करनेके लिए प्रयुक्त किये जाते हैं; जैसे क्लोरोफॉर्म ।

निष्टपन–पु० (सं०) पकाना; जलाना, झुलसना।

निष्टप्त–वि० (सं०) झुलसा हुआ; अच्छी तरह पकाया हुआ।

निष्टानक–पु० (सं०) गर्जन; कलरव।

निष्टाप–पु० (सं०) जलाना; थोड़ा तप्त करना।

निष्टि-स्त्री० (सं०) दितिका एक नाम।

निष्ठ–वि० (सं०) (प्रायः समासांतमें) संस्थित; निर्भर; संलग्न; अनुरक्त; तत्पर,…में विश्वास करनेवाला; दक्ष।

निष्ठांत–वि० (सं०) विनाशशील, नश्वर।

निष्ठा–स्त्री० (सं०) स्थिति; आधार; एकाग्रता, तत्परता; दृढ़ता; अनुराग; श्रद्धा; विश्वास; पूरा होना, निष्पत्ति; नाश; क्लेश; निर्वाह; याचना; व्रत; विष्णु; निश्चय; अवधारण; कौशल।

निष्ठान-पु० (सं०) दाल, शाक, अचार आदि भोजनके उपकरण।

निष्ठानक–पु० (सं०) एक नाग।

निष्ठावान्(वत्)–वि० (सं०) निष्ठावाला।

निष्ठित–वि० (सं०) भली भाँति स्थित, दृढ़; निष्ठायुक्त; कुशल, दक्ष।

निष्ठीव, निष्ठीवन–पु० (सं०) खखार आदिको मुँहसे बाहर निकालना; थूकना; थूक; कफ बाहर निकालनेकी ओषधि।

निष्ठुर–वि० (सं०) कड़ा, कठोर; परुष; कड़े दिलका; निर्दय, बेरहम। पु० परुष वचन, नीच वचन, कड़ी बात।

निष्ठेव, निष्ठेवन–पु० (सं०) दे० 'निष्ठीव'।

निष्ठ्यूत–वि० (सं०) थूका हुआ, उगला हुआ; बाहर निकाला हुआ; कहा हुआ, उक्त।

निष्ठ्यूति–स्त्री० (सं०) थूकनेकी क्रिया।

निष्ण, निष्णात–वि० (सं०) कुशल, प्रवीण, निपुण; (किसी विषयका) पूर्ण ज्ञान रखनेवाला; पूरा किया हुआ, निष्पन्न।

निष्पंक–वि० (सं०) जिसमें पंक न हों या न लगा हो, पंकरहित; साफ-सुथरा।

निष्पंद–वि० (सं०) गतिहीन, स्थिर।

निष्पक्व–वि० (सं०) अच्छी तरह पकाया हुआ।

निष्पक्ष–वि० (सं०) जो किसी पक्षका न हो, जिसमें पक्षपात न हो, पक्षपात न करनेवाला।

निष्पतन–पु० (सं०) तेजीसे बाहर निकलना।

निष्पताक–वि० (सं०) पताकारहित।

निष्पत्ति–स्त्री० (सं०) उत्पत्ति; पूरा किया जाना, समाप्ति; सिद्धि; परिपाक; नादकी अंतिम अवस्था (हठयोग); निर्वाह; चर्वणा, अभिव्यक्ति (सा०)।

निष्पत्र–वि० (सं०) जिसपर या जिसमें पत्ते न हों, पत्तोंसे रहित; बिना पंखका।

निष्पत्रिका–स्त्री० (सं०) करीलका पेड़।

निष्पद–वि० (सं०) जिसके पैर न हों। पु० बिना पहिये आदिकी सवारी (जैसे-नाव)।

निष्पन्न–वि० (सं०) जिसकी निष्पत्ति हो चुकी हो।

निष्पराक्रम–वि० (सं०) पराक्रमहीन।

निष्परिकर–वि० (सं०) जिसने कोई तैयारी न की हो।

निष्परिग्रह–पु० (सं०) कंथा, पादुका आदि पदार्थोंसे रहित साधु। वि० जिसने विवाह न किया हो, अविवाहित; जिसके पास कुछ न हो; दान आदि न लेनेवाला; जो विषयादिमें आसक्त न हो।

निष्पर्यंत–वि० (सं०) अपार, निःसीम।

निष्पलक–अ० बिना पलक गिराये।

निष्पवन–पु० (सं०) धान आदिकी भूसी अलग करना।

निष्पादक–वि०, पु० (सं०) निष्पादन करनेवाला; आदेश, निश्चय आदिके अनुसार कार्य करनेवाला।

निष्पादन-पु० (सं०) निष्पन्न करनेकी क्रिया।

निष्पादी–स्त्री० (सं०) बोड़ा नामका शाक।

निष्पाप–वि० (सं०) पापरहित; (कर्म) जिसे करनेसे पाप न लगे।

निष्पार–वि० (सं०) दे० 'निष्पर्यंत', अपार।

निष्पाव–पु० (सं०) सूप आदिकी हवा जिससे अनाजकी भूसी निकाली जाती है; धान आदिकी भूसी निकालना, निस्तुषीकरण; सेम।

निष्पावक–पु० (सं०) सफेद सेम।

निष्पावी–स्त्री० (सं०) सेमका एक भेद, बोड़ा।

निष्पिष्ट–वि० (सं०) चूर्ण किया हुआ; पीटा हुआ; पीडित।

निष्पीडन–पु० (सं०) दबाकर, मसलकर रस निकालना; निचोड़ना।

निष्पुत्र–वि० (सं०) पुत्रहीन, जिसके पुत्र न हो।

निष्पुरुष–वि० (सं०) नपुंसक; निर्जन।

निष्पुलाक–वि० (सं०) जिसमें पैया न हो; भूसी निकाला हुआ।

निष्पेष, निष्पेषण–पु० (सं०) पेरना, पीसना, चूर्ण करना; रगड़ना; रगड़।

निष्पौरुष–वि० (सं०) पौरुषहीन।

निष्प्रकंप-वि० (सं०) कंपनरहित, अचल, स्थिर। पु० चौदहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमें एक।

निष्प्रकारक–वि० (सं०) वैशिष्टयसे रहित अर्थात् साधारण (जैसे–निष्प्रकारक ज्ञान)।

निष्प्रकाश–वि० (सं०) प्रकाशरहित, अँधेरा।

निष्प्रचार–वि० (सं०) जो इधर-उधर जा न सके, एक ही स्थानपर रहनेवाला, जो चल न सके।

निष्प्रताप–वि० (सं०) प्रतापरहित।

निष्प्रतिघ–वि० (सं०) बिना रुकावटका, अबाध।

निष्प्रतिभ–वि० (सं०) प्रतिभारहित, मूर्ख।

निष्प्रतीकार–वि० (सं०) जिसका प्रतिकार न किया जा सके।

निष्प्रभ–वि० (सं०) जिसमें चमक न हो, द्युतिहीन; जिसमें तेज न हो, विवर्ण।

निष्प्रभाव–वि० (सं०) जिसका कोई प्रभाव न रह गया हो, जिसका प्रभाव नष्ट या रुद्ध कर दिया गया हो, अप्रभावी।

निष्प्रयोजन–वि० (सं०) जिससे कोई प्रयोजन न सिद्ध हो, व्यर्थ; बिना किसी मतलबका, निस्वार्थ। अ० वृथा, बिना किसी मतलबके।

निष्प्रवाण, निष्प्रवाणि–पु० (सं०) कोरा कपड़ा।

निष्प्रेही*–वि० दे० 'निस्पृह'।

निष्फल–वि० (सं०) जिसका कुछ फल न हो; जिससे कुछ अर्थ न सिद्ध हो; बेकार; निर्वीर्य; बिना फलका; जिसमें फल न लगें। पु० पयाल।

निष्फला-स्त्री० (सं०) वह अधिक अवस्थावाली स्त्री जिसे रजोधर्म न होता हो, विगतार्तवा स्त्री।

निष्फलि–पु० (सं०) अस्त्रोंको काटनेवाला अस्त्र।

निष्फेन–वि० (सं०) फेनरहित।

निष्यंद–पु० (सं०) दे० 'निस्यंद'।

निसंक*–वि० दे० 'निःशंक'।

निसंग*–वि० दे० 'निस्संग'।

निसँठ-वि० धनहीन, दरिद्र।

निसंस*–वि० दे० 'नृशंस'।

निसँस–वि० दे० 'निसाँसा'।

निसँसना*-अ० क्रि० हाँफना।

निस*–स्त्री० निशा, रात। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–द्योस**-अ० दे० 'निसवासर'। **–वासर**–अ० रात-दिन, सर्वदा। पु० रात और दिन।

निसक*–वि० शक्तिहीन, कमजोर।

निसचर, निसचै*–पु० दे० 'निश्चय'।

निसत*–वि० असत्य, मिथ्या, झूठा।

निसतरना*–अ० क्रि० निस्तार पाना, मुक्ति पाना, छुटकारा पाना, बचना।

निसतार*–पु० दे० 'निस्तार'।

निसतारना*–स० क्रि० उद्धार करना, मुक्त करना।

निसनेहा*–स्त्री० दे० 'निःस्नेहा'।

निसबत–स्त्री० (अ०) लगाव, संबंध, वास्ता; तुलना। अ० संबंधमें।

निसबती–वि० संबंधी, रिश्तेका। **–भाई**–पु० बहनोई।

निसयाना*–वि० जो आपेमें न हो, बेहोश।

निसरना*–अ० क्रि० बाहर आना, निकलना।

निसराना*–स० क्रि० निकालना; निकलवाना।

निसर्ग–पु० (सं०) प्रकृति, स्वभाव; सृष्टि; स्वरूप; देना; दान; मल-त्याग; परित्याग; विनिमय। **–ज**–वि० प्राकृतिक, सहज। **–भिन्न**–वि० स्वभावसे ही भिन्न। **–सिद्ध**–वि० स्वाभाविक, सहज।

निसर्गायु(स्)–स्त्री० (सं०) आयु निकालनेकी एक प्रकारकी गणना (ज्यो०)।

निसवादला*–वि० बिना स्वादका, निःस्वाद।

निसवादिल*–वि० दे० 'निसवादला'।

निसस*–वि० जिसकी श्वासक्रिया बंद हो गयी हो, 'निसाँस'; मूर्च्छित, अचेत।

निसहाय–वि० दे० 'निस्सहाय'।

निसाँक*–वि० दे० 'निःशंक'। अ० बेखटके–'मनो अली चंपक कली, बसि रस लेत निसाँक'–वि०।

निसाँस†–स्त्री० लंबी साँस, निःश्वास। वि० बेहोश, मृत-प्राय।

निसाँसा*–वि० जिसकी श्वास-प्रश्वास-क्रिया बंद हो गयी हो, बेदम, मृतप्राय।

निसा†–पु० दे० 'नशा'। * स्त्री० तृप्ति, संतोष; इच्छा–'निसा ज्यों होइ त्यौंही तोष कीजै'–सुजान०; दे० 'निशा'। **–कर**–पु० दे० 'निशाकर'। **–चर**–पु० दे० 'निशाचर'। **–नाथ,–पति**–पु० दे० 'निशानाथ'। **–भर**–अ० यथेष्ट; भली भाँति।

निसाद*–पु० दे० 'निषाद'; भंगी।

निसान*–पु० दे० 'निशान'; डंका, नगाड़ा।

निसानन*–पु० रजनीमुख, प्रदोष।

निसाना*–पु० दे० 'निशाना'।

निसानी*–स्त्री० दे० 'निशानी'।

निसाफ*–पु० इंसाफ, न्याय।

निसार–पु० (सं०) समुदाय, समूह; (अ०) निछावर; मुगलकालका एक सिक्का जो चार आनेके बराबर होता था; † निकलनेका मार्ग। * वि० सारहीन, निःसार।

निसारना*–स० क्रि० बाहर करना, बाहर लाना, निकालना।

निसारा–पु० (अ०) ईसाई।

निसास*–पु० दे० 'निःश्वास'।

निसासी–वि० दे० 'निसाँसा'।

निसिंधु–पु० (सं०) सिंधुवार, सम्हालूका पेड़।

निसि–स्त्री० एक वृत्त; * रात। **–कर**–पु० दे० 'निशाकर'। **–चर**–पु० दे० 'निशाचर'। **–चारी**-वि० रातमें निकलने या घूमने-फिरनेवाला। पु० राक्षस। **–दिन**–अ० रात-दिन, सर्वदा, हमेशा। **–नाथ,–नाह**–पु० चंद्रमा। **–निसि**–स्त्री० आधी रात, मध्य रात्रि। **–पति,–पाल,–मनि**–पु० चंद्रमा। **–मुख**–पु० दे० 'निशामुख'। **–यर**–पु० चंद्रमा। **–वासर**–अ० रात-दिन, सदा, हर समय।

निसोठी–वि० सारहीन, निस्तत्त्व।

निसीथ*–पु० दे० 'निशीथ'; आधीरात; रात्रि।

निसुंभ*–पु० दे० 'निशुंभ'।

निसु*–स्त्री० रात।

निसुका*–वि० धनहीन, दरिद्र, निस्वक।

निसूदक–वि० (सं०) हिंसा करनेवाला, वध करनेवाला।

निसूदन–पु० (सं०) मारना, वध करना। वि० मारनेवाला, वध करनेवाला।

निसृत–वि० (सं०) विशेष रूपसे निकला या गया हुआ।

निसृता–स्त्री० (सं०) निसोथ।

निसृष्ट–वि० (सं०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, न्यस्त; दिया हुआ, प्रदत्त; बीचमें पड़ा हुआ, मध्यस्थ। पु० एक दिनकी मजदूरी, दैनिक भृति (कौ०)।

निसृष्टार्थ–पु० (सं०) तीन प्रकारके दूतोंमेंसे वह दूत जो उभय पक्षकी बातोंको समझकर स्वयं उत्तर दे ले और कार्य निष्पपन्न कर ले; धनके आय-व्यय तथा कृषि और वाणिज्यकी निगरानीके लिए नियुक्त किया जानेवाला कर्मचारी; स्वामीके कार्यको लगनसे करने तथा अपने पौरुषको प्रकट करनेवाला धीर और दृढ़मति पुरुष। **–दूतिका,–दूती**–स्त्री० वह दूती जो नायक और नायिकाके मनोरथको समझकर अपनी बुद्धिसे कार्य सिद्ध करे।

निसेनी, निसैनी*–स्त्री० सीढ़ी, सोपान।

निसेष*–वि० दे० 'निःशेष'।

निसेस*–पु० निशेश, चंद्रमा।

निसोग*–वि० निःशोक; निश्चित, बेफिक्र।

निसोच*–वि० निश्चित, बेफिक्र।

निसोत*–वि० शुद्ध, खालिस–'रीझत रामसनेह निसोते'–रामा०। † स्त्री० दे० 'निसोथ'।

निसोथ–स्त्री० एक लता जिसकी जड़ और डंठल दवाके काम आते हैं।

निसोधु*–स्त्री० सुध, खबर; संवाद, संदेश।

निस्–उप० (सं०) इसका प्रयोग वियोग (निःसंग), अत्यय (निर्मेध), आदेश (निर्देश), अतिक्रम (निष्क्रांत), भोग (निर्वेश), निश्चय (निश्चित), निषेध (निर्मक्षिक) और साफल्य (निर्गत)का द्योतन करनेके लिए होता है। (संधिके नियमोंके अनुसार 'निस्'का 'स्' विसर्ग, 'र्' 'श्' और 'ष्'में बदल जाता है।)

निस्केवल*–वि० बिना मिलावटका, निरा, विशुद्ध, निष्केवल।

निस्तंतु–वि० (सं०) तंतुरहित; जिसे कोई संतति न हो, संतानहीन।

निस्तंद्र, निस्तंद्रि–वि० (सं०) तंद्रारहित, जागरूक; आलस्यरहित।

निस्तत्त्व–वि० (सं०) जिसमें कुछ तत्त्व न हो, सारहीन।

निस्तनी–स्त्री० (सं०) औषधकी वटिका, गोली।

निस्तब्ध–वि० (सं०) विशेष रूपसे स्तब्ध; निश्चेष्ट।

निस्तमस्क–वि० (सं०) अंधकाररहित; जो अँधेरा न हो।

निस्तर*–पु० दे० 'निस्तार'।

निस्तरण–पु० (सं०) पार जाना; निस्तार, उद्धार; उपाय।

निस्तरना*–अ० क्रि० निस्तार पाना, छुटकारा पाना, पार पाना, उबरना। स० क्रि० पार उतारना, उबारना।

निस्तर्क्य–वि० (सं०) दे० 'अतर्क्य'।

निस्तर्हण–पु० (सं०) मारण, वध।

निस्तल–वि० (सं०) तलरहित, अतल; चंचल, चल; गोला।

निस्तला–स्त्री० (सं०) वटिका, गोली।

निस्तार–पु० (सं०) पार जाना; पार पाना; छुटकारा, मुक्ति, उद्धार; अभीष्टकी प्राप्ति; * सुविधा, निर्वाह, काम–'यज्ञशालाएँ कुटीरें साधुजन निस्तारकी'–पूर्ण कवि; † पेशाबके लिए या शौचके लिए जाना–'दिन चढ़े निस्तारके उपरान्त दोनों दालानमें आ बैठें'–मृग०। **–बीज**–पु० भवबंधनसे मुक्त करनेवाले कार्य या उपाय।

निस्तारक–वि०, पु० (सं०) निस्तार करनेवाला; मुक्त करनेवाला, छुटकारा दिलानेवाला। (स्त्री० 'निस्तारिका'।)

निस्तारण–पु० (सं०) पार करना; मुक्त करना, उद्धार करना; विजय पाना, जीतना; (डिसपोजल) काम पूरा करने या निपटानेकी क्रिया।

निस्तारन*–वि० जो निस्तार करे; जो उद्धार करे। पु० दे० 'निस्तारण'।

निस्तारना*–स० क्रि० पार करना; मुक्त करना; बचाना, उद्धार करना।

निस्तारा*–पु० दे० 'निस्तार'।

निस्तिमिर–वि० (सं०) दे० 'निस्तमस्क'।

निस्तीर्ण–वि० (सं०) जो पार जा चुका हो; जिसका उद्धार हो गया हो, जो मुक्त हो गया हो, जिसे छुटकारा मिल गया हो।

निस्तुष–वि० (सं०) तुषरहित, जिसकी भूसी अलग कर दी गयी हो; विशुद्ध, निर्मल। **–क्षीर**-पु० गेहूँ। **–रत्न**–पु० स्फटिक मणि।

निस्तुषित–वि० (सं०) जिसका छिलका अलग कर दिया गया हो, छीला हुआ; त्यागा हुआ, त्यक्त; पतला बनाया हुआ; छोटा किया हुआ।

निस्तेज–वि० दे० 'निस्तेजा'।

निस्तेजा(जस्)–वि० (सं०) तेजोहीन, जिसमें तेजका अभाव हो;

कांतिहीन, निष्प्रभ।

निस्तैल–वि० (सं०) बिना तेलका, जिसमें तेल न हो।

निस्तोद–पु० (सं०) चुभनेकी-सी तीव्र व्यथा, बहुत अधिक व्यथा; डंक मारना।

निस्त्रप–वि० (सं०) दे० 'निर्लज्ज'।

निस्त्रिंश–वि० (सं०) निर्दय, निष्ठुर। पु० खड्ग; एक प्रकारका मंत्र (तं०)। **–पत्रिका**–स्त्री० थूहर। **–भृत्**–पु० खड्गधारी।

निस्त्रुटी–स्त्री० (सं०) इलायची।

निस्त्रैगुण्य–वि० (सं०) जो सत्त्व, रज और तम–इन तीनों गुणोंसे परे हो, त्रिगुणातीत। पु० त्रिगुणोंसे रहित होनेकी अवस्था।

निस्पंद-वि० (सं०) स्पंदरहित, जिसमें कोई हरकत न हो। पु० स्पंदन।

निस्पृह–वि० (सं०) निर्लोभ, इच्छारहित, वासनारहित।

निस्पृहा–स्त्री० (सं०) अग्निशिखा नामक वृक्ष।

निस्प्रेही*-वि० दे० 'निस्पृह'।

निस्फ़–वि० (फ़ा०) आधा। **–(स्फ़ा) निस्फ़**–अ० आधे-आध। **–(स्फ़ी) बँटाई**-स्त्री० वह बँटाई जिसमें आधी उपज जमींदार ले और आधी असामी, अधिया।

निस्फल* -वि० दे० 'निष्फल'; अंडकोश-हीन।

निस्वत–स्त्री०, अ० दे० 'निसवत'।

निस्यंद-पु० (सं०) क्षरण, चूना, रिसना; परिणाम; जाहिर करना।

निस्यंदी (दिन्)–वि० (सं०) बहनेवाला, रिसनेवाला।

निस्याँना*–अ० क्रि० निश्चित होना–'अनंगके रंग निस्यौ करि' –घन०।

निस्रव, निस्रवा–पु० (सं०) भातका माँड़; चूना, बहना, अपक्षरण।

निस्व–वि० दे० 'निस्स्व'।

निस्वन, निस्वान–पु० (सं०) शब्द, आवाज; वाणीकी सरसराहट।

निस्संकोच–वि० (सं०) संकोचरहित। अ० बिना संकोचके, संकोचरहित होकर।

निस्संग–वि० (सं०) संगरहित, विषयानुरागशून्य; एकाकी; निर्लिप्त; निष्काम।

निस्संतान–वि० (सं०) जिसे कोई संतान न हो, संतानहीन।

निस्संदेह–वि० (सं०) जिसमें किसी प्रकारका संदेह न हो, संदेहरहित, असंदिग्ध। अ० बिना किसी संदेहके, बेशक।

निस्सत्त्व–वि० (सं०) सत्त्वरहित, असार; शक्तिहीन, कमजोर; तुच्छ; प्राणियोंसे रहित।

निस्सरण-पु० (सं०) निकलनेकी क्रिया; निकलनेका मार्ग।

निस्सहाय–वि० (सं०) सहायरहित।

निस्सार–वि० (सं०) असार, जिसमें कोई तत्त्व न हो।

निस्सीम–वि० (सं०) जिसकी सीमा न हो, अपार।

निस्स्नेह–वि० (सं०) स्नेहरहित। पु० एक प्रकारका मंत्र (तं०)। **–फला**–स्त्री० सफेद भटकटैया।

निस्स्पंद–वि० (सं०) दे० 'निस्पंद'।

निस्स्पृह–वि० (सं०) दे० 'निस्पृह'।

निस्स्व, निस्स्वक–वि० (सं०) दरिद्र, धनहीन।

निस्स्वादु–वि० (सं०) स्वादरहित, बिना स्वादका, अस्वादिष्ठ, बदमजा।

निस्स्वार्थ–वि० (सं०) बिना स्वार्थका, स्वार्थरहित, जिसमें स्वार्थकी भावना न हो।

निहंग–वि० निःसंग, एकाकी; (वह साधु) जिसने विवाह न किया हो, जो स्त्री आदिसे संबंध न रखे; नंगा; निर्लज्ज। पु० वैष्णव साधुओंका एक वर्ग; वह साधु जो किसीसे कुछ मतलब न रखे और एकदम अकेले रहे। **–लाड़ला**–वि० जो अधिक लाड़-प्यारके कारण बिगड़ गया हो।

निहंगम–वि० दे० 'निहंग'।

निहंता (तृ)–वि० (सं०) हनन करनेवाला, मारनेवाला; नाशक; प्राण हर लेनेवाला।

निह*–उप० 'निस' का एक विकृत रूप।

निहकर्मा, निहकर्मी*–वि० दे० 'निष्कर्मा'।

निहकलंक*–वि० दे० 'निष्कलंक'।

निहकाम, निहकामी*–वि० दे० 'निष्काम'।

निहचय, निहचै* -पु० दे० 'निश्चय'।

निहचल*-वि० दे० 'निश्चल'।

निहचिंत*–वि० दे० 'निश्चिंत'।

निहठा† -पु० वह लकड़ी जिसपर रखकर बढ़ई कोई चीज गढ़ते हैं, ठीहा। * स्त्री० दे० 'निष्टा'।

निहत–वि० (सं०) मारा हुआ; नष्ट किया हुआ; जड़ा हुआ; संलग्न।

निहतार्थ–पु० (सं०) साहित्यमें एक दोष-किसी द्व्यर्थक शब्दको उसके अप्रसिद्ध अर्थमें प्रयुक्त करना।

निहत्था–वि० जिसके हाथमें कोई हथियार न हो, बिना हथियारका, निःशस्त्र, निरस्त्र।

निहनन–पु० (सं०) वध, मारण।

निहनना*–स० क्रि० मारना, वध करना।

निहपाप*–वि० दे० 'निष्पाप'।

निहफल*–वि० दे० 'निष्फल'।

निहल–पु० गंगबरार।

निहव–पु० (सं०) आह्वान, बुलाना।

निहाई–स्त्री० एक विशेष आकारका लोहेका ठोस टुकड़ा जिसपर लोहा आदि धातुओंको रखकर पीटते हैं। **–की थाली**–निहाईपर रखकर नकाशी गयी थाली।

निहाउ*–पु० दे० 'निहाई'।

निहाका–स्त्री० (सं०) जल-गोधिका; तूफान।

निहानी–स्त्री० खुदाईका महीन काम करनेकी एक तरहकी रुखानी; ठप्पेकी लकीरोंके भीतरका जमा हुआ रंग खुरचनेका एक आला।

निहाय, निहाव*–पु० दे० 'निहाई'।

निहायत–अ० (अ०) अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

निहार*–वि० निहाल, लट्टू। पु० (सं०) कुहरा; पाला; ओस। **–जल**–पु० ओस।

निहारना*–स० क्रि० गौरसे देखना, निरखना।

निहारिका-स्त्री० (सं०) दे० 'नीहारिका'।

निहारुआ†–पु० दे० 'नारू'।

निहाल–वि० हर तरहसे तृप्त, जिसके सभी मनोरथ सिद्ध हो चुके हों, सफल मनोरथ; प्रसन्न। पु० (फ़ा०) पौधा; छोटा पौधा; तोशक, गद्दा। **–चा**–पु० बच्चोंको सुलानेकी छोटी गद्दी। **–लोचन**–पु० वह घोड़ा जिसका आधा अयाल गरदनकी दाहिनी ओर हो और आधा बायीं ओर।

निहालना* -स० क्रि० निहारना, देखना (बीसल०)।

निहाली–स्त्री० (फ़ा०) तोशक, गद्दा; रजाई–'जैसे नर शीतकाल सोचत निहाली ओढ़'–सुंदर; निहाई।

निहिंसन–पु० (सं०) मार डालना, वध करना।

निहि–उप० 'निस्'का एक विकृत रूप।

निहिचय*–पु० दे० 'निश्चय'।

निहिचिंत*–वि० दे० 'निश्चिंत'।

निहित–वि० (सं०) रखा हुआ, धरा हुआ, स्थापित; सौंपा हुआ; गंभीर स्वरमें उच्चरित। **–स्वार्थ**–पु० (वेस्टेड इंटरेस्ट) व्यापार-व्यवसाय, भूमि आदिमें रुपया लगाकर प्राप्त किया गया स्थिर स्वार्थ।

निहीन–वि० (सं०) अधम, नीच। पु० नीच आदमी।

निहुँकना†–अ० क्रि० झुकना।

निहुड़ना†–अ० क्रि० दे० 'निहुरना'।

निहुड़ाना†–स० क्रि० दे० 'निहुराना'।

निहुरना*–अ० क्रि० झुकना, नत होना।

निहुराई*-स्त्री० दे० 'निठुराई'।

निहुराना†–स० क्रि० झुकाना, नत करना।

निहोर*–पु० दे० 'निहोरा'।

निहोरना*–स० क्रि० निहोरा करना, प्रार्थना करना; आराधना करना, मनाना; आभार स्वीकार करना।

निहोरा*–पु० प्रार्थना, निवेदन; कृपा, उपकार, एहसान; अवलंब,

आसरा ।

निहोरे*-अ० कारणसे, वजहसे; वास्ते ।

निह्नव–पु० (सं०) इनकार; वस्तुस्थितिको छिपाना, अपलाप; दुराव; शठता; वहाना; अविश्वास; प्रायश्चित्त । **–वादी (दिन)** –पु० वह जो टालमटोलवाला उत्तर दे ।

निह्नवन-पु० (सं०) इनकार; वहाना ।

निह्नवोत्तर–पु० (सं०) टालमटोलवाला उत्तर ।

निह्नुत–वि० (सं०) छिपाया हुआ, गोपित ।

निह्नुति–वि० (सं०) छिपानेकी क्रिया, गोपन ।

निह्राद–पु० (सं०) स्वर, आवाज ।

नीँद–स्त्री० निद्रा ।

नीँदड़ी*–स्त्री० निद्रा ।

नीँदना*–स० क्रि० निंदा करना; निराना ।

नीँदर, नीँदरी*–स्त्री० निद्रा, नींद ।

नीँबा†–स्त्री० नीम ।

नीँव–स्त्री० दे० 'नीवँ' ।

नीअर†–अ० निकट ।

नीक–पु० (सं०) एक वृक्ष; * भलाई, अच्छापन । * वि० उत्तम, अच्छा, भला । मु० **–लगना**–अच्छा लगना, प्रिय लगना; रुचना; फबना, सुहाना ।

नीका*–वि० दे० 'नीक' । मु० **–लगना**–दे० 'नीक लगना' ।

नीकार–पु० (सं०) दे० 'निकार' ।

नीकाश–वि० (सं०) सदृश, समान, तुल्य ।

नीके*–अ० अच्छी तरह, भली भाँति; सकुशल ।

नीगने*–वि० अगणित, वेशुमार–'मृगराज ज्यों वनराजमें गजराज मारत नीगने'-'रामचंद्रिका ।

नीग्रो–पु० हब्शी ।

नीच–वि० (सं०) (उच्चका उलटा) जो जाति, गुण, कर्म आदिमें घटकर हो, अधम, निकृष्ट; खल, दुष्ट, खोटा; वौना । पु० नीच मनुष्य; चोर नामका गंधद्रव्य; कुंडलीमें किसी ग्रहका अपने उच्च स्थानसे सातवाँ स्थान (ज्यो०) । **–ऊँच**–वि० (हिं०) छोटा-बड़ा; छोटे या बड़े कुलका; भला-बुरा, उचित-अनुचित । पु० सुफल-कुफल, भला या बुरा परिणाम, लाभालाभ; सुखःदुःख । **–कदंब**–पु० मुंडी । **–कमाई**–स्त्री० (हिं०) बुरा पेशा; बुरे व्यवसायसे उपार्जित धन । **–ग**–वि० नीचेकी ओर आनेवाला, निम्नगामी; खोटा, ओछा; (वह ग्रह) जो अपने उच्च स्थानसे सातवें स्थानमें पड़ा हो (ज्यो०) । (स्त्री० 'नीचगा' ।) पु० जल । **–गा**–स्त्री० नदी; नीच कुलवालेके साथ व्यभिचार करनेवाली स्त्री । **–गामी (मिन्)**–वि० दे० 'नीचग' । (स्त्री० 'नीचगामिनी' ।)**–गृह**–पु० कुंडलीमें किसी ग्रहका अपने उच्च स्थानसे सातवाँ स्थान (ज्यो०) । **–भोज्य**-पु० प्याज । **–योनि** –वि० नीच जाति या कुलका । **–वज्र**–पु० वैक्रांत मणि । **–स्थान**–पु० दे० 'नीचगृह' ।

नीचक–वि० (सं०) कमीना; ठिंगना; मंद ।

नीचका, नीचिका–स्त्री० (सं०) बढ़िया गाय ।

नीचकी (किन्)–वि० (सं०) उच्च, ऊँचा । पु० किसी वस्तुका सिरा; वैलका सिर; अच्छी गाय रखनेवाला ।

नीचट†–वि० पक्का, दृढ़, मजबूत ।

नीचता–स्त्री०, **नीचत्व**–पु० (सं०) नीच होनेका भाव, ओछापन, खोटाई ।

नीचा–वि० जिसकी सतह ऊँचाईमें आसपासकी सतहसे घटकर हो, जो ऊँचा न हो, निम्न, कम ऊँचाईवाला, जो काफी ऊँचा न हो; नीचेकी ओर लटका हुआ, जो जमीनके अधिक समीप आ गया हो; जो ऊँचाईपर न हो, झुका हुआ; जिसमें तीव्रता न हो, मंद, धीमा; जो ऊँचे दर्जेका न हो, जो जाति, गुण, कर्म आदिकी दृष्टिसे न्यून हो (ऊँचाका उलटा) । (स्त्री० 'नीची' ।) **–ऊँचा**–वि० दे० 'नीच ऊँच' । **–(ची) दृष्टि,–निगाह**–स्त्री० लज्जासे झुकी हुई दृष्टि । मु० **–खाना**–अपमानित होना; पराजित होना, शिकस्त खाना; लज्जित होना । **–दिखाना**–अपमानित करना; पराजित करना, शिकस्त देना; घमंड दूर करना, शेखी उतारना; लजवाना । **–देखना**–दे० 'नीचा खाना' । **–(ची) दृष्टि या निगाहसे देखना** –घृणित या तुच्छ समझना, छोटा समझना ।

नीचाशय–वि० (सं०) तुच्छ विचारवाला ।

नीचू†–वि० जो चूता न हो; दे० 'नीचा' ।

नीचे–अ० नीचेकी तरफ, अधोभागमें, तलमें; घटकर; अधीनतामें । **–ऊपर**-अ० ऐसे क्रमसे जिसमें एक दूसरेके ऊपर हो; ऐसी दशामें जिसमें नीचेका ऊपर और ऊपरका नीचे हो, व्यतिक्रांत रूपमें । मु० **–गिरना**–पतन होना, अधोगतिको प्राप्त होना; पछाड़ा जाना । **–गिराना**-पतित वनाना, अधोगतिको प्राप्त कराना; कुश्तीमें पछाड़ना, पटकना । **–लाना**–कुश्तीमें पटकना । **–से ऊपरतक**–सिरसे पाँवतक; सभी अंगों या भागोंमें; एक सिरेसे दूसरे सिरेतक ।

नीजन*–वि० दे० 'निर्जन' । पु० एकांत स्थान ।

नीझर*–पु० दे० 'निर्झर' ।

नीठ*-अ० दे० 'नीठि' । वि० दे० 'नीठा' ।

नीठा*–वि० जो अच्छा न लगे, अप्रिय, अरुचिकर ।

नीठि–स्त्री० अरुचि । अ० किसी तरह, कठिनाईसे । **–नीठि करके** –किसी-किसी तरह, कठिनाईसे ।

नीड–पु० (सं०) रहने या ठहरनेकी जगह, आश्रय; घोंसला; माँद; रथका एक अंग; किसी सवारीमें बैठनेकी जगह; पलंग । **–ज**–पु० पक्षी ।

नीडक-पु० (सं०) पक्षी; घोंसला ।

नीडोद्भव–पु० (सं०) पक्षी, चिड़िया ।

नीत–वि० (सं०) ले जाया, पहुँचाया हुआ; विताया हुआ; ग्रहण किया हुआ; प्राप्त । पु० धन, संपत्ति; गल्ला ।

नीति–स्त्री० (सं०) ले जानेकी क्रिया; व्यवहारका ढंग, वर्तावका तरीका; वह आधारभूत सिद्धांत जिसके अनुसार कोई कार्य संचालित किया जाय; लोकव्यवहारके निर्वाहके लिए नियत किया गया आचार; लोकाचारकी वह पद्धति जिससे अपना कल्याण हो और दूसरेको हानि न पहुँचे; किसी राज्य, राष्ट्र, संस्था या सरकार द्वारा अपने कार्यके संचालनके लिए नियत की गयी कार्य-पद्धति; कार्यविशेषकी सिद्धिके लिए काममें लायी जानेवाली युक्ति, (पालिसी) चतुराईभरी चाल; राजनीति; औचित्य; योजना; प्राप्ति; भेंट देना; संवंध, सहारा । **–कुशल**–वि० दे० 'नीतिज्ञ' । **–घोष**–पु० वृहस्पतिका रथ । **–घोषणा**–स्त्री० (मैनिफेस्टो) किसी दलके नेता या राज्यके प्रधान शासक आदि द्वारा अपनी नीति या लक्ष्य आदिके संवंधमें लिखित रूपमें की गयी सार्वजनिक घोषणा, लोक-घोषणा । **-ज्ञ,–निपुण,–निष्ण**–वि० नीति जाननेवाला । **–वीज**–पु० दुरभिसंधिका आरंभ या मूल । **-वाद**–पु० नीतिपर बल देने, नीतिको प्रधानता देनेका सिद्धान्त । **–वादी**–पु० नीतिवादका अनुयायी; नीतिशास्त्रका अनुसरण करनेवाला । **–विज्ञान** –पु० दे० 'नीतिशास्त्र' । **–विद्**-वि० दे० 'नीतिज्ञ' । **–विद्या**–स्त्री० राजनीतिशास्त्र; कर्तव्यशास्त्र । **–शास्त्र**–पु० राजनीतिसंवंधी शास्त्र; वह शास्त्र जिसमें आचार-संवंधी नियमोंका विधान हो ।

नीतिमान् (मत्)–वि० (सं०) नीतिके अनुसार आचरण करनेवाला; राजनीतिमें दक्ष; चतुर, बुद्धिमान्; सदाचारी ।

नीदना*–स० क्रि० निंदा करना ।

नीधना*–वि० निर्धन, दरिद्र ।

नीध्र–पु० (सं०) ओलती; वन; चंद्रमा; पहियेका घेरा; रेवती नक्षत्र ।

नीप–पु० (सं०) कदमका पेड़ या फूल; वंधूक वृक्ष; नील अशोक; एक प्राचीन देश; पर्वतका निम्नभाग । वि० निम्नभागमें स्थित ।

नीपजना*–अ० क्रि० उत्पन्न होना; बढ़ना, उन्नति करना ।

नीपना*-स० क्रि० लीपना ।

नीवर†–वि० दे० 'निर्वल' ।

नीवी–स्त्री० दे० 'नीवी' ।

नीबू–पु० खट्टे रसवाला एक प्रसिद्ध फल; इसका पेड़ । **–निचोड़**–वि० थोड़ा देकर बहुत लेनेवाला । पु० नीबूको दबाकर रस निकालनेका यंत्र । मु० **–नमक चाटना**–ठेंगा दिखाना, कुछ भी न देना, निराश करना, कोरा जवाब देना । **–नमक चाटना**-निराश

होना, प्रायः कुछ भी न पाना।

नीम–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सब अंग कड़वे होते हैं। मु० **–की टहनी हिलाना**–उपदंशसे पीड़ित होकर बैठना।

नीम–वि० (फा०) आधा। **–आस्तीन**–स्त्री० आधी बाँहकी कुर्ती। **–चा**–पु० छोटी तलवार, खाँड़ा। **–जाँ**-वि० अधमरा। **–टर**–वि० कम पढ़ा-लिखा, अर्धशिक्षित। **–पुख़्त,–पुख़्ता**–वि० आधा पका हुआ, अर्धपक्व। **–रज़ा,–राज़ी**–वि० आधा रजामंद। **–शब**–स्त्री० आधी रात। **–हकीम**–पु० अधकचरा हकीम, आयुर्विज्ञानकी बहुत कम जानकारी रखनेवाला चिकित्सक। मु०–**हकीम खतरे जान**–अधकचरे वैद्यकी दवा करनेमें जान जानेका डर रहता है।

नीमगिर्दा–पु० (फा०) बढ़इयोंका एक औजार।

नीमन|–वि० उम्दा, बढ़िया; स्वस्थ, नीरोग; जो खराब न हुआ हो, ठीक, काम देने लायक।

नीमबर–पु० (फा०) कुश्तीका एक पेंच।

नीमर|–वि० निर्बल, अशक्त, क्षीण।

नीमषारण्य, नीमषारन|–पु० दे० 'नैमिषारण्य'।

नीमस्तीन, नीमास्तीन-स्त्री० दे० 'नीम-आस्तीन'।

नीमा–पु० (फा०) जामेके नीचे पहननेका एक पहनावा।

नीमावत–पु० निंबार्क संप्रदाय।

नीयत–स्त्री० (अ०) इरादा, इच्छा, मंशा। मु० **–डिगना, –बद होना,–बिगड़ना,–बुरी होना**–विचार दूषित होना, मनमें बुरी बात पैदा होना, मनमें बेईमानीकी बात आना।

नीर–पु० (सं०) जल, पानी; फफोले आदिके अंदरका पानी; रस; नीमके पेड़से निकलनेवाला रस। **–क्षीर-विवेक**–पु० दूधका दूध, पानीका पानी अलग करनेकी सामर्थ्य; भले-बुरे, न्याय-अन्यायमें ठीक-ठीक भेद करनेकी शक्ति या ज्ञान (हंसमें यह शक्ति मानी गयी है)। **–ज**–वि० जलीय, जलसे उत्पन्न होनेवाला। पु० ऊदबिलाव; उशीर; कमल; मोती; कुट। **–द,–धर**–पु० बादल। **–धि,–निधि**–पु० समुद्र। **–पति**–पु० वरुण। **–प्रिय**–वि० जिसे जल प्रिय हो। पु० जलबेंत। **–रुह**–पु० कमल।

नीरज–वि० (सं०) दे० 'नीरजा'। पु० शिव।

नीरजा(जस्)–वि० (सं०) धूलिरहित। पु० शिव। वि० स्त्री० अरजस्वला।

नीरत–वि० (सं०) विरत।

नीरद–वि० (सं०) बिना दाँतका, जिसे दाँत न हों। पु० बाहर निकला हुआ दाँत; दे० 'नीर'में।

नीरना*–स० क्रि० बिखेरना; जल छिड़कना।

नीरव–वि० (सं०) शब्दरहित, जिसमें ध्वनि न हो; जो शब्द न करे।

नीरस–वि० (सं०) रसहीन; सूखा; शुष्क स्वभावका (व्यक्ति); आनंदरहित; बेस्वादका। पु० अनार, दाडिम।

नीरा–स्त्री० ताड़के वृक्षका रस जो स्वादिष्ठ और पुष्टिकारक होता है।

नीराज–पु० (सं०) ऊदबिलाव।

नीराजन–पु० (सं०) देवताको दीप आदि दिखानेकी पूजन-विधि, आरती; विजययात्राके पहले हथियारोंकी सफाई करनेका राजाओंका एक कृत्य जो आश्विन मासमें हुआ करता था।

नीराजना–स्त्री० (सं०) दे० 'नीराजन'। * स० क्रि० आरती करना; हथियारोंकी सफाई करना।

नीराज्यिक भूमि–स्त्री० (नोमैन्स लैंड) दो देशोंकी सीमाओंके बीचमें पड़नेवाली वह भूमि जो दोमेंसे किसीके भी अधिकारमें न हो; दे० 'निःस्वामिक भूमि'।

नीरिंदु–पु० (सं०) सिहोरका पेड़।

नीरुक्(ज्), नीरोग–वि० (सं०) रोगरहित, स्वस्थ।

नीरुज–पु० (सं०) कुष्ठौषधि, कुट। वि० रोगरहित।

नीरे*–अ० दे० 'नियर', निकट।

नीरेणुक–वि० (सं०) धूलिरहित।

नीलंगु–पु० (सं०) कीड़ा; एक तरहका छोटा कीड़ा; एक तरहकी मक्खी; गीदड़; भँवरा; फूल।

नील–वि० (सं०) नीले रंगका, आसमानके रंगका; सौ खरब। पु० नीला रंग; एक तरहका पौधा जिससे नीला रंग तैयार किया जाता है; एक पर्वत; रामकी सेनाका एक वानर जिसने नलके साथ समुद्रमें पुल बाँधा था; कुबेरकी एक निधि; कलंक; बड़का पेड़; इंद्रनील मणि; यमराजका एक विग्रह; एक तरहका पक्षी, मैना; काले-नीले रंगका बैल; काच-लवण; तूतिया; सुरमा; एक विष; तालीस-पत्र; चिह्न; नृत्यके १०८ करणोंमेंसे एक; एक मात्रिक वृत्त; एक दिग्गज; सौ खरबकी संख्या, १,००,००,००,००,००,०००। **–कंठ**–वि० जिसका गला नीले रंगका हो, नीले कंठवाला। (स्त्री० 'नीलकंठी'।) पु० मोर; शिव; नीले कंठ और डैनोंवाला एक पक्षी जिसका विजयादशमीके दिन दर्शन करते हैं; गौरी नामका पक्षी; खंजन; गौरैया; भ्रमर; मूली; राक्षसोंका एक भेद। **–कंद**–पु० भैंसा कंद; विषकंद। **–कमल**–पु० नीले रंगका कमल। **–कांत**–पु० एक पहाड़ी पक्षी; विष्णु; नीलम मणि। **–कुंतला**–स्त्री० दुर्गाकी एक सखी। **–कुरंटक**–पु० नील झिंटी। **–केशी**–स्त्री० नीलका पौधा। **–क्रांता**–स्त्री० कृष्णापराजिता। **–क्रौंच**–पु० काला बगला। **–गंगा**–स्त्री० एक नदी। **–गाय**–स्त्री० (हिं०) एक बनैला जानवर जिसकी शक्ल गाय जैसी होती है, रोझ। **–गिरि**–पु० दक्षिणका एक पर्वत। **–ग्रीव**–पु० शिव। **–चक्र**–पु० एक चक्र जिसकी स्थिति जगन्नाथके मंदिरके शिखरपर मानी जाती है; दंडक वृत्तका एक भेद। **–चर्म(न्)**पु० नीले रंगका चमड़ा। **–चर्मा(र्मन्)**–वि० जिसका चमड़ा नीले रंगका हो। **–च्छद**–पु० गरुड़; खजूरका पेड़। –पु० एक तरहका लोहा, वर्मलौह। **–जा**–स्त्री० वितस्ता (झेलम) नदी। **–झिंटी**–स्त्री० नीली कटसरैया। **–तरु**–पु० नारियलका पेड़। **–ताल**–पु० हिंताल; तमाल वृक्ष। **–द्रुम**–पु० असन वृक्ष। **–ध्वज**–पु० तमाल वृक्ष; एक राजा। **–निर्गुंडी**–स्त्री० नीला सिंदुवार। **–निर्यासक**–पु० पियासालका पेड़। **–निलय**–पु० आकाश। **–पंक**–पु० अंधकार, अँधेरा। **–पटल**–पु० घना काला आवरण; अंधेकी आँखमेंकी काली झिल्ली। **–पत्र**–पु० अनार; नील कमल। **–पत्रिका,–पत्री**–स्त्री० नील। **–पद्म**–पु० दे० 'नील-कमल'। **–पर्ण**–पु० वृंदार वृक्ष। **–पिच्छ**–पु० बाज। **–पुष्प**–पु० नीला भँगरा। **–पुष्पा,–पुष्पिका**–स्त्री० अलसी, तीसी; नीलका पौधा। **–फला**–स्त्री० जामुन। **–बरी**–स्त्री० (हिं०) कच्चे नीलकी बट्टी। **–बिरई**–स्त्री० (हिं०) सनायका पौधा। **–बीज**–पु० दे० 'नीलबीज'। **–भ**-पु० चंद्रमा; बादल; भ्रमर। **–मणि**–पु० नीलम। **–मल्लिका**–स्त्री० बेल। **–माष**–पु० काला उड़द। **–मीलिका**–स्त्री० जुगनू। **–मृत्तिका**–स्त्री० काली मिट्टी। **–मोर**–पु० (हिं०) हिमालयपर पाया जानेवाला कुरही नामका पक्षी। **–रत्न**–पु० नीलम। **–राजि**–स्त्री० घना अंधकार। **–लोह**–पु० दे० 'वर्त्तलोह'। **–लोहित**–वि० ललाई लिये नीला; बैंगनी। पु० शिव। **–लोहिता**–स्त्री० जामुनकी एक जाति; पार्वती। **–वर्ण**–वि० नीले रंगका। पु० मूली। **–वर्षाभू**-स्त्री० नील पुनर्नवा। **–वल्ली**-स्त्री० परगाछा। **–वसन**–वि० जो नीले रंगका वस्त्र पहनता हो या पहने हो। पु० नीले रंगका वस्त्र; बलराम; शनैश्चर। **–वासा(सस्)**–वि० दे० 'नीलवसन'। पु० शनिग्रह। **–वीज**–पु० पियासाल। **–वृंतक**–पु० रुई। **–वृष**–पु० एक प्रकारका वृष (साँड़) जिसका उत्सर्ग प्रशस्त माना जाता है (इसके मुँह, सिर, पूँछ और खुरका रंग श्वेत होता है और शेष शरीरका लाल)। **–वृषा**–स्त्री० बैंगन। **–शिखंड**–पु० रुद्रका एक भेद। **–शिग्रु**–पु० सहजनका पेड़। **–संध्या**–स्त्री० कृष्णापराजिता। **–सार**–पु० तेंदूका पेड़। **–सिंदुवार**–पु० काले रंगका सिंदुवार। **–सिर**–पु० (हिं०) नीले सिरवाली एक प्रकारकी बतख। **–स्वरूप,–स्वरूपक**–पु० एक वर्णवृत्त।

नीलकंठाक्ष–पु० (सं०) रुद्राक्ष।

नीलकंठाक्षी–वि० स्त्री० (सं०) खंजनकी-सी आँखोंवाली।

नीलक–पु० (सं०) भ्रमर, भँवरा; काच-लवण; वर्त्तलोह; काले रंगका घोड़ा; तीसरी अज्ञात राशि (ग०)।

नीलकाँटा–पु० एक झाड़।

नीलम–पु० (फा०) नीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, इंद्रनील; एक तरहका आम। स्त्री० पुरानी चालकी एक तलवार।

नीलांग–वि० (सं०) जिसके अंग नीले रंगके हों। पु० सारस।

नीलांगु–पु० (सं०) दे० 'नीलंगु'।

नीलांजन–पु० (सं०) तूतिया; नीला सुरमा।

नीलांजना–स्त्री० (सं०) विजली।

नीलांजनी–स्त्री० (सं०) एक क्षुप, कालांजनी।

नीलांजसा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा; एक नदी; बिजली।

नीलांबर–वि० (सं०) जिसका वस्त्र नीला हो, जो नीले रंगका वस्त्र धारण करता हो या पहने हो। पु० नीला कपड़ा; तालीस पत्र; वलराम; शनि ग्रह; राक्षस।

नीलांबरी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

नीलांबुज, नीलांबुजन्म(न्)–पु० (सं०) नील कमल।

नीला–स्त्री० (सं०) कालीकी एक शक्ति (कालीकवच); नीलका पौधा; एक रागिनी; नीली पुनर्नवा; एक तरहकी काली मक्खी। वि० (हिं०) नीलके-से रंगका, आसमानी रंगका। पु० नीलम; एक तरहका कवूतर। **–थोथा**–पु० (हिं०) तूतिया। **–पन,–हट**–पु० (हिं०) नीला होनेका भाव, नीलवर्णता। **मु० –करना**–इतना मारना कि शरीरपर काले दाग पड़ जायँ, वहुत अधिक मारना। **–पड़ना**–मारके दाग पड़ना। **–पीला होना**–क्रोध करना।

नीलाक्ष–वि० (सं०) नीली आँखोंवाला। पु० राजहंस।

नीलाचल–पु० (सं०) नील गिरि।

नीलाम–पु० विक्रीकी एक रीति जिसमें सवसे अधिक दाम वोलनेवालेके हाथ माल वेचा जाता है; वोली वोलकर वेंचना। **–घर**–पु० वह घर या जगह जहाँ वस्तुएँ नीलाम की जायँ। **मु० –पर चढ़ना**–नीलाम किया जाना।

नीलामी–वि० नीलाममें खरीदा हुआ; जो नीलाम किया जाय।

नीलाम्ला–स्त्री० (सं०) दे० 'नीलझिंटी'।

नीलाम्लान–पु० (सं०) एक पुष्प।

नीलाम्ली–स्त्री० (सं०) दीर्घशाखिका नामक क्षुप।

नीलारुण–पु० (सं०) ऊषा, प्रत्यूष।

नीलालु–पु० (सं०) एक तरहका कंद।

नीलावती–स्त्री० चावलका एक भेद।

नीलाशी–स्त्री० (सं०) नीला सिंदुवार।

नीलाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) नीलम रत्न।

नीलाभ्र–पु० (सं०) एक देश।

नीलासन्न–पु० (सं०) पियासालका पेड़; एक रतिबंध।

नीलि–पु० (सं०) एक जलजंतु।

नीलिका–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; नीला सिंदुवार; एक नेत्र-रोग; वायु और पित्तके प्रकोपसे होनेवाला एक क्षुद्र रोग जिसमें मुँहपर और अन्य अंगोंमें छोटे-छोटे काले दाने निकल आते हैं।

नीलिनी–स्त्री० (सं०) नील; नीलका पौधा।

नीलिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) नीलापन।

नीली–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; नील नामका रंग; एक प्रकारकी मक्खी; एक रोग। **–राग**–पु० प्रगाढ़ और दृढ़ प्रेम; स्थायी मित्र। **–संधान**–पु० नीलका खमीर।

नीली–वि० स्त्री० दे० 'नीला'। **–घोड़ी**–स्त्री० नीले रंगकी घोड़ी; जामेके साथ सिली हुई कागजकी घोड़ी जिसके कारण उस जामेको पहननेवाला घोड़ीपर चढ़ा हुआ-सा जान पड़ता है। **–चकरी**–स्त्री० एक पौधा। **–चाय**–स्त्री० अंगिया घास, यज्ञकुश।

नीलू–स्त्री० एक प्रकारकी घास।

नीलोत्पल–पु० (सं०) नील कमल।

नीलोत्पली–स्त्री० (सं०) नीलकमलोंसे पूर्ण सरोवर।

नीलोत्पली(लिन्)–पु० (सं०) शिवके अंशभूत मंजुघोष।

नीलोपल–पु० (सं०) नीला पत्थर; नीलम।

नीलोफ़र–पु० (फा०) नील कमल; कुईं।

नीवँ–स्त्री० नालीके आकारका गहरा गड्ढा जिसमेंसे दीवार उठायी जाती है; इसमें की जानेवाली ईंट-पत्थरकी चुनाई या जमावट जिसके ऊपरसे दीवारकी जोड़ाई होती है, मूल भित्ति, मूल आधार। **मु० –जमाना**–जड़ मजवूत करना, आधार दृढ़ करना। **–डालना, –देना**–दीवार उठानेके लिए नीवँ तैयार करना; कोई कार्य आरंभ करना। **–पड़ना**–आरंभ होना, शुरू होना।

नीव–स्त्री० दे० 'नीवँ'।

नीवर–पु० (सं०) सन्न्यासी, परिव्राजक; वणिक्, व्यापारी; वाणिज्य, व्यवसाय; रहनेकी जगह, वास्तव्य; कीचड़; जल।

नीवाक–पु० (सं०) दुर्भिक्ष; दुर्भिक्षकालमें अन्नकी बढ़ी हुई माँग।

नीवानास–पु० समूलनाश, सर्वनाश, सत्तानाश, सत्यानास। वि० जो समूल नष्ट हो गया हो।

नीवार–पु० (सं०) तिन्नी धान। **–लता**–स्त्री० तिन्नी धानका पौधा।

नीवि–स्त्री० (सं०) दे० 'नीवी'।

नीवीँ*–स्त्री० नीवँ।

नीवी–स्त्री० (सं०) धोतीकी वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ नाभिके नीचे या वगलमें इजारवंदसे या योंही वाँधती हैं; इसे वाँधनेकी सूतकी डोरी, लहँगेके नेफेकी डोरी, इजारवंद; नारा; पूँजी, मूल धन; वस्त्र (वै०); वह जमा की हुई रकम जिसका व्याज आदि दूसरे कामोंमें लगाया जाता हो, स्थायी कोश (कौ०); खरचनेके वाद वची हुई पूँजी (कौ०)। **–ग्राहक**–पु० वह व्यक्ति जिसके पास चंदा या किसीकी कुछ रकम जमा हो और जो उसके व्यय आदिकी देख-रेख करता हो (कौ०)।

नीव्र–पु० (सं०) दे० 'नीध्र'।

नीशार–पु० (सं०) ओढ़नेका गरम कपड़ा, आवरण (जैसे–कंवल आदि); कनात; मसहरी।

नीस†–पु० सफेद धतूरा।

नीसक*–वि० अशक्त, असमर्थ, दुर्वल, 'तीन सतावैं नीसकैं राजा, पातक, रोग।'

नीसान*–पु० दे० 'निशान'।

नीसानी–स्त्री० एक छंद।

नीसार*–पु० (संस्कृत 'नीशार') आवरण, पर्दा (रासो)।

नीसू†–पु० चारा या गन्ना काटनेके लिए जमीनमें गाड़ा जानेवाला काठका टुकड़ा, ठीहा।

नीह† –स्त्री० दे० 'नीवँ'।

नीहल†–पु० नीची जमीन, खलार।

नीहार–पु० (सं०) कुहरा; हिम, वरफ; खाली करना, निष्कासन। **–जल**–पु० ओस।

नीहारिका–स्त्री० (सं०) कुहरे या धुएँकी तरह आकाशमें छाया रहनेवाला प्रकाशपुंज जो ग्रह-नक्षत्रोंका उपादान माना जाता है।

नुकता–पु० (अ०) पतेकी वात, वारीक वात, दूरकी वात; ऐव, नुक्स, दोष, छिद्र; घोड़ेके मुँहपर लगाया जानेवाला चमड़ा, सरवंद। **–चीँ**–वि० नुक्स या ऐव निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी। **–चीनी**–स्त्री० दोष या ऐव निकालनेका काम, छिद्रान्वेषण।

नुक़ता–पु० (अ०) धव्वा, दाग; विंदु; लिखावटमें अक्षरोंपर लगायी जानेवाली बिंदी; सिफर, सुन्ना।

नुकती–स्त्री० महीन मीठी वुंदिया जिसके लड्डू वनते हैं।

नुकना*–अ० क्रि० छिपना।

नुक़रा–पु० (अ०) चाँदी; घोड़ेका सफेद रंग। वि० सफेद रंगका (घोड़ा)।

नुकरी† –स्त्री० जलाशयोंके किनारे पायी जानेवाली एक छोटी चिड़िया।

नुकसान–पु० (अ०) कमी, न्यूनता; हानि, क्षति; ऐव, दोष। **मु० –उठाना**–क्षतिग्रस्त होना। **–पहुँचना**–हानि होना। **–पहुँचाना**–हानि करना।

नुकसानी–स्त्री० क्षति; हानि; क्षतिपूर्ति। वि० जिसका कुछ भाग कटफट गया हो, जैसे नुकसानी कपड़ा या माल।

नुकाना*–स० क्रि० छिपाना।

नुकीला–वि० नोकवाला, नोकदार; सजीला, सुंदर, वाँका।

नुक्कड़–पु० नोक; नाका, मोड़; छोर; निकला हुआ कोना।

नुक्का–पु० नोक। **–टोपी**–स्त्री० पतली दुपलिया टोपी जिसका प्रचार लखनऊमें है।

नुक्स–पु० (अ०) ऐब, दोष; खामी, त्रुटि ।

नुगदी–स्त्री० दे० 'नुकती'; लुगदी ।

नुचना–अ० क्रि० नोचा जाना ।

नुचवाना–स० क्रि० नोचनेका काम कराना ।

नुजूम–पु० (अ०) ज्योतिष ।

नुत–वि० (सं०) जिसे प्रणाम किया गया हो, वंदित, नमस्कृत; जिसकी स्तुति की गयी हो, स्तुत ।

नुति–स्त्री० (सं०) प्रणाम; स्तुति ।

नुत्त–वि० (सं०) फेंका या चलाया हुआ, क्षिप्त; प्रेरित ।

नुत्फ़ा–पु० (अ०) वीर्य, शुक्र; संतान । **–(त्फ़े) हराम**–वि० दोगला, जारज; नीच, कमीना (गाली) । **मु० –ठहरना**–गर्भाधान होना ।

नुनखरा, नुनखारा–वि० नमकके-से स्वादवाला, नमकीन ।

नुनना–स० क्रि० तैयार फसलको काटना ।

नुनाई*–स्त्री० लावण्य, शोभा, सौंदर्य; खेत काटनेकी मजदूरी ।

नुनेरा–पु० नोना मिट्टी आदिसे नमक तैयार करनेका पेशा करनेवाला; नोनिया ।

नुमा–वि० (फा०) जाहिर करनेवाला; दिखानेवाला; बतानेवाला; दिखनेवाला; सदृश; मानिंद (केवल समासमें व्यवहृत–जैसे खुशनुमा, रहनुमा) ।

नुमाइंदगी–स्त्री० (फा०) प्रतिनिधित्व ।

नुमाइंदा–पु० (फा०) दिखानेवाला; प्रकट करनेवाला; प्रतिनिधि ।

नुमाइश–स्त्री० (फा०) दिखावा, जहूर, प्रदर्शन; रूप, सूरत, शक्ल; अनेक प्रकारकी अद्भुत वस्तुओंका प्रदर्शन; वह मेला जहाँ भिन्न-भिन्न स्थानोंकी अनेक प्रकारकी कुतूहलवर्द्धक, अद्भुत तथा सुंदर वस्तुओंका प्रदर्शन किया जाता है, प्रदर्शनी । **–गाह**–पु०, स्त्री० वह स्थान जहाँ नुमाइश हो ।

नुमाइशी-वि० (फा०) नुमाइश संबंधी; दिखावटी; तड़क-भड़कवाला ।

नुमाई–स्त्री० (फा०) दिखावा, प्रदर्शन (समासमें व्यवहृत–जैसे खुदनुमाई) ।

नुमायाँ–वि० (फा०) जाहिर, प्रकट; प्रधान, बड़ा ।

नुसख़ा–पु० (अ०) लिखा हुआ कागज; नकल, कापी; वह कागज जिसपर हकीम, डाक्टर या वैद्य दवा, उसके प्रयोगकी विधि आदि लिखते हैं; किसी हकीम, डाक्टर या वैद्यके द्वारा रोगविशेषके लिए निकाली गयी औषध, योग । **मु० –बाँधना**–नुसखेमें लिखी हुई दवाएँ देना । **–लिखना**–रोगीको उसके अनुकूल नुसखा लिखकर देना ।

नुहरना*–अ० क्रि० दे० 'निहुरना' ।

नूत–वि० (सं०) दे० 'नुत'; * नया, नवीन ।

नूतन–वि० (सं०) नया, नवीन, अभिनव; अपूर्व, अद्भुत; हालका, ताजा ।

नूतनता–स्त्री०, **–नूतनत्व** -पु० (सं०) नूतन होनेका भाव, नयापन, नवीनता ।

नूतनीकरण–पु० (रिनोवेशन) दे० 'नवीकरण' ।

नूत्न–वि० (सं०) दे० 'नूतन' ।

नूद–पु० (सं०) शहतूत, ब्रह्मदारु वृक्ष ।

नून†–पु० नमक; एक लता । * वि० दे० 'न्यून' । **–तेल**–पु० गृहस्थीकी सामग्री ।

नूनताई*–स्त्री० न्यूनता, कमी ।

नूनी†–स्त्री० लिंगेंद्रिय (विशेषकर बच्चोंकी) ।

नूपुर–पु० (सं०) पैरका एक गहना, घुँघरू; इक्ष्वाकुवंशी एक राजा ।

नूर–पु० (अ०) ज्योति, प्रकाश; द्युति, कांति, छवि; ईश्वरका एक नाम (सू०) । **–चश्म**–पु० प्यारा पुत्र । **–चश्मी**–स्त्री० प्यारी पुत्री । **–बाफ़**–पु० जुलाहा । **–(रे) जहाँ**–संसारका प्रकाश; जहाँगीरकी पत्नी ।

नूरा-पु० मिलकर लड़ी जानेवाली कुश्ती । † वि० नूरसे युक्त, द्युतिमान्, तेजस्वी ।

नूह–पु० (अ०) शामी या इबरानी मतोंके अनुसार आदमसे दसवीं पीढ़ीमें उत्पन्न एक पैगंबर (जिनके समयमें एक ऐसा तूफान आया था कि सारी सृष्टि जलमग्न हो गयी थी । उस समय अपने परिवार तथा सभी जानवरोंके एक-एक जोड़ेके साथ एक स्वनिर्मित नौकामें बैठकर इन्होंने प्राण बचाये थे । कहा जाता है कि उन्हींसे पुनः सृष्टि चली) ।

नृ–पु० (सं०) (समस्त पदोंमें प्रयुक्त) नर, मनुष्य; शतरंजका मोहरा । **–कपाल**–पु० मनुष्यकी खोपड़ी । **–केशरी(रिन्)**–पु० नरसिंह अवतार; सिंहके-से पराक्रमवाला मनुष्य । **–घ्न**–वि० मनुष्यको मारनेवाला, मनुष्यघातक । **–जल**–पु० आदमीका पेशाब । **–दुर्ग**–पु० वह दुर्ग जिसके चारों ओर सेना हो । **–देव**–पु० ब्राह्मण; राजा । **–धर्मा(र्मन्)**–पु० कुबेर । **–प**–पु० दे० क्रममें । **–पति,–पाल**–पु० राजा । **–पशु** -पु० मनुष्यरूपी पशु, पशुतुल्य मनुष्य; महामूर्ख मनुष्य । **–मिथुन**–पु० स्त्री-पुरुषका जोड़ा; मिथुन राशि । **–मेध** -पु० नरमेध यज्ञ । **–यज्ञ**–पु० गृहस्थके कर्तव्यरूप पंचयज्ञोंमेंसे एक, अतिथिपूजन, अतिथि-सत्कार । **–लोक**–पु० मर्त्यलोक । **–वराह**–पु० वराहरूपधारी विष्णु । **–वाहन**–पु० कुबेर । **–वेष्टन**–पु० शिव । **–शंस**–वि० मनुष्योंको सतानेवाला, क्रूर, अत्याचारी । **–शृंग**–पु० मनुष्योंके सींग जैसी असंभव वस्तु या बात । **–सिंह**–पु० सिंह-रूपधारी विष्णु, विष्णुका चतुर्थ अवतार (इसी अवतारमें विष्णुने हिरण्यकशिपुका नाश किया था); सिंह जैसा पराक्रमी मनुष्य । **–०चतुर्दशी**–स्त्री० वैशाख-शुक्ला चतुर्दशी जिस दिन नृसिंहका अवतार हुआ था । **–०पुराण**–पु० एक उपपुराण । **–०पुरी**–स्त्री० एक तीर्थ । **–०वन**–पु० एक प्राचीन देश । **–सोम**–पु० वह मनुष्य जो चंद्रमाके समान हो; बड़ा आदमी । **–हरि**–पु० नृसिंह ।

नृग–पु० (सं०) एक महादानी पौराणिक राजा जिन्हें एक ब्राह्मणके शापसे गिरगिटका शरीर धारण करना पड़ा था ।

नृतक*–पु० दे० 'नर्तक' ।

नृतना, नृत्तना*–अ० क्रि० नाचना ।

नृति–स्त्री० (सं०) नाच, नर्तन ।

नृतु–पु० (सं०) नाचनेवाला, नर्तक ।

नृतू–पु० (सं०) नर्तक; भूमि; क्रिमि । वि० हिंसा करनेवाला, हिंसक; दीर्घ ।

नृत्त -पु० (सं०) वह नाच जिसमें केवल अंगोंका विक्षेप किया जाय ।

नृत्य–पु० (सं०) ताल, लय और रसके अनुसार विलासपूर्वक अंगोंका विक्षेप करनेका एक व्यापार, ताल, लय तथा रसके अनुसार किया जानेवाला नाच (इसके दो प्रधान भेद हैं–(१) तांडव और (२) लास्य) । **–प्रिय**–पु० शिव; मोर । **–शाला**–स्त्री० नाचघर । **–स्थान**–पु० रंगशाला ।

नृत्यांगना–स्त्री० (सं०) नृत्यकलामें निपुणनारी ।

नृपंजय–पु० (सं०) एक पुरुवंशी नरेश ।

नृप–पु० (सं०) (मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला) राजा । **–कंद**–पु० लाल प्याज । **–गृह**–पु० राजभवन, राजमहल । **–चिह्न**–पु० श्वेत छत्र । **–द्रुम**–पु० खिरनीका पेड़; अमलतास । **–नीति**–स्त्री० राजनीति । **–पथ**–पु० मुख्य मार्ग, राजमार्ग । **–प्रिय**–वि० राजाका प्रिय, जो राजाको प्रिय हो । पु० एक प्रकारका बाँस; लाल प्याज; आम; जड़हन धान । **–प्रिया**–स्त्री० केतकी । **–बदर**–पु० बड़ा बेर । **–मांगल्यक**–पु० आहुल्यका पेड़ । **–मान**–पु० एक बाजा जो राजाओंके भोजनके समय बजाया जाता था । **–लक्ष्म(न्),–लिंग**–पु० राजचिह्न । **–वल्लभ**–पु० आम; राजाका मित्र या प्रिय व्यक्ति । **–वल्लभा**–स्त्री० रानी; केतकी । **–वृक्ष**–पु० एक पेड़ । **–शासन**–पु० राजाज्ञा । **–सभ**–पु० वह सभा जिसमें बहुतसे राजे सम्मिलित हुए हों, राजाओंकी सभा (संस्कृतमें प्रयुक्त) । **–सभा**–स्त्री० राजाकी सभा । **–सुत**–पु० राजकुमार । **–सुता**–स्त्री० राजकुमारी ।

नृपांश–पु० (सं०) राज-कर, उपजका छठा या आठवाँ भाग ।

नृपात्मज–पु० (सं०) राजकुमार ।

नृपात्मजा–स्त्री० (सं०) राजकुमारी ।

नृपाध्वर–पु० (सं०) राजसूय यज्ञ ।

नृपान्न–पु० (सं०) राजाका अन्न, एक धान, राजान्न ।

नृपाभीर–पु० (सं०) दे० 'नृपमान' ।

नृपामय–पु० (सं०) राजरोग, यक्ष्मा ।

नृपावर्त्त–पु० (सं०) एक रत्न, राजवर्त्त ।

नृपासन–पु० (सं०) सिंहासन, तख्त ।

नृपाह्व–पु० (सं०) लाल प्याज ।

नृपोचित–वि० (सं०) जो राजाके योग्य या अनुरूप हो । पु० राजमाष, काला उड़द ।

नृमणा–स्त्री० (सं०) प्लक्ष द्वीपकी एक बड़ी नदी (पु०) ।

नृम्ण–पु० (सं०) धन (वै०); बल, पौरुष; कृष्ण ।

नृविज्ञान–पु० (एनथ्रोपॉलॉजी) मानववंशकी उत्पत्ति, विकास आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मानव-विज्ञान । (नृवंश-विज्ञान या मानवजाति विज्ञान —एथनालाजि) ।

ने–प्र० भूतकालिक सकर्मक क्रियाके कर्ताके आगे लगनेवाला एक कारकचिह्न ।

नेअमत–स्त्री० (अ०) दे० 'नेमत' ।

नेइँ, नेई*–स्त्री०दे० 'नीवँ'–'दीन्हीं अचल विपति कै नेई'–रामा० ।

नेउछावरि†–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

नेउतना†–स० क्रि० दे० 'नेवतना' ।

नेउतहरि, नेउतहरी*–पु० निमंत्रित व्यक्ति ।

नेउता†–पु० दे० 'न्योता' ।

नेउला†–पु० दे० 'नेवला' ।

नेक†–अ० जरा, थोड़ा । वि० जरा, थोड़ा-सा; (फा०) अच्छा, भला, उम्दा । **–अंजाम**–वि० जिसका परिणाम भला हो । **–अंदेश**–वि० भलाई चाहनेवाला, हितैषी । **–ख़्वाह**–वि० स्वामिभक्त, वफादार । **–चलन**–वि० अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी । **–चलनी**–स्त्री० अच्छी चाल-चलन, सदाचारिता । **–ज़ात**–वि० अच्छी जाति या नस्लका । **–तर,–तरीन**–वि० बहुत अच्छा, अति उत्तम । **–दिल**–वि० अच्छी नीयतवाला । **–नाम**–वि० जो अच्छे कामके लिए प्रसिद्ध हो, जिसकी अच्छी ख्याति हो, यशस्वी । **–नामी**–स्त्री० नेकनाम होनेका भाव या सद्गुण, सुख्याति, सुप्रसिद्धि, सुकीर्ति । **–नीयत**–वि० अच्छी नीयतवाला, किसीकी बुराई न चाहनेवाला । **–नीयती**–स्त्री० नेकनीयत होनेका भाव, भलमनसाहत; ईमानदारी । **–बख़्त**–वि० अच्छे भाग्यवाला, भाग्यशाली । **–बख़्ती**–स्त्री० सौभाग्य, खुशकिस्मती ।

नेकी–स्त्री० (फा०) भलाई, उपकार, अच्छा काम, हित । **–बदी**–स्त्री० भलाई-बुराई । **–मु०**– **और पूछ-पुछ ?**–कहीं नेकी भी पूछ-पूछकर की जाती है ? जिसकी भलाई करनी हो उससे पूछनेकी जरूरत नहीं, किसीकी भलाई बिना उससे पूछे करनी चाहिये ।

नेकु*–वि० थोड़ा, जरा-सा । अ० जरा, थोड़ा ।

नेग–पु० विवाहादि मांगलिक अवसरोंपर सगे-संबंधियों तथा पौनियोंको खुश करनेके लिए द्रव्य-वस्त्र आदि देनेकी रस्म; इस रस्मके निमित्त दिया जानेवाला द्रव्य-वस्त्र आदि । **–चार,–जोग**–पु० दे० 'नेग'; मांगलिक अवसरोंपर होनेवाले सामाजिक उपचार एवं कृत्य ।

नेगटी*–पु० नेग या रीतिका अनुसरण करनेवाला, प्रथाका पालन करनेवाला ।

नेगी–पु० नेग पानेवाला, वह जिसे नेग पानेका हक हो; * संपत्ति आदिका प्रबंधक । **–जोगी**–पु० दे० 'नेगी' ।

नेछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर' ।

नेजक–पु० (सं०) धोबी ।

नेजन–पु० (सं०) कपड़े धोना; सफाई करना ।

नेजा–पु० (फा०) भाला; राजाओंका निशान; चिलगोजा । **–बरदार**–पु० नेजा लेकर चलनेवाला ।

नेजाल*–पु० भाला ।

नेटा*–पु० नाकके रास्ते निकलनेवाला कफ या मल । **मु० –बहना**–मैला-कुचैला रहना ।

नेठना*–अ० क्रि० दे० 'नाठना' ।

नेड़े†–अ० निकट, समीप ।

नेत*–पु० किसी बातका निश्चित होना, निर्धारण; पक्का इरादा, निश्चय; आयोजन, प्रबंध; मथानीमें लगायी जानेवाली रस्सी; एक गहना । स्त्री० दे० 'नेती'; दे० 'नीयत'; एक प्रकारकी रेशमी चादर ।

नेता–पु० मथानीकी रस्सी ।

नेता(तृ)–पु० (सं०) दलविशेष या जनताको किसी ओर ले चलनेवाला, नायक, अगुआ, सरदार; पहुँचानेवाला; स्वामी, मालिक; कामको निभानेवाला; प्रवर्तन करनेवाला, प्रवर्तक; किसी काव्यका चरितनायक; नीमका पेड़; विष्णु; दोकी संख्या ।

नेताजी–पु० दे० 'सुभाषचंद्र वसु' ।

नेति–(सं०) ब्रह्म या ईश्वरकी अनंतता सूचित करनेवाला एक औपनिषद वाक्य जिसका अर्थ है 'अंत नहीं है' अर्थात् ब्रह्म या ईश्वरकी महिमा अपार है । * स्त्री० नीयत, इरादा ।

नेती–स्त्री० मथानीकी रस्सी जिसे खींचनेसे वह घूमती है; हठयोगकी एक क्रिया, दे० 'नेती-धौती' । **–धौती**–स्त्री० पेटमें कपड़ेकी लंबी पतली पट्टी डालकर आँतें साफ करनेकी एक क्रिया ।

नेत्र–पु० (सं०) आँख; मथानीमें लगायी जानेवाली रस्सी; पेड़की जड़; जटा; नाड़ी; एक तरहका रेशमी कपड़ा; रथ; दोकी संख्या (ज्यो०); नेता । **–कनीनिका**–स्त्री० आँखके काले भागके बीचका बिंदु । **–कोष**–पु० नेत्रपटल । **–च्छद**–पु० पलक । **–ज, –जल**–पु० आँसू । **–दान**–पु० किसी मनुष्यकी मृत्यु होनेके तत्काल बाद उसके नेत्र निकालकर किसी ऐसे व्यक्तिके नेत्र कोटरमें आरोपित कर देना जो नेत्रहीन हो गया हो; मोतियाबिंद आदिके कारण जिसके नेत्रोंकी ज्योति जाती रही हो, उसकी दृष्टिशक्ति शल्य-चिकित्सादि द्वारा पुनः ठीक कर देना । **–०शिविर**–पु० वह स्थान जहाँ थोड़े समयके लिए इस तरहकी प्रायः निःशुल्क चिकित्साकी व्यवस्था की जाती है । **–पर्यंत**–पु० आँखका कोना । **–पिंड**–पु० आँखका गोलक; बिलाव । **–पिंडी**–स्त्री० बिल्ली । **–पुष्करा**–स्त्री० रुद्रजटा लता । **–बंध**–पु० आँखमिचौनी । **–बाला**–स्त्री० सुगंधवाला । **–भाव**–पु० नृत्यमें केवल आँखोंकी क्रिया द्वारा सुख-दुःख आदि अभिव्यक्त करनेका भाव । **–मंडल**–पु० आँखका डेला । **–मल**–पु० आँखका कीचड़ । **–मीला**–स्त्री० यवतिक्ता लता । **–मुट्(ष्)**–वि० आँखोंको अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला । **–योनि**–पु० इंद्र; चंद्रमा । **–रंजन**–पु० काजल । **–रोग**–पु० आँखोंका रोग । **–०हा(हन्)**–पु० वृश्चिकाली वृक्ष । **–रोम(न्)**–पु० बरौनी । **–वस्त्र**–पु० पलक । **–वारि**–पु० आँसू । **–विट्(ष्)**–स्त्री० आँखका कीचड़ । **–विष**–पु० एक दिव्य सर्प जिसकी आँखोंमें विष होता है । **–स्तंभ**–पु० आँखोंका मँदना तथा खुलना बंद होनेका एक उपद्रव (सुश्रुत) ।

नेत्रांत–पु० (सं०) आँखका बाहरी कोना ।

नेत्रांबु, नेत्रांभ(स्)–पु० (सं०) आँसू ।

नेत्राभिष्यंद, नेत्राभिस्यंद–पु० (सं०) आँख आनेका रोग ।

नेत्रामय–पु० (सं०) आँखका रोग ।

नेत्रारि–पु० (सं०) सेहुँड़ ।

नेत्रिक–पु० (सं०) एक तरहकी छोटी पिचकारी (सुश्रुत); करछुल ।

नेत्री–स्त्री० (सं०) दलविशेष या जनताको किसी ओर ले चलनेवाली, रहनुमाई करनेवाली; नाड़ी; नदी; लक्ष्मी ।

नेत्रोत्सव–पु० (सं०) नेत्रोंका सुख; आँखोंको तृप्त करनेवाली वस्तु ।

नेत्रोपम–पु० (सं०) बादाम ।

नेत्रौषध–स्त्री० (सं०) नेत्ररोगकी दवा; पुष्पकासीस ।

नेत्रौषधि, नेत्रौषधी–स्त्री० (सं०) मेढ़ासिंगी, अजशृंगी ।

नेत्र्य–वि० (सं०) नेत्र-संबंधी; आँखोंके लिए हितकर । **–गण**–पु० रसौत, त्रिफला आदि आँखोंके लिए हितकर औषधियोंका समाहार ।

नेदिष्ठ–वि० (सं०) अधिकतम; निकटतम; निपुण । पु० अंकोट वृक्ष ।

नेदिष्ठी(ष्ठिन्)–पु० (सं०) सहोदर भाई । वि० निकटतम संबंधवाला ।

नेनुआ, नेनुवा–पु० एक तरकारी, घिवरा, घिया तरोई, 'फतकुली' (बुंदेल०) ।

नेप–पु० (सं०) पुरोहित; जल ।

नेपचून–पु० (अं०) सौर मंडलका एक ग्रह जो अन्य ग्रहोंकी अपेक्षा बहुत अधिक दूरीपर है। इसका व्यास ३७००० मील है। इसका पता १८४६ ई० में लगा था; वरुण।

नेपथ्य–पु० (सं०) वेश-भूपा; नटोंकी वेश-भूषा; भूषण; रंगमंचके परदेके पीछेकी वह जगह जहाँ नटोंकी वेशरचना की जाती है।

नेपाल–पु० (सं०) भारतके उत्तरमें स्थित एक देश; ताँवा। **–कंवल**–पु० एक तरहका रंग-विरंगा कंवल। **–जा,–जाता**–स्त्री० मैनसिल। **–निंब**–पु० चिरायतेका एक भेद। **–मूलक**–पु० हस्तिकंद जैसा एक मूल, नेवार।

नेपालक–पु० (सं०) ताँवा।

नेपालिका–स्त्री० (सं०) मैनसिल।

नेपाली–वि० नेपाल-संवंधी; नेपालका। पु० नेपालका निवासी। स्त्री० (सं०) मैनसिल; नेवारी; एक जंगली खजूर; नेपालकी भाषा।

नेपुर*–पु० दे० 'नूपुर'।

नेफ़ा–पु० (फा०) पायजामे, लहँगे आदिका वह ऊपरी भाग जिसमें इजारबंद पिरोया जाता है।

नेव*–पु० सहयोग करनेवाला, सहकारी; मंत्री।

नेवुआ†–पु० दे० 'नीवू'।

नेवू†–पु० दे० 'नीवू'।

नेम–वि० (सं०) आधा। पु० काल; अवधि; खंड; प्राकार; छल, कैतव; अर्द्ध भाग; ऊपरका हिस्सा; सायंकाल; मूल; नींव; गड्ढा; नृत्य; अन्न; † वँधा हुआ क्रम, नियम, पावंदी; धर्मकी भावनासे किये जानेवाले व्रत, उपवास आदि; आचारका नियम; * प्रतिज्ञा। **–धरम**–पु० संध्या-वंदन, पूजन आदि।

नेमत–स्त्री० (अ०) ईश्वरकी देन; धन; स्वादिष्ठ भोजन; सुख। **–ख़ाना**–पु० भोज्य पदार्थ रखनेका कमरा या अलमारी, भोजनगृह।

नेमि–स्त्री० (सं०) पहियेका ढाँचा या घेरा; घेरा; कुएँकी जगत; जमवट; चरखी; कोर, किनारा; वज्र; पृथ्वी। पु० तिनिश वृक्ष; एक जिन। **–घोष**–पु०,**–ध्वनि**–स्त्री०,**–निनाद**–पु० पहियेकी 'घर-घर' आवाज। **–चक्र**–पु० परीक्षित्‌का एक वंशज। **–वृत्ति**–वि० पहियेकी चालका अनुकरण करनेवाला। **–शब्द,–स्वन**–पु० दे० 'नेमिघोष'।

नेमी–स्त्री० (सं०) दे० 'नेमि' (स्त्री०)। वि० (हिं०) नेमसे रहनेवाला, नेमका पालन करनेवाला। **–धरमी**–वि० नेम-धरमसे रहनेवाला।

नेमी(मिन्)–पु० (सं०) तिनिश वृक्ष।

नेयार्थता–स्त्री० (सं०) एक काव्यदोष। जहाँ रूढ़ि या प्रयोजनके विना लक्षणाका प्रयोग किया जाय वहाँ यह दोष होता है।

नेरा*–अ० पास, नजदीक।

नेराना†–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'नियराना'।

नेरी*–अ० थोड़ा भी–'···पत्याति न नेरी' –घन०।

नेरुवा†–पु० कोल्हूके नीचेकी तेल वहनेकी नाली।

नेरे, नेरैं*–अ० समीप, नजदीक।

नेव*–पु० दे० 'नेव'। स्त्री० दे० 'नींव'।

नेवग*–पु० नेग, दस्तूर।

नेवगी*–पु० दे० 'नेगी'।

नेवछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नेवज*–पु० देवताको अर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु, नैवेद्य।

नेवजा–पु० (फा०) चिलगोजा।

नेवजी–स्त्री० एक पुष्प।

नेवत†–पु० दे० 'न्योता'।

नेवतना*–स० क्रि० निमंत्रित करना।

नेवतहरी–पु० दे० 'न्योतहरी'।

नेवता†–पु० दे० 'न्योता'।

नेवना*–अ० क्रि० झुकना।

नेवर–पु० नूपुर, घुँघरू। स्त्री० दो पैरोंके आपसमें ठोकर या रगड़ खानेसे घोड़ेके पैरोंमें होनेवाला घाव; घोड़ेके दो पैरोंकी आपसकी रगड़। † वि० बुरा; जो घटकर हो, न्यून।

नेवरना*–अ० क्रि० निवारित होना, दूर होना।

नेवल*–पु० दे० 'नेवर'।

नेवला–पु० गिलहरीकी शक्लका लगभग डेढ़ हाथ लंबा भूरे रंगका एक जंतु जो साँपको मारनेके लिए प्रसिद्ध है।

नेवा–पु० गीति, प्रथा, दस्तूर; कहावत। वि० तुल्य समान; चुप, खामोश।

नेवाज–वि० दे० 'निवाज'।

नेवाजना*–स० क्रि० दे० 'निवाजना', दया करना।

नेवाड़ा–पु० दे० 'निवाड़ा'।

नेवाड़ी–स्त्री० नेवारी।

नेवाना*–स० क्रि० झुकाना।

नेवार–पु०, स्त्री० दे० 'निवार'।

नेवारना*–स० क्रि० निवारण करना, दूर करना, हटाना।

नेवारी–स्त्री० जूहीकी जातिका एक पौधा जिसमें छोटे और सफेद फूल लगते हैं।

नेश्तर–पु० (फा०) दे० 'नश्तर'।

नेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) ऋत्विक्।

नेष्टु–पु० (सं०) मिट्टीका ढेला।

नेस–पु० जंगली जंतुका नुकीला दाँत।

नेसुक*–वि० थोड़ा-सा, अल्प, रंचमात्र। अ० जरा, थोड़ा।

नेसुहा†–पु० गन्ना या चारा काटनेके कामका जमीनमें गाड़ा जानेवाला लकड़ीका टुकड़ा, ठीहा।

नेस्त–वि० (फा०) जिसका अस्तित्व न हो, जो न हो। **–नाबूद**–वि० जड़-मूलसे नष्ट।

नेस्ती–स्त्री० (फा०) अस्तित्वका अभाव, न होनेका भाव; विनाश; आलस्य।

नेह*–पु० स्नेह, प्रेम, प्यार; तेल या घी।

नेहरू–पु० दे० 'जवाहरलाल' तथा 'मोतीलाल नेहरू'।

नेही*–वि० स्नेही, प्रीति रखनेवाला, प्रेमी।

नैःश्रेयस–वि० (सं०) कल्याणकारक; मोक्षदायक।

नैःस्व–पु० (सं०) अकिंचनता, निर्धनता।

नै–पु० दे० 'नय'। * स्त्री० नदी; (फा०) बाँसकी नली; निगाली; बाँसुरी।

नैऋत, नैऋत्य*–वि० निर्ऋति-संबंधी, नैर्ऋत्य। पु० मूल नक्षत्र; निशाचर; पश्चिम-दक्षिणका कोण।

नैक–अ० दे० 'नैकु'। वि० दे० 'नैकु'; (सं०) एकसे अधिक, बहुत, बहुसंख्यक। पु० विष्णु। **–चर**–वि० झुंड या जमातमें चलनेवाला, जो अकेले न चले, समूहचारी (जैसे–हाथी, हिरन, भेड़ आदि)। **–भावाश्रय**–वि० अस्थिर, चंचल; परिवर्तनशील। **–भेद**–वि० विभिन्न प्रकारका। **–शृंग**–पु० विष्णु।

नैकटिक–वि० (सं०) पार्श्ववर्ती; भिक्षा आदिके लिए ग्राम आदिके समीप रहनेवाला। पु० सन्न्यासी, भिक्षु।

नैकट्य–पु० (सं०) निकट होनेका भाव, निकटता, सामीप्य।

नैकधा–अ० (सं०) कई तरहसे।

नैकषेय–पु० (सं०) राक्षस (जिनकी उत्पत्ति निकषासे है)।

नैकु*–अ० जरा, थोड़ा। वि० थोड़ा-सा, अल्प।

नैकृतिक–वि० (सं०) दूसरेका अपकार करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला; दूसरेको हानि पहुँचाकर अपनी जीविका चलानेवाला; वेईमान, दुष्ट; कमीना।

नैगम–वि० (सं०) निगम-संबंधी; निगमका। पु० वेदका वह भाग जिसमें ब्रह्म आदिका प्रतिपादन है, उपनिषद्; नीति; साधन; नागरिक; व्यापारी; बुद्धिमत्तापूर्ण व्यवहार।

नैगमिक–वि० (सं०) वेद-संबंधी; वेदोंसे निकला हुआ।

नैगमेय, नैगमेष–पु० (सं०) कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक बालग्रह (सुश्रुत)।

नैघंटुक–पु० (सं०) वैदिक शब्दोंका संग्रहग्रंथ जिसकी व्याख्या यास्कने अपने निरुक्तमें की।

नैचा–पु० (फा०) एकमें वँधी हुई हुक्केकी दोनों नलियाँ; बहुत दुवला-पतला आदमी (व्यं०)। **–बंद**–पु० नैचा बनाने या बाँधनेवाला। **–बंदी**–स्त्री० नैचाबंदका काम।

नैचिक–पु० (सं०) गाय या बैलका सिर।

नैचिकी–स्त्री० (सं०) अच्छी गाय ।

नैची–स्त्री० मोट खींचते समय बैलोंके बार-बार आने और लौटनेके लिए कुएँके पास बनी हुई ढाल ।

नैज–वि० (सं०) निजी, निजका ।

नैत*–पु० सुअवसर ।

नैतल–पु० (सं०) नीचेका लोक । **–सद्मा(द्मन्)**–पु० यम ।

नैतिक–वि० (सं०) नीति-संबंधी; नीतिका ।

नैत्य–वि० (सं०) नित्य होने या किया जानेवाला; नित्य दिया जानेवाला । पु० नित्य कर्म ।

नैत्यक, नैत्यिक–वि० (सं०) नियमित रूपसे होने या किया जानेवाला; अनिवार्य ।

नैत्रिक–वि० (सं०) नेत्र-संबंधी, आँखोंका ।

नैदाघ–वि० (सं०) निदाघ-संबंधी; निदाघका, ग्रीष्मका । पु० ग्रीष्म ऋतु ।

नैदाघिक, नैदाघीय–वि० (सं०) दे० 'नैदाघ' ।

नैदानिक–वि० (सं०) जो रोगोंका निदान जानता हो; निदान-संबंधी ग्रंथको पढ़नेवाला । पु० रोगका निदान करनेवाला ।

नैदानिकी–स्त्री० रोगोंका निदान करनेकी विद्या ।

नैदेशिक–पु० (सं०) निदेशका पालन करनेवाला; नौकर ।

नैधन–पु० (सं०) मरण, मृत्यु; लग्नसे आठवाँ स्थान (ज्यो०) । वि० मरणशील, नश्वर ।

नैधानी सीमा–स्त्री० (सं०) भूसी, कोयले आदिसे पूर्ण घड़ा गाड़कर स्थिर की जानेवाली सीमा (स्मृ०) ।

नैधेय–वि० (सं०) निधि-संबंधी; निधिका ।

नैन*–पु० दे० 'नयन' । **–मुतना**–वि० जिसके नेत्रोंसे जल्द आँसू निकल पड़ते हों । **–सुख**–पु० एक तरहका चिकना सूती कपड़ा ।

नैना*–पु० नेत्र । अ० क्रि० नयना, झुकना ।

नैनी*–स्त्री० नैनू, नवनीत–'किसीकी नैनी ले भागे तो किसीकी छाछ फैला दी'–केशव प्र० ।

नैनू–पु० एक तरहका बूटेदार सूती कपड़ा; * मक्खन ।

नैपाल–वि० (सं०) नेपाल-संबंधी; नेपालका । पु० नेपालनिंब; ईखका एक भेद; † नेपाल देश ।

नैपालिक–पु० (सं०) ताँबा । वि० नेपालमें उत्पन्न ।

नैपाली–वि० नेपाल-संबंधी; नेपाल देशका; जो नेपालमें रहता हो, नेपालमें रहनेवाला । पु० नेपाल देशका निवासी । स्त्री० (सं०) नेवारी नामका फूल; मैनसिल; नीलका पौधा; निर्गुंडीका एक भेद; नेपालकी भाषा ।

नैपुण, नैपुण्य–पु० (सं०) निपुण होनेका भाव; निपुणता, पटुता, चातुरी, कौशल; वह वस्तु जिसके लिए कौशल आवश्यक हो; समग्रता, पूर्णता ।

नैपोलियन, बोनापार्ट–पु० फ्रांसीसी सैनिक वीर तथा सेनापति जो १८०४ में फ्रांसका सम्राट् बन गया । १८१५ में वाटरलूकी लड़ाईमें पराजित होनेपर सेंटहेलीनामें निर्वासित कर दिया गया (१७६९–१८२१) ।

नैभृत्य–पु० (सं०) नम्रता, विनय; छिपाव; स्थिरता ।

नैमंत्रणक–पु० (सं०) भोज, तवाजा ।

नैमय–पु० (सं०) व्यापारी, सौदागर ।

नैमित्त–वि० (सं०) निमित्त-संबंधी; निमित्तसे उत्पन्न; चिह्न-संबंधी ।

नैमित्तिक–वि० (सं०) निमित्त या शकुन जाननेवाला; निमित्त या शकुन संबंधी शास्त्र पढ़नेवाला; किसी निमित्तसे किया जानेवाला, जो किसी निमित्तसे या कोई विशेष प्रयोजन दृष्टिमें रखकर किया जाय (जैसे–प्रायश्चित्तके रूपमें किया जानेवाला कर्म या पुत्रेष्टि यज्ञ); आकस्मिक; विशेष कारणसे उत्पन्न । पु० ज्योतिषी; फल, परिणाम । **–लय**–पु० एक प्रकारका प्रलय जिसमें क्रमशः सौ वर्षोंतक वृष्टि नहीं होती, बारहों सूर्य तीनों लोकोंको दग्ध करते हैं और अंतमें पुष्करावर्तक आदि मेघ अनवरत सौ वर्षोंतक बरसकर विश्वको जलमग्न कर देते हैं ।

नैमिश–पु० (सं०) दे० 'नैमिष' ।

नैमिष–पु० (सं०) नैमिषारण्य नामक तीर्थ । वि० पलभर टिकनेवाला, क्षणिक ।

नैमिषारण्य–पु० (सं०) अवधका एक प्राचीन वन जिसे हिंदू अपना तीर्थस्थान मानते हैं (कहा जाता है कि सूत मुनिने यहीं ऋषियोंको महाभारतकी कथा सुनायी थी ।)

नैमिषेय–वि० (सं०) नैमिष-संबंधी । पु० नैमिषारण्यका निवासी ।

नैमेय–पु० (सं०) विनिमय, अदला-बदला ।

नैयग्रोध–पु० (सं०) बरगदका फल ।

नैयत्य–पु० (सं०) नियत होनेका भाव, नियतत्व; आत्मनियंत्रण ।

नैयमिक–वि० (सं०) नियमके अनुसार होने या किया जानेवाला ।

नैया*–स्त्री० नाव ।

नैयायिक–पु० (सं०) न्यायशास्त्रका विद्वान् ।

नैरंतर्य–पु० (सं०) निरंतर होनेका भाव, निरंतरत्व, अविच्छिन्नता ।

नैर*–पु० नगर; देश ।

नैरपेक्ष्य–पु० (सं०) निरपेक्ष होनेका भाव, उपेक्षा, तटस्थता ।

नैरयिक–पु० (सं०) नरकमें रहनेवाला, नरक भोगनेवाला ।

नैरर्थ्य–पु० (सं०) निरर्थक होनेका भाव, निरर्थकता ।

नैरात्म्यवाद–पु० (सं०) आत्माका अस्तित्व न माननेका सिद्धान्त ।

नैराश्य–पु० (सं०) निराश होनेका भाव, नाउम्मेदी; आशा या इच्छाका अभाव । **–वाद**–पु० (पेसिमिज्म) संसारको दुःखमय मानने, प्रत्येक वस्तु या घटनाको नैराश्यपूर्ण दृष्टिसे ही देखनेका सिद्धांत, **निराशावाद** ।

नैरुक, नैरुक्तिक–पु० (सं०) निरुक्ति जाननेवाला ।

नैरुज्य–पु० (सं०) आरोग्य, स्वस्थता ।

नैरूहिक–पु० (सं०) एक प्रकारकी वस्ति (सुश्रुत) ।

नैर्ऋत–वि० (सं०) निर्ऋति-संबंधी । पु० राक्षस; दक्षिण-पश्चिम कोणका स्वामी; मूल नक्षत्र ।

नैर्ऋती–स्त्री० (सं०) दक्षिण-पश्चिमका कोना; दुर्गा ।

नैर्ऋत्य–वि० (सं०) निर्ऋति देवता-संबंधी ।

नैर्गुण्य–पु० (सं०) निर्गुण होनेका भाव, सत्त्व आदि गुणोंसे रहित होनेका भाव, निर्गुणत्व; गुणराहित्य ।

नैर्घृण्य–पु० (सं०) निर्दयता, निष्ठुरता ।

नैर्देशिक–पु० (सं०) भृत्य, नौकर । वि० निर्देश संबंधी; जो निर्देशका पालन करे ।

नैर्मल्य–पु० (सं०) निर्मल होनेका भाव, निर्मलता, स्वच्छता ।

नैर्लज्ज्य–पु० (सं०) निर्लज्ज होनेका भाव, लज्जाहीनता, बेहयाई ।

नैल्य–पु० (सं०) नीलापन ।

नैवासिक–वि० (सं०) निवास संबंधी; निवासके अनुकूल ।

नैविड्य–पु० (सं०) निविड होनेका भाव, घनापन ।

नैवेद्य–पु० (सं०) देवताको समर्पित की जानेवाली भोज्य वस्तु ।

नैवेशिक–पु० (सं०) गृहस्थीका सामान; ब्राह्मणको दी जानेवाली भेंट ।

नैश, नैशिक–वि० (सं०) निशा-संबंधी; निशाका, ···रात्रिमें होनेवाला, चलनेवाला या काम करनेवाला (नैश निनाद) ।

नैश्चल्य–पुं० (सं०) निश्चल होनेका भाव, स्थिरता ।

नैश्चित्य–पु० (सं०) निश्चित होनेका भाव; निश्चित संस्कार ।

नैश्श्रेयस, नैश्श्रेयसिक–वि० (सं०) दे० 'नैःश्रेयस' ।

नैषध–पु० (सं०) निषध देशका राजा; निषध देशका राजा नल; वहाँका निवासी; श्रीहर्ष कविका एक महाकाव्य जिसमें नलकी कथा वर्णित है । वि० निषध-संबंधी; निषधका ।

नैषधीय–वि० (सं०) नल नरेश-संबंधी; राजा नलका ।

नैषध्य–पु० (सं०) निषध-नरेशका पुत्र; राजा नलका पुत्र । (स्त्री०) 'नैषध्या' ।

नैषाद, नैषादि–पु० (सं०) निषादका पुत्र ।

नैषेचनिक–पु० (सं०) राज्याभिषेकके समय दिया जानेवाला उपहार (कौ०) ।

नैष्कर्म्य–पु० (सं०) निष्क्रियता; आलस्य, कर्म न करनेका भाव; सभी कर्मोंका त्याग, आसक्ति और फलकी कामना त्यागकर किये जानेवाले कर्मका अनुष्ठान (गी०) । **–सिद्धि**–स्त्री० सब प्रकारके कर्मोंसे निवृत्ति (गी०) ।

नैष्किंचन्य–पु० (सं०) अकिंचनता, दरिद्रता ।

नैष्किक–वि० (सं०) एक निष्कमें खरीदा हुआ। पु० टकसालका प्रधान अधिकारी।

नैष्क्रमण–पु० (सं०) नवजात शिशुको पहले-पहल घरसे बाहर ले जानेके समय किया जानेवाला कृत्य।

नैष्ठिक–वि० (सं०) निष्ठावाला; उपनयनसे लेकर मृत्युतक ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए गुरुकुलमें निवास करनेवाला (ब्रह्मचारी); किसी व्रतके अनुष्ठानमें लगा हुआ; निश्चयात्मक; स्थिर; पारंगत।

नैष्ठुर्य–पु० (सं०) निठुराई, निर्दयता।

नैष्ठ्य–पु० (सं०) नियम निष्ठा; दृढ़ता।

नैसर्गिक–वि० (सं०) निसर्ग-संबंधी; स्वाभाविक, सहज, प्राकृतिक।

नैसा*–वि० अनिष्ट, बुरा।

नैसिक*–वि०, अ० दे० 'नैसुक' (जरा, थोड़ा)–'नैसिक हेरियै मेरियै सौंहें'–घन०।

नैसुक*–वि०, अ० दे० 'नेसुक'।

नैस्त्रिंशिक–पु० (सं०) तलवार लेकर युद्ध करनेवाला योद्धा, खड्गधारी।

नैहर–पु० स्त्रीके पिताका घर, मायका।

नोअना, नोना*–स० क्रि० दूहनेके समय गायके पिछले पैरोंमें रस्सी बाँधना–'कपट हेतुकी प्रीति निरंतर नोइ चोखाई गाय'–सूर।

नोआ†–पु० दे० 'नोई'।

नोइनी, नोई–स्त्री० वह रस्सी जिससे दूध दुहनेके समय गायकी पिछली टाँगें बाँधी जाती हैं।

नोक–स्त्री० (फा०) किसी वस्तुका उस ओरका अग्रभाग जिस ओर वह पतली होती चली गयी हो; किसी चीजका निकला हुआ बारीक सिरा; किसी ओर निकला हुआ कोना। **–झोंक**–स्त्री० सजधज, सजावट, अलंकरण; ताव; अभिमान; ताना, छीटाकशी, चुटीली बात; छेड़खानी; संघर्ष; झड़प, विवाद। **–दार**–वि० नोकवाला, नुकीला; चुटीला, चुभनेवाला; सजधजका, ठाटका। **–पलक**–स्त्री० चेहरेकी गठन। **–पान**–पु० जूतेकी बनावट, सुंदरता आदि। मु०**–की लेना**–बढ़-बढ़कर बातें करना। **–दुम भागना**–बड़े जोरसे भागना, बेतहाशा भागना। **–बनाना**–बनाव-सिंगार करना। **–रह जाना**–मान-मर्यादाकी रक्षा होना, इज्जत बच जाना।

नोकना*–अ० क्रि० ललचना; आकृष्ट होना।

नोकाझोंकी–स्त्री० छीटाकशी, तानाजनी, एक-दूसरेको चुटीली बातें कहना; झगड़ा, विवाद।

नोकीला†–वि० दे० 'नुकीला'।

नोखा*–वि० अनोखा, अद्भुत, अपूर्व।

नोच–स्त्री० नोचनेका काम या भाव; छीनने या बलपूर्वक लेनेका कार्य; किसीको परेशान या बेबस करके उससे बार-बार कुछ लेना; बहुतसे व्यक्तियोंका कई ओरसे एक साथ माँगना। **–खसोट**–स्त्री० लूटपाट, छीनाझपटी।

नोचना–स० क्रि० लगी या जमी हुई वस्तुको झटकेके साथ इस प्रकार खींचना कि वह अपने स्थानसे अलग हो जाय, झटकेसे उखाड़ना या तोड़ना; नख, दाँत आदिसे किसी वस्तुके कुछ अंशोंको खींचकर अलग करना; शरीरपर नख या पंजेसे इस प्रकार आघात करना कि खरोंच पड़ जाय; किसीको बेबस करके बार-बार उससे कुछ लेना, किसीको फेरमें डालकर बार-बार उससे कुछ न कुछ वसूल करना; इतना माँगना कि जी ऊब जाय।

नोचानाची–स्त्री० दे० 'नोचखसोट'।

नोचू–वि० नोचनेवाला; नोचखसोट करनेवाला।

नोट–पु० (अं०) स्मरणके लिए लिख लेना, टाँकना; संक्षेप; छोटा पत्र या लिखा हुआ परचा; आशय या मत प्रकट करनेवाला संक्षिप्त लेख, टिप्पण; निश्चित समयपर रुपया चुकानेकी प्रतिज्ञा; सरकार द्वारा रुपयेकी जगह चलाया गया वह कागज जिसपर उतने रुपयोंकी संख्या लिखी रहती है जितनेका वह होता है। **–पेपर**–पु० पत्र लिखनेका कागज। **–बुक**–स्त्री० वह पुस्तिका जिसमें आवश्यक बातें स्मरणार्थ लिख ली जाती हैं।

नोटिस–स्त्री० (अं०) सूचना, विज्ञप्ति; इश्तहार, विज्ञापन।

नोदक–पु० (प्रोपेलैंट) द्रव या ठोस पदार्थ जिसमें ईंधन तथा ऑक्सीकारक दोनों मौजूद हों और जो राकेट इंजनमें दहन कराये जानेपर उसे आगे बढ़ानेके लिए प्रणोद (थ्रस्ट) उत्पन्न कर सके।

नोदन–पु० (सं०) कार्यविशेषमें प्रवृत्त करना, प्रेरण; खंडित करना, खंडन; बैलोंको हाँकनेका पैना।

नोदना–स्त्री० (सं०) प्रेरणा।

नोदयिता(तृ)–वि० (सं०) आगे बढ़ानेवाला, प्रेरित करनेवाला।

नोन†–पु० नमक। **–चा**–पु० नमकीन अचार, आमका एक प्रकारका अचार जो उसकी फाँकोंमें केवल नमक लगाकर तैयार किया जाता है; लोनी जमीन। **–छा,–छी**–स्त्री० लोनी मिट्टी। **–हरामी***–वि० नमकहरामी।

नोना†–पु० सीड़के कारण दीवार या जमीनमें लगनेवाला नमकका अंश; लोनी मिट्टी; नाव, जहाज आदिके पेंदेमें लगनेवाला एक प्रकारका कीड़ा। वि० जिसमें नमकका अंश हो, खारा; अच्छा; सुंदर।

नोनाचमारी–स्त्री० एक मशहूर जादूगरनी।

नोनिया†–पु० एक जाति जो लोनी मिट्टीसे नमक तैयार करती है। स्त्री० एक भाजी जो स्वादमें नमकीन होती है।

नोनी–स्त्री० लोनी मिट्टी; नोनिया नामकी भाजी। वि० स्त्री० अच्छी; सुंदर।

नोर*–वि० नया, नूतन। पु० आँसू।

नोल*–वि० दे० 'नवल'। † स्त्री० चिड़ियाकी चोंच।

नोवना*–स० क्रि० दुहनेके समय गायकी पिछली टाँगोंको एकमें बाँधना।

नोहर*–वि० जिसका मिलना कठिन हो, जो बड़ी कठिनाईसे मिले, दुष्प्राप्य; अपूर्व, अद्भुत।

नौ–स्त्री० (सं०) नाव; जहाज। **–कर्ण**–पु० जहाजकी पतवार। **–०धार**–पु० पोतचालक। **–कर्णी**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका। **–कर्म(न्)**–पु० मल्लाहकी वृत्ति, माँझीका पेशा। **–क्रम**–पु० नावोंका पुल। **–चर**–वि० जो जहाजसे जाय। पु० माँझी। **–जीविक**–पु० माँझी। **–तरण**–पु० दे० 'नौपरिवहन'। **–तरणीय**–वि० (नैविगेबिल) जिसमें नौका, जहाज आदि चल सकते हों (वह नदी, तालाब आदि); नाव्य। **–तार्य**–वि० जो नावसे पार किया जाय। **–दंड**–पु० डाँड़। **–नेता(तृ)**–पु० वह जो जहाजकी पतवार धारण करे, कर्णधार, नाविक। **–परिवहन**–पु० (नैविगेशन) जहाज आदिमें बैठकर जल-मार्गसे यात्रा करना। **–०विषयक**–वि० (नॉटिकल) समुद्र यात्रा, जहाज द्वारा ले जाने या जहाजों, नाविकों आदिसे जिसका संबंध हो। **–प्रभार**–पु० (टनेज) पोत या जहाजपर लादे जा सकनेवाले मालका कुल भार; जहाजका खुद अपना भार या उस जलराशिका भार जो समुद्रादिमें संतरण किये जानेपर उसके द्वारा हटायी जाय। **–बंधन**–पु० हिमालयकी वह चोटी जिससे मनुने प्रलयकालमें अपनी नाव बाँधी थी (म० भा०)। **–बलाध्यक्ष**–पु० (एडमिरल) नौबल या नौसेनाका प्रधान सेनापति, नौसेनाका सबसे बड़ा अधिकारी। **–यायी(यिन्)**–वि० नाव या जहाजसे जानेवाला (माल या मुसाफिर)। **–वाह**–पु० दे० 'नौनेता'। **–विज्ञान**–पु० (नॉटिकल साइंस) जहाजों, नाविकों या नौका-नयन संबंधी विज्ञान। **–व्यसन**–पु० पोतभंग। **–साधन**–पु० बेड़ा। **–सेना**–स्त्री० समुद्री लड़ाई लड़नेवाली सेना, जंगी जहाजोंपरसे लड़नेवाली सेना, जलसेना। **–०पति**–पु० नौसेनाका अध्यक्ष।

नौ–वि० आठ और एक, आठसे एक अधिक। पु० नौकी संख्या। **–कड़ा**–पु० प्रतिव्यक्ति तीन-तीन कौड़ियाँ लेकर तीन व्यक्तियों द्वारा खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ। **–गरें,–गिरिही***–स्त्री० दे० 'नौगही'। **–गही,–ग्रही**–स्त्री० हाथका एक गहना; नौ रत्नोंवाला हार। **–तेरही**–स्त्री० एक प्रकारकी पुरानी ईंट; पासोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ। **–दसी**–स्त्री० किसानोंकी जमीदारोंसे रुपया लेनेकी एक रीति जिसके अनुसार वे सालभरमें ९) के बदले १०) देते हैं। **–धा**–वि० नौ प्रकारका (नौधाभक्ति)। अ० दे० 'नवधा'। **–नगा**–पु० नौ नगोंवाला हाथमें पहननेका एक गहना। **–मासा**–पु० गर्भाधानसे नवाँ मास;

इस मासमें की जानेवाली एक रस्म जिसमें मिटाई आदि बँटती है। **–रतन**–पु० दे० 'नवरत्न'; नौनगा। स्त्री० खटाई, गुड़, मिर्च, केसर आदि नौ चीजोंसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी चटनी। **–रातर**†–पु० दे० 'नवरात्र'। **–लक्खा**†–वि० दे० 'नौलखा'। **–लखा**–वि० जिसकी कीमत नौ लाख हो, नौ लाखका। **–सत***–पु० सोलहों शृंगार–'नौसत साजे चली गोपिका गिरिवर पूजा हेतु'–सूर। **–सर**†–पु० चालबाजी, फरेब। **–सरा**–पु० नौ लड़ियोंवाली माला। **–सरिया**–वि० चालबाज, फरेबी; जालिया। मु०–**तेरह बाईस बनाना**–टाल-मटूल करना। **–दो ग्यारह होना**–चंपत होना, भाग जाना।

नौ*–वि० नव, नया। **–तोड़**–वि० पहली बार जोता हुआ (खेत)। **–बढ़***–वि० जो हालमें बुरी दशासे अच्छी दशाको प्राप्त हुआ हो। **–बढ़िया,–बढ़ुआ**–वि० दे० 'नौबढ़'। **–रंग**–पु० एक पक्षी; * औरंग–औरंगजेब शब्दका एक विकृत रूप। **–रस**–वि० ताजा पका हुआ (फल); नौजवान। **–रूप**–पु० नीलकी पहली कटाई। **–सिख,–सिखिया,–सिखुवा**–वि० जिसने अभी सीखना आरंभ किया हो; जिसने अभी हालमें ही सीखा हो। **–हँड़**–पु० कोरी हाँड़ी; वह जो दूसरी जातिकी बनायी हुई कच्ची रसोई न खाता हो। **–हँड़ा**–पु० पितृपक्ष।

नौ–वि० (फा०) नया, हालका, ताजा। **–आबाद**–वि० हालका बसा हुआ, जहाँ लोग हालमें बसे हों। **–आबादी**–स्त्री० नया बसा हुआ स्थान या देश, उपनिवेश। **–आमूज़**–वि० नौसिखिया। **–कडा**–वि० नौजवान। **–ख़स्ता**–वि० नयी उम्रका, नौजवान। **–खेज़**–वि० दे० 'नौख़स्ता'। **–खेज़ी**–स्त्री० नौजवानी। **–चंदा**–पु० चाँदसे दूसरा दिन। **–चंदी**–स्त्री० चाँदसे शुरू होनेवाले महीनोंकी पहली जुमेरात। **–जवान**–वि० चढ़ती जवानीवाला। पु० नवयुवक। **–जवानी**–स्त्री० उठती जवानी, चढ़ती युवावस्था। **–दौलत**–वि० जो हालमें मालवर हो गया हो, नया मालदार। **–निहाल**–पु० नौजवान, नवयुवक। **–बरार**–पु० वह जमीन जिसपर पहली बार मालगुजारी लगी हो। **–बाला**–स्त्री० वह लड़की जो हालमें बालिग हुई हो। **–रोज़**–पु० (पारसियोंका) वर्षका पहला दिन; त्योहार या खुशीका दिन। **–शहाना**–वि० दूल्हे जैसा, दूल्हेके समान। **–शा,–शाह**–पु० नौजवान शाह; दूल्हा, वर। **–शी**–स्त्री० दुलहिन, नववधू।

नौकर–पु० (फा०) वह कर्मचारी जो वेतन लेकर किसीका काम करे; छोटे-मोटे कामोंको करनेके लिए नियुक्त किया गया वैतनिक सेवक, भृत्य, खिदमतगार। **–शाही**–स्त्री० कर्मचारियों द्वारा संचालित शासन-प्रबंध, दफ्तरी हुकूमत, 'ब्यूरोक्रेसी'।

नौकराना–पु० दस्तूरी; वेतन या इनामके रूपमें नौकरको दी जानेवाली रकम; नौकर-खर्च।

नौकरानी–स्त्री० टहल करनेवाली स्त्री, दासी, भृत्या।

नौकरी–स्त्री० नौकरका काम या पेशा, सेवा, मुलाजमत; वह काम जिसे करनेवालेको नियत वेतन दिया जाय। **–पेशा**–वि०, पु० नौकरी करके जीवन निर्वाह करनेवाला।

नौका–स्त्री० (सं०) नाव; पोत। **–दंड**–पु० डाँड़ा।

नौकाधिकरण–पु० (एडमिरलटी) दे० 'नावधिकरण'।

नौची–स्त्री० नवयुवती; वह अपनी या परायी लड़की जिसे वेश्या अपना पेशा सिखाती है।

नौछावर†–स्त्री० दे० 'निछावर'।

नौज–अ० ऐसी नौबत न आये, भगवान् न करे; कुछ परवाह नहीं, बलासे (स्त्री०)। (अ० 'नऊज'–हम पनाह माँगते हैं); * पु० दे० 'नौजा'।

नौजा*–पु० बादाम; चिलगोजा।

नौजी–स्त्री० लीची। † अ० दे० 'नौज'।

नौटंकी–स्त्री० साधारण जनतामें प्रचलित शृंगार तथा वीररस प्रधान एक तरहका नाटक, जिसमें संगीतकी प्रधानता होती है।

नौतन*–वि० दे० 'नूतन'।

नौतम*–वि० बिलकुल नया–'तुम्ह सतगुरु मैं नौतम चेला'–कबीर; ताजा। पु० नम्रता।

नौता*–वि० नया। पु० दे० 'न्योता'।

नौथारी†–पु० निमंत्रित व्यक्ति।

नौबा†–पु० वर्षारंभमें बोयी हुई नीलकी फसल; नया बाग। वि० दे० संख्यावाचक 'नौ'में।

नौन*–पु० नमक।

नौना–अ० क्रि० नत होना, झुकना; नम्र होना। * वि० सुंदर।

नौनिहाल–दे० 'नौ' (फा०) के साथ।

नौबत–स्त्री० (फा०) बारी; गत, दुर्दशा; स्थिति, योग; हालत, दशा; उत्सव, मंगल आदि सूचित करनेवाला बाजा; समय-समयपर बजनेवाला बाजा; धौंसा, नगाड़ा। **–ख़ाना**–पु० नौबत बजानेका फाटकके ऊपरका कमरा या स्थान। **–नवाज़**–पु० नक्कारची। **–निशान**–पु० नगाड़ा और झंडा। **–बनौबत**–अ० बारी-बारीसे, क्रमशः। मु०–**की टकोर**–धौंसेकी आवाज। **–गुज़रना**–मौका जाता रहना; दुर्दशा होना। **–झड़ना**–नौबत बजना। **–बजना**–आमोद-प्रमोद होना, खुशी मनायी जाना। **–बजाकर**–सरेआम, गा-बजाकर। **–बजाना**–आमोद-प्रमोद करना, खुशी मनाना।

नौबती–पु० (फा०) नौबत बजानेवाला; चौकीदार, पहरेदार; सजा हुआ, पर बिना सवारका घोड़ा, कोतल घोड़ा; भारी खेमा या तंबू। वि० बारीसे होनेवाला (जैसे–नौबती बुखार)। **–दार**–पु० खेमेका चौकीदार; प्रहरी, द्वारपाल।

नौमि–(सं०) प्रणाम करता हूँ।

नौमी–स्त्री० दे० 'नवमी'।

नौमुसलिम–वि० (अ०) जो हालमें ही मुसलमान हुआ हो।

नौरंगी†–स्त्री० दे० 'नारंगी'।

नौल*–वि० दे० 'नवल'।

नौला†–पु० दे० 'नेवला'।

नौलासी–वि० मुलायम।

नौवाब–पु० दे० 'नवाब'।

नौवाबी–स्त्री० दे० 'नवाबी'।

नौशेरवाँ–पु० (फा०) ईसाकी छठी सदीका फारसका एक अति न्यायप्रिय प्रतापी बादशाह।

नौसादर–पु० एक प्रकारका क्षार जो प्रायः जानवरोंके मलमूत्रसे तैयार किया जाता है।

नौहा–पु० (अ०) मृतकके लिए रोना पीटना; करबलाके शहीदोंपर शोक प्रकट करनेके लिए लिखित गीत।

न्यंक–पु० (सं०) रथका एक विशेष अंग।

न्यंकु–पु० (सं०) बारहसिंगा; एक मुनि। वि० बहुत चलनेवाला, अति गमनशील। **–भूरुह**–पु० सोनापाठा। **–सारिणी**–स्त्री० एक वैदिक छंद।

न्यंग–पु० (सं०) चिह्न; भेद, प्रकार।

न्यंचन–पु० (सं०) मोड़; छिपनेका स्थान; विवर।

न्यंचनी–स्त्री० (सं०) गोद।

न्यंचित–वि० (सं०) नीचे फेंका हुआ, अधःक्षिप्त; झुकाया हुआ।

न्यंजलिका–स्त्री० (सं०) नीचे झुकायी अंजली।

न्यंत–पु० (सं०) अंतिम भाग; सामीप्य।

न्यक्(न्यंच)–वि० (सं०) निम्न। **–करण,–कार**–पु० नीचा दिखाना; तिरस्कार; त्याग; अनुकरणका उलटा।

न्यक्ष–पु० (सं०) भैंसा; परशुराम; एक तरहकी घास। वि० निकृष्ट, अधम; समग्र।

न्यग्–'न्यक्'का समासगत रूप। **–भाव**–पु० घटकर होना, अपकर्ष; तिरस्कार। **–भावित**–वि० तिरस्कृत। **–रोध**–पु० बड़, बरगद; शमीका पेड़; बाहु; लंबाईका परिमाण जो ऊपर हाथ किये हुए मनुष्यके बराबर होता है, पुरसा; विष्णु; शिव; राजा उग्रसेनका एक पुत्र (पु०); मूसाकानी; मोहनौषधि। **–०परिमंडल**–पु० एक पुरसा घेरेका आदमी। **–०परिमंडला**–स्त्री० कठिन स्तनों, भारी नितंबों तथा पतली कमरवाली स्त्री; सुंदर स्त्री। **–रोधिका,–रोधी**–स्त्री० विषपर्णी।

न्यग्रोधादिगण–पु० (सं०) बरगद, पीपल आदि २३ वृक्षोंका एक गण (आ० वे०)।

न्यग्रोधिक–वि० (सं०) जहाँ या जिसमें बड़की प्रचुरता हो।

न्यच्छ–पु० (सं०) तिल; एक क्षुद्र रोग जिसमें काले या सफेद रंगके छोटे-बड़े दाग देहपर पड़ जाते हैं (सुश्रुत)। वि० बहुत अच्छा।

न्यय–पु० (सं०) क्षय, नाश।

न्यर्बुद–वि० (सं०) दस अरब। पु० दस अरबकी संख्या।

न्यर्बुदि–पु० (सं०) एक रुद्र।

न्यसन–पु० (सं०) किसीके पास जमा करना; रखना; देना; छोड़ देना।

न्यस्त–वि० (सं०) रखा या डाला हुआ; निहित; छोड़ा हुआ, त्यक्त। **–दंड**–वि० सजा न देनेवाला। **–देह**–वि० मरा हुआ, मृत। **–शस्त्र**–वि० जिसने हथियार डाल दिये हों; निहत्था, अरक्षित।

न्यस्य–वि० (सं०) रखने, निहित करने तथा छोड़ने योग्य।

न्यह्न–पु० (सं०) अमाका संध्याकाल।

न्यांक्व–पु० (सं०) बारहसिंगेका चमड़ा।

न्याइ, न्याउ|–पु० दे० 'न्याय'।

न्याक्य–पु० (सं०) भूना हुआ चावल, फरही।

न्याति*–स्त्री० जाति।

न्याद–पु० (सं०) आहार; खाना।

न्याना|–वि० अनजान; अबोध; कम उम्रका।

न्याय–पु० (सं०) उचित-अनुचितका विवेक, नीतिसंगत बात, इंसाफ; विवाद या मामलेमें दोनों पक्षोंकी सचाई-झुठाई आदिके अनुसार किया गया निबटारा, फैसला; विष्णु; सादृश्य; ६ आस्तिक दर्शनोंमेंसे एक जिसके प्रवर्तक गौतम ऋषि माने जाते हैं; प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण आदि ६ अंगोंवाला वाक्य जिससे पदार्थानुमान संपन्न होता है (न्या०); लोक, शास्त्रमें विशिष्ट प्रसंगमें प्रयुक्त होनेवाला कहावतकी तरहका दृष्टांत-वाक्य (जैसे-देहलीदीपन्याय)। * वि० ठीक, उचित; जैसा, समान। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० पु० न्याय करनेवाला, फैसला करनेवाला, विचारपति, निर्णायक। **–ज्ञ**–पु० (जूरिस्ट) न्याय-शास्त्रका ज्ञाता। **–पथ**–पु० न्यायका मार्ग, न्यायोचित मार्ग; मीमांसादर्शन। **–पर**–वि० न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायी। **–परता**–स्त्री० न्यायपर या न्यायी होनेका भाव। **–परायण**–वि० दे० 'न्यायपर'। **–परायणता**–स्त्री० दे० 'न्यायपरता'। **–पालिका** स्त्री० (जूडिशियरी) देशके न्यायाधीशोंका समूह; देशका न्याय-विभाग या न्याय-व्यवस्था। **–पीठ**–पु० (बेंच) न्यायाधीशका आसन, धर्मासन। **–प्रिय**–वि० जिसे न्याय प्रिय हो, न्यायशील। **–मूर्ति**–पु० (जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति'। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० न्यायानुसार आचरण करनेवाला। **–वादी(दिन्)**–वि० उचित बात कहनेवाला। **–विभ्रंश**–पु० (मिसकैरिज ऑफ जस्टिस) न्यायका उचित मार्गसे भ्रष्ट हो जाना, न्यायके लक्ष्यकी सिद्धिसे बहक जाना, न्यायवैफल्य। **–वृत्त**–पु० शास्त्रविहित आचार। **–शास्त्र**–पु० (जूरिसप्रूडेंस) न्याय या विधिसंबंधी शास्त्र; दे० 'विधि-विज्ञान'; दे० 'तर्कशास्त्र'। **–शील**–वि० दे० 'न्यायपर'। **–शुल्क**-पु० (कोर्ट फी) न्यायालयमें कोई आवेदनपत्र उपस्थापित करते समय दिया जानेवाला शुल्क जो प्रायः स्टांप (अंकपत्र)के रूपमें होता है। **–संगत**–वि० न्यायोचित। **–सभा**–स्त्री० अदालत, कचहरी, न्यायालय। **–सभ्य**–पु० (जूरी) फौजदारीके कुछ खास-खास मुकदमोंका विचार करते समय दौरा जजकी सहायता करनेके लिए नियुक्त सभ्यगण, जिनकी संख्या प्रायः ३ से ५ तक होती है (इनसे न्यायाधीशका मतभेद होनेपर मामला उच्च न्यायालयमें भेज दिया जाता है)। **–सारिणी**–स्त्री० युक्तिसंगत कार्य।

न्यायतः(तस्)–अ० (सं०) न्यायके अनुसार, न्यायको दृष्टिमें रखते हुए, न्यायसे।

न्यायाधिकरण–पु० (ट्राइब्यूनल) किसी विवादग्रस्त विषय या विषयोंपर विचार कर न्यायिक निर्णय करनेवाला अधिकारी या इसी उद्देश्यसे स्थापित विशेष न्यायालय।

न्यायाधिपति–पु० (जस्टिस) राज्यके मुख्य न्यायालय या देशके सर्वोच्च न्यायालयका न्यायाधीश, न्यायमूर्ति (इन न्यायाधीशोंमें जो प्रधान होता है उसे मुख्य न्यायाधिपति (चीफ जस्टिस) कहते हैं)।

न्यायाधीन–वि० (सब जुडिसी) दे० 'अभिनिर्णयाधीन'।

न्यायाधीश–पु० (सं०) विवाद या मामलेका निबटारा करनेवाला अधिकारी, न्यायकर्ता, विचारपति, 'जज'।

न्यायालय–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ न्यायाधीश विवाद या मामलेका निर्णय करता है, अदालत, कचहरी।

न्यायिक निर्णय–पु० (एडजुडिकेशन) न्यायासनपर बैठकर किसी मामलेके संबंधमें निर्णय देना या इस तरह दिया गया निर्णय।

न्यायिक प्राधिकारी–पु० (जुडीशल अथॉरिटी) न्याय-विभागका प्राधिकारी।

न्यायिक मुद्रांक–पु० (जुडीशल स्टांप) न्यायालयके कागज-पत्रोंपर लगायी जानेवाली मुहर या मुद्राकी छाप।

न्यायी(यिन्)–वि० (सं०) न्यायके अनुसार आचरण करनेवाला, न्यायके पथपर चलनेवाला।

न्यायोचित–वि० (सं०) जो न्यायतः ठीक या उचित हो, जो न्यायके विरुद्ध न हो।

न्याय्य–वि० (सं०) न्यायसंगत, न्यायोचित।

न्यार*–वि० दे० 'न्यारा'। पु० तिन्नी धान, निवार, पसही।

न्यारा–वि० जो दूर हो, दूरस्थ; दूरका, जो अलग हो; पृथक्; दूसरे प्रकारका, भिन्न, दीगर; अद्भुत, विचित्र, अपूर्व।

न्यारिया–पु० वह जो सुनारोंकी दूकानकी राख आदिमेंसे सोना-चाँदी निकालता है।

न्यारे–अ० अलग; दूर।

न्याव–पु० उचित-अनुचितका विवेक, इंसाफ; विवाद या मामलेका निर्णय, फैसला; आचारकी रीति। मु०**–चुकाना**–निर्णय करना, फैसला करना।

न्यास–पु० (सं०) रखना, स्थापन; उचित स्थानपर रखना; धरोहर, निक्षेप, अमानत; अर्पण; छोड़ना, त्याग; चिह्न, निशान; अंकन; स्वर मंद करना; (ट्रस्ट) किसी विशेष कार्यमें लगानेके लिए विश्वासपूर्वक सौंपी हुई संपत्ति या इस प्रकार सौंपनेका कार्य। **–धारी(रिन्)**–वि०, पु० (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे ऐसी संपत्ति सौंपी जाय; धरोहर रखनेवाला। **–स्वर**–पु० वह स्वर जिसपर राग समाप्त हो।

न्यासापह्नव-पु० (सं०) किसीकी धरोहर हड़प जाना।

न्यासिक-पु० (सं०) वह जो अपने पास किसीकी धरोहर रखे।

न्यासिता–स्त्री० (ट्रस्टीशिप) किसी संपत्ति या जायदादका प्रबंध ट्रस्टियों (न्यासियों)के हाथ सौंप देनेकी क्रिया; अमानत।

न्यासी(सिन्)–पु० (सं०) सन्न्यासी। वि० त्यागी; (ट्रस्टी) वह व्यक्ति जिसे किसी धन या संपत्तिका न्यास (विशेष उद्देश्यसे विश्वासपूर्वक समर्पण) कर दिया गया हो; दे० 'न्यासधारी'।

न्युब्ज–वि० (सं०) जिसका मुँह नीचेकी ओर हो, औंधा, अधोमुख; कुबड़ा। पु० बरगद; कुशकी स्रुवा; कमरख; श्राद्धमें काम आनेवाला पात्र। **–खड्ग**–पु० टेढ़ी तलवार।

न्यूज़–पु० (अं०) समाचार, संवाद। **–प्रिंट**–पु० अखबारी कागज।

न्यूट्रॉन–पु० (अं०) एक क्षुद्र कण, जिसमें कोई विद्युत् आवेश नहीं होता और जिसका द्रव्यमान प्रोटॉनके द्रव्यमानसे कुछ ही अधिक होता है। सामान्य हाइड्रोजन परमाणुको छोड़कर अन्य सभी तत्वोंके परमाणुनाभिकोंमें न्यूट्रॉन अनिवार्यतः मौजूद होता है।

न्यूट्रिनो–पु० (अं०) परमाणु नाभिकके अन्दर पाया जानेवाला एक क्षुद्र कण।

न्यून–वि० (सं०) जो घटकर हो; कम, थोड़ा; विकारयुक्त, विकृत; हीन; नीच; निकृष्ट। **–कोण**–पु० (एक्यूट एंगिल) वह कोण जो एक समकोणसे छोटा हो। **–०त्रिभुज**–पु० (ऐक्यूट-एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसके तीनों कोण न्यूनकोण हों। **–धी**–वि० कमअक्ल, मूर्ख। **–पोषण**–पु० (मैलन्यूट्रीशन) खाद्य-वस्तुओंकी खराबी, कमी आदिके कारण पर्याप्त पोषणका न मिलना, कुपोषण; (अंडर-नरिशमेंट) पोषणकी या पोषक तत्त्वोंकी कमी। **–वयस्क**–वि० (माइनर) दे० 'नाबालिग', 'अवयस्क'।

न्यूनता–स्त्री० (सं०) न्यून होनेका भाव, कमी; हीनता; नीचता;

सदोषता । **–बोधक**–वि० (डिम्यूनिटिव) यह उससे न्यून या छोटा है, यह बोध करानेवाला (शब्द), ऊनवाचक, अल्पार्थक ।

न्यूनन–पु० (एब्रिजमेंट) घटा देना, कम कर देना, छोटा कर देना, संक्षेपण ।

न्यूनांग–वि० (सं०) जिसका कोई अंग विकृत हो ।

न्यूनाधिक–वि० (सं०) कम-वेश; असम ।

न्यूनीकरण–पु० (अबेटमेंट) कम कर देना, घटा देना ।

न्यूनोन्नत क्षेत्र–पु० (अंडर-डेवलप्ड एरिया) वह भूभाग जो उद्योगों, खनिज द्रव्यों आदिकी दृष्टिसे बहुत पिछड़ा हुआ हो, जिसकी बहुत कम उन्नति हुई हो, अर्धविकसित क्षेत्र ।

न्यूमोनिया–पु० दे० ‘फुप्फुस दाह’ ।

न्योचनी–स्त्री० (सं०) दासी, परिचारिका ।

न्योछावर–स्त्री० दे० ‘निछावर’ ।

न्योजी*–स्त्री० लीची; चिलगोजा ।

न्योतना–स० क्रि० उत्सव, भोज आदिके लिए निमंत्रित करना ।

न्योतनी–स्त्री० विवाहादि अवसरोंपर होनेवाला भोज ।

न्योतहरी–पु० निमंत्रित व्यक्ति ।

न्योता–पु० निमंत्रण; भोज आदिका निमंत्रण, दावत; वह रकम या वस्तु जो न्योतहरी न्योता देनेवालेको देता या उसके यहाँ भेजता है ।

न्यौज*–पु० दे० ‘नेवज’ ।

न्यौरा*–पु० दे० ‘नेवला’; बड़े दानोंका घुँघरू ।

नृप*–पु० नृप, राजा ।

न्वैनी*–स्त्री० दे० ‘नोई’ ।

न्हवाना*–स० क्रि० नहलाना, स्नान कराना ।

न्हान*–पु० स्नान ।

न्हाना*–अ० क्रि० नहाना ।

प

प–देवनागरी वर्णमालामें पवर्गका प्रथम वर्ण । उच्चारण-स्थान ओष्ठ ।

पंक–पु० (सं०) कीचड़; दलदल; घनी बड़ी राशि; पाप; पोतने योग्य गीला पदार्थ; लेप । **–कर्बट**–पु० जलयुक्त पंक । **–कीर**–पु० टिटिहरी नामक चिड़िया । **–क्रीड,–क्रीडन,–क्रीडनक**–पु० सूअर । **–गडक**–पु० एक प्रकारकी मछली । **–ग्राह**–पु० मगर । **–च्छिद**–पु० निर्मली । **–ज**–वि० जो कीचड़से उत्पन्न हो । पु० कमल; सारस पक्षी । **–०जन्मा(न्मन्)**–पु० ब्रह्मा । **–०नाभ**–पु० विष्णु । **–०राग**–पु० पद्मराग मणि । **–०वाटिका**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–जन्म(न्)**–पु० कमल । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० सारस पक्षी । वि० पंकसे उत्पन्न होनेवाला । **–जात**–पु० कमल । **–जित्**–पु० गरुड़का एक पुत्र । **–दिग्ध**–वि० कीचड़ पुता हुआ, जिसमें कीचड़ लगा हो । **–०शरीर**–पु० एक दानव । **–दिग्धांग**–वि० जिसके अंगोंमें कीचड़ लगा हो । पु० कार्त्तिकेयका एक अनुचर । **–धूम**–पु० एक नरक (जै०) । **–पर्पटी**–स्त्री० गोपी-चंदन । **–पिच्छला**–वि० स्त्री० कीचड़के कारण जिसमें फिसलन पैदा हो गयी हो ‘पंक पिच्छला हो गई, सुंदर और सुखद मही’ । **–प्रभा**–स्त्री० एक नरक जहाँ कीचड़ ही कीचड़ है । **–भाक्(ज्)**–वि० कीचड़में निमग्न । **–भारक**–वि० पंकिल । **–मंडूक**–पु० घोंघा । **–रुह**–पु० कमल । **–वास**–पु० केकड़ा । **–शुक्ति**–स्त्री० सुतही; घोंघा । **–शूरण,–सूरण**–पु० कमल या कुमुद-की जड़ ।

पंकजासन–पु० (सं०) ब्रह्मा ।

पंकजिनी–स्त्री० (सं०) कमलका पौधा; पद्म-राशि; कमलपूर्ण जलाशय; कुमुद-दंड ।

पंकण–पु० (सं०) चांडालकी झोपड़ी या निवासस्थान ।

पंकार–पु० (सं०) सेवार; सेतु; बाँध; सीढ़ी, सोपान; जल-कुब्जक; सिंघाड़ा ।

पंकिल–वि० (सं०) पंकयुक्त, जिसमें कीचड़ मिला हो, कीचवाला ।

पंकिलता–स्त्री० (सं०) कलुष; कालिमा; गंदगी ।

पंकेज–पु० (सं०) कमल ।

पंकेरुह–पु० (सं०) कमल, सारस ।

पंकेशय–वि० (सं०) कीचड़में रहनेवाला ।

पंकेशया–स्त्री० (सं०) जोंक ।

पंक्चर–पु० (अं०) ट्यूब, ब्लैडर आदिमें किसी नुकीली चीजके चुभने या कटनेसे होनेवाला छेद ।

पंक्ति–स्त्री० (सं०) वह समूह जिसमें प्रायः सजातीय पदार्थ या व्यक्ति एक-दूसरेके पीछे या बगलमें क्रमके अनुसार स्थित हों, श्रेणी, कतार; एक वर्णिक छंद; एक वैदिक छंद; पाँचका समाहार; दसकी संख्या; कुलीन ब्राह्मणोंकी श्रेणी; भोजमें एक साथ खाने-वालोंकी पाँत, पंगत; वर्तमान पीढ़ी; पाक; पृथ्वी; गौरव । **–कंटक,–दूष,–दूषक**–पु० वह पतित ब्राह्मण जो अच्छे ब्राह्मणोंके साथ भोजन करनेके योग्य न हो । (ऐसे ब्राह्मणको श्राद्धमें खिलाना तथा दान देना वर्जित है—स्मृ०) । **–ग्रीव**–पु० रावण । **–चर**–पु० कुरर पक्षी । **–च्युत**–वि० (डिग्रेडेड) दे० ‘कोटिच्युत’, जो अपनी पंक्ति या कोटि (दरजे)से नीचे हटा दिया गया हो, अव-क्रमित । **–पावन**–पु० विद्या, तप आदिसे विशिष्ट ब्राह्मण जिससे श्राद्धमें निमंत्रित ब्राह्मणोंकी पंक्ति पवित्र हो जाती है; वह ब्राह्मण जो पंक्ति-दूषक द्वारा अपवित्र की गयी पंक्तिको पवित्र बना देता है (स्मृ०), पंक्तिदूषकका उलटा । **–बद्ध**–वि० श्रेणीबद्ध । **–बाह्य**–वि० पंक्ति या जातिसे बाहर किया हुआ । **–बीज**–पु० बबूल । **–रथ**–पु० दशरथ ।

पंक्तिका–स्त्री० (सं०) कतार, पंक्ति ।

पंख–पु० पर, डैना । मु० **–जमना**–भागने, खिसकने, कुमार्गपर चलने या प्राण गँवानेका लक्षण प्रकट होना । **–परेवा बना डालना**–बातका बतंगड़ बना देना, छोटी-सी चीजको तूल दे देना, मामूली-सी बातको बहुत बढ़ा देना (अमर०) । **–लगाना**–पक्षीकी-सी गतिसे युक्त होना; उड़ान भरना ।

पँखड़ी–स्त्री० फूलका वह पत्तेके समान अवयव जिसके संकोचसे वह मुकुलित रहता है और फैलावसे खिलता है, फूलकी पत्ती, पुष्पदल ।

पंखा–पु० वह वस्तु जिससे हवा की जाती है; † दे० ‘पखुरा’ । **–कुली**–पु० पंखा खींचनेवाला नौकर । **–पोश**–पु० पंखेका खोल । मु० **–करना**–पंखा डुलाकर किसी ओर हवाका झोंका या वायुका संचार करना ।

पंखाज–पु० पखावज ।

पँखिया*–स्त्री० भूसीके महीन टुकड़े; पँखड़ी ।

पंखी–पु० पक्षी; पाँखी; साखूके फलके ऊपरकी छोटी हलकी पत्ती । स्त्री० छोटा पंखा ।

पँखुड़ा, पँखुरा†–पु० दे० ‘पखुरा’ ।

पँखुड़ी, पँखुरी*–स्त्री० दे० ‘पँखड़ी’ ।

पँखेरू†–पु० दे० ‘पखेरू’ ।

पंग*–वि० लँगड़ा; कुंठित; बेकाम; अवरुद्ध; स्तब्ध । पु० कन्नौज नरेश जयचंद (रासो) । **–जा**–स्त्री० संयोगिता ।

पंगत, पंगति–स्त्री० पंक्ति, कतार; भोजमें एक साथ खानेवालोंकी पाँत; समाज; भोज ।

पँगला–वि० दे० ‘पंग’ ।

पंगा–वि० दे० ‘पंग’ ।

पंगु–वि० (सं०) जो पाँवके बेकाम होनेसे चल-फिर न सकता हो; जो चल न सके; गतिहीन, शक्तिहीन । पु० शनि ग्रह; लँगड़ा आदमी । **–गति**–स्त्री० वर्णिक छंदोंका एक दोष । **–ग्राह**–पु० मगर; मकर राशि । **–पीठ**–पु० लँगड़ेको बिठाकर कहीं ले जानेकी गाड़ी, पर्प ।

पंगुक–वि० (सं०) दे० ‘पंगु’ ।

पंगुता–स्त्री० (सं०) दे० ‘पंगुत्व’ ।

पंगुत्व–पु० (सं०) लँगड़ापन । **–हारिणी**–स्त्री० शिमड़ी नामक क्षुप ।

पंगुल–वि० (सं०) पंगु । पु० लँगड़ापन; काँच जैसा सफेद घोड़ा ।

पँगुला–वि० दे० ‘पंगु’ ।

पंच–वि० (सं०) विस्तृत, चौड़ा (दे० 'पंचानन')। **–पात्र**–पु० पूजनके कामका गिलासके आकारका एक चौड़े मुँहका पात्र (दे० 'पंच(न्)'में भी। **–मुख,–वक्त्र**–वि० चौड़े या विस्तृत मुखवाला। पु० सिंह। (दे० 'पंच (न्)'में भी)।

पंच(न्)–वि० (सं०) पाँच। पु० पाँचकी संख्या। **–कन्या**–स्त्री० अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी–ये पाँच स्त्रियाँ जो कन्याके समान पवित्र मानी गयी हैं। **–कपाल**–पु० वह पुरोडाश जिसका संस्कार पाँच कपालों(कसोरों)में किया गया हो। वि० पाँच कसोरोंमें तैयार किया हुआ। **–कर्पट**–पु० महाभारतमें वर्णित एक देश। **–कर्म(न्)**–पु० पाँच प्रकारके कर्म–उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन (न्या०); वैद्यकमें चिकित्साके अंतर्गत पाँच क्रियाएँ–वमन, विरेचन, नस्य, निरूह और अनुवासन। **–कर्मी**–स्त्री० उपचारके पाँच अंग, पंचकर्म। **–कल्याण,–कल्याणक**–पु० वह घोड़ा जिसके पैर और मुँह सफेद रंगके हों (ऐसा घोड़ा बहुत मांगलिक माना जाता है)। **–कवल**–पु० भोजनके पहले पक्षियों आदिके लिए निकाला जानेवाला पाँच ग्रास अन्न। **–कषाय**–पु० जामुन, सेमर, बेर, मौलसिरी और बरियारा–इन पाँच वृक्षोंकी छालका रस। **–काम**–पु० पाँच प्रकारके कामदेव। जिनके नाम हैं–काम, मन्मथ, कंदर्प, मकरध्वज और मीनकेतु। **–कारण**–पु० कार्योत्पत्तिके पाँच कारण–काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म (जै०)। **–कृत्य**–पु० ईश्वरके सृष्टि, ध्वंस, संहार, तिरोभाव और अनुग्रहकरण–ये पाँच कर्म। **–कृष्ण**–पु० एक कीड़ा। **–कोण**–पु० पाँच भुजाओंवाला क्षेत्र (ज्या०)। वि० पाँच कोनोंवाला। **–कोल**–पु० पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रकमूल और सोंठ–इन पाँच ओषधियोंका समाहार। **–कोश,–कोष**–पु० वेदांतके अनुसार आत्माके आवरणरूप पाँच कोश जो इस प्रकार हैं–अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। **–कोस**–पु० (हिं०) काशीपुरी। **–कोसी**–स्त्री० (हिं०) काशीकी परिक्रमा। **–क्रोशी**–स्त्री० पाँच कोसका फासला; काशी पुरी जो पाँच कोसमें बसी हुई है। **–क्लेश**–पु० अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश–ये पाँच क्लेश (यो०)। **–क्षारगण**–पु० पाँच प्रकारके लवण–काच, सैंधव, सामुद्र, विट् और सौवर्चल (आ० वे०)। **–खट्व**–पु० पाँच खटियोंका समाहार। **–खट्वी**–स्त्री० दे० 'पंच-खट्व'। **–गंग**–पु० गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा–इन पाँच नदियोंका समाहार। **–गंगा(घाट)**–पु० (हिं०) काशीका एक प्रसिद्ध स्थान जो कई नदियोंका संगमस्थान माना जाता है। **–गणयोग**–पु० विदारीगंधा, बृहती, पृश्निपर्णी, निदिग्धिका और भूकुष्मांडका योग (आ० वे०)। **–गत**–वि० (वह राशि) जो अपनेमें पाँच बार गुणित हो, जैसे ५।क (वी० ग०)। **–गव**-पु० पाँच गायों या बैलोंका समाहार। **–गव्य**–पु० गायके दूध, दही, घी, गोबर और मूत्रको एकमें मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक पदार्थ जो बहुत पवित्र माना जाता है। **–गु**–वि० पाँच गायें देकर खरीदा हुआ। **–गुण**–पु० शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध–ये पाँच गुण। वि० पँचगुना। **–गुणी**–स्त्री० पृथ्वी। **–गुप्त**–पु० कछुवा; चार्वाक दर्शन। **–गुप्तिरसा**–स्त्री० स्पृक्का। **–गोटिया** -पु० (हिं०) पाँच गोटियोंसे खेला जानेवाला एक खेल। **–गौड**–पु० उत्तरी भारतके पाँच प्रकारके ब्राह्मण–सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और औत्कल (उत्कल)। **–ग्रामी** -स्त्री० पाँच गाँवोंका समूह। **–ग्रास**–पु० दे० 'पंचकवल'। **–घात** -पु० संगीतका एक ताल। **–चक्र**–पु० पाँच चक्रों–राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और दशचक्र–का समाहार (तं०)। **–चक्षु(स्)**–पु० बुद्ध। **–चामर**–पु० एक छंद। **–चीर**–पु० एक बुद्ध, मंजुश्री। **–चूड़**–वि० पाँच कलगियों या केशगुच्छोंवाला। **–चूड़ा**–स्त्री० एक अप्सरा। **–चोल**–पुं० हिमालय श्रेणीका एक भाग। **–जन**–पु० आत्मा; मनुष्य; निषाद सहित ब्राह्मण आदि चार वर्ण; देव; मनुष्य, नाग, गंधर्व और पितर–ये पाँच प्रकारके प्राणी; एक असुर जिसे कृष्णने मारा था और जिसकी हड्डीसे उनका पांचजन्य नामक शंख बना था; एक प्रजापति; संजयका एक पुत्र। **–जनी**–स्त्री० पाँच व्यक्तियोंका समुदाय। **–जनीन**–पु० अभिनेता, विदूषक। वि० पंचजनसंबंधी। **–ज्ञान**–पु० बुद्ध; पाशुपत दर्शनका ज्ञाता। **–तंत्र**–पु० संस्कृतिकी एक प्रसिद्ध पुस्तक जिसमें मित्रलाभ, सुहृद्भेद आदि पाँच प्रकरणोंके अंतर्गत अनेक नीतिविषयक कथाएँ दी हुई हैं। **–तंत्री**–स्त्री० पाँच तारोंवाली वीणा। **–तत्त्व**–पु० पंचभूत; पंचमकार। **–तन्मात्र**–पु० रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द—ये पाँच सूक्ष्म और अतींद्रिय तत्त्व जिनसे पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति होती है। **–तपा(पस्)**–वि०, पु० पंचाग्निका ताप लेनेवाला। **–तरु**–पु० मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदनका समाहार। **–तिक्त**–पु० पाँच कड़वी ओषधियों–गुड़ुच, भटकटैया, सोंठ, कुट और चिरायता–का समाहार। **–तीर्थी**–स्त्री० पाँच तीर्थों–विश्रांति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर (वराह पु०) का समाहार (इस प्रकारके अन्य समाहार भी मिलते हैं)। **–तृण**–पु० कुश, कास, सरकंडा, डाभ और ईख–इन पाँच तृणोंका समाहार। **–दश(न्)**–वि०, पु० दे० 'पंद्रह'। **–दशी**–स्त्री० पूर्णिमा; अमावस्या; वेदांतका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–दीर्घ**–पु० शरीरके ये पाँच दीर्घ अंग–बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और स्तनोंके बीचका भाग। वि० जिस पुरुषके ये अंग दीर्घ हों। **–देव**–पु० विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा–ये देवता जिनकी उपासना स्मार्त हिंदू करते हैं। **–द्रविड़**–पु० दक्षिण भारतके पाँच प्रकारके ब्राह्मण–महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़। **–नख**–वि० पाँच नखोंवाला (जानवर)। पु० हाथी; कछुआ; बाघ या शेर। **–नद**–पु० पाँच नदियोंवाला देश, पंजाब; दे० 'पंचगंग'। **–नाथ**–पु० बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ। **–निंब**–पु० नीमके पाँच अंग। **–नीराजन**–पु० दीपक, कमल, आम, वस्त्र और पान–इन पाँच वस्तुओं द्वारा की गयी आरती। **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० एक तरहका शकुन-शास्त्र। **–पत्र**–पु० एक वृक्ष। **–पदी**–स्त्री० एक प्रकारकी ऋचा; पाँच डग; पाँच पद, (व्या०); वह संबंध जिसमें मैत्रीका भाव न हो। **–पर्णिका,–पर्णी**–स्त्री०गोक्षुर नामक क्षुप। **–पर्व(न्)**–पु०अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और रविसंक्रान्ति। **–पल्लव**–पु० गंध कर्ममें–आम, जामुन, कैथ, बेल और बिजौरा–इन पाँच वृक्षोंके पल्लव; वैदिक कर्ममें–पीपल, गूलर, पाकड़, आम और बड़–इन पाँच वृक्षोंके पल्लव; तांत्रिक कर्ममें कटहल, आम, पीपल, बड़ और मौलसिरी–इन पाँच वृक्षोंके पल्लव। **–पात**–पु० (हिं०) पंचौली नामक पौधा। **–पात्र**–पु० पाँच पात्रोंका समाहार; एक तरहका श्राद्ध जिसमें पाँच पात्र रखे जाते हैं (दे० 'पंच'में भी)। **–पाद्**–वि० पाँच चरणोंवाला। पु० संवत्सर। **–पिता(तृ)**–पु० पाँच प्रकारके पिता–पिता, उपनेता, श्वशुर, अन्नदाता और भयत्राता। **–पित्त**–पु० सूअर,बकरा,भैंसा,मछली और मोर–इन पाँच जानवरोंका पित्त। **–पुष्प**–पु० चंपा, आम, शमी, कमल और कनेरके फूलोंका समाहार। **–प्राण**–पु० शरीरमें संचरण करनेवाली वायुके पाँच भेदों–प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान–का समाहार। **–प्रासाद**–पु० वह मंदिर जिसमें चार शृंग और बीचमें गुंबद हो। **–बंध**–पु० वह अर्थदंड जो नष्ट वस्तुओंके मूल्यका पंचमांश हो। **–बटी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'पंचवटी'। **–बला**–स्त्री० बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला–ये पाँच औषधियाँ। **–बाण,**–पु० कामदेव; कामदेवके पाँच प्रकारके बाण–सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण और तापन। **–बाहु**–पु० शिव। **–बीज**–पु० अनार, ककड़ी, खीरा आदि। **–भद्र**–पु० एक प्रकारका सुलक्षण घोड़ा जिसके मुँह, पीठ, छाती दोनों बगलोंपर एक धब्बा होता है। वि० पाँच गुणोंवाला (व्यंजन आदि); बुरा। **–भर्तारी**–स्त्री० (हिं०) द्रौपदी। **–भर्त्री**–स्त्री० द्रौपदी। **–भुज**–वि० पाँच भुजाओंवाला। पु० पाँच भुजाओंवाला क्षेत्र। **–भूत**–पु० पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश–ये पाँच तत्त्व। **–मकार**–पु० वामाचारके अंतर्गत वे पाँच वस्तुएँ जिनके नामका प्रथम अक्षर 'म' है–मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन। **–महापातक**–पु० पाँच प्रकारके महापातक–ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, गुरुतल्प-गमन और उक्त चार महापातकोंको करनेवालेका संसर्ग (स्मृ०)। **–महायज्ञ**–पु० गृहस्थोंके लिए विहित वे पाँच

कृत्य जिन्हें करनेसे पंचसूना-संबंधी हिंसाके दोषसे छुटकारा मिलता है–ये कृत्य निम्नलिखित हैं–स्वाध्याय-ब्रह्मयज्ञ, होम–देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव–भूतयज्ञ, पिंडक्रिया–पितृयज्ञ और अतिथिपूजन–नृयज्ञ । **–महाव्याधि**–स्त्री० अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद –ये पाँच दुःसाध्य व्याधियाँ । **–महाव्रत**–पु० अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (यो०) । **–महिष**–पु० भैंसका दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र । **–मास्य**–वि० पाँच महीनोंमें या हर पाँचवें महीनेमें होनेवाला; पाँच महीनेका । पु० कोकिल । **–मुख**–पु० शिव; पाँच मुखोंवाला रुद्राक्ष; पाँच नोकोंवाला बाण । वि० जिसके पाँच मुँह हो (दे० 'पंच'में भी)। (स्त्री० 'पंचमुखी')। **–मुखी**–स्त्री० अड़ूसा; सिंहकी मादा । **–मुद्रा**–स्त्री० पूजनविधि-के अंतर्गत पाँच प्रकारकी मुद्राएँ-आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, संबोधिनी और सम्मुखीकरणी । **–मूत्र**–पु० गाय, बकरी, भेंड़, भैंस और गधी–इन पाँच जानवरोंका मूत्र । **–मूल**–पु० पाँच-पाँच वनस्पतियोंकी जड़से तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी दवा । **–मूली**–स्त्री० पाँच प्रकारके मूलोंका समाहार । **–यज्ञ**–पु० दे० 'पंचमहायज्ञ' । **–याम**–पु० दिन । **–रक्षक**–पु० पत्तपौड़, पखौड़ा वृक्ष । **–रत्न**–पु० पाँच रत्न; पाँच प्रकारके रत्न–नीलम, हीरा, पद्मराग मणि, मोती और मूँगा; महाभारतके पाँच प्रसिद्ध आख्यान; पाँच नीतिपूर्ण पद्योंका समूह । **–रश्मि**–पु० सूर्य । **–रसा**–स्त्री० आँवला । **–रात्र**–पु० पाँच रात्रियोंका समाहार; पाँच रातोंका समय; पाँच दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ । **–राशिक**–पु० गणितकी एक क्रिया जिससे चार ज्ञात राशियोंके द्वारा पंचम राशि निकाली जाती है । **–लक्षण**–पु० पुराण । **–लवण** –पु० दे० 'पंचक्षारगण' । **–लांगलक**–पु० पाँच हलोंसे जोती जा सकनेवाली भूमिका दान । **–लोह,–लोहक,–लौह**–पु० सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा और सीसा–ये पाँच धातुएँ; इन पाँचोंके योगसे बनी धातु । **–वक्त्र**–पु०, वि० दे० 'पंचमुख' । **–वक्त्रा**–स्त्री० दुर्गा । **–वट**–पु० यज्ञोपवीत । **–वटी**–स्त्री० पीपल, बेल, बड़, हड़ और अशोक–इन पाँच वृक्षोंका समाहार (आस-पास लगे हुए इन पाँच वृक्षोंके नीचे तप करना प्रशस्त माना गया है) ; दंडकारण्य-में वह स्थान जहाँ वनवासी रामने सीता और लक्ष्मणके साथ निवास किया था । **–वर्ग**–पु० पाँच पदार्थोंका समूह; पाँच प्रकार-के गुप्तचरोंका समूह; पाँच ज्ञानेंद्रियाँ; शरीरको संघटित करनेवाले पाँच तत्त्व; पंच महायज्ञ । **–वर्ण**–पु० अकार, उकार, मकार, नाद और बिंदुसे संयुक्त ओंकार । **–वल्कल**–पु० बड़, पीपल, पाकड़, गूलर और बेंत–इन पाँच वृक्षोंकी छाल । **–बाण**–पु० दे० 'पंचबाण' । **–वातीय**–पु० राजसूयके अंतर्गत एक प्रकारका होम । **–विंशति**–वि० पच्चीस । **–वृक्ष**–पु० पाँच देववृक्ष–मंदार, पारि-जात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन । **–शब्द**–पु० पंच मंगलवाद्य; शंखध्वनि आदि पाँच प्रकारकी ध्वनियाँ; सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और कवियोंका प्रयोग (व्या०) । **–शर**–पु० 'पंचबाण' । **–शस्य**–पु० धान, मूँग, तिल, उड़द और जौ–ये पाँच प्रकारके अन्न । **–शाख**–पु० पाँच शाखाओंका समाहार; हाथ; हाथी । (स्त्री० 'पंचशाखी') । **–शाखा**–पु० (हिं०) दे० 'पंजशाखा' । **–शारदीय**–पु० एक यज्ञ । **–शिख**–पु० सांख्य दर्शनके एक प्रसिद्ध आचार्य; सिंह । **–शीर्ष**–पु० एक प्रकारका सर्प । **–शील**–पु० बौद्धधर्मके शील संबंधी ये पाँच सिद्धान्त–अस्तेय, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य और मादक द्रव्य-निषेध; अंतर-राष्ट्रीय शांतिरक्षाके वे पाँच सिद्धांत या शील जिनकी घोषणा पहले-पहल जवाहरलाल नेहरू तथा चाउ-एन-लाईके संयुक्त वक्तव्यमें की गयी थी । पाँचों शील ये हैं–(१) राज्यकी अविच्छिन्नता और प्रभुत्वके लिए परस्पर समादर; (२) परस्पर अनाक्रमणका आश्वासन; (३) भीतरी बातोंमें अहस्तक्षेप; (४) समता और पारस्परिक लाभ; (५) शांतिमय सहअस्तित्व । **–शुक्ल**–पु० एक जहरीला कीड़ा । **–शूरण**–पु० अत्यम्लपर्णी, मालकंद, सूरन, सफेद सूरन और कांडीर–ये पाँच प्रकारके सूरन । **–शैल**–पु० एक पर्वत (पु०) । **–संधि**–स्त्री० पाँच प्रकारकी संधियाँ–स्वरसंधि, व्यंजनसंधि, विसर्गसंधि, स्वादिसंधि और प्रकृतिभाव (व्या०) । **–सरा***–पु० कामदेव । **–सिद्धांती**–स्त्री० ब्रह्मा, सूर्य, सोम आदि द्वारा उक्त ज्योतिषके पाँच सिद्धांतों-का समाहार । **–सुगंधक**–पु० कपूर, शीतलचीनी, लौंग, सुपारी और जायफल–ये पाँच सुगंध पदार्थ (आ० वे०) । **–सूना**–स्त्री० गृहस्थके घरमें निम्नलिखित पाँच वस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे-छोटे कीड़ोंकी हिंसा हो जाया करती है–चूल्हा, चक्की या सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और पानीका घड़ा । **–स्कंध**–पु० रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार तथा विज्ञान–ये पाँच वस्तुएँ (बौ०) । **–स्नेह**–पु० घी, तेल, चरबी, मज्जा और मोम–ये पाँच चिकने पदार्थ । **–स्रोत(स्)**–पु० एक तीर्थ; एक प्रकारका योग । **–हजारी**–पु० (हिं०) दे० 'पंजहजारी' ।

पंच–पु० पाँच या अधिक मनुष्योंका समूह; सर्वसाधारण; न्याय करनेवाली सभा; पंचायतका सदस्य; मध्यस्थ, (आर्बिट्रेटर) दो पक्षोंके बीचका झगड़ा निपटानेके लिए, दोनोंकी स्वीकृतिसे नियुक्त कोई तटस्थ व्यक्ति, जिसका अभिनिर्णय माननेके लिए दोनों बाध्य हों । जूरीका सदस्य । **–नामा**–पु० वह कागज जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूहको अपने मामले-का फैसला करनेका अधिकार देते हैं; वह कागज जिसपर पंचों ने अपनी तजवीज लिखी हो । **–निर्णय**–पु० (आर्बिट्रेशन) पंच द्वारा किया गया निर्णय । **–न्यायाधिकरण**–पु० (आर्बिट्रल ट्राइ-ब्यूनल) वह अदालत जिसमें मामलेका निपटारा पंचों द्वारा किया जाय । मु० **–की दुहाई**–सहायताकी पुकार । **–की भीख**–सर्वसाधारणकी कृपा, लोक-अनुग्रह । **–परमेश्वर**–पंचोंका कहना ईश्वरीय वाक्यके समान है । **–बदना,–मानना**–झगड़ेका फैसला करनेके लिए मध्यस्थ बनाना ।

पँच–'पाँच'का समासमें व्यवहृत रूप; दे० 'पच' । **–तोरिया***–पु० एक तरहका बढ़िया कपड़ा । **–तोलिया**–पु० पाँच तोलेका बाट; एक तरहका बढ़िया कपड़ा । **–पीरिया**–पु० पाँच पीरोंका पूजक । **–मेल**–वि० जिसमें पाँच प्रकारकी वस्तुओंका मेल हो; जिसमें कई तरहकी चीजें मिली हों । **–रंग,–रंगा**–वि० पाँच रंगोंवाला; कई रंगोंवाला; रंग-बिरंगा । **–लड़ा**–वि० पाँच लड़ोंका (हार) । **–लड़ी**–स्त्री० पाँच लड़ोंवाली माला । **–लरी** –स्त्री० दे० 'पँचलड़ी' । **–वाँसा**–पु० गर्भरक्षाके निमित्त प्रथम गर्भाधानके पाँचवें महीने किया जानेवाला एक कृत्य । **–वान†**–पु० राजपूतोंकी एक उपजाति ।

पंचक–वि० (सं०) पाँच अंगोंवाला; पाँच-संबंधी; पाँचमें खरीदा हुआ; पाँच प्रतिशत ब्याज लेनेवाला । पु० पाँचका समूह (समासमें); धनिष्ठासे रेवतीतकके पाँच नक्षत्र; इन नक्षत्रोंका योगकाल जिसमें प्रेतदाह, दक्षिणकी यात्रा आदि निषिद्ध हैं, पचखा; युद्धक्षेत्र ।

पंचतय–वि० (सं०) पँचगुना ।

पंचता–स्त्री०,**–पंचत्व**–पु० (सं०) शरीरके उपादानरूप पाँच महाभूतोंका अपने-अपने रूपको प्राप्त हो जाना, मृत्यु ।

पंचनी–स्त्री० (सं०) बिसात (शतरंज) ।

पंचम–वि० (सं०) पाँचवाँ; दक्ष, चतुर; सुंदर, कांतिमान् । पु० संगीतके सप्तकका पाँचवाँ स्वर जो कोयलकी कूकका स्वर माना जाता है; एक राग; मैथुन; वर्गका पाँचवाँ वर्ण ।

पंचमांगी–पु० (फिफ्थ कालमिस्ट) दूसरे देश से गुप्त संबंध रखकर स्वदेशको हानि पहुँचानेवाला, देशद्रोही, भेदिया, जयचंद (स्पेनकी राजधानी मैड्रिडपर अधिकार करनेके लिए चार फौजोंको साथ लेकर बढ़नेवाले जनरल फ्रैंकोने पाँचवीं सेनाके रूपमें इन देशद्रोहियों या भेदियोंसे ही सहायता प्राप्त की थी, इसीसे इस तरहके लोग पाँचवीं सेनाके अंग या 'पंचमांगी' कहे जाने लगे) ।

पंचमी–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी पाँचवीं कला; पक्षकी पाँचवीं तिथि; द्रौपदी; अपादान कारक; बिसात ।

पंचांग–वि० (सं०) पाँच अंगोंवाला । पु० पाँचका समाहार; पाँच अंग; किसी वृक्ष या पौधेके ये पाँच अंग–जड़, छाल, पत्ता, फूल और फल; घुटना, सिर, हाथ तथा छातीको पृथ्वीसे सटाकर और आँखोंको देवताके चरणोंकी ओर करके किया जानेवाला एक प्रकारका प्रणाम (तं०); तांत्रिक उपासनाके ये पाँच अंग–कवच, स्तोत्र, पद्धति, पटल और सहस्रनाम; जप, होम, तर्पण, अभिषेक

और विप्रभोजन–इन पाँच अंगोंसे युक्त पुरश्चरण; महापुरश्चरण (तं०); तिथि, वार, योग, नक्षत्र और करण–इन पाँच अंगोंसे युक्त तिथिपत्र, पत्रा (ज्यो०); राजनीतिके ये पाँच अंग–सहाय, साधन, उपाय, देशकाल-भेद और विपत्-प्रतीकार; पंचभद्र घोड़ा; कछुवा (यह अपने चारों पैर तथा सिर भीतर छिपा लेता है)। **–शुद्धि**–स्त्री० तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण इन पाँचकी निर्दोषता।

पंचांगिक–वि० (सं०) पाँच अंगोंवाला।

पंचांगुल–वि० (सं०) जो नापमें पाँच अंगुलका हो; जिसमें पाँच उँगलियाँ हों। पु० रेंड़; तेजपत्ता; पंजेके आकारकी करछुल; पंजे जैसा एक उपकरण।

पंचांगुलि–वि० (सं०) जिसे पाँच अँगुलियाँ हों।

पंचांगुली–स्त्री० (सं०) तकाह्वा नामक क्षुप।

पंचांतरीय–पु० (सं०) पाँच प्रकारके पातक–माता, पिता, अर्हत् और बुद्धका घात और याजकोंसे विवाद (बौ०)।

पंचांश–पु० (सं०) पाँचवाँ भाग।

पंचाइत†–स्त्री० दे० 'पंचायत'।

पंचाइती†–वि० दे० 'पंचायती'।

पंचाक्षर–वि० (सं०) पाँच अक्षरोंवाला। पु० एक छंद; शिवका पाँच अक्षरोंवाला मंत्र, 'ॐ नमः शिवाय'।

पंचाग्नि–स्त्री० (सं०) पाँच प्रकारकी निम्नलिखित अग्नियाँ–शरीरमें मानी जानेवाली पाँच अग्नियाँ–अन्वाहार्य-पचन, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य; उपनिषद्के अनुसार–स्वर्ग, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्; चारों ओर जलती हुई चार अग्नियों तथा ऊपरसे सूर्यके तापका सेवन करनेका ग्रीष्म ऋतुमें किया जानेवाला एक तप; चीता, चिचड़ी, भिलावाँ, गंधक और मदार–ये पाँच बहुत गरम तासीरवाली ओषधियाँ (आ० वे०)। वि० आहवनीय आदि पाँच अग्नियोंका आधान करनेवाला।

पंचाज–पु० (सं०) (अजा) बकरीसे प्राप्त दूध, दही, घी, पुरीष और मूत्र, ये पाँच पदार्थ।

पंचाट–पु० (अवार्ड) पंचों द्वारा किया गया निर्णय, 'परिनिर्णय'।

पंचातप–वि० (सं०) जो पंचाग्नि-तप करे।

पंचात्मक–वि० (सं०) पाँच तत्त्वोंवाला (शरीर)।

पंचात्मा(त्मन्)–स्त्री० (सं०) पंचप्राण।

पंचानन–वि० (सं०) पाँच मुँहोंवाला; चौड़े मुँहवाला। पु० शिव; सिंह; पंचमुखी रुद्राक्ष; सिंह राशि।

पंचाननी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; सिंहनी।

पंचानबे–वि० नब्बेसे पाँच अधिक, जो सौसे पाँच कम हो। पु० पंचानबेकी संख्या, ९५।

पंचाप्सर(स्)–पु० (सं०) वह सरोवर जहाँ शातकर्णि मुनिकी तपस्या भंग करनेवाली अप्सराएँ रहती थीं।

पंचामरा–स्त्री० (सं०) दूब, विजया, बिल्वपत्र, निर्गुंडी और काली तुलसी।

पंचामृत–वि० (सं०) पाँच द्रव्योंके मेलसे बना हुआ। पु० पाँच द्रव्योंका समाहार; देवताओंके स्नान कराने और चढ़ानेके कामका एक पेय पदार्थ जो गायके दूध, दही, घी, मधु और चीनीके योगसे बनाया जाता है; गुरुच, गोखरू, मुसली, मुंडी और सतावर–इन पाँच ओषधियोंका योग (आ० वे०)।

पंचाम्ल–पु० (सं०) बेर, अनार, अमलबेत, चूक और बिजौरा नीबू–ये पाँच खट्टे पदार्थ (आ० वे०)।

पंचायत–स्त्री० पंचोंकी मंडली या सभा; किसी मामले या झगड़ेके संबंधसे पंचों द्वारा किया जानेवाला विचार या निबटारा; कई आदमियोंका एकत्र होकर इधर-उधरकी बातें करना, गपशप करना (व्यं०); जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियोंका मंडल।

पंचायतन–पु० (सं०) पाँच देवताओंकी प्रतिमाओंका समुदाय।

पंचायती–वि० पंचायतका; जिसपर बहुतोंका अधिकार हो; अनेक मनुष्योंका; जनताका; जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित, जिसका संचालन जनता द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधिमंडल करे; जो जनवर्गको मान्य हो (जैसे 'पंचायती तौल')। **–राज्य**–पु० जनताके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित राज्य, गणतंत्र।

पंचारी–स्त्री० (सं०) शतरंज आदिकी बिसात।

पंचार्चि(स्)–पु० (सं०) बुध ग्रह।

पंचाल–द्रु० (सं०) हिमालय तथा चंबलसे सीमित एक प्राचीन देश जो गंगाके दोनों ओर स्थित था (द्रुपद यहींके राजा थे–म०भा०); इस देशका निवासी; वहाँका राजा; एक ऋषि; महादेव।

पंचालिका–स्त्री० (सं०) कपड़े आदिकी पुतली; प्रेक्षाभवनमें दर्शकोंके बैठनेके लिए बना पाँच अवलियों (कतारों)का मंच (रामचं०)।

पंचालिस†–वि०, पु० दे० 'पैंतालीस'।

पंचाली–स्त्री० पांचाली, द्रौपदी; (सं०) कपड़े आदिकी पुतली; एक प्रकारका गीत; शतरंज आदिकी बिसात।

पंचावयव–वि० (सं०) पाँच अवयवों या अंगोंवाला। पु० इन पाँच अवयवोंवाला न्यायवाक्य–प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

पंचावस्थ–वि० (सं०) पाँचवीं अवस्थाको प्राप्त अर्थात् मृत (अन्य चार अवस्थाएँ ये हैं–बाल्य, कौमार, यौवन, वार्धक्य)। पु० शव, मुर्दा।

पंचाविक–पु० (सं०) भेंड़का दूध, दही, घी, पुरीष और मूत्र।

पंचाश–वि० (सं०) पचासवाँ।

पंचाशत–वि० (सं०) चालीस और दस। पु० पचासकी संख्या, ५०।

पंचाशिका–स्त्री० (सं०) पचास वस्तुओं, व्यक्तियों या पद्योंका समूह।

पंचास्य–वि, पु० (सं०) जिसके पाँच आस्य (मुँह) हों, पंचानन; शिव, 'पंचानन'।

पंचाह–पु० (सं०) पाँच दिनोंका समूह।

पंचिका–स्त्री० (सं०) पाँच अध्यायोंवाली पुस्तक; पाँच गोटियोंसे खेला जानेवाला जुआ।

पंचीकरण–पु० (सं०) दो समान भागोंमें बाँटे गये आकाश आदि पाँच तत्त्वोंमेंसे प्रत्येकके प्रथमार्द्धको पुनः चार भागोंमें बाँटकर उन्हें अन्य तत्त्वके द्वितीयार्द्धमें मिलानेकी क्रिया (वेदांत)।

पंचीकृत–वि० (सं०) जिसका पंचीकरण हुआ हो (वे०)।

पंचूरा–पु० लड़कोंका एक मिट्टीका खिलौना जिसके पेंदेमें बहुतसे छेद होते हैं।

पंचेंद्रिय–स्त्री० (सं०) पाँच ज्ञानेंद्रियाँ अथवा कर्मेंद्रियाँ।

पंचेषु–पु० (सं०) पंचबाण (इषु—बाण), कामदेव।

पँचोतर सौ–पु० दे० 'पचोतर सौ'।

पंचोपचार–पु० (सं०) पूजनके साधनभूत पाँच द्रव्य–गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य; इन पाँच द्रव्योंसे किया गया पूजन।

पंचोपविष–पु० (सं०) पाँच प्रकारके उपविष–हड़, मदार कनेर, जलपीपल और कुचला।

पंचोष्मा(ष्मन्)–पु० (सं०) आहारको पचानेवाली पाँच अग्नियाँ।

पंचौली–स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियों और डंठलोंसे एक प्रकारका खुशबूदार तेल निकाला जाता है।

पंछा–पु० प्राणियोंके शरीर या पेड़-पौधोंमें कटने, छिलने आदिकी जगहसे निकलनेवाला एक प्रकारका पसेव; फफोले, चेचकके दाने आदिमें भरा हुआ पानी।

पंछाला–पु० फफोला; फफोलेके भीतरका पानी।

पंछी–पु० पक्षी, चिड़िया।

पंज–वि० (फा०) पाँच। **–अंगुश्त**–पु० हाथकी पाँच उँगलियाँ। **–आयत**–स्त्री० गमी और फातेहाके अवसरपर पढ़ी जानेवाली कुरानकी पाँच सतरें। **–कल्यान**–पु० दे० 'पंचकल्याण'। **–गान,–वक्ती**–पु० पाँचों वक्तकी नमाज। **–गोश**–वि० पाँच कोनोंवाला, पंचकोण। **–रोज़ा**–वि० पाँच दिनोंका; कुछ ही दिनोंतक रहनेवाला, अस्थायी, जो टिकाऊ न हो। **–शाख़ा**–पु० एक तरहकी मशाल, पनसाखा। **–हज़ारी**–पु० पाँच हजार सैनिकोंका नायक; मुगलकालमें बादशाहकी ओरसे अमीरोंको दिया जानेवाला एक पद (इस पदवाले पाँच हजार सेना रख सकते थे या उतनी सेनाके नायक बनाये जाते थे)।

पंजर–पु० (सं०) हड्डियोंका ढाँचा, ठठरी, कंकाल; पसली;

पिंजड़ा; शरीर; कलियुग; गायका एक संस्कार । **–शुक**–पु० पिंजड़ेमें बंद किया हुआ तोता, पालतू तोता ।

पंजरक–पु० (सं०) पिंजड़ा ।

पँजरना*–अ० क्रि० दे० 'पजरना' ।

पंजराखेट–पु० (सं०) मछली पकड़नेका एक तरहका जाल या झावा ।

पँजरी–स्त्री० अरथी; †पसली ।

पंजा–पु० (फा०) पाँच सजातीय वस्तुओंका समाहार; गाही; पाँचों उँगलियोंके सहित हथेली या पैरका अगला भाग; अधखुली मुट्ठी जिसमें अँगूठा और उँगलियाँ इस स्थितिमें हों कि किसी वस्तुको पकड़ा या बकोटा जा सके; उँगलियोंके सहित हथेलीका अर्धसंपुट; जूतेका वह भाग जो पंजेको ढके रहता है; पीठ खुजलानेका पंजेकी आकृतिका बना एक आला; पंजा लड़ानेकी क्रिया या प्रतियोगिता; पाँच बूटियोंवाला ताशका पत्ता; आदमीके पंजेके आकारका टिन आदिका वह टुकड़ा जिसे लंबे बाँस आदिमें लगाकर झंडेके रूपमें ताजियेके साथ ले चलते हैं । **–तोड़ बैठक**–पु० कुश्तीका एक पेंच । **मु० –फेरना,–मोड़ना**–पंजेकी लड़ाईमें प्रतिद्वंद्वीको हराना । **–फैलाना,–बढ़ाना**–लेने या अधिकारमें करनेकी चेष्टा करना । **–मारना**–झपट्टा मारना । **–लड़ाना, –लेना**–कसरत या बलपरीक्षाके लिए उँगलियोंको फँसाकर जोर लगाना । **–ले जाना**–पंजेकी प्रतियोगितामें हरा देना । **–(जे) में**–काबूमें, अधिकारमें । **–(जों)पर चलना**–इतराना ।

पंजाब–पु० (फा०) पाँच नदियोंका एक प्रदेश जो अब भारत तथा पाकिस्तानमें बँट गया है ।

पंजाबी–वि० (फा०) पंजाबका; पंजाब-संबंधी । पु० पंजाब प्रांतका निवासी । (स्त्री० 'पंजाबिन') । स्त्री० पंजाबकी भाषा ।

पंजारा–पु० सूत कातनेवाला; धुनिया ।

पंजाह–वि० (फा०) पचास । **–साला**–वि० पचास वर्षोंका ।

पंजाहम–वि० (फा०) पचासवाँ ।

पंजि, पंजी--स्त्री० (सं०) पूनी; बही; (रजिस्टर) वह पुस्तक या बही जिसमें हिसाब, कार्य विवरण, जन्म-मृत्युका लेखा, गृह, भूमि आदिकी अधिकृत बिक्री या हस्तांतरण आदिका ब्यौरा लिखा या दर्ज किया जाय; पंचांग । **–कार,–कारक**–पु० लेखक, बही लिखनेवाला, क्लर्क; पंचांग बनानेवाला । **कृत,–बद्ध**–वि० जो पंजी या रजिस्टरमें चढ़ा दिया गया हो, रजिस्ट्रीशुदा, रजिस्टर्ड ।

पंजिका–स्त्री० (सं०) ऐसी टीका जिसमें प्रत्येक शब्दका अर्थ समझाया गया हो, विशद टीका; पंचांग, तिथिपत्र; आयव्यय लिखनेकी बही; रजिस्टर; यमकी बही जिसमें जीवोंके कर्म लिखे जाते हैं । **–कार,–कारक**–पु० लेखक, बही लिखनेवाला, क्लर्क; कायस्थ ।

पंजीयक–पु० (रजिस्ट्रार) किसी लेख, इच्छापत्र आदिकी प्रामाणिक प्रतिलिपि राजकीय पंजीमें सुरक्षित रखनेका प्रबंध करनेवाला अधिकारी; किसी उच्च न्यायालय, सहयोगसमितियों आदिका वह अधिकारी जो अपनी संस्था या विभागके सब प्रकारके महत्त्वपूर्ण लेख, कागज-पत्रादि सुरक्षित रूपसे रखनेकी व्यवस्था करता है; दे० 'कुलसचिव' ।

पंजीयन–पु० (रजिस्ट्रेशन) मकान, जमीन आदिकी बिक्री या हस्तांतरण आदिका ब्यौरा या किसी पारसल, चिट्ठी आदिके सुरक्षित रूपसे भेजे जानेके लिए पानेवालेका नाम, पता आदि पंजीमें चढ़ाकर अभिलेखके रूपमें रखा जाना; अभ्यर्थियों आदिकी नाम-सूचीमें नामका दर्ज कर लिया जाना ।

पंजीरी–स्त्री० धनिया, सोंठ आदिका चीनी मिला हुआ चूर्ण और घीमें भुना आटा जिसका प्रयोग प्रायः नैवेद्यके लिए करते हैं (कहीं-कहीं केवल धनिया, चीनी और सोंठसे पंजीरी तैयार की जाती है, उसमें आटेका योग नहीं रहता) ।

पंजुम–वि० (फा०) पाँचवाँ ।

पँजेरा–पु० बरतन आदि झालनेका पेशा करनेवाला ।

पंड–पु० (सं०) नपुंसक, हिजड़ा । वि० फलरहित; निष्फल ।

पँडरा, पँडरू†–पु० दे० 'पँड़वा' ।

पँडरी–स्त्री० वह पड़ती भूमि जिसमें ऊख बोना हो ।

पंडल*–वि० पीला । पु० पिंड; शरीर ।

पंडवा–पु० पांडव ।

पँड़वा–पु० भैंसका बच्चा ।

पंडा–पु० तीर्थ, मंदिर या घाटपर धर्मकृत्य करानेवाला ब्राह्मण; तीर्थका पुजारी, घाटिया, गंगापुत्र; रसोई बनानेका काम करनेवाला ब्राह्मण, रसोइया । (स्त्री० पंडाइन') । स्त्री० (सं०) सत्-असत्का विवेक करनेवाली बुद्धि; निश्चयात्मिका बुद्धि; ज्ञान; विद्या ।

पँड़ाइन–स्त्री० पाँड़ेकी स्त्री; पाँड़े जातिकी स्त्री ।

पंडापूर्व–पु० (सं०) वह अदृष्ट जो अपना फल न दे सके, फलरहित अदृष्ट (मी०) ।

पंडाल–पु० किसी संस्थाके अधिवेशन आदिके लिए बना हुआ बड़ा मंडप ।

पंडित–पु० (सं०) शास्त्रके तात्पर्यको जाननेवाला विद्वान्; वह जिसमें सत्-असत्का विवेक करनेकी शक्ति ('पंडा') हो; शास्त्रज्ञ विद्वान्; ब्राह्मण (लो०); संस्कृतका विद्वान्; एक गंधद्रव्य, सिह्लक । वि० विद्वान्; कुशल । **–जातीय**–वि० कुछ चतुर । **–मंडल**–पु०,**–सभा**–स्त्री० विद्वानोंकी मंडली । **–मानिक,–मानी(निन्)**–वि० दे० 'पंडितम्मन्य' । **–राज**–पु० बहुत बड़ा विद्वान्; संस्कृतके प्रसिद्ध विद्वान् जगन्नाथकी उपाधि । **–वादी-(दिन्)**–वि० जो पंडित होनेका ढोंग करे ।

पंडितक–वि० (सं०) विद्वान्; चतुर । पु० विद्वान् व्यक्ति ।

पंडितम्मन्य–वि० (सं०) जो अपनेको बहुत बड़ा विद्वान् समझे ।

पंडिताइन†–स्त्री० दे० 'पंडितानी' ।

पंडिताई–स्त्री० पंडित होनेका भाव या गुण, विद्वत्ता, पांडित्य ।

पंडिताऊ–वि० पंडितोंके ढंगका, पंडित जैसा ।

पंडितानी–स्त्री० पंडितकी स्त्री; ब्राह्मणी ।

पंडितिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) पांडित्य, पंडिताई, विद्वत्ता ।

पंडुक–पु० कबूतरकी जातिका एक हलके कत्थई रंगका पक्षी, पेंडकी ।

पंडुर*–पु० जलसर्प ।

पंडोह†–पु० नाबदान, पनाला ।

पंढ़, पंढ़क–पु० (सं०) पंगु मनुष्य; हिजड़ा ।

पँतीजना–स० क्रि० रुई ओटना ।

पँतीजी–स्त्री० रुई धुननेका औजार, धुनकी ।

पंत्यारी*–स्त्री० पंक्ति, कतार ।

पंथ–पु० मार्ग, रास्ता; रीति; धर्म, संप्रदाय; पथ्य, रोगीका उपवासके बादका हलका भोजन । **मु० –गहना***–रास्ता पकड़ना । **–दिखाना**–रास्ता दिखलाना; शिक्षा देना । **–देखना,–निहारना,–सेना**–बाट जोहना, प्रतीक्षा करना । **–पर या में पाँव देना**–मार्ग ग्रहण करना । **–पर लाना, –लगाना**–सुमार्गपर चलाना । **(किसीके) –लगना**–अनुकरण करना; परेशान करना ।

पंथक–वि० (सं०) मार्गमें उत्पन्न ।

पंथकी*–पु० यात्री, मुसाफिर ।

पंथान*–पु० रास्ता, मार्ग ।

पंथिक*–पु० पथिक ।

पंथी–पु० बटोही, यात्री; किसी मतका माननेवाला ।

पंद–पु० (फा०) शिक्षा, नसीहत; सलाह ।

पंदरह, पंद्रह–वि० दस और पाँच । पु० १५ की संख्या ।

पंदरहियों, पंद्रहियों–अव्य० पंद्रह दिनों या अधिकका समय ।

पँदरोह†–पु० दे० 'पंडोह' ।

पंदार–पु० सलाह या शिक्षा लेनेवाला ।

पंप–पु० (अं०) पानी आदि तरल पदार्थोंको ऊपर खींचने या पहुँचाने तथा इधर-उधर ले जानेकी एक कल; ट्यूब आदिमें हवा भरनेका एक उपकरण; पिचकारी; एक प्रकारका जूता ।

पंपा–स्त्री० (सं०) दक्षिणकी एक नदी जो ऋष्यमूक पर्वतके समीप थी; इस नदीके पासका एक पुराना नगर; इस नगरके पासकी एक झील । **–सर**–पु० पंपा नामकी झील ।

पंपाल*–वि० पापी ।

पंबा–पु० ऊन रँगनेके कामका एक पीला रंग ।

पँवर*–स्त्री० डचोढ़ी; सामान ।

पँवरना*–अ० क्रि० तैरना; थाह लेना, पता लगाना ।

पँवरि*–स्त्री० डचोढ़ी; द्वार ।

पँवरिआ*–पु० दे० 'पँवरिया' ।

पँवरिया–पु० पौरिया, द्वारपाल; पुत्रजन्मके अवसरपर मंगलगीत गानेका पेशा करनेवाला एक विशेष वर्ग, दाढ़ी ।

पँवरी–स्त्री० डचोढ़ी; * पाँवरी, खड़ाऊँ ।

पँवाड़ा, पँवारा–पु० विस्तृत कथा; वीरगाथा, कीर्तिकथा ।

पँवार–पु० परमार, राजपूतोंका एक भेद; * मूँगा ।

पँवारना*–स० क्रि० फेंकना; 'तीस तीर रघुवीर पँवारे'–रामा०; दूर करना, हटाना ।

पँवारी–स्त्री० लोहेमें छेद करनेका उपकरण, पवाँरी ।

पंशाखा, पंसाखा–पु० दे० 'पंजशाखा' ।

पँसरहट्टा–पु० वह वाजार जिसमें पंसारियोंकी दुकानें हों ।

पंसारी–पु० नमक, मसाले आदि प्रतिदिनके व्यवहारकी वस्तुएँ, ओषधियाँ आदि वेचनेवाला वनियाँ ।

पंसासार*–पु० पासेका खेल ।

पँसुरी, पँसुली–स्त्री० दे० 'पसली' ।

पंसेरी–स्त्री० पाँच सेरकी तौल या उसका वाट ।

प–वि० (सं०) पीनेवाला; रक्षक (समासांतमें) । पु० हवा; पत्ता; अंडा; पंचम स्वरका संकेत (संगीत) ।

पइग†–पु० दे० 'पैग' ।

पइज†–स्त्री० दे० 'पैज' ।

पइठ†–स्त्री० दे० 'पैठ' ।

पइठना†–अ० क्रि० दे० 'पैठना' ।

पइता–पु० एक छंद ।

पइसना*–अ० क्रि० दे० 'पैठना' ।

पइसार*–पु० प्रवेश ।

पउँरि*–स्त्री० डचोढ़ी ।

पउनार†–पु० पद्मनाल, कमलदंड ।

पउनी*–स्त्री० दे० 'पौनी' ।

पउला†–पु० वह खड़ाऊँ जिसमें खूँटीकी जगह रस्सी लगी रहती है ।

पउहर*–पु० पयोधर (वीसल०) ।

पकड़–स्त्री० पकड़नेका काम या भाव, ग्रहण; पकड़नेका तर्ज; कुश्तीमें एक वारकी भिड़ंत; भूल, अशुद्धि आदि खोज निकालनेकी क्रिया या भाव; समझ; वह स्वर-समूह जो किसी रागमें विशेष रूपसे आया करता और उस रागका परिचायक होता है । **–धकड़**–स्त्री० धर-पकड़ । मु० **–जाना**–वंदी बनाया जाना, गिरफ्तार होना; दोषी ठहराया जाना । **–में आना**–पकड़ा जाना; काबूमें किया जाना; वशवर्ती होना ।

पकड़ना–स० क्रि० किसी वस्तुको इस ढंगसे हाथमें लेना या दवाना कि वह इधर-उधर न हट सके; ग्रहण करना; धरना; गति या व्यापारसे निवृत्त करना; खोज निकालना; पता लगाना; गलती करने या वहकनेसे रोकना; किसी काममें आगे वढ़े हुएकी बराबरीमें आ जाना; किसी वस्तुको अपनेमें व्याप्त होने देना; किसी वस्तुमें व्याप्त होना; अपनाना; आक्रांत या वशीभूत करना; ग्रसना; वंदी वनाना, गिरफ्तार करना; किसी वस्तुसे चिपकना; समझना ।

पकड़वाना–स० क्रि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना या सहायता देना ।

पकड़ाना–स० क्रि० पकड़नेमें प्रवृत्त करना ।

पकना–अ० क्रि० अनाज, फल आदिका परिपक्व होना या उस अवस्थाको पहुँचना जिसके बाद वे झड़ने लगते हैं, परिणतावस्थाको प्राप्त होना; कच्चा न रहना; आँच खाकर कड़ा और लाल होना; आँच या गरमी खाकर गलना या नरम होना, सीझना, चुरना; (वालोंका) सफेद होना; पक्का होना; फोड़ा-फुंसी, घावका मवाद भर जानेकी अवस्थाको पहुँचना; गोटियोंका सब खानोंको पार करके अपने खानेमें पहुँचना (चौसर) ।

पकरना*–स० क्रि० दे० 'पकड़ना' ।

पकला†–पु० फोड़ा ।

पकवान–पु० घी या तेलमें तली हुई भोज्य वस्तु ।

पकवाना–स० क्रि० पकानेमें प्रवृत्त करना ।

पकाई–स्त्री० पकने, पकानेकी क्रिया या भाव; पकानेकी उजरत ।

पकाना–स० क्रि० अनाज, फल आदिको पकनेकी अवस्थाको पहुँचाना; आँच पहुँचाकर कड़ा और लाल करना; आँच या गरमी पहुँचाकर गलाना या नरम करना, सिझाना, चुराना; उबालना; सफेद करना या वनाना; फोड़ा, फुंसी या घावको मवाद भर आनेकी अवस्थाको पहुँचाना ।

पकाव–पु० पकनेका भाव; मवाद ।

पकावन*–पु० पकवान ।

पकौड़ा–पु० वड़ी पकौड़ी ।

पकौड़ी–स्त्री० घी या तेलमें तली हुई वेसन या पीठीकी वरी ।

पक्कण–पु० (सं०) चांडालका घर; चांडालोंकी बस्ती ।

पक्का–वि० पका हुआ, कच्चाका उलटा; जिसमें कोई कमी न रह गयी हो, पूर्णताको प्राप्त, पूरा; जिसमें हीर पड़ गया हो; मँजा हुआ, सिद्ध; सुडौल और एक जैसा जिसमें कहीं विषमता न हो; निपुण, निष्णात; आँचपर गलाया या नरम किया हुआ, जो सीझ चुका हो, राँधा हुआ; पूर्णरूपसे पकाया और साफ किया हुआ; ठहराऊ, अचल, सुदृढ़; ईंट या पत्थरका बना हुआ; जिसमें सुरखी-चूना आदिका उपयोग हुआ हो; जिसपर कंकड़-पत्थर विछाया गया हो; घीमें पका हुआ, घृतपक्व (पक्की रसोई); उवाला हुआ, औटा हुआ; स्वास्थ्यवर्द्धक (पक्का पानी); जिसमें खालिस सोने चाँदीके तार लगे हों, जो नकली न हो (पक्का काम); निश्चित; जो प्रमाणरूप माना जाय, टकसाली; जिसमें हेर-फेर न किया जा सके; जो हर तरहसे ठीक हो; जिसपर लिखी हुई बात कानूनके विरुद्ध न हो; जो कभी छूट न सके (पक्का रंग); अच्छी तरह जाँचा हुआ; जिसमें अच्छी तरह जाँचा हुआ हिसाव दर्ज किया गया हो (पक्की वही) । **–गाना**–पु० शास्त्रीय संगीत । **–पानी**–पु० गेहुँआँ रंग ।

पक्खर*–स्त्री० दे० 'पाखर' । वि० पक्का, दृढ़; प्रखर, तीक्ष्ण; प्रचंड; तेज ।

पक्तपौड–पु० (सं०) पखौड़ा नामक वृक्ष ।

पक्तव्य–वि० (सं०) पकाने योग्य; पचाने योग्य ।

पक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) पकाने या पचानेवाला । पु० जठराग्नि; रसोइया ।

पक्ति–स्त्री० (सं०) (भोजन) पकाना, पाचन; (फल आदिका) पकना; प्रसिद्धि, यश; पाचन-संस्थान । **–नाशन**–वि० पाचन खराव करनेवाला । **–शूल**–पु० अजीर्णके कारण होनेवाला दर्द । **–स्थान**–पु० पाचन-संस्थान, वे अंग जो पचानेकी क्रिया करते हैं ।

पक्त्रिम–वि० (सं०) पका हुआ; पकाया हुआ; पकानेसे प्राप्त (नमक) ।

पक्व–वि० (सं०) पका हुआ; पकाया हुआ; पक्का, अनुभवी; दृढ़, पुष्ट; सफेद (वाल); पूर्णतः विकसित । पु० पकाया हुआ भोजन । **–कृत**–पु० नीम; पकानेवाला, पाककर्ता । **–केश**–वि० जिसके वाल पक गये हों । **–रस**–पु० मद्य, शराव । **–वारि**–पु० काँजी ।

पक्वता–स्त्री०, **पक्वत्व**–पु० (सं०) पक्व होनेका भाव ।

पक्वश–पु० (सं०) एक नीच जाति, चांडाल ।

पक्वातिसार, पक्वातीसार–पु० (सं०) अतिसारके पाँच भेदोंमेंसे एक ।

पक्वाधान–पु० (सं०) पाचन-संस्थानका वह भाग जहाँ आहार पचता है, आमाशय, जठर ।

पक्वान्न–पु० (सं०) पकाया हुआ अन्न; पकायी हुई भोज्य वस्तु; पकवान ।

पक्वाशय–पु० (सं०) दे० 'पक्वाधान' ।

पक्ष–पु० (सं०) किसी वस्तुका दायाँ या बायाँ भाग; सेना, मकान आदिका आगेकी ओर बढ़ा हुआ दायाँ या बायाँ भाग; पार्श्व, बगल; हाथी या घोड़ेका दाहिना या बायाँ पार्श्व; ओर, तरफ; किसी विषयका कोई अंग; किसी विषयके दो पहलुओंमेंसे कोई एक जिसका खंडन या मंडन किया जाय, विचारणीय विषयकी

कोई कोटि; किसी वस्तुके प्रति किसीकी अनुकूलता या समर्थनकी स्थिति; वादी या प्रतिवादीके संबंधमें अनुकूलताकी स्थिति; चांद्र मासके दो भागोंमेंसे एक; वह वस्तु जिसमें साध्यकी स्थिति संदिग्ध हो (न्या०); समूह (केवल समासमें—केशपक्ष); वर्ग-विशेष, दलविशेष; अनुयायी; सहायक; अनुयायियों या सहायकोंका दल; किसी विषयके संबंधमें विभिन्न मत रखनेवालोंका विशिष्ट वर्ग या दल; वादियों या प्रतिवादियोंका दल; पंख, पर; बाणमें लगा हुआ पर; शरीरका अर्द्धभाग; दोकी संख्या; सेना; सखा; चूल्हेका मुँह; शरीर; संबंध; हक; पक्षी; हाथका कड़ा। **—गम**—वि० उड़नेवाला। **—ग्रहण**—पु० दो पक्षोंमेंसे किसी एकको अंगीकार करना। **—घात**—पु० दे० 'पक्षाघात'। **—चर**—पु० चंद्रमा; यूथसे बहका हुआ हाथी; सेवक। **—च्छिद्**—पु० इंद्र। **—ज,—जन्मा(न्मन्)**—पु० चंद्रमा। **—द्वय**—पु० विवादके दोनों पक्ष; महीना। **—द्वार**—पु० चोर दरवाजा। **—धर**—पु० वह जो किसीका पक्ष ले; पक्षी; चंद्रमा; यूथभ्रष्ट हाथी। **—धर्म**—पु० पक्षमें हेतुके होनेका अनुमान। **—नाडी**—स्त्री० पक्षीका मोटा पर (ऐसा ही पर कलमके तौरपर इस्तेमाल किया जाता है)। **—पात**—पु० न्याय-अन्यायका विचार त्यागकर किसीका पक्ष ग्रहण करना, तरफ़दारी, अधिक चाह; पंख या परका संचालन। **—पातिता**—स्त्री०,**—पातित्व**—पु० पक्षपाती होनेका भाव, तरफ़दारी, पक्ष-ग्रहण। **—पाती(तिन्)**—वि० पक्षपात करनेवाला, तरफ़दार। **—पालि**—स्त्री० चोर दरवाजा। **—पुट**—पु० पंख, डैना। **—पोषण**—वि० फूट डालनेवाला। **—प्रद्योत**—पु० नृत्यमें हाथकी एक मुद्रा। **—बिंदु,—विंदु**—पु० कंक पक्षी। **—भाग**—पु० हाथीका पार्श्व। **—भुक्ति**—स्त्री० उतनी दूरी जितनी सूर्य एक पखवारेमें तै करता है। **—मूल**—पु० पंखकी जड़; परिवा। **—रचना**—स्त्री० दलबंदी, गुट बनाना। **—वध**—पु० दे० 'पक्षाघात'। **—वाद**—पु० एकतरफा बयान। **—वाहन**—पु० पक्षी। **—सुंदर**—पु० लोध्र। **—हत**—वि० जिसका एक पार्श्व लकवेसे बेकाम हो गया हो। **—हर**—पु० पक्षी; विश्वासघाती। **—होम**—पु० एक पक्ष चलनेवाला यज्ञ।

पक्ष(स्)—पु० (सं०) पंख; रथादिका पार्श्व; दरवाजेका पल्ला; सेनाका पार्श्व; अर्द्धभाग; मासार्द्ध; नदीका किनारा; बगल।

पक्षक—पु० (सं०) खिड़की, पक्षद्वार, चोर दरवाजा; पक्ष; सहाय।

पक्षति—स्त्री० (सं०) पंखकी जड़; शुक्ल पक्षकी पहली तिथि।

पक्षांत—पु० (सं०) अमावस्या; पूर्णिमा।

पक्षांतर—पु० (सं०) दूसरा पक्ष।

पक्षाघात—पु० (सं०) एक वातरोग जिसमें शरीरका बायाँ या दाहना भाग बेकाम हो जाता है, लकवा।

पक्षाभास—पु० (सं०) हेत्वाभाससे युक्त तर्क।

पक्षालिका—स्त्री० (सं०) कार्त्तिकेयकी एक मातृका।

पक्षालु—पु० (सं०) पक्षी।

पक्षावसर—पु० (सं०) दे० 'पक्षांत'।

पक्षाहार—पु० (सं०) पक्षमें केवल एक बार भोजन करना।

पक्षिणी—स्त्री० (सं०) मादा पक्षी; दो दिनोंके बीचकी रात, वर्तमान तथा आगामी दिनके बीचकी रात; पूर्णिमा। वि० स्त्री० पक्षवाली।

पक्षिल—पु० (सं०) वात्स्यायन मुनि जिन्होंने गौतमके न्याय-सूत्रपर भाष्य लिखा है।

पक्षी(क्षिन्)—पु० (सं०) चिड़िया; बाण; शिव। वि० पंखवाला; पक्ष ग्रहण करनेवाला, तरफ़दार। **—(क्षि) कीट**—पु० छोटी चिड़िया। **—पति**—पु० संपाति, जटायुका भाई। **—पानीयशालिका**—स्त्री० पक्षियोंके पानी पीनेका हौज या पात्र। **—पुंगव**—पु० जटायु। **—प्रवर,—राज,—सिंह,—स्वामी(मिन्)**—पु० गरुड़। **—बालक,—शावक**—पु० चिड़ियाका बच्चा। **—शाला**—स्त्री० चिड़ियाखाना; घोंसला; पिंजड़ा।

पक्षीय—वि० (सं०) पक्ष-संबंधी; पक्षका (समासांतमें)।

पक्ष्म(न्)—पु० (सं०) बरौनी; (फूलका) केसर; पर, पंख। **—कोप,—प्रकोप**—पु० आँख गड़नेका एक रोग जो दोष-विशेषके कारण बरौनीके बालोंके आँखमें घुसे रहनेसे होता है।

पक्ष्मल—वि० (सं०) लंबी, सुंदर बरौनीवाला; बालदार।

पक्ष्य—वि० (सं०) पाखमें होनेवाला; तरफ़दार; हर पाखमें बदलनेवाला। पु० पक्ष ग्रहण करनेवाला।

पखंड†—पु० दे० 'पाखंड'।

पखंडी†—वि० दे० 'पाखंडी'। * पु० कठपुतली नचानेवाला।

पख—स्त्री० दे० 'पख़'। पु० पाख।

पख़—स्त्री० (फ़ा०) प्रतिबंध; शर्त; झगड़ा; ऐब, नुक्स; फ़साद; रोक; अड़ंगा; बकवास। मु० **—लगाना**—शर्त या कैद लगाना; प्रतिबंध या रोक लगाना; रोड़े अटकाना; अड़ंगा लगाना। **—निकालना**—दोष दिखाना, नुक्स निकालना।

पखड़ी—स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पखपान—पु० पाँवका एक गहना।

पखरना*—स० क्रि० पखारना, धोना।

पखरवाना—स० क्रि० पखारनेमें प्रवृत्त करना।

पखराना*—स० क्रि० पखरवाना, धुलवाना।

पखरी—स्त्री० दे० 'पाखर'; दे० 'पँखड़ी'।

पखरैत—पु० वह घोड़ा, हाथी या बैल जिसपर पाखर डाली गयी हो।

पखरौटा†—पु० वह पानका बीड़ा जिसपर सोने या चाँदीका वर्क लपेटा गया हो।

पखवाड़ा†—पु० दे० 'पखवारा'।

पखवारा—पु० महीनेका आधा भाग, पंद्रह दिनोंका समय।

पखा*—पु० दाढ़ी।

पखाउज†—पु० दे० 'पखावज'।

पखान*—पु० दे० 'पाषाण'। **—भेद**—पु० दे० 'पाषाण-भेद'।

पखाना*—पु० कथा, उपाख्यान; † दे० 'पाखाना'।

पखारना—स० क्रि० पानीसे धोना; धोकर साफ करना।

पखाल—पु० मशक; धौंकनी; मुँह धोनेका पात्र।

पखाली—पु० भिश्ती।

पखावज—पु० मृदंग।

पखावजी—पु० पखावज बजानेवाला।

पखिया—पु० झगड़ा खड़ा करनेवाला। वि० व्यर्थका, फ़जूल।

पखी*—पु० 'पक्षी'।

पखीरी*—पु० दे० 'पक्षी'।

पखुड़ी, पखुरी†—स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पखुरा, पखुवा—पु० मनुष्यके शरीरमें कंधे और बाँहके जोड़के पासका भाग, भुजमूलके पासका भाग।

पखेरू—पु० पक्षी, चिड़िया।

पखेवा†—पु० उड़द, सोंठ, गुड़ आदिका घोल जिसे ब्यायी हुई गाय भैंसको कुछ दिनोंतक खिलाते हैं।

पखौआ*—पु० पंख।

पखौटा—पु० पर, पंख; मछलीका पर।

पखौड़ा—पु० एक वृक्ष; दे० 'पखुरा'।

पखौरा—पु० दे० 'पखुरा'।

पग—पु० पैर; डग। **—डंडी**—स्त्री० मनुष्योंके चलनेसे जंगल, खेत या मैदानमें बना हुआ पतला रास्ता। **—तरी**†—स्त्री० जूता। **—दासी**—स्त्री० जूता, खड़ाऊँ। **—पान**—पु० पैरके पंजेपर पहना जानेवाला एक गहना, पलानी।

पगड़ी—स्त्री० सिरपर लपेटी जानेवाली कपड़ेकी लंबी पट्टी, पाग, उष्णीष; दुकान आदि किरायेपर देनेके पूर्व भावी किरायेदारसे नजरानेके रूपमें ली जानेवाली रकम। मु० **(किसीसे)—अटकना**—किसीसे झगड़ा लगना। **—उछलना**—बेइज्जती होना; दुर्दशा होना। **—उछालना**—बेइज्जत करना; दुर्गत करना। **—उतरना**—प्रतिष्ठा नष्ट होना, अपमान होना। **—उतारना**—अपमानित करना, बेइज्जत करना; लूटना; धनका अपहरण करना। **(किसीको)—बँधना**—मालिकाना मिलना; उत्तराधिकार प्राप्त होना; उच्च अधिकार मिलना। **(किसीको)—बाँधना**—मालिक या सरदार बनाना; उत्तराधिकारी बनाना; उच्च अधिकार देना। **—बदलना**—मित्रता करना। **—रखना**—मान-मर्यादाकी रक्षा करना, इज्जत बचाना, प्रतिष्ठाकी रक्षा करना। **(किसीके आगे या पैरोंपर)—रखना**—सहायताकी गुहार करना; मिन्नत करना, दयाकी भीख माँगना।

पगड़ै*–अ० प्रभातमें–'सघली रैंनि आनँदघन बरस्या पगड़ै म्हाँ पर छाया' (पगड़ा, पगरा–सवेरा)।

पगना–अ० क्रि० किसी वस्तुका शीरे आदिमें इस प्रकार डूबा रहना कि वह उसमें अच्छी तरह भिन जाय; किसी तरल पदार्थके साथ इस प्रकार मिलना कि वह जज्ब हो जाय; रस आदिमें सन जाना, शराबोर होना; निमग्न होना; लिप्त होना।

पगनियाँ*–स्त्री० जूती।

पगरा*–पु० डग, कदम; प्रभात; सफर शुरू करनेका समय।

पगरी†–स्त्री० दे० 'पगड़ी'।

पगला–वि० पागल; नासमझ। (स्त्री० 'पगली')।

पगली–स्त्री० (एलार्म) जेलमें कोई खतरा उपस्थित होनेपर बजायी जानेवाली घंटी, खतरेकी घंटी।

पगहा†–पु० दे० 'पघा'।

पगा*–पु० पगड़ी; डुपट्टा; पघा; दे० 'पगरा'।

पगाना–स० क्रि० पागनेका काम कराना; शराबोर कराना; निमग्न कराना; अनुरक्त करना।

पगार–पु० गारा, गिलावा; हलकर पार करने योग्य नदी आदि; † वेतन; * दे० 'प्राकार'।

पगारना†–स० क्रि० फैलाना।

पगिआना, पगियाना*–स० क्रि० दे० 'पगाना'।

पगिया*–स्त्री० दे० 'पगड़ी'।

पगुराना†–अ० क्रि० जुगाली करना, पागुर करना। स० क्रि० (ला०) पचा जाना, हड़प जाना।

पगोडा–पु० (ब०) बौद्धमंदिर।

पघा–पु० ढोर बाँधनेकी रस्सी।

पघिलना†–अ० क्रि० दे० 'पिघलना'।

पघिलाना†–स० क्रि० दे० 'पिघलाना'।

पच–'पाँच'का समासगतरूप। –**कल्यान**–पु० दे० 'पंच-कल्याण'। –**कल्यानी**†–वि० धूर्त, चाइयाँ; लंपट। –**खना**–वि० पाँच खंडोंवाला। –**गुना**–वि० जिसमें कोई राशि या माप पाँच बार शामिल हो, पाँच गुना। –**ग्रह**–पु० मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि–ये पाँच ग्रह। –**तूरा**–पु० एक बाजा। –**तोरिया**–पु० एक तरहका कपड़ा। –**तोलिया**–पु० एक तरहका कपड़ा; पाँच तोलेका बाट। –**पल्लव**–पु० दे० 'पंचपल्लव'। –**मेल**–वि० जिसमें कई या पाँच प्रकारकी वस्तुएँ मिली हों। –**रंग**–पु० चौक पूरनेके कामकी अबीर-बुक्का आदि पाँच वस्तुओंका समूह। वि० दे० 'पचरंगा'। –**रंगा**–वि० पाँच रंगोंवाला; पाँच रंगोंमें रँगा हुआ या पाँच रंगोंके सूतोंसे बुना हुआ (कपड़ा); जो कई रंगोंका हो। –**लड़ी**–स्त्री० पाँच लड़ियोंवाला माला जैसा एक गहना। –**लोना**–वि० जिसमें पाँच प्रकारके नमक मिले हों। पु० ऐसा मिश्रण, पंचलवण। –**वई**†–स्त्री० दे० 'पचवाई'। –**वाई**–स्त्री० एक प्रकारकी देशी शराब।

पचक–पु० (सं०) पकानेवाला रसोइया।

पचकना–अ० क्रि० दे० 'पिचकना'।

पचका–पु० पिचकनेके कारण पड़ा हुआ गड्ढा या चिह्न।

पचकाना–स० क्रि० दे० 'पिचकाना'।

पचखना–अ० क्रि० दे० 'पिचकना'। वि० दे० 'पच'में।

पचखा†–पु० दे० 'पंचक'।

पचड़ा–पु० बखेड़ा, झंझट; एक तरहका गीत जिसे प्रायः ओझा देवी आदिकी स्तुतिमें गाता है; लावनीकी तरहका गीत जिसमें पाँच-पाँच चरणोंके खंड होते हैं।

पचन–पु० (सं०) पकने या पकानेका कार्य; अग्नि; पकानेवाला, पाककर्ता; पकानेका साधन।

पचना–स्त्री० (सं०) पकानेकी क्रिया। अ० क्रि० पचाया जाना; हजम होना; खपना, अन्य वस्तुमें मिल जाना; अधिक परिश्रमसे क्षीण होना; परेशान होना–'बृथा रुचि बीच पच्यौपरि क्यों ?'–घन०। मु० **पच मरना**–जी-तोड़ मेहनत करना।

पचनागार–पु० (सं०) रसोईघर।

पचनाग्नि–स्त्री० (सं०) जठराग्नि।

पचनिका–स्त्री० (सं०) कड़ाही।

पचनी–स्त्री० (सं०) (जंगली) बिजौरा नीबू।

पचनीय–वि० (सं०) पकाने योग्य; जो पच सकता हो।

पचपच–स्त्री० बार-बार उत्पन्न किया हुआ 'पच' शब्द; 'पच-पच' शब्द होने या करनेकी क्रिया या भाव; कीच। पु० (सं०) शिव।

पचपचा–वि० अधूरा पका हुआ (भोजन); जिसका पानी जज्ब न हुआ हो।

पचपचाना–अ० क्रि० किसी वस्तुका बहुत गीला होना।

पचपन–वि० पचास और पाँच। पु० पचपनकी संख्या, ५५।

पचवना*–स० क्रि० दे० 'पचाना'।

पचहत्तर–वि० सत्तरसे पाँच अधिक। पु० सत्तरसे पाँच अधिककी संख्या, ७५।

पचहरा–वि० पाँच स्तरों-परतोंवाला; पाँच गुना।

पचा–स्त्री० (सं०) पकने या पकानेकी क्रिया।

पचाना–स० क्रि० पकाना; जठराग्निकी क्रिया द्वारा खाये हुए पदार्थको रस आदिका रूप ग्रहण करनेकी स्थितिको पहुँचाना; पक्व बनाना; नष्ट कर देना; बना न रहने देना; खत्म कर देना; पराये मालको अनुचित रीतिसे आत्मसात् कर लेना, हजम करना; परायी चीजको इस प्रकार अपना लेना कि वह वास्तविक अधिकारीको पुनः मिल न सके; किसी बात या मामलेको इस प्रकार दबा देना कि दूसरे उसे जान न सकें या उसका भेद न खुल सके; बहुत अधिक काम लेकर या कष्ट पहुँचाकर शरीर आदिको क्षीण बनाना; किसी वस्तुको पूर्णतया लीन कर लेना; किसी वस्तुको अपनेमें एकदम छिपा लेना।

पचारना*–स० क्रि० ललकारना।

पचाव†–पु० पचनेका कार्य या भाव।

पचास–वि० दसका पाँच गुना, चालीससे दस अधिक। पु० पचासकी संख्या, ५०।

पचासा–पु० पचास सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसीके जीवनके प्रथम पचास वर्ष; पचास वर्षोंका समाहार; संकटके समय सब सिपाहियोंको थानेमें बुलानेके लिए देरतक बजनेवाला घंटा।

पचासी–वि० अस्सीसे पाँच अधिक। पु० पचासीकी संख्या, ८५।

पचि–पु० (सं०) अग्नि; पकना।

पचित–वि० पचा हुआ; * जड़ा हुआ, खचित।

पचीस–वि० बीससे पाँच अधिक। पु० पचीसकी संख्या, २५।

पचीसी–स्त्री० पचीस सजातीय वस्तुओंका समाहार; किसीके जीवनके प्रारंभिक पचीस वर्षका समय, दे० 'गदहपचीसी'; पचीस वर्षोंका समाहार; एक तरहकी द्यूतक्रीड़ा; इसकी बिसात।

पचूका†–पु० पिचकारी।

पचेलिम–वि० (सं०) जो अपने आप पक जाय; जो शीघ्र पक जाय। पु० अग्नि, सूर्य।

पचेलुक–पु० (सं०) रसोइया।

पचोतर–वि० जिसमें ऊपरसे पाँच और मिलाया गया हो, पाँच अधिक। –**सौ**–वि० एक सौ पाँच। पु० एक सौ पाँचकी संख्या, १०५।

पचोतरा–पु० वरपक्षकी ओरसे कन्यापक्षके पुरोहितको दिया जानेवाला एक नेग जिसमें उसे तिलकके रुपयोंमेंसे सौ पीछे पाँच रुपये मिलते हैं।

पचौनी–स्त्री० पचानेकी क्रिया; आमाशय, मेदा।

पचौर*–पु० दे० 'पचौली'–पु०।

पचौली†–पु० गाँवका मुखिया। स्त्री० एक पौधा।

पचौवर–वि० पचहरा।

पच्चड़–पु० दे० 'पच्चर'।

पच्चर–पु० बाँस अथवा लकड़ीकी वह फट्टी या गुल्ली जिसे लकड़ीकी बनी चीजोंमें संधिकी दरार भरनेके लिए ठोंकते या बैठाते हैं; व्यर्थकी बाधा। मु० –**अड़ाना**–बाधा डालना, रुकावट पैदा करना, रोड़े अटकाना। –**ठोंकना**–ऐसा कार्य करना जिससे किसीको भारी कष्ट पहुँचे या उसे बहुत हैरान होना पड़े। –**मारना**–होते हुए काममें बाधा डालना; बने हुए खेलको बिगाड़ देना।

पच्ची–स्त्री० एक वस्तुको दूसरी वस्तुमें इस प्रकार खोदकर जोड़ना

कि दोनोंकी सतहें एक मेलमें आ जायँ और वे परस्पर अंग और अंगी जान पड़ें; एक रंगके पत्थरपर दूसरे रंगके पत्थरका जड़ाव; (सिर) खपानेकी क्रिया (–माथापच्ची)। **–कार**–पु० पच्ची करनेवाला। **–कारी**–स्त्री० पच्ची करनेका काम। **मु० (किसीमें)–हो जाना**–मिलकर एक रूप हो जाना, लीन हो जाना।

पच्छ*–पु० दे० 'पक्ष'।

पच्छताई*–स्त्री० दे० 'पक्षपात'।

पच्छब्द–पु० (सं०) दे० 'पदशब्द'।

पच्छम।–पु० दे० 'पश्चिम'।

पच्छाघात।–पु० दे० 'पक्षाघात'।

पच्छि।–पु० दे० 'पक्षी'। **–राज***–पु० गरुड़।

पच्छिउँ, पच्छिवँ*–पु० दे० 'पश्चिम'।

पच्छिनी*–स्त्री० चिड़िया।

पच्छिम–पु० दे० 'पश्चिम'।

पच्छी*–पु० चिड़िया; पक्ष ग्रहण करनेवाला।

पच्छौच–पु० (सं०) पैरकी शुद्धि, पैर धोकर साफ करना।

पछ–'पीछा'का समासमें व्यवहृत विकृत रूप। **–लगा***–पु० दे० 'पिछलगा'। **–लत्त***–पु०, **–लत्ती**–स्त्री० पिछली टाँगों द्वारा प्रहार। **–लागा***–पु० दे० 'पिछलगा'।

पछड़ना–अ० क्रि० पछाड़ा जाना; दे० 'पिछड़ना'।

पछताना–अ० क्रि० कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि*–स्त्री० पछतावा।

पछताव।–पु० दे० 'पछतावा'।

पछतावना–अ० क्रि० पछताना।

पछतावा–पु० वह दुःख जो किसीके मनमें कोई अनुचित कार्य कर चुकनेपर होता है, किसी कार्यके अनौचित्यके बोधसे होनेवाली आत्मग्लानि, पश्चात्ताप।

पछना–अ० क्रि० पाछा जाना। पु० पाछनेका औजार।

पछमन*–अ० पीछे।

पछरना*–अ० क्रि० पछड़ना; लौटना।

पछरा*–पु० दे० 'पछाड़'।

पछवत–स्त्री० फसल कट चुकनेपर बोयी जानेवाली चीज।

पछवाँ–वि० पश्चिमीय, पश्चिमका। स्त्री० पश्चिमकी ओरसे चलनेवाली हवा, पच्छिमी हवा; अँगियाका मोढ़ेके पीछेकी ओर पड़नेवाला भाग।

पछाँह–पु० पश्चिमी प्रदेश; पश्चिम दिशा।

पछाँहिया–वि० दे० 'पछाँही'।

पछाँही–वि० पछाँहका।

पछाड़–स्त्री० शोकसे मूर्च्छित होकर पीठके बल गिर पड़ना; शोकसे विह्वल होकर खड़े-खड़े गिर पड़ना। पु० कुश्तीका एक दाँव। **मु० –खाना**–शोकसे मूर्च्छित होकर पीठके बल या खड़े-खड़े गिर पड़ना।

पछाड़ना–स० क्रि० कुश्ती या लड़ाईमें पटकना या परास्त करना; धोते समय कपड़ेको पटकना।

पछाड़ी–स्त्री० दे० 'पिछाड़ी'।

पछानना*–स० क्रि० दे० 'पहचानना'।

पछाया–पु० किसी वस्तुका पिछला भाग।

पछार।–स्त्री० दे० 'पछाड़'।

पछारना*–स० क्रि० दे० 'पछाड़ना'।

पछावर, पछावरि*–स्त्री० छाछ आदिका बना हुआ एक पेय जो पीछेसे, भोजनके अंतमें, दिया जाता है।

पछाहँ–पु० दे० 'पछाँह'।

पछाहियाँ, पछाहीँ–वि० दे० 'पछाँही'।

पछिआना*–स० क्रि० अनुगमन करना; पीछा करना।

पछिउँ–पु० दे० 'पश्चिम'।

पछिताना*–अ० क्रि० 'पछताना'।

पछितानि–स्त्री०, **पछिताव**–पु० दे० 'पछतावा'।

पछियाउर, पछियावर–स्त्री० दे० 'पछावर'।

पछियाना*–स० क्रि० पीछे-पीछे चलना; पीछा करना।

पछियाव–पु० पच्छिमी हवा।

पछिलगा*–पु० दे० 'पिछलगा'।

पछिलना।–अ० क्रि० दे० 'पिछड़ना'; दे० 'पिछलना'।

पछिला।–वि० दे० 'पिछला'।

पछिवाँ, पछुवाँ–वि० स्त्री० पच्छिम। स्त्री० पच्छिमकी ओरसे आनेवाली हवा।

पछीत–स्त्री० मकानका पिछवाड़ा; मकानके पीछेकी दीवार।

पछुवा–पु० कड़े जैसा हाथमें पहननेका एक गहना।

पछेती–स्त्री० पौधोंका अंगमारी रोग।

पछेलना।–स० क्रि० पीछे छोड़ना या हटना।

पछेला।–पु० हाथमें पीछे पहननेका एक गहना। वि० पिछला।

पछेली।–स्त्री० छोटा पछेला।

पछेवड़ा*–पु० पिछौरा, चद्दर।

पछोड़ना।–स० क्रि० सूपसे फटकना।

पछोरना*–स० क्रि० दे० 'पछोड़ना'।

पछौरा–पु० दे० 'पिछौरा'।

पछ्यावर–स्त्री० दे० 'पछावर'।

पज़मुर्दगी–स्त्री० (फा०) कुम्हलाहट।

पज़मुर्दा–वि० (फा०) कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

पजरना*–अ० क्रि० जलना; सुलगना।

पजामा।–पु० पायजामा।

पजारना*–स० क्रि० जलाना।

पजावा–पु० (फा०) ईंटका भट्ठा।

पजूरुण–पु० जैनोंका एक व्रत।

पजोखा–पु० मातमपुरसी।

पज्ज–पु० (सं०) शूद्र।

पज्झटिका–स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद; छोटी घंटी।

पटंबर*–पु० दे० 'पाटंबर'।

पट–पु० (सं०) वस्त्र, कपड़ा; बारीक कपड़ा; चित्र खींचनेका कागज या कपड़ेका टुकड़ा; पर्दा; रंगमंचका पर्दा; छाजन; छत; चिरौंजीका पेड़। **–कर्म(न्)**–पु० कपड़ा बुनना, वयन, जुलाहेका धंधा। **–कार**–पु० जुलाहा; चित्रकार। **–कुटी**–स्त्री० खेमा, तंबू। **–द**–पु० कपास। **–धारी(रिन्)**–वि० जो वस्त्र पहने हो। * पु० तोशाखानेका प्रधान अधिकारी। **–मंडप,–वाप,–वेश्म(न्)**–पु० खेमा, तंबू। **–वाद्य**–पु० झाँझ जैसा एक बाजा (संगीत)। **–वास**–पु० रावटी, खेमा; धोती या साड़ीके नीचे पहननेका स्त्रियोंका एक प्रकारका घाँघरा, साया; कपड़ा बासनेका सुगंधित द्रव्य। **–वासक**–पु० कपड़ेको सुवासित करनेका सुगंधित द्रव्य या चूर्ण।

पट–पु० जगन्नाथ, बदरीनाथ आदिका चित्र जिसे यात्री अपने साथ लाते हैं; किवाड़; पालकीका दरवाजा; सिंहासन; कुश्तीका एक पेंच; तख्ता; किसी वस्तुकी चिपटी और चौरस सतह; किसी छोटी वस्तुके गिरने, फटने आदिसे होनेवाला शब्द; दे० 'पट्ट' (हिंदीमें समासमें आनेवाला विकृत रूप)। अ० अति शीघ्र, तत्काल। वि० जो पेटके बल स्थित हो, औंधा, चितका उलटा। **–ताल**–पु० मृदंगका एक ताल। **–पट**–स्त्री० अनेक बार और निरंतर उत्पन्न 'पट' शब्द। अ० 'पट-पट' आवाजके साथ। **–रानी**–स्त्री० वह रानी जिसके साथ राजा सिंहासनारूढ़ हुआ हो या हो, राजाकी सबसे बड़ी रानी, पट्टमहिषी। **–साली**–पु० धारवाड़ी जुलाहोंकी एक जाति। **मु० –उघड़ना**–दे० 'पट खुलना'। **–खुलना**–मंदिरका द्वार खुलना। **–पड़ना**–औंधे पड़ना; मंद होना। **–बंद होना**–मंदिरका द्वार बंद होना। **–लेना**–कुश्तीमें पट नामके पेंचसे अपने प्रतिद्वंद्वीको पछाड़नेके लिए उसकी टाँगें अपनी ओर खींचना।

पटइन।–स्त्री० पटवा जातिकी स्त्री।

पटक–पु० (सं०) सूती कपड़ा; शिविर; खेमा; अर्द्धग्राम।

पटकन*–पु० पटकनेकी क्रिया; तमाचा; छड़ी।

पटकना–स० क्रि० किसी वस्तु या व्यक्तिको उठाकर झोंकेके साथ पृथ्वी आदिपर गिराना; उठायी या हाथमें ली हुई वस्तुको पृथ्वी आदिपर जोरसे गिराना; कुश्तीमें पछाड़ना या दे मारना। †

अ० क्रि० 'पट' की आवाज करते हुए दरकना या फटना; पचकना; सीलसे या भीगनेसे फूले हुए गेहूँ, चने आदिका सूखकर पचकना। * परेशान होना–'ऐसी कौन बावरी सयान लैन पटकै'–घन०। (**मु० किसीके ऊपर, किसीपर या किसीके सिर पटकना**–किसीकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम उसे सौंपना।)

पटकनिया†–स्त्री० पटकने या पटके जानेकी क्रिया; पछाड़।

पटकनी†–स्त्री० दे० 'पटकनिया'; कड़ा आघात।

पटका–पु० कमरबंद; † गिर पड़ने, दब जाने आदिसे बरतनमें पड़नेवाला गड्ढा, पचका। **मु०–पकड़ना**–किसीको किसी बातका उत्तरदायी ठहराते हुए रोक रखना। **–बाँधना**–उद्यत होना, सन्नद्ध होना।

पटकान–पु० पटकने या पटके जानेकी क्रिया; पछाड़।

पटच्चर–पु० (सं०) चोर; फटा-पुराना कपड़ा।

पटड़ा†–पु० पटरा।

पटड़ी†–स्त्री० छोटा पटरा।

पटतर*–पु० बराबरी, तुलना, उपमा। † वि० हमवार, चौरस।

पटतरना*–स० क्रि० तुलना करना, समान ठहराना, समता दिखाना।

पटतारना–स० क्रि० ऊँची-नीची जमीनको हमवार बनाना, चौरस करना; * तलवार आदिको प्रहार करनेकी मुद्रामें हाथमें लेना, शस्त्र सँभालना।

पटत्क–पु० (सं०) चोर।

पटन*–पु० दे० 'पट्टन'।

पटना–अ० क्रि० पाटा जाना; भर जाना; मेल खाना; बनना; तै होना; (ऋण) पूरा-पूरा अदा किया जाना; † सींचा जाना। पु० बिहारकी आधुनिक राजधानी पाटलिपुत्र; * धन–'कौशल्या रानी पटना लुटावइँ'–ग्राम०।

पटनिया, पटनिहा–वि० पटनाका; पटना-संबंधी; पटनामें बना हुआ।

पटनी–स्त्री० कोठेवाले घरमें नीचेका कमरा; वह जमीन जिसका किसीके साथ स्थायी बंदोबस्त कर दिया गया हो; जमीनका स्थायी बंदोबस्त करनेकी रीति; कुछ रखनेके लिए खूँटियोंके सहारे या दराज बनाकर दीवारमें लगायी जानेवाली पटरी।

पटपटाना–अ० क्रि० भूख या गरमीसे तड़पना; 'पट-पट' शब्द निकलना। स० क्रि० 'पट-पट' शब्द उत्पन्न करते हुए किसी चीजको बजाना या पीटना; † चने या मटरको इस प्रकार भूनना कि 'पट-पट' शब्द हो।

पटपर–वि० चौरस, समतल। पु० समतल मैदान; उजाड़ जगह; बरसातमें नदीके पानीसे डूबी रहनेवाली जमीन।

पटपरा†–पु० पहाड़के ऊपरकी समतल भूमि।

पटबंधक–पु० एक तरहका रेहन जिसमें रेहन रखी हुई वस्तुके लाभसे सूदके सहित मूल धन अदा हो जानेपर रेहनदार उस वस्तुको लौटा देता है।

पटबीजना*–पु० जुगनू।

पटभाक्ष–पु० (सं०) एक प्रकारका प्रकाश संबंधी यंत्र।

पटमंजरी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

पटम*–पु० छल-छंद–'काहेकौं एतौ पटम रचत हौ मन रूखे मुँह चिकने बैन'–घन०।

पटमय–वि० (सं०) वस्त्रनिर्मित। पु० खेमा।

पटरक–पु० (सं०) गुंद्र नामक तृण, पटेर।

पटरा–पु० लंबा, चौकोर और कम मोटा चीरा हुआ लकड़ीका समतल टुकड़ा, पल्ला; हेंगा; पीढ़ा; धोबीका पाट; † किनारदार मर्दानी धोती; पैजामा, जाँघिया आदि बनानेका चौड़ी पट्टियों-वाला कपड़ा। **मु०–कर देना**–मारकर या काटकर गिरा देना; बरबाद कर देना। **–फेरना**–पटेलेसे जमीन बराबर करना; ध्वस्त करना। **–होना**–मरकर या कटकर गिर जाना।

पटरी–स्त्री० काठका लंबा, चौकोर और बहुत कम मोटा तख्ता, छोटा पटरा; वह तख्ती जिसपर बच्चे लिखना सीखते हैं, पटिया; थपुआ; सड़कके किनारेकी पैदल चलनेकी थोड़ी ऊँची और पतली जगह, 'पद्या'; नहरके किनारेका रास्ता; रविश; साड़ी-लहँगे आदिकी कोरपर टाँकनेका सोने या चाँदीके तारोंका फीता; एक प्रकारकी नक्काशी की हुई चौड़ी चूड़ी; जंतर, चौकी; लोहेके लंबे डंडे जिनसे बनी लाइनपर रेलगाड़ी चलती है; व्यवहारमें हेलमेलकी स्थिति। **मु० –जमाना**–घुड़सवारीमें रान जमाना; मेल बैठाना; **–बैठना**–मन मिलना; मेल खाना।

पटरोल*–पु० पट्टवस्त्र, रेशमी वस्त्र।

पटल–पु० (सं०) छत, छाजन; आवरणरूप वस्तु; तह, परत; आँखका एक रोग; समूह, राशि; शरीरके किसी अंगपरका चिह्न (जैसे–तिल); दलबल, लवाजमा; टोकरी; वृक्ष; डंटल; पृष्ठभाग; अध्याय; (टेबिल) मेज, टेबुल; (बोर्ड) लकड़ीका तख्ता; दफ्ती। **–प्रांत**–पु० ओलती।

पटलक–पु० (सं०) आवरण, पर्दा; संदूकची; टोकरी; राशि, ढेर।

पटली–स्त्री० (सं०) छाजन, छप्पर; वृक्ष; डंठल; * चौकी; पंक्ति।

पटवा–पु० गहना गूँथनेका पेशा करनेवाला; गहना गूँथनेका पेशा करनेवाली जाति; एक तरहका बैल; पटसनकी तरहका एक पौधा।

पटवाना–स० क्रि० पाटनेका काम कराना; भरवाकर बराबर कराना; छत तैयार कराना; † सिंचवाना; अदा करवाना; शांत कराना।

पटवारगिरी–स्त्री० पटवारीका काम या पद।

पटवारी–पु० गाँवकी जमीन और उसकी मालगुजारीका लेखा रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी; लेखपाल। * स्त्री० वस्त्र पहनानेवाली दासी।

पटसन–पु० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छालके रेशे रस्सी, बोरा आदि बनानेके काम आते हैं; इसकी छालके रेशे।

पटहंसिका–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

पटह–पु० (सं०) नगाड़ा, डंका; ढोल; डुग्गी; किसी काममें हाथ लगाना; क्षति पहुँचाना, हिंसा। **–घोषक**–पु० डुग्गी पीटनेवाला। **–भ्रमण**–पु० डुग्गी पीटते हुए घूमना।

पटहार–पु० पटवा।

पटहारिन–पु० पटहारकी या पटहार जातिकी स्त्री।

पटा–पु० तलवारके आकारका एक लोहेका हथियार जिसे खेल वगैरहमें भाँजते हैं; * पीढ़ा; अधिकारपत्र, पट्टा, सनद; खरीद-बिक्री, सौदा; चौड़ी धारी; लगामकी मुहरी। **–फेर**–पु० विवाह-में वर-वधूके आसन बदल देनेकी रस्म, लौटपटा (बुंदेल०)। **–(टे) बाज**–पु० पटा भाँजनेवाला, पटैत। **मु० –बाँधना***–उच्च पदपर अधिष्ठित करना; पटरानी बनाना।

पटाई–स्त्री० पाटनेका कार्य या भाव; पाटनेकी मजदूरी; † सींचनेका कार्य; सींचनेकी उजरत।

पटाक–पु० 'पट'की आवाज; (सं०) पक्षिविशेष।

पटाका–पु० 'पट'की आवाज; पटाकेकी आवाज, दे० 'पटाखा'; तमाचा, थप्पड़। स्त्री० (सं०) झंडा, पताका, ध्वजा।

पटाक्षेप–पु० (सं०) पर्दा गिरना या गिराना; किसी घटनाकी समाप्ति।

पटाखा–पु० पटाका, एक तरहकी आतिशबाजी।

पटाना–स० क्रि० पाटनेका काम कराना; कोठेकी छत तैयार कराना; ऋण चुकाना; मोल-भाव करके सौदा तै करना; † सींचना। † अ० क्रि० चुप मारना, शांत हो जाना।

पटापट–स्त्री० 'पट-पट'की आवाज। अ० 'पटा-पट' आवाजके साथ; तेजीसे।

पटापटी–स्त्री० वह चीज जिसमें रंग-बिरंगे फूल-पत्ते कढ़े हों; रंग-बिरंगी वस्तु।

पटार–स्त्री० पेटी, पिटारी; पिंजड़ा; रेशमकी डोरी; † गोजर (बुंदेल०)।

पटालुका–स्त्री० (सं०) जोंक।

पटाव–पु० पाटनेका कार्य; पाटी हुई जगह; पाटकर बनायी हुई छत; भरेठा।

पटि–स्त्री० (सं०) रंगीन वस्त्र; रंगमंचका पर्दा, यवनिका; कनात। **–क्षेप**–पु० पर्दा गिराना।

पटिका–स्त्री० (सं०) वस्त्र।

पटिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) पटुता, दक्षता; कर्कशता, रूखापन; उग्रता; अम्लता।

पटिया–स्त्री० चौकोर और समतल कटा हुआ पत्थरका लंबोतरा टुकड़ा; काठकी तख्ती; खाटकी पाटी; छोटा हेंगा; लंबा और कम चौड़ा खेत;* सिरके सँवारे हुए बाल।

पटी–स्त्री० (सं०) दे० 'पटि'; * कपड़ेकी पट्टी; कमरबंद।

पटीमा–पु० वह तख्ता जिसपर कपड़ेको फैलाकर छीपी उसे छापते हैं।

पटीर–वि० (सं०) सुंदर; ऊँचा। पु० खेलनेका गेंद; चंदन; कामदेव; कत्था; मैदान, क्षेत्र; उदर; मूली; क्यारी; वातरोग; प्रतिश्याय, जुकाम; चलनी; बादल; ऊँचाई; * बड़का पेड़। **–जन्मा(न्मन्)**–पु० चंदनका पेड़। **–मारुत**–पु० चंदनके वृक्षसे आनेवाली हवा; चंदन-निर्मित वस्तुसे झलकर उत्पन्न की हुई हवा।

पटीलना–स० क्रि० समझा-बुझाकर किसीको अपनी रायमें करना; छलना; मारना, पीटना; कमाना; पराजित करना; कोई काम पूरा करना।

पटु–वि० (सं०) कुशल, निपुण, प्रवीण, चतुर, चालाक; नीरोग; उग्र; तीखा; निष्ठुर; धूर्त; स्फुट, स्पष्ट; कर्कश (स्वर); विकसित। पु० नमक; पाँगा (समुद्री) नमक; परवल; करेला; छत्रक। **–कल्प**–वि० जो कुछ कम पटु हो। **–तृणक**–पु० लवणतृण। **–त्रय**–पु० तीन प्रकारके नमकोंका समाहार (आ० वे०)। **–पत्रिका**–स्त्री० छोटे चेंचका क्षुप। **–पर्णिका,–पर्णी**–स्त्री० मकोय। **–रूप**–वि० अत्यंत कुशल।

पटुआ–पु० पटसन; करेमू; वह डंडा जिसमें गून या डोरीका अगला सिर बँधा रहता है और उसे पकड़े हुए माझी उसे खींचते हैं।

पटुक–पु० (सं०) परवल; पट, वस्त्र।

पटुता–स्त्री०, **पटुत्व**–पु० (सं०) दक्षता, कुशलता।

पटुली–स्त्री० झूलेके रस्सोंपर रखी जानेवाली तख्ती; चौकी।

पटुवा–पु० दे० 'पटुआ'।

पटूका*–पु० दे० 'पटका'।

पटेर–स्त्री० सरकंडेकी जातिकी एक पानीकी घास।

पटेरा–पु० दे० 'पटेला'; दे० 'पटैला'।

पटेल–पु० गाँवका मुखिया; गाँवका नंबरदार; गुजराती कुर्मियोंकी एक उपाधि।

पटेल, सरदार वल्लभभाई–पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम गृहमंत्री; जन्म ३१-१०-१८७५; बारडोली सत्याग्रहके सफल संचालनके बादसे 'सरदार' कहे जाने लगे; १९३१ में कांग्रेसके अध्यक्ष बने; गृहमंत्री बननेपर देशी राज्योंके विलयनका गुरुतर कार्य किया; मृत्यु १५-१२-१९५०।

पटेलना–स० क्रि० दे० 'पटीलना'।

पटेला–पु० वह नाव जिसका बीचका भाग पटा हो; एक प्रकारकी घास; हेंगा; जमीन चौरस करनेका गोला, भारी पत्थर; कुश्तीका एक पेंच; चूड़ीका काम देनेवाला (चाँदीका) चिपटा कड़ा।

पटेली–स्त्री० छोटा पटेला।

पटैत–पु० पटेबाज।

पटैला–पु० पटेला; अर्गला, ब्योंड़ा।

पटोटज–पु० (सं०) खेमा; कुकुरमुत्ता, छत्रक।

पटोर–पु० एक प्रकारका कपड़ा; रेशमी कपड़ा; पटोल, परवल।

पटोरी–स्त्री० रेशमी चादर या साड़ी; रेशमी किनारेकी धोती।

पटोल–पु० (सं०) एक प्रकारका रेशमी कपड़ा; परवल।

पटोलक–पु० (सं०) सीपी, शुक्ति।

पटोलिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी तरोई, सतपुतिया, पेटी।

पटोली*–स्त्री० चादर, पटोरी; (सं०) दे० 'पटोलिका'।

पटोशिर*–पु० साफा (कृष्णगीता, भ्रमरगीतसार)।

पटौहाँ–पु० पटी हुई जगह; पटावके नीचेकी जगह या कमरा; पटवंधक। वि० (कर्ज) जो पटाकर चुकता किया जाय।

पट्ट–पु० (सं०) पटिया, तख्ती, प्लेट (जैसे नामपट्ट); पीठ, पीढ़ा; राजाज्ञा, दानपत्र आदि खुदवानेकी ताँबे आदिकी पट्टी; मालिककी ओरसे असामी आदिको दिया जानेवाला भूमि आदिके उपयोगका अधिकारपत्र; घावपर बाँधनेकी पट्टी, कपड़े आदिका लंबा-पतला टुकड़ा; पगड़ी; चक्की; चौराहा; नगर; किसी चौरस चीजकी सतह; रेशम; दुपट्टा; राजसिंहासन; सिल; एक पहनावा; बारीक या रंगीन कपड़ा; ढाल; पटसन; (हिं०) 'पट'की आवाज। वि० मुख्य; औंधा। **–उत्पादन**–पु० (सेरिकलचर) रेशमके कीड़े पालकर कच्चा रेशम तैयार करना। **–कीट**–पु० रेशमका कीड़ा। **–०पालन**–पु० (सेरिकलचर) दे० 'कोशकीट-पालन'; पट्ट उत्पादन। **–ज**–पु० रेशमी कपड़ा। **–देवी,–महिषी,–राज्ञी**–स्त्री० पटरानी। **–रंग,–रंजन**–पु० बक्कम। **–वस्त्र,–वासा(सस्)**–वि० रेशमी या रंगीन वस्त्र धारण करनेवाला। **–विलेख**–पु० (लीजडीड) वह विलेख जिसमें किसी भूमि या संपत्तिके उपभोग-संबंधी अधिकार किसीको दिये जानेकी शर्त, पट्टेकी शर्तें, विवरण आदि रहता है; पट्टानामा, पट्टा। **–शाक**–पु० पटुवा।

पट्टक–पु० (सं०) तख्ती; राजाज्ञा खुदवानेका ताम्रादिका पट्ट; घावपर बाँधनेकी पट्टी; दस्तावेज।

पट्टन–पु० (सं०) शहर।

पट्टनी–स्त्री० (सं०) नगरी।

पट्टला–स्त्री० (सं०) जिला; जिलेमें रहनेवाली जनता; समुदाय।

पट्टांशुक–पु० (सं०) रेशमी वस्त्र।

पट्टा–पु० किसी स्थावर संपत्तिके उपयोगका अधिकारपत्र, सनद; पालतू कुत्ते, बिल्ली आदिके गलेमें लगायी जानेवाली पट्टी; पीढ़ा; चपरास; पुरुषोंके सिरके पीछेकी ओरके बराबर कटे बाल; चमड़ेका कमरबंद; वंक्षण। **–(ट्टे)पछाड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–बैठक**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच।

पट्टार–पु० (सं०) एक प्राचीन देश।

पट्टार्ही–स्त्री० (सं०) पटरानी।

पट्टिका–स्त्री० (सं०) पटिया, तख्ती, प्लेट; कपड़ेका या रेशमी कपड़ेका टुकड़ा; घावपर बाँधनेकी पट्टी; पठानी लोध; दस्तावेज। **–लोध्र**–पु० पठानी लोध। **–वायक**–पु० रेशमी कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा।

पट्टिकाख्य–पु० (सं०) रक्तलोध्र, पठानी लोध।

पट्टिल–पु० (सं०) पूतिकरंज।

पट्टिलोध्र, पट्टिलोध्रक–पु० (सं०) दे० 'पट्टिका-लोध्र'।

पट्टिश, पट्टिस, पट्टीश, पट्टीस–पु० (सं०) एक प्राचीन शस्त्र, पटा।

पट्टी–स्त्री० (सं०) पठानी लोध; ललाटका एक गहना; नगर; घोड़ेकी पेटी; तोबड़ा; (हिं०) लिखना सीखनेकी लकड़ीकी लंबोतरी और चौरस पटरी, पटिया, तख्ती; सबक, सीख, शिक्षा; हानिकर शिक्षा (ला०); बहकानेवाली सीख; खाटकी पाटी; कपड़ा, कागज या धातुका पतला और लंबा टुकड़ा; घाव आदिपर बाँधनेका कपड़ेका लंबा और पतला टुकड़ा; पत्थरका लंबा, पतला और कम मोटा टुकड़ा; छाजनके ठाटमें लगायी जानेवाली लकड़ीकी लंबी बल्ली; कपड़ेकी किनारी; उन कई धज्जियोंमेंसे एक जिन्हें एकमें मिलानेसे टाट या कोई (ऊनी) कपड़ा (कंबल आदि) बनता है; नावके बीचोबीचका तख्ता; चने, तिल आदिकी चाशनीमें मिलाकर बनायी जानेवाली एक प्रकारकी पपड़ी; घुटनेके नीचेसे लेकर टखनेतक पाँवमें लपेटी जानेवाली सूती या ऊनी कपड़ेकी धज्जी; माँगके दोनों ओर कंघीसे जमायी जानेवाली बालोंकी तह; पाँत; घोड़ेकी लंबी और सीधी दौड़; छाजनकी कड़ियोंकी पाँत; संपत्ति या मिलकियतका एक भाग, पत्ती; किसी एक पट्टीदारके हिस्सेकी जमीदारी; वह कर जिसे जमींदार किसी कार्यके लिए द्रव्य एकत्र करनेके निमित्त असामियोंपर लगाता है। **–दार**–पु० वह जो किसी संयुक्त संपत्तिके किसी भागका स्वामी हो; किसी बातमें किसीके बराबर अधिकार रखनेवाला व्यक्ति, बराबरका अधिकारी या हकदार। **–दारी**–स्त्री० पट्टी होनेका भाव; पट्टीदार होनेका भाव; समान अधिकार रखनेका भाव; संपत्ति या अधिकारमें बराबरका अधिकारी होनेका दावा; किसी विषयमें दूसरेके बराबर अधिकार रखनेका दावा; कई पट्टीदारोंकी संयुक्त संपत्ति। **–०नामुकम्मल**–स्त्री० वह पट्टीदारी जिसका कुछ भाग हिस्सेदारोंमें बँट गया हो और कुछ संयुक्त अधिकारमें हो। **–०मुकम्मल**–स्त्री० वह पट्टीदारी जिसकी जमीन आदिका पूरा-

पूरा बँटवारा हो गया हो। **–वार**–अ० पट्टियोंको एक-दूसरीसे इस प्रकार पृथक् करते हुए कि एक पट्टीका हिसाब दूसरीके हिसाबसे पृथक् रहे, सभी पट्टियोंका हिसाब अलग-अलग रखते हुए। वि० (वह बही) जिसमें सभी पट्टियोंका हिसाब अलग-अलग रहे। **–का गाँव**–वह गाँव जिसमें बहुतसे हिस्सेदार हों। **मु० –जमाना**–माँगके दोनों ओरके बालोंको इस प्रकार सँवारना कि उनकी तह बैठ जाय। **–दारी अटकना**–पट्टीदारीको लेकर झगड़ा या विरोध होना। **–दारी करना**–समान अधिकार रखनेका दावा करना; पट्टीदारीका प्रश्न खड़ा करके किसीके काममें बाधा पहुँचाना; बराबरी करना। **–पढ़ाना**–बहकानेवाली शिक्षा देना। **–में आना**–किसीकी धूर्ततापूर्ण बातोंमें फँस जाना।

पट्टू–पु० एक प्रकारका ऊनी कपड़ा; एक प्रकारका धारीदार चारखाना।

पट्टैत–पु० पटैत; मूर्ख मनुष्य।

पट्टोलिका–स्त्री० (सं०) पट्टा, अधिकारपत्र।

पट्ठमान*–वि० पढ़ने योग्य।

पट्ठा–पु० युवा, तरुण, चढ़ती जवानीवाला मनुष्य, पशु आदि; कुश्तीबाज जवान; लंबा और मोटे दलका पत्ता; मांसपेशियोंको एक-दूसरीसे और हड्डियोंसे जुड़ी रखनेवाली मोटी नस; एक तरहका मोटा गोटा जो सुनहला या रुपहला होता है। **–पछाड़**–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जो पट्ठेको पछाड़ दे, बहुत बलवती (हो)। **मु० उल्लूका**– महा मूर्ख आदमी। **–चढ़ना**–कोई नस तन जाना। **–(ट्ठों) में घुसना**–अभिन्न बनना, बहुत अधिक मेल-जोल बढ़ाना।

पट्ठी–स्त्री० दे० 'पठिया'।

पठक–पु० (सं०) पढ़नेवाला।

पढ़त–स्त्री० (रीडिंग) दे० 'वाचन'।

पठन–पु० (सं०) पढ़नेकी क्रिया, पढ़ना; वर्णन करना। **–शील**–वि० जो बहुत पढ़े।

पठनीय–वि० (सं०) पढ़ने योग्य।

पठनेटा–पु० पठानका बेटा; पठान पुरुष।

पठमंजरी–स्त्री० (सं०) दे० 'पटमंजरी', एक रागिनी।

पठवना*–स० क्रि० भेजना।

पठवाना*–स० क्रि० भेजवाना।

पठान–पु० मुसलमानोंकी एक प्रसिद्ध उपजाति; अफगानिस्तान या पख्तूनिस्तानका निवासी।

पठाना*–स० क्रि० भेजना।

पठानिन–स्त्री० पठानकी या पठान जातिकी स्त्री।

पठानी–स्त्री० पठानकी या पठानजातिकी स्त्री; पठानका स्वभाव, पठानपन। वि० पठानका; पठान-संबंधी। **–लोध**–पु० एक जंगली पेड़ जिसकी छाल और पत्तियाँ रंगके तथा लकड़ी और फूल दवाके काम आते हैं।

पठार–पु० दूरतक फैली हुई चौरस और ऊँची जमीन।

पठावन†–पु० दूत; बसीठी।

पठावनि*–स्त्री० दे० 'पठवनी'।

पठावनी–स्त्री० किसी कार्यके लिए किसीको कहीं भेजना; किसीके भेजनेपर कहीं जाना; किसीको कहीं भेजने या पहुँचानेकी उजरत।

पठि–स्त्री० (सं०) पढ़नेकी क्रिया, अध्ययन।

पठित–वि० (सं०) पढ़ा हुआ।

पठियर†–स्त्री० पानी खींचनेके लिए कुएँके मुँहपर रखी जानेवाली पटिया।

पठिया–स्त्री० जवान और हृष्ट-पुष्ट औरत।

पठोर–स्त्री० जवान और बिना ब्यायी हुई बकरी या मुर्गी।

पठौना*–स० क्रि० पठाना, भेजना।

पठौनी†–स्त्री० दे० 'पठावनी'।

पठ्यमान*–वि० पढ़ने योग्य।

पड़की–स्त्री० पंडुक, फाख्ता।

पड़छती, पड़छत्ती–स्त्री० पानीकी बौछारसे बचानेके लिए कच्ची दीवारपर रखी या लगायी जानेवाली छाजन या टट्टी।

पड़त†–स्त्री० दे० 'पड़ता'।

पड़ता–पु० किसी मालकी खरीद या तैयारीका खर्च; बिक्रीके दाममेंसे लागत छाँटकर होनेवाली बचत; औसत; दर; लगानकी दर। **–मु०–निकालना,–फैलाना,–बैठाना**–लागतका विचारकर भाव निश्चित करना।

पड़ताल–स्त्री० पड़तालनेका काम या भाव; निरीक्षण, जाँच (प्रायः 'जाँच' शब्दके साथ प्रयुक्त); पटवारी या कानूनगो द्वारा की जानेवाली खेतोंकी एक विशेष प्रकारकी जाँच जिसमें बोयी हुई फसल, बोनेवालेका नाम, सिंचाई आदिका ब्योरा लिखा जाता है।

पड़तालना–स० क्रि० जाँच करना, छानबीन करना।

पड़ती–स्त्री० दे० 'परती', वह खेत या भूमि जो जोती बोयी न गयी हो।

पड़ना–अ० क्रि० गिरना; कहीं यकायक जा पहुँचना; असर होना; खाली न जाना; आना; डाला या पहुँचाया जाना; बिछाया या रखा जाना; घटनाका रूप प्राप्त करना; घटित होना; ब्याहा जाना; स्थित होना; दखल देना; शरीक होना; टिकना, ठहरना, मुकाम करना; लेटना; बीमार होना; मिलना; पड़ता खाना; आमदनी, लाभ आदिका पड़ता होना; प्रसंग प्राप्त होना; उपस्थित होना; राहमें मिलना; निकल आना, पैदा होना; होना; हो जाना; तीव्र इच्छा होना; धुन सवार होना; नियत किया जाना, मुकर्रर होना; बन जाना। (**किसीपर पड़ना**–आफत आना, विपत्ति आना। **क्या पड़ी है**–क्या मतलब है?)

पड़-नाना–पु० पर-नाना।

पड़-पड़–स्त्री० अनेक बार और निरंतर उत्पन्न 'पड़' शब्द।

पड़पड़ाना–अ० क्रि० 'पड़-पड़' शब्द होना; 'पड़-पड़' शब्द करना; मिर्च आदि तीखी वस्तुओंके स्पर्शसे जीभका जलने-सा लगना।

पड़पड़ाहट–स्त्री० पड़पड़ानेकी क्रिया या भाव।

पड़पोता–पु० दे० 'परपोता'।

पड़रू†–पु० 'पँड़वा'।

पड़वा†–स्त्री० दे० 'परिवा'। पु० दे० 'पँड़वा'।

पड़वाना–स० क्रि० पड़नेका काम कराना।

पड़वी†–स्त्री० वैशाख या ज्येष्ठमें बोयी जानेवाली एक प्रकारकी ईख।

पड़ा–पु० भैंसका बच्चा, पँड़वा।

पड़ाका†–पु० दे० 'पटाका'।

पड़ाना–स० क्रि० गिराना; लिटाना; झुकाना; पड़नेमें प्रवृत्त करना।

पड़ापड़–स्त्री० 'पड़-पड़'की आवाज। अ० 'पड़-पड़'की आवाजके साथ।

पड़ाव–पु० सेना, काफिले या पथिकोंका रातभर या कुछ समयके लिए मार्गमें कहीं ठहरना; यात्रियोंके ठहरनेकी जगह, टिकान। **मु० –मारना**–पड़ाव डाले हुए काफिले या यात्री-दलको लूटना; कोई भारी साहसका काम करना।

पड़िया–स्त्री० भैंसका मादा बच्चा।

पड़ियाना†–अ० क्रि० भैंसका भैंसेसे संयोग होना। स० क्रि० भैंसेका भैंससे संयोग करना; ऐसा संयोग कराना।

पड़िवा†–स्त्री० दे० 'परिवा'।

पड़ोरा†–पु० परवल।

पड़ोस–पु० किसीके घरके पासके घर, प्रतिवेश; किसीके घरके आसपासकी जगह। **मु० –करना**–पड़ोसमें रहना।

पड़ोसी, पड़ौसी–पु० पड़ोसमें रहनेवाला।

पढ़ंत–स्त्री० निरंतर पढ़ना; जादू।

पढ़ंता–वि०, पु० पढ़नेवाला।

पढ़त–स्त्री० पढ़नेकी क्रिया, पाठ; वाचन (रीडिंग)।

पढ़ना–स० क्रि० लिखे हुए अक्षरों या शब्दोंका क्रमसे उच्चारण करना; पुस्तक या लेख आदिको इस प्रकार देखना कि उसमें लिखे शब्दसमूहका अर्थ या भाव समझमें आ जाय; चिह्न या लक्षण देखकर उनका आशय या परिणाम समझना; बोलकर जपना; मन-ही-मन जपना; बोल-बोलकर याद करना, रटना, घोखना; जादू करना; तोता-मैना आदिका सिखाये हुए शब्दोंका उच्चारण करना; नया सबक सीखना। **मु० –लिखना**–शिक्षा प्राप्त करना।

पढ़नी-उड़ी–स्त्री० टीले, आदमी आदिको उछलकर लाँघनेकी एक कसरत ।

पढ़वाना–स० क्रि० किसीको पढ़ने या पढ़ानेमें प्रवृत्त करना ।

पढ़वैया†–पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पढ़ाई–स्त्री० पढ़नेका काम, पठन; विद्योपार्जन, शिक्षा; पढ़ानेका काम, पाठन; पढ़ानेका तर्ज; अध्ययनका ढंग; पढ़ानेके बदले दिया जानेवाला धन, पढ़ानेकी उजरत ।

पढ़ाना–स० क्रि० शिक्षा देना, शिक्षित बनाना, कोई विषय या बात सिखाना; तोता-मैना आदिको किसी शब्द या शब्द-समूहका उच्चारण करना सिखाना ।

पढ़िना–पु० एक प्रकारकी मछली ।

पढ़ैया†–पु० पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पण–पु० (सं०) ११ या २० माशेके बराबर एक पुराना सिक्का, ताँबेका एक पुराना सिक्का जो अस्सी कौड़ियोंके बराबर होता था; जुआ; बाजी; बाजी लगायी हुई चीज; प्रतिज्ञा; इकरार; मजदूरी, पारिश्रमिक; वेतन; मूल्य; धन; बेचनेकी चीज. विक्रेय वस्तु; व्यापार; व्यवहार; कलाल; विक्रेता; घर; मुट्ठीभर कोई वस्तु; स्तुति; विष्णु । **–क्रिया**–स्त्री० (बेटिंग) बाजी लगानेका कार्य, पणन । **–ग्रंथि**–स्त्री० बाजार । **–च्छेदन**–पु० अँगूठा काटनेका दंड (कौ०) । **–जित**–वि० जुएमें जीता हुआ । **–०दास**–पु० वह जो जुएमें अपनेको हारकर विजेताका दास बन गया हो । **–दंड**–पु० अर्थदंड । **–फर**–पु० लग्नसे दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ और ग्यारहवाँ स्थान (ज्यो०) । **–बंध**–पु० बाजी लगाना, किसीसे इस प्रकारकी प्रतिज्ञा करना कि यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं यह दूँगा या ऐसा करूँगा; इकरार; संधि । **–स्त्री, –सुंदरी**–स्त्री० वेश्या ।

पणता–स्त्री०, **पणत्व**–पु० (सं०) मूल्य ।

पणन–पु० (सं०) खरीदने-बेचनेकी क्रिया; व्यापार; बाजी लगाना, शर्त लगाना; प्रतिज्ञा करना, इकरार करना, कौल करना ।

पणनीय–वि० (सं०) खरीदने-बेचने योग्य ।

पणव–पु० (सं०) छोटा ढोल; एक वर्णवृत्त ।

पणवा–स्त्री० (सं०) पणव; एक वृत्त ।

पणवानक–पु० (सं०) नगाड़ा ।

पणवी(विन्)–पु० (सं०) शिव ।

पणस–पु० (सं०) विक्रेय वस्तु ।

पणांगना–स्त्री० (सं०) वेश्या ।

पणाया–स्त्री० (सं०) क्रय-विक्रयका व्यवहार; बाजार; व्यापारसे होनेवाला लाभ; स्तुति; जुआ, द्यूत ।

पणायित–वि० (सं०) खरीदा या बेचा हुआ; स्तुत ।

पणार्पण–पु० (सं०) इकरार, शर्त ।

पणासी*–वि० विनाशक–'हौं जब हीं जब पूजन जात पितापद पावन पाप पणासी'–रामचंद्रिका ।

पणास्थि–स्त्री० (सं०) कौड़ी ।

पणि–स्त्री० (सं०) बाजार; दूकानोंकी पँत । –पु० फणिश (फिनीलिया) (मिस्र ?)का व्यापारी (भुवन विक्रम) । पु० कंजूस; पापी ।

पणित–वि० (सं०) खरीदा या बेचा हुआ; जिसकी बाजी लगायी गयी हो; स्तुत । पु० बाजी ।

पणितव्य–वि० (सं०) खरीदने या बेचने योग्य; बाजी लगाने योग्य ।

पणिता(तृ)–पु० (सं०) सौदागर, व्यापारी ।

पणी(णिन्)–वि० (सं०) क्रय-विक्रय आदि करनेवाला, व्यापारी । पु० एक ऋषि ।

पण्य–वि० (सं०) क्रय-विक्रयके योग्य; व्यवहार या व्यापारके योग्य । पु० विक्रेय वस्तु, सौदा; रोजगार, व्यापार; मूल्य, दाम; दुकान । **–क्षेत्र**–पु०, (मारकेट) वस्तुएँ बेचने खरीदनेका स्थान, बाजार । **–दासी**–स्त्री० लौंडी । **–निचय**–पु० बिक्रीका माल एकत्र करना । **–निर्वाहण**–पु० चुंगी या महसूल दिये बिना ही माल निकाल ले जाना (कौ०) । **–पति**–पु० बहुत बड़ा व्यापारी, भारी व्यवसायी । **–पत्तन**–पु० मंडी, कई बाजारोंवाला नगर । **–०चारित्र**–पु० मंडीका नियम । **–परिणीता**–स्त्री० रखेली । **–फलत्व**–पु० व्यापारमें उन्नति या लाभ । **–भूमि**–स्त्री० गोदाम; दे० पण्यक्षेत्र । **–योषित,–विलासिनी**–स्त्री० वेश्या । **–वाहक नौका**–स्त्री० (कारगो बोट) माल ढोनेवाली नाव । **–वीथि,–विथिका,–वीथी,–शाला**–स्त्री० बाजार; दुकान । **–समवाय**–पु० थोक बिक्रीका माल । **–संस्था**–स्त्री० गोदाम (कौ०) ।

पण्यांगना–स्त्री० (सं०) वेश्या ।

पण्याजीव–पु० (सं०) वणिक, व्यापारी ।

पण्याजीवक–पु० (सं०) व्यापारी; बाजार ।

पण्योपघात–पु० (सं०) बेचे जानेवाले मालकी हानि ।

पतंखा†–पु० एक प्रकारका बगला ।

पतंग–पु० (सं०) सूर्य, पक्षी, चिड़िया; शलभ, टिड्डी; एक कीड़ा; एक प्रकारका धान; जलमहुआ; पारा; खेलनेका गेंद; एक प्रकारका चंदन; चिनगारी; नौका; विष्णु; जैनोंके एक देवता । (हिं०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ीसे एक बढ़िया लाल रंग तैयार किया जाता है, बक्कम । स्त्री० बाँसकी कमानियोंके ढाँचेपर कागज मढ़कर बनाया जानेवाला खिलौना जिसे तागेसे बाँधकर हवा चलते समय आसमानमें उड़ाते हैं, गुड्डी, कनकौवा । **–छुरी**†–पु० चुगली करनेवाला, चुगलखोर । **–बाज़**–पु० पतंग उड़ाने, लड़ानेवाला, वह जो बहुत अधिक गुड्डी उड़ाये । **–बाज़ी**–स्त्री० पतंगबाज होनेकी क्रिया या भाव; पतंग उड़ानेका हुनर । मु०–**काटना**–अपनी पतंगकी डोरीकी रगड़ दूसरेकी पतंगकी डोरीपर डालकर उसे काट देना । **–बढ़ाना**–डोर ढीली करके पतंगको और ऊपर या आगे पहुँचाना ।

पतंगम–पु० (सं०) पक्षी; शलभ, पतंगा ।

पतंगा–पु० एक प्रकारका उड़नेवाला कीड़ा, फतिंगा; दीयेका फूल, चिरागका गुल; चिनगारी ।

पतंगिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मधुमक्खी; छोटी चिड़िया ।

पतंगी(गिन्)–पु० (सं०) पक्षी ।

पतंगी*–वि० स्त्री० रंग-बिरंगी–'गोरे तन पहिरि पतंगी सारी, झमकि-झमकि गावै गारी'–घन० ।

पतंगेंद्र–पु० (सं०) गरुड़ ।

पतंचल–पु० (सं०) एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि ।

पतंचिका–स्त्री० (सं०) धनुषकी डोरी ।

पतंजलि–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योगसूत्रोंकी रचना की है और जो योग-दर्शनके आदि आचार्य माने जाते हैं; एक ऋषि जिन्होंने पाणिनिके व्याकरण-सूत्रोंपर महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याख्या-ग्रंथ रचा है (कुछ लोगोंने योगसूत्रकार पतंजलिको महाभाष्यकार पतंजलिसे अभिन्न माना है) ।

पत*–पु० पति; मालिक, अधीश्वर, प्रभु । स्त्री० लाज; प्रतिष्ठा, इज्जत । **–खोवन**†–पु० अपनी प्रतिष्ठाका नाश करनेवाला । **–पानी**–पु० प्रतिष्ठा, इज्जत; लाज । मु०–**उतारना**–किसीकी प्रतिष्ठा भंग करना, अपमान करना । **–रखना**–प्रतिष्ठाकी रक्षा करना, इज्जत बचाना ।

पत–'पत्ता'का समासमें व्यवहृत रूप । **–झड़**–स्त्री० शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ोंकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं । **–झर,–झल**†–स्त्री० दे० 'पतझड़' । **–झाड़,–झार**–स्त्री० दे० 'पतझड़' ।

पतई†–स्त्री० पत्ती ।

पतग–पु० (सं०) पक्षी ।

पतगेंद्र–पु० (सं०) गरुड़ ।

पतजिव–पु० दे० 'पुत्र-जीव' ।

पतत्–वि० (सं०) गिरता हुआ; नीचे आता हुआ । पु० पक्षी । **–प्रकर्ष**–पु० एक काव्यदोष जहाँ किसी अलंकार या किसी रचनाकी उत्कृष्टताका निर्वाह न हो सके ।

पतत्र–पु० (सं०) वाहन, सवारी; डैना, पर ।

पतत्रि–पु० (सं०) पक्षी, चिड़िया ।

पतत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) पक्षी; बाण; घोड़ा । **–(त्रि)केतन**–पु० विष्णु । **–राज**–पु० गरुड़ ।

पतद्–'पतत्'का समासगत रूप । **–ग्रह**–पु० पीकदान; भिक्षापात्र; संरक्षित सेना । **–भीरु**–पु० बाज पक्षी ।

पतन–पु० (सं०) ऊपरसे नीचे आना; गिरना; च्युत होना; अधोगति; संहार; नाश; मरण; बैठना; डूबना (जैसे सूर्यका); नीचे लटक आना (जैसे छानीका); जातिसे च्युत होना; गर्भपात; पतित होना; पातित्य; किसी ग्रहका अक्षांश; उड़ना; घटाव। **–धर्मी**(र्मिन्)–वि० जिसका पतन हो; नश्वर। **–शील**–वि० पतन जिसका स्वभाव हो; जिसका पतन होता रहे; जो सदा पतनोन्मुख रहे।

पतनारा, पतनाला*–पु० दे० 'परनाला'; नाबदान।

पतनीय–वि० (सं०) पतनके योग्य; पतित होनेके योग्य; पतित करने या बनानेवाला। पु० पतित या च्युत करनेवाला पाप (स्मृ०)।

पतनोन्मुख–वि० (सं०) पतनकी ओर जानेवाला, पतनकी ओर प्रवृत्त, जो पतनकी राहपर हो; जो पतनके निकट हो।

पतम–पु० (सं०) चंद्रमा; पक्षी; टिड्डी।

पतयालु, पतयिष्णु–वि० (सं०) पतनशील।

पतर*–वि० पतला। पु० पत्ता; पनवारा।

पतरा†–वि० पतला; झीना; निर्बल। **–ई**–स्त्री० पतलापन।

पतरिंगा–पु० पतली चोंचवाला एक हरे रंगका पक्षी।

पतरी†–स्त्री० पत्तल।

पतरेंगा–पु० पतरिंगा नामका पक्षी।

पतरौल–पु० गश्त लगानेवाला व्यक्ति (अंग्रेजी पैट्रोल)।

पतला–वि० जिसका फैलाव या घेरा कम हो; जो मोटा न हो, जिसका शरीर मोटा न हो, कृश; सँकरा (गली इ०); बारीक; जो गाढ़ा न हो; जिसमें जलांशकी अधिकता हो; शक्तिहीन; अबल। **–ई**†–स्त्री० दे० 'पतलापन'। **–पन**–पु० पतला होनेका भाव। **–(ले)कान**–उस व्यक्तिके कान जो सुनी हुई बातको बिना विचार किये मान ले। **मु०–पड़ना**–दीन-हीन हो जाना; आपद्ग्रस्त होना।

पतलून–पु० (अं० 'पैंटलून') अंग्रेजी ढंगका पायजामा। **–नुमा**–वि० पतलूनके ढंगका। पु० पतलूनके ढंगका पायजामा।

पतलो†–स्त्री० सरपत या उसकी पत्ती।

पतवर–अ० अलग-अलग पाँतोंमें; पंक्तिबद्ध रूपमें।

पतवा†–पु० एक तरहका मचान जिसपरसे बाघ आदिका शिकार करते हैं।

पतवार–स्त्री० नावमें पीछेकी ओर लगी हुई वह तिकोनी लकड़ी जिसके द्वारा नावको इधर-उधर घुमाते या मोड़ते हैं, कर्ण; पार उतारनेका सहारा या साधन। पु० कूड़ा-करकट (खर-पतवार)।

पतवारी–स्त्री० ईखका खेत; पतवार।

पतवास–स्त्री० पक्षियोंका अड्डा।

पतस–पु० (सं०) चंद्रमा; पक्षी; फतिंगा।

पता–पु० किसी वस्तु, स्थान या व्यक्तिका ऐसा परिचय जो उसे पाने, ढूँढ़ने या उसके पासतक समाचार पहुँचानेमें सहायक हो; चिट्ठी आदिकी पीठपर लिखा जानेवाला पानेवालेका नाम आदि जिसके सहारे वह उसके पास पहुँच जाती है; ठिकाना, जानकारी; स्थिति-सूचक चिह्न या लक्षण; खोज, खबर; भेद, तत्त्व, रहस्य। **–(ते)की,–की बात**–भेदभरी बात, तत्त्वकी बात।

पताई–स्त्री० सूखी हुई पत्तियाँ या उनका पुंज। **मु०–झोंकना,–लगाना**–आगको तेज करनेके लिए उसमें पताई झोंकना या डालना। **(किसीके मुँहमें)–लगाना**–(किसीके मुँहमें) आग लगाना (स्त्रियाँ गालीके रूपमें कहती हैं)।

पताकांशुक–पु० (सं०) झंडा, पताका।

पताका–स्त्री० (सं०) ध्वजके ऊपरी सिरेपर पहनाया जानेवाला वह तिकोना या चौकोना कपड़ा जिसपर प्रायः किसी राजा, राष्ट्र या संघ आदिका निजी चिह्न बना रहता है; झंडा, पताका पहनानेका डंडा, ध्वज; चिह्न, निशान; प्रतीक; सौभाग्य; नाटकमें एक विशिष्ट स्थल, दे० 'पताकास्थानक'; तीर चलानेमें उँगलियोंकी एक विशेष प्रकारकी मुद्रा; प्रासंगिक कथावस्तुका एक भेद (ना०); दस खर्वकी संख्या। **–दंड**–पु० पताका लगानेका डंडा। **–स्थानक**–पु० नाटकमें वह स्थल जहाँ किसी सोचे हुए विषय या प्रस्तुत प्रसंगसे मेल खानेवाला दूसरा विषय या प्रसंग उपस्थित हो जाय। **–शीर्षक**–पु० (बैनर हेडलाइन) समाचार-पत्रके मुख-पृष्ठपर एक सिरेसे दूसरे सिरेतक, पताका-रूपमें, दिया गया सर्वप्रधान शीर्षक, पृष्ठ-(व्यापी) शीर्षक। **मु० (किसीकी)–उड़ना या फहरना**–एकाधिकार होना; सबसे बढ़कर होना; मूर्द्धन्य होना; बेजोड़ होना। **(किसीकी) विद्या गुण आदिकी–उड़ना या फहरना**–ख्याति होना। **–उड़ाना या फहराना**–आधिपत्य स्थापित करना, विजय प्राप्त करना। **–गिरना**–पराजय होना, हार होना।

पताकिक–पु० (सं०) पताका धारण करनेवाला, झंडा-बरदार।

पताकित–वि० (फ्लैग्ड) पताकाओंसे सज्जित, जिसपर पताका लगायी गयी हो।

पताकिनी–स्त्री० (सं०) सेना।

पताकी(किन्)–वि० (सं०) पताकावाला; पताका ले चलनेवाला। पु० झंडा ले चलनेवाला, झंडाबरदार; झंडा; रथ; राशियोंका एक बेध (ज्यो०)।

पतापत–वि० (सं०) अतिशय पतनयुक्त।

पतामी†–स्त्री० एक तरहकी नाव।

पतार*–पु० दे० 'पाताल'; जंगल।

पतारी–स्त्री० तालाब आदिके समीप रहनेवाली एक चिड़िया।

पताल–'पाताल'का समासगत विकृत रूप। **–आँवला**–पु० एक प्रकारका बड़ा पौधा जो औषधके काम आता है। **–कुम्हड़ा**–पु० एक जंगली पौधा। **–दंती**–पु० वह हाथी जिसका दाँत सीधे नीचेकी ओर बढ़ा हो।

पतावर–पु० सूखे पत्ते।

पतासी†–स्त्री० बढ़इयोंकी छोटी रुखानी।

पतिंग–पु० फतिंगा।

पतिंवरा–स्त्री० (सं०) स्वेच्छासे वर चुननेवाली कन्या; वह कन्या जो अपना वर चुननेके लिए स्वयंवर-भूमिमें उतरी हो।

पति–स्त्री० दे० 'पत'; साख। पु० (सं०) किसी वस्तुका स्वामी, वह जिसका किसी वस्तुपर अधिकार हो; किसी ब्याही हुई औरत-का शौहर, भर्ता, कांत; शासक; अपरिमित ज्ञानशक्ति तथा प्रभुशक्तिसे युक्त महेश्वर जो जगत्की सृष्टि और संहारके कारण हैं (पाशुपत दर्शन); मूल, जड़; गति। **–कामा**–स्त्री० पति चाहनेवाली स्त्री; पतिसे मिलनेकी इच्छा रखनेवाली स्त्री। **–खेचर**–पु० शिव। **–घातिनी,–घ्नी**–स्त्री० पतिको मार डालनेवाली स्त्री; वह स्त्री जिसमें ज्योतिष या सामुद्रिकके अनुसार ऐसे लक्षण हों जो पतिकी मृत्युके कारण हों, वैधव्य योगवाली स्त्री; एक हस्तरेखा जो यह सूचित करती है कि अमुक स्त्री पतिघातिनी होगी। **–देवता,–देवा**–स्त्री० वह स्त्री जो अपने पतिको देवताकी तरह माने, पतिव्रता स्त्री। **–धर्म**–पु० पतिके प्रति स्त्रीका कर्तव्य। **–प्राणा**–स्त्री० पतिव्रता स्त्री। **–भक्ति**–स्त्री० पतिकी तनमनसे सेवा करना। **–लंघन**–पु० पहले पतिके रहते दूसरेसे विवाह कर लेनेका अपराध। **–लोक**–पु० वह उत्तम परलोक जिसमें पतिकी आत्माका निवास हो (मृत्युके उपरांत पतिव्रता स्त्री उसी लोकमें पहुँचती है जिसमें उसका पति निवास करता है)। **–वर्त***–पु० दे० 'पतिव्रत'। **–वर्ता***–स्त्री० दे० 'पतिव्रता'। **–वेदन**–पु० शिव। **–व्रत**–पु० पतिके प्रति एकांत प्रेम, अनुराग, भक्ति। **–व्रता**–स्त्री० पतिमें अनन्य श्रद्धा, अनुराग, रखनेवाली स्त्री, साध्वी नारी। **–सेवा**–स्त्री० पतिभक्ति।

पतिआना†–स० क्रि० दे० 'पतियाना'।

पतिआर*–पु० विश्वास, प्रतीति। वि० विश्वसनीय।

पतिआरा*–पु० दे० 'पतियारा', विश्वास–'कहा परदेसीको पतिआरो'–सुर।

पतिक–पु० एक पुराना सिक्का, कार्षापण।

पतिजिया–स्त्री० अशोककी जातिका एक पेड़।

पतित–वि० (सं०) गिरा हुआ; जाति, धर्म आदिसे च्युत; आचार-भ्रष्ट; महापातकी, बहुत नीच; अत्यंत अपावन; पराजित। पु० उड़ना। **–उधारन***–वि० पतितोंको तारनेवाला; जो पतित जनोंको सुगति दे। पु० ईश्वर; सगुण ब्रह्म जो पतित जनोंको तारनेके लिए अवतीर्ण होता है। **–पावन**–वि० पतितोंको पवित्र

करनेवाला, जो पतितोंका उद्धार करे। पु० ईश्वर; सगुण ब्रह्म। **–वृत्त**–वि० भ्रष्ट आचरणवाला; जो पतित होकर जीवन बिताये। **–सावित्रीक**–पु० वह द्विज जिसका उपनयन संस्कार या तो हुआ ही न हो या हुआ हो तो विधिपूर्वक न हुआ हो।

पतितव्य–वि० (सं०) पतनके योग्य, गिरने योग्य।

पतिनी*–स्त्री० दे० 'पत्नी'।

पतिमती–वि० स्त्री० (सं०) (भूमि आदि) जिसका कोई स्वामी हो।

पतिया*–स्त्री० पत्री, चिट्ठी, पाती।

पतियाना*–स० क्रि० विश्वास करना; विश्वसनीय समझना, सच्चा या ठीक मानना।

पतियार†–पु० विश्वास, एतबार। वि० विश्वसनीय।

पतियारा*–पु० विश्वास, एतबार।

पतिलीन*–वि० प्रतिष्ठाहीन–'गतिहीननकी पतिलीननकी रति'। –घन०।

पतिश्रंती*–वि० स्त्री० सधवा, (वह स्त्री) जिसका पति जीवित हो।

पतिवती–वि० स्त्री० दे० 'पतिवत्नी'।

पतिवत्नी–वि० स्त्री० (सं०) सधवा।

पती†–पु० दे० 'पति'।

पतीजना, पतीनना*–स० त्रि.० विश्वास करना, पतियाना।

पतीर*–स्त्री० पंक्ति, पाँत।

पतीरी†–स्त्री० एक तरहकी चटाई।

पतील, पतीला†–वि० पतला।

पतीली–स्त्री० एक प्रकारकी पीतल आदिकी चौड़े मुंह और पेटेकी चिपटी बटलोई। † वि० स्त्री० दे० 'पतीला'।

पतुकी*–स्त्री० पतीली; हंडी।

पतुरिया†–स्त्री० वेश्या, रंडी; कुलटा।

पतुही†–स्त्री० छोटे या अपुष्ट दानोंवाली मटर आदिकी फली।

पतूख, पतूखी*–स्त्री० दे० 'पतोखी'।

पतोखद, पतोखदी–स्त्री० किसी वृक्ष, पौधे या घास आदिके फूल, पत्ते आदिसे बनी दवा, खरबिरई।

पतोखा–पु० पत्तेका बना दोना; पत्तोंसे बनी छतरी; एक तरहका बगुला।

पतोखी–स्त्री० छोटा पतोखा; रातमें बोलनेवाली एक चिड़िया; दे० 'पतौखी'।

पतोरा†–पु० दे० 'पत्योरा'।

पतोह†–स्त्री० दे० 'पतोहू'।

पतोहू–स्त्री० पुत्रवधू, पुत्रकी स्त्री।

पतौआ, पतौवा*–पु० पत्ता।

पतौखी†–स्त्री० कत्था, चूना और कटी सुपारीका मिश्रण जिसे मुखशुद्धिके लिए खाते हैं।

पत्तंग–पु० (सं०) लाल चंदन।

पत्त†–पु० दे० 'पत्र'।

पत्तन–पु० (सं०) नगर, शहर; पोताश्रय, बंदरगाह; बंदरगाही शहर (पोर्ट); अड्डा (हवाई–) (–'एअरपोर्ट'); मृदंग। **–वणिक्(ज्)**–पु० नगर-वणिक्।

पत्तर–पु० पीटकर पतला बनाया हुआ धातुका टुकड़ा जो कागजकी तरह किसी चीजपर चढ़ाया जाय; पत्तल।

पत्तल–स्त्री० थालीकी जगह उपयोगमें लानेके लिए बनाया गया पलाश आदिके पत्तोंका पात्र; पत्तलभर-खाद्य सामग्री, परोसा; पत्तलमें रखी हुई खाद्य सामग्री। मु० **(एक)–के खानेवाले**–बहुत नजदीकी। **–पड़ना**–खानेवालोंके सामने पत्तलोंका रखा जाना। **–परसना**–पत्तलपर खाद्य-सामग्री रखकर खानेवालेके सामने रखना। **–बाँधना**–कोई पहेली पूछकर उसे हल करनेके पहले भोजन न करनेकी कसम देना। **(किसीकी)–में खाना**–किसीके साथ खान-पानका नाता जोड़ना या रखना। **(जिस)–में खाना उसीमें छेद करना**–उपकारके बदले अपकार करना, उपकार करनेवालेका भी अपकार करना, कृतघ्न होना।

पत्ता–पु० कांड अथवा टहनीसे निकलनेवाला पेड़-पौधेका वह हरा अवयव जिससे छाया होती है और जो सूख जानेपर झड़ जाता है, पत्र; कानमें पहननेका एक गहना; मोटे कागजका गोल या चौकोर टुकड़ा (ताशका –); पत्तर। वि० बहुत हलका (ला०)। मु० **–खड़कना**–किसीकी आहट मिलना, कोई खटका होना। **–तोड़कर भागना**–बेतहासा भागना। **–न हिलना**–जरा भी हवा न चलना। **–हो जाना**–चटपट गायब हो जाना।

पत्ति–पु० (सं०) पैदल चलनेवाला यात्री; पैदल सिपाही, पदाति; योद्धा, वीर। स्त्री० सेनाका वह सबसे छोटा विभाग जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल सिपाही होते थे; पैदल चलना। **–काय**–पु० पैदल सेना। **–गणक**–पु० पैदल सिपाहियोंको एकत्र करने तथा उनकी गणना करनेवाला सेनाधिकारी। **–पाल**–पु० पाँच या छः सिपाहियोंका सरगना या नायक। **–व्यूह**–पु० वह व्यूह जिसमें आगे कवचधारी सैनिक हों और पीछे धनुर्धर (कौ०)। **–संहति**–स्त्री०, **सैन्य**–पु० पैदल सेना।

पत्तिक–वि० (सं०) पैदल चलनेवाला।

पत्ती–स्त्री० छोटा पत्ता; साझेका हिस्सा, भाग; साझा; पंखड़ी; भाँग; पत्तीके आकारका कटा हुआ लकड़ी, धातु आदिका टुकड़ा जो कहीं जड़ा, लगाया या लटकाया जाय; ताशका पत्ता; दे० 'ब्लेड'। पु० राजपूतोंकी एक जाति। **–दार**–पु० वह व्यक्ति जिसका किसी संपत्ति या व्यवसायमें साझा हो, हिस्सेदार।

पत्ती(त्तिन्)–पु० (सं०) पैदल सिपाही, प्यादा; पैदल चलने या यात्रा करनेवाला।

पत्तूर–पु० (सं०) एक प्रकारका शाक; लाल चंदन; पतंग नामका पेड़।

पत्थ*–पु० दे० 'पथ्य'।

पत्थर–पु० पृथ्वीका कड़ा स्तर, वह द्रव्य जिससे पृथ्वीका कड़ा स्तर बना होता है; इसका कोई टुकड़ा; मीलकी संख्या सूचित करनेके लिए सड़कके किनारे गाड़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा; सीमा या हद निर्धारित करनेके लिए गाड़ा जानेवाला पत्थरका टुकड़ा, ढेला; ओला; हीरा, जवाहर आदि; पत्थरकेसे स्वभाव या गुणसे युक्त वस्तु; वह वस्तु जो कठोरता, भारीपन आदिमें पत्थरके समान हो; कुछ नहीं, खाक (ला०)। **–कला**–स्त्री० एक प्रकारकी पुराने ढंगकी बंदूक, तोड़ेदार बंदूक। **–कूट**–पु० लम्बी टाँगों और ऐनक जैसी आँखोंवाला एक पक्षी जो छोटी झाड़ियों तथा जुती हुई कृषि भूमिपर कीड़ों तथा छोटे सरीसृपोंका शिकार करता है। **–चटा**–पु० एक प्रकारकी घास; पत्थर चाटनेवाला एक प्रकारका साँप; एक तरहकी मछली; कंजूस आदमी। वि० जो अपना वासस्थान छोड़कर किसी और जगह न गया हो, कूपमंडूक। **–चूर**–पु० एक तरहका पौधा। **–पानी**–पु० आँधी-पानी; घोर दुर्भिक्ष। **–फूल**–पु० छरीला। **–फोड़**–पु० हुदहुद चिड़िया; एक तरहका छोटा पौधा जो अधिकतर बरसातमें दीवारोंको फोड़कर निकलता है। **–फोड़ा**–पु० पत्थर तोड़नेका काम करनेवाला, संगतराश। **–बाज़**–वि० जो किसीपर पत्थर फेंके, पत्थर चलाकर मारनेवाला; जिसे पत्थर या ढेला चलानेका अभ्यास हो। **–बाज़ी**–स्त्री० पत्थर चलाकर मारनेकी क्रिया, ढेलवाही। मु० **–का कलेजा, दिल या हृदय**–अति कठोर हृदय, बहुत कड़ा दिल, ऐसा हृदय जिसमें करुणा, दया आदि कोमल भावोंका उदय न हो। **–का छापा**–लीथोकी छपाई। **–की छाती**–घोर कष्ट या विषम परिस्थितिमें भी न डिगनेवाला चित्त, मजबूत दिल। **–की लकीर**–न मिटनेवाली वस्तु, सदा बनी रहनेवाली वस्तु। **–को जोंक लगाना**–असंभव या दुःसाध्य कार्य करना। **–चटाना**–पत्थरपर रगड़कर धार तेज करना। **–तलेसे हाथ निकलना**–भारी कष्टसे छुटकारा मिलना। **–तले हाथ आना या दबना**–ऐसे संकटमें पड़ जाना जिससे शीघ्र छुटकारा न मिल सके, भारी विपत्तिमें पड़ जाना। **–निचोड़ना**–किसी ऐसे व्यक्तिसे कुछ प्राप्त करना या वसूल करना जिससे उसका मिलना असंभव हो; किसीसे ऐसा कोई काम निकालना जो उसके स्वभावके विरुद्ध हो; असंभव कार्य करना। **–पड़े**–मिट जाय, जाता रहे (गाली)। **–पर दूब जमना**–अनहोनी बात होना। **–पसीजना या पिघलना**–निष्ठुर हृदयमें दयाका संचार होना। **–मारे भी न मरना**–मृत्युका कारण रहते हुए भी न मरना; जल्दी न मरना। **–सा खींच मारना या फेंक मारना**–बहुत कड़ी बात कहना, दो-टूक जवाब देना।

पत्थल†–पु० दे० 'पत्थर'।

पत्नी–स्त्री० (सं०) किसी पुरुषसे संवद्ध वह स्त्री जिसके साथ उसका व्याह हुआ हो, परिणीता स्त्री, भार्या, जोरू। **–व्रत**–पु० विवाहिता स्त्रीके अलावा और किसी स्त्रीसे संबंध न रखनेका व्रत। **–शाला**–स्त्री० पत्नीके रहनेका घर या कमरा। **–संयाज, –संयाजन**–पु० एक वैदिक कृत्य।

पत्न्याट–पु० (सं०) पत्नीगृह, अंतःपुर।

पत्याना*–स० क्रि० दे० 'पतियाना'।

पत्यानि*–स्त्री० विश्वास–'झूठी वतियानिकी पत्यानिते उदास ह्वै कै'–घन०।

पत्यारा*–पु० दे० 'पतियारा'।

पत्यारी*–स्त्री० पाँत. कतार।

पत्योरा†–पु० कच्चूके पत्तोंकी रिकवँछ।

पत्र–पु० (सं०) पत्ता; चिट्ठी; कागज; वह कागज जिसपर कोई वात लिखी या छपी हो; वह कागज या धातुकी पट्टी जिसपर किसी व्यवहारके विषयमें कोई प्रामाणिक लेख लिखा या खुदवाया गया हो (दानपत्र, ताम्रपत्र); किसी व्यवहार या घटनाके विपयका प्रमाणरूप लेख (पट्टा, दस्तावेज); समाचारपत्र, अखवार; पुस्तक, कापी आदिका कोई पन्ना, वर्क; किसी धातुकी पट्टी या पत्तर; पंख; तेजपत्ता; वाणका परकी तरह निकला हुआ हिस्सा; यान, वाहन, सवारी; चंदन, कस्तूरी आदि गंधद्रव्योंसे कपोल, कुच आदिपर वनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न या बूटे आदि (दे० 'पत्रभंग'); कटार, तलवार आदिका फल; छुरा, कटार। **–कार**–पु० समाचारपत्रका संपादक या लेखक। **–कारी**–स्त्री० (हिं०) पत्रकारका पेशा। **–काहला**–स्त्री० पंख फड़फड़ाने या पत्ता खड़कनेसे होनेवाला शब्द। **–कृच्छ**–पु० पत्तोंके रसपर रहनेका एक व्रत। **–गुप्त**–पु० त्रिकंट, थूहर। **–घना**–स्त्री० सातला नामक पौधा। **–चलार्थ**–पु० (पेपर-करेंसी) छपे हुए कागज या नोटके रूपमें चलनेवाली मुद्रा, कागजी मुद्रा। **–चाप**–दे० क्रममें। **–ज**–पु० तेजपात। **–झंकार**–पु० नदीका प्रवाह। **–तंडुली**–स्त्री० यवतिक्ता। **–तरु**–पु० दुष्खदिर। **–दारक**–पु० आरा। **–नाडिका**–स्त्री० पत्तेकी नस, पत्तेका रेशा। **–परशु**–पु० सोनारकी छेनी। **–पाल**–पु० बड़ी छुरी। **–पाली**–स्त्री० वाणका पंख; कैंची। **–पाश्या**–स्त्री० ललाटका एक (सोनेका) आभूषण। **– पिशाचिका**–स्त्री० पत्तियोंकी वनी छतरी। **–पुट**–पु० पत्तोंका पात्र, दोना। **–पुरा**–स्त्री० एक प्रकारकी नाव जिसकी लंवाई ९६ हाथ और चौड़ाई और ऊँचाई दोनों ४८ हाथ होती है। **–पुष्प**–पु० रक्त तुलसी; फूल-पत्ता, मामूली भेंट, सत्कारकी मामूली चीजें। **–पुष्पक**–पु० भोजपत्र। **–पुष्पा**–स्त्री० लाल तुलसी; तुलसी। **–पेटिका**–स्त्री० (लेटर-वाक्स) भेजी जानेवाली चिट्ठी या पैकेट छोड़नेका डब्बा, मकानके द्वारादिपर लगाया हुआ संदूक जिसमें वाहरसे आयी हुई चिट्ठियाँ आदि पत्र-वितरक (डाकिया) द्वारा डाल दी जाती हैं। **–बंध**–पु० फूलोंसे किया जानेवाला विशेष प्रकारका श्रृंगार। **–बाल**–पु० डाँड़ा। **–भंग**–पु० चंदन, कस्तूरी, केसर आदिसे कपोल, स्तन आदिपर वनाये जानेवाले विशेष प्रकारके चिह्न, बूटे आदि। **–भंगि,–भंगी**–स्त्री० दे० 'पत्रभंग'। **–माल**–पु० वेत। **–यौवन**–पु० नया पत्ता, किशलय। **–रचना,–रेखा,–लेखा**–स्त्री० पत्रभंग। **–रथ**–पु० पक्षी। **–लता**–स्त्री० वह लता जिसमें पत्ते ही पत्ते हों; लंबी छुरी। **–वल्लरी,–वल्लि,–वल्ली**–स्त्री० पत्रभंग। **–वाज**–पु० चिड़िया; पंखवाला वाण। **–वाल**–पु० दे० 'पत्रबाल'। **–वाह,–वाहक**–पु० पक्षी; चिट्ठी ले जानेवाला; वाण। **–वाह-पंजिका**–स्त्री० (प्यूनबुक) वह छोटी पंजी या वही जिसपर पत्रादिका ब्यौरा चढ़ा दिया जाता है और जिसे पत्र-वाहक पानेवालेसे हस्ताक्षर करानेके लिए अपने साथ ले जाता है। **–वितरक**–पु० (पोस्टमैन) वाहरसे आये हुए पत्रों आदिको पानेवालोंमें वाँट आने,उनके पासतक पहुँचा देनेवाला डाकखानेका आदमी, डाकिया। **–वियोजक**–पु० (सॉर्टर) भेजे जानेवाले स्थानोंके अनुसार पत्रों आदिको पृथक् पृथक् करनेवाला पत्रालयका कर्मचारी। **–विशेषक**–पु० पत्रभंग। **–विष**–पु० पत्तोंसे प्राप्त विष। **–वेष्ट**–पु० कानका एक गहना, ताटंक। **–व्यवहार**–पु० खत-कितावत, लिखा-पढ़ी। **–शवर**–पु० एक प्राचीन अनार्य जाति जो पत्तोंसे अपनी देह सजाती थी। **–शाक**–पु० पत्रबहुल शाक, ऐसी तरकारी जिसमें पत्तोंका वाहुल्य हो। **–शिरा**–स्त्री० पत्तेकी नस; पत्रभंग। **—श्रृंगी**–स्त्री० एक लता, मूसाकानी। **–श्रेणी**–स्त्री० मूसाकानी; पत्तोंकी पंक्ति। **–श्रेष्ठ**–पु० वेलका पेड़। **–सूचना-विभाग**–पु० (प्रेस इनफरमेशन व्यूरो) समाचार-पत्रोंके लिए सूचनाएँ और समाचार देनेवाला सरकारका, सेना, पुलिस या किसी संस्थाका कार्यालय अथवा विभाग। **–सूचि**–स्त्री० काँटा। **–हिम**–पु० ऐसा मौसम जिसमें पाला पड़े या अधिक ठंढक रहे, हिमदुर्दिन।

पत्रक–पु० (सं०) पत्ता; तेजपत्ता; पत्रभंग; पत्तोंकी श्रेणी।

पत्रकारिता–स्त्री० पत्रकारका काम या पेशा; समाचार-पत्रोंके संपादन, समाचार इकट्ठे करने आदिका विवेचन करनेवाली विद्या ('जर्नलिज्म')।

पत्रचाप–पु० (पेपरवेट) लकड़ी, शीशे, पत्थर आदिका वह छोटा टुकड़ा जिसका प्रयोग कागजपत्रोंको दवाये रखने, हवामें उड़ जानेसे रोकनेके लिए किया जाता है, पत्रभारक।

पत्रणा–स्त्री० (सं०) पत्ररचना; वाणमें पंख लगाना।

पत्रभारक–पु० (पेपरवेट) दे० 'पत्रचाप'।

पत्रांग–पु० (सं०) वक्कम; पतंग; भोजपत्र नामका वृक्ष; कमलगट्टा।

पत्रांगुलि–स्त्री० (सं०) पत्रभंग।

पत्रांजन–पु० (सं०) स्याही।

पत्रा–पु० पंचांग; पन्ना।

पत्राख्य–पु० (सं०) तालीसपत्र; तेजपात।

पत्राचार–पु० लिखा-पढ़ी, (कारेस्पांडेंस) पत्रव्यवहार, खत-कितावत।

पत्राढ्य–पु० (सं०) पिपरामूल; पर्वततृण; तालीसपत्र।

पत्रान्य–पु० (सं०) पतंग, वक्कम।

पत्रालय–पु० (पोस्ट आफिस) वह स्थान या कार्यालय जहाँसे चिट्ठी, पारसल, मनीआर्डर आदि वाहर भेजने तथा वाहरसे आनेवाले पत्रों, पारसलों आदिको उपयुक्त व्यक्तियोंतक पहुँचानेका प्रवंध हो, डाकखाना, डाकघर।

पत्रालयिक आदेश–पु० (पोस्टल आर्डर) दे० 'डाकीय आदेश'।

पत्रालयित–वि० (पोस्टेड) अन्यत्र भेजे जानेके लिए पत्रालय या पत्रपेटिका (डाकघर या लेटर वाक्स)में छोड़ा हुआ।

पत्रालयीय प्रमाणपत्र–पु० (पोस्टल सर्टीफिकेट) दे० 'डाकीय प्रमाणपत्र'।

पत्रालाप–पु० (नेगोशियेशन) चिट्ठी-पत्री आदिकी सहायतासे समझौतेका रूप निश्चित करने या कोई वात तय करनेका कार्य।

पत्रालु–पु० (सं०) इक्षुदर्भा; कासालु।

पत्रावलि–स्त्री० (सं०) गेरू; पत्तोंकी पंक्ति या श्रेणी; पत्रभंग।

पत्रावली–स्त्री० (सं०) दे० 'पत्रावलि'; पीपलकी कोंपलोंके साथ जौ और मधुका मिश्रण।

पत्राहार–पु० (सं०) सिर्फ पत्तियाँ खाकर रहना।

पत्रिका–स्त्री० (सं०) चिट्ठी; कागजका कोई टुकड़ा या पन्ना; एक तरहका कपूर; पत्ती; जन्मपत्रिका; पाक्षिक, मासिक आदि पत्र (आ०)।

पत्रिकाख्य–पु० (सं०) एक तरहका कपूर।

पत्रिणी–स्त्री० (सं०) अँखुवा, कोंपल।

पत्री–स्त्री० (सं०) चिट्ठी; अँखुवा।

पत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) पंखदार; पत्तियों या पत्रोंवाला; रथवाला। पु० वाण; पक्षी; वाज; वृक्ष; पर्वत; रथ; ताड़।

पत्रोपस्कर–पु० (सं०) कासमर्द, कसौंदी।

पत्रोर्ण–पु० (सं०) रेशमी वस्त्र; सोनापाठा।

पत्रोल्लास–पु० (सं०) अँखुवा।

पत्सल–पु० (सं०) मार्ग, सड़क।

पथ–पु० (सं०) मार्ग, रास्ता; कार्य या व्यवहारकी पद्धति; † दे० 'पथ्य'। **–कर**–पु० (टॉल) किसी सड़क या पुलपरसे जाने, माल

ले जाने आदिके लिए लगनेवाला कर । **–कल्पना**–स्त्री० बाजीगरी । **–गामी(मिन्),–चारी(रिन्)**–पु० पथिक, राही । **–दर्शक,–प्रदर्शक**–पु० राह दिखानेवाला, रहनुमा । **–सुंदर**–पु० एक पौधा । **–स्थ**–वि० जो मार्गमें हो, मार्गस्थ ।

पथक–पु० (सं०) रास्तेका जानकार; मार्गदर्शक, 'गाइड' ।

पथनार–स्त्री० उपले पाथना; मारने-पीटनेकी क्रिया ।

पथन्(त्)–पु० (सं०) सड़क; मार्ग; गमन-कर्ता ।

पथर–'पत्थर'का समासगत विकृत रूप । **–कला**–स्त्री० दे० 'पत्थरकला' । **–चटा**–पु० दे० 'पत्थरचटा' ।

पथरना†–स० क्रि० (औजार आदि) पत्थरपर रगड़कर तेज करना; ठगना ।

पथराना–अ० क्रि० सूखकर पत्थर जैसा कड़ा हो जाना; रसहीन और कठोर हो जाना; शुष्क हो जाना; पत्थरकी तरह स्थिर हो जाना (आँखें –); चेतना-शून्य हो जाना, जड़ हो जाना, निर्जीव हो जाना ।

पथराव–पु० पत्थरों, ढेलों आदिकी वर्षा (लगातार फेंका जाना); पत्थरकी तरह कठोर या स्थिर हो जानेकी क्रिया ।

पथरी–स्त्री० पत्थरकी वनी कुंडी, पत्थरकी मलिया; उस्तरे आदिकी धार तेज करनेका पत्थरका टुकड़ा, सिल्ली; चकमक पत्थर; पक्षियोंके पेटका वह भाग जहाँ पहुँचकर उनकी खायी हुई कड़ी चीजें पचती हैं; एक तरहकी मछली; जायफलकी जातिका एक पेड़ जिसके फलोंसे तेल निकाला जाता है; एक रोग जिसमें वृक्कों आदिमें पत्थरके छोटे टुकड़े जैसे पिंड वन जाते हैं, अश्मरी ।

पथरीला–वि० जिसमें पत्थरके टुकड़े मिले हों, पत्थरके टुकड़ोंसे युक्त ।

पथरौटा–पु० पत्थरका कटोरा जैसा पात्र ।

पथरौटी–स्त्री० पत्थरकी कूड़ी, पथरी ।

पथरौड़ा†–पु० गोवर पाथनेकी जगह ।

पथिक–पु० (सं०) रास्ता चलनेवाला, राही, बटोही, यात्री । **–संतति,–संहति**–स्त्री० सार्थ, पथिक समूह ।

पथिका–स्त्री० (सं०) मुनक्का; एक तरहकी अंगूरी शराव ।

पथिकाश्रय–पु० (सं०) पथिकोंके ठहरनेकी जगह, धर्मशाला, सराय ।

पथिन्–पु० (सं०) मार्ग, रास्ता; कार्य या व्यवहारकी पद्धति; यात्रा; संप्रदाय, मत; एक नरक (समासमें 'न्'का लोप हो जाता है । इसका प्रथमांत रूप 'पंथा' होता है । समासमें उत्तरपदके रूपमें प्रयुक्त होनेपर इसका रूप 'पथ' हो जाता है, जैसे–दृष्टिपथ, सत्पथ; हिंदीमें यही रूप प्रयुक्त होता है) । **–(थि)कार**–पु० रास्ता बनानेवाला । **–कृत**–पु० मार्गदर्शक (वै०); अग्नि । **–देय**–पु० सार्वजनिक मार्गपर लगनेवाला कर, 'रोडसेस' । **–द्रुम**–पु० खदिर वृक्ष । **–प्रज्ञ**–वि० मार्गसे परिचित । **–प्रिय**–पु० मिलनसार हमराही । **–वाहक**–वि० निष्ठुर, निर्दय । पु० शिकारी, बहेलिया; बोझ ढोनेवाला, मोटिया । **–स्थ**–वि० जाता हुआ, चलनेमें प्रवृत्त ।

पथिल–पु० (सं०) पथिक, यात्री ।

पथी(थिन्)–पु० (सं०) पथिक ।

पथीय–वि० (सं०) पथ-संबंधी; पथका ।

पथेय*–पु० दे० 'पाथेय' ।

पथेरा–पु० ईंट, खपड़ा पाथनेवाला, कुम्हार ।

पथौनी†–स्त्री० गोवर पाथनेकी क्रिया; गोवर पाथनेकी जगह 'गोवर उठाकर पथौनीके पास डाल दो'–टूटे काँटे ।

पथौरा–पु० गोवर पाथनेकी जगह ।

पथ्यार*–पु० प्रस्तार, विस्तार (रासो) ।

पथ्य–वि० (सं०) लाभकर, हितकर (आहार, औषध आदि); उचित; अनुकूल । पु० रोगीको दिया जानेवाला, रोगकी स्थितिके अनुकूल और हितकर आहार; रोगीके लिए हितकर वस्तु; कल्याण; हड़का पेड़; सेंधा नमक । **–शाक**–पु० चौलाईका शाक । **मु० –से रहना**–कुपथ्य न करना, वर्जित वस्तुओंसे परहेज करना, परहेजसे रहना ।

पथ्या–स्त्री० (सं०) हड़; एक मात्रिक छंद; चिर्भिटा; वनककोड़ा; सड़क, रास्ता ।

पथ्यापथ्य–वि० (सं०) रोगकी अवस्थामें हितकर और अहितकर ।

पथ्याशन, पथ्योदन–पु० (सं०) पाथेय, संवल ।

पथ्याशी(शिन्)–वि० (सं०) पथ्य खानेवाला ।

पद–पु० (सं०) पैर; डग, कदम; पैरका निशान, चरण-चिह्न; चिह्न, निशान; स्थान; आधार; योग्यता या कार्यके अनुसार नियत स्थान, ओहदा, दर्जा; विषय; पात्र; किसी छंद या पद्यका चरण या चौथा भाग; विभक्ति, प्रत्यय युक्त शब्द; मंत्रमें प्रयुक्त शब्दोंको अलग-अलग करना, मंत्रगत शब्दोंका पृथक्करण (वै०); वाक्य आदिका कोई अंश; विसातका कोष्ठ या खाना; किरण; प्रदेश; दानकी ये वस्तुएँ–जूता, छाता, कपड़ा, अँगूठी, कमंडलु, आसन, वरतन और भोज्य वस्तु(पु०); वस्तु; व्यवसाय; त्राण, रक्षा; वहाना; वर्गमूल (ग०); (हि०) ईश प्रार्थना-संबंधी गीत; भक्तिपरक गीत, भजन । **–कंज,–कमल**–पु० कमलवत् चरण । **–कंदुक**–पु० (फुटवाल) दे० 'फुटवाल' । **–कार,–कृत**–पु० पद-पाठका रचयिता (वै०) । **–कारणात्**–अ० (एक्स ऑफिशियो) (व्यक्तिगत रूपसे नहीं, वरन्) किसी पदपर आरूढ़ रहने या काम करते रहनेके कारण, पदेन । **–क्रम**–पु० चलना, डग भरना; वेदमंत्रोंके पदोंको एक-दूसरेसे अलग करनेका क्रम । **–ग**–पु० पैदल सिपाही । **–गति**–स्त्री० चलनेकी धज । **–चर**–पु० प्यादा । **–चारण**–पु० पैदल चलना । **–चारी(रिन्)**–वि० पैदल चलनेवाला । **–चिह्न**–पु० पैरका निशान । **–च्छेद**–पु० किसी वाक्य या वाक्यांशके पदोंको एक-दूसरेसे अलग करना; किसी वाक्यके संहित और समासगत पदोंको विभक्त करना । **–च्युत**–वि० जो अपने पद या दर्जेसे हटा दिया गया हो, जिसका पद छीन लिया गया हो । **–च्युति**–स्त्री० पदच्युत होनेकी क्रिया या दशा । **–ज**–वि० पैरसे उत्पन्न । पु० पैरकी उँगलियाँ; शूद्र । **–जात**–पु० परस्पर संबद्ध पदों और वाक्योंका समूह । **–तल**–पु० तलवा । **–त्याग**–पु० अपना पद या ओहदा छोड़ देना, अपने पद, ओहदेसे अलग हो जाना । **–त्राण**–पु० जूता, खड़ाऊँ आदि । **–त्रान***–पु० दे० 'पदत्राण' । **–त्वरा**–स्त्री० जूता । **–दलित**–वि० पैरों तले कुचला हुआ । **–दारिका**–स्त्री० बिवाई । **–धारण-सुरक्षा**–स्त्री० (सीक्यूरिटी ऑफ टेन्यूर) किसी पदपर, नौकरी आदिपर काम करते रहने या सुरक्षित रूपसे बने रहनेकी पक्की आशा । **–नाम**–पु० किसी अधिकारीके पदका सूचक नाम, जैसे शिक्षा निदेशक, जिला मजिस्ट्रेट । **–न्यास**–पु० पैर रखना, डग भरना; पैरकी एक मुद्रा; पदचिह्न; गोखरू; किसी रचनामें पदों या शब्दोंको चुन-चुनकर रखना, किसी रचनाके अंतर्गत पदों या शब्दोंका निवेश । **–पंकज,–पद्म**–पु० दे० 'पदकमल' । **–पद्धति**–स्त्री० पदचिह्नोंकी कतार । **–पलटी**–स्त्री० (हिं०) एक तरहका नाच । **–पाठ**–पु० वेदमंत्रोंका वह क्रम जिसमें उनमें प्रयुक्त सभी पद विभक्त करके अपने मूल रूपमें अलग-अलग रखे गये हों; वह ग्रंथ जिसमें वेदमंत्रोंका ऐसा संपादन किया गया हो (संहिता-पाठका उलटा) । **–पात**–पु० पैर रखना, डग भरना । **–पूरण**–पु० किसी छंदकी पूर्ति करना । **–बंध**–पु० पग, डग । **–बाधा**–पु० (लेग विफोर विकेट) (किसी बल्लेबाज द्वारा) टाँग अड़ाकर अर्थात् अनियमित रूपसे गेंदको यष्टियोंकी ओर बढ़नेसे रोक देना । **–भंजन**–पु० शब्दोंका विश्लेषण, शब्दोंकी निरुक्ति । **–भंजिका**–स्त्री० टिप्पणी । **–भ्रंश**–पु० पदच्युति । **–माला**–स्त्री० मोहन-विद्या । **–मुक्त**–वि० (आउट गोइंग) अपना पद या स्थान छोड़कर अन्यत्र जानेवाला, निवर्तमान । **–मूल**–पु० तलवा; शरण, आश्रय (ला०) । **–मैत्री**–स्त्री० किसी छंद या पद्यमें एक ही शब्द या वर्णकी चमत्कारपूर्ण आवृत्ति; दोसे अधिक पदोंकी एक-दूसरेके अनुरूप स्थिति, अनुप्रास । **–मोचन**–पु० (रिलीफ) किसी पद या कर्तव्यसे मुक्त हो जाना, छुट्टी पा जाना, पृथक् हो जाना या कर दिया जाना । **–योजना**–स्त्री० पदों या शब्दोंको जोड़ना, पदों या शब्दोंको चुन-चुनकर रखना । **–रिपु**–पु० काँटा । **–रोध(रोक)**–पु० दे० 'पदबाधा' । **–वाद्य**–पु० एक तरहका ढोल । **–विक्षेप**–पु० दे० 'पदपात' । **–विग्रह,–विच्छेद**–पु० दे० 'पदच्छेद' । **–विराम**–पु० पद्यमें चरण-

के वादका विराम । **–विष्टंभ–**पु० डग, कदम रखना; चरणचिह्न डालना । **–वृद्धि–**दे० 'पदोन्नति' । **–वेदी(दिन्)–**वि०, पु० शब्दशास्त्र या भाषा-विज्ञानका ज्ञाता । **–व्याख्या–**स्त्री० (पार्सिग) वाक्यमें आये हुए पदका शब्दभेद, लिंग, वचन आदि वतलाना । **–शब्द–**पु० आहट, पैरकी धमक । **–शिक्षार्थी–** (ऐप्रेंटिस) नौकरी पानेकी आशासे विना वेतन लिये काम सीखनेवाला, उम्मेदवार; किसी अनुभवप्राप्त व्यवसायी, कलाकार आदिकी देखरेखमें व्यवसाय, कला आदिकी शिक्षा प्राप्त करनेवाला, शिक्ष्यमाण । **–संघात–**पु० संहितामें विभक्त पदोंको एकमें मिलाना; संकलनकर्ता । **–समय–**पु० दे० 'पदपाठ' । **–सूचक चिह्न–**पु० (इनसिग्निया) राजा या किसी बड़े अधिकारी आदिके पदकी पहिचान करानेवाला विशेष चिह्न (मुकुट, दंड, पट्टा इ०) । **–स्थ–**वि० पैदल चलनेवाला; जो किसी बड़े दर्जे या ओहदेपर हो । **–स्थान–**पु० पैरका चिह्न ।

पदक–पु० पूजनके लिए वनायी हुई किसी देवताके चरणकी प्रतिमूर्ति; वालकोंको पहनाया जानेवाला एक प्रकारका गहना जिसपर किसी देवताका चरण वना रहता है; कोई वहुत अच्छा या कमालका काम करनेपर किसीको उपहाररूपमें दिया जानेवाला सोने-चाँदी आदिका सिक्के जैसा गोल या अन्य आकारका टुकड़ा जिसपर प्रायः देनेवालेका नाम अंकित रहता है, तमगा; (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; पग; स्थान; ओहदा; गलेका एक गहना; पदपाठका ज्ञाता ।

पदम–पु० वादामकी जातिका एक पेड़ जिसका फल खाने और माला वनानेके काम आता है; * दे० 'पद्म' । **–काठ–**पु० पद्मकाष्ठ ।

पदमाकर*–पु० दे० 'पद्माकर' ।

पदवाना–स० क्रि० पदानेमें प्रवृत्त करना ।

पदवि, पदवी–स्त्री० (सं०) मार्ग, रास्ता; चलन, प्रणाली, पद्धति; स्थान; राज, संस्था आदिकी ओरसे किसीको दी जानेवाली आदर या योग्यतासूचक उपाधि, खिताव; दरजा, ओहदा ।

पदवीदान-समारोह–पु० (सं०) दे० 'समावर्तन-संस्कार' ।

पदांक–पु० (सं०) पैरका निशान, पदचिह्न ।

पदांगी–स्त्री० (सं०) हंसपदी नामकी लता ।

पदांत–पु० (सं०) पदका अंतिम भाग; किसी श्लोक या पद्यके चरणका अंतिम भाग ।

पदांतर–पु० (सं०) दूसरा डग या कदम; एक डगकी दूरी; दूसरा पद; दूसरा स्थान ।

पदांत्य–वि० (सं०) पदके अंतमें स्थित, अंतिम ।

पदाभोज–पु० (सं०) दे० 'पदकंज' ।

पदाक्रांत–वि० (सं०) पाँवोंसे कुचला हुआ, पामाल ।

पदाघात–पु० (सं०) पैरका प्रहार ।

पदाजि–पु० (सं०) पैदल सिपाही ।

पदात–पु० (सं०) दे० 'पदाति' ।

पदाति–पु० (सं०) पैदल चलनेवाला; प्यादा, पैदल सिपाही; पैदल यात्री ।

पदातिक, पदातीय–पु० (सं०) दे० 'पदाति' ।

पदातिका*–स्त्री० पैदल सेना ।

पदाती(तिन्)–पु० (सं०) पैदल सिपाही । वि० (वह सेना) जिसमें पैदल सिपाही हों; पैदल चलनेवाला ।

पदादि–पु० (सं०) छंदके चरणका आरंभ; शब्दका पहला वर्ण ।

पदाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) वह जो किसी पदपर नियुक्त हो, ओहदेदार ।

पदाध्ययन–पु० (सं०) पदपाठके अनुसार वेद पढ़ना या उसका पाठ करना ।

पदाना–स० क्रि० पादनेमें प्रवृत्त करना; (गुल्ली-डंडे आदिके खेलमें) वार-वार हराना और दौड़ाना; हैरान करना, परेशान करना ।

पदानुग–वि० (सं०) जो पीछे-पीछे चले; अनुकूल । पु० पीछे चलनेवाला, अनुयायी; साथी ।

पदानुराग–पु० (सं०) नौकर; सेना ।

पदानुशासन–पु० (सं०) व्याकरण ।

पदानुस्वार–पु० (सं०) एक प्रकारका साम ।

पदाब्ज–पु० (सं०) दे० 'पदकंज' ।

पदायता–स्त्री० (सं०) जूता ।

पदार–पु० (सं०) पैरकी धूल, चरणरज; पैरका ऊपरी भाग ।

पदारथ*–पु० दे० 'पदार्थ' ।

पदारविंद–पु० (सं०) दे० 'पदकंज' ।

पदार्घ्य–पु० (सं०) अतिथिको पैर धोनेके लिए दिया जानेवाला जल ।

पदार्थ–पु० (सं०) पद या शब्दका अर्थ; वह वस्तु जिसका किसी शब्दसे बोध हो; उन विषयोंमेंसे कोई एक जिनके नाम, रूप आदिका कथन न्याय, वैशेषिक आदि दर्शनोंमें किया गया है; कोई अभिधेय वस्तु । (न्यायमें १६, वैशेषिकमें ६ या ७, सांख्यमें २५, योगमें २६ और वेदांतमें २ पदार्थ माने गये हैं) । (मैटर) ऐसी वस्तु जिसका ज्ञान हम अपनी ज्ञानेंद्रियोंसे प्राप्त कर सकते हैं तथा जो स्थान घेरती, भार रखती और रुकावट पैदा करती है । **–विज्ञान–**पु० (फिजिक्स) दे० 'भौतिक शास्त्र' । **–विद्या–**स्त्री० वह विद्या जिसमें पदार्थोंका निरूपण किया गया हो ।

पदार्थीकरण–सूक्ष्म भावोंको अपनेसे अलग पदार्थोंके रूपमें सोचना । (आब्जेक्टिफिकेशन) ।

पदार्पण–पु० (सं०) पैर रखना; आगमन (आदरसूचक) ।

पदालिक–पु० (सं०) पैरका ऊपरी भाग ।

पदावधि–स्त्री० (टेन्यूर) किसी पदपर काम करते रहनेकी अवधि ।

पदावनत–वि० (सं०) पैरोंपर झुका हुआ, विनीत ।

पदावनति–स्त्री० (सं०) (डीग्रेडेशन) ऊँचे पदसे हटाकर नीचे पदपर कर दिया जाना, तनज्जुली ('पदोन्नति'का उलटा) ।

पदावली–स्त्री० (सं०) पदों या शब्दोंकी परंपरा; किसी रचनामें निवद्ध अनेक पद या शब्द; शब्दोंकी लड़ी; किसी कवि या लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्द-समूह; (हिं०) भजनों आदिका संग्रह ।

पदावास–पु० (आफिशल रेज़ीडेंस) किसी पदाधिकारीका सरकारी निवास-स्थान ।

पदाश्रित–वि० (सं०) आश्रयमें रहनेवाला, शरणमें आया हुआ ।

पदास–स्त्री० पादनेका भाव; पादनेका शारीरिक वेग या प्रेरणा ।

पदासन–पु० (सं०) पादपीठ, पैर रखनेकी छोटी चौकी ।

पदासा–वि० जिसे पदास लगी हो ।

पदासीन–वि० (सं०) (किसी विशेष) पदपर आरूढ़ ।

पदाहत–वि० (सं०) पैरसे ठुकराया हुआ ।

पदिक–वि० (सं०) पैदल; एक डग जितना लंवा; जिसमें एक ही विभाग हो । पु० प्यादा; पैरका अग्रभाग; * गलेका एक आभूषण जिसपर किसी देवताका चरण वना रहता है; गलेका एक गहना, जुगनू; रत्न; तमगा । **–हार–**पु० रत्नोंकी माला ।

पदी–स्त्री० (सं०) पदोंका समूह (समासांतमें) । * पु० प्यादा, पदाति ।

पदु–पु० दे० 'पद'; वदला ।

पदुम–पु० घोड़ेके शरीरपर होनेवाला एक प्रकारका चिह्न; * दे० 'पद्म' । वि० दे० 'पद्म' ।

पदुमिनी*–स्त्री० दे० 'पद्मिनी' ।

पदेक–पु० (सं०) वाज ।

पदेन–अ० (सं०) पदकी हैसियतसे ('पद'का करण कारकका रूप); दे० 'पदकारणात्' ।

पदोड़ा–वि० जो वहुत पादे; कायर ।

पदोदक–पु० (सं०) वह जल जिससे पैर धोया गया हो, चरणामृत ।

पदोन्नति–स्त्री० (प्रमोशन) किसी कर्मचारीके पदमें होनेवाली वृद्धि या उन्नति, पहलेसे अधिक ऊँचे पदपर नियुक्त होना या भेजा जाना, पदवृद्धि, तरक्की ।

पद्–पु० (सं०) पैर; चतुर्थ भाग । **–ग–**पु० पैदल सिपाही । **–रथ–**पु० प्यादा, पैदल सिपाही ।

पद्दूं–वि० पदोड़ा ।

पद्धटिका–स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें १६ मात्राएँ होती हैं तथा अंत 'जगण'से होता है ।

पद्धड़ी–स्त्री० दे० 'पद्धटिका' ।

पद्धति, पद्धती–स्त्री० (सं०) पथ, मार्ग, रास्ता; प्रथा, रीति, परिपाटी, प्रणाली; पंक्ति, पाँत; वह ग्रंथ जिसमें किसी ग्रंथका सारांश समझाया गया हो; जाति आदि सूचित करनेके लिए जोड़ा गया उपनाम जिसे नामके आगे या पीछे लगाते हैं (जैसे–सिंह, लाल, वसु, घोष आदि); वह पुस्तक जिसमें कर्मकांडकी कोई विधि लिखी गयी हो।

पद्धरि, पद्धरी–स्त्री० दे० 'पद्धटिका'।

पद्धिम–पु० (सं०) पैरका ठंढापन, पदशैत्य।

पद्म–पु० (सं०) कमल; वे विंदियाँ जो हाथीकी सूँड़ आदिपर होती हैं; एक प्रकारकी मोर्चाबंदी, पद्मव्यूह; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; १०० नीलकी संख्या (संस्कृत गणनपद्धतिमें एक नील या सौ खरब); ६ चक्रोंमेंसे कोई एक (तं०); पदमकाठ; सीसा; एक रतिबंध; पुष्करमूल; एक पुराण; एक कल्प (पु०); दाग, धब्बा, चिह्न; मनुष्यके शरीरपरका कोई दाग, तिल आदि; पैरमें होनेवाला एक भाग्यसूचक चिह्न (सामुद्रिक); खंभोंका एक भाग (वास्तुविद्या); एक प्रकारका मंदिर; एक आसन; एक नक्षत्र; एक गंधद्रव्य; कमलकी जड़; एक प्रकारका साँप; एक नरक; एक वर्णवत्त; राम; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; भारतके नवें चक्रवर्ती, कश्मीरका एक प्राचीन राजा जिसने पद्मपुर वसाया था। वि० सौ नील। **–कंद**–पु० कमलकी जड़। **–कर**–पु० विष्णु; सूर्य; कमल जैसा हाथ। वि० जिसके हाथमें कमलका फूल हो। **–करा**–स्त्री० लक्ष्मी। **–कर्णिका**–स्त्री० पद्मका बीजकोश; पद्म नामक व्यूहमें व्यूढ सेनाका केंद्रभाग। **–काष्ठ**–पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी दवाके काममें आती है, पदमकाठ। **–किंजल्क**–पु० कमलका केसर। **–कीट**–पु० एक विषैला कीड़ा। **–केतन**–पु० गरुड़का एक पुत्र। **–केतु**–पु० एक प्रकारका पुच्छल तारा। **–केशर**–पु० कमल-पुष्पका सूत्र। **–कोश**–पु० कमलका संपुट; कमलके भीतरका छत्ता जिसमें उसके बीज लगते हैं; संपुटित कमलके आकारकी उँगलियोंकी एक मुद्रा। **–क्षेत्र**–पु० उड़ीसा प्रांतके अंतर्गत एक तीर्थ। **–खंड**–पु० पद्मराशि। **–गंध, –गंधि**–वि० कमलकी-सी गंधवाला। पु० पद्मकाष्ठ। **–गर्भ**–पु० पद्मकोशका भीतरी भाग; ब्रह्मा; शिव; विष्णु; सूर्य। **–गुणा, –गृहा**–स्त्री० लक्ष्मी; लवंग। **–चारिणी**–स्त्री० गेंदा; शमी; हल्दी। **–ज, –जात**–पु० ब्रह्मा। **–तंतु**–पु० कमलकी नाल, मृणाल। **–दर्शन**–पु० लोवान। **–नाभ**–पु० विष्णु; अस्त्र चलानेके समय पढ़ा जानेवाला एक मंत्र; एक नाग। **–नाभि**–पु० विष्णु। **–नाल**–स्त्री० कमलकी डंडी। **–निधि**–स्त्री० कुबेरकी एक निधि। **–निमीलन**–पु० कमलका संपुटित होना। **–नेत्र**–वि० जिसके नेत्र कमलके समान हों। पु० एक भावी बुद्ध; एक पक्षी। **–पत्र, –पर्ण**–पु० पुष्करमूल; कमलका पत्ता, पुरइन; कमलकी पँखड़ी। **–पाणि**–वि० जिसके हाथमें कमलका फूल हो। पु० ब्रह्मा; विष्णु; एक बुद्ध; सूर्य। **–पुष्प**–पु० कनेरका पेड़; एक पक्षी। **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–प्रभ**–पु० एक भावी बुद्ध (बौ०); वर्तमान अवसर्पिणीके छठे अर्हत् (जै०)। **–प्रिया**–स्त्री० जरत्कारु मुनिकी पत्नी मनसा देवी। **–बंध**–पु० एक प्रकारका चित्रकाव्य या चित्रालंकार जिसमें अक्षर इस ढंगसे लिखे जाते हैं कि उनसे कमलका फूल बन जाता है। **–बंधु**–पु० सूर्य; भ्रमर। **–बीज**–पु० कमलगट्टा। **–भव, –भू**–पु० ब्रह्मा। **–भास**–पु० विष्णु; शिव। **–भूषण**–पु० स्वतंत्र भारतमें केंद्रीय सरकार द्वारा सुयोग्य नागरिकों, विद्वानों, देशसेवकों आदिको सम्मानार्थ दिया जानेवाला तृतीय श्रेणीका एक अलंकरण। **–मालिनी**–स्त्री० लक्ष्मी। **–माली(लिन्)**–पु० एक राक्षस। **–मुखी**–स्त्री० दूब। **–मुद्रा**–स्त्री० हाथकी उँगलियोंकी एक मुद्रा (तं०)। **–योनि**–पु० ब्रह्मा। **–राग**–पु० एक प्रसिद्ध रत्न, लाल, मानिक। **–रेखा**–स्त्री० कमलके आकारकी हस्तरेखा जो अति धनवान् होनेका लक्षण मानी जाती है। **–लांछन**–पु० ब्रह्मा; सूर्य; कुबेर; राजा। वि० जिसके हाथमें पद्मरेखा हो। **–लांछना**–स्त्री० लक्ष्मी; सरस्वती; तारा देवी। **–लोचन**–वि० कमल जैसे नेत्रोंवाला। **–वर्ण, वर्णक**–पु० पुष्करमूल। **–वासा**–स्त्री० लक्ष्मी। **–विभूषण**–पु० किसी असामान्य या विशिष्ट सेवाके लिए स्वतंत्र भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला द्वितीय श्रेणीका एक अलंकरण या सम्मान। **–वीज**–पु० दे० 'पद्मबीज'। **–बीजाभ**–पु० मखाना। **–वृक्ष**–पु० पदमकाठ। **–वेश**–पु० विद्याधरोंका एक राजा। **–व्याकोश**–पु० संपुटित कमलके आकारकी सेंध। **–व्यूह**–पु० प्राचीन कालकी एक प्रकारकी मोर्चाबंदी जिसमें सैनिकोंको इस ढंगसे खड़ा करते थे कि कमलपुष्पका आकार बन जाता था। **–श्री**–पु० अवलोकितेश्वर; एक बोधिसत्व; स्वतंत्र भारतमें सरकार द्वारा सुयोग्य नागरिकोंको विशिष्ट सेवा आदिके लिए दिया जानेवाला चतुर्थ श्रेणीका अलंकरण। **–षंड**–पु० दे० 'पद्मखंड'। **–संकाश**–वि० कमल जैसा। **–संभव**–पु० ब्रह्मा। **–सद्म(द्मन्), –समासन**–पु० ब्रह्मा। **–सूत्र**–पु० कमल-पुष्पोंकी माला। **–स्नुषा**–स्त्री० गंगा; दुर्गा। **–हस्त**–वि०, पु० दे० 'पद्म-कर'। **–हस्ता**–स्त्री० लक्ष्मी। **–हास**–पु० विष्णु।

पद्मक–पु० (सं०) पद्मव्यूह; हाथीकी सूँड़परके दाग; पद्म वृक्षकी लकड़ी; कुट नामक ओषधि; पद्मासन।

पद्मकी(किन्)–पु० (सं०) हाथी; भुर्जवृक्ष।

पद्मांतर–पु० (सं०) कमल-दल।

पद्मा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; राजा बृहद्रथकी पुत्री; मनसा देवी; लवंग; कुसुमका फूल; गेंदा।

पद्माकर–पु० (सं०) जलाशय; वह बड़ा तालाब जिसमें कमल लगे हों; कमल-राशि; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि।

पद्माक्ष–पु० (सं०) कमलगट्टा; सूर्य; विष्णु। वि० जिसके नेत्र कमलके समान हों।

पद्माख–पु० दे० 'पद्मकाष्ठ'।

पद्माट–पु० (सं०) चकवँड़।

पद्माधीश–पु० (सं०) विष्णु।

पद्मालय–पु० (सं०) ब्रह्मा।

पद्मालया–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; लौंग।

पद्मावती–स्त्री० (सं०) मनसा देवी; एक प्राचीन नदी; एक सुरांगना; पटनाका एक पुराना नाम; उज्जयिनीका एक पुराना नाम; लोककथाके अनुसार सिंहलकी एक राजकुमारी जो चित्तौरके राजा रत्नसेनको ब्याही थी।

पद्मासन–पु० (सं०) एक प्रकारका रोगासन जिसमें पालथी मारकर तनकर बैठते हैं; ब्रह्मा; शिव; सूर्य।

पद्माह्वा–स्त्री० (सं०) गेंदा; लौंग।

पद्मिनी–स्त्री० (सं०) कमलका पौधा; कमलकी नाल; कमलोंका समूह; कमलसे युक्त जलाशय; हथिनी; चार प्रकारकी स्त्रियोंमेंसे प्रथम श्रेणीकी स्त्री (कोकशास्त्र); चित्तौरकी एक प्रसिद्ध रानी। **–कंटक**–पु० एक प्रकारका क्षुद्र (कुष्ठ) रोग। **–कांत**–पु० सूर्य। **–खंड**–पु० कमलोंका समूह; वह स्थान जहाँ कमलोंकी प्रचुरता हो। **–वल्लभ**–पु० सूर्य। **–षंड**–पु० दे० 'पद्मखंड'।

पद्मी(द्मिन्)–वि० (सं०) कमलसे युक्त, कमलवाला; दागदार (महाभा०)। पु० विष्णु; हाथी।

पद्मेशय–पु० (सं०) विष्णु।

पद्मोत्तम–पु० (सं०) एक समाधि; एक लोक; एक बुद्ध।

पद्मोत्तर–पु० (सं०) कुसुम या बर्रें; एक बुद्ध।

पद्मोद्भव–पु० (सं०) ब्रह्मा।

पद्मोद्भवा–स्त्री० (सं०) मनसा देवी।

पद्य–वि० (सं०) पद-संबंधी; पदोंवाला; शब्द-संबंधी; अंतिम। पु० चार चरणोंवाला छंद, छंदोबद्ध रचना, गद्यका उलटा; शब्द-खंड; शूद्र; वह कीचड़ जो पूरा-पूरा न सूखा हो; प्रशंसा, स्तुति।

पद्यमय–वि० (सं०) पद्यरूप, छंदोबद्ध।

पद्या–स्त्री० (सं०) पगडंडी; सड़कके किनारेकी पैदल चलनेकी पटरी; शर्करा।

पद्यात्मक–वि० (सं०) दे० 'पद्यमय'।

पद्र–पु० (सं०) ग्राम, गाँव।

पद्व–पु० (सं०) भूलोक; सड़क; रथ।

पद्वा(द्वन्)–पु० (सं०) मार्ग।

पधरना*–अ० क्रि० पधारना, आना।

पधराना–स० क्रि० आदरके साथ लिवा जाना; आदरपूर्वक बैठाना; स्थापित करना।

पधरावनी–स्त्री० पधारनेकी क्रिया।

पधारना–अ० क्रि० पदार्पण करना; चला जाना। स० क्रि० पधराना।

पन–प्र० एक प्रत्यय जो भाववाचक संज्ञा बनानेके लिए जातिवाचक तथा गुणवाचक संज्ञाओंसे जोड़ा जाता है (जैसे–गँवारपन आदि)। पु० पण, प्रतिज्ञा; आयुके चार भागोंमेंसे कोई एक 'चौथे पन पायेउँ सुत चारी'–रामा०; पत्ता; 'पानी', 'पान' और 'पाँच'का समासगत विकृत रूप)। **–कटा**–पु० खेतोंमें इधरसे उधर पानी ले जानेवाला आदमी। **–कपड़ा**–पु० शरीरमें कटने, छिलने आदिकी जगहपर बाँधा जानेवाला गीला कपड़ा। **–काल**–पु० अतिवृष्टि-जनित अकाल। **–कुट्टी**–स्त्री० वह छोटा खरल जिसमें बूढ़े या बिना दाँतके लोग खानेके लिए पान कूटते हैं। **–कौवा**–पु० एक जलीय पक्षी, जल-कौवा। **–गाचा**–पु० वह खेत जिसमें पानी भरा हो; सींचा हुआ खेत। **–गोटी**–स्त्री० मोतिया शीतला। **–घट**–पु० पानी भरनेका घाट। **–चक्की**–स्त्री० पानीके बहावकी शक्तिसे चलनेवाली चक्की। **–चोरा**–पु० छोटे मुँह और पेटका जलपात्र। **–डब्बा**–पु० दे० 'पानदान'। **–डुब्बा**–पु० गोताखोर; एक जलपक्षी जो पानीमें डूब-डबकर मछलियाँ पकड़ता है; एक प्रकारका पानीमें रहनेवाला भूत (जनश्रुति)। **–डुब्बी**–स्त्री० एक जलपक्षी जो पानीमें डूब-डूबकर मछलियाँ पकड़ता है; पानीके भीतर-भीतर चलनेवाला एक प्रकारका जहाज, 'सबमेरीन'। **–पथू†**–स्त्री० पानी लगाकर हाथसे फैलायी जानेवाली रोटी। **–बट्टा**–पु० पानके बीड़े रखनेका एक प्रकारका डिब्बा। **–बिछिया, –बिच्छी**–स्त्री० पानीमें रहनेवाला एक प्रकारका डंक मारनेवाला कीड़ा। **–बिजली-शक्ति**–स्त्री० (हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर) जलशक्तिके संप्रयोगसे उत्पन्न होनेवाली बिजलीकी शक्ति, जलविद्युत्-शक्ति। **–भता**–पु० केवल पानीमें पकाया हुआ भात। **–भरा**–पु० पानी भरनेवाला नौकर। (स्त्री० 'पनभरिन')। **–लगा**–पु० दे० 'पनकटा'। **–बाड़ी**–स्त्री० पानका खेत, बरेजा। पु० तमोली। **–बार***–पु० पत्तल। **–बारा**–पु० पत्तल; पत्तलभर भोजन; एक प्रकारका साँप। **–बारी**–स्त्री०, पु० दे० 'पनबाड़ी'। **–सखिया**–स्त्री० एक प्रकारका फूल; इस फूलका पौधा। **–सल्ला†**–पु० प्याऊ, पौसरा। **–साखा**–पु० पाँच बत्तियोंवाली मशाल। **–सार†**–पु० किसी स्थानको पानीसे एकदम तर कर देनेकी क्रिया; बहुत अधिक सिंचाई। **–साल,–साला**–स्त्री० पौसरा। **–सुइया**–स्त्री० छोटी डोंगी जिसमें खेनेवाला दोनों ओरके डाँड़े चला सकता है। **–सेरी**–स्त्री० दे० 'पंसेरी'। **–सोई†**–स्त्री० दे० 'पनसुइया'। **–हड़ा**–पु० पान या हाथ धोनेके लिए पानी रखनेकी तमोलियोंकी हाँड़ी। **–हरा,–हारा**–पु० पानी भरनेवाला नौकर, पनभरा। (स्त्री० 'पनहारन, पनहारिन'।)

पनग*–पु० दे० 'पन्नग'।

पनगनि*–स्त्री० पन्नगी, सर्पिणी।

पनच–स्त्री० धनुष्की डोरी; † बाँसका छिलका।

पनतुआ†–पु० रसगुल्ले जैसी एक मिठाई।

पनपना–अ० क्रि० पल्लवित होना; हराभरा होना; फूलना-फलना; फिरसे स्वस्थ होना।

पनपाना–स० क्रि० किसीके पनपनेका कारण होना।

पनव*–पु० दे० 'प्रणव'; एक बाजा।

पनवाँ†–पु० हमेल आदिमें बीचोबीच लगायी जानेवाली पानके आकारकी चौकी।

पनस–पु० (सं०) कटहल; काँटा; एक तरहका साँप; विभीषणका एक मंत्री; रामकी सेनाका एक वानर। **–तालिका,–नालिका**–स्त्री० कटहल।

पनसिका–स्त्री० (सं०) एक क्षुद्र रोग जिसमें कान और गर्दनपर नोकदार फुंसियाँ निकल आती हैं।

पनसी–स्त्री० (सं०) दे० 'पनसिका'।

पनह*–स्त्री० पनाह।

पनहा–पु० कपड़े आदिकी चौड़ाई; भेद; चोरी गये मालका पता लगानेवाला या इसके लिए दिया जानेवाला पुरस्कार।

पनहिया†–स्त्री० दे० 'पनही'।

पनही*–स्त्री० जूता।

पना–पु० अपनेसे पके या आगमें पकाये हुए आम, इमली आदिके रस या गूदेसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका पेय पदार्थ, पानक, पन्ना।

पनाती–पु० नातीका बेटा, परनाती।

पनार*–पु० दे० 'पनारा'।

पनारा, पनाला–पु० नाबदान; नाला; प्रवाह।

पनारी–स्त्री० नाली, मोरी; * धारा, बहाव; एक भोज्य वस्तु। **–दार चादर**–स्त्री० लोहेकी कलईदार चादर जिसमें नालियाँ-सी बनी होती हैं, कोरोगेटेड टिन।

पनालियापत्र–पु० अश्लील ढंगके समाचार देनेवाला तथा आक्षेपपूर्ण भद्दी आलोचना करनेवाला समाचार-पत्र (गटरप्रेस)।

पनाली–स्त्री० मोरी, नाली।

पनासना†–स० क्रि० पालना-पोसना।

पनाह–स्त्री० (फा०) शत्रु आदिसे बचाव, परित्राण; शरण; आड़; शरण लेनेकी जगह, शरण्य। मु० **(किसीसे)–माँगना**–किसी कष्टप्रद वस्तु या हानि पहुँचानेवाले व्यक्तिके संसर्गसे बचना। **–लेना**–शरणके लिए कहीं जाना।

पनि–'पानी'का समासमें प्रयुक्त विकृत रूप। **–गर**–वि० पानीदार। **–घट**–पु० दे० 'पनघट'। **–हार**–पु० दे० 'पनहरा'। **–हारी**–स्त्री० पनहारिन।

पनिच*–स्त्री० दे० 'पनच'।

पनिया†–वि० पानीका; पानीमें उत्पन्न; पानी मिला (–दूध)। पु० पानी। **–सोत**–वि० बहुत गहरा।

पनियाना†–स० क्रि० पानीसे सराबोर करना। अ० क्रि० पानीसे चपचपाना।

पनियारा†–पु० बाढ़।

पनियाला–पु० एक तरहका फल।

पनिहा–वि० जो पानीमें रहे; पानीका; जिसमें पानीका मेल हो, जलयुक्त। पु० दे० 'पनहा'।

पनी–पु० प्रण करनेवाला, कौल करनेवाला। † स्त्री० पन्नी, सुनहला-रुपहला कागज।

पनीर–पु० (फा०) फाड़े दूधका थक्का, छेना; इससे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी टिकिया जो खानेके काममें आती है; पानी निचोड़े हुए दहीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका खाद्य पदार्थ। मु० **–चटाना**–कोई काम निकालनेके लिए किसीकी चापलूसी करना। **–जमाना**–कोई ऐसा काम करना जिससे और भी कार्य सिद्ध हो सकें।

पनीरी†–स्त्री० और जगह लगानेके लिए उगाये हुए छोटे पौधे; ऐसे पौधे उगानेकी क्यारी।

पनीला–वि० जिसमें पानी मिला हो, जलसे युक्त; बेस्वाद, फीका। पु० दे० 'पनैला'।

पनुआँ–पु० गुड़के कड़ाहेका धोवन जिसे शरबतकी तरह पीते हैं। वि० जिसमें आवश्यकतासे अधिक पानी पड़ गया हो, फीका।

पनेथी†–स्त्री० वह रोटी जिसमें पलेथनकी जगह पानी लगाया गया हो।

पनेरी–स्त्री० दे० 'पनीरी'। पु० तंबोली।

पनेवा†–पु० एक पक्षी।

पनेहड़ी–स्त्री० पनहड़ा।

पनेहरा–पु० पनहरा।

पनैला–पु० एक तरहका गाढ़ा, चिकना और चमकदार कपड़ा जो अधिकतर अस्तरके काम आता है।

पनौआ†–पु० पानके पत्तेकी पकौड़ी।

पनौटी–स्त्री० पान रखनेकी पिटारी, बाँसका बना पानदान, 'मचला'।

पन्न–वि० (सं०) गिरा हुआ, नीचे खसका हुआ; गया हुआ, गत। पु० नीचेकी ओर जाना, अधोगमन; रेंगना। **–ग**–पु० दे० क्रममें।

पन्नई–वि० पन्नेके रंगका।

पन्नग–पु० (सं०) साँप (जो रेंगकर चलता है); सीसा; पदमकाठ; ✻ पन्ना । **–केसर**–पु० नागकेसर । **–नाशन**–पु० गरुड़ । **–पति**–पु० शेषनाग ।

पन्नगारि, पन्नगाशन–पु० (सं०) गरुड़ ।

पन्नगिनि✻–स्त्री० दे० 'पन्नगी' ।

पन्नगी–स्त्री० (सं०) सर्पिणी, साँपिन; सर्पिणी नामक बूटी ।

पन्नद्धा, पन्नध्री–स्त्री० (सं०) जूता ।

पन्ना–पु० हरे रंगका एक प्रसिद्ध रत्न, जमुर्रद; पुस्तक आदिके दो पृष्ठ, वर्क; जूतेका पान; भेड़ोंके कानका वह चौड़ा हिस्सा जहाँसे ऊन काटते हैं; आम आदिका पना ।

पन्नी–स्त्री० राँगे आदिका हलका पत्तर जिसके टुकड़ोंको दूसरी चीजोंपर सुंदरताके लिए चिपकाते हैं; वह कागज या चमड़ा जिसपर सोने-चाँदीका पानी चढ़ाया गया हो; एक भोज्य वस्तु; ✻ बारूदकी एक आध सेरकी तौल । **–साज**–पु० पन्नी बनानेका पेशा करनेवाला । **–साजी**–स्त्री० पन्नीसाजका काम, पन्नीसाजका पेशा ।

पन्नी–पु० (फा०) पठानोंकी एक जाति ।

पपड़ा–पु० लकड़ी आदिका सूखा छिलका; रोटीका छिलका ।

पपड़िया, पपरिया–वि० जिसमें पपड़ी हो, पपड़ीदार । **–कत्था**–पु० सफेद कत्था ।

पपड़ियाना–अ० क्रि० किसी चीजपर पपड़ी पड़ना; इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी पड़ जाय, बहुत अधिक सूख जाना ।

पपड़ी–स्त्री० छोटा पपड़ा; किसी वस्तुकी वह ऊपरी परत जो उसके बहुत अधिक सूख जानेसे चिटककर अलग-सी हो गयी हो, सूखकर ऐंठी हुई ऊपरी परत; घावका खुरंड; पत्तरके रूपमें जमायी हुई मिठाई; वृक्षकी सूखकर चिटकी हुई छाल ।

पपड़ीला–वि० पपड़ीवाला, जिसमें पपड़ी हो ।

पपनी†–स्त्री० बरौनी ।

पपरी–स्त्री० दे० 'पपड़ी'; एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है ।

पपि–पु० (सं०) चंद्रमा । वि० पीनेवाला ।

पपिहा†–पु० दे० 'पपीहा' ।

पपी–पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा ।

पपीता–पु० एक फलदार वृक्ष, या उसका फल, एरंड मेवा ।

पपीलि✻–स्त्री० दे० 'पिपीलिका' ।

पपीहरा†–पु० दे० 'पपीहा' ।

पपीहा–पु० हलके काले रंगका एक प्रसिद्ध पक्षी जो वसंत और पावसमें मीठे बोल बोला करता है, चातक (यह 'पी कहाँ'-'पी कहाँ'-की रट लगाया करता है और कहा जाता है कि केवल स्वातीकी बूंदसे प्यास बुझाता है); सितारका पक्का तार; पपैया ।

पपु–वि० (सं०) रक्षक, पालन करनेवाला । स्त्री० धाय ।

पपैया†–पु० सीटी; अमोलेकी जड़में लगी हुई गुठलीको घिसकर बनायी जानेवाली एक प्रकारकी सीटी, अमोला ।

पपोटन†–स्त्री० एक पौधा जिसके पत्ते घाव पकानेके लिए बाँधे जाते हैं ।

पपोटा–पु० पलक ।

पपोरना✻–स० क्रि० बाहोंको ऐंठकर उनकी पुष्टता देखना (बलाभिमानका सूचन)–'कंस लाज भय गर्व युत चल्यो पपोरत बाँह' –सूर ।

पपोलना–अ० क्रि० दंतहीनका मुँह चुभलाना ।

पप्पी†–स्त्री० बच्चोंका चुम्बन, चुम्मी, मिट्ठी–'मा पप्पी लेने लगीं'–नीहारिका, फर० '६४ ।

पबई–स्त्री० मैनाकी जातिकी एक चिड़िया ।

पबना✻–स० क्रि० पाना ।

पबारना✻–स० क्रि० दे० 'पँवारना' ।

पबि, पब्बि✻–पु० दे० 'पवि' ।

पब्बय✻–पु० पर्वत, पहाड़; पत्थर ।

पब्लिक–स्त्री० (अं०) जनता, जनसाधारण, सर्वसाधारण । वि० सार्वजनिक, आम । **–प्रासिक्यूटर**–पु० सरकारी वकील । **–वर्क्स**–पु० नहर, पुल आदि लोकोपयोगी चीजें बनानेका सरकारी काम, तामीरात । **–० डिपार्टमेंट**–पु० तामीरातका मुहकमा, सार्वजनिक निर्माण-विभाग ।

पभरा–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य, शल्लकी ।

पमाना✻–अ० क्रि० डींग मारना ।

पमार–पु० राजपूतोंका एक भेद; चकवँड़ ।

पम्मन–पु० एक प्रकारका बड़े दानेका और उम्दा गेहूँ ।

पयः–'पयस्'का समासगत रूप । **–कंदा**–स्त्री० क्षीर-विदारी । **––पयोष्णी**–स्त्री० एक नदी । **–पान**–पु० दूध पीना । **–पूर**–पु० जलाशय, झील । **–फेनी**–स्त्री० दुग्धफेनी नामक क्षुप ।

पय(स्)–पु० (सं०) दूध; जल; शुक्र, वीर्य; अन्न, आहार; ओज, शक्ति । **–द**✻–पु० दे० 'पयोद' । **–धि,–निधि**✻–पु० पयोधि, पयोनिधि । **–हारी**–वि० (हि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला ।

पय✻–पु० पद, चरण–'पयलग्गि प्रानपति बीनवों नाह नेह मुझ चित धरहु'–रासो ।

पयउहर✻–पु० पयोधर ।

पयना†–पु० दे० 'पैना' ।

पयश्चय–पु० (सं०) जलाशय, झील ।

पयस्य–वि० (सं०) दूधका बना हुआ; दूधका; जलका । पु० दूधका विकार–दही, मट्ठा आदि; बिडाल ।

पयस्या–स्त्री० (सं०) दही; दुधिया; क्षीरकाकोली; स्वर्णक्षीरी ।

पयस्वल–वि० (सं०) दूध या जलसे युक्त । पु० बकरा ।

पयस्वली–स्त्री० (सं०) बकरी ।

पयस्वान्(वत्)–वि० (सं०) पानीसे युक्त; पानीवाला; दूधसे युक्त ।

पयस्विनी–स्त्री० (सं०) नदी; दूध देनेवाली गाय, धेनु; रात; बकरी; दूधफेनी; दूधविदारी; जीवंती ।

पयस्वी(विन्)–वि० (सं०) दूध या जलसे युक्त ।

पया†–पु० दस सेर अनाजकी तौलवाला बरतन (अमर०) ।

पयादा–वि० पैदल । पु० दे० 'प्यादा' ।

पयान–पु० प्रस्थान, गमन, रवानगी ।

पयाम–पु० (फा०) पैगाम, संदेश ।

पयार✻–पु० दे० 'पयाल'; बँगलाका एक छन्द जो अतुकान्त होता है । मु० –गाहना–दे० 'पयाल झाड़ना' ।

पयाल–पु० पके हुए धान, कोदो आदिके वे डंठल जिनसे दाने अलग कर लिये गये हों; ✻ पाताल; मूलाधार । मु० –झाड़ना –व्यर्थ श्रम करना; ऐसे व्यक्तिकी सेवा करना जिससे कुछ प्राप्त न हो ।

पयो–'पयस्'का समासगत रूप । **–गड,–गल**–पु० ओला; द्वीप । **–ग्रह**–पु० एक यज्ञ-संबंधी पात्र । **–घन**–पु० ओला । **–जन्मा-(न्मन्)**–पु० बादल । **–द**–पु० बादल । **–०सुहृद्**–पु० मोर । **–धर**–पु० बादल; स्तन; मोथा; नारियल; रीढ़ । **–धा(धस्)**–पु० समुद्र; बादल; जलाशय । **–धारागृह**–पु० वह स्नानागार जिसमें जल धाराके रूपमें गिरता हो । **–धि**–पु० समुद्र । **–०क**–पु० समुद्रफेन । **–निधि**–पु० समुद्र । **–मुक्(च्)**–पु० बादल; मोथा । **–राशि**–पु० समुद्र । **–वाह**–पु० बादल; मोथा । **–व्रत**–पु० केवल दूध पीकर रहनेका व्रत ।

पयोष्णिजाता–स्त्री० (सं०) सरस्वती नदी ।

पयोष्णी–स्त्री० (सं०) विंध्याचलसे निकलनेवाली एक पुरानी नदी ।

परंच–अ० (सं०) और भी; पर, लेकिन, तो भी ।

परंज–पु० (सं०) तेल पेरनेका कोल्हू; छुरीका फल; फेन; इंद्रका खड्ग ।

परंजन–पु० (सं०) वरुण ।

परंजय–वि० (सं०) शत्रुको जीतनेवाला । पु० वरुण ।

परंजा–स्त्री० (सं०) उत्सव आदिमें होनेवाली औजारोंकी ध्वनि ।

परंतप–वि० (सं०) शत्रुओंको संतप्त करनेवाला, शत्रुतापक ।

परंतु–अ० (सं०) पूर्वकथित स्थितिसे वैपरीत्य या अंतर दिखलानेके लिए प्रयुक्त किया जानेवाला एक शब्द–मगर, लेकिन, किंतु ।

परंतुक–पु० (प्रॉविजो) किसी अधिनियम, प्रलेख आदिकी धाराके साथ लगी हुई कोई शर्त या उसके पूर्ण रूपसे पालन या कार्यान्वित किये जानेमें पड़नेवाली किसी कठिनाईसे बचनेके लिए निकाला हुआ रास्ता ।

परंद, परंदा–पु० दे० 'परिंदा', चिड़िया; एक तरहकी हवादार नाव ।

परंपद–पु० (सं०) वैकुंठ; मोक्ष; उच्च पद ।

परंपर–पु० (सं०) पौत्र, प्रपौत्र आदि; एक प्रकारका मृग । वि० क्रमागत, सिलसिलेवार ।

परंपरया–अ० (सं०) परंपराके अनुसार; परंपरासे ।

परंपरा–स्त्री० (सं०) अविच्छिन्न क्रम, चला आता हुआ अटूट सिलसिला, अनुक्रम; क्रमबद्ध समूह या पंक्ति; प्रथा, प्रणाली जो बहुत दिनोंसे चली आ रही हो; पुत्र-पौत्र आदि, वंश, संतति; वध ।

परंपराक–पु० (सं०) यज्ञपशुका वध ।

परंपरागत–वि० (सं०) सदासे चला आता हुआ; क्रमागत ।

परंपरित–वि० (सं०) परंपरायुक्त; परंपरापर अवलंबित । –रूपक–पु० रूपक अलंकारका एक भेद जिसमें एकका आरोप किसी दूसरेके आरोपका हेतु होता है ।

परंपरीण–वि० (सं०) वंशक्रमसे प्राप्त; परंपरागत ।

परः–'परस्'का समासगत रूप । –कृष्ण–वि० बहुत काला । –पुंसा–स्त्री० वह स्त्री जो अपने पतिसे असंतुष्ट होनेके कारण परपुरुषसे प्रेम करना चाहती है । –पुरुष–वि० मनुष्यसे उच्चतर । –शत–वि० सौसे अधिक, शताधिक । –श्व(स्)–अ० कलके बाद आनेवाले दिन, परसों ।

पर–अ० किंतु, तो भी, लेकिन; पीछे; * पास । प्र० अधिकरण कारकका चिह्न जिससे आधार और आधेयका संबंध सूचित होता है । वि० (सं०) अपनेसे भिन्न, अन्य, दूसरा, गैर; दूसरेका, गैरका, पराया; आगेका, बादका; जो जुदा या अलग हो; अतिरिक्त; जो दूर या परे हो; जो किसी हदके बाहर हो; जो सबसे आगे या ऊपर स्थित हो; सबसे बड़ा, श्रेष्ठ; सर्वातीत; शत्रुतापूर्ण, विरोधी; लगा हुआ; लीन; निरत । सर्व० दूसरा व्यक्ति । पु० अजनबी; चरम बिंदु; गौण अर्थ; शत्रु; केवल ब्रह्म; शिव; ब्रह्मा; मोक्ष; सामान्य नामक पदार्थका एक भेद (न्या०) । –कलत्र–पु० दूसरेकी स्त्री । –काज–पु० (हिं०) दूसरेका काम । –काजी–वि० (हिं०) दूसरेका काम करनेवाला, परोपकारी । –काय–पु० दूसरेका शरीर । –०प्रवेश–पु० योगीका अपनी आत्माको किसीके शवमें पहुँचाना । –कृति–स्त्री० दूसरेकी कृति; दूसरेकी कृतिका वर्णन । –क्षेत्र–पु० दूसरेका शरीर; दूसरेका खेत; दूसरेकी स्त्री । –गाछा–पु० (हिं०) दूसरे पेड़ोंपर लगनेवाला पौधा, बंदाक । –गाछी–स्त्री० (हिं०) अमरबेल । –गामी(मिन्)–वि० दूसरेके साथ जानेवाला; दूसरेंसे संबद्ध; दूसरेके लिए लाभदायक । –गुण–वि० दूसरेके लिए हितकर । –ग्रंथि–स्त्री० (उँगली आदिकी) पोर । –ग्लानि–स्त्री० शत्रुको वशमें करना; शत्रुका दमन । –चक्र–पु० शत्रुका राष्ट्र आदि; शत्रुकी सेना; शत्रुका आक्रमण जिसकी गणना ६ ईतियोंमें है । –च्छंद–वि० पराधीन । पु० दूसरेकी इच्छा या मरजी; अधीनता । –च्छंदानुवर्ती(र्तिन्)–वि० जो दूसरेकी इच्छाके अनुसार काम करे, पराधीन । –च्छिद्र–पु० दूसरेका दोष । –ज–वि० जिसका पालन-पोषण किसी दूसरेने किया हो; जो दूसरेके बाद हो; शत्रुका । पु० (हिं०) एक राग । –जन–पु० पराया, स्वजनका उलटा; * दे० 'परिजन' । –जात–वि० अन्य द्वारा पालित; परावलंबी । पु० नौकर; (हिं०) दूसरी जातिका मनुष्य । स्त्री० दूसरी जाति । –जाति–स्त्री० दूसरी जाति । –जित–वि० दूसरेके द्वारा पाला-पोसा हुआ; जिसे किसीने जीत लिया हो, विजित । पु० कोयल । – जीवी पु० ऐसा जीव (पौधा या प्राणी) जो अन्य किसी पौधे या प्राणी पर या उसके अन्दर रहता है, तथा उसीसे अपना आहार प्राप्त करता है, परोपजीवी (पैरासाइट) । –तंत्र–वि० जो दूसरेके वशमें हो, पराधीन । –०द्वैधीभाव–पु० दो शक्तिशाली और परस्पर विरोधी राज्योंके मध्यमें रहते हुए एकसे कुछ धन पाकर दोनोंसे मैत्रीभाव रखना । –दार–स्त्री० दूसरेकी स्त्री, परायी स्त्री; * लक्ष्मी; पृथ्वी । –दारिक,–दारी(रिन्)–वि०, पु० व्यभिचारी । –दूषण-संधि–स्त्री० वह संधि जिसमें राज्यकी सारी आय देनेकी प्रतिज्ञा की गयी हो । –देवता–पु० परब्रह्म । –देश–पु० अपने देशसे भिन्न देश, दूसरा देश । –देशापवाहन–पु० दूसरे देशके लोगोंको बुलाकर उनसे उपनिवेश बसाना (कौ०) । –देशी–वि० (हिं०) दूसरे देशका । पु० दूसरे देशमें रहनेवाला; प्रवासी । –द्रोही(हिन्),–द्वेषी(षिन्)–वि० दूसरेसे द्वेष या शत्रुता करनेवाला । –धन–पु० दूसरेका धन, परायी संपत्ति । –धर्म–पु० दूसरेका या दूसरा धर्म, अपने धर्मसे भिन्न धर्म । –धाम(न्)–पु० वैकुंठ; परमेश्वर; विष्णु । –ध्यान–पु० वह ध्यान जिसमें ध्येयके अतिरिक्त कोई और वस्तु न रहे । –निपात–पु० समासमें पहले आने योग्य शब्दका बादमें रखा जाना (जैसे–भूतपूर्व) । –पक्ष–पु० शत्रुका पक्ष; विरोधीका मत; विरोधीकी दलील । –०ग्राही–दे० क्रममें । –पद–पु० दे० 'परमपद' । –पाक–पु० दूसरेके उद्देश्यसे अथवा पंचयज्ञके लिए भोजन तैयार करना (स्मृ०) । –०निवृत्त–वि० जो पंचयज्ञ न करे (स्मृ०) । –०रत–वि० जो स्वयं पंचयज्ञ करे पर दूसरेका धान्य खाकर निर्वाह करे । –पार–पु० दूसरा किनारा, दूसरा छोर । –पिंड–पु० दूसरेका अन्न, दूसरेका दिया हुआ भोजन । –पिंडाद–वि० जो दूसरेका अन्न खाकर निर्वाह करे । पु० भृत्य, नौकर । –पीडक–वि० दूसरोंको पीड़ा पहुँचानेवाला, दूसरोंको सतानेवाला । –पीडनरति–स्त्री० दे० 'यंत्रणाप्रियता' (सैडिज्म) । –पीरक*–वि० दूसरोंके दुःखसे दुःखी होनेवाला । –पुरंजय–पु० विजेता; वीर । –पुरुष–पु० पतिसे भिन्न पुरुष; अजनबी; पुरुषोत्तम; विष्णु । –पुष्ट–वि० जिसका पालन-पोषण दूसरेने किया हो । पु० कोयल । –० महोत्सव–पु० आम । –पुष्टा–स्त्री० वेश्या, रंडी; बंदाक । –पूर्वा–स्त्री० वह स्त्री जिसने पहले पतिको छोड़कर दूसरा पति कर लिया हो । –पोषी (षिन्)–पु० (होस्ट) वे जीव, जिनपर या जिनके अन्दर परजीवी (पैरासाइट) पाये जाते हैं; 'पोषक' । –प्रपौत्र–पु० प्रपौत्रका पुत्र । –प्रेष्य–पु० दास । –प्रेष्या–स्त्री० दासी । –बस–वि० (हिं०) दे० 'परवश' । –बसताई*–स्त्री० परवशता । –ब्रह्म(न्)–पु० निर्गुण और उपाधिरहित ब्रह्म । –भव–पु० दूसरा जन्म । –भाग–पु० दूसरेका अंश या हिस्सा; अंतिम भाग; गुणका उत्कर्ष; समृद्धि; सुसंपद्; प्रचुरता; उत्कृष्टता । –भाग्योपजीवी(विन्)–वि० दूसरेकी कमाई या दूसरेका अन्न खाकर निर्वाह करनेवाला । –भाषा–स्त्री० संस्कृतसे भिन्न भाषा; दूसरी भाषा । –भुक्त–वि० दूसरेके द्वारा भोगा हुआ । –भुक्ता–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसका किसी दूसरेके साथ समागम हो चुका हो । –भृत–वि० जिसका पालन दूसरेने किया हो । पु० कोकिल; * षडानन । –भृत्–पु० कौआ । –मत–पु० दूसरेका मत; विरोधीका मत; अपनेसे भिन्न मत । –मद–पु० बहुत अधिक नशा, मदात्यय । –मर्मज्ञ–वि० दूसरेका भेद जाननेवाला । –मृत्यु–पु० कौआ । –युग–पु० उत्तरवर्त्ती युग, बादका युग । –रमण–पु० ब्याही हुई स्त्रीका जार या यार । –लोक–पु० स्वर्ग आदि लोक जहाँ मृत्युके पश्चात् प्राणीकी आत्मा जाती है । –०गम,–०गमन–पु०,–० प्राप्ति–स्त्री०,–०यान,–०वास–पु० मृत्यु (आदरार्थक) । –०वासी(सिन्)–वि० मृत । (मु०–लोक बनना–मृत्युके पश्चात् सद्गति प्राप्त होना । –लोक बिगड़ना–मृत्युके पश्चात् अच्छी गतिको प्राप्त न होना । –लोक सिधारना–मरना ।) –वश,–वश्य–वि० जो दूसरेके वशमें हो, पराधीन । –वशता,–वश्यता–स्त्री० परवश होनेका भाव, पराधीनता । –वाद–पु० अफवाह; दूसरेकी निंदा; प्रत्युत्तर, विरोधरूप उत्तर । –वादी(दिन्)–पु० वह जो किसीके विरोधमें कुछ कहे, प्रत्युत्तर देनेवाला प्रतिवादी । –वेश्म(न्)–पु० परमात्माका वासस्थान; वैकुंठ । –व्रत–पु० धृतराष्ट्र । –शाला–पु० (हिं०) परगाछा । –संगत–वि० दूसरेका साथ करनेवाला; दूसरेसे लड़नेवाला । –संज्ञक–पु० आत्मा । –सर्ग–पु० शब्दके अंतमें जुटनेवाला प्रत्यय (व्या०) । –सवर्ण–वि० आगे आनेवाले वर्णके समान (व्या०) । –साल–अ० (हिं०) पिछले या अगले साल । –स्त्री–स्त्री० परायी स्त्री । –स्व–पु० दूसरेका धन, दूसरेकी संपत्ति । –०हरण–पु० दूसरेका धन हर लेना । –हित–पु० दूसरेका कल्याण । वि० दूसरेका कल्याण करनेवाला ।

पर–पु० (फा०) पंख, डैना । –कट,–कटा–वि० जिसके पर या पंख कटे हों । मु०–कट जाना–अशक्त हो जाना । –काट देना–

अशक्त बना देना। **–कैंच करना**–कबूतर आदिके पंख काट देना। **–जमना**–पंख जमना; शरारत सूझना। **(जाते हुए)–जलना, –टूटना**–गति या जानेका साहस न होना। **–न मारना**–जा न सकना। **–निकलना,–व बाल निकलना**–नया पर निकलना; होशियार होना। **–बाँध देना**– बेबस करना।

परई|–स्त्री० मिट्टीका बड़ा कसोरा।

परकना*–अ० क्रि० परचना; किसी विषयमें ढीठ बनना, चसका लगना।

परकसना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना; प्रकट होना।

परकाना|–स० क्रि० परचाना; किसीको किसी बातका चसका लगाना।

परकार–पु० (फा०) (डिवाइडर्स) वृत्तकी परिधि बनाने, नापने आदिका दो भुजाओंवाला एक आला। * दे० 'प्रकार'।

परकाल–पु० 'परकार'।

परकाला–पु० सीढ़ी; देहली; (फा०) टुकड़ा; शीशेका टुकड़ा; चिनगारी। (आफतका परकाला–गजब ढानेवाला।)

परकास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

परकासना*–स० क्रि० प्रकाशित करना; प्रकट करना। अ० क्रि० प्रकाशित होना।

परकिति, परकीति, परकीती*–स्त्री० दे० 'प्रकृति'।

परकीय–वि० (सं०) दूसरेका।

परकीया–स्त्री० (सं०) नायिकाका एक भेद, वह नायिका जो गुप्त रूपसे परपुरुषसे प्रेम करे।

परकीरति*–स्त्री० दे० 'प्रकृति'।

परकोटा–पु० गढ़ आदिकी रक्षाके लिए चारों ओर उठायी गयी दीवार; पानी आदि रोकनेका बाँध।

परक्रामण–पु० (नेगोशियेशन) पूरे अधिकारों समेत (बंधपत्रादि) दूसरेको हस्तांतरित करनेकी क्रिया।

परक्राम्य–वि० (नेगोशियेबिल) (वह बंध-पत्रादि) जो दूसरेको, समस्त अधिकारों समेत हस्तांतरित किया जा सके।

परख–स्त्री० गुण-दोषके निर्णयकी दृष्टिसे किसी वस्तुको देखनेकी क्रिया, परीक्षा; किसीके गुण-दोषका पता लगानेकी शक्ति। **–नली**–स्त्री० (टेस्टट्यूब) दे० 'परीक्षण-नलिका'।

परखचा–पु० टुकड़ा, खंड। मु०–**(चे)उड़ाना**–खंड-खंड कर देना, धज्जियाँ उड़ाना।

परखना–स० क्रि० गुण-दोषके निर्धारणके लिए किसी व्यक्ति या वस्तुको भली भाँति देखना; भली भाँति देखकर गुण-दोष जान लेना; किसीकी राह देखना।

परखनी|–स्त्री० दे० 'परखी'।

परखवाना–स० क्रि० दे० 'परखाना'।

परखवैया, परखैया–पु० परखनेवाला।

परखाई–स्त्री० परखनेका काम; परखनेकी उजरत।

परखाना–स० क्रि० किसीसे परखनेका काम कराना; सहेजवाना।

परखी–स्त्री० लोहेका पतला, लंबा आला जिसे गेहूँ, चावल आदिके बोरेमें घुसाकर परखनेके लिए नमूना निकाला जाता है।

परग*–पु० डग, कदम।

परगट*–वि० प्रकट, स्पष्ट।

परगटना*–अ० क्रि० प्रकट होना। स० क्रि० प्रकट करना।

परगन*–पु० दे० 'परगना'।

परगना–पु० (फा०) एक भूभाग जिसके अंतर्गत बहुतसे गाँव होते हैं। **–दार**–पु० परगनेका अफसर।

परगनाधीश–पु० दे० 'परगना-हाकिम'।

परगना-हाकिम–पु० (अ०) परगनेकी देख-रेख करनेवाला प्रधान अधिकारी, परगनाधीश।

परगनी–स्त्री० दे० 'परगहनी'।

परगसना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना; प्रकट होना।

परगहनी–स्त्री० चाँदी, सोनेकी गुल्लियाँ ढालनेका नलीके आकारका एक आला।

परगाढ़*–वि० दे० 'प्रगाढ'।

परगाना|–कदम कदम चलना; आगे बढ़ना।

परगार–पु० (फा०) वृत्तकी परिधि बनानेका एक आला, 'परकार'।

परगास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

परगासना*–स० क्रि० प्रकाशित करना। अ० क्रि० प्रकाशित होना।

परघट*–वि० दे० 'प्रकट'।

परघनी–स्त्री० दे० 'परगहनी'।

परचंड*–वि० दे० 'प्रचंड'।

परचइ*–पु० दे० 'परिचय'।

परचत*–स्त्री० जान-पहचान।

परचना–अ० क्रि० किसीसे इतनी जान-पहचान हो जाना कि उससे कोई खटका न रह जाय, हिल-मिल जाना; चसका लगना; * पहचाना जाना; सुलगना। मु० **परच पड़ना***–पहचानमें आना।

परचर*–पु० बैलोंकी एक जाति।

परचा–पु० (फा०) कागजका टुकड़ा; कागजका वह टुकड़ा जिसपर परीक्षार्थियोंके हल करनेके प्रश्न लिखे रहते हैं, प्रश्नपत्र; पुरजा, रुक्का; * परिचय–'कह कबीर परचा भया गुरु दिखाई बाट'–कबीर; परख, जाँच; सबूत। मु०–**देना**–किसीको पूर्ण परिचय देना। **–माँगना**–सबूत देनेको कहना; किसी देवी-देवतासे अपनी शक्ति दिखानेकी प्रार्थना करना (ओझा)।

परचाना–स० क्रि० परचने देना; हिलाना-मिलाना; चसका लगाना; * सुलगाना–'बिरही दहन काम क्वैला परचाये हैं' –सेनापति।

परचार|–पु० दे० 'प्रचार'।

परचारना*–स० क्रि० दे० 'प्रचारना'।

परचून–पु० आटा-चावल आदि भोजनकी सामग्री।

परचूनी–पु० परचून बेचनेवाला। स्त्री० परचूनीका काम।

परचे, परचै|–पु० दे० 'परिचय'।

परछत्ती–स्त्री० कमरेके भीतर बनी हुई सामान रखनेकी पाटन; फूस आदिकी हलकी छाजन, हलका छप्पर।

परछन–पु० एक वैवाहिक लोकाचार जिसमें स्त्रियाँ वरको दही-अक्षतका टीका लगाती और मूसल तथा बट्टा उसपरसे घुमाती हैं; वरकी आरती उतारनेकी रीति।

परछना–स० क्रि० परछन करना।

परछा–पु० कोल्हूके बैलकी आँखोंपर अँधोटी बाँधनेका कपड़ा; जुलाहोंकी सूत लपेटनेकी नली; बड़ी बटलोई; कड़ाही; मिट्टीका मझोले आकारका बरतन; भीड़के छँटने या ठसाठस भरी हुई चीजोंमेंसे कुछके निकलनेसे मिलने या पड़नेवाला अवकाश; निबटारा।

परछाईं–स्त्री० किसीकी वह छाया जो उतनी दूर और उस दिशामें पड़ती है जितनी दूर और दिशामें उसके बीचमें आ जानेसे प्रकाश फैल नहीं पाता, प्रतिच्छाया; जल, दर्पण आदिसे पड़नेवाली किसीकी छायाकृति। मु०–**से डरना**–मामूली बातसे भी डरना, बहुत अधिक डरना।

परछालना*–स० क्रि० प्रक्षालन करना, साफ करना, धोना।

परजंक*–पु० दे० 'पर्यंक'।

परजन्य*–पु० दे० 'पर्जन्य'।

परजरना*–अ० क्रि० जलना; क्रुद्ध होना, कुढ़ना, खीज उठना; ईर्ष्या करना, द्वेष करना।

परजवट–पु० दे० 'परजौट'।

परजा–स्त्री० प्रजा, असामी, रैयत; नाई-बारी आदि आश्रित जन।

परजाता–पु० एक प्रसिद्ध फूल, हरसिंगार; इसका पौधा।

परजाय*–पु० दे० 'पर्याय'।

परजौट–पु० सालाना खिराजपर मकान उठाने, जमीन लेने-देनेकी रीति; मकान बनानेकी जमीनका सालाना खिराज।

परज्वलना*–स० क्रि० प्रज्वलित करना। अ० क्रि० प्रज्वलित होना।

परणना*–स० क्रि० ब्याहना।

परणि*–पु० परिणय, विवाह।

परतंचा, परतिंचा*–स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा'।

परतः(तस्)–अ० (सं०) दूसरेसे; शत्रुसे; बादमें, पीछे; परे, आगे। **–प्रमाण**–वि० जो किसी दूसरे प्रमाणसे सिद्ध हो, जिसके लिए दूसरा प्रमाण अपेक्षित हो, 'स्वतः प्रमाण'का उलटा।

परत–स्त्री० तह, स्तर, पुट ।

परतच्छ, परतछ*–वि०, अ० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

परतर–वि० (सं०) जो ठीक वादमें हुआ हो; ठीक वादका ।

परतल–पु० लदुवा घोड़ेकी पीठपर रखनेका वोरा या गोनी । **–का टट्टू**–लदुवा घोड़ा ।

परतला–पु०, **परतली**–स्त्री० तलवार आदि रखनेकी चमड़ेकी वह पट्टी जो कंधेसे लटकायी जाती है ।

परता–पु० दे० 'पड़ता' ।

परताजना†–पु० गहनोंपर मछलीके चेहरेका आकार बनानेका सोनारोंका एक आला ।

परताप*–पु० दे० 'प्रताप' ।

परताल–स्त्री० दे० 'पड़ताल' ।

परतिग्या, परतिज्ञा*–स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा' ।

परती–स्त्री० वह जमीन जो जोती-वोयी न जाती हो; वह चद्दर जिससे हवा करके अनाज ओसाते हैं । मु० **–लेना**–ओसाना ।

परतीत, परतीति*–स्त्री० दे० 'प्रतीति' ।

परतेजना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना ।

परत्र–अ० (सं०) दूसरे स्थानमें; परलोकमें; उत्तरकालमें । पु० परलोक । **–भीरु**–वि० जिसे परलोकके विगड़नेका भय हो, धार्मिक ।

परथन†–पु० दे० 'पलेथन' ।

परद*–पु० दे० 'परदा' ।

परदच्छिना, परदछिना*–स्त्री० दे० 'प्रदक्षिणा' ।

परदनिया*–स्त्री० धोती ।

परदनी*–स्त्री० धोती; दक्षिणा; वख्शिश ।

परदा–पु० (फा०) किसी वस्तु, व्यक्ति आदिको दृष्टिसे ओझल करनेके कामका कपड़ा, टाट आदि; ओट करनेवाली वस्तु; आड़, ओट; घूंघट; लोगोंकी दृष्टिसे अपनेको वचानेकी स्थिति; विभाग या आड़ करनेके लिए वनायी जानेवाली दीवार; सतह, मंडल (दुनियाका परदा); रंग-मंचपर लगाया जानेवाला वह आड़ करनेका कपड़ा जो समय-समयपर उठाया और गिराया जाता है; चमड़ेकी वह झिल्ली जो कान आदिमें आवरणका काम देती है; अँगरखेका वह हिस्सा जो छातीके ऊपर पड़ता है; जनानख़ाना; भेद; रहस्य; गिरीदार मेवेके ऊपरका छिलका; सितार, हारमोनियम आदिमें स्वर निकलनेका स्थान; फारसीके वारह रागोंमेंसे हर एक; नावका पाल । **–ख़ाक**–पु० जमीन । **–दर**–वि० दोष प्रकट करनेवाला; भेद खोलनेवाला । **–दरी**–स्त्री० दोष प्रकट करना; भेद खोलना । **–दार**–वि० परदा करनेवाला, छिपनेवाला । **–दारी**–स्त्री० ऐब छिपाना; भेद छिपाना । **–नशीन**–वि० जो परदेमें रहे । **–पोश**–वि० ऐब छिपानेवाला । **–पोशी**–स्त्री० ऐब छिपाना । मु० **–उठाना या खोलना**–रहस्यकी वात प्रकट करना; भेदकी वात जाहिर करना । **–डालना**–छिपाना; प्रकट होनेसे रोकना । **(आँखपर)–पड़ना**–दिखाई न देना । **(बुद्धिपर)–पड़ना**–समझ जाती रहना, अक्ल खफ्त होना । **–फटना***–इज्जत-आवरू न वचना–'सेवकको परदा फटे तू समरथ सीले'–विनय० । **–फ़ाश करना**–दोष प्रकट करना; भेद खोलना । **–फ़ाश होना**–दोष प्रकट होना; भेद खुलना । **(किसीका)–रखना**–किसी वुराईको जाहिर न होने देना; प्रतिष्ठाकी रक्षा करना । **–रखना**–अपनेको किसीकी दृष्टिसे बचाना, सामने न होना; दुराव-छिपाव रखना । **(किसीको)–लगना**–परदेमें रहनेका नियम होना । **–होना**–परदा रखने या परदेमें रहनेका नियम होना; दुराव-छिपाव होना ।**–(दे)के पीछे**–छिपे-छिपे । **–परदे**–गुप्त रीतिसे, छिपे-छिपे । **–में छेद होना**–परदेके पीछे व्यभिचार होना । **–में रखना**–स्त्रियोंको सबके सामने न होने देना; गुप्त रखना । **–में रहना**–स्त्रियोंका घरसे वाहर न निकलना; स्त्रियोंका सवके सामने न होना; छिपा रहना, गुप्त रहना; घरके भीतर रहना; वाहर न निकलना (व्यं०) ।

परदाख़्त–स्त्री० (फा०) परवरिश; सहायता; ठीक, दुरुस्त करना ।

परदाज़–पु० (फा०) दुरुस्ती, सजावट; चित्रकी रूप-रेखा; चित्रका हाशिया; ढंग । वि० (समासमें) करनेवाला; पोषक (कारपरदाज़, फ़ितनापरदाज़) ।

परदादा–पु० दादाका बाप, प्रपितामह । (स्त्री० 'परदादी' ।)

परदायत–स्त्री० परदा करनेवाली स्त्री 'परदायतोंसे मकानकी पोल भर गई'–सरिता, जुला० '७० ।

परदुम्म*–पु० प्रद्युम्न ।

परदोस*–पु० दे० 'प्रदोष'; भारी दोष ।

परधान*–वि० दे० 'प्रधान' । पु० दे० 'परिधान'; मंत्री; नायक; माया; बुद्धि ।

परन–पु० मृदंग आदिके प्रधान बोलोंके बीचमें बजाये जानेवाले बोलोंके टुकड़े; * प्रण, टेक; पत्ता । * स्त्री० टेव, आदत । **–कुटी**–स्त्री०,**–गृह**–पु० झोपड़ी ।

परना*–अ० क्रि० दे० 'पड़ना' ।

परनाना–पु० नानाका पिता ।

परनानी–स्त्री० परनानाकी स्त्री ।

परनाम†–पु० दे० 'प्रणाम' ।

परनाला–पु० घरके गंदे पानी और गलीजके वहनेका मार्ग, नाबदान, मोरी; वह बड़ी नाली जिससे होकर गंदा पानी वहता है ।

परनाली–स्त्री० छोटा परनाला; घोड़ोंकी पीठका कंधों और पुट्ठोंकी अपेक्षा नीचा होना जो उनके तेज होनेका लक्षण माना जाता है ।

परनि*–स्त्री० आदत, टेव ।

परनी–स्त्री० राँगेकी पन्नी ।

परनौत*–स्त्री० प्रणति, प्रणाम ।

परपंच*–पु० दे० 'प्रपंच' ।

परपंचक*–वि० प्रपंच रचनेवाला, वखेड़ा मचानेवाला, फसादी; धूर्त ।

परपंची*–वि० दे० 'परपंचक' ।

परपक्षग्राही–वि० (टर्नकोट) अपना दल या पक्ष छोड़कर दूसरा दल या पक्ष ग्रहण कर लेनेवाला; अपने विश्वासों या सिद्धांतोंका परित्याग कर दूसरे विचारों-सिद्धांतोंका अनुयायी वन जानेवाला ।

परपट–पु० चौरस मैदान ।

परपटी–स्त्री० दे० 'पर्पटी', एक गंध द्रव्य, एक रसौषधि ।

परपरा*–वि० चरपरा; 'पर-पर' आवाजके साथ टूटनेवाला ।

परपराना†–अ० क्रि० मिर्च आदि तीखी वस्तुओंके स्पर्शसे जीभ आदिका जलने-सा लगना; पड़पड़ाना ।

परपराहट–स्त्री० परपरानेकी क्रिया या भाव ।

परपाजा–पु० दे० 'परदादा' ।

परपूठा–वि० पक्का, दृढ़ ।

परपैठ–स्त्री० हुंडीकी तीसरी नकल ।

परपोता–पु० पोतेका पुत्र, प्रपौत्र ।

परफुल्ल, परफुल्लित*–वि० दे० 'प्रफुल्ल' ।

परबंद–पु० नाचकी एक गत ।

परबंध*–पु० दे० 'प्रबंध' ।

परब–पु० दे० 'पर्व' । स्त्री० किसी रत्नका छोटा टुकड़ा

परबत–पु० दे० 'पर्वत' ।

परबत्ता–पु० पहाड़ी तोता ।

परबल*–वि० दे० 'प्रबल' । † पु० एक तरकारी ।

परबाल–पु० पलकपर निकला हुआ वह अनावश्यक वाल जो वहुत कष्ट देता है; * दे० 'प्रवाल' ।

परबी–स्त्री० पर्वका दिन; त्योहारी ।

परबीन*–वि० दे० 'प्रवीण' ।

परबेस*–पु० दे० 'प्रवेश' ।

परबोध*–पु० दे० 'प्रबोध' ।

परबोधना*–स० क्रि० प्रबुद्ध करना, जगाना; ज्ञानका उपदेश देना; समझाना-बुझाना, सांत्वना देना ।

परभा*–स्त्री० दे० 'प्रभा' ।

परभाइ*–पु० दे० 'प्रभाव' ।

परभात*–पु० दे० 'प्रभात' ।

परभाती–स्त्री० दे० 'प्रभाती' ।

परभाव*–पु० दे० 'प्रभाव' ।

परम–वि० (सं०) जो सबसे उच्च या उत्कृष्ट हो; उत्कृष्ट; मुख्य;

सबसे पहलेका, आद्य; अत्यधिक; अतिगूढ़, सबसे खराव; हद दर्जेका। पु० ओंकार; शिव; विष्णु; वह जो मुख्य या सर्वोच्च हो। **–कांड**–पु० बहुत ही शुभ अवसर या समय। **–क्रांति**–स्त्री० सूर्यकी शेष क्रांति। **–गति**–स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति। **–गव**–पु० बहुत अच्छा साँड़। **–गहन**–वि० जिसे समझना या जिसका पार पाना बहुत कठिन हो, बहुत पेचीदा, अति कठिन। **–जा**–स्त्री०–प्रकृति। **–तत्त्व**–पु० मूलतत्त्व, ब्रह्म। **–ताप**–पु० (एब्सोल्यूट टेम्परेचर) तापकी नापके मापक्रमके लिए जब शून्य (परम शून्य) वह ताप लेते हैं जो बर्फ़के गलनांकसे २७३ डिग्री सेंटीग्रेड नीचे रहता है, तब हमें परम ताप प्राप्त होता है। परमताप मापक्रमकी प्रत्येक डिग्री, सेंटीग्रेड तापक्रमकी एक डिग्रीके बराबर होती है। जैसे शून्य डिग्री सेंटीग्रेड = २७३ डिग्री परम ताप; १०० डिग्री सेंटीग्रेड = ३७३ डिग्री परमताप। **–धाम(न्)**–पु० वैकुंठ। **–न्यायालय**–पु० (सुप्रीमकोर्ट) दे० 'सर्वोच्च न्यायालय'। **–पद**–पु० सबसे उच्च पद या स्थान; मुक्ति। **–पिता(तृ)**–पु० परमेश्वर। **–पुरुष,–पूरुष**–पु० परमात्मा, विष्णु। **–प्रख्य**–वि० अति प्रसिद्ध। **–फल**–पु० सबसे उत्कृष्ट फल; मुक्ति। **–ब्रह्म(न्)**–पु० दे० 'परब्रह्म'। **–ब्रह्मचारिणी**–स्त्री० दुर्गा। **–भट्टारक**–पु० चक्रवर्ती राजाओंकी एक प्राचीन उपाधि। **–भट्टारिका**–स्त्री० पटरानियोंकी एक प्राचीन उपाधि। **–महान्(हत्)**–वि० सबसे बड़ा; सबसे अधिक महत्त्ववाला (काल, आकाश, आत्मा और दिशा–ये चार सर्वगत होनेसे परम महत् माने जाते हैं)। **–रस**–पु० तक्र, मट्ठा। **–वीरचक्र**–पु० भारतीय गणतंत्रमें शत्रुके सम्मुख असाधारण वीरता प्रदर्शित करनेपर भारत सेनाके किसी वीरको दिया जानेवाला 'विक्टोरिया क्रास'के ढंगका प्रथम श्रेणीका उपहार। **–श्रेष्ठ**–वि० (हिज़ एक्सलेंसी) दे० 'महामहिम', तत्र भवान्। **–सत्ता**–स्त्री० (ऐबसाल्यूट पावर) अनियंत्रित शक्ति या अधिकार, पूर्ण तथा अबाध सत्ता। **–हंस**–पु० एक प्रकारका सन्न्यासी (ऐसे सन्न्यासीके लिए दंड, शिखा, सूत्र आदिकी कोई आवश्यकता नहीं होती); परमेश्वर।

परमक–वि० (सं०) सर्वोच्च; सर्वोत्कृष्ट।

परमटा, परमाटा–पु० अस्तरके काम आनेवाला एक रंगीन कपड़ा।

परमनेंट–वि० (अं०) स्थायी, स्थिर। **–सेटिलमेंट**–पु० ज़मीनका दमामी या स्थायी बंदोबस्त।

परमर्षि–पु० (सं०) उच्च कोटिका ऋषि (जैसे वेदव्यास)।

परमल†–पु० भुना हुआ गेहूँ।

परमांगना–स्त्री० (सं०) अच्छी और सुंदर स्त्री।

परमा*–स्त्री० शोभा, सौंदर्य; आकार विस्तार, माप (साइज)। † पु० प्रमेह रोग।

परमाक्षर–पु० (सं०) ॐकार।

परमाटिक–पु० (सं०) यजुर्वेदकी एक शाखा।

परमाणु–पु० (सं०) पृथिवी, जल, तेज और वायुका वह सबसे छोटा भाग जिसके और टुकड़े न हो सकें; किसी पदार्थका वह सबसे छोटा टुकड़ा जिसके और टुकड़े न हो सकें; तत्त्वका क्षुद्रतम टुकड़ा जो रासायनिक क्रियामें भाग ले सके। उसे इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी द्वारा भी देखा नहीं जा सकता। परमाणुकी संरचना अत्यन्त क्षुद्र कणों–प्रोटान, न्यूट्रॉन तथा इलेक्ट्रानों–से होती है। **–वाद**–पु० (ऐटमिज्म) परमाणुओंसे वस्तुओंके निर्माण तथा परमाणुओंके कार्यों, प्रभावादिका विवेचन करनेवाला सिद्धांत। **–बम**–पु० (हिं०) ऐसा बम जिसमें युरेनियम नाभिक (न्यूक्लियस)की विखंडन श्रृंखला द्वारा अत्यल्प अवधिमें ढेर-सी ऊर्जा विस्फोटके रूपमें विमुक्त होती है। परमाणु बमका विस्फोट एक सेकण्डके लाखवें अंशके अन्दर अन्दर सम्पन्न हो जाता है। इसका आविष्कार द्वितीय महायुद्धके समाप्तिकालमें हुआ (इसी बमके प्रहारसे जापानने मित्र-सेनाओंके सामने घुटने टेक दिये)। **–भार**–पु० (एटामिक वेट) आक्सीजनके परमाणुके भारको १६ मानकर अन्य तत्वोंके परमाणुओंके भारको व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार भारके लिए प्राप्त संख्याको उस तत्वका परमाणु-भार कहते हैं। **–वाद**–पु० न्याय और वैशेषिक दर्शनका वह मत कि संसारकी सृष्टि परमाणुओंसे हुई है। **–वादी(दिन्)**–पु० परमाणुवादको माननेवाला।

परमाणु न्यष्टियंत्र–पु० (न्यूक्लियर रीऐक्टर) दे० 'परमाणु भट्ठी'।

परमाणु भट्ठी–स्त्री० (न्यूक्लियर रीऐक्टर) वह भट्ठी जिसमें भारी धातुओंके टुकड़े रखनेसे वे रेडियो-सक्रिय हो जाते हैं।

परमात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परमेश्वर।

परमादेश–पु० उच्च न्यायालय द्वारा दिया गया आदेश जिसमें कोई काम करने या न करनेको कहा गया हो (रिट ऑफ मेंडामेस)।

परमाद्वैत–पु० (सं०) सभी भेदोंसे रहित परमात्मा; विष्णु।

परमाधिकार–पु० (प्रेरोगेटिव) दे० 'विशिष्टाधिकार'।

परमानंद–पु० (सं०) उत्तम आनंद; उत्तम आनंदरूप परमात्मा।

परमान*–पु० प्रमाण; विश्वास; परिमाण; सत्य बात; अवधि।

परमानना*–स० क्रि० प्रमाणरूपमें ग्रहण करना, प्रमाण मानना; अंगीकार करना; मानना, विश्वास करना।

परमान्न–पु० (सं०) चावलकी खीर, पायस।

परमा मुद्रा–स्त्री० (सं०) त्रिपुराकी पूजाके अंतर्गत एक मुद्रा।

परमायु(स्)–स्त्री० (सं०) सर्वाधिक आयु।

परमायुष–पु० (सं०) असन, विजयसाल नामका पेड़।

परमार–पु० राजपूतोंका एक वंश जिसकी उत्पत्ति अग्नि-कुण्डसे मानी जाती है।

परमारथ*–पु० दे० 'परमार्थ'।

परमार्थ–पु० (सं०) उत्कृष्ट वस्तु; नित्य और अबाधित पदार्थ; यथार्थ तत्त्व; सत्य; मोक्ष; ब्रह्म। **–वादी(दिन्)**–पु० वेदांती, तत्त्वज्ञ। **–विद्**–वि०, पु० ब्रह्मज्ञानी, दार्शनिक।

परमार्थी(थिन्)–वि० (सं०) परमार्थको जानने या प्राप्त करनेका इच्छुक।

परमावधि–स्त्री० (सं०) किसी बात या कार्यकी अंतिम सीमा।

परमावश्यक सेवाएँ–स्त्री० (इसेंशल सर्विसेज) सर्वसाधारणको पानी, बिजली आदि देने तथा सार्वजनिक सफाई आदि-संबंधी कार्य।

परमाह–पु० (सं०) शुभ दिन; पुण्यदिवस।

परमिति*–स्त्री० परम सीमा; मर्यादा।

परमुख*–वि० जिसने किसी ओरसे मुँह मोड़ लिया हो, पराङ्मुख।

परमुखापेक्षिता–स्त्री० (सं०) दूसरेका मुँह जोहने, दूसरेपर निर्भर रहनेकी प्रवृत्ति–'मनुष्यको परमुखापेक्षितासे निकालना. . .साहित्यका लक्ष्य'–हजारीप्र०।

परमुखापेक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) दूसरेका मुँह जोहनेवाला।

परमेश–पु० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु और महेश–इन तीन रूपोंवाला, सगुण ब्रह्म; शिव; विष्णु; चक्रवर्ती राजा।

परमेश्वर–पु० (सं०) दे० 'परमेश'; इंद्र।

परमेश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

परमेष्ठ–पु० (सं०) ब्रह्मा; देवता।

परमेष्ठिनी–स्त्री० (सं०) ब्राह्मी बूटी; देवी; सरस्वती।

परमेष्ठी(ष्ठिन्)–पु० (सं०) ब्रह्मा; शालग्रामका एक विग्रह; शिव; गुरु; गरुड़; अर्हत्, जिन; अग्नि।

परमेसर, परमेसुर*–पु० दे० 'परमेश्वर'।

परमेसरी*–स्त्री० दे० 'परमेश्वरी'।

परमोद*–पु० दे० 'प्रमोद'।

परमोधना*–स० क्रि० दे० 'परबोधना'–'बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं'–साखी।

परयंक*–पु० दे० 'पर्यंक'।

परराष्ट्र–पु० (सं०) अपने देशको छोड़कर अन्य राष्ट्र। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० विदेशी मामलोंकी देखरेख करनेवाला मंत्री, विदेश मंत्री।

पररु–पु० (सं०) नीली भँगरैया।

परलउ–पु० दे० 'प्रलय'।

परलय*–पु०, स्त्री० दे० 'प्रलय'।

परला–वि० उस ओरका, दूसरी ओरका, उरलाका उलटा। (स्त्री० 'परली'।) मु० **–(ले) दरजेका,–सिरेका**–परम कोटिका, हद दरजेका, अत्यधिक। **–पार होना**–हदतक पहुँचना, अंतिम सीमातक पहुँचना; बहुत दूरतक पहुँचना; समाप्त होना, पूरा होना।

परवर†–पु० दे० 'परवल'; दे० 'प्रवर'; आँखका एक रोग। वि० दे० 'प्रवर'; (फा०) पालन-पोषण करनेवाला, (समासमें प्रयुक्त)। **–दिगार**–पु० पालन-पोषण करनेवाला, पालक; ईश्वर, अल्लाह।

परवरिश–स्त्री० (फा०) पालन-पोषण; मेहरबानी।

परवल–पु० एक प्रसिद्ध लता; इस लताका फल जो तरकारीके काम आता है; चिचड़ा जिसका फल तरकारीके काम आता है।

परवस्ती†–स्त्री० परवरिश, पालन-पोषण।

परवा–पु० मिट्टीका बना एक तरहका कटोरे जैसा बरतन, 'पुरवा', कोसा या कसोरा। स्त्री० पक्षकी पहली तिथि, परिवा; † एक घास; किसी बातकी ओर मन लगाना, ध्यान, अवधान; अवलंब; सहारा, भरोसा; (फा०) चाह, खाहिश; फिक्र, चिंता, सोच; खटका; गरज। * पु० परेवा, पक्षी।

परवाई*–स्त्री० दे० 'परवा'।

परवाज़–स्त्री० (फा०) उड़ना, उड़ान; नाज़; घमण्ड। वि० (समासांतमें) उड़नेवाला; डींग मारनेवाला।

परवाज़ी–स्त्री० (फा०) उड़ान (समासांतमें)।

परवाणि–पु० (सं०) धर्माध्यक्ष; वत्सर; कार्त्तिकेयका वाहन, मयूर।

परवान*–पु० प्रमाण; अवधि, सीमा; जहाजका मस्तूल।

परवानना*–स० क्रि० प्रमाणरूप मानना, ठीक समझना।

परवानगी–स्त्री० (फा०) इजाजत, आज्ञा, फरमान।

परवाना–पु० बरी, चूना आदि नापनेका एक बड़ा पैमाना जो प्रायः लकड़ीका बना होता था।

परवाना–पु० (फा०) लिखित आज्ञा, आज्ञापत्र, अनुमति-पत्र, हुक्मनामा; फरमान; जागीरका हुक्म; लाइसेंस; नौकरीका आज्ञापत्र, नियुक्तिपत्र; नायबके नाम भेजा जानेवाला आज्ञापत्र; शेरके आगे चलनेवाला जानवर; पतिंगा, पंखी। **–गिरफ्तारी**–पु० बंदी बनानेका आज्ञापत्र। **–तलाशी**–पु० खानातलाशीका आज्ञापत्र। **–नवीस**–पु० परवाना लिखनेवाला कर्मचारी, वह क्लर्क जो परवाना लिखे। **–राहदारी**–पु० दूसरे देशमें जानेका सरकारकी ओरसे मिलनेवाला स्वीकृतिपत्र, 'पासपोर्ट'। **मु० (किसीपर)–होना**–किसीके लिए आत्मोत्सर्ग करना, अपनी जान दे देना।

परवान्(वत्)–वि० (सं०) पराश्रयी, पराधीन; असहाय।

परवाया–पु० चारपाईके पायोंके नीचे रखी जानेवाली वस्तु।

परवाल*–पु० दे० 'प्रवाल'।

परवास*–पु० आच्छादन; प्रवास।

परवाह–स्त्री० दे० 'परवा'। † पु० प्रवाह, शवको बिना जलाये नदीमें बहा देना।

परवी†–स्त्री० पर्वकाल।

परवीन*–वि० दे० 'प्रवीण'।

परवेख*–पु० यदा-कदा चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला बादलके टुकड़ेकी तरहका घेरा; दे० 'परिवेष'।

परवेश*–पु० दे० 'प्रवेश'।

परश–पु० (सं०) पारस पत्थर।

परशु–पु० (सं०) कुल्हाड़ीकी तरहका एक प्रसिद्ध शस्त्र, फरसा (यही परशुरामका प्रधान शस्त्र था); शस्त्र। **–धर**–पु० परशु धारण करनेवाला; परशुराम; गणेश। **–पलाश**–पु० फरसेका फल। **–मुद्रा**–स्त्री० जंगलियोंकी एक प्रकारकी मुद्रा। **–राम**–पु० जमदग्नि ऋषिके एक पुत्र जो विष्णुके छठें अवतार माने जाते हैं (इन्होंने २१ बार पृथ्वीको क्षत्रियोंसे रहित कर दिया था)। **–वन**–पु० एक नरक।

परश्वध–पु० (सं०) परशु, कुठार।

परसंग*–पु० दे० 'प्रसंग'।

परसंसा–स्त्री० दे० 'प्रशंसा'।

परस*–पु० स्पर्श, छूना। **–पखान,–मणि**–पु० पारस पत्थर।

परसन†–पु० स्पर्श। * प्रसन्न, खुश–...'देव परसन भये करो काजा'–सूर।

परसना–स० क्रि० खानेवालोंके सामने भोज्य वस्तुएँ रखना; * छूना, स्पर्श करना।

परसन्न*–वि० दे० 'प्रसन्न'।

परसन्नता*–स्त्री० दे० 'प्रसन्नता'।

परसर्ग–पु० (सं०) शब्दके आगे जोड़ा जानेवाला प्रत्यय, ने, को आदि।

परसॉन*–वि० प्रसन्न (चंदा०)।

परसा–पु० फरसा, कुठार; पत्तल आदिमें रखा हुआ एक व्यक्तिके खानेभरका भोजन, परोसा।

परसाद*–पु० दे० 'प्रसाद'।

परसादी†–स्त्री० दे० 'प्रसाद'।

परसाना–स० क्रि० भोज्य वस्तु सामने रखवाना; स्पर्श कराना, छुलाना; फैलाना–'मनहु पन्नगिनि उतरि गगन ते दलपर फन परसावति'–सूर।

परसिद्ध*–वि० दे० 'प्रसिद्ध'।

परसिया–स्त्री० हँसिया।

परसीया†–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुर्सी आदि बनानेके काम आती है।

परसु*–पु० दे० 'परशु'।

परसूत*–वि० दे० 'प्रसूत'।

परसेद*–पु० दे० 'प्रस्वेद'।

परसों–अ० पिछले दिनसे एक दिन पहले; अगले दिनसे एक दिन आगे।

परसोतम*–पु० दे० 'पुरुषोत्तम'।

परसौहाँ*–वि० स्पर्श करनेवाला, छूनेवाला।

परस्–अ० (सं०) दूर, परे। **–पर**–अ० एक दूसरेके साथ, आपसमें। **–० ज्ञ**–पु० मित्र।

परस्परोपमा–स्त्री० (सं०) उपमालंकारका एक भेद, उपमेयोपमा।

परस्वध–पु० (सं०) दे० 'परश्वध'।

परहरना*–स० क्रि० त्यागना, छोड़ना।

परहेज़–पु० (फा०) निषिद्ध वस्तुओंसे बचना; बीमारका हानिकर पदार्थ न खाना, कुपथ्यसे बचना; खाने-पीने आदिका संयम; दोष-पापसे बचना। **–गार**–वि० परहेज करनेवाला; पापसे बचनेवाला। **–गारी**–स्त्री० परहेज करनेका कार्य, संयम; पापसे बचनेका कार्य।

परहेलना*–स० क्रि० अवहेलना करना, अनादर करना; उपेक्षा करना, तुच्छ समझना, 'सुंदर युवा जीव परहेले'–रामा०।

परांग–पु० (सं०) दूसरेका अंग; श्रेष्ठ अंग।

परांगद–पु० (सं०) शिव।

परांगव–पु० (सं०) समुद्र।

परांच्–वि० (सं०) दे० 'पराक्'।

परांज, परांजन–पु० (सं०) तेल पेरनेका कोल्हू; फेन; छुरी आदिका फल।

पराँठा–पु० घी लगाकर तवेपर सेंकी जानेवाली एक प्रकारकी चपाती।

परांत–पु० (सं०) मृत्यु। **–काल**–पु० मृत्युकाल; मुमुक्षुओंका शरीर छोड़नेका समय।

परांतक–पु० (सं०) शिव।

परा–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो अर्थमें प्रातिलोम्य (पराहत), प्राधान्य (परागत), धर्षण (परादृष्ट), आभिमुख्य (पराक्रांत), विक्रम (पराजित) आदिके द्योतनके लिए प्रयुक्त होता है। स्त्री० मूलाधारमें स्थित रहनेवाली नादरूपिणी वाणी; ब्रह्मविद्या; गंगा; बाँझ ककोड़ा; (हि०) पंक्ति। वि० स्त्री० श्रेष्ठ। **–काष्ठा**–स्त्री० अंतिम सीमा, चरम कोटि या सीमा, हद; ब्रह्माकी आधी आयु। **–कोटि**–स्त्री० दे० 'पराकाष्ठा'। **–गति**–स्त्री० गायत्री। **–बैंगनी**–पु० (अल्ट्रा-वायलेट) वे विद्युत् चुम्बकीय तरंगें जिनका तरंग दैर्घ्य दृश्य प्रकाशके तरंग दैर्घ्यसे थोड़ा ही कम होता है। ये फोटोग्राफीकी प्लेटको आसानीसे प्रभावित कर सकती हैं। सूर्यके प्रकाशमें पराबैंगनी प्रकाश तरंगें मौजूद होती हैं। इनके प्रभावसे ही शरीरके अन्दर विटामिन-डीका निर्माण होता है। **–मनोविज्ञान**–पु० अलौकिक मानसिक शक्तियों तथा अद्भुत घटनाओं, असाधारण आध्यात्मिक तथ्यों आदिका विवेचन करनेवाला

मनोविज्ञान । **–विद्या–स्त्री०** अध्यात्मविद्या । **–वैद्युत–पु०** (डाइ इलेक्ट्रिक) विद्युत्का अचालक (विद्युत्रोधी) जैसे काँच, रबड़ आदि । **–श्रव्य–स्त्री०** (अल्ट्रा सॉनिक) (ध्वनि) जिसकी आवृत्ति इतनी ऊँची हो कि वह कानोंको सुनाई न दे । यदि ध्वनिके स्रोतका कम्पन प्रति सेकण्ड २०,००० से अधिक हो तब उससे उत्पन्न हुई ध्वनि पराश्रव्य होती है–इसे हम सुन नहीं सकते । **–सरण–पु०** (ओस्मॉसिस) अर्द्ध-पारगम्य झिल्लीके आरपार गुजर सकनेकी किसी द्रवकी क्षमता ।

पराइ*–वि० स्त्री० दूसरेकी ।

पराक–पु० (सं०) वारह दिनोंतक भोजन न करनेका प्रायश्चित्तरूपमें किया जानेवाला एक कृच्छ्र व्रत; वलिदान करनेका खड्ग; एक रोग । वि० छोटा ।

पराकरण–पु० (सं०) दूर करना, हटाना; अस्वीकार करना; उपेक्षा करना ।

पराकाश–पु० (सं०) दूरवर्ती आकाश ।

पराक(च्)–वि० (सं०) पराङ्मुख; ऊपरकी ओर जानेवाला, ऊर्ध्वगामी; उलटा जानेवाला, प्रतिलोमगामी; प्रतिकूल; दूरवर्ती । **–पुष्पी–स्त्री०** चिचड़ी ।

पराक्रम–पु० (सं०) सामर्थ्य, वल; शौर्य; विक्रम, उद्योग; पुरुषार्थ; अभियान, आक्रमण; विष्णु । **मु० –चलना–**उद्योग किया जा सकना; शक्तिका साथ देना ।

पराक्रमी(मिन्)–वि० (सं०) पराक्रमवाला; शूर; पुरुषार्थी ।

पराक्रांत–वि० (सं०) शक्तिशाली; उत्साही; वीर; आक्रांत; जिसका मुँह मोड़ दिया गया हो ।

पराग–पु० (सं०) फूलके भीतरकी धूल, नन्हें जर्रे जो पौधेके पुंकेसरमें स्थित परागकोषमें उत्पन्न होते हैं । वायु या कीट-पतंगोंके माध्यमसे पराग अन्य पौधोंके फूलोंके वर्तिकाग्र (स्टिगमा) में पहुँचकर उनका परागण करता है (पोलेन) । पुष्परज; धूल; केसरका चूर्ण आदि जिसे नहानेके बाद लगाते हैं; उपराग; चंदन; कपूरका चूरा; चंद्र या सूर्यका ग्रहण; ख्याति; एक पर्वत; स्वच्छंद गति । **–केसर–पु०** फूलोंके भीतरके वे पतले लंवे डोरे जिनपर केसर लगा रहता है । **–कोश–पु०** (ऐन्थर) फूलका वह भाग जो पुंकेसरके सिरेपर थैलीकी शक्लका होता है । इसीके अन्दर पराग बनता है ।

परागण–पु० (पॉलिनेशन) परागसे अभिषिंचित हो जाना, (हवाके झकोरे आदिसे) पुष्पपर परागका फैल जाना, छा जाना ।

परागत–वि० (सं०) मृत; आवृत, वेष्टित; फैला हुआ ।

परागना*–अ० क्रि० प्रेमासक्त होना, प्रेममें पड़ना ।

पराङ्मुख–वि० (सं०) जिसने किसी ओरसे मुँह मोड़ लिया हो, विमुख; प्रतिकूल ।

पराचीन–वि० (सं०) विमुख, पराङ्मुख; वादमें होनेवाला; उत्तरकालमें होनेवाला; जो दूसरी ओर, परे हो ।

पराजय–स्त्री० (सं०) हार, विजयका उलटा ।

पराजिका–स्त्री० एक रागिनी ।

पराजित–वि० (सं०) जिसने हार खायी हो, हारा हुआ, हराया हुआ ।

पराणसा, परानसा–स्त्री० (सं०) चिकित्सा, औषधोपचार ।

परात–स्त्री० थालीकी शक्लका पीतल आदिका एक वड़ा वरतन, वड़ा थाल ।

परात्पर–वि० (सं०) जो सबसे परे हो । पु० परमात्मा ।

परात्प्रिय–पु० (सं०) तृणविशेष ।

परात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) दे० 'परमात्मा' ।

परादन–पु० (सं०) अरवी घोड़ा ।

पराधि–स्त्री० (सं०) वहुत तीव्र मानसिक व्यथा ।

पराधीन–वि० (सं०) जो दूसरेके अधीन हो, परवश ।

पराधीनता–स्त्री० (सं०) पराधीन होनेका भाव; पराधीन होनेकी दशा ।

पराध्वनिक–वि० ध्वनि वेगको भी मात करनेवाला (वेग); ध्वनिसे भी अधिक तेज गतिसे चलनेवाला (विमान) (सूपरसोनिक) ।

परान*–पु० दे० 'प्राण' ।

पराना*–अ० क्रि० पलायन करना, भागना ।

परान्न–पु० (सं०) दूसरेका अन्न, दूसरेका धान्य; दूसरेका दिया हुआ भोजन । **–भोजी(जिन्)–वि०** दूसरेका दिया खाकर निर्वाह करनेवाला ।

परापर–वि० (सं०) पर और अपर; परत्व और अपरत्व दोनों गुणोंसे युक्त (वैशेषिक) ।

पराभव–पु० (सं०) तिरस्कार, अनादर; हार, पराजय; विनाश ।

पराभिक्ष–पु० (सं०) एक प्रकारका वानप्रस्थ जो थोड़ी-सी भिक्षासे निर्वाह करता है ।

पराभूत–वि० (सं०) जिसका पराभव हुआ हो; तिरस्कृत; हारा हुआ, परास्त; नष्ट ।

पराभूति–स्त्री० (सं०) दे० 'पराभव' ।

परामर्श–पु० (सं०) पकड़ना; खींचना; आक्रमण; वाधा; स्पर्श करना; रोगाक्रांत होना; विवेचन; स्मरण करना; याद करना (वे०); व्याप्य हेतुका पक्षधर्म होना, पक्षमें हेतुके होनेकी अनुमिति (न्या०); युक्ति; सलाह । **–कक्ष–पु०** (कन्सल्टिंग रूम) किसी चिकित्सक या वकील आदिसे परामर्श करनेका स्थान, कमरा या गृह । **–दात्री समिति–स्त्री०** (ऐडवाइजरी कमिटी) किसी कार्य या विषयादिके संवंधमें सलाह देनेवाली समिति ।

परामर्शन–पु० (सं०) पकड़ना; खींचना; स्मरण करना; विवेचन करना; सलाह करना ।

परामर्शालय–पु० (सं०) दे० 'परामर्शकक्ष' ।

परामृत–वि० (सं०) जिसने मृत्युको जीत लिया हो । पु० वर्षा ।

परामृष्ट–वि० (सं०) पकड़कर खींचा हुआ; स्पृष्ट; विचारा हुआ; संबद्ध; जिसके विषयमें सलाह की या दी गयी हो ।

परायचा–पु० वह जो कटनीसोंसे टोपियाँ आदि तैयार कर वेचे; सिले हुए कपड़े वेचनेवाला ।

परायण–वि० (सं०) अति आसक्त; निरत; अवलंवित । पु० अति आसक्ति; उत्तम आश्रय; विष्णु; अंतिम लक्ष्य; सार ।

परायत्त–वि० (सं०) दूसरेपर आश्रित, पराधीन ।

पराया–वि० दूसरेका, विराना; अपनेसे भिन्न ।

परायु(स्)–पु० (सं०) व्रह्मा ।

परार*–वि० दूसरेका, पराया । पु० पयाल ।

परारध*–पु० दे० 'परार्द्ध' ।

परारब्ध, परालब्ध†–पु० दे० 'प्रारब्ध' ।

परारि–अ० (सं०) पूर्वतर वर्षमें, परियार साल ।

परारु–पु० (सं०) करेला ।

परारुक–पु० (सं०) चट्टान, पत्थर ।

परार्थ–पु० (सं०) दूसरेका प्रयोजन, दूसरेका कार्य; सवसे वड़ा लाभ । वि० जो दूसरेके निमित्त हो । **–वाद–पु०** (ऐलट्रूइज्म) दूसरोंकी सेवा या भलाईके लिए ही जीवित रहने या कार्य करनेका सिद्धांत ।

परार्द्ध, परार्ध–पु० (सं०) उत्तरार्द्ध; गणितमें सबसे वड़ी संख्या, एक शंख; व्रह्माकी आयुका आधा भाग ।

परार्द्ध्य–वि० (सं०) श्रेष्ठ; उत्तम । पु० असीम संख्या; सबसे वड़ी वस्तु आदि ।

पराव, परावा*–वि० पराया, दूसरेका ।

परावत–पु० (सं०) फालसा ।

परावन–पु० वहुतोंका एक साथ भागना, सामूहिक पलायन, भगदड़; * पर्वकाल–'पूरे पूरव पुन्यतें पर्‍यो परावन आज'–मतिराम ।

परावर–वि० (सं०) पहलेका और पीछेका; निकटका और दूरका; सर्वश्रेष्ठ; परंपरागत । पु० कारण और कार्य; विश्व; अखिलता ।

परावरा–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी विद्या (उपनि०) ।

परावर्त, परावर्तन–पु० (सं०) अदला-वदला, विनिमय; लौटना, प्रत्यावृत्ति; (रिफ्लेक्शन) किसी सतहसे प्रकाश किरणका टकराकर निश्चित नियमोंके अनुसार वापस जाना; फैसला उलटना; ग्रंथोंको दोहराना, उद्धरणी (जै०) । **–विंदु–पु०** दे० 'आवर्तविंदु' ('टर्निंग पाइंट') ।

परावर्तित–वि० (सं०) लौटाया हुआ ।

परावर्त्य–वि० (सं०) जो वदला, लौटाया या उलटा जा सके । –**व्यवहार**–पु० फैसला किये हुए मुकदमेपर फिर विचार करना, फैसलेका पुर्नविचार, अपील ।

परावसु–पु० (सं०) असुरोंका एक होता; एक गंधर्व ।

परावह–पु० (सं०) वायुके सात भेदोंमेंसे एक (अंतिम) ।

पराविद्ध–पु० (सं०) कुवेर ।

परावृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; लौटाया हुआ; वदला हुआ ।

परावृत्ति–स्त्री० (सं०) लौटना, पलटना; लौटाया जाना, पलटा जाना, फैसला किये हुए मुकदमेपर फिरसे विचार करना ।

परावेदी–स्त्री० (सं०) वृहती, भटकटैया ।

पराव्याध–पु० (सं०) हाथसे पत्थर फेंकनेपर जहाँतक जाय वह फासला ।

पराशर–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध गोत्र-प्रवर्तक ऋषि जो वसिष्ठके पौत्र थे (कृष्णद्वैपायन व्यास इन्हींके पुत्र थे); आयुर्वेदके एक आचार्य; एक नाग ।

पराशरी(रिन्)–पु० (सं०) भिक्षुक; सन्न्यासी ।

पराश्रय–पु० (सं०) दूसरेका सहारा या अवलंव । वि० दूसरेपर आश्रित ।

पराश्रया–स्त्री० (सं०) परगाछा ।

पराश्रयी–वि० दे० 'परोपजीवी', परजीवी (पैरेसाइट) ।

परासंग–पु० (सं०) दे० 'पराश्रय' ।

परास–पु० (सं०) दे० 'पराव्याध'; उतनी दूरी जितनी कोई चीज फेंकी जाने या चलायी जानेपर पार करती हो; उतना क्षेत्र या विस्तार जहाँतक किसी क्रियाका प्रभाव पड़ता हो (रेंज); टीन; † दे० 'पलाश' ।

परासन–पु० (सं०) वध, मारण ।

परासपीपल–पु० दे० 'पारिसपीपल' ।

परासी–स्त्री० एक रागिनी ।

परासु–वि० (सं०) मरा हुआ, मृत ।

परास्कंदी(दिन्)–पु० (सं०) चोर ।

परास्त–वि० (सं०) हराया हुआ; जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो; दवा हुआ; फेंका हुआ; अस्वीकृत ।

पराह–पु० (सं०) दूसरा दिन ।

पराहत–वि० (सं०) आक्रांत; खदेड़ा हुआ, हटाया हुआ; जोता हुआ; खंडित । पु० आघात ।

पराहति–स्त्री० (सं०) खंडन, विरोध ।

पराहृत–वि० (सं०) हटाया हुआ ।

पराह्ण–पु० (सं०) दोपहरके आगेका समय, दिनका तीसरा पहर, अपराह्ण ।

परिंदा–पु० (फा०) पक्षी, चिड़िया ।

परि–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो समंततोभाव (परिक्रमण), व्याप्ति (परिणत), दोषकथन (परिवाद), भूषण (परिष्कार), आश्लेष (परिष्वंग), पूजन (परिचर्या), आच्छादन (परिच्छद) आदि अर्थोंके द्योतनके लिए शब्दोंके पूर्व आता है ।

परिकंप–पु० (सं०) कँपकँपी; अत्यधिक भय ।

परिकथा–स्त्री० (सं०) अनुकथा, वह छोटी कथा जो बड़ी कथाके अंदर आयी हो ।

परिकर–पु० (सं०) परिवार; राजा आदिके साथ रहनेवाले लोग, परिजन, अनुचरवर्ग; कमरबंद; समारंभ, तैयारी; पलंग; समूह; विवेक; सहायक; सहकर्मी; एक अर्थालंकार जहाँ विशेप अभिप्रायसे युक्त विशेषणका प्रयोग हो; बीज, भावी घटनाओंका संकेतरूपमें सूचन (ना०); निर्णय, फैसला ।

परिकरमा*–स्त्री० दे० 'परिक्रमा' ।

परिकरांकुर–पु० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ विशेष अभिप्रायसे युक्त किसी विशेष्यका प्रयोग हो ।

परिकर्तन–पु० (सं०) काटना; गोलाकार काटना; शूल ।

परिकर्तिका–स्त्री० (सं०) शूल ।

परिकर्म(न्)–पु० (सं०) शरीरमें केसर आदि लगाना; पैर रँगना या उसमें महावर आदि लगाना; अंकोंका परस्पर योग, गुणन, भाग आदि (ग०); पूजन; सभारंभ; परिष्कार ।

परिकर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) सेवक, अनुचर, परिचायक ।

परिकर्मी(र्मिन्)–पु० (सं०) सहायक; सेवक, दास । वि० अलंकृत करनेवाला ।

परिकर्ष, परिकर्षण–पु० (सं०) वाहर खींच लाना या निकालना ।

परिकर्षित–वि० (सं०) वाहर खींचा हुआ; उत्पीडित ।

परिकलित–पु० (सं०) आकलन, अनुमान ।

परिकल्कन–पु० (सं०) धोखा, दगाबाजी ।

परिकल्पन–पु०, **परिकल्पना**–स्त्री० (सं०) मनमें गढ़ना; तर्कके लिए किसी वातकी कल्पना कर लेना; रचना, बनाना; आविष्कार करना; निर्णय, निश्चय करना; बाँटना; प्रस्तुत करना ।

परिकल्पित–वि० (सं०) मनमें गढ़ा हुआ; रचा हुआ; आविष्कृत; निर्णीत; विभक्त; मुहय्या किया हुआ ।

परिकांक्षित–पु० (सं०) भक्त; तपस्वी ।

परिकीर्ण–वि० (सं०) चारों ओर फैला हुआ, व्याप्त; भरा हुआ, परिवेष्टित ।

परिकीर्तन–पु० (सं०) घोषित करना; गुणोंका अधिक वर्णन; किसीकी वहुत अधिक प्रशंसा करना ।

परिकीर्तित–वि० (सं०) जिसका परिकीर्तन किया गया हो ।

परिकूट–पु० (सं०) नगरके द्वारपरकी खाई; एक नाग ।

परिकूल–पु० (सं०) तटवर्ती भूमि ।

परिकृश–वि० (सं०) वहुत पतला; क्षीण ।

परिकोप–पु० (सं०) अत्यधिक क्रोध, प्रचंड कोप ।

परिक्रम–पु० (सं०) चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा करना; (टूर) कार्य-निरीक्षण या जाँच आदिके लिए स्थान स्थानपर जाना, टहलना; क्रम; प्रवेश । –**सह**–पु० वकरा ।

परिक्रमण–पु० (सं०) दे० 'परिक्रम' ।

परिक्रमा–स्त्री० फेरी, प्रदक्षिणा; किसी मंदिर या तीर्थमें प्रदक्षिणा करनेके लिए वनवायी हुई जगह, फेरी देनेका मार्ग ।

परिक्रय–पु० (सं०) मजदूरी; भाड़ा; खरीद; कुछ मजदूरी तै करके नियत कालतक सेवामें रखना; ऐसी खरीद जिसमें मालके बदले माल दिया जाय, विनिमयरूप क्रय; द्रव्य देकर खरीदा हुआ माल ।

परिक्रांत–वि० (सं०) जिसपर गमन किया गया हो, रौंदा हुआ । पु० वह स्थान जिसपर गमन किया गया हो; डग; पदचिह्न ।

परिक्रिया–स्त्री० (सं०) घेरना; खाई आदिसे घेरना; एक दिनमें होनेवाला एक तरहका याग; ध्यान, मनोयोग ।

परिक्लांत–वि० (सं०) बहुत अधिक थका हुआ ।

परिक्लिष्ट–वि० (सं०) जिसे वहुत अधिक क्लेश पहुँचा हो; थका हुआ । पु० तकलीफ, क्लेश, परेशानी ।

परिक्लेद–पु० (सं०) आर्द्रता, नमी, गीलापन ।

परिक्वणन–वि० (सं०) उच्च स्वरयुक्त ।

परिक्षत–वि० (सं०) वहुत अधिक क्षतिग्रस्त; नष्ट ।

परिक्षय–पु० (सं०) बर्बादी, नाश, लोप ।

परिक्षा–स्त्री० (सं०) कीचड़; गीली मिट्टी; † दे० 'परीक्षा' ।

परिक्षाम–वि० (सं०) अति क्षीण; बहुत दुर्बल ।

परिक्षालन–पु० (सं०) अच्छी तरह धोना; धोनेके कामका पानी ।

परिक्षिप्त–वि० (सं०) इधर-उधर फेंका या फैलाया हुआ, प्रकीर्ण; घिरा हुआ; खाईसे घिरा हुआ; त्यागा हुआ, त्यक्त; चारों ओरसे घिरी हुई (सेना) ।

परिक्षीण–वि० (सं०) लुप्त; नष्ट, तवाह; अति क्षीण; जिसका दिवाला निकल गया हो; शक्तिहीन (सेना) ।

परिक्षीव–वि० (सं०) प्रमत्त, बहुत मतवाला ।

परिक्षेप–पु० (सं०) इधर उधर घूमना, टहलना; फैलाना, विकीर्ण करना; परित्याग; चारों ओरसे घेरना, आवेष्टित करना; आवेष्टित करनेवाली वस्तु; ज्ञानेंद्रिय ।

परिखन*–पु० देखभाल करनेवाला ।

परिखना*–स० क्रि० प्रतीक्षा करना; जाँच करना; गणना करना ।

परिखा–स्त्री० (सं०) नगर या दुर्गको दुर्गम बनानेके लिए उसके चारों ओर खोदी जानेवाली खाई ।

परिखात–पु० (सं०) परिखा; चारों ओर खाई खोदनेकी *क्रिया;*

हराई, वाह ।

परिखान–स्त्री० गाड़ीकी लीक ।

परिखिन्न–वि० (सं०) कष्टग्रस्त, पीडित, परेशान ।

परिखेद–पु० (सं०) बहुत अधिक थकावट; मुर्दनी ।

परिख्यात–वि० (सं०) बहुत अधिक प्रसिद्ध ।

परिख्याति–स्त्री० (सं०) विशेष प्रसिद्धि ।

परिगंतव्य–वि० (सं०) प्राप्त करने योग्य; जानने योग्य ।

परिगणन–पु० (सं०) पूरी गणना करना; विधि तथा निषेध-शास्त्रका विशेष रूपसे कथन ।

परिगणना–स्त्री० (शेड्यूल) दे० 'अनुसूची'; परिगणन ।

परिगणनीय–वि० (सं०) परिगणनके योग्य ।

परिगणित–वि० (सं०) जिसका परिगणन किया गया हो । –जातियाँ–स्त्री० (शेड्यूल्ड कास्ट्स) दे० 'अनुसूचित जातियाँ' ।

परिगण्य–वि० (सं०) दे० 'परिगणनीय' ।

परिगत–वि० (सं०) घिरा हुआ, आवेष्टित; पूर्णतः व्याप्त; जाना हुआ, ज्ञात; स्मृत; प्राप्त किया हुआ; मरा हुआ, मृत; विस्मृत; अभिभूत; ···से पीडित; बाधित । –वृत्त–पु० (सरकम्स्क्राइब्ड सरकिल) वह वृत्त जो त्रिभुजके तीनों शीर्षोंसे होकर गया हो ।

परिगन†–वि० बहुत, अधिक, प्रचुर; दे० 'परिगणन' ।

परिगम, परिगमन–पु० (सं०) घेरना, आवेष्टित करना; व्याप्त करना या होना; प्राप्त करना; जानना ।

परिगर्भिक–पु० (सं०) गर्भवतीका दूध पीनेसे होनेवाला एक बाल-रोग ।

परिगर्वित–वि० (सं०) जिसे बहुत अधिक गर्व हो, बहुत गर्वीला ।

परिगर्हण–पु० (सं०) अति निंदा ।

परिगलित–वि० (सं०) गिरा हुआ, च्युत; लुप्त; गला हुआ; तरल, पिघला हुआ ।

परिगह*–पु० आश्रित जन; संबंधी ।

परिगहन–वि० (सं०) अति गहन ।

परिगहना*–स० क्रि० ग्रहण करना, अंगीकार करना ।

परिगीत–वि० (सं०) जिसका बहुत अधिक वर्णन या कीर्तन किया गया हो ।

परिगीति–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

परिगुंठित–वि० (सं०) छिपाया हुआ, ढका हुआ ।

परिगुंडित–वि० (सं०) धूलसे ढका हुआ ।

परिगूढ–वि० (सं०) बहुत अधिक गूढ़, अत्यंत गुप्त ।

परिगुणन–पु० (सं०) संख्याको गुणा करके बहुत बढ़ा देना; किसी वस्तुको बढ़ा देना ।

परिगृद्ध–वि० (सं०) जिसे बहुत अधिक लालच हो ।

परिगृहीत–वि० (सं०) स्वीकृत; चारों ओरसे घेरा हुआ; पकड़ा हुआ; धारण किया हुआ; ग्रहण किया हुआ; संरक्षित; प्राप्त किया हुआ; अनुसृत ।

परिगृहीता–वि० स्त्री० (सं०) विवाहिता ।

परिगृहीता(तृ)–पु० (सं०) पति; सहायक; गोद लेनेवाला व्यक्ति ।

परिगृह्या–स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री ।

परिग्रह–पु० (सं०) लेना, स्वीकार करना; ग्रहण करना; चारों ओरसे घेरना, आवेष्टित करना; धारण करना; धन आदिका संचय; किसी दी हुई वस्तुको ग्रहण करना; किसी स्त्रीको भार्या-रूपमें ग्रहण करना; पत्नी, स्त्री; पति; घर; परिवार; अनुचर; सेनाका पिछला भाग; राहु द्वारा सूर्य या चंद्रमाका ग्रसा जाना; शपथ, कसम; मूल, आधार; विष्णु; जायदाद; स्वीकृति, मंजूरी; दावा; स्वागत-सत्कार; आतिथ्यसत्कार करनेवाला; आदर; सहायता; दमन; दंड; राज्य; संबंध; योग, संकलन; शाप ।

परिग्रहण–पु० (सं०) अच्छी तरह ग्रहण करना; पहनना, धारण करना ।

परिग्राम–पु० (सं०) गाँवके सामनेका भाग ।

परिग्राह–पु० (सं०) यज्ञकी वेदीके चारों ओर तीन रेखाएँ खींचना ।

परिग्राह्य–वि० (सं०) परिग्रहके योग्य; सद्व्यवहारके योग्य ।

परिघ–पु० (सं०) अर्गला; छड़; डंडा; रोक; बर्छा, भाला; लोहगदा; घड़ा; शीशेकी सुराही; मकान; वध, नाश करना; आघात करना; फाटक; सायं या प्रातःकाल सूर्यके सामने आनेवाले बादल; वह शिशु जिसकी जन्मके समय स्थिति बदल गयी हो; योगका एक भेद ।

परिघट्टन–पु० (सं०) चारों ओरसे रगड़ना; कलछी आदिसे चारों ओरसे मथना या चलाना ।

परिघट्टित–वि० (सं०) जिसका परिघट्टन किया गया हो ।

परिघर्म–पु० (सं०) एक विशेष प्रकारका यज्ञपात्र ।

परिघात–पु० (सं०) मार डालना; नष्ट करना; मार डालनेका अस्त्र; गदा; उल्लंघन करना ।

परिघातन–पु० (सं०) मार डालना; नष्ट कर देना; मार डालनेका अस्त्र ।

परिघाती(तिन्)–वि० (सं०) मार डालनेवाला; नष्ट करनेवाला; उल्लंघन करनेवाला (आज्ञा आदिका) ।

परिघृष्ट–वि० (सं०) अच्छी तरह घिसा हुआ ।

परिघृष्टिक–पु० (सं०) एक प्रकारका वानप्रस्थ ।

परिघोष–पु० (सं०) जोरकी आवाज; अनुचित बात; कटु शब्द; बादलका गर्जन ।

परिचना*–अ० क्रि० दे० 'परचना' । स० क्रि० परीक्षा लेना ।

परिचपल–वि० (सं०) अति चंचल, जो कभी स्थिर न रहे ।

परिचय–पु० (सं०) एकत्र करना; ढेर लगाना; चारों ओरसे इकट्ठा करना; चारों ओर जमा करना; अच्छी तरह जानना, पूरी जानकारी, जान-पहचान; अभ्यास । –करुणा–स्त्री० बढ़ता हुआ प्रेम या करुणा । –पत्र–पु० किसी व्यक्ति या अधिकारीका दिया हुआ वह पत्र जिसे कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति या अधिकारीको अपना परिचय देनेके लिए दिखलाता है ।

परिचर–पु० (सं०) भृत्य, सेवक, खिदमतगार; रथकी रक्षाके लिए नियुक्त सैनिक, रथरक्षक; अंगरक्षक; दंडनायक; आदर-सत्कार । वि० भ्रमणशील; चल; बहनशील ।

परिचरजा*–स्त्री० दे० 'परिचर्या' ।

परिचरण–पु० (सं०) सेवा, खिदमत; परिभ्रमण ।

परिचरणीय, परिचरितव्य–वि० (सं०) परिचरण करने योग्य ।

परिचरिता(तृ)–पु० (सं०) परिचर्या करनेवाला, सेवक, नौकर ।

परिचरी–स्त्री० (सं०) सेविका, दासी ।

परिचर्मण्य–पु० (सं०) चमड़ेका फीता ।

परिचर्या–स्त्री० (सं०) सेवा, खिदमत; रोगीकी सेवा, तीमारदारी ।

परिचायक–पु० (सं०) परिचय करानेवाला; जतानेवाला ।

परिचाय्य–पु० (सं०) यज्ञाग्नि; लगानमें वृद्धि करना, इजाफा लगाना ।

परिचार–पु० (सं०) सेवा, खिदमत; टहलने, घूमनेकी जगह; सेवक । –गाड़ी–स्त्री० (एंब्यूलेंस कार) घायल हुए या बीमार व्यक्तियोंको लाने-ले जानेवाली गाड़ी, अस्पताली गाड़ी ।

परिचारक, परिचारिक, परिचारी(रिन्)–पु० (सं०) सेवक, खिदमतगार; रोगीकी सेवा करनेवाला, तीमारदार; देवमंदिर आदिके कार्यकी देखभाल करनेवाला ।

परिचारण–पु० (सं०) सेवा; (सरक्यूलेशन) सूचनाओं, विधेयकों आदिका सदस्यों या अन्य लोगोंमें परिचारित किया जाना ।

परिचारणदल–पु० (एंब्यूलेंस कोर) दे० 'आहतोपचारी दल' ।

परिचारना*–स० क्रि० सेवा करना ।

परिचारिका–स्त्री० (सं०) सेविका, टहल करनेवाली ।

परिचारित–वि० जिसका परिचारण किया गया हो (सरक्यूलेटेड) । पु० (सं०) खेल, क्रीड़ा, मनोविनोद । –करना–स० क्रि० (टु सरक्यूलेट) कोई पत्र, विधेयक आदि लोगोंकी राय जाननेके लिए चारों तरफ वितरित करना या घुमाना, परिपत्रित करना ।

परिचार्य–वि० (सं०) सेवा करने योग्य, परिचर्याके योग्य ।

परिचालक–वि०, पु० (सं०) चारों ओर घुमानेवाला; चलानेवाला; हिलानेवाला । पु० (कंडक्टर) परिचालन, नियंत्रण आदिका काम करनेवाला; ट्राम (रथ्यायान), बस, ट्रेन आदिमें यात्रियोंकी देखरेखका भार सँभालनेवाला कर्मचारी । वि० ताप या विद्युत्को कणोंकी सहायतासे एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुँचानेवाला; (वह वस्तु) जो विद्युत्को अपनेमेंसे होकर चला

जाने दे । (बुरा परिचालक–दे० 'कुचालक'; अच्छा परिचालक –दे० 'सूचालक') ।

परिचालन–पु० (सं०) चारों ओरसे चलाना; हिलाना-डुलाना; चारों ओर घुमाना । (कंडक्शन) गर्मी या विजलीके फैलनेकी वह रीति जिसमें गर्मी या विजली एक कणसे दूसरे कणको मिलती है और कण स्वयं नहीं चलते, संवाहन ।

परिचालित–वि० (सं०) जिसका परिचालन किया गया हो ।

परिचिंतन–पु० (सं०) स्मरण करना; सोचना ।

परिचित–वि० (सं०) जिससे जान-पहचान हो, जिसका परिचय प्राप्त हो; एकत्र किया हुआ; ढेर लगाया हुआ; अभ्यस्त ।

परिचिति–स्त्री० (सं०) परिचय, जान-पहचान ।

परिचिह्नित–वि० (सं०) जिसपर हस्ताक्षर किया गया हो (स्मृ०) ।

परिचीर्ण–वि० (सं०) जिसकी सेवा की गयी हो, सेवित ।

परिचुंबन–पु० (सं०) अतिशय प्रेमसे चूमना ।

परिचुंबित–वि० (सं०) अत्यंत प्रेमसे चूमा हुआ ।

परिचेय–वि० (सं०) जान-पहचानके योग्य, जानने योग्य; एकत्र करने योग्य; खोज करने योग्य ।

परिचो*–पु० परिचय, जानकारी ।

परिच्छंद–पु० (सं०) साथमें चलनेवाले अनुचर आदि ।

परिच्छद–पु० (सं०) ढाँकनेकी वस्तु; ढाँकनेका कपड़ा आदि; आच्छादन; वस्त्र, पहनावा; राजाके साथ चलनेवाले अनुचर, सैनिक आदि; राजाके बाह्य उपकरण (छत्र, चमर आदि); यात्राके लिए आवश्यक सामान; माल, असबाब ।

परिच्छन्न–वि० (सं०) ढका हुआ, आवृत; परिच्छद अर्थात् अनुचर आदिसे युक्त; छिपाया हुआ ।

परिच्छा*–स्त्री० दे० 'परीक्षा' ।

परिच्छित्ति–स्त्री० (सं०) अवधि या व्याप्तिका निर्धारण, सीमा, अवधि; अवधारण; विभाजन; परिमिति; सटीक परिभाषा ।

परिच्छिन्न–वि० (सं०) जिसकी सीमा या व्याप्ति निर्धारित की गयी हो; जिसका चारों ओरका कुछ अंश छाँट दिया गया हो; अलग किया हुआ, विभक्त; परिमित; उपचारित ।

परिच्छेद–पु० (सं०) काट-छाँटकर अलग करना; अवधि, सीमा; अवधारण; निर्णय, निश्चय (जैसे सत्य और असत्यका); विभाजन; परिभाषा; सटीक परिभाषा; उन कई विभागोंमेंसे कोई एक जिनमें कोई ग्रंथ विषयके अनुसार विभक्त रहता है; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयकी चर्चा हो; उपचार; माप ।

परिच्छेदक–पु० (सं०) अवधि या सीमा निर्धारित करनेवाला; काँट-छाँटकर अलग करनेवाला; अवधारण करनेवाला; विभाजन करनेवाला; परिभाषा बनानेवाला; परिच्छेदकर्ता; सीमा, अवधि ।

परिच्छेदन–पु० (सं०) अवधारण, विवेक करना; विभाजन; पुस्तकका अध्याय या विभाग ।

परिच्छेदातीत–वि० (सं०) जो सभी परिभाषाओंके परे हो; जिसकी सीमा, इयत्ता आदिका निर्धारण न हो सके ।

परिच्छेद्य–वि० (सं०) परिच्छेदके योग्य; परिमेय; अवधार्य ।

परिच्युत–वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित; भ्रष्ट ।

परिच्युति–स्त्री० (सं०) पतन; भ्रंश ।

परिछन–पु० दे० 'परछन' ।

परिछाहीं–स्त्री० दे० 'परछाईं' ।

परिजंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

परिजटन*–पु० दे० 'पर्यटन' ।

परिजन–पु० (सं०) भरण-पोषणके लिए आश्रित लोग, स्त्री, पुत्र, दास आदि; वे लोग जिनका कोई प्रतिपालन करे; राजा आदिके साथ-साथ चलनेवाले लोग, अनुचरगण ।

परिजनता–स्त्री० (सं०) परिजन होनेका भाव; सेवकत्व; अधीनता ।

परिजन्मा (न्मन्)–पु० (सं०) चंद्रमा; अग्नि ।

परिजपित, परिजप्त–वि० (सं०) मंद स्वरमें उच्चरित (प्रार्थना आदि) ।

परिजय्य–वि० (सं०) जो चारों ओरसे जीता जा सके, जो हर तरहसे जीता जा सके ।

परिजल्पित–पु० (सं०) सेवकका अपने स्वामीकी निर्दयता, शठता आदिके वर्णन द्वारा अव्यक्त रूपसे अपना कौशल, उत्कर्ष आदि जताना; उपेक्षित या अवमानित नायिकाका व्यंग्यपूर्ण शब्दोंमें नायककी निर्दयता, शठता आदिका वर्णन करना ।

परिजात–वि० (सं०)··से उत्पन्न; पूर्णतः विकसित ।

परिजीवी–वि० (सरवाइवर) दे० 'अतिजीवी' ।

परिज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) अच्छी तरह जानना; पहचानना; बातचीत, कथोपकथन ।

परिज्ञा–स्त्री० (सं०) दे० 'परिज्ञान' ।

परिज्ञात–वि० (सं०) भली भाँति जाना हुआ; पहचाना हुआ ।

परिज्ञाता (तृ)–वि०, पु० (सं०) अच्छी तरह जाननेवाला; पहचाननेवाला ।

परिज्ञान–पु० (सं०) पूरी जानकारी, पूरा ज्ञान; सूक्ष्म ज्ञान; पहचान ।

परिज्वा (ज्वन्)–पु० (सं०) चंद्रमा; अग्नि; सेवक ।

परिडीन–पु० (सं०) पक्षीका गोलाईमें उड़ना ।

परिणत–वि० (सं०) चारों ओरसे झुका हुआ; बहुत झुका हुआ, अत्यंत नत; परिणाम या रूपांतरको प्राप्त, अन्य रूपमें बदला हुआ; पका हुआ, पक्का; जिसकी पूरी वृद्धि हो चुकी हो; प्रौढ़; पुष्ट, परिपक्व; पचा हुआ; ढलता हुआ (वय); समाप्त । पु० वह हाथी जो दंत प्रहारके लिए एक ओर झुका हो ।

परिणति–स्त्री० (सं०) चारों ओरसे झुका होना; पूरा झुकाव; अत्यंत नति; रूपांतरको प्राप्त होना; पकना; पक्व होना; पूर्ण वृद्धि; प्रौढ़ होना; परिणाम; परिपाक, पचना; अंत, अवसान ।

परिणद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ, मढ़ा हुआ; चौड़ा, विशाल ।

परिणमन–पु० (सं०) रूपांतर होना; परिणत होनेकी क्रिया; परिणामको प्राप्त होना ।

परिणमयिता (तृ)–पु० (सं०) परिणत करनेवाला, परिणामको प्राप्त करानेवाला ।

परिणय–पु० (सं०) चारों ओर (विशेषकर विवाहमंडपमें स्थापित अग्निके चारों ओर) ले जाना; विवाह ।

परिणयन–पु० (सं०) ब्याहना, विवाहकी क्रिया ।

परिणहन–पु० (सं०) कसना, लपेटना ।

परिणाम–पु० (सं०) एक अवस्थासे दूसरी अवस्थाको प्राप्त होना, रूपांतर होना, बदलकर दूसरे रूप, आकार, गुण आदिको प्राप्त होना; प्रकृतिका अन्यथा भाव (सां०); चित्त, इंद्रिय आदिका किसी धर्म या संस्कारको प्राप्त होना (यो०); पचना, परिपाक; पूर्ण वृद्धि, पूरा विकास; पकाव, पक्का होना; आयुका ढलना, वृद्ध होना; समय या अवधिका समाप्त होना; प्रयत्न, संघर्ष आदिके बाद प्राप्त होनेवाला फल, नतीजा; निष्कर्ष; एक अर्थालंकार जहाँ उपमान उपमेयके साथ मिलकर कोई क्रिया करे । **–दर्शी (र्शिन्)**–वि० किसी कार्यके भले या बुरे फलको जाननेवाला, दूरदर्शी । **–दृष्टि**–स्त्री० किसी कार्यके भले या बुरे परिणामको जान लेनेकी शक्ति या बुद्धि, दूरदर्शिता । वि० दूरदर्शी । **–पथ्य**–वि० जिसका परिणाम अच्छा हो, अच्छा फल देनेवाला । **–वाद**–पु० यह सिद्धांत कि कारणमें कार्य अव्यक्त रूपमें विद्यमान रहता है और इस प्रकार अव्यक्त कार्य ही कारण है तथा व्यक्त कारण ही कार्य । **–वादी (दिन्)**–पु० परिणामवादको माननेवाला । **–शूल**–पु० भोजनके पचते समय पेटमें उठनेवाला शूल ।

परिणामक–वि० (सं०) परिणाम या रूपांतर लानेवाला ।

परिणामन–पु० (सं०) परिणामको प्राप्त कराना; परिणत करना; वर्द्धित करना; संघकी वस्तुओंको अपने काममें लाना (बौ०) ।

परिणामिक–वि० (सं०) जो शीघ्र या आसानीसे पच जाय, सुपाच्य ।

परिणामित्र–पु० ए० सी० विद्युत्धाराकी वोल्टता घटाने या बढ़ानेका यंत्र (ट्रांसफार्मर); एक तरहकी विद्युत्धाराको दूसरे तरहकी धारामें बदलनेका यंत्र ।

परिणामी (मिन्)–वि० (सं०) जो परिणामको प्राप्त होता रहे,

परिणामको प्राप्त होते रहना जिसका स्वभाव हो; (रिजल्टैंट) जो दो या दोसे अधिक कारणोंका संयुक्त परिणाम हो, जो किसीके परिणामस्वरूप उत्पन्न हो या सामने आये।

परिणाय–पु० (सं०) चारों ओर या इधर-उधर ले जाना; शतरंज, चौसर आदिकी गोटोंको चारों ओर चलाना; विवाह।

परिणायक–पु० (सं०) नेता; विवाह करनेवाला, पति, भर्ता। –**–रत्न**–पु० दे० 'परिणीत रत्न'।

परिणाह–पु० (सं०) फैलाव, विस्तार; आभोग; विशालता; पनहा।

परिणाहवान्(वत्)–वि०, पु० (सं०) विस्तारवाला, विस्तृत।

परिणाही(हिन्)–वि० (सं०) दे० 'परिणाहवान्'।

परिंणिसक–पु० (सं०) चूमनेवाला; खानेवाला।

परिंणिसा–स्त्री० (सं०) चूमना, चुंबन; खाना।

परिणीत–वि० (सं०) विवाहित; पूरा किया हुआ, समाप्त। –**रत्न**–पु० चक्रवर्ती राजाओंके सात प्रकारके कोषोंमेंसे एक (वौ०)।

परिणीता–वि०, स्त्री० (सं०) विवाहिता (स्त्री)।

परिणेतव्या, परिणेया–वि० स्त्री० (सं०) ब्याहने योग्य (लड़की)।

परिणेता(तृ)–पु० (सं०) विवाह करनेवाला व्यक्ति; पति, स्वामी।

परिणेय–वि० (सं०) जो चारों ओर घुमाया जाय।

परिणेया–वि०, स्त्री० (सं०) जो चारों ओर घुमायी जाय (वधू); जो विवाहके योग्य हो।

परितः(तस्)–अ० (सं०) चारों ओर; चारों ओरसे।

परितच्छ*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष'। अ० देखते-देखते; आंखोंके सामने।

परितप्त–वि० (सं०) वहुत तपा हुआ, वहुत गरम; वहुत अधिक दुःखित, संतप्त।

परितप्ति–स्त्री० (सं०) परितप्त होनेकी क्रिया या भाव; अत्यंत ताप; अत्यधिक दुःख, संताप।

परितर्कण–पु० (सं०) विशेष रूपसे विचार करना।

परितर्पण–पु० (सं०) संतुष्ट करना, खुश करना।

परिताप–पु० (सं०) अत्यधिक ताप, वहुत गरमी, अति उष्णता; अन्यधिक दुःख; संताप; शोक; भय; कंप, कँपकँपी; एक नरक।

परितापी(पिन्)–वि० (सं०) अति उष्ण, वहुत गरम, जलता हुआ-सा; जिसे परिताप हो; संतापयुक्त; वहुत अधिक क्लेश पहुँचानेवाला, अति दुःखकर। पु० सतानेवाला, दुःख देनेवाला।

परितिक्त–वि० (सं०) अति तिक्त, बहुत तीता।

परितुष्ट–वि० (सं०) जिसे पूरा संतोष हो, अच्छी तरह तुष्ट, संतुष्ट।

परितुष्टि–स्त्री० (सं०) परितुष्ट होनेका भाव, परितोष, संतोष; प्रसन्नता।

परितृप्त–वि० (सं०) पूरी तरह अघाया हुआ; संतुष्ट।

परितृप्ति–स्त्री० (सं०) परितृप्त होनेका भाव, पूर्ण तुष्टि।

परितोष–पु० (सं०) संतोष; तृप्ति; किसी इच्छाकी पूर्तिसे होनेवाली प्रसन्नता।

परितोषक–पु० परितुष्ट करनेवाला।

परितोषण–पु० (सं०) परितुष्ट करनेका कार्य; (ग्रैटिफिकेशन) दे० 'अनुतोषण'।

परितोषी(षिन्)–वि० (सं०) परितोषवाला, परितोषयुक्त, संतोषी।

परितोस*–पु० दे० 'परितोष'।

परित्यक्त–वि० (सं०) पूरे तौरसे त्यागा हुआ, एकदम छोड़ा हुआ; छोड़ा, चलाया हुआ (जैसे वाण)। (स्त्री० 'परित्यक्ता'।)

परित्यक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) परित्याग करनेवाला।

परित्यजन–पु० (सं०) परित्याग करनेकी क्रिया, त्यागना; (ऍवैंडनमेंट) पूर्णतः छोड़ देना, परित्याग।

परित्याग–पु० (सं०) पूरी तरह त्याग देना, एकदम छोड़ देना, पूर्ण त्याग; यज्ञ; जुदाई; उदारता।

परित्यागना*–स० क्रि० परित्याग करना।

परित्यागी(गिन्)–वि० (सं०) जो परित्याग करे, पूरी तरह छोड़ देनेवाला।

परित्याजन–पु० (सं०) परित्याग कराना, छोड़वाना।

परित्याज्य–वि० (सं०) परित्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य।

परित्रस्त–वि० (सं०) अति त्रस्त, वहुत डरा हुआ।

परित्राण–पु० (सं०) पूर्ण रक्षा, पूरा बचाव; अनिष्टमें प्रवृत्त व्यक्तिका निवारण; आत्मरक्षा; आश्रय, पनाह; वाल; मूँछ।

परित्रात–वि० (सं०) जिसका परित्राण किया गया हो।

परित्रातव्य–वि० (सं०) परित्राण करने योग्य।

परित्राता(तृ)–वि०, पु० (सं०) परित्राण करनेवाला।

परित्रास–पु० (सं०) अत्यधिक त्रास, भारी भय।

परिदंशित–वि० (सं०) जिसने कवच धारण किया हो, कवचावृत।

परिदग्ध–वि० (सं०) जला, झुलसा हुआ।

परिदत्तपूंजी–स्त्री० (पेड अप कैपिटल) प्रार्थित पूंजीका वह भाग जो संचालकों द्वारा माँगे जानेपर हिस्सेदारों द्वारा जमा कर दिया गया हो; चुकता-पूंजी।

परिदर–पु० (सं०) मसूड़ोंका एक रोग जिसमें मसूड़े दाँतोंसे अलग हो जाते और खून तथा मवाद निकलता है (पायरिया)।

परिदर्शन–पु० (सं०) सम्यक् दर्शन, सब ओरसे, अच्छी तरह देखना।

परिदष्ट–वि० (सं०) वुरी तरह काट खाया हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

परिदहन–पु० (सं०) जलाना, झुलसना।

परिदान–पु० (सं०) अदला-वदला, विनिमय; धरोहर लौटाना।

परिदाय–पु० (सं०) सुगंधि, खुशबू।

परिदायी(यिन्)–पु० (सं०) वह जो अपनी लड़कीका विवाह ऐसे व्यक्तिसे करे जिसका वड़ा भाई व्याहा न हो।

परिदाह–पु० (सं०) अति दाह या ताप, बहुत अधिक जलन; अत्यधिक मानसिक दुःख, तीव्र मनस्ताप।

परिदिग्ध–वि० (सं०) (किसी वस्तुसे) वहुत अधिक ढका हुआ, जिसपर कोई वस्तु वहुत अधिक मात्रामें लगी या पुती हुई हो। पु० वह मांसखंड जिसपर अन्नकी तह चढ़ायी गयी हो।

परिदीन–वि० (सं०) जिसे वहुत अधिक मानसिक दुःख हो, तीव्र आंतरिक दुःखसे पीड़ित। **–मानस,–सत्त्व**–वि० जिसे तीव्र मनोव्यथा हो, अति खिन्न।

परिदृढ–वि० (सं०) अति दृढ़।

परिदेव, परिदेवन–पु० (सं०) वहुत अधिक रोना-धोना, विलखना, विलाप करना।

परिदेवना–स्त्री० दे० 'परिदेवन'; (कंप्लेंट) वेदना या हानि पहुँचाये जानेके विरोधमें किया गया अभ्यावेदन, शिकायतनामा, परिवाद, फरियाद।

परिद्रष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) परिदर्शन करनेवाला।

परिद्वीप–पु० (सं०) गरुड़का एक पुत्र।

परिध–पु० दे० 'परिधि'।

परिधन*–पु० दे० 'परिधान'।

परिधर्षण–पु० (सं०) आक्रमण; हानि पहुँचाना।

परिधान–पु० (सं०) चारों ओरसे घेरना या आवृत करना; नाभिसे नीचेका पहनावा; वस्त्र; पहननेका कपड़ा; वस्त्र आदि धारण करना। **–कक्ष**–पु० (ड्रेसिंग रूम) कपड़े पहननेका कमरा; दे० 'परिधानगृह'।

परिधानीय–वि० (सं०) पहनने योग्य।

परिधापन–पु० (सं०) पहनाना।

परिधाय–पु० (सं०) अनुचरगण; दल-बल; नितंवदेश; मध्यभाग; पानी जमा करने या होनेकी जगह, जलस्थान।

परिधायक–पु० (सं०) चारों ओरसे घेरने या आवृत करनेवाला; घेरा; वेड़ा; लकड़ी आदिका वाड़ा।

परिधारण–पु० (सं०) सहन करना।

परिधावन–पु० (सं०) दौड़ना, भागना; किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़ना।

परिधावी(विन्)–वि० (सं०) दौड़नेवाला, भागनेवाला; किसीके चारों ओर या पीछे-पीछे दौड़नेवाला; चारों ओर वहनेवाला। पु० छियालीसवाँ संवत्सर।

परिधि–स्त्री० (सं०) लकड़ी आदिका घेरा या वाड़ा; मेघकी समीपताके कारण सूर्य या चंद्रके चारों ओर वन जानेवाला मंडल, परिवेष; प्रकाशमंडल; वृत्त वनानेवाली गोल रेखा (सरकम्फरेंस); पहियेका घेरा; होमाग्निके तीन ओर रखी जानेवाली

तीन लकड़ियाँ; क्षितिज; आवरण; पहनावा; उस वृक्षकी कोई शाखा जिसमें बलिपशु बाँधा जाता है; परिक्रमा करनेका नियत मार्ग। पु० समुद्र (जो पृथ्वीको घेरे हुए है)। **–पतिखेचर**–पु० शिव। **–स्थ**–पु० परिचारक; रथीकी रक्षाके लिए रथके चारों ओर नियुक्त सैनिक।

परिधीर–वि० (सं०) अति गंभीर (स्वर, शब्द)।

परिधूपित–वि० (सं०) पूर्ण रूपसे वासित।

परिधूमन–पु० (सं०) डकार; एक रोग जिसमें मतली होती है।

परिधूसर–वि० (सं०) धूलसे भरा हुआ, जिसमें खूब धूल लगी हो।

परिधेय–वि० (सं०) पहनने योग्य। पु० नीचे या भीतर पहननेका एक कपड़ा।

परिध्वंस–पु० (सं०) बर्बादी, विनाश; जातिच्युति; विफलता।

परिनंदन–वि० (सं०) संतोषप्रद। पु० संतोष देना, संतुष्ट करना।

परिनय*–पु० दे० 'परिणय'।

परिनाम*–पु० दे० 'परिणाम'।

परिनिर्णय–पु० (अवार्ड) अंतिम निर्णय, विशेषतः पंच या पंचों द्वारा किया गया, पंचाट।

परिनिर्वपण–पु० (सं०) बाँटना, देना।

परिनिर्वाण–पु० (सं०) पूर्ण निर्वाण, मोक्ष।

परिनिवृत्ति–स्त्री० (सं०) मुक्ति, मोक्ष।

परिनिष्ठा–स्त्री० (सं०) चरम सीमा; ज्ञानकी पूर्णता; पर्यवसान।

परिनिष्ठित–वि० (सं०) पूर्णतया निपुण।

परिनैष्ठिक–वि० (सं०) सर्वोच्च, चोटीका।

परिन्यास–पु० (सं०) किसी वाक्यका अर्थ पूरा करना; कथानककी मूलभूत घटना (बीज)का संकेत द्वारा सूचन (ना०)।

परिपंच*–पु० दे० 'प्रपंच'।

परिपंथ, परिपंथक–पु० (सं०) मार्ग रोकनेवाला, शत्रु।

परिपंथी(थिन्)–वि० (सं०) मार्ग रोकनेवाला। पु० शत्रु; लुटेरा, डाकू।

परिपक्व–वि० (सं०) पूर्णतया पक्व, अच्छी तरह पका हुआ; अच्छी तरह पचा हुआ; सम्यक् जीर्ण; जिसका पूरा विकास हो चुका हो, प्रौढ़, जिसमें कच्चापन न हो (बुद्धि, ज्ञान); पूर्णतया कुशल; परिपाकको प्राप्त (रस)।

परिपक्वता–स्त्री० (सं०) परिपक्व होनेका भाव।

परिपक्वावस्था–स्त्री० (सं०) परिपक्व होनेकी दशा।

परिपचित–वि० (सं०) पकाया हुआ।

परिपण, परिपन–पु० (सं०) मूल धन, पूंजी।

परिपणन–पु० (सं०) बाजी लगाना; वादा करना।

परिपणित–वि० (सं०) वादा किया हुआ; जिसके लिए शर्त की गयी हो, जिसकी बाजी लगायी गयी हो। **–काल-संधि**–स्त्री० वह संधि जिसमें यह प्रतिज्ञा की गयी हो कि कौन कितने समयतक लड़ेगा। **–देशसंधि**–स्त्री० वह संधि जिसमें यह नियत किया गया हो कि कौन पक्ष किस देशपर चढ़ाई करेगा। **–संधि**–स्त्री० वह संधि जिसमें कुछ शर्तें स्वीकार की गयी हों।

परिपणितार्थसंधि–स्त्री० (सं०) वह संधि जिसमें यह तै पाया हो कि कौन कितना कार्य करे।

परिपतन–पु० (सं०) चारों ओर उड़ना।

परिपत्र–पु० (सरक्यूलर) कुछ निश्चित बातों, सुझाव आदिकी सूचना देनेके लिए चारों तरफ, विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों आदिके पास, भेजा जानेवाला पत्र, गश्ती चिट्ठी।

परिपर–पु० (सं०) चक्करदार रास्ता।

परिपवन–पु० (सं०) ओसाना; ओसानेका सूप।

परिपांडिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) बहुत अधिक सफेदी या पीलापन।

परिपांडु–वि० (सं०) बहुत अधिक सफेद या पीला।

परिपांडुर–वि० (सं०) बहुत सफेद, भास्वर शुक्ल।

परिपाक–पु० (सं०) सम्यक् पाक; अच्छी तरह पकना या पकाया जाना; अच्छी तरह पचना या पचाया जाना; पूर्ण विकास, प्रौढता-को प्राप्त होना; परिणति; परिणाम; पक्का होना (बुद्धि, अनुभव, ज्ञान आदि); कुशलता, निपुणता। **–तिथि**–स्त्री० (डेट ऑफ मैच्यूरिटी) किसी हुंडी या बीमाकी पॉलिसीमें निर्धारित अवधि (मीआद) समाप्त होनेकी तिथि।

परिपाकिनी–स्त्री० (सं०) निसोथ।

परिपाचन–वि० (सं०) पकानेवाला। पु० परिपक्व बनाना।

परिपाचित–वि० (सं०) अच्छी तरह पकाया हुआ, भूना हुआ।

परिपाटल–वि० (सं०) पीलापन लिये लाल रंगका।

परिपाटलित–वि० (सं०) जो लाल-पीला रँगा गया हो, जो रँगकर पीलापन लिये लाल रंगका बना दिया गया हो।

परिपाटि, परिपाटी–स्त्री० (सं०) चला आता हुआ क्रम, अनुक्रम, आनुपूर्वी, सिलसिला; रीति, ढंग; अंकगणित; प्रथा, चाल (हिं०)।

परिपाठ–पु० (सं०) विस्तारके साथ उल्लेख या पाठ करना।

परिपार्श्व–पु० (सं०) बगल। वि० पासका, निकटवर्ती। **–चर**–वि० बगलमें या पास-पास चलनेवाला। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० बगलमें या समीप रहनेवाला।

परिपालक–पु० (सं०) परिपालन करनेवाला।

परिपालन–पु० (सं०) रक्षा करना, रक्षण; पालन-पोषण करना, पोषण।

परिपालना–स्त्री० (सं०) रक्षण, बचाव।

परिपालनीय–वि० (सं०) परिपालन करने योग्य।

परिपालयिता(तृ)–पु० (सं०) परिपालन करनेवाला।

परिपालयिषा–स्त्री० (सं०) परिपालन करनेकी इच्छा।

परिपाल्य–वि० (सं०) परिपालनके योग्य।

परिपिंग–वि० (सं०) अति पिंग, ललाई लिये भूरा।

परिपिंजर–वि० (सं०) हलके लाल-भूरे रंगका।

परिपिच्छ–पु० (सं०) मोरकी पूंछसे तैयार किया जानेवाला एक प्राचीन आभूषण।

परिपिष्टक–पु० (सं०) सीसा।

परिपीडन–पु० (सं०) बहुत पीड़ा देना; पेरना, बहुत दबाना; अनिष्ट करना।

परिपीडित–वि० (सं०) अति पीड़ित।

परिपीवर–वि० (सं०) अति पीवर, बहुत मोटा।

परिपुटन–पु० (सं०) संपुटित करना; छिलका या चमड़ा अलग करना या होना।

परिपुष्ट–वि० (सं०) जिसका पोषण अच्छी तरह किया गया हो, सम्यक् पोषित; अति पुष्ट, पूर्ण रूपसे पुष्ट।

परिपूजन–पु० (सं०) सम्यक् पूजन।

परिपूजा–स्त्री० (सं०) सम्यक् पूजा।

परिपूजित–वि० (सं०) अच्छी तरह पूजित, जिसका सम्यक् पूजन किया गया हो।

परिपूत–वि० (सं०) पूर्णतया शुद्ध किया हुआ; अति पवित्र; सूप आदिसे अच्छी तरह साफ किया हुआ (जैसे परिपूत धान्य)।

परिपूरक–वि० (सं०) परिपूर्ण करनेवाला; समृद्ध या पूर्णतया संपन्न बनानेवाला।

परिपूरण–पु० (सं०) परिपूर्ण करना; भर देना।

परिपूरणीय–वि० (सं०) परिपूर्ण करने योग्य।

परिपूरन*–वि० दे० 'परिपूर्ण'।

परिपूरित–वि० (सं०) परिपूर्ण किया हुआ।

परिपूर्ण–वि० (सं०) अच्छी तरह भरा हुआ, खूब भरा हुआ; पूरा किया हुआ; संतुष्ट। **–चंद्रविमलप्रभ**–पु० एक तरहकी समाधि।

परिपूर्णेंदु–पु० (सं०) पूरा चाँद, सोलहों कलाओंसे युक्त चंद्रमा।

परिपूर्ति–स्त्री० (सं०) सम्यक् पूर्ति।

परिपृच्छ–पु० (सं०) प्रश्न।

परिपृच्छक–वि०, पु० (सं०) प्रश्न करनेवाला; पूछनेवाला; जिज्ञासु।

परिपृच्छनिका–स्त्री० (सं०) वाद-विवादका विषय।

परिपृच्छा–स्त्री० (सं०) प्रश्न; जिज्ञासा; पूछना। (इनक्वाइरी) कोई बात जानने या किसी घटना आदिका पता लगानेके लिए की जानेवाली पूछताछ, परिप्रश्न। **–गृह**–पु० (इनक्वाइरी ऑफिस) पूछताछ करने, पता लगानेका दफ्तर।

परिपेलव–वि० (सं०) अत्यंत कोमल; सुकुमार। पु० एक सुगंधित

घास ।

परिपोट, परिपोटक–पु० (सं०) कानका एक रोग ।

परिपोटन–पु० (सं०) छिलका या चमड़ा अलग होना ।

परिपोष–पु० (सं०) सम्यक् पुष्टि; सम्यक् पोषण ।

परिपोषण–पु० (सं०) परिपुष्ट करना; वृद्धि करना ।

परिप्रश्न–पु० (सं०) प्रश्न; जिज्ञासा; युक्तायुक्तताका प्रश्न । (इनक्वाइरी) दे० 'परिपृच्छा' ।

परिप्राप्ति–स्त्री० (सं०) मिलना, प्राप्त होना ।

परिप्रेक्ष्य–पु० (सं०) दृश्यों, वस्तुओं, व्यक्तियों आदिका ऐसा चित्रण जो चाक्षुष दृश्यके अनुरूप हो; वस्तुओं, दृश्यों आदिकी दूरी आदिका ठीक ठीक अनुपात दिखलानेवाला चित्र; साहित्यमें किसी वस्तु, पदार्थ, मत, मूल्य आदिको देखनेका दृष्टिकोण ।

परिप्रेषण–पु० (सं०) (चारो ओर) भेजना; त्यागना; निकाल बाहर करना ।

परिप्रेषित–वि० (सं०) भेजा हुआ; त्यागा हुआ; निर्वासित ।

परिप्रेष्य–वि० (सं०) भेजने योग्य । पु० भृत्य, नौकर ।

परिप्लव–पु० (सं०) तैरना; नौका, पोत; बाढ़; आप्लावित होना; पीड़न । वि० हिलता हुआ, चंचल, अस्थिर; तिरता हुआ ।

परिप्लावित–वि० (सं०) दे० 'परिप्लुत' ।

परिप्लुत–वि० (सं०) जल आदिसे आर्द्र या सिक्त, सराबोर; जलसे आप्लावित, बाढ़के पानीसे व्याप्त; अभिभूत । पु० छलाँग ।

परिप्लुता–स्त्री० (सं०) मदिरा; मैथुन-वेदनावती योनि ।

परिप्लुष्ट–वि० (सं०) जला हुआ; जलाया हुआ ।

परिप्लोष–पु० (सं०) जलना; जलाना; आंतरिक ताप ।

परिफुल्ल–वि० (सं०) दे० 'प्रफुल्ल' ।

परिबंधन–पु० (सं०) जकड़कर बाँधना ।

परिबर्ह–पु० (सं०) दे० 'परिवर्ह' ।

परिबर्हण–पु० (सं०) दे० 'परिवर्हण' ।

परिबाधा–स्त्री० (सं०) कष्ट, तकलीफ; श्रम, आयास ।

परिबृंहण–पु० (सं०) अभ्युदय; वर्धन, बढ़ाना; पूरक ग्रंथ ।

परिबृंहित–वि० (सं०) बढ़ाया हुआ, वर्धित; वृद्धिशील; ··से युक्त । पु० हाथीकी चिग्घाड़ ।

परिबोध–पु० (सं०) ज्ञान ।

परिबोधन–पु०, **परिबोधना**–स्त्री० (सं०) ठीकसे बोध कराना; चेतावनी ।

परिभंग–पु० (सं०) टुकड़े-टुकड़े होना या करना ।

परिभक्षण–पु० (सं०) चट कर जाना ।

परिभर्त्सन–पु० (सं०) डाँटना-फटकारना, धमकाना ।

परिभव–पु० (सं०) अनादर, तिरस्कार; पराजय । –पद–पु० हेय वस्तु । –विधि–स्त्री० बेकदरी, तिरस्कार ।

परिभवन–पु० (सं०) अनादर करना, तिरस्कार करना ।

परिभवनीय–वि० (सं०) अनादर करने योग्य; जो हार जानेवाला हो ।

परिभवी(विन्)–वि० (सं०) अनादर या तिरस्कार करनेवाला ।

परिभाव–पु० (सं०) अनादर, तिरस्कार ।

परिभावन–पु० (सं०) संयोग, मिलना; विचार करना, मनन करना ।

परिभावना–स्त्री० (सं०) विचार करना, विचारना; चिंतन ।

परिभावित–वि० (सं०) संयुक्त; व्याप्त; विचारित ।

परिभावी(विन्)–वि० (सं०) अनादर या तिरस्कार करनेवाला ।

परिभावुक–वि० (सं०) अवज्ञा करनेवाला ।

परिभाव्यधन–पु० (कॉशन मनी) अच्छा आचरण आदि बनाये रखनेके लिए जमानतके रूपमें पहलेसे जमा किया गया धन, अवधान द्रव्य ।

परिभाषण–पु० (सं०) बातचीत, वार्तालाप; निंदापूर्वक दुर्वचन कहना, फटकार; नियम ।

परिभाषा–स्त्री० (सं०) किसीका ऐसा नपा-तुला परिचय जिससे उसके स्वरूप, गुण, वैशिष्ट्य आदिका यथार्थ ज्ञान हो जाय, लक्षण; किसी शास्त्र, कला या विद्याके क्षेत्रमें विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाला शब्द या संज्ञा; अपने प्रयोगके लिए शास्त्रकारों द्वारा रची हुई विशिष्ट संज्ञा; परिभाषाका शाब्दिक रूप, परिभाषाकी शब्दावली; बातचीत, आलाप; व्याख्या; निंदा ।

परिभाषित–वि० (सं०) स्पष्ट रूपसे कथित, समझाकर कहा हुआ, व्याख्यात; (डिफाइंड) जिसकी परिभाषा की गयी हो ।

परिभाषी(षिन्)–वि० (सं०) बोलनेवाला, कहनेवाला ।

परिभाष्य–वि० (सं०) कथनके योग्य ।

परिभिन्न–वि० (सं०) विदीर्ण; क्षत; जिसका आकार विकृत हो गया हो ।

परिभुक्त–वि० (सं०) जो भोगा जा चुका हो, जो काममें लाया जा चुका हो; खाया हुआ; अधिकारमें किया हुआ ।

परिभुग्न–वि० (सं०) झुका हुआ, टेढ़ा ।

परिभू–वि० (सं०) चारों ओरसे घेरने या आच्छादित करनेवाला; आवेष्टित करनेवाला; व्याप्त करनेवाला (इसका प्रयोग ईश्वरके लिए होता है) ।

परिभूत–वि० (सं०) जिसका अनादर या तिरस्कार किया गया हो, अनादृत, तिरस्कृत ।

परिभूति–स्त्री० (सं०) अनादर, तिरस्कार ।

परिभूषण–पु० (सं०) सजाना, बनाव-सिंगार करना, सँवारना; किसी प्रदेशकी पूरी मालगुजारी विपक्षीको देकर की जानेवाली संधि ।

परिभूषित–वि० (सं०) सजाया हुआ, सँवारा हुआ ।

परिभेद–पु० (सं०) शस्त्र आदिका आघात; क्षत, घाव ।

परिभेदक–पु० (सं०) फाड़ने या छेदनेवाला अस्त्रादि । वि० फाड़नेवाला; परिमित करनेवाला ।

परिभोक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) बिना अधिकारके परायी वस्तु काममें लानेवाला ।

परिभोग–पु० (सं०) सेवन, उपभोग; स्त्री-प्रसंग; बिना अधिकारके परायी वस्तुएँ काममें लाना ।

परिभ्रंश–पु० (सं०) गिरना, पतन, च्युत होना; भाग निकलना, पलायन ।

परिभ्रम–पु० (सं०) इधर-उधर घूमना; चारों ओर घूमना; कोई बात घुमा-फिराकर कहना; भ्रम, भ्रांति, भूल ।

परिभ्रमण–पु० (सं०) चारों ओर घूमना; इधर-उधर घूमना, पर्यटन; पहिये आदिका चक्कर खाना; परिधि ।

परिभ्रष्ट–वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित; खोया हुआ, जो लापता हो गया हो; भागा हुआ; बहका हुआ, जिसका साथ छूट गया हो; (किसी वस्तुसे) रहित किया हुआ ।

परिभ्रामण–पु० (सं०) इधर-उधर घुमाना; चक्कर देना, (पहिये आदिको) घुमाना ।

परिभ्रामी(मिन्)–वि० (सं०) परिभ्रमण करनेवाला ।

परिमंडल–वि० (सं०) वर्तुलाकार, गोल; जो परिमाणमें एक परमाणुके बराबर हो । पु० वृत्त, घेरा, दायरा; पिंड, गोलक; परिधि । –कुष्ठ–पु० एक प्रकारका कोढ़ ।

परिमंडलता–स्त्री० (सं०) गोलाई ।

परिमंडलित–वि० (सं०) गोलाकृति बनाया हुआ ।

परिमंथर–वि० (सं०) बहुत धीमा, बहुत मंद ।

परिमंद–वि० (सं०) बहुत मंद, बहुत धुंधला; बहुत क्षीण; बहुत थोड़ा, अत्यल्प; बहुत सुस्त ।

परिमन्यु–वि० (सं०) बहुत क्रुद्ध; क्रोध करनेवाला ।

परिमर–पु० (सं०) विनाश; वायु; शत्रुओंके नाशका एक तांत्रिक प्रयोग ।

परिमर्द–पु० (सं०) घर्षण, रगड़ना; नष्ट करना, विनाश; हिंसन; मसलना, मींजना ।

परिमर्श–पु० (सं०) छू जाना, स्पर्श; विचार करना, विचारण, परामर्श, विमर्श ।

परिमर्ष–पु० (सं०) ईर्ष्या; क्रोध ।

परिमल–पु० (सं०) कुमकुम, चंदन आदिको रगड़ना या घिसना; कुमकुम, चंदन आदिके मर्दनसे उत्पन्न सुगंधि; सुगंध, सुवास; स्त्री-प्रसंग; पंडितोंकी मंडली; धब्बा, दाग ।

परिमलित–वि० (सं०) बासा हुआ, सुवासित; गंदा किया हुआ ।

परिमाण–पु० (सं०) किसी वस्तुकी लंबाई, चौड़ाई आदि; माप; तौल; मात्रा; विस्तार, आकार ।

परिमाणक–पु० (सं०) तौल; मात्रा ।

परिमाता(तृ)–पु० (सं०) मापनेवाला; तौलनेवाला ।

परिमाथी(थिन्)–वि० (सं०) कष्ट देनेवाला ।

परिमान*–पु० दे० 'परिमाण' ।

परिमार्ग–पु० (सं०) चारो ओर बना रास्ता, परिपथ; दे० 'परिमार्गण' ।

परिमार्गण–पु० (सं०) खोजना, ढूँढ़ना, अन्वेषण; साफ करना; संपर्क, स्पर्श ।

परिमार्जक–वि०, पु० (सं०) धोनेवाला; स्वच्छ करनेवाला ।

परिमार्जन–पु० (सं०) धोना; साफ करना, स्वच्छ करना; शहद और तेलमें पगी हुई एक मिठाई; त्रुटियाँ या दोष दूर करना, सुधारना ।

परिमार्जनीय–वि० (सं०) जिसकी त्रुटियाँ दूर करना आवश्यक हो, संशोध्य ।

परिमार्जित–वि० (सं०) धोया हुआ; साफ किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ ।

परिमित–वि० (सं०) मापा हुआ; तौला हुआ; जो परिमाणमें आवश्यकतासे न अधिक हो, न कम; जिसकी मात्रा कम-बेश न हो; थोड़ा; मामूली, सामान्य; सीमित । * अ० पर्यंत । –**कथ**–वि० अल्पभाषी । –**भुक्(ज्)**,–**भोजन**–वि० अल्पाहारी ।

परिमितायु(स्)–वि० (सं०) अल्पायु ।

परिमिताहार–वि० (सं०) अल्पाहारी ।

परिमिति–स्त्री० (सं०) परिमाण; अवधि; सीमा; * मर्यादा; (पेरिमीटर) ऋजुभुज (रेक्टीलीनियल) क्षेत्रकी भुजाओंकी लंबाइयोंका योग ।

परिमिलन–पु० (सं०) संयोग, मिलन; स्पर्श ।

परिमिलित–वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित; भरा हुआ, व्याप्त ।

परिमीढ–वि० (सं०) मूत्रसे सिक्त ।

परिमुक्त–वि० (सं०) जिसे छुटकारा मिला हो, मुक्त किया हुआ ।

परिमुक्ति–स्त्री० (सं०) छुटकारा ।

परिमुग्ध–वि० (सं०) आकर्षक, सुंदर ।

परिमूढ–वि० (सं०) घबराया हुआ, परेशान, व्याकुल ।

परिमृदित–वि० (सं०) कुचला हुआ; रगड़ा या पीसा हुआ; आलिंगित ।

परिमृष्ट–वि० (सं०) परिमार्जित; छुआ हुआ, स्पृष्ट; व्याप्त ।

परिमेय–वि० (सं०) जिसका परिमाण जाना जा सके; मापने योग्य; तौलने योग्य; कुछ, थोड़ा; सीमित ।

परिमोक्ष–पु० (सं०) सम्यक् मुक्ति, निर्वाण; मुक्त करना, छोड़ना, मोचन; मलत्याग; विष्णु; बच निकलना ।

परिमोक्षण–पु० (सं०) मुक्त करना, छोड़ना; मुक्ति, छुटकारा; धौतिक्रिया ।

परिमोष, परिमोषण–पु० (सं०) चुराना, चोरी; डाका ।

परिमोषक, परिमोषी(षिन्)–वि०, पु० (सं०) चोरी करनेवाला; डाका डालनेवाला ।

परिमोहन–पु० (सं०) पूरी तरह मुग्ध कर देना; किसीकी मति हर लेना; दे० 'परिलोभन' ।

परिम्लान–वि० (सं०) मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ; जिसपर धब्बा लगा हो; क्लांत; क्षीण । पु० भय या दुःखसे चेहरेकी रंगत बदलना; धब्बा, दाग ।

परिम्लायी(यिन्)–पु० (सं०) आँखकी कनीनिकाका एक रोग । वि० मुरझाया हुआ; खिन्न ।

परियंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

परियंत*–अ० दे० 'पर्यंत' ।

परियज्ञ–पु० (सं०) बृहस्पतिसत्र आदि गौण याग ।

परियत्त–वि० (सं०) चारों ओरसे घिरा हुआ ।

परियष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) वह जो अपने बड़े भाईसे पहले सोमयाग करे ।

परिया–पु० दक्षिण भारतकी एक प्राचीन जाति ।

परियाण–पु० (सं०) परिभ्रमण, पर्यटन ।

परियाणिक–पु० (सं०) घूमने-फिरने या पर्यटन करनेकी गाड़ी ।

परियात–वि० (सं०) घूमा-फिरा हुआ; आया हुआ ।

परियोजना–स्त्री० (प्रोजेक्ट) मनमें सोचकर, आगे आनेवाली स्थितिका अनुमान लगाकर, तैयार की गयी योजना या परिकल्पना ।

परिरंधित–वि० (सं०) क्षत या नष्ट किया हुआ ।

परिरंभ, परिरंभण–पु० (सं०) गले लगना, आलिंगन करना ।

परिरंभना*–स० क्रि० आलिंगन करना ।

परिरक्षक–पु० (सं०) रक्षण करनेवाला, अभिभावक; (क्यूरेटर) किसी संग्रहालयकी देख-रेख या व्यवस्था करनेवाला अधिकारी; संग्रहपाल, संग्रहालयाध्यक्ष । (पेट्रोल) दे० 'परिरक्षी' ।

परिरक्षण–पु० (सं०) हर तरहसे रक्षा करना, पूरी तरह रक्षण करना; देखभाल; बचाव; पालन, निभाना ।

परिरक्षणीय, परिरक्ष्य–वि० (सं०) पूरी तरह रक्षा करने योग्य ।

परिरक्षित–वि० (सं०) जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गयी हो; भली भाँति निभाया हुआ, जिसका पूरी तरह पालन किया गया हो ।

परिरक्षिता(तृ)–वि०, दे० 'परिरक्षी' ।

परिरक्षी(क्षिन्)–वि०, पु० (सं०) पूरी तरह रक्षा करनेवाला ।

परिरथ्या–स्त्री० (सं०) चौड़ी सड़क ।

परिरब्ध–वि० (सं०) जिसने आलिंगन किया हो; आलिंगन किया हुआ ।

परिरमित–वि० (सं०) (कामक्रीड़ा आदिसे) प्रसन्न किया हुआ ।

परिराटी(टिन्)–वि० (सं०) चीखने-चिल्लानेवाला; रट लगानेवाला ।

परिरोध–पु० (सं०) रोक, रुकावट ।

परिलंघन–पु० (सं०) उछलना, लाँघना ।

परिलघु–वि० (सं०) बहुत छोटा; बहुत हलका; जो बहुत जल्द पच जाय ।

परिलब्धि–स्त्री० (परक्विजिट) निर्धारित वेतन या भृतिके ऊपर अलगसे दिया गया भत्ता या शुल्क, अनुलाभ ।

परिलाभ–पु० (इमॉल्यूमेंट) किसी पदपर काम करके या सेवा आदिके कारण वेतन, पुरस्कार इत्यादिके रूपमें होनेवाला लाभ ।

परिलिखन–पु० (सं०) रगड़कर चिकना करना ।

परिलिखित–वि० (सं०) जिसके चारों ओर रेखाएँ आदि बनायी गयी हों, वृत्त आदिसे घेरा हुआ ।

परिलीढ–वि० (सं०) अच्छी तरह चाटा हुआ ।

परिलुप्त–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त; लुप्त; नष्ट । –**संज्ञ**–वि० बेहोश, संज्ञाहीन ।

परिलून–वि० (सं०) काटा हुआ; काटकर अलग किया हुआ ।

परिलेख–पु० वर्णन; (सं०) रेखा-चित्र, खाका; रेखाएँ या चित्र खींचनेका आला, कूँची, कलम आदि ।

परिलेखन–पु० (सं०) वेदीके चारों ओर रेखाएँ बनाना ।

परिलेखना*–स० क्रि० जानना, समझना ।

परिलेही(हिन्)–पु० (सं०) कानका एक रोग ।

परिलोप–पु० (सं०) लोप; नाश; क्षति; उपेक्षा ।

परिलोभन–पु० (इंटाइसमेंट) किसी तरहका प्रलोभन या आश्वासन देकर या झूठी आशा उत्पन्न कर बहकाना, फुसलाना ।

परिवंचन–पु०, **परिवंचना**–स्त्री० (सं०) धोखा देना, छलना ।

परिवक्रा–स्त्री० (सं०) गोल गड्ढा ।

परिवत्सर–पु० (सं०) पूरा वर्ष ।

परिवत्सरीण, परिवत्सरीय–वि० (सं०) जिसका संबंध पूरे वर्षसे हो; पूरे वर्षभर रहनेवाला ।

परिवदन–पु० (सं०) निंदा करना; किसीके दोष दिखाना; शोर मचाना ।

परिवपन–पु० (सं०) कतरना; मूँड़ना (बाल) ।

परिवर्जन–पु० (सं०) त्यागना, त्याग; मारण ।

परिवर्जनीय–वि० (सं०) त्यागने योग्य ।

परिवर्जित–वि० (सं०) त्यागा हुआ, त्यक्त ।

परिवर्त–पु० (सं०) चक्कर, परिभ्रमण; किसी *काल या युगकी* समाप्ति, युगका अंत; (ग्रंथका) परिच्छेद, *अध्याय आदि*;

विनिमय, अदल-बदल; महाकच्छप; आवृत्ति; पुनर्जन्म; राशिचक्रका फेरा; पलायन; निवासस्थान; मृत्युका एक पौत्र ।

परिवर्तक–वि० (सं०) घुमानेवाला, चक्कर देनेवाला; चक्कर खानेवाला; विनिमयकर्ता । पु० मृत्युका एक पौत्र ।

परिवर्तन–पु० (सं०) फेरा, चक्कर; चक्कर देना, परिभ्रमण; उलटना; पलटना; करवट लेना; किसी वस्तुके बदले दूसरी वस्तु देना, अदल-बदल, विनिमय; हेर-फेर होना, बदलना, एक स्थिति, रूप आदिसे दूसरी स्थिति, रूप आदिको प्राप्त होना; हेरफेर; किसी काल या युगका अंत ।

परिवर्तनीय–वि० (सं०) परिवर्तनके योग्य, बदलने योग्य ।

परिवर्तिका–स्त्री० (सं०) लिंगेंद्रियका एक क्षुद्र रोग ।

परिवर्तित–वि० (सं०) जिसने चक्कर दिया हो; जिसे चक्कर दिया गया हो; उलटा-पलटा हुआ; जिसका विनिमय किया गया हो; जिसमें हेर-फेर हुआ हो या किया गया हो; बदला हुआ; लौटा हुआ ।

परिवर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) जो बदलता रहे, जिसमें परिवर्तन होता रहे; विनिमय करनेवाला; जो घूमता या चक्कर देता रहे; भागनेवाला ।

परिवर्तुल–वि० (सं०) एकदम गोल ।

परिवर्त्य–वि० (कॉनवर्टिबिल) जो अन्य रूपमें बदला जा सके (ऋणपत्र, कंपनीके हिस्से आदि) ।

परिवर्धन–पु० (सं०) अच्छी तरह बढ़ना या बढ़ाया जाना, सम्यक् वृद्धि ।

परिवर्धित–वि० (सं०) जो अच्छी तरह बढ़ा हो या बढ़ाया गया हो; जिसमें पूर्ण वृद्धि की गयी हो; जिसमें ऊपरसे कुछ और जोड़ दिया गया हो ।

परिवर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) जो कवचसे ढका हो, कवचावृत ।

परिवर्ह–पु० (सं०) छत्र, चँवर आदि राजचिह्न; राजाओंके अनुचर आदि, दल-बल; कमरे या घरका साज-सामान, उपस्कर; जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुएँ; संपत्ति ।

परिवर्हण–पु० (सं०) अनुचरवर्ग; वेश-भूषा, पोशाक; वृद्धि, बाढ़; पूजा ।

परिवसथ–पु० (सं०) गाँव ।

परिवह–पु० (सं०) सात प्रकारकी वायुओंमेंसे एक; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक ।

परिवहन–पु० (ट्रांसपोर्ट) कोई वस्तु, माल, सामान आदि एक स्थानसे दूसरे स्थानतक उठाकर या ढोकर ले जाना, पहुँचाना । **–बाधा** –स्त्री० (बाटिलनेक) माल इत्यादिके एक स्थानसे दूसरे स्थानतक पहुँचाये जानेमें रेलके डब्बों इत्यादिकी कमीके कारण पड़नेवाली बाधा, मार्गावरोध । **–व्यवस्थापक**–पु० (ट्रैफिक मैनेजर) रेलपथ द्वारा यात्रियों तथा माल-असबाबके परिवहनकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी ।

परिवा–स्त्री० पक्षकी पहली तिथि ।

परिवाद–पु० (सं०) निंदा; (कांप्लेंट) काम ठीकसे न होने, असुविधा होने आदिके संबंधमें अधिकारियोंसे की जानेवाली किसी तरहकी शिकायत, दोषकथन; किसीमें ऐसे दोष दिखाना जिनका अस्तित्व न हो, झूठी निंदा; कुख्याति; अपवाद; आरोपित दोष, जुर्म; मिजराब । **–निरीक्षक**–पु० (कांप्लेंट इन्स्पेक्टर) डाक-घर आदिका वह कर्मचारी जिसके जिम्मे जनतासे प्राप्त शिकायतों आदिकी जाँच करनेका काम होता है ।

परिवादक–पु० (सं०) वादी, मुद्दई; निंदा करनेवाला; शिकायत करनेवाला; वीणा बजानेवाला ।

परिवादिनी–स्त्री० (सं०) सात तारोंवाली वीणा; निंदा करनेवाली स्त्री ।

परिवादी(दिन्)–वि० (सं०) निंदा करनेवाला, अपवाद करनेवाला; आरोप करनेवाला; शोर मचानेवाला ।

परिवाप–पु० (सं०) वपन, बोना; मुंडन, मूँड़ना; जलाशय, तालाब; घरका उपयोगी सामान; अनुचरवर्ग; भूना हुआ चावल, लावा, फरुही; छेना ।

परिवापण–पु० (सं०) मुंडन ।

परिवापित–वि० (सं०) मूँड़ा हुआ, मुंडित ।

परिवार–पु० (सं०) माता-पिता, लड़के बच्चों तथा एक साथ रहनेवाले अन्य आश्रित-जनोंका समूह, कुटुंब आदि; आश्रितजन, परिजन; अनुचरोंका समूह, दल-बल; ढकनेवाली वस्तु, आवरण; म्यान; सजातीय व्यक्ति; वस्तुओंका समुदाय, समूह ।

परिवारण–पु० (सं०) ढकनेकी क्रिया; आवरण; म्यान ।

परिवारित–वि० (सं०) घिरा हुआ, आवेष्टित ।

परिवारी–पु० परिवारमें रहनेवाला, कुटुंबी ।

परिवास–पु० (सं०) ठहरना, टिकना; सुगंध, सुवास ।

परिवाह–पु० (सं०) पानीका उमड़कर या फूटकर चारों ओर बहना; बढ़े हुए पानीके बहनेका मार्ग; फालतू पानीका निकास ।

परिवाही(हिन्)–वि० (सं०) उमड़कर या छलककर बहनेवाला ।

परिविंदक, परिविंदन्(त्)–पु० (सं०) दे० 'परिवित्त' ।

परिविण्ण, परिविन्न–पु० दे० 'परिवित्त' ।

परिवित्त, परिवित्ति–पु० (सं०) वह जिसका छोटा भाई उससे पहले ही विवाह या अग्निका आधान कर ले ।

परिविद्ध–वि० (सं०) चारों ओरसे बिधा हुआ । पु० कुबेर ।

परिविहार–पु० (सं०) इतस्ततः घूमना, चहलकदमी ।

परिवीक्षाधीन–वि० दे० 'परीक्ष्यमाण' (प्रोबेशनर) ।

परिवीजित–वि० (सं०) जिसे पंखा झला गया हो ।

परिवीत–वि० (सं०) परिवेष्टित; आवृत; व्याप्त । पु० ब्रह्माका धनुष् ।

परिवृढ–वि० (सं०) दृढ़, मजबूत । पु० स्वामी; सरदार ।

परिवृत–वि० (सं०) घिरा हुआ, आवेष्टित; व्याप्त; ज्ञात; प्राप्त । पु० (सरकम्स्क्राइब्ड सरकिल) दे० 'परिगतवृत्त' ।

परिवृति–स्त्री० (सं०) घेरना, आवेष्टित करना ।

परिवृत्त–वि० (सं०) घुमाया हुआ; लौटाया हुआ; बदला हुआ; समाप्त; घेरा हुआ; आवेष्टित । पु० आलिंगन; लुढ़कना ।

परिवृत्ति–स्त्री० (कनवर्शन) एक तरहके ऋणपत्र, प्रमंडलके हिस्सों आदिको दूसरी तरहके ऋणपत्रों या हिस्सोंमें बदलना; रूपांतरण; धर्म, विश्वास, मत आदिका बदलना, मतपरिवर्तन ।

परिवृत्ति–स्त्री० (सं०) घुमाव; घेरना; आवेष्टित करना; समाप्ति; विनिमय, अदला-बदला; एक शब्दके स्थानपर दूसरे शब्दको इस प्रकार रखना कि अर्थमें अंतर न पड़े, अर्थकी रक्षा करते हुए किसी शब्दके स्थानपर उसका पर्यायवाची शब्द रखना (जैसे–'चरण-कमल'के स्थानपर 'पाद-पद्म' रखना); एक अर्थालंकार जहाँ सम या असम पदार्थोंका विनिमय हो अर्थात् कुछ देकर कुछ लेनेका वर्णन हो (सा०) ।

परिवृद्ध–वि० (सं०) अच्छी तरह बढ़ा हुआ ।

परिवृद्धि–स्त्री० (सं०) पूर्ण वृद्धि, सम्यक् वृद्धि ।

परिवेत्ता(त्तृ), परिवेदक–पु० (सं०) दे० 'परिवित्त' ।

परिवेद–पु० (सं०) यथार्थ ज्ञान; अनेक विषयोंका ज्ञान ।

परिवेदन–पु० (सं०) छोटे भाईका बड़े भाईसे पहले ही विवाह करना या अग्निहोत्र ले लेना; विवाह; व्यापक ज्ञान, पूरी जानकारी; सर्वत्र स्थिति; कष्ट; तर्क ।

परिवेदना–स्त्री० (सं०) बुद्धिमत्ता, चातुरी; दूरदर्शिता ।

परिवेदनीया, परिवेदिनी–स्त्री० (सं०) परिवेत्ताकी पत्नी ।

परिवेश, परिवेष–पु० (सं०) घेरना, वेष्टन; हलके बादलोंकी विशेष स्थितिके कारण सूर्य या चंद्रमाके चारों ओर बन जानेवाला एक प्रकारका मंडल, किरणोंका वह मंडल जो कभी-कभी सूर्य या चन्द्रमाके चारों ओर बन जाता है; परिधि; देवताओं आदिके मुखमंडलके चारो ओरका प्रकाशवृत्त, प्रभामंडल; किसी रचनाकारका वह विशिष्ट वातावरण जो उसके लेखनसे संसक्त होता है और उसे प्रभावित करता है; आवेष्टित करनेवाली वस्तु; भोजन परसना ।

परिवेषक–पु० (सं०) भोजन परोसनेवाला ।

परिवेषण–पु० (सं०) भोजन परसना–'परिवेषणतक मृदुल करोंसे तुम्हें न करने दूँगी मैं'–पंचवटी; घेरनेकी क्रिया; सूर्य या चंद्रके चारों ओरका मंडल; परिधि ।

परिवेष्टन–पु० (सं०) चारों ओरसे घेरना; आवृत्त करनेवाली

वस्तु, आवरण, आच्छादन; घेरा, परिधि; पट्टी ।

परिवेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) भोजन परसनेवाला ।

परिवेष्टित–वि० (सं०) चारों ओरसे घिरा हुआ; आवृत, आच्छादित ।

परिवेष्य–वि० (सं०) परसने योग्य ।

परिव्यक्त–वि० (सं०) अति स्पष्ट ।

परिव्यय–पु० (सं०) (कॉस्ट) किसी वस्तुके उत्पादन, निर्माणादिमें लगनेवाला रुपया या खर्च, लागत । व्यय; मूल्य; मसाले ।

परिव्याध–पु० (सं०) चारों ओरसे बेधनेवाला; जलबेंत; कनेर ।

परिव्रज्या–स्त्री० (सं०) चारों ओर घूमना (विशेषतः भिक्षुका); तपस्या; घूमफिरकर भिक्षा माँगते हुए जीवननिर्वाहका व्रत, सन्न्यास ।

परिव्राज, परिव्राजक–पु० (सं०) वह जो घर-बार छोड़कर चतुर्थ आश्रममें प्रविष्ट हो गया हो, सन्न्यासी ।

परिव्राट्(ज्)–पु० (सं०) परिव्राजक ।

परिशंकी(किन्)–वि० (सं०) भय, आशंका करनेवाला ।

परिशाश्वत–वि० (सं०) हमेशा उसी रूपमें बना रहनेवाला ।

परिशिष्ट–वि० (सं०) जो छूट गया हो, बचा हुआ; समाप्त । पु० किसी पुस्तक या लेखका पूरक अंश ।

परिशीलन–पु० (सं०) स्पर्श; लगाव; किसी विषयपर पूरी तरह विचार करते हुए उसे पढ़ना, सम्यक् अध्ययन ।

परिशीलित–वि० (सं०) जिसका परिशीलन किया गया हो ।

परिशुद्ध–वि० (सं०) पूर्णतया शुद्ध; चुकाया हुआ; जो बरी कर दिया गया हो; (ऐक्यूरेट) बिलकुल ठीक, यथार्थ ।

परिशुद्धता–स्त्री० (ऐक्यूरेसी) बिलकुल ठीक, यथार्थ या सटीक होनेका भाव ।

परिशुद्धि–स्त्री० (सं०) पूर्ण शुद्धि; रिहाई ।

परिशुष्क–वि० (सं०) अति शुष्क, एकदम सूखा हुआ; मुरझाया हुआ; पिचका हुआ (कपोल आदि); नीरस । पु० पकाया हुआ मांस ।

परिशून्य–वि० (सं०) पूर्णतः रिक्त, ' ' से पूर्णतः वंचित ।

परिश्रुत–पु० (सं०) उत्साह, उमंग, जोश, लगन ।

परिशेष–पु० (सं०) अवशेष, वह जो बच गया हो; समाप्ति ।

परिशोध–पु० (सं०) सम्यक् शुद्धि, पूरी सफाई; ऋण आदिका भुगतान, चुकता ।

परिशोधन–पु० (सं०) पूर्णतया शुद्ध करनेकी क्रिया; भुगतान, चुकता करना; संशोधन ।

परिशोष–पु० (सं०) बहुत अधिक सूख जाना, शुष्क हो जाना ।

परिश्रम–पु० (सं०) क्लांति; क्लेशकर आयास, मेहनत ।

परिश्रमी(मिन्)–वि० (सं०) परिश्रम करनेवाला, जो परिश्रम करे ।

परिश्रय–पु० (सं०) आश्रय; सभा ।

परिश्रयण–पु० (सं०) घेरना, आवेष्टित करना ।

परिश्रांत–वि० (सं०) विशेष रूपसे थका हुआ ।

परिश्रांति–स्त्री० (सं०) अधिक थकावट; परिश्रम ।

परिश्रित–वि० (सं०) आश्रित; चारों ओरसे घेरा हुआ । पु० आश्रय; चारों ओरसे घेरना ।

परिश्रुत–वि० (सं०) अच्छी तरह सुना हुआ; विख्यात, प्रसिद्ध ।

परिश्लिष्ट–वि० (सं०) आलिंगित ।

परिश्लेष–पु० (सं०) आलिंगन ।

परिषद, परिषद्य, परिषद्वल–पु० (सं०) सभासद् ।

परिषद्–स्त्री० (सं०) सभा; वेद-वेदांग, धर्मशास्त्र आदिमें पारंगत ब्राह्मणोंकी वह सभा जिसे प्राचीन कालके राजा धर्म आदिके मामलोंका निर्णय करनेके लिए यदा-कदा बुलाया करते थे; समूह, मंडली; (काउंसिल) सलाह देनेवाले या विवादादिमें हिस्सा लेनेवाले सदस्योंकी सभा; नगर या जिलेकी स्थानीय प्रबंध सभा; चुने हुए या मनोनीत किये हुए सदस्योंकी विशेष सभा ।

परिषिक्त–वि० (सं०) सींचा हुआ, जिसपर जल आदि छिड़का गया हो ।

परिषीवण–पु० (सं०) गाँठ देना ।

परिषेक–पु० (सं०) सींचना, छिड़काव; स्नान ।

परिषेचक–वि०, पु० (सं०) सींचनेवाला, छिड़कनेवाला ।

परिषेचन–पु० (सं०) सींचना, छिड़कना ।

परिष्कंद–पु० (सं०) वह जिसका पालन-पोषण उसके माता-पिताने नहीं प्रत्युत दूसरेने किया हो; नौकर (विशेषतः वह जो सवारीके साथ-साथ चले) ।

परिष्कण्ण, परिष्कन्न–वि० (सं०) जिसका पालन अन्यके द्वारा हुआ हो । पु० ऐसा बच्चा ।

परिष्कर–पु० (सं०) सजावट ।

परिष्करण–पु० (सं०) बुराइयाँ या दोष दूरकर ठीक करनेका कार्य, संशोधन । –शाला–स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ खनिज वस्तुओं, धातुओं आदिका परिष्कार किया जाता है (रिफाइनरी) ।

परिष्करिणी–स्त्री० दे० 'परिष्करणशाला' ।

परिष्कार–पु० (सं०) सजावट, सिंगार; पाक द्वारा सुस्वादु बनाना; संस्कार; भूषण, गहना; मार्जन आदि संस्कार, सफाई; घरका उपयोगी सामान, सजावटका सामान ।

परिष्कृत–वि० (सं०) जिसका परिष्कार किया गया हो; सजाया हुआ, सँवारा हुआ; पाक द्वारा सुस्वादु बनाया हुआ; साफ किया हुआ; चमकाया हुआ; शुद्ध किया हुआ ।

परिष्कृता–स्त्री० (सं०) यज्ञके निमित्त शुद्ध की हुई भूमि ।

परिष्कृति–स्त्री० (सं०) शुद्ध करना, साफ करना; चमकाना; सँवारना ।

परिष्क्रिया–स्त्री० (सं०) सजाना, अलंकृत करना; शोधन ।

परिष्टयन–पु० (सं०) स्तुति, प्रशंसा ।

परिष्टोम–पु० (सं०) हाथीकी झूल; आच्छादन; गद्दा ।

परिष्ठल–पु० (सं०) चारों ओरकी, आसपासकी भूमि ।

परिष्पंद–पु० (सं०) सजावट, सिंगार; फूल आदिसे बालोंको सजाना; परिष्कार; निर्वाहका साधन; परिवार, परिजन; अनुचर वर्ग; स्पंदन, हरकत; कुचलना ।

परिष्यंद–पु० (सं०) प्रवाह, बहाव; नदी; आर्द्रता; द्वीप (वै०) ।

परिष्यंदी(दिन्)–वि० (सं०) बहनेवाला, प्रवाहशील ।

परिष्वंग, परिष्वंजन, परिष्वजन–पु० (सं०) आलिंगन ।

परिष्वक्त–वि० (सं०) जिसका आलिंगन किया गया हो, आलिंगित; आवेष्टित ।

परिसंख्या–स्त्री० (सं०) गिनती, गणना; एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तुका एक स्थानसे निषेध करके उसका दूसरे स्थानमें स्थापन हो, जैसे 'खल' केवल वैद्योंके यहाँ थे, अन्यत्र उनका अभाव था; ऐसा विधान जिससे विहित वस्तुसे भिन्न सभी वस्तुओंका निषेध हो जाय (मी०) ।

परिसंख्यात–वि० (सं०) जिसकी परिसंख्या हुई हो, परिगणित; जिसका खास तौरसे उल्लेख किया गया हो ।

परिसंख्यान–पु० (सं०) गणना; सही अनुमान; विशेष वस्तुका निर्देश ।

परिसंघ–पु० (कानफेडरेशन) स्वतंत्र राजाओं, राज्यों या राष्ट्रोंका ऐसा संघटन जो एक दूसरेकी सहायता करने और सामान्यरूपसे संबंध रखनेवाले वैदेशिक प्रश्नों आदिके संबंधमें समान नीति निर्धारित करनेके उद्देश्यसे बनाया जाता है, राज्यमंडल ।

परिसंचर–पु० (सं०) प्रलय-काल ।

परिसंचित–वि० (सं०) जिसका संचय किया गया हो, संचित ।

परिसंतान–पु० (सं०) तार, ताँत; तंत्री ।

परिसंपत्ति, परिसंपद्–स्त्री० (असेट्स) किसी महाजन या व्यापारिक संस्था आदिकी वह संपत्ति तथा पावना आदि जिससे (उसका) देय या ऋण चुकाया जा सके, मालमत्ता ।

परिसभ्य–पु० (सं०) सभाका सदस्य ।

परिसमापक–पु० (लिक्विडेटर) किसी प्रमंडल, व्यापारिक संस्था आदिका देना-पावना ले-देकर उसका कारबार समाप्त करनेवाला अधिकारी ।

परिसमापन–पु० (सं०) समाप्त करना, पूरा करना; (लिक्विडेशन) किसी व्यापारिक संस्था प्रमंडल आदिके देने-पावनेका हिसाब चुकाकर उसका कारबार समाप्त करना; ऋण आदि पूरी तरह चुका देना ।

परिसमाप्त–वि० (सं०) पूरी तरह समाप्त ।

परिसमाप्ति–स्त्री० (सं०) पूर्ण समाप्ति ।

परिसमूहन–पु० (सं०) एकत्र करना; यज्ञाग्निमें समिधा डालना; यज्ञमें अग्निके चारों ओर गिरे हुए तृण आदिको आगमें डालना; यज्ञाग्निके चारों ओर जलसे मार्जन करना ।

परिसर–पु० (सं०) नदी, नगर, पर्वत आदिके आस-पासकी भूमि; विधान, नियम; स्थिति, मौका; मृत्यु; एक देवता; इधरसे उधर जाना, हिलना-डोलना ।

परिसरण–पु० (सं०) चारों ओर घूमना, पर्यटन; इधर-उधर दौड़ना ।

परिसर्प–पु० (सं०) चारों ओर जाना या घूमना-फिरना, पर्यटन; जल आदिसे घेरना; किसीको खोजते हुए उसके पीछे जाना, किसीका पीछा करना; एक सारस्वत याग; घेरना, आवेष्टन; एक प्रकारका साँप; एक प्रकारका क्षुद्र कुष्ठ, विसर्प ।

परिसर्पण–पु० (सं०) इधर-उधर जाना या घूमना-फिरना; गमन; रेंगना ।

परिसर्या–स्त्री० (सं०) चारों ओर या इधर-उधर जाना; टहलना, घूमना, पर्यटन; एक प्रकारका रोग ।

परिसहाय–पु० (एडेकांग) गवरनर आदिके साथ चलनेवाला अंगरक्षक, सैनिक अधिकारी ।

परिसांत्वन–पु० (सं०) सांत्वना देना, ढाढ़स बँधाना ।

परिसार–पु० (सं०) चारों ओर जाना या घूमना ।

परिसारक–वि०, पु० (सं०) चारों ओर जाने या घूमनेवाला ।

परिसारी(रिन्)–वि० (सं०) चारों ओर जानेवाला; इधर-उधर घूमनेवाला ।

परिसिद्धिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी चावलकी लपसी ।

परिसीमन–पु० (डीलिमिटेशन) किसी स्थान, क्षेत्र, प्रदेश आदिकी सीमा स्थिर करना, सीमा-निर्धारण ।

परिसीमा–स्त्री० (सं०) चौहद्दी; अवधि; हद, अंतिम सीमा ।

परिसून–पु० (सं०) वह पशु जिसका वध बूचड़खानेके बाहर किया गया हो (कौ०) ।

परिसेवना–स्त्री० (सं०) विशेष सेवा ।

परिस्कंद–पु० (सं०) दे० 'परिष्कंद' ।

परिस्कन्न–वि०, पु० (सं०) दे० 'परिष्कन्न' ।

परिस्तर–पु० (सं०) फैलाना, व्याप्त करना, छितराना; जमा करना; ढकना, आवरण ।

परिस्तरण–पु० (सं०) छितराना, फैलाना; आवरण ।

परिस्तान–पु० (फा०) परियोंका, सुंदर स्त्रियोंका, देश, परियोंका लोक ।

परिस्तीर्ण, परिस्तृत–वि० (सं०) फैलाया हुआ; आच्छादित ।

परिस्तोम–पु० (सं०) दे० 'परिष्टोम' ।

परिस्थान–पु० (सं०) वासस्थान; दृढ़ता, ठोसपन ।

परिस्थिति–स्त्री० (सं०) आसपास, चारों ओरकी स्थिति, अवस्था; चारो ओर होनेवाली घटनाएँ या बातें जो मनुष्यपर प्रभाव डालती हैं । **–विज्ञान**–पु० (इकालॉजी) प्राणिविज्ञानकी वह शाखा जिसके अन्तर्गत पौधों और प्राणियोंके आपसके सम्बन्ध तथा वातावरणके साथ उनके सम्बन्धका अध्ययन किया जाता है ।

परिस्पंद–पु० (सं०) दे० 'परिष्पंद' ।

परिस्पंदन–पु० (सं०) बहुत अधिक कंपित होना ।

परिस्पर्द्धा, परिस्पर्धा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिस्पर्द्धा' ।

परिस्पर्द्धी(र्द्धिन्), परिस्पर्धी(र्धिन्)–वि० (सं०) दे० 'प्रतिस्पर्द्धी' ।

परिस्फुट–वि० (सं०) सुस्पष्ट; अच्छी तरह विकसित, सम्यक् रीतिसे विकसित ।

परिस्फुरण–पु० (सं०) कंपन; कलियुक्त होना, कलीका निकलना ।

परिस्मापन–पु० (सं०) चकित करना, अचंभेमें डालना ।

परिस्यंद–पु० (सं०) चूना, रिसना; दे० 'परिष्यंद' ।

परिस्रव–पु० (सं०) चारों ओरसे चूना, टपकना या रिसना; बहना, प्रवाहित होना; नीचे लुढ़कना; बच्चेका जन्म लेना ।

परिस्राव–पु० (सं०) चारों ओरसे चूना, टपकना या रिसना; एक रोग जिसमें मलके साथ-साथ पित्त और कफ गिरता है (आ० वे०); बच्चेका जन्म लेना ।

परिस्रावण–पु० (सं०) वह बरतन जिसमेंसे साफ किया जानेवाला पानी टपकाते हैं ।

परिस्रावी(विन्)–वि० (सं०) चूने, टपकने या रिसनेवाला; बहनेवाला । पु० एक प्रकारका भगंदर ।

परिस्रुत–वि० (सं०) स्रवयुक्त; रसा हुआ । **–दधि**–पु० वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो ।

परिस्रुता–स्त्री० (सं०) शराब; अंगूरी शराब ।

परिस्रुत्–स्त्री० (सं०) मदिरा; चूना, क्षरण । वि० चूनेवाला ।

परिस्वंजन–पु० (सं०) दे० 'परिष्वंग' ।

परिहँस*–पु० हँसी, उपहास; दुःख; दे० 'परिहस'; ईर्ष्या, डाह ।

परिहंत–स्त्री० हलमें पीछेकी ओर लगी हुई वह लकड़ी जिसे हल चलाते समय हाथसे पकड़े रहते हैं । वि० (सं०) ढीला किया हुआ; मारा हुआ; नष्ट ।

परिहरण–पु० (सं०) त्यागना, तजना; दूर करना, निवारण; छीन लेना, अपहरण करना ।

परिहरणीय–वि० (सं०) परिहरणके योग्य ।

परिहरना*–स० क्रि० छोड़ना, त्यागना ।

परिहस*–पु० दे० 'परिहास'; दुःख ।

परिहसित–वि० (सं०) जो हँसा गया हो ।

परिहस्त–पु० (सं०) हाथका छल्ला, मुद्रिका ।

परिहा–पु० एक छंद ।

परिहाण–पु० (सं०) नुकसान उठाना, हानि उठाना; हानि, घाटा, कमी ।

परिहाणि, परिहानि–स्त्री० (सं०) नुकसान, घाटा; ह्रास; त्यागना, छोड़ना; उपेक्षा करना ।

परिहार–पु० (सं०) त्यागना, छोड़ना; दोष आदिको दूर करना, दोषका निराकरण; गाँवके चारों ओर जनताकी ओरसे परती छोड़ी हुई जमीन (स्मृ०); पराजित शत्रुसे छीनी हुई वस्तुएँ; कर या लगानकी माफी (स्मृ०); अनादर, अवज्ञा; खंडन; किसी कुकृत्यका प्रायश्चित्त करना; राजपूतोंका एक वंश जो अग्निवंशके अंतर्गत माना जाता है; (एवॉइड) त्याग करने, छोड़ देनेकी क्रिया; बचा जाने या प्रयोग न करनेकी क्रिया । (रेमीशन) अनावृष्टि आदि संकटके कारण दी जानेवाली कर या लगानकी माफी, छूट; ऋण या दंड आदिमें की गयी कमी ।

परिहारक–वि०, पु० (सं०) परिहार करनेवाला । **–ग्राम**–पु० वह गाँव जिसकी मालगुजारी माफ हो (कौ०) ।

परिहारना*–स० क्रि० दूर करना; प्रहार करना, मारना ।

परिहारी(रिन्)–वि० (सं०) त्याग या निवारण करनेवाला ।

परिहार्य–वि० (सं०) परिहार करने योग्य, त्यागने या निवारण करने योग्य ।

परिहास–पु० (सं०) ज़ोरकी हँसी, मजाक । **–वेदी(दिन्)**–पु० मसखरा ।

परिहास्य–वि० (सं०) परिहासके योग्य ।

परिहित–वि० (सं०) आवृत, आच्छादित; पहना हुआ, धारण किया हुआ ।

परिहीण–वि० (सं०) जिसका ह्रास हो गया हो; रहित; त्यागा हुआ; उपेक्षित ।

परिहृत–वि० (सं०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ; दूर किया हुआ; नष्ट किया हुआ; जिसका खंडन किया गया हो; छिपाया हुआ; छीना हुआ ।

परिहृति–स्त्री० (सं०) त्यागना, छोड़ना ।

परिहेलना–स० क्रि० दूर करना, हटाना ।

परींदन–पु० (सं०) तुष्ट करना; भेंट देना ।

परी–स्त्री० घी, तेल आदि निकालनेकी एक तरहकी कलछी, पली ।

परी–स्त्री० (फा०) पुरानी कथाओंके अनुसार अदृश्य होने तथा जहाँ चाहें वहाँ जा सकने आदिकी शक्तिसे युक्त उड़नेवाली परम सुंदर स्त्रियाँ जिनका निवासस्थान कोहकाफ पहाड़ माना जाता है (फारसी-उर्दूकी कवितामें इन्हें सुंदर स्त्रियोंका उपमान बनाया गया है); अति रूपवती स्त्री (ला०) । **–ख़ाना**–पु० परियों या

हसीनोंके रहनेका स्थान। **–ख़्वान**–पु० जंत्र-मंत्र करनेवाला। **–ख़्वानी**–स्त्री० जंत्र-मंत्र करनेका काम या पेशा। **–ज़दा**–वि० जिसपर परीका साया हो। **–जमाल**–वि० हसीन, खूबसूरत। **–ज़ाद**–पु० परीका बच्चा। वि० हसीन, सुंदर, खूबसूरत। **–दार**–वि० दे० 'परीज़दा'। **–बंद**–पु० बाजुओंपर पहननेका एक गहना। **–रू**–वि० अत्यंत सुंदर। **–का साया**–परीका असर।

परीक्षक–पु० (सं०) परीक्षा करने या लेनेवाला, परखनेवाला, जाँचनेवाला।

परीक्षण–पु० (सं०) परीक्षा करने या लेनेकी क्रिया, जाँच, परख; राजाके मंत्री, चर आदिके दोषादोषकी जाँच करना। **–काल**–पु० (प्रोबेशन) वह अवधि या समय जिसमें इस बातकी जाँच की जाती है कि जो आदमी या कर्मचारी किसी कामपर नियुक्त होनेको है, वह उसके योग्य है या नहीं। **–नलिका**–स्त्री० (टेस्ट ट्यूब) वैज्ञानिक परीक्षणके काम आनेवाली शीशे (काँच)की नलिका, परखनली।

परीक्षना*–स० क्रि० परीक्षा लेना।

परीक्षा–स्त्री० (सं०) किसीके गुण दोष, योग्यता, शक्ति आदिकी सच्ची जानकारीके लिए उसे अच्छी तरह देखना-भालना, किसीके गुण, दोष, योग्यता आदिका पता लगानेके लिए किया जानेवाला काम, इम्तहान; तर्क, प्रमाण आदिके द्वारा किसी वस्तुके तत्त्वका निश्चय करना; किसी वस्तुका ऐसा प्रयोग जो उसके बारेमें कोई विशेष बात निश्चित करनेके लिए किया जाय; विद्यार्थियों या उम्मीदवारोंकी योग्यताकी वह विशेष प्रकारकी जाँच जिसमें उनसे मौखिक या लिखित रूपमें प्रश्न पूछे जाते हैं; अभियुक्तकी सदोषता या निर्दोषता अथवा साक्षीकी सचाई या झुठाईका निर्णय करनेकी एक प्राचीन रीति। **–काल**–पु० परीक्षाका समय। **–निरीक्षक**–पु० परीक्षाभवनमें परीक्षार्थियोंकी निगरानी करनेवाला (इनविजिलेटर)। **–भवन**–पु० वह कमरा या घर जिसमें परीक्षार्थी परीक्षा देते समय बैठते हैं, परीक्षा देनेका स्थान। **–शुल्क**–पु० परीक्षाके निमित्त लिया जानेवाला द्रव्य।

परीक्षार्थ–अ० (सं०) परीक्षाके लिए।

परीक्षार्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) परीक्षा देनेवाला। –पु० (इग्ज़ामिनी) वह व्यक्ति जिसकी परीक्षा ली जाय या जो परीक्षामें बैठा हो।

परीक्षालय–पु० (इग्ज़ामिनेशन हॉल) वह भवन या स्थान जहाँ बैठकर परीक्षार्थियोंको परीक्षा देनी पड़े।

परीक्षित–वि० (सं०) जिसकी परीक्षा ली गयी हो, जाँचा हुआ, आजमाया हुआ; परीक्षार्थी।

परीक्षित्–पु० (सं०) पांडुकुलके एक प्रसिद्ध राजा जो अभिमन्युके पुत्र और अर्जुनके पौत्र थे (इनकी मृत्यु तक्षक सर्पके काटनेसे हुई और इन्हींके राजत्वकालमें कलियुगका पदार्पण हुआ)।

परीक्ष्य–वि० (सं०) परीक्षा लेने योग्य, जिसकी परीक्षा ली जाय।

परीक्ष्यमाण–वि० (प्रोबेशनर) (वह कर्मचारी) जिसकी नियुक्ति अभी पक्की न हुई हो, वरन् जो अभी परीक्षण-कालमें हो; **परिवीक्षाधीन**।

परीखना*–स० क्रि० परखना; जाँचना।

परीच्छित*–वि० दे० 'परीक्षित'। पु० दे० 'परीक्षित्'।

परीछत*–पु० दे० 'परीक्षित्'।

परीछना*–स० क्रि० परीक्षा लेना (मुद्रा०)।

परीछम–पु० पैरमें पहननेका एक चाँदीका गहना।

परीछा*–स्त्री० दे० 'परीक्षा'।

परीछित*–वि० दे० 'परीक्षित'। पु० राजा परीक्षित।

परीणाम–पु० (सं०) दे० 'परिणाम'।

परीणाह–पु० (सं०) गाँवके चारों ओर छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि (स्मृ०); शिव; दे० 'परिणाह'।

परीत–वि० (सं०) चक्कर देनेवाला; घेरनेवाला; बीता हुआ, गत; गृहीत। * पु० दे० 'प्रेत'।

परीताप–पु० (सं०) दे० 'परिताप'।

परीति–स्त्री० (सं०) पुष्पांजन; * प्रीति।

परीतोष–पु० (सं०) दे० 'परितोष'।

परीत्त–वि० (सं०) दिया हुआ; चारों ओरसे कटा हुआ; सीमित।

परीदाह–पु० (सं०) दे० 'परिदाह'।

परीधान–पु० (सं०) दे० 'परिधान'।

परीप्सा–स्त्री० (सं०) प्राप्त करनेकी इच्छा; शीघ्रता, जल्दबाजी।

परीभव–पु० (सं०) दे० 'परिभव'।

परीभाव–पु० (सं०) अनादर, तिरस्कार।

परीमाण–पु० (सं०) दे० 'परिमाण'।

परीरंभ–पु० (सं०) आलिंगन।

परीर–पु० (सं०) फल।

परीरण–पु० (सं०) कछुवा; डंडा, दंड; वस्त्र।

परीरू–पु० 'जलपरी' नामक कल्पित प्राणी, दे० 'जलमानुष'।

परीवाद–पु० (सं०) दे० 'परिवाद'।

परीवाप–पु० (सं०) दे० 'परिवाप'।

परीवार–पु० (सं०) दे० 'परिवार'।

परीवाह–पु० (सं०) दे० 'परिवाह', पानीका उमड़कर बाहर बह निकलना।

परीशान–वि० दे० 'परेशान'।

परीशेष–पु० (सं०) दे० 'परिशेष'।

परीष्टि–स्त्री० (सं०) अन्वेषण, खोज; पूछताछ, जाँच; सेवा; सम्मान; इच्छा।

परीसना*–स० क्रि० परोसना–'आनँद घन पिय न्यौति पपीहनि प्यास परीसत हौं'–घन०; स्पर्श करना–'मधुर त्रिभंगी जौं लौं कृपा न परीसई'–घन०।

परीसर्या–स्त्री० (सं०) दे० 'परिसर्या'।

परीसार–पु० (सं०) दे० 'परिसार'।

परीहार–पु० (सं०) दे० 'परिहार'।

परीहास–पु० (सं०) दे० 'परिहास'।

परु–पु० (सं०) समुद्र; स्वर्ग; ग्रंथि, गाँठ; पहाड़। † अ० गत या आगामी वर्ष (में)।

परु(स्)–पु० ग्रंथि, गाँठ; शरीरका कोई अंग।

परुआ†–स्त्री० एक प्रकारकी जमीन; अपमानका बदला। वि० कामचोर, जो काम लेते समय बैठ जाय या पड़ रहे (बैल आदि) रास्ते आदिमें; पड़ा हुआ (माल)।

परुई†–स्त्री० भड़भूजेकी अनाज भूननेकी नाँद।

परुख*–वि० दे० 'परुष'।

परुखाई*–स्त्री० परुषता, कठोरता।

परुत्–अ० (सं०) गत वर्ष।

परुद्वार–पु० (सं०) घोड़ा।

परुष–वि० (सं०) कठोर, कड़ा; रूखा; कर्कश; बुरा लगनेवाला; तीव्र, उग्र (वायु आदि); कठोर हृदयवाला, दयाहीन; नीरस, रसहीन; गंदा; चितकबरा। पु० कड़ी बात, दुर्वचन; नीली कटसरैया; फालसा। **–वचन**–पु० कठोर वचन, कड़ी बात, अप्रिय बात, लगनेवाली बात।

परुषा–वि० स्त्री० (सं०) 'परुष'का स्त्रीलिंग रूप। **–वृत्ति**–स्त्री० काव्यकी तीन वृत्तियोंमेंसे एक जिसमें ट, ठ, ड, ढ वर्णों, लंबे समासों और ऐसे संयुक्त वर्णोंकी योजना होती है जो कठोर होते हैं।

परुषाक्षर–वि० (सं०) जिसमें रूखे शब्दोंका प्रयोग हो, कड़े शब्दोंमें कहा हुआ; कड़े शब्द प्रयोगमें लानेवाला।

परुषेतर–वि० (सं०) कोमल, मृदु।

परुषोक्ति–स्त्री० (सं०) निष्ठुर वचन, कड़ी या लगनेवाली बात।

परुषोक्तिक–वि० (सं०) कड़ी बात कहनेवाला।

परुसना*–स० क्रि० दे० 'परसना'।

परूँगा†–पु० शाहबलूत वृक्षकी एक जाति।

परूष, परूषक–पु० (सं०) फालसा।

परे–अ० उस ओर; और आगे; बहुत दूर; ऊर्ध्व, ऊपर; बाद; बाहर। **–मु०–परे कहना**–'दूर हटो', 'दूर हटो' कहना। **–बिठाना**–परास्त करना, मात करना।

परेई–स्त्री० मादा परेवा, कबूतरी; पंडुकी।

परेखना–स० क्रि० अच्छी तरह देखना-भालना, परीक्षा करना, जाँचना; * प्रतीक्षा करना।

परेखा*–पु० परीक्षा, जाँच; पश्चात्ताप; विश्वास ।

परेग–पु० लोहेकी कील ।

परेट–पु०, स्त्री० दे० 'परेड' ।

परेड–पु०, स्त्री० (अं०) सैनिकोंकी क़वायद; उन्हें युद्धकलाकी शिक्षा देनेका मैदान ।

परेत–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रेत' । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० यमराज । **–भूमि**–स्त्री० श्मशान । **–राट्(ज्)**–पु० यमराज । **–वास**–पु० श्मशान ।

परेता–पु० सूत लपेटनेके कामका जुलाहोंका एक आला; बाँसकी पतली चपटी तीलियोंसे तैयार किया जानेवाला वह बेलन जिसपर पतंगकी डोर लपेटी जाती है ।

परेद्यवि, परेद्यु(स्)–अ० (सं०) दूसरे दिन ।

परेर*–पु० आकाश ।

परेली–पु० तांडव नृत्यका एक भेद जिसमें अभिनयकी न्यूनता और गात्रविक्षेपकी अधिकता रहती है ।

परेवा–पु० कबूतर; पंडुक; कोई तेज उड़नेवाला पक्षी; शीघ्रगामी पत्रवाहक, तेज चलनेवाला हरकारा ।

परेश–पु० (सं०) सबका स्वामी; परमात्मा, परमेश्वर ।

परेशान–वि० (फ़ा०) उद्विग्न, व्याकुल; हैरान; सताया हुआ ।

परेशानी–स्त्री० (फ़ा०) उद्विग्नता, व्याकुलता; झंझट ।

परेषक–पु० (कनसाइनर) वह व्यक्ति जो रेलगाड़ी आदिसे पारसलके रूपमें अपना माल किसी अन्य स्थानमें रहनेवाले व्यक्तिके पास भेजे ।

परेषणी–पु० (कनसाइनी) वह व्यक्ति जिसके पास कोई माल रेलपार्सल द्वारा भेजा जाय, प्रेषिती ।

परेषित–वि० (कनसाइंड) (वह माल) जो रेलगाड़ी इत्यादिसे पारसलके रूपमें अन्य किसीके पास भेजा गया हो ।

परेष्टि–पु० (सं०) ब्रह्म ।

परेष्टु, परेष्टुका–स्त्री० (सं०) वह गाय जो कई बार बच्चा दे चुकी हो ।

परेस*–पु० दे० 'परेश' ।

परेह–पु० घी या तेलमें छौंककर पकाया जानेवाला बेसन या पीठीका घोल जिसमें पकौड़ी, बड़े आदिको डुबाये रखते हैं, बेसनकी पतली कढ़ी ।

परेहा†–पु० वह जमीन जो जोतनेके बाद सींची गयी हो ।

परैधित–वि० (सं०) अन्य द्वारा पालित । पु० कोकिल; सेवक ।

परैना–पु० पशुओंको हाँकनेका एक हथियार ।

परों*–अ० दे० 'परसों' ।

परो–'परस्'का समासगत रूप । **–रजा(जस्)**–वि० जो राग आदि भावोंसे परे या अस्पृष्ट हो; विरक्त, विशुद्ध, विमुक्त । **–लक्ष**–पु० एक लाखसे अधिककी संख्या । वि० एक लाखसे अधिक ।

परोक्तदोष–पु० (सं०) न्यायालयमें ऊटपटांग बयान देनेका अपराध ।

परोक्ष–वि० (सं०) जो आँखोंके सामने न हो; जो नेत्रका विषय न हो, अप्रत्यक्ष; अनुपस्थित; छिपा हुआ, अलक्षित, गुप्त; अज्ञात । पु० वर्तमान न होनेकी स्थिति, अनुपस्थिति; पूर्ण भूतकाल (संस्कृत व्या०) । **–कर**–पु० वह कर जिसका भार सीधे करदातापर न पड़कर उपभोक्ताओं आदिपर पड़े (इनडाइरेक्ट टैक्स) । **–निर्वाचन**–पु० (इनडाइरेक्ट इलेक्शन) सीधे जनताके मतदान द्वारा नहीं, वरन् निर्वाचन-मंडलों, नगरपालिकाओं आदि द्वारा किया जानेवाला चुनाव । **–भोग**–पु० किसी वस्तुका ऐसा भोग जो उसके स्वामीकी अनुपस्थितिमें किया जाय । **–वृत्ति**–स्त्री० अज्ञात जीवन । वि० अज्ञात रूपसे रहनेवाला ।

परोक्षार्थ–वि० (सं०) जिसका अभिप्राय या अर्थ रहस्यपूर्ण हो ।

परोजन†–पु० दे० 'प्रयोजन'; विवाह आदि उत्सव ।

परोढा–स्त्री० (सं०) दूसरेकी स्त्री ।

परोत्कर्ष–पु० (सं०) दूसरेका अभ्युदय ।

परोद्वह–वि० (सं०) अन्य द्वारा पालित । पु० कोकिल ।

परोना*–स० क्रि० दे० 'पिरोना' ।

परोपकार–पु० (सं०) दूसरेकी भलाई ।

परोपकारी(रिन्)–वि० (सं०) दूसरेकी भलाई करनेवाला ।

परोपकृत–वि० (सं०) जिसकी दूसरेने भलाई की हो ।

परोपजीवी–वि० (पैरेसाइट) दूसरोंपर आश्रित रहकर जीवित रहनेवाला । वह वनस्पति या जंतु जो किसी अन्य विटप या जंतुके शरीरमें लिपटकर उसका रस या रक्त चूसकर परिपुष्ट हो, 'परजीवी'; पराश्रयी ।

परोपदेश–पु० (सं०) दूसरेको उपदेश देना ।

परोपसर्पण–पु० (सं०) भीख माँगना ।

परोरना†–स० क्रि० अभिमंत्रित करना ।

परोरा†–पु० परवल ।

परोल–पु० दे० 'पैरोल' ।

परोष्टि, परोष्णी–स्त्री० (सं०) तेल पीनेवाला एक कीड़ा, तेलचटा ।

परोस*–पु० दे० 'पड़ोस' ।

परोसना†–स० क्रि० दे० 'परसना' ।

परोसा†–पु० पत्तल या थालीमें रखा हुआ एक व्यक्तिके खानेभरका भोजन जो भोजमें सम्मिलित न होनेवालेके यहाँ भेजा जाता है ।

परोसी†–पु० दे० 'पड़ोसी' ।

परोसैया†–पु० भोजन परसनेवाला ।

परोहन–पु० सवारी या बोझ लादनेके काम आनेवाला पशु ।

परोहा†–पु० बाँस, वल्ली आदिसे लटकायी हुई डौरीकी सहायतासे पानी उठाकर सींचनेका प्रकार; मोट, पुरवट ।

परौं–अ० दे० 'परसों' ।

परौठा–पु० दे० 'पराँठा' ।

पर्कट–पु० (सं०) बगला; पश्चात्ताप, ग्लानि ।

पर्कटि, पर्कटी–स्त्री० (सं०) पाकरका पेड़; नयी सोपारी ।

पर्चा–पु० दे० 'परचा' ।

पर्चाना–स० क्रि० दे० 'परचाना' ।

पर्जंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

पर्जनी–स्त्री० (सं०) दारुहल्दी ।

पर्जन्य–पु० (सं०) मेघ, बादल; बरसनेवाला बादल; वर्षा; बादलोंका गर्जन; इंद्र; विष्णु । **–पत्नी**–स्त्री० वशा; इंद्रकी पत्नी शची ।

पर्जन्या–स्त्री० (सं०). दारुहल्दी ।

पर्ण–पु० (सं०) पत्ता; पर; बाणका पंख; पान; पलाशका पेड़ । **–कार**–पु० बरई, पनेरी । **–कुटिका,–कुटी**–स्त्री० पत्तोंकी बनी छाजनवाली कुटिया । **–कूर्च**–पु० एक कृच्छ्र व्रत जिसमें तीन दिन उपवास करनेके बाद पलाश, गूलर, कमल तथा बेलके पत्तों और कुशका काढ़ा पीते हैं । **–कृच्छ**–पु० पाँच दिनोंका एक व्रत जिसमें क्रमसे एक-एक दिन केवल पलाश, गूलर, कमल तथा बेलके पत्तोंका और कुशका काढ़ा पीकर रहते हैं । **–खंड**–पु० वह वनस्पति जिसमें कभी फूल न लगें; पत्तोंका समूह । **–चीर,–पट**–पु० शिव । **–चोरक**–पु० एक गंधद्रव्य । **–नर**–पु० पलाशके पत्तों या सरपतका वह पुतला जिसे किसीकी लाश न मिलनेकी स्थितिमें उसके स्थानपर जलाते हैं । **–भेदिनी**–स्त्री० प्रियंगु नामकी लता । **–भोजन**–वि० पत्ता खाकर रहनेवाला । पु० बकरा । **–भोजनी**–स्त्री० बकरी । **–मणि**–पु० पन्ना (अथर्ववेद); एक तरहका अस्त्र । **–माचाल**–पु० कमरंग वृक्ष, कमरख । **–मुक्(च्)**–पु० शिशिर ऋतु, पतझड़ । **–मृग**–पु० वृक्षोंपर रहने और दौड़नेवाला जानवर (जैसे–बंदर, गिलहरी आदि) । **–रुट्(ह्)**–पु० वसंत ऋतु । **–लता**–स्त्री० पानकी लता । **–वल्क**–पु० एक ऋषि । **–वल्ली**–स्त्री० पलाशी नामकी लता । **–वाद्य**–पु० पत्तेके बने बाजेको बजानेसे होनेवाला शब्द । **–वीटिका**–स्त्री० पानका बीड़ा । **–शब्द**–पु० पत्तोंके खरकने आदिका शब्द । **–शय्या**–स्त्री० पत्तोंका विस्तर, पत्तोंका बिछावन । **–शवर**–पु० एक प्राचीन देश । **–शाला**–स्त्री० पर्णकुटी । **–शुद्(ष्)**–पु० शीतकाल । **–संपुट**–पु० पत्तोंका बना दोना । **–संस्तर**–वि० पत्तोंके बिछौनेपर सोनेवाला । पु० पत्तोंके विस्तरपर सोना ।

पर्णक–पु० (लीफलेट) कागजका छपा हुआ टुकड़ा जो लोगोंमें प्रायः बिना मूल्य वितरणके लिए होता है, पत्रक, परचा ।

पर्णल–वि० (सं०) पत्तोंसे भरा हुआ; पत्तोंसे युक्त ।

पर्णसि–पु० (सं०) जलाशयमें बना हुआ घर; कमल; बनाव-सिंगार; तरकारी, साग ।

पर्णाद–पु० (सं०) पत्ते खाकर रहनेवाला व्रती; एक ऋषि ।

पर्णाशन–पु० (सं०) वह जो पत्ते खाकर रहे; मेघ, बादल ।

पर्णास–पु० (सं०) तुलसी ।

पर्णाहार–पु० (सं०) दे० 'पर्णाशन' ।

पर्णिक–पु० (सं०) पत्ते बेचनेवाला ।

पर्णिका–स्त्री० (सं०) शालपर्णी; पिठवन; अरणी; (कूपन) वस्तुओंके सीमित वितरणकी व्यवस्थामें वह पुरजी, कागजका टुकड़ा या टिकट जिसपर लिखा रहता है कि अमुक व्यक्तिको इतना कपड़ा, पेट्रोल या अन्य वस्तु दी जाय; पैसा जमा करनेपर मिलनेवाला वह प्रमाणक जिसे अर्पित करनेपर कोई वस्तु (जैसे दुग्धशालाका दूध) या कोई सेवा प्राप्त की जा सके; मनीआर्डर फार्मका वह निचला भाग जिसमें रुपया भेजनेवाला पानेवालेके नाम कोई संदेश आदि लिख सकता है; कूपन ।

पर्णिनी–स्त्री० (सं०) माषपर्णी; एक अप्सरा ।

पर्णिल–वि० (सं०) दे० 'पर्णल' ।

पर्णी(र्णिन्)–पु० (सं०) वृक्ष, पेड़; शालपर्णी; पिठवन; तेजपत्ता ।

पर्णीर–पु० (सं०) सुगंधबाला ।

पर्णोटज–पु० (सं०) पर्णकुटी, पर्णशाला ।

पर्त–स्त्री० दे० 'परत' ।

पर्तली–स्त्री० दे० 'परतली' ।

पर्द–पु० (सं०) बालोंका समूह; अपान वायुका त्याग ।

पर्दन–पु० (सं०) अपान वायुका त्याग, पादना ।

पर्दनी*–स्त्री० धोती ।

पर्दा–पु० दे० 'परदा' ।

पर्नसालिका*–स्त्री० कुटिया ।

पर्प–पु० (सं०) गृह, घर; हरी और नयी घास; पंगुओंको एक स्थानसे दूसरे स्थानतक ले जानेके कामकी पहियेदार गाड़ी, पंगुपीठ ।

पर्पट–पु० (सं०) पित्तपापड़ा; पापड़ा; एक ओषधि । **–द्रुम**–पु० कुंभी वृक्ष ।

पर्पटी–स्त्री० (सं०) गोपीचंदन; पापड़; एक गंधद्रव्य; एक रसौषधि, स्वर्णपर्पटी; † कनपटी ।

पर्परी–स्त्री० पापड़ी; (सं०) कवरी, जूड़ा ।

पर्परीक–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; जलाशय ।

पर्परीण–पु० (सं०) पत्तेकी नस ।

पर्पिक–पु० (सं०) कुर्सी आदिपर ढोया जानेवाला पंगु ।

पर्फरीक–पु० (सं०) नया पल्लव, किसलय ।

पर्ब–पु० दे० 'पर्व' ।

पर्बत–पु० दे० 'पर्वत' ।

पर्बती–वि० पर्वत-संबंधी, पहाड़ी ।

पर्यंक–पु० (सं०) पलंग; एक आसन, वीरासन (यो०); दे० 'अवसक्थिका'; पालकी । **–पादिका**–स्त्री० काली सेम । **–बंध**–पु० वीरासन । **–बंधन**–पु० कपड़ेसे पीठ और घुटने बाँधकर बैठना । **–भोगी(गिन्)**–पु० एक प्रकारका साँप ।

पर्यंत–अ० (सं०) तक । वि० सीमित । पु० अंतिम सीमा, किनारा; अंत, समाप्तिस्थान । **–देश**–पु० दे० 'पर्यंतभू' । **–भू, –भूमि**–स्त्री० नदी, नगर आदिके पासका भूभाग ।

पर्यंतिका–स्त्री० (सं०) गुणोंका नाश; नैतिक पतन ।

पर्यटक–पु० (सं०) भ्रमण करनेवाला; देशविदेशमें घूमने-फिरनेवाला । **–राजदूत**–पु० (रोविंग एंबैसेडर) किसी विशेष उद्देश्यसे विभिन्न देशोंमें परिभ्रमण कर लौट आनेवाला राजदूत ।

पर्यटन–पु० (सं०) चारों ओर घूमना, इधर-उधर घूमना; देशदर्शन और मनोरंजनके लिए विभिन्न स्थानोंका भ्रमण ।

पर्यनुयोग–पु० (सं०) किसी उक्ति या बयानको मिथ्या सिद्ध करनेके लिए की जानेवाली पूछताछ; पूछताछ; निंदा ।

पर्यन्य–पु० (सं०) दे० 'पर्जन्य' ।

पर्यय–पु० (सं०) ऐसा आचार जिसमें शास्त्रीय और लौकिक व्यवहारका अतिक्रमण हो; बीतना (जैसे–'कालपर्यय'); परिवर्तन; अव्यवस्था ।

पर्ययण–पु० (सं०) घोड़ेका जीन, काठी ।

पर्यवदात–वि० (सं०) पूर्णतः शुद्ध, अति स्वच्छ ।

पर्यवरोध–पु० (सं०) रोक, बाधा ।

पर्यवलोकन–पु० (सर्वे) किसी कामको या किसी क्षेत्रादिको आदिसे अंततक–एक छोरसे दूसरे छोरतक–स्थूल रूपसे देखना, जाँचना समझना, सर्वेक्षण ।

पर्यवष्टंभन–पु० (सं०) घेरा डालना, अवरोध ।

पर्यवसान–पु० (सं०) अंत, समाप्ति; अवधारण, निश्चय ।

पर्यवसित–वि० (सं०) समाप्त; जिसका निश्चय हुआ हो, निश्चित; नष्ट ।

पर्यवस्था–स्त्री० (सं०) विरोध; विरोधमें कही गयी बात, प्रतिपक्षवाद ।

पर्यवस्थाता(तृ)–पु० (सं०) विरोध करनेवाला; प्रतिपक्षी ।

पर्यवस्थान–पु० (सं०) विरोध करना; प्रतिवाद करना ।

पर्यवेक्षक–पु० (सूपरवाइजर) किसी काम आदिकी निगरानी करनेवाला, चारों तरफ नजर रखनेवाला, देखभाल करनेवाला ।

पर्यवेक्षण–पु० (सूपरविजन) चारों तरफ नजर रखने, निगरानी करने आदिका काम, देखभाल ।

पर्यश्रु–वि० (सं०) जो आँसुओंसे भीग-सा गया हो, जिसकी आँखोंसे बहुत अधिक आँसू बह रहे हों ।

पर्यसन–पु० (सं०) फेंकना; दूर करना; बाहर करना, निकालना, हटाना ।

पर्यस्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; दूर किया हुआ; बाहर किया हुआ, निकाला हुआ ।

पर्यस्तापह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नुति अर्थालंकारका एक भेद जहाँ किसी वस्तु (उपमान)का गुण छिपाकर किसी दूसरी वस्तु (उपमेय)में उसकी स्थापना की जाय ।

पर्यस्ति–स्त्री० (सं०) दूर करना; वीरासन लगाकर बैठना ।

पर्यस्तिका–स्त्री० (सं०) वीरासन; पलंग ।

पर्याकुल–वि० (सं०) गँदला; व्याकुल, घबराया हुआ; क्षुब्ध, उत्तेजित; पूर्ण, भरा हुआ (क्रोधपर्याकुल) ।

पर्यागत–वि० (सं०) जो अपना चक्कर पूरा कर चुका हो, परिक्रमा किया हुआ (वर्षादि); जो अपना सांसारिक जीवन समाप्त कर चुका हो; वशीकृत ।

पर्याचांत–पु० (सं०) वह भोजन जो एक साथ खानेवालोंमेंसे किसी एकके बीचमें ही आचमन कर लेनेके बाद औरोंके आगे बच रहा हो । वि० समयसे पहले ही आचमन किया हुआ ।

पर्याण–पु० (सं०) घोड़ेका जीन, काठी ।

पर्याप्त–वि० (सं०) पाया हुआ, प्राप्त; जो जितना चाहिये उतना हो, पूरा, काफी; समग्र; योग्य; समर्थ; बड़ा; विस्तृत; समाप्त ।

पर्याप्ति–स्त्री० (सं०) मिलना, प्राप्ति; यथेष्ट या काफी होनेका भाव; अंत, समाप्ति; योग्यता; तृप्ति; संतोष; सामर्थ्य; निवारण; रक्षण; वस्तुओंका गुणगत भेद ।

पर्याप्लाव–पु० (सं०) चक्कर, फेरा; घेरा ।

पर्याप्लुत–वि० (सं०) घेरा हुआ ।

पर्याय–पु० (सं०) अनुक्रम, सिलसिला; व्यतीत होना (समय); समानार्थक शब्द; प्रकार, ढंग; अवसर, मौका; बनाना, निर्माण; द्रव्यका धर्म या सहज गुण; एक अर्थालंकार जहाँ एक वस्तुका क्रमसे अनेक आश्रय लेना दिखाया जाय या अनेक वस्तुओंका एकके ही आश्रित होना वर्णित हो । **–च्युत**–वि० स्थानच्युत; जिसका स्थान दूसरेको प्राप्त हुआ हो । **–वचन,–शब्द**–पु० समानार्थक शब्द । **–वाचक,–वाची(चिन्)**–वि० समानार्थक । **–शयन**–पु० पहरेदारोंका बारी-बारीसे सोना । **–सेवा**–स्त्री० बारी-बारीसे सेवा करना ।

पर्यायोक्त–पु०, **पर्यायोक्ति**–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ कोई बात घुमा-फिराकर कही जाय या किसी रमणीय व्याजसे कार्य-साधन किये जानेका वर्णन हो ।

पर्यारिणी–स्त्री० (सं०) व्याधिग्रस्त गौ ।

पर्यालोचन–पु०, **पर्यालोचना**–स्त्री० (सं०) सम्यक् विवेचन, समीक्षण ।

पर्यावरण–पु० (सं०) अड़ोस-पड़ोस; चारों ओरकी स्थिति; आस-पासकी घटनाएँ, रीति-व्यवहारादि ।

पर्यावर्त–पु० (सं०) वापस आना, लौटना; सूर्यका ऐसा परिभ्रमण जिसमें उसकी पश्चिम पड़नेवाली छाया पूर्वकी ओर पड़े ।

पर्यावर्तन–पु० (सं०) एक नरक; दे० 'पर्यावर्त' ।

पर्याविल–वि० (सं०) बहुत गँदला ।

पर्यास–पु० (सं०) चक्कर देना; चारों ओर घूमना, परिभ्रमण; पतन; हनन, वध; उलटा क्रम; समाप्ति ।

पर्यासन–पु० (सं०) चक्कर, फेरा ।

पर्याहार–पु० (सं०) जूआ; ढोना, ले जाना; बोझ; घड़ा; अन्न जमा करना ।

पर्युक्षण–पु० (सं०) हवन-पूजन आदि धार्मिक कृत्य करते समय अपने चारों ओर बिना कोई मंत्र पढ़े जल छिड़कना ।

पर्युक्षणी–स्त्री० (सं०) पर्युक्षण-संबंधी जल रखनेका पात्र ।

पर्युत्थान–पु० (सं०) उठ खड़ा होना ।

पर्युत्सुक–वि० (सं०) बहुत उत्सुक; उदास, खिन्न, रंजीदा; व्याकुल, क्षुब्ध ।

पर्युदंचन–पु० (सं०) ऋण; उद्धार ।

पर्युदय–पु० (सं०) आसन्न सूर्योदयकाल; प्रभातके पूर्वका समय ।

पर्युदस्त–वि० (सं०) मना किया हुआ, निषिद्ध; अलग या अपवाद किया हुआ ।

पर्युदास–पु० (सं०) निषेध; अपवाद, मुसतसना ।

पर्युपस्थान–पु० (सं०) सेवा, टहल ।

पर्युपासक–पु० (सं०) उपासना करनेवाला; सेवक ।

पर्युपासन–पु० (सं०) उपासना, सेवा, पूजा; मैत्री, सद्भावना; आस-पास बैठना ।

पर्युपासिता (तृ), पर्युपासी (सिन्)–पु० (सं०) उपासना करनेवाला ।

पर्युप्त–वि० (सं०) बोया हुआ ।

पर्युप्ति–स्त्री० (सं०) बोनेकी क्रिया, बोआई ।

पर्युषण–पु० (सं०) पूजन, उपासना; जैनियोंका एक पर्व ।

पर्युषित–वि० (सं०) ताजा नहीं, बासी; कुरस; मूर्ख ।

पर्यूहण–पु० (सं०) अग्निके चारों ओर जलसे मार्जन करना ।

पर्येषण–पु०, **पर्येषणा**–स्त्री० (सं०) तर्क आदिके द्वारा की गयी छानबीन; खोज, अन्वेषण; पूजा; आदर-सत्कार ।

पर्येष्टि–स्त्री० (सं०) अन्वेषण, खोज; पूछताछ ।

परौं†–बीजका उपजाऊपन परखनेकी एक विधि ।

पर्व (न्)–पु० (सं०) उत्सव, त्योहार; कोई उत्सव या त्योहार मनाने या कोई विशिष्ट धार्मिक कृत्य (स्नान आदि) करनेका समय या दिन; चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या तथा पूर्णिमा–ये चार तिथियाँ और रविसंक्रांति; परिवासे लेकर पूर्णिमा या अमावस्यातकका समय; सूर्य-ग्रहण; चंद्रग्रहण; अवसर, मौका; संधिस्थान, गाँठ, जोड़; पोर; शरीरके अवयवोंका कोई जोड़; अंश, भाग; सीढीका डंडा, सोपान; पुस्तकका कोई भाग (जैसे महाभारतका); निश्चित काल; चातुर्मास्यमें होनेवाले याग । **–कार, –कारी-(रिन्)**–पु० वह ब्राह्मण जो धनके लोभसे पर्वके दिनका कृत्य उस दिन भी करे जिस दिन कोई पर्व न हो । **–काल**–पु० पर्वका समय । **–गामी (मिन्)**–वि०, पु० पर्वके दिन स्त्री-प्रसंग करनेवाला । **–धि**–पु० चंद्रमा । **–पुष्पिका, –पुष्पी**–स्त्री० रामदूती; नागदंती । **–पूर्णता**–स्त्री० किसी उत्सव या त्योहारके लिए की जानेवाली तैयारी; किसी उत्सव या त्योहारका संपन्न होना । **–भाग**–पु० कलाई । **–मूल**–पु० चतुर्दशी और पूर्णिमा या अमावस्याका संधिकाल । **–मूला**–स्त्री० श्वेता, सफेद दूब । **–योनि**–पु० वह पौधा या वनस्पति जिसमें गाँठें हों (ईख, बेंत आदि) । **–रुट् (ह्)**–पु० अनारका पेड़ । **–वल्ली**–स्त्री० एक प्रकारकी दूब, मालादूर्वा । **–संधि**–स्त्री० प्रतिपदा और पूर्णिमाके आदि और अंतके चार दंड; प्रतिपदा तथा पूर्णिमा या अमावस्याका संधिकाल ।

पर्वक–पु० (सं०) घुटनेका जोड़ ।

पर्वण–पु० (सं०) पूरा करनेकी क्रिया, पूर्तिकरण; एक राक्षस ।

पर्वणिका–स्त्री० (सं०) आँखके जोड़का एक रोग (आ० वे०) ।

पर्वणी–स्त्री० (सं०) पूर्णिमा; प्रतिपदा; उत्सव, त्योहार; आँखके जोड़में होनेवाला एक रोग (आ० वे०); पर्वशाक; पूरा करना ।

पर्वत–पु० (सं०) पहाड़; चट्टान; बनावटी पहाड़; किसी वस्तुका पहाड़ जैसा ऊँचा ढेर; एक देवर्षि; एक प्रकारकी मछली; सातकी संख्या (पर्वत सात हैं–निषध, हेमकूट, नील, श्वेत, शृंगी, माल्यवान्, गंधमादन); वृक्ष; एक प्रकारका शाक; एक गंधर्व; दशनामी सन्न्यासियोंका एक भेद । **–काक**–पु० डोमकौआ । **–कीला**–स्त्री० पृथ्वी । **–ज**–वि० पर्वतसे उत्पन्न । **–जा**–स्त्री० नदी; पार्वती । **–जाल**–पु० पर्वतश्रेणी । **–तृण**–पु० एक प्रकारका तृण । **–दुर्ग**–पु० दुरारोह पर्वत; पहाड़ी किला । **–नंदिनी**–स्त्री० पार्वती । **–पति**–पु० हिमालय । **–माला**–स्त्री० पहाड़ोंकी श्रेणी या परंपरा । **–मोचा**–स्त्री० पहाड़ी केला । **–राज**–पु० बड़ा पहाड़; हिमालय । **–वासिनी**–स्त्री० दुर्गा; गायत्री । **–वासी (सिन्)**–वि०, पु० पहाड़पर रहनेवाला; पहाड़ी । **–स्थ**–वि० पर्वतपर स्थित ।

पर्वतक–पु० (सं०) पहाड़ ।

पर्वतात्मज–पु० (सं०) मैनाक ।

पर्वतात्मजा–स्त्री० (सं०) पार्वती ।

पर्वताधारा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

पर्वतारि–पु० (सं०) इंद्र ।

पर्वतारोही दल–पु० पहाड़की ऊँचाई आदिका पता लगानेके लिए अभियान करनेवाला दल ।

पर्वताशय–पु० (सं०) मेघ, बादल ।

पर्वताश्रय–पु० (सं०) शरभ; पहाड़पर रहनेवाला । वि० पहाड़ी ।

पर्वताश्रयी (यिन्)–वि०, पु० (सं०) पहाड़पर रहनेवाला ।

पर्वतासन–पु० (सं०) हठयोगमें एक आसन ।

पर्वतास्त्र–पु० (सं०) एक तरहका अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर पत्थरोंकी वर्षा होने लगती थी ।

पर्वतिया–पु० नेपालियोंकी एक जाति; एक प्रकारका कद्दू; एक प्रकारका तिल । † वि० पहाड़ी ।

पर्वती–वि० दे० 'पर्वतीय' ।

पर्वतीय–वि० (सं०) पर्वत-संबंधी; पर्वतका; पहाड़पर रहने या पैदा होनेवाला, पहाड़ी । पु० पहाड़ी ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

पर्वतेश्वर–पु० (सं०) हिमालय ।

पर्वतोद्भव–पु० (सं०) पारा; शिंगरफ । वि० पर्वतपर उत्पन्न ।

पर्वतोद्भूत–पु० (सं०) अबरक । वि० पर्वतपर उत्पन्न ।

पर्वतोर्मि–पु० (सं०) एक प्रकारकी मछली ।

पर्वरिश–स्त्री० दे० 'परवरिश' ।

पर्वरीण–पु० (सं०) वायु; पर्व; मृतक; गर्व; पत्तेका रस; पत्तेकी नस ।

पर्वा–स्त्री० दे० 'परवा' ।

पर्वानगी–स्त्री० दे० 'परवानगी' ।

पर्वाना–पु० दे० 'परवाना' ।

पर्वावधि–स्त्री० (सं०) गाँठ, जोड़; पर्वकाल या उसका अंत ।

पर्वास्फोट–पु० (सं०) उँगलियोंको चटकानेकी क्रिया ।

पर्वाह–स्त्री० दे० 'परवाह' । पु० (सं०) पर्वका दिन ।

पर्विणी–स्त्री० (सं०) त्योहारका दिन ।

पर्वित–पु० (सं०) एक प्रकारकी मछली ।

पर्वेश–पु० (सं०) ब्रह्मा, इंद्र, चंद्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम जो छ-छ महीनेके ग्रहणके अधिपति हुआ करते हैं; ग्रहणका अधिपति देवता ।

पर्शु–पु० (सं०) आयुध; अस्त्र; परशु, फरसा; पसली । **–पाणि**–पु० गणेश; परशुराम ।

पर्शुका–स्त्री० (सं०) बगलकी हड्डी, पसली ।

पश्वंध–पु० (सं०) फरसा, कुठार ।

पर्षद्–स्त्री० (सं०) परिषद्, सभा; धर्मोपदेशक पंडितोंका समाज ।

पर्षद्वल–पु० (सं०) सभासद् ।

पर्हेज–पु० दे० 'परहेज' ।

पलंकट–वि० (सं०) भीरु, डरपोक ।

पलंकर–पु० (सं०) पित्त नामक धातु ।

पलंकष–पु० (सं०) दानव; सिंह; समुद्र, गुग्गुल; पलाश ।

पलंकषा–स्त्री० (सं०) गुग्गुल; मक्खी; पलाश; लाख ।

पलंका*–स्त्री० लंकासे भी आगेका स्थान, दूरवर्ती स्थान।

पलंग–पु० बड़ी और बढ़िया चारपाई, अधिक लंबी-चौड़ी और सुन्दर चारपाई। **–तोड़**–वि० जो बिना कुछ काम किये यों ही पड़ा रहे, निकम्मा, आलसी। **–पोश**–पु० पलंगकी चादर। मु० **–को लात मारकर खड़ा होना**–भली-चंगी होकर सौरीसे बाहर आना; किसी भारी बीमारीसे छुटकारा पाकर स्वस्थ होना। **–तोड़ना**–कोई काम न करते हुए पड़े या सोये रहना, बेकार रहकर दिन बिताना। **–लगाना**–पलँगपर ठीक तरहसे बिछावन बिछाना।

पलँगड़ी–स्त्री० छोटा पलंग, चारपाई।

पलँगिया†–स्त्री० छोटा पलंग या खाट।

पल–पु० (सं०) मांस; समयका एक लघु विभाग जो ६० विपल अर्थात् २४ सेकंडके बराबर होता है; ४ कर्षकी एक प्राचीन तौल; पयाल; *पलक। **–क्षार**–पु० रक्त, खून। **–गंड**–पु० दीवारपर पलस्तर करनेवाला मिस्त्री, राज। **–चर***–पु० एक उपदेवता। **–द**–वि० जिसके सेवनसे मांस बढ़े। **–प्रिय**–पु० राक्षस; कौआ। वि० जिसे मांस प्यारा हो, मांसप्रिय। **–भा**–स्त्री० विषुवत् रेखापर सूर्यके रहते समय धूपघड़ीके शंकुकी मध्याह्नकी छाया।

पलई†–स्त्री० पेड़का सिरा; पेड़की पतली और नरम टहनी।

पलक–स्त्री० आँखको ढकनेवाला चमड़ेका वह परदा जिसके गिरने और उठनेसे आँख क्रमसे बंद होती और खुलती है; *क्षण, निमिष। *अ० क्षणभर। **–दरिया,–दरियाव,–नेवाज**†–वि० अति उदार। **–पीटा**–पु० आँखका एक रोग जिसमें बरौनियाँ करीब-करीब झड़ जाती हैं, आँखें झपका करती हैं और रोगी धूप या रोशनीकी ओर देख नहीं सकता; वह जिसे यह रोग हुआ हो, इस रोगका रोगी। मु० **–झपकते या गिरते**–देखते-देखते क्षणभरमें। **–पसीजना**–आँखोंमें आँसू आना; दयार्द्र होना। **–बिछाना**–किसीका बड़ी श्रद्धासे स्वागत करना। **–भँजना**–आँखका इशारा होना। **–भाँजना**–आँखसे इशारा करना। **–मारना**–आँखसे इशारा करना; झपकी लेना; पलक गिराना। **–लगना**–आँख बंद होना, नींद आना। **–लगाना**–आँख बंद करना; सोनेके लिए आँख बंद करना। **–से पलक न लगना**–टकटकी लगी रहना, नींद न आना। **–(कों)से जमीन झाड़ना या तिनके चुनना**–बड़ी श्रद्धासे किसीकी सेवा करना।

पलका*–पु० पलंग, शय्या।

पलक्या–स्त्री० (सं०) पालकका साग।

पलखन–पु० पाकरका पेड़।

पलटन–स्त्री० (अं० 'प्लेटून') पैदल सैनिकोंका वह विभाग जिसमें २०० सैनिक हों; सैनिकों या लोगोंका दल जो समान उद्देश्यसे कहीं एकत्र हुए हों, फौज।

पलटना–अ० क्रि० उलट जाना; एकदम बदल जाना, पूर्णतया परिवर्तित हो जाना ('जाना' क्रियाके साथ); अच्छी दशाको प्राप्त होना; पीछेकी ओर रुख करना, मुड़ना; वापस आना, लौटना। स० क्रि० उलटना, ऐसी स्थितिको पहुँचाना कि नीचेका भाग ऊपर हो जाय और ऊपरका नीचे; एकदम बदल देना, पूर्णतया परिवर्तित कर देना ('देना' या 'डालना'के साथ); बार-बार उलटना; एक वस्तुके स्थानपर दूसरी वस्तु ग्रहण करना; किसी वस्तुके बदले दूसरी वस्तु लेना या बदलना; बात उलट देना, मुकरना; * वापस करना, लौटाना।

पलटनिया–वि० पलटनका। पु० पलटनमें काम करनेवाला सैनिक।

पलटा–पु० पलटनेका कार्य या भाव; प्रतिफल; बदला; नावमें लगी हुई वह पटरी जिसपर खेवैया बैठता है; गवैयेका ऊँचे स्वरोंतक पहुँचकर बारीकीके साथ पुनः नीचेके स्वरोंकी ओर लौटना, अवरोह; लोहे, पीतल या काठकी चपटी कलछी; कुश्तीका एक पेंच। मु०**–खाना**–स्थितिका पूर्णतः परिवर्तित हो जाना।

पलटाना–स० क्रि० वापस करना; लौटाना; बदलना।

पलटाव–पु० पलटे जानेकी क्रिया।

पलटावना–स० क्रि० दे० 'पलटाना', *दबवाना।

पलटी†–स्त्री० पलटा जाना; बदली।

पलटे†–अ० बदलेमें, प्रतिफलके रूपमें।

पलड़ा, पलरा–पु० तराजूका पल्ला; दो पक्षोंमेंसे एककी शक्ति या बल।

पलथा†–पु० कलैया मारनेकी क्रिया।

पलथी–स्त्री० दाहिने और बायें पैरोंके पंजोंको क्रमसे बायीं और दाहिनी जाँघोंके नीचे दबाकर बैठनेका एक आसन।

पलना–अ० क्रि० पालित होना, पाला-पोसा जाना; हृष्ट-पुष्ट होना, तैयार होना। पु० दे० 'पालना'।

पलनाना*–स० क्रि० जोत या कसकर तैयार करना (रथ, घोड़ा)।

पलल–पु० (सं०) मांस; कीचड़; तिलकुट; राक्षस। **–ज्वर**–पु० पित्त नामक धातु। **–प्रिय**–पु० राक्षस; डोमकौआ।

पललाशय–पु० (सं०) गलगंड, घेघा।

पलव–पु० (सं०) मछलियाँ फँसानेका एक तरहका जाल या बाँसका झाबा।

पलवल†–पु० दे० 'परवल'।

पलवा†–पु० ऊखका ऊपरी भाग जो नीरस होता है, 'अगाव'; एक घास; *अंजलि।

पलवाना–स० क्रि० किसीसे पालन कराना।

पलवार–पु० ईखकी खेती करनेका एक तरीका जिसमें अँखुए निकलनेके बाद खेतको तर बनाये रखनेके लिए उसे सूखे पत्तों आदिसे ढक देते हैं; माल लादनेकी एक प्रकारकी बड़ी नाव।

पलवारी–पु० नाव खेनेवाला, मल्लाह।

पलवैया†–पु० पालन-पोषण करनेवाला।

पलस–पु० (सं०) दे० 'पनस'।

पलस्तर–पु० (अं० 'प्लास्टर') चूना, कंकड़, सुर्खी, सीमेंट-बालू, आदिसे तैयार किया हुआ एक तरहका लेप जो दीवार आदिपर चढ़ाया जाता है; हड्डी बैठाने आदिके लिए लगाया जानेवाला लेप। मु० **(किसीका)–ढीला करना**–पस्त करना। **–ढीला होना**–शिथिल होना; पस्त होना। **(किसीका)–बिगड़ना या बिगड़ जाना**–दे० 'पलस्तर ढीला होना'। **(किसीका)–बिगाड़ना या बिगाड़ देना**–दे० 'पलस्तर ढीला करना'।

पलहना*–अ० क्रि० दे० 'पलुहना', पल्लवित होना।

पलहा–पु० जन्म-मृत्युकी सूचना; *पल्लव।

पलांग–पु० (सं०) कछुआ; सूंस।

पलांडु–पु० (सं०) प्याज।

पला–पु० ६० विपल, पल; बड़ी पली; *तराजूका पल्ला; आँचल, पल्ला, किनारा; डिब्बोंके दो भागोंमेंसे कोई एक।

पलाग्नि–स्त्री० (सं०) पित्त नामक धातु।

पलाद, पलादन, पलाशन–पु० (सं०) राक्षस। वि० मांस खानेवाला, मांसाहारी।

पलान–पु० घोड़े आदिकी पीठपर कसा जानेवाला जीन या चारजामा।

पलानना*–स० क्रि० (घोड़े आदिपर) पलान कसना; आक्रमण करनेकी तैयारी करना।

पलाना*–अ० क्रि० भागना; तेजीसे जाना; गाय इत्यादिका पेन्हाना। स० क्रि० भगाना।

पलानि*–स्त्री० जीन–'परै पलानि तुरंगम पीठिहिं'–प०।

पलानी–स्त्री० छप्पर; पंजेके ऊपर पहननेका स्त्रियोंका एक गहना; जीन।

पलान्न–पु० (सं०) मांसयुक्त अन्न, पुलाव।

पलाप–पु० (सं०) हाथीका कपोल; पगहा।

पलायक, पलायी(यिन्)–वि०, पु० (सं०) भागनेवाला, भगोड़ा; (ऐब्सकांडर) दंडित होने या पकड़े जाने आदिके भयसे भाग जाने, छिप जानेवाला व्यक्ति; अपपलायी।

पलायन–पु० (सं०) (डरकर) दूसरी जगह चले जाना, भागना। **–वाद**–पु० (एस्केपिज्म) यह मत कि सभी वस्तुएँ प्रस्तुत रूप तथा स्थितिसे ऊबकर किसी नवीन या विशिष्टतायुक्त रूपकी ओर प्रवृत्त होती हैं; वह मतवाद जिसमें जीवनकी वास्तविकता और कठिनाइयोंसे भागनेकी प्रवृत्तिको प्रश्रय दिया जाता है; कठिनाइयों, जिम्मेदारी आदिसे दूर भागनेकी प्रवृत्ति। **–वादी(दिन्)**–वि०, पु० पलायनवादका सहारा लेनेवाला (कवि, लेखक इ०)। **–वेग**–पु० (इस्केप वेलामिटी) वह वेग जिससे यदि कोई *पिण्ड धुर*

ऊपरकी दिशामें फेंका जाय तो वह पृथ्वीके गुरुत्वाकर्षण बलकी पकड़से छूटकर दूर किसी अन्य आकाशीय पिण्डके गुरुत्वीय आकर्षण की पकड़में आ जाय। पृथ्वीके आकर्षणसे निकल भागनेके लिए पलायन वेग लगभग ११ किलोमीटर प्रति सेकण्ड है.।

पलायमान–वि० (सं०) भागता हुआ।

पलायित–वि० (सं०) भागा हुआ।

पलाल–पु० (सं०) पौधेका सूखा डंठल, पयाल; भूसी। **–दोहद**–पु० आमका पेड़।

पलालि, पलाली–स्त्री० (सं०) मांसका ढेर।

पलाव–पु० (सं०) मछली फँसानेका काँटा, बंसी।

पलाश–पु० (सं०) पत्ता; पलास, टेसू; पलासका फूल; राक्षस; मगध देश; हरा रंग; किसी तेज हथियारका फल। वि० हरा; निष्ठुर, कठोरहृदय; मांसाहारी। **–पर्णी**–स्त्री० असगंध। –**–पुट**–पु० पलासके पत्तेका दोना।

पलाशक–पु० (सं०) पलासका पेड़; कपूर।

पलाशांता–स्त्री० (सं०) कपूरकचरी, गंधपत्ना।

पलाशाख्य–पु० (सं०) नाड़ीहींग।

पलाशिका–स्त्री० (सं०) वृक्षादिपर चढ़नेवाली एक लता।

पलाशी–स्त्री० (सं०) वृक्षपर चढ़नेवाली एक लता; लाख।

पलाशी (शिन्)–वि० (सं०) पत्तोंवाला; मांस खानेवाला। पु० क्षीरवृक्ष; राक्षस।

पलाशीय–वि० (सं०) पत्तोंवाला, पत्नयुक्त।

पलास–पु० मझोले आकारका एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फूल बहुत लाल होता है, किंशुक (हिंदू इस वृक्षको पवित्र मानते हैं और ब्रह्मचारी इसका दंड धारण करते हैं); गीधकी जातिका एक मांसाहारी पक्षी। **–पापड़ा**–पु०,**–पापड़ी**–स्त्री० पलासकी कली।

पलिक–वि० (सं०) एक पल वजनका।

पलिका*–पु० दे० 'पलका'। स्त्री० (सं०) तेल निकालनेकी पली।

पलिक्नी–स्त्री० (सं०) वह बुड्ढी स्त्री जिसके बाल सफेद हो गये हों; वह गाय जो पहले पहल गाभिन हुई हो, बालगर्भिणी गौ।

पलिघ–पु० (सं०) काँचका घड़ा; प्राकार, चहारदीवारी; फाटक; गोशाला; परिघ, लौहगदा।

पलितंकरण–वि० (सं०) (बाल) पलित या सफेद बनानेवाला।

पलित–वि० (सं०) वृद्ध, बुड्ढा; पका हुआ या सफेद (बाल)। पु० वृद्धावस्थाके कारण बालोंका पकना या सफेद होना; ताप, गरमी; कीचड़; छरीला नामक पौधा; लोहा।

पलिती (तिन्)–वि० (सं०) जिसके बाल सफेद हो गये हों।

पलिया–पु० पशुओंका एक रोग जिसमें उनका गला सूज जाता है।

पलिहर†–पु० चैती फसल बोनेके लिए छोड़ा जानेवाला खेत जिसमें भदई न बोयी जाय पर जोताई होती रहे।

पली–स्त्री० बड़े बरतनोंमेंसे घी, तेल आदि तरल पदार्थ निकालनेका लोहेका एक आला जो एक डंडीके सिरेपर छोटी-सी कटोरी जोड़कर बनाया जाता है, 'परी'। मु०**–पली जोड़ना**–थोड़ा-थोड़ा करके संचय करना; कौड़ी-कौड़ी जोड़कर धन बटोरना।

पलीत–वि० दुष्ट; धूर्त्त; गंदा। पु० भूत-प्रेत।

पलीता–पु० मंत्र लिखा हुआ कागज जिसे बत्तीकी तरह बनाकर जलाते हैं; तोपके रंजकमें आग लगानेकी बरोह आदिकी मोटी बत्ती; पनसाखेपर रखकर जलानेकी कपड़ेकी विशेष प्रकारकी बत्ती; पटाखेमें लगी बत्ती जिसे जलानेसे वह भड़क उठता है। वि० अति क्रुद्ध, क्रोधसे तमतमाया हुआ; तेज चलने या दौड़नेवाला, तीव्रगामी। मु० **–लगाना**–ऐसी बात कह देना जिससे झगड़ा शुरू हो जाय।

पलीती–स्त्री० छोटा पलीता।

पलीद–वि० (फा०) अशुद्ध, अपवित्र, नापाक; दुष्ट; खोटा, खराब (मिट्टी–होना)। पु० भूत-प्रेत।

पलुआ†–पु० सनकी जातिका एक पौधा। वि० पाला हुआ, पालतू।

पलुवाँ†–वि० पालतू।

पलुहना*–अ० क्रि० हरा-भरा होना, पल्लवित होना।

पलुहाना*–स० क्रि० हरा-भरा करना, पल्लवित करना–'जरी जो बेल सींचि पलुहाई'–प०।

पलेट–स्त्री० (अं० 'प्लेट') पट्टी; कमीज, कुरते आदिमें सुंदरताके लिए या कड़ापन लानेके लिए लगायी जानेवाली कपड़ेकी पट्टी।

पलेटन–पु० (अं० 'प्लेटेन') मुद्रणयंत्नका वह भाग जिसके दबावसे अक्षर छपते हैं।

पलेड़ना*–स० क्रि० धक्का देना।

पलेथन–पु० वह सूखा आटा जिसे लोईपर लगाकर रोटी बेलते हैं, 'परथन'। मु०**–निकलना**–खूब पीटा जाना, गहरी मार पड़ना। **–निकालना**–खूब पीटना; परेशान करना।

पलेनर–पु० (अं० 'प्लेनर') (छपाईमें) कसे हुए फरमेमें सतहसे ऊपर उठे हुए टाइपोंको बराबर करनेके लिए काठका बना चिपटा टुकड़ा।

पलेना–पु० दे० 'पलेनर'।

पलोटना*–स० क्रि० (पैर) दबाना। अ० क्रि० लोट-पोट करना; भारी शारीरिक कष्टसे तड़फड़ाना-छटपटाना।

पलोथन–पु० दे० 'पलेथन'।

पलोवना*–स० क्रि० (पैर) दबाना; सेवा-शुश्रूषा करना।

पलोसना*–स० क्रि० साफ करना, धोना।

पल्टा–पु० दे० 'पलटा'।

पल्यंक–पु० (सं०) पलंग, शय्या।

पल्ययन–पु० (सं०) घोड़ेका जीन; बागडोर।

पल्ल–पु० (सं०) अन्नका बखार।

पल्लव–पु० (सं०) नया और कोमल पत्ता; घासकी पत्ती; कली; कंकण, वलय; अलक्तक; बल; चंचलता; विस्तार; विटप; वृक्ष; रस्सी या वस्त्रका छोर; लंपट; शृंगार; काम-क्रीडा; नृत्यमें हाथकी एक मुद्रा; दक्षिणका एक प्राचीन राजवंश। –**–ग्राहिता**–स्त्री० अधूरा, अपूर्ण ज्ञान; मामूली चीजोंमें लगा रहना। **–ग्राहिपांडित्य**–पु० किसी विषयका अपूर्ण ज्ञान या अधूरी जानकारी। **–ग्राही (हिन्)**–वि० जिसमें पल्लव लगे हों या लग रहे हों; अपूर्ण, अधूरा (ज्ञान); अधूरी जानकारीवाला; अदनी बातोंमें व्यस्त रहनेवाला। **–द्रु**–पु० अशोकका पेड़।

पल्लवक–पु० (सं०) लंपट; वेश्याका यार; अशोक वृक्ष; एक तरहकी मछली; अँखुवा, कोंपल।

पल्लवना*–अ० क्रि० पल्लवित होना।

पल्लवांकुर, पल्लवाधार–पु० (सं०) शाखा।

पल्लवाद–पु० (सं०) हिरन।

पल्लवापीडित–वि० (सं०) कलियोंसे लदा हुआ।

पल्लवास्त्र–पु० (सं०) कामदेव।

पल्लविक–पु० (सं०) कामुक।

पल्लवित–वि० (सं०) जिसमें पल्लव लगे हों; लहलहाता हुआ; विकसित; विस्तृत; बढ़ाया हुआ; लाखमें रँगा हुआ; रोमांचयुक्त। पु० लाखका रंग।

पल्लवी (विन्)–वि० (सं०) जिसमें नये पत्ते निकले हों। पु० वृक्ष।

पल्ला–पु० कपड़ेका छोर, दामन; दूरी; दुपलिया टोपीका आधा हिस्सा; अन्न बाँधकर ले जानेका टाट या गोनी; रजाई, चश्मे, किवाड़, तराजू, कैंची आदिके दो हिस्सोंमेंसे कोई एक; तीन मनका बोझ। † वि० दे० 'परला'। **–(ल्ले)दार**–पु० गल्ला आदि ढोने या तौलनेवाला। **–दारी**–स्त्री० पल्लेदारका काम या उजरत। मु०**–छुड़ाना**–छुट्टी पा लेना, पिंड छुड़ाना। **–छूटना**–छुटकारा मिलना, पिंड छूटना। **–झुकना**–किसी पक्षका अधिक बलवान् होना। **–पकड़ना**–सहारा लेना। **–पसारना**–किसीके सामने दामन फैलाना, किसीसे कुछ भीख माँगना। –**–भारी होना**–दे० 'पल्ला झुकना'। **–(ल्ले)पड़ना**–हाथ लगना, मिलना। **(किसीके)–बँधना**–विवाहित होना, ब्याही जाना; सौंपा जाना। **(किसीके)–बाँधना**–ब्याहना; जिम्मे करना या लेना। **–से बाँधना**–जिम्मे करना; ब्याह देना।

पल्लि, पल्ली–स्त्री० (सं०) छोटा गाँव, पुरा, टोला; कुटी; घर; छिपकली; जमीनपर फैलनेवाली लता।

पल्लिका–स्त्री० (सं०) छोटा गाँव, छोटी बस्ती, टोला; छिपकली।

पल्लौ*–पु० 'पल्लव'; अनाज बाँधनेका टाट आदि ।

पल्वल–पु० (सं०) छोटा जलाशय, छोटा तालाव ।

पल्वलावास–पु० (सं०) कछुआ ।

पवँरि*–स्त्री० ड्योढ़ी ।

पवँरिया*–पु० दे० 'पँवरिया' ।

पव–स्त्री० दे० 'पौ' । पु० (सं०) वायु, हवा; सूप आदिसे अनाजकी भूसी आदि निकालना; शुद्धीकरण ।

पवई†–स्त्री० एक चिड़िया ।

पवन–पु० (सं०) हवा; वायुके अधिष्ठातृदेव; अनाज आदि साफ करना; छलनी; कुम्हारका आवाँ; पानी; विष्णु; गृह्याग्नि; पाँचकी संख्या । वि० शुद्ध, निर्मल । **–कुमार**–पु० हनूमान्; भीमसेन । **–चक्र**–पु० ववंडर । **–चक्की**–स्त्री० (हिं०) हवाकी शक्तिसे चलनेवाली चक्की । **–ज,–तनय,–नंद,–नंदन,–पुत्र**–पु० दे० 'पवनकुमार' । **–पति**–पु० वायुके अधिष्ठातृदेव । **–परीक्षा**–स्त्री० आषाढ़-शुक्ला पूर्णिमाको वायुकी दिशा देखनेकी एक क्रिया जिसके अनुसार ज्योतिषी ऋतुका भविष्य वतलाते हैं । **–पूत**–वि० वायुसे पवित्र किया हुआ । * पु० दे० 'पवनपुत्र' । **–वाण**–पु० दे० 'पवनास्त्र' । **–भुक(ज्)**–पु० साँप । **–वाहन**–पु० अग्नि । **–व्याधि**–स्त्री० वातरोग । पु० उद्धव । **–संघात**–पु० हवाका झोंका । **–सुत**–पु० दे० 'पवनकुमार' ।

पवना†–पु० झरना, पौना ।

पवनात्मज–पु० (सं०) हनूमान्; भीमसेन ।

पवनाल–पु० (सं०) धान्यविशेष ।

पवनाश, पवनाशन–पु० (सं०) साँप । वि० हवा पीकर रहनेवाला ।

पवनाशनाश–पु० (सं०) गरुड़; मोर ।

पवनाशी(शिन्)–वि० (सं०) हवा पीकर रहनेवाला । पु० साँप ।

पवनास्त्र–पु० (सं०) एक प्रकारका अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर वहुत तेज हवा या आँधी चलने लगती थी, पवन-वाण (पु०) ।

पवनाहत–वि० (सं०) वातग्रस्त ।

पवनी–स्त्री० (सं०) झाड़ू; † दे० पौनी ।

पवनेष्ट–पु० (सं०) वकायन ।

पवमान–पु० (सं०) वायु, हवा; गार्हपत्य अग्नि; सोम-देवता (वै०) ।

पवर*–वि० प्रवर । स्त्री० ड्योढ़ी ।

पवरिया*–पु० ड्योढ़ीदार, पौरिया ।

पवरी†–स्त्री० दे० 'पौरी' ।

पवर्ग–पु० (सं०) देवनागरी वर्णमालाके अंतर्गत 'प'से 'म'तक पाँच अक्षरोंका समूह, पाँचवाँ वर्ग ।

पवाँड़ा–पु० वीरगाथा (मराठी 'पोआड़ा') दे० 'पँवाड़ा'; जी उवा देनेवाला लंवा आख्यान; वहुत वढ़ाकर कही हुई वात; एक तरहका गीत ।

पवाँर–पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति; † चकवँड़ ।

पवाँरना, पवारना*–स० क्रि० फेंकना; छींटना, छितराना, फैलाना ।

पवाँरी†–स्त्री० लोहा छेदनेका लोहारोंका एक आला ।

पवाई–स्त्री० किसी एक पैरका जूता या खड़ाऊँ; चक्कीके दो पाटोंमेंसे कोई एक ।

पवाका–स्त्री० (सं०) ववंडर ।

पवाड़†–पु० चकवँड़ ।

पवाडा–दे० 'पवाँडा' ।

पवाना*–स० क्रि० खिलाना; † प्राप्त कराना ।

पवि–पु० (सं०) वज्र; वाणी; वाण या भालेकी नोक; वाण; अग्नि । **–धर**–पु० इंद्र ।

पवित–वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ, साफ किया हुआ । पु० मिर्च ।

पविता(तृ)–वि० (सं०) पवित्र करनेवाला ।

पविताई*–स्त्री० पवित्रता, शुद्धता ।

पवित्तर†–वि० दे० 'पवित्र' ।

पवित्र–वि० (सं०) शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, पुनीत; निश्छल; व्रत, शौच आदिसे शुद्ध । पु० शुद्ध करनेवाली वस्तु, शुद्धताकी साधनरूप वस्तु (छलनी आदि); कुश; कुशके दो दल जिनसे यज्ञमें घीका संस्कार करते हैं; कुशकी वनी हुई पवित्री जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं; यज्ञोपवीत; ताँबा; वर्षा; जल; अर्घ्यका उपकरण; घृत; मधु; तिलका पौधा; घर्षण । **–धान्य**–पु० जौ । **–पाणि**–वि० जिसके हाथमें कुश हो ।

पवित्रक–पु० (सं०) पीपलका पेड़; गूलरका पेड़; क्षत्रियोंका जनेऊ; कुश; दौना; छलनी; जाल ।

पवित्रता–स्त्री० (सं०) पवित्र होनेका भाव ।

पवित्रा–स्त्री० (सं०) तुलसी; हलदी; एक प्राचीन नदी; श्रावण-शुक्ला द्वादशी ।

पवित्रात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसकी आत्मा पवित्र हो, जिसका अंतःकरण शुद्ध हो ।

पवित्रारोपण, पवित्रारोहण–पु० (सं०) यज्ञोपवीत धारण करना; भक्तों द्वारा विष्णु आदि देवताओंको यज्ञोपवीत पहनाया जाना (वैष्णव श्रावण-शुक्ला द्वाद्वशीको विष्णु-मूर्तिको यज्ञोपवीत पहनाते हैं) ।

पवित्राश–पु० (सं०) सनका वना हुआ डोरा जो पहले वहुत शुद्ध माना जाता था ।

पवित्रित–वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ ।

पवित्री–स्त्री० (सं०) कुशकी वनी हुई अंगूठी जैसी वस्तु जिसे धार्मिक कृत्य करते समय अनामिकामें पहनते हैं, पैंती ।

पवित्री(त्रिन्)–वि० (सं०) शुद्ध करनेवाला; शुद्ध ।

पवित्रीकरण–पु० (सं०) पवित्र या शुद्ध करना ।

पवेरना†–स० क्रि० वीजोंको छींटते हुए वोना ।

पवेरा†–पु० वीजोंको फैलाते या छितराते हुए वोनेकी क्रिया ।

पशम–पु० (फा० 'पश्म') नरम वाल; वहुत उम्दा और नरम ऊन जो अधिकतर पंजाव, कश्मीर और तिब्बतकी बकरियोंसे प्राप्त होता है; पुरुष या स्त्रीकी जननेंद्रियपरके वाल; वहुत तुच्छ वस्तु । मु०**–उखाड़ना**–विना कुछ करे-धरे समय विताना, व्यर्थ समय विताना; थोड़ा भी नुकसान न पहुँचा सकना । **–न उखड़ना**–कुछ भी करते-धरते न वनना, कुछ भी काम न किया जा सकना; थोड़ा भी नुकसान न पहुँचना । **–न समझना**–पशमसे भी गया-गुजरा समझना, कुछ भी न गुनना । **–पर मारना**–अति तुच्छ समझना, नाचीज समझना ।

पशमीना–पु० कश्मीरमें वननेवाला एक तरहका वहुत मुलायम ऊनका कपड़ा ।

पशव्य–वि० (सं०) पशुके लिए उपयुक्त; पशु-संवंधी; पशुतापूर्ण । पु० पशुओंका झुंड; गोष्ठ ।

पशु–पु० (सं०) चार पैरों और पूँछसे युक्त जानवर, चौपाया (जैसे –सिंह, बाघ, वैल, ऊँट, बकरा आदि); जंतु, प्राणी; वह जंतु जिसकी यज्ञमें वलि दी जाय, वलिपशु; शिवका एक पारिषद, प्रमथ; मूर्ख, विवेकहीन मनुष्य; वह यज्ञ जिसमें पशुकी वलि दी जाय; बकरा; देवता; अग्नि; जीवात्मा (पाशुपत दर्शन) । **–कर्म(न्)**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० पशुका वलिदान; मैथुन । **–गायत्री**–स्त्री० एक मंत्र जिसे वलि-पशुके कानमें कहते हैं–'पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि । तन्नो जीवः प्रचोदयात्' । **–घात**–पु० वलिपशुका वध । **–चर्या**–स्त्री० पशु जैसा लज्जारहित आचार; मैथुन । **–चिकित्सा**–स्त्री० पशुओंके रोगोंके निदान और उपचारका कार्य या पद्धति । **–चिकित्सालय**–पु० (वेटेरिनरी हॉस्पिटल) वह स्थान जहाँ घोड़े, गाय-वैल आदि घरेलू पशुओंकी चिकित्साका प्रवंध हो, घोड़ा अस्पताल । **–जीवी(विन्)**–वि० पशुका मांस खाकर जीनेवाला । **–दा**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका । **–देवता**–पु० वह देवता जिसके निमित्त किसी पशुका वध किया जाय । **–धन**–पु० (लिवस्टॉक) मनुष्य-परिवारके साथ रहने और उसके काम आनेवाले पशु–गाय, वैल, घोड़े, भेड़ आदि । **–धर्म**–पु० पशुवत् आचरण या व्यवहार; विधवा-विवाह; मैथुन । **–नाथ**–पु० शिव । **–निरोधगृह**–पु०, **–निरोधिका**–स्त्री० (कैटिल पाउंड) इधर-उधर विचरते हुए किसी तरहकी क्षति करनेवाले पशुओंको रोककर रखनेकी जगह, आवारा पशुओंको निर्धारित शुल्क देकर छुड़ा ले जानेतक रोक रखनेका वाड़ा या घर, काँजी हाउस । **–प**–पु० पशु पालनेवाला, वह जो जीविकाके लिए भेड़-वकरी आदि पाले । **–पक्षिकानन–**

पु० (जू) वह बन या कानन जहाँ विभिन्न प्रकारके पशु तथा पक्षी प्रदर्शन आदिके लिए रखे जाते हैं, चिड़ियाघर, जंतुशाला। **–पति**–पु० पशु पालनेका व्यवसाय करनेवाला; शिव। **–पल्वल**–पु० केवटी मोथा। **–पाल,–पालक**–पु० दे० 'पशुप'। **–पालन**–पु० जीविकाके निमित्त भेड़-बकरी आदि पालनेका काम। **–पाश**–पु० बलि-पशुको बाँधनेकी रस्सी; पशुरूपी जीवोंका बंधन (पाशुपत दर्शन)। **–पाशक**–पु० एक रतिबंध। **–प्रक्षेत्र**–पु० (लिवस्टॉक फार्म) गाय, भेड़, सूअर आदि पशुओंको रखने, पालनेका स्थान। **–प्रेरण**–पु० पशुओंको हाँकना। **–भाव**–पु० पशुता, पशुत्व। **–मैथुन**–पु० पशुओंका संभोग; मनुष्यका बकरी आदि पशुके साथ संभोग; पशुओं जैसा निर्लज्ज संभोग। **–यज्ञ,–याग**–पु० वह यज्ञ जिसमें किसी पशुकी बलि दी जाय। **–रक्षण**–पु० दे० 'पशुपालन'। **–रज्जु**–स्त्री० बलि पशुको बाँधनेकी रस्सी। **–राज**–पु० सिंह। **–बंदीगृह**–पु० दे० 'काँजी-हाउस'। **–हरीतकी**–स्त्री० आमड़ेका फल।

पशुता–स्त्री०, **पशुत्व**–पु० (सं०) पशुका भाव, जानवरपन।

पश्च–वि० (सं०) बादका; पश्चिमका, पश्चिमी। **–गामी(मिन्)**–वि० पीछेकी ओर, अवनतिकी ओर जानेवाला। **–लेख**–पु० कोई पत्र या लेख समाप्त हो जानेपर बादमें लिखी गयी या जोड़ी गयी दो चार पंक्तियाँ (पोस्ट स्क्रिप्ट)। **–विचार**–पु० दे० 'उत्तरविचार'।

पश्चात्–अ० (सं०) पीछेसे, बादमें, पीछे, अनन्तर; अंतमें; पश्चिम दिशासे; पश्चिम दिशाकी ओर। **–कृत**–वि० जो पीछे छोड़ दिया गया हो, मात किया हुआ। **–ताप**–कोई अनुचित कार्य करके बादमें उसके लिए दुःखी होना, पछतावा, अनुशय। **–तापी(पिन्)**–वि० पश्चात्ताप करनेवाला।

पश्चाद्–'पश्चात्'का समासगतरूप। **–उक्त**–वि० (लैटर) जो बादमें कहा गया हो, वाक्यादिमें जिसका प्रयोग किसी अन्य (तद्वत्) शब्दके बादमें किया गया हो। **–उक्ति**–स्त्री० पुनः कहना। **–घाट**–पु० गरदन। **–बाहुबद्ध**–वि० जिसकी मुश्कें पीछेकी ओर बाँध दी गयी हों। **–भाग**–पु० पीछेका हिस्सा; पश्चिमी भाग। **–वर्ती(तिन्)**–वि० पीछे रहनेवाला; अनुसरण करनेवाला। **–वात**–पु० पछवाँ हवा।

पश्चानुताप–पु० (सं०) पछतावा।

पश्चापी(पिन्)–पु० (सं०) नौकर, सेवक।

पश्चार्द्ध, पश्चार्ध–पु० (सं०) पीछेवाला आधा भाग; अपरार्द्ध, शेषार्द्ध; पश्चिमी भाग।

पश्चिम–वि० (सं०) सबसे पीछेका; अंतिम; पच्छिमका। पु० उदय होते हुए सूर्यकी ओर मुँह करके खड़े होनेपर पीठकी ओर पड़नेवाली दिशा, पश्चिम। **–क्रिया**–स्त्री० अंत्येष्टि क्रिया। **–घाट**–पु० (हिं०) पश्चिमी घाट, बंबईके पासकी एक पर्वतमाला। **–प्लव**–वि० पश्चिमकी ओर झुकी हुई (भूमि)। **–रात्र**–पु० रातका पिछला भाग। **–वाहिनी**–वि० स्त्री० पच्छिम दिशाकी ओर बहनेवाली।

पश्चिमा–स्त्री० (सं०) सूर्यके अस्त होनेकी दिशा, पच्छिम।

पश्चिमाचल–पु० (सं०) वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य छिपता है, अस्ताचल।

पश्चिमार्द्ध, पश्चिमार्ध–पु० (सं०) पीछेवाला आधा भाग; अपरार्ध।

पश्चिमी–वि० पश्चिम दिशाका, पछाँही। **–घाट**–पु० बंबईके पासकी एक पर्वतमाला।

पश्चिमोत्तर–वि० (सं०) जो पश्चिम और उत्तरमें स्थित हो, उत्तरी-पश्चिमी। पु० वायुकोण।

पश्चिमोत्तरा–स्त्री० (सं०) उत्तर और पश्चिमके बीचकी विदिशा, वायव्य कोण।

पश्तो–स्त्री० एक प्राचीन आर्यभाषा जो भारतकी पश्चिमोत्तर सीमासे लेकर अफगानिस्तानतक बोली जाती है। पु० एक ताल।

पश्म–पु० (फा०) दे० 'पशम'।

पश्मीना–पु० (फा०) दे० 'पशमीना'।

पश्यंती–स्त्री० (सं०) वेश्या; वह शब्द जो मूलाधारमें उत्पन्न होनेवाले सूक्ष्म शब्दकी उत्पत्तिके अनंतर वायुके संयोगसे नाभिदेशमें उत्पन्न होता है, परा वाक्को उत्पन्न करनेवाली वायुके मूलाधारसे हटकर नाभिदेशमें पहुँचनेपर उत्पन्न होनेवाला शब्द-विशेष (परा वाक् और पश्यंती वाक् केवल ईश्वर और योगियोंके लिए ही गोचर है। वस्तुतः एक ही शब्द मूलाधार, नाभि, हृदय तथा कंठके संयोगसे क्रमशः परा, पश्यंती, मध्यमा तथा वैखरी–इन ४ संज्ञाओंसे अभिहित होता है)।

पश्यतोहर–वि० (सं०) जो देखते देखते कोई चीज चुरा ले। पु० सुनार।

पश्यवदान–पु० (सं०) बलि-पशुके अंगविशेषका छेदन।

पश्वाचार–पु० (सं०) कामना और संकल्पके साथ किया जानेवाला देवीका पूजन (तं०)।

पष*–पु० पक्ष, पाख; पंख, डैना; तरफ, ओर।

पषा*–पु० दाढ़ी।

पषाण, पषान*–पु० पाषाण, पत्थर।

पषारना, पषालना*–स० क्रि० पखारना, धोना।

पष्पान*–पु० दे० 'पाषाण'।

पसंग*–पु० दे० 'पासँग'।

पसँगा†–पु० दे० 'पासँग'। वि० बहुत थोड़ा। मु०–**भी न होना**–अति तुच्छ होना।

पसंघा†–पु० दे० 'पासँग'।

पसंती*–स्त्री० दे० 'पश्यंती'।

पसंद–स्त्री० (फा०) रुचि; स्वीकृति, कबूलियत; तरजीह। वि० रुचिके अनुकूल; जो मनको जँचे, मनोनीत।

पसंदा–पु० (फा०) मांसके कुचले हुए टुकड़ोंसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका कबाब।

पसंदीदा–वि० (फा०) पसंद किया हुआ; जो पसंद हो।

पस–पु० (अं०) मवाद। अ० (फा०) बादमें, पीछे; आखिरकार; अंतमें; इसलिए, अतः; निःसंदेह, बेशक। **–अंदाज़**–वि० बचा हुआ, अवशिष्ट, जमा किया हुआ, संचित। पु० बचाया हुआ धन; वृद्धावस्था आदिके लिए संचित धन। **–खुरदा**–पु० जूठन। **–ग़ैबत**–अ० अनुपस्थितिमें, परोक्षमें। **–पा**–वि० पीछे हटा हुआ; शिकस्त खाया हुआ। **–पाई**–स्त्री० शिकस्त खाना, पराजय। **–मर्ग,–मुर्दन**–अ० मरनेके बाद। **– रू**–पु० नौकर, चाकर। **–(सो)पेश**–पु० आगा-पीछा; बहाना, टालमटूल।

पसनी*–स्त्री० बच्चेको पहले पहल अन्न चखाना; अन्नप्राशन, चटावन।

पसम*–पु० दे० 'पशम'।

पसमीना*–पु० दे० 'पशमीना'।

पसर–पु० आधी अंजलि। * स्त्री० प्रसार, फैलाव; आक्रमण। **–कटाली**–स्त्री० भटकटैया। मु० **–चराना**–पशुओंको रातमें चुपकेसे थोड़ी देरके लिए किसीके खेतमें चराना।

पसरट्टा†–पु० दे० 'पँसरहट्टा'।

पसरन, पसारिनी–स्त्री० प्रसारिणी लता।

पसरना–अ० क्रि० और अधिक दूरीमें व्याप्त होना, फैलना; आगे बढ़ना; बढ़ना; हाथ-पाँव फैलाकर बैठना या सोना।

पसरहट्टा–पु० दे० 'पँसरहट्टा'।

पसराना–स० क्रि० फैलवाना, किसीको पसारनेके काममें प्रवृत्त करना।

पसरौहाँ–वि० फैलनेवाला, जो फैले।

पसली–स्त्री० पाँजरकी हड्डियोंमेंसे कोई एक पार्श्वास्थि। मु० **–फड़क उठना या फड़कना**–मनमें उत्साह पैदा होना, जीमें उमंग होना। **–(लियाँ) ढीली करना या तोड़ना**–बेतरह पीटना।

पसही†–स्त्री० तिन्नीका चावल।

पसा†–पु० अंजलि।

पसाउ*–पु० प्रसाद, कृपा।

पसाना–स० क्रि० पके हुए चावलमेंसे माँड़ निकालना; जलयुक्त पदार्थमेंसे जलके अंशको बहा देना। * अ० क्रि० प्रसन्न होना।

पसार–पु० पसरनेकी क्रिया या भाव, फैलाव, विस्तार; * मायाजाल, प्रपंच।

पसारना–स० क्रि० फैलाना, छितराना; आगेकी ओर करना

या बढ़ाना ।

पसारा–पु० दे० 'पसार' ।

पसारी†–पु० तिन्नीधान; पंसारी ।

पसाव–पु० दे० 'पसावन'; * प्रसाद, अनुग्रह ।

पसावन–पु० पसानेपर निकलनेवाला पदार्थ, माँड़ आदि ।

पसाहनि*–स्त्री० अंगराग (विद्या०) ।

पसिंजर–पु० दे० 'पैसेंजर' ।

पसित*–वि० बँधा हुआ, पाशबद्ध ।

पसीजना–अ० क्रि० ताप या गरमीके कारण किसी ठोस चीजका ऐसी स्थितिको प्राप्त होना कि उसका जलांश रस-रसकर बाहर निकले या उसमेंसे पानी छूटे; खिन्न होना; दयासे आर्द्र होना ।

पसीना–पु० वह पानी जो श्रम करने या गरमी लगनेसे शरीरमेंसे निकलता है, स्वेद, श्रमजल । **मु०** **(गाढ़े)-(ने)की कमाई**–बड़ी मेहनत और सचाईसे कमाया हुआ धन । **–पसीने होना**–पसीनेसे तर-बतर होना ।

पसु*–पु० दे० 'पशु' ।

पसुरी, पसुली*–स्त्री० दे० 'पसली' ।

पसूज†–स्त्री० एक तरहकी सिलाई जिसमें सीधे टाँके दिये जाते हैं ।

पसूजना†–स० क्रि० सीना ।

पसूता†–स्त्री० दे० 'प्रसूता' ।

पसेउ*–पु० प्रस्वेद, पसीना; 'पसेव' ।

पसेरी–स्त्री० पाँच सेरकी एक तौल ।

पसेव–पु० वह पानी जो किसी वस्तुके पसीजनेसे उसमेंसे निकलता है; किसी वस्तुमेंसे रस-रसकर निकलनेवाला तरल पदार्थ, जलांश; सुखाते समय कच्ची अफीममेंसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ; पसीना ।

पसोपेश–पु० दे० 'पस'के साथ ।

पस्त–वि० (फा०) नीच, कमीना; छोटा, तुच्छा; हारा हुआ; शिथिल (बो०) । **–क़द**–पु० छोटा कद । वि० छोटे कदका, नाटा, बौना । **–क़िस्मत**–वि० भाग्यहीन । **–ख़याल**–पु० छोटा खयाल, तुच्छ विचार । वि० छोटे खयालवाला । **–हिम्मत**–वि० जिसकी हिम्मत टूट गयी हो, हतोत्साह । **मु०** **–करना**–दबा देना, हरा देना; (हिम्मत) तोड़ देना । **–होना**–हार जाना; पराजित होना; (हिम्मत) टूट जाना ।

पस्ती–स्त्री० (फा०) नीचता, कमीनापन; निचाई; कमी; त्रुटि ।

पस्त्य–पु० (सं०) गृह, निवास-स्थान; परिवार, कुल ।

पहँ*–अ० पास; से ।

पहँसुल–पु० तरकारी काटनेका हँसियाकी तरहका एक औजार ।

पह*–स्त्री० दे० 'पौ' । **मु०** **–फटना**–दे० 'पौ फटना' ।

पहचनवाना–स० क्रि० किसीको पहचाननेमें प्रवृत्त करना, किसीसे पहचाननेका काम कराना ।

पहचान–स्त्री० पहचाननेकी क्रिया या भाव, कभीके देखे या जाने हुए व्यक्ति या पदार्थको दुबारा देखनेपर उसे उसी रूपमें जान लेनेकी क्रिया या भाव, पूर्व-परिचित व्यक्ति या वस्तुको देखनेसे होनेवाला यह ज्ञान कि यह अमुक है; किसी पदार्थकी वस्तुस्थिति जाननेकी क्रिया या भाव, परख; वह वस्तु या बात जिससे यह जाना जाय कि यही अमुक पदार्थ है, निशान, चिह्न; परखनेकी शक्ति; परिचय (क्व०); विवेक ।

पहचानना–स० क्रि० किसी पूर्वपरिचित व्यक्ति या वस्तुको देखकर यह जान लेना कि वह अमुक है; किसी व्यक्ति या पदार्थको इस प्रकार जानना कि जब कभी देखे तब यह ज्ञान हो जाय कि यह अमुक है अथवा नहीं; विवेक करना; किसीका गुण-दोष जानना, किसीके गुण-दोषसे अच्छी तरह परिचित होना ।

पहटना†–स० क्रि० भगाने या पकड़नेके लिए दौड़ना; पत्थर आदिपर रगड़कर धार तेज करना ।

पहन–पु० (फा०) बच्चेको देखकर प्यारकी अधिकतासे माताके स्तनमें उतर आनेवाला दूध; * पत्थर, पाषाण ।

पहनना–स० क्रि० (कपड़े, गहने आदि) शरीर या अंग-विशेषपर धारण करना ।

पहनवाना–स० क्रि० किसीके द्वारा किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना; किसीको पहनने या पहनानेमें प्रवृत्त करना ।

पहना–पु० दे० पहन (फा०) ।

पहनाई–स्त्री० पहननेकी क्रिया या भाव; पहनानेकी उजरत; * पाहन जैसी कठोरता 'पाहन ते न कठिन पहनाई'–रामा० ।

पहनाना–स० क्रि० किसीको कपड़े, गहने आदि धारण कराना ।

पहनाव†–पु० दे० 'पहनावा' ।

पहनावा–पु० पहननेके कपड़े, पोशाक, नीचेसे ऊपरतक पहने जानेवाले कपड़े; वेश; विशेष प्रकारका वेश; किसी तरहका खास पहननेका वस्त्र; कपड़े पहननेका तर्ज या ढंग ।

पहपट–पु० एक प्रकारका स्त्रियोंका गीत; हल्ला, शोर; बदनामीका हल्ला; छिपे तौरसे की जानेवाली बदनामी; धोखा, दगाबाजी । **–बाज़**–वि० हल्ला मचानेवाला; ऊधमी, फसादी; धोखा देनेवाला, दगाबाज । **–बाज़ी**–स्त्री० हल्ला मचानेका काम; फसाद करानेका काम; धोखा देना, दगा करना, छलना ।

पहर–पु० तीन घंटेका समय; समय, काल, जमाना ।

पहरना†–स० क्रि० पहनना ।

पहरा–पु० किसी व्यक्ति या वस्तुको उसी रूप या स्थितिमें बनाये रखनेके लिए एक या अनेक व्यक्तियोंका नियुक्त होना, चौकी; निगरानी, देखरेख; रक्षकदलके तैनात रहनेका समय; रक्षकदल; रक्षकदलका फेरा; गश्तके समयकी बोली; हिरासत; * युग, जमाना । **–(रे)दार**–पु० पहरा देनेवाला, रक्षक । **मु०** **–देना**–रखवाली करना, निगरानी करना, किसीकी रक्षाके लिए तैनात रहना । **–पड़ना**–पहरा दिया जाना, रक्षाके लिए चौकीदार तैनात रहना । **–बदलना**–एक रक्षक या रक्षकदलका समय समाप्त हो जानेपर उसके स्थानपर दूसरे पहरेदारका आ जाना । **–बैठाना**–किसीकी निगहबानीके लिए उसके आस-पास पहरेदार नियुक्त करना । **–(रे)में देना**–निगहबानीके लिए पहरेदारों या सिपाहियोंके सिपुर्द करना, हिरासतमें करना । **–में रखना**–हिरासतमें रखना । **–में होना**–हिरासतमें रखा जाना ।

पहराइत*–पु० पहरा देनेवाला–'पहराइत घर मुसो सावको, रच्छा करने लागो चोर'–सुंदरदास ।

पहराना†–स० क्रि० पहनाना ।

पहरावनी–स्त्री० दान या खिलअतके रूपमें दी जानेवाली पोशाक ।

पहरावा†–पु० दे० 'पहनावा', परिधान ।

पहरी–पु० पहरेदार ।

पहरु, पहरू*–पु० पहरेदार ।

पहरुआ†–पु० पहरेदार ।

पहल–पु० किसी ठोस या पोली चीजके तीन या अधिक कोरों या कोनोंके बीचकी चौरस सतह; धुनी हुई रुईकी या ऊनकी मोटी और जमी हुई तह या परत; रजाई, तोशक आदिके भीतरकी रुईकी परत; पुरानी रुईकी वह जमी हुई तह जो रजाई, तोशक आदिमेंसे निकाली गयी हो; किसी ऐसे कार्यका आरंभ जिसमें प्रतिकारस्वरूप दूसरे भी कुछ करें, किसी कार्यको आरंभ करनेका प्रथम प्रयत्न, शुरुआत, छेड़; बगल; * पटल, परत । **–दार**–वि० जिसमें पहल हों, पहलोंवाला । **मु०** **–निकालना**–किसी चीजमें पहल बनाना ।

पहलनी–स्त्री० कोढ़ेको गोल करनेका सुनारोंका एक औजार ।

पहलवान–पु० (फा०) कुश्ती लड़नेवाला मजबूत और कसरती आदमी, मल्ल, कुश्तीबाज; हृष्ट-पुष्ट और बलवान् आदमी ।

पहलवानी–स्त्री० (फा०) कुश्ती लड़नेका काम या पेशा, मल्लवृत्ति; पहलवान होनेका भाव ।

पहलवी–स्त्री० (फा०) ईरानकी एक पुरानी भाषा ।

पहला–वि० जो गणना या क्रमके अनुसार एकके स्थानपर पड़े, आदिमें पड़नेवाला, आद्य, प्रथम । † पु० पुरानी रूईकी जमी हुई तह ।

पहलू–पु० (फा०) बगल, पाँजर; किसी पदार्थका दाहिना या बाँया भाग, बाजू, पार्श्व; सेना या मकानका दाहिना या बायाँ भाग; किनारा; कल, करवट; दिशा; किसी ठोस चीज या नगीने आदिके कोरों या कोनोंके बीचकी चौरस सतह, पहल; किसी विषयका कोई अंग जिसपर विचार किया जाय, पक्ष; गुण, दोष आदिके विचारसे किसी विषयका कोई अंग या पक्ष; पड़ोस; गूढ़ अर्थ,

व्यंग्यार्थ; रुख; तरकीव, वहाना। **–दार**–वि० जिसके कई पहलू हों। मु० **–आबाद होना**–प्रेयसीका प्रेमीके पास वैठना, माशूकका आशिकके पास वैठना। **(किसीका)–गरम कराना**–किसीका, विशेषकर प्रेयसीका प्रेमीसे सटकर वैठना, वहुत नजदीक वैठना। **(किसीसे)–गरम करना**–प्रेयसीको अपने शरीरसे सटाकर वैठाना। **–दवाना**–शत्रुकी सेना या नगरके दायें या वायें भागको आक्रांत कर देना; अपनी सेनाके दोनों पक्षोंमेंसे किसी एकको दूसरेके पीछे रखते हुए आक्रमणमें आगे बढ़ना। **–बचाना**–मुठभेड़का अवसर न आने देते हुए आगे वढ़ जाना, भिड़ंत वचाते हुए वगलसे निकल जाना। **–बसाना**–पड़ोसमें जा वसना। **–में वैठना**–किसीसे सटकर या लगकर वैठना। **–में रहना**–किसीसे सटकर, किसीके वहुत समीप वैठ रहना।

पहले–अ० आदिमें, शुरूमें; देश, स्थिति या कालके अनुसार प्रथम, पूर्वमें, पेश्तर, आगे; पुराने जमानेमें, प्रचीन कालमें, अतीत कालमें। **–पहल**–अ० सर्वप्रथम, सवसे पहले; पहली वार।

पहलेज†–पु० एक प्रकारका लंवोतरा खरवूजा।

पहलौँठा, पहलौठा–वि० प्रथम गर्भसे उत्पन्न (पुत्र), जो और सभी लड़कोंसे पहले पैदा हुआ हो, प्रथमजात।

पहलौँठी, पहलौठी–स्त्री० वच्चा जननेकी पहली क्रिया, प्रथम प्रसव, आद्य गर्भमोचन। वि० स्त्री० दे० 'पहलौँठा'।

पहाड़–पु० पत्थर, कंकड़, चूने, मिट्टी आदिकी चट्टानोंका वह प्राकृतिक पुंज जो जमीनकी सतहसे वहुत ऊँचा होता है और वहुधा वरफसे ढका रहता है; किसी पदार्थका वहुत ऊँचा ढेर; कोई वहुत भारी वस्तु; वह जिससे जल्दी छुटकारा न मिल सके; वहुत कठिन कार्य, दुष्कर कार्य। मु० **–उठाना**–भारी काम हाथमें लेना। **–कटना**–भारी कामका पूरा हो जाना। **–टूटना,–टूट पड़ना**–भारी संकट आ पड़ना। **–से टक्कर लेना**–वहुत वड़े वलवान्‌से भिड़ना।

पहाड़ा–पु० किसी अंककी गुणन-सूची जिसे वच्चे याद करते हैं।

पहाड़िया†–वि० दे० 'पहाड़ी'।

पहाड़ी–वि० पहाड़-संवंधी; पहाड़का; पहाड़पर या उसके आसपास रहनेवाला; पहाड़पर होनेवाला; जो पहाड़से निकले (इस अर्थमें स्त्रीलिंग विशेष्यके लिए भी 'पहाड़ी'का ही प्रयोग होता है)। स्त्री० छोटा पहाड़; पहाड़ी लोगोंके गानेकी एक तरहकी धुन; एक रागिनी; एक औषधि, जनी। **–इंद्रायन**–पु० एक प्रकारका खीरा।

पहार†–पु० दे० 'पहाड़'।

पहारी†–वि०, स्त्री० दे० 'पहाड़ी'।

पहारू*–पु० पहरेदार।

पहिचान†–स्त्री० दे० 'पहचान'।

पहिचानना†–स० क्रि० दे० 'पहचानना'।

पहित, पहिती*–स्त्री० पकायी हुई दाल।

पहिनना†–स० क्रि० दे० 'पहनना'।

पहिना–स्त्री० एक मछली, वदाल, पाठीन।

पहिनाना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना'।

पहिनावा†–पु० दे० 'पहनावा'।

पहियाँ*–अ० पास।

पहिया–पु० गाड़ी, कल आदिका वह गोलाकार अवयव जिसके धुरीपर घूमनेसे वह कल या गाड़ी चलती है, चक्र, चक्का। **–और धुरी**–(ह्वील एंड एक्सिल) एक मशीन जिसके द्वारा कम वल लगाकर अधिक भारका वोझ कुएँके अन्दरसे ऊपर खींच सकते हैं।

पहिरना†–स० क्रि० दे० 'पहनना'।

पहिराना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना'।

पहिरावना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना'।

पहिरावनि, पहिरावनी*–स्त्री० दे० 'पहनावा'।

पहिल*–वि० दे० 'पहला'। अ० पहले।

पहिला†–वि० दे० 'पहला'। वि० स्त्री० जो पहले-पहल व्यायी हो।

पहिले†–अ० दे० 'पहले'।

पहिलौँठा, पहिलौठा–वि० दे० 'पहलौठा'।

पहिलौँठी–स्त्री० दे० 'पहलौँठी'।

पहौति*–स्त्री० दाल।

पहुँच–स्त्री० पहुँचनेकी क्रिया या भाव; पहुँचनेकी शक्ति; पासतक गमन; गति, पैठ, प्रवेश (शास्त्र, विद्या आदिमें); पहुँच जानेकी खवर या सूचना (जैसे पत्रकी पहुँच); समझनेकी सामर्थ्य; ग्रहण या धारणकी शक्ति; जानकारी।

पहुँचना–अ० क्रि० एक स्थानसे चलकर दूसरे स्थानको प्राप्त होना; आगे वढ़कर या फैलकर विशिष्ट स्थानको प्राप्त होना; किसी स्थान या पद आदिको प्राप्त होना; व्याप्त होना; समाना; किसी गूढ़ या मार्मिक वातको जान लेना, समझना; किसी विषयकी दूरकी वातें समझनेकी शक्ति रखना; गति या जानकारी रखना; फलके रूपमें मिलना या प्राप्त होना; प्राप्त या अनुभूत होना; वरावरीमें आना; समान होना, समता करना। मु० **पहुँचा हुआ**–सिद्ध।

पहुँचा–पु० कलाईके ऊपर और कुहनीके नीचेका भाग; † काम करनेकी शक्ति। मु० **–पकड़ना**–किसी कार्यके निमित्त वलपूर्वक किसीका हाथ पकड़ना और उसे रोक रखना।

पहुँचाना–स० क्रि० किसी व्यक्ति या पदार्थको एक स्थानसे चलाकर या हटाकर दूसरे स्थानको प्राप्त कराना, ले जाना; आगे वढ़ाकर या फैलाकर किसी विशिष्ट स्थानको प्राप्त कराना; कोई स्थान या पद आदि प्राप्त कराना; फैलाना; समवाना; फलके रूपमें प्राप्त कराना; अनुभव कराना; समकक्ष वनाना, वरावरीमें लाना; तुल्य वनाना।

पहुँची–स्त्री० हाथमें पहननेका स्त्रियोंका एक प्रसिद्ध गहना; कलाईकी रक्षाके लिए पहना जानेवाला आवरण।

पहुनई†–स्त्री० दे० 'पहुनाई'।

पहुना†–पु० दे० 'पाहुना'।

पहुनाई–स्त्री० पाहुना होनेका भाव; पाहुना वनकर कहीं जाना या आना; † किसी नातेदारका घर जहाँ पाहुना वनकर जाया जाय; पाहुनेका सत्कार, अतिथि-सत्कार। मु०**–करना**–पाहुनेके रूपमें जहाँ-तहाँ जाकर खाना; पाहुनेके रूपमें नातेदारके यहाँ जाना।

पहुप*–पु० फूल, पुष्प।

पहुम, पहुमि, पहुमी–स्त्री० पृथ्वी।

पहुला*–स्त्री० कुई, कुमुदिनी।

पहेटना–स० क्रि० पकड़नेके लिए किसीका पीछा करना, दौड़ाना; पत्थरपर रगड़कर औजार तेज करना।

पहेरी†–स्त्री० दे० 'पहेली'।

पहेला–पु० विकट पहेली; जटिल या अनोखे स्वभावका व्यक्ति।

पहेली–स्त्री० किसीकी वुद्धि या समझकी परीक्षा लेनेके कामका एक प्रकारका प्रश्न, वाक्य या वर्णन जिसमें किसी वस्तुका भ्रामक या टेढ़ा-मेढ़ा लक्षण देकर उसे वूझने या अभिप्रेत वस्तुका नाम वतानेको कहते हैं, वुझौवल; कोई ऐसी वात या ऐसा विषय जो जल्दी समझमें न आये; ऐसी समस्या जो जल्दी हल न की जा सके। मु० **–वुझाना**–अपनी वातको ऐसे शव्दोंमें कहना कि वह जल्द सुननेवालेकी समझमें न आये।

पह्लव–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति, ईरानी (?)।

पह्लवी–स्त्री० ईरानकी एक प्राचीन भाषा।

पह्लिका–स्त्री० (सं०) वारिपृश्नी, जलकुंभी।

पाँ, पाँइ*–पु० पैर, पाँव।

पाँइता*–पु० चारपाईका पैर रखनेकी ओरका हिस्सा, पायताना।

पाँईँवाग–पु० दे० 'पाईँवाग'।

पाँउ*–पु० पैर, पाँव।

पाँउरी*–स्त्री० खड़ाऊँ।

पाँक*–पु० पंक, कीचड़।

पाँका†–पु० दे० 'पाँक'।

पांक्त–वि० (सं०) पंक्ति-संवंधी; पंक्तिका।

पांक्तेय, पांक्त्य–वि० (सं०) जो पंगतमें औरोंके साथ वैठने योग्य हो, पाँतमें सम्मिलित होने योग्य।

पाँख–पु० पंख, पर, डैना।

पाँखड़ा†–पु० पंख, पर।

पाँखड़ी–स्त्री० दे० 'पँखड़ी'।

पाँखी*–स्त्री० दीपकपर जल मरनेवाली पाँखवाली कीड़ी, फतिंगा; पक्षी, चिड़िया।

पाँखुरी।–स्त्री० दे० 'पँखड़ी' ।

पाँग–पु० गंगवरार, कछार ।

पाँगानोन–पु० रेहसे तैयार किया जानेवाला नमक ।

पाँगुर*–वि० पंगु, लँगड़ा । पु० लँगड़ा मनुष्य; पैरकी उँगली (विद्या०) ।

पांगुल्य–पु० (सं०) पंगुल होनेका भाव, लंगड़ापन ।

पाँच–वि० चारसे एक अधिक, दसका आधा । पु० पाँचकी संख्या, ५; * पाँच व्यक्ति; बहुतसे लोग, जनता 'जो पाँचहि मत लागै नीका'–रामा०; जाति-बिरादरीके नेता या सरदार ।

–वाँ–वि० गिनती या क्रममें पाँचके स्थानपर पड़नेवाला । **मु० पाँचों या पाँचों उँगलियाँ घीमें होना**–खूब फायदा उठाना । **–सवारोंमें नाम लिखाना**–पात्रता न होते हुए भी अपनेको बड़ोंमें सम्मिलित करना ।

पाँचक–पु० दे० 'पंचक' ।

पांचकपाल–वि० (सं०) पंचकपाल-संबंधी ।

पांचदन्य–वि० (सं०) कृष्णका शंख; अग्नि; एक प्रकारकी मछली; जंबुद्वीपके आठ उपद्वीपोंमेंसे एक । **–धर**–पु० कृष्ण ।

पांचदश–वि० (सं०) महीनेके पंद्रहवें दिनसे संबद्ध ।

पांचदश्य–पु० (सं०) पंद्रहका समाहार ।

पांचनद–वि० (सं०) पंचनद-संबंधी; पंजाबका, पंजाबी । पु० पंचनद अथवा पंजाबका राजा या वहाँका निवासी ।

पांचभौतिक–वि० (सं०) पृथ्वी, जल, तेज आदि पाँच भूतों या तत्त्वोंका बना हुआ ।

पांचयज्ञिक–वि० (सं०) पंचयज्ञ-संबंधी । पु० पाँच महायज्ञोंमेंसे कोई ।

पाँचर–पु० कोल्हूके मुँहपर, जहाँ जाठ लगता है, जड़ा जानेवाला लकड़ीका टुकड़ा; दे० 'पच्चर' ।

पांचरात्र–पु० (सं०) एक वैष्णव संप्रदाय ।

पांचलिका–स्त्री० (सं०) दे० 'पांचालिका' ।

पांचवर्षिक–वि० (सं०) पाँच वर्षका । (स्त्री० 'पांचवर्षिकी' ।)

पांचशब्दिक–पु० (सं०) एक प्रकारका बाजा, जिसमें पाँच प्रकारके स्वर मिले रहते हैं; संगीतवाद्य, पाँच प्रकारका संगीत ।

पाँचा।–पु० भूसा बटोरनेके कामका किसानोंका एक बेंटदार आला जिसमें पाँच दाँते होते हैं ।

पांचार्थिक–पु० (सं०) शैव ।

पांचाल–वि० (सं०) पंचाल देश-संबंधी; पंचाल देशका; पंचाल देशपर शासन करनेवाला । पु० पंचाल नामक देश; पंचाल देशका राजा; पंचाल देशके निवासी; बढ़ई, जुलाहा, नाई, धोबी और मोची–इन पाँचोंका समाहार ।

पाँचालक–पु० (सं०) पंचाल देशका राजा । वि० पंचालवासियोंके संबंधका ।

पांचालिका–स्त्री० (सं०) कपड़े आदिकी बनी हुई गुड़िया, पुतली ।

पांचाली–स्त्री० (सं०) पंचाल देशकी स्त्री या रानी; पांडवोंकी पत्नी द्रौपदी जो पंचाल देशकी राजकुमारी थी; पुतली, गुड़िया; काव्यकी एक प्रसिद्ध रचनाशैली, जिसमें बड़े-बड़े समासोंसे युक्त कांतिपूर्ण पदावलीका समावेश होता है; स्वरसाधनकी एक रीति ।

पाँचें*–स्त्री० किसी पक्षकी पाँचवीं तिथि, पंचमी ।

पाँज*–पु० पुल, सेतु ।

पाँजना–स० क्रि० लोहे, पीतल आदिकी वस्तुओंको टाँका देकर जोड़ना, झालना ।

पाँजर–पु० शरीरका काँख और कमरके बीचका पसलियोंवाला भाग, पार्श्व ।

पाँजी*–स्त्री० नदीमें पानीकी इतनी कमी होना कि लोग उसे हलकर पार कर सकें ।

पाँझ–वि० हलकर पार करने योग्य (नदी) ।

पांड–वि० (सं०) दे० 'पंड' ।

पाँडक–पु० पंडुक ।

पांडर–पु० (सं०) सफेद रंग; दौना; कुंदका फूल; गेरू । वि० सफेद रंगका । **–पुष्पिका**–स्त्री० शीतला वृक्ष । **–वायस**–पु० सफेद कौआ (असंभव बात) । **–वासा–(सस्)**,**–वासी (सिन्)**–वि० श्वेत वस्त्रधारी ।

पाँडरा।–पु० एक तरहकी ईख ।

पांडरेतर–वि० (सं०) श्वेतसे भिन्न, काला इ० ।

पांडव–पु० (सं०) पांडुके पुत्र, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव; इन पाँचोंमेंसे कोई एक; पंजाबका एक प्राचीन प्रदेश; उक्त प्रदेशका निवासी । **–श्रेष्ठ**–पु० युधिष्ठिर ।

पांडवाभील, पांडवायन–पु० (सं०) कृष्ण ।

पांडविक–पु० (सं०) एक तरहका गौरा ।

पांडवीय–पु० (सं०) पांडव-संबंधी; पांडवोंका ।

पांडवेय–पु० (सं०) पांडुका पुत्र, पांडव ।

पांडित्य–पु० (सं०) पंडिताई, विद्वत्ता ।

पांडु–पु० (सं०) सफेद-पीला रंग; सफेद रंग; पीलिया रोग; सफेद हाथी; पांडवोंके पिता; पांडुफल, परवल; मध्यदेशका एक प्राचीन प्रदेश । वि० पीलापन लिये हुए सफेद रंगका, सफेद-पीले रंगका; सफेद रंगका । **–कंटक**–पु० चिचड़ा । **–कंबल**–पु० सफेद रंगका कंबल; हाथीकी झूल; एक प्रकारका सफेद पत्थर । **–कंबली-(लिन्)**–वि० सफेद कंबलसे ढका हुआ (रथादि) । **–करण**,**–कर्म-(न्)**–पु० फोड़ेका दाग मिटानेका एक उपचार । **–क्ष्मा**–स्त्री० हस्तिनापुर । **–तरु**–पु० धवका पेड़ । **–नाग**–पु० सफेद हाथी; सफेद साँप; पुन्नागका पेड़ । **–पत्री**–स्त्री० एक गंधद्रव्य, रेणुका । **–पुत्र**–पु० पांडुका पुत्र, युधिष्ठिरादिमेंसे कोई पांडव । **–पृष्ठ**–वि० जिसकी पीठ सफेद हो (यह एक दुर्लक्षण माना जाता है) । **–फल**–पु० परवल । **–फली**–स्त्री० चिर्भटी । **–भूम**–वि० जहाँकी धरती सफेद रंगकी हो । **–मृत्(द्)**,**–मृत्तिका**–स्त्री० सफेद या पीले रंगकी मिट्टी; खड़िया । **–रंग**–पु० एक तरकारी; विष्णुका एक अवतार । **–राग**–पु० सफेद रंग, सफेदी । **–रोग**–पु० एक प्रसिद्ध रोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़ जाता है, पीलिया । **–लिपि**–स्त्री० दे० 'पांडुलेख'; पुस्तककी हस्तलिखित प्रति । **–लेख**,**–लेख्य**–पु० पट्टी, कागज आदिपर अंकित वह लेख या रेखाचित्र जिसे पुनः काट-छाँटकर ठीक किया जाय, मसविदा । **–लेखक**–पु० (लेख्य आदिकी) पांडुलिपि तैयार करनेवाला । **–लोमश**–वि० जिसके रोयें या बाल सफेद हों । **–लोमशा**,**–लोमा**–स्त्री० माषपर्णी । **–लोह**–पु० चाँदी । **–शर्करा**–स्त्री० प्रमेहका एक भेद । **–शर्मिला**–स्त्री० द्रौपदी । **–सोपाक**,**–सौपाक**–पु० एक संकर जाति ।

पांडुक–पु० (सं०) सफेद-पीला रंग; पीलिया रोग; राजा पांडु; पंडुक; एक तरहका धान ।

पांडुकी(किन्)–वि० (सं०) जिसे पीलिया रोग हुआ हो ।

पांडुर–पु० (सं०) पीलापन लिये हुए सफेद रंग, सफेद-पीला रंग; सफेद रंग; पांडु रोग; सफेद कोढ़ । वि० पीलापन लिये हुए सफेद रंगका; सफेद रंगका । **–द्रुम**–पु० कुटज वृक्ष, कुरैया । **–पृष्ठ**–वि० दे० 'पांडुपृष्ठ' । **–फली**–स्त्री० एक क्षुप ।

पांडुरक–वि० (सं०) सफेद या पीले-सफेद रंगका । पु० दे० 'पांडुर' ।

पांडुरा–स्त्री० (सं०) माषपर्णी; एक बौद्ध देवी ।

पांडुरित–वि० (सं०) जो पीला बना दिया गया हो–'वदनचंद्रके लोध्ररेणुसे गंगाका जल पांडुरित हो जाता था'–हजारीप्र० ।

पांडुरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) सफेदी मिला हुआ पीलापन; सफेदी ।

पांडुरेक्षु–पु० (सं०) एक प्रकारकी ईख, सफेद ईख ।

पाँड़े–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; * अध्यापक; रसोइया ।

पांडेय–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

पांड्य–पु० (सं०) पांडु देशका निवासी; पांडु देशका राजा; दक्षिणका एक प्राचीन प्रदेश; इस प्रदेशका निवासी या राजा ।

पाँत–स्त्री० पंक्ति, कतार; पंगत; समूह ।

पाँति–स्त्री० कतार; एक साथ खानेवालोंका समूह, तड़; स्वजनवर्ग ।

पांथ–पु० (सं०) पथिक, राही; प्रवासी; विरही; सूर्य । **–निवास**–पु०, **–शाला**–स्त्री० धर्मशाला, सराय, चट्टी ।

पाँयँ–पु० पैर, चरण । **–चा**–पु० दे० 'पायँचा । **–ता**–पु० दे० 'पायँता' ।

पाँव–पु० वह अंग जिसके वल प्राणी चलते हैं, पैर। **–चप्पी**–स्त्री० पैर दवानेकी क्रिया। **–पाँव**–अ० पैदल। **–पोश**–पु० दे० 'पापोश' ('पा'में)। मु०**–अड़ाना**–किसी वातमें वेकार दखल देना। **–उखड़ या उठ जाना**–लड़ाईमें ठहर न सकना। **–उठा कर चलना**–तेज चलना। **–कट जाना**–आने-जानेकी शक्ति नष्ट हो जाना; चल वसना। **–का खटका**–पैरकी आहट। **–की जूती**–तुच्छ सेवक। **–०सिरको लगना**–छोटेका वड़ेसे वरावरीका दावा करना। **–की वेड़ी**–जंजाल, झंझट। **–गाड़ना**–जमकर खड़ा रहना; लड़ाईमें डटा रहना। **–घिसना**–चलते-चलते थक जाना। **–जमना**–दृढ़तापूर्वक स्थित होना; स्थिति दृढ़ होना, ऐसी स्थितिमें होना कि हटने या विचलित होनेकी नौवत न आये। **–जमाना**–दृढ़तापूर्वक स्थित होना, अपनी स्थिति दृढ़ करना। **–डिगना**–स्थिर न रहना। **–तलेकी धरती खसकना**–वहुत अधिक घवरा जाना, होश उड़ जाना। **–तलेकी धरती सरक जाना या मिट्टी निकल जाना**–स्तब्ध रह जाना। **–तोड़कर वैठना**–कहीं जाना-आना वंद कर देना। **–तोड़ना**–वहुत अधिक चलकर पैरोंको थका देना। **–धरतीपर न पड़ना यां न रखना**–घमंडमें चूर रहना। **–धरना**–पधारना। **–धारना***–दे० 'पाँव धरना'। **–धोकर पीना**–वहुत आवभगत करना; चरणामृत लेना। (किसीके)**–न होना**–ठहरनेकी शक्ति या दम न होना, दृढ़ताका अभाव होना। **–निकलना**–वदनामी फैलना। **–निकालना**–अपनी स्थितिसे वढ़कर काम करना; मनमानी करना; दुष्कर्ममें प्रवृत्त होना। (किसी कामसे)**–निकालना**–पृथक् हो जाना। **–पकड़ना**–पैर छूना, वहुत अधिक दीनता और विनय प्रकट करना। **–पड़ना**–चरणोंपर गिरना; दैन्यभावसे विनय करना। **–पर पाँव रखकर वैठना**–वेखवर होना; कुछ काम न करना। (किसीके) **–पर पाँव रखना**–किसीका पूरी तरह अनुगमन करना। **–पलोटना***–पाँव-चप्पी करना, पैर दवाना। **–पसारना**–कब्जा करना; ठाट-वाट करना। **–पाँव चलना**–पैदल चलना। **–पीटना**–छटपटाना; परेशान होना। **–पूजना**–वहुत अधिक आवभगत करना; विवाहमें कन्यादान करनेवालेका वरका पूजन करके उसे कन्या समर्पित करना। **–फूलना**–भय आदिके कारण ठिठक जाना। **–फेरने जाना**–दुलहिनका पहले पहल ससुराल जाना; दुलहिनका ससुरालसे पहले-पहल अपने मायके या किसी और रिश्तेदारके यहाँ जाना; प्रसूताका कुछ समयके लिए अपने मायके या किसी और रिश्तेदारके यहाँ जाना। **–फैलाना**–अधिक पानेके लिए प्रयत्न करना; अधिक पानेका लोभ करना। **–वढ़ाना**–और अधिक वेगसे चलना; कब्जा करना। **–वाहर निकलना**–दे० 'पाँव निकलना'। **–भारी होना**–गर्भवती होना। (किसीसे)**–भी न धुलवाना**–अति तुच्छ समझना। **–में वेड़ी पड़ना**–जंजालमें फँसना। **–में मेंहदी लगना**–कोई काम करनेके लिए वाहर न जाना। **–रोपना***–प्रण करना; वाजी लगाना। **–लगना**–चरण छूकर प्रणाम करना। **–समेटना**–पैर सिकोड़ना; पृथक रहना। **–से पाँव वाँधकर रखना**–सदा अपने पास या देखरेखमें रखना, कभी पाससे या आँखोंके सामनेसे हटने न देना।

पाँवड़ा–पु० वह कपड़ा जो किसी आदरणीय व्यक्तिके पाँव रखकर चलनेके लिए उसके मार्गमें विछाया जाता है; पाँव पोंछनेके लिए दरवाजेपर रखा हुआ कपड़ा या ऐसी ही कोई अन्य वस्तु, पायंदाज।

पाँवड़ी–स्त्री० खड़ाऊँ; * जूता; गोटा-पट्ठा वुननेका काठका एक आला।

पाँवर*–वि० नीच; तुच्छ, क्षुद्र; मूर्ख। पु० दे० 'पाँवड़ा'।

पाँवरी*–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी'; सीढ़ी; ड्योढ़ी; वैठक।

पांशन, पांसन–वि० (सं०) कलंकित करनेवाला, अपमानित करनेवाला; भ्रष्ट करनेवाला; दुष्ट; हेय। (प्रायः समासमें व्यवहृत –पौलस्त्य-कुल-पांशन)। पु० तिरस्कार, घृणा।

पांशव, पांसव–वि० (सं०) पांशुसे उत्पन्न, धूलिमय। पु० नोना मिट्टीसे निकाला हुआ नमक।

पांशु, पांसु–स्त्री० (सं०) धूल, धूलिकण; गोवरका खाद; नोना मिट्टीसे निकाला हुआ नमक; एक प्रकारका कपूर; पित्तपापड़ा; भूसंपत्ति। **–कासीस**–पु० कसीस। **–कुली**–स्त्री० राजमार्ग, चौड़ी सड़क। **–कूल**–पु० धूलका ढेर, धूलिपटल; वह दस्तावेज या कागज जो किसी विशिष्ट व्यक्तिके नाम न लिखा गया हो, निरुपद शासन (स्मृ०); गुदड़ी (वौ०)। **–कृत**–वि० धूलसे ढका हुआ। **–क्षार**–पु० पाँगा नमक। **–गुंठित**–वि० धूलसे ढका हुआ। **–चंदन**–पु० शिव। **–चत्वर**–पु० ओला। **–चामर**–पु० तंवू, खेमा; धूलिराशि; ऐसा किनारा जिसपर दूव जमी हो; प्रशंसा। **–ज,–भव**–पु० पाँगा नमक। **–जालिक**–पु० विष्णु। **–धान**–पु० धूलिराशि। **–पटल**–पु० धूलिराशि या धूलकी परत। **–पत्र**–पु० वथुएका साग। **–मदन**–पु० थाला, क्यारी। **–रागिणी**–स्त्री० महामोदा।

पांशुर, पांसुर–पु० (सं०) डाँस; खंज, पंगु व्यक्ति।

पांशुल, पांसुल–वि० (सं०) जिसमें धूल लगी हो; कलंकित करनेवाला (कुलपांशुल); अपवित्र; सदोष; लंपट, व्यभिचारी। पु० व्यभिचारी पुरुष; शिवका एक अस्त्र; पूतिकरंज।

पांशुला, पांसुला–स्त्री० (सं०) पुंश्चली, व्यभिचारिणी; रजस्वला; पृथ्वी।

पाँस–स्त्री० राख, गोवर आदिकी खाद; खमीर; शराव निकाला हुआ महुआ।

पाँसना†–स० क्रि० खेतमें खाद देना।

पाँसा–पु० दे० 'पासा'

पाँसी–स्त्री० रस्सीकी वनी हुई घास-भूसा रखनेकी जाली।

पाँसु, पाँसुरी*–स्त्री० पसली–'...मसककी पाँसुरी पयोधि पाटियतु हैं'–कवितावली।

पाँहीं*–अ० पास, निकट।

पा–पु० (फा०) पैर, पाँव; कदम; वृक्षकी जड़। **–अंदाज़**–पु० नारियलके छिलके, मूँज, ऊन आदिसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी चटाई जो पैर पोंछनेके काममें आती है; गर्दखोर। **–कार**–पु० तहसीलका प्यादा; प्यादा; खिदमतगार। **–कूब**–वि० पाँव मारनेवाला, नाचनेवाला। **–ख़ाना**–पु० मल, गू; मलत्यागके निमित्त वनाया हुआ विशेष प्रकारका स्थान या कमरा। (मु० **–०खता होना**–वहुत अधिक डर जाना। **–०निकलना**–वहुत अधिक डर जाना। **–०फिर देना**–डरकर घवरा जाना, अत्यंत त्रस्त हो जाना। **–०फिरना**–मलत्याग करना।) **–चिरारा**–अ० एक पाँवपर। **–जामा**–पु० कमरसे लेकर टखनेतकका दो पायचोंवाला एक प्रसिद्ध पहनावा। (मु० **–०(मे)में हग देना**–डर या खौफसे वदहवास होना। **–से वाहर होना या निकल पड़ना**–वहुत अधिक क्रुद्ध होना, क्रोधमें आपेसे वाहर होना।)**–ज़ेव**–पु० पाँवमें पहननेका एक घुँघरूदार गहना। **–तराव**–पु० प्रस्थान। **–तावा**–पु० मोजा; तल्लेके आकारका चमड़ेका वह लंबा टुकड़ा जिसे जूतेको चुस्त करनेके लिए उसमें डालते हैं। **–नाम**–वि० नामजद, मशहूर, प्रसिद्ध। **–पोश**–पु० पाअंदाज; जूता; † मोजा (वुंदेल०)। (मु०**–०पर मारना**–कुछ भी परवा न करना; अति तुच्छ समझना।) **–प्यादा**–अ० विना सवारीके, पैदल। **–वंद**–वि० वँधा हुआ; गिरफ्तार, कैद; जो किसी नियम, वचन आदिका पूरी तरह पालन करे; जो किसी नियम, वचन आदिसे पूर्णरूपसे वद्ध हो, जो किसी नियम, वचन आदिका पालन करनेके लिए विवश हो; मजवूर, लाचार; कायम रहनेवाला (रहना, होनाके साथ)। पु० वेड़ी; घोड़ेके पिछले पैरोंको वाँधनेके कामकी रस्सी, पिछाड़ी। **–वंदी**–स्त्री० पावंद होनेकी क्रिया या भाव; नियम, वचन आदिका अनिवार्य पालन, मानियत; मजवूरी। **–वोस**–वि० पाँव चूमनेवाला, प्रणाम करनेवाला, आदाव वजानेवाला। पु० दे० 'पावोसी'। **–वोसी**–स्त्री० पाँव चूमना या छूना, प्रणमन; खातिर, ताजीम। **–मर्द**–वि० स्थिर चित्तवाला, धीर; वहादुर, हिम्मती। **–मर्दी**–स्त्री० धीरता, स्थिरचित्तता; वहादुरी, हिम्मत। **–माल**–वि० पैरों तले रौंदा हुआ, पददलित; तवाह, वरवाद (करना, होनाके साथ)। **–माली**–स्त्री० पैरोंके नीचे रौंदना या रौंदवाना; तवाही, वरवादी। **–मोज़**–पु० एक प्रकारका कवूतर जिसके पंजोंपर पर होते हैं; एक तरहकी मुर्गी जिसके पंजोंपर पर होते हैं। **–याव**

–वि० जो हलकर पार किया जा सके, कम गहरा। **–याबी**–स्त्री० पायाव होना, उथलापन। **–लागन**†–स्त्री० नमस्कार, प्रणाम। **–लागी**†–स्त्री० दे० 'पालागन'।

पाइ*–पु० पैर, पाँव। **–तरी***–स्त्री० पलंगका पैरकी ओरका भाग, पैताना। **–माल***–वि० दे० 'पामाल'।

पाइक*–पु० दे० 'पायक'।

पाइका–पु० (अं०) एक प्रकारका छापेका टाइप जो १।६ इंच चौड़ा होता है।

पाइट–स्त्री० बाँस आदिका बना हुआ वह ढाँचा जिसपर खड़े होकर राज दीवार बनाते या पलस्तर आदि करते हैं।

पाइप–पु० (अं०) नल; नली; पानीकी कल; बाँसुरी जैसा एक बाजा; हुक्केकी निगाली।

पाइरा†–पु० रकाव।

पाइल*–पु० पाँवमें पहननेका एक गहना, पायल।

पाईं–अ० (फा०) सिरहाने; सामने; नीचे। **–बाग़**–पु० घरके साथ लगा हुआ बाग, नजरबाग।

पाई–स्त्री० घेरा बनाते हुए नाचने या घूमनेकी क्रिया; बाँसकी तीलियों या बेंतका एक प्रकारका ढाँचा जिसपर तानेके सूतको फैलाकर जुलाहे उसे माँजते हैं, टिकठी; घोड़ेकी पैर सूजनेकी एक बीमारी; इकाईका चतुर्थांश सूचित करनेवाली छोटी खड़ी रेखा, इकाईके चौथे भागके रूपमें किसी संख्याके आगे लगायी जानेवाली छोटी खड़ी लकीर; आकारकी मात्रा; पूर्ण विराम सूचित करनेके लिए वाक्यके अंतमें लगायी जानेवाली छोटी खड़ी लकीर; गहने आदि रखनेकी स्त्रियोंकी पिटारी; घिसे हुए टाइपका समूह; एक कीड़ा; एक छोटा सिक्का जो एक पैसेके १।३ के बराबर होता था।

पाउँ*–पु० पाँव, पैर।

पाउंड–पु० (अं०) सोनेका एक अंग्रेजी सिक्का जो २० शिलिंगके बराबर होता है; एक अंग्रेजी वजन जो आठ छटाँकसे कुछ कम होता है।

पाउ*–पु० पाँव; चतुर्थांश।

पाउडर–पु० (अं०) चूरा, बुकनी; सुंदरता बढ़ाने या अच्छी रंगत लानेके लिए चेहरे आदिपर लगाया जानेवाला एक प्रकारका चूरा; चूर्ण की हुई दवा (जैसे–टूथपाउडर)।

पाक–पु० (सं०) पकने या पकानेकी क्रिया या भाव; पकाया हुआ अन्न, रसोई; पिंडदानके निमित्त दूधमें पकाया हुआ चावल; पकवान; भोजनका पचना, फोड़े, फल आदिका पकना; व्रण, फोड़ा; वृद्धताके कारण बालोंका सफेद होना; बुद्धिका परिपक्व होना; परिणाम; शिशु; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था; उल्लू; समाप्ति; अन्न, अनाज; गृह्याग्नि; भोजन बनानेका बरतन; आतंक (विद्रोहादिका); उच्छेद, उलट-फेर (देशका)। वि० पका हुआ; अल्प; प्रशस्य; परिपक्व बुद्धिवाला। **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० पकानेकी क्रिया, पकाना। **–कृष्ण,–फल**–पु० पानी अमला; जंगली करौंदा। **–ज**–वि० पाकसे उत्पन्न। पु० कचिया नमक; परिणामशूल। **–द्विट् (ष्)**–पु० इंद्र। **–पंडित**–पु० वह जो रसोई बनानेमें सिद्धहस्त हो। **–पात्र,–भांड**–पु० भोजन पकानेका पात्र, बटलोई आदि। **–पुटी**–स्त्री० कुम्हारका आवाँ। **–यज्ञ**–पु० वृषोत्सर्ग आदिके अवसरपर किया जानेवाला होम जिसमें चरुका हवन होता है। **–रंजन**–पु० तेजपत्ता। **–रिपु**–पु० इंद्र। **–ल**–पु० अग्नि; वायु; हाथियोंको होनेवाला एक ज्वर, कुंजरज्वर; कूट नामकी ओषधि। **–ली**–स्त्री० कर्कटी, काकड़ासींगी। **–शाला**–स्त्री० रसोईघर। **–शासन**–पु० इंद्र। **–शासनि**–पु० इंद्रका पुत्र जयंत; बालि; अर्जुन। **–शुक्ला**–स्त्री० खड़िया मिट्टी। **–स्थली**–स्त्री० पक्वाशय। **–स्थान**–पु० रसोईघर; आवाँ। **–हंता(तृ)**–पु० दे० 'पाकशासन'।

पाक–वि० (फा०) शुद्ध, पवित्र; निर्दोष, निष्कलंक; साफ-सुथरा; बिना मिलावटका; खालिस; बरी; बेबाक; पाप या बुराईसे बचनेवाला, परहेजगार। **–ज़ाद**–वि० जो दोगला न हो, जातिका शुद्ध। **–ज़ादा**–पु० धोबी। **–दामन,–दामाँ**–वि० शुद्ध; पवित्र आचरणवाला, निष्पाप। वि० स्त्री० सती (स्त्री)। **–दामनी, –दामानी**–स्त्री० शुद्धता; आचरणकी शुद्धता; निष्पापता; सतीत्व। **–दिल**–वि० शुद्ध अंतःकरणवाला, पवित्र विचारवाला। **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० पवित्र दृष्टि, कामवासनासे रहित दृष्टि। वि० जिसकी दृष्टि कामवासनासे रहित हो, पवित्र दृष्टिवाला। **–नीयत**–स्त्री० अच्छी नीयत, सद्विचार, शुद्ध विचार। **–परवरदिगार**–पु० परमेश्वर। **–बाज़**–वि० शुद्ध हृदयवाला, निष्पाप, सच्चा, नेकनीयत। पु० भाँग छाननेकी साफी। **–बाज़ी** –स्त्री० पाकबाज होनेका भाव या गुण, शुद्धहृदयता, सचाई, निष्पापता। **–बीं**–वि० पवित्र दृष्टिसे देखनेवाला। **–मुहब्बत** –स्त्री० स्वार्थ आदिकी भावनासे रहित प्रेम, विशुद्ध प्रेम। **–रवी** –स्त्री० आचारकी शुद्धता, नेकचलनी। **–रू**–वि० शुद्ध आचरणवाला, नेकचलन। **–साफ़**–वि० साफ-सुथरा, निर्मल; निर्दोष, निष्कलंक, निष्पाप; विशुद्ध।

पाकट–पु० दे० 'पाकेट'।

पाकठ†–वि० पका हुआ; परिपक्व बुद्धिवाला, अनुभवी; सबल।

पाकड़, पाकर–पु० बरगदकी जातिका एक प्रसिद्ध पेड़।

पाकना*–अ० क्रि० पकना।

पाकरी*–स्त्री० दे० 'पाकड़'।

पाकल†–वि० पका हुआ। पु० (सं०) दे० 'पाक'में।

पाकलि–स्त्री० (सं०) वृक्षविशेष; रोहिणी।

पाका†–पु० फोड़ा। वि० पका हुआ।

पाकागार–पु० (सं०) रसोईघर।

पाकातिसार–पु० (सं०) जीर्ण आमातिसार।

पाकात्यय–पु० (सं०) आँखका एक रोग।

पाकाभिमुख–वि० (सं०) जो पकनेपर हो; विकासोन्मुख।

पाकारि–पु० (सं०) इंद्र।

पाकिट–पु० दे० 'पाकेट'।

पाकिम–वि० (सं०) पका हुआ; पकाया हुआ; पाक द्वारा प्राप्त (लवण आदि)।

पाकिस्तान–पु० (फा०) हिंदुस्तानके मुसलिम-प्रधान प्रदेशों-(सिंध, बिलोचिस्तान, सीमाप्रांत, पच्छिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल)का संघ जो १५ अगस्त, १९४७ ई०से स्वतंत्र राज्य है। इसमेंसे पूर्वी बंगाल १९७२ में बंगला देशके नामसे स्वतंत्र राज्य बन गया।

पाकिस्तानी–वि० (फा०) पाकिस्तानका। पु० पाकिस्तानका रहनेवाला।

पाकी–स्त्री० (फा०) पवित्रता; निर्दोषता, निष्कलंकता; सफाई।

पाकी(किन्)–वि० (सं०) जो पक रहा हो (समासांतमें)।

पाकीज़गी–स्त्री० (फा०) सफाई; शुद्धता, निर्दोषता; सुंदरता।

पाकीज़ा–वि० (फा०) साफ-सुथरा; परिमार्जित; निर्दोष, निष्कलंक; सुंदर, हसीन; उम्दा।

पाकु, पाकुक–वि०, पु० (सं०) खाना पकानेवाला, पाचक।

पाकेट–पु० (अं०) थैली, जेब। **–मार**–पु० वह जो चोरीसे जेबमेंसे रुपया-पैसा आदि निकालने या जेब काटनेका काम करे। **–मारी**–स्त्री० पाकेटमारका पेशा। मु०–**गरम करना**–घूस देना, घूस लेना।

पाक्य–वि० (सं०) पाकके योग्य; पक्तव्य। पु० जवाखार; नौसादर; खारी नमक; शोरा।

पाक्ष–वि० (सं०) पाखसे संबंध रखनेवाला, पाक्षिक; किसी दलसे संबंध रखनेवाला।

पाक्षपातिक–वि० (सं०) पक्षपात करनेवाला, फूट डालनेवाला।

पाक्षिक–वि० (सं०) पक्ष-संबंधी; पक्षका; पाखभरमें होनेवाला; प्रत्येक पक्षमें होनेवाला; हर पंद्रहवें दिन होनेवाला; चिड़ियासे संबंध रखनेवाला; पक्षपात करनेवाला; वैकल्पिक। (स्त्री० 'पाक्षिकी'।) पु० बहेलिया, चिड़ीमार; विकल्प।

पाखंड–पु० (सं०) वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला; दिखावटी उपासना या भक्ति, पूजा-पाठ आदिका आडंबर; ढकोसला, ढोंग; वंचना, छल। वि० जो वेदके विरुद्ध आचरण करे। **–फंडी**–वि० (हिं०) वेद-विरुद्ध आचरण करनेवाला; भक्ति या उपासनाका ढोंग रचनेवाला; जो केवल दूसरोंको ठगने या धोखा देनेके लिए पूजा-पाठ आदि करे; छलिया, ठग; धूर्त्त। मु० **–फैलाना–**

दूसरोंको ठगनेके लिए विशेष प्रकारका स्वाँग बनाना; दूसरोंको धोखा देनेके लिए अनेक प्रकारके आयोजन करना; ढकोसलेबाजी करना।

पाखंडी(डिन्)–वि० (सं०) दे० 'पाखंड'।

पाख–पु० आधा महीना, पंद्रह दिनका पक्ष, पखवाड़ा– कमरेकी चौड़ाईकी दीवारका वह तिकोना ऊपरी भाग जिसपर 'बड़ेर' रखते हैं; पाखवाली दीवार।

पाखर–स्त्री० लड़ाईके हाथी या घोड़ेको रक्षाके लिए पहनायी जानेवाली लोहेकी झूल। † पु० दे० 'पाकड़'।

पाखरी–स्त्री० अनाज लादनेके लिए गाड़ीपर बिछाया जानेवाला टाट।

पाखा–पु० पख; पंख; * कोना।

पाख़ान*–पु० पाषाण, पत्थर।

पाखाना–पु० दे० 'पा'में।

पाग–स्त्री० पगड़ी। पु० वह शीरा या किवाम जिसमें मिठाई आदिको डुवाते हैं, चाशनी; चाशनीमें डुवायी हुई पेठे आदिकी मिठाई; मधु, चीनी या मिसरीके शीरेमें सनी हुई विशेष प्रकारकी औषध; अवलेह।

पागना–स० क्रि० पाग या शीरेमें डुवाना, चाशनीमें डुवाना। * अ० क्रि० मग्न होना, शराबोर होना।

पागर†–पु० नावमें बाँधा जानेवाला वह रस्सा जिसके सहारे उसे किनारेकी ओर खींचते हैं।

पागल–वि० (सं०) जिसका दिमाग खराब हो गया हो, विक्षिप्त, सनकी; जो प्रेम, क्रोध आदिमें आपेसे बाहर हो गया हो; अति मूर्ख, बहुत नासमझ; अबूझ। **–ख़ाना**–पु० (हिं०) वह जगह जहाँ पागलोंकी देखरेख और उपचार किया जाता है; पागलोंके रहनेकी जगह। **–पन**–पु० पागल होनेका भाव या रोग; एक प्रकारकी मानसिक व्याधि जिसमें विवेक नष्ट हो जाता है और रोगी नासमझीके काम करता है, उन्माद; मूर्खता, नासमझी।

पागलिनी–स्त्री० पगली, विक्षिप्त स्त्री।

पागुर–पु० जुगाली।

पाचक–वि० (सं०) पकानेवाला; पचानेवाला। पु० रसोई बनानेका पेशा करनेवाला, रसोइया, सूपकार; अग्नि; पित्तके पाँच भेदोंमेंसे एक; भोजनको पचानेवाली औषध। **–स्त्री**–स्त्री० रसोईदारिन।

पाचन–पु० (सं०) पकाने या पचानेकी क्रिया; अग्नि; अम्लरस; खटाई; (पापका नाश करनेवाला) प्रायश्चित्त; भोजन पचानेवाली विशेष प्रकारकी औषध; जठराग्नि द्वारा भोजनका पचाया जाना; लाल रेंड़; घावको भरनेकी क्रिया; घावमेंसे मवाद आदि निकालनेकी क्रिया। वि० पकाने या पचानेवाला। **–शक्ति**–स्त्री० भोजनको पचानेकी शक्ति।

पाचनक–पु० (सं०) सोहागा; एक पेय आहार; औषधादि द्वारा घाव भरना; दे० 'पाचन'।

पाचना*–स० क्रि० पकाना। अ० क्रि० मरना, गलना।

पाचनिका–स्त्री० (सं०) पकाना; पचाना।

पाचनी–स्त्री० (सं०) हड़।

पाचनीय–वि० (सं०) पकाने योग्य; पचाने योग्य।

पाचयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पकानेवाला; पचानेवाला।

पाचर†–पु० दे० 'पच्चर'।

पाचल–वि० (सं०) पकानेवाला; पचानेवाला। पु० रसोइया; अग्नि, वायु; पचानेवाली वस्तु; रंधनद्रव्य।

पाचा, पाचि–स्त्री० (सं०) (भोजन) पकाना।

पाची–स्त्री० (सं०) एक लता, मरकतपत्री।

पाच्य–वि० (सं०) जो अवश्य पक या पच जाय; पचाने या पकाने योग्य।

पाछ–स्त्री० पाछनेकी क्रिया या भाव; पाछनेसे पड़ने या लगनेवाला चीरा; वह चीरा जो अफीम निकालनेके लिए पोस्तेके डोंड़ेपर नहरनीसे लगाया जाता है; वह चीरा जो किसी वृक्षका रस या दूध निकालनेके लिए उसपर लगाया जाता है। † पु० पिछला भाग, पीछा–'आशा लुबधल न तेजए रे कृपनक पाछु भिखारी'–विद्या० * अ० पीछे।

पाछना–स० क्रि० खून, पंछा या रस अथवा दूध निकालनेके लिए छुरे आदिके हलके आघातसे प्राणीके शरीरपर या पेड़-पौधेपर चीरा लगाना; छुरे आदिके हलके आघातसे शरीरपर या पेड़-पौधेपर जहाँ-तहाँ चीरा लगाना।

पाछल, पाछिल, पाछिला*–वि० पिछला।

पाछा*–पु० पीछा।

पाछी, पाछू, पाछें, पाछे*–अ० पीछेकी ओर, पीछे।

पाज*–पु० पाँजर, पार्श्व; वंधन, वाँध–'ब्रजतिय-हिय-सरवर रस भरे। लाज-पाजं तजि उमगनि ढरे।'–घन०।

पाजरा†–पु० एक वनस्पति जिससे रंग निकालते हैं।

पाजस्य–पु० (सं०) पाँजर; बगल (वैं०)।

पाज़िट्रॉन–पु० (अं०) नन्हा धन विद्युतवाला अवपरमाणविक कण, जिसका आवेश परिमाणमें इलेक्ट्रानके आवेशके वरावर होता है। इसका द्रव्यमान भी इलेक्ट्रॉनके ही द्रव्यमानके वरावर होता है।

पाजी–वि० दुष्ट, वदमाश। * पु० पैदल सिपाही, प्यादा; पहरेदार, रक्षक–'सहस-सहस तहँ वइठे पाजी'–प०। **–पन**–पु० दुष्टता, वदमाशी।

पाटंबर–पु० रेशमी कपड़ा।

पाट–पु० (सं०) विस्तार, फैलाव; चौड़ाई; (हिं०) रेशम; वस्त्र; वटा हुआ रेशम; एक तरहका रेशमका कीड़ा; पटसन; सिंहासन, राजगद्दी; पीढ़ा; पत्थरकी पटिया; धोवीका कपड़े धोनेके कामका पत्थर या काठका वड़ा टुकड़ा; चक्कीके दो भागोंमेंसे कोई एक; हाँकनेवालेके वैठनेके लिए कोल्हूमें लगाया जानेवाला तख्ता; कुएँपर रखी जानेवाली वह चपटी लकड़ी जिसपर एक पाँव रखकर पानी खींचते हैं, पठियर; वैलोंका एक रोग; * बालोंकी पटिया; नदीके किनारेकी या दो धाराओंके वीचकी रेतीली भूमि। **–महादेई***,**–महिषी**,**–रानी**–स्त्री० पटरानी।

पाटक–पु० (सं०) चीरनेवाला, फाड़नेवाला; विभाग करनेवाला; गाँवका एक भाग; गाँवका आधा; एक प्रकारका वाजा; किनारा, तट; घाटपरकी सीढ़ियाँ; सीढ़ियोंकी वह परंपरा जिससे उतरकर पानीमें पैठते हैं; मूलधन या पूँजीकी हानि; पासा डालना या फेंकना; जुएमें दाँव रखना।

पाटच्चर–पु० (सं०) चोर; डाकू।

पाटण*–पु० पत्तन, नगर।

पाटन–स्त्री० पाटनेकी क्रिया या भाव; पटाव; छत; मकानकी पहिली मंजिलसे ऊपरकी मंजिलें; साँपका विष उतारनेका एक प्रकारका मंत्र; नगर, पत्तन (जैसे–देवीपाटन)। पु० (सं०) चीरना, फाड़ना, छेदन। **–क्रिया**–स्त्री० घाव चीरना, शल्यक्रिया।

पाटना–स० क्रि० किसी गड्ढेको या नीची भूमिको भरकर आसपासकी जमीनके वरावर कर देना; भर देना; पूर्ण कर देना; ढकना; किसी वस्तुकी भरमार कर देना, ढेर लगा देना।

पाटनीय–वि० (सं०) चीरने या फाड़ने योग्य।

पाटल–पु० (सं०) ललाई मिला हुआ उजला रंग; गुलावी रंग; पाढरका पेड़; इसका फूल; एक प्रकारका वरसाती धान; लाल लोध; केसर; गुलाव (आ०)। वि० ललाई लिये हुए उजले रंगका; गुलावी। **–कीट**–पु० एक तरहका कीड़ा। **–चक्षु(स्)**–वि० जिसकी आँखोंमें मोतियाबिंद हो। **–द्रुम**–पु० पुन्नाग।

पाटलक–वि० (सं०) लाल-पीले रंगका।

पाटला–पु० एक तरहका सीना; * पटल, पल्ला। स्त्री० (सं०) दुर्गा; पाढर।

पाटलावती–स्त्री० (सं०) दुर्गा; एक पुरानी नदी।

पाटलि–स्त्री० (सं०) पाढरका पेड़; पांडुफली। **–पुत्र**,**–पुत्रक**–पु० अजातशत्रुका वसाया हुआ मगधका एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर जिसका आधुनिक नाम पटना है (इसे पुष्पपुर या कुसुमपुर भी कहते थे)।

पाटलिक–पु० (सं०) विद्यार्थी; शिष्य; पाटलिपुत्र। वि० दूसरेका भेद जाननेवाला; देश-कालका ज्ञान रखनेवाला।

पाटलित–वि० (सं०) लाल रँगा हुआ।

पाटलिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) गुलावी रंग।

पाटली–स्त्री० लकड़ीकी एक बहुतसे छेदोंवाली बल्ली जिसके एक-एक छेदमेंसे मस्तूलकी एक-एक रस्सी निकाली जाती है; (सं०) पाढर; पांडुफली, विश्वामित्रकी बहन जिसके अनुरोधसे कौंडिन्य मुनिने पाटलिपुत्र बसाया था (भविष्यपुराण)। **–पुत्र**–पु० दे० 'पाटलिपुत्र'।

पाटलोपल–पु० (सं०) लाल नामक रत्न।

पाटल्या–स्त्री० (सं०) पाटल-पुष्पोंका समूह।

पाटव–पु० (सं०) पटुता, दक्षता, कौशल; आरोग्य; उत्साह; तीक्ष्णता; तीव्रता।

पाटविक–वि० (सं०) दक्ष, कुशल, पटु; धूर्त।

पाटवी*–वि० पटरानीसे जनमा हुआ (राजकुमार); रेशमका बना हुआ, रेशमी।

पाटहिक–पु० (सं०) नगाड़ा बजानेवाला।

पाटहिका–स्त्री० (सं०) गुंजा, घुंघची।

पाटा–स्त्री० (सं०) परंपरा; सिलसिला। पु० (हिं०) पीढ़ा; पत्थर या काठका वह बड़ा टुकड़ा जिसपर धोबी कपड़े धोता है; आड़के लिए चौकेके पास उठायी जानेवाली दीवार; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बाँस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; * पट्टा। **मु० –फेरना**–विवाहमें वर-कन्याको एक-दूसरेके पीढ़ेपर बैठाना।

पाटिका–स्त्री० (सं०) एक दिनकी मजदूरी; एक पौधा।

पाटित–वि० (सं०) फाड़ा हुआ, विदारित।

पाटी–स्त्री० (सं०) परिपाटी, प्रणाली; रीति; अंकगणित; बला, खरैंटी। **–गणित**–पु० गणितशास्त्र; गणित।

पाटी–स्त्री० विशेष प्रकारका लकड़ीका वह लंबोतरा टुकड़ा जिसपर बच्चोंको अक्षर लिखना सिखाया जाता है, तख्ती; पाठ, सबक; तेल, गोंद आदिकी सहायतासे माँगके दोनों ओर सजाकर बैठाये जानेवाले बाल; खाटके ढाँचेके दाहिने-बायें लगायी जानेवाली वे लकड़ियाँ जिनके मेलसे रस्सीकी बुनाई होती है; चटाई; पत्थरकी पटिया। **मु० –पढ़ना**–पाठ पढ़ना; सबक सीखना; शिक्षा प्राप्त करना। **–पढ़ाना**–पाठ पढ़ाना; शिक्षा देना।

पाटीर–पु० (सं०) चंदन; खेत, मैदान; टीन; बादल; छलनी; एक तीक्ष्ण मूल; जुकाम, प्रतिश्याय; वेणुसार।

पाठ–पु० (सं०) पढ़नेकी क्रिया या भाव; कोई धार्मिक या देवपरक ग्रंथ नियमित रूपसे पढ़ना; वेदपाठ, ब्रह्मयज्ञ; पढ़ा या पढ़ाया जानेवाला विषय; किसी पाठ्य-पुस्तकका वह अंश जो किसी एक विषयसे संबद्ध हो, परिच्छेद; किसी विषयका उतना अंश जितना एक बारमें पढ़ाया जाय, सबक; वाक्य, पद्य आदिका लिखित रूप। **–च्छेद**–पु० पाठ्य विषयके बीचमें होनेवाला विराम; यति। **–दोष**–पु० पाठ-संबंधी दोष (अठारह प्रकारके पाठ-दोष गिनाये गये हैं, जैसे–विस्वर, विरस, विश्लिष्ट, काकस्वर आदि)। **–निश्चय**–पु० शुद्ध पाठका निश्चय करना। **–भू**–स्त्री० वह स्थान जहाँ वेदोंका अध्ययन किया जाय। **–भेद**–पु० दे० 'पाठांतर'। **–मंजरी,–शालिनी**–स्त्री० मैना, सारिका। **–विधि**–स्त्री० कहानी या कविताके पढ़नेके लिए आवश्यक क्षमता और उसे ठीकसे समझनेकी शर्तोंको पूरा करनेके तरीके। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान या संस्था जहाँ विद्यार्थियोंको, विशेषकर छोटी कक्षाओंके विद्यार्थियोंको एक या अधिक विषयोंकी शिक्षा दी जाय, विद्यालय, स्कूल; वह विद्यालय जिसमें संस्कृत पढ़ायी जाय, संस्कृत पढ़ानेका विद्यालय। **–शाली(लिन्)**–पु० विद्यार्थी, छात्र। **–शालीय**–वि० पाठशाला संबंधी; पाठशालाका।

पाठक–पु० (सं०) अध्यापक; कथावाचक; गुरु; छात्र; पढ़नेवाला; ब्राह्मणोंका एक अल्ल।

पाठन–पु० (सं०) पढ़ानेकी क्रिया, अध्यापन। **–शैली**–स्त्री० पढ़ानेका ढंग।

पाठांतर–पु० (सं०) दूसरा पाठ, भिन्न प्रकारका पाठ; किसी पुस्तक या ग्रंथके किसी अंशका उसकी दूसरी प्रति या प्रतियोंमें दूसरा रूप होना, पाठमें भिन्नता होना।

पाठा–पु० जवान और मोटा-ताजा आदमी; जवान बैल, हाथी, भैंस, बकरा आदि। स्त्री० (सं०) पाढ़ा नामकी लता।

पाठावली–स्त्री० (सं०) पाठोंका संग्रह; वह पुस्तक जिसमें किसी विषयके पाठोंका संग्रह हो।

पाठिक–वि० (सं०) जो मूल पाठसे मिलता हो।

पाठिका–स्त्री० (सं०) पढ़नेवाली; पढ़ानेवाली; पाढ़ा।

पाठित–वि० (सं०) पढ़ाया हुआ।

पाठी(ठिन्)–पु० (सं०) वह जो अध्ययन समाप्त कर चुका हो; पाठ करनेवाला; पढ़नेवाला; चीतेका पेड़। (स्त्री० 'पाठिनी'।) **–(ठि)कुट**–पु० चीतेका पेड़।

पाठीन–पु० (सं०) एक प्रकारकी मछली; गूगलका पेड़; पढ़ने-पढ़ानेवाला; पुराण आदिका वाचक।

पाठ्य–वि० (सं०) पढ़ने योग्य; पढ़ाने योग्य। **–क्रम**–पु०– **पुस्तक**–स्त्री० किसी संस्था या परीक्षा-समितिकी ओरसे किसी कक्षाके विद्यार्थियोंके पढ़नेके लिए निर्धारित पुस्तक, कोर्सकी किताब।

पाड़–पु० धोती या साड़ीका किनारा, कोर; मचान; कुएँको ढकनेके लिए लकड़ी अथवा फट्टियोंका बना विशेष प्रकारका ढाँचा; बाँध; दो दीवारोंके बीच कड़ी, बाँस, पटरा आदि जड़कर बनाया जानेवाला आधार जिसपर चीजें रखते हैं; वह तख्ता जिसपर मृत्युदण्ड पानेवाले अपराधीको फाँसी देनेके लिए खड़ा करते हैं।

पाड़इ*–स्त्री० पाटल नामका वृक्ष।

पाड़साली–पु० दाक्षिणात्य जुलाहोंकी एक जाति।

पाड़ा–पु० टोला; महल्ला; † एक समुद्री मछली; भैंसका नर बच्चा।

पाडिनी–स्त्री० (सं०) मिट्टीका बरतन, हाँड़ी।

पाढ़–पु० पीढ़ा; वह पीढ़ा जिसपर सुनार, लोहार आदि काम करते समय बैठते हैं; रखवालेके बैठने-सोनेके लिए खेतमें बनायी जानेवाली मचान; कुएँपर रखा जानेवाला ढक्कनकी तरहका लकड़ीका ढाँचा; सुनारोंका नक्काशी करनेके कामका एक आला; किनारा (इस अर्थमें स्त्री० भी)। स्त्री० पाढ़ा लता; नदीकी धारा। **मु०–मारना**–(नाव आदिका) किनारे लगते लगते पुनः धारामें बह जाना।

पाढ़त*–स्त्री० पढ़ी जानेवाली वस्तु; मंतर, जादू।

पाढर, पाढ़र–पु० एक पेड़ जिसके पत्ते बेलके पत्तोंके समान होते हैं और जिसमें लाल या सफेद फूल लगते हैं, पाटल। * वि० किनारदार।

पाढ़ा–स्त्री० पाठा नामकी लता। * पु० हिरनका एक भेद।

पाढी†–स्त्री० नावको धाराके अनुकूल खेनेकी क्रिया।

पाण–पु० (सं०) व्यापार, व्यवसाय; व्यापारी, व्यवसायी; द्यूत; दाँव; बाजी; प्रतिज्ञा, कौल, इकरार; प्रशंसा; हाथ।

पाणि–पु० (सं०) हाथ; खुर (वै०)। स्त्री० बाजार। **–कच्छपिका**–स्त्री० उँगलियोंकी एक मुद्रा, कूर्ममुद्रा। **–कर्ण**–पु० शिव। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० शिव। वि० जो हाथसे कोई बाजा बजाये, मृदंग, ढोल आदि बजानेवाला। **–गृहीती**–स्त्री० पत्नी। **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० विवाह। **–ग्रहणिक**–वि० विवाह-संबंधी, वैवाहिक। पु० दहेज, यौतुक। **–ग्रहणीय**–वि० दे० 'पाणिग्रहणिक'। **–ग्रहीता(तृ),–ग्राहक**–पु० पति। **–ग्राह**–पु० पति; विवाह। **–ग्रहीत**–वि० विवाहित। **–ग्रहीता**–वि०, स्त्री० विवाहिता। **–घ**–पु० मृदंग, ढोल आदि (हाथसे बजाये जानेवाले बाजे) बजानेवाला; दस्तकार। **–घात**–पु० घूँसा; घूँसेबाज। **–घ्न**–पु० दस्तकार; ताली बजानेवाला (वै०); उँगलियोंको झटकारना। **–ज**–पु० नख। **–तल**–पु० हथेली; दो तोलेका एक प्राचीन परिमाण। **–ताल**–पु० एक प्रकारका ताल (संगीत)। **–धर्म**–पु० पाणिग्रहणरूप धर्म, विवाह-संस्कार। **–पल्लव**–पु० पल्लवरूपी कर; अँगुलियाँ। **–पात्र**–वि० हाथमें लेकर पीनेवाला; जो हाथ या अंजलिसे पात्र या बरतनका काम ले। **–पाद**–पु० हाथ और पैर। **–पीडन**–पु० पाणिग्रहण, विवाह; हाथ मलना। **–पुट,–पुटक**–पु० चुल्लू। **–प्रणयिनी**–स्त्री० पत्नी। **–बंध**–पु० पाणिग्रहण, विवाह। **–भुक्(ज)**–पु० गूलरका पेड़। **–मर्द**–पु० करौंदा। **–मुक्त**–वि० हाथसे फेंका जानेवाला (अस्त्र)। पु० भाला। **–मुख**–वि० हाथसे खानेवाला।

पु० पितर (इसका प्रयोग बहुवचनमें ही होता है।) **–मूल**–पु० कलाई। **–रुट् (ह्),–रुह**–पु० नख, नाखून। **–रेखा**–स्त्री० हस्तरेखा। **–वाद,–वादक**–पु० ताली बजानेवाला; मृदंग आदि (हाथसे बजाये जानेवाले बाजे) बजानेवाला। **–सर्ग्या**–स्त्री० रस्सी (जो हाथसे बनायी जाती है)। **–स्वनिक,–स्वानक**–पु० हाथसे बाजा बजानेवाला। **–हता**–स्त्री० एक तालाब जिसे देवताओंने अपने हाथसे बुद्धके लिए तैयार किया था।

पाणिक–वि० (सं०) द्यूतसे प्राप्त; जो एक पणमें खरीदा गया हो। पु० व्यापारी; स्कंदका एक अनुचर।

पाणिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका गीत; एक तरहकी करछुल।

पाणिनि–पु० (सं०) एक विख्यात मुनि जिन्होंने अष्टाध्यायी नामका प्रसिद्ध सूत्रबद्ध व्याकरण-ग्रंथ बनाया (इनका समय ईसवी पूर्व चतुर्थ शतक माना जाता है और कहा जाता है कि शंकरके प्रसादसे इन्हें व्याकरणका अगाध ज्ञान प्राप्त हुआ था)।

पाणिनीय–वि० (सं०) पाणिनि-संबंधी; पाणिनी द्वारा रचित या उक्त। पु० पाणिनिके मतको माननेवाला, पाणिनिका अनुयायी; पाणिनिका व्याकरण।

पाणी–पु० दे० 'पाणि'।

पाणीकरण–पु० (सं०) विवाह।

पाण्य–वि० (सं०) प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य; हाथ-संबंधी।

पाण्यास–वि० (सं०) हाथसे खानेवाला (पितर)।

पातंग–वि० (सं०) फतिंगोंके संबंधका; भूरा।

पातंगि–पु० (सं०) शनैश्चर; यम; कर्ण; सुग्रीव।

पातंजल–वि० (सं०) पतंजलि-संबंधी; पतंजलिका; पतंजलि द्वारा रचित या प्रवर्तित। पु० योगशास्त्र जिसके आद्य आचार्य पतंजलि माने जाते हैं।

पात–पु० कानका एक गहना; घटना; भूल, दोष; पत्ता; (सं०) गिरनेकी क्रिया या भाव; पतन; गिरानेकी क्रिया या भाव; उड़ना; उड़ान; उतरना; उतार; नाश, ध्वंस (शरीरपात); प्रहार (खड्गपात); डालना, ले जाना (दृष्टिपात); टूटकर गिरने या च्युत होनेकी क्रिया या भाव (उल्कापात); राहु; चालन (पक्षपात–पंख चलाना); अशुभ स्थिति। वि० रक्षित।

पातक–पु० (सं०) पाप, अघ (महापातक पाँच हैं–ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरुतल्पगमन, स्तेय और पातकीका संसर्ग)। वि० गिरानेवाला।

पातकी (किन्)–वि० (सं०) पापी, अघी; अपराधी।

पातन–पु० (सं०) गिरानेकी क्रिया; झुकाना; काटकर गिरा देना; फेंकना; डालना; पारेका एक प्रकारका संस्कार। वि० गिरानेवाला।

पातनीय–वि० (सं०) गिराने योग्य; प्रहार करने योग्य ('पात'के अन्य अर्थोंमें भी)।

पातबंदी–स्त्री० वह नकशा जिसमें किसी जायदादकी कूती हुई मालियत और उसपर चढ़ा हुआ कर्ज लिखा रहता है।

पातयिता (तृ)–वि०, पु० (सं०) गिरानेवाला; फेंकनेवाला।

पातर†–स्त्री० पत्तल; वेश्या। वि० पतला, बारीक; दुर्बल, क्षीणकाय; क्षुद्र, नीच–'जतियाक पातरि'–ग्रामगीत।

पातरि, पातरी–स्त्री० पत्तल।

पातल*–स्त्री० दे० 'पातर'।

पातव्य–वि० (सं०) रक्षा करने योग्य; पीने योग्य।

पातशाह–पु० दे० 'पादशाह'।

पातशाही–स्त्री० दे० 'पादशाही'।

पाता*–पु० पत्ता।

पाता (तृ)–पु० (सं०) रक्षक; पीनेवाला।

पाताखत*–पु० पत्र और अक्षत; पूजनकी साधारण सामग्री; मामूली भेंट।

पातार†–पु० दे० 'पाताल'।

पाताल–पु० (सं०) भुवनका अधोभाग; पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे सबसे नीचेका लोक (पुराणोंमें सात प्रकारके अधोलोकोंका उल्लेख मिलता है–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल); गुफा; पारा आदि शोधनेका एक यंत्र; गड्ढा; बड़वानल; कुंडलीमें उस घरसे चौथा स्थान जिसमें सूर्य हो; छंदकी संख्या; मात्रा आदि निकालनेकी एक रीति (पिं०)। **–केतु**–पु० एक दानव। **–गंगा**–स्त्री० पाताल लोकमें बहनेवाली गंगा। **–गरुड़ी**–स्त्री० एक लता, छिरहटा। **–तुंबी**–स्त्री० खेतोंमें होनेवाली एक लता। **–तोड़**–वि० (हिं०) बहुत गहरा (कुँआ)। **–निलय,–निवास, –वासी (सिन्)**–पु० दैत्य, दानव; नाग। **–यंत्र**–पु० धातु गलाने, अर्क, तेल आदि तैयार करनेका एक यंत्र।

पातालौका (कस्)–पु० (सं०) दे० 'पाताल-निलय'।

पाति–पु० (सं०) प्रभु, स्वामी; पति; पक्षी। † स्त्री० पत्ती; चिट्ठी।

पातिक–पु० (सं०) सूंस।

पातिग*–पु० पातक।

पातित–वि० (सं०) गिराया हुआ; फेंका हुआ; झुकाया हुआ।

पातित्य–पु० (सं०) पतित होनेका भाव; जातिच्युति; पदच्युति।

पातिली–स्त्री० (सं०) हिरन फँसानेका जाल; फंदा; एक प्रकारका मिट्टीका बरतन; विशेष वर्गकी स्त्री।

पातिव्रत–पु० दे० 'पातिव्रत्य'।

पातिव्रत्य–पु० (सं०) पतिव्रता होनेका भाव; पतिव्रताका धर्म।

पाती*–स्त्री० चिट्ठी, पत्र; पत्ता; लज्जा, हया; मर्यादा।

पाती (तिन्)–वि० (सं०) गिरनेवाला; गिरानेवाला; फेंकनेवाला।

पातुक–वि० (सं०) प्रायः गिरनेवाला, पतनशील; जातिसे च्युत होनेवाला; नरकगामी। पु० पहाड़का ढाल; जल-हस्ती।

पातुर, पातुरनी, पातुरि–स्त्री० वेश्या, रंडी।

पात्य–वि० (सं०) गिराने योग्य; लगाने योग्य (जैसे दंड, जुर्माना); प्रहार करने योग्य।

पात्र–पु० (सं०) जल आदि पीनेका बरतन; बरतन, कुछ रखने या खाने-पीने आदिके कामका आधाररूप पदार्थ; स्रुवा आदि यज्ञके कामका कोई पदार्थ; कोई वस्तु पानेका अधिकारी व्यक्ति; अभिनेता; उपन्यासमें वर्णित वह व्यक्ति जिसका कथावस्तुमें कोई स्थान हो (स्त्री० पात्रा); नदीका पेटा या पाट; राजाका मंत्री, अमात्य; ४ सेरका एक पुराना परिमाण, आढक; आदेश; योग्यता; पत्ता। **–टीर**–पु० योग्य अमात्य; चाँदी, पीतल या लोहेका कोई बरतन; अग्नि; कौआ; कंक नामक पक्षी; मोरचा, जंग; नाकमेंसे निकलनेवाला मल, नेटा। **–दुष्टरस**–पु० एक तरहका काव्यदोष, परस्पर विरोधी बातें कहना (केशवदास)। **–निर्णेग**–पु० बरतन माँजनेवाला। **–पाल**–पु० तराजूकी डाँड़ी; पतवार। **–भृत्**–पु० नौकर, चाकर। **–वर्ग**–पु० अभिनेताओंका दल। **–शुद्धि**–स्त्री० बरतनोंकी सफाई। **–शेष**–पु० उच्छिष्ट, जूठन। **–संस्कार**–पु० बरतनोंकी सफाई; नदीका प्रवाह।

पात्रक–पु० (सं०) बरतन; छोटा बरतन।

पात्रट–पु० (सं०) पात्र; प्याला; जीर्णवस्त्र, फटा-पुराना कपड़ा; रूमाल, तौलिया। वि० कृश।

पात्रता–स्त्री०, **पात्रत्व**–पु० पात्र होनेका भाव या धर्म, योग्यता।

पात्रासादन–पु० (सं०) यज्ञ-संबंधी पात्रोंको क्रमानुसार उचित स्थानपर रखना।

पात्रिक–वि० (सं०) जो किसी पात्रसे नापा गया हो; आढकसे तौला या मापा हुआ; उपयुक्त। पु० बरतन; छोटा बरतन, कटोरा आदि।

पात्रिका, पात्रिकी–स्त्री० (सं०) पात्र–कटोरा, थाली आदि।

पात्रिय, पात्र्य–वि० (सं०) जिसके साथ एक पात्रमें भोजन किया जा सके।

पात्री–स्त्री० (सं०) बरतन–थाली आदि; दुर्गा; छोटी भट्ठी।

पात्री (त्रिन्)–वि० (सं०) जिसके पास बरतन हो, पात्रसे युक्त; जिसके पास योग्य व्यक्ति हों।

पात्रीण–वि० (सं०) पात्रसे नापकर बोया या पकाया हुआ।

पात्रीय–पु० (सं०) एक तरहका यज्ञपात्र।

पात्रीर–पु० (सं०) यज्ञमें समर्पित किया जानेवाला पदार्थ, यज्ञद्रव्य।

पात्रेबहुल–पु० (सं०) वह जो खानेभरके लिए साथ रहे और किसी काम न आये।

पात्रेसमित–पु० (सं०) दे० 'पात्रेबहुल'; वह पापात्मा जो अपने कुछ न करे और दूसरोंको उपदेश दे, ढोंगी; छलिया।

पात्रोपकरण–पु० (सं०) अलंकरणके तुच्छ साधन, गौण श्रेणीके अलंकार।

पाथ–पु० (सं०) अग्नि; सूर्य; जल; * रास्ता, मार्ग। **–नाथ, –निधि**–पु० समुद्र।

पाथ(स्)–पु० (सं०) जल; वायु; खाद्यपदार्थ; आकाश; हृदयाकाश (वै०)। **–(स्) पति**–पु० वरुण; समुद्र।

पाथना–स० क्रि० साँचेकी सहायतासे या यों ही हाथोंसे थोप-पीटकर किसी गीले उपादानसे बड़ी टिकिया या पटरी आदिकी तरहकी विशेष आकारकी कोई वस्तु तैयार करना; * गढ़ना, बनाना; मारना, पीटना।

पाथर*–पु० दे० 'पत्थर'।

पाथा–पु० अन्न नापनेकी एक तौल; अन्नकी राशि नापनेके कामका एक प्रकारका बड़ा टोकरा; उतनी जमीन जितनेमें एक पाथा अन्न बोया जाय; हलकी खोंपी जिसमें फाल ठोंका जाता है; कोल्हू हाँकनेवाला; अन्नमें लगनेवाला एक प्रकारका कीड़ा।

पाथि(स्)–पु० (सं०) समुद्र; नेत्र; खुरंड।

पाथेय–पु० (सं०) वह भोज्य वस्तु जिसे पथिक राहमें खानेके लिए अपने साथ ले जाता है, संबल; राहखर्च; कन्या राशि; एक देश।

पाथो–'पाथस्'का समासगत रूप। **–ज**–पु० कमल; शंख। **–द, –धर**–पु० बादल। **–धि, –निधि**–पु० समुद्र।

पाथोन–पु० कन्याराशि।

पाद–पु० अपान वायु; (सं०) चरण, पैर; श्लोक, पद्य या मंत्रका चौथा भाग; किसी वस्तुका चौथा भाग, चतुर्थांश; किसी पुस्तक या अध्यायका चौथा भाग; वृक्ष या पौधेकी जड़; किसी वस्तुका निचला भाग; किसी बड़े पर्वतके पासका छोटा पहाड़; किरण; भाग, हिस्सा, अंश; गमन; एक पैर या बारह अंगुलकी माप; स्तंभ, खंभा; एक ऋषि। **–कटक**–पु० नूपुर। **–कमल**–पु० कमलसदृश चरण। **–कीलिका**–स्त्री० नूपुर। **–कृच्छ्र**–पु० चार दिनोंमें पूरा किया जानेवाला एक व्रत या प्रायश्चित्त। **–क्षेप**–पु० पैर रखना, चरणन्यास। **–गंडीर**–पु० पीलपाँव, श्लीपद। **–ग्रंथि**–स्त्री० टखना। **–ग्रहण**–पु० ऐसा प्रणाम जिसमें चरणका स्पर्श किया जाय, पैर छूकर प्रणाम करना। **–चतुर, –चत्वर**–पु० निंदा करनेवाला, निंदक; बकरा; पीपलका पेड़; बालूका बाँध; ओला। **–चार**–पु० पैदल चलना। **–चारी(रिन्)**–वि० पैदल चलनेवाला; पु० पैदल सिपाही। **–ज**–पु० शूद्र। **–जल**–पु० वह जल जिसमें किसीका पैर पखारा गया हो; वह मट्ठा जिसमें चतुर्थांश जल मिलाया गया हो। **–जाह**–पु० दे० 'पादमूल'। **–टीका**–स्त्री० पादटिप्पणी, 'फुटनोट'। **–तल**–पु० तलवा। **–त्र, –त्राण**–पु० खड़ाऊँ, जूता, चट्टी आदि। वि० जिससे पैरकी रक्षा हो। **–दलित**–वि० पैरोंके नीचे कुचला हुआ, रौंदा हुआ; बुरी तरहसे दबाया हुआ (ला०)। **–दारिका, –दारी**–स्त्री० बिवाई नामका रोग। **–दाह**–पु० एक वातरोग जिसमें पैरमें जलन होती है। **–धावन**–पु० पैर धोनेकी क्रिया। **–धावनिका**–स्त्री० वह बालू या मिट्टी जिसे लगाकर पैर धोया जाय। **–नख**–पु० पैरकी अँगुलीका नख। **–नम्र**–वि० किसीके पैरतक झुका हुआ। **–नालिका**–स्त्री० नूपुर। **–निकेत**–पु० पैर रखनेकी छोटी चौकी, पादपीठ। **–न्यास**–पु० पैर रखना, कदम रखना। **–पंकज, –पद्म**–पु० दे० 'पाद-कमल'। **–प**–पु० वृक्ष, पेड़; पादपीठ। **–०खंड**–पु० वृक्षोंका झुंड। **–पथ**–पु० पगडंडी। **–पद्धति**–स्त्री० पगडंडी। **–पा**–स्त्री० पादुका, पादत्राण। **–पालिका**–स्त्री० नूपुर। **–पाश**–पु० घोड़ेके पिछले पैर बाँधनेकी रस्सी, पिछाड़ी; वह रस्सी जिससे कोई चौपाया छाना जाय, छान; नूपुर; घुंघरू। **–पाशी**–स्त्री० बेड़ी, जंजीर; चटाई; एक लता। **–पीठ**–पु० ऊँचे आसनके पास रखी जानेवाली छोटी चौकी या आधार जिसपर पैर रखते हैं, पैर रखनेके कामकी चौकी। **–पीठिका**–स्त्री० साधारण व्यवसाय, मामूली पेशा (जैसे नाईका); सफेद पत्थर। **–पूरण**–पु०, **–पूर्ति**–स्त्री० किसी श्लोक या पद्यके किसी चरणको पूरा करना; वह अक्षर जिसके द्वारा कोई चरण पूरा किया जाय। **–प्रक्षालन**–पु० पैर धोनेकी क्रिया। **–प्रणाम**–पु० साष्टांग प्रणाम; पैर पड़ना। **–प्रतिष्ठान**–पु० दे० 'पादपीठ'। **–प्रधारण**–पु० जूता, खड़ाऊँ आदि। **–प्रसारण**–पु० पैर फैलाना। **–प्रहार**–पु० पैरसे किया गया आघात। **–बंध**–पु० बेड़ी। **–बंधन**–पु० जानवरोंके पैर छाननेकी रस्सी; जानवरोंको छाननेकी क्रिया; पशुधन। **–भाग**–पु० पैरका निचला भाग; चतुर्थांश। **–मुद्रा**–स्त्री० पैरका चिह्न। **–मूल**–पु० टखना; तलवा; एड़ी; वह स्थान जहाँसे पहाड़का आरंभ होता है; चरणका सान्निध्य (नम्रता सूचित करनेके लिए प्रयुक्त)। **–रक्ष, –रक्षक**–पु० जूता, खड़ाऊँ आदि। **–रक्षण**–पु० पैरका आवरण; जूता, खड़ाऊँ आदि। **–रज(स)**–स्त्री० पैरकी धूल। **–रज्जु**–स्त्री० हाथीके पाँव बाँधनेकी रस्सी या जंजीर। **–रथी**–स्त्री० जूता; खड़ाऊँ। **–रोह, –रोहण**–पु० बड़का पेड़। **–लग्न**–वि० शरणागत; आश्रित। **–वंदन**–पु० चरण छूकर प्रणाम करना। **–वल्मीक**–पु० पीलपाँव, श्लीपद। **–विरजा (जस्)**–स्त्री० जूता; खड़ाऊँ। पु० देवता। **–वेष्टनिक**–पु० पातावा। **–शब्द**–पु० पैरकी धमक, आहट। **–शाखा**–स्त्री० पैरकी अँगुली। **–शैल**–पु० किसी पहाड़के पासका छोटा पहाड़। **–शोथ**–पु० पैरका फूल जाना। **–शौच**–पु० पैर धोना। **–सेवन**–पु०, **–सेवा**–स्त्री० पैर छूना; सेवा-शुश्रूषा। **–स्तंभ**–पु० खंभा, टेक। **–स्फोट**–पु० एक प्रकारका कुष्ठ, विपादिका। **–स्वेदन**–पु० पैरमें पसीना होना। **–हत**–वि० जिसपर पादप्रहार किया गया हो। **–हर्ष**–पु० एक वातरोग जिसमें पैरमें झुनझुनी होती है। **–हीन**–वि० जो अपने चतुर्थ भाग या चरणसे रहित हो; जिसके पैर न हों।

पादक–पु० (सं०) पैर; चतुर्थांश। वि० चलनेवाला।

पादक्रमिक–वि० (सं०) पदक्रम जानने या पढ़नेवाला।

पादना–अ० क्रि० अपान वायुको गुदामार्गसे बाहर निकालना, गोज करना।

पादप–पु० दे० 'पाद'के साथ। **–जात**–पु० (सं०) (फ्लोरा) किसी विशिष्ट प्रदेश, समय अथवा युगके पौधों, वनस्पति आदिका समूह या सूची। **–शास्त्र**–पु० (मैलियो-बोटैनी) लाखों वर्ष पुराने उन पेड़-पौधोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र जो अब पत्थर इत्यादिके रूपमें परिणत हो गये हैं।

पादरी–पु० ईसाई धर्मका पुरोहित या आचार्य।

पादविक–पु० (सं०) पथिक।

पादशाह–पु० (फा०) बादशाह, सम्राट्। **–ज़ादा**–पु० राजकुमार।

पादशाही–स्त्री० बादशाही।

पादांक–पु० (सं०) पैरका निशान।

पादांगद–पु०, **पादांगदी**–स्त्री० (सं०) नूपुर।

पादांगुलि, पादांगुली–स्त्री० पैरकी उँगली।

पादांगुष्ठ–पु० (सं०) पैरका अँगूठा।

पादांत–पु० (सं०) पैरका अग्रभाग; श्लोक या पद्यके किसी पदका अंतिम भाग या अवसान। **–स्थ**–वि० पादांतमें स्थित, जो पद या चरणके अंतमें हो।

पादांबु–पु० (सं०) पैर धोनेका पानी; चतुर्थांश जलवाला मट्ठा।

पादांभ(स्)–पु० (सं०) दे० 'पादांबु'।

पादाकुलक–पु० (सं०) एक मात्रावृत्त।

पादाक्रांत–वि० (सं०) पैरों तले दबाया हुआ; रौंदा हुआ।

पादाग्र–पु० (सं०) पैरका अग्रभाग।

पादाघात–पु० (सं०) पैरका प्रहार, लात मारना।

पादात–पु० पैदल सिपाही, पैदल सेना।

पादाति, पादातिक–पु० (सं०) पैदल सिपाही।

पादाध्यास–पु० (सं०) रौंदना, कुचलना, पदाघात।

पादानत–वि० (सं०) पैरोंपर पड़ा हुआ।

पादानुप्रास–पु० (सं०) एक शब्दालंकार, पदगत अनुप्रास।

पादानोन†–पु० काला नमक।

पादाभ्यंजन–पु० (सं०) पैरोंमें लगाया जानेवाला घी या तेल।

पादारक–पु० (सं०) आरोहियोंके बैठनेकी नावकी पटरी; मस्तूल।

पादारघ*–पु० दे० 'पाद्यार्घ'।

पादारविंद–पु० (सं०) चरण-कमल।

पादार्पण–पु० (सं०) दे० 'पदार्पण' ।

पादालिंद–पु०, **पादालिंदा, पादालिंदी**–स्त्री० (सं०) नाव ।

पादावर्त–पु० (सं०) रहट ।

पादावसेचन–पु० (सं०) पैर धोना; पैर धोनेका पानी ।

पादाविक–पु० (सं०) पैदल सिपाही ।

पादाष्ठील–पु० (सं०) टखना ।

पादासन–पु० (सं०) पादपीठ ।

पादास्फालन–पु० (सं०) पैरोंको कठिनाईसे आगे बढ़ाना (जैसे कीचड़में चलते समय) ।

पादाहत–वि० (सं०) जिसपर पैरसे प्रहार किया गया हो ।

पादाहति–स्त्री० (सं०) पैरका आघात, लात मारनेकी क्रिया ।

पादिक–वि० (सं०) जो किसीके चतुर्थांशके बराबर हो (जैसे पादिक शत–पचीस प्रतिशत) ।

पादी(दिन्)–वि० (सं०) पैरवाला, जिसके पैर या पाँव हों; चार चरणोंवाला, चार भागोंवाला; जिसे किसी वस्तुका चौथा भाग मिले या मिलता हो; जो किसी वस्तुके चतुर्थांशका अधिकारी हो । पु० पैरवाला, उभयचर जंतु (मगर, घड़ियाल, कछुआ आदि); वह जो किसी संपत्ति या जायदादके चौथे भागका अधिकारी हो, चौथाईका हिस्सेदार ।

पादुक–वि० (सं०) पैदल चलनेवाला ।

पादुका–स्त्री० (सं०) जूता; खड़ाऊँ । **–कार**–पु० मोची, चमार; बढ़ई ।

पादू–स्त्री० (सं०) जूता । **–कृत्**–पु० मोची ।

पादोदक–पु० (सं०) पैर धोनेका जल; वह जल जिससे किसीका पाँव पखारा गया हो, 'चरणामृत' ।

पादोदर–पु० (सं०) साँप ।

पाद्य–वि० (सं०) पाद-संबंधी; चरणका, पैरका । पु० पैर धोनेका पानी ।

पाद्यार्घ, पाद्यार्घ्य–पु० (सं०) पाद्य और अर्घ, पैर धोनेका पानी और दूब, अक्षत, जल आदि पूजाके उपकरण (अर्घमें जल, दूध, दही, घी आदि आठ वस्तुएँ दी जाती हैं); भेंट, नजर (केशव) ।

पाधा–पु० आचार्य; पंडित ।

पान–पु० (सं०) जल आदि पीनेकी क्रिया; पीनेका पात्र; शराब पीना; पेय द्रव्य (शरबत, शराब); पौसरा; शराब बेचनेवाला, शौंडिक, कलवार; रक्षा करनेकी क्रिया, रक्षण; निःश्वास; उस्तरे, तलवार आदिपर सान चढ़ाना, हथियारोंकी धार तेज करना; नहर; चुंबन ('अधरपान') । **–गोष्ठिका, –गोष्ठी**–स्त्री० मद्य आदि पीनेके लिए एकत्र हुए लोगोंकी मंडली, शराबियोंकी मंडली; शराबकी दुकान । **–दोष**–पु० शराब पीनेकी कुटेव । **–प**–वि० शराब पीनेवाला, मद्यप । **–पर, –रत**–वि० शराबी, जो शराब पीनेका आदी हो । **–पात्र, –भांड, –भाजन**–पु० शराब आदि पीनेका बरतन । **–वणिक, –वणिक्(ज्)**–पु० शराब बेचनेवाला, कलाल । **–भू, –भूमि, –भूमी**–स्त्री० शराब पीनेकी जगह, वह स्थान जहाँ शराबी इकट्ठे होकर शराब पियें । **–भोजन**–पु० खाना-पीना । **–मंडल**–पु० मद्यपोंकी मंडली । **–मत्त**–वि० नशेमें चूर । **–मद**–पु० शराबका नशा । **–विभ्रम**–पु० अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक प्रकारका विकार जिसमें वमन, मूर्च्छा, सिरमें पीड़ा, कफस्रवण आदि उपसर्ग होते हैं, पानात्यय, मदात्यय । **–शौंड**–वि०, पु० अधिक मद्य पीनेवाला ।

पान–पु० एक लता जिसके पत्ते सुपारी, कत्था आदिके साथ मुखशुद्धिके लिए खाये जाते हैं, इस लताका पत्ता; * पत्ता; * पानी; वह चमक जो शस्त्रोंपर उन्हें आगमें तपाकर पानी आदिमें बुझानेसे आती है; * प्राणवायु; हारमें गुथा जानेवाला पानके आकारका तावीज; जूतेमें एड़ीपर लगाया जानेवाला पानके आकारका चमड़ेका टुकड़ा; एक प्रकारका ताशका पत्ता जिसपर पानकी लाल-लाल आकृतियाँ बनी रहती हैं; * पाणि, हाथ; सूतको माँड़ीमें भिगोकर उसका ताना करना (जुलाहा) । **–दान**–पु० पानके पत्ते और उसके मसाले रखनेके कामका डिब्बा; पानके बीड़े रखनेका डिब्बा, पनडिब्बा । **–पत्ता**–पु० लगा हुआ पान; साधारण उपहार, तुच्छ भेंट । **–फूल**–पु० तुच्छ भेंट; बहुत कोमल वस्तु । **–सुपारी**–स्त्री० किसी शुभ अवसरपर किया जानेवाला वह समारोह जिसमें पान-सुपारीसे आगत व्यक्तियोंका सम्मान किया जाता है । मु० **–उठाना**–कोई काम करनेका जिम्मा लेना । **–कमाना**–पानके पत्तोंको उलट-पुलटकर उनमेंसे सड़े अंशको निकाल देना । **–खिलाना**–विवाहके विषयमें वर और कन्या-पक्षका परस्पर वचनबद्ध होना, सगाई करना । **–चीरना**–बिना कामका काम करना, निरर्थक कार्य करना । **–देना**–किसीसे कोई काम कर डालनेकी प्रतिज्ञा करना; किसीको कोई काम अपने जिम्मे लेनेके लिए प्रेरित करना । **–फेरना**–दे० 'पान कमाना' । **–बनाना या लगाना**–पानका बीड़ा तैयार करना; पान कमाना (?) । **–लेना**–कोई काम कर डालनेका जिम्मा लेना ।

पानक–पु० (सं०) पेय; एक प्रकारका पेय जो पकाये हुए आम, इमली, आदिके गूदेमें पानी, नमक, मिर्च आदि मिलाकर तैयार करते हैं, पना ।

पानड़ी–स्त्री० एक प्रकारकी पत्ती जो पेय पदार्थों और तेल-उबटन आदिमें सुगंधके लिए छोड़ी जाती है ।

पानन–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है और सजावटके सामान तथा गाड़ी आदि बनानेके काम आती है ।

पानरा*–पु० पनारा ।

पानस–वि० (सं०) कटहलसे संबंध रखनेवाला । पु० कटहलसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी शराब ।

पानही*–स्त्री० जूता ।

पाना–स० क्रि० प्राप्त करना; फल या परिणामके रूपमें कुछ प्राप्त करना; दूसरेके हाथमें गयी हुई या खोयी हुई वस्तु पुनः प्राप्त करना; समझ जाना, जान लेना; देखना; अनुभव करना; भोगना; वेतन या मजदूरीके रूपमें कुछ प्राप्त करना; किसीके पासतक पहुँचना; पकड़ना; बराबरी करना; भोजन करना । अ० क्रि० सकना (इस अर्थमें 'पाना'का प्रयोग संयोज्य क्रियाके रूपमें होता है) । पु० दे० 'पावना' ।

पानागार–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ बहुतसे लोग एकत्र होकर मद्यपान करें, शराबखाना ।

पानात्यय–पु० (सं०) अधिक शराब पीनेसे होनेवाला एक प्रकारका विकार जिसमें कंप, शिरोवेदना, दाह, मूर्च्छा आदि उपसर्ग होते हैं ।

पानि*–पु० हाथ; पानी; आब, चमक । **–ग्रहन**–पु० दे० 'पाणिग्रहण' ।

पानिक–पु० (सं०) शराब बेचनेवाला, मद्य-व्यवसायी ।

पानिप*–पु० कांति, आब, लावण्य; पानी ।

पानिय*–पु० पानी । वि० रक्षा करने योग्य, रक्षणीय ।

पानिल–पु० (सं०) पानपात्र ।

पानी–पु० नदी, कूप आदि जलाशयों और बादलोंसे मिलनेवाला एक शीत स्पर्शवाला प्रसिद्ध तरल द्रव्य जो चराचर सृष्टिके लिए अनिवार्य होता है (आधुनिक विज्ञानके अनुसार यह अम्लजन और उदजन नामकी दो गैसोंसे बनता है तथा स्वाद, रंग और गंधसे रहित और पारदर्शक होता है); जीभ, आँख, घाव आदिसे निकलनेवाला जलीय पदार्थ; वह पानी जिसमें उसमें उबाली या भिगोयी हुई वस्तुका सारभाग मिला हो (नीमका पानी); किसी हरे या सरस पदार्थके भीतरसे निकलनेवाला रस या पानी जैसा तरल पदार्थ–नारियल, तरबूज आदि फलोंका रस; आब, कांति; प्रतिष्ठा, मानमर्यादा, इज्जत; तलवार आदि शस्त्रोंकी धारका वह काला हलका रंग जिससे उनकी अच्छाई जानी जाती है; साल, वर्ष; कलई, मुलम्मा; आत्माभिमान; दंभ; जीवट; घोड़े आदि जानवरोंकी जातिगत विशेषता; पानी जैसी ठंढी वस्तु; पानीकी तरह निःस्वाद पदार्थ; कुश्तीमें एक बारकी भिड़ंत; जल-वायु; सामाजिक स्थिति, वातावरण । **–दार**–वि० जिसमें पानी, आब हो, आबदार, कांतिमान्; प्रतिष्ठावाला, इज्जतदार; स्वाभिमानी । **–देवा**–पु० तर्पण करनेवाला, जलदाता; पुत्रादि । **–फल**–पु० सिंघाड़ा । **–बेल**–स्त्री० एक प्रकारकी लता । मु० **–आना**–वर्षा होना । **–उठाना**–पानी खींचना, सोखना । **–उतरना**–बेइज्जती होना; अंडवृद्धि होना । **–उतारना**–बेइज्जत करना । **–करना**–सरल बना देना; (किसीको) लजवाना; क्रुद्ध व्यक्तिको

शांत करना । **–काटना**–पानीको रोकनेवाले बाँध या मेड़को काट देना, पानीको एक नालीसे दूसरी नालीमें ले जाना । **–का बतासा, –का बुलबुला**–क्षणभंगुर पदार्थ । **–की पोट**–वह पदार्थ जिसमें जल अधिक हो । **–के मोल**–बहुत सस्ता । **–चढाना**–किसी घोलके योगसे आभूषण आदिपर चमक लाना (सोनेका–चढाना) । **–चलाना***–चौपट करना । **–छानना**–चेचककी बीमारीमें पानी छाननेका एक कृत्य । **–छूना**–आबदस्त लेना । **–जाना**–बेइज्जत होना । **–टूटना**–कुएँ, ताल आदिके पानीका बहुत कम हो जाना; बारिश बंद हो जाना । **–तोड़ना या काटना**–तैरते या नाव खेते समय पानीको हाथ या डाँड़ेसे चीरना । **–दिखाना**–पशुओंके सामने पीनेके लिए पानी रखना, चौपायोंको पानी पिलाना । **–देना**–तर्पण करना; सींचना । **–न माँगना**–तत्काल मर जाना । **–न रह जाना**–इज्जत मिट्टीमें मिलना । **–निकलना**–वर्षा बंद होना । **–पड़ना**–वर्षा होना । **–पड़ा**–जिसमें कसावट न हो, ढीलाढाला । **–पढ़ना,–परोरना या फूँकना**–जलको अभिमंत्रित करना । **–पर नीवँ डालना**–ऐसी वस्तुको आधार बनाना जो टिकाऊ न हो; किसी कामको इस प्रकार आरंभ करना कि वह बहुत जल्द बिगड़ जाय । **–पर नीवँ होना**–किसी काम या आयोजनका टिकाऊ न होना । **–पानी करना**–बहुत अधिक लजवाना, किसीका क्रोध शांत करना । **–पानी होना**–बहुत अधिक लज्जित होना, झेंपना । **–पीकर जाति पूछना**–कोई काम कर चुकनेपर उसके औचित्यका निर्णय करना । **–पी-पीकर कोसना**–इतनी देरतक कोसना कि गला सूख जानेके कारण बीच-बीचमें पानी पीना पड़े, बहुत अधिक और देरतक कोसना । **(किसी बात या कृत्यपर)––फिरना**–बरबाद होना, चौपट होना । **–फेर देना**–बरबाद कर देना, चौपट कर देना । **–बचाना,–रखना**–मर्यादाकी रक्षा करना । **–बराना**–सिंचाईमें एक क्यारी भर जानेपर दूसरी क्यारीमें पानी ले जाना । **–बाँधना**–बाँध या मेड़ बनाकर पानीको रोक रखना; जादूके द्वारा पानीका बरसना रोक देना । **–बुझाना**–तपे हुए लोहे आदिको पानीमें बुझाना । **(किसीके सामने या आगे)–भरना**–अति तुच्छ सिद्ध होना; फीका पड़ना । **–भरी खाल**–क्षणभंगुर शरीर । **–मरना**–बेइज्जती होना; पानी जज्ब होना । **(किसी-के सिर)–मारना**–किसीको दोषी ठहराना । **–में आग लगाना**–असंभव कार्य कर डालना; जहाँ झगड़ा होना संभव न हो वहाँ भी झगड़ा लगा देना । **–में फेँकना या बहाना**–बरबाद करना, नष्ट करना । **–लगना**–पानी जमा होना; पानी छू जानेपर (दाँतमें) टीस या चुभती पीड़ा होना । **(कहीँका)–लगना**–जल-वायुका अनुकूल न होना, स्थानविशेषके बुरे वातावरणका असर होना । **–लेना**–बेइज्जत करना । **–से पतला**–बहुत तुच्छ; बदनाम; आसान । **–से पहले पुल, पाड़ या बाँध बाँधना**–किसी अनागत विपत्तिका पहलेसे ही प्रतिकार करने लगना, किसी संकटके आनेके पहले ही उसके निवारणका उपाय करने लगना । **–से पहले मोजा उतारना**–दे० 'पानीसे पहले पुल बाँधना' । **–होना**–धातु आदिका तरल अवस्थामें परिणत होना । **(किसीका) –होना**–क्रोध शांत होना ।

पानीपत–पु० दिल्लीके पासका एक मैदान जहाँ बहुत बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं ।

पानीय–वि० (सं०) पीने योग्य; रक्षा करने योग्य । पु० जल; पेय, शराब (तं०) । **–काकिक**–पु०, **काकिका**–स्त्री० एक पक्षी । **–चूर्णिका**–स्त्री० बालू । **–नकुल**–पु० ऊदबिलाव । **–पृष्ठज**–पु० जलकुंभी । **–फल**–पु० मखाना । **–मूलक**–पु० बकुची ।**–वर्णिका**–स्त्री० बालू । **–शाला,–शालिका**–स्त्री० पौसरा, प्याऊ ।

पानीयामलक–पु० (सं०) पानी-आँवला ।

पानीयालु–पु० (सं०) एक प्रकारका कंद ।

पानुस*–पु० दे० 'फानूस' ।

पानूस–पु० दे० 'फानूस' ।

पानौरा*–पु० पानके पत्तेकी पकौड़ी ।

पान्यो*–पु० पानी–'ज्यों झख पायो पान्यो'–सूर ।

पाप–वि० (सं०) निकृष्ट; खोटा, बुरा; अशुभ; नीच; दुष्ट; (प्रायः समासमें प्रयुक्त–'पापकर्म', 'पापग्रह' आदि) । पु० बुरे कामोंसे उत्पन्न होनेवाला वह अदृष्ट जिससे मनुष्य बुरी गतिको प्राप्त होता है; ऐसा अदृष्ट उत्पन्न करनेवाला कृत्य, कुकृत्य, अधार्मिक कृत्य (जैसे–हिंसा, चोरी आदि); अनिष्ट; अपराध, जुर्म; पापी, पातकी । **–कर**–वि० दे० 'पापकारक' । **–कर्म-(न्)**–पु० ऐसा कर्म जिसे करनेसे पाप लगे, धर्मविरुद्ध कर्म, खोटा काम । **–कर्मा(र्मन्),–कर्मी(र्मिन्)**–वि० पापी । **–कल्प**– पु० नीच मनुष्य, खोटा आदमी । **–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–पु०, वि० पाप कमानेवाला, पापी । **–क्षय**–पु० पापका नाश । **–गति**–वि० अभागा, भाग्यहीन । **–ग्रह**–पु० अशुभ ग्रह जैसे मंगल, शनि, राहु, केतु या सूर्य अथवा इनमेंसे किसीसे युक्त बुध । **–घ्न**–वि० पाप नष्ट करनेवाला । पु० तिल (जिसके दानसे पापका नाश होता है) । **–घ्नी**–स्त्री० तुलसी । **–चर,–चारी(रिन्)**–वि० पापाचरण करनेवाला । **–चर्य**–पु० पापी; राक्षस । **–चेता-(तस्)**–वि० जिसके मनमें सदा पाप बसे, नीच, दुष्ट, दुरात्मा । **–चेलिका,–चेली**–स्त्री० पाठा लता । **–चैल**–पु० अशुभ वस्त्र । वि० अशुभ वस्त्र धारण करनेवाला । **–जीव**–वि० पापी, दुरात्मा । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० बुरी निगाहसे देखनेवाला । **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि पवित्र न हो; जिसकी दृष्टिका किसीपर बुरा प्रभाव पड़े, जिसके देखनेसे किसीका अमंगल हो । **–धी**–वि० दुर्बुद्धि, दुरात्मा । **–नक्षत्र**–पु० अशुभ नक्षत्र । **–नापित**–पु० धूर्त नाई । **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम बुरा, अशुभ हो । **–नाशक**–वि० पापोंका नाश करनेवाला । **–नाशन**–वि० पाप नष्ट करनेवाला । पु० विष्णु; शिव; प्रायश्चित्त । **–नाशिनी**–स्त्री० शमी; काली तुलसी । **–नाशी(शिन्)**–वि० पाप नष्ट करनेवाला । **–निरति**–वि० पापकर्ममें लगा रहनेवाला, पापी । **–निश्चय**–वि० बुरी नीयतवाला; दुष्कर्म करनेको प्रस्तुत । **–निष्कृति**–स्त्री० प्रायश्चित्त । **–पति**–पु० जार । **–पुरुष**–पु० पापमय पुरुष, बहुत पापी मनुष्य; एक प्रकारका पापमय पुरुष जिसका ध्यान बायीं कोखमें किया जाता है (तं०); परमेश्वर द्वारा सारे जगत्के दमनके लिए रचा गया पापमय पुरुष जिसके विविध अंग भिन्न-भिन्न पापोंसे तैयार किये गये माने जाते हैं (पद्म पु०) । **–फल**–वि० बुरे परिणामवाला, बुरा फल देनेवाला, अशुभ । **–बुद्धि**–वि० जिसका मन सदा पापकी ओर प्रवृत्त रहे, दुरात्मा । **–भक्षण**–पु० काल-भैरव । **–भाक्(ज्)**–वि० पापी । **–भाव,–मति**–वि० दे० 'पापबुद्धि' । **–मित्र**–पु० कुमित्र, अहित करनेवाला मित्र । **–मुक्त**–वि० जिसे पापसे छुटकारा मिल गया हो, जो निष्पाप हो गया हो । **–मोचन**–पु० पाप नष्ट करनेकी क्रिया, पापका निराकरण । **–यक्ष्मा(क्ष्मन्)**–पु० यक्ष्मा नामक बुरा रोग, क्षय । **–योनि**–स्त्री० तुच्छ योनि (जैसे तिर्यक्योनि) । वि० जिसकी उत्पत्ति किसी तुच्छ योनिमें हुई हो । **–रोग**–पु० किसी पापके कुफलके रूपमें होनेवाला बुरा रोग (जैसे–कुष्ट, यक्ष्मा, उन्माद आदि); चेचक । **–रोगी(गिन्)**–वि० जो किसी पापरोगसे ग्रस्त हो । **–ल**–वि० दे० 'क्रममें' । **–लोक**–पु० पापियोंको प्राप्त होनेवाला लोक, नरक । **–लोक्य**–वि० नरक संबंधी; नरकका, नारकीय । **–वाद**–पु० अशुभ शब्द । **–विनाशन**–पु० दे० 'पापमोचन' । **–शमनी**–वि० स्त्री० पापका नाश करनेवाली । स्त्री० शमीका पेड़ । **–शील**–वि० पाप करना जिसका स्वभाव हो, जो सदा पाप किया करे, पापमें निरत रहनेवाला । **–शोधन**–पु० पापोंका मार्जन करना । **–संकल्प**–वि० जिसका संकल्प पाप करनेका हो, पापात्मा, पापी । पु० पाप करनेका विचार; पापमय विचार । **–स्वीकार**–पु० ईसाइयोंके 'कन्फेशन'से मिलती-जुलती प्रक्रिया । लेखक जब स्वच्छन्द ढंगसे अपनी अनैतिक धारणाओं या क्रियाओंका इज़हार करता है । **–हर**–वि० पापोंका हरण करनेवाला, पापनाशक । **–हा(हन्)**–वि० पापोंका नाश करनेवाला, पापनाशक । मु० **–उदय होना**–पूर्वकृत पापका फल मिलने लगना । **–कटना**–प्रायश्चित्त आदिसे पापका अंत होना; बाधा आदिका दूर होना । **–कमाना,–बटोरना**–पापमय कार्य करना, ऐसे दुष्कर्म करना जिनका परिणाम बुरा हो । **–पड़ना***–ऐसी पापमय स्थिति उत्पन्न होना जिससे बहुत कष्ट भोगना पड़े । **–मोल लेना**–जानबूझकर बखेड़ेमें पड़ना । **–लगना**–पापका भागी होना ।

पापक–वि० (सं०) बुरा; दुष्ट; पापी। पु० दुष्ट व्यक्ति; बुरा ग्रह; कुकृत्य, अपराध।

पापड़–पु० उड़द या मूँग आदिकी पीठीसे या आलू, साबूदाना आदिसे तैयार की जानेवाली एक प्रकारकी बारीक मसालेदार चपाती जिसे तेल या घीमें तलकर अथवा आगपर सेंककर व्यंजनके रूपमें खाते हैं। वि० कागज-सा पतला; सूखा। मु०–**बेलना**–घोर परिश्रम करना; बहुत कष्ट झेलना; व्यर्थका परिश्रम करना।

पापड़ा–पु० एक प्रकारका छोटा पेड़।

पापड़खार–पु० केलेके पेड़से तैयार किया जानेवाला क्षार।

पापड़ी–स्त्री० एक पेड़ जो मध्य प्रदेश, पंजाब और मद्रासमें अधिक होता है; एक मिठाई।

पापर†–पु० दे० 'पापड़'।

पॉपर–पु० (अं०) वह जिसके पास कुछ न हो, मुफलिस आदमी, अकिंचन व्यक्ति; वह व्यक्ति जिसे अपनी निर्धनता प्रमाणित करनेपर बिना कोई अदालती रसूम या खर्च अदा किये ही दीवानीमें मुकदमा लड़नेकी स्वीकृति मिली हो। –**सूट**–पु० 'पापर' द्वारा दाखिल किया जानेवाला या लड़ा जानेवाला मुकदमा, मुफलिसी दावा।

पापर्द्धि–स्त्री० (सं०) शिकार, आखेट।

पापल–पु० (सं०) एक परिमाण। त्रि० जो पापका कारण हो; पापग्राहक।

पापांकुशा(एकादशी)–स्त्री० (सं०) आश्विन-शुक्ला एकादशी।

पापा–स्त्री० (सं०) बुधकी एक गति; एक शिकारी जंतु। (अं०) पिताका संबोधन।

पापाचार–पु० (सं०) पापमय आचरण, पापसे भरा हुआ कृत्य, दुराचार। वि० जिसका आचरण पापमय हो।

पापात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसकी आत्मा सदा पापमें प्रवृत्त रहे, जो सदा पापमें प्रवृत्त रहे, पापी।

पापाधम–पु० (सं०) महापापी।

पापानुबंध–पु० (सं०) पापका दुष्परिणाम।

पापानुवसित–वि० (सं०) पापी; पापपूर्ण।

पापापनुत्ति–स्त्री० (सं०) प्रायश्चित्त।

पापारंभ–वि० (सं०) दुष्कर्म करनेवाला, पापी।

पापारंभक–वि० (सं०) जो कुकर्म करना चाहता हो।

पापार्त–वि० (सं०) पाप या दुष्कृत्यके कारण दुःखी।

पापाशय–वि० (सं०) दे० 'पापचेता'।

पापाह–पु० (सं०) अशौचका दिन; अशुभ दिन।

पापाहि–पु० (सं०) सर्प।

पापिष्ठ–वि० (सं०) सबसे बड़ा पापी; अति पापी, अत्यंत पापमय।

पापी(पिन्)–वि० (सं०) पाप करनेवाला, अघी; निष्ठुर, निर्दय। पु० वह जो पाप करे, पाप करनेवाला मनुष्य।

पापोश–दे० 'पा'के साथ।

पाप्मा(प्मन्)–पु० (सं०) पाप, किल्विष; दुष्टता; दुर्भाग्य। वि० पापी; हानिकारक।

पाम(न्)–पु० (सं०) एक चर्मरोग, विचर्चिका; खुरंड। –**घ्न**–पु० गंधक। –**घ्नी**–स्त्री० कुटकी।

पामड़ा, पामरा*–पु० दे० 'पाँवड़ा'।

पामन–वि० (सं०) जिसे पामा नामक रोग हुआ हो।

पामर–वि० (सं०) नीच, दुष्ट; मूर्ख; निर्धन; असहाय; पामा रोगसे ग्रस्त। पु० मूर्ख या नीच व्यक्ति; वह जो पापकर्ममें संलग्न हो। –**योग**–पु० एक तरहका निकृष्ट योग।

पामरी*–स्त्री० दुपट्टा, उपरना; पाँवड़ी।

पामा(मन्)–पु० (सं०) दे० 'पाम'।

पामारि–पु० (सं०) गंधक।

पामाल–दे० 'पा'के साथ।

पायँ*–पु० पैर, पाँव। –**चा**–पु० पाजामेके उन दो भागोंमेंसे कोई एक जो उसके पहने जानेपर टाँगोंको ढके रहते हैं; पैखानेमें शौचके लिए बैठनेके पत्थर या ईंटे। –**जेहरि***–स्त्री० पायजेब। –**ता**–पु०,–**ती**–स्त्री० चारपाई या पलँगका उधरका भाग जिधर सोनेवालेका पैर रहता है, पायताना; सोनेवालेके पैरकी ओरकी दिशा।

पायँता†–पु० वह वस्त्र आदि जो यात्राके समय स्वयं जानेमें असमर्थ होनेपर यात्राके प्रतीकके रूपमें गंतव्य दिशामें कहीं रख दिया जाता और यात्रा करते समय फिर उसे साथ ले लिया जाता है, प्रस्थान। स्त्री० दे० 'पायँती'।

पायंदाज–पु० दे० 'पा-अंदाज'।

पाय–पु० (सं०) जल; (फा०) 'पा'का समासमें, इजाफत लगनेसे मिलनेवाला रूप। –**कार**–पु० बनानेवालेसे माल खरीदकर दुकानदारोंके हाथ बेचनेवाला, एजेंट, खुर्दाफरोश, बिसाती। –**ख़ाना**–पु० दे० 'पाखाना'। –**गाह**–पु० तबेला, अस्तबल; कचहरी। –**ज़ंजीर**–वि० गिरफ्तार, कैद; दुनियाके धंधोंमें फँसा हुआ। –**जामा**–पु० दे० 'पाजामा'। –**ज़ेब**–पु० दे० 'पाजेब'। –**जेहरि***–स्त्री० पाजेब। –**तख़्त**–पु० राजधानी। –**तन***–पु० दे० 'पायँता'। –**तराब**–पु० दे० 'पातराब'। –**दान**–पु० सवारी गाड़ीमें बाहरकी ओर लगाया हुआ तख्ता या लोहेका चौकोर टुकड़ा जिसपर पैर रखकर गाड़ीवान चढ़ते हैं। –**दाम**–पु० जाल, फंदा। –**दार**–वि० मजबूत, टिकाऊ। –**दारी**–स्त्री० मजबूती, टिकाऊपन। –**पोश**–पु० दे० 'पापोश'। –**बंद**–वि० दे० 'पाबंद'। –**बंदी**–स्त्री० दे० 'पाबंदी'। –**बस्ता**–वि० जिसके पैर बँधे हों। –**बोसी**–स्त्री० दे० 'पाबोसी'। –**मर्दी**–स्त्री० बहादुरी, जवाँमर्दी। –**माल**–वि० दे० 'पामाल'।

पायक–पु० दूत; सेवक; पैदल सिपाही; * मल्ल; पटेबाज; पताका; (सं०) पीनेवाला, पानकर्ता।

पायठ–स्त्री० दे० 'पाइट'।

पायड़ा*–पु० रकाब–'हर घोड़ा, ब्रह्मा कड़ी, बिस्नू पीठपलान। चंद सूर दोइ पायड़ा, चढ़सी सन्त सुजान'–साखी।

पायन–पु० (सं०) पिलाना।

पायना–स्त्री० (सं०) सींचना; पिलानेकी क्रिया; गीला करना; सान धरना, धार तेज करना।

पायरा–पु० रकाब; † एक तरहका कबूतर।

पायल–स्त्री० पैरमें पहननेका एक घुँघरूदार गहना, पाजेब; नूपुर; तेज चलनेवाली हथिनी; बाँसकी सीढ़ी।

पायस–वि० (सं०) दूध या जलसे संबद्ध; दूधका या जलका; दूध या जलका बना हुआ। पु० दूधमें पकाया हुआ चावल, खीर; अमृत; सलईका गोंद, तारपीन।

पायसा*–पु० पड़ोस।

पायसिक–वि० (सं०) जिसे उबला हुआ या गरम दूध प्रिय लगे। (स्त्री० 'पायसिकी'।)

पाया–पु० (फा०) चारपाई, कुरसी, तख्ते आदिके उन डंडोंके आकारके निचले अंगोंमेंसे कोई एक जिनके बल वे स्थित रहते हैं, पावा, गोड़ा, खंभा, टेक; बुनियाद, नीवँ; सीढ़ी; दर्जा, पद; घोड़ोंके पैरका एक रोग। –**ब-पाया**–अ० एक-एक दर्जा करके, दर्जा-ब-दर्जा। मु० –**बुलंद होना**–दर्जा बढ़ना।

पायिक–पु० (सं०) पैदल सिपाही; दूत।

पायी(यिन्)–वि०, पु० (सं०) पीनेवाला (प्रायः समासांतमें प्रयुक्त जैसे–'स्तनपायी')।

पायु–पु० (सं०) गुदा।

पाय्य–वि० (सं०) पीने योग्य; पिलाने योग्य; निंदनीय; कमीना। पु० जल; परिमाण; रक्षण; पेशा।

पारंगत–वि० (सं०) दे० 'पारगत'।

पारंपरीण–वि० (सं०) परंपरागत, क्रमागत।

पारंपरीय–वि० (सं०) परंपरागत।

पारंपर्य–पु० (सं०) परंपराका भाव; कुल आदिकी परंपरा।

पारंपर्योपदेश–पु० (सं०) परंपरागत उपदेश, ऐतिह्य (जो एक तरहका प्रमाण माना जाता है)।

पार–पु० (सं०) नदी, समुद्र आदिका दूसरी ओरका किनारा; किसी वस्तुका दूसरा किनारा; किसी दूरतक फैली हुई वस्तुका अंतिम भाग, प्रांतभाग; किसी दूरतक फैली हुई वस्तुके दो किनारोंमेंसे कोई एक; अंत, हद; पारा। अ० परे, दूर। –**काम**–वि० दूसरे किनारे जानेका इच्छुक। –**ग**–वि० पार जानेवाला; पार पहुँचानेवाला; जिसने किसी वस्तुका पार पा लिया हो; जिसने किसी

विद्या या शास्त्रका पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; (समासमें प्रयुक्त, जैसे–'वेदांतपारग')। पु० पूरा करना (वादा इ०)। –**–गत**–वि० पारतक पहुँचा हुआ; जिसने पार पा लिया हो; जिसने किसी विद्या या शास्त्रका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; पवित्र। पु० जिन (जै०)। **–गति**–स्त्री० पढ़ना, अध्ययन। **–गामी-(मिन्)**–वि० पार जानेवाला। **–चर**–वि० दूसरे किनारे पहुँचा हुआ। **–दर्शक**–वि० पारको या दूसरे किनारेको दिखानेवाला; जिसके आर-पार देखा जा सके। **–दर्शी (र्शिन्)**–वि० दूरदर्शी, परिणामदर्शी; वहुज्ञ, पंडित; (ट्रांसपेरेंट) ऐसे पदार्थ जिनमेंसे होकर प्रकाश किरणें आसानीसे गुजर सकें। पारदर्शी पदार्थके आरपार स्पष्ट देखा जा सकता है जैसे काँच, पानी, हवा आदि। **–दृश्वा (श्वन्)**–वि० दूरदर्शी; जिसने किसी वस्तुका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, पारंगत। **–नेता (तृ)**–वि० पार लेजानेवाला; किसी विपयका पूरा ज्ञान करानेवाला। **–पत्र**–पु० दे० क्रममें। **–पार**–पु० विष्णु। **मु०** **–उतर जाना**–दे० 'पार उतरना'; कोई प्रयोजन सिद्ध करके अलग हो जाना। **–उतरना**–तैरकर या नाव आदिके द्वारा नदी आदिके उस पार जाना; किसी कार्यको समाप्त करके उससे छुट्टी पाना; किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना; भववंधनसे मुक्त होना, संसारसे छुटकारा पाना। **–उतारना या करना**–नदी, समुद्र आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना। **–पाना**–किसी वस्तुके अंततक पहुँचना। **(किसीसे)–पाना**–परास्त करना। **–वसाना***–वश चलना। **–लगना**–किनारे पहुँचना। **(किसीका वेड़ा)–लगना**–गुजारा होना, निर्वाह होना। **(किसीसे वेड़ा)–लगना**–किया जा सकना; हो सकना। **–लगाना**–नदी आदिके दूसरे किनारे पहुँचाना; उद्धार करना। **(किसीका वेड़ा)–लगाना**–निर्वाह करना। **–होना**–दूसरे किनारे या उस पार पहुँचना; काम पूरा कर लेना।

पारई*–स्त्री० वड़ा कसोरा।

पारक–वि० (सं०) पार करनेवाला; पार लगानेवाला; पूर्ति करनेवाला; पालक; प्रिय; प्रीतिकर; तुष्ट करनेवाला।

पारक् (ज्)–पु० (सं०) सोना।

पारक्य–वि० (सं०) दूसरेका, पराया; जो दूसरेके लिए हो; जो परलोकके लिए हितकर हो; जो विरुद्ध हो। पु० शत्रु, विरोधी; पवित्र आचरण (जिससे परलोक वनता है)।

पारख*–स्त्री० दे० 'परख'। पु० दे० 'पारखी'।

पारखद*–पु० दे० 'पार्पद'।

पारखी–पु० परखनेवाला, वह जिसमें परखनेकी शक्ति है।

पारग्रामिक–वि० (सं०) पराया; विरोधी।

पारचा–पु० (फा०) टुकड़ा; धज्जी; कपड़ा; एक तरहका रेशमी कपड़ा; पोशाक, लिवास; कुएँके मुँहपर कुछ आगेकी ओर वढ़ाकर रखी जानेवाली वह चौड़ी और चिपटी लकड़ी जिसके ऊपरसे ही रस्सी लटकाकर पानी खींचते हैं। **–फ़रोश**–पु० कपड़ा बेचनेवाला, बजाज। **–फ़रोशी**–स्त्री० बजाजका काम, बजाजी। **–वाफ़**–पु० कपड़ा धुननेवाला, जुलाहा।

पारजन्मिक–वि० (सं०) दूसरे जन्मसे संवंध रखनेवाला।

पारजात*–पु० दे० 'पारिजात'।

पारजायिक–पु० (सं०) परस्त्रीगामी, लंपट, व्यभिचारी।

पारटीट, पारटीन–पु० (सं०) चट्टान, शिला।

पारण–पु० (सं०) किसी व्रत या उपवासके वादका पहला भोजन (पारण उपवासका अंग माना जाता है); वादल; तृप्ति, संतोष; पूरा करना; व्रत या उपवासके वाद भोजन करनेकी क्रिया; पढ़ना, अध्ययन; सम्यग् विचारके वाद विधान-सभामें (प्रस्तावादिका) स्वीकृत किया जाना (पासिंग); पुस्तकका सारा विषय। वि० पार करनेवाला; उद्धार करनेवाला। **–पत्र**–पु० (पास) किसी स्थान, सिनेमा-भवन, सभागृह आदिके भीतर या वाहर जानेका लिखित अनुमति-पत्र; रेल आदि द्वारा विना किराया दिये यात्रा करनेका अनुमतिपत्र, पास।

पारणा–स्त्री० (सं०) व्रतके वादका भोजन; भोजन।

पारणीय–वि० (सं०) समाप्त; पूरा करने योग्य।

पारतंत्र्य–पु० (सं०) पराधीनता।

पारत–पु० (सं०) दे० 'पारा'।

पारतल्पिक–पु० (सं०) परस्त्रीगामी, लंपट।

पारत्रिक–वि० (सं०) परलोक-संवंधी; परलोकका; परलोक वनानेवाला।

पारत्र्य–पु० (सं०) परलोकमें मिलनेवाला फल।

पारथ*–पु० दे० 'पार्थ'; पारधी।

पारथिव*–पु० राजा; मिट्टीका शिवलिंग। वि० मिट्टी-संवंधी; मिट्टीका वना हुआ।

पारद–पु० (सं०) पारा; एक प्राचीन असभ्य जाति।

पारदर्शिता–स्त्री० (ट्रांसपेरेंसी) पदार्थोंके आर-पार देखे जा सकनेकी क्षमता या गुण, पारदर्शी होनेका गुण।

पारदारिक–पु० (सं०) परस्त्रीगामी, लंपट।

पारदार्य–पु० (सं०) परस्त्रीगमन।

पारदेशिक–वि० (सं०) दूसरे देशका, विदेशी। पु० दूसरे देशका निवासी; यात्री।

पारदेश्य–वि०, पु० (सं०) दे० 'पारदेशिक'।

पारधि*–पु० दे० 'पारधी'। **–पति**–पु० धनुर्धरोंमें श्रेष्ठ, कामदेव।

पारधी–पु० वहेलिया, चिड़ीमार; शिकारी; कमनैत; हत्यारा। † स्त्री० ओट, आड़।

पारन*–पु० दे० 'पारण'।

पारना–स० क्रि० जमीनपर डाल देना; गिराना; साँचेमें या और किसी चीजमें जमाकर कुछ तैयार करना; * सुलाना; पछाड़ना; रखना; सम्मिलित करना; पहनना; ढाना; डालना; पालन करना। अ० क्रि० सकना; करनेमें समर्थ होना।

पारपत्र–पु० (पासपोर्ट) समुद्र-पार जानेका वह अनुज्ञा-पत्र जिसमें यात्रार्थीकी संरक्षाका भी अभिवचन सन्निविष्ट रहता है।

पारवती–स्त्री० दे० 'पार्वती'।

पारभासक–पु० (ट्रांसलूसेंट) ऐसे पदार्थ जिनमेंसे होकर थोड़ा वहुत प्रकाश गुजर सकता है किंतु उनके आर-पार देख सकना संभव न हो; जैसे कागज़का पृष्ठ, घर्पित काँच आदि।

पारभृत–पु० उपायन, भेंट, नजर।

पारमहंस, पारमहंस्य–वि० (सं०) परमहंस-संवंधी; परमहंसका।

पारमाणविक–वि० (सं०) परमाणुका; परमाणुसंवंधी (ऐटमिक)।

पारमार्थिक–वि० (सं०) परमार्थ-संवंधी; अविकारी और सत्य; स्वाभाविक (जैसे–पारमार्थिक सत्ता); परमार्थका प्रेमी; परमार्थकी ओर दृष्टि रखनेवाला; अति उत्तम।

पारमार्थ्य–पु० (सं०) परम सत्य।

पारमिक–वि० (सं०) सवसे वड़ा, सर्वश्रेष्ठ; प्रधान।

पारमिक–वि० (सं०) पार गया हुआ; श्रेष्ठ।

पारमिता–स्त्री० (सं०) पूर्णता, उत्कृष्टता (यह ६ प्रकारकी मानी गयी है जो ये हैं–दान, शील, शांति, वीर्य, ध्यान और प्रज्ञा। कुछ लोग सत्य, अधिष्ठान, मैत्र और उपेक्षाको सम्मिलित कर इनकी संख्या दस भी मानते हैं)–(वौ०)।

पारमेश्वर–वि० (सं०) परमेश्वर-संवंधी।

पारमेष्ठ्य–वि० (सं०) ब्रह्मासे संवंध रखनेवाला; ब्रह्माका। पु० प्रधानता; सर्वोच्च पद; सर्वेश्वरता; राजचिह्न।

पारय–वि० (सं०) उपयुक्त; संतोषजनक।

पारयिष्णु–वि० (सं०) तृप्तिजनक; पार जाने या पूरा करनेमें समर्थ।

पारयुगीन–वि० (सं०) परवर्ती युगका; परवर्ती युगमें होनेवाला।

पारलोक्य–वि० (सं०) परलोक-संवंधी; परलोकका।

पारलौकिक–वि० (सं०) परलोक-संवंधी; परलोकका। पु० अंत्येष्टि क्रिया।

पारवत–पु० (सं०) कवूतर।

पारवर्ग्य–वि० (सं०) दूसरे वर्गका; विरोधी।

पारवश्य–पु० (सं०) पराधीनता, परवशता।

पारविषयिक–वि० (सं०) दूसरे देश या राज्यका, विदेशी।

पारशव–वि० (सं०) परशु-संवंधी; परशुका; लोहेका वना हुआ। पु० लोहा; ब्राह्मण और शूद्रासे उत्पन्न एक संकर जाति; परायी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र; एक प्राचीन देश।

पारभ्वध, पारभ्वधिक–पु० (सं०) फरसा लेकर युद्ध करनेवाला योद्धा ।

पारषद–पु० (सं०) दे० 'पारिषद' या 'पार्षद' ।

पारस–पु० एक प्रकारका पत्थर जिसके स्पर्शसे लोहा सोना हो जाता है, स्पर्शमणि; बहुत लाभ पहुँचानेवाला पदार्थ, पारस जैसा उत्तम पदार्थ; परसा हुआ भोजन; वह पत्तल जिसमें एक आदमीके खानेभरका भोजन रखा गया हो; एक मझोले आकारका पहाड़ी पेड़; हिंदुस्तानके पश्चिममें स्थित एक प्रसिद्ध देश । वि० (सं०) फारस देश-संबंधी; फारसका; फारस देशमें पैदा ।

पारसनाथ–पु० पार्श्वनाथ (जैनोंके तीर्थंकर) ।

पारसव*–वि०, पु० दे० 'पारशव' ।

पारसा–वि० (फा०) साधु चरित्र; धर्मात्मा; सती-साध्वी (स्त्री) । **–ई**–स्त्री० साधुता, धार्मिकता ।

पारसिक–पु० (सं०) दे० 'पारसीक' ।

पारसी–पु० एक अग्निपूजक जाति । स्त्री० (सं०) फारस देशकी भाषा । **–कोश,–प्रकाश**–पु० एक ग्रंथ जिसमें फारसीके शब्दोंका अर्थ संस्कृतमें दिया हुआ है । **–विनोद**–पु० एक ग्रंथ जिसमें ज्योतिष तथा खगोलविद्यासे संबंध रखनेवाले फारसी और अरबी भाषाके शब्दोंकी व्याख्या संस्कृतमें की गयी है ।

पारसीक–पु० (सं०) फारस देश; फारस देशका घोड़ा; फारस देशका निवासी । **–यमानी**–स्त्री० खुरासानी अजवायन । **–वचा**–स्त्री० खुरासानी वच ।

पारसीकेय–वि० (सं०) फारस-संबंधी; फारसका ।

पारस्कर–पु० (सं०) एक प्राचीन देश; एक गृह्यसूत्रकार मुनि ।

पारस्त्रैणेय–पु० (सं०) परायी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र ।

पारस्परिक–वि० (सं०) आपसका, आपसी ।

पारस्पर्य–पु० (रेसीप्रॉसिटी) व्यवहारमें एक दूसरेका खयाल रखना; परस्पर रिआयत करने या सुविधा देनेका सिद्धांत ।

पारस्य–पु० (सं०) पारस या फारस देश ।

पारस्यकुलीन–वि० (सं०) दूसरे कुलमें उत्पन्न ।

पारहंस्य–वि० (सं०) दे० 'पारमहंस्य' ।

पारांध–वि० (ओपेक) जिसके आर-पार दिखाई न दे, अपारदर्शी ।

पारांधता–स्त्री० (ओपेसिटी) दे० 'अपारदर्शिता' ।

पारा–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नदी । पु० (हिं०) एक प्रसिद्ध धातु; बड़ी परई; टुकड़ा; एक प्रकारकी छोटी दीवार जो बिना गारे या मसालेके ही ईंटों या पत्थरके टुकड़ोंको एक-दूसरेपर रखकर बनायी जाती है । मु० **–पिलाना**–किसी क्रिया द्वारा भारी बनाना ।

पारापत–पु० (सं०) कबूतर ।

पारापार–पु० (सं०) दोनों किनारे, उभय तट; समुद्र ।

पारापारीण–वि० (सं०) दे० 'पारावारीण' ।

पारायण–पु० (सं०) किसी ग्रंथका आद्यंत पाठ; संपूर्णता; पार जाना ।

पारायणिक–वि०, पु० (सं०) पारायण करनेवाला, पुराणादिका पाठ करनेवाला; छात्र ।

पारायणी–स्त्री० (सं०) सरस्वती; मनन, चिंतन; कर्म; प्रकाश ।

पारारुक–पु० (सं०) पत्थर, शिला ।

पारावत–पु० (सं०) कबूतर; पंडुक; बंदर; पर्वत; एक तरहका सर्प । **–घ्नी**–स्त्री० सरस्वती नदी । **–पदी**–स्त्री० मालकंगनी; काकजंघा ।

पारावतांघ्रि–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती नामकी लता । **–पिच्छ**–पु० एक तरहका कबूतर ।

पारावताभ्व–पु० (सं०) धृष्टद्युम्न ।

पारावती–स्त्री० (सं०) ग्वालोंका एक प्रकारका गीत, बिरहा; हरफारेवड़ी; कबूतरी ।

पारावार–पु० (सं०) दे० 'पारापार' ।

पारावारीण–वि० (सं०) जो किसी वस्तुके एक किनारेसे दूसरे किनारेतक पहुँच गया हो; जिसने किसी विषय, विद्या या शास्त्रका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो; समुद्रगामी ।

पाराशर–पु० (सं०) पराशरके पुत्र वेदव्यास । वि० पराशर द्वारा उक्त या रचित ।

पाराशरि–पु० (सं०) शुकदेव; वेदव्यास ।

पाराशरी (रिन्)–पु० (सं०) सन्यासी; व्यास द्वारा रचित शारीरक-सूत्रका अध्ययन करनेवाला सन्यासी ।

पाराशरीय–वि० (सं०) पराशरके आसपासका देश या स्थान आदि ।

पाराशर्य–पु० (सं०) पराशरके पुत्र वेदव्यास ।

पारिंद्र–पु० (सं०) सिंह ।

पारि*–स्त्री० दिशा, ओर; नदी, समुद्र आदिका किनारा; मेंड़; सीमा ।

पारिकांक्षक, पारिकांक्षी (क्षिन्)–पु० (सं०) तापस, तपस्वी ।

पारिक्षित–पु० (सं०) परीक्षितके पुत्र जनमेजय ।

पारिख–वि० (सं०) परिखा-संबंधी; परिखा । * पु० पारखी, परखनेवाला; गुजरातियोंकी एक उपजाति । * स्त्री० दे० 'परख' ।

पारिखेय–वि० (सं०) परिखा, खाईसे घिरा हुआ ।

पारिगर्भिक–पु० (सं०) कबूतर ।

पारिग्रामिक–वि० (सं०) जो किसी गाँवके चारों ओर स्थित हो, जो गाँवके चारों ओर हो ।

पारिजात–पु० (सं०) पाँच देववृक्षोंमेंसे एक; हरसिंगार; कचनार; फरहद; एक ऋषि; सुगंध ।

पारिजातक–पु० (सं०) एक देववृक्ष; हरसिंगार; फरहद; कचनार ।

पारिणामिक–वि० (सं०) पचनेवाला; जिसका विकास हो सके ।

पारिणाय्य–वि० (सं०) विवाह-संबंधी; विवाहमें पाया हुआ । पु० वह धन जो किसी स्त्रीको अपने विवाहके अवसरपर मिला हो; विवाह-संबंधका स्थिर होना ।

पारिणाह्य–पु० (सं०) चारपाई, चौकी, बरतन आदि घरेलू सामान ।

पारित–वि० (पास्ड) (प्रस्ताव, विधेयक आदि) जो किसी संस्था, विधानसभा आदिमें विधिपूर्वक स्वीकृत हो चुका हो ।

पारितथ्या–स्त्री० (सं०) बाल गुहनेके काम आनेवाली मोतियोंकी लड़ी; माँगपर पहना जानेवाला स्त्रियोंका एक प्रकारका गहना ।

पारितोषिक–वि० (सं०) संतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला । पु० पुरस्कार, इनाम ।

पारिध्वजिक–पु० (सं०) झंडा लेकर चलनेवाला ।

पारिपंथिक–पु० (सं०) लुटेरा; चोर ।

पारिपाट्य–पु० (सं०) ढंग, परिपाटी; नियमितता ।

पारिपातिकरथ–पु० (सं०) वह रथ जिसपर हवा खाने या घूमने-फिरनेके लिए निकला जाय ।

पारिपात्र–पु० (सं०) एक कुलपर्वत ।

पारिपात्रिक–पु० (सं०) पारिपात्र नामक पर्वत; उसपर बसनेवाला ।

पारिपार्श्व–पु० (सं०) पार्श्वचर, अनुचर ।

पारिपार्श्वक, पारिपार्श्विक–पु० (सं०) अनुचर, सेवक; नाटकके स्थापकका सहायक नट ।

पारिप्लव–वि० (सं०) चंचला; क्षुब्ध, आकुल; तिरता हुआ । पु० नाव, जलयान; आकुलता ।

पारिप्लाव्य–पु० (सं०) हंस; आकुलता; कंपन; चंचलता ।

पारिभद्र–पु० (सं०) फरहदका पेड़; देवदारु; सलईका पेड़; नीमका पेड़ ।

पारिभद्रक–पु० (सं०) देवदारु; नीम; एक कुष्ठौषध ।

पारिभाव्य–पु० (सं०) प्रतिभू या जामिन होनेका भाव; एक कुष्ठौषध । **–धन**–पु० (कॉशन मनी) जमानत या प्रतिभूतिके रूपमें अथवा सद्व्यवहार या सदुपयोगका निश्चय करानेके लिए पहलेसे जमा की गयी या करायी गयी रकम ।

पारिभाषिक–वि० (सं०) सर्वसामान्य; जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थमें किया जाय, जो कोई विशिष्ट अर्थ सूचित करे, लाक्षणिक । **–शब्दावली**–स्त्री० (ग्लॉसरी ऑफ टेक्निकल वर्ड्ज) विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेवाले शब्दोंकी सूची ।

पारिमांडल्य–पु० (सं०) परमाणु; परमाणुका परिमाण ।

पारिमाण्य–पु० (सं०) परिधि, घेरा ।

पारिमिता–स्त्री०, **पारिमित्य**–पु० (सं०) सीमा, हद ।

पारिमुखिक–वि० (सं०) जो सामने हो; जो समीप हो ।

पारिमुख्य–पु० (सं०) सामने या समीप होनेका भाव ।

पारियात्र–पु० (सं०) पारिपात्र नामक कुलपर्वत ।

पारियात्रिक–पु० (सं०) दे० 'पारिपात्रिक' ।

पारियानिक–पु० (सं०) वह रथ जिसपर चढ़कर कहीं यात्रा की जाय ।

पारिरक्षक, पारिरक्षिक–पु० (सं०) तपस्वी, तापस ।

पारिवित्य, पारिवेत्र्य–पु० (सं०) बड़े भाईका अविवाहित होना और छोटे भाईका विवाहित ।

पारिव्राजक, पारिव्राज्य–पु० (सं०) सन्न्यास ।

पारिश–पु० (सं०) एक वृक्ष, परासपीपल, गर्दभांड ।

पारिशील–पु० (सं०) एक तरहका पूआ ।

पारिशेष्य–पु० (सं०) बाकी, वह जो शेष रह गया हो ।

पारिश्रमिक–पु० (सं०) (रेम्यूनरेशन) किये गये परिश्रमके बदलेमें मिलनेवाला धन या मजूरी, मेहनताना, उजरत ।

पारिषद–वि० (सं०) परिषद्-संबंधी; परिषद्का । पु० परिषद् या सभामें बैठनेवाला, (काउंसिलर) परिषद्का सदस्य, सभासद; राजाका मित्र या अनुचर; किसी देवताका अनुचरवर्ग ।

पारिषद्य–पु० (सं०) दर्शक; सामाजिक ।

पारिसपीपल–पु० भिंडीकी जातिका एक पेड़ ।

पारिसीर्य–वि० (सं०) जो बिना जोते-बोये उत्पन्न हो, अपने आप पैदा होनेवाला (अन्न) ।

पारिहारिक–पु० (सं०) हरण करनेवाला; हार या मालाएँ तैयार करनेवाला; आवृत करनेवाला, घेरनेवाला । वि० हरण करनेवाला; घेरनेवाला ।

पारिहारिकी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली ।

पारिहार्य–पु० (सं०) हरण करनेकी क्रिया; वलय, कंकण ।

पारिहास्य–पु० (सं०) दिल्लगी, हँसी-मजाक ।

पारींद्र–पु० (सं०) सिंह; अजगर ।

पारी–स्त्री० बारी, ओसरी; † गुड़ आदिका जमाया हुआ बड़ा ढोंका; (सं०) हाथीके पैर बाँधनेका रस्सा; जलराशि; प्याला; दोहनी; पराग ।

पारीक्षित–पु० (सं०) राजा परीक्षित्; उनका वंशधर, जनमेजय ।

पारीछत*–पु० दे० 'पारीक्षित' ।

पारीण–वि० (सं०) उस पारतक जानेवाला; पूरा करनेवाला; समाप्त करनेवाला; जो किसी विद्या या शास्त्रमें पारंगत हो (समासांतमें) ।

पारीणह्य–पु० (सं०) दे० 'पारिणाह्य' ।

पारीय–वि० (सं०) (समासांतमें) किसी विषयमें दक्ष ।

पारीरण–पु० (सं०) कछुआ; डंडा; एक पहनावा ।

पारीष–पु० (सं०) दे० 'पारिसपीपल' ।

पारु–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि ।

पारुष्ण–पु० (सं०) एक तरहका पक्षी ।

पारुष्य–पु० (सं०) परुष होनेका भाव (बात या व्यवहारमें); कठोरता; रुखाई; दुर्वचन; इंद्रका वन; अगर; बृहस्पति ।

पारेरक–पु० (सं०) तलवार ।

पारेवत–पु० (सं०) एक तरहका खजूर ।

पारोक्ष–वि० (सं०) रहस्यमय; गुप्त; अस्पष्ट ।

पारोक्ष्य–पु० (सं०) रहस्य ।

पारोवर्य–पु० (सं०) परंपरा ।

पार्क–पु० (अं०) नगरके अंदरका वह सार्वजनिक उपवन जहाँ लोग दिलबहलाव या हवाखोरीके लिए जाया करते हैं ।

पार्घट–पु० (सं०) धूल या राख ।

पार्जन्य–वि० (सं०) मेघ-संबंधी ।

पार्टी–स्त्री० (अ०) दल, मंडली; फरीक, वादी या प्रतिवादी पक्ष; प्रीतिभोज, दावत ।

पार्ण–वि० (सं०) पत्तोंका या पत्तोंका बना हुआ; पत्तियोंसे प्राप्त होनेवाला (कर) ।

पार्थ–पु० (सं०) युधिष्ठिर, अर्जुन या भीम (विशेषतः अर्जुन); अर्जुन नामका पेड़; राजा । **–सारथि**–पु० कृष्ण; मीमांसाके एक प्राचीन आचार्य ।

पार्थक्य–पु० (सं०) पृथक् होनेका भाव, पृथक्त्व, भेद, अंतर; अपाय, जुदाई बिलगाव ।

पार्थव–पु० (सं०) पृथु होनेका भाव, स्थूलता; विशालता । वि० पृथु-संबंधी; पृथुका ।

पार्थिव–वि० (सं०) पृथ्वी-संबंधी; पृथ्वीका; पृथ्वीसे उत्पन्न; पृथ्वीतत्त्वका विकाररूप; मिट्टीका बना हुआ; जो राजाके योग्य हो, राजोचित, राजसी; पृथ्वीका शासन करनेवाला; सांसारिक । पु० पृथ्वीपर रहनेवाला प्राणी; राजा; मिट्टीका बरतन; एक संवत्सर; तगर; सांसारिक पदार्थ; शरीर; मृत्तिका-निर्मित शिवलिंग । **–आय**–स्त्री० मालगुजारी; लगान । **–कन्या,–नंदिनी,–सुता**–स्त्री० राजकुमारी । **–नंदन,–सुत**–पु० राजकुमार । **–लिंग**–पु० राजचिह्न । **–श्रेष्ठ**–पु० श्रेष्ठ राजा, उत्तम राजा ।

पार्थिव दूरबीन–स्त्री० (टेरेस्ट्रियल टेलिस्कोप) पृथ्वीपर रखी हुई दूरकी वस्तुओंको देखनेके काम आनेवाली दूरबीन ।

पार्थिवात्मज–पु० (सं०) राजकुमार ।

पार्थिवाधम–पु० (सं०) नीच राजा ।

पार्थिवी–स्त्री० (सं०) सीता; लक्ष्मी ।

पार्थी–पु० मिट्टीका बनाया हुआ शिवलिंग ।

पार्पर–पु० (सं०) मुट्ठीभर चावल; क्षय रोग; राख, भस्म; यम; कदंबका केसर ।

पार्यंतिक–वि० (सं०) अंतिम ।

पार्य–वि० (सं०) जो दूसरे किनारे हो; अंतिम; प्रभावकर, सफल । पु० अंत, परिणाम ।

पार्याप्तिक–वि० (सं०) संपूर्ण ।

पार्लमेंट–स्त्री० (अं०) राष्ट्रकी, विशेषतः ब्रिटेनकी, निर्वाचित विधान-सभा ।

पार्वण–वि० (सं०) जो किसी पर्वपर या अमावस्याके दिन किया जाय । पु० किसी पर्वपर अमावस्याके दिन किया जानेवाला श्राद्ध ।

पार्वत–वि० (सं०) पर्वतपर होनेवाला; पर्वतपर रहनेवाला; जहाँ या जिसमें पहाड़ हो । पु० महानिंब ।

पार्वतायन–पु० (सं०) पर्वत ऋषिका गोत्रापत्य ।

पार्वतिक–पु० (सं०) पर्वतमाला ।

पार्वती–स्त्री० (सं०) शिवकी अर्द्धांगिनी गौरी जो हिमालयकी पुत्री हैं, उमा, भवानी (ये दुर्गासे अभिन्न मानी जाती हैं और हिमालयके घर जन्म लेनेके पहिले सतीके रूपमें शिवकी अर्द्धांगिनी थीं); गोपी; ग्वालिन; द्रौपदी; बकायन; सलई; गोपीचंदन; जीवंती; धवा, धाय; पहाड़ी झरना । **–कुमार,–नंदन**–पु० कार्त्तिकेय; गणेश । **–नेत्र,–लोचन**–पु० एक ताल (संगीत) । **–सख**–पु० शिव ।

पार्वतीय–वि० (सं०) पर्वतपर रहनेवाला; पहाड़ी । पु० वह जो पर्वतपर रहे, पहाड़ी; पहाड़ियोंकी एक पुरानी जाति ।

पार्वतेय–वि० (सं०) पर्वतसे उत्पन्न । पु० सुरमा; हुंलहुलका पौधा ।

पार्शव–पु० (सं०) पर्शु या फरसेसे युद्ध करनेवाला योद्धा ।

पार्शुका–स्त्री० (सं०) पसली ।

पार्श्व–वि० (सं०) निकट, पासका । पु० कक्षके नीचेका या छातीके दायें-बायेंका भाग, पाँजर; अगल-बगलकी जगह; सामीप्य; गाड़ीके धुरेके छोर; पार्श्वनाथ; पसलियोंका समूह, पसलियाँ; कपट, धूर्तता, छल । **–कर**–पु० बकाया मालगुजारी । **–ग,–गम**–वि० साथ रहनेवाला । पु० परिचारक, सेवक; नौकर । **–गत**–वि० जो साथ हो; रक्षित, आश्रित । **–गायक**–पु० (सं०) किसी अन्य अभिनेता या अभिनेत्रीके एवजमें नेपथ्यमें बैठकर गानेवाला, स्वरदान करनेवाला, व्यक्ति । **–चर**–वि० दे० 'पार्श्वग' । **–च्छवि**–स्त्री० बगली शोभा, अप्रधान शोभा । **–टिप्पण**–पु० (मार्जिनल नोट) पुस्तक, कापी आदिके पृष्ठपर किनारेकी तरफ लिखे गये विचार, ज्ञातव्य बातें आदि । **–द**–पु० परिचारक, सेवक । **–देश**–पु० बगल । **–नाथ**–पु० जैनोंके

तेईसवें तीर्थंकर। **–नायक**–पु० (विंग कमांडर) वायु-सेनाके दो-तीन दस्तोंकी बनी टुकड़ीका नायक (ग्रूप-कप्तान तथा स्क्वाड्रन लीडरके बीचका अधिकारी)। **–पथ या शंट**–पु० (शंट) धातुके तारका टुकड़ा जो विद्युतयंत्रके दोनों पेचोंके बीच इसलिए जोड़ दिया जाता है कि यदि यंत्रवाले परिपथमें धाराका मान बहुत अधिक हो जाये, तो उस धाराका अधिकांश इस तार (पार्श्वपथ) में ही प्रवाहित हो। पार्श्वपथ लगानेसे विद्युत यंत्रकी पर्याप्त सुरक्षा हो जाती है। **–परिवर्तन**–पु० करवट बदलना। **–पिप्पल**–पु० हड़का एक भेद। **–प्रसारण**–पु० (इनडेंट) टाइपके अक्षर बैठाते समय नये अनुच्छेदकी पहली पंक्तिके पूर्वका हाशिया (पार्श्व) बढ़ा देना या किसी उद्धरण आदिकी पंक्तियोंके एक ओर अथवा दोनों ओरका हाशिया अधिक चौड़ा कर देना। **–भाग**–पु० वगल, बाजू। **–मंडली (लिन्)**–पु० नृत्यमें एक मुद्रा। **–रक्षक सेना**–स्त्री० (फ्लैंकगार्ड) पार्श्वकी रक्षा करनेवाली सेना। **–वक्त्र**–पु० शिव। **–वर्ती (र्तिन्)**–वि० साथ रहनेवाला; बगलमें या आसपास रहनेवाला। पु० परिचारक, सेवक; सहचर। **–शय**–वि० बगलमें सोनेवाला; जो किसी करवट सोया करे। **–शीर्षक**–पु० (मार्जिनल हेडिंग) किसी छपे हुए या छपनेवाले लेख, पुस्तकके अध्याय आदिमें विषय आदिकी ओर संकेत करनेवाला वह शीर्षक जो बीचमें न दिया जाकर पार्श्वमें, किनारेकी तरफ दिया जाय। **–शूल**–पु० पाँजरमें होनेवाला दर्द; (प्लूरिसी) ठंड आदि लग जानेसे पार्श्वदेशमें होनेवाली सूजन, जिससे छाती या पसलीमें पीड़ा होती है और ज्वरादिके लक्षण भी देख पड़ते हैं। **–संधान**–पु० ईंटोंकी वगली जोड़ाई (शुल्बशास्त्र)। **–सूत्रक**–पु० एक प्रकारका गहना। **–स्थ**–वि० जो वगलमें हो, समीपस्थ। पु० सहचर, साथी; पारिपार्श्वक।

पार्श्वक–पु० (सं०) छलपूर्ण उपाय; ठग; चोर; साथी; बाजीगर; कपट या धूर्त्ततासे धन कमानेवाला। वि० पार्श्वसंबंधी।

पार्श्वतीय–वि० (सं०) जो पासमें हो, पार्श्ववर्ती।

पार्श्वानुचर–पु० (सं०) परिचारक, सेवक।

पार्श्वायात–वि० (सं०) जो पास आया हो।

पार्श्वार्ति–स्त्री० (सं०) पार्श्वशूल।

पार्श्वावमर्द–पु० (सं०) पार्श्वशूल।

पार्श्वासन्न, पार्श्वासीन–वि० (सं०) पास बैठा हुआ, उपस्थित।

पार्श्वास्थि–स्त्री० (सं०) पसली।

पार्श्विक–वि० (सं०) पार्श्व-संबंधी; किसी एक पार्श्वमें होने या रहनेवाला। पु० पक्षपाती, तरफदार; सहचर, साथी; बाजीगर; धूर्त मनुष्य; कपट या छलसे पैसा कमानेवाला।

पार्श्वोदरप्रिय–पु० (सं०) केकड़ा।

पार्षत–वि० (सं०) पृषत, चित्रमृग-संबंधी। पु० द्रुपद; धृष्टद्युम्न।

पार्षती–स्त्री० (सं०) द्रौपदी; दुर्गा।

पार्षद–पु० (सं०) सभासद; परिचारक, सेवक; किसी देवता का अनुचर।

पार्षद्–स्त्री० (सं०) परिषद्, सभा।

पार्षद्य–पु० (सं०) सभासद्।

पार्ष्णि–स्त्री० (सं०) एड़ी; पृष्ठ, पिछला भाग; सेनाका पृष्ठ भाग; जीतनेकी इच्छा, जिगीषा; पदाघात, ठोकर; जाँच, तहकीकात। स्त्री० मदमत्त स्त्री; पुंश्चली; कुंती। **–क्षेम**–पु० एक विश्वेदेव। **–ग्रह**–वि० पीछेसे पकड़नेवाला। पु० अनुयायी (अपने पक्षका या विपक्षका)। **–ग्रहण**–पु० शत्रुकी सेनापर पीछेकी ओरसे आक्रमण करना। **–ग्राह**–पु० सेनापर पीछेकी ओरसे आक्रमण करनेवाला शत्रु; सेनाके पृष्ठभागका नायक; मित्र राजा। **–घात**–पु० पादप्रहार, ठोकर। **–त्र**–पु० सेनाकी रक्षाके लिए उसके पीछे रखा जानेवाला सैनिकदल। **–प्रहार**–पु० दे० 'पार्ष्णिघात'।

पार्सल–पु० (अं०) डाक या रेल द्वारा भेजे जानेवाले मालका पुलिंदा या पैकेट। **–क्लर्क**–पु० पार्सलोंकी व्यवस्था करनेवाला कर्मचारी। **–ट्रेन**–स्त्री० पार्सल ढोनेवाली रेलगाड़ी। **–बाबू**–पु० दे० 'पार्सलक्लर्क'।

पालंक–पु० (सं०) पालक नामका साग; सलई; बाज पक्षी।

पालंकी–स्त्री० (सं०) पालक नामक साग; कुँदुरू नामक गंधद्रव्य।

पालंक्य–पु० (सं०) पालक नामका साग।

पालंक्या–स्त्री० (सं०) कुंदुरू।

पालंग*–पु० पलंग।

पाल–पु० (सं०) रक्षा करना; रक्षा करनेवाला चरवाहा; राजा; पीकदान। वि० रक्षक; व्यवस्था या देख-रेख करनेवाला। **–घ्न**–पु० कुकुरमुत्ता।

पाल–पु० आम, केला आदि पकानेकी एक विधि जिसमें उन्हें पत्तोंपर रखकर पुन· पत्तोंसे ही ढक देते हैं; नावके मस्तूलके सहारे ताना जानेवाला वह कपड़ा जिसमें हवाके भरनेसे नाव चलती है; बंगालियोंकी एक उपाधि; बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश; गाड़ी या पालकी आदिका ओहार, धूप आदिसे बचावके लिए चँदोवेकी तरह टाँगा जानेवाला टाट, कपड़ा आदि; तंबू; कपोत-मैथुन; * बाँध, मेंड़–'टूट पाल सरवर वह लागे'–प०; ऊँचा किनारा, कगार; नदीके घाटके नीचेका वह गड्ढा जो ईंट, कंकड़-पत्थर आदि बह जानेपर बन जाता है। **–वंश**–पु० बंगालका एक प्रसिद्ध राजवंश जिसने बंग और मगधपर ७७५ ई० से ११६१ ई० तक राज्य किया था।

पालउ*–पु० पल्लव, पत्ता।

पालक–पु० एक प्रसिद्ध साग; (सं०) रक्षक, पालन करनेवाला; राजा; सईस; घोड़ा; चित्रक वृक्ष; पितासे भिन्न व्यक्ति जिसने किसीका पालन-पोषण किया हो। वि० पालन करनेवाला; निभानेवाला (जैसे प्रतिज्ञापालक); * पलंग–'ता दिन पालक ते न उठावै'–रामचंद्रिका।

पालकरी–स्त्री० चारपाईके सिरहानेको ऊँचा करनेके लिए उधरके पायेके नीचे रखा जानेवाला लकड़ीका टुकड़ा।

पालकाप्य, पालकाव्य–पु० (सं०) एक मुनि जो अश्व, गज आदिसे संबंध रखनेवाले शास्त्रके प्रथम आचार्य माने जाते हैं; अश्व, गज आदिसे संबद्ध शास्त्र जिसमें हाथी-घोड़े आदिके लक्षण, गुण आदिका निरूपण है।

पालकी–स्त्री० एक तरहकी सवारी जिसे आदमी कंधेपर ढोते हैं, खड़खड़िया, शिविका; पालकका साग।

पालट–पु० गोद लिया हुआ लड़का। † स्त्री० पलट, परिवर्तन; पटेबाजीका एक हाथ।

पालड़ा–पु० दे० 'पलड़ा'।

पालतू–वि० पाला हुआ; जो पाला जा सके।

पालथी–स्त्री० बैठनेका एक आसन जिसमें दाहने और बायें पैरोंके पंजे क्रमसे बायीं और दायीं जाँघके नीचे दबे रहते हैं।

पालन–वि० (सं०) रक्षा करनेवाला। पु० रक्षा करना, रक्षण; निर्वाह करना, भरण-पोषण, परवरिश; निभाना, भंग न होने देना (जैसे प्रतिज्ञापालन); तत्कालकी ब्यायी हुई गायका दूध।

पालना–स० क्रि० भोजन-वस्त्र आदि देकर बड़ा करना, भरण-पोषण करना, परवरिश करना; जीविका या मनोरंजनके निमित्त पशु-पक्षी आदिको आहार आदि देकर अपने यहाँ रखना; उल्लंघन न करना, न टालना, निबाहना (आज्ञा, वचन)। पु० बच्चोंको झुलानेके कामका एक प्रकारका छोटा झूला या हिंडोला।

पालनीय–वि० (सं०) पालन करने योग्य।

पालयिता (तृ)–पु० (सं०) पालन करनेवाला।

पालल–वि० (सं०) तिलचूर्णसे बना हुआ।

पालव*–पु० पल्लव, पत्ता; नया और कोमल पत्ता।

पाला–पु० हवामें मिले हुए भापके सूक्ष्म कण जो अधिक ठंढक पड़नेपर सफेद तहके रूपमें जमीनपर जम जाते हैं, हिम, तुषार, बर्फ; ठंढक, सरदी; किसी प्रकारके व्यवहारका अवसर, साबिका ('पड़ना' के साथ); सदर मुकाम, सीमा-निर्देशके लिए बनाया जानेवाला मिट्टीका मेंड़ या धुस; वह धुस जो कबड्डीके खेलमें हदके निशानका काम देता है; अनाज रखनेके कामका एक प्रकारका मिट्टीका गोला, कच्चा और बड़ा बरतन, डेहरी; अखाड़ा; वह स्थान जहाँ दस-पाँच आदमी उठें-बैठें। मु० (किसीसे) **–पड़ना**–साबिका होना, काम पड़ना।

पालागन–दे० 'पा' के साथ।

पालागल–पु० (सं०) दूत, संवादवाहक ।

पालागली–स्त्री० (सं०) राजाकी चौथी और सबसे कम आदर पानेवाली महिषी ।

पालान–पु० दे० 'पलान' ।

पालाश–वि० (सं०) पलाश-संबंधी; पलाशका; पलाशका बना हुआ; हरा । पु० तेजपत्ता; हरा रंग । **–खंड,–षंड**–पु० मगध देश ।

पालाशि–पु० (सं०) पलाश गोत्रके प्रवर्तक ऋषि ।

पालिंद–पु० (सं०) कुंदरू नामका गंधद्रव्य ।

पालिंदी–स्त्री० (सं०) श्यामा लता; त्रिवृता ।

पालिंधी–स्त्री० (सं०) कृष्ण त्रिवृता ।

पालिंहिर–पु० (सं०) एक प्रकारका साँप ।

पालि–स्त्री० (सं०) कानकी लौ; किनारा; श्रेणी, पंक्ति; सीमा; बाँध; पुल; प्रस्थ नामक परिमाण; गोद; परिधि; धब्बा; चिह्न; लंबोतरा तालाब; वह नियत भोजन जो अंतेवासी या छात्रको गुरुकुलमें दिया जाता था; जूँ; वह स्त्री जिसे पुरुषोंकी तरह दाढ़ी-मूँछें आदि हों; वह प्राचीन भाषा जिसमें बौद्ध ग्रंथ लिखे गये थे; प्रशंसा; चूतड़ । **–ज्वर**–पु० एक प्रकारका ज्वर । **–भंग**–पु० बाँधका टूटना ।

पालिक–पु० पालकी; पलंग ।

पालिका–स्त्री० (सं०) कानकी लौ; तलवार आदिकी धार; मक्खन, पनीर आदि काटनेके कामकी छुरी; पालन करनेवाली । वि० स्त्री० रक्षिका ।

पालित–वि० (सं०) जिसका पालन किया गया हो, पाला हुआ; रक्षित । पु० सिहोरका पेड़ ।

पालित्य–पु० (सं०) पलित होनेका भाव; बालोंकी सफेदी ।

पालिनी–वि० स्त्री० (सं०) पालन करनेवाली; रक्षा करनेवाली ।

पालिश–स्त्री० (अं०) चिकनाई और रौनक जो एक वस्तुपर दूसरी वस्तुके रगड़नेसे पैदा होती है; वह मसाला जिसके लगानेसे किसी वस्तुपर चिकनाई और रौनक पैदा होती है । मु० **–करना**–विशेष प्रकारका मसाला लगाकर चिकना और रौनकदार बनाना ।

पालिसी–स्त्री० (अं०) नीति; बीमा-संबंधी वह प्रतिज्ञापत्र जो किसी कंपनीकी ओरसे बीमा करनेवालेको मिलता है । **–होल्डर**–पु० वह जिसके पास किसी बीमा कंपनीकी पालिसी हो ।

पाली–स्त्री० तीतर, बटेर आदि लड़ानेकी जगह; मजदूरोंके (शिफ्ट; इनिंग्ज) कारखानों आदिमें श्रमिकोंके एक दलके लिए बँधा हुआ काम करनेका समय जिसकी समाप्तिपर दूसरा दल काम शुरू करता है; हॉकी, क्रिकेट आदि खेलोंमें खेलाड़ियोंके किसी दलका पहली या दूसरी बार खेलना; परई; वह प्रसिद्ध प्राचीन भाषा जिसमें बुद्धने अपने धर्मका उपदेश दिया था और जिसमें बौद्धोंके धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं; (सं०) दे० 'पालि'; बटलोई ।

पाली(लिन्)–वि० (सं०) पालन करनेवाला; रक्षा करनेवाला ।

पालीवत–पु० (सं०) एक पेड़ ।

पालीवाल–पु० मारवाड़ी ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

पालू–वि० पालतू ।

पाले–अ० वशमें, चंगुलमें । मु० **(किसीके)–पड़ना**–चंगुलमें फँसना, काबूमें आना ।

पाल्य–वि० (सं०) पालने योग्य ।

पाल्लवा–स्त्री० (सं०) टहनियोंसे खेला जानेवाला एक खेल ।

पाल्लविक–वि० (सं०) फैलनेवाला, प्रसरणशील ।

पाल्वल–वि० (सं०) पल्वल या तलैयाका; पल्वल या तलैयामें होनेवाला । पु० तलैयाका पानी ।

पावँ–पु० दे० 'पाँव' ।

पावँड़ा–पु० दे० 'पाँवड़ा' ।

पावँड़ी–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी' ।

पावँर*–वि० दे० 'पाँवर' ।

पावँरी–स्त्री० दे० 'पाँवड़ी' ।

पाव–पु० चौथा भाग, एक चौथाई; चार छटाँककी एक तौल, एक सेरका चौथा भाग; † पैर । **–दान** †–पु० दे० 'पायदान' । **–मुहर**–स्त्री० शाहजहाँके समयका एक सिक्का जो एक अशरफीके चतुर्थांशके बराबर होता था । **–रोटी**–स्त्री० खमीर उठाकर बनायी गयी मैदेकी मोटी रोटी, डबलरोटी ।

पावक–पु० (सं०) अग्नि, आग; अग्निदेव; सूर्य; वरुण; वैद्युत अग्नि; सदाचार; अँगेथूका पेड़; चीतेका पेड़; तपस्वी, तापस; भिलावाँ; बायविडंग; कुसुंभ; तीनकी संख्या । वि० शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला । **–मणि**–पु० सूर्यकांतमणि, आतशी शीशा ।

पावकात्मज–पु० (सं०) कार्तिकेय; सुदर्शन नामक एक ऋषि ।

पावकि–पु० (सं०) दे० 'पावकात्मज' ।

पावकी–स्त्री० (सं०) अग्निदेवकी पत्नी; सरस्वती (वै०) ।

पावकुलक–पु० दे० 'पादाकुलक' ।

पावती–स्त्री० रसीद । **–पत्र**–पु० (एकनॉलेजमेंट) रुपया या अन्य वस्तु मिल जानेका प्रमाणपत्र, प्राप्ति-स्वीकार-पत्र, रसीद ।

पावन–वि० (सं०) शुद्ध करनेवाला, पवित्र करनेवाला; शुद्ध, पवित्र । पु० अग्नि; वेदव्यास; विष्णु; सिद्ध पुरुष; प्रायश्चित्त; सांप्रदायिक चिह्न; शुद्ध करनेवाली वस्तु; शुद्धि; जल; गोबर; रुद्राक्ष; कूट नामकी ओषधि; चीतेका पेड़; लोबान । **–ध्वनि**–पु० शंख ।

पावना–स० क्रि० प्राप्त करना, पाना; महसूस करना; समझना; जीमना, खाना । पु० दूसरेसे रुपया आदि पानेका अधिकार; वह रुपया या द्रव्य जो दूसरेसे पाना हो । **–(ने) दार**–पु० वह व्यक्ति जिसे किसीसे कुछ पावना हो, लहनदार ।

पावनी–स्त्री० (सं०) तुलसी; गाय; गंगा; हड़ ।

पावमान–वि० (सं०) (वह सूक्त) जिसमें पवमान अग्निकी स्तुति की गयी है (वै०) ।

पावमानी–स्त्री० (सं०) पवमान अग्नि-संबंधी सूक्त ।

पावर–पु० (सं०) वह पासा या पासेका पार्श्व जिसपर दो बिंदियाँ बनी हों; यह पासा फेंकनेका विशेष हाथ; (अं०) वह शक्ति जिसके बलसे मशीनें चलायी जाती हैं, यंत्रशक्ति (जैसे विद्युत्); अधिकार; शक्ति; सैन्यबल; शासन । **–लूम**–पु० यंत्रशक्तिसे चलनेवाला करघा । **–स्टेशन,–हाउस**–पु० वह स्थान जहाँ वितरणके लिए बिजली तैयार की जाती है, बिजलीघर ।

पावरी–स्त्री० दे० 'पाँवडी', खडाऊँ (चंदा०) ।

पावली–स्त्री० चवन्नी ।

पावस–पु० वर्षा ऋतु; (मॉनसून) समुद्रकी ओरसे आनेवाली वर्षा-सूचक हवा ।

पावा†–पु० दे० 'पाया'; गोरखपुरसे उत्तर-पश्चिममें स्थित एक प्राचीन गाँव जहाँ बुद्ध कुछ समयतक ठहरे थे ।

पावी–स्त्री० मैनाकी एक जाति ।

पाश–पु० (सं०) सरकनेवाली गाँठवाला रस्सी, तार आदिका विशेष प्रकारका फंदा जिसमें फँसनेसे प्राणी बँध जाता है, फाँस (प्राचीन कालमें युद्धमें भी आयुधके रूपमें पाशका प्रयोग किया जाता था); पशु-पक्षियोंको फँसानेका जाल; पासा; किसी बुनी हुई चीजका छोर; फँसानेवाला पदार्थ, बंधन । (समासमें पाश शब्द समूह, शोभा और अपकर्ष आदि सूचित करता है, जैसे–केशपाश, कर्णपाश, वैद्यपाश ।) **–कंठ**–वि० जिसके गलेमें फाँस हो । **–क्रीड़ा**–स्त्री० जुआ । **–जाल**–पु० संसाररूपी जाल । **–धर,–पाणि**–पु० वरुण । **–पीठ**–पु० पासे आदिकी बिसात । **–बंध**–पु० फाँस, फंदा । **–बंधक**–पु० चिड़ीमार । **–बंधन**–पु० जाल । **–बद्ध**–वि० पाशसे बाँधा हुआ, फाँसमें फँसा हुआ । **–भृत्**–पु० पाश धारण करनेवाला, वरुण । **–मुद्रा**–स्त्री० एक मुद्रा जो एकमें सटायी हुई दायें और बायें हाथकी तर्जनियोंके सिरोंपर एक-एक अँगूठेको रखनेसे बनती है (तं०) । **–रज्जु**–स्त्री० शृंखला; रस्सी । **–हस्त**–पु० वरुण; यम । वि० जिसके हाथमें फंदा हो ।

पाशक–पु० (सं०) पासा; (समासांतमें) फंदा, जाल । **–पीठ**–पु० पासा खेलनेका स्थान या बिसात ।

पाशन–पु० (सं०) बंधन; रस्सी; जालमें फँसाना ।

पाशव–वि० (सं०) पशु-संबंधी; पशुका । पु० पशुओंका समूह । **–पालन**–पु० चारा, घास ।

पाशवासन–पु० (सं०) एक आसन ।

पाशविक–वि० दे० 'पाशव' ।

पाशांत–पु० (सं०) किसी पहनावेका पीठकी ओरका भाग ।

पाशिक–पु० (सं०) चिड़ीमार, बहेलिया ।

पाशित–वि० (सं०) फँसा हुआ; बद्ध ।

पाशी(शिन्)–पु० (सं०) वरुण; यम; व्याध, बहेलिया । वि० फंदेवाला ।

पाशुपत–वि० (सं०) पशुपति-संबंधी; शिव-संबंधी या शिवका; शिवका दिया हुआ, शिव-प्रदत्त; शिव द्वारा उक्त; जो पशुपति या शिवके निमित्त हो । पु० पशुपति या शिवका उपासक; एक प्रसिद्ध दार्शनिक मत; इस मतको माननेवाला, इस मतका अनुयायी; वक-पुष्प । **–दर्शन**–पु० एक प्रसिद्ध दर्शन जिसमें जीवोंको 'पशु' और शिवको उनका अधीश्वर माना गया है ।

पाशुपतास्त्र–पु० (सं०) एक भीषण अस्त्र जिसे अर्जुनने शिवसे प्राप्त किया था ।

पाशुपाल्य–पु० (सं०) पशुपालन, पशुपालकका पेशा ।

पाशुबंधक–पु० (सं०) यज्ञमें वह स्थान जहाँ बलिपशु बाँधा जाता था ।

पाशुबंधका–स्त्री० (सं०) बलिवेदी ।

पाश्चात्य–वि० (सं०) पश्चिमका, पच्छिमी; पच्छिमका रहनेवाला; वादका, पिछला । पु० पिछला हिस्सा ।

पाश्या–स्त्री० (सं०) जाल; पाश-समूह ।

पाषंड–वि०, पु० (सं०) दे० 'पाखंड' ।

पाषंडक, पाषंडिक, पाषंडी(डिन्)–वि० (सं०) दे० 'पाखंडी' ।

पाषक–पु० (सं०) पैरका एक गहना ।

पाषर*–स्त्री० दे० 'पाखर' ।

पाषाण–पु० (सं०) पत्थर, शिला । **–गर्दभ**–पु० जबड़ेके जोड़के पास होनेवाली कड़ी सूजन । **–चतुर्दशी**–स्त्री० अगहन सुदी चौदस । **–दारक,–दारण**–पु० पत्थर काटनेकी छेनी । **–भेदक, –भेदन,–भेदी(दिन्)**–पु० एक पौधा, पखानभेद, पथरचूर । वि० पत्थर तोड़ने या काटनेवाला । **–युग**–पु० (स्टोन एज) दे० 'प्रस्तरयुग' । **–रोग**–पु० अश्मरी, पथरी । **–संधि**–स्त्री० चट्टानके भीतरकी गुफा या खाली जगह । **–हृदय**–वि० जिसका दिल पत्थरकी तरह कड़ा हो, निष्ठुर, निर्दय ।

पाषाणी–स्त्री० (सं०) पत्थरका बटखरा; भाला । वि० स्त्री० कठोर, पत्थरका दिल रखनेवाली ।

पाषान*–पु० पाषाण ।

पासँग–पु० (फा० 'पासंग') तराजूकी डाँड़ी बराबर करनेके लिए हलके पलड़ेकी ओर रखी जानेवाली वस्तु; डाँड़ीका ऊपर-नीचे होना । मु० **(किसीका)–भी न होना**–किसीके मुकाबलेमें कुछ भी न होना ।

पास–अ० समीप, नज़दीक, दूरका उलटा; अधिकारमें; पल्ले; * (किसीके) प्रति, निकट जाकर, से । * पु० ओर, तरफ; पासा; फाँस; भेड़के बाल कतरनेकी कैंचीका दस्ता । **–पास**–अ० एक-दूसरेके करीब, एक-दूसरेके निकट । **–बंद**–पु० दरी बुननेके करघेकी एक लकड़ी जो बुनाईके समय नीचे-ऊपर जाया करती है । **–मान,–वान***–पु० पास रहनेवाला, सेवक–'जिनके धन दसमान पेखियतु पासवान'–भूषण । **–वर्ती***–वि०, पु० दे० 'पार्श्ववर्ती' । **–सार***–पु० दे० 'पासासार' । मु० **(किसीके)–जाना**–समागम करना । **–तक न फटकना**–दूर हो रहना । **–फटकना**–समीप जाना । **(किसीके)–बैठना**–साथ करना, सहवास करना । **–बैठनेवाला**–साथी, हेलीमेली; सहवासी ।

पास–पु० (फा०) खयाल, लिहाज; निगहबानी; रिआयत; तीन घंटेका काल, पहर । **–दारी**–स्त्री० तरफदारी, पक्षपात । **–बाँ, –बान**–वि० रखवाली करनेवाला, चौकीदार, दरबान । **–बानी**–स्त्री० रक्षण, निगहबानी ।

पास–पु० (अं०) कहीं जानेकी लिखित आज्ञा या अनुमति; वह टिकट या आज्ञापत्र जिसे दिखाकर रेल आदि द्वारा बेरोक-टोक भ्रमण कर सकें । वि० जिसने पार किया हो; जो किसी परीक्षामें सफल हो चुका हो, उत्तीर्ण, फेलका उलटा; जो किसी कक्षा या श्रेणीको पारकर आगे बढ़ा हो; स्वीकृत, मंजूर । **–पोर्ट**–पु० विदेश जानेके लिए सरकारसे लिया जानेवाला अनुमतिपत्र, राहदारीका परवाना । **–बुक**–स्त्री० बंकसे मिलनेवाली वह किताब जिसमें रुपया जमा करने आदिका हिसाब रहता है ।

पासना†–अ० क्रि० पेन्हाना ।

पासनी*–स्त्री० अन्नप्राशन, चटावन ।

पासा–पु० चौसरके खेलमें फेंका जानेवाला वह चौपहला लंबोतरा हड्डीका या लकड़ीका बना टुकड़ा जिसपर बिंदियाँ बनी होती हैं; पासोंसे खेला जानेवाला खेल, चौसर; गुल्ली; सुनारोंके कामका पीतल या काँसेका चौकोर लंबा ठप्पा जिसपर गोल गड्ढे बने होते हैं । **–सार**–पु० पासेकी गोटी; पासेका खेल । मु० **(किसीका)–पड़ना**–पासेका इस रूपमें गिरना जिससे किसीकी जीत हो; विरोधीको हरानेवाला दाँव पड़ना; भाग्य खुलना । **–पलटना**–चौसरमें जीत या हारका दाँव पड़ना; अच्छे या बुरे दिन आना, भाग्यका अनुकूल या प्रतिकूल होना । **–फेंकना**–भाग्यकी परीक्षा करना; किस्मतकी आजमाइश करना ।

पासि*–पु० फंदा, बंधन ।

पासिक*–पु० फंदा; जाल ।

पासिका*–स्त्री० फंदा, बंधन; जाल ।

पासी–पु० बहेलिया; एक जाति जिसका पेशा सूअर पालना या ताड़ी उतारना है । स्त्री० फाँस; वह जाली जिसमें घास, भूसा आदि बाँधते हैं; पिछाड़ी ।

पासुरी*–स्त्री० पसली ।

पास्तुरीकरण–पु० (पॉस्ट्यूराइज़ेशन) दूधको बैक्टीरियारहित करनेका प्रक्रम । इस क्रियामें दूधको ६५° सेंटीग्रेड तक पहले गर्म किया जाता है और तब शीघ्रतासे इसे ठण्डा कर लेते हैं ।

पाहँ*–अ० पास, समीप; प्रति, से ।

पाह–पु० एक प्रकारका पत्थर जिसपर लौंग, फिटकरी और अफीम घिसकर आँखपर लगानेका लेप तैयार किया जाता है ।

पाहत, पाहात–पु० (सं०) ब्रह्मदारु, शहतूतका पेड़ ।

पाहन*–पु० पत्थर ।

पाहरू*–पु० पहरू, पहरेदार ।

पाहा†–पु० मेंड़ ।

पाहिँ*–अ० पास, समीप; प्रति, से ।

पाहि–(क्रियापद) (सं०) रक्षा करो; बचाओ । **–पाहि**–रक्षा करो-रक्षा करो, बचाओ-बचाओ ।

पाहीँ*–अ० दे० 'पाहिँ' ।

पाही–स्त्री० बस्तीसे दूरका या दूसरे गाँवका स्थान । वि० जो बसा न हो । **–काश्त**–पु० दूसरे गाँवमें खेती करनेवाला असामी । **–खेती**–स्त्री० वह खेती जो दूरवर्ती स्थान या अन्य गाँवमें हो ।

पाहुँच*–स्त्री० दे० 'पहुँच' ।

पाहुन†–पु० दे० 'पाहुना' ।

पाहुना–पु० अतिथि, मेहमान; दामाद ।

पाहुनी–स्त्री० अतिथि; उपपत्नी; अतिथि-सत्कार, मेहमानदारी ।

पाहुर†–पु० उपहार, भेंट; बायन ।

पाहू–पु० पाहुना; दामाद । तुच्छ व्यक्ति ।

पिंग–वि० (सं०) ललाई लिये भूरा, दीपशिखाके रंगका । पु० ललाई लिये भूरा रंग, पिंग वर्ण; हरताल; चूहा; भैंसा । –**–कपिशा**–स्त्री० तेलचटा नामका कीड़ा । **–चक्षु(स्)**–वि० जिसकी आँखें पिंग वर्णकी हों । पु० केकड़ा; नाक । **–जट**–पु० शिव । **–मूल**–पु० गाजर । **–सार**–पु० हरताल । **–स्फटिक**–पु० गोमेद ।

पिंगल–वि० (सं०) पिंग वर्णका, ललाई लिये भूरे रंगका । पु० पिंग वर्ण, ललाई लिये भूरा रंग; एक प्राचीन मुनि जो छंदःशास्त्रके प्रथम आचार्य माने जाते हैं; उक्त मुनि द्वारा प्रणीत छंदःशास्त्र (हिं०); अग्नि; बंदर; एक तरहका छोटा उल्लू; नेवला; रुद्र; सूर्यका एक अनुचर; एक संवत्सर; कुबेरका एक रत्न; एक प्रकारका साँप; एक यक्ष; शिवका एक अनुचर; एक दानव; एक पर्वत; एक प्राचीन देश; एक प्रकारका स्थावर विष; पीतल; हरताल; एक राग; * एक पक्षी, पपीहा–'पिंगल ह्वै पिउ-पिउ करै, ताको काल न खाय'–साखी । **–लौह**–पु० पीतल ।

पिंगला–स्त्री० (सं०) शरीरके दक्षिण भागकी एक प्रसिद्ध नाड़ी; एक पक्षी; उल्लूकी एक जाति; पीतल; शीशमका पेड़; गोरोचन; लक्ष्मी; कुमुद नामक दिग्गजकी पत्नी; एक प्राचीन वेश्या जो अपनी धर्मनिष्ठाके लिए प्रसिद्ध है।

पिंगलाक्ष–पु० (सं०) शिव। वि० दे० 'पिंगाक्ष'।

पिंगलिका–स्त्री० (सं०) बगलेकी एक जाति; उल्लूकी एक जाति; एक प्रकारकी मक्खी।

पिंगलित–वि० (सं०) पिंगल वर्णका बनाया हुआ, पिंगलीकृत।

पिंगा–पु० वह मनुष्य जिसके पैर टेढ़े हों। स्त्री० (सं०) गोरोचन, वंशरोचना; हल्दी; दुर्गा; प्रत्यंचा।

पिंगाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें ललाई लिये भूरे रंगकी हों। पु० शिव; हनूमान्; केकड़ा; नाक, बिल्ली; बनमानुस।

पिंगाश–पु० (सं०) गाँवका मालिक या मुखिया; एक प्रकारकी मछली; खरा सोना।

पिंगाशी–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा।

पिंगिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) ललाई लिये भूरा रंग।

पिंगी–स्त्री० (सं०) शमीका पेड़; चुहिया।

पिंगेक्षण–पु० (सं०) शिव। वि० जिसके नेत्र पिंग वर्णके हों।

पिंगेश–पु० (सं०) अग्नि।

पिंछ–पु० (सं०) दे० 'पिच्छ'।

पिंज–वि० (सं०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। पु० बल; वध; एक प्रकारका कपूर; चंद्रमा; समूह।

पिंजट–पु० (सं०) आँखका मैल, कीचड़।

पिँजड़ा–पु० दे० 'पिँजरा'।

पिंजन–पु० (सं०) रुई धुननेकी क्रिया; धुनकी।

पिंजर–वि० (सं०) ललाई लिये पीले रंगका; पीला। पु० ललाई लिये पीला रंग; सोना; हरताल; नागकेसर; पिंजरा; ठठरी; कंकाल; एक प्रकारका घोड़ा; एक प्रकारका साँप।

पिंजरक–पु० (सं०) हरताल।

पिँजरा–पु० लोहे, बाँस आदिकी तीलियोंका बना हुआ एक प्रकारका झाबा जिसमें पालतू पक्षी या पशु रखे जाते हैं; बहुत सँकरी जगह; सँकरा घर या कमरा (ला०)। **–पोल**–पु० गोशाला।

पिंजरिक–पु० (सं०) एक वाद्य (संगीत)।

पिंजरित–वि० (सं०) पीले या लाल-पीले रंगमें रँगा हुआ।

पिंजरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) ललाई लिये भूरा या पीला रंग।

पिंजल–वि० (सं०) व्याकुल, बहुत घबराया हुआ; आतंकित। पु० हरताल; कुशका पत्ता।

पिंजली–स्त्री० (सं०) एकमें बँधे हुए दो नोकदार कुश जिन्हें यज्ञमें विशेष अवसरोंपर हाथमें धारण करते हैं।

पिंजा–स्त्री० (सं०) हिंसा; रुई; हल्दी; जादूगरनी।

पिंजान, पिंजाल–पु० (सं०) सोना।

पिंजिका–स्त्री० (सं०) धुनी हुई रुईकी पूनी।

पिँजियारा–पु० रुई ओटनेवाला।

पिंजुल, पिंजूल–पु० **पिंजूली**–स्त्री० (सं०) पत्तियोंका गुच्छ।

पिंजूष–पु० (सं०) कानका मैल, खूँट।

पिंजेट–पु० (सं०) आँखका मैल, कीचड़।

पिंजोत, पिंजोला–स्त्री० (सं०) पत्तोंकी सरसराहट।

पिंड–वि० (सं०) घना, ठोस। पु० गोलक; गोला; किसी द्रव्यका ठोस गोला (जैसे मृत्पिंड, अयःपिंड); ढेला; ग्रास; पके हुए चावल, पायस आदिका गोला जिसे श्राद्धमें पितरोंको अर्पित करते हैं; आहार; जीविका; दान, भिक्षा; मांस; वृत्ति; शरीर, देह; राशि; समूह; कोई वस्तु; मकान या घरका कोई खंड; मकानके आगे निकला हुआ छज्जा, बरसाती; हाथीका कुंभस्थल; राशि, धन (अंकग०); घनत्व (रेखाग०); लोबान; बल; शक्ति; लोहा; सेना; ताज़ा मक्खन; पिंडली; जपाकुसुम। **–कंद**–पु० पिंडालू। **–कर्कटी**–स्त्री० एक तरहका पेठा। **–खर्जूर**–पु०,**–खर्जूरिका,–खर्जूरी**–स्त्री० छोहाड़ेकी जातिका पेड़ या उसका फल। **–गोस**–पु० गंधरस; बोल। **–ज**–पु० पिंडके रूपमें पैदा होनेवाला जीव, जरायुज। **–तैल,–तैलक**–पु० लोबान। **–द**–पु० पिंडा पारनेवाला; आहार देनेवाला। **–दान**–पु० पितरोंके निमित्त पिंडा पारनेका काम, पिंड देनेका काम। **–निर्वपण**–पु० पितरोंको पिंडा देना। **–पात**–पु० भिक्षा देनेकी क्रिया, भिक्षादान। **–पातिक**–वि०, पु० भिक्षासे जीविका चलानेवाला। **–पाद,–पाद्य**–पु० हाथी। **–पुष्प**–पु० अशोकका पेड़ या फूल; अनार; जपाकुसुम, अड़हुल; तगरका फूल; कमल। **–पुष्पक**–पु० बथुआ। **–फला**–स्त्री० तितलौकी। **–बीजक**–पु० कनेर। **–भाक्(ज्)**–पु० पिंडा पानेका अधिकारी, पितर। **–भृति**–स्त्री० जीविका। **–मुस्ता**–स्त्री० नागरमोथा। **–मूल,–मूलक**–पु० गाजर। **–यज्ञ**–पु० पिंडदानरूप कर्म, पिंडदान। **–राशि**–स्त्री० (लंप सम) किस्तके रूपमें नहीं, वरन् एक ही बारमें पूरीकी पूरी दी जानेवाली रकम। **–रोग**–पु०,**–व्याधि**–स्त्री० पुराना रोग जिसने शरीरमें जड़ जमा ली हो। **–लेप**–पु० पिंडेका वह अंश जो पिंडदान करते समय हाथमें सटा रह जाता है (इसके अधिकारी वृद्ध प्रपितामह आदि तीन पितर होते हैं)। **–लोप**–पु० पिंडदाताका अभाव; पिंडदानका अभाव। **–वेणु**–पु० एक प्रकारका बाँस। **–शर्करा**–स्त्री० ज्वारसे बनी शर्करा। **–संबंध**–पु० जन्य या जनक होनेका संबंध; पिंडदाता और पिंडभोक्ता होनेका संबंध। **–स्थ**–वि० एकमें मिलाया हुआ, मिश्रित। **–स्वेद**–पु० गरम पुल्टिस। मु० **–छूटना**–छुटकारा मिलना। **–पड़ना**–पीछे पड़ना।

पिंडक–पु० (सं०) गोला; लोहे आदिका बड़ा गोल टुकड़ा (इन्गॉट), धातुपिंड; पिंडालू नामका कंद; लोबान; बोल नामक गंधद्रव्य; गिलट; कवल; गाजर।

पिंडन–पु० (सं०) पिंड बनाना; पिंडा बनाना; बाँध; टीला।

पिंडरक–पु० (सं०) पुल; बाँध।

पिँडरी*–स्त्री० दे० 'पिँडली'।

पिंडल–पु० (सं०) पुल।

पिँडली–स्त्री० टाँगका पीछेकी ओरका मांसल भाग।

पिँडवाही*–स्त्री० एक तरहका कपड़ा।

पिंडस–पु० (सं०) भिक्षा द्वारा जीविका चलानेवाला, भिक्षुक।

पिंडा–स्त्री० (सं०) फौलाद; एक प्रकारकी कस्तूरी; वंशपत्नी। पु० (हिं०) गोला; ठोस या गीले पदार्थका गोला; पके हुए चावल या पायसका वह हाथसे गढ़ा हुआ गोला जिसे पितरोंको श्राद्धमें अर्पित करते हैं; शरीर। **–पानी**–पु० श्राद्ध और तर्पण। मु० **–पानी देना**–श्राद्ध और तर्पण करना।

पिंडाकार–वि० (सं०) गोल।

पिंडात–पु० (सं०) लोबान।

पिंडान्वाहार्यक–पु० (सं०) पार्वण, श्राद्ध।

पिंडाभ–पु० (सं०) लोबान।

पिंडाभ्र–पु० (सं०) ओला।

पिंडायस–पु० (सं०) फौलाद।

पिंडार–पु० (सं०) क्षपणक; गोप, ग्वाला; भैंसोंका चरवाहा; विकंकत वृक्ष; एक जुगुप्सासूचक शब्द; एक प्रकारका शाक; एक नाग।

पिंडारा–पु० एक तरहका शाक।

पिंडारी–पु० दक्षिणमें रहनेवाली एक जाति।

पिंडालक्तक–पु० (सं०) महावर।

पिंडालु–पु० (सं०) एक प्रकारका कंद, एक प्रकारका आलू।

पिंडालू–पु० एक प्रकारका कंद; सुथनी; एक तरहका रतालू।

पिंडाश, पिंडाशक, पिंडाशन, पिंडाशी(शिन्)–पु० (सं०) भिक्षुक।

पिंडाह्वा–स्त्री० (सं०) नाड़ीहींग।

पिंडि, पिंडी–स्त्री० (सं०) गोलक; गोला; पहियेके बीचोबीच वह बेलनके आकारका पोला अवयव जिसमें धुरी पहनायी जाती है, चक्रनाभि, चक्रमध्य; पिंडली; अशोकका पेड़; कद्दू; छोहारा; घर, मकान; पीठ, पीढ़ा; वह पीठिका जिसपर देवमूर्तिकी स्थापना की जाती है। **–पुष्प**–पु० अशोकका पेड़। **–लेप**–पु० एक प्रकारका लेप या उबटन। **–शूर**–वि० घर बैठे-बैठे वीरताका दम भरनेवाला, गेहेशूर।

पिंडिका–स्त्री० (सं०) दे० 'पिंडि'; गोलाकार शोथ, गिल्टी।

पिंडित–वि० (सं०) जिसे पिंडका रूप दिया गया हो, पिंडाकार बनाया हुआ; जो लपेटकर पिंडाकार बनाया गया हो; गुणा किया

हुआ, गुणित; गिना हुआ, गणित; मिश्रित । पु० लोबान । –द्रुम–वि० वृक्षोंसे पूर्ण । –स्नेह–वि० जिसमें गाढ़ी वसा भरी हो (जैसे भेजा) ।

पिंडितार्थ–पु० (सं०) सारांश, मथितार्थ ।

पिंड़िया†–स्त्री० गाढ़ा किये हुए ऊखके रस या आम, आँवले आदिके गूदेका मुट्ठीसे दबाकर बनाया हुआ छोटा पिंड ।

पिंडिल–वि० (सं०) जिसकी पिंडलियाँ बड़ी हों; जो गणना करनेमें कुशल हो । पु० सेतु, पुल; बाँध; दैवज्ञ, गणक ।

पिंडी(डिन्)–वि० (सं०) पिंडेका भागी, पिंडा प्राप्त करनेवाला (पितर); शरीरधारी । पु० भिक्षुक; पिंडदान करनेवाला ।

पिंडीकरण–पु० (सं०) पिंडाकार बनाना, पिंडका रूप देना ।

पिंडीतक–पु० (सं०) मैनफल; तगर ।

पिंडीभवन–पु० (सं०) पिंडाकार होना या बनाया जाना ।

पिंडीर–पु० (सं०) अनारका पेड़; समुद्रफेन । वि० शुष्क, नीरस ।

पिँडुरी, पिँडुली*–स्त्री० दे० 'पिँडली' ।

पिंडूक–पु० पंडुक; उल्लू ।

पिंडोदकक्रिया–स्त्री० (सं०) पिंडदान और तर्पण ।

पिंडोद्धरण–पु० (सं०) साथ-साथ पिंडदान करना, मिलकर पिंडा पारना ।

पिंडोपजीवी(विन्)–वि० (सं०) दूसरेके दिये हुए टुकड़ोंसे जीवन-निर्वाह करनेवाला ।

पिंडोल–स्त्री० पीली मिट्टी ।

पिंडोलि, पिंडोलिका–स्त्री० (सं०) जूठन ।

पिअ*–पु० दे० 'प्रिय' । वि० प्यारा; सुंदर ।

पिअना†–स० क्रि० दे० 'पीना' ।

पिअर†–वि० पीला ।

पिअरवा†–पु० पति, स्वामी । वि० प्यारा ।

पिअराई*–स्त्री० पीलापन ।

पिअरी†–स्त्री० हल्दी या पीले रंगमें रँगी हुई धोती; पीलिया रोग । * वि० स्त्री० पीली ।

पिआज†–पु० दे० 'प्याज' ।

पिआना†–स० क्रि० दे० 'पिलाना' ।

पिआर†–पु० दे० 'प्यार' ।

पिआरा†–वि० दे० 'प्यारा' ।

पिआस†–स्त्री० दे० 'प्यास' ।

पिआसा†–वि० दे० 'प्यासा' ।

पिउ*–पु० प्रियतम, कांत ।

पिउनी†–स्त्री० रुईकी पूनी ।

पिक–पु० (सं०) कोकिल, कोयल । (स्त्री० 'पिकी' ।)–**प्रिया**–स्त्री० महाजंबू । –**बंधु**–पु० आमका पेड़ । –**बांधव**–पु० वसंत ऋतु । –**भक्षा**–स्त्री० भूमिजंबू । –**राग,**–**वल्लभ**–पु० दे० 'पिकबंधु' ।

पिकांग–पु० (सं०) चातक ।

पिकाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें कोयलकी आँखोंके समान हों । पु० रोचनी; तालमखाना ।

पिकानंद–पु० (सं०) वसंत ऋतु ।

पिकेक्षणा–स्त्री० (सं०) दे० 'कोकिलाक्ष' ।

पिक्क–पु० (सं०) हाथीका बच्चा; बीस बरसका हाथी; तेरह मोतियोंकी वह लड़ी जिसका वजन एक धरण हो ।

पिघरना†–अ० क्रि० दे० 'पिघलना' ।

पिघलना–अ० क्रि० किसी ठोस पदार्थका गरमी पाकर तरल होना, तापसे द्रवीभूत होना; दयासे आर्द्र होना, पसीजना ।

पिघलाना–स० क्रि० गरमी पहुँचाकर किसी ठोस पदार्थको तरल बनाना; दयासे आर्द्र करना ।

पिचंड, पिचिंड–पु० (सं०) उदर, पेट; किसी जानवरका कोई अंग ।

पिचंडक, पिचिंडक–वि० (सं०) औदरिक, पेटू ।

पिचंडिक, पिचंडिल, पिचिंडी(डिन्)–वि० (सं०) तुंदिल, तोंदवाला ।

पिचंडिका–स्त्री० (सं०) पिंडली ।

पिच†–स्त्री० दे० 'पीच' । (अं०) दे० 'धावनस्थली' ।

पिचक†–स्त्री० पिचकनेकी क्रिया, स्थिति या चिह्न; दे० 'पिचकारी' ।

पिचकना–अ० क्रि० फूले या उभरे हुए तलका भीतरकी ओर दबना, फुलाव या उभारसे रहित होना, बैठ जाना; सिकुड़ना ।

पिचकवाना–स० क्रि० पिचकानेमें प्रवृत्त करना ।

पिचका†–पु० बड़ी पिचकारी ।

पिचकाना–स० क्रि० फूले या उभरे हुए तलको नीचा करना ।

पिचकारी–स्त्री० एक प्रसिद्ध पोला यंत्र जिसके निचले सिरेपर एक या अनेक छोटे छेद होते हैं और जिसके द्वारा पानी या अन्य किसी तरल पदार्थको खींचकर बाहर फेंकते हैं; किसी छिद्रादिसे वेगके साथ निकलनेवाली तरल धार । मु०–**छूटना**–किसी तरल पदार्थका किसी स्थानसे पिचकारी द्वारा फेंके जानेवाले जलकी तरह बाहर निकलना । –**छोड़ना**–किसी द्रव पदार्थको पिचकारीमें भरे पानीकी तरह बाहर निकालना ।

पिचकी*–स्त्री० पिचकारी ।

पिचपिचा–वि० चिपचिपा; गुलगुल ।

पिचपिचाना–अ० क्रि० घाव आदिमेंसे पंछा निकलना, घाव आदिका आर्द्र होना ।

पिचपिचाहट–स्त्री० पिचपिचानेका भाव ।

पिचलना†–स० क्रि० 'कुचलना' ।

पिचव्य–पु० (सं०) कपासका पौधा ।

पिचास*–पु० दे० 'पिशाच'–'हरि बिच डारै अंतरा माया बड़ी पिचास'–साखी ।

पिचु–पु० (सं०) कपासकी रुई; दो तोलेका एक परिमाण, कर्ष; कोढ़का एक भेद; एक असुर; एक प्रकारका अनाज । –**तूल**–पु० कपासकी रुई । –**मंद,**–**मर्द**–पु० नीमका पेड़ ।

पिचुक–पु० (सं०) मैनफलका पेड़ ।

पिचुकिया†–स्त्री० छोटी पिचकारी; एक प्रकारकी गुझिया जिसमें केवल गुड़ और सोंठ भरी जाती है ।

पिचुक्का, पिचूका†–पु० पिचकारी, गोलगप्पा ।

पिचुल–पु० (सं०) कपासकी रुई; झाऊका पेड़; जलकौआ ।

पिचोतरसौ–वि० सौसे पाँच अधिक । पु० सौ और पाँचकी संख्या, १०५ ।

पिच्चट–वि० (सं०) दबाकर चिपटा किया हुआ; निचोड़ा हुआ । पु० सीसा; राँगा; आँख आनेका रोग ।

पिच्चा–स्त्री० (सं०) सोलह मोतियोंकी लड़ी जिसका वजन एक धरण हो (मोतियोंका एक परिमाण) । वि० पिचका हुआ ।

पिच्चिट–पु० (सं०) एक विषैला कीड़ा ।

पिच्चित–वि० (सं०) दे० 'पिच्चट' ।

पिच्छ–पु० (सं०) पूँछ; कलाप, मयूरपुच्छ; चूड़ा, कलगी; पंख; पूँछपरके पंख; बाणमें लगा हुआ पंख । –**पाद**–पु० पैरका एक रोग । –**बाण**–पु० बाजपक्षी । –**लतिका**–स्त्री० पूँछपरके पर ।

पिच्छक–पु० (सं०) पूँछ; पूँछपरके पर (समासांतमें) ।

पिच्छल–वि० (सं०) फिसलानेवाला, चिकना; † पिछला; पीछे रह जानेवाला । पु० वासुकिके वंशका एक नाग; शीशम; अकासबेल; मोचरस ।

पिच्छा–स्त्री० (सं०) मोचरस; कवच; कोष, आवरण, खोल; सुपारी; केला; माँड़; राशि; पंक्ति; घोड़ेके पैरका एक रोग; कोकिला; फणिलाला; शीशमका पेड़; निर्मलीका पेड़; अकासबेल; पिंडली ।

पिच्छास्राव–पु० (सं०) चिकनी लार ।

पिच्छिका–स्त्री० (सं०) मोरपंखका गुच्छा ।

पिच्छितिका–स्त्री० (सं०) शीशमका पेड़ ।

पिच्छिल–वि० (सं०) फिसलनवाला, चिकना; पूँछवाला, दुमदार; चूड़ायुक्त, कलगीवाला । पु० माँड़; दाल, कढ़ी आदि स्निग्ध व्यंजन; लसोड़ेका पेड़ । –**च्छदा,**–**दला**–स्त्री० उपोदकी, पोय; बेर । –**त्वक्(च्)**–पु० नारंगीका पेड़ या उसका छिलका; धन्वन वृक्ष । –**सार**–पु० मोचरस ।

पिच्छिलक–पु० (सं०) धन्वन वृक्ष; मोचरस ।

पिच्छिला–स्त्री० (सं०) शीशमका पेड़; सेमल; एक प्राचीन नदी;

अलसी; तालमखाना; शूलीतृण; पोय; वृश्चिकाली; अरवी। वि० स्त्री० दे० 'पिच्छिल'।

पिछ–'पीछा'का समासमें प्रयुक्त लघुरूप। **–लगा**–पु० पीछे-पीछे चलनेवाला; अनुगमन करनेवाला, अनुयायी; आश्रयमें रहनेवाला; सेवक, दास। **–लगी**–स्त्री० पिछलगा होनेका भाव; अनुगमन; अनुगामिनी; सेविका। **–लगू,–लग्गू**†–पु० दे० 'पिछलगा'। **–लत्ती**–स्त्री० घोड़े, गधे आदिका पीछेकी ओर लात मारना। **–वाई**–स्त्री० पीछेकी ओर लगाया जानेवाला परदा। **–वाड़ा,–वारा**–पु० मकानका पिछला भाग, घरका पीछेकी ओरका भाग; मकान या घरके पीछेकी जमीन।

पिछड़ना†–अ० क्रि० पीछे रह जाना, बराबरीमें या आगे न रहना।

पिछलना†–अ० क्रि० पीछे हटना या मुड़ना (क्व०)।

पिछलपाई†–स्त्री० चुड़ैल (जिसके पैरका पंजा पीछेकी ओर माना जाता है); जादूगरनी।

पिछला–वि० पीछेकी ओर पड़नेवाला, जो पीछेकी ओर हो, 'अगला'-का उलटा; जो क्रममें किसीके पीछे पड़े या हो; जिसके आगे और कोई हो; जो अंतमें हो या पड़े; बादका, परवर्ती; बीता हुआ, व्यतीत; पुराना; जो किसी वस्तुके अंतिम भागसे संबद्ध हो; अंतिम भागका; ठीक पीछेका। पु० पिछले दिनका पाठ; पिछला पाठ; वह खाना जिसे रोजा रखनेवाले मुसलमान बहुत तड़के खाते हैं।

पिछाड़ी–स्त्री० पृष्ठभाग, पीछेका भाग; घोड़ेके पिछले पैरोंको खूँटेसे बाँधनेकी रस्सी।

पिछान†–स्त्री० दे० 'पहचान'।

पिछानना*–स० क्रि० 'पहचानना'।

पिछारी†–स्त्री० दे० 'पिछाड़ी'।

पिछेलना–स० क्रि० (धक्का देकर) पीछे कर देना।

पिछेला†–पु० पीछेकी ओर लटकनेवाला धोती, दुपट्टे आदिका छोर; पीछा; पृष्ठभाग।

पिछौंड़†–वि० जिसने अपना मुँह पीछेकी ओर फेर लिया हो।

पिछौंड़ा†–अ० पीछेकी ओर।

पिछौंता†–अ० पीछेकी ओर।

पिछौंही†–स्त्री० दे० 'पिछौरी'।

पिछौंहैं*–अ० पीछेकी ओर; पीछेकी ओरसे।

पिछौरा*–पु० चादर; दुपट्टा, उत्तरीय।

पिछौरी*–स्त्री० स्त्रियोंकी ओढ़नी; ऊपरसे ओढ़ा जानेवाला कोई वस्त्र, ओढ़नी।

पिटंकाकी, पिटंकोकी–स्त्री० (सं०) इंद्रवारुणी।

पिटंत–स्त्री० पीटनेकी क्रिया, मार, पिटाई।

पिट–पु० (सं०) पिटारा; संदूक; मकान; छत; झोपड़ी। स्त्री० (हिं०) एक शब्द जो कड़ी और छोटी वस्तुके हलके आघातसे उत्पन्न होता है। **–पिट**–स्त्री० दो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'पिट' शब्द।

पिटक–पु० (सं०) पिटारा; वस्त्र, आभूषण आदि रखनेकी पिटारी, झाँपी; बखारी; फुड़िया; एक प्रकारका आभूषण जो इंद्रकी ध्वजापर है; विशेष प्रकारकी रचनाओंका संग्रह (सुत्तपिटक, विनयपिटक)।

पिटका–स्त्री० (सं०) फुड़िया; पिटारी।

पिटना–अ० क्रि० पीटा जाना; मार खाना; पछाड़ दिया जाना, हार, मात खाना–'इस चुनावमें कैथलिक लीग बुरी तरह पिटी'। बजाया जाना; बजना। †पु० पीटनेका औजार, थापी।

पिटपिटाना–अ० क्रि० लाचार होकर रह जाना।

पिटरिया†–स्त्री० दे० 'पिटारी'।

पिटवाना–स० क्रि० किसीके पीटे जानेका कारण होना; बजवाना; किसीको पीटनेमें प्रवृत्त करना।

पिटाई–स्त्री० पीटनेकी क्रिया; मारनेकी क्रिया; पीटनेकी उजरत।

पिटाक–पु० (सं०) पिटारा; बक्स; एक मुनि।

पिटापिट†–स्त्री० मारपीट।

पिटारा–पु० बाँस, बेंत आदिकी तीलियोंसे बना हुआ डिब्बेकी शक्लका पात्र; † गुब्बारा।

पिटारी–स्त्री० छोटा पिटारा; पानदान। **मु०–का खर्च**–स्त्रियोंका पानदानका खर्च, जेबखर्च; किसी स्त्रीकी व्यभिचारकी कमाई।

पिटिक्या–स्त्री० (सं०) पिटारोंका समूह।

पिट्टक–पु० (सं०) दाँतकी पपड़ी, दंतकिट्ट।

पिट्टस–स्त्री० शोक-विह्वल होकर छाती पीटना। **मु०–पड़ना,–मचना**–बहुतोंका या सारे कुटुंबका एक साथ छाती पीटना, कुहराम मचाना।

पिट्टू–वि० जिसपर प्रायः मार पड़े, जो प्रायः मारा-पीटा जाय।

पिट्ठी–स्त्री० दे० 'पीठी'।

पिट्ठू–पु० पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुगामी (निंदा); सहायक, समर्थक; खुशामदी; साथ-साथ खेलनेवाला, खेलका साथी; किसी खिलाड़ीका वह कल्पित साथी जिसके स्थानपर वह अपनी बारी समाप्त कर फिर खुद ही खेलता है।

पिठमिल्ला–पु० अँगरखेका पीठकी तरफका भाग।

पिठर–पु० (सं०) एक प्रकारका घर या कमरा; मोथा; एक अग्नि; मथानी; बटलोई; एक दानव। **–पाक**–पु० पाकका एक प्रकार (नैयायिकोंका यह सिद्धांत है कि घड़ेके आगमें पकते समय उसके परमाणु अलग-अलग नहीं होते, प्रत्युत छिद्रोंसे होकर गरमी परमाणुओंके रंगको बदल देती हैं, अतः घड़ेका पाक होता है, परमाणुओंका नहीं)।

पिठरक–पु० (सं०) कड़ाही; पात्र; एक नाग। **–कपाल**–पु० बरतनका टुकड़ा।

पिठरिका, पिठरी–स्त्री० (सं०) बटलोई; हाँड़ी।

पिठवन–स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जो दवाके काम आती है, पृश्निपर्णी।

पिठौनी†–स्त्री० दे० 'पिठवन'।

पिठौरी–स्त्री० पीठीसे तैयार की हुई कोई भोज्य वस्तु (पकौड़ी आदि)।

पिडक–पु०, **पिडका**–स्त्री० (सं०) फुड़िया, फुंसी।

पिडकाना–स० क्रि० खीझ उत्पन्न करनेवाला कामकर किसीको चिढ़ाना।

पिड़किया–स्त्री० गुझिया नामक पकवान।

पिड़की–स्त्री० फुड़िया; † एक पक्षी, पंडुक।

पिड़िया–स्त्री० चावलके गुँधे हुए आटेका लंबोतरा टुकड़ा जिसे जलमें उबालकर खाते हैं।

पिढ़ई†–स्त्री० छोटा पीढ़ा; पीढ़ेकी तरहका वह आधार जिसपर कोई छोटा यंत्र रखा जाय; बैलगाड़ीके ढाँचेमें पीछे और आगेकी ओर लगी हुई लकड़ीका ढाँचेके बाहर दोनों ओर निकला हुआ भाग।

पिढ़ी†–स्त्री० मचिया; दे० 'पीढ़ी'।

पिण्या–स्त्री० (सं०) मालकँगनी।

पिण्याक–पु० (सं०) खली; हींग; लोबान; केसर।

पितंबर†–पु० दे० 'पीतांबर'।

पितपापड़ा–पु० एक क्षुप जो दवाके काम आता है।

पितर–पु० मृत पूर्वज; प्रेतत्वसे छूटे हुए पूर्वज जिन्हें पिंडा-पानी दिया जाता है। **–पति**–पु० यमराज। **–सौनन**–† पु० दे० 'पितृ-विसर्जन'।

पितराइँध, पितराई†–स्त्री० वह कसाव जो पीतलके बरतनमें खटाई रख देनेसे या अधिक देरतक भोज्यवस्तु रख देनेसे उसमें उत्पन्न हो जाता है।

पितरिहा†–वि० पीतलका बना हुआ, पीतलका। पु० पीतलका घड़ा।

पिता(तृ)–पु० (सं०) किसीके संबंधमें वह व्यक्ति जिसके वीर्यसे उसकी उत्पत्ति हुई हो, जनक, बाप; (समासके लिए दे० 'पितृ')। **–पुत्र**–पु० पिता और पुत्र, बाप और बेटा।

पितामह–पु० (सं०) दादा; ब्रह्मा; पितर।

पितामही–स्त्री० (सं०) दादी।

पितिजिया–पु० इंगुदीकी तरहका एक पेड़।

पितिया–पु० चाचा। **–ससुर**–पु० ससुरका भाई, चचिया ससुर। **–सास**–स्त्री० ससुरके भाईकी स्त्री, चचिया सास।

पितियानी†–स्त्री० चाची।

पितु*–पु० पिता। **–मातु***–पु० पिता और माता।

पितृ–पु० (सं०) दे० 'पिता'; मरे हुए पुरखे; प्रेतत्वसे मुक्त पूर्वज । **–ऋण**–पु० एक प्रकारका शास्त्रोक्त ऋण जिससे मनुष्य पुत्र उत्पन्न करनेपर मुक्त होता है । **–कर्म(न्),–कार्य,–कृत्य**–पु० श्राद्ध, तर्पण आदि जो पितरोंके निमित्त किये जाते हैं । **–कल्प**–पु० श्राद्धादि कृत्य । वि० जो पिताके समान हो, पितृतुल्य । **–कानन**–पु० श्मशान । **–कुल**–पु० पिताके वंशके लोग । **–कुल्या**–स्त्री० मलय पर्वतसे निकलनेवाली एक नदी । **–क्रिया**–स्त्री० दे० 'पितृकर्म' । **–गण**–पु० पितर; मरीचि आदि ऋषियोंके पुत्र, अग्निष्वात्त आदि । **–गणा**–स्त्री० दुर्गा । **–गाथा**–स्त्री० पितरों द्वारा पढ़ी गयी विशेष प्रकारकी गाथा (पुराणभेदसे ये गाथाएँ भी भिन्न-भिन्न हैं) । **–गामी(मिन्)**–वि० पिता संबंधी । **–गृह**–पु० मायका, नैहर; श्मशान । **–ग्रह**–पु० स्कंद आदि नौ बालग्रहोंमेंसे एक (सुश्रुत) । **–घात**–पु० पिताकी हत्या करना । **–घातिक,–घाती(तिन्)**–वि०, पु० पिताका वध करनेवाला । **–तर्पण**–पु० पितरोंके निमित्त किया जानेवाला तर्पण; अँगूठे और तर्जनीके वीचका स्थान जिसके द्वारा तर्पण समर्पित करनेका विधान है; तिल; श्राद्धके समय दान की जानेवाली वस्तुएँ । **–तिथि**–स्त्री० अमावस्या । **–तीर्थ**–पु० गया आदि तीर्थ; अँगूठे और तर्जनीके वीचका भाग जिसके द्वारा तर्पणका जल या पिंड समर्पित करना विहित है । **–दत्त**–वि० पिताका दिया हुआ । **–दान**–पु० पितरोंके निमित्त किया जानेवाला दान, निवाप । **–दाय,–द्रव्य**–पु० पितासे प्राप्त संपत्ति, मौरूसी जायदाद । **–दिन**–पु० अमावस्या । **–देव**–पु० अग्निष्वात्त आदि पितर; पितारूपी देवता । वि० जो पिताको देवतुल्य माने । **–दैवत**–वि० जिसके अधिष्ठाता पितर हों; जिसका संबंध पितरोंकी पूजासे हो । पु० मघा नक्षत्र । **–दैवत्य**–वि० पितरोंकी पूजासे संबंध रखनेवाला । पु० अष्टका (विशेष मासोंकी अष्टमी)के दिन किया जानेवाला पितृकृत्य । **–नाथ,–पति**–पु० यमराज; अर्यमा नामक पितर । **–पक्ष**–पु० आश्विनका कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकृत्य करना प्रशस्त माना गया है; पिताका कुल, पितृकुल; पितृकुलका मनुष्य; पिता, पितामह और प्रपितामह । **–पद**–पु० पितरोंका लोक; पिता या पितरका दर्जा । **–पिता(तृ)**–पु० पितामह । **–प्रसू**–स्त्री० पितामही, दादी; सायंकाल, संध्या । **–प्राप्त**–वि० पितासे मिला हुआ । **–प्रिय**–पु० भँगरैया । **–बंधु**–पु० वह जिससे पिताके संवंधसे रिश्ता हो (जैसे पिताके मामाका पुत्र) । **–भक्त**–वि० पिताका भक्त, पिताकी यथोचित सेवा करनेवाला । **–भक्ति**–स्त्री० पिताके प्रति आदर और यथोचित सेवाका भाव । **–भोजन**–पु० पितरोंका भोजन; पितरोंका भोज्य पदार्थ, उड़द । **–भ्राता(तृ)**–पु० चाचा । **–मंदिर**–पु० दे० 'पितृगृह' । **–मात्रर्थ**–वि० पिता-माताके लिए भीख माँगनेवाला । **–मेध**–पु० एक प्रकारका पितृकर्म । **–यज्ञ**–पु० पितृतर्पण । **–याण**–पु० वह मार्ग जिससे पितर चंद्रलोकको जाते हैं । **–राज,–राट्(ज्)**–पु० यम । **–रूप**–पु० शिव । **–लोक**–पु० वह लोक जिसमें पितर निवास करते हैं, पितरोंका लोक । **–वंश**–पु० पिताका कुल । **–वन,–सद्म(न्)**–पु० श्मशान । **–वसति**–स्त्री० श्मशान । **–वित्त**–पु० बाप-दादोंकी संपत्ति, मौरूसी जायदाद । **–वेश्म(न्)**–पु० पिताका घर, मायका । **–विसर्जन**–पु० आश्विन-कृष्णा अमावास्याके दिन पितरोंकी विदाईका कृत्य । **–व्रत**–पु० पितृकर्म; पितरोंकी पूजा करनेवाला । **–श्राद्ध**–पु० पितरोंके निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध । **–षदन**–पु० कुश । **–ष्वसा,–स्वसा**–स्त्री० बूआ । **–ष्वसीय,–स्वसीय**–पु० फुफेरा भाई । **–सत्तात्मक**–वि० (पैट्रिआर्कल) (वह प्रथा या पद्धति) जिसमें पिता या गृह-स्वामीकी ही सत्ता सर्वोपरि मानी जाती रही हो । **–सू**–स्त्री० पितामही, दादी; सायंकाल, संध्या । **–स्थान,–स्थानीय**–पु० वह जो पिताके स्थानपर हो, अभिभावक, संरक्षक । **–हत्या**–स्त्री० पिताकी हत्या । **–हा(हन्)**–वि०, पु० पिताकी हत्या करनेवाला । **–हू**–पु० दाहना कान ।

पितृक–वि० (सं०) पैतृक, पितासे प्राप्त ।

पितृतंत्र–पु० (पैट्रिआर्की) समाजकी वह प्राचीन व्यवस्था जिसमें घरका कोई बड़ा-बूढ़ा आदमी या गृहस्वामी ही समस्त परिवारका प्रबंधक होता था और उसीके अनुशासनमें वंश या परिवारकी विभिन्न शाखाओं, उपशाखाओंके सदस्योंको रहना पड़ता था ।

पितृता–स्त्री०, **पितृत्व**–पु० (सं०) पिता होनेका भाव ।

पितृवनेचर–पु० (सं०) भूत-प्रेत; शिव ।

पितृव्य–पु० (सं०) चाचा ।

पितौंजिया–पु० दे० 'पितिजिया' ।

पित्त–पु० (सं०) शरीरके तीन प्रसिद्ध दोषोंमेंसे एक (यह नीलापन लिये पीले रंगका और कड़वा होता है) । **–कर**–वि० जो पित्त उत्पन्न करे, वढ़ाये । **–कास**–पु० पित्तके प्रकोपसे होनेवाली खाँसी । **–कोष**–पु० पित्तकी थैली, पित्ताशय । **–क्षोभ**–पु० पित्तका प्रकोप । **–गदी(दिन्)**–वि० जिसे पित्तज रोग हुआ हो । **–गुल्म**–पु० पित्तकी अधिकतासे उदरका फूलना । **–घ्न**–वि० पित्तका नाश या शमन करनेवाला । **–घ्नी**–स्त्री० गुडुच । **–ज**–वि० जिसका कारण पित्त हो; पित्तके प्रकोपसे होनेवाला । **–ज्वर,–दाह**–पु० पित्तके प्रकोपसे होनेवाला ज्वर । **–द्रावी(विन्)**–वि० पित्तको पिघलानेवाला । पु० मीठा नीबू । **–नाडी**–स्त्री० एक तरहका नाड़ी-व्रण । **–नाशक**–वि० पित्तका नाश या शमन करनेवाला । **–निवर्हण**–वि० पित्तनाशक । **–पथरी**–स्त्री० (हिं०) पित्ताशयमें वननेवाली पथरी । **–पांडु**–पु० पित्त-विकारसे उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें नेत्र आदि पीले हो जाते हैं, पीलिया । **–पापड़ा**–पु० (हिं०) पितपापड़ा । **–प्रकृति**–वि० जिसके शरीरमें पित्तकी प्रधानता हो । **–प्रकोप**–पु० पित्तका वढ़ जाना या कुपित हो जाना । **–भेषज**–पु० मसूरकी दाल । **–रक्त**–पु० रक्तपित्त नामक रोग । **–वायु**–स्त्री० पित्तके प्रकोपसे पेटमें वायुका पैदा होना । **–विदग्ध**–वि० पित्तके प्रकोपसे आक्रांत । **–विसर्प**–पु० विसर्प रोगका एक भेद । **–व्याधि**–स्त्री० पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न रोग । **–शमन,–हर**–वि० पित्तके प्रकोपको दूर करनेवाला । **–शूल**–पु० पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न होनेवाला शूल रोग । **–शोथ**–पु० पित्तज शोथ । **–संशयन**–पु० चंदन, लाल-चंदन, नेत्रवला आदि पित्तनाशक ओपधियोंका समूह । **–स्थान**–पु० दे० 'पित्तकोष' । **–स्यंदन**–पु० एक पित्तजन्य नेत्र-रोग । **–हा(हन्)**–वि० पित्तको मारनेवाला । पु० पितपापड़ा । मु० **–उवलना या खौलना**–वहुत अधिक क्रोध आना । **(किसीका)–गरम होना**–क्रोधी स्वभावका होना ।

पित्तल–वि० (सं०) जिसमें पित्तकी अधिकता हो, पित्तबहुल । पु० पीतल; भोजपत्र; हरताल ।

पित्तला–स्त्री० (सं०) जलपीपल ।

पित्तांड–पु० (सं०) घोड़ोंके अंडकोशका एक रोग ।

पित्ता–पु० पित्ताशय; पशुओंके शरीरसे प्राप्त 'पित्त'; साहस; रुतवा । **–मार**–वि० नीरस और दुष्कर (काम) । मु० **–उवलना या खौलना**–वहुत क्रोध आना । **–पानी करना**–घोर परिश्रम करना । **–मरना**–क्रोधशीलता दूर होना; क्रोध जाता रहना । **–मारना**–क्रोधका शमन करना, क्रोधके वेगको रोकना; जीको ऊवने न देना ।

पित्तातिसार–पु० (सं०) पित्तके प्रकोपसे होनेवाला अतिसार ।

पित्ताभिष्यंद–पु० (सं०) एक पित्तज नेत्ररोग जिसमें आँखोंसे पानी वहता है ।

पित्तारि–पु० (सं०) पितपापड़ा ।

पित्ताशय–पु० (सं०) पित्तकी थैली, पित्तकोष ।

पित्तास्र–पु० (सं०) दे० 'पित्त-रक्त' ।

पित्ती–स्त्री० पित्तकी अधिकता या रक्तके अधिक उष्ण होनेसे उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें शरीरपर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं; एक लता । † पु० चाचा, काका ।

पित्तोदर–पु० (सं०) दे० 'पित्त-गुल्म' ।

पित्तोपहत–वि० (सं०) पित्तके प्रकोपसे आक्रांत ।

पित्र्य–वि० (सं०) पिता-संवंधी; पिताका; पितरोंका । पु० ज्येष्ठ भ्राता; माघका महीना; मघा नक्षत्र; अँगूठे और तर्जनीके वीचका भाग; मधु; उड़द; पिताकी प्रकृति ।

पित्र्या–स्त्री० (सं०) अमावस्या; पूर्णिमा ।

पित्सत्–पु० (सं०) पक्षी ।

पित्सल–पु० (सं०) पथ, मार्ग ।

पिथौरा–पु० दिल्लीके अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज ।

पिदर–पु० (फा०) पिता । **–कुशी**–स्त्री० पितृहत्या ।

पिदारा*–पु० पिद्दीका नर ।

पिद्दा–पु० पिद्दीका नर; गुलेलकी डोरीमें निवाड़ आदिकी वह गद्दी जिसपर रखकर गोली चलायी जाती है ।

पिद्दी–स्त्री० बयाकी जातिकी एक छोटी चिड़िया; अति तुच्छ प्राणी ।

पिधान–पु० (सं०) ढकने या आच्छादित करनेकी क्रिया; अपवारण; आवरण; ढकना, ढक्कन; म्यान; * किवाड़ ।

पिधानक–पु० (सं०) कोष, म्यान; ढक्कन ।

पिधायक, पिधायी(यिन्)–वि० (सं०) ढकने, छिपानेवाला ।

पिन–स्त्री० (अं०) कागज आदि नत्थी करनेके कामकी लोहे, पीतल आदिकी बारीक कील, आलपीन ।

पिनक–स्त्री० अफीमके नशेमें आगेकी ओर झुक पड़नेकी क्रिया; ऊँघ ।

पिनकना–अ० क्रि० अफीमके नशेमें आगेकी ओर झुक-झुक पड़ना, पीनक लेना; नींदके मारे आगेकी ओर झुक-झुक जाना, ऊँघना ।

पिनकी–वि०, पु० पीनक लेनेवाला, अफीमची ।

पिनद्ध–वि० (सं०) धारण किया हुआ (वस्त्र आदि); बँधा हुआ; आच्छादित, आवृत ।

पिन-पिन†–स्त्री० दो या अधिक बार उत्पन्न किया हुआ 'पिन' शब्द; बच्चोंके नकियाकर और अस्पष्ट स्वरमें रुक-रुककर रोनेका शब्द; नकियाकर और रुक-रुककर रोना ।

पिनपिनहाँ†–वि० 'पिन-पिन' करनेवाला, जो सदा पिनपिनाया करे ।

पिनपिनाना†–अ० क्रि० 'पिन-पिन' शब्द करना; बच्चेका नकियाकर और अस्पष्ट स्वरमें रुक-रुककर रोना ।

पिनपिनाहट†–स्त्री० पिनपिनानेकी क्रिया या भाव ।

पिनसन, पिनसिन–स्त्री० दे० 'पेंशन'; दे० 'पेंसिल' ।

पिनाक–पु० (सं०) शिवका धनुष, अजगव; धनुष; त्रिशूल; डंडा या छड़ी; धूलकी वृष्टि । **–गोप्ता(प्तृ),–धृक्,–धृत्,–पाणि,–हस्त**–पु० शिव । **मु० –होना**–(किसी कार्यका) दुष्कर होना, कष्टसाध्य होना ।

पिनाकी(किन्)–पु० (सं०) शिव ।

पिन्नस†–स्त्री० नाकका एक रोग, पीनस ।

पिन्ना†–वि० जो बराबर रोया करे, रोनेवाला । पु० धुनकी ।

पिन्नी–स्त्री० भीगे हुए कच्चे चावलको पीसकर (या आटेमें) घी, शक्कर, मेवे डालकर बनाया हुआ लड्डू; सूतको लपेटकर बनाया हुआ छोटा पिंड ।

पिन्यास–पु० (सं०) हींग ।

पिन्व–वि० (सं०) बढ़ाने या बहानेवाला ।

पिन्हाना†–स० क्रि० दे० 'पहनाना' । अ० क्रि० दे० 'पेन्हाना' ।

पिपतिषत्, पिपतिषु–पु० (सं०) पक्षी ।

पिपरमिंट–पु० (अं०) पुदीनेकी जातिका एक विदेशी पौधा जो प्रायः दवाके काम आता है; इसका सत ।

पिपरामूल–पु० पीपलकी जड़; पिप्पलीमूल ।

पिपास*–स्त्री० पिपासा, प्यास ।

पिपासा–स्त्री० (सं०) पीनेकी इच्छा; प्यास, तृषा; लालच (हिं०) ।

पिपासित–वि० (सं०) जिसे प्यास लगी हो, प्यासा ।

पिपासी(सिन्)–वि० (सं०) प्यासा ।

पिपासु–वि० (सं०) पीनेकी इच्छा रखनेवाला, प्यासा; लालची (हिं०) ।

पिपियाना†–अ० क्रि० पीव पैदा होना । स० क्रि० पीव पैदा करना ।

पिपिली–स्त्री० (सं०) दे० 'पिपीली' ।

पिपीतक–पु० (सं०) पिपीतकी द्वादशीका प्रवर्तक एक ब्राह्मण ।

पिपीतकी–स्त्री० (सं०) वैशाख-शुक्ला द्वादशी ।

पिपील, पिपीलक–पु० (सं०) चींटा ।

पिपीलिक–पु० (सं०) चींटा; एक प्रकारका सोना (यह चींटोंका एकत्र किया हुआ माना जाता है) । **–पुट**–पु० वल्मीक । **–मध्य,–मध्यम**–वि० जो चींटीके मध्य भागकी तरह बीचमें पतला हो ।

पिपीलिका–स्त्री० (सं०) चींटी । **–परिसर्पण**–पु० चींटियोंका इधर-उधर घूमना । **–मध्य**–पु० एक प्रकारका चांद्रायण व्रत ।

पिपीलिकोद्वाप–पु० (सं०) वल्मीक ।

पिपीली–स्त्री० (सं०) चींटी ।

पिप्पटा–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी मिठाई ।

पिप्पल–पु० (सं०) पीपलका पेड़; बंधन-रहित रखा हुआ पक्षी; पक्षी; आस्तीन; चूचुक, चूची; पीपलका गोदा; जल; विषय-भोग ।

पिप्पलक–पु० (सं०) आलपीन, 'पिन'; चूचुक; सोनेका तागा ।

पिप्पला–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नदी ।

पिप्पलाद–पु० (सं०) एक ऋषि । वि० गोदा खाकर रहनेवाला ।

पिप्पलाशन–वि० (सं०) गोदा खाकर रहनेवाला ।

पिप्पलि–स्त्री० (सं०) पीपल नामकी ओषधि ।

पिप्पली–स्त्री० (सं०) दे० 'पिप्पलि' । **–मूल**–पु० पीपरकी जड़, पिपरामूल ।

पिप्पलीका–स्त्री० (सं०) पीपलका छोटा पेड़ ।

पिप्पिका–स्त्री० (सं०) दाँतपर जमनेवाली पपड़ी ।

पिप्पीक–पु० (सं०) एक पक्षी ।

पिप्पीका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी ।

पिप्लु–पु० (सं०) मसा, तिल ।

पिय*–पु० प्रियतम, कांत, पति ।

पियर*–वि० पीला । **–ई**–स्त्री० दे० 'पियराई' ।

पियराई–स्त्री० पीलापन ।

पियरवा†–पु० प्रियतम, कांत ।

पियराना*–अ० क्रि० पीला होना, पीला पड़ना ।

पियरी*–वि० स्त्री० पीली । स्त्री० पीली धोती; पीलापन; एक तरहका पीला रंग; † पीलिया नामक रोग ।

पियरोला†–पु० मैनासे कुछ छोटे आकारकी पीले रंगकी एक चिड़िया ।

पियल्ला–पु० * दुधमुँहाँ बच्चा; † पियरोला ।

पियवास, पियावाँसा–पु० कटसरैया ।

पिया*–पु० दे० 'पिय' ।

पियाज†–पु० दे० 'प्याज' ।

पियाजी†–वि० दे० 'प्याज़ी' ।

पियादा†–पु० दे० 'प्यादा' ।

पियाना†–स० क्रि० पिलाना ।

पियानो–पु० (अं०) मेजके आकारका एक प्रसिद्ध अंग्रेजी बाजा ।

पियामन–पु० राजजामुन नामका वृक्ष ।

पियार–पु० दे० 'पियाल'; † दे० 'प्यार'; पयाल । वि० प्यारा ।

पियारा*–वि० प्यारा ।

पियाल–पु० (सं०) चिरौंजीका पेड़ या उसका फल ।

पियाला†–पु० दे० 'प्याला' ।

पियावबड़ा–पु० एक तरहकी मिठाई ।

पियास*–स्त्री० प्यास ।

पियासा*–वि० दे० 'प्यासा' ।

पियासाल–पु० बहेड़ेकी जातिका एक जंगली पेड़ ।

पियासी*–स्त्री० एक मछली ।

पियूख, पियूष*–पु० दे० 'पीयूष' ।

पियौसार–स्त्री० पतिका घर, ससुराल ।

पिरकी†–स्त्री० फुड़िया, फुंसी ।

पिरता–पु० काठ या पत्थरका वह टुकड़ा जिसपर रखकर पूनी दबायी जाती है ।

पिरथी†–स्त्री० दे० 'पृथ्वी' । **–नाथ**†–पु० दे० 'पृथ्वीनाथ' ।

पिरम*–पु० प्रेम 'पिरम कहानी कहु मोहि आई'–चंदा० ।

पिराई*–स्त्री० पीलापन, जर्दी ।

पिराक–स्त्री० गुझिया जैसा एक पकवान ।

पिराना*–अ० क्रि० दर्द करना; दर्दका अनुभव करना; किसीके दुःखसे दुःखी होना ।

पिरारा*–पु० डाकू, लुटेरा ।

पिरिथ*–स्त्री० पृथ्वी (चंदा०) ।

पिरिथिमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

पिरीतम*–पु० प्रियतम ।

पिरीता*–वि० प्यारा ।

पिरीति*–स्त्री० प्रीति ।

पिरोजन†–पु० कनछेदन ।

पिरोज़ा–पु० हरापन लिये नीले रंगका एक बहुमूल्य पत्थर, फ़ीरोज़ा ।

पिरोना–स० क्रि० सुईके छेदमें धागा डालना; किसी बारीक छेदमें कोई चीज डालना; डोरेमें मनका आदि पहनाना ।

पिरोला–पु० दे० 'पियरोला' ।

पिरोहना*–स० क्रि० 'पिरोना' ।

पिलई, पिलही†–स्त्री० बरबट ।

पिलक–पु० एक पीले रंगका, मैनासे कुछ छोटा पक्षी, पियरोला; अबलक कबूतर ।

पिलकना–स० क्रि० गिराना; ढकेलना । अ० क्रि० चिढ़ना; चिढ़कर भागना ।

पिलकिया*–स्त्री० एक पीली-सी छोटी चिड़िया ।

पिलचना–अ० क्रि० पिल पड़ना; भिड़ जाना, लिपटना ।

पिलना–अ० क्रि० किसी ओर वेगसे प्रवृत्त होना; घुस पड़ना; झुक पड़ना; तत्पर होना; (किसी काममें) जी-जानसे लग जाना;* किसी ओर वेगसे झपटना; पेरा जाना ।

पिलपिल†–वि० दे० 'पिलपिला' ।

पिलपिला–वि० बहुत नरम, पिचपिचा । **–हट**–स्त्री० पिलपिला होनेका भाव ।

पिलपिलाना–स० क्रि० चारों ओरसे इस प्रकार दबाना कि पिलपिला हो जाय या भीतरका रस या गूदा बाहर निकल पड़े ।

पिलवाना–स० क्रि० किसीको पिलानेमें प्रवृत्त करना, पिलानेका काम कराना; पेरनेका काम कराना ।

पिलाना–स० क्रि० पीनेमें प्रवृत्त करना; पान कराना; पीनेको देना; किसी तरल पदार्थको किसी छेदमें डालना; भीतर भरना । (**कोई बात पिलाना**–दिलमें बैठाना ।)

पिलुंडा†–पु० दे० 'पुलिंदा'. ।

पिलु–पु० (सं०) पीलूका पेड़ । **–पर्णी**–स्त्री० मूर्वा लता ।

पिलुक–पु० (सं०) दे० 'पिलु' ।

पिलुनी–स्त्री० (सं०) मूर्वी लता ।

पिल्ल–वि० (सं०) जिसके नेत्र क्लेदयुक्त हों । पु० ऐसा नेत्र ।

पिल्लका–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

पिल्ला–पु० कुत्तेका नर बच्चा; † कुत्ता । (स्त्री० 'पिल्ली')

पिल्लू–पु० एक प्रकारका सफेद लंबा कीड़ा, ढोला ।

पिव*–पु० प्रियतम, कांत ।

पिवाना†–स० क्रि० दे० 'पिलाना' ।

पिशंग–वि० (सं०) ललाई लिये भूरे रंगका । पु० ललाई लिये भूरा रंग ।

पिशंगक–पु० (सं०) विष्णु या विष्णुका अनुचर ।

पिशंगिला–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मिश्र धातु, काँसा ।

पिशंगी(गिन्)–वि० (सं०) ललाई लिये भूरे रंगका ।

पिश–वि० (सं०) पापसे मुक्त; अनेक रूपोंवाला, बहुरूप ।

पिशाच–पु० (सं०) दस प्रकारकी देवयोनियोंमेंसे एक, एक निम्न देवयोनि; प्रेत; दुष्ट मनुष्य (ला०) । **–गृहीतक**–पु० वह जो पिशाचसे आविष्ट हो । **–घ्न**–वि० पिशाचोंका नाश करनेवाला । पु० पीली सरसों (इसका उपयोग प्रायः ओझा करते हैं) । **–चर्या**–स्त्री० श्मशान-सेवन । **–द्रु,–वृक्ष**–पु० सिहोरका पेड़ । **–पति**–पु० शिव । **–बाधा**–स्त्री० पिशाच द्वारा आविष्ट होना । **–भाषा**–स्त्री० पैशाची प्राकृत जिसका प्रयोग संस्कृतके नाटकोंमें मिलता है । **–मोचन**–पु० एक तीर्थ (स्कंद पु०); काशीका एक तालाब जिसके किनारे गया करनेवाले हिंदू यात्री पिंडा पारते हैं । **–वदन**–वि० जिसका मुँह पिशाचका-सा हो । **–संचार**–पु० पिशाचबाधा ।

पिशाचक–पु० (सं०) पिशाच ।

पिशाचकी(किन्)–पु० (सं०) कुबेर ।

पिशाचांगना–स्त्री० (सं०) पिशाची ।

पिशाचालय–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ फ़ास्फोरसके कारण अँधेरेमें प्रकाश हुआ करे ।

पिशाचिका–स्त्री० (सं०) स्त्री पिशाच; पिशाचकी स्त्री; एक प्रकारकी जटामासी; पैशाचिका आसक्ति (समासमें) ।

पिशाची–स्त्री० (सं०) दे० 'पिशाचिका' ।

पिशिक–पु० (सं०) एक प्राचीन देश ।

पिशित–पु० (सं०) कच्चा मांस; छोटा टुकड़ा, लघु अंश । **–भुक्(ज्)**–पु० राक्षस; नरभक्षक; भेड़िया ।

पिशिता, पिशिती–स्त्री० (सं०) जटामासी ।

पिशिताश, पिशिताशन, पिशिताशी(शिन्)–पु० (सं०) कच्चा मांस खानेवाला, राक्षस; नरभक्षक; भेड़िया ।

पिशी–स्त्री० (सं०) जटामासी ।

पिशुन–पु० (सं०) चुगली खानेवाला, चुगलखोर; केसर; कपास; नारद; कौआ; एक प्रेत जो गर्भिणियोंको बाधा पहुँचाता है; विश्वासघात करना । वि० नीच; क्रूर; सूचक, चुगुलखोर; छली; मूर्ख । **–वचन,–वाक्य**–पु० चुगली ।

पिशुनता–स्त्री० (सं०) चुगलखोरी ।

पिशोन्माद–पु० (सं०) उन्मादका एक भेद ।

पिष्ट–वि० (सं०) पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ; निचोड़ा हुआ; गुँधा हुआ । पु० पिसा हुआ पदार्थ, विशेषतः अन्न; आटा; पीठी; सीसा । **–पचन**–पु० कड़ाही; तवा । **–पशु**–पु० गुँधे हुए आटेका बनाया हुआ बलिपशु । **–पाकभृत्,–पाचक**–पु० तवा; कड़ाही । **–पिंड**–पु० बाटी । **–पूर**–पु० दे० 'घृतपूर' । **–पेश,–पेषण**–पु० पिसे हुएको पीसना; निरर्थक कार्य करना; एक ही बातको बार-बार कहना; निरर्थक श्रम । **–०न्याय**–पु० एक न्याय जो किये हुएको व्यर्थ ही पुनः करनेपर प्रयुक्त किया जाता है । **–प्रमेह,–मेह**–पु० प्रमेहका एक भेद । **–वर्ति**–स्त्री० बेसन; धुआँस; जौके आटे, चावल और दालका बना हुआ पिंड । **–सौरभ**–पु० (चूर्ण) चंदन ।

पिष्टक–पु० (सं०) किसी पिसे हुए पदार्थ, आटे, पीठी आदिसे बनी चीज–रोटी, बाटी आदि; तिलका चूर्ण; आँखका एक रोग ।

पिष्टप–पु० (सं०) भुवन; लोक ।

पिष्टात, पिष्टातक–पु० (सं०) अबीर; बुक्का ।

पिष्टाद–वि० (सं०) आटा खानेवाला ।

पिष्टान्न–पु० (सं०) आटेसे बनी हुई चीज ।

पिष्टि–स्त्री० (सं०) आटा, चूर्ण ।

पिष्टिक–पु० (सं०) चावलकी पीठी ।

पिष्टोदक–पु० (सं०) वह जल जिसमें चावलका चूण घोला गया हो ।

पिष्यल–पु० (सं०) दे० 'पिप्पल' ।

पिसंग–वि०, पु० (सं०) दे० 'पिशंग' ।

पिसण*–वि०, पु० पिशुन ।

पिसनहारी–स्त्री० आटा पीसनेवाली, आटा पीसनेका पेशा करनेवाली स्त्री ।

पिसना–अ० क्रि० पीसा जाना, चूर्ण किया जाना; दबकर चिपटा हो जाना; बहुत अधिक कष्ट पाना; घोर परिश्रम करना; घोर परिश्रमसे थककर चूर होना ('जाना'के साथ) ।

पिसवाज–स्त्री० दे० 'पेशवाज़' ।

पिसवाना–स० क्रि० पीसनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे पीसनेका काम कराना ।

पिसाई–स्त्री० पीसनेकी क्रिया या भाव; आटा पीसनेका पेशा; पीसनेकी उजरत; घोर परिश्रम ।

पिसाच*–पु० दे० 'पिशाच' ।

पिसान†–पु० आटा ।

पिसाना–स० क्रि० पीसनेका काम कराना । † अ० क्रि० पिसना ।

पिसिया†–पु० एक प्रकारका छोटे दानेका लाल गेहूँ । स्त्री० आटा पीसनेका धंधा ।

पिसी, पिस्सी†–स्त्री० सफेद गेहूँ ।

पिसुन*–पु० पिशुन, चुगलखोर ।

पिसुराई–स्त्री० रुई लपेटकर पूनी बनानेके काम आनेवाला सरकंडेका टुकड़ा ।

पिसौनी–स्त्री० पीसनेका काम; आटा पीसनेका पेशा; घोर परिश्रम ।

पिस्तई–वि० पिस्तेके रंगका ।

पिस्ताँ–पु० (फा०) औरतके सीनेका उभार ।

पिस्ता–पु० एक प्रसिद्ध मेवा; इसका पेड़ ।

पिस्तौल–स्त्री० बंदूककी तरह गोली दागनेका एक छोटा हथियार ।

पिस्सू–पु० एक मच्छड़ जैसा उड़ने और काटनेवाला छोटा कीड़ा ।

पिहकना–अ० क्रि० कोयल, पपीहे आदि मीठे गलेवाले पक्षियोंका बोलना ।

पिहान†–पु० पिधान, ढकना, ढक्कन ।

पिहानी*–स्त्री० ढक्कन; छिपानेवाली बात ।

पिहित–वि० (सं०) ढका हुआ, आच्छादित, आवृत । पु० एक अर्थालंकार जहाँ किसीके मनका भाव जानकर किसी क्रिया द्वारा अपना भाव प्रदर्शित किये जानेका वर्णन हो ।

पींजन–पु० धुनकी (दे० 'बैना') ।

पींजना–स० क्रि० (रुई) धुनना । † धुनिया ।

पींजर*–पु० पिंजरा; अस्थिपंजर ।

पींजरा*–पु० दे० 'पिंजरा' ।

पींड़†–पु० किसी गीली वस्तुका गोला; एक गहना; * शरीर; पेड़का तना; पिंडखजूर ।

पींडी–स्त्री० दे० 'पिंडी'; † पौधा उखाड़ते समय जड़के चारों ओरकी मिट्टीका पिंड ।

पींडुरी*–स्त्री० दे० 'पिंडुली' ।

पी*–पु० प्रियतम, कांत । स्त्री० पपीहेकी बोली । **–कहाँ**–पु० पपीहेकी बोली । **–खग**–पु० पी-पी करनेवाला एक पक्षी, पपीहा ।

पीक–स्त्री० पानका थूक; वह रंग जो कपड़ेपर पहली बारकी रँगाईमें चढ़ता है (रँगरेज) । **–दान**–पु० पानकी पीक थूकनेका एक विशेष प्रकारका पात्र, उगालदान ।

पीकना*–अ० क्रि० पपीहे या कोयलका बोलना, पिहकना; † अंकुर निकलना ।

पीका*–पु० नया, कोमल पत्ता । **मु० –फूटना**–पल्लव निकलना, पल्लवित होना ।

पीच–स्त्री० माँड़; † दे० 'पीक' । पु० (सं०) ठुड्डी ।

पीछा†–स्त्री० माँड़; पक्षियोंकी पूँछ ।

पीछा–पु० किसी वस्तु या व्यक्तिका पिछला भाग; आगाका उलटा; किसी घटनाके बादका समय; पीछे लगा रहना, पिछलगी । **मु० –करना**–किसीको पकड़ने, भगाने या मारनेके लिए उसके पीछे-पीछे जाना, खदेड़ना । **–छुड़ाना**–किसी अप्रिय व्यक्ति या वस्तुसे पिंड छुड़ाना । **–छूटना**–किसी अप्रिय व्यक्ति या वस्तुसे छुटकारा मिलना । **–छोड़ना**–पीछा करनेके कार्यसे विरत होना, किसीके पीछे लगे रहनेका कार्य बंद करना; किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना बंद करना । **–दिखाना**–भाग खड़ा होना । **–देना**–साथ छोड़ देना । **–पकड़ना**–किसी आशासे किसीका साथ करना ।

पीछू*–अ० दे० 'पीछे' ।

पीछे–अ० पीठकी ओर, पृष्ठदेशमें, आगेका उलटा; देश-कालके अनुसार किसीके पश्चात्, अनंतर, बाद; अंतमें, बादमें; इस लोकसे विदा होनेपर, मर जानेपर; लिए, वास्ते, खातिर; वजहसे, बदौलत । **मु० (किसीके)–चलना**–किसी बातमें किसीका अनुगमन करना या अनुयायी होना । **(किसीके)–छूटना**–किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीके लिए नियुक्त किया जाना; किसीको पकड़नेके लिए तैनात किया जाना । **–छूटना**–पिछड़ जाना (जानेके साथ) । **(किसीके)–छोड़ना**–किसीकी स्थिति, कार्य आदिका पता देनेके निमित्त उसकी निगरानीपर नियुक्त करना; किसीको पकड़नेके लिए नियुक्त करना । **(किसीके)–पड़ना**–किसी वस्तुको मिटा देनेके लिए तुल जाना; किसी व्यक्तिको हैरान करने या उसे हानि पहुँचानेके लिए निरंतर यत्न करना । **–लगना**–किसी प्रयोजनकी सिद्धिके लिए किसीका आश्रय लेना; किसी कार्यकी सिद्धिके लिए किसीके पीछे-पीछे फिरना; किसी अप्रिय या हानिकर वस्तुका पीछा न छोड़ना ।

पीटना–स० क्रि० किसी वस्तुपर आघात करना, चोट पहुँचाना; किसी प्राणीपर हाथ, डंडे आदिसे आघात करना, मारना; सोने-चाँदी आदिके टुकड़ेको बढ़ाने या फैलानेके लिए उसपर हथौड़े आदिसे आघात करना; किसी तरह समाप्त करना; जैसे-तैसे पूरा करना; जैसे-तैसे कमा लेना, किसी भी तरह उपार्जित करना । पु० रोना, धोना, पिट्टस; विपत्ति, भारी संकट ।

पीठ–पु० (सं०) लकड़ी, पत्थर या धातुका आसन–पीढ़ा, चौकी आदि; व्रतियोंके बैठनेका आसन (जैसे–कुशासन); (चेयर) सभापति आदिका आसन; (सीट) न्यायाधीशका आसन (न्यायपीठ); (बेंच) विधानसभा आदिमें विभिन्न दलोंके बैठनेके लिए निर्धारित आसन या पंक्तियाँ (सरकारी पीठ, विरोधी पीठ–बहु०); (सेंटर) स्थान, केंद्रादि (विद्यापीठ); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाकी स्थापना हो, सिंहासन; मूर्ति आदिका आधार; प्राध्यापक या प्रोफेसरका पद (चेयर); उन प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे कोई एक जो विष्णुके चक्रसे कटे हुए सतीके शवके अंगोंके गिरनेके कारण सिद्धिदायक माने जाते हैं; बैठनेका एक ढंग; एक प्रकारका आसन; स्थान, आलय (जैसे–विद्यापीठ); शांकरमठ (जैसे–शारदापीठ); कंसका एक मंत्री । **–केलि**–पु० दे० 'पीठमर्दसखा' । **–ग**–वि० पंगु । **–गर्भ,–विवर**–पु० मूर्तिके आधारमेंका वह गड्ढा जिसमें वह जमायी जाती है । **–चक्र**–पु० गाड़ी । **–देवता**–पु० आदि देवता । **–नायिका**–स्त्री० वह कुमारी जो दुर्गापूजाके समय दुर्गा मानकर पूजी जाती है । **–भू**–स्त्री० प्राचीरके आस-पासकी भूमि, वप्र । **–मर्दसखा**–पु० नायकका विशेष प्रकारका सखा जो गुणोंमें उससे कुछ घटकर होता है (जैसे रामका सखा सुग्रीव); नायकका वह सखा जो नायिकाके मानमोचनमें सहायता करता है (सा०); वेश्याका नृत्यगुरु । **–मर्दिका**–स्त्री० वह स्त्री जो नायकको रिझानेमें नायिकाकी सहायता करती है (सा०) । **–सर्प,–सर्पी(र्पिन्)**–वि० पंगु । **स्थविर**–पु० (रजिस्ट्रार) विश्वविद्यालय, विद्यापीठ, गुरुकुल आदिका वह (वृद्ध) पदाधिकारी जो संस्थाके कागज-पत्र, छात्रों संबंधी विवरण इत्यादि रखता और उनकी शिक्षा-दीक्षाका प्रबंध करता है; कुलसचिव ।

पीठ–स्त्री० किसी प्राणीके शरीरका कमरसे लेकर गरदनतकका पीछेका भाग जिसके बीचोबीच रीढ़ रहती है, पृष्ठ; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, पृष्ठ-भाग । **–पीछे**–अ० अनुपस्थितिमें, मौजूद न रहनेपर । **मु०–का,–परका**–किसी सहोदरके पीछे जनमा हुआ । **–का कच्चा**–(वह घोड़ा) जो एक आसनसे सवारको देरतक न ले जा सके; (वह घोड़ा) जिसपर सवारी या लदाई करनेसे उसकी पीठ छिल जाय । **–का मोजा**–कुश्तीका एक दाँव । **–का सच्चा**–(वह घोड़ा) जो सवारी करनेपर अच्छी चाल चले और किसी तरहकी बदमाशी न करे । **–चारपाईसे लगना**–बीमारका अशक्तताके कारण उठने-बैठनेमें असमर्थ हो जाना । **–ठोंकना**–कोई अच्छा काम करनेपर शाबाशी देना; प्रशंसा करके कोई कार्य करनेके लिए उत्तेजित करना, बढ़ावा देना । **–दिखाना**–भाग खड़ा होना । **–देना**–भाग खड़ा होना; साथ छोड़ देना; लेटना । **–पर हाथ फेरना**–बढ़ावा देना, शाबाशी देना । **–पर होना**–मददगार होना । **–फेरना**–दे० 'पीठ दिखाना' । **(किसीकी)–लगना**–कुश्तीमें चित किया जाना, पछाड़ा जाना । **(घोड़े, बैल आदिकी)–लगना**–पीठपर जख्म होना, पीठका क्षत होना । **(किसीको)–लगाना**–कुश्तीमें चित कर देना, पछाड़ देना ।

पीठक–पु० (सं०) आसन, चौकी, कुरसी आदि; एक तरहकी पालकी ।

पीठा–पु० आटेकी लोईमें उर्द या चनेकी पीठी भरकर बनायी जानेवाली विशेष प्रकारकी भोज्य वस्तु; * पीढ़ा ।

पीठासीन–वि० (प्रिजाइडिंग) जो अध्यक्षके स्थानपर आसीन हो । **मु०–होना**–अध्यक्षता करना; अध्यक्षका स्थान ग्रहण करना ।

पीठि*–स्त्री० पीठ ।

पीठिका–स्त्री०. (सं०) धातु, पत्थर या काठका विशेष प्रकारका

आसन (जैसे पीढ़ा, चौकी); वह आधार जिसपर किसी देव-प्रतिमाकी स्थापना की गयी हो, देवमूर्तिका आधार; मूर्ति, खंभे आदिका आधार; पुस्तिकाका विशिष्ट अंश या विभाग; पृष्ठभूमि; तामजान (कौ०); (चेयर) किसी प्राध्यापकका पद या कार्य (वृत्ति)।

पीठी–स्त्री० पानीमें भिगोकर पिसी हुई उड़द या मूँगकी दाल जिससे पकौड़ी आदि वनाते हैं।

पीड़*–स्त्री० एक प्रकारका शिरोभूषण; पीड़ा।

पीडक–पु० (सं०) पीड़ा देनेवाला, पीडित करनेवाला, सतानेवाला; दवानेवाला, चाँपनेवाला; पेरनेवाला।

पीडन–पु० (सं०) दवाना, चाँपना; मलना; पीड़ा पहुँचाना, दुःख देना, सताना; पेरना; निचोड़ने या पेरनेका औजार; अनाजके डंठलसे अन्नको अलग करनेके लिए रौंदना या रौंदवाना; मीजना, मसलना; ग्रहण करना, हाथमें लेना, पकड़ना (जैसे–करपीडन); सूर्य या चंद्रका ग्रहण; नष्ट, वर्वाद करना; उच्चारणमें किसी स्वरको दवाना; पीब निकालनेके लिए फोड़ेको दवाना।

पीड़न–पु० दे० 'पीडन'।

पीडनीय–वि० (सं०) पीडनके योग्य; दवानेके काम आनेवाला। पु० विना मंत्री और सेनाका राजा; शत्रुका एक भेद या प्रकार।

पीडा–स्त्री० (सं०) शारीरिक या मानसिक कष्ट, व्यथा, दर्द; वाधा; गड़वड़ (जैसे–आश्रमपीडा); सिरपर पहनी जानेवाली माला; नाश; प्रतिवंध; करुणा; ग्रहण; टोकरी; क्षति, हानि; सरल वृक्ष। **–कर–वि०** दुःख देनेवाला, कष्ट पहुँचानेवाला। **–करण–पु०** पीड़न, पीडित करना। **–गृह–पु०** यंत्रणा-गृह, साँसतघर। **–स्थान–पु०** कुंडलीमें अशुभ ग्रहोंके स्थान। **–हारी–पु०** स्त्री० दे० 'निश्चेतक'।

पीड़ा–दे० 'पीडा'।

पीडिका–स्त्री० (सं०) फुड़िया, फुंसी।

पीडित–वि० (सं०) (पीड़ित) जिसे पीड़ा पहुँचायी गयी हो, सताया हुआ; दवाया हुआ, चाँपा हुआ; ग्रसा हुआ, ग्रस्त; ध्वस्त; वँधा हुआ; मला हुआ, मसला हुआ; पेरा हुआ; पकड़ा हुआ। पु० क्षति; पीड़ा देनेकी क्रिया; एक रतिवंध।

पीडी(डिन्)–वि० (सं०) कष्ट देनेवाला, पीडित करनेवाला।

पीडुरी*–स्त्री० दे० 'पिँडली'।

पीड़ोन्माद–पु० (पैरानोइया) पीड़ासे उत्पन्न होनेवाली एक सुखात्मक अनुभूति।

पीढ़ा–पु० काठ, पत्थर या धातुका वह चौकी जैसा आसन जो प्रायः भोजन करते समय वैठनेके काम आता है, पीठ।

पीढ़ी–स्त्री० छोटा पीढा। किसी जाति, कुल या व्यक्तिकी वंश-परंपराकी कोई कड़ी; किसी पीढ़ीके अंतर्गत आनेवाले व्यक्तियोंका समुदाय; किसी विशिष्ट कालके प्रायः समान अवस्थाके लोगोंका समूह।

पीत–वि० (सं०) पीला; पिया हुआ; जिसने पिया हो; जिसने सोखा हो (दे० 'पीताब्धि')। पु० पीला रंग; पुखराज; हरताल; गंधक; चंपक; कनेर; दीप; केसर; वल्कल; चकवा पक्षी; मेढक; इंद्र; गरुड़; वह उपधातु जिससे घंटे वनाये जाते हैं; गोमूत्र; सुवर्ण; मैनाकी चोंच। **–कंद–पु०** गाजर। **–कदली–स्त्री०** स्वर्णकदली, सोनकेला। **–करवीरक–पु०** पीला कनेर। **–कावेर–पु०** केसर; एक उपधातु जिसके घंटे वनते हैं। **–काष्ठ–पु०** पीला चंदन; पीला अगरु। **–कीला–स्त्री०** आवर्तकी। **–कुरवक–पु०** पीली कटसरैया। **–कुष्ठ–पु०** पीले रंगका कोढ़। **–केदार–पु०** एक तरहका धान। **–गंध–पु०** पीला चंदन। **–घोषा–स्त्री०** एक लता जिसके फूल पीले होते हैं। **–चंचु–पु०** एक तरहका तोता। **–चंदन–पु०** पीला चंदन, हरिचंदन; केसर; हल्दी। **–चंपक–पु०** प्रदीप, दीपक। **–चोंप–पु०** (हिं०) पलाशपुष्प। **–झिंटी–स्त्री०** पीले फूलोंवाली कटसरैया। **–तंडुल–पु०** कँगनी। **–तुंड–पु०** कारंडव पक्षी। **–तैला–स्त्री०** मालकँगनी; वड़ी मालकँगनी। **–दारु–पु०** देवदारु; सरलका पेड़; दारुहल्दीका पौधा। **–दीप्ता–स्त्री०** वौद्धोंकी एक देवी। **–दुग्धा–स्त्री०** दूध देनेवाली गाय; वह गाय जो सूदके एवजमें दूध पीनेके लिए ऋणदाताको दी गयी हो। **–द्रु–पु०** सरलका पेड़; दारुहल्दी। **–धातु*–स्त्री०** गोपीचंदन। **–निद्र–वि०** गहरी नींदमें सोया हुआ। **–नील–पु०** हरा रंग। वि० हरे रंगका। **–पर्णी–स्त्री०** वृश्चिकाली। **–पादा–स्त्री०** मैना। **–पिष्ट–पु०** सीसा। **–पुष्प–वि०** जिसमें पीले फूल लगते हों, पीले फूलोंवाला। पु० कनेर, चंपा आदि। **–पुष्पा–स्त्री०** इंद्रवारुणी; आढकी। **–पुष्पी–स्त्री०** शंखपुष्पी; सहदेई; ककड़ी; तोरई; नेनुआँ। **–पृष्ठा–स्त्री०** पीली पीठवाली कौड़ी। **–प्रसव–पु०** पीला कनेर। **–फल,–फलक–पु०** सिहोरेका पेड़; कमरख; धव। **–फेन–पु०** रीठा। **–वालुका–स्त्री०** हल्दी। **–वीजा–स्त्री०** मेथी। **–भृंगराज–पु०** पीला भँगरा। **–मणि–पु०** पुखराज। **–मद्य–वि०** जिसने मद्यपान किया है। **–मस्तक–पु०** एक पक्षी। **–माक्षिक–पु०** सोनामाखी। **–मारुत–पु०** एक तरहका साँप। **–मुंड–पु०** एक तरहका हिरन। **–मुद्ग–पु०** मूँगका एक भेद। **–मूलक–पु०** गाजर। **–यूथी–स्त्री०** सोनजुही। **–रक्त–पु०** ललाई मिला हुआ पीला रंग; पुखराज। वि० ललाई मिले हुए पीले रंगका। **–रत्न–पु०** गोमेद। **–राग–पु०** पीला रंग; पद्मकेसर; मोम। वि० पीले रंगका। **–रोहिणी–स्त्री०** खंभारी। **–लोह–पु०** पीतल नामकी धातु। **–वर्ण–पु०** पीला रंग; एक पक्षी; कदंव; मैंनसिल; केसर; पीत चंदन। वि० पीले रंगका, पीला। **–वासा(सस्)–वि०** पीले वस्त्रवाला। पु० कृष्ण। **–वृक्ष–पु०** सोनापाठा। **–शाल,–शालक–पु०** विजयसार। **–शेष–पु०** वह जो पीनेके वाद वचा हो। वि० पीनेके वाद वचा हुआ। **–शोणित–वि०** (खड्ग) जिसने रक्तपान किया हो, खूनी। **–सार–पु०** पीला चंदन; हरिचंदन; गोमेद; अंकोल; लोवान। **–सारक–पु०** नीमका पेड़। **–सारि–स्त्री०** सुरमा। **–साल,–सालक–पु०** विजयसार। **–स्कंध–पु०** एक वृक्ष; सूअर। **–स्फटिक–पु०** पुखराज। **–स्फोट–पु०** खुजली। **–हरित–पु०** पीलापन लिये हरा रंग। वि० पीलापन लिये हरे रंगका।

पीतक–पु० (सं०) हरताल; कुसुमका फूल; केसर; अगर; पदमकाठ; पीतल; सोनामाखी; एक उपधातु जिसके घंटे वनते हैं; पीत चंदन; तूनका पेड़; अशोकका पेड़; विजयसार; अव्यक्त राशि (वी० ग०); दारुहल्दीका पौधा; अंडेकी जर्दी, अंडपीत। **–द्रुम–पु०** दारुहल्दीका पौधा।

पीतन–पु० (सं०) सरल वृक्ष; हरताल; आमड़ा; केसर; पाकड़।

पीतम*–पु० प्रियतम, कांत।

पीतर†–पु० दे० 'पीतल'।

पीतल–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध उपधातु जो मुख्यतः ताँवे और जस्तेके योगसे तैयार की जाती है; पीला रंग। वि० पीले रंगका।

पीतलक–पु० (सं०) पीतल।

पीतसरा–पु० चचिया ससुर।

पीतांग–वि० (सं०) पीले अंगोंवाला। पु० सोनापाठा; एक तरहका मेढक।

पीतांबर–पु० (सं०) पीला वस्त्र; विशेष प्रकारकी रेशमी धोती जिसे हिंदू पूजा-पाठ तथा संस्कार आदिके समय धारण करते हैं; कृष्ण, विष्णु; नर्तक, अभिनेता; पीत वस्त्रधारी सन्न्यासी। वि० पीले वस्त्रवाला, जिसने पीला वस्त्र धारण किया हो।

पीता–स्त्री० (सं०) हल्दी; दारुहल्दी; महाज्योतिष्मती; कपिल शिंशपा; प्रियंगु; गोरोचना; अतिविषा।

पीतातंक–पु० (येलो पेरिल) यह भय कि चीन, जापान आदि देशोंकी पीली जातियाँ अपनी शक्ति वढ़ाकर कहीं सारे संसारपर छान जायँ।

पीताब्धि–पु० (सं०) अगस्त्य मुनि (जिन्होंने समुद्र सोख लिया था)।

पीताभ–वि० (सं०) पीले रंगका।

पीतारुण–पु० (सं०) ललाई लिये हुए पीला रंग; सूर्योदयका मध्यकाल। वि० ललाई लिये पीले रंगका।

पीतावशेष–पु० (सं०) जो कुछ पीनेके वाद वचा हो।

पीताश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) पुखराज।

पीति–पु० (सं०) घोड़ा। स्त्री० पीनेकी क्रिया, पान; सूँड़; गति, गमन; पांथशाला।

पीतिका–स्त्री० (सं०) केसर; दारुहल्दी; सोनजुही।

पीतिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) पीलापन।

पीती*–स्त्री० दे० 'प्रीति'।

पीती(तिन्)–पु० (सं०) घोड़ा।

पीतु–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; हाथियोंके दलका नायक, हाथियोंका यूथप।

पीतोदक–पु० (सं०) नारियल (जिसके भीतर जल या रस रहता है)। वि० जिसने पानी पिया हो या जिसका पानी पिया गया हो।

पीथ–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; जल; घी; काल, समय; रक्षा; पेय।

पीथि–पु० (सं०) घोड़ा।

पीन–वि० (सं०) स्थूल, मोटा; परिपुष्ट; बृहत्; भारी; भरापूरा। **–वक्षा(क्षस्)**–वि० चौड़ी छातीवाला, विशाल वक्षःस्थलवाला।

पीनक–स्त्री० पिनकनेकी क्रिया, अफीमके नशेमें ऊँघना; ऊँघना। **मु०–में आना**–अफीमके नशेमें ऊँघने लगना।

पीनता–स्त्री० (सं०) स्थूलता, मोटाई; परिपुष्टता; भारीपन।

पीनना†–स० क्रि० दे० 'पींजना'।

पीनस–स्त्री० फीनस, पालकी। पु० (सं०) नाकका जुकाम जिसमें गंधग्रहणकी शक्ति नष्ट हो जाती है।

पीनसा–स्त्री० (सं०) ककड़ी।

पीनसित, पीनसी(सिन्)–वि० (सं०) जिसे पीनस रोग हुआ हो, पीनस रोगसे ग्रस्त।

पीना–स० क्रि० किसी द्रव पदार्थको घूँट-घूंट करके पेटमें पहुँचाना, पान करना; किसी वातको सह लेना; (क्रोधको) भीतर ही भीतर दवा देना, उभड़ने न देना, प्रकट न होने देना; शराब पीना; ध्यानसे सुनना; हुक्के, सिगरेट आदिका धुआँ खींचना; सोखना, जज्ब करना।

पीनोघ्नी–स्त्री० (सं०) भारी थनवाली गाय।

पीप–स्त्री० घाव या फोड़ेका सफेद मवाद।

पीपर†–पु० दे० 'पीपल'। **–पर्न***–पु० पीपलका पत्ता; एक गहना।

पीपरामूल, पीपलामूल–पु० एक प्रसिद्ध ओषधि, पिप्पलीमूल।

पीपरि–पु० (सं०) छोटा पाकड़।

पीपल–पु० वरगदकी जातिका एक पेड़ जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं, अश्वत्थ। स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जिसकी कली दवाके काम आती है; इस लताकी कली।

पीपा–पु० काठ या लोहेका ढोलके आकारका वना एक वड़ा पात्र जिसमें तेल आदि द्रव पदार्थ रखे या बंद करके बाहर भेजे जाते हैं (खाली पीपोंसे अस्थायी पुल भी वनते हैं)।

पीब–स्त्री० दे० 'पीप'।

पीय*–पु० स्वामी, पति।

पीयर†–वि० पीला।

पीया*–पु० पति, स्वामी।

पीयु–पु० (सं०) काल, समय; कौआ; सूर्य; अग्नि; उल्लू; सोना।

पीयूक्षा–स्त्री० (सं०) पाकड़का एक भेद।

पीयूख*–पु० दे० 'पीयूष'।

पीयूष–पु० (सं०) अमृत; दूध; गायका ब्यानेके बाद पहला या सात दिनोंतकका दूध, पेउस। **–ग्रंथि**–स्त्री० (पिट्यूइटरी ग्लैंड) मस्तिष्कके निचले स्थलमें स्थित एक ग्रंथि जो बाढ या अभिवृद्धिको प्रभावित करती है, पीयूषिका। **–द्युति, धामा(मन्), –भानु**–पु० चंद्रमा। **–भुक्(ज्)**–पु० देवता। **–मयूख, –महा(हस्), –रुचि**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–वर्ण**–वि० दूध जैसा सफेद। पु० सफेद घोड़ा। **–वर्ष**–पु० अमृतकी वर्षा; चंद्रमा; कपूर; एक वृत्त; चंद्रालोकके रचयिता जयदेवकी उपाधि।

पीयूषिका–स्त्री० दे० 'पीयूषग्रंथि'।

पीर–स्त्री० पीड़ा, व्यथा, दुःख, दर्द; प्रसवपीड़ा (ठेठ)। वि० (फा०) वृद्ध, बूढा; चालाक, धूर्त। पु० बूढ़ा आदमी, बुजुर्ग; महात्मा, सिद्ध; धर्मगुरु; मुसलमानोंके धर्मगुरु; सोमवार। **–जादा**–पु० पीर या धर्मगुरुका पुत्र। **–जाल**–स्त्री० बहुत बूढ़ी स्त्री। **–नाबालिग**–पु० वह बूढ़ा जो बच्चोंका-सा आचरण करे, बुद्धिहीन बुड्ढा। **–भाई**–पु० वह जो एक ही धर्मगुरुका शिष्य होनेके नाते भाई लगता हो, एक ही धर्मगुरुका चेला। **–मुरशिद**–पु० धर्मगुरु। **–मौला**–पु० फकीर। **–साल**–वि० वृद्ध, बूढ़ा। **–(रे)ज़र**–पु० बूढ़ा आदमी।

पीरक*–वि० दे० 'पीडक'।

पीरना*–स० क्रि० पेरना–'तेली ह्वै तन कोल्हू करिहौं पाप पुन्नि दोउ पीरौं'–कबीर।

पीरा†–स्त्री० दे० 'पीड़ा'। वि० दे० 'पीला'।

पीराई–पु० वह जाति जो डफपर पीरोंके गीत गाकर अपनी जीविका चलाती है, डफाली।

पीरान–स्त्री० (फा०) किसी पीरकी सेवामें अर्पित की हुई भूमि; पीरोंकी सहायताके लिए किसी मकवरेके साथ वक्फ की हुई जमीन।

पीरानी–स्त्री० (फा०) पीरकी पत्नी।

पीरानेपीर–पु० (फा०) पीरोंका पीर, सवसे वड़ा पीर।

पीरी–स्त्री० (फा०) बुढ़ापा; चेला मूँड़नेका व्यवसाय, चेलवाई; चालाकी, धूर्तता; इजारा, अधिकार; हुकूमत।

पीरू–पु० एक तरहका मुर्ग।

पीरोजा–पु० दे० 'फ़ीरोज़ा'।

पील–पु० (फा०) हाथी; शतरंजका एक मोहरा जो तिरछे चलता है और तिरछे ही मारता है (ऊँट)। पु० कीड़ा; पीलूका पेड़। **–ख़ाना**–पु० हस्तिशाला। **–पाँव**–पु० एक प्रसिद्ध रोग जिसमें प्रायः पाँवका घुटनेसे नीचेकी ओरका भाग सूज जाता है (अधिक सूजनेपर पाँव हाथीके पाँवकी तरह मोटा हो जाता है)। **–पा**–पु० दे० 'पीलपाँव'। **–पाया**–पु० थूनी, टेक। **–पाल**–पु० महावत, हाथीवान। **–बान**–पु० हाथी हाँकनेवाला, महावत, हाथीवान, फीलवान। **–वान**–पु० दे० 'पीलवान'।

पीलक–पु० (सं०) काला वड़ा चींटा; † पीले रंगका एक पक्षी।

पीलसोज*–पु० दीवट।

पीला–वि० हल्दीके रंगका, जर्द; तेज या आभासे रहित, निष्प्रभ, फीका। (स्त्री० 'पीली'।) पु० पीला रंग। **–कनेर**–पु० कनेरका वह भेद जिसका फूल पीले रंगका और घंटीके आकारका होता है। **–धतूरा**–पु० भड़भाँड़। **–बरेला**†–पु० बनमेथी। **–शेर**–पु० अफ्रीकामें होनेवाला एक तरहका शेर जिसका रंग कुछ पीला होता है। **–(ली)कमेली**–स्त्री० एक प्रकारकी चमेली जिसका फूल पीले रंगका होता है। **–चिट्ठी**–स्त्री० विवाहका निमंत्रणपत्र। **–जुही**–स्त्री० सोनजुही। **–मिट्टी**–स्त्री० एक तरहकी चिकनी, कड़ी और पीले रंगकी मिट्टी। **मु० –पड़ना**–तेज या आभासे रहित होना। **–(ली)फटना**–पौ फटना।

पीलिमा*–स्त्री० पीलापन।

पीलिया–पु० पांडु रोग।

पीली–स्त्री० प्रातः आकाशमें दिखाई देनेवाला पीला-सा प्रकाश। **मु० –फटना**—सबेरा होना।

पीलु–पु० (सं०) एक वृक्ष, पीलू; हाथी; परमाणु; ताड़का तना; ताड़के वृक्षोंका समूह; फूल; वाण; हड्डीका टुकड़ा; अस्थि-राशि; कृमि; पीलूका फल; हाथका मध्यभाग। **–पत्र**–पु० मूर्वा लता। **–पर्णी**–स्त्री० मरोड़फली नामकी लता; एक ओषधि। **–पाक**–पु० 'पाक'के दो भेदोंमेंसे एक (पदार्थविशेषकी पाकक्रियाके विषयमें वैशेषिकोंका मत है कि तेजके व्यापारके उस पदार्थके परमाणु अलग-अलग होकर पकते हैं और वादमें उनके एकाकार होनेपर उस पदार्थकी पुनः उत्पत्ति होती है)। **–०वाद**–पु० वैशेषिकोंका पाक-संबंधी मत। **–०वादी(दिन्)**–पु० वैशेषिक। **–मूल**–पु० पीलूके पेड़की जड़। **–मूला**–स्त्री० असगंध; सतावर। **–मली**–स्त्री० सतावर; सालपर्णी।

पीलुक–पु० (सं०) चींटा।

पीलू–पु० कोंकणमें होनेवाला एक वृक्ष, गुडफल; उसका फल जो दवाके काम आता है; एक राग; दे० 'पिल्लू'। **मु० –पड़ना**–किसी वस्तुमें सड़ने आदिके कारण कीड़े उत्पन्न हो जाना।

पीव*–पु० प्रियतम। † स्त्री० दे० 'पीप'।

पीवना*–स० क्रि० दे० 'पीना'।

पीवर–वि० (सं०) स्थूल, मोटा; भरा-पूरा। पु० कछुवा। –

स्तनी–वि० स्त्री० स्थूल या भरे-पूरे स्तनोंवाली (स्त्री या गाय)।

पीवरा–स्त्री० (सं०) असगंध; सतावर।

पीवरी–स्त्री० (सं०) तरुणी; गाय; योगमाता; शतमूली; शालपर्णी।

पीवा–स्त्री० (सं०) जल।

पीवा(वन्)–पु० (सं०) वायु। वि० मोटा, स्थूल; बलवान्।

पीसना–स० क्रि० रगड़कर या दबाव पहुँचाकर किसी कड़ी वस्तुको चूरेके रूपमें बदलना, चूर्ण करना; किसी वस्तुको जल या किसी अन्य तरल द्रव्यके योगसे रगड़कर बारीक बनाना; किसी सरस वस्तुको रगड़कर या दबाव पहुँचाकर बारीक बनाना; कुचल देना; तंग करना; दबाकर चिपटा कर देना; घोर परिश्रम करना; (दाँत) कटकटाना। पु० वह वस्तु जो किसीको पीसनेके लिए दी जाय।

पीसू|–पु० दे० 'पिस्सू'।

पीहर–पु० स्त्रीका मायका।

पीहू|–पु० दे० 'पिस्सू'।

पुं, पुम्(पुंस्)–पु० (सं०) पुमान्, पुरुष; सेवक; पुंलिंग शब्द; पुंलिंग (व्या०); आत्मा। **–अर्थ**–पु० चार प्रकारके पुरुषार्थोंमेंसे कोई एक। **–(पुं)गव**–पु० साँड़; बैल; (समासांतमें) किसी वर्ग या समुदायका श्रेष्ठ व्यक्ति (नरपुंगव); ऋषभ नामकी ओषधि। **–०केतु**–पु० शिव। **–जन्म(न्)**–पु० नर शिशुकी उत्पत्ति। **–ध्वज**–पु० कोई नर जानवर; चूहा। **–यान**–पु० पालकी। **–योग**–पु० पुरुषका योग या संबंध। **–रत्न**–पु० श्रेष्ठ पुरुष, पुरुषरत्न। **–राशि**–स्त्री० नर राशि (जैसे–मकर, कुंभ)। **–लिंग**–पु० पुरुषका चिह्न, शिश्न। वि० पुरुषवाचक (शब्द–व्या०)। **–वत्स**–पु० बछड़ा। **–वृष**–पु० छछूँदर। **–वेष**–वि० जो पुरुषवेशमें हो। **–सवन**–वि० जो पुत्रोत्पत्तिमें सहायक हो। पु० द्विजातियोंका दूसरा संस्कार जो गर्भाधानके तीसरे मास होता है; दूध। **–सू**–स्त्री० केवल पुत्र जननेवाली स्त्री।

पुंख–पु० (सं०) बाणका पिछला भाग जिसपर कभी-कभी पर लगाये जाते थे; बाज पक्षी।

पुंखानुपुंख–अ० एक सिरेसे दूसरे सिरेतक, पूर्णरूपसे।

पुंखित–वि० (सं०) पंखयुक्त (बाण)।

पुंग–पु० (सं०) समूह; राशि।

पुंगफल–पु० सुपारी।

पुंगल–पु० (सं०) आत्मा।

पुंगव–दे० 'पुं'के साथ।

पुंगीफल–पु० सुपारी।

पुंछल्ला|–पु० दे० 'पुंछाला'।

पुंछार–वि० बड़ी पूँछवाला। पु० मोर।

पुंछाला–पु० पुछल्ला; पूँछकी तरह लगी रहनेवाली वस्तु; पिछलगा।

पुंज–पु० (सं०) समूह; राशि, ढेर, अटाला।

पुंजि–स्त्री० (सं०) राशि, ढेर।

पुंजिक–पु० (सं०) ओला।

पुंजित–वि० (सं०) राशीकृत, ढेर लगाया हुआ; एक साथ दबाया हुआ।

पुंजिष्ठ–वि० (सं०) ढेर किया हुआ, राशीकृत।

पुंजी*–स्त्री० दे० 'पूँजी'।

पुंजोत्पादन–पु० (मास प्रॉडक्शन) कारखाने आदिमें किसी वस्तुका बड़ी संख्यामें या बड़े पैमानेपर किया गया उत्पादन, समूहोत्पादन।

पुंड–पु० (सं०) तिलक, टीका।

पुंडरिया–पु० एक पौधा जिसके पत्ते शालपर्णीके पत्तेके समान होते हैं।

पुंडरी(रिन्)–पु० (सं०) पुंडरिया नामका पौधा।

पुंडरीक–पु० (सं०) श्वेत कमल; कमल; श्वेत छत्र; अग्नि-कोणका दिग्गज; बाघ; एक द्रव्यौषध; दौना; ईखका एक भेद; आमका एक भेद; हाथीका ज्वर; घड़ा; कमंडलु; श्वेत वर्ण; एक प्रकारका कोढ़; एक प्रकारका साँप; एक तरहका चावल; अग्नि; सांप्रदायिक चिह्न; एक कोपकार। **–दलोपम**–वि० कमलपत्र जैसा। **–नयन,–लोचन**–वि० कमल-नयन। **–पालाशाक्ष**–वि० कमल-नयन। **–प्लव**–पु० एक तरहका पक्षी। **–मुख**–वि० कमल-वदन। **–मुखी**–स्त्री० एक तरहकी जोंक।

पुंडरीकाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें कमलके समान हों। पु० विष्णु।

पुंडरीकेक्षण–वि०, पु० (सं०) दे० 'पुंडरीकाक्ष'।

पुंडरीयक–पु० (सं०) पुंडरिया, स्थलकमल; एक विश्वेदेव; एक औषध।

पुंडर्य–पु० (सं०) पौधा; लता; एक विशेष पौधा जो नेत्र-रोगमें दवाके काम आता है, पुंडरिया।

पुंड्र–पु० (सं०) एक तरहका ईख, पौंड़ा; कमल; श्वेतकमल; एक दैत्य; एक प्राचीन देश; इस देशका निवासी; तिलक, टीका; कृमि, कीड़ा; तिलकका पेड़; पाकड़; तिनिशका पेड़। **–केलि**–पु० हाथी। **–वर्द्धन**–पु० पुंड्रदेशकी प्राचीन राजधानी।

पुंड्रक–पु० (सं०) ईखका एक भेद; पौंड़ा; तिलक, टीका; रेशमके कीड़े पालनेका काम करनेवाला; माधवी लता; तिलक वृक्ष।

पुंवत्, पुंसवत्–वि० (सं०) पुरुष जैसा। अ० पुरुषकी तरह।

पुंश्चली, पुंश्चलू–स्त्री० (सं०) कुलटा, वेश्या।

पुंश्चलीय–पु० (सं०) वेश्याका पुत्र।

पुंश्चिह्न–पु० (सं०) शिश्न।

पुंस*–पु० पुरुष।

पुंसवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसे पुत्र हो।

पुंसानुज–वि० (सं०) जिसके बड़ा भाई हो।

पुंसी–स्त्री० (सं०) बछड़ावाली गाय।

पुंस्त्व–पु० (सं०) पुरुषभाव, पुरुषत्व; पुरुषकी कामशक्ति; पुंलिंगत्व (व्या०); शुक्र, वीर्य। **–दोष**–पु० नामर्दी। **–विग्रह**–पु० एक प्रकारका तृण।

पुआ–पु० मैदे या आटेके मीठे घोलसे तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध पकवान जो घी या तेलमें तला जाता है।

पुआल–पु० दे० 'पयाल'; |एक जंगली पेड़।

पुकार–स्त्री० किसीका नाम लेकर बुलानेकी क्रिया या भाव, रक्षा या बचावके लिए किसीको आर्त स्वरसे बुलाना, टेर, दुहाई; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीके प्रति की गयी प्रार्थना, फरियाद; चिल्लाहट; आवाज; कचहरीके चपरासीका मुकदमा पेश होनेपर वादी और प्रतिवादीका नाम लेकर इजलासपर बुलाना।

पुकारना–स० क्रि० किसीको नाम लेकर बुलाना; नामका बार-बार उच्चारण करना; जोर-जोरसे कहना, चिल्लाना; रक्षा या बचावके लिए किसीको आर्त स्वरसे बुलाना, दुहाई देना; किसी कष्टके निवारणके लिए किसी अधिकारीसे प्रार्थना करना, फरियाद करना; अभिहित करना; निर्देश करना।

पुक्कश, पुक्कस–पु० (सं०) चांडाल; एक संकर जाति; अधम या नीच व्यक्ति। वि० नीच, कमीना।

पुक्कशक–वि० (सं०) नीच, कमीना। पु० पुक्कश जातिका व्यक्ति।

पुक्कशी, पुक्कसी–स्त्री० (सं०) कालापन; नीलका पौधा; कली; पुक्कश जातिकी स्त्री।

पुख*–पु० दे० 'पुष्य'।

पुखता|–वि० दे० 'पुख्ता'।

पुखर, पुखरा|–पु० पोखरा, तालाब।

पुखराज–पु० पीले रंगका एक प्रसिद्ध रत्न।

पुख़्ता–वि० (फा०) मजबूत; पक्का; सख्त; टिकाऊ; ईंटोंका बना हुआ; जानकार, अनुभवी; पूरी उम्रका; निश्चित। **–मिज़ाज**–वि० स्थिरचित्त। **–मग्ज़**–वि० होशियार।

पुगाना–स० क्रि० पूरा करना।

पुचकार–स्त्री० वह चूमनेका-सा शब्द जिसे किसीके प्रति लाड़ प्रकट करनेके लिए ओठोंसे उत्पन्न करते हैं, चुमकार।

पुचकारना–स० क्रि० ओठोंसे चूमनेका-सा शब्द उत्पन्न करते हुए किसीके प्रति लाड़-चाव प्रकट करना।

पुचकारी–स्त्री० दे० 'पुचकार'।

पुचारना–स० क्रि० पोतना; पुचारा देना।

पुचारा–पु० किसी वस्तुपर गीला कपड़ा फेरनेकी क्रिया; चूने आदिका हलका लेप; पुचारा देनेका कपड़ा; वह वस्तु जो किसी

वस्तुपर पुचारा देनेके लिए पानीमें घोली गयी हो; दगी हुई बंदूक या तोपकी गरम नालको ठंडा करनेके लिए उसपर भींगा हुआ कपड़ा रखनेकी क्रिया; वे प्रिय वचन जो किसीको मनानेके लिए उसके प्रति कहे जायँ; खुशामद; उत्साहवर्धक वचन ।

पुच्छंड–पु० (सं०) एक तक्षकवंशीय नाग ।

पुच्छ–पु० (सं०) पूँछ; बालोंसे युक्त पूँछ; पिछला भाग; मोरकी पूँछ, कलाप; समूह, (एपेंडिक्स) मानव शरीरमें उंगलीके आकारका भाग जो बड़ी आँतके उस सिरेसे जुड़ा रहता है जो छोटी आँतसे संबद्ध रहता है । शारीरिक क्रियामें पुच्छ कोई भी भूमिका अदा नहीं करता । **–कंटक**–पु० बिच्छू । **–दा**–स्त्री० लक्ष्मणा नामक कंद । **–जाह**–पु० पूँछकी जड़ । **–बंध**–पु० (घोड़ेकी) पूँछ बाँधनेकी रस्सी । **–मूल**–पूँछकी जड़ ।

पुच्छटि, पुच्छटी–स्त्री० (सं०) उँगली चटकाना ।

पुच्छल–वि० पूँछवाला, दुमदार । **–तारा**–पु० यदा-कदा उगनेवाला एक विशेष प्रकारका तारा जिसके पीछे झाड़ूके आकारका भापका-सा पदार्थ जुड़ा दिखाई देता है ।

पुच्छाग्र–पु० (सं०) पूँछका आगेका भाग ।

पुच्छी(च्छिन्)–वि० (सं०) पूँछवाला । पु० मुरगा; आक (मदार)का पौधा ।

पुछल्ला–पु० लंबी पूँछ; पूँछकी तरह साथमें या पीछे जुड़ी वस्तु; वह जो सदा किसीके पीछे लगा रहे, पिछलगा; साथ-साथ लगी या जुड़ी हुई अनावश्यक वस्तु; साथमें लगी रहनेवाली अप्रिय या अनावश्यक वस्तु; साथमें लगा रहनेवाला अप्रिय या अनावश्यक व्यक्ति ।

पुछवैया†–पु० दे० 'पुछैया' ।

पुछार–पु० * पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला; मोर–'जान पुछार जो भा बनवासी'–प०; † मातमपुरसी ।

पुछिया–पु० दुंबा मेढ़ा ।

पुछैया†–पु० पूछनेवाला, खोज-खबर लेनेवाला ।

पुजना–अ० क्रि० † पूजित होना, पूजा जाना; अत्यधिक सम्मानित होना; * पूरा होना ।

पुजवना*–स० क्रि० पूरा करना; सफल करना ।

पुजवाना–स० क्रि० किसीसे पूजनेका काम करवाना, पूजा कराना; अपनी पूजा, अपनी आवभगत कराना; शिष्यों या भक्तोंसे अपनी सेवा-शुश्रूषा कराना और भेंट चढ़वाना ।

पुजाई–स्त्री० पूजनेकी क्रिया या भाव; पूजनेकी उजरत; पूरा करनेकी क्रिया या भाव; पूरा करनेकी उजरत ।

पुजाना–स० क्रि० दे० 'पुजवाना'; पूरा करना, कमीकी पूर्ति करना; सफल करना; घाव, गड्ढे आदिको भरना ।

पुजापा–पु० देवपूजनके उपकरण, पूजनकी सामग्री; वह झोली या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखी जाती है, पुजाही । मु० **–फैलाना**–वस्तुओंको बेतरतीब रखना; ढकोसला खड़ा करना, आडंबर फैलाना ।

पुजारी–पु० पूजा करनेवाला; किसी देवताकी नियमित रूपसे पूजा करनेवाला ।

पुजाही–स्त्री० वह झोली या पात्र जिसमें पूजनकी सामग्री रखते हैं ।

पुजेरी*–पु० दे० 'पुजारी' ।

पुजेला*–पु० पुजेरी ।

पुजैया†–पु० पूजा करनेवाला; भरने या पूरा करनेवाला । स्त्री० दे० 'पुजाई' ।

पुजौरा–पु० पूजन, पूजा; पूजनमें देवताको अर्पित की जानेवाली सामग्री ।

पुज्जना*–अ० क्रि० पूजना, पूरा होना ।

पुट–पु० किसी तरल पदार्थका वह छींटा जो किसी वस्तुपर उसे आर्द्र करने या हलका मेल देनेके लिए डाला जाय; किसी वस्तुको हलके मेलके लिए रंग या किसी तरल पदार्थमें डुबाना, बोर; हलका मेल, साधारण मिश्रण, थोड़ी-सी मिलावट; (सं०) रिक्त स्थान; विवर (जैसे–कर्णपुट); ढकनेवाली वस्तु, आच्छादन; किसी वस्तुपर लगाई या जमाई जानेवाली किसी अन्य वस्तुकी तह या परत; कोष; मंजूषा; दोना; दोने या कटोरेकी तरहका कोई पात्र; एक-दूसरेपर ढक्कनकी तरह रखकर एकमें जोड़े हुए दोनेके आकारके दो पात्र या मिट्टी आदिके दो कपाल; इस प्रकारका औषध पकानेके कामका पात्र-विशेष; घोड़ेकी टाप; आँखकी पलक; जायफल; एक वर्णवृत्त । **–कंद**–पु० बाराही कंद । **–ग्रीव**–पु० कलसा, गगरा; ताँबेका कलसा । **–पाक**–पु० ओषधियोंको पकानेकी एक क्रिया जिसमें उन्हें जामुन, बरगद आदिके पत्तोंसे लपेट और ऊपरसे गीली मिट्टी लगाकर आगमें पकाते हैं; कटोरेके आकारके दो बरतनोंसे पुटित की हुई दवाको विशेष आकारके गड्ढेमें उपलेकी आँचमें पकानेकी एक क्रिया । **–भेद**–पु० नगर; जलकी भँवरी, जलावर्त; एक प्रकारका बाजा । **–भेदन**–पु० नगर ।

पुटक–पु० (सं०) दे० 'पुट'; कमल ।

पुटकिनी–स्त्री० (सं०) कमलिनी; कमलोंका समूह; पद्मयुक्त स्थान ।

पुटकी–स्त्री० पोटली; एकाएक होनेवाली मृत्यु, आकस्मिक मृत्यु; भारी आफत, वज्रपात; वह आटा या बेसन जो तरकारीके रसेमें उसे गाढ़ा करनेके लिए मिलाया जाता है । मु० **(किसीपर)–पड़ना**–अचानक मृत्यु होना; भारी आफत पड़ना (स्त्रियाँ शाप देते समय कहती हैं) ।

पुटरिया, पुटरी†–स्त्री० पोटली ।

पुटालु–पु० (सं०) बाराही कंद ।

पुटास–पु० दे० 'पोटाश' ।

पुटिका–स्त्री० (सं०) पुड़िया; इलायची ।

पुटित–वि० (सं०) रगड़ा या पीसा हुआ; फाड़ा हुआ, विदारित; सिला हुआ; सिकुड़ा हुआ; (वह मंत्र) जिसके आदि या अंतमें कोई मंत्रात्मक अक्षर या पद पढ़ा या जपा जाय; बंद किया हुआ (आ०) (कैपसूल्ड) जो पुटीके रूपमें बना हो, जो पुटीके रूपमें किसी आवरणके भीतर बंद हो (औषध) । पु० अंजलि ।

पुटिया†–स्त्री० एक छोटी मछली ।

पुटियाना*–स० क्रि० फुसलाना, समझा-बुझाकर राजी करना या अपने पक्षमें लाना ।

पुटी–स्त्री० (सं०) छोटा दोना; कौपीन; गड्ढा, खात; रिक्त स्थान; आच्छादन; पुड़िया ।

पुटीन–पु० किवाड़ों, खिड़कियों आदिमें शीशे जड़ने और लकड़ीकी चीजोंके छेद आदि भरनेके कामका तीसीके तेल और खरिया मिट्टीसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका मसाला ।

पुटोटज–पु० (सं०) सफेद छाता ।

पुटोदक–पु० (सं०) नारियल ।

पुट्ठा–पु० चूतड़के ऊपरका मांसल भाग; चौपायोंका, विशेषकर घोड़ोंका चूतड़; घोड़ोंकी अदद जतानेका शब्द; किताबकी जिल्दका उस ओरका भाग जिधर सिलाई की गयी रहती है ।

पुट्ठी–स्त्री० लकड़ीके उन अर्द्धचंद्राकार टुकड़ोंमेंसे कोई एक जिन्हें एकमें मिलाकर बैलगाड़ीका पहिया तैयार किया जाता है ।

पुठवार*–अ० पृष्ठभागमें, पीछे ।

पुठवाल–पु० भले-बुरे काममें साथ देनेवाला, पृष्ठपाल; सेंधके मुँहपर पहरा देनेवाला ।

पुड़ा–पु० बड़ी पुड़िया; ढोल मढ़नेका चमड़ा ।

पुड़िया–स्त्री० वह कागज या पत्ता जिसमें कोई दवा या अन्य वस्तु लपेटकर रखी गयी हो; पुड़ियामें लपेटी हुई एक खुराक दवा; खान, घर (जैसे–आफतकी पुड़िया) ।

पुड़ी–स्त्री० ढोल मढ़नेका चमड़ा; पूरी, सुहारी; * पुड़िया ।

पुण्य–वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध; शुभ, भला; प्रिय; सुंदर, सुष्ठु; अनुकूल; मधुर (गंध) । पु० शुभ अदृष्टवाला कृत्य, शुभ फल देनेवाला कार्य, सुकृत; सुकर्मसे उत्पन्न शुभ अदृष्ट; दूसरोंकी सहायता या उपकारका काम; पशुओंको पानी पिलानेका हौज; पवित्रता; कुंडलीमें लग्नसे नवाँ स्थान; एक व्रत जिसे स्त्रियाँ पतिप्रेमकी अक्षयता तथा पुत्रप्राप्तिके लिए करती हैं । **–कर्ता(र्तृ)**–वि०, पु० पुण्य करनेवाला । **–कर्म(न्)**–पु० वह कर्म जिसे करनेसे पुण्य प्राप्त हो । **–कर्मा(र्मन्)**–वि०, पु० शुभकर्म करनेवाला । **–काल**–पु० ऐसा समय जिसमें स्नान, दान आदि

करनेसे पुण्य हो । **–कीर्तन**–पु० विष्णु; पुराणोंका पाठ या वाचन । **–कीर्ति**–वि० जिसकी कीर्तिके वर्णनसे पुण्य हो । स्त्री० ऐसी कीर्ति जिससे पुण्य हो । **–कृत्**–वि० पुण्य करनेवाला । **–कृत्य**–पु० ऐसा कार्य जिसे करनेसे पुण्य हो । **–क्षेत्र**–पु० तीर्थ; आर्यावर्त । **–गंध**–पु० चंपा । वि० सुगंधयुक्त । **–गंधा**–स्त्री० सोनजुही । **–गंधि**–वि० अच्छी गंधवाला, खुशबूदार । **–गृह**–पु० वह स्थान जहाँ अन्न आदि बाँटा जाय; देवालय । **–जन**–पु० सज्जन; राक्षस; यक्ष । **–जित**–वि० पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ (जैसे–पुण्यजित लोक) । **–तृण**–पु० श्वेत कुश । **–दर्शन**–वि० जिसका दर्शन शुभ फल देनेवाला हो; सुंदर । पु० नीलकंठ पक्षी; पवित्र स्थानोंका दर्शन । **–दुद्(ह्)**–वि० पुण्यदायक । **–पुरुष**–पु० धर्मात्मा मनुष्य । **–प्रताप**–पु० पुण्यका प्रताप । **–फल**–पु० शुभ कर्मोंका फल; वह उद्यान जहाँ लक्ष्मी निवास करती हैं । **–भाक्(ज्)**–वि० धर्मात्मा । **–भू,–भूमि**–स्त्री० आर्यावर्त; पुत्रवती स्त्री । **–योग**–पु० पूर्वजन्ममें किये हुए सुकृतका फल । **–लोक**–पु० स्वर्ग । **–विजित**–वि० पुण्य द्वारा प्राप्त किया हुआ । **–शकुन**–पु० शुभ शकुन; शुभसूचक पक्षी । **–शील**–वि० पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, धर्मपरायण । **–श्लोक**–वि० उत्तम यशवाला (प्रायः दिवंगत व्यक्ति), जिसका चरित्र पावन हो । पु० विष्णु; युधिष्ठिर; नल । **–श्लोका**–वि० स्त्री० उत्तम यशवाली, पावन चरितवाली । स्त्री० सीता; द्रौपदी; गंगा । **–स्थान**–पु० तीर्थस्थान; कुंडलीमें लग्नसे नवाँ स्थान ।

पुण्यक–पु० (सं०) उपवास आदि व्रत जिनसे पुण्य होता है; एक व्रत जिसे स्त्रियाँ पति-प्रेमकी अक्षयता तथा पुत्र-प्राप्तिके लिए करती हैं; विष्णु । **–व्रत**–पु० पुत्रप्राप्तिके लिए एक वर्ष किया जानेवाला विष्णु-पूजनका व्रत ।

पुण्यजनेश्वर–पु० (सं०) कुबेर ।

पुण्या–स्त्री० (सं०) तुलसी ।

पुण्याई–स्त्री० पुण्यका प्रताप ।

पुण्यात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) पुण्य करना जिसका स्वभाव हो, पुण्यशील, धर्मात्मा ।

पुण्याह–पु० (सं०) शुभ दिन । **–वाचन**–पु० किसी धार्मिक कृत्यके आरंभमें ब्राह्मणका 'पुण्याह' शब्द तीन बार कहना ।

पुण्योदय–पु० (सं०) शुभ अदृष्टका उदय होना, सौभाग्यका उदय । वि० सौभाग्यशाली ।

पुतना–अ० क्रि० पोता जाना, चुपड़ा जाना ।

पुतरा*–पु० दे० 'पुतला' ।

पुतरि, पुतरिका*–स्त्री० दे० 'पुत्तलिका' ।

पुतरिया*–स्त्री० दे० 'पुतली' ।

पुतरी*–स्त्री० दे० 'पुतली' ।

पुतला–पु० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई पुरुषकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है; किसी व्यक्तिकी सरपत, आटे आदिकी बनायी हुई वह प्रतिमा जो उसके शवके अभावमें अंत्येष्टि करनेके लिए या उसका मरण मनानेके लिए जलायी जाय । मु० (किसीका) **–जलाना**–विरोध या निंदा करनेके उद्देश्यसे किसी व्यक्तिका पुतला बनाकर जलाना । **–बाँधना**–किसीका अपयश फैलाना, किसीकी बदनामी करना ।

पुतली–स्त्री० लकड़ी, धातु, कपड़े आदिकी बनी हुई स्त्रीकी प्रतिमा जो विशेषकर खिलौनेके काम आती है, गुड़िया; आँखके बीचका वह काला भाग जिसके मध्यमें रूप ग्रहण करनेवाली इंद्रिय होती है; कपड़ा बुननेका यंत्र; सुंदर और कोमलांगी स्त्री; घोड़ेकी टापके बीचोबीचका उभरा हुआ मांसल भाग । **–घर**–पु० कपड़ेकी मिल । मु० **–फिर जाना**–आँखें पथरा जाना; घमंड होना ।

पुताई–स्त्री० पोतनेकी क्रिया या भाव; लेप; दीवार आदिपर मिट्टी, गोबर, चूने आदिका लेप करना; इस कामकी उजरत ।

पुतारा–पु० किसी वस्तुपर पानी, रंग आदिसे तर कपड़ा फेरनेका काम; पानी, रंग आदिसे तर कपड़ा जो किसी वस्तुपर फेरा जाय ।

पुत्–पु० (सं०) एक नरक जिससे छुटकारा पानेका साधन पुत्र माना जाता है । **–त्र**–पु० दे० 'पुत्र' ।

पुत्त*–पु० दे० 'पुत्र' ।

पुत्तरी*–स्त्री० दे० 'पुत्री'; दे० 'पुत्तली' ।

पुत्तल–पु० (सं०) पुतला । **–दहन**–पु० किसी मृत व्यक्तिके शवके अभावमें उसका पुतला जलानेका कर्म । **–पूजा**–स्त्री० मूर्तिपूजा । **–विधि**–स्त्री० दे० 'पुत्तल-दहन' ।

पुत्तलक–पु० (सं०) पुतला ।

पुत्तलिका, पुत्तली–स्त्री० (सं०) पुतली ।

पुत्तारी*–पु० पुत्र, सुत ।

पुत्ति*–स्त्री० पुत्री, लड़की ।

पुत्तिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी छोटी मधुमक्खी; दीमक ।

पुत्र–पु० (सं०) बेटा; प्यारा बच्चा; पशुशावक; (समासांतमें) अपने वर्गकी कोई छोटी वस्तु (जैसे असिपुत्र–छुरा) । **–कंदा**–स्त्री० एक पुत्रदा जड़ी, लक्ष्मणाकंदा । **–कर्म(न्)**–पु० पुत्रोत्पत्ति-संबंधी संस्कार । **–काम**–वि० जिसे पुत्रकी कामना हो; * पुत्रकी कामनासे किया जानेवाला (यज्ञादि) । **–काम्या**–स्त्री० पुत्र-प्राप्तिकी इच्छा । **–कार्य**–पु० पुत्र-संबंधी संस्कारादि । **–कृतक**–पु० वह जो पुत्रकी तरह माना-जाना गया हो, गोद लिया हुआ । **–कृत्**–पु० दत्तक पुत्र । **–घ्नी**–स्त्री० एक गर्भनाशक योनि-रोग । **–जग्धी**–स्त्री० अपने पुत्रोंको खा जानेवाली स्त्री; अप्रकृत माता । **–जात**–वि० जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो । **–जीव,–जीवक**–पु० इंगुदीकी तरहका एक पेड़, जियापोता । **–दा**–स्त्री० वंध्या कर्कटी; खेखसी; लक्ष्मणा नामकी जड़ी; जीवंती; श्वेत कंटकारी; वि० पुत्र देनेवाली (–एकादशी) । **–दात्री**–स्त्री० मालवाकी एक प्रसिद्ध लता; भ्रमरी । **–धर्म**–पु० पुत्रका पिताके प्रति अपेक्षित कर्तव्य । **–पौत्रीण**–वि० पुत्रसे पौत्रको प्राप्त होनेवाला, आनुवंशिक । **–प्रतिनिधि**–पु० पुत्रके स्थानपर अपनाया हुआ व्यक्ति, दत्तक पुत्र । **–प्रदा**–स्त्री० क्षविका; श्वेत कंटकारि । **–प्रवर**–पु० सबसे बड़ा पुत्र । **–प्रसू**–वि० स्त्री० पुत्र उत्पन्न करनेवाली । **–प्रिय**–वि० पुत्रको प्यारा । पु० एक प्रकारका पक्षी । **–भद्रा**–स्त्री० बड़ी जीवंती । **–भांड**–पु० दे० 'पुत्र-प्रतिनिधि' । **–भाव**–पु० पुत्रका भाव, पुत्रता; कुंडलीमें पुत्रस्थानकी ग्रहस्थिति (ज्यो०) । **–लाभ**–पु० पुत्रकी प्राप्ति, पुत्र उत्पन्न होना । **–वधू**–स्त्री० पुत्रकी पत्नी, पतोहू । **–शृंगी**–स्त्री० अजशृंगी । **–श्रेणी**–स्त्री० मूषिकपर्णी । **–सख**–पु० बच्चोंसे प्रेम करनेवाला; बच्चोंका प्रेमी । **–सप्तमी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला सप्तमी । **–सहम**–पु० ज्योतिषोक्त ५० सहमोंमेंसे एक जिससे पुत्रलाभ आदिका विचार किया जाता है । **–सू**–स्त्री० पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री । **–हीन**–वि० जिसके पुत्र न हो । (स्त्री० 'पुत्रहीना' ।)

पुत्रक–पु० (सं०) बेटा; शरभ; टिट्टा; धूर्त मनुष्य; पुतला, गुड्डा; एक पर्वत; एक वृक्ष; बाल, केश; दयनीय व्यक्ति ।

पुत्रका–स्त्री० (सं०) दे० 'पुत्रिका' ।

पुत्रवती–वि० स्त्री० (सं०) पुत्रवाली (स्त्री) ।

पुत्रवल–वि० (सं०) पुत्रवाला ।

पुत्राचार्य–वि० (सं०) पुत्रसे पढ़नेवाला ।

पुत्रादिनी–स्त्री० (सं०) अपने बेटेको खा जानेवाली, व्याघ्री, सर्पिणी इ०; अप्रकृत माता ।

पुत्रादी(दिन्)–वि० (सं०) अपने पुत्रको खा जानेवाला, पुत्रभक्षक ।

पुत्रान्नाद–पु० (सं०) वह जिसका भरण-पोषण उसका पुत्र करता हो, पुत्रकी कमाई खानेवाला; यतियोंका एक भेद, कुटीचक ।

पुत्रार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) पुत्र चाहनेवाला, पुत्रप्राप्तिकी इच्छा रखनेवाला ।

पुत्रिक–वि० (सं०) पुत्रवाला ।

पुत्रिका–स्त्री० (सं०) बेटी; पुतली, गुड़िया; पुत्रहीन व्यक्तिकी वह कन्या जिसे उसने पुत्ररूप मान लिया हो (ऐसा करनेके लिए कन्याका पिता विवाहके समय जामातासे यह तै कर लेता है कि इस कन्याका पुत्र मेरा पिंडदान करेगा और उत्तराधिकारी होगा); किसी पदार्थके संबंधमें उससे छोटी सजातीय वस्तु (जैसे–असिपुत्रिका–असिकी पुत्रिका–छुरी); आँखकी पुतली । **–पुत्र,–सुत**–पु० बेटीका बेटा, दौहित्र; पुत्रके स्थानपर माना हुआ कन्याका पुत्र; पुत्तली; एक पौधा । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० दामाद ।

पुत्रिणी–वि० स्त्री० (सं०) पुत्रवाली ।

पुत्रिय–वि० (सं०) पुत्र-संबंधी; पुत्रका ।

पुत्री–स्त्री० (सं०) कन्या, बेटी; दुर्गा ।

पुत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) पुत्रवाला ।

पुत्रीय, पुत्र्य–वि० (सं०) दे० 'पुत्रिय' ।

पुत्रीया–स्त्री० (सं०) पुत्रलाभकी इच्छा ।

पुत्रेप्सु–वि० (सं०) पुत्रका इच्छुक ।

पुत्रेष्टि, पुत्रेष्टिका–स्त्री० (सं०) पुत्रलाभकी इच्छासे किया जानेवाला यज्ञविशेष ।

पुत्रैषणा–स्त्री० (सं०) पुत्रप्राप्तिकी कामना ।

पुदीना–पु० एक प्रसिद्ध छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ अच्छी गंधवाली होती हैं और चटनी आदिमें पीसकर खायी जाती है ।

पुद्गल–पु० (सं०) परमाणु; भूत-सामान्य, वे द्रव्य जिनके संघातसे शरीर तथा मन, प्राण, आदिका निर्माण होता है (जै०); आत्मा (बौ०); शिव । वि० सुंदर ।

पुद्गलास्तिकाय–पु० (सं०) जैन-दर्शनके अनुसार पाँच प्रकारके द्रव्योंमेंसे एक ।

पुनः–'पुनर्'का समासगत रूप । **–करण**–पु० फिर करना । **–पाक**–पु० फिरसे पकाना या पकाया जाना । **–पुनः**–अ० बार-बार । **–पुना**–स्त्री० पुनपुन नामकी नदी । **–प्रतिनिवर्तन**–पु० पुनः आना, वापस आना । **–प्रमाद**–पु० बार-बार गफलत करना । **–प्राप्ति**–स्त्री० कोई वस्तु फिरसे प्राप्त होना । **–प्राप्य**–वि० पुनः प्राप्त करने योग्य । **–संगम**–पु० फिरसे मिलना । **–संधान**–पु० बुझी हुई अग्निहोत्रकी अग्निको फिरसे जलाना । **–संस्कार**–पु० द्विजातिका वह उपनयन संस्कार जो गोमांसभक्षण, सुरापान आदिके प्रायश्चित्तके रूपमें दुबारा हो । **–संस्कृत**–वि० फिर सुधारा हुआ; जिसकी मरम्मत की गयी हो । **–सिद्ध**–वि० फिरसे पकाया हुआ । **–स्तोम**–पु० एक याग । **–स्थापन**–पु० फिरसे स्थापित करना ।

पुनःप्रेषणकेंद्र–पु० (डेडलेटर आफिस) दे० 'बेपता चिट्ठीघर' ।

पुन–वि० (सं०) शुद्ध, पवित्र करनेवाला (समासांतमें–जैसे कुलंपुन) । † पु० पुण्य ।

पुनना–स० क्रि० दुर्वचन कहना । अ० क्रि० पूरा होना ।

पुनपुन, पुनपुना–स्त्री० गयाके पासकी एक छोटी नदी जो पवित्र मानी जाती है ।

पुनरवस, पुनरवसु*–पु० दे० 'पुनर्वसु' ।

पुनर्–अ० (सं०) एक बार और, फिर, दुबारा । **–अपगम**–पु० पुनः जाना । **–अपि**–अ० फिर भी; बार-बार । **–अभिधान**–पु० फिरसे कहना । **–आगत**–वि० फिरसे आया हुआ, लौटा हुआ । **–आगम, आगमन**–पु० फिरसे आना, लौटना । **–आगामी(मिन्)**–वि० फिरसे आनेवाला, लौटनेवाला । **–आजाति**–स्त्री० फिर जन्म लेना । **–आदि**–वि० फिरसे शुरू करनेवाला । **–आधान**–पु० श्रौत, स्मार्त अग्निका पुनः स्थापन । **–आधेय**–वि० फिरसे स्थापित की जानेवाली (अग्नि) । पु० दे० 'पुनराधान'; सोमयज्ञ । **–आनयन**–पु० लौटा लाना, पुनः ले आना । **–आलंभ**–पु० पुनः ग्रहण कर लेना । **–आवर्त**–पु० लौटना; फिरसे जन्म ग्रहण करना । **–आवर्तक**–वि० पुनः-पुनः आनेवाला (ज्वर) । **–आवर्ती(र्तिन्)**–वि० फिरसे या बार-बार जन्म ग्रहण करनेवाला । **–आवृत्त**–वि० दोहराया हुआ; संसारमें फिरसे आया हुआ; लौटा हुआ । **–आवृत्ति**–स्त्री० दोहराना; फिरसे आना, लौटना; संसारमें फिरसे आना, दुबारा जन्म लेना । **–आहार**–पु० दुबारा भोजन करना; दुबारा किया हुआ भोजन । **–उक्त**–वि० दुबारा या बार-बार कहा हुआ । पु० दुबारा कहना । **–उक्तवदाभास**–पु० एक शब्दालंकार जिसमें शब्द सुननेसे तो पुनरुक्ति-सी जान पड़े परंतु वास्तवमें पुनरुक्ति न हो । **–उक्ति**–स्त्री० किसी बातको दुहराना या एक ही बातको बार-बार कहना (साहित्यमें यह एक दोष माना जाता है) । **–उत्थान**–पु० पुनः उठना; पुनरुन्नति । **–उत्पत्ति**–स्त्री० फिर उत्पन्न होना । **–उत्पादन**–पु० पुनः उत्पादन करना; पुनः निर्माण करना । **–उत्स्यूत**–वि० दुबारा सिला हुआ; जो फटनेपर सी दिया गया हो । **–उद्धार**–पु० फिरसे ठीक करना, बचाना, मरम्मत आदि करना । **–उपगम, –उपगमन**–पु० लौटना । **–उपनयन**–पु० दे० 'पुनःसंस्कार' । **–उपोढा, –ऊढा**–वि० स्त्री० जो फिरसे ब्याही गयी हो, जिसका दुबारा ब्याह हुआ हो । **–गमन**–पु० दुबारा जाना । **–गेय**–वि० जो फिर गाया जाय । **–ग्रहण**–पु० कलछुल आदिसे बार-बार ग्रहण करना, निकालना; त्यागी हुई वस्तु, वृत्ति आदिको फिरसे स्वीकार या ग्रहण करना, पुनरावृत्ति । **–जन्म(न्)**–पु० मरनेके बाद फिरसे उत्पन्न होना, दुबारा शरीर धारण करना । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० ब्राह्मण । **–जात**–वि० फिर जनमा हुआ । **–डीन**–पु० उड़नेका एक प्रकार । –**–णव**–पु० नाखून । वि० दे० 'पुनर्नव' । **–दाय**–पु० पुनः दे देना, लौटा देना । **–नव**–वि० जो फिर-फिर नया हो जाता हो । पु० दे० 'पुनर्णव' । **–नवा**–स्त्री० शाककी जातिका एक बरसाती पौधा, गदहपुरना । **–भव**–पु० फिर शरीर धारण करना, दुबारा उत्पन्न होना; नाखून; एक तरहकी पुनर्नवा । वि० जो फिर उत्पन्न हुआ हो । **–भाव**–पु० दूसरा जन्म । **–भू**–स्त्री० वह स्त्री जो पहले पतिके मरनेपर दूसरेसे ब्याही गयी हो । **–भोग**–पु० पूर्वकर्मके फलके रूपमें सुख या दुःखका पुनः भोग । **मार**–पु०,**–मृत्यु**–स्त्री० बार-बार मरना । **–लाभ**–पु० फिर प्राप्त हो जाना । **–वचन**–पु० दुबारा कथन, पुनरुक्ति; शास्त्र द्वारा बार-बार विहित होना । **–वसु**–पु० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे सातवाँ नक्षत्र; विष्णु; शिव; कात्यायन मुनि; एक लोक; पुनः समृद्ध होना । **–वाद**–पुनरुक्ति । **–वार**–अ० दुबारा । **–विभाग, –विभाजन**–पु० जिसका एक बार विभाजन हो चुका हो उसका फिरसे विभाजन करना । **–विवाह**–पु० दूसरा ब्याह ।

पुनरधिनियमन–पु० (री-इनैक्टमेंट) दे० 'पुनर्विधायन' ।

पुनरस्त्रीकरण–पु० (री-आर्ममेंट) पुनः अस्त्र-संभार बढ़ाना, सेनाको नये-नये आधुनिक शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित करना; किसी देशकी अस्त्रविहीन की गयी सेनाओंको पुनः अस्त्रादिसे युक्त करना ।

पुनरावेदन–पु० (अपील) दे० 'पुनर्न्याय-प्रार्थना' ।

पुनरीक्षण–पु० (रिवीजन) संशोधन या भूलसुधार आदिकी दृष्टिसे मुकदमेकी फाइल, लेख, पुस्तक आदिकी सामग्री, आय-व्ययके आँकड़े आदि फिरसे देखना या पढ़ना ।

पुनरीक्षित–वि० (रिवाइज्ड) संशोधन या सुधारकी दृष्टिसे जो फिरसे देख लिया गया हो । **–पाठ**–पु० (रिवाइज्ड वर्शन) वह विवरण, वक्तव्य आदि जो फिरसे भली-भाँति देख लिया, जाँच लिया गया हो ।

पुनरुज्जीवन–पु० (रिवाइवल) पुनः जीवन दान देना, फिरसे उन्नतिकी ओर ले जाना ।

पुनरुज्जीवित करना–अपने अनुभूत किसी भावको पुनः मनके अन्दर उसी तापमानके साथ जीवित करके भोगनेकी प्रक्रिया ।

पुनरुत्थान–पु० (रिनेसाँ) कला और साहित्यका पुनर्जन्म या नये रूपसे होनेवाली उन्नति, नवोत्थान, पुनर्जागरण ।

पुनरेकीकरण–पु० (री-यूनियन) दो वस्तुओं, दलों आदिको मिलाकर फिर एक कर देना ।

पुनर्जागरण–पु० (रिनेसाँस) यूरोपके इतिहासका १४वींसे १६वीं शती तकका वह काल जब कला और साहित्यके नये अनुसंधान तथा विकाससे नयी चेतना उत्पन्न हुई जिससे आधुनिक युगका प्रारंभ हुआ ।

पुनर्नियुक्ति–स्त्री० (री-इंस्टेटमेंट) किसी पद या कामपर फिरसे नियुक्त कर दिया जाना ।

पुनर्न्यायप्रार्थना–स्त्री० (अपील) पुनर्विचारके लिए कोई मामला उच्चतर न्यायालयमें रखना, अपील ।

पुनर्न्यायप्रार्थी–पु० (एपेलेंट) वह जो अपना व्यवहार (मामला) पुनर्विचारके लिए किसी ऊँचे न्यायालयमें रखे ।

पुनर्मुद्रित–वि० (री-प्रिंटेड) जो फिरसे छापा गया हो ।

पुनर्मूल्यन–पु० (री-वैल्यूएशन) फिरसे मूल्य आँकना या लगाना; मुद्रा आदिका फिरसे मूल्य निश्चित करना, ठहराना ।

पुनर्युक्त कोण–पु० (रीफ्लेक्स एंगिल) वह कोण जो दो समकोणोंसे बड़ा, किंतु चार समकोणोंसे छोटा हो, बृहत्कोण ।

पुनर्वास–पु० (रीहैबिलिटेशन) जिनका घर-बार नष्ट हो गया हो

या जो उद्वासित हो गये हों उन्हें फिरसे बसाना ।

पुर्नविचार-प्रार्थना–स्त्री॰ अपील, पुनर्न्यायप्रार्थना ।

पुर्नविचारन्यायाधिकरण–पु॰ (अपेलेट ट्रिब्यूनल) मामलों, मुकदमों-पर पुनः विचार करनेवाली अदालत ।

पुर्नविचारन्यायालय–पु॰ (कोर्ट ऑफ अपील) छोटी या मातहत अदालतोंमें निर्णीत मामलोंपर पुर्नविचार करनेवाला न्यायालय ।

पुर्नविचारप्रार्थी–पु॰ (एपेलेंट) दे॰ 'पुनर्न्यायप्रार्थी' ।

पुर्नविधायन–पु॰ (री-इनैक्टमेंट) फिरसे कोई विधान, अधिनियम आदि बनाना, पुनरधिनियमन ।

पुर्नविलोकन–पु॰ (रीव्यू) दंडादेश आदिपर फिरसे विचार करना; बीती हुई घटनाओंकी संक्षिप्त आलोचना ।

पुर्नहिमायन–पु॰ (रीजिलेशन) दाब-वृद्धिपर बर्फका गलना और दाब हटते ही इसका पुनः जम जाना ।

पुनवाँसी–स्त्री॰ दे॰ 'पूर्णमासी' ।

पुनश्–'पुनर्'का समासगत रूप । **–चवर्ण**–पु॰ पागुर करना । **–चिति**–स्त्री॰ ढेर लगाना ।

पुनाराज–पु॰ (सं॰) नया राजा ।

पुनि*–अ॰ पुनः, फिर । **–पुनि**–अ॰ बार-बार ।

पुनिम*–स्त्री॰ पूर्णिमा ।

पुनी*–वि॰ पुण्य करनेवाला, पुण्यात्मा । स्त्री॰ पूर्णिमा । अ॰ पुनः, फिर ।

पुनीत–वि॰ (सं॰) पवित्र किया हुआ; शुद्ध, पाक ।

पुन्–'पुंस्'का समासगत रूप । **–नक्षत्र**–पु॰ नर नक्षत्र; वह नक्षत्र जिसके स्थितिकालमें नर संतान उत्पन्न हो । **–नाग**–पु॰ एक बड़ा सदाबहार पेड़; श्रेष्ठ पुरुष; सफेद हाथी; श्वेत कमल; जायफल । **–नाट,–नाड**–पु॰ चकवँड़का पौधा ।

पुन्न*–पु॰ दे॰ 'पुण्य' ।

पुन्नम*, **पुन्निम***–स्त्री॰ पूर्णिमा ।

पुन्नामा(मन्)–पु॰ (सं॰) पुत् नामका नरक; पुन्नाग वृक्ष ।

पुन्य*–पु॰ दे॰ 'पुण्य' । **–ताई***–स्त्री॰ दे॰ 'पुण्य' ।

पुपली†–स्त्री॰ बाँसकी पतली पोली नली ।

पुपूषा–स्त्री॰ (सं॰) शुद्धि करनेकी इच्छा ।

पुप्पुट–पु॰ (सं॰) तालुका एक रोग ।

पुप्फ*–पु॰ पुष्प, फूल ।

पुप्फुल–पु॰ (सं॰) उदरवात ।

पुप्फुस–पु॰ (सं॰) फेफड़ा; कमलका बीजकोष ।

पुमान्(मस्)–पु॰ (सं॰) पुरुष, नर, मादाका उलटा ।

पुरंजन–पु॰ (सं॰) आत्मा; वरुण ।

पुरंजनी–स्त्री॰ (सं॰) बुद्धि, समझ; प्रज्ञा ।

पुरंजय–पु॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध रघुवंशी राजा, काकुत्स्थ । वि॰ पुरको जीतनेवाला ।

पुरंजर–पु॰ (सं॰) काँख, बगल ।

पुरंदर–पु॰ (सं॰) इंद्र; शिव; विष्णु; अग्नि; ज्येष्ठा नक्षत्र; चोर।

पुरंदरा–स्त्री॰ (सं॰) गंगा ।

पुरंध्रि, पुरंध्री–स्त्री॰ (सं॰) पतिपुत्रवती स्त्री; (सम्मानित) स्त्री।

पुरः–'पुरस्'का समासमें प्रयुक्त रूप । **–पाक**–वि॰ जिसकी सिद्धि निकट हो । **–प्रहर्ता(र्तृ)**–पु॰ अगली पाँतमें लड़नेवाला सैनिक । **–फल**–वि॰ सद्यः फल देनेवाला । **–सर**–वि॰, पु॰ दे॰ 'पुरस्'में । **–स्थ**–वि॰ जो सामने हो, दृष्टिगोचर । **–स्थग्रंथि**–स्त्री॰ पुरुषेंद्रियके मूलमें स्थित ग्रंथि जिसके बढ़ जानेसे मूत्रावरोध होने लगता है (प्रॉस्टेट ग्लैंड); दे॰ 'अष्ठीला' । **–स्थापन**–पु॰, **पुरःस्थापना**–स्त्री॰ (इंट्रॉडक्शन) पुरः स्थापित करनेकी क्रिया । **–स्थापित करना**–स॰ क्रि॰ (टु इंट्रोडयूस) (सभा आदिमें) औपचारिक रूपसे रखना या सामने लाना ।

पुर–पु॰ (सं॰) बाजार; खाई; तोरण, प्रासाद आदिसे युक्त बड़ी बस्ती; नगर, शहर; कोट, किला; गृह, घर; पाटलिपुत्र; शरीर; कोठा, अटारी; अंतःपुर; भंडारघर; वेश्यालय; नागरमोथा; कलीको आवृत करनेवाले पत्ते; राशि, ढेर; गुग्गुल; चमड़ा; त्रिपुरासुर । वि॰ भरा हुआ, पूर्ण । **–कोट्ट**–पु॰ नगररक्षक दुर्ग । **–ग**–वि॰ नगरगामी; जिसकी मनोवृत्ति अनुकूल हो । **–जन**–पु॰ पुरवासी लोग । **–जित्**–पु॰ शिव । **–तटी**–स्त्री॰ छोटा बाजार । **–तोरण**–पु॰ नगरका बाहरी दरवाजा या फाटक, नगरका बहिर्द्वार । **–त्राण**–पु॰ प्राचीर, शहरपनाह । **–द्वार**–पु॰ नगरका प्रवेशद्वार । **–द्विट्(ष्)**–पु॰ शिव । **–नारी**–स्त्री॰ वेश्या । **–निवेश**–पु॰ नगर बसाना; दे॰ 'नगर आयोजन' । **–पक्षी(क्षिन्)**–पु॰ पालतू पक्षी । **–पाल,–पालक**–पु॰ नगरपाल; आत्मा । **–भिद्,–मथन,–मथिता(तृ)**–पु॰ शिव । **–मार्ग**–पु॰ सड़क । **–रक्ष,–रक्षक,–रक्षी(क्षिन्)**–पु॰ नगरकी रक्षाके लिए नियुक्त कर्मचारी । **–रोध**–पु॰ नगरका घेरा डालना। **–लोक**–पु॰ पुरजन । **–वधू**–स्त्री॰ दे॰ 'पुरनारी' । **–वर**–पु॰ राजनगर । **–वासी(सिन्)**–पु॰ नगरमें रहनेवाला, पौर, नागरिक । **–वास्तु**–पु॰ नगर बसाने योग्य भूमि । **–शासन,–हा-(हन्)**–पु॰ विष्णु; शिव ।

पुर†–पु॰ मोट, चरसा । **–वट**–पु॰ मोट, चरसा । **–हा**–पु॰ वह व्यक्ति जो मोट चलते समय उसका पानी ढालने या छीननेके लिए कुएँपर नियुक्त रहता है ।

पुर–वि॰ (फा॰) भरा हुआ, पूर्ण । **–अमन**–वि॰ शांतिमय । **–ख़ार**–वि॰ काँटोंसे भरा हुआ; संकटपूर्ण । **–ख़मार**–वि॰ नशेसे भरा हुआ । **–गो**–वि॰ बहुत बोलनेवाला । **–गोई**–स्त्री॰ बकवास । **–ज़ायका**–वि॰ मजेदार, सुस्वादु । **–ज़ोर**–वि॰ जोरदार; ओजःपूर्ण । **–जोश**–वि॰ जोशसे भरा हुआ । **–नूर**–वि॰ रौशन, चमकदार, द्युतिमान् । **–फ़न**–वि॰ चतुर; चालाक । **–साला**–वि॰ बूढ़ा । **–हौल**–वि॰ डरावना ।

पुरइन*–स्त्री॰ कमलका पत्ता; कमल; जरायु, अपरा ।

पुरइया*–पु॰ तकुआ; ताना ।

पुरखा–पु॰ बापसे ऊपरकी किसी पीढ़ीमें उत्पन्न कोई पुरुष, पूर्वपुरुष (जैसे–दादा, परदादा); बड़ा-बूढ़ा (व्यं॰) । (स्त्री॰ 'पुरखिन' ।)

पुरचक–स्त्री॰ पुचकार; बढ़ावा, उभाड़नेकी क्रिया, उसकाना; पृष्ठपोषण ।

पुरज़ा–पु॰ (फा॰) कागजका टुकड़ा; खंड, टुकड़ा; अवयव, अंग; चिड़ियाका बारीक पर; रुक्का । मु॰ –(ज़े) **पुरज़े उड़ना या होना**–टुकड़े-टुकड़े होना । **–पुरज़े उड़ाना या करना**–टुकड़े-टुकड़े करना ।

पुरट–पु॰ (सं॰) स्वर्ण, सोना ।

पुरण–पु॰ (सं॰) समुद्र ।

पुरतः(तस्)–अ॰ (सं॰) समक्ष, आगे ।

पुरनियाँ†–वि॰ बूढ़ा, वृद्ध ।

पुरनी†–स्त्री॰ पैरके अँगूठेका एक गहना; सिहा; बंदूकका गज ।

पुरबला, पुरबिला, पुरबुला*–वि॰ पहलेका; पूर्व जन्मका ।

पुरबा†–स्त्री॰ दे॰ 'पुरवा' ।

पुरबिया–वि॰ पूरबका । पु॰ पूरबी देश या प्रांतका निवासी ।

पुरबिहा–वि॰, पु॰ दे॰ 'पुरबिया' ।

पुरबी†–वि॰, स्त्री॰ दे॰ 'पूरबी' ।

पुरला–स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा ।

पुरवइया†–स्त्री॰ पूरबकी ओरसे बहनेवाली हवा, पुरवा ।

पुरवना–स॰ क्रि॰ भरना, पुजाना; पूरा करना । अ॰ क्रि॰ पूरा होना; पर्याप्त होना ।

पुरवा–स्त्री॰ पूरबकी ओरसे बहनेवाली हवा । पु॰ बैलोंका एक रोग जो पुरवा हवा लगनेसे होता है; मिट्टीका प्याले जैसा बरतन, कुल्हड़; * छोटा गाँव, टीला, खेड़ा । * वि॰ पूर्ण करनेवाला–'चलि राधे वृंदावन विहरन औसर बन्यौ है मनोरथ-पुरवा'–घन॰ ।

पुरवाई–स्त्री॰ पुरवा हवा ।

पुरवी–स्त्री॰ (सं॰) एक रागिनी ।

पुरवैया†–स्त्री॰ दे॰ 'पुरवइया' ।

पुरश्–'पुरस्'का समासगत । **–चरण**–पु॰ आरंभिक कृत्य; हवन करते हुए किसी देवताका नाम या मंत्र जपना; गुरुसे प्राप्त किये हुए मंत्रका वह सविधि जप जो उसे सिद्ध करनेके लिए किया जाय । **–चर्या**–स्त्री॰ दे॰ 'पुरश्चरण' । **–छद**–पु॰ एक प्रकारकी घास; चूचुक, स्तनवृंत ।

पुरषा–पु० दे० 'पुरखा'।

पुरसा†–पु० खाद।

पुरसाँ–वि० (फा०) पूछने या खोज-खबर लेनेवाला।

पुरसा–पु० ऊँचाई, गहराईकी एक माप जो मानमें हाथ उठाकर खड़े हुए मनुष्यके बराबर होती है।

पुरसी–स्त्री० (फा०) पूछने या खोज-खबर लेनेकी क्रिया (समासमें)।

पुरस्–अ० (सं०) सामने, समक्ष; आगे, पहले। **–करण**–पु० पुरस्कृत करनेकी क्रिया, आगे करना या रखना; पूरा करना; दे० 'पुरस्कार'। **–कर्ता**–पु० सामने रखने या लानेवाला, प्रारंभ करनेवाला 'खड़ी बोली कविताके पुरस्कर्ता श्रीधर पाठक'–सुधीन्द्र। **–कार**–पु० आगे करना या रखना; आदर, सम्मान; पूजन; स्वीकार; शत्रुपर आक्रमण करना; सिक्त करना, सेक; अभिशाप; उपहार, भेंट (बँ०, हिं०); पारितोषिक, इनाम (बँ०, हिं०); पारिश्रमिक (हिं०)। **–कृत**–वि० आगे किया हुआ या रखा हुआ; आदृत, सम्मानित; पूजित; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; सिक्त; शत्रु द्वारा आक्रांत; अभिशप्त; जिसे पुरस्कार दिया गया हो या मिला हो (बँ०, हिं०)। **–क्रिया**–स्त्री० आरंभिक कृत्य; आदर करना, सम्मान करना। **–सर**–वि० आगे चलनेवाला, अग्रगामी; सहित, उपेत (समासमें)। पु० नेता, अग्रणी, अगुआ; अनुचर। **–स्थायी(यिन्)**–वि० आगे खड़ा रहनेवाला।

पुरस्तात्–अ० आगे, सामने; पहले, आरंभमें; पूरबमें; अंतमें; पूर्वकालमें; बादमें।

पुरहत–पु० वह अन्न और द्रव्य जो मांगलिक कृत्योंके आरंभमें नेगीको दिया जाता है।

पुरही†–स्त्री० एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ और जड़ दवाके काम आती हैं, हरजेवड़ी।

पुरहूत*–पु० पुरुहूत, इंद्र।

पुरांतक–पु० (सं०) शिव।

पुरा–पु० बस्ती, गाँव। अ० (सं०) प्राचीन कालमें, पहले; अबतक; सिवा; अल्प कालमें, थोड़े समयमें। (प्राचीन, अतीत आदि अर्थोंका भी इससे द्योतन होता है।) स्त्री० प्राची, पूरब; एक सुगंधित द्रव्य; गंगा; किला। **–कथा**–स्त्री० प्राचीन कथा, इतिहास। **–कल्प**–पु० प्राचीन युग, प्राचीन समय; प्राचीन वृत्त। **–कृत**–वि० पहलेका किया हुआ; पूर्वजन्ममें किया हुआ। पु० पूर्वजन्मका कर्म। **–ग**–वि० पूर्वगामी। **–तत्त्व**–पु० पुरानी बातोंके अनुसंधान तथा अध्ययनसे संबंध रखनेवाली विशेष प्रकारकी विद्या। **–योनि**–वि० प्राचीन कालमें उत्पन्न। पु० शिव। **–लिपि**–स्त्री० पुरातन कालमें प्रचलित लिपि। **–लिपिशास्त्र**–पु० प्राचीन लिपियोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **–लेख**–पु० (आरकाइव्ज) पुराने सरकारी अभिलेख। **–०पाल**–पु० (आरकाइविस्ट) राज्यके पुराने अभिलेखों आदिको सुरक्षित रूपसे रखनेवाला अधिकारी। **–०भवन**–पु० दे० 'अभिलेखागार'। **–वसु**–पु० भीष्म। **–विद्**–वि० पुरानी बातोंको जाननेवाला; प्राचीन इतिहास जाननेवाला। **–वृत्त**–पु० प्राचीन वार्ता; इतिहास। वि० प्राचीन, पुराना।

पुराचीन†–वि० दे० 'प्राचीन'।

पुराट्ट–पु० (सं०) बुर्ज।

पुराण–वि० (सं०) प्राचीन, पुराना; जीर्ण-शीर्ण। पु० प्राचीन वृत्तांत; सृष्टि, लय, मन्वंतरों तथा प्राचीन ऋषियों, मुनियों और राजाओंके वंशों तथा चरितोंके वर्णनसे युक्त प्रसिद्ध हिंदू धर्मग्रंथ (जो अठारह हैं–विष्णु, पद्म, ब्रह्म, शिव, भागवत, नारद, मार्कंडेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कंद, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़, ब्रह्मांड और भविष्य); एक पुराना सिक्का जो अस्सी कौड़ियोंके बराबर होता था, कार्षापण; अठारहकी संख्या; शिव। **–कल्प**–पु० दे० 'पुराकल्प'। **–ग**–पु० ब्रह्मा; पुराणवाचक। **–दृष्ट**–वि० प्राचीन ऋषियोंका देखा या माना हुआ। **–पण्य**–पु० पुराना माल (कौ०)। **–पुरुष**–पु० वृद्ध मनुष्य; विष्णु। **–भांड**–पु० टूटा-फूटा सामान (कौ०)।

पुराणांत–पु० (सं०) यम; पुराणका शेष या अंत भाग।

पुरातन–वि० (सं०) प्राचीन, पुराना; जो सबसे पहले हुआ हो, आद्य (जैसे–पुरातन पुरुष)। पु० विष्णु; प्राचीन कथा। **–पुरुष**–पु० विष्णु 'पुरुष पुरातनकी वधू क्यों न चंचला होय'।

पुराधिप, पुराध्यक्ष–पु० (सं०) नगरके शासन, रक्षण आदिका प्रबंध करनेवाला प्रधान अधिकारी।

पुरान†–वि० दे० 'पुराना'। पु० दे० 'पुराण'।

पुराना–वि० जिसकी सत्ता बहुत पहलेसे हो, बहुत दिनोंका, नयाका उलटा; बीता हुआ; जो बहुत पहले बीत चुका हो; विगत कालका; बहुत पहले बीते हुए समयका; जो दिनी होनेके कारण अच्छी दशामें न हो, जीर्ण; जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, पूर्ण अनुभवी; परिणत-बुद्धि, पक्का; सधा हुआ, मँजा हुआ; सिद्ध (पुराना हाथ); जिसका रिवाज उठ गया हो; जिसका समय अब न हो। पु० † वृद्ध मनुष्य। स० क्रि० किसीसे पूरनेका काम कराना; पूरा कराना; भरवाना; * पालन कराना; पूरा करना, भरना; * सिद्ध कराना, पूर्ण कराना; * आटे, अबीर आदिसे (चौक) बनवाना; इस प्रकार बाँटना कि कोई बिना पाये न रहे, अँटाना।

पुराराति, पुरारि–पु० (सं०) शिव।

पुराल*–पु० दे० 'पयाल'।

पुरावती–स्त्री० (सं०) एक पुरानी नदी।

पुरासाट्(ह्)–पु० (सं०) इंद्र।

पुरासिनी–स्त्री० (सं०) सहदेई नामकी बूटी।

पुरासुहृद्–पु० (सं०) शिव।

पुरि–स्त्री० (सं०) पुरी, नगरी; शरीर; नदी। पु० राजा। **–श**–पु० जीव। **–शय**–वि० शरीरमें निवास करनेवाला।

पुरिखा, पुरिषा*–पु० पूर्वपुरुष, पुरखा।

पुरिया–स्त्री० बाना फैलानेकी नरी; ताना; † पुड़िया।

पुरिष*–पु० दे० 'पुरीष'।

पुरी–स्त्री० (फा०) भरा होना (समासमें, जैसे–खानापुरी); (सं०) नगरी, शहर; नदी; शरीर; किला, दुर्ग; दशनामी सन्न्यासियोंका एक भेद; उड़ीसाका एक प्रसिद्ध नगर। **–मोह**–पु० धतूरा।

पुरीतत–स्त्री० (सं०) आँत; हृदयके पासकी एक नाड़ी।

पुरीष–पु० (सं०) विष्ठा, गू; कूड़ा; जल (निघंटु)। **–निग्रहण**–पु० कोष्ठबद्धता।

पुरीषण–पु० (सं०) विष्ठा; मलत्याग करना।

पुरीषम–पु० (सं०) उड़द।

पुरीषाधान–पु० (सं०) मलाशय।

पुरीषोत्सर्ग–पु० (सं०) मलत्याग।

पुरु–पु० (सं०) देवलोक, स्वर्ग; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था; राजा ययातिका कनिष्ठ पुत्र जिसने अपने पिताको अपना यौवन समर्पित कर दिया था; चंद्रवंशका छठा राजा; पराग। वि० प्रचुर। **–कुत्स**–पु० मांधाताका ज्येष्ठ पुत्र। **–कुत्सव**–पु० एक दैत्य। **–चेतन**–वि० प्रकट, जो बहुतोंको प्रत्यक्ष हो। **–जित्**–पु० अर्जुनके मामा राजा कुंतिभोज; विष्णु। **–दंशक**–पु० हंस। **–दंशा(शस्)**–पु० इंद्र। **–द**–पु० सोना। **–दत्र,–द्रुद्(ह्)**–पु० इंद्र। **–भोजा(जस्)**–पु० बादल। **–मीढ़**–पु० अजमीढ़का छोटा भाई। **–लंपट**–वि० अति लंपट। **–हूत**–वि० जिसका आह्वान बहुतोंने किया हो; जिसकी बहुत-से लोगोंने स्तुति की हो। पु० इंद्र। **–हूति**–पु० विष्णु।

पुरुख*–पु० पुरुष।

पुरुखा–पु० दे० 'पुरखा'।

पुरुष–पु० (सं०) मर्द, नर, स्त्रीका उलटा; मानव जाति; सूर्य; आत्मा; सांख्यके अनुसार वह मुख्य तत्त्व जिसके संयोगसे प्रकृति विश्वकी सृष्टि करती है (यह त्रिगुणातीत, चेतन, अविकारी, नित्य, सर्वव्यापक, निष्क्रिय तथा नित्य मुक्त होता है); परमात्मा; विष्णु; संसारका आदि कारणभूत परम पुरुष (पुरुषसूक्त); शिव; जीव; विषम राशि–पहली, तीसरी, पाँचवीं, सातवीं, नवीं या ग्यारहवीं राशि (ज्यो०); कर्मचारी (राजपुरुष); ऊँचाई या गहराईकी एक प्राचीन माप जो पुरुष या १२० अंगुलके बराबर होती थी; मेरु

पर्वत; पुन्नाग वृक्ष; पारा; गुग्गुल; पति; ⁕ पूर्वपुरुष, पुरखा। **–कार**–पु॰ पुरुषार्थ, पौरुष; उद्योग। **–कुणप**–पु॰ मनुष्यका शव। **–केशरी(रिन्),–केसरी(रिन्)**–पु॰ वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष; विष्णुका नृसिंहावतार। **–गति**–पु॰ एक तरहका साम। **–ग्रह**–पु॰ मंगल, सूर्य और गुरु (ज्यो॰)। **–घ्नी**–वि॰ स्त्री॰ पतिकी हत्या करनेवाली। **–ज्ञान**–पु॰ मनुष्यजातिका ज्ञान। **–दंतिका**–स्त्री॰ एक जड़ी जो अष्टवर्गके अंतर्गत है, मेदा। **–ज्ञान**–वि॰ जो ऊँचाईमें पुरुषके बराबर हो। **–द्विट्(ष्)**–पु॰ विष्णुका विरोधी। **–द्वेषिणी**–वि॰ स्त्री॰ अपने पतिसे वैर रखनेवाली (स्त्री)। **–द्वेषी(षिन्)**–वि॰ मनुष्यसे द्वेष करनेवाला। **–धर्म**–पु॰ मनुष्यमात्रका धर्म। **–धौरेयक**–पु॰ श्रेष्ठ पुरुष। **–नक्षत्र**–पु॰ हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य (ज्यो॰)। **–नाय**–पु॰ सेनापति; राजा। **–पशु**–पु॰ पशुतुल्य मनुष्य, नरपशु। **–पुंगव,–पुंडरीक**–पु॰ श्रेष्ठ पुरुष। **–पुर**–पु॰ गांधारकी प्राचीन राजधानी, वर्तमान पेशावर। **—प्रेक्षा**–स्त्री॰ केवल पुरुषोंके देखनेका खेल या मेला। **–मात्र**–वि॰ मनुष्यकी ऊँचाईका। **–मानी(निन्)**–वि॰ अपनेको वीर समझनेवाला। **–मुख**–वि॰ पुरुषके समान मुखवाला। (स्त्री॰ 'पुरुषमुखी'।) **–मेध**–पु॰ एक प्राचीन वैदिक यज्ञ जिसमें मनुष्यकी बलि दी जाती थी। **–राशि**–स्त्री॰ मेष, मिथुन, सिंह आदि विषम राशियोंमेंसे कोई एक (ज्यो॰)। **–वर**–पु॰ श्रेष्ठ पुरुष; विष्णु। **–वर्जित**–वि॰ वीरान। **–वार**–पु॰ रवि, मंगल, बृहस्पति और शनिवार (ज्यो॰)। **–वाह**–पु॰ गरुड़; कुबेर। **–व्याघ्र,–शार्दूल**–पु॰ वह जो पुरुषोंमें सिंहके समान हो, सिंहके समान पराक्रमी पुरुष। **–शीर्ष**–पु॰ काठका बना हुआ मनुष्यका सिर जिसे चोर, सेंधमें यह देखनेके लिए डालते थे कि यह प्रवेशके योग्य है या नहीं (स्तेयशास्त्र)। **–समवाय**–पु॰ मनुष्योंका समूह। **–सिंह**–पु॰ दे॰ 'पुरुषकेशरी'। **–सूक्त**–पु॰ ऋग्वेदका एक परम-पुरुष-विषयक प्रसिद्ध सूक्त जो 'सहस्रशीर्षा'से आरंभ होता है, ऋग्वेदके दशम मंडलका ९० वाँ सूक्त।

पुरुषक–पु॰ (सं॰) पुरुष, नर; घोड़ेका पिछले पैरोंके बल खड़ा होना, अलफ।

पुरुषत्व–पु॰ (सं॰) पुरुषका भाव।

पुरुषांग–पु॰ (सं॰) पुरुषकी लिंगेंद्रिय।

पुरुषांतर–पु॰ (सं॰) दूसरा मनुष्य।

पुरुषाद, पुरुषादक, पुरुषाद्–पु॰ (सं॰) नरभक्षक राक्षस।

पुरुषाद्य–पु॰ (सं॰) विष्णु; दैत्य।

पुरुषाधम–पु॰ (सं॰) नीच मनुष्य।

पुरुषाधिकार–पु॰ (सं॰) पुरुषका कर्तव्य।

पुरुषानुक्रम–पु॰ (सं॰) वंशधरोंकी परंपरा।

पुरुषायित–पु॰ (सं॰) पुरुषवत् आचरण; एक रतिबंध। वि॰ पुरुषकी तरह आचरण करनेवाला।

पुरुषायुष–पु॰ (सं॰) मनुष्यकी आयु। **–जीवी(विन्)**–वि॰ जो मनुष्यकी पूरी आयुभर जीये। (स्त्री॰ 'पुरुषायुष-जीविनी'।)

पुरुषारथ⁕–पु॰ दे॰ 'पुरुषार्थ'।

पुरुषार्थ–पु॰ (सं॰) मनुष्यके जीवनका प्रधान उद्देश्य, वह वस्तु या प्रयोजन जिसकी प्राप्ति या सिद्धिके लिए मनुष्यको उद्योग करना चाहिये (पुरुषार्थ चार माने गये हैं–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष); उद्योग, उद्यम।

पुरुषार्थी(र्थिन्)–वि॰ पुरुषार्थ करनेवाला; उद्योगशील, परिश्रमी; पाकिस्तानसे आये पंजाबियों, सिखों आदिका सूचक शब्द।

पुरुषाशी(शिन्)–पु॰ (सं॰) राक्षस।

पुरुषास्थि–स्त्री॰ (सं॰) मनुष्यकी हड्डी। **–माली(लिन्)**–पु॰ शिव।

पुरुषी–स्त्री॰ (सं॰) स्त्री।

पुरुषेंद्र–पु॰ (सं॰) राजा; श्रेष्ठ पुरुष।

पुरुषोत्तम–पु॰ (सं॰) श्रेष्ठ पुरुष; विष्णु; कृष्ण; नारायण; जगन्नाथ; अच्छा सेवक या कर्मचारी। **–क्षेत्र**–पु॰ उड़ीसाका वह पुण्यक्षेत्र जहाँ जगन्नाथ निवास करते हैं, जगन्नाथपुरी। **–मास**–पु॰ अधिक मास, मलमास।

पुरुहूत–पु॰ (सं॰) दे॰ 'पुरु'के साथ।

पुरूरवा(वस्)–पु॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध सोमवंशी राजा जिसका विवाह उर्वशीसे हुआ था (पर अंतमें दोनों बिछुड़ गये); एक विश्वेदेव।

पुरेथा⁕–पु॰ हलकी मूठ।

पुरैन, पुरैनि–स्त्री॰ दे॰ 'पुरइन'।

पुरो–'पुरस्'का समासगत रूप। **–गंता(तृ),–गामी(मिन्)**–वि॰ दे॰ 'पुरोग'। पु॰ नायक; अग्रदूत; कुत्ता। **–ग**–वि॰ आगे-आगे चलनेवाला, अगुआ; प्रधान। **–गत**–वि॰ जो सामने हो; जो पहले गया हो। **–गति**–स्त्री॰ अग्रगामिता। पु॰ कुत्ता। वि॰ आगे-आगे चलनेवाला। **–गम**–वि॰ अग्रगामी, अग्रसर। **–जन्मा(न्मन्)**–वि॰ जिसका जन्म पहले हुआ हो। पु॰ जेठा भाई। **–डाश,–डाश्**–पु॰ जौ, चावल आदिके आटेकी टिकिया जिसे कपालमें रखकर अग्निमें हवन करते हैं; हवि; हुतशेष; पुरोडाश या हवि देते समय पढ़ा जानेवाला मंत्र; सोमरस। **–भागी(गिन्)**–वि॰ अग्रभाग लेनेवाला; (किसीमें) दोष ही दोष देखनेवाला, छिद्रान्वेषी। **–मारुत,–वात**–पु॰ पुरवा हवा। **–वाद**–पु॰ पूर्व कथन।

पुरोटि–स्त्री॰ (सं॰) नदीका प्रवाह; पत्रशब्द।

पुरोडाशीय–वि॰ (सं॰) पुरोडाशके कामका (यव, तंडुल आदि)।

पुरोत्सव–पु॰ (सं॰) नगरभरमें मनाया जानेवाला उत्सव।

पुरोद्यान–पु॰ (सं॰) नगरके अंदरका उद्यान, 'पार्क'।

पुरोधा–स्त्री॰ (सं॰) पौरोहित्य।

पुरोधा(धस्), पुरोधानीय–पु॰ (सं॰) पुरोहित।

पुरोधिका–स्त्री॰ (सं॰) ज्येष्ठा, सबसे प्रिय पत्नी।

पुरोहित–पु॰ (सं॰) धार्मिक कृत्य करानेवाला।

पुरोहिततंत्र–पु॰ (हायरैरकी) (रोमन कैथालिकोंमें) पुरोहितोंकी शासनव्यवस्था; कैथालिक पादरियोंके क्रमानुगत अधिकारियोंका वर्ग।

पुरोहिताई–स्त्री॰ पुरोहितका भाव; पुरोहितका पेशा।

पुरोहितानी–स्त्री॰ पुरोहितकी पत्नी।

पुरोहितिका–स्त्री॰ (सं॰) पुरोहितानी।

पुरोहिती–स्त्री॰ पुरोहिताई।

पुरौ⁕–पु॰ पुरवट।

पुरौका(कस्)–वि॰, पु॰ (सं॰) नगरवासी।

पुरौती¦–स्त्री॰ कमी पूरा करना, पूर्ति।

पुरौनी¦–स्त्री॰ पूरा करना; समाप्ति; घलुआ।

पुर्जा–पु॰ दे॰ 'पुरजा'।

पुर्तगाल–पु॰ यूरोपके दक्षिण-पश्चिममें स्पेनसे लगा हुआ एक छोटा देश।

पुर्तगाली–वि॰ पुर्तगाल-संबंधी; पुर्तगालका। पु॰ पुर्तगालमें रहनेवाला, पुर्तगाल-निवासी। स्त्री॰ पुर्तगालकी भाषा।

पुर्तगीज़–पु॰ (अं॰) पुर्तगाल-निवासी। स्त्री॰ पुर्तगालकी भाषा। वि॰ पुर्तगाल संबंधी।

पुर्बला–वि॰ दे॰ 'पुरबला'।

पुर्सां–वि॰ 'पुरसाँ'।

पुर्सी–स्त्री॰ दे॰ 'पुरसी'।

पुलंदा–पु॰ दे॰ 'पुलिंदा'।

पुल–वि॰ (सं॰) बड़ा, भारी, महान्। पु॰ रोमहर्षण, रोमांच; (फा॰) नदी, सोता, खाई आदि पार करनेका वह साधन जो नाव पाटकर अथवा खंभोंपर पटरियाँ आदि बिछाकर या पक्की जोड़ाई करके बनाया जाता है, सेतु। **–सरात**–पुं॰ दोजखके ऊपरका वह बाल जैसा बारीक और तलवार जैसा तेज पुल जिसपरसे कयामतके बाद नेक-बद सभी गुजरेंगे (कहते हैं कि नेक तो उसे आसानीसे पार करके बहिश्तमें चले जायेंगे और बद लोग कटकर दोजखमें गिर जायँगे–इस्लाम)। मु॰ (किसी बातका)**–बाँधना**–भरमार करना, झड़ी लगाना।

पुलक–पु॰ (सं॰) हर्ष, भय आदिके कारण रोंगटे खड़े होना, लोमहर्षण, रोमांच, त्वक्-स्फुरण; एक प्रकारका रत्न; एक रत्नदोष; एक प्रकारका खनिज पदार्थ; हाथीका रातिब; मद्यपान-

का पात्र; हरताल; एक प्रकारकी सरसों; एक गंधर्व; एक प्रकारकी मिट्टी ।

पुलकना*–अ० क्रि० पुलकित होना, हर्षविह्वल होना ।

पुलकांग–पु० (सं०) वरुणका पाश ।

पुलकाई*–स्त्री० पुलकित होनेका भाव, पुलक ।

पुलकालय–पु० (सं०) कुबेर ।

पुलकालि*–स्त्री० दे० 'पुलकावलि' ।

पुलकावलि–स्त्री० (सं०) प्रेम या हर्षजन्य रोमांच ।

पुलकित–वि० (सं०) जिसे रोमांच हुआ हो; हृष्ट, प्रसन्न, हर्षविह्वल ।

पुलकी(किन्)–वि० (सं०) पुलकवाला, रोमांचयुक्त । पु० कदंबका एक भेद ।

पुलकोत्कंप–पु० (सं०) हर्षोद्रेकसे काँपना ।

पुलकोद्गम, पुलकोद्भेद–पु० (सं०) रोंगटे खड़े होना, लोमहर्षण ।

पुलट†–स्त्री० पलटनेकी क्रिया ।

पुलटिस–स्त्री० हलवेकी तरह पकायी हुई अलसी आदि जो घावपर उसे पकाने, फोड़नेके लिए बाँधते हैं ।

पुलपुल†–वि० दे० 'पुलपुला' ।

पुलपुला–वि० पिलपिला, जो भीतरसे नरम और ढीला हो ।

पुलपुलाना–स० क्रि० किसी पुलपुली चीजको दबाना; दबाकर चूसना ।

पुलस्त*–पु० दे० 'पुलस्ति' ।

पुलस्ति, पुलस्त्य–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्माके मानसपुत्रोंमेंसे थे और सप्तर्षियों तथा प्रजापतियोंमें गिने जाते हैं (ये रावणके पितामह तथा विश्रवाके पिता थे); शिव ।

पुलह–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्माके मानसपुत्रोंमेंसे थे और सप्तर्षियोंमें गिने जाते हैं; शिव ।

पुलहना*–अ० क्रि० दे० 'पलुहना' ।

पुला–स्त्री० (सं०) घंटिका, उपजिह्विका ।

पुलाक–पु० (सं०) कदन्न; पैया; भातका पिंड; भातका माँड़; संक्षेप; लघुत्व; त्वरा ।

पुलाकी(किन्)–पु० (सं०) वृक्ष ।

पुलानिका–स्त्री० (सं०) त्वचाका कठिन पड़ना ।

पुलावित–पु० (सं०) घोड़ेका सरपट दौड़ना ।

पुलाव–पु० मांस और चावल एकमें पकाकर तैयार किया जानेवाला विशेष प्रकारका व्यंजन ।

पुलिंद–पु० (सं०) एक पुरानी असभ्य जाति; इस जातिके बसनेका देश; जहाजका मस्तूल ।

पुलिंदा–पु० लपेटे हुए कागजका बंडल । स्त्री० ताप्तीकी एक सहायक नदी ।

पुलिन–पु० (सं०) नदीका किनारा; रेतीला किनारा; नदीमें पड़ी हुई रेत ।

पुलिनवती–स्त्री० (सं०) नदी ।

पुलिया–स्त्री० छोटा पुल ।

पुलिरिक–पु० (सं०) सर्प ।

पुलिश–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि जो ज्योतिषके एक सिद्धांतकारक आचार्य थे (इनका सिद्धांत पौलिश सिद्धांत कहलाता है) ।

पुलिस, पुलीस–स्त्री० (अं०) जनताके जान-माल और शांतिकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला सरकारी महकमा, इस महकमेके कर्मचारी । **–काररवाई**–स्त्री० किसी स्थानमें शांति स्थापित करनेके लिए की गयी सख्त काररवाई । **–मैन**–पु० पुलिस विभागका कर्मचारी । **–राज**–पु० पुलिसका शासन, दबदबा या आतंक ।

पुलिहोरा*–पु० एक पकवान ।

पुली†–स्त्री० उत्तर भारतकी एक चिड़िया । (अं०, पूली) वह चक्कर या गडारी जिसपर रस्सा या रस्सी रखकर भार खींचते हैं या इंजनकी शक्ति यंत्रोंतक पहुँचायी जाती है ।

पुलोमही–स्त्री० (सं०) अफीम ।

पुलोमा–स्त्री० (सं०) भृगु ऋषिकी पत्नी और च्यवनकी माता ।

पुलोमा(मन्)–पु० (सं०) एक दैत्य जो इंद्रकी पत्नी शचीका पिता था; एक राक्षस । **–(म)जा**–स्त्री० शची । **–जित्,–द्विट्(ष्), –निषूदन,–भिद्**–पु० इंद्र । **–पुत्री**–स्त्री० शची ।

पुलोमारि–पु० (सं०) इंद्र ।

पुल्कक, पुल्कस–पु० (सं०) एक संकर जाति जिसकी उत्पत्ति ब्राह्मण और क्षत्राणीसे मानी जाती है ।

पुल्ल–वि० (सं०) विकसित । पु० एक पुष्प ।

पुल्ला†–पु० नाकका एक गहना ।

पुवा†–पु० दे० 'पुआ' ।

पुवार†–पु० दे० 'पयाल' ।

पुश्त–स्त्री० (फा०) पीठ; पीढ़ी; सहारा; मददगार; रक्षक । **–ख़म**–वि० कुबड़ा । **–ख़ार**–पु० पीठ खुजलानेका एक आला जिसमें एक सिरेपर हाथीदाँत या लोहेका पंजा लगा रहता है । **–दर-पुश्त,–ब-पुश्त**–अ० कई पीढ़ियोंसे; पीढ़ी-दर-पीढ़ी । **–दस्त**–पु० हथेलीके ऊपरका हिस्सा । **–नामा**–पु० वह कागज जिसपर किसी वंश या कुलके लोगोंके नाम यथाक्रम लिखे हों, कुरसीनामा । **–पनाह**–पु० मददगार, सहायक । **–बानी**–स्त्री० वह लकड़ी जो किवाड़ या तख्तेके पीछे उसकी मजबूतीके लिए लगायी जाती है ।

पुश्ता–पु० (फा०) किसी दीवारकी मजबूतीके लिए उससे सटाकर बनवाया जानेवाला मिट्टी, ईंट, पत्थर आदिका धुस्स; बाँध; पानीको रोकनेके लिए बँधवाया जानेवाला बाँध; किताबकी जिल्दका पीछेकी ओरका चमड़ा या कपड़ा; पुट्ठा; एक ताल । **–बंदी**–स्त्री० पुश्ता बाँधनेका काम ।

पुश्तापुश्त–अ० (फा०) कई पीढ़ियोंसे ।

पुश्तारा–पु० (फा०) पीठपर लादनेभरका बोझ, गठरी, गट्ठा ।

पुश्ती–स्त्री० (फा०) सहारा, टेक; मदद, सहायता; किताबकी जिल्दका पुट्ठा; गावतकिया, मसनद । **–बान्**–पु० मजबूतीके लिए किवाड़ या तख्तेमें पीछेकी ओर लगायी जानेवाली लकड़ी; थूनी ।

पुश्तैनी–वि० जो कई पीढ़ियोंसे चला आता हो; जो कई पीढ़ियोंतक चला जाय ।

पुष–वि० (सं०) पोषण प्रदान करनेवाला ।

पुषा–स्त्री० (सं०) लांगलिकी, कलियारी ।

पुषित–वि० (सं०) जिसका पोषण किया गया हो, पुष्ट ।

पुष्क–पु० (सं०) पोषण; पुष्टि ।

पुष्कर–पु० (सं०) जलाशय, सरोवर; जल; आकाश; हाथीकी सूँड़का अग्रभाग; कमल; नील कमल; तलवारकी धार; कूट नामकी ओषधि; पुष्करमूल; एक तरहका ढोल; तलवारका म्यान, बाण; एक तीर्थ जो अजमेरके पास है; ढोल, मृदंग आदिका मुँह; जंबू आदि द्वीपोंमेंसे एक (पु०); एक रोग; एक नाग; सारस पक्षी; राजा नलका छोटा भाई जिसने नलको जुएमें हराकर उनका राजपाट ले लिया था; पिंजड़ा; युद्ध; नशा; नृत्यकला; संयोग; अंश, भाग; सूर्य; मेघोंका एक अधिपति; एक असुर; विष्णु; शिव; वरुणका एक पुत्र; ग्रहोंका एक अशुभ योग (ज्यो०) । **–कर्णिका**–स्त्री० स्थलपद्मिनी; सूँड़की नोक । **–चूड़**–पु० वह दिग्गज जो लोकालोक पर्वतपर स्थित है । **–जटा**–स्त्री० दे० 'पुष्करमूल' । **–तीर्थ**–पु० पुष्कर नामक तीर्थ । **–नाडी**–स्त्री० स्थलपद्मिनी । **–नाभ**–पु० विष्णु । **–पत्र,–पर्ण,–पलाश**–पु० कमलका दल या पाटल । **–प्रिय**–पु० मोम । **–बीज**–पु० कमलका बीज । **–मुख**–पु० सूँड़के मुँहपरका छेद । वि० सूँड़के मुख जैसे मुखवाला (पात्र) । **–मूल**–पु० कूट नामकी ओषधि; कमलकी जड़ । **–व्याघ्र**–पु० घड़ियाल । **–शायिका**–स्त्री० एक जल-पक्षी । **–शिफा**–स्त्री० पुष्करमूल । **–सद्**–पु० एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि । **–सागर**–पु० पुष्करमूल । **–सारी**–स्त्री० एक लिपि । **–स्थपति**–पु० शिव । **–स्रक्(ज्)**–स्त्री० कमलके फूलोंकी माला । पु० अश्विनीकुमार (संस्कृतमें द्विवचन) ।

पुष्कराक्ष–वि० (सं०) कमलके समान नेत्रोंवाला । पु० विष्णु ।

पुष्कराख्य–पु० (सं०) सारस पक्षी; कूट नामकी ओषधि ।

पुष्कराग्र–पु० (सं०) सूँड़का अग्रभाग ।

पुष्करावती–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

पुष्करावर्तक–पु० (सं०) मेघोंका एक अधिपति ।

पुष्कराह्व–पु० (सं०) दे० 'पुष्कराख्य' ।

पुष्करिका–स्त्री० (सं०) शिश्नका एक रोग ।

पुष्करिणी–स्त्री० (सं०) हथिनी; एक प्रकारका जलाशय; कमलों-

का समूह; कमलका पौधा; कमलयुक्त जलाशय; एक प्राचीन नदी; चाक्षुप मनुकी पत्नी; भूमन्युकी पत्नी और ऋचीककी माता।

पुष्करी(रिन्)–वि० (सं०) कमलयुक्त। पु० हाथी।

पुष्कल–वि० (सं०) श्रेष्ठ; अति शोभन; पूर्ण, भरपूर; प्रभूत, बहुत; पर्याप्त; शब्दपूर्ण; निकटवर्ती। पु० अनाज आदिका चौंसठ मुट्ठीका एक प्राचीन परिमाण; चार ग्रास भिक्षान्नका एक प्राचीन परिमाण; इस परिमाणकी भिक्षा; एक असुर; रामके भाई भरतका एक पुत्र; शिव; मेरु पर्वत; एक प्रकारका ढोल; एक प्रकारका तंत्रयुक्त वाद्य।

पुष्कलक–पु० (सं०) गंधमृग, कस्तूरीमृग; अर्गला, सिटकिनी; खूंटी; कील; क्षपणक, बौद्धभिक्षु।

पुष्कलावती–स्त्री० (सं०) भरतके पुत्र पुष्कलकी राजधानी।

पुष्ट–वि० (सं०) जिसका पोषण किया गया हो, पोषित; मोटा-ताजा, तगड़ा; पोढ़ा; पूर्ण; पूरी आवाज करनेवाला। पु० विष्णु; पोषण।

पुष्टई–स्त्री० बलवर्द्धक औषध, ताकत बढ़ानेवाली दवा या वस्तु।

पुष्टता–स्त्री० (सं०) पुष्ट होनेका भाव, पोढ़ाई, बलिष्ठता, तगड़ापन।

पुष्टि–स्त्री० (सं०) पोषण; वृद्धि; तगड़ापन; अभ्युदय; सहारा; समर्थन; दृढ़ीकरण; वैभव; एक मातृका; एक योगिनी; धर्मकी एक पत्नी; असगंध; लोभकी माता; चंद्रमाकी एक कला। **–कर,–कारक**–वि० पोषण करनेवाला, पुष्ट बनानेवाला, बलवर्द्धक। **–कर्म(न्)**–पु० एक धार्मिक कृत्य जो अभ्युदयके लिए किया जाता है। **–कांत**–पु० गणेश। **–काम**–वि० अभ्युदय चाहनेवाला। **–द**–वि० पुष्टिकर; वृद्धिकर। **–दा**–स्त्री० असगंध। **–प्रद**–वि० दे० 'पुष्टिद'। **–मति**–पु० एक अग्नि। **–मार्ग**–पु० वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय, वल्लभसंप्रदाय। **–वर्धन**–वि० जिससे अभ्युदयकी सिद्धि हो; सुख विभवकी वृद्धि करनेवाला। पु० मुर्गा।

पुष्टिका–स्त्री० (सं०) सुतही, सीपी।

पुष्टीकरण–पु० (रैटिफिकेशन) दे० 'अनुसमर्थन'; किसी कथन या कृत्यको ठीक मानकर उसका समर्थन करना।

पुष्पंधय–वि० (सं०) मकरंद पान करनेवाला। पु० भ्रमर।

पुष्प–पु० (सं०) फूल, कुसुम; स्त्रीका रज; मधु; कुबेरका पुष्पक विमान; आँखका एक रोग; पुखराज; विकसित होना, विकास, खिलना; धीरता, नम्रता आदि भावोंकी अभिव्यक्ति (ना०)। **–करंड,–करंडक**–पु० उज्जयिनीका प्राचीन शिवोद्यान; फूल तोड़नेकी डलिया। **–करंडकिनी,–करंडिका,–करंडिनी**–स्त्री० उज्जयिनी। **–कार**–पु० पुष्पसूत्रके रचयिता। **–काल**–पु० वसंत ऋतु; स्त्रियोंका ऋतुकाल। **–कासीस**–पु० एक प्रकारका कसीस, हीराकसीस। **–कीट**–पु० फूलका कीड़ा; भ्रमर, भौंरा। **–कृच्छ्र**–पु० एक व्रत जिसमें कुछ फूलोंके काढ़ेपर महीनेभर रहते हैं। **–केतन**–पु० कामदेव। **–केतु**–पु० कामदेव; पुष्पांजन; बुद्ध। **–गंडिका**–स्त्री० लास्यके दस भेदोंमेंसे एक। **–गंधा**–स्त्री० जूही। **–गवेधुका**–स्त्री० नागवला। **–ग्रथन**–पु० माला गूंथना। **–घातक**–पु० बाँस। **–चय,–चयन**–पु० फूल लोढ़ना। **–चाप,–धनु(स्),–धन्वा(वन्)**–पु० कामदेव। **–चामर**–पु० मदन नामका पेड़; बेंतकी लता। **–ज**–वि० फूलसे उत्पन्न होनेवाला। पु० फूलका रस, मकरंद। **–जीवी(विन्)**–पु० माली। **–दंत**–पु० शिवका एक अनुचर; विष्णुका एक अनुचर; एक गंधर्व जिसने महिम्नस्तोत्र रचा है; एक विद्याधर; एक नाग; वायव्य कोणका दिग्गज; सूर्य और चंद्रमा (संस्कृतमें द्विवचन)। **–दंती**–स्त्री० एक राक्षसी। **–दंष्ट्र**–पु० एक नाग। **–द**–पु० वृक्ष, पेड़। **–दाम(न्)**–पु० फूलोंकी माला; एक छंद। **–द्रव**–पु० फूलका रस, मकरंद। **–द्रुम**–पु० पुष्पप्रधान वृक्ष, वह वृक्ष जो केवल फूलके लिए हो। **–ध**–पु० एक जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य ब्राह्मणसे मानी जाती है। **–धारण**–पु० विष्णु। **–ध्वज**–पु० कामदेव। **–निक्ष**–पु० भ्रमर, भौंरा। **–निर्यास**–पु० दे० 'पुष्पद्रव'। **–नेत्र**–पु० वस्तिकी पिचकारी या सलाई (आ० वे०)। **–पत्र**–पु० फूलकी पँखड़ी; एक प्रकारका बाण। **–पत्री(त्रिन्)**–पु० कामदेव। **–पथ**–पु०,**–पदवी**–स्त्री० रज निकलनेका मार्ग, योनि। **–पांडु**–पु० एक प्रकारका साँप। **–पात्र**–पु० फूल रखनेका पात्र। **–पिंड**–पु० अशोक। **–पुट**–पु० पुष्पदलावरण; फूलोंसे भरी हुई झोली या पात्र (?)। **–पुर**–पु० पटनेका एक प्राचीन नाम। **–पेशल**–वि० फूलकी तरह नाजुक। **–प्रचय,–प्रचाय**–पु० हाथसे फूल तोड़ना। **–प्रचायिका**–स्त्री० फूल लोढ़ना। **–प्रस्तार**–पु० फूलोंका बिछौना, पुष्पशय्या। **–प्रियक**–पु० विजयसाल। **–फल**–पु० कपित्थ, कैथा; कुम्हड़ा। **–बलि**–स्त्री० फूलोंकी भेंट या चढ़ावा। **–बाण**–पु० कामदेव; कुशद्वीपका एक पर्वत; एक दैत्य। **–भद्र**–पु० ६२ खंभोंवाला एक प्रकारका मंडप। **–भद्रक**–पु० एक विशेष वन। **–भव**–पु० फूलोंका रस, मकरंद। **–भाजन**–पु० दे० 'पुष्पपात्र'। **–भूषित**–वि० फूलोंसे सजाया हुआ। **–मंजरिका**–स्त्री० नील कमलका पौधा। **–मंजरी**–स्त्री० फूलकी मंजरी। **–मास**–पु० चैत्र मास; वसंतकाल। **–मित्र**–पु० दे० 'पुष्पमित्र'। **–मृत्यु**–पु० नरसलका एक भेद। **–मेघ**–पु० फूल बरसानेवाला मेघ। **–यमक**–पु० यमकका एक भेद। **–रक्त**–पु० सूर्यमणि नामक फूल। **–रचन**–पु० फूलोंकी माला गूंथना। **–रज(स्)**–स्त्री० पराग। **–रथ**–पु० यात्रा, हवाखोरीके काम आनेवाला रथ। **–रस**–पु० फूलका रस, मकरंद। **–रसाह्वय**–पु० मधु। **–राग,–राज**–पु० पुखराज। **–रेणु**–पु० पराग। **–रोचन**–पु० नागकेसर। **–लाव**–पु० (फूल लोढ़नेवाला) माली। **–लावी**–स्त्री० (फूल लोढ़नेवाली) मालिन। **–लिक्ष,–लिट्(ह्)**–पु० भ्रमर, भौंरा। **–लिपि**–स्त्री० एक प्राचीन लिपि। **–वर्ग**–पु० कचनार, सेमल, अगस्त्य आदिके फूलोंका एक विशिष्ट समाहार (आ० वे०)। **–वर्त्मा(त्मन्)**–पु० द्रुपद। **–वर्ष**–पु० फूलोंकी वर्षा; एक वर्ष-पर्वत। **–वर्षण**–पु० पुष्पवृष्टि। **–वाटिका,–वाटी**–स्त्री० फुलवारी। **–वाण,–विशिख**–पुं० दे० 'पुष्पवाण'। **–वाहिनी**–स्त्री० एक प्राचीन नदी। **–विचित्रा**–स्त्री० एक वृत्त। **–वृष्टि**–स्त्री० फूलोंकी वर्षा। **–वेणी**–स्त्री० फूलोंकी माला। **–शकटिका,–शकटी**–स्त्री० आकाशवाणी, देववाणी। **–शकली(लिन्)**–पु० एक प्रकारका विषहीन सर्प। **–शय्या**–स्त्री० फूलोंका बिछौना। **–शर,–शरासन, शिलीमुख**–पु० (फूलके बाणोंका प्रयोग करनेवाला) कामदेव। **–शाक**–पु० शाकके रूपमें खाये जानेवाले फूल। **–शून्य**–वि० फूलोंसे रहित, जिसमें फूल न लगें। पु० गूलरका पेड़। **–शेखर**–पु० पुष्पमाला। **–श्रेणी**–स्त्री० मूसाकानी। **–समय**–पु० वसंत ऋतु। **–साधारण**–पु० वसंत। **–सायक**–पु० कामदेव। **–सार,–स्नेह,–स्वेद**–पु० मकरंद या मधु। **–सारा**–स्त्री० तुलसी। **–सीता**–स्त्री० एक तरहकी चीनी। **–सूत्र**–पु० गोभिलका एक सूत्रग्रंथ। **–सौरभा**–स्त्री० कलियारीका पौधा। **–स्नान**–पु० दे० 'पुष्यस्नान'। **–स्वेद**–पु० दे० 'पुष्पद्रव'। **–हास**–पु० फूलोंका खिलना; विष्णु। **–हासा**–स्त्री० ऋतुमती स्त्री। **–हीन**–वि० फूलोंसे रहित, (वह पौधा या पेड़) जिसमें फूल न लगें। **–हीना**–स्त्री० गतार्तवा स्त्री; गूलरका पेड़।

पुष्पक–पु० (सं०) फूल; पीपल; कुबेरका विमान; एक नेत्ररोग; कंकण; रत्नमय कंकण; एक प्रकारका अंजन; कसीस; मिट्टीका चूल्हा या अँगीठी; लोहेका कटोरा; रसौत; दाँतका मैल; एक तरहका साँप; एक पर्वत।

पुष्पलक–पु० (सं०) दे० 'पुष्कलक'।

पुष्पवती–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री; मस्त (उठी हुई) गाय।

पुष्पांजन–पु० (सं०) पीतलके कसावसे तैयार किया जानेवाला एक अंजन।

पुष्पांजलि–स्त्री० (सं०) अंजलीभर फूल; अंजलीमें रखे हुए फूल।

पुष्पांड, पुष्पांडक–पु० (सं०) धानका एक भेद।

पुष्पांबुज–पु० (सं०) मकरंद।

पुष्पा–स्त्री० चंपापुरी, वर्तमान भागलपुर।

पुष्पाकर, पुष्पागम–पु० (सं०) वसंत ऋतु।

पुष्पाग्र–पु० (सं०) गर्भकेशर, बीजकोप।

पुष्पाजीव, पुष्पाजीवी(विन्)–पु० (सं०) माली।

पुष्पानन–पु० (सं०) एक तरहकी शराब; एक यक्ष।

पुष्पापण–पु० (सं०) फूलकी मंडी ।

पुष्पापीड–पु० (सं०) सिरपर धारण की जानेवाली फूलकी माला आदि ।

पुष्पाभिषेक–पु० (सं०) पुष्पस्नान ।

पुष्पायुध–पु० (सं०) कामदेव ।

पुष्पाराम–पु० (सं०) फुलवारी ।

पुष्पावचय–पु० (सं०) फूल लोढ़ना, पुष्पचयन ।

पुष्पावचायी (यिन्)–पु० (सं०) माली ।

पुष्पासव–पु० (सं०) मधु; फूलोंसे बनी हुई शराब ।

पुष्पासार–पु० (सं०) फूलोंकी वर्षा ।

पुष्पास्तरक, पुष्पास्तरण–पु० (सं०) पुष्प बिखेरने, पुष्प-शय्या आदि तैयार करनेकी कला ।

पुष्पास्त्र–पु० (सं०) कामदेव ।

पुष्पाह्वा–स्त्री० (सं०) शतपुष्पी, सौंफ ।

पुष्पिका–स्त्री० (सं०) दाँतकी पपड़ी; लिंगका मैल; किसी ग्रंथके किसी अध्यायका वह समापक वाक्य जिसमें प्रतिपाद्यकी समाप्तिकी सूचना तथा लेखकके नाम, रचनाकालादिका उल्लेख रहता है ।

पुष्पिणी–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पित–वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल लगे हों; रंग-बिरंगा, चितकबरा; अलंकृत (भाषण आदि) ।

पुष्पिता–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री ।

पुष्पिताग्रा–स्त्री० (सं०) एक वृत्त ।

पुष्पी (ष्पिन्)–वि० (सं०) फूलोंसे युक्त, जिसमें फूल लगे हों ।

पुष्पेषु–पु० (सं०) कामदेव ।

पुष्पोद्गम–पु० (सं०) फूल लगना ।

पुष्पोद्यान–पु० (सं०) फुलवारी ।

पुष्पोपजीवी (विन्)–पु० (सं०) माली ।

पुष्य–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध नक्षत्र; पूसका महीना; कलिकाल; फूल (वै०) । **–मित्र**–पु० शुंगवंशका पहला राजा जो अंतिम मौर्य सम्राट् बृहद्रथको मारकर ई० पू० १८५ में मगधके सिंहासनपर आरूढ़ हुआ था । **–योग**–पु० चंद्रमाके पुष्य नक्षत्रपर स्थिर रहनेका योग । **–रथ**–पु० दे० 'पुष्परथ' । **–स्नान**–पु० पुष्य-योग में किया जानेवाला अभिषेक ।

पुष्यलक–पु० (सं०) दे० 'पुष्कलक' ।

पुष्या–स्त्री० (सं०) पुष्य नक्षत्र ।

पुष्याभिषेक–पु० (सं०) दे० 'पुष्यस्नान' ।

पुष्यार्क–पु० (सं०) एक योग जो सूर्यके पुष्य नक्षत्रमें होनेपर होता है (ज्यो०) ।

पुस†–पु० बिल्लीको पुचकारनेका शब्द ।

पुसकर†–पु० दे० 'पुष्कर' ।

पुसाना*–अ० क्रि० पूरा पड़ना; उचित जान पड़ना ।

पुस्त–पु० (सं०) मिट्टी, लकड़ी, लोहे आदिका शिल्प; शिल्पकारी; लकड़ी, धातु आदिकी बनी हुई वस्तु; हाथकी लिखी हुई पोथी; पोथी, किताब । **–कर्म (न्)**–पु० लकड़ी, धातु आदिका शिल्प, कारीगरी । **–कर्मा (र्मन्)**–पु० शिल्पी, कारीगर । **–पाल**–पु० राजकार्य संबंधी पत्रोंको सँभालकर रखनेवाला कर्मचारी; पुस्तकाध्यक्ष । **–वार्त्त**–पु० पुस्तकोंके सहारे जीविका चलानेवाला; पुस्तक बनानेवाला ।

पुस्तक–स्त्री० (सं०) हाथकी लिखी हुई पोथी; ग्रंथ, किताब । **–मुद्रा**–स्त्री० हाथकी एक मुद्रा (तं०) ।

पुस्तक-डाक–पु० (बुकपोस्ट) छपी हुई पुस्तकें, संवादपत्र या उसमें छपनेके लिए भेजे जानेवाले लेख, समाचार आदि डाक-विभाग द्वारा निर्धारित विशेष रिआयती दरसे भेजनेकी रीति ।

पुस्तकाकार–वि० (सं०) जो आकारमें पुस्तकके समान हो, पुस्तकके आकारका ।

पुस्तकागार, पुस्तकालय–पु० (सं०) वह मकान या कमरा जिसमें विभिन्न विषयोंकी पुस्तकें संगृहीत हों, लाइब्रेरी ।

पुस्तकाध्यक्ष–पु० (लाइब्रेरियन) दे० 'ग्रंथागारिक' ।

पुस्तकास्तरण–पु० (सं०) किताब या पोथीका बेठन ।

पुस्तकी–स्त्री० (सं०) छोटा ग्रंथ ।

पुस्तिका–स्त्री० (सं०) छोटी पुस्तक ।

पुस्ती–स्त्री० (सं०) हाथकी लिखी हुई पोथी; पोथी, किताब ।

पुहकर, पुहुकर*–पु० दे० 'पुष्कर' ।

पुहना*–अ० क्रि० पोहा जाना, गूँथा जाना ।

पुहप्प*–पु० पुष्प ।

पुहमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

पुहवै*–पु० प्रभु, स्वामी ।

पुहाना–स० क्रि० गुँथवाना, पिरोनेका काम कराना ।

पुहुप*–पु० फूल, पुष्प । **–राग**–पु० पुष्पराग, पुखराज । **–रेनु**–पु० पुष्परेणु, पराग ।

पुहुमी*–स्त्री० भूमि, पृथ्वी । **–पति**–पु० राजा ।

पुहुवी*–स्त्री० भूमि, पृथ्वी ।

पूँगा–स्त्री० महुवर नामका बाजा । पु० सीपका कीड़ा ।

पूँगी†–स्त्री० एक तरहकी बाँसुरी ।

पूँछ–स्त्री० पशु-पक्षी आदिके शरीरका वह रीढ़से लगा अंग जो प्रायः गुदाके ऊपर-ऊपर दूरतक लंबा चला जाता है, दुम; किसी पदार्थका पिछला भाग; सदा पीछे लगा रहनेवाला; पुछल्ला; पूँछकी तरह जुड़ी हुई वस्तु । मु० **(किसीकी)–पकड़कर चलना**–आँख मूँदकर किसीका अनुगमन करना; किसीकी सहायतासे कोई काम करना ।

पूँछ–स्त्री० दे० 'पूछ' । **–ताछ,–पाछ**–स्त्री० दे० 'पूछ-ताछ' ।

पूँछड़ी–स्त्री० पूँछ; नालेमें चढ़ावके आगे-आगे बहनेवाला पानी ।

पूँछना–स० क्रि० दे० 'पूछना' ।

पूँछलतारा–पु० दे० 'पुच्छलतारा' ।

पूँजी–स्त्री० किसी व्यवसायमें लगाया हुआ धन, वह धन जिससे कोई व्यवसाय आरंभ किया गया हो; मूल धन; जोड़ा-बटोरा हुआ धन, संचित धन; रुपया-पैसा, द्रव्य; किसी विषयका ज्ञान, विद्या-बुद्धि; * समूह, ढेर । **–गतव्यय**–पु० (कैपिटल एक्सपेंडिचर) उत्पादक कार्योंके लिए–जैसे रेलों, नहरों इत्यादिके निर्माणार्थ–किया जानेवाला व्यय । **–दार**–पु० दे० 'पूँजीपति' । **–पति**–पु० वह धनी व्यक्ति जो उद्योग और व्यवसायमें पूँजी लगाकर अपनी जीविका चलाता हो, कारखानेदार; धनी व्यक्ति । **–वाद**–पु० (कैपिटलिज्म) वह आर्थिक प्रणाली जिसमें उत्पादनके तथा वितरणके भी साधन प्रायः थोड़ेसे धनी आदमियोंके ही हाथमें होते हैं, जो अधिकसे अधिक मुनाफा पानेकी दृष्टिसे अपनी इच्छाके अनुसार उनका प्रयोग और संचालन करते हैं । **–वादी**–पु० (कैपिटलिस्ट) पूँजीवादके सिद्धांतोंका प्रयोग या अनुसरण करनेवाला ।

पूँठ*–स्त्री० पीठ ।

पू–वि० (सं०) शुद्ध करनेवाला (समासांतमें) ।

पूआ–पु० दे० 'पुआ' ।

पूखन*–पु० पूषण, सूर्य ।

पूग–पु० (सं०) सुपारीका पेड़ या उसका फल; कटहलका पेड़ या फल; संघ; समूह, राशि; स्वभाव, प्रकृति । **–कृत**–वि० जमा किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, राशीकृत । **–पात्र**–पु० पीकदान; पानदान । **–पीठ**–पु० पीकदान । **–पुष्पिका**–स्त्री० विवाह-संबंध पक्का होनेपर दिया जानेवाला पान-फूल । **–पोट**–पु० सुपारीका नया पेड़ । **–फल**–पु० सुपारी । **–रोट**–पु० हिंतालका पेड़ । **–वैर**–पु० वह विरोध, शत्रुता जो बहुतसे लोगोंसे हो ।

पूगना*–अ० क्रि० पूरा होना–'साँई संग साध नहिं पूगी'–कबीर ।

पूगी–स्त्री० (सं०) सुपारीका पेड़; सुपारी । **–फल**–पु० सुपारी । **–लता**–स्त्री० सुपारीका पेड़ ।

पूग्य–वि० (सं०) समूह-संबंधी ।

पूछ–स्त्री० पूछने, पूछे जानेका भाव या क्रिया; खोज; कद्र, आदर; माँग (वस्तुके लिए) । **–गछ**–स्त्री० दे० 'पूछताछ' । **–ताछ,–पाछ**–स्त्री० किसी बातकी पक्की जानकारीके लिए उसके विषयमें अनेक व्यक्तियोंसे कई प्रकारके प्रश्न पूछना । **–०घर**–पु० किसी कार्यालय आदिका वह स्थान जहाँ उससे संबंधित बातोंकी जानकारी पूछकर प्राप्त की जा सकती है ।

पूछना–स० क्रि० किसी वस्तुके संबंधमें किसीसे कोई प्रश्न करना, किसी बातकी जिज्ञासासे कोई प्रश्न करना; किसीकी कुशल आदिके विषयमें प्रश्न करना; खोज-खबर लेना; कद्र करना; टोकना;

जवाब तलब करना।

पूछरी*–स्त्री॰ पूँछ; पिछला भाग; गोवर्धन पहाड़का अंतिम भाग।

पूछाताछी, पूछापाछी–स्त्री॰ पूछताछ करनेकी क्रिया।

पूजक–पु॰ (सं॰) पूजा करनेवाला, उपासक।

पूजन–पु॰ (सं॰) पूजनेकी क्रिया, अर्चन; सत्कार, आवभगत; आदरकी वस्तु।

पूजना–स॰ क्रि॰ पत्र, पुष्प, गंध, फल, जल आदि समर्पित करके ईश्वर या किसी विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण, स्तवन आदि करना, ईश्वर या किसी देवताका अर्चन, आराधना करना; सत्कार करना, आवभगत करना; घूस देना, जेब गरम करना (ला॰)। अ॰ क्रि॰ पूरा होना; घाव, गड्ढेका भरकर बराबर होना; बराबर या समतुल्य होना–'सेरसाहि सरि पूज न केऊ'–प॰; वेबाक किया जाना, चुकता होना।

पूजनी–स्त्री॰ (सं॰) मादा गौरैया।

पूजनीय–वि॰ (सं॰) पूजा करने योग्य; आदरके योग्य।

पूजमान–वि॰ पूजित होनेवाला, जिसकी पूजा की जाती हो, पूज्य।

पूजयान–वि॰ (सं॰) आदर-सम्मान करनेवाला।

पूजयितव्य–वि॰ (सं॰) पूजा करने योग्य।

पूजयिता(तृ)–वि॰, पु॰ (सं॰) पूजा करनेवाला।

पूजा–स्त्री॰ (सं॰) पत्र, पुष्प, गंध आदिके समर्पणके साथ ईश्वर या विशिष्ट देवताका ध्यान, स्मरण आदि करनेका कृत्य, अर्चन; सत्कार, आवभगत, संभावना; घूस देना, जेब गरम करना (ला॰); ताड़न, पिटाई (ला॰)। **–कर–**वि॰, पु॰ पूजा करनेवाला। **–गृह–**पु॰ मंदिर, देवालय; उपासना-मंदिर। **–संभार–**पु॰ दे॰ 'पूजोपकरण'।

पूजाधार–पु॰ (सं॰) वह पदार्थ जिसको आधार मानकर किसीकी पूजा की जाय (जैसे–यंत्र, चक्र, प्रतिमा, शालग्राम आदि)।

पूजार्ह–वि॰ (सं॰) पूजाके योग्य, पूजनीय; सत्कारके योग्य, मान्य।

पूजित–वि॰ (सं॰) जिसकी पूजा की गयी हो, अर्चित; जिसका सत्कार किया गया हो, सत्कृत; माना हुआ, स्वीकृत; जिसकी सिफारिश की गयी हो; अध्युषित, आवाद। **–पत्रफला–**स्त्री॰ एक पौधा। **–पूजक–**वि॰ सम्मानित व्यक्तिका सम्मान करनेवाला।

पूजितव्य–वि॰ (सं॰) पूजाके योग्य, पूजनीय।

पूजिल–वि॰ (सं॰) पूजाके योग्य। पु॰ देवता।

पूजोपकरण–पु॰ (सं॰) देवताकी पूजाके लिए आवश्यक वस्तुएँ।

पूज्य–वि॰ (सं॰) पूजा करने योग्य; सत्कारके योग्य, मान्य, आदरणीय। पु॰ सम्मान्य व्यक्ति; श्वशुर। **–पाद–**वि॰ जिनके चरण पूजनीय हों, अति पूज्य। पु॰ देवनंदी। **–पूजा–**स्त्री॰ पूजनीय व्यक्तिकी पूजा।

पूज्यता–स्त्री॰ (सं॰) पूज्य होनेका भाव।

पूज्यमान–वि॰ (सं॰) जो पूजित हो रहा हो, पूजा जाता हुआ।

पूठि*–स्त्री॰ पीठ।

पूड़ा†–पु॰ पुआ; दे॰ 'पुड़ा'।

पूड़ी–स्त्री॰ तवले या मृदंगके मुँहपर मढ़ा हुआ चमड़ा; दे॰ 'पूरी'।

पूत–पु॰ पुत्र, बेटा; (सं॰) सत्य; शंख; श्वेत कुश; विकंकत वृक्ष। वि॰ पवित्र किया हुआ, शुद्ध; साफ किया हुआ (अन्न); प्रायश्चित्त किया हुआ; दुर्गंधवाला, बदबूदार; आविष्कृत। **–क्रतु–**पु॰ इंद्र। **–गंध–**पु॰ बर्बर नामक पौधा। **–तृण–**पु॰ श्वेत कुश। **–द्रु–**पु॰ पलासका पेड़। **–धान्य–**पु॰ तिल। **–पत्री–**स्त्री॰ तुलसी। **–पाप,–पाप्मा(प्मन्)–**वि॰ पापसे रहित, निष्पाप। **–फल–**पु॰ कटहलका पेड़। **–मति–**वि॰ निष्पाप बुद्धिवाला। पु॰ शिव।

पूतक्रतायी–स्त्री॰ (सं॰) पूतक्रतुकी पत्नी, शची।

पूतड़ा–पु॰ छोटे बच्चेका छोटा बिस्तर। **–(ड़ों)के अमीर–**पुश्तैनी अमीर।

पूतन–पु॰ (सं॰) भूतयोनिकी एक जाति या भेद, वेताल।

पूतना–स्त्री॰ (सं॰) एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसे कंसने कृष्णको मारनेके लिए नंदके घर भेजा था, पर वह स्वयं मारी गयी; राक्षसी; बालकोंका एक क्षुद्र रोग; एक प्रकारकी हड़; गंधमासी। **–केश–**पु॰, **–केशी–**स्त्री॰ एक पौधा। **–दूषण,–सूदन,–हा(हन्)–** पु॰ कृष्ण।

पूतनारि–पु॰ (सं॰) कृष्ण।

पूतनिका–स्त्री॰ (सं॰) पूतना राक्षसी।

पूतर–पु॰ (सं॰) एक जलजंतु; तुच्छ व्यक्ति (ला॰)।

पूतरा*–पु॰ दे॰ 'पुतला'; पुत्र, बेटा।

पूता–स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा; एक दूब। † पु॰ बेटा, पुत्र; बोरसी वगैरहमें बरतन रखनेके लिए ऊपर आगे बढ़ा हुआ मिट्टीकी गाँठ-सा उभार।

पूतात्मा(त्मन्)–वि॰ (सं॰) शुद्ध अंतःकरणवाला। पु॰ विष्णु; संत।

पूति–स्त्री॰ (सं॰) पवित्रता, शुद्धता; दुर्गंध, बदबू; सड़ायँध; रोहिष तृण; गंधमार्जार; गंदा पानी; पूय। वि॰ दुर्गंधवाला, बदबू करनेवाला। * पु॰ पुत्र (बीसल॰)। **–कन्या–**स्त्री॰ पुदीना। **–करंज,–करज–**पु॰ करंजका एक भेद। **–कर्ण,–कर्णक–**पु॰ एक रोग जिसमें कानसे मवाद निकलता है। **–काष्ठ–**पु॰ देवदारु। **–काष्ठक–**पु॰ सरलका पेड़। **–कीट–**पु॰ एक तरहकी मधुमक्खी। **–केशर–**पु॰ नागकेशर; गंधमार्जार। **–गंध–**वि॰ जिसमेंसे दुर्गंध निकलती हो, दुर्गंधवाला। स्त्री॰ दुर्गंध, बदबू; गंधक। पु॰ इंगुदीका पेड़। **–गंधा–**स्त्री॰ बकुची। **–गंधि,–गंधिक–**वि॰ दुर्गंधयुक्त, बदबू करनेवाला। **–गंधिका–**स्त्री॰ बकुची; पोय। **–घास–**पु॰ एक प्रकारका जंतु। **–तैला–**स्त्री॰ ज्योतिष्मती। **–नस्य–**पु॰ एक रोग जिसमें श्वासके साथ दुर्गंध निकलती है। **–नासिक–**वि॰ जिसकी नाकसे दुर्गंध निकलती हो। **–पत्र–**पु॰ एक तरहका श्योनाक। **–पत्रिका–**स्त्री॰ प्रसारिणी लता। **–पर्ण,–पर्णक–**पु॰ पूतिकरंज। **–पल्लवा–**स्त्री॰ बड़ा करेला। **–पुष्प–**पु॰ इंगुदी। **–पुष्पिका–**स्त्री॰ मातुलंगा। **–फल–**पु॰, **–फला,–फली–**स्त्री॰ सोमराजी, बकुची। **–भाव–**पु॰ सड़नेकी क्रिया। **–मयूरिका–**स्त्री॰ अजमोदा। **–मुद्गला–**स्त्री॰ रोहिष तृण। **–मूषिका–**स्त्री॰ छछूंदर। **–मृत्तिक–**पु॰ एक नरक। **–मेद–**पु॰ विट्खदिर। **–योनि–**पु॰ योनिका एक रोग। **–रोधी–**पु॰ (ऐंटीसेप्टिक) वे रासायनिक पदार्थ जो कतिपय बैक्टीरियाको नष्ट कर देते हैं तथा अन्य बैक्टीरियाकी बाढ़को रोक देते हैं। उदाहरणके लिए हाइड्रोजन-पर-आक्साइड पूतिरोधी है। **–वक्त्र–**वि॰ जिसके मुँहसे दुर्गंध निकलती हो। **–वात–**पु॰ गंदी हवा; अपान वायु; बेलका पेड़। **–वृक्ष–**सोनापाठा। **–व्रण–**पु॰ मवाद देनेवाला फोड़ा या घाव। **–शाक–**पु॰ बकवृक्ष। **–शारिजा–**स्त्री॰ बनबिलाव, कटास।

पूतिक–पु॰ (सं॰) विष्ठा, मल। वि॰ बदबूदार।

पूतिका–स्त्री॰ (सं॰) पोयका साग; मार्जारी; दीमक। **–मुख–**पु॰ शंबूक, घोंघा।

पूतिकाह्व–पु॰ (सं॰) पूतिकरंज।

पूती–स्त्री॰ गाँठदार जड़; लहसुनकी गाँठ।

पूतीक–पु॰ (सं॰) पूतिकरंज; गंधमार्जार।

पूतीकरंज–पु॰ (सं॰) पूतिकरंज।

पूतीका–स्त्री॰ (सं॰) पोय नामक साग।

पूतुदारु–पु॰ (सं॰) दे॰ 'पूतद्रु'।

पूत्कारी–स्त्री॰ (सं॰) सरस्वती; नागोंकी राजधानी।

पूत्यंड–पु॰ (सं॰) एक प्रकारका हिरन जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है; एक बदबू करनेवाला कीड़ा।

पूयिका–स्त्री॰ (सं॰) पोय।

पूदना†–पु॰ उत्तरी भारतका एक पक्षी।

पून–वि॰ (सं॰) नष्ट; * पूर्ण। † पु॰ जंगली बादामका पेड़; कलपून नामका पेड़।

पूनव–स्त्री॰ दे॰ 'पूनो'।

पूनसलाई–स्त्री॰ वह पतली छोटी लकड़ी जिसपर धुनी हुई रुई लपेटकर पूनी बनाते हैं।

पूनिउँ*–स्त्री॰ दे॰ 'पूनो'।

पूनी–स्त्री॰ धुनी हुई रुईकी मोटी बत्ती जो सूत कातनेके काममें आती है।

पूनो–स्त्री॰ पूर्णिमा।

पून्यो*–स्त्री० दे० 'पूनो' ।

पूप–पु० (सं०) पूआ । **–शाला**–स्त्री० नानबाईकी दूकान (स्मृ०) ।

पूपला, पूपलिका, पूपली, पूपाली, पूपिका–स्त्री० (सं०) एक तरह-की मीठी पूरी ।

पूय–पु० (सं०) पीव, मवाद । **–कुंड**–पु० एक नरक । **–प्रमेह**–पु० प्रमेहका एक भेद । **–भुक्(ज्)**–वि० सड़ा मुर्दा खानेवाला । **–रक्त**–पु० एक रोग जिसमें नाकसे पीव मिला हुआ खून निकलता है; पीव मिला हुआ रक्त । **–वर्द्धन**–वि० जिसके सेवनसे पीवकी वृद्धि हो । **–वह**–पु० एक नरक । **–शोणित**–पु० दे० 'पूयरक्त' । **–स्राव**–पु० पूयका वहना; आँखका एक रोग ।

पूयन–पु० (सं०) मवाद, पीव । (प्यूट्रीफैक्शन) फोड़े आदिमें मवाद आ जाना ।

पूयारि–पु० (सं०) नीमका पेड़ ।

पूयालस–पु० (सं०) आँखका एक रोग जिसमें उसका संधिस्थान सूजकर पक जाता है और उसमेंसे पीव निकलने लगती है ।

पूयोद–पु० (सं०) एक नरक ।

पूर–पु० किसी पकवानके भीतर भरा जानेवाला मसाला; (सं०) जलराशि; प्रवाह; बाढ़; जलाशय; घावको साफ करना या भरना, व्रणशुद्धि; नीबू; बिजौरा नीबू; वाद्य-विशेष; श्वासको नाकसे धीरे-धीरे भीतर ले जाना । * वि० पूर्ण, पूरा ।

पूरक–वि० (सं०) पूरा करनेवाला, पूर्ति करनेवाला; तुष्ट करने-वाला । पु० एक प्रकारका प्राणायाम जिसमें नाकके बायें छेदसे प्राणवायुको धीरे-धीरे भीतर पहुँचाते हैं; बिजौरा नीबू; गुणक अंक (ग०), अशौचकालमें पारे जानेवाले दस पिंडोंमेंसे प्रत्येक जिससे प्रेतके शरीरका एक-एक अंग बनता है (आतिवाहिक शरीरके नष्ट हो जानेपर इन्हीं पिण्डोंसे प्रेतका शरीर बनता है); किसी चीजकी कमी पूरी करनेके लिए ऊपरसे मिलाया जाने-वाला अंश ।

पूरण–पु० (सं०) पूर्ण या पूरा करनेकी क्रिया; भरने या भरे जानेकी क्रिया; एक प्रकारकी रोटी; वृष्टि; भरना; गुणन (ग०); सेतु, पुल; बाँध; समुद्र; सेमलका पेड़; विष्णुतैल; किसी संख्याकी पूर्ति; झुकाना, खींचना (धनुष्); मोड़; सजाना । वि० पूरा करनेवाला; (द्वितीयसे ऊपरका) संख्या-क्रम बतलानेवाला (शब्द); तुष्ट करनेवाला; खींचनेवाला (धनुष्); * पूर्ण ।

पुरणी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; सेमलका पेड़ ।

पूरणीय–वि० (सं०) पूर्ण करने योग्य ।

पूरन–पु० उबाले जानेके बाद सिलपर पिसी हुई मटर, चनेकी दाल । * वि० दे० 'पूर्ण' । **–काम**–वि० दे० 'पूर्णकाम' । **–परब***–पु० पूर्णिमा, पूनो । **–पूरी**–स्त्री० वह पूरी जिसमें पूरन भरा गया हो, पूरन भरी हुई पूरी । **–मासी**†–स्त्री० दे० 'पूर्णमासी' ।

पूरना†–स० क्रि० पूरा करना, पूर्ति करना; सिद्ध करना; पूर्ण करना (मनोरथके साथ); * आच्छादित करना, ढक देना, व्याप्त कर देना; त्योहारों, मांगलिक अवसरोंपर अबीर, चौरेठे आदिसे पृथ्वी-पर विशेष आकारके क्षेत्र बनाना (चौक पूरना); बटना; * बजाना । अ० क्रि० व्याप्त होना; ओत-प्रोत होना; रमना; छाना ।

पूरनिमा–स्त्री० दे० 'पूर्णिमा' ।

पूरब–पु० सूरजके निकलनेकी दिशा, पश्चिमके सामनेकी दिशा । * वि० दे० 'पूर्व' । * अ० पहले, पूर्व ।

पूरबल*–पु० प्राचीन काल, पुराना जमाना; पूर्वजन्म ।

पूरबला*–वि० प्राचीन समयका, पुराना; पूर्वजन्मका ।

पूरबली*–स्त्री० पूर्वजन्मका कर्म ।

पूरबिया†–पु० पूरबी देशका निवासी; दे० 'पूरबी' ।

पूरबी–वि० पूरब-संबंधी; पूरबका । स्त्री० एक राग ।

पूरयितव्य–वि० (सं०) पूरा करने योग्य ।

पूरयिता(तृ)–पु० (सं०) पूर्ण करनेवाला; विष्णु । वि० पूरा करनेवाला; संतुष्ट करनेवाला ।

पूरा–वि० भरा हुआ, परिपूर्ण, खालीका उलटा; जो अपने सभी अंशों, अंगोंसे युक्त हो, समूचा, अन्यून, सकल; जिसमें कोई कोर-कसर न हो, जिसमें किसी प्रकारकी न्यूनता न हो; यथेष्ट, पर्याप्त, जितना चाहिये उतना; जो अधूरा न हो, समाप्त, पूर्ण; सिद्ध; सफल; पक्का; ठीक, सही । मु० **(कोई काम)–उतरना**–भली भाँति संपन्न होना । **(किसीका)–पड़ना**–अँट जाना; कमी न होना । **(दिन)–(रे) करना**–किसी तरह समय बिताना । **(दिन)–होना**–अंतिम समय निकट आना ।

पूरानीत भूमि–स्त्री० (अलूव्हिअल सॉइल) दे० 'जलोढ भूमि' ।

पूराम्ल–पु० (सं०) वृक्षाम्ल ।

पूरिक–पु०, **पूरिका**–स्त्री० (सं०) कचौड़ी ।

पूरित–वि० (सं०) पूरा किया हुआ; भरा हुआ; गुणा किया हुआ, गुणित; तृप्त ।

पूरिया–पु० एक राग । **–कल्याण**–पु० एक संकर राग ।

पूरी–स्त्री० आटेको रोटीकी तरह बेलकर घी या तेलमें छाना हुआ एक पकवान; तबले आदिके मुँहपरका चमड़ा; * घास आदि-का पूला ।

पूरी(रिन्)–वि० (सं०) पूरा करनेवाला; भरनेवाला ।

पूरु–पु० (सं०) मनुष्य (वै०); राजा ययातिका कनिष्ठ पुत्र; जह्नु ऋषिका एक पुत्र; एक राक्षस । **–जित्**–पु० विष्णु ।

पुरुख*–पु० दे० 'पूरुष' ।

पूरुब†–पु० दे० 'पूरब' ।

पूरुष–पु० (सं०) पुरुष; आत्मा ।

पूरुषाद–पु० (सं०) एक नरभक्षी जाति ।

पूर्ण–वि० (सं०) भरा हुआ; समूचा, अखंड, समग्र; पूरा किया हुआ, सिद्ध; समाप्त, संपन्न; जिसे किसी बातकी अपेक्षा न हो, आप्तकाम; यथेष्ट, पर्याप्त; बीता हुआ, अतीत; तृप्त; शब्द-कारी; सशक्त; स्वार्थी; झुकाया हुआ (धनुष्) । पु० जल (वै०); एक देवगंधर्व; एक नाग; एक ताल (संगीत) । **–ककुद्**–वि० तरुण (बैल) । **–काम**–वि० जिसकी सभी इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों, जिसकी कोई इच्छा पूरी होनेको बाकी न हो, परितुष्ट; निरीह । पु० परमेश्वर । **–कालिक**–वि० जो पूरे समय काम करे, जो पूरे समयके लिए नियुक्त किया गया हो; पूरे समयसे जिसका संबंध हो । **–कारण**–वि० पूरा करनेवाला; तृप्त करनेवाला । **–काश्यप**–पु० उन छ तीर्थिकोंमेंसे एक जिन्हें भगवान् बुद्धने पराजित किया था । **–कुंभ**–पु० जल आदिसे भरा हुआ कलसा; एक प्रकारका युद्ध; घड़ेके आकारका (दीवारका) छेद । **–कोशा**–स्त्री० एक ओषधि । **–कोष्ठा**–स्त्री० नागरमोथा । **–गर्भा**–वि० स्त्री० जिसका गर्भ पूरी तरह वृद्धिको प्राप्त हो चुका हो, जो शीघ्र बच्चा जननेवाली हो; पूरनपुडी; कचौडी । **–चंद्र**–पु० पूर्णिमाका चंद्रमा । **–०निभानन**–वि० जिसका मुख पूर्ण चंद्रमाके समान हो । **–तूण**–वि० जिसका तरकस बाणोंसे भरा हो । **–पर्वेंदु**–स्त्री० पूर्णिमा, पूनो । **–पात्र**–पु० जलसे भरा हुआ पात्र; दो सौ छप्पन मुष्टियोंका एक प्राचीन परिमाण; चावलसे भरा हुआ घड़ा जो होमके अंतमें दक्षिणाके रूपमें ब्राह्मणको दिया जाता है; पुत्रजन्मोत्सव आदिके समय स्वामीके शरीरपरसे सेवकों द्वारा लिये जानेवाले वस्त्र, भूषण आदि; सुसंवाद लानेवाले सेवकों या आत्मीय जनोंको बाँटे जानेवाले वस्त्र, भूषण आदि । **–प्रज्ञ**–वि० परम ज्ञानी । पु० मध्वाचार्यका एक नाम । **–०दर्शन**–पु० मध्वाचार्य द्वारा प्रवर्तित दर्शन । **–बीज,–वीज**–पु० बिजौरा नीबू । **–बोध**–वि० दे० 'पूर्णप्रज्ञ' । **–भद्र**–पु० एक नाग (महा-भारत); हरिकेश नामक यक्षका पिता (स्कंद पु०) । **–भेदी-(दिन्)**–पु० एक पौधा । **–मा**–स्त्री० पूनो । **–मानस**–वि० संतुष्ट । **–मास**–पु० पूर्णिमाको किया जानेवाला याग-विशेष; चंद्रमा । **–मासी**–स्त्री० शुक्लपक्षकी अंतिम तिथि जिसमें चंद्रमा अपनी सोलहों कलाओंसे युक्त हो जाता है, पूनो । **–मुख**–पु० एक नाग जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जला था; एक पक्षी । **–योग**–पु० एक प्रकारका बाहुयुद्ध । **–यौवन**–वि० पूरा जवान । **–रथ**–पु० पक्का योद्धा । **–लक्ष्मीक**–वि० श्री या धनसे अच्छी तरह संपन्न । **–वर्मा(र्मन्)**–पु० एक मगधनरेश । **–वर्ष**–वि० जिसकी अवस्था पूरे बीस सालकी हो । **–विराम**–पु० वाक्यकी समाप्तिका सूचक चिह्न । **–विषम**–पु० तालमें एक स्थान (संगीत) । –

वैनाशिक–पु० सर्वशून्यत्ववाद माननेवाला बौद्ध । **–श्री**–वि० धनधान्यसे पूर्ण । **–होम** पु० दे० 'पूर्णाहुति' ।

पूर्णक–पु० (सं०) चाष पक्षी; मुर्गा; एक वृक्ष ।

पूर्णतः(तस्), पूर्णतया–अ० (सं०) अच्छी तरह, पूर्ण रूपसे ।

पूर्णांक–पु० (सं०) पूरी संख्या; अविभक्त संख्या (ग०); किसी प्रश्नपत्रके लिए निर्धारित अंक ।

पूर्णांगद–पु० (सं०) एक नाग ।

पूर्णा–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी पंद्रहवीं कला; पंचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या; दक्षिण भारतकी एक नदी ।

पूर्णाघात–पु० (सं०) तालमें एक विशेष स्थान (संगीत) ।

पूर्णाधिकारप्राप्त दूत–पु० (मिनिस्टर प्लेनीपोटेंशिअरी) वह दूत जिसे स्वविवेकसे काम लेते हुए यथावश्यक निर्णय करनेका पूरा अधिकार दिया गया हो ।

पूर्णाधिवेशन–पु० (प्लीनरी सेशन) किसी सभा, संस्था आदिका पूरा अधिवेशन–वह अधिवेशन जिसमें उसके सभी सदस्य सम्मिलित हो सकें ।

पूर्णानंद–पु० (सं०) परमेश्वर ।

पूर्णानक–पु० (सं०) पटह; पटहकी ध्वनि; पुत्रजन्मोत्सवके अवसरपर मित्रों आदिको दी जानेवाली भेंट ।

पूर्णाभिलाष–वि० (सं०) संतुष्ट, परितृप्त ।

पूर्णाभिषिक्त–पु० (सं०) शाक्तोंका एक भेद ।

पूर्णाभिषेक–पु० (सं०) शाक्तोंका एक संस्कार, महाभिषेक ।

पूर्णामृता–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी सोलहवीं कला ।

पूर्णायु(स्)–स्त्री० (सं०) सौ वर्षकी आयु (मनुष्यकी पूरी आयु सौ वर्षकी मानी गयी है) । वि० सौ वर्षकी आयुवाला । पु० एक गंधर्व ।

पूर्णालक–पु० (सं०) दे० 'पूर्णानक' ।

पूर्णावतार–पु० (सं०) वह अवतार जिसमें ईश्वर अपनी सभी कलाओंसे युक्त होकर अवतीर्ण हुआ हो, विष्णुका चौथा, सातवाँ और आठवाँ अवतार ।

पूर्णाश–वि० (सं०) जिसकी आशा पूरी हो चुकी हो ।

पूर्णाहुति–स्त्री० (सं०) वह आहुति जिससे होमकर्म समाप्त किया जाता है, होमकर्मकी अंतिम आहुति; किसी कार्यका वह अंग जिससे वह पूर्णताको प्राप्त हो, किसी कार्यका पूरक अंश ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी–स्त्री० (सं०) शुक्ल पक्षकी अंतिम तिथि, पूनो ।

पूर्णेंदु–पु० (सं०) सोलहों कलाओंसे युक्त चंद्रमा; पूर्णिमाका चंद्र ।

पूर्णोत्कट–पु० (सं०) एक पूर्वदेशीय पर्वत ।

पूर्णोदरा–स्त्री० (सं०) एक देवी ।

पूर्णोपमा–स्त्री० (सं०) उपमालंकारका वह भेद जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और साधारण धर्म, ये चारों अंग उक्त हों ।

पूर्त–वि० (सं०) पूरा किया हुआ, पूरित; ढका हुआ, छन्न, व्याप्त; पालित; रक्षित । पु० पूरा करना; पालन; कुआँ, तालाब खोदवाने, मंदिर बनवाने आदिका धार्मिक कृत्य; पुरस्कार । **–विभाग**–पु० वह सरकारी विभाग जिसके जिम्मे सड़क, नहर, पुल आदि बनवानेका काम रहता है, तामीरातका मुहकमा, 'पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट', सार्वजनिक निर्माण-विभाग । **–संस्था**–स्त्री० (चैरिटेबिल इंस्टिटयूशन) कुआँ, तालाब आदि धर्मार्थ बनवानेवाली संस्था ।

पूर्ति–स्त्री० (सं०) पूरा करनेकी क्रिया, पूरण; संतुष्टि; तृप्ति; गुणा करना, गुणन; पुरस्कार देना; पुरस्कार; (सप्लाई) उपभोक्ताओंकी आवश्यकता पूरी करनेके लिए उन्हें चीजें देना; जुटाना, समायोग ।

पूर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) पूरा करनेवाला; उदाराशय; लोककल्याणके कार्य करनेवाला ।

पूर्त्यधिकारी–पु० (सप्लाई ऑफिसर) जनताकी आवश्यकताकी कतिपय वस्तुओं–लोहा, सीमेंट, कपड़ा आदिके समुचित वितरणकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी ।

पूर्ब–वि०, पु०, अ० (सं०) दे० 'पूर्व' (समास भी) ।

पूर्य–वि० (सं०) पूरा करने योग्य, पूरणीय; परिपालनके योग्य ।

पूर्वंगम–वि० (सं०) पूर्वगामी ।

पूर्व–वि० (सं०) पूरबी; पहला, प्रथम, आद्य; पहलेका, आगेका; प्राचीन, पुराना; पिछला; पूरबमें स्थित; पहले कहा हुआ; बहुत दिनोंसे चला आता हुआ (रिवाज आदि) । पु० पुरखा; सूरजके निकलनेकी दिशा, पूरब; अग्रभाग । अ० पहले, पेश्तर । **–कर्म(न्)**–पु० पहला काम, प्रथम कार्य; पूर्वजन्मका कर्म; तैयारी । **–कल्प**–पु० प्राचीनकाल । **–काय**–पु० जानवरोंके शरीरका अगला भाग; मनुष्यके शरीरका ऊपरी भाग । **–काल**–पु० प्राचीन काल, पुराना समय; पहलेका समय, बीता हुआ समय । वि० प्राचीन कालका । **–कालिक,–कालीन**–वि० पूर्वकालसंबंधी; पुराना, प्राचीन; पहलेका । **–कालिक क्रिया**–स्त्री० वह क्रिया जिसे पूरा कर कर्ता दूसरा कार्य करे (जैसे वह 'खाकर' पढ़ने लगा) । **–काष्ठा**–स्त्री० पूरब, प्राची । **–कृत**–वि० जो पहले किया गया हो । पु० पहलेका कर्म; पूर्व जन्मका कर्म । **–कृत्**–पु० (पूर्व दिशाका सूचक) सूर्य; (पूर्व दिशाका अधिपति) इंद्र । **–क्रयका अधिकार**–पु० (राइट ऑफ प्री-एंपशन) कोई संपत्ति आदि औरोंसे पहले खरीद सकनेका विधिक अधिकार, हकशुफा । **–कोटि**–स्त्री० वादका पूर्वपक्ष । **–गंगा**–स्त्री० नर्मदा नदी । **–ग**–वि० पहले जानेवाला; पहलेका, आगेका, पूर्ववर्ती । **–गत**–वि० पहले गया हुआ । **–गामी(मिन्)**–वि० दे० 'पूर्वंग' । **–चित्ति**–स्त्री० एक अप्सरा । **–ज**–वि० जिसकी उत्पत्ति पहले हुई हो, पहले जनमा हुआ । पु० बापसे पहलेकी पीढ़ीमें उत्पन्न पुरुष, पुरखा; बड़ा भाई, अग्रज; चन्द्रलोकमें रहनेवाले दिव्य पितृगण; मनुष्योंके पूर्व पुरुष; बड़ी पत्नीका जेठा लड़का; सबसे बड़ा लड़का । **–जन्म(न्)**–पु० वर्तमान जन्मसे पहलेका जन्म, पिछला जन्म । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० जेठा भाई । **–जा**–स्त्री० बड़ी बहन । **–जाति**–स्त्री० पूर्व जन्म । **–जिन**–पु० पुराने समयके जिन, मंजुघोष आदि । **–ज्ञान**–पु० पूर्व जन्मका ज्ञान; पूर्व जन्ममें उपार्जित ज्ञान; आगे आनेवाली घटनाओंका पहलेसे ही बोध या आभास हो जाना । **–तिथित**–वि० (एंटीडेटेड) (वह प्रलेखादि) जिसमें वास्तविक तिथिसे पहलेकी तिथि दी गयी हो । **–दक्षिण**–वि० अग्निकोणमें स्थित, अग्निकोणीय । पु० अग्निकोण । **–दत्त**–वि० पहले दिया हुआ । **–दिक्(श्)**–स्त्री० पूरब, प्राची । **–०पति**–स्त्री० इंद्र । **–दिगीश**–पु० इंद्र । **–दिन**–पु० दिनका मध्याह्नसे पहलेका भाग । **–दिश्य**–वि० पूरब; पूरबी । **–दिष्ट**–पु० प्रारब्धके अनुसार नियत सुख, दुःख आदि । वि० जिसका विधान पहले किया जा चुका हो, पूर्वविहित । **–दुष्कृत**–पु० पूर्व जन्मका कुकृत्य । **–देव**–पु० प्राचीन देवता; असुर; नर और नारायण; पितर । **–देवता**–पु० पितर । **–देश**–पु० पूरबी देश; भारतका पूरबी भाग । **–देह**–स्त्री० वह शरीर जिसे त्यागकर वर्तमान शरीर धारण किया गया हो; पूर्व जन्मवाला शरीर; शरीरका अगला या ऊपरी भाग । **–देहिक,–दैहिक**–वि० पूर्व जन्ममें किया हुआ । **–धारणा**–स्त्री० (प्रेजूडिस) किसीके पक्ष या विपक्षमें पहलेसे स्थिर की गयी धारणा, कायम कर ली गयी राय । **–धारणान्वित,–धारणायुक्त**–वि० (प्रेजूडिस्ड) जिसने पहलेसे ही किसीके पक्ष या विपक्षमें मत स्थिर कर लिया हो; (वह कथन) जो पूर्वधारणाके आधारपर किया गया हो । **–नडक**–पु० जाँघकी पोली हड्डी । **–निरूपण**–पु० अदृष्ट । **–निश्चित**–वि० जिसका पहलेसे निश्चय हो चुका हो । **–पक्ष**–पु० अगला हिस्सा; शास्त्र-विचारमें किसी संशयवाले स्थलके संबंधमें उठाया गया प्रश्न; किसी विषयके विमर्शकी वह कोटि जिसमें सिद्धांतके विरुद्ध तर्क उपस्थित किये जाते हैं; विवाद या अभियोगमें वादीकी प्रतिज्ञा या नालिश, मुद्दईकी फरियाद; कृष्ण पक्ष । **–पक्षी(क्षिन्)**–वि०, पु० पूर्व पक्ष उपस्थित करनेवाला । **–पथ**–पु० पहलेका मार्ग; पुराना मार्ग । **–पद**–पु० समासमें पहला पद; पहला स्थान । **–पर्वत**–पु० उदयाचल । **–पाली(लिन्)**–पु० इंद्र । **–पितामह**–पु० पुरखा, पूर्वज; प्रपितामह । **–पीठिका**–स्त्री० पहली पीठिका, भूमिका । **–पुरुष**–पु० पुरखा, दादा-परदादा आदि । **–प्रज्ञा**–स्त्री० अतीतका ज्ञान, स्मृति । **–प्लावनिक**–वि० (एंटी डाइलूवियल) प्रलयके समयकी बाढ़के

पहलेका । **–फल्गुनी, –फाल्गुनी**–स्त्री० दे० 'पूर्वाफाल्गुनी' । **–०भव**–पु० वृहस्पति । **–वंधु**–पु० पहला या सबसे अच्छा मित्र । **–वाध**–पु० पहले हुए निश्चय आदिको स्थगित या रद्द करना । **–भाग**–पु० अगला या ऊपरका भाग । **–भाद्रपदा**–स्त्री० दे० 'पूर्वाभाद्रपदा' । **–भाव**–पु० पूर्वसत्ता; प्राथमिकता; विचारकी अभिव्यक्ति, पूर्वराग (सा०) । **–भावी(विन्)**–पु० कारण । वि० पूर्ववर्ती । **–भाषी(षिन्)**–वि० पहले वोलनेका इच्छुक; नम्र, विनयी । **–भुक्ति**–स्त्री० पहलेसे चला आता हुआ कब्जा । **–भूत**–वि० जो पहले हुआ हो । **–मारी(रिन्)**–वि० पहले मरनेवाला । **–मीमांसा**–स्त्री० मीमांसा दर्शनका वह भाग जिसमें कर्मकांडका तात्त्विक विवेचन किया गया है । **–मेघ**–पु० मेघदूतका पूर्वार्द्ध । **–यक्ष**–पु० मणिभद्र नामक जिन । **–रंग**–पु० विघ्नशांतिके लिए अभिनयके आरंभमें किये जानेवाले कृत्य–नांदी-पाठ आदि । **–राग**–पु० नायक और नायिकामें श्रवण, दर्शन आदिके कारण मिलनसे पहले उत्पन्न होनेवाला अनुराग । **–राज**–पु० भूतपूर्व नरेश । **–रात्र**–पु० रात्रिका पूर्व भाग । **–रूप**–पु० पहलेवाला रूप, वह रूप जो पहले रहा हो; ऐसा लक्षण जिससे किसी भावी वस्तुके आगमकी सूचना मिले; रोगका आरंभिक लक्षण; आसार; एक अर्थालंकार जहाँ किसीके विनष्ट गुण, रूप आदिके फिरसे आ जाने या उस वस्तु अथवा व्यक्तिके पुनः अपने पूर्व रूपमें आ जानेका वर्णन होता है । **–वय(स्),–वयस**–पु० वचपन । **–वया(यस्)**–वि० वचपनकी अवस्थावाला । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० पहले होनेवाला, पहलेका । **–वाद**–पु० वादीका अभियोग या दावा, मुद्दईकी नालिश । **–वादी(दिन्)**–पु० मुद्दई, वादी । **–विद्**–वि० जिसे पुरानी वातें मालूम हों, पुराविद् । **–विहित**–वि० पहले जमा किया हुआ या गाड़ा हुआ (धन) । **–वृत**–वि० पहले चुना हुआ । **–वृत्त**–पु० पुराना वृत्तांत; इतिहास; पहलेका चरित्र या आचरण । **–वैरी(रिन्)**–पु० पहलेका वैरी, पुराना शत्रु; शत्रुता आरंभ करनेवाला । **–शैल**–पु० उदयाचल । **–संचित**–वि० पहले एकत्र किया हुआ । **–संध्या**–स्त्री० प्रातःकाल । **–मोदन**–पु० (प्रीवियस सैंकशन) किसी आदेश, नियमादिके संवंधमें उच्चाधिकारियोंसे पहलेसे ही प्राप्त कर ली गयी स्वीकृति या पुष्टि । **–सक्थ**–पु० जंघाका ऊपरी भाग । **–समिक**–पु० द्यूतगृहका प्रधान । **–सर**–वि० आगे चलनेवाला, अग्रसर । **–सागर**–पु० पूर्वी समुद्र । **–सार**–वि० पूरवकी ओर जानेवाला । **–साहस**–पु० पहला या सवसे वड़ा दंड । **–सुप्त**–वि० पहलेसे सोया हुआ । **–स्थिति**–स्त्री० पहलेकी दशा ।**–०स्थापन**–पु० (रेस्टिट्यूशन) (लचीलेपन आदिके कारण) पुनः पूर्वस्थितिको प्राप्त हो जाना, प्रत्यास्थापन ।

पूर्वक–अ० (सं०) साथ, सहित (संज्ञाके साथ प्रयुक्त, जैसे कृपापूर्वक) । वि० पहलेका; पहला । पु० पुरखा ।

पूर्वतः(तस्)–अ० (सं०) पहले, प्रथमतः; सामने ।

पूर्वतन–वि० (सं०) पहला, पुराना ।

पूर्वता, पूर्ववर्तिता, पूर्वस्थानीयता–स्त्री० (प्रेसीडेंस) समय या स्थान आदिकी दृष्टिसे पहले रखे जाने, विचार किये जाने आदिका भाव ।

पूर्वत्र–अ० (सं०) पहले; पहले भाग या स्थानमें ।

पूर्ववत्–अ० (सं०) पहलेकी तरह । पु० कार्यका वह अनुमान जो उसके कारणको देखकर किया जाय । **–वत्करण**–पु० (रेस्टोरेशन) पहलेकी स्थितिमें ला देना, पहुँचा देना; फिर चालू कर देना, प्रभावी बना देना ।

पूर्वांबुधि–पु० (सं०) पूरवी समुद्र ।

पूर्वा–स्त्री० (सं०) प्राची, पूरव । **–फाल्गुनी**–स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे ग्यारहवाँ नक्षत्र । **–भाद्रपदा**–स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे पचीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाग्नि–स्त्री० (सं०) आवसथ्य अग्नि ।

पूर्वाचल, पूर्वाद्रि–पु० (सं०) उदयाचल ।

पूर्वाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) पहलेका अधिकारी ।

पूर्वानिल–पु० (सं०) पूरवी हवा, पुरवा ।

पूर्वानुमान–पु० (फोरकास्ट) निकट भविष्यमें होनेवाली वर्षा, ठंड, पैदावार या किसी संभावित घटना आदिके संबंधमें पहलेसे किया गया अनुमान ।

पूर्वानुमित निष्कर्ष–पु० (फोरगॉन कॉनक्लूजन) वह निष्कर्ष या नतीजा जिसका अनुमान पहलेसे ही कर लिया गया हो ।

पूर्वानुराग–पु० (सं०) दे० 'पूर्वराग' ।

पूर्वापर–वि० (सं०) अगला और पिछला; पूरव और पच्छिमका । पु० आगा-पीछा; प्रमाण और प्रमेय ।

पूर्वापराध पत्र–पु० दे० 'वृत्तपत्र' ।

पूर्वापराधी–पु० (हिस्ट्रीशीटर) वह मुलजिम या कैदी जो पहले कई वार अपराध (जुर्म) कर चुका हो ।

पूर्वापर्य–पु० (सं०) पूर्वापरका भाव ।

पूर्वाभिनय–पु० (रिहर्सल) शीघ्र खेले जानेवाले किसी नाटकका या निर्धारित समयपर किये जानेवाले हमले आदिका पहलेसे किया गया पूरा अभिनय या अभ्यास ।

पूर्वाभिमुख–वि० (सं०) जिसका रुख पूरवकी ओर हो । अ० पूरवकी ओर ।

पूर्वाभिषेक–पु० (सं०) पहलेका स्नान; एक मंत्र ।

पूर्वाभ्यास–पु० (सं०) पहले किया हुआ अभ्यास; पहलेका अभ्यास ।

पूर्वाराम–पु० (सं०) एक वौद्ध मठ ।

पूर्वार्चिक–पु० (सं०) सामवेदका पूर्वार्द्ध ।

पूर्वार्जित–वि० (सं०) पहलेका उपार्जन किया हुआ, पहलेका कमाया हुआ । पु० पैतृक संपत्ति ।

पूर्वार्द्ध, पूर्वार्ध–पु० (सं०) दो वरावर भागोंमेंसे पहला भाग, उत्तरार्द्धका उलटा ।

पूर्वार्धिक–वि० (सं०) दे० 'पूर्वार्ध्य' ।

पूर्वार्ध्य–वि० (सं०) पूर्वार्ध-संवंधी; पूर्वार्धका ।

पूर्वावेदक–पु० (सं०) वादी, मुद्दई ।

पूर्वावधानता–स्त्री० (प्रीकाशन) अनिष्ट या हानिकर परिणामकी संभावनाका खयाल कर पहलेसे सावधान हो जानेकी क्रिया ।

पूर्वाशा–स्त्री० (सं०) पूर्व दिशा ।

पूर्वाश्रम–पु० (सं०) ब्रह्मचर्याश्रम ।

पूर्वाषाढ़ा–स्त्री० (सं०) सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे वीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाह–पु० (सं०) दे० 'पूर्वाह्ण' ।

पूर्वाह्ण–पु० (सं०) दिनका पहला भाग, दिनके पहले दो प्रहर ।

पूर्वाह्णिक–वि० (सं०) पूर्वाह्ण-संबंधी । पु० दिनके पहले भागमें किया जानेवाला कृत्य ।

पूर्वाह्न–पु० दे० 'पूर्वाह्ण' ।

पूर्वी–वि० पूरवका, पूरवी । **–घाट**–पु० दक्षिण भारतके पूरवी तटपरकी वालासोरसे कन्याकुमारीतककी पर्वतमाला । **–द्वीप-समूह**–पु० भारतके पूरवमें स्थित जावा, सुमात्रा, वोर्नियो आदि द्वीपोंका समूह ।

पूर्वीण–वि० (सं०) पुराना; पैतृक ।

पूर्वेतर–वि० (सं०) पश्चिमी ।

पूर्वेद्युः(द्युस्)–अ० (सं०) पिछले दिन, पूर्व दिन । पु० प्रातःकाल; पिछला दिन; एक विशेष श्राद्ध ।

पूर्वोक्त, पूर्वोदित–वि० (सं०) जिसका कथन पहले हो चुका हो, पहले कहा हुआ ।

पूर्वोदाहरण–पु० (प्रेजीडेंट) पहलेकी कोई घटना या मामला जो वादकी वैसी ही घटनाओंके लिए उदाहरण या नजीरका काम दे; किसी न्यायालयका वह अभिनिर्णय या कार्यविधि जो आदर्श या नजीरका काम दे; नजीर ।

पूर्वोत्तर–वि० (सं०) उत्तरी-पूरवी । पु० दे० 'पूर्वोत्तरा' ।

पूर्वोत्तरा–स्त्री० (सं०) पूरव और उत्तरके वीचकी दिशा, ईशान कोण ।

पूर्वोपाय–पु० (प्रीकाशन) अनिष्ट या हानिकी संभावना रोकनेके लिए या उससे वचावके लिए पहलेसे किया गया उपाय ।

पूल, पूलक–पु० (सं०) तृण आदिका ढेर, पूला ।

पूला–पु० तृण आदिका वँधा हुआ मुट्ठा; एक छोटा जंगली पेड़ जिसकी छालके रेशेसे रस्से तैयार किये जाते हैं ।

पूलाक–पु० (सं०) दे० 'पुलाक' ।

पूलिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी मीठी पूरी ।

पूली–स्त्री० छोटा पूला ।

पूल्य–पु० (सं०) खोखला दाना, पैया ।

पूवा†–पु०·दे० 'पुआ' ।

पूष–पु० अगहनके बादका महीना, पौष; (सं०) शहतूतका पेड़ ।

पूषक–पु० (सं०) शहतूतका पेड़ ।

पूषण, पूषन*–पु० सूर्य ।

पूषा–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी तीसरी कला ।

पूषा(षन्)–पु० (सं०) सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे एक । **–(ष)-दंतहर**–पु० वीरभद्र (जिसने सूर्यका दाँत तोड़ा था) । **–भासा**–स्त्री० इंद्रकी पुरी ।

पूषात्मज–पु० (सं०) इंद्र; मेघ, बादल ।

पूषासुहृद्(त्)–पु० (सं०) शिव ।

पूस–पु० पौष मास ।

पृक्का–स्त्री० (सं०) एक शाक, असवर्ग ।

पृक्त–वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित; संबद्ध, युक्त, भरा हुआ, पूर्ण । पु० धन, संपत्ति ।

पृक्ति–स्त्री० (सं०) मिलाव, मिश्रण; संपर्क, संबंध, योग; स्पर्श ।

पृक्थ–पु० (सं०) धन, संपत्ति ।

पृच्छक–पु० (सं०) पूछनेवाला, जिज्ञासु ।

पृच्छन–पु० (सं०) पूछनेकी क्रिया, पूछना ।

पृच्छा–स्त्री० (सं०) प्रश्न; भविष्य-संबंधी प्रश्न ।

पृतना–स्त्री० (सं०) सेना; वह सेना जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ; ७२९ अश्वारोही और १२१५ पैदल सिपाही हों; संग्राम । **–पति**–पु० सेनापति । **–षाट्(ह्)**–पु० इंद्र ।

पृतन्या–स्त्री० (सं०) सेना ।

पृतन्यु–वि० (सं०) शत्रुता करनेवाला, आक्रामक ।

पृथक्–अ० (सं०) अलग, जुदा, बिना, भिन्न । **–करण**–पु०, **–क्रिया**–स्त्री० अलग करनेका काम; विश्लेषण । **–कुल**–वि० दूसरे कुलका, भिन्न कुलका । **–क्षेत्र**–पु० एक पिता, पर भिन्न मातासे जनमी हुई संतति । **–चर**–वि० अलग या अकेले जानेवाला; अलग या अकेले विचरनेवाला । **–त्वचा**–स्त्री० मूर्वालता । **–पर्णी**–स्त्री० पृश्निपर्णी; पिठवन । **–पिंड**–पु० दूरवर्ती संबंधी जो साथ पिंड न देकर अकेले दे । **–शय्या**–स्त्री० अलग सोना । **–शायी(यिन्)**–वि० अकेले या अलग सोनेवाला ।

पृथक्ता–स्त्री० **पृथक्त्व**–पु० (सं०) पृथक् होनेका भाव, भिन्नता, अलहदगी; चौबीस गुणोंमेंसे एक (न्या०) ।

पृथक्तावादी नीति–स्त्री० (आइसॉलेशनिज्म) (द्वितीय महायुद्धके पूर्व) अमेरिकाके कतिपय राजनीतिज्ञों तथा राजनेताओंका यह मत कि अमेरिकाको यूरोपीय झगड़ोंसे पृथक् रहना चाहिये ।

पृथग्–'पृथक्'का समासगत रूप । **–आत्मता**–स्त्री० भेद; विशेष, वैशिष्टच । **–आत्मा(त्मन्)**–वि० भिन्न, विशिष्ट । **–आत्मिका**–स्त्री० वैशिष्टच, व्यक्तित्व । **–गोत्र**–वि० भिन्न कुलका । **–जन**–पु० निम्न वर्गका व्यक्ति; नीच, कमीना । **–बीज**–पु० भिलावाँ । **–भाव**–पु० भिन्न अवस्था; अंतर, भिन्नता । **–रूप**–वि० अनेक रूपोंवाला, नाना प्रकारका । **–वासन-नीति**–स्त्री० (एपारथाइड पालिसी) कुछ लोगोंको अन्य लोगोंसे–दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंको यूरोपियनोंसे–पृथक् बसानेकी नीति । **–विध**–वि० नाना प्रकारका ।

पृथवी–स्त्री० (सं०) दे० 'पृथ्वी' ।

पृथा–स्त्री० (सं०) पांडुपत्नी कुंती । **–ज**–पु० कुंतीपुत्र, अर्जुन आदि; अर्जुन वृक्ष । **–तनय**–पु० युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम (विशेषतः अर्जुन) । **–पति**–पु० राजा पांडु । **–सुत,–सूनु**–पु० दे० 'पृथातनय' ।

पृथिका–स्त्री० (सं०) कनखजूरा ।

पृथिवी–स्त्री० (सं०) दे० 'पृथ्वी' । **–कंप**–पु० भूडोल । **–क्षित्, –नाथ**–पु० राजा । **–तल**–पु० पृथ्वीकी सतह, धरातल । **–पति**–पु० राजा; यम; ऋषभ नामकी ओषधि । **–परिपालक,–पाल, –भुक्(ज्),–भुजंग**–पु० राजा । **–प्लव**–पु० समुद्र । **–भृत्**–पु० पहाड़ । **–मंडल**–पु० दे० 'भूमंडल' । **–रुह**–पु० पौधा, वृक्ष । **–लोक**–पु० मर्त्यलोक । **–शक्र**–पु० राजा ।

पृथी–पु० (सं०) एक पौराणिक राजा । *स्त्री० दे० 'पृथ्वी' । **–नाथ***–पु० राजा ।

पृथु–वि० (सं०) विस्तीर्ण, चौड़ा; महान्, विशाल; मोटा; प्रभूत; बहुसंख्यक; चतुर; विशिष्ट । पु० अग्नि; शिव; एक विश्वेदेव; विष्णु; एक दानव; इक्ष्वाकुवंशका एक राजा जिसका पुत्र त्रिशंकु हुआ; वेणुके पुत्र जो प्रथम राजा माने जाते हैं (इन्होंने ही गोरूपधारिणी पृथ्वीसे ओषधियोंका दोहन किया था) । स्त्री० काला जीरा; अफीम; हिंगुपत्नी । **–कीर्ति**–स्त्री० वसुदेवकी एक बहन । वि० बड़ी कीर्तिवाला, महान् यशस्वी । **–कोल**–पु० बड़ा बेर । **–ग्रीव**–वि० मोटी गर्दनवाला । **–च्छद**–पु० हरे रंगका कुश । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दूरतक देखनेवाला, दूरदर्शी । **–पत्र**–पु० लाल लहसुन । **–पलाशिका**–स्त्री० शटी, कचूर । **–पाणि**–वि० लंबे हाथोंवाला । **–प्रथ,–यशा(शस्)**–वि० बहुत विख्यात । **–बीजक**–पु० मसूर । **–रोमा(मन्)**–पु० मछली । **–लोचन**–वि० बड़ी आँखोंवाला । **–शिंव**–पु० सोना-पाठा । **–शृंग**–पु० मेषका एक भेद । **–शेखर**–पु० पहाड़ । **–श्रवा(वस्)**–वि० बड़े कानोंवाला; बहुत प्रसिद्ध । पु० कार्त्तिकेयका एक अनुचर; रघुका एक पुत्र । नवें मनुका एक पुत्र; एक नाग । **–श्री**–वि० वैभवशाली । **–श्रोणि,–श्रोणी**–वि० स्त्री० जिसकी कटि चौड़ी हो । **–संपद्**–वि० धनी । **–स्कंध**–पु० सूअर ।

पृथुक–पु० (सं०) शिशु; चिउड़ा ।

पृथुका–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्नी; बालिका ।

पृथुता–स्त्री०, **पृथुत्व**–पु० फैलाव; मोटापन; विशालता ।

पृथुल–वि० (सं०) स्थूल, मोटा; विस्तीर्ण, विशाल । **–लोचन**–वि० बड़ी आँखोंवाला । **–वक्षा(क्षस्)**–वि० जिसका सीना चौड़ा हो । **–विक्रम**–वि० बहुत वीर, पराक्रमी ।

पृथुला–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्नी ।

पृथुलाक्ष–वि० (सं०) बड़ी आँखोंवाला ।

पृथूदक–पु० (सं०) सरस्वतीके किनारेका एक तीर्थ जिसका आधुनिक नाम पोहोआ है ।

पृथूदर–वि० (सं०) बड़े पेटवाला । पु० मेढ़ा ।

पृथ्विका–स्त्री० (सं०) दे० 'पृथ्वीका' ।

पृथ्वींद्र–पु० (सं०) राजा ।

पृथ्वी–स्त्री० (सं०) सौर मंडलका वह प्रसिद्ध ग्रह जिसपर मर्त्यलोककी स्थिति है, पाँच महाभूतोंमेंसे एक; पृथ्वीका तल, भूमि, धरती; बड़ी इलायची; हिंगुपत्नी; गदहपुरना; काला जीरा; एक वर्णिक वृत्त । **–कुरबक**–पु० सफेद आक, मदार । **–खात**–पु० गुफा । **–गर्भ**–वि० बड़े पेटवाला । पु० गणेश । **–गृह**–पु० गुफा । **–ज**– पु० मंगल ग्रह; पेड़; साँभर नमक । **–तनया**–स्त्री० सीता । **–धर**–पु० पर्वत । **–नाथ,–पति,–पाल**–पु० राजा । **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह । **–भुक्(ज्),–भृत्**–पु० राजा । **–मंडल**–पु० दे० 'भूमंडल' ।

पृथ्वीका–स्त्री० (सं०) बड़ी इलायची; हिंगुपत्नी; काला जीरा ।

पृथ्वीश–पु० (सं०) राजा ।

पृदाकु–पु० (सं०) बाघ; चीता; हाथी; साँप; बिच्छू; पेड़, वृक्ष ।

पृश्नि–वि० (सं०) छोटे कदका, बौना; दुबला-पतला, क्षीणकाय; नाजुक; चितकबरा । स्त्री० छोटी गाय; किरण; पृथ्वी; कृष्णकी माता देवकी । पु० बौना; एक ऋषि । **–गर्भ,–धर**–पु० कृष्ण । **–पर्णिका,–पर्णी**–स्त्री० पिठवन । **–भद्र**–पु० कृष्ण । **– शृंग**–पु० गणेश; विष्णु ।

पृश्निका–स्त्री० (सं०) जलकुंभी ।

पृश्नी–स्त्री० (सं०) जलकुंभी ।

पृषंति–पु० (सं०) जलकी बूँद ।

पृषत–वि० (सं०) चितकबरा । पु० एक प्रकारका हिरन जिसके शरीरपर सफेद धब्बे होते हैं; धब्बा; जलकी बूँद; वायुका वाहन; द्रुपदके पिता ।

पृषतांपति–पु० (सं०) वायु ।

पृषताश्व–पु० (सं०) वायु ।

पृषत्–पु० (सं०) जल-बिंदु; चितकबरा हिरन । वि० सिक्त करनेवाला; चितकबरा ।

पृषत्क–पु० (सं०) वाण; गोल धब्बा ।

पृषद्–'पृषत्'का समासगत रूप । **–अंश**–पु० वायु; शिव । **–अश्व**–पु० वायु; शिव । **–आज्य**–पु० दही मिला हुआ घी । **–वल**–पु० वायुका घोड़ा ।

पृषद्ध–पु० (सं०) वैवस्वत मनुके एक पुत्र ।

पृषभाषा–स्त्री० (सं०) इंद्रपुरी, अमरावती ।

पृषाकरा–स्त्री० (सं०) पत्थरका बटखरा ।

पृषातक–पु० (सं०) दही मिला हुआ घी ।

पृषोदर–वि० (सं०) जिसके पेटपर बुंदे हों; छोटे पेटवाला । पु० वायु ।

पृषोद्यान–पु० (सं०) छोटा उपवन ।

पृष्ट–वि० (सं०) पूछा हुआ; जिससे पूछा गया हो; सिक्त । पु० प्रश्न । **–हायन**–पु० एक प्रकारका अनाज; हाथी ।

पृष्टि–स्त्री० (सं०) पूछनेकी क्रिया; स्पर्श; किरण; पृष्ठ; पृष्ठ भाग ।

पृष्ठ–पु० (सं०) पीठ; किसी वस्तुका पिछला भाग; किसी वस्तुका ऊपरी भाग, तल; पुस्तकके पन्नेका एक ओरका भाग, सफा; छत (सौधपृष्ठ) । **–ग**–वि० (घोड़े आदिपर) चढ़ा हुआ । **–गामी-(मिन्)**–वि० पीछे चलनेवाला, अनुयायी । **–गोप**–पु० वह सैनिक जो लड़नेवाले योद्धाके पीछे उसकी रक्षाके लिए नियुक्त रहता है । **–ग्रंथि**–वि० कुबड़ा । स्त्री० कूबड़, एक तरहका शोथ । **–ग्रह**–पु० घोड़ोंका एक रोग । **–चक्षु(स्)**–पु० केकड़ा; भालू । **–ज**–वि० जिसकी उत्पत्ति (किसीके) पीछे या बादमें हुई हो । पु० स्कंदका एक रूप । **–तनाव**–पु० (सरफेस टेन्शन) द्रवकी खुली हुई सतहकी प्रवृत्ति एक तनी हुई लचीली झिल्ली सदृश होती है–इस प्रवृत्तिको पृष्ठतनाव कहते हैं । **–तल्पन**–पु० हाथीकी पीठपरकी बाहरी पेशियाँ । **–ताप**–पु० मध्याह्न । **–दृष्टि**–पु० केकड़ा; भालू । **–देश**–पु० पीछेका भाग । **–पाती(तिन्)**–वि० अनुगमन करनेवाला; नियंत्रण करनेवाला । **–पोषक**–वि०, पु० (बँ०, हिं०) सहायक । **–पोषण**–पु० (बँ०, हिं०) सहायता करना । **–भंग**–पु० एक प्रकारका युद्ध । **–भाग**–पु० पिछला भाग । **–भूमि**–स्त्री० मकानकी ऊपरकी मंजिल या छत; पीछेकी भूमि या पीछेका दृश्य, पृष्ठिक; पहलेकी बातें । **–मर्म**–पु० पीठपरका मर्मस्थान । **–मांस**–पु० पीठका मांस । **–मांसाद**–वि०, पु० पीठका मांस खानेवाला; चुगली करनेवाला, चुगलखोर । **–मांसादन**–पु० पीठका मांस खानेकी क्रिया; चुगली खाना । **–यान**–पु० पीठपर चढना, सवारी करना (घोड़े आदिकी) । **–रक्ष**–पु० दे० 'पृष्ठ-गोप' । **–रक्षक युद्ध**–पु० (रेयरगार्ड एक्शन) पीछे हटती हुई सेनाके पृष्ठभाग, पिछले हिस्सेकी रक्षा करनेवाली टुकड़ियों द्वारा शत्रुसे किया गया युद्ध, अनुबलका संघर्ष । **–रक्षण**–पु० पृष्ठभागकी रक्षा । **–लग्न**–वि० पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुयायी । **–वंश**–पु० रीढ़ । **–वाद्(ह्)**–पु० दे० 'पृष्ठवाह्य' । **–वास्तु**–पु० घरके ऊपर बना हुआ घर; मकानकी ऊपरी मंजिल । **–वाह,–वाह्य**–पु० लदुवा वैल । **–शय**–वि० पीठके बल सोनेवाला । **–शीर्षक**–पु० (बैनर हेडलाइन) दे० 'पताकाशीर्षक' । **–श्रंग**–पु० जंगली बकरा । **–शृंगी(गिन्)**–पु० मेढ़ा; भैंसा; हिजड़ा; अर्जुनके भाई भीम । **–श्वेत**–पु० एक तरहका धान । **–सज्जा**–स्त्री० (मेकअप) समाचारपत्रके पृष्ठकी सजावट ।

पृष्ठक–पु० (सं०) पृष्ठ, पीछेकी ओरका हिस्सा ।

पृष्ठतः(तस्)–अ० (सं०) पीछे; पीछेसे, पीठकी ओरसे; चुपकेसे । **–प्रथित**–पु० तलवारका एक हाथ ।

पृष्ठांकन–पु० (एंडार्समेंट) किसी लेख, पत्र, धनादेश आदिकी पीठपर हस्ताक्षर करना, समर्थन आदिके रूपमें कुछ लिख देना या किसीको कुछ दिये जाने आदिका लिखित आदेश देना; समर्थन करना ।

पृष्ठांकित–वि० (एंडार्स्ड) जिसपर या जिसकी पीठपर हस्ताक्षर कर दिया गया या कुछ लिख दिया गया हो ।

पृष्ठानग, पृष्ठानुगामी(मिन्)–वि० (सं०) अनुगमन करनेवाला ।

पृष्ठास्थि–स्त्री० (सं०) पीठकी बीचकी हड्डी, रीढ़ ।

पृष्ठिका–स्त्री० (सं०) पीछेकी भूमि या पीछेका दृश्य; घटनाके पहलेकी बातें या परिस्थितियाँ, पृष्ठभूमि ।

पृष्ठेमुख–पु० (सं०) कार्त्तिकेयका एक अनुचर ।

पृष्ठोदय–पु० (सं०) पीठकी ओरसे उदित होनेवाली राशि (जैसे–मेष, वृष, कर्क, धन, मकर और मीन) ।

पृष्ठ्य–वि० (सं०) पृष्ठ-संबंधी; पीठका । पु० लदुआ घोड़ा ।

पृष्ठ्या–स्त्री० (सं०) लदुई घोड़ी; वेदीके पृष्ठभागका किनारा ।

पृष्णि–स्त्री० (सं०) एड़ी; पिछला भाग; किरण ।

पृष्णिका–स्त्री० (सं०) दे० 'पृश्नी' ।

पृष्णी–स्त्री० (सं०) दे० 'पृश्नी' ।

पें–स्त्री० रोने, बाजा फूँकने आदिसे निकलनेवाला शब्द ।

पेंग–स्त्री० झूलनेके समय झूले या हिंडोलेका आगे-पीछे जाना । †पु० एक पक्षी । **मु० –मारना**–झूलेको वेगसे और दूरतक झुलानेके लिए उसपर जोर पहुँचाना; जोरसे झुलाना या झूलना ।

पेंगिया मैना–स्त्री० मैना चिड़ियाकी एक जाति ।

पेंघट, पेंघा†–पु० एक तरहका पक्षी ।

पेंच–पु० दे० 'पेच' ।

पेंचक–स्त्री० दे० 'पेचक' (फा०) ।

पेंटोड–पु० (अं०) निर्वात नली (वाल्व) जिसमें ५ एलेक्ट्रोड होते हैं : कैथोड, एनोड (प्लेट) तथा इन दोनोंके दर्मियान तीन ग्रिड होते हैं जिनके नाम हैं कन्ट्रोल ग्रिड, स्क्रीन ग्रिड तथा सप्रेसर ग्रिड पेन्टोड ।

पेंठ–स्त्री० दे० 'पैंठ' ।

पेंड–पु० (सं०) रास्ता, सड़क ।

पेंडुलम–पु० (अं०) दीवारघड़ीका वह लटकनेवाला पुरजा जो बराबर हिलता रहता है ।

पेंडुकी†–स्त्री० पंडुक, फाखता; सोनारोंकी फुँकनी; गुझिया नामका पकवान ।

पेंडुली†–स्त्री० दे० 'पिंडली' ।

पेंदा–पु० किसी गहरी वस्तुका निचला भाग जिसके बलपर वह स्थित होती है; किसी गहरी वस्तुका तला ।

पेंदी–स्त्री० 'पेंदा'का अल्पा०; किसी गहरी वस्तुका तला; गुदा; गाजर या मूलीकी जड़ । **मु० (बिना)–का लोटा**–वह मनुष्य जो किसी निश्चित सिद्धांतका न हो; वह मनुष्य जिसकी मति बदला करे; वह मनुष्य जो कभी इस पक्षमें मिल जाय, कभी उस पक्षमें ।

पेंशन–स्त्री० (अं०) वह मासिक या वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति या उसके उत्तराधिकारियोंको उसकी पूर्वसेवाओंके पुरस्कारके रूपमें नियोक्ता या स्वामीकी ओरसे मिलती है । **–याफ्ता**–वि० जिसे पेंशन मिलती हो ।

पेंस–पु० (अं०) पेनीका बहु०, दे० 'पेनी' ।

पेंसिल–स्त्री० (अं०) एक प्रकारकी लेखनी जो लकड़ी या किसी धातुके पोले लंबोतरे टुकड़ेमें विशेष प्रकारके मसालेकी सलाई बैठाकर तैयार की जाती है ।

पेउश, पेउस†–स्त्री० दे० 'पेउसी' ।

पेउसरी†–स्त्री० दे० 'पेउसी' ।

पेउसी†–स्त्री० गाय या भैंसका ब्यानेके दिनसे सात दिनोंतकका दूध; इस दूधमें पकाया हुआ सोंठ, शक्कर आदिका पाक, इन्नर ।

पेखक*–पु० प्रेक्षक, देखनेवाला, दर्शक ।

पेखन*–पु० प्रेक्षण; तमाशा, दृश्य ।

पेखना*–स० क्रि० देखना; पु० दे० 'पेखन', तमाशा ।

पेखनी–स्त्री० प्रेक्षणीय (बढ़िया) वस्तु ।

पेग–पु० (अं०) शराब आदिका पीना; उतनी शराब जितनी एकबार पीनेके लिए गिलासमें डाली जाय; खूँटी ।

पेच–पु० (फा०) लपेट, चक्कर; झंझट, झमेला; मरोड़; कुश्तीका दाँव; पेटका दर्द; एक प्रकारकी कील जिसमें चूड़ियाँ बनी रहती हैं, 'स्क्रू'; मुश्किल, कठिनाई; धोखा; फरेब; चाल; पगड़ीकी लपेट–'रहे पेच करमें पड़े परे पेचमें स्याम'–बिहारी; एक आभूषण जो पगड़ीपर आगेकी ओर बाँधा जाता है, सिरपेच; एक प्रकारका आभूषण जो कानोंपर धारण किया जाता है; कल, मशीन; मशीनका कोई पुरजा; किसी यंत्रका वह अंग या पुरजा जिसे घुमाने, दबाने आदिसे उसमें हरकत पैदा होती है; लड़ाई जानेवाली पतंगों-

की डोरोंका एक-दूसरेसे उलझना; युक्ति, उपाय। –**कश**–पु॰ बढ़इयों, लोहारोंका वह आला जिससे वे पेचोंको घुमा-घुमाकर जड़ते या निकालते हैं; लोहेका वह चक्करदार आला जिससे बोतलका काग निकाला जाता है। –**दार**–वि॰ लपेटवाला; चक्करदार; जिसमें कोई यंत्र लगा हो; जिसमें कोई उलझन या झमेला हो, उलझनवाला। –**व ताव**,–**(चो)ताव**–पु॰ बेचैनी; कुढ़न; फिक्र; अंदेशा; गुस्सा; गम; कहर और गजब। –**वान**–पु॰ फरशीमें लगायी जानेवाली बड़ी सटक; बड़ा हुक्का।

पेचक–पु॰ (सं॰) उल्लू पक्षी; पलँग; बादल; हाथीकी पूँछकी जड़; जूँ। स्त्री॰ (फा॰) बटे हुए तागेकी गोली, रील।

पेचकी–स्त्री॰ (सं॰) उल्लूकी मादा।

पेचकी(किन्)–पु॰ (सं॰) हाथी।

पेचना–स॰ क्रि॰ दो वस्तुओंके बीच उन्हीं जैसी तीसरी वस्तु इस प्रकार मिला या डाल देना कि जल्दी उसकी पहचान न हो सके।

पेचिका–स्त्री॰ (सं॰) एक तरहका उल्लू।

पेचिल–पु॰ (सं॰) हाथी।

पेचिश–स्त्री॰ (फा॰) आमाशयमें मरोड़की बीमारी जिसमें आँव गिरता है।

पेचीदगी–स्त्री॰ पेचीदा होनेका भाव, जटिलता, उलझन।

पेचीदा–वि॰ (फा॰) पेंच या लपेटवाला; चक्करदार; जिसमें उलझन हो, उलझनवाला, जो जल्दी हल न हो सके, कठिन, टेढ़ा।

पेचीला–वि॰ दे॰ 'पेचीदा'।

पेचु, पेचुक–पु॰ (सं॰) एक तरहका शाक।

पेचुली–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'पेचु'।

पेट–पु॰ (सं॰) थैला; पिटारा; समूह; थप्पड़, प्रहस्त; (हि॰) शरीरका वह प्रसिद्ध खोखला अंग जिसमें भोजनका पाक होता है, उदर; पेटके भीतरकी वह थैली जिसमें खायी हुई वस्तु जमा होती है; आमाशय; छातीके नीचेसे लेकर कमरतक फैला हुआ अंग; गर्भ, हमल; मन, दिल; किसी खोखली वस्तुका भीतरका भाग; बंदूक या तोपमें गोली या गोला भरनेकी जगह; जीवनयात्रा, जीविका; एकमें जुड़े हुए चक्कीके पाटोंका भीतरी भाग; सिलका ऊपरी भाग जिसपर रखकर कोई वस्तु पीसी जाती है; रोटीका वह भाग जिधरसे वह पहले सेंकी जाती है। –**चोट्टी**–स्त्री॰ वह स्त्री जो गर्भिणी होते हुए भी बाहरी लक्षणोंसे वैसी न जान पड़े। –**नटा**–पु॰ पेटके लिए नाचनेवाला। –**पूजा**–स्त्री॰ पेट भरना, भोजन करना। –**पोंछना**–पु॰ अंतिम संतान। –**पोसुवा**†–पु॰ वह जिसे केवल अपना पेट भरनेकी चिंता लगी रहे। –**मरानी**–स्त्री॰ पेटके लिए मेहनत या व्यभिचार करनेवाली स्त्री। –**वाली**–वि॰ स्त्री॰ गर्भवती। **मु॰**–**का गहरा**–भेद प्रकट न करनेवाला। –**काटना**–पैसा बचानेके लिए कम खाना, द्रव्य-संचय करनेके लिए खानेमें कंजूसी करना; कम खिलाना; कम पारिश्रमिक देना। –**का धंधा**–वह पेशा जिससे गुजारा हो, जीविका। –**का पानी न पचना**–कोई बात कहे, पूछे बिना न रहा जाना। –**का पानी न हिलना**–थोड़ा-सा भी श्रम न पड़ना। –**का हलका**–जो गंभीर न हो, गंभीरतासे रहित। –**का हाल**–मनकी बात, तहेदिलकी बात। –**की आग**–भूख। –**॰बुझाना**–कुछ खाकर या खिलाकर भूख शांत करना, भूख मिटाना। –**की बात**–मनकी बात, रहस्यभरी बात। –**की मार मारना**–आहार न देना, भूखा रखना। –**खलाना**–पेट पचकाकर भूखा होनेका संकेत करना; अत्यधिक दीनता प्रकट करना। –**गदराना**–गर्भका लक्षण प्रकट होना। –**गिरना**–गर्भपात होना। –**गिराना**–गर्भपात करना। –**चलना**–दस्त जारी होना। –**छँटना**–पेटका मल-रहित होना। –**छूटना**–दस्त होना। –**जलना**†–भरपेट भोजन न मिलना। –**दिखाना**–पेट दिखाकर भूखे होनेका संकेत करना। –**देना**–किसीको अपनी गुप्त बात बताना, किसीसे भेदकी बात कहना। –**पानी होना**–पतले दस्त आना। –**पालना**–किसी प्रकार निर्वाह करना, उदर-पूर्तिमात्र करते हुए निर्वाह करना। –**पीठ एक हो जाना**–बहुत दुर्बल हो जाना। –**पीठसे लगना**–दे॰ 'पेट पीठ एक हो जाना'। –**फूलना**–किसी बातको कहने, जानने आदिके लिए बेचैन हो उठना; गर्भ रहना। –**मसोसकर रह जाना**–कुढ़कर रह जाना। –**मसोसना**–भूखा रहना। –**मारकर मरना**–आत्महत्या करना। –**में घुसना**–भेद जाननेके लिए घनिष्ठ मित्र बनना। –**में चूहे कूदना या दौड़ना**–जोरकी भूख लगना; भूखसे व्याकुल होना। –**में डालना**–खा जाना, हड़प जाना। –**में दाढ़ी होना**–छोटी उम्रमें ही बहुत अधिक बुद्धिमान् होना। –**रखना**–गर्भवती कर देना। –**रहना**–गर्भ रहना। –**से पाँव निकालना**–किसी भले आदमीका कुमार्गमें प्रवृत्त होना।

पेटक–पु॰ (सं॰) थैला; पिटारा; समूह।

पेटकुइयाँ, पेटकैयाँ†–अ॰ पेटके बल; औंधा।

पेटरिया†–स्त्री॰ दे॰ 'पिटारी'।

पेटल–वि॰ बड़े पेटवाला, तोंदू।

पेटा–पु॰ किसी गहरी वस्तुका तलभाग; किसी वस्तुका भीतरी भाग, गर्भ; घेरा, चक्कर; नदीके भीतरकी जमीन जिसपरसे पानी बहता है; उतनी धरती जितनीसे होकर नदी बहती है; बहीका ब्योरे या तफसीलका खाना; उड़ते हुए कनकौएकी डोरका वह भाग जो ढीला पड़कर नीचेकी ओर लटका रहता है; पशुओंकी अँतड़ी।

पेटाक–पु॰ (सं॰) टोकरा, पिटारा।

पेटागि*–स्त्री॰ पेटकी आग, भूख।

पेटार*–पु॰ दे॰ 'पिटारा'।

पेटारा*–पु॰ दे॰ 'पिटारा'।

पेटारी*–स्त्री॰ दे॰ 'पिटारी'।

पेटार्थी, पेटार्थू–वि॰ जो सदा खानेकी फिक्रमें रहे।

पेटिका–स्त्री॰ (सं॰) छोटा पिटारा, पिटारी।

पेटी–स्त्री॰ तोंदकी झोल; वह तसमा जिससे पतलून, पैंट आदि पहननेपर कमरको कसते हैं, बेल्ट; चपरास; नाइयोंका लोहखर; वह तागा जो बुलबुलको उँगलीपर बैठानेके लिए उसकी कमरसे बाँधते हैं; (सं॰) छोटा पिटारा, पिटारी; लघुमंजूषा, छोटा संदूक।

पेटीकोट–पु॰ (अं॰) घाँघरेकी तरहका एक हल्का पहनावा जिसे स्त्रियाँ साड़ीके नीचे और लड़कियाँ कुर्ती, फ्राकके साथ पहनती हैं, साया।

पेटू–वि॰ जिसे सदा खानेकी चिंता लगी रहे; बहुत अधिक खानेवाला, दीर्घाहारी।

पेटेंट–पु॰ (अं॰) वह सरकारी स्वीकृति या रजिस्टरी जिसके अनुसार किसीको किसी नये आविष्कार या पदार्थके उत्पादन और विक्रयका एकाधिकार प्राप्त होता है। वि॰ (वह वस्तु) जिसकी ऐसी रजिस्ट्री हुई हो।

पेट्रोल–पु॰ (अं॰) एक प्रकारका खनिज तेल जिससे उत्पन्न शक्तिसे मोटर गाड़ियाँ, बसें आदि चलती हैं।

पेठा–पु॰ सफेद कुम्हड़ा; इस कुम्हड़ेसे बनी मिठाई, कोंहड़ापाग।

पेड़–पु॰ वृक्ष, दरख्त।

पेडल–पु॰ (अं॰) साइकिल आदिमें एक पुरजा जिसे पैरसे चलानेपर साइकिल आदि चलती है।

पेडा–स्त्री॰ (सं॰) बड़ा थैला, पिटारा।

पेड़ा–पु॰ चकईके आकारकी एक प्रसिद्ध मिठाई जो खाँड़ मिले हुए खोयेसे तैयार की जाती है; गुँधे हुए आटेकी लोई।

पेड़ार†–पु॰ एक वृक्ष।

पेड़ी–स्त्री॰ ऊपर-ऊपर काट लिये गये वृक्ष या पौधेके तनेका जड़-सहित बचा हुआ भाग; पेड़ या पौधेका तना–'बिरिछ उचारि पेड़िसों लेहीं'–प॰; ऊखका वह खेत जो ऊखके कट जानेके बाद रबीकी फसलके लिए जोता जाय; पानकी पुरानी बेल; पुरानी बेलसे उतारा हुआ पान; फलवाले वृक्षोंपर लगाया जानेवाला कर।

पेड़ू–पु॰ शरीरका नाभि और उपस्थके बीचका भाग।

पेत्व–पु॰ (सं॰) अमृत; घी; भेड़ा।

पेदर–पु॰ दे॰ 'पिदर'; † एक बड़ा जंगली पेड़।

पेन–स्त्री॰ (अं॰) कलम, लेखनी। † पु॰ लसोड़ेकी जातिका एक पेड़।

पेनिसिलिन–स्त्री॰ (अं॰) संतरेपर पायी जानेवाली फँफूदीसे प्राप्त प्रतिजीवी (एन्टी बायोटिक)की एक विशेष नस्ल, जो कई किस्मके रोग-कीटाणुओंकी वृद्धिको रोकनेमें विशेषरूपसे समर्थ पायी

गयी है ।

पेनी–स्त्री० (अं०) एक अंग्रेजी सिक्का जो शिलिंगके बारहवें भागके वरावर होता है । **–वेट**–पु० एक अँग्रेजी तौल जो २४ ग्रेन (लगभग १० रत्तीके) वरावर होता है ।

पेन्हाना|–स० क्रि० दे० 'पहनाना' । अ० क्रि० गाय-भैंस आदिके थनमें दूध उतर आना ।

पेपर–पु० (अं०) कागज; समाचारपत्र; प्रश्न-पत्र, परचा; निवंध, प्रवंध । **–मिल**–स्त्री० वह मिल जिसमें कागज तैयार किया जाय । **–वेट**–पु० पत्थर, लकड़ी आदिका टुकड़ा जो कागजपर उसे उड़नेसे रोकनेके लिए रखा जाता है ।

पेम*–पु० दे० 'प्रेम' ।

पेमचा*–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा ।

पेमा–स्त्री० एक प्रकारकी मछली ।

पेय–वि० (सं०) पीने योग्य; जो पिया जाय । पु० पीने योग्य या पिया जानेवाला पदार्थ; जल; दूध; शरवत; एक प्रकारका व्यंजन ।

पेया–स्त्री० (सं०) माँड़; एक प्रकारका माँड़ मिला हुआ पेय पदार्थ; शर्वत; मदिरा ।

पेयु–पु० (सं०) समुद्र; अग्नि, सूर्य ।

पेयूष–पु० (सं०) अमृत; ताजा मक्खन; गायका ब्यानेके दिनसे सात दिनोंतकका दूध, पेउस ।

पेरणी–स्त्री० (सं०) तांडव नृत्यका एक भेद ।

पेरना–स० क्रि० किसी घूमनेवाले पदार्थ या यंत्रके द्वारा किसी वस्तुपर ऐसा दवाव पहुँचाना कि उसका रस या स्नेह निचुड़ जाय; बहुत अधिक क्लेश पहुँचाना, सताना; किसी कामको वहुत दिनोंतक लगाये रहना, किसी कामको करनेमें वहुत ढिलाई करना; * प्रेरित करना ।

पेरवा, पेरवाह|–पु० पेरनेवाला ।

पेरा|–पु० दे० 'पेड़ा' । स्त्री० एक प्रकारकी मिट्टी जो पोताईके काम आती है, पोतनी मिट्टी; (सं०) एक प्रकारका बाजा ।

पेराई–स्त्री० पेरनेकी क्रिया या मजदूरी ।

पेरु–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; सागर; मेरुपर्वत ।

पेरोज–पु० (सं०) एक उपरत्न, पीरोजा ।

पेरोल–(अं०) कैदीका इस शर्तपर कुछ समयके लिए छोड़ दिया जाना कि निर्धारित अवधिके भीतर वह लौट आयगा ।

पेल–पु० (सं०) जानेकी क्रिया; गमन; अंडकोष ।

पेलक–पु० (सं०) अंडकोष ।

पेलना–स० क्रि० दबाकर भीतर पहुँचाना, जोरसे भीतर घुसेड़ना; प्रेरित करना; फेंकना; उल्लंघन करना, टालना–'आयउ तात वचन मम पेली'–रामा०; ढकेलना, ठेलना; वलप्रयोग करना; आक्रमण करनेके लिए प्रेरित करना; आगे बढ़ाना ।

पेलव–वि० (सं०) कोमल; कृश, क्षीण; विरल ।

पेलवाना–स० क्रि० किसीको पेलनेमें प्रवृत करना; किसीसे पेलनेका काम कराना ।

पेला–पु० पेलनेकी क्रिया या भाव; * वहाना बताना; दुराव-छिपाव; नकल; आक्रमण, चढ़ाई; झगड़ा, तकरार; अपराध, कसूर ।

पेली(लिन्)–पु० (सं०) घोड़ा ।

पेलू–पु० पेलनेवाला ।

पेल्हड़–पु० फोता ।

पेवँ*–पु० प्रेम ।

पेवस, पेवसी|–स्त्री० दे० 'पेउसी' ।

पेश–पु० (सं०) रूप, आकृति; दे० 'पेशल' । अ० (फा०) सामने, आगे, समक्ष; पहले, कव्ल । **–क़ब्ज़**–स्त्री० आगेकी ओर लगायी जानेवाली कटार; कुश्तीका एक दाँव । **–कश**–स्त्री० नजर, भेंट । **–कार**–पु० पेश करनेवाला, आगे रखनेवाला; अदालतका वह कर्मचारी जो हाकिमके सामने मुकदमेकी मिसिल पेश करता है, मिसिलख्वाह; किसी दफ्तर या दरवारका वह कर्मचारी जो हाकिम या मालिकके सामने कागजात पेश करके उनपर उसका आदेश लिखवाता है । **–कारी**–स्त्री० पेशकारका काम या पद । **–ख़ेमा**–पु० वह खेमा जो अगली मंजिलपर पहले ही भेज दिया जाता है; सेनाका अगला भाग, हरावल । **–गाह**–पु०, स्त्री० इजलास; दरवार, सदरमजलिस । **–गी**–स्त्री० किसी वस्तुके मूल्य या किसी कार्यके पारिश्रमिकका वह अंश जो करनेवालेको उसके पूरा होनेके पहले ही दे दिया जाता है; किसीके वेतन या पुरस्कारका वह भाग जो उसे नियत तिथिके पहले ही दे दिया जाता है, अगौड़ी, अग्रिम । **–गोई**–स्त्री० दे० 'पेशीनगोई' । **–तर**–अ० पहले, पूर्व । **–दस्त**–पु० पेशकार । **–दस्ती**–स्त्री० वह काररवाई जिससे कोई झगड़ा शुरू हो, पहल । **–दामन**–पु० खिदमतगार, नौकर । **–बंद**–पु० दे० 'जेरबंद' । **–बंदी**–स्त्री० दूरदर्शिता, दूरंदेशी; बचावकी युक्ति जो पहले की जाय । **–रवी**–स्त्री० आगे-आगे चलने या जानेका काम । **–राज**–पु० वह मजदूर जो पत्थर ढो-ढोकर मेमारके पास लाता है; दीवार आदिकी चुनाई करनेवाला सहायक कारीगर । **–रौ**–वि० आगे-आगे चलनेवाला । पु० सेनाका अगला भाग, हरावल; दूत । **–व पस,–(शो)पस**–पु० आगा-पीछा । **मु०** **–आना**–सलूक करना, वर्ताव करना । **–करना**–आगे रखना, सामने रखना; हाजिर करना । **–चलना या जाना**–दे० 'वश चलना' । **(किसीसे)–पाना**–मात करना, जीतना, विजय पाना ।

पेश(स्)–पु० (सं०) रूप, आकृति; सोना; चमक, कांति; सजावट; आभूषण ।

पेशल–वि० (सं०) कोमल, ऋजु; क्षीण, कृश; सुंदर; दक्ष, कुशल; धूर्त्त । पु० विष्णु; सुंदरता, लावण्य ।

पेशवा–पु० (फा०) नेता, सरदार, मुखिया; मराठोंके प्रधान मंत्रियोंकी उपाधि । **–ई**–स्त्री० पेशवाका काम या पद; अगवानी ।

पेशवाज़–स्त्री० (फा०) वेश्याओं, नर्तकियोंका घाघरा जिसपर प्रायः जरीका काम रहता है ।

पेशा–पु० (फा०) वह व्यवसाय या धंधा जिससे किसीकी जीविका चलती हो, पेटका धंधा । **–वर**–पु० कोई पेशा करनेवाला; दे० क्रममें । **मु०** **–कमाना या करना**–वेश्याका काम करना, वेश्या वनकर जीविका चलाना ।

पेशानी–स्त्री० (फा०) ललाट, माथा; किस्मत, भाग्य; कागजके ऊपरका खाली हिस्सा । **मु०** **–का ख़त**–भाग्यरेखा । **–पर बल आना या पड़ना**–क्रोधसे ललाटपरके चमड़ेका ऊपरकी ओर खिंच जाना, त्योरी चढ़ना ।

पेशाब–पु० (फा०) मूत्र, मूत; शुक्र, वीर्य । **–ख़ाना**–पु० पेशाव करनेका स्थान, पेशाव करनेके लिए वनायी हुई जगह । **मु०** **–करना**–कुछ भी न गुनना, अत्यंत हेय समझना; लानत भेजना । **(किसीके)–का चिराग़ जलना**–वहुत प्रतापी होना ।

पेशावर–पु० (फा०) सीमाप्रांतका एक प्रसिद्ध नगर; दे० 'पेशा'में ।

पेशि–स्त्री० (सं०) वज्र; अंडा; मांसपिंड; पुट्ठा; जटामासी; वह कली जो खिलनेवाली ही हो, पकी हुई कली; तलवारका म्यान; एक प्रकारका वाजा; एक पुरानी नदी; एक पिशाची; एक राक्षसी; फलका छिलका; जूता; वह झिल्ली जिससे गर्भ आवृत रहता है । **–कोश,–कोष**–पु० अंडा ।

पेशी–स्त्री० (सं०) दे० 'पेशि'; शरीरमें स्थित ऊतक जो अपने संकुचन तथा शिथलीकरण द्वारा शरीरांगोंमें गति उत्पन्न कर सकता है (मसल्स); (फा०) पेश होने या किये जानेकी क्रिया या भाव; न्यायाधीशके सामने मुकदमेका पेश होना, मुकदमेकी सुनवाई । **–का मुहर्रिर**–पेशकार ।

पेशीनगोई–स्त्री० (फा०) होनेवाली बातको पहले ही बता देना, भविष्यवाणी ।

पेश्तर–अ० (फा०) दे० 'पेशतर' ।

पेष–पु० (सं०) पीसनेकी क्रिया, पीसना ।

पेषक–पु० (सं०) पीसनेवाला ।

पेषण–पु० (सं०) पीसनेकी क्रिया, पिसाई; खरल ।

पेषणि, पेषणी–स्त्री० (सं०) सिल; चक्की; खरल ।

पेषना*–स० क्रि० पेखना, देखना; पीसना ।

पेषल–वि०, पु० (सं०) दे० 'पेशल' ।

पेषाक–पु० (सं०) दे० 'पेषणि' ।

पेषि–पु० (सं०) वज्र ।

पेषी–स्त्री० (सं०) पिशाची ।

पेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) पीसनेवाला ।

पेस*–अ० दे० 'पेश' । **–कस**–स्त्री० दे० 'पेशकश' ।

पेसना*–अ० क्रि० घुसना । स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना ।

पेसल–वि०, पु० (सं०) दे० 'पेशल' ।

पेस्टल–पु० (अं०) रंगकी वत्ती । **–ड्राइंग**–स्त्री० रंगकी बत्तीसे बना हुआ चित्र ।

पेस्वर–वि० (सं०) चलनेवाला, गतिशील; ध्वंसक, नाश करनेवाला ।

पेहँटा†–पु०, **पेहँटी†**–स्त्री० मक्के आदिके खेतोंमें होनेवाली एक प्रसिद्ध लता जिसका फल यों ही खाने तथा तरकारी और कचरी बनानेके काम आता है ।

पेहँटुल†–पु० दे० 'पेहँटा' ।

पैँकड़ा–पु० पैरका कड़ा; बेड़ी; ऊँटकी नकेल ।

पैंग–वि० (सं०) चूहा-संबंधी ।

पैंगि–पु० (सं०) यास्कका एक नाम ।

पैँच–स्त्री० धनुष्की डोरी; मोरकी पूँछ ।

पैँचना†–स० क्रि० सूपसे अनाज साफ करना; फेरना ।

पैँचा†–पु० हेर-फेर; हाथ-उधार । (ऐंचा-पैंचा–हेर-फेर ।)

पैँछर*–अ० पीछे-पीछे ।

पैँजना–पु० एक तरहका पैरका खोखला कड़ा जिसके भीतर कंकड़ियाँ पड़ी रहती हैं ।

पैँजनिया†–स्त्री० दे० 'पैंजनी' ।

पैँजनी–स्त्री० दे० 'पैंजनी' ।

पैंजूष–पु० (सं०) कान ।

पैंट–पु० (अं०) पायजामेकी तरहका एक अंग्रेजी पहनावा, पतलून ।

पैँठ–स्त्री० खोयी हुई हुंडीके स्थानपर लिखी गयी दूसरी हुंडी, डुप्लिकेट हुंडी; * बाजार, हाट; दुकान; बाजार लगनेका दिन, बाजारका दिन ।

पैँठौर*–पु० दुकान, हाट ।

पैँड़–पु० डग; राह, रास्ता ।

पैंडपातिक–वि० (सं०) दानपर निर्वाह करनेवाला (बौ०) ।

पैँड़ा–पु० राह, रास्ता, पथ; रीति, चलन, घुड़सार । मु० **–(ड़े)-पड़ना***–पीछे पड़ना ।

पैंडिक्य, पैंडिन्य–पु० (सं०) भिक्षावृत्ति ।

पैँत–स्त्री० पासा; दाव, घात ।

पैँतरा–पु० दे० 'पैंतरा' ।

पैँतरी*–स्त्री० जूती ।

पैँतालिस–वि०, पु० दे० 'पैँतालीस' ।

पैँतालीस–वि० चालीससे पाँच अधिक । पु० चालीससे पाँच अधिककी संख्या, ४५ ।

पैँती–स्त्री० दे० 'पवित्री'; ताँबे आदिकी बनी मुँदरी जिसे पवित्रता-की दृष्टिसे अनामिकामें पहनते हैं ।

पैँतीस–वि० तीससे पाँच अधिक । पु० तीससे पाँच अधिककी संख्या, ३५ ।

पैँयाँ*–स्त्री० पैर, पाँव ।

पैँसठ–वि० साठसे पाँच अधिक । पु० साठसे पाँच अधिककी संख्या, ६५ ।

पै*–अ० परंतु, लेकिन; अवश्य; पश्चात्, बाद; पास; ओर, तरफ । प्र० ऊपर, पर; से । स्त्री० ऐब, दोष । पु० दे० 'पय' । **–हारी** –वि० दे० 'पयहारी' ।

पै†–'पाय' (फा०) का समासमें व्यवहृत विकृत रूप । **–करी**–स्त्री० पैरका एक गहना, पैरी । **–ख़ाना**–पु० पाखाना । **–जामा** –पु० पाजामा । **–ताना**–पु० दे० 'पायँता' । **–माल**–वि० दे० 'पामाल' । **–लगी**–स्त्री० पालागन, चरणस्पर्शके साथ किया हुआ प्रणाम; प्रणाम ।

पैक–पु० (फा०) पैगाम लानेवाला, संदेशवाहक ।

पैकर–पु० कपाससे रुई इकट्ठी करनेवाला; (अं०) माल, चिट्ठी आदिको बोरे या थैले आदिमें बंद करनेवाला ।

पैकरमा*–स्त्री० दे० 'परिक्रमा' ।

पैका–पु० (अं० 'पाइका') एक विशेष आकारका छापेका टाइप; * पैसा–'पैका पैका जोड़ताँ जुड़सी लाष करोड़ि'–कबीर ।

पैकार–पु० (फा०) फुटकर माल बेचनेवाला व्यापारी ।

पैकारी–पु० दे० 'पैकार' ।

पैकी–पु० घूम-फिरकर, पैसा लेकर, हुक्का पिलानेवाला; बाजीगर; नट । स्त्री० बाजीगरी; नटोंका पेशा ।

पैकेट–पु० (अं०) डिब्बे आदिमें बंद किया हुआ माल; किसी वस्तुका छोटा बंडल ।

पैग़ंबर–पु० (फा०) 'पैग़ामबर'का अल्प०; मनुष्योंके पास ईश्वरका सँदेसा पहुँचानेवाला, ईश्वरका दूत, नबी । **–सलाम**–पु० मुहम्मद ।

पैग़ंबरी–वि० पैगंबरका । स्त्री० पैगंबरका काम या पद ।

पैग*–पु० पग, डग–'तीन पैग बसुधा करी तऊ बावनै नाम'–रहीम ।

पैग़ाम–पु० (फा०) सँदेसा, संवाद । **–बर**–पु० सँदेसा पहुँचानेवाला, एलची, दूत ।

पैग़ामी–पु० (फा०) दूत, संदेशवाहक ।

पैग़ार–पु० (फा०) खंदक; गड्ढा; हलकी लकीर, हराई ।

पैज*–स्त्री० टेक, पण; होड़ ।

पैजनिया†–स्त्री० दे० 'पैजनी' ।

पैजनी–स्त्री० पैरका पोला कड़ा जिसमें बजनेके लिए कुछ कंकड़ियाँ रख दी गयी होती हैं ।

पैजा–पु० किवाड़को थामे रहनेके लिए लगाया जानेवाला लोहेका कड़ा ।

पैज़ार–पु० (फा०) जूता, जोड़ा ।

पैठ–स्त्री० पैठनेकी क्रिया या भाव, प्रवेश; पहुँच, गति ।

पैठना–अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना; चुभना ।

पैठाना–स० क्रि० प्रवेश कराना, भीतर पहुँचाना, घुसाना ।

पैठार*–पु० प्रवेश; प्रवेश करनेका मार्ग, द्वार ।

पैठारी†–स्त्री० प्रवेश, पैठ; पहुँच ।

पैठीनसि–पु० (सं०) एक उपस्मृतिकार ।

पैड–पु० (अं०) सोख्ते, पत्र लिखने आदिके काम आनेवाले कागज-की गद्दी ।

पैडिक–वि० (सं०) पीडिका, फुंसी-संबंधी ।

पैड़ी–स्त्री० सीढ़ी; मोट खींचते समय बैलोंके बार-बार कुएँके पासतक आने और लौटनेके लिए बना हुआ ढालवाँ रास्ता; वह जगह जहाँ कुएँ आदिसे निकाला हुआ सिंचाईका पानी ढाला जाता है ।

पैतरा–पु० कुश्ती, पटेबाजी आदिमें प्रतिद्वंद्वियोंका भिड़ने या वार करनेके पहले एक-दूसरेसे बचते हुए कलापूर्ण ढंगसे घूम-फिरकर विभिन्न मुद्राओंमें स्थित होना; चरण-चिह्न । **–(रे)बाज़**–वि० चालबाज । **–बाज़ी**–स्त्री० चालबाजी । मु० **–बदलना**–कुश्ती, पटेबाजी आदिमें घूम-फिरकर विविध मुद्राओंमें स्थित होना; नयी चाल चलना; नया हाथ दिखाना ।

पैतरी–स्त्री० रेशम फेरनेकी परेती; जूता ।

पैतला–वि० उथला ।

पैतामह–वि० (सं०) पितामह-संबंधी; पितामहसे प्राप्त; ब्रह्मा (विधाता)का; ब्रह्मासे प्राप्त ।

पैतामहिक–वि० (सं०) पितामह संबंधी; पितामहसे प्राप्त ।

पैतृक–वि० (सं०) पिताका; पितासे प्राप्त; पूर्वजोंका; पूर्वजोंसे प्राप्त, मौरूसी । पु० पितरोंके निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध ।

पैतृमत्य–पु० (सं०) कुमारीसे उत्पन्न पुत्र; ख्यात व्यक्तिका पुत्र ।

पैतृस्वसेय, पैतृस्वस्त्रीय–पु० (सं०) फुफेरा भाई ।

पैत्त, पैत्तिक–वि० (सं०) जो पित्तके प्रकोपसे हुआ हो, पित्तजनित ।

पैत्तल–वि० (सं०) पीतलका बना हुआ ।

पैत्र–वि० (सं०) पितृ-संबंधी (श्राद्ध आदि) । पु० पितृतीर्थ (इस अर्थमें 'पैत्र्य' भी होता है); पितरोंके लिए पवित्र वर्ष, मास या दिन ।

पैथला†–वि० दे० 'पैतला' ।

पैदल–वि० पाँव-पाँव चलनेवाला, बिना सवारीके चलनेवाला । अ० पा-प्यादे, पाँव-पाँव । पु० पा-प्यादे चलना; पा-प्यादे चलने-वाला सिपाही; वह सिपाही जो किसी सवारीपर न हो; शतरंजका

एक मुहरा जो सीधे चलता है और आड़े मारता है ।

पैदा–वि० (फ़ा०) उत्पन्न; जो खड़ा हुआ हो; घटित, प्रादुर्भूत; कमाया हुआ, उपार्जित । † स्त्री० आमद, आय । **–वार**–स्त्री० खेतीकी उपज । **–वारी**†–स्त्री० पैदावार ।

पैदाइश–स्त्री० (फ़ा०) उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ।

पैदाइशी–वि० जन्मजात, सहज, क़ुदरती ।

पैन–पु० नाली ।

पैना–वि० जिसकी धार बहुत तेज हो, तीक्ष्ण; (ला०) जिसका प्रवेश भीतरतक हो, भीतरतक जानेवाला; जो भीतरकी वस्तुको देख सके । (स्त्री० 'पैनी' ।) पु० बैल हाँकनेकी छड़ी; अंकुश ।

पैनाक–वि० (सं०) पिनाक-संबंधी; पिनाकका ।

पैनाना–स० क्रि० छुरी आदिकी धार तेज करना, टेना ।

पैन्य–पु० (सं०) घनता; मोटापा ।

पैप्पल–वि० (सं०) पीपलकी लकड़ीका बना हुआ; पीपलसे तैयार किया हुआ ।

पैप्पलाद–पु० (सं०) पिप्पलाद ऋषिका ग्रंथ पढ़नेवाला ।

पैमक–स्त्री० कलाबत्तूकी सुनहरी या रुपहली डोरी या लेस ।

पैमाइश–स्त्री० (फ़ा०) जमीन आदि मापनेकी क्रिया ।

पैमाना–पु० (फ़ा०) वह साधन जिससे कोई वस्तु मापी जाय; नाप; प्याला, पानपात्र ।

पैयाँ*–स्त्री० पैर, पाँव ।

पैया–पु० सारहीन अन्न, अनाजका वह दाना जिसमें बीज-भाग न हो; अकिंचन मनुष्य; * पहिया ।

पैर–पु० शरीरका वह प्रसिद्ध अंग जिसके बलपर जंगम प्राणी स्थित होते और चलते हैं, चरण; पैरका निशान, चरणचिह्न; फसलका उतना भाग जितना एक बारमें माँड़ा जाय; खलिहान । **–उठान**–पु० कुश्तीका एक दाँव । **–गाड़ी**–स्त्री० पैरसे चलायी जानेवाली गाड़ी (साइकिल आदि) । **मु० –उखड़ जाना**–टिक न सकना, पराजित होना । **–उठाना**–रवाना होना; तेजीसे चलना । **–का नाखून न देखना**–सूरत न देखना । **–छूना**–पाँव पड़ना; दीनता प्रकट करना । **–जमना**–स्थिर होना, दृढ़ होना । **–डालना**–दखल देना । **–तोड़कर बैठना**–कहीं आना-जाना बंद करना । **–तोड़ना**–चलते-चलते थक जाना; दौड़-धूप करना । **–धरना,–रखना**–क़दम रखना, चलना । **(धरतीपर)–न रखना**–इतराना । **–निकालना**–पीछा छुड़ाना । **–पकड़ना**–पैर छूना; कहीं जानेसे रोकना । **–पसारना,–फैलाना**–आरामसे लेटना; आडंबर फैलाना । **–फँसाना**–अपने आपको संकटमें डालना । **–बढ़ाना**–चलना; सीमोल्लंघन करना । **–भर जाना**–थक जाना । **–भारी होना**–गर्भ रहना । **–से पैर बाँधकर रखना**–साथ रखना, कहीं जाने न देना । **पैरों चलना**–पैदल चलना ।

पैरना–अ० क्रि० तैरना । † स० क्रि० पहिरना, धारण करना ।

पैरवी–स्त्री० (फ़ा०) पीछे-पीछे जाना, अनुगमन; मुकदमेकी देखरेख; प्रमाणादि इकट्ठाकर पक्ष समर्थनका प्रयत्न; कोशिश; खुशामद (हिं०) । **–कार**–पु० पैरवी करनेवाला ।

पैरहन†–पु० कश्मीरियोंका लबादा जैसा लंबा पहनावा (शेखर०) ।

पैरा–पु० रखे हुए चरण, कदम, पौरा; आगमन; पैरमें पहननेका एक प्रकारका कड़ा; लकड़ी आदिका बना हुआ आरोहण-मार्ग; † दक्षिण भारतमें होनेवाली एक प्रकारकी कपास; लकड़ीकी वह संदूकके आकारकी वस्तु जिसमें सुनार अपने काँटे, बाट रखते हैं; (अं०) दे० 'पैराग्राफ' ।

पैराग्राफ–पु० (अं०) लेख आदिका वह अंश जिसमें कोई एक बात कही गयी हो और जिसकी पहली पंक्ति आरंभमें कुछ छोड़कर लिखी गयी हो, अनुच्छेद ।

पैराई–स्त्री० तैरनेकी क्रिया या भाव; तैरनेका हुनर ।

पैराउ*–पु० दे० 'पैराव' ।

पैराक–पु० तैरनेवाला, तैराक ।

पैराना–स० क्रि० किसीको तैरनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे तैरनेका काम कराना, तैराना ।

पैराव–पु० नदी आदिमें वह स्थान जो केवल तैरकर पार किया जा सके ।

पैराशूट–पु० (अं०) एक प्रकारकी छतरी जिसके सहारे ऊँचाईसे, विशेषतः उड़ते हुए वायुयान या गुब्बारेसे उतरते हैं ।

पैरी–स्त्री० काँसे आदिका पैरका एक चौड़ा गहना जिसे निम्न जातिकी स्त्रियाँ पहनती हैं; दाँनेके लिए फैलाये हुए अनाजके पौधे; दाँनेकी क्रिया; * सीढ़ी; पीढ़ी, पुश्त ।

पैरेखना*–स० क्रि० दे० 'परेखना' ।

पैरोकार–पु० दे० 'पैरवीकार' ।

पैरोल–पु० (अं०) वर्जित कार्य न करने, नियत समयपर फिर हाजिर होने आदिकी प्रतिज्ञा जिसके आधारपर बंदी दंडकी अवधि पूरी होनेके पहले भी विशेष कारणवश कुछ समयके लिए मुक्त कर दिया जाता है ।

पैलव–वि० (सं०) पीलू वृक्षसे संबद्ध; पीलूकी लकड़ीका बना हुआ ।

पैला†–पु० दूध-दही ढाँकनेका नाँद जैसा मिट्टीका बरतन; अनाज नापनेका चार सेरका एक बरतन । वि० * परला; दूसरा ।

पैली†–स्त्री० अनाज, तेल आदि नापनेका एक बरतन ।

पैवंद–पु० (फ़ा०) कपड़े आदिका वह टुकड़ा जिसे टाँककर अँगरखे आदिका छेद बंद किया जाता है, चकती; किसी पेड़के फलके आकारको बढ़ाने या उसके स्वादमें विशेषता लानेके लिए उसकी टहनीमें दूसरे सजातीय पेड़की टहनी काटकर बाँध देनेकी क्रिया; सगा-संबंधी, स्वजन । **–कार**–पु० पैवंद लगानेवाला । **–कारी**–स्त्री० पैवंद लगानेकी क्रिया ।

पैवंदी–वि० पैवंद लगाकर तैयार किया हुआ, कलमी; दोगला । पु० शफतालू ।

पैवस्त–वि० (फ़ा०) किसी वस्तुमें पूरी तरह व्याप्त या भिंदा हुआ, जज्ब ।

पैशल्य–पु० (सं०) पेशलका भाव, कोमलता ।

पैशाच–वि० (सं०) पिशाच-संबंधी; पिशाचका; पिशाचकृत; पिशाचोचित । पु० एक प्रकारका हीन विवाह जिसमें किसी सोयी हुई या प्रमत्त कन्याका कौमार हरण करनेवाला उसके पतित्वका अधिकारी हो जाता है (स्मृ०) ।

पैशाचिक–वि० (सं०) पिशाच-संबंधी; पिशाचका; क्रूरतापूर्ण, घोर (ला०) ।

पैशाची–स्त्री० (सं०) धार्मिक कृत्यके अवसरपर दी जानेवाली भेंट; रात्रि; प्राकृत भाषाका एक भेद ।

पैशाच्य–पु० (सं०) पिशाचका स्वभाव, क्रूर स्वभाव ।

पैशुन, पैशुन्य–पु० (सं०) पिशुनता, चुगलखोरी; दुष्टता ।

पैष्ट–वि० (सं०) आटेसे तैयार किया हुआ ।

पैष्टिक–पु० (सं०) आटेसे तैयार किया जानेवाला एक प्रकारका मद्य । वि० आटेका बना हुआ ।

पैष्टी–स्त्री० (सं०) दे० 'पैष्टिक' ।

पैसंगी*–स्त्री० (सं०) पेशीनगोई, भविष्यवाणी ।

पैसना*–अ० क्रि० घुसना, प्रविष्ट होना ।

पैसरा*–पु० झमेला, झंझट ।

पैसा–पु० ताँबेका वह सिक्का जो पहले आनेके चौथे और रुपयेके चौसठवें भागके बराबर होता था पर अब रुपयेका शतांश होता है; द्रव्य, धन । **–(से)वाला**–वि० धनी, मालवर, सर्राफ ।

पैसार†–पु० प्रवेश, पैठ; घुसने-पैठनेका मार्ग ।

पैसेंजर–पु० (अं०) यात्री । **–गाड़ी**–स्त्री० सवारी ढोनेवाली रेलगाड़ी । **–ट्रेन**–स्त्री० दे० 'पैसेंजरगाड़ी' ।

पैहम–अ० (फ़ा०) निरंतर, लगातार ।

पैहरा–पु० कपाससे रुई इकट्ठी करनेवाला ।

पों–स्त्री० भोंपा; भोंपेकी आवाज; अपानवायु निकलनेका शब्द । **मु० –बोलना**–दिवाला निकलना; थककर बैठ जाना; परास्त होना ।

पोंकना†–अ० क्रि० पतला पाखाना फिरना; बहुत अधिक डरना । पु० चौपायोंका एक रोग जिसमें उन्हें पतले दस्त आते हैं ।

पोंका–पु० एक बड़ा फतिंगा ।

पोंगरा*–पु० बालक, बच्चा ।

पोंगली–स्त्री० बाँस, नरकट आदिकी चोंगी ।

पोंगा–पु० बाँसकी नली; टिन आदिका चोंगा । **वि० खोखला;**

अज्ञ, मूर्ख । **–पंथी**–स्त्री० मूर्खतापूर्ण कार्य, ढोंग । वि० मूर्खतापूर्ण; ढोंगी ।

पोंगी–स्त्री० छोटी नली; जुलाहोंका नरसलका एक आला जिसपर सूत लपेटकर वे ताना-भरना करते हैं; बाँसकी वह छोटी नली जो बेनेकी डाँड़ीमें उस ओर पहनायी रहती है जिधरसे पकड़कर उसे डुलाते हैं; बाँस आदि पोली और गाँठदार वस्तुओंका दो गाँठोंके बीचका भाग; * तुमड़ी ।

पोंछ*–स्त्री० दे० 'पूंछ' ।

पोंछन–पु० किसी लगी, सटी हुई वस्तुका पोंछनेसे निकला हुआ भाग ।

पोंछना–स० क्रि० किसी वस्तुपर हाथ, कपड़ा आदि फेरकर उसपर लगा हुआ तरल पदार्थ उठा लेना या धूल आदि साफ़ कर देना । पु० पोंछनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोंटा†–पु० नाकका मल ।

पोंटी†–स्त्री० एक प्रकारकी मछली ।

पोंद†–पु० कमरके नीचेका मांसल भाग, चूतड़ ।

पो–वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध, साफ; शुद्ध करनेवाला ।

पोआ–पु० साँपका छोटा बच्चा, सँपोला ।

पोआना–स० क्रि० किसीसे पोनेका काम कराना; रोटी गढ़-गढ़कर पकानेवालेको देना ।

पोइया†–स्त्री० घोड़ेकी सरपट चाल ।

पोइस*–स्त्री० सरपट ।

पोई–स्त्री० एक लता जिसमें पानके आकारकी मोटे दलकी पत्तियाँ लगती हैं; अँखुआ; ईखका कल्ला, गेहूँ, ज्वार आदिका नरम पौधा ।

पोकना–अ० क्रि० दे० 'पोंकना' ।

पोख*–पु० पालन-पोषण करनेका संबंध ।

पोखनरी†–स्त्री० ढरकीके बीचकी खाली जगह ।

पोखना*–स० क्रि० पालन-पोषण करना, पोसना । अ० क्रि० गाय-भैंस आदिका ब्यानेका समय समीप आनेपर बदन ढीला पड़ना ।

पोखर–पु० तालाब; पटेबाजीका एक हाथ ।

पोखरा–पु० तालाब, वह बड़ा-सा गड्ढा जिसमें वर्षाका जल इकट्ठा हो जाता है ।

पोखरी–स्त्री० छोटा तालाब या पानीका गड्ढा ।

पोगंड–पु० (सं०) पाँचसे दस (किसी-किसीके मतसे १६) बरसतककी उम्रका लड़का; वह जिसका कोई अंग छोटा-बड़ा या न्यूनाधिक हो । वि० अल्पवयस्क, जो अभी जवान न हो ।

पोच–वि० नीच, अधम; तुच्छ, क्षुद्र । स्त्री० खोटाई, नीचता; बुरी बात ।

पोचारा–पु० पुचारा ।

पोची*–स्त्री० खोटाई; नीचता ।

पोट–स्त्री० गठरी, मोटरी; राशि, ढेर, पुंज । पु० (सं०) घरकी नींव; एकमें मिलाना, संश्लेष । **–गल**–पु० नरसल; काश, क़ाँस; एक प्रकारकी मछली ।

पोटक–पु० (सं०) सेवक, नौकर ।

पोटना*–स० क्रि० समेटना; अपने हाथमें करना ।

पोटरी*–स्त्री० दे० 'पोटली' ।

पोटल, पोटलक–पु०, **पोटलिका**–स्त्री० (सं०) पोटली ।

पोटला–पु० बड़ी गठरी ।

पोटली–स्त्री० छोटी गठरी; छोटेसे वस्त्रमें कसकर बाँधी हुई थोड़ी-सी वस्तु ।

पोटा–पु० पेटकी थैली; आँखकी पलक; उँगलीका सिरा; हिम्मत, मजाल, कूवत; चिड़ियाका वह बच्चा जिसे अभी पर न निकले हों; नाकका मल । स्त्री० (सं०) पुरुषके लक्षणोंसे युक्त स्त्री; दासी; वह मनुष्य या जानवर जिसमें नर और मादा दोनोंके लक्षण हों ।

पोटाश–पु० (अं०) एक क्षार जो खानसे निकलता है और लकड़ीकी राखसे भी तैयार किया जाता है ।

पोटिक–पु० (सं०) फोड़ा ।

पोटी–स्त्री० पेटकी थैली; कलेजा; (सं०) गुदा; घड़ियालकी जातिका एक जलजंतु, नाक ।

पोट्टल–पु० (सं०) दे० 'पोटल' ।

पोट्टलिका, पोट्टली–स्त्री० (सं०) पोटली ।

पोडु–स्त्री० (सं०) खोपड़ी, सिरसे ऊपरवाली हड्डी ।

पोढ़*–वि० दे० 'पोढ़ा' ।

पोढ़ा–वि० दृढ़, मजबूत; कड़ा, कठिन ।

पोढ़ाना†–अ० क्रि० दृढ़ होना, मजबूत होना, पुष्ट होना । स० क्रि० दृढ़ बनाना, पुष्ट बनाना ।

पोत–पु० (सं०) जानवरका बच्चा, पशुशावक; दस वर्षकी अवस्थाका हाथी; नाव; जहाज; वस्त्र, कपड़ा; मकानकी नींव; कोंपल; वह भ्रूण जिसपर अभी झिल्ली न पड़ी हो । **–घाट**–पु० (पीर) पत्थर, लोहे या लकड़ीका बना वह चबूतरा जैसा ढाँचा जो समुद्रकी तरफ फैला हो और जिसपर जहाजसे उतरनेमें आसानी हो । **–धारी(रिन्)**–पु० जहाजका मालिक । **–ध्वज**–पु० (एनसाइन) जहाजपर फहरानेवाला राष्ट्रविशेष या नौदलविशेषका परिचायक ध्वज । **–निर्माण-उद्योग**–पु० (शिप-बिल्डिंग इंडस्ट्री) जहाज बनाने, तैयार करनेका उद्योग या व्यवसाय । **–प्लव**–पु० माँझी । **–भंग**–पु० जहाजका चट्टानसे टकराकर ध्वस्त हो जाना । **–वणिक्(ज्)**–पु० नाव या जहाजके द्वारा व्यापार करनेवाला व्यवसायी । **–वाह**–पु० नाव खेनेवाला । **–संतरण**–पु० (लॉञ्चिंग ए शिप) किसी नये बने हुए जहाजको पानीमें उतारना या तैराना, जलावतरण ।

पोत–पु० कपड़ेकी बुनावट; ढंग, तरीका; लगान; बारी, अवसर । स्त्री० काँचका छोटा दाना । **–दार**–पु० वह जिसके पास लगानका रुपया रखा जाता है, खजानची; खजानेमें रुपये परखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, पारखी । मु० **–पूरा करना**–जैसे-तैसे कोई काम पूरा करना ।

पोतक–पु० (सं०) पशु-शावक; नया पौधा; मकान बनानेकी जगह ।

पोतकी–स्त्री० (सं०) पोई नामकी लता ।

पोतड़ा–पु० छोटे बच्चोंके चूतड़के नीचे बिछाया जानेवाला कपड़ा, गँड़तरा । **–(ड़ों) के अमीर या रईस**–खानदानी अमीर, रईस, ऐसा अमीर जिसका बाप भी अमीर रहा हो ।

पोतन–वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध; पवित्र करनेवाला । † पु० दे० 'पोतना' ।

पोतनहर†–स्त्री० चौका लगानेकी घोली हुई मिट्टी और पोतना रखनेके काम आनेवाला बरतन; घर पोतनेका काम करनेवाली स्त्री; अँतड़ी ।

पोतना–स० क्रि० किसी तरल पदार्थको अन्य वस्तुपर फैलाकर लगाना, चुपड़ना; किसी वस्तुपर किसी गीले या सूखे पदार्थको इस प्रकार लगाना कि उसपर उसकी तह जम जाय, लेप करना; मिट्टी, गोबर आदिसे लीपना । पु० पोतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोतला–पु० पराठा ।

पोता–पु० बेटेका बेटा, पौत्र; अंडकोष; लगान; पोतनेका कपड़ा; पोतनेके लिए तैयार की गयी मिट्टी; चूना फेरनेके काम आनेवाली कूँची; एक प्रकारकी मछली; * कलेजा, बूता, सामर्थ्य । मु० **–फेरना**–दीवारपर चूने आदिकी पुताई करना; बरबाद कर देना, चौपट करना ।

पोता(तृ)–पु० (सं०) सोलह प्रकारके ऋत्विकोंमेंसे एक; विष्णु ।

पोताई–स्त्री० दे० 'पुताई' ।

पोताच्छादन–पु० (सं०) वस्त्रकुटीर, खेमा; रावटी ।

पोताधान–पु० (सं०) मछलियोंके बच्चोंका समूह ।

पोताधिरोध–पु० (इम्बार्गो) किसी देशके नौ-सेना-विभाग द्वारा बंदरगाहोंपर अन्य देशके जहाजोंके आने या वहाँसे जानेपर कुछ समयके लिए लगाया गया प्रतिबंध, घाटबंदी ।

पोतारा–पु० दे० 'पुतारा' ।

पोतारी–स्त्री० पोतनेके काम आनेवाला कपड़ा ।

पोतास–पु० (सं०) एक प्रकारका कपूर ।

पोतिका–स्त्री० (सं०) पोई नामकी लता; वस्त्र ।

पोतिया–पु० तंबाकू, चूना आदि रखनेकी थैली जिसे इन वस्तुओंका सेवन करनेवाले साथमें लिये रहते हैं; एक तरहका खिलौना, पहनकर नहानेका कपड़ेका टुकड़ा ।

पोती–स्त्री० बेटेकी बेटी, पौत्री; हँड़ियाको कड़ी आँचसे बचानेके

लिए उसकी पेंदीपर किया जानेवाला मिट्टीका लेप; अर्क, मद्य चुआते समय भवकेपर फेरा जानेवाला पानीका पुतारा; पुतारा फेरनेकी क्रिया; * गुरिया ।

पोत्या–स्त्री० (सं०) नावों या जहाजोंका समूह ।

पोत्र–पु० (सं०) सूअरका खाँग; नौका; जहाज; वज्र; हलका फाल; वस्त्र ।

पोत्रायुध–पु० (सं०) सूअर ।

पोत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) सूअर ।

पोथकी–स्त्री० (सं०) पलकोंपर निकल आनेवाले सरसोंके बराबर लाल-लाल दाने जिनमें पीड़ा और खुजली होती है ।

पोथा–पु० कागजकी बड़ी गड्डी; बड़ी पोथी ।

पोथी–स्त्री० पुस्तक, ग्रन्थ; लहसुनकी गाँठ ।

पोदना–पु० एक छोटी चिड़िया; छोटे कदका आदमी, नाटा आदमी । **–सा**–बहुत छोटा ।

पोदीना–पु० दे० 'पुदीना' ।

पोद्दार–पु० मारवाड़ी वैश्योंकी एक उपाधि; पोतदार ।

पोना–स० क्रि० लोईसे रोटी गढ़ना; (रोटी) पकाना; गूँथना, पिरोना ।

पोप–पु० (अं०) ईसाइयोंके रोमन कैथोलिक संप्रदायका प्रधान धर्माचार्य । **–लीला**–स्त्री० धर्मका आडंबर फैलाना ।

पोपला–वि० जिसमें पोल हो, जो भीतरसे खाली हो; बिना दाँतका (मुँह); जिसके मुँहमें दाँत न हो ।

पोपलाना–अ० क्रि० पोपला होना ।

पोपली–स्त्री० अमोलेकी जड़में लगी हुई आमकी गुठलीको घिसकर बनाया जानेवाला बाजा जिसे लड़के बजाते हैं ।

पोय†–स्त्री० दे० 'पोई' ।

पोया–पु० कोंपल; सँपोला; नन्हा बच्चा ।

पोयाबोई–स्त्री० छल-कपटकी बातें ।

पोर–स्त्री० उँगलीकी गाँठ; उँगलीके दो गाँठोंके बीचका भाग; ईख, बाँस आदिमें दो गाँठोंके बीचका भाग; * पीठ ।

पोरा–पु० लकड़ीका गोला टुकड़ा या कुंदा; मोटा और ठिंगना आदमी ।

पोरिया–स्त्री० छल्लेकी तरहका एक गहना जो हाथकी उँगलियोंकी पोरोंपर पहना जाता है ।

पोर्टर–पु० (अं०) रेलवे-कुली; जहाजका कुली ।

पोल–पु० (सं०) पुंज, ढेर; (अं०) ध्रुव (भूगोल); साढ़े पाँच गजका एक पैमाना, लट्ठा; लकड़ी, लोहे आदिका खंभा । स्त्री० (हिं०) किसी वस्तुके भीतरकी खाली जगह, अवकाश; निःसारता, खोखलापन (ला०); प्रवेशद्वार, फाटकके पासकी जगह 'परदायतोंसे मकानकी पोल खचाखच भर गयी'–सरिता, जुलाई १, १९७० । **–दार**–वि० (हिं०) पोला, खोखला । **मु०–(किसीकी)–खुलना**–किसीका छिपा हुआ दोष प्रकट होना । **(किसीकी) –खोलना**–किसीके छिपे हुए दोषको प्रकट करना ।

पोलक–पु० बिगड़े हाथीको डरानेका एक तरहका लुक जो लंबे बाँसमें पयाल बाँधकर बनाया जाता है ।

पोलकी–पु० एक रत्न ।

पोला–वि० जो भीतरसे खाली हो, खोखला; निःसार, निस्तत्त्व; जिसका भीतरी भाग कड़ा या ठोस न हो; जो दबाव पड़नेसे दब या पचक जाय, पुलपुला । पु० परेतीपर सूत लपेटनेसे तैयार होनेवाला लच्छा; † एक पेड़; एक त्योहार जिसमें बैलोंकी पूजा होती है और उनकी दौड़ करायी जाती है (म० प्र०) ।

पोलारी–स्त्री० खोरिया, घुँघरू आदिके खलनेके कामका सोनारोंका एक आला ।

पोलाव–पु० दे० 'पुलाव' ।

पोलिंद–पु० (सं०) जहाज या नावका मस्तूल ।

पोलिका, पोली–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी पूरी, पूआ ।

पोलिटिकल–वि० (अं०) राजनीति-संबंधी, राजनीतिक । **–एजंट, –रेजिडेंट**–पु० वह अंग्रेज अफसर जो अंग्रेजी सरकारकी ओरसे भारतकी देशी रियासतोंमें शासन-कार्यमें राजाओंको परामर्श देनेके लिए नियुक्त किया जाता था ।

पोलिया–स्त्री० औरतोंका पैरमें पहननेका एक पोला गहना । पु० पौरिया ।

पोलो–पु० (अं०) गेंदका एक खेल जो घोड़ेपर चढ़कर खेला जाता है, चौगान । **–स्टिक**–स्त्री० वह डंडा जिससे पोलो खेला जाता है ।

पोवना*–स० क्रि० दे० 'पोना' ।

पोश–पु० (फा०) पहननेकी चीज, कपड़ा; पहननेवाला, ढकनेवाला (समासांतमें–नकाबपोश, पलँगपोश); लोगोंको हटानेके लिए धोबियों, भंगियों आदि द्वारा प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द ।

पोशाक–स्त्री० (फा०) पहनावा, लिबास । **मु०–बढ़ाना**–कपड़े उतारना ।

पोशीदगी–स्त्री० गुप्त होनेका भाव, छिपाव ।

पोशीदा–वि० (फा०) गुप्त, छिपा हुआ ।

पोष–पु० (सं०) पोसनेकी क्रिया, पालन; पुष्टि; वृद्धि; * संतोष ।

पोषक–वि०, पु० (सं०) पोषण करनेवाला; दे० 'परपोषी' । बढ़ानेवाला, वर्द्धक; सहायक । **–तत्त्व**–पु० (विटामिन) दे० 'खाद्योज' ।

पोषण–पु० (सं०) पोसनेकी क्रिया, पालन; बढ़ानेकी क्रिया, वर्द्धन; सहायता देना ।

पोषध–पु० (सं०) उपवास या उपवास करनेका दिन, व्रत (बौ०) ।

पोषना*–स० क्रि० पोषण करना, पालना ।

पोषयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पोषण करनेवाला ।

पोषयित्नु–पु० (सं०) कोकिल ।

पोषिका–स्त्री० (एलिमेंटरी कैनाल) गलेके नीचेसे शुरू होनेवाली नली जिससे भोजन पेटमें पहुँचता है और जो आगे छोटी तथा बड़ी अँतड़ियोंसे मिल जाती है, खाद्य-नलिका, आहारनाल ।

पोषित–वि० (सं०) जिसका पोषण किया गया हो, पाला हुआ ।

पोषिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोषी(षिन्)–वि०, पु० (सं०) पोषण करनेवाला, पोषक ।

पोष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) पोषक । पु० पोषण करनेवाला; एक तरहका करंज ।

पोष्य–वि० (सं०) पोषणके योग्य, पालने योग्य, जिसका पोषण करना आवश्यक हो, जिसका पोषण करना कर्तव्य समझा जाय; अभ्युदय करनेवाला; प्रभूत । **–पुत्र,–सुत**–पु० वह जो पुत्रकी तरह पाला गया हो, दत्तक । **–वर्ग**–पु० माता, पिता, गुरु आदि जिनका पोषण करना पुत्र आदिका कर्तव्य माना जाता है ।

पोस–पु० पोसनेकी क्रिया या भाव; पालनेका नाता; पालनेका उपकार ।

पोसती*–पु० अफीमची ।

पोसन*–पु० 'पोषण' ।

पोसना–स० क्रि० आहार आदि देकर बड़ा करना; पालन करना; (पशु-पक्षीको) आहार आदि देकर मनोरंजन या उपयोगके लिए अपने यहाँ रखना; ढाँकना, छिपाना–'मोरि मुखै करसों कुच पोसै' –सुधानिधि; पोंछना ।

पोस्ट–पु० (अं०) खंभा; डाक; स्थान, जगह; पद; नौकरी । **–आफिस**–पु० डाकघर, डाकखाना, पत्रालय । **–कार्ड**–पु० डाकखानेसे खरीदा जानेवाला वह मोटे कागजका टुकड़ा जो पत्र-व्यवहारके काम आता है । **–बाक्स**–पु० किसीकी डाक या चिट्ठियाँ सुरक्षित रखनेके लिए विशेष रूपसे रखी गयी पेटी । **–बैग**–पु० डाकका थैला । **–मार्क**–पु० डाकघरकी मुहर । **–मास्टर**–पु० डाकघरका प्रधान कर्मचारी, डाकपाल । **–०जेनरल**–पु० किसी प्रांतके डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी । **–मैन**–पु० डाकखानेका वह कर्मचारी जो लोगोंके यहाँ उनकी चिट्ठियाँ पहुँचाता है, डाकिया ।

पोस्टमार्टम–वि० (अं०) मृत्युके बादका । पु० मृत्युका कारण जाननेके लिए किसी प्राणीके शवको चीर-फाड़कर देखना, शव-परीक्षा ।

पोस्टर–पु० (अं०) किसी कागजपर बड़े अक्षरोंमें छपी हुई वह नोटिस जो जनताकी जानकारीके लिए जगह-जगह दीवार आदिपर चपका दी जाती है ।

पोस्टल–वि० (अं०) डाक-घर-संबंधी; डाक-विभाग-संबंधी । –

आर्डर–पु० डाकघरसे मिलनेवाली एक तरहकी हुंडी जो मनीआर्डर-की जगह काममें लायी जाती है, डाकीय.आदेश । **–गाइड**–पु० वह पुस्तक जिसमें डाक-तार आदिके नियम और डाकखानोंकी सूची दी हुई रहती है ।

पोस्त–पु० (फा०) खाल, चमड़ा; छिलका; छाल; तह, परत; अफीमका पौधा; इस पौधेका डोंड़ा ।

पोस्ता–पु० एक पौधा जिसके डोंड़ेसे अफीम निकलती है, अफीमका पौधा ।

पोस्ती–वि० अफीमका सेवन करनेवाला, अफीमची; पोस्तको भिगोकर उसका पानी पीनेवाला; काहिल । पु० एक खिलौना जो नीचेकी ओर भारी होता है और लिटानेपर फिर खड़ा हो जाता है ।

पोस्तीन–पु० (फा०) पामीर, तुर्किस्तान और मध्य एशियाके लोगों-का एक प्रकारका पहनावा जो समूर आदि जानवरोंके बालदार चमड़ेसे बनाया जाता है; बालदार चमड़ेका कोट; पुस्तकमें जिल्दके साथ लगाया जानेवाला कागज ।

पोहना*–स० क्रि० गूँथना, पिरोना; भेदना, छेदना; चढ़ाना, लगाना; जमाना, बैठाना । * वि० घुसनेवाला, धँसनेवाला ।

पोहमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

पोहर†–पु० चरागाह; पशुओंका चारा, चरी ।

पोहा†–पु० चौपाया ।

पोहिया†–पु० चरवाहा ।

पौँचा–पु० साढ़े पाँचका पहाड़ा ।

पौंड–पु० दे० 'पाउंड' । **–पावना**–पु० (स्टर्लिंग बैलेंसेज) (अंतर-राष्ट्रीय वाणिज्यादिके परिणामस्वरूप) ब्रिटेनसे किसी देशके पावनेकी वह रकम जो बैंक आफ इंग्लैंडमें जमा रहती है और जो उसके साथ हुए समझौतेकी शर्तोंके अनुसार क्रमशः चुकायी जाती है।

पौँड़ई–वि० पौंड़ेके रंगका । पु० एक रंग जो पौंड़ेके रंगका होता है ।

पौंडरीक–वि० (सं०) कमल-संबंधी; कमलका; कमलका बना हुआ । पु० स्थलपद्म; एक प्रकारका कुष्ठ; एक यज्ञ ।

पौंडरीय, पौंडरीयक–पु० (सं०) दे० 'पुंडर्य' ।

पौंडर्य–पु० (सं०) दे० 'पुंडर्य' ।

पौंडल–पु० (अं०) फुट-पौंड-सेकण्ड पद्धतिमें बलका मात्रक । वह बल जो एक पौंड द्रव्यमानको 'एक फुट प्रति सेकण्ड, प्रति सेकण्ड'का त्वरण प्रदान करे ।

पौँड़ा, पौँढ़ा–पु० मोटे छिलके और अधिक रसवाली एक प्रकारकी लंबी और मोटी ईख ।

पौँड़ी†–स्त्री० पौरी ।

पौंड्र–पु० (सं०) एक प्राचीन देश; इस देशका निवासी या राजा; एक प्रकारकी ईख, पौंड़ा; भीमसेनका शंख; सांप्रदायिक चिह्न; एक संकीर्ण जाति (स्मृ०) ।

पौंड्रक–पु० (सं०) पौंड़ा, ईख; एक संकर जाति ।

पौंड्रिक–पु० (सं०) पौंड़ा, ईख ।

पौँढ़ना–अ० क्रि० दे० 'पौढ़ना' ।

पौँनार–स्त्री० दे० 'पौनार' ।

पौँरना†–अ० क्रि० तैरना ।

पौँरि, पौँरी*–स्त्री० पौरी ।

पौँरिया*–पु० दे० 'पौरिया' ।

पौंश्चलीय–वि० (सं०) कुलटा-संबंधी; कुलटाका ।

पौंश्चलेय–पु० (सं०) कुलटाका पुत्र ।

पौंश्चल्य–पु० (सं०) व्यभिचार ।

पौँसरा–पु० दे० 'पौसला' ।

पौंसवन–पु० (सं०) 'पुंसवन' ।

पौंस्न–वि० (सं०) पुरुषोचित । पु० पुरुषत्व, पुंस्त्व । .

पौ–स्त्री० प्रातःकालका प्रकाश; पौसला, प्याऊ; पासेका एक दाँव । * पु० जड़; पाँव । मु० **–फटना**–तड़का होना । **–बारह पड़ना**–पासेमें जीतका दाँव पड़ना; लाभका मौका मिलना । **–बारह होना**–पासेमें जीतका दाँव पड़ना; विजय होना; लाभ ही लाभ होना; खूब बन आना ।

पौआ–पु० सेरका चौथा हिस्सा; मिट्टी या धातुका वह बरतन जिसमें पावभर दूध, पानी आदि अँटे ।

पौगंड–पु० (सं०) दे० 'पोगंड' । वि० बालोचित; बालकों जैसा ।

पौगंडक–पु० (सं०) दे० 'पोगंड' ।

पौठ–स्त्री० जमीनका एक तरहका बंदोबस्त जिसमें खेत हर साल नये काश्तकारको जोतनेके लिए दिया जाता है ।

पौड़ना*–अ० क्रि० दे० 'पौढ़ना' ।

पौढ़ना–अ० क्रि० लेटना; झूलना ।

पौढ़ाना–स० क्रि० सुलाना, लेटाना; झुलाना ।

पौण्य–वि० (सं०) खरा, सच्चा; धर्मात्मा ।

पौतव–पु० (सं०) एक तौल ।

पौतवाध्यक्ष–पु० (सं०) मालकी तौलकी देखरेख करनेवाला अधिकारी (कौ०) ।

पौतवापचार–पु० (सं०) कम तौलना, डाँड़ी मारना (कौ०) ।

पौतिक–वि० (सं०) दुर्गंधवाले द्रव्यका बना हुआ; (सेप्टिक) जिसमें सड़न पैदा हो गई हो (व्रण) ।

पौतिनासिक्य–पु० (सं०) नाकसे दुर्गंध आनेका रोग, पीनस ।

पौत्तिक–पु० (सं०) एक प्रकारका मधु ।

पौत्र–वि० (सं०) पुत्र संबंधी; पुत्रका । पु० बेटेका बेटा, पोता ।

पौत्रिक–वि० (सं०) पुत्र-संबंधी; पौत्र-संबंधी ।

पौत्रिकेय–पु० (सं०) पुत्रके स्थानपर माना हुआ कन्याका पुत्र ।

पौत्री–स्त्री० (सं०) पोती; दुर्गा ।

पौद–स्त्री० छोटा पौधा; एक स्थानसे उखाड़कर दूसरे स्थानपर लगाने लायक छोटा पौधा; संतान; उपज; * पाँवड़ा । (नयी पौद–नयी पीढ़ी ।) **–घर**–पु० छोटे छोटे विविध पौधे लगाने तथा ग्राहकोंको बेचनेका स्थान (नर्सरी) ।

पौदन्य–पु० (सं०) राजा अश्मकका नगर (म० भा०) ।

पौदर–स्त्री० पैरका निशान, चरणचिह्न; लोगोंके पैदल चलनेसे बनी हुई राह, पगडंडी; कोल्हूके चारों ओरका वह मार्ग जिससे होकर उसे खींचनेवाला बैल घूमा करता है; मोट खींचनेवाले बैलोंके कुएँके पासतक बार-बार आने-जानेवाला ढालवाँ रास्ता ।

पौदा–पु० दे० 'पौधा'; बुलबुलकी कमरमें बाँधा जानेवाला फुँदना । **–गाह**–पु०, स्त्री० वह जगह जहाँ छोटे पौधे लगे हों ।

पौद्गलिक–वि० (सं०) पुद्गल-संबंधी; पुद्गलका; भूत-संबंधी; स्वार्थी ।

पौध–स्त्री० उपज, पैदाइश ।

पौधन–स्त्री० खाना परसनेका मिट्टीका बरतन ।

पौधा–पु० छोटा पेड़; नया पेड़ ।

पौधि*–स्त्री० दे० 'पौद' ।

पौनःपुनिक–वि० (सं०) बार-बार होनेवाला ।

पौनःपुन्य–पु० (सं०) अनेकशः आवृत्ति, बार-बार होनेका भाव ।

पौन–पु० हवा, वायु; जीव, प्राण; भूत, प्रेत; एक प्रकारका ढगण जिसमें गुरु पहले आता है और लघु पीछे । वि० तीन-चौथाई, पूर्णसे चतुर्थांश कम । मु० **–चलाना या मारना**–जादू-टोना करना ।

पौनरुक्त, पौनरुक्त्य–पु० (सं०) दुबारा उक्त होनेका भाव, आवृत्ति ।

पौनर्नव–वि० (सं०) पुनर्नवा-संबंधी ।

पौनर्भव–वि० (सं०) पुनर्भू (पुनः विवाह करनेवाली विधवा)-संबंधी; पुनर्भूका; पुनर्भूसे उत्पन्न । पु० पुनर्भूका पुत्र जिसकी गणना बारह प्रकारके पुत्रोंमें है (स्मृ०); किसी विधवा या परित्यक्ता स्त्रीका नया पति ।

पौनर्भवा–स्त्री० (सं०) पुनर्भूकी पुत्री ।

पौना–पु० पौनका पहाड़ा; गोल और चिपटे सिरकी छेददार या बिना छेदोंवाली लोहे आदिकी कलछी ।

पौनार–स्त्री० कमलकी नाल ।

पौनारि†–स्त्री० दे० 'पौनार' ।

पौनी–स्त्री० बढ़ई, नाई, धोबी आदि जिन्हें गाँवोंमें लोग कामके बदले उपजका कुछ अंश तथा मांगलिक अवसरोंपर इनाम देते हैं; छोटा पौना ।

पौने–वि० किसी संख्याका तीन-चौथाई (संख्यावाचक शब्दोंके साथ –जैसे पौने तीन, २) । मु० **–सोलह आना**–लगभग समूचा, लगभग पूरा । **–सोलह आने**–लगभग पूर्णरूपसे; प्रायः पूरी मात्रामें ।

पौमान*–पु० दे० 'पवमान'; जलाशय ।

पौरंदर–वि० (सं०) इंद्र-संबंधी । पु० ज्येष्ठा नक्षत्र ।

पौरंध्र–वि० (सं०) स्त्री-संबंधी ।

पौर*–स्त्री० ड्योढ़ी । वि० (सं०) पुर-संबंधी; नगरका; जो नगरमें पैदा हुआ हो; पेटू, औदरिक (वे०) । पु० पुरवासी, नागरिक; रोहिष नामकी घास । **–कन्या**–स्त्री० नगरकी स्त्री, नागरी । **–कार्य**–पु० नगर-संबंधी कार्य; जनताका कार्य । **–जन**–पु० नागरिक । **–जनपद**–वि० नगर और जनपदका । पु० नगर और जनपदके निवासी । **–मुख्य**–पु० नगरका प्रमुख व्यक्ति । **–योषित्,–स्त्री**–स्त्री० दे० 'पौर-कन्या' । **–लोक**–पु० नागरिक । **–वृद्ध**–पु० प्रमुख नागरिक । **–सख्य**–पु० एक नगरका नागरिक होना, सहनागरिकता ।

पौरक–पु० (सं०) नगर या घरके पासका बाग ।

पौरना†–अ० क्रि० तैरना ।

पौरव–वि० (सं०) पुरु-संबंधी; पुरुका; पुरुके गोत्रमें उत्पन्न । पु० पुरुका गोत्रज; आर्यावर्तका एक प्राचीन देश (म० भा०); इस देशका राजा या निवासी ।

पौरवी–स्त्री० (सं०) वसुदेवकी एक पत्नी; एक मूर्च्छना (संगीत) ।

पौरवीय–वि० (सं०) जिसकी भक्ति पौरव राजामें हो, जो पौरव राजामें अनुरक्त हो ।

पौरस्त्य–वि० (सं०) पूरबका, पूरबी, प्राच्य; प्रथम, आद्य, अगला ।

पौरांगना–स्त्री० (सं०) नगरकी स्त्री, नागरी ।

पौरा†–पु० रखे हुए चरण, कदम, आगमन ।

पौराण–वि० (सं०) प्राचीन कालका; पहलेका; पुराण-संबंधी; पुराणका; जिसका कथन या उल्लेख पुराणमें हो, पुराणोक्त ।

पौराणिक–वि० (सं०) दे० 'पौराण'; पुराणोंका जानकार । पु० पुराणका जानकार व्यक्ति; पुराणवाचक ।

पौरि–स्त्री० दे० 'पौरी' ।

पौरिक–पु० (सं०) नागरिक; नगरका शासक ।

पौरिया–पु० ड्योढ़ीदार, द्वारपाल ।

पौरी–स्त्री० मकानका वह कोठरी या गलीकी तरहका भीतरी भाग जो प्रवेश करते ही पड़ता है, ड्योढ़ी; खड़ाऊँ; (सं०) अंतःपुरमें रहनेवाले सेवकोंकी भाषा ।

पौरुमीढ़–पु० (सं०) एक प्रकारका साम ।

पौरुष–वि० (सं०) पुरुष-संबंधी; पुरुषका । पु० पुरुषका भाव, पुरुषत्व; पुरुषार्थ; शुक्र; उद्यम; विक्रम, पराक्रम; ऊँचाई या गहराईकी एक माप, पुरसा; एक आदमीके ले जानेभरका बोझ; पुरुषकी लिंगेंद्रिय ।

पौरुषिक–पु० (सं०) पुरुषकी पूजा करनेवाला ।

पौरुषी–स्त्री० (सं०) स्त्री ।

पौरुषेय–वि० (सं०) पुरुष-संबंधी; पुरुषका; मानवीय, मनुष्यका बनाया हुआ, मनुष्यकृत; आध्यात्मिक । पु० मनुष्यवध; मनुष्योंका समूह; मनुष्यका कार्य; रोजीनेपर काम करनेवाला मजदूर ।

पौरुष्य–पु० (सं०) साहस, मरदानगी ।

पौरुहूत–वि० (सं०) इंद्र-संबंधी; इंद्रका ।

पौरू†–स्त्री० एक तरहकी जमीन ।

पौरेय–वि० (सं०) नगरके समीपका (स्थान, देश आदि); नागर ।

पौरोगव–पु० (सं०) (राजाकी) पाकशालाका अध्यक्ष ।

पौरोडाश–वि० (सं०) पुरोडाश-संबंधी; पुरोडाशका । पु० पुरोडाशके समर्पणके समय पढ़ा जानेवाला मंत्र-विशेष ।

पौरोडाशिक–पु० (सं०) पौरोडाश नामक मंत्रका पाठ करनेवाला ।

पौरोधस–पु० (सं०) पुरोहितका पद; ऋत्विक्; पुरोहितका कर्म ।

पौरोभाग्य–पु० (सं०) दोष-दर्शन, छिद्रान्वेषण; द्वेष; दुष्कर्म ।

पौरोहित्य–पु० (सं०) पुरोहितका पद या कर्म ।

पौर्णमास–वि० (सं०) पूर्णिमा-संबंधी । पु० पूर्णिमाको किया जानेवाला यागविशेष; पूर्णिमा ।

पौर्णमासिक–वि० (सं०) पूर्णिमा-संबंधी; पूर्णिमाके दिन होनेवाला ।

पौर्णमासी–स्त्री० (सं०) पूर्णिमा, पूनो; प्रतिपदा ।

पौर्णमास्य–पु० (सं०) पूर्णिमाको होनेवाला यज्ञ ।

पौर्णमी, पौर्णिमा–स्त्री० (सं०) पूर्णिमा, पूनो ।

पौर्णिम–पु० (सं०) सन्यासी ।

पौर्तिक–वि० (सं०) पूर्त-संबंधी; पूर्तका साधनरूप (कर्म) ।

पौर्व–वि० (सं०) पहलेका; पूरबी । (स्त्री० 'पौर्वी' ।)

पौर्वदेहिक, पौर्वदैहिक–वि० (सं०) पूर्व जन्म-संबंधी; पूर्व जन्ममें किया हुआ ।

पौर्वपदिक–वि० (सं०) पूर्वपद-संबंधी, जो समासके पूर्वपदसे बद्ध हो ।

पौर्वापर्य–पु० (सं०) पूर्वापरका, भाव, पूर्वापरत्व; अनुक्रम ।

पौर्वार्द्धिक–वि० (सं०) पूर्वार्द्ध-संबंधी ।

पौर्वाह्णिक–वि० (सं०) पूर्वाह्ण-संबंधी; पूर्वाह्णमें किया जानेवाला ।

पौर्विक–वि० (सं०) पहलेका, प्राचीन; पैतृक ।

पौल–स्त्री० रास्ता; सिंहद्वार ।

पौलना*–स० क्रि० काटना ।

पौलस्ती–स्त्री० (सं०) शूर्पणखा ।

पौलस्त्य–वि० (सं०) पुलस्त्य-संबंधी; पुलस्त्यके गोत्रमें उत्पन्न । पु० रावण; कुबेर; विभीषण; चंद्रमा ।

पौला†–पु० एक प्रकारकी खड़ाऊँ जिसमें खूँटीकी जगह रस्सी लगी रहती है ।

पौलि–स्त्री० दे० 'पौली' । पु० (सं०) कम भूना हुआ अन्न; इस प्रकारके अन्नकी रोटी ।

पौलिया–पु० दे० 'पौरिया' ।

पौली–स्त्री० पौरी, ड्योढ़ी; पैरका एड़ीसे पंजेतकका भाग; पैरका निशान, चरणचिह्न ।

पौलोम–वि० (सं०) पुलोमा-संबंधी; पुलोमाका; पुलोमाके गोत्रमें उत्पन्न । पु० इंद्र (?) ।

पौलोमी–स्त्री० (सं०) इंद्रकी पत्नी शची, इंद्राणी । **–संभव**–पु० जयंत ।

पौवा–पु० सेरका चौथा भाग; पावभरका बाट; एक पाव दूध, तेल आदि अँटनेभरका बरतन ।

पौष–पु० (सं०) पूसका महीना; एक त्योहार; युद्ध ।

पौषी–स्त्री० (सं०) पूसकी पूर्णिमा ।

पौष्कर–वि० (सं०) नीलकमल-संबंधी । पु० पुष्करमूल । **–मूल**–पु० पुष्करमूल ।

पौष्करिणी–स्त्री० (सं०) पुष्करिणी ।

पौष्कल–पु० (सं०) एक प्रकारका अन्न ।

पौष्कल्य–पु० (सं०) प्रचुरता; परिपूर्णता; पूर्ण वृद्धि ।

पौष्टिक–वि० (सं०) पुष्ट बनानेवाला, पुष्टिकर, शक्तिवर्द्धक । पु० धन, जन आदिकी वृद्धि करनेवाला कर्म; एक वस्त्र जो मुंडन-संस्कारके समय धारण किया जाता है ।

पौष्ण–पु० (सं०) रेवती नक्षत्र । वि० सूर्य-संबंधी ।

पौष्प–वि० (सं०) पुष्प-संबंधी; फूलोंका बना हुआ, फूलोंसे तैयार किया हुआ ।

पौष्पक–पु० (सं०) पुष्पांजन ।

पौष्पी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी शराब जो फूलोंसे तैयार की जाती है; पाटलिपुत्र, पटना ।

पौसरा–पु० दे० पौसला ।

पौसला–पु० वह स्थान जहाँ प्यासोंको धर्मार्थ पानी पिलाया जाता है, सबील ।

पौसार†–स्त्री० करघेमेंकी वह लकड़ी जिसे पैरसे दबानेपर राछ ऊँचा-नीचा होता है ।

पौसेरा–पु० एक पावका बाट ।

पौहारी–वि० दे० 'पयहारी' ।

प्याऊ–पु० दे० 'पौसला' ।

प्याज़–पु० (फा०) उत्कट गंधवाला एक प्रसिद्ध मूल जो तरकारी, मसाले और दवाके काम आता है; पलांडु, सुकंद, सुकंदक, मुखदूषण (मुखभूषण—पान) ।

प्याज़ी–वि० (फा०) प्याजके रंगका; हलका गुलाबी ।

प्यादा–पु० (फा०) पैदल सिपाही; दूत; सतरंजका एक मोहरा जो सीधे चलता है और आड़े मारता है, पैदल । **–पा**–अ० पाँव-पाँव, पैदल । **–पाई**–स्त्री० पाँव-पाँव चलना, पैदल चलना ।

प्यान–वि० (सं०) मोटा, पीन ।

प्याना†–स० क्रि० दे० 'पिलाना' ।

प्यायन–पु० (सं०) वृद्धि, वर्द्धन । वि० शक्तिवर्द्धक ।

प्यायित–वि० (सं०) जिसकी वृद्धि हुई हो; जिसकी शक्ति बढ़ गयी हो; जो मोटा हो गया हो; जो तृप्त किया गया हो ।

प्यार–पु० प्रेम, प्रीति, मुहब्बत; प्रेमसूचक स्पर्श, चुंबन आदि; लालन, लाड़-चाव; पियार नामका वृक्ष (चिरौंजी इसीका बीज है) ।

प्यारा–वि० जिसे प्यार किया जाय, जो प्रेमका पात्र हो, प्रिय; जो प्रिय लगे, अच्छा लगनेवाला; जिसे त्यागनेका जी न चाहे, जिसके प्रति बहुत अधिक ममता हो; * महँगा ।

प्याला–पु० (फा०) पीनेका बरतन, पान-पात्र; जल, दूध, मद्य आदि पीनेका एक बिना गलेका छोटा चिपटा बरतन जिसका ऊपरी भाग पेंदेसे अधिक चौड़ा होता है, छोटा कटोरा, जाम; जुलाहोंका नरी भिगोनेका मिट्टीका बरतन; तोप या बंदूकमें रंजक रखनेकी जगह; खप्पर जिसमें भिक्षुक भीख माँगते हैं । **मु०** **–देना**–शराब पिलाना । **–पीना या लेना**–शराब पीना । **–बहना**–गर्भपात होना । **–भरना**–आयु पूरी होना ।

प्यावना*–स० क्रि० दे० 'पिलाना' ।

प्यास–स्त्री० शरीरकी वह आवश्यकता जो पानी पीनेसे शांत होती है, पानी पीनेकी इच्छा, तृषा; किसी वस्तुकी प्रबल चाह, उत्कट इच्छा । **मु०** **–बुझाना**–पानी पीकर प्यास दूर करना; किसी उत्कट इच्छाकी पूर्ति करना ।

प्यासा–वि० जिसे प्यास लगी हो, पिपासार्त्त ।

प्यासी–स्त्री० एक छोटी मछली ।

प्यून–पु० (अं०) चपरासी । **–बुक**–स्त्री० वह रजिस्टर जिसमें उन कागजोंके नाम चढ़ाये जाते हैं जिन्हें किसी चपरासीके हाथ कहीं भेजते हैं और जिसपर वह चपरासी पानेवालोंके हस्ताक्षर करा लाता है ।

प्यूनी–स्त्री० दे० 'पूनी' ।

प्यूपा–पु० (अं०, प्यूपा) अण्डेसे कीट शिशु डिंभक (लारवा)की शक्लमें बाहर आता है, जो तेजीसे बढ़ता है, फिर कुछ समय बाद वह सुस्त होकर गोल मटोल बनकर अपने गिर्द एक खोल-सी चढ़ा लेता है । कायांतरणका यह रूप 'प्यूपा' कहलाता है ।

प्यो*–पु० पति, स्वामी ।

प्योसर*–पु० हालकी ब्यायी हुई गायका दूध ।

प्योसार, प्योसाल–पु० स्त्रीका पितृगृह, मायका ।

प्यौंदा†–पु० पैवंद ।

प्यौर*–पु० प्रियतम, पति, कांत ।

प्र–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर आरंभ (प्रयाण), शक्ति (प्रभु), आधिक्य (प्रवाद, प्रच्छाय), उत्पत्ति (प्रपौत्र), वियोग (प्रोषित), उत्कर्ष (प्राचार्य), शुद्धि (प्रसन्न-जल), इच्छा (प्रार्थना), शांति (प्रशम), पूजा (प्रांजलि) आदिका द्योतन करता है ।

प्रकंप–पु० (सं०) कँपकँपी, थरथराहट ।

प्रकंपन–वि० (सं०) कँपानेवाला; हिलानेवाला । पु० वायु, तेज हवा; एक नरक; कँपकँपी; जोरसे हिलनेकी क्रिया ।

प्रकंपित–वि० (सं०) काँपता हुआ; हिलता हुआ; कँपाया या हिलाया हुआ ।

प्रकंपी(पिन्)–वि० (सं०) हिलनेवाला; काँपनेवाला ।

प्रकच–वि० (सं०) जिसके बाल खड़े हों ।

प्रकट–वि० (सं०) जो सामने हो, प्रत्यक्ष; जाहिर, स्पष्ट; जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो; जो गुप्त न हो, व्यक्त । * अ० प्रकाश्य रूपमें, सबके सामने ।

प्रकटन–पु० (सं०) प्रकट करने या होनेकी क्रिया ।

प्रकटना*–अ० क्रि० प्रकट होना ।

प्रकटाना–स० क्रि० प्रकट करना ।

प्रकटित–वि० (सं०) प्रकाशित, प्रकट किया हुआ ।

प्रकटीकरण–पु० (सं०) प्रकट करनेकी क्रिया; प्रकट करना ।

प्रकटीभवन–पु० (सं०) प्रकट होनेकी क्रिया, प्रकट होना ।

प्रकथन–पु० (सं०) घोषित करना ।

प्रकर–पु० (सं०) समूह, राशि; अगर; सहायता, मदद; मैत्री; गुलदस्ता; रिवाज; सम्मान; उढ़ारना । वि० कुशलतापूर्वक मैत्री करनेवाला ।

प्रकरण–पु० (सं०) निर्माण, रचना; वर्णन, प्रतिपादन; प्रसंग, संदर्भ; किसी ग्रंथ या पुस्तकका वह भाग जिसमें किसी एक विषयका प्रतिपादन हो, परिच्छेद; वह ग्रंथ जिसमें किसी शास्त्रके सिद्धांतका प्रतिपादन हो; कर्तव्यका विधान (मी०); अवसर; एक प्रकारका शृंगारप्रधान नाटक जिसका वृत्त लौकिक तथा काल्पनिक होता है और नायक ब्राह्मण, अमात्य या वणिक् होता है । **–सम**–पु० सत्पक्ष नामका हेत्वाभास (न्या०) ।

प्रकरणिका, प्रकरणी–स्त्री० (सं०) वह नाटक जो प्रकरण जैसा ही हो, पर आकारमें उससे छोटा हो ।

प्रकरिका–स्त्री० (सं०) आगेकी घटनाएँ स्पष्ट करनेके लिए बीचमें रखी जानेवाली घटना, प्रासंगिक कथावस्तु ।

प्रकरी–स्त्री० (सं०) एक तरहका गान; आँगन; चौराहा; एक तरहकी प्रासंगिक कथावस्तु (ना०) ।

प्रकर्ष–पु० (सं०) उत्कर्ष; उत्तमता; अतिरेक, अधिकता; खींचनेकी क्रिया; शक्ति; विस्तार; विशेषता ।

प्रकर्षक–पु० (सं०) खींचनेवाला; कामदेव ।

प्रकर्षण–पु० (सं०) क्षुब्ध, अशांत करना; खींचना; हल चलाना; लंबाई; लगाम; चाबुक; उत्तमता; सूदसे अधिक रुपया वसूल करना ।

प्रकर्षित–वि० (सं०) खींचा हुआ, ताना हुआ; सूदके अतिरिक्त वसूल किया हुआ ।

प्रकर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) प्रकर्षयुक्त, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ; चलानेवाला, नेतृत्व करनेवाला ।

प्रकला–स्त्री० (सं०) कला (समय)का साठवाँ भाग । **–(ल) विद्**–वि० अज्ञान । पु० व्यापारी ।

प्रकल्पना–स्त्री० (सं०) नियत करना, स्थिर करना, संभाव्य निष्कर्षका पूर्वानुमान; प्रामाणिक सिद्ध होनेके पहलेकी स्थिति, धारणा (हाइपाथेसिस) ।

प्रकल्पित–वि० (सं०) बनाया हुआ, निर्मित, रचित; नियत किया हुआ, स्थिर किया हुआ ।

प्रकल्प्य–वि० (सं०) निश्चित या स्थिर किये जाने योग्य ।

प्रकश–पु० (सं०) चाबुक; मूत्रनलिका; चोट पहुँचाना; वध करना ।

प्रकांड–पु० (सं०) वृक्ष; वृक्षका तना; शाखा; बाहुका ऊपरका हिस्सा । वि० उत्तम, प्रशस्त; सर्वश्रेष्ठ; बहुत बड़ा ।

प्रकांडक–पु० (सं०) दे० 'प्रकांड' ।

प्रकांडर–पु० (सं०) वृक्ष ।

प्रकाम–वि० (सं०) यथेष्ट, काफी; जिसमें कामवासनाकी अधिकता हो । पु० एक देवता; इच्छा; तृप्ति । **–भुक्(ज्)**–वि० इच्छाभर खानेवाला ।

प्रकामोदय–पु० (सं०) इच्छाभर बात करना ।

प्रकार–पु० (सं०) भेद, किस्म; रीति, ढंग; सादृश्य; विशेषता; * प्राकार, परकोटा ।

प्रकालन–पु० (सं०) मारण; एक नाग; एक तरहका साँप । वि० हिंसक; पीछा करनेवाला ।

प्रकाश–पु० (सं०) (लाइट) वह भौतिक शक्ति जिसके द्वारा हमें वस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं, ज्योतिष्मान् पदार्थोंसे उत्पन्न होनेवाली वह शक्ति जो ईथर या आकाशतत्त्वके द्वारा चारों ओर फैलती है, तेज, आलोक, द्योत, उजेला, अंधकारका उलटा; आतप, धूप; विकास, अभिव्यक्ति; स्पष्ट होना; प्रकट होना, आविर्भाव; किसी ग्रंथ या पुस्तकका कोई विभाग; प्रसिद्धि, ख्याति; अट्टहास; पीतल । वि० प्रकाशयुक्त; स्फुट; स्पष्ट; प्रकट; वृक्षादिसे रहित; अति प्रसिद्ध । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सूर्य । **–काम**–वि० ख्यातिका इच्छुक । **–क्रय**–पु० खुलेआम होनेवाली खरीद । **–नारी**–स्त्री० वेश्या । **–परावर्तक**–पु० (रीफ्लेक्टर) शीशे आदिका वह टुकड़ा या आला जो कहींसे प्रकाश ग्रहण कर उसे अन्य दिशामें

प्रक्षेपित करे, वह यंत्र जो किसीकी छाया या प्रतिबिंब ग्रहण कर दूसरी ओर प्रतिफलित करे, प्रकाश-प्रतिफलक, प्रतिक्षेपक। **–प्रक्षेपक**–पु० (सर्चलाइट) दे० 'अन्वेषक प्रकाश'। **–मापी**–पु० (फोटो मीटर) एक यंत्र जो प्रकाश स्रोतकी प्रकाशतीव्रता नापता है।**–वर्ष**–पु० (लाइट ईयर) वह दूरी जो प्रकाशकी किरणें एक वर्षमें तय करती हैं–लगभग ५८ खरब ७० अरब मील (एक सेकंडमें १ लाख ८६ हजार मील)। **–वियोग**–पु० ऐसा वियोग जो सबपर प्रकट हो। **–संयोग**–पु० वह संयोग जो सबपर प्रकट हो। **–संश्लेषण**–(फोटो-सिन्थेसिस) क्लोरोफिल युक्त हरे पौधे सूर्यके प्रकाशमें वायुमण्डलकी कार्बन-डाई-ऑक्साइड तथा जलसे कार्वोहाइड्रेटका संश्लेषण कर लेते हैं। इस क्रियाको प्रकाश-संश्लेषण कहते हैं। **–स्तंभ**–(लाइट हाउस) समुद्रमें बनाया गया वह ऊँचा स्तंभ या मीनार जिसपर रातमें जहाजोंको चट्टानों या अन्य खतरोंसे बचानेके लिए तेज रोशनी की जाती है, दीपघर; रातमें विमानोंका पथ-प्रदर्शन करनेके लिए हवाई अड्डेपर दायें-बायें घूमनेवाला आकाश-दीप; (ला०) मार्गप्रदर्शक। मु० **–डालना**–(जानकारी तथा तथ्योंके विवेचनसे) स्थिति, प्रयोग अर्थादिको स्पष्ट करना।

प्रकाशक–वि० (सं०) चमकीला; प्रकाश करनेवाला; अभिव्यक्त करनेवाला; प्रकट करनेवाला; प्रसिद्ध। पु० पुस्तक आदिको छपवाकर प्रकट करनेवाला, 'पब्लिशर'; सूर्य; आविष्कर्ता; व्याख्या करनेवाला। **–ज्ञाता(तृ)**–पु० मुर्गा।

प्रकाशकीय–वि० (सं०) प्रकाशक संबंधी। पु० प्रकाशककी ओरसे, पुस्तकके आरंभमें, दिया जानेवाला वक्तव्य या निवेदन।

प्रकाशन–पु० (सं०) आलोकित करना; प्रकट करना; छपवाकर प्रकट करना या जनताके सामने रखना; प्रकाशित ग्रंथादि; सबको सूचित करना, विज्ञापन; विष्णु। वि० प्रकाशित करनेवाला।

प्रकाशनाधिकार–पु० (सं०) (कापीराइट) दे० 'कृतिस्वाम्य'।

प्रकाशनोद्घाटन–पु० छपकर तैयार हुए किसी महत्त्वपूर्ण ग्रंथका प्रकाशनारंभ सार्वजनिक रूपसे किसी विख्यात व्यक्तिके हाथों करानेका कार्य, आयोजन या समारोह।

प्रकाशमान–वि० (सं०) चमकता हुआ, द्योतमान; प्रसिद्ध।

प्रकाशवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रकाशयुक्त।

प्रकाशात्मक–वि० (सं०) चमकीला, दीप्तिमान्।

प्रकाशात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) चमकीला, सतेज। पु० विष्णु; शिव; सूर्य।

प्रकाशिकी–स्त्री० दृष्टि और प्रकाशके स्वरूप तथा नियमों-सिद्धान्तों आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान (आप्टिक्स), दृष्टिविज्ञान।

प्रकाशित–वि० (सं०) प्रकाशयुक्त; प्रकट किया हुआ; आलोकित किया हुआ; छपवाकर प्रकट किया हुआ; विज्ञापित।

प्रकाशी(शिन्)–वि० (सं०) प्रकाशयुक्त, चमकीला।

प्रकाश्य–वि० (सं०) प्रकाशित करने योग्य, प्रकाशनके योग्य; प्रकट; जो सबको सुनाकर कहा जाय ('स्वगत'का उलटा)। पु० प्रकाश।

प्रकास*–पु० दे० 'प्रकाश'।

प्रकासना*–अ० क्रि० प्रकाशित होना।

प्रकिरण–पु० (सं०) फैलाना, बिखेरना; मिश्रण।

प्रकीर्ण–वि० (सं०) फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ; मिलाया हुआ, मिश्रित; अस्त-व्यस्त किया हुआ; क्षुब्ध; परिशिष्ट; फुटकल। पु० किसी पुस्तक या ग्रंथका कोई परिच्छेद, प्रकरण; अनेक प्रकारकी वस्तुओंका मिश्रण; बिखेरना; विक्षेप; विस्तार; चँवर; फुटकल वस्तुओंका संग्रह; काँटेदार करंज। **–केश**–वि० जिसके बाल बिखरे हों। **–केशी**–स्त्री० दुर्गा। **–लेखा**–पु० (मिसेलेनियस अकाउंट) फुटकर मदोंसे होनेवाली आय तथा व्ययका हिसाब।

प्रकीर्णक–पु० (सं०) चँवर; घोड़ेके सिरपर लगायी जानेवाली कलगी; घोड़ा; फुटकल वस्तुओंका संग्रह; वह परिच्छेद या प्रकरण जिसमें फुटकल बातें दी गयी हों; वह पाप जिसका प्रायश्चित्त धर्मग्रंथोंमें न बताया गया हो; प्रकरण, अध्याय। वि० छितराया, फैलाया हुआ; फुटकल।

प्रकीर्तन–पु० (सं०) प्रशंसा, यशका गान; घोषणा।

प्रकीर्तना–स्त्री० (सं०) उल्लेख करना, नाम लेना।

प्रकीर्ति–स्त्री० (सं०) ख्याति, यश; घोषणा।

प्रकीर्तित–वि० प्रशंसित, जिसका यश गाया गया हो; जिसकी घोषणा की गयी हो।

प्रकीर्य–वि० (सं०) फैलाने योग्य; बिखेरने योग्य; मिश्रित करने योग्य। पु० रीठा करंज, काँटेदार करंज।

प्रकुंच–पु० (सं०) एक मान जो लगभग एक मुट्ठीके बराबर होता था, पल।

प्रकुथित–वि० (सं०) दूषित; सड़ा हुआ।

प्रकुपित–वि० (सं०) विशेष रूपसे कुपित, अति क्रुद्ध।

प्रकुप्त–वि० (सं०) दे० 'प्रकुपित'।

प्रकुल–पु० (सं०) सुंदर शरीर।

प्रकूष्मांडी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

प्रकृत–वि० (सं०) प्रकृतिसे उत्पन्न; प्रकृतिके अनुरूप; जो बनावटी न हो; स्वाभाविक; शुद्ध; असल; अविकृत; जिसका आरंभ हो चुका हो, आरब्ध; जिसका प्रसंग छिड़ा हो, प्रकरणप्राप्त; संगत, पूरा किया हुआ; नियुक्त; इच्छित; महत्त्वका; रुचिकर।

प्रकृतार्थ–पु० (सं०) यथार्थ अभिप्राय। वि० असल।

प्रकृति–स्त्री० (सं०) स्वभाव, मिजाज; वह मूलतत्त्व जिसका परिणाम जगत् है, जगत्का उपादान कारणरूप मूलतत्त्व (सां०); माया; परमात्मा; पंच महाभूत; स्वामी, अमात्य, सुहृद् आदि राज्यांग; प्रजा; सदा बना रहनेवाला; मूल गुण या धर्म; योनि; लिंग; स्त्री; माता; एक छंद; वह मूल शब्द जिसमें प्रत्यय लगाये जाते हैं (व्या०); आकार-प्रकार; गुणक (ग०); चराचर संसार। **–ज**–वि० सहज, स्वाभाविक। **–पुरुष**–पु० राजमंत्री। **–भाव**–पु० मूल, अविकृत रूप। **–मंडल**–पु० स्वामी, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और दल–ये सात राज्यांग; प्रजावर्ग। **–लय**–पु० संसारका प्रकृतिमें मिल जाना, प्रलय (सां०)। **–वाद**–पु० कला और साहित्यके क्षेत्रमें यह सिद्धान्त कि प्रकृतिमें जो कुछ दिखाई देता है, उसका वैसा ही चित्रण किया जाना चाहिए; उसमें आदर्शों तथा नैतिक विचारोंको स्थान न मिलना चाहिये; दर्शनमें प्राकृतिक वस्तुओंकी वास्तविक सत्ता माननेका सिद्धान्त, जिसमें अध्यात्म या अलौकिक तत्त्वकी गुंजाइश नहीं; 'नैचुरलिज्म'। एमिल ज़ोला आदि द्वारा प्रचारित एक कलात्मक दृष्टिकोण जो मनुष्यमें पशु-भिन्न किसी विशिष्ट चेतनाका अस्तित्व स्वीकार नहीं करता; जीवकी सभी प्रवृत्तियोंका, जो प्रायः पाशविक हैं, नग्न चित्रण करनेवाली प्रवृत्ति। **–शास्त्र**–पु० प्रकृति-संबंधी शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें चराचर जगत्की उत्पत्ति, विकास आदिकी मीमांसा की जाय। **–सिद्ध**–वि० सहज, स्वाभाविक। **–सुभग**–वि० स्वभावसे ही सुंदर, जिसमें सहज सौंदर्य हो। **–स्थ**–वि० जो अपने स्वभाव या स्वरूपमें स्थित हो, क्षोभ, विकारसे रहित, स्वस्थ।

प्रकृतीश–पु० (सं०) राजा, शासक।

प्रकृत्या–अ० (सं०) स्वभावसे, स्वभावतः।

प्रकृष्ट–वि० (सं०) खींचा हुआ; बढ़ाया हुआ; प्रकर्षयुक्त, उत्कृष्ट, उत्तम; प्रधान, मुख्य।

प्रकृष्टता–स्त्री० (सं०) प्रकृष्टका भाव; उत्कृष्टता; दीर्घता; मुख्यता।

प्रकोथ–पु० (सं०) सड़ना; दूषित होना; सूखना, शोष।

प्रकोप–पु० (सं०) अत्यधिक कोप; उत्तेजना; विद्रोह; आक्रमण; किसी बीमारीका जोर; शरीरकी धातुओंका बिगड़ जाना।

प्रकोपन–पु० (सं०) प्रकोपित करना। वि० प्रकुपित करनेवाला।

प्रकोपित–वि० (सं०) जिसमें प्रकोप उत्पन्न किया गया हो; क्रुद्ध किया हुआ।

प्रकोष्ठ–पु० (सं०) बाँहका कलाईसे लेकर कुहनीतकका भाग, पहुँचा; महल या भवनके सदर फाटकके पासका कमरा; इमारतके भीतरका आँगन; इमारतोंसे घिरा हुआ सहन; (लॉबी) विधान-सभा आदिके बाहरका कमरा, बरामदा, प्रांगण या अन्य स्थान जहाँ बैठकर सदस्यगण निजी तौरपर बातचीत करते और पत्रकारों आदिसे मिलते हैं, सभाकक्ष। **–वार्त्ता**–स्त्री० (लॉबीटॉक) संसद्

या विधानसभाके बाहर किसी स्थानपर की जानेवाली बातचीत ।

प्रकोष्ठक–पु० (सं०) प्रासादके मुख्य द्वारके पासका कमरा ।

प्रक्खर–वि० (सं०) अति तीक्ष्ण । पु० घोड़े या हाथीका कवच, पाखर; कुत्ता; खच्चर ।

प्रक्रम–पु० (सं०) कदम; क्रम, तरतीब, सिलसिला; आरंभ, उपक्रम; अवसर, मौका; (स्टेज) प्रगति या विकासके सिलसिले-में (बीचमें) पड़नेवाला कोई स्थान या कालभाग; यात्रा आदिके क्रमकी विशेष स्थिति या कुछ समयतक ठहरनेका स्थान, मंजिल । **–भंग**–पु० एक काव्यदोष, दे० 'भग्न प्रक्रम' । **–विरुद्ध**–वि० जो आरंभ करते ही रोका गया हो ।

प्रक्रमण–पु० (सं०) आरंभ करना; कदम बढ़ाना; अधिक भ्रमण ।

प्रक्रमणीय–वि० (सं०) आरंभ करने योग्य ।

प्रक्रांत–वि० (सं०) आरंभ किया हुआ, आरब्ध; जिसका प्रसंग छिड़ा हो या चल रहा हो, प्रकरणप्राप्त । पु० यात्राका आरंभ; वादका विषय ।

प्रक्रिया–स्त्री० (सं०) प्रकरण; क्रिया, अमल; संस्कार; उच्च पद; ग्रंथका अध्याय; पुस्तकका आरंभिक अध्याय; विशेषाधिकार; तरकीब; विधि; (प्रोसेस) किसी चीजके बनने, निकलने, तैयार होने आदिकी क्रिया; शब्द या प्रयोगका साधन; राजाओंका छत्र आदि धारण करना ।

प्रक्रीड–पु० (सं०) खेल, क्रीड़ा ।

प्रक्लिन्न–वि० (सं०) आर्द्र, तर, गीला; दयार्द्र । **–वर्त्म(न्)**–पु० पलकका एक रोग ।

प्रक्लेद–पु० (सं०) आर्द्रता, तरी, गीलापन, नमी ।

प्रक्लेदन–वि० (सं०) आर्द्र बनानेवाला, तर करनेवाला । पु० आर्द्र करना ।

प्रक्लेदी(दिन्)–वि० (सं०) गीला करनेवाला; पिघलानेवाला ।

प्रक्वण, प्रक्वाण–पु० (सं०) वीणाकी ध्वनि या झंकार ।

प्रक्वाथ–पु० (सं०) उबलना, उबाल ।

प्रक्षपण–पु० (सं०) नष्ट करना ।

प्रक्षय–पु० (सं०) अंत, विनाश ।

प्रक्षयण–पु० (सं०) नष्ट करना ।

प्रक्षर–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रक्खर', पाखर ।

प्रक्षरण–पु० (सं०) झरना, चूना ।

प्रक्षाम–वि० (सं०) जला हुआ, झुलसा हुआ ।

प्रक्षाल–पु० (सं०) प्रायश्चित्त । वि० शुद्ध करनेवाला ।

प्रक्षालन–पु० (सं०) पानीसे साफ करना, धोना; साफ करना; वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी जाय; शुद्ध करनेका साधन । **–गृह**–पु० (लैबेटरी) हाथ-मुँह आदि धोनेका प्रकोष्ठ; दे० 'शौचालय' भी ।

प्रक्षालयिता(तृ)–पु० (सं०) (अतिथियोंके चरण) धोनेवाला ।

प्रक्षालित–वि० (सं०) धोया हुआ; साफ किया हुआ; जिसका प्रायश्चित्त किया गया हो ।

प्रक्षाल्य–वि० (सं०) धोने योग्य; शुद्ध करने योग्य ।

प्रक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; डाला हुआ; क्षेपकके रूपमें निविष्ट किया हुआ, पीछेसे जोड़ा या मिलाया हुआ ।

प्रक्षीण–वि० (सं०) विनष्ट; लुप्त । पु० विनाश-स्थल ।

प्रक्षीवित–वि० (सं०) जो नशेमें हो, मतवाला ।

प्रक्षुण्ण–वि० (सं०) कूटा हुआ; चूर्ण किया हुआ; चोट पहुँचाया हुआ; रौंदा हुआ (मार्ग) ।

प्रक्षेप–पु० (सं०) फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना; ऊपरसे मिलायी जानेवाली वस्तु; गाड़ीका बक्स; पुस्तक या ग्रंथमें वह मूलसे भिन्न अंश जो बादमें जोड़ा या मिलाया गया हो, क्षेपक; किसी व्यापारके साझेदारोंकी अलग-अलग पूँजी । **–लिपि**–स्त्री० लिखनेका एक विशेष-ढंग ।

प्रक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना, डालना; ऊपरसे मिलाना; नियत करना (मूल्य आदि) ।

प्रक्षेपणीय–वि० (सं०) प्रक्षेपणके योग्य ।

प्रक्षोभण–पु० (सं०) क्षुब्ध करना ।

प्रक्ष्वेडन–पु० (सं०) लोहेका बाण; शोर-गुल ।

प्रखंड–पु० खंडका खंड, छोटा विभाग ।

प्रखर–वि० (सं०) तीक्ष्ण, तेज; प्रचंड, उग्र । पु० प्रक्खर ।

प्रखरता–स्त्री० (सं०) प्रखरका भाव, तीक्ष्णता, तेजी; प्रचंडता; उग्रता ।

प्रखल–वि० (सं०) भारी दुष्ट ।

प्रखाद–वि० (सं०) निगलने, खानेवाला ।

प्रख्य–वि० (सं०) स्पष्ट, दृश्य; सदृश (समासांतमें) ।

प्रख्या–स्त्री० (सं०) विशिष्ट ख्याति; सुप्रसिद्धि; उपमा, समता; इंद्रिय-ग्राह्यता ।

प्रख्यात–वि० (सं०) विशेष रूपसे ख्यात, बहुत प्रसिद्ध; प्रसन्न, सुखी । पु० नाटकका एक भेद जिसमें कथावस्तुका आधार इति-हास, पुराणादिकी घटना हो ।

प्रख्याति–स्त्री० (सं०)विशिष्ट ख्याति, अधिक प्रसिद्धि; प्रशंसा; इंद्रिय-ग्राह्यता ।

प्रख्यान–पु० (सं०) खबर देना, सूचित करना; सूचना; अनुभव करना ।

प्रख्यापन–पु० (सं०) प्रसिद्ध करना, प्रचार करना; सूचित करना; कोई आवश्यक आदेश, आज्ञप्ति आदि औपचारिक रूपसे सर्व-साधारणको सूचित कर देना (प्रोमल्गेशन) ।

प्रख्यापित–वि० (प्रोमलगेटेड) (वह अध्यादेश, आज्ञप्ति, राज्यादेश आदि) जो सर्वसाधारणको विज्ञापित कर दिया गया हो, जिसकी विघोषणा कर दी गयी हो ।

प्रगंड–पु० (सं०) बाँह या कुहनीसे कंधेतकका भाग ।

प्रगंडी–स्त्री० (सं०) दुर्ग आदिके चारों ओरकी दीवार, प्राकार, परकोटा; परकोटेमें योद्धाओंके बैठनेकी जगह ।

प्रगंध–पु० (सं०) पर्पट, दवनपापड़ा ।

प्रगट–वि० दे० 'प्रकट' । अ० प्रकट रूपसे ।

प्रगटन–पु० दे० 'प्रकटन' ।

प्रगटना*–अ० क्रि० प्रकट होना; जन्म लेना । स० क्रि० प्रकट करना ।

प्रगटाना*–स० क्रि० प्रकट करना ।

प्रगत–वि० (सं०) आगे गया या बढ़ा हुआ; जो अलग या अधिक दूरीपर हो । **–जानु,–जानुक**–वि० जिसके घुटने एक-दूसरेसे बहुत अलग हों (ऐसे प्राणीकी टाँगें प्रायः धनुषाकार होती हैं) ।

प्रगति–स्त्री० (सं०) आगे बढ़ना, उन्नति । **–रोध**–पु० (सेट बैक) प्रगति या उन्नतिमें बाधा पड़ना, प्रगतिका रुक जाना । **–वाद**–पु० (प्रोग्रेसिविज्म) समाज, साहित्य आदिकी निरंतर उन्नतिपर जोर देनेका सिद्धांत; साहित्यका एक आधुनिक सिद्धान्त जिसका लक्ष्य जनवादी शक्तियोंको संघटितकर मार्क्सवाद तथा भौतिक यथार्थवादके ध्येयकी संपूर्त्ति करना है । **–शील**–वि० आगे बढ़नेवाला, उन्नतिशील ।

प्रगतिवादी(दिन्)–वि० प्रगतिवादका अनुयायी या समर्थक ।

प्रगम–पु० (सं०) प्रेमी और प्रेमिकामें अनुरागका उदय, पूर्वानुराग ।

प्रगमन–पु० (सं०) आगे बढ़ना, उन्नति करना; पूर्वानुराग ।

प्रगयण–पु० (सं०) अनूठा जवाब ।

प्रगर्जन–पु० (सं०) गरजनेकी क्रिया; चिल्लाना ।

प्रगर्भ*–वि० दे० 'प्रगल्भ'–'बोल्यो प्रगर्भ बानी कठोर'–रघुराजसिंह ।

प्रगल्भ–वि० (सं०) प्रतिभावान्; जिसकी बुद्धि अवसरके अनुसार काम कर जाय, प्रत्युत्पन्नमति; साहसी, हिम्मतवर; धृष्ट, ढीठ; बोलनेमें संकोच न करनेवाला; वाचाल; प्रौढ़; कुशल, दक्ष; उद्दंड, उद्धत; निर्लज्ज; अभिमानी; ख्यात ।

प्रगल्भता–स्त्री० (सं०) प्रगल्भ होनेका भाव; प्रतिभाशालिता; उत्साह; औद्धत्य; धृष्टता; मुखरता; वाक्चातुर्य; कुशलता; दक्षता; प्रौढ़ता; निःशंकता; प्रसिद्धि; अध्यवसाय ।

प्रगल्भा–स्त्री० (सं०) नायिकाका एक भेद–दे० प्रौढा नायिका; दुर्गा; धृष्ट स्त्री ।

प्रगल्मित–वि० (सं०) घमंडी; प्रसिद्ध, ख्यात ।

प्रगसना*–अ० क्रि० प्रकट होना, व्यक्त होना ।

प्रगाढ़–वि० (सं०) डुबाया हुआ, तर किया हुआ; अत्यधिक; दृढ़;

बहुत गाढ़ा, गहरा, घना; कठिन। पु० कष्ट; तपश्चर्या।

प्रगाता(तृ)–पु०, वि० (सं०) अच्छा गानेवाला।

प्रगामी(मिन्)–वि० (सं०) प्रस्थान करनेवाला; जो प्रस्थान कर रहा हो।

प्रगायी(यिन्)–वि० (सं०) गानेवाला; जो गाना आरंभ कर रहा हो।

प्रगास*–पु० प्रकाश।

प्रगासना*–स० क्रि० प्रकाशित करना; प्रज्वलित करना।

प्रगीत–वि० (सं०) गाया हुआ। पु० गाना।

प्रगीति–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका छंद; गीतिकाव्य।

प्रगुण–वि० (सं०) प्रकृष्ट गुणवाला, उत्तम गुणवाला; कुशल, दक्ष; सीधा; सरल स्वभावका, अकुटिल; अनुकूल।

प्रगुणता-अर्गल–पु० (एफिशेंसी बार) (सरकारी या अर्द्ध-सरकारी) नौकरीमें वेतनवृद्धिके मार्गमें आनेवाली वह बाधा जो आवश्यक योग्यता या दक्षताके अभावसे उत्पन्न हो, दक्षता-अर्गल, दक्षतारोक।

प्रगुणन–पु० (सं०) सीधा, चिकना करना; व्यवस्थित करना।

प्रगुणित–वि० (सं०) बराबर, चिकना या सीधा किया हुआ; सुव्यवस्थित।

प्रगुणी(णिन्)–वि० (सं०) चिकना; बराबर; गुणी; मैत्रीपूर्ण।

प्रगुण्य–वि० (सं०) अधिक; उत्तम।

प्रगृहीत–वि० (सं०) अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ; जिसका उच्चारण बिना संधिके नियमोंका ध्यान रखे किया गया हो।

प्रगृह्य–वि० (सं०) अच्छी तरह ग्रहण करने योग्य; (वह पद) जिसमें स्वरसंधि न हो सके (व्या०)। पु० स्मृति; वाक्य।

प्रगे–अ० (सं०) प्रातःकाल, तड़के, सबेरे। **–निश,–शय**–वि० जो सबेरा होनेपर भी सोता रहे, प्रातःशायी।

प्रगेतन–वि० (सं०) प्रातःकाल किया जानेवाला।

प्रग्रह–पु० (सं०) ग्रहण करना, पकड़ना; नियमन; सूर्यग्रहण अथवा चंद्रग्रहणका आरंभ; बागडोर; तराजूमें लगी हुई रस्सी; कोड़ा; किरण; भुजा; कनेरका पेड़; कैद, बंधन; बंदी, कैदी; नेता, अगुआ; कर्णिकार वृक्ष; अनुग्रह; विष्णु; घोड़े आदिको साधना।

प्रग्रहण–पु० (सं०) ग्रहण करने या पकड़नेकी क्रिया; नियमन; सूर्य या चंद्रमाके ग्रहणका आरंभ; बागडोर; बंधन; घोड़े आदिको साधना; नेतृत्व करना।

प्रग्राह–पु० (सं०) ग्रहण करने या पकड़नेकी क्रिया; वहन; तराजूकी रस्सी; बागडोर, लगाम।

प्रग्रिह*–पु० परिग्रह।

प्रग्रीव–पु० (सं०)रंगा हुआ बुर्ज; घर या मकानके चारों ओरका लकड़ीका घेरा; वातायन; झरोखा; पेड़का सिरा; अस्तबल; विलासगृह, रंगभवन।

प्रघट*–वि० दे० 'प्रकट'।

प्रघटक–पु० (सं०) नियम; सिद्धांत; आदेश, विधिवाक्य।

प्रघटना*–अ० क्रि० प्रकट होना।

प्रघटा–स्त्री० (सं०) किसी शास्त्रकी स्थूल और आरंभिक बातें। **–विद्**–वि०, पु० किसी शास्त्रका मामूली जानकार।

प्रघट्टक–पु० (सं०) दे० 'प्रघटक'; प्रकरण; अनुच्छेद, पैरा–'अंतिम प्रघट्टकमें जो प्रकृतिका वर्णन है'–गद्यभारती। * वि० प्रकट करनेवाला।

प्रघण, प्रघाण, प्रघन, प्रघान–पु० (सं०) मकानके बाहरी दरवाजेके सामनेका स्थान या छज्जा; ताम्रपत्र; लोहेकी गदा या मुद्गर।

प्रघस–पु० (सं०) अधिक भक्षण, पेटूपन; राक्षस, दैत्य, असुर। वि० अधिक खानेवाला, पेटू।

प्रघसा–स्त्री० (सं०) कार्त्तिकेयकी एक मातृका।

प्रघात–पु० (सं०) मारण, हनन; युद्ध; पानी बहनेका नल।

प्रघुण–पु० (सं०) अतिथि, मेहमान।

प्रघूर्ण–वि० (सं०) घूमनेवाला; चक्कर खानेवाला। पु० अतिथि, मेहमान।

प्रघोर–वि० (सं०) अति घोर; कठिन।

प्रघोष–पु० (सं०) ऊँची ध्वनि, प्रचंड शब्द।

प्रघोषक–पु० (एनाउंसर) दे० 'अभिज्ञापक', 'आख्यापक'।

प्रचंड–वि० (सं०) अति तीव्र, प्रखर; बहुत क्रोधी; प्रबल; घोर, भीषण; अति तेजस्वी; प्रतापी; असह्य; बड़ा। पु० सफेद कनेर। **–घोण**–वि० बड़ी नाकवाला। **–मूर्ति**–पु० वरुण वृक्ष। स्त्री० भारी और बली शरीर। वि० भीमकाय।

प्रचंडा–स्त्री० (सं०) शंखपुष्पी; दुर्गाकी एक सखी; दुर्गा।

प्रचई*–स्त्री० परिचयपत्र; परिचयात्मक वर्णन।

प्रचक्र–पु० (सं०) प्रस्थित सैन्य।

प्रचक्षा(क्षस्)–पु० (सं०) बृहस्पति।

प्रचय–पु० (सं०) फूल या फल तोड़ना; समूह, पुंज, ढेर; संयोगका एक भेद, शिथिल संयोग (न्या०); उपचय, वृद्धि; एक प्रकारका वेदपाठ, एक श्रुति।

प्रचर–पु० (सं०) मार्ग, राह; चलन, रीति।

प्रचरण–पु० (सं०) घूमना-फिरना, विचरण; प्रचारित होना; चलन होना; आरंभ।

प्रचरणी–स्त्री० (सं०) स्रुवा।

प्रचरना*–अ० क्रि० प्रचारित होना; फैलना; चलना।

प्रचरित–० वि(सं०) जिसका प्रचार हो, प्रचलित; अभ्यस्त।

प्रचल–वि० (सं०) चंचल; जिसका चलन हो।

प्रचलक–पु० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

प्रचलन–पु० (सं०) हिलना; चलना-फिरना; व्यवहारमें आना; चलन, प्रचार; पलायन।

प्रचलाक–पु० (सं०) बाणका आघात; मोरकी कलगी या पूँछ; साँप।

प्रचलाकी(किन्)–पु० (सं०) मोर।

प्रचलायन–पु० (सं०) निद्रा आदिसे सिरका झुकना।

प्रचलायित–पु० (सं०) लुढ़कता हुआ; निद्रा आदिके कारण जिसका सिर झुक रहा हो।

प्रचलित–वि० (सं०) हिला हुआ; गतिशील; जिसका चलन हो, जो व्यवहारमें आ रहा हो; चलता हुआ, जारी; जो चल चुका हो।

प्रचाय–पु० (सं०) दे० 'प्रचय'।

प्रचायक–वि०, पु० (सं०) पुष्प आदिका चयन करनेवाला; ढेर लगानेवाला।

प्रचायिका–स्त्री० (सं०) पुष्प आदिका चयन; पुष्प आदिका चयन करनेवाली स्त्री।

प्रचार–पु० (सं०) घूमना-फिरना; प्रयोग; चलाना; प्रकट होना; किसी वस्तुका व्यापक व्यवहार; आचरण; चलन, रवाज; खेल-कूदका मैदान; चरागाह; गति; मार्ग; किसी वस्तुको प्रसिद्ध करने या फैलानेका कार्य (हिं०)। **–कार्य**–पु० प्रचारका काम; (प्रोपैगैंडा) विचारों, सिद्धांतों, विशेष ढंगके समाचारों आदिका दूसरोंमें संघटित रूपसे प्रचार करनेका कार्य।

प्रचारक–वि०, पु० (सं०) प्रचार करनेवाला; फैलानेवाला।

प्रचारण–पु० (सं०) फैलाना; छितराना।

प्रचारणा–स्त्री० चुनौती, ललकार, आह्वान।

प्रचारना*–स० क्रि० प्रचार करना, फैलाना; ललकारना।

प्रचारित–वि० (सं०) चलाया हुआ; जिसका प्रचार किया गया हो; फैलाया हुआ।

प्रचारी(रिन्)–वि० (सं०) घूमने-फिरनेवाला; प्रकट होनेवाला; बर्ताव करनेवाला।

प्रचाल–पु० (सं०) वीणाकी गरदन।

प्रचालन–पु० (सं०) चलानेकी क्रिया।

प्रचालित–वि० (सं०) जो चलाया गया हो, प्रचलित किया हुआ।

प्रचित–वि० (सं०) (पुष्प आदि) जिसका चयन हुआ हो; चुना हुआ; एकत्र किया हुआ; भरा हुआ; अनुदात्त; वृद्धिको प्राप्त। पु० दंडक छंदका एक भेद।

प्रचुर–वि० (सं०) बहुत अधिक, प्रभूत; बहुत बड़ा; पूर्ण, भरा-पूरा (समासमें)। पु० चोर। **–पुरुष**–वि० घना बसा हुआ, जनाकीर्ण। पु० चोर।

प्रचुरता–स्त्री०, **प्रचुरत्व**–पु० (सं०) प्रचुर होनेका भाव, आधिक्य।

प्रचेतसी–स्त्री० (सं०) कायफल; प्रचेताकी कन्या।

प्रचेता(तस्)–पु० (सं०) वरुण; एक स्मृतिकार मुनि; प्राचीनबर्हि-

के दस पुत्र । वि० बुद्धिमान्, चतुर ।

प्रचेता(तृ)–पु० (सं०) चयन करनेवाला; सारथि ।

प्रचेतित–वि० (सं०) देखा हुआ; विचारा हुआ ।

प्रचेय–वि० (सं०) चयनके योग्य, चुनने योग्य; वृद्धिके योग्य ।

प्रचेल–पु० (सं०) पीत चंदन ।

प्रचेलक–पु० (सं०) घोड़ा । वि० तीव्र गतिवाला ।

प्रचोद–पु० (सं०) प्रेरणा करना; उत्तेजित करना ।

प्रचोदक–वि०, पु० (सं०) प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक ।

प्रचोदन–पु० (सं०) प्रेरित करना; उत्तेजित करना; आदेश देना; आदेश ।

प्रचोदनी–स्त्री० (सं०) भटकटैया; प्रेरण ।

प्रचोदित–वि० (सं०) जिसे प्रेरणा की गयी हो, प्रेरित; उत्तेजित किया हुआ; आदिष्ट; प्रेषित; घोषित ।

प्रचोदी(दिन्)–वि० (सं०) वढ़ावा देनेवाला; प्रेरित करनेवाला ।

प्रच्छक–वि०, पु० (सं०) पूछनेवाला, प्रश्नकर्ता ।

प्रच्छद–पु० (सं०) ढकनेवाला कपड़ा आदि, आच्छादन; बिछावनकी चादर । **–पट**–पु० ढकने या ओढ़नेका कपड़ा (चादर, ओहार); बुरका; बिछावन; बिछावनकी चादर ।

प्रच्छन–पु० (सं०) पूछना, प्रश्न करना ।

प्रच्छना–स्त्री० (सं०) प्रश्न; आमंत्रण ।

प्रच्छन्न–वि० (सं०) ढका हुआ, आच्छन्न; छिपा हुआ, गुप्त । पु० चोर दरवाजा; खिड़की । **–चारी(रिन्)**–वि० गुप्त रूपसे कार्य करनेवाला । **–तस्कर**–पु० गुप्त चोर ।

प्रच्छर्दन–पु० (सं०) प्राणवायुको नाकके द्वारा वाहर निकालनेकी क्रिया, रेचन; वमन, कै; कै करानेवाली दवा ।

प्रच्छर्दिका–स्त्री० (सं०) कै आनेका रोग, वमन ।

प्रच्छादक–वि०, पु० (सं०) ढकनेवाला, आवृत करनेवाला; छिपानेवाला ।

प्रच्छादन–पु० (सं०) ढकने, आवृत करनेकी क्रिया; छिपानेकी क्रिया; उत्तरीय, ओढ़नी ।

प्रच्छादित–वि० (सं०) ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ ।

प्रच्छान–पु० (सं०) घाव चीरना ।

प्रच्छाय–पु० (सं०) घनी छाया; छायादार जगह ।

प्रच्छालना*–स० क्रि० धोना ।

प्रच्छिल–वि० (सं०) जलहीन, सूखा हुआ ।

प्रच्छेदक–पु० (सं०) अविश्वसनीय पतिके प्रति पत्नी द्वारा गाया जानेवाला गीत ।

प्रच्छेदन–पु० (सं०) काटना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

प्रच्यव–पु० (सं०) पतन, भ्रंश; क्षरण; पीछे हटना; प्रगति ।

प्रच्यवन–पु० (सं०) पतन; क्षरण, चूना; हटना; हानि ।

प्रच्यावन–पु० (सं०) हटनेके लिए प्रेरित करना; हटानेका साधन; शमन करनेवाला ।

प्रच्युत–वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित, भ्रष्ट; विचलित; क्षरित, झरा हुआ; निष्कासित; भगाया हुआ ।

प्रच्युति–स्त्री० (सं०) अपने स्थानसे भ्रष्ट होना, पतन; हानि ।

प्रछालना*–स० क्रि० धोना ।

प्रछेद*–पु० प्रस्वेद, पसीना ।

प्रजंक*–पु० पलंग ।

प्रजंघ–पु० (सं०) एक राक्षस; एक वानर ।

प्रजंघा–स्त्री० (सं०) जाँघका निचला भाग ।

प्रजंत*–अ० दे० 'पर्यंत' ।

प्रज–पु० (सं०) पति ।

प्रजन–पु० (सं०) गर्भाधानके लिए नरपशुका मादासे संगम; संतान उत्पन्न करना; जन्म देनेवाला, जनक ।

प्रजनक रिऐक्टर–पु० (ब्रीडर रिऐक्टर) ऐसा रिऐक्टर जिसमें युरैनियम २३५ के विखंडन द्वारा नियंत्रित ऊर्जाका उत्पादन करनेके अतिरिक्त इस बातका भी प्रबन्ध होता है कि जितना युरैनियम २३५ इसमें खर्च हो उससे अधिक मात्रामें प्लूटोनियमका निर्माण हो सके जो स्वयं एक विखण्डनीय पदार्थ है ।

प्रजनन–पु० (सं०) संतान उत्पन्न करना; जन्म; वीर्य; भग; पुरुषकी लिंगेंद्रिय; संतान; नरपशुका गर्भाधानके लिए मादासे संगम करना; (ब्रीडिंग) पौधों तथा प्राणियोंमें नियंत्रित संगमन द्वारा उनकी नस्लको सुधारना । वि० उत्पन्न करनेवाला ।

प्रजनयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) उत्पन्न करनेवाला ।

प्रजनिका–स्त्री० (सं०) माता ।

प्रजनिष्णु–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला ।

प्रजनुक–पु० (सं०) शरीर ।

प्रजनू–स्त्री० (सं०) योनि, भग ।

प्रजय–स्त्री० (सं०) विजय ।

प्रजरंत*–वि० प्रज्वलित, जलता हुआ ।

प्रजरना*–अ० क्रि० बहुत जलना; प्रज्वलित होना ।

प्रजल्प–पु० (सं०) इधर-उधरकी वात, गप ।

प्रजल्पन–पु० (सं०) वात करना; गप करना ।

प्रजल्पित–वि० (सं०) कहा हुआ । पु० जो वात कही गयी हो; वकवाद; वार्तालाप ।

प्रजवन–वि० (सं०) वेगवान्, तीव्र गतिवाला, तेज ।

प्रजवित–वि० (सं०) बुलाया हुआ; प्रेरित किया हुआ; चलाया हुआ ।

प्रजवी(विन्)–वि० (सं०) अधिक वेगवाला, तेज । पु० दूत, हरकारा ।

प्रजांतक–पु० (सं०) यम ।

प्रजा–स्त्री० (सं०) प्रजनन; संतति, औलाद; शुक्र, वीर्य; प्राणी; किसी राजा द्वारा शासित जनता; किसी राज्य या राष्ट्रकी जनता दे० 'परजा' । **–काम**–वि० संतान चाहनेवाला, संतानेच्छु । पु० संतानकी कामना । **–कार**–पु० प्रजा उत्पन्न करनेवाला, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा । **–गुप्ति**–स्त्री० प्रजाकी रक्षा । **–तंतु**–पु० वंश-परंपरा; वंश, संतान । **–तंत्र**–पु० प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था । वि० प्रजा या प्रजाके प्रतिनिधियों द्वारा परिचालित (शासन-व्यवस्था) । **–तीर्थ**–पु० जन्मका शुभकाल । **–दंत**–पु० अक्लदाढ़, चरम चर्वणक । **–द**–वि० संतान देनेवाला, बाँझपन दूर करनेवाला । **–दा**–स्त्री० बाँझपन दूर करनेवाली एक ओषधि, गर्भदात्री । **–दान**–पु० संतानोत्पत्ति; चाँदी । **–द्वार**–पु० सूर्य । **–धर**–पु० विष्णु । **–नाथ**–पु० ब्रह्मा; मनु; दक्ष; राजा । **–निषेक**–पु० गर्भाधान । **–प**–पु० राजा । **–पति**–पु० सृष्टिका रचयिता, सृष्टिका अधिष्ठाता देवता, सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; दक्ष आदि दस लोककर्ता जिन्हें ब्रह्माने सृष्टिके आदिमें उत्पन्न किया था; विश्वकर्मा; सूर्य; अग्नि; विष्णु; यज्ञ; राजा; जामाता; पिता, जनक; लिंगेंद्रिय । **–पाल,–पालक**–पु० राजा । **–पालन**–पु० प्रजाका पालन । **–पालि**–पु० शिव । **–पाल्य**–पु० राजाका पद । **–वृद्धि**–स्त्री० संतानकी बढ़ती, संतानकी बहुलता । **–व्यापार**–पु० प्रजाकी देखभाल, प्रजाका हितचिंतन । **–सत्ता**–स्त्री० दे० 'प्रजातंत्र' । **–सत्ताक,–सत्तात्मक**–वि० (शासन-व्यवस्था) जिसमें शासन-सूत्र प्रजा या उसके प्रतिनिधियोंके हाथमें हो । **–सृक्(ज्)**–पु० ब्रह्मा । **–हित**–पु० जल । वि० जो प्रजाके लिए हितकर हो । **–हृदय**–पु० एक प्रकारका साम ।

प्रजाक्षोभ–पु० (इनसरजेंसी) राजसत्ताके विरुद्ध प्रजामें व्याप्त क्षोभ या विद्रोहकी भावना; राज्यप्रतिरोध ।

प्रजागर–पु० (सं०) निद्राका अभाव, नींद न आना, अनिद्रा; सतर्कता; रक्षक; पहरा देनेवाला; विष्णु ।

प्रजागरण–पु० (सं०) जागना ।

प्रजागरूक–वि० (सं०) अच्छी तरह जगा हुआ; सावधान ।

प्रजात–वि० (सं०) उत्पन्न ।

प्रजाता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे संतान उत्पन्न हुई हो ।

प्रजाति–स्त्री० (सं०) प्रजा, संतान; संतान उत्पन्न करना, प्रजनन; (रेस) मनुष्यों, पशु पक्षियों आदिका वह समूह जिसके सदस्योंके नाक, कान, कपाल, केशादिके आकार-प्रकार, रूपरंग आदिमें समानता हो, जैसे मंगोलियन प्रजाति; प्रजनन-शक्ति; पौत्रकी उत्पत्ति । **–गत भेदभाव**–पु० (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन) एक प्रजातिको अन्य प्रजातियोंसे श्रेष्ठ मानकर उनमें भेदभाव

करना, भिन्न-भिन्न प्रजातयोंके प्रति समानताकी नीति न बरतकर उनमें अंतर करना। **–संहार**–पु० (जेनोसाइड) किसी देशकी सरकार द्वारा एक सुनियोजित नीतिके अनुसार राज्य-सीमाके भीतर रहनेवाली किसी अल्पसंख्यक जाति या वर्गके विनाशका कार्य।

प्रजाध्यक्ष–पु० (सं०) सूर्य; दक्ष।

प्रजायी(यिन्)–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला (जैसे–'वीर-प्रजायी')। (स्त्री० 'प्रजायिनी'।)

प्रजारना*–स० क्रि० पूरी तरह जलाना; उद्दीप्त करना।

प्रजावती–स्त्री० (सं०) भाईकी स्त्री। वि० स्त्री० गर्भवती; संतानवाली।

प्रजित–वि० (सं०) हाँका हुआ, प्रेरित।

प्रजित्–वि० (सं०) विजयी।

प्रजिन–पु० (सं०) वायु।

प्रजीवन–पु० (सं०) जीविका; रोजी।

प्रजुरना*–अ० क्रि० प्रज्वलित होना; प्रकाशित होना।

प्रजुरित, प्रजुलित*–वि० दे० 'प्रज्वलित'।

प्रजेप्सु–वि० (सं०) संतानेच्छु।

प्रजेश, प्रजेश्वर–पु० (सं०) प्रजापति; राजा।

प्रजोग*–पु० दे० 'प्रयोग'।

प्रज्झटिका–स्त्री० (सं०) प्राकृतका एक छंद।

प्रज्ञ–वि० (सं०) प्रकृष्ट बुद्धिवाला, बुद्धिमान्, मतिमान्; (किसी बातकी) जानकारी रखनेवाला (समासमें)। पु० बुद्धिमान् मनुष्य; पंडित, विद्वान्।

प्रज्ञता–स्त्री० (सं०) प्रज्ञ होनेका भाव, बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता।

प्रज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) जनाने या ज्ञात करानेकी क्रिया या भाव; सूचना; बुद्धि; संकेत, इशारा; प्रतिज्ञा, कौल; एक देवी; प्रशस्त बुद्धि।

प्रज्ञा–स्त्री० (सं०) बुद्धि, विवेक, मति; सरस्वती; विदुषी। **–काय**–पु० एक पूर्वजिन, मंजुश्री। **–कूट**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–गुप्त**–वि० बुद्धि द्वारा रक्षित। पु० एक बौद्ध आचार्य। **–चक्षु(स्)**–पु० धृतराष्ट्र; बुद्धिरूपी नेत्र। वि० अंधा (जिसके लिए उसकी बुद्धि ही आँखका काम देती है); बुद्धिमान्। **–पारमिता**–स्त्री० दान, शील आदि छ पारमिताओंमेंसे एक, पूर्ण ज्ञान या सर्वज्ञता (बौ०)। **–वाद**–पु० विद्वत्तापूर्ण उक्ति; यह सिद्धांत कि मनुष्यको अपना काम हमेशा अपनी प्रज्ञाके अनुसार विचारपूर्वक करना चाहिए। **–वृद्ध**–वि० जो बुद्धिमें बढ़ा-चढ़ा हो, अधिक बुद्धिमान्; ज्ञानवृद्ध। **–सहाय**–वि० बुद्धिमान्, मतिमान्। **–हीन**–वि० निर्बुद्धि, मूर्ख।

प्रज्ञात–वि० (सं०) अच्छी तरह जाना हुआ; स्पष्ट; विवेचित; प्रसिद्ध, ख्यात, विश्रुत।

प्रज्ञात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) परम बुद्धिमान्।

प्रज्ञान–पु० (सं०) बुद्धि; चिह्न। वि० बुद्धिमान्, पंडित।

प्रज्ञापन–पु० (सं०) जताना, सूचित करना।

प्रज्ञाल–वि० (सं०) बुद्धिमान्।

प्रज्ञावान्(वत्)–वि० (सं०) चतुर, बुद्धिमान्।

प्रज्ञिल–वि० (सं०) बुद्धिमान्।

प्रज्ञी(ज्ञिन्)–वि० (सं०) बुद्धिमान।

प्रज्ञु–वि० (सं०) दे० 'प्रगतजानुक'।

प्रज्वलन–पु० (सं०) जलना, दहकना, जोरसे जलना, बलना।

प्रज्वलित–वि० (सं०) जलता हुआ, बलता हुआ; जला हुआ. दहका हुआ; चमकीला !

प्रज्वार–पु० (सं०) ज्वरका ताप।

प्रज्वालन–पु० (सं०) प्रज्वलित करना, जलाना।

प्रडीन–पु० (सं०) पक्षियोंकी एक प्रकारकी उड़ान, चारों ओर उड़ना। वि० जो उड गया हो।

प्रण–पु० दृढ़ निश्चय, पण, प्रतिज्ञा। वि० (सं०) प्राचीन, पुराना।

प्रणख–पु० (सं०) नाखूनका अगला भाग।

प्रणत–वि० (सं०) विशेष रूपसे झुका हुआ; जो प्रणाम कर रहा हो, जो प्रणाम करनेके लिए झुका हो, कृतप्रणाम; वक्र; विनीत, नम्र; शरणागत; चतुर, दक्ष। **–काय**–वि० जिसका शरीर झुका हो। **–पाल,–पालक**–पु० शरणागतकी रक्षा करनेवाला। (स्त्री० 'प्रणतपालिका'।)

प्रणति–स्त्री० (सं०) झुकनेकी क्रिया या भाव; प्रणाम; विनय, नम्रता; शरणमें जाना, शरणागति।

प्रणदन–पु० (सं०) आवाज करना; जोरकी आवाज, चिल्लाहट; गरजना, गर्जन।

प्रणदित–वि० (सं०) शब्द करता हुआ; गुंजार करता हुआ।

प्रणमन–पु० (सं०) झुकना; प्रणाम करना।

प्रणमना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रणम्य–वि० (सं०) प्रणाम करने योग्य, वंद्य।

प्रणय–पु० (सं०) प्रेम, प्रीति; प्रीतियुक्त प्रार्थना; विश्वास; निर्वाण, मोक्ष; उदारता, कृपा; श्रद्धा; नायक; नेतृत्व। **–कलह**–पु० नायक और नायिकाका आपसी झगड़ा या प्रीतिभंग; नायक-नायिकाका एक-दूसरेसे रूठ जाना। **–कुपित**–वि० जो प्रणय-कलहके कारण रूठ गया हो। (स्त्री० 'प्रणयकुपिता'।)**–कोप**–पु० नायिकाका नायकसे रूठ जाना, मान। **–प्रकर्ष**–पु० प्रेमका अतिरेक। **–भंग**–पु० मैत्री न रहना; विश्वासघात। **–वचन**–पु० प्रेमपूर्ण वचन। **–विघात,–विहति**–पु० प्रीतियुक्त प्रार्थनाकी अस्वीकृति। **–विमुख**–वि० प्रेम या मैत्रीकी ओर जिसकी प्रवृत्ति न हो।

प्रणयन–पु० (सं०) लाना; ले जाना; करना; निबद्ध करना, ग्रंथ, लेखादि लिखना; रचना; निर्माण; वितरण; (दंड) देना, लगाना; अग्निका संस्कार करना।

प्रणयनीय–वि० (सं०) ले जाने योग्य; संस्कार करने योग्य (अग्नि)।

प्रणयिता–स्त्री० (सं०) प्रणययुक्त होनेका भाव, अनुरक्ति।

प्रणयिनी–स्त्री० (सं०) प्रेम करनेवाली, प्रेमिका; कांता, पत्नी।

प्रणयी(यिन्)–वि० (सं०) प्रेम करनेवाला, अनुरागी, प्रणययुक्त; चाहनेवाला, इच्छुक; घनिष्ठ (संबंध)। पु० मित्र; प्रेमी; पति; प्रार्थी; सेवक; उपासक।

प्रणव–पु० (सं०) ओंकार; परमेश्वर; ढोल।

प्रणवना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रणष्ट–वि० (सं०) जो लुप्त हो गया हो; विनष्ट; मृत।

प्रणस–वि० (सं०) बड़ी नाकवाला।

प्रणाडिका, प्रणाडी–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रणाली'; द्वार।

प्रणाद–पु० (सं०) तारध्वनि, जोरकी आवाज; गर्जन; गुहार; हिनहिनानेकी आवाज आदि; प्रसन्नतावश मुखसे निकलनेवाला विशेष प्रकारका शब्द, शीत्कार आदि; कर्णनाद नामका कानका रोग जिसमें यों ही मृदंग आदिकी ध्वनि सुनाई देती है।

प्रणाम–पु० (सं०) झुकना, नत होना; अपनी लघुता या विनय सूचित करनेके लिए किसीके सामने झुकने, हाथ जोड़ने आदिका व्यापार, नमस्कार, अभिवादन।

प्रणामांजलि–स्त्री० (सं०) हाथ जोड़कर किया जानेवाला प्रणाम, करबद्ध प्रणाम।

प्रणामी(मिन्)–वि० (सं०) झुकनेवाला, प्रणाम करनेवाला।

प्रणायक–पु० (सं०) नेता, पथप्रदर्शक; सेनापति।

प्रणाय्य–वि० (सं०) प्रीति करने योग्य; प्रिय; विरक्त; अभिलाष-रहित; साधु। पु० चोर।

प्रणाल–पु० (सं०) पानी बहनेका नाला।

प्रणालिका–स्त्री० (सं०) नाली; अविच्छिन्न क्रम।

प्रणाली–स्त्री० (सं०) पानी बहनेका कृत्रिम नाला, परनाला; परंपरा, प्रथा; दो बड़े जलमार्गोंको मिलानेवाला छोटा जलमार्ग; पद्धति; रीति, ढंग (हिं०)।

प्रणाश–पु० (सं०) विनाश, बरबादी; लुप्त होना, गायब होना; मृत्यु।

प्रणाशन–पु० (सं०) नाश करनेकी क्रिया या भाव, नष्ट करना; विनाश। पु० नष्ट करनेवाला।

प्रणाशी(शिन्)–वि० (सं०) नाश करनेवाला।

प्रणिसित–वि० (सं०) जिसका चुंबन किया गया हो, चूमा हुआ।

प्रणिधान–पु० (सं०) रखना, रखा जाना; व्यवहार, उपयोग; प्रयत्न; अभिनिवेश, आग्रह; एक प्रकारकी समाधि (यो०); भक्तिविशेष; अर्पण; कर्मके फलका त्याग; चित्तकी एकाग्रता; प्रवेश; प्रार्थना ।

प्रणिधायी(यिन्)–वि० (सं०) (गुप्तचर) भेजने या नियुक्त करनेवाला ।

प्रणिधि–पु० (सं०) भेद लेना; गुप्तचर भेजना; (सीक्रेट एजेंट) गुप्तचर; अनुचर; याचन; अवधान; विशेष कार्यसे भेजा जानेवाला दूत; दूत या एजेंट (सीक्रेट एजेंट) ।

प्रणिधेय–पु० (सं०) गुप्तचर भेजना; नियुक्ति, प्रयोग ।

प्रणिनाद–पु० (सं०) भारी शब्द, घोर ध्वनि ।

प्रणिपतन, प्रणिपात–पु० (सं०) प्रणाम करना; चरणोंपर गिरना ।

प्रणिहित–वि० (सं०) रखा हुआ, स्थापित; प्राप्त; फैलाया हुआ; समाधिस्थ; कृतसंकल्प; सतर्क; गुप्त रूपसे पता लगाया हुआ; मिश्रित ।

प्रणी–पु० (सं०) ईश्वर ।

प्रणीत–वि० (सं०) वनाया हुआ, निर्मित, रचा हुआ; निवद्ध; फेंका हुआ; अलग किया हुआ; प्रिय; जिसका प्रवेश कराया गया हो, प्रवेशित; विहित; जिसका संस्कार किया गया हो, संस्कृत; (दंडके रूपमें) लगाया हुआ । पु० मंत्र द्वारा संस्कृत अग्नि; पकाया हुआ पदार्थ ।

प्रणीता–स्त्री० (सं०) मंत्र-संस्कृत जल रखनेका एक पात्र ।

प्रणीय–वि० (सं०) दे० 'प्रणेय' ।

प्रणुत–वि० (सं०) स्तुत ।

प्रणुत्त–वि० (सं०) भगाया हुआ, निष्कासित ।

प्रणुन्न–वि० (सं०) प्रेरित; फेंका हुआ; भेजा हुआ, प्रेषित; भगाया हुआ; गतियुक्त किया हुआ; कंपित ।

प्रणेजन–पु० (सं०) धोना, प्रक्षालन; नहाना; वह पानी जिससे कोई वस्तु धोयी जाय ।

प्रणेता(तृ)–पु० (सं०) पथप्रदर्शन करनेवाला, नेता; वनानेवाला, निर्माता; पुस्तक या ग्रंथका रचयिता, लेखक; किसी सिद्धांत या मतका प्रवर्तक ।

प्रणेय–वि० (सं०) ले जाने योग्य, प्रापणीय; पथप्रदर्शनके योग्य; जिसका नेतृत्व किया जाय; जो किसीके वशमें हो, अधीन; करने योग्य; निश्चय करने योग्य; जिसके लौकिक संस्कार किये जा चुके हों ।

प्रणोद–पु० (सं०) प्रेरित करना; भेजना, प्रेषण ।

प्रणोदना–स्त्री० (सं०) प्रेरणा; प्रेषण ।

प्रणोदित–वि० (सं०) जिसे प्रेरणा की गयी हो, प्रेरित; भेजा हुआ, प्रेषित ।

प्रतंचा*–स्त्री० रोदा, धनुष्की डोरी ।

प्रतक्ष*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

प्रतग्याँ*–स्त्री० प्रतिज्ञा ।

प्रतच्छ*–वि० दे० 'प्रत्यक्ष' ।

प्रतत–वि० (सं०) फैला हुआ या फैलाया हुआ; आवृत; तना हुआ या ताना हुआ; विस्तीर्ण ।

प्रतति–स्त्री० (सं०) विस्तार; लता, वल्ली ।

प्रतन–वि० (सं०) प्राचीन, पुराना ।

प्रतनु–वि० (सं०) अति क्षीण; अति सूक्ष्म; वहुत पतला; अत्यल्प; तुच्छ ।

प्रतपन–पु० (सं०) तपाना, तप्त करना ।

प्रतप्त–वि० (सं०) विशेष रूपसे तपाया हुआ; पीड़ित ।

प्रतमक–पु० (सं०) एक प्रकारका दमा ।

प्रतर–पु० (सं०) पार करना ।

प्रतर्क–पु० (सं०) प्रकृष्ट तर्क, वितर्क; कल्पना करना, समझना ।

प्रतर्कण–पु० (सं०) वितर्क; संदेह, शंका; न्यायशास्त्र ।

प्रतर्क्य–वि० (सं०) जिसके संवंधमें तर्क किया जा सके; कल्पनीय ।

प्रतर्दन–पु० (सं०) ताड़ना; ताड़ना करनेवाला; विष्णु; काशीके प्राचीन राजा दिवोदासका पुत्र ।

प्रतल–पु० (सं०) फैलायी हुई पाँचों उँगलियों सहित हथेली; पंजा; सात अधोलोकोंमेंसे एक ।

प्रतषि*–वि० प्रत्यक्ष ।

प्रता–स्त्री० छोटी लता (पंत) ।

प्रताड़ना–स्त्री० (सं०) कष्ट पहुँचाने या सतानेकी क्रिया; डाँट-फटकार ।

प्रताडित–वि० (सं०) जिसे प्रताड़ना दी गयी हो; जो सताया गया हो; जिसे मानसिक वेदना पहुँचायी गयी हो; जिसे डाँट फटकार वतायी गयी हो ।

प्रतान–पु० (सं०) फैलाव, विस्तार; लता; पेड़का नया कल्ला; लतातंतु; मिरगी रोग ।

प्रतानिनी–स्त्री० (सं०) शाखाओं-प्रशाखाओंवाली दूरतक फैलनेवाली लता ।

प्रतानी(निन्)–वि० (सं०) दूरतक फैला हुआ; जिसमें तंतु हों ।

प्रताप–पु० (सं०) राजाका कोश-दंड-जनित तेज; वीरता; प्रभुत्व, पराक्रम आदिका आतंक फैलानेवाला प्रभाव, इकवाल; तेज, प्रकृष्ट ताप; पौरुष; वीरता; मदारका पेड़ ।

प्रतापन–पु० (सं०) तप्त करना; दुःख देना, सताना; विष्णु; शिव; एक नरक । वि० तप्त करनेवाला; पीडक ।

प्रतापवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रतापी । पु० विष्णु; शिव ।

प्रतापस–पु० (सं०) वहुत वड़ा तपस्वी; सफेद मदार ।

प्रतापी(पिन्)–वि० (सं०) प्रतापवाला; दुःख देनेवाला, सतानेवाला ।

प्रतारक–वि०, पु० (सं०) वंचक, ठग; धूर्त ।

प्रतारण–पु० (सं०) वंचना, ठगी ।

प्रतारणा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतारण' ।

प्रतारित–वि० (सं०) जो ठगा गया हो, वंचित ।

प्रतिंचा–स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा' ।

प्रति–स्त्री० नकल; वहुत-सी पुस्तकों आदिमेंसे एक अदद (जैसे–इस पुस्तककी सभी प्रतियाँ विक गयीं) । उप० (सं०) एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले आकर विरोध, विपरीतता (प्रतिकार, प्रतिवल), वदला (प्रतिदान, प्रतिफल), वीप्सा (प्रतिदिन, प्रतिगृह), सादृश्य (प्रतिदेवता, प्रतिमूर्ति), सामना, साम्मुख्य (प्रत्यक्ष), खंडन (प्रतिवाद), मुकावला, जोड़ (प्रतिभट) आदिका द्योतन करता है । अ० ओर, तरफ; संवंधमें, विपयमें; मुकावलेमें ।

प्रतिकंचुक–पु० (सं०) प्रतिपक्षी, शत्रु ।

प्रतिक–वि० (सं०) जो एक कार्षापणमें खरीदा गया हो ।

प्रतिकर–पु० (सं०) विस्तीर्ण होनेका भाव, विस्तीर्णता; विक्षेप; प्रतिशोध; क्षतिपूर्ति ।

प्रतिकर–पु० (कंपेनसेशन) जिस भूमि, संपत्ति आदिपर अधिकार कर लिया गया हो उसके वदलेमें, मुआवजेकी तरह, दी जानेवाली रकम ।

प्रतिकरणीय–वि० (सं०) जो रोका जाय, जिसका प्रतिरोध किया जाय ।

प्रतिकर्तव्य–वि० (सं०) चुकाने या अदा करने योग्य (ऋण); प्रतिकार करने योग्य; जिसका प्रतिकार किया जाय; चिकित्सा करने या अच्छा करने योग्य (रोग) ।

प्रतिकर्ता(र्तृ)–वि०, पु० (सं०) अपकारका वदला लेनेवाला, प्रत्यपकारक; प्रतिकार करनेवाला ।

प्रतिकर्म(न्)–पु० (सं०) वदला; प्रतिकार; शृंगार, प्रसाधन ।

प्रतिकर्ष–पु० (सं०) एकत्र करना; संयोग ।

प्रतिकल्प–पु० (सं०) मुकावलेका हिस्सा ।

प्रतिकश–वि० (सं०) चावुककी परवाह न करनेवाला, सरकश (घोड़ा) ।

प्रतिकष–पु० (सं०) नेता; सहायक; दूत, वार्ताहर ।

प्रतिकामिनी–स्त्री० (सं०) सपत्नी, सौत ।

प्रतिकाय–पु० (सं०) पुतला, प्रतिमूर्ति; शत्रु; वाणका लक्ष्य ।

प्रतिकार–पु० (सं०) वैर निकालना, वदला चुकाना; वह अपकार जो किसी अपकारके वदले किया जाय; किसी रोग, संकट आदिको दूर करने, दवाने आदिके लिए किया जानेवाला उपाय; चिकित्सा, इलाज; किसी वातके जवावमें किया जानेवाला कार्य; एक प्रकार-

की संधि जिसमें उपकारके बदलेमें उपकार करनेकी प्रतिज्ञा की जाती है। **–कर्म(न्)**–पु० प्रतिकार करनेका काम; विरोध। **–विधान**–पु० चिकित्सा, इलाज।

प्रतिकारक–वि०, पु० (सं०) प्रतिकार करनेवाला; (ऐन्टीडोट) ऐसी औषधि जो शरीरके अन्दर किसी विषके प्रभावको रासायनिक क्रिया द्वारा नष्ट कर दे।

प्रतिकारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकार्य–वि० (सं०) दे० 'प्रतिकर्तव्य'।

प्रतिकाश–पु० (सं०) प्रतिरूप; सादृश्य (प्रायः समासमें)।

प्रतिकितव–पु० (सं०) वह जिसके साथ कोई जुआरी खेलता हो, जुआ खेलनेवालेका जोड़।

प्रतिकुंचित–वि० (सं०) झुका हुआ, टेढ़ा।

प्रतिकूप–पु० (सं०) खाई।

प्रतिकूल–वि० (सं०) विरुद्ध पक्षका अवलंबन करनेवाला; जो अनुकूल न हो, विपरीत, विरुद्ध, अनुकूलका उलटा। पु० विरोध, प्रतिरोध। **–कारी(रिन्),–कृत्, –चारी(रिन्)**–वि० विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरोधी। **–दर्शन**–वि० जो देखनेमें अशुभ या अप्रिय लगे। **–प्रवर्ती(र्तिन्)**–वि० गलत राह जानेवाला (पोत); जो अनुचित बात बोले (रसना)। **–वाद**–पु० विरोधमें कुछ कहना, खंडन। **–वृत्ति**–वि० 'प्रतिकूलकारी'।

प्रतिकूला–स्त्री० (सं०) सपत्नी।

प्रतिकूलाक्षर–पु० साहित्यमें अनुपयुक्त वर्णोंका प्रयोग, जैसे रौद्ररसमें कोमल पदावलीका प्रयोग।

प्रतिकूलिक–वि० (सं०) विरोधी, शत्रुता रखनेवाला।

प्रतिकृत–वि० (सं०) जिसका प्रतिकार या प्रतिशोध किया गया हो। पु० प्रतिकार, विरोध।

प्रतिकृति–स्त्री० (सं०) किसी वस्तुकी, उसी आकार प्रकारकी बनायी हुई वैसी ही अन्य वस्तु, प्रतिरूप, प्रतिमा; बदला, प्रतिकार; सादृश्य, प्रतिबिंब; प्रतिनिधि।

प्रतिकृष्ट–वि० (सं०) निंद्य, गर्हित; दो बार जोता हुआ (खेत)।

प्रतिकोप–पु० (सं०) विरोधीके प्रति होनेवाला क्रोध।

प्रतिक्रम–पु० (सं०) उलटा क्रम।

प्रतिक्रिया–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिकार'; किसी कार्यके परिणामके रूपमें होनेवाला कार्य; शृंगार, प्रसाधन; (रिऐक्शन) सुधार, उन्नति या क्रांतिके विरुद्ध होनेवाली क्रिया या गति। **–वादी**–पु० (रिएक्शनरी) वह जो उन्नति या नवीन मान्यताओं या क्रांतिका विरोधी हो।

प्रतिक्रियात्मक सहयोग–पु० (रेस्पांसिव कोऑपरेशन) सहयोगके जवाबमें या उसके प्रतिक्रियास्वरूप किया जानेवाला सहयोग।

प्रतिकुष्ट–वि० (सं०) दीन, दुःखी।

प्रतिक्रूर–वि० (सं०) प्रतिकारस्वरूप क्रूरता करनेवाला।

प्रतिक्रोध–पु० (सं०) क्रोधके प्रति होनेवाला क्रोध।

प्रतिक्षण–अ० (सं०) प्रत्येक क्षणमें, हरदम, निरंतर।

प्रतिक्षय–पु० (सं०) अंगरक्षक; सेवक।

प्रतिक्षिप्त–वि० (सं०) भेजा हुआ, प्रेषित; जो बुलाकर लौटा दिया गया हो; जो रोका गया हो, वारित; जिसका निराकरण किया गया हो; जिसका तिरस्कार किया गया हो; निंदित; जिसे क्षति पहुँचायी गयी हो; जिसपर झूठा दोष लगाया गया हो। पु० दवा।

प्रतिक्षुत–पु० (सं०) छींक।

प्रतिक्षेप, प्रतिक्षेपण–पु० (सं०) दूर करना; खंडन; तिरस्कार; फेंकना; प्रतियोगिता, होड़।

प्रतिक्षेपक–पु० (रीफ्लेक्टर) दे० 'प्रकाशपरावर्तक'।

प्रतिखुर–पु० (सं०) जन्मके समय बच्चेकी एक विशेष स्थिति जिसमें योनिमार्गका अवरोध हो जाता है।

प्रतिख्यात–वि० (सं०) बहुत अधिक प्रसिद्ध।

प्रतिख्याति–स्त्री० (सं०) बहुत अधिक प्रसिद्धि।

प्रतिगत–वि० (सं०) लौटा हुआ; आगे-पीछे उड़ता हुआ; विस्मृत। पु० लौटना; पक्षियोंकी एक प्रकारकी गति, पक्षियोंका आगे-पीछे जाते हुए उड़ना।

प्रतिगमन–पु० (सं०) लौटना।

प्रतिगर्जना–स्त्री० (सं०) किसीके गर्जनके जवाबमें किया गया गर्जन।

प्रतिगर्हित–वि० (सं०) निंदित।

प्रतिगिरि–पु० (सं०) छोटा पहाड़, पहाड़ी; पहाड़के सामनेका पहाड़।

प्रतिगृह, प्रतिगेह–अ० (सं०) घर-घर।

प्रतिगृहीत–वि० (सं०) ग्रहण किया हुआ; अंगीकार किया हुआ; ब्याहा हुआ, विवाहित।

प्रतिगृह्य–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य।

प्रतिग्या*–स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा'।

प्रतिग्रह–पु० (सं०) ग्रहण करना, स्वीकार करना; विधिपूर्वक दान की जानेवाली वस्तु स्वीकार करना; दान लेना जो ब्राह्मणोंके ६ कर्मोंके अंतर्गत है; लेनेवाला; ग्रहण करनेवाला; अनुग्रह; उपहार, भेंट; दान; पत्नीके रूपमें ग्रहण करना, ब्याहना; सूर्य या चंद्रका ग्रहण; सेनाका पिछला भाग; पीकदान; कानों द्वारा ग्रहण करना, सुनना; स्वीकार करना।

प्रतिग्रहण–पु० (सं०) स्वीकार करना; दान लेना; पत्नीके रूपमें ग्रहण करना, ब्याहना; पात्र; (एटैचमेंट) जुरमाने, ऋणकी रकम आदिके बदलेमें न्यायालयके आदेशसे किसी संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना।

प्रतिग्रही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) दान लेनेवाला।

प्रतिग्रहीता(तृ)–पु० (सं०) दान लेनेवाला; पति।

प्रतिग्राह–पु० (सं०) दान लेना; पीकदान; प्रतिग्रहकारक।

प्रतिग्राहक, प्रतिग्राही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) दान लेनेवाला।

प्रतिग्राहक–पु० (रिसीव्हर) झगड़ेमें पड़ी हुई संपत्तिसे या जो व्यक्ति दिवालिया हो गया हो उसकी संपत्तिसे होनेवाली आमदनी लेने और उसकी निगरानी करनेवाला अधिकारी, गृहीता, आदायक।

प्रतिग्राह्य–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; स्वीकार करने योग्य।

प्रतिघ–पु० (सं०) रुकावट, बाधा; कोप; मूर्च्छा; विरोध; लड़ाई, मारपीट; शत्रु। वि० विरोध करनेवाला; शत्रुता करनेवाला।

प्रतिघात–पु० (सं०) निवारण; आघातके बदले किया गया आघात; मारण, वध; रुकावट, बाधा।

प्रतिघातक–वि०, पु० (सं०) प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिघातन–पु० (सं०) मारण, वध; निवारण।

प्रतिघाती(तिन्)–वि०, पु० (सं०) निवारण करनेवाला; बाधक; विरोध करनेवाला; विरोधी; क्षतिकारक। (स्त्री० 'प्रतिघातिनी'।)

प्रतिघ्न–पु० (सं०) शरीर।

प्रतिचंद्र–पु० (सं०) एक प्रकारका आकाशीय उत्पात जिसमें दो चंद्र दिखाई देते हैं।

प्रतिचक्र–पु० (सं०) जवाबी चक्र; शत्रुसेना।

प्रतिचरित–वि० (सं०) जिसका प्रचार किया गया हो; घोषित।

प्रतिचार–पु० (सं०) बनाव, शृंगार, प्रसाधन।

प्रतिचारी(रिन्)–वि० (सं०) अभ्यास करनेवाला।

प्रतिचिंतन–पु० (सं०) बार-बार गौर करना, सोचना।

प्रतिचिकीर्षा–स्त्री० (सं०) प्रतिकार करनेकी इच्छा।

प्रतिचोदित–वि० (सं०) किसीके विरुद्ध प्रेरित या उत्तेजित किया हुआ।

प्रतिच्छंद, प्रतिच्छंदक–पु० (सं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र।

प्रतिच्छदन–पु० (सं०) ढाँकनेवाली वस्तु, आच्छादन, आवरण।

प्रतिच्छन्न–वि० (सं०) आवृत; वस्त्राच्छादित; छिपा हुआ, गुप्त।

प्रतिच्छवि–स्त्री० (सं०) प्रतिमा; प्रतिबिंब (इमेज)।

प्रतिच्छा*–स्त्री० दे० 'प्रतीक्षा'।

प्रतिच्छाया–स्त्री० (सं०) प्रतिरूप; प्रतिमा; प्रतिबिंब, परछाईं।

प्रतिच्छायिका–स्त्री० (सं०) प्रतिमूर्ति; प्रतिमा।

प्रतिच्छेद–पु० (सं०) बाधा, विरोध; प्रतिरोध; खंडित करना।

प्रतिछाँई, प्रतिछाँह, प्रतिछाँही–स्त्री० परछाई, प्रतिबिंब।

प्रतिजंघा–स्त्री० (सं०) जाँघका अगला भाग।

प्रतिजन्म(न्)–पु० (सं०) पुनर्जन्म ।

प्रतिजल्प–पु० (सं०) उत्तरके रूपमें या विरोधमें कही गयी बात ।

प्रतिजल्पक–पु० (सं०) टाल-मटोलवाला उत्तर (जो नरमीयतके साथ दिया जाय) ।

प्रतिजागर–पु० (सं०) निगरानी, देखरेख, पहरा ।

प्रतिजागरण–पु० (सं०) देखरेख या निगरानी करना, पहरा देना ।

प्रतिजिह्वा, प्रतिजिह्विका–स्त्री० (सं०) गलेके भीतरकी घंटी ।

प्रतिजीवविष–पु० (ऐन्टी टॉक्सिन) प्राणीके शरीरमें उत्पन्न होनेवाला ऐसा प्रतिरक्षी पदार्थ जो किसी विशेष बैक्टीरिया विषके प्रभावका प्रतिकार कर सके ।

प्रतिजीवन–पु० (सं०) फिरसे जी जाना, पुनर्जीवन ।

प्रतिजीवाणु–पु० जीवाणुनाशक औषध, (एंटीबायोटिक) ।

प्रतिजैविकी–पु० (ऐन्टी बॉयटिक्स) बैक्टीरिया तथा फँफूदी सरीखे जीवों द्वारा उत्पन्न किया गया ऐसा पदार्थ जो सूक्ष्म जीवोंका विनाश कर देता है । उदाहरणके लिए 'पेनिसिलिन' प्रतिजैविकी पदार्थ है जो संतरेपर पायी जानेवाली फँफूदीसे प्राप्त होता है ।

प्रतिज्ञांतर–पु० (सं०) एक निग्रहस्थान (न्या०) ।

प्रतिज्ञा–स्त्री० (सं०) किसी कार्यको करने न करने आदिका दृढ़ संकल्प; वादा; अनुमान-वाक्यके पाँच अवयवोंमेंसे पहला जिसमें साध्यका निर्देश किया जाता है (जैसे–पर्वत वह्निमान् है–न्या०); अभियोग, दावा; स्वीकार, अंगीकार । –पत्र,–पत्रक–पु० वह पत्र या कागज जिसमें लेखरूपमें कोई प्रतिज्ञा की गयी हो, इकरारनामा, शर्तनामा; (कॉवेनेंट) दे० 'प्रतिश्रुतिपत्र' । –०मुद्रा–स्त्री० (प्रोमिसरी नोट) वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं अमुक तिथिको या जब कभी भी माँगनेपर अमुक व्यक्तिको या इसके वाहकको इतना रुपया दूँगा, वचनपत्र । –पालन–पु० प्रतिज्ञा पूरी करना, प्रतिज्ञाकी रक्षा, प्रतिज्ञाका निर्वाह । –भंग–पु० प्रतिज्ञा तोड़ देना, प्रतिज्ञा न निभाना । –विरोध–पु० प्रतिज्ञा तोड़ देना; एक निग्रहस्थान (न्या०) । –विवाहित–वि० जिसकी सगाई हो गयी हो । –सन्न्यास–पु० प्रतिज्ञाभंग; एक निग्रहस्थान (न्या०) । –हानि–स्त्री० एक निग्रहस्थान ।

प्रतिज्ञात–वि० (सं०) जिसकी या जिसके विषयमें प्रतिज्ञा की गयी हो, स्वीकार किया हुआ । पु० प्रतिज्ञा, दृढ़ संकल्प ।

प्रतिज्ञातार्थ–पु० (सं०) बयान, वक्तव्य ।

प्रतिज्ञान–पु० (सं०) प्रतिज्ञा; स्वीकार; (एफर्मेशन) (विधान-सभा आदिमें) किसी तरहकी शपथ ग्रहण करनेके बजाय सत्यनिष्ठाके साथ और गंभीरतापूर्वक स्वीकार करना या प्रतिज्ञा करना ।

प्रतिज्ञेय–वि० (सं०) जिसके विषयमें प्रतिज्ञा की जाय, प्रतिज्ञा करने योग्य । पु० स्तुति करनेवाला, बंदी, स्तुति-पाठक ।

प्रतितंत्र–पु० (सं०) प्रतिकूल शास्त्र । –सिद्धांत–पु० प्रतिकूल शास्त्रसे लिया हुआ सिद्धांत ।

प्रतितर–पु० (सं०) डाँड़ा; कर्णधार, मल्लाह ।

प्रतिताल, प्रतितालक–पु० (सं०) एक प्रकारका ताल (संगीत) ।

प्रतिताली–स्त्री० (सं०) कुंजी, चाभी ।

प्रतितूणी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका वातरोग ।

प्रतिदंड–वि० (सं०) आज्ञाका पालन न करनेवाला, धृष्ट ।

प्रतिदत्त–वि० (सं०) बदलेमें दिया हुआ; वापस किया हुआ ।

प्रतिदर्श–किसी भी वस्तु, कथ्य आदिके निर्माणके लिए पूर्व निर्मित आदर्श (माडेल) ।

प्रतिदान–पु० (सं०) किसी ली हुई वस्तुके बदलेमें दूसरी वस्तु देना, बदला, विनिमय; निक्षेप या धरोहर वापस करना ।

प्रतिदारण–पु० (सं०) फाड़ना, चीरना, विदीर्ण करना; युद्ध ।

प्रतिदिन–अ० (सं०) प्रत्येक दिन, हर रोज, नित्य ।

प्रतिदिवा(वन्)–पु० (सं०) सूर्य ।

प्रतिदीप्ति–स्त्री० (फ्लूरेसेन्स) पदार्थोंका वह गुण जिसकी बदौलत आपाती प्रकाशकी किसी एक तरंगदैर्घ्यका अवशोषण करके उससे भिन्न तरंगदैर्घ्यके प्रकाशका वे उत्सर्जन करते हैं ।

प्रतिदूत–पु० (सं०) बदलेमें भेजा हुआ दूत ।

प्रतिदेय–वि० (सं०) जो बदला या लौटाया जाय, बदलने या लौटाने योग्य । पु० खरीदकर लौटायी हुई चीज ।

प्रतिद्वंद्व–पु० (सं०) दो तुल्य बलवानोंकी लड़ाई; प्रतिद्वंद्वी, शत्रु ।

प्रतिद्वंद्विता–स्त्री० (सं०) प्रतिद्वंद्वी होनेका भाव; बराबरवालोंकी लड़ाई ।

प्रतिद्वंद्वी(द्विन्)–पु० (सं०) विपक्षी, विरोधी, शत्रु । वि० मुकाबला करनेवाला, प्रतिपक्षी ।

प्रतिधान–पु० (सं०) निराकरण; लौटाना ।

प्रतिधावन–पु० (सं०) आक्रमण ।

प्रतिधुर–पु० (सं०) दूसरे घोड़ेके साथ जुता हुआ घोड़ा ।

प्रतिध्वनन–पु० (इकोइंग) ध्वनिलहरीके सामनेकी किसी वस्तुसे टकराकर वापस आनेकी क्रिया, ध्वनिके प्रत्यावर्तित होकर सुनाई देनेकी क्रिया ।

प्रतिध्वनि–स्त्री० (सं०) किसी शब्दका वह प्रतिरूप जो उसके किसी बाधक पदार्थसे टकरानेपर उत्पन्न होता है और मूल शब्दके उपरांत सुनाई पड़ता है, किसी शब्दके उपरांत सुनाई पड़नेवाला उसीसे उत्पन्न तदनुरूप शब्द, गूँज; दूसरेके विचारों, कथनों आदिका मूलसे मिलते जुलते रूपमें दोहराया जाना; इस तरह दोहरायी गयी बात ।

प्रतिध्वनित–वि० (सं०) गूँजा हुआ ।

प्रतिध्वान–पु० (सं०) दे० 'प्रतिध्वनि' ।

प्रतिध्वानित–वि० (सं०) गूँजाया हुआ ।

प्रतिनंदन–पु० (सं०) आशीर्वादके साथ अभिनंदन करना; धन्यवाद देना; बधाई देना; प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करना ।

प्रतिनप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) प्रपौत्र ।

प्रतिनमस्कार–पु० (सं०) नमस्कारके जवाबमें किया गया नमस्कार, प्रत्यभिवादन ।

प्रतिनव–वि० (सं०) नूतन, नया ।

प्रतिनाडी–स्त्री० (सं०) उपनाडी ।

प्रतिनाद–पु० (सं०) दे० 'प्रतिध्वनि' ।

प्रतिनादित–वि० (सं०) जहाँ या जिसमें प्रतिनाद हुआ हो, जिससे प्रतिनाद उठा हो, प्रतिध्वनित ।

प्रतिनायक–पु० (सं०) नायकका प्रतिद्वंद्वी (सा०); प्रतिमा ।

प्रतिनारी–स्त्री० (सं०) प्रतिद्वंद्विनी स्त्री ।

प्रतिनाह–पु० (सं०) झंडा, निशान ।

प्रतिनिधि–पु० (सं०) प्रतिरूप, प्रतिमा; वह व्यक्ति जो किसीके स्थानपर उसका कार्य करे, किसीका स्थानापन्न व्यक्ति; विधान सभा आदिका वह सदस्य जो किसी स्थानके निर्वाचकों द्वारा चुना गया हो और जिसे उनकी ओरसे बोलने या काम करनेका अधिकार हो; किसी विशिष्ट जाति, समूह आदिका वह व्यक्ति या इकाई जिससे उक्त जाति या समूहके अन्य सदस्यों या इकाइयोंकी कल्पना की जा सके; किसी वैदिक कृत्य या औषधके काम आनेवाले द्रव्यके अभावमें उसके स्थानपर प्रयुक्त होनेवाला द्रव्य; प्रतिभू, जामिन । –पत्र–पु० (पावर ऑफ ऐटर्नी) प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारपत्र, 'मुखतारनामा' । –शासन–पु० जनताके प्रतिनिधियों द्वारा नियंत्रित शासन ।

प्रतिनिधित्व–पु० (सं०) प्रतिनिधिका भाव; प्रतिनिधिका कार्य ।

प्रतिनिनाद–पु० (रीवरबरेशन) निनाद या शब्दका टकराकर वापस आना, प्रतिध्वनि ।

प्रतिनियत–वि० (सं०) पहलेसे स्थिर, निर्धारित किया हुआ, पूर्वनिश्चित ।

प्रतिनियम–पु० (सं०) सामान्य नियम या व्यवस्था ।

प्रतिनियुक्त–वि० (डेप्युटेड) अधिकार या कार्य सौंपकर जो किसी दूसरेके स्थानपर काम करनेके लिए नियुक्त किया गया या भेजा गया हो ।

प्रतिनियुक्ति–स्त्री० (डेप्यूटेशन) किसीके स्थानपर किसी अन्य व्यक्तिको नियुक्त करना; दूसरेके स्थानपर कुछ समयतक काम करना; किसीको किसी विशेष कार्यके लिए नियुक्त करके भेजना ।

प्रतिनिर्जित–वि० (सं०) निर्जित, विजित; अपने काममें लाया हुआ ।

प्रतिनिर्देश–पु० (सं०) पुनः उल्लेख या कथन करना ।

प्रतिनिर्देश्य–वि० (सं०) जिसका पुनः कथन किया जाय।

प्रतिनिर्यातन–पु० (सं०) वदला लेना, प्रत्यपकार करना; लौटाना।

प्रतिनिवर्तन–पु० (सं०) निवारण; लौटना।

प्रतिनिर्वातित–वि० (सं०) लौटाया हुआ।

प्रतिनिवासन–पु० (सं०) एक तरहकी भिक्षुओंकी पोशाक।

प्रतिनिविष्ट–वि० (सं०) जो दृढ़ हो गया हो। **–मूर्ख**–वि० जड़मूर्ख।

प्रतिनिश्चय–पु० (सं०) विरोधी मत।

प्रतिनिष्क्रय–पु० (सं०) वदला, प्रतिकार।

प्रतिनोद–पु० (सं०) पीछे हटाना; दूर भगाना।

प्रतिप–पु० (सं०) राजा शांतनुके पिता।

प्रतिपक्ष–पु० (सं०) विरोधीका पक्ष, विरुद्ध पक्ष, विपक्ष; शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी, मुद्दालेह। वि० सदृश, समान। **–नेता**–पु० (लीडर ऑफ दि अपोज़िशन) संसद या विधानसभामें सरकारी पक्षका विरोध करनेवाले मुख्य दल या दलोंका नेता।

प्रतिपक्षता–स्त्री० (सं०) प्रतिपक्षका भाव, विरोधिता; वाधा।

प्रतिपक्षित–वि० (सं०) (वह हेतु) जो सत्प्रतिपक्ष नामक दोपसे युक्त हो (न्या०)।

प्रतिपक्षी(क्षिन्)–पु० (सं०) शत्रु, विरोधी।

प्रतिपच्छ*–पु० दे० 'प्रतिपक्ष'।

प्रतिपच्छी*–पु० दे० 'प्रतिपक्षी'।

प्रतिपण–पु० (सं०) समान मूल्य, एक-सा मूल्य।

प्रतिपत्–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिपद्'। **–तूर्य**–पु० एक पुराना वाजा, दगड़ा।

प्रतिपत्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्त करना, पाना, प्राप्ति; ज्ञान, बोध; वुद्धि, प्रज्ञा; स्वीकृति; कर्तव्यका ज्ञान; आदर, सम्मान; गौरव; उन्नति; दृढ़ निश्चय, संकल्प; प्रसिद्धि; कार्यारंभ; संवाद; तरीका, ढंग; प्रयोग; किसी विषयका निरूपण या प्रतिपादन; प्रमाण; नतीजा। **–कर्म(न्)**–पु० वह कर्म जिसकी कोई विशेषता न हो, फलरहित कर्म (जैसे–पूजित प्रतिमाको जलमें डुवाना–मीमांसा)। **–दक्ष**–वि० कार्यकुशल। **–पटह**–पु० नगाड़ा। **–भेद**–पु० मतभेद। **–विशारद**–वि० कार्यकुशल।

प्रतिपत्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) वुद्धिमान्; प्रसिद्ध; कार्यकुशल।

प्रतिपत्र–पु० (प्रॉक्सी) दे० 'प्रतिपुरुषपत्र'।

प्रतिपत्रक–पु० (काउंटर फाइल) चेककी किताव, चालान-वही, रसीद-वही आदिमें लगा रहनेवाला वह टुकड़ा जो देनेवाले या भेजनेवालेके पास ही रह जाता है और जिसपर किसीको दिये हुए दूसरे टुकड़ेकी प्रतिलिपि या संक्षिप्त विवरण लिखा रहता है, प्रतिपर्ण।

प्रतिपत्रफला–स्त्री० (सं०) करेली।

प्रतिपत्री–पु० (प्रॉक्सी) दे० 'प्रतिपुरुष'।

प्रतिपद–अ० (सं०) पग-पगपर। **–बिक्री कर**–पु० (माल्टीपिल सेल्स टैक्स) एक ही मालपर वार-वार लगनेवाला बिक्री कर।

प्रतिपदा, प्रतिपदी–स्त्री० (सं०) पक्षकी पहली तिथि, परिवा।

प्रतिपद्–स्त्री० (सं०) प्रवेश; मार्ग; आरंभ, उपक्रम; आरंभिक श्लोक; शुक्ल या कृष्ण पक्षकी पहली तिथि, परिवा; वुद्धि, प्रज्ञा; एक पुराना वाजा, दगड़ा; श्रेणी, पंक्ति।

प्रतिपन्न–वि० (सं०) प्राप्त; आरंभ किया हुआ, उपक्रांत; स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत; किया हुआ; वादा किया हुआ; जिसका उत्तर दिया गया हो; पराभूत; जाना हुआ, अवगत; सम्मानित, आदृत; सावित किया हुआ, प्रमाणित।

प्रतिपरिषद्विपत्र–पु० (रिवर्स काउंसिल विल) (ब्रिटिश शासन-कालमें) लंदनस्थित भारतमंत्रीके नाम जारी की गयी हुंडियाँ जिनका भुगतान इंग्लैंडमें (विदेशोंमें) होता था। (व्यापार-संतुलन भारतके प्रतिकूल होनेपर इनकी आवश्यकता पड़ती थी। इन्हें "उलटी हुंडियाँ" भी कहते थे।)

प्रतिपरीक्षण–पु० (क्रास-एग्जामिनेशन) गवाह आदिका वयान हो चुकनेपर सत्यासत्यका या छिपायी गयी वातोंका पता लगानेके लिए उलटे-सीधे प्रश्न करना, साक्षि-परीक्षा; प्रतिपृच्छा, जिरह।

प्रतिपर्ण–पु० (काउंटर फाइल) दे० 'प्रतिपत्रक'।

प्रतिपर्णशिफा–स्त्री० (सं०) द्रवंती, मूषिकपर्णी।

प्रतिपाण–पु० (सं०) जुएमें प्रतिपक्षीका लगाया हुआ दाँव।

प्रतिपादक–वि०, पु० (सं०) देनेवाला; निरूपण करनेवाला; व्याख्यान करनेवाला; उत्पादक; उन्नायक; पूरा करनेवाला।

प्रतिपादन–पु० (सं०) ज्ञान कराना, वोधन; किसी विषयका सप्रमाण कथन, निरूपण; किसी विषयका स्थापन; लौटाना, प्रत्यर्पण; दान; आरंभ करना, उपक्रम करना; पूरा करना; उत्पन्न करना।

प्रतिपादयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) शिक्षा देनेवाला; व्याख्याकार; दिखलाने-समझानेवाला; देनेवाला।

प्रतिपादित–वि० (सं०) प्रदत्त; जिसका निरूपण किया गया हो, निरूपित, प्रमाणित; उत्पादित; घोषित, कथित।

प्रतिपाद्य–वि० (सं०) जिसे प्रमाणित किया जाय; जिसका स्पष्टीकरण किया जाय; देय।

प्रतिपान–पु० (सं०) पीना; पीनेका पानी।

प्रतिपाप–वि० (सं०) अपकारके वदले अपकार करनेवाला, जो वुराईका वदला वुराईसे दे। पु० बुराईके वदले बुराई करना।

प्रतिपापी(पिन्)–वि० (सं०) दे० 'प्रतिपाप'।

प्रतिपार*–पु० पालन करनेवाला; रक्षण, पालन–'तीन लोक जाके महिभार। सो काहे न करै प्रतिपार'–कवीर।

प्रतिपारना*–स० क्रि० पालन करना; रक्षा करना।

प्रतिपाल–पु० दे० 'प्रतिपालक'; 'प्रतिपालन'।

प्रतिपालक–पु० (सं०) पालन करनेवाला, पालक; रक्षक। **–अधिकरण**–पु० (कोर्ट ऑफ वार्ड्स) अल्पवयस्कों या अयोग्य व्यक्तियोंकी संपत्तिका प्रवंध तथा रक्षण करनेवाला सरकारी विभाग।

प्रतिपालन–पु० (सं०) पालन करना; रक्षा करना; प्रतीक्षा करना।

प्रतिपालना*–स० क्रि० पालन करना, पालना; रक्षा करना।

प्रतिपालनीय–वि० (सं०) दे० 'प्रतिपाल्य'।

प्रतिपालित–वि० (सं०) जिसका पालन किया गया हो, पालित; जिसकी रक्षा की गयी हो, रक्षित; जिसका अभ्यास या अनुगमन किया गया हो।

प्रतिपाल्य–वि० (सं०) पालन करने योग्य; रक्षा करने योग्य।

प्रतिपित्सु–वि० (सं०) प्राप्त करनेकी इच्छा करनेवाला।

प्रतिपीडन–पु० (सं०) कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना; (रीप्राइजल) (शत्रु द्वारा की गयी) हानिके वदले हानि पहुँचाना, संपत्ति आदिपर अधिकार कर लेना या छीन लेना, प्रतिशोध।

प्रतिपुरुष, प्रतिपूरुष–पु० (सं०) वह मनुष्य जो किसीका स्थानापन्न होकर काम करे, प्रतिनिधि; (प्राक्सी) वह व्यक्ति जिसे किसी सभा आदिमें किसीके प्रतिनिधिरूपमें काम करने, वोट देने आदिका अधिकार दियां जाय; साथी; पुतला; आदमीका पुतला जिसे चोर घरमें स्वयं घुसनेके पहले यह जाननेके लिए फेंका करते थे कि कोई जगा तो नहीं है। **–पत्र**–पु० (प्रॉक्सी) वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्तिको किसीके वदले कुछ काम करने, वोट डालने आदिका अधिकार दिया जाय।

प्रतिपुस्तक–स्त्री० (सं०) किसी पुस्तक या लेखकी हस्तलिखित प्रतिकी नकल।

प्रतिपूजन–पु० (सं०) अभिवादनके वदले अभिवादन करना; आवभगत करना।

प्रतिपूजा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिपूजन'।

प्रतिपूजित–वि० (सं०) जिसका प्रतिपूजन किया गया हो।

प्रतिपूज्य–वि० (सं०) प्रतिपूजनके योग्य।

प्रतिपूयिक–वि० (सं०) दे० 'प्रतिपौतिक'।

प्रतिपोषक–पु० (सं०) सहायक; समर्थक।

प्रतिपौतिक–वि० (सं०) (ऐंटी-सेप्टिक) जो सड़न या मवाद न उत्पन्न होने दे।

प्रतिप्रणाम–पु० (सं०) प्रणामके उत्तरमें किया जानेवाला प्रणाम।

प्रतिप्रत्त–वि० (सं०) बदलेमें दिया हुआ, प्रत्यर्पित; जो सौंप दिया गया हो।

प्रतिप्रदान–पु० (सं०) प्रतिदान, प्रत्यर्पण।

प्रतिप्रभा–स्त्री० (सं०) परछाँही ।

प्रतिप्रयाण–पु० (सं०) लौटना, वापसी ।

प्रतिप्रश्न–पु० (सं०) प्रश्नके बदलेमें पूछा जानेवाला प्रश्न; उत्तर ।

प्रतिप्रसव–पु० (सं०) निषिद्धका पुनर्विधान; अपवादका अपवाद; प्रतिजन्म ।

प्रतिप्रसूत–वि० (सं०) विशेष अवसरपर निषिद्ध होते हुए भी स्वीकार किया हुआ ।

प्रतिप्रस्थाता(तृ)–पु० (सं०) सोलह सोमयागी ऋत्विकोंमेंसे एक ।

प्रतिप्रस्थान–पु० (सं०) शत्रुके पक्षमें जाना, शत्रुसे मिल जाना ।

प्रतिप्रहार–पु० (सं०) प्रहारके जवाबमें किया जानेवाला प्रहार ।

प्रतिप्राकार–पु० (सं०) दुर्गका बाहरी परकोटा ।

प्रतिप्रिय–पु० (सं०) बदलेमें की जानेवाली कृपा या सेवा ।

प्रतिप्रेषण करना–स० क्रि० (रेफर) कोई आवेदनपत्रादि स्वीकृति या आवश्यक काररवाईके लिए किसी ऊँचे प्राधिकारीके पास भेजना; कोई विवादास्पद या संदेहयुक्त विषय उलझन दूर करने, संशय मिटानेके लिए किसी विशेषज्ञ या जानकारके पास भेजना ।

प्रतिप्लवन–पु० (सं०) पीछेकी ओर कूदना ।

प्रतिफल–पु० (सं०) प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया; किसीके किये हुएका अनुरूप प्रतिकार; परिणाम; नतीजा; पुरस्कार, वह जो बदलेमें दिया जाय ।

प्रतिफलक–पु० (सं०) अक्स डालने, वस्तुको प्रतिफलित करनेका यंत्र; (रीफ्लेक्टर) दे० 'प्रकाशपरावर्तक' ।

प्रतिफलन–पु० (सं०) दे० 'प्रतिफल' ।

प्रतिफलित–वि० (सं०) प्रतिबिंबित; जिसका बदला लिया गया हो, प्रतिकृत ।

प्रतिफुल्लक–वि० (सं०) प्रफुल्ल ।

प्रतिबंध–पु० (सं०) बाँधनेकी क्रिया या भाव, बंधन; रुकावट, बाधा, अवरोध; (एंबार्गो) विदेशोंको कोई विशेष माल भेजने, ऋण देने आदिपर लगायी गयी रोक; कोई समाचार आदि निर्धारित समयसे पूर्व प्रकाशित करनेकी मनाही; (प्राविजो) किसी अधिनियम आदिकी धारामें या किसी प्रलेख आदिमें पड़नेवाली कठिनाईसे बचनेके लिए लगायी गयी शर्त या बताया गया उपाय, परंतुक; प्रतिरोध; सदा बना रहनेवाला संबंध; नैराश्य ।

प्रतिबंधक–पु० (सं०) बाँधनेवाला; रोकने या बाधा डालनेवाला, प्रतिरोधक; शाखा, टहनी ।

प्रतिबंधवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रतिबंधसे युक्त ।

प्रतिबंधि, प्रतिबंधी–स्त्री० (सं०) आपत्ति; दोनों पक्षोंपर लागू होनेवाली दलील ।

प्रतिबंधी(धिन्)–वि० (सं०) बाँधनेवाला; बाधा पहुंचानेवाला; रोकनेवाला; जिसे बाधा पहुँची हो ।

प्रतिबंधु–पु० (सं०) वह जो बंधुके समान हो; वह जो पद आदिमें समान हो ।

प्रतिबद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ; लगाया हुआ, जमाया हुआ; जड़ा हुआ; जिसपर प्रतिबंध हो, जो प्रतिबंधका विषय हो; जिसमें कोई बाधा डाली गयी हो; फँसा हुआ, अटका हुआ; जो किसीसे इस प्रकार संबद्ध हो कि अलग न किया जा सके; हताश; अलग किया हुआ ।

प्रतिबद्धता–स्त्री० (सं०) किसी खास उद्देश्य, मतवाद आदिसे सम्बद्ध होनेकी संकल्पबद्धता ।

प्रतिबल–वि० (सं०) समान बलवाला । पु० शत्रु; सामर्थ्य, शक्ति ।

प्रतिबाधक–वि०, पु० (सं०) रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; कष्ट पहुँचानेवाला ।

प्रतिबाधन–पु० (सं०) रोकना, बाधा डालना; प्रत्यावृत करना; कष्ट पहुँचाना ।

प्रतिबाधित–वि० (सं०) निवारित, हटाया हुआ; बाधित; पीड़ित; (प्रीक्लूडेड) जिसमें पहलेसे ही बाधा डाल दी गयी हो, जो पहलेसे रोक दिया या रोक रखा गया हो ।

प्रतिबाधी(धिन्)–वि० (सं०) रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; कष्ट पहुँचानेवाला । पु० शत्रु, विपक्षी ।

प्रतिबाहु–पु० (सं०) बाहुका अग्रभाग; अक्रूरका एक भाई ।

प्रतिबिंब, प्रतिविंब–पु० (सं०) परछाई, प्रतिच्छाया; (इमेज) किसी वस्तुसे आनेवाली प्रकाश किरणें दर्पणसे परावर्तित होकर या लेन्ससे अपवर्तित होकर उस वस्तुकी जो अनुकृति बनाती है उसे 'प्रतिबिंब'का नाम दिया गया है; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र, तसवीर । –वाद–पु० जीवको ईश्वरका प्रतिबिंब माननेका सिद्धांत ।

प्रतिबिंबक, प्रतिविंबक–वि०, पु० (सं०) छायाकी तरह अनुगमन करनेवाला ।

प्रतिबिंबन, प्रतिविंबन–पु० (सं०) प्रतिबिंबित होना; अनुकरण; तुलना ।

प्रतिबिंबना*–अ० क्रि० प्रतिबिंबित होना ।

प्रतिबिंबित, प्रतिविंबित–वि० (सं०) जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो, दर्पण आदिमें प्रतिफलित ।

प्रतिबीज–पु० (सं०) वह बीज जिसका बीजत्व नष्ट हो गया हो, मरा हुआ बीज ।

प्रतिबुद्ध–वि० (सं०) जगा हुआ, जाग्रत्; जाना हुआ, ज्ञात, अवगत; खिला हुआ; प्रसिद्ध; महान् ।

प्रतिबुद्धि–स्त्री० (सं०) जागरण; शत्रुता या विरोधका भाव ।

प्रतिबोध–पु० (सं०) जागरण, जागना; ज्ञान; स्मृति; होशमें आना ।

प्रतिबोधक–वि० (सं०) जगानेवाला; ज्ञान करानेवाला ।

प्रतिबोधन–पु० (सं०) जगानेकी क्रिया; ज्ञान कराना ।

प्रतिबोधित–वि० (सं०) जगाया हुआ; जिसे किसी बातका ज्ञान कराया गया हो ।

प्रतिबोधी(धिन्)–वि० (सं०) जागता हुआ; जो शीघ्र ही जागने या ज्ञान प्राप्त करनेवाला हो ।

प्रतिभट–पु० (सं०) विरोधी, शत्रु; शत्रु पक्षका योद्धा; प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिभय–पु० (सं०) भय, डर, खतरा । वि० भयंकर ।

प्रतिभा–स्त्री० (सं०) दीप्ति, प्रभा, चमक; बुद्धि, समझ; विलक्षण बौद्धिक शक्ति; उपयुक्तता । –कूट–पु० एक बोधिसत्त्व । –क्षय–पु०,–हानि–स्त्री० शक्तिका ह्रास; प्रकाशका नाश, अंधकार होना । –मुख–वि० कुशाग्र-बुद्धि; प्रगल्भ । –शाली(लिन्)–वि० जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त । (स्त्री० 'प्रतिभाशालिनी' ।) –संपन्न–वि० दे० 'प्रतिभाशाली' ।

प्रतिभात–वि० (सं०) प्रभायुक्त, चमकदार; ज्ञात, अवगत ।

प्रतिभान–पु० (सं०) प्रभा, चमक; बुद्धि, समझ; प्रगल्भता; जान पड़ना, मालूम होना ।

प्रतिभान्वित–वि० (सं०) प्रतिभासे युक्त, जिसमें प्रतिभा हो; प्रगल्भ ।

प्रतिभावान्(वत्)–वि० (सं०) जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभायुक्त; प्रगल्भ; दीप्तियुक्त । पु० सूर्य; अग्नि; चंद्रमा ।

प्रतिभाव्य–वि० (बेलेबिल) दे० 'प्रतिभूमोच्य' ।

प्रतिभाषा–स्त्री० (सं०) उत्तर, जवाब ।

प्रतिभास–(सं०) प्रकाश; आभास; भ्रम; मिथ्याज्ञान ।

प्रतिभासन–पु० (सं०) चमकना; दीख पड़ना, दिखाई देना ।

प्रतिभिन्न–वि० (सं०) जिसका भेदन किया गया हो; अलग किया हुआ; विभाजित ।

प्रतिभू–पु० (सं०) (श्योरटी) किसीकी जमानत करनेवाला, उसकी ओरसे–अदालतमें हाजिर होने, रकम चुकाने या कोई प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिए–अपने आपको वचनबद्ध करनेवाला, जामिन । –मोच्य–वि० (बेलेबिल) (वह अपराध) जिसमें किसीके जामिन बन जाने या जमानत देनेपर अभियुक्त मामलेका निपटारा होनेतक रिहा कर दिया जाता है, प्रतिभाव्य ।

प्रतिभूति–स्त्री० (बेल, सिक्यूरिटी) प्रतिभू द्वारा की गयी जमानत; कोई काम या वचन पूरा करने आदिके लिए दिया गया निश्चित आश्वासन या उसके बदले जमा की गयी वस्तु या धन; ऋण आदिके प्रमाण-स्वरूप जारी किया गया सरकारी कागज, साखपत्र ।

प्रतिभेद–पु० (सं०) विभाग करना, विभाजन; रहस्य प्रकट करना, भेद खोलना ।

प्रतिभेदन–पु० (सं०) विदीर्ण करना, चीरना-फाड़ना; (आँख

आदि) निकाल लेना; विभाग करना ।

प्रतिभोग–पु० (सं०) उपभोग ।

प्रतिभौ*–पु० शरीरकी शक्ति तथा तेज ।

प्रतिमंडल–पु० (सं०) सूर्य आदिके चारों ओरका घेरा, परिवेप ।

प्रतिमंडित–वि० (सं०) अलंकृत; सजाया हुआ ।

प्रतिमंत्रण–पु० (सं०) उत्तर, जवाब ।

प्रतिमंत्रित–वि० (सं०) अभिमंत्रित, मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ ।

प्रतिमर्श–पु० (सं०) नास़की तरह काममें लाया जानेवाला एक चूर्ण ।

प्रतिमल्ल–पु० (सं०) कुश्तीका जोड़; वह जो मुकाबलेमें लड़े, प्रतियोद्धा ।

प्रतिमा–स्त्री० (सं०) मिट्टी आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; पत्थर आदिकी बनी हुई देवताकी मूर्ति; जिसकी पूजा की जाती है, अनुकृति; चित्र, तसवीर; प्रतिबिंब, परछाईं; सादृश्य-(समासांतमें प्रतिम–सदृशके अर्थमें); परिमाण, माप; चिह्न; हाथीके सिरका, दाँतोंके बीचका एक भाग । **–गत**–वि० जो प्रतिमा या चित्रमें स्थित हो । **–चंद्र**–पु० चंद्रमाका प्रतिबिंब । **–परिचारक**–पु० देवल, पुजारी, पूजक । **–पूजा**–स्त्री० मूर्तिपूजा ।

प्रतिमान–पु० (सं०) परछाईं; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र; नमूना; (स्टैंडर्ड) मापने या योग्यता, आदिका निर्धारण करनेके लिए स्थिर किया हुआ मानदंड; हाथीके कुंभस्थलका निचला भाग, हाथीके दोनों दाँतोंके बीचका भाग; बाट, बटखरा; विरोधी, प्रतिद्वंद्वी; सादृश्य, समता ।

प्रतिमाया–स्त्री० (सं०) जवाबी जादू ।

प्रतिमाला–स्त्री० (सं०) स्मरणशक्तिकी जाँचके लिए दो आदमियोंका बारी-बारी श्लोक-पाठ करना ।

प्रतिमास–अ० (सं०) हर महीने ।

प्रतिमित–वि० (सं०) जिसका प्रतिबिंब पड़ा हो, प्रतिबिंबित; अनुकृत; जिसकी तुलना की गयी हो ।

प्रतिमुक्त–वि० (सं०) पहना हुआ, धारण किया हुआ (वस्त्र आदि); बँधा हुआ; त्यागा हुआ, परित्यक्त; छोड़ा हुआ, रिहा किया हुआ; फेंका हुआ, प्रक्षिप्त ।

प्रतिमुख–पु० (सं०) नाटककी पाँच संधियोंमेंसे एक; मुखका प्रतिबिंब; उत्तर, जवाब । वि० जो सामने मौजूद हो, उपस्थित; निकटस्थ ।

प्रतिमुद्रांकित–वि० वह मुद्रांकित कागज, आदेशादि जिसपर किसी उच्चाधिकारीने भी स्वीकृति सूचित करनेके लिए अपनी मोहर लगा दी हो (काउंटरसील्ड) ।

प्रतिमुद्रा–स्त्री० (सं०) मुद्राकी छाप ।

प्रतिमूर्ति–स्त्री० (सं०) पत्थर, धातु आदिकी बनायी हुई देवता आदिकी मूर्ति; अनुकृति, चित्र, प्रतिमा ।

प्रतिमूषिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चुहिया ।

प्रतिमोक्ष–पु० (सं०) मोक्ष, मुक्ति ।

प्रतिमोक्षण–पु० (सं०) मोक्ष; करसे मुक्ति ।

प्रतिमोचन–पु० (सं०) बंधनसे मुक्त करना; रिहाई; बदला लेना, प्रतिकार ।

प्रतिमोचित–वि० (सं०) मुक्त किया हुआ; रक्षित ।

प्रतियत्न–पु० (सं०) इच्छा, चाह; प्रयत्न, उद्योग; किसी कार्यको पूरा करना; अनुग्रह; बंदी बनाना, कैद करना; प्रतिकार; निग्रह; संस्कार ।

प्रतियाग–पु० (सं०) विशेष उद्देश्यसे किया जानेवाला यज्ञ ।

प्रतियातन–पु० (सं०) प्रतिकार, प्रतिशोध ।

प्रतियातना–स्त्री० (सं०) प्रतिमा; समान यातना ।

प्रतियान–पु० (सं०) लौटना, वापस आना ।

प्रतियुत–वि० (सं०) बँधा हुआ ।

प्रतियुद्ध, प्रतियोधन–पु० (सं०) किसीके मुकाबलेमें लड़ना, किसीके विरुद्ध युद्ध करना ।

प्रतियूथप–पु० (सं०) शत्रु हाथियोंके झुंडका नायक ।

प्रतियोग–पु० (सं०) विरोध; विरुद्ध संबंध, परस्पर विरोधी पदार्थोंका संबंध; वह जो किसीके प्रभावको नष्ट करे, मारक; सहयोग ।

प्रतियोगिता–स्त्री० (सं०) प्रतियोगी होनेका भाव, विरोध, प्रतिद्वंद्विता, होड़; शत्रुता । **–परीक्षा**–स्त्री० किसी काम या पदके उम्मेदवारोंकी वह परीक्षा जो उनकी योग्यताकी जाँचके लिए ली जाती है और जिसमें उत्तीर्ण होनेवाले उसके लिए चुने जाते हैं ।

प्रतियोगी(गिन्)–पु० (सं०) विरोधी, शत्रु; प्रतिद्वंद्वी, होड़; बाधक; वह जिसका अभाव हो; वह जिसका किसीसे प्रतिकूल संबंध हो (जैसे–घट घटाभावका प्रतियोगी है, न्या०); हिस्सेदार; वह वस्तु जो किसी अन्य वस्तुपर आश्रित हो । वि० विरोधी; बराबरीका ।

प्रतियोध, प्रतियोधी(धिन्), प्रतियोद्धा(द्धृ)–पु० (सं०) मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिरंभ–पु० (सं०) क्रोध ।

प्रतिरक्षण–पु०, **प्रतिरक्षा**–स्त्री० (सं०) रक्षा, हिफाजत; (डिफ़ेंस) किसीके आक्रमणसे अपनी रक्षा करनेका कार्य या व्यवस्था; लगाये गये अभियोगसे अपना बचाव करने या अपनी निर्दोषिता दिखानेका प्रयत्न, सफाई । **–व्यय**–पु० (डिफेंस एक्सपेंडिचर) किसी देशकी प्रतिरक्षा आदिके लिए किया जानेवाला व्यय । (इम्यूनिटी) किसी विशेष रोगके आक्रमणके प्रभावको निष्क्रिय बनानेकी क्षमता जो प्राणीके जीवन कालमें ही उसके शरीरमें उत्पन्न हुई हो । प्रतिरक्षा (असंक्राम्यता) दो प्रकारसे उत्पन्न हो सकती है; व्यक्ति किसी रोगसे आक्रान्त हो चुका हो तो उसके शरीरमें उस रोगके खिलाफ़ प्रतिरक्षा उत्पन्न हो जाती है, या उस रोगके मृत या निर्बलीकृत रोगाणुओंका टीका लगानेसे भी प्रतिरक्षा उत्पन्न हो जाती है ।

प्रतिरक्षी–पु० (एंटीबॉडी) ऐसे प्रोटीन जो प्राणीके शरीरमें उस वक्त उत्पन्न होते हैं जब कोई बैक्टीरिया या अन्य विजातीय पदार्थ (प्रतिजन) शरीरके ऊतकोंमें प्रवेश कर जाता है । प्रतिरक्षी पदार्थ प्रतिजनके साथ रासायनिक संयोग करके रोगोंके बाह्य आक्रमणसे शरीरकी रक्षा करते हैं ।

प्रतिरथ–पु० (सं०) मुकाबलेमें लड़नेवाला, प्रतियोद्धा (रथी) ।

प्रतिरव–पु० (सं०) विवाद, झगड़ा; प्रतिध्वनि ।

प्रतिराज–पु० (सं०) विपक्षी नरेश ।

प्रतिरात्र–अ० (सं०) हर रात ।

प्रतिरुद्ध–वि० (सं०) रोका हुआ, अवरुद्ध; जिसे या जिसमें बाधा पहुँचायी गयी हो; (नगर, दुर्ग आदि) जो घेर लिया गया हो ।

प्रतिरूप–पु० (सं०) वह जो रूप या आकृतिमें किसीके समान हो; प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; चित्र, अनुकृति; प्रतिनिधि; एक दानव । वि० एक ही जैसे रूपवाला; सुंदर; उपयुक्त; (स्पेसिमेन) किसी जाति, प्रवर्ग आदिकी वह इकाई जो गुण, स्वरूप आदिमें समस्त जाति या प्रवर्गका प्रतिनिधित्व कर सके या जिससे उस जाति या ढंगकी अन्य वस्तुओंका गुण, स्वरूप आदि जाना जाय; किसी वस्तुका वह थोड़ा अंश जिससे अंशीके गुण, स्वरूप आदिका यथेष्ट परिचय मिल जाय, नमूना, बानगी ।

प्रतिरूपक–पु० (सं०) प्रतिबिंब; मूर्ति; चित्र; जाली पत्रादि । वि० एक ही जैसा (समासमें) ।

प्रतिरोद्धा(द्धृ)–पु० (सं०) दे० 'प्रतिरोधक' ।

प्रतिरोध–पु० (सं०) रोक, रुकावट, बाधा; प्रतिबंध; तिरस्कार; डाका; चोरी; घेरा डालना; विरोध ।

प्रतिरोधक–वि० (सं०) रोकनेवाला; बाधा डालनेवाला । पु० दे० 'प्रतिरोधी' ।

प्रतिरोधी(धिन्)–पु० (सं०) प्रतिरोध करनेवाला; रोकनेवाला; डाकू; चोर; घेरा डालनेवाला; विरोधी; बाधा पहुँचानेवाला । वि० बाधा डालनेवाला; अवरोध करनेवाला ।

प्रतिरोधन–पु० (सं०) प्रतिरोध करनेकी क्रिया ।

प्रतिरोधित–वि० (सं०) जिसका प्रतिरोध किया गया हो ।

प्रतिरोपित–वि० (सं०) जो (पौधा) पुनः रोपा गया हो ।

प्रतिलंभ–पु० (सं०) लाभ, प्राप्ति; निंदा, इल्जाम; जानना-समझना ।

प्रतिलक्षण–पु० (सं०) चिह्न ।

प्रतिलब्धि–स्त्री० (रिकव्हरी) किसीको पहले दी हुई (या खोयी हुई) वस्तु पुनः प्राप्त करना ।

प्रतिलाभ–पु० (सं०) प्राप्ति; पुनः प्राप्त करना ।

प्रतिलिपि–स्त्री० (सं०) किसी लिखी हुई चीजकी ज्योंकी त्यों की गयी नकल ।

प्रतिलिपिक–पु० (कॉपीइस्ट) किसी लेख, पत्रादिकी प्रतिलिपि या नकल करनेवाला ।

प्रतिलिपित–वि० (कांपीड) जिसकी प्रतिलिपि कर ली गयी हो ।

प्रतिलेखक–पु० (कॉपीइस्ट) दे० 'प्रतिलिपिक' ।

प्रतिलेखन–पु० (ट्रांसक्रिप्शन) किसी पत्र, पुस्तक आदिसे कोई चीज ज्योंकी त्यों उतारना या फिर उसी तरह लिखना ।

प्रतिलोम–वि० (सं०) विपरीत, उलटा; अनुलोमका उलटा; नीच, अधम; अप्रिय; प्रतिकूल; बायाँ । पु० अप्रिय या हानिकर कार्य । **–ज**–वि० जिसकी उत्पत्ति उच्च वर्णकी स्त्री और हीनतर वर्णके पुरुषसे हुई हो । **–विवाह**–पु० ऐसा विवाह जिसमें वर नीच वर्णका हो और कन्या उच्च वर्णकी ।

प्रतिलोमक–पु० (सं०) उलटा क्रम ।

प्रतिवक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) उत्तर देनेवाला; (कानूनकी) व्याख्या करनेवाला ।

प्रतिवच(स्)–पु० (सं०) दे० 'प्रतिवचन' ।

प्रतिवचन–पु० (सं०) उत्तर, जवाब; प्रतिध्वनि ।

प्रतिवनिता–स्त्री० (सं०) सौत, सपत्नी ।

प्रतिवर्णिक–वि० (सं०) एक ही जैसे रंगवाला, समान, सदृश ।

प्रतिवर्तन–पु० (सं०) लौटना, वापस जाना; पिछली बातों या घटनाओंपर फिरसे विचार करना ।

प्रतिवर्ती–वि० (रिवर्शनरी) (लाभादिकी रकम) जो मृत्युके बाद प्राप्य हो; जो उत्तराधिकारके रूपमें भोग्य हो । **–अधिलाभांश** –पु० (रिवर्शनरी बोनस) बीमा-पत्रक आदिपर मिलनेवाला वह अधिलाभांश (बोनस) जो मृत्युके बाद ही उसके उत्तराधिकारियोंको प्राप्त हो सके । **–क्रिया**–स्त्री० (रीफ्लेक्स ऐक्शन) किसी विशेष उद्दीपन (स्टिमुलस) के प्रति स्वतः उत्पन्न होनेवाली ऐसी अनुक्रिया जिसके लिए मस्तिष्कको सोचने विचारनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती । उदाहरणके लिए यदि उंगली अचानक आगकी लपटमें पड़ जाय तो तुरन्त हाथको हम झटकेसे अपनी ओर खींच लेते हैं ।

प्रतिवर्द्धी(र्द्धिन्)–वि० (सं०) जो मुकाबला कर सके ।

प्रतिवसथ–पु० (सं०) गाँव ।

प्रतिवस्तु–स्त्री० (सं०) वह वस्तु जो रूप आदिमें किसी वस्तुके समान हो, सदृश वस्तु; किसी वस्तुके बदलेमें दी जानेवाली वस्तु; उपमान ।

प्रतिवस्तूपमा–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ उपमेय और उपमान-वाक्यमें एक ही साधारण धर्म, शब्दभेदसे, कहा जाय ।

प्रतिवहन–पु० (सं०) पीछे ले जाना, लौटाना; निवारण करना ।

प्रतिवाक्(च्)–स्त्री० (सं०) उत्तर, जवाब ।

प्रतिवाक्य–पु० (सं०) उत्तर, जवाब । वि० उत्तर देने योग्य ।

प्रतिवाणी–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिवाक्'; प्रतिवाद ।

प्रतिवात–पु० (सं०) वह प्रदेश जिधरसे हवा चल रही हो ।

प्रतिवाद–पु० (सं०) वादीकी बातके विरोधमें कही जानेवाली बात, वादीकी बातका उत्तर; विरोध, खंडन ।

प्रतिवादिता–स्त्री० (सं०) प्रतिवादीका भाव; प्रतिवादीका कार्य ।

प्रतिवादी(दिन्)–पु० (सं०) प्रतिवाद करनेवाला; वादीकी बातका उत्तर देनेवाला; खंडन करनेवाला, विरोध करनेवाला; वह जिसपर दावा किया गया हो, मुद्दालेह; विरोधी, प्रतिपक्षी, शत्रु ।

प्रतिवाप–पु० (सं०) क्वाथ बनते समय या बन जानेपर उसमें दवाएँ मिलाना ।

प्रतिवार–पु० (सं०) निवारण, हटाना, दूर करना । अ० प्रतिदिन; हर बार ।

प्रतिवारण–पु० (सं०) निवारण, रोकना; चेतावनी; विरोधी हाथी ।

प्रतिवारित–वि० (सं०) निवारित; रोका हुआ ।

प्रतिवार्त्ता–स्त्री० (सं०) जवाब या उत्तरमें भेजा गया संवाद, प्रत्युत्तररूप वृत्तांत ।

प्रतिवाश–वि० (सं०) खंडन करने योग्य ।

प्रतिवास–पु० (सं०) पड़ोस, प्रतिवेश; सुगंधि ।

प्रतिवासरिक–वि० (सं०) नित्यका, दैनिक ।

प्रतिवासित–वि० (सं०) आबाद किया हुआ, बसाया हुआ ।

प्रतिवासी(सिन्)–पु० (सं०) पड़ोसमें रहनेवाला, पड़ोसी । (स्त्री० 'प्रतिवासिनी' ।)

प्रतिवासुदेव–पु० (सं०) अश्वग्रीव, तारक आदि विष्णुके नौ शत्रु ।

प्रतिवाह–पु० (सं०) अक्रूरका एक भाई ।

प्रतिविंध्य–पु० (सं०) युधिष्ठिरका एक पुत्र ।

प्रतिविघात–पु० (सं०) निवारण; रक्षण ।

प्रतिविधान–पु० (सं०) प्रतिकार; एहतियात ।

प्रतिविधि–स्त्री० (सं०) प्रतिकार ।

प्रतिविधित्सा–स्त्री० (सं०) प्रतिकार करनेकी इच्छा ।

प्रतिविधित्सु–पु० (सं०) प्रतिकार करनेकी इच्छा करनेवाला ।

प्रतिविरुद्ध–वि० (सं०) विद्रोही ।

प्रतिविशिष्ट–वि० (सं०) बहुत बढ़िया ।

प्रतिविष–पु० (सं०) विषका प्रभाव नष्ट करनेवाला पदार्थ ।

प्रतिविषा–स्त्री० (सं०) अतीस ।

प्रतिविष्णुक–पु० (सं०) राजा मुचकुंद; मुचकुंदका पेड़ ।

प्रतिविहित–वि० (सं०) निवारित ।

प्रतिवीत–वि० (सं०) ढका हुआ; दबाया हुआ ।

प्रतिवीर–पु० (सं०) विरोधी; प्रतिभट, प्रतिद्वंद्वी ।

प्रतिवीर्य–वि० (सं०) किसीका भी सामना करनेमें समर्थ; अद्वितीय, बेजोड़ ।

प्रतिवेदन–पु० (रिपोर्ट) किसी घटना, कार्य, योजना आदिके संबंधमें छानबीन, पूछताछ आदि करनेके बाद तैयार किया गया विवरण जो किसी अधिकारी या सभा आदिके सामने प्रस्तुत करनेको हो, आख्या ।

प्रतिवेदित–वि० (सं०) आगाह किया हुआ, जताया हुआ ।

प्रतिवेदी(दिन्)–वि० (सं०) अनुभव करनेवाला, जानने-समझनेवाला ।

प्रतिवेल–अ० (सं०) हर समय ।

प्रतिवेश–पु० (सं०) पड़ोस; पड़ोसी ।

प्रतिवेशी(शिन्)–पु० (सं०) पड़ोसी ।

प्रतिवेश्म(न्)–पु० (सं०) पड़ोसीका घर । अ० घर-घर ।

प्रतिवेश्य–पु० (सं०) पड़ोसी ।

प्रतिवैर–पु० (सं०) वैरका प्रतिकार, शत्रुताका बदला ।

प्रतिव्यक्ति-कर–पु० (कैपिटेशन टैक्स) प्रतिव्यक्तिके हिसाबसे लगाया गया कर ।

प्रतिव्यूढ–वि० (सं०) व्यूहबद्ध ।

प्रतिव्यूह–पु० (सं०) शत्रुके विरुद्ध की गयी व्यूहरचना, मोर्चाबंदी; समूह ।

प्रतिशंका–स्त्री० (सं०) संदेह; बराबर बना रहनेवाला भय ।

प्रतिशब्द–पु० (सं०) प्रतिध्वनि, गूँज । अ० शब्द-शब्दमें या पर ।

प्रतिशम–पु० (सं०) निवृत्ति, छुटकारा ।

प्रतिशयन–पु० (सं०) किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए दाना-पानी छोड़कर किसी देवताके सामने पड़े रहना ।

प्रतिशयित–वि० (सं०) प्रतिशयन करनेवाला ।

प्रतिशशी(शिन्)–पु० (सं०) दे० 'प्रतिचंद्र' ।

प्रतिशाखा–स्त्री० (सं०) प्रशाखा ।

प्रतिशाप–पु० (सं०) शापके बदलेमें दिया जानेवाला शाप ।

प्रतिशासन–पु० (सं०) नौकर या किसी छोटेको बुलाकर कहीं भेजना या किसी कामपर नियुक्त करना; विरोधी या किसी औरका शासन ।

प्रतिशास्ति–स्त्री० (सं०) नौकर आदिसे संवाद आदि भेजना ।

प्रतिशिष्ट–वि० (सं०) जो कहीं भेजा या किसी कामपर नियुक्त किया गया हो (नौकर आदिके लिए); जिसका निराकरण किया गया हो, निराकृत; अस्वीकृत; प्रसिद्ध ।

प्रतिशीत, प्रतिशीन–वि० (सं०) पिघला हुआ; तरल; चूता हुआ ।

प्रतिशुल्क–पु० (काउंटरवेलिंग ड्यूटी) आयात मालपर इस उद्देश्यसे लगाया गया कर जिससे वह स्वदेशमें प्रस्तुत की गयी वस्तुओंसे अधिक सस्ता न बिक सके; विदेश द्वारा पहलेसे लगाये गये किसी शुल्कका अनिष्टकारी प्रभाव व्यर्थ करनेके लिए लगाया जानेवाला आयात कर।

प्रतिशोध–पु० (सं०) अनिष्टकर कार्यके बदले किया गया वैसा ही व्यवहार, बदला, प्रतिकार।

प्रतिश्या–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिश्याय'।

प्रतिश्यान, प्रतिश्याय–पु० (सं०) जुकाम, सर्दी।

प्रतिश्रय–पु० (सं०) आश्रय; सहायता; आश्रयस्थान; यज्ञशाला; गृह; सभा; सत्र।

प्रतिश्रव–पु० (सं०) प्रतिज्ञा; प्रतिध्वनि, गूंज।

प्रतिश्रवण–पु० (सं०) सुनना; प्रतिज्ञा करना।

प्रतिश्रित–पु० (सं०) आश्रयस्थान।

प्रतिश्रुत–वि० (सं०) जिसकी या जिसके संबंधमें प्रतिज्ञा की गयी हो; प्रतिज्ञात; सुना हुआ।

प्रतिश्रुति–स्त्री० (सं०) प्रतिज्ञा; प्रतिध्वनि, गूँज। –**पत्र**–पु० (कॉवेनैंट) वह पत्र या प्रलेख जिसमें किसी बातकी प्रतिज्ञा की गयी हो; कोई बात करने या न करनेके संबंधमें आपसमें किया गया लिखित समझौता।

प्रतिश्रुत्–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिश्रुति'।

प्रतिश्रोता(तृ)–वि०, पु० (सं०) वचन या स्वीकृति देनेवाला।

प्रतिषिद्ध–वि० (सं०) जिसका प्रतिषेध किया गया हो, निषिद्ध; जिसका खंडन किया गया हो।

प्रतिषेद्धा(द्धृ)–वि०, पु० (सं०) प्रतिषेध करनेवाला।

प्रतिषेध–पु० (सं०) निवारण; निषेध, मनाही; खंडन; एक अर्थालंकार जहाँ किसी प्रसिद्ध निषेध या अंतरका इस प्रकार वर्णन किया जाय जिससे उसका कोई विशेष अभिप्राय सूचित हो। –**लेख**–पु० (रिट ऑफ प्रोहिबिशन) किसी मामलेकी सुनवाई बंद कर देनेका उच्च न्यायालय द्वारा छोटी मातहत अदालतको दिया गया लिखित आदेश।

प्रतिषेधक–वि०, पु० (सं०) प्रतिषेध करनेवाला।

प्रतिषेधन–पु० (सं०) प्रतिषेध करनेकी क्रिया।

प्रतिषेधाधिकार–पु० (पावर ऑफ वीटो) किसी देशके राष्ट्रपति या प्रधान शासकका विधानसभा द्वारा स्वीकृत प्रस्तावको अमान्य ठहरानेका अधिकार; सुरक्षापरिषद द्वारा स्वीकृत किसी प्रस्तावको न मानने या कार्यान्वित होनेसे रोक देनेका पाँच महान् राष्ट्रोंमेंसे प्रत्येकको प्राप्त विशेषाधिकार।

प्रतिषेधोपमा–स्त्री० (सं०) उपमालंकारका एक भेद जिसमें निषेध द्वारा तुलना की जाती है।

प्रतिष्क–पु० (सं०) दूत, जासूस।

प्रतिष्कश–पु० (सं०) दूत, जासूस; कोड़ा।

प्रतिष्कष–पु० (सं०) चमड़ेकी रस्सी, चाबुक।

प्रतिष्कस–पु० (सं०) गुप्तचर, भेदिया।

प्रतिष्टंभ–पु० (सं०) प्रतिबंध; स्तब्ध या निश्चेष्ट होने या करनेका भाव; बाधा।

प्रतिष्टब्ध–वि० (सं०) जिसमें रुकावट डाली गयी हो, रोका हुआ।

प्रतिष्ठ–वि० (सं०) ख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिष्ठा–स्त्री० (सं०) स्थिति, ठहराव; स्थापन, रखा जाना; देवप्रतिमाकी स्थापना; किसी पदपर प्रतिष्ठित किया जाना; स्थान, जगह; पृथ्वी; घर, आधार; सम्मान, गौरव, मान-मर्यादा; सीमा; पैर; स्थिरता; ख्याति, प्रसिद्धि; अभीष्टकी सिद्धि; यज्ञ समाप्तिके समय किया जानेवाला कर्म-विशेष; आश्रय; कार्त्तिकेयकी एक अनुचरी; एक वर्णिक वृत्त। –**पत्र**–पु० दे० 'मानपत्र'।

प्रतिष्ठान–पु० (सं०) आधार; स्थान; संघटन, संस्था; कोई सरकारी, अर्धसरकारी या व्यक्तिगत संगठन या संस्था (जिसका अंग होना साहित्यकारकी स्वतंत्रतामें बाधक माना जाता है) (इस्टैब्लिशमेंट); नगरस्थापन; विश्रामालय; पैर; दे० 'प्रतिष्टानपुर'। –**पत्र**–पु० (मेमोरैंडम ऑफ असोसियेशन) किसी व्यापारिक संस्था या प्रमंडलका नाम, उद्देश्य आदिका ब्यौरा देनेवाला वह लेख जो उसकी संस्थापनाके पूर्व सार्वजनिक रूपमें प्रकाशित किया जाय और विधिवत् जिसका पंजीयन किया जाय। –**पुर**–पु० एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुनाके संगमपर बसा था और जो चंद्रवंशके पूर्ववर्ती राजाओंकी राजधानी था; गोदावरीके किनारेका एक प्रचीन नगर जो शालिवाहनकी राजधानी था।

प्रतिष्ठानीयता–किसी बौद्धिककी किसी संस्था या प्रतिष्ठानमें सम्मिलित होकर उससे प्रभावित होनेकी प्रक्रिया। (इसे बौद्धिकताको कुन्द करनेवाला माना जाता है।)

प्रतिष्ठापन–पु० (सं०) स्थापित करनेका काम; देवप्रतिमाकी स्थापना; पदासीन करना।

प्रतिष्ठापयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) प्रतिष्ठापन करनेवाला।

प्रतिष्ठापित–वि० (सं०) जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो।

प्रतिष्ठावान्(वत्)–वि० (सं०) गौरवशाली; मान-मर्यादावाला, इज्जतदार।

प्रतिष्ठित–वि० (सं०) जिसकी प्रतिष्ठा की गयी हो, स्थापित; पदाभिषिक्त; पूरा किया हुआ; निश्चित, निर्धारित; विवाहित; प्रयुक्त; जानकार; प्राप्त; विख्यात, प्रसिद्ध; सम्मानित, इज्जतदार। पु० विष्णु।

प्रतिसंक्रम–पु० (सं०) परछाईं, प्रतिच्छाया; दे० 'प्रलय'।

प्रतिसंक्रांत–वि० (सं०) (दर्पण आदिमें) जिसकी परछाईं पड़ी हो, प्रतिबिंबित।

प्रतिसंख्या–स्त्री० (सं०) चेतना, सम्यक् ज्ञान; एक प्रकारका ज्ञान (सां०)।

प्रतिसंगी(गिन्)–वि० (सं०) साथ लगा रहनेवाला।

प्रतिसंचर–पु० (सं०) पीछेकी ओर जाना; एक प्रलय जिसमें विश्व प्रकृतिमें विलीन हो जाता है; संचार।

प्रतिसंदेश–पु० (सं०) संदेशके जवाबमें कहा गया संदेश।

प्रतिसंधान–पु० (सं०) जोड़ना, संयोजन; अनुसंधान, खोज; उपाय; धनुष्पर बाण चढ़ाना; दो युगोंका संधिकाल (वायु पु०); प्रशंसा, स्तुति; अनुचितन; आत्मनियंत्रण।

प्रतिसंधि–स्त्री० (सं०) वियोग; उपरम, समाप्ति; दो युगोंका संधिकाल; पुनर्योग; पुनर्जन्म; भाग्यकी प्रतिकूलता।

प्रतिसंधेय–वि० (सं०) जिसका प्रतिकार किया जाय।

प्रतिसंलयन–पु० (सं०) (ईश्वर-स्मरणके लिए) एकांतवासी होना।

प्रतिसंविद्–स्त्री० (सं०) किसी विषयका सांगोपांग ज्ञान।

प्रतिसंवेदक–वि० (सं०) किसी विषयकी पूरी जानकारी करानेवाला।

प्रतिसंहरण–पु० (रिवोकेशन) किसी आज्ञप्ति, आदेश, अनुज्ञा, वचन आदिको वापस लेना, रद्द कर देना।

प्रतिसंहार–पु० (सं०) समेट लेना; त्यागना; किसी वस्तुसे दूर रहना।

प्रतिसंहृत–वि० (सं०) समेटा हुआ; त्यागा हुआ।

प्रतिसचिव–पु० (डिप्टी सेक्रेटरी) सचिवकी अनुपस्थितिमें उसके स्थानपर काम करनेवाला, उपसचिव।

प्रतिसम–वि० (सं०) जो समान न हो, विसदृश; जो मुकाबलेका हो।

प्रतिसमाधान–पु० (सं०) प्रतिकार, उपचार।

प्रतिसमासन–पु० (सं०) निवारण; प्रतिरोध।

प्रतिसर–पु० (सं०) सेनाका पिछला भाग; वह कंकण जो ब्याहके पहले वर तथा कन्याकी कलाईपर बाँधा जाता है; कंकण नामका आभूषण; एक प्रकारका मंत्र; राखी; माला; घावका भरना, व्रणशुद्धि; सेवक, टहलू; रक्षक, रखवाला; प्रभात। वि० अधीन, परतंत्र।

प्रति-सरकार–स्त्री० (पैरेलल गवर्नमेंट) किसी देशमें प्रतिष्ठित सरकारकी प्रतिस्पर्द्धा या विरोधमें स्थापित अन्य सरकार जो उक्त सरकारके साथ-साथ ही कुछ भागोंपर शासन करने आदिका प्रयत्न करे, समकक्ष सरकार।

प्रतिसरण–पु० (सं०) किसीके सहारे उठँघनेकी क्रिया।

प्रतिसरा–स्त्री० (सं०) सेविका, दासी; पट्टी, तस्मा।

प्रतिसर्ग–पु० (सं०) रुद्र, मनु, मरीचि आदि द्वारा की गयी सृष्टि;

प्रलय; पुराणका एक भाग जिसमें प्रलय आदिका विचार किया गया है।

प्रतिसव्य–वि० (सं०) प्रतिकूल, विरुद्ध आचरण करनेवाला, विरुद्धाचारी।

प्रतिसांधानिक–पु० (सं०) चारण, मागध।

प्रतिसामंत–पु० (सं०) शत्रु, विपक्ष।

प्रतिसाम्य–पु० (सिमेट्री) शरीरके या किसी रचना अथवा किसी वस्तुके विभिन्न अंगोंमें आकार-प्रकार, वनावट आदि-संवंधी वह उचित अनुपात जो उसे सुंदर और मनोरम बनानेमें सहायक हो, सर्ममिति।

प्रतिसायम्–अ० (सं०) हर शाम।

प्रतिसारण–पु० (सं०) दूर हटाना, दूरीकरण, अपसारण; घावकी मरहम-पट्टी करना (सुश्रुत); मरहम लगानेका एक औजार; चूर्ण, कल्क आदिकी सहायतासे दाँत, जीभ आदिका उँगलीसे रगड़ना (सुश्रुत)।

प्रतिसारणीय–वि० (सं०) प्रतिसारणके योग्य।

प्रतिसारित–वि० (ड्रेस्ड) जिसकी मरहम-पट्टी की गयी हो।

प्रतिसारी(रिन्)–वि० (सं०) उलटी दिशामें जानेवाला।

प्रतिसीरा–स्त्री० (सं०) परदा।

प्रतिसूर्य–पु० (सं०) एक प्रकारका उत्पात जिसमें वर्तमान सूर्यके अलावा एक और सूर्य दिखाई देता है; गिरगिट।

प्रतिसृष्ट–वि० (सं०) भेजा हुआ, प्रेपित; जिसका निराकरण किया गया हो, निराकृत; मत्त, मतवाला।

प्रतिसेना–स्त्री० (सं०) शत्रुकी सेना।

प्रतिसोमा–स्त्री० (सं०) एक पौधा, महिपवल्ली।

प्रतिस्कंध–पु० (सं०) कार्त्तिकेयका एक अनुचर।

प्रतिस्त्री–स्त्री (सं०) परायी स्त्री।

प्रतिस्थापन–पु० (सब्स्टिटयूशन) कोई काम करने या चलानेके लिए एक आदमी या एक वस्तुके वदलेमें, स्थानमें, दूसरा आदमी या दूसरी वस्तु रखना।

प्रतिस्नात–वि० (सं०) नहाया हुआ, जो स्नान कर चुका हो।

प्रतिस्नेह–पु० (सं०) प्रेमके वदले किया जानेवाला प्रेम, प्रेमका प्रतिदान।

प्रतिस्पंदन–पु० (सं०) स्पंदन, हरकत, स्फुरण।

प्रतिस्पर्द्धा, प्रतिस्पर्धा–स्त्री० (सं०) लाग-डाट, आगे वढने या मात देनेकी होड़।

प्रतिस्पर्द्धी(र्द्धिन्), प्रतिस्पर्धी(र्धिन्)–पु० (सं०) प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला, होड़ लगानेवाला; प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिस्राव–पु० (सं०) नाकसे पीला और गाढ़ा कफ निकलनेका एक रोग; उक्त प्रकारका स्राव।

प्रतिस्वन–पु० (सं०) प्रतिशब्द।

प्रतिस्वर–पु० (सं०) प्रतिशब्द।

प्रतिहंता(तृ)–पु० (सं०) रोकनेवाला; निवारण करनेवाला।

प्रतिहत–वि० (सं०) रोका हुआ, अवरुद्ध; दूर किया हुआ, निरस्त; निराश किया हुआ; पराभूत किया हुआ। **–धी,–मति**–वि० विरोध-भाव रखनेवाला।

प्रतिहति–स्त्री० (सं०) आघातके जवावमें किया जानेवाला आघात, प्रतिघात; रोकने या हटानेकी क्रिया; रोष, क्रोध; नैराश्य।

प्रतिहनन–पु० (सं०) आघातके जवावमें आघात करना।

प्रतिहरण–पु० (सं०) निवारण; परित्याग; हटाना।

प्रतिहर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) सोलह प्रकारके ऋत्विकोंमेंसे एक; हटानेवाला; नाश करनेवाला।

प्रतिहस्त, प्रतिहस्तक–पु० (सं०) प्रतिनिधि; सहायक।

प्रतिहस्ताक्षरित–वि० (काउंटरसाइंड) (वह प्रलेख आदि) जिसपर पहलेसे किये गये हस्ताक्षरके सामने किसी अन्य अधिकारी आदिके हस्ताक्षर किये गये हों; जिसपर किसीके हस्ताक्षरोंको साक्षीकृत करनेके लिए हस्ताक्षर किये गये हों।

प्रतिहार–पु० (सं०) निवारण; द्वारपाल, डयोढ़ीदार; द्वार, दरवाजा; ऐंद्रजालिक, वाजीगर; वाजीगरी; उद्गाता द्वारा गाये जानेवाले सामका एक अवयव। **–भूमि**–स्त्री० डयोढ़ी। **–रक्षी**–स्त्री० द्वारपालिका।

प्रतिहारक–पु० (सं०) ऐंद्रजालिक; दूसरे स्थानपर ले जानेवाला; प्रतिहार सामका गान करनेवाला।

प्रतिहारण–पु० (सं०) प्रवेश; द्वारमें प्रवेश करनेकी आज्ञा।

प्रतिहारी–स्त्री० (सं०) द्वारपालका काम करनेवाली स्त्री, द्वारपालिका।

प्रतिहारी(रिन्)–पु० (सं०) द्वारपाल।

प्रतिहार्य–पु० (सं०) इंद्रजाल, वाजीगरी। वि० लौटाया, हटाया जानेवाला; जिसका प्रतिरोध किया जाय।

प्रतिहास–पु० (सं०) हँसनेके जवावमें हँसना; कनेर।

प्रतिहिंसा–स्त्री० (सं०) हिंसाके वदलेमें की जानेवाली हिंसा।

प्रतिहिंसित–पु० (सं०) दे० 'प्रतिहिंसा'। वि० जिसे वदलेमें क्षति पहुँचायी गयी हो।

प्रतिहित–वि० (सं०) रखा हुआ, जमाया हुआ।

प्रतींधक–पु० (सं०) विदेह देश।

प्रतीक–वि० (सं०) प्रतिकूल, विरुद्ध; विलोम, उलटा। पु० अंग, अवयव; अंश, भाग; वह जिसपर किसीका आरोप किया गया हो, प्रतिरूप; प्रतिमा; वह दृश्य वस्तु या तथ्य जो किसी अदृश्य वस्तु या तथ्यके प्रायः अनुरूप होनेके कारण उसके प्रतिनिधि या प्रतिरूपके रूपमें मान ली जाय; किसी वाक्य, पद, मंत्र आदिके कुछ अक्षर जिनसे पूरेका बोध हो; मुँह, चेहरा; किसी चीजका आगेका हिस्सा। **–न्यूनन**–पु० (टोकन कट) (अपना विरोध या असंतोष प्रकट करनेके लिए) आय-व्ययकी किसी मदमें केवल प्रतीकके रूपमें नाममात्रकी कमी करानेका प्रस्ताव, लाक्षणिक न्यूनन। **–वाद**–पु० (सिंवालिज्म) किसी वस्तु या विपयको किसीके प्रतीकके रूपमें वर्णन करने या माननेका सिद्धांत।

प्रतीकार–पु० (सं०) दे० 'प्रतिकार'।

प्रतीकाश–पु० (सं०) दे० 'प्रतिकाश'।

प्रतीकोपासना–स्त्री० (सं०) ब्रह्मके आदित्य आदि प्रतीकोंकी ब्रह्मदृष्टिसे उपासना करना; किसीके प्रतीककी की जानेवाली उपासना; प्रतिमा-पूजन।

प्रतीक्ष, प्रतीक्षक–वि०, पु० (सं०) प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्षण–पु० (सं०) प्रतीक्षा करना; प्रतीक्षा; सम्मान या पूजा करना; ध्यान देना; वचन आदिका पालन।

प्रतीक्षा–स्त्री० (सं०) आसरा, इंतजार; पूजा, सम्मान; ध्यान देना। **–गृह**–पु० दे० 'प्रतीक्षालय'।

प्रतीक्षालय–पु० (वेटिंग रूम) रेलगाड़ी, वस, विमानादिके आगमनतक प्रतीक्षा करनेवाले यात्रियोंके वैठनेका कमरा या छायादार स्थान; किसी अधिकारी, वड़े आदमी आदिसे मिलनेवालोंके लिए वैठकर प्रतीक्षा करनेका कमरा या घर।

प्रतीक्षित–वि० (सं०) जिसकी प्रतीक्षा की गयी हो; जिसका खयाल किया गया हो; पूजित, सम्मानित।

प्रतीक्षी(क्षिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रतीक्षक'।

प्रतीक्ष्य–वि० (सं०) जिसकी प्रतीक्षा की जाय; प्रतीक्षाके योग्य; पूज्य; ध्यान देने योग्य।

प्रतीघात–पु० (सं०) दे० 'प्रतिघात'।

प्रतीघातक–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रतिघातक'।

प्रतीघातन–पु० (सं०) दे० 'प्रतिघातन'।

प्रतीघाती(तिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रतिघाती'।

प्रतीघ्न–पु० (सं०) दे० 'प्रतिघ्न'।

प्रतीची–स्त्री० (सं०) पश्चिम दिशा। **–पति**–पु० वरुण।

प्रतीचीन–वि० (सं०) पश्चिम दिशाका, पश्चिमी, पछाहीं; पिछला।

प्रतीचीश–पु० (सं०) वरुण।

प्रतीच्य–वि० (सं०) पश्चिमका, पश्चिमी, पछाहीं।

प्रतीच्या–स्त्री० (सं०) पुलस्त्यकी माता।

प्रतीच्छक–पु० (सं०) ग्राहक (स्मृ०)।

प्रतीत–वि० (सं०) जाना हुआ, ज्ञात, मालूम, प्रसिद्ध, मशहूर; हृष्ट, प्रसन्न; जिसका आदर हो, सम्मानित, प्रतिष्ठित; विश्वास किया हुआ; प्रस्थित, गत; बुद्धिमान्; संकल्प किया हुआ।

प्रतीति–स्त्री० (सं०) ज्ञान, बोध; प्रसिद्धि, ख्याति; आदर; हर्ष;

विश्वास; प्रस्थान ।

प्रतीत्त–वि० (सं०) लौटाया हुआ ।

प्रतीत्य–पु० (सं०) आराम, सांत्वना । **–समुत्पाद**–पु० दुःखके निम्नलिखित बारह निदान जिनमें क्रमशः एकसे दूसरेकी उत्पत्ति मानी जाती है–(१) अविद्या, (२) संस्कार, (३) विज्ञान, (४) नामरूप, (५) षडायतन, (६) स्पर्श, (७) वेदना, (८) तृष्णा, (९) उपादान, (१०) भव, (११) जाति और (१२) जरामरण (बौ०) ।

प्रतीनाह–पु० (सं०) झंडा, निशान ।

प्रतीप–वि० (सं०) प्रतिकूल, उलटा, विलोम; अप्रिय; हठी; बाधक; विरोधी । पु० राजा शांतनुके पिता; एक अर्थालंकार जहाँ प्रसिद्ध उपमानको उपमेय बना दिया जाय या उपमेयसे उपमानका निरादर आदि कराया जाय । **–ग**–वि० विरुद्ध जानेवाला; प्रतिकूल । **–गति**–स्त्री०,**–गमन**–पु० पीछेकी ओर जाना । **–गामी(मिन्)**–वि० विरुद्धाचरण करनेवाला; (रीट्रोग्रेसिव) पीछेकी ओर ले जानेवाला, प्रतिगामी । **–तरण**–पु० नाव या जहाजको धाराके विरुद्ध ले जाना । **–दर्शनी,–दर्शिनी**–स्त्री० स्त्री, नारी । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० विपरीत देखनेवाला । **–वचन**–पु० खंडन, प्रतिकूल कथन । **–विपाकी(किन्)**–वि० जिसका परिणाम उलटा हो, उलटा फल देनेवाला ।

प्रतीपक–वि० (सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल ।

प्रतीपी(पिन्)–वि० (सं०) प्रतिकूल; अकृपालु ।

प्रतीपोक्ति–स्त्री० (सं०) खंडन, प्रतिकूल वचन ।

प्रतीयमान–वि० (सं०) जिसकी प्रतीति हो रही हो, जान पड़ता हुआ; (वह अर्थ) जो व्यंजना द्वारा प्रकट हो रहा हो ।

प्रतीर–पु० (सं०) तट; किनारा ।

प्रतीवाप–पु० (सं०) दे० 'प्रतिवाप'; धातुओं आदिका मिश्रण; प्लेग आदि महामारी, दैवी उत्पात ।

प्रतीवेश–पु० (सं०) दे० 'प्रतिवेश' ।

प्रतीवेशी(शिन्)–पु० (सं०) दे० 'प्रतिवेशी' ।

प्रतीष्ट–वि० (सं०) प्राप्त; स्वीकृत ।

प्रतीह–पु० (सं०) भरतवंशका एक राजा ।

प्रतीहार–पु० (सं०) दे० 'प्रतिहार' ।

प्रतीहारी–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रतिहारी' ।

प्रतीहास–पु० (सं०) दे० 'प्रतिहास' ।

प्रतुद–पु० (सं०) परेवा, खंजन, कोयल आदि पक्षी जो अपना चारा चोंचसे तोड़कर खाते हैं; कोंचनेका एक आला ।

प्रतुष्टि–स्त्री० (सं०) संतुष्टि, तृप्ति ।

प्रतूणी–स्त्री० (सं०) नाडी-दौर्बल्यका एक रोग जिसमें गुदासे लेकर आँतोंतक दर्द होता है ।

प्रतूर्ण, प्रतूर्त–वि० (सं०) वेगवान् ।

प्रतूलिका–स्त्री० (सं०) तोशक, गद्दा ।

प्रतोद–पु० (सं०) अंकुश; चाबुक; पैना; कोंचनेका एक आला; कोई काम करनेको विवश करना ।

प्रतोली–स्त्री० (सं०) नगरके बीचकी चौड़ी सड़क, शाहराह; गली, कूचा; बाजारके बीचका रास्ता; किलेके नीचेसे होकर जानेवाला रास्ता; शिश्न या गलेपर बाँधी जानेवाली एक तरहकी पट्टी ।

प्रतोष–पु० (सं०) संतोष; स्वायंभुव मनुके एक पुत्र ।

प्रतोषना*–स० क्रि० संतुष्ट करना; समझाना-बुझाना–'राम प्रतोषी मातु सब कहि बिनीत बर बैन'–रामा० ।

प्रत्त–वि० (सं०) दिया हुआ, प्रदत्त ।

प्रत्न–वि० (सं०) पुराना, पुरातन; परंपरागत । **–तत्त्व**–पु० दे० 'पुरातत्त्व' । **–०विद्**–पु० पुरातत्त्ववेत्ता ।

प्रत्यंकन–पु० (ट्रेसिंग) अंकित की हुई किसी आकृति आदिकी ज्योंकी त्यों प्रतिकृति तैयार करना, विशेषकर उसके ऊपर पारदर्शी पतला कागज या मसिपत्र नीचे रखकर, अनुरेखन ।

प्रत्यंग–पु० (सं०) शरीरका कोई गौण अंग (जैसे नाक); अध्याय, परिच्छेद; अस्त्र; एक मान । अ० प्रत्येक अंगमें, अंग-अंगमें ।

प्रत्यंगिरा–स्त्री० (सं०) एक दुर्गा, तांत्रिकोंकी एक देवी; सिरसका पेड़ ।

प्रत्यंगिरा(रस्)–पु० (सं०) चाक्षुष मन्वंतरके एक ऋषि ।

प्रत्यंचा–स्त्री० धनुष्की डोरी ।

प्रत्यंचित–वि० (सं०) पूजित, सम्मानित ।

प्रत्यंजन–पु० (सं०) लेपन; अंजन लगाना ।

प्रत्यंत–वि० (सं०) जो सन्निकट हो, प्रत्यासन्न । पु० सीमा; म्लेच्छ देश । **–पर्वत**–पु० किसी बड़े पहाड़के पासका छोटा पहाड़ ।

प्रत्यक्(च्)–अ० (सं०) पीछे, प्रतिकूल दिशामें; पश्चिममें, पश्चिमकी ओर; पहले, प्राचीन कालमें । **–चेतन**–वि० जिसकी चेतना अंतर्मुखी हो । पु० पुरुष (सां०); सर्वज्ञ, परमेश्वर; जीवात्मा । **–पर्णी,–पुष्पी**–स्त्री० चिचड़ा; मूषिकपर्णी । **–प्रवण**–वि० आत्मलीन । **–श्रेणी**–स्त्री० मूसाकानी; वज्रदंती । **–स्रोता(तस्)**–वि० पश्चिमकी ओर बहनेवाला (नद) । **–स्रोतसी**–स्त्री० नर्मदा ।

प्रत्यक्ष–वि० (सं०) जो आँखोंके सामने हो, जो आँखोंसे दिखाई दे, परोक्षका उलटा; जिसका ग्रहण किसी ज्ञानेंद्रियसे हो सके; स्पष्ट, साफ । पु० एक प्रकारका ज्ञान जो इंद्रिय और अर्थके सन्निकर्षसे उत्पन्न होता है और चार प्रकारके प्रमाणोंके अंतर्गत माना जाता है; किसी ज्ञानेंद्रिय द्वारा वस्तु-विशेषका ग्रहण । अ० स्पष्टतः, साफ-साफ । **–ज्ञान**–पु० इंद्रिय और विषयके सन्निकर्षसे उत्पन्न ज्ञान । **–दर्शन,–दर्शी(र्शिन्)**–वि० जिसने कोई घटना साक्षात् देखी हो । पु० साक्षी, गवाह । **–दृश्य**–वि० जो आँखोंसे देखा जा सके । **–दृष्ट**–वि० प्रत्यक्ष रूपसे देखा हुआ । **–प्रमा**–स्त्री० इंद्रियोंके संपर्कसे प्राप्त सही ज्ञान । **–प्रमाण**–पु० प्रत्यक्ष ज्ञानरूप प्रमाण । **–फल**–वि० साक्षात् फल देनेवाला । **–भोग**–पु० किसी वस्तुका वह भोग जो उसके स्वामीके सामने किया जाय । **–लवण**–पु० व्यंजन आदिमें, उनके सिद्ध होनेके बाद, ऊपरसे मिलाया या दिया जानेवाला नमक (श्राद्ध आदिमें ऐसा लवण वर्जित है) । **–वादी(दिन्)**–वि० केवल प्रत्यक्ष माननेवाला । पु० चार्वाक मत जो प्रत्यक्षके अतिरिक्त और किसी प्रमाणको नहीं मानता; वह जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने । **–विहित**–वि० जिसका प्रत्यक्ष रूपसे विधान हो । **–सिद्ध**–वि० जो प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध हो, जिसकी सिद्धिके लिए प्रत्यक्षके अतिरिक्त किसी और प्रमाणकी आवश्यकता न हो ।

प्रत्यक्षता–स्त्री०, **प्रत्यक्षत्व**–पु० (सं०) प्रत्यक्ष होनेका भाव ।

प्रत्यक्षर–अ० (सं०) प्रत्येक अक्षरमें, अक्षर-अक्षरमें ।

प्रत्यक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) जिसने किसी बातको साक्षात् देखा हो, प्रत्यक्षद्रष्टा ।

प्रत्यक्षीकरण–पु० (सं०) स्वयं अपनी आँखोंसे देखनेकी क्रिया; किसी इंद्रिय द्वारा ग्रहण करनेकी क्रिया ।

प्रत्यक्षीकृत–वि० (सं०) आँखोंसे देखा हुआ; जिसका ग्रहण किसी इंद्रिय द्वारा हो चुका हो ।

प्रत्यक्षीभूत–वि० (सं०) जो प्रत्यक्ष हो चुका हो ।

प्रत्यग्–'प्रत्यक्'का समासगत रूप । **–अक्ष**–पु० अंदरका अंग या नेत्र । वि० अन्दरके अंगोंवाला । **–आत्मा(त्मन्)**–पु० ब्रह्म, परमात्मा; जीवात्मा । **–आशा**–स्त्री० पश्चिम दिशा । **–०पति**–पु० वरुण । **–उदक्(च्)**–स्त्री० पश्चिम और उत्तरके बीचकी दिशा । अ० पश्चिमोत्तरकी ओर । **–रथ**–पु० अहिच्छत्र नामका प्राचीन देश; दक्षिण पांचाल ।

प्रत्यग्र–वि० (सं०) नया, हालका; ताजा; शोधित, शुद्ध । **–गंधा**–स्त्री० सोनजूही । **–यौवन**–वि० जो भरी जवानीमें हो । **–वयस्क**–वि० नयी उम्रका, नौजवान ।

प्रत्यग्रथि–पु० (सं०) प्रत्यग्रथका निवासी या राजा ।

प्रत्यङ्मुख–वि० (सं०) जिसका मुँह पश्चिमकी ओर हो ।

प्रत्यनंतर–वि० (सं०) सन्निकट, प्रत्यासन्न ।

प्रत्यनीक–पु० (सं०) शत्रु; शत्रुता; शत्रुसेना; विघ्न; प्रतिवादी; एक अर्थालंकार जहाँ शत्रुको न जीत सकनेके कारण उसके पक्षके किसी व्यक्तिसे वैर निकालनेका वर्णन किया जाय या किसी मित्रकी भलाईके बदले उसके किसी संबंधी आदिके प्रति कोई अच्छा काम करना दिखाया जाय । वि० विरोधी, विपक्षी ।

प्रत्यनुमान–पु० (सं०) प्रतिकूल अनुमान (जैसे–"पर्वत वह्निमान्

है" के विरोधमें "पर्वत वह्न्यभाववान् है" ऐसा अनुमान) ।

प्रत्यपकार–पु० (सं०) अपकारके बदले किया जानेवाला अपकार ।

प्रत्यब्द–अ० (सं०) प्रति वर्ष, हर साल ।

प्रत्यभिज्ञा–स्त्री० (सं०) कभीके देखे हुए व्यक्ति या पदार्थको फिर देखनेपर होनेवाला यह ज्ञान कि यह अमुक व्यक्ति या पदार्थ है, पहचान; यह ज्ञान कि परमेश्वर और जीवात्मा एक हैं । **–दर्शन**–पु० एक दर्शन जिसके अनुसार महेश्वर या परमशिव ब्रह्म या परमात्मा माने जाते हैं ।

प्रत्यभिज्ञात–वि० (सं०) पहचाना हुआ ।

प्रत्यभिज्ञान–पु० (सं०) पहचान; वह वस्तु या चिह्न जिससे कोई पहचाना जाय ।

प्रत्यभिभूत–वि० (सं०) पराभूत, विजित ।

प्रत्यभियुक्त–वि० (सं०) जिसपर प्रत्यभियोग लगाया गया हो ।

प्रत्यभियोग–पु० (सं०) अभियुक्त या प्रतिवादीकी ओरसे वादीपर लगाया जानेवाला अभियोग ।

प्रत्यभिवाद, प्रत्यभिवादन–पु० (सं०) प्रणाम करनेवालेको दिया जानेवाला आशीर्वाद; प्रणामके बदले प्रणाम करना ।

प्रत्यभिस्कंदन–पु० (सं०) दे० 'प्रत्यभियोग' ।

प्रत्यमित्र–पु० (सं०) शत्रु, दुश्मन ।

प्रत्यय–पु० (सं०) विश्वास; ज्ञान; किसी वस्तुका मानसिक बोध (आइडिया); शपथ; आचार; छिद्र; निश्चय; प्रसिद्धि, ख्याति; सहकारी कारण (बौ०); कारण; बुद्धि; स्वाद; अभ्यास; प्रयोग; साधन; ध्यान; छंदोंकी संख्या जाननेकी एक रीति; आश्रित जन; सहायक; विष्णु; वह उपसर्ग जैसा शब्द जो किसी धातु या मूल शब्दके अंतमें कोई संज्ञापद, क्रियापद, अव्यय या विशेषण बनानेके लिए लगाया जाता है, परसर्ग (व्या०); (क्रेडिट) साख, (ऋण चुकानेकी क्षमतामें) विश्वास, प्रतीति । **–कार,–कारी(रिन्)**–वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला । **–कारिणी**–स्त्री० मुहर, मुद्रा । **–पत्र**–पु० (लेटर ऑफ क्रेडिट) किसी व्यापारी, महाजन आदि द्वारा किसी व्यक्तिको दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि आवश्यकता पड़नेपर इसे इतना धन हमारे (व्यापारी या महाजनके) खातेमेंसे या ऋणस्वरूप दिया जाय, साखपत्र; (क्रेडेंशल्ज़) किसी राज्यके सर्वोच्च अधिकारीके हस्ताक्षरसे युक्त वह प्रमाणपत्र जो इस बातका सूचक होता है कि अमुक व्यक्ति आधिकारिक रूपसे अमुक पदपर नियुक्त किया गया है । **–प्रतिभू**–पु० वह प्रतिभू या जमानतदार जो ऋण लेनेवालेके प्रति महाजनको यह विश्वास दिलाता है कि "मैं इसे जानता हूँ, यह भला आदमी है ।" **–प्रति-वचन**–पु० निश्चित और स्पष्ट उत्तर । **–वाद**–पु० दृश्यजगत्की वस्तुओंके संबंधमें मानसिक बोध या प्रत्ययको प्रधानता देनेवाला दार्शनिक सिद्धान्त (आइडियालिज्म) । **–सर्ग**–पु० महत्तत्त्व या बुद्धिसे उत्पन्न सृष्टि ।

प्रत्ययन–पु० (सं०) प्रतीत होनेकी क्रिया ।

प्रत्ययित–वि० (सं०) विश्वस्त; आप्त ।

प्रत्ययी(यिन्)–वि० (सं०) विश्वास करनेवाला, विश्वासयुक्त ।

प्रत्यरा–स्त्री० (सं०) आरोंकी दृढ़ताके लिए उनके साथ पहियेकी पुट्ठीमें जड़ी जानेवाली लकड़ी, गज ।

प्रत्यर्क–पु० (सं०) सूर्यके पास कभी-कभी देख पड़नेवाला प्रतिसूर्य ।

प्रत्यर्थ–वि० (सं०) उपयोगी । पु० उत्तर; शत्रुता; विरोध ।

प्रत्यर्थक, प्रत्यर्थिक–पु० (सं०) विरोधी, विपक्षी ।

प्रत्यर्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) शत्रु; प्रतिवादी, मुद्दालेह ।

प्रत्यर्पण–पु० (सं०) ली हुई वस्तुको उसके अधिकारी या किसी दूसरेको देना, गृहीत वस्तुका पुनर्दान । (एक्सट्रैडिशन) किसी देशसे भागकर आये हुए अपराधीको पुनः उस देशके उपयुक्त अधिकारीके हाथ सौंप देना; (रिफंड) पहले ली हुई या वसूल की हुई रकम लौटाना ।

प्रत्यर्पित–वि० (सं०) लौटाया हुआ ।

प्रत्यवनेजन–पु० (सं०) पुनः धोना ।

प्रत्यवमर्श, प्रत्यवमर्ष–पु० (सं०) अनुचिंतन; सहिष्णुता ।

प्रत्यवर–वि० (सं०) अति निकृष्ट ।

प्रत्यवरूढि–स्त्री० (सं०) नीचेकी ओर आना ।

प्रत्यवरोधन–पु० (सं०) बाधा, रुकावट ।

प्रत्यवरोह–पु० (सं०) अवरोह, उतार ।

प्रत्यवरोहण–पु० (सं०) दे० 'प्रत्यवरूढि'; मार्गशीर्षमें होनेवाला एक त्यौहार ।

प्रत्यवसान–पु० (सं०) भोजन करना; भोजन ।

प्रत्यवसित–वि० (सं०) खाया हुआ, भुक्त; जो फिर पुराना (बुरा) रहन-सहन अपना चुका हो ।

प्रत्यवस्कंद–पु० (सं०) प्रतिवादी या मुद्दालेहका वह उत्तर जिसमें वह वादीके अभियोगका खंडन करता है, मुद्दईके दावेके विरोधमें मुद्दालेहकी ओरसे लगाया जानेवाला जवाब ।

प्रत्यवस्थाता(तृ)–पु० (सं०) शत्रु; प्रतिवादी, मुद्दालेह ।

प्रत्यवस्थान–पु० (सं०) विरोधी या प्रतिवादीके रूपमें स्थित होना, विरोध; पृथक् करना; पूर्व स्थितिमें बने रहना ।

प्रत्यवहार–पु० (सं०) संहार, विनाश; प्रलय; लड़नेके लिए तैयार सैनिकोंको युद्धसे निवृत्त करना ।

प्रत्यवाय–पु० (सं०) ह्रास; बाधा; संध्योपासन आदि विहित नित्यकर्म न करनेसे होनेवाला पाप; दुष्कृत, पाप; विरुद्ध आचरण (स्मृ०); नैराश्य; परिवर्तन; सत्तावाली वस्तुका लोप; जो नहीं है उसका आविर्भाव न होना ।

प्रत्यवेक्षण–पु० (सं०) किसी बातके पूर्वापरका विचार करना, देखभाल, निगरानी ।

प्रत्यवेक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रत्यवेक्षण' ।

प्रत्यश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) गेरू ।

प्रत्यष्ठीला–स्त्री० (सं०) एक नाडी-रोग जिसमें पेटमें अर्बुद बन जाता है जो मल-मूत्रके द्वारको रोक देता है ।

प्रत्यस्तमय–पु० (सं०) (सूरजका) डूबना; अंत, समाप्ति ।

प्रत्याकार–पु० (सं०) म्यान ।

प्रत्याक्रमण–पु० (सं०) आक्रमणके बदले किया जानेवाला आक्रमण, जवाबी हमला (काउंटर अटैक) ।

प्रत्याख्यात–वि० (सं०) अस्वीकृत, इनकार किया हुआ; खंडित; मना किया हुआ; सूचित किया हुआ; निवारित; प्रसिद्ध, मशहूर; अतिक्रांत ।

प्रत्याख्यान–पु० (सं०) इनकार; खंडन, निराकरण; उपेक्षा ।

प्रत्यागत–वि० (सं०) वापस आया हुआ; लौट आया हुआ; पुनः प्राप्त । पु० लड़नेका एक ढंग ।

प्रत्यागतासु–वि० (सं०) जिसके प्राण लौट आये हों, पुनर्जीवित ।

प्रत्यागति–स्त्री० (सं०) लौट आना, वापस आना ।

प्रत्यागम, प्रत्यागमन–पु० (सं०) लौट आना, वापस आना ।

प्रत्याघात–पु० (सं०) आघातके उत्तरमें किया जानेवाला आघात ।

प्रत्याचार–पु० (सं०) जैसेका तैसा व्यवहार; अनुकूल व्यवहार ।

प्रत्याताप–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ खूब धूप आये ।

प्रत्यादान–पु० (सं०) फिरसे लेना या प्राप्त करना ।

प्रत्यादित्य–पु० (सं०) दे० 'प्रतिसूर्य' ।

प्रत्यादिष्ट–वि० (सं०) निराकृत; लांछित; घोषित; निर्देश किया हुआ; अस्वीकृत; पृथक् किया हुआ; चिताया हुआ ।

प्रत्यादेश–पु० (सं०) निराकरण, खंडन; वह जो किसीको लज्जित करे या नीचा दिखाये; चेतावनी, हिदायत; आज्ञा; अस्वीकृत, इनकार ।

प्रत्याधान–पु० (सं०) मस्तक (वै०); वह स्थान जहाँ कोई वस्तु जमा की जाय ।

प्रत्याध्मान–पु० (सं०) एक वातव्याधि जिसमें पेट फूल जाता है ।

प्रत्यानयन–पु० (सं०) लौटा लाना, वापस लाना; (रेस्टिट्यूशन) पुनः लौटा दिया जाना, हृतप्रतिदान ।

प्रत्यानाह–पु० (सं०) फुफ्फुसके आवरणका प्रदाह ।

प्रत्यानीत–वि० (सं०) लौटाकर लाया हुआ ।

प्रत्यापत्ति–स्त्री० (सं०) पुनरागमन; वैराग्य ।

प्रत्याभूति–स्त्री० (गारंटी) किसी संविदा आदिकी शर्तोंके पालनके लिए जमानतके रूपमें दी गयी वस्तु; इस बातकी लिखित या अलिखित जिम्मेदारी कि कोई बात, घटना आदि सच्ची, साधार और विश्वसनीय है ।

प्रत्याम्नाय–पु० (सं०) अनुमान, वाक्यका पाँचवाँ अवयव-निगमन; प्रतिनिधि (वै०)।

प्रत्याय–स्त्री० (सं०) राजस्व, कर, टैक्स; (रिटर्न) बदलेमें मिलनेवाली आमदनी या लाभ, प्रतिफल।

प्रत्यायक–वि०, पु० (सं०) विश्वास दिलानेवाला; व्याख्याता; प्रमाणित करनेवाला।

प्रत्यायन–पु० (सं०) विश्वास दिलानेकी क्रिया; व्याख्या करनेवाला; (वधूको) लिवा जाना; विवाह करना; सूर्यका अस्त होना।

प्रत्यायित–पु० (सं०) विश्वस्त प्रतिनिधि या दूत।

प्रत्यायुक्त–वि० (डेलीगेटेड) जो प्रतिनिधि बनाकर भेजा गया हो या जिसे विशेष कामके लिए कुछ अधिकार प्रदान किया गया हो।

प्रत्यायोजन–पु० (ऐक्ट ऑफ डेलीगेटिंग) अपने कर्तव्य, शक्तियाँ आदि किसी दूसरे व्यक्तिको सौंपना या दे देना।

प्रत्यारंभ–पु० (सं०) पुनरारंभ; निषेध।

प्रत्यारोप–पु० (काउंटर चार्ज) वह आरोप जो किसी आरोपके जवाबमें किया जाय।

प्रत्यालीढ़–पु० (सं०) बाण चलानेका एक आसन जिसमें बायाँ पैर आगे बढ़ाते हैं और दायाँ पीछे खींच लेते हैं। वि० बायीं ओर बढ़ाया हुआ।

प्रत्यावर्त्तन–पु० (सं०) लौट आना, वापस आना।

प्रत्यावेदन–पु० (काउंटर स्टेटमेंट) किसी वक्तव्य, कथन आदिके जवाब या विरोधमें कही गयी बात।

प्रत्याशा–स्त्री० (सं०) आशा। **–में**–अ० (इन एंटिसिपेशन) किसी बातका होना पहलेसे ही पूर्ण निश्चित मान लेनेकी स्थितिमें या प्रतीक्षामें।

प्रत्याशित–वि० (ऐंटिसिपेटेड) जिसकी आशा या अपेक्षा पहलेसे की गयी हो, जिसका पहलेसे अनुमान किया गया हो (आय, घटी, वृद्धि आदि)। **–उत्तराधिकारी**–पु० (एयर एक्सपेक्टैंस) वह जिसके उत्तराधिकारी बननेकी आशा हो।

प्रत्याशी(शिन्)–वि० (सं०) आशा करनेवाला; कोई पद या जगह पानेका इच्छुक, अभ्यर्थी (कैंडिडेट)।

प्रत्याश्रय–पु० (सं०) शरण लेनेका स्थान।

प्रत्याश्वास–पु० (सं०) पुनः साँस लेना।

प्रत्याश्वासन–पु० (सं०) सांत्वना, ढाढ़स।

प्रत्याश्वास्त–वि० (सं०) जिसे सांत्वना दी गयी हो, जिसे ढाढ़स बँधाया गया हो।

प्रत्यासंकलित–पु० (सं०) पक्ष और विपक्षमें कही हुई बातोंको मिलाकर विचार करना।

प्रत्यासंग–पु० (सं०) संयोग, संबंध।

प्रत्यासत्ति–स्त्री० (सं०) निकटता; निकट संबंध; प्रसन्नता; अलौकिक प्रत्यक्षका कारणरूप संबंध (न्या०)।

प्रत्यासन्न–वि० (सं०) जो बहुत निकट हो, अति निकटस्थ; संबद्ध। **–मरण,–मृत्यु**–वि० जो मर रहा हो।

प्रत्यासर, प्रत्यासार–पु० (सं०) सेनाका पिछला भाग; ऐसी मोर्चाबंदी जिसमें एक व्यूहके पीछे दूसरा बनाया गया हो।

प्रत्यास्थ–वि० जो दबाव पड़ने या खींचनेपर बढ़ तो जाय किंतु खिंचाव हटनेपर फिर ज्योंका त्यों हो जाय, (इलैस्टिक)।

प्रत्यास्मरण–पु० (सं०) किसी भूली हुई बात, घटना आदिको फिरसे स्मरण करना (रिकॉल)।

प्रत्यास्वर–पु० (सं०) डूबनेके बाद फिरसे उदित हुआ सूर्य। वि० पुनः चमकनेवाला।

प्रत्याहत–वि० (सं०) हटाया हुआ, निवारित; अस्वीकार किया हुआ।

प्रत्याहरण–पु० (सं०) पीछे खींचना, हटाना; निग्रह करना; इंद्रियोंको विषयोंसे निवृत्त करनेकी क्रिया।

प्रत्याहार–पु० (सं०) पीछे खींचना, हटाना; इंद्रियोंको विषयोंसे हटाना; अष्टांग योगके अंतर्गत एक बहिरंग साधन जिसमें इंद्रियोंको उनके विषयोंसे हटाकर चित्तके समान निरुद्ध करते हैं; (विथड्राल) आदेश, प्रस्ताव, वचन, शब्दादिका वापस ले लिया जाना। प्रलय; वर्णोंको संक्षेपतः ग्रहण करनेकी एक क्रिया (व्या०)।

प्रत्याहूत–वि० (सं०) वापस बुलाया हुआ।

प्रत्याहृत–वि० (सं०) पीछे खींचा हुआ, हटाया हुआ; जिसका निग्रह किया गया हो।

प्रत्याह्वयन–पु० (रिकॉल) किसी स्थान या पदसे किसी अधिकारी या विदेश गये हुए प्रतिनिधिको वापस बुला लेना।

प्रत्युक्त–वि० (सं०) जिसका उत्तर दिया गया हो; जिसका उत्तर द्वारा खंडन किया गया हो।

प्रत्युक्ति–स्त्री० (सं०) उत्तर, जवाब।

प्रत्युच्चार, प्रत्युच्चारण–पु० (सं०) पुनरुक्ति।

प्रत्युज्जीवन–पु० (सं०) फिरसे जी उठना, पुनर्जीवन।

प्रत्युत–अ० (सं०) इसके विपरीत, बल्कि, वरन्।

प्रत्युत्क्रम–पु० (सं०) आक्रमण करनेके लिए कूच करना; युद्धकी तैयारी; मुख्य कार्यकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला गौण कार्य; पहला कदम (किसी कार्यमें)।

प्रत्युत्तर–पु० (सं०) उत्तर पानेपर दिया गया उत्तर, उत्तरका उत्तर (रेजॉइंडर)।

प्रत्युत्थान–पु० (सं०) किसी बड़ेके आनेपर उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए अपने आसनसे उठ जाना, अभ्युत्थान; विरोधीका सामना करनेके लिए उठ खड़ा होना; युद्ध या किसी कार्यके लिए तैयारी करना।

प्रत्युत्थित–वि० (सं०) जो किसी बड़ेके आनेपर उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए या किसी शत्रुका मुकाबला करनेके लिए उठ खड़ा हुआ हो।

प्रत्युत्पन्न–वि० (सं०) जो फिरसे उत्पन्न हुआ हो; जो तत्काल उत्पन्न हुआ; उपस्थित। पु० गुणन। **–मति**–वि० जिसे उचित उत्तर या उपाय तत्काल सूझ जाय, प्रतिभाशाली; साहसी।

प्रत्युदाहरण–पु० (सं०) प्रतिकूल उदाहरण, किसी उदाहरणके विरोधमें दिया गया उदाहरण।

प्रत्युद्गत–वि० (सं०) किसी व्यक्तिके प्रति आदर प्रकट करनेके लिए अपने आसनसे उठा हुआ; किसीके विरुद्ध गया हुआ।

प्रत्युद्गति–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रत्युद्गमन'।

प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमन–पु० (सं०) किसी बड़े या अतिथिके आनेपर उसके प्रति सम्मान प्रकट करनेके लिए अपना आसन छोड़कर खड़ा हो जाना या उसके पासतक जाना, स्वागत करना।

प्रत्युद्गमनीय–वि० (सं०) स्वागत करनेके योग्य, पूज्य। पु० वे वस्त्र (धोती-चादर) जो यज्ञ और भोजनके अवसरपर काममें लाये जायँ।

प्रत्युद्गार–पु० (सं०) एक प्रकारका नाडी-रोग।

प्रत्युद्धरण–पु० (सं०) पुनः प्राप्त करना।

प्रत्युद्यम–पु० (सं०) प्रतिकार, प्रतिक्रिया।

प्रत्युपकार–पु० (सं०) किसी उपकारके बदलेमें किया हुआ उपकार, भलाईके बदलेमें की हुई भलाई।

प्रत्युपकारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) प्रत्युपकार करनेवाला।

प्रत्युपदेश–पु० (सं०) उपदेशके बदलेमें दिया हुआ उपदेश; रायके बदलेमें दी हुई राय।

प्रत्युपपन्न–वि० (सं०) दे० 'प्रत्युत्पन्न'।

प्रत्युपमान–पु० (सं०) उपमानका उपमान।

प्रत्युपलब्ध–वि० (सं०) जो पुनः प्राप्त हुआ हो।

प्रत्युपस्थान–पु० (सं०) पड़ोस।

प्रत्युप्त–वि० (सं०) जड़ा हुआ, जमाया, बैठाया हुआ; बोया हुआ।

प्रत्युलूक–पु० (सं०) उल्लू जैसा एक पक्षी; उल्लूका शत्रु दूसरा उल्लू या कौआ।

प्रत्युलूकक–पु० (सं०) उल्लू जैसा पक्षी।

प्रत्युष–पु० (सं०) प्रातःकाल।

प्रत्युष(स्)–पु० (सं०) प्रातःकाल।

प्रत्यूष–पु० (सं०) प्रातःकाल; आठ वसुओंमेंसे एक; सूर्य।

प्रत्यूष(स्)–पु० (सं०) प्रातःकाल।

प्रत्यूह–पु० (सं०) विघ्न, बाधा।

प्रत्येक–वि० (सं०) दो या दोसे अधिकमेंसे एक-एक, अलग-अलग,

हर एक । **–बुद्ध**–पु० वह बुद्ध जो और बुद्धोंकी तरह लोककल्याणमें प्रवृत्त न होकर एकांतमें साधना द्वारा अपना ही कल्याण करे ।

प्रथन–पु० (सं०) फैलना; प्रसिद्ध होना या करना; कोई चीज फैलानेका स्थान; फेंकना; प्रदर्शन करना ।

प्रथम–वि० (सं०) गणना या क्रममें जिसका स्थान पहला हो, अव्वल; जो सबसे बढ़कर हो, श्रेष्ठ; प्रधान, मुख्य; पहलेका । अ० पहले, आगे । **–कल्प**–पु० करने योग्य सबसे अच्छा उपाय; मुख्य नियम । **–कल्पिक**–पु० वह जिसने अभी योगाभ्यास आरंभ किया हो, नौसिखिया योगी । **–कल्पित**–वि० पहले सोचा हुआ; शीर्षस्थानीय । **–कारक**–पु० कर्ता कारक (व्या०) । **–कुसुम**–पु० सफेद, अगस्तका फूल । **–ज**–वि० जो सबमें पहले उत्पन्न हुआ हो । **–दर्शन**–पु० पहले पहल देखना । **–दृष्टितः**–अ० (प्राइमाफेसी) प्रथम बार देखनेपर । **–दृष्टिसिद्ध**–वि० (प्राइमाफेसी) पहली बार देखनेसे उत्पन्न या सिद्ध जान पड़नेवाला । **–धार**–स्त्री० पहली बूंद । **–निर्दिष्ट**–वि० जिसका पहले उल्लेख हुआ हो । **–पुरुष**–पु० वह व्यक्ति जिसके विषयमें कुछ कहा जाय, अन्य पुरुष; (व्या०) अंग्रेजी व्याकरणके अनुसार "मैं" या "हम" (उत्तम पुरुष) । **–प्रसूता**–स्त्री० पहली बार बच्चा देनेवाली (गाय) । **–मंगल**–वि० बहुशुभ । **–यौवन**–पु० चढ़ती जवानी । **–रात्र**–पु० रातका पहला भाग । **–वय(स्)**–पु० बचपन । **–वयसी(सिन्)**–वि० नयी उम्रका । **–विरह**–पु० पहले-पहल होनेवाला वियोग । **–साहस**–पु० सबसे हलकी सजा, प्राचीन कालका एक प्रकारका अर्थदंड जिसमें २५० पणतक जुरमाना किया जाता था । **–सुकृत**–पु० पहला उपकार या सेवा ।

प्रथमक–वि० (सं०) पहला ।

प्रथमतः(तस्)–अ० (सं०) पहले, सबसे पहले ।

प्रथमा–स्त्री० (सं०) कर्ता कारक (सं० व्या०); मदिरा ।

प्रथमाक्रमण–पु० (ऐग्रेशन) आक्रमणका आरंभ या पहला कार्य, लड़ाईकी पहल । **–कर्ता,–कारी**–पु० (ऐग्रेसर) आक्रमणमें पहल लेनेवाला, आक्रमणात्मक कार्य आरंभ करनेवाला ।

प्रथमाक्रामक–पु० (सं०) (ऐग्रेसर) दे० 'प्रथमाक्रमणकारी' ।

प्रथमार्द्ध, प्रथमार्ध–पु० (सं०) दो समान भागोंमेंसे पहला, पूर्वार्द्ध ।

प्रथमाश्रम–पु० (सं०) ब्रह्मचर्याश्रम ।

प्रथमी*–स्त्री० पृथ्वी ।

प्रथमेतर–वि० (सं०) पहलेके बादका, दूसरा ।

प्रथमोदित–वि० (सं०) पहले कहा हुआ ।

प्रथमोपचार–पु० (फर्स्ट एड) किसी घायल या आहत व्यक्तिका उपयुक्त चिकित्सककी सहायता प्राप्त होनेके पूर्व किया गया उपचार, प्राथमिक उपचार । **–केंद्र**–पु० (फर्स्ट एड पोस्ट) वह स्थान जहाँ प्राथमिक उपचार किया जाय ।

प्रथा–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि; ख्याति; रीति, परिपाटी (हिं०) ।

प्रथित–वि० (सं०) प्रसिद्ध, विख्यात; बढ़ा हुआ, फैला हुआ; दिखलाया, प्रदर्शित किया हुआ । पु० विष्णु ।

प्रथिति–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, ख्याति ।

प्रथिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) स्थूलता, पृथुत्व ।

प्रथिवी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

प्रथु–पु० (सं०) विष्णु । वि० विस्तृत, फैला हुआ ।

प्रथुक–पु० (सं०) चिउड़ा; शावक ।

प्रद–वि० (सं०) देनेवाला (यौगिक शब्दोंमें, जैसे–हर्षप्रद, कामप्रद) ।

प्रदक्षिण–पु० (सं०) श्रद्धा-भक्तिके भावसे देवता आदिके चारों ओर इस प्रकार घूमना कि दाहिना अंग बराबर उसीकी ओर पड़े, परिक्रमा, फेरी । वि० विनम्र; शुभ; दाहिनी ओर स्थित; दक्ष, चतुर । **–क्रिया**–स्त्री० परिक्रमा । **–पट्टिका**–स्त्री० आँगन ।

प्रदक्षिणा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रदक्षिण' ।

प्रदक्षिणार्चि(स्)–वि० (सं०) (वह अग्नि) जिसकी लपटोंका रुख दाहिनी ओर हो ।

प्रदग्ध–वि० (सं०) बहुत जला हुआ ।

प्रदच्छिन*–पु० दे० 'प्रदक्षिण' ।

प्रदत्त–वि० (सं०) दिया हुआ । **–अंश-पूंजी**–स्त्री० (पेड अप शेयर कैपिटल) किसी सीमित प्रमंडल या संस्थाके हिस्से खरीदनेमें लगायी गयी पूंजीका वह भाग जो चुका दिया गया हो ।

प्रदर–पु० (सं०) विदीर्ण होने या फटनेका भाव; दरार; छिद्र; बाण; सेनाका तितर-बितर होना; स्त्रियोंका एक रोग जिसमें उनके गर्भाशयसे सफेद या लाल रंगका लसदार पदार्थ बहता है ।

प्रदर्प–पु० (सं०) भारी घमंड ।

प्रदर्श–पु० (सं०) रूप, शक्ल-सूरत; आदेश, आज्ञा ।

प्रदर्शक–पु० (सं०) दिखानेवाला; देखनेवाला; गुरु, पैगंबर; सिद्धांत, मत । वि० दिखलानेवाला; सिखलानेवाला; भविष्यवक्ता ।

प्रदर्शन–पु० (सं०) दिखलानेकी क्रिया, दिखाना; (डिमांस्ट्रेशन) जुलूस निकालकर या नारे आदि लगाकर किसी प्रश्नके संबंधमें सामूहिक रूपसे असंतोष प्रकट करना; किसी शिकायत, अन्याय आदिकी ओर अधिकारियोंका ध्यान दिलाने एवं जनताकी सहानुभूति प्राप्त करनेके लिए जुलूस आदि निकालना; कोई खेल, प्रयोग आदि करके दिखलाना; सिखलाना; उदाहरण; भविष्यकथन; रूप; नजारा ।

प्रदर्शनात्मक कार्य–अपने हृदयकी सच्ची भावनाओंको दबाकर समाजसे स्वीकृति पानेके लिए किये गये दिखावामूलक कार्य ।

प्रदर्शनी–स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ तरह-तरहकी वस्तुएँ प्रदर्शित की जायँ, नुमाइश ।

प्रदर्शित–वि० (सं०) जो दिखाया गया हो; प्रदर्शनीमें रखा हुआ; जनाया हुआ; सिखलाया हुआ ।

प्रदर्शी(र्शिन्)–पु० (सं०) देखनेवाला, दर्शक; दिखलानेवाला ।

प्रदल–पु० (सं०) बाण, तीर ।

प्रदव–पु० (सं०) बहुत अधिक ताप; प्रज्वलन ।

प्रदव्य–पु० (सं०) वनाग्नि ।

प्रदाता(तृ)–पु० (सं०) देनेवाला, दाता; कन्यादान करनेवाला; इंद्र ।

प्रदान–पु० (सं०) देना, दान; कन्यादान; अंकुश; नैवेद्य । **–शूर**–पु० बहुत बड़ा दानी, दानवीर ।

प्रदानक–पु० (सं०) दान; भेंट, उपहार; दाता ।

प्रदाय–पु० (सं०) उपहार, भेंट ।

प्रदायक, प्रदायी(यिन्)–वि०, पु० (सं०) देनेवाला, प्रदान करनेवाला ।

प्रदाह–पु० (सं०) दाह, जलना; भस्मसात् होना, ध्वंस ।

प्रदिक्(श्), प्रदिशा–स्त्री० (सं०) दो मुख्य दिशाओंके बीचकी दिशा, विदिशा, कोण ।

प्रदिग्ध–वि० (सं०) लिप्त । पु० घीमें अच्छी तरह भूना हुआ मांस जिसमें ऊपरसे जीरा, तक्र आदि मिलाया गया हो ।

प्रदिष्ट–वि० (सं०) दिखाया हुआ, बताया हुआ; नियत किया हुआ, ठहराया हुआ; आदिष्ट ।

प्रदीप–पु० (सं०) दीपक, चिराग; लालटेन; वह जो प्रकाश करे अथवा किसी विषयको स्पष्ट करे (इस अर्थमें इस शब्दका प्रयोग ग्रंथोंके नाममें होता है। जैसे–काव्यप्रदीप); संपूर्ण जातिका एक राग । (विशेष–कुलके साथ जुड़नेपर 'प्रदीप'का अर्थ होता है रौशन करनेवाला, नाम उजागर करनेवाला ।)

प्रदीपक–वि० (सं०) प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला । पु० छोटा दीपक; प्रकाश करनेवाला; स्पष्ट करनेवाला ।

प्रदीपति*–स्त्री० दे० 'प्रदीप्ति' ।

प्रदीपन–पु० (सं०) प्रकाश करना; जलाना; उत्तेजित करना, जगाना; लाल रंगका और आगके समान चमकवाला एक प्रकारका स्थावर विष जो बहुत अधिक दाह उत्पन्न करता है । वि० प्रकाश करनेवाला; उत्तेजित करनेवाला, जगानेवाला ।

प्रदीपिका–स्त्री० (सं०) छोटा दीपक; अर्थ या विषय स्पष्ट करनेवाली छोटी पुस्तक ।

प्रदीप्त–वि० (सं०) जलाया हुआ (आग आदिके लिए); प्रकाशित; जलता हुआ, जगमगाता हुआ; उत्तेजित, जगाया हुआ (भूख आदिके लिए); दीप्तियुक्त; चमकीला । **–प्रज्ञ**–वि० तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

प्रदीप्ति–स्त्री० प्रकाश; प्रभा; चमक।

प्रदुमन*–पु० दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदुष्ट–वि० (सं०) विगड़ा हुआ; दोषयुक्त; दुष्ट, बुरे स्वभावका; लंपट।

प्रदूषक–वि०, पु० (सं०) दोषयुक्त वनानेवाला, दूषित करनेवाला।

प्रदूषण–पु० (सं०) दोषयुक्त वनाना; चौपट करना, रद कर देना।

प्रदूषित–वि० (सं०) विशेष रूपसे दूषित।

प्रदृप्ति–स्त्री० (सं०) घमंड।

प्रदेय–वि० (सं०) देने योग्य, दान करने योग्य। पु० उपहार, भेंट।

प्रदेश–पु० (सं०) किसी देशका वह बड़ा भाग जो भाषा, रीति, आवहवा आदिकी दृष्टिसे उसी देशके अन्य भागोंसे भिन्न हो, प्रांत; स्थान, जगह; अँगूठेके सिरेसे लेकर तर्जनीके सिरेतककी दूरी; दीवार; निश्चय, संकल्प; दिखलाना, निर्देश करना। –**कारी(रिन्)**–पु० सन्न्यासियोंका एक भेद।

प्रदेशन–पु० (सं०) परामर्श, उपदेश देना; दिखलाना; नजर, भेंट।

प्रदेशनी, प्रदेशिनी–स्त्री० (सं०) अँगूठेके वादकी उँगली, तर्जनी।

प्रदेशित–वि० (सं०) दिखलाया, वतलाया हुआ।

प्रदेशीय–वि० (सं०) प्रदेश-संवंधी; प्रदेशका।

प्रदेष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) प्रधान विचार-पति।

प्रदेह–पु० (सं०) प्रलेप, लेप करना, फोड़े आदिपर दवा चढ़ाना।

प्रदोष–पु० (सं०) भारी दोष; अव्यवस्था; सायंकाल; रातका पहला पहर; त्रयोदशी व्रत जिसमें दिनभर उपवास करते हैं और सायंकाल शिवकी पूजा करके भोजन करते हैं। वि० वुरा, दुष्ट।

प्रदोषक–वि० (सं०) जो प्रदोषकालमें उत्पन्न हुआ हो।

प्रदोह–पु० (सं०) दूध दुहना, दोहन।

प्रद्युतित–वि० (सं०) आलोकित, प्रकाशित।

प्रद्युम्न–पु० (सं०) कामदेव, कृष्णके वड़े पुत्र; मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक; विष्णुके वसुदेव आदि चार अंशोंमेंसे एक, चतुर्व्यूहात्मक विष्णुका एक अंश। वि० वहुत वली।

प्रद्योत–पु० (सं०) प्रकाशित करना; किरण; दीप्ति, प्रभा; एक यक्ष।

प्रद्योतन–पु० (सं०) चमकना; दीप्ति, प्रभा; सूर्य। वि० चमकनेवाला।

प्रद्रव–पु० (सं०) पलायन, भागना। वि० तरल।

प्रद्राव–पु० (सं०) पलायन, भागना; तेजीसे जाना।

प्रद्रावण–पु० (स्मेल्टिंग) कच्ची धातुको ऊँचे तापमें गलाकर सोना, चाँदी, लोहा आदि निकालनेकी क्रिया।

प्रद्रावी(विन्)–वि० (सं०) पलायनकारी, भागनेवाला।

प्रद्वार–पु० (सं०) द्वारके सामनेका स्थान।

प्रद्वेष, प्रद्वेषण–पु० (सं०) अधिक द्वेष, तीव्र द्वेष; घृणा।

प्रधन–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई; लूटका माल; विनाश; विदारण; किसीकी सवसे वहुमूल्य वस्तु। वि० वहुत धनी।

प्रधमन–पु० (सं०) एक तरहकी सुंघनी; नाकसे ऊपर खींचना (सुंघनी आदि)।

प्रधर्ष–पु० (सं०) अपमान, पराभव; किसी स्त्रीका सतीत्व नष्ट करना; वलात्कार; आक्रमण।

प्रधर्षक–वि०, पु० (सं०) आक्रमण करनेवाला; तंग करनेवाला।

प्रधर्षण–पु०, **प्रधर्षणा**–स्त्री० (सं०) आक्रमण; अपमान; दुर्व्यवहार; सतीत्व-हरण।

प्रधर्षित–वि० (सं०) आक्रांत; क्षति-ग्रस्त; घमंडी।

प्रधा–स्त्री० (सं०) दक्षकी एक कन्या और कश्यपकी एक पत्नी।

प्रधान–वि० (सं०) सवसे वड़ा, मुख्य। पु० प्रकृति (सां०); वुद्धितत्त्व (सां०); परमात्मा; सचिव, मंत्री; किसी दल, समाज आदिका प्रमुख व्यक्ति, मुखिया; सेनापति, महावत। –**कार्यालय**–पु० किसी व्यापारिक या अन्य संस्थाका केंद्रीय या मुख्य कार्यालय जहाँसे शाखा-कार्यालयोंका नियंत्रण किया जाता है। –**धातु**–स्त्री० शरीरकी मुख्य धातु, शुक्र, वीर्य। –**पुरुष**–पु० राज्यका सर्वप्रमुख व्यक्ति; शिव। –**भाक्(ज्)**–वि० वहुत प्रसिद्ध। –**मंत्री(त्रिन्)**–पु० किसी देश या राज्यका सवसे वड़ा मंत्री। –**सभिक**–पु० द्यूतगृहका प्रधान। –**सैन्यावास-व्यवस्थापक**–पु० (क्वारटर मास्टर-जनरल) सेनाके किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जो सैनिकोंके आवास, साजसज्जा, रसद आदिका प्रवंध करता है, प्रधान रसद-व्यवस्थापक।

प्रधानक–पु० (सं०) वुद्धितत्त्व (सां०)। वि० मुख्य।

प्रधानतः(तस्)–अ० (सं०) मुख्यतः, प्रधान रूपमें।

प्रधानता–स्त्री० (सं०) प्रधान होनेका भाव, मुख्यता।

प्रधानांग–पु० (सं०) किसी चीज या शरीरका मुख्य अंग; राज्यका सर्वप्रसिद्ध व्यक्ति।

प्रधानात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु।

प्रधानाध्यापक–पु० (सं०) किसी विद्यालयका मुख्य अध्यापक।

प्रधानामात्य–पु० (सं०) प्रधान मंत्री।

प्रधानी*–स्त्री० प्रधानका पद या कार्य।

प्रधानोत्तम–वि० (सं०) वहुत प्रसिद्ध; वीर।

प्रधारण–पु० (सं०) वचाना, रक्षण।

प्रधारणा–स्त्री० (सं०) किसी विषयपर वरावर ध्यान जमाये रखना।

प्रधावन–पु० (सं०) वायु; मार्जन, प्रक्षालन।

प्रधि–पु० (सं०) रथ आदिके पहियेका घेरा, नेमि; कुआँ।

प्रधी–स्त्री० (सं०) वड़ी समझ। वि० वहुत चतुर, वुद्धिमान्।

प्रधूपित–वि० (सं०) संतापित, तप्त; पीड़ित; धूपित, सुवासित।

प्रधूपिता–स्त्री० (सं०) वह दिशा जिस ओर सूरज वढ़ता है; कष्टग्रस्त स्त्री।

प्रधूमन–पु० (फ्यूमिगेशन) रोगके कीटाणुओंसे मुक्त करने या हवाकी गंदगी दूर करनेके लिए कमरे आदिमें सुगंधित धूम, संक्रमण-नाशक गैस आदि प्रसारित करना; धूम्रीकरण।

प्रधूमित–वि० (सं०) जो धुँआँ दे रहा हो, भीतर ही भीतर सुलग रहा हो।

प्रधृष्ट–वि० (सं०) जिसके प्रति दुर्व्यवहार या औद्धत्य किया गया हो, अपमानित; घमंडी, शोख।

प्रध्मापन–पु० (सं०) स्वरनलिकाकी रुकावट दूर करने, श्वास-क्रिया ठीक करनेका उपचार।

प्रध्मापित–वि० (सं०) फूंका हुआ (शंख)।

प्रध्यान–पु० (सं०) प्रगाढ चिंतन।

प्रध्वंस–पु० (सं०) विनाश; किसी पदार्थकी अतीतावस्था (सां०)।

प्रध्वंसक–वि०, पु० (सं०) विनाश करनेवाला।

प्रध्वंसाभाव–पु० (सं०) कारणमें कार्यका वह अभाव जो उसकी उत्पत्तिके पीछे होता है।

प्रध्वंसित–वि० (सं०) विनष्ट किया हुआ।

प्रध्वंसी(सिन्)–वि० (सं०) नाशशील, नष्ट होनेवाला; नाश करनेवाला।

प्रध्वस्त–वि० (सं०) जिसका प्रध्वंस हुआ हो, विनष्ट।

प्रन–पु० दे० 'प्रण'।

प्रनत*–वि० दे० 'प्रणत'।

प्रनति*–स्त्री० दे० 'प्रणति'।

प्रनप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) परनाती, नातीका लड़का।

प्रनमन*–पु० दे० 'प्रणमन'।

प्रनमना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रनय*–पु० दे० 'प्रणय'।

प्रनर्तित–वि० (सं०) गतिमान् किया हुआ; कंपित, क्षुब्ध किया हुआ।

प्रनव*–पु० दे० 'प्रणव'।

प्रनवना*–स० क्रि० प्रणाम करना।

प्रनष्ट–वि० (सं०) लुप्त; वुरी तरह नष्ट; भगा हुआ, पलायित।

प्रनाम*–पु० दे० 'प्रणाम'।

प्रनामी*–स्त्री० गुरु, ब्राह्मण आदिको प्रणाम करते समय दी जानेवाली दक्षिणा या भेंट। पु० प्रणाम करनेवाला।

प्रनायक–पु० (सं०) प्रकृष्ट नायक। वि० जिसका नायक साथ न हो, नायकहीन।

प्रनाल–पु० (सं०) दे० 'प्रणाल'।

प्रनाली–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रणाली'।

प्रनाशन–पु० दे० 'प्रणाशन', नष्ट करनेवाला ।

प्रनासन*–वि०, पु० दे० 'प्रणाशन' ।

प्रनिघातन–पु० (सं०) वध, मारण ।

प्रनिपात*–पु० दे० 'प्रणिपात' ।

प्रनृत्त–पु० (सं०) नाच, नृत्त । वि० नाचनेवाला ।

प्रपंच–पु० (सं०) विस्तार, फैलाव; संसार, भवचक्र; जगत्का जंजाल, भवजाल (हिं०); छल, धोखा; भिन्नता; राशि; प्रतिकूलता; विश्लेषण; झमेला, बखेड़ा (हिं०) । **–बुद्धि**–वि० चालबाज, धोखेबाज । **–वचन**–पु० विस्तृत कथन ।

प्रपंचक–वि० (सं०) विस्तार करनेवाला; व्याख्या करनेवाला ।

प्रपंचन–पु० (सं०) विस्तार करना; व्याख्या करना ।

प्रपंचित–वि० (सं०) जिसका विस्तार किया गया हो, विस्तारित; जो ठगा गया हो, प्रतारित, जिससे भूल हुई हो ।

प्रपंची(चिन्)–वि० (सं०) प्रपंच रचनेवाला; छलिया, धोखेबाज; बखेड़ा खड़ा करनेवाला ।

प्रपंजी–स्त्री० (लेजर) किसी बैंक, व्यापारिक संस्था आदिकी वह मुख्य पंजी (रजिस्टर) जिसमें व्यापारिक लेनदेन, आय-व्यय आदिका ब्यौरा लिखा रहता है, खाता वही । **–पृष्ठ**–पु० (लेजर-फोलिओ) प्रपंजीका वह पृष्ठ (वस्तुतः आमने-सामनेके पृष्ठद्वय) जिसपर किसीके रुपया या माल इत्यादि जमा करने या निकालनेका ब्यौरा दिया रहता है ।

प्रपक्ष–पु० (सं०) (पक्षीके रूपमें व्यूढ सेनाके) पक्षका अग्रभाग ।

प्रपतन–पु० (सं०) वह पदार्थ जिसपरसे किसी वस्तुका पतन हो (वृक्ष आदि); उड़ जाना; नीचे गिरना; मृत्यु ।

प्रपतित–वि० (सं०) जो उड़ गया हो; नीचे गिरा हुआ; जिसका क्षय हो गया हो; मृत ।

प्रपत्ति–स्त्री० (सं०) अनन्य भक्ति ।

प्रपत्र–पु० (फार्म) किसी परीक्षा या स्थान आदिके लिए आवेदनपत्र देने, कोई विवरण प्रस्तुत करने या शपथ ग्रहण करने आदि संबंधी पत्रोंका वह बँधा हुआ रूप जिसमें आवश्यक जानकारी देनेके लिए रिक्त स्थान, कोष्ठक आदिकी व्यवस्था रहती है ।

प्रपथ–पु० (सं०) चौड़ी सड़क । वि० विश्रांत, थका हुआ ।

प्रपथ्य–वि० (सं०) अति हितकर ।

प्रपथ्या–स्त्री० (सं०) हरीतकी, हड़ ।

प्रपद–पु० (सं०) पैरका अगला भाग, पैरका पंजा ।

प्रपदन–पु० (सं०) प्रवेश, पहुँच ।

प्रपदीन–वि० (सं०) प्रपद-संबंधी; प्रपदका ।

प्रपन्न–वि० (सं०) शरणमें आया हुआ, शरणागत; प्राप्त; युक्त; दीन; कष्टग्रस्त । पु० (वार्ड) वह व्यक्ति जो नाबालिग होनेके कारण अपने अभिभावकके अधीन हो, अभिरक्ष्य । **–पारिजात**–पु० शरणागतके मनोरथ पूर्ण करनेवाले, कृष्ण । **–पाल**–पु० कृष्ण ।

प्रपन्नाड–पु० (सं०) चकवँड़ ।

प्रपर्ण–वि० (सं०) जिसके पत्ते झड़ गये हों । पु० गिरा हुआ पत्ता ।

प्रपलायन–पु० (सं०) भाग खड़ा होना, पलायन ।

प्रपलायी(यिन्)–वि० (सं०) भगोड़ा ।

प्रपलाश–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रपर्ण' ।

प्रपा–स्त्री० (सं०) पौसरा; कूप; हौज; पशुओंको पानी पिलाने आदिका स्थान । **–पालिका**–स्त्री० पौसरा चलानेवाली स्त्री । **–वन**–पु० शीतल कुंज ।

प्रपाक–पु० (सं०) घावका पकना; प्रदाह ।

प्रपाठ, प्रपाठक–पु० (सं०) सबक, पाठ; पुस्तकका अध्याय ।

प्रपाणि–पु० (सं०) हथेली; हाथका अग्रभाग ।

प्रपात–पु० (सं०) पहाड़ या चट्टानका ऐसा किनारा जिसके आगे या नीचे कोई रोक न हो, पहाड़ या चट्टानका ऊँचा खड़ा किनारा, अतट; झरना, निर्झर; किनारा, तट; ऊँचाईसे गिरना, धड़ामसे नीचे गिरना; जलकी वह धारा जो बहुत ऊँचाईसे नीचे गिरती हो, 'घुआँधार'; उड़ानका एक ढंग; आक्रमण ।

प्रपातन–पु० (सं०) गिराना, नीचे फेंकना ।

प्रपातांबु–पु० (सं०) झरनेका पानी ।

प्रपाती(तिन्)–पु० (सं०) वह चट्टान या पहाड़ जिसका किनारा खड़ा हो ।

प्रपाथ–पु० (सं०) सड़क; मार्ग ।

प्रपादिक–पु० (सं०) मोर ।

प्रपान–पु० (सं०) पीना; पेय; पौसरा ।

प्रपानक–पु० (सं०) (भूने हुए) आम आदिके गूदेमें जीरा आदि डालकर बनाया हुआ नमकीन या मीठा पेय, पन्ना ।

प्रपाली(लिन्)–पु० (सं०) बलराम ।

प्रपितामह–पु० (सं०) परदादा; परब्रह्म; कृष्ण ।

प्रपितामही–स्त्री० (सं०) परदादी ।

प्रपितृव्य–पु० (सं०) दादाका चाचा, चचेरा परदादा ।

प्रपीडक–पु० (सं०) दबानेवाला; सतानेवाला ।

प्रपीडन–पु० (सं०) निचोड़ना; पेरना; वह जो दबाये ।

प्रपीत, प्रपीन–वि० (सं०) सूजा हुआ; फैला हुआ ।

प्रपीति–स्त्री० (सं०) पीनेकी क्रिया ।

प्रपुंज–पु० (सं०) बड़ा झुंड ।

प्रपुत्र–पु० (सं०) पौत्र, पोता ।

प्रपुन्नाट, प्रपुन्नाड, प्रपुन्नाल–पु० (सं०) चकवँड़ ।

प्रपूरक–वि० (सं०) पूरा करनेवाला; भरनेवाला; तृप्त करनेवाला ।

प्रपूरण–पु० (सं०) भरना; पूरा करना; तृप्त करना; मिलाना ।

प्रपूरिका–स्त्री० (सं०) कटेरी, भटकटैया ।

प्रपूरित–वि० (सं०) विशेष रूपसे पूरा किया हुआ; अच्छी तरह भरा हुआ ।

प्रपूर्वग–पु० (सं०) परब्रह्म; अश्विनीकुमार ।

प्रपौंडरीक–पु० (सं०) पुंडरी नामका पौधा, पुंडरिया ।

प्रपौत्र–पु० (सं०) पोतेका बेटा ।

प्रपौत्री–स्त्री० (सं०) पोतेकी बेटी ।

प्रप्यायन–पु० (सं०) सूजन ।

प्रफुलना*–अ० क्रि० खिलना, फूलना ।

प्रफुला*–स्त्री० कुमुदिनी, कुईं, कमलिनी ।

प्रफुलित*–वि० खिला हुआ; अति प्रसन्न, प्रमुदित ।

प्रफुल्त–वि० (सं०) दे० 'प्रफुल्ल' ।

प्रफुल्ल–वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित; जिसमें फूल लगे हों; फूला हुआ; प्रसन्न । **–नयन,–नेत्र**–वि० जिसकी आँखें प्रसन्नतासे फैली हुई हों । **–वदन**–वि० जिसका मुख प्रसन्न दिखता हो ।

प्रफुल्लचंद्र राय–पु० रसायनशास्त्रके ख्यातनामा विद्वान् (१८६१–१९४४); बंगालकी आर्थिक उन्नतिके लिए आप सतत प्रयत्नशील रहे । ओषधिनिर्माण करनेवाले कारखाने 'बंगाल केमिकल एंड फारमेसिटिकल वर्क्स'की स्थापना आपने ही की थी ।

प्रबंध–पु० (सं०) प्रकृष्ट बंधन; (अविच्छिन्न) क्रम; ग्रंथ, कथा आदिकी रचना; निबंध; किसी विषय सम्बन्धी वह उच्च श्रेणीकी रचना जो विशेष अनुसंधान तथा अध्ययनके आधारपर विभिन्न तथ्यों एवं मतोंकी समीक्षा करते हुए प्रस्तुत की गयी हो, थीसिस या शोध-प्रबंध; आयोजन; व्यवस्था । **–अभिकर्ता**–पु० (मैनेजिंग एजेंट्स) वह कंपनी या व्यावसायिक संस्था जो निर्धारित वेतन या पारिश्रमिक लेकर किसी अन्य संस्था, कारखाने आदिके प्रबंधका काम, उसके संचालकोंके विधिविहित निश्चयके अनुसार, ग्रहण करे । **कर्ता(र्तृ)**–वि०, पु० प्रबंध करनेवाला । **–कल्पना**–स्त्री० वह रचना जिसमें थोड़ेसे सत्य वृत्तांतमें बहुत कुछ काल्पनिक बातें मिलायी गयी हों, कथा (जैसे–कादंबरी) ।**–कारिणी**–वि० स्त्री० किसी सभा, संघ इत्यादिके निश्चयोंको कार्यरूप देनेवाली या उसकी ओरसे प्रबंधकार्य करनेवाली (समिति) ।**–काव्य**–पु० (मुक्तक-का उलटा) वह काव्य जिसमें किसीके जीवनकी विशेष घटनाओंका क्रम-बद्ध चित्रण किया गया हो । **–संचालक**–पु० किसी संस्थाके प्रबंधादिकी देख-रेख करनेवाला संचालक । **–संपादक**–पु० (मैनेजिंग एडिटर) संपादकीय विभागकी व्यवस्था आदिकी देखभाल करनेवाला संपादक । **–समिति**–स्त्री० (मैनेजिंग कमिटी) किसी सभा या संस्थाका प्रबंध करनेवाली समिति ।

प्रबंधक–वि० पु० (सं०) दे० 'प्रबंधकर्ता' ।

प्रबभ्र–पु० (सं०) इंद्र ।

प्रबर्ह–वि० (सं०) प्रधान, श्रेष्ठ ।

प्रबल–वि० (सं०) प्रकृष्ट बलवाला, बहुत बली; प्रचंड, उग्र, जोरका; भारी, महान्; हानिकर । पु० कोंपल, पल्लव ।

प्रबला–स्त्री० (सं०) प्रसारिणी लता । वि० स्त्री० दे० 'प्रबल' ।

प्रबल्हिका–स्त्री० (सं०) पहेली ।

प्रबाधक–वि० (सं०) भगाने, हटानेवाला; निवारण करनेवाला; पीडन करनेवाला; अस्वीकार करनेवाला ।

प्रबाधन–पु० (सं०) निवारण करना; सताना; इनकार करना ।

प्रबाधित–वि० (सं०) पीडित; दबाया हुआ; आगे बढ़ाया हुआ ।

प्रबाल–पु० (सं०) प्रवाल, नया कोमल पत्ता, नव-पल्लव; मूँगा; वीणाकी लकड़ी, वीणादंड; शिष्य; जानवर । **–पद्म**–पु० लाल कमल । **–फल**–पु० लाल चंदन । **–भस्म(न्)**–पु० मूँगेका भस्म । **–वर्ण**–वि० मूँगेके रंगका, लाल ।

प्रबालक–पु० (सं०) एक यक्ष ।

प्रबालिक–पु० (सं०) एक शाक, जीवशाक ।

प्रबास*–पु० दे० 'प्रवास' ।

प्रबाह*–पु० दे० 'प्रवाह' ।

प्रबाहु–पु० (सं०) हाथका अगला भाग ।

प्रबिसना*–अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना ।

प्रबीन*–वि० दे० 'प्रवीण' । स्त्री० अच्छी वीणा ।

प्रबीर*–वि० दे० 'प्रवीर' ।

प्रबुद्ध–वि० (सं०) जागा हुआ, जाग्रत्; प्रबोधयुक्त; पंडित, ज्ञानी; खिला हुआ, विकसित; (जादू आदि) जिसका असर पड़ने लगा हो; सजीव ।

प्रबुध–पु० (सं०) महर्षि ।

प्रबोध–पु० (सं०) जागना, जागरण; सचेत होना (ला०); यथार्थ ज्ञान, तत्त्वज्ञान; सांत्वना, ढाढ़स; सतर्कता; उड़ी हुई गंधको फिर तेज करना; फूलका खिलना, विकास; व्याख्या करना ।

प्रबोधक–वि०, पु० (सं०) जगानेवाला; सचेत करनेवाला (ला०); ज्ञान देनेवाला, ज्ञानदाता; ढाढ़स बँधानेवाला; राजाको प्रातःकाल जगानेवाला, स्तुतिपाठ करनेवाला ।

प्रबोधन–पु० (सं०) जगना; जगाना; सचेत होना; तत्त्व-ज्ञान; यथार्थ ज्ञान; बोध कराना, समझाना; गंधको फिर तेज करना ।

प्रबोधना*–स० क्रि० जगाना; सचेत करना; समझाना-बुझाना; कोई बात सिखाना; ढाढ़स बँधाना, तसल्ली देना ।

प्रबोधनी–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रबोधिनी' ।

प्रबोधित–वि० (सं०) जगाया हुआ; जिसका प्रबोध किया गया हो, समझाया-सिखलाया हुआ ।

प्रबोधिता–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

प्रबोधिनी–स्त्री० (सं०) देवोत्थान एकादशी; दुरालभा, जवासा ।

प्रब्बत*–पु० पर्वत ।

प्रभंग–वि० (सं०) कुचला, रौंदा हुआ; पूर्णतः पराभूत ।

प्रभंजन–पु० (सं०) तोड़-फाड़; वायु, हवा; प्रचंड वायु, जोरकी हवा; एक नाडी-रोग; एक प्रकारकी समाधि । वि० तोड़-फोड़ करनेवाला, नष्ट करनेवाला । **–सुत**–पु० हनूमान् ।

प्रभणना*–स० क्रि० कहना ।

प्रभद्र–पु० (सं०) नीमका पेड़ ।

प्रभद्रक–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त । वि० बहुत सुंदर ।

प्रभद्रा–स्त्री० (सं०) लाजवंती ।

प्रभव–पु० (सं०) उत्पत्ति, जन्म; उत्पत्तिका कारण; उत्पत्तिका स्थान; मूल; जड़; नदी आदिका उद्‌गमस्थान; पराक्रम; साठ संवत्सरोंमेंसे एक; विष्णु ।

प्रभवन–पु० (सं०) उत्पत्ति; उत्पत्तिस्थान ।

प्रभविता(तृ)–पु० (सं०) शासक; प्रभु ।

प्रभविष्णु–वि० (सं०) प्रभाव डालनेवाला; प्रभावशील; शक्तिशाली । पु० प्रभु, अधीश्वर, मालिक; विष्णु ।

प्रभविष्णुता–स्त्री० (सं०) प्रभावोत्पादकता ।

प्रभांजन–पु० (सं०) शोभांजन, सहिजनका पेड़ ।

प्रभा–स्त्री० (सं०) तेज, चमक, दीप्ति; प्रकाश; किरण; सूर्यबिंब; दुर्गा; कुबेरकी पुरी; सूर्यकी एक पत्नी; एक अप्सरा; नहुषकी माता; एक वृत्त । **–कर**–पु० सूर्य; शिव; अग्नि; चंद्रमा; समुद्र; मदारका पौधा; मीमांसाके एक प्रसिद्ध आचार्य जो 'गुरु' नाम से विख्यात हैं; कुश-द्वीपका एक पर्वत । **–करी**–स्त्री० सिद्धिकी दस अवस्थाओंमेंसे एक (बौ०) **–कीट**–पु० जुगनू । **–पल्लवित**–वि० जिसपर दीप्ति फैली हुई हो । **–प्ररोह**–पु० प्रकाशकी किरण । **–मंडल**–पु० देवताओं, महात्माओं आदिके मुखके चारों तरफका वह दीप्तिमंडल जो चित्रों या मूर्तियोंमें दिखलाया जाता है । **–लेपी(पिन्)**–वि० प्रकाशसे ढका हुआ; चमक बिखेरता हुआ ।

प्रभाउ*–पु० दे० 'प्रभाव' ।

प्रभाग–पु० (सं०) भागका भाग, टुकड़ेका टुकड़ा; भिन्नका भिन्न (जैसे–१।३ का १।५); खंड, विभाग (सेक्शन) ।

प्रभात–पु० (सं०) सवेरा, प्रातःकाल; प्रभासे उत्पन्न सूर्यका पुत्र । वि० जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो । **–करणीय**–पु० प्रातःकालका कृत्य । **–कल्प,–प्राय**–वि० प्रभातासन्न । **–काल, –समय**–पु० तड़का, प्रातःकालकी वेला । **–फेरी**–स्त्री० (हिं०) कोई उत्सव मनाने या किसी बातका प्रचार करनेके उद्देश्यसे जुलूस बनाकर विशेष प्रकारके नारे लगाते हुए भोरमें बस्तीमें घूमना ।

प्रभाती–स्त्री० सवेरे गाया जानेवाला एक प्रकारका गीत; दातुन (साधुओंकी बोली) ।

प्रभान–पु० (सं०) दीप्ति, प्रकाश ।

प्रभापन–पु० (सं०) दीप्तिमान् करना ।

प्रभार–पु० (चार्ज) किसी विभागादिके कार्यका भार या जिम्मेदारी ।

प्रभारी–वि० (इनचार्ज) जिसके ऊपर किसी विभागादिके कार्यका भार या उत्तरदायित्व हो । **–राजदूत**–पु० (शार्ज्हे ड फेयर) अस्थायी रूपसे राजदूतका काम सँभालनेवाला व्यक्ति; उप-राजदूत, छोटे देशोंमें नियुक्त राजदूत, कार्यदूत । **–सदस्य**–पु० (मेंबर इनचार्ज) वह सदस्य जिसपर किसी कार्य या पदका भार (उत्तरदायित्व) डाला गया, सौंपा गया हो ।

प्रभाव–पु० (सं०) दीप्ति, कांति; उद्‌भव, उत्पत्ति; सामर्थ्य, शक्ति, विक्रम; सूर्यका एक पुत्र; सुग्रीवका एक मंत्री; राजकीय शक्ति, राजाका कोश और दंडसे उत्पन्न तेज, प्रताप; फल, परिणाम; असर; दबाव; विस्तार । **–कर**–वि० असर डालनेवाला । **–ज**–वि० प्रभावसे उत्पन्न । पु० तीन प्रकारकी राजशक्तियोंमेंसे एक जो कोप और दंडके रूपमें प्रकट होती है । **–शाली(लिन्)**–वि० प्रभाववाला । **–शील**–वि० दे० 'प्रभावी' ।

प्रभावक, प्रभावन–वि० (सं०) प्रमुख, जिसका प्रभाव हो; प्रभाव डालनेवाला ।

प्रभावती–स्त्री० (सं०) कार्त्तिकेयकी एक अनुचरी; एक असुरकन्या जिसका हरण प्रद्युम्नने किया था; अंग देशके राजा चित्ररथकी रानी (म० भा०); सूर्यपत्नीका नाम; शिवके एक गणकी वीणा; एक छंद । वि० स्त्री० प्रभावशाली ।

प्रभावना–स्त्री० (सं०) प्रकट करना; (किसी सिद्धांतका) प्रचार ।

प्रभाववान्(वत्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; प्रतापी ।

प्रभावान्(वत्)–वि० (सं०) दीप्तियुक्त ।

प्रभावान्वित–वि० (सं०) प्रभावसे युक्त; प्रभावित ।

प्रभावान्विति–स्त्री० घटना, चरित्र, भावोंका ऐसा समन्वय जो किसी एकमेव निश्चित प्रभावकी ओर अभिमुख हो ।

प्रभावित–वि० (सं०) जिसपर प्रभाव पड़ा हो ।

प्रभावी(विन्)–वि० (इफेक्टिव) जिसका प्रभाव पड़ा हो या पड़ता हो, असर करनेवाला; शक्तिशाली ।

प्रभाषण–पु० (सं०) शब्दों, वाक्यों आदिकी व्याख्या ।

प्रभासंत–पु० (सं०) परमेश्वर; रुद्र ।

प्रभास–वि० (सं०) प्रचुर प्रभाववाला, अति दीप्तिमान् । पु० दीप्ति, प्रकाश; एक प्राचीन तीर्थ, सोमतीर्थ; एक वसु; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक जैन गणाधिप ।

प्रभासन–पु० (सं०) आलोकित, प्रकाशित करना ।

प्रभासना*–अ० क्रि० भासित होना, प्रतीत होना, दिखाई पड़ना ।

प्रभास्वर-वि० (सं०) दीप्तियुक्त, बहुत चमकीला ।

प्रभिन्न-वि० (सं०) भिन्न, जो अलग हो; बहुत अधिक भेदवाला; विभक्त; जो टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; परिवर्तित; विकृत; ढीला किया हुआ; भिदा हुआ; खिला हुआ; मतवाला (हाथी)। पु० वह हाथी जिसके गंडस्थलसे मद चू रहा हो, मतवाला हाथी । **-करट**-वि० (वह हाथी) जिसके फटे हुए कुंभस्थलसे दान बह रहा हो ।

प्रभिन्नांजन-पु० (सं०) तेलमें तैयार किया हुआ एक तरहका अंजन।

प्रभीत-वि० (सं०) बहुत डरा हुआ ।

प्रभु-पु० (सं०) अधीश्वर, स्वामी; अन्नदाता; शासक; ईश्वर; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; इंद्र; पारा; राजा, स्वामी या श्रेष्ठ पुरुषका संबोधन; बंबई प्रांतके कायस्थोंकी उपाधि । वि० शक्तिशाली; योग्य, दक्ष; प्रचुर; स्थायी; मुकावलेका । **-भक्त**-वि० जो अपने स्वामीका सच्चा सेवक हो, जो अपने स्वामीमें अनुरक्त हो, वफादार । पु० अच्छी जातिका घोड़ा । **-शक्ति**-स्त्री० कोप और सेनाका वल; पूर्ण प्रभुत्व, परम सत्ता । **-सत्ता**-स्त्री० (साव्हरेनटी) देश या राज्यपर ऐसी अखंड सत्ता जिसके ऊपर और किसीकी सत्ता या अधिकार न हो, पूर्ण सत्ता ।

प्रभुता-स्त्री०, **प्रभुत्व**-पु० (सं०) प्रभुका भाव, गौरव, महत्त्व; अधिकार, स्वामित्व; वैभव, ऐश्वर्य ।

प्रभुताई*-स्त्री० दे० 'प्रभुता' ।

प्रभुसत्ताक-वि० (साव्हरेन) प्रभुसत्तासे युक्त; (राज्य) जो पूर्णतः स्वतंत्र हो, जिसपर अन्य किसीका कोई शासन या नियंत्रण न हो ।

प्रभू*-पु० दे० 'प्रभु' ।

प्रभूत-वि० (सं०) जो हुआ हो, भूत; उत्पन्न, उद्‌गत; बहुत अधिक, प्रचुर; उन्नत; पूर्ण; पक्व ।

प्रभूतता-स्त्री०, **प्रभूतत्व**-पु० (सं०) प्रचुरता; राशि ।

प्रभूति-स्त्री० (सं०) उत्पत्ति-स्थान; शक्ति; आधिक्य, प्रचुरता ।

प्रभूष्णु-वि० (सं०) प्रभावशील; समर्थ ।

प्रभृति-अ० (सं०) इत्यादि, वगैरह । स्त्री० आरंभ ।

प्रभेद-पु० (सं०) भेद, प्रकार, किस्म; अंतर; स्फोटन; विभाग; वियोग; दानका स्राव ।

प्रभेदक-वि० (सं०) फाड़ने, चीरनेवाला; अंतर करनेवाला ।

प्रभेदन-वि० (सं०) दे० 'प्रभेदक' ।

प्रभेव*-पु० दे० 'प्रभेद' ।

प्रभ्रंश-पु० (सं०) गिरना; निकलकर गिर जाना ।

प्रभ्रंशथु-पु० (सं०) नाकका एक रोग, पीनस ।

प्रभ्रंशित-वि० (सं०) निष्कासित; फेंका हुआ, गिराया हुआ; ···· से वंचित ।

प्रभ्रंशी(शिन्)-वि० (सं०) गिरनेवाला; हटनेवाला ।

प्रभ्रष्ट-वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित; टूटा हुआ, खंडित । पु० शिखापर धारण की गयी माला, शिखालंबिनी माला ।

प्रभ्रष्टक-पु० (सं०) दे० 'प्रभ्रष्ट' ।

प्रमंडल-पु० (सं०) पहियेके वाहरी हिस्सेका खंड, चक्केका खंड; (कंपनी) मिल-जुलकर कोई काम करने, विशेषकर व्यापारादिके लिए बनाया गया व्यक्तियोंका संघ या समूह, कंपनी, समवाय ।

प्रम*-वि० परम ।

प्रमग्न-वि० (सं०) डूबा हुआ, निमग्न ।

प्रमणा(णस्),- **प्रमना(नस्)**-वि० (सं०) प्रसन्न, हृष्ट ।

प्रमत-वि० (सं०) विचारित, सोचा हुआ; चतुर ।

प्रमति-वि० (सं०) प्रकृष्ट बुद्धिवाला । पु० च्यवन ऋषिका एक पुत्र ।

प्रमत्त-वि० नशेमें चूर; मतवाला; पागल, विक्षिप्त; असावधान, प्रमादयुक्त; संध्या-पूजा न करनेवाला; भूल-चूक करनेवाला । **-गीत**-पु० नशेकी हालतमें गाया हुआ गीत । **-चित्त**-वि० लापरवाह, प्रमादी ।

प्रमत्तता-स्त्री० (सं०) प्रमत्त होनेका भाव, मतवालापन; पागलपन; लापरवाही ।

प्रमथ-पु० (सं०) शिवके एक प्रकारके अनुचर; घोड़ा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । **-नाथ,-पति**-पु० शिव ।

प्रमथन-पु० (सं०) मथना; मार डालना, वध; नष्ट करना; पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना, उत्पीडन; क्षति पहुँचाना ।

प्रमथा-स्त्री० (सं०) हड़, हरीतकी ।

प्रमथाधिप-पु० (सं०) शिव ।

प्रमथालय-पु० (सं०) नरक ।

प्रमथित-वि० (सं०) अच्छी तरह मथा हुआ; जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो, उत्पीडित; रौंदा हुआ; जिसका वध किया गया हो । पु० विना जलका मट्ठा ।

प्रमथी(थिन्)-वि० (सं०) नाश करनेवाला ।

प्रमथेश्वर-पु० (सं०) शिव ।

प्रमद-वि० (सं०) मतवाला, प्रमत्त; जिसमें बहुत मद हो, प्रकृष्ट मदवाला; उग्र; लापरवाह; विवेकहीन । पु० धतूरेका फल; हर्ष, मोद; एक दैत्य । **-कानन,-वन**-पु० वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रानियोंके साथ विहार करता है, क्रीडोद्यान, प्रमोदवन।

प्रमदक-वि० (सं०) कामुक ।

प्रमदन-पु० (सं०) कामेच्छा; क्रीडोद्यान ।

प्रमदा-स्त्री० (सं०) रूपवती युवती; सुंदर स्त्री; एक वर्णिक वृत्त; कन्या राशि । **-कानन,-वन**-पु० दे० 'प्रमदकानन' । **-जन**-पु० युवती स्त्री; स्त्री जाति ।

प्रमद्वर-वि० (सं०) लापरवाह, असावधान ।

प्रमन्यु-वि० (सं०) अति क्रुद्ध; विषण्ण । पु० अधिक क्रोध ।

प्रमय-पु० (सं०) वध; मृत्यु; पतन; नाश ।

प्रमर्दन-पु० (सं०) एक दैत्य; विष्णु; शिवका एक अनुचर; नाश करना; निकालना । वि० नष्ट करनेवाला ।

प्रमर्दित-वि० (सं०) नष्ट-ध्वस्त किया हुआ, रौंदा हुआ ।

प्रमर्दिता(तृ), **प्रमर्दी(दिन्)**-वि० (सं०) कुचलनेवाला, नष्ट करनेवाला ।

प्रमस्तिष्क-पु० (सेरेब्रम) मस्तिष्कका सामनेका बड़ा भाग, मस्तिष्काग्र ।

प्रमा-स्त्री० (सं०) चेतना, बोध; जो जैसा हो उसको उस रूपमें जानना, किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान या अनुभव (न्या०); आधार, नींव (वै०); माप ।

प्रमाण-पु० (सं०) वह साधन जिसके द्वारा किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान हो, प्रमाका साधन (न्या०); वह साधन जिसके सहारे कोई बात सिद्ध की जाय, सबूत; वह जिसका वचन या निर्णय यथार्थ या आप्त माना जाय; माप; परिमाण, मात्रा; इयत्ता, सीमा, अवधि; एक अर्थालंकार जहाँ आठ प्रमाणोंमेंसे किसी एकका कथन हो; धर्मशास्त्र; मूलधन; विष्णु; एका; हेतु, कारण; नियम; त्रैराशिककी पहली राशि (ग०); (हिं०) यथार्थता, सत्यता; निश्चय, पक्का इरादा; ठिकाना, भरोसा; मानने या आदर करने योग्य वस्तु; आज्ञापत्र, आदेश । वि० यथार्थ; चरितार्थ; सत्य; उचित, ठीक । अ० तक, पर्यंत । **-कुशल**-वि० वाद-विवाद या बहस करनेमें चतुर, युक्तिपटु । **-कोटि**-स्त्री० प्रामाणिक वस्तुओं या आधारोंकी श्रेणी या दर्जा; वाद-विवादमें वह युक्ति जो प्रमाण मानी जाती है । **-ज्ञ**-वि० प्रमाण-अप्रमाणको जाननेवाला, पंडित । पु० शिव । **-दृष्ट**-वि० शास्त्रादिसे सम्मत (जो प्रमाणके रूपमें पेश किया जा सके) । **-पत्र**-पु० वह पत्र या लेख जो किसी बातका प्रमाण माना जाय । **-पुरुष**-पु० मध्यस्थ, पंच । **-प्रवीण**-वि० तर्क-कुशल । **-भूत**-वि० जो किसी बातका प्रमाण हो या माना जाय, प्रमाणरूप । पु० शिव । **-वचन,-वाक्य**-पु० न्यायसंगत वाक्य । **-शास्त्र**-पु० न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र । **-सूत्र**-पु० वह सूत जिससे कोई वस्तु नापी जाय ।

प्रमाणक-वि० (सं०) (समासांतमें)·········परिमाण या विस्तारका । पु० (वाउचर) किसी रकमके आय-व्ययके खातेमें चढ़ाये जानेकी संपुष्टि या प्रमाणके रूपमें साथमें नत्थी किया गया हिसाबके ब्यौरेका पुरजा; प्रमाणपत्र ।

प्रमाणतः(तस्)-अ० (सं०) प्रमाणके अनुसार ।

प्रमाणन-पु० (सर्टिफिकेशन) किसी लेख, कथन या बातका ठीक और प्रामाणिक होना लिखकर स्वीकार करना ।

प्रमाणना*-अ० क्रि० दे० 'प्रमानना' ।

प्रमाणाधिक–वि० (सं०) परिमाणसे अधिक; अत्यधिक ।

प्रमाणिक–वि० (सं०) जिसके लिए कोई प्रमाण हो, प्रमाण-सिद्ध; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाणरूप (हिं०) । पु० चौबीस अंगुलकी एक लंबाईकी माप, हाथ ।

प्रमाणिका–स्त्री० (सं०) एक छंद ।

प्रमाणित–वि० (सं०) प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाणसिद्ध ।

प्रमाणी–स्त्री० (सं०) एक छंद, प्रमाणिका ।

प्रमाणीकरण–पु० (आथेंटिकेशन) किसी बातकी सत्यता प्रमाणित करना, किसीकी विश्वसनीयताकी पुष्टि करना ।

प्रमाणीकृत–वि० (सं०) जो प्रमाण ठहराया गया हो ।

प्रमातव्य–वि० (सं०) वध्य, मारने योग्य ।

प्रमाता(तृ)–वि० (सं०) प्रमारूप ज्ञानको प्राप्त करनेवाला, जो प्रमाण द्वारा किसी वस्तुका ज्ञान प्राप्त करे; किसी विषयका साक्षात्कार करनेवाला, विषयी । पु० अंतःकरणकी वृत्तिसे अवच्छिन्न या उसमें प्रतिबिंबित चैतन्य (वे०) ।

प्रमातामह–पु० (सं०) परनाना ।

प्रमातामही–स्त्री० (सं०) परनानी ।

प्रमात्रा–स्त्री० (क्वाण्टम) यथेष्ट मात्रा, उतनी मात्रा जितनी आवश्यक हो; हिस्सा, भाग, राशि जो आवश्यक, वांछित या स्वीकृत हो ।

प्रमाथ–पु० (सं०) मथना, मथन; बलपूर्वक हरण करना; बलात्कार; बहुत अधिक दुःख देना, उत्पीड़न; वध, संहार; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; शिवके एक प्रकारके अनुचर, प्रमथ ।

प्रमाथिनी–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

प्रमाथी(थिन्)–वि० (सं०) मथनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला; पीडा पहुँचानेवाला; मारनेवाला; नष्ट करनेवाला; क्षुब्ध करनेवाला; काटनेवाला । (स्त्री० 'प्रमाथिनी' ।) पु० एक राक्षस; एक संवत्सर ।

प्रमाद–पु० (सं०) कर्तव्यको अकर्तव्य समझकर उससे निवृत्त होना और अकर्तव्यको कर्तव्य समझकर उसमें प्रवृत्त होना, अनवधानता; भूल-चूक, गफलत, लापरवाही; मद, नशा; उन्माद; मूर्च्छा; संकट, विपत् ।

प्रमादवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रमाद करनेवाला, प्रमादयुक्त; विना विचारे काम करनेवाला; मतवाला; पागल ।

प्रमादिका–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका कौमार्य किसीने नष्ट कर दिया हो; लापरवाह स्त्री ।

प्रमादित–वि० (सं०) तिरस्कृत, हेय समझा हुआ ।

प्रमादी(दिन्)–वि० (सं०) जो बराबर प्रमाद करे, प्रमादशील, लापरवाह; मत्त; विक्षिप्त ।

प्रमान*–पु० दे० 'प्रमाण' ।

प्रमानना*–स० क्रि० प्रमाणके रूपमें स्वीकार करना, प्रमाण मानना, ठीक मानना; प्रमाणित करना, सिद्ध करना ।

प्रमानी*–वि० प्रामाणिक, मान्य ।

प्रमाप–स्त्री० (स्टैंडर्ड) वह स्थिर की हुई एवं बहुमान्य माप या मान जिसके आधारपर अन्य मापों या मानोंका निश्चय किया जाय; योग्यता, श्रेष्ठता आदि परखने, नापनेका सुनिर्धारित स्तर या क्रम ।

प्रमापक–वि० (सं०) प्रमाणित करनेवाला । पु० प्रमाण ।

प्रमापण–पु० (सं०) मारण, वध ।

प्रमापयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) मारनेवाला, हत्यारा; नाशक ।

प्रमापित–वि० (सं०) ध्वस्त; हत ।

प्रमापी(पिन्)–वि०, पु० (सं०) मारनेवाला; नष्ट करनेवाला ।

प्रमायु, प्रमायुक–वि० (सं०) मरणशील, नश्वर ।

प्रमार्जक–वि० (सं०) धोने, साफ करनेवाला; पोंछनेवाला; मिटानेवाला ।

प्रमार्जन–पु० (सं०) धोना, साफ करना; पोंछना; दूर करना ।

प्रमित–वि० (सं०) जिसका यथार्थ ज्ञान हुआ हो; ज्ञात, अवगत; परिमित, अल्प; मापा हुआ; प्रमाण द्वारा सिद्ध किया हुआ; (समासांतमें)...परिमाण या विस्तारका ।

प्रमिताक्षरा–स्त्री० (सं०) एक वर्णिक वृत्त ।

प्रमिति–स्त्री० (सं०) किसी प्रमाण द्वारा प्राप्त यथार्थ ज्ञान, प्रमा; माप ।

प्रमीढ–वि० (सं०) पेशाब किया हुआ, मूत्रित; घना ।

प्रमीत–वि० (सं०) मृत, मरा हुआ; बलि चढ़ाया हुआ; नष्ट । पु० यज्ञके निमित्त मारा हुआ पशु ।

प्रमीति–स्त्री० (सं०) मृत्यु; नाश ।

प्रमीलन–पु० (सं०) आँखें बंद करना ।

प्रमीला–स्त्री० (सं०) तंद्रा; शिथिलता, क्लांति; अर्जुनकी एक भार्या ।

प्रमीलिका–स्त्री० (सं०) तंद्रा ।

प्रमीलित–वि० (सं०) जिसकी आँखें मुंदी हों ।

प्रमुक्त–वि० (सं०) जिसका बंधन खोल दिया गया हो; परित्यक्त; प्रक्षिप्त ।

प्रमुक्ति–स्त्री० (सं०) मोक्ष, मुक्ति ।

प्रमुख–अ० इत्यादि, वगैरह । वि० (सं०) प्रथम; मुख्य, प्रधान; श्रेष्ठ; सम्मान्य, प्रतिष्ठित । पु० सम्मान्य व्यक्ति; (स्पीकर) संसद् या विधानसभाका 'अध्यक्ष'; मुख; समूह; पुन्नाग वृक्ष; अध्याय आदिका आरंभ । –सभा–स्त्री० (सिनेट) प्रमुख या प्रख्यात व्यक्तियोंकी सभा ।

प्रमुग्ध–वि० (सं०) मूर्च्छित, अचेत; हतबुद्धि; बहुत सुंदर ।

प्रमुदित–वि० (सं०) अति प्रसन्न । –वदना–स्त्री० एक वर्णवृत्त । –हृदय–वि० जिसे आंतरिक प्रसन्नता हो ।

प्रमुद्–वि० (सं०) हर्षयुक्त । पु० अति हर्ष ।

प्रमुषित–वि० (सं०) चुराया हुआ; हतबुद्धि ।

प्रमुषिता–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी पहेली ।

प्रमूढ–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, चकराया हुआ; मूर्ख ।

प्रमृत–पु० (सं०) कृषक-वृत्ति, कृषि; मृत्यु । वि० मृत; आवृत; दृष्टिसे ओझल ।

प्रमृष्ट–वि० (सं०) धोया हुआ, साफ किया हुआ; पोंछा या चमकाया हुआ ।

प्रमेय–वि० (सं०) प्रमा या यथार्थ ज्ञानके योग्य, जो प्रमा या यथार्थ ज्ञानका विषय हो सके या जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय, अवधारणके योग्य, अवधार्य । पु० वह जो प्रमा या यथार्थ ज्ञानका विषय हो सके या जिसका किसी प्रमाण द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त किया जाय, प्रमाका विषय ।

प्रमेह–पु० (सं०) एक रोग जिसमें शरीरकी धातुएँ अनेक रूपोंमें पेशाबके रास्ते गिरा करती हैं ।

प्रमेही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) प्रमेहका रोगी ।

प्रमोक्ष–पु० (सं०) त्याग; फेंकना; मोक्ष, मुक्ति ।

प्रमोक्षण–पु० (सं०) चंद्रमा या सूर्यके ग्रहणका अंत ।

प्रमोचन–पु० (सं०) मुक्त करना, छोड़ना; छुड़ाना; हरण ।

प्रमोचनी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ककड़ी, गोड़ुंबा ।

प्रमोद–पु० (सं०) प्रकृष्ट हर्ष, आनंद; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक नाग; एक संवत्सर; कड़ी सुगंधि; एक प्रकारकी सिद्धि जिससे आध्यात्मिक दुःखोंका विनाश हो जाता है (सां०) । –कर–पु० (एंटरटेनमेंट टैक्स) नाटक, चलचित्रोंके प्रदर्शन तथा मनोरंजनके ऐसे अन्य प्रकारोंपर लगनेवाला कर, मनोरंजन-कर । –कानन–पु० दे० 'प्रमदकानन' । –काल–पु० दे० 'आनंदमास' । –गोष्ठी–स्त्री० (पिकनिक पार्टी) मित्रमंडलीका नगरादिके बाहर जाकर किसी खुले स्थान, उद्यान आदिमें खान-पान, मनोरंजन आदिका आयोजन करना । –वन–पु० दे० 'प्रमदकानन' ।

प्रमोदन–वि० (सं०) आनंदित करना; प्रसन्न करनेवाला । पु० विष्णु ।

प्रमोदित–वि० (सं०) प्रमोदयुक्त, प्रसन्न । पु० कुबेर ।

प्रमोदी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला, प्रमोदजनक; प्रसन्न । (स्त्री० 'प्रमोदिनी' ।)

प्रमोधना*–स० क्रि० प्रबोधना, समझाना ।

प्रमोह–पु० (सं०) मोह; जड़ता; संज्ञाहीनता, मूर्च्छा । –चित्त–वि० घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि ।

प्रमोहन–पु० (सं०) मोहित करना; वह अस्त्र जिसके प्रयोगसे

शत्रुदल संज्ञाहीन हो जाय ।

प्रमोहित–वि० (सं०) स्तब्ध, मूर्च्छित; चकराया हुआ ।

प्रमोही(हिन्)–वि० (सं०) मोहजनक, हतबुद्धि करनेवाला ।

प्रम्लान–वि० (सं०) मुरझाया हुआ; मैला । **–वदन**–वि० जिसका चेहरा उतर गया हो । **–शरीर**–वि० जिसका शरीर मुरझा गया हो, निःशक्त-सा हो गया हो ।

प्रम्लोचा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

प्रयंक*–पु० दे० 'पर्यंक' ।

प्रयंत*–अ० दे० 'पर्यंत' ।

प्रयत–वि० (सं०) जिसने इंद्रियोंको वशमें किया हो, यमयुक्त, वशी; शुद्धात्मा; पवित्र; प्रयत्नवान्; नम्र; सावधान । पु० पवित्र व्यक्ति, सत्पुरुष ।

प्रयतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जितेंद्रिय, आत्मनिग्रही ।

प्रयत्न–पु० (सं०) किसी कार्य या उद्देश्यकी पूर्तिके लिए किया जानेवाला व्यापार, प्रयास, कोशिश; अध्यवसाय; कठिनता; आत्माके ६ गुणोंमेंसे एक; फलकी प्राप्तिके लिए शीघ्रतापूर्वक की जानेवाली क्रिया (ना०); श्वास, जिह्वा, कंठ आदिका वह व्यापार जिसके सहारे वर्णोंका उच्चारण होता है । (व्या०) । **–प्रेक्षणीय**–वि० जो कठिनाईसे देखा जा सके । **–शील**–वि० प्रयत्नमें लगा हुआ, जो प्रयत्न कर रहा हो ।

प्रयत्नवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रयत्नमें लगा हुआ, सक्रिय, सचेष्ट ।

प्रयस्त–वि० (सं०) मसाले आदि देकर बढ़िया तौरसे पकाया हुआ ।

प्रयाग–पु० (सं०) हिंदुओंका एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा और यमुनाके संगमपर बसा हुआ है; इंद्र; घोड़ा; यज्ञ । **–भय**–पु० इंद्र ।

प्रयागवाल–पु० प्रयागका पंडा ।

प्रयाचन–पु० (सं०) गिड़गिड़ाना; गिड़गिड़ाते हुए माँगना ।

प्रयाज–पु० (सं०) दर्श-पौर्णमास आदिका एक अंगभूत याग ।

प्रयाण–पु० (सं०) गमन, प्रस्थान; यात्रा; युद्धके लिए किया गया प्रस्थान, चढ़ाई; आरंभ; संसारसे विदा होना, मरना; घोड़ेकी पीठ; जानवरका पिछला भाग । **–काल,–समय**–पु० प्रस्थान करनेका समय; मृत्युकाल । **–पटह**–पु० कूचका डंका, युद्धके लिए प्रस्थान करते समय बजाया जानेवाला नगाड़ा । **–भंग**–पु० यात्रा करते समय बीचमें कहीं रुक जाना, यात्राभंग ।

प्रयाणक–पु० (सं०) यात्रा, प्रस्थान; गमन, गति ।

प्रयात–वि० (सं०) प्रस्थित, जो रवाना हो चुका हो; मरा हुआ । पु० रात्रियुद्ध; पहाड़ या चट्टानका ऊँचा खड़ा किनारा, प्रपात ।

प्रयान*–पु० दे० 'प्रयाण' ।

प्रयापण, प्रयापन–पु० (सं०) प्रस्थान कराना, चलाना; दूर करना, भगाना ।

प्रयापित–वि० (सं०) आगे बढ़ाया हुआ; चले जानेके लिए विवश किया हुआ ।

प्रयाम–पु० (सं०) लंबाई, दीर्घता; बढ़ाव; संयम, नियंत्रण; अकाल, अभाव (अन्नादिका); अकालके कारण होनेवाली गाहकोंकी होड़ ।

प्रयास–पु० (सं०) प्रयत्न, कोशिश; श्रम, आयास ।

प्रयुक्त–वि० (सं०) जोता हुआ; जिसका प्रयोग किया गया हो, लगाया हुआ; किसी काममें लगाया हुआ; जोड़ा हुआ, एकमें मिलाया हुआ; समाधिस्थ; सूदपर दिया हुआ (धन); प्रेरित; (अस्त्र, मंत्र आदि) जिसका किसीपर प्रयोग किया गया हो; गतिमान् किया हुआ । पु० कारण । **–संस्कार**–वि० साफ कर चमकाया हुआ (रत्नादि) ।

प्रयुक्ति–स्त्री० (सं०) प्रयोग; प्रेरण; नीयत, उद्देश्य; अवसर; परिणाम; प्रयत्न ।

प्रयुत–वि० (सं०) युक्त, सहित; अस्पष्ट; खल्त-मल्त; ध्वस्त; दस लाख । पु० दस लाखकी संख्या, १०,००,००० ।

प्रयुत्सु–पु० (सं०) योद्धा; भेड़ा; वायु; सन्यासी; इंद्र ।

प्रयुद्ध–पु० (सं०) लड़ाई; जंग । वि० जो युद्ध कर चुका हो; युद्ध करनेवाला ।

प्रयोक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; किसी काममें लगानेवाला, प्रेरक । पु० ऋण देनेवाला, उत्तमर्ण, महाजन; नाटकका सूत्रधार; कमनैत; पाठ करनेवाला, वाचक ।

प्रयोग–पु० (सं०) किसी काममें लाना या लाया जाना, व्यवहार; इस्तेमाल; अनुष्ठान; (अस्त्र-शस्त्र) चलाना या छोड़ना, शस्त्रपात; ज्ञानको अमलमें लाना या बरतना, अमल, प्रक्रिया-शास्त्रका उलटा; नाटकका खेला जाना, अभिनय; मारण-मोहन आदि तांत्रिक अभिचार; वह ग्रंथ जिसमें यज्ञ-संबंधी क्रियाओंकी विधि बतायी गयी हो, पद्धति; व्याकरणमें क्रियापदमें होनेवाला वह विकार जो कर्ताके लिंग, वचनके अनुसार होनेपर कर्तरि प्रयोग, कर्मके लिंग, वचनके अनुसार होनेपर कर्मणि प्रयोग तथा दोनोंसे स्वतंत्र (सर्वदा पुंलिंग एक वचनके अनुसार) होनेपर भावे प्रयोग कहलाता है; योजना; साधन; पाठ; आरंभ; परिणाम; संबंध; भूत-प्रेत आदिके उच्चाटनके लिए किया जानेवाला मंत्रोच्चारण; सूदपर रुपया देना; उदाहरण, दृष्टांत; साम, दाम आदिका अवलंबन; (एक्सपेरिमेंट) किसी सिद्धांतकी सत्यता प्रमाणित करने या किसी अज्ञात बातका पता लगाने, जाँच करने आदिकी दृष्टिसे की गयी प्रक्रिया या कार्य । **–ज्ञ,–निपुण**–वि० जिसे अभ्यासजन्य अनुभव प्राप्त हो । **–वाद**–पु० (एक्सपेरिमेंटलिज्म) भाषा, विषय, भाव, छंद आदि संबंधी पुरानी परंपराके विरोधी नये-नये प्रयोग करते रहनेकी साहित्यिकों, कवियोंकी प्रवृत्ति जिसकी तहमें पाठकोंको चौंका देनेकी लालसा भी, अज्ञात रूपसे, विद्यमान रहती है । **–विधि**–स्त्री० प्रयोगज्ञापक विधि (मी०) । **–शाला**–स्त्री० (लेबोरेटरी) वह स्थान जहाँ पदार्थविज्ञान, रसायनशास्त्र आदि-विषयक तथ्योंको समझने, जानने या नयी बातोंका पता लगानेकी दृष्टिसे विविध प्रयोग किये जाते हों ।

प्रयोगतः(तस्)–अ० (सं०) प्रयोग द्वारा; परिणामरूपमें; अनुसार; कार्यतः ।

प्रयोगातिशय–पु० (सं०) वह प्रस्तावना जिसमें प्रस्तुत प्रयोगके अंतर्गत दूसरा प्रयोग उपस्थित हो जाता है और उसीपर पात्र प्रवेश करते हैं (ना०) ।

प्रयोगार्थ–पु० (सं०) मुख्य कार्यकी सिद्धिके लिए किया जानेवाला गौण कार्य ।

प्रयोगार्ह–वि० (सं०) प्रयोगके योग्य, जिसका प्रयोग किया जा सके ।

प्रयोगी(गिन्)–वि० (सं०) प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; प्रेरक; जिसके सामने कोई उद्देश्य हो ।

प्रयोग्य–पु० (सं०) (गाड़ीमें जोता जानेवाला) घोड़ा (वै०) ।

प्रयोजक–पु० (सं०) प्रयोग करनेवाला, प्रयोगकर्ता; किसी काममें लगानेवाला; जोड़नेवाला, एकमें मिलानेवाला; प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक, प्रेरणार्थक क्रियाका कर्ता (व्या०); सूदपर रुपया देनेवाला, महाजन; ग्रंथ-लेखक; संस्थापक; धर्मशास्त्री । वि० प्रेरक; नियुक्त करनेवाला; जो कारण बने ।

प्रयोजन–पु० (सं०) प्रवृत्तिका कारणभूत उद्देश्य, वह उद्देश्य जिसकी पूर्तिके लिए कोई किसी काममें प्रवृत्त हो, अर्थ, अभिप्राय, गरज; उपयोग, इस्तेमाल, काम; हेतु; साधन, उपाय; लाभ ।

प्रयोजनवती लक्षणा–स्त्री० (सं०) वह लक्षणा जिसके द्वारा किसी विशिष्ट प्रयोजनकी सिद्धिके लिए वाच्यार्थसे भिन्न अर्थ निकाला जाय ।

प्रयोजनवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसे कोई प्रयोजन हो, प्रयोजन रखनेवाला; खुदगरज; उपयोगी ।

प्रयोजनीय–वि० (सं०) प्रयोगमें लाने योग्य, उपयोगी ।

प्रयोज्य–वि० (सं०) प्रयोगके योग्य; जो चलाया, फेंका जाय; जो काममें लगाया जाय । पु० नौकर, टहलू; मूल धन, पूंजी ।

प्ररक्षण–पु० (सं०) रक्षा करना ।

प्ररुज–पु० (सं०) देवसेनाका एक सेनापति ।

प्ररुदित–वि० (सं०) बहुत रोता-चिल्लाता हुआ ।

प्ररुह–वि० (सं०) (अंकुर आदि) जो ऊपरकी ओर बढ़े ।

प्ररूढ–वि० (सं०) उगा हुआ (वृक्ष आदि); उत्पन्न; जिसने जड़ पकड़ ली हो, बद्धमूल; खूब बढ़ा हुआ; खूब बढ़नेवाला (केश आदि) ।

प्ररूढि–स्त्री० (सं०) बाढ़, वृद्धि ।

प्ररूपण–पु०, **प्ररूपणा**–स्त्री० (सं०) व्याख्या करना, समझाना।

प्ररोचन–पु० (सं०) रुचि उत्पन्न करना, रुचि-संपादन; उत्तेजित करना; दे० 'प्ररोचना'।

प्ररोचना–स्त्री० (सं०) दे० 'प्ररोचन'; स्तुति; नाटककारकी प्रशंसा द्वारा नाटकके प्रति दर्शकोंमें रुचि उत्पन्न करना; आगे आनेवाली बातका इस प्रकार कथन करना कि दर्शकोंकी रुचि या औत्सुक्य बढ़ जाय (ना०)।

प्ररोह–पु० (सं०) अंकुरित होना; उत्पत्ति; आरोह, चढ़ाव; अंकुर; संतान; प्रकाश-किरण; नया पत्ता या टहनी; अर्बुद। **–भूमि**–स्त्री० उपजाऊ जमीन। **–शाखी(खिन्)**–वि० (वह वृक्ष) जिसकी शाखा लगायी जा सके।

प्ररोहण–पु० (सं०) उगना, जमना; उत्पत्ति; अंकुर; टहनी।

प्ररोही(हिन्)–वि० (सं०) उगनेवाला, जमनेवाला; उत्पन्न होनेवाला; बढ़नेवाला।

प्रलंफन–पु० (सं०) कुदान; कूदना।

प्रलंब–वि० (सं०) लटकता हुआ, लटका हुआ; अधिक लंबा; सुस्त। पु० लटकनेकी क्रिया, लटकाव; लटकनेवाली चीज; शाखा, डाल; स्तन; माला; एक प्रकारका हार; एक असुर जिसे बलरामने मारा था; खीरा; राँगा; गाथा। **–घ्न,–मथन,–हा(हन्)**–पु० बलराम। **–बाहु**–वि० जिसकी बाहें अधिक लंबी हों, आजानुबाहु।

प्रलंबक–पु० (सं०) रोहिष तृण।

प्रलंबन–पु० (सं०) लटकना; अवलंबित होना।

प्रलंबांड–वि० (सं०) जिसका अंडकोष नीचेतक लटका हो, बड़े अंडकोषवाला।

प्रलंबित–वि० (सं०) लटका हुआ; नीचेकी ओर दूरतक बढ़ा हुआ, झूलता हुआ।

प्रलंबी(बिन्)–वि० (सं०) लटकनेवाला; सहारा लेनेवाला।

प्रलंभ–पु० (सं०) लाभ, प्राप्ति; धोखा देना, छलना।

प्रलंभन–पु० (सं०) लाभ होना; धोखा देना, छलना।

प्रलपन–पु० (सं०) वार्तालाप; अनर्थक वचन, प्रलाप, बकवास; दुखड़ा रोना।

प्रलपित–वि० (सं०) कथित; जो दीनतापूर्वक कहा गया हो। पु० दे० 'प्रलपन'।

प्रलब्ध–वि० (सं०) गृहीत; जो छला गया हो।

प्रलब्धा(ब्धृ)–वि०, पु० (सं०) छल करनेवाला, वंचक।

प्रलयंकर–वि० (सं०) प्रलय करनेवाला; विनाशकारी।

प्रलय–पु० (सं०) लयको प्राप्त होना, नष्ट होना, न रह जाना; विनाश, संहार; संसारका अपने मूल कारण प्रकृतिमें सर्वथा लीन हो जाना, सृष्टिका सर्वनाश; मृत्यु; मूर्च्छा, बेहोशी; एक सात्त्विक भाव जिसमें सुख या दुःखके कारण मनुष्य जड़ हो जाता है (सा०); भारी या व्यापक संहार; ॐकार (वे०)। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'प्रलयंकर'। **–काल**–पु० प्रलयका समय। **–जलधर**–पु० प्रलयके समयका बादल। **–पयोधि**–पु० प्रलयके समयका समुद्र।

प्रललाट–वि० (सं०) जिसका ललाट ऊँचा हो।

प्रलव–पु० (सं०) अच्छी तरह काटना; खंड, लेश, टुकड़ा।

प्रलवण–पु० (सं०) फसल काटना।

प्रलविता(तृ)–वि०, पु० (सं०) काटनेवाला।

प्रलवित्र–पु० (सं०) काटनेका साधन, हँसिया आदि।

प्रलाप–पु० (सं०) बात-चीत; अंड-बंड बकना, निरर्थक बात, बकवास; दुखड़ा रोना; मानसिक विकार या ज्वराधिक्यसे बेहोश होकर अंड-बंड बकना; वियोगजन्य करुण आलाप। **–हा(हन्)**–पु० एक तरहका अंजन, कुलत्थांजन।

प्रलापक–पु० (सं०) बकवास करनेवाला; एक तरहका सन्निपात रोग जिसमें रोगी प्रलाप करता है।

प्रलापी(पिन्)–वि० (सं०) प्रलाप करनेवाला, अनाप-शनाप बकनेवाला।

प्रलाभी–वि० (लूक्रेटिव) लाभ देनेवाला, जिसके करनेमें विशेष लाभ हो (पद या काम)।

प्रलिप–वि०, पु० (सं०) लेप करनेवाला।

प्रलिप्त–वि० (सं०) चिपका हुआ, लिपटा हुआ, लिप्त।

प्रलीन–वि० (सं०) विलीन; लुप्त; प्रलयको प्राप्त, विनष्ट; क्लांत; चेष्टाशून्य, जड़।

प्रलीनता–स्त्री० चेष्टानाश, जड़ता।

प्रलीनेंद्रिय–वि० (सं०) जिसकी इंद्रियाँ शिथिल हो गयी हों।

प्रलुठित–वि० (सं०) उछलता हुआ; लुढ़कता हुआ।

प्रलुब्ध–वि० (सं०) जो लालचमें पड़ गया हो।

प्रलुब्धा–वि०, स्त्री० (सं०) (वह स्त्री) जिसे किसीसे अनुचित प्रेम हो गया हो।

प्रलून–वि० (सं०) काटा हुआ। पु० एक तरहका कीड़ा।

प्रलेख–पु० (डाक्यूमेंट) वह कागज या लिखित पत्र जिसमें किसी बातका प्रमाण या कोई प्रमाणिक बात दर्ज हो और जो विधिक दृष्टिसे किसी पक्ष या व्यवहार (मामले) के समर्थनमें उपस्थित किया जा सके, दस्तावेज।

प्रलेखन–पु० (डाकुमेण्टेशन) ज्ञानप्रसार हेतु लेखबद्ध साहित्यकी खोज, संकलन और व्यवस्थित रूपसे प्रस्तुत करनेकी क्रिया।

प्रलेखीय चलचित्र–पु० (डाक्यूमेंटरी फिल्म) वह चल-चित्र जिसमें किसी महत्त्वपूर्ण घटना, पुरातत्त्व, औद्योगिक प्रगति आदिका चित्रण किया गया हो, दे० 'वृत्तचित्र'।

प्रलेप–पु० (सं०) लेप, घाव या फोड़ेपर कोई मलहम चढ़ाना; घाव या फोड़ेपर चढ़ानेका मलहम।

प्रलेपक–पु० (सं०) प्रलेप करनेवाला; एक प्रकारका मंद ज्वर।

प्रलेपन–पु० (सं०) लेप करनेकी क्रिया।

प्रलेप्य–वि० (सं०) लेप करने योग्य। पु० साफ-सुथरे, छाँटे हुए बाल।

प्रलेह–पु० (सं०) एक प्रकारका व्यंजन, कोरमा।

प्रलेहन–पु० (सं०) चाटना।

प्रलोठन–पु० (सं०) उछलना; लुढ़कना।

प्रलोठित–वि० (सं०) दे० 'प्रलुठित'।

प्रलोप–पु० (सं०) नाश, विलय।

प्रलोभ–पु० (सं०) अधिक लोभ, लालच; प्रलोभन।

प्रलोभक–वि०, पु० (सं०) प्रलोभन देनेवाला, लालच उत्पन्न करनेवाला।

प्रलोभन–पु० (सं०) लालच देना; ललचाना; (ऐल्यूरमेंट) लालच देकर बहकाना, फुसलाना, अपनी ओर कर लेना या किसी कार्यसे विरत करना; ललचानेवाली वस्तु।

प्रलोभनी–स्त्री० (सं०) बालू।

प्रलोभित–वि० (सं०) प्रलोभनमें पड़ा हुआ, प्रलुब्ध।

प्रलोभी(भिन्)–वि० (सं०) ललचानेवाला, लालची, प्रलोभनमें पड़नेवाला।

प्रलोल–वि० (सं०) क्षुब्ध; कंपित।

प्रवंग, प्रवंगम–पु० (सं०) पक्षी; बंदर।

प्रवंचक–वि०, पु० (सं०) ठग, धूर्त।

प्रवंचन–पु० (सं०) ठगना, धोखा देना।

प्रवंचना–स्त्री० (सं०) ठगी, धोखेबाजी, धूर्तता।

प्रवंचित–वि० (सं०) जो ठगा गया हो, जिसे धोखा दिया गया हो।

प्रवक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) अच्छा वक्ता; वेद आदिका अच्छी तरह प्रवचन करनेवाला (स्मृ०); पु० (स्पोक्समैन) किसी संस्था या सरकार आदिकी ओरसे आधिकारिक रूपमें बोलनेवाला प्रतिनिधि; प्रतिष्ठापक, प्रतिपादक, पुरस्कर्ता 'तिलक इस मतके प्रवक्ता थे'—सुधीन्द्र; प्रवचन करनेवाला, विषयको अच्छी तरह समझानेवाला (लेक्चरर)।

प्रवग–पु० (सं०) पक्षी; बंदर।

प्रवचन–पु० (सं०) विशेष रूपसे कहना, अर्थ समझाते हुए कहना; वेद, पुराण आदिका उपदेशपूर्ण व्याख्यान; शास्त्र। **–पटु**–वि० बोलनेमें कुशल, वाग्मी।

प्रवचनीय–वि० (सं०) प्रवचनके योग्य।

प्रवट–पु० (सं०) जौ।

प्रवण–वि० (सं०) ढालुवाँ; टेढ़ा, वक्र; खड़ा; किसी वस्तुकी ओर

झुका हुआ, प्रवृत्त; नम्र; आसक्त; क्षीण; दीर्घ, लंबा; अनुकूल। पु० चौराहा; ढाल, उतार; उदर।

प्रवणता–वि० (सं०) प्रवृत्ति, झुकाव।

प्रवत्स्यत्–वि० (सं०) दे० 'प्रवत्स्यन्'। **–पतिका,–प्रेयसी**–स्त्री० वह नायिका जिसका नायक परदेस जानेवाला हो।

प्रवत्स्यद्भर्तृका–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रवत्स्यत्पतिका'।

प्रवत्स्यन्(त्)–वि० (सं०) जो विदेश जानेवाला हो।

प्रवदन–पु० (सं०) घोषणा।

प्रवप–वि० (सं०) स्थूलकाय।

प्रवपण–पु० (सं०) मुंडन।

प्रवयण–पु० (सं०) चाबुक; अंकुश; कपड़ेका ऊपरका हिस्सा।

प्रवया(यस्)–वि० (सं०) वृद्ध, बूढ़ा।

प्रवर–वि० (सं०) प्रधान, श्रेष्ठ; सबसे जेठा; पद या वयमें बड़ा, ज्येष्ठ; गुणवान्, विशेषज्ञ (व्यक्ति)। पु० आह्वान; यज्ञ आरंभ करनेके समय किया जानेवाला अग्निका आह्वान; संतति; गोत्र, संतान; किसी गोत्रके प्रवर्तक मुनियोंमेंसे कोई एक; अगरकी लकड़ी; आवरण; उपरना। **–कल्याण**–वि० बहुत सुंदर। **–गिरि**–पु० मगधका एक पर्वत जो आजकल 'बराबर' पहाड़ कहलाता है। **–जन**–पु० अच्छे गुणोंसे युक्त व्यक्ति। **–ललित**–पु० एक छंद। **–वाहन**–पु० अश्विनीकुमार। **–समिति**–स्त्री० (सिलेक्ट कमिटी) किसी विषयकी छान-बीन करने और विचार-विमर्शके बाद निश्चित मत प्रकट करनेके लिए बनायी गयी चुने हुए विशेषज्ञ सदस्योंकी समिति।

प्रवरण–पु० (सं०) आह्वान; वर्षांतपर होनेवाला त्योहार (बौ०)।

प्रवरता–स्त्री० (सं०) (सीनियारिटी) अधिक ज्येष्ठ या पुराना होनेका भाव ('अवरता'का उलटा)।

प्रवरा–स्त्री० (सं०) गोदावरीकी एक सहायक नदी; अगरकी लकड़ी।

प्रवर्ग–पु० (सं०) यज्ञाग्नि, होमाग्नि; विष्णु; एक याग; एक मिट्टीका यज्ञपात्र; (कैटीगरी) कई भागों, वर्गों या श्रेणियोंमेंसे एक; श्रेणी।

प्रवर्त–पु० (सं०) किसी कार्यका आरंभ; उत्तेजन।

प्रवर्तक–पु० (सं०) प्रवृत्त करनेवाला, किसी काममें लगानेवाला; चलानेवाला, आरंभ करनेवाला, जारी करनेवाला; आविष्कार करनेवाला; (हिं०) उसकानेवाला, उभारनेवाला; किसी पूर्व सूचित पात्रका प्रवेश (ना०); मध्यस्थ, पंच।

प्रवर्तन–पु० (सं०) प्रवृत्त करना, किसीको किसी बातमें लगाना; आरंभ करना, चलाना, जारी करना; उसकाना, उभारना; आविष्कार करना (हिं०)।

प्रवर्तना–स्त्री० (सं०) प्रवृत्त करनेकी क्रिया, प्रेरण।

प्रवर्तयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) गति देनेवाला; आरंभ करनेवाला; स्थापित करनेवाला; उसकानेवाला।

प्रवर्तित–वि० (सं०) आरब्ध; चालित; स्थापित; उत्तेजित; प्रज्वलित; सूचित; शुद्ध किया हुआ।

प्रवर्ती(तिन्)–वि० (सं०) उद्गत या प्रवाहित होनेवाला; सक्रिय; आरंभ करनेवाला; प्रयोगमें लानेवाला; फैलानेवाला।

प्रवर्द्धन, प्रवर्धन–पु० (सं०) बढानेकी क्रिया; बढ़ती, वृद्धि।

प्रवर्ष–पु० (सं०) भारी वर्षा, जोरकी बारिश।

प्रवर्षण–पु० (सं०) वर्षा, बारिश; पहली बारिश; किष्किंधाके पासका एक पर्वत जिसपर रामने अपने वनवासकालमें कुछ समयतक निवास किया था।

प्रवर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) बरसानेवाला; बौछार करनेवाला (बाणों आदिकी)।

प्रवर्ह–वि० (सं०) दे० 'प्रबर्ह', प्रधान।

प्रवलाकी(किन्)–पु० (सं०) साँप; मोर।

प्रवल्हिका–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रवल्हिका', पहेली।

प्रवसन–पु० (सं०) बाहर जाकर रहने लगना; विदेश-यात्रा; मरण।

प्रवह–पु० (सं०) बहाव; वायु; सात प्रकारकी वायुओंमेंसे एक जिसके सहारे नक्षत्र परिभ्रमण करते हैं; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; घर, नगर आदिसे बाहर जाना, बहिर्यात्रा; पानी बहाकर ले जानेका कुंड।

प्रवहण–पु० (सं०) बहली; डोली; पोत; लड़कीको ब्याह देना। **–भंग**–पु० जहाजका नष्ट होना, पोत-ध्वंस, पोतभंग।

प्रवहमान–वि० (सं०) प्रवाहशील, बहनेवाला।

प्रवह्लि, प्रवह्लिका, प्रवह्ली–स्त्री० (सं०) पहेली।

प्रवाक–पु० (सं०) घोषणा करनेवाला।

प्रवाक्(च्)–वि० (सं०) युक्तियुक्त बातें कहनेवाला, वाक्पटु, वाग्मी; बहुत अधिक बोलनेवाला, वाचाल।

प्रवाचक–वि० (सं०) वाग्मी, सुवक्ता; अर्थद्योतक; व्याख्याता।

प्रवाचन–पु० (सं०) विज्ञप्ति, घोषणा; उपाधि, नाम।

प्रवाच्य–पु० (सं०) साहित्यिक रचना।

प्रवाण–पु० (सं०) कपड़ेका छोर या अंचल बनाना।

प्रवाणि, प्रवाणी–स्त्री० (सं०) जुलाहोंकी ढरकी।

प्रवात–पु० (सं०) स्वच्छ वायु, ताजा हवा; तेज हवा; हवादार जगह। वि० जिसमें तेज हवा लगती हो।

प्रवाद–पु० (सं०) बोलना; व्यक्त करना; लोगोंमें प्रचलित बात, जनश्रुति, किंवदंती; बातचीत, वार्तालाप; चुनौती।

प्रवादक–वि० (सं०) वाद्य बजानेवाला (संगीत)।

प्रवादी(दिन्)–वि०, पु० (सं०) प्रवाद करनेवाला।

प्रवान*–पु० दे० 'प्रमाण'।

प्रवार–पु० (सं०) ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय, ओढ़नी; आच्छादन।

प्रवारण–पु० (सं०) निषेध, मनाही; प्रतिरोध; स्वेच्छासे किया जानेवाला दान, काम्यदान; उत्तम वस्तु (जैसे हाथी, घोड़ा आदि)का दान; महादान; इच्छा पूर्ण करना; दे० 'प्रवार'; वर्षांतमें होनेवाला बौद्धोंका एक त्योहार।

प्रवाल–पु० (सं०) दे० 'प्रवाल'। **–द्वीप वलय**–पु० (अटोल) मूँगे (प्रवाल) की बनी चट्टानोंका वृत्ताकार संयोजन जो समुद्रके जलकी सतहसे ऊपर निकला रहता है तथा उसके बीचमें पानी मौजूद रहता है।

प्रवास–पु० (सं०) परदेशमें रहना, विदेशवास; परदेश जाना। **–गत,–स्थ,–स्थित**–वि० परदेश गया हुआ, जो घर न हो।

प्रवासन–पु० (सं०) बाहर रहना; देशनिष्कासन; वध।

प्रवासित–वि० (सं०) देशसे निकाला हुआ।

प्रवासी(सिन्)–वि० (सं०) परदेशमें रहनेवाला।

प्रवास्य–वि० (सं०) देशनिकाला देने योग्य।

प्रवाह–पु० (सं०) बहनेकी क्रिया या भाव, बहाव; जल आदिकी धारा; किसी वस्तुका अटूट क्रम, बँधा हुआ तार, अखंड परंपरा; शवादिको नदीके पानीमें बहा देना; घटनाक्रम; तालाब; झील; अच्छा घोड़ा; व्यवहार।

प्रवाहक–वि० (सं०) अच्छी तरह वहन करनेवाला। पु० राक्षस।

प्रवाहणी–स्त्री० (सं०) मलमार्गकी एक पेशी जो मलको बाहर निकालती है।

प्रवाहिका–स्त्री० (सं०) ग्रहणी रोग; बहनेवाली, धारा, नदी–'मधुर लालसाकी लहरोंसे यह प्रवाहिका स्पंदित होती'–कामायनी।

प्रवाहित–वि० (सं०) बहाया हुआ; ढोया हुआ।

प्रवाहिनी–स्त्री० (सं०) नदी।

प्रवाही–स्त्री० (सं०) बालू।

प्रवाही(हिन्)–वि० (सं०) बहनेवाला, प्रवाहयुक्त; ले जानेवाला; चलानेवाला।

प्रविकट–वि० (सं०) बहुत बड़ा, विशाल।

प्रविकर्षण–पु० (सं०) खींचना, तानना।

प्रविकीर्ण–वि० (सं०) छितराया, फैलाया हुआ।

प्रविख्यात–वि० (सं०) सुप्रसिद्ध, बहुत मशहूर।

प्रविख्याति–स्त्री० (सं०) अतिशय प्रसिद्धि।

प्रविग्रह–पु० (सं०) संधिविच्छेद।

प्रविचय–पु० (सं०) खोज, अनुसंधान, जाँच-पड़ताल।

प्रविचित–वि० (सं०) जाँचा हुआ, परीक्षित।

प्रविचेतन–पु० (सं०) समझ, बोध।

प्रवितत–वि० (सं०) विशेष रूपसे फैला हुआ, दूरतक फैला हुआ, व्याप्त; बिखरे हुए (बाल)।

प्रविदार–पु० (सं०) स्फोट।

प्रविदारण–पु० (सं०) स्फुटन; विशेष विदारण; युद्ध; भीड़-भड़क्का।

प्रविद्ध–वि० (सं०) फेंका हुआ; मरा हुआ; परित्यक्त।

प्रविद्रुत–वि० (सं०) तितर-बितर किया हुआ; भगाया हुआ।

प्रविधान–वि० (सं०) किसी विषयपर विचार करना; वह उपाय जिसका प्रयोग किया गया हो।

प्रविधि–स्त्री० (टेकनीक) कोई (कलात्मक) कार्य करनेका विशेष ढंग, विशेष विधि या विशेष कौशल; कोई विशिष्ट विधि या कानून। –ज्ञ–पु० कला, उद्योग आदिकी विशिष्ट विधियोंका ज्ञाता।

प्रविध्वस्त–वि० (सं०) फेंका हुआ, उछाला हुआ; क्षुब्ध।

प्रविपल–पु० (सं०) विपलका एक छोटा भाग।

प्रविर–पु० (सं०) पीला चंदन।

प्रविरल–वि० (सं०) अति विरल।

प्रविलंब करना–स० क्रि० (रिप्रीव्ह) सजाकी कारवाई स्थगित कर देना या उसमें विलंब करना।

प्रविलय–पु० (सं०) पिघलना; पूर्ण लय।

प्रविवर–पु० (सं०) पद्माख।

प्रविविक्त–वि० (सं०) बिलकुल अलग; एकाकी।

प्रविषा–स्त्री० (सं०) अतिविषा नामक वृक्ष, अतीस।

प्रविष्ट–वि० (सं०) घुसा हुआ, अंदर गया हुआ। –रोगी–पु० (इनडोर पेशेंट) वह रोगी जो चिकित्सालयमें ही रखकर चिकित्सा करनेके उद्देश्यसे भरती कर लिया गया हो, अंतर्वासी रोगी।

प्रविष्टि–स्त्री० (एंट्री) खाते, पुस्तक आदिमें लिखने, चढ़ाने या दर्ज करनेकी क्रिया; वह चीज जो इस प्रकार लिखी या दर्ज की गयी हो।

प्रविसना*–अ० क्रि० प्रवेश करना, घुसना।

प्रविस्तर, प्रविस्तार–पु० (सं०) घेरा, फैलाव।

प्रवीण–वि० (सं०) निपुण, कुशल।

प्रवीणता–वि० (सं०) निपुणता, कौशल।

प्रवीन*–वि० दे० 'प्रवीण'। स्त्री० अच्छी वीणा।

प्रवीर–पु० (सं०) अच्छा वीर, सुभट। वि० उत्तम; बली। –बाहु –पु० एक राक्षस।

प्रवृत–वि० (सं०) चुना हुआ; (दत्तकके रूपमें) ग्रहण किया हुआ। –होम–पु० एक प्रकारका होम।

प्रवृत्त–वि० (सं०) प्रवृत्तियुक्त, लगा हुआ, रत; जिसका आरंभ हुआ हो, आरब्ध; निश्चित; निर्दिष्ट; निर्बाध; निर्विवाद; वर्तुलाकार। पु० एक गोलाकार गहना; कार्य।

प्रवृत्तक–पु० (सं०) एक मात्रावृत्त।

प्रवृत्ति–स्त्री० (सं०) प्रवाह, बहाव; मनका किसी विषयकी ओर झुकाव; वार्ता, वृत्तांत; आरंभ; उत्पत्ति; आचार-व्यवहार; अध्यवसाय; भाग्य; एक प्रकारका प्रयत्न (न्या०); शब्दोंके अर्थका बोध करानेकी एक शक्ति; इंद्रिय आदिका अपने-अपने विषयमें निरत होना, सांसारिक विषयोंके प्रति आसक्ति, निवृत्तिका उलटा; हाथीका मद; किसी नियमका किसी प्रसंगमें लगना। –ज्ञ–पु० भेदिया, जासूस। –निमित्त–पु० किसी शब्दके किसी विशिष्ट अर्थमें प्रयुक्त होनेका हेतु। –पराङ्मुख–वि० जो समाचार बतलाना न चाहता हो। –मार्ग–पु० संसारके धंधोंमें संलग्न रहना। –मूलक–वि० (टेनडेनशस) वह रचना जो किसी मत या दर्शनकी प्रवृत्तिका अन्धानुसरण करती है। –विज्ञान–पु० वाह्य जगत्का ज्ञान (बौ०)।

प्रवृद्ध–वि० (सं०) अतिशय वृद्धिको प्राप्त, बहुत अधिक बढ़ा हुआ; प्रौढ; घमंडी; उग्र; विशाल।

प्रवेक–वि० (सं०) प्रधान; सर्वोत्तम।

प्रवेग–पु० (सं०) अधिक वेग; (टेंपो) हिलने, चलने, काम करने आदिकी तीव्र गति; घटनाओं आदिका जल्दी-जल्दी और तेजीसे होना; (वेलॉसिटी) किसी वस्तुके तेजीसे आगे बढ़ने, नीचे गिरने आदिकी रफ्तार।

प्रवेट–पु० (सं०) जौ।

प्रवेणि, प्रवेणी–स्त्री० (सं०) वेणी, चोटी; जल आदिका प्रवाह; हाथीकी झूल; एक नदी।

प्रवेता(तृ)–पु० (सं०) रथ हाँकनेवाला, सारथि।

प्रवेदन–पु० (सं०) प्रकट करना, जाहिर करना।

प्रवेध–पु० (सं०) बाण छोड़ना; लंबाईकी एक माप (बौ०)।

प्रवेप, प्रवेपक, प्रवेपथु, प्रवेपन–पु० (सं०) काँपना, चंचल होना।

प्रवेरित–वि० (सं०) इधर-उधर फेंका हुआ।

प्रवेल–पु० (सं०) पीली मूँग।

प्रवेश–पु० (सं०) भीतर जाना, घुसना; पैठ, पहुँच, रसाई; किसी विद्यालय या अन्य संस्थामें भरती कर लिया जाना; किसी पात्रका रंगमंचपर आना (ना०); किसी विषय, शास्त्रकी जानकारी, अभिज्ञता; दूसरेके काममें दखल देना; थाती रखना; सूर्यका किसी राशिमें संक्रमण; द्वार; किसी कार्यमें संलग्न रहना; सुई देनेकी पिचकारी। –द्वार–पु० भीतर जानेका द्वार या रास्ता। –पत्र–(टिकट) किसी सिनेमा, नाटचशाला, संगीत-सम्मेलन आदिमें प्रवेशका अधिकार प्रदान करनेवाला पत्र; दे० 'अनुवेश-पत्र'। –रोधन–पु० (पिकेटिंग) अधिकारियों आदिसे अपनी माँगें पूरी करानेके लिए या लोगोंको कोई अनुचित काम करनेसे रोकनेके लिए कार्यालय, दूकान आदिके सामने अड़कर बैठ जाना जिससे उनके प्रवेशमें बाधा पड़े, धरना। –शुल्क–पु० प्रवेश पानेका अधिकार प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला धन।

प्रवेशक–पु० (सं०) प्रवेश करनेवाला; नाटकमें दो अंकोंके बीचका एक प्रकारका अंक जिसमें नीच पात्र न दिखायी हुई तथा भावी घटनाओंकी सूचना देते हैं।

प्रवेशन–पु० (सं०) प्रवेश कराना; प्रवेश; सदर दरवाजा, सिंह-द्वार; रतिक्रिया; ले जाना, पहुँचाना।

प्रवेशना*–अ० क्रि० प्रवेश करना। स० क्रि० प्रवेश कराना।

प्रवेशिका–स्त्री० (सं०) प्रवेश-पत्र या प्रवेश शुल्क; संस्कृत, अंग्रेजी आदिकी एक परीक्षा (आ०)।

प्रवेशित–वि० (सं०) घुसाया हुआ, पैठाया हुआ; पहुँचाया हुआ।

प्रवेश्य–वि० (सं०) प्रवेश करने योग्य, जिसमें प्रवेश किया जाय; जिसका प्रवेश कराया जाय; जो बजाया जाय (वाद्य यंत्र)। पु० बाहरसे आनेवाला माल, आयात। –शुल्क–पु० बाहरसे आनेवाले मालपर लगाया जानेवाला कर, आयातकर।

प्रवेष*–पु० दे० 'परिवेष'।

प्रवेष्ट–पु० (सं०) भुजा, कलाई; हाथीका मसूड़ा; हाथीकी पीठ; हाथीकी झूल।

प्रवेष्टक–पु० (सं०) दाहिनी भुजा, दायाँ हाथ।

प्रवेष्टा(ष्टृ)–वि०, पु० (सं०) प्रवेश करने या करानेवाला।

प्रव्यक्त–वि० (सं०) स्फुट, स्पष्ट।

प्रव्याहार–पु० (सं०) वाद-विवादका जारी रहना या बढ़ना।

प्रव्याहृत–वि० (सं०) कथित; जो भविष्यवाणीके रूपमें कहा गया हो।

प्रव्रजन–पु० (सं०) सन्यास लेना; (माइग्रेशन) किसी एक देश या प्रदेशादिसे अन्य देश या प्रदेशादिमें, वहाँ बस जानेकी गरजसे, चले जाना; दे० 'देशान्तरगमन'।

प्रव्रजित–वि० (सं०) जिसने सन्यास लिया हो, सन्यासी; जो भाग या बहक गया हो (घोड़ा आदि); जो बाहर चला गया हो। पु० सन्यासी; बौद्ध भिक्षुका शिष्य; सन्यास-ग्रहण; सन्यासाश्रम।

प्रव्रजिता–स्त्री० (सं०) जटामासी; मुंडी; तापसी, सन्यासिनी।

प्रव्रज्या–स्त्री० (सं०) सन्यास; सन्यासाश्रम; देशत्याग; विदेश-गमन। –ग्रहण–पु० सन्यास लेना। –व्रत–पु० हिंदुओंके उपनयनके ढंगका नेपाली बौद्धोंका एक प्रकारका संस्कार।

प्रव्रज्यावसित–पु० (सं०) वह जो सन्याससे च्युत हो गया हो। सन्यासभ्रष्ट।

प्रव्राज–पु० (सं०) सन्यास।

प्रव्राजक–पु० (सं०) सन्यासी। (स्त्री० 'प्रव्राजिका'।)

प्रव्राट्(ज्)–पु० (सं०) सन्यासी।

प्रशंस*–स्त्री० प्रशंसा, स्तुति। वि० प्रशंसाके योग्य।

प्रशंसक–वि०, पु० (सं०) प्रशंसा करनेवाला ।

प्रशंसन–पु० (सं०) प्रशंसा करना, गुणोंका बखान ।

प्रशंसना–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रशंसन' । * स० क्रि० प्रशंसा करना, तारीफ करना, सराहना ।

प्रशंसनीय–वि० (सं०) प्रशंसा करने योग्य, स्तुत्य ।

प्रशंसा–स्त्री० (सं०) गुणोंका बखान, गुणकीर्तन, तारीफ, बड़ाई; ख्याति । **–घोष**–पु० (एप्लॉज) किसी वक्ताके भाषण करते समय उसके किसी कथन या प्रस्तावादिके अनुमोदनमें श्रोताओं द्वारा की गयी प्रशंसासूचक ध्वनि; साधुवाद । **–मुखर**–वि० उच्च स्वरमें प्रशंसा करनेवाला ।

प्रशंसित–वि० (सं०) जिसकी प्रशंसा की गयी हो ।

प्रशंसी(सिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रशंसक' ।

प्रशंसोपमा–स्त्री० (सं०) उपमाका एक भेद जिसमें उपमेयकी प्रशंसाके द्वारा उपमानका उत्कर्ष दिखाया जाता है ।

प्रशंस्य–वि० (सं०) प्रशंसाके योग्य; अपेक्षाकृत अच्छा ।

प्रशक्य–वि० (सं०) अपनी शक्तिभर करनेवाला ।

प्रशत्वरी–स्त्री० (सं०) नदी ।

प्रशत्वा(त्वन्)–पु० (सं०) समुद्र ।

प्रशम–पु० (सं०) शांत करना, शमन; निवृत्ति; शांति ।

प्रशमन–पु० (सं०) शांत करना, दवाना, शमन; नीरोग करना; रक्षण; वध; शांति ।

प्रशल–पु० (सं०) दे० 'प्रसल' ।

प्रशस्त–वि० (सं०) जिसकी प्रशंसा की गयी हो; प्रशसाके योग्य, स्तुत्य; श्रेष्ठ, उत्तम; शुभ; विस्तृत; लंबा-चौड़ा; चौड़ा मार्ग, (ललाट); साफ-सुथरा (हिं०) । **–पाद**–पु० न्यायके एक प्राचीन आचार्य । **–वचन**–पु० प्रशंसा-वाक्य, स्तुति ।

प्रशस्ताद्रि–पु० (सं०) मध्यदेशके पासका एक पहाड़ ।

प्रशस्ति–स्त्री० (सं०) प्रशंसा, तारीफ, बड़ाई; वर्णन; किसीकी प्रशंसामें लिखी गयी कविता आदि; राजाका वह आज्ञापत्र जो पत्थर आदिपर खोदा जाता था और जिसमें राजवंश तथा उसकी कीर्ति आदिका वर्णन रहता था; वह प्रशंसासूचक वाक्य जो पत्रके आदिमें लिखा जाता है, सरनामा; प्राचीन ग्रंथ या पुस्तकका वह आदि और अंतवाला अंश जिससे उसके रचयिता, काल, विषय आदिका ज्ञान होता है, पुष्पिका । **–गाथा**–स्त्री० प्रशंसात्मक गीत । **–पट्ट**–पु० आज्ञापत्र, लेखपत्र ।

प्रशस्य–वि० (सं०) प्रशंसाके योग्य, स्तुत्य, प्रशंसनीय (इसका अतिशयार्थक रूप श्रेष्ठ है) ।

प्रशांत–वि० (सं०) शांत किया हुआ; शांत; सधाया हुआ, वशमें किया हुआ; मृत । पु० एशिया और अमेरिकाके बीचका एक महासागर, 'पैसिफिक' । **–काम**–वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों, संतुष्ट । **–चित्त,–धी**–वि० जिसका मन शांत हो । **–चेष्ट**–वि० जिसने प्रयत्न करना छोड़ दिया है । **–बाध**–वि० जिसकी सब बाधाएँ दूर हो गयी हों ।

प्रशांतक–पु० (ट्रांक्विलाइज़र) ऐसी औषध जो उत्तेजनाका शमन करती है । उच्च रक्त-चापके उपचारमें प्रशान्तक उपयोगी सिद्ध होते हैं ।

प्रशांतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दे० 'प्रशांतचित्त' ।

प्रशांति–स्त्री० (सं०) शांति; विश्राम; शमन ।

प्रशांतोर्ज–वि० (सं०) जिसकी शक्ति क्षीण हो गयी हो ।

प्रशाख–वि० (सं०) जिसकी बहुत-सी शाखाएँ चारों ओर फैली हों; (भ्रूण) जो अपनी पाँचवीं अवस्थामें हो (जब हाथ-पैरोंका निर्माण होता है) ।

प्रशाखा–स्त्री० (सं०) शाखासे निकली हुई शाखा; टहनी (शाखाके अनुसार इसके भी लाक्षणिक अर्थ हो सकते हैं) ।

प्रशाखिका–स्त्री० (सं०) टहनी, छोटी डाल ।

प्रशासक–पु० (सं०) शासन करनेवाला; (ऐडमिनिस्ट्रेटर) राज्य या शासनप्रबंध करनेवाला अधिकारी; भूसंपत्तिका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी; आचार्य, उपदेष्टा ।

प्रशासन–पु० (सं०) शिष्य आदिको दी जानेवाली कर्तव्यकी शिक्षा; शासन; (ऐडमिनिस्ट्रेशन) राज्यके शासन या परिचालनका प्रवंध । **–पत्र**–पु० (लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन) न्यायालय द्वारा जारी किया गया वह आदेश-पत्र जिसके अनुसार इच्छापत्रहीन संपत्तिका प्रबंध करनेके लिए प्रशासककी नियुक्ति हो । **–भंग**–पु० (ब्रेक डाउन ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन) आंतरिक उपद्रव, आर्थिक संकट आदिके कारण शासन-व्यवस्थाका ठप हो जाना ।

प्रशासनीय कृत्य–पु० (एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शंस) राज्यके प्रशासनसे संबंध रखनेवाले काम ।

प्रशासित–वि० (सं०) विशेष रूपसे शासित; आदिष्ट ।

प्रशासिता(तृ)–पु० (सं०) शासन करनेवाला, शासनकर्ता ।

प्रशास्ता(स्तृ)–पु० (सं०) शासन करनेवाला, शासनकर्ता, राजा; होताका प्रधान सहायक, मैत्रावरुण; परामर्शदाता ।

प्रशास्त्र–पु० (सं०) प्रशास्ता नामक ऋत्विक्‌का पद या कार्य; वह पात्र जिसमें प्रशास्ता सोमपान करता है । वि० प्रशास्ता-संबंधी ।

प्रशिक्षण–पु० (ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय, कला, शिल्पादिकी या कुश्ती, दौड़ आदिकी व्यावहारिक रूपमें लगातार कुछ समयतक दी जानेवाली शिक्षा । **–महाविद्यालय**–पु० (ट्रेनिंग कालेज) वह महाविद्यालय जिसमें अध्यापकों आदिके प्रशिक्षणकी व्यवस्था हो । **–विद्यालय**–पु० (नार्मल स्कूल) अध्यापनकलाकी शिक्षा देनेवाला विद्यालय । **–शिविर**–पु० (ट्रेनिंग कैंप) वह शिविर जहाँ किसी कार्य, कला आदिके प्रशिक्षणकी व्यवस्था की गयी हो ।

प्रशिक्षणार्थी–पु० (ट्रेनी) वह जो प्रशिक्षण पा रहा हो ।

प्रशिक्षित–वि० (ट्रेंड) जिसने किसी व्यवसाय, कला आदिकी क्रियात्मक शिक्षा पायी हो ।

प्रशिष्ट–वि० (सं०) शासित; आदिष्ट ।

प्रशिष्य–पु० (सं०) शिष्यका शिष्य ।

प्रशीत–वि० (सं०) ठंढसे जमा हुआ ।

प्रशीतक–पु० (रिफ्रिजरेटर) वह यंत्र या विशिष्ट आलमारी जिसमें खाद्यपदार्थ, औषध आदिको रखकर इस तरह ठंडा वना दिया जाता है कि वे सड़ने-गलने नहीं पाते; हिमीकर ।

प्रशीताद–पु० नाविकों तथा पोषकतत्वहीन खाद्योंका सेवन करनेवालोंको होनेवाला रोग जिसमें मसूड़ोंमें सूजन हो जाती है और मुंहसे दुर्गंध आती है (स्कर्वी) ।

प्रशीतित्र–पु० (रिफ्रिजरेटर) अधिक ठंडक पहुँचाकर किसी खाद्य वस्तुको जमा देने या सुरक्षित वनाये रखनेका यंत्र; प्रशीतक ।

प्रशुल्क–पु० (टैरिफ) आयात-निर्यात-वस्तुओंपर लगनेवाला कर । **–मंडल**–पु० (टैरिफबोर्ड) किन वस्तुओंके आयात या निर्यातपर कितना कर लगाया जाय, इस संबंधमें समुचित विचार कर सरकारको सलाह देनेवाली विशेषज्ञोंकी समिति ।

प्रशून–वि० (सं०) सूजा हुआ ।

प्रशोचन–पु० (सं०) जलाना, दागना ।

प्रशोभित–वि० अधिक शोभासे युक्त ।

प्रशोष–पु० (सं०) सूखना, खुश्क होना ।

प्रशोषण–पु० (सं०) एक रोगकारक राक्षस ।

प्रश्चोतन–पु० (सं०) चूनेकी क्रिया, चूना, क्षरण ।

प्रश्न–पु० (सं०) सवाल; पूछ-ताछ; पूछी जानेवाली बात; भविष्य-संबंधी जिज्ञासा; विचारणीय विषय, समस्या; पुस्तकका कोई छोटा खंड, 'पैराग्राफ'; एक उपनिषद् । **–कथा**–स्त्री० वह कथा जिसमें कोई प्रश्न हो । **–चिह्न**–पु० प्रश्न-वाक्यके अंतमें लगाया जानेवाला विरामचिह्न (?); जटिल समस्या । **–दूती**–स्त्री० पहेली । **–पत्र**–पु० वह परचा जिसपर उत्तर देनेके लिए प्रश्न अंकित हों । **–वादी(दिन्)**–पु० ज्योतिषी, दैवज्ञ । **–विवाक**–पु० वह ज्योतिषी जो ग्रहदशा आदि-संबंधी प्रश्नोंका उत्तर दे (वै०); मध्यस्थ, पंच । **–विवाद**–पु० विवादास्पद प्रश्न ।

प्रश्नावली–स्त्री० (इग्जांपिल्स, एक्सरसाइज) पाठ्य-पुस्तकोंमें छात्रोंके अभ्यासके लिए एकत्र दिये हुए प्रश्न; दे० 'प्रश्नावली-पत्रक' । **–पत्रक**–पु० (क्वेश्चनेयर) किसी व्यवसायादिकी स्थिति या अन्य विषयकी जानकारी प्राप्त करनेके लिए उससे संबंध रखनेवाले विभिन्न व्यक्तियोंके पास लिखित रूपमें भेजा जानेवाला संबद्ध प्रश्नोंका समूह जिनका उत्तर देनेका उनसे अनुरोध किया जाता है ।

प्रश्नी(श्निन्)–वि०, पु० (सं०) प्रश्न पूछनेवाला, पूछ-ताछ करनेवाला।

प्रश्नोत्तर–पु० (सं०) सवाल-जवाब; एक अलंकार जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी–स्त्री० (कैटेकिज्म) वह पुस्तक जिसमें कोई विषय प्रश्नों तथा उनके उत्तरोंके रूपमें समझाया गया हो।

प्रश्नोपनिषद्–स्त्री० (सं०) अथर्ववेदकी एक उपनिषद्।

प्रश्रथ–पु० (सं०) शैथिल्य, ढीलापन।

प्रश्रब्धि–स्त्री० (सं०) विश्वास।

प्रश्रय, प्रश्रयण–पु० (सं०) विनय; प्रणय, प्रीति; सहारा (आ०)।

प्रश्रयी(यिन्)–वि० (सं०) नम्र; सरलप्रकृति; मिलनसार।

प्रश्रवण–पु० (सं०) एक पर्वत।

प्रश्रित–वि० (सं०) दे० 'प्रश्रवी'।

प्रश्लथ–वि० (सं०) शिथिल; क्लांत।

प्रश्लिष्ट–वि० (सं०) सुसंवद्ध; युक्तियुक्त; (स्वर-वर्ण) जिनमें संधि हुई हो।

प्रश्लेष–पु० (सं०) घनिष्ठ संबंध; स्वरोंकी संधि।

प्रश्वास–पु० (सं०) साँस बाहर निकालना; बाहर निकली हुई साँस।

प्रष्टव्य–वि० (सं०) पूछने योग्य, जो पूछा जाय।

प्रष्टा(ष्टृ)–वि०, पु० (सं०) पूछनेवाला, प्रश्नकर्ता।

प्रष्ठ–वि० (सं०) आगे चलनेवाला, अग्रगामी; श्रेष्ठ, प्रधान। **–वाट्(ह्)**–पु० वह बैल जो हलमें निकाला जा रहा हो।

प्रष्ठौही–स्त्री० (सं०) वह गाय जो पहले पहल गाभिन हुई हो।

प्रसंख्या–स्त्री० (सं०) कुल अंकोंका जोड़; मनन, ध्यान।

प्रसंख्यान–पु० (सं०) जोड़ लगाना; गणना; सम्यक् ज्ञान; ध्यान; ख्याति; अदायगी, चुकता।

प्रसंग–पु० (सं०) प्रकृष्ट संग; संबंध, लगाव; व्याप्तिरूप संबंध; विषयका तारतम्य, प्रकरण; एक प्रकारकी संगति (न्या०); अवैध संबंध; स्त्री-पुरुषका संयोग, समागम; अनुरक्ति, आसक्ति; प्राप्ति; सिलसिला; अवसर, मौका; * बात, विषय। **–यान**–पु० एक स्थानपर आक्रमण करनेकी बात चलाकर दूसरे स्थानपर आक्रमण कर देना। **–विध्वंस,–विभ्रंश**–पु० मानमोचनका एक उपाय। **–विनिवृत्ति**–स्त्री० किसी बातका घटित न होना। **–सम**–पु० प्रमाणको भी प्रमाणित करनेका कुतर्क (न्या०)।

प्रसंगी(गिन्)–वि० (सं०) प्रसंगयुक्त; अनुराग रखनेवाला, अनुरागी; सहवास करनेवाला; गौण; आकस्मिक।

प्रसंघ–पु० (सं०) भारी संघ; बहुत बड़ा समूह।

प्रसंजन–पु० (सं०) संयोग करना, मिलाना; प्रयोगमें लाना।

प्रसंधान–पु० (सं०) संधि, योग, मेल।

प्रसंविदा–स्त्री० दे० 'संविदा', करार, इकरारनामा।

प्रसंसना*–स० क्रि० प्रशंसा करना।

प्रसक्त–वि० (सं०) जो प्रसंगका विषय हो, प्रसंगप्राप्त; संबद्ध, लगा हुआ; आसक्त, निरत; बराबर बना रहनेवाला, नित्य; स्थायी; प्राप्त; निकट, सटा हुआ; स्फुटित।

प्रसक्ति–स्त्री० (सं०) प्रसंग; आसक्ति; आपत्ति; अनुमिति; व्याप्ति; अध्यवसाय; प्राप्ति।

प्रसज्य–वि० (सं०) जो संबद्ध किया जाय; जो प्रयोगमें लाया जाय; संभव। **–प्रतिषेध**–पु० वह निषेध जिसमें प्रतिषेधकी प्रधानता रहती है और विधिकी अप्रधानता।

प्रसत्ति–स्त्री० (सं०) निर्मलता; प्रसन्नता; अनुग्रह।

प्रसत्त्वा(त्त्वन्)–पु० (सं०) धर्म; प्रजापति।

प्रसन्न–वि० (सं०) निर्मल; प्रसादयुक्त; स्वच्छ; शांत; संतुष्ट; हर्षयुक्त, खुश; उचित, युक्त; कृपालु। **–कल्प**–वि० शांतप्राय; सत्यप्राय। **–जल**, पु०,**–तोया,–सलिला**–वि० स्त्री० जिसका पानी साफ हो (नदी)। **–मुख,–वदन**–वि० जिसके चेहरेसे प्रसन्नता प्रकट होती हो।

प्रसन्नता–स्त्री० (सं०) प्रसन्न होनेका भाव; स्वच्छता; स्पष्टता।

प्रसन्नांध–पु० (सं०) घोड़ेका एक नेत्ररोग।

प्रसन्ना–स्त्री० (सं०) चावलसे बनी हुई मदिरा; प्रसन्न करनेकी क्रिया।

प्रसन्नात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु। वि० प्रसन्न, संतुष्ट।

प्रसन्नित*–वि० प्रसन्न, खुश।

प्रसन्नेरा–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी मदिरा।

प्रसभ–पु० (सं०) बलात्कार, जब्र। **–दमन**–पु० (जंगली पशुओंका) बलात् दमन करना, सधाना। **–हरण**–पु० बलपूर्वक हरण कर ले जाना।

प्रसयन–पु० (सं०) जाल; बाँधनेकी रस्सी आदि।

प्रसर–पु० (सं०) आगे बढ़ना, बढ़ाव; फैलना, फैलाव, विस्तार; वेग; प्रवाह; प्रलय; समूह; बढ़ावा; साहस; युद्ध; प्रेमपूर्ण यांचा; लोहेका बाण, नाराच; प्रवार; आसार; वात, पित्त आदिका घट-बढ़ जाना।

प्रसरण–पु० (सं०) आगे बढ़ना, सरकना; पलायन; फैलना, प्रसार; सेनाका चारों ओर फैलकर शत्रुको घेरना; स्वभावका माधुर्य।

प्रसरणी–स्त्री० (सं०) सेनाका चारों ओर फैलकर शत्रुको घेरना।

प्रसरा–स्त्री० (सं०) प्रसारणी लता।

प्रसरित–वि० फैला हुआ; आगे बढ़ा हुआ।

प्रसर्ग–पु० (सं०) फेंकना, चलाना; पृथक् करना।

प्रसर्जन–पु० (सं०) फेंकना, चलाना; बरसाना।

प्रसर्प–पु० (सं०) यज्ञशालाके 'सदस्' नामक मंडपमें जाना; एक प्रकारका साम।

प्रसर्पण–पु० (सं०) आगे बढ़ना, खिसकना; सेनाका चारों ओर फैल जाना; यज्ञशालाके 'सदस्'में प्रवेश करना।

प्रसर्पणी–स्त्री० (सं०) सेनाका चारों ओर फैल जाना।

प्रसर्पी(र्पिन्)–वि० (सं०) सरकनेवाला, आगे जानेवाला; रेंगनेवाला।

प्रसल–पु० (सं०) हेमंत।

प्रसवंती–स्त्री० (सं०) प्रसव-वेदना-ग्रस्त स्त्री।

प्रसव–पु० (सं०) बच्चा जनना, गर्भमोचन; उत्पत्ति; उत्पत्तिस्थान; फल; फूल; अपत्य, संतति। **–गृह**–पु० बच्चा जननेका घर, सौरी। **–धर्मी(र्मिन्)**–वि० फलप्रद; उत्पादक। **–बंधन**–पु० वह पतला सीका जिसपर फूल, फल लगते हैं, वृंत। **–वेदना, व्यथा**–स्त्री० प्रसवकी पीड़ा, बच्चा जनते समय होनेवाली पीड़ा। **–स्थान**–स्त्री० माता; उत्पत्तिस्थान। **–स्थली**–पु० बच्चा जननेकी जगह; घोंसला।

प्रसवक–पु० (सं०) पियाल वृक्ष, चिरौंजीका पेड़।

प्रसवन–पु० (सं०) बच्चा जनना, गर्भमोचन; उत्पन्न करना।

प्रसवना*–स० क्रि० जन्म देना। अ० क्रि० उत्पन्न होना।

प्रसवावकाश–पु० (मैटरनिटी लीव) किसी स्त्रीको प्रसव-कालके समय दी जानेवाली छुट्टी, प्रसूत्यवकाश।

प्रसविता(तृ)–पु० (सं०) उत्पन्न करनेवाला, पिता, जनक।

प्रसवित्री–स्त्री० (सं०) माता।

प्रसविनी–वि० स्त्री० (सं०) जन्म देनेवाली, उत्पन्न करनेवाली।

प्रसवी(विन्)–वि० (सं०) जन्म देनेवाला, उत्पन्न करनेवाला।

प्रसवोत्तरकाल–पु० (पोस्टनेटल पीरियड) शिशुको जन्म दे चुकनेके बादकी जननीकी स्थिति या समय।

प्रसव्य–वि० (सं०) प्रतिकूल; जो बायीं ओर हो, बायाँ; अनुकूल; प्रसवनीय।

प्रसह–पु० (सं०) शिकारी चिड़िया या पशु; प्रतिरोध; सहन।

प्रसहन–पु० (सं०) हिंस्र पशु; सहना; प्रतिरोध; आलिंगन; पराभूत करना।

प्रसहा–स्त्री० (सं०) बृहतिका।

प्रसह्य–अ० (सं०) बलात्, बलपूर्वक। **–चौर**–पु० डाकू, लुटेरा। **–हरण**–पु० बलात् हर लेना, छीन लेना; लूट लेना।

प्रसातिका–स्त्री० (सं०) बारीक दानेका अन्न (साँवाँ आदि)।

प्रसाद–पु० (सं०) निर्मलता, स्वच्छता; अनुग्रह, कृपा; देवताको चढ़ायी गयी वस्तु; हर्ष, प्रसन्नता; मानसिक शांति; स्वभावकी सरलता; महात्मा या गुरुकी जूठन या उसके खा चुकनेपर बची हुई भोज्य वस्तु; काव्यके तीन गुणोंमेंसे एक, किसी काव्य या रचनाका

विशेष रूपसे सरल और सुबोध होना; धर्मका एक पुत्र; भोजन (भक्त–साधुओंकी बोलीमें); * दे० 'प्रासाद'। –**पट्ट**–पु० राजाकी ओरसे सम्मानार्थ दिया जानेवाला शिरोवस्त्र। –**पराङ्मुख**–वि० प्रतिकूल, अप्रसन्न; किसीकी कृपाकी परवा न करनेवाला। **प्रसादपर्यंत**–अ० (ड्यूरिंग दि प्लेजर ऑफ) (राष्ट्रपति आदि) जबतक चाहें तबतक, जबतक इच्छा या खुशी हो तबतक। –**पात्र**–पु० कृपापात्र। –**स्थ**–वि० कृपायुक्त, मेहरबान, प्रसन्न।

प्रसादक–पु० (सं०) निर्मल बनानेवाला; प्रसन्न करनेवाला; देश, धन आदिका अधार्मिकके हाथसे धर्मनिष्ठके हाथमें जाना (कौ०)।

प्रसादन–वि० (सं०) निर्मल बनानेवाला, प्रसाद-कारक, प्रसन्न करनेवाला। पु० प्रसन्न करना; (प्रोपिशियेशन) किसी व्यक्तिको संतुष्ट या प्रसन्न कर अपने अनुकूल बनाना; राजाका खेमा।

प्रसादना–स्त्री० (सं०) सेवा; पूजा; स्वच्छ करना। * स० क्रि० प्रसन्न करना।

प्रसादनीय–वि० (सं०) प्रसन्न करने योग्य।

प्रसादित–वि० (सं०) शांत, प्रसश्न किया हुआ; आराधित; स्वच्छ किया हुआ।

प्रसादी–स्त्री० किसी देवताको चढ़ायी हुई वस्तु; महात्मा, गुरु या किसी मान्य व्यक्ति द्वारा दी गयी वस्तु।

प्रसादी(दिन्)–वि० (सं०) निर्मल बनानेवाला; प्रसन्न करनेवाला; प्रसादयुक्त, प्रसन्न।

प्रसाधक–वि० (सं०) श्रृंगार करनेवाला, भूषक; सिद्ध या निष्पन्न करनेवाला, साधनकर्ता, निष्पादक। पु० राजाका वह सेवक जो उसे वस्त्र, भूषण आदि पहनाता है।

प्रसाधन–पु० (सं०) श्रृंगार, बनाव; (टाइलेट) बालोंको सजाने, साबुन लगाने, ओठ या पैर रँगने आदिकी क्रिया; श्रृंगारकी सामग्री, भूषण, कंघी आदि जिससे श्रृंगार किया जाता है; निष्पादन, सिद्धि। –**द्रव्य**–पु०,–**सामग्री**–स्त्री० (टाइलेट) श्रृंगार या प्रसाधनमें काम आनेवाली वस्तुएँ।

प्रसाधनी–स्त्री० (सं०) कंघी।

प्रसाधिका–स्त्री० (सं०) श्रृंगार करनेवाली, प्रसाधनकर्त्री; तिन्नी धान।

प्रसाधित–वि० (सं०) जिसका प्रसाधन या बनाव-श्रृंगार किया गया हो, अलंकृत; निष्पादित, संपादित; प्रमाणित।

प्रसार–पु० (सं०) फैलानेकी क्रिया, फैलाव, पसार; फैलने या व्याप्त होनेकी क्रिया; संचार, इधर-उधर जाना, फिरना; (मुँह) खोलना।

प्रसारक–वि० (सं०) फैलानेवाला।

प्रसारण–पु० (सं०) फैलानेकी क्रिया, फैलाना, पसारना; आगे करना; बढ़ाना; फैलकर शत्रुको घेर लेना; (विक्रयके लिए) खोलकर दिखलाना; (ब्रॉडकास्टिंग) कोई समाचार, भाषण, गायन आदि दूर-दूरके लोगोंको सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाना।

प्रसारना*–स० क्रि० पसारना, फैलाना।

प्रसारिणी–स्त्री० (सं०) गंधप्रसारिणी नामकी लता; अपामार्ग; लाजवंती; फैलकर शत्रुको घेर लेना; एक श्रुति (संगीत)। वि०, स्त्री० फैलानेवाली।

प्रसारित–वि० (सं०) फैलाया हुआ, पसारा हुआ; (विक्रयके लिए) प्रदर्शित; (ब्रॉडकास्ट) दूर-दूरके लोगोंको सुनानेके लिए आकाशवाणी द्वारा चारों ओर फैलाया हुआ।

प्रसारी(रिन्)–वि० (सं०) फैलानेवाला; निकलनेवाला (समासमें)।

प्रसार्य–वि० (सं०) प्रसारणके योग्य, फैलाने योग्य।

प्रसाविका–स्त्री० (मिडवाइफ) प्रसव कराने, बच्चा जनानेवाली स्त्री, धात्री।

प्रसाह–पु० (सं०) वशमें करना, जीतना; आत्मशासन।

प्रसित–वि० (सं०) आबद्ध; आसक्त; संलग्न; अति शुभ्र, बहुत साफ। पु० पीव, मवाद।

प्रसिति–स्त्री० (सं०) बंधन; बंधनका साधन, रस्सी, जंजीर आदि; जाल; तंतु; आक्रमण; विस्तार; क्षेपण; क्रम; अधिकार, प्रभाव।

प्रसिद्ध–वि० (सं०) सजाया या सँवारा हुआ, अलंकृत, भूपित; जिसकी प्रसिद्धि या शोहरत हो, ख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धि–स्त्री० (सं०) ख्याति; सजाने या सँवारनेकी क्रिया, श्रृंगार करना, भूषण, बनाव; सफलता, सिद्धि।

प्रसीदिका–स्त्री० (सं०) छोटी वाटिका।

प्रसुत–वि० (सं०) निचोड़ा या दबाया हुआ। पु० एक बहुत बड़ी संख्या।

प्रसुप्त–वि० (सं०) गहरी नींद सोया हुआ; संपुटित (फूल); संज्ञाहीन (सुश्रुत); निष्क्रिय, निश्चेष्ट।

प्रसुप्ति–स्त्री० (सं०) गहरी नींद; संज्ञाहीनता; निश्चेष्टता।

प्रसू–स्त्री० (सं०) उत्पन्न करनेवाली; माता; घोड़ी; केला; लता; अँखुआ; कोमल तृण।

प्रसूका–स्त्री० (सं०) घोड़ी।

प्रसूत–वि० (सं०) प्रसव किया हुआ; उत्पन्न, संजात। पु० फूल; उत्पत्तिका साधन; चाक्षुष मन्वंतरका एक देवगण।

प्रसूता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे कुछ ही काल पूर्व बच्चा पैदा हुआ हो, जच्चा।

प्रसूतालय–पु० (सं०) प्रसूतिगृह, सौरी।

प्रसूति–स्त्री० (सं०) प्रसव; उत्पत्ति; संतान; अपत्य; माता; प्रसूता, जच्चा। –**कल्याण-कार्य**–पु० (मैटरनिटी वेलफेयर वर्क) शिशुजननकी सुविधा तथा जच्चा-बच्चाकी भलाईसे संबद्ध कार्य, मातृकल्याणकार्य। –**गृह**–पु० बच्चा जननेका घर या स्थान, सौरी। –**ज**–पु० प्रसव-वेदना। –**ज्वर**–पु० प्रसवके कुछ काल बाद होनेवाला ज्वर। –**भवन**–पु० दे० 'प्रसूति-गृह'। –**वायु**–स्त्री० प्रसवकालमें गर्भाशयमें उत्पन्न होनेवाली वायु। –**विज्ञान**–पु० गर्भवती स्त्रियोंको संतान प्रसव करानेकी कलाका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

प्रसूतिका–स्त्री० (सं०) प्रसूता, जच्चा।

प्रसूत्यवकाश–पु० (मैटरनिटी लीव) दे० 'प्रसवावकाश'।

प्रसून–वि० (सं०) उत्पन्न, संजात। पु० फूल; फल। –**बाण**,–**शर**–पु० कामदेव। –**वर्ष**–पुष्पवर्षा।

प्रसूनक–पु० (सं०) फूल; कली।

प्रसूनेषु–पु० (सं०) कामदेव।

प्रसृत–वि० (सं०) आगे बढ़ा हुआ, खिसका हुआ; फैला हुआ, विस्तीर्ण; लंबा; संलग्न; विहित; गया हुआ, गत; नियुक्त; द्रुत; प्रदर्शित; नम्र। पु० अद्धांजलि, पसर; दो पलका एक मान। –**ज**–पु० एक प्रकारकी जारज संतान।

प्रसृता–स्त्री० (सं०) जंघा।

प्रसृति–स्त्री० (सं०) आगे बढ़ना; फैलाव; अद्धांजलि, पसर; दो पलका एक मान।

प्रसृष्ट–वि० (सं०) त्यागा हुआ, परित्यक्त।

प्रसृष्टा–स्त्री० (सं०) फैलायी हुई उँगली; युद्धका एक दाँव।

प्रसेक–पु० (सं०) सींचना, आसिंचन; चूना, क्षरण; मुँहसे पानी छूटना या नाकसे पानी गिरना; वमन; करछुलकी कटोरी।

प्रसेकी(किन्)–वि० (सं०) बहनेवाला; जिससे मवाद निकलता रहे; ऐसे व्रणवाला। पु० एक प्रकारका असाध्य व्रण या घाव।

प्रसेद*–पु० प्रस्वेद, पसीना।

प्रसेदिका–स्त्री० (सं०) छोटी वाटिका, क्षुद्राराम।

प्रसेदिवान्(वस्)–वि० (सं०) प्रसन्न।

प्रसेन–पु० (सं०) एक प्राचीन राजा (हरिवंश)।

प्रसेनजित्–पु० (सं०) एक प्राचीन राजा (हरिवंश)।

प्रसेव–पु० (सं०) प्रकृष्ट सेवन; वीणाकी तूंबी; कपड़े या चमड़ेका थैला।

प्रसेवक–पु० (सं०) वीणाकी तूंबी; कपड़े या चमड़ेका थैला।

प्रसोपा–पु० भारतका एक राजनीतिक दल, प्रजासमाजवादी दल (प्रजासोशलिस्ट पार्टी)।

प्रस्कंदन–पु० (सं०) कूदना, फलाँग; वह स्थान जहाँसे कूदा जाय; अतीसार; विरेचन; महादेव।

प्रस्कंदिका–स्त्री० (सं०) विरेचन; अतीसार।

प्रस्कण्व–पु० (सं०) एक ऋषि जो कण्वके पुत्र थे।

प्रस्कन्न–वि० (सं०) कूदा हुआ; गिरा हुआ, पतित; पराजित। पु० जातिच्युत व्यक्ति; पापी; नियम भंग करनेवाला व्यक्ति; घोड़ेका एक रोग।

प्रस्कुंद–पु० (सं०) वर्तुलाकार वेदी; सहारा, अवलंब।

प्रस्खलन–पु० (सं०) स्खलन, पतन।

प्रस्तर–पु० (सं०) पत्थर; पत्तों आदिका बिछावन; बिस्तरा, बिछावन; कुशका मुट्ठा; मणि, रत्न; एक प्रकारका ताल; चौरस मैदान; ग्रंथका अध्याय। **–भेद**–पु० पखानभेद, हड़ जोड़ नामक लता। **–मुद्रण**–पु० (लिथोग्राफ) विशेष प्रकारके पत्थरपर लिखकर या खोदकर छापनेका कार्य। **–युग**–पु० (स्टोन एज) वह ऐतिहासिक काल जब मनुष्य काटने, छीलने आदिके लिए प्रायः पत्थरके बने औजारोंका ही प्रयोग करते थे, पाषाणयुग।

प्रस्तरण–पु०, **प्रस्तरणा**–स्त्री० (सं०) बिछावन; आसन।

प्रस्तरिणी–स्त्री० (सं०) सफेद दूब; बच।

प्रस्तरीभूत–वि० (ऐसी विचारधाराएँ) जो अपनी पुराणपंथिताके कारण निर्जीव पत्थरकी तरह बेकार हो गयी हों।

प्रस्तरोपल–पु० (सं०) चंद्रकांत मणि।

प्रस्तव–पु० (सं०) स्तुति; सुअवसर।

प्रस्तार–पु० (सं०) फैलाना; ढकना; घासका जंगल; पत्तों आदिका बिछावन; बिछावन, बिस्तरा; परत; चौरस मैदान; सीढ़ी; एक प्रकारका ताल; छंदोंके भेद जाननेकी एक विधि; (परम्यूटेशन) वस्तुओं, अक्षरों, अंकों आदिको भिन्न-भिन्न प्रकारसे पंक्तियों या कतारोंमें रखना। **–पंक्ति**–स्त्री० एक छंद।

प्रस्तारी(रिन्)–वि० (सं०) फैलानेवाला (समासमें)। पु० एक नेत्ररोग।

प्रस्तार्यर्म–पु० (सं०) आँखका एक रोग।

प्रस्ताव–पु० (सं०) प्रकृष्ट स्तुति; अवसर, मौका; प्रसंग, प्रकरण; सामवेदका एक अंश जिसका गान प्रस्तोता नामक ऋत्विक् करता है; आरंभ; नाटककी प्रस्तावना; सभाके सामने विचारके लिए रखी हुई बात (आ०)। **–विवाद-नियंत्रण**–पु० (गिलोटिन ए मोशन) किसी विधेयक आदिके संबंधमें विरोधियों द्वारा अनावश्यक बाधा डाले जानेपर अध्यक्षका समय निर्धारित कर उसे इस प्रकार नियंत्रित करना जिसमें समय बीतनेके पहले ही उसके स्वीकृत या अस्वीकृत होनेका निश्चय हो जाय।

प्रस्तावक–पु० (सं०) प्रस्ताव करनेवाला।

प्रस्तावना–स्त्री० (सं०) आरंभ; नाटकके आरंभमें सूत्रधारका नटी, विदूषक या पारिपार्श्विकके साथ होनेवाला संलाप जिसमें प्रस्तुतका परिचय आदि रहता है; (प्रीएंबिल) किसी विधान, प्रलेख आदिका प्रारंभिक भाग; किसी भाषण, लेख आदिके आरंभका अंश, प्राक्कथन।

प्रस्तावित–वि० (सं०) आरंभ किया हुआ, आरब्ध; वर्णित, कथित; जिसका प्रस्ताव किया गया हो, जो प्रस्तावरूपमें रखा गया हो (आ०)।

प्रस्तिर–पु० (सं०) पत्तों आदिका बिछावन।

प्रस्तीत, प्रस्तीम–वि० (सं०) संहत; ध्वनित।

प्रस्तुत–वि० (सं०) विशेष रूपसे स्तुत; जिसकी चर्चा चल रही हो, प्रकरणप्राप्त, प्रासंगिक; उपस्थित; प्रयत्नसे किया हुआ; घटित; उद्यत, तैयार; आरब्ध। पु० छिड़ा हुआ विषय, प्रकरणप्राप्त विषय; उपमेय।

प्रस्तुतांकुर–पु० (सं०) एक काव्यालंकार जहाँ प्रस्तुतके कथनमें दूसरे वांछित प्रस्तुतका द्योतन किया जाय।

प्रस्तुतांगगृह-निर्माणशाला–स्त्री० (प्रीफैब्रिकेटेड हाउस फैक्टरी) वह कारखाना जहाँ मकानके अलग-अलग हिस्से पहलेसे तैयार किये जायँ ताकि बादमें उन्हें किसी भी स्थानपर एकत्र कर पूरी इमारत आसानीसे खड़ी की जा सके।

प्रस्तुति–स्त्री० (सं०) प्रशंसा (वै०); प्रकृष्ट स्तुति; निष्पत्ति।

प्रस्तोता(तृ)–वि० (सं०) विशेष रूपसे स्तवन करनेवाला। पु० सामका प्रथम भाग गानेवाला ऋत्विक्; प्रस्ताव करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला, उत्पादक; इधर-उधरसे सामग्री एकत्र कर लेख प्रस्तुत करनेवाला, संकलयिता; पीठस्थविर या रजिस्ट्रार।

प्रस्तोभ–पु० (सं०) एक प्रकारका साम; प्रसंग; संदर्भ।

प्रस्थंपच–वि० (सं०) परिमाणतः एक प्रस्थ पकानेवाला।

प्रस्थ–वि० (सं०) प्रकृष्ट रूपसे स्थित; प्रस्थान करनेवाला; फैलानेवाला; दृढ़, स्थिर। पु० पर्वतके ऊपरकी समतल भूमि, सानु; समतल भूमि, चौरस मैदान; विस्तार; बत्तीस पलका एक प्राचीन परिमाण, आढकका चतुर्थांश; एक प्रस्थके मापकी कोई वस्तु। **–कुसुम,–पुष्प**–पु० मरुवा; एक प्रकारका नीबू, तुलसीकी एक जाति।

प्रस्थल–पु० (सं०) एक प्राचीन देश।

प्रस्थान–पु० (सं०) गमन; रवानगी; जिगीषुकी युद्ध-यात्रा, कूच; प्रेषण; मार्ग; एक प्रकारका नाटक (सा०); विधि, पद्धति; मृत्यु, मरण; उपदेशका साधन (जैसे–उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र); वह वस्त्र आदि जो, शुभ मुहूर्त न मिलनेके कारण, यात्राके पहले गंतव्य स्थानकी दिशामें कहीं रख दिया जाता है (आ०)। **–त्रयी**–स्त्री० उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र।

प्रस्थानी*–वि० जानेवाला, प्रस्थान करनेवाला।

प्रस्थापक–पु० (प्रपोजर) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखने या सामने लानेवाला।

प्रस्थापन–पु० (सं०) प्रकृष्ट स्थापन; प्रस्थान करना; भेजना; दौत्यमें लगाना; प्रमाणित करना; प्रयोगमें लाना; पशुओंका हरण; यंत्रादिका बैठाया जाना।

प्रस्थापना–स्त्री० (सं०) भेजना, प्रेषण; (प्रपोजल) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव लाना; वह प्रस्ताव जो प्रस्थापक द्वारा सभा आदिमें रखा जाय; कोई विषय या सिद्धान्त प्रमाणादि सहित प्रस्तुत करना।

प्रस्थापित–वि० (सं०) विशेष रूपसे स्थापित; भेजा हुआ, प्रेषित; आगे बढ़ाया हुआ; प्रवर्तित।

प्रस्थापित करना–स० क्रि० (टु प्रपोज) (विधानसभा आदिमें) कोई प्रस्ताव रखना।

प्रस्थायी(यिन्)–वि० (सं०) जो प्रस्थान करनेको हो, जो कहीं जानेवाला हो।

प्रस्थिका–स्त्री० (सं०) अंवष्ठा लता।

प्रस्थित–वि० (सं०) जिसने प्रस्थान किया हो; विशेष रूपसे स्थित, दृढ़।

प्रस्थिति–स्त्री० (सं०) गमन, यात्रा, प्रस्थान, कूच; † विशेष स्थिति।

प्रस्न–पु० (सं०) स्नानपात्र; * दे० 'प्रश्न'।

प्रस्नव–पु० (सं०) बहना; निकलना; (पानी, दूध आदिकी) धारा; मूत्र।

प्रस्निग्ध–वि० (सं०) जिसमें तेल या चिकनाई अधिक हो।

प्रस्नुत–वि० (सं०) टपकने, बहनेवाला। **–स्तनी**–स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तनोंसे वात्सल्य प्रेमके कारण दूध टपक रहा हो।

प्रस्नुषा–स्त्री० (सं०) पोतेकी स्त्री, नतोहू।

प्रस्नेय–वि० (सं०) स्नान करने योग्य (जल आदि)।

प्रस्पंदन–पु० (सं०) प्रकंपन।

प्रस्फुट–वि० (सं०) सुस्पष्ट; प्रफुल्ल, विकसित; प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्फुटन–पु० (सं०) विकसित होना, खिलना; प्रकट होना।

प्रस्फुटित–वि० (सं०) फूटा या खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुर गणित्र–पु० (सिन्टिलेशन काउण्टर) नाभिकीय कणों तथा गामा किरणोंकी उपस्थितिका पता लगाने तथा उनकी गणना करनेवाला।

प्रस्फुरण–पु० (सं०) कंपन; निकलना; चमकना; स्पष्ट होना।

प्रस्फुरित–वि० (सं०) काँपता हुआ, हिलता हुआ।

प्रस्फोट–पु० (बम) विस्फोटक पदार्थोंसे भरा हुआ लोहेका गोला जो जहाजसे गिराया जाता और हाथसे तथा तोपमें भरकर भी फेंका जाता है; जोरकी आवाजके साथ एकबारगी फूट पड़ना।

प्रस्फोटन–पु० (सं०) विशेष रूपसे फूटना या विदीर्ण होना; भीतरकी चीजोंका जोरके साथ एकाएक बाहर निकलना; विकसित

होना, खिलना; ताड़न; सूप; (अन्न आदि) फटकना।

प्रस्मृत–वि० (सं०) भूला हुआ, विस्मृत।

प्रस्मृति–स्त्री० (सं०) भूलना, विस्मरण।

प्रस्यंद, प्रस्यंदन–पु० (सं०) बहना, चूना, क्षरण।

प्रस्रंस–पु० (सं०) गिरना, (गर्भका) पात (सुश्रुत)।

प्रस्रंसन–पु० (सं०) द्रावक पदार्थ।

प्रस्रंसी(सिन्)–वि० (सं०) गिरनेवाला; (वह गर्भ) जिसका पात हो जाय।

प्रस्रव–पु० (सं०) लगातार चूना या बहना; स्तनसे निकला हुआ दूध; प्रवाह, धारा; पेशाव; आँसू; उबलते हुए चावलका ऊपरसे बहकर गिरता हुआ माँड़।

प्रस्रवण–पु० (सं०) जल आदिका लगातार चूना या बहना; पसीना; स्तनसे निकलता हुआ दूध; पेशाब करना; वह स्थान जहाँसे पानी गिरता या बहता है; झरना, प्रपात; माल्यवान् पर्वत।

प्रस्रवणी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी योनि या भग।

प्रस्राव–पु० (सं०) चूनेकी क्रिया, क्षरण, बहाव; पेशाव; उबलते हुए चावलका ऊपरसे बहता हुआ माँड़।

प्रस्रुत–वि० (सं०) क्षरित; झड़ा हुआ।

प्रस्वन, प्रस्वान–पु० (सं०) उच्च शब्द, जोरकी आवाज।

प्रस्वाप–पु० (सं०) सोनेकी क्रिया, सोना; स्वप्न; एक अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर शत्रुको नींद आ जाती है।

प्रस्वापक–वि० (सं०) सुलानेवाला; मारक।

प्रस्वापन–पु० (सं०) सुलाना; एक अस्त्र जिसका प्रयोग करनेपर विपक्षीको नींद आ जाती है।

प्रस्वापिनी–स्त्री० (सं०) सत्यभामाकी एक बहन जो कृष्णकी पत्नी थी (हरिवंश)।

प्रस्वार–पु० (सं०) ओंकार (वै०)।

प्रस्विन्न–वि० (सं०) जिसे पसीना आ गया हो।

प्रस्वीकृत–वि० (रिकॉगनाइज्ड) जो अधिकृत रूपसे मान लिया गया हो; जिसे औपचारिक रूपसे मान्यता (संबद्ध होने आदिकी स्वीकृति) दे दी गयी हो; मान्यताप्राप्त।

प्रस्वीकृति–स्त्री० (रिकॉगनिशन) प्रधान या केंद्रीय संस्था द्वारा अन्य छोटी संस्था या संस्थाओंका अस्तित्व, प्रामाणिकता आदि मान लिया जाना, मान्यता; किसी वस्तुकी यथार्थता, विशेषता, दावे आदि मान लेना।

प्रस्वेद–पु० (सं०) पसीना।

प्रस्वेदन–पु० (फोमेंटेशन) पसीना लाने, गरम जलसे सेंकने आदिकी क्रिया, सेंक, वाष्प-तापन; (डेलिक्वेसेन्स) कुछ यौगिक ऐसे होते हैं जो वायुमण्डलसे जलवाष्प इतनी अधिक मात्रामें अवशोषित कर लेते हैं कि वे उसमें घुलकर द्रव बन जाते हैं। इस गुणको प्रस्वेदन कहते हैं; जैसे कैल्शियम क्लोराइडमें प्रस्वेदन होता है।

प्रस्वेदित–वि० (सं०) जिसे पसीना आ गया हो; तप्त, पसीना लानेवाला।

प्रस्वेदी(दिन्)–वि० (सं०) पसीनेसे तर-बतर।

प्रहंतव्य–वि० सं०) वध्य।

प्रहणन–पु० (सं०) वध, मारण।

प्रहणेमि, प्रहनेमि–पु० (सं०) चंद्रमा।

प्रहत–वि० (सं०) आहत; निहत, मारा हुआ; (ढोल आदि) जिसपर आघात किया गया हो; वितत, फैलाया हुआ; पराभूत; विद्वान्।

प्रहति–स्त्री० (स०) आघात, चोट।

प्रहर–पु० (सं०) एक दिनका आठवाँ भाग, याम, पहर; पहरा। –**कुटुंबी**–स्त्री० कुटुंबिनी नामक क्षुप। –**विरति**–स्त्री० पहरेका अंत।

प्रहरक–पु० (सं०) पहरेदार, घड़ियाली।

प्रहरखना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना–'पेखि प्रहरखे मुनि समुदाई'–रामा०।

प्रहरण–पु० (सं०) छीनना; हटाना; प्रहार, आघात; प्रहारका साधन, हथियार; आक्रमण; युद्ध; दम, दमन; अस्त्र; (अग्निमें तृणादि) फेंकना; परदेदार गाड़ी या डोली; मृदंगका एक प्रबंध; गाड़ीमें बैठनेका स्थान। –**कलिका,–कलिता**–स्त्री० चौदह अक्षरोंका एक छंद।

प्रहरणीय–वि० (सं०) लड़ने या आक्रमण करने योग्य; नष्ट करने, दूर करने योग्य। पु० एक अस्त्र।

प्रहरी(रिन्)–पु० (सं०) पहरेदार, घड़ियाली।

प्रहर्ता(र्तृ)–वि० पु० (सं०) भेजनेवाला; (शिशुपाल०); आक्रमण या प्रहार करनेवाला; योद्धा।

प्रहर्ष–पु० (सं०) अत्यधिक प्रसन्नता; पुरुषेंद्रियमें उत्तेजना या तनाव आना।

प्रहर्षण–पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता; हर्षजन्य रोमांच; अभीष्टकी प्राप्ति; बुध ग्रह; एक काव्यालंकार जहाँ बिना परिश्रमके ही कार्य सिद्ध होने या अभीष्टसे भी अधिक सफलता मिलनेका वर्णन किया जाय अथवा जहाँ यह दिखलाया जाय कि जिस बातके लिए यत्न आरंभ किया गया था, वह बीचमें ही प्राप्त हो गयी। वि० पुलकित करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।

प्रहर्षणी, प्रहर्षिणी–स्त्री० (सं०) हलदी; एक वर्णवृत्त।

प्रहर्षित–वि० (सं०) कड़ा किया हुआ, संभोगके लिए उत्तेजित किया हुआ; रोमांचित; प्रसन्न।

प्रहर्षुल–पु० (सं०) बुध ग्रह।

प्रहसंती–स्त्री० (सं०) बड़ी अँगीठी; यूथी; वासंती लता।

प्रहसन–पु० (सं०) जोरकी हँसी; परिहास, दिल्लगी; भाणकी तरहका हास्य रसप्रधान एक रूपक (सा०)।

प्रहसित–पु० (सं०) एक बुद्ध; जोरसे हँसना। वि० हँसता हुआ, प्रसन्न।

प्रहस्त–पु० (सं०) पंजा, प्रतल; रावणकी सेनाका एक सेनापति।

प्रहाण–पु० (सं०) परित्याग; ध्यान; चेष्टा, उद्योग।

प्रहाणि–स्त्री० (सं०) परित्याग; कमी, अभाव; हानि।

प्रहान*–पु० दे० 'प्रहाण'।

प्रहानि–स्त्री० दे० 'प्रहाणि'।

प्रहार–पु० (सं०) आघात, वार; मारण; कंठहार ('धर्मसंग्रह')। –**वल्ली**–स्त्री० मांसरोहिणी लता।

प्रहारक–वि० (सं०) प्रहार करनेवाला।

प्रहारण–पु० (सं०) काम्यदान, मनचाहा दान।

प्रहारना*–स० क्रि० प्रहार करना, वार करना, मारना; (अस्त्र) फेंकना या चलाना।

प्रहारार्त–वि० (सं०) जो आघातसे घायल हो गया हो। पु० आघातके क्षतसे होनेवाली जीर्ण या तीव्र पीड़ा।

प्रहारित*–वि० जिसपर प्रहार किया गया हो।

प्रहारी(रिन्)–वि० (सं०) प्रहार करनेवाला; आक्रमण करनेवाला; नष्ट करनेवाला। पु० श्रेष्ठ योद्धा।

प्रहारुक–वि० (सं०) बलपूर्वक हरण करनेवाला।

प्रहार्य–वि० (सं०) प्रहार करने योग्य; हरण करने योग्य।

प्रहास–पु० (सं०) अट्टहास, ठहाका; तिरस्कार; व्यंग्योक्ति; एक नाग; शिव; नट; सोमतीर्थ; रंगोंकी चटक।

प्रहासक–वि०, पु० (सं०) हँसानेवाला, मसखरा।

प्रहासी(सिन्)–वि० (सं०) ठहाका लगानेवाला; जोरसे हँसनेवाला; चमकनेवाला। पु० भाँड़; विदूषक।

प्रहित–वि० (सं०) फेंका हुआ, चलाया हुआ (अस्त्र); फैलाया हुआ; भेजा हुआ, प्रेरित; नियुक्त; उपयुक्त; निष्कासित। पु० दाल; सालन।

प्रहीण–वि० (सं०) परित्यक्त; एकाकी; लुप्त; जीर्ण-शीर्ण। पु० नाश; हानि। –**जीवित**–वि० मृत। –**दोष**–वि० पापरहित, निष्पाप।

प्रहुत–पु० (सं०) भूतयज्ञ, बलिवैश्वदेव।

प्रहुति–स्त्री० (सं०) उत्तम होम (वै०)।

प्रहृत–वि० (सं०) जिसपर प्रहार किया गया हो, आहत; फेंका हुआ, चलाया हुआ, उठाया हुआ (अस्त्र आदि)। पु० आघात, वार।

प्रहृष्ट–वि० (सं०) अति प्रसन्न, प्रमुदित; खड़ा (रोम)। –**चित्त, –मना(नस्)**–वि० बहुत प्रसन्न। –**मुख,–वदन**–वि० जिसका

चेहरा प्रसन्न हो । **–रूप**–वि० जो प्रसन्न देख पड़े, जिसे देखनेसे मनमें प्रसन्नता हो । **–रोमा(मन्)**–वि० जिसके बाल खड़े हों ।

प्रहृष्टक–पु० (सं०) काक ।

प्रहृष्टात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दे० 'प्रहृष्टचित्त' ।

प्रहेणक–पु० (सं०) पुआ; लपसी; त्योहारमें बाँटी जानेवाली मिठाई ।

प्रहेलक–पु० (सं०) दे० 'प्रहेणक'; पहेली ।

प्रहेला–स्त्री० (सं०) स्वच्छंद क्रीडा ।

प्रहेलि, प्रहेलिका–स्त्री० (सं०) पहेली ।

प्रह्लाद–पु० दे० 'प्रह्लाद' ।

प्रह्लास–पु० (सं०) क्षय ।

प्रह्ल–वि० (सं०) प्रसन्न ।

प्रह्लत्ति, प्रह्लन्नि–स्त्री० (सं०) प्रसन्नता ।

प्रह्लन्न–वि० (सं०) प्रसन्न ।

प्रह्लाद–पु० (सं०) अतिशय आनंद, अत्यधिक प्रसन्नता; प्रमोद; आवाज, शब्द; विष्णुका एक प्रसिद्ध भक्त जो हिरण्यकशिपुका पुत्र था; एक नाग; एक प्राचीन देश ।

प्रह्लादक–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला, हर्षकारक । (स्त्री० 'प्रह्लादिका' ।)

प्रह्लादन–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला, हर्षजनक । पु० प्रसन्न करना ।

प्रह्लादित–वि० (सं०) प्रसन्न किया हुआ ।

प्रह्लादी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न होनेवाला ।

प्रह्व–वि० (सं०) नम्र; झुका हुआ; ढालुआँ; आसक्त ।

प्रह्वण–पु० (सं०) नम्रता प्रकट करनेके लिए झुकना ।

प्रह्वल–पु० (सं०) सुंदर शरीर ।

प्रह्वलीका–स्त्री० (सं०) पहेली ।

प्रह्वांजलि–वि० (सं०) हाथ जोड़कर सामने झुका हुआ ।

प्रह्वाण–वि० (सं०) झुका हुआ ।

प्रह्वय–पु० (सं०) आवाहन, आह्वान ।

प्रांग–वि० (सं०) लंबे डील-डौलका । पु० छोटा ढोल, पणव ।

प्रांगण–पु० (सं०) आँगन; मकानके सामनेकी खुली जगह; छोटा ढोल, पणव ।

प्रांजल–वि० (सं०) सरल, सुबोध; खरा, ईमानदार; समतल, बराबर ।

प्रांजलता–स्त्री० (सं०) अर्थकी सरलता ।

प्रांजलि–वि० (सं०) जो हाथ जोड़े हो, बद्धांजलि । स्त्री० जोड़े हुए हाथ ।

प्रांजलिक, प्रांजली(लिन्)–वि० (सं०) दे० 'प्रांजलि' ।

प्रांत–पु० (सं०) अंत, शेष भाग; सिरा, छोर; किनारा; कोण; सीमा, हद; पृष्ठ भाग; किसी देशका कोई बड़ा भाग, प्रदेश (जैसे–बिहार, आ०); एक ऋषि । **–ग,–चर**–वि० पास रहनेवाला । **–दुर्ग**–पु० नगरके परकोटेके बाहरकी बस्ती; परकोटेके बाहरका दुर्ग । **–निवासी(सिन्)**–वि० सीमापर रहनेवाला । **–पति**–पु० (गवरनर) प्रांतका सर्वोच्च अधिकारी, सूबेदार, राज्यपाल । **–पुष्पा**–स्त्री० एक पौधा । **–भूमि**–स्त्री० अंतिम स्थान; सीढ़ी; समाधि । **–विरस**–वि० जो अंतमें निस्सार हो; जो अंतमें स्वाद-हीन हो । **–वृत्ति**–स्त्री० क्षितिज । **–शून्य**–पु० छाया आदिसे रहित लंबा मार्ग । **–स्थ**–वि० सीमापर रहनेवाला ।

प्रांततः(तस्)–अ० (सं०) सीमा या छोरसे होकर ।

प्रांतर–पु० (सं०) लंबा रास्ता; छाया आदिसे रहित मार्ग; वन; पेड़का खोखला भाग, कोटर । **–शून्य**–पु० दे० 'प्रांतशून्य' ।

प्रांतिक–वि० (सं०) दे० 'प्रांतीय' ।

प्रांतीय–वि० (सं०) प्रांत-संबंधी; प्रांतका । **–स्वराज्य**–पु० (प्राविशल ऑटोनॉमी) प्रांतों या किसी संघराज्यसे सम्मिलित राज्योंको प्राप्त स्वराज्य जिसके अनुसार उन्हें आंतरिक विषयों-संबंधी निर्णय करने या नीति निर्धारित करनेकी स्वतंत्रता होती है ।

प्रांतीयता–स्त्री० (सं०) अपने प्रांतके प्रति मोह या पक्षपात ।

प्रांशु–वि० (सं०) ऊँचा; लंबा । पु० लंबा आदमी । **–प्राकार**–वि० जिसका परकोटा बहुत ऊँचा हो । **–लभ्य**–वि० लंबे मनुष्यको प्राप्य ।

प्राइमरी–वि० (अं०) आरंभिक, प्राथमिक । **–स्कूल**–पु० वह स्कूल जिसमें आरंभिक शिक्षा दी जाय ।

प्राइवेट–वि० (अं०) व्यक्तिविशेषसे संबद्ध; व्यक्तिविशेषका निजी; जो औरोंसे छिपाया जाय, गुप्त, आपसी; गैर-सरकारी (जैसे–प्राइवेट सर्विस) । **–सेक्रेटरी**–पु० किसी बड़े आदमीका वह निजी सहायक जो पत्र-व्यवहार तथा अन्य व्यक्तिगत कार्योंमें उसकी सहायता करता है, खास नवीस ।

प्राकट्य–पु० (सं०) प्रकट होनेका भाव, प्रकटता ।

प्राकरणिक–वि० (सं०) जिसका प्रकरण हो, प्रकरणप्राप्त; प्रस्तुत; उपमेय ।

प्राकर्षिक–वि० (सं०) तरजीह देनेके लायक ।

प्राकषिक–पु० (सं०) परदारोपजीवी; स्त्री द्वारा नियुक्त नर्तक; स्त्रियोंकी मंडलीमें नाचनेवाला पुरुष ।

प्राकाम्य–पु० (सं०) आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिसके प्राप्त हो जानेपर मनुष्य जो चाहता है वह हो जाता है ।

प्राकार–पु० (सं०) नगर या किलेके चारों ओर रक्षाके लिए बनायी जानेवाली दीवार, परकोटा; ईंट, लकड़ी आदिका बनाया हुआ घेरा ।

प्राकारीय–वि० (सं०) प्राकारके योग्य; परकोटेसे घिरा हुआ ।

प्राकाश्य–पु० (सं०) प्रकाशका भाव, प्रकटता; प्रसिद्धि, ख्याति ।

प्राकृत–वि० (सं०) प्रकृति-संबंधी; प्रकृतिका; असंस्कृत; उजड्ड; नीच; स्वभाव-सिद्ध, स्वाभाविक; साधारण, सामान्य । स्त्री० प्रांतकी बोली; एक प्राचीन भाषा जिसका प्रयोग संस्कृतके नाटकों आदिमें तथा अन्य ग्रंथोंमें मिलता है; एक नक्षत्रवीथी । **–ज्वर**–पु० वर्षा, शरद् और वसंतमें क्रमशः वात, पित्त और कफके प्रकोपसे होनेवाला ज्वर । **–दोष**–पु० वात, पित्तादिके कोपसे उत्पन्न दोष । **–प्रलय**–पु० एक प्रकारका प्रलय जिसमें प्रकृतितकका ब्रह्ममें लय हो जाता है । **–मानुष**–पु० साधारण व्यक्ति । **–मित्र**–पु० प्राकृत शत्रुके देशके ठीक बादवाले देशका राजा । **–वाद**–पु० दे० 'प्रकृतिवाद' । **–शत्रु**–पु० वह राजा जिसका देश किसी अन्य राजाके देशसे लगा हुआ हो ।

प्राकृतवादी(दिन्)–वि० प्राकृतवादका समर्थक ।

प्राकृतारि–पु० (सं०) दे० 'प्राकृतशत्रु' ।

प्राकृतिक–वि० (सं०) प्रकृतिसे उत्पन्न; प्रकृति-संबंधी; प्रकृतिका, कुदरती; लौकिक; असार । **–चिकित्सा**–स्त्री० मुख्यरूपसे प्राकृतिक उपायोंपर आधारित चिकित्सा-पद्धति । **–भूगोल**–पु० भूगोल-विद्याका वह भाग जिसमें समुद्र, पर्वत, नदी आदिकी प्राकृतिक विशेषताओंका विवरण रहता है ।

प्राकृतिक वरण–पु० (नेचुरल सिलेक्शन) जीवोंके विकासका विशेष प्रक्रम, जिसके अनुसार केवल वही नस्ल जीवित रह पाती है जो अपने आसपासके पर्यावरणमें जिन्दा रहनेकी क्षमता रखती है ।

प्राक्(च्)–वि० (सं०) सामनेका, अगला; पूरबका, पूरबी; पहलेका । अ० पहले, आगे । **–कथन**–पु० भूमिका, प्रस्तावना । **–कर्म(न्)**–पु० पूर्व जन्मका कर्म । **–कलन**–पु० दे० क्रममें । **–काल**–पु० पहलेका समय, बीता हुआ समय, प्राचीन काल । **–कालिक,–कालीन**–वि० पहलेका, पुराना, प्राचीन । **–कूल**–वि० (वह कुश) जिसका सिरा पूरबकी ओर हो । **–कृत**–वि० पूर्व जन्ममें किया हुआ । पु० पूर्व जन्ममें किया हुआ कर्म । **–चरणा**–स्त्री० भग, योनि । **–चिर**–अ० यथासमय, ठीक समयपर । **–छाय**–पु० छाया पूरबकी ओर पड़नेका समय, अपराह्न । **–तनय**–पु० पहलेका शिष्य । **–तूल**–वि० (कुश) जिसका सिरा पूरबकी ओर हो । पु० कुशका ऐसा सिरा । **–प्रवण**–वि० जो पूरबकी ओर ढालवाँ हो । **–प्रहार**–पु० पहला आघात । **–फल**–पु० कटहल । **–फल्गुनी**–स्त्री० पूर्वा-फाल्गुनी नामक नक्षत्र । **–०भव**–पु० बृहस्पति । **–फाल्गुन**–पु० बृहस्पति । **–संध्या**–स्त्री० सूर्योदयके समयकी संध्या, प्रातःकालकी संध्या । **–सेवन**–पु० यज्ञका प्रथम सवन । **–सौमिक**–पु० सोमयागके पहले किये जानेवाले अग्निहोत्र, दर्श, पौर्णमास आदि । **–स्रोता–(तस्)**–वि० पूरबकी ओर बहनेवाला ।

प्राक्कलन–पु० (एस्टिमेट) संभावित व्यय या लागतका पहलेसे अनुमान लगाना या लगाया गया अनुमान ।

प्राक्कल्पना–स्त्री० किसी वस्तुकी निर्माणपूर्व रूपरेखा, मंसौदा ।

प्राक्तन–वि० (सं०) पहलेका, प्राचीन; पूर्वकालिक (फार्मर); पूर्व जन्मका । पु० भाग्य, प्रारब्ध ।

प्राखर्य–पु० (सं०) प्रखरता, प्रचंडता, तीक्ष्णता ।

प्राग्–'प्राच्'का समासगत रूप । **–अनुराग**–पु० पूर्वानुराग । **–अभाव**–पु० कार्यका अपनी उत्पत्तिके पहले कारणमें न रहना, अपनी उत्पत्तिके पहले कारणमें कार्यका अभाव । **–अभिहित**–वि० पूर्वकथित । **–उक्ति**–स्त्री० पूर्वकथन । **–उत्तर**–वि० पूर्वोत्तर । **–उत्तरा**–स्त्री० दे० 'प्रागुदीची' । **–उदीची**–स्त्री० ईशान कोण । **–ऐतिहासिक**–वि० इतिहासमें वर्णित कालके पूर्वका । **–ज्योतिष**–पु० कामरूप देश । **–०पुर**–पु० प्राग्ज्योतिष देशकी राजधानी जिसका आधुनिक नाम गौहाटी है । **–दक्षिणा**–स्त्री० दक्षिण-पूर्वका कोण, अग्निकोण । **–देश**–पु० पूरबी देश । **–द्वार**–पु० पूरबका द्वार । **–भक्त**–पु० भोजनसे पहलेका समय जो औषध-सेवनके दस कालभागोंमेंसे एक माना जाता है; भोजनके पहले औषधका सेवन । **–भव**–पु० पूर्व जन्म । **–भाग**–पु० अगला भाग । **–भार**–पु० उत्कर्ष; पर्वतका अग्रभाग; किसी वस्तुका अग्रभाग; राशि । **–भाव**–पु० पूर्व जन्म; उत्कर्ष, श्रेष्ठता । **–रूप**–पु० पूर्व चिह्न । **–वंश**–पु० यज्ञशालामें हविर्गृह-के पूरबका घर जिसमें यजमान आदि रहते हैं; विष्णु; पहलेका वंश । **–वचन**–पु० पहलेका निश्चय; मनु आदिका वचन । **–वृत्त,–वृत्तांत**–पु० पहलेकी घटना ।

प्रागल्भ्य–पु० (सं०) प्रगल्भ होनेका भाव, प्रगल्भता; साहस; घमंड, दक्षता; विकास; वाग्मिता; ठाट-बाट; दृढ़ता; प्रबलता; स्त्रीका भयसे रहित होना जो सात्त्विक भाव माना जाता है ।

प्रागार–पु० (सं०) भवन, इमारत ।

प्राग्र–पु० (सं०) चरम या शीर्षबिंदु । **–सर**–वि० पहला, सबसे आगेका । **–हर**–वि० प्रधान, मुख्य ।

प्राग्राट–पु० (सं०) पतला दही, मट्ठा ।

प्राग्र्य–वि० (सं०) श्रेष्ठ, प्रधान ।

प्राघात–पु० (सं०) भारी आघात; युद्ध ।

प्राघार–पु० (सं०) चूनेकी क्रिया, क्षरण ।

प्राघुण, प्राघुणक, प्राघुणिक–पु० (सं०) अतिथि ।

प्राघूर्णक, प्राघूर्णिक–पु० (सं०) अतिथि ।

प्राङ्–'प्राच्'का समासगत रूप । **–न्याय**–पु० व्यवहार-शास्त्रके अनुसार एक प्रकारका उत्तर जिसमें प्रतिवादी यह कहता है कि वादी प्रस्तुत अभियोग लगाकर पहले भी मेरे ऊपर दावा कर चुका है और उसमें उसकी हार हुई है । **–मुख**–वि० जिसका मुँह पूरबकी ओर हो, पूर्वाभिमुख ।

प्राचंड्य–पु० (सं०) प्रचंडता, उग्रता; भयंकरता ।

प्राचार–वि० (सं०) जो प्रचलित प्रथाके विरुद्ध हो । पु० पंखदार चींटी ।

प्राचार्य–पु० (सं०) प्रकृष्ट आचार्य; प्रधानाचार्य ।

प्राचिका–स्त्री० (सं०) डाँस; बाजकी जातिकी एक चिड़िया ।

प्राची–स्त्री० (सं०) पूरब; पूज्य और पूजकके बीचकी दिशा या स्थान । **–पति**–पु० इंद्र । **–मूल**–पु० पूर्वी क्षितिज ।

प्राचीन–वि० (सं०) पूरबका, पूरबी; पहलेका, पुराना । पु० दे० 'प्राचीर' । **–गर्भ**–पु० एक ऋषि । **–गाथा**–स्त्री० पुरानी कथा । **–तिलक**–पु० चंद्रमा । **–पनस**–पु० बेलका पेड़ । **–बर्हि(स्)**–पु० एक प्राचीन राजा जो प्रजापति कहलाते थे और जिनसे प्रचेतागण उत्पन्न हुए; इंद्र । **–मत**–पु० पुराना विश्वास; वह मत जो प्राचीन कालसे चला आ रहा हो ।

प्राचीनता–स्त्री० (सं०) प्राचीन होनेका भाव, पुरानापन ।

प्राचीना–वि० स्त्री० (सं०) पुरानी ('प्राचीन'का स्त्री०) । स्त्री० रास्ना, पाठा ।

प्राचीनामलक–पु० (सं०) जलआमला ।

प्राचीनावीत–पु० (सं०) (श्राद्धमें) दाहिने कंधेपरसे धारण किया हुआ यज्ञोपवीत ।

प्राचीनावीती(तिन्)–वि० (सं०) जिसने प्राचीनावीत धारण किया हो ।

प्राचीनोपवीत–पु० (सं०) दे० 'प्राचीनावीत' ।

प्राचीनोपवीती(तिन्)–वि० (सं०) दे० 'प्राचीनावीती' ।

प्राचीर–पु० (सं०) नगर, किले आदिके चारों ओर रक्षाके लिए बनायी गयी दीवार, परकोटा, चहारदीवारी ।

प्राचुर्य–पु० (सं०) प्रचुर होनेका भाव, प्रचुरता, आधिक्य, बहुतायत; राशि ।

प्राचेतस–पु० (सं०) वाल्मीकि मुनि; प्रचेताका पुत्र; मनु; दक्ष; वरुणके पुत्र ।

प्राच्छित*–पु० 'प्रायश्चित्त' ।

प्राच्य–वि० (सं०) पूरबका, पूरबी; पहलेका, पुराना; सामनेका, अगला । पु० शरावती नदीके पूर्वका देश; इस देशका निवासी । **–भाषा**–स्त्री० पूरबी भाषा । **–विद्**–पु० प्राच्य विद्याका जानकार । **–विद्या**–स्त्री० प्राच्य देशों (भारत, ईरान, चीन, मलाया आदि)की भाषा, धर्म, इतिहास, साहित्यादिका विवेचन करनेवाला पुरातत्वका अंग । **–वृत्ति**–स्त्री० एक छंद । **–वेत्ता**–पु० 'प्राच्यविद्' ।

प्राच्यक–वि० (सं०) पूरबी, पूर्वस्थित ।

प्राजक–पु० (सं०) सारथि ।

प्राजन–पु० (सं०) चाबुक, कोड़ा ।

प्राजहित–पु० (सं०) गार्हपत्य अग्नि ।

प्राजापत्य–वि० (सं०) प्रजापतिसे उत्पन्न; प्रजापति-संबंधी; प्रजापतिका; जो प्रजापति देवताके निमित्त हो । पु० आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्याका पिता वर और कन्यासे गार्हस्थ्य धर्मका पालन करनेकी प्रतिज्ञा करानेके अनंतर दोनोंकी पूजा करके कन्यादान करता है; बारह दिनोंका एक प्रकारका व्रत; प्रयाग; पितृलोक; विष्णु; रोहिणी नक्षत्र ।

प्राजापत्या–स्त्री० (सं०) सन्न्यास ग्रहण करनेके पूर्व की जानेवाली एक प्रकारकी इष्टि जिसमें दक्षिणाके रूपमें सर्वस्व दान कर दिया जाता है ।

प्राजिक–पु० (सं०) बाज पक्षी ।

प्राजिता(तृ)–पु० (सं०) सारथि ।

प्राजी(जिन्)–पु० (सं०) बाज पक्षी ।

प्राजेश–पु० (सं०) रोहिणी नक्षत्र ।

प्राज्ञ–वि० (सं०) बुद्धिमान्; चतुर, दक्ष; महामूर्ख (व्यंग्य) । पु० चतुर मनुष्य; एक तरहका तोता; कल्किदेवके बड़े भाई (पु०); जीवात्मा (वे०) । **–मन्य,–मानी(निन्)**–वि० अपनेको बहुत बुद्धिमान् माननेवाला (इस अर्थमें 'प्राज्ञम्मन्य' और 'प्राज्ञम्मानी' रूप भी होते हैं) ।

प्राज्ञा–स्त्री० (सं०) बुद्धि; बुद्धिमती स्त्री ।

प्राज्ञी–स्त्री० (सं०) विदुषी; विद्वान्‌की स्त्री; सूर्यकी एक पत्नी ।

प्राज्य–वि० (सं०) जिसमें खूब घी पड़ा हो; प्रचुर, प्रभूत; विशाल; ऊँचा; दीर्घ ।

प्राड्विवाक, प्राड्विवेक–पु० (सं०) न्याय करनेके लिए राजाकी ओरसे नियुक्त विचारक, न्यायाधीश ।

प्राणंत–पु० (सं०) वायु; रसांजन ।

प्राणंती–स्त्री० (सं०) भूख; छींक; हिचकी, हिक्का ।

प्राण–पु० (सं०) वायु; शरीरके भीतरकी जीवनाधाररूपी वायु (इसके पाँच भेद माने गये हैं–प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान); श्वास, साँस; बल; जीव; जीवन, जान; घ्राण; ज्ञानेंद्रिय; पाचन; कालका मानरूप श्वास; मूलाधारमें रहनेवाली वायु; वह जो प्राणोंके समान प्रिय हो; वैवस्वत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक; काव्यका आत्मारूप रस; एक गंधद्रव्य, गंधरस; 'य' वर्ण, यकार; एक प्रकारका साम; ब्रह्म; विष्णु । **–अधार***–पु० वह जिसपर जीवन अवलंबित हो, जीवनका सहारा; पति, खाविंद; प्रेमी, प्रियतम । **–कर**–वि० ताजगी लानेवाला; बल बढ़ानेवाला, बलकारक । **–कष्ट**–पु० मरनेके समय होनेवाला कष्ट । **–कांत**–पु० प्रिय व्यक्ति; पति । **–कृच्छ्र**–पु० प्राणका संकट, जान-जोखिम । **–ग्रह**–पु० नाक । **–घात**–पु० मार

डालना, मारण। **–घातक**–वि० मार डालनेवाला, प्राण हर लेनेवाला। **–घ्न**–वि० जो प्राण हर ले, घातक। **–चय**–पु० शक्तिवृद्धि। **–च्छिद्**–वि० प्राण ले लेनेवाला, प्राणहारक। **–च्छेद**–पु० वध, हत्या। **–जीवन**–पु० विष्णु जो प्राणोंका स्थापन और पोषण करते हैं; प्राणाधार। **–त्याग**–पु० मृत्यु; आत्महत्या। **–दंड**–पु० मौतकी सजा। **–द**–वि० जान डालनेवाला। (स्त्री० 'प्राणदा')। पु० जल; रक्त; जीवन नामका वृक्ष; विष्णु। **–दयित**–पु० पति। वि० प्राण-प्यारा। **–दा**–स्त्री० हड़, हरीतकी; एक प्रकारकी गुटिका (आ० वे०)। **–दाता(तृ)**–वि०, पु० किसीकी जान बचानेवाला। **–दान**–पु० प्राण देना; किसीकी प्राण-रक्षा करना; प्राणदंडसे मुक्त कर देना। **–दुरोदर,–द्यूत**–पु० जान जोखिममें डालना; जानकी बाजी लगाना। **–द्रोह**–पु० किसीकी जान लेनेके फेरमें रहना। **–धन**–पु० वह जो प्राणके समान प्यारा हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति। **–धार**–वि० जिसमें प्राण हों, जीवित। पु० प्राणी। **–धारण**–पु० जीवन धारण करनेकी क्रिया, जीव-शक्ति; जीवनका सहारा। **–धारी(रिन्)**–पु० प्राणी, जीव। **–नाथ**–पु० पति, स्वामी; प्रेमपात्र, प्रियतम; यम; एक महात्मा जिन्होंने 'परिणामी' संप्रदाय चलाया (इनका लक्ष्य सर्वधर्मसमन्वय था और ये अपनेको हिंदुओंका कल्कि, मुसलमानोंका मेहदी और ईसाइयोंका मसीहा मानते थे)। **–नाथी**–पु० (हिं०) महात्मा प्राणनाथके संप्रदायका अनुयायी; प्राणनाथका चलाया हुआ संप्रदाय। **–नाश**–पु० मृत्यु; वध। **–नाशक**–वि० जान लेनेवाला, प्राणहारक। **–निग्रह**–पु० प्राणायाम। **–पण**–पु० जानकी बाजी। **–पति**–पु० पति; प्रेमपात्र, प्रियतम; वैद्य; आत्मा। **–पत्नी**–स्त्री० मुख-ध्वनि। **–परिक्रय**–पु० जानकी बाजी लगाना। **–परिग्रह**–पु० प्राण धारण करना, जन्म लेना। **–प्यारा**–पु० (हिं०) वह जो प्राणोंके समान प्रिय हो, अत्यंत प्रिय व्यक्ति; पति, खाविंद; प्रेमपात्र, प्रियतम। (स्त्री० 'प्राणप्यारी')। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० देवप्रतिमाका एक प्रकारका संस्कार जिसमें मंत्रों द्वारा देवताका प्रतिमामें आवाहन करते हैं; मंत्रों द्वारा किसी देवताका उसकी प्रतिमामें निवास कराना। **–प्रद**–वि० प्राण देनेवाला, प्राणदायक; प्राणोंकी रक्षा करनेवाला; बलकारक। **–प्रदा**–स्त्री० ऋद्धि नामकी ओषधि। **–प्रयाण**–पु० मृत्यु। **–प्रिय**–पु० प्रियतम, पति। वि० जो प्राणोंके समान प्रिय हो। **–बाध**–पु० जानका खतरा। **–बाधा**–स्त्री० (हिं०) दे० 'प्राणकृच्छ्र'। **–भक्ष**–वि० जो केवल हवा पीकर रहता हो। **–भय**–पु० जान जानेका खतरा। **–भास्वान्(स्वत्)**–पु० समुद्र। **–भृत्**–वि० प्राणवान्, जीवित। पु० प्राणी; विष्णु। **–मोक्षण**–पु० मृत्यु; आत्महत्या। **–यम**–पु० प्राणायाम। **–यात्रा**–स्त्री० श्वास-प्रश्वास-क्रिया; भोजन आदि जिनसे उक्त क्रियाका निर्वाह होता है; जीवन-निर्वाह। **–योनि**–पु० परमेश्वर; वायु। स्त्री० जीवनका मूल। **–रंध्र**–पु० मुँह; नाक। **–रोध**–पु० प्राणायाम; जानका खतरा; एक नरक। **–वल्लभ**–वि० 'प्राणप्रिय'। (स्त्री० 'प्राणवल्लभा')। **–वायु**–स्त्री० प्राणरूपी वायु, प्राण। **–विनाश,–विप्लव**–पु० मृत्यु, मौत। **–वियोग**–पु० मृत्यु। **–वृत्ति**–स्त्री० प्राणका श्वास-प्रश्वास आदि व्यापार। **–व्यय**–पु० प्राणत्याग, जीवनोत्सर्ग। **–शरीर**–पु० परमेश्वर (जिसका प्राणात्मक रूपमें ध्यान किया जाता है)। **–शोषण**–पु० बाण। **–संकट,–संदेह,–संशय**–पु० ऐसा संकट जो जानपर आ जाय, जान जानेका भय, जानजोखों। **–संभृत**–पु० वायु। **–संयम**–पु० प्राणायाम। **–संहिता**–स्त्री० एक प्रकारका वेदपाठ। **–सद्म(न्)**–पु० शरीर। **–सम**–पु० पति, प्रियतम। वि० प्राणप्रिय। **–समा**–स्त्री० पत्नी। **–सार**–वि० अति बलशाली, बलपूर्ण। **–सूत्र**–पु० जीवनसूत्र। **–हंता(तृ)**–वि०, पु० जान लेनेवाला, प्राणहारक। **–हर,–हारी(रिन्)**–वि० प्राण हरनेवाला, जान लेनेवाला; बलनाशक। **–हारक**–वि० जान लेनेवाला, घातक। पु० वत्सनाभ नामक विष। **–हानि**–स्त्री० प्राणनाश। **–हीन**–वि० निर्जीव। मु० **–आना**–भय कम होना। **–उड़ जाना या सूख जाना**–बदहवास हो जाना; बहुत अधिक घबरा जाना; बहुत डर जाना। **–गलेतक आना**–मरणासन्न होना। **–छूटना,–जाना या निकलना**–मरना, देहावसान होना। **–छोड़ना,–त्यागना**–मरना। **–डालना**–जीवनका संचार करना, सजीव बनाना। **–देना**–मरना; अधिक कष्ट पाना; किसीको बहुत चाहना। **–पयान होना***–मरना। **–बचाना**–जान बचाना; पिंड छुड़ाना। **–मुँहको आना**–बहुत अधिक दुःख होना, दुःखसे व्याकुल होना। **–मुट्ठीमें या हथेलीपर लिये रहना**–मरनेको तैयार रहना। **–रखना**–जिलाना। **–लेना**–मार डालना। **–हरना**–मार डालना; बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना। **–हारना***–मर जाना; हतोत्साह होना। **–से हाथ धोना**–मर जाना। **–(णों) पर आ पड़ना**–प्राण संकटमें पड़ना, जानजोखों होना। **–पर खेलना**–जानकी बाजी लगा देना, जान जोखोंमें डालना। **–पर बीतना**–प्राण संकटमें पड़ना।

प्राणक–पु० (सं०) जीव; जीवक वृक्ष; गोंद।

प्राणथ–पु० (सं०) वायु; श्वास; प्रजापति; तीर्थ। वि० शक्तिशाली।

प्राणन–पु० (सं०) गला; जल; श्वास; जीवन; जीवनोत्पादन।

प्राणमय–वि० (सं०) जिसमें प्राण हों, प्राणयुक्त। **–कोश**–पु० वेदांतके अनुसार शरीरके पाँच कोशोंमेंसे दूसरा; पाँच कर्मेंद्रियोंके सहित प्राण, अपान आदि पाँच प्राण।

प्राणवत्ता–स्त्री० (सं०) प्राणवान् या जीवित होनेका भाव।

प्राणवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसमें प्राण हों, सप्राण, जीवित। (स्त्री० 'प्राणवती')।

प्राणांत–वि० (सं०) मृत्यु, मौत।

प्राणांतक–वि०, पु० (सं०) प्राण लेनेवाला।

प्राणांतिक–वि० (सं०) प्राण हरनेवाला, घातक; जीवन-पर्यंत रहनेवाला। पु० वध, हत्या; वधिक।

प्राणाग्निहोत्र–पु० (सं०) दे० 'प्राणाहुति'।

प्राणाघात–पु० (सं०) वध, हत्या।

प्राणाचार्य–पु० (सं०) वैद्य।

प्राणातिपात–पु० (सं०) वध, हत्या। **–विरमण**–पु० अहिंसा व्रत (जै०)।

प्राणात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) जीवात्मा, सूत्रात्मा।

प्राणात्यय–पु० (सं०) मृत्यु, मौत; मृत्युका समय; जानका खतरा।

प्राणाद–वि० (सं०) घातक।

प्राणाधार–पु० (सं०) जीवनका अवलंब या सहारा; पति; प्रियतम।

प्राणाधिक–वि० (सं०) जो प्राणोंसे भी बढ़कर हो; बलवत्तर।

प्राणाधिनाथ–पु० (सं०) पति।

प्राणाधिप–पु० (सं०) आत्मा।

प्राणाबाध–पु० (सं०) जानका खतरा।

प्राणायतन–पु० (सं०) प्राणोंके निकलनेका प्रधान मार्ग (ये नौ हैं–दोनों कान, नाकके दोनों छेद, दोनों आँखें, गुदा, उपस्थ और मुख)।

प्राणायन–पु० (सं०) ज्ञानेंद्रिय।

प्राणायाम–पु० (सं०) श्वास-प्रश्वासकी गतिका नियमन, योगके आठ अंगोंमेंसे एक।

प्राणायामी(मिन्)–वि० (सं०) प्राणायाम करनेवाला।

प्राणाध्य–वि० (सं०) उचित, उपयुक्त।

प्राणावरोध–पु० (सं०) श्वासका अवरोध।

प्राणाश्रयी–वि० (वह साहित्य) जो विषयतत्त्व या प्राणिक ऊर्जाको महत्त्व देता है।

प्राणासन–पु० (सं०) एक प्रकारका आसन (तं०)।

प्राणाहुति–स्त्री० (सं०) भोजनके आरंभमें पाँच ग्रास 'प्राणाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा' आदि मंत्र पढ़कर पाँचों प्राणोंके निमित्त खाना।

प्राणिक–वि० (सं०) विना शोर किये बोलनेवाला।

प्राणित–वि० (सं०) जिसमें जीवनका संचार किया गया हो।

प्राणी(णिन्)–वि० (सं०) जिसमें प्राण हों, प्राणवान्। पु० जीव-जंतु, मनुष्य; व्यक्ति (हिं०)। **–(णि)घाती(तिन्)**–वि० जीवोंकी हत्या करनेवाला। **–जात**–पु० जीवजगत्, प्राणिवर्ग;

(फॉना) किसी विशिष्ट क्षेत्र अथवा युगके प्राणियों, जीवोंका समूह या सूची। **–द्यूत**–पु० मेढ़े, तीतर आदिकी लड़ाईपर बाजी लगाना। **–पीड़ा**–स्त्री० जीवोंको सताना। **–माता(तृ)**–स्त्री० एक क्षुप, गर्भदात्री। **–योधन**–पु० जानवरोंको लड़नेमें प्रवृत्त करना। **–वध**–पु० जीवहत्या। **–विज्ञान**–पु० प्राणियोंकी जातियों, विभेदों, शरीर-रचना, विशेषताओं आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान (जूलॉजी)। **–हिंसा**–स्त्री० जीवोंको कष्ट देना या मारना। **–हिता**–स्त्री० पादुका, खड़ाऊँ; जूता।

प्राणीत्य–पु० (सं०) ऋण, कर्ज।

प्राणेश, प्राणेश्वर–पु० (सं०) पति, स्वामी; प्रेमपात्र, प्रियतम।

प्राणेशा, प्राणेश्वरी–स्त्री० (सं०) पत्नी; प्रियतमा।

प्राणोत्क्रमणा, प्राणोत्सर्ग–पु० (सं०) मृत्यु।

प्राणोपहार–वि० (सं०) भोजन, आहार।

प्राणोपेत–पु० (सं०) जीवनयुक्त, जीवित।

प्राण्–पु० (सं०) प्राण।

प्रातः(तर्)–पु० (सं०) सवेरा, तड़का। अ० सवेरे, तड़के। **–कर्म(न्),–कार्य,–कृत्य**–पु० प्रातःकाल किया जानेवाला कर्म (ईशप्रार्थना आदि)। **–काल,–क्षण,–समय**–पु० सवेरेका समय, प्रभात; रातके अंत और सूर्योदयके पहलेका तीन मुहूर्तका समय। अ० सवेरे, तड़के। **–कालिक,–कालीन**–वि० प्रातःकालका; प्रातःकाल-संबंधी। **–संध्या**–स्त्री० प्रातःकालकी संध्या, रातका अंतिम एक दंड और दिनका पहला एक दंड; प्रातःकाल किया जानेवाला संध्याकर्म। **–सवन**–पु० दे० 'प्रातस्सवन'। **–स्नान**–पु० सवेरेका स्नान। **–स्नायी(यिन्)**–वि० सवेरे स्नान करनेवाला। **–स्मरण**–पु० प्रातःकाल देवताका स्मरण। **–स्मरणीय**–वि० जो प्रातःकाल स्मरण करने योग्य हो, पुण्यचरित।

प्रात*–पु० सवेरा, प्रातःकाल। * अ० सवेरे, तड़के। **–कृत्य**–पु० दे० 'प्रातः कृत्य'। **नाथ***–पु० सूर्य।

प्रातर–पु० (सं०) एक नाग।

प्रातराश–पु० (ब्रेकफास्ट) सवेरे किया जानेवाला हलका भोजन या नाश्ता, कलेवा।

प्रातर्–अ० (सं०) दे० 'प्रातः'। **–अशन**–पु० कलेवा। **–अह्न**–पु० सवेरेसे दोपहरतकका समय, पूर्वाह्ण। **–आश**–पु० दे० क्रममें **–आशी(शिन्)**–वि० सुबह कलेवा करनेवाला। **–आहुति**–स्त्री० प्रातःकाल दी जानेवाली आहुति; अग्निहोत्रका द्वितीयांश। **–गेय**–पु० स्तुतिपाठक, वंदी। वि० जो सवेरे गाया जाय। –**–जप**–पु० प्रातःकालकी प्रार्थना। **–दिन**–पु० पूर्वाह्ण। **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० कौआ। **–भोजन**–पु० दे० 'प्रातराश'। **–युक्त**–वि० प्रातःकाल जोता हुआ (रथादि)। **–विकस्वर**–वि० प्रातःकाल उदय होनेवाला। **–हुत,–होम**–पु० प्रातःकाल किया जानेवाला हवन।

प्रातस्तन–वि० (सं०) प्रातःकाल-संबंधी; प्रातःकालका।

प्रातस्त्य–वि० (सं०) दे० 'प्रातस्तन'।

प्रातस्–'प्रातर्'का समासगत रूप। **–त्रिवर्गा**–स्त्री० गंगा। **–सवन**–पु० प्रातःकाल किया जानेवाला सवन।

प्राति–स्त्री० (सं०) पूर्ति; लाभ; अँगूठेके सिरेसे तर्जनीके सिरेतककी दूरी।

प्रातिकंठिक–वि० (सं०) गला पकड़नेवाला।

प्रातिका–स्त्री० (सं०) जपा, अड़हुल।

प्रातिकूलिक–वि० (सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल।

प्रातिकूल्य–पु० (सं०) प्रतिकूल होनेका भाव, प्रतिकूलता।

प्रातिजनीन–वि० (सं०) विरोधीके उपयुक्त; प्रत्येक व्यक्तिके लिए उपयुक्त।

प्रातिज्ञ–पु० (सं०) तर्कका विषय।

प्रातिदैवसिक–वि० (सं०) प्रतिदिन होनेवाला।

प्रातिनिधिक–पु० (सं०) प्रतिनिधि। वि० प्रतिनिधिमूलक।

प्रातिपक्ष–वि० (सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल।

प्रातिपक्ष्य–पु० (सं०) विरोध, प्रतिकूलता; शत्रुता।

प्रातिपथिक–वि० (सं०) यात्रा करनेवाला; रास्तेसे जानेवाला। पु० यात्री।

प्रातिपद–वि० (सं०) जो प्रतिपदाको उत्पन्न हुआ हो; प्रतिपदा-संबंधी; प्रतिपदाका; आरंभका।

प्रातिपदिक–पु० (सं०) अग्नि; धातु, प्रत्यय और प्रत्ययांतसे भिन्न अर्थवान् शब्द, वह अर्थवान् शब्द जो धातु और प्रत्ययसे भिन्न हो और जिसमें प्रत्यय न लगा हो, जैसे 'राम' (सं० व्या०)।

प्रातिभ–वि० (सं०) प्रतिभा-संबंधी; प्रतिभाका; प्रतिभायुक्त, प्रतिभावान्। पु० प्रतिभा; योगमार्गका एक उपसर्ग या विघ्न (पु०)।

प्रातिभाव्य–पु० (सं०) प्रतिभूका भाव, प्रतिभूत्व, जामिनदारी; वह धन जो प्रतिभू या जामिनको देना पड़े। **–ऋण**–पु० किसीकी जमानतपर लिया गया ऋण।

प्रातिभासिक–वि० (सं०) जो वास्तव न हो पर भ्रमवश विशेष प्रकारका भासित होता हो, अवास्तव (जैसे–सीपमें चाँदीका भान)।

प्रातिरूपिक–वि० (सं०) उसी रूपका, नकली।

प्रातिलोमिक–वि० (सं०) विरुद्ध, विपरीत; अप्रिय।

प्रातिलोम्य–पु० (सं०) क्रमविरुद्धता; विरुद्धता, वैपरीत्य।

प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्मक, प्रातिवेश्यक–पु० (सं०) पड़ोसी।

प्रातिवेश्य–पु० (सं०) पड़ोस; पड़ोसी, वह जिसका घर अपने घरके सामने या बाद हो।

प्रातिशाख्य–पु० (सं०) वे ग्रंथविशेष जिनके द्वारा भिन्न-भिन्न वेदों तथा एक ही वेदके अनेक तरहसे स्वरोंके उच्चारण, पदोंके क्रम और विच्छेद आदिका निर्णय होता है।

प्रातिसीम–पु० (सं०) पड़ोसी।

प्रातिस्विक–वि० (सं०) अपना-अपना, प्रत्येकका; निजी।

प्रातिहंत्र–पु० (सं०) बदला, प्रतिशोध।

प्रातिहर्त्र–पु० (सं०) प्रतिहर्ताका काम।

प्रातिहार, प्रातिहारक–पु० (सं०) ऐंद्रजालिक, बाजीगर; द्वारपाल।

प्रातिहारिक–पु० (सं०) बाजीगर; द्वारपाल।

प्रातिहार्य–पु० (सं०) इंद्रजाल, बाजीगरी; द्वारपालका काम।

प्रातीतिक–वि० (सं०) जो वास्तव न हो पर भ्रमवश विशेष प्रकारका भासित होता हो, प्रातिभासिक; जो केवल कल्पनामें हो।

प्रातीप–पु० (सं०) प्रतीपपुत्र, भीष्मपितामहके पिता शांतनु।

प्रातीपिक–वि० (सं०) प्रतिकूल आचरण करनेवाला, प्रतिकूलाचारी; विपरीत, उलटा।

प्रात्यंतिक–पु० (सं०) सीमांत देशका राजा या शासक।

प्रात्यक्ष–वि० (सं०) प्रत्यक्ष-संबंधी।

प्रात्ययिक–पु० (सं०) तीन तरहके प्रतिभूओंमेंसे एक, प्रत्यय-प्रतिभू। वि० विश्वस्त।

प्रात्यहिक–वि० (सं०) प्रतिदिनका, दैनिक।

प्राथमकल्पिक–पु० (सं०) वह विद्यार्थी जिसने अभी वेदका अध्ययन आरंभ किया हो; वह व्यक्ति जिसने अभी योगका आरंभ किया हो।

प्राथमिक–वि० (सं०) पहला, आदिम; पहलेका; प्रारंभिक, पहली बार घटित होनेवाला। **–उपचार**–पु०,**–चिकित्सा**–स्त्री० सहसा किसीके आहत हो जाने, कुचल जाने, जल जाने आदिके समय, सुयोग्य चिकित्सकके आगमनके पूर्व, किया जानेवाला वह उपचार जिससे आहत या पीड़ित व्यक्तिकी स्थिति अधिक बिगड़ने न पावे (फर्स्ट एड)।

प्राथमिकता–स्त्री० (प्रायॉरिटी) प्राथमिक होनेका भाव; किसीको औरोंसे पहले स्थान या अवसर मिलना। **–सूची**–स्त्री० (प्रायॉरिटी लिस्ट) विषयों आदिकी सूची जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक प्रश्नोंको प्रथम स्थान, प्राथमिकता, देनेका विशेष ध्यान रखा गया हो।

प्राथम्य–पु० (सं०) प्रथम होनेका भाव, पहलापन।

प्रादक्षिण्य–पु० (सं०) परिक्रमा करना।

प्रादानिक–वि० (सं०) होम, नैवेद्य आदि-संबंधी।

प्रादीपिक–वि०, पु० (सं०) घर-खेत आदिमें आग लगानेवाला (कौ०)।

प्रादुराक्षि–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

प्रादुर्भाव–पु० (सं०) प्रकट होना, प्रकाश; उत्पत्ति; अस्तित्व-ग्रहण; देवताका पृथ्वीपर प्रकट होना ।

प्रादुर्भूत–वि० (सं०) जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, जो प्रकट हुआ हो; उत्पन्न । **–मनोभवा**–स्त्री० एक प्रकारकी मध्या नायिका जिसके मनमें कामका पूरा प्रादुर्भाव होता है और जिसमें कामकलाके सभी चिह्न प्रकट होते हैं (केशव) ।

प्रादुष्करण–पु० (सं०) प्रकट करना; उत्पन्न करना ।

प्रादुष्कृत–वि० (सं०) प्रकट किया हुआ; उत्पन्न किया हुआ, उत्पादित; प्रज्वलित किया हुआ ।

प्रादुष्य–पु० (सं०) प्रादुर्भाव ।

प्रादेश–पु० (सं०) अँगूठेके सिरेसे तर्जनीके सिरेतककी दूरी; प्रदेश, प्रांत; स्थान; दे० 'शासनादेश' ।

प्रादेशन–पु० (सं०) दान ।

प्रादेशिक–वि० (सं०) प्रदेश-संबंधी; प्रदेशका; अर्थद्योतक; प्रसंगगत; स्थानिक; सीमित । पु० किसी प्रदेशका शासक, सूबेदार । **–सेना**–स्त्री० (टेरिटोरियल आर्मी) किसी विशेष प्रदेश या क्षेत्रमें स्थानीय सुरक्षाकी दृष्टिसे तैयार की जानेवाली (नागरिकोंकी) सेना ।

प्रादेशिनी–स्त्री० (सं०) तर्जनी ।

प्रादेशी(शिन्)–वि० (सं०) अँगूठेकी नोकसे तर्जनीकी नोकतक लंबा ।

प्रादोष, प्रादोषिक–वि० (सं०) प्रदोष-संबंधी; प्रदोषका ।

प्राधनिक–पु० (सं०) विध्वंसक अस्त्र; युद्धका उपकरण, लड़ाईका सामान ।

प्राधा–स्त्री० (सं०) कश्यपकी एक पत्नी ।

प्राधानिक–वि० (सं०) श्रेष्ठ; सुख्यात; प्रधान, मूलप्रकृति-संबंधी ।

प्राधान्य–पु० (सं०) प्रधान होनेका भाव, प्रधानता; श्रेष्ठता; मूल कारण ।

प्राधिकरण–पु० (अथॉरिजेशन) किसीको कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार प्रदान करना ।

प्राधिकार–पु० (अथॉरिटी) कोई काम करने, आदेश देने आदिका अधिकार; इस तरहका वह अधिकार जो किसी पदाधिकारीको अपने पदके कारण प्राप्त हो ।

प्राधिकारी–पु० (अथॉरिटी) वह जिसे प्राधिकार प्राप्त हो । (प्राधिकारिवर्ग—अथारिटीज़) ।

प्राधिकृत–वि० (अथॉराइज्ड) जिसे विधिविहित अधिकार प्राप्त हो, जो विधिविहित अधिकारी द्वारा स्वीकृत हो । **–अभिकर्ता**–पु० (अथॉराइज्ड एजेंट) वह अभिकर्ता जिसे प्रतिनिधिरूपमें कोई काम करनेका विधिविहित अधिकार प्राप्त हो । **–पूँजी**–स्त्री० (अथॉराइज्ड कैपिटल) कारखाने आदिमें लगानेके लिए हिस्सेदारोंसे ली जानेवाली वह पूँजी जिसकी स्वीकृति विशेष प्राधिकारीसे ले ली गयी हो ।

प्राधीत–वि० (सं०) जिसने अच्छी तरह अध्ययन किया है, प्रकृष्ट रूपसे शिक्षित ।

प्राध्यापक–पु० (लेक्चरर, प्रोफेसर) वह अध्यापक जो अपने विषयका अच्छा विद्वान् हो; किसी महाविद्यालय आदिका उच्च श्रेणीका अध्यापक ।

प्राध्व–वि० (सं०) जो दूर हो, दूरवर्ती; नम्र; वद्ध; अनुकूल । पु० लंबी राह; सवारी; रथ आदि; वंधन; परिहास; क्रीडा ।

प्रान*–पु० दे० 'प्राण' ।

प्रानी*–पु० दे० 'प्राणी' ।

प्रानुमतिपत्र–पु० (परमिट) वह पत्र जिसमें कोई ऐसा माल, जिसपर किसी तरहका नियंत्रण हो, सीमित मात्रामें खरीदनेकी विशेष अनुमति दी गयी हो; माल उतारने या हटाने-वढ़ानेकी विशेष अनुमति प्रदान करनेवाला पत्र, अनुज्ञापत्र ।

प्रानेस*–पु० दे० 'प्राणेश' ।

प्राप–पु० (सं०) प्राप्ति, पहुँचना (जैसे–दुष्प्राप); जलका प्रचुर होना । वि० प्राप्य ।

प्रापक–वि०, पु० (सं०) प्राप्त करने या करानेवाला; पहुँचानेवाला; (पेयी) जिसे रुपया-पैसा आदि दिया जाय, चुकाया जाय, पानेवाला, आदाता ।

प्रापण–पु० (सं०) प्राप्त करना या कराना; पहुँचाना, ले जाना; हवाला ।

प्रापणिक–पु० (सं०) व्यापारी, सौदागर ।

प्रापणीय–वि० (सं०) प्राप्त करने या कराने योग्य; पहुँचाने योग्य ।

प्रापति*–स्त्री० प्राप्ति; एक सिद्धि ।

प्रापना*–स० क्रि० प्राप्त करना, पाना ।

प्रापयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) प्राप्त करानेवाला ।

प्रापित–वि० (सं०) प्राप्त कराया हुआ; पहुँचाया हुआ ।

प्रापी(पिन्)–वि० (सं०) प्राप्त करनेवाला; पहुँचनेवाला (समासांतमें) ।

प्राप्त–वि० (सं०) पाया हुआ, जो मिला हो, लब्ध; जो आ पड़ा हो, उपस्थित; स्थापित; पूरा किया हुआ; जहाँ कोई पहुँचा हो, आसादित; उचित । **–कारी(रिन्)**–वि० उचित कार्य करनेवाला । **–काल**–वि० जिसे करनेका समय उपस्थित हो, समयोचित । पु० उचित समय, किसी बातका उपयुक्त अवसर; मृत्युका समय । **–जीवन**–वि० जिसकी जान लौट आयी हो, जो मरते-मरते वच गया हो । **–दोष**–वि० जिसे दोष लगा हो, दोषी । **–पंचत्व**–वि० मरा हुआ, मृत । **–प्रसवा**–वि० स्त्री० जो बच्चा जननेको हो । **–बीज**–वि० वोया हुआ । **–बुद्धि**–वि० जो वेहोशीके वाद फिर होशमें आ गया हो; वुद्धिमान् । **–भार**–पु० वोझ ढोनेवाला पशु (वैल आदि) । **–भाव**–वि० चतुर; सुंदर । **–मनोरथ**–वि० जिसका मनोरथ पूर्ण हो गया हो । **–यौवन**–वि० जिसकी जवानी आ गयी हो । **–रूप**–वि० उपयुक्त; रूपवान्, मनोहर; वुद्धिमान् । **–व्यवहार**–वि० वालिग ।

प्राप्तर्तु–स्त्री० (सं०) वह लड़की जो रजस्वला हो गयी हो ।

प्राप्तव्य–वि० (सं०) पाने, मिलने योग्य ।

प्राप्ताधिकार–पु० (प्रिविलेज) वह विशेष अधिकार जो कुछ ही लोगोंको प्राप्त हो; किसी व्यक्ति, वर्ग, संस्था आदिको उसकी विशेष स्थितिके कारण प्राप्त विशेष अधिकार या सहूलियत, विशेषाधिकार ।

प्राप्तानुज्ञ–वि० (लाइसेंस्ड) जिसे किसी वस्तुके वेचने या कोई काम करनेका अनुज्ञापत्र दिया गया हो । पु० (लाइसेंसी) वह व्यक्ति जिसे इस तरहका अनुज्ञापत्र दिया गया हो, अनुज्ञप्तिधारी ।

प्राप्तार्थ–वि० (सं०) सफल । पु० मिली हुई वस्तु ।

प्राप्तावसर–वि० (सं०) दे० 'प्राप्तकाल' ।

प्राप्ति–स्त्री० (सं०) पाया जाना, मिलना, लाभ; पहुँच; उपार्जन; उदय; अनुमति; हिस्सा; भाग्य; संहति; पूर्व कर्मोंका फल; फलागम (ना०); आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिसके द्वारा प्रत्येक अभीष्ट पदार्थ मिलता है; आय, धनागम; फायदा, लाभ; जरासंधकी एक पुत्री जो कंससे व्याही गयी थी; कामदेवकी एक पत्नी; चंद्रमाका ग्यारहवाँ स्थान (फ० ज्यो०) । **–कर्ता**–पु० (रीसिपिएंट) जिसे कोई वस्तु प्राप्त हो, पानेवाला, आदाता । **–सम**–पु० न्यायमें एक विशेष जाति ।

प्राप्त्याशा–स्त्री० (सं०) प्राप्तिकी आशा, मिलनेकी आशा; आरब्ध कार्यकी एक अवस्था जिसमें फलप्राप्तिकी आशा होती है (ना०) ।

प्राप्य–वि० (सं०) प्राप्त करने योग्य; (उधार दी हुई रकम या वेची हुई वस्तुका मूल्य) जो बाकी निकलता हो और जिसे पानेका किसीको अधिकार हो, पावना; जहाँतक पहुँच हो सके; जो मिल सके, मिलने योग्य । **–कारी(रिन्)**–पु० वह इंद्रिय जो विषयतक पहुँचकर उसका ज्ञान कराती है (जैसे–आँख) । **–रूप**–वि० जिसे प्राप्त करना सरल हो ।

प्राप्यक–पु० (बिल) किसीके हाथ वेचे हुए माल या किसीके लिए किये हुए काम आदिका ब्यौरा और प्राप्य मूल्य दिखानेवाला पत्र; बीजक ।

प्रावल्य–पु० प्रवलता; प्रधानता; शक्ति ।

प्रावालिक–पु० (सं०) दे० 'प्रावालिक' ।

प्राबोधक–पु० (सं०) उषःकाल; स्तुतिगान कर प्रातःकाल राजाओंको जगानेवाला व्यक्ति, वंदी, मागध ।

प्राबोधिक–पु० (सं०) दे० 'प्राबोधक'।

प्राभंजन–वि० (सं०) वायु-संबंधी। पु० स्वाती नक्षत्र।

प्राभंजनि–पु० (सं०) हनूमान्; भीष्म।

प्राभव–पु० (सं०) प्रभुता, प्रभुत्व; प्रधानता, श्रेष्ठता।

प्राभवत्य–वि० (सं०) विभुत्व; प्रभुत्व।

प्राभाकार–वि० (सं०) मीमांसाके प्रसिद्ध आचार्य प्रभाकरसे संबंध रखनेवाला। पु० प्रभाकरके मतका अनुयायी।

प्राभातिक–वि० (सं०) प्रभात-संबंधी, प्रातःकालिक। पु० 'प्रभाती' नामक गीत।

प्राभिकर्ता–पु० (एटर्नी) वह व्यक्ति जिसे किसी अन्य व्यक्ति या संस्थाकी ओरसे प्रतिनिधि-रूपमें कार्य करनेका विधिविहित अधिकार प्राप्त हो; वह जिसे मुकदमे-मामलेमें किसीकी ओरसे देख-रेख करने आदिका विधिविहित अधिकार दिया गया हो।

प्राभियोक्ता–पु० (प्रॉसीक्यूटर) किसीके विरुद्ध कोई मामला चलानेवाला। **–पक्ष**–पु० (प्रॉसीक्यूशन) वह पक्ष जिसकी ओरसे किसीके विरुद्ध कोई मामला न्यायालयमें चलाया गया हो।

राजकीय प्राभियोक्ता–पु० (गवर्नमेंट प्रॉसीक्यूटर) राज्यका वह विधिक अधिकारी जो सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे किसीपर कोई अभियोग चलाये।

प्राभियोजन–पु० (प्रॉसीक्यूशन) किसीके विरुद्ध कोई अभियोग या मामला चलाना, दे० 'अभियोजन'।

प्राभृत, प्राभृतक–पु० (सं०) उपहार, भेंट, नजर; रिश्वत।

प्रामंडलिक–वि० (डिवीजनल) प्रमंडलका या प्रमंडल-संबंधी।

प्रामाणिक–वि० (सं०) जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणोंसे सिद्ध हो, शास्त्र-सिद्ध; मानने योग्य; प्रमाण-संबंधी; जो मान, परिमाणका काम दे; जो किसी बातका प्रमाण हो, प्रमाणरूप; शास्त्रज्ञ। पु० प्रमाणोंको माननेवाला; वह जो प्रमाणोंको जानता हो, प्रमाणवेत्ता, न्यायशास्त्री; व्यापारियोंका प्रधान।

प्रामाणिकता–आधुनिक आलोचनाका एक परिभाषिक शब्द जो मात्र अनुभवको नहीं, उसके जीवनमें परीक्षित होनेकी स्थितिको महत्त्व देता है।

प्रामाण्य–पु० (सं०) प्रमाणत्व, शास्त्रसिद्ध होना; विश्वसनीयता; प्रमाण। **–वादी(दिन्)**–वि० प्रमाणमें विश्वास करनेवाला।

प्रामादिक–वि० (सं०) जो प्रमादके कारण हुआ हो, प्रमादजनित।

प्रामाद्य–पु० (सं०) अड़ूसा; उन्माद, नशा; लापरवाही; भूल।

प्रामिसरी–वि० (अं०) जिसमें किसी बातकी प्रतिज्ञा की गयी हो। **–नोट**–पु० वह लेख या पत्र जिसमें कोई व्यक्ति यह प्रतिज्ञा करता है कि मैं अमुक मितिको या जब कभी भी माँगनेपर अमुक व्यक्तिको या इस पत्रके वाहकको इतना रुपया दूँगा; वह कागज या ऋणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ ऋण लेकर यह प्रतिज्ञा करती है कि अमुक व्यक्तिसे जो इतना ऋण लिया गया वह (मूलधन) तथा उसका सूद इस हिसाबसे ऋणदाताको दिया जायगा।

प्रामीत्य–पु० (सं०) ऋण, कर्ज; मृत्यु।

प्रामोदक, प्रामोदिक–वि० (सं०) मनोज्ञ, सुंदर, मनोहर।

प्रायः(यस्)–वि० (सं०) लगभग, करीब-करीब। अ० अधिकतर, अकसर।

प्राय–पु० (सं०) मृत्यु; अनशन द्वारा होनेवाली मृत्यु, अनशन-मृत्यु; बाहुल्य, आधिक्य। वि० तुल्य, समान; वहाँतक पहुँचता हुआ; पूर्ण (इन अर्थोंमें इस शब्दका प्रयोग समासमें होता है, जैसे–'कष्टप्राय')। **–गत**–वि० मरणासन्न। **–दर्शन**–पु० सामान्य बात। **–भव**–वि० जो प्रायः हुआ करे, सामान्य। **–विधायी(यिन्)**–वि० जो प्रायोपवेशन कर मरनेका संकल्प कर चुका हो। **–वृत्त**–वि० जो बिलकुल गोल न हो।

प्रायण–पु० (सं०) प्रवेश, आरंभ; एक शरीर त्यागकर दूसरेमें प्रवेश करना (स्मृ०); शरण लेना; मृत्यु, स्वेच्छासे मरना; स्थान बदलना; जीवनमार्ग; दूधके योगमें बना हुआ एक व्यंजन; वह आहार जिससे अनशन भंग किया जाय।

प्रायणीय–वि० (सं०) आरंभिक। पु० एक याग जो सोमयागके आरंभमें किया जाता है; सोमयागका पहला दिन।

प्रायत्य–पु० (सं०) पवित्रता, विशुद्धता।

प्रायद्वीप–पु० दे० 'प्रायोद्वीप'।

प्रायशः(शस्)–अ० (सं०) अधिकतर, बहुधा, अकसर।

प्रायश्चित्त–पु० (सं०) वह शास्त्र-विहित कर्म जो पापका मार्जन करनेके लिए किया जाय; शोधन।

प्रायश्चित्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रायश्चित्त'।

प्रायश्चित्तिक–वि० (सं०) जिसका प्रायश्चित्त किया जाय, प्रायश्चित्तके योग्य; प्रायश्चित्त-संबंधी।

प्रायश्चित्ती(त्तिन्)–वि० (सं०) प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायाणिक, प्रायात्रिक–वि० (सं०) जो यात्राके समय आवश्यक या उचित हो। पु० शंख, चँवर, दही आदि मंगलद्रव्य जो यात्राके समय शुभ माने जाते हैं।

प्रायिक–वि० (सं०) जो अधिकतर होता हो, प्रायः होनेवाला, सामान्य।

प्रायुद्धेषी(षिन्)–पु० (सं०) घोड़ा।

प्रायोगिक–वि० (सं०) प्रयोग संबंधी; जिसका नित्य प्रयोग होता हो, जिसका नित्य प्रयोग किया जाय; व्यावहारिक।

प्रायोज्य–वि० (सं०) प्रयोजनके योग्य, (वह वस्तु) जो किसीके विशेष प्रयोजनकी हो (जैसे–पंडितके लिए पुस्तक आदि। शास्त्रके अनुसार ऐसी वस्तुओंका बँटवारा और वस्तुओंकी भाँति नहीं हो सकता)।

प्रायो–'प्रायस्'का समासगत रूप। **–देवता**–पु० वह देवता जिसे सभी मानते हों, सर्वपूज्य देवता। **–द्वीप**–पु० स्थलका वह भाग जो तीन ओर पानीसे घिरा हो और एक ओर स्थलसे लगा हो। **–भावी(विन्)**–वि० जो आम तौरसे होता हो, सामान्य। **–वाद**–पु० लोकोक्ति, कहावत।

प्रायोपगमन–पु० (सं०) दे० 'प्रायोपवेश'।

प्रायोपयोगिक–वि० (सं०) जो साधारण हो, सामान्य।

प्रायोपविष्ट–वि० (सं०) जो प्रायोपवेश कर रहा हो।

प्रायोपवेश, प्रायोपवेशन–पु० (सं०) जान देनेके लिए दाना-पानी छोड़कर पड़ रहना; मृत्युके लिए किया जानेवाला अनशनव्रत।

प्रायोपवेशनिका–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रायोपवेश'।

प्रायोपवेशी(शिन्)–वि० (सं०) प्रायोपवेश (आमरण अनशन) करनेवाला।

प्रायोपेत–वि० (सं०) जो प्रायोपवेश कर रहा हो।

प्रारंभ–पु० (सं०) आरंभ; शुरूकी स्थिति; कार्य, प्रयत्न।

प्रारंभण–पु० (स०) आरंभ करना, शुरू करना।

प्रारंभिक–वि० (सं०) आरंभका; आरंभमें होनेवाला।

प्रारब्ध–वि० (सं०) आरंभ किया हुआ। पु० तीन प्रकारके कर्मोंमेंसे वह जिसका फल भोगा जा रहा हो; भाग्य, किस्मत; वह जो शुरू किया गया हो।

प्रारब्धि–स्त्री० (सं०) आरंभ; हाथी बाँधनेका खूँटा या रस्सा।

प्रारब्धी(ब्धिन्)–वि० (सं०) प्रारब्धवाला, भाग्यवान्।

प्रारिप्सित–वि० (सं०) जिसे शुरू करनेका विचार किया गया हो।

प्रारूप–पु० (ड्रॉफ्ट) किसी प्रस्ताव, योजना विधेयक आदिका वह प्राथमिक रूप जो शीघ्रतामें तैयार कर लिया जाता है, किंतु जिसमें बादमें कुछ काट-छाँट या संशोधनकी आवश्यकता पड़ती है, मसौदा, खर्रा, प्रालेख; (प्रीकर्सर) पूर्वगामी रूप, किसी यंत्रादिके पूर्ण विकसित रूपके पहलेका अविकसित या भद्दा रूप। **–कार**–पु० (ड्राफ्ट्समैन) प्रारूप या मसौदा तैयार करनेवाला।

प्रारोह–पु० (सं०) प्ररोह, अंकुर।

प्रार्जयिता(तृ)–वि० (सं०) दान करनेवाला।

प्रार्ण–पु० (सं०) प्रधान ऋण।

प्रार्थक–वि० (सं०) प्रार्थना करनेवाला। पु० प्रणयकी आकांक्षा करनेवाला।

प्रार्थन–पु० (स०) माँगना, याचना करना, याचन।

प्रार्थना*–स० क्रि० प्रार्थना करना। स्त्री० (सं०) किसीसे कुछ माँगना; किसी बातके लिए किसीसे विनयपूर्वक कहना, नम्र निवेदन, यांचा; अपने या किसी अन्य व्यक्तिके कल्याण, उन्नति आदिके लिए ईश्वर या किसी देवतासे भक्तिपूर्वक किया जानेवाला निवेदन; आक्रमण, अभियान; हिंसा; एक प्रकारकी मुद्रा (तं०);

इच्छा, चाह; दावा, अभियोग। **–पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जिससे किसीसे किसी बातके लिए प्रार्थना की गयी हो, अरजी। **–भंग**–पु० प्रार्थनाकी अस्वीकृति। **–समाज**–पु० ब्रह्मसमाज जैसा एक नवीन संप्रदाय। **–सिद्धि**–स्त्री० इच्छाकी पूर्ति।

प्रार्थनीय–वि० (सं०) जिसके लिए प्रार्थना की जाय, प्रार्थना करने योग्य। पु० द्वापर युग।

प्रार्थयितव्य–वि० (सं०) प्रार्थना करने या चाहने योग्य।

प्रार्थयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) प्रार्थना करनेवाला, याचक; प्रणयाकांक्षी।

प्रार्थित–वि० (सं०) जिसकी या जिसके लिए प्रार्थना की गयी हो, याचित; आक्रांत; अवरुद्ध; आहत; हत; जिसकी चाह, तलाश हो। पु० इच्छा। **–दुर्लभ**–वि० जिसके लिए इच्छा की गयी हो, पर जिसका मिलना कठिन हो। **–पूंजी**–स्त्री० (सब्स्क्राइब्ड कैपिटल) किसी कारखाने आदिके लिए प्राधिकृत पूंजीका वह अंश जिसके लिए संभाव्य हिस्सेदारोंके प्रार्थनापत्र प्राप्त और स्वीकृत हो चुके हों।

प्रार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) प्रार्थना करनेवाला; चाहनेवाला, इच्छुक; याचक।

प्रार्थ्य–वि० (सं०) प्रार्थना करने योग्य, जिसके लिए प्रार्थना की जाय।

प्रालंब–वि० (सं०) विशेष रूपसे लटकनेवाला। पु० सीनेतक लटकनेवाली माला; एक तरहकी मोतियोंकी माला; स्त्रीका स्तन; एक तरहका कद्दू।

प्रालंबक–पु० (सं०) सीनेतक लटकनेवाली माला।

प्रालंबिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका सोनेका हार।

प्रालेख–पु० (ड्रॉफ्ट) दे० 'प्रारूप'।

प्रालेय–पु० (सं०) हिम, बर्फ। वि० प्रलय-संबंधी। **–पर्वत,–भूधर,–शैल**–पु० हिमालय। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा; कपूर।

प्रालेयांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

प्रालेयाद्रि–पु० (सं०) हिमालय।

प्रावट–पु० (सं०) जौ।

प्रावण–पु० (सं०) फावड़ा।

प्रावधान–पु० किसी कानूनके साथ कोई शर्त रख देनेका कार्य, उपबंध (प्राविज़न)।

प्रावर–पु० (सं०) प्राचीर, चहारदीवारी; उपरना; एक देश।

प्रावरण–पु० (सं०) ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय, ओढ़नी, चादर।

प्रावरणीय–पु० (सं०) उपरना आदि ऊपरसे ओढ़नेका वस्त्र।

प्रावस्था–स्त्री० (फ़ेज़) परिवर्तन या विकासकी विशेष स्थिति; स्वरूप।

प्रावार–पु० (सं०) ओढ़नेका वस्त्र, ओढ़नी; आवरण; एक जिला या क्षेत्र। **–कर्ण**–पु० एक प्रकारका उल्लू पक्षी। **–कीट**–पु० एक प्रकारका कपड़ेका कीड़ा; चीलर।

प्रावारक–पु० (सं०) ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय।

प्रावारिक–पु० (सं०) प्रावार बनानेवाला।

प्रावालिक–पु० (सं०) प्रवाल, मूँगेका व्यापार करनेवाला।

प्रावास–वि० (सं०) प्रवास या यात्रा-संबंधी।

प्रावासिक–वि० (सं०) प्रवास या यात्राके उपयुक्त।

प्राविट*–पु० प्रावृट्, वर्षाऋतु, पावस।

प्रावित्र–पु० (सं०) रक्षण; आश्रय।

प्राविधिक–वि० (टेकनिकल) किसी कला, शिल्प आदिकी विशेष कार्यविधि, प्रक्रिया आदि संबंधी। **–आपत्ति**–स्त्री० (टेकनिकल आब्जेक्शन) नियम, प्रविधि आदिके अननुपालनके आधारपर की गयी आपत्ति।

प्राविधिज्ञ–पु० (टेकनीशियन) किसी कला, शिल्प आदिकी विशेष कार्यविधि, प्रक्रियाओं आदिका जानकार।

प्रावीण्य–पु० (सं०) प्रवीण होनेका भाव, कुशलता, निपुणता।

प्रावृट्(ष्)–स्त्री० (सं०) वर्षाऋतु, पावस। **–(ट्) काल**–पु० वर्षाका मौसम।

प्रावृडत्यय–पु० (सं०) शरत्काल।

प्रावृत–वि० (सं०) विशेष रूपसे आवृत, घिरा हुआ; ढका हुआ। पु० ओढ़नेका वस्त्र, उत्तरीय, 'रैपर'।

प्रावृति–स्त्री० (सं०) प्राचीर, चहारदीवारी; बाड़ा; आध्यात्मिक अंधकार, अज्ञान (मायाका एक परिणाम–जै०)।

प्रावृत्तिक–वि० (सं०) गौण; जानकार। पु० दूत, एलची।

प्रावृष–पु०,–**प्रावृषा**–स्त्री० (सं०) वर्षाकाल, पावस।

प्रावृषायणी–स्त्री० (सं०) केवाँच; बिसखोपरा।

प्रावृषिक–वि० (सं०) वर्षाऋतु-संबंधी। पु० मोर।

प्रावृषिज–वि० (सं०) जो वर्षाऋतुमें उत्पन्न हुआ हो। पु० झंझावात।

प्रावृषीण–वि० (सं०) जो वर्षाऋतुमें उत्पन्न हो।

प्रावृषेण्य–वि० (सं०) वर्षाकाल-संबंधी; वर्षाकालमें उत्पन्न; वर्षाऋतुमें देय (ऋण आदि)। पु० कदमका पेड़; कुटजका पेड़; कुरैया; प्रचुरता, आधिक्य।

प्रावृषेण्या–स्त्री० (सं०) केवाँच; लाल पुनर्नवा।

प्रावृषेय–वि० (सं०) वर्षाऋतुमें होनेवाला।

प्रावृष्य–वि० (सं०) वर्षाऋतुमें होनेवाला। पु० वैदूर्य मणि; धाराकदंब; कुरैयाका पेड़; विकंटक वृक्ष।

प्रावेण्य–पु० (सं०) बढ़िया ऊनी चादर, शाल।

प्रावेशन–वि० (सं०) जो प्रवेशके समय दिया या किया जाय। पु० कारखाना।

प्रावेशिक–वि० (सं०) जिसने या जिसके द्वारा प्रवेश मिले, प्रवेशका साधनरूप; प्रवेश-संबंधी; जिसमें घुसनेकी आदत हो।

प्राव्रज्य–पु० (सं०) दे० 'प्राव्राज्य'।

प्राव्राज्य–पु० (सं०) प्रव्रज्या, सन्न्यास; बेकार घूमना।

प्राश–पु० (सं०) भोजन करना; स्वाद लेना; आहार।

प्राशक–वि०, पु० (सं०) खानेवाला।

प्राशन–पु० (सं०) खाना; खिलाना; भोजन।

प्राशनीय–वि० (सं०) खाने योग्य, खाद्य। पु० आहार।

प्राशस्त्य–पु० (सं०) प्रशस्त होनेका भाव, प्रशस्तता; विशिष्टता।

प्राशास्त्र–पु० (सं०) प्रशास्ता नामक ऋत्विक्का कर्म या पद; शासन; राज्य।

प्राशित–वि० (सं०) खाया हुआ, भक्षित। पु० पितृतर्पण; भोजन, भक्षण।

प्राशित्र–पु० (सं०) पुरोडाश आदिका वह भाग जो ब्रह्माके लिए एक पात्रमें अलग रखा जाता है; वह पात्र; खाद्यपदार्थ।

प्राशित्राहरण–पु० (सं०) गायके कानके आकारका वह पात्र जिसमें प्राशित्र रखा जाता है।

प्राशी(शिन्)–वि० (सं०) प्राशन करनेवाला, खानेवाला। (स्त्री० 'प्राशिनी')।

प्राश्निक–पु० (सं०) प्रश्न करनेवाला, प्रश्नकर्ता; पंच, मध्यस्थ; (पेपर सेटर) छात्रोंकी किसी परीक्षाके लिए किसी विषयके प्रश्न छाँटने या चुननेवाला, प्रश्नपत्र तैयार करनेवाला; साक्षी; सभा-की काररवाई करनेवाला, सभ्य। वि० जिसमें प्रश्न हो।

प्राश्य–वि० (सं०) खाने योग्य।

प्रासंग–पु० (सं०) वह जूआ जिसके सहारे नये बैल निकाले जाते हैं; तराजू, तुला; तुलादंड।

प्रासंगिक–वि० (सं०) जिसका प्रसंग हो, प्रसंगप्राप्त; प्रसंगोचित; प्रसंगवश किया गया। **–व्यय**–पु० आकस्मिक आवश्यकतावश किया जानेवाला व्यय (कंटिंजेंसी चार्जेज)।

प्रासंग्य–पु० (सं०) वह नया बैल जो हल आदिमें निकाला जा रहा हो।

प्रास–पु० (सं०) फेंकना; भाला; अनुप्रास, वर्णसाम्य।

प्रासक–पु० (सं०) भाला; पासा।

प्रासन–पु० (सं०) फेंकना; † दे० 'प्राशन'।

प्रासविक विज्ञान–पु० (सं०) गर्भवती नारियोंको प्रसव करानेकी कलाका विवेचन करनेवाला विज्ञान, प्रसूतिविज्ञान।

प्रासाद–पु० (सं०) राजभवन, महल; देवालय; विशाल भवन, आलीशान इमारत; महल या बड़े भवनकी छत; दर्शकोंके लिए बना हुआ ऊँचा स्थान। **–कुक्कुट**–पु० पालतू कबूतर। **–गर्भ**–पु० राजभवनके अंदरका शयनागार। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० देवालय-

में मूर्तिका स्थापन। **–मंडना**–स्त्री० एक प्रकारका रंग। **–शृंग**–पु० महल या मंदिरकी चोटी। **–शायी(यिन्)**–वि० प्रासादमें सोनेवाला।

प्रासादिक–वि० (सं०) कृपायुक्त, अनुकूल; सुंदर; जो प्रसादके रूपमें दिया जाय।

प्रासादीय–वि० (सं०) प्रासाद-संबंधी; प्रासादका।

प्रासिक–पु० (सं०) भालेसे लड़नेवाला योद्धा।

प्रासूतिक–वि० (सं०) प्रसूति-संबंधी।

प्रासेव–पु० घोड़ेके साजकी रस्सी।

प्रास्कण्व–पु० (सं०) एक प्रकारका साम।

प्रास्त–वि० (सं०) निकाला हुआ, बहिष्कृत, निष्कासित; फेंका हुआ।

प्रास्तारिक–वि० (सं०) प्रस्तार-संबंधी; प्रस्तारमें काम आनेवाला।

प्रास्ताविक–वि० (सं०) प्रस्तावके रूपमें काम आनेवाला; प्रसंगोचित; समयोचित। पु० प्रस्तावना 'यह प्रास्ताविक समाप्त करता हूँ'—सुधीन्द्र।

प्रास्तुत्य–पु० (सं०) विचार या तर्कका विषय बनना।

प्रास्थानिक–वि० (सं०) जो प्रस्थानके समय आवश्यक या उचित हो; प्रस्थानसंबंधी। पु० दे० 'प्रायाणिक'।

प्रास्थिक–वि० (सं०) जो तौलमें एक प्रस्थ हो; जो एक प्रस्थ देकर खरीदा गया हो; जिसमें एक प्रस्थ अन्न अँटे या पके; जिसे बोनेमें एक प्रस्थ बीज लगे।

प्रास्रवण–वि० (सं०) झरना-संबंधी।

प्राह–पु० (सं०) नृत्यकी शिक्षा।

प्राहारिक–पु० (सं०) प्रहरी, पुलिस कर्मचारी।

प्राहुण, प्राहुणक–पु० (सं०) अतिथि, पाहुन।

प्राह्ण–पु० (सं०) दिनका पूर्व भाग, पूर्वाह्ण।

प्राह्णेतन–वि० (सं०) पूर्वाह्णमें होनेवाला या पूर्वाह्ण-संबंधी।

प्राह्लाद–पु० (सं०) प्रह्लादका वंशज।

प्रिंटर–पु० (अं०) मुद्रक, छापनेवाला।

प्रिंटिंग–स्त्री० (अं०) छापनेका काम, छपाई, मुद्रण। वि० छापनेवाला। **–इंक**–स्त्री० छपाईके काम आनेवाली स्याही। **–प्रेस**–पु० हायसे चलायी जानेवाली टाइप छापनेकी कल। **–मशीन**–स्त्री० टाइप छापनेकी वह कल जो साधारण हैंड प्रेससे अच्छी होती है और विशेपकर विजलीके वलसे चलती है।

प्रिंस–पु० (अं०) राजा; राजकुमार, शाहजादा; राजकुलका कोई पुरुप। **–आव् वेल्स**–पु० इंगलैंडका युवराज।

प्रिंसिपल–पु० (अ०) किसी कालेज या बड़े विद्यालयका सर्वोच्च अध्यापक या अधिकारी; प्राचार्य; वह धन जो सूदपर दिया गया हो, मूल धन।

प्रिथिमी*–स्त्री० पृथ्वी, धरती।

प्रियंकर–वि० (सं०) प्रसन्नकारक।

प्रियंकरी–स्त्री० (सं०) श्वेतकंटकारी; बृहत् जीवंती; असगंध।

प्रियंकार–वि० (सं०) दे० 'प्रियकर'।

प्रियंगु–स्त्री० (सं०) एक वृक्ष; राई; पीपल; कँगनी नामका अन्न; कुटकी।

प्रियंवद–वि० (सं०) प्रिय बोलनेवाला। पु० गगनचारी पक्षी, खेचर; एक गंधर्व।

प्रियंवदा–स्त्री० (सं०) एक वृत्त। वि० स्त्री० प्रिय बोलनेवाली।

प्रिय–वि० (सं०) जिसके प्रति प्रेम हो, प्यारा; अच्छा लगनेवाला, हृद्य; जो छोड़ा न जा सके, जिससे अलग होनेको जी न चाहे; खर्चीला। पु० स्वामी, पति; प्रेमी, आशिक; एक प्रकारका मृग; जीवक नामकी ओषधि; अच्छी लगनेवाली बात, अनुकूल बात; हित। **–कर**–वि० हर्ष उत्पन्न करनेवाला, हर्षप्रद; हित करनेवाला। **–कलत्र**–पु० वह पुरुष जो अपनी पत्नीको बहुत प्यार करता हो। **–कांक्षी(क्षिन्)**–वि० भला चाहनेवाला। **–काम**–वि० भला चाहनेवाला, हितैषी। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० हित करनेवाला। पु० मित्र। **–कृत्**–पु० हित करनेवाला; विष्णु। **–जन**–पु० स्नेहपात्र व्यक्ति; सगा-संबंधी। **–जानि**–पु० दे० 'प्रियकलत्र'। **–जीव**–पु० सोनापाठा। **–तोषण**–पु० एक रतिबंध। वि० प्रियको तुष्ट करनेवाला। **–दत्ता**–स्त्री० दान की जानेवाली पृथिवी। **–दर्श**–वि० दे० 'प्रियदर्शन'। **–दर्शन**–वि० जो देखनेमें भला लगे, सुदर्शन, सुंदर। पु० तोता; पिंडखजूर; गंधर्वोंका एक राजा। **–दर्शी(शिन्)**–वि० सबको स्नेहकी दृष्टिसे देखनेवाला। पु० सम्राट् अशोकका एक नाम। **–देवन**–वि० जिसे जुएसे प्रेम हो। **–धन्वा(न्वन्)**–पु० शिव। **–निवेदन**–पु० सुसंवाद। **–निवेदयिता(तृ)**–वि०, पु० संवादवाहक। **–पात्र**–वि०, पु० प्यारा। **–पुत्र**–पु० एक पक्षी। **–प्राय**–वि० अत्यंत प्रिय। पु० प्रिय वचन। **–प्रेप्सु**–वि० अभीष्ट वस्तुकी प्राप्तिकी इच्छा रखनेवाला। **–भाव**–पु० प्रेम। **–भाषण**–पु० प्रिय वचन। **–भाषी(षिन्)**–वि० प्रिय बोलनेवाला, मीठी बात कहनेवाला। (स्त्री० 'प्रियभाषिणी'।) **–मंडन**–वि० जिसे आभूषण प्रिय हों। **–मधु**–वि० जिसे शराब प्यारी हो, मद्यप्रिय। पु० बलराम। **–रण**–वि० जिसे युद्ध प्रिय हो, वीर। **–रूप**–वि० सुंदर, सुभग। **–वक्ता(क्तृ)**–वि० चापलूस। **–वचन**–पु० अच्छी लगनेवाली बात, मधुरवचन। वि० मधु-सी मीठी बात कहनेवाला, मधुरभाषी। **–वयस्य**–पु० प्रिय मित्र। **–वर्णी,–वल्ली**–स्त्री० प्रियंगु। **–वादिका**–स्त्री० एक बाजा। **–वादिनी**–स्त्री० एक तरहकी चिड़िया। वि० स्त्री० मधुर बोलनेवाली। **–वादी(दिन्)**–वि०, पु० प्रिय बोलनेवाला, मधुरभाषी; चापलूस। **–व्रत**–वि० जिसे व्रत प्रिय हों। पु० स्वायंभुव मनुके एक पुत्र। **–शालक**–पु० पियासाल। **–श्रवा(वस्)**–पु० विष्णु। **–संगमन**–पु० प्रिय और प्रियाके मिलनेका स्थान; कश्यप और अदितिके मिलनेका स्थान। **–संदेश**–पु० अच्छा या अनुकूल संवाद, खुशखबरी; चंपाका पेड़। **–संप्रहार**–वि० मुकदमेबाज। **–संवास**–पु० प्रिय व्यक्तियोंके साथ रहना। **–सख**–पु० प्रिय मित्र; खैरका पेड़। (स्त्री० 'प्रियसखी'।) वि० मित्रोंको प्यार करनेवाला। **–सत्य**–पु० प्रिय लगनेवाला सत्य वचन। वि० जिसे सत्य प्रिय हो। **–सालक**–पु० पियासाल नामका पेड़। **–सुहृद्**–पु० प्यारा मित्र। **–स्वप्न**–वि० जिसे सोना प्रिय हो, आलसी।

प्रियक–पु० (सं०) पियासाल वृक्ष; कदंब वृक्ष; एक तरहका चितकबरा हिरन; प्रियंगु; भ्रमर; केसर; धाराकदंब; एक पक्षी; कार्त्तिकेयका एक अनुचर।

प्रियतम–वि० (सं०) सबसे अधिक प्यारा। पु० पति, स्वामी; प्रेमी, आशिक।

प्रियतमा–वि० स्त्री० (सं०) सबसे अधिक प्यारी। स्त्री० पत्नी; प्रेमिका, माशूका।

प्रियता–स्त्री०, **प्रियत्व**–पु० (सं०) प्रिय होनेका भाव; प्रेम।

प्रियांबु–पु० (सं०) आमका पेड़।

प्रिया–स्त्री० (सं०) पत्नी, भार्या; प्रेमिका; स्त्री, नारी; छोटी इलायची; चमेली; मदिरा; संवाद, समाचार।

प्रियाख्य–वि० (सं०) सुसमाचार सुनानेवाला।

प्रियाख्यान–पु० (सं०) शुभ समाचार।

प्रियातिथि–वि० (सं०) अतिथि-सत्कार करनेवाला।

प्रियान्न–पु० (सं०) महँगा खाद्य पदार्थ।

प्रियापाय–पु० (सं०) एक प्रकारका गृध्र।

प्रियापाय–पु० (सं०) प्रिय वस्तुका अभाव।

प्रियाप्रिय–पु० (सं०) हित और अहित। वि० अच्छा-बुरा।

प्रियार्ह–पु० (सं०) विष्णु। वि० प्रेमके योग्य।

प्रियाल–पु० (सं०) एक पेड़ जिसके फलोंके बीजकी गिरी चिरौंजी होती है।

प्रियाला–स्त्री० (सं०) दाख।

प्रियासु–वि० (सं०) जिसे प्राण प्यारे हों।

प्रियैषी(षिन्)–वि० (सं०) प्रिय चाहनेवाला।

प्रियोक्ति–स्त्री० (सं०) चापलूसीकी बात, चाटु वाक्य।

प्रियोदित–पु० (सं०) दे० 'प्रियोक्ति'।

प्रिवी–वि० (अं०) अंतरंग। **–कौंसिल**–स्त्री० सम्राट् या बादशाहके परामर्शदाताओंकी परिषद्; ग्रेट ब्रिटेनके सम्राट्के परामर्शदाताओंकी परिषद् जिसके सदस्य राज-कुलके लोग, बड़े-बड़े

सरकारी कर्मचारी तथा पादरी आदि होते हैं; इस कौंसिलका न्याय-विभाग जो अंग्रेजी राज्यमें अपीलका सबसे बड़ा और अंतिम न्यायालय है। **–कौंसिलर**–पु० प्रिवी कौंसिलका सदस्य।

प्रीअंक–पु० कदंब।

प्रीण–वि० (सं०) प्रीतियुक्त; प्रसन्न, पुराना।

प्रीणन–पु० (सं०) प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेवाला।

प्रीणस–पु० (सं०) गैंड़ा।

प्रीणित–वि० (सं०) प्रसन्न; संतुष्ट।

प्रीत–वि० (सं०) प्रीतियुक्त; प्रसन्न, हृष्ट। * स्त्री० प्रेम, प्रीति।

प्रीतम–पु० प्रियतम, पति, स्वामी; किसी नायिकाका प्रेमिक, आशिक।

प्रीति–स्त्री० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, आमोद; तृप्ति; प्रेम, प्यार; कृपा; कामदेवकी एक पत्नी; विष्कुंभ आदि २७ योगोंमेंसे दूसरा योग (फ० ज्यो०)। **–कर**–वि० हर्ष या प्रेम उत्पन्न करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० प्रेमपूर्ण कार्य, मैत्रीपूर्ण कार्य। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'प्रीतिकर'। **–तृट्(ष्)**–पु० कामदेव। **–द**–वि० प्रसन्न करनेवाला, हर्षदायक। पु० भाँड़; विदूषक। **–दत्त**–वि० प्रीतिपूर्वक दिया हुआ। पु० वह धन जो कन्याको विवाहमें माता, पिता आदिसे मिले। **–दान,–दाय**–पु० प्रेमवश दिया हुआ पदार्थ या द्रव्य, प्रेमोपहार। **–धन**–पु० प्रेमवश दिया हुआ धन। **–पात्र**–वि०, पु० प्यारा, प्रेमभाजन। **–पेय**–पु० (टोस्ट) किसीकी स्वास्थ्य-कामनासे ग्रहण किया जानेवाला पेय। **–भोज**–पु० वह भोज जिसमें प्रियजन, सगे-संबंधी सद्भावसे सम्मिलित हों (आ०)। **–भोज्य**–वि० जो आनंदपूर्वक खाया जाय। **–रीति**–स्त्री० प्रीति-पूर्ण व्यवहार, प्रेम-व्यवहार। **–वर्द्धन,–वर्धन**–पु० विष्णु। वि० प्रीति बढ़ानेवाला। **–वाद**–पु० मैत्रीपूर्ण वाद। **–विवाह**–पु० प्रेम-संबंधके कारण होनेवाला विवाह। **–सम्मेलन**–पु० (सोशल गैदरिंग) विद्यालय आदिके वार्षिकोत्सवके समय नये-पुराने छात्रोंका एकत्र होकर एक दूसरेसे मिलना, साथ खेलना, जलपान, नाटकादिमें सम्मिलित होना, स्नेह-सम्मेलन। **–स्निग्ध**–वि० प्रेमके कारण आर्द्र (आँखें)।

प्रीत्यर्थ–अ० (सं०) प्रसन्नताके लिए, प्रसन्न करनेके लिए।

प्रुष्ट–वि० (सं०) जला हुआ, दग्ध।

प्रुष्व–पु० (सं०) वर्षाकाल; जलबिंदु; सूर्य; सिर। वि० तप्त।

प्रूफ़–पु० (अं०) प्रमाण, सबूत; किसी छपनेवाली वस्तुका वह नमूना जो उसकी छपाईके पहले अशुद्धियाँ ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है; वस्तुविशेषके प्रभावसे वचनेका साधन, वस्तुविशेषका प्रतिरोधक (जैसे–'वाटरप्रूफ', 'फायरप्रूफ')। **–रीडर**–पु० प्रूफ-की अशुद्धियाँ ठीक करनेवाला कर्मचारी।

प्रूम–पु० समुद्रकी गहराई नापनेके काम आनेवाला सीसे आदिका बना हुआ लट्टूके आकारका यंत्र।

प्रेंख–पु० (सं०) झूला, पालना।

प्रेंखण–पु० (सं०) झूलनेकी क्रिया, झूलना; झूला; एक प्रकारका वीर रस-प्रधान एकांकी नाटक। **–कारिका**–स्त्री० नर्तकी।

प्रेंखा–स्त्री० (सं०) झूलना; झूला; परिभ्रमण; नृत्य; एक प्रकारका घर; घोड़ेकी एक प्रकारकी चाल।

प्रेंखित–वि० (सं०) कंपित; झूला हुआ।

प्रेंखोल, प्रेंखोलन–पु० (सं०) हिलना, डोलना; झूलना।

प्रेक्षक–वि०, पु० (सं०) देखनेवाला, दर्शक।

प्रेक्षण–पु० (सं०) देखनेकी क्रिया, देखना; किसी घटना, दृश्यादि-को अध्ययनादिकी दृष्टिसे अच्छी तरह देखनेका कार्य (आब्सर्वेस); आँख; किसी प्रकारका अभिनय, तमाशा आदि खेल। **–कूट**–पु० आँखका डेला।

प्रेक्षणक–पु० (सं०) तमाशा देखनेवाला।

प्रेक्षणिका–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे तमाशा देखनेका शौक हो।

प्रेक्षणीय–वि० (सं०) देखने योग्य; सुंदर; दृष्टिगोचर; विचार-के योग्य।

प्रेक्षणीयक–पु० (सं०) तमाशा।

प्रेक्षा–स्त्री० (सं०) देखना; दृश्य; किसी बातकी अच्छाई और बुराईका विवेक; किसी प्रकारका अभिनय, तमाशा आदि; पेड़की डाल, शाखा। **–कारी(रिन्)**–वि० सोच-समझकर काम करनेवाला। **–गृह,–स्थान**–पु० राजाओंका मंत्रणा-गृह; दर्शकों-के बैठनेका स्थान, रंगशाला। **–प्रपंच**–पु० नाटकका अभिनय। **–समाज**–पु० दर्शकोंका समुदाय, दर्शक-वृंद।

प्रेक्षागार–पु० (सं०) दे० 'प्रेक्षागृह'।

प्रेक्षावान्(वत्)–वि० (सं०) सोच-समझकर काम करनेवाला, चतुर।

प्रेक्षित–वि० (सं०) देखा हुआ।

प्रेक्षिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) देखनेवाला, दर्शक।

प्रेक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) देखनेवाला; गौरसे देखनेवाला; ··· जैसी आँखों या दृष्टिवाला (जैसे–'मृगप्रेक्षिणी')।

प्रेक्ष्य–वि० (सं०) दे० 'प्रेक्षणीय'।

प्रेत–वि० (सं०) मरा हुआ, मृत। पु० मृतात्मा; वह योनि जिसमें मनुष्य मरनेके उपरांत सपिंड होनेतक रहता है; इस योनिमें पड़ी हुई मृतककी आत्मा; एक प्रकारकी देवयोनि; भयंकर आकारवाला आदमी; नरकमें रहनेवाला प्राणी; अथक परिश्रम करनेवाला आदमी; दुरूह काव्य रचनेवाला (कठिन काव्यका प्रेत); कंजूस या चालाक व्यक्ति। **–कर्म(न्)**, **–कार्य,–कृत्य**–पु० मृतकके निमित्त किये जानेवाले दाह आदिसे लेकर सपिंडीकरणतकके कृत्य। **–काय**–पु० शव। **–गत**–वि० मृत। **–गृह,–गेह**–पु० श्मशान। **–गोप**–पु० प्रेतोंका रक्षक। **–चारी(रिन्)**–पु० शिव। **–तर्पण**–पु० प्रेतके निमित्त किया जानेवाला तर्पण; प्रेतके निमित्त सालभरतकका किया जानेवाला विशेष प्रकारका तर्पण। **–दाह**–पु० शवको जलानेकी क्रिया। **–देह**–स्त्री०,**–शरीर**–पु० वह शरीर जो मृतककी आत्माको मरनेके बादसे लेकर सपिंडीकरण-तक प्राप्त रहता है। **–धूम**–पु० चिताका धुआँ। **–नदी**–स्त्री० वैतरणी नदी। **–नाथ**–पु० यमराज। **–नाह**–पु० (हिं०) दे० 'प्रेतनाथ'। **–निर्यातक,–निर्हारक**–पु० शवको श्मशानतक ले जानेवाला मनुष्य, शवहारक। **–पक्ष**–पु० पितृपक्ष। **–पटह**–पु० प्राचीन कालका एक प्रकारका बाजा जो शवदाहके समय बजाया जाता था। **–पति**–पु० यमराज। **–पर्वत**–पु० गयातीर्थके अंतर्गत एक पर्वत। **–पात्र**–पु० श्राद्धमें काम आनेवाला बरतन। **–पावक**–पु० रातके समय श्मशान, कब्रिस्तान, जंगल आदि सूनी जगहोंमें दिखाई देनेवाला चलता हुआ प्रकाश जिसे लोग प्रेतलीला समझते हैं। **–पिंड**–पु० वह पिंडा जो दाहसे लेकर सपिंडीकरणके दिनतक प्रेतके निमित्त पारा जाता है। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० यमपुरी। **–भाव**–पु० मृत्यु। **–भूमि**–स्त्री० श्मशान। **–मेध**–पु० मृतकके निमित्त किया जानेवाला श्राद्ध। **–राक्षसी**–स्त्री० तुलसी (कहते हैं कि जहाँ तुलसी रहती हैं वहाँ भूत-प्रेत नहीं फटकते)। **–राज**–पु० यमराज। **–लीला**–स्त्री० प्रेत द्वारा किया जानेवाला उपद्रवादि। **–लोक**–पु० यमलोक। **–वन**–पु० श्मशान। **–वाहित**–वि० जिसपर भूत सवार हो, भूताविष्ट। **–विधि**–स्त्री० मृतक-संस्कार। **–शिला**–स्त्री० गयातीर्थ-स्थित वह शिला जिसपर श्राद्ध करनेसे मृतक प्रेतयोनिसे छुटकारा पाता है (गरुडपु०)। **–शुद्धि**–स्त्री० मरणाशौचके दोषसे रहित होना। **–शौच**–पु० दे० 'प्रेतशुद्धि'; मृतकका एक प्रकारका संस्कार। **–श्राद्ध**–पु० दाहकी तिथिसे लेकर एक बरसतक मृतकके निमित्त किये जानेवाले श्राद्धोंमेंसे कोई एक। **–हार**–पु० दे० 'प्रेतनिर्यातक'; निकट संबंधी।

प्रेतता–स्त्री०, **प्रेतत्व**–पु० (सं०) मरण; प्रेतकी अवस्था या धर्म।

प्रेतनी–स्त्री० प्रेतकी स्त्री।

प्रेताधिप–पु० (सं०) यमराज।

प्रेतान्न–पु० (सं०) प्रेतोंके निमित्त पारा जानेवाला पिंडा; घृतहीन भोजन।

प्रेतायन–पु० (सं०) एक नरक।

प्रेतावास–पु० (सं०) श्मशान।

प्रेताशी(शिन्)–वि० मृत शरीर खानेवाला।

प्रेताशौच–पु० (सं०) मृत्युके कारण होनेवाला अशौच।

प्रेतास्थि–स्त्री० (सं०) मुर्देकी हड्डी। **–धारी(रिन्)**–पु० शिव।

प्रेति–स्त्री० (सं०) मृत्यु; गमन। पु० आहार।

प्रेतिक–पु० (सं०) प्रेत ।

प्रेती*–पु० प्रेत पूजनेवाला, प्रेतपूजक ।

प्रेतेश, प्रेतेश्वर–पु० (सं०) यमराज ।

प्रेतोन्माद–पु० (सं०) प्रेतबाधाके कारण होनेवाला उन्माद ।

प्रेत्यजाति–स्त्री० (सं०) मरकर फिर जन्म लेना, पुनर्जन्म, पुनरुत्पत्ति ।

प्रेत्यभाव–पु० (सं०) दे० 'प्रेत्यजाति' ।

प्रेत्वा (त्वन्)–पु० (सं०) वायु; इंद्र ।

प्रेप्सा–स्त्री० (सं०) प्राप्त करनेकी इच्छा, पानेकी इच्छा ।

प्रेप्सु–वि० (सं०) पानेकी इच्छा करनेवाला, पानेका इच्छुक ।

प्रेम (न्)–पु० (सं०) गुण, रूप, स्वभावादिके कारण उत्पन्न होनेवाला वह आकर्षण एवं सुखद मनोभाव जिससे प्रभावित होकर एक व्यक्ति दूसरेको सदा अपने साथ या निकट और प्रसन्न रखना चाहता है; प्यार, मुहब्बत, अनुराग; कृपा; क्रीड़ा, केलि; आनंद; मजाक; वायु; इंद्र; एक अलंकार (केशव); माया और लोभ । **–कलह**–पु० प्रेमवश या प्रेममें किया जानेवाला कलह । **–गर्विता**–स्त्री० वह नायिका जिसे अपने पतिप्रेमका गर्व हो । **–जल,–नीर**–पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू, प्रेमाश्रु । **–जा**–स्त्री० मरीचि ऋषिकी पत्नी । **–पातन**–पु० प्रेमाश्रु; नेत्र (प्रेमाश्रु बहानेवाला) । **–पात्र**–वि०, पु० प्यारा, प्रियपात्र । **–पाश**–पु० प्रेमका फंदा या बंधन, आलिंगन । **–पुत्तलिका**–स्त्री० पत्नी । **–पुलक**–पु० प्रेमके कारण होनेवाला रोमांच । **–प्रत्यय**–पु० वीणा आदिके स्वरका प्रेम (जै०)। **–बंध,–बंधन**–पु० प्रेमका बंधन । **–भक्ति**–स्त्री० प्रेमभावसे की जानेवाली विष्णुभक्ति (वैष्णव) । **–भगति***–स्त्री० दे० 'प्रेम-भक्ति' । **–भाव**–पु० प्रेमका भाव । **–लक्षणा भक्ति**–स्त्री० दे० 'प्रेम-भक्ति' । **–वारि**–पु० प्रेमके कारण आँखोंसे निकलनेवाले आँसू ।

प्रेमचंद–पु० हिंदीके सर्वप्रमुख उपन्यासकार (१८८०-१९३६) जिन्होंने विभिन्न मानवीय संबंधों, सामाजिक वर्गोंकी पारस्परिक स्थिति और उनके संस्कार तथा शील-वैचित्र्य और अंतर्वृत्तिका मार्मिक चित्रण करनेवाले गोदान, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि और गबन जैसे उच्च कोटिके उपन्यास लिखे हैं । आपने उच्च कोटिकी कहानियाँ भी लिखी हैं ।

प्रेमवती–स्त्री० (सं०) पत्नी ।

प्रेमाक्षेप–पु० (सं०) एक प्रकारका आक्षेप अलंकार जिसमें प्रेमका वर्णन करते समय उसमें व्याघात भी दिखाया जाता है (केशव) ।

प्रेमालाप–पु० (सं०) प्रेमपूर्वक की जानेवाली बात-चीत; एक दूसरेसे प्रेम करनेवाले दो या अधिक व्यक्तियोंकी आपसी बातचीत ।

प्रेमालिंगन–पु० (सं०) प्रेमके साथ या प्रेमके आवेशमें गले लगाना; नायक-नायिकाका परस्पर आलिंगन ।

प्रेमाश्रु–पु० (सं०) प्रेमके कारण आँखोंसे झड़नेवाले आँसू, प्रेमके आँसू ।

प्रेमिक–वि० प्रेमपूर्ण; प्रेमी ।

प्रेमी (मिन्)–पु० (सं०) प्रेम करनेवाला । वि० प्रेमयुक्त, प्रेमवाला ।

प्रेय (स्)–वि० (सं०) अधिकतर प्यारा, प्रियतर । पु० प्रेमी; पति; सांसारिक सुख; एक प्रकारका अलंकार; * प्रेमी–'तहँ प्रतीप उपमा कहत भूषण कविता प्रेय' भू० ।

प्रेयसी–स्त्री० (सं०) पत्नी; प्रियतमा ।

प्रेयान् (यस्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'प्रेय' ।

प्रेयोपत्य–पु० (सं०) कंक पक्षी ।

प्रेरक–वि०, पु० (सं०) प्रेरणा करनेवाला, प्रयोजक; भेजनेवाला ।

प्रेरण–पु० (सं०) किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करना, प्रेरणा करना; फेंकना; भेजना; आदेश; चेष्टा ।

प्रेरणा–स्त्री० (सं०) किसीको किसी कार्यमें प्रवृत्त करनेकी क्रिया, किसीको किसी काममें लगाना; उसकानेकी क्रिया; फेंकना; भेजना ।

प्रेरणार्थक क्रिया–स्त्री० (सं०) क्रियाका वह रूप जिससे यह बोध हो कि उसका व्यापार किसी अन्यकी प्रेरणासे कर्ता द्वारा संपन्न हुआ है ।

प्रेरणीय–वि० (सं०) प्रेरणा करने योग्य, जिसे किसी कार्यमें प्रवृत्त किया जाय; फेंकने योग्य; भेजने योग्य ।

प्रेरना*–स० क्रि० प्रेरणा करना; फेंकना, चलाना; भेजना ।

प्रेरयिता (तृ)–वि०, पु० (सं०) प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक; फेंकनेवाला; भेजनेवाला ।

प्रेरित–वि० (सं०) किसी कार्यमें प्रवृत्त किया हुआ; फेंका हुआ, चलाया हुआ; भेजा हुआ; आदिष्ट ।

प्रेष–पु० (सं०) प्रेषण; पीड़ा; शोक ।

प्रेषक–वि०, पु० (सं०) भेजनेवाला; आदेश देनेवाला ।

प्रेषण–पु० (सं०) प्रेरणा करना, नियोग; भेजना । **–कर्मी**–पु० (डिस्पैचर) चिट्ठी, पैकेट आदि पंजीमें चढ़ाकर बाहर भेजनेका काम करनेवाला कर्मचारी, डाक-प्रेषक । **–पुस्तक**–स्त्री० (डिस्पैचबुक) वह पुस्तक या बही जिसमें भेजी गयी चिट्ठियों, पारसलों आदिका ब्यौरा लिखा जाता है ।

प्रेषणादेशपत्र–पु० (आर्डर फॉर्म) वह पत्र जिसमें कोई वस्तु या माल किसी स्थानसे भेजनेका आदेश लिखा हो ।

प्रेषणीय–वि० (सं०) प्रेरणा करने योग्य; भेजने योग्य ।

प्रेषना*–स० क्रि० भेजना ।

प्रेषित–वि० (सं०) प्रेरित किया हुआ, नियोजित; भेजा हुआ; निर्वासित । पु० स्वर साधनेकी एक रीति ।

प्रेषितव्य–वि० (सं०) प्रेरित करने योग्य, नियोज्य; भेजने योग्य, जिसे भेजा जाय ।

प्रेषिती–पु० (ऐड्रेसी) वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की जाय, पानेवाला; जिसके नाम कोई माल भेजा जाय (कनसाइनी), दे० 'परेषणी' ।

प्रेषित्र–पु० (ट्रांसमिटर) वह यंत्र या साधन जो रेडियो तरंगों द्वारा कोई ध्वनि (समाचार, भाषण, नाटक आदि) अन्यत्र भेजनेका काम करे; दूरविक्षेपक यंत्र, प्रेषी ।

प्रेषी–पु० दे० 'प्रेषित्र' ।

प्रेष्ठ–वि० (सं०) जो सबसे अधिक प्रिय हो, अत्यंत प्रिय । पु० प्रियतम; पति ।

प्रेष्ठा–स्त्री० (सं०) प्रियतमा; जंघा ।

प्रेष्य–पु० (सं०) नौकर, चाकर, टहलू; दूत; सेवा । वि० जिसे प्रेरित किया जाय या आदेश दिया जाय; जो भेजा जाय । **–जन**–पु० नौकरोंका समुदाय । **–वस्तु-आलेखन**–पु० (बुकिंग) (रेलके मालगोदाम आदिसे) भेजे जानेवाले मालका विवरण आदि रजिस्टरमें चढ़ाना और उसकी रसीद काटना । **–भाव**–पु० दासत्व, दासता ।

प्रेष्यता–स्त्री० (सं०) दासता, चाकरी; दूतत्व ।

प्रेष्या–स्त्री० (सं०) नौकरानी, भृत्या ।

प्रेस–पु० (अं०) वह कल जिससे कोई चीज दबायी या पेरी जाय; छापनेकी कल; वह स्थान या कार्यालय जहाँ छपाईका काम हो, छापाखाना; समाचार पत्रोंका समुदाय, सामूहिक रूपसे सब संवादपत्र । **–ऐक्ट**–पु० प्रेस-संबंधी कानून, वह कानून जिसके द्वारा छापेखानेवालों तथा समाचार पत्रोंके अधिकारों आदिका नियंत्रण किया जाता है । **–रिपोर्टर**–पु० वह व्यक्ति जो पत्रके लिए समाचार एकत्र करता है । **मु० (किसी चीजका)–में होना**–अप्रकाशित रूपमें होना; छापनेकी स्थितिमें होना ।

प्रेसिडेंट–पु० (अं०) वह प्रधान सभासद जिसकी देख-रेखमें किसी सभा या समतिकी कारवाइयाँ हों, किसी सभा या समितिका प्रधान पदाधिकारी; संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि प्रजातंत्र शासन वाले देशोंका राष्ट्रपति (आ०) ।

प्रैक्टिस–स्त्री० (अं०) प्रयोग; अभ्यास; रीति, प्रथा; डाक्टर या वकीलका व्यवसाय या कारोबार; व्यवहार (ग०) ।

प्रैय–पु० (सं०) प्रियका भाव, प्रियता, स्नेह; कृपा ।

प्रैष–पु० (सं०) क्लेश, कष्ट; मर्दन; प्रेरणा करना, प्रेरण; उन्माद ।

प्रैषणिक–वि० (सं०) आदेशका पालन करनेवाला (सेवक आदि) ।

प्रैष्य–पु० (सं०) दे० 'प्रेष्य' (समास भी) ।

प्रोंछन–पु० (सं०) पोंछनेकी क्रिया, पोंछना; बचे हुए खंडोंको चुनना ।

प्रोंठ–पु० (सं०) पीकदान, उगालदान।

प्रोक्त–वि० (सं०) कहा हुआ, उक्त, कथित। पु० कही हुई बात, प्रोक्ति।

प्रोक्ति–स्त्री० (सं०) मुहाविरा 'भाषामें प्रोक्तिकी शुद्धताका विचार रहना चाहिए'–सुधीन्द्र; (कोटेशन) दूसरेकी उक्ति जो कहीं उद्‌धृत की जाय।

प्रोक्षण–पु० (सं०) छिड़काव, सेचन; यज्ञके निमित्त पशुका वध करना; वध।

प्रोक्षणी–स्त्री० (सं०) छिड़कनेका जल; वह यज्ञपात्र जिसमें वह जल रखा जाता है।

प्रोक्षणीय–वि० (सं०) प्रोक्षणके योग्य, जिसका प्रोक्षण किया जाय। पु० प्रोक्षणके काममें लाया जानेवाला जल।

प्रोक्षित–वि० (सं०) जिसपर जल आदि छिड़का गया हो, जल आदिसे सिक्त; जिसकी बलि दी गयी हो, बलिदान किया हुआ (पशु)।

प्रोक्षितव्य–वि० (सं०) प्रोक्षण करने योग्य, जिसका प्रोक्षण किया जाय।

प्रोग्राम–पु० (अं०) किसी व्यक्ति या आयोजनका कार्यक्रम; वह पत्र या कागज जिसपर कोई कार्यक्रम लिखा हो।

प्रोच्चंड–वि० (सं०) अति प्रचंड।

प्रोच्छून–वि० (सं०) स्फीत, बढ़ा हुआ; सूजा हुआ।

प्रोज्जासन–पु० (सं०) मारण, वध।

प्रोज्झन–पु० (सं०) परित्याग।

प्रोज्झित–वि० (सं०) विशेष रूपसे त्यागा हुआ, परित्यक्त।

प्रोटॉन–पु० (अं०, प्रोटॉन) धन-विद्युत-आवेशयुक्त नन्हा कण जिसका धन आवेश परिमाणमें ठीक इलेक्ट्रानके आवेशके बराबर होता है, तथा इसका द्रव्यमान, इलेक्ट्रानके द्रव्यमानका लगभग १८४० गुना होता है। सभी तत्त्वोंके परमाणु नाभिकमें प्रोटान पाया जाता है।

प्रोटीन–स्त्री० (अं०, प्रोटीन) जैव पदार्थोंकी संरचनामें मौजूद एक कार्बनिक यौगिक जिसका अणुभार बहुत अधिक (१८०००–१०,०००,०००) होता है। प्रोटीन अणुमें अनिवार्य रूपसे कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन मौजूद होते हैं; कभी कभी गन्धक और फास्फोरस भी उसमें पाये जाते हैं। भोजनके ये महत्त्वपूर्ण अंग हैं, क्योंकि शरीरके ऊतकोंका निर्माण इन्हींसे होता है।

प्रोटेस्टेंट–पु० (अं०) विरोध करनेवाला; एक ईसाई संप्रदाय जिसे मार्टिन लूथरने रोमन कैथोलिक संप्रदाय, पोपके अधिकार आदिके विरोधमें सोलहवीं शताब्दीमें यूरोपमें चलाया था; इस संप्रदायका अनुयायी।

प्रोटोज़ोआ–पु० (अं०, प्रोटोज़ोआ) एक-कोशीय प्राणी जो सामान्यतः जलमें रहते हैं। कुछ प्रोटोज़ोआ अन्य प्राणियोंके शरीरमें परजीवीकी भाँति रहते हैं, जैसे मलेरिया परजीवी। अमीबा भी प्रोटोज़ोआका उदाहरण है।

प्रोढ–वि० (सं०) दे० 'प्रौढ'।

प्रोढा–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रौढा'।

प्रोढि–स्त्री० (सं०) दे० 'प्रौढि'।

प्रोत–वि० (सं०) सिला हुआ, गूँथा हुआ; पिरोया हुआ; मिला हुआ (ओतप्रोत); लंबाईके बल फैलाया हुआ; बँधा हुआ; छिपा हुआ; जड़ा हुआ; जोड़ा हुआ। पु० वस्त्र, कपड़ा।

प्रोतोत्सादन–पु० (सं०) छत्र, छाता; खेमा।

प्रोत्कंठ–वि० (सं०) जिसने अपनी गरदन ऊपर उठायी हो; जिसे बहुत अधिक उत्कंठा हो।

प्रोत्कट–वि० (सं०) अति उत्कट; बहुत बड़ा। –**भृत्य**–पु० बहुत बड़ा कर्मचारी; प्रिय सेवक।

प्रोत्तुंग–वि० (सं०) बहुत ऊँचा।

प्रोत्तेजन–पु० प्रोत्साहन, बढ़ावा 'समृद्धिको प्रोत्तेजन दिया' सुधीन्द्र।

प्रोत्थित–वि० (सं०) विशेष रूपसे उठा हुआ, निकला हुआ या उत्पन्न।

प्रोत्फल–पु० (सं०) ताड़ जैसा एक वृक्ष।

प्रोत्फुल्ल–वि० (सं०) अच्छी तरह खिला हुआ, पूर्ण रूपसे विकसित।

प्रोत्सारण–पु० (सं०) हटाना, निकालना; पिंड छुड़ाना।

प्रोत्सारित–वि० (सं०) हटाया हुआ, निकाला हुआ; बढ़ाया हुआ; दिया हुआ।

प्रोत्साह–पु० (सं०) प्रबल उत्साह, अत्यधिक उत्साह।

प्रोत्साहक–वि०, पु० (सं०) उत्साह बढ़ानेवाला, पीठ ठोंकनेवाला।

प्रोत्साहन–पु० (सं०) उत्साह बढ़ाना; उत्साह बढ़ानेके लिए कही गयी बात; एक प्रकारका नाटयालंकार; हिम्मत बाँधकर किसी काममें लगना (सा०)।

प्रोत्साहित–वि० (सं०) जिसका उत्साह बढ़ाया गया हो, जिसको बढ़ावा दिया गया हो।

प्रोत्सिक्त–वि० (सं०) जो बहुत घमंड करे।

प्रोथ–वि० (सं०) भयानक; प्रसिद्ध; स्थापित; यात्रापर निकला हुआ। पु० घोड़ेकी नाक; घोड़ेका मुँह; सूअरका थूथन; पथिक; कमर; गर्भाशय; चूतड़; गड्ढा; गुफा; भय; साड़ी या साया; यात्री; आतंक, त्रास।

प्रोथी(थिन्)–पु० (सं०) घोड़ा।

प्रोदक–वि० (सं०) आर्द्र, गीला, तर; जिसमेंका पानी निकल गया हो।

प्रोदर–वि० (सं०) तोंदवाला।

प्रोद्‌गत–वि० (सं०) आगे निकला हुआ।

प्रोद्‌घुष्ट–वि० (सं०) शब्दायमान।

प्रोद्घोषण–पु०, **प्रोद्घोषणा**–स्त्री० (सं०) उच्च स्वरमें घोषित करना।

प्रोद्दीप्त–वि० (सं०) जलता हुआ, प्रज्वलित।

प्रोद्धरण–पु० (साइटेशन) किसी लेख, पुस्तक आदिसे कोई अंश पढ़कर सुनाना या उद्‌धृत करना; इस तरह लिया हुआ अंश।

प्रोद्भिन्न–वि० (सं०) अंकुरित; भेदन कर निकला हुआ।

प्रोद्‌भूत होना–अ० क्रि० (टु एक्रू) (पूंजीपर ब्याज आदि) निकलना, किसीके स्वाभाविक परिणाम या परिलाभ आदिके रूपमें सामने आना, दिखाई देना।

प्रोद्यत–वि० (सं०) उठाया हुआ; परिश्रमी।

प्रोनोट–पु० (अं०) वह रुक्का जो कर्ज लेनेवाला शर्तोंके साथ रसीदके तौरपर लिखता है, हैंडनोट।

प्रोन्नत–वि० (सं०) विशेष रूपसे उन्नत, ऊँचा; आगे निकला हुआ; बढ़ाचढ़ा; शक्तिशाली।

प्रोफ़ेसर–पु० (अं०) किसी विश्वविद्यालय या बड़े विद्यालयका अध्यापक; वह जो सिखलाने या द्रव्योपार्जनके लिए कला-संबंधी विशिष्ट कार्य करे।

प्रोष–पु० (सं०) दग्ध होना, जलना, दाह; संताप।

प्रोषित–वि० (सं०) जो परदेश गया हो, प्रवासी। –**पतिका**,–**प्रेयसी**,–**भर्तृका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो। –**–भार्य**–पु० वह पुरुष जो स्त्रीके प्रवाससे दुःखी हो। –**मरण**–पु० विदेशमें मरना।

प्रोष्ठ, प्रौष्ठ–पु० (सं०) सौरी मछली; साँड़, बैल; बेंच, स्टूल; एक प्राचीन देश (म० भा०)। –**पद**–पु० भाद्रपद, भादोंका महीना। –**पदा**–स्त्री० पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र। –**पदी**–स्त्री० भाद्रपदमासकी पूर्णिमा। –**पाद**–वि० जिसका जन्म पूर्वभाद्रपद या उत्तरभाद्रपद नक्षत्रमें हुआ हो।

प्रोष्ठी, प्रौष्ठी–स्त्री० (सं०) सौरी मछली।

प्रोष्ण–वि० (सं०) बहुत गरम, अति उष्ण।

प्रोह, प्रौह–पु० (सं०) हाथीका पैर; तर्क; गाँठ। वि० बुद्धिमान्; तार्किक।

प्रोहित*–पु० दे० 'पुरोहित'।

प्रौढ–वि० (सं०) जिसकी पूरी वृद्धि हो चुकी हो, प्रवृद्ध; जिसकी उम्र अधिक हो चली हो, तीस और पचासके बीचकी अवस्थावाला; पुष्ट, परिपक्व; जिसमें पूर्णता आ गयी हो (जैसे प्रौढ़ विद्वान्); निपुण, दक्ष; जिसे किसी बातका पूरा अनुभव हो, अनुभवी, परिणतबुद्धि; गाढ़ा; घना; प्रगल्भ; उग्र; विवाहित; उठाया हुआ; तर्कित। पु० चौबीस अक्षरोंका एक मंत्र (तं०)। –**जलद**–पु० घना बादल। –**पाद**–वि० जो उकड़ूँ बैठा हो, जिसके पैरोंके

तलवे आसनपर ही हों। –वाद–पु० प्रबल या गर्वभरी उक्ति।

प्रौढता–स्त्री०, **प्रौढत्व**–पु० (सं०) प्रौढ़ होनेका भाव।

प्रौढा–वि०, स्त्री० (सं०) दे० 'प्रौढ'। स्त्री० वह स्त्री जिसकी उम्र अधिक हो चली हो, तीससे लेकर पचासके बीचकी अवस्थावाली स्त्री; सब प्रकारकी रतिमें निपुण तथा कम लज्जा और प्रचुर कामवासनावाली अधिक अवस्थाकी नायिका (सा०)। –अधीरा –स्त्री० वह प्रौढा नायिका जो अपने नायकमें परस्त्री-संयोगके चिह्न देखकर अधीर या प्रकुपित हो उठे। –धीरा–वह प्रौढ़ा नायिका जो प्रियतममें विलासचिह्न देखकर प्रत्यक्ष कोप न कर व्यंग्यसे अपना भाव प्रकट करे। –धीराधीरा–स्त्री० नायकमें परस्त्री-गमनके चिह्न देखकर कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट रूपसे क्रोध प्रदर्शित करनेवाली नायिका।

प्रौढि–स्त्री० (सं०) पूर्ण वृद्धि; परिपक्वता; सामर्थ्य, शक्ति; धृष्टता; साहस। –वाद–पु० प्रबल उक्ति, हठोक्ति।

प्रौढोक्ति–स्त्री० (सं०) प्रबल उक्ति; एक काव्यालंकार जहाँ उत्कर्षका जो कारण न हो उसे उसका कारण बताया जाय।

प्रौण–वि० (सं०) निपुण, कुशल; विद्वान्।

प्रौद्योगिक शिक्षा–स्त्री० (टेक्निकल एजुकेशन) किसी विशेष कला या व्यवसाय-संबंधी शिक्षा।

प्लक्ष–पु० (सं०) पाकड़का पेड़; जंबू आदि सात द्वीपोंमेंसे एक (पु०); पिछवाड़ेकी खिड़की या दरवाजा; दरवाजेके पासकी जमीन; हिंदुओंका एक तीर्थ (हरिवंश); सरस्वती नदीका उद्‌गम स्थान। –जाता–स्त्री० सरस्वती नदी। –प्ररोह–पु० बरोह (पाकड़का)। –प्रस्रवण,–राज–पु० वह स्थान जहाँसे सरस्वती नदी निकलती है, सरस्वती नदीका उद्‌गम (म० भा०)। –समुद्रभवा,–समुद्रवाचका–स्त्री० सरस्वती नदी।

प्लक्षा–स्त्री० (सं०) सरस्वती नदी।

प्लक्षावतरण–पु० (सं०) सरस्वती नदीका उद्‌गम।

प्लवंग–पु० (सं०) वानर; हिरन; पाकड़का पेड़।

प्लवंगम–पु० (सं०) मेढक; वानर; एक वर्णवृत्त।

प्लवंगमेंदु–पु० (सं०) हनूमान्।

प्लव–पु० (सं०) तैरनेकी क्रिया, तैरना; उछाल, कुदान; छोटी नाव, उडुप; श्वपच, चांडाल; बंदर; भेड़ा; मेढक; शत्रु; कारंडव पक्षी; जलपक्षी; मछली पकड़नेका एक प्रकारका जाल; लौटना; बढ़ावा; जलकुक्कुट, मुरगाबी; नागरमोथा; पाकड़का पेड़; ढाल, उतार; शब्द; नदीकी बाढ़; एक संवत्सर। –ग–पु० उछलनेवाला; बंदर; सूर्यका सारथि; मेढक; शिरीषका पेड़। –गति–पु० मेढक। –गा–स्त्री० कन्या राशि।

प्लवक–वि० (सं०) उछलने, कूदनेवाला। पु० चांडाल; मेढक; पाकड़का पेड़; रस्सी, तलवार आदिपर नाचनेवाला।

प्लवगेंद्र–पु० (सं०) हनूमान्।

प्लवन–पु० (सं०) तैरनेकी क्रिया, तैरना; उछलना, कूदना; उड़ना; महाप्लावन; ढाल, उतार; घोड़ेकी एक चाल। वि० ढालुवाँ।

प्लवाका–स्त्री० (सं०) नाव, भेला।

प्लविक–पु० (सं०) नावसे पार उतारनेवाला, माँझी।

प्लवित–पु० (सं०) तैरना; उछलना।

प्लविता(तृ)–वि०, पु० (सं०) उछलनेवाला।

प्लांचेट–पु० (अं०) पानके आकारकी लकड़ीकी वह छोटी तख्ती जिसके चौड़े भागकी ओर दो पाये और नोककी ओर एक पेंसिल लगी रहती है और जो धीरेसे ऊँगलियाँ रखनेपर खसकने लगती है, जिससे उसमें लगी पेंसिलसे अपने आप अक्षर आदि बनने लगते हैं (प्रेतविद्या)।

प्लाक्ष–वि० (सं०) प्लक्ष-संबंधी, प्लक्षका; प्लक्षनिर्मित। पु० पाकड़का फल; पाकड़के पेड़ोंका समुदाय।

प्लाट–पु० (अं०) इमारत बनाने, खेती करने आदिके कामकी जमीनका टुकड़ा; ऐसी जमीनका नकशा; उपन्यास, कहानी, नाटक आदिका कथानक; दुरभिसंधि, साजिश।

प्लान–पु० (अं०) किसी बननेवाली इमारतका नकशा; नगर, जिले आदिका बड़े पैमानेपर बना हुआ नकशा; किसी किये जानेवाले कामकी योजना, स्कीम।

प्लाव–पु० (सं०) जल आदिका उमड़कर बहना; उछाल, कुदान; डुबकी; (गंदगी निकालनेके लिए किसी तरल पदार्थको) छानना।

प्लावन–पु० (सं०) जल आदिका उमड़कर बहना; गोता लगाना; किसी वस्तुको पानीमें बोरना; प्रलयकालीन भारी बाढ़; बाढ़, सैलाव।

प्लावनिक–वि० (डिलूवियल) महाप्लावन या प्रलयसे संबंध रखनेवाला।

प्लावित–वि० (सं०) जिसपर बाढ़का पानी चढ़ आया हो, जो जलमें डूब गया हो; जल आदिसे व्याप्त। पु० बाढ़।

प्लावी(विन्)–वि० (सं०) उमड़कर बहनेवाला; फैलनेवाला, व्याप्त होनेवाला। (स्त्री० 'प्लाविनी'।) पु० पक्षी।

प्लाव्य–वि० (सं०) गोता देने योग्य; जो उछाला जाय।

प्लाशुक–वि० (सं०) (वह अन्न) जो जल्दी पककर तैयार हो जाय। (वै०)।

प्लास्टर–पु० (अं०) सूजन, फोड़े आदिपर चढ़ाई जानेवाली लेई जैसी दवा; चूना, कंकड़, सुर्खी आदिसे तैयार किया जानेवाला गारा जिसे दीवारपर उसे समतल और सुघड़ बनानेके लिए लगाते हैं, पलस्तर।

प्लिहा(हन्), **प्लीहा(हन्)**–पु० (सं०) यकृत। –(ह)घ्न,–शत्रु–पु० रोहड़ा वृक्ष, रोहितक वृक्ष।

प्लीहा–स्त्री० (सं०) तिल्ली, बरबट; एक रोग जिसमें तिल्ली बढ़ जाती है। –कर्ण–पु० कानका एक रोग। –शत्रु–पु०,–हंत्री–स्त्री० दे० 'प्लीहशत्रु'।

प्लीहारि–पु० (सं०) पीपलका पेड़।

प्लीहोदर–पु० (सं०) तिल्ली रोग।

प्लीहोदरी(रिन्)–वि० (सं०) जिसे तिल्ली रोग हुआ हो।

प्लुक्षि–पु० (सं०) अग्नि; स्नेह; घर जलना, गृहदाह।

प्लुत–वि० (सं०) जल आदिसे व्याप्त, तराबोर; उछला हुआ; आवृत, ढका हुआ; तीन मात्राओंसे युक्त (वर्ण)। पु० तीन मात्राओंवाला स्वर या वर्ण; उछाल, कुदान; घोड़ेकी एक प्रकारकी चाल; तीन मात्राओंवाला ताल (संगीत)। –गति–स्त्री० उछलते या छलाँग मारते हुए गमन करना। पु० खरगोश।

प्लुति–स्त्री० (सं०) उछलते हुए गमन करना; उछाल, कुदान; जल आदिका उमड़कर बहना या चारों ओर फैल जाना; किसी स्वर या वर्णका तीन मात्राओं सहित उच्चारित होना; घोड़ेकी एक विशेष चाल।

प्लुष्ट–वि० (सं०) जला हुआ, दग्ध।

प्लेग–पु० (अं०) कोई भयानक संक्रामक रोग; एक भयानक संक्रामक रोग जिसमें गिलटी निकलती है और बहुत तेज बुखार आता है, ताऊन।

प्लेट–पु० (अं०) धातु आदिका चिपटा, समतल और प्रायः बराबर मोटाईका टुकड़ा, पट्टी; कपड़ेकी वह पट्टी जो परिधानमें मजबूती या सुंदरताके लिए लगायी जाती है; ताँबे आदिकी वह चिपटी पट्टी जिसपर किसी प्रकारका लेख खुदा हो; सोने या चाँदीका प्याला या विशेष प्रकारकी पट्टी जो घुड़दौड़ आदिमें बाजी मारनेवालेको पुरस्कारके रूपमें दी जाती है; तश्तरी, रकाबी; फोटो लेनेके कामका शीशा।

प्लैज्मा (रक्तका)–पु० (प्लैज्मा आव ब्लड) रक्तमेंसे रक्त कोशिकाओंको पृथक् करनेपर बचा हुआ फीके पीत वर्णका स्वच्छ द्रव।

प्लैटफार्म–पु० (अं०) कोई चौकोर और चौरस चबूतरा, विशेषतः वह जिसपरसे भाषण या उपदेश किया जाय, मंच; रेलवे स्टेशनोंपरका वह लंबा ऊँचा चबूतरा जिसके सामने ट्रेन लगती है और जिसपरसे होकर लोग उसपर सवार होते या उससे उतरते हैं।

प्लैटिनम–पु० (अं०) सफेद रंगकी एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जो बहुत कड़ी और प्रायः अन्य धातुओंसे भारी होती है।

प्लैस्टिक–पु० (अं०, प्लैस्टिक) ऐसे कार्बनिक (आर्गेनिक) पदार्थ जो सामान्य अवस्थामें तो कठोर बने रहते हैं किंतु ताप या दाब द्वारा उन्हें नम्य दशामें लाया जा सकता है, ताकि उन्हें साँचे

ढालकर मनोवांछित शक्ल दी जा सके।

प्लोत–पु० (सं०) घावपर बाँधी जानेवाली पट्टी; कपड़ा।

प्लोष–पु० (सं०) दग्ध होना, जलना; दाहकी पीड़ा।

प्लोषण–वि० (सं०) जलनेवाला। पु० जलन।

फ

फ–देवनागरी वर्णमालामें प वर्गका द्वितीय वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

फंक*–स्त्री० फाँक, चीरा हुआ टुकड़ा।

फँकनी†–स्त्री० दे० 'फंकी'।

फंका–पु० उतना दाना या चूर्ण जितना एक बार फाँका या खाया जाय; * फाँक, टुकड़ा। मु०–**करना**–नष्ट करना। –**मारना**–फाँकना।

फंकी–स्त्री० कोई चीज़ फाँकनेकी क्रिया या भाव; फाँकी जानेवाली वस्तु, दवा; रेचक चूर्ण; † छोटी फाँक।

फंग*–पु० फंदा, बंधन–'मति कोई प्रीतिके फंग परै'–सूर; अधीनता; प्रेम, अनुराग।

फ़ंगस–पु० (अं०, फ़ंगस) ऐसे नन्हें वनस्पति जिनमें क्लोरोफ़िल नहीं पाया जाता; कवक (इनमें न फल होते हैं, न पत्तियाँ, न जड़ें)। –**नाशी**–पु० ऐसे रसायन जो फँफूद आदि हानिकारक फ़ंगसको विनष्ट करनेकी क्षमता रखते हैं।

फंजिका–स्त्री० (सं०) भारंगी; जवासा; देवताड़; दंती। –**पत्रिका**–स्त्री० मूसाकानी।

फंजी–स्त्री० (सं०) भारंगी; दंती; मजीठ।

फंट–पु०–फणि।

फंड–पु० (सं०) उदर, जठर; (अं०) कार्य-विशेषके लिए अलग या एकत्र किया हुआ धन; कोश; निधि।

फंद*–पु० फंदा, फाँस, बंधन; मायाजाल; कपट; क्लेश, दुःख; मर्म, रहस्य; गूंज। –**वार**–वि० फंदा लगानेवाला, फँसानेवाला।

फंदना, फँदना*–अ० क्रि० फंदेमें पड़ना, फँसना; मुग्ध होना। स० क्रि० लाँघना, फाँदना।

फंदरा†–पु० दे० 'फंदा'।

फंदा–पु० सरकीली गाँठोंवाला रस्सी, तार आदिका विशेष प्रकारका घेरा जिसमें फँसनेसे प्राणी बँध जाता है, फाँस; पशु-पक्षियोंको फँसानेका जाल; फँसानेवाली वस्तु, बंधन; छल, प्रपंच, धोखा; दुःख, कष्ट; खाते-पीते समय अचानक बात करने या हँसी आ जानेसे खाद्य या पेयका श्वासनलीमें अटकना जिससे व्यक्ति बोल न सके या खाँसी आने लगे, ठसकी। मु० –**छुड़ाना**–कैदसे रिहा करना। –**देना**–गिरह देना; फंदा लगाना। (**किसीपर**)–**पड़ना**–रचा हुआ प्रपंच सफल होना। –**मारना**–जालमें फँसाना। –(**दे**) **में आना या पड़ना**–जालमें फँसना; वशमें होना। –**में लाना**–जालमें लाना, फरेबमें लाना।

फँदाना–स० क्रि० किसीसे फाँदनेका काम कराना, किसीको फाँदनेमें प्रवृत्त करना; * फंदेमें लाना, फँसाना।

फँदावना*–स० क्रि० दे० 'फँदाना'।

फंदैत–पु० फंदा डालकर पशु-पक्षियोंको फँसानेवाला बहेलिया, व्याध, वह सिखाया हुआ पशु जो अन्य पशुओंको जालमें फँसाए।

फँफाना–अ० क्रि० हकलाना; खौलते हुए दूध आदिका ऊपर उठना।

फँसना–अ० क्रि० फंदेमें पड़ना, पकड़में आना; उलझना, विकट या अधिक काममें उलझना या व्यस्त रहना; चिकनी चुपड़ी बातोंमें आना और धोखा खाना। (**किसीसे फँसना**–किसीसे अवैध संबंध, आशनाई होना)।

फँसनी–स्त्री० गगरेका गला बनानेकी हथौड़ी।

फँसरी†–स्त्री० फंदा, फाँस; फाँसी।

फँसाना–स० क्रि० फंदेमें लाना, उलझाना; काबूमें करना।

फँसाव, फँसावा–पु० फँसनेका भाव; वह चीज या बात जिसमें आदमी फँस जाय, अटकाव।

फँसिहारा*–पु० फँसानेवाला; ठग।

फँसौरि*–स्त्री० जाल, फंदा।

फ–पु० (सं०) कटुवचन; फूत्कार; निष्फल वचन; झंझावात; जँभाई, निष्फलता; वृद्धि; विस्तार; फलकी प्राप्ति। वि० प्रकट, प्रत्यक्ष।

फक–वि० स्वच्छ, शुभ्र; फीका, वदरंग। मु० (**रंग**)–**पड़ जाना या हो जाना**–लज्जा या डरके मारे स्तब्ध हो जाना, बहुत अधिक घबरा जाना; विवर्ण हो जाना। –पु० (फा०) रेहनसे मुक्ति। –**रेहन**–रेहन रखी चीजका बंधकसे मुक्त होना। –**कराना**–रेहन रखी हुई चीज धन देकर छुड़ाना।

फकड़ा–पु० रद्दी किस्मकी, व्यर्थकी कविता या तुकबंदी।

फकड़ी–स्त्री० फजीहत, दुर्गति; फक्कड़पन।

फ़क़त–वि० (अ०) अकेला, केवल। अ० एकमात्र, सिर्फ।

फकर*–पु० फखर (गर्व) दे० 'फख्र'।

फका*–पु० फाँक, टुकड़ा।

फ़क़ीर–पु० (अ०) भीख माँगनेवाला, भिखारी; वह जो शरीर-रक्षाभरके लिए माँग-खाकर ईश्वरका भजन करता हो, साधु; मुसलमान साधु; अकिंचन मनुष्य (वस्तुतः वह जिसके पास केवल एक दिनका भोजन हो)। मु० –**का घर बड़ा है**–फकीरको अपनी शक्तिसे सब कुछ प्राप्त है। –**की सदा**–वह आवाज जो फकीर माँगनेके समय देते हैं।

फ़क़ीरनी–स्त्री० भीख माँगनेवाली औरत।

फ़क़ीराना–वि० फकीरोंका-सा, फकीरों जैसा। पु० वह भूमि जो फकीरोंके निर्वाहके लिए दान की गयी हो।

फ़क़ीरी–स्त्री० फकीरका भाव, भिखारीपन; साधुता; अकिंचनता। वि० फकीर-संबंधी; फकीरका। –**लटका**–पु० साधु-फकीरकी बतायी हुई दवा, जड़ी-बूटी।

फ़क़ीह–पु० (अ०) फिक़ाह या इस्लामी धर्मशास्त्रका पंडित।

फक्क–पु० (सं०) पंगु, विकलांग व्यक्ति।

फ़क्क–पु० (अ०) खोलना; दो जुड़ी हुई चीजोंको अलग करना, छुड़ाना।

फक्कड़–पु० गाली-गुफ्ता, दुर्वचन; वह व्यक्ति जो अकिंचन होते हुए या भूखा रह कर भी मस्त बना रहे; उच्छृंखल व्यक्ति; फकीर, भिखमंगा। –**बाज**–वि० गाली-गुफ्ता बकनेवाला। –**बाजी**–स्त्री० गाली-गुफ्ता बकनेकी क्रिया।

फक्किका–स्त्री० (सं०) पूर्वपक्ष जो तत्त्व-निर्णयके लिए उपस्थित किया जाता है; कपटयुक्त व्यवहार, धोखा, दगा।

फक्कुलरिहन, फक्केरिहन–पु० (अ०) बंधक रखी हुई वस्तुको छुड़ाना।

फख़र–पु० दे० 'फ़ख्र'।

फ़ख़ीर–वि० घमंड करनेवाला, शेखी मारनेवाला।

फ़ख्र–पु० (फा०) गर्व, घमंड; नाज।

फ़ख्रिया–अ० गर्वसे, घमंडके साथ।

फग*–पु० जाल, फंदा, फंग।

फगवा–पु० दे० 'फगुआ'।

फगुआ–पु० दे० 'फाग'; * फागके उपलक्ष्यमें दिया जानेवाला उपहार।

फगुआना–अ० क्रि० फागुनके महीनेमें किसीपर रंग छोड़ना या उसे अश्लील गीत सुनाना; फागुनके दिनोंमें सभ्यताविमुख हो उच्छृंखल या मस्त होना।

फगुनहट–स्त्री० फागुनके महीनेमें चलनेवाली धूल, पत्तों आदिसे युक्त जोरकी हवा; फागुनमें होनेवाली बारिश; फागुनकी मस्ती।

फगुनिया–पु० त्रिसंधि नामक पुष्पवृक्ष। वि० फागुन संबंधी।

फगुहरा, फगुहारा†–पु० फाग खेलनेवाला; फाग गानेवाला।

फ़जर–स्त्री० (अ०) प्रभात, तड़का।

फ़जल–पु० (अ०) दे० 'फ़ज़्ल'।

फ़जिर–स्त्री० दे० 'फ़जर'।

फजिहतिताई*–स्त्री० फजीहत करानेवाली बात।

फ़ज़ीता–पु० दे० 'फजीहत'।

फ़ज़ीती–स्त्री॰ दे॰ 'फ़जीहत' ।

फ़ज़ीलत–स्त्री॰ (अ॰) गौरव, महत्ता । **मु॰–का वक्त**–वह वक्त जिसमें प्रार्थना करनेका महत्त्व हो । **–की पगड़ी**–विद्वत्ताका प्रमाणरूप चिह्न, सबसे बड़ी सनद । (मुसलमानोंमें यह चलन है कि किसी प्रकांड विद्वान्‌की विद्वत्ताकी स्वीकृतिके रूपमें उसके सिरपर पगड़ी बाँधते हैं जिसे 'फ़ज़ीलतकी पगड़ी' कहते हैं ।)

फ़ज़ीहत–स्त्री॰ (अ॰) अपमान, वेइज्जती; दुर्दशा, दुर्गति; वदनामी ।

फ़ज़ीहती–स्त्री॰ दे॰ 'फ़ज़ीहत' ।

फ़ज़ूल–वि॰ दे॰ 'फ़ुज़ूल' । **–खर्च**–वि॰ दे॰ 'फ़ूज़ूल-ख़र्च' । **–खर्ची**–स्त्री॰ दे॰ 'फ़ुज़ूल-खर्ची' ।

फ़ज़्ल–पु॰ (अ॰) अनुग्रह, दया; विद्या; महत्ता ।

फट–पु॰ (सं॰) साँपका फैला हुआ फन; धूर्त । स्त्री॰ (हिं॰) किसी चौड़ी, कड़ी, हलकी तथा पतली चीजपर आघात करने अथवा उसके किसी दूसरी कड़ी वस्तुपर गिरने या जोरसे हिलनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द, लकड़ी-वाँस आदिके फटनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द । **–फट**–स्त्री॰ 'फट' ध्वनिकी आवृत्ति । **–से**–अति शीघ्र, तत्काल ।

फटक*–पु॰ स्फटिक, विल्लौर । अ॰ तत्काल, तुरंत । स्त्री॰ फटकने की क्रिया या भाव ।

फटकन–स्त्री॰ अन्न आदि फटकनेसे निकलनेवाला अग्राह्य या सारहीन पदार्थ ।

फटकना–पु॰ गुलेलका फीता जिसपर रखकर गुलता फेंका जाता है । स॰ क्रि॰ सूप आदिके द्वारा अन्न आदि साफ करना, झाड़ना; * इस प्रकार हिलाना कि 'फट फट' शब्द उत्पन्न हो; फेंकना, चलाना । अ॰ क्रि॰ आना; चल जाना; पहुँचना; पृथक् होना; तड़फड़ाना; श्रम करना । **मु॰ –पछोरना**–अन्न आदि सूप या छाज द्वारा साफ करना; अच्छी तरह देखना-भालना, परखना (ला॰) । **–(ने) देना**–आने देना ।

फटकनी–स्त्री॰ अनाज फटकने का सूप ।

फटकरना*–स॰ क्रि॰ फटकना, साफ करना; फेंकना, फटकारा जाना ।

फटकरी†–स्त्री॰ दे॰ 'फिटकरी' ।

फटकवाना–स॰ क्रि॰ किसीको फटकनेमें प्रवृत्त करना, किसीसे फटकनेका काम कराना ।

फटका†–पु॰ धुनियेकी धुनकी; काव्यके गुणसे रहित कविता, निरी तुकवंदी; तड़फड़ाहट; फाटक; चिड़ियोंको उड़ानेके लिए फले हुए पेड़में रस्सीके सहारे बाँधी जानेवाली लकड़ी जिसे हिलाकर 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करते हैं; एक प्रकारकी वलुई और रोड़ेदार जमीन जो अनुपजाऊ होती है ।

फटकाना*–स॰ क्रि॰ फेंकना; फटकवाना; फटफटाना ।

फटकार–स्त्री॰ फटकारनेकी क्रिया या भाव; किसीको लज्जित करने या उसका तिरस्कार करनेके लिए क्रोधके आवेशमें कही जानेवाली कड़ी बात, लानत-मलामत ।

फटकारना–स॰ क्रि॰ किसीको लज्जित करने या उसका तिरस्कार करनेके लिए क्रोधपूर्वक कड़ी बातें कहना, लानत-मलामत करना; झटका देकर छितराना या खुला रखना (चुटिया फटकारना); उपार्जन करना, पैदा करना (रुपया फटकारना); कपड़ेको साफ करते समय पत्थर आदिपर पटकना, पछारना; * फेंकना; * चलाना, प्रहार करना ।

फटकिया†–पु॰ एक प्रकारका विष ।

फटकी–स्त्री॰ चिड़ीमारकी फँसायी हुई चिड़ियाँ रखनेका एक तरहका झावा; दे॰ 'फटका' ।

फटना–अ॰ क्रि॰ किसी प्रकारके दबाव या आघातसे किसी वस्तुका दो या अधिक खंडोंमें विभक्त हो जाना या उसमें दरार पड़ जाना, विदीर्ण होना; किसी पैनी या नुकीली चीजके संयोगसे किसी वस्तुमें दरार पड़ जाना या उसका कोई भाग अलग हो जाना; आवरणके रूपमें फैले हुए पदार्थका छिन्न-भिन्न हो जाना (जैसे–वादल फटना, अंधकार फटना); पृथक् हो जाना; दूध आदिका इस प्रकार विकृत होना कि उसका जलभाग सारभागसे अलग हो जाय; किसी वस्तुकी अधिकता होना (पड़नाके साथ); घोड़ेका सवारके आदेशके विरुद्ध चलना ।

फटफट–स्त्री॰ दे॰ 'फट' के साथ ।

फटफटाना–स॰ क्रि॰ किसी वस्तुसे 'फट-फट' शब्द उत्पन्न करना; वकवास करना; दौड़-धूप करना । अ॰ क्रि॰ 'फट-फट' शब्द होना; मारे-मारे फिरना, विवश होनेपर चिन्तित या विकल होना ।

फटफटिया, फटफटैया–स्त्री॰ (फट-फट आवाज करनेवाली) मोटर-साइकिल ।

फटहा†–वि॰ फटा हुआ; अंड-वंड वकनेवाला ।

फटा–स्त्री॰ (सं॰) साँपका फन; दाँत; छल । वि॰ (हिं॰) जो फट गया हो, जिसमें फटाव या दरार हो; गया-गुजरा । पु॰ छेद । **–(टी)आवाज़**–स्त्री॰ भर्रायी हुई आवाज । **–(टे)हाल**–वि॰ जिसके पास कुछ न हो । **–हालों**–अ॰ अकिंचनताकी स्थितिमें, मुफलिसीकी हालतमें । **मु॰ (किसीके)–(टे) में पाँव अड़ाना या देना**–जान-वूझकर किसीके झगड़ेमें पड़ना, किसीकी वला अपने सिर लेना ।

फटाका–पु॰ 'फट'की वुलंद आवाज; † पटाखा ।

फटाटोप–पु॰ (सं॰) साँपका फन फैलाना, फनका फैलाव ।

फटाटोपी(पिन्)–पु॰ (सं॰) साँप ।

फटाव–पु॰ फटनेकी क्रिया; फटने जैसी पीड़ा; फटनेके कारण पड़ी हुई दरार आदि ।

फटिक–पु॰ दे॰ 'स्फटिक' ।

फटिका–स्त्री॰ एक तरहकी शराव जो जौ आदिके खमीरसे विना खींचे तैयार की जाती है; गुलेलकी डोरीके वीच वह हिस्सा जहाँ रखकर ढेला चलाया जाता है ।

फटीचर†–वि॰ जो मैले-कुचैले कपड़े पहने हो, भद्दी वेश-भूषा, सूरत-शक्लवाला–'शकल-सूरत फटीचर और नाम रख दिया मनोहरदास'–नया जीवन ।

फट्–स्त्री॰ (सं॰) एक अस्त्र-मंत्र (तं॰); एक अनुकरण शब्द जिसका प्रयोग तंत्रमें अघमर्षण, करन्यास, अंगन्यास और अर्घ्यपात्रके प्रक्षालन, होमाग्निके आवाहन आदिमें होता है ।

फट्टा, फट्ठा–पु॰ चीरे हुए वाँसका लंवा टुकड़ा ।

फट्टी, फट्ठी–स्त्री॰ पतला फट्ठा ।

फड़–स्त्री॰ जुएका दाँव; जुआरियोंके जुआ खेलनेका स्थान, जुएका अड्डा; दुकानमें वह स्थान जहाँ वैठकर दुकानदार माल वेचता है; वह कपड़ा जिसे छोटे दुकानदार जमीनपर विछाकर वेचनेकी चीजें सजानेके लिए काममें लाते हैं; पंख आदिके हिलनेसे उत्पन्न होनेवाला शब्द; * दल, पंक्ति । पु॰ गाड़ीका हरसा; वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है, चरख । **–फड़**–स्त्री॰ दो या अधिक वार उत्पन्न 'फड़' शब्द; 'फड़' शब्दकी अनेक वार आवृत्ति । **–बाज़**–पु॰ जुआ खेलनेवाला, जुआड़ी । **–बाज़ी**–स्त्री॰ फड़वाजका काम, जुआ खेलना । **मु॰ –रखना,–लगाना**–दाँव लगाना ।

फड़क–स्त्री॰ फड़कनेकी क्रिया या भाव, स्पंदन, स्फुरण ।

फड़कन–स्त्री॰ दे॰ 'फड़क' ।

फड़कना–अ॰ क्रि॰ रुक-रुककर या अचानक चलायमान होना, थोड़ा-थोड़ा कंपित होना; शरीरके किसी अंग या भागका रुक-रुककर गतियुक्त होना या सिकुड़ना और फैलना, स्फुरित होना; हिलना-डुलना या गतियुक्त होना । **मु॰ फड़क उठना**–प्रसन्न होना; स्फुरित होना । **बोटी-बोटी फड़कना**–(किसीका) वहुत अधिक चंचल होना ।

फड़काना–स॰ क्रि॰ किसीको फड़कनेमें प्रवृत्त करना; उत्सुकता उत्पन्न करना (ला॰) ।

फड़नवीस–पु॰ मराठोंके शासन-प्रवंधमें एक उच्चपद ।

फड़फड़ाना–स॰ क्रि॰ किसी वस्तुमें 'फड़-फड़' शब्द उत्पन्न करना; पंख आदिको इस प्रकार हिलाना कि उससे 'फड़-फड़' शब्द उत्पन्न हो, फटफटाना । अ॰ क्रि॰ 'फड़-फड़' शब्द होना; छटपटाना; उत्सुक होना ।

फड़वाना–स॰ क्रि॰ किसीको फाड़नेमें प्रवृत्त करना, किसीसे फाड़नेका काम कराना ।

फँडिगा–स्त्री॰ (सं॰) फतिंगा; झींगुर ।

फड़िया–पु० फुटकर माल बेचनेवाला बनिया; जुएमें अड्डेका मालिक, सभिक।

फड़ी–स्त्री० ईंट, पत्थर आदिका एक गज चौड़ा, एक गज ऊँचा और तीस गज लंबा ढेर।

फ़ड़ुआ, फ़ड़ुहा†–पु० दे० 'फावड़ा'।

फ़ड़ुई, फ़ड़ुही†–स्त्री० फरवी, लाई; छोटा फावड़ा।

फण–पु० (सं०) साँपका फन; नासापुट, नथना; रस्सीका गाँठदार फंदा; नावका ऊपरी अगला भाग, मुद्धी। **–कर**–पु० साँप। **–धर**–पु० साँप; शिव। **–०धर**–पु० शिव। **–भर**–पु० साँप। **–भृत्**–पु० साँप; नौकी संख्या। **–मंडल**–पु० साँपका फन जो फेंटी मारनेपर गोलाकार हो गया हो, कुंडलीकृत फण। **–मणि**–पु० सर्पके फनपर स्थित मणि।

फणवान्(वत्)–पु० (सं०) सर्प।

फणा–स्त्री० (सं०) 'फण'। **–कर**–पु० सर्प। **–धर**–पु० साँप; शिव। **–फलक**–पु० फनकी चौड़ी सतह। **–भर**–पु० फणधर। **–भृत्**–पु० सर्प।

फणावान्(वत्)–पु० (सं०) सर्प।

फणिक–पु० (सं०) सर्प।

फणिका–स्त्री० (सं०) काले गूलरका पेड़।

फणिज्झ, फणिज्झक–पु० (सं०) मरुआ; एक तरहकी तुलसी।

फणित–वि० (सं०) गया हुआ, गत; तरल किया हुआ।

फणिनी–स्त्री० (सं०) सर्पिणी; सर्पिणी नामकी ओषधि।

फणींद्र–पु० (सं०) शेषनाग; वासुकि; पतंजलि मुनि।

फणी(णिन्)–पु० (सं०) सर्प; राहु; पतंजलि; राँगा या टीन। **–(णि)कन्या**–स्त्री० नागकन्या। **–केशर,–केसर**–पु० नागकेसर। **–खेल**–पु० एक पक्षी। **–चक्र**–पु० एक प्रकारका सर्पाकार चक्र जिसके द्वारा शुभ या अशुभ नाडीकूट जाना जाता है (ज्यो०)। **–जिह्वा,–जिह्विका**–स्त्री० महाशतावरी, वड़ी सतावर। **–तल्प**–पु० सर्परूपी तल्प, सर्पशय्या। **–०ग**–पु० (शेषशायी) विष्णु। **–नायक**–पु० वासुकि। **–पति**–पु० बड़ा सर्प; शेष या वासुकि; पतंजलि। **–प्रिय**–पु० वायु। **–फेन**–पु० अफीम। **–भाषित**–वि० पतंजलि मुनि द्वारा उक्त, पतंजलिका कहा हुआ। **–भाष्य**–पु० पतंजलि मुनिका रचा हुआ महाभाष्य नामक व्याकरणग्रंथ। **–भुक्(ज्)** पु० गरुड़ (जो साँपोंको खाते हैं); मोर। **–मुख**–पु० चोरोंके सेंध मारनेके कामका एक औजार जो साँपके मुँहके आकारका होता था। **–लता,–वल्ली**–स्त्री० पानकी बेल। **–हंत्री**–स्त्री० गंधनाकुली, रास्ना। **–हृत्**–स्त्री० क्षुद्र दुरालभा।

फणीश–पु० (सं०) दे० 'फणींद्र'।

फणीश्वर–पु० (सं०) दे० 'फणींद्र'। **–चक्र**–पु० एक प्रकारका चक्र जिसके द्वारा शनिकी नक्षत्रस्थितिके अनुसार जंबू, प्लक्ष आदि सात द्वीपोंका शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्यो०)।

फ़तवा–पु० (अ०) किसी कर्मके उचित या अनुचित होनेके संबंधमें मुफ्ती या मुल्ला (धर्माचार्य) द्वारा शास्त्रके अनुसार दी गयी व्यवस्था।

फ़तह–स्त्री० (अ०) विजय, जीत; सफलता, कामयाबी। **–नसीब,–मंद,–याब**–वि० जिसे विजय प्राप्त हुई हो, विजयी; सफल, कामयाब। **–नामा**–पु० जीतकी खुशीमें की जानेवाली रचना। **–पेच**–पु० पगड़ी बाँधनेका एक ढंग; स्त्रियोंका बाल गूँथनेका एक ढंग; एक तरहका हुक्केका नैचा। **मु० –का डंका या नक्कारा**–जीतकी खुशीमें बजाया जानेवाला नगाड़ा।

फतहपुरसीकरी–पु० आगरा जिलेके अंतर्गत एक इतिहास-प्रसिद्ध स्थान (बाबर और राणा साँगाका युद्ध यहीं हुआ था)।

फतिंगा–पु० कोई परदार कीड़ा, विशेषकर वह जो दीपक या प्रकाश पर झुकता है, पतंग, परवाना।

फ़तील–पु० (सं०) दे० 'फ़तीला'। **–सोज**–पु० दे० 'फतीलासोज'।

फ़तीला–पु० (अ०) दीपककी बत्ती; रुईकी मोटी बत्ती; बंदूक या तोपमें दी जानेवाली बत्ती, पलीता; बत्तीके आकारमें लपेटा हुआ कागज जिसपर कोई यंत्र लिखा रहता है और जिसकी धूनी प्रेतग्रस्त व्यक्तिको दी जाती है, पलीता; जरदोजीका काम करनेवालोंकी लकड़ीकी वह तीली जिसपर तार लपेटते हैं। **–सोज**–पु० दीवट, शमादान।

फतुही–स्त्री० दे० 'फ़तूही'।

फतूर–पु० दे० 'फ़ुतूर'।

फतूरिया–वि० दे० 'फ़ुतूरिया'।

फतूह*–स्त्री० (अ० 'फ़ुतूह'–'फ़तह'का बहु०) विजय, जीत; लूटका माल।

फ़तूही–स्त्री० (अ०) कमरतकको एक प्रकारकी बिना आस्तीनकी कुरती जिसमें सामनेकी ओर बटन या घुंडी लगायी जाती है।

फते*–स्त्री० फतह, विजय।

फतेह*–स्त्री० विजय, जीत।

फत्कारी(रिन्)–पु० (सं०) पक्षी, चिड़िया।

फ़त्ताह–वि० फतह करनेवाला; खोलनेवाला। पु० परमेश्वर।

फदकना–अ० क्रि० 'फद-फद' शब्द करना; भात, रस आदिका पकते समय 'फद-फद' शब्द करना; * दे० 'फुदकना'।

फदका†–पु० तैयारीकी उस अवस्थामें गुड़ आदिका पाग जब वह 'फद-फद' शब्द करता है।

फदफदाना–अ० क्रि० शरीरमें अधिक फुंसियाँ या गरमीके दाने निकल आना; वृक्ष या पौधेमें बहुत-सी शाखाएँ या टहनियाँ निकल आना; † किसी चीजका उबलते समय 'फद-फद' शब्द करना।

फदिया†–स्त्री० दे० 'फरिया'।

फन–पु० उस स्थितिमें साँपका सिर जब वह फैलकर छत्रके आकारका हो गया हो; दे० 'फ़न'। **–माली***–पु० शेषनाग–'कालिका-कृपान, मुंडमालीके त्रिशूलसे है, रामचंद्र-बान फनमालीके जहरसे' –लछिराम।

फ़न, फ़न्न–पु० (अ०) गुण, हुनर; खूबी, विशेषता; विद्या, इल्म; जौहर, कौशल; कारीगरी; धोखा, फरेब, छल, चालाकी, मक्कारी। **–कार**–पु० कलाकार–'वह कद्रदानोंका जमाना था जब फनकारोंको फाँके न करने पड़ते थे।'–नीहारिका, फर० '६४। (**हर फ़न मौला**–हर काममें होशियार, प्रत्येक कार्यमें निपुण।)

फनकना–अ० क्रि० 'फन-फन' शब्द करना; सनसनाहटके साथ चलना।

फनकार–स्त्री० 'फन'की आवाज; पु० दे० 'फन'के साथ।

फनगना†–अ० क्रि० कल्ला फूटना, पनपना।

फनगा†–पु० फतिंगा; अंकुर, कल्ला, फुनगा।

फनना†–अ० क्रि० कामका आरंभ होना, ठाना जाना।

फन-फन–स्त्री० दो या अधिक बार उत्पन्न 'फन' शब्द, 'फन' शब्दकी आवृत्ति।

फनफनाना–अ० क्रि० 'फन-फन' शब्द करना; तेजीसे हिलना।

फनस–पु० पनस, कटहल।

फ़ना–स्त्री० (अ०) विनाश, अस्तित्व नष्ट होना, मिटना; मृत्यु, मौत; परमात्मा और जीवात्मा या उपास्य और उपासकका अभेद होना (सू०)। वि० नष्ट, बरबाद; मृत। **–फ़िल्ला**–वि० ईश्वरमें लीन।

फनाना–स० क्रि० आरंभ करना; तैयार करना।

फनाली*–स्त्री० फनोंका समूह–'कालीकी फनालीपै नचत बनमाली है'–पद्माकर।

फनिग*–पु० सर्प, नाग।

फनिंद*–पु० दे० 'फणींद्र'।

फनि*–पु० दे० 'फणी'; दे० 'फण'। **–धर**–पु० साँप। **–पति, राज**–पु० दे० 'फणिपति'।

फनिक, फनिग–पु० साँप; फतिंगा–'अब करि फनिग भंग कै करा'–प०।

फनियाला–पु० साँप; † तानी लपेटनेके कामकी करघेकी एक लकड़ी, लपेटन।

फनी*–पु० दे० 'फणी'। स्त्री० दे० 'फण'।

फनूस*–पु० दे० 'फ़ानूस'।

फन्नी–स्त्री० पच्चर; कपड़ा बुननेका एक औजार, राछ।

फपक–स्त्री० वृद्धि, बाढ़।

फपकना–अ० क्रि० बढ़ना, पुष्ट होना।

फप्फस-वि० बहुत मोटे और भद्दे शरीरवाला।

फप्फस--अ० क्रि० रुक-रुककर रोना।

फफका।-पु० झलका, फफोला।

फफदना।-अ० क्रि० गोबर आदिका विकारविशेषके कारण बढ़कर फैलना; दाद आदिका वृद्धिको प्राप्त होना या फैलना।

फफसा।-पु० फेफड़ा। वि० जो भीतरसे खाली हो, पोला; स्वादरहित, फीका।

फफूंद-स्त्री० भुकड़ी। -**विज्ञान**-पु० (माइकोलॉजी) भुकड़ी लगनेके कारणों, निरोधक उपायों आदिपर सम्यक् रूपसे विचार करनेकी विद्या; कवकविज्ञान।

फफूंदी*-स्त्री० सूतकी डोरी जिससे स्त्रियाँ साड़ीकी गाँठ बाँधती हैं, नीवी, नारा; फल, लकड़ी आदिपर बरसातमें या सीलके कारण जमनेवाली काईकी तरहकी सफेद वस्तु, भुकड़ी।

फफोर-पु० एक तरहका जंगली प्याज।

फफोला-पु० जलने, रगड़ खाने आदिसे शरीरपर होनेवाला उभार जिसके भीतर चेप या पानी भरा रहता है, छाला, झलका, आबला। **मु० (दिलके)-(ले) फोड़ना**-जली-कटी सुनाना।

फबकना-अ० क्रि० दे० 'फफदना'; मोटा होना।

फबती-स्त्री० प्रसंगानुकूल उक्ति; ऐसी बात जो किसीपर ठीक-ठीक घटे, चुटीली बात। **मु०-उड़ाना या कसना**-चुटीली बात कहना, चुटकी लेना।

फबदना।-अ० क्रि० दाद, खुजली जैसी छोटी-छोटी फुड़ियोंका चारों तरफ फैल जाना, फलना, फफदना।

फबन-स्त्री० फबनेका भाव; शोभा, सौंदर्य।

फबना-अ० क्रि० शोभा देना, सजना, भला मालूम होना।

फबाना-स० क्रि० ऐसे स्थानपर लगाना जहाँ सजे या सुंदर जान पड़े।

फबि*-स्त्री० शोभा, सुंदरता, छवि।

फबीला-वि० शोभा देनेवाला, सजनेवाला, सुंदर।

फ़रंग, फ़रंज-पु० (फा०) दे० 'फ़िरंग'।

फर*-पु० दे० 'फल'; दे० 'फड़'; बिछावन; युद्ध, रण-'फरमें फते बुंदेलन पाई'-छत्रप्रकाश; (सं०) फलक, ढाल। (अं०) -जानवर विशेषके मुलायम छोटे बाल या बालदार खाल।

फरक-पु० दे० 'फ़र्क़'। * स्त्री० दे० 'फड़क'।

फ़रक-वि० (अ०) तेज, तेज चलनेवाला। **मु० (घड़ीका)-होना**-चाल जितनी चाहिये उससे तेज होना; सूईका आगेका समय बताना।

फ़रक़-पु० (अ०) दे० 'फ़र्क़'।

फरकन*-स्त्री० फड़कनेकी क्रिया या भाव।

फरकना*-अ० क्रि० दे० 'फड़कना'।

फरका*-पु० बँड़ेरपर रखा जानेवाला छप्पर; दरवाजेपर लगाया जानेवाला टट्टर-'चोरी करत उघारत फरको'-सूर।

फरकाना*-स० क्रि० दे० 'फड़काना'; अलग करना।

फरकिल्ला-पु० गाड़ीमें हरसेके बाहर पटरीमें लगाया जानेवाला खूंटा जिसके सहारे ऊपरका ढाँचा बनाया जाता है।

फरकी-स्त्री० लासायुक्त लकड़ी जो पक्षी पकड़नेके लिए इस्तेमाल की जाती है।

फरकौहं-वि० फड़कनेवाला, फड़कता हुआ।

फरक्क-पु० दे० फ़र्क।

फ़रग़ान-पु० फरगानाका रहनेवाला।

फ़रग़ाना-पु० तुर्किस्तानके उजबक प्रजातंत्रका एक सूबा जो बाबरका पैतृक राज्य था।

फरचा-वि० जो जूठा न हो, साफ, शुद्ध। -**ई**-स्त्री० सफाई, शुद्धता।

फरचाना।-स० क्रि० साफ करना; शुद्ध करना; आदेश देना।

फ़रजंद-पु० (फा०) बेटा।

फ़रजंदी-स्त्री० पुत्रभाव, बाप-बेटेका नाता।

फ़रज-स्त्री० (अ०) दरार, शिगाफ; फैलाव। पु० दे० 'फ़र्ज़'।

फ़रज़ानगी-स्त्री० बुद्धिमानी।

फ़रज़ाना-वि० (फा०) बुद्धिमान्।

फरजिंद।-पु० दे० 'फ़रज़ंद'।

फ़रज़ीं-पु० (फा०) शतरंजका वजीर जो सबसे महत्त्वका मोहरा होता है। -**बंद**-पु० पैदलके जोरपर पड़नेवाली वजीरकी शह; वजीरके जोरपर बैठा हुआ मोहरा। **मु०-बनना**-पैदलका वजीरके खानेमें पहुँचकर वजीर बन जाना।

फ़रज़ी-पु० दे० 'फ़रज़ीं'। 'फ़र्ज़ी'।

फ़रतूत-वि० (फा०) अति वृद्ध, जरठ।

फ़रद-स्त्री० दे० 'फ़र्द'।

फ़रदा-पु० (फा०) आनेवाला दिन, कल।

फरना*-अ० क्रि० दे० 'फलना'।

फरफंद-पु० छल-कपट; फरेब, दाँव-पेंच; नखरा।

फरफंदी-वि० फरेबी, चालबाज।

फर-फर-स्त्री० दे० 'फड़-फड़'।

फ़र-फ़र-स्त्री० (फा०) जल्दी, तेजी। अ० जल्दी-जल्दी, धड़ाधड़। **मु०-उड़ाना**-जल्दी-जल्दी पढ़ना।

फरफराना-अ० क्रि० दे० 'फड़फड़ाना'।

फरफुंदा*-पु० फतिंगा।

फरमा-पु० (अ० 'फ्रेम') ढाँचा; वह ढाँचा जिसपर मोची जूता बनाता है; (अं० 'फ़ार्म', 'फ़ार्मे') कंपोज किया और चेसमें कसा हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आदिका एक बारमें छापा हुआ अंश, जुज। **मु० -देना**-चेसमें कसकर मैटरको छापनेके लिए तैयार कर देना।

फ़रमा-वि० (फा०) (समासके अंतमें) हुक्म देनेवाला (कारफ़रमा)।

फ़रमाइश-स्त्री० आज्ञा, आज्ञारूपमें कुछ माँगना, कोई चीज भेजनेकी आज्ञा, 'आर्डर'।

फ़रमाइशी-वि० जिसकी फरमाइश की गयी हो, फरमाइश करके बनवाया, मँगवाया हुआ; बढ़िया।

फ़रमान-पु० (फा०) आज्ञा, राजकीय आज्ञा या आज्ञापत्र; अस्थायी कानूनके रूपमें निकली हुई राजकीय आज्ञा, 'आर्डिनेंस'। -**(माँ)गुज़ार**-पु० हाकिम, बादशाह। वि० आज्ञा करनेवाला। -**बरदार**-वि० अधीन, आज्ञाकारी, सेवक। -**बरदारी**-स्त्री० फरमाँबरदार होनेका भाव। -**रवा**-पु० हाकिम, बादशाह। -**रवाई**-स्त्री० बादशाही, हुकूमत।

फ़रमाना-स० क्रि० कहना, आज्ञा करना (आदरार्थक प्रयोग)।

फ़रयाद-स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फरलांग-पु० (अं०) दूरीकी एक माप, २२० गज, मीलका आठवाँ भाग।

फरलो-स्त्री० (अं०) सरकारी कर्मचारियोंको आधी तनखाहपर मिलनेवाली लंबी छुट्टी।

फरवरी-पु० ईसवी सन्‌का दूसरा महीना, 'फेब्रुअरी'।

फरवार।-पु० खलिहान।

फरवारी-स्त्री० फसलका वह भाग जो खलिहानसे ब्राह्मण, बढ़ई, नाई आदिको दिया जाता है।

फरवी-स्त्री० भूना हुआ चावल, लाई।

फ़रश-पु० दे० 'फ़र्श'। -**बंद**-पु० फर्शके रूपमें बना हुआ ऊँचा स्थान।

फ़रशी-स्त्री० तंग मुँह और चौड़े पेंदेका बरतन जिसके मुँहपर हुक्केका नैचा बैठाया जाता है, गुड़गुड़ी; बंदूकका एक पुरजा जिसमें गज रखते हैं। वि० फर्शका; फर्श-संबंधी। -**जूता**-पु० फर्शपर या घरमें पहननेका जूता। -**सलाम**-पु० वह सलाम जिसमें सिर फर्शके साथ लग जाय, बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम।

फरसंग-पु० (फा०) फासलेकी एक माप जो १८ हजार फुटकी होती है।

फरस-पु० दे० 'फ़र्श'; * दे० 'फरसा'।

फरसा-पु० फावड़ा; परशु।

फरसी-स्त्री०, वि० दे० 'फ़रशी'।

फ़रसूदा-वि० (फा०) घिसा हुआ, जीर्ण।

फरहंग-पु० (फा०) कोश; टीका, व्याख्या; कुंजी।

फरहटा-पु० बाँस लकड़ी आदिकी लंबी पतली पट्टी।

फ़रहत-स्त्री० (अं०) प्रसन्नता, प्रफुल्लता। -**बख़्श**-वि० फरहत

देनेवाला।

फरहद–पु० एक वृक्ष जिसकी गणना पंच देवतरुओंमें है, पारिभद्र।

फरहर†–वि० तेज, चालाक; दे० 'फरहरा'।

फरहरना*–अ० क्रि० फड़कना; फहराना।

फरहरा–पु० पताका। वि० अलग-अलग (भात); शुद्ध; प्रसन्न।

फरहराना–अ० क्रि० दे० 'फरहरना'।

फरहरी*–स्त्री० फल, जंगली फल।

फ़रहाँ–वि० (अ०) प्रसन्न, प्रफुल्ल।

फरहा–पु० धुनियेकी कमानका चौड़ा भाग।

फ़रहाद–पु० (फा०) 'शीरीं-फरहाद' कहानीका नायक जिसने शीरींसे मिलनेके लिए कोहे बेसितूनसे शीरींके महलतक नहर खोदकर लानेकी शर्त पूरी की।

फरही–स्त्री० लकड़ीका वह चौड़ा भाग जिसपर रखकर ठठेरे बर्तन रेतते हैं।

फरा†–पु० खौलते पानीमें या भापसे पकाया हुआ एक व्यंजन।

फराक*–वि० दे० 'फ़राख़'। पु० लंबी-चौड़ी खुली जगह, मैदान; दे० 'फ्राक'।

फराकत*–वि० दे० 'फ़राख़'। स्त्री० दे० 'फ़राग़त'।

फ़राख़–वि० (फा०) चौड़ा, विस्तृत, कुशादा। **–दस्त,–दामन**–वि० धनी; उदार। **–हौसला**–वि० ऊँची हिम्मतवाला; धैर्यवान्।

फ़राख़ी–स्त्री० फराख होना, फैलाव; खुशहाली; बहुलता; घोड़ेका तंग।

फ़राग़त–स्त्री० (अ०) छुटकारा; बेफिक्री; मलत्याग। **–ख़ाना** पु० शौचालय, पाखाना। **मु०** **–जाना**–शौच जाना। **–पाना**–छुटकारा पाना, फुरसत पाना।

फ़राज़–वि० (फा०) ऊँचा (समासमें व्यवहृत–सरफ़राज़, नशेबो-फ़राज़)। पु० ऊँचाई, बुलंदी।

फ़राज़ी–स्त्री० ऊँचाई।

फ़रामुश–वि० (फा०) दे० 'फ़रामोश'।

फ़रामुशी–स्त्री० दे० 'फ़रामोशी'।

फ़रामोश–वि० (फा०) भूला हुआ, विस्मृत। पु० लड़कोंका एक खेल। **–कार**–वि० विस्मरणशील।

फ़रामोशी–स्त्री० विस्मृति, भूल-चूक।

फरार–वि० दे० 'फ़रारी'; * पु० फलाहार; फैलाव।

फरार–वि० (अ०) (गिरफ्तारीसे बचनेके लिए) जो भाग गया हो या कहीं छिप गया हो, पलायित।

फ़रारी–वि० भागा हुआ। पु० अपराधी जो भाग गया हो या भागता फिरे।

फरास–पु० दे० 'फ़र्राश'।

फरासीस–पु० फ्रांसका रहनेवाला, फ्रेंच; एक तरहकी छींट।

फरासीसी–पु० फ्रांसका रहनेवाला। वि० फ्रांसका। स्त्री० फ्रांसकी भाषा, फ्रेंच।

फ़राहम–वि० (फा०) इकट्ठा किया हुआ, राशीकृत।

फ़राहमी–स्त्री० इकट्ठा करना, जुटाना।

फरिया–स्त्री० एक तरहका लहँगा; घाँघराके साथ ओढ़नेकी छोटी पिछौरी, ओढ़नी (बुंदेल०)। पु० मिट्टीकी नाँद।

फ़रियाद–स्त्री० (फा०) जुल्मकी शिकायत, अन्याय-अत्याचारसे बचानेकी प्रार्थना, दुहाई; नालिश। **–रस**–वि० उत्पीडितको न्याय दिलानेवाला। **–रसी**–स्त्री० इंसाफ।

फ़रियादी–वि० फरियाद, नालिश करनेवाला। पु० अभियोक्ता, मुस्तगीस। **मु०** **–होना**–नालिश-फरियाद करना।

फरियाना†–स० क्रि० चावल आदिका कचरा धोकर साफ करना; निर्णय करना। अ० क्रि० साफ होना; निर्णीत होना।

फ़रिश्ता–पु० (फा०) 'फ़िरिश्ता', देवदूत।

फरी–स्त्री० चमड़ेकी ढाल जिसपर गतकेकी मार रोकी जाती है–'लैके खड्ग फरी गहि हाथा'–सबल सिंह; फड़।

फ़रीक़–पु० (अ०) जुदा करनेवाला; जमात, पक्ष; मुकदमेमें वादी, प्रतिवादी या वादी-प्रतिवादी पक्षका कोई व्यक्ति। **–औवल**–पु० मुद्दई। **–बंदी**–स्त्री० गुटबंदी, तरफदारी। **–सानी**–पु० मुद्दालेह। **–सालिस**–पु० तीसरा फरीक या पक्ष जो मुकदमेमें अपनेसे आ कूदे।

फ़रीक़ैन–पु० वादी-प्रतिवादी दोनों, उभयपक्ष (द्विवचन)।

फ़रीज़ा–पु० (अं०) खुदाका हुक्म जिसका पालन बंदोंके लिए फर्ज हो (नमाज, रोजा, हज इ०)।

फ़रीदबूटी–स्त्री० एक बूटी।

फरुई–स्त्री० दे० 'फरुही'; 'फरवी'।

फरुवक–पु० (सं०) पूगपात्र, पीकदानी।

फरुहरी–स्त्री० फड़कनेकी क्रिया, स्पंदन।

फरुहा†–पु० दे० 'फावड़ा'।

फरुही†–स्त्री० छोटा फावड़ा; खेतीके काम आनेवाला एक औजार; दे० 'फरवी'।

फरेंदा†–पु० 'फलेंदा'। जामुनका फल।

फ़रेफ़्ता–वि० (फा०) लुभाया हुआ, मुग्ध, आशिक।

फ़रेब–पु० (फा०) छल, धोखा। वि० (समासके अंतमें) ठगने, लुभानेवाला (दिलफ़रेब, नज़रफ़रेब)। **–कार**–वि० ठगनेवाला, धोखेबाज। **–ख़ुर्दा**–वि० ठगा हुआ, जिसने धोखा खाया हो।

फ़रेबिया†–वि० दे० 'फ़रेबी'।

फ़रेबी–वि० फरेब करने, धोखा देनेवाला।

फरेरा*–पु० झंडा, पताका।

फरेरी†–स्त्री० दे० 'फरहरी'।

फ़रोख़्त–स्त्री० (सं०) बिक्री, बेची।

फ़रोख़्ता–वि० (फा०) बेचा हुआ, बिका हुआ।

फ़रोग़–पु० (फा०) रोशनी; रौनक; ख्याति, उत्कर्ष, उन्नति।

फ़रोश–वि० (फा०) (समासके अंतमें) बेचनेवाला (मेवाफ़रोश)।

फ़र्क़–पु० (अ०) अंतर, दूरी; बिलगाव, भेद, भिन्नता; माँग, सिर।

फ़र्ज–स्त्री० (अ०) भग; दरार।

फ़र्ज़–पु० (अ०) ईश्वरादिष्ट अवश्य कर्तव्य कर्म, (मुसल०) शास्त्रविहित कर्म; कर्तव्य; जिम्मेदारी; कल्पना। **–(र्ज़े)ऐन**–पु० हर एकका जाती फर्ज (रोज़ा, नमाज इ०)। **–मुहाल**–पु० असंभवको संभव मान लेना। **मु०** **–अदा करना**–कर्तव्यका पालन करना। **–करना**–मानना, कल्पना करना। **(किसी-पर)–होना**–अवश्य कर्तव्य होना, धर्म होना।

फ़र्ज़ी–वि० अवश्य कर्तव्य; फर्ज किया हुआ, खयाली, काल्पनिक।

फ़र्त–पु० (अ०) आधिक्य, इफ़रात।

फ़र्द–वि० (अ०) एक, अकेला; बेजोड़। स्त्री० सूची; फिहरिस्त; निमंत्रितोंकी सूची, बंद; चिट्ठा; चादर, शाल; रजाईका ऊपरका पल्ला। पु० व्यक्ति, अकेला आदमी; गंजीफेका वरक। **–जुर्म**–स्त्री० वह कागज जिसपर अभियुक्तका अपराध और दफा लिखी जाती है, अभियोगसूची। **–तालीक़ा**–स्त्री० कुर्क किये हुए मालकी सूची। **–बशर**–पु० व्यक्ति। **–हिसाब**–स्त्री० हिसाबका चिट्ठा।

फ़र्दन्-फ़र्दन्–अ० अलग-अलग हर आदमीसे।

फर्दी–वि० जिसमें एक हो। स्त्री० फर्द, सूची।

फर्फरीक–पु० (सं०) फैली हुई उँगलियोंके साथ हथेली; नयी टहनी या कल्ला; कोमलता।

फर्फरीका–स्त्री० (सं०) पादत्राण, जूता।

फ़र्म–स्त्री० (अ०) साझेका कारबार करनेवाली कोठी या बड़ी दुकान या संस्था।

फ़र्याद–स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फ़र्र–पु० (अ०) रोशनी; ठाट-बाट, शान-शौकत; दबदबा।

फर्राटा–पु० तेजी। **मु०** **–भरना,–मारना**–तेजीसे दौड़ना।

फ़र्राश–पु० (अ०) फर्श बिछानेवाला; खेमा लगानेवाला; झाड़ू देनेवाला। **–ख़ाना**–पु० वह कमरा या मकान जिसमें खेमे और उनका सामान रखा जाय।

फ़र्राशन, फ़र्राशिन–स्त्री० फर्राशकी स्त्री।

फ़र्राशी–स्त्री० फर्राशका काम। **–पंखा**–पु० छतका पंखा।

फ़र्श–पु० (अ०) वह चीज जो जमीनपर बिछायी जाय (दरी, कालीन, जाजिम इ०); बिछावन; धरातल; कंकर आदि कूटकर पक्की की हुई जमीन, गच। **–(र्शे) ख़ाक**–पु० जमीन, धरती। **मु०** **–से अर्शतक**–धरतीसे आकाशतक। **–(र्शे) जमीं होना**–

मरना; दफन होना।

फ़र्शी–वि० फर्शका। स्त्री० दे० 'फ़रशी'। **–जूता**–पु० फर्शपर या घरमें पहननेका जूता; स्लीपर, चप्पल। **–झाड़**–पु० वह झाड़ जो फर्शपर रखकर जलाया जाता हो। **–सलाम**–पु० वह सलाम जिसमें सिर फर्शके साथ लग जाय, बहुत झुककर किया जानेवाला सलाम। **–हुक्का**–पु० चौड़े पेंदेका हुक्का।

फलंक*–पु० फलाँग; आकाश।

फलंत–स्त्री० पौधों, वृक्षों आदिके फलनेकी क्रिया या भाव।

फल–पु० (सं०) पेड़-पौधोंका गूदेदार बीजकोश; शस्य; संतान; कर्मपरिणाम, नतीजा; बदला; कर्मसे प्राप्त होनेवाला सुख-दुःखरूप भोग; ब्याज; नफा; हानि; गणित-क्रियासे प्राप्त अंक; उद्देश्य, प्रयोजन; तीर-बरछी आदिका अग्र भाग; तलवार आदिकी धार; ढाल; फाल; आर्तव; जयफल; गिरी; कंकोल; त्रिफला; कोरैयाका पेड़; पासेपरकी बिंदी। **–कंटक**–पु० कटहल। **–कंटकी**–स्त्री० इंदीवरा। **–कर**–पु० फलोंपर लगनेवाला महसूल। **–कर्कशा**–स्त्री० बनबेर, झड़बेरी। **–काम**–वि० फलकी कामना करनेवाला। **–काल**–पु० फलका मौसम। **–कृच्छ्र**–पु० कृच्छ्रव्रतका एक भेद जिसमें फलोंका क्वाथ पीकर रहना होता है। **–कृष्ण**–पु० जलआँवला; करंजका पेड़। **–केसर**–पु० नारियलका पेड़। **–कोश,–कोष**–पु० अंडकोश, फोता। **–खंडन**–पु० फलकी अप्राप्ति, नैराश्य। **–ग्रह,–ग्राही(हिन्)**–वि० फल ग्रहण करने, लाभ उठानेवाला। **–चारक**–पु० बौद्ध विहारका एक पदाधिकारी। **–चोरक**–पु० एक गंधद्रव्य। **–छदन**–पु० तख्तोंसे बना हुआ मकान। **–त्रय**–पु० त्रिफला; द्राक्षा; परूष और काश्मीर। **–त्रिक**–पु० त्रिफला; त्रिकुटा। **–द**–वि० फल देनेवाला। पु० वृक्ष। **–दाता(तृ),–प्रद**–वि० फल देनेवाला; लाभदायक। **–दान**–पु० ब्याह पक्का करनेके लिए वरको रुपये आदि देनेकी रस्म। **–दार**–वि० (हिं०) फलनेवाला; फलयुक्त। **–निर्वृत्ति**–स्त्री० दे० 'फलनिष्पत्ति'; अंतिम परिणाम। **–निवृत्ति**–स्त्री० फलप्राप्तिमें विराम। **–निष्पत्ति**–स्त्री० फलकी उत्पत्ति। **–परिणति**–स्त्री०,**–परिणाम,–पाक**–पु० फलका अच्छी तरह पक जाना। **–परिरक्षण**–पु० (प्रिजर्वेशन ऑफ फ्रूट्स) रासायनिक साधनों या अन्य उपायों द्वारा फलोंको क्षतिग्रस्त होने, सड़ने आदिसे बचाना। **–पाकांता**–स्त्री० वे पौधे जो फल पकनेके बाद नष्ट हो जाते हैं। **–पाकावसाना**–स्त्री० एक वार्षिक पौधा। **–पाकी(किन्)**–पु० गर्दभांड वृक्ष। **–पातन**–पु० फल बटोरना। **–पादप**–पु० फलदार वृक्ष। **–पुच्छ**–पु० गाजर-शलजम आदिके वर्गकी वनस्पति। **–पुष्पा,–पुष्पी**–स्त्री० एक तरहका खजूर। **–पूर,–पूरक**–पु० बिजौरा नीबू। **–प्रदान**–पु० दे० 'फलदान'। **–प्राप्ति**–स्त्री० अभीष्ट-सिद्धि, सफलता। **–प्रिया**–स्त्री० प्रियंगु। **–फलहरी,–फलारी**–स्त्री० (हिं०) कई तरहके फल, मेवे। **–फूल**–पु० (हिं०) फल और फूल। **–बंधी(धिन्)**–वि० जिसमें फल आ रहे हों। **–भाक्(ज्),–भागी(गिन्)**–वि० फल भोगने या पानेवाला। **–भुक्(ज्)**–वि० फलभोजी। पु० बंदर। **–भूमि**–स्त्री० कर्मफल भोगनेका स्थान (स्वर्ग या नरक)। **–भृत्**–वि० जिसमें फल लग रहे हों, फलोंसे भरा हुआ। **–भोग**–पु० कर्मफल (सुख-दुःख)का भोग; लाभादिका अधिकार। **–भोजी(जिन्)**–वि० फल खानेवाला। **–मत्स्या**–स्त्री० घीकुआर। **–मुंड**–पु० नारियलका पेड़। **–मुख्या**–स्त्री० अजमोदा। **–मुद्गरिका**–स्त्री० एक तरहका खजूर। **–योग**–पु० फलप्राप्ति; वेतन; पुरस्कार; नाटकमें नायककी उद्देश्यसिद्धिका स्थान। **–राज**–पु० तरबूज। **–लक्षणा**–स्त्री० दे० 'प्रयोजनवती लक्षणा' (सा०)। **–वंध्य**–वि० (वृक्ष) जिसमें फल न लगे। **–वर्ति**–स्त्री० घावमें भरनेकी मोटी बत्ती। –**–वर्तुल**–पु० तरबूज। **–वस्ति**–स्त्री० वस्तिकर्मका एक भेद। **–विक्रयी(यिन्)**–पु० फल बेचनेवाला, मेवाफरोश। **–विष**–पु० जहरीले फलवाला पेड़। **–वृक्ष**–पु० फलनेवाला वृक्ष। **–वृक्षक**–पु० कटहल। **–शाक**–पु० तरकारीके काम आनेवाला फल। शाकके ६ भेदोंमेंसे एक। **–शाडव**–पु० अनार। **–शाली(लिन्)**–वि० फलयुक्त; फलाश्रय। **–शैशिर**–बेरका पेड़। **–श्रुति**–स्त्री० सत्कर्मविशेषका फल बतानेवाला वाक्य; ऐसे वाक्यका श्रवण; परिणामके रूपमें हुई उपलब्धि; परिणाम। **–श्रेष्ठ**–पु० आम। **–संपद्**–स्त्री० फलोंकी प्रचुरता; सफलता। **–संबद्ध**–पु० गूलर। **–संभारा**–कठगूलर, कृष्णोदुंबरी। **–संस्थ**–वि० फल उत्पन्न करनेवाला। **–साधन**–पु० अभीष्ट-सिद्धिका साधन। **–सिद्धि**–स्त्री० फलप्राप्ति। **–स्थापन** पु० सीमंतोन्नयन संस्कार। **–स्नेह**–पु० अखरोट। **–हारी**–स्त्री० कालिका। †वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो। **–हीन**–वि० फलरहित, निष्फल। **–हेतु**–वि० फलके उद्देश्यसे काम करनेवाला। **मु० –आना**–(पेड़में) फल लगना, फलना। **–खाना**–श्रम, सत्कर्मका फल भोगना। **–पाना**–नतीजा मिलना, कियेकी सजा मिलना। **–लाना**–फल लगना, फलना; (कर्मका) फलजनक होना।

फलक–पु० (सं०) लकड़ीका तख्ता, पट्टी; ताँबे, हाथीदाँत, दफ्ती आदिका पट्ट जो लेख या चित्रके आधारका काम दे; चौकी; नितंब; हथेली; फल; परिणाम; लाभ; आर्तव; कमलका बीजकोष; ललाटकी अस्थि; धोबीका पाट; ढाल; फल, तीरकी गाँसी। **–यंत्र**–पु० भास्कराचार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिपसंबंधी यंत्र। **–सक्थ**–वि० तख्ते जैसी चौड़ी जंघावाला।

फ़लक–पु० (अ०) आकाश; * स्वर्ग। **–ज़दा**–वि० मुसीबतका मारा; मुफलिस, फटे हाल। **–परवाज़**–वि० आसमानपर पहुँचनेवाला। **–मर्तबा,–रुतबा**–वि० ऊँचे पदपर आसीन, आलीमर्तबा। **–सैर**–वि० वायुवेगवाला (घोड़ा)। स्त्री० भंग। **–(के)पीर**–वि० बूढा, जरठ। **मु० –टूटना,–पर चढ़ना,–पर चढ़ाना**–दे० 'आसमान'में। **–याद आना**–जमानेके उलट-फेर याद आना।

फलकना*–अ० क्रि० छलकना; फड़कना।

फलका–पु० फफोला, झलका।

फलकी(किन्)–वि० (सं०) फलकों, तख्तोंसे बना हुआ; जो ढाल लिये हो। पु० चौकी; चंदन।

फलकी–वि० आकाशीय।

फलतः(तस्)–अ० (सं०) फलस्वरूप, इसलिए।

फलदू–पु० एक वृक्ष, धौली।

फलन–पु० (सं०) फलना; परिणाम उत्पन्न करना।

फलना–अ० क्रि० (पेड़में) फल आना, फलयुक्त होना; फल देना, फलजनक होना; संतानवती होना; बहुतसे दानों या फुंसियोंका निकल आना। **मु० –फूलना**–फलयुक्त होना; बालबच्चोंवाला होना, सुख-सौभाग्ययुक्त होना।

फलफंद*–पु० दे० 'फरफंद'।

फलवान्(वत्)–वि० (सं०) फलयुक्त; फल देने या उत्पन्न करनेवाला; जिसमें नाटकका फल हो। पु० फलदार वृक्ष।

फलवती–स्त्री० (सं०) प्रियंगु। वि० स्त्री० फलवाली।

फलश, फलस–पु० (सं०) कटहल।

फ़लसफ़ा–पु० (अ०) तर्कविद्या, दर्शनशास्त्र; ज्ञान, विद्या।

फ़लसफ़ी–पु० दर्शनविद्, दार्शनिक।

फलहक–पु० (सं०) तख्ता।

फलही–स्त्री० (सं०) कपास; शाल्मली।

फ़लाँ–वि० (अ०) कोई आदिष्ट (व्यक्ति या वस्तु), अमुक। पु० लिंग। **–फलाँ**–वि० अमुक-अमुक।

फलाँग*–स्त्री० छलाँग; छलाँगमें तै की जानेवाली दूरी; मालखंभकी एक कसरत।

फलाँगना*–अ० क्रि० कूदना, छलाँग मारना।

फलांत–पु० (सं०) बाँस।

फलांश–पु० (सं०) तात्पर्य, सारांश।

फला–स्त्री० (सं०) शमी; प्रियंगु; झिंझिरीटा।

फलाकना–स० क्रि० छलाँग मारकर पार करना।

फलाकांक्षा–स्त्री० (सं०) फलकी कामना।

फलागम–पु० (सं०) फल आना; फल आनेका काल; शरद ऋतु; कथावस्तुकी वह अवस्था जिसमें फलकी प्राप्ति होती है (ना०)।

फलाढ्य–वि० (सं०) फलोंसे भरा हुआ।

फलाढ्या–स्त्री० (सं०) जंगली केला।

फलातूँं–पु० दे० 'अफ़लातून'।

फलादन–वि० (सं०) फल-भक्षक। पु० तोता।

फलादेश–पु० (सं०) फल कहना, विशेषत: ग्रहादिका।

फलाध्यक्ष–पु० (सं०) खिरनी; फल देनेवाला, ईश्वर; फलोंका अध्यक्ष।

फलाना–वि० दे० 'फलाँ'। (स्त्री० 'फलानी'।) स० क्रि० फलनेका कारण या प्रेरक होना।

फलानी–स्त्री० भग।

फलानुबंध–पु० (सं०) फलों या परिणामोंका क्रम।

फलानुमेय–वि० (सं०) जो फलसे जाना जा सके।

फलान्वेषी(षिन्)–वि० (सं०) फलका आकांक्षी।

फलापेक्षा–स्त्री० (सं०) फलकी अपेक्षा, फलाशा।

फलापेत–वि० (सं०) फलहीन; अनुत्पादक।

फलाफल–पु० (सं०) कर्म-विशेषका शुभाशुभ या इष्ट-अनिष्ट फल।

फलाम्ल–पु० (सं०) खट्टे फलोंवाला पेड़; अम्लवेत; इमली। **–पंचक**–पु० वेर, अनार, विषाविल, अम्लवेत और विजौराका समाहार।

फलाम्लिक–वि० (सं०) खट्टे फलसे वना हुआ (पदार्थ)। पु० इमली आदिकी चटनी।

फलायोषित्–स्त्री० (सं०) झींगुर।

फलारं–पु० फलाहार।

फलाराम–पु० (सं०) फलोंका बाग।

फलार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) फलकी कामना करनेवाला।

फ़लालेन, फ़लालैन–पु० (अं० 'फ्लैनेल') एक तरहका मुलायम ऊनी कपड़ा।

फलाशन–वि० (सं०) फलभोजी। पु० तोता।

फलाशी(शिन्)–वि० (सं०) फल खाकर रहनेवाला, फलाहारी।

फलासंग–पु० (सं०) फलके प्रति आसक्ति।

फलासक्त–वि० (सं०) फलमें आसक्ति रखनेवाला, फलकामी।

फलासव–पु० (सं०) दाख, खजूर आदिसे वनाया हुआ आसव।

फलास्थि–पु० (सं०) नारियलका पेड़।

फलाहार–पु० (सं०) फल-मूलका आहार। वि० फल खाकर रहनेवाला।

फलाहारी(रिन्)–वि० (सं०) फलाहार करनेवाला; दूध आदिसे निर्मित, अन्नरहित (फल-मिठाई)।

फलि–पु० (सं०) एक प्रकारकी मछली।

फलिक–वि० (सं०) फलका उपभोग करनेवाला। पु० पर्वत।

फलिका–स्त्री० (सं०) सरपत आदिका नुकीला भाग; एक तरहकी सेम, निष्पावी।

फलित–वि० (सं०) फला हुआ. सफल; फलीभूत। पु० फल-वृक्ष; एक गंधद्रव्य, शैलेय। **–ज्योतिष**–पु० ज्योतिषका वह अंग जो ग्रह-नक्षत्रोंकी गतिसे शुभाशुभ अदृष्ट वताता है।

फलितव्य–वि० फलनेवाला अथवा फलने योग्य।

फलिता–स्त्री० रजस्वला स्त्री।

फलितार्थ–पु० (सं०) तात्पर्य, निचोड़।

फलिन–वि० (सं०) फलयुक्त, फल देनेवाला। पु० कटहल; श्योनाक; रीठा।

फलिनी–स्त्री० (सं०) प्रियंगु लता; अग्निशिखा वृक्ष; इलायची।

फली–स्त्री० लंबोतरे पतले फल जिनमें एक साथ कई दाने या बीज होते हैं, मटर, सेम, केवाँच आदि; (सं०) एक तरहकी मछली; दे० 'फलिनी'।

फली(लिन्)–वि० (सं०) फलयुक्त, फल देनेवाला; लाभजनक। पु० वृक्ष।

फलीकरण–पु० (सं०) अनाजको भूसे या भूसीसे अलग करना, माँड़ना, कूटना; फटकना।

फलीकृत–वि० (सं०) माँड़ा या कूटा हुआ; फटककर साफ किया हुआ।

फलीता–पु० (अ० 'फ़तीला') वत्ती; तावीजकी बत्ती जिसकी धूनी प्रेतबाधावाले रोगीको देते हैं; वह वत्ती जिससे बंदूक या तोपकी वारूदको आग देते हैं। मु० **–दिखाना**–आग लगाना; बंदूक या तोपको दागना। **–सुँघाना**–तावीज या यंत्रकी धूनी देना।

फलीभूत–वि० (सं०) फलरूपमें परिणत, फलित, सफल।

फलुईं–स्त्री० एक मछली।

फलूष–पु० (सं०) एक विशेष लता।

फलेंदा–पु० जामुनका एक भेद जिसके फल अधिक गूदेदार और मीठे होते हैं।

फलेंद्र–पु० (सं०) वड़ा जामुन, फलेंदा अथवा फरेंदा।

फलोच्चय–पु० (सं०) फलोंकी राशि।

फलोत्तमा–स्त्री० (सं०) एक तरहका अंगूर जिसमें बीज नहीं होते।

फलोत्पत्ति–स्त्री० (सं०) फलकी उत्पत्ति; लाभ। पु० आमका वृक्ष।

फलोदय–पु० (सं०) फलोत्पत्ति; लाभ; हर्ष; दंड; स्वर्ग।

फलोद्देश–पु० (सं०) दे० 'फलापेक्षा'।

फलोद्भव–वि० (सं०) जो फलसे उत्पन्न हुआ हो।

फलोपजीवी(विन्)–वि०, पु० (सं०) फलका व्यवसाय करनेवाला।

फलोपेत–वि० (सं०) फल उत्पन्न करने, देनेवाला।

फल्क–वि० (सं०) जिसका अंग फैला हुआ हो, विस्तारितांग।

फल्गु–वि० (सं०) साररहित; निरर्थक; क्षुद्र; शक्तिहीन; असत्य; सामान्य; रम्य। स्त्री० एक नदी जिसके किनारे गया आवाद है; वसंतकाल; गुलाल; मिथ्या वचन; कठगूलर। **–द**–वि० लालची; कंजूस। **–दा**–स्त्री० फल्गु नदी। **–प्रासह**–वि० अल्प बलवाला। **–वाटिका**–स्त्री० कठगूलर। **–वृंत,–वृंताक**–पु० एक तरहका श्योनाक।

फल्गुन–वि० (सं०) फल्गुनी नक्षत्रमें उत्पन्न; लाल। पु० फाल्गुन मास; इंद्र; अर्जुन।

फल्गुनी–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र। **–भव**–पु० वृहस्पति।

फल्गूत्सव–पु० (सं०) वसंतोत्सव, होली।

फल्य–पु० (सं०) फूल; कली।

फल्लकी(किन्)–पु० (सं०) फलुई नामकी मछली।

फल्लफल–पु० (सं०) फटकनेकी क्रियासे पैदा होनेवाली हवा।

फसकड़ां–पु० चूतड़ टेककर और टाँगें फैलाकर वैठनेका ढंग। मु०**–मारना**–उक्त प्रकारसे बैठना।

फसकनां–अ० क्रि० मसकना, फटना; धँसना। वि० जल्द मसकने या धँसनेवाला।

फसडी*–वि० दे० 'फिसड्डी'।

फसल–स्त्री० (अ०) खेतीकी पैदावार, उपज; किसी चीजके उपजने, फलनेका काल, मौसम। **–की चीज़**–ऋतुविशेषमें पैदा होनेवाले फल, शाक आदि।

फ़सली–वि० फसलका, मौसमी। पु० हैजा; दे० 'फसली-सन्'। **–कौआ**–पु० पहाड़ी कौआ। वि० मतलबका यार। **–गुलाब**–पु० चैती गलाब। **–बुख़ार**–पु० मौसमी बुखार, जूड़ी, मलेरिया। **–सन्,–साल**–पु० अकवरका चलाया हुआ सन् जिसका उपयोग जमीन, लगान, मालगुजारी आदिका हिसाब रखनेमें किया जाता है।

फ़साद–पु० (अ०) बिगाड़, खराबी; वखेड़ा; झगड़ा, लड़ाई, दंगा। **–(दे)ख़ून**–पु० रक्तदोष। मु० **–का घर**–झगड़ेकी जड़।

फ़सादी–वि० फसाद करनेवाला, उपद्रवी, झगड़ालू।

फ़साना–पु० (फा०) कहानी, आख्यायिका। **–नवीस,–निगार**–पु० कहानीकार।

फ़साहत–स्त्री० भाषाका साधु और परिमार्जित होना, क्लिष्ट, श्लिष्ट, अप्रचलित शब्दावलीसे रहित होना, खुशबयानी।

फ़सील–स्त्री० (अ०) दीवार; परकोटा, शहरपनाह।

फ़सीह–वि० (अ०) साफ़-सुंदर भाषा बोलने-लिखनेवाला, खुशबयान।

फ़स्द–स्त्री० (अ०) रगको काट या छेदकर रक्त निकालना। मु० **–खोलना,–लेना**–रगपर नश्तर देना, रगसे रक्त निकालना।

फ़स्ल–स्त्री० (अ०) खेतीकी पैदावार; किसी चीजके उपजनेका काल; अंतर, बिलगाव; परदा; पुस्तकका परिच्छेद। **–(ले)गुल**–स्त्री० फूलोंका मौसम, वसंत। **–बहार**–स्त्री० बसंत ऋतु।

फ़स्ली–वि०, पु० दे० 'फ़सली'।

फ़स्साद–पु० (अ०) फस्द खोलनेवाला, नश्तर लगानेवाला।

फ़ह्म–स्त्री० दे० 'फ़ह्म'।

फ़हमाइश–स्त्री० दे० 'फ़ह्माइश'।

फहरना–अ० क्रि० हवामें उड़ना।

फहरान–स्त्री० फहरानेका भाव।

फहराना–अ० क्रि० हवामें हिलना, झोंके खाना, लहराना (पताका फहराना)। स० क्रि० किसी चीजको इस तरह खड़ा करना कि हवामें हिले–लहराये, उड़ाना।

फहरानि*–स्त्री० दे० 'फहरान'।

फ़ह्म–स्त्री० (अ०) अक्ल, समझ (समासांतमें)।

फह्माइश–स्त्री० (अ०) समझाना, शिक्षा; आदेश; चेतावनी।

फाँक–स्त्री० फल आदिका चाकू आदिसे लंबाईमें तराशा हुआ टुकड़ा, खंड; नारंगी, चकोतरे आदिका प्राकृतिक रूपमें विभाजित अंश जो छिलकेके अंदर होता है।

फाँकना–स० क्रि० चूर या दानेकी शक्लवाली चीजको हाथको होंठसे सटाये बिना मुँहमें डाल लेना, फंका मारना।

फाँका–पु० फाँकनेकी क्रिया, फंका; उतनी चीज जितनी एक बारमें फाँकी जाय; * फाँक।

फाँकी†–स्त्री० दे० 'फाँक'; फाँकनेकी चीज।

फाँग, फाँगी*–स्त्री० एक तरहका साग।

फांट–पु० (सं०) एक तरहका काढ़ा जो औषध-चूर्णको गरम पानीमें भिगोकर छान लेनेसे प्रस्तुत होता है। वि० जो आसानीसे तैयार किया गया हो।

फांट–पु० भाग, हिस्सा; क्रमसे बँटा हुआ भाग। **–बंदी**–स्त्री० वह कागज जिसमें जमीदारीके हिस्सोंका ब्योरा लिखा हो।

फांटक–पु० (सं०) क्वाथ, काढ़ा।

फाँटना–स० क्रि० बाँटना, विभाग करना।

फांटा–पु० कोनिया।

फांड–पु० (सं०) पेट, उदर।

फाँड़–स्त्री० दे० 'फाँड़ा'; * कमर–'फाँड़े सोहै गुजराती फेटा' –ग्रामगीत।

फाँड़ा†–पु० धोतीका कमरमें बाँधा हुआ भाग, फेंटा। मु० **–पकड़ना**–फेंटा पकड़कर भागनेसे रोकना; किसी स्त्रीका किसी पुरुषको भरण-पोषणके लिए जिम्मेदार ठहराना। **–बाँधना**–कमर कसना, तैयार होना।

फाँद–स्त्री० उछाल, छलाँग; फंदा, जाल।

फाँदना–अ० क्रि० उछलना, छलाँग भरना। स० क्रि० कूदकर लाँघना; * फंदेमें फाँसना।

फाँदा†–पु० फंदा।

फाँदी–स्त्री० गट्ठा बाँधनेकी रस्सी।

फाँफट*–पु० कूड़ा-करकट।

फाँफी–स्त्री० बारीक झिल्ली; मलाईकी पतली तह; माँड़ा।

फाँस–स्त्री० पाश, फंदा; बाँस आदिका कड़ा रेशा जो काँटेकी तरह चुभ जाय, किरिच; मनमें चुभने-खटकनेवाली बात (चुभना, निकलना, निकालना); बाँस आदिकी पतली तीली। मु० **–निकलना**–काँटा निकलना; चित्तमें चुभनेवाली बातका दूर होना।

फाँसना–स० क्रि० फंदेमें कसना (रस्सीमें डोल); फंदेमें फँसाना; दाँव-पेंचमें बाँधना; बसमें, हाथमें करना।

फाँसी–स्त्री० रस्सीका फंदा जिससे गला घुटकर जान निकल जाय; वह टिकटिकी या फंदा जिसपर प्राणदंड पाये हुए अपराधीको लटकाते हैं; इस रीतिसे दिया जानेवाला प्राणदंड। मु० **–चढ़ना**–फाँसी चढ़ाया जाना। **–चढ़ाना,–देना**–फंदेसे गला घोंटकर मौतकी सजा देना। **–पड़ना**–फाँसीकी सजा पाना। **–लगना**–फंदेसे गला कसना।

फ़ाइन–पु० (अं०) जुर्माना। वि० बढ़िया, सुंदर।

फाइनल–वि० (अं०) अंतिम (–परीक्षा); दो प्रतिद्वंद्वियोंके बीच निपटारेके लिए खेला गया अंतिम मैच।

फ़ाइल–पु० (अ०) कर्म करनेवाला, क्रियाका कर्ता (व्या०)। स्त्री० (अं०) नुकीला तार जिसपर जरूरी कागज नत्थी किये जाते हैं; सिलसिलेवार रखे हुए कागज, मिसिल; अखबार आदिके सिलसिलेसे नत्थी किये हुए अंक। मु० **–करना**–नत्थी करना; मिसिलमें शामिल करना।

फ़ाइलीयत–स्त्री० फाइल होना; कर्तृत्व।

फाउंटन पेन–पु० (अं०) वह कलम जिसकी नलिकामें स्याही भर देनेसे लिखते समय उसे बार-बार दावातमें डुबाना नहीं पड़ता।

फ़ाक़ा–पु० (अ०) भूखा रहना, उपवास, अनाहार। **–कश**–वि० फाका करनेवाला, क्षुधापीड़ित। **–कशी**–स्त्री० भूखों मरना, लगातार कई दिनोंतक अन्न न मिलना। **–(क़े) मस्त**–वि० मुफलिसीमें भी मस्त रहने, चिंता-परवाह न करनेवाला। **–मस्ती**–स्त्री० तंगदस्तीकी हालतमें भी मस्त रहना। **–शिकनी**–स्त्री० उपवास-भंग। मु० **–(क़ों)का मारा**–जो फाके करते-करते दुबला, कमजोर हो गया हो। **–मरना**–भूखों मरना।

फ़ाख़तई–वि० फाखता (पेंडुकी)के रंगका, सुर्खीमायल, खाकी रंगका। पु० सुर्खीमायल रंग, खाकी रंग।

फ़ाख़ता–स्त्री० (अ०) पेंडकी, पंडुक; क़ुमरी। मु० **–उड़ जाना**–घबड़ा जाना; बेहोश होना; होश फाख़ता हो जाना।

फाग–पु० फागुनमें होनेवाला रागरंग, होली; फागुनमें गाया जानेवाला गीत।

फागुन, फाल्गुन–पु० विक्रम संवत्‌का बारहवाँ मास जो माघके बाद आता है जिसमें होली होती है।

फागुनी–वि० फागुनका।

फ़ाजिर–वि० (अ०) बदकार, दुश्चरित्र। (स्त्री० 'फ़ाजिरा'।)

फ़ाज़िल–वि० (अ०) बढ़ा हुआ, आवश्यकतासे अधिक; हिसाबसे बढ़ा या खर्चसे बचा हुआ; विद्वान्, गुणी। **–बाकी**–स्त्री० देने-पावने या आमद-खर्चके हिसाबके बाद निकलने या बाकी रहनेवाली रकम।

फ़ाटक–पु० बड़ा दरवाजा, सिंहद्वार; तोरण; † मवेशीखाना, काँजीहौस; * फटकन–'फाटक दैकर हाटक माँगत भोरै निपट सुधारी'–सूर। **–दार**–पु० काँजी हाउसका प्रबंधक।

फाटक, फाटका–पु० सट्टा, सट्टेका जुआ। **–(के)बाज़**–पु० सट्टेबाज।

फाटकी–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

फाटना*–अ० क्रि० दे० 'फटना'।

फाड़न–पु० फाड़नेसे निकला हुआ टुकड़ा; छेनेका पानी।

फाड़ना–स० क्रि० चीरना, शिगाफ करना; टुकड़े करना; बाना, फैलाना (आँख, मुँह); खटाई आदिके योगसे दूधके जलीय और ठोस भागको अलग-अलग कर देना। **फाड़ खाऊ**–वि० फाड़ खानेवाला, बिगड़ैल। मु० **फाड़ खाना**–भेड़िये आदिका किसीको चीरकर खा जाना; झल्लाना, काटने दौड़ना।

फाणि–स्त्री० (सं०) गुड़ दहीमें गूँधा हुआ सत्तू।

फाणित–पु० (सं०) राब; शीरा।

फ़ातिमा–स्त्री० (अ०) मुहम्मदकी बेटी जो अलीको ब्याही गयी, हसन-हुसैनकी माता।

फ़ातिहा–स्त्री० (अ०) आरंभ; कुरानकी पहली सूरत; परलोकगत आत्माकी सद्‌गतिके लिए सूरए फातिहा आदि पढ़े जानेकी रस्म। **–ख़्वानी**–स्त्री० फातिहा पढ़नेकी रस्म। मु० **–पढ़ना**–निराश होना।

फानना–स० क्रि० (रुई) धुनना; † किसी कामको शुरू करना।

फ़ानी–वि० (अ०) फना होनेवाला, मरने-मिटनेवाला, नाशवान्।

फ़ानूस–पु० (फा०) एक तरहका शमादान जिसपर बारीक कपड़े या कागजका ग्लोब-सा बना होता है, एक तरहका बड़ा कंदील जिसमें बहुत-सी मोमबत्तियाँ एक साथ जलायी जाती हैं; शीशेका गिलास जिसमें मोमबत्ती जलायी जाती है। **–(से)ख़याल,–ख़याली**–पु० कागजका बना हुआ कंदील जिसमें लगे कागजके हाथी-घोड़े हवासे घूमते और उनकी छाया कंदीलके कागजपर पड़ती है।

फाफर–पु० कूटू।

फाफा–स्त्री० पोपली बुढ़िया।

फाफुंदा*–पु० फतिंगा।

फाब*–स्त्री० फबन, शोभा।

फावना*–अ० क्रि० दे० 'फबना' ।

फ़ायदा–पु० (अ०) लाभ, नफा; प्राप्ति; प्रयोजनकी सिद्धि; नतीजा; गुण । **–(दे)मंद**–वि० लाभजनक; गुणकारी; उपयोगी ।

फ़ायर–पु० (अं०) आग; फ़ैर । **–अलार्म**–पु० आग लगनेकी सूचना अपने आप मिल जानेकी व्यवस्था । **–आर्म**–पु० आग्नेयास्त्र, तमंचा-बंदूक आदि । **–एंजिन**–पु० आग बुझानेकी कल, दमकल । **–ब्रिगेड**–पु० आग बुझानेवाले कर्मचारियोंका दस्ता । **–मैन**–पु० इंजन या भट्ठीमें कोयला डालनेवाला या आग बुझानेवाला कर्मचारी ।

फाया–पु० दे० 'फाहा' ।

फार*–पु० दे० 'फाल' ।

फारखती–स्त्री० दे० 'फ़ारिगख़ती' ।

फारना*–स० क्रि० दे० 'फाड़ना' ।

फ़ारम–पु० दे० 'फ़ार्म' ।

फ़ारस–पु० (अ०) ईरान, पारस ।

फ़ारसी–स्त्री० (अ०) फारसकी भाषा । वि० फारसका । पु० फारसका रहनेवाला, ईरानी । **–दाँ**–वि० फारसी पढ़ा हुआ । मु०**–बघारना**–बेमौके फारसीदानी दिखानेके लिए फारसी बोलना या बेमौके विद्वत्ता प्रदर्शित करना ।

फारा*–पु० कतला, कटी हुई फाँक, फाल; फरा ।

फ़ारिग़–वि० (अ०) जो फरागत हो चुका हो, कार्यसे निवृत्त, निश्चित । **–ख़ती**–स्त्री० बेबाकीकी रसीद । मु० **–होना**–निवृत्त होना; शौच जाना ।

फारी–स्त्री० ओढ़नी ।

फ़ारेन हाइट–पु० एक जर्मन विज्ञानविद् जिसने फारेन हाइट थर्मामीटरका आविष्कार किया । **–थर्मामीटर**–पु० थर्मामीटरके तीन भेदोंमेंसे एक जिसमें हिमांक (फ्रीजिंग प्वाइंट) ३२° पर और क्वथनांक (ब्वायलिंग प्वाइंट) २१२° पर होता है ।

फ़ार्म–पु० (अं०) आकृति; नकशा, नमूना; साँचा; दर्खास्त आदिका छपा हुआ नमूना; कंपोज किया और चेसमें कसा हुआ छपनेके लिए तैयार मैटर; पुस्तक आदिका एक बारमें छापा हुआ अंश, जुज; बड़े रकबेका खेत, खासकर जिसमें वैज्ञानिक ढंगसे खेती की जाय ।

फाल–स्त्री० कटी हुई सुपारी । पु० डग; एक डगका फासला; (सं०) हलकी अँकड़ीमें लगाया जानेवाला नुकीला लोहा जिससे जमीन खुदती है, कुसी; एक दिव्य या दैवी परीक्षा; माँगकी पट्टी, सीमंत भाग; गुलदस्ता; फलाँग; एक तरहका फावड़ा; पूला; ललाट; बलराम; शिव; बिजौरा नीबू; सूती वस्त्र; जोती हुई जमीन । वि० सूती । **–कृष्ट**–वि० जुता हुआ । पु० जुता हुआ खेत । **–गुप्त**–पु० बलराम ।

फ़ाल–स्त्री० (अ०) शकुन । **–(ले)नेक**–पु० शुभ शकुन । **–बद**–पु० असगुन, अपशकुन ।

फालखेला–स्त्री० (सं०) एक पक्षी ।

फालतू–वि० आवश्यकतासे अधिक, फाजिल; बेकार, निकम्मा ।

फ़ालसई–वि० फालसेके रंगका । पु० फालसेके रंगसे मिलता हुआ रंग ।

फ़ालसा–पु० (फा०) गरमीके दिनोंमें होनेवाला एक छोटा फल जिसके खट्टा (शर्बती) और मीठा (शकरी) दो भेद होते हैं ।

फ़ालसाई–वि०, पु० दे० 'फ़ालसई' ।

फालाहत–वि०, पु० (सं०) दे० 'फालकृष्ट' ।

फ़ालिज–पु० (अ०) पक्षाघात रोग, आधे अंगका सुन्न हो जाना, लकवा । **–ज़दा**–वि० जिसे फालिज हुआ हो । मु० **–गिरना,–मारना**–फालिजकी बीमारी होना ।

फ़ालूदा–पु० (फा०) एक तरहकी सेवई जो मैदेके बारीक टुकड़े दूध, शकरमें डालकर तैयार की जाती है ।

फ़ालेज़–पु० (फा०) खरबूजे-ककड़ीका खेत ।

फाल्गुन–पु० (सं०) विक्रम संवत्‌के बारहवें महीनेका नाम, फागुनका महीना; अर्जुन; अर्जुन वृक्ष ।

फाल्गुनानुज–पु० (सं०) चैत्र; वसंतकाल; नकुल-सहदेव ।

फाल्गुनाल–पु० (सं०) फाल्गुनका महीना ।

फाल्गुनिक–पु० (सं०) फाल्गुन मास । वि० फल्गुनी नक्षत्र-संबंधी; फाल्गुनकी पूर्णिमा-संबंधी ।

फाल्गुनी–स्त्री० (सं०) फाल्गुनकी पूर्णिमा; पूर्वा फाल्गुनी या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र । **–भव**–पु० बृहस्पति ।

फावड़ा–पु० चौड़े फलकी कुदाल, बेलचा । **–(ड़े)से दाँत**–चौड़े, बदशक्ल दाँत । मु० **–बजाना**–खोदकर गिराना, ढाना ।

फावड़ी–स्त्री० छोटा फावड़ा; काठकी कुदाल जिससे घोड़ेकी लीद आदि हटाते हैं ।

फ़ाश–वि० (फा०) खुला हुआ; प्रकट, सरीह । **–ग़लती**–स्त्री० खुली गलती । मु० **(परदा)–करना**–गुप्त बात प्रकट कर देना ।

फासफोरस–पु० (अं०) एक ज्वलनशील मूल तत्त्व जो साधारण तापमानमें खुला रखनेसे धीरे-धीरे जलता रहता और अँधेरेमें दीप्तिमान् दिखाई देता है ।

फासला–पु० दे० 'फासिला' ।

फासिज्म–मुसोलिनी द्वारा प्रवर्तित इताली राष्ट्रीय आन्दोलन जो सेनाकी तरह संगठित था और संसदीय व्यवस्था तथा साम्यवादका विरोधी था ।

फ़ासिद–वि० (अ०) फसाद करनेवाला, खराबी, बिगाड़ पैदा करनेवाला, बुरा, खोटा ।

फ़ासिल–वि० (अ०) जुदा करनेवाला, अंतर करनेवाला ।

फ़ासिला–पु० (अ०) दूरी, अंतर ।

फासिस्ती–किसी पुरानी विचारधाराको लेकर चलनेवाला वह वर्ग जो अपनी धारणाओंको मनवानेके लिए बलप्रयोगको ही एकमात्र उपाय मानता हो ।

फाहा–पु० इत्र, घी आदिमें तर की हुई रुई या कपड़ा; मरहम चुपड़ी हुई पट्टी ।

फ़ाहिशा–स्त्री० (अ०) दुश्चरित्र स्त्री, पुंश्चली ।

फिँकरना†–अ० क्रि० गीदड़का बोलना ।

फिँकवाना–स० क्रि० किसीसे फेंकनेका काम कराना ।

फिंगक–पु० (सं०) एक पक्षी, फिंगा ।

फिंगा–पु० एक चिड़िया ।

फ़िकर–स्त्री० दे० 'फ़िक्र' ।

फ़िक़रा–पु० (अ०) उद्देश्य-विधेययुक्त पदसमूह, वाक्य, जुमला; रीढ़की हड्डी; फरेबकी बात, चकमा, झाँसा । **–बंदी**–स्त्री० तुकबंदी । **–(रे)बाज़**–वि० चकमा देनेवाला, धोखेबाज । **–बाज़ी**–स्त्री० चकमा देना, धोखेबाजी । मु० **–चल जाना**–चकमेका काम कर जाना । **–चुस्त करना**–दिलसे कोई मौजूं बात जोड़कर कहना । **–(रे)जड़ना**–फबती, आवाजा कसना । **–जोड़ना**–झूठी बात बनाकर कहना । **–बताना**–धोखा, चकमा देना ।

फिकवाना–स० क्रि० दे० 'फिँकवाना' ।

फ़िक़ाह–पु० (अ०) इसलामी धर्मशास्त्र, मजहबी कानून ।

फिकैत–पु० गतका-फरी, पटा-बनेठीका खिलाड़ी, पटेबाज ।

फिकैती–स्त्री० गतके-पटे आदिकी कुशलता, पटेबाजी ।

फ़िक्र–स्त्री० (अ०) सोच, चिंता; अंदेशा; काव्य-रचनाके लिए किया जानेवाला चिंतन; परवाह; यत्न । **–मंद**–वि० जिसे किसी बातकी चिंता लगी हो, सोची । **–(क्रे)मआश**–स्त्री० जीविकाकी चिंता ।

फ़िगार–वि० (फा०) (समासांतमें) घायल, जख्मी ('दिलफ़िगार', 'सीनाफ़िगार') ।

फिचकुर†–पु० मूर्च्छा आदिमें मुँहसे निकलनेवाला फेन, झाग ।

फिजाँ–स्त्री० वातावरण, आसपासकी स्थिति, समाँ–'जमीं वही पर फिजाँ बदल गयी'–आज ९-१०-६९ ।

फिट–अ० धिक्कार, लानत, फटकार; उपयुक्त, दुरुस्त ।

फिटकरी–स्त्री० एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिककी तरह सफेद होता और दवा, रँगाई आदिके काम आता है ।

फिटकार–स्त्री० लानत, धिक्कार; शाप । मु० **(मुंह या चेहरेपर)–बरसना**–चेहरेका मलिन, उतरा हुआ होना ।

फिटकारना–स० क्रि० धिक्कार-फटकार बताना ।

फिटकिरी–स्त्री० दे० 'फिटकरी'।

फिटकी–स्त्री० छींटा; कपड़ेकी बुनावटमें निकले हुए फुचरे; * फिटकरी।

फिटन–स्त्री० (अं० 'फेटन') चार पहियोंकी खुली हलकी घोड़ा-गाड़ी।

फ़िटर–पु० (अं०) 'फिट' करनेवाला, कलोंके पुरजे दुरुस्त करनेवाला मिस्तरी।

फिटाना*–स० क्रि० हटा देना, भगा देना।

फिट्ट–वि० दे० 'फिट्टा'।

फिट्टा–वि० (फटकार, अपमानसे) उतरा, खिसियाया हुआ (चेहरा)।

फ़ितना–पु० (अ०) झगड़ा-फसाद; उपद्रव; दुष्टता; एक तरहका इत्र (उठाना, बरपा करना)। **–अंदाज़,–परदाज़**–वि० झगड़ा उठानेवाला, फसादी। **मु० –जगाना**–मिटे हुए झगड़ेको फिर उठाना।

फ़ितरत–स्त्री० .(अ०) प्रकृति, स्वभाव; पैदाइश; सृष्टि; चालाकी; चाल।

फ़ितरतन्–अ० प्रकृतिसे, स्वभावतः।

फ़ितरती–वि० प्रकृतिगत, पैमाइशी (इस अर्थमें अब फ़ितरी चलता है); शरारती, चालबाज।

फ़ितरी–वि० सहज, पैदाइश, प्रकृतिगत; प्राकृतिक।

फ़ितूर–पु० दे० 'फ़ुतूर'।

फ़ितूरी–वि० दे० 'फ़ुतूरी'।

फिदवी–वि० दे० 'फ़िद्वी'।

फ़िदा–वि० (अ०) मुग्ध, आसक्त; किसीपर जान देनेवाला। **–ई**–वि० प्राण निछावर करनेवाला। पु० इस्माईलिया फिरकेका अनुयायी। **मु० –होना**–आशिक होना; किसीके लिए जान देना।

फ़िद्वी–वि० (अ०) फिदा होनेवाला; किसीके लिए जान देनेवाला। पु० सेवक, दास (प्रार्थना-पत्रोंमें प्रार्थीके नामके पहले लिखा जाता है)।

फिद्दा–पु० दे० 'पिद्दा'।

फिना–स्त्री० वि० दे० 'फ़ना'।

फिनिया*–स्त्री० कानमें पहननेका एक गहना।

फिफरी*–स्त्री० पपड़ी–'उड़ि गै बदनकी लालिमा फिफरी परी अधरान'–रघुराज०।

फिरंग–पु० यूरोप, यूरोपीय; गरमीकी बीमारी। * स्त्री० विलायती तलवार–'चमकती चपला न, फेरत फिरंगैं भट···'–भूषण। **–रोग**–पु० (वेनीरियल डिजीज) दे० 'रतिज रोग', यौन रोग।

फिरंगिस्तान–पु० यूरोप।

फिरंगी–पु० यूरोपियन। वि० यूरोपीय, विलायती। स्त्री० विलायती तलवार।

फिरंट–वि० फिरा हुआ, विरुद्ध; नाराज।

फिर–अ० पीछे, अनंतर; दूसरे समय; तब; पुनः, दोबारा; इसके अलावा। **–फिर**–अ० बार-बार, पुनः-पुनः। **–भी**–अ० तिसपर भी, तब भी।

फ़िरऔन–पु० (अ०) मिस्रके प्राचीन बादशाहोंकी उपाधि। वि० घमंडी, सरकश। **–(ने) बेसामान**–पु० वह आदमी जो निर्धन होते हुए भी घमंडी हो।

फिरकना–अ० क्रि० थिरकना, नाचना।

फ़िरक़ा–पु० (अ०) ज़मात, समुदाय; जाति, संप्रदाय। **–बंदी**–स्त्री० जमात बनाना, गरोहबंदी। **–वार**–अ० फिरके, संप्रदायके अनुसार। **–वाराना**–वि० सांप्रदायिक, संप्रदायगत।

फिरकी–स्त्री० चकई, लकड़ीका एक खिलौना; फिरहरी; तकलेमें लगा हुआ चमड़ेका टुकड़ा; मालखंभकी एक कसरत; कुश्तीका एक पेंच; धागा लपेटनेकी रील। **–दंड**–पु० एक तरहका दंड। **मु० –की तरह फिरना**–एक जगह या एक हालतमें स्थिर न रहना।

फिरकैयाँ*–स्त्री० चक्कर।

फिरगाना*–पु० यूरोप-निवासी; अंग्रेज।

फिरता–वि० वापस। पु० वापसी; अस्वीकार।

फ़िरदौस–पु० (अ०) स्वर्ग, बिहिश्त; उद्यान।

फ़िरदौसी–पु० (अ०) फारसीके प्रसिद्ध महाकाव्य शाहनामाका रचयिता अबुलकासिम तूसी (९३२-१०२० ई०)।

फिरना–अ० क्रि० कभी इधर, कभी उधर जाना, घूमना, भ्रमण करना; चक्कर खाना; मंडलाकार घूमना; लौटना, पलटना, मुड़ना; बदलना; मुकरना; लौटाया जाना, फिराया जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; फेरा या चलाया जाना (छुरी फिरना); पोता जाना। स० क्रि० (पाखाना) करना या कर मारना। **फिरकर**–मुड़कर, पलटकर। **मु० जी–**विरक्त होना। **दिन फिरना**–अनुकूल समयकी वापसी। **सिर फिरना**–बुद्धि भ्रष्ट होना।

फ़िरनी–स्त्री० (फा०) पिसे हुए चावलोंकी खीर।

फिरवाना–स० क्रि० फिराने या फेरनेका काम कराना।

फिराऊ–वि० जो फिरता हो सके। जाकड़ (माल)।

फिराक–पु० फेर, चिंता; टोह।

फ़िराक़–पु० (अ०) वियोग, जुदाई। **–(क़े)यार**–पु० प्रियतम, प्रेमपात्रसे बिछोह।

फ़िराक़िया–वि० वियोगात्मक, जिसका विषय वियोग हो। **–नज़्म**–स्त्री० वह काव्य जिसमें विरहका वर्णन हो।

फिराद, फिरादि*–स्त्री० फरियाद।

फिराना–स० क्रि० इधर-उधर चलाना, घुमाना, भ्रमण या सैर कराना; चक्कर खिलाना; साथ लिये फिरना; मोड़ना, लौटाना; औरका और करना; (पाखाना) करनेमें प्रवृत्त करना।

फ़िरार–पु० (अ०) भाग जाना, पलायन करना।

फ़िरारी–वि० भागा हुआ, पलायित (अभियुक्त इ०)।

फ़िरासत–स्त्री० (फा०) बुद्धिमानी, समझदारी; सामुद्रिक।

फिरि*–अ० दे० 'फिर'।

फिरिकी*–स्त्री० दे० 'फिरकी'।

फिरियाद–स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फिरियादि*–स्त्री० दे० 'फ़रियाद'।

फिरियादी–वि०, पु० दे० 'फ़रियादी'।

फ़िरिश्ता–पु० (फा०) देवता; मुसलमानोंके विश्वासानुसार ज्योतिसे निर्मित एक दिव्य योनि, देवदूत; हिंदुस्तानके मुसलमान राज्योंके प्रसिद्ध इतिहास 'तारीख़े फ़िरिश्ता'का लेखक। **–ख़सलत,–ख़–**वि० देवोपम स्वभाववाला, नेक, भला। **–सीरत**–वि० साधुचरित, नेक। **–सूरत**–वि० जो देखनेमें बहुत नेक, भला मालूम हो। **मु०–(श्ते)का कानमें फूँकना**–घमंडी होना। **–का गुज़र न होना,–की दाल न गलना**–किसीकी पहुँच न होना। **–के पर जलना**–प्रवेशका साहस न होना; गुजर न होना। **–दिखाई देना, –नज़र आना**–मौत करीब होना। **–(श्तों)को ख़बर न होना**–नितांत गुप्त होना।

फिरिहरा–पु० एक चिड़िया।

फिरिहरी†–स्त्री० दे० 'फिरकी'।

फिरौती–स्त्री० फिराने या फेरनेकी क्रिया या भाव; (अपहृत व्यक्ति या वस्तुको) लौटानेके लिए माँगी गयी रक़म–'तीस हजार फिरौती देनेपर बालक छूटा'; ब्याहमें बहनोई या दामाद आदि द्वारा दी गयी रक़म जो बादमें लौटा देनी पड़ती है (–के रुपये)।

फ़िर्क़ा–पु० (अ०) दे० 'फ़िरक़ा'।

फ़िलफ़ौर–अ० फौरन, तुरत; खुदाकी राहपर, ईश्वर-प्रीत्यर्थ।

फ़िलहक़ीक़त–अ० हकीकतमें, सचमुच।

फ़िलहाल–अ० तत्काल; अभी, इस समय।

फिल्म–स्त्री० (अं०) चलचित्र; सिनेमा; रासायनिक पदार्थसे बनी कागजी वस्तु जिसपर कैमरासे प्रतिकृति उतारी जाती है।

फिल्मी–वि० फिल्म-संबंधी।

फिल्ली†–स्त्री० पिंडली।

फ़िश–अ० (फा०) धिक्, छी (तिरस्कारसूचक)।

फिस–वि० सारहीन; कुछ नहीं। **मु०–हो जाना**–बेकार सिद्ध होना; कुछ न रह जाना।

फिसड्डी–वि० पीछे रह जानेवाला, काममें पिछड़ा रहनेवाला; निकम्मा।

फिसफिसाना–अ० क्रि० फिस होना; ढीला, कमजोर हो जाना।

फिसलन–स्त्री० फिसलनेकी क्रिया; फिसलनेकी जगह ।

फिसलना–अ० क्रि० चिकनाईकी अधिकतासे पाँवका न टिकना, सरकना; (ला०) लुभाना, मनका झुकाव होना; चूकना, धर्म या नीतिसे डिगना । वि० फिसलनवाला ।

फिसलाना–स० क्रि० किसीके फिसलनेका कारण होना ।

फिसलाहट–स्त्री० फिसलनेका भाव; फिसलन; पिच्छलता ।

फ़िहरिस्त–स्त्री० (अ०) सूची, फर्द ।

फीँचना|–स० क्रि० (कपड़ा) कचारना ।

फ़ी–स्त्री० दोष, त्रुटि, खोट । अ० (अ०) में, वीच; से; प्रति, हर, पीछे । **–कस**–अ० प्रतिव्यक्ति, आदमी पीछे । **–ज़माना**–अ० आजके जमाने, वर्तमान कालमें । **–साल**–अ० प्रतिवर्ष । **–सैकड़े**–अ० सैकड़े पीछे, प्रतिशत ।

फीका–वि० सीठा, वेमजा; जो शोख या चटकीला न हो, हलका (रंग); कांतिहीन; *वेअसर, व्यर्थ ।

फ़ीता–पु० (पुर्त०) सूत या रेशमकी पतली पट्टी जो गोटे-किनारीकी तरह कपड़ोंके हाशियेपर लगायी जाती है; निवाड़की पतली धज्जी जिससे कागज आदि वाँधते, अंग्रेजी ढंगके जूतोंको कसते हैं ।

फीनस–स्त्री० दे० 'पीनस' ।

फीफरी|–स्त्री० दे० 'फिफरी' ।

फीरनी–स्त्री० दे० 'फिरनी' ।

फ़ीरोज़–वि० (फा०) विजयी; सफल; सौभाग्यशाली । **–मंद**–वि० सफल, सौभाग्यशाली । **–शाह**–पु० हिंदुस्तानके खिलजी वादशाहोंमेंसे एक जो अपने भतीजे अलाउद्दीनके हाथों (१२९० ई० में) कतल किया गया; तुगलक वंशका वादशाह, गयासुद्दीन तुगलकका भाई जिसका राज्यकाल शांति और समृद्धिका था (राज्यारोहण १३५१ ई०) ।

फ़ीरोज़ा–पु० (फा०) नगके काम आनेवाला एक कीमती पत्थर जिसका रंग नीला या हरा होता है । **–चश्म**–वि० नीली आँखोंवाला ।

फीरोज़ी–स्त्री० विजय; सफलता, भाग्योदय । वि० फीरोजेके रंगका ।

फ़ील–पु० (अ०) हाथी । **–ख़ाना**–पु० हाथियोंका अस्तवल, हस्तिशाला । **–दंदाँ**–वि० वड़े-वड़े दाँतोंवाला । पु० हाथीदाँत । **–पा**–पु० एक रोग जिसमें एक या दोनों पाँव सूज जाते हैं, श्लीपद । **–पाया**–पु० जोड़ाई करके वनाया हुआ मोटा खंभा । **–वान**–पु० हाथीवान, महावत ।

फीली–स्त्री० पिंडली–'रोवाँ वहुत जाँघ अरु फीली'–प० ।

फ़ीस–स्त्री० (अं०) शिक्षा-शुल्क; प्रवेश-शुल्क; डाक्टर, वकील आदिका मेहनताना ।

फ़ीसागोरस–(पाइथागोरस) पु० यूनानी वैज्ञानिक और दार्शनिक जो आत्माकी अमरता और पुनर्जन्मका कायल था ।

फुँकना–अ० क्रि० फूँका जाना, भस्म होना, जलना; नष्ट होना; व्यर्थ खर्च होना । पु० दे० 'फुकना' ।

फुँकनी–स्त्री० दे० 'फुकनी' ।

फुँकरना–अ० क्रि० फुफकारना, फूत्कार करना ।

फुँकवाना, फुँकाना–स० क्रि० फूँकने या जलानेका काम कराना ।

फुंकार–पु० फुफकार ।

फुंकारना–अ० क्रि० फुफकारना, साँपका गुस्सेमें मुँहसे हवा छोड़ना ।

फुँकैया–पु० फूँकनेवाला ।

फुँदकी–स्त्री० गाँठ; विंदी ।

फुँदना–पु० सूत, ऊन आदिका फूल या गुच्छा; झव्वा ।

फुँदारा–पु० जिसमें फुँदने लगे हों ।

फुँदिया–स्त्री० झव्वा, फुँदना ।

फुँदी*–स्त्री० विंदी–'सारी लटकति पाटकी विलसति फुँदी लिलार'–मतिराम; गाँठ ।

फुंसी–स्त्री० छोटी फुड़िया ।

फु–पु० (सं०) मंत्र पढ़कर फूँकनेका शब्द; तुच्छ बात ।

फुआ–स्त्री० पिताकी वहन, वूआ ।

फुआरा|–पु० फुहारा ।

फुक–पु० (सं०) पक्षी ।

फुकना–पु० मसाना, मूत्राशय, वड़ी फुकनी । अ० क्रि० दे० 'फुंकना' ।

फुकनी–स्त्री० वाँस आदिकी नली जिसके छेदमें फूँक मारकर आगको हवा देते हैं ।

फुकली–स्त्री० दे० 'फोकली' ।

फुक्क–पु० पूरी तरह भस्म, नष्ट ।

फुक्का–पु० कपड़ेपर मुँहकी फूंक डालकर उसीकी गरमाहटसे आँख सेंकना । **–मारकर रोना**–फूटफूटकर रोना ।

फुग्गा–पु० फुंकना, गुब्वारा ।

फुचका|–पु० गोलगप्पा, वताशा, पिचूका ।

फुचड़ा–पु० (दरी आदिमें) वुनावटसे वाहर निकला हुआ सूत या रेशा ।

फुज़ला–पु० (अ०) वचा हुआ अंश; सीठी; मैल ।

फ़ुज़ूल–वि० (फा०) ज्यादा; वेकार, अनावश्यक । **–ख़र्च**–वि० अनावश्यक व्यय करनेवाला, अपव्ययी । **–ख़र्ची** स्त्री० अनावश्यक व्यय करना, अपव्यय ।

फुट–पु० (सं०) साँपका फन । वि० फटा हुआ; स्फुटित; (हिं०) विना जोड़ेका, अकेला; जो किसीके साथ या किसी श्रेणी-सिलसिलेमें न हो । **–मत**–पु० मतभेद ।

फुट–पु० (अं०) पाँव, पाद; लंवाईकी एक माप जो १२ इंचकी होती है । **–नोट**–पु० पृष्ठके नीचे दी जानेवाली टिप्पणी, पादटिप्पणी । **–पाथ**–पु० सड़कके अगल-वगल पैदल चलनेकी पटरी । **–पौण्डल**–पु० ऊर्जा या कार्य नापनेका मात्रक । एक फुट-पौण्डल कार्य उस वक़्त पूरा होता है जव एक 'पौण्डल'का वल अपनी दिशामें वल विन्दुको एक फुटकी दूरी तक खिसका दे । **–वाल**–पु० चमड़ेका वड़ा गेंद जिसके भीतर रवड़की थैलीमें हवा भरी रहती है; उस गेंदसे खेला जानेवाला खेल ।

फुटक–पु० दे० 'फुटका' ।

फुटकर, फुटकल–वि० फुट, अकेला, अलग, भिन्न; जो किसी श्रेणी-सिलसिलेमें न हो; जिसमें कई तरहकी चीजें हों, विविध; थोड़ी मात्रामें तोड़कर होनेवाली (विक्री), खुर्दा । पु० रेजगारी ।

फुटका–पु० छाला, फफोला; धान आदिका लावा ।

फुटकी–स्त्री० छोटी अंठी, दूध आदिके जमे हुए कण; गाढ़ी चीजका छींटा; एक छोटी चिड़िया, फुदकी ।

फुटेहरा–पु० मटर आदिका भूना हुआ दाना जिसका छिलका फट गया हो ।

फुटैल–वि० दे० 'फुट्टैल' ।

फुट्ट–वि० दे० 'फुट' (हिं०) ।

फुट्टक–पु० (सं०) एक प्रकारका वस्त्र ।

फुट्टिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारका वस्त्र ।

फुट्टैल–वि० जिसका जोड़ा न हो; झुंडसे अलग रहनेवाला । (जानवर); हतभाग्य ।

फुतकार–पु० फुफकार ।

फ़ुतूर–पु० (अ०) फसाद; शरारत; घटना; कमजोरी; खरावी ।

फ़ुतूरिया, फ़ुतूरी–वि० फुतूर करनेवाला ।

फुत्कर–पु० (सं०) अग्नि ।

फुत्कार–पु० (सं०) दे० 'फूत्कार' ।

फुत्कृत–वि० (सं०) फूँका हुआ; चिल्लाया हुआ । पु० फूँकसे वजनेवाले वाद्यकी ध्वनि; चीत्कार; दे० 'फूत्कृति' ।

फुत्कृति–स्त्री० (सं०) दे० 'फूत्कृति' ।

फुदकना–अ० क्रि० (मेढक, छोटी चिड़ियों, चिड़ियोंके वच्चोंका) उछलते हुए चलना, कूदना; हर्षके अतिरेकमें उछलना ।

फुदकी–स्त्री० एक छोटी चिड़िया जो फुदकती हुई चलती है ।

फुनंग–पु० दे० 'फुनगी' ।

फुनकार–पु० दे० 'फुंकार' ।

फुनगी–स्त्री० वृक्ष या शाखाका सिरा; शाखाके अंतकी कोमल पत्तियाँ और टूँसा ।

फुनना|–पु० फुँदना ।

फुनफुनी*–अ० पुनःपुनः, वार-वार–'हरि भगति विना दुःख फुनफुनी'–कवीर ।

फुनि*–अ॰ पुनि, पुनः।

फुप्फुकारक–वि॰ (सं॰) जो हाँफ रहा हो, हाँफनेवाला।

फुप्फुस–पु॰ (सं॰) फेफड़ा।

फुप्फुसदाह–पु॰ (न्यूमोनिया) एक या दोनों फेफड़ोंमें श्लेष्माके जमा हो जानेसे होनेवाला शोथ या प्रदाह।

फुफँदी–स्त्री॰ साड़ी कसनेकी डोरी या साड़ीके दो छोरोंकी गाँठ जो स्त्रियाँ सामनेकी ओर लगाती हैं।

फुफकाना*–अ॰ क्रि॰ फुफकारना।

फुफकार–पु॰ साँपके मुँहसे हवा निकालनेकी आवाज, फूत्कार।

फुफकारना–अ॰ क्रि॰ साँपका गुस्सेमें मुँहसे जोरसे हवा निकालना, फुंफकार करना।

फुफी*–स्त्री॰ दे॰ 'फूफी'।

फुफुस–पु॰ (सं॰) दे॰ 'फुप्फुस'।

फुफू*–स्त्री॰ दे॰ 'फूफी'।

फुफेरा–वि॰ फूफा या फूफीके नातेका (भाई आदि)।

फुबती†–स्त्री॰ साड़ीका चुना हुआ किनारा।

फुर–स्त्री॰ छोटी चिड़ियोंके उड़नेमें होनेवाली परोंकी आवाज (फुरसे उड़ जाना)। * वि॰ सत्य। **–फुर**–स्त्री॰ बार-बार होनेवाली 'फुर'की आवाज।

फुरक़त–स्त्री॰ (अ॰) वियोग, जुदाई।

फुरकना†–स॰ क्रि॰ मुँहसे सुरकना (कढ़ी आदि)।

फुरती–स्त्री॰ तेजी; चुस्ती; जल्दी।

फुरतीला–वि॰ तेज; चुस्त; फुरतीसे काम करनेवाला।

फुरना*–अ॰ क्रि॰ स्फुटित होना; उद्भूत होना, निकलना (शब्द); चमक पड़ना; सत्य होना; फलदायक होना; असर करना; फड़कना।

फुरफुराना–अ॰ क्रि॰ इस तरह उड़ना कि परों या डैनोंसे 'फुर-फुर' आवाज हो। स॰ क्रि॰ फुरेरी फिराना; पंख आदि फड़फड़ाना।

फुरफुरी–स्त्री॰ उड़नेके लिए पंख फड़फड़ाना।

फुरमान*–पु॰ दे॰ 'फ़रमान'।

फुरमाना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'फ़रमाना'।

फ़ुरसत–स्त्री॰ (अ॰) अवकाश, खाली वक्त; छुट्टी; इतमीनान; रोगसे मुक्ति। मु॰ **–पाना**–छुटकारा पाना। **–से**–अवकाशमें; धीरे-धीरे।

फुरसा–पु॰ बालूके रंगका एक विषैला साँप।

फुरहरना*–अ॰ क्रि॰ स्फुरित होना; प्रकट होना; फरहरना; हिलना; फड़क उठना।

फुरहरी–स्त्री॰ परों आदिकी फड़फड़ाहट; कंप; दे॰ 'फुरेरी'। मु॰ **–लेना**–काँपना।

फुराना–अ॰ क्रि॰ सत्य होना, फुरना। स॰ क्रि॰ सत्य करना, सत्य सिद्ध करना।

फुरेरी–स्त्री॰ सींक या तिनकेके सिरेपर लपेटी हुई रुई जिसपर इत्र, तेल आदि चुपड़ा जाय; कँपकँपी, कंपयुक्त रोमांच; फड़कनेका भाव। मु॰ **–लेना**–कंपके साथ रोमांच होना; हिलना; सतर्क हो जाना।

फुरेरू†–दे॰ 'फुरेरी' (कंपन, लहर), 'निशाके चेहरेपर लाजकी फुरेरू'–अचल मेरा कोई।

फुर्ती–स्त्री॰ दे॰ 'फुरती'।

फुर्सत–स्त्री॰ दे॰ 'फुरसत'।

फुल–'फूल'का समासमें व्यवहृत रूप। **–कारी**–स्त्री॰ गुलबूटेका काम, गुलकारी; एक कपड़ा जिसपर रंगीन रेशमसे फूल कढ़े होते हैं। **–चुही**–स्त्री॰ एक छोटी चिड़िया जो फूलोंपर उड़ा और उनका रस चूसा करती है। **–झड़ी**–स्त्री॰ एक तरहकी आतिशबाजी जिसे जलानेपर फूल जैसी चिनगारियाँ झड़ती हैं; झगड़ा लगानेवाली बात (फुलझड़ी छोड़ना); झगड़ा कराने-लगानेवाली स्त्री। **–वर** पु॰ एक कपड़ा जिसपर रेशमसे फूल बने होते हैं। **–वाई***–स्त्री॰ दे॰ 'फुलवारी'। **–वाड़ी**–स्त्री॰ दे॰ 'फुलवारी'। **–वार***–वि॰ प्रफुल्ल, प्रमुदित। पु॰ रंगीन कागजके बने हुए फूल-पौधे जिन्हें सजावटके लिए बरातके साथ ले जाते हैं। **–वारी**–स्त्री॰ फूलोंका (छोटा) बाग, पुष्पवाटिका। **–सरा**–स्त्री॰ एक चिड़िया। **–सुंघी**–स्त्री॰ फुलचुही चिड़िया। **–हारा**–पु॰ माली।

फुलका–पु॰ हलकी-पतली रोटी, चपाती; * फफोला।

फुलकी–स्त्री॰ छोटा फुलका; गोलगप्पा, बताशा; पकौड़ी।

फुलफुला–वि॰ फूला-फूला-सा।

फुलरा–पु॰ फुँदना, झब्बा, (फूलोंका) गुच्छा।

फुलहरा–पु॰ † फूल मालाओंका बना झूला या आटोप (चँदोवा)।

फुलांग–पु॰ एक तरहकी भाँग।

फुलाई–स्त्री॰ सूखेकी बीमारी; बबूलका एक भेद; फुलानेकी क्रिया।

फुलाना–स॰ क्रि॰ किसी चीजको हवा भरकर फैलाना; मोटा करना; चापलूसी करके किसीका दिमाग चढ़ाना, गर्व बढ़ाना; फूलनेका कारण होना, पुष्पित करना। अ॰ क्रि॰ फूलना।

फुलायल*–पु॰ दे॰ 'फुलेल'।

फुलाव–पु॰ दे॰ 'फुलावट'।

फुलावट–स्त्री॰ फूलनेकी क्रिया; फैलाव, उभार।

फुलावा–पु॰ चोटी या जूड़ा बाँधनेकी फुँदनेदार डोरी।

फुलिंग*–पु॰ दे॰ 'स्फुलिंग'।

फुलिया–स्त्री॰ छत्राकार सिरेवाला काँटा; कानमें पहननेकी लौंग।

फुलिसकेप–पु॰ (अं॰ 'फूलसकैप') एक विशेष आकारका सफेद कागज (१२"×१५" या १३ १/२"×१६ १/४")।

फुलेरा–पु॰ फूलोंसे बनायी हुई छतरी।

फुलेल–पु॰ खुशबूदार तेल।

फुलेली–स्त्री॰ फुलेल रखनेका बरतन।

फुलेहरा*–पु॰ सूत या रेशमका बना बंदनवार; फुलेरा।

फुलौरा–पु॰ बड़ी पकौड़ी।

फुलौरी–स्त्री॰ बेसनकी पकौड़ी।

फुल्ल–वि॰ (सं॰) खिला हुआ, विकसित; प्रसन्न। पु॰ फूल। **–तुवरी**–स्त्री॰ फिटकरी। **–दाम(न्)**–पु॰ एक वर्णवृत्त। **–नयन**–पु॰ एक तरहका हिरन; बड़ी आँख। वि॰ दे॰ 'फुल्लनेत्र'। **–नेत्र,–लोचन**–वि॰ जिसकी आँखें हर्षसे खिल रही हों। **–फाल** –पु॰ फटकनेमें सूप या छाजसेनिकलनेवाली हवा।

फुल्लन–पु॰ (सं॰) हवासे फुलाना।

फुल्लरीक–पु॰ (सं॰) जिला, भूभाग; सर्प।

फुल्लि–स्त्री॰ (सं॰) पुष्पित होना, खिलना।

फुल्ली–स्त्री॰ दे॰ 'फूली'; फुलिया; फूलके आकारका कोई गहना।

फुवारा†–पु॰ फुहारा।

फुस–स्त्री॰ बहुत धीमी, अस्फुट आवाज। **–फुस**–स्त्री॰ बहुत धीमी, साफ सुनाई न देनेवाली आवाज़; ऐसे स्वरमें कही जानेवाली बात, कानाफूसी। पु॰ फुप्फुस। मु॰ **–फुस करना**–सुनाई न देनेवाले स्वरमें बोलना। **–से**–बहुत धीमी आवाजमें, चुपकेसे।

फुसकारना*–अ॰ क्रि॰ फुफकारना; फूँक मारना।

फुसकी–स्त्री॰ बिना आवाजके निकलनेवाली अपानवायु।

फुसड़ा–पु॰ फुचड़ा।

फुसफुसा–वि॰ जल्दी टूट जानेवाला, कमजोर।

फुसफुसाना–अ॰ क्रि॰ धीमी, अस्फुट आवाजमें बोलना, फुसफुस करना।

फुसलाना–स॰ क्रि॰ मीठी बातोंसे बहलाना, भुलावा देना, बहकाना।

फुसूँ–पु॰ (फा॰) दे॰ 'अफ़सूँ'। **–गर**–पु॰ जादूगर।

फुहर*–वि॰, स्त्री॰ दे॰ 'फूहड़'।

फुहार–स्त्री॰ नन्हीं-नन्हीं बूँदोंकी झड़ी, झींसी, जलकण (उड़ना, पड़ना)।

फुहारा–पु॰ बारीक धार या फुहारके रूपमें पानी ऊपर फेंकनेवाला यंत्र; इससे निकलनेवाली बारीक धार।

फुही–स्त्री॰ फुहार।

फूँक–स्त्री॰ होठोंको मिलाकर मुखके मध्य भागसे जोरके साथ निकाली हुई हवा, दम, साँस; किसीपर मंत्रका प्रभाव डालनेके लिए मुँहसे छोड़ी हुई हवा; गाँजे आदिका कश। मु॰ **–निकल जाना**–दम निकल जाना, मर जाना। **–मारना**–किसीपर फूँककी हवा छोड़ना, फूँकना। **–सा**–बहुत कमजोर, दुबला-पतला (आदमी)।

फूँकना–स॰ क्रि॰ होठोंको मिलाकर मुखके मध्य भागसे हवा छोड़ना,

फूंक मारना; मंत्र पढ़कर मुखसे हवा छोड़ना; फूंककर बजाना; फूंककी हवासे प्रज्वलित करना, जलाना; भस्म करना; कुश्ता करना (धातु); बरबाद करना; फैलाना। मु० **फूंक-ताप डालना**–उड़ा देना, बरबाद कर देना। **फूंक-फूंककर कदम या पांव रखना**–बहुत सावधानतासे, हर तरहके खतरेसे बचते हुए काम करना।

फूँका–पु० फूंक मारनेकी क्रिया; गायके थनपर लगनेवाली दवाएँ लगाकर नलीसे फूंक मारना; फूंका मारनेकी नली, फोड़ा।

फूँद–स्त्री०, **फूँदा***–पु० दे० 'फुँदना'। **–(द)फुँदारा**–वि० जिसमें फुँदना लगा हो।

फूँस–पु० दे० 'फूस'।

फू–स्त्री० फूंकनेकी आवाज।

फूई–स्त्री० फुहार; फफूंदी। मु० **–फूई ताल भरता है**–थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है।

फूट–स्त्री० फूटनेकी क्रिया; एकाका उलटा, अलगाव, बिगाड़, विरोध। पु० एक तरहकी ककड़ी जो पकनेपर फट जाती है। मु० **–डालना**–मतभेद उत्पन्न करना। **–पड़ना**–फूट पैदा होना।

फूटन–स्त्री० फूटकर अलग हुआ टुकड़ा; शरीरकी संधियोंमें होनेवाली पीड़ा।

फूटना–अ० क्रि० चोट या धक्का खाकर टूटना; भग्न होना; फटना, त्वचा या सतहको भेदकर बाहर आना, तोड़ या फोड़कर निकलना; (शब्दका मुँहसे) निकलना; खराब, निकम्मा हो जाना (आँख, तकदीर); उगना, अंकुरित होना; शाखारूपमें निकलना; खिलना; अलग, वियुक्त होना; बिखरना; विपक्षसे जा मिलना; फुंसियों, दानों आदिके रूपमें होनेवाले रोगका प्रकट होना (गरमी, कोढ़); स्याहीका रसकर कागजकी दूसरी ओर निकलना; जोड़ोंमें दर्द होना; फोड़ा जाना (उँगलियाँ)। मु० **फूट-फूटकर रोना**–बिलख-बिलखकर रोना।

फूटा–पु० खेतमें टूटकर गिरी हुई बालें; संधियोंमें होनेवाली पीड़ा। वि० फूटा हुआ; खराब, बिगड़ा हुआ। **–(टी) कौड़ी**–स्त्री० निकम्मी कौड़ी। मु० **–(टी)आँखका तारा**–कई बेटोंमेंसे बचा हुआ अकेला बेटा, बहुत प्यारा बेटा। **–आँखों न देख सकना**–देखकर जलना, देखना भी सह्य न होना। **–आँखों न भाना**–अति अप्रिय होना, तनिक भी अच्छा न लगना। **–कौड़ी (पासमें) न होना**–कुछ न होना; बिलकुल नादार होना। **–(टे) मुँहसे न बोलना, बात न करना**–बिलकुल ही उपेक्षा करना, एक बात भी न करना।

फूत्कार–पु० (सं०) फूंक, फुफकार; साँपका फुफकार; सिसकना; चीत्कार।

फूत्कृति–स्त्री० (सं०) दे० 'फूत्कार'।

फूफा–पु० फूफी या बुआका पति।

फूफी–स्त्री० बापकी बहिन।

फूफू–स्त्री० दे० 'फूफी'।

फूर*–पु० फूल।

फूरना*–अ० क्रि० पुष्पित होना।

फूल–पु० पौधोंका जननेंद्रियरूप या फलोत्पादक अंग जो सुंदरता और सुकुमारताका प्रतीक बन गया है, खिली हुई कली, पुष्प; फूलकी शक्लका बेल-बूटा, आभूषण इत्यादि; पीतल आदिकी घुंडी; बत्तीका जला हुआ अंश; श्वेत कुष्ठका दाग; स्त्रियोंका मासिक स्राव, रज; गर्भाशय; शवदाहके बाद रहनेवाला अस्थि-अवशेष; मुसलमानोंमें तीसरे या पाँचवें दिनका फातिहा; सार; पहली बार खींची हुई शराब; ताँबे और राँगेके मेलसे प्रस्तुत एक मिश्र धातु; घुटनेकी गोल हड्डी। * स्त्री० फूलनेका भाव, उमंग, आनंद। **–कारी**–स्त्री० बेल-बूटे बनाना, गुलकारी। **–गोभी**–स्त्री० गोभीका एक भेद जिसका फूल तरकारीके रूपमें खाया जाता है। **–झरी***–स्त्री० दे० 'फुलझड़ी'। **–डोल**–पु० चैत्र-शुक्ला एकादशीको होनेवाला एक उत्सव। **–दान**–पु० गुलदस्ता रखनेका पात्र। **–दार**–वि० फूलोंवाला; जिसपर फूल-पत्ते या बेल-बूटे बने हों। **–बिरंज**–पु० एक तरहका बढ़िया धान। **–भाँग**–स्त्री० एक तरहकी भाँग। **–मती**–स्त्री० एक देवी। **–वाला**–पु० माली। वि० फूलदार। **–वाली**–स्त्री० मालिन। मु० **–आना**–फूल लगना। **–उतारना,–लोढ़ना**–फूल चुनना। **–चुनना**–फूल तोड़कर एकत्र करना। **–झड़ना**–मुंहसे मीठे शब्द निकलना। **–पड़ना**–बत्तीके मुंहपर गुल बनना। **–भेजना**–फूलोंके संकेत द्वारा प्रेमी-प्रेमिकाका एक-दूसरेको सँदेसा भेजना। **–वालोंकी सैर**–महरौली (पुरानी दिल्ली) में होनेवाला एक सालाना मेला। **–सा**–बहुत सुकुमार। **–सूँघकर जीना या रहना**–बहुत थोड़ा खाना, अल्पाहारी होना। **–(लों)की चादर**–चादरके रूपमें गुंथे हुए फूल जो पीरों आदिकी कब्रोंपर डाले जाते हैं। **–की छड़ी**–फूलोंके हार लपेटी हुई छड़ी। **–की सेज**–पुष्पशय्या, सुख और चैनभरी स्थिति। **–की सेजपर सोना**–सुख-चैनकी जिंदगी बसर करना। **–के काँटेमें तुलना**–बहुत सुकुमार होना; राजसिक सुख भोगना।

फूलड़िया†–स्त्री० जूती–'फाटी तो फूलड़िया पाँव उभाणे चलतै चरण धसे'–मीरा।

फूलना–अ० क्रि० (पेड़-पौधेमें) फूल आना, कुसुमित होना; कलीका खिलना; गर्वसे इतराना; अति प्रसन्न होना; हवा भरनेसे तन जाना, फैलना; मोटा होना, सूजना; ढीला, शिथिल होना (हाथ-पाँव फूलना); रूठना, नाराज होना; सुनहले प्रकाशसे युक्त होना। मु०– **फूलकर कुप्पा हो जाना**–अत्यधिक हर्ष या गर्व होना; बहुत मोटा हो जाना। **फूलना-फलना**–धन-धान्य और बाल-बच्चोंसे सुखी होना। **–फालना***–प्रसन्न होना। **फूला-फूला फिरना**–आनंदमें मग्न होकर या गर्वसे इतराते हुए विचरना। **फूले न समाना**–खुशीमें आपेसे बाहर होना।

फूला–पु० खील; आँखकी फूली।

फूली–स्त्री० आँखकी पुतलीपर पड़ा हुआ सफेद दाग जिससे दृष्टि मंद हो जाती और मारी भी जाती है; एक तरहकी सज्जी।

फूवा–पु० सूखा तृण, फूस। † स्त्री० फूफी।

फूस–पु० सूखी घास जो छप्पर बाँधने, ईंधन आदिके काम आये; जीर्ण-शीर्ण वस्तु।

फूहड़–वि० भद्दे ढंगसे काम करनेवाला, बेशऊर (विशेषतः स्त्री); भद्दा, गंदा (–गाली)। स्त्री० बेशऊर स्त्री। **–पन**–पु० बेढंगापन, भद्दापन।

फूहर†–वि०, स्त्री० दे० 'फूहड़'।

फूहा–पु० रुईका गाला।

फूही–स्त्री० फुहार, झींसी।

फेंक–स्त्री० फेंकनेकी क्रिया।

फेंकना–स० क्रि० किसी चीजको हाथसे ऐसी हरकत देना कि कुछ दूर जा गिरे; जमीनपर गिराना; पटकना; उछालना; ले जाकर दूसरी जगह डालना (कूड़ा); डालना (कौड़ी, पासा); इधर-उधर बखेर देना; चलाना (तीर); सरपट दौड़ाना (घोड़ा); गँवाना; छोड़ना, परित्याग करना; अपव्यय करना; घुमाना, भाँजना (पटा)।

फेंकरना*–अ० क्रि० दे० 'फेकरना'।

फेंकाना–स० क्रि० फेंकनेका काम दूसरेसे कराना।

फेंगा†–पु० दे० 'फिंगा'।

फेंट–स्त्री० दे० 'फेंटा'; लपेट; फेंटनेकी क्रिया। मु०**–कसना,–बाँधना**–कटिबद्ध होना। **–धरना,–पकड़ना** जानेसे रोकना।

फेंटना–स० क्रि० हाथ या उँगलियोंकी हरकतसे मिलाना (पीठी इ०); अच्छी तरह मिलाना, गड्डमड्ड करना (ताश)।

फेंटा–पु० कमरका घेरा; कमरपर लपेटा हुआ कपड़ा, कमरबंद; धोतीका वह भाग जो कमरपर लपेटा गया हो; सिरपर लपेटा हुआ कपड़ा, छोटी पगड़ी; सूतकी बड़ी अंटी।

फेंटी–स्त्री० अटेरनपर लपेटा हुआ सूत।

फेंफर*–वि० सूखा हुआ, कांतिहीन–'नैन बरन मुख फेंफर भयउ'–चंदा०।

फेंफरी*–स्त्री० कांतिहीनता, सूखापन।

फेकरना*–अ० क्रि० (सिरका) अनावृत होना; गीदड़ या स्यारका चिल्लाना; फूट-फूटकर रोना, फेंकरना।

फेकारना*–स० क्रि० (सिरको) खोलना, अनावृत करना।

फेकैत–पु० फेंकनेवाला; पंहलवान।

फ़ेज़–पु० ऊँची दीवारकी तुर्की टोपी।

फेट–स्त्री० दे० 'फेंट'।

फेटा–पु० दे० 'फेंटा'।

फेट्कार–पु० (सं०) गीदड़ोंका रोना।

फेण, फेन–पु० (सं०) झाग, बुलबुलोंका समूह। **–दुग्धा**–स्त्री० दुधिया घासका एक भेद। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० क्षणभंगुर। **–पिंड**–पु० बुद्बुद; निरर्थक, सारहीन बात। **–मेह**–पु० प्रमेहका एक भेद। **–वाही(हिन्)**–पु० छाननेके काम आनेवाला कपड़ा।

फेणक, फेनक–पु० (सं०) फेन; एक मिठाई, बतासफेनी।

फेद*–पु० फेंटा।

फेनका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पीठी।

फेनल–वि० (सं०) दे० 'फेनिल'।

फेना–स्त्री० (सं०) एक क्षुप।

फेनाग्र–पु० (सं०) बुलबुला।

फेनाशनि–पु० (सं०) इंद्र।

फेनिका–स्त्री० (सं०) दे० 'फेनका'; 'फेनी'।

फेनिल–वि० (सं०) फेनयुक्त, झागदार। पु० रीठा (दे० 'रीठा')।

फेनी–स्त्री० (सं०) घीमें छाना हुआ मैदेका लच्छा जिसे दूधमें भिगोकर और शकर मिलाकर खाते हैं, सुधाफेनी।

फेफड़ा–पु० छातीके नीचे स्थित थैलीके आकारका अवयव जिससे रीढ़वाले अधिकांश प्राणी साँस लेते हैं, फुप्फुस।

फेफड़ी–स्त्री० खुश्कीसे होंठोंपर पड़नेवाली पपड़ी।

फेफरी*–स्त्री० दे० 'फेफड़ी'।

फेरंड–पु० (सं०) सियार, गीदड़।

फेर–पु० (सं०) गीदड़; (हिं०) घुमाव; रास्तेका घुमाव, चक्कर; परिवर्तन, बदलना; भ्रम; विपरीतता (समझका फेर); फर्क, अंतर; उलझन; बहकावा, उपाय; नुकसान; प्रेतबाधा; अदला-बदला। * अ० ओर, तरफ (चहुँफेर); दे० 'फिर'। **–पलटा**–पु० गौना। **–फार**–पु० उलट-फेर; चक्कर। **–बदल**–पु० तबदीली। मु० **–खाना**–चक्कर काटना, घुमावके रास्ते जाना। **–बँधना**–सिलसिला लगना। **–में पड़ना**–नुकसान उठाना; उलझन, कठिनाईमें पड़ना। **–लगाना**–युक्ति लगाना।

फेरना–स० क्रि० घुमाना, दिशा बदलना; लौटाना; वापस लेना; बदलना; पलटना; घुमाना; भाँजना (मुग्दर, पटा); क्रम बदलना; अभ्यास करना; चाल सिखानेके लिए चक्कर देना, निकालना (घोड़ा); इस बलसे उस बल करना; उलटना-पलटना (पात्र); जपना (माला); पोतना, लेप करना; फिराना, धीरे-धीरे इधर-उधर ले जाना; प्रचारित करना (डौंड़ी)।

फेरव–पु० (सं०) सियार; राक्षस। वि० धूर्त; हिंस्र।

फेरवट–स्त्री० घुमाव; पेच; अंतर; † टूटे खपरैलोंको निकालकर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया, फेरौरी।

फेरवा–पु० तारको कई बार लपेटकर बनाया हुआ सोनेका छल्ला।

फेरा–पु० लपेट; चौगिर्दा घुमाव; परिक्रमा, चक्कर, भाँवर; बार-बार आना-जाना, गश्त; फिर आना, पुनरागमन; (भिक्षुकको) लौटा देना। **–फेरी**–स्त्री० उलट-पुलट; क्रम बदलना। मु० **–देना**–भिक्षुकको बिना कुछ दिये लौटा देना; चक्कर देना।

फेरि*–अ० फिर, पुनः।

फेरी–स्त्री० फेरा, चक्कर, भाँवर; गश्त; खुर्दाफरोशोंका सौदा बेचनेके लिए गली-कूचोंमें घूमना; रस्सीपर ऐंठन देनेकी चरखी। **–वाला**–पु० फेरी करके, घूम-फिरकर चीजें बेचनेवाला। मु० **–पड़ना**–भाँवर होना।

फेरु–पु० (सं०) सियार।

फेरौरी†–स्त्री० टूटे खपरैलोंको निकालकर उनकी जगह नये रखनेकी क्रिया।

फेल–पु० (सं०) उच्छिष्ट, जूठन। वि० (अं०) विफल, नाकामयाब; (परीक्षामें) अनुत्तीर्ण।

फ़ेल–पु० (अ०) काम, कर्म; दुष्कर्म; क्रियापद (व्या०)। **–मुतअद्दी**–पु० सकर्मक क्रिया। **–लाज़िम**–पु० अकर्मक क्रिया।

फेला, फेलिका, फेली–स्त्री० (सं०) दे० 'फेल' (सं०)।

फ़ेहरिस्त–स्त्री० दे० 'फ़िहरिस्त'।

फ़ैंसी–वि० (अं०) सुंदर; भड़कदार, जिसपर काम किया हुआ हो।

फ़ैज़–पु० (अ०) लाभ, भलाई। **–(ज़े) आम**–पु० आम लोगों, जन-साधारणकी भलाई, लोकहित।

फ़ैज़ी–पु० अकबरके दरबारका सुप्रसिद्ध विद्वान् अबुलफैज फैजी जो अबुलफज्लका छोटा भाई था और जिसने महाभारतका फारसीमें उलथा किया।

फैदम–पु० (अं० फ़ैदम) दूरी नापनेकी इकाई (=छः फुट) जो प्रायः समुद्रकी गहराईको व्यक्त करनेके काम आती है।

फ़ैयाज़–वि० (अ०) फैज पहुँचानेवाला, उदार, दरियादिल।

फ़ैयाज़ी–स्त्री० उदारता, दरियादिली।

फ़ैर (अं०-फायर)–पु० बंदूक, तमंचे या तोपका दागा जाना; इनका एक बार दगना (लगातार चार फैर किये)।

फैल*–पु० फेल, काम; खेल; नखरा, बनावट; राशि; फैलाव, विस्तार।

फैलना–अ० क्रि० अधिक स्थान घेरना, आकारका बढ़ना, पसरना; डीलका बढ़ना, मोटा होना; अधिक दूरतक जाना; प्रसिद्ध या प्रचारित होना; वृद्धि होना; बिखरना, पूरा तनना (हाथ फैलना); मचलना; हठ करना।

फ़ैलसूफ़–पु० (यू०) ज्ञानी; मक्कार। वि० (हिं०) फजूलखर्च।

फ़ैलसूफी–स्त्री० (यू०) चालाकी, मक्कारी; (हिं०) फजूलखर्ची।

फैलाना–स० क्रि० पसारना, विस्तार करना, बिछाना; आयोजन करना; बिखेरना; बढ़ाना; खोलना, तानना; प्रचार करना; प्रसिद्ध करना; हिसाबकी पूरी प्रक्रिया दिखाना, प्रस्तार करना (ब्याज फैलाना); गुणा-भागकी जाँच-पड़ताल करना।

फैलाव–पु० लंबाई-चौड़ाई; विस्तार, प्रसार; प्रचार।

फैलावट–स्त्री० फैलाव।

फ़ैशन–पु० (अं०) ढंग, तर्ज; कपड़े आदिका प्रचलित ढंग, वजा; प्रथा।

फ़ैसल–पु० (अ०) निर्णय, निबटारा (करना, होना)।

फ़ैसला–पु० (अ०) निर्णय, निबटारा; निश्चय। मु० **–सुनाना**–मुकदमेका निर्णय सुनाना।

फोंक–पु० तीरका पीछेकी ओरका सिरा।

फोंका–पु० लंबा पोला चोंगा; फूंका।

फोंदा*–पु० दे० 'फुँदना'।

फोंफर†–वि० पोला; निस्सार। पु० छेद, खाली जगह।

फोंफी†–स्त्री० चोंगी; फुकनी; छूँछी।

फोक–पु० फुजला; सीठी; भूसी; नीरस पदार्थ; एक तृण, सूक्ष्मपुष्पी; खोई।

फोकट–वि० मूल्यरहित; निरर्थक; मुफ्त; निःसार–'अलि चलि औरै ठौर दिखावहु अपनो फोकट ज्ञान'–सूर। **–का**–मुफ्त। **–में**–मुफ्तमें।

फोकला*–पु० छिलका।

फोकली†–स्त्री० दे० 'फोकला'।

फोका*–पु० बुद्बुदा।

फोट*–पु० दे० 'स्फोट'।

फोटक*–वि० दे० 'फोकट'।

फोटा–पु० बिंदी, टीका–'ललाट पावक नहिं, सिंदुरक फोटा'–विद्यापति।

फ़ोटो–पु० (अं०) छायाचित्र, अक्स। **–ग्राफ**–पु० छायाचित्र। **–ग्राफर**–पु० फोटो, छायाचित्र उतारनेवाला, अक्कास। **–ग्राफी**–स्त्री० छायाचित्र उतारनेकी कला, अक्कासी।

फोड़ना–स० क्रि० तोड़ना, टुकड़े करना; विदीर्ण करना; कड़े छिलके, त्वचा आदिको तोड़ना (फोड़ा, नारियल); शरीरमें जगह-जगह फोड़े या घाव पैदा कर देना; शाखा निकालना; छेद करना, सेंध लगाना (दीवार); खराब, अंधा करना (आँखें); बहका, फुसलाकर अपनी ओर कर लेना (गवाह); प्रकट करना, खोल देना (भंडा)।

फोड़ा–पु० शरीरमें किसी स्थानपर होनेवाला पीड़ाकारक शोथ, जिसके पक जानेपर भीतरसे पूय निकलता है, व्रण, बड़ी फुंसी।

फोड़िया, फुड़िया–स्त्री० छोटा फोड़ा।

फ़ोता–पु० (अ०) थैली, कोप; अंडकोप; लगान, पोत; कमरबंद

या सिरबंद (?)। **-(ते) दार**-पु० खजांची, रोकड़िया, तहवीलदार। मु० **-भरना**-लगान देना।

फोनोग्राफ-पु० (अं०) एक यंत्र जो ध्वनिको अंकित करता या लाखकी चूड़ियोंमें भरता और कुंजी देकर चूड़ियोंको घुमानेपर पुनः उसे उसी रूपमें प्रकट कर देता है, ग्रामोफोन।

फोया-पु० दे० 'फोहा'।

फोरना*-स० क्रि० दे० 'फोड़ना'।

फ़ोरमैन-वि० (अं०) छापेखाने, कारखाने आदिमें काम करनेवालोंका मुखिया या उनपर निगरानी रखनेवाला कर्मचारी।

फोहा-पु० रुईका गाला जो किसी चीजसे तर किया गया हो, फाहा-'वारेतें पालो हतो फोहन दूध पियाय'।

फ़ौआरा-पु० (अ०) फुहारा।

फ़ौक़-अ० (अ०) ऊपर। पु० ऊँचाई; श्रेष्ठता। मु० **-ले जाना**-आगे बढ़ जाना।

फ़ौज-स्त्री० (अ०) सेना; जनसमूह, मजमा। **-दार**-पु० सेनानायक; बादशाह आदिकी सवारीमें हाथीपर आगे बैठनेवाला, कोतवाल। **-दारी**-स्त्री० फौजदारका पद; मारपीट, लड़ाई। **-०अदालत**-स्त्री० अपराधोंका विचार, निर्णय करनेवाली अदालत, दंड-व्यवस्था करनेवाला न्यायालय। **-०अफ़सर**-पु० फौजदारी अदालतका हाकिम। मु० **-का घूँघट खाना**-सेनाका हारना, पराजित होना।

फ़ौजी-वि० फौजसे संबंध रखनेवाला। पु० सैनिक।

फ़ौत-स्त्री० (अ०) मरना, गुजर जाना; खो जाना (होना)। **-शुदा**-वि० मृत, मरा हुआ।

फ़ौती-वि० मृत्यु-संबंधी। स्त्री० मृत्युकी सूचना। **-नामा,-रजिस्टर**-पु० वह सूची या रजिस्टर जिसमें मृतजनोंकी मृत्युतिथि और उनका नाम-पता लिखा जाता है।

फ़ौरन्-अ० (अ०) अभी, तुरत, झटपट।

फ़ौरी-वि० जल्दीका।

फ़ौलाद-पु० (फा०) कड़ा और बढ़िया लोहा जिसके हथियार और तेज धारवाले औजार बनाये जाते हैं, इस्पात। **-तन**-वि० दृढ़ शरीरवाला।

फ़ौलादी-वि० फौलादका बना हुआ, बहुत कड़ा या मजबूत। स्त्री० बल्लमका डंडा।

फौवारा-पु० दे० 'फ़ौआरा'।

फ्यूज़-पु० (फ़्यूज) धातुका एक नन्हा टुकड़ा जो विद्युत् परिपथमें इसलिए लगाया जाता है कि एक नियतमानसे अधिक प्रबल धारा परिपथमें न प्रवाहित होने पाए।

फ़्रांक-पु० फ्रांस देशका सिक्का।

फ़्रांस-पु० यूरोपका एक देश जो स्पेनके उत्तरमें है।

फ़्रांसीसी-वि० फ्रांसका। पु० फ्रांसका रहनेवाला। स्त्री० फ्रांसकी भाषा, फ्रेंच।

फ्राक-पु० (अं०) ढीली, छोटी आस्तीनका लंबा कुरता जो बच्चे और स्त्रियाँ भी पहनती हैं।

फ्री-(अं०) निर्बन्ध, निःशुल्क।

फ्रेम-पु० (अं०) चौकठा।

ब

ब-देवनागरी वर्णमालामें पवर्गका तीसरा वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

बंक-वि० * टेढ़ा, वक्र; † तिरछा; वीर, पराक्रमी; † विकट, दुर्गम। * अ० वक्ररूपसे, तिरछी निगाहसे। **-नाल**-स्त्री० वह नली जिससे सुनार जुड़ाई करते समय चिरागकी लौ फूंकते हैं।

बंक-पु० (अं० 'बैंक') वह कार्यालय जो लोगोंका रुपया अमानतके रूपमें जमा करता और माँगनेपर सूदके साथ उन्हें वापस देता है।

बंकट*-वि० टेढ़ा, वक्र-'बंकट भौंह चपल अति लोचन'-सूर।

बंकर-पु० (अं०) ऐसे कंक्रीटके तहखाने जहाँसे सैनिक छिपकर चौकीदारी और दुश्मनपर मार करते हैं।

बंकराज-पु० एक तरहका साँप।

बंका*-वि० दे० 'बंक'; बढ़िया। दे० 'बक्का'।

बंकाई-स्त्री० बंक होनेका भाव, बाँकपन।

बंकिम-वि० टेढ़ा।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय-पु० बँगलाके महान् उपन्यासकार (१८३८-१८९४) जिन्होंने 'आनंदमठ', 'कपालकुंडला', 'दुर्गेशनंदिनी' आदिकी रचना की। बँगला भाषाकी समृद्धिमें आपका बहुत बड़ा हाथ था।

बंकुर*-वि० दे० 'बंक'।

बंकुरता*-स्त्री० टेढ़ापन।

बँकैअन*-अ० घुटनोंके बल।

बंग-पु० बंगाल, बंग; * एक दवा जो ताकत बढ़ाती है; * बाँग।

बंगई†-स्त्री० एक तरहकी कपास; शरारत, नटखटी।

बँगला-वि० बंगालका। स्त्री० बंगालकी भाषा, बंगभाषा। पु० खुली जगहमें बना सुंदर छोटा हवादार मकान; सबसे ऊपरकी छतपर बना हुआ छोटा हवादार कमरा; बंगालका पान।

बँगली†-स्त्री० एक गहना जो चूड़ियोंके साथ पहना जाता है; पानोंकी एक जाति।

बंगसार-पु० जहाजपर चढ़नेके लिए पुल जैसा बना हुआ चबूतरा।

बंगा†-वि० टेढ़ा; नटखट, उपद्रवी; अज्ञान।

बंगाल-पु० भारतका एक पूरबी प्रांत, बंग देश; एक राग।

बंगालिका-स्त्री० एक रागिनी।

बंगाली-पु० बंगालका रहनेवाला, बंगदेशीय। स्त्री० बँगला भाषा; एक रागिनी।

बँगुरी†-स्त्री० एक गहना, बँगली।

बंचक-पु० दे० 'वंचक'।

बंचकता, बंचकताई-स्त्री० दे० 'वंचकता'।

बंचन-पु० दे० 'वंचन'।

बंचना*-स० क्रि० ठगना। स्त्री० दे० 'वंचना'।

बँचवाना-स० क्रि० पढ़वाना।

बंचित-वि० दे० 'वंचित'।

बंछना*-स० क्रि० वांछा करना, चाहना।

बंछनीय*-वि० दे० 'वांछनीय'।

बंछित*-वि० दे० 'वांछित'।

बंजर-पु० खेतीके अयोग्य जमीन, वह जमीन जिसे खेत न बना सकें, ऊसर।

बंजरिया-स्त्री० बंजर।

बंजारा-पु० दे० 'बनजारा'।

बंजुल, बंजुलक-पु० दे० 'वंजुल'।

बंझा†-वि० न फलनेवाला (पेड़, पौधा), वंध्य। वि०, स्त्री० वंध्या। स्त्री० वंध्या स्त्री।

बँटना-अ० क्रि० बाँटा जाना, भाग किया जाना; वितरित होना।

बँटवाई-स्त्री० बाँटनेकी उजरत।

बँटवाना-स० क्रि० बाँटनेका काम दूसरेसे कराना।

बँटवारा-पु० बाँटनेका काम; विभाजन, अलगौझा।

बंटा-पु० पान आदि रखनेका डब्बा। वि० छोटे कदका।

बँटाई-स्त्री० बाँटनेका काम; बाँटनेकी उजरत; जमीन बंदोबस्तकी वह रीति जिसमें मालिकको लगानके रूपमें उपजका नियत भाग मिले, बटाई।

बंटाधार-वि० चौपट, सत्यानास (कर देना)।

बँटाना-स० क्रि० बटवारा कराना; अपना हिस्सा अलग करा लेना; शामिल, शरीक होना।

बँटावन*-वि० बँटानेवाला।

बँटैया†-पु० बँटानेवाला।

बंडल-पु० (अं०) छोटी गठरी, पुलिंदा; गट्ठा, पूला।

बंडा-पु० अरुईकी जातिका एक कंद जो तरकारीके काम आता है; बड़ी बखारी। वि० पुच्छहीन।

बंडी-स्त्री० फतुही; बगलबंदी।

बँड़ेर, बँड़ेरा†–पु० छाजनके बीचोबीच लगाया जानेवाला बल्ला जिसपर ठाटका बोझ रहता है; झगड़ा, फसाद। **–मु० बात का–होना, करना**–बातका बतंगड़।

बँड़ेरी–स्त्री० दे० 'बँड़ेर'।

बंद–पु० (फा०) बाँध, मेंड; कैद, बंधन; गिरह, गाँठ; अंगोंका जोड़; जंजीर; सिला हुआ फीता जिससे अँगरखा, अँगिया आदिके पल्ले बाँधते हैं, तनी; कुश्तीका पेंच; युक्ति, उपाय; पाँच या छ मिसरोंके उर्दू-फारसी पद्यका टुकड़ा; सूची, फिहरिस्त; कागजका लंबा टुकड़ा; लाखकी चपटी चूड़ी। वि० रुका हुआ, बँधा हुआ; कसा, जकड़ा हुआ; धरा या पकड़ा हुआ, कैद; कुंडी-ताला लगा हुआ, भिड़ा हुआ; जो खुला न हो, जो चलता न हो; जिसकी गति, क्रिया रुद्ध हो; जिसमें दूकानें आदि बन्द हों (पंजाब बन्द)। (समासके अंतमें) बाँधनेवाला (नालबंद)। **–गोभी**–स्त्री० करमकल्ला। **–बंद**–पु० जोड़-जोड़, गाँठ-गाँठ (टूटना)। **–वान***–पु० कारागारका रक्षक, जेलर। **–साल**–स्त्री० बंदीगृह, कैदखाना। **मु० –बंद ढीले कर देना**–थका देना, पस्त कर देना।

बंदक–पु० वंदना करनेवाला।

बंदगी–स्त्री० (फा०) सेवा, चाकरी; वंदना, आराधना; नमस्कार, प्रणाम। **मु० –कबूल होना**–प्रणाम, वंदना स्वीकार होना।

बंदन–पु० दे० 'वंदन'; * सिंदूर; रोली; बंदनवार।

बंदनता–स्त्री० दे० 'वंदनीयता'।

बंदनवार–पु० सुंदर पत्तों, फूलों आदिकी झालर जो मंगल अवसरोंपर दरवाजे, मंडप आदिपर बाँधी जाती है।

बंदना–स्त्री० दे० 'वंदना'। स० क्रि० वंदना करना, प्रणाम करना।

बंदनी–स्त्री० सिरपर पहननेका एक गहना, सिरबंदी। * वि० स्त्री० वंदनीया (समासमें)।

बंदनीमाल–स्त्री० पैरोंतक लटकनेवाली माला।

बंदर–पु० एक स्तनपायी पशु जिसकी कुछ बातें मनुष्यसे मिलती हैं और जिसमें वुद्धि कुछ विकसित होती है, मर्कट, कपि। **–खत**–पु० बंदरका घाव। **–घुड़की**–स्त्री० महज डरानेके लिए दी जानेवाली धमकी। **मु० –का घाव**–वह घाव जो कभी सूखे नहीं (बंदरका घाव जब सूखने लगता है तो वह खुजलाकर उसे छील देता है)।

बंदर–पु० (फा०) जहाजके रुकने-ठहरनेकी जगह, बंदरगाह। **–गाह**–पु० समुद्र-किनारे बसा हुआ नगर जहाँ जहाज ठहरते हों, पोर्ट।

बँदरिया, बँदरी–स्त्री० मर्कटी, वानरी।

बंदा–पु० (फा०) सेवक, दास; वशवर्ती (वक्ता विनय दिखानेके लिए अपने आपको कहता है)। **–ए खुदा**–पु० खुदाका बंदा (साधारण आदमीका संबोधन)। **–ए बेदाम**–पु० बेपैसे-कौड़ीका गुलाम। **–ज़ादा**–पु० सेवकका बेटा, गुलामजादा (वक्ता नम्रता-वश अपने बेटेको कहता है)। **–ज़ादी**–स्त्री० सेवककी बेटी, गुलामजादी। **–निवाज**–वि० बंदेपर अनुग्रह करनेवाला (सम्मान-सूचक संबोधन)। **–निवाज़ी**–स्त्री० कृपा, अनुग्रह। **–परवर**–वि० बंदेका पालन करनेवाला (सम्मानसूचक संबोधन)।

बंदारु–वि० दे० 'वंदारु'; पूजनीय, वंदनीय।

बंदाल–पु० देवदासी।

बंदि–स्त्री० (सं०) बंधन, कैद। पु० कैदी; चारण। **–छोर*** –पु० दे० 'बंदीछोर'।

बंदिप्रत्यक्षीकरण–पु० (हैबियस कॉर्पस) बंदीको न्यायाधीशके सामने उपस्थित करनेका लिखित आदेश।

बंदिश–स्त्री० (फा०) बाँधनेका भाव; रोक, प्रतिबंध; गाँठ; शब्दयोजना, रचना; उपाय, पेशबंदी; साजिश।

बंदी–स्त्री० (सं०) कैद; (हिं०) सिरका एक गहना, बंदनी; दूकानों, कामकाज आदिका बंद रहना; कैदी। (फा०) बाँधना, बंद करना; कैद करना; बाँदी; लागत। **–ख़ाना,–घर**–पु० कैदखाना। **–छोर***–पु० बंधनसे छुड़ानेवाला। **–वान***–पु० कैदी।

बंदी(दिन्)–पु० (सं०) चारण; कैदी। **–ख़ाना**–पु० (लॉक अप) न्यायालयमें मामलेपर विचार होनेतक बंदियोंको तालेमें बंद कर या पहरेमें रखनेकी जगह, हवालात।

बंदूक–स्त्री० (फा०) एक प्रसिद्ध आग्नेयास्त्र जिसमें लकड़ीके कुंदेमें लोहेकी लंबी नली लगी होती है और उसमें गोली भरकर बारूदकी सहायतासे दागी जाती है। **–ची**–पु० बंदूक चलानेवाला सिपाही। **मु० –छतियाना**–भरी हुई बंदूकको छातीसे लगाकर निशाना बाँधना। **–दागना**–बंदूक चलाना।

बंदूख†–स्त्री० दे० 'बंदूक'।

बँदेरी–स्त्री० दासी, बाँदी।

बंदोबस्त–पु० (फा०) प्रबंध; इंतजाम; जमीनका प्रबंध, खेतका लगान ठहराकर किसीको जोतने-बोनेके लिए देना; जमीनकी नाप और लगान तै करनेका काम, 'सेटिलमेंट'। **–अफ़सर**–पु० बंदोबस्तका काम करनेवाले महकमेका प्रधान अधिकारी। **–इस्तमरारी**–पु० स्थायी बंदोबस्त।

बंध–पु० (सं०) बंधन; बाँधनेका साधन; बाल बाँधनेकी चोटी; जंजीर, बेड़ी; बाँध; कैद; गाँठ; पकड़ना, बाँधना; (स्टेंजा) कविताका अंश या अनुच्छेद जिसमें प्रायः चार या छः पंक्तियाँ या चरण होते हैं, पद्यांश, पद्यखंड; निर्माण; व्यवस्था; संयोग; पट्टी; सामंजस्य; प्रदर्शन; जीवका बंधन (मुक्तिका उलटा); परिणाम; अंगन्यास; स्नायु; शरीर; आँखका एक रोग; रतिका कोई (मुख्य) आसन; बंधक रखी हुई वस्तु। **–करण**–पु० कैद करना। **–तंत्र**–पु० पूरी सेना (जिसमें उसके सारे अंग हों)। **–पत्र**–पु० (बॉंड) सरकार द्वारा या किसी सार्वजनिक संस्था (नगर-निगम आदि) द्वारा जारी किया गया वह ऋणपत्र जिसमें इस बातकी लिखित प्रतिज्ञा की जाती है कि निर्धारित अवधि समाप्त होनेपर ऋण ली गयी सारी रकम अदा कर दी जायगी; कही हुई बात पूरी न होनेपर किसीको कुछ रुपया या हरजाना आदि देनेका प्रतिज्ञापत्र; किसी पदपर नियुक्ति होनेके पूर्व नियुक्त व्यक्ति या नियोजक द्वारा लिखा गया वह प्रतिज्ञापत्र जिसमें इस बातका निश्चय दिलाया गया हो कि निर्दिष्ट अवधिके पूर्व नियुक्त व्यक्ति अपने पदसे न हटेगा अथवा न हटाया जायगा। **–मोचनिका,–मोचिनी**–स्त्री० एक योगिनी। **–स्तंभ**–पु० हाथी आदि बाँधनेका खूँटा।

बंधक–पु० (सं०) बाँधने, पकड़नेवाला; रस्सी; बाँध; गिरवी; अंगन्यास; वादा; भंग करनेवाला; बंधन; कैद; विनिमय। **–कर्ता**–पु० (मॉर्टगेजर) अपना घर, खेत आदि किसीके पास रेहन रखनेवाला। **–गृहीता,–ग्राही (हिन्)**–पु० (मार्टगेजी) वह महाजन आदि जिसके पास कोई चीज रेहन रखी गयी हो, रेहनदार।

बंधकी–स्त्री० (सं०) पुंश्चली; वेश्या; हस्तिनी; वंध्या स्त्री।

बँध-छुड़ाई–स्त्री० विवाहके अंतमें बंदनवारके पत्तेकी गाँठ खोलनेकी रस्म। इसे वधूकी रुखसतके पूर्व वर खोलता है और नेग माँगता है।

बंधन–वि० (सं०) बाँधनेवाला; रोकनेवाला,··पर अवलंबित। पु० बाँधना; जंजीर, बेड़ी; रस्सी; पकड़ना; कैद; कैदखाना; निर्माण; संयोग; रोक; क्षति पहुँचाना; डंठल; पेशी; स्नायु; पट्टी; बाँध; पुल; धातुओंका मिश्रण; दमन। **–कारी(रिन्)**–वि०, पु० बाँधनेवाला; आलिंगन करनेवाला। **–ग्रंथि**–स्त्री० पट्टीकी गाँठ; फाँस; पशुओंको बाँधनेकी रस्सी। **–पालक,–रक्षी(क्षिन्)**–पु० कारागारका रक्षक, जेलर। **–रज्जु**–स्त्री० बाँधनेकी रस्सी। **–वेश्म(न्)**–पु० कारागार। **–स्तंभ**–पु० हाथी आदि बाँधनेका खूँटा। **–स्थ**–पु० कैदी। **–स्थान**–पु० तबेला, अस्तबल।

बँधना–अ० क्रि० बाँधा जाना, कसा-जकड़ा, लपेटा जाना; कैद होना; मुग्ध होना; फँसना; गँठना; पाबंद होना; निश्चित होना; मोरचा नियत होना। पु० बंधन; बाँधनेका साधन (रस्सी, डोर आदि); * दे० 'बधना'।

बंधनागार–पु० (सं०) कारागार।

बंधनालय–पु० (सं०) कारागार।

बंधनि*–स्त्री० बंधन, बाँधने, फँसानेवाली चीज।

बंधनिक–पु० (सं०) जेलर।

बंधनी–स्त्री० (सं०) शरीरके संधि-स्थानोंको बाँधनेवाली नसें; बंधन, बाँधनेका साधन।

बंधनीय–पु० (सं०) वाँध । वि० वाँधने योग्य; रोकने योग्य ।

बंधयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) वाँधनेवाला ।

बंधव–पु० दे० 'वांधव' ।

बँधवाना–स० क्रि० वाँधनेका काम दूसरेसे कराना ।

बंधाकि–पु० (सं०) पहाड़ ।

बंधान–पु० वँधा हुआ क्रम, परिपाटी; दस्तूरी; वाँध; तालका सम ।

बँधाना–स० क्रि० वाँधनेका काम दूसरेसे कराना; धारण कराना; वंधनमें डलवाना, कैद कराना ।

बंधाल–पु० नावमें वह जगह जहाँ रिसकर आनेवाला पानी जमा होता है ।

बँधिका–स्त्री० तानेकी साँथी वाँधनेकी डोरी ।

बंधित–वि० (सं०) वाँधा हुआ; जो कैद किया गया हो । † वाँझ ।

बंधित्र–पु० (सं०) कामदेव; शरीरपरका तिल; चमड़ेका पंखा ।

बँधिया–स्त्री० छोटा वाँध या मेंड़–'खेत भर गया तो एक ओरसे वँधिया काटकर फालतू पानी निकाल दिया'–मृग० ।

बंधी–स्त्री० वँधा हुआ काम, वँधी व्यवस्था, निश्चित या नियमित प्रवंध; वंधेज ।

बंधी(धिन्)–वि० (सं०) वाँधने, पकड़नेवाला (समासमें व्यवहृत, –मत्स्यवंधी, दृढ़वंधी) ।

बंधु–पु० (सं०) स्वजन, आत्मीय, सजातीय व्यक्ति, सगोत्र; भाई; मित्र; पति; पिता; वंधुजीव नामक फूल; संवंध । **–काम**–वि० भाई-वंद, स्वजनों, संवंधियोंसे स्नेह रखनेवाला । **–कृत्य**–पु० संवंधीका कर्तव्य । **–जन**–पु० आत्मीय, निकट संवंधियोंकी समष्टि, भाई-वंद । **–जीव,–जीवक**–पु० गुलदुपहरिया । **–जीवी (विन्)**–पु० एक तरहका लाल । **–दग्ध**–वि० संवंधियों द्वारा परित्यक्त । **–दत्त**–पु० विवाहके समय कन्याको संवंधियोंसे मिला हुआ धन । **–बांधव**–पु० स्वजन-संवंधी, भाई-वंद । **–भाव**–पु० वंधुता, भाईचारा । **–वर्ग**–पु० भाई-वंद, वंधुजन । **–हीन**–वि० जिसका कोई अपना न हो, असहाय ।

बँधुआ, बँधुवा–पु० कैदी ।

बंधुक–पु० (सं०) दे० 'वंधु-जीव'; जारज संतान ।

बंधुका, बंधुकी–स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी स्त्री ।

बंधुता–स्त्री० (सं०) रिश्ता, संवंध; भाईचारा; वंधुवर्ग ।

बंधुत्व–पु० (सं०) भाईचारा, संवंध; स्नेह ।

बंधुदा–स्त्री० (सं०) पुंश्चली स्त्री ।

बंधुमान्(मत्)–वि० (सं०) जिसके मित्र और संवंधी हों ।

बंधुर–पु० (सं०) मुकुट; गुलदुपहरिया; भग; हंस; वगला; खली । वि० वहरा; झुका हुआ, वक्र; चढ़ाव-उतारवाला; ऊँचा-नीचा; हानिकारक; सुंदर । पु० काकड़ासिंघी, विड़ंग ।

बंधुरा–स्त्री० (सं०) कुलटा; वेश्या ।

बंधुल–पु० (सं०) कुलटाका पुत्र; वेश्या-पुत्र; वेश्याका टहलू; गुलदुपहरिया । वि० झुका हुआ, वक्र; सुंदर, मनोहर ।

बंधूक–पु० (सं०) गुलदुपहरिया ।

बंधूप*–पु० दे० 'वंधूक' ।

बंधूर–पु० (सं०) छेद । वि० दे० 'वंधुर' ।

बंधूलि–पु० (सं०) दे० 'वंधूक' ।

बंधेज–पु० वंधान; प्रतिबंध; स्तंभन ।

बंध्य–वि० (सं०) वाँधने योग्य, वंधनीय; निर्माणके योग्य; वाँझ; न फलनेवाला (वृक्षादि); वंचित (समासांतमें) । **–फल**–वि० न फलनेवाला, फलहीन ।

बंध्या–स्त्री० (सं०) वाँझ स्त्री या गाय; योनिका एक रोग; एक गंधद्रव्य । **–कर्कटी**–कड़वी ककड़ी । **–तनय,–पुत्र,–सुत**–पु० वाँझका वेटा, अलीक, अनहोनी वात, वह जिसका अस्तित्व संभव न हो ।

बंपुलिस–स्त्री० म्युनिसिपलिटीकी ओरसे वना हुआ वह पाखाना जो सर्वसाधारणके काम आता हो ।

बंब–पु० डंका; 'वम-वम' शब्द । * स्त्री० अहंकार–'धंधा ही में मरि गया वाहर हुई न वंब'–साखी ।

बंबा–पु० पानीकी कल; पानी वहानेका नल; सोता ।

बँबाना–अ० क्रि० गाय-वैलका रँभाना ।

बंबू–पु० चंडू पीनेकी वाँसकी नली ।

बंबूकाट–पु० तांगे जैसी सवारी ।

बँभनाई–स्त्री० ब्राह्मणत्व, यजमानी ।

बंस–पु० वंश, कुल; वाँस; * वाँसुरी । **–कार***–पु० वाँसुरी । **–लोचन**–पु० दे० 'वंशलोचन' ।

बँसरी†–स्त्री० दे० 'वंसी' ।

बँसवाड़ा–पु० दे० 'वँसवारी' ।

बँसवाड़ी–स्त्री० वह स्थान जहाँ वाँसकी वहुत-सी कोठियाँ हों ।

बंसी–स्त्री० वाँसुरी; मछली फँसानेका काँटा; विष्णु, कृष्णादिके चरणचिह्न । **–धर**–पु० कृष्ण ।

बँसोड़, बँसोर–पु० वाँसके टोकरे आदि वनानेवाली एक जाति, धरकार ।

बँहगी–स्त्री० दे० 'वहँगी' ।

बँहरखा–पु० एक आभूषण ।

बंहिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) प्राचुर्य, आधिक्य ।

बँहुटा–पु० दे० 'वहूँटा' ।

बँहोल*–स्त्री० आस्तीन ।

बँहोली†–स्त्री० दे० 'वँहोल' ।

ब–पु० (सं०) वरुण; जल; घट; समुद्र; वुनना; ताना; भग; गंधक । अ० (फा०) साथ, से; लिए, वास्ते; पर (दिन-दिन) । **–क़ौल**–कथनानुसार । **–ख़ुद**–अ० अपनेसे,–आपको । **–ख़ूबी**–अ० अच्छी तरह, भली भाँति, सम्यक् रीतिसे । **–ख़ैर**–अ० कुशलतापूर्वक, अच्छी तरह, भलाईसे । **–ख़ैरियत,–ख़ैरीयत**–अ० खैरियतके साथ, कुशलतापूर्वक । **–ग़ैर**–अ० विना, सिवा । **–ज़रिया, –ज़रीया**–अ० (–के) जरीये, (–के) द्वारा । **–जा**–वि० जो अपनी जगहपर हो, ठीक, उचित । **–जाय**–अ० (–के) स्थानपर, वदले । **–जिंस**–अ० दे० 'वजिंसहू' । **–जिंसहू**–अ० हुवहू, ठीक-ठीक; कुल; ज्योंका त्यों । **–ज़िद**–वि० जिदपर अड़ा हुआ । **–जुज़**–अ० सिवा, वगैर, (–को) छोड़कर । **–तौर**–अ० (–के) तरीकेपर; द्वारा, मारफत । **–दस्त**–अ० (–के) हाथसे, द्वारा, मारफत । **–दस्तूर**–अ० साधारण अभ्यासके अनुसार, यथानियम; यथापूर्व, पहलेकी तरह । **–दौलत**–अ० (–के) सहारे, द्वारा; (–की) कृपासे; (–के) कारण । **–नाम**–अ० (–के) नामसे, नामपर; (–के) प्रति, विरुद्ध (मुकदमेमें–रघुवीर सिंह वनाम रामधनी) । **–निस्बत**–अ० अपेक्षा, मुकावलेमें । **–मुकाबला**–अ० (–के) मुकावलेमें, तुलनामें । **–मुश्किल**–अ० कठिनाईसे, मुश्किलसे । **–मूजिब**–अ० (–के) अनुसार, मुताविक । **–रंग**–अ० (–के) सदृश, मानिंद । **–राह**–अ० (–की) राहसे; (–के) तौरपर; दे० क्रममें । **–शर्ते कि**–अ० इस शर्तसे कि, अगर । **–सबब**–अ० (–के) कारण । **–सूरत**–अ० सूरतमें, स्थितिमें, वहालत । **–हुक्म**–अ० आज्ञासे, आदेशानुसार । **–हैसियत**–अ० (–के) रूपमें, नाते; (–की) स्थितिमें ।

बइर*–पु० वैर, शत्रुता; † वेर । वि० वहरा, वधिर ।

बउर*–पु० दे० 'वौर' ।

बउरा*–वि० दे० 'वावला' ।

बउराना–अ० क्रि० पागल होना, उन्मत्त होना ।

बक–पु० (सं०) वगला; वंचक, ठग; ढोंगी; कुवेर; भीमके हाथों मारा गया एक राक्षस; कृष्णके हाथों मारा गया एक राक्षस; एक ऋषि; एक पुष्पवृक्ष, अगस्त; वकयंत्र । * वि० वगले जैसा सफेद । **–चंदन**–पु० वृक्षविशेष । **–चन**†–पु० दे० 'वकचंदन' । **–चर**–वि० ढोंग करनेवाला । **–चिंचिका**–स्त्री० एक तरहकी मछली । **–जित्**–पु० भीम; कृष्ण । **–धूप**–पु० एक प्रकारका गंधद्रव्य । **–ध्यान**–पु० वगले जैसी ध्यानमग्न होनेकी दिखाऊ मुद्रा, साधुताका ढोंग । **–ध्यानी(निन्)**–वि० वगला-भगत, वकध्यान लगानेवाला । **–निषूदन**–पु० कृष्ण; भीम । **–पंचक**–पु० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातकके पाँच दिन । **–मौन**–पु० वकध्यान । वि० वकध्यानी । **–यंत्र**–पु० एक आयुर्वेदोक्त यंत्र जो अर्क आदि खींचनेके काम आता है । **–रिपु**–पु० भीम । **–वृत्ति**–वि० वगलाभगत, ज्ञान-ध्यानका ढोंग कर लोगोंको ठगनेवाला । स्त्री० वगलाभगत होनेका भाव, पाखंड । **–व्रत-धर,–**

व्रती(तिन्)–वि० दे० 'बक-वृत्ति'।

बक–स्त्री० बकनेकी क्रिया, बकवास। **–झंक,–बक**–स्त्री० बकवास, वेकार वात। **–वाद**–स्त्री० निरर्थक वार्ता, बकवास। **–वादी**–वि० बकवाद करनेवाला, बक्की। **–वास**–स्त्री० वेकार बात जो लगातार कुछ देरतक कही जाय, वकवक; बकनेकी क्रिया। **–वासी**–वि० बकवास करनेवाला।

बक†–पु० वाक्, वाणी, वाक्य, बोल। मु० **–फटना**–मुंहसे आवाज या बोल निकलना–'क्या कहूँ, वक नहीं फटता'–मृग०।

बकचा–पु० दे० 'बकुचा'।

बकची–स्त्री० एक मछली; दे० 'बकुची'।

बकत*–स्त्री० बकनेकी क्रिया, वाणी, आवाज-'परा मुरझ मुख वकत न आवा'–चंदा०।

बकतर–पु० (फा०) जिरह, लोहेके जालका वना हुआ कवच। –**–पोश**–वि० जो बकतर पहने हो, कवचधारी।

बकता, बकतार*–वि०, पु० दे० 'वक्ता'।

बकना–स० क्रि० बोलना, मुंहसे निकालना (गालियाँ)। अ० क्रि० वड़बड़ाना, बकवास करना। मु० **–झकना**–वड़वड़ाना, गुस्सेमें वोलना, विगड़ना।

बक़र–पु० (अ०) गाय, बैल; कुरानकी एक सूरत। **–ईद**–स्त्री० मुसलमानोंका एक त्योहार जिस दिन ईश्वरके प्रीत्यर्थ पशुवलि करना फर्ज माना जाता है। **–कसाव**–पु० चिक, कसाई।

बकरना–अ० क्रि० अपना दोष, अपराध स्वीकार करना; वड़वड़ाना।

बकरम–पु० (अ० 'वक्रम') गोंद आदिसे कड़ा किया हुआ कपड़ा जो कपड़ोंके कालर, आस्तीन आदिमें कड़ाई लानेके लिए दिया जाता है।

बकरवाना–स० क्रि० किसीसे दोष-अपराध स्वीकार कराना।

बकरा–पु० एक प्रसिद्ध पालतू चौपाया, छाग। (स्त्री० 'वकरी'।) मु० **–(रे)की माँ कवतक ख़ैर मनायेगी**–दोषी, अपराधी कवतक वच सकता है?

बक़रीद–स्त्री० दे० 'वकर-ईद'।

बकलस–पु० (अं० 'बकल्स') लोहे, पीतल आदिका चौकोर छल्ला जिससे तसमे आदिको फँसाते हैं, बकसुआ।

बकला–पु० छिलका; छाल।

बकली–स्त्री० एक प्रकारका वृक्ष।

बकवाना–स० क्रि० किसीको बकनेमें प्रवृत्त करना।

बकस–पु० (अं० 'बॉक्स') कपड़े आदि रखनेका छोटा संदूक; गहने आदि रखनेका डब्बा।

बकसना†–स० क्रि० दे० 'बख्शना'।

बकसवाना,† **बकसाना***–स० क्रि० दे० 'बख्शवाना'।

बकसा–पु० दे० 'बकस'।

बकसीस*–स्त्री० दे० 'बख़्शिश'; * आज्ञा 'भई बकसीस जाचकन्हि दीन्हा'–रामा०।

बकसुआ, बकसुवा–पु० दे० 'बकलस'।

बक़ा–स्त्री० (अ०) बाकी रहना, बना रहना, जीवित रहना, नित्यता।

बकाइन–पु० दे० 'बकायन'।

बकाउ*–स्त्री० दे० 'बकावली'।

बकाउर*–स्त्री० दे० 'बकावली'।

बकाना*–स० क्रि० कहलाना; बकवाना।

बकायन–पु० नीमकी जातिका एक पेड़ जिसके फल, फूल, पत्तियाँ आदि दवाके काममें आते हैं, महानिंब।

बक़ाया–वि० (अ०) वचा हुआ, बाकी, अवशिष्ट ('बक़ीया'का बहु०)। पु० बाकी बची हुई चीज; बचत; बाकी पड़ी हुई रकम। **–लगान**–पु० बाकी पड़ा हुआ लगान।

बकारि–पु० (सं०) भीम; कृष्ण।

बकारी–स्त्री० मुंहसे निकलनेवाला शब्द। मु० **–फूटना**–मुंहसे शब्द, बात निकलना।

बकावर*–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकावरी*–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकावली–स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बकासुर–पु० (सं०) बक नामका दैत्य जो कृष्णके हाथों मारा गया।

बकिनव*–पु० दे० 'बकायन'।

बकी–स्त्री० (सं०) मादा बगला; बकासुरकी बहन, पूतना।

बक़ीया–वि० (अ०) बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट।

बकुचन*–स्त्री० हाथ जोड़ना; मुट्ठी या पंजेमें पकड़ना।

बकुचना*–अ० क्रि० सिमटना, सिकुड़ना।

बकुचा–पु० गठरी; * ढेर, गुच्छा; जुड़ा हुआ हाथ।

बकुची–स्त्री० छोटी गठरी; एक छोटा पौधा जो चर्मरोगमें लाभदायक होता है। मु० **–बाँधना,–मारना**–हाथ-पैर समेटकर गठरी जैसा वन जाना।

बकुचौंहाँ*–वि० बकुचे जैसा।

बकुर–वि० (सं०) भयंकर। पु० बिजली, वज्र, सूर्य।

बकुरना*–अ० क्रि० दे० 'बकरना'।

बकुराना*–स० क्रि० कबूल करना।

बकुल–पु० (सं०) मौलसिरी; शिव।

बकुला†–पु० दे० 'बगला'।

बकूल–पु० (सं०) दे० 'बकुल'।

बकेन†–स्त्री० गाय या भैंस जिसे ब्याये ५-६ महीने हो गये हों, धेन या 'लवाई'का उलटा।

बकेरुका–स्त्री० (सं०) छोटी बकी; हवासे झुकी हुई वृक्षकी शाखा।

बकेल–स्त्री० पलाशकी जड़ जो रस्सी बनानेके काम आती है।

बकैयाँ–पु० घुटनोंके बल चलना; ऐसी चाल।

बकोट–स्त्री० बकोटनेकी क्रिया; बकोटनेकी मुद्रामें हाथकी उँगलियाँ; वस्तुकी वह मात्रा जो बकोटनेसे चंगुलमें आयी हो। पु० (सं०) बक।

बकोटना–स० क्रि० पंजे या नाखूनोंसे नोचना।

बकोटा–पु० बकोटनेकी क्रिया; बकोटनेकी मुद्रा; वस्तुकी वह मात्रा जो चंगुल या मुट्ठीमें आ जाय, बुकटा।

बकोरी, बकौरी*–स्त्री० बकावली, गुलबकावली।

बक्कम–पु० एक पेड़, पतंग।

बक्कल–पु० छिलका, छाल।

बक्का–पु० धानकी फसलमें लगनेवाला एक कीड़ा।

बक्काल–पु० (अ०) तरकारी बेचनेवाला (अप्र०); आटा-दाल आदि बेचनेवाला, बनिया।

बक्की–वि० बकबक करनेवाला बकवादी।

बक्कुर†–पु० मुँहसे निकला हुआ शब्द, बोल।

बक्खर–पु० गाय-बैल बाँधनेका बाड़ा; दे० 'बाखर'; पत्तियों आदिसे तैयार किया हुआ खमीर।

बक्तर–पु० दे० 'बकतर'।

बक्षोज*–पु० उरोज।

बक्स–पु० बकस, संदूक।

बखत*–पु० दे० 'वक्त'; 'बख़्त'–'बंस सम बखत बखत सम ऊँचो मन···' ललित०।

बखतर–पु० दे० 'बकतर'।

बखर†–पु० एक तरहका हल।

बखरा–पु० दे० 'बाखर'; 'बख़रा'।

बख़रा–पु० (फा०) हिस्सा, भाग, टुकड़ा।

बखरी†–स्त्री० (गाँवके साधारण घरोंकी दृष्टिसे) बड़ा, अच्छा मकान; जमींदारका मकान।

बखरैत–पु० हिस्सेदार।

बखसीस†–स्त्री० दे० 'बख़्शिश'।

बखसीसना*–स० क्रि० दे० 'बख्शना'।

बखान–पु० वर्णन; बड़ाई, गुण-कथन।

बखानना–स० क्रि० वर्णन करना; सराहना, बड़ाई करना; गालियाँ देना, कोसना (सात पुरखा बखानना); निन्दा करना, गाली देना –'मैं तोला बखान डारव' (छत्तीसगढी)।

बखार–पु० अनाज रखनेके लिए बनाया हुआ बड़े कोठले जैसा घेरा।

बखारी–स्त्री० † दे० 'बखार', बंडा।

बख़िया–पु० (फा०) दुहरे टाँकोंकी सिलाई, महीन और मजबूत सिलाईका एक प्रकार। **–गर**–पु० बखिया करनेवाला। मु० **–उधड़ना**–बखिया, सीवन खुलना; भंडाफोड़ होना। **–उधेड़ना**

–सीवन खोलना; भंडा-फोड़ करना ।

बखियाना–स० क्रि० बखिया करना ।

बखीर†–स्त्री० ईखका रस या गुड़-चीनी देकर पानीमें पकाया हुआ चावल ।

बख़ील–वि० (अ०) कंजूस, कृपण ।

बख़ीली–स्त्री० कंजूसी ।

बखेड़ा–पु० झगड़ा, टंटा; झंझट, झमेला; कठिनाई, परेशानी ।

बखेड़िया–वि० बखेड़ा उठानेवाला, झगड़ालू ।

बखेरना–स० क्रि० चीजोंको छितराना, फैलाना, तितर-बितर करना ।

बखेरी–स्त्री० एक पेड़ जिसे कुंती भी कहते हैं ।

बखोरना*–स० क्रि० छेड़ना, टोकना ।

बख़्त–पु० (फा०) भाग; भाग्य; सौभाग्य ।

बख़्तर–पु० दे० 'बकतर' ।

बख़्तावर–वि० (फा०) भाग्यशाली, ऊँचे नसीबवाला ।

बख़्तियार–वि० (फा०) भाग्यवान्, सौभाग्यशाली । **–खिलजी**–पु० खिलजी वंशका एक बादशाह ।

बख़्श–वि० (फा०) (संज्ञापदसे समस्त होकर) बख्शनेवाला, देनेवाला । पु० हिस्सा; (नामोंके अंतमें) बख्शिश, देन, प्रसाद (गुरुबख्श, करीमबख्श) । **–नामा**–पु० दे० 'बख्शिशनामा' ।

बख़्शना–स० क्रि० देना, दान करना; क्षमा करना ।

बख़्शवाना, बख़्शाना–स० क्रि० दिलाना; माफ करना ।

बख़्शिश–स्त्री० (फा०) दान; देन; इनाम; क्षमा । **–नामा**–पु० हिब्बानामा, दानपत्र ।

बख़्शी–पु० (फा०) तनखाह बाँटनेवाला कर्मचारी, खजांची; मवेशीखानेका मुंशी ।

बख़्शीश†–स्त्री० दे० 'बख्शिश' ।

बग*–पु० बगला; 'बाग'का लघु और समासमें व्यवहृत रूप । **–छुट, –टुट**–अ० सरपट, बेतहाशा 'हम बगटुट भागे ।' **–मेल**–अ० बाग मिलाये हुए, 'कछुक चले बगमेल'–रामा० । पु० पंक्तिबद्ध होकर धावा बोलना; बराबरी; घोड़सवारोंका दस्ता जो बाग मिलाकर सेनाके आगे चलता है 'आइ गये बगमेल'–रामा० ।

बग*–बगलका लघु रूप ('एकबग'में प्रयुक्त) ।

बगई†–स्त्री० एक घास जिसकी पत्तियाँ पुड़ियाँ आदि बाँधने और बान बनानेके काम आती हैं; कुकुरमाछी ।

बगड़ी*–स्त्री० बाग, बगीचा ।

बगदना†–अ० क्रि० बिगड़ना; गुस्सेमें अंड-बंड बकना; गिर पड़ना; लुढ़क जाना; भूलना; * लौटना, उलटना ।

बगदर†–पु० मच्छड़ (बुंदेल०) ।

बगदहा†–वि० बिगड़नेवाला; लड़नेवाला ।

बग़दाद–पु० (फा०) इराकका एक प्रसिद्ध पुराना नगर ।

बग़दादी–वि० (फा०) बगदादका; बगदादका रहनेवाला ।

बगदाना†–स० क्रि० खराब करना, बिगाड़ना ।

बगना*–अ० क्रि० घूमना-फिरना; दौड़ना; भागना ।

बगर*–पु० महल; मकान; सहन; गाय बाँधनेका बाड़ा । † (पशुओंका) झुंड, समूह–'ढोरोंका एक पूरा बगर सामने पेश कर दिया'–अमर० । स्त्री० दे० 'बगल' ।

बगरना*–अ० क्रि० फैलना, बिखरना ।

बगरा–स्त्री० एक तरहकी छोटी मछली ।

बगराना*–स० क्रि० बखेरना, फैलाना । अ० क्रि० फैलना, बिखरना ।

बगरी*–स्त्री० बखरी; मकान; मवेशी बाँधनेका बाड़ा, धानकी किस्म ।

बगरूरा*–पु० बगूला, बवंडर ।

बग़ल–स्त्री० (फा०) मोढ़ेके नीचेका गढ़ा, काँख; पहलू, पार्श्व; समीपवर्ती स्थान; कपड़ेका टुकड़ा जो अँगरखे-कुरते आदिमें कंधेके नीचे लगाया जाता है, बगली । **–बंदी**–स्त्री० एक मिरजई जिसमें बगलमें बंद बाँधे जाते हैं । मु० **–का फोड़ा**–काँखमें होनेवाला फोड़ा, कँखौरी । **–का घूंसा**–दे० 'बग़ली घूंसा' । **–गरम करना**–(स्त्रीका) साथ सोना, बगलमें सोना । **–गीर होना**–आलिंगन करना, छातीसे लगाना । **–में**–पासमें, एक ओर । **–में ईमान दबाना**–बेईमानी करना, ईमान छोड़कर बोलना । **–में दबाना, –में दाबना**–काँखमें छिपा लेना; कब्जेमें कर लेना । **–(लें) झाँकना**–निरुत्तर होना; बचावका रास्ता ढूंढ़ना । **–बजाना**–बगलमें हथेली दबाकर आवाज निकालना; अति प्रसन्नता प्रकट करना ।

बगला–पु० एक पक्षी जो मछलियों आदिका शिकार करता और अपनी कपटवृत्तिके लिए प्रसिद्ध है, बक । (स्त्री० 'बगली' ।)–**भगत**–वि० साधुताका ढोंग कर दुनियाको ठगनेवाला, पाखंडी ।

बगला, बगलामुखी–स्त्री० दे० 'वगला' ।

बगलियाना–अ० क्रि० बगलसे होकर जाना, अलग हटकर जाना । स० क्रि० अलग करना; बगलमें करना ।

बग़ली–वि० (फा०) बगलका, एक ओरका । स्त्री० अँगरखे आदिमें कंधेके नीचे लगाया जानेवाला टुकड़ा; वह थैली जिसमें दर्जी सुई, तागा रखते हैं; बगलमें रखनेका तकिया; दरवाजेकी बगलमें मारी जानेवाली सेंध; मुगदरकी एक कसरत । **–घूंसा**–पु० बगलसे मारा जानेवाला घूंसा; छिपकर किया जानेवाला वार; दोस्त बनकर दुश्मनी करनेवाला । **–टाँग**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच । **–बाँह**–स्त्री० एक तरहकी कसरत । **–लँगोट**–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

बगलेंदी–स्त्री० एक चिड़िया ।

बगलौंहा*–वि० तिरछा, बगलकी ओर झुका हुआ । (स्त्री० 'बगलौंही' ।)

बगसना*–स० क्रि० दे० 'बख्शना' ।

बगा*–पु० जामा; बागा; बगला ।

बगाना*–स० क्रि० घुमाना-फिराना; सैर कराना; भगाना । अ० क्रि० भागना, दौड़ना; घूमना-फिरना ।

बगार†–पु० गायोंको बाँधनेकी जगह ।

बगारना*–स० क्रि० दे० 'बगराना' ।

बग़ावत–स्त्री० (अ०) बागी होना; राज-विद्रोह, विप्लव; अराजकता, बदअमली । मु० **–का झंडा उठाना या बुलंद करना**–विद्रोह करना, विद्रोहकी घोषणा करना ।

बगिया–स्त्री० छोटा बाग, वाटिका ।

बगीचा–पु० बाग; छोटा बाग ।

बगीची–स्त्री० छोटा बाग ।

बगुला–पु० दे० 'बगला' । **–भगत**–वि० दे० 'बगला-भगत' ।

बगुली–स्त्री० बगली चिड़िया ।

बगूरा*–पु० दे० 'बगूला' ।

बगूला–पु० (फा०) भँवरकी तरह घूमती हुई हवा, बवंडर ।

बगेड़ी*–स्त्री० दे० 'बगेरी' ।

बगेदना*–स० क्रि० धक्का देकर गिरा देना, हटा देना ।

बगेरी–स्त्री० गौरैयासे मिलती-जुलती एक छोटी चिड़िया, भरद्वाज ।

बगैचा†–पु० दे० 'बगीचा' ।

बग़ैर–अ० बिना ।

बग्ग, बग्गु*–बाग, लगाम, वल्गा ।

बग्गड़–वि०, पु० दे० 'बिग्गड' ।

बग्गी–स्त्री० दे० 'बग्घी' ।

बग्घी–स्त्री० चार पहियेकी घोड़ा-गाड़ी, जोड़ी ।

बघंबर–पु० दे० 'बाघंबर' ।

बघ–'बाघ'का समासमें आनेवाला लघु रूप । **–छाला**–पु० दे० 'बाघंबर' । **–नखा**–पु० उँगली में पहननेका एक हथियार जिसमें बाघके नखकी शक्लके काँटे निकले होते हैं, शेरपंजा; बच्चोंको पहनानेका एक गहना । **–नहाँ***–पु० दे० 'बघनखा' । **–नहियाँ***–स्त्री० दे० 'बघनखा' । **–बार**–पु० बाघकी मूँछका बाल ।

बघना*–पु० एक गहना जिसमें बाघके नख लगे होते हैं ।

बघरूरा*–पु० दे० 'बगूला' ।

बघार–पु० बघारनेकी क्रिया; वह चीज या मसाला जो बघारनेके काममें लाया जाय, छौंक; बघारकी गंध ।

बघारना–स० क्रि० हींग, जीरा, प्याज आदि घीमें कड़कड़ाकर दाल, तरकारी आदिमें डालना, छौंकना, तड़का देना; पांडित्य दिखानेके लिए किसी विषयकी चर्चा करना, छाँटना (वेदांत बघारना) ।

बघूरा*–पु० दे० 'बगूला'।

बघेरा†–पु० लकड़बग्घा।

बघेलखंड–पु० मध्यप्रदेशका एक क्षेत्र जिसमें रीवा, मैहर आदि रियासतें थीं।

बघेलखंडी, बघेली–पु० बघेलखंडका रहनेवाला। स्त्री० बघेलखंडकी बोली।

बच–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काममें आती है। * पु० दे० 'वचन'।

बचका*–पु० आलू, लौकी आदिका पतला चिंपटा टुकड़ा जिसपर बेसन लपेटकर घी या तेलमें तलते हैं।

बचकाना–वि० बच्चोंके लायक; बच्चोंकी नापका, छोटा; बच्चों जैसी (–आदत)। (स्त्री० 'बचकानी'।)

बचत–स्त्री० बचनेका भाव; बचाव; जो खर्चसे बच जाय, बची हुई चीज, रकम; लाभ, नफा।

बचन–पु० दे० 'वचन'।

बचना–अ० क्रि० बाकी रहना, खर्चसे उबरना; रक्षा, बचाव होना (खतरे, विपत, सांघातिक रोग आदिसे); प्राण-रक्षा होना; अलग रहना, परहेज करना। * स० क्रि० बोलना, कहना।

बचपन–पु० लड़कपन, बालावस्था।

बचपना–पु० बचपन; सयाने लोगोंका ऐसा काम जो अविचारपूर्ण तथा उनके वयके अनुपयुक्त हो।

बचवैया*–पु० बचानेवाला, रक्षक।

बचवा–पु० बच्चा; अँगूठीमें लगी किंकिणी।

बचा*–पु० दे० 'बच्चा'।

बचाना–स० क्रि० रक्षा करना; बाकी रखना, खर्च न होने देना; अलग रखना; छिपाना।

बचाव–पु० बचनेका भाव, रक्षा; आत्मरक्षा; सफाई (अभियोगसे); बचानेका भाव।

बच्चा–पु० नवजात शिशु; शिशु; वत्स, लड़का। वि० कमउम्र, नादान; अनुभवहीन। **–कश**–वि० स्त्री० बहुत बच्चे जननेवाली, बहुप्रसवा (स्त्री)। **–कशी**–स्त्री० बार-बार बच्चे देना। **–दान**–पु० गर्भाशय। **–दानी**–स्त्री० दे० 'बच्चादान'। **–बाज़**–वि० लौंडेबाज। **–(च्चे)कच्चे**–पु० बाल-बच्चे, छोटे बच्चे। **–वाली**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी गोदमें बच्चा हो। मु० **–देना**–गाय-भैंस आदिका बच्चा जनना। **–निकलना**–अंडेसे बच्चेका बाहर आना। **–(च्चों)का खेल**–बहुत आसान काम।

बच्ची–स्त्री० पायजेबका घुँघरू; बच्चाका स्त्रीलिंग रूप।

बच्छ*–पु० दे० 'वत्स'; ढाल; वक्ष, सीना।

बच्छल*–वि० दे० 'वत्सल'।

बच्छस*–पु० दे० 'वक्ष'।

बच्छा†–पु० दे० 'बाछा'; 'बछड़ा'।

बछ*–पु० बछड़ा। स्त्री० बच। **–नाग**–पु० एक स्थावर विष।

बछड़ा–पु० गायका बच्चा।

बछरा*–पु० दे० 'बछड़ा'।

बछरू*–पु० दे० 'बछड़ा'।

बछल*–वि० दे० 'वत्सल'।

बछवा*–पु० दे० 'बछड़ा'।

बछा*–पु० बछड़ा।

बछिया–स्त्री० गायका मादा बच्चा। मु० **–का ताऊ**–सीधा-सादा, भोंदू, मूर्ख, अज्ञान।

बछेड़ा–पु० घोड़ेका बच्चा। (स्त्री० 'बछेड़ी'।)

बछेरू*–पु० बछड़ा; बच्चा–'केसोदास मृगज बछेरू चोवैं बाघिनीन चाटत सुरभि बाघ बालक बदन है'–रामचंद्रिका।

बजंत्री–पु० बाजा बजानेवाला, बजनियाँ; बाजा बजानेवालोंका गिरोह; मुसलमानोंके राज्यकालमें पेशेवर गाने-बजानेवालोंसे लिया जानेवाला कर।

बजकंद–पु० एक जंगली लता।

बजकना†–अ० क्रि० दे० 'बजबजाना'; भीड़ आदिकी गंदगीसे पिचपिच करने लगना–'कच्चा रास्ता आदमियोंसे बजक रहा था।'

बजका†–पु० दे० 'बचका'।

बजट–पु० (अं०) आय-व्ययका तख़मीना, आयव्ययक।

बजड़ा–पु० दे० 'बजरा'।

बजनक–पु० पिस्तेका फूल।

बजना–अ० क्रि० ध्वनि उत्पन्न होना; ध्वनि उत्पन्न करनेवाला आघात होना; बाजेसे आवाज निकलना; बजाया जाना; चलना (लाठी, तलवार आदिका); प्रसिद्ध होना; * हठ करना। मु० **बिगुल**–आरंभ होना या उसकी घोषणा। **दुन्दुभी**–यश विस्तार।

बजनियाँ, बजनिहाँ†–पु० बाजा बजानेवाला।

बजनी, बजनू†–वि० बजनेवाला।

बजबजाना†–अ० क्रि० सड़े हुए गंदे पानी आदिमें बुलबुले उठना।

बजमारा*–वि० वज्रका मारा हुआ, जिसपर बिजली गिरी हो (स्त्रियों द्वारा शापरूपमें प्रयुक्त)।

बजरंग–वि० जिसका शरीर वज्र जैसा दृढ़ हो। पु० हनूमान्। **–बली**–पु० हनूमान्।

बजर*–पु० दे० 'वज्र'। **–बट्टू**–पु० एक पेड़के फलका काला गोला बीज जिसकी माला छोटे बच्चोंको पहनायी जाती है। **–हड्डी**–स्त्री० घोड़ेका एक रोग।

बजरा–पु० कमरेदार बड़ी नाव; † दे० 'बाजरा'।

बजरागि*–स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बजरिया–स्त्री० छोटा बाजार।

बजरी–स्त्री० कंकड़ी; ओला; छोटा कंगूरा; बाजरा।

बजवाई–स्त्री० बाजा बजानेकी उजरत।

बजवाना–स० क्रि० बजानेका काम दूसरेसे कराना।

बजवैया–पु० बाजा बजानेवाला।

बजा–दे० 'ब'के साथ।

बजागि*–स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बजागिन*–स्त्री० वज्राग्नि, बिजली।

बजाज़, बज्ज़ाज़–पु० (अ०) कपड़ा बेचनेवाला, वस्त्र-वणिक्।

बज़ाज़ा–पु० कपड़ोंका बाजार, वह स्थान जहाँ बजाजोंकी दुकानें हों।

बज़ाज़ी–स्त्री० बजाजका व्यवसाय; बेचनेका कपड़ा।

बजाना–स० क्रि० आघातसे आवाज पैदा करना; बाजेसे आवाज निकालना; आवाज निकालकर जाँचना, परखना (रुपया आदि); मारना, चलाना (लाठी, तलवार); पूरा करना। **बजाकर**–डंका पीटकर, खुले खजाने। मु० **गाल**–बकवास, निरर्थक प्रलाप।

बजार*–पु० दे० 'बाज़ार'।

बजारी*–वि० दे० 'बाज़ारी'।

बजारू†–पु० दे० 'बाज़ारू'।

बजावना–क्रि० बजाना।

बजूका–पु० (अं०) एक तरहकी बंदूक।

बजूखा–पु० दे० 'बिजूखा'।

बज्जना*–अ० क्रि० 'बजना'।

बज्जात*–वि० दे० 'बदज़ात'।

बज्र–पु० दे० 'वज्र'।

बज्री–पु० दे० 'वज्री'।

बझना*–अ० क्रि० फँसना, उलझना; बँधना; हठ करना।

बझाउ*–पु० दे० 'बझाव'।

बझान–स्त्री० बझने, फँसनेकी क्रिया।

बझाना†–स० क्रि० फँसाना, उलझाना।

बझाव–पु० उलझाव, फँसाव।

बझावट–स्त्री० दे० 'बझाव'।

बझावना*–स० क्रि० दे० 'बझाना'।

बझावा–पु० फँसानेके लिए बनाया गया जाल।

बट–पु० दे० 'वट'; बाट, वजन; रास्ता (बाटका लघु रूप); बट्टा; बड़ा; किसी चीजका गोला; * हिस्सा। स्त्री० रस्सीकी ऐंठन, बटन। **–परा***–पु० दे० 'बटमार'। **–पार**–पु० दे० 'बटमार'। **–पारी**–स्त्री० दे० 'बटमारी'। **–मार**–पु० राहमें लूट लेनेवाला, राहज़न। **–मारी**–स्त्री० बटमारका काम, पेशा। **–वायक**–पु० रास्तेमें पहरा देनेवाला। **–वार**–पु० रास्तेपर पहरा देनेवाला; रास्तेका कर वसूल करनेवाला।

बटई–स्त्री० बटेर।

वटक*–पु० वट वृक्ष ।

वटखरा–पु० बाट, वजन ।

वटन–स्त्री० वटनेकी क्रिया या भाव; रस्सी आदिकी ऐंठन; वादलेका एक तरहका तार । पु० (अं०) सीप, सींग आदिकी छेददार या विना छेदकी घुंडी जिसे काजमें अटकाकर कपड़ेके दो भाग या पल्ले परस्पर मिलाये जाते हैं, वुताम; विजली आदिका स्विच या घुंडी जिससे रोशनीका वल्व जलाया-वुझाया, पंखा आदि खोला-वंद किया जाता है ।

वटना–स० क्रि० सूत, धागेके रेशों आदिको तागा, डोरी, रस्सी आदि वनानेके लिए मिलाकर ऐंठना । अ० क्रि० पिसना, पिसा जाना; * वँट जाना, समाप्त हो जाना–'पनकी पटिहै वह जौ वटिहै'–घन०; हटना, वहकना (चित्त) –'कहूँ न काहू भाँति वटै'–घन० । पु० रस्सी वटनेका आला; उवटन । मु० **–खेलना**–व्याहके अवसरपर परिहासार्थ एक-दूसरेको उवटन मलना ।

वटम†–पु० संगतराशोंका एक औजार, कोनिया । **–पास**–वृक्ष विशेष ।

वटला–पु० वड़ी वटलोई ।

वटली–स्त्री० वटलोई ।

वटलोई–स्त्री० चावल, दाल आदि पकानेके काम आनेवाला हाँड़ीकी शक्लका वरतन, पतीली, स्थाली ।

वटवाना–स० क्रि० वाँटने या वटनेका काम दूसरेसे कराना ।

वटा*–पु० गोल वस्तु; गेंद; रोड़ा; वटोही ।

वटाई–स्त्री० वटनेकी क्रिया, वटन; वटनेकी उजरत; वाँटनेकी क्रिया, वाँट, विभाजन; जमीनके वंदोवस्तकी वह व्यवस्था जिसमें मालिकको लगानके रूपमें पैदावारका नियत भाग मिले, भावली ।

वटाऊ*–पु० वटोही, पथिक ।

वटाक*–वि० वड़ा, ऊँचा ।

वटाटा–पु० आलू ।

वटाना–क्रि० वटने या वाँटनेका काम कराना । मु० **हाथ**–सहायता करना ।

वटालियन–पु० (अं०) पैदल सेनाका एक विभाग जिसमें कई कंपनियाँ होती हैं ।

वटाली†–स्त्री० वढ़इयोंका एक औजार, रुखानी ।

वटिका–स्त्री० दे० 'वटिका' ।

वटिया–स्त्री० छोटा, गोल, चिकना पत्थर (शालग्रामकी वटिया); छोटा वट्टा, लोढ़िया; * मार्ग, रास्ता; † वँटाई, वँटैया, जमीनकी वह व्यवस्था जिसमें मालिकको लगानके रूपमें पैदावारका नियत भाग मिले ।

वटी–स्त्री० गोली, वटी; एक पकवान, वड़ी; * वाटिका ।

वटु–पु० दे० 'वटु' ।

वटुआ–पु० छोटा खानेदार थैला जो मुँहपर लगी डोर खींचनेसे खुलता-वंद होता है; † वड़ी वटलोई ।

वटुई–स्त्री० छोटी वटलोई ।

वटुक–पु० दे० 'वटुक'; लवंग ।

वटुरना†–अ० क्रि० इकट्ठा होना; सिमटना ।

वटुरी–स्त्री० खेसारी या मोठ नामका अनाज ।

वटुला–पु० चावल आदि पकानेका वड़े मुँहका पात्र ।

वटुली–स्त्री० छोटा वटुला ।

वटुवा–पु० दे० 'वटुआ'; *-एक तरहका मांस ।

वटे–पु० गणितमें व्यवहृत शब्द वटाका रूप ।

वटेर–स्त्री० तीतरसे मिलती-जुलती एक चिड़िया जो अकसर लड़ानेके शौकके लिए पाली जाती है । **–वाज़**–पु० वटेर पालने, लड़ानेवाला । **–वाज़ी**–स्त्री० वटेर पालना, लड़ाना; इसका व्यसन ।

वटेरा–पु० नर वटेर; कटोरा ।

वटोर–पु० आदमियोंका जमाव; किसी खास कामके लिए बहुतसे लोगोंका जमा होना ।

वटोरन–स्त्री० झाड़ने-वुंहारनेसे इकट्ठा होनेवाला कूड़ा; झाड़-वटोरकर लगाया हुआ वस्तुओंका ढेर; वटोरकर एकत्र किये जानेवाले खेतमें पड़े दाने ।

वटोरना–स० क्रि० समेटना; इकट्ठा करना, जमा करना; विखरी हुई चीजोंको इकट्ठा करना, चुनना ।

वटोही–पु० पथिक, राही ।

वट्ट*–पु० गोला, वटा; गेंद; शिकन; ऐंठन; वाट ।

वट्टा–पु० वह रकम जो रुपये, नोट, हुंडी आदि भुनाने, वदलने या वेचनेपर उसके मूल्यमेंसे काट ली जाय, दस्तूरी, दलाली; कमी; घाटा, नुकसान । **–खाता**–पु० हानि या घाटेका खाता; वह खाता जिसमें डूवी हुई रकमें लिखी जायँ । मु० **–लगना**–वट्टेसे चलना, पूरा मूल्य न मिलना; (इज्जत, नाम आदिमें वट्टा लगना) कमी होना, दाग लगना । **–सहना**–घाटा, नुकसान उठाना ।

वट्टा–पु० गोल, लंवोतरा पत्थर जिससे पीसने-कूटनेका काम लिया जाय, लोढ़ा; पत्थरका चिकना, छोटा गोला; वाजीगरका प्याला; वह गोला जिसे वाजीगर कमानपर चलाते हैं; पान, रत्न आदि रखनेका डिव्वा । **–ढाल**–वि० खूव चौरस और चिकना । **–(ट्टे)वाज़**–पु० वाजीगर, नजरवंदीके खेल करनेवाला । वि० धूर्त, चालाक ।

वट्टी–स्त्री० छोटा वट्टा; (सावुन आदिकी) टिकिया; गुड़की छोटी भेली ।

वट्टू–पु० वजरवट्टू; धारीदार चारखाना; * वटा, गोला–'नागरि या जगमें वे उछरत, जेहि विधि नटके वट्टू'–नागरीदास ।

वड़ंगा–पु० वँड़ेर ।

वड़–पु० वरगद, वट । **–कौला,–वट्टा**–पु० वरगदका गोदा ।

वड़–'वड़ा'का समासमें व्यवहृत रूप । **–दंता**–वि० वड़े दाँतोंवाला । **–दुमा**–पु० लंवी पूँछवाला हाथी । **–पेटा**–वि० वड़े पेटवाला । **–वेरी**–स्त्री० झड़वेरी (?) । **–वोल,–वोला**–वि० डींग मारनेवाला, वड़े वोल वोलनेवाला । **–भाग**–वि० दे० 'वड़भागी' । **–भागी**–वि० वड़े भाग्यवाला, खुशनसीव । **–मुँहा**–वि० वड़े, अधिक लंवे मुंहवाला; वड़वोला ।

वड़–स्त्री० वकवाद, डींग । **–वड़**–स्त्री० वड़वड़ करना, व्यर्थ वकते जाना । मु० **–मारना**–डींग हाँकना ।

वड़का–पु० वड़ा, ज्येष्ठ (स्त्री-वड़की) ।

वड़प्पन–पु० वड़ाई, महत्ता, गौरव ।

वड़वड़ाना–अ० क्रि० वकवक करना; डींग मारना ।

वड़वड़िया–वि० वड़वड़ानेवाला ।

वड़रा*–वि० वड़ा । (स्त्री० 'वड़री' ।)

वड़राना–अ० क्रि० दे० 'वर्राना' ।

वड़वा–स्त्री० (सं०) घोड़ी; अश्विनी नक्षत्र; दासी; वड़वाग्नि । **–कृत,–हृत**–पु० वह दास जो दासीके साथ व्याह करनेसे दास वना हो । **–मुख**–पु० वड़वाग्नि; शिव; एक प्राचीन जनपद । **–सुत**–पु० अश्विनीकुमार ।

वडवागि*–स्त्री० दे० 'वडवाग्नि' ।

वड़वाग्नि–स्त्री० (सं०) समुद्रस्थित कालानल ।

वड़वानल–पु० (सं०) वड़वाग्नि ।

वड़वार*–वि० वड़ा ।

वड़वारी*–स्त्री० प्रशंसा; वड़प्पन ।

वड़हंस–पु० एक राग । **–सारंग**–पु० एक राग ।

वड़हंसिका–स्त्री० एक रागिनी ।

वड़हन†–पु० एक तरहका धान । वि० वड़ा ।

वड़हर, वड़हल–पु० एक खट-मिट्ठा फल; उसका पेड़ ।

वड़हार–पु० व्याहके वाद कन्यापक्षकी ओरसे होनेवाली वरातियोंकी ज्योनार ।

वड़ा–वि० जिसका डील, फैलाव अधिक हो, लंवा-चौड़ा, छोटेका उलटा; उम्रमें अधिक; पद, प्रतिष्ठा, अधिकार आदिमें अधिक; भारी महत्त्ववाला; कठिन; विस्तार, परिमाणवाला (इतना, कितना वड़ा); ऊँचा, विशाल, (वड़े हौसिलेका); अधिक, वहुत (वड़ा भारी) । (स्त्री० 'वड़ी') । पु० वुजुर्ग, गुरुजन; वड़ा आदमी, अधिक शक्ति, प्रभाववाला पुरुष; उरदकी पीठीकी घी या तेलमें तली हुई टिकिया । **–आदमी**–पु० धनी, वड़े पद, प्रतिष्ठावाला व्यक्ति । **–ई**–स्त्री० वड़ा होना; विस्तार, डील; वड़प्पन, महत्ता; प्रशंसा । **–काम**–पु० भारी काम, कठिन काम । –

फुलंजन–पु० मोथा । –घर–पु० अमीरका घर; जेलखाना (व्यं०) । –घराना–पु० ऊँचा घराना । –जानवर–पु० सूअर; गाय-बैल । –दिन–पु० लंबा दिन; २५ दिसंबरका दिन, 'क्रिसमस डे' । –नहान–पु० प्रसूताका चालीसवें दिनका स्नान (मुसल०) । –बाबू–पु० हेडक्लर्क । –बूढ़ा–पु० बुजुर्ग, गुरुजन । –बोल–पु० गर्वोक्ति, डींग । –साहब–पु० प्रधान अधिकारी (यूरोपीय); कलेक्टर; रेजीडेंट । –(ड़ी) इलायची–स्त्री० बड़े दानेकी इलायची जिसका छिलका हलके कत्थई रंगका होता है । –कटाई–स्त्री० बड़ी भटकटैया । –गोटी–स्त्री० चौपायोंका एक रोग । –बात–स्त्री० कठिन काम, बड़ा काम । –बी–स्त्री० वृद्धाका सम्मानसूचक संबोधन । –माता–स्त्री० चेचक, शीतला । –मौसली–स्त्री० नक्काशी करनेका एक औजार । –राई–स्त्री० सरसोंका एक भेद । –(ड़े)अब्बा–पु० ससुर । –बड़े–वि० बड़े नाम, प्रतिष्ठा, शक्ति, अधिकारवाले लोग । –लाट–पु० ब्रिटिश भारतका गवर्नर-जेनरल । –लोग–पु० बड़े आदमी । मु० –(ड़ी) बड़ी बातें करना–दूनकी लेना, डींग मारना । –(ड़े) बरतनकी खुरचन–धनी, बड़े आदमीकी जूठन । –बापका बेटा–बड़े नाम, प्रतिष्ठावालेका बेटा, बड़े घरानेका आदमी । –बोलका सिर नीचा–घमंडीको नीचा देखना पड़ता है ।

बडिश, बलिश–पु० (सं०) मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी; नश्तरके कामका एक प्राचीन शस्त्र ।

बड़ी–स्त्री० उरदकी पीठीमें पेठा, मसाला आदि मिलाकर बनायी और सुखायी हुई टिकिया, कुम्हड़ौरी; पकौड़ी । –इलायची–स्त्री० काले छिलकेका मसालेके कामका फल । –माता–शीतला । –मैल–एक चिड़िया । –राई–लाही ।

बडूजा*–पु० दे० 'बिडौजा' ।

बड़ेरर*–पु० बगूला, बवंडर ।

बड़ेरा*–वि० दे० 'बड़ा' । पु० झगड़ा; † दे० 'बँड़ेर' ।

बड़ेरी–स्त्री० दे० 'बँड़ेर' ।

बड़ौना*–पु० बड़ाई, प्रशंसा ।

बड्डु*–वि० बड़ा ।

बढ़ंती–स्त्री० दे० 'बढ़ती' ।

बढ़–स्त्री० बढ़नेका भाव, बढ़ती (केवल समस्तपद 'घटबढ़'में व्यवहृत) ।

बढ़ई–पु० एक हिंदू जाति जो लकड़ीका काम करती है । –गिरी–स्त्री० बढ़ईका धंधा ।

बढत–स्त्री० क्रिकेट आदिमें एक पक्षका दूसरे पक्षसे कुछ रनोंसे आगे बढ जाना, दे० 'लीड' ।

बढ़ती–स्त्री० बढ़नेका भाव, वृद्धि, अधिकता; धन-संपत्तिकी वृद्धि, समृद्धि । मु० –का पहरा–उन्नति-समृद्धिके दिन, उत्कर्षकाल ।

बढ़ना–अ० क्रि० डील, आकार, फैलाव, संख्या, मात्रा आदिका अधिक होना, लंबा, ऊँचा होना, वृद्धि होना; धन-धान्यकी वृद्धि होगा; आगे जाना; दूसरेसे आगे निकल जाना; लाभ होना; महँगा होना; चिरागका बुझाया जाना; दुकानका बंद किया जाना । बढ़कर–अधिक अच्छा, श्रेष्ठ । मु० बढ़कर चलना–घमंड करना । बढ़कर बोलना–दूसरोंसे अधिक दाम लगाना, बड़ी बोली बोलना । बढ़-बढ़कर बोलना–डींग मारना; ढिठाई, गुस्ताखी करना ।

बढ़नी–स्त्री० झाड़ू, बुहारी; पेशगीके रूपमें लिया जानेवाला अन्न या रुपया ।

बढ़वाना–स० क्रि० बढ़ानेकी क्रिया कराना ।

बढ़वारि†–स्त्री० बढ़ती ।

बढ़ाना–स० क्रि० आकार, विस्तार, संख्या, परिमाण आदिमें वृद्धि करना; पहलेसे अधिक लंबा-चौड़ा, ऊँचा करना, ऊपर उठाना; धन, मान आदिकी वृद्धि करना; तरक्की देना, उन्नति करना; ऊँचा, महँगा करना (भाव); आगे करना; आगे निकालना, ले जाना (घोड़ा); सराहना, बढ़ावा देना; समेटना, उठाना (दुकान, दस्तरख्वान); बुझाना (दिया); उतारना (चूड़ियाँ, गहने) । * अ० क्रि० चुकना, समाप्त होना ।

बढ़ाव–पु० बढ़नेकी क्रिया या भाव; बढ़ना; आगे जाना (सेनाका), फैलाव ।

बढ़ावन–पु० गोबरका छोटा पिंड जो खलियानमें अन्नकी राशिपर (तौलने, उठानेके पहले) वृद्धिजनक मानकर रखा जाता है ।

बढ़ावा–पु० हिम्मत, हौसला बढ़ानेवाली बात; प्रोत्साहन; उत्तेजन, इश्तियाल ।

बढ़िया–वि० अच्छा, उमदा, अच्छी किस्मका । स्त्री० एक तरहकी दाल; * बाढ़–'जिन्हहिं छाँड़ि बढ़िया महँ आये, ते बिकल भये जदुराय'–सूर ।

बढ़ेल–स्त्री० ऊनवाली भेड़ोंकी एक जाति ।

बढ़ेला–पु० जंगली सूअर ।

बढ़ैया†–पु० बढ़ानेवाला; * बढ़ई ।

बढ़ोतरी–स्त्री० बढ़ती; बढ़ाया हुआ अंश, क्षेपक ।

बणिक्(ज्)–पु० (सं०) बनिया, बनिज-व्यापार करनेवाला; विक्रेता (शाक··) । –(क्)कटक–पु० व्यापारियोंका दल, कारवाँ । –पथ–पु० व्यापार; व्यापारी; दुकान; तुला राशि । –सार्थ–पु० दे० 'बणिक्कटक' ।

बणिग्–'बणिक्'का समासगत रूप । –ग्राम–पु० व्यापारियोंका मंडल । –बंधु–पु० नीलका पौधा । –वह–पु० ऊँट । –वीथी–स्त्री० बाजारका मार्ग; बाजार । –वृत्ति–स्त्री० व्यापार, कारबार ।

बत–'बात'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । –कट–बात काटनेवाला–'नसकट खटिया, बतकट जोइ' । –कहावा†–पु० बातचीत; विवाद । –कही*–स्त्री० बातचीत । –चल*–वि० बकवादी । –बढ़ाव–पु० बातका बढ़ जाना, झगड़ा, विवाद । –रस–पु० वार्ताका रस, बातचीतका मजा –'बतरस लालच लालकी मुरली धरी लुकाइ'–बि० ।

बतक–स्त्री० दे० 'बतख़' ।

बतख़–स्त्री० हंसकी जातिका एक जलपक्षी ।

बतर*–वि० बदतर ।

बतरान*–स्त्री० 'बातचीत' ।

बतराना*–अ० क्रि० बातचीत करना । स० क्रि० बतलाना ।

बतरावनि–स्त्री० बातचीतका ढंग ।

बतरौहाँ*–वि० बातचीत करनेका इच्छुक ।

बतलाना–स० क्रि० दे० 'बताना' । † अ० क्रि० बात करना ।

बताना–स० क्रि० कहना, बयान करना; जताना, समझाना; सूचित करना, प्रकट करना; गाने-नाचनेमें उँगलियोंसे गान या नृत्यके भावोंको प्रकट करना; (ला०) खबर लेना, मरम्मत करना (आने दो तो बताता हूँ) । पु० फटी-पुरानी पगड़ी जिसपर नयी पगड़ी बाँधी जाती है; हाथका कड़ा ।

बताशा–पु० दे० 'बतासा'; गोलगप्पा ।

बतास*–स्त्री० वायु; वातरोग ।

बतासफेनी–स्त्री० एक प्रकारकी मिठाई ।

बतासा–पु० खालिस शकरकी बनी हुई एक मिठाई, शर्करापुष्प; एक आतिशबाजी; बुलबुला । मु० –(से)सा घुलना–झट नष्ट हो जाना । –(सों) पर चलना–बड़ी नजाकतसे चलना ।

बतासी–स्त्री० एक प्रकारकी चिड़िया ।

बतिया–पु० कुछ ही दिनोंका लगा हुआ छोटा फल ।

बतियाना†–अ० क्रि० बात करना; पेड़में फलका लगना ।

बतियार*–स्त्री० बातचीत ।

बतीसा–पु० बत्तीस दवाओं और मेवोंके योगसे बनाया हुआ लड्डू या हलवा जो प्रसूताको पुष्टिके लिए खिलाया जाता है; † दाँत काटनेका घाव या चिह्न ।

बतीसी–स्त्री० नीचे-ऊपरकी दंतपंक्ति, बत्तीसों दाँत; बत्तीस चीजोंका समूह । मु० –खिलना–खुलकर हँसना । –झड़ना–दाँतोंका गिर जाना । –दिखाना–दाँत दिखाना; हँसना । –बजना–अधिक जाड़ा लगना ।

बतू*–पु० कलाबत्तू ।

बतोला–पु० धोखा देनेकी बात, भुलावा, झाँसा । मु० –(ले) बनाना–बातें बनाना, भुलावा देना ।

बतौरी–स्त्री० अर्बुद, मांसग्रंथि, रसौली, ददौरा–'उरपर कुच नीके लगै अनत बतौरी आहि'–रहीम ।

बत्तक–पु० दे० 'बतख'।

बत्तर–वि० दे० 'बदतर'।

बत्तिस–वि०, पु० दे० 'बत्तीस'।

बत्ती–स्त्री० रुई, पुराने कपड़े आदिकी ऐंठ या बटकर बनायी हुई पतली पूनी जिसे तेलमें डालकर दिया जलाते हैं; बुना हुआ, निवाड़ जैसा, फीता जिसे लंपोंमें डालकर जलाते हैं; कपड़ेकी कड़ी ऐंठी हुई धज्जी जो घावके भीतर भरी जाती है; मोमबत्ती; दिया; फलीता; सींक आदिपर गंधद्रव्य लपेटकर बनायी हुई बत्ती जो पूजन आदिमें जलायी जाती है; चीरेका ऐंठा हुआ कपड़ा; चिराग; छाजनमें लगानेका कास आदिका पूला। **मु०–दिखाना**–रोशनी दिखलाना। **–देना**–दागना (तोप आदि)। **–लगाना**–जलाना, आग लगाना।

बत्तीस–वि० तीस और दो। पु० बत्तीसकी संख्या, ३२।

बत्तीसा–पु० दे० 'बतीसा'।

बत्तीसी–स्त्री० दे० 'बतीसी'।

बथान†–पु० गाय-बैल रखनेकी जगह।

बथुआ–पु० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ सागके रूपमें खायी जाती हैं।

बद–स्त्री० गिलटी; चौपायोंका एक रोग; बदला, एवज। **–में**–बदलेमें।

बद–वि० (फा०) बुरा, खराब; दुष्ट, खोटा; अशुभ। **–अंदेश**–वि० बुरा चाहनेवाला, बदख्वाह। **–अंदेशी**–स्त्री० बदख्वाही। **–अख़लाक़**–वि० अशिष्ट; दुश्शील। **–अमनी**–स्त्री० अशांति, उपद्रव। **–अमली**–स्त्री० अव्यवस्था, अशान्ति, कुशासन। **–इंतज़ाम**–वि० प्रबंधमें अपटु, जिसके प्रबंधमें दोष, खराबियाँ हों। **–इंतज़ामी**–स्त्री० कुप्रबंध। **–कार**–वि० कुकर्मी; व्यभिचारी, दुश्चरित्र। **–कारी**–स्त्री० कुकर्म, दुराचार; व्यभिचार, परस्त्री-गमन। **–किरदार**–वि० दुश्चरित्र। **–क़िस्मत**–वि० अभागा, बुरी किस्मतवाला। **–ख़त**–वि० जिसके अक्षर खराब हों। **–ख़ती**–स्त्री० बुरी लिखावट। **–ख़ू**–वि० बुरी आदतों, बुरे स्वभाववाला। **–ख़्वाह**–वि० बुरा चाहनेवाला, दुश्मन। **–ख़्वाही**–स्त्री० द्वेष, शत्रुता। **–गुमान**–वि० दूसरेके विषयमें बुरी धारणा रखनेवाला; संदेह करनेवाला, शक्की। **–गुमानी**–स्त्री० कुधारणा; शक। **–गो**–वि० बुराई करनेवाला, निंदक। **–गोई**–स्त्री० बुराई, निंदा। **–गोश्त**–पु० भरते हुए घावका अतिरिक्त मांस। **–चलन**–वि० दुश्चरित्र, व्यभिचारी। **–चलनी**–स्त्री० दुश्चरित्रता, व्यभिचार, बुरा चाल-चलन। **–ज़बान**–वि० अपशब्द, गाली-गलौज करनेवाला; मुँह-फट। **–ज़बानी**–स्त्री० बुरे शब्द कहना; गाली-गलौज। **–ज़ात**–वि० खोटा, नीच, कमीना। **–ज़ायक़ा**–वि० जिसका स्वाद खराब हो, कुस्वाद। **–तमीज़**–वि० जिसे तमीज, सलीका न हो, गँवार; अशिष्ट, गुस्ताख। **–तमीज़ी**–स्त्री० अशिष्टता, गुस्ताखी। **–तर**–वि० अधिक बुरा, ज्यादा खराब। **–तरीन**–वि० बुरेसे बुरा, निहायत खराब। **–तहज़ीब**–वि० असभ्य, अशिष्ट, उजड्ड। **–तहज़ीबी**–स्त्री० असभ्यता, अशिष्टता, उजड्डपन। **–दयानत**–वि० जिसकी नीयत दूसरेकी जमा मार लेनेकी हो, बेईमान, बदनीयत। **–दयानती**–स्त्री० खयानत, बेईमानी। **–दिमाग़**–वि० घमंडी, बदमिजाज। **–दिमाग़ी**–स्त्री० घमंड, अपने आपको बहुत बड़ा समझना। **–दिल**–वि० भग्नहृदय, निराश; अप्रसन्न। **–दुआ**–स्त्री० शाप, अहितकामनाका उद्‌गार। **–नज़र**–वि० बुरी नजरवाला। स्त्री० बुरी निगाह, कुदृष्टि। **–नसीब**–वि० अभागा, बदकिस्मत। **–नसीबी**–स्त्री० दुर्भाग्य। **–नस्ल**–वि० बुरी नस्लका, नीच, कमीना। **–नाम**–वि० लोग जिसकी निंदा करते हों, जिसकी बुराईकी प्रसिद्धि हो। **–नामी**–स्त्री० लोक-निंदा, अपकीर्ति। **–०का टीका**–कोई बुरी बात करनेका दोष, लांछन, कलंक। **–निगाह**–वि०, स्त्री० दे० 'बदनजर'। **–नीयत**–वि० बुरी नीयतवाला, जिसके दिलमें बुराई हो, बेईमान। **–नीयती**–स्त्री० नीयत, इरादेका खोटा होना, बेईमानी। **–नुमा**–वि० जो देखनेमें बुरा लगे, भद्दा, कुरूप। **–परहेज़**–वि० जो खाने-पीनेमें परहेज न करे, कुपथ्य करनेवाला। **–परहेज़ी**–स्त्री० कुपथ्य, अयुक्त आहार-विहार। **–फ़ेल**–वि० कुकर्मी, व्यभिचारी। **–फ़ेली**–स्त्री० कुकर्म, व्यभिचार, बदकारी। **–बख़्त**–वि० अभागा, बदनसीब। **–बख़्ती**–स्त्री० दुर्भाग्य, कमबख्ती। **–बू**–स्त्री० दुर्गंध, कुबास। **–०दार**–वि० जिससे बुरी बास आये, दुर्गंधयुक्त। **–मज़गी**–स्त्री० बदमजा होना, कटुता, बिगाड़। **–मज़ा**–वि० जिसका स्वाद अच्छा न हो, कुस्वाद, फीका। **–मस्त**–वि० शराबके नशेमें चूर, मतवाला, मदहोश; कामुक। **–मस्ती**–स्त्री० मदहोशी, मतवालापन; कामुकता। **–माश**–वि० दुष्कर्मसे जीविका करनेवाला; बुरे चाल-चलनका, दुर्वृत्त, दुष्ट, लुच्चा। पु० गुंडा, दुर्वृत्त जन। **–माशी**–स्त्री० बदचलनी; खुटाई, दुष्टता। **–मिज़ाज**–वि० बुरे, तीखे स्वभाववाला, चिड़चिड़ा, बिगड़ैल। **–मिज़ाजी**–स्त्री० स्वभावका तीखा होना, चिड़चिड़ापन। **–मुआमला**–वि० लेन-देनमें बेईमानी करनेवाला, बद-दयानत। **–यक़ीन**–वि० बुरी बातपर विश्वास करनेवाला। **–रंग**–वि० बुरे रंगका, जिसका रंग उड़, बिगड़ गया हो, फीका। पु० जिस रंगकी चाल हो उससे भिन्न रंग (ताश); भिन्न रंगकी गोट (चौसर)। **–राह**–वि० बुरे चलनवाला, कुचाली, दुष्ट, खोटा। **–रिकाब**–वि० (घोड़ा) जो सवार होते समय शरारत करे। **–रू**–वि० बुरी शक्लका, कुरूप। **–रोंह***–वि० दे० 'बदराह'। **–रोबी**–स्त्री० रोब बिगड़ना, धाक उठ जाना; अप्रतिष्ठा। **–रौनक**–वि० श्रीहीन, उजाड़। **–लगाम**–वि० मुँहजोर, सरकश (घोड़ा); मुहँफट। **–वज़ा**–वि० जिसका तौर-तरीका अच्छा न हो। **–शकल,–शक्ल**–वि० कुरूप, भोंड़ा। **–शगून**–वि० अशुभ, मनहूस। **–शगूनी**–स्त्री० असगुन। **–सलीक़गी**–स्त्री० बेशऊरी, फूहड़पन; बदतमीजी। **–सलीक़ा**–वि० बेशऊर, फूहड़; बदतमीज। **–सलूकी**–स्त्री० दुर्व्यवहार, बुरा बर्ताव। **–सीरत**–वि० खोटे स्वभावका, दुश्शील। **–सूरत**–वि० कुरूप, भोंड़ा, बुरी शक्लका। **–सूरती**–स्त्री० कुरूपता, खूबसूरतीका उलटा, भोंड़ापन। **–हज़मी**–स्त्री० अपच, अजीर्ण। **–हवास**–वि० जिसका होश-हवास ठिकाने न हो, घबराया हुआ, उद्विग्न। **–हवासी**–स्त्री० होश-हवासका ठिकाने न होना, घबराहट, परीशानी। **–हाल**–वि० जिसका हाल बुरा हो, दुर्दशाग्रस्त।

बदन–पु० दे० 'वदन'; (फा०) शरीर, देह। **–तौल**–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत। **–निकाल**–पु० मालखंभकी एक कसरत। **मु० –जलना**–बुखारकी तेजी होना। **–टूटना**–जोड़ोंमें हलका दर्द, तनाव होना (ज्वरका पूर्वरूप)। **–ढीला करना**–बदनका तनाव दूर करना। **–तख़्ता होना**–बदन अकड़ जाना। **–दुहरा होना**–बदन झुक जाना। **–फलना**–बदनपर फोड़े-फुंसियाँ निकलना। **–में आग लगना**–बहुत क्रोध होना। **–सनसनाना**–बदनमें सनसनी पैदा होना। **–साँचेमें ढला होना**–हर एक अंगका सुंदर और मुनासिब होना। **–सूखकर काँटा हो जाना**–बहुत दुबला हो जाना। **–हरा होना**–बदनका तर और ताजा होना।

बदना–स० क्रि० ठहराना; नियत, पक्का करना (कुश्ती, उसका दिन, स्थान आदि); शर्त लगाना; गिनना, समझना (वह किसीको कुछ बदता नहीं); मानना (गवाह बदना); * कहना, वर्णन करना–'विप्र बदत बहु बढ़ि बढ़ि बाता'–रघुराज। **बदकर**–शर्त लगाकर, पूरे जोरके साथ।

बदनी–वि० देह-संबंधी, शारीरिक। पु० महाजनको सस्ते मूल्यपर गल्ला बेचनेका शर्तनामा।

बदर–पु० (सं०) बेरका पेड़ या उसका फल; कपास; बिनौला। **–कुण**–पु० बेर पकनेका समय।

बदर–अ० (फा०) बाहर, दरवाजेके बाहर (शहर-बदर करना–नगरसे निर्वासित करना)। **–नवीस**–पु० हिसाबकी गलतियाँ, न मानने लायक रकमें निकालना। **–नवीसी**–स्त्री० बदरनवीसका काम। **मु० –निकालना**–हिसाबमें गलती निकालना; किसीके जिम्मे रकम निकालना।

बदरा–स्त्री० (सं०) कपासका पौधा। * पु० बादल।

बदराई*–स्त्री० बदली।

बदरामलक–पु० (सं०) पानी-आमला।

बदरि–स्त्री० (सं०) बेरका पेड़।

बदरिका–स्त्री० (सं०) बेरका पेड़ या फल; गंगाका एक उद्‌गम-

स्थान तथा उसका निकटवर्ती आश्रम-स्थान ।

वदरिकाश्रम–पु० (सं०) श्रीनगर (गढ़वाल)में स्थित वैष्णवोंका एक प्रधान तीर्थ जहाँ नर-नारायण ऋषियोंने तपस्या की थी ।

वदरी–स्त्री० ० बादल; (सं०) कपासका पौधा; दे० 'वदरिका' । **–छद**–पु० एक गंधद्रव्य । **–नाथ**–पु० वदरिकाका मंदिर । **–नारायण**–पु० वदरिकाश्रममें प्रतिष्ठित नारायणकी प्रतिमा; वदरिका नामक स्थान । **–पत्र, पत्रक**–पु० एक गंधद्रव्य । **–फल**–पु० वेरका फल । **–फला**–स्त्री० नील शेफालिका । **–वण, –वन**–पु० वेरका जंगल; वदरिकाश्रम । **–वासा**–स्त्री० दुर्गा । **–शैल**–वदरिकाश्रमका एक पहाड़ ।

वदल–पु० (अ०) फेर-फार, परिवर्तन; एवज, वदला ।

वदलना–अ० क्रि० एकसे दूसरी स्थितिमें जाना, भिन्न होना, रंग-रूप दूसरा हो जाना; एककी जगह दूसरा हो जाना, दूसरी जगह भेजा जाना; नियुक्त होना, तवादला होना; (मत, विचार, स्वभावका) दूसरा हो जाना (अव वे बिलकुल वदल गये हैं); बातसे हटना, मुकरना । स० क्रि० दूसरा रंग-रूप देना, फेर-फार करना; एकको छोड़कर या एकके वदलेमें दूसरी चीज लेना, काममें लाना (कपड़ा, मकान); एक चीज देकर दूसरी चीज लेना, वदला करना ।

वदलवाना–स० क्रि० वदलनेका काम कराना ।

वदला–पु० वदलनेकी क्रिया, अदल-वदल; एकके वदले दूसरी चीज देना, लेना; वह चीज जो किसी चीजके वदलेमें दी-ली जाय, मुआवजा; वह काम जो किसी कामके वदलेमें, जवाबमें किया जाय, पलटा, प्रतिकार (चुकाना, लेना); कर्मका फल, प्रतिफल । मु० **–देना**–प्रत्युपकार करना । **–लेना**–प्रत्यपकार करना । **–(ले)में–(···के)** एवजमें, स्थानपर ।

वदलाई–स्त्री० वदलनेकी क्रिया; वदलेमें ली या दी जानेवाली चीज; कोई चीज वदलनेमें ऊपरसे लगनेवाली रकम ।

वदलाना–स० क्रि० दे० 'वदलवाना' ।

वदली–स्त्री० छाये हुए वादल, घटा; एकके स्थानपर दूसरेका रखा, भेजा या लगाया जाना, तवादला, स्थानांतरण ।

वदलौवल†–स्त्री० वदलनेकी क्रिया ।

वदा–वि० ('वदना'का भूतकाल) नियत, भाग्यमें लिखा हुआ (जो भाग्यमें वदा है वह होकर रहेगा) । पु० अदृष्ट, नियति । मु० **–होना**–भाग्यमें लिखा होना ।

वदान–स्त्री० वदनेकी क्रिया या भाव, वदा जाना ।

वदावदी–स्त्री० होड़, प्रतियोगिता । अ० वढ़कर, प्रतियोगिता-पूर्वक ।

वदाम–पु० दे० 'वादाम' ।

वदामी–वि० दे० 'वादामी' ।

वदि*–स्त्री० वदला, एवज । अ० वदले, एवजमें ।

वदी–स्त्री० कृष्णपक्ष, अँधेरा पाख; (फा०) वुराई, अपकार, नेकीका उलटा ।

वदूख*–स्त्री० 'वंदूक' ।

वदूर, वदूल*–पु० दे० 'वादल' ।

वदे–अ० वास्ते, के लिए ।

वदेस*–पु० विदेश ।

वद्दल†–पु० वादल ।

वद्दुआ–स्त्री० दे० 'वददुआ' ।

वद्दू–पु० (अ०) अरवके रेगिस्तानमें रहनेवाली एक असभ्य जाति; उस जातिका जन । † वि० वुरा, दोषभाजन (वनना); वदनाम ।

वद्ध–वि० (सं०) वँधा हुआ, वाँधा हुआ; भव-वंधनमें फँसा हुआ, अमुक्त (जीव); जुड़ा हुआ (वद्धांजलि); जमा हुआ; रचित; वंद किया हुआ; प्रदर्शित, प्रकटित । **–कक्ष,–कक्ष्य**–वि० वद्ध-परिकर । **–केसर**–वि० जिसमें किंजल्क या केसर वन गया हो । **–कोप,–मन्यु,–रोष**–वि० क्रोध पालनेवाला; क्रोध दवानेवाला । **–कोष्ठ**–वि० जिसे कोष्ठवंधका रोग हो, कब्जसे पीड़ित । **–कोष्ठता**–स्त्री० कब्जियत । **–गुद**–पु० एक रोग जिसमें आँतमें मलका अवरोध हो जाता है । **–ग्रह**–वि० हठ पकड़ा हुआ । **–चित्त**–वि० जिसका मन किसी विषयपर जमा हो । **–जिह्व,–वाक् (च्)**–वि० मौन, जो चुप्पी साधे हुए हो । **–दृष्टि,–नेत्र,–लक्ष्य**–वि० जो किसी चीजपर आँखें गड़ाये, जमाये हो । **–धार**–वि० लगातार वहनेवाला । **–निश्चय**–वि० जिसने पक्का निश्चय कर लिया हो । **–नेपथ्य**–वि० जो नट या अभिनेताकी वेषभूषा धारण किये हो । **–परिकर**–वि० जिसने कमर वाँध ली हो, तैयार । **–पुरीष**–वि० जिसे कब्ज हो । **–प्रतिज्ञ**–वि० वचन-वद्ध । **–प्रतिश्रुत्**–वि० प्रतिध्वनियुक्त । **–फल**–पु० करंज । **–भू,–भूमि**–स्त्री० मकानका (पक्का) फर्श; मकान वनानेके लिए तैयार की गयी जमीन । **–मुष्टि**–वि० जिसकी मुट्ठी दानके लिए न खुले, कंजूस; जिसकी मुट्ठी वँधी हो । **–मूल**–वि० जिसने जड़ पकड़ ली हो, दृढ़मूल । **–मौन**–वि० जिसने चुप्पी साध ली हो । **–युक्ति**–स्त्री० वंशी वजानेका एक ढंग । (संगीत) । **–रसाल**–पु० एक वढ़िया आम । **–राग**–वि० किसीके प्रति दृढ़ रागयुक्त, आसक्त । **–राज्य**–वि० जिसे राज्य प्राप्त हुआ हो, राज्यारूढ़ । **–वर्चस**–कब्ज करनेवाला । **–वसति**–वि० जिसके रहनेका स्थान निश्चित हो । **–वेपथु**–वि० जिसे कँपकँपी हो गयी हो । **–वैर**–वि० जिसके मनमें किसीके प्रति वैर वद्धमूल हो गया हो । **–शिख**–वि० जिसकी शिखा वँधी हो; अल्पवयस्क । पु० छोटा वच्चा । **–शिखा**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–सूत,–सूतक**–पु० विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ पारा । **–स्नेह**–वि० (किसीपर) आसक्त, अनुरक्त ।

वद्धांजलि–वि० (सं०) सम्मान-प्रदर्शनके लिए जिसके हाथ जुड़े हों ।

वद्धानंद–वि० (सं०) आनंदयुक्त ।

वद्धानुराग–वि० (सं०) दे० 'वद्धराग' ।

वद्धानुशय–वि० (सं०) अनुतप्त; कृतसंकल्प ।

वद्धायुध–वि० (सं०) जो हथियार वाँधे हो, शस्त्रसज्ज ।

वद्धाशंक–वि० (सं०) जिसके मनमें शंका उत्पन्न हो गयी हो ।

वद्धाश–वि० (सं०) आशान्वित ।

वद्धी–स्त्री० वाँधनेका साधन, डोर, रस्सी; गलेमें पहननेका एक गहना ।

वद्धोत्सव–वि० (सं०) जो उत्सवका आनंद ले रहा हो या उत्सव मना रहा हो ।

वद्धोदर–पु० (सं०) कोष्ठवद्धता । वि० जिसे कब्ज हो ।

वध–पु० दे० 'वध' ।

वधना–* स० क्रि० वध करना, मार डालना । पु० टोंटीदार पात्र जिससे मुसलमान प्रायः लोटेका काम लेते हैं ।

वधाई–स्त्री० वधावा, उत्सव; मंगलाचार; खुशीके मौकेपरका गाना-वजाना; इष्ट-मित्रके हर्ष, सफलतापर किया जानेवाला हर्ष-प्रकाश, मुवारकवाद; मुवारकवादका गीत; शुभ अवसरपर दिया जानेवाला उपहार । मु० **–वजना**–पुत्र-जन्म आदिपर वाजा, खासकर शहनाई, वजना ।

वधाऊ–पु० वधाई ।

वधाना*–स० क्रि० वध कराना ।

वधाया*–पु० वधाई, वधावा ।

वधावना, वधावरा*–पु० दे० 'वधावा' ।

वधावा–पु० वधाई; मंगलाचार; पुत्रजन्म आदिके अवसरपर भेजा जानेवाला उपहार ।

वधिक–पु० वध करनेवाला, जल्लाद; व्याध, वहेलिया ।

वधिया–पु० वैल, घोड़ा, वकरा आदि जिसका अंडकोश कुचल या निकाल दिया गया हो; वैल । मु० **–वैठना**–चलते हुए वैलका वैठ जाना; घाटा होना ।

वधियाना†–स० क्रि० वधिया करना ।

वधिर–पु० (सं०) वहरा ।

वधिरता–स्त्री० (सं०) वहरापन ।

वधिरित–वि० (सं०) वहरा किया हुआ ।

वधिरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वहरापन ।

वधू–स्त्री० दे० 'वधू' ।

वधूक–पु० दे० 'वंधूक' ।

वधूटी–स्त्री० दे० 'वधूटी' ।

वधुरा*–पु० वगूला, ववंडर ।

वधैया*–स्त्री० दे० 'वधाई'।

वध्य–वि० दे० 'वध्य'।

वन–पु० कपास; दे० 'वन'; * घर। **–आलू**–पु० जमींकंदकी जातिका एक पौधा जिसकी जड़ वनवासी अकसर खोदकर खाते हैं। **–कंडा**–पु० अपने आप सूखा हुआ गोवर जो ईंधनका काम दे। **–ककड़ी**–स्त्री० एक पौधा जिसका गोंद दवाके काम आता है, पापड़ा। **–कचूर**–पु० एक पौधा। **–कटी**–वि० जंगली (लकड़ी)। **–कटा**–स्त्री० एक तरहका वाँस; जंगलको काटकर आवाद करनेका हक। **–कपास**–स्त्री० पटसनकी जातिका एक पौधा। **–कपासी**–स्त्री० एक पौधा जिसके रेशोंसे रस्सी वटते हैं। **–कर**–पु० जंगलकी पैदावारपर लिया जानेवाला कर; दे० क्रममें। **–कल्ला**–पु० एक जंगली पेड़। **–कस,–कुस**–पु० एक घास जिसकी रस्सी वटी जाती है। **–कोरा**–पु० लोनियाका साग। **–खंड**–पु० वनका कोई भाग, वनस्थली। **–खंडी**–स्त्री० वनखंड। पु० वनवासी। **–खरा**–स्त्री० वह जमीन जिसमें कपासकी फसल वोयी गयी रही हो। **–गरी***–स्त्री० एक मछली। **–गाव**–पु० एक तरहका हिरन; एक तरहका तेंदू। **–गोभी**–स्त्री० एक प्रकारकी जंगली घास। **–चर**–पु० दे० 'वनचर'। **–चरी**–स्त्री० एक जंगली घास। **–चारी**–वि०, पु० दे० 'वनचारी'। **–चौंर,–चौंरी**–स्त्री० सुरागाय। **–ज,–जात**–वि०, पु० दे० 'वनज', 'वनजात'। **–ज्योत्स्ना**–स्त्री० माधवी लता। **–तुरई**–स्त्री० वंदाल। **–तुलसी**–स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ और मंजरी तुलसीसे मिलती है, वर्वरी। **–द***–पु० वादल, वनद। **–दाम**–पु० वनमाला। **–देव,–देवता**–पु० दे० 'वनदेवता'। **–देवी**–स्त्री० जंगलकी अधिष्ठात्री देवी। **–धातु**–स्त्री० गेरू, रंगीन मिट्टी। **–निधि**–पु० समुद्र। **–नीवू**–पु० एक सदावहार क्षुप। **–पच***–पु० पेड़ोंकी छालका वना कपड़ा। **–पति**–पु० सिंह। **–पथ**–पु० जंगलसे होकर गया हुआ रास्ता। **–पाट**–पु० जंगली पटुआ, सन। **–पाती***–स्त्री० 'वनस्पति'। **–पाल**–पु० वगीचेका रक्षक, माली। **–पिंडालू**–पु० एक जंगली पेड़। **–प्रिय**–पु० कोयल। **–फल**–पु० वनमें होनेवाले फल। **–फूल**–पु० जंगली वृक्षोंके फूल। **–वकरा**–पु० ठंढे प्रदेशोंमें पाया जानेवाला एक पक्षी। **–वरें**–पु० जंगली कुसुम, खारेजा। **–वसन**–पु० छालका वना हुआ कपड़ा। **–वारी**–वनकन्या; * पुष्पोद्यान। **–वास**–पु० वनमें वसना; घर छोड़कर अधिक कष्टके स्थानमें रहनेको विवश किया जाना। **—वासी**–वि०, पु० वनमें रहनेवाला, जंगली। **–वाहन**–पु० नौका, जलयान। **–विलाव**–पु० विल्लीकी जातिका एक वन्य जंतु। **–मानुस**–पु० विना पूँछका वंदर जिसकी शक्ल आदमीसे कुछ अधिक मिलती है; निरा जंगली, असभ्य मनुष्य। **–माल,–माला**–स्त्री० दे० 'वनमाला'। **–माली**–पु० दे० 'वनमाली'। **–मुरगा**–पु० जंगली मुरगा। **–मूंग**–स्त्री० मोठ। **–रखा**–पु० वनकी रखवाली करनेवाला; वहेलियोंकी एक जाति। **–राज**–पु० जंगलका राजा, सिंह; वहुत वड़ा वृक्ष। **–राय**–पु० दे० 'वनराज'। **–राह**–पु० विस्तृत या घना जंगल। **–रीठा**–पु० जंगली रीठा। **–रीहा**–स्त्री० एक पौधा जिसकी छालसे रस्सी वनती है। **–रुह**–पु० जंगली पेड़; कमल। **–रोहू**–विसखोपड़ा जातिका चौपाया जानवर। **–वसन**–पु० छालका वस्त्र। **–वारी**–पु० श्रीकृष्ण। **–वासी**–वि० जंगलमें रहनेवाला। **–स्थली**–स्त्री० जंगल। **–हरदी,–हलदी**–स्त्री० दारुहलदी।

वनउर|–पु० विनौला; ओला।

वनक*–स्त्री० वाना, भेष; वनावट; वनकी उपज; मैत्री–'जासों अनवन मोहिं, तासों वनक वनी तुम्हें'–घन०।

वनकर–पु० अस्त्र-प्रहारकी एक काट; दे० 'वन'में।

वनज–पु० दे० 'वनिज'; दे० 'वन'में।

वनजना*–स० क्रि० व्यापार करना।

वनजर|–पु० दे० 'वंजर'।

वनजारन, वनजारी–स्त्री० वनजारेकी स्त्री।

वनजारा–पु० जो वैलोंपर अनाज लादकर वेचनेको ले जाय, टाँडा लादनेवाला; वनिज, व्यापार करनेवाला।

वनजी*–पु० व्यापारी। स्त्री० व्यापार–'कोउ खेती कोउ वनजी लागै'–सुंदरदास।

वनड़ा–पु० विलावल रागका एक भेद। **–देवगरी**–स्त्री० एक रागिनी।

वनत–स्त्री० वनावट; मेल; सलमे-सितारेकी वेल जिसके दोनों ओर हाशिया हो।

वनताई*–स्त्री० वनकी भयंकरता या गहनता।

वनना–अ० क्रि० वनाया जाना, निर्मित, रचित, तैयार होना; नया रूप मिलना; दूसरी स्थितिमें जाना, आसीन, नियुक्त होना; सुधरना; दुरुस्त होना; सिद्ध, सफल होना (काम, वात); सजना, सँवरना–'प्रात भये सव भूप वनि वनि मंडपमें गये'–रामचंद्रिका; वनावट करना, जो वात अपनेमें न हो उसका प्रदर्शन करना; फटका जाना, साफ होना (अनाज); वेवकूफ वनाया जाना; मालदार होना; पटना, मेल होना; हो सकना, शक्य होना। मु० **वन आना**–संयोग मिलना, अभीष्ट-सिद्धिका अवसर मिलना। **वनना-ठनना**–वनाव-सिंगार करना, सजना-सँवरना। **वन पड़ना**–हो सकना, शक्य होना। **वन-वनाकर**–वनकर, पूरी तरह वनकर। **वना रहना**–कायम रहना, मौजूद रहना।

वननि*–स्त्री० वनाव, सिंगार; वनावट।

वनपशई–वि० वनफशेके रंगका।

वनपशा–पु० (फा०) एक पौधा जो दवाके काम आता है।

वनराँव*–पु० वड़ा जंगल; वड़ा वृक्ष–'चंदनकी कुटकी भली ना ववूल वनराँव'–कवीर।

वनरा–पु० दे० दूल्हा; (लड़केके) व्याहमें गाया जानेवाला एक गीत; * वंदर।

वनरी–स्त्री० दुलहिन, नववधू; मर्कटी।

वनवध–पु० प्राचीन भारतका एक प्रांत।

वनवना*–स० क्रि० वनाना।

वनवा–पु० पनडुब्बी (जलपक्षी); एक तरहका वछनाग।

वनवाना–स० क्रि० वनानेका काम कराना, निर्मित कराना, तैयार कराना।

वनवारी–पु० वनमाली, कृष्ण।

वनवैया|–पु० वनानेवाला।

वनसपती|–स्त्री० दे० 'वनस्पति'।

वनसी|–स्त्री० मछली फँसानेकी कँटिया; मुरली।

वनहटी–स्त्री० एक तरहकी छोटी नाव।

वना–पु० दूल्हा, वर; दे० 'वाना'।

वनाइ*–अ० दे० 'वनाय'।

वनाउ*–पु० दे० 'वनाव'।

वनाउरि*–स्त्री० वाणावली।

वनागि*–स्त्री० दावानल।

वनाग्नि–स्त्री० दावानल।

वनात–स्त्री० एक रंगीन ऊनी कपड़ा जिसका अँगरखा आदि वनाते हैं।

वनाती–वि० वनातका वना हुआ।

वनाना–स० क्रि० रचना, निर्माण करना, तैयार करना; वस्तुको काममें लाने लायक रूप देना; नया रूप देना, दूसरी वस्तुमें वदल देना (रावसे शकर, दोस्तसे दुश्मन इ०); गढ़ना, रचना (वात, वहाना); साफ करना, विनना-फटकना (अनाज); काट-छीलकर दुरुस्त करना; सँवारना; किसी पदपर नियुक्त, आसीन करना; सुधारना, मरम्मत करना; कमाना, पैदा करना (रुपया वनाना); व्यंग्य द्वारा उपहास करना, व्याज-निंदाके द्वारा लजवाना। **वनाकर**–अच्छी तरह। मु० **–पछोड़ना**–फटकना, साफ करना। **–विगाड़ना**–अच्छी या वुरी हालतमें पहुँचाना। **वनाये रखना**–जिंदा रखना, कायम रखना।

वनाफर–पु० राजपूतोंकी एक उपजाति।

वनावंत, वनावनत*–पु० वर-कन्याकी जन्मपत्रियोंका मिलान।

वनानी*–स्त्री० वनावट।

वनाम–अ० किसीके नामपर, दे० 'व'में।

वनाय*–अ० अच्छी तरह; वहुत ज्यादा; विलकुल।

बनार–पु० चाकसू; कासमर्द; काशीकी उत्तर-सीमापर स्थित एक प्राचीन राज्य ।

बनारना–स० क्रि० काटकर टुकड़े करना ।

बनारस–पु० वाराणसी, काशी ।

बनारसी–वि० बनारसका; बनारसमें बना हुआ । पु० काशीवासी ।

बनाव–पु० बनावट; बनना-सँवरना; युक्ति, उपाय; मेल । **–सिंगार**–पु० बनना-सँवरना ।

बनावट–स्त्री० बनानेकी क्रिया या ढंग, रचना, गठन; रूप; बननेका भाव, आडंबर, दिखावा, नुमाइश ।

बनावटी–वि० दिखाऊ; कृत्रिम, नकली ।

बनावन†–पु० अनाज बनानेपर निकलनेवाली मिट्टी, कंकड़ी, कचरा आदि ।

बनावनहार, बनावनहारा*–पु० बनानेवाला, रचयिता; सुधारनेवाला ।

बनावना*–स० क्रि० दे० 'बनाना' ।

बनावरि*–स्त्री० बाणोंकी अवलि, पंक्ति ।

बनास–स्त्री० राजपूतानेकी एक नदी ।

बनासपाती*–स्त्री० दे० 'वनस्पति'–'…नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं'–भूषण ।

बनि*–स्त्री० अन्नके रूपमें दी जानेवाली दैनिक मजदूरी । **–हार**–पु० बनीपर काम करनेवाला; खेतीके काममें किसानकी सहायता करनेवाला स्वतंत्र मजदूर । **–हारी**–स्त्री० दे० 'बनि' ।

बनिक–पु० दे० 'वणिक्' ।

बनिज–पु० दे० 'वाणिज्य' । **–ब्योपार**–पु० वाणिज्य-व्यापार ।

बनिजना*–स० क्रि० व्यापार करना; क्रय करना; ठगना ।

बनिजारा–पु० दे० 'बनजारा' ।

बनिजारिन, बनिजारी–स्त्री० बनजारेकी स्त्री ।

बनित*–पु० बाना; सजावट ।

बनिता–स्त्री० स्त्री; पत्नी ।

बनिया–पु० व्यापार करनेवाली एक हिंदू जाति, वैश्य; आटा-दाल आदि बेचनेवाला ।

बनियाइन–स्त्री० गंजी जैसी कुरती जो बुनी होती है; बनियेकी स्त्री ।

बनिहार–पु० खेतिहर मजदूर ।

बनी–स्त्री० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मजदूरी; वनस्थली; वाटिका; * वधू, नायिका । * पु० वणिक्, बनिया ।

बनीनी†–स्त्री० बनियेकी स्त्री; बनियायन ।

बनीर*–पु० बेत, वानीर ।

बनेला–पु० रेशमका एक कीड़ा ।

बनेठी–स्त्री० पटेबाजीके अभ्यासमें काममें लायी जानेवाली वह लाठी जिसके दोनों सिरोंपर लट्टू लगे रहते हैं ।

बनैया–पु० बनानेवाला ।

बनैला–वि० जंगली, वन्य ।

बनोवास*–पु० दे० 'वनवास' ।

बनौआ, बनौवा†–वि० बनावटी ।

बनौटी–वि० कपासके फूलके रंगका, कपासी ।

बनौधा–पु० दे० 'बनवध' ।

बनौरी†–स्त्री० ओला, उपल ।

बन्ना†–पु० बनरा, दूल्हा ।

बन्नात–स्त्री० दे० 'बनात' ।

बन्नी–स्त्री० अन्नके रूपमें मिलनेवाली दैनिक मज़दूरी; † बनरी, दुलहिन ।

बन्हि–पु० दे० 'वह्नि' ।

बप*–पु० बाप, पिता । **–मार**–पु० बापकी हत्या करनेवाला, पितृघातक; धोखा देनेवाला ।

बपतिस्मा–पु० (अं० 'बैप्टिज्म') ईसाई धर्मकी दीक्षाके समय किया जानेवाला एक संस्कार ।

बपना*–स० क्रि० बीज बोना, वपन ।

बपु, बपुख*–पु० शरीर; रूप; अवतार ।

बपुरा*–वि० बेचारा, दीन, अशक्त ।

बपौती–स्त्री० बापकी छोड़ी हुई जायदाद, पैतृक संपत्ति ।

बप्पा†–पु० बाप (प्रायः संबोधनरूपमें प्रयुक्त) ।

बफरना–अ० क्रि० उत्तेजित होना; क्रुद्ध होना, बिगड़ना । दे० 'बिफरना' ।

बफारा–पु० भाप; दवा मिले हुए पानीकी भापसे शरीर या अंग-विशेषको सेंकना (देना, लेना); इस प्रकार काममें लायी जानेवाली दवा ।

बफौरी–स्त्री० भापसे पकायी हुई बरी ।

बबकना–अ० क्रि० उत्तेजित होकर बोलना, बमकना; * उछलना ।

बबर–पु० (फा०) अफ्रीकामें पाया जानेवाला शेर, सिंह । **–शेर**–पु० भयानक शेर, सिंह । **–अकाली**–पु० प्रथम महायुद्धके बाद संघटित अकालियोंका एक गुप्त दल जो कुछ दिनोंतक कतल, डकैती आदि करता रहा ।

बबा*–पु० दे० 'बाबा' ।

बबुआ†–पु० बड़ा जमींदार, बाबू; पुत्र, दामाद, देवर आदिका स्नेहसूचक संबोधन ।

बबुई†–स्त्री० बड़े जमींदार या बाबकी बेटी; बेटी; छोटी ननदका संबोधन ।

बबुनी–स्त्री० बबुई ।

बबुर†–पु० दे० 'बबूल' ।

बबूल–पु० एक प्रसिद्ध कँटीला पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत कड़ी और मजबूत होती और फल, पत्तियाँ, गोंद आदि दवाके काम आते हैं, कीकर ।

बबूना–पु० भूरी पूंछ और हरे-सुनहरे रंगकी चिड़िया ।

बबूला–पु० दे० 'बगूला'; दे० 'बुलबुला' ।

बभनी–स्त्री० जोंकके आकारका छिपकली जैसा एक जंतु जिसकी पीठपर चमकीली धारियाँ होती हैं; बनकुस ।

बभूत†–स्त्री० दे० 'भभूत' ।

बभ्रवी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

बभ्रु–वि० (सं०) गहरे भूरे रंगका; गंजा; खल्वाट । पु० अग्नि; नेवला; गहरा भूरा रंग; भूरे बालोंवाला व्यक्ति; शिव; विष्णु; चातक; सफाई करनेवाला; भूरे रंगकी कोई वस्तु । **–केश**–वि० भूरे बालोंवाला । **–धातु**–स्त्री० सोना; गेरू । **–लोमा(मन्)**–वि० भूरे बालोंवाला । **–वाहन**–पु० अर्जुनका एक पुत्र ।

बम–पु० शिवकी प्रसन्नताके लिए कहा जानेवाला एक शब्द; एक्के, बैलगाड़ी आदिमें आगेकी ओर निकला हुआ बाँस या लकड़ी जिसमें घोड़े, बैल आदि जोते जाते हैं; शहनाईके साथका छोटा या मादा नगाड़ा । **–भोला**–पु० शिव । मु० **–बम करना**–शिवोपासकोंका शिवको प्रसन्न करनेके लिए 'बम-बम' कहना । **–बोलना**–समाप्त हो जाना (शक्ति, पूंजी, सामग्री आदिका), दिवाला हो जाना ।

बम–पु० (अं० 'बांब') लोहेका लंबोतरा गोला जिसमें बारूद और छिटकनेवाली चीजें भरी होती हैं और जो हवाईजहाजसे गिराया जाता और हाथसे तथा तोपमें भरकर भी फेंका जाता है । **–कांड**–पु० बमका प्रहार, विस्फोट । **–गोला**–पु० बमका गोला । **–बाज़**–वि० दुश्मनपर बम बरसानेवाला (हवाई जहाज) । **–बाज़ी,–बारी,**–स्त्री० बम-वर्षा । **–वर्षक,–वर्षी**–पु० (बमर) प्रस्फोटों (बमों)की वर्षा करनेवाला हवाई जहाज ।

बमकना–अ० क्रि० आवेशमें अपने बल-पौरुषकी डींग मारना; उछलना; फूटना ।

बमकाना–अ० क्रि० किसीको क्रोधित करना ।

बमचख–स्त्री० शोरगुल (मचाना) ।

बमना*–स० क्रि० वमन करना ।

बमपुलिस–स्त्री० दे० 'बंपुलिस' ।

बमलाना–स० क्रि० बढ़कर बोलनेके लिए बढ़ावा देना ।

बमीठा–पु० बाँबी, वल्मीक ।

बमेक*–पु० विवेक ।

बमोट†–पु० दे० 'बमीठा' ।

बम्हनी–स्त्री० दे० 'बभनी'; आँखका एक रोग, बिलनी; हाथीकी पूंछ सड़नेका रोग; लाल रंगकी जमीन ।

बम्हनौटी–स्त्री० गाँवमें ब्राह्मणोंकी बस्ती ।

बयँहत्था–वि० (लेफ्ट हैंडर) कामकाजमें बायें हाथका ही विशेष रूपसे प्रयोग करनेवाला; बायें हाथसे गेंद फेंकनेवाला, वामहस्तिक।

बय–स्त्री० जुलाहोंका एक औजार, कंघी । पु०, स्त्री० दे० 'वय' ।

बयन*–पु० दे० 'बैन' ।

बयनी, बैनी–स्त्री० बोलनेवाली (यौगिक शब्दोंमें) ।

बयना*–स० क्रि० बीज बोना; वर्णन करना । अ० क्रि० बहना; लगना, आरोपित होना । पु० मित्रों तथा संबंधियोंके यहाँ भेजा जानेवाला पकवान या इस तरहकी कोई चीज ।

बयर*–पु० दे० 'बैर' ।

बयस–स्त्री० दे० 'वय(स्)' । –**वाला**–वि० वयस्क, युवा । –**सिरोमनि***–पु० जवानी, यौवन ।

बया–पु० गौरैयासे मिलती-जुलती एक चिड़िया जो अपना घोंसला बड़े कौशलसे बनाती है; आढ़तों आदिमें माल तौलनेका काम करनेवाला ।

बयाई–स्त्री० बयाका धंधा; तौलनेकी उजरत, तौलाई ।

बयान–पु० (अ०) कथन, वचन, उक्ति; वर्णन; वक्तव्य; तथ्योंका वह विवरण जो अदालतमें वादी या प्रतिवादी द्वारा लिखकर या जबानी प्रस्तुत किया जाय; (अरबी, फारसी) साहित्यशास्त्रकी एक शाखा । –**तहरीरी**–पु० लिखा हुआ बयान जो प्रतिवादी अरजीदावेके जवाबमें दाखिल करता है । –**ताईदी**–पु० दूसरेके बयानकी पुष्टि करनेवाला बयान । –**दावा**–पु० दावेका विवरण । मु० –**से बाहर**–अवर्णनीय, जो कहा न जा सके ।

बयाना–पु० वह रकम जो सौदा पक्का करनेके लिए खरीदार बेचनेवालोंको पेशगी देता है और पीछे वस्तुके मूल्यमेंसे काट लेता है, साई । * अ० क्रि० बड़बड़ाना ।

बयाबान–पु० (फा०) जंगल, उजाड़खंड ।

बयाबानी–वि० जंगली, वनवासी ।

बयार, बयारि*–स्त्री० हवा, वायु; शीतल-मंद वायु । मु० –**करना**–पंखा झलना, पंखेसे हवा करना ।

बयारी–स्त्री० ब्यालू; दे० 'बयार' ।

बयाला*–पु० वह छेद जो बाहरका दृश्य देखने या गोली चलानेके लिए दीवारमें बना हो; ताखा, आला ।

बयालिस–वि०, पु० दे० 'बयालीस' ।

बयालीस–वि० चालीस और दो । पु० चालीस और दोकी संख्या, ४२ । –**वाँ**–बयालिसके स्थानवाला ।

बयासी–वि० अस्सी और दो । पु० अस्सी और दोकी संख्या, ८२ । –**वाँ**–बयासीके स्थानवाला ।

बरंगा†–पु० छत पाटनेकी पत्थरकी पटिया; पाटनेके लिए धरनपर लगायी जानेवाली लकड़ी ।

बर–पु० दूल्हा । –**काज***–पु० ब्याह । –**का पानी**–नहछूके समय बरका नहाया हुआ पानी जो कन्याको नहलानेके लिए उसके यहाँ भेजा जाता है । –**नेत**–स्त्री० ब्याहकी एक रस्म ।

बर*–पु० दे० 'बल'–'देख्यो मैं राजकुमारको बर'–रामचंद्रिका । –**जोर**–वि० जोरदार, जबरदस्त । –**जोरी**–स्त्री० जबर्दस्ती । अ० बलात् ।

बर*–वि० श्रेष्ठ । –**गंध**–पु० सुगंधित मसाला ।

बर*–अ० बल्कि । पु० बरगद; बरदान, आशीर्वाद; 'बाल'का विकृत रूप । –**टुट**,–**तोर**–पु० दे० 'बलतोड़' ।

बर–अ० (फा०) ऊपर, पर; बाहर । पु० फल; क्रोड, बगल; देह । वि० ले जानेवाला, ढोनेवाला (दिलबर, आदि); श्रेष्ठ, उत्तम; पूर्ण । –**अकस**–अ० उलटा, विरुद्ध, विपरीत । –**क़रार**–वि० स्थिर, कायम, बहाल; दृढ़; जीवित; बना हुआ । –**खास**,*–**ख़ास्त**,–**ख़्वास्त**–वि० उठा हुआ, विसर्जित (जलसा आदि); समाप्त; नौकरीसे अलग किया हुआ, बरतरफ । –**ख़ास्तगी**–स्त्री० समाप्ति; बरतरफी । –**ख़िलाफ़**–वि० विरुद्ध, प्रतिकूल । अ० (··के) विरुद्ध, ख़िलाफ । –**ख़ुरदार**–वि० सफल, फलता-फूलता हुआ; भाग्यशाली । पु० बेटा, संतान । –**ज़बान**–वि० जो जबानपर हो, कंठस्थ, याद । –**जस्ता**–वि० ठीक, उपयुक्त, यथायोग्य । –**तर**–वि० अधिक अच्छा, ऊँचा, श्रेष्ठ । –**तरफ़**–वि० नौकरी आदिसे अलग किया हुआ, मौकूफ । अ० एक ओर, अलग, दूर । –**तरफ़ी**–स्त्री० नौकरीसे अलहदगी, मौकूफी । –**तरी**–स्त्री० उच्चता, श्रेष्ठता । –**दार**–वि० उठानेवाला, ढोनेवाला (संज्ञापदके अंतमें–अमलबरदार) । –**दारी**–स्त्री० ढोना, उठाना (संज्ञापदसे समस्त होकर–बाजबरदारी, बारबरदारी) । –**दाश्त**–स्त्री० सहन, उठाना; जानवरोंकी देखभाल, रखरखाव । –**दाश्ता**–वि० उठाया, हटाया हुआ । –**पा**–वि० खड़ा, उपस्थित । (मु० –० होना–खड़ा होना, मचना (फसाद बरपा होना) ।)–**बखत**†–अ० हरघड़ी । –**बाद**–वि० फेंका हुआ, नष्ट; तबाह (जाना, होना) । –**बादी**–स्त्री० नाश, तबाही, खराबी । –**मला**–अ० सामने, मुँहपर; खुल्लमखुल्ला । –**महल**–अ० ठीक मौकेपर । वि० मौकेका, उपयुक्त । –**वक्त**–अ० समयपर, मौकेपर । –**हक़**–वि० ठीक, यथार्थ; सच्चा । मु० –**आना**–पूरा होना, सफल होना । –**लाना**–पूरा करना, सिद्ध करना ।

बरई–पु० तमोली ।

बरक़ंदाज़–पु० बंदूक लेकर चलनेवाला सिपाही; चौकीदार ।

बरकत–स्त्री० (अ०) वृद्धि, बढ़ती; सौभाग्य; लाभ; बहुतायत; एककी संख्या (बनिये तौलनेमें एकके बदले अक्सर 'बरकत' कहते हैं); बढ़ती करनेका गुण, प्रभाव, प्रसाद । मु० –**उठना**–पूरा न पड़ना, घटना; अवनति होना । –**देना**–बढ़ाना, वृद्धि करना । –**होना**–बढ़ना, वृद्धि होना ।

बरकती–वि० जिसमें बरकत हो; बरकतके लिए निकाला हुआ (रुपया) ।

बरकना†–अ० क्रि० घटित न होना; टलना; बचना, अलग रहना ।

बरकाना*–स० क्रि० निवारण करना; हटाना; बचाना; पीछा छुड़ाना ।

बरकावना†–स० क्रि० दे० 'बरकाना' ।

बरख*–पु० दे० 'वर्ष' ।

बरखना*–अ० क्रि० बरसना । स० क्रि० बरसाना ।

बरखा*–स्त्री० वर्षा; वर्षा ऋतु ।

बरखाना*–स० क्रि० दे० 'बरसाना' ।

बरखास्त–वि० दे० 'बर'के साथ ।

बरखिलाफ–दे० 'बर'के साथ ।

बरखुरदार–वि० दे० 'बर'के साथ ।

बरग–पु० दे० 'बग'; दे० 'वर्ग' ।

बरगद–पु० भारतका एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी गणना पाँच पवित्र वृक्षोंमें है और जिसकी आयु और विस्तार संभवतः सब पेड़ोंसे अधिक होता है, वट ।

बरचर–पु० एक तरहका देवदार ।

बरच्छा†–स्त्री० दे० 'बरेच्छा' ।

बरछा–पु० भाला ।

बरछी–स्त्री० छोटा बरछा ।

बरछैत*–पु० बरछा रखने या चलानेवाला ।

बरजन–पु० दे० 'वर्जन' ।

बरजना*–स० क्रि० मना करना, रोकना ।

बरजनि*–स्त्री० मनाही, रोक ।

बरजस्ता–वि० आशु कथन ।

बरजोर–वि० दे० 'बर' (बल)के साथ ।

बरट–पु० (सं०) एक अन्न ।

बरटा–दे० 'वरटा', हंसिनी ।

बरट्रैंड रसेल–पु० अंग्रेज दार्शनिक तथा गणितज्ञ (जन्म १८७२, मृत्यु १९७०) ।

बरत–पु० दे० 'व्रत' । स्त्री० रस्सी; वह रस्सी जिसपर चढ़कर नट खेल करता है ।

बरतन–पु० मिट्टी, धातु आदिका पात्र जो खासकर खाने-पीनेकी चीजें रखने या पकानेके काममें लाया जाय, भाँड़ा; व्यवहार, बर्ताव ।

बरतना–स० क्रि० काममें लाना, इस्तेमाल करना; बर्ताव करना ।

बरतनी–स्त्री० शब्दका वर्णक्रम, हिज्जे ।

बरताना–स० क्रि० बाँटना, वितरण करना । पु० पुराने कपड़े, उतारा ।

बरताव–पु० बरतनेका ढंग, व्यवहार ।

बरती*–वि० दे० 'व्रती' । स्त्री० बत्ती ।

बरद*–पु० 'बरधा' ।

बरदवाना†–स० क्रि० दे० 'बरदाना' ।

बरदा*–पु० दे० 'बरधा'; (तु०) दास; युद्धबंदी । –**फ़रोश**–पु० दास-दासियोंको खरीदने-बेचनेवाला । –**फ़रोशी**–स्त्री० दास-दासियोंको खरीदने-बेचनेका रोजगार ।

बरदाना–अ० क्रि० गाय, भैंस आदिका जोड़ा खाना, गाभिन होना । † स० क्रि० गाय-भैंस आदिको जोड़ा खिलाना, गाभिन कराना, बरदवाना ।

बरदार–वि० दे० 'बर'के साथ ।

बरदिया, बरधिया*–पु० चरवाहा ।

बरदौर†–पु० बैल आदि बाँधनेका स्थान, बथान ।

बरध, बरधा†–पु० दे० 'बैल' । –**मुतान**–स्त्री० गो-मूत्रिका ।

बरधाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'बरदाना' ।

बरन*–पु० रंग । अ० बल्कि ।

बरनन*–पु० दे० 'वर्णन' ।

बरनना*–स० क्रि० वर्णन करना ।

बरनर–पु० दे० 'बर्नर' ।

बरना*–स० क्रि० वरण करना, चुनना; ब्याहना; वारण करना, मना करना; नियुक्त करना; निमंत्रित करना । अ० क्रि० जलना ।

बरनाला–पु० जहाजका फाजिल पानी निकाल देनेका परनाला ।

बरपा–वि० दे० 'बर'के साथ ।

बरफ़–स्त्री० दे० 'बर्फ़' ।

बरफ़ानी–वि० दे० 'बर्फ़ानी' ।

बरफ़ी–स्त्री० एक मिठाई जो चीनीकी चाशनीमें खोया, पेठा, बेसन आदि मिलाकर बनायी जाती है।

बरफ़ीला–वि० दे० 'बर्फ़ीला' ।

बरबंड*–वि० दे० 'बरिबंड' ।

बरबट*–अ० बरबस, हठात् ।

बरबटी–स्त्री० बोड़ा (छत्तीस०) ।

बरबट्टा–पु० बोड़ा ।

बरबत–पु० (अ०) एक बाजा, ऊद ।

बरबर–पु० उत्तरी अफ्रीकाका सहाराके उत्तर और मिस्र तथा भूमध्यसागरके बीचका भूखंड, बर्बर, हब्श । वि० असभ्य, जंगली बर्बर । * स्त्री० दे० 'बड़बड़' ।

बरबराना†–अ० क्रि० दे० 'बड़बड़ाना' ।

बरबरियत–स्त्री० बर्बरता, जंगलीपन ।

बरबरिस्तान–पु० बर्बर देश, अफ्रीका ।

बरबरी–स्त्री० बकरीकी एक जाति । वि० बर्बरका, बर्बरोचित ।

बरबस–अ० जबर्दस्ती, बलपूर्वक; अकारण, व्यर्थ ।

बरबाद–वि० दे० 'बर'के साथ ।

बरम*–पु० दे० 'वर्म' ।

बरमा–पु० लकड़ीमें छेद करनेका औजार; भारतकी पूर्वी सीमासे लगा हुआ एक देश, ब्रह्मदेश ।

बरमी–पु० बरमावासी । स्त्री० बरमाकी भाषा; छोटा बरमा । वि० बरमाका; बरमा-संबंधी ।

बरम्हा*–पु० ब्रह्मा; बरमा ।

बरम्हाउ*–पु० दे० 'बरम्हाव' ।

बरम्हाना, बरम्हावना*–स० क्रि० आशीर्वाद देना ।

बरम्हाव*–पु० ब्राह्मणत्व; आशीर्वाद ।

बरराना–अ० क्रि० दे० 'बर्राना' ।

बररे–पु० बर्रे, भिड़ ।

बरवट–स्त्री० तिल्ली (रोग) ।

बरवा–पु० दे० 'बरवै' ।

बरवै–पु० एक मात्रिक छंद ।

बरषना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'बरसना' ।

बरषा*–स्त्री० दे० 'वर्षा' ।

बरषाना*–स० क्रि० दे० 'बरसाना' ।

बरषासन–पु० दे० 'वर्षाशन' ।

बरस–पु० कालका वह मान जिसमें पृथ्वी सूर्यकी एक बार परिक्रमा करती है, ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट ४६ सेकेंडका समय, वर्ष । –**गाँठ**–स्त्री० जन्मदिवस, सालगिरह; जन्मदिवसका उत्सव । **मु०** –**दिनका दिन,**–**बरसका दिन**–खुशीका दिन, त्योहार जो सालभरके बाद आये ।

बरसना–अ० क्रि० वायुमंडलके जलांशका घनीभूत होकर बूँदोंकी शक्लमें नीचे आना, वर्षा होना; बूँदोंकी तरह गिरना, झड़ना (फूल, रुपये); इफरातसे मिलना; साफ झलकना, टपकना । स० क्रि० बरसाना । **मु० बरस पड़ना**–बहुत क्रुद्ध होकर डाँटना, फटकारना, बक-झक करना ।

बरसाइत–स्त्री० जेठ बदी अमावस्या, वट-सावित्री व्रत; * वर्षाऋतु ।

बरसाइन†–वि० स्त्री० हर साल बच्चा देनेवाली (गाय-भैंस) । स्त्री० ऐसी गाय ।

बरसाऊ–वि० बरसनेवाला (बादल) ।

बरसात–स्त्री० वर्षाके दिन, वर्षा ऋतु–मोटे हिसाबसे आषाढ़से आश्विनतकका समय ।

बरसाती–वि० बरसातका; बरसातमें होनेवाला । पु० मोमजामे या दूसरे वाटरप्रूफ कपड़ेका बना हुआ ओवरकोट; वाटरप्रूफ; बरसातमें सोने लायक सबसे ऊपरकी मंजिलपर बना हुआ हवादार कमरा या बरामदा; मकानके आगे बना हुआ छतदार फाटक जिसमें घोड़ा-गाड़ी आदि जाकर रुकती हैं; घोड़ेका एक रोग; बरसातमें पैर आदिमें होनेवाले फोड़े; चरस पक्षी ।

बरसाना–स० क्रि० वर्षा करना; वर्षाकी बूँदोंकी तरह गिराना; बड़ी संख्या, मात्रामें फेंकना, बखेरना (फूल) । पु० गोकुलके समीपका एक प्रसिद्ध गाँव जो वृषभानुकुमारी राधाका जन्मस्थान माना जाता है ।

बरसायत–स्त्री० शुभ-मुहूर्त; दे० 'बरसाइत' ।

बरसावना–स० क्रि० दे० 'बरसाना' ।

बरसिंघा–पु० दे० 'बारहसिंगा'; वह बैल जिसका एक सींग ऊपर और दूसरा नीचे गया हो ।

बरसी–स्त्री० मृत्युकी प्रथम वार्षिक तिथिको किया जानेवाला श्राद्ध ।

बरसीला*–वि० बरसानेवाला ।

बरसौंहा*–वि० बरसनेवाला ।

बरहंटा–पु० कड़वा भंटा ।

बरहना–वि० (फा०) नंगा, वस्त्ररहित । –**पा**–वि० नंगे-पावँ ।

बरहमंड*–पु० दे० 'ब्रह्मांड' ।

बरहम–वि० (फा०) परीशान; क्रुद्ध; उद्विग्न; गड्ड-मड्ड, बेतरतीब ।

बरहा–पु० मोटा रस्सा; खेतोंकी सिंचाईके लिए बनी हुई नाली ।

बरही–स्त्री० प्रसूताका शिशु-जन्मके १२ वें दिनका स्नान; उस दिनका उत्सव; * जलानेकी लकड़ीका गट्ठा; मोटी रस्सी । * पु० मोर, बर्ही; साही; मुरगा; अग्नि, वह्नि । –**पीड़***–पु० मोरके पंखोंका मुकुट । –**मुख***–पु० देवता ।

बरहौं*–पु० जन्मके बादका बारहवाँ दिन ।

बरांडल–पु० जहाजमें मस्तूलको सीधा रखनेवाला रस्सा ।

बरांडा–पु० दे० 'बरामदा' ।

बरांडी–स्त्री० दे० 'ब्रांडी' ।

बरा–पु० दे० 'बड़ा'; * वटवृक्ष; बाहुपर पहननेका एक गहना ।

बराई*–स्त्री० दे० 'बड़ाई' ।

बराक–पु० दे० 'वराक'; युद्ध; शिव । वि० शोचनीय; बेचारा; अधम; तुच्छ ।

बराट–पु० दे० 'वराटिका' ।

बराटिका–स्त्री० दे० 'वराटिका' ।

बराड़ी–स्त्री० दे० 'बरारी' ।

बरात–स्त्री० वरके साथ कन्यापक्षके यहाँ जानेवाले लोग, जनेत; दूल्हेकी सवारीका जुलूस; भीड़, मजमा । –**मु०** –**करना**–बरातमें शामिल होना ।

बराती–वि० बरातमें शामिल होनेवाले, वरपक्षकी ओरसे कन्यापक्षके यहाँ जानेवाले । पु० बरातमें आये हुए लोग ।

बरानकोट–पु० (अं० ब्राउनकोट) सिपाहियोंका ऊनी ओवरकोट ।

बराना–स० क्रि० परहेज करना, बचाना, अलग रखना, टालना;

रक्षा करना; चुनना, छाँटना; * जलाना। अ० क्रि० जलना–'नैन दीठ नहिं दिया बराही'–प०।

बराबर–वि० (फा०) समान, तुल्य, सदृश; समतल, हमवार; बल, दरजे आदिमें समान, समकक्ष। अ० लगातार; एक पंक्तिमें; साथ; सदा; तक। **–का**–वि० बल, वय आदिमें समान, जोड़का; सामनेका (बराबरके मकानमें)। **–बराबर**–अ० साथ-साथ, एक पाँतमें; समान भागमें, आधेआध। **मु० –करना**–समतल करना; परिमाण, ऊँचाई आदिमें समान करना; खतम कर देना; बाकी न छोड़ना (सारी कमाई खा-पीकर बराबर कर दी)। **–(पर) छूटना**–कुश्ती, बटेरों आदिकी लड़ाईमें लड़नेवालोंका बिना हारे-जीते अलग हो जाना, किसीकी जीत-हार न होना। **–से निकलना**–पाससे निकलना।

बराबरी–स्त्री० समानता, प्रतिस्पर्द्धा; गुस्ताखी।

बरामद–पु० (फा०) बाहर आना, निकलना, प्रकट होना; निकास; मालकी रवानगी; नदीके हटनेसे निकलनेवाली जमीन, गंगबरार (बर+आमद=ऊपर, बाहर आना)। **–गी**–स्त्री० बरामद होना। **मु० –करना**–छिपी-छिपायी हुई चीजको बाहर लाना, प्रकट करना (चोरीका माल, खजानेसे रुपया)। **–होना**–बाहर आना, प्रकट होना।

बरामदा–पु० (फा०) मकान या बालाखानेकी दीवारसे लगाकर बनाया हुआ सायबान जिसकी छत या छाजन खंभोंपर टिकी हो।

बरामदी–स्त्री० बरामद होनेका भाव।

बराय–अ० (फा०) वास्ते, लिए। **–ख़ुदा**–अ० खुदाके वास्ते, ईश्वरके नामपर। **–नाम**–अ० नामके लिए, दिखानेको। **–बैत** –अ० छंदके अनुरोधसे; पादपूर्तिके लिए। वि० पादपूरक; व्यर्थ, फालतू।

बरायन*–पु० विवाहके समय दूल्हेको पहनाया जानेवाला लोहेका छल्ला; विवाहके समयका कलश।

बरार–पु० एक जंगली जानवर; मध्यप्रदेशका (अब महाराष्ट्रका) एक भाग; (फा०) कर; चंदा। वि० (समासांतमें) लाने, ले जाने, पूरा करनेवाला।

बरारी–स्त्री० एक रागिनी। **–श्याम**–पु० एक संकर राग।

बराव–पु० बरानेका भाव, बचाव, परहेज।

बराबुर्द–स्त्री० (फा० बर–आबुर्द) तनखाहका चिट्ठा; तखमीनेकी फर्द, गोशवारा।

बरास–पु० एक तरहका कपूर जो अधिक सुगंधित होता है, भीमसेनी कपूर।

बरासी–स्त्री० (सं०) एक तरहका कपड़ा।

बराह–पु० दे० 'वराह'। अ० दे० 'ब'में।

बरिअरा*–पु० बला नामकी ओषधि। वि० बलवान्, जबरदस्त, 'बरिआर'।

बरिआई*–स्त्री० जबर्दस्ती। अ० बलपूर्वक।

बरिआत*–स्त्री० दे० 'बरात'।

बरिआर*–वि० बलवान्–'तपबल बिप्र सदा बरिआरा'–रामा०।

बरिच्छा–स्त्री० बरेच्छा, फलदान।

बरिबंड*–वि० बलवान्; प्रचंड, दुर्धर्ष।

बरिया†–स्त्री० बटिका, गोली। वि० दे० 'बरियार'। **–ई***–स्त्री०, अ० दे० 'बरिआई'।

बरियात*–स्त्री० दे० 'बरात'।

बरियार*–वि० बलवान्, शक्तिशाली।

बरियारा–पु० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है।

बरिल†–पु० एक पकवान।

बरिशी–स्त्री० (सं०) मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी।

बरिषना*–अ० क्रि०, स० क्रि० 'बरसना'।

बरिषा*–स्त्री० दे० 'वर्षा'।

बरिस†–पु० दे० 'बरस'।

बरी*–वि० बली; (अ०) आजाद, रिहा; फारिग; निर्दोष। स्त्री० (हिं०) फूंका हुआ कंकड़, कंकड़का चूना; बरकी ओरसे वधूको भेजे जानेवाले आभूषण और पकवान आदि; दे० 'बड़ी'। **–का चूना**–कंकड़का चूना जो पलस्तर आदिके काम आता है।

बरीवर्द–पु० (सं०) बैल।

बरीस*–पु० दे० 'बरस'।

बरीसना*–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'बरसना'।

बरीसनु*–पु० राधाका जन्मस्थान बरसाना।

बरु*–अ० बल्कि; भले ही।

बरुआ, बरुवा†–पु० ब्राह्मणकुमार जिसका उपनयन हो रहा हो; उपनयन; वह गीत जिसे गाकर भिक्षा-वृत्तिवाले ब्राह्मण उपनयनके निमित्त भीख माँगते हैं; बंगाली ब्राह्मणोंका एक भेद; मूंजका छिलका जिससे डलिया आदि बनाते हैं। वि० दुष्ट, शरारती।

बरुक*–अ० दे० 'बरु'।

बरुन*–पु० दे० 'वरुण'।

बरुना–पु० एक पेड़। स्त्री० दे० 'वरुणा'।

बरुनी–स्त्री० दे० 'बरौनी'।

बरूथ–पु० दे० 'वरूथ'।

बरूथी–स्त्री० उत्तर प्रदेशकी एक छोटी नदी।

बरेंड़ा†–पु० ठाटके नीचे लंबाईमें दिया जानेवाला गोला बल्ला।

बरेंड़ी†–स्त्री० छोटा बरेंडा।

बरे*–अ० ऊँची आवाजसे; बलपूर्वक; बदलेमें, लिये।

बरेखी, बरेषी–स्त्री० ब्याहकी ठहरौनी, मँगनी; बाँहपर पहननेका एक गहना।

बरेच्छा–स्त्री० ब्याहकी ठहरौनी।

बरेज, बरेजा–पु० पानकी बाड़ी।

बरेठ, बरेठा–पु० धोबी।

बरेत*–स्त्री० मथानीकी रस्सी।

बरेता–पु० सनका मोटा रस्सा।

बरेदी†–पु० चरवाहा।

बरेव†–पु० दे० 'बरेज'।

बरेषी–स्त्री० दे० 'बरेखी'।

बरैंड़ा–पु० दे० 'बँड़ेरा'।

बरो–पु० एक घास।

बरोबर–वि० बराबर।

बरोक–पु० वह धन जो कन्यापक्षकी ओरसे वरपक्षको इसलिए दिया जाता है कि ब्याहकी बातचीत पक्की समझी जाय, फलदान (वर–रोक)। अ० बलपूर्वक–'होइ सो बेलि जेहि बारी, आनहिं सबै बरोक'–प०।

बरोठा, बरौठा–पु० डेवढ़ी; बैठक। **–(ठे)का चार**–द्वार पूजा।

बरोरु*–वि० स्त्री० दे० 'वरोरु'।

बरोह–पु० बरगद, पाकड़ आदिकी डालियोंसे निकलनेवाली प्रशाखा जो धीरे-धीरे जमीनतक पहुँचकर जड़ पकड़ लेती है, बरगदकी जटा।

बरौंछी–स्त्री० सूअरके बालोंकी कूंची जिससे सुनार गहना साफ करते हैं।

बरौनी–स्त्री० पलकके किनारेके बाल; † पानी भरने आदिका काम करनेवाली टहलनी, कहारिन।

बरौरी*–स्त्री० बड़ी।

बर्क़–स्त्री० (अ०) बिजली, विद्युत्। **–ज़दा**–वि० जिसपर बिजली गिरी हो, बिजलीका मारा हुआ। **–ताब**–वि० बिजलीकी तरह चमकनेवाला। **–दम**–वि० बहुत तेज दौड़ने, भागनेवाला; धारदार, तीक्ष्ण। **–नुमा**–पु० विद्युत्की स्थिति मालूम करनेका आला। **–रफ्तार**–वि० अति द्रुतगामी।

बर्क, एडमंड–पु० अंग्रेज लेखक, वक्ता तथा राजनीतिज्ञ जो ब्रिटिश पार्लिमेंटका सदस्य था और फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिकी कराधान, वारेन हेस्टिंग्सका मामला आदि विषयोंपर किये भाषणोंके लिए प्रसिद्ध है (१७२९-१७९७)।

बर्कत–स्त्री० दे० 'बरकत'।

बर्कर–वि० (सं०) बहरा। पु० बकरी या भेड़का बच्चा; बकरा; खेल, परिहास।

बर्क़ी–वि० बिजलीका; बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाला। (–पंखा, रेलवे इ०)।

बर्खास्त–वि० दे० 'बरख़ास्त'।

बर्ग–पु० (फा०) पत्ता; लड़ाईका हथियार।

बर्छा–पु० दे० 'बरछा'।

बर्ज*–वि० दे० 'वर्य'।

बर्जना–स० क्रि० दे० 'बरजना'।

बर्णन–पु० दे० 'वर्णन'।

बर्णना*–स० क्रि० वर्णन करना। स्त्री० दे० 'वर्णना'।

बर्तन–पु० दे० बरतन।

बर्तना, बर्त्तना–स० क्रि० दे० 'बरतना'।

बर्ताव–पु० दे० 'बरताव'।

बर्तुल–वि० दे० 'वर्तुल'।

बर्द–पु० बैल।

बर्दाश्त–स्त्री० दे० 'बरदाश्त'।

बर्न*–पु० दे० 'वर्ण'।

बर्नना*–स० क्रि० वर्णन करना। स्त्री० दे० 'वर्णना'।

बर्नर–पु० (अं०) लंपका वह हिस्सा जिसमें लगी हुई बत्ती मुँहपर जलती है।

बर्नार्ड शा–पु० (जार्ज) १८५६-१९५०; अंग्रेजी भाषाका सुप्रसिद्ध आयरिश नाटककार जो अपनी चुभती उक्तियोंके लिए तथा कपटाचारका भंडाफोड़ करनेके कारण अत्यंत लोकप्रिय हो गया था।

बर्फ़–स्त्री० (फा०) जमा हुआ पानी; वायुमंडलकी नमी जो सरदीसे घनीभूत होकर रुईके गालेकी शक्लमें जमीनपर गिरती और फिर जमकर कड़ी हो जाती है; बर्फमें रखकर जमाया हुआ दूध, फलोंका रस आदि। वि० बर्फ जैसा ठंढा; बर्फ-सा सफेद (होना, हो जाना)। **–की नदी**–हिमानी, ग्लेशियर, हिमनद। **–की कुलफ़ी**–बर्फके योगसे कुलफीमें जमाया हुआ दूध आदि। मु०–**गिरना, –पड़ना**–आकाशसे बर्फका गिरना, हिमपात।

बर्फ़ानी–वि० (फा०) बर्फका; बर्फसे ढका हुआ (पहाड़)।

बर्फ़ी–स्त्री० दे० 'बरफ़ी'।

बर्फ़ीला–वि० बर्फसे युक्त, ढका हुआ (बर्फीली–स्त्री०)।

बर्बट–पु० (सं०) राजमाष।

बर्बटी–स्त्री० (सं०) राजमाष; वेश्या। † घोड़ा। (छत्तीस०)।

बर्बर–वि० (सं०) असभ्य, जंगली, उजड्ड; अनार्य; घुँघराले। पु० घुँघराले बाल; जंगली, असभ्य आदमी; एक कीड़ा; एक मछली; एक सुगंधित तृण; हथियारोंकी आवाज; एक तरहका नृत्य।

बर्बरा–स्त्री० (सं०) बनतुलसी; एक नदी; एक तरहकी मक्खी; एक फूल; पीत चंदन।

बर्बरी–स्त्री० (सं०) बनतुलसी; इंगुर; बकरीकी एक नस्ल।

बर्बरी(रिन्)–वि० (सं०) घुँघराले बालोंवाला।

बर्रा†–पु० भिड़।

बर्राक–वि० (अ०) चमकता हुआ; तेज, द्रुतगामी; चतुर।

बर्राना–अ० क्रि० सपना देखते हुए आदमीका बोलना; बड़बड़ाना, प्रलाप करना।

बर्रे†–पु० भिड़, ततैया; सरसोंके आकारका एक काँटेदार पौधा जिसमें केसरिया रंगके फूल लगते हैं और बीज तेलहनके काम आता है।

बर्रों–पु० एक तरहकी चिड़िया।

बर्सात–स्त्री० दे० 'बरसात'।

बर्ह–पु० (सं०) दे० 'वर्ह'।

बर्हण–वि० (सं०) शक्तिशाली; फाड़ने या खींच लेनेवाला; चकाचौंध पैदा करनेवाला। पु० पत्ता; खींचने, फाड़नेकी क्रिया।

बर्ही(र्हिन्)–पु० (सं०) दे० 'वर्ही'।

बलंद–वि० 'बुलंद'।

बलंदी–स्त्री० दे० 'बुलंदी'।

बलंधरा–स्त्री० भीमसेनकी पत्नी।

बल–पु० (सं०) शरीरकी शक्ति, ताकत; (फोर्स) वह कारक जो किसी पिण्डकी विरामावस्था या गतिकी अवस्थामें परिवर्तन उत्पन्न कर सके। (इसकी नाप 'डाइन' या 'पौण्डल'में करते हैं।) स्थूलता; सेना; शुक्र; बलराम; इंद्रके हाथों मारा गया एक राक्षस; भरोसा, सहारा (हिं०); बलका गर्व; अधपका जौ; कौआ; वरुण वृक्ष। **–कंद**–पु० बालाकंद। **–कर, –कारक**–वि० बल देनेवाला। **–काम**–वि० बलका इच्छुक। **–काय**–पु० सेना। **–चक्र**–पु० सेना; राज्य, साम्राज्य। **–ज**–वि० बलसे उत्पन्न; बलजात। पु० नगरका द्वार; खेत; फसल; अन्नकी राशि; युद्ध। **–जा**–स्त्री० पृथ्वी; एक तरहकी जुही; सुंदर स्त्री; रस्सी। **–द**–पु० बैल, जीवक; गृह्याग्निका एक भेद। वि० बल देनेवाला। **–दर्प**–पु० बलका घमंड। **–दा**–स्त्री० अश्वगंधा। **–दाऊ***–पु० बलराम। **–देव**–पु० बलराम; वायु। **–द्विट्(ष्)** पु० इंद्र। **–नाशन**–पु० इंद्र। **–पति**–पु० सेनापति; इंद्र। **–परीक्षण**–पु० (शो-डाउन) परस्पर-द्वेषी दलों द्वारा (अंततोगत्वा) एक दूसरेकी शक्ति या बलकी परीक्षा लेनेके लिए किया जानेवाला प्रयत्न, अंतिम परीक्षा। **–पांडुर**–पु० कुंदका पौधा। **–पुच्छक**–पु० कौआ। **–पृष्ठक**–पु० रोहू मछली। **–प्रमथनी**–स्त्री० दुर्गाका एक रूप। **–प्रयोग**–पु० शक्तिके जोरसे काम कराना। **–प्रसू**–स्त्री० बलरामकी माता, रोहिणी। **–बीज**–पु० कंघीके बीज। **–बीर, –वीर***–पु० कृष्ण (बलरामके भाई)। **–बूता**–पु० (हिं०) ताकत, जोर। **–भद्र**–पु० बलवान् पुरुष; बलराम; नीलगाय; अनंत; लोध्र। **–भद्रा**–स्त्री० त्रायमाणा; लोध; घृतकुमारी। **–मद**–पु० बलका घमंड। **–मुख्य**–पु० सेना-नायक। **–राम**–पु० कृष्णके बड़े भाई जो रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, बलदेव, हलधर। **–वर्जित**–वि० निर्बल। **–वर्धन**–वि० बल बढ़ानेवाला। **–वर्धिनी**–स्त्री० जीवक। **–वर्धी(र्धिन्)**–वि० बल बढ़ानेवाला। **–विकर्णिका**–स्त्री० दुर्गाका एक नाम। **–विन्यास**–पु० सेना-व्यूहन। **–व्यसन**–पु० सेनाकी पराजय। **–व्यूह**–पु० एक समाधि। **–शाली(लिन्)**–वि० बलयुक्त, बली। **–शील***–वि० बलशाली। **–साम्य**–पु० (बैलेंस ऑफ पावर) दे० 'शक्ति-संतुलन'। **–सूदन**–पु० इंद्र। **–स्थिति**–स्त्री० शिविर, छावनी। **–हा(हन्)**–पु० सेनाका नाश करनेवाला; श्लेष्मा; इंद्र। **–हीन**–वि० निर्बल, कमजोर। मु० **(किसीके)–पर कूदना**–किसीके भरोसे इतराना। **–भरना**–ताकत दिखलाना, जोरमें आना।

बल–पु० पहलू, बगल, करवट; ऐंठन; शिकन; फेरा; टेढ़ापन; लचक; फर्क; घाटा। मु० **–आना**–शिकन पड़ना; फर्क आना। **–उतरना**–शिकन दूर होना। **–की बात**–शरारत या चालाकीकी बात। **–की लेना**–घमंड करना। **–खाना**–नाराज होना; टेढ़ा होना; लचकना; घाटा सहना। **–खुलना**–सीधा होना। **–देना**–ऐंठना, मरोड़ना। **–निकालना**–टेढ़ापन या शिकन दूर करना। **–पड़ना**–घाटा होना; फर्क होना; शिकन आना।

बलक–पु० (सं०) आधी रातके बादका स्वप्न; शीरे और दूधका शरबत।

बलकटी–स्त्री० राज-करकी किश्त जो मुसलमानी राज्यकालमें फसल काटनेके समय वसूल की जाती थी।

बलकना, बलगना†–अ० क्रि० उमगना, जोशमें आना; इतरा कर बोलना, बलबलाना।

बलकनि*–स्त्री० प्रवाह, उल्लास, जोश–'रस-बलकनि उनमदि न कहूँ सके'–घन०।

बलकल*–पु० दे० 'वल्कल'।

बलका†–पु० काढ़ा।

बलकाना–स० क्रि० उबालना; उमगाना, उसकाना।

बलक्ष–वि० (सं०) श्वेत, सफेद। पु० सफेद रंग। **–गु**–पु० चंद्रमा।

बलख–पु० अफगानिस्तानका प्राचीन नगर बल्ख।

बलग़म–पु० (अ०) कफ, श्लेष्मा।

बलग़मी–वि० कफप्रधान (प्रकृति); कफजन्य (रोग)।

बलटुट, बलतोड़–पु० बाल टूटनेसे होनेवाला फोड़ा।

बलदिया–पु० गाय-बैल चरानेवाला।

बलन–पु० (सं०) बलवान् बनानेकी क्रिया।

बलना–अ० क्रि० जलना, दहकना।

बलबलाना–अ० क्रि० ऊँटका बोलना; बड़बड़ाना; उफनना।

बलबलाहट–स्त्री० बलबलानेकी क्रिया; ऊँटकी बोली।

बलभ–पु० (सं०) एक जहरीला कीड़ा।

बलभी–स्त्री० सबसे ऊपरकी छत; उसपरकी कोठरी।

वलम*–पु० प्रियतम ।

वलमीक–पु० बाँबी ।

वलय*–पु० दे० 'वलय' ।

वलया*–स्त्री० दे० 'वलय' ।

वलल–पु० (सं०) वलराम; † इंद्र ।

वलवंड*–वि० दे० 'वलवंत' ।

वलवंत*–वि० वलवान् ।

वलवत्ता–स्त्री० (सं०) वलवान् होनेका भाव, शक्तिमत्ता ।

वलवा–पु० दंगा, फसाद, उपद्रव; विप्लव, वगावत; पाँचसे अधिक आदमियोंका मिलकर एक या अधिक आदमियोंको मारना (का०) । **–ई**–वि०, पु० वलवा करनेवाला, विद्रोही, वागी ।

वलवान्(वत्)–वि० (सं०) शक्तिशाली, वली, ताकतवर ।

वलवार*–वि० वलवान्–'सहित वीर वानर वलवारे'–रघुराज सिंह ।

वलसुम–वि० वलुआ, रेतीला ।

वलांगक–पु० (सं०) वसंत ऋतु ।

वला–स्त्री० (सं०) वरियारा; एक मंत्र जिसके प्रयोगसे योद्धाको भूख-प्यास नहीं लगती; पृथ्वी; दक्षकी एक कन्या; छोटी वहनका संवोधन (ना०) । **–चतुष्टय**–पु० वला (वरियारा), महावला (सहदेवी), अतिवला (कँगनी) और नागवला (गँगेरन) इन चार पौष्टिक ओषधियोंका समूह । **–पंचक**–पु० वलाचतुष्टय और राजवला ।

वला–स्त्री० (अ०) कष्ट, आपत्ति, आफत; भूत-प्रेत, प्रेतवाधा; रोग-व्याधि; वहुत कष्ट देनेवाली वस्तु, व्यक्ति । **–कश**–वि० मुसीवतें उठाने, कठिनाइयाँ झेलनेवाला । **–का**–वि० प्रवल, तीव्र । **–नसीव**–वि० अभागा । **–नोश**–वि० वहुत खानेवाला; वहुत शराव पीनेवाला । **–(ये)आसमानी**–स्त्री० अचानक आनेवाली विपत, दैवकोप । **–जान**–स्त्री० जीका जंजाल, झंझट । **–नागहान,–नागहानी**–स्त्री० आकस्मिक विपत्ति । **–वद**–स्त्री० वुरी वला । मु० **–उतरना**–विपत आना, दैवकोप होना । **(किसीकी)– कुछ करे या करने जाय**–नहीं करना । **–का**–गजव का, हद दरजे का । **(मेरी)–जाने**–मैं न जानता हूँ न जानने की गरज है । **–टलना**–कष्टसे, परीशानीसे या तंग करनेवाले आदमीसे छुटकारा मिलना । **–पीछे लगना**–वखेड़ा साथ होना । **–मोल लेना**–जान-वूझकर झंझट-झमेलेमें पड़ना । **(मेरी)–से**–कुछ परवा नहीं, (मेरी) जूतीकी नोकसे । **वलायें लेना**–किसीकी वला, रोग-व्याधि अपने ऊपर लेना ।

वलाइ*–स्त्री० दे० 'वला' (अ०) ।

वलाक–पु० (सं०) वगला; एक पुराण-वर्णित राजा; पुरुका पुत्र ।

वलाका–स्त्री० (सं०) प्रिया; कामुक स्त्री; वगली; वकपंक्ति; नृत्यका एक भेद ।

वलाकाश्व–पु० (सं०) जह्नु-वंशका एक राजा ।

वलाकिका–स्त्री० एक तरहका छोटा वगला ।

वलाकी(किन्)–वि० (सं०) वगलोंसे पूर्ण, जहाँ वहुतसे वगले हों । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

वलाग्र–पु० (सं०) सेनानायक; वहुत वड़ी शक्ति ।

वलाट–स्त्री० (सं०) मूँग ।

वलाढ्य–वि० (सं०) वलवान् । पु० उरद ।

वलात्–अ० (सं०) वलपूर्वक, जवर्दस्ती । **–कार**–पु० वलपूर्वक, जवरदस्ती कुछ करना; वलप्रयोग; अन्याय; अत्याचार; स्त्रीकी इच्छाके विरुद्ध वलपूर्वक किया जानेवाला संभोग; महाजनका ऋणीको रोककर और मार-पीटकर पावना वसूल करना (स्मृ०) । **–कृत**–वि० जिसपर वलात्कार किया गया हो, जिससे जवर्दस्ती कुछ कराया गया हो ।

वलात्काराभिगम–पु० (सं०) वलपूर्वक किया जानेवाला संभोग ।

वलात् सत्तापहरण–पु० (कूडेटा) दे० 'शासनिक विपर्यय' ।

वलादवतरण–पु० (फोर्स्ड लैंडिंग) इंजनकी खरावी आदिके कारण हवाई जहाजका हठात् भूमिपर उतर पड़ना ।

वलादवतरित–वि० (फोर्स्ड लैंडेड) जो इंजनकी खरावी आदिके कारण भूमिपर उतर पड़नेको वाध्य हो गया हो (विमान) ।

वलाद्ग्रहण–पु० (एग्जैक्शन) रुपया-पैसा आदि किसीसे वलपूर्वक ले लेना; धन-संवंधी अनुचित माँग ।

वलाधिक–वि० (सं०) अधिक वलवाला ।

वलाधिकरण–पु० (सं०) सेनाकी काररवाई ।

वलाधिकृत–पु० (मार्शल) सेनाका सर्वोच्च पदाधिकारी ।

वलाधिक्य–पु० (सं०) वलकी अधिकता ।

वलाध्यक्ष–पु० (सं०) सेनापति ।

वलानुज–पु० (सं०) कृष्ण ।

वलान्नयन–पु० (सं०) चालकको वेकावू कर या किसी तरहकी धमकी देकर वायुयान आदिको गन्तव्य स्थानकी ओर न जाने देकर अन्यत्र ले जानेके लिए वाध्य करनेका कार्य (हाईजैकिंग) ।

वलान्वित–वि० (सं०) वली, वलशाली ।

वलावल–पु० (सं०) वल और वलाभाव; (दो पक्षों आदिका) तुलनात्मक वल और निर्वलता, महत्त्व और महत्त्वहीनता ।

वलाय–पु० (सं०) वरुण वृक्ष । स्त्री० (हिं०) दे० 'वला' (अ०) । मु० **–लेना**–दे० 'वलायें लेना' ।

वलाराति–पु० (सं०) इंद्र ।

वलालक–पु० (सं०) जल-आँवला ।

वलावलेप–पु० (सं०) वलका घमंड ।

वलाश, वलास–पु० (सं०) कफ; क्षय । **–वस्त**–पु० आँखका एक रोग । **–वर्धन**–वि० कफ वढ़ानेवाला ।

वलासक–पु० (सं०) रोगके कारण आँखके सफेद हिस्सेमें वना हुआ पीला दाग ।

वलासी(सिन्)–वि० (सं०) क्षयरोगसे ग्रस्त ।

वलाह–पु० (सं०) जल ।

वलाहक–पु० (सं०) वादल; मोथा; सर्पोंका एक भेद; एक पर्वत ।

वलाहर–पु० धीवरोंकी एक जाति; चौकीदार ।

वलिदम–पु० (सं०) विष्णु ।

वलि–पु० (सं०) विरोचनका पुत्र दैत्यराज जिसे पुराणोंके अनुसार विष्णुने वामनरूप धरकर छला; चँवरका दंड । स्त्री० देवताको चढ़ायी जानेवाली चीज, चढ़ावा, नैवेद्य; पूजा; वलिपशु; जमीनकी उपजका भाग जो राजाको मिले, राजकर; पंच महायज्ञोंके अंतर्गत चौथा, भूतयज्ञ; वल, सिकुड़न; पेटमें नाभिके ऊपर पड़नेवाली रेखा; ववासीरका मस्सा; गुदावर्तके पास होनेवाला एक फोड़ा; छाजनका छोर; * सखी । **–कर**–वि० कर देनेवाला; वलि चढ़ानेवाला; झुर्री पैदा करनेवाला । **–कर्म(न्)**–पु० भूतयज्ञ; पूजा; राजकर देना । **–दान**–पु० देवताको पूजनसामग्रीका अर्पण; देवताके उद्देश्यसे पशुवध करना, कुरवानी । – **–द्विट्(ष्)**–पु० विष्णु । **–ध्वंसी(सिन्)**–पु० विष्णु । **–नंदन, –पुत्र,–सुत**–पु० वाणासुर । **–पशु**–पु० वह पशु जिसका किसी देवताके प्रीत्यर्थ वध किया जाय । **–पुष्ट,–भुक्(ज्)**–पु० कौआ । **–पोदकी**–स्त्री० वड़ी पोय । **–प्रिय**–पु० लोधका पेड़ । **–वंधन**–पु० विष्णु । **–भृत्**–वि० कर देनेवाला, अधीन । **–भोज,–भोजन**–पु० कौआ । **–मंदिर,–वेश्म(न्),–सद्म(न्)**–पु० पाताल लोक । **–मुख**–पु० वंदर । **–वैश्वदेव**–पु० भूतयज्ञ । **–हरण**–पु० सव जीवोंको वलि देना । **–हा(हन्)**–पु० विष्णु । मु० **–चढ़ना**–वलिदान होना, मारा जाना । **–चढ़ाना**–वलि देना । **–जाना**–निछावर होना ।

वलिक–पु० (सं०) एक नाग ।

वलित*–वि० वलि चढ़ाया हुआ. मारा हुआ; दे० 'वलित' ।

वलिनी–स्त्री० (सं०) अतिवला; वरियारा ।

वलिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वल, ताकत ।

वलिया†–वि० वलवान् ।

वलिवर्द–पु० (सं०) दे० 'वलीवर्द' ।

वलिश–पु० (सं०) कँटिया, वंसी ।

वलिष्ठ–वि० (सं०) सवसे अधिक वली, अतिशय वलवान् । पु० ऊँट ।

वलिष्ठातिजीवन–पु० (सर्वाइवल ऑफ दि फिटेस्ट) सामाजिक और प्राकृतिक जीवन-संघर्षमें सवसे योग्यों या वलिष्ठोंका जीवित वचे रहना ।

बलिष्णु–वि० (सं०) अपमानित ।

बलिहारना*–स० क्रि० निछावर करना ।

बलिहारी–स्त्री० निछावर होना, कुर्बान जाना । मु० –जाना–निछावर होना । –लेना–बलायें लेना ।

बली–स्त्री० (सं०) त्वचापर शिकनसे पड़ी हुई रेखा, बलि; * लता । –मुख–पु० बंदर ।

बली(लिन्)–वि० (सं०) बलवान्, ताकतवर । पु० भैंसा; साँड़; ऊँट; सूअर; बलराम; सैनिक; कफ; एक तरहकी चमेली ।

बलीक–पु० (सं०) छप्परका किनारा ।

बलीन–पु० (सं०) बिच्छू ।

बलीवर्द–पु० (सं०) साँड़; बैल ।

बलुआ–वि० जिसमें बालू अधिक मिला हो, रेतीला । पु० बलुई जमीन ।

बलूच–पु० बलूचिस्तानमें बसनेवाली एक जाति ।

बलूचिस्तान–पु० हिंदुस्तानके पश्चिममें अवस्थित एक देश ।

बलूची–पु० बलूचिस्तानका निवासी । स्त्री० बलूचिस्तानकी भाषा ।

बलूत–पु० (अ०) ठंडे देशोंमें होनेवाला एक पेड़ जिसे यूरोपवाले पवित्र मानते हैं ।

बलूल–वि० (सं०) बलवान्, शक्तिशाली ।

बलूला–पु० पानीका बुलबुला ।

बलैया*–स्त्री० दे० 'बला' । मु० –लेना–दे० 'बलायें लेना' ।

बल्कल–पु० दे० 'वल्कल' ।

बल्कस–पु० (सं०) आसवकी तलछट ।

बल्कि–अ० (फा०) किंतु, प्रत्युत; अच्छा हो कि (बल्कि तुम कल आओ) ।

बल्ब–पु० (अं०) शीशेकी नलीका अधिक चौड़ा भाग; पतले शीशेका खोखला लट्टू जिसके भीतर बिजलीकी बत्ती होती है ।

बल्य–वि० (सं०) बलवान्; बलकारक । पु० बौद्ध भिक्षु; शुक्र, वीर्य ।

बल्या–स्त्री० (सं०) अतिबला; अश्वगंधा; प्रसारिणी; शिमृडी ।

बल्लभ–वि०, पु० दे० 'वल्लभ' ।

बल्लभी–स्त्री० प्रिया; * छत–'ताकी बर बल्लभी, विचित्र अति ऊँची, जासों निपटै नजीक सुरपतिको अगार हैं' (काव्यांगकौ०); दे० 'वल्लवी' ।

बल्लम–पु० डंडा; भाला; चाँदी या सोनेका पत्तर चढ़ा हुआ सोंटा जिसे राजाओं, दूल्हों आदिकी सवारीके अगल-बगल लेकर चलते हैं, सोंटा । –बरदार–पु० बल्लम लेकर चलनेवाला, अनुचर ।

बल्लमटेर–पु० स्वयंसेवक, 'वालंटियर' ।

बल्लरी–स्त्री० दे० 'वल्लरी' ।

बल्लव–पु० (सं०) चरवाहा, ग्वाला; रसोइया, पाचक; विराटके यहाँ पाचकका काम करते समय भीमका नाम ।

बल्लवी–स्त्री० (सं०) ग्वालिन, गोपी ।

बल्ला–पु० लकड़ीका लंबा, सीधा लट्ठा; नाव खेनेका डाँड़ा या बाँस; गेंद मारनेका चपटा डंडा, बैट; होलीमें डालनेके लिए गोबरकी सुखायी हुई खोखली-सी टिकिया ।

बल्लारी–स्त्री० एक रागिनी ।

बल्ली–स्त्री० छोटा बल्ला; डाँड़ा; * लता ।

बल्लेबाज–पु० (बैट्समैन) क्रिकेट या गेंद-बल्लेके खेलमें वह खिलाड़ी जो अपनी ओर आते हुए गेंदपर प्रहार करता है और अवसर देखकर 'रन' बनानेके लिए एक विकेटसे दूसरे विकेटकी ओर दौड़ता है ।

बल्लेबाजी–स्त्री० (बैट्समैनशिप) (गेंद-बल्लेके खेलमें) बल्लेसे गेंदपर प्रहार करनेकी क्रिया या कला ।

बल्व–पु० (सं०) एक करण (ज्यो०) ।

बल्वज–पु०, **बल्वजा**–स्त्री० (सं०) एक मोटी घास ।

बल्वल–पु० (सं०) एक दैत्य जो बलरामके हाथों मारा गया ।

बल्हिक, बल्हीक–पु० (सं०) बलख देश या वहाँका निवासी ।

बवँड़ना†–अ० क्रि० बेकार घूमना ।

बवंडर–पु० बगूला, अंधड़ ।

बवंडा*–पु० बवंडर ।

बवँड़ियाना†–अ० क्रि० भटकना ।

बव–पु० (सं०) ज्योतिषके करणोंमेंसे पहला ।

बवघूरा*–पु० बगूला ।

बवन*–पु० दे० 'वमन' ।

बवना*–स० क्रि० बोना; बिखेरना । अ० क्रि० बिखरना । वि०, पु० बौना ।

बवरना*–अ० क्रि० दे० 'बौरना' ।

बवाल–पु० बखेड़ा, फसाद ।

बवासीर–स्त्री० (अ०) एक रोग जिसमें गुदामें मस्से पैदा हो जाते हैं ।

बशर–पु० आदमी ।

बशर्ते–अव्य० दे० 'ब'में ।

बशिष्ठ–पु० दे० 'वसिष्ठ' ।

बशीरी–पु० एक तरहका बारीक रेशमी कपड़ा ।

बष्कय–वि० (सं०) (बछड़ा) जो काफी बड़ा हो गया हो ।

बष्कयणी, बष्कयनी, बष्कयिणी, बष्कयिनी–स्त्री० (सं०) वह गाय, जिसका बछड़ा काफी बड़ा हो गया हो, बकेना ।

बष्किह–वि० (सं०) जरा-जीर्ण ।

बष्ट–वि० (सं०) मूर्ख, अज्ञान ।

बसंत–पु० दे० 'वसंत'; एक पौधा ।

बसंता–पु० एक चिड़िया ।

बसंती–वि० बसंतका; बसंती रंगका । पु० हलका पीला रंग; पीला कपड़ा ।

बसंदर*–पु० दे० 'वैश्वानर' ।

बस–पु० वश, शक्ति, काबू । –का–काबूका, इख्तियारका ।

बस*–वि० सुवासित ।

बस–स्त्री० (अं०) यात्रियोंको ढोनेवाली लारी । अ० (फा०) काफी, अलम्; बहुत; इतना ही; (आज्ञा अर्थमें) ठहरो, रुको । –करो–ठहरो, रुक जाओ, खतम करो ।

बसति*–स्त्री० दे० 'बस्ती' ।

बसन–पु० दे० 'वसन' ।

बसना–अ० क्रि० स्थायी रूपसे रहना; टिकना, ठहरना; आबाद होना; मनुष्योंका रहने लगना; * बैठना–'प्यारपगी पगरी पियकी बसि भीतर आपने सीस सँवारी'–देव; बसाया जाना, सुगंधसे बासा जाना । पु० बेठन; थैली; रुपये रखनेकी जालीदार थैली; † बरतन ।

बसनि*–स्त्री० वास, रहाइश ।

बसनी†–स्त्री० रुपये रखकर कमरमें बाँधनेकी एक प्रकारकी लंबी थैली ।

बसर–स्त्री० (फा०) गुजर, निर्वाह (करना, होना) । –औकात–स्त्री० निर्वाह, जीवन-यापन ।

बसवार*–पु० तड़का, छौंक । वि० सोंधा ।

बसवास*–पु० वास, रहना; रहनेका ठिकाना; रहनेका ढंग ।

बसह*–पु० बैल ।

बसाँधा*–वि० बासा हुआ, सुवासित ।

बसा–स्त्री० दे० 'वसा'; * बर्रै, भिड़; एक तरहकी मछली ।

बसात–स्त्री० दे० 'बिसात' ।

बसाना–स० क्रि० बसनेको प्रेरित करना; बसनेका प्रबंध करना; आबाद करना; टिकाना; बासना, सुवासित करना; * बिठाना । अ० क्रि० बस चलना–'तन मन हारेहूँ हँसैं; तिनसों कहा बसाय'–वि०; बसना; गंध देना; बदबू करना ।

बसिआना, बसियाना†–अ० क्रि० बासी हो जाना ।

बसिऔरा, बसियौरा†–पु० रातमें होनेवाले कुछ पूजनोंका अगला दिन जब घरके सब लोग रातका पका हुआ बासी ही खाना खाते हैं; बासी भोजन ।

बसिया†–वि० बासी । पु० बासी भोजन ।

बसिष्ठ–पु० दे० 'वसिष्ठ' ।

बसीकत, बसीगत*–स्त्री० बस्ती; बसनेकी क्रिया, निवास ।

बसीकर*–वि० दे० 'वशीकर' ।

बसीकरन*–पु० दे० 'वशीकरण' ।

बसीठ–पु० दूत, संदेशवाहक ।

बसीठी–स्त्री० दूतका काम, दौत्य ।

बसीत–पु० सूर्यका अक्षांश जाननेका यंत्र जो जहाजपर रहता है । कमान ।

बसीता–पु० बस्ती ।

बसीत्यो*–पु० बस्ती, निवासस्थान ।

बसीना*–पु० निवास; रहाइश ।

बसीला–वि० बासवाला, गंधयुक्त; दुर्गंधयुक्त ।

बसु–पु० दे० 'वसु' । **–देव**–पु० दे० 'वसु'में । **–धा**–स्त्री० दे० 'वसु'में ।

बसु–पु० दे० 'जगदीशचंद्र वसु', 'सुभाषचंद्र वसु' । * पशु ।

बसुमती–स्त्री० दे० 'वसुमती' ।

बसुरी†–स्त्री० बाँसुरी ।

बसूला–पु० एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी काटता-छीलता है ।

बसूली–स्त्री० छोटा बसूला; वह औजार जिससे राज ईंटें गढ़ता-छीलता है ।

बसेंधा–वि० गंध युक्त, खुशबूदार ।

बसेरा–पु० रात बितानेका स्थान, टिकनेका ठिकाना; अस्थायी निवास; वह जगह जहाँ चिड़ियाँ रात बितावें, घोंसला; रहना, टिकना; रहनेवाला । मु० **–करना,–लेना**–रातमें टिकना, बसना ।

बसेरी*–पु० बसने-टिकनेवाला ।

बसैया*–पु० बसनेवाला ।

बसोवास*–पु० वासस्थान ।

बसोर†–पु० बाँसकी डलिया, सूप आदि बनानेवाला, (बुंदेल०), बँसोड ।

बसौंधी–स्त्री० सुवासित और लच्छेदार रबड़ी ।

बस्ट–पु० (अं०) छाती; वह चित्र या मूर्ति जिसमें कमरसे ऊपरका भागभर दिखाया गया हो ।

बस्त–स्त्री० दे० 'वस्तु' (केवल 'चीज'के साथ समासमें प्रयुक्त) । पु० (सं०) बकरा, सूर्य । **–कर्ण**–पु० सालका पेड़ । **–गंधा,–मोदा**–स्त्री० अजमोदा । **–मुख**–वि० बकरे जैसे मुखवाला । **–शृंगी**–स्त्री० मेढासींगी ।

बस्तर†–पु० दे० 'वस्त्र' । **–मोचन**–पु० किसीके बदनपर लँगोटीतक न रहने देना, सब कुछ छीन लेना ।

बस्तांबु–पु० (सं०) बकरेका मूत्र ।

बस्ता–वि० (फा०) बँधा हुआ (दस्त-बस्ता, कमर-बस्ता); तह किया हुआ । पु० वह कपड़ा जिसमें किताबें या कागज-पत्र बाँधे जायँ, बेठन; बेठनमें बँधी हुई पुस्तकें, कागजपत्र । मु० **–बाँधना**–कागजपत्र समेटना, (दफ्तर, मदरसेसे) जानेकी तैयारी करना ।

बस्ताजिन–पु० (सं०) बकरेका चर्म ।

बस्तार–पु० पुलिंदा ।

बस्ति–स्त्री० दे० 'वस्ति' ।

बस्ती–स्त्री० बसनेका भाव; आबादी, आबाद घरोंका समूह, गाँव, कसबा इ०; स्थानविशेषमें बसनेवाले लोग, आबादी (छोटी, बड़ी बस्ती, दस हजारकी बस्ती) ।

बस्तु–स्त्री० दे० 'वस्तु' ।

बस्त्र–पु० दे० 'वस्त्र' ।

बस्य–वि० अधीन, वशमें आनेवाला । पु० अधीनस्थ व्यक्ति; सेवक ।

बहँगा–पु० बड़ी बहँगी ।

बहँगी–स्त्री० बाँसके फट्टेके दोनों छोरोंपर छीका लटकाकर बनाया हुआ बोझ ढोनेका साधन, काँवर ।

बहक–स्त्री० बहकनेका भाव, पथभ्रष्टता; बढ़-बढ़कर या अंड-बंड बोलना, बड़बड़ाहट ।

बहकना–अ० क्रि० ठीक रास्तेसे हटकर गलत रास्तेपर जाना, पथ-भ्रष्ट होना; चूकना; भुलावेमें आना, धोखा खाना; नशेमें अंड-बंड या घमंडमें बढ़-बढ़कर बोलना; * उछलना । मु० **बहकी-बहकी बातें करना**–मदोन्मत्तकी तरह अंड-बंड बकना; बढ़-बढ़कर बोलना ।

बहकाना–स० क्रि० गलत रास्तेपर ले जाना, पथ-भ्रष्ट करना; बुरे, हानिकर कामके लिए प्रेरित करना; भुलावा देना, भरमाना; बहलाना (बच्चोंको) ।

बहकावट–स्त्री० बहकानेकी क्रिया ।

बहकावा–पु० बहकानेवाली बात, भुलावा ।

बहतोल*–स्त्री० पानी बहनेकी नाली ।

बहत्तर–वि० सत्तर और दो । पु० सत्तर और दोकी संख्या, ७२ । **–वाँ**–जो क्रमसे ७१ के बाद ७२ के स्थानपर आये ।

बहन–स्त्री० दे० 'बहिन' । *पु० (वायुका) बहना, झोंका ।

बहना–अ० क्रि० तरल पदार्थका नीचेकी ओर जाना, धाराके रूपमें प्रवाहित होना; धारा या बहावके साथ आगे जाना; हवाका चलना; चूना, स्रवित होना; फूटना, मवाद निकलना; अपनी जगहसे हट जाना; चरित्रभ्रष्ट होना; नष्ट होना; डूब जाना; बहुत सस्ता बिकना; * उठना; चलना । स० क्रि० वहन करना, ढोना; धारण करना, निभाना । मु० **बहती गंगामें हाथ धोना**–ऐसी चीजसे फ़ायदा उठाना जिससे सब उठा रहे हों ।

बहनापा–पु० बहिनका नाता ।

बहनी*–स्त्री० दे० 'वह्नि'; † बोहनी ।

बहनु*–पु० वाहन, सवारी ।

बहनेली–स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ बहनका नाता जोड़ा गया हो, मुँहबोली बहन ।

बहनोई–पु० बहिनका पति, भगिनीपति ।

बहनोली–स्त्री० बहनेली ।

बहनौता–पु० बहिनका बेटा, भांजा ।

बहनौरा–पु० बहिनकी ससुराल ।

बहम–पु० दे० 'वहम' ।

बहर*–अ० बाहर–'गावत बधाई सूर भीतर बहरके'–सूर । स्त्री० पु० दे० 'बह्र' । अ०–हरएक, हरप्रकारसे ।

बहरना*–अ० क्रि० बीतना, कटना (समय)–'बहरि परै नहिं समै गमै जियरा'–घन० ।

बहरा–वि० जिसे सुनाई न दे, श्रवणशक्तिहीन; ऊँचा सुननेवाला; अनसुनी करनेवाला, ध्यान न देनेवाला (–बन जाना) । मु० **–पत्थर**–बहुत ज्यादा बहरा ।

बहराना–स० क्रि० दे० 'बहलाना'; * बाहर करना । * अ० क्रि० बाहर होना; बह जाना; उड़ जाना; बहरा हो जाना–'रुई दिये रहोगे कहाँ लौं बहरायबेकी'–घन० ।

बहरिया†–वि० दे० 'बाहरी' । पु० मंदिरका सेवक जो मंडपसे बाहर रहे (बल्लभसंप्रदाय) ।

बहरियाना†–स० क्रि० बाहर करना; अलग करना । अ० क्रि० बाहर या बाहरकी ओर जाना; अलग हो जाना ।

बहरी–स्त्री० बाजसे मिलती जुलती एक शिकारी चिड़िया । वि० दे० 'बह्री' ।

बहरु–पु० छोटी जातका पेड़ जिसकी लकड़ी चमकदार और मजबूत होती है ।

बहरुपिया–पु० दे० 'बहुरुपिया' ।

बहरूप–पु० गोरखपुर, चंपारन आदि में बसने वाली एक जाति जो बैलों का रोजगार करती है ।

बहल–स्त्री० सवारीके काम आनेवाली छतरीदार बैलगाड़ी, बहली । **–ख़ाना**–पु० गाड़ीखाना ।

बहल–वि० (सं०) घना, ठोस, दृढ़; झबरीला; विस्तृत; गहरा; गाढ़ा; कर्कश (स्वर); प्रचुर । पु० एक तरहकी ईख । **–गंध**–पु० एक तरहका चंदन । **–त्वच**–पु० श्वेतपुष्पोंवाला लोध्र । **–वर्त्म(न्)**–पु० आँखका एक रोग । **–वान**–पु० बहल या बहली हाँकनेवाला ।

बहलना–अ० क्रि० मनका दुःख, क्लेश देनेवाली बातसे हटकर प्रसन्नताजनक व्यापारमें लगना, मनोरंजन होना ।

बहलाना–स० क्रि० मनको दुःख, क्लेश देनेवाली बातसे हटाकर प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लगाना, दिल खुश करना, मनोरंजन करना; भुलावा देना, बहकाना ।

बहलानुराग–पु० (सं०) गाढ़ा लाल रंग ।

बहलाव–पु० मनका वहलना, किसी प्रसन्नताजनक विषय, व्यापारमें लग जाना ।

बहलावा–पु० बहलाव, वहकावा ।

बहलित–वि० (सं०) जो खूव ठोस और दृढ़ हो गया हो ।

बहली–स्त्री० दे० 'वहल' ।

बहल्ला*–पु० आनंद । वि० आनंदित ।

बहल्ली–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच ।

बहस–स्त्री० (अ०) सवाल-जवाव; वाद-विवाद, खंडन-मंडन; हुज्जत, झगड़ा; मुकदमेमें पक्षविशेषके वकीलका अपने पक्षको युक्ति-प्रमाणके साथ प्रस्तुत करना; मतलब, लगाव (मुझे दूसरेसे कोई वहस नहीं); * होड़ । **–क़ानूनी**–स्त्री० कानून-विषयक वहस । **–मुबाहिसा**–पु० वाद-विवाद, शास्त्रार्थ । **–वाक़ियाती**–स्त्री० वह वहस जो घटनाओं, तथ्योंको लेकर की जाय ।

बहसना*–अ० क्रि० वहस करना, विवाद करना; होड़ लगाना ।

बहाऊ–वि० बहानेवाला, वहाने योग्य; बुरा, हेय ।

बहादर*–वि० दे० 'वहादुर' ।

बहादुर–वि० (फा०) शूर-वीर; साहसी, निडर ।

बहादुराना–अ० (फा०) वीरतापूर्वक, वीरोचित प्रकारसे । वि० वीरोचित, वीरतासूचक ।

बहादुरी–स्त्री० वीरता, मरदानगी ।

बहाना–स० क्रि० बहनेका कारण, कर्ता होना, जल या दूसरे प्रकारके द्रव पदार्थको किसी दिशामें प्रवाहित करना; वहनेके लिए धारामें डालना; वूंदों या धाराके रूपमें गिराना, ढालना (आँसू वहाना); सस्ता वेचना; उड़ाना; वरवाद करना । पु० (फा०) किसी कामके करने या न करनेका झूठा, बनावटी हेतु, मिस, हीला; निमित्त, व्याज । **–(ने) बाज़ी**–स्त्री० वहाने वनाना ।

बहाने–अ०…के वहानेसे; …के हेतु, निमित्त बनाकर ।

बहार–स्त्री० (फा०) वसंत ऋतु; खिलती हुई जवानी; विकास; शोभा; आनंद, लुत्फ, मजा; तमाशा; नारंगीका फूल; एक रागिनी । **–गुर्जरी**–स्त्री० एक रागिनी । **–नशाख**–पु० एक राग । **–(रे)दानिश**–स्त्री० फारसीका एक प्रसिद्ध कहानी-संग्रह । **–बुर्ज**–किले या महलका सवसे ऊँचा कमरा जहाँ वैठकर चारों ओरका दृश्य देखते हैं । **–हुस्न**–स्त्री० रूपकी छटा, यौवन-श्री । **मु० –पर आना, –पर होना**–जवानीपर आना, खिलना, पूर्ण विकास होना ।

बहारना†–स० क्रि० झाड़ना, झाड़ू लगाना ।

बहारी, बहारू–स्त्री० बढ़नी, झाड़ू ।

बहाल–अ० (फा०) असली हालतपर, पूर्ववत् । वि० ज्योंका त्यों; प्रसन्न, खुश; तंदुरुस्त; कायम ।

बहाली–स्त्री० पुनर्नियुक्ति; † भुलावा देनेवाली वात, झाँसा ।

बहाव–पु० बहनेका भाव या क्रिया, प्रवाह, धारा ।

बहिः(हिस्)–अ० (सं०) वाहर, भीतरका उलटा; वाहरसे, अलग । **–शाला**–स्त्री० वाहरका कमरा । **–शीत**–वि० जो वाहर ठंढा हो । **–सद्**–वि० वाहर वैठनेवाला । **–स्थ**–वि० वाहरका । **–स्पर्शी**–वि० (सुपरफीशियल) भीतरतक न जानेवाला, ऊपरी, दिखाऊ ।

बहिअर†–स्त्री० वधू स्त्री ।

बहिक्रम*–पु० उम्र, अवस्था ।

बहित्र–पु० दे० 'वहित्र' ।

बहिन–स्त्री० पिताकी पुत्री, भगिनी ।

बहिनापा–पु० दे० 'वहनापा' ।

बहियाँ*–स्त्री० बाँह ।

बहिया–स्त्री० वाढ़, प्लावन ।

बहिरंग–वि० वाहरी, अंतरंगका विपर्याय, अनावश्यक, प्रारम्भिक, ऊपरी ।

बहिर, बहिरा*–वि० वहरा, वधिर ।

बहिरत*–वि० वाहर ।

बहिराना†–स० क्रि० वाहर निकालना । अ० क्रि० वाहर होना; वहरा होना ।

बहिर्–'बहिस्'का समासगत रूप । **–अंग**–वि० वाहरी, अंतरंगका उलटा, वाहरवाला । पु० वाहरी भाग, अंग । **–अर्थ**–पु० वाह्य उद्देश्य । **–इंद्रिय**–स्त्री० बाहरी इंद्रिय, बाह्य विषयोंको ग्रहण करनेवाली इंद्रिय (कान, नाक आदि) । **–गत**–वि० बाहर गया हुआ; (आउट) (गेंद-वल्ला आदिके खेलमें वह खेलाड़ी) जो गेंदके आघातसे यष्टियोंके ऊपरकी गुल्लीके गिर जाने, पदबाधा या गेंदके लोक लिये जाने आदिके कारण वल्लेवाजी करते रहनेके अधिकारसे वंचित हो गया हो; जो घरमें या कार्यालय आदिमें न हो, बाहर गया हो; जो पदासीन या अधिकारारूढ़ न रह गया हो; जो प्रकट या प्रकाशित हो गया हो; जो वाहर हो; अलग । **–गमन**–पु० बाहर जाना । **बहिर्गमनद्वार**–पु० (एग्ज़िट) (किसी सिनेमा, नाट्यशाला आदिके) प्रकोष्ठ या भवनसे बाहर निकलनेका रास्ता । **–गामी(मिन्)**–वि० बाहर जानेवाला । **–गिरि**–पु० पर्वत मालाकी वाहरी और कम ऊँची श्रेणियाँ । **–गेह**–अ० घरके वाहर; परदेशमें । **–जगत्**–पु० वाह्य जगत् । **–जानु**–अ० हाथोंको घुटनेके वाहर किये हुए । **–देश**–पु० गाँव या नगरके वाहरका स्थान; परदेश । **–द्वार**–पु० वाहरी दरवाजा, तोरण । **–द्वारी(रिन्)**–वि० जो घरके वाहर हो । **–ध्वजा**–स्त्री० दुर्गा । **–निःसारण**–पु० बाहर निकालना । **–भव**–वि० वाहरी । **–भाग**–पु० वाहरका हिस्सा । **–भूत**–वि० जो वाहर हो या हो गया हो, वहिर्गत । **–मनस्क**–वि० जिसका मन किसी और जगह हो । **–मुख**–वि० जिसका मन वाहरी विषयोंमें उलझा, आसक्त हो; विमुख । पु० देवता । **–यात्रा**–स्त्री०,**–यान**–पु० वाहर जाना, विदेश-यात्रा । **–युति**–वि० वाहर रखा या वाँधा हुआ । **–योग**–पु० वाह्य विषयपर ध्यान जमाना । **–रेखा**–स्त्री० आकार, रूप वतानेवाली रेखा । **–लंब**–पु० अधिक कोण वनानेवाला लंब । **–लापिका**–स्त्री० एक तरहकी पहेली जिसमें उसका उत्तर पहेलीके शब्दोंके वाहर रहता है, भीतर नहीं । **–लोम,–लोमा(मन्)**–वि० जिसके वाल वाहरकी ओर निकले हों । –**–वास(स्)**–पु० कौपीनके ऊपर पहननेका कपड़ा । **–वहिर्वासी रोगी**–पु० (आउटडोर पेशेंट) वह रोगी जो चिकित्सागृहके वाहर रहते हुए इलाज कराता हो (अंतर्वासी या प्रविष्ट रोगीका उलटा), वाह्यरोगी । **–विकार**–पु० गरमीकी वीमारी, आतशक । **–व्यसन**–पु० लंपटता । **–व्यसनी(निन्)**–वि० लंपट, व्यभिचारी ।

बहिला†–वि० स्त्री० वच्चा न देनेवाली (गाय, भैंस आदि) ।

बहिश्चर–वि० (सं०) वाहर जानेवाला, वाहरी । पु० कर्कट; वाहरका भेदिया ।

बहिश्त–पु० स्वर्ग ।

बहिष्–'वहिस्'का समास-गत रूप । **–करण**–पु० वाहर करना, अलग करना; वहिरिंद्रिय, अंतःकरणका उलटा । **–कार**–पु० वाहर करने, अलग करनेका भाव; संवंध-त्याग, विरादरीसे वाहर करना; वस्तु-विशेष (वर्ग या देश-विशेषके माल, संस्था आदि) का सामूहिक व्यवहार-त्याग, 'वायकाट' । **–कुटीचर**–पु० केकड़ा । **–कृत**–वि० जिसका वहिष्कार किया गया हो, निकाला हुआ; परित्यक्त । **–क्रिया**–स्त्री० वाहरी क्रिया; वाह्य संस्कार । **–पट**–पु० दे० 'वहिर्वास' । **–परिधि**–अ० घेरेसे वाहर । **–प्रज्ञ**–वि० जिसे वाह्य विषयोंका ज्ञान हो । **–प्राकार**–पु० परकोटा । **–प्राण**–वहुत प्रिय वस्तु; द्रव्य ।

बही–स्त्री० हिसाव-किताव लिखनेकी पुस्तक, महाजनों, व्यापारियों आदिके हिसावका रजिस्टर; सिली हुई मोटी कापी जो हिंदुस्तानी ढंगसे हिसाव लिखनेके काम आती है । **–खाता**–पु० किसी महाजन, व्यापारी आदिकी वहियाँ, हिसावकी किताबें । **मु० –पर चढ़ना या टँकना**–वहीपर लिख लिया जाना ।

बहीर*–स्त्री० भीड़–'जेहि मारग गये पंडिता तेई गई वहीर'–वीजक; सेनाके साथ चलनेवाला सेवक-समुदाय; फौजी सामान–'अब वहीर चलती करौ काल्हि पहुँचनो कोल'–सुजान । अ० वाहर ।

बहीरति–स्त्री० (सं०) वाह्य रति–आलिंगन, चुंवन आदि ।

बहुँटा–पु० बाँहका एक गहना ।

बहु–वि० (सं०) दोसे अधिक, अनेक, वहुत, ज्यादा । **–कंटक**–वि० वहुत काँटोंवाला । पु० क्षुद्र गोक्षुर; जवासा; हिंताल । **–आयामी**

–वि० नाना प्रकारका; विविध स्तरों और कोणोंवाला (लेखन या व्यक्तित्व)। **–उद्देशीय**–वि० (मल्टी-परपज़) अनेक कार्य-साधनके निमित्त बनायी गयी योजना, किया गया कार्य। **–कंटा**–स्त्री० कंटकारी। **–कंद**–पु० सूरन। **–कन्या**–स्त्री० घृतकुमारी। **–कर**–वि० बहुत काम करनेवाला, परिश्रमी। पु० झाड़ू देनेवाला, भंगी; ऊँट। **–करा,–करी**–स्त्री० झाड़ू। **–कर्णिका**–स्त्री० मूसाकानी। **–काम**–वि० बहुत-सी इच्छाओंवाला। **–कालीन**–वि० बहुत दिनका, पुराना। **–कूर्च**–पु० एक तरहका नारियल। **–केतु**–पु० एक पहाड़। **–क्षम**–वि० बहुत सहनेवाला। **–क्षीरा**–वि० स्त्री० बहुत अधिक दूध देनेवाली (गाय)। **–गंध**–वि० तीव्र गंधवाला। **–०दा**–स्त्री० कस्तूरी। **–गंधा**–स्त्री० जूही; चंपाकी कली; स्याहजीरा। **–गुडा,–गुहा**–स्त्री० कंटकारी; भूम्यामलकी। **–गुण**–वि० कई तारों या सूतोंवाला; जिसमें बहुत-से गुण हों। **–गुना**–(हिं०) पु० खुले मुँहके डब्बेके आकारका पीतलका बरतन जो बटलोई, कड़ाही आदिका काम देता है। **–गुरु**–पु० पल्लवग्राही व्यक्ति। **–ग्रंथि**–पु० झाड़ू। **–छिन्ना**–स्त्री० कंदगुडुची। **–जल्प**–वि० बहुत बोलनेवाला, वाचाल। **–जल्पिता(तृ)**–वि० पु० बड़बड़िया। **–जाली**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी। **–ज्ञ**–वि० बहुत जाननेवाला, बहुत विषयोंका जानकार। **–तंत्री**–वि० बहुत-से तंतुओंवाला (शरीर)। **–तंत्रीक**–वि० जिसमें बहुत-से तार हों (वाद्य)। **–तिक्ता**–स्त्री० काकमाची। **–तृण**–पु० मूंज। वि० तृणपूर्ण; तृण जैसा। **–त्वक्(च्),–त्वक्क**–पु० भोजपत्र। **–दंडिक,–दंडी(डिन्)**–वि० जिसके पास बहुतसे दंडधारी हों। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० जिसने बहुत देखा-सुना हो, बहुज्ञ; दूरदर्शी। **–दला**–स्त्री० चेंच नामका साग। **–दायी(यिन्)**–वि० उदार। **–दुग्ध**–पु० गेहूँ। **–दुग्धा**–स्त्री० दुधार गाय। **–दुग्धिका**–स्त्री० थूहड़। **–देववाद**–पु० वह धर्म जिसमें अनेक देवी-देवताकी मानता हो। **–धंधी**–वि० जो एक साथ बहुतसे कामोंमें अपनेको फँसाये रखता हो। **–धन**–वि० जिसके पास बहुत धन हो। **–धर**–पु० शिव। **–धान्य**–पु० एक संवत्सर। **–धार**–पु० वज्र। **–नाद**–पु० शंख। **–नामा(मन्)**–वि० जिसके बहुतसे नाम हों। **–पत्नीक**–वि० जिसके कई पत्नियाँ हों। **–पत्र**–पु० अभ्रक; प्याज। वि० बहुत पत्तोंवाला। **–पत्रा,–पत्री**–स्त्री० घृतकुमारी; शिवलिंगिनी; दुधिया घास; बृहती; भुइँआँवला। **–पत्रिका**–स्त्री० मेथी; वच; भुइँआँवला। **–पतित्व**–पु० (पॉली-एंड्री) एक साथ बहुतसे पतियोंकी पत्नी बनकर रहनेकी प्रथा। **–पद,–पाद**–वि० बहुतसे पैरोंवाला। पु० बरगद। **–पदीविक्रीकर**–पु० एक ही मालपर बार-बार लगने वाला बिक्रीकर। **–पद्,–पाद्**–पु० बरगद। **–पुत्र**–वि० अनेक पुत्रोंवाला। पु० सप्तपर्ण। **–पुत्री**–स्त्री० शतमूली। **–पुष्ट**–वि० समृद्ध। **–पुष्प**–पु० नीम; पारिभद्र वृक्ष। **–प्रकार**–अ० अनेक प्रकारसे। वि० बहुविध। **–प्रज**–वि० जिसके अधिक बाल-बच्चे हों। पु० सूअर; चूहा; मूंज। **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसमें बहुत-सी प्रतिज्ञाएँ या दावे हों; (मुकदमा) जिसमें अनेक अभियोग या दावे हों। **–प्रद**–वि० बहुत देनेवाला, महादानी। **–प्रसू**–स्त्री० बहुत-से बच्चोंकी माँ। **–फल**–वि० जो बहुत फले। पु० कदंब; बनभंटा। **–फला**–स्त्री० खीरा; छोटा करेला, करेली; भुइँआँवला; काकमाची। **–फली**–स्त्री० आमलकी; मृगेर्वारु। **–फेना**–स्त्री० सातला; संखाहुली। **–बल**–वि० अतिबली। पु० सिंह। **–बाहु**–वि० बहुत-सी बाहोंवाला। पु० रावण। **–बीज**–वि० बिजौरा नीबू; बीजवाला केला; शरीफा। **–भक्ष**–वि० बहुत खानेवाला। **–भाग्य**–वि० बड़े भाग्यवाला, बड़भागी। **–भाषाज्ञ**–पु० (पॉलीग्लॉट) बहुत-सी भाषाएँ जानने या बोलनेवाला। **–भाषी(षिन्)**–वि० बहुत बोलनेवाला। **–भुज**–वि० अनेक भुजाओंवाला। **–०क्षेत्र**–पु० चारसे अधिक रेखाओंसे घिरा हुआ क्षेत्र (ज्या०)। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा। **–भूमिक**–वि० कई मंजिलोंवाला। **–भोक्ता(क्तृ)**–वि० बहुत खानेवाला। **–भोग्या**–स्त्री० वेश्या। **–भोजी(जिन्)**–वि० पेटू। **–मंजरी**–स्त्री० तुलसी। **–मत**–वि० अति सम्मानित, बहुमानयुक्त; कई रायें रखनेवाला। पु० अधिकतर, बहुसंख्यक लोगोंका मत, कसरतराय (हिं०); अनेक मत, कई तरहकी रायें। **–मति**–स्त्री० बहुमान, बहुत मान, इज्जत। **–मल**–पु० सीसा। वि० बहुत मैला। **–मान**–पु० अति आदर, मान। **–मानी(निन्)**–वि० बहुत आदरणीय। **–मान्य**–वि० आदरणीय, सम्मानित। **–मार्ग**–वि० अनेक रास्तोंवाला। पु० चौराहा। **–०गा**–स्त्री० गंगा; दुश्चरित्रा, पुंश्चली स्त्री। **–मार्गी**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलें। **–मुख**–वि० कई तरह की बातें कहनेवाला; अनेक दिशाओंमें जानेवाला; (वर्सेटाइल) जो अनेक विषयोंका जानकार हो; अनेक दिशाओंमें जानेवाला। (बहुमुखी प्रतिभा –वर्सेटाइल जीनियस।) **–मुखी**–वि० स्त्री० अनेक विषयों, दिशाओंमें लागू होने, जानेवाली। **–मूत्र**–वि० मधुमेह रोगसे पीड़ित। पु० मधुमेह। **–मूत्रक**–पु० एक तरहका गिरगिट। **–मूर्ति**–पु० बनकपास; विष्णु; बहुरुपिया। **–मूल**–वि० बहुत-सी जड़ोंवाला। पु० सरकंडा; नरसल; सहिजन। **–मूलक**–पु० खस। **–मूला**–स्त्री० सतावर। **–मूल्य**–वि० अधिक मूल्यका, बेशकीमत। **–याजी(जिन्)**–वि० जिसने बहुत यज्ञ किये हों। **–रंग**–वि० अनेक रंगोंवाला, रंग-बिरंगा। **–रंगी**–वि० (हिं०) जो बहुत-से रंग बदले; बहुरुपिया। **–रंध्रिका**–स्त्री० मेदा। **–रस**–वि० वि० जिसमें बहुत रस हो; तरह-तरहके स्वादवाला। **–रसा**–स्त्री० महाज्योतिष्मती। **–रिपु**–वि० जिसके बहुत-से शत्रु हों। **–रुपिया**–वि०, पु० (हिं०) अनेक रूप धरनेवाला। **–रुहा**–स्त्री० कंदगुडुची। **–रूप**–वि० अनेक रूपोंवाला, बहुरुपिया। पु० शिव; विष्णु; ब्रह्मा; सूर्य; कामदेव; गिरगिट; केश; तांडव नृत्यका एक भेद। **–रूपक**–वि० अनेक रूपोंवाला। पु० एक जीव। **–रूपा**–स्त्री० दुर्गा। **–रेता(तस्)**–वि० जिसमें बहुत वीर्य हो। पु० ब्रह्मा। **–रोमा(मन्)**–वि० जिसकी देहपर बहुत बाल हों, लोमश। पु० मेष। **–वचन**–पु० संज्ञा, क्रिया आदिका वह विकार जिससे बहुत या एकसे अधिकका बोध हो। **–वर्ण**–वि० बहुरंग। **–वल्क–वल्कल**–पु० पियासाल। **–वार्षिक**–वि० अनेक वर्षोंतक चलने, रहनेवाला। **–विक्रम**–वि० अति पराक्रमी, बहुत वीर। **–विघ्न**–वि० विघ्नों, कठिनाइयोंसे भरा हुआ। **–विद्,–विद्य**–वि० बहुत बड़ा विद्वान्। **–विध**–वि० अनेक प्रकारका। अ० अनेक प्रकारसे, बहुत तरहसे। **–विवाह**–पु० (पालिगैमी) एक साथ कई स्त्रियोंसे विवाह करना। **–विस्तार**–पु० बहुत अधिक फैलाव। वि० विस्तृत। **–वीर्य**–वि० अधिक वीर्यवाला। पु० बहेड़ा; सेमल; मरुवा। **–व्ययी(यिन्)**–वि० फ़ुजूलखर्च, उड़ाऊ। **–व्रीहि**–वि० जिसके पास बहुत धान हो। पु० व्याकरणके चार मुख्य समासोंमेंसे एक। **–शत्रु**–वि० जिसके बहुतसे दुश्मन हों। पु० गौरैया, चटक। **–शल्य**–वि० जिसमें बहुत काँटे या गाँसियाँ हों। पु० लाल खैर। **–शाख**–वि० अनेक शाखाओंवाला। पु० थूहड़। **–शाल**–पु० थूहड़। **–शिख**–वि० अनेक शिखाओंवाला। **–शिखा**–स्त्री० जलपिप्पली। **–शिरा(रस्),–शृंग**–पु० विष्णु। **–श्रुत**–वि० जिसने बहुत-से शास्त्र गुरुसे पढ़े हों; विद्वान्; जिसने अनेक शास्त्रोंकी बातें सुनी हों, बहुज्ञ। **–संख्य,–संख्यक**–वि० बड़ी संख्यावाला, जो गिनतीमें बहुत हो। **–संतति**–वि० अधिक बाल-बच्चोंवाला। पु० एक तरहका बाँस। **–सार**–वि० जिसमें बहुत सार हो, ठोस। पु० खैरका पेड़। **–सुता**–स्त्री० शतमूली। **–सू**–स्त्री० बहुत बच्चोंकी माँ; शूकरी। **–सूति**–स्त्री० बहुत बच्चोंकी माँ; बहुत ब्यानेवाली गाय। **–स्रवा**–स्त्री० शल्लकी। **–स्वन**–पु० उल्लू; शंख। वि० बहुत बोलनेवाला। **–स्वामिक**–वि० जिसके बहुतसे मालिक हों।

बहुक–पु० (सं०) सूर्य; मदार; केकड़ा; चातक; तालाब खोदनेवाला। वि० जो महँगे दामों खरीदा गया हो।

बहुगव–पु० एक नरेश, जो पुरुवंशी था।

बहुटनी–स्त्री० छोटा बहूँटा।

बहुत–वि० अधिक, ज्यादा (मात्रा या संख्यामें); काफी, पूरा। अ० अधिक मात्रामें, ज्यादा। **–अच्छा**–(स्वीकृति-सूचक) बेहतर है, ऐसा ही होगा। **–करके**–अधिकतर, *प्रायः*, बहुत संभव

है। –**कुछ**–काफी, थोड़ा नहीं। –**ख़ूब**–बहुत अच्छा।

बहुतक*–वि० बहुत-से।

बहुता–स्त्री०, **बहुत्व**–पु० (सं०) बहुतायत, आधिक्य।

बहुताइत–स्त्री० दे० 'बहुतात'।

बहुतात, बहुतायत–स्त्री० अधिकता, ज्यादती, इफरात।

बहुतेरा–वि० बहुत-सा। अ० बहुत-बहुत तरहसे।

बहुतेरे–वि० बहुत-से, अनेक।

बहुधा–अ० (सं०) अनेक प्रकारसे; बहुत करके, अकसर।

बहुरना*–अ० क्रि० लौटना, वापस आना, फिर मिलना।

बहुरि*–अ० फिर; पीछे, अनंतर।

बहुरिया–स्त्री० दुलहिन, नयी बहू।

बहुरी†–स्त्री० भुना हुआ गेहूँ या जौ।

बहुरूपदर्शक–पु० (कैलीडोस्कोप) एक लंबी नली जिसमें रंगीन कांचके टुकड़े इस तरह डाल दिये जाते हैं कि उसे इधर-उधर हिलानेसे कई तरहकी सुंदर और कलापूर्ण शकलें दिखाई देती हैं।

बहुरौ*–अ० दे० 'बहुरि'।

बहुल–वि० (सं०) बहुत, अनेक; बहुत-सा, प्रचुर; काला। पु० अग्नि; आकाश; सफेद मिर्च; काला रंग; कृष्ण पक्ष। –**गंधा**–स्त्री० छोटी इलायची। –**च्छद**–पु० लाल सहिजन।

बहुलता–स्त्री० (सं०) बहुतात, प्रचुरता, बाहुल्य।

बहुला–स्त्री० (सं०) इलायची; गाय; नीलका पौधा; एक देवी; चंद्रमाकी बारहवीं कला। –**चौथ**–स्त्री० (हिं०) भाद्र-कृष्णा चतुर्थी। –**वन**–पु० वृंदावनके ४४ वनोंमेंसे एक।

बहुलायास–वि० (सं०) श्रमसाध्य।

बहुलालाप–वि० (सं०) बकवादी।

बहुलाविष्ट–वि० (सं०) घना बसा हुआ।

बहुलाश्व–पु० (सं०) मिथिलाके एक प्राचीन नरेश।

बहुलिका–स्त्री० (सं०) सप्तर्षिमंडल।

बहुलित–वि० (सं०) बढ़ाया हुआ, वर्धित।

बहुली*–स्त्री० इलायची।

बहुलीकरण–पु० (पॉलिमराइज़ेशन) जब एक ही रासायनिक योगिकके कई अणु परस्पर रासायनिक संयोग करके एक बड़े आकार-का अणु बनाते हैं जिसमें अवयव तत्त्वोंका प्रतिशत अनुपात पहले जैसा ही रहता है किन्तु आणविक भार बढ़ जाता है, तो इस क्रियाको बहुलीकरण कहते हैं।

बहुलीकृत–वि० (सं०) बढ़ाया हुआ, वर्धित; प्रकट किया हुआ।

बहुवार–पु० एक वृक्ष।

बहुविद्य–वि० (वर्सटाइल) जो अनेक विद्याएँ जानता हो, जो विभिन्न विषयोंपर लेखादि लिख सकता हो या भाषण कर सकता हो, बहुमुख।

बहुशः(शस्)–अ० (सं०) बहुत बार, बहुत तरहसे।

बहूँटा–पु० बाँहपर पहननेका एक गहना।

बहू–स्त्री० पुत्रवधू; छोटे भाईकी स्त्री; दुलहिन; पत्नी।

बहूदक–पु० (सं०) सन्न्यासियोंका एक भेद।

बहूपमा–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार–उपमेयके एक ही धर्मके लिए अनेक उपमानोंका कथन।

बहेंगा–पु० एक पक्षी; चौपायोंका एक रोग; आवारा।

बहेंत†–स्त्री० बहकर जमा होनेवाली मिट्टी।

बहेंतू†–वि० दे० 'बहेतू'।

बहेड़ा–पु० एक जंगली पेड़ और उसका फल जो दवाके और चमड़ा सिझानेके काम आता है, विभीतक।

बहेतू–वि० जो इधर-उधर मारा-मारा फिरे, आवारा।

बहेरा–पु० दे० 'बहेड़ा'।

बहेरी*–स्त्री० मिस, बहाना।

बहेला–पु० कुश्तीका एक पेंच।

बहेलिया–पु० चिड़िया फँसानेका काम करनेवाला, चिड़ीमार।

बहोर*–पु० बहोरनेका भाव, लौटाना; वापसी। अ० दे० 'बहुरि'।

बहोरना*–स० क्रि० लौटाना, वापस करना।

बहोरि*–अ० दे० 'बहुरि'।

बह्र–स्त्री० (अ०) छंद, शेरका वजन। पु० महासमुद्र; समुद्र; बड़ा दरिया, नद; उदार व्यक्ति; तेज घोड़ा; जहाजोंका बेड़ा। –**(ह्रे) अरब**–पु० अरब सागर। –**अहमर**–पु० लाल समुद्र। –**आज़म**–पु० महासमुद्र। –**ज़लमात**–पु० अतलांतक महासागर। –**हिंद**–पु० हिंदमहासागर।

बह्री–वि० समुद्री; दरियाई।

बह्‌रुलकाहिल–पु० (अ०) प्रशांत महासागर।

बाँ–पु० गाय-बैलकी आवाज; * बार, दफा।

बाँक–पु० टेढ़ापन, वक्रता; गन्ना छीलनेका सरौतेकी शक्लका एक औजार; एक तरहकी टेढ़ी छुरी; एक तरहका शिकंजा जिसमें किसी चीजको दबाकर रेतते हैं; दे० 'बाँका'; बाज़ूपर पहननेका एक गहना; पैरका एक गहना; एक तरहकी चौड़ी चूड़ी; बाँकसे लड़नेकी कला; नदीका घुमाव; धनुष्। वि० दे० 'बाँका'। –**डोरी**–स्त्री० एक हथियार। –**नल**–पु० पीतलकी नली जिससे सुनार टाँका गलानेके लिए दियेकी लौपर फूँक मारते हैं।

बाँकड़ा†–वि० वीर, साहसी।

बाँकड़ी, बाँकुड़ी–स्त्री० साड़ी आदिपर टाँकनेका सुनहला या रुपहला फीता।

बाँकनल–पु० सुनारोंकी फूँक मारनेकी नली।

बाँकना*–स० क्रि० टेढ़ा करना। अ० क्रि० टेढ़ा होना।

बाँकपन, बाँकपना–पु० टेढ़ापन, वक्रता; सुंदरता, छवि; छबीलापन, शौकीनी; शोखी, अदा।

बाँका–वि० टेढ़ा, तिरछा, वक्र; सजधजका, शौकीन, छैलछबीला; शोख; वीर, साहसी; गुंडा। पु० एक अर्धचंद्राकार औजार जिससे बाँसका काम करनेवाले बाँस छीलते-काटते हैं।

बाँकिया–पु० नरसिंघा नामका बाजा।

बाँकी–स्त्री० छोटा बाँका; लगान।

बाँकुरा*–वि० टेढ़ा, बाँका; चतुर; वीर, साहसी; पैना।

बाँग–स्त्री० (फा०) आवाज, बोली; मुर्गेकी आवाज; अजान।

बाँगड़–पु० हिसार, रोहतक और करनाल जिले। **बाँगड़ी**–बाँगड़ क्षेत्रका रहनेवाला।

बाँगड़ू–स्त्री० बाँगड़ देशकी बोली। † वि० मूर्ख, उजड्ड।

बाँगदरा–पु० घंटे या घड़ियालकी ध्वनि; काफिलेके प्रस्थानके समय होनेवाली घंटा-ध्वनि।

बाँगर–पु० ऊँची जमीन, वह जमीन जो बाढ़में न डूबे; एक तरहका बैल।

बाँगा†–पु० कपास, वह रुई जो ओटी न गयी हो।

बाँगुर–पु० चिड़ियाँ फँसानेका जाल, फंदा–'तुलसिदास यह बिपति बाँगुरो तुमहिंसो बने निबेरें'–विनय०।

बाँचना–स० क्रि० पढ़ना; * बचाना–'बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा'–रामा०; चुनना, चयन करना। अ० क्रि० बचना, बाकी रहना; रक्षा पाना।

बाँछना*–स्त्री० दे० 'वांछा'। * स० क्रि० चाहना; दे० 'बाछना'।

बांछा*–स्त्री० दे० 'वांछा'।

बांछित*–वि० दे० 'वांछित'।

बांछी*–वि० वांछा करनेवाला।

बाँझ–वि० जिससे संतान या फल उत्पन्न न हो। स्त्री० वंध्या स्त्री, गाय आदि। –**का कोलीड़ी**–स्त्री० खेखसा, बनपरवल। –**पन**, –**पना**–पु० बाँझ होना, वंध्यत्व।

बाँट–स्त्री० बाँटनेकी क्रिया, बटवारा; ताश आदिके पत्तोंका बाँटा जाना; हिस्सा, बाँटा–'याहूमें कछु बाँट तुम्हारो'–सूर; दे० 'बाट'। –**बूँट**, –**चूँट**–स्त्री० बटवारा, हिस्सा-बखरा। मु० –**पड़ना**–दे० 'बाँटेमें आना'।

बाँटना–स० क्रि० हिस्से करना, कई भाग कर देना; बहुतोंको थोड़ा-थोड़ा देना, वितरण करना; * पीसना, घोंटना।

बाँटा–पु० बाँटनेकी क्रिया; हिस्सा, बखरा; बाँटमें मिलनेवाली वस्तु। –**चौदस**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला चतुर्दशी। मु० –**(टे)में आना या पड़ना**–हिस्सेमें आना।

बाँड़–पु० दो नदियोंके संगमके बीचकी जमीन। † वि० बाँड़ा।

बाँड़ा–वि० (पशु) जिसकी पूँछ कट गयी हो; (पुरुष) जिसके आगे-पीछे कोई न हो, असहाय। (स्त्री० 'बाँड़ी'।)

बाँड़ी–स्त्री० बिना पूँछकी गाय या कोई मादा पशु; छोटा रंगीन डंडा जिसे झूमरके नाचमें तालके लिए बजाते हैं। **–बाज़**–वि०, पु० लाठीबाज; शरारत करनेवाला।

बाँद*–पु० दास, टहलू; बंधन, फंदा।

बाँदर–पु० बंदर।

बाँदा–पु० एक तरहका पौधा जो आम आदिके वृक्षोंमें लगकर उनके रससे पुष्ट होता है।

बाँदी–स्त्री० दासी, लौंड़ी।

बाँदू*–पु० बंदी, बँधुआ।

बाँध–पु० नदीका पानी रोकनेके लिए बनाया हुआ कच्चा या पक्का घेरा, बंद।

बांधकिनेय–पु० (सं०) पुंश्चलीका पुत्र, जारज।

बांधकेय–पु० (सं०) दे० 'बांधकिनेय'।

बाँधना–स० क्रि० रस्सी, जंजीर आदिसे कसना; गाँठ देना, बंधनमें लाना; रस्सी आदिमें फँसाकर खूँटे आदिसे अँटकाना; लपेटना (पगड़ी, पट्टी); लपेटकर कसना, समेटना (गठरी, बिस्तर); बाँधकर धारण करना (घड़ी, तलवार); जोड़ना (हाथ); कैद करना; नियम, वचन आदिसे बंधनमें डालना, पाबंद करना; मेड़ या बाँध बनाकर रोकना; गतिहीन करना; कीलना, शक्ति, प्रभाव नष्ट कर देना; जमाना (निशाना); नियत करना (हद, गुजारा, बारी आदि); चूर्ण, चाशनी आदिकी गोली, लड्डू आदिका रूप देना; ठीक करना (घड़ा); व्यवस्थित, क्रमयुक्त करना; जोड़ना, बटोरना (दल, गोल); बनाना (मोरचा); लगातार करना, लगाना (झड़ी, ताँता); सोचना (खयाल, मंसूबा); भावको गद्य या पद्य-रचनाका रूप देना, निबंधन।

बाँधनीपौरि*–स्त्री० पशुशाला।

बाँधनू–पु० मंसूबा, बंदिश; मनमें बनायी हुई योजना; खयाली पुलाव; झूठी तोहमत; लहरियादार रँगाईमें कपड़ेको जगह-जगह बाँध देना; इस तरह बाँधकर रँगा हुआ कपड़ा। **मु०** **–बाँधना**–मंसूबा बाँधना; खयाली पुलाव पकाना; झूठी तोहमत लगाना।

बांधव–पु० (सं०) भाई-बंधु; स्वजन, निकट-संबंधी। **–धुरा**–स्त्री० मैत्रीभाव, सद्भाव, कृपा।

बांधवक–वि० (सं०) बांधव-संबंधी।

बांधव्य–पु० (सं०) रक्त-संबंध, नाता, रिश्ता।

बांधिल*–वि० बँधा हुआ, बद्ध–'गुन बाँधिल होइ न छोरियै जू' –घन०।

बांधुक–वि० (सं०) बंधुक वृक्ष-संबंधी।

बांधुक्य–पु० (सं०) विवाह।

बाँबी, बाँमी–स्त्री० दीमकोंका भीटा, बमीठा; साँपका बिल।

बाँभन*–पु० ब्राह्मण।

बाँया–वि० दे० 'बायाँ'।

बाँवला–वि० दे० 'बावला'।

बाँस–पु० तिनकेकी जातिका एक लंबा, सीधा, गिरहदार पौधा जो बहुतसे कामोंमें आता है, वंश; रीढ़; भूमिकी एक माप; नावकी लग्गी। **–गुला**–पु० गहरे गुलाबी रंगका पौधा और उसके फूलका नाम। **–पिया**–पु० सुनहरे रंगके फूलका काँटोंदार झाड़ीदार पौदा और उसके फूलका नाम, कंसरइया। **–पूर**–पु० एक बारीक कपड़ा। **–फल**–पु० एक बारीक धान, बाँसी। **मु०** **–पर चढ़ना**–बदनाम होना। **–पर चढ़ाना**–बदनाम करना। **–बजना**–लाठी चलना, मारपीट होना। **–बजाना**–लाठी चलाना, मार-पीट करना। **–बराबर**–बहुत लंबा। **–(सों)उछलना**–बेहद खुश होना; बहुत उछल-कूद करना।

बाँसली–स्त्री० दे० 'बाँसुरी'।

बाँसा–पु० नाकके बीचकी उभरी हुई हड्डी; रीढ़; पियाबाँसा; बीज गिरानेके लिए हलके साथ लगा हुआ बाँसका नल। **–गड़ा**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **मु०** **–फिर जाना**–नाककी हड्डीका टेढ़ा होना (जो मृत्यु निकट होनेका सूचक है)।

बाँसी–स्त्री० एक तरहकी किल्क जो नैचे बनानेके काम आती है; एक धान जिसका चावल बारीक और सुगंधित होता है; एक तरहका गेहूँ; एक घास; सफेदी लिये हुए पीले रंगका एक तरहका पत्थर; * बाँसुरी।

बाँसुरी–स्त्री० पतले पोले बाँसका बना एक बाजा जो मुंहसे फूंककर बजाया जाता है, वंशी।

बाँसुली–स्त्री० एक घास; दे० 'बाँसुरी'। **–कंद**–पु० एक तरहका जंगली सूरन।

बाँह–स्त्री० हाथका कंधेसे हथेलीतकका भाग, बाहु, भुजा; (ला०) बल; भरोसा; शरण; आस्तीन; एक कसरत। **–गल**–(बहियां)–गलेमें बाँह डालना जो मित्रता या निकटताका सूचक है। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–बोल**–पु० रक्षा या सहायता करनेका वचन। **–मरोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **मु०** **–की छाँह लेना**–शरणमें आना। **–गहना,–पकड़ना**–भरण-रक्षणका भार उठाना; अपनाना; विवाह करना। **–चढ़ाना**–लड़नेको तैयार होना, आस्तीन चढ़ाना; कोई काम करनेके लिए तैयार होना। **–टूटना**–सबसे बड़े सहायकका उठ जाना; भाईका मरना। **–देना**–सहारा, सहायता देना। **–बुलंद होना**–साहस करना; उदार होना।

बाँही*–स्त्री० दे० 'बाँह'।

बा*–पु० पानी; बार, दफा। स्त्री० (गु०) माता। अ० (फा०) पास, साथ (संज्ञापदसे मिलकर युक्तताका अर्थ देता है।) **–अदब**–वि० अदबवाला, विनीत। अ० अदबके साथ, विनयपूर्वक। **–असर**–वि० असर रखनेवाला, प्रभावशाली। **–आबरू**–वि० आबरूदार, प्रतिष्ठित। अ० इज्जतके साथ। **–इख़्तियार**–वि० अधिकार रखनेवाला। **–ईमान**–वि० ईमानदार। अ० ईमानके साथ। **–कमाल** वि० गुणी, कमालवाला। **–कार**–वि० जो कुछ करता हो, बैठा-ठाला, बेकार न हो। **–क़ायदा**–वि० नियमित। अ० कायदेके साथ, नियमानुसार। **–ख़ुदा**–वि० भगवद्भक्त, जिसे ईश्वरका सामीप्य प्राप्त हो, खुदा-रसीदा। **–ग़रज़**–वि० गरजमंद। **–ज़ाब्ता**–अ० जाबतेसे, नियमानुसार। वि० नियम-युक्त, बाकायदा। **–मज़ा** वि० मजेदार, स्वादिष्ठ। **–मज़ाक़**–वि० रसिक, विनोदशील। **–मुराद**–वि० सफल, जिसकी कामना पूरी हो गयी हो। **–मुरौवत**–वि० मुरौवतवाला। **–वज़ा**–वि० वजेदार, सभ्य, शिष्ट। **–वजूद**–अ० होते हुए, यद्यपि, अगरचे। **–वफ़ा**–वि० वफादार; प्रीति निभानेवाला; वचनपालक। **–शऊर**–वि० शऊरदार, सलीकादार, चतुर। **–सलीक़ा**–वि० जिसे काम करनेका सलीका, ढंग आता हो। **–सवाब**–वि० ठीक, यथायोग्य। **–हम**–अ० इकट्ठे, मिलकर, परस्पर।

बा†–अ० क्रि० है।

बाइ*–स्त्री० दे० 'बाई'; बावड़ी।

बाइगी–स्त्री० व्यर्थकी बात।

बाइनि*–स्त्री० बयना।

बाइबिल–स्त्री० ईसाइयोंकी इलहामी धर्मपुस्तक, इंजील।

बाइस–वि० दे० 'बाईस'। पु० दे० 'बाईस'; (अ०) कारण, सबब, हेतु।

बाइसिकिल–स्त्री० (अं०) दो पहियोंकी गाड़ी जो सवारके पाँवोंकी हरकतके ही सहारे चलती है, साइकिल, पैरगाड़ी।

बाई–स्त्री० वायु; वातव्याधि। **मु०** **–का दखल,–की झोंक**–वातकोप; सन्निपात। **–चढ़ना**–सन्निपात होना; मिजाज बिगड़ना। **–पचना**–वातकोपका शांत होना; घमंड टूटना। **–पचाना**–घमंड तोड़ना।

बाई–स्त्री० प्रतिष्ठित महिला; वेश्या। **–जी**–स्त्री० वेश्या; नायिका।

बाईस–वि० बीस और दो। पु० बाईसकी संख्या, २२। **–वाँ**–जिसका स्थान क्रमसे २१ के बाद हो।

बाईसी–स्त्री० बाईस चीजों, पद्योंका समूह।

बाउ*–पु० वायु; अपान वायु।

बाउर*–वि० बावला; मूर्ख; गूँगा; † खराब, बुरा।

बाउरी†–स्त्री० दे० 'बावली'।

बाउल–पु० बंगाली वैष्णवोंका एक सम्प्रदाय; बावला। **–गीत**–बाउलों द्वारा गाया जानेवाला भक्ति-गीत।

बाऊ*–पु० दे० 'वायु'।

बाओटा–पु० गठिया रोगका एक नाम, दे० 'वहुँटा' ।

बाक–पु० (सं०) बगलोंका समूह; * वाक्य, वचन, शब्द । **–चाल***–वि० वाचाल, बातूनी ।

बाकना*–अ० क्रि० 'बकना' ।

बाकरी–स्त्री० पगली ।

बाकल–पु० छाल, वल्कल ।

बाकला–स्त्री० एक छोटा फसली पौधा जिसकी फलियाँ तरकारीकी तरह खायी जाती हैं और दाने दाल आदि बनानेके काम आते हैं ।

बाकलि*–पु० बकरा ।

बाकली–स्त्री० एक पेड़ जिसके पत्ते रेशमके कीड़ोंको खिलाये जाते हैं ।

बाकस†–पु० बक्स, संदूक ।

बाका*–स्त्री० वाणी, वाक्शक्ति ।

बाकिरा–स्त्री० (अ०) कुमारी; अनबिधा मोती ।

बाकी*–अ० लेकिन, अगर ('बल्कि'से बना रूप), मुलाँ । स्त्री० एक धान ।

बाक़ी–वि० (अ०) बचा हुआ, अवशिष्ट; जो सदा बना रहे; मौजूद, विद्यमान; देय, न चुकाया हुआ (पावना) । स्त्री० एक संख्याको दूसरीमेंसे घटानेका गणित, व्यवकलन, (निकालना); घटानेसे निकलनेवाली संख्या । **–दार**–वि० जिसके यहाँ लगान या पावना बाकी हो । **–दारद**–अभी बाकी है, असमाप्त ।

बाकुंभा–पु० कुंभीके फूलका सुखाया हुआ केसर ।

बाकुल–वि० (सं०) बकुल वृक्ष-संबंधी । पु० बकुलका फल । * पु० वल्कल, छाल, बाकल ।

बाखर†–पु० एक तृण ।

बाखरि*–स्त्री० दे० 'बखरी' ।

बाख़्तर–पु० (फा०) हिंदूकुश और वक्षु (आक्सस)के बीच अवस्थित एक प्राचीन जनपद, 'बैक्ट्रिया'; बल्ख प्रदेश ।

बाग–स्त्री० लगाम, रास । **–डोर**–स्त्री० लगाममें बाँधी जानेवाली रस्सी । मु० **–उठाना**–चल पड़ना । **(किसी ओर)–मोड़ना**–घुमाना, ले जाना । **–हाथसे छूटना**–बेकाबू होना; मौका हाथसे जाता रहना ।

बाग़–पु० (फा०) जमीनका वह टुकड़ा जिसमें फल-फूलके पेड़-पौधे करीनेसे लगाये गये हों, वाटिका, उपवन; लगाये हुए पेड़ोंका झुंड, बाड़ी । **–बाग़**–वि० अति प्रसन्न, प्रमुदित (होना) । **–बान**–पु० बागकी देखरेख करनेवाला, माली । **–बानी**–स्त्री० बागवानका काम, पद । **–वान**–पु० दे० 'बाग़बान' ।

बागड़–पु० उजाड़ क्षेत्र; दे० 'बागर' (मरुभूमि); नखलिस्तान ।

बागना*–अ० क्रि० बोलना; चलना, घूमना ।

बागर–पु० नदीके किनारेकी जमीन जहाँतक उसका पानी बाढ़में भी न पहुँचता हो; * जाल, फंदा; रस्सी; मरुभूमि–'बागर देश लुअनका घर है'–कबीर ।

बागल*–पु० बगला ।

बागा*–एक पुराना लंबा पहनावा ।

बाग़ी–वि० (अ०) बगावत करनेवाला, विद्रोही; न दबनेवाला, सरकश ।

बाग़ीचा–पु० (फा०) छोटा बाग ।

बागुर*–पु० जाल, फंदा ।

बागेसरी†–स्त्री० दे० 'वागीश्वरी;' एक रागिनी ।

बाघंबर–पु० बाघकी खाल; एक तरहका रोयेंदार कंबल ।

बाघ–पु० सिंहके समान बल-विक्रम रखनेवाला, लंबाईमें उससे कुछ छोटा एक हिंस्र जंतु, व्याघ्र । (स्त्री० 'बाघिन' ।) **–नख**–पु० बघनखा ।

बाघा–पु० चौपायोंका एक रोग; एक तरहका कबूतर ।

बाघी–स्त्री० जाँघके जोड़में होनेवाली एक तरहकी गिल्टी ।

बाघुल–स्त्री० एक छोटी मछली ।

बाच*–वि० वाच्य, वर्णनीय ।

बाचना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'बाँचना' ।

बाचा*–स्त्री० वचन; वाक्य; बोलनेकी शक्ति, प्रतिज्ञा । **–बंध**–वि० प्रतिज्ञाबद्ध ।

बाछ–पु० बाछनेकी क्रिया, छँटाई; चंदे, मालगुजारी आदिका आनुपातिक (रसदी) पड़ता; बाछा । स्त्री० मुखका प्रांतभाग जहाँ दोनों होंठ जुड़ते हैं । मु० **–(छें)खिलना**–प्रसन्न होना, खुशीसे खिल जाना ।

बाछना–स० क्रि० छाँटना, चुनना; जुदा करना, विभक्त करना ।

बाछा†–पु० बछड़ा; * बच्चा, वत्स ।

बाछी†–स्त्री० बछिया ।

बाज*–पु० घोड़ा, बाजी; दे० 'बाजा' । अ० बिना, छोड़कर ।

बाज़–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया; संज्ञापदसे संयुक्त होकर खेलनेवाला, करनेवालाका अर्थ देता है (कबूतरबाज़, पतंगबाज) । अ० फिर, दोबारा । वि० वंचित; कोई-कोई, कुछ, विशिष्ट । **–गश्त**–स्त्री० लौटना, वापसी । **–दावा**–पु० दावा उठाना, छोड़ना; स्वत्वका त्याग, दस्त-बरदारी । **–दीद**–स्त्री० किसीके मिल जानेके बाद उससे मिलने जाना, वापसी मुलाकात । **–पुर्स**–स्त्री० पूछताछ, जवाबतलबी । मु०**– आना**–लौटना; छोड़ना, त्यागना; बचना, दूर रहना । **–रखना**–रोकना, मना करना ।

बाजड़ा–पु० दे० 'बाजरा' ।

बाजन*–पु० बाजा ।

बाजना*–अ० क्रि० लड़ना; लगना, बैठना (चोट आदिका); पहुँचना–'साह आइ चितउर गढ बाजा'–प०; दे० 'बजना' ।

बाजरा–एक मोटा अनाज; उसका पौधा ।

बाजा–पु० बजानेका यंत्र, वाद्य । **–गाजा**–पु० अनेक प्रकारके साथ बजनेवाले बाजे; धूमधाम ।

बाज़ार–पु० (फा०) वह स्थान जहाँ साधारण आवश्यकताकी वस्तुएँ या कोई खास चीज बेची-खरीदी जाय, हाट, मंडी; खरीद-बेचीके लिए जमा हुए लोग; भाव; बाजार लगनेका दिन, समय; भीडभाड़, मेला (ला०) । **–भाव**–पु० किसी चीजके बाजारमें बेचे-खरीदे जानेका भाव, प्रचलित दर । मु० **–करना**–चीजें खरीदने या बेचनेके लिए बाजार जाना । **–का गज**–वह आदमी जो इधर-उधर मारा-मारा फिरे । **–की मिठाई**–आसानीसे मिलनेवाली चीज; वेश्या । **–गरम या गर्म होना**–बाजारमें खूब खरीद-बिक्री, चहल-पहल होना । **(किसी चीजका)–गरम या गर्म होना**–जोर, अधिकता, प्रबलता होना (रिश्वत, गिरफ्तारियोंका बाजार०) । **–गिरना**–भाव घटना, मंदी होना । **–तेज़ होना**–भाव चढ़ना, बहुत माँग होना । **–भाव देना या पीटना**–खूब पीटना, पूरी मरम्मत करना । **–मंदा होना**–किसी वस्तुका दाम घटना; कम बिक्री होना । **–में आग लगना**–चीजोंके दाम चढ़ जाना । **–लगना**–बाजारमें चीजोंका बिक्रीके लिए रखा, लगाया जाना; दूकानें खुलना; चीजोंका ढेर, अंबार लगना; भीड़ होना । **–लगाना**–चीजोंको इधर-उधर फैला देना; भीड़ लगाना ।

बाज़ारी–वि० बाजारका; मामूली, साधारण लोगोंमें प्रचलित; अशिष्ट (प्रयोग, मुहाविरा) । **–औरत**–स्त्री० वेश्या । **–गप**–स्त्री० अविश्वसनीय बात ।

बाज़ारू–वि० दे० 'बाज़ारी' ।

बाजि*–पु० घोड़ा; पक्षी; बाण । वि० चलनेवाला ।

बाजी–स्त्री० बड़ी बहन । पु० घोड़ा; * बजनिया ।

बाज़ी–स्त्री० (फा०) खेल; करतब, तमाशा; दाँव, शर्त; ताश-शतरंज आदिका एक पूरा खेल; एक खिलाड़ीके खेलनेका समय, बारी; धोखा, चालाकी । **–गर**–पु० जादूके खेल करनेवाला, नट । (स्त्री० 'बाजीगरनी' ।) **–गरी**–स्त्री० बाजीगरका काम; धोखा, चालाकी । **–चा**–पु० खेल, खिलवाड़ । मु० **–आना**–ताश-गंजीफेकी बाँटमें अच्छे पत्ते मिलना । **–बदना**–शर्त बदना (लगाना) । **–मारना**–जीतना । **–ले जाना**–आगे बढ़ जाना, जीतना ।

बाजु*–अ० बिना; (–के) सिवा ।

बाज़ू–पु० (फा०) बाहँ, भुजा; सेनाका दाहिना या बायाँ भाग, पक्ष; चिड़ियाका डैना; चौखटेकी दाहिने-बायेंकी खड़ी लकड़ी; बाजूबंद । **–बंद**–पु० बाँहपर पहननेका एक गहना, भुजबंद ।

–बीर|–पु० बाजूबंद। मु० –टूटना–बाँह टूटना, गतबल हो जाना। –तोलना–(पक्षीका) उड़नेके लिए तैयार होना।

बाजोटा*–पु० ऊँचा आसन, चौकी।

बाझ*–अ० बग़ैर, बिना।

बाझन*–पु० फँसाव, बझाव; उलझन; लड़ाई।

बाझना*–अ० क्रि० दे० 'बझना', फँसना–'तैं सुअटा पंडित होइ कैसे बाझा आइ'–प०।

बाट–पु० पत्थर, लोहे आदिका टुकड़ा जो चीजें तौलनेके काम आये, वजन, बटखरा। स्त्री० ऐंठन, बल; राह, मार्ग। मु० –करना *–रास्ता करना। –का रोड़ा–बाधक, विघ्नरूप। –जोहना,–देखना–इंतजार करना। –परना–डाका पड़ना। –पारना–रास्तेमें लूट लेना, डाका डालना। –लगाना–मार्ग दिखलाना; बेवकूफ बनाना।

बाटकी*–स्त्री० बटुली।

बाटना–स० क्रि० पीसना, घोंटना; * बटना, ऐंठना।

बाटली|–स्त्री० बोतल।

बाटिका–स्त्री० दे० 'वाटिका'।

बाटी–स्त्री० उपलोंकी आग या अंगारोंपर सेंकी हुई छोटी, मोटी रोटी, अंगाकड़ी; गोली; तसला; कटोरी; * वाटिका।

बाड़–स्त्री० फसलकी रक्षाके लिए बनाया हुआ काँटे-बाँस आदिका घेरा, झाड़बंदी, टट्टी; तेजी; टाँड़ नामका गहना।

बाडुकिन–पु० छापेखाने या दफ्तरीखानेमें काम आनेवाला लोहेका नोकदार उपकरण।

बाडव–पु० (सं०) बडवाग्नि; ब्राह्मण; घोड़ियोंका झुंड। वि० बड़वा-संबंधी।

बाड़ा–पु० इहाता, घेरा; पशुशाला।

बाड़ि*–स्त्री० टट्टर; मेंड़; बाड़ी।

बॉडिस–स्त्री० (अं०) विलायती ढंगकी अँगिया।

बाडी–स्त्री० (अं०) शरीर, देह। –गार्ड–पु० अंगरक्षक सैनिक; ऐसे सैनिकोंका दस्ता।

बाड़ी–स्त्री० फलोंका बाग़; वाटिका; घिरी जगह; घर।

बाडीर–पु० (सं०) मजदूर।

बाड़ौ*–पु० दे० 'बाडव'।

बाढ़–स्त्री० बढ़नेकी क्रिया या भाव, वृद्धि, विकास; बहुतात, अधिकता; नफा; नदी आदिके जलका बढ़ना, फैलना, सैलाब; अतिवृष्टिसे धरतीका जलमग्न होना; बहुत-सी तोपों, बंदूकोंका एक साथ दगना; तलवार आदिकी धार; कोर; सान; किनारा, किनारेकी ऊँचाई। मु० –का डोरा–तलवारकी धारकी रेखा। –पर चढ़ाना–सान देना; उकसाना; भड़काना। –मरना–(रोगादिसे) बाढ़का रुक जाना। –रोकना–आगे बढ़नेसे रोकना।

बाढ़ना*–अ० क्रि० दे० 'बढ़ना'।

बाढ़ि*–स्त्री० बाढ़, वृद्धि।

बाढ़ी–स्त्री० बाढ़, वृद्धि; उधार दिये हुए अन्नके ब्याजरूपमें मिलनेवाला अन्न; नफा। * पु० बढ़ई–'बाढ़ी आवत देखिकर तरुवर डोलन लाग'–कबीर।

बाढ़ीवान|–पु० धार तेज करनेवाला, सान चढ़ानेवाला।

बाण–पु० (सं०) लोहेका फल लगा हुआ नरसल या पतली सीधी लकड़ीका टुकड़ा जिसे धनुषपर चढ़ाकर मारते हैं, तीर, शर; बाणका फल, गाँसी; निशाना; सरपत; गायका थन; ५ की संख्या; बाणासुर; बाणभट्ट; अग्नि। –गंगा–स्त्री० गंगाकी एक सहायक नदी जो कहा जाता है कि एक पहाड़में रावणके बाण मारनेसे निकली है। –गोचर–पु० बाणकी मार। –जित्–पु० विष्णु। –तूण,–धि–पु० तरकश। –नाशा–स्त्री० एक नदी। –पथ,–पात–पु० बाणके पहुँचनेकी हद, मार। –पर्णी–स्त्री० एक पौधा। –पाणि–वि० बाणोंसे लैस। –पुंखा–स्त्री० बाणका पंखवाला छोर; एक पौधा। –पुर–पु० बाणासुरकी राजधानी, शोणितपुर। –भट्ट–पु० कादंबरीके रचयिता प्रसिद्ध संस्कृत कवि जो महाराज हर्षवर्धनके दरबारमें रहते थे। –मुक्ति–स्त्री०,–मोक्षण–पु० तीर छोड़ना। –योजन–पु० तरकश। –रेखा–स्त्री० बाणका लंबा घाव। –लिंग–पु० नर्मदामें पाया जानेवाला एक सफेद पत्थर जिसको शिवलिंगके रूपमें पूजते हैं। –वर्षण–पु० दे० 'बाणवृष्टि'। –वर्षी(र्षिन्)–वि० बाणोंकी वर्षा करनेवाला। –वार–पु० कवच, बख्तर; बाणोंका समूह। –विद्या–स्त्री० बाण चलानेकी विद्या, तीरंदाजी। –वृष्टि–स्त्री० बाणोंकी वर्षा। –संधान–पु० बाणको धनुष्पर चढ़ाना। –सिद्धि–स्त्री० बाणसे निशाना मारना। –सुता–स्त्री० बाणासुरकी पुत्री, उषा, अनिरुद्धकी पत्नी। –हा(हन्)–पु० विष्णु।

बाणाभ्यास–पु० (सं०) बाण चलाने, तीरंदाजीका अभ्यास।

बाणावती–स्त्री० (सं०) बाणासुरकी पत्नी।

बाणावलि, बाणावली–स्त्री० (सं०) बाणोंकी पंक्ति या समूह।

बाणाश्रय–पु० (सं०) तरकश।

बाणासन–पु० (सं०) धनुष्।

बाणासुर–पु० (सं०) राजा बलिके सौ बेटोंमें सबसे बड़ा जिसके, पुराणोंके अनुसार, हजार हाथ थे और जिसकी बेटी उषासे कृष्णके पोते अनिरुद्धका ब्याह हुआ।

बाणि–स्त्री० (सं०) दे० 'वाणि'।

बाणिज्य–पु० (सं०) दे० 'वाणिज्य'।

बाणी–स्त्री० (सं०) दे० 'वाणी'।

बाणी(णिन्)–वि० (सं०) बाणोंसे युक्त।

बात–पु० दे० 'वात'। स्त्री० कथन, वचन; वार्ता, बातचीत; वक्तव्य (मेरी बात तो सुन लो); चर्चा, प्रसंग; कौल, करार; विषय, मामला; घटना; संयोग, प्रसंग; बहाना, बनावट; गूढ़ अर्थ, भेद, मर्म; कथनमात्र; कड़ी बात, डाँट, भर्त्सना (–सहना, सुनना); बातका विश्वास, साख (बात जाना); तात्पर्य, मतलब; खूबी, प्रशंसाकी बात; काम; लगाव; चीज, वस्तु; आदत, गुण (अच्छी, बुरी बातें); स्थिति, हालत; मोल, दाम (एक बात); रास्ता, उपाय (मेरे लिए एक ही बात रह गयी है); आदेश (बड़ोंकी बात मानो); सँदेसा; इच्छा, कामना। –चीत–स्त्री० दो या अधिक आदमियोंका आपसमें बातें करना, वार्तालाप, गुफ्तगू। –फ़रोश–वि०, पु० बातें बनानेवाला, झूठी बातें आदि करनेवाला; चापलूस। मु० –आँचलमें बाँधना–दे० 'बात गाँठ बाँधना'। –आना–चर्चा छिड़ना। (किसीपर)–आना–दोषारोप होना। –आ पड़ना–प्रसंग आना; संयोग उपस्थित होना। –उठना–चर्चा चलना, जिक्र होना। –उठाना–चर्चा चलाना; बात न मानना। –उड़ना–चर्चा फैलना। –उड़ाना–बात टालना। –उलटना–बात पलटना; विरुद्ध बात कहना। –कहते–तुरत, झट। –का ओर-छोर–बातका मतलब, बातका सिर-पैर। –काटना–बीचमें बोलना, टोकना, बातका खंडन करना। –का धनी,–का पूरा–जो कहे वह करनेवाला। –कान पड़ना–बातकी जानकारी होना। –का बतंगड़ करना या बनाना–छोटी-सी बातको बहुत बड़ी बना देना, तिलका ताड़ बनाना। –की तह–असल मतलब, तात्पर्य। –की पुड़िया–बहुत बातूनी। –की बातमें–छन भरमें, तुरत। –खुलना–छिपी बातका प्रकट हो जाना। –गढ़ना–झूठी बात कहना। –गाँठ बाँधना–बात दिलमें बैठा लेना, अच्छी तरह याद कर लेना। –घूँट जाना–दे० 'बात पी जाना'। –चबा जाना–बातको कहते-कहते बीचमें उड़ा देना; बातका रुख दूसरी ओर कर देना। –(तें) छाँटना या बघारना–डींग मारना। –जाना–साख जाना; एतबार उठना। –टलना–बातका अन्यथा होना, कहे मुताबिक न होना। –टालना–बात न मानना; सुनी अनसुनी करना। –ठहरना–ब्याह तै होना। –दुहराना–दूसरेकी बातको उलटकर जवाब देना। (मुँहसे)–न आना–मुँहसे बोल न निकलना। –न करना–घमंडके मारे न बोलना। –न पूछना–खोज-खबर न लेना; ध्यान न देना; तुच्छ समझना। –निकलना–चर्चा चलना। –नीचे डालना–अपनी बातको कट जाने देना, अपनी बातका आग्रह त्याग देना। –पकड़ना–कथनमें गलती, असंगति बताना; नुक्ताचीनी करना। –पचना–सुनी हुई बातका दूसरोंसे न कहा जाना। –पर आना–अपनी बातका पक्ष, हठ करना। –पर जाना–किसीके कहेपर विश्वास कर लेना, बात मानना। –पर धूल डालना–किसी बातको भूल जाना या उसपर ध्यान न देना। –पर बात कहना–जवाब देना। –पर बात

निकलना–चर्चा या प्रसंग, दूसरेके कुछ कहनेके कारण किसी बातका कहा जाना । **–पलटना**–बात बदलना । **–पाना**–असल मतलब समझना । **–पी जाना**–बातको अनसुनी करना, बातको सह लेना । **–पूछना**–खोज-खबर लेना, ध्यान देना; *कद्र करना । **–फेंकना**–ताने मारना; कह रखना । **–फेरना**–बात पलटना । **–फैलना**–चर्चा फैलना । **–बढ़ना**–बातका बहस या झगड़ेका रूप ले लेना; मामलेका तूल खींचना; साख, मान-प्रतिष्ठा बढ़ना । **–बढ़ाना**–बहस, झगड़ा करना; मामलेको तूल देना । **–बदलना**–बातपर कायम न रहना, दूसरी बात कहना; बातका विषय, पहलू बदलना । **–बनना**–काम बनना; मान, साख बढ़ना । **–बनाना**–बहाना करना; काम सँभाल लेना, बिगड़ने न देना । **–बात में**–हर बातमें । **–बिगड़ना**–काम बिगड़ना; साख नष्ट होना । **–मारना**–असल बात छिपा लेना; व्यंग्य बोलना । **–मुँहपर लाना**–बात बोलना । **–में फ़र्क़ आना**–बात झूठी ठहरना । **–में बात निकालना**–बातमें बारीकी निकालना, बालकी खाल खींचना । **–रखना**–कहा मान लेना, बातका आदर करना; मान रखना; अपने वचनका पालन करना; दुराग्रह करना । **–रहना**–वचनका पालन होना; प्रतिष्ठा बनी रहना । **–लगना**–बातसे आहत होना । **–(तें) छाँटना**–बढ़-बढ़कर बोलना । **–बनाना**–बनावटी बातें, बहाना करना; चापलूसी करना । **–मिलाना**–हाँमें हाँ करना । **–सुनना**–कड़ी बातें सुनना । **–(तों) की झड़ी**–बातोंका देरतक न टूटनेवाला सिलसिला, लगातार बोलना । **–बातों में**–बातोंके सिलसिलेमें, बातचीतके दरमियान । **–में आना**–बातोंका विश्वास कर लेना, धोखा खाना । **–में उड़ाना**–इधर-उधरकी बातों या हँसीमें टालना । **–में लगाना**–बातोंमें उलझाना, बहलाना; **क्या बात है !** क्या कहना, धन्य है (प्रशंसासूचक कथन) ।

बातप–पु० हिरन ।

बातासा†–पु० दे० बतास, हवा ।

बातिन–पु० (अ०) भीतर; अंतःकरण, मानस ।

बातिनी–वि० (अ०) भीतरी ।

बातिल–वि० (अ०) झूठ, मिथ्या, गलत; रद्द किया हुआ । **–परस्त**–वि० मिथ्याको पूजनेवाला, काफिर ।

बाती*–स्त्री० बत्ती ।

बातुल–वि० दे० 'वातुल' ।

बातूनी–वि० बहुत बोलवाला, बक्की ।

बाथ†–पु० गोद, अंक; (अं०) स्नान ।

बाथू–पु० बथुआ नामका साग ।

बाद–अ० बेमतलब, फजूल, बेकार । पु० तर्क; बहस; हुज्जत; शर्त; बाजी; दस्तूरी; अतिरिक्त मूल्य जो पीछे काट दिया जाता है । वि० छोड़ा हुआ । मु० **–करना, –देना** –अलग कर देना, काट देना । **–मेलना***–शर्त बदना ।

बाद–अ० (अ०) पीछे, अनंतर । **–को, –में**–पीछे ।

बाद–पु० (फा०) हवा, वायु; घोड़ा । **–कश**–पु० छतसे लटकनेवाला पंखा; धौंकनी । **–ख़ोर**–पु० बाल झड़ जानेकी बीमारी, गंजापन । **–गर्द**–पु० बगूला, बवंडर । **–गीर**–पु० झरोखा । **–नुमा**–पु० वायुकी दिशा बतानेवाला आला । **–पा, –रफ्तार**–वि० हवाकी तरह तेज चलनेवाला (घोड़ा) । **–बान**–पु० पाल । **–बानी**–वि० पालसे चलनेवाला (जहाज) । **–फ़रोश**–वि० दे० 'बातफरोश' । **–(दे) ख़िज़ाँ**–स्त्री० पतझड़की हवा । **–फ़िरंग**–पु० गरमीकी बीमारी, आतशक । **–बहारी**–पु० वसंतकी सुहावनी हवा ।

बादकाकुल–पु० तालका एक मुख्य भेद ।

बादना*–अ० क्रि० बहस करना, झगड़ा करना; ललकारना ।

बादर–पु० (सं०) कपास; कपासका सूत; सूती वस्त्र; बेर; रेशम; जल; दक्षिणावर्त शंख; *पु० बादल । वि० बेरका; कपासका; मोटा, बारीकका उलटा ।

बादरा–स्त्री० (सं०) कपासका पेड़ या सूत ।

बादरायण–पु० (सं०) वेदांत सूत्रके रचयिता वेद-व्यास । **–संबंध**–पु० बहुत दूरका, खींच-तानकर जोड़ा हुआ संबंध । **–सूत्र**–पु० ब्रह्मसूत्र ।

बादरायणि–पु० (सं०) शुकदेव ।

बादरिक–वि० (सं०) बेर इकट्ठा करनेवाला ।

बादरिया, बादरी†–स्त्री० बदली ।

बादल–पु० वायुमंडलमें संचित और घनीभूत भाप जो मेहके रूपमें धरतीपर आती है, मेघ, अभ्र; एक तरहका दूधिया रंगका पत्थर । मु० **–उठना, –चढ़ना**–बादलोंका फैलना, छाना, घटा उठना । **–गरजना**–बादलोंके संघर्षसे घोर ध्वनि उत्पन्न होना । **–घिरना**–मेघोंका छाना । **–छँटना, –फटना**–घटाका बिखरना । **–में थिगली लगाना**–कठिन काम करना । **–(लों) से बातें करना**–आकाशसे बातें करना, बहुत ऊँचा होना ।

बादला–पु० चाँदीका चपटा तार जो गोटा बुनने या कलाबत्तू बनानेके काम आता है, जरबफ्त ।

बादशाह–पु० (फा०) राजा, सुलतान; सरदार; ईश्वर; स्वतंत्र प्रकृतिका पुरुष; शतरंजका एक मुहरा; ताशका एक पत्ता । **–ज़ादा**–पु० बादशाहका बेटा, राजकुमार । **–ज़ादी**–स्त्री० बादशाहकी बेटी, राजकुमारी । **–पसंद**–पु० खशखाशी रंग; एक तरहका चावल । **–(हे) वक्त**–पु० वर्तमान नरेश, वह बादशाह जो तत्काल राज्य कर रहा हो ।

बादशाहत–स्त्री० राज्य, हुकूमत; बादशाहका पद; राजत्व ।

बादशाही–वि० बादशाहका; राजोचित, शाहाना । स्त्री० राज्य, शासन; मनमाना व्यवहार । **–ख़र्च**–पु० शाहानाखर्च, भारी फुजूलखर्ची । **–फ़रमान, –हुक्म**–पु० राजाज्ञा ।

बादहि–अ० निरर्थक ।

बादाम–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध मेवा जिसकी गिरी खायी जाती और बहुत पुष्टिकर होती है; उसका पेड़ । **–पाक**–पु० एक प्रसिद्ध पुष्टिकर पाक । **–फ़रोश**–पु० बादाम बेचनेवाला ।

बादामा–पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; फकीरोंकी गुदड़ीका एक नाम ।

बादामी–वि० बादामके रंगका; बादामी शक्लका; बादामका बना हुआ । पु० बादामके छिलकेसे मिलता हुआ रंग; वह ख्वाजासरा जिसकी इंद्रिय बहुत छोटी हो; बादामके रंगका घोड़ा; किलकिला पक्षी; एक धान । स्त्री० बादामकी शक्लकी एक डिबिया जिसमें जवाहरात रखते हैं; एक तरहकी मिठाई जिसमें बादाम डाले जाते हैं; बादाम रखनेकी रिकाबी; रिकाबीकी शक्लकी एक मिठाई । **–आँख**–स्त्री० बादामकी शक्लकी छोटी आँख ।

बादि*–अ० व्यर्थ, बेकार ।

बादित–वि० जो बजाया गया हो ।

बादी–पु० दे० 'वादी' । वि० वातकारक, वातज । स्त्री० वातविकार । **–पन**–पु० वायुविकार; वातकारक होना । **–बवासीर**–स्त्री० बवासीरके दो भेदोंमेंसे एक जिसमें मस्सेसे खून नहीं आता ।

बादीगर*–पु० बाजीगर ।

बादुर*–पु० चमगादड़–'ते बिधना बादुर रचे रहे उरध मुख झूल' –साखी ।

बाध–पु० (सं०) प्रतिरोध; रोक, प्रतिबंध; कष्ट, पीड़ा; बाधा देनेवाला; † मूँजकी रस्सी ।

बाधक–वि० (सं०) बाधा करनेवाला, रुकावट डालनेवाला; विघ्नकारक, कष्ट देनेवाला । पु० स्त्रियोंका एक रोग जो प्रजननमें बाधक होता है ।

बाधन–पु० (सं०) बाधा करना; विरोध करना; कष्ट देना ।

बाधना–स्त्री० (सं०) अशांति; कष्ट; बाधा, प्रतिरोध; पीडन । * स० क्रि० रुकावट डालना; विघ्न करना; कष्ट पहुँचाना ।

बाधयिता (तृ)–वि०, पु० (सं०) हानि पहुँचानेवाला; बाधा डालनेवाला; पीडक ।

बाधा–स्त्री० (सं०) अड़चन, रुकावट, विघ्न; पीड़ा, कष्ट; भय (प्रेतबाधा) । **–हर**–वि० बाधा दूर करनेवाला ।

बाधित–वि० (सं०) जिसमें रुकावट पड़ी हो; असंगत; ग्रस्त; आभारी ।

बाधिता (तृ)–वि०, पु० (सं०) दे० 'बाधयिता' ।

बाधिर्य–पु० (सं०) बहरापन, बधिरता ।

बाधी (धिन्)–वि० (सं०) बाधा डालनेवाला; हानि पहुँचानेवाला ।

बाध्य–वि० (सं०) पीडित; रोका हुआ; विवश; रद करने योग्य। **–रेता(तस्)** वि० नपुंसक।

बान–पु० बाण; एक तरहकी आतिशबाजी; ऊँची लहर; रुई धुननेका डंडा, मुठिया; बाध, मूँजकी रस्सी; * कांति; चमक, एक पेड़; धानका बेहन। स्त्री० सजधज; आदत।

बानइत*–पु० दे० 'बानैत'।

बानक*–स्त्री० बाना, भेस, एक तरहका रेशम।

बानगी–स्त्री० थोड़ी-सी चीज जो ग्राहकको देखनेके लिए दी जाय, नमूना।

बानना*–स० क्रि० बनाना।

बानबे–वि० नब्बे और दो। पु० नब्बे और दोकी संख्या, ९२।

बानर*–पु० दे० 'बंदर'।

बाना–पु० पहनावा, भेस; बुनावट; तानेमें भरा जानेवाला आड़ा सूत; एक तरहका बारीक तागा; भाले जैसा एक हथियार जिसका ऊपरी हिस्सा दुधारी तलवारका-सा होता है; रीति, चाल; पहली जुताई; * निशान; वर्ण, रंग। स० क्रि० फैलाना, प्रसारित करना (मुँह बाना)। मु० **–मुँह**–प्राप्त करनेको लालायित रहना।

बानात–स्त्री० दे० 'बनात'।

बानावरी*–स्त्री० बाणावली; बाणविद्या (?)।

बानि*–स्त्री० बान, आदत; सजधज; रंग, चमक; वचन, वाणी। अ० प्रकारसे।

बानिक*–स्त्री० भेस, बाना; बनिया।

बानिन–स्त्री० बनियेकी स्त्री।

बानिया*–पु० दे० 'बनिया'।

बानी–स्त्री० दे० 'वाणी'; उक्ति, एक हथियार; * वर्ण; चमक; * वाणिज्य। * पु० बनिया; (अ०) नीवँ डालनेवाला, आरंभ करनेवाला; कारणरूप; प्रेरक। **–मबानी**–पु० असल कारण।

बानू(नो)–स्त्री० (फा०) भद्र महिला, कुलांगना; शराबकी सुराही।

बानैत–पु० बाना फेरनेवाला; बाण चलानेवाला; योद्धा।

बानो–स्त्री० (फा०) सम्मानित स्त्रीके नामके साथ प्रयोग किया जानेवाला आदरसूचक शब्द।

बाप–पु० पिता, माताका पति, जनक। **–दादा**–पु० पुरखे, पूर्व-पुरुष। मु० **–का**–पैतृक, मौरूसी। **–की चीज़ समझना**–अपनी मिलकीयत समझना। **–दादाका नाम डुबाना**–कुलकी प्रतिष्ठा मिटाना। **–दादा बखानना**–बाप-दादाको बुरा-भला कहना, गाली देना। **–दादासे**–पीढ़ियोंसे। **–बनाना**–अति सम्मान करना; चापलूसी करना। **–रे,–रे बाप**–दुःख या भय सूचित करनेवाला उद्‌गार।

बापरना†–स० क्रि० व्यवहार करना, काममें लाना।

बापा–पु० बाप; दे० 'बाप्पा'। **–बैर**–पु० पुश्तैनी अदावत।

बापिका–स्त्री० दे० 'वापिका'।

बापी–स्त्री० दे० 'वापी'।

बापुरा–वि० गरीब; बेचारा; तुच्छ, नगण्य। (स्त्री० 'बापुरी'।)

बापू†–पु० दे० 'बाप'; पिता या अन्य आदरणीय जनका संबोधन; महात्मा गांधीके लिए प्रयोग किया जानेवाला सम्मानसूचक शब्द।

बाप्पा–पु० मेवाड़के राजवंशका आदिपुरुष बाप्पा रावल (जन्म ७६९ वैक्रम)।

बाफ†–स्त्री० 'भाप'।

बाफ़–पु० (फा०) संज्ञापदसे समस्त होकर 'बुननेवाला' अर्थ देता है (नूरबाफ़)।

बाफ़ता, बाफ्ता–वि० (फा०) बुना हुआ। पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा; कबूतरोंका एक रंग।

बाब–पु० (अ०) द्वार, दरवाजा; दरबार; पुस्तकका अध्याय, परिच्छेद; प्रकार, विषय।

बाबत–स्त्री० (फा०) विषय; जरीया। (**किसीकी बाबत**–किसीके विषयमें, बारेमें)।

बाबर–पु० भारतके मुगल राजवंशका प्रवर्तक जहीरुद्दीन मुहम्मद (१४८३-१५३० ई०)।

बाबरची–पु० दे० 'बावरची'।

बाबरी–स्त्री० जुल्फ, काकुल।

बाबल*–पु० बाबुल, पिता, बाबा–'बाबल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखायी म्हारी बाँह'–मीरा।

बाबा–पु० (फा०) बाप; दादा; बूढ़ा, पके बालोंवाला आदमी; साधु-सन्यासी; एक संबोधन; साधु-सन्यासियोंके लिए प्रयुक्त एक आदरसूचक शब्द, बच्चोंके लिए प्यारका शब्द। **–आदम**–पु० दे० 'आदम'; तरीका। **–जी**–पु० साधु, सन्यासी; इनका संबोधन। मु० **–आदम निराला है**–रीति-नीति निराली है।

बाबिल–पु० इराकका एक प्राचीन नगर जो फरात नदीके किनारे बसा था और एक समृद्ध राज्यकी राजधानी था, 'बेबिलोनिया'।

बाबी*–स्त्री० साधुनी।

बाबुल–पु० दे० 'बाबिल,' बेबीलोनिया; बाप, पिता; पिताको लक्ष्यकर गाया जानेवाला लड़कीकी बिदाईका गीत–'लड़कीकी बिदाई है, बाबुल गाया जा रहा है'–कादं० अग० ६६।

बाबू–पु० बड़ा क्षत्रिय जमींदार; ठाकुर; शिक्षित, प्रतिष्ठित जन; क्लर्क (बड़े बाबू, हेड क्लर्क); दे० 'बाबूजी'। **–जी**–पु० पिता या अन्य आदरणीय जनका संबोधन। **–साहब**–पु० आदरणीय जनके लिए प्रयुक्त शब्द।

बाबूना–पु० दवाके काम आनेवाला एक पौधा। **–(ने)का तेल**–बाबूनेके फूलोंको तिलके साथ पेरकर निकाला हुआ तेल।

बाभना†–पु० दे० 'ब्राह्मण'; भूमिहार।

बाम–वि० दे० 'वाम'। स्त्री० एक गहना; एक मछली; नापनेका पैमाना जो साढ़े तीन हाथ होता है, पुरसा; * स्त्री। पु० (फा०) कोठा, छत। **–देव**–पु० 'वामदेव'।

बामकी–स्त्री० एक देवी।

बामन–पु०, वि० दे० 'वामन'।

बामा–स्त्री० दे० 'वामा'।

बामी–स्त्री० बाँबी; एक तरहकी मछली। वि० वाममार्गी।

बाम्हन–पु० दे० 'ब्राह्मण'।

बायँ*–वि० दे० 'बायाँ'; चूका हुआ। मु० **–देना**–तरह देना; फेरा देना।

बाय*–स्त्री० वायु; वातका कोप–'भटा एकको पित करै, करै एकको बाय'; वापी, बावली।

बायक*–पु० वाचक, दूत।

बायकाट–पु० (अं०) संबंध-त्याग, बहिष्कार; सामाजिक या व्यापारिक संबंध, वस्तुविशेषके व्यवहार आदिका त्याग।

बायन–पु० मित्रों, संबंधियोंके यहाँ भेजी जानेवाली मिठाई आदि (बाँटना, बायना या बैना); † दे० 'बयाना'। मु० **–देना**–छेड़छाड़ करना (भले घर बायन दिया)।

बायना–पु० दे० बायन।

बायबिडंग–पु० एक लता जिसके फल दवाके काम आते हैं।

बायबी–वि० बाहरी, गैर, अजनबी।

बायरा–पु० कुश्तीका एक दाँव।

बायव्य–वि०, पु० दे० 'वायव्य'।

बायलर–पु० (अं० 'ब्वायलर') बड़ा बरतन जिसमें कोई चीज उबाली जाय; इंजनका वह भाग जहाँ भाप तैयार करनेके लिए पानी खौलाया जाता है।

बायला†–वि० वातकारक।

बायली*–वि० दे० 'बायबी'।

बायस*–पु० दे० 'वायस'।

बायस्कोप–पु० (अं०) परदेपर चलते-फिरते चित्र दिखलानेवाला एक यंत्र।

बायाँ–वि० पूरबकी ओर मुँह होनेपर उत्तरकी ओर पड़नेवाला (अंग), दाहनाका उलटा, वाम; विरुद्ध, प्रतिकूल। (स्त्री० 'बायीं'।) पु० बाँयें हाथसे बजाया जानेवाला तबला। मु० **–कदम लेना**–दे० 'बायाँ पाँव पूजना'। **–देना**–कतरा जाना; त्याग देना, उपेक्षा करना। **–पाँव या पैर पूजना**–गुरु मानना; हार मानना; उस्तादीका कायल होना। **–(यें)हाथका काम या खेल**–बहुत आसान काम। **–हाथसे गिनवा या रखवा लेना**–जबरदस्ती लेना, धरवा लेना।

बायु–स्त्री० दे० 'वायु'।

बायें–अ० बायीं ओर; प्रतिकूल (होना), विरुद्ध अप्रसन्न या असंतुष्ट (होना)। मु० **–होना**–प्रतिकूल होना।

बारंबार–अ० फिर-फिर, कई बार।

बार–स्त्री० समय; देर; दफा, मर्तबा। पु० द्वार (घर-बार); जनसमूह; टट्टर, घेरा; किनारा; धार; * केश, बाल; * बालक; ठिकाना; राजदरबार। * वारि, जल; (सं०) दरार, छेद। **–तिय,–बधू,–बधूटी,–मुखी***–स्त्री० वारवधू। **–बार**–अ० पुनः-पुनः, अनेक बार।

बार–पु० (फा०) बोझ, भार; ऋणभार; फल; वृक्षशाखा; गर्भ, भ्रूण; दरबार, इजलास; दखल, पहुँच। प्र० संज्ञापदसे युक्त होकर 'बरसनेवाला' अर्थ देता है ('गोहरबार'; 'दरियाबार')। **–आवर**–वि० फलनेवाला, फलदार। **–कश**–वि०, पु० बोझ ढोनेवाला। **–ख़ाना**–पु० मालखाना, गोदाम। **–गह,–गाह**–स्त्री० दरबार; कचहरी; शाही खेमा। **–गीर**–वि० बोझ ढोनेवाला। पु० लदाईके काम आनेवाला जानवर; घोड़ेके लिए घास करनेवाला, घसियारा। **–चा**–पु० छोटा दरवाजा; बारजा। **–दान,–दाना**–पु० वह चीज जिसमें कुछ रखा जाय, बोरा, थैला आदि; रसद; टूटे-फूटे सामान। **–दार**–वि० फलयुक्त; गर्भवती। **–बटाई**–स्त्री० बिना दाँये बोझे बाँट लेना। **–बधू,–बधूटी**–स्त्री० वेश्या। **–मुखी**–स्त्री वेश्या। **–बरदार**–वि० बोझ ढोनेवाला। पु० मोटिया, मजदूर। **–बरदारी**–स्त्री० बोझ-सामान ढोनेका काम; ढुलाई, ढोनेकी उजरत; ढुलाईका साधन, वाहन। **–याब**–वि० पहुँचनेवाला। **–याबी**–स्त्री० प्रवेश, पहुँच। **–रुकाई**–विवाह संबंधी एक रस्म। **–(रे)इहसान**–पु० उपकारका बोझ। **–ख़ातिर**–वि० भारस्वरूप, कष्टप्रद। **–जहाज़**–पु० जहाजका बोझ। **–सबूत**–पु० साबित करनेकी जिम्मेदारी।

बार–पु० (अं०) बारिस्टरों, वकीलोंका समूह; बारिस्टरका पेशा; नृत्यशाला; मदिरालय। **–असोसियेशन,–एसोसियेशन**–पु० वकीलोंकी सभा। **–रूम**–पु० (कचहरीमें) वकीलोंके बैठनेका कमरा। **–लाइब्रेरी**–स्त्री० वकीलोंके उपयोगके लिए (कचहरीके साथ) स्थापित पुस्तकालय।

बारक–स्त्री० दे० 'बारिक'। * अ० एक बार।

बारजा–पु० बालाखानेके सामने पाटकर बनाया हुआ खुला या छतदार बरामदा।

बारण–पु० दे० 'वारण'।

बारता*–स्त्री० दे० 'वार्ता'।

बारतिय–स्त्री० वेश्या।

बारतुंडी–स्त्री० एक पेड़का नाम।

बारन–पु० हाथी। दे० 'वारण'।

बारना–स० क्रि० रोकना, निवारण करना; न्योछावर करना; जलाना।

बारनिश–स्त्री० (अं० 'वारनिश'।) लकड़ी-चमड़े आदिपर चमक लानेके लिए लगाया जानेवाला रोगन; वारनिशकी चमक।

बारदा–स्त्री० एक रागिनी।

बारस*–वि०, पु० दे० 'बारह'–'बारस मास जहाँ चौमासो'–घन०। † स्त्री० द्वादशी।

बारह–वि० दससे दो अधिक। पु० बारहकी संख्या, १२। **–खड़ी**–स्त्री० व्यंजनके बारहों स्वरोंसे युक्त रूप। **–दरी**–स्त्री० वह कमरा जिसमें सब ओर बारह या अधिक दरवाजे हों। **–पत्थर**–पु० छावनीकी सीमा (उसपर प्रायः बारह पत्थर गड़े होते हैं); छावनी। **–बान,–बाना**–वि० दे० 'बारहबानी'। **–बानी**–वि० खरा, खालिस (सोना); निर्दोष, बेऐब; पूरा, कामिल। **–मासा**–पु० वह पद्य या गीत जिसमें बारहों महीनोंकी प्राकृतिक विशेषताओंका वर्णन हो। **–मासी**–वि० बारहों महीने फलने-फूलनेवाला, सदाबहार; जो बारहों महीने रहे, काम करे। **–मुक़ाम**–पु० इरानी संगीतके बारह परदे। **–वफ़ात**–स्त्री० रबीउल-औवल की १२ वीं तिथि जो मुहम्मदकी निधनतिथि है। **–सिंगा,–सिंघा**–पु० हिरनका एक भेद जिसके नरके सींगोंमें अनेक शाखाएँ होती हैं। **–हठ**–पु० चारणोंका एक भेद। मु० **–गुना लिखना**–हारनेपर बारह गुना देनेकी शर्त स्वीकार करना। **–पत्थर बाहर करना**–छावनीकी हदसे निकाल देना। **–पानीका**–बारह बरसका (सूअर)। **–बच्चेवाली**–शूकरी; बहुप्रसवा स्त्री। **–बाट करना**–तितर-बितर करना; बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट करना। **–बाट छालना***–दे० 'बारह बाट करना'। **–बाट जाना या होना**–तितर-बितर होना; बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट होना।

बारहाँ–वि० बारहवाँ। अ० १२ बार, अनेक बार। दे० 'बारहा'।

बारहा–अ० (फा०) अनेक बार।

बारहीं–स्त्री० बच्चेकी बरही।

बारहों–पु० मरनेके बादका बारहवाँ दिन; संतानके जन्मसे बारहवाँ दिन।

बारा–वि० बालक, किशोर; कोमलवय, कमसिन। पु० बेटा; बालक। बारेतें * –बचपनसे।

बारा–पु० (फा०) समय, बार; विषय, मामला; परकोटा। (बारेमें···के विषयमें)।

बारा*–पु० बाना, वेश 'महँकरपना धरु झोंगी बारा'–चंदा०; बरा (दहीबरा)।

बारात–स्त्री० दे० 'बरात'।

बाराती–वि०, पु० दे० 'बराती'।

बारादरी–स्त्री० दे० 'बारहदरी'।

बारान–पु० (फा०) मेह, वृष्टि; बरसात। वि० बरसनेवाला। **–गीर**–पु० छज्जा। **–दीदा**–वि० जो बरसात देख चुका हो; अनुभवी।

बारानी–वि० (फा०) वर्षापर अवलंबित, सींची न जा सकनेवाली (फसल, जमीन)। स्त्री० वह जमीन जिसमें केवल वर्षासे सिंचाई हो, कुएँ आदिका सुभीता न हो; बिना सींचे होनेवाली फसल; बरसाती कोट।

बाराह–पु० दे० 'वाराह'। **–कंद**–पु० दे० 'वाराहकंद'।

बाराही–स्त्री० दे० 'वाराही'।

बारि*–पु० दे० 'वारि'। (–ज,–द,–धर;–धि,–वाह आदि दे० 'वारि'में)।

बारिक–स्त्री० सैनिकोंके रहनेके लिए बने लंबे दालान जैसे मकानोंकी पाँत। **–मास्टर**–पु० बारिककी निगरानी करनेवाला अफसर।

बारिगर*–पु० हथियारोंपर सान रखनेवाला।

बारिगह*–स्त्री० दे० 'बारगह'–'चितउर सौंह बारिगह तानी' –प०।

बारिश–स्त्री० (फा०) वर्षा, मेह; बरसात।

बारिस्टर–पु० (अं० 'बैरिस्टर') इंगलैंडकी वकालतकी परीक्षामें उत्तीर्ण वकील, जो हिंदुस्तानमें बिना वकालतनामेके मुकदमेमें पैरवी कर सकता है।

बारिस्टरी–स्त्री० बारिस्टरका धंधा, वकालत।

बारी–स्त्री० अनेक व्यक्तियोंमेंसे प्रत्येकको मिलनेवाला यथाक्रम अवसर, पारी; पारीके बुखारका दिन। **–का**–बारीसे आनेवाला (ज्वर)। **–बारीसे**–एकके बाद दूसरा।

बारी–वि० स्त्री० कमसिन (लड़की)। स्त्री० किशोरी, बालिका; नवयुवती; बड़े पेड़ोंका बाग; किनारा; धार; छोर; औंठ; दे० 'बाली'; घर; खिड़की। पु० एक हिंदू जाति जो दोने-पत्तल आदि बनानेका धंधा करती है।

बारीक–वि० (फा०) महीन, बहुत पतला; सूक्ष्म; समझनेमें कठिन, गूढ़। **–बीन**–वि० सूक्ष्मदर्शी; तीक्ष्णबुद्धि; नुक्ताचीन। **–बीनी**–स्त्री० बारीकबीनका भाव।

बारीका–पु० पतली रेखाएँ खींचनेकी महीन तूली।

बारीकी–स्त्री० (फा०) बारीकपन, सूक्ष्मता; खूबी, सूक्ष्म गुण-दोष।

बारीस*–पु० दे० 'वारीश'।

बारुणी, बारुनी*–स्त्री० दे० 'वारुणी'।

बारू*–स्त्री०, पु० दे० 'बालू'।

बारूत–स्त्री० (तु०) बारूद।

बारूद–स्त्री० शोरे, गंधक और कोयलेका बारीक चूर्ण जो अग्निके संयोगसे भड़क उठता और आतिशबाजी तथा तथा तोप-बंदूक चलानेमें काम आता है। **–ख़ाना**–पु० बारूद या गोली-बारूदका

भंडार।

बारे–अ० (फ़ा०) अंतमें, आखिरकार; लेकिन; खैर। **–में**–संबंधमें।

बारै*–वि०, पु० बारह।

बारोठा–पु० द्वार; ब्याहकी एक रस्म, द्वारपूजा।

बार्डर–पु० (अं०) छोर; किनारा; हद, सीमा।

बार्बर–वि० (सं०) बर्बर देशमें उत्पन्न।

बार्बरीट–पु० (सं०) आमकी गुठली; अँखुवा; टीन; वेश्या-पुत्र।

बार्ह–वि० (सं०) मोरके पंखका बना हुआ।

बार्हस्पत, बार्हस्पत्य–वि० (सं०) बृहस्पति-संबंधी। पु० एक संवत्सर; एक शब्दकोष।

बार्हिण–वि० (सं०) मयूर-संबंधी।

बालंगा–पु० दे० 'बालंगू'।

बालंगू–पु० (फ़ा०) जीरे जैसा एक बीज जो दवाके काम आता है, तूतमलंगा।

बाल–स्त्री० जौ, गेहूँ आदिका वह भाग जिसमें दाने लगे होते हैं, खोशा; * बाला, तरुणी। पु० (सं०) बच्चा, बालक; वह जिसकी उम्र सोलह वर्षसे ऊपर न हो; बछेड़ा; सुगंधवाला; पाँच बरसका हाथीका बच्चा; दूध; नारियल; केश, रोआँ; शीशे आदिकी चीजोंमें पड़ी हुई दरार। वि० जो पूरी बाढ़को न पहुँचा हो; नवोदित; नासमझ, मूर्ख। **–कमानी**–स्त्री० (हिं०) घड़ीके बैलेंसमें लगायी जानेवाली बारीक कमानी। **–कांड**–पु० रामायणका पहला खंड जिसमें रामचंद्रके जन्म, बाललीला, विवाह आदिका वर्णन है। **–काल**–पु० बचपन, बाल्य। **–कृमि**–पु० जूँ। **–कृष्ण**–पु० कृष्णका बालरूप। **–केलि, –केली**–स्त्री० बच्चोंका खेल, बालक्रीडा। **–क्रीडन**–पु० बच्चोंकी क्रीड़ा। **–क्रीडनक**–पु० खिलौना। **–क्रीडा**–स्त्री० दे० 'बालकेलि'। **–खंडी**–(हिं०) पु० ऐबी हाथी। **–खिल्य**–पु० ऋषियोंका एक वर्ग (पुराणोंके अनुसार ये डीलमें अँगूठेके बराबर हैं और सूर्यके रथके आगे-आगे चलते हैं, इनकी संख्या ६० हजार है)। **–खोरो**–पु० (हिं०) बाल झड़नेका रोग, गंजापन। **–गर्भवती**–स्त्री० पहली बार गाभिन होनेवाली गाय। **–गोपाल**–पु० बालकृष्ण; बाल-बच्चे। **–गोविंद**–पु० बालकृष्ण। **–ग्रह**–पु० बालकोंको पीड़ा पहुँचानेवाला उपग्रह या पिशाच (इनकी संख्या ९ बतायी गयी है, नाम ये हैं–स्कंद, स्कंदापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, गंधपूतना, शीतपूतना, मुखमंडिका, नैगमेय); बालरोगविशेष। **–चंद्र**–पु० दूजका चाँद। **–चर**–पु० बालकोंमें चारित्र्य, लोकसेवा और स्वावलंबनका भाव लानेके लिए स्थापित संघका सदस्य, 'ब्वाय-स्काउट'। **–चरित**–पु० बाललीला, बचपनके काम। **–चर्य**–पु० कार्त्तिकेय। **–चर्या**–स्त्री० बच्चोंका रख-रखाव, शिशुपालन। **–चातुर्भद्रिका**–स्त्री० बच्चोंको दी जानेवाली एक दवा, चौहद्दी। **–छड़**–स्त्री० (हिं०) जटामासी। **–छतरी**–स्त्री० (हिं०) चुटिया; कबूतरोंकी छतरी। **–तंत्र**–पु० धात्रीकर्म। **–तनय**–पु० खैरका पेड़। **–तृण**–पु० नरम, नवजात घास। **–तोड़**–पु० (हिं०) बाल टूट जानेसे होनेवाला फोड़ा। **–दलक**–पु० खैरका पेड़। **–धन**–पु० नाबालिगकी संपत्ति। **–धि**–पु० पूँछ। **–धी***–स्त्री० दे० 'बालधि'। **–पक्षाघात**–पु० (इनफैनटाइल पैरालिसिस) बच्चोंको होनेवाला पक्षाघात। **–पत्र**–पु० खैरका पेड़; जवासा। **–पाश्या**–स्त्री० बालोंमें बाँधनेकी मोतियोंकी लड़ी। **–पुत्रक**–पु० अल्पवयस्क पुत्र। **–पुष्पी**–स्त्री० जूही। **–बच्चे**–पु० (हिं०) लड़केवाले, संतान। **–बाँधा**–वि० (हिं०) ठीक, सटीक, पक्का। **–०गुलाम**–पु० (हिं०) हर आज्ञाका पालन करनेवाला, इशारेपर काम करनेवाला सेवक। **–बुद्धि**–स्त्री० बालोचित बुद्धि; नासमझी, कम-अकली। वि० लड़कोंकी-सी अकल रखनेवाला; अल्पबुद्धि। **–बोध**–वि० बालकोंकी समझमें आनेवाला, आसान। **–ब्रह्मचारी(रिन्)**–पु० बचपनसे ब्रह्मचर्य रखनेवाला, आजन्म ब्रह्मचारी। **–भद्रक**–पु० एक विष। **–भाव**–पु० बचपन; बालरूप। **–भैषज्य**–पु० रसांजन। **–भोग**–पु० प्रातःकालका (कलेवारूप) नैवेद्य। **–भोज्य**–पु० चना। **–भौंरी**–स्त्री० (हिं०) घोड़ोंका एक दोष। **–मति**–स्त्री०, वि० दे० 'बालबुद्धि'। **–मत्स्य**–पु० छोटी, बिना खालकी मछली। **–मरण**–पु० मूर्खोंका मरनेका ढंग (जै०)। **–मुकुंद**–पु० बालक कृष्ण। **–मूलक**–पु० छोटी मूली। **–मूलिका**–स्त्री० आमड़ेका पेड़। **–मृग**–पु० मृगछौना। **–यज्ञोपवीतक**–पु० दे० 'बालोपवीत'। **–रवि**–पु० बालसूर्य। **–रस**–पु० एक आयुर्वेदोक्त औषध। **–राज**–पु० वैदूर्य मणि। **–रोग**–पु० बच्चोंको होनेवाला रोग। **–लीला**–स्त्री० बाल-चरित, बालक्रीड़ा। **–वत्स**–पु० बछड़ा; कबूतर। वि० जिसका लड़का बहुत छोटा हो। **–वध**–पु० बालककी हत्या। **–वाह्य**–पु० बकरा। **–विधवा**–स्त्री० छोटी उम्रमें ही विधवा हो जानेवाली स्त्री; गौना या पति-समागमके पहले विधवा हो जानेवाली स्त्री। **–विधु**–पु० दूजका चाँद, बालचंद्र। **–विवाह**–पु० बचपनका, छोटी उम्रका ब्याह। **–व्यजन**–पु० चँवर। **–शृंग**–वि० जिसके सींग अभी निकले हों। **–संध्या**–स्त्री० गोधूलिवेला, संध्याका पूर्व भाग। **–सखा, –सखि**–पु० बचपनका दोस्त; बच्चोंका दोस्त; मूर्खका दोस्त। **–सफ़ा**–वि० (हिं०) बाल साफ करने, उड़ानेवाला (साबुन, दवा)। **–सात्म्य**–पु० दूध। **–सूर्य**–पु० उगता हुआ सूर्य। **–स्थान**–पु० बचपन। **–हठ**–पु० बच्चेका हठ, जिद। मु० **–आना, –पड़ना**–शीशे, चीनी, धातु आदिकी चीजोंपर चिटकनेका निशान पड़ना। **–उगना**–बाल जमना। **–का कंबल बनाना, –की भेड़ बनाना**–अतिरंजना करना, तिलका ताड़ बनाना; परका कौआ बनाना। **–की खाल खींचना या निकालना**–बारीकी निकालना, बहुत छानबीन करना। **–खिचड़ी होना**–स्याहसे सफेद बाल अधिक हो जाना। **–धूपमें पकाना**–बूढ़ा हो जानेपर भी ज्ञान, अनुभवसे कोरा रहना। **(किसी काममें)–पकाना**–(कुछ करते हुए) बूढ़ा होना; अनुभव प्राप्त करना। **–बराबर**–बहुत बारीक; जरा-सा, रत्तीभर। **–बाँका न होना**–कष्ट चोट न पहुँचना; हानि, अनिष्ट न होना। **–बाँधा निशान उड़ाना**–पक्का, अचूक निशाना लगाना। **–बाल**–पूरा; सिरसे पैरतक; हर एक; जरा-सा। **–बाल गजमोती पिरोना**–खूब बनाव-शृंगार करना। **–बाल गुनहगार होना**–हर तरहसे, सिरसे पैरतक अपराधी होना। **–बाल दुश्मन होना**–हर एकका दुश्मन होना, सभीका शत्रु हो जाना। **–बाल बँधना या बँधा होना**–(किसीके ऋण-उपकारसे) बहुत अधिक बँधा, दबा होना। **–बाल बचना**–विपद्में पड़ते-पड़ते बच जाना, पड़नेमें तनिक-सी ही कसर रहना, साफ बचना।

बॉल–पु० (अं०) गेंद; (यूरोपीय ढंगका) नाचका जलसा, समूह-नृत्य। **–डांस**–पु० सामूहिक नृत्य।

बालक–पु० (सं०) बच्चा, लड़का; नाबालिग, अनजान, नासमझ आदमी; अँगूठी; कड़ा, कंकण; घोड़े या हाथीकी पूँछ; सुगंधबाला; केश; एक जलीय पौधा, मोथा। **–प्रलपित**–पु० बालकोंकी-सी, नासमझीकी बात। **–प्रिया**–स्त्री० केला; इंद्रवारुणी।

बालकता, बालकताई*–स्त्री० लड़कपन, नासमझी।

बालकपन–पु० बचपन; नासमझी।

बालकी†–स्त्री० बालिका।

बालकीय–वि० (सं०) बालक-संबंधी; बालकोंका।

बालटी–स्त्री० लोहे, पीतल आदिका बना डोल।

बालटू–पु० पेचको दूसरे सिरेसे कसनेवाला पेचदार छल्ला।

बालद†–पु० बैल।

बालना–स० क्रि० जलाना।

बालपन–पु० बचपन।

बालम–पु० पति; प्रेमी। **–खीरा**–पु० एक तरहका बढिया, मोटा खीरा। **–चावल**–धान या चावलकी एक किस्म।

बालव–पु (सं०) ११ करणोंमेंसे दूसरा (ज्यो०)।

बाला–पु० कानमें पहननेका छल्ला, बड़ी बाली; गेहूँ-जौकी फसलमें लगनेवाला एक कीड़ा; स्त्री० (सं०) लड़की, बालिका; १६ बरससे कम उम्रकी युवती; युवती; पत्नी; हलदी; छोटी इलायची; एक सालकी बछिया; सुगंधबाला; नारियल; खैरका पेड़; घृतकुमारी; दस महाविद्याओंमेंसे एक; एक वर्णवृत्त। वि० (हिं०) कमसिन ('बाला जोगी'); बालस्वभाव, भोला।

–जोवन–पु० (हिं०) उठती जवानी । **–भोला**–वि० (हिं०) सीधासादा, सरल ।

वाला–वि० (फा०) ऊपरका; ऊँचा । पु० डील, लंबाई-ऊँचाई । **–ए ताक़**–वि० अलग, दूर (रखना) । **–कुप्पी**–स्त्री० पुराने समयमें प्रचलित एक शारीरिक दंड । पु० भारी चीजोंको ऊपर उठानेका आला, 'क्रेन' । **–ख़ाना**–पु० ऊपरकी मंजिलका कमरा, अटारी । **–दस्त**–वि० पदमें ऊँचा, बड़ा । **–नशीन**–पु० वैठनेकी ऊँची जगह। वि० सबसे अच्छा, बढ़िया । **–पोश**–पु० पलंगपोश; ओवरकोट । **–बंद**–पु० सिरपेच; एक तरहका अँगरखा; एक तरहका लिहाफ । **–वर**–पु० अँगरखेका वह भाग जो आगेकी कलीसे निकला हुआ और दामनके नीचे छिपा रहता है । **–वाला**–अ० ऊपर-ऊपर; वाहर-वाहर ।

वालाई–वि० (फा०) ऊपरका (हिस्सा) । स्त्री० मलाई । **–आमदनी**–स्त्री० ऊपरी आमदनी, वेतन या बँधी वृत्तिके अतिरिक्त मिलनेवाली रकम ।

वालाग्र–पु० (सं०) कबूतरका दरवा; बालका सिरा ।

वालाजी बाजीराव–पु० तीसरा पेशवा (१७४०-६१ ई०) ।

वालाजी विश्वनाथ–पु० पहला महाराष्ट्र पेशवा, पेशवाईका संस्थापक (१७२०...ई०) ।

वालातप–पु० (सं०) सवेरेकी धूप ।

वालादवी–स्त्री० भेद लेनेके लिए चक्कर लगाना ।

वालादित्य–पु० (सं०) नवोदित सूर्य ।

वालाध्यापक–पु० (सं०) वच्चोंको पढ़ानेवाला ।

वालापन–पु० बचपन, लड़कपन ।

मालामय–पु० (सं०) वच्चोंका रोग ।

वालार्क–पु० (सं०) वालसूर्य; कन्याराशिमें स्थित सूर्य ।

वासोवस्थ–वि० (सं०) अल्पवयस्क, कमसिन ।

वालावस्था–स्त्री० (सं०) वचपन ।

वालि*–स्त्री० मंजरी । पु० (सं०) दे० 'वाली(लिन्)' । **–हंता(तृ),–हा(हन्)**–पु० राम । **–कुमार**–पु० अंगद ।

वालिका–स्त्री० (सं०) छोटी लड़की; वेटी; वाली; छोटी इलायची; वालू । **–विद्यालय**–पु० लड़कियोंका मदरसा ।

वालिग़–वि० (अ०) वयःप्राप्त, सयाना, वयस्क । पु० सयाना आदमी । **–मताधिकार**–२१ वर्षकी वयःप्राप्त स्त्री-पुरुषोंका वोट देनेका अधिकार ।

वालिग़ा–स्त्री० सयानी, १५ वर्षसे अधिक उम्रकी लड़की, युवती; (विधि) १८ वर्षकी वय.प्राप्त लड़की, वयस्का ।

वालिनी–स्त्री० (सं०) अश्विनी नक्षत्र ।

वालिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वचपन, वालावस्था ।

वालिश–वि० (सं०) वालोचित; वालबुद्धि, नासमझ; लापरवाह । पु० शिशु; मूर्ख व्यक्ति; (फा०) तकिया, मसनद; बढ़ती ।

वालिश्त–पु० (फा०) अँगूठेके सिरेसे छिगुनीके छोरतककी लंबाई, वित्ता ।

वालिश्तिया–पु० वौना, वहुत ही नाटा आदमी ।

वालिश्य–पु० (सं०) वचपन; मूर्खता ।

वालिस*–वि० दे० 'वालिश' । पु० दे० 'वालिश'; (अं० 'वैलेस्ट') पत्थरके छोटे-छोटे टुकड़े जो सड़क बनानेके काम आते हैं, गिट्टी । **–गाड़ी**–स्त्री० गिट्टी, कंकड़ आदि ढोनेवाली रेलगाड़ी ।

वालीँ–स्त्री० (फा०) सिरहाना; तकिया ।

वाली–स्त्री० सोने या चाँदीके तारका छल्ला जो कानमें पहना जाता है; गेहूँ-जौ आदिकी वाल, खोशा; थाली बनानेका एक औजार; वि० ('वाला'की स्त्री०) नयी उम्रकी ।

वाली(लिन्)–पु० (सं०) किष्किधाका वानर राजा और सुग्रीवका बड़ा भाई जो रामके हाथों मारा गया। **–(लि) कुमार,–तनय,–सुत**–पु० अंगद ।

वालीदगी–स्त्री० (फा०) वाढ़, वृद्धि ।

वालीश–पु० (सं०) मूत्रावरोध ।

वालुंकी, वालुंगी–स्त्री० (सं०) दे० 'वालुकी' ।

वालु, वालुक–पु० (सं०) एलुवा; पानी-आँवला ।

वालुका–स्त्री० (सं०) वालू, रेत; ककड़ी; कपूर । **–गड**–पु० एक तरहकी मछली । **–यंत्र**–दवा फूंकनेका एक यंत्र । **–स्वेद**–पु० पसीना लानेके लिए गर्म वालूकी पोटलीसे सेंकना ।

वालुकी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ककड़ी ।

वालू–स्त्री०, पु० रेत । **–दानी**–स्त्री० वह डिविया जिसमें स्याही सुखानेके लिए वालू रखने हैं । **–बुर्द**–वि० जो वालूसे नष्ट हो गया हो । पु० वह जमीन जो रेत पड़ जानेके कारण खेतीके लायक न रह गयी हो । **–शाही**–स्त्री० एक प्रसिद्ध मिठाई । **–की घड़ी**–शीशेका अंडाकार पात्र जिसमें भरी हुई रेत उसके छेदसे एक घंटेमें नीचेके पात्रमें गिर जाती है । **–की भीत**–क्षण-भंगुर वस्तु, वह चीज जिसके विगड़नेमें देर न लगे ।

वालूक–पु० (सं०) एक विष ।

वालूडा*–पु० वालक ।

वालेंदु–पु० (सं०) दूजका चाँद ।

वालेमियाँ–पु० गाजीमियाँ ।

वालेय–वि० (सं०) वालकोंके लिए हितकर; वलिके योग्य; मृदु, मुलायम; वलिसे उत्पन्न । पु० वलिका वेटा; गधा ।

वालेया–स्त्री० (सं०) वलिकी वेटी ।

वालेष्ट–पु० (सं०) वेरका पेड़; बेर ।

वालोपचरण–पु० (सं०) वालकोंका उपचार ।

वालोपचार–पु० (सं०) वच्चोंका इलाज ।

वालोपवीत–पु० (सं०) लँगोटी; जनेऊ ।

वाल्टी–स्त्री० दे० 'वालटी' ।

वाल्टू–पु० (अं० 'वोल्ट') लोहे आदिकी वनी एक प्रकारकी कील जिसके एक सिरेपर घुंडी और दूसरे सिरेपर ढिवरी कसनेके लिए चूड़ियाँ वनी होती हैं ।

वाल्य–पु० (सं०) बचपन, वालकाल; १६ वरसतककी अवस्था; नासमझी । **–काल**–पु० वचपनका समय ।

वाल्हक, वाल्हिक, वाल्हीक–पु० (सं०) वलख देश; वलखका रहनेवाला; बलखका घोड़ा; केसर; हींग ।

वाल्हा–पु० वल्लभ, प्रियतम, इष्ट ।

वाव*–पु० दे० 'वायु'; अपानवायु; वातदोष ।

वावड़ी–स्त्री० दे० 'वावली' ।

वावजूद–अ० दे० 'वा'के साथ ।

वावदूकता*–स्त्री० वाग्मिता ।

बावन–वि० पचास और दो; † दे० 'वामन' । पु० वावनकी संख्या; ५२; † दे० 'वामन' । मु० **–तोले पाव रत्ती**–विलकुल ठीक । **–वीर**–वहुत चतुर और वहादुर ।

वावना†–वि० ठिगना, वौना ।

वावनी–स्त्री० ५२ पदोंका संकलन, समूह; मजाकिया लोगोंका दल ।

बावभक–पु० पागलपन ।

वावर*–वि० दे० 'वावला' । पु० (फा०) विश्वास ।

बावरची–पु० खाना पकानेवाला, रसोइया । **–ख़ाना**–पु० रसोई, पाकशाला ।

बावरा*–वि० पागल ।

बावरि, वावरी–स्त्री० दे० 'वावली' ।

बावला–वि० वातरोगी; पागल, सिड़ी । **–पन**–पु० पागलपन, सनक, सिड़ ।

बावली–स्त्री० चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे जानेके लिए सीढ़ियाँ बनी हों; छोटा सोपानयुक्त तालाव । वि० स्त्री० दे० 'बावला' ।

बावाँ†–वि० दे० 'वायाँ' ।

वावेला–पु० कुहराम ।

वाशिंदा–पु० (फा०) वसनेवाला ।

वाष्प–पु० (सं०) आँसू; भाप; लोहा । **–कंठ**–वि० जिसका गला भर आया हो । **–कल**–वि० (शब्द) जो आँसुओंके कारण अस्पष्ट हो । **–दुर्दिन,–पूर,–प्रकर**–पु० आँसुओंकी वाढ़ । **–मोक्ष,––मोचन**–पु० आँसू वहाना । **–विक्लव**–वि० जो रोनेके कारण घवड़ा गया हो । **–वृष्टि**–स्त्री० आँसुओंकी वर्षा । **–संदिग्ध**–वि० दे० 'वाष्पकल' । **–सलिल**–पु० अश्रुजल ।

वाष्पक–पु० (सं०) भाप; एक साग, मारिष ।

वाष्पका–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्री ।

वाष्पांवु–पु० (सं०) अश्रुजल।

वाष्पाकुल–वि० (सं०) जो आँसुओंके कारण मंद पड़ गया हो।

वाष्पासार–पु० (सं०) दे० 'वाष्प-वृष्टि'।

वाष्पिका–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

वाष्पी(ष्पिन्)–वि० (सं०) आँसू या आँसू जैसा कोई तरल पदार्थ बहानेवाला।

वाष्पोत्पीड–पु० (सं०) आँसुओंकी बाढ़।

वाष्पोद्भव–पु० (सं०) आँसुओंका निकलना।

वासंतिक–वि०, पु० दे० 'वासंतिक'।

वास–पु० निवास; वासस्थान; वस्त्र; * दिन। स्त्री० गंध; वासना; आग; एक हथियार। **–फूल**–पु० एक सुगंधित धान। **–मती**–पु० एक खुशबूदार चावल।

वासक–पु० दे० 'वासक'।

वासकसज्जा–स्त्री० दे० 'वासकसज्जा'।

वासठ–वि० साठ और दो। पु० वासठकी संख्या, ६२।

वासन*–पु० वरतन; वस्त्र।

वासनवारा*–पु० सुगंधित करनेवाला।

वासना–स० क्रि० बसाना, सुवासित करना। स्त्री० दे० 'वासना'; गंध।

वासर*–पु० दे० 'वासर'।

वासव–पु० इंद्र।

वासवी–पु० अर्जुन। **–दिशा**–स्त्री० पूर्व।

वाससी*–स्त्री० कपड़ा, वस्त्र।

वासा–पु० अडूसा; एक पक्षी; भोजनालय; * निवास-स्थान; वस्त्र। वि० वासी।

वासिग*–पु० वासुकि नाग।

वासित*–वि० वासित, सुगंधित किया हुआ; कपड़ेसे ढका हुआ।

वासिष्ठी–स्त्री० बन्नास नदी।

वासी–वि० रहनेवाला; देरका पका हुआ, दूसरे जून या रातका बचा हुआ (खाना); पिछले दिनका तोड़ा, रखा हुआ (फल, पानी); सूखा, कुम्हलाया हुआ। **–ईद**–स्त्री० ईदका दूसरा दिन। **–तिवासी**–वि० कई दिनोंका। **–मुँह**–वि० जिसने सवेरेसे कुछ खाया न हो। अ० बिना कुछ खाये, खाली पेट। मु० **–कढ़ीमें उबाल आना**–बुढ़ापेमें जवानीका जोश जगना; समय बीत जानेपर कुछ करनेकी इच्छा होना; अशक्तका सशक्त-सा आचरण करना। **–बचे न कुत्ता खाय**–झाड़-पोंछकर स्वयं खा जानेवालेके यहाँ दूसरोंके लिए गुंजाइश कहाँ? **–भातमें खुदा का साझा**–कठिनाईसे मिली रद्दी चीजमें भी अकस्मात् किसी बँटानेवालेका आ पहुँचना।

वासुकी–पु० वासुकि नाग। स्त्री० सुगंधित पुष्पोंकी माला।

वासौंधी–स्त्री० दे० 'वसौंधी'।

वास्त–वि० (सं०) बकरेसे प्राप्त या संबंध रखनेवाला।

वाह–पु० (सं०) बाहु; घोड़ा; * प्रवाह; निकास; खेतकी जुताई। वि० दृढ़, सशक्त।

वाहक–पु० दे० 'वाहक'; * सवार।

वाहकी*–स्त्री० पालकी ढोनेवाली कहारिन।

वाहन–पु० दे० 'वाहन'; एक पेड़।

वाहना*–स० क्रि० ढोना; हाँकना; फेंकना; † साफ करना, झारना–'जब हम बाल बाहनेके लिए कंघा उठायें;' मारना; खेत जोतना; † गाय आदिको गाभिन कराना। अ० क्रि० बहना।

वाहनी*–स्त्री० नदी; सेना।

वाहर–अ० स्थान या वस्तुविशेषकी सीमाके उस पार; अंदरका उलटा; अलग; दूर, अन्यत्र; –से अधिक (बूतेसे बाहर)। पु० वाह्यरूप, ऊपरी भाग; परदेश। **–जामी***–पु० ईश्वरका सगुण रूप। **–बाहर**–अ० ऊपर-ऊपर; दूर दूर। **–भीतर**–अ० अंदर और बाहर। **–वाला**–पु० भंगी। वि० बाहरी। **–वाली**–स्त्री० भंगिन। मु० **–करना**–निकाल देना, अलग करना, बहिष्कृत करना। **–का**–जो घरका न हो, गैर; ऊपरका। **–की हवा लगना**–बाहरवालोंका असर पड़ना; आवारा होना। **–जाना**–घरसे निकलना, परदेश जाना। **–से**–ऊपरसे, जाहिरा; दूसरे स्थान, परदेशसे। (आज्ञा, हुक्म आदिसे) **–होना**–माननेसे इनकार करना।

वाहरी–वि० वाहरका; गैर, पराया; अजनबी, परदेसी; दिखाऊ; (आउट साइडर)–पश्चिमी जीवनका एक विशेषण, जो किसी व्यक्तिके वातावरणसे उसकी विच्छिन्नता सूचित करता है। **–टाँग**–स्त्री० कुश्तीका एक पेंच।

वाहाँजोरी*–अ० हाथसे हाथ मिलाये हुए।

वाहा–स्त्री० (सं०) बाहु।

वाहिज*–अ० वाहरसे, ऊपरसे।

वाहिनी–स्त्री० सेना; सवारी।

वाहिय*–अ० बाहर।

वाहिर†–अ० दे० 'वाहर'।

वाह्लीक–वि० (सं०) बाहरका, बाहरी। पु० पंजाबकी एक जाति या इस जातिका व्यक्ति।

वाहु–स्त्री० (सं०) बाँह, भुजा। **–कुंठ,–कुब्ज**–वि० लूला। **–कुंथ**–पु० डैना। **–ज**–पु० क्षत्रिय; तोता; जंगली तिल। **–तरण**–पु० तैरकर नदी पार करना। **–त्र,–त्राण**–पु० बाहुपर बाँधा जानेवाला वर्म। **–दंड**–पु० भुजदंड। **–पाश**–पु० बाहोंको फैलाकर हथेलियोंको मिला लेनेसे बननेवाला घेरा, आलिंगन करते समय बाहुओंकी मुद्रा। **–प्रसार**–पु० हाथका फैलाव। **–बल**–पु० भुजबल, शरीरबल; पराक्रम। **–भूषण**–पु०, **–भूषा**–स्त्री० भुजबंद, केयूर। **–भेदी(दिन्)**–पु० विष्णु। **–मूल**–पु० कंधे और बाँहका जोड़। **–युद्ध**–पु० कुश्ती, भिड़ंत। **–योध,–योधी(धिन्)**–पु० कुश्ती लड़नेवाला। **–लता**–स्त्री० लता जैसी बाँह; सुकुमार बाहु। **–विक्षेप**–पु० हाथ फेंकना; तैरना। **–विमर्द**–पु० बाहुयुद्ध। **–विस्फोट**–पु० ताल ठोंकना। **–वीर्य**–पु० बाहुबल। **–व्यायाम**–पु० दंड, कसरत। **–शाली(लिन्)**–पु० शिव; भीम; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–शिखर**–पु० कंधा। **–शोष**–पु० बाँहोंमें होनेवाला एक वात रोग। **–संभव**–पु० क्षत्रिय। **–हजार***–पु० दे० 'सहस्रबाहु'।

वाहुक–पु० (सं०) एक नाग; नकुल; बंदर; नलका उस समयका नाम जब वे अयोध्यानरेश ऋतुपर्णके सारथि थे। वि० अधीन, आश्रित; तैरनेवाला।

वाहुगुण्य–पु० (सं०) बहुत-से गुणोंका होना।

वाहुजन्य–वि० (सं०) जो बहुत बड़े जनसमाजमें फैला हो।

वाहुदंती(तिन्), वाहुदंतेय–पु० (सं०) इंद्र।

वाहुदा–स्त्री० (सं०) महाभारतमें वर्णित एक नदी; राजा परीक्षित॰की पत्नी।

वाहुभाष्य–पु० (सं०) बकबक करना, बकवास।

वाहुरना*–अ० क्रि० मुड़ना, लौटना, वापस आना।

वाहुरूप्य–पु० (सं०) बहुरूपता।

वाहुल–पु० (सं०) कार्त्तिक मास; बाहुत्राण; अग्नि। **–ग्रीव**–पु० मोर।

वाहुली–स्त्री० (सं०) कार्त्तिककी पूर्णिमा।

वाहुल्य–पु० (सं०) बहुतात, इफरात; बहुरूपता।

वाहुश्रुत्य–पु० (सं०) बहुश्रुत होनेका भाव।

वाहू–स्त्री० दे० 'बाहु'।

वाहेर*–अ० दे० बाहर।

वाह्मन†–पु० ब्राह्मण।

वाह्य–पु० रथ, यान। अ० बाहर, परे। वि० (सं०) बाहरी; गैर, बेगाना; बहिर्गत, बहिष्कृत; ऊपरी, दिखाऊ। **–करण**–पु० बाह्य ज्ञानेंद्रिय। **–द्रुति**–स्त्री० पारेका एक संस्कार। **–पटी**–स्त्री० जवनिका। **–रूप**–पु० ऊपरी, दिखाऊ रूप। **–रत,–संभोग**–पु० भगके बाहरकी रतिक्रिया। **–रोगी**–पु० (आउट डोर पेशेंट) दे० 'बहिर्वासी रोगी'। **–लिंगी(गिन्)**–वि० धर्मविरोधी। **–वासी(सिन्)**–वि० बस्तीके बाहर रहनेवाला। पु० चांडाल। **–विद्रधि**–स्त्री० एक रोग। **–विषय**–पु० प्राणको बाहर रोकना। **–वृत्ति**–स्त्री० प्राणायामका एक भेद।

वाह्याचरण–पु० (सं०) ढकोसला।

वाह्याभ्यंतर–पु० (सं०) प्राणायामका एक भेद। वि० बाहरी

और भीतरी (रोग) ।

बाह्यायाम–पु० (सं०) धनुस्तंभ रोग, धनुष्टंकार ।

बाह्यालय–पु० (सं०) बाहीकोंका देश ।

बाह्लीक–पु० (सं०) दे० 'बाल्हीक' ।

बिंग†–पु० दे० 'व्यंग्य' ।

बिंजन*–पु० दे० 'व्यंजन' ।

बिंद*–पु० बिंदु, बूँद; भ्रूमध्य; बिंदी ।

बिंदवि–पु० (सं०) बूँद ।

बिंदा–पु० बड़ी बिंदी । स्त्री० दे० 'वृंदा' ।

बिंदी–स्त्री० सुन्ना, सिफर; नुक्ता; गोल टीका ।

बिंदु–पु० (सं०) बूँद; बिंदी; अनुस्वारका चिह्न; शून्य; अधरक्षत; भ्रूमध्य; नाटकका वह स्थल जहाँ गौण घटनाओंका विस्तृत रूप ग्रहण करना आरंभ होता है । **–चित्र,–चित्रक**–पु० एक तरहका मृग जिसके बदनपर चित्तियाँ होती हैं । **–तंत्र**–पु० पासा; बिसात; खेलनेका गेंद । **–देव**–पु० शिव । **–पत्र**–पु० एक वृक्ष. भोजपत्र । **–फल**–पु० मोती । **–माली(लिन्)**–पु० एक ताल । **–राजि**–पु० एक सर्प । **–रेखक**–पु० अनुस्वार; एक पक्षी । **–रेखा**–स्त्री० बिंदुओंसे बनी हुई रेखा । **–वासर**–पु० गर्भाधानका दिन ।

बिंदुक–पु० (सं०) बूँद ।

बिंदुका–पु० बिंदी ।

बिंदुकित–वि० (सं०) बिंदियोंसे पूर्ण ।

बिंदुरी–स्त्री० दे० 'बिँदुली' ।

बिँदुली–स्त्री० बिंदी, टिकली ।

बिंद्रावन–पु० दे० 'वृंदावन' ।

बिंध–पु० दे० 'विंध्याचल' ।

बिंधना–अ० क्रि० बींधा जाना; उलझना । स० क्रि० छेदना ।

बिँधाना–अ० क्रि० बेधा जाना ।

बिँधिया–पु० मोती बेधनेवाला ।

बिंब–पु० (सं०) अक्स, प्रतिच्छाया; कमंडलु; सूर्य या चंद्रमाका मंडल; कुँदरू; गिरगिट; झलक; मंडल जैसा कोई तल; उपमेय; आईना; * बाँबी । **–फल**–पु० कुँदरू । **–विधान**–पु० (इमेजरी) आधुनिक काव्यका एक उपकरण, बिंबसृष्टि । **–सृष्टि**–स्त्री० दे० 'बिंबविधान' ।

बिंबक–पु० (सं०) चंद्रमा या सूर्यका मंडल; कुंदरू ।

बिंबट–पु० (सं०) सरसों ।

बिंब, बिंबी–स्त्री० (सं०) कुंदरूकी लता ।

बिंबाधरोष्ठी–वि० स्त्री० (सं०) जिसके होंठ कुंदरू जैसे लाल हों ।

बिँबिका–स्त्री० (सं०) सूर्य या चंद्रमाका मंडल; कुँदरूकी लता ।

बिंबित–वि० (सं०) प्रतिबिंबित ।

बिंबिसार–पु० (सं०) बुद्धके समकालीन मगधनरेश अजातशत्रुका पिता ।

बिंबु–पु० (सं०) सुपारीका पेड़ ।

बिंबोष्ठ, बिंबौष्ठ–वि० (सं०) जिसके होंठ कुँदरूकी तरह लाल हों । पु० कुँदरू जैसा लाल होंठ ।

बि, बिअ*–वि० दो ।

बिआज†–पु० सूद; बहाना ।

बिआध†–पु० व्याधा । स्त्री० व्याधि ।

बिआधि*–स्त्री० दे० 'व्याधि' ।

बिआना–स० क्रि० जनना । अ० क्रि० पशुका बच्चा जनना ।

बिआपना–अ० क्रि० व्याप्त होना ।

बिआपी†–वि० व्यापी ।

बिआवर–वि० बियावर ।

बिआहना*–स० क्रि० व्याह करना ।

बिकट–वि० दे० 'विकट' ।

बिकना–अ० क्रि० बेचा जाना, दाम लेकर दिया जाना; * मुग्ध होना ।

बिकरम*–पु० दे० 'विक्रम'; दे० 'विक्रमादित्य' ।

बिकरार*–वि० बेकरार, विकल; दे० 'विकराल' ।

बिकराल–वि० दे० 'विकराल' ।

बिकर्म–पु० कुकर्म, बुरा काम ।

बिकल–वि० विकल, बेचैन ।

बिकलई, बिकलाई*–स्त्री० विकलता, बेचैनी ।

बिकलाना*–अ० क्रि० व्याकुल होना । स० क्रि० व्याकुल करना ।

बिकवाना–स० क्रि० बेचनेका काम दूसरेसे कराना; बिकनेमें सहायता करना ।

बिकवाल–पु० बेचनेवाला, बेचू ।

बिकवाली–स्त्री० बिक्री; बेचने या बिकनेकी क्रिया ।

बिकसना–अ० क्रि० खिलना, फूलना; प्रसन्न होना; फूटना, फटना ।

बिकसाना–स० क्रि० विकसित करना; प्रसन्न करना । * अ० क्रि० दे० 'बिकसना' ।

बिकाऊ–वि० जो बेचा जानेवाला हो ।

बिकाना*–अ० क्रि० बिकना, बिकवाना; वशमें होना । स० क्रि० खरीदना ।

बिकार–पु० दे० 'विकार' । * वि० विकृत ।

बिकारी–स्त्री० मन, सेर, रुपये आदिके चिह्नरूप, टेढ़ी पाई । वि० दे० 'विकारी' ।

बिकास–पु० दे० 'विकास' ।

बिकासना*–स० क्रि० विकसित करना; खोलना । अ० क्रि० विकसित होना; प्रकट होना ।

बिकुंठ*–पु० बैकुंठ ।

बिक्ख*–पु० विष ।

बिक्रम–पु० दे० 'विक्रम' ।

बिक्रमाजीत–पु० दे० 'विक्रमादित्य' ।

बिक्रमी–वि० दे० 'विक्रमी' ।

बिक्री–स्त्री० बेचा जाना, विक्रय; बिक्रीकी आय । **–कर**–वस्तुओंकी बिक्रीपर लगनेवाला राजकीय कर ।

बिख*–पु० दे० 'विष' ।

बिखम*–वि० दे० 'विषम' ।

बिखय*–अ० विषयमें, संबंधमें ।

बिखरना–अ० क्रि० चीजोंका बेतरतीबीसे इधर-उधर फैलना. तितर-बितर होना; फैल जाना ।

बिखराना–स० क्रि० दे० 'बिखेरना' ।

बिखाद*–पु० दे० 'विषाद' ।

बिखान*–पु० दे० 'विषाण' ।

बिखीला*–वि० विषैला ।

बिखे*–अ० दे० 'बिखय' ।

बिखेरना–स० क्रि० तितर-बितर करना, फैलाना, छिटकाना ।

बिगंध*–स्त्री० दुर्गंध, बदबू ।

बिग*–पु० वृक, भेड़िया ।

बिगड़ना–अ० क्रि० गुण-रूप आदिमें विकार होना; खराब होना; उपयोगिता घटना, काम देने लायक न रहना; अच्छीसे बुरी दशामें आना; टूट-फूट जाना; बेकार खर्च होना; बुराईके रास्तेपर जाना, चाल-ढंग खराब होना; क्रुद्ध होना; डाँटना; हाथी-घोड़े आदिका सवार आदिके काबूमें न रह जाना; बिगाड़, अनबन होना; विद्रोह करना; नष्ट होना, गलना-सड़ना (फल आदि) । **–(ड़े) दिल**–वि० बदमिजाज; लड़ाका । **–रईस**–पु० वह रईस या अमीर जो फ़ज़ूलखर्चीमें तबाह हुआ हो ।

बिगड़ैल–वि० क्रोधी, हठी; कुमार्गगामी ।

बिगत–पु० भाँति, तरह । वि० दे० 'विगत' ।

बिगर*–अ० दे० 'बगैर' ।

बिगरना*–अ० क्रि० दे० 'बिगड़ना' ।

बिगराइल, बिगरायल, बिगरैल*–वि० दे० 'बिगड़ैल' ।

बिगलित–वि० दे० 'विगलित' ।

बिगसना*–अ० क्रि० दे० 'बिकसना'; † फूटना, फटना, छितरा जाना–'मिट्टीका लड्डू छातीपर जाकर बिगस गया' । स० क्रि० देना, बकसना ।

बिगसाना*–स० क्रि० दे० 'बिकसाना' । अ० क्रि० दे० 'बिकसना' ।

बिगहा†–पु० दे० 'बीघा' ।

बिगाड़–पु० बिगड़नेका भाव; खराबी, विकृति, अनबन, झगड़ा ।

विगाड़ना–स० क्रि० दोष-विकार उत्पन्न करना, खराब करना, कामके लायक न रहने देना; टेढ़ा, विकृत करना (मुंह); बुराईकी ओर ले जाना; वहकाना, पथभ्रष्ट करना, बुरी आदत लगाना; सतीत्व नष्ट करना; नष्ट, वरवाद करना; तोड़-फोड़ देना।

विगाना†–वि० दे० 'बेगाना'।

विगार*–पु० दे० 'विगाड़'। † स्त्री० दे० 'वेगार'।

विगारि, विगारी*–स्त्री० दे० 'वेगार'।

विगास*–पु० दे० 'विकास'।

विगासना*–स० क्रि० विकसित करना।

विगाहा–पु० दे० 'बिग्गाहा'।

विगिर*–अ० दे० 'वगैर'।

विगुन*–वि० विगुण, गुण रहित, निर्गुण।

विगुर*–वि० जिसने गुरुसे शिक्षा या दीक्षा न ली हो, निगुरा।

विगुरचन, विगुरचिन*–स्त्री० दे० 'विगूचन'।

विगुरचना*–अ० क्रि० दिक्कतमें पड़ना।

विगुरदा*–पु० पुराने समयका एक हथियार।

विगुल–पु० (अं०) सेना या पुलिसमें सिपाहियोंको एकत्र करनेके लिए बजाया जानेवाला तुरहीके ढंगका बाजा। मु० –बजना–कूच करने आदिका आदेश होना, डंका वजना।

विगूचन*–स्त्री० उलझन, असमंजस; कठिनाई।

विगूचना*–अ० क्रि० उलझन, असमंजसमें पड़ना; दवाया जाना। स० क्रि० दबोचना।

विगूतना*–अ० क्रि० दे० 'विगूचना'।

विगूता*–वि० उलझा हुआ।

विगोना*–स० क्रि० विगाड़ना; गंवाना, व्यर्थ विताना; छिपाना; वहकाना; हैरान करना।

विग्गड*–वि० पु० विगड़नेवाला, किसीकी न सुननेवाला।

विग्गाहा–पु० आर्या छंदका एक भेद।

विग्यान*–पु० दे० 'विज्ञान'।

विग्रह–पु० दे० 'विग्रह'।

विघटन–पु० दे० 'विघटन'।

विघटना*–स० क्रि० तोड़ना, विघटित करना; विगाड़ना।

विघन*–पु० विघ्न, बाधा; बड़ा हथौड़ा; अभ्यास करना। –हरन*–पु० दे० 'विघ्नहरण'।

बिघार*–पु० बाघ।

विच*–अ० दे० 'बीच'।

विचकना–अ० क्रि० चौंकना, भड़कना, चिढ़ना। वि० चौंकनेवाला।

विचकाना–स० क्रि० भड़काना; मुंह बनाना, मुंह चिढ़ाना।

विचखोपड़†–पु० विसखापर।

विचच्छन*–वि० दे० 'विचक्षण'; प्रकाशमान।

विचरना–अ० क्रि० घूमना-फिरना, स्वच्छंद भ्रमण करना, विचरण करना।

विचलना–अ० क्रि० विचलित होना, हटना; मुकरना।

विचला–वि० वीचका, मध्यम।

विचलाना–स० क्रि० विचलित करना; तितर-वितर करना।

विचवई–पु० वीच विचाव करनेवाला, मध्यस्थ। स्त्री० मध्यस्थता।

बिचवान, बिचवानी*–पु० मध्यस्थ।

विचहुत*–पु० अंतर; दुविधा।

विचार–पु० विचार, खयाल; इरादा। मान–*–वि० विचारवान्; विचारणीय।

विचारना–स० क्रि० विचार करना, सोचना; इरादा करना।

बिचारा–वि० दे० 'बेचारा'। (स्त्री० 'विचारी'।)

विचारी–वि० विचारवान्, विचार करनेवाला।

विचाल*–पु० विचलित करनेका भाव; अंतर।

विचुकना*–वि० चौंकनेवाला। अ० क्रि० चौंकना।

विचेत*–वि० अचेत, बेहोश।

बिचौंहाँ*–वि० बीचका, बीचवाला।

बिचौलिया–पु० कृषि, व्यापारादिमें वेचनेवाले तथा ग्राहकके बीचमें पड़नेवाले लोग।

विच्छित्ति–स्त्री० दे० 'विच्छित्ति'।

विच्छी†–स्त्री० दे० 'विच्छू'।

बिच्छू–पु० एक रेंगनेवाला जहरीला जंतु जिसके डंक मारनेसे प्राणियोंको बहुत पीड़ा और कभी-कभी मृत्यु भी हो जाती है, वृश्चिक; एक तरहकी घास।

बिच्छेप*–पु० दे० 'विक्षेप'।

बिछना–अ० क्रि० विछाया-फैलाया जाना।

विछलन–स्त्री० फिसलन।

विछलना, विछलाना–अ० क्रि० फिसलना; डगमगाना।

विछवाना–स० क्रि० विछानेका काम कराना।

बिछान–पु० विछावन।

बिछाना–स० क्रि० आसन-बिस्तर आदिको जमीन, चारपाई आदिपर फैलाना; विखेरना; मारकर गिरा देना।

विछायत*–स्त्री० विछानेकी चीज, विछावन।

विछावन–पु० दे० 'बिछौना'।

विछिप्त*–वि० दे० 'विक्षिप्त'।

विछिया–स्त्री० पाँवकी उँगलियोंमें पहननेका एक गहना।

विछुआ, विछुवा–पु० पाँवका एक गहना; एक तरहकी छुरी (कटार)।

विछुड़न*–स्त्री० विछुड़नेका भाव, वियोग, जुदाई।

विछुड़ना–अ० क्रि० जुदा होना, साथ छूटना, वियोग होना।

विछुरंता*–पु० विछुड़नेवाला; वह जो विछुड़ा हुआ हो।

बिछुरना*–अ० क्रि० दे० 'विछुड़ना'।

विछुरनि*–स्त्री० दे० 'विछुड़न'।

विछूना*–वि० विछुड़ा हुआ।

विछोई*–वि० दे० 'विछोही'।

विछोड़ा*–पु० विछुड़न, वियोग।

विछोय*–पु० दे० 'विछोह'।

विछोह–पु० वियोग, जुदाई।

विछोही–विछुड़ा हुआ, वियुक्त।

विछौना–पु० वह कपड़ा जिसे चारपाई आदिपर विछाकर सोया जाय, विस्तर।

विजड़*–स्त्री० खाँड़ा, तलवार।

विजन*–पु० दे० 'व्यजन। वि० दे० 'विजन'–..'विजन डुलाती ते वै विजन डुलाती हैं'–भूपण।

विजना*–पु० पंखा।

बिजय–स्त्री० दे० 'विजय'। –घंट–पु० मंदिरोंमें लटकाया जानेवाला बड़ा घंटा। –सार–पु० एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी ढोल आदि बनानेके काम आती है।

विजयी–वि० दे० 'विजयी'।

बिजली–स्त्री० रगड़, रासायनिक क्रिया या चुंबकीय शक्तिसे उत्पन्न शक्ति-विशेष, विद्युत्; एकसे दूसरे बादलमें या बादलसे धरतीकी ओर विजलीका विसर्जन; इस विसर्जनसे उत्पन्न प्रकाश, तडित्; कानमें पहननेका एक गहना; गलेमें पहननेका एक गहना; आमकी गुठलीके भीतरका गूदा। वि० बहुत तेज, अति चंचल, द्रुतगामी। –घर–पु० वह स्थान जहाँ विजलीकी शक्ति उत्पन्न करके नगर या क्षेत्र विशेषमें वितरित की जाय। –बचाव–पु० ऊँची इमारतोंपर विजलीसे वचावके लिए लगा हुआ नोकदार लोहा, तड़ित् चालक। –सार†–पु० एक बड़ा पेड़। मु० –का कड़का,–की कड़क–विजली चमकनेके बाद सुनाई देनेवाली गड़गड़ाहट। –गिरना–बिजलीका आकाशसे धरतीकी ओर आना; किसी चीजका बिजलीके रास्ते या निशानेमें पड़ना, वज्रपात होना, आकस्मिक अनर्थ। –गिराना–सुन्दरतासे विचलित करना।

बिजहन–वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो, हतवीर्य।

विजाती–वि० दे० 'विजातीय'।

विजान*–वि० ज्ञानरहित, अनजान।

विजायठ–पु० बाजूबंद।

बिजुरी*–स्त्री० दे० 'विजली'।

बिजूका, बिजूखा†–पु० पक्षियों आदिको भगानेके लिए खेतमें बनाया हुआ पुतला आदि।

विजै*–स्त्री० दे० 'विजय'।

बिजोग*–पु० दे० 'वियोग' ।

बिजोना*–स० क्रि० अच्छी तरह देखना; देख रेख करना ।

बिजोरा–पु० दे० 'बिजौरा' । † वि० निर्बल ।

बिजोहा–पु० दे० 'बिज्जूहा' ।

बिजौरा–पु० नीबूके वर्गका एक फल जो आकारमें बड़ी नारंगीके बराबर होता है, बीजपूर; इसका पेड़; तिलके मेलसे बनी हुई एक तरहकी बरी ।

बिजौरी–स्त्री० एक प्रकारकी बरी जो पीठी और पेठेके बीजके मेलसे बनती है ।

बिज्जु*–स्त्री० दे० 'बिजली' । –पात*–पु० बिजली गिरना, वज्रपात ।

बिज्जुल*–स्त्री० दे० 'बिजली' । पु० छिलका, त्वचा ।

बिज्जू–पु० एक वन्य जंतु जिसकी शक्ल बिल्लीसे मिलती है ।

बिज्जूहा–पु० एक वर्णवृत्त ।

बिझँवारी–स्त्री० छत्तीसगढ़ प्रदेशकी एक बोली ।

बिझकना*–अ० क्रि० दे० 'बिझुकना' ।

बिझुकना*–अ० क्रि० 'बिचकना'; तनना ।

बिझुका*–पु० दे० 'बिजूका' ।

बिझुकाना*–स० क्रि० चौंकाना; डराना; चंचल कर देना ।

बिटंबे*–स्त्री० विडंबना ।

बिट–पु० विदूषक; वेश्यागामी; वैश्य । स्त्री० बीट ।

बिटक–पु० (सं०) फोड़ा ।

बिटका–स्त्री० (सं०) दे० 'बिटक' ।

बिटप–पु० वृक्ष; झाड़ी; वृक्षादिकी नयी शाखा ।

बिटपी–पु० दे० 'विटपी' ।

बिटरना*–अ० क्रि० घँघोला जाना ।

बिटारना*–स० क्रि० घँघोलना, गंदा करना ।

बिटालना–स० क्रि० फैलाना, बिखेरना ।

बिटिनिया†–स्त्री० दे० 'बिटिया' ।

बिटिया†–स्त्री० बेटी, बच्ची ।

बिटौरा*–पु० उपलोंकी राशि, ढेर; वि० बड़ा ।

बिट्ठल–पु० विष्णुका एक नाम; पंढरपुर (शोलापुर) में स्थापित देवमूर्ति ।

बिठलाना–स० क्रि० दे० 'बिठाना' ।

बिठाना–स० क्रि० बैठाना ।

बिठालना–स० क्रि० दे० 'बिठाना' ।

बिडंब*–पु० आडंबर ।

बिडंबना–स्त्री० दे० 'विडंबना' ।

बिड–पु० बीट; दे० 'विट्'; (सं०) एक तरहका नमक, खारी नमक ।

बिड़ई–स्त्री० गेंडुरी, इँडुरी ।

बिड़र–वि० अलग-अलग, जो सटा न हो; * निडर, ढीठ ।

बिडरना*–अ० क्रि० तितर-बितर होना; भागना; डरना, चौंकना (जानवरोंका) ।

बिडराना–स० क्रि० तितर-बितर करना; भगाना ।

बिड़वना*–स० क्रि० तोड़ना ।

बिड़ा*–पु० वृक्ष–'कबिरा चंदनका बिड़ा बैठ्या आक पलास'–कबीर ।

बिडारना–स० क्रि० तितर-बितर कर देना; भगाना; बाहर करना; विपक्षी दलको डराकर भगा देना–'मारीच बिडार्यो जलधि उतार्यो'–रामचंद्रिका; नष्ट करना ।

बिडाल–पु० (सं०) मार्जार, बिलाव; एक दैत्य; आँखका डेला । –पद,–पदक–पु० एक तौल । –वृत्ति–कपट, हिंसा भाव, लोभवृत्ति । –व्रतिक–वि० ढोंगी ।

बिडालक–पु० (सं०) बिलाव; नेत्रपिंड ।

बिडालाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें बिल्लीकी-सी हों ।

बिडालिका–स्त्री० (सं०) छोटी बिल्ली; हरताल ।

बिडाली–स्त्री० (सं०) बिल्ली; आँखका एक रोग ।

बिडिक–पु० (सं०) पानका बीड़ा, गिलौरी ।

बिड़ी†–स्त्री० दे० 'बीड़ी' ।

बिड़ौ*–पु० बिटप ।

बिडौजा (जस्)–पु० (सं०) इंद्र ।

बिढ़तो*–पु० कमाई; लाभ ।

बिढ़वना, बिढ़ाना*–स० क्रि० कमाना; संचय करना ।

बित*–पु० दे० 'वित्त' ।

बितताना*–अ० क्रि० विकल होना । स० क्रि० दुःख देना, सताना ।

बितना*–पु० बित्ता । अ० क्रि० दे० 'बीतना'–'बिते बहुत दिन जात न जाना'–रघुराज सिंह ।

बितनु–पु० अनंग, कामदेव ।

बितरना*–स० क्रि० वितरण करना, बाँटना ।

बितवना*–स० क्रि० बिताना ।

बिताना–स० क्रि० गुजारना, व्यतीत करना । * अ० क्रि० बीतना –'भयो द्रौपदीको बसन बासर नहीं बिताय'–रसराज ।

बितावना*–स० क्रि० दे० 'बिताना' ।

बितीतना*–अ० क्रि० बीतना, गुजरना । स० क्रि० बिताना ।

बितुंड–पु० दे० 'वितुंड' ।

बितुंडे*–पु० 'वितंडावाद' ।

बितुन्ना*–स० क्रि० रेशा-रेशा अलग कर देना '–हाय ब्रज-ब्यौहार-गति अति पर्तिहिं बितुनति धूम'–घन० ।

बित्त–पु० वित्त, धन-दौलत; हैसियत; बूता, सामर्थ्य ।

बित्ता–पु० अँगूठेके सिरेसे छिँगुनीके छोरतककी लंबाई, बालिश्त ।

बित्ती–स्त्री० धर्मादाय ।

बिथकना–अ० क्रि० थकना; मुग्ध होना; चकित होना ।

बिथरना, बिथुरना*–अ० क्रि० बिखरना; अलग-अलग होना; खिलना ।

बिथराना, बिथुराना†–स० क्रि० बिखेरना, छिटकाना ।

बिथा*–स्त्री० दे० 'व्यथा' ।

बिथारना*–स० क्रि० बिखेरना, छितराना ।

बिथित*–वि० दे० 'व्यथित' ।

बिथुरित*–वि० बिखरा हुआ ।

बिथोरना*–स० क्रि० दे० 'बिथराना' ।

बिदकना*–अ० क्रि० चौंकना, भड़कना; फटना; घायल होना, चिढ़ना ।

बिदकाना*–स० क्रि० चौंकाना, भड़काना; फाड़ना; घायल करना; † मुँह टेढ़ा-मेढ़ा बनाना, चिढ़ाना, बिचकाना–'स्त्रियाँ मुँह बिदकाकर हँस पड़ीं'–मृग० ।

बिदर–पु० विदर्भ देश, बरार; ताँबे और जस्तेके मेलसे बनी उपधातु; इस उपधातुका बना बरतन जिसपर चाँदीके पत्तरसे बेल-बूटे बने हों । –साज़–पु० बिदरका काम करनेवाला ।

बिदरन*–स्त्री० विदीर्ण होना; दरार । वि० विदीर्ण करनेवाला ।

बिदरना*–अ० क्रि० फटना, विदीर्ण होना ।

बिदरी–स्त्री० बिदरके बरतन बनानेका काम ।

बिदलना*–स० क्रि० दलित करना ।

बिदहना†–स० क्रि० धान आदिको छीटकर जुताई करना ।

बिदहनी†–स्त्री० बिदहनेकी क्रिया ।

बिदा–स्त्री० रवानगी, रुखसत; जानेकी इजाजत; गौना । –ई–स्त्री० रुखसती, रवानगी; बिदा करते समय दिये जानेवाले रुपये आदि, रुखसताना ।

बिदारना*–स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना; नष्ट करना ।

बिदारी–पु० दे० 'विदारी' । –कंद–पु० दे० 'विदारीकंद' ।

बिदायगी–स्त्री० बिदाई ।

बिदिसा*–स्त्री० दे० 'विदिशा' ।

बिदीरना*–स० क्रि० विदीर्ण करना; आहत करना ।

बिदुराना*–अ० क्रि० मुस्कराना ।

बिदुरानि*–स्त्री० मुस्कराहट ।

बिदूखना, बिदूषना*–स० क्रि० दोष देना, लगाना; बिगाड़ना ।

बिदूरित–वि० दूर किया हुआ ।

बिदूसक–पु० दे० 'विदूषक' ।

बिदेस–पु० 'विदेश' ।

बिदेसिया–पु० भोजपुर क्षेत्रमें गाया जानेवाला एक प्रकारका लोकगीत ।

बिदेसी–वि० दे० 'विदेशी'।

बिदोख*–पु० वैर, विद्वेष।

बिदोरना*–स० क्रि० चलाना; फैलाना–'खायके पान बिदोरत ओठ हैं, बैठि सभामें बने अलबेला'–क० कौ०।

बिद्अत–स्त्री० (अ०) नयी बात; ईजाद; धर्ममें कोई नयी बात, नयी रीति निकालना; जुल्म, अत्याचार; झगड़ा, लड़ाई।

बिद्अती–वि० बिद्अत करनेवाला।

बिद्दत, बिद्धत–स्त्री० दे० 'बिद्अत'; बुराई; दुर्दशा।

बिद्ध–वि० बिधा हुआ, छेदा हुआ।

बिधँसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना।

बिध–स्त्री० दे० 'विधि'। पु० हाथीका चारा या रातिब; दे० 'विधि'। मु० –मिलाना–आय-व्ययका हिसाब ठीक करना।

बिधना–पु० विधि, ब्रह्मा। अ० क्रि० बेधा जाना, बिंधना। * स० क्रि० फँसाना।

बिधवपन†–पु० वैधव्य।

बिधवाँस*–पु० विद्वान् –'अति बिधवाँस पँडित ते बडे'–चंदा०।

बिधवा*–स्त्री० दे० 'विधवा'। वि० स्त्री० धव वृक्षसे रहित 'बिधवा बनी न नारि'–रामचं०।

बिधवाना–स० क्रि० छेद कराना।

बिधाँसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना।

बिधाई*–पु० विधायक।

बिधान–पु० दे० 'विधान'।

बिधाना–अ० क्रि० दे० 'बिँधाना'।

बिधानी*–पु० विधान करनेवाला, विधायक।

बिधि–स्त्री०, पु० दे० 'विधि'।

बिधितात–पु० (विधिजनक) कमल।

बिधिना*–पु० ब्रह्मा।

बिधुंतुद–पु० दे० 'विधुंतुद'।

बिधुंसना*–स० क्रि० विध्वंस करना, नष्ट करना।

बिधुर–वि० दे० 'विधुर'।

बिधुली–पु० बाँसकी एक किस्म।

बिन*–अ० दे० 'बिना'।

बिनई*–वि० दे० 'विनयी'।

बिनउ*–स्त्री० दे० 'विनय'।

बिनठना*–अ० क्रि० नष्ट होना; बिगड़ना।

बिनता–स्त्री० दे० 'विनता'।

बिनति*–स्त्री० दे० 'बिनती'।

बिनती–स्त्री० प्रार्थना, अर्ज।

बिनन–स्त्री० बिननेकी क्रिया; बीनकर निकाली हुई चीज (कूड़ा-करकट); बुननेकी क्रिया।

बिनना–स० क्रि० चुनना, छाँटना; डंक मारना; दे० 'बुनना'।

बिनय–स्त्री० दे० 'विनय'।

बिनयना*–स० क्रि० विनय, प्रार्थना करना।

बिनवट–स्त्री० रूमाल या रस्सीमें पैसा आदि बाँधकर बनेठी भाँजनेकी कला जो बचावमें अधिक उपयोगी होती है।

बिनवना*–स० क्रि० विनय करना।

बिनवाना–स० क्रि० चुनवाना; दे० 'बुनवाना'।

बिनशना, बिनसना*–अ० क्रि० नष्ट होना। स० क्रि० विनाश करना।

बिनसाना*–स० क्रि० विनाश करना, मिटाना। अ० क्रि० नष्ट होना।

बिना–अ० बगैर, छोड़कर। स्त्री० (अ०) नींवँ, बुनियाद; जड़; कारण। –ए-दावा–स्त्री० दावेका कारण, आधार। –ए-मुख़ासिमत–स्त्री० झगड़े या दावेका कारण।

बिनाई–स्त्री० बीनने (चुनने)की क्रिया या भाव; बीननेकी मजदूरी; दे० 'बुनाई'।

बिनाती*–स्त्री० दे० 'बिनती'–'पै गोसाइँ संग एक बिनाती'–प०।

बिनाना–स० क्रि० बुनवाना।

बिनानी*–वि० ज्ञानहीन, नासमझ–'रोवन लागे कृष्ण बिनानी'–सूर; विज्ञानी। स्त्री० विचार।

बिनावट†–स्त्री० दे० 'बुनावट'।

बिनास*–पु० दे० 'विनाश'; नाकसे खून जाना।

बिनासना†–स० क्रि० विनाश करना।

बिनासी*–वि० विनाशी, नष्ट होनेवाला, नश्वर।

बिनाह*–पु० दे० 'विनाश'–'साकत संग न कीजिये जाते होइ बिनाह'–कबीर।

बिनि, बिनु*–अ० दे० 'बिना'।

बिनुआ–वि० बीनकर, चुनकर एकत्रित।

बिनूठा*–वि० अनूठा।

बिनै*–स्त्री० दे० 'विनय'।

बिनौला–पु० कपासका बीज।

बिपक्ष–पु० दे० 'विपक्ष'।

बिपक्षी–वि० दे० 'विपक्षी'।

बिपच्छ*–पु० शत्रु, विरोधी पक्ष। वि० प्रतिकूल, विमुख।

बिपच्छी*–वि० दे० 'विपक्षी'।

बिपणि–स्त्री० दे० 'विपणि'।

बिपत, बिपता*–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपति*–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपत्ति–स्त्री० दे० 'विपत्ति'।

बिपथ–पु० गलत रास्ता, कुमार्ग।

बिपद, बिपदा*–स्त्री० विपत्ति, मुसीबत, आफत।

बिपर*–पु० दे० 'विप्र'।

बिपाक–पु० दे० 'विपाक'।

बिपाशा, बिपासा–स्त्री० व्यास नदी।

बिपोहना–स० क्रि० दे० 'विपोहना'।

बिफर*–वि० दे० 'विफल'।

बिफरना*–अ० क्रि० भड़कना; नाराज होना; मचलना; विद्रोह करना; चमकना, उछलना (घोड़ेका)।

बिफरा†–वि० क्रुद्ध, क्षुब्ध, भड़का हुआ–'वे बिफरे शेरकी भाँति कमरेका चक्कर लगा रहे थे।'–नीहारिका, फर० '६४।

बिफुलता–स्त्री० उत्फुल्लता, हर्ष।

बिबछना–अ० क्रि० विपक्षी, विरोधी होना; उलझना।

बिबर–पु० दे० 'विवर'।

बिबरन*–वि० दे० 'विवर्ण'। पु० दे० 'विवरण'।

बिबस*–वि० दे० 'विवश'। अ० लाचार होकर।

बिबसाना*–अ० क्रि० विवश होना।

बिबहार*–पु० दे० 'व्यवहार'।

बिबाई*–स्त्री० दे० 'बिवाई'।

बिबाक*–वि० दे० 'बेबाक़'।

बिबाकी*–स्त्री० दे० 'बेबाक़ी'।

बिबादना*–अ० क्रि० विवाद करना, झगड़ना।

बिबाहना*–स० क्रि० ब्याह करना।

बिबि*–वि० दो।

बिबेक–पु० दे० 'विवेक'।

बिब्बोक–पु० (सं०) गर्वपूर्ण उपेक्षा; रूपादिके गर्वसे प्रियकी उपेक्षा (सा०)।

बिभचारी*–वि० दे० 'व्यभिचारी'।

बिभछ*–बीभत्स रस–'शृंगार बीर करुना बिभछ भय अद्भुत हसंत सम'–रासो।

बिभाना*–अ० क्रि० चमकना, शोभित होना।

बिभावरी*–स्त्री० दे० 'विभावरी'।

बिभिचारी*–वि० दे० 'व्यभिचारी'।

बिभिनाना*–स० क्रि० भिन्न, अलग करना।

बिभीषक–वि० (सं०) भयकारक, त्रास उत्पन्न करनेवाला।

बिभीषिका–स्त्री० (सं०) दे० 'विभीषिका'।

बिभु*–पु० दे० 'विभु'।

बिभोर*–वि० दे० 'विभोर'।

बिभौ*–पु० ऐश्वर्य; प्राचुर्य।

बिमन*–वि० उदास, विमनस्क। अ० बिना मनके।

बिमर्दना*–स॰ क्रि॰ मर्दन करना, मसलना; नष्ट करना ।

बिमला–स्त्री॰ दे॰ 'विमला' ।

बिमान–पु॰ वायुयान; अनादर ।

बिमानी*–वि॰ मानरहित ।

बिमानीकृत–वि॰ जो मानरहित किया गया हो; जिसने (किसीको अपना) विमान बनाया हो–'बिमानीकृत राजहंस'–राम॰ ।

बिमूढ़–वि॰ दे॰ 'विमूढ़' ।

बिमोचना*–स॰ क्रि॰ टपकाना; छोड़ना, मुक्त करना ।

बिमोट, बिमोटा–पु॰ बाँबी, वल्मीक ।

बिमोहना*–अ॰ क्रि॰ मुग्ध, आसक्त होना । स॰ क्रि॰ मुग्ध करना ।

बिमौटा†–पु॰ बाँबी, वल्मीक ।

बिय*–वि॰ दो; दूसरा । पु॰ बीज ।

बियत–पु॰ आकाश; *एकांत स्थान ।

बियर–(अं॰) स्त्री॰ जौकी बनी एक विदेशी शराब ।

बियहुता†–वि॰ विवाहित ।

बिया*–वि॰ दूसरा । † पु॰ बीज ।

बियाज†–पु॰ सूद; बहाना ।

बियाजू†–वि॰ ब्याजपर दिया हुआ (धन) ।

बियाड़†–पु॰ वह खेत जिसमें (धानके) बीज रोपनेके लिए बोये जायं ।

बियाध, बियाधा*–दे॰ 'व्याध' ।

बियाधि*–स्त्री॰ दे॰ 'व्याधि' ।

बियाना†–स॰ क्रि॰, अ॰ क्रि॰ दे॰ 'ब्याना' ।

बियापना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'व्यापना' ।

बियावान–पु॰ दे॰ 'बयाबान' ।

बियावानी–वि॰ दे॰ 'बयाबानी' ।

बियारी, बियारू–स्त्री॰, **बियालू**–पु॰ दे॰ 'ब्यालू' ।

बियाल*–पु॰ साँप; शेर ।

बियाव*–पु॰ विवाह; जननेका भाव ।

बियाह†–पु॰ दे॰ 'ब्याह' ।

बियाहना*–स॰ क्रि॰ ब्याह करना ।

बियोग–पु॰ दे॰ 'वियोग' ।

बिरंग–वि॰ बेरंग; कई रंगोंवाला ।

बिरंचना–स॰ क्रि॰ विरचित करना ।

बिरंचि*–पु॰ ब्रह्मा ।

बिरंज–पु॰ (फा॰) चावल; भात; (अ॰) पीतल ।

बिरंजारी–पु॰ (फा॰) गल्लेका व्यापारी ।

बिरंजी–स्त्री॰ छोटी कील । वि॰ (अ॰) पीतलका ।

बिरई*–स्त्री॰ छोटा पौधा ।

बिरकत*–वि॰ दे॰ 'विरक्त'–'वैरागी बिरकत भला ग्रेही चित्त उदार'–साखी ।

बिरखभ, बिरषभ*–पु॰ दे॰ 'वृषभ' ।

बिरचना*–स॰ क्रि॰ रचना, बनाना, सजाना । अ॰ क्रि॰ उचटना ।

बिरछ, बिरछा*–पु॰ दे॰ 'वृक्ष' ।

बिरछिक, बिरछीक–पु॰ दे॰ 'वृश्चिक' ।

बिरज–वि॰ निर्मल; निर्दोष; गुणरहित । पु॰ ब्रज ।

बिरझना*–अ॰ क्रि॰ उलझना; मचलना; क्रुद्ध होना ।

बिरझाना*–अ॰ क्रि॰ क्रुद्ध होना ।

बिरतंत, बिरतांत*–पु॰ दे॰ 'वृत्तांत' ।

बिरता–पु॰ बूता, शक्ति ।

बिरताना*–स॰ क्रि॰ वितरण करना, बाँटना ।

बिरति*–स्त्री॰ दे॰ 'विरक्ति' ।

बिरथा*–वि॰ व्यर्थ । अ॰ अकारण, निष्प्रयोजन ।

बिरदंग*–पु॰ मृदंग ।

बिरद–पु॰ नाम, बड़ाई, यश ।

बिरदैत–वि॰ बड़े नामवाला, विख्यात । पु॰ नामी योद्धा ।

बिरध*–वि॰ दे॰ 'वृद्ध' ।

बिरधाई*–स्त्री॰ बुढ़ापा ।

बिरधापन*–पु॰ बुढ़ापा ।

बिरबिराना†–स॰ क्रि॰ शिकायतकी तरह धीरे-धीरे कुछ कहना ।

बिरमना*–अ॰ क्रि॰ रुकना, अटकना; देर करना; विश्राम करना; प्रेममें बँधना ।

बिरमाना*–स॰ क्रि॰ रोक, अटका रखना; मोह लेना, प्रेममें बाँधना; बिताना । अ॰ क्रि॰ ठहरना, विश्राम करना–'सघन गुंजत बैठि उनपर भौर हैं बिरमाहिं'–सूर; भुलाना ।

बिरल–वि॰ दे॰ 'विरल' ।

बिरला–वि॰ बहुतोंमेंसे कोई एक ।

बिरले–वि॰ (बहु॰) इने-गिने, बहुत थोड़े ।

बिरवा*–पु॰ पौधा, वृक्ष । –ई–†स्त्री॰ दे॰ 'बिरवाही' ।

बिरवाही†–स्त्री॰ छोटे पौधोंका समूह; वह स्थान जहाँ बहुत-से छोटे पौधे उगे हों ।

बिरस–वि॰ दे॰ 'विरस' । पु॰ बिगाड़ ।

बिरसना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'बिलसना' ।

बिरह–पु॰ दे॰ 'विरह' ।

बिरहा–पु॰ भोजपुरीका एक तरहका लोकगीत जिसे खास तौरसे अहीर गाते हैं; दे॰ 'विरह' ।

बिरहाना*–अ॰ क्रि॰ विरह-व्यथाका अनुभव करना–'राधा बिरह देखि बिरहानी, यह गति बिन नंदनंद'–सूर ।

बिरही–वि॰ दे॰ 'विरही' ।

बिरहुला–पु॰ सर्प । (बिरहुली = सर्पिणी) ।

बिराग–पु॰ दे॰ 'विराग' ।

बिरागना*–अ॰ क्रि॰ विरक्त होना ।

बिराजना–अ॰ क्रि॰ शोभित होना; बैठना; आसीन होना ।

बिरादर–पु॰ (फा॰) भाई, बंधु; भाई-बंद, सजातीय । –कुशी–स्त्री॰ बंधुवध । –ज़ादा–पु॰ भतीजा । –ज़ादी–स्त्री॰ भतीजी ।

बिरादराना–वि॰ (फा॰) भाईका-सा, भाईके अनुरूप ।

बिरादरी–स्त्री॰ (फा॰) भाईचारा; जाति, गोत्र । मु॰ –से ख़ारिज, बाहर होना–जातिच्युत होना ।

बिरान*–वि॰ बेगाना, पराया ।

बिराना*–वि॰ पराया । † स॰ क्रि॰ (मुँह) चिढ़ाना ।

बिराम–पु॰ विराम । † वि॰ बीमार, रुग्ण; अधीर ।

बिराल–पु॰ दे॰ 'बिडाल' ।

बिरावना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बिराना' ।

बिरास*–पु॰ दे॰ 'विलास' ।

बिरासी*–वि॰ दे॰ 'विलासी' ।

बिरिख*–पु॰ दे॰ 'वृक्ष'; दे॰ 'वृष' ।

बिरिछ*–पु॰ वृक्ष ।

बिरिध*–वि॰ दे॰ 'वृद्ध' ।

बिरियाँ*–स्त्री॰ वेला, समय; बार, दफा ।

बिरिया†–स्त्री॰ कानका एक गहना, 'ढारें' ।

बिरियाली–स्त्री॰ नमकीन पुलाव ।

बिरी*–स्त्री॰ पानका बीड़ा; गठरी; मिस्सी ।

बिरुझना, बिरुझाना*–अ॰ क्रि॰ उलझाना; झगड़ना; बिफरना ।

बिरुद–पु॰ दे॰ 'बिरद' ।

बिरुदैत–वि॰, पु॰ दे॰ 'बिरदैत' ।

बिरुधाई*–स्त्री॰ बुढ़ापा ।

बिरूप–वि॰ दे॰ 'विरूप' ।

बिरोग†–पु॰ दुःख, चिंता ।

बिरोगी–पु॰ दुःखी; चिन्तित; वियोगी ।

बिरोजा–पु॰ एक दवा, गंधाबिरोजा ।

बिरोधना*–अ॰ क्रि॰ रोकना; विरोध करना–'नवहिं बिरोधे नहिं कल्याना'–रामा॰ ।

बिरोलना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'बिलोड़ना' ।

बिर्छ–पु॰ दे॰ 'वृक्ष' ।

बिर्ध–वि॰ दे॰ 'वृद्ध' ।

बिलंद*–वि॰ हारा हुआ, असफल हुआ । दे॰ 'बुलंद' ।

बिलंब–पु॰ दे॰ 'विलंब' ।

बिलंबना*–अ॰ क्रि॰ देर करना; रुकना; लटकना ।

बिलंबित–वि॰ दे॰ 'विलंबित' ।

बिल–पु॰ (सं॰) जमीन या दीवारोंमें बनाया हुआ लंबा छेद; इस

तरहका छेद जिसमें कोई जंतु (चूहा, साँप आदि) रहता हो; इंद्रका घोड़ा। **–कारी(रिन्)**–पु० चूहा। **–वास,–वासी(सिन्)**–वि० माँदमें रहनेवाला। पु० ऐसा जानवर। **–शय,–शायी(यिन्)**–वि० बिलमें रहनेवाला। पु० ऐसा जंतु। **–स्वर्ग**–पु० नरक। मु० **–ढूँढ़ना**–बचावकी जगह ढूंढ़ना। **–में घुसना**–छिप जाना, घरमें बैठ रहना।

बिल–पु० (अं०) बेचे हुए माल या किये हुए कामके पावनेका पुरजा, बीजक; क़ानूनका मस्विदा, विधेयक।

बिलकुल–अ० दे० 'बिल्'में।

बिलखना–अ० क्रि० दुःखी होना, विलाप करना; *ताड़ जाना।

बिलखाना*–अ० क्रि० दे० 'बिलखना'। स० क्रि० दुःख देना, रुलाना।

बिलग–वि० अलग, जुदा। * पु० बिलगाव; रंज; बुराई-'आरति बस सन्मुख भयेउँ बिलग न मानहु तात।' –रामा०। मु० **–मानना**–बुरा मानना; दुःखी होना।

बिलगाऊ–वि० अलग करनेवाला।

बिलगाना–अ० क्रि० अलग होना। स० क्रि० अलग करना।

बिलगाव–पु० अलग होनेका भाव या क्रिया।

बिलच्छन*–वि० दे० 'विलक्षण'।

बिलछना*–अ० क्रि० लखना, ताड़ना।

बिलटना–अ० क्रि० उलटना; असफल या नष्ट होना। स० क्रि० नष्ट करना।

बिलटाना–स० क्रि० उलटा, विफल या नष्ट करना।

बिलटी–स्त्री० रेलसे भेजे जानेवाले मालकी रसीद जिसे दिखानेपर भेजा हुआ माल मिलता है।

बिलना–अ० क्रि० बेला जाना। पु० दे० 'बेलना'।

बिलनी–स्त्री० आँखकी पलकपरकी फुंसी; एक कीड़ा, भृंगी।

बिलपना*–अ० क्रि० विलाप करना।

बिलफ़ेल–अ० दे० 'बिल्'में।

बिलबिलाना–अ० क्रि० दुःख, पीड़ा आदिसे विकल, विह्वल होना, रोना-चिल्लाना; गिड़गिड़ाना; कीड़ोंका कुलबुलाना।

बिलम*–पु० 'विलंब'।

बिलमना*–अ० क्रि० देर करना; रुकना, अटकना; प्रेममें बँधकर रुक जाना।

बिलमाना*–स० क्रि० रोकना, अटकाना; प्रेममें फँसाना, बाँधना।

बिललाना*–अ० क्रि० बिलखना, विलाप करना–'बिललात परे इक कटे गात'–सुजान०; घबड़ाना।

बिलल्ला–वि० खेल-कूद, आवारगीमें समय बितानेवाला; बेशऊर।

बिलवाना†–स० क्रि० खोना, गँवाना; नष्ट करना या कराना; छिपाना।

बिलसना*–अ० क्रि० सजना, शोभित होना। स० क्रि० बरतना, भोगना।

बिलसाना*–स० क्रि० बरतना, भोगना; दूसरेको बरतनेमें प्रवृत्त करना।

बिलस्त†–पु० बित्ता।

बिलहरा–पु०, **बिलहरी**–स्त्री० बाँसकी तीलियोंका बना पान रखनेका डिब्बा।

बिला–अ० (अ०) बिना, बगैर। **–तकल्लुफ़**–अ० निस्संकोच, बिना रुके-अटके। **–नाग़ा**–अ० प्रतिदिन, हर रोज। **–वजह**–अ० अकारण। **–वास्ता**–अ० सीधे, बराहे रास्त; बगैर जरियेके। **–शक,–शुभा**–अ० निस्संदेह, निश्चयपूर्वक। **–शर्त**–अ० बिना किसी शर्तके। **–शिरकत ग़ैर**–अ० बिना दूसरेकी शिरकतके।

बिलाई–स्त्री० बिल्ली; सिटकनी; कुएँमें गिरी हुई चीजें निकालनेका काँटा; कद्दूकश।

बिलाईकंद–पु० दे० 'विदारीकंद'।

बिलाना–अ० नष्ट होना; छिन्न-भिन्न होना; लुप्त होना।

बिलाप–पु० दे० 'विलाप'।

बिलापना*–अ० क्रि० विलाप करना।

बिलायत–पु० दे० 'वलायत'। * वि० बहुत।

बिलायन–पु० (सं०) माँद; गुफा।

बिलार†–पु० बड़ी बिल्ली।

बिलारी†–स्त्री० बिल्ली।

बिलाल–पु० बिडाल, मार्जार।

बिलाव–पु० बड़ी बिल्ली, मार्जार।

बिलावल–पु० एक राग। * स्त्री० पत्नी, स्त्री; प्रेमिका।

बिलास–पु० दे० 'विलास'।

बिलास खानीतोड़ी–स्त्री० एक रागिनी।

बिलासना*–स० क्रि० बरतना, भोगना।

बिलासिनी–स्त्री० वेश्या।

बिलासी–वि० दे० 'विलासी'। पु० एक पेड़।

बिलियर्ड–पु० (अं०) एक अंग्रेजी खेल जो लंबी छड़ियोंसे मेजपर खेला जाता है। **–टेबुल**–पु० बिलियर्ड खेलनेकी मेज। **–रूम**–पु० बिलियर्ड खेलनेका कमरा।

बिलिया–स्त्री० कटोरी।

बिलिश–पु० मछली फँसानेका काँटा या उसमें लगाया जानेवाला चारा।

बिलुठना*–अ० क्रि० लोटना।

बिलूर*–पु० दे० 'बिल्लौर'।

बिलेशय–वि० (सं०) बिलमें सोनेवाला। पु० साँप आदि।

बिलैया†–स्त्री० बिल्ली; कद्दूकश; दरवाजेकी सिटकिनी। मु० **–डंडवत्**–दिखावटी विनय।

बिलोकना*–स० क्रि० देखना, अवलोकन करना।

बिलोकनि*–स्त्री० चितवन, दृष्टि।

बिलोचन–पु० नेत्र।

बिलोड़ना*–स० क्रि० मथना; गड्डमड्ड करना।

बिलोन*–वि० अलोना; बदसूरत।

बिलोना–स० क्रि० मथना; ढालना, गिराना (आँसू)–'तुलसी मँदोवै रोइ रोइ कै बिलोवै आँसु…'–कविता०। वि० दे० 'बिलोन'।

बिलोरना*–स० क्रि० दे० 'बिलोड़ना'।

बिलोल–वि० चंचल; सुंदर।

बिलोलना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना, लहराना।

बिलोवना*–स० क्रि० दे० 'बिलोना'।

बिलौका(कस्)–पु० (सं०) बिलमें रहनेवाला जंतु।

बिलौटा–पु० बिल्लीका बच्चा।

बिलौर–पु० दे० 'बिल्लौर'।

बिलौरा†–पु० बिल्लीका बच्चा।

बिल्–अ० (अ०) से, साथ; लिए; द्वारा। **–इरादा**–अ० इरादेके साथ, जान-बूझकर। **–कुल**–अ० सारा, तमाम; निपट। **–फ़र्ज़**–अ० फर्ज कीजिये, मान लीजिये। **–फ़ेल**–अ० अभी, सरेदस्त, फिलहाल। **–मुक्ता**–अ० इकट्ठा, अलल हिसाब। वि० जो घटाया-बढ़ाया न जा सके (लगान, मालगुजारी)।

बिल्ल–पु० (सं०) गड्ढा; थाला, आलवाल; हींग। **–मूला**–स्त्री० बराहीकंद। **–सू**–स्त्री० दस बच्चोंकी माँ।

बिल्ला–पु० नर बिल्ली; पद या संस्थाविशेषकी सदस्यतासूचक पट्टी, बैज।

बिल्लाना–अ० क्रि० चीखें मारकर रोना, विलाप करना।

बिल्ली–स्त्री० शेर, चीते आदिकी जातिका एक मांसाहारी छोटा जंतु जो पालतू और जंगली दोनों तरहका होता है; सिटकिनी। **–लोटन**–पु० एक वनस्पति। मु० **–का रास्ता काटना**–बिल्लीका सामनेसे निकल जाना जो अशुभ समझा जाता है। **–को छीछड़ोंके ख़्वाब**–मनुष्यका जैसा स्वभाव होता है वैसे ही विचार उसके मनमें आते हैं।

बिल्लूर–पु० दे० बिल्लौर।

बिल्लौर–पु० शीशे जैसा सफेद एक पारदर्शक पत्थर, स्फटिक।

बिल्लौरी–वि० बिल्लौरका बना हुआ; बिल्लौरकी-सी चमकवाला।

बिल्व–पु० (सं०) बेलका पेड़ या फल। **–दंड,–दंडी(डिन्)**–पु० शिव।

बिल्हण–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध कवि जिसने विक्रमांकदेवचरितकी रचना की थी।

बिवछना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ ‘बिबछना’।

बिवरना*–स॰ क्रि॰ सुलझाना। अ॰ क्रि॰ सुलझना–‘नीक सगुन बिबरहि झगर होइहि धरम नियाउ’–रामाज्ञा। विवरण देना, साफ करना।

बिवराना–स॰ क्रि॰ (बालोंको) सुलझाना; सुलझवाना।

बिवसाइ*–पु॰ दे॰ ‘व्यवसाय’।

बिवाई–स्त्री॰ पाँवके चमड़ेका फटना।

बिवान*–पु॰ विमान, रथ।

बिवेचना*–स॰ क्रि॰ विवेचन करना।

बिशप–पु॰ (अं॰) बड़ा पादरी जो विभागविशेषका धर्माध्यक्ष (गवर्नर) हो।

बिशाखा–स्त्री॰ राधाकी एक सखी।

बिष–पु॰ दे॰ ‘विष’।

बिषया–स्त्री॰ विषय-वासना।

बिषान*–पु॰ सींग।

बिषारा*–वि॰ विषाक्त।

बिषिया*–स्त्री॰ दे॰ ‘विषया’।

बिसंच*–पु॰ संचयका अभाव, अपव्यय; लापरवाही; विघ्न; डर।

बिसंभर*–पु॰ दे॰ ‘विश्वंभर’।

बिसँभर*–वि॰ जो सँभाला न जा सके; बेखबर।

बिसँभार*–वि॰ जो सम्भाला न जा सके; बेसुध, अचेत।

बिस–पु॰ दे॰ ‘विष’; (सं॰) मृणाल। **–कंटिका–**स्त्री॰ एक तरहकी बकी। **–कंठी(ठिन्)–**पु॰ एक तरहका बगला। **–कुसुम,–पुष्प,–प्रसून–**पु॰ पद्मपुष्प। **–ग्रंथि–**स्त्री॰ आँखका एक रोग। **–नाभि,–लता–**स्त्री॰ कमलका पौधा। **–नासिका–**स्त्री॰ एक तरहकी बकी। **–वर्त्म(न्)–**पु॰ एक नेत्ररोग। **–शालूका–**स्त्री॰ कमलकी जड़।

बिसकरमा*–पु॰ दे॰ ‘विश्वकर्मा’।

बिसखपरा–पु॰ गोहकी जातिका एक जहरीला जंतु; गदहपुरना; एक वनौषधि।

बिसखापर, बिसखोपरा–पु॰ दे॰ ‘बिसखपरा’।

बिसतरना*–स॰ क्रि॰ विस्तार करना। अ॰ क्रि॰ फैलना।

बिसतार*–पु॰ दे॰ ‘विस्तार’।

बिसद*–वि॰ दे॰ ‘विशद’।

बिसन*–पु॰ व्यसन; पतन; दुर्भाग्य; दोष।

बिसनी*–वि॰ दे॰ ‘व्यसनी’।

बिसमउ, बिसमव*–पु॰ दे॰ ‘बिसमय’।

बिसमय*–पु॰ विस्मय, आश्चर्य; संदेह; गर्व; विषाद-‘हर्ष समय बिसमय करसि कारण मोहि सुनाव’–रामा॰।

बिसमरना*–स॰ क्रि॰ भूलना।

बिसमिल–वि॰ जबह किया हुआ; जख्मी, घायल। **–गाह–**स्त्री॰ वधालय।

बिसमिल्ला–पु॰ दे॰ ‘बिस्मिल्ला’।

बिसयक*–पु॰ प्रदेश, विषय; राज्य।

बिसरना–अ॰ क्रि॰ भूल जाना।

बिसरात*–पु॰ खच्चर।

बिसराना–स॰ क्रि॰ भुला देना।

बिसराम*–पु॰ दे॰ ‘विश्राम’।

बिसरामी*–वि॰ विश्राम देनेवाला, सुखद–‘सुआ सो राजा कर बिसरामी’–प॰।

बिसरावना*–स॰ क्रि॰ दे॰ ‘बिसराना’।

बिसल–पु॰ (सं॰) अंकुर, अँखुवा।

बिसवा–पु॰ दे॰ ‘बिस्वा’। स्त्री॰ वेश्या।

बिसवार–पु॰ किसबत, नाईकी पेटी।

बिसवास*–पु॰ दे॰ ‘विश्वास’।

बिसवासिनी*–वि॰ स्त्री॰ विश्वास करनेवाली; विश्वासघात करनेवाली।

बिसवासी*–वि॰ विश्वासी; अविश्वसनीय–‘पै यह पेट महा बिसवासी’–प॰।

बिससना*–स॰ क्रि॰ विश्वास करना, पतियाना; वध करना; चीर-फाड़ करना।

बिसहना*–स॰ क्रि॰ दे॰ ‘बिसाहना’।

बिसहर*–पु॰ विषधर, सर्प।

बिसहरु–पु॰ बिसाहने, खरीदनेवाला।

बिसा*–पु॰ दे॰ ‘बिस्वा’।

बिसाइँध–स्त्री॰, वि॰ दे॰ ‘बिसायँध’।

बिसाख*–स्त्री॰ दे॰ ‘विशाखा’।

बिसात–स्त्री॰ (अ॰) फैलाव; फैलायी, बिछायी जानेवाली चीज, दरी, चटाई आदि; वह कपड़ा जिसपर चौसर या शतरंज खेला जाय; पूँजी; हैसियत; हस्ती; शक्ति, सामर्थ्य। **–ख़ाना–**पु॰ बिसातीकी दुकान। **–बाना–**पु॰ बिसातीकी दुकानमें बिकनेवाला सामान, ‘स्टेशनरी’। **मु॰ –उलटना–**उलट-पलट हो जाना, दशा बदल-बिगड़ जाना।

बिसाती–पु॰ फुटकर चीजें बेचनेवाला, लिखने-पढ़ने, शृंगार, सीने-पिरोने, शीशे-चीनी आदिका सामान बेचनेवाला, ‘जनरल मर्चेंट’।

बिसाना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ ‘बसाना’; † विषका असर होना। सौदा करना।

बिसायँध–स्त्री॰ दुर्गंध; मांस-मछलीकी गंध। वि॰ ऐसी गंधवाला।

बिसारद*–वि॰ दे॰ ‘विशारद’।

बिसारना–स॰ क्रि॰ भुला देना, याद न रखना।

बिसारा–वि॰ विषयुक्त ‘···मैन बानसे बिसारे न बिसारे बिसरत हैं’–ललितललाम।

बिसारी*–वि॰ स्त्री॰ विषयुक्त–‘साँपिनि निसा बिसारी’–घन॰।

बिसास*–पु॰ विश्वासघात–‘विष भोए विषम-बिसास-बानहत हैं’–घन॰; दे॰ ‘विश्वास’।

बिसासिन, बिसासिनि*–वि॰ स्त्री॰ विश्वास-घातिनी।

बिसासी*–वि॰ विश्वासघाती।

बिसाह–पु॰ बिसाहनेकी क्रिया, खरीद।

बिसाहना†–स॰ क्रि॰ मोल लेना, खरीदना। पु॰ सौदा।

बिसाहनी*–स्त्री॰ खरीदी जानेवाली चीज, सौदा; क्रय।

बिसाहा*–पु॰ सौदा।

बिसिख*–पु॰ दे॰ ‘विशिख’।

बिसिनी–स्त्री॰ (सं॰) कमल; कमल-समूह।

बिसियर*–वि॰ विषैला। पु॰ सर्प।

बिसुकरमा, बिसुकर्मा*–पु॰ दे॰ ‘विश्वकर्मा’।

बिसुनना–अ॰ क्रि॰ खाते समय खाद्य-पदार्थका नाककी ओर चढ़ जाना।

बिसुनी–स्त्री॰ अमरबेल।

बिसुरना*–अ॰ क्रि॰ दे॰ ‘बिसूरना’।

बिसूरना–अ॰ क्रि॰ दुःखित होना, सोच करना; चुपके-चुपके रोना। स्त्री॰ सोच, चिंता।

बिसेख, बिसेस*–वि॰ दे॰ ‘विशेष’। **–ता–**स्त्री॰ दे॰ ‘विशेषता’।

बिसेखना*–अ॰ क्रि॰ विशेष रूपसे, विस्तारसे कहना; विशेष रूपसे प्रतीत होना।

बिसेन–पु॰ क्षत्रियोंकी एक शाखा।

बिसेसक–पु॰ तिलक, टीका।

बिसेसर*–पु॰ दे॰ ‘विश्वेश्वर’।

बिसैंधा†–वि॰ जिसमें मांस-मछलीकी गंध हो।

बिसैला–पु॰ दे॰ ‘विषैला’।

बिसोक*–वि॰ शोकरहित। पु॰ अशोक वृक्ष।

बिस्कुट–पु॰ आटे, आरारोट आदिकी विशेष रीतिसे बनी मीठी या नमकीन टिकिया।

बिस्त–पु॰ (सं॰) सोना तौलनेका ८॰ रत्तीका एक मान।

बिस्तर–पु॰ (फा॰) बिछौना।

बिस्तरना*–स॰ क्रि॰ विस्तार करना, फैलाना।

बिस्तारना*–अ॰ क्रि॰ विस्तृत होना। स॰ क्रि॰ विस्तार करना।

बिस्तरा–पु॰ दे॰ ‘बिस्तर’।

बिस्तार–पु॰ दे॰ ‘विस्तार’।

बिस्तुइया–स्त्री॰ छिपकली।

बिस्मार्क, प्रिंस–पु० जर्मनीका प्रसिद्ध राजपुरुष जो १८६२ में प्रशाका प्रधान मंत्री बना। उसीके नेतृत्वमें जर्मन साम्राज्य संघटित हुआ और वही उसका पहला चांसलर हुआ (१८१५-१८९८)।

बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह–स्त्री० (अ०) 'अल्लाहके नामके साथ' (मुसलमान हर अच्छे कामका आरंभ करते हुए कहते हैं); आरंभ; विद्यारंभ। मु० –करना–आरंभ करना। –ही ग़लत होना–शुरूमें ही गलती होना, 'प्रथमग्रासे मक्षिकापातः'।

बिस्राम*–पु० दे० 'विश्राम'।

बिस्वा–पु० बीघेका बीसवाँ भाग। –दार–पु० पट्टीदार।

बिस्वास–पु० दे० 'विश्वास'।

बिस्वाससँगाती*–वि०, पु० विश्वासघाती–'छोड़ गया बिस्वास-सँगाती प्रेमकी बाती बराय'–मीरा।

बिहँग–पु० दे० 'विहंग'।

बिहंडना*–स० क्रि० काटना, टुकड़े करना; नष्ट करना; मार डालना।

बिहंडला–पु० आवारा, असभ्य।

बिहँसना*–अ० क्रि० मुसकराना।

बिहँसाना*–स० क्रि० हँसाना। अ० क्रि० मुसकराना; खिलना।

बिहँसौँहा*–वि० हँसता हुआ।

बिह–वि० (फा०) दे० 'बेह'। –तर–वि० दे० 'बेहतर'।

बिहग–पु० दे० 'विहग'।

बिहद, बिहद्द*–वि० दे० 'बेहद'।

बिहवल*–वि० दे० 'विह्वल'; शिथिल।

बिहरना*–अ० क्रि० विचरना; विहार करना–'जमुनाजल बिहरत ब्रजनारी'–सूर; विदीर्ण होना, फटना।

बिहराना*–अ० क्रि० फटना।

बिहरी†–स्त्री० चंदा।

बिहाग–पु० एक राग।

बिहागड़ा–पु० एक राग।

बिहान–पु० सवेरा, भोर; अंत–'जब लगि बिपति बिहान'–रामा०। अ० आनेवाला कल।

बिहाना*–स० क्रि० त्यागना। अ० क्रि० बीतना।

बिहार–पु० दे० 'विहार'; भारतवर्षका एक राज्य जो उत्तरप्रदेशके पूरबमें पड़ता है।

बिहारना*–अ० क्रि० विहार करना।

बिहारी–पु० बिहारका रहनेवाला। वि० दे० 'विहारी'।

बिहारीलाल–पु० हिंदीके शृंगाररसके प्रसिद्ध कवि जिन्होंने ७०० दोहोंकी 'सतसई'की रचना की।

बिहाल*–वि० दे० 'बेहाल'।

बिहि*–पु० विधि, ब्रह्मा।

बिहित*–पु० बिहिश्त, स्वर्ग–'बिहित न मेरे चाहिये बाझ पियारे तुझ'–साखी। वि० दे० 'विहित'।

बिहिश्त–पु० (फा०) स्वर्ग, वैकुंठ, जन्नत; स्वर्गोपम स्थान। –(ते)बरीं–पु० सर्वोच्च स्वर्ग, अर्श। मु० –का जानवर–मोर। –का मेवा–अनार। –की कुमरी–नाचने-गानेवाली स्त्री। –की हवा–शीतल-मंद-सुगंध वायु। –को ठोकर या लात मारना–मिले या मिलते हुए सुखको छोड़ना।

बिहिश्ती–पु० बिहिश्तका रहनेवाला; (मशकसे) पानी भरनेवाला, भिश्ती।

बिही–पु० (फा०) नाशपातीकी शक्लका एक फल; उसका पेड़; अमरूद, लाल गूदेका अमरूद। –दाना–पु० बिहीका बीज।

बिही–स्त्री० (फा०) भलाई; नेकी। –ख़्वाह–पु० भलाई चाहनेवाला, हितैषी।

बिहीन–वि० दे० 'विहीन'।

बिहुरना*–अ० क्रि० दे० 'बिथुरना'। स० क्रि० छोड़ना।

बिहून*–वि० दे० 'विहीन'।

बिहोरना*–अ० क्रि० बिछुड़ना।

बींग†–स्त्री० त्रुटि, नुक्स (बुंदेल०)।

बीँड़†–स्त्री० पयालका बना गोल आसन; गेंडुरी; सरकंडेका बाँस जैसा लंबा बना हुआ मुट्ठा जो छाजनके नीचे लगाया जाता है। बीड़ा।

बीँड़ा–पु० पयालका बना गोल आसन; गेंड़ुरी।

बींड़ी–स्त्री० एक तरहकी रस्सी, गेंडुरी।

बीँदना*–स० क्रि० अनुमान करना; दे० 'बीनना'।

बीँधना–स० क्रि० छेदना, बेधना। * अ० क्रि० दे० 'बिँधना'।

बी–स्त्री० प्रतिष्ठित महिला, बीबी (प्रतिष्ठित महिलाओंके नामके साथ लगाया जाता है)।

बीका–वि० दे० 'बाँका'।

बीख*–पु० डग, कदम; दे० 'विष'।

बीग*–पु० भेड़िया।

बीगना–स० क्रि० बिखेरना, फेंकना।

बीघा–पु० बीस बिस्वेका रकबा (एक जरीब लंबी और एक जरीब चौड़ी जमीन)।

बीच–पु० किसी वस्तु, क्षेत्र आदिका मध्य भाग, दरमियान, वस्त; दो चीजोंके मध्यका फासिला, अंतर, फर्क; * अवसर, अवकाश–'पायो बीच इंद्र अभिमानी हरि बिनु गोकुल जान्यो'–सूर। अ० बीचमें, दरमियान; अरसेमें। –बिचाव–पु० मध्यस्थता, बिचवई। –वाला–पु० बिचुआ, मध्यस्थ। मु० –करना–बिचवई करना। –खेत–खुल्लमखुल्ला, डंकेकी चोट। –पड़ना–(दशा आदिमें) फर्क होना। –पारना–भेद, बिलगाव करना। –बीचमें–थोड़ी-थोड़ी देरपर। –में कूदना–दखल देना, टाँग अड़ाना। –में डालना–मध्यस्थ बनाना। –में देना–साक्षी बनाना। –में पड़ना–बिचवई करना; जिम्मेदार बनना। –रखना–भेद करना; छिपाना।

बीचोबीच–ठीक मध्यमें।

बीचि–स्त्री० दे० 'वीचि'।

बीछना*–स० क्रि० छाँटना, चुनना।

बीछी–स्त्री०, **बीछू***–पु० दे० 'बिच्छू'।

बीज–पु० (सं०) फूलवाले पेड़-पौधेका गर्भांड, वह दाना या गुठली जिससे पेड़-पौधेका अंकुर उगे, तुख्म, बीया; शुक्र; मूल कारण, जड़; कथावस्तुका मूल; बीजगणित; मंत्रका बीज रूप; अक्षर या ध्वनि; मंत्रका मूल भाग; मज्जा। * स्त्री० बिजली। –कर्ता(र्तृ)–पु० शिव। –कृत–पु० बाजीकरण। वि० वीर्यकारक। –केंद्र (न्यूक्लिअस) पु० –वह मध्यभाग जिसके चारों तरफ और चीजें बादमें इकट्ठी हो जाती हैं; वह मध्यभाग जिसमें बीज रहता है। –कोश,–कोष–पु० फूलका वह भाग जिसमें बीज रहता है, बीजाधार। –क्रिया–स्त्री० बीजगणितकी क्रिया। –खाद–स्त्री० (हिं०) किसानोंको बीज-खादके लिए दी जानेवाली तकावी। –गणित–पु० गणितका एक भेद जिसमें संख्याकी जगह अक्षरका प्रयोग करते हैं। –गर्भ–पु० परवल। –गुप्ति–स्त्री० सेम; भूसी; फली। –दर्शक–पु० अभिनयकी व्यवस्था करनेवाला। –द्रव्य–पु० मूल तत्त्व। –धान्य–पु० धनियाँ। –निर्वापण–पु० बीज बोना। –पादप–पु० भिलावाँ। –पुरुष–पु० कुलका आदि पुरुष। –पुष्प–पु० मरुआ; मदन। –पूर,–पूरक–पु० बिजौरा नीबू। –पेशिका–स्त्री० अंडकोश। –प्ररोह,–प्ररोही(हिन्)–वि० बीजसे उत्पन्न होनेवाला। –फलक–पु० बिजौरा नीबू। –बंद–पु० (हिं०) बरियारेके बीज। –मंत्र–पु० किसी देवताके लिए निश्चित मंत्र; गुर। –मातृका–स्त्री० कमलगट्टा। –मार्ग–पु० वाममार्गका एक भेद। –रत्न–पु० उरद। –रुह–पु० दाना, धान्य। –रेचन–पु० जमालगोटा। –वपन–पु० बीज बोना; खेत। –वाप–पु० बीज बोनेवाला; बीज बोना। –वाहन–पु० शिव। –वृक्ष–पु० असनाका पेड़। –सू–स्त्री० पृथ्वी। –स्थापन–पु० बीज बोनेका मुहूर्त। –हरा,–हारिणी–स्त्री० जादूगरनी।

बीजक–पु० (सं०) बिजौरा नीबू; बीज; प्रसवके समय बच्चेके सिरका उसकी भुजाओंके बीचमें आ जाना; सूची; भेजे जानेवाले मालकी सूची जो दाम और खर्चके हिसाबके साथ खरीदारके पास भेजी जाती है; कबीरदासके पदोंका एक संग्रह।

बीजन, बीजना*–पु० व्यजन, पंखा।

बीजरी*–स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजल–वि० (सं०) बीजदार ।

बीजसि–स्त्री० द्वितीया ।

बीजांक–पु० (सं०) दे० 'गूढ़लेख' । **–प्रक्रिया**–(साइफर प्रोसीजर) राजनयिक संदेशके लिए प्रयोग की जानेवाली सांकेतिक या कूट शब्दावली या लिपि ।

बीजांकुर–पु० (सं०) अंकुर । **–न्याय**–पु० बीजसे अंकुर और अंकुरसे बीजकी उत्पत्तिका अनादि प्रवाह ।

बीजा–पु० बीज । * वि० दूसरा ।

बीजाकृत–पु० (सं०) वह खेत जो बीज छीटकर जोत दिया गया हो ।

बीजाक्षर–पु० (सं०) मंत्रका प्रथम अक्षर ।

बीजाख्य–पु० (सं०) जमालगोटा ।

बीजाढ्य–वि० (सं०) बीजसे भरा हुआ ।

बीजाणु–पु० (स्पोर्स) अलिंगी-जनक कोशिकाएँ, जो पुष्पहीन जातिके पौधोंके बीजकोशमें पायी जाती हैं । ये सुदृढ़ आवरण द्वारा सुरक्षित रहती हैं । पौधेके बीजकोशसे बाहर बिखर जानेपर ये नन्हे बीजाणु अनुकूल परिस्थितियोंमें अंकुरित होकर नये पौधेको जन्म देते हैं ।

बीजाध्यक्ष–पु० (सं०) शिव ।

बीजापहारिणी–स्त्री० (सं०) जादूगरनी ।

बीजारोपण–पु० बीज बोना ।

बीजार्थ–वि० (सं०) संतानेच्छु ।

बीजाश्व–पु० (सं०) कोतल घोड़ा ।

बीजित–वि० (सं०) बोया हुआ ।

बीजी–स्त्री० गिरी, मोंगी, गुठली ।

बीजी(जिन्)–वि० (सं०) बीजवाला । पु० पिता; क्षेत्रज संतानका असल बाप (क्षेत्रीसे भिन्न); सूर्य ।

बीजु*–स्त्री० बिजली–'चमकहिं दसन बीजुकै नाईं'–प० । **–पात**–पु० वज्रपात ।

बीजुरी*–स्त्री० बिजली ।

बीजू–वि० बीजसे उत्पन्न; जो कलमी न हो (–आम) । पु० दे० 'बिज्जू' ।

बीजोदक–पु० (सं०) ओला ।

बीजोप्ति–स्त्री० (सं०) बीज बोनेकी क्रिया ।

बीज्य–वि० (सं०) बीजसे उत्पन्न; कुलीन ।

बीझ, बीझा*–वि० बीहड़, जनशून्य; सघन ।

बीझना*–अ० क्रि० फँसना, उलझना ।

बीट–स्त्री० चिड़ियोंका मैला ।

बीटा कण–पु० (बीटा पार्टिकिल) तीव्र वेगसे चलनेवाले इलेक्ट्रॉन, जो रेडियो ऐक्टिव तत्त्वोंके नाभिकसे बीटा किरणोंके रूपमें विसर्जित होते हैं । इन बीटा कणोंका वेग प्रकाशके वेगसे थोड़ा ही कम होता है ।

बीटा-ट्रॉन–पु० (बीटा-ट्रॉन) एक प्रकारका यंत्र जो इलेक्ट्रानोंको त्वरित करके उन्हें अत्यधिक ऊर्जा प्रदान करता है ।

बीड़–स्त्री० गुल्लीकी शक्लमें रखे हुए रुपये ।

बीड़ा–पु० पानकी गिलौरी; म्यानके मुँहके पास बँधी डोरी । मु० **–उठाना**–किसी कामका भार लेना, करनेकी प्रतिज्ञा करना । **–डालना,–रखना**–किसी कठिन कामका भार उठानेके लिए सामंतों, सरदारोंके सामने पानका बीड़ा रखना । **–देना**–नाचने-गानेवालों आदिको साई देना ।

बीड़ी–स्त्री० छोटा बीड़ा; गठरी; पत्ती लपेटकर बनायी हुई सिगरेट-जैसी वस्तु; मिस्सी; नाव, एक आभूषण ।

बीतना–अ० क्रि० गुजरना, कटना; दूर होना; घटित होना; पड़ना ।

बीतनि*–स्त्री० क्षणभंगुरता–'बीतनिको रूप तूं ठहरि हेरि गये बीते'–घन० ।

बीता*–पु० दे० 'बित्ता' ।

बीती–स्त्री० किसीके ऊपर बीती, गुजरी हुई बात, घटित घटना; वृत्तांत ।

बीथि, बीथी–स्त्री० दे० 'वीथी' ।

बीथित*–वि० दे० 'व्यथित' ।

बीदर–पु० दे० 'बिदर' ।

बीदरी–स्त्री० दे० 'बिदरी' ।

बीधना*–अ० क्रि० दे० 'बिँधना' । स० क्रि० दे० 'बीँधना' ।

बीधा–पु० गाँवकी मालगुजारी तै करना ।

बीन–स्त्री० वीणा । **–कार**–पु० वीणावादक ।

बीनना*–स० क्रि० चुनना; बुनना ।

बीनवना*–स० क्रि० विनती करना–'पय लग्गि प्रानपति बीनवाँ'–रासो ।

बीना–स्त्री० दे० 'वीणा' ।

बीनी–स्त्री० देखनेकी क्रिया । **तमाश**–तमाशा देखना ।

बीफै†–पु० बृहस्पतिवार ।

बीबी–स्त्री० भले घरकी स्त्री, कुलांगना; पत्नी; बेटी, स्त्री और छोटी ननदका आदरार्थक संबोधन; फातिमा ।

बीभत्स–वि० (सं०) घृणा उत्पन्न करनेवाला; सड़ा-गला (मांसादि); पापी । पु० साहित्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव जुगुप्सा है; घृणोत्पादक वस्तु; अर्जुन ।

बीभत्सा–स्त्री० (सं०) घृणा, जुगुप्सा ।

बीभत्सित–वि० (सं०) घृणित, निंदित ।

बीभत्सु–पु० (सं०) अर्जुन, अर्जुनका पेड़ ।

बीम–पु० (फा०) डर, जोखिम; (अं०) पु० शहतीर, मस्तूल । **–व हरास**–पु० खौफ और खतरा ।

बीमा–पु० (फा०) ठेका; जमानत; मृत्यु, दुर्घटना, मालके रास्तेमें खो जाने आदिकी हानि भर देने, उसके बदलेमें नियत धन देनेकी जिम्मेदारी, 'इंश्योरेंस' । **–दार**–पु० बीमा करानेवाला, 'पालिसीहोल्डर' । **–पत्रक**–पु० (इन्श्योरेंस पॉलिसी) बीमा करनेवाली संस्था और बीमा करानेवाले व्यक्ति या व्यक्तियोंके बीच हुए समझौतेका लिखित पत्र । मु० **–करना**–क्षतिपूर्तिकी जिम्मेदारी लेना । **–(मे)की पालिसी**–बीमेका इकरारनामा ।

बीमार–पु० (फा०) वह व्यक्ति जिसे रोग हुआ हो, मरीज । वि० रोगी; आशिक । **–दारी**–स्त्री० रोगीकी सेवा, तीमारदारी ।

बीमारी–स्त्री० (फा०) रोग, मर्ज; लत; झंझट ।

बीय, बीया*–वि० दूसरा । पु० बीज ।

बीर–वि० वीर, बहादुर । पु० वीर पुरुष; भाई; एक तरहका प्रेत । * स्त्री० सखी–'फिरत कहा है बीर बावरी भईसी…'–हठी; कलाईका एक गहना; कानका एक गहना; चरागाह; चरानेका कर ।

बीरउ*–पु० दे० 'बिरवा' ।

बीरज*–पु० दे० 'वीर्य' ।

बीरत–पु० दे० 'वीरता' ।

बीरन†–पु० भाई, वीर; दे० 'बीरण' । **–मूल**–पु० एक पौधा ।

बीरबहूटी–स्त्री० किलनीकी जातिका, गहरे लाल रंगका एक बरसाती कीड़ा, इंद्रवधू ।

बीरा*–पु० दे० 'बीड़ा'; प्रसादस्वरूप दिये जानेवाले फल-फूल आदि ।

बीराना–पु० दे० 'वीराना', निर्जन स्थान, जंगल 'तीन लोक बस्तीके बसाये, आप बसे बीरानेमें' ।

बीरी*–स्त्री० पानका बीड़ा; मिस्सी; कानका एक गहना; पत्तेसे बना हुआ सिगरेट; लोहारी उपकरण । पु० पौदा ।

बीरौ*–पु० दे० 'बिरवा'–'जस असोक बीरौ तर सीता'–प० ।

बील–वि० पोला । पु० नीची जमीन जहाँ पानी जमा हो जाय; * मंत्र; बेल ।

बीबी–स्त्री० (फा०) बीबी, स्त्री; पत्नी, गृहिणी; छोटी ननदका संबोधन ।

बीस–वि० दसका दूना, उन्नीससे एक अधिक; बढ़कर, श्रेष्ठ । पु० बीसकी संख्या, २०; * विष । **–बिस्वे**–अ० निश्चयपूर्वक, यकीनन; बहुत करके । **–वाँ**–क्रमसे १९ के बाद आनेवाला स्थान या संख्या ।

बीसना†–स० क्रि० शतरंज आदि खेलनेके लिए बिसात फैलाना ।

बीसरना*–अ० क्रि०, स० क्रि० भूल जाना ।

बीसी–स्त्री० बीसका समूह, कोड़ी; साठ संवत्सरोंके तीनमेंसे कोई

विभाग; जमीनकी एक नाप, तुला।

बी॰ सी॰ जी॰–(बी॰ सी॰ जी॰) यक्ष्माके प्रतिरोधके लिए वैक्सीन (टीका)।

बीह*–वि॰ दे॰ 'बीस'–'साँचहु मैं लबार भुजबीहा'–रामा॰।

बीहड़–वि॰ ऊबड़-खाबड़; विकट; विभक्त, जुदा।

बीहर–वि॰ अलग।

बुंद–स्त्री॰, पु॰ बूँद; वीर्य।

बुँदकी–स्त्री॰ छोटी बिंदी या दाग। **–दार**–वि॰ जिसपर बहुत-सी बुँदकियाँ बनी हों।

बुंदा–पु॰ टिकली; टिकलीके आकारका गोदना; कानका एक गहना; * बूंद।

बुँदिया–स्त्री॰ एक तरहकी मिठाई।

बुंदिर–पु॰ (सं॰) मकान।

बुंदीदार–वि॰ जिसपर बिंदियाँ हों।

बुंदेलखंड–पु॰ बुंदेलोंका देश, भारतका वह भूभाग जिसमें उत्तरप्रदेशके दक्षिण-पश्चिमके कुछ जिले और पन्ना, छतरपुर आदि रियासतें पड़ती थीं।

बुंदेलखंडी–वि॰ बुंदेलखंडका। पु॰ बुंदेलखंडका निवासी। स्त्री॰ बुंदेलखंडकी भाषा।

बुंदेला–पु॰ एक तरहके राजपूत जो बुंदेलखंडमें रहते हैं।

बुंदेली–स्त्री॰ बुंदेलखंडकी बोली।

बुँदौरी*–स्त्री॰ बुँदिया नामकी मिठाई।

बुआ–स्त्री॰ दे॰ 'बूआ'।

बुआई–स्त्री॰ दे॰ 'बोआई'।

बुक–स्त्री॰ एक बारीक कपड़ा जो बकरमकी तरह कड़ा होता है। पु॰ (सं॰) हास्य।

बुक़चा–पु॰ (फा॰) कपड़ेकी गठरी।

बुक़ची–स्त्री॰ छोटा बुकचा, दर्जियोंकी थैली जिसमें वे सुई, तागा आदि रखते हैं।

बुकटा, बुकट्टा–पु॰ दे॰ 'बकोटा'।

बुकना, बुकनी–स्त्री॰ चूर्ण, सफूफ; चूर्णरूप रंग।

बुकनू–पु॰ एक चूर्ण जिसमें अनेक मसाले मिले रहते हैं।

बुकवा|–पु॰ उबटन।

बुकस–पु॰ दे॰ 'बुक्कस'।

बुकुना*–पु॰ बुकनी; पाचक।

बुक्क–पु॰ (सं॰) हृदय; हृदयस्थ अग्रमांस; बकरा; समय।

बुक्कन–पु॰ (सं॰) कुत्ते आदि जानवरोंका बोलना।

बुक्कस–पु॰ (सं॰) चांडाल; भंगी।

बुक्कसी–स्त्री॰ (सं॰) नीलका पौधा।

बुक्का–पु॰ अभ्रकका चूर्ण। स्त्री॰ (सं॰) रक्त।

बुक्का(क्कन्)–पु॰ (सं॰) दे॰ 'बुक्क'।

बुक्की–स्त्री॰ (सं॰) हृदय, कलेजा।

बुख़ार–पु॰ (अ॰) भाप; ज्वर; भड़ास, दिलका गुबार।

बुख़ारा–पु॰ रूसी तुर्किस्तानका एक प्रदेश या उसकी राजधानी।

बुख़ारी–वि॰ बुखाराका रहनेवाला। स्त्री॰ बखार; दीवारमें बनायी हुई अँगीठी।

बुग़चा–पु॰ (तु॰) कपड़ोंकी गठरी, बुकचा।

बुग़ची–स्त्री॰ छोटा बुगचा।

बुग़दा–पु॰ (फा॰) कसाईका छुरा।

बुज़–पु॰, स्त्री॰ (सं॰) बकरा, बकरी। **–कसाब**–पु॰ कसाई, बूचड़। **–दिल**–वि॰ डरपोक, भीरु। **–दिली**–स्त्री॰ कायरपन, भीरुता।

बुजियाला–पु॰ वह बकरी या बंदर जिसे कलंदर नचाता हो।

बुज़ुर्ग–वि॰ (फा॰) बड़ा, वृद्ध; आदरणीय। पु॰ गुरुजन; संत, महात्मा; पुरखा, बाप-दादा (बहु॰में व्यवहृत)। **–ज़ादा**–वि॰ गुरुजात; कुलीन। पु॰ गुरुभाई; कुलीन व्यक्ति। **–वार**–वि॰ बुजुर्ग (प्रायः बाप या दादाके साथ व्यवहृत)।

बुज़ुर्गाना–वि॰ बुजुर्गके अनुरूप, गुरुजनोचित।

बुज़ुर्गी–स्त्री॰ बड़प्पन; वृद्धावस्था।

बुझना–अ॰ क्रि॰ (आग, दीपक आदिका) जलना बंद होना, शांत होना; जलती चीजका ठंढा होना; बुझाया जाना; शांत होना, मिटना (प्यास); (चित्तका) सुस्त, उदास होना।

बुझाई–स्त्री॰ बुझानेकी क्रिया या उजरत; बूझनेकी क्रिया।

बुझाना–स॰ क्रि॰ आग या जलती हुई चीजको ठंढा करना, जलनेका अंत करना, गुल करना; जलती हुई चीजको पानीमें डालकर ठंढा करना; तलवार आदिको जहर मिले हुए पानीमें डालकर ठंढा करना; शांत करना, मिटाना (प्यास); समझाना; बूझनेका काम दूसरेसे कराना, पहेलीका उत्तर पूछना। * अ॰ क्रि॰ शांत होना।

बुझारत–स्त्री॰ हिसाब समझना, हिसाब-फहमी।

बुझौवल–स्त्री॰ किसी वस्तुका ऐसा अनोखा वर्णन जिसके आधारपर उसका अर्थ बूझने, उत्तर देने या वस्तुका नाम बतानेमें बहुत सोच-विचार करना पड़े, पहेली।

बुट*–स्त्री॰ दे॰ 'बूटी'।

बुटना*–अ॰ क्रि॰ हटना, भागना।

बुड़की*–स्त्री॰ डुबकी।

बुड़ना*–अ॰ क्रि॰ डूबना।

बुड़बुड़ाना–अ॰ क्रि॰ कुड़बुड़ाना।

बुड़ाना*–स॰ क्रि॰ दे॰ 'डुबाना'।

बुड़ाव|–पु॰ दे॰ 'डुबाव'।

बुढ़ऊ|–पु॰ बूढ़ा, वृद्ध।

बुड्ढा–वि॰ बूढ़ा। (स्त्री॰ 'बुड्ढी'।)

बुढभस–स्त्री॰ बूढ़े पुरुषोंकी हिर्स, बुढ़ौतीमें जवानीकी उमंग।

बुढवा–वि॰ बूढा, वृद्ध। पु॰ बूढा आदमी। **–मंगल**–पु॰ काशीमें होलीके बाद गंगामें मनाया जानेवाला नृत्य, गायन आदिका त्यौहार।

बुढ़ाई–स्त्री॰ बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

बुढ़ाना|–अ॰ क्रि॰ बूढ़ा होना।

बुढ़ापा–पु॰ बूढ़ा होनेकी अवस्था, वार्द्धक्य, बुढ़ौती।

बुढ़िया–स्त्री॰ वृद्धा स्त्री, बूढ़ी। **–पुराण**–पु॰ तत्त्वहीन बात, ढकोसला। **–बैठक**–स्त्री॰ एक तरहकी बैठक।

बुढ़ौती–स्त्री॰ बुढ़ापा।

बुत–पु॰ (फा॰) मूर्ति, प्रतिमा; प्रेमपात्र, माशूक। वि॰ मूर्तिकी तरह जड़, निश्चेष्ट। **–ख़ाना**–पु॰ मंदिर। **–तराश**–पु॰ मूर्तियाँ बनानेवाला। **–परस्त**–पु॰ मूर्तिकी पूजा करनेवाला; सौंदर्योपासक। **–परस्ती**–स्त्री॰ मूर्ति-पूजा। **–शिकन**–पु॰ मूर्तिको तोड़ने-फोड़नेवाला, मूर्तिभंजक; प्रतिमा-पूजाका घोर विरोधी। मु॰ **–बन जाना या हो जाना**–मूर्त्तिकी तरह स्थिर और मौन हो जाना।

बुतना–अ॰ क्रि॰ बुझना; शांत होना।

बुतात–स्त्री॰ किसी वस्तुका परिमाण, नाप।

बुताना–स॰ क्रि॰ बुझाना; शांत करना। अ॰ क्रि॰ दे॰ 'बुतना'।

बुताम–पु॰ बटन।

बुत्त–वि॰ दे॰ 'बुत'।

बुत्ता–पु॰ झाँसा, दम।

बुदबुदा–पु॰ बुलबुला।

बुदबुदाना–अ॰ क्रि॰ कुड़मुड़ाना; बड़-बड़ाना।

बुद्ध–वि॰ (सं॰) जगा हुआ; ज्ञानी; पंडित; विकसित। पु॰ बौद्ध धर्मके प्रवर्तक गौतम बुद्ध जो विष्णुके नवें अवतार माने जाते हैं, सिद्धार्थ (जन्म ई॰ पू॰ ५५७, निर्वाण ई॰ पू॰ ४४७)। **–गया**–स्त्री॰ गयाके पासका वह स्थान जहाँ बुद्धको बुद्धत्व प्राप्त हुआ। **–द्रव्य**–पु॰ बुद्धके स्मृति-चिह्न (अस्थि, नख, केश आदि)। **–धर्म**–पु॰ बौद्ध धर्म। **–पुराण**–पु॰ पराशररचित ललितलघुविस्तर।

बुद्धत्व–पु॰ (सं॰) बुद्धपद।

बुद्धागम–पु॰ (सं॰) बौद्ध धर्मके सिद्धांत।

बुद्धि–स्त्री॰ (सं॰) जानने, समझने और विचार करनेकी शक्ति, समझ, अक्ल; अंतःकरणकी निश्चयात्मिका वृत्ति (वे॰); प्रकृतिका पहला परिणाम, महत्तत्त्व। **–कामा**–स्त्री॰ कार्त्तिकेयकी एक मातृका। **–कृत**–वि॰ बुद्धिपूर्वक, सोच-समझकर किया हुआ। **–कौशल**–पु॰ चतुराई। **–गम्य, –ग्राह्य**–वि॰ जो समझमें आ सके। **–चक्षु(स्)**–वि॰ प्रज्ञाचक्षु। पु॰ धृतराष्ट्र। **–चिंतक**–

वि० बुद्धिमत्तापूर्वक सोचनेवाला । **–जीवी(विन्)**–वि० बुद्धिसे जीविका करनेवाला, दिमागी काम करनेवाला । **–०वर्ग**–पु० (इंटेलिजेंशिया) बुद्धिसे जीविका प्राप्त करनेवाले, दिमागी काम करनेवाले लोगोंका समुदाय । **–तत्त्व**–पु० महत्तत्त्व । **–दोष**–पु० समझकी कमी, खराबी । **–द्यूत**–पु० शतरंजका खेल । **–पर***–वि० बुद्धिकी पहुँचके बाहर । **–पुरस्सर,–पूर्वक**–अ० इरादा करके, इच्छा-पूर्वक, सोच-समझकर । **–प्रामाण्यवाद**–पु० 'बुद्धिवाद' । **–बल**–पु० बुद्धिका बल । **–भ्रंश**–पु० एक दोष या रोग जिसमें बुद्धि ठिकानेसे काम नहीं करती । **–मोह**–पु० दिमागका घबड़ा जाना । **–योग**–पु० ज्ञानयोग । **–वाद**–पु० अन्य विषयोंकी तरह धर्ममें भी बुद्धि ही सर्वोपरि प्रमाण है–यह मत, 'रैशनलिज्म' । **–वादी(दिन्)**–वि० बुद्धिवादको माननेवाला । **–विलास**–पु० कल्पना । **–वैभव**–पु० बुद्धिकी प्रखरता, बुद्धिबल । **–शक्ति**–स्त्री० बुद्धिबल । **–शाली(लिन्),–शील**–वि० बुद्धिमान् । **–शुद्ध**–वि० सच्चे भाववाला, नेकनीयत । **–शुद्धि**–स्त्री० नेकनीयती । **–सख,–सहाय**–पु० मंत्री । **–हत**–वि० बेअकल, निर्बुद्धि । **–हा(हन्)**–पु० शराब (बुद्धिका नाश करनेवाली) । **–हीन**–वि० निर्बुद्धि, नासमझ ।

बुद्धिमत्ता–स्त्री० (सं०) बुद्धिमानी, समझदारी ।

बुद्धिमानी–स्त्री० दे० 'बुद्धिमत्ता' ।

बुद्धिमान्(मत्)–वि० (सं०) चतुर ।

बुद्धिवंत–वि० अक्लमंद, समझदार ।

बुद्धींद्रिय–स्त्री० (सं०) ज्ञानेंद्रिय, मन ।

बुद्धी|–स्त्री० दे० 'बुद्धि' ।

बुद्बुद–पु० (सं०) बुलबुला ।

बुधंगड़*–वि० मूर्ख ।

बुध–पु० (सं०) पंडित, विद्वान्; सौरमंडलका एक ग्रह जो पुराणोंके अनुसार चंद्रमाका बृहस्पतिकी पत्नी ताराके गर्भसे उत्पन्न पुत्र है; देवता; कुत्ता । **–चक्र**–पु० बुधकी गतिका शुभाशुभ-सूचक एक चक्र । **–जन**–पु० पंडित, विद्वान् । **–जायी***–पु० बुधके पिता, चंद्रमा । **–रत्न**–पु० पन्ना । **–वार,–वासर**–पु० मंगलवार और गुरुवारके बीचका दिन, चहार शंबा । **–सुत**–पु० पुरूरवा ।

बुधवान*–वि० बुद्धिमान् ।

बुधान–पु० (सं०) आचार्य । वि० विज्ञ, ज्ञानी; जागरित ।

बुधि*–स्त्री० दे० 'बुद्धि' ।

बुधित–वि० (सं०) ज्ञात, जाना हुआ ।

बुधियार–पु० बुद्धिमान ।

बुधिल–वि० (सं०) विद्वान् ।

बुधिवाही–पु० बुद्धिमान ।

बुध्य–वि० (सं०) जानने योग्य ।

बुनकर–पु० कपड़ा बुननेवाला ।

बुनना–स० क्रि० धागेसे कपड़ा बनाना, तानोंके सूतोंसे बानेका सूत निकालना; ऊन आदिके धागोंसे सलाईके द्वारा मोजा, गुलूबंद आदि बनाना; सुतली, बान, बेतके छिलके आदिसे जाली बनाकर चारपाई, कुरसी आदिकी खाली जगह भरना ।

बुनवाना–स० क्रि० बुननेका काम कराना ।

बुनाई–स्त्री० बुननेकी क्रिया; बुनावट; बुननेकी मजदूरी ।

बुनावट–स्त्री० बुननेका ढंग, ताने-बानेका घना-झीना होना ।

बुनिया|–स्त्री० एक मिठाई, बुँदिया । पु० बुनकर ।

बुनियाद–स्त्री० (फा०) जड़, नीवँ, आधार; आरंभ । मु० **–डालना,–रखना**–नीवँ डालना ।

बुनियादी–वि० मूलगत; नीवँका कार्य देनेवाला, आधाररूप, आरम्भिक ।

बुबुकना–अ० क्रि० ढाढ़ मारकर, जोर-जोरसे रोना ।

बुबुकारी–स्त्री० ढाढ़ मारकर रोना ।

बुबुर–पु० (सं०) जल ।

बुभुक्षा–स्त्री० (सं०) खानेकी इच्छा, भूख ।

बुभुक्षित, बुभुक्षु–वि० (सं०) भूखा, क्षुधित ।

बुभुत्सा–स्त्री० (सं०) जाननेकी इच्छा ।

बुभुत्सु–वि० (सं०) जिज्ञासु ।

बुर–स्त्री० भग, योनि (प्रायः गाली-गलौजमें प्रयुक्त) ।

बुरकना–स० क्रि० चूर्ण जैसी वस्तुको छिड़कना ।

बुरकाना–स० क्रि० दे० 'बुरकना' ।

बुरक़ा–पु० (अ०) लंबा पहनावा जिससे बाहर निकलनेके वक्त मुसलमान स्त्रियाँ अपना सारा शरीर ढक लेती हैं, नकाब । **–पोश**–वि० जो बुरका ओढ़े हो । मु० **–(के)में छौंछड़े खाना**–परदेमें बदचलनी करना ।

बुरकी–स्त्री० टोने टुटकेमें या मंत्रादि पढते समय प्रयुक्त धूल या राख ।

बुरा–वि० खराब, दूषित; हानिकर; खोटा, कुचाली । पु० बुराई; हानि, अनिष्ट । **–ई**–स्त्री० दे० क्रममें । **–काम**–पु० निंदित कर्म; व्यभिचार । **–भला**–वि० अच्छा-बुरा । पु० हानि-लाभ (सोचना); गाली-गलौज; अपशब्द (कहना, सुनना) । **–वक्त**–पु० कष्टका समय, विपत्काल । **–हाल**–पु० दुर्दशा; अधिक कष्टकी स्थिति; तबाही । मु० **–करना**–अनुचित काम करना, हानिकर कार्य करना; नुकसान पहुँचाना । **–कहना**–निंदा करना, बदनाम करना । **–चाहना**–बुराई चाहना, (किसीके) अनिष्टकी कामना करना । **–बनना**–बुराई लेना, दोषी बनना; बदनाम होना । **–मानना**–दुःखी होना; नाराज होना । **–लगना**–नागवार लगना, अच्छा न लगना । **–हाल होना**–तबाह होना; घोर कष्टमें होना; (रोगीकी) हालत बिगड़ना । **–(रे)दिन**–कष्टके दिन, विपत्काल । – **०का साथी**–विपत्कालमें साथ देनेवाला ।

बुराई–स्त्री० बुरा होना, खराबी, दोष; खुटाई, दुष्टता; अपकार, अनिष्ट; निंदा, बदगोई; दुश्मनी । **–भलाई**–स्त्री० नेकी-बदी, अच्छा-बुरा काम । मु० **–आगे आना**–बुरे कामका फल मिलना ।

बुरादा–पु० (फा०) लकड़ी, कोयले आदिका चूरा ।

बुरि–स्त्री० भग, योनि ।

बुरी–वि०, स्त्री० दे० 'बुरा' । **–ख़बर**–स्त्री० मौतकी खबर । **–गत,–गति**–स्त्री० दुर्दशा, बुरा हाल । **–घड़ी**–स्त्री० मुसीबतकी घड़ी, विपत्काल । **–तरह**–अ० बहुत ज्यादा; कसकर । **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० बुराईकी निगाह, पापकी दृष्टि । **–बला**–स्त्री० भारी बला, बहुत कष्ट देनेवाली चीज; विपद । **–लत**–स्त्री० बुरी आदत । **–सुहबत**–स्त्री० कुसंगति, बुरेका साथ । मु० **–गत करना**–बहुत मारना । **–तरह पेश आना**–दुर्व्यवहार करना । **–समाना**–दिलमें बुराई समाना, पापबुद्धि होना ।

बुरुज–पु० दे० 'बुर्ज' ।

बुरुड–पु० (सं०) एक नीच जाति जो टोकरे, चटाई आदि बनानेका काम करती है ।

बुरुल–पु० एक वृक्ष ।

बुरुश–पु० (अं० 'ब्रश') बाल या तारकी कूँची जो गर्द झाड़ने, दाँत माँजने, बाल सँवारने आदिके काममें लायी जाती है; तसवीर बनाने, रंग-रोगन करनेके काम आनेवाली बालोंकी कूँची ।

बुरैया–पु० बुराई करनेवाला ।

बुर्ज–पु० गड़गज; मीनार; गुंबद, कलस; राशि ।

बुर्जतोप–स्त्री० (टरेट गन) (चारों तरफ घूमनेवाले) बुर्जमें लगायी गयी तोप ।

बुर्जी–स्त्री० छोटा बुर्ज ।

बुर्जुआ–पु० (फा०) धनिक मध्यम वर्ग (व्यापारी तथा बड़ा वेतन पानेवाले लोग) । वि० इससे संबंध रखनेवाला (–मनोवृत्ति) ।

बुर्द–स्त्री० (फा०) आमदनी, नफा; बाजी; शतरंजमें बादशाहका अकेला रह जाना । **–बार**–वि० (बोझ उठानेवाला) सहनशील । **–बारी**–स्त्री० सहनशीलता ।

बुर्दाफरोश–पु० स्त्रियोंको उड़ाकर बेच देनेवाला (किडनैपर) ।

बुर्राक–वि० चमकदार; स्वच्छ, बिलकुल साफ–'सफेद बुर्राक खद्दरका पहनावा' ।

बुलंद–वि० (फा०) ऊँचा । **–आवाज़**–स्त्री० ऊँची, जोरकी आवाज । **–इक़बाल**–वि० भाग्यवान्, सौभाग्यशाली । **–परवाज़**–वि० ऊँचे उड़नेवाला; ऊँचे खयालका; उच्चाकांक्षी । **–परवाज़ी**–स्त्री० बुलंद-परवाजका भाव । **–पाया,–मरतबा**–वि० उच्चपदस्थ । **–हिम्मत,–हौसिला**–वि० ऊँची हिम्मत,

हौसिलावाला ।

बुलंदी–स्त्री० (फा०) ऊँचाई; उत्कर्ष ।

बुलडॉग–पु० (अं०) विलायती कुत्तेका एक भेद जो अधिक बलवान् और डरावनी शक्लका होता है ।

बुलबुल–स्त्री० (अ०) एक छोटी चिड़िया जिसकी बोली बहुत मधुर होती है और जो फारसी-उर्दू काव्यमें फूलोंकी आशिक मानी गयी है । –बाज़–पु० बुलबुल लड़ानेवाला । –(ले)शीराज़–पु० शेखसादी । –हज़ार दास्तान–स्त्री० मीठी आवाज ।

बुलबुला–पु० पानीका बुल्ला, बुद्बुद; क्षणभंगुर वस्तु ।

बुलवाना–स० क्रि० बुलानेका काम कराना; बोलनेमें प्रवृत्त करना ।

बुलाक़–पु० (तु०) नाककी बिचली हड्डी; उसमें पहननेका एक गहना ।

बुलाकी–पु० घोड़ेकी एक जाति ।

बुलाना–स० क्रि० पुकारना, पास आनेको कहना, किसीको बोलनेमें प्रवृत्त करना ।

बुलावा–पु० बुलानेका भाव, न्योता ।

बुलाहट–स्त्री० बुलावा या जानेका निर्देश ।

बुलि–स्त्री० (सं०) भग, योनि; गुदा ।

बुलेटिन–स्त्री० (अं०) सूचना पत्रक ।

बुलौआ, बुलौवा†–पु० दे० 'बुलावा' ।

बुल्लना*–स० क्रि० बोलना–'सकुच न हिय छिन एक बचन मनमाने बुल्लैं'–रासो ।

बुल्ला*–पु० दे० 'बुलबुला' ।

बुवाई–स्त्री० दे० 'बोवाई' ।

बुष, बुस–पु० (सं०) भूसी; सूखा गोबर; जल; संपत्ति ।

बुसना–अ० क्रि० बासी खानेमें दुर्गन्ध पैदा होना या उसका सड़ना ।

बुस्त–पु० (सं०) फलका छिलका ।

बुहारना–स० क्रि० झाड़ू देना, झाड़ना ।

बुहारा–पु० बड़ी झाड़ू ।

बुहारी–स्त्री० झाड़ू, बढ़नी ।

बुक्ला–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

बूँद–स्त्री० पानी या दूसरे तरल पदार्थका बहुत छोटा अंश, कतरा, बिंदु; वीर्य; एक रंगीन कपड़ा ।

बूँदा–पु० बड़ी टिकली, बुंदा ।

बूँदाबाँदी–स्त्री० हलकी वर्षा ।

बूँदी–स्त्री० एक तरहकी मिठाई, बुँदिया; वर्षाके जलकी बूंद ।

बू–स्त्री० (फा०) गंध; सुगंध; दुर्गंध; (ला०) ठसक, आन-बान (नवाबीकी बू); ढंग । (खुश–स्त्री० सुगन्ध; बद–स्त्री० दुर्गन्ध) । –बास–स्त्री० बू; सुराग; निशान । मु० –उड़ना, –फैलना–भेद, कलंकका प्रसिद्ध हो जाना ।

बआ–स्त्री० पिताकी बहिन, फूफी; एक स्त्रीकी ओरसे दूसरीके लिए आदरसूचक संबोधन; एक तरहकी मछली ।

बूई–पु० एक पौधा जिससे सज्जीखार बनाते हैं, कौड़ा ।

बूक–पु० चंगुल, बुकट्टा; एक वृक्ष, सलसी ।

बूकना–स० क्रि० चूर करना, पीसना; छाँटना ('अँग्रेजी बूकना') ।

बूका–पु० हृदय, कलेजा ।

बूच–पु० कपड़े या गत्तेका टुकड़ा; खूंटा ।

बूचड़–पु० कसाई; मांस-विक्रेता । –ख़ाना–पु० कसाईखाना ।

बूचा–वि० कनकटा; नंगा ।

बूची*–वि०, स्त्री० कनकटी ।

बूजना*–स० क्रि० धोखा देना ।

बूज़ना, बूज़ीना–पु० (फा०) बंदर ।

बूझ–स्त्री० बूझनेका भाव; समझ ।

बूझना–स० क्रि० समझना; जानना; * पूछना ।

बूट–पु० हरा चना; चनेका पौधा; * पेड़; (अं०) मोटे तल्लेका अंग्रेजी जूता जिससे टखनेसे कुछ ऊपरतक पाँव ढक जाता है ।

बूटना*–अ० क्रि० भागना–'कहूँ बाजि स्यौ साजके जात बूटे'–सुजान ।

बूटनि*–स्त्री० वीरबहूटी ।

बूटा–पु० छोटा पौधा; फूलका छोटा पौधा; कपड़े आदिपर बनी हुई फूल-पत्ती ।

बूटी–स्त्री० जड़ी; भंग; कपड़ेपर बने हुए छोटे बेल-बूटे; ताशके पत्तोंपर बनी हुई बिंदी ।

बूटेदार–वि० बेल-बूटेसे युक्त (कपड़ा) ।

बूड़ना*–अ० क्रि० डूबना, लीन होना ।

बूड़ा–पु० जलमें डूबकर मरनेवाला आदमी जो प्रेत बन गया हो; बाढ़ ।

बूढ़*–पु० लाल रंग; वीरबहूटी । † वि० बुड्ढा ।

बूढ़ा–वि० बड़ी उम्रका, जो बुढ़ापेकी अवस्थामें हो, वृद्ध । † स्त्री० वृद्ध स्त्री । –खुर्रांट†–वि० चालाक, अनुभवी; वृद्ध (व्यक्ति) । –पोंग–वि० बूढ़ा बेवकूफ । –फूँस,–फूस–वि० अति वृद्ध । मु० –(ढ़े)तोतेको पढ़ाना–पढ़ने-सीखनेकी उम्र बीत जानेपर सिखाना-पढ़ाना । –मुँह मुहाँसे–बुढ़ापेमें जवानीके शौक आदि करना ।

बूढ़ी–वि०, स्त्री० दे० 'बूढ़ा' । –ईद–स्त्री० वह ईद जो रमजानके पूरे ३० दिन बाद होती है । –ढड्ढो–स्त्री० बहुत बूढ़ी स्त्री ।

बूत–पु० दे० 'बूता' ।

बूता–पु० बल, शक्ति; बस, सामर्थ्य ।

बूना–पु० चनारका पेड़ ।

बूवास–स्त्री० गंध, शेषांश ।

बूम–स्त्री० (फा०) भूमि, जमीन ।

बूरना*–अ० क्रि० दे० 'बूड़ना' ।

बूरा–पु० कच्ची चीनी; चीनी; चूर्ण ।

बृंद–पु० दे० 'वृंद' ।

बृंदा*–स्त्री० राधा–'चंद्रमल्ली-पुंजकी नवकुंज बिहरत आय । जहाँ बृंदा अति भली विधि रची बनक बनाय ।'–घन० ।

बृंदारण्य–पु० (सं०) वृंदावन ।

बृंहण–वि० (सं०) पोषक, पुष्टिकर । पु० पुष्ट करना; एक तरहकी मिठाई ।

बृक–पु० भेड़िया; गीदड़ ।

बृगल–पु० (सं०) टुकड़ा, खंड; ग्रास ।

बृच्छ*–पु० दे० 'वृक्ष' ।

बृष–पु० दे० 'वृष' । –केतु,–ध्वज–पु० शिव ।

बृषभ–पु० दे० 'वृषभ' ।

बृषिका, बृसिका–स्त्री० (सं०) दे० 'बृषी' ।

बृषी, बृसी–स्त्री० (सं०) किसी ऋषि या संत महात्माका आसन ।

बृहच्–'बृहत्'का समासगत रूप । –चंचु–पु० महाचंचु नामक शाक । –चित्त–पु० फलपूर । –छद–पु० अखरोट । –छल्क–पु० एक मत्स्य । –छिंबी–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी । –छ्रवा-(वस्)–वि० बड़े नामवाला, महायशा ।

बृहज्–'बृहत्'का समासगत रूप । –जघन–वि० बड़े नितंबोंवाला । –जन–पु० नामी, यशस्वी पुरुष । –जातक–पु० वराहमिहिर-रचित जातकग्रंथ । –जाबाल–पु० एक उपनिषद । –जीवंतिका, जीवंती–स्त्री० एक ओषधि, महाजीवंती ।

बृहड्ढक्का–पु० (सं०) भेरी, डंका ।

बृहतिका–स्त्री० (सं०) उपरना, दुपट्टा ।

बृहती–स्त्री० (सं०) बड़ी वीणा; विश्वावसु गंधर्वकी वीणा । ३६ की संख्या; सीने और रीढ़के बीचका एक भाग; बनभंटा; भटकटैया; वाणी; एक वृत्त; उपरना । –पति–पु० बृहस्पति ।

बृहत्–वि० (सं०) बड़ा, विशाल; लंबा-चौड़ा; शक्तिशाली; घना; चमकीला; स्पष्ट; ऊँचा (स्वर) । पु० विष्णु; एक मरुत् । –कंद–पु० विष्णुकंद; गाजर । –कथा–स्त्री० गुणाढ्य-रचित कहानियोंकी पुस्तक । –०मंजरी–वि० क्षेमेंद्र-रचित कहानियोंकी पुस्तक । –काय–वि० विशालकाय, बड़े डील-डौलका । –कीर्ति–वि० बहुत यशस्वी । –कुक्षि–वि० बड़ी तोंदवाला । –केतु–पु० अग्नि । –कोण–पु० दे० 'पुनर्युक्त कोण' (रीफ्लेक्स एंगिल) । –कोशातकी–स्त्री० एक तरहका कुम्हड़ा । –तर–वि० और अधिक बड़ा; मूल पदार्थ, देश आदिसे अधिक आकार या विस्तारका (जिसमें आस-पासके कुछ और पदार्थ या देश सम्मिलित हों–जैसे बृहत्तर भारत) । –ताल–पु० हिंताल । –तृण–पु० बाँस । –त्वक्(च्)–पु० नीम । –पत्र–पु० हाथीकंद; सफेद लोध;

कासमर्द । –**पर्ण**–पु० सफेद लोध । –**पाटलि**–पु० धतूरा । –**पाद**–पु० बरगद । –**पाली(लिन्)**–पु० बनजीरा । –**पीलु**–पु० पहाड़ी अखरोट । –**पुष्प**–पु० पेठा; केलेका पेड़ । –**पुष्पी**–स्त्री० सनई । –**फल**–पु० चिचड़ा; कुम्हड़ा; कटहल । वि० लाभदायक । –**सहाय**–वि० शक्तिशाली मित्रवाला ।

बृहद्–'बृहत्'का समासगत रूप । –**अंग**–वि० जिसका शरीर बड़ा हो; जिसके बहुतसे भाग हों । पु० हाथी । –**आरण्यक**–पु० दस मुख्य उपनिषदोंमेंसे एक । –**एला**–स्त्री० बड़ी इलायची । –**दंती**–स्त्री० एक पौधा । –**दल**–पु० सफेद लोध; सप्तपर्ण । –**दली**–स्त्री० लजालू । –**बला**–स्त्री० लजालू; महाबला, सफेद लोध । –**बीज**–पु० आमड़ा । –**भंडी**–स्त्री० त्रायमाणा लता । –**भट्टारिका**–स्त्री० दुर्गा । –**भानु**–पु० अग्नि; चीता; सूर्य । –**भुज**–वि० लंबी भुजाओंवाला । –**रथ**–पु० इंद्र; जरासंधका पिता । –**रावी(विन्)**–पु० एक तरहका छोटा उल्लू । –**वर्ण**–पु० सोनामाखी । –**वल्ली**–स्त्री० करेला । –**वादी(दिन्)**–वि० बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला, डींग मारनेवाला ।

बृहन्–'बृहत्'का समासगत रूप । –**नखी**–स्त्री० एक विशेष गंध-द्रव्य । –**नट**–पु० अर्जुन । –**नड**–पु० एक तृण; अर्जुन । –**नल**–पु० अर्जुन; बाँह । –**नला**–स्त्री० अर्जुनका विराटके यहाँ स्त्री-रूपमें रहते समयका नाम । –**नाट**–पु० एक राग । –**नारदीय**–पु० एक उपपुराण । –**नारायण**–पु० एक उपनिषद् । –**निंब**–पु० महानिंब । –**नेत्र**–वि० दूरदर्शी, बुद्धिमान् ।

बृहस्पति–पु० (सं०) सौरमंडलका पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह; एक ऋषि जो देवताओंके गुरु माने जाते हैं; एक स्मृतिकार । –**चक्र**–पु० ६० संवत्सरोंका चक्र । –**पुरोहित**–पु० इंद्र । –**वार**–पु० गुरुवार । –**स्मृति**–स्त्री० बृहस्पतिकी बनायी हुई स्मृति ।

बेंग*–पु० मेढक ।

बेंच–स्त्री० (अं०) लकड़ी-लोहे आदिकी लंबी, कम चौड़ी चौकी; जजका आसन, पद; न्यायालय; न्यायालय-विशेषके विचारकर्ता; आनरेरी और स्पेशल मजिस्ट्रेटोंका इजलास; पार्लमेंट; व्यवस्थापक सभामें पक्ष-विशेषके बैठनेका स्थान ।

बेंट, बेंठा†–स्त्री० मूठ, दस्ता ।

बेंड़*–स्त्री० चाँड़, टेक; भेड़ा; रुपया ।

बेंड़ना–स० क्रि० बंद करना; घेरना ।

बेंड़ा*–वि० आड़ा; कठिन । पु० ब्योंड़ा ।

बेंड़ी–स्त्री० बाँसकी छिछली टोकरी जिससे सिंचाईके लिए ताल आदिका पानी उलीचते हैं; दे० 'बेड़ी' ।

बेंत–पु० एक लता जिसका डंठल मजबूत और लचीला होता है और टोकरे आदि बनानेके काम आता है; बेंतकी छड़ी । मु० –**की तरह काँपना**–डरसे बहुत काँपना ।

बेंदली†–स्त्री० बिंदी, टिकली ।

बेंदा–पु० बड़ी टिकली; माथेपरका एक गहना; टीका, तिलक ।

बेंदी–स्त्री० बिंदी; टिकली; सुन्ना; माथेपर पहननेका एक गहना ।

बेंवड़ा–पु० ब्योंड़ा, अरगल ।

बेंवत†–स्त्री० दे० 'ब्योंत' ।

बेंवतना–स० क्रि० दे० 'ब्योंतना' ।

बेंवताना–स० क्रि० ब्योंतनेका काम दूसरेसे कराना ।

बे–अ० अरे, अबे; (फा०) बिना, बगैर, सिवाय । पु० फारसी वर्णमालाका दूसरा अक्षर । –**अंत***–वि० अथाह, जिसका अंत न हो । –**अक़्ल,–अक्ल**–वि० नासमझ, निर्बुद्धि । –**अक्ली**–स्त्री० नासमझी, मूर्खता । –**अदब**–वि० बड़ोंका अदब न करनेवाला, अशिष्ट, अविनीत, गुस्ताख । –**अदबी**–स्त्री० अविनय, ढिठाई, गुस्ताखी । –**आब**–वि० जिसमें आब-चमक न हो । –**आबरू**–वि० बेइज्जत, प्रतिष्ठारहित । –**आबरूई**–स्त्री० बेइज्जती । –**इंसाफ**–वि०,–**इंसाफी**–स्त्री० अन्याय, नाइंसाफी । –**इज्जत**–वि० प्रतिष्ठारहित, जलील; अपमानित । –**इज्जती**–स्त्री० बेइज्जत होना; अप्रतिष्ठा, अपमान । –**इल्म**–वि० अपढ़; विद्यारहित । –**इल्मी**–स्त्री० बेइल्म होना, विद्याका अभाव । –**ईमान**–वि० धर्मको न माननेवाला, बेदीन; देन-लेनमें झुठाई करनेवाला, बददयानत; बदनीयत; झूठा; नमक हराम । –**ईमानी**–स्त्री० बेदीनी; बददयानती; बदनीयती; झुठाई । –**उज्र**–वि० जिसे किसी बातके मानने, करनेमें कोई उज्र–आपत्ति न हो । अ० बिना किसी उज्रके । –**उनवानी**–स्त्री० बेकायदगी, अनौचित्य । –**क़दर**–वि० दे० 'बेक़द्र' । –**क़द्र**–वि० जिसकी कोई पूछ न हो । –**क़द्री**–स्त्री० आदरमानका अभाव, बेइज्जती; पूछ न होना । –**क़रार**–वि० विकल, बेचैन । –**क़रारी**–स्त्री० बेचैनी, बेकली । –**कल**–वि० बेचैन, विकल । –**कली**–स्त्री० बेचैनी । –**कस**–वि० असहाय; दीन, विवश । –**कसी**–स्त्री० असहायावस्था; दीनता, विवशता । –**कहा**–वि० जो किसीका कहना, दाब न माने, स्वच्छंद । –**क़ानूनी**–वि० गैरकानूनी, नियमविरुद्ध । –**क़ाबू**–वि० जिसका बस न चले, विवश, लाचार । –**काम**–वि० दे० 'बेकार' । –**क़ायदगी**–स्त्री० बेकायदा होना, अनियमितता; अनियम । –**क़ायदा**–वि० नियमविरुद्ध, नियमरहित, अनियमित । –**कार**–वि० जिसके पास कोई काम न हो, निठल्ला; निकम्मा; बेरोजगार; निरर्थक । –**कारी**–स्त्री० बेकार होना; बेरोजगारी । –**क़ुसूर**–वि० निरपराध; निर्दोष । –**खटका,–खटके**–अ० बिना-संकोचके, बेधड़क । –**ख़तर**–वि० निर्भय । अ० निर्भय होकर, बिना डरे । –**ख़ता**–वि० निरपराध, बेकसूर; खता न करनेवाला, अचूक (निशाना) । –**ख़बर**–वि० जिसे (किसी बातकी) जानकारी न हो; असावधान, लापरवा; बेसुध । –**ख़बरी**–स्त्री० बेखबर होना । –**ख़ानमान**–वि० बेघरका, परदेशी । –**ख़ार**–वि० बिना काँटोंका; भयरहित । –**ख़ुद**–वि० जिसे अपनी सुध-बुध न हो, आत्मविस्मृत; नशेमें चूर, मदहोश । –**ख़ुदी**–स्त्री० आत्मविस्मृति; मदहोशी । –**ख़ौफ़**–वि० निडर । अ० निर्भयतापूर्वक, बिना डरे । –**ख़्वाबी**–स्त्री० नींद न आना, जागरण । –**ग़म**–वि० जिसे कोई सोच-फिक्र न हो । –**गानगी**–स्त्री० बेगानापन; अनजानपन । –**गाना**–वि० गैर, पराया; अनजान । –**गुन**–वि० गुणरहित; बिना गोन या रस्सीकी (नाव) । –**गुनाह**–वि० निरपराध, बेकसूर । अ० बिना कोई अपराध किये, अकारण । –**गुनाही**–स्त्री० निर्दोषता, बेकुसूरी । –**गुमान**–अ० बेशक, निस्संदेह । –**ग़ैरती**–स्त्री० निर्लज्जता, बेहयाई । –**घर,–घरा**–वि० गृहहीन, जिसके कोई घर-बार न हो । –**चराग़**–वि० दे० 'बेचिराग' । –**चारगी**–स्त्री० बेचारापन, दीनता, विवशता । –**चारा**–वि० दीन, असहाय, विवश । –**चिराग़**–वि० जहाँ दीया न जलता हो, कोई रहता न हो; गैर-आबाद । (मु०–० **होना**–(घर) उजड़ना; बेटेका मर जाना ।) –**चूँ व चरा**–अ० बिना उज्र, बिना कुछ कहे-सुने । –**चैन**–वि० बेकल, बेकरार । –**चैनी**–स्त्री० बेकली, घबराहट । –**चोबा**–पु० बिना खंभेका खीमा । –**जड़**–वि० बिना जड़का, निर्मूल । –**ज़बान**–वि० न बोलनेवाला, मूक (जानवर); जो अपनी दशा खुद न कह सके; दीन । –**ज़र**–वि० निर्धन, गरीब । –**जवाला**†–वि० बिना झंझट-बखेड़ेका, जंजालरहित । –**ज़वाल**–वि० जो घटे-छीजे नहीं; सदा बना रहनेवाला । –**जा**–वि० जो अपनी जगहपर न हो, बेमौका; अनुचित, बुरा । –**जान**–वि० निष्प्राण, मुर्दा; बेदम, दुर्बल । –**ज़ाबितगी,–ज़ाब्तगी**–स्त्री० बेजाबितापन, अनियमितता । –**ज़ाबिता,–ज़ाब्ता**–वि० जो नियमानुकूल न हो, बेकायदा । –**ज़ार**–वि० नाराज; दुःखी; परीशान; ऊबा हुआ । –**ज़ारी**–स्त्री० नाराजगी; परीशानी । –**जून**–अ० बेमौका, कुसमय । –**जोड़**–वि० बिना जोड़का, अखंड; जिसका जोड़ न हो, लाजवाब; बेमेल । –**टिकट**–वि० जिसके पास टिकट न हो । –**ठिकाना**–वि० जिसका कुछ ठीक न हो; अविश्वसनीय । –**ठिकाने**–वि० जो अपनी जगहपर न हो, असंगत; बिना पते या निशानका; जिसका भरोसा न किया जा सके ।अ० बेमौके । –**डौल**–वि० भद्दा, कुरूप । –**ढंगा**–वि० बुरे ढंगवाला, बेशऊर; भद्दा; अव्यवस्थित । –**ढब**–वि० निराले ढंगवाला; टेढ़ा, हठी; खतरनाक । अ० बुरी तरह, बहुत ज्यादा । –**तअम्मुल**–अ० बेखटके, निस्संकोच । –**तअल्लुक़**–वि० अलग रहनेवाला, तटस्थ, उदासीन । –**तअल्लुक़ी**–स्त्री० उदासीनता, किसीसे वास्ता न रखना । –**तकल्लुफ़**–वि० जिसमें बनावट न हो, सरल; दिखाऊ शिष्टाचार

न बरतनेवाला; संकोच-रहित, घनिष्ठ (मित्र) । अ० निस्संकोच, बेधड़क । –तकल्लुफ़ी–स्त्री० बनावट, संकोचका अभाव; सरलता; आजादी; घनिष्ठता । –तक़सीर–वि० बेकसूर । –तमीज़–वि० बदतमीज, उजड्ड । –तरतीब–वि० क्रम-रहित, गड्डमड्ड, अव्यवस्थित । –तरतीबी–स्त्री० क्रमका अभाव, विश्रृंखलता । –तरह–वि० बेढब; गैर तरहमें पढ़ी जानेवाली (गजल) । अ० बुरी तरह, बहुत ज्यादा । –तरीक़ा–वि० अनुचित, बेकायदा । –तरीक़े–अ० अनुचित रूपसे । –तलब–अ० बिना बुलाये; बिना माँगे । –तवज्जुह–वि० ध्यान न देनेवाला, बेपरवाह । –तहाशा–अ० बहुत तेजीसे, बदहवास होकर (भागना); बिना सोचे-विचारे । –ताब–वि० बेचैन, विकल, अधीर । –ताबी–स्त्री० बेचैनी, अधीरता । –तार–वि० बिना तारका । –०का तार–पु० बिना तारके विद्युद्यंत्रसे भेजा जानेवाला तार, 'वायरलेस' । –ताल,–ताला–वि० जो गाने-बजानेमें तालसे चूक जाय । –ताली*–स्त्री० गाने-बजानेमें तालसे चूक जानेकी क्रिया । –तुका–वि० बेमेल, असंगत; बेमौका (बात); बेतुकी बात कहनेवाला; तुकरहित (छंद) । –तुकी–वि० स्त्री० असंगत (बात) । (मु० –०हाँकना–असंगत, बेतुकी बात बकना ।)–तौर–अ० बेतरह । –दख़ल–वि० जिसका दखल, कब्जा हटा दिया गया हो । –दख़ली–स्त्री० कब्जेका हटाया जाना, असामीका खेतसे बेदखल कर दिया जाना । –दम–वि० बेजान, मुर्दा; बहुत कमजोर, शिथिल । –दरेग़–अ० बिना सोचे-अटके, बेधड़क । वि० संकोच, आगा-पीछा न करनेवाला । –दर्द–वि० निठुर, निर्दय; जालिम । –दर्दी–स्त्री० निर्दयता, बेरहमी । * वि० दे० 'बेदर्द' । –दाग़–वि० जिसमें कोई दाग न लगा हो, निष्कलंक, निर्दोष । –दाद–स्त्री० अन्याय, जुल्म । –० गर–वि० जुल्म करनेवाला, अन्यायी । –दाना–वि० बिना दानोंका; मूर्ख । पु० अनारका एक बढ़िया भेद जिसके दानेमें नामकी ही सीठी होती है; एक तरहका शहतूत; बिहीदाना; –दानिशी–स्त्री० नासमझी, बेअकली ।–दाम–वि० मुफ्त, बिना दामका । (–०का गुलाम–बेपैसेका गुलाम, आज्ञाकारी ।) –दावा–वि० दावा न करने, अधिकार न जतानेवाला; दस्तबरदार । –दिमाग़–वि० अप्रसन्न; बदमिजाज । –दिल–वि० खिन्न, उदास, भग्नहृदय । –दीद–वि० बेमुरौवत; निर्लज्ज । –दीन–वि० धर्मभ्रष्ट, धर्मको न माननेवाला । –धड़क–अ० निर्भय होकर, बिना सोचे-अटके । वि० निर्भय । –धरम–वि० धर्मभ्रष्ट, जिसका धर्म नष्ट हो गया हो । –धीर*–वि० धैर्यरहित । –नंग–वि० निर्लज्ज । –नज़ीर–वि० बेजोड़, अनुपम । –नमक–वि० फीका, बेमजा । –नवा–वि० दीन, असहाय । पु० मुसलमानोंका एक फ़िर्क़ा । –नाप–वि० न नापा हुआ । –नाम–वि० गुमनाम । –नामोनिशान–वि० बेपता, जिसका पता-ठिकाना न हो । –निमून*–वि० अद्वितीय, बेजोड़ । –नियाज़–वि० जिसे किसी चीजकी चाह या आवश्यकता न हो, बेपरवा । –नियाज़ी–स्त्री० किसी चीजकी चाह, परवाह न होना । –नियाम–वि० नियामसे बाहर, नंगी (तलवार) । –नूर–वि० जिसकी ज्योति चली गयी हो (आँख) । –पनाह–वि० जिससे बचाव न हो सके; निराश्रय । –परदगी,–पर्दगी–स्त्री० परदेका हट जाना; भेदका प्रकट हो जाना; बेइज्जती । –परदा–वि० परदेसे बाहर; जिस (स्त्री)का मुँह खुला हो; प्रकट, खुला । –परवा,–परवाह–वि० जिसे किसी बातकी फिक्र न हो, निर्द्वंद्व । –परवाई,–परवाही–स्त्री० बेफिक्री; लापरवाई । –पाइ*–वि० निरुपाय, भौचक । –पीर–वि० निर्दय, दूसरोंका दुख-दर्द न समझनेवाला; निगुरा । –फ़सल,–फ़स्ल–वि०– बेमौसम; बेवक्त । (–० की बहार–बेमौसम चीज (खोंमचेवाले बेमौसम फल बेचते समय कहते हैं) ।) –फ़ायदा–वि० जिससे कोई लाभ, फल न हो, बेकार । –फ़िक्र–वि० चितारहित, बेपरवा, निर्द्वंद्व । –फ़िक्रा–वि० बेफिक्र । –फ़िक्री–स्त्री० निश्चिंतता । –बदल–वि० बेजोड़, बेमिस्ल । –बरकत–वि० जिसमें बरकत न हो, जिससे पूरा न पड़े । –बरकती–वि० बरकत न होना, पूरा न पड़ना । –बस–वि० विवश, लाचार, असहाय । –बसी–स्त्री० विवशता, लाचारी । –बहरा–वि० अभागा; जिसे कुछ आता न हो, बेइल्म, बेहुनर । –बाक–वि० निडर, ढीठ । –बाक़–वि० जिस (हिसाब खाते)में कुछ बाकी न हो, चुकाया हुआ; जिसने पूरा पावना चुका दिया हो । –बाकी–स्त्री० निर्भयता, धृष्टता । –बाक़ी–स्त्री० बेबाक होना, चुकता, पूरी सफाई; किसी भी बातको बिना साहित्यिक आवरणके साफ साफ पूराका पूरा कह सकनेकी क्षमता । –बाल व पर–वि० असहाय, दीन-हीन । –बुनियाद–वि० बिना जड़का, निर्मूल; मनगढ़ंत । –ब्याहा–वि० अविवाहित । –भाव–वि० बेहिसाब । (मु०–० की पड़ना–बहुत मार पड़ना ।) –मज़ा–वि० स्वादरहित; बदजायका । –मतलब–अ० निष्प्रयोजन, बेकार । वि० निरर्थक । –मनका–वि० जिसमें मन न लगता हो । –मरम्मत–वि० जिसकी मरम्मत न हुई हो, टूटा-फूटा । –मरम्मती–स्त्री० बेमरम्मत होनेका भाव । –मसरफ़–वि० अनुपयोगी, बेकार, निकम्मा । –महल–वि० बेमौका । –मानी–वि० अर्थरहित; बेकार, बेमतलब । –मालूम–वि० जिसका पता न लगे, अज्ञात । –मिलावट–वि० खालिस, शुद्ध । –मुनासिब–वि० अनुचित । –मुरौवत–वि० जिसमें लिहाज, मुरौवत न हो, तोताचश्म । –मुरौवती–स्त्री० बेमुरौवत होना, तोताचश्मी । –मेल–वि० जो मेल न खाता हो, अनमिल, बेजोड़ । –मेह्र–वि० बेदर्द, निष्ठुर; निष्करुण । –मौक़ा–वि० जिसका अवसर न हो; अयुक्त, नामुनासिब । –मौक़े–अ० असमय, बिना अवसरके । –मौत–अ० बिना मौत आये, बिना कालके (मरना) । –मौसिम–वि० जिसका मौसिम न हो, असामयिक । अ० बिना उचित समयका । –रंग–वि० बेमजा, बेलुत्फ । –रब्त–वि० बेमेल; बेमौका । –रस–वि० रसहीन, बेमजा । –रहम–वि० जिसमें रहम न हो, निर्दय । –रहमी–स्त्री० निर्दयता, बेदर्दी । –राह–वि० पथभ्रष्ट; कुचाली । –राही–स्त्री० पथभ्रष्टता, गुमराही; कुचाल । –रिया–वि० निश्छल, सरल, सच्चा । –रुख़–वि० बेमुरौवत; रुष्ट; प्रतिकूल । –रुख़ी–स्त्री० उपेक्षा; प्रतिकूलता; बेमुरौवती । –रूप–वि० कुरूप । –रेश–वि० जिसके दाढ़ी-मूँछें न आयी हों । –रेशा–वि० बिना रेशेका (आम इ०) । –रोक-टोक–अ० बिना किसी रुकावटके, बेखटके । –रोज़गार–वि० जिसके पास जीविकाका साधन न हो; नौकरीसे अलग किया हुआ, बेकार । –रोज़गारी–स्त्री० बेरोजगार होनेका भाव, बेकारी । –रौनक़–वि० जिसकी शोभा, चहल-पहल चली गयी हो, उदास । –रौनक़ी–स्त्री० बेरौनक होनेका भाव । –लगाम–वि० मुहँजोर, सरकश, दाब न माननेवाला । (मु० –० सुनाना–दोटूक कहना; बहुत गालियाँ देना ।)–लज़्ज़त–वि० बेमजा, स्वादरहित; निष्फल । –लाग–वि० किसीकी रू-रिआयत न करनेवाला, खरा; दोटूक (बात) । –लिहाज़–वि० बेमुरौवत; निर्लज्ज । –लुत्फ़–वि० बेमजा, रसरहित । –लुत्फ़ी–स्त्री० रसभंग, बदमजगी, आनंद न आना । –लौस–वि० खरा; किसीका लिहाज, मुरौवत न करनेवाला ।–०कथन–बिना किसी संकोचके अपनी अनुभूतिको, चाहे वह अनैतिक हो या दूसरोंके लिए असह्य, कह देना । –लौसी–स्त्री० खरापन, निष्पक्षता । –वक़अत,–वक़त–वि० प्रतिष्ठारहित, तुच्छ, नगण्य । –वक़र–वि० तुच्छ, जलील, बेइज्जत । –वक़री–स्त्री० बेइज्जती, जिल्लत । –वक़ूफ़–वि० निर्बुद्धि, नासमझ । –वकफ़ी–स्त्री० नासमझी, मूर्खता । –वक्त–अ० असमय, बेमौके, कुसमयमें । (मु० –०की रागिनी या शहनाई–बेमौका बात ।)–वफ़ा–वि० वचनका पालन, प्रीतिका निर्वाह न करनेवाला; कृतघ्न; मित्रको धोखा देनेवाला । –वफ़ाई–स्त्री० बेवफ़ा होनेका भाव; बेमुरौवती; कृतघ्नता । वास्ता–वि० बेजरिया; अकारण; नाहक । –शऊर–वि० बेसलीका, फूहड़; बेअकल । –शक–अ० निस्संदेह, जरूर । –शगल–वि० जिसके पास कोई कामधंधा न हो, बेकार । –शरम,–शर्म–वि० निर्लज्ज । –शर्मी–स्त्री० निर्लज्जता । –शुमार–वि० अगणित; बेहिसाब । –सँभर*–वि० बेहोश । –सँभार,–सँभाल–वि० जो सँभालके बाहर हो; * बेहोश । –सतर–वि० नंगा । –सतरी–स्त्री० नंगापन । –सबब–अ० अकारण, बिलावजह । –सबरा–वि० दे० 'बेसब्र' । –सबरी–स्त्री० अधैर्य ।

–सबात–वि० नश्वर, क्षणभंगुर । **–सबाती**–स्त्री० बेसबात होना । **–सबूरी**–स्त्री० बेसब्री । **–सब्र**–वि० जिसमें सब्र, धीरज न हो, अधीर । **–सब्री**–स्त्री० अधीरता । **–समझ**–वि० नासमझ । **–समझी**–स्त्री० मूर्खता । **–सर***–वि० आश्रयरहित । **–सरा, –सिरा**–वि० जिसके सिरपर कोई न हो; स्वच्छंद । **–सरोसामान**–वि० जिसके पास कोई सामग्री न हो । **–सलीक़ा**–वि० बेशऊर, फूहड़ । **–साख़्ता**–वि० स्वाभाविक, अकृत्रिम, जिसके लिए सोचना न पड़ा हो (भाव, उक्ति) । अ० बिना कुछ सोचे–"मैं बेसाख़्ता नवयुवक गुजरालके पास जा पहुँचा'–हम हिन्दु० ९३ । **–सामान**–वि० जिसके पास माल-असबाव या जरूरी औज़ार आदि न हो, उपकरणहीन । **–सामानी**–स्त्री० मुफ़लिसी, साधन-सामग्रीका अभाव । **–सिलसिला**–वि० क्रमरहित, अव्यवस्थित । **–सिलसिले**–अ० बिना क्रम, सिलसिलेके । **–सुध**–वि० अचेत, बेहोश; आत्मविस्मृत । **–सुर**–वि० जिसका स्वर ठीक न हो । **–सुरा**–वि० जो शुद्ध स्वमें न गा सके; स्वरदोषयुक्त, अशुद्ध स्वरमें गाया जानेवाला (गाना) । (स्त्री० 'बेसुरी' ।)**–सूद**–वि० बेफ़ायदा, व्यर्थ । **–सोचे-समझे**–अ० बिना सोच-विचार किये, झट । **–स्वाद**–वि० स्वादरहित, बदजायका । **–हंगम**–वि० बेडौल, भद्दा । **–हंगाम**–वि० बेवक्त । **–हक़ीक़त**–वि० तुच्छ, उपेक्षणीय । **–हद**–वि० असीम; बहुत अधिक । **–हया**–वि० निर्लज्ज, बेशर्म । **–हयाई**–स्त्री० निर्लज्जता । (**मु०–०का जामा पहन लेना, – ० का बुरका ओढ़ या मुँहपर डाल लेना**–नितांत निर्लज्ज हो जाना ।)**–हवास**–वि० बेहोश; परीशान; पागल । **–हाल**–वि० कष्टसे व्याकुल, जिसका हाल बुरा हो । **–हिजाब**–वि० बेपर्दा; लज्जारहित । **–हिजाबी**–स्त्री० बेपर्दगी; निर्लज्जता । **–हिम्मत**–वि० जिसमें हिम्मत न हो, डरपोक । **–हिस**–वि० गतिहीन, सुन्न । **–हिसाब**–वि० बेहद, अमित; बहुत ज्यादा । **–हुनर,–हुनरा**–वि० जिसे कुछ आता न हो, अनाड़ी, बेशऊर । **–हुरमत**–वि० बेइज्जत । **–हुरमती**–स्त्री० बेइज्जती । **–हूदगी**–स्त्री० बेहूदापन; अशिष्टता, असभ्यता । **–हूदा**–वि० असंगत, बेतुका; अशिष्ट, भद्दा । **–० गो**–वि० बेहूदा बातें करनेवाला, बकवास करनेवाला । **–हैफ़***–वि० बेफिक्र । **–होश**–वि० जिसे होश न हो, अचेत । **–होशी**–स्त्री० अचेतपन, मूर्च्छा । **मु० –परकी उड़ाना**–बेतुकी हाँकना, गप मारना । **–परके कबूतर उड़ाना**–चतुराईके बलसे अनहोनी बात कर लेना; हवामें गिरह बाँधना । **–पेंदीका लोटा या बधना**–जो किसी बातपर स्थिर न रहे, जिसका मत बदलता रहे, ढुलमुल ।

बेइलि*–स्त्री० दे० 'बेला' तथा 'बेल' ।

बेउ–वि० दोनों । वे ।

बेकरा–पु० एक पशु रोग ।

बेकारचो*–पु० जोरसे बुलानेकी आवाज ।

बेंकुरा–स्त्री० (सं०) स्वर, आवाज ।

बेख*–पु० दे० 'बेष' ।

बेख़–स्त्री० (फा०) जड़, नीवँ । **–कुन**–वि० जड़ उखाड़नेवाला । **–कुनी**–स्त्री० जड़ उखाड़ देना । **–व बुनयाद,–बुनियाद**–स्त्री० जड़मूल (उखाड़ देना) ।

बेग–पु० दे० 'वेग'; (तु०) अमीर, सरदार (मुगलोंके नामके साथ लगाया जानेवाला 'खाँ'का समानार्थक शब्द); (अं० 'बैग') किरमिच, चमड़े आदिका लंबोतरा, बकसका काम देनेवाला थैला । **–पाइप**–पु० बैंडके साथ बजाया जानेवाला एक बाजा, मशकबीन । (**मनी**–पु० रुपये-पैसे रखनेका चमड़ेका छोटा बटुआ ।) ।

बेगड़ी–पु० हीरातराश; जौहरी ।

बेगना*–अ० क्रि० वेगपूर्वक करना, जल्दी करना ।

बेगम–स्त्री० (तु० 'बेगुम') बड़े आदमीकी बीबी, खातून; रानी; रानीकी शक्लवाला ताशका पत्ता ।

बेगमात–स्त्री० (तु०) बेगमका बहुवचन ।

बेगमी–पु० कपूरी पानका एक भेद । वि० बेगम-संबंधी ।

बेगर*–वि० पृथक, भिन्न ।

बेगवती–स्त्री० एक वर्णवृत्त ।

बेगार–स्त्री० (फा०) जबर्दस्ती, बिना उजरत दिये कराया जानेवाला काम; वह जिससे इस तरहका काम कराया जाय (पकड़ना); बेमनका काम । **मु० –टालना**–बिना मन लगाये, बेगारकी तरह काम करना ।

बेगारी–स्त्री० दे० 'बेगार' ।

बेगि*–अ० जल्दी, वेगपूर्वक, झटपट ।

बेगुना†–पु० दे० 'बैगन' ।

बेचक*–पु० बेचनेवाला ।

बेचना–स० क्रि० दाम लेकर (कोई वस्तु) देना, बिक्री करना; पैसेके बदलेमें देना (धर्म, ईमान इ०) । **मु० बेच खाना**–नष्ट कर देना; उड़ा डालना ।

बेचवाना, बेचाना–स० क्रि० दे० 'बिकवाना' ।

बेचवाल–पु० दे० 'बेचू' ।

बेची–स्त्री० बिक्री, विक्रय ।

बेचु, बेचू–पु० बेचनेवाला ।

बेजू–पु० एक जंगली जानवर जिसके बालोंका ब्रश बनाया जाता है ।

बेझ*–पु० दे० 'बेझा' ।

बेझड़–पु० जौ, चना, मटर आदिकी मिली हुई फसल; ऐसा अनाज ।

बेझना*–स० क्रि० निशाना लगाना, बेधना ।

बेझरा–पु० दे० 'बेझड़' ।

बेझा*–पु० वेध, निशाना ।

बेट–पु० दे० 'बेंट' ।

बेटकी*–स्त्री० दे० 'बेटी' ।

बेटला, बेटवा*–पु० दे० 'बेटा' ।

बेटा–पु० पुत्र, लड़का; स्नेहका संबोधन, बच्चा । **–बेटी**–स्त्री० बाल-बच्चे, संतान । **–(टे) वाला**–पु० वरका पिता । **मु० –बनाना**–गोद लेना ।

बेटी–स्त्री० लड़की, पुत्री; बड़ेकी ओरसे बालिका या युवतीका स्नेहसूचक संबोधन । **–वाला**–पु० कन्याका पिता । **–व्यवहार**–पु० विवाह-संबंध । **मु० –देना**–बेटी ब्याहना । **–लेना**–किसीकी बेटीसे ब्याह करना ।

बेटौना†–पु० बेटा ।

बेट्टा–पु० बेटा; भैंसेकी एक जाति ।

बेठ–स्त्री० दस्ता, मूठ ।

बेठन–पु० पुस्तक आदिको गर्दसे बचानेके लिए उसपर लपेटा जानेवाला कपड़ा; खोल ।

बेड़–स्त्री० बाड़, थाला ।

बेड़ना–स० क्रि० बाड़ लगाना, थाला बनाना; रुपया; नटोंकी एक जाति ।

बेड़ा–पु० लट्ठों या तख्तोंको बाँधकर और उनपर बाँसका टट्टर रखकर बनायी हुई नाव; नावों या जहाजोंका समूह; नाव । **मु० –डूबना**–काम बिगड़ना, नष्ट, तबाह होना । **–पार होना**–संकट कटना, काम हो जाना ।

बेड़िन, बेड़िनी–स्त्री० नाचने गानेका पेशा करनेवाली स्त्री, नटिनी ।

बेड़िया†–पु० एक तरहका नट ।

बेड़ी–स्त्री० कैदियों, हाथी-घोड़ों आदिके पावोंमें पहनायी जानेवाली लोहेकी जंजीर, निगड (कटना, पड़ना); बंधन; छोटा बेड़ा, नाव; दे० 'बेंड़ी' । वि० स्त्री० कठिन ।

बेढ़–पु० घेरनेका कार्य; नाश; अंकुरित बीज ।

बेढ़ई–स्त्री० पीठी भरकर बनायी हुई रोटी, कचौड़ी ।

बेढ़न–पु० बाड़, घेरा ।

बेढ़ना–स० क्रि० बाड़ बनाना, रूँधना; ढोरोंको घेरकर ले जाना ।

बेढब–पु० बेढंगा, भद्दा, विचित्र ।

बेढ़ा–पु० एक तरहका कड़ा; मकानकी बारी ।

बेणी–स्त्री० दे० 'वेणी' । **–फूल**–पु० सीसफूल ।

बेत–पु० दे० 'बेंत' । **–पानि**–वि० जिसके हाथमें बेत या दंड हो ।

बेतना*–अ० क्रि० जान पड़ना ।

बेतवा–स्त्री० बुंदेलखंडकी एक नदी ।

बेताल–पु० दे० 'वेताल'; दे० 'बे' में; * चारण ।

बेद–पु० दे० 'वेद'; (फा०) बेंत । **–बाफ़**–पु० बेंतके छिलकेसे कुरसियाँ आदि बुननेवाला । **–बाफ़ी**–स्त्री० बेदबाफका काम ।

—मजनूँ—पु० वेँतका एक भेद जिसकी टहनियाँ जमीनकी ओर झुकी रहती हैं । **—मुश्क**—पु० वेतका एक भेद जिसके फूलोंका अर्क दवाके काम आता है ।

बेदन*—स्त्री० दे० 'वेदन' । एक पशु रोग ।

बेदना—स्त्री० दे० 'वेदना' ।

बेदमाल—स्त्री० वह तख्ती जिसपर सिकलीगर अपना औजार रगड़ते हैं ।

बेदार—वि० (फा०) जागता हुआ, जागरूक; चौंकन्ना । **—बख़्त**—वि० भाग्यशाली । **—मग्ज़**—वि० बुद्धिमान् । **—बाश**—जागते रहो (चौकीदारोंकी आवाज) ।

बेदारी—स्त्री० (फा०) जागरण, जागरूकता ।

बेध—पु० छेद; मोती, मूँगे आदिमें किया हुआ छेद; दे० 'वेध' ।

बेधक—वि० बेधनेवाला ।

बेधना—स० क्रि० छेद करना; घाव करना ।

बेधिया—पु० अंकुश ।

बेधी—पु० वेधनेवाला ।

बेन*—पु० दे० 'वेणु'; महुवर ।

बेनट—स्त्री० वंदूकमें खोंसी रहनेवाली संगीन, 'बॉयनट' ।

बेना†—पु० बाँसके छिलकेका वना हुआ पंखा; माथेका एक गहना, वेंदा; * खस; बाँस ।

बेनिया†—स्त्री० पंखी; किवाड़के पल्लेके किनारे दूसरे पल्लेको रोकनेके लिए लगायी जानेवाली लकड़ी ।

बेनी—स्त्री० स्त्रियोंकी चोटी; त्रिवेणी; किवाड़के पल्लेके किनारे लगायी जानेवाली वह लकड़ी जो दूसरे पल्लेको खुलनेसे रोकती है ।

बेनु—पु० दे० 'वेणु' ।

बेनौरा—पु० दे० 'विनौला' ।

बेनौरी—स्त्री० दे० 'बनौरी' ।

बेपताचिट्ठीघर—पु० (डेड लेटर ऑफिस) दे० 'लापताचिट्ठीघर' ।

बेपार†—पु० दे० 'व्यापार' ।

बेपारी†—पु० दे० 'व्यापारी' ।

बेमाई—स्त्री० दे० 'बिवाई' ।

बेमारी†—स्त्री० दे० 'बीमारी' ।

बेमौसिम—वि० दे० 'बे'के साथ ।

बेयरा—पु० खानसामा, बेरा ।

बेर—पु० एक प्रसिद्ध फल; उसका पेड़; देर, समय; शरीर । स्त्री० वार, दफा । **—जरी**—स्त्री० झड़बेरी ।

बेरजा—पु० विरोजा ।

बेरवा†—पु० कलाईमें पहननेका कड़ा, ब्यौरा ।

बेरा†—स्त्री० समय; सवेरा; दफा । पु० मिला हुआ जौ और चना; * बेड़ा, नाव; पोत-समूह; (अं० 'बेअरर') किसी बड़े अफसरका चपरासी जिसका काम चिट्ठी-पत्री, संदेसा आदि लाना, ले जाना हो; खानसामा ।

बेरादरी†—स्त्री० दे० 'बिरादरी' ।

बेराम†—वि० दे० 'बीमार' ।

बेरामी—स्त्री० बीमारी, रोग ।

बेरिआ, बेरियाँ†—स्त्री० बेला, समय ।

बेरी—स्त्री० मिली हुई सरसों और अलसी; देरी; * दे० 'बेड़ी'; * नौका । पु० खत्रियोंकी एक जाति ।

बेरी-बेरी—स्त्री० (बेरी-बेरी) एक प्रकारकी बीमारी जो आहारमें विटामिन-बी वर्गके एक विशेष विटामिनकी कमीसे उत्पन्न होती है ।

बेलंद*—वि० बुलंद, ऊँचा ।

बेलंब*—पु० विलंब, देर ।

बेल—पु० एक प्रसिद्ध फल-वृक्ष जो हिंदू धर्ममें पवित्र माने गये वृक्षोंमेंसे है; इसका फल, बिल्व, श्रीफल । **—गिरी**—स्त्री० बेलके फलका गूदा । **—पत्ती**-स्त्री० बेलपत्र । **—पत्र**—पु० बेलका पत्ता । **—पात**—पु० बेलपत्र ।

बेल—स्त्री० जमीन, दीवार, पेड़ आदिपर फैलनेवाला बिना तनेका पौधा, लता; वंश; कागज, कपड़े आदिपर रंग, रेशम आदिसे बनाये हुए लताकी शक्लके फूल-पत्ते; कपड़ेपर टाँका जानेवाला फीता जिसपर जरीके तारोंसे फूल-पत्तियाँ बनी हों; दाग-बेल; * बेला । **—बूटा**—पु० कागज, कपड़े आदिपर बनाये जानेवाले फूल-पत्ते । **—हाशिया**—पु० बेल छापनेका ठप्पा । मु० **— बढ़ना** —वंश बढ़ना । **—मँढ़े चढ़ना**—कामका पूरा होना ।

बेल—पु० एक तरहकी कुदाल । **—चा**—पु० छोटी कुदाल; लंबा खुरपा । **—दार**—पु० फावड़ा चलानेवाला मजदूर । **—दारी**—स्त्री० बेलदारका काम । **—बागुरा**—पु० हिरन पकड़नेका जाल ।

बेलड़ी, बेलरी*—स्त्री० बेल, लता ।

बेलन—पु० काठका बना लंबा, गोला दस्ता जिससे चकलेपर रोटी, पापड़ आदि बेलते हैं; पत्थर या लोहेका भारी गोला जिससे सड़क आदि दबाकर बराबर करते हैं, 'रोलर'; छापने, ईख पेरनेकी कल आदिका बेलनकी शक्लका पुरजा ।

बेलना—स० क्रि० चकलेपर बेलनेसे रोटी, पूरी आदि बनाना । पु० दे० 'बेलन' ।

बेलनाकार—वि० (सिलिंड्रिकल) जिसका आकार बेलनके सदृश हो ।

बेलनी—स्त्री० चरखी जिसपर कपास ओटा जाता है ।

बेलवाना—स० क्रि० बेलनेका काम दूसरेसे कराना ।

बेलसना*—अ० क्रि० विलास, मौज करना ।

बेलहरा†—पु० दे० 'बिलहरा' ।

बेला—पु० एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल; उसका पौधा; मोतिया; मोगरा; कटोरा; सारंगी जैसा एक बाजा । स्त्री० दे० 'वेला' ।

बेलाई—स्त्री० बेलनेकी क्रिया या भाव; बेलनेकी उजरत ।

बेलावल—पु० दे० 'बिलावल'; प्रियतम, पति । स्त्री० पत्नी ।

बेलि—स्त्री० बेल, लता ।

बेलिया—स्त्री० कटोरी ।

बेली—पु० साथी, सहायक ।

बेवकूफ—वि० दे० 'बे'के साथ ।

बेवकूफी—स्त्री० मूर्खता, नासमझी ।

बेवट*—स्त्री० विवशता, संकट ।

बेवपार*—पु० दे० 'व्यापार' ।

बेवपारी*—पु० दे० 'व्यापारी' ।

बेवरा*—पु० दे० 'ब्योरा' । **—(रे)वार**—अ० तफसीलके साथ ।

बेवसाउ*—पु० दे० 'व्यवसाय' ।

बेवस्था*—स्त्री० शास्त्रीय विधान; प्रबंध; स्थिति ।

बेवहरना*—स० क्रि० व्यवहार करना, बरतना ।

बेवहरिया*—पु० महाजन, साहूकार; मुनीम ।

बेवहार*—पु० दे० 'व्यवहार' ।

बेवा—स्त्री० (फा०) विधवा, राँड़ ।

बेवाई—स्त्री० दे० 'बिवाई' ।

बेवान*—पु० दे० 'विमान' ।

बेश—वि० (फा०) ज्यादा, अधिक । **—क़ीमत**—वि० बहुमूल्य, दामी । **—क़ीमती**—वि० दे० 'बेशकीमत' । **—बहा**—वि० बेशकीमत । **—तर**—अ० बहुधा, अकसर ।

बेशी—स्त्री० अधिकता, वृद्धि; नफा ।

बेश्म—पु० दे० 'वेश्म' ।

बेसंदर*—पु० वैश्वानर, अग्नि ।

बेस—पु० दे० 'वेश' ।

बेसन—पु० चनेका आटा ।

बेसनी—वि० बेसनका बना हुआ । स्त्री० बेसनकी बनी हुई पूरी ।

बेसर—स्त्री० नाकका एक गहना, एक तरहका बुलाक । पु० गधा, खच्चर; एक अंत्यज जाति ।

बेसरा*—पु० एक शिकारी चिड़िया; खच्चर । दे० 'बे'में ।

बेसबा†—स्त्री० वेश्या, रंडी । **—पन**—पु० वेश्यावृत्ति ।

बेसहना*—स० क्रि० खरीद करना, मोल लेना ।

बेसा*—स्त्री० वेश्या, रंडी ।

बेसारा*—वि० बैठानेवाला; रखने, जमानेवाला ।

बेसाहना*—स० क्रि० मोल लेना, खरीदना ।

बेसाहनी*—स्त्री० सौदा; खरीद ।

बेसाहा*—पु० सौदा; खरीदी हुई चीज ।

बेसी—स्त्री० दे० 'बेशी' ।

बेस्वा*—स्त्री० वेश्या ।

बेहँसना*–अ० क्रि० दे० 'विहँसना'।

बेह*–पु० छेद। वि० (फा०) अच्छा, भला। **–तर**–वि० अधिक अच्छा। अ० बहुत अच्छा, अच्छी बात है (स्वीकृति सूचित करता है)। **–तरी**–स्त्री० भलाई, हित। **–बूद,–बूदी**–स्त्री० भलाई, हित, खुशहाली।

बेहड़†–वि० दे० 'बीहड़'। * पु० जंगल आदि विकट स्थान, खार।

बेहन†–पु० अनाजका बीज, पौध। वि० पीला।

बेहना†–पु० धुनिया; जुलाहोंकी एक उपजाति।

बेहर*–वि० स्थावर; विलग, जुदा। पु० बावली।

बेहरना†–अ० क्रि० फटना, दरार पड़ना।

बेहरा*–वि० अलग, जुदा। पु० दे० 'बेयरा'।

बेहराना*–अ० क्रि० विदीर्ण होना, फटना। स० क्रि० फाड़ना, विदीर्ण करना।

बेहरी†–स्त्री० चंदा।

बेहला–पु० सारंगीके ढंगका एक बाजा; बेला।

बेहाई†–स्त्री० बेशर्मी, बेहयाई।

बेहु–पु० दे० 'बेह'।

बेहून*–अ० बिना, बगैर। वि० विहीन।

बैंक–पु० (अं०) लोगोंका रुपया जमा करने और माँगनेपर ब्याज-सहित लौटा देनेका कारबार करनेवाली कोठी।

बैंकर–पु० (अं०) महाजन।

बैंगन–पु० दे० 'बैगन'।

बैंगनी–वि० दे० 'बैगनी'। स्त्री० एक पकवान जो बैगनका टुकड़ा बेसनमें लपेटकर तेलमें तलनेसे तैयार होता है।

बैंजना, बैंजनी*–वि० बैंगनी।

बैंड–पु० (अं०) वादकदल, अंग्रेजी बाजा बजानेवालोंका जत्था; अंग्रेजी बाजा। **–मास्टर**–पु० बैंडका संचालक, वाद्य-निर्देशक।

बैंड़ना–स० क्रि० दे० 'बेँड़ना'।

बैंड़ा*–पु० दे० 'बेँड़ा'।

बैंत, बैंता*–पु० दे० 'बेत'।

बै–स्त्री० जुलाहोंकी कंघी; *पु०, स्त्री० दे० 'वय'। **–संधि**–स्त्री० वयःसंधि।

बै–स्त्री० (अ०) खेत आदिकी ऐसी बिक्री जिसमें खरीदनेवालेका उस चीजपर स्थायी और पूर्ण अधिकार होता है। **–नामा**–पु० वह कागज जो बेचनेवाला खरीदनेवालेको लिखता है।

बैकना*–अ० क्रि० बहकना।

बैकल–वि० विकल, विक्षिप्त, उन्मत्त।

बैकुंठ–पु० दे० 'वैकुंठ'।

बैक्टीरिया (जीवाणु)–पु० (अं०) क्षुद्र आकारके एक कोशीय प्राणी जिनकी गणना वनस्पति वर्गमें की जाती है। इनके अन्दर क्लोरोफिल नहीं पाया जाता। इनमें जनन द्वि-विभाजन द्वारा होता है।

बैखरी–स्त्री० दे० 'वैखरी'।

बैखानस–पु० दे० 'वैखानस'।

बैगन–पु० एक पौधा जिसका फल तरकारीके काम आता है, भंटा।

बैगनी–वि० बैगनके रंगका। पु० बैगनके रंगसे मिलता हुआ रंग। स्त्री० दे० 'बैँगनी'। **–बूँद**–स्त्री० एक तरहकी छींट।

बैजयंती, बैजंती–स्त्री० दे० 'वैजयंती'।

बैज–कपड़ेका फीता या धातुका टुकड़ा जो पदका चिह्न हो, चपरास; बिल्ला।

बैजई–वि० हलके नीले रंगका। पु० हलका नीला रंग।

बैजनाथ–पु० दे० 'वैद्यनाथ'।

बैज़वी–वि० (अ०) अंडेका; अंडाकार।

बैज़ा–पु० (अ०) अंडा; अंडकोष।

बैजिक–वि० (सं०) बीज-संबंधी; पैतृक; मूल-संबंधी। पु० अंकुर; कारण; आत्मा।

बैट–पु० (अं०) गेंद खेलनेका बल्ला।

बैटरी–स्त्री० (अं०) तोपखाना; रासायनिक पदार्थोंके योगसे विद्युत् उत्पन्न करनेका एक यंत्र।

बैठक–स्त्री० बैठनेका कमरा, चौपाल; बैठनेकी चीज, आसन; पेंदा; बैठनेका ढंग; बहुतसे लोगोंका किसी खास कामके लिए इकट्ठा बैठना, जमाव; जलसा, अधिवेशन; उठना-बैठना, सुहबत; मूर्ति या खंभेके नीचेका आधार; उठने-बैठनेकी कसरत; एक पेंच; बैठकी; एक तरहकी पूजा, नियाज। **–ख़ाना**–पु० बैठने, मिलने-जुलनेका कमरा। **–बाज़, बैठकबाजी**–स्त्री० चतुरतापूर्ण बातचीत द्वारा किसीको अपने पक्षमें करनेकी कला। वि० धूर्त, शरारती।

बैठका–पु० बैठने या मित्रोंसे मिलने-जुलनेका कमरा।

बैठकी–स्त्री० उठने-बैठनेकी कसरत; उठना-बैठना; आसन; मेजपर रखकर जलानेका लैंप, 'टेबुल-लैंप'; किसी कारखानेमें काम करनेवाले श्रमिकोंकी जान-बूझकर चुपचाप बैठे रहने या बहुत धीरे-धीरे काम करनेकी नीति।

बैठन*–स्त्री० बैठनेकी क्रिया; बैठनेका ढंग; आसन।

बैठना–अ० क्रि० इस तरह स्थित होना कि चूतड़ जमीन या किसी आसनपर टिका रहे और कमरसे ऊपरका धड़ उसके बल सीधा रहे, आसीन होना; चढ़ना, सवार होना; इजलास करना; अपनी जगहपर ठीक आना, छोटा-बड़ा न होना (चूल, नग); (नस, जोड़का) अपनी जगहपर आ जाना; अँटना; धँसना, दबना; गिरना, ढहना (घर); तहमें जमना; तौलमें ठहरना; खर्च होना; पड़ना, लगना (लाठी, डंडा); (स्त्रीका) रखेली बनना, घरमें पड़ना; बेकार रहना; डूबना, अस्त होना; काम बिगड़ना; सधना, मँजना (हाथ); अंडे सेना; (चावलका) सील खाकर थक्का-सा हो जाना। **–बैठते उठते**–अक्सर, जब देखो तब। **बैठा-ठाला**–वि० बेकार, निठल्ला। **बैठा-भात**–पु० पानी और चावलको एक साथ आगपर चढ़ाकर पकाया हुआ भात। **–बैठा रहना**–अकर्मण्य बने रहना। **–बैठी-रोटी**–स्त्री० बिना मेहनतकी आमदनी (पेंशन आदि)। **बैठे-दंड**–पु० एक तरहकी कसरत। **बैठे-बिठाये, बैठे-बैठे**–अ० अकारण; मुफ्तमें; अचानक।

बैठनि*–स्त्री० बैठनेकी क्रिया या तरीका।

बैठनी–स्त्री० करघेमें बुननेवालेके बैठनेके लिए बनी हुई जगह।

बैठवाना–स० क्रि० बिठाने, अपनी जगहपर जमाने, रोपनेका काम दूसरेसे कराना।

बैठाना–स० क्रि० किसीको भूमि या आसनपर स्थित कराना, बैठनेको कहना; स्थापित करना; अपनी जगहपर स्थित करना; सवार कराना; जमाना, जड़ना; अपनी जगहपर लाना (नस, जोड़); दबाना, पिचकाना (फोड़ा); रोपना, गाड़ना; घरमें डाल लेना; बेकार बना देना।

बैठारना*–स० क्रि० दे० 'बैठाना'।

बैठालना–स० क्रि० दे० 'बैठाना'।

बैडाल–वि० (सं०) विडाल-संबंधी। **–व्रत**–पु० धर्मका आडंबर। **–व्रतिक,–व्रती (तिन्)**–वि० धर्मका आडंबर करनेवाला, ढोंगी।

बैढ़ना*–स० क्रि० दे० 'बेढ़ना'।

बैण–पु० (सं०) बाँसकी चीजें बनानेवाला।

बैत–स्त्री० (अ०) शेर, पद्य। पु० घर, आलय; स्थान। **–बाज़ी**–स्त्री० पद्य-पाठकी प्रतियोगिता; अंत्याक्षरी।

बैतरनी–स्त्री० दे० 'वैतरणी'।

बैताल–पु० वेताल; स्तुतिपाठक; भाट; एक प्रेतयोनि।

बैतालिक–पु० दे० 'वैतालिक'।

बैतुलख़ला–पु० (अ०) शौचालय, पाखाना।

बैतुलमाल–पु० (अ०) सार्वजनिक कोष; राजकोश; लावारिस माल जो जब्त हो जाय।

बैतुलमुकद्दस–पु० (अ०) यरूशलम।

बैतुल्लाह–पु० (अ०) खुदाका घर; खानएकाबा।

बैद*–पु० दे० 'वैद्य'। **–ई,–की**–स्त्री० वैद्यका पेशा।

बैदाई*–स्त्री० चिकित्सा, उपचार।

बैदूर्य–पु० दे० 'वैदूर्य'।

बैदेही–स्त्री० दे० 'वैदेही'।

बैन*–पु० वचन, बोल; बयान, रो रोकर गुणगान करना 'मिरासनें शेखके बैन करने लगीं।'

बैनतेय–पु० दे० 'वैनतेय'।

बैना†–पु० दे० 'बायन'; दे० 'बेंदा', एक आभूषण; † धुनिया-'काँधे पींजन हाथमें मुठिया। कहाँ चले तुम बैना दुखिया'; (बुंदेल०)। * स० क्रि० बोना।

बैनामा–पु० जमीन जायदाद बेचनेके लिए बनाया गया शर्त सहित विक्रय-पत्र।

बैपार–पु० दे० 'व्यापार'।

बैपारी–पु० दे० 'व्यापारी'।

बैमाता–स्त्री० दे० 'विमातृका'।

बैयर*–स्त्री० स्त्री।

बैयाँ*–अ० घुटनोंके बल।

बैया*–पु० बैसर। † स्त्री० छोटी ननँद (बुंदेल०)।

बैरंग–वि० (अं० 'बेयरिंग') (चिट्ठी, पारसल आदि) जिसका महसूल भेजनेवालेने न चुकाया हो। मु० –लौटना–बिना काम हुए, विफल लौटना।

बैर–पु० दे० 'बेर'; शत्रुभाव, दुश्मनी; विरोध, बुराई। मु० –काढ़ना,–लेना–बदला लेना। –ठानना–शत्रुता करना (लड़नेको तैयार होना)। –पड़ना*–कष्ट देना। –मोलना–शत्रुता करना।

बैरक़–पु० (अ०) झंडा, निशान।

बैरख*–पु० दे० 'बैरक'।

बैरन, बैरिन–स्त्री० शत्रु स्त्री; सौत।

बैरा–पु० चपरासी, बेयरा।

बैराखी–स्त्री० एक गहना, बरेखी।

बैराग, बैराग्य–पु० दे० 'वैराग्य'।

बैरागर*–पु० खानि, आकर।

बैरागी–पु० वैष्णव साधुओंका एक भेद।

बैराना*–अ० क्रि० वातग्रस्त होना; दे० 'बौराना'।

बैरिस्टर–पु० (अं०) दे० 'बारिस्टर'।

बैरी–वि०, पु० दुश्मन, विरोधी।

बैरोमीटर (दाबमापी)–पु० (बैरोमीटर) ऐसे यंत्र जो वायुमण्डलका दाब नाप सकते हैं। प्रायः ये दो प्रकारके होते हैं; 'पारेका बैरोमीटर' तथा 'निर्द्रव बैरोमीटर'।

बैल–वि० (सं०) बिलमें रहनेवाला; बिलमें रहनेवाले जंतुओंसे संबंध रखनेवाला। पु० (हिं०) गो-जातिका नर जो अनेक देशोंमें कृषिका मुख्य आधार है। वि० मूर्ख, निर्बुद्धि (ला०)। –गाड़ी–स्त्री० बैल द्वारा खींची जानेवाली गाड़ी।

बैलर–पु० दे० 'बायलर'।

बैलून–पु० (अं०) हवासे हलकी गैससे भरा हुआ रबड़का थैला जो आकाशमें उड़ता है; गुब्बारा।

बैल्व–वि० (सं०) बेल वृक्ष-संबंधी; बेलकी लकड़ीका बना हुआ; बेलके वृक्षोंसे पूर्ण। पु० बेलका फल।

बैष्क–पु० (सं०) जालमें फँसे हुए या शिकारी जंतुके मारे हुए जानवरका मांस।

बैसंतर, बैसंदर*–पु० वैश्वानर, अग्नि।

बैस–स्त्री० वयस, उम्र; जवानी। पु० क्षत्रियोंका एक भेद; † वैश्य। मु० –चढ़ना–जवानी आना।

बैसना*–अ० क्रि० दे० 'बैठना'।

बैसर–पु० जुलाहोंका एक औजार, कंघी।

बैसवाड़ा, बैसवारा–पु० अवधका पच्छिमी भाग।

बैसवाड़ी–स्त्री० बैसवाड़की बोली, अवधीका एक भेद।

बैसा–वि० दे० वैसा। पु० दस्ता।

बैसाख–पु० चैतके बाद पड़नेवाला महीना, वैशाख। –नंदन–पु० दे० 'वैशाखनंदन'।

बैसाखी–स्त्री० वह लाठी जिसे टेककर लँगड़े चलते हैं; वैशाखकी पूर्णिमा।

बैसाना, बैसारना†–स० क्रि० दे० 'बैठाना'।

बैसिक*–पु० दे० 'वैशिक'।

बैस्वा–स्त्री० वेश्या।

बैसिलस (दंडाणु)–पु० (अं०) लाल रंगका बैक्टीरिया जो शृंखलाबद्ध रूपमें समूहोंमें पाया जाता है। उदाहरणके लिए 'टायफायड बैसिलस' जो टायफायडकी बीमारी उत्पन्न करता है।

बैहर*–स्त्री० वायु। वि० डरावना।

बोंक़–पु० किवाड़में चूलकी जगह लगाया जानेवाला लोहेका कीला।

बोंगना†–पु० एक बरतन, बहुगुना।

बोंड़ा*–पु० बारूदमें आग लगानेकी रस्सी, पलीता।

बोंड़ी†–स्त्री० दे० 'बौंड़ी'।

बो†–स्त्री० वधू, पत्नी (भाईजी-बो—भौजी, जेठानी; रामा-बो, इत्यादि)।

बोअनी†–स्त्री० दे० 'बोनी'।

बोआई–स्त्री० बोनेका काम; बोनेकी उजरत।

बोआना–स० क्रि० बोनेका काम दूसरेसे कराना।

बोक*–पु० बकरा।

बोकरा†–पु० बकरा।

बोकला†–पु० बकला।

बोक्काण–पु० (सं०) तोबड़ा।

बोखार–पु० दे० 'बुखार'।

बोगस–वि० (अं०) नकली; निरर्थक, बेकार; रद्दी; जाली।

बोगुमा–पु० घोड़ोंकी एक बीमारी।

बोचना†–स० क्रि० झेलना, लोकना–'उन्हें गेंदकी तरह उछाल दिया ··पर वे बोच न सकें'–जिंदगी।

बोज–पु० घोड़ोंकी एक किस्म।

बोझा–स्त्री० चावलकी शराब।

बोझ–पु० भार, वजन; भारी लगनेवाली चीज; गठरी, गट्ठा; उतना भार, सामान जितना एक आदमी, बैल, घोड़ा आदि एक बारमें उठा सके,खेप; भारी लगनेवाला काम,या आदमी; कार्यभार, जिम्मेदारी। मु०–उठाना–कोई कठिन काम करनेका भार लेना। –उतरना–किसी कठिन कामसे फ़ुरसत पाना; जी हलका होना।

बोझना–स० क्रि० लादना, बोझ रखना।

बोझल, बोझिल–वि० भारी, वजनदार।

बोझा–पु० दे० 'बोझ'।

बोझाई–स्त्री० बोझनेका काम; बोझनेकी उजरत।

बोट–स्त्री० (अं०) नाव; घुआँकश, पु० दे० 'वोट'।

बोटा–पु० लकड़ीका कुंदा; खंड, टुकड़ा।

बोटी–स्त्री० मांसका छोटा टुकड़ा। मु०–बोटी काटना–शरीरके छोटे-छोटे टुकड़े कर देना। –बोटी फड़कना–अंग-अंग फड़कना, बहुत चुलबुलापन होना।

बोड़ना*–स० क्रि० डुबाना।

बोडल†–पु० एक चिड़िया।

बोड़री–स्त्री० नाभि।

बोड़ा–पु० अजगर; एक पतली, लंबी फली जो तरकारी बनानेके काम आती है।

बोड़ी–स्त्री० दमड़ी; बहुत ही छोटी रकम; बौड़ी।

बोत–पु० घोड़ोंकी एक जाति।

बोतल–स्त्री० काँचका एक बरतन जिसकी गरदन लंबी और पतली होती है। –वासिनी–स्त्री० शराब। मु०–की बोतल चढ़ा जाना–बोतलकी सारी शराब पी जाना।

बोतली–स्त्री० छोटी बोतल। वि० बोतलके रंगका।

बोता–पु० ऊँटका बच्चा जो अभी सवारी आदिके काममें न आता हो।

बोद–वि० दे० 'बोदा'।

बोदकी†–स्त्री० कुसुम, बर्रेका एक भेद।

बोदर*–स्त्री० लचीली छड़ी।

बोदा–वि० मोटी अक्लका, गावदी; दब्बू; सुस्त। –पन–पु० मोटी अक्लका होना; दब्बूपन।

बोद्धव्य–वि० (सं०) जानने, ध्यान देने योग्य; जाग्रत् करने योग्य।

बोद्धा(द्धृ)–वि०, पु० (सं०) जानने, समझनेवाला; नैयायिक।

बोध–पु० (सं०) ज्ञान; जानकारी; जताना; सांत्वना, तसल्ली। –कर–वि० जगानेवाला। पु० स्तुतिपाठक, बंदी। –गम्य–वि० समझमें आने लायक। –वासर–पु० देवोत्थानी एकादशी।

बोधक–वि० (सं०) बोध करानेवाला, जतानेवाला, सूचक। पु०

शृंगाररसका एक हाव; गुप्तचर, भेदिया।

बोधन–पु० (सं०) ज्ञान कराना, जताना; जगाना; उद्दीपन; विकसित करना; बुध ग्रह।

बोधना*–स० क्रि० समझाना-बुझाना; जताना।

बोधनी–स्त्री० (सं०) समझ; ज्ञान; प्रबोधिनी एकादशी; पीपल, पिप्पली।

बोधनीय–वि० (सं०) जताने, जगाने योग्य।

बोधयिता(तृ)–त्रि०, पु० (सं०) जगानेवाला; बतलानेवाला; शिक्षक।

बोधान–वि० (सं०) चतुर, बुद्धिमान्। पु० चतुर मनुष्य; बृहस्पति।

बोधायन–पु० (सं०) ब्रह्मसूत्रवृत्तिके रचयिता एक आचार्य।

बोधि–स्त्री० (सं०) समाधिका एक भेद; पीपलका पेड़। **–तरु, –द्रुम,–वृक्ष**–पु० गयामें अवस्थित पीपलका पेड़ जिसके नीचे बुद्धको बुद्धत्वकी प्राप्ति हुई। **–मंडल**–पु० वह स्थान जहाँ गौतमको बुद्धत्व प्राप्त हुआ। **–सत्त्व**–पु० बुद्धत्व-प्राप्तिका अधिकारी जो अभी उस पदपर पहुँच न पाया हो, बुद्धविशेष।

बोधित–वि० (सं०) जिसे बोध कराया गया हो।

बोधितव्य–वि० (सं०) जानने या जनाने योग्य; जगाने योग्य।

बोधी(धिन्)–वि० (सं०) जाननेवाला; जनानेवाला।

बोधोदय–पु० (सं०) ज्ञानका उदय, ज्ञानोत्पत्ति।

बोध्य–वि० (सं०) जानने योग्य; जताने योग्य।

बोना–स० क्रि० बीज जमीनमें डालना, बिखेरना।

बोनी–स्त्री० बोनेकी क्रिया; बोनेका मौसम।

बोबा*–पु० स्तन; गठरी; घरकी चीज-वस्तु।

बोय*–स्त्री० दे० 'बू'।

बोर|–स्त्री० बोरने, डुबानेकी क्रिया, डोब। पु० एक गहना; चांदी या सोनेका गोखरू।

बोरका, बोरिका|–पु० दावात।

बोरना*–स० क्रि० डुबाना; डुबाकर तर करना; रँगना; मिलावट करना; चौपट करना, नाश करना (कुल, प्रतिष्ठा आदि)।

बोरसी|–स्त्री० अँगीठी, गोरसी।

बोरा–पु० टाटका बना बड़ा थैला जिसमें अनाज आदि रखते या भरकर अन्यत्र भेजते, ले जाते हैं; घुँघरू।

बोरिया–स्त्री० छोटा बोरा। पु० (फा०) खजूरके पत्तोंकी चटाई। **–बाफ़**–पु० चटाई बनानेवाला। मु० **–बँधना उठाना या समेटना**–चल देना, रास्ता लेना। **–सम्हालना**–चलनेकी तैयारी करना।

बोरी–स्त्री० छोटा बोरा।

बोरो–पु० एक तरहका धान।

बोर्ज़ुवा–प्रथमतः अभिजात समाजके लिए प्रयुक्त। अधुना जनरुचियोंकी अवहेलना करनेवाला वह वर्ग जो अपनी सुविधाओंके लिए निम्नवर्गकी उपेक्षा करता है।

बोर्ड–पु० (अं०) लकड़ीका तख्ता; दफ्ती; कमेटी, मंडल; कार्यविशेषके लिए स्थापित (सरकारी) मंडल, विभाग (रेलवे-बोर्ड); म्युनिसिपल बोर्ड; जिला बोर्ड। **–आव् डाइरेक्टर्स**–पु० संचालक-मंडल।

बोर्डिंग-हाउस–पु० (अं०) छात्रावास।

बोल–पु० एक गंधद्रव्य, रसगंध; वचन, जो कुछ बोला जाय, बात; शब्द; गीतका टुकड़ा जो गाया या बजाया जाय; किसी बाजेकी ध्वनि; ताना; संख्या; प्रतिज्ञा। **–चाल**–स्त्री० बातचीत; साधारण व्यवहारकी भाषा, रोजके बोलनेका ढंग, रोजमर्रा; बातचीतका संबंध (–बंद होना)। **–तान**–स्त्री० संगीतके टुकड़ोंको मूल रूपसे भिन्न आलाप या तानके रूपमें रखकर गाना। **–पट**–पु० वह चित्रपट जिसमें पात्रोंके बोलने, गाने आदिकी आवाज भी सुनाई दे, सवाक् चित्र। मु० **–बाला होना**–बढ़ती-चढ़ती होना; मान-प्रतिष्ठा अधिक होना। **–मारना**–व्यंग्य करना।

बोलता–वि० बोलता हुआ; वाचाल; सजीव, सप्राण। पु० प्राण; आत्मा।

बोलती–वि० स्त्री० बोलती हुई, सजीव। स्त्री० बोलनेकी शक्ति। मु०**–बंद होना**–बोल न सकना; लज्जा या दुःखके अतिरेकसे मुँहसे बोल न निकलना।

बोलनहार*–पु० आत्मा, बोलता।

बोलना–अ० क्रि० मुँहसे शब्द, आवाज निकालना; शब्द करना (बाजे, पेट आदिका); चटखना (लकड़ी); रोक-टोक करना; भाषण करना। स० क्रि० कहना; आज्ञा देना, जवाब देना; * बुलाना, पुकारना; बुलवाना; * जानना; छेड़छाड़ करना। मु० **बोल जाना**–खतम हो जाना; जवाब देना, कामके लायक न रहना; हिम्मत हार जाना। **बोलि पठाना***–बुला भेजना।

बोलवाना–स० क्रि० कहवाना; दे० 'बुलवाना'।

बोलवाला–पु० एक सदाबहार पेड़।

बोलशेविक–पु० श्रमिकवर्गके अधिनायकत्वका समर्थक।

बोलसर–पु० मौलसिरी; एक तरहका घोड़ा।

बोलाचाली|–स्त्री० बातचीत; बातचीतका संबंध।

बोलाना–स० क्रि० दे० 'बुलाना'।

बोलावा–पु० दे० 'बुलावा'।

बोली–स्त्री० बोल, वचन; भाषा, बोल-चाल; नीलामकी आवाज, खरीदारकी ओरसे लगाया गया चीजका दाम; व्यंग्य, फबती; पशु-पक्षियोंकी आवाज। **–ठोली**–स्त्री० व्यंग्य, कटाक्ष (–मारना)। **–दार**–पु० वह असामी जिसे खेत बिना लिखा-पढ़ीके दिया गया हो। मु०**–कसना**–दे० 'बोली मारना'। **–बोलना**–व्यंग्य करना, फबती कसना; नीलाममें चीजके दाम लगाना। **–मारना**–ताने देना, आवाजें कसना।

बोवना|–स० क्रि० बोना।

बोवाई–स्त्री० दे० 'बोआई'।

बोवाना–स० क्रि० दे० 'बोआना'।

बोह–स्त्री० डुबकी।

बोहना|–अ० क्रि०, स० क्रि० (बीज) बोना, खेतमें बीज छिटकना (अमर०)।

बोहनी–स्त्री० पहली बिक्री; | बीज बोने, छिटकनेकी क्रिया–'जुताइयाँ हुईं और बोहनी भी'–अमर०।

बोहरा–पु० एक मुसलमान जाति जो प्रायः व्यापार कार्य करती है।

बोहित, बोहथ*–पु० नाव, जहाज।

बोहित्थ–पु० दे० 'बोहित्थ'।

बौंड़*–स्त्री० लंबी टहनी; लता।

बौंड़ना*–अ० क्रि० टहनी फेंकना; दूरतक फैलना; आगे बढ़ना; लिपटना।

बौंडर*–पु० दे० 'बवंडर'।

बौंड़ी–स्त्री० कच्चा, छोटा फल, ढोंढी; फली; दमड़ी, छदाम।

बौआना|–अ० क्रि० सपनेमें प्रलाप करना।

बौखल–वि० बदहवास, विक्षिप्त।

बौखलाना–अ० क्रि० होश-हवासमें न रहना, विक्षिप्तके-से काम करना; क्रोधसे पागल हो उठना।

बौखलाहट–स्त्री० बदहवासी, विक्षिप्तता; क्रोधावेश।

बौखा–स्त्री० हवाका तेज झोंका।

बौछाड़–स्त्री० दे० 'बौछार'।

बौछार–स्त्री० हवाके झोंकेसे तिरछी होकर गिरनेवाली बूँदें; वर्षा, झड़ी; भरमार (करना, पड़ना, होना)।

बौड़ना*–अ० क्रि० मतवाला होना।

बौड़म–वि० पागल, सनकी।

बौड़हा–वि० बौड़म, पागल।

बौद्ध–वि० (सं०) बुद्धि-संबंधी; बुद्ध-संबंधी। पु० बुद्धप्रवर्तित धर्मका अनुयायी। **–धर्म,–मत**–पु० बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।

बौद्धिक–वि० बुद्धि संबंधी; पु० बुद्धिजीवी।

बौध–पु० (सं०) बुधका पुत्र, पुरूरवा।

बौधायन–पु० (सं०) कल्पसूत्रके रचयिता एक ऋषि।

बौना–वि० बहुत छोटे या ठिंगने कदका, वामन। पु० ऐसा आदमी।

बौनी–स्त्री० बुवाई; नाटी स्त्री।

बौर–पु० आमकी मंजरी, मौर।

बौरई|–स्त्री० पागलपन।

बौरना—अ० क्रि० आममें बौर लगना, आमका फूलना ।

बौरहा*—वि० बौड़म, पागल ।

बौरा—वि० पागल; भोला-भाला; गूंगा । **—ई***—स्त्री० बावलापन ।

बौराना*—अ० क्रि० बावला, पागल हो जाना । स० क्रि० उन्मत्त करना; बहकाना ।

बौराह*—वि० दे० 'बावला' ।

बौरी*—वि० स्त्री० बावली, पगली ।

बौलसिरी—स्त्री० मौलसिरी ।

बौहर*—स्त्री० वधू, दुलहिन ।

ब्यंग—पु० चुटकी, ताना; गूढार्थ ।

ब्यंजन—पु० दे० 'व्यंजन' ।

ब्यक्ति—स्त्री०, पु० दे० 'व्यक्ति' ।

ब्यजन—पु० दे० 'व्यजन' ।

ब्यतीतना*—अ० क्रि० व्यतीत होना, गुजरना ।

ब्यथा—स्त्री० दे० 'व्यथा' ।

ब्यलीक—वि०, पु० दे० 'व्यलीक' ।

ब्यवहर†—पु० दे० 'व्यवहार' ।

ब्यवहरिया—पु० व्यवहार, लेन-देन करनेवाला ।

ब्यवहार—पु० व्यवहार, बर्ताव; रुपयेका देन-लेन; मुकदमा; शादी-गमीमें शरीक होनेका संबंध ।

ब्यवहारी—पु० व्यवहार, देन-लेन करनेवाला; व्यापारी; जिसके साथ मैत्री-संबंध हो ।

ब्यसन—पु० दे० 'व्यसन' ।

ब्याज—पु० सूद; दे० 'व्याज' । **—ख़ोर**—पु० सूद खानेवाला । **—बट्टा**—पु० नफा-नुकसान ।

ब्याजू—वि० सूदपर दिया हुआ (रुपया) ।

ब्याध, ब्याधा*—पु० दे०, 'व्याध' ।

ब्याधि—स्त्री० दे० 'व्याधि' ।

ब्याना—स० क्रि० (पशुका) जनना । अ० क्रि० बच्चा देना ।

ब्यापक—वि० दे० 'व्यापक' । * स्त्री० व्यापकता ।

ब्यापना*—अ० क्रि० व्याप्त होना, फैलना । स० क्रि० पकड़ना, ग्रसना ।

ब्यापार—पु० दे० 'व्यापार' ।

ब्यापारी—पु० दे० 'व्यापारी' ।

ब्यार, ब्यारि—स्त्री० हवा ।

ब्यारी—स्त्री० दे० 'ब्यालू' ।

ब्याल—पु० दे० 'व्याल' ।

ब्याली—स्त्री० सर्पिणी । वि० सर्पधारण करनेवाला । पु० शिव ।

ब्यालू—पु० रातका भोजन ।

ब्याव*—पु० ब्याह ।

ब्याह—पु० स्त्री-पुरुषमें विधिवत् पति-पत्नी संबंधकी स्थापना, विवाह, पाणिग्रहण ।

ब्याहता—वि० विवाहित; जिसके साथ ब्याह हुआ हो । पु० पति । स्त्री० विवाहिता पत्नी ।

ब्याहना*—स० क्रि० किसीको विधिवत् पति या पत्नी बनाना; ब्याह करना (बेटे या बेटीका) ।

ब्योंच—स्त्री० नस आदिका अपने स्थानसे हट जाना, मोच ।

ब्योंचना—अ० क्रि० हाथ, पैर आदिके एकाएक मुड़ जानेसे नसका हट जाना, मोच आना ।

ब्योंत—स्त्री० कपड़ेकी काट, काट-छाँट; ढंग, ढब; युक्ति, उपाय; प्रबंध; योजना; किफायतसारी; * वृत्तांत, हाल—'बलि बामनको ब्योंत सुनि को बल तुमहिं पत्याय'—बिहारी । मु० **—बनना**—उपाय होना, डौल निकलना ।

ब्योंतना—स० क्रि० सिलाईके लिए कपड़ेको नापसे काटना ।

ब्योतना, ब्यौतना—स० क्रि० दे० 'ब्योंतना' ।

ब्योताना—स० क्रि० कपड़ेको नापके अनुसार (दरजीसे) कटवाना ।

ब्योपार—पु० व्यापार ।

ब्योपारी—पु० व्यापारी ।

ब्योरन*—स्त्री० ब्योरने अर्थात् बालोंको सुलझाने-सँवारनेकी क्रिया या ढंग ।

ब्योरना*—स० क्रि० गुंथे हुए बालों, तारों आदिको अलग-अलग करनां, सुलझाना—'मंजन करि खंजन-नयनि बैठी ब्योरति बार' —बिहारी ।

ब्योरा—पु० एक-एक बातको अलग-अलग कहना, विवरण, तफसील; हाल; अंतर । **—(रे)वार**—अ० तफसीलके सांथ, विस्तारपूर्वक ।

ब्योसाय—पु० दे० 'व्यवसाय' ।

ब्योहर—पु० रुपयेका देन-लेन, व्यवहार । मु० **—चलना**—महाजनोंका कारबार होना ।

ब्योहरा, ब्योहरिया—पु० रुपयेका देन-लेन करनेवाला, महाजन ।

ब्योहार, ब्यौहार—पु० दे० 'व्यवहार' ।

ब्यौहरिया—पु० दे० 'व्यवहरिया' ।

ब्रंद*—पु० वृंद, समूह ।

ब्रज—पु० दे० 'व्रज' । **—भाषा, —मंडल, —राज**—दे० 'व्रज'में ।

ब्रजना*—अ० क्रि० जाना, गमन करना ।

ब्रध्न—पु० (सं०) सूर्य; दिन; शिव; मदार; घोड़ा; एक रोग; बाणकी नोक; सीसा ।

ब्रन्न*—पु० वर्ण, दे० 'व्रण' ।

ब्रह्मंड*—पु० ब्रह्मांड ।

ब्रह्म(न्)—पु० (सं०) सच्चिदानंदस्वरूप जगत्का मूल तत्त्व; हिरण्यगर्भ; वेद; सत्य; तत्त्व; प्रणव; ब्रह्मा (समासमें); ब्राह्मण; तपस्या; ब्रह्मचर्य; २७ योगोंमेंसे एक; एककी संख्या । **—कन्यका, —कन्या**—स्त्री० सरस्वती; ब्राह्मीबूटी । **—कर्म(न्)**—पु० ब्राह्मणके कर्तव्य कर्म; वेदविहित कर्म । **—कला**—स्त्री० दाक्षायणीदेवी । **—कल्प**—पु० ब्रह्माकी आयु । वि० ब्रह्माके तुल्य । **—कांड**—पु० वेदका ज्ञानकांड, ब्रह्मत्त्वकी मीमांसा करनेवाला भाग । **—काष्ठ**—पु० शहतूतका पेड़ । **—कुंड**—पु० एक सरोवर । **—कुशा, —कोशी**—स्त्री० अजमोदा । **—कूट**—पु० एक पर्वत; विद्वान् ब्राह्मण । **—कूर्च**—पु० रजस्वलाके स्पर्श आदिके प्रायश्चित्तमें किया जानेवाला एक व्रत । **—कोश**—पु० संपूर्ण वेद । **—क्षत्र**—पु० ब्राह्मण और क्षत्रियसे उत्पन्न एक संकर जाति । **—गति**—स्त्री० मोक्ष । **—गाँठ**—स्त्री० (हिं०) जनेऊकी मुख्य गाँठ । **—गुप्त**—पु० पुराने समयके एक प्रमुख ज्योतिषी (जन्म सन् ५९८ ई०) । **—गोल**—पु० ब्रह्मांड । **—ग्रंथि**—स्त्री० ब्रह्मगाँठ । **—ग्रह**—पु० ब्रह्मराक्षस । **—घातक, —घाती(तिन्)**—वि० ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला । **—घातिनी**—वि०, स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या करनेवाली । स्त्री० ऋतुके दूसरे दिन रजस्वलाकी संज्ञा । **—घोष**—पु० वेदपाठ; वेद । **—घ्न**—वि०, पु० ब्रह्महत्या करनेवाला । **—चक्र**—पु० संसारचक्र । **—चर**—पु० ब्राह्मणको पूजा-पाठके लिए दी गयी भूमि । **—चर्य**—पु० अष्टविध मैथुनसे बचनेका व्रत, वीर्यरक्षा; उपनयनके अनंतर गुरुकुलमें रहकर द्विज बालकके वेदाध्ययनका काल; वर्णाश्रमी हिंदूके लिए विहित चार आश्रमोंमेंसे पहला; ब्रह्मके साक्षात्कारकी साधना । **—चारिणी**—स्त्री० ब्रह्मचर्य धारण करनेवाली; दुर्गा; ब्राह्मीबूटी । **—चारी(रिन्)**—पु० ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेवाला; गुरुकुलमें रहकर ब्रह्मचर्यका पालन करते हुए वेदाध्ययन करनेवाला । **—ज**—पु० हिरण्यगर्भ; कार्त्तिकेय; ब्रह्मासे उत्पन्न जगत् । **—जटा**—स्त्री० दौना । **—जटी(टिन्)**—पु० दे० 'ब्रह्मजटा' । **—जन्म(न्)**—पु० उपनयन-संस्कार । **—जार**—पु० ब्राह्मणीका आशना; इंद्र । **—जिज्ञासा**—स्त्री० ब्रह्मको जाननेकी इच्छा, ब्रह्मविचार । **—जीवी(विन्)**—पु० श्रौत कर्मोंसे जीविका करनेवाला । **—ज्ञ**—वि० ब्रह्मको जाननेवाला, ज्ञानी । **—ज्ञान**—पु० ब्रह्मको जानना, परमतत्त्वका ज्ञान । **—ज्ञानी(निन्)**—वि० ब्रह्मको जाननेवाला । **—तत्त्व**—पु० ब्रह्मका सच्चा ज्ञान । **—ताल**—पु० संगीतका एक ताल, चतुर्मुख ताल । **—तीर्थ**—पु० नर्मदाके तटपर स्थित एक तीर्थ । **—तेज(स्)**—पु० ब्रह्मका तेज; ब्राह्मणका तेज; ब्रह्मचर्य या ब्रह्मज्ञानका तेज । **—दंड**—पु० ब्राह्मणका अभिशाप; ब्रह्मचारीका डंडा; ब्राह्मणयष्टि नामक पौधा; एक केतु; शिव । **—दंडी**—स्त्री० एक बूटी । **—दर्भा**—स्त्री० अजवायन । **—दाता(तृ)**—पु० वेदाध्यापक । **—दान**—पु० वेदका पाठन । **—दाय**—पु० समावृत्त ब्राह्मणको दिया जानेवाला धन । **—दारु**—पु० शहतूत । **—दिन**—पु० ब्रह्माका दिन, १०० चतुर्युगी । –

दूषक–वि० वेदकी निंदा करनेवाला । –देय–पु० ब्राह्मणकी दान की हुई चीज । –देया–वि० स्त्री० ब्राह्म-विवाहमें दी जानेवाली (कन्या) । –दैत्य–वि० ब्रह्मराक्षस । –दोष–पु० ब्रह्महत्या । –द्रव–पु० गंगाजल । –द्रुम–पु० पलाश । –द्रोही(हिन्)–वि० ब्राह्मणद्रोही । –द्वार–पु० ब्रह्मरंध्र । –द्विट्(ष्),–द्वेषी(षिन्)–वि० ब्राह्मणद्वेषी; वेदनिंदक । –द्वेष–पु० ब्राह्मण या वेदके प्रति द्वेष । –नदी–स्त्री० सरस्वती नदी । –नाभ–पु० विष्णु । –निर्वाण–पु० ब्रह्म परमात्मामें लय होना, मोक्ष । –निष्ठ–वि० ब्रह्मचिंतनमें डूबा रहनेवाला । –पत्र–पु० पलाशपत्र । –पद–पु० ब्रह्मत्व, मुक्ति; ब्राह्मणका पद । –पन्नग–पु० एक मरुत् । –परिषद्–स्त्री० ब्राह्मणोंकी सभा । –पर्णी–स्त्री०, पृश्निपर्णी, पिठवन । –पवित्र–पु० कुश, दर्भ । –पादप–पु० पलाश । –पार–पु० ब्रह्मज्ञानका अंतिम लक्ष्य । –पारायण–पु० संपूर्ण वेदोंका अध्ययन; संपूर्ण वेद । –पाश–पु० ब्रह्मशक्तिसे परिचालित पाश । –पिता(तृ)–पु० विष्णु । –पिशाच–पु० ब्रह्मराक्षस । –पुत्र–पु० ब्रह्माका पुत्र (नारद, वसिष्ठ, मनु, मरीचि, सनकादि); एक नद जो मानसरोवरसे निकलकर वंगालकी खाड़ीमें गिरता है । –पुत्री–स्त्री० सरस्वती; सरस्वती नदी; वाराही कंद । –पुर–पु० ब्रह्मलोक; हृदय; शरीर । –पुराण–पु० १८ महापुराणोंमेंसे एक । –पुरी–स्त्री० वाराणसी; ब्रह्मलोक । –प्रकृतिक–वि० ब्रह्मसे उत्पन्न होनेवाला । –प्रलय–पु० ब्रह्माकी आयुकी समाप्तिपर होनेवाला प्रलय । –प्राप्त–वि० जिसे ब्रह्मकी प्राप्ति हो गयी हो । –फाँस–स्त्री० (हिं०) ब्रह्मपाश । –बंधु–पु० ब्राह्मणोचित कर्म न कर निंद्य कर्म करनेवाला ब्राह्मण, नामका ब्राह्मण । –वल–पु० तपस्या आदिसे प्राप्त शक्ति । –विंदु–पु० दे० 'ब्रह्मविंदु' । –वीज–पु० आम । –भट्ट–पु० एक जाति जो स्तुतिपाठ आदिका धंधा करती है, भाट । –भद्रा–स्त्री० त्रायमाणा लता । –भाग–पु० ब्रह्माको मिलनेवाला यज्ञद्रव्यका भाग; शहतूत । –भाव–पु० ब्रह्ममें लय होना । –भूत–वि० जो ब्रह्ममें लीन, ब्रह्मरूप हो गया हो । –भूति–स्त्री० संध्या । –भूमिजा–स्त्री० सिंहली । –भूय–पु० ब्रह्मभाव, शुद्ध चैतन्यस्वरूपकी प्राप्ति । –भोज–पु० वहुसंख्यक ब्राह्मणोंको भोजन कराना । –मंडूकी–स्त्री० मजीठ; मंडूकपर्णी; भारंगी । –मीमांसा–स्त्री० वेदांतदर्शन । –मुहूर्त–पु० दे० 'ब्राह्ममुहूर्त' । –मूर्धभृत्–पु० शिव । –मेखल–पु० मूंज । –मेध्या–स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक नदी । –यज्ञ,–याग–पु० वेद पढ़ना-पढ़ाना । –यष्टि–स्त्री० भारंगी । –युग–पु० ब्राह्मणोंका युग । –योग–पु० ब्रह्म-साक्षात्कारकी साधनभूत समाधि; ब्रह्मज्ञानकी साधना; एक ताल (संगीत) । –योनि–वि० ब्रह्मसे उत्पन्न । स्त्री० सरस्वती; गयामें स्थित एक तीर्थ । –रंध्र–पु० मस्तकके मध्यमें माना जानेवाला एक छेद जिससे होकर प्राण निकलनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्ति होना माना जाता है । –राक्षस–पु० प्रेतयोनि प्राप्त करनेवाला ब्राह्मण; शिवका एक गण । –रात–पु० शुकदेव; याज्ञवल्क्यके पिता । –रात्र–पु० ब्राह्ममुहूर्त । –राशि–पु० परशुराम । स्त्री० संपूर्ण वेद । –रीति–स्त्री० एक तरहका पीतल । –रूप–पु० विष्णु । –रूपक–पु० एक छंद । –रूपिणी–स्त्री० बाँदा । –रेखा,–लेखा–स्त्री० जीवके मस्तकपर ब्रह्मा द्वारा लिखित भाग्यलेख । –लिखित,–लेख–पु० भाग्यलेख । –लोक–पु० ब्रह्माका लोक । –लौकिक–वि० ब्रह्मलोकमें रहनेवाला । –वक्ता(क्तृ)–पु० वेदाध्यापक । –वद्य–पु० वेदपाठ । –वध–पु०,–वध्या–स्त्री० ब्रह्महत्या । –वर्चस–पु० वेदाध्ययन या ब्रह्मचर्यसे उत्पन्न तेज, ब्रह्मतेज । –वर्चसी(सिन्),–वर्चस्वी(स्विन्)–वि० ब्रह्म-तेजवाला । –वर्त–पु० दे० 'ब्रह्मावर्त' । –वर्धन–पु० ताँवा । –वल्ली–स्त्री० एक उपनिषद् । –वाद–पु० वेदपाठ; ब्रह्ममीमांसा, वेदांत । –वादिनी–स्त्री० गायत्री । –वादी(दिन्)–वि० वेद पढ़ने-पढ़ानेवाला; वेदांती । –विंदु–पु० वेदपाठ करते समय मुंहसे निकलनेवाला थूकका छींटा । –विद्–वि० ब्रह्मको जाननेवाला; वेदार्थज्ञाता । –विद्या–स्त्री० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मविद्या; दुर्गा । –विवर्धन–पु० विष्णु । –वृक्ष–पु० पलाश; गूलर । –वृत्ति–स्त्री० ब्राह्मणवृत्ति; अंतःकरणकी ब्रह्माकार वृत्ति । –वेत्ता(त्तृ)–वि० ब्रह्मविद्, ब्रह्मज्ञानी । –वेद–पु० ब्रह्मज्ञान; वेदांत; ब्राह्मणका वेद । –वेदी(दिन्)–वि० ब्रह्मविद् । –वैवर्त,–वैवर्तक–पु० ब्रह्मका विवर्त जगत्; अष्टादश महापुराणोंमेंसे एक । –शल्य–पु० ववूलका पेड़ । –शाप–पु० ब्राह्मणका शाप । –शासन–पु० वेदका अनुशासन, आज्ञा; ब्राह्मणकी आज्ञा । –शिरा(रस)–पु० एक अस्त्र जिसे द्रोणाचार्यने अर्जुन और अश्वत्थामाको चलाना सिखाया था । –सती–स्त्री० सरस्वती नदी । –सत्र–पु० वेद पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ । –सत्री–(त्रिन्)–वि० ब्रह्मयज्ञ करनेवाला । –सदन–पु० यज्ञमें ब्रह्माका आसन । –सभा–स्त्री० ब्रह्माकी सभा; ब्राह्मणोंकी सभा । –समाज–पु० दे० 'ब्राह्मसमाज' । –सर–पु० महाभारतमें वर्णित एक तीर्थ । सर्प–पु० एक तरहका साँप । –सायुज्य–पु० ब्रह्ममें पूर्ण तादात्म्य, एकरूपता । –सावर्णि–पु० दसवें मनु । –सुता–स्त्री० सरस्वती । –सुवर्चला–स्त्री० हुरहुर । –सू–पु० विष्णुकी एक मूर्ति; अनिरुद्ध; कामदेव । –सूत्र–पु० जनेऊ; व्यासकृत वेदांतसूत्र । –सूत्री(त्रिन्)–वि० जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो । –सृक्(ज्)–पु० शिव । –स्तंब–पु० जगत्, विश्व । –स्तेय–पु० गुरुकी अनुमतिके विना दूसरेको पढ़ाया हुआ पाठ सुनकर वेद पढ़नेवाला । –स्व–पु० ब्राह्मणका धन । –० हारी(रिन्)–वि० ब्राह्मणका धन चुरानेवाला । –हत्या–स्त्री० ब्राह्मणका वध जिसे मनुने महापातक वताया है । –हुत–पु० ब्राह्मणका आदर-सत्कार । –हृदय–पु० एक नक्षत्र ।

ब्रह्मण्य–वि० (सं०) ब्रह्म-संबंधी; ब्राह्मणनिष्ठ; धार्मिक; ब्राह्मणोंके योग्य । पु० ब्रह्मतेज; नारायण; कार्त्तिकेय; शनि ग्रह; शहतूत; मूंज; ताड़ ।

ब्रह्मत्व–पु० (सं०) ब्रह्मभाव; ब्राह्मणत्व; ब्रह्मा, ऋत्विक्का भाव ।

ब्रह्मर्षि–पु० (सं०) वसिष्ठ आदि मंत्रद्रष्टा ऋषि; ब्राह्मण ऋषि । –देश–पु० आर्यावर्तका वह भाग जिसके अन्दर कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और शूरसेनक देश आते हैं ।

ब्रह्मांड–पु० (सं०) अंडाकार भुवनकोष जिससे मनुस्मृति आदिके अनुसार, पितामह ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई, विश्वगोलक, संपूर्ण विश्व; खोपड़ी । –किरण–स्त्री० (कॉस्मिक रेज़) अन्तरिक्षसे आनेवाली रेडियो सक्रिय किरणें जो पृथ्वीके वायुमण्डल तथा समस्त जीवों और निर्जीव वस्तुओंको प्रभावित करती हैं । –धूलि–स्त्री० रेडियो सक्रिय कण जो सारे अन्तरिक्षमें फैले 'कॉस्मिक डस्ट' हैं । –पुराण–पु० १८ महापुराणोंमेंसे एक । –विज्ञान–पु० (कॉस्मोलॉजी) विज्ञान की वह शाखा जिसमें समस्त ब्रह्माण्डकी संरचना, उसके पिण्डों की गति आदिका अध्ययन किया जाता है । –शास्त्र–पु० अन्तरिक्ष की उत्पत्ति, स्वरूप तथा इतिहास संबंधी विद्या (कॉस्मोलोजी) ।

ब्रह्मांभ(स्)–पु० (सं०) गोमूत्र ।

ब्रह्मा(मन्)–पु० (सं०) हिंदूधर्ममें माने हुए त्रिदेवमेंसे प्रथम जिसे सृष्टि-रचनाका काम सौंपा गया है, विरंचि, चतुरानन ।

ब्रह्माक्षर–पु० (सं०) ॐ ।

ब्रह्माग्रभू, ब्रह्मात्मभू–पु० (सं०) घोड़ा ।

ब्रह्माणी–स्त्री० (सं०) ब्रह्माकी शक्ति; ब्रह्माकी पत्नी; सरस्वती; रेणुका (गंधद्रव्य); एक तरहका पीपल; दुर्गा; एक नदी ।

ब्रह्मादनी–स्त्री० (सं०) एक पौधा, हंसपदी ।

ब्रह्मानंद–पु० (सं०) ब्रह्मस्वरूपके साक्षात्कारका आनंद ।

ब्रह्माभ्यास–पु० (सं०) वेदाध्ययन ।

ब्रह्मारण्य–पु० (सं०) एक वन; वेदपाठ-भूमि ।

ब्रह्मार्पण–पु० (सं०) परमात्माको सर्वकर्मफलका समर्पण ।

ब्रह्मावर्त–पु० (सं०) सरस्वती और दृषद्वती नदियोंके बीचका देश ।

ब्रह्मासन–पु० (सं०) ब्रह्मके ध्यानके उपयुक्त माना जानेवाला एक आसन ।

ब्रह्मास्त्र–पु० (सं०) ब्रह्मशक्तिसे परिचालित अमोघ माना जानेवाला एक अस्त्र ।

ब्रह्मिष्ठ–वि० (सं०) वेदोंका पूर्ण पंडित ।

ब्रह्मिष्ठा–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

ब्रह्मी–स्त्री० (सं०) दे० 'ब्राह्मी' ।

ब्रह्मीभूत–वि० जो ब्रह्म बन गया हो या ब्रह्ममें लीन हो गया हो।

ब्रह्मेशय–पु० (सं०) कार्त्तिकेय; विष्णु।

ब्रह्मोपदेश–पु० (सं०) वेद या ब्रह्मज्ञानकी शिक्षा।

ब्रह्मोपनेता(तृ)–पु० (सं०) पलाश।

ब्रांडी–स्त्री० (अं०) एक विलायती शराब।

ब्रात*–पु० दे० 'व्रात्य'।

ब्राह्म–वि० (सं०) ब्रह्म-संबंधी; ब्रह्मा-संबंधी; ब्राह्मण-संबंधी; वैदिक; जिसके अधिष्ठाता ब्रह्मा हों (—मुहूर्त)। पु० स्मृत्युक्त आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक जिसमें कन्या वस्त्राभूषण सहित वरको, उससे कुछ लिये बिना, दान की जाती है, कन्यादान-विवाह; नारद; एक महापुराण; रोहिणी नक्षत्र; हथेलीका अंगुष्ठमूलके नीचेका भाग; ब्राह्मधर्मका अनुयायी (आ०)। –अहोरात्र–पु० ब्रह्माका दिन और रात। –धर्म–पु० राजा राममोहनरायका चलाया हुआ एकेश्वरवादी धर्म। –पिंगा–स्त्री० चाँदी। –पुराण–पु० ब्रह्मपुराण। –मंदिर–पु० ब्राह्मसमाजका उपासना-गृह। –मुहूर्त–पु० रातके पिछले पहरके अंतिम दो दंड। –विवाह–पु० कन्यादान-विवाह। –समाज–पु० राजा राममोहनरायका चलाया हुआ एकेश्वरवादी पंथ; ब्राह्ममंदिर। –समाजी–पु० ब्राह्मसमाजका अनुयायी।

ब्राह्मण–पु० (सं०) हिंदू धर्मके माने हुए चार वर्णों या लोक-विभागोंमेंसे पहला; उस वर्णका जन, अग्रजन्मा; पुरोहित; वेदका मंत्र या संहितासे भिन्न विभाग; ब्रह्माका सोमपात्र; अग्नि। वि० ब्रह्मज्ञानी; ब्राह्मण-संबंधी; ब्राह्मणोचित। –काम्या–स्त्री० ब्राह्मणोंके लिए प्रेम। –घ्न–वि० ब्राह्मणकी हत्या करनेवाला। –चांडाल–पु० शास्त्र-निषिद्ध कर्म करनेवाला, हीन ब्राह्मण; ब्राह्मण स्त्री और शूद्र पितासे उत्पन्न जन। –तर्पण–पु० ब्राह्मणको खिला-पिलाकर संतुष्ट करना। –द्रव्य–पु० ब्राह्मणका धन। –द्वेषी(षिन्)–वि० ब्राह्मणसे द्वेष करनेवाला। –प्रिय–पु० विष्णु। –ब्रुव–पु० ब्राह्मणके कर्म, संस्कारसे हीन, केवल जातिसे अपनेको ब्राह्मण कहनेवाला। –भोजन–पु० अनेक ब्राह्मणोंको एक साथ निमंत्रित कर खिलाना। –यष्टि,–यष्टिका,–यष्टी–स्त्री० ब्राह्मणका डंडा; भारंगी। –वध–पु० ब्राह्मणकी हत्या। –संतर्पण–पु० ब्राह्मणको खिलाना, तृप्त करना। –स्व–पु० ब्राह्मणका धन। –हित–वि० ब्राह्मणके लिए उपयुक्त।

ब्राह्मणक–पु० (सं०) ब्राह्मणके कर्म न करनेवाला, हीन ब्राह्मण; ऐसा ब्राह्मणकुल।

ब्राह्मणत्व–पु० (सं०) ब्राह्मणपन या ब्राह्मणका पद, भाव, धर्म।

ब्राह्मणाच्छंसी(सिन्)–पु० (सं०) सोमपानमें ब्राह्मणका सहकारी।

ब्राह्मणातिक्रम–पु० (सं०) ब्राह्मणका अनादर।

ब्राह्मणायन–पु० (सं०) विद्वान् और अशुद्ध ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न ब्राह्मण।

ब्राह्मणिक–वि० (सं०) ब्राह्मण-संबंधी।

ब्राह्मणी–स्त्री० (सं०) ब्राह्मणकी पत्नी; ब्राह्मण स्त्री; बुद्धि; छिपकलीकी जातिका एक छोटा जंतु, बभनी; एक तरहकी भिड़; एक तरहका पीतल।

ब्राह्मणेष्ट–पु० (सं०) शहतूतका पेड़।

ब्राह्मण्य–पु० (सं०) ब्राह्मणका धर्म, ब्राह्मणत्व; ब्राह्मणोंका समूह; शनि ग्रह। वि० ब्राह्मणके योग्य, अनुरूप।

ब्राह्मराति–पु० (सं०) याज्ञवल्क्य।

ब्राह्मी–स्त्री० (सं०) ब्रह्माकी शक्ति; सरस्वती, वाणी; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र; ब्राह्मविधिसे विवाहिता स्त्री; वह प्राचीन लिपि जिससे देवनागरी और अन्य आधुनिक भारतीय लिपियोंकी उत्पत्ति हुई; एक प्रसिद्ध बूटी जो आयुर्वेदमें बुद्धिवर्द्धक मानी गयी है। –कंद–पु० वाराही कंद। –गायत्री–स्त्री० एक वैदिक छंद।

ब्राह्म्य–वि० (सं०) दे० 'ब्राह्म'।

ब्रिगेड–पु० (सं०) सेनाका एक विभाग।

ब्रिगेडियर–पु० (अं०) ब्रिगेडका नायक। –जनरल–पु० ब्रिग्रेडियर।

ब्रिज–पु० ताशका एक खेल; पुल।

ब्रिटिश–वि० (अं०) ब्रिटेनका, अंग्रेजी। –राज–पु० अंग्रेजी हुकूमत। –द्वीप–पु० इंगलैंड, वेल्स और स्काटलैंड, ग्रेट ब्रिटेन।

ब्रिटेन–पु० (अं०) इंगलैंड, वेल्स और स्काटलैंड।

ब्रीड़–पु०, **ब्रीड़ा**–स्त्री० दे० 'व्रीड'।

ब्रीड़ना*–अ० क्रि० लज्जित होना।

ब्रीवियर–पु० (अं०) छापेके अक्षरों (टाइप)का एक भेद।

ब्रीहि–पु० दे० 'व्रीहि'।

ब्रुव, ब्रुवाण–वि० (सं०) अपने आपको कहनेवाला, होनेका दावा करनेवाला (ब्राह्मणब्रुव, क्षत्रियब्रुव)।

ब्रेक–पु० (अं०) पहिये या गतिचक्रकी गतिको रोकनेवाला यंत्र; दे० 'ब्रेकवान'। –वान–पु० रेलवे गार्डका डब्बा जिसमें ब्रेक लगा होता है। मु० –लगाना–गाड़ी आदि रोकनेके लिए ब्रेकको दबाना।

ब्रूहि–कहो, बोलो, उच्चारण करो।

ब्लाउज़–पु० (अं०) विलायती ढंगकी जनाना कुरती। –पीस–पु० साड़ीके साथ बना हुआ कुरतीका कपड़ा।

ब्लाक–पु० (अं०) चित्र, लिखावट, कंपोज किये हुए मैटर आदिका ताँबे, जस्ते आदिपर बना हुआ ठप्पा; गैरआबाद जगहमें बसनेवालेको राज्यकी ओरसे दिया जानेवाला जमीनका टुकड़ा; भूमिखंड; गृहसमूह; किसी बड़े मकानका वह खंड जो अपने आपमें पूर्ण हो।

ब्लेड–पु० (अं०) इस्पातका चौकोर पतला पत्तर या टुकड़ा जिससे दाढ़ी बनानेका काम लिया जाता है, पत्ती।

ब्लेष्क–पु० (सं०) जाल, फंदा।

भ

भ–देवनागरी वर्णमालामें पवर्गका चौथा वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ।

भँइस†–स्त्री० भैंस।

भँइसा†–पु० भैंसा।

भंकार–पु० भीषण शब्द; भनभनाहट।

भंकारी–स्त्री० (सं०) डाँस; फनगा।

भंक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) तोड़ने, भंग करनेवाला।

भंक्ति–स्त्री० (सं०) टूटने, खंडित होनेका भाव।

भंग–पु० (सं०) टूटना, खंडित होना; खंड, विघटन; ध्वंस, नाश (राज्यभंग; सत्त्वभंग); पराजय; संकोच; लहर; झुकाव; अस्वीकार; ग्रास; टेढ़ापन; छल; कुटिलता; बाधा; भय; सोता; लकवा। –नय–पु० विघ्न-बाधाओंको दूर करना। –वासा–स्त्री० हलदी। –सार्थ–वि० कुटिल, छली।

भंग–स्त्री० भाँग। –घुटना–पु० भाँग घोटनेका सोंटा। –फ़रोश–पु० भाँग बेचनेवाला।

भंगड़–वि० बहुत भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी। –ख़ाना–पु० भाँग छाननेका स्थान।

भंगड़ा–पु० दे० 'भाँगड़ा'।

भंगड़ी–वि० दे० 'भँगेड़ी'।

भंगना*–अ० क्रि० टूटना; पराजित होना। स० क्रि० तोड़ना; नष्ट करना।

भँगरा–पु० एक बूटी, भँगरैया; दे० 'भँगेरा'।

भँगराज–पु० एक चिड़िया; भँगरा।

भँगरैया–स्त्री० भृंगराज।

भंगा–स्त्री० (सं०) भाँग। –कट–पु० भाँगका पराग। –स्वन–पु० महाभारतोक्त एक राजर्षि।

भंगान–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

भँगार–पु० दे० 'भगाड़'। स्त्री० कूड़ा-करकट, कतवार–'बाहर भेप बनाइया भीतर भरी भँगार'–साखी।

भंगारी–स्त्री० (सं०) दे० 'भंकारी'।

भंगि–स्त्री० (सं०) टेढ़ापन, कुटिलता; लहर; विच्छेद; ढंग; वेश-विन्यास; बहाना; छल; व्यंग्य; विनय।

भंगिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वक्रता, कुटिलता ।

भंगी–पु० मैले, कूड़ा-करकटकी सफाई करनेवाली एक जाति; उस जातिका व्यक्ति । वि० भाँग छाननेवाला । स्त्री० (सं०) दे० 'भंगि' ।

भंगी(गिन्)–वि० (सं०) भंग हो जानेवाला, नाशवान्; * भंग करनेवाला ।

भंगील–पु० (सं०) ज्ञानेंद्रिय संबंधी दोष ।

भंगुर–वि० (सं०) भंग होनेवाला; (ब्रिटिल, ऐसे पदार्थ) जो हथौड़ीकी चोट देनेपर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं, (काँच आदि) । अधिक दिन न टिकनेवाला; टेढ़ा, कुटिल; छली, बेईमान । पु० नदीका मोड़ ।

भंगुरा–स्त्री० (सं०) अतिविषा; प्रियंगु ।

भँगेड़ी–वि० भाँग पीनेका आदी, वहुत भाँग पीनेवाला ।

भँगेरा, भँगेला–पु० भाँगके रेशेका वना हुआ कपड़ा ।

भंग्य–पु० (सं०) भाँगका खेत । वि० भंग करने, तोड़ने योग्य ।

भंजक–वि०, पु० (सं०) भंग करनेवाला, तोड़नेवाला ।

भंजन–पु० (सं०) भंग करना, तोड़ना; ध्वंस, नाश करना; दंतक्षय। वि० भंग करनेवाला; पीड़ा देनेवाला; (तैलश)-(क्रैकिंग) खनिज तैलका उच्च ताप द्वारा अपघटन, भंजन द्वारा उच्च क्वथनांकके खनिज तैलका अपघटन करके अपेक्षाकृत छोटे अणुवाले अधिक वाष्पशील तैल प्राप्त करते हैं जो मोटरकार या वायुयानके इंजिनोंमें प्र युक्त किये जा सकते हैं । **–शील**–वि० (ब्रिटिल) (ठोस) जो गिर जानेपर या पीटे जानेपर टूट जाय, टुकड़े-टुकड़े हो जाय; भंगुर ।

भंजनक–पु० (सं०) टूटना, बिखरना; नाश; पीड़ा; वाधा डालना। * स० क्रि० तोड़ना ।

भँजना–अ० क्रि० भँजाया जाना; नोट या वड़े सिक्केका छोटे सिक्कोंमें वदला जाना; भाँजा जाना; वटा जाना ।

भंजा–स्त्री० (सं०) अन्नपूर्णा ।

भँजाई–स्त्री० भाँजनेकी क्रिया या उजरत; नोट आदि भुनानेके लिए दी जानेवाली रकम ।

भँजाना|–स० क्रि० तुड़वाना; भुनाना (सिक्केका); भँजवाना (रस्सी आदिका) ।

भंजी(जिन्)–वि० (स०) तोड़नेवाला, नष्ट करनेवाला ।

भंटा|–पु० बैगन ।

भंटाकी–स्त्री० (स०) भटा ।

भंटुक, भंटूक–पु० (सं०) श्योनाक वृक्ष ।

भंड–पु० पात्र, वरतन; 'भंडा'का समासगत रूप । **–फोड़**–पु० मिट्टीके वरतनोंको पटककर तोड़ देना या उनका तोड़ा जाना; भंडाफोड़ ।

भंड–पु० (सं०) भाँड़, अश्लील वातें वकनेवाला । वि० अश्लील वातें कहनेवाला निर्लज्ज; पाखंडी । **–तपस्वी(स्विन्)**–पु० वना हुआ तपस्वी, साधु । **–हासिनी**–स्त्री० वेश्या ।

भंडक–पु० (सं०) खँड़रिच पक्षी ।

भँड़ताल, भँड़तिल्ला–पु० नाचके साथ होनेवाला एक तरहका गाना ।

भंडन–पु० (सं०) कवच; युद्ध; हानि, वुराई ।

भंडना–स० क्रि० दे० 'भाँड़ना' ।

भँड़भाँड़–पु० दे० 'भड़भाँड़' ।

भंडरिया–स्त्री० दीवारमें वनी हुई छोटी अलमारी ।

भँडरिया–पु० दे० 'भड्डर' । वि० पाखंडी; धूर्त । **–पन**–पु० धूर्तता, पाखंड ।

भँड़सार|–स्त्री० दे० 'भँड़साल' ।

भँड़साल–स्त्री० खत्ती ।

भंडा–पु० भाँड़ा, वरतन; रहस्य । **–फोड़**–पु० भेद, छिपी वातका प्रकट हो जाना । मु० **–फूटना**–भेद खुलना ।

भंडाकी–स्त्री० (सं०) दे० 'भंटाकी' ।

भँड़ाना*–स० क्रि० चीजोंको तोड़ना-फोड़ना; उछल-कूद मचाना; ढूँढ़ना ।

भंडार–पु० ढेर, खजाना; वह स्थान जहाँ घरका अन्नादि रखा जाय, कोठार; पाकशाला; पेट; पुरइन; अग्निकोण ।

भंडारा–पु० साधुओंका भोज; पेट; भंडार; * समूह । मु० **–खुल जाना**–पेट फटकर आँतोंका वाहर निकल आना ।

भंडारी–पु० भंडारका अध्यक्ष, तोशाखानेका दारोगा; रसोइया; * खजांची । स्त्री० दीवारमें वनी छोटी अलमारी; छोटी कोठरी; * कोष, खजाना ।

भंडि–स्त्री० (सं०) लहर । पु० सिरिसका पेड़ ।

भंडित–पु० (सं०) एक ऋषि जिनसे भांडित्यायन नामका गोत्र चला । वि० तिरस्कृत ।

भंडिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) छल, धोखा ।

भंडिर–पु० (सं०) सिरिसका पेड़ ।

भंडिल–पु० (सं०) भाग्य; कुशल; संदेश-वाहक; शिल्पी; सिरिसका पेड़ ।

भँडिसरा–पु० भँडसार; दीवारके कोनेमें मिट्टीकी वनी भंडरिया ।

भँड़िहा*–पु० चोर ।

भंडी–स्त्री० (सं०) मंजिष्ठा; सिरिसका पेड़ ।

भंडीतकी–स्त्री० (सं०) दे० 'भंडी' ।

भंडीर–पु० (सं०) चौलाई; सिरिसका पेड़; वटवृक्ष । **–लतिका** –स्त्री० मँजीठ ।

भंडीरी–स्त्री० (सं०) मंजिष्ठा ।

भंडील–पु० (सं०) मंजिष्ठा ।

भँड़ुआ–पु० दे० 'भड़ुआ' ।

भंडुक, भंडूक–पु० (सं०) भाकुर मछली; श्योनाक वृक्ष ।

भँड़ेरी–स्त्री० भँडार घर ।

भँड़ेरिया*–पु० दे० 'भँड़रिया' ।

भँडेहर–स्त्री० मिट्टीके छोटे छोटे वरतनोंका एकके ऊपर एक रखा हुआ थाक; भद्दे ढंगसे सजायी हुई चीज (ला०) ।

भँड़ैती–स्त्री० भाँड़ोंका पेशा; हेय वातचीत या हास-परिहास ।

भँड़ौआ–पु० हास्यरसकी भद्दी कविता; भाँड़ोंके गानेका गीत ।

भंदिल–पु० (सं०) भाग्य; संदेश-वाहक; लड़खड़ाते हुए चलना ।

भंबूरी|–स्त्री० वबूलकी जातिका एक पेड़ ।

भंभ–पु० (सं०) चूल्हेका मुँह; धुआँ; मक्षिका ।

भँभरना–अ० क्रि० डरना ।

भंभरालिका–स्त्री० (सं०) मच्छड़ ।

भंभराली–स्त्री० (सं०) मच्छड़ ।

भंभा–पु० वड़ा विल या छेद । स्त्री० (सं०) डुग्गी ।

भँभाना–अ० क्रि० गाय, वैल आदिका जोरसे वोलना, रँभाना ।

भंभारव–पु० (सं०) गाय आदिके रँभानेका शब्द ।

भँभीरी–स्त्री० एक तरहका फतिंगा; फिरैरी, फिरकी ।

भँभूरा–पु० ववंडर, वगूला ।

भँभेरि*–स्त्री० भय, डर ।

भँभोड़ना–पु० नोंचना, खसोटना, काटना, क्षत-विक्षत करना ।

भँमर, भँभरा|–पु० वड़ी मधुमक्खी; भिड़ ।

भँवना*–अ० क्रि० भ्रमण करना, घूमना; चक्कर लगाना, मँडराना।

भँवर–पु० भ्रमर; जलावर्त; गड्ढा । **–कली**–स्त्री० कीलमें जड़ी हुई वह कड़ी जो सब ओर घूम सके (यह प्रायः पशुओंके गलेकी जंजीरमें लगायी जाती है) । **–जाल**–पु० सांसारिक झंझट । **–धारा**–स्त्री० (एड्डी करेन्ट) किसी धातुकी सतहके निकटका चुम्बकीय क्षेत्र जव वदलता है तो उस क्षण धातुकी सतहपर विद्युत प्रेरणके कारण विद्युतधारा प्रवाहित होती है । इसे भँवरधारा कहते हैं । **–भीख**–स्त्री० घूम-फिरकर माँगी जानेवाली भीख, मधुकरी । मु० **–में पड़ना**–चक्कर, वखेड़ेमें पड़ना, घवड़ा जाना।

भँवरा–पु० भ्रमर, भौंरा; लट्टू ।

भँवरी–स्त्री० जलका चक्कर, भँवर; सिर, डाढ़ी तथा पशुओंकी पीठ आदिपर वालोंका एक केंद्रपर घुमाव; भाँवर, परिक्रमा; गश्त; घूम-घूमकर सौदा वेचना ।

भँवाना*–स० क्रि० घुमाना; फेरमें डालना, भ्रममें डालना ।

भँवारा*–वि० घूमनेवाला, भ्रमणशील ।

भँवैया–पु० घुमाने, चक्कर करानेवाला ।

भ–पु० (सं०) नक्षत्र; ग्रह; शुक्राचार्य; राशि; शुक्र; पहाड़; भ्रांति; भगण; भ्रमर । **–कक्षा**–स्त्री० नक्षत्रोंका गमनमार्ग ।

–कूट–पु० राशियोंका समूह जिससे विवाहकी गणनामें वर-कन्याका शुभाशुभ जाना जाता है । **–गण**–पु० छंदःशास्त्रमें माना हुआ एक गण जिसमें आदिवर्ण गुरु और अंतके दो लघु होते हैं; राशिचक्र; ग्रहका राशिचक्रमें परिभ्रमण । **–गोल**–पु० नक्षत्रोंका गमनमार्ग । **–चक्र**–पु० राशिचक्र; नक्षत्रचक्र । **–पंजर**–पु० आकाश । **–मंडल,–वर्ग**–पु० दे० 'भचक्र' । **–लता**–स्त्री० राजवला लता । **–संधि**–स्त्री० नक्षत्रोंका एक योग । **–समूह**–पु० नक्षत्र-समूह । **–सूचक**–पु० ज्योतिषी ।

भइया–पु० भाई; बड़े भाई या वरावरवालेका संवोधन । **–जी**–पु० नौकर मालिकके सामने उसके वेटे या नवयुवक मालिकको इस शव्दसे संवोधित करते हैं ।

भई–अव्य० भाईका लघु रूप जो संवोधनके ढंगपर प्रयुक्त होता है (सुनो भई । भई, क्या वात है) ।

भउजाई†–स्त्री० दे० 'भौजाई' ।

भक–स्त्री० आगके एकवारगी तेज जलनेसे होनेवाला शव्द; तत्काल भस्म होना ।

भक-भक–स्त्री० रह-रहकर होनेवाली चमक; रह-रहकर वेगसे निकलनेवाले धुएँका शव्द । अ० रह-रहकर होनेवाली चमक या धुएँके निकलनेके शव्दके साथ ।

भकभकाना–अ० क्रि० 'भक-भक' शव्द करके जलना या रह-रहकर चमकना ।

भकभूर*–वि० उजड्ड, मूढ़–'प्रेम-पीर-कथा कहै कहा भकभूर सों' –घन० ।

भकराँध†–स्त्री० अनाजके सड़नेकी गंध ।

भकसना, भकसाना†–अ० क्रि० खाद्य पदार्थका अधिक समयतक पड़े रहनेके कारण खट्टा और वदवूदार हो जाना ।

भकाऊँ–पु० डरावनी चीज, हौआ (वच्चोंको डरानेके लिए कहा जाता है) ।

भकुआ, भकुवा–वि० मूढ, हतवुद्धि, जिसकी अक्ल गुम़ हो गयी हो ।

भकुआना, भकुवाना–अ० क्रि० भकुआ वनना । स० क्रि० चकपका देना ।

भकुड़ा†–पु० तोपमें वत्ती भरनेका गज ।

भकुरना†–अ० क्रि० नाराज होना, रूठना, क्षुब्ध होकर मुँह डाल लेना–'निन्नीने मनाया, अरी ठहर भी, यों ही भकुरने लगी'–मृग० ।

भकोसना–स० क्रि० भक्षण करना; जल्दी-जल्दी खाना, ठूँसना ।

भकोसू–वि० भकोसनेवाला ।

भक्किका–स्त्री० (सं०) झींगुर ।

भक्कुड–पु० (सं०) एक तरहकी मछली ।

भक्त–वि० (सं०) अनुरागी, वफादार; अनुगत; भक्तियुक्त; विभाजित; चाहा हुआ; पूजित; पकाया हुआ । पु० भोजन; अन्न, भात; भाग; उपासक, सेवक । **–कंस,–पात्र**–पु० भातकी थाली । **–कर**–पु० एक तरहका धूप । **–कार**–पु० रसोइया । **–गृह**–पु० बौद्ध भिक्षुओंकी भोजनशाला । **–च्छंद**–पु० भोजनकी इच्छा, भूख । **–जा**–स्त्री० अमृत । **–तूर्य**–पु० भोजनके समय वजाया जानेवाला एक प्राचीन वाद्य । **–दाता(तृ)–दायक,–दायी–(यिन्)**–वि०, पु० भरण-पोषण करनेवाला । **–दास**–पु० वह दास जिसे श्रमके वदलेमें मालिकसे केवल भोजन मिलता रहे । **–द्वेष**–पु० मंदाग्नि । **–पुलाक**–पु० भातका कौर; माँड़ (?) । **–वच्छल***–वि० दे० 'भक्तवत्सल' । **–मंड,–मंडक**–पु० भातका माँड़ । **–वत्सल**–वि० भक्तको प्यार करनेवाला, भक्तके प्रति स्नेहयुक्त । **–शरण**–पु०,**–शाला**–स्त्री० भोजनशाला; धर्मोपदेशका स्थान । **–सिक्थ**–पु० दे० 'भक्तमंड' ।

भक्तता–पु० भक्ति ।

भक्तत्व–पु० भक्त होनेका भाव, विभाजित होनेका भाव ।

भक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) पूजक, आराधक ।

भक्ताई*–स्त्री० भक्ति ।

भक्ताकांक्षा–स्त्री० (सं०) खानेकी इच्छा, भूख ।

भक्ति–स्त्री० (स०) सेवा, आराधना; ईश्वर या पूज्य व्यक्तिके प्रति अत्यनुराग; श्रद्धा; विभाग (जैसे, क्षेत्रभक्ति); विभागरेखा; रोगप्रवृत्ति; एक वृत्त । **–गम्य**–वि० सेवासे प्राप्य (शिव) । **–च्छेद**–पु० रेखाओं द्वारा की जानेवाली चित्रकारी; वैष्णवके चिह्न (तिलक, मुद्रा आदि) । **–पूर्वक**–अ० भक्तिसहित । **–प्रवण**–वि० भक्तिमें लीन । **–भाजन**–वि० भक्तिके योग्य, श्रद्धेय । **–मार्ग**–पु० मोक्षप्राप्तिके तीन मार्गोंमेंसे एक । **–योग**–पु० भक्ति-रूप योग, भक्तिके द्वारा भगवान्‌को पानेकी साधना । **–रस**–पु० ईश्वरके प्रति उत्कट अनुराग, रति । **–ल**–वि० वफादार, विश्वासी (घोड़ा, नौकर) । **–सूत्र**–पु० शांडिल्यकृत भक्तिप्रतिपादक सूत्र-ग्रंथ ।

भक्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) भक्तियुक्त । (स्त्री० 'भक्तिमती' ।)

भक्ती*–स्त्री० दे० 'भक्ति' ।

भक्तोपसाधक–पु० (सं०) रसोइया, पाचक ।

भक्ष–पु० (सं०) भोजन; खाना, भक्षण । **–कार**–पु० हलवाई; रसोइया । **–पत्रा**–स्त्री० पानकी वेल ।

भक्षक–वि० (सं०) खानेवाला, भक्षण करनेवाला; पेटू । पु० आहार ।

भक्षटक–पु० (सं०) छोटा गोखरू ।

भक्षण–पु० (सं०) खाना; दाँतोंसे काटकर खाना । वि० खानेवाला ।

भक्षणीय–वि० (सं०) भक्षण करने योग्य ।

भक्षना*–स० क्रि० भक्ष ण करना, खाना ।

भक्षयिता(तृ)–वि० पु० (सं०) भक्षण करनेवाला ।

भक्षिका–स्त्री० (सं०) आहार; खाना (समासांतमें) ।

भक्षित–वि० (सं०) खाया हुआ । पु० आहार । **–शेष**–पु० जूठन ।

भक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) खानेवाला ।

भक्ष्य–वि० (सं०) खाने-योग्य । पु० वह जो खाया जाय; आहार, भोजन । **–कार**–पु० रसोइया, पाचक । **–वस्तु**–स्त्री० खानेकी चीज ।

भक्ष्याभक्ष्य–वि० (सं०) खाद्य-अखाद्य (पदार्थ) ।

भख*–पु० भक्ष्य, आहार ।

भखना*–स० क्रि० खाना, भक्षण करना ।

भखी†–स्त्री० एक घास ।

भगंदर–पु० (सं०) गुदावर्तके किनारे होनेवाला फोड़ा जो फूटनेपर नासूर हो जाता है ।

भग–पु० (सं०) सूर्य; शिवका एक रूप; चंद्रमा; द्वादश आदित्यों-मेंसे एक, ईश्वरकी ६ विभूतियाँ–ऐश्वर्य (अणिमादि), वीर्य, यश, श्री (सौभाग्य), ज्ञान और वैराग्य; सौभाग्य; माहात्म्य; इच्छा; कांति; मोक्ष; धर्म; योनि; गुदा और अंडकोषके बीचका स्थान; उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र; धन; यत्न । **–काम**–वि० संभोगका इच्छुक । **–घ्न**–पु० शिव । **–दत्त**–पु० प्राग्ज्योतिषपुरका एक राजा जो कुरुक्षेत्रके युद्धमें पांडवोंसे लड़कर मरा था । **–दारण**–पु० एक रोग । **–देव**–वि० कामी । **–दैवत**–पु० उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र । **–नंदन**–पु० विष्णु । **–नासा**–स्त्री० भगोष्ठोंके ऊपरके संधिस्थानके पासका एक भाग । **–नेत्रघ्न**–पु० शिव । **–भक्षक**–पु० भँड़ुआ, कुटना । **–शास्त्र**–पु० कामशास्त्र । **–हा(हन्),–हारी(रिन्)**–पु० शिव; विष्णु । **–शिश्निका**–स्त्री० दे० 'भगनासा' ।

भगई,† **भगही**–स्त्री० कमरमें लपेटकर पहनी जानेवाली चिट, लँगोटी ।

भगत–वि० भक्त, भगवद्‌भजनमें लगा रहनेवाला; निरामिषभोजी । (स्त्री० 'भगतिन' ।) पु० वैष्णव साधु; राजपूतानाकी एक जाति, भगतिया; होलीमें बनाया जानेवाला एक तरहका स्वाँग । **–वछल***–वि० दे० 'भक्तवत्सल' । **–वाज**–पु० लौंडे नचानेवाला ।

भगति, भगती*–स्त्री० दे० 'भक्ति' ।

भगतिया–पु० राजपूतानामें वसनेवाली एक जाति जो गाने-वजानेका पेशा करती है ।

भगदड़, भगदर–स्त्री० वहुत-से लोगोंका वदहवास होकर एक साथ भागना (पड़ना-मचना) ।

भगन*–वि० दे० 'भग्न' ।

भगना–पु० भानजा । अ० क्रि० दे० 'भागना' ।

भगनी–स्त्री० दे० 'भगिनी'।

भगर*–पु० दे० 'भगल'।

भगरड़ी*–पु० भंग।

भगरना–अ० क्रि० खत्तेमें रखे हुए अनाजका गरमीसे सड़ने लगना।

भगल*–पु० छल, धोखेबाजी; बाजीगरी।

भगलिया–पु० धोखधड़ी करनेवाला, पाखंडी, कपटी।

भगली–वि० छली; बाजीगरी करनेवाला।

भगवंत*–वि० दे० 'भगवान्'।

भगवती–स्त्री० (सं०) दुर्गा; लक्ष्मी; देवी; सम्मान्य स्त्री।

भगवत्पदी–स्त्री० (सं०) गंगा।

भगवदीय–पु० (सं०) भगवद्भक्त।

भगवद्–'भगवत्' (भगवान्)का समासगत रूप। **–गीता**–स्त्री० कुरुक्षेत्रके मैदानमें कृष्ण द्वारा अर्जुनको दिया गया ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग-विषयक उपदेश। **–द्रुम**–पु० महाबोधि वृक्ष। **–भक्त**–वि०, पु० भगवान्‌का भक्त, वैष्णव। **–भक्ति**–स्त्री० भगवान्‌की भक्ति। **–विग्रह**–पु० भगवान्‌की मूर्ति।

भगवन्मय–वि० (सं०) भगवान्‌में तन्मय।

भगवा–पु० एक रंग, काषाय; इस रंगमें रँगा हुआ वस्त्र।

भगवान्(वत्)–वि० (सं०) ऐश्वर्यादि षड्भगयुक्त; पूज्य। पु० परमेश्वर; विष्णु; शिव; बुद्ध; जिन; पूज्य, महिमाशाली पुरुष।

भगांकुर–पु० (सं०) बवासीर।

भगाई*–स्त्री० भागनेकी क्रिया।

भगाड़–पु० वर्षाके कारण जमीन धँसनेसे हो जानेवाला गड्ढा; वह गड्ढा जो कुआँ बैठ जानेके बाद हो जाता है।

भगाना–स० क्रि० डरा-धमकाकर भागनेको विवश करना, खदेड़ना, दुतकारना; स्त्री, बच्चे आदिको बहकाकर साथ ले जाना। * अ० क्रि० भागना।

भगाल–पु० (सं०) मनुष्यकी खोपड़ी।

भगाली(लिन्)–पु० (सं०) मनुष्यकी खोपड़ी धारण करनेवाला, शिव।

भगिनिका–स्त्री० (सं०) बहिन।

भगिनी–स्त्री० (सं०) बहिन, सहोदरा; भाग्यवती स्त्री। **–पति**, **–भर्ता(र्तृ)**–पु० बहनोई। **–सुत**–पु० भांजा।

भगिनीय–पु० (सं०) भांजा।

भगीरथ–पु० (सं०) सूर्यवंशी राजा दिलीपके पुत्र जो कहा जाता है कि घोर तप करके गंगाको स्वर्गसे पृथ्वीपर लाये। **–कन्या**–स्त्री० गंगा। **–प्रयत्न**–पु० महाप्रयास, असाधारण प्रयत्न। **–सुता**–स्त्री० गंगा।

भगेड़ू, भगेलू–वि० दे० 'भगोड़ा'।

भगेश–पु० (सं०) ऐश्वर्यका देवता।

भगोड़ा–वि० भागा हुआ; रणभूमिसे भागनेवाला, डरपोक।

भगोष्ठ–पु० (सं०) भगके बाहरी हिस्सेका किनारा।

भगोहाँ–वि० दे० 'भगौहाँ'।

भगौती*–स्त्री० दे० 'भगवती'।

भगौना–पु० एक बरतन जो गहरा और गोलाकार होता है तथा जिसके ऊपरका किनारा या ओंठ मुड़ा होता है, बहुगुना।

भगौहाँ–वि० भगोड़ा; भगवा रंगमें रँगा हुआ, गेरुआ।

भग्गुल*–वि० रणभूमिसे भागा हुआ, भगोड़ा।

भग्गू–वि० भगोड़ा, डरपोक।

भग्न–वि० (सं०) टूटा हुआ, खंडित; चूर किया हुआ, नष्ट; रोका हुआ; हराया हुआ; हताश। पु० पैरका अस्थिभंग। **–क्रम**–वि० जिसका क्रम भंग हो गया हो। **–चित्त**–वि० भग्नहृदय, निराश। **–चेष्ट**–वि० विफल होकर चेष्टासे विरत हो जानेवाला। **–ताल**–पु० एक तरहका ताल (संगीत)। **–दंष्ट्र**–वि० जिसके दाँत टूट गये हों। **–दर्प**–वि० जिसका घमंड तोड़ दिया गया हो, गलितगर्व। **–दूत**–पु० युद्धमें हार होनेकी खबर लानेवाला दूत। **–निद्र**–वि० जो सोते समय जगा दिया गया हो। **–पाद**–पु० पुनर्वसु, उत्तराषाढा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद और विशाखा नक्षत्र जिनमें मरनेपर द्विपाद दोष लगता है। **–पृष्ठ**–वि० जिसकी पीठ, रीढ़ टूट गयी हो; सामनेसे आनेवाला। **–प्रक्रम**–पु० रचनाका क्रम बिगड़ जाना, काव्यका एक दोष। **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी हो। **–मना(नस्)**–वि० भग्नहृदय, हतोत्साह। **–मनोरथ**–वि० विफल-मनोरथ, जिसका मनोरथ भंग हो गया हो, नाकाम। **–मान**–वि० अनादृत, तिरस्कृत। **–विषाणक**–वि० जिसके सींग टूट गये हों। **–व्रत**–वि० जिसका व्रत टूट गया हो। **–श्री**–वि० गतसौंदर्य। **–शृंग**–वि० दे० 'भग्नविषाणक'। **–संधि**–वि० जिसकी हड्डीका जोड़ टूट गया हो। पु० एक रोग। **–संधिक**–पु० मक्खन निकाला हुआ दही, घोल। **–हृदय**–वि० जिसका हृदय, दुःखादिके कारण, टूट गया हो; निराश; उदास।

भग्नांश–पु० (सं०) मूल द्रव्यका कोई अंश; समान विभागोंमेंसे कुछ अंश।

भग्नात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) चंद्रमा।

भग्नापद्–वि० (सं०) जिसने संकटों, शत्रुओंपर विजय प्राप्त कर ली हो।

भग्नावशेष–पु० (सं०) खंडहर।

भग्नाश–वि० (सं०) हताश।

भग्नी–स्त्री० दे० 'भगिनी'।

भग्नोत्साह–वि० (सं०) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो।

भग्नोद्यम–वि० (सं०) जिसका प्रयत्न विफल हो गया हो।

भचक–स्त्र० भचकनेका भाव या क्रिया।

भचक्र–पु० दे० 'भ'के साथ।

भचकना–अ० क्रि० लँगड़ाते हुए चलना।

भच्छ*–पु० दे० 'भक्ष्य'।

भच्छक*–वि०, पु० दे० 'भक्षक'।

भच्छन*–पु० दे० 'भक्षण'।

भच्छना*–स० क्रि० खाना, भक्षण करना।

भजक–वि०, पु० (सं०) भजन-भक्ति करनेवाला; विभाग करनेवाला।

भजन–पु० (सं०) सेवा, आराधना; भगवान् या उपास्य देवताका नाम जपना, स्मरण; भगवान् या किसी देवताकी स्तुतिमें रचित पद (हिं०); स्वत्व; विभाजन। **–पूजन**–पु० पूजा-उपासना। **–वारिक**–पु० बौद्ध विहारका एक कर्मचारी।

भजना–स० क्रि० सेवा, भक्ति करना; उपास्य देवताको याद करना; जपना; * आश्रय लेना। * अ० क्रि० भागना; पहुँचना।

भजनानंद–पु० (सं०) भजनका, भगवान्‌को याद करनेका आनंद। वि० भजनमें तल्लीन रहनेवाला।

भजनानंदी–वि० भजनानंद, भगवद्भजनमें मस्त रहनेवाला।

भजनी–वि० भजन गानेवाला।

भजनीक, भजनोपदेशक–पु० भजन गाकर उपदेश करनेवाला।

भजनीय–वि० (सं०) सम्मान्य, पूज्य।

भजाना*–स० क्रि० भगाना। अ० क्रि० भागना।

भजितव्य–वि० (सं०) दे० 'भजनीय'।

भजियाउर*–स्त्री० घी, दही आदिके साथ पकाया हुआ चावल।

भजेन्य, भज्य–वि० (सं०) दे० 'भजनीय'।

भट–पु० (सं०) योद्धा; सैनिक; एक जाति; दास; कूवर। **–पेटक**–पु० फौजकी टुकड़ी। **–बलाग्र**–पु० वीर; सेना। **–भेर***–पु० दे० 'भटभेरा'। **–भेरा***–पु० मुठभेड़, भिड़ंत, टक्कर; अचानक सामना या भेंट होना।

भटई–स्त्री० झूठी तारीफ, चापलूसी, भाटपन।

भटकटाई–स्त्री० दे० 'भटकटैया'।

भटकटैया–स्त्री० एक वनौषधि, कंटकारी।

भटकना–अ० क्रि० रास्ता भूलना; रास्ता भूलकर इधर-उधर फिरना; व्यर्थ घूमना; तलाशमें फिरना; भ्रममें पड़ना; * चूक जाना।

भटका*–पु० व्यर्थ घूमनेकी क्रिया; चक्कर–'द्वार न पावै सबदका फिरि फिरि भटका खाय'–साखी।

भटकाना–स० क्रि० गलत रास्ता बताना, बहकाना।

भटकैया*–पु० भटकनेवाला। स्त्री० दे० 'भटकटैया'।

भटकौहाँ*–वि० भटकानेवाला।

भटतीतर–पु० एक चिड़िया ।

भटनास, भटबाँस†–स्त्री० एक लता ।

भटनेर–पु० सिंधुके पूर्वी तटपर स्थित एक प्राचीन राजधानी ।

भटनेरा–पु० भटनेरका रहनेवाला; वैश्योंकी एक उपजाति ।

भटभटी*–देखते हुए भी न दिखाई पड़ना–'भटभटी लागै जो पै बीच वारुनी बसै'–घन० ।

भटा†–पु० भंटा, वैंगन ।

भटियार–पु० एक राग ।

भटियारा–पु० दे० 'भठियारा' ।

भटियारी–स्त्री० दे० 'भठियारी'; एक संकर रागिनी ।

भटिहारिन, भटिहारी–स्त्री० दे० 'भठिहारिन' ।

भटू*–स्त्री० सखी, अलि (बराबरकी स्त्रीका संबोधन) ।

भटेरा†–पु० वैश्योंकी एक उपजाति ।

भटैया*–स्त्री० दे० 'भटकटैया' ।

भट्ट–पु० (सं०) भाट; पंडित; दाक्षिणात्य ब्राह्मणोंकी एक उपाधि; स्वामी (नाटकादिमें राजाओंका संबोधन) । **–नारायण**–पु० वेणीसंहार (संस्कृत) नाटकके रचयिता ।

भट्टाचार्य–पु० (सं०) दर्शनशास्त्रका पंडित, सम्मानित अध्यापक (पदवीरूपमें प्रयुक्त); बंगाली ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

भट्टार–पु० (सं०) पूज्य, माननीय (पदवीरूपमें प्रयुक्त) ।

भट्टारक–वि० (सं०) पूज्य, माननीय । पु० राजा (ना०); मुनि; तपस्वी; पंडित; सूर्य; देवता । **–वार,–वासर**–पु० रविवार ।

भट्टारिका–स्त्री० (सं०) सम्मान्य स्त्री, देवी ।

भट्टि–स्त्री० (सं०) श्रीधर स्वामीके पुत्र भट्टिकृत (कुछ विद्वानोंके मतसे भर्तृहरिकृत) संस्कृत महाकाव्य ।

भट्टिनी–स्त्री० (सं०) अनभिषिक्त रानी; ब्राह्मणी; सम्मान्य स्त्री ।

भट्टोजि–पु० (सं०) सिद्धांतकौमुदीके कर्ता ।

भट्ठा–पु० बड़ी भट्ठी; ईंटें आदि पकानेका पजावा; बड़ा चूल्हा जिसपर कड़ाह चढ़ाकर गुड़, भोजके लिए पूरियाँ आदि बनायी जायँ ।

भट्ठी–स्त्री० खास कामोंके लिए बना हुआ बड़ा चूल्हा; मद्य बनानेका स्थान; * माँद ।

भठ*–वि० भ्रष्ट–'साधु-मतो क्यों मानै दुंरमति जाको सबै सयान परयौ भठ'–घन० । पु० भट्ठा ।

भठियाना†–अ० क्रि० भाटा आना ।

भठियारखाना–पु० भठियारीका घर; वह जगह जहाँ बहुत शोरगुल होता हो; कमीने, असभ्य लोगोंकी बैठक ।

भठियारन, भठियारिन, भठियारी–स्त्री० भठियारेकी स्त्री; लड़ाकी औरत । मु० (**भठियारिनों**)की **तरह लड़ना**–चिल्लाते, उँगलियाँ आदि चमकाते और गंदी गालियाँ बकते हुए लड़ना ।

भठियारपन–पु० भठियारेका पेशा; भठियारोंकी तरह लड़ना-झगड़ना, कमीनापन ।

भठियारा–पु० सरायमें यात्रियोंके टिकने, खाने-पीनेका प्रबंध करनेवाला ।

भठियाल–पु० भाटा ।

भठिहारिन–स्त्री० भठियारिन ।

भड–पु० (सं०) एक जाति (प्रा०) ।

भड़क–स्त्री० चमक-दमक, भड़कीलापन; भड़कनेका भाव, झिझक । **–दार**–वि० चमक-दमकवाला ।

भड़कना–अ० क्रि० प्रज्वलित होना, बल उठना, जोरसे जलने लगना; क्रुद्ध होना; चौंकना, बिदकना ।

भड़काना–स० क्रि० आगको तेज करना, प्रज्वलित करना; उत्तेजित करना, बढ़ावा देना; बहकाना; चौंकाना, डराना ।

भड़कीला–वि० चमक-दमकवाला, भड़कदार; भड़कनेवाला । **–पन**–पु० चमक-दमक; भड़कीला होनेका भाव ।

भड़कैल–वि० भड़कनेवाला, चौंकने, बिदकनेवाला ।

भड़भड़–स्त्री० बड़े ढोल, पोली चीज आदिकी आवाज; किसी चीजके जोरसे गिरनेकी आवाज; बकवास ।

भड़भड़ाना–स० क्रि० 'भड़-भड़' आवाज पैदा करना । अ० क्रि० 'भड़-भड़' आवाज होना; विकल होना ।

भड़भड़िया–वि० बक्की, डींग मारनेवाला ।

भड़भाँड़–पु० एक कँटीला पौधा, घमोय ।

भड़भूँजा–पु० एक हिंदू जाति जो दाना भूनने और भाड़ झोंकनेका काम करती है, भुजवा ।

भड़वा–पु० दे० 'भड़ुआ' ।

भड़सार–स्त्री० भोजन रखनेकी अलमारी, ताखा या स्थान ।

भड़साईं, भड़सायँ†–स्त्री० भाड़ ।

भडहर–पु० भाँड़ा, बरतन ।

भडार*–पु० दे० 'भंडार' ।

भड़ास–स्त्री० दिलमें भरी हुई बातें, गुबार, दिलका बुखार (–निकालना) ।

भड़िहा–पु० चोर । **–ई***–स्त्री० चोरी । अ० चोरकी तरह–'इत उत चितै चला भड़िहाई'–रामा० ।

भड़ी†–स्त्री० बढ़ावा; गलत उद्देश्यके लिए उकसावा ।

भड़ुआ–पु० सफरदाई; रंडियोंकी दलाली करनेवाला । **–ई**–स्त्री० भडुआ होनेका भाव, भड़ुआपन । **–पन**–पु० दे० 'भड़ुआई' ।

भडेरिया–पु० दे० 'भँड़ेरिया' ।

भडैत–पु० भाडा देकर रहने या बसनेवाला ।

भड्डु, भड्डुर–पु० ब्राह्मणोंकी एक जाति जो यात्रियोंको देवदर्शन आदि कराने तथा भविष्य बतलानेका काम करती है; इस जातिका व्यक्ति–'भड्डु कहै सुन भड्डुरी बिन बरसे ना जाय' ।

भणन–पु० (सं०) कहना, कथन; वर्णन ।

भणना*–स० क्रि० कहना, वर्णन करना ।

भणित–वि० (सं०) कहा हुआ, कथित । पु० कथन; वर्णन ।

भणिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) बोलनेवाला, वक्ता ।

भणिति–स्त्री० (सं०) कथन; वार्ता ।

भतरौड़–पु० मथुरा और वृंदावनके बीचका एक गाँव ।

भतवान–पु० व्याहके संबंधमें होनेवाली कच्ची ज्योनार ।

भतार*–पु० दे० 'भर्तार' ।

भतीजा–पु० भाईका बेटा ।

भतीजी–स्त्री० भाईकी बेटी ।

भतुआ†–पु० पेठा ।

भत्ता–पु० वेतनके अतिरिक्त किसी विशेष व्ययकी पूर्ति या अंश पूर्तिके लिए कर्मचारीको मिलनेवाला धन, जैसे यात्रा-भत्ता, मँहगाई-भत्ता आदि ।

भदंत–वि० (सं०) पूजित, सम्मानित; सन्न्यस्त । पु० बौद्ध भिक्षु ।

भद–स्त्री० दे० भद्द ।

भदई†–वि० भादोंमें होनेवाला । स्त्री० भादोंमें होनेवाली फसल ।

भदाक–पु० (सं०) सौभाग्य, अभ्युदय ।

भदावर–पु० वर्तमान ग्वालियर राज्यके अंतर्गत एक प्रदेश ।

भदूना†–पु० ढेर (मृग०) ।

भदेस*–वि० भोंड़ा, बेढंगा, भद्दा ।

भदेसिल†–वि० दे० 'भदेस' ।

भदैला–वि० भाद्रपद मासमें पैदा होनेवाला ।

भदौंह*–वि० दे० 'भदौहाँ' ।

भदौहाँ†–वि० भादोंमें होनेवाला (आम, अमरूद इ०) ।

भदौरिया–पु० भदावरका रहनेवाला; क्षत्रियोंकी एक उपजाति ।

भद्द–स्त्री० उपहासकी स्थिति, बेइज्जती ।

भद्दा–वि० बेढंगा, भोंड़ा, बेडौल; अशिष्ट; अयुक्त । **–पन**–पु० बेढंगापन; अशिष्टता; अयुक्तता ।

भद्रंकर–वि० (सं०) मंगलकारक, शुभ ।

भद्रंकरण–पु० (सं०) मंगलसाधन ।

भद्र–वि० (सं०) भला, साधु; शुभ, मंगलकारी; श्रेष्ठ; सुंदर । पु० मंगल, सुख-सौभाग्य; सोना; लोहा; शिव; बलदेव; मोथा; उत्तर दिशाका दिग्गज; खंजन; सुमेरु; एक करण (ज्यो०); बैल; एक प्रकारका हाथी; देवदार; कदंब; एक देववर्ग; स्वर-साधनकी एक प्रणाली; * सिर, दाढ़ी-मूँछ आदिका मुंडन, भद्राकरण । * वि० जिसके सिर, दाढ़ी आदिका मुंडन हुआ हो–'लीन्हों हृदय लगाय सूर प्रभु पूछत भद्र भये क्यों भाई'–सूर । **–कंट**–पु० गोखरू । **–कपिल**–पु० शिव । **–काय**–वि० सुंदर,

भव्य देहवाला । **–कारक**–वि० मंगलकारक । पु० महाभारत-वर्णित एक प्राचीन देश । **–काली**–स्त्री० दुर्गाका एक रूप; कार्त्तिकेयकी एक मातृका । **–काशी**–स्त्री० भद्रमुस्ता । **–काष्ठ**–पु० देवदार । **–कुंभ**–पु० तीर्थजलसे भरा हुआ स्वर्णघट; मंगलघट । **–गंधिका**–स्त्री० मोथा । **–गणित**–पु० वीजगणितके अंतर्गत गणित विशेष । **–घट,–घटक**–पु० लाटरी निकालनेका घड़ा । **–चारु**–पु० रुक्मिणीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र । **–चूड़**–पु० 'लंकासिज' नामक पौधा । **–ज**–पु० इंद्रजौ । **–जन**–पु० भला आदमी, शिष्ट जन, शरीफ । **–तरुणी**–स्त्री० कुब्जक, एक तरहका गुलाव । **–तुंग**–पु० महाभारतमें वर्णित एक तीर्थ । **–तुरग**–पु० जंबूद्वीपके अंतर्गत नौ वर्षोंमेंसे एक । **–दंत**–पु० एक तरहका हाथी । **–दंतिका**–स्त्री० दंतीका एक भेद । **–दारु**–पु० देवदार । **–द्वीप**–पु० कुरुवर्षके अंतर्गत एक द्वीप । **–नामा(मन्)**–पु० खँड़रिच; कठफोड़वा । **–नामिका**–स्त्री० त्रायंती । **–निधि**–स्त्री० दानके लिए वनाया हुआ ताँवे आदिका घड़ा । **–पदा**–स्त्री० भाद्रपदा । **–पर्णा**–स्त्री० कटंभरा वृक्ष । **–पर्णी**–स्त्री० गंभारी; प्रसारिणी लता । **–पाल**–पु० एक वोधिसत्त्व । **–पीठ**–पु० सुंदर आसन; वह चौकी जिसपर किसी राजा या देवताका अभिषेक किया जाय; एक परदार कीड़ा । **–पुरुष**–पु० दे० 'भद्रजन' । **–वलन**–पु० वलराम । **–वला**–स्त्री० माधवी लता; प्रसारिणी लता । **–वाहु**–पु० रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र । **–भूषणा**–स्त्री० एक देवी । **–मंद,–मंद्र**–पु० एक तरहका हाथी । **–मनसी**–स्त्री० ऐरावतकी माता । **–मल्लिका**–स्त्री० गवाक्षी । **–मुंज**–पु० सरपत । **–मुख**–वि० सुंदर, प्रसन्न चेहरेवाला । पु० एक नाग । **–मुखी**–स्त्री० चंद्रमुखी (शिष्टसंवोधन) । **–मुस्तक**–पु०,**–मुस्ता**–स्त्री० नागरमोथा । **–मृग**–पु० एक तरहका हाथी । **–यव**–पु० इंद्रजौ । **–यान**–पु० एक वौद्ध आचार्य । **–रेणु**–पु० ऐरावत । **–रोहिणी**–स्त्री० कटुका । **–वट**–पु० एक प्राचीन तीर्थ । **–वर्मा(र्मन्)**–पु० नवमल्लिका । **–वल्लिका**–स्त्री० गोपवल्ली, अनंतमूल । **–वल्ली**–स्त्री० मल्लिका; माधवी । **–विंद**–पु० कृष्णका एक पुत्र । **–विराट्(ज्)**–पु० एक वर्णवृत्त । **–शाख**–पु० कार्त्तिकेय । **–श्रय,–श्रिय,–श्री**–पु० चंदन । **–श्रेण्य**–पु० दिवोदासके पूर्ववर्ती वाराणसीके एक राजा । **–षष्ठी**–स्त्री० दुर्गा । **–सेन**–पु० देवकीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र । **–सोमा**–स्त्री० एक नदी; गंगा ।

भद्रक–वि० दे० (सं०) 'भद्र' । पु० मोथा; देवदारु ।

भद्रवती–स्त्री० (सं०) कृष्णकी एक पुत्री; हथिनी; कटफल; वेश्या ।

भद्रवान्(वत्)–वि० (सं०) दे० मंगलमय । पु० देवदारु ।

भद्रांग–पु० (सं०) वलराम ।

भद्रा–वि० स्त्री० (सं०) भद्र । स्त्री० आकाशगंगा; पक्षविशेषकी द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियाँ; फलित ज्योतिषका शुभ कार्यके लिए एक निषिद्ध योग; सुभद्रा; दुर्गा; गाय; हल्दी; कटफल; अनंता; अपराजिता; कृष्णा; जीवंती; नीली; रास्ना; एक वृत्त; पृथ्वी; कृष्णकी एक पत्नीका नाम; असमकी एक नदीका नाम; सूर्यकी एक कन्या । **मु० –उतारना**–मरम्मत करना, सजा देना । **–लगना**–विघ्न पड़ना, वाधा उपस्थित होना ।

भद्राकरण–पु० (सं०) भद्र नामक करण; मुंडन ।

भद्राकृति–वि० (सं०) सुंदर, भव्य आकृतिवाला ।

भद्रात्मज–पु० (सं०) खड्ग ।

भद्रानंद–पु० (सं०) स्वर-साधनकी एक प्रणाली (संगीत) ।

भद्राभद्र–वि० (सं०) भला-वुरा ।

भद्रारक–पु० (सं०) अठारह क्षुद्र द्वीपोंमेंसे एक ।

भद्रालपत्रिका–स्त्री० (सं०) गंधाली ।

भद्राली–स्त्री० (सं०) गंधाली ।

भद्रावती–स्त्री० (सं०) कटफल; महाभारतोक्त एक नगरी ।

भद्रावह–वि० (सं०) मंगलकारक ।

भद्राश्रय–पु० (सं०) चंदन ।

भद्राश्व–पु० (सं०) जंबूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक; वसुदेवका एक पुत्र ।

भद्रासन–पु० (सं०) राजसिंहासन; योगका एक आसन ।

भद्रिका–स्त्री० (सं०) भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी); योगिनी दशाके अंतर्गत पाँचवीं दशा; एक वृत्त ।

भद्री(द्रिन्)–वि० (सं०) भाग्यशाली ।

भद्रेश–पु० (सं०) शिव ।

भद्रेश्वर–पु० (सं०) शिवका एक रूप ।

भद्रैला–स्त्री० (सं०) वड़ी इलायची ।

भद्रोदनी, भद्रौदनी–स्त्री० (सं०) वला; नागवला ।

भनक–स्त्री० धीमी, अस्पष्ट ध्वनि; उड़ती हुई खवर (पड़ना) ।

भनकना*–अ० क्रि० वोलना, भनभन शब्द करना ।

भनना*–स० क्रि० कहना ।

भनपैरा–वि० अशुभ या अभागा व्यक्ति ।

भनभनाना–अ० क्रि० 'भन-भन' आवाज करना; गुंजार करना ।

भनभनाहट–स्त्री० धीमी आवाज; गुंजार ।

भनित*–वि०, पु० दे० 'भणित' ।

भनिति*–स्त्री० दे० 'भणित'; रचना ।

भवका–पु० अर्क खींचनेका यंत्र ।

भवकी–स्त्री० झूठी धमकी, वंदर-घुड़की ।

भवभड़, भभ्भड़–स्त्री० भीड़-भाड़, धक्कम-धक्का ।

भभक–स्त्री० भभकनेका भाव; भड़क उठना; तेज वदवू ।

भभकना–अ० क्रि० जोरसे जल उठना; भड़कना ।

भभका–पु० दे० 'भवका' ।

भभकी–स्त्री० दे० 'भवकी' ।

भभरना*–अ० क्रि० डरना; घवराना; भरमना, भ्रममें पड़ना, भूलना ।

भभीरी*–स्त्री० झींगुर; फिरकी ।

भभूका–पु० लपट, शोला; चिनगारी । वि० अंगारेकी तरह लाल, प्रज्वलित ।

भभूखा*–पु० दे० 'भभूका' ।

भभूत–स्त्री० वह भस्म जिसे शिवभक्त शरीरपर लगाते हैं, यज्ञकुंड, धूनी आदिकी राख । **मु० –रमाना**–वैराग्य धारण करना, साधु हो जाना ।

भभूदर–स्त्री० दे० 'भूभल' ।

भमरा–पु० दे० 'भ्रमर' ।

भमीरी*–स्त्री० झींगुर–'वरषा भये तें जैसे वोलत भमीरी स्वर…'–सुंदर ।

भयंकर–वि० (सं०) डरावना, भयोत्पादक । पु० एक तरहका छोटा उल्लू; एक वाज । **–ता**–भयावना होनेका भाव ।

भय*–अ० क्रि० हुआ । पु० (सं०) विपद् या अनिष्टकी संभावनासे उत्पन्न दुःखजनक भाव, डर, खौफ; खतरा; भयानक रस । **–कंप**–पु० भयसे उत्पन्न होनेवाला कंपन । **–कर,–जनक**–वि० भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना, खतरनाक । **–डिंडिम**–पु० एक रणवाद्य । **–त्रस्त**–वि० वहुत डरा हुआ । **–त्राता(तृ)**–वि०, पु० भयसे छुड़ानेवाला । **–द,–दायी(यिन्)**–वि० भय उत्पन्न करनेवाला । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० भयानक । **–दान**–पु० भयसे दिया जानेवाला दान । **–द्रुत**–वि० डरसे भागनेवाला । **–धन**–वि० भयानक । **–नाशन**–वि० भयका नाश करनेवाला । पु० विष्णु । **–नाशिनी**–स्त्री० त्रायमाणा लता । **–नाशी(शिन्)**–वि० भय दूर करनेवाला । **–प्रतीकार**–पु० भयका निवारण । **–प्रद,–प्रदायी(यिन्)**–वि० डरावना । **–प्रदर्शन**–पु० भय दिखाना, डराना । **–ब्राह्मण**–पु० अपना ब्राह्मणत्व वताकर खतरेसे वचनेका उपाय करनेवाला । **–भीत**–वि० (हिं०) डरा हुआ । **–भ्रष्ट**–वि० डरकर भागा हुआ । **–मोचन**–वि० भयसे छुड़ानेवाला । **–वर्जिता**–स्त्री० दो गाँवोंके वीचकी सीमा जो वादी-प्रतिवादी आपसमें मिलकर मान लें । **–विह्वल**–वि० डरसे जिसकी वुद्धि ठिकाने न हो, भयाकुल । **–व्यूह**–पु० भय उपस्थित होनेपर सेनाके रक्षार्थ रचा जानेवाला व्यूहविशेष । **–शील**–वि० डरपोक । **–शून्य**–वि० निर्भय । **–स्थान**–पु० भयका कारण । **–हरण,–हर्ता(र्तृ),–हारक,–हारी(रिन्)**–वि० भय दूर कर

देनेवाला। **–हेतु**–पु० भयका कारण।

भयवाद–पु० भाई-बंद।

भया–स्त्री० (सं०) एक राक्षसी जो कालकी बहन थी। * पु० भैया, भाई। * अ० क्रि० हुआ।

भयाकुल–वि० (सं०) डरसे घबराया हुआ, भय-विह्वल।

भयाक्रांत–वि० (सं०) भयसे अभिभूत; सार्वजनीन उच्छृंखलता और अराजकतासे उत्पन्न असुरक्षाकी उस भावनासे ग्रस्त, जो साहित्यकारमें कुंठाको जन्म देती है। ('ट्रैडेड')।

भयातीसार–पु० (सं०) भयके कारण होनेवाला अतीसार।

भयातुर–वि० (सं०) दे० 'भयाकुल'।

भयादोहन–पु० (ब्लैकमेलिंग) डरा-धमकाकर फायदा उठाना, पैसा वसूलना।

भयान*–वि० भयानक।

भयानक–वि० (सं०) भय उत्पन्न करनेवाला, डरावना। पु० बाघ; राहु; भय; काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव भय है (सा०)।

भयाना*–अ० क्रि० डरना। स० क्रि० डराना।

भयान्वित–वि० (सं०) भयसे युक्त, डरा हुआ।

भयापह–वि० (सं०) भय दूर करनेवाला।

भयाबाध–वि० (सं०) भयसे विचलित न होनेवाला।

भयारा*–वि० भयानक।

भयार्त–वि० (सं०) डरा हुआ।

भयावदीर्ण–वि० (सं०) दे० 'भयविह्वल'।

भयावन*–वि० दे० 'भयावना'।

भयावना–वि० डरावना।

भयावह–वि० (सं०) भयजनक, खतरनाक।

भयोपशम–पु० (सं०) भयका शमन, प्रोत्साहन।

भय्या–पु० दे० 'भैया'।

भरंड–पु० (सं०) स्वामी; राजा; बैल; कीड़ा।

भरंत*–स्त्री० भ्रांति, भ्रम; भरनेकी क्रिया; भराई।

भर–पु० एक हिंदू जाति। वि० सब, पूरा, सारा। * अ० के बल, द्वारा। **–पाई**–स्त्री० भर पाने, चुकता हो जानेका भाव; भर पाने, बेबाकीकी रसीद। **–पूर**–वि० पूरी तरह भरा हुआ, परिपूर्ण। अ० पूरे तौरसे। **–पेट**–अ० जी भरकर, पेट भरकर। **–सक**–अ० शक्तिभर, जितना हो सके। मु० **–पाना**–पूरा पावना वसूल हो जाना; कियेका फल पाना।

भर–पु० (सं०) भार; ढेर, समूह; आधिक्य, अतिरेक; पीनता; एक तौल; चोरी; स्तुति; आक्रमण। वि० (समासांतमें) भरण करनेवाला; वहन करनेवाला। **–ग**–वि० तेज जानेवाला।

भरक|–पु० एक चिड़िया; दे० 'भरका'।

भरकना*–अ० क्रि० सुखियाना; दे० 'भड़कना'।

भरका–पु० कुछ नदियोंके किनारेकी बंजर ऊबड़-खाबड़ भूमि जो क्रमशः कहीं टीले जैसी ऊँची और खाईं जैसी गहरी होती है; खार या बीहड़ –'वे दोनों नदीके भरकेमें उतर गयीं'–मृग०; खड्ड।

भरकाना*–स० क्रि० दे० 'भड़काना'।

भरट–पु० (सं०) कुम्हार; सेवक।

भरण–पु० (सं०) पालन; पोषण; धारण; उत्पादन; भृति, वेतन; भरणी नक्षत्र। वि० भरण-पोषण करनेवाला।

भरणी–स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रोंमेंसे दूसरा; घियातरोई; एक लग्न। वि० स्त्री० भरण करनेवाली। **–भू**–पु० राहु।

भरणीय–वि० (सं०) भरण करने योग्य।

भरण्य–पु० (सं०) वेतन, उजरत; पालन-पोषण; भरणी नक्षत्र। **–भुक्(ज्)**–पु० नौकर; मजदूर।

भरण्या–स्त्री० (सं०) मजदूरी; स्त्री।

भरण्यु–पु० (सं०) स्वामी; रक्षक; मित्र; अग्नि; सूर्य; चंद्र।

भरत–पु० काँसा, कसकुट; ठठेरा; भरी हुई चीज, भरतीकी चीज, निरर्थक वस्तु, भराव; एक तरहका लवा; लगान; (सं०) शकुंतलासे उत्पन्न दुष्यंतका पुत्र जिसके नामपर इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा; कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न दशरथ-पुत्र; एक मुनि जो नाटयशास्त्रके प्रवर्तक माने जाते हैं; नट; शबर; जुलाहा; जडभरत; आयुधजीवी; अग्नि; क्षेत्र। **–खंड**–पु० भारतवर्ष; भारतवर्षके अंतर्गत कुमारिका खंड। **–ज्ञ**–वि० नाटयशास्त्रका जानकार। **–पुत्र,–पुत्रक**–पु० नट, अभिनेता। **–प्रसू**–स्त्री० कैकेयी। **–भूमि**–स्त्री० भारतवर्ष। **–वर्ष**–पु० दे० 'भारतवर्ष'। **–वाक्य**–पु० नाटकके अंतमें आशीर्वादरूपमें गाया जानेवाला पद्य। **–वीणा**–स्त्री० वीणाका एक भेद। **–शास्त्र**–पु० नाटयशास्त्र।

भरतरी–पु० दे० भर्तृहरि।

भरतर्षभ–वि० (सं०) भरतवंशमें श्रेष्ठ।

भरता–पु० आलू-बैंगन आदिको भून और मसलकर बनाया हुआ सालन, चोखा। स्त्री० (सं०) बोझयुक्त होना। दे० 'भरतार'।

भरताग्रज–पु० (सं०) राम।

भरतार*–पु० कांत, पति; स्वामी।

भरतिया–पु० काँसेके बरतन बनानेवाला।

भरती–स्त्री० एक चीजका दूसरीमें भरा, बैठाया जाना, भराव; भीतर भरी हुई चीज; पच्चीकारी; प्रवेश, दाखिला, लिया जाना (सेना, पुलिस, स्वयंसेवकदल आदिमें)। **भरती का**–खानापूर्ति के लिए किया जानेवाला।

भरत्थ*–पु० रामानुज भरत।

भरथ–पु० (सं०) लोकपाल; राजा; अग्नि; * रामके छोटे भाई भरत।

भरथरी–पु० दे० 'भर्तृहरि'।

भरदूल–पु० भरत पक्षी।

भरद्वाज–पु० (सं०) एक गोत्र-प्रवर्तक और मंत्रकार ऋषि; भरत पक्षी; एक अग्नि; एक अर्हत्।

भरना–स० क्रि० खाली बरतन आदिमें कोई चीज डालना, खाली जगहको किसी चीजसे पूर्ण करना; ढालना; छेद, अवकाशको बंद करना; तोप, बंदूक आदिमें गोला, गोली आदि डालना; चुकाना (ऋण); पूर्ति करना (नुकसानकी); पदपर नियुक्ति करना; सींचना; कुएँ आदिसे घड़े आदिमें पानी लाना; शिकायत करना; बरगलाना; चिलमपर तंबाकू और आग रखना; भेंटना; * गुजर करना; सहना; देहमें पोतना। अ० क्रि० भरा जाना, पूर्ण होना; घावका पूरा होना; मनका क्रोध, क्षोभ आदिसे पूर्ण होना; पुष्ट, मोटा होना (शरीर); गर्भवती होना (गाय, कुतिया आदिका)।

भरनि*–स्त्री० पहनावा, वेशभूषा।

भरनी–स्त्री० करघेकी ढरकी; छछूंदर; मोरनी; एक जंगली बूटी; सर्पका विष उतारनेका मंत्र; * दे० 'भरणी'।

भरभराना–अ० क्रि० फूलना; रोमांच होना; घबड़ाना।

भरभराहट–स्त्री० सूजन; घबड़ाहट।

भरभेंटा*–पु० सामना, मुठभेड़।

भरम–पु० भ्रम; भेद; साख, प्रतिष्ठा (खुलना, खोना, गँवाना, बनाना)–'संपति भरम गँवाइकै बसे रहे कछु नाहिं'–रहीम।

भरमना*–अ० क्रि० फिरना; भटकना; बहकना; गुमराह होना। स्त्री० भ्रांति, भूल।

भरमाना–स० क्रि० भ्रममें डालना; बहकाना, धोखा देना; व्यर्थ घुमाना। * अ० क्रि० भटकना; चकित होना।

भरमार–स्त्री० बहुतायत, आधिक्य; बाहुल्य।

भरराना–अ० क्रि० यकबारगी गिर पड़ना, अरराना; टूट पड़ना। स० क्रि० 'भरर' शब्दके साथ गिराना; किसीको टूट पड़नेमें प्रवृत्त करना।

भरल|–स्त्री० हिमालयके अंचलमें होनेवाली एक जंगली भेड़।

भरवाई–स्त्री० भरवानेकी क्रिया या उजरत; बोझ उठानेकी टोकरी।

भरवाना–स० क्रि० भरनेका काम कराना।

भरसन, भरसना*–स्त्री० दे० 'भर्त्सना'।

भरसाईं|–स्त्री० भाड़।

भरहर|–वि० 'फरहर', अलग अलग खिला हुआ (भात); कमजोर, धराशायी हो जाने योग्य।

भरहरना, भरहराना–अ० क्रि० दे० 'भहराना'।

भराँति*–स्त्री० दे० 'भ्रांति'।

भरा–वि० भरा हुआ, पूर्ण; आबाद; संपन्न (घर); पुष्ट, मांसल (अंग, देह); क्रोध, क्षोभ, खीझसे भरा हुआ, जिसका क्षोभ बाहर

निकला ही चाहता हो। (स्त्री० 'भरी'।)–**पूरा**–वि० संपन्न; धन-धान्य, बाल-बच्चोंसे सुखी। –**भरा**–वि० आवाद; मांसल, मोटा। मु० –**महीना**–बरसातके दिन। –**(री) गोद या गोदी खाली होना**–संतानका मर जाना। –**जवानी**–चढ़ी जवानी, जिस जवानीका उतार आरंभ न हुआ हो। –**थालीमें लात मारना**–लगी नौकरी, मिलती रोजीको छोड़ देना। –**सभा या मजलिसमें**–सबके सामने।

भराई–स्त्री० भरनेकी क्रिया या उजरत।

भराव–पु० भरनेका भाव; भरती; कशीदेमें पत्तियों आदिका काम।

भरित–वि० (सं०) भरा हुआ;...से पूर्ण; पोपित; हरा। पु० हरा रंग।

भरित्र–पु० (सं०) वाहु।

भरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) भरण-पोषण। कुटुंव।

भरिया|–वि० भरनेवाला। पु० ढलाई करनेवाला।

भरी–स्त्री० एक रुपये या दस माशेभरकी तौल।

भरु–पु० (सं०) स्वामी; भर्ता, पति; शिव; विष्णु; सोना; समुद्र; * भार, वोझ।

भरुआ–पु० टसर; * दे० 'भड़ुआ'।

भरुआना|–अ० क्रि० भारी होना; भार अनुभव करना।

भरुका–पु० पुरवा, कुल्हड़, चुक्कड़।

भरुज–पु० (सं०) शृगाल; भूना हुआ जौ।

भरुजा, भरुजी–स्त्री० (सं०) शृगाली।

भरुटक–पु० (सं०) भूना हुआ मांस।

भरुटा–स्त्री० (सं०) दे० 'भरुटक'।

भरुहाना*–अ० क्रि० गर्व करना। स० क्रि० वहकाना; बढ़ावा देना; भ्रममें डालना–'तुमको नंदमहर भरुहाये'–सूर।

भरुही–स्त्री० एक तरहकी किलिक; एक पक्षी, भरत।*

भरेठ–पु० दरवाजेके ऊपर दीवारका बोझ सँभालनेके लिए दी हुई लकड़ी, करगहना, नासा।

भरेठा–पु० दे० 'भरेठ'; धोवी, वरेठा।

भरैत|–पु० किरायेदार।

भरैया–पु० भरनेवाला; भरण करनेवाला, पालक।

भरोस*–पु० दे० 'भरोसा'।

भरोसा–पु० पक्की आशा; सहारा, आसरा; विश्वास। –**(से)का**–विश्वसनीय।

भरोसी|–वि० भरोसा रखनेवाला; आश्रित; विश्वस्त।

भर्ग–पु० (सं०) भूनना, भर्जन; शिव; व्रह्मा; तेज, ज्योति; एक प्राचीन देश।

भर्ग्य–पु० (सं०) शिव।

भर्जन–पु० (सं०) भूनना; वध करना; भूननेका साधन, कड़ाही। वि० भूननेवाला।

भर्तव्य–वि० (सं०) वहन करने योग्य; भरण करने योग्य, पालनीय।

भर्ता(तृ)–पु० (सं०) भरण करनेवाला; स्वामी; पति; नायक; विष्णु। (स्त्री०, 'भर्त्री'।) –**(र्तृ)गुण**–पु० पतिके गुण। –**घ्न**–वि० स्वामीकी हत्या करनेवाला। –**घ्नी**–स्त्री० पतिघातिनी। –**दारक**–पु० युवराज, राजकुमार (ना०)। –**दारिका**–स्त्री० राजकुमारी (ना०)। –**देवता,–दैवता**–स्त्री० पतिको देवतारूप-में माननेवाली स्त्री। –**व्रत**–पु० पतिव्रत। –**शोक**–पु० पतिशोक। –**हरि**–पु० शृंगार-शतक, नीति-शतक, वैराग्य-शतकके रचयिता जो महाराज विक्रमादित्यके सौतेले वड़े भाई थे; वाक्यप्रदीपके कर्ता वैयाकरण कवि।

भर्तार–पु० कांत, पति; स्वामी।

भर्तृमती–स्त्री० (सं०) सधवा स्त्री।

भर्त्सक–पु० (सं०) भर्त्सना करनेवाला।

भर्त्सन–पु०, **भर्त्सना**–स्त्री० (सं०) निंदा, लानत-मलामत।

भर्त्सित–वि० (सं०) जिसकी निंदा या तिरस्कार किया गया हो। पु० दे० 'भर्त्सना'।

भर्म*–पु० दे० 'भ्रम'; (सं०) मजदूरी; सोना; नाभि; एक सिक्का।

भर्म(न्)–पु० (सं०) पोषण; भृति, मजदूरी; सोना; स्वर्णमुद्रा; धतूरा; नाभि; वोझ; मकान।

भर्मन*–पु० दे० 'भ्रमण'।

भर्य–पु० (सं०) भरण-पोषणका खर्च, गुजारा (कौ०)।

भर्रा–पु० एक चिड़िया; चिड़ियोंकी उड़ान; दम, चकमा; भगदड़।

भर्राना–अ० क्रि० 'भर्र-भर्र' शब्द निकलना।

भर्सन*–पु० दे० 'भर्त्सन'।

भल*–वि०, पु० दे० 'भला'।

भलका*–स्त्री० गाँसी।

भलपति*–पु० भाला धारण करनेवाला।

भलभल–स्त्री० किसी तरल पदार्थके वहनेका शब्द। (रक्त वहनेके लिए विशेष रूपसे प्रयुक्त–खून भलभला आया।)

भलमनसात, भलमनसाहत, भलमनसी–स्त्री० भलामानुसपन, सज्जनता, शराफत।

भला–वि० अच्छा, नेक, साधु; सुंदर (लगना)। पु० भलाई, हित। अ० अच्छा, खूव; काकुयुक्त प्रश्नवाचक वाक्योंमें 'नहीं'का अर्थ देता है–'भला कहीं वालूसे तेल निकल सकता है?' धमकीके अर्थमें–'भला वच्चा'। –**आदमी**–पु० भलामानस, नेक, शरीफ आदमी। –**ई**–स्त्री० भलापन, अच्छाई; नेकी; हित, खैरियत। –**चंगा**–वि० स्वस्थ, तंदुरुस्त, अच्छा-खासा। –**बुरा**–वि० अच्छा और बुरा; सख्त-सुस्त, खरी-खोटी (कहना, सुनना)। –**मानस**–पु० दे० 'भला आदमी'; (व्यं०) दुष्ट। मु० –**चाहना**–कुशल-की कामना करना।

भले–अ० खूव, अच्छा (भले आये)। –**ही**–अ० ऐसा हो तो हुआ करे, हो तो परवाह नहीं (भले ही तुम वुरा मानो)।

भलेमानुसोंका समझौता–पु० (जंटिलमेंस ऐग्रीमेंट) एक तरहका अनौपचारिक समझौता जो केवल जवानी वातचीत या सामान्य पत्रालापके आधारपर किया गया हो, कोई पक्की लिखा-पढ़ी न की गयी हो।

भलेरा*–पु० दे० 'भला'।

भल्ल–पु० (सं०) भाला; भालू; शिव; भिलावाँ, वध, वाण। –**नाथ,–पति**–पु० जांववान्। –**पुच्छी**–स्त्री० गोरखमुंडी।

भल्लक–पु० (सं०) भालू; भिलावाँ; एक (प्राचीन) जनपद।

भल्लाट–पु० (सं०) भालू; एक पहाड़।

भल्लात, भल्लातक–पु०, **भल्लातकी**–स्त्री० (सं०) भिलावाँ।

भल्ली–स्त्री० (सं०) भल्लातक, भिलावाँ।

भल्लु–पु० (सं०) एक प्रकारका सन्निपात ज्वर।

भल्लुक–पु० (सं०) भालू।

भल्लूक–पु० (सं०) भालू; कुत्ता। (स्त्री० 'भल्लूकी'।)

भवंग, भवंगा*–पु० सर्प।

भवंगम*–पु० सर्प।

भवंत–पु० (सं०) वर्तमान काल। * सर्व० आपका।

भवंति–पु० (सं०) वर्तमान काल।–वहुवचन।

भवंती–स्त्री० (सं०) साध्वी स्त्री; दे० 'भवंति'।

भवँना*–अ० क्रि० घूमना, चक्कर खाना।

भवँर–पु० दे० 'भँवर'।

भवँरी–स्त्री० भाँरी।

भवँलिया|–स्त्री० एक तरहकी पटी हुई नाव।

भव–पु० (सं०) उत्पत्ति, जन्म; होना; संसृति; प्राप्ति; संसार; अग्नि; शिव; कुशल; * दे० 'भय'। (समासमें 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है।) –**केतु**–पु० एक पुच्छल तारा। –**क्षिति**–स्त्री० जन्मस्थान। –**घस्मर**–पु० दावानल। –**चक्र**–पु० किस-किस कर्मसे जीवात्माको किस-किस योनिमें जाना पड़ता है यह जाननेका चक्र (वौ०)। –**चाप**–पु० शिवका धनुष्। –**च्छेद**–पु० आवागमनसे मुक्ति। –**जल**–पु० दे० 'भवसमुद्र'। –**दारु**–पु० देवदार। –**धरण**–पु० परमेश्वर। –**नाशिनी**–स्त्री० सरयू नदी। –**प्रत्यय**–पु० समाधिकी एक अवस्था। –**वंधन**–पु० संसार-वंधन, जन्म-मरणका चक्र। –**भंग**–पु० संसृतिका अंत। –**भंजन**–पु० परमेश्वर; काल। –**भय**–पु० वार-वार जन्म लेने और मरनेका भय, कष्ट। –**भामिनी,–वामा**–स्त्री० पार्वती। –**भाव**–पु० भौतिक सत्तासे प्रेम। –**भीत**–वि० जिसे पुनर्जन्मका भय हो। –

भीति–स्त्री० जन्म-मरणका भय, संसृतिका भय; सांसारिक भय। **–भूत**–पु० परमेश्वर। **–भूति**–स्त्री० ऐश्वर्य। पु० 'उत्तर-रामचरित'के रचयिता। **–भूष***–वि० दे० 'भवभूषण'। **–भूष** –वि० जगत्‌के भूषणरूप। पु० शिवका भूषण, भस्म आदि। **–भोग**–पु० लौकिक सुखोंका उपभोग। **–मन्यु**–पु० लौकिक सुखसे विरक्ति। **–मोचन**–पु० भवबंधनको काटनेवाला, परमेश्वर। **–रस**–पु० लौकिक सत्तामें प्राप्त होनेवाला रस। **–रुत्(द्)**–पु० एक प्राचीन बाजा जो दाह-संस्कारके समय बजाया जाता था। **–विलास**–पु० माया; लौकिक सुख। **–व्यय**–पु० जन्म और लय। **–शूल**–पु० भौतिक दुःख। **–शेखर**–पु० चंद्रमा। **–संगी(गिन्)**–वि० लौकिक सत्तामें अनुरक्त। **–संभव**–वि० संसारसे उत्पन्न, सांसारिक। **–संशोधन**–पु० एक तरहकी समाधि। **–समुद्र,–सागर,–सिंधु**–पु० संसाररूप समुद्र।

भवक–वि० (सं०) उत्पन्न; जीवित; आशीर्वाद देनेवाला। पु० अस्तित्व।

भवत्–पु० आपका।

भवती–स्त्री० (सं०) जहरीला बाण।

भवदनुगत–वि० (युअर्स ओबिडिएंटली) आपकी आज्ञा माननेवाला, आपके आदेशानुसार चलनेवाला (किसी मातहत कर्मचारी द्वारा अथवा पुत्र या छोटे भाई द्वारा, उच्च कर्मचारी, पिता या बड़े भाईको लिखे गये आवेदन-पत्र, कुशलपत्रादिके अंतमें, हस्ताक्षर करनेके ठीक पहले प्रयुक्त विशेषण)।

भवदनुरत–वि० (युअर्स सिनसियरली) आपसे स्नेह, मित्रता या सद्भाव रखनेवाला (किसी मित्र या सामान्य परिचित व्यक्तिको लिखे गये पत्रके अंतमें लेखक द्वारा स्वयं अपने लिए प्रयुक्त विशेषण)।

भवदीय–वि० (सं०) आपका।

भवदीया–वि० स्त्री० (सं०) आपकी।

भवन–पु० (सं०) होना, भाव; जन्म, उत्पत्ति; घर, मकान; स्थान, क्षेत्र; अधिष्ठान; जन्मकुंडली; प्रकृति। **–कक्ष्या**–आँगन, चौक। **–दीर्घिका**–स्त्री० घरका भीतरी तालाब। **–पति**–पु० घरका मालिक; राशि-स्वामी।

भवन-निर्माण-विज्ञान–पु० (आर्किटेक्चर) मकान आदि बनानेकी कलाका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

भवना*–अ० क्रि० दे० 'भँवना'।

भवनापचरण–पु० (हाउस-ट्रेसपास) किसीके मकानमें अवैध रूपसे प्रवेश करना।

भवनी*–स्त्री० गृहिणी।

भवनीय–वि० (सं०) होनेवाला।

भवन्निष्ठ–वि० (युअर्स फेथफुल्ली) आपमें विश्वास रखनेवाला (अंग्रेजी ढंगके व्यापारिक पत्रों या सामान्य कार्यके लिए प्रायः कम परिचित व्यक्तियोंके नाम लिखे गये पत्रोंके अंतमें, हस्ताक्षरके ठीक पहले, प्रयुक्त होनेवाला समस्तपद)।

भवाँ*–पु० फेरा।

भवांगण–पु० (सं०) शिवमंदिरका सहन।

भवांतर–पु० (सं०) पहले या बादका जन्म।

भवाँना*–स० क्रि० घुमाना।

भवांबुधि–पु० (सं०) दे० 'भवसमुद्र'।

भवा–स्त्री० पार्वती।

भवाग्र–पु० (मं०) संसारका छोर।

भवाचल–पु० (सं०) कैलास पर्वत।

भवातिग–वि० (सं०) वीतराग।

भवात्मज–पु० (सं०) कार्त्तिकेय; गणेश।

भवानी–स्त्री० (सं०) दुर्गा, पार्वती। **–कांत,–पति,–वल्लभ,–सख**–पु० शिव। **–गुरु,–तात**–पु० हिमवान्। **–नंदन**–पु० कार्त्तिकेय; गणेश।

भवान्(वत्)–सर्व० (सं०) आप, श्रीमान् (संबोधन)।

भवाब्धि–पु० (सं०) दे० 'भवसमुद्र'।

भवाभीष्ट–पु० (सं०) गुग्गुल।

भवायना–स्त्री० (सं०) दे० 'भवायनी'।

भवायनी–स्त्री० (सं०) शिवके सिरपर रहनेवालीं गंगा।

भवि*–वि० दे० 'भव्य'।

भविक–वि० (सं०) मंगलकारी; धार्मिक। पु० मंगल, कल्याण।

भवित–वि० (सं०) जो हो चुका है, भूत।

भवितव्य–वि० (सं०) होनहार, अवश्यंभावी।

भवितव्यता–स्त्री० (सं०) जिसका होना अटल हो, होनी; भाग्य।

भविता(तृ)–वि० (सं०) होनेवाला, होनहार। (स्त्री० 'भवित्री'।) अस्तित्ववादी दर्शनमें 'होनेका भाव' (बिकमिंग)।

भविल–वि० (सं०) भावी; जीवित; भव्य, सुंदर। पु० मकान; जार।

भविष*–पु० दे० 'भविष्य'।

भविष्णु–वि० (सं०) होनेवाला, भावी।

भविष्य–पु० (सं०) आनेवाला काल। वि० होनेवाला, भावी। **–काल**–पु० क्रियाके तीन कालोंमेंसे एक, अनागत काल (व्या०)। **–गुप्ता**–स्त्री० सुरतिगुप्ता नायिकाका एक भेद। **–ज्ञान**–पु० होनेवाली बातोंकी जानकारी। **–निधि**–स्त्री० (प्रॉविडेंट फंड) किसी सरकारी, अर्द्ध-सरकारी या व्यापारिक संस्था आदिमें काम करनेवाले कर्मचारीको कार्यसे अवसर ग्रहण कर लेनेपर भरण-पोषणमें सहायक होनेकी दृष्टिसे दी जानेवाली वह सहायता जो उसके वेतनमेंसे कटनेवाले उसके अपने अंशके साथ-साथ नियोजकों द्वारा निधिके रूपमें जमा की जाती है, संचित कोष, संचित निधि, संभरणनिधि। **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–सुरति-गोपना**–स्त्री० दे० 'भविष्यगुप्ता'।

भविष्यत्–वि० (सं०) होनेवाला, भावी। पु० आनेवाला काल; जल; एक फल। **–काल**–पु० दे० 'भविष्यकाल'। **–पुराण**–पु० भविष्यपुराण।

भविष्यद्–'भविष्यत्'का समासगत रूप। **–आक्षेप**–पु० एक अर्थालंकार। **–वक्ता(क्तृ),–वादी(दिन्)**–पु० वह जो आगे होनेवाली बातोंको पहले बता दे, ज्योतिषी। **–वाणी**–स्त्री० भविष्य-कथन, पेशीनगोई।

भवी(विन्)–वि० (सं०) जीवित या सत्तायुक्त। पु० जीवधारी; मनुष्य।

भवीला*–वि० चाववाला; आनबानवाला।

भवेश–पु० (सं०) संसारका स्वामी, शिव।

भव्य–वि० (सं०) विद्यमान; होनेवाला, भावी; योग्य, उपयुक्त; सुंदर; शानदार; शांत, प्रसन्न; शुभ; सत्य। पु० कमरख; करेला।

भव्यता–स्त्री० (सं०) उपयुक्तता; सौंदर्य।

भव्या–स्त्री० (सं०) पार्वती; गजपीपल।

भष*–पु० भक्ष्य, आहार; (सं०) कुत्ता। वि० भूंकनेवाला। (स्त्री० 'भषी'।)

भषक–पु० (सं०) कुत्ता।

भषण–पु० (सं०) भूँकना; कुत्ता।

भषना*–स० क्रि० दे० 'भखना'।

भषा–स्त्री० (सं०) स्वर्णक्षीरी।

भषित–पु० (सं०) भूँकनेकी क्रिया।

भसंत–पु० (सं०) काल, समय।

भसंधि–स्त्री० दे० 'भ'के साथ।

भसन–पु० (सं०) भौंरा।

भसना†–अ० क्रि० तैरना; डूबना; धँसना।

भसमंत*–वि० जला हुआ।

भसम–पु० दे० 'भस्म'। **–पत्ती**–गाँजा।

भसमा–पु० आटा (साधु); दे० 'वस्मा' (अ०)।

भसल–पु० (सं०) बड़ा भौंरा।

भसान†–पु० दुर्गा आदिकी प्रतिमाको पूजनोपरांत नदीमें प्रवाहित करना।

भसाना†–स० क्रि० तैराना; डुबाना; धँसाना।

भसिंड, भसींड–पु० कमलनाल।

भसित–वि० (सं०) भस्मीभूत। पु० भस्म।

भसुंड*–पु० हाथी।

भसुर–पु० पतिका वड़ा भाई, जेठ ।

भसूँड़–पु० हाथीकी सूँड़ ।

भस्त्रका, भस्त्राका, भस्त्रिका–स्त्री० (सं०) छोटी भस्त्रा ।

भस्त्रा–स्त्री० (सं०) भाथी; मशक; प्राणायामका एक प्रकार । **–फला**–स्त्री० एक क्षुप ।

भस्त्री–स्त्री० (सं०) दे० 'भस्त्रा' ।

भस्म(न्)–पु० (सं०) राख; चिताकी राख; दवाके कामके लिए फूँकी हुई धातु आदि, कुश्ता । **–कार**–पु० धोवी । **–कूट**–पु० राखका ढेर; एक पर्वत । **–गंधा,–गंधिका,–गंधिनी**–स्त्री० रेणुका (गंधद्रव्य) । **–गर्भ**–पु० तिनिश वृक्ष । **–गर्भा**–स्त्री० रेणुका; कपिलशिशपा । **–गात्र**–पु० कामदेव । **–चय,–पुंज**–पु० भस्मराशि । **–जावाल**–पु० एक उपनिषदका नाम । **–तूल**–पु० हिम, पाला । **–प्रिय**–पु० शिव । **–वाण**–पु० ज्वर । **–मेह**–पु० अश्मरी (पथरी) रोगका एक भेद । **–राशि**–स्त्री० राखका ढेर । **–रोहा**–स्त्री० दग्धा वृक्ष, दग्धरुहा । **–वेधक**–पु० कपूर । **–शयन,–शय्या**–पु० शिव । **–शर्करा**–स्त्री० पोटास (?) । **–शायी(यिन्)**–पु० शिव । **–शुद्धिकर**–पु० शिव । **–सात्**–वि० जो भस्मरूप हो गया हो, भस्मीभूत । **–स्नान**–पु० सारी देहमें भस्म मलना ।

भस्मक–पु० (सं०) सोना; चाँदी; विडंग; एक रोग जिसमें जो कुछ खाया जाय तुरत पचा जैसा ज्ञात होता (लेकिन पचता नहीं) और रोगीको तेज भूख लगी रहती है ।

भस्मांग–वि० (सं०) भस्मके रंगका ।

भस्माग्नि–स्त्री० (सं०) भस्मक रोग ।

भस्माचल–पु० (सं०) कामरूपका एक पर्वत ।

भस्मावशेष–वि० (सं०) जो राखमात्र रह गया हो, जो जलकर राख हो गया हो । पु० राखके रूपमें बचा अंश ।

भस्मासुर–पु० (सं०) एक दैत्य जिसने शिवसे यह वरदान प्राप्त किया था कि वह जिसके सिरपर हाथ रखेगा वह जल जायगा ।

भस्माह्वय–पु० (सं०) कपूर ।

भस्मित–वि० जला या जलाया हुआ ।

भस्मीभूत–वि० (सं०) जो जलकर राख हो गया हो, नष्ट ।

भस्सड़–वि० मोटा, बेडौल (मनुष्य) ।

भस्सी–स्त्री० चूने, कोयले आदिका चूरा ।

भहराना–अ० क्रि० यकवारगी गिरना; टूट पड़ना ।

भहूँ–स्त्री० भौंह ।

भाँई–पु० खरादी ।

भाँउर, भाँउरि*–स्त्री० दे० 'भाँवर' ।

भाँऊँ*–पु० दे० 'भाव' ।

भांग–वि० (सं०) भाँगका बना । पु० भाँगका खेत ।

भाँग–स्त्री० गाँजेकी जातिका एक पौधा जिसकी पत्तियाँ नशा पैदा करती हैं; इसकी पत्तियाँ; इन पत्तियोंको घोंटकर बनाया हुआ पेय । मु० **–खा जाना**–नशेमें होनेकी-सी बातें करना । **–छानना**–भाँग पीना । **(घरमें भूँजी)–न होना**–दरिद्र होना ।

भांगक–पु० (सं०) चीथड़ा ।

भांगड़ा–पु० पंजावका एक सामूहिक लोकनृत्य ।

भांगीन–पु० (सं०) भाँगका खेत । वि० भाँगका ।

भाँज–स्त्री० भाँजनेकी क्रिया या भाव; मोड़, तह; भुनाई, बट्टा ।

भाँजना–स० क्रि० तह करना; डोर आदिकी कई लड़ोंको एकमें मिलाकर बटना; घुमाना (मुगदर आदि) ।

भांजा–पु० दे० 'भानजा' । (स्त्री०–'भांजी' ।)

भाँजी–स्त्री० चुगली; बहकाने, रुष्ट करनेवाली बात । मु० **–मारना**–बाधा डालना ।

भाँट–पु० दे० 'भाट' ।

भाँटा†–पु० बैंगन ।

भांड–पु० (सं०) भाँड़ा, बरतन; घी-तेलका कुप्पा; दुकानका माल, सामान; घोड़ेका एक साज; नदीका पेटा; भाँड़का काम; एक बाजा; गर्दभांड वृक्ष । **–कला**–स्त्री० मट्टीके बरतन बनानेकी कला । **–गोपक**–पु० बौद्ध विहारमें पात्र रखनेका काम करनेवाला व्यक्ति । **–पति**–पु० व्यापारी । **–पुट**–पु० हज्जाम । **–पुष्प**–पु० एक तरहका साँप । **–प्रतिभांडक**–पु० विनिमय, चीजोंक अदला-बदला । **–भरक**–पु० पात्रमें रखी हुई वस्तुएँ । **–शाल**–स्त्री० भंडार ।

भाँड़–पु० मसखरा; महफिलोंमें हँसी-मजाककी नकलें आदि करनेका पेशा करनेवाला; वह जिसके पेटमें बात न पचे; निर्लज्ज व्यक्ति; दे० 'भाँड़ा'; * उपद्रव; हँसी; भंडाफोड़–'इहाँ कपट कर होइहि भाँड़ू'–प० । **–भगतिये**–पु० नाचने-गाने आदिका पेशा करनेवाले ।

भांडक–पु० (सं०) छोटा पात्र; व्यापारिक वस्तुएँ ।

भांडन–पु० (सं०) झगड़ा ।

भाँड़ना–स० क्रि० बिगाड़ना, नष्ट करना; बदनाम करते फिरना; * घूम-घूमकर देखना । अ० क्रि० भटकना ।

भाँड़ा–पु० बरतन; * भाँड़पन । मु० **–(ड़े) भरना**–पछताना; फूट-फूटकर रोना । **–में जी देना**–किसीपर दिल लगा होना ।

भांडागार–पु० (सं०) भंडार, गोदाम; खजाना ।

भांडागारिक–पु० (सं०) भंडारी; खजांची ।

भांडार–पु० (सं०) भंडार । **–पंजी**–स्त्री० (स्टाक बुक) भांडारमें रखी वस्तुओंकी सूची और ब्यौरा । **–पाल**–पु० (स्टोरकीपर) विविध वस्तुओंके संग्रह या भांडारकी रक्षा, देखरेख करनेवाला कर्मचारी ।

भांडारिक, भांडारी(रिन्)–पु० (सं०) भंडारी, 'स्टाकिस्ट', भंडारका रक्षक, अध्यक्ष ।

भांडि–स्त्री० (सं०) किसबत । **–वाह**–पु० हज्जाम । **–शाला**–स्त्री० नाईकी दुकान ।

भांडिक–पु० (सं०) हज्जाम; तुरही आदि बजाकर जगानेवाला ।

भांडिका–स्त्री० (सं०) औजार; एक पौधा ।

भांडिनी–स्त्री० (सं०) टोकरी ।

भांडिल–पु० (सं०) हज्जाम ।

भांडीर–पु० (सं०) बरगद; एक क्षुप । **–वन**–पु० वृंदावनका एक भाग । **–०नंदन,–०वासी(सिन्)**–पु० कृष्ण ।

भाँड़चो*–पु० भाँड़पन ।

भांण–पु० सूर्य ।

भांत–वि० (सं०) दीप्त, प्रकाशयुक्त; वज्ररूप ।

भाँत–स्त्री० दे० 'भाँति' ।

भाँति–स्त्री० तरह, प्रकार, रंगढंग; * मर्यादा । **–भाँतिके**–तरह-तरहके, रंग-बिरंगके ।

भांद–पु० (सं०) एक उपपुराण ।

भाँपना–स० क्रि० रंग-ढंगसे जान लेना, ताड़ना ।

भाँपू–वि० भाँप जानेवाला, ताड़ जानेवाला ।

भाँभी*–वि०, स्त्री० घूमनेवाली ।

भाँयँ-भाँयँ–पु० सन्नाटेमें होनेवाली हवाकी आवाज ।

भाँवना–स० क्रि० खरादपर घुमाना; * गढ़कर सुंदर बनाना; † घुमाना; मथना (मट्ठा भावना), बिलोना । अ० क्रि० घूमना ।

भाँवर–स्त्री० परिक्रमा; विवाहके समय की जानेवाली अग्निकी परिक्रमा; खेत जोतते समय एक बार चारों ओर घूम आना । * पु० भौंरा । मु० **–भरना**–परिक्रमा करना ।

भाँवरा*–पु० आवर्त, भँवर; परिक्रमा ।

भाँवरि, भाँवरी*–स्त्री० चक्कर, परिक्रमा ।

भाँस†–स्त्री० (गलेकी) आवाज, स्वर, शब्द ।

भा*–अ० चाहे, या । * अ० क्रि० हुआ । स्त्री० (सं०) चमक, दीप्ति; किरण; कांति । **–कर**–पु० सूर्य । **–कूट**–पु० एक मछली । **–कोश,–नाभि,–नेमि**–पु० सूर्य । **–रवि**–पु० किरातार्जुनीयके रचयिता । **–रूप**–पु० आत्मा; ब्रह्म ।

भाइ*–पु० भाव; प्रेम; विचार; भाई । स्त्री० रीति, प्रकार; चाल-ढाल ।

भाइप*–पु० भ्रातृत्व, भाईचारा ।

भाई–पु० एक ही माँ-बापका बेटा, भ्राता, सहोदर, ज्ञातिबंधु; बराबरवाले (प्रियजन)का संबोधन । **–चारा**–पु० भाईका नाता या भाव, बंधुत्व । **–दूज**–स्त्री० भैयादूज । **–बंद**–पु० कुल-कुटुंबके लोग, ज्ञाति-जन । **–बिरादर**–पु० भाई-बंद ।

भाई-भतीजावाद–पु० (नीपाटिज्म) नौकरी, आर्थिक सहायता

आदि दिलानेमें अपने भाई, भतीजे या किसी अन्य संबंधी आदिके साथ विशेष पक्षपात करना, स्वजनपक्षपात ।

भाउ*–पु० दे० 'भाव' ।

भाऊ*–पु० भाव; प्रेम; स्वभाव; रूप; प्रभाव; वृत्ति; महिमा; अवस्था; † भाई ।

भाएँ*–अ० समझमें ।

भाकसी–स्त्री० भाड़ ।

भाकुर–पु० एक तरहकी मछली ।

भाक्त–वि० (सं०) जिसे नित्य भोजन दिया जाता हो, आश्रित; खाने योग्य; औपचारिक, गौण । पु० चावल ।

भाक्तिक–वि० (सं०) आश्रित ।

भाक्ष–वि० (सं०) वहुत खानेवाला, भकोसू ।

भाख*–पु० दे० 'भाषण' ।

भाखना*–अ० क्रि०, स० क्रि० कहना, वोलना ।

भाखर–पु० पर्वत ।

भाखा*–स्त्री० दे० 'भाषा' ।

भाग–पु० (सं०) हिस्सा, अंश; वँटवारा; चौथाई; परिधिका ३० वाँ भाग; राशिचक्रका ५० वाँ भाग; राशि या संख्या-विशेषको कई अंशमें वाँटनेकी क्रिया, तकसीम (ग०) । **–कल्पना**–स्त्री० हिस्से वाँटना, वँटवारा । **–धान**–पु० खजाना । **–धेय**–पु० भाग; भाग्य; सौभाग्य; राजाको दिया जानेवाला कर; भाग पानेका अधिकारी । **–फल**–पु० भाज्यको भाजकसे भाग देनेपर प्राप्त संख्या, लब्धि । **–भाक्(ज्)**–वि० हिस्सेदार । **–भुक्(ज्)**–पु० राजा । **–लक्षणा**–स्त्री० जहदजहल्लक्षणा । **–हर**–वि० हिस्सेदार । **–हार**–पु० भाग, तकसीम । **–हारी(रिन्)**–वि० हिस्सेदार । पु० उत्तराधिकारी ।

भाग–पु० भाग्य, तकदीर; ललाट; पार्श्व; प्रातःकाल । **–भरा**–वि० भाग्यवान् । **–भरी**–स्त्री० सौभाग्यशालिनी । **–वंत,*–वान**–वि० भाग्यवान्, खुशनसीव । मु० **–खुलना,–जागना**–तकदीर खुलना, भाग्योदय होना । **–फूटना**–वुरे दिन आना ।

भागक–पु० (सं०) भाग; भाजक ।

भागड़–स्त्री० वहुतसे लोगोंका आतंकित होकर एक साथ भागना, भगदड़; उतावली, जल्दवाजी ।

भागदौड़–स्त्री० दौड़धूप, भागड़ ।

भागना–अ० क्रि० किसी जगहसे हट जानेके लिए दौड़ना, पलायन करना; चल देना; जान वचाना, हारकर पलायन करना ।

भागनेय–पु० दे० 'भागिनेय' ।

भागरा–पु० एक संकर राग ।

भागवत–पु० (सं०) अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें मुख्यतः कृष्णकी कथा वर्णित है; देवीभागवत; भगवद्भक्त । वि० भगवत्संबंधी । **–धर्म**–पु० विष्णु और उनके अवतारोंको इष्टदेव माननेवाला भक्तिप्रधान मत ।

भागवती–स्त्री० एक तरहकी कंठी । वि० भगवत् संबंधी ।

भागाभाग–स्त्री० भागनेकी हलचल, भागड़ ।

भागार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) हिस्सा चाहनेवाला ।

भागार्ह–वि० (सं०) हिस्सा पानेका हकदार; हिस्सोंके मुताविक वाँटा जानेवाला ।

भागिक–वि० (सं०) भाग-संवंधी, आंशिक; जिसपर व्याज मिले ।

भागिता–स्त्री० (पार्टनरशिप) किसी कारवारमें साझा होना, साझेदारी, हिस्सेदारी ।

भागिनेय–पु० (सं०) भानजा ।

भागी(गिन्)–वि० (सं०) जिसमें भाग, हिस्से हों; हिस्सेदार; शामिल, शरीक (पापभागी); मालिक, अधिकारी; गौण । पु० हिस्सेदार ।

भागीरथ–वि० (सं०) भगीरथ-संवंधी । * पु० दे० 'भगीरथ' ।

भागीरथी–स्त्री० (सं०) गंगा; गंगाकी वह शाखा जो वंगालमें वहती है (पुराणोंके अनुसार भगीरथ गंगाको स्वर्गसे पृथ्वीपर लाये) ।

भागुरि–पु० (सं०) सांख्यसूत्रोंपर भाष्य लिखनेवाले एक मुनि ।

भागू†–वि० भगोड़ा ।

भाग्य–वि० (सं०) विभाज्य, भाग, हिस्सेका अधिकारी । पु० शुभाशुभसूचक कर्मजन्य अदृष्ट, नियति, तकदीर; सौभाग्य । **–क्रम**–पु० भाग्यका क्रम, फेर । **–दा**–स्त्री० (लॉटरी) घुड़दौड़ आदिका परिणाम देखकर या चिट्ठी निकालकर टिकट खरीदनेवालोंमें इनाम वाँटनेकी पद्धति, लॉटरी । **–दोष**–पु० भाग्यका दोष, तकदीरकी खरावी । **–पत्रक**–पु० (लॉट) वह चिट्ठी या कागजकी गोली आदि जिसे फेंककर या उठाकर किसी मालके वँटवारे, किसीकी नियुक्ति, चुने जाने आदिका विनिश्चय किया जाता है । **—वल**–पु० भाग्यका वल, तकदीर । **–भाव**–पु० जन्मकुंडलीमें भाग्यका स्थान (लग्नसे ९ वाँ) । **–लिपि**–स्त्री० तकदीरकी लिखावट, अदृष्ट रेखा । **–वश,–वशात्**–अ० भाग्यके वल, किस्मतसे । **–वाद**–पु० भाग्यके अनुसार ही शुभाशुभकी प्राप्ति माननेका सिद्धांत । **–वादी(दिन्)**–वि० भाग्यवाद माननेवाला । **–विधाता(तृ)**–पु० तकदीर वनानेवाला, अदृष्टका नियंता । (स्त्री०–'विधात्री' ।) **–विपर्यय**–पु० भाग्यका उलट-फेर, दिनका फेर । **–विप्लव**–पु० दुर्भाग्य । **–शाली(लिन्)**–वि० भाग्यवान् । **–संपद्**–स्त्री० सौभाग्य । **–हीन**–वि० अभागा, वदनसीव ।

भाग्यवान् (वत्)–वि० (सं०) भाग्यशाली, खुशकिस्मत ।

भाग्याधीन, भाग्यायत्त–वि० (सं०) भाग्यपर आश्रित, जो भाग्यके अधीन हो ।

भाग्योदय–पु० (सं०) भाग्यका खुलना, जागना ।

भाजक–पु० (सं०) भाग करनेवाला, विभाजक, वह संख्या जिससे किसी राशिको भाग दें ।

भाजकांश–पु० (सं०) वह भाजक जिससे किसी राशिको भाग देनेपर कुछ वचे नहीं ।

भाजन–पु० (सं०) वरतन, पात्र; योग्य अधिकारी; आधार; एक तौल, आढक; विभाग करना । वि० भाग लेनेवाला, शामिल होनेवाला ।

भाजनता–स्त्री० पात्र होनेका भाव या स्थिति, योग्यता ।

भाजना*–अ० क्रि० दे० 'भागना' ।

भाजित–वि० (सं०) भाग किया हुआ, विभक्त ।

भाजी–स्त्री० (सं०) माँड़; साग आदि ।

भाजी(जिन्)–वि० (सं०) भाग लेनेवाला, शरीक होनेवाला; संवद्ध । पु० सेवक, नौकर ।

भाज्य–वि० (सं०) भाग करने योग्य, विभाज्य; वह अंक जिसमें भाग दिया जाय ।

भाट–स्त्री० नदीके किनारोंके वीचकी जमीन, पेटा; दे० 'भाठ' । पु० राजाओं आदिके यश, वंश, चरितका गान करनेवाला, वंदी; एक जाति जो अपने जजमानोंका वंशचरित सुनाने, स्तुतिपरक तुकवंदी आदि करनेका पेशा करती है; झूठी वड़ाई करनेवाला, चापलूस; (सं०) भाड़ा, किराया ।

भाटक–पु० (सं०) (रेंट) मकान या जमीनका किराया, लगान । **–अधिकारी**–मकान भाड़े या भाड़ेके मकान संवंधी विवाद निर्णय करनेवाला राज्य अधिकारी । **–राशि**–स्त्री० (रेंटल) कियायेसे होनेवाली समस्त आय, किरायेके रूपमें प्राप्त धनराशि ।

भाटा–पु० समुद्रके पानीके नियतकालिक चढ़ावका उतार, ज्वारका उलटा; पथरीली जमीन ।

भाटि–स्त्री० (सं०) भाड़ा; वेश्याकी कमाई ।

भाटिया–पु० खत्रियोंकी एक उपजाति ।

भाठी–स्त्री० जल प्रवाह ।

भाटचौ*–पु० भाटका कार्य, स्तुतिपाठ ।

भाठ–स्त्री० नदीकी वाढ़में वहकर आनेवाली मिट्टी जो किनारेकी जमीनपर जम जाती है; धारा; कछार ।

भाठा–पु० दे० 'भाटा'; गढ़ा ।

भाठी–स्त्री० भाटा; * दे० 'भट्ठी' ।

भाड़–पु० भड़भूँजेकी भट्ठी जिसमें वालू गरम कर वह दाना भूनता है । मु० **–झोंकना**–तुच्छ काम करना; निरर्थक श्रम करना । **–में जाय**–चूल्हेमें जाय । **–में झोंकना,–में डालना**–चूल्हेमें डालना, नष्ट करना; त्यागना ।

भाड़ा–पु० वह रकम जो किसी चीजको इस्तेमाल करनेके वदले दी जाय, किराया; गाड़ी आदिका किराया। **–(ड़े) का टट्टू**–उजरतपर काम करनेवाला; वह आदमी जिसे पैसा देकर जो चाहे काम ले।

भाड़ैत|–वि० भाड़ेपर काम करनेवाला, भृतिभोगी।

भाण–पु० (सं०) रूपक (दृश्यकाव्य) का एक भेद (इसमें हास्यरसकी प्रधानता होती है और यह एक अंकका होता है)।

भात–पु० उवाला हुआ चावल; व्याहकी एक रस्म, वरके पिताका कन्याके पिताके घर जाकर कच्ची रसोई खाना; (सं०) दीप्ति; प्रभात। वि० चमकदार; प्रकट होनेवाला।

भाति–स्त्री० (सं०) चमक, दीप्ति; ज्ञान।

भातु–पु० (सं०) सूर्य।

भाथा–पु० तीर रखनेकी थैली, तरकश; वड़ी भाथी।

भाथी–स्त्री० चमड़ेकी धौंकनी।

भादों–पु० सावनके बाद पड़नेवाला महीना, भाद्रपद।

भादौं*–पु० दे० 'भादों'।

भाद्र–पु० (सं०) दे० 'भाद्रपद'। **–पद**–पु० भादोंका महीना। **–पदा**–स्त्री० पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र। **–पदी**–स्त्री० भाद्रपदकी पूर्णिमा।

भाद्रमातुर–पु० (सं०) सतीका पुत्र।

भाद्री–स्त्री० (सं०) भादोंकी पूर्णिमा।

भान*–पु० सूर्य; (सं०) प्रकाश; दीप्ति; ज्ञान; प्रतीति, आभास।

भानजा–पु० वहिनका पुत्र। (स्त्री० 'भानजी'।)

भानना*–स० क्रि० तोड़ना; काटना; नष्ट करना।

भानमती–स्त्री० जादूके खेल करनेवाली, जादूगरनी। मु० **–का कुनवा**–जहाँ-तहाँसे लिये हुए वेमेल उपादानोंसे वनी वस्तु। **–का पिटारा**–वह जिसमें तरह-तरहकी चीजें मौजूद हों।

भानव–वि० (सं०) सूर्य-संवंधी।

भानवी*–स्त्री० यमुना।

भानवीय–वि० (सं०) सूर्य-संवंधी। पु० दाहिनी आँख।

भाना–अ० क्रि० रुचना, अच्छा लगना; फवना; * भान होना, जान, पड़ना।० स० क्रि० खरादपर चढ़ाना; चमकाना; (मट्ठा) मथना, भाँवना (टूटे काँटे)।

भानु–पु० (सं०) सूर्य; प्रभा; किरण; मदार; राजा; स्वामी; विष्णु; शिव। **–कंप**–पु० ग्रहणादिसे सूर्यविवका काँपना। **–केसर**–पु० सूर्य। **–ज**–पु० शनि; यम। **–जा, –तनया, –तनूजा**–स्त्री० यमुना। **–दिन, –वार**–पु० रविवार। **–पाक**–पु० औषधको धूपमें रखकर तैयार करने या पकानेकी क्रिया। **–प्रताप**–पु० रामायणमें वर्णित एक राजा जो कहा जाता है कि ब्राह्मणोंके शापसे दूसरे जन्ममें रावण हुआ। **–फला**–स्त्री० केला। **–मुखी**–स्त्री० सूर्यमुखी। **–सुत**–पु० यम; शनि; कर्ण। **–सुता**–स्त्री० यमुना। **–सेन**–पु० कर्णका एक पुत्र।

भानुमती–स्त्री० (सं०) गंगा; दुर्योधनकी पत्नी; विक्रमादित्यकी रानी जो इंद्रजाल विद्याकी पंडिता थी।

भानुमान्(मत्)–वि० (सं०) तेजोमय, दीप्तिमान्; सुंदर। पु० सूर्य; कृष्णका एक पुत्र।

भाप, भाफ–स्त्री० पानीको खौलानेसे निकलनेवाला वाष्पीय रूप; खौलते हुए जलसे ऊपर उठनेवाला सूक्ष्म जलकण, वाष्प, वुखार; ठोस या तरल पदार्थका अधिक तापसे होनेवाला गैस रूप। मु० **–भरना**–चिड़ियोंका अपने वच्चोंके मुँहमें मुँह डालकर हवा भरना।

भावर, भाभर–पु० एक घास जिसकी रस्सी वटी जाती है; पहाड़की तलहटी और तराईके वीचका जंगल।

भाभरा*–वि० लाल रंगका।

भाभी–स्त्री० वड़े भाईकी स्त्री, भावज।

भाम–पु० (सं०) दीप्ति, चमक; सूर्य; क्रोध; मदार; वहनोई; एक वृत्त। * स्त्री० भामिनी।

भामक–पु० (सं०) वहनोई।

भामता*–पु० भावता, प्रियतम।

भामती*–स्त्री० भावती, प्रियतमा; (सं०) आचार्य वाचस्पति मिश्रकी पत्नी; भामतीके नामसे लिखी गयी टीका।

भामतीय–स्त्री० दक्षिण भारतकी एक खानावदोश जातिका नाम।

भामनी–पु० (सं०) परमेश्वर।

भामह–पु० (सं०) एक अलंकार-शास्त्री।

भामा–स्त्री० (सं०) क्रोधी स्त्री; सत्यभामा; * स्त्री।

भामिन*–स्त्री० दे० 'भामिनी'।

भामिनी–स्त्री० (सं०) क्रोध करनेवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री; एक छंदका नाम।

भामी(मिन्)–वि० (सं०) क्रोधी; क्रुद्ध; सुंदर; दीप्तिमान्।

भाय*–पु० भाई; भाव; इच्छा; प्रेम; परिमाण; दर; ढंग।

भायप–पु० भाईचारा।

भाया*–वि० जो अच्छा लगता हो, प्यारा।

भारंगी–स्त्री० (सं०) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवाके काम आती हैं।

भारंड–पु० (सं०) एक पक्षी। (स्त्री० 'भारंडी'।)

भार–पु० (सं०) वोझ, गुरुत्व; (वेट) वह वल जिससे पृथ्वी अपने केन्द्रकी ओर अन्य वस्तुओंको आकृष्ट करती है। वस्तुओंका भार पृथ्वीतलसे दूर जानेपर घटता है; राशि, ढेर; जिम्मेदारी; वजन, सँभाल; कठिन कार्य; २ हजार पलका एक वजन; वहँगीका वोझ; वहँगी; विष्णु; ढोल वजानेका एक ढंग; * आश्रय; भाड़। वि० वोझा-सा लगनेवाला, कठिन, कष्टरूप। **–केंद्र**–पु० गुरुत्व-केंद्र, भारका मध्यविंदु। **–क्षम**–वि० भार वहन करनेमें समर्थ (पोतादि)। **–ग्रस्त संपदा**–स्त्री० वह संपत्ति जिसपर ऋणका भार हो गया हो (एन्कंवर्ड एस्टेट)। **–जीवी(विन्)**–पु० भारवाहक। **–तुला**–स्त्री० स्तंभके नौ भागोंमेंसे वीचका भाग। **–दंड**–पु० वहँगी। **–भारीन्(रि), –भृत्**–वि० भार वहन करनेवाला। **–भूत**–वि० बोझरूप, कष्टप्रद; भृत। पु० विष्णु। **–यष्टि**–स्त्री० वहँगी। **–वाह, –वाहक, –वाहिक**–पु० वोझ ढोनेवाला, मोटिया। **–वाहन**–पु० लद्दू पशु; गाड़ी। **–वाही**–स्त्री० नील। **–वाही(हिन्)**–वि० दे० 'भारभारी'। **–शंकु**–पु० लटकन, लिवर। **–शिव**–पु० भारतवर्षका एक प्राचीन राजवंश। **–सह**–वि० भारी वोझ उठानेमें समर्थ। पु० गधा। **–हर, –हार**–वि०, पु० वोझ उठानेवाला। **–हानि**–स्त्री० (लॉस ऑफ वेट) भार या वजनमें होनेवाली कमी। **–हारी(रिन्)**–पु० विष्णु, कृष्ण। वि० भार वहन करनेवाला। **–हीनता**–स्त्री० (वेटलेसनेस) अन्तरिक्ष यात्रीका यान जब भू-परिक्रमा करने लग जाता है तो उस समय यानका इंजिन भी वन्द रहता है, और ऐसी दशामें यानमें स्थित सभी वस्तुएँ भारहीनताकी दशामें होती हैं। यदि गिलासका पानी नीचेकी ओर उँडेलें तो वह गिरेगा ही नहीं। क्योंकि वह भारहीनताकी दशामें है। मु० **(किसीका)–उठाना**–दायित्व ग्रहण करना। **–उतरना**–किसी कठिन कर्तव्यका पूरा होना; ऋणसे मुक्ति मिलना। **–देना**–वोझ डालना।

भारक–पु० (सं०) भार; एक तौल।

भारत–पु० (सं०) भरतवंशमें उत्पन्न जन; भारतवर्ष, हिंदुस्तान; (भरतवंशका चरितरूप ग्रंथ) महाभारत; नाट्यशास्त्र (भरतकृत); नट; संग्राम (हिं०)–'घरी एक भारत भा, भा असवारन्ह मेल'–प०। **–खंड**–पु० दे० 'भरतखंड'। **–जात**–वि० हिंदुस्तानमें जनमा हुआ। **–नंद**–पु० तालके ६० भेदोंमेंसे एक। **–महासागर**–पु० भारतवर्षके दक्षिणमें अवस्थित महासमुद्र। **–माता(तृ)**–स्त्री० भारतवासियोंकी जननीरूप भारतभूमि। **–रत्न**–पु० प्रगाढ़ पांडित्य, अद्वितीय राष्ट्रसेवा, विश्वशांतिके प्रयत्नादिके लिए भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला सर्वोच्च सम्मान। **–वर्ष**–पु० जंवूद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक, भारत देश, हिंदुस्तान। **–विद्या**–स्त्री० (इण्डोलॉजी) भारतीय इतिहास, संस्कृति, भाषा एवं साहित्यसंवंधी शास्त्र। **–वासी(सिन्)**–पु० भारतमें वसनेवाला, हिंदुस्तानी। **–संतान**–स्त्री० भारतमें उत्पन्न जन, भारतवासी।

भारतवर्षीय–वि० (सं०) भारतवर्ष-संवंधी।

भारति*–स्त्री० दे० 'भारती'।

भारती–स्त्री० (सं०) वाणी; वाणीकी अधिष्ठात्री, सरस्वती;

मंडन मिश्रकी पत्नी; एक वृत्ति या वर्णनशैली (सा०); एक पक्षी; नाटचकला; सन्न्यासियोंकी एक उपाधि; भारतमाता। भारतकी भाषा हिन्दी, खड़ी बोली–‘आलोच्यकाल भारती कविताका है’–सुधीन्द्र।

भारतीय–वि० (सं०) भारत-संबंधी। पु० भारतवासी।

भारतीयकरण, भारतीयीकरण–पु० (सं०) भारतीय बनाना; संस्था या विभागविशेषके कर्मचारियोंमें भारतीयोंकी प्रधानता कर देना।

भारतेंदु हरिश्चंद्र–पु० (संवत् १९०७-१९४१) वर्तमान हिंदी गद्यके प्रवर्तक जिन्होंने हिंदी साहित्यको नवीन मार्ग दिखलाया। उन्होंने मुख्य रूपसे नाटकोंकी रचना की किंतु शृंगाररसयुक्त तथा देशभक्तिमय काव्य एवं अन्यान्य विषयोंकी ओर भी ध्यान दिया।

भारथ*–पु० युद्ध; अर्जुन; दे० ‘भारत’।

भारथी*–पु० सिपाही।

भारद्वाज–वि० (सं०) भरद्वाजके गोत्र या वंशमें उत्पन्न। पु० द्रोणाचार्य; अगस्त्य; मंगल ग्रह; बृहस्पतिका एक पुत्र; भरदूल पक्षी; अस्थि।

भारद्वाजी*–स्त्री० (सं०) जंगली कपास।

भारना–स० क्रि० बोझ लादना; दबाना।

भारय–पु० (सं०) भरदूल पक्षी।

भारव–पु० (सं०) धनुष्की डोरी।

भारवि–पु० दे० ‘भा’में।

भारवी–स्त्री० (सं०) तुलसी।

भारा*–वि० भारी; विशाल; अधिक; असह्य। † पु० भाड़ा; दे० ‘भार’।

भाराक्रांत–वि० (सं०) बोझसे दबा हुआ।

भाराक्रांता–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

भारावतरण–पु० (सं०) बोझ उतरना।

भारावतारण–पु० (सं०) बोझ उतारना।

भारि–पु० (सं०) सिंह।

भारिक–वि० (सं०) भारी; सूजा हुआ (श्लीपद)। पु० (पोर्टर) बोझ ढोनेवाला।

भारी–वि० कठिन; बड़ा; बहुत ज्यादा; गहरा; देरमें पचनेवाला; भाररूप, कष्टकर। **–पन**–पु० भारी होनेका भाव, बोझ; गरिष्ठता। **–जल**–पु० ऐसा जल जिसके अणु भारी हाइड्रोजन D (डचूटीरियम) तथा ऑक्सीजनके संयोगसे बने हों (सूत्र D_2O)। **–पानी** पु० (हैवी वाटर) भारी हाइड्रोजन तथा आक्सीजन मिश्रित, रासायनिक पानी। **–भरकम**–वि० बड़े डील-डौलका। मु० **–रहना**–चुप रहना। **(–पर)–होना,–पड़ना**–जबर्दस्त पड़ना, (–से) प्रबल होना (अकेला दसपर भारी है)।

भारी(रिन्)–वि० (सं०) भारवाला, वजनी।

भारीट–पु० (सं०) एक पक्षी।

भारुंड–पु० (सं०) एक चिड़िया; एक साम; उस सामके द्रष्टा एक ऋषि।

भारुष–पु० (सं०) वैश्य व्रात्य और अविवाहित वैश्यासे उत्पन्न पुत्र; श्मशानमें शक्तिकी उपासना करनेवाला।

भारोढि–स्त्री० (सं०) भारवहन, बोझ ढोनेकी क्रिया।

भारोद्वह–पु० (सं०) बोझ ढोनेवाला, मोटिया।

भारोपीय–पु० भारतीय और यूरोपीय।

भार्ग–पु० (सं०) भर्ग देशका राजा; प्रतर्दनका एक पुत्र।

भार्गव–वि० (सं०) भृगु-संबंधी या भृगुसे उत्पन्न। पु० भृगुके वंशमें उत्पन्न पुरुष; शुक्राचार्य; परशुराम; मार्कंडेय; जमदग्नि; शिव; च्यवन; एक प्राचीन जनपद; धनुर्धारी; कुम्हार; ज्योतिषी; हाथी; एक हिंदू जाति। **–क्षेत्र**–पु० केरलका एक नाम। **–प्रिय**–पु० हीरा।

भार्गवक–पु० (सं०) हीरा।

भार्गवी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; पार्वती; देवयानी; दूब।

भार्गवीय–वि० (सं०) भृगु-संबंधी।

भार्गवेश–पु० (सं०) परशुराम।

भार्गी–स्त्री० (सं०) भारंगी।

भार्ङ्गी–स्त्री० (सं०) भारंगी।

भार्द्वाजी–स्त्री० (सं०) बनकपास।

भार्य–वि० (सं०) भरण करने योग्य। पु० सेवक; आश्रित व्यक्ति; आयुधजीवी।

भार्या–स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री, पत्नी। **–द्रोही(हिन्)**–वि० पत्नीके प्रति द्वेष-भाव रखनेवाला। **–वृक्ष**–पु० पतंग नामक वृक्ष। **–सौश्रुत**–वि० स्त्रीके वशमें रहनेवाला।

भार्याजित–वि० (सं०) जनमुरीद, जोरूका गुलाम। पु० एक तरहका हिरन।

भार्याट–वि० (सं०) अपनी पत्नीको दूसरेके पास भेजनेवाला, जोरूकी कमाई खानेवाला।

भार्याटिक–वि० (सं०) स्त्रीके शासनमें रहनेवाला।

भार्यात्व–पु० (सं०) पत्नीत्व।

भार्यारु–पु० (सं०) बिना नियोगके परस्त्रीगमन करनेवाला; एक तरहका हिरन; एक पर्वत।

भार्श्य–पु० (सं०) प्रबलता, जोर; अधिकता; तीव्रता।

भाल–पु० भाला; गाँसी; भालू; (सं०) माथा; ललाट; तेज; अंधकार। **–चंद्र**–पु० शिव; गणेश। **–चंद्रा, चंद्री**–स्त्री० दुर्गा। **–दर्शन**–पु० सिंदूर; शिव। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० जो किसीकी भौं देखता रहे। पु० मालिकके इशारेपर दौड़नेवाला नौकर। **–दृक्(श्),–नयन,–नेत्र,–लोचन**–पु० शिव।

भालका*–स्त्री० दे० ‘भलका’।

भालना–स० क्रि० भली भाँति देखना; तलाश करना (केवल ‘देखना’के साथ प्रयुक्त)।

भालांक–वि० (सं०) (वह पुरुष) जिसके माथेपर सौभाग्यसूचक रेखाएँ हों। पु० शिव; करपत्र नामका अस्त्र (आरा); एक शाक; रोहू मछली; कछुआ।

भाला–पु० बरछा, नेजा। **–बरदार**–पु० भाला धारण करने, चलानेवाला।

भालि*–स्त्री० बरछी; शूल।

भालिम†–स्त्री० अच्छाई, भलाई।

भाली–स्त्री० भालेकी गाँसी; शूल।

भालु–पु० भालू; (सं०) सूर्य। **–नाथ**–पु० जांबवान।

भालुक, भालूक, भाल्लुक, भाल्लूक–पु० (सं०) रीछ, भालू।

भालू–पु० एक वन्य हिंस्र जंतु जिसके शरीरपर लंबे-लंबे बाल होते हैं।

भावंता*–पु० प्रेमपात्र–‘कैसे मन धन लूटते भावंताके नैन’–रतन०; होनहार।

भाव–पु० दर, निर्ख; (सं०) जन्म, उत्पत्ति; होना, सत्ता, अभावका उलटा; चित्तमें उत्पन्न होनेवाला विकार,हर्ष-शोकादि मनोविकार; भावना; जो कुछ मनमें सोचा जाय, खयाल; शब्द या वाक्यका अर्थ, आशय; राग, प्रेम; भावसूचक अंगचेष्टा, भंगी; अवस्था, दशा; हैसियत, रूप (दासभाव); स्वभाव; श्रद्धा; भक्ति; जन्मकुंडलीके विभिन्न स्थान (तनु, धन आदि); गीतका भाव बतानेवाली अंगचेष्टा; ग्रहोंकी शयन, उपवेशन आदि बारह प्रकारकी चेष्टाओंमेंसे कोई एक; पदार्थ; आत्मा; योनि; द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष और समवाय–ये ६—पदार्थ (वैशे०); निश्चय; प्राणी; व्यवहार; विश्व; कोख; ज्ञानेंद्रिय; उपदेश; एक संवत्सर; ढंग, प्रकार; आदर-मान; विश्वास। **–गति**–स्त्री० इच्छा, मनोभाव। **–गम्य**–वि० मनसे जानने योग्य। **–ग्राही(हिन्)**–वि० भाव, तात्पर्यको समझनेवाला, रसज्ञ। **–ज**–पु० काम, कामदेव। **–चित्र**–पु० मानसिक कल्पनाको व्यक्त करनेवाला चित्र। **–ज्ञ**–वि० मनोभाव समझनेवाला। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० दे० ‘भालदर्शी’ (असाधु)। **–नाट्य**–पु० भावको अभिव्यक्ति देनेवाला संगीतसहित नाटक। **–परिग्रह**–पु० संग्रह न करते हुए भी संग्रहकी इच्छा करना (जै०)। **–प्रधान**–वि० जिसमें भावकी प्रधानता हो; जिसकी भावानुभूति अधिक तीव्र हो, भाविक। **–प्रवण**–वि० भावप्रधान, भावुक। **–प्रवणता**–स्त्री० भावप्रधान होना; भावोंके वश, भावोंसे परिचालित होनेकी प्रवृत्ति; भावुकता। **–बोधक**–वि० भाव बताने या प्रकट करनेवाला। **–भंगी, भंगिमा**–स्त्री० मनके विकारको व्यक्त करनेवाला

अंग चालन या क्रिया। **–भक्ति–**स्त्री० श्रद्धा-भक्ति, आदर। **–भीनो–**वि० स्त्री० भावयुक्त, स्नेह भावसे ओतप्रोत। **–मृषावाद–**पु० मुँहसे झूठ न बोलना, पर मनमें झूठी बातें सोचना (जै०)। **–मैथुन–**पु० मनमें मैथुनका विचार रखना (जै०)। **–यति–**पु० वह व्यक्ति जो यति जैसा आचरण करे। **–लिपि–**(आइडियोग्राफी)–लिपिका आरंभिक रूप जब वह अक्षरोंके बजाय भाव-प्रतीकोंसे संप्रेषण करती थी। **–वाचक–**वि० किसी चीजका भाव, धर्म, गुण आदि बतानेवाला (प्रत्यय, संज्ञा)। **–वाच्य–**पु० क्रियाका वह रूप जिसमें वाक्यका उद्देश्य कर्ता या कर्म न होकर भाव होता है (व्या०)। **–विकार–**पु० भावके ६ विकार–उत्पत्ति, अस्तित्व, विपरिणमन, वर्धन, क्षय और नाश (यास्क)। **–वृत्त–**पु० ब्रह्मा। **–व्यंजक–**वि० भावबोधक। **–शबलता–**स्त्री० एक अलंकार जिसमें भावोंकी संधि होती है। **–शांति–**स्त्री० एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भावकी शांतिके साथ दूसरेका उदय होता है और शांतिमें ही चमत्कार होता है। **–शुद्धि–**स्त्री० भावकी सचाई, नेकनीयती। **–शून्य–**वि० अनासक्त। **–संधि–**स्त्री० दो भावोंकी संधि (का वर्णन); वह स्थिति जब मनमें एक साथ कई प्रबल भाव उत्पन्न हों। **–समन्वित–**वि० सत्तायुक्त, जिसका अस्तित्व हो। **–समाहित–**वि० जिसके मनमें भाव केंद्रित हो, भक्त। **–सर्ग–**पु० कल्पनाप्रसूत रचना; तन्मात्राओंकी उत्पत्ति (सां०)। **स्थ–**वि० भावमें लीन। **–स्निग्ध–**वि० अनुरक्त। **–हिंसा–**स्त्री० कार्यतः हिंसा न करते हुए मनसे बुरा सोचना (जै०)। **–हीन–**वि० भावरहित।

भावइ*–अ० मनमें आये, जी चाहे तो।

भावक–वि० (सं०) भावना करनेवाला; उत्पादक; श्रेयस्कर; रसज्ञ; भावभरा; भक्त; * प्रेमी। पु० भाव, मनोविकार। * अ० थोड़ा।

भावज–स्त्री० बड़े भाईकी स्त्री, भौजाई। पु० (सं०) दे० 'भाव'में।

भावता*–वि० जो मनको भाये, अच्छा लगे–'सुनि भावती भरत बात'–रामचंद्रिका। पु० प्रेमपात्र। (स्त्री० 'भावती'।)

भाव-ताव–पु० वस्तु मूल्य, निर्ख। **–करना–**जाँचना, सौदेबाजी करना; अ० क्रि० मूल्य ठहराना।

भावन–पु० (सं०) निमित्त कारण; स्रष्टा; शिव; विष्णु; उत्पादन; रुचि-वर्धन; चिंतन, कल्पना; भक्ति-भावना; अनुसंधान; निर्धारण; स्मरण; प्रमाण; किसी चूर्णको रससे तर करके घोटना; सुवासित करना; अनुभूति। वि० दे० 'भावक'; * भाने, अच्छा लगनेवाला। **–क्रिया–**किसी विचारका अनुभावन करना ('आइडेशन')।

भावना*–अ० क्रि० दे० 'भाना'। स्त्री० (सं०) चिंतन, ध्यान, खयाल, कल्पना; उत्पादन; रुचिवर्धन; अनुसंधान; स्मरण; प्रमाण; इच्छा, इरादा; कौआ; जल; चूर्ण आदिको रस, क्वाथ आदिके साथ बार-बार तर करके घोटना। **–मार्ग–**पु० आध्यात्मिक अवस्था। **–युक्त–**वि० चिंतित।

भावनामय–वि० (सं०) भावनायुक्त; काल्पनिक।

भावनाश्रय–पु० (सं०) शिव।

भावनि*–स्त्री० जो जीमें आया, जो कुछ सोचा हो।

भावनीय–वि० (सं०) चिंतनके योग्य, कल्पनाके योग्य; सहनीय।

भावांकन–पु० दे० 'भावलिपि'।

भावांतर–पु० (सं०) मनकी अवस्था दूसरी हो जाना; अर्थांतर।

भावानुग–वि० (सं०) भावका अनुसरण करनेवाला।

भावानुगा–स्त्री० (सं०) छाया। वि० स्त्री० दे० 'भावानुग'।

भावाभास–पु० (सं०) बनावटी भाव; अनुपयुक्त स्थानमें भावका दिखलाया जाना (सा०)।

भावार्थ–पु० (सं०) वह अर्थ जिसमें प्रत्येक शब्दका अर्थ न देकर समूचे वाक्यका आशय दे दिया जाय, मतलब, तात्पर्य।

भावालीना–स्त्री० (सं०) छाया।

भावाव–वि० (सं०) कोमल, नाजुक; दयालु।

भावाश्रित–पु० (सं०) नृत्यका एक भेद।

भाविक–वि० (सं०) भावनाप्रधान, भावुक; स्वाभाविक; भावी; * मर्मज्ञ। पु० एक अर्थालंकार–भूत या भविष्यकी घटनाओंका इस तरह वर्णन करना कि वे आँखोंके सामने घटित होती हुई जान पड़ें।

भावित–वि० (सं०) सोचा हुआ, चिंतित; जाना हुआ; प्रमाणित; प्राप्त; शोधित; जिसमें किसी रस आदिकी भावना दी गयी हो; वासित; मिश्रित; व्यक्त किया हुआ। **–बुद्धि–**वि० दे० 'भावितात्मा'।

भाविता–स्त्री० (सं०) होनहार।

भावितात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसने ईश्वर-स्मरण द्वारा अपनी आत्मा शुद्ध कर ली हो, संत; तल्लीन।

भावित्र–पु० (सं०) त्रिलोक–स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।

भावित्व–पु० (सं०) होनहार, अवश्यंभाविता।

भाविनी–स्त्री० (सं०) सुंदरी स्त्री; साध्वी स्त्री; भावनायुक्त स्त्री; क्रीड़ाप्रिय स्त्री; स्वैरिणी (?)।

भावी–स्त्री० होनी, होनेवाली बात।

भावी(विन्)–वि० (सं०) होनेवाला, होनहार; भविष्यत्; सुंदर, भव्य; अनुरक्त।

भावुक–वि० (सं०) भावी; जो जल्दी भावों, विशेषतः कोमल, करुण भावोंके अधीन हो जाय, कोमलचित्त; सहृदय, रसज्ञ; मंगलयुक्त। पु० बहनोई; मंगल; रसमयी भाषा।

भावुकता–स्त्री० (सं०) भावुक होनेका भाव, भाव-प्रवणता।

भावै*–अ० दे० 'भावइ'।

भावोदय–पु० एक प्रकारका वर्णन जिसमें एक भावकी शांति और दूसरेका उदय हुआ हो और उदयमें ही चमत्कार हो (सा०)।

भावोद्दीपक–वि० (सं०) भावोंको उत्तेजित करनेवाला।

भावोन्मत्त–वि० (सं०) भावविह्वल।

भावोन्मेष–पु० (सं०) भावका उदय।

भाव्य–वि० (सं०) होनेवाला, भावी: भावना करने योग्य, सिद्ध करने योग्य। पु० होनी।

भाष–पु० भाषा, वाणी।

भाषक–पु० (सं०) कहने, बोलनेवाला (समासांतमें)।

भाषण–पु० (सं०) बोलना, कथन; व्याख्यान; कृपा पूर्ण शब्द। **–प्रतियोगिता–**स्त्री० विषय-विशेषपर बोलनेकी प्रतियोगिता। **–स्वातन्त्र्य–**पु० अपने मतको बोलकर व्यक्त करनेका एक मौलिक वैधानिक अधिकार।

भाषना*–स० क्रि० बोलना, कहना।

भाषांतर–पु० (सं०) अनुवाद, उलथा, तर्जुमा। **–कार–**पु० उलथा करनेवाला।

भाषा–स्त्री० (सं०) (बोलकर) भावप्रकाश करनेका साधन; किसी विशेष देश या जनसमाजमें प्रचलित शब्दावली और उसे बरतनेका ढंग, बोली; प्रादेशिक भाषा या बोली; हिंदी; व्यक्ति-विशेषके लिखने-बोलनेका ढंग; परिभाषा; शैली; सरस्वती; अर्जीदावा; एक रागिनी। **–ज्ञान–**पु० शब्द, शब्दार्थ और व्याकरणका ज्ञान। **–तत्त्व–**पु० भाषा-विज्ञान। **–पाद–**पु० अर्जीदावा। **–बद्ध–**वि० हिंदी भाषामें लिखित। **–विज्ञान, –शास्त्र–**पु० वह विज्ञान जिसमें भाषाकी उत्पत्ति, रूपपरिवर्तन आदि विषयोंका विचार किया गया हो। **–विद्–**पु० भाषा या भाषाओंका अच्छा ज्ञाता। **–सम–**पु० एक शब्दालंकार–शब्दोंकी ऐसी योजना जिससे वाक्य कई भाषाओंका माना जा सके।

भाषाई, भाषायी–वि० भाषा संबंधी, भाषावाले–'सभी भाषायी क्षेत्र अपनी-अपनी अस्मिता लेकर जाग्रत हो गये'–सुधीन्द्र।

भाषिक–वि० (सं०) भाषा-संबंधी, बोली-संबंधी।

भाषिका–वि०, स्त्री० (सं०) बोलने, कहनेवाली। स्त्री० वाणी, भाषा।

भाषित–वि० (सं०) कथित, उक्त। पु० कथन, बोली।

भाषिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) बोलने, बात करनेवाला।

भाषी(षिन्)–वि० (सं०) (समासके अंतमें) बोलनेवाला (हिंदी-भाषी, बँगलाभाषी); कहनेवाला, बतानेवाला 'पिय आगमभाषी भलो...'। **–(षि)पक्षी(क्षिन्)–**पु० बोलनेवाला पक्षी।

भाष्य–पु० (सं०) बोलना; भाषामें लिखित कोई ग्रंथ; सूत्र या मूल ग्रंथकी व्याख्या, विवृति; व्याख्या। वि० कहने योग्य। **–कार,**

–कृत्–पु० भाष्य लिखनेवाला ।

भासंत–वि० (सं०) प्रकाशमान; सुंदर । पु० सूर्य; चंद्र; नक्षत्र; भास पक्षी ।

भासंती–स्त्री० (सं०) तारा ।

भास–पु० (सं०) चमक, दीप्ति; कल्पना; गोष्ठ; गीध; मुर्गा; स्वप्नवासवदत्ता आदिके कर्ता, कालिदासके पूर्ववर्ती एक (संस्कृत) महाकवि; शकुंत पक्षी । **–कर्ण**–पु० एक राक्षस ।

भास*–स्त्री० दे० 'भाषा' ।

भासक–वि०, पु० (सं०) चमकानेवाला, प्रकाशक ।

भासता–स्त्री० (सं०) गृध्र जैसा स्वभाव, लालच; चमकीलापन ।

भासन–पु० (सं०) चमकना; रोशन होना ।

भासना*–अ० क्रि० प्रतीत होना; प्रकाशित होना; डूबना, धँसना –'यह मत दै गोपिन कहँ आवहु विरह नदीमें भासति'–सूर । स० क्रि० बोलना, कहना ।

भासमंत*–वि० चमकदार ।

भासमान–वि० (सं०) जान पड़ता हुआ; दिखाई देता हुआ । * पु० सूर्य ।

भासा*–स्त्री० दे० 'भाषा' ।

भासिक–वि० (सं०) दिखाई पड़नेवाला, लक्षित होनेवाला ।

भासित–वि० (सं०) प्रकाशित, चमकीला ।

भासी(सिन्)–वि० (सं०) चमकनेवाला ।

भासु–पु० (सं०) सूर्य ।

भासुर–वि० (सं०) चमकीला, दीप्तिमान्; भयंकर । पु० वीर; स्फटिक; कुष्ठौषध । **–पुष्पा**–स्त्री० वृश्चिकाली ।

भास्–स्त्री० (सं०) चमक, दीप्ति; किरण; आभास; प्रतिबिंब; इच्छा । **–कर**–पु० सूर्य; वीर; अग्नि; शिव; सोना; मदार; शिद्धांतशिरोमणिके कर्ता प्रसिद्ध ज्योतिषी (११वीं-१२वीं शती); धातु, पत्थर आदिको खोद, छीलकर मूर्ति आदि बनानेवाला । वि० प्रकाशमान । **–०कर्म**–पु० दे० 'भास्कर्य' । **–०द्युति**–पु० विष्णु । **–०प्रिय**–पु० लाल ।

भास्करि–पु० (सं०) वैवस्वत मनु; कर्ण; सुग्रीव; शनि ग्रह; एक मुनि ।

भास्कर्य–पु० (सं०) धातु, पत्थर आदिकी मूर्ति बनानेकी कला ।

भास्मन–वि० (सं०) भस्मसे बना हुआ; भस्म-संबंधी ।

भास्य–वि० (सं०) प्रकाशित करने योग्य, प्रकट करने योग्य ।

भास्वती–वि०, स्त्री० (सं०) दीप्तिमती । स्त्री० एक प्राचीन नदी ।

भास्वर–वि० (सं०) दीप्तिमान्, चमकीला । पु० सूर्य; दिन; अग्नि । **–वर्ण**–वि० प्रकाशके रंगका ।

भास्वान्(वत्)–वि० (सं०) दीप्तिमान्, चमकता हुआ । पु० सूर्य; वीर; दीप्ति ।

भिंग*–पु० दे० 'भृंग'; बिलनी । † स्त्री० बाधा । **–राज**–पु० दे० 'भृंगराज' ।

भिँगाना–स० क्रि० तर या सिक्त करना ।

भिँगोरा–पु० भँगरा; भृंगराज पक्षी ।

भिँजाना†–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिँजोना, भिँजोवना*–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिंड–पु० (सं०) भिंडी; मध्यप्रदेशके एक जिलेका नाम ।

भिंडिपाल–पु० दे० 'भिंदिपाल' ।

भिंडी–स्त्री० (सं०) एक क्षुप और उसकी फली जो तरकारीके काम आती है, रामतरोई । **–तक**–पु० भिंडीका क्षुप ।

भिंदपाल, भिंदिपाल–पु० (सं०) हाथसे फेंका जानेवाला छोटे डंडे जैसा एक अस्त्र; ढेलवाँस ।

भिंदु–वि० (सं०) नष्ट करनेवाला । पु० बिंदु । स्त्री० मृत अर्भकका प्रसव करनेवाली स्त्री ।

भिंसार–पु० सवेरा, उषाकाल ।

भिआ*–पु० भाई ।

भिक्षण–पु० (सं०) भीख माँगना ।

भिक्षा–स्त्री० (सं०) माँगना, याचना, भीख; सेवा; भृति, मजदूरी; भिक्षु, सन्न्यासीको भोजनार्थ दिया जानेवाला (सिद्ध) अन्न (करना, कराना) । **–करण**–पु० भीख माँगना । **–चर,–चार**–पु० भिक्षुक । **–चर्या**–स्त्री० भीख माँगना, भिक्षावृत्ति । **–जीवी(विन्)**–वि० भीख माँगकर जीविका चलानेवाला । **–पात्र**–पु० भीख माँगनेका बरतन, कपाल; भिक्षाका अधिकारी । **–भांड**–पु० भीख माँगनेका बरतन । **–भाजन**–पु० दे० 'भिक्षापात्र' । **–भुक(ज्)**–वि० भिक्षाजीवी । **–वृत्ति**–स्त्री० भीख माँगकर गुजर करना, भिखारीका जीवन ।

भिक्षाक–पु० (सं०) भिक्षुक ।

भिक्षाटन–पु० (सं०) भीख माँगनेके लिए फिरना ।

भिक्षान्न–पु० (सं०) भिक्षामें प्राप्त अन्न ।

भिक्षार्थी(र्थिन्)–वि०, पु० (सं०) भीख माँगनेवाला, भिखारी ।

भिक्षार्ह–वि० (सं०) भिक्षा देने योग्य ।

भिक्षाशी(शिन्)–वि० (सं०) भिक्षाजीवी ।

भिक्षित–वि० (सं०) भिक्षाके रूपमें प्राप्त ।

भिक्षी (क्षिन्)–वि० (सं०) भीख माँगनेवाला ।

भिक्षु–पु० (सं०) भीख माँगनेवाला; सन्न्यासी; बौद्ध सन्न्यासी । **–चर्या**–स्त्री० भिक्षावृत्ति । **–रूप**–पु० महादेव । **–संघ**–पु० बौद्ध सन्न्यासियोंका संघ । **–संघाती**–स्त्री० भिक्षुके कपड़े, चीवर, गुदड़ी । **–सूत्र**–पु० बौद्ध भिक्षुओंके लिए बने हुए नियमोंका संग्रह ।

भिक्षुक–पु० (सं०) भीख माँगनेवाला, भिखारी ।

भिक्षुकी–स्त्री० (सं०) भिक्षुक स्त्री ।

भिक्षुणी–स्त्री० (सं०) बौद्ध सन्न्यासिनी ।

भिख–'भीख'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । **–मंगन,–मंगिन**–स्त्री० भिखारिन, भिक्षुकी । **–मंगा**–पु० भीख माँगनेवाला ।

भिखारिणी–स्त्री० दे० 'भिखारिन' ।

भिखारिन, भिखारिनी–स्त्री० भिक्षुकी, भिखमंगन ।

भिखारी–पु० भीख माँगनेवाला, भिक्षुक । वि० कंगाल, अकिंचन ।

भिखिया*–स्त्री० भीख ।

भिखियारी†–पु० भिखारी ।

भिगाना–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिगोना–स० क्रि० पानी आदिसे तर करना ।

भिगौना†–पु० दे० 'बहुगुना' ।

भिच्छा*–स्त्री० दे० 'भिक्षा' ।

भिच्छु*–पु० दे० 'भिक्षु' ।

भिच्छुक*–पु० दे० 'भिक्षुक' ।

भिजवना*–स० क्रि० भिगोनेका काम कराना; भिगोना ।

भिजवाना–स० क्रि० भिगोने या भेजनेका काम कराना ।

भिजाना, भिजोना*–स० क्रि० दे० 'भिगोना' ।

भिटक–स्त्री० घृणाका भाव ।

भिटकना–अ० क्रि० घृणाके कारण अलग हटना ।

भिटनी–स्त्री० स्तनका अग्रभाग, चूचुक ।

भिटाना–स० क्रि० भेंट करवाना । अ० क्रि० भेंट होना, रास्तेमें मिल जाना ।

भिड़ंत–स्त्री० मुठभेड़ ।

भिड़–स्त्री० ततैया, बर्रे । मु० **–का छत्ता**–ऐसा कुल, कुटुंब जिसके एक आदमीको छेड़िये तो सब लड़नेको आमादा हो जायँ ।

भिड़ना–अ० क्रि० टकराना; सटना; लड़ना, गुथना ।

भितरिया†–वि० भीतर रहने, आने-जानेवाला, अंतरंग । पु० वल्लभ-कुलके मंदिरोंके भीतर रहनेवाला पुजारी ।

भितल्ला–पु० कपड़ेके भीतरका पल्ला, अस्तर । वि० भीतरी ।

भितल्ली–स्त्री० चक्कीके नीचेका पाट ।

भिताना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना ।

भित्त–पु० (सं०) खंड, टुकड़ा; भाग; दीवार ।

भित्ति–स्त्री० (सं०) भीत, दीवार; नीवँ; चित्राधार; भेद, दरार; खंड; टूटी हुई वस्तु; चटाई; दोष; अवसर । **–खातन**–पु० चूहा । **–चित्र**–पु० दीवारपर बना हुआ चित्र । **–चौर**–पु० सेंध मारनेवाला चोर । **–पत्रक**–पु० (प्लैकार्ड) दीवारपर चिपकाया जानेवाला वह कागज जिसके एक ही ओर बड़े अक्षरोंमें विज्ञापन, सूचना आदि छपी हो या हाथसे लिखी गयी हो । **–पातन**–पुं० एक तरहका चूहा ।

भित्तिक–वि० (सं०) तोड़नेवाला। पु० दीवार।

भित्तिका–स्त्री० (सं०) दीवार; छिपकली।

भित्र–पु० (सं०) नृत्यका एक भेद।

भिद*–पु० भेद, अंतर।

भिदक–पु० (सं०) तलवार; वज्र; हीरा।

भिदना–अ० क्रि० छिदना, विद्ध होना; घुसना, पैवस्त होना।

भिदा–स्त्री० (सं०) टूटना, फटना; पार्थक्य; अंतर; भेद, प्रकार; जीरा।

भिदि, भिदिर, भिदु–पु० (सं०) वज्र।

भिदुर–पु० (सं०) भिदना, फटना; नष्ट होना; पाकरका पेड़; वज्र; हाथी बाँधनेकी जंजीर। वि० छेदने, फाड़नेवाला; तुनुक; मिश्रित।

भिदेलिम–वि० (सं०) तुनुक, जो आसानीसे टूट जाय।

भिद्–वि० (सं०) (समासांतमें) तोड़ने, नष्ट करनेवाला। स्त्री० खंडन; अंतर; प्रकार।

भिद्य–वि० (सं०) भेदनीय। पु० नद; करारोंको काटता हुआ वहनेवाला नद।

भिद्र–पु० (सं०) वज्र।

भिनकना–अ० क्रि० मक्खियोंका भिनभिनाना; किसी (गंदी) चीजपर मक्खियोंके झुंडका वैठना; वहुत गंदा होना; घिन लगना।

भिन-भिन–स्त्री० मक्खी आदिके परोंकी आवाज।

भिनभिनाना–अ० क्रि० मक्खियोंका 'भिन-भिन' करना।

भिनसार, भिनुसार*–पु० ऊषाकाल, तड़का।

भिनहीं†–अ० सवेरे, तड़के।

भिन्न–वि० (सं०) अलग, जुदा; छिन्न; खंडित, प्रस्फुटित; दूसरा; ढीला किया हुआ; मिश्रित; परिवर्तित; मस्त (हाथी)। वह संख्या जो पूर्ण संख्यासे कम हो (ग०); रत्नका एक दोष; जख्म; फली। **–कट**–वि० मस्त (हाथी)। **–करट**–पु० मस्त हाथी। **–कूट**–वि० नायकरहित, बेसिरी (सेना)। **–क्रम**–वि० क्रमभंग दोषयुक्त। पु० क्रमभंग। **–गति**–वि० तेज चालसे जानेवाला। **–गर्भ**–वि० जिसका व्यूह विखर गया हो, अस्त-व्यस्त (सेना)। **–गात्रिका**–स्त्री० ककंटी, फूट। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० पक्षपाती। **–देशीय**–वि० दूसरे देशका, विदेशीय। **–देह**–वि० आहत। **–भाजन**–घड़ेका टुकड़ा। **–भिन्नात्मा(त्मन्)**–पु० चना। **–मतावलंबी(विन्)**–वि०, पु० दूसरे मत, मजहवको माननेवाला। **–मर्याद, –मर्यादी(दिन्)**–वि० जिसने मर्यादा भंग कर दी है, अनियंत्रित। **–योजनी**–स्त्री० पाषाणभेदक पौधा। **–रुचि**–वि० जिसकी रुचि भिन्न हो, अलग अलग रुचिवाला। **–वर्ण**–वि० विवर्ण; दूसरी जातिका। **–वृत्त**–वि० जो कर्तव्य-पथसे भ्रष्ट हो गया है; जिसमें छंद-संवंधी दोष हों। **–वृत्ति**–वि० दूसरे पेशेका; बुरा जीवन व्यतीत करनेवाला; भिन्न भाव, रुचिवाला। **–संहति**–वि० जिसका संवंध विच्छिन्न हो गया हो, वियुक्त। **–हृदय**–जिसका हृदय छिद गया हो।

भिन्नक–पु० (सं०) वौद्ध।

भिन्नता–स्त्री० (सं०) भिन्न होनेका भाव, भेद, विलगाव।

भिन्नत्व–पु० दे० 'भिन्नता'।

भिन्नाना–अ० क्रि० चकराना।

भिन्नार्थ–वि० (सं०) भिन्न उद्देश्यवाला; स्पष्ट अर्थवाला।

भिन्नोदर–पु० (सं०) सौतेला भाई।

भियना*–अ० क्रि० डरना, भीत होना।

भिया–स्त्री० (सं०) भय। * पु० दे० 'भिआ'।

भिरंग*–पु० दे० 'भृंग'।

भिरना*–अ० क्रि० दे० 'भिड़ना'।

भिरिंग*–पु० दे० 'भृंग'।

भिरिंटिका–स्त्री० (सं०) श्वेत गुंजा।

भिलनी–स्त्री० दे० 'भीलनी'।

भिलावाँ–पु० एक जंगली पेड़ जिसका फल दवाके काम आता है और उससे तेल भी निकाला जाता है, भल्लातक।

भिल्ल–पु० (सं०) भील। **–गवी**–स्त्री० नीलगाय। **–तरु**–पु० लोध। **–भूषण**–पु० घुंघची।

भिल्ली–स्त्री० (सं०) लोध

भिल्लोट, भिल्लोटक–पु० (सं०) लोध।

भिश्त*–पु० दे० 'विहिश्त'।

भिश्ती–पु० मशकसे पानी ढोनेवाला, सक्का।

भिषक्(ज्)–पु० (सं०) वैद्य, चिकित्सक; दवा, उपचार। **–पाश**–पु० अताई वैद्य। **–प्रिया**–स्त्री० गुड़ूच।

भिषग्–'भिषक्'का समासगत रूप। **–जित**–पु० औषध। **–भद्रा**–स्त्री० भद्रदंतिका। **–माता(तृ)**–स्त्री० वासक, अड़ूसा। **–वर**–पु० अश्विनीकुमार। **–विद्**–पु० चिकित्सक, वैद्य।

भिषजावर्त–पु० (सं०) कृष्ण।

भिषज्य–पु० (सं०) रोगनिवारण; औषध।

भिष्टा, भिसटा†–स्त्री० मल, विष्ठा।

भिष्मा, भिष्मिका, भिष्मिटा, भिष्मिष्टा–स्त्री० (सं०) पक्वान्न।

भिसत*–पु० विहिश्त, स्वर्ग।

भिस्त*–पु० दे० 'विहिश्त'।

भिस्ती–पु० दे० 'भिश्ती'।

भिस्स–स्त्री० कमलकी जड़।

भिस्सटा, भिस्सा, भिस्सिटा–स्त्री० (सं०) दे० 'भिष्मा'।

भीँगना–अ० क्रि० दे० 'भीगना'।

भीँगी*–स्त्री० दे० 'भृंगी'।

भीँचना*–स० क्रि० खींचना, दवाना, वंद करना (आँख); † काटना।

भीँजना*–अ० क्रि० भीगना; स्नान करना; प्रविष्ट होना; मेल-जोल वढ़ाना; गद्‌गद होना।

भीँट–पु० दे० 'भीट'। † स्त्री० दीवार, भित्ति (वुन्देल०)।

भींतड़ा–पु० घर, आवास।

भी–अ० अन्य लोगों या वस्तुओंके अलावा या साथ; अवश्य; तक; अधिक। स्त्री० (सं०) भय, भीति; आशंका। **–कर**–वि० भयोत्पादक।

भीउँ*–पु० दे० 'भीम'।

भीक–स्त्री० दे० 'भीख'।

भीख–स्त्री० भिक्षा, याचना; माँगनेसे प्राप्त अन्नादि, खैरात। मु० **–का टुकड़ा**–भीखमें मिली हुई चीज।

भीखन*–वि० दे० 'भीषण'।

भीखम*–वि०, पु० दे० 'भीष्म'।

भीगना–अ० क्रि० पानीसे तर होना, गीला होना। मु० **–(गी) बिल्ली**–भय या स्वार्थसे अति नम्र, दीन वना हुआ। **रात**–आधी रातके वादकी रात जो अधिक ठंडी होती है।

भीजना*–अ० क्रि० दे० 'भीगना'; वढ़ना, व्यतीत होना–'जीव सूक्यौ जाय ज्यौं-ज्यौं भीजत सरवरी'–घन०।

भीजा*–वि० सरस, सुखी–'भीजे घन आनंद विराजी निधरक तुम'–घन०।

भीट–पु० दे० 'भीटा'।

भीटा–पु० टीला, ढूह; टीलेकी शक्लकी जमीन; पानकी वेल चढ़ानेके लिए वनाया हुआ टीला।

भीड़–स्त्री० आदमियोंका जमाव, मजमा, जनसमूह; संकट (कटना, पड़ना)। **–भड़क्का**–पु० दे० 'भीड़-भाड़'। **–भाड़**–स्त्री० भीड़, मजमा; धक्कमधक्का।

भीड़न*–स्त्री० मलनेकी क्रिया।

भीड़ना*–स० क्रि० मलना; भिड़ाना; मिलाना।

भीड़ा*–वि० तंग, संकीर्ण।

भीडी*–स्त्री० भिंडी।

भीत–वि० (सं०) डरा हुआ, भयग्रस्त। पु० भय, भीति; खतरा। **–गायन**–पु० मुँहचोर गवैया। **–चारी(रिन्)**–वि० डरता हुआ काम करनेवाला। **–चित्त**–वि० मनमें डरा हुआ।

भीत–स्त्री० दीवार; छत। मु० **–में दौड़ना**–शक्तिसे वाहर, असंभव कार्य करनेमें प्रवृत्त होना।

भीतर–अ० अंदर; घरके अंदर; मध्यमें। पु० अंतर, अंतःकरण; जनानखाना। मु० **–का**–अंदरका; मनका; अप्रकट, मनमें रहनेवाला। **–०कुआँ**–उपयोगी, पर किसीके काम न आनेवाली

वस्तु । **–ही भीतर**–मन ही मन, अंदर ही अंदर ।

भीतरि*–अ० भीतर ।

भीतरिया†–पु० दे० 'भितरिया' ।

भीतरी–वि० भीतरका, अंदरूनी; मनका; अप्रकट । **–टाँग**–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

भीति–स्त्री० (सं०) भय, डर; कंप । **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० भयंकर । **–कृत्**–वि० भयोत्पादक । **–च्छिद्**–वि० भयका निवारण करनेवाला ।

भीती*–स्त्री० भय; दीवार ।

भीन*–पु० भोर, भिनसार ।

भीनना–अ० क्रि० मिलकर एकरस होना; भीगना; पैवस्त होना, जज्ब होना; फँसना ।

भीनी–वि० स्त्री० हलकी, मीठी (खुशबू); पैवस्त, ओतप्रोत (भावभीनी विदाई) ।

भीम–वि० (सं०) डरावना, भय उपजानेवाला; विशालकाय । पु० भयानक रस; शिव; परमेश्वर; पाँचों पांडवोंमेंसे दूसरे जो वायुके पुत्र माने जाते हैं, भीमसेन; दमयंतीके पिता विदर्भनरेश; कुंभकर्णका वेटा । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० डरावने काम करनेवाला; महा पराक्रमी । **–कार्मुक,–धन्वा(न्वन्)**–वि० वहुत वड़े धनुष्‌वाला । **–कुमार**–पु० घटोत्कच । **–चंडी**–स्त्री० एक देवी । **–तिथि**–स्त्री० माघ-शुक्ला एकादशी । **–दर्शन**–वि० डरावनी शक्लवाला, भीमरूप । **–द्वादशी**–स्त्री० माघ-शुक्ला द्वादशी । **–नाद**–वि० डरावनी आवाजवाला । पु० डरावनी आवाज; शेर; प्रलयकालमें प्रकट होनेवाले सात वादलोंमेंसे एक । **–पराक्रम,–विक्रम**–वि० जिसका पराक्रम दूसरोंके दिलमें भय पैदा करे, महा वली । **–पलाशी**–स्त्री० एक रागिनी । **–पूर्वज**–पु० युधिष्ठिर । **–वल**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक अग्नि । वि० भारी वलवान् । **–मुख**–पु० एक तरहका वाण; एक वानर । **–रथ**–पु० एक असुर जो कूर्मावतारमें विष्णुके हाथों मारा गया; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र । **–रथी**–स्त्री० ७७ वें वर्षके ७ वें मासकी ७ वीं रात जिसे पार करना वहुत कठिन माना गया है; एक पुराणोक्त नदी । **–०दशा**–स्त्री० उसे पार कर लेनेके वादकी वयोदशा जो अति पुण्यजनक मानी गयी है । **–रूप**–वि० डरावनी शक्लवाला । **–विक्रांत**–पु० सिंह । वि० महा वली । **–विग्रह**–वि० भयानक शरीर, शक्लवाला । **–वेग**–वि० भयानक वेगवाला । **–शासन**–पु० यम । **–सेन**–पु० पाँचों पांडवोंमेंसे दूसरे, भीम; दमयंतीके पिताका नाम; भीमसेनी कपूर । **–सेनी**–वि० (हिं०) भीमसेन-संवंधी । पु० भीमसेनी कपूर । **–०एकादशी**–स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला एकादशी, निर्जला एकादशी । **–०कपूर**–पु० एक तरहका कपूर जो अधिक सुगंधित होता है, वरास । **–हास**–पु० वुढ़ियाका सूत, इंद्र-तूल । मु० **–के हाथी**–न लौटनेवाली वस्तु ।

भीमक–पु० (सं०) एक दैत्य ।

भीमता–स्त्री० (सं०) डरावनापन ।

भीमर–पु० (सं०) युद्ध; जासूस ।

भीमरा*–वि० स्त्री० भयानक आकार-प्रकारवाली–'फेरि भीमरा कृष्णा गाहीं'–छत्र० ।

भीमराज–पु० भृंगराज पक्षी ।

भीमा–वि० स्त्री० (सं०) डरावनी, भीषण रूप, आकारवाली । स्त्री० रोचना नामका गंधद्रव्य; दुर्गा; चाबुक; दक्षिण भारतकी एक नदी ।

भीमान्(मत्)–वि० (सं०) भयावह ।

भीमोदरी–स्त्री० (सं०) उमा ।

भीम्राथली–स्त्री० घोड़ोंकी एक जाति ।

भीर*–स्त्री० दे० 'भीड़'; आधिक्य–'उर न समात प्रेमकी भीर'–गीतावली । * वि० भीत; भीरु; (सं०) डरानेवाला, भय प्रदर्शित करनेवाला ।

भीरना*–अ० क्रि० डरना ।

भीरु–वि० (सं०) डरपोक; (–से) डरनेवाला (पापभीरु) । पु० सियार; वाघ; कनखजूरा; एक तरहका ऊख । स्त्री० सतावर; भटकटैया; डरपोक स्त्री; चाँदी; बकरी; छाया । **–चेता(तस्),–हृदय**–पुं० हिरन । वि० डरपोक । **–पत्री,–पर्णी**–स्त्री० शतमूली । **–योध**–वि० जिसकी सेना डरनेवाली हो । **–रंध्र**–पु० भठ्ठी, चूल्हा । **–सत्त्व**–वि० स्वभावतः भीरु ।

भीरुक–पु० (सं०) एक तरहका ऊख; वन; उल्लू; भालू; वाघ; सियार । वि० भीरु ।

भीरुता–स्त्री० (सं०) भयशीलता, वुजदिली ।

भीरुताई*–स्त्री० दे० 'भीरुता' ।

भीरू–वि० स्त्री० (सं०) भीरु स्वभाववाली (स्त्री) ।

भीरे–अ० पास, नजदीक ।

भील–पु० मध्य भारत, राजपूताना आदिमें पायी जानेवाली एक जंगली जाति । **–भूषण**–पु० घुँघची ।

भीलनी–स्त्री० भीलकी स्त्री ।

भीलु–वि० (सं०) भीरु, डरपोक । पु० भालू ।

भीलुक, भीलूक–पु० (सं०) भालू । वि० भीरु ।

भीव*–पु० भीम ।

भीष*–स्त्री० दे० 'भीख' ।

भीषक–वि० (सं०) डरावना, भीषण ।

भीषज*–पु० भिषक्, वैद्य ।

भीषण–वि० (सं०) भय उपजानेवाला, डरावना । पु० भयानक रस; शिव; कुँदरू; हिंताल; कबूतर; डरानेकी क्रिया ।

भीषणक–वि० (सं०) भयानक ।

भीषणता–स्त्री०, **भीषणत्व**–पु० (सं०) डरावनापन ।

भीषणाकार–वि० (सं०) डरावनी शक्लवाला ।

भीषणी–स्त्री० (सं०) सीताकी एक सखी ।

भीषन*–वि० दे० 'भीषण' ।

भीषम*–वि० 'भीष्म' । पु० देवव्रत, गांगेय ।

भीषा–स्त्री० (सं०) डराना, भयप्रदर्शन; भय ।

भीषित–वि० (सं०) डराया हुआ ।

भीष्म–वि० (सं०) भयानक, भीषण । पु० भयानक रस; रुद्र; गंगाके गर्भसे उत्पन्न शांतनुके पुत्र, देवव्रत, गांगेय । **–जननी,–सू**–स्त्री० गंगा । **–पंचक**–पु० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातकके पाँच दिन जिनमें व्रत रखनेका विधान है । **–पितामह**–पु० गांगेय भीष्म । **–मणि,–रत्न**–पु० एक तरहका सफेद पत्थर । **–स्वरराज**–पु० एक वुद्ध ।

भीष्मक–पु० (सं०) रुक्मिणीके पिता, विदर्भ-नरेश । **–सुता**–स्त्री० रुक्मिणी ।

भीष्माष्टमी–स्त्री० (सं०) माघ-शुक्ला अष्टमी जिस दिन भीष्मने प्राणत्याग किया ।

भीसम*–वि०, पु० दे० 'भीष्म' ।

भुँइ*–स्त्री० दे० 'भूमि' ।

भुँकाना–स० क्रि० भूंकनेमें या चिल्लानेमें प्रवृत्त करना ।

भुंजन–पु० भोजन करनेकी क्रिया ।

भुंजना*–स० क्रि० जलाना, भूनना ।

भुँजना†–अ० क्रि० भूना जाना; झुलसना ।

भुँजरिया†–स्त्री० भुजरिया, जरई (बुंदेल०) ।

भुँजवा†–पु० भड़भूँजा ।

भुँड़ली–स्त्री० एक कीड़ा जिसके रोएँ शरीरमें गड़नेपर खुजलाहट पैदा करते हैं ।

भुंडा–वि० विना सींग या शिखरका (वैल आदि); * दुष्ट'...कह्यो न मानै भुंडी राँड'–सुन्दर ।

भुंडी–स्त्री० एक छोटी मछली । वि० स्त्री० दे० 'भुंडा' ।

भुअंग, भुअंगम*–पु० दे० 'भुजंग', 'भुजंगम' ।

भुअ*–स्त्री० भौ; पृथ्वी ।

भुअन*–पु० दे० 'भुवन' ।

भुअना*–अ० क्रि० भूलना, वहकना ।

भुआ–पु० दे० 'भूआ' ।

भुआर, भुआल*–पु० भूपाल, राजा ।

भुइँ*–स्त्री० दे० 'भूमि' । **–आँवला**–पु० एक घास जो दवाके काम आती है । **–कंप**–पु० दे० 'भूकंप' । **–काँड़ा**–पु० समुद्र, झीलों आदिके किनारे होनेवाली एक घास । **–चाल,–डोल***–पु०

भूकंप । **–तरवर**–पु० सनायकी जातिका एक पेड़ । **–दग्धा**–पु० मसानका कर । **–धरा**–पु० तहखाना; आवाँ लगानेकी एक रीति। **–फोर**–पु० खुभीका एक भेद, कुकुरमुत्ता । **–हरा***–पु० तहखाना। **–हार**।–पु० दे० 'भूमिहार'; एक जंगली जाति ।

भुई–स्त्री० एक कीड़ा ।

भुक*–पु० भोजन, आहार; अग्नि ।

भुकड़ी।–स्त्री० फफूंदी ।

भुकराँद, भुकरायँध–स्त्री० सड़नेसे उत्पन्न दुर्गंध ।

भुकाना–स० क्रि० भूकने, बकवाद करनेमें प्रवृत्त करना ।

भुक्कड़–वि० दे० 'भुक्खड़' ।

भुक्खड़–वि० भूखा, पेटू; जिसके पास कुछ न हो, कंगाल ।

भुक्त–वि० (सं०) खाया हुआ; भोगा हुआ; जो भोगा जा रहा हो । पु० भोजन । **–पूर्व**–वि० जो पहले भोगा जा चुका हो । **–भोग** –वि० जो भोग चुका हो; जो भोगा गया हो । **–भोगी**–वि० (हि०) जो किसी चीजका दुःख-सुख उठा चुका हो, कृतभोग । **–वृद्धि**–स्त्री० (पेटमें) अन्नका फूलना । **–शेष,–समुज्झित**–पु० खानेसे बचा हुआ अन्नादि; उच्छिष्ट, जूठन । **–सुप्त**–वि० भोजनके बाद सोनेवाला ।

भुक्ति–स्त्री० (सं०) भोजन; भोग; आहार; कब्जा, दखल; ग्रहकी दैनिक गति; सीमा; प्रदेशका वह भाग जिसमें कई जिले या विषय हों, कमिश्नरी । **–पात्र**–पु० खानेका बरतन, थाल आदि । **–प्रद**–वि० भोग या भोजन देनेवाला । पु० मूंग । **–वर्जित**–वि० जिसका भोग वर्जित हो ।

भुक्तोच्छिष्ट–पु० (सं०) जूठन ।

भुख–'भूख'का समासगत रूप । **–मरा**–वि० भूखों मरनेवाला, भुक्खड़ । **–मरी**–स्त्री० भूखों मरनेकी स्थिति, दुर्भिक्ष; पोषण न मिलनेके कारण शरीरका क्षीण होना ।

भुखाना।–अ० क्रि० क्षुधित होना ।

भुखालू*–वि० भूखा ।

भुगत–स्त्री० बिसात; * दे० 'भुक्ति' ।

भुगतना–स० क्रि० भोगना, सहना । अ० क्रि० बीतना, पूरा होना । मु० **भुगत लेना**–निबट लेना, समझ लेना ।

भुगतान–पु० भुगतानेकी क्रिया; कीमत या देनेका चुकता किया जाना; गाहकको खरीदा हुआ माल देना, 'डेलिवरी'; निबटारा । **–तुला**–स्त्री० (बैलेंस ऑफ पेमेंट) हिसाबकी वे मदें (व्यापारकी वस्तुएँ, पूंजी, सूद, बीमा-शुल्क, जहाजका किराया आदि) जिनके संबंधमें एक देशको दूसरे देशोंसे कुछ पावना हो या दूसरे देशोंको देना हो ।

भुगताना–स० क्रि० चुकाना, अदा करना; समाप्त करना; बिताना; पहुँचाना (मेरी सारी बातें वहाँ भुगता दीं); भुगतनेके लिए बाध्य करना ।

भुगाना–स० क्रि० भोग कराना, भोगवाना ।

भुगुत–स्त्री० बिसात; ० दे० 'भुक्ति' ।

भुगुति*–स्त्री० दे० 'भुक्ति'–'चला भुगुति माँगै कहँ साधि कथा तपजोग'–प० ।

भुग्गा–वि० बुद्धू, मूर्ख । पु० एक चूर्ण ।

भुग्न–वि० (सं०) जो (रोगादिसे) टेढ़ा हो गया हो; भग्न । **–नेत्र**–पु० एक सन्निपात जिसमें रोगीकी आँखें टेढ़ी हो जाती हैं ।

भुच्च, भुच्चड़–वि० मूर्ख, जड़मति ।

भुजंग–पु० (सं०) साँप; जार; पति; सीसा; अश्लेषा नक्षत्र; आठकी संख्या; विदूषक । **–घातिनी**–स्त्री० काकोली । **–जिह्वा** –स्त्री० महासमंगा । **–दमनी**–स्त्री० नाकुली । **–पर्णी**–स्त्री० नागदमनी । **–पुष्प**–पु० एक क्षुप । **–प्रयात**–पु० एक वर्णवृत्त । **–भुक्(ज्),–भोगी–(गिन्)**–पु० मोर; गरुड । **–भोजी(जिन्)** –पु० मोर; गरुड; एक तरहका साँप । **–लता**–स्त्री० पानकी बेल । **–विजृंभित**–पु० एक वर्णिक छंद । **–शत्रु**–पु० गरुड । **–शिशु**–पु० एक वृत्त । **–संगता**–स्त्री० एक वृत्त ।

भुजंगम–पु० (सं०) साँप; सीसा; राहु; अश्लेषा नक्षत्र; आठकी संख्या ।

भुजंगा–पु० काले रंगकी एक चिड़िया, * साँप ।

भुजंगाक्षी–स्त्री० नकुलेष्टा, रास्ना ।

भुजंगाख्य–पु० (सं०) नागकेसर ।

भुजंगिनी–स्त्री० (सं०) सर्पिणी; एक छंद ।

भुजंगी–स्त्री० (सं०) सर्पिणी, नागिन; एक वर्णवृत्त ।

भुजंगेश–पु० (सं०) दे० 'भुजगेश' ।

भुज–पु० (सं०) बाजू; हाथ; हाथीकी सूंड़; डाल; रेखा-गणितके किसी क्षेत्रकी सीमारेखा, बाहु; त्रिभुजका आधार; छायाका मूल । **–कोटर**–पु० काँख । **–ग**–पु० साँप । **–०दारण**–पु० नेवला; मोर; गरुड़ । **–०भोजी(जिन्)**–पु० गरुड़; मोर । **–०राज**–पु० शेषनाग । **–गी**–स्त्री० सर्पिणी; अश्लेषा नक्षत्र । **–च्छाया** –स्त्री० निरापद आश्रय । **–ज्या**–स्त्री० भुजकी ज्या । **–दंड**–पु० दंडरूप हाथ; लंबा हाथ; बाहँमें पहननेका तीन फेरेका एक गहना । **–दल**–पु० हाथ । **–पाश**–पु० गलबाहीं । **–बंद**–पु० (हि०) बाजूबंद । **–बंध**–पु० केयूर । **–बंधन**–पु० भुजपाश, बाहोंके भीतर भर लेना । **–बल**–पु० बाहुबल । **–बाथ*** –पु० अँकवार । **–मध्य**–पु० क्रोड । **–मान**–(आर्डिनेण्ट) किसी क्षेत्रपर बिन्दु निर्धारित करनेके लिए खींची जानेवाली दो रेखाएँ (रेखागणित) । **–मूल**–पु० कंधा । **–यष्टि**–स्त्री० भुजदंड । **–लता**–स्त्री० लता जैसी कोमल कमनीय बाँह । **–वीर्य**–पु० भुजबल । **–शिखर**–पु० कंधा । **–शिर(स्)**–पु० कंधा ।**–संभोग** –पु० आलिंगन । **–स्तंभ**–पु० बाँहका अकड़ जाना ।

भुजगांतक–पु० (सं०) गरुड; मोर; नेवला ।

भुजगाशन–पु० (सं०) मोर; गरुड़ ।

भुजगेंद्र, भुजगेश–पु० (सं०) शेषनाग; वासुकि ।

भुजपात*–पु० दे० 'भूर्जपत्र' ।

भुजप्रतिभुज–पु० सरल क्षेत्रकी समानान्तर रेखाएँ । (रेखागणित)।

भुजरिया*–स्त्री० जरई ।

भुजवा।–पु० भड़भूंजा ।

भुजांतर, भुजांतराल–पु० (सं०) छाती; गोद ।

भुजा–स्त्री० (सं०) बाहु, भुज; सर्पकी कुंडली । **–कंट**–पु० हाथकी उँगलीका नाखून । **–दल**–पु० हाथ । **–मध्य**–पु० कुहनी । **–मूल**–पु० कंधा, बाहुमूल । मु०**–उठाकर कहना, उठाना या टेकना**–प्रतिज्ञा करना ।

भुजाग्र–पु० (सं०) हाथ ।

भुजाली–स्त्री० एक तरहका टेढ़ा छुरा, खुखरी ।

भुजिया–पु० उबाले हुए धानका चावल; घी या तेलमें भूनी हुई तरकारी ।

भुजिष्य–पु० (सं०) दास; रोग; हस्तसूत्र । वि० स्वतंत्र ।

भुजिष्या–स्त्री० (सं०) दासी; वेश्या ।

भुजेना*–पु० चबैना ।

भुजैल–पु० भुजंगा पक्षी ।

भुजौना*–पु० भूना हुआ अन्न; भुनाईमें दिया जानेवाला अन्न ।

भुज्यु–पु० (सं०) आहार; पात्र; अग्नि; यज्ञ ।

भुटिया–स्त्री० दे० 'भोटिया' ।

भुट्टा–पु० मक्केकी हरी बाल; जुआर या बाजरेकी बाल, गुच्छा ।

भुठार–पु० एक छोटा पशु ।

भुड़ला, भुडिला–पु० एक छोटा कीड़ा, सुंडा ।

भुठौर–पु० घोड़ोंकी एक जाति ।

भुतनी।–स्त्री० स्त्री प्रेत; दे० 'भूतिनी' ।

भुतहा–वि० प्रेतसे ग्रस्त (–मकान) ।

भुथराई*–स्त्री० मोथरा होना, कुदपना–'पैने कटाछनि ओज मनोजके बानन बीच बिंधी भुथराई'–घन० ।

भुथराना–अ० क्रि० दे० 'भोथराना' ।

भुनगा–पु० उड़नेवाला छोटा कीड़ा, फतिंगा; तुच्छ, नगण्य प्राणी ।

भुनगी–स्त्री० ईखकी फसलको लगनेवाला एक कीड़ा ।

भुनना–अ० क्रि० भूना जाना, सिकना; रुपये आदिका छोटे सिक्कोंमें बदला जाना ।

भुन-भुन–स्त्री० धीमी, अस्पष्ट ध्वनि (खासकर कुढ़कर बोलनेवालेकी) ।

भुनभुनाना–अ० क्रि० 'भुन-भुन' करना, अस्पष्ट स्वरमें कुढ़न

प्रकट करना ।

भुनवाई, भुनाई–स्त्री० भुनानेके वदलेमें दी जानेवाली रकम, भाँज; भूननेकी उजरत ।

भुनाना–स० क्रि० नोटको रुपयों या किसी वड़े सिक्केको छोटे सिक्कोंमें वदलवाना; भूननेका काम कराना ।

भुन्नासी–पु० एक प्रकारका वड़ा ताला ।

भुबि*–स्त्री० दे० 'भूमि' ।

भुमिया–पु० दे० 'भूमिया' ।

भुयंग–पु० दे० 'भुजंग' ।

भुरकना–स० क्रि० छिड़कना, वुरकना । अ० क्रि० भुरभुरा होना; * भूलना, वहक जाना ।

भुरकस–पु० दे० 'भुरकुस' ।

भुरका†–पु० चूरा, वुकनी; मिट्टीकी दवात, कुज्जा ।

भुरकाना†–स० क्रि० भुरभुराना, छिड़कना; * भुलावा देना ।

भुरकी–स्त्री० छोटा भुरका, कुल्हिया; कोठिला; हौज ।

भुरकुटा–पु० छोटा कीड़ा ।

भुरकुन–पु० चूर्ण ।

भुरकुस–पु० चूर्ण; वह वस्तु जो चूर-चूर हो गयी हो । मु० –निकलना–चूर-चूर होना; पीटकर भरता वना दिया जाना ।

भुरजी–पु० भुँजा हुआ अन्न ।

भुरता–पु० दे० 'भरता' ।

भुरभुरा–वि० चूर्णरूप; जो झट टूटकर चूर्णरूप हो जाय । **–हट**–स्त्री० भुरभुरापन ।

भुरली–स्त्री० भुँड़ली; फसलको लगनेवाला एक कीड़ा ।

भुरवना*–स० क्रि० भुलावा देना, वहकाना ।

भुरसना*–अ० क्रि०, स० क्रि० भुलसना, झुलसना ।

भुरहरा*–पु० भोर, तड़का ।

भुराई*–स्त्री० भोलापन ।

भुराना*–अ० क्रि० भुलावेमें आना । स० क्रि० भुलवाना, वहकाना; भूल जाना ।

भुरावना*–अ० क्रि०, स० क्रि० 'भुराना' ।

भुरुंड–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि; भारंडपक्षी ।

भुर्भुरिका, भुर्भुरी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मिठाई ।

भुर्रा–वि० वहुत काला । † पु० विशेष प्रकारसे बनायी हुई एक तरहकी चीनी ।

भुलक्कड़–वि० वहुत भूलनेवाला, विस्मरणशील ।

भुलना†–वि० विस्मरणशील । पु० एक तरहकी घास ।

भुलवाना–स० क्रि० भूलनेको प्रेरित करना; वहकाना; भुलाना; † खो देना ।

भुलसना–अ० क्रि०, स० क्रि० गरम राखमें झुलसना ।

भुलाना–स० क्रि० भूलना; दे० 'भुलवाना' । अ० क्रि० भुलावेमें पड़ना; बहकना; विस्मरण होना ।

भुलावा–पु० बहकानेकी युक्ति, धोखा, चकमा ।

भुल्लना*–स० क्रि०, अ० क्रि० भूलना ।

भुवंग*–पु० दे० 'भुजंग' ।

भुवंगम*–पु० दे० 'भुजंगम' ।

भुव–पु० (सं०) भुवर्लोक, अग्नि । * स्त्री० भूमि; भौं । **–पति**–पु० भुवर्लोकका पति; * राजा । **–पाल***–पु० दे० 'भूपाल' ।

भुवन–पु० (सं०) जगत्, लोक (तीन या चौदह); जन, प्राणी; आकाश; जल; समृद्धि; चौदहकी संख्या (संकेत) । **–कोश**–पु० भूमंडल (ब्रह्मांड) । **–त्रय**–पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल । **–पावनी**–स्त्री० गंगा । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० जगत्का धारण-पोषण करनेवाला । **–भावन**–पु० लोकस्रष्टा । **–माता(तृ)**–स्त्री० दुर्गा । **–मोहिनी**–वि० स्त्री० जगत्को मोहनेवाली । **–विदित**–वि० जगत्प्रसिद्ध ।

भुवनेश्वर–पु० (सं०) राजा; शिव; उड़ीसाके अंतर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ; वहाँ स्थापित शिवलिंग । उड़ीसाकी राजधानीका नाम ।

भुवनेश्वरी–स्त्री० (सं०) दस महाविद्याओंके अंतर्गत एक देवी ।

भुवनौका(कस्)–पु० (सं०) देवता ।

भुवन्य–पु० (सं०) स्वामी; सूर्य; चंद्रमा; अग्नि ।

भुवर्लोक–पु० (सं०) अंतरिक्ष लोक ।

भुवा–पु० घुच; रुई ।

भुवार, भुवाल*–पु० दे० 'भूपाल' ।

भुवि*–स्त्री० दे० 'भूमि' ।

भुशुंडि–पु० (सं०) काकभुशुंडि । स्त्री० एक अस्त्र ।

भुशुंडी–स्त्री० एक तरहका अस्त्र ।

भुस–पु० भूसा ।

भुसना*–अ० क्रि० दे० 'भूँसना' (भूँकना)–'हस्ती चढ़ि नहि डोलिये कूकर भुसैं जु लाख'–साखी ।

भुसी*–स्त्री० दे० 'भूसी' ।

भुसुंड–स्त्री० सूँड़ ।

भुसुंडी*–पु० दे० 'भुशुंडी' ।

भुसौरा–पु० भूसा रखनेका घर ।

भूँकना–अ० क्रि० कुत्तेका भौं-भौं करना; व्यर्थ वकना ।

भूँजना†–स० क्रि० पकाना; सताना; * भोगना–'राज कि भूँजव भरत पुर नृप कि जियहिं विनु राम'–रामा०; भक्षण करना 'जेहँ भूँज सुख निदरा सोवहु'–चंदा० ।

भूँजा†–पु० भड़भूँजा; भूजा हुआ अन्न, चवैना ।

भूँड़*–स्त्री० वालू मिली हुई भुरभुरी मिट्टी ।

भूँख–स्त्री० दे० 'भूख' ।

भूँजा–पु० भूँजा हुआ अन्न ।

भूँडरी–स्त्री० नाऊ, वारी आदिको माफी मिलनेवाली जमीन ।

भूँडिया†–पु० मँगनीके हल-वैलोंसे खेती करनेवाला व्यक्ति ।

भूँरा*–पु० भ्रमर ।

भूँसना*–अ० क्रि० भूँकना ।

भू–स्त्री० (सं०) भूमि, धरती, जमीन; स्थान; यज्ञाग्नि; एकका संकेत; पदार्थ । वि० (समासांतमें).. से उत्पन्न या होनेवाला (स्वयंभू, मनोभू) । **–कंद**–पु० महाश्रावणिका । **–कंप**–पु० भूगर्भमें होनेवाली उथल-पुथलसे धरतीकी ऊपरी सतहका हिलना, भूचाल । **–०मापक यंत्र, –०लेखी,–०सूचक यंत्र**–पु० (साइजमोमीटर, साइजमोग्राफ) भूकंपके धक्के, भूकंपके केंद्रकी दूरी, प्रवेग आदि सूचित करनेवाला यंत्र । **–०विज्ञान**–पु० (साइजमोलॉजी) भूकंपोंके कारणों तथा स्वरूप आदका विवेचन करनेवाला विज्ञान । **–कदंब,–नीप**–पु० एक तरहका कदंव । **–कपित्थ**–पु० एक तरहका कैथ । **–कर्ण**–पु० पृथ्वीका व्यास । **–कर्मी**–पु० (ग्राउंडस्टाफ) हवाई अड्डेके वे कर्मचारी जिन्हें उड़नेवाले विमानोंके साथ रहकर नहीं, वरन् भूमिपर ही काम करना पड़ता है । **–कर्वुदारक**–पु० वृक्षविशेष, लिसोड़ा । **–कश्यप**–पु० कृष्णके पिता वसुदेव । **–काक**–पु० एक तरहका वाज; क्रौंच; नीला कवूतर । **–कुंभी**–स्त्री० भूपाटली । **–कुष्मांडी, कूष्मांडी**–स्त्री० भुइँकुम्हड़ा, बिदारी । **–केश**–पु० वरगद; सिवार । **–केशा**–स्त्री० राक्षसी । **–केशी**–स्त्री० सोमराजिका वृक्ष । **–क्षित्**–पु० सूअर । **–खंड**–पु० भूभाग । **–खर्जूरी**–स्त्री० छोटा खजूर । **–गंधपति**–पु० शिव । **–गंधा**–स्त्री० मुरा नामक गंधद्रव्य । **–गर**–पु० एक विष । **–गर्भ**–पु० धरतीका भीतरी भाग; विष्णु; भवभूति नामक कवि । **–०गृह**–पु० तहखाना । **–०विद्या**–स्त्री०, **–०शास्त्र**–पु० (जियोलाजी) वह शास्त्र जिससे भूमिकी भीतरी बनावटका ज्ञान हो । **–गृह,–गेह**–पु० तहखाना । **–गोल**–पु० भूमंडल; भूगोलशास्त्र । **–०विद्या**–स्त्री०,**–०शास्त्र**–पु० (ज्यॉग्रैफी) पृथ्वीके वाह्यरूप, प्राकृतिक विभाग आदिका ज्ञान करानेवाली विद्या या शास्त्र । **–गोलक**–पु० भूमंडल । **–घन**–पु० शरीर । **–चक्र**–पु० विषुवरेखा; क्रांतिवृत्त । **–चर**–वि० स्थलचर । पु० स्थलचर प्राणी; दीमक; शिव । **–चरी**–स्त्री० योगकी एक मुद्रा । **–चर्या,–च्छाया**–स्त्री०,**–च्छाय**–पु० धरतीकी छाया; अंधकार । **–चाल**–पु० (हिं०) भूकंप । **–चित्रावली**–स्त्री० पृथ्वी तथा उसके क्षेत्रोंके प्राकृतिक रूपों और विशिष्टताओंको वतानेवाले नकशोंका संकलन, एटलस । **–छाया**–स्त्री० (अंब्रा) सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहणके समय सूर्य अथवा चंद्रमाके विंबपर पड़नेवाली छाया । **–जंतु**–पु० हाथी; एक तरहका घोंघा । **–जंबु**–पु० गेहूँ; वनजामुन । **–जात**–पु० वृक्ष । **–डोल**–पु०

(हिं०) भूकंप। **–तत्त्व**–पु० धरतीकी रचनाका विज्ञान। **–०विज्ञान**–पु०,**–०विद्या**–स्त्री० भूगर्भशास्त्र। **–०विद्**–पु० भूगर्भशास्त्रका पंडित। **–तल**–पु० जमीनकी सतह, धरातल, भूपृष्ठ, पाताल। **–ताली**–स्त्री० भूपाटली; मुषली। **–तुंबी**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी। **–तृण**–पु० रूसा नामकी घास। **–तैल**–पु० भूमिके नीचेसे निकलनेवाला तेलयुक्त द्रव (पेट्रोलिअम), खनिज तेल। **–दान**–पु० घर, जमीन, खेत आदिका दान; भूमिहीन वर्गमें भूमिका वितरण करनेके लिए चलाये गये आन्दोलनमें सहयोग करते हुए खेतों, वाग-वगीचों आदिका दान करना। **–दार**–पु० सूअर। **–दृश्य**–पु० दे० क्रममें। **–देव**–पु० ब्राह्मण। **–धन**–पु० राजा। **–धर**–पु० पहाड़; शेषनाग; रस आदि वनानेके काम आनेवाला एक यंत्र; कृष्ण; शिव; सातकी संख्या। **–०राज**–पु० हिमालय। **–धात्री**–स्त्री० भुइँआँवला। **–धृति**–स्त्री० (सं०) भूमिकी भोग्यावधि, दे० 'धारणावधि' (टेन्यूर)। **–ध्र**–पु० पहाड़। **–नाग**–पु० भूमिनाग, केंचुआ। **–निंब**–पु० चिरायता। **–नेता(तृ)**–पु० राजा। **–प**–पु० राजा। **–पटल**–पु० पृथ्वीकी ऊपरी सतह। **–पति**–पु० राजा; शिव; इंद्र। **–पतित**–वि० पृथ्वीपर (घायल आदि होकर) गिरा, पड़ा हुआ। **–पद**–पु० वृक्ष। **–पदी**–स्त्री० एक तरहकी चमेली। **–परिधि**–स्त्री० पृथ्वीकी परिधि। **–परिमाप**–पु०दे० क्रममें। **–परिमापन**–पु० दे० क्रममें। **–पलाश**–पु० एक वृक्ष। **–पवित्र**–पु० गोवर। **–पाटली**–स्त्री० एक तरहका पौधा। **–पाल**–पु० राजा; (हिं०) मध्य भारतका भोपाल राज्य; उसकी राजधानी। **–पाली**–स्त्री० एक रागिनी। **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–पुत्री**–स्त्री० सीता। **–प्रकंप**–पु० भूकंप। **–फल**–पु० हरी मूँग; एक तरहका चूहा। **–बदरी**–स्त्री० झड़वेर। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० राजा। **–भाग**–पु० भूखंड, प्रदेश। **–भार**–पु० धरतीपर होनेवाले पापका भार। **–०हारी(रिन्)**–पु० परमेश्वर। **–भुक्(ज्)**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़; राजा; विष्णु; सातकी संख्या। **–भौतिकी**–स्त्री० दे० क्रममें। **–मंडल**–पु० धरती, भूगोल। **–मध्यसागर**–पु० यूरोप, अफ्रीका और एशियासे घिरे हुए एक समुद्रका नाम। **–महेंद्र**–पु० राजा। **–युक्ता**–स्त्री० भूमिखर्जूरी। **–रमण**–पु० राजा। **–राजस्व**–पु० लगान। **–रुह**–पु० वृक्ष; अर्जुन वृक्ष। **–रुहा**–स्त्री० दूव। **–लग्ना**–स्त्री० शंखपुष्पी। **–लता**–स्त्री० केंचुआ। **–लेखनयंत्र**–पु० दे० 'भूकंपसूचक यंत्र'। **–लोक**–पु० मर्त्यलोक। **–लोटन**–वि० (हिं०) धरतीपर लोटनेवाला। **–वलय**–पु० पृथ्वीकी परिधि। **–वल्लभ**–पु० राजा। **–वल्लूर**–पु० कुकुरमुत्ता। **–शक्र**–पु० राजा। **–शय**–पु० विष्णु; विलमें रहनेवाला जंतु। **–शय्या**–स्त्री० जमीनपर सोना। **–शर्करा**–स्त्री० एक कंद। **–शायी(यिन्)**–वि० जमीनपर सोनेवाला, जमीनपर गिरा हुआ; मृत। **–शुद्धि**–स्त्री० भूमिकी शुद्धि (लीपने आदिसे)। **–शेलु**–पु० भूकर्वुदारक। **–श्रवा(वस्)**–पु० वल्मीक। **–संपत्ति**–स्त्री० जमीनके रूपमें संपत्ति (खेत, जमींदारी)। **–संस्कार**–पु० यज्ञके लिए भूमिको लीपना, नापना, रेखाएँ खींचना आदि। **–सुत**–पु० मंगल, नरकासुर। **–सुता**–स्त्री० सीता। **–सुर**–पु० ब्राह्मण। **–स्खलन**–पु० जमीनका घसकना, शिला खंडका गिर पड़ना। **–स्पृक्(श्)**–पु० मनुष्य। **–स्फोट**–पु० कुकुरमुत्ता। **–स्वर्ग**–पु० धरतीपर स्वर्गरूप स्थान; सुमेरु पर्वत। **–स्वामी(मिन्)**–पु० जमीनका मालिक, जमींदार। **–हरा***–पु० दे० 'भुइँहरा'।

भूआ–पु० रुई जैसा रेशेदार पदार्थ। वि० सफेद। * स्त्री० वुआ।

भूई–स्त्री० रुईका छोटा गाला।

भूक–स्त्री० दे० 'भूख'। पु० (सं०) छिद्र; काल; वसंत; अंधकार।

भूकना–अ० क्रि० दे० 'भूँकना'।

भूकल–पु० (सं०) विगड़ैल घोड़ा।

भूख–स्त्री० आहारकी आवश्यकतासे उत्पन्न विकलता; भोजनकी इच्छा, क्षुधा; इच्छा। **–हड़ताल**–स्त्री० वंदियों आदिका विरोधमें खाना न खाना। मु० **–मर जाना**–क्षुधाका नष्ट हो जाना; भूख न लगना। **–(खों)मरना**–क्षुधा-कष्टसे पीड़ित होना, निराहार रहना।

भूखण, भूखन*–पु० दे० 'भूषण'।

भूखना*–स० क्रि० सजाना, भूषित करना। † अ० क्रि० उपवास करना।

भूखा–वि० जिसे भूख लगी हो, क्षुधित; किसी चीजकी चाह रखनेवाला, इच्छुक; भुक्खड़। **–नंगा**–वि० अन्न, वस्त्रके कष्टसे पीड़ित, दीन, दरिद्र। मु० **–रहना**–उपवास करना; व्रत रखना।

भूटान–पु० आसामके उत्तर और हिमालयके दक्षिणमें अवस्थित एक राज्य।

भूटानी–पु० भूटानका निवासी; भूटानका घोड़ा। स्त्री० भूटानकी भाषा। वि० भूटान-संवंधी; भूटानका।

भूटिया–वि० भूटानका। पु० भूटानका रहनेवाला। **–वादाम**–पु० एक तरहका पहाड़ी पेड़ जिसका फल खाया जाता है और लकड़ी मेज आदि वनानेके काम आती है।

भूड़–स्त्री० वलुई जमीन; कुएँका सोता।

भूत–वि० (सं०) जो हो चुका हो, अतीत; वीता हुआ; वस्तुतः घटित; उत्पन्न; सत्य; प्राप्त; युक्त; रूप या अवस्था-विशेषको प्राप्त (घनीभूत, पुंजीभूत); सदृश। पु० पंचमहाभूतों–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश–मेंसे कोई एक तत्त्व; प्राणी; प्रेत, पिशाच; वीता हुआ समय, भूत काल; कृष्ण पक्ष; शिव; कार्त्तिकेय; जगत्; कल्याण; पुत्र; वहुत वड़ा भक्त; पाँचकी संख्या; उपयुक्तता। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० ब्रह्मा, स्रष्टा। **–कला**–स्त्री० पृथ्वी आदि पंचभूतोंकी उत्पादिका निवृत्ति आदि पाँच कलाएँ (वैशे०)। **–काल**–पु० गतकाल। **–केश**–पु० सफेद दूव; इंद्रवारुणी। **–केशी**–स्त्री० श्वेत तुलसी। **–क्रांति**–स्त्री० भूतावेश। **–खाना**–पु० (हिं०) गंदा घर। **–गंधा**–स्त्री० मुरा नामक गंधद्रव्य। **–गण**–पु० शिवके अनुचर; प्रेतगण। **–ग्रस्त**–वि० जिसे भूत लगा हो। **–ग्राम**–पु० प्राणिसमष्टि; देह। **–घ्न**–पु० लहसुन; भोजपत्र; ऊँट। **–घ्नी**–स्त्री० तुलसी। **–चतुर्दशी**–स्त्री० कार्त्तिक-कृष्णा चतुर्दशी। **–चारी(रिन्)**–पु० शिव। **–चिंता**–स्त्री० तत्त्वोंकी छानवीन। **–जटा**–स्त्री० जटामासी। **–जय**–स्त्री० तत्त्वोंपर प्राप्त विजय। **–तृण**–पु० एक घास। **–दमनी**–स्त्री० शिवकी एक शक्ति। **–दया**–स्त्री० संपूर्ण प्राणियोंके प्रति दयाभाव। **–द्रावी(विन्)**–पु० लाल कनेर। **–द्रुह्(ह्)**–वि० जीवोंसे द्रोह करनेवाला। **–द्रुम**–पु० श्लेष्मांतक वृक्ष। **–धरा,–धात्री,–धारिणी**–स्त्री० धरती। **–नाथ**–पु० शिव। **–नायिका**–स्त्री० दुर्गा। **–नाशन**–पु० रुद्राक्ष; सरसों; भिलावाँ; हींग। **–निचय**–पु० शरीर। **–पक्ष**–पु० कृष्ण पक्ष। **–पति**–पु० शिव; अग्नि; तुलसी। **–पत्री**–स्त्री० कृष्ण तुलसी। **–पाल**–पु० विष्णु। **–पुष्प**–पु० श्योनाक वृक्ष। **–पूर्णिमा**–स्त्री० आश्विनकी पूर्णिमा। **–पूर्व**–वि० जो पहले हो चुका है, पूर्ववर्ती, पहला। **–प्रकृति**–स्त्री० मूलप्रकृति। **–प्रतिषेध**–पु० प्रेतादिका निवारण। **–प्रेत**–पु० भूत-पिशाच आदि। **–बलि**–स्त्री० भूतयज्ञ। **–ब्रह्मा(ह्मन्)**–पु० देवल, देवमाल्य लेनेवाला ब्राह्मण। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० शिव। **–भावन**–पु० भूतोंके स्रष्टा, ब्रह्मा; शिव; विष्णु। **–भावी(विन्)**–वि० जीवोंकी सृष्टि करनेवाला; अतीत और भावी। **–भाषा**–स्त्री०, **–भाषित**–पु० प्रेतोंकी भाषा, पैशाची। **–भृत्**–पु० विष्णु। **–भैरव**–पु० भैरवका एक रूप। **–महेश्वर**–पु० शिव। **–माता(तृ)**–स्त्री० गौरी। **–मातृका**–स्त्री० पृथ्वी। **–मात्रा**–स्त्री० तन्मात्रा। **–मारी**–स्त्री० चीड़ा नामक गंधद्रव्य। **–यज्ञ**–पु० गृहस्थके लिए कर्तव्य पंच महायज्ञोंमेंसे एक, वलिवैश्वदेव। **–योनि**–पु० परमेश्वर। स्त्री० प्रेतयोनि। **–राज**–पु० शिव। **–लक्षी**–वि० पूर्व व्यापित। **–वाद**–पु० भौतिक वाद। **–वास**–पु० वहेड़ेका पेड़। **–वाहन**–पु० शिव। **–विक्रिया**–स्त्री० अपस्मार रोग; प्रेतवाधा। **–विद्या**–स्त्री० आयुर्वेदका वह विभाग जिसमें पिशाच आदिकी वाधासे उत्पन्न रोगोंका इलाज वताया गया है **–विनायक**–पु० शिव। **–वृक्ष**–पु० वहेड़ा। **–वेशी**–स्त्री० श्वेत शेफालिका। **–शुद्धि**–स्त्री० पूजाके पहले शरीर अथवा उसके उपादानरूप पंचभूतोंकी मंत्र द्वारा शुद्धि। **–संचार**–पु० भूतावेश, प्रेतबाधा। **–संचारी(रिन्)**–

पु० दावानल । **–संप्लव**–पु० प्रलय । **–सर्ग**–पु० भूतसृष्टि । **–साधनी**–स्त्री० पृथ्वी । **–सार**–पु० श्योनाकका एक भेद । **–सिद्ध**–वि० जिसने भूत-प्रेत आदिको वशमें कर लिया है । **–सूक्ष्म**–पु० तन्मात्र । **–सृष्टि**–स्त्री० भूतोंकी सृष्टि; भूतावेशसे उत्पन्न भ्रांति । **–हंत्री**–स्त्री० नीली दूब; बाँझ ककोड़ी । **–हत्या**–स्त्री० जीववध । **–हर**–पु० गुग्गुल । **–हा(हन्)**–पु० भोजपत्र-का वृक्ष । **–हारी(रिन्)**–पु० लाल कनेर; देवदार । **–हास**–पु० सन्निपातका एक भेद । **मु० –उतरना**–पागल कर देनेवाले गुस्सेका उतर जाना; खब्तका दूर हो जाना । **–का पकवान,–की मिठाई**–भ्रमवश दिखाई देनेवाला या जल्द नष्ट हो जानेवाला पदार्थ । **–चढ़ना,–सवार होना**–गुस्सेमें पागल-सा हो जाना; किसी कामको करनेकी धुन सवार होना । **–बनकर लगना**–बुरी तरह पीछे लगना । **–बनना**–नशेमें चूर होना; क्रोधाभिभूत होना; किसी काममें भिड़ जाना । **(किसी बातका)–सवार होना**–किसी चीजके पीछे पड़ जाना, उसका हठ पकड़ लेना ।

भूतक–पु० (सं०) सुमेरुपरका एक लोक ।

भूतकालिक–वि० (सं०) भूतकाल संबंधी ।

भूतनी–स्त्री० स्त्रीप्रेत, भुतनी, दे० 'भूतिनी' ।

भूतलिका–स्त्री० (सं०) पृक्का, असवर्ग ।

भूतांकुश–पु० (सं०) कश्यप ऋषि; गावजुबाँ ।

भूतांतक–पु० (सं०) यम; रुद्र ।

भूता–स्त्री० (सं०) कृष्ण पक्षकी चतुर्दशी ।

भूताक्ष–पु० (सं०) सूर्य ।

भूतागति*–स्त्री० भूतका-सा व्यापार, विलक्षण बात–'दौरि परें न निगोड़ी थकैं बड़ी भूतागति हैं'–घन० ।

भूतात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) परब्रह्म; हिरण्यगर्भ; विष्णु; शिव; जीवात्मा; देह; युद्ध । वि० जिसकी आत्मा शुद्ध हो ।

भूतादि–पु० (सं०) परमेश्वर; अहंकार ।

भूताधिपति–पु० (सं०) शिव ।

भूतानुकंपा–स्त्री० (सं०) जीवदया ।

भूताभिषंग–पु० (सं०) प्रेतावेश ।

भूतायन–पु० (सं०) परमेश्वर ।

भूतारि–पु० (सं०) हींग ।

भूतार्त–वि० (सं०) प्रेतपीडित ।

भूतार्थ–वि० (सं०) यथार्थ, वस्तुतः घटित ।

भूतावास–पु० (सं०) शरीर; शिव; विष्णु; बहेड़ा ।

भूताविष्ट–वि० (सं०) जिसे भूत लगा हो ।

भूतावेश–पु० (सं०) भूत लगना, प्रेतबाधा ।

भूति–स्त्री० (सं०) होना, उत्पत्ति; संपत्ति, वैभव; अणिमादि अष्ट सिद्धियाँ; भभूत; वृद्धि नामकी ओषधि; रूसा; हाथियोंका शृंगार; भूना हुआ मांस; दान-स्राव । पु० विष्णु; शिव; एक पितृवर्ग । वि० शुभ । **–काम**–वि० वैभवकी चाह रखनेवाला । पु० राजाका मंत्री; बृहस्पति । **–काल**–पु० शुभकाल । **–कील**–पु० गड्ढा; परिखा; तहखाना । **–कृत्**–पु० शिव । **–गर्भ**–पु० भवभूति । **–द**–पु० शिव । **–दा**–स्त्री० गंगा । **–निधान**–पु० धनिष्ठा नक्षत्र । **–भूषण,–वाहन**–पु० शिव । **–वर्धन**–वि० ऐश्वर्य बढ़ानेवाला । **–सित**–वि० जो भस्म लगानेके कारण श्वेत हो (शिव) ।

भूतिक–पु० (सं०) कपूर; चंदन; चिरायता; अजवायन, रूसा ।

भूतिनी–स्त्री० भूतयोनिप्राप्त स्त्री; डाकिनी ।

भूती–वि० भूत-पूजक ।

भूतीक–पु० (सं०) चिरायता; अजवायन; भूतृण; कपूर ।

भूतेज्य–वि० (सं०) प्रेत-पूजक । पु० प्रेत-पूजा ।

भूतेज्या–स्त्री० (सं०) प्रेत-पूजा ।

भूतेश–पु० (सं०) शिव ।

भूतेश्वर–पु० (सं०) शिव ।

भूतेष्टा–स्त्री० (सं०) आश्विन-कृष्णा चतुर्दशी ।

भूतोन्माद–पु० (सं०) प्रेतबाधासे उत्पन्न उन्माद ।

भूतोपदेश–पु० (सं०) बीती हुई या मौजूद बातका हवाला ।

भूतोपसृष्ट, भूतोपहत–वि० (सं०) जिसे भूत लगा हो ।

भूत्तम–पु० (सं०) सोना ।

भूदृश्य–पु० (लैंडस्केप) भूमिका वह दृश्य जो किसी ओर दृष्टि डालनेपर दूर-दूरतक दिखाई दे, किसी भूभागमें स्थित पेड़ों, पहाड़ों, नदियों आदिका दृश्य ।

भून*–पु० दे० 'भ्रूण' ।

भूनना–स० क्रि० आगपर रखकर इस तरह पकाना कि छिलका कड़ा हो जाय; घी-तेलमें तलना; गरम रेतमें डालकर अन्नादिको पकाना; जलाना; बहुत कष्ट देना; बंदूकोंकी बाढ़ या मशीनगनकी गोलियोंसे बहुतोंका एक साथ वध करना ।

भूपरिमाप–स्त्री० (लैंड सर्वे) भूमिके किसी टुकड़े या देश, राज्यादि-की भूमिकी नाप-जोख ।

भूपेंद्र–पु० (सं०) राजाओंमें श्रेष्ठ, सम्राट् ।

भूपेष्ट–पु० (सं०) राजादनी वृक्ष ।

भूभल–स्त्री० गरम रेत या धूल; गरम राख ।

भूभुर, भूभुरि–स्त्री० दे० 'भूभल' ।

–भू-भौतिकी–(जियोफिजिक्स) पृथ्वीकी भौतिकी । इस विज्ञानके अन्तर्गत ग्रहविज्ञान, वायु-विज्ञान, मौसमविज्ञान, समुद्रविज्ञान, भूकंपविज्ञान, ज्वालामुखी विज्ञान, भूचुम्बकत्व तथा भूगणित आदि आते हैं ।

भूमय–वि० (सं०) मिट्टीका बना हुआ ।

भूमयी–स्त्री० (सं०) सूर्यपत्नी, छाया ।

भूमा(मन्)–पु० (सं०) बहुत्व; विशाल राशि; ऐश्वर्य; संख्या; विराट् पुरुष; धरती, प्राणी ।

भूमापन–पु० (सर्वे) सीमा आदि निर्धारित करनेकी दृष्टिसे किसी खेत, भूमिके टुकड़े या देश-प्रदेश आदिकी नाप-जोख (पैमाइश) करना ।

भूमि–स्त्री० (सं०) जमीन, धरती; स्थान, क्षेत्र; देश (भारत-भूमि); जमींदारी; विस्तार भूमिका (ना०); जीभ; एककी संख्या; आधार; मंजिल, तल्ला (सप्तभूमिक प्रासाद); योगीके चित्तकी एक अवस्था; उत्पत्तिस्थान (वीरोंकी भूमि) । **–उच्च**–पु० (एपोजी) भू-उपग्रह प्रायः पृथ्वीके गिर्द दीर्घवृत्तीय कक्षामें चलते हैं । इस कक्षाका वह विन्दु जो पृथ्वीतलसे सर्वाधिक दूरीपर स्थित होता है, भूमि-उच्च कहलाता है । **–कंदक,–कंदर**–पु० कुकुरमुत्ता । **–कंदली**–स्त्री० एक लता । **–कंप,–कंपन**–पु० भूचाल । **–कदंब**–पु० एक तरहका कदंब । **–कुष्मांड,–कूष्मांड**–जमीनपर होनेवाला कुम्हड़ा, भुइँकुम्हड़ा । **–खर्जूरिका**–स्त्री० एक तरहका छोटा खजूर । **–गत**–वि० (अण्डरग्राउण्ड) अज्ञात-वास; भूपतित । **–गर्भ**–पु० भवभूति । **–गम**–पु० ऊँट । **–गृह**–पु० तहखाना । **–गोचर**–पु० मनुष्य । **–चंपक**–पु० एक फूलका पौधा । **–चल,–चलन**–पु० भूकंप । **–जंबु**–पु० छोटा जामुन । **–ज**–वि० धरतीसे उत्पन्न । पु० मंगल ग्रह; मनुष्य; नरकासुर; सोना; भूनिंब; एक तरहका घोंघा । **–जा**–स्त्री० सीता । **–जीवी(विन्)**–पु० जमीनसे जीविका करनेवाला, कृषक । **–तल**–पु० जमीनकी सतह । **–दान**–पु० जमीनका दान । **–देव**–पु० ब्राह्मण । **–धर**–पु० पर्वत; शेषनाग । **–नाग**–पु० केंचुवा । **– नीच (उपभू)**–पु० (पेरिजी) वह विन्दु या स्थिति जहाँ पृथ्वीकी परिक्रमा करनेवाला उपग्रह (चन्द्रमा या कृत्रिम भू-उपग्रह) अपनी दीर्घवृत्त-कक्षामें पृथ्वीतलसे न्यूनतम दूरीपर होता है । **–प**–पु० राजा । **–पक्ष**–पु० बहुत तेज घोड़ा । **–पति,–पाल**–पु० राजा; क्षत्रिय । **–पाश**–पु० एक पौधा । **–पिशाच**–पु० ताड़का पेड़ । **–पुत्र**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; श्योनाक । **–पुरंदर**–पु० राजा दिलीप । **–प्रचल**–पु० भूकंप । **–भाग**–पु० भूभाग; प्रदेश । **–भुक्(ज्),–भृत्**–पु० राजा । **–मंड**–पु० उष्ट्रपादिका । **–मंडपभूषणा**–स्त्री० माधवी लता । **–रक्षक**–पु० देशरक्षक; तेज घोड़ा । **–रंडी**–स्त्री० हस्तिनी नामक वृक्ष । **–रुज***–पु० वृक्ष । **–रुह**–पु० वृक्ष । **–रुहा**–स्त्री० दूब । **–लग्ना**–स्त्री० श्वेत अपराजिता । **–लता**–स्त्री० शंखपुष्पी । **–लवण**–पु० शोरा । **–लाभ**–पु० मृत्यु; भूमिकी प्राप्ति । **–लेपन**–पु० धरती लीपना; गोबर । **–वर्धन**–पु० शव । **–वल्ली**–स्त्री० भुइँआँवला । **–विज्ञान**–दे० क्रममें । **–शय**–

वि० जमीनपर सोनेवाला। पु० बालक; जंगली कबूतर। **–शयन**–पु०,**–शय्या**–स्त्री० जमीनपर सोना। **–संभव**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर। **–संभवा**–स्त्री० सीता। **–सत्र**–पु० भूमिदानरूप यज्ञ। **–सात्**–वि० जमींदोज, गिरकर मट्टीमें मिलना। **–सुत**–पु० दे० 'भूमिसंभव'। **–सुर**–पु० ब्राह्मण। **–स्खलन**–पु० दे० 'भू-स्खलन'। **–स्तोम**–पु० एक ही दिनमें पूरा होनेवाला एक यज्ञ। **–स्नु**–पु० केंचुआ। **–स्पृक्(श्)**–वि० अंधा; लँगड़ा; पंगु। पु० मनुष्य; वैश्य; चोर। **–स्वामी(मिन्)**–पु० राजा। **–हार**–पु० मध्यप्रदेशमें बसनेवाली एक हिंदू जाति जो अपनेको ब्राह्मण कहती है।

भूमि-अवाप्ति-अधिनियम–पु० (लैंड ऐक्विज़िशन ऐक्ट) किसी सार्वजनिक कामके निमित्त या राज्यादिकी कोई विशेष आवश्यकता पूरी करनेके लिए दूसरेकी भूमि खरीदने, ले लेनेका अधिकार प्रदान करनेवाला अधिनियम।

भूमिका–स्त्री० (सं०) धरती; तल्ला; वक्तव्य विषयकी पूर्व-सूचना, ग्रंथादिकी प्रस्तावना, तमहीद; लिखनेका तख्ता; योगसिद्धिकी दृष्टिसे योगीके चित्तकी कोई विशेष अवस्था (यो०); नटकी वेशभूषा; अभिनेताका पार्ट; किसी नाटक या संघटित प्रयासमें लिया जानेवाला हिस्सा या सहयोग। **–गत**–पु० नाटकीय वस्त्र पहननेवाला। **–भाग**–पु० फर्श। मु०**–बाँधना**–किसी बातको सीधे-सीधे थोड़ेमें न कहकर उसे कहनेके लिए इधर-उधरसे बहुत-सी बातें लाकर जोड़-तोड़ भिड़ाना।

भूमिधर किसान–पु० वह काश्तकार जो दसगुना लगान जमाकर भूमिका स्वामी बन गया हो और सीधे सरकारको लगान देने लगा हो (आ०)।

भूमिया–पु० ज़मींदार; देवता।

भूमि-संरक्षण–पु० (सॉइल कंसर्वेशन) कटाव आदिसे भूमिका बचाव।

भूमि-हस्तांतर-अधिनियम–पु० (लैंड एलियनेशन ऐक्ट) भूमिका स्वत्व या स्वामित्व हस्तांतरित करनेसे संबंध रखनेवाला अधिनियम।

भूमींद्र–पु० (सं०) राजा।

भूमी–स्त्री० (सं०) दे० 'भूमि'। **–कदंब**–पु० दे० 'भूमि-कदंब'। **–पति,–भुक्(ज्)**–पु० दे० 'भूमिपति'। **–रुह**–पु० वृक्ष। **–सह**–पु० वृक्षविशेष।

भूमीच्छा–स्त्री० (सं०) जमीनपर गिरने या लेटनेकी इच्छा।

भूमीश्वर–पु० (सं०) राजा।

भूम्यनंतर–वि० (सं०) दूसरे देशका। पु० आसन्नवर्ती देशका राजा।

भूम्यामलकी, भूम्यामली–स्त्री० (सं०) भुइँआँवला।

भूयः(यस्)–अ० (सं०) पुनः; और अधिक; साधारणतः।

भूयशः(शस्)–अ० (सं०) अधिकतर, बहुत करके; अतिशय।

भूयसी–वि० स्त्री० (सं०) बहुत अधिक (–दक्षिणा)। **–दक्षिणा**–स्त्री० धर्मकृत्यके अंतमें उपस्थित ब्राह्मणोंको दी जानेवाली दक्षिणा।

भूयस्त्व–पु० (सं०) प्राचुर्य; प्रधानता।

भूयिष्ठ–वि० (सं०) बहुत अधिक, अत्यधिक।

भूयुक्ता–स्त्री० भुँइ खजूर।

भूयोभूयः(यस्)–अ० (सं०) पुनः-पुनः, बार-बार।

भूर्–पु० लोक।

भूर*–वि० दे० 'भूरि'। पु० रेत। स्त्री० भूल।

भूरज*–पु० दे० 'भूर्ज'। **–पत्र**–पु० दे० 'भूर्जपत्र'।

भूरपूर*–वि० भरपूर।

भूरसी दक्षिणा–स्त्री० दे० 'भूयसी दक्षिणा'; बड़े खर्चके बाद होनेवाले छोटे खर्च।

भूरा–पु० स्याह और सफेदके बीचका रंग, खाकी रंग; कच्ची चीनी; चीनी। वि० भूरे रंगका, कपासी। **–कुम्हड़ा**–पु० पेठा।

भूरि–वि० (सं०) प्रचुर, बहुत ज्यादा; बड़ा। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; इंद्र; सोना। अ० बहुत अधिक; प्रायः। **–गंधा**–स्त्री० मुरा नामक गंधद्रव्य। **–गम**–पु० गधा। **–तेजस,–तेजा(जस्)**–वि० अति तेजस्वी। पु० अग्नि; सोना। **–द**–वि० बहुत देनेवाला, महादानी। **–दक्षिण**–वि० जिसमें बहुत दान-दक्षिणा दी गयी हो; महादानी। पु० विष्णु। **–दा***–वि० बहुत बड़ा दानी। **–दावा(वन्)**–वि० बहुत बड़ा दानी। **–दुग्धा**–स्त्री० वृश्चिकाली। **–द्युम्न**–पु० नवें मनुका एक पुत्र। **–धामा(मन्)**–पु० नवें मनुका एक पुत्र। **–पत्र**–पु० उखर्वल तृण। **–पलितदा**–स्त्री० पांडुरफली। **–पुष्पा**–स्त्री० शतपुष्पा। **–प्रयोग**–वि० जिसका बहुत प्रयोग होता हो, बहुप्रचलित। **–प्रेमा(मन्)**–पु० चकवा। **–फेना**–स्त्री० सप्तला। **–बल**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–बला**–अतिबला, कँगही। **–भाग**–वि० धनी, समृद्ध। **–भाग्य**–वि० बड़भागी। **–मल्ली**–स्त्री० ब्राह्मणी लता। **–माय**–वि० भारी मायावी। पु० सियार; लोमड़ी। **–मूलिका**–स्त्री० ब्राह्मणी लता। **रस**–पु० ईख। **–लग्ना**–स्त्री० सफेद अपराजिता। **–लाभ**–वि० बहुत लाभदायक। पु० बड़ा लाभ। **–विक्रम**–वि० बहुत बड़ा शूर-वीर। **–श्रवा(वस्)**–पु० कौरव-पक्षका एक महारथी जो सात्यकिके हाथों मारा गया। **–सख**–वि० जिसके बहुतसे मित्र हों।

भूरिक–स्त्री० पृथ्वी।

भुरिक्(ज्)–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

भूरिता–स्त्री० (सं०) आधिक्य, बाहुल्य।

भूरुह–पु० (सं०) पेड़; अर्जुन वृक्ष; शालवृक्ष।

भूरुहा–स्त्री० दूब।

भूर्ज–पु० (सं०) भोजपत्रका पेड़। **–कंटक**–पु० एक संकर जाति। **–पत्र**–पु० भोजपत्र।

भूर्णि–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; मरुभूमि।

भूर्भुव–पु० (सं०) ब्रह्माका एक मानस पुत्र।

भूर्लोक–पु० (सं०) मर्त्यलोक; विषुवत् रेखाके दक्षिणका देश।

भूल–स्त्री० भूलनेका भाव, भ्रम; चूक; दोष; गलती, अशुद्धि। **–चूक**–स्त्री० भूल, भ्रम; गलती। (मु० **–०लेनी-देनी**–हिसाबमें भूल-चूक हो तो लेन-देनकी कमी-बेशी ठीक कर ली जाय (पुरजे, बिल, बीजक आदिपर लिखा जाता है))। **–भुलैया**–स्त्री० वह इमारत जिसका रास्ता ऐसा चक्करदार हो कि आदमी जल्दी बाहर न निकल सके। **–से**–भूलकर, गलतीसे (...नाम न लेना, याद न करना)।

भूलक*–वि० भूल करनेवाला।

भूलना–अ० क्रि० याद न रहना, बिसरना; गलती करना; भटकना, गलत रास्तेपर जाना; धोखा खाना, भुलावेमें पड़ना; बेखबर, अचेत होना; इतराना; खो जाना। स० क्रि० याद न रखना, भुला देना। † वि० विस्मरणशील। मु० **भूलकर**–भूलसे, गलतीसे (भी)। **–०नाम न लेना**–कभी याद न करना। **भूला-भटका**–जो रास्ता भूलकर, साथियोंसे बिछुड़कर भटक रहा हो। **भूले-भटके**–कभी-कभी।

भूवा–पु०, वि०, * स्त्री० दे० 'भूआ'।

भू-विज्ञान–पु० (जिओलॉजी) भू-पर्पटी (पृथ्वीके ऊपरी स्तर)का वैज्ञानिक अध्ययन।

भूषण–पु० (सं०) गहना, जेवर; सजावट; शोभाजनक वस्तु; विष्णु। **–पेटिका**–स्त्री० रत्नमंजूषा।

भूषणीय, भूष्य–वि० (सं०) अलंकृत करने योग्य।

भूषन*–पु० दे० 'भूषण'।

भूषना*–स० क्रि० सजाना, भूषित करना।

भूषा–स्त्री० (सं०) गहना, भूषण; सजावट, शृंगार।

भूषाचार–पु० (फ़ैशन) कपड़े आदि पहननेका विशिष्ट ढंग; समाजके उच्च वर्गोंमें प्रचलित या आदृत ढंग, रीति, तौर-तरीका।

भूषित–वि० (सं०) सजाया हुआ, अलंकृत।

भूष्णु–वि० (सं०) होनेवाला, भवनशील; ऐश्वर्यका इच्छुक।

भूष्य–वि० (सं०) सजाने योग्य।

भूसन*–पु० दे० 'भूषण'।

भूसना*–अ० क्रि० दे० 'भूँकना'।

भूसा–पु० गेहूँ, जौ आदिका टुकड़े-टुकड़े किया हुआ डंठल जो पशुओंको खिलाया जाता है।

भूसी–स्त्री० धान, चने, मटर आदिका छिलका ।

भूस्तृण–पु० (सं०) एक घास, घटियाली ।

भृंग–पु० (सं०) भौंरा, बिलनी; लंपट; भँगरा; भृंगराज पक्षी; झारी, स्वर्णपात्र; अभ्रक । **–ज**–पु० अगर; अभ्रक । **–जा**–स्त्री० भारंगी । **–पर्णिका**–स्त्री० छोटी इलायची । **–प्रिया**–स्त्री० माधवी लता । **–राज**–पु० बड़ा भौंरा; एक पक्षी; भँगरा नामका क्षुप । **–राजक**–पु० एक पक्षी । **–रिटि,–रीटि**–पु० शिवका एक द्वारपाल । **–रोल**–पु० एक तरहकी भिड़ । **–वल्लभ**–पु० धाराकदंब; भूमिकदंब । **–वल्लभा**–स्त्री० भूमिजंबू । **–सार्थ**–पु० भौंरोंका झुंड । **–सोदर**–पु० भँगरैया ।

भृंगक–पु० (सं०) भौंरा; भृंगराज पक्षी ।

भृंगाण–पु० (सं०) बड़ा काला भौंरा ।

भृंगाभीष्ट–पु० (सं०) आम ।

भृंगार–पु० (सं०) सोनेकी झारी; झारी; अभिषेकपात्र; सोना; लौंग ।

भृंगारक–पु० (सं०) घड़ा, पात्र ।

भृंगारि–स्त्री० (सं०) केवड़ा ।

भृंगारी, भृंगालिका–स्त्री० (सं०) झींगुर ।

भृंगारु–पु० (सं०) घड़ा; पात्र ।

भृंगावली–स्त्री० (सं०) भौंरोंकी पाँत ।

भृंगाह्व–पु० (सं०) भँगरैया; जीवक ।

भृंगि–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर ।

भृंगिरिटि, भृंगिरीटि–पु० (सं०) दे० 'भृंगरिटि' ।

भृंगी–स्त्री० (सं०) भौंरी, बिलनी–'डरियतु भृंगीकीट लौं मत वहई ह्वै जाति'–बिहारी; अतिविषा; भाँग ।

भृंगीफल–पु० (सं०) अमड़ा ।

भृंगी(गिन्)–पु० (सं०) शिवका एक गण; बरगद ।

भृंगीश–पु० (सं०) शिव ।

भृंगेरिटि–पु० (सं०) दे० 'भृंगरिटि' ।

भृंगेष्टा–स्त्री० घीकुआर; युवती ।

भृकुंश, भृकुंस–पु० (सं०) स्त्री-वेशधारी अभिनेता ।

भृकुटि, भृकुटी–स्त्री० (सं०) भ्रुकुटि, भ्रूभंग, भौं चढ़ाना; भौं (आ०) ।

भृगु–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि जो ब्रह्माके पुत्र माने जाते हैं; जमदग्नि; शुक्राचार्य; शुक्र ग्रह; शुक्रवार; कृष्ण; शिव; पहाड़का खड़ा कगार; अधित्यका । **–कच्छ**–पु० आधुनिक भड़ौंच । **–ज,–तनय**–पु० शुक्राचार्य; शुक्र । **–तुंग**–पु० हिमालयकी एक चोटी । **–नंदन**–पु० परशुराम: शुक्र । **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० परशुराम । **–पात**–पु० पहाड़के कगारसे गिरकर आत्महत्या करना । **–पुत्र**–पु० शुक्र । **–रेखा,–लता**–स्त्री० विष्णुकी छातीपर पड़ा हुआ भृगुके लात मारनेका चिह्न । **–वल्ली**–स्त्री० तैतरेय उपनिषद्की एक शाखा । **–वार,–वासर**–पु० शुक्रवार । **–शार्दूल,–श्रेष्ठ,–सत्तम**–पु० परशुराम । **–सुत,–सूनु**–पु० शुक्र; परशुराम (?) ।

भृत–वि० (सं०) प्राप्त, वहन किया हुआ; भरा हुआ; पोषित, पाला हुआ; मजदूरी या किरायेपर लिया हुआ । पु० वेतन लेकर काम करनेवाला दास, नौकर । **–भूति**–वि० शक्तिशाली; ऐश्वर्यवान्; जिसने भस्म लगाया हो ।

भृतक–वि० (सं०) मजदूरी या वेतनपर रखा हुआ । पु० वेतनपर काम करनेवाला नौकर ।

भृतकाध्ययन–पु० (सं०) वैतनिक शिक्षकसे पढ़ना ।

भृतकाध्यापक–पु० (सं०) वेतन लेकर शिक्षणकार्य करनेवाला ।

भृति–स्त्री० (सं०) ले जाना; लाना; भरण; भरणका साधन, वेतन, मजदूरी; भोजन । **–कर्मकर**–पु० मजदूर, वेतन लेकर काम करनेवाला नौकर । **–भुक्(ज्)**–पु० वेतन लेकर काम करनेवाला नौकर । **–भोगी**–वि० (मर्सीनरी) वेतन लेकर अवसर-विशेषपर किसीके लिए भी काम करने या लड़नेवाला, केवल रुपयेके लालचसे किसीकी सेवा करनेवाला; किरायेका या भाड़ेका (सैनिक), भाड़ैत । **–रूप**–पु० किसी विशेष कामके लिए पारिश्रमिकके बदले दिया जानेवाला पुरस्कार ।

भृत्य–वि० (सं०) भरण करने योग्य । पु० सेवक । **–परमाणु**–पु० विनम्र सेवक । **–भरण**–पु० भृत्योंका पालन । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० नौकरोंका पालन करनेवाला; गृहस्वामी । **–भाव**–पु० सेवाभाव, पराश्रय । **–वर्ग**–पु० दास-समूह । **–वृत्ति**–स्त्री० सेवकोंका पालन ।**–शाली(लिन्)**–वि० जिसके बहुतसे सेवक हों ।

भृत्या–स्त्री० (सं०) दासी; भृति ।

भृमि–स्त्री० (सं०) भँवर; बगूला ।

भृश–वि० (सं०) अतिशय; प्रचंड; शक्तिशाली । अ० अत्यधिक । **–कोपन**–वि० बहुत क्रोधी । **–दारुण**–वि० बहुत कठोर, निष्ठुर । **–दुःखित,–पीडित**–वि० अत्यधिक कष्टग्रस्त । **–पत्रिका**–स्त्री० महानीली ।

भृष्ट–वि० (सं०) भूना हुआ; आगपर या गरम रेतमें पकाया हुआ । पु० पकाया हुआ मांस । **–कार**–पु० भूननेवाला; मांस पकानेवाला । **–तंडुल**–पु० भूना हुआ अन्न ।

भृष्टान्न–पु० (सं०) लाई ।

भृष्टि–स्त्री० (सं०) भूनना; सूनी वाटिका ।

भेंगा–पु० भेंड़ा, आँखकी टेढ़ी, तिरछी पुतलीवाला (व्यक्ति), टपंगा ।

भेँट–स्त्री० मिलन, मुलाकात; नजर ।

भेँटना*–स० क्रि० मिलना; गले लगना या लगाना; छूना, पकड़ना ।

भेँड़–स्त्री० दे० 'भेड' ।

भेंड़ा–पु० दे० 'भेंगा' । स्त्री० भेंड़ी ।

भेँना, भेँवना*–स० क्रि० तर करना ।

भेइ, भेउ*–पु० दे० 'भेद' ।

भेक–पु० (सं०) मेढक; मेघ; डरपोक आदमी । **–पर्णी**–स्त्री० मंडूकपर्णी । **–भुक्(ज्)**–पु० साँप । **–रव**–पु० मेढकोंका टर्राना ।

भेकासन–पु० (सं०) एक तंत्रोक्त आसन ।

भेकी–स्त्री० (सं०) मेढकी; मंडूकपर्णी ।

भेख–पु० दे० 'भेस' ।

भेखज*–पु० दे० 'भेषज' ।

भेजना–स० क्रि० अन्य स्थानके लिए रवाना करना, पहुँचाये जानेका प्रबंध करना, प्रेषण करना ।

भेजवाना–स० क्रि० भेजनेका काम दूसरेसे कराना ।

भेजा–पु० रीढ़वाले प्राणियोंकी खोपड़ीके अंदर रहनेवाला भूरा गूदा जो नाडी-मंडल और मनकी क्रियाओंका केंद्र माना जाता है; दिमाग, मग्ज; चंदा; * मेढक । मु० **–खाना,–पकाना**–बकबक करके खोपड़ी खाना ।

भेट–स्त्री० दे० 'भेँट' ।

भेटना–स० क्रि० दे० 'भेँटना' ।

भेड–स्त्री० (सं०) बकरीकी जातिका एक चौपाया जो दूध, रोयें और मांसके लिए भी पाला जाता है; भेड़ी; बहुत सीधा, बेवकूफ आदमी; भेला ।

भेड़–स्त्री० दे० 'भेड' । **–चाल**–स्त्री० भेड़िया धसान ।

भेड़ना†–स० क्रि० भिड़ा देना, सटा देना, ओठँगाना–'किवाड़ भेड़कर पत्नी चली गयीं'–मनो, नव० ५५ ।

भेड़ा–पु० मेढ़ा, मेष ।

भेड़िया–पु० कुत्तेकी जातिका एक हिंस्र जंतु जो प्रायः भेड़-बकरियोंका शिकार किया करता है, वृक ।

भेड़िया धसान–पु० भेड़ जैसी अंध अनुकरणकी प्रवृत्ति ।

भेड़िहर†–पु० गड़ेरिया ।

भेडी–स्त्री० (सं०) मेषी ।

भेड्र–पु० (सं०) भेड़ा, मेष ।

भेतव्य–वि० (सं०) जिससे डरा जाय; डरने योग्य ।

भेत्ता(त्तृ)–वि० (सं०) भेदन करनेवाला; विघ्न डालनेवाला; भेद खोलनेवाला; षड्यंत्र रचनेवाला ।

भेद–पु० (सं०) छेदना; दारण; बिलगाव, अंतर; तादात्म्यका अभाव; क्षति, चोट; परिवर्तन; द्रोह; पराजय; कोष्ठशुद्धि, रेचन; छिपी हुई बात, रहस्य; मर्म; प्रकार; फूट; खुलना, प्रकट

होना (रहस्यभेद); राजनीतिके चार उपायोंमेंसे एक, शत्रुपक्षमें फूट डालना। –कर,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्–वि० भेद करनेवाला। –ज्ञान–पु० द्वैतज्ञान, द्वैतकी प्रतीति।–दर्शी(शिन्), –दृष्टि–वि० विश्वको परब्रह्मसे भिन्न समझनेवाला, द्वैतवादी। –नीति–स्त्री० फूट डालनेकी नीति। –प्रत्यय–पु० द्वैतवादमें विश्वास। –बुद्धि–स्त्री० अंतर करनेवाली दृष्टि, द्वैतभाव। वि० द्वैतवादी। –भाव–पु० दो व्यक्तियों, वर्गोंके साथ दो तरहका व्यवहार, फर्क। –वाद–पु० द्वैतवाद। –वादी(दिन्)–वि० द्वैतवादी। –विधि–स्त्री० दो वस्तुओंमें अंतर करनेकी शक्ति। –सह–वि० जो भेद डालकर अलग किया जा सके। –साक्षी–दे० क्रममें।

भेदक–वि० (सं०) भेद करनेवाला; छेदन करनेवाला; नष्ट करनेवाला; अंतर करनेवाला; रेचक। पु० भेदकारक गुण, विशेपता।

भेदकातिशयोक्ति–स्त्री० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकारका एक भेद जिसमें 'और ही', 'न्यारा' आदि शब्दों द्वारा उपमानसे उपमेयको भिन्न कहा जाय।

भेदड़ी†–स्त्री० खड़ी।

भेदन–पु० (सं०) छेदन; फाड़ना; विलगाना; भेद, अंतर करना; रेचन, दस्त लाना; सूअर; हींग; अम्लवेत। वि० दे० 'भेदक'।

भेदना–स० क्रि० छेदना, बेधना।

भेद साक्षी–पु० (एप्रूवर) मुखबिर, इकबाली गवाह, अभियुक्त जो सरकारकी तरफसे गवाही दे।

भेदिका–स्त्री० (सं०) नाश, ध्वंस। वि० स्त्री० दे० 'भेदक'।

भेदित–वि० (सं०) छेदा, फाड़ा, विलगाया हुआ।

भेदिया–पु० भेद जाननेवाला; जासूस।

भेदिर, भेदुर–पु० (सं०) वज्र।

भेदी(दिन्)–वि० (सं०) भेदकारक; भेद जाननेवाला; भेद लेनेवाला। पु० अम्लबेत।

भेदीसार–पु० छेद करनेका औजार, बरमा।

भेदू*–पु० भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ।

भेद्य–वि० (सं०) भेद करने योग्य। पु० विशेष्य। –रोग–पु० वह रोग जिसकी चिकित्सा चीर-फाड़के जरिये की जाय।

भेन†–स्त्री० वहिन। पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा।

भेना*–स० क्रि० भिगोना।

भेय–वि० (सं०) दे० 'भेतव्य'।

भेर–पु० (सं०) नगाड़ा, डंका।

भेरा*–पु० एक तरहकी नाव, भेला।

भेरि, भेरी–स्त्री० (सं०) दे० 'भेर'। –कार–पु० भेरी बजानेवाला।

भेरुंड–वि० (सं०) भयानक। पु० गर्भधारण; एक पक्षी; हिंस्र जंतु (भेड़िया, सियार आदि)।

भेरुंडक–पु० (सं०) सियार आदि हिंस्र जंतु।

भेल–वि० (सं०) भीरु; मूर्ख; लंबा, ऊँचा; अस्थिर; क्षिप्र। पु० नाव; एक ऋषि।

भेलक–पु० (सं०) नाव।

भेलन–पु० (सं०) तैरना।

भेलपूड़ी–स्त्री० मसालेदार लाई।

भेला*–पु० भेंट; भिड़ंत; भिलावाँ; नाव; † गुड़ आदिका बड़ा पिंड।

भेली–स्त्री० गुड़ आदिकी पिंडी; गुड़।

भेलुक–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर।

भेव*–पु० दे० 'भेद'; बारी।

भेवना*–स० क्रि० भिगोना।

भेष–पु० दे० 'भेस'।

भेषज–पु० (सं०) दवा; उपचार; जल; विष्णु। वि० आरोग्य-लाभ करानेवाला। –करण–पु० दवा तैयार करना (बौ०)। –कृत–वि० नीरोग किया हुआ। –वीर्य–पु० औषधकी नीरोग करनेवाली शक्ति। –संग्रह–पु० (फार्मेकोपिया) मान्य दवाओंकी अधिकृत सूची जिसमें उनके गुणों और मात्राओंका ब्यौरा होता है।

भेषजांग–पु० (सं०) दवा खानेके साथ या बाद खायी जानेवाली चीज, अनुपान।

भेषजागार–पु० (सं०) दवाकी दुकान।

भेषज्य–वि० (सं०) आरोग्यदायक।

भेषना*–स० क्रि० भेस बनाना।

भेस–पु० बाह्य रूप; पहनावा; वेश-भूषा, पहनावे आदिसे बदला हुआ रूप (बनाना, बदलना)।

भेसज*–पु० दे० 'भेषज'।

भेसना*–स० क्रि० भेस बनाना।

भैंस–स्त्री० गोजातीय एक मादा पशु जिसका दूध गायके दूधसे अधिक गाढ़ा और स्नेह-युक्त होता है, महिषी।

भैंसा–पु० भैंसका नर, महिष।

भैंसौरी†–स्त्री० भैंसका चमड़ा।

भै*–पु० दे० 'भय'। –जन*–वि० दे० 'भयजनक'। –दा*–वि० भयोत्पादक।

भैक्ष–पु० (सं०) भिक्षा; भिक्षामें प्राप्त वस्तु, भीख। वि० भिक्षाजीवी। –काल–पु० भिक्षाका समय। –चरण,–चर्य–पु०,–चर्या–स्त्री० घूम-घूमकर भीख माँगना। –जीविका–स्त्री० भिक्षापर जीवन व्यतीत करना। –भुक्(ज्)–वि० भिक्षाजीवी। –वृत्ति–स्त्री० दे० 'भैक्षजीविका'।

भैक्षक–पु० (सं०) दान, भीख।

भैक्षव–वि० (सं०) भिक्षु-संबंधी। पु० भिक्षुकोंका समूह।

भैक्षान्न–पु० (सं०) भीखमें मिला हुआ अन्न।

भैक्षाशी(शिन्)–वि० (सं०) भिक्षान्न खानेवाला। पु० भिक्षुक।

भैक्षाहार–पु० (सं०) भिक्षुक।

भैक्षुक–पु० (सं०) भिक्षुक-दल; सन्न्यास।

भैक्ष्य–पु० (सं०) भीख।

भैचक*–वि० दे० 'भौचक'।

भैडक–वि० (सं०) भेड़-संबंधी।

भैदा*–वि० भयदायक।

भैन, भैना, भैनी†–स्त्री० बहिन।

भैने†–पु० भांजा।

भैम–वि० (सं०) भीम-संबंधी। पु० उग्रसेन; भीमका वंशज।

भैमी–स्त्री० (सं०) दमयंती; माघ-शुक्ला एकादशी।

भैया–पु० भाई; बराबरवाले या छोटेका संबोधन। –चार,–चारा–पु० भाईचारा। –चारी–स्त्री० भाईचारा। –दूज–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला द्वितीया।

भैरव–वि० (सं०) भैरव-संबंधी, भयानक, डरावना; दुःखी; अति उग्र, विकट तीव्र। पु० शिवके अवताररूप माने जानेवाले शिवके अंगविशेष; शिव; भय; भयानक रस; एक नद; एक राग; तालका एक भेद; गीदड़; एक पर्वत। –कारक–वि० भयावना। –तंत्र–पु० तंत्रविशेष। –तर्जक–पु० विष्णु। –मस्तक–पु० तालका एक भेद। –वाहन–पु० कुत्ता, श्वान।

भैरवी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; दस महाविद्याओंमेंसे एक; एक रागिनी; एक नदी; शैव सन्न्यासिनी। वि० स्त्री० दे० 'भैरव'। –चक्र–पु० तांत्रिक (वाममार्गी) साधकों, पंचमकारकी विधिसे उपासना करनेवालोंकी चक्ररूपमें बैठी हुई मंडली; मद्यपों आदिका समूह। –यातना–स्त्री० वह यातना जो काशीखंडके अनुसार काशीमें प्राणत्याग करनेवालोंको मरते समय पापोंसे शुद्धिके लिए भैरव द्वारा दी जाती है।

भैरवीय–वि० (सं०) भैरव-संबंधी।

भैरवेश–पु० (सं०) विष्णु; शिव।

भैरू, भैरो–पु० दे० 'भैरव'।

भैवाद†–पु० भाईचारा; बिरादरी।

भैषज–पु० (सं०) औषध; लवा पक्षी।

भैषजिक विद्यालय–पु० (मेडिकल कॉलेज) रोगोंके निदान, उपचार आदिकी शिक्षा प्रदान करनेवाला विद्यालय।

भैषजिकी–स्त्री० (फार्मेसी) औषधि बनानेकी विधि, शास्त्र। औषधिकी दूकान।

भैषज्य–पु० (सं०) औषध, चिकित्सा; भिषक् पुत्र; आरोग्यदायक

शक्ति । **–रत्नावली**–स्त्री० आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध चिकित्साग्रंथ ।

भैष्मकी–स्त्री० (सं०) भीष्मककी कन्या, रुक्मिणी ।

भैहा*–वि० भयग्रस्त, डरा हुआ; जिसपर किसी प्रेत आदिका आवेश होता हो ।

भोंकना–स० क्रि० शरीरमें नुकीली चीज (भाला, छुरा आदि) घुसेड़ना । अ० क्रि० भूँकना ।

भोंगाल–पु० आवाजको दूरतक पहुँचानेके लिए काममें लाया जानेवाला भोंपा ।

भोंचाल–पु० भूकंप ।

भोंडर*–पु० दे० 'भोडर' ।

भोंड़ा–वि० भद्दा; वदशकल, वेडौल; * मूर्ख । (स्त्री० 'भोंड़ी' ।) **–पन**–पु० भद्दापन; अशिष्टता ।

भोंतरा, भोंतला।–वि० जिसकी धार तेज न हो ।

भोंदू–वि० मूर्ख, वुद्धू ।

भोंपा, भोंपू–पु० एक तरहकी तुरही; इंजिनमें लगा हुआ वह साधन जिसके द्वारा ऊँची आवाज पैदा की जाती है; ऐसी आवाज, सीटी ।

भों-भों–पु० भूँकनेकी आवाज ।

भोंसल, भोंसला, भोंसले–पु० महाराष्ट्रका एक राजवंश; मराठोंकी एक जातिका नाम ।

भो–अ० (सं०) हे, अहो (संवोधन); * दे० 'भया' ।

भोकस*–वि० भूखा । पु० राक्षस–'कीन्हेसि भोकस देव दयीता' –प० ।

भोक्तव्य–वि० (सं०) भोगने योग्य ।

भोक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) भोग करनेवाला; भोजन करनेवाला; सहन करनेवाला; शासन करनेवाला । पु० पति; राजा; विष्णु ।

भोक्तृत्व–पु० (सं०) भोग; अधिकार; अनुभूति ।

भोग–पु० (सं०) सुख-दुःखादिका अनुभव; सुख; दुःख; संभोग; भूमि आदिका फल भोगना, भुक्ति, कब्जा; वेश्याका शुल्क; संपत्ति; शासन; चीजको काममें लाना; पाप-पुण्यका फल; भोजन; लाभ, आय; देवताके आगे रखा जानेवाला मिष्टान्न आदि, नैवेद्य; सूर्यादिका राशि-विशेषमें गतिकाल; साँपका (फैला हुआ) फन; कुंडली; साँप; पंक्तिवद्ध सेना; देह । **–काल**–पु० घटना घटने, फल भोगनेकी अवधि । **–गुच्छ**–पु० वेश्याका शुल्क । **–गृह**–पु० जनानखाना । **–चिन्तामणि**–पु० संगीतका एक राग । **–जात**–वि० भोग या कष्टसे उत्पन्न । **–तृष्णा**–स्त्री० भोगकी वलवती इच्छा । **–देह**–स्त्री० मृत्युके वाद जीवात्माको पाप-पुण्यका फल भोगनेके लिए मिलनेवाला सूक्ष्म शरीर । **–धर**–पु० साँप । **–नाथ**–पु० पालन करनेवाला । **–पति**–पु० प्रदेश विशेषका शासक । **–पाल**–पु० साईस । **–पिशाचिका**–स्त्री० भूख । – **–बंधक**–पु० वह वंधक या रेहन जिसमें रुपया देनेवालेको व्याजके वदले बंधक रखी चीजको काममें लानेका अधिकार हो । **–भुक्(ज्)**–वि० भोग करनेवाला । **–भूमि**–स्त्री० भारतवर्षसे भिन्न देश (भारतवर्ष कर्मभूमि कहा गया है) । **–भृतक**–पु० केवल भोजन-वस्त्र लेकर काम करनेवाला नौकर । **–लाभ**–पु० अनाजका व्याज, डेढ़िया, सवाई । **–लिप्सा**–स्त्री० भोगकी तृष्णा । **–वाद**–पु० (हीडानिज्म) भोग-विलासमें डूबे रहने, मौज उड़ानेका सिद्धान्त या प्रवृत्ति, प्रमोदवाद, सुखवाद । **–वादी**–पु० शारीरिक आकांक्षाओंकी तृप्तिको ही जीवनका लक्ष्य माननेवाला व्यक्ति । **–विलास**–पु० शारीरिक या इंद्रियजन्य सुखोंका अधिक भोग, मौज, ऐश । **–व्यूह**–पु० सैन्य-रचनाका एक प्रकार–सैनिकोंको एकके पीछे एकके क्रमसे खड़ा करना । **–शील**–वि० भोगी । **–सद्म(न्)**–पु० जनानखाना, अंतःपुर । **–स्थान**–पु० शरीर; अंतःपुर ।

भोगना–स० क्रि० सुख-दुःखका अनुभव करना; सहना, भुगतना; लुत्फ उठाना; संभोग करना ।

भोगली।–स्त्री० नली; नाककी लौंग; कानमें पहननेकी तरकी; लौंग आदिको अटकानेके लिए उसमें लगायी जानेवाली कील ।

भोगवती–स्त्री० (सं०) पाताल गंगा; नागिन; नागपुरी; एक नदी; कृष्णपक्षकी द्वितीयाकी रात ।

भोगवना*–स० क्रि० दे० 'भोगना' ।

भोगवाना–स० क्रि० दे० 'भोगाना' ।

भोगवान्(वत्)–वि० (सं०) भोगयुक्त । पु० साँप; नाट्य ।

भोगांत–पु० (सं०) भोग या कष्टका अंत ।

भोगांतराय–पु० (सं०) भोगमें वाधा डालनेवाला कर्म आदि (जै०) ।

भोगाधिकार–पु० (आकुपैंसी राइट) खेत, भूमि आदिके भोगका स्थायी अधिकार जो प्रायः उसपर निर्धारित अवधितक काविज रहनेके वाद किसीको प्राप्त होता है ।

भोगाना–स० क्रि० दूसरेको भोग कराना ।

भोगार्ह–वि० (सं०) भोगोपयोगी । पु० धन-संपत्ति ।

भोगार्ह्य, भोग्यार्ह्य–पु० (सं०) धान्य ।

भोगावली–स्त्री० (सं०) मागधों द्वारा की जानेवाली स्तुति ।

भोगावास–पु० (सं०) अंतःपुर ।

भोगिक–पु० (सं०) साईस; गाँवका मुखिया ।

भोगिनी–स्त्री० (सं०) नागिन; राजाकी उपपत्नी ।

भोगींद्र–पु० (सं०) शेष; वासुकि; पतंजलि ।

भोगी(गिन्)–वि० (सं०) भोग करनेवाला; विषयासक्त, भोग-विलासमें रत; कुंडलीयुक्त; फणदार । पु० साँप; जमींदार; राजा; नाई । **–(गि)कांत**–पु० वायु । **–गंधिका**–स्त्री० लघुमंगुष्ठा नामक वृक्ष । **–भुक्(ज्)**–पु० मोर; नेवला । **–वल्लभ**–पु० चंदन ।

भोगेश्वर–पु० (सं०) एक तीर्थ ।

भोग्य–वि० (सं०) भोग करने योग्य । पु० भोग्य वस्तु, धन-संपत्ति; भोगवंधक रखी हुई चीज । **–भूमि**–स्त्री० भोगका स्थान; मर्त्यलोक ।

भोग्या–स्त्री० (सं०) वेश्या ।

भोज–पु० (सं०) भोजपुर; राजा द्रुह्यु का एक पुत्र; कान्यकुब्जमें नवीं शतीमें हुआ एक प्रतापी नरेश; मालवाका परमारवंशी राजा जो वड़ा पंडित, कवि और गुणी जनोंका आदर करनेवाला था (१०-११वीं शती), राजा भोज । **–कट**–पु० वर्तमान भोजपुर । **–देव**–पु० कान्यकुब्ज-नरेश भोजराज । **–पति**–पु० भोजराज; कंस । **–पुर**–पु० भोजकट नामका जनपद । **–पुरिया**–वि० (हिं०) भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । **–पुरी**–वि० (हिं०) भोजपुरका । पु० भोजपुरका निवासी । स्त्री० भोजपुर प्रदेशकी वोली । **–राज**–पु० राजा भोज । **–विद्या**–स्त्री० इंद्रजाल ।

भोज–पु० वहुतसे लोगोंका साथ वैठकर खाना, ज्योनार; एक तरहकी शराव; पाकशाला । **–भात**–पु० भातका भोज ।

भोजक–पु० (सं०) भोजन करानेवाला; परसनेवाला; भोजन करनेवाला; ज्योतिषी । वि० खानेवाला; भोजन देनेवाला; * भोगी ।

भोजन–पु० (सं०) ठोस आहारको गलेके नीचे पहुँचाना, खाना; खानेकी चीज, खाद्य; खिलाना; भोगना; धन; एक पर्वत । **–काल**–पु० खानेका समय । **–खानी***–स्त्री० रसोई । **–गृह**–पु० रसोईघर, भोजनशाला । **–त्याग**–पु० आहारका त्याग, उपवास । **–भट्ट**–पु० (हिं०) पेटू । **–भूमि**–स्त्री० भोजन करनेका स्थान । **–यान**–पु० (डाइनिंग कार) रेलगाड़ीका वह डव्वा जिसमें भोजन करनेकी व्यवस्था रहती है । **–वस्त्र**–पु० खाना-कपड़ा । **–वेला**–स्त्री०, **–समय**–पु० दे० 'भोजन-काल' । **–व्यग्र**–वि० खानेमें संलग्न; जिसे खाद्य-पदार्थका अभाव हो । **–व्यय**–पु० खाने-पीनेका खर्च । **–शाला**–स्त्री० भोजन करनेका स्थान; रसोई ।

भोजनक–पु० (सं०) एक पौधा ।

भोजनाच्छादन–पु० (सं०) खाना-कपड़ा ।

भोजनाधिकार–पु० (सं०) पाकशालाकी अध्यक्षता ।

भोजनार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) भोजनका इच्छुक, भूखा ।

भोजनालय–पु० (सं०) भोजनशाला; रेस्टोरेण्ट ।

भोजनीय–वि० (सं०) खाने योग्य, भोज्य; जिसको भोग कराया जाय । पु० आहार; समुद्री नमक । **–मृत**–वि० जो अजीर्णसे मरा हो ।

भोजनोत्तर–वि० (सं०) जिसे भोजनके बाद खाया जाय (औषधि आदि)।

भोजयिता(तृ)–वि० (सं०) खिलानेवाला।

भोजल*–पु० भवजाल, भवसागर।

भोजी(जिन्)–वि० (सं०) (समासांतमें) भोजन करनेवाला; भोगनेवाला।

भोज्य–वि० (सं०) खाने योग्य, भोजनीय। पु० भोजन, खाद्य। **–काल**–पु० भोजनका समय। **–संभव**–पु० शरीरका रस।

भोज्यान्न–वि० (सं०) जिसका अन्न खाया जा सके। पु० खाद्य अन्न।

भोट–पु० (सं०) भूटान देश; तिब्बत।

भोटांग–पु० (सं०) भूटान।

भोटिया–पु० भूटानका निवासी। स्त्री० भूटानकी भाषा। **–बादाम**–पु० मूँगफली; आलूबुखारा।

भोटीय–वि० (सं०) भोट देशका।

भोडर, भोडल*–पु० अभ्रक, बुक्का।

भोत–वि० बहुत।

भोथर, भोथरा–वि० जिसकी धार कुंद हो गयी हो।

भोथराना–अ० क्रि० भोथरा होना।

भोथार–पु० एक तरहका घोड़ा।

भोना*–अ० क्रि० रँगना; अनुरक्त होना; पैवस्त होना।

भोपा–पु० दे० 'भोंपा'।

भोम*–स्त्री० भूमि, धरती–'जित जाऊँ तित पाणी पाणी हुई सब भोम हरी'–मीरा।

भोमि, भोमी*–स्त्री० दे० 'भूमि'।

भोमीरा–स्त्री० मूँगा।

भोर–पु० रात बीतने और सूर्योदय होनेके पहलेका समय, तड़का, प्रभात; एक सदाबहार वृक्ष; एक पक्षी; * भूल; भ्रम। * वि० भोला; चकित–'सूर प्रभुकी निरखि सोभा, भई तरुनी भोर' –सूर।

भोरा*–वि० दे० 'भोला'। (स्त्री० 'भोरी'।)**–नाथ**–पु० दे० 'भोलानाथ'। **–ई**–स्त्री०,**–पन**–पु० भोलापन, सिधाई।

भोराना*–स० क्रि० बहकाना, भुलाना। अ० क्रि० भ्रममें पड़ना; भुलावेमें आना।

भोरे–अव्य० भूलकर भी।

भोल–पु० (सं०) वैश्य पिता और नटी मातासे उत्पन्न संतान।

भोलना*–स० क्रि० बहकाना।

भोला–वि० सीधा, सरल, जिसमें बनावट, छल-कपट न हो; मूर्ख, बुद्धू। **–नाथ**–पु० शिव। वि० सीधा-सादा। **–पन**–पु० सिधाई, मूर्खता। **–भाला**–वि० सीधा-सादा, निष्कपट।

भोलि–पु० (सं०) ऊँट।

भोहरा*–पु० दे० 'भुइँहरा'।

भौं–स्त्री० आँखके ऊपरकी हड्डीपर धनुषके आकारमें जमे हुए बाल। मु० **–चढ़ाना,–तानना**–रोष प्रकट करना, नाराज होना।

भौंकना–अ० क्रि० दे० 'भूँकना'।

भौंचाल†–पु० भूकंप।

भौंड़ा†–वि० दे० 'भोंड़ा'।

भौंड़ी†–स्त्री० पहाड़ी। वि० स्त्री० भोंड़ी।

भौंडू*–पु० टीला, कगार।

भौंतुवा–पु० प्रायः हाथमें होनेवाला एक तरहका वातज शोथ रोग; एक छोटा कीड़ा; तेलीका बैल।

भौंना–अ० क्रि० घूमना, भ्रमण करना।

भौंर*–पु० भ्रमर; जलावर्त। **–कली**–स्त्री० दे० 'भँवरकली'।

भौंरहाई*–स्त्री० भौंरोंका मँडराना–'आरस विभावरी ह्वै होत भौंरहाई है'–घन०।

भौंरा–पु० एक काला परदार कीड़ा जो फूलोंका प्रेमी माना जाता है, भ्रमर; बड़ी मधुमक्खी; पहियेकी नाभि; रहटकी खड़ी चरखी; * एक खिलौना, लट्टू; हिंडोलेमें ऊपर लगी हुई लकड़ी; तहखाना।

भौंराना*–स० क्रि० घुमाना, भाँवर फिराना।

भौंराला*–वि० घुँघराले (बाल)।

भौंरी–स्त्री० चक्राकारमें उगे हुए बाल या रोयें जो शुभाशुभसूचक माने जाते हैं; भाँवर; भँवर; एक तरहकी बाटी; एक तरहका भौंरा।

भौंह–स्त्री० दे० 'भौं'।

भौंहरा*–पु० दे० 'भुइँहरा'।

भौ*–पु० दे० 'भव'; दे० 'भय'। **–जल,–जलि***–पु० भवजाल, भवसागर।

भौकन–स्त्री० लपट, ताप, ज्वाला।

भौका–पु० बड़ी टोकरी। स्त्री० भौकी।

भौगर्भिक–वि० भूगर्भ संबंधी।

भौगोलिक–वि० (सं०) भूगोल-संबंधी।

भौचक, भौचक्का–वि० भय या आश्चर्यसे हतबुद्धि, हक्का-बक्का, हैरान।

भौजंग–वि० (सं०) सर्प-संबंधी; सर्प जैसा।

भौज*–स्त्री० दे० 'भावज'।

भौजल, भौजलि–स्त्री० भवजाल, भवबंधन–'मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा'–कबीर।

भौजाई, भौजी–स्त्री० भावज, बड़े भाईकी स्त्री।

भौजिष्य–पु० (सं०) दासता।

भौज्य–पु० (सं०) वह राज्य-प्रबंध जिसमें प्रजाका खयाल न कर राजा अपना ही लाभ देखे।

भौट–पु० (सं०) तिब्बत-निवासी।

भौत–वि० (सं०) भूत-संबंधी; भूतनिर्मित, भौतिक; पैशाचिक; भूताविष्ट; बहुत, प्रचुर। पु० देवल; पुजारी; भूतपूजक; भूतयज्ञ; भूतोंका समूह।

भौतक–वि० (सं०) भूताविष्ट।

भौतारन–वि० भवतारण, भगवान।

भौतिक–वि० (सं०) भूत-संबंधी; पंचमहाभूतों या किसी एक भूतसे बना हुआ, पार्थिव, माद्दी; शरीर-संबंधी; प्रेत-संबंधी, पिशाचकृत। पु० मोती; शिव; तत्त्व; तत्त्वोंके गुण; उपद्रव, आधि-व्याधि। **–वाद**–पु० (मैटीरियालिज्म) पंचभूत निर्मित यह संसार ही सत्य है –यह सिद्धान्त प्रतिपादित करनेवाला मत। –पु० पंचभूतोंके आधारपर बना हुआ सिद्धांत। **–वादी**–वि० भौतिकवाद संबंधी; भौतिकवादका अनुयायी। **–विज्ञान**–पु० वह विज्ञान जिसमें तत्त्वोंके गुण आदिका विवेचन किया गया हो। **–विद्या**–स्त्री० जादूगरी। **–सृष्टि**–स्त्री० देव, मनुष्य, तिर्यक्–इन तीन योनियोंका समूह।

भौतिकी–स्त्री० (फ़िजिक्स)–भौतिक विज्ञान।

भौती–स्त्री० (सं०) रात।

भौत्य–पु० चौदहवें मनु।

भौन*–पु० दे० 'भवन'।

भौना*–अ० क्रि० चक्कर लगाना, घूमना।

भौपाल–पु० (सं०) राजकुमार।

भौम–वि० (सं०) भूमि-संबंधी; भूमिसे उत्पन्न। पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; जल; आकाश; प्रकाश; अत्रि ऋषि। **–दिन**–पु० भौमवार। **–प्रदोष**–पु० मंगलवारको पड़नेवाला प्रदोष। **–रत्न**–पु० मूँगा। **–राशि**–स्त्री० मेष और वृश्चिक राशियाँ। **–वार,–वासर**–पु० मंगलवार।

भौमक–पु० (सं०) भूमिमें रहनेवाला प्राणी।

भौमन–पु० (सं०) विश्वकर्मा।

भौमवती–स्त्री० भौमासुरकी पत्नीका नाम।

भौमासुर–पु० (सं०) नरकासुर।

भौमिक–वि० (सं०) भूमि-संबंधी; पृथ्वीपर रहनेवाला। पु० भूस्वामी, जमींदार; बंगालियोंकी एक जातिका नाम।

भौमिकी–स्त्री० दे० 'भूगर्भशास्त्र'।

भौमी–स्त्री० (सं०) भूमिसुता, सीता।

भौम्य–वि० (सं०) भूमि-संबंधी; पृथ्वीपरका।

भौर*–पु० भौंरा; भँवर; घोड़ोंका एक भेद।

भौरिक–पु० (सं०) कोषाध्यक्ष।

भौरिकी–स्त्री० (सं०) टकसाल, खजाना ।

भौली–स्त्री० (सं०) एक राग ।

भौवन–पु० (सं०) दे० 'भौमन' ।

भौसा–पु० भीड़, अव्यवस्था, हुल्लड़ ।

भौसागर–पु० भव-सागर ।

भ्रंगी–पु० एक गुंजार करनेवाला फतिंगा ।

भ्रंश, भ्रंस–पु० (सं०) नीचे गिरना, पतन, ह्रास; नाश; मार्गसे विचलित होना; परित्याग; पृथ्वीकी हरकतके कारण ऊपरी स्तरोंका टूटना जिसके फलस्वरूप छोटी बड़ी दरारें पड़ जाती हैं (भूगर्भ विज्ञान) ।

भ्रंशन, भ्रंसन–पु० (सं०) नीचे गिरना, पतन; भ्रष्ट होना । वि० नीचे गिरानेवाला ।

भ्रंशित–वि० (सं०) नीचे गिराया हुआ; वंचित ।

भ्रंशी(शिन्)–वि० (सं०) भ्रष्ट होनेवाला; छीजनेवाला; भटकनेवाला; बरबाद करनेवाला ।

भ्रंशोद्धार–पु० (सैलवेज) डूबे हुए या ध्वस्त किये हुए जहाजका समुद्रगर्भसे उद्धार करना ।

भ्रकुंश–पु० (सं०) स्त्रीवेशधारी नट ।

भ्रकुटि–स्त्री० (सं०) दे० 'भ्रुकुटि' ।

भ्रज्जन–पु० (सं०) भूनना ।

भ्रत, भ्रत्त–पु० नौकर, भृत्य ।

भ्रत्तार*–पु० भर्तार, पति ।

भ्रभंग–पु० (सं०) दे० 'भ्रूभंग' ।

भ्रमंत–पु० (सं०) छोटा मकान ।

भ्रम–पु० (सं०) घूमना, चक्कर; भूल; भटकना; मिथ्या, अयथार्थ ज्ञान (जैसे रस्सीको साँप समझना); घबड़ाहट; जलावर्त; चकाचौंध; उत्स, सोता; चक्करका रोग; चाक; चक्की; खराद; भ्रांति अर्थालंकार; * भरम, प्रतिष्ठा । **–कारी(रिन्)**–वि० भ्रमोत्पादक । **–जार*–**पु० भ्रम-जाल । **–जाल**–पु० मोहपाश । **–मूलक**–वि० भ्रमसे उत्पन्न, भ्रमजनित । **–वात**–पु० ऊपर ही ऊपर चलती रहनेवाली वायु । **–संशोधन**–पु० भूलसुधार ।

भ्रमण–पु० (सं०) घूमना, फिरना; यात्रा; अस्थिरता; चक्कर; चकाचौंध । **–कारी(रिन्)**–वि० घूमनेवाला, घुमक्कड़ । **–विलसित**–पु० एक वृत्त । **–वृत्तांत**–पु० यात्राका वर्णन, पर्यटनकी कहानी ।

भ्रमणी–स्त्री० (सं०) मनोविनोदके लिए चक्कर खानेका साधन (चरखी ?); जोंक; पाँच धारणाओंमेंसे एक ।

भ्रमणीय–वि० भ्रमण या घूमने योग्य ।

भ्रमत्कुटी–स्त्री० (सं०) तिनकों या बाँस आदिकी खपच्चियोंसे बना छाता ।

भ्रमन*–पु० दे० 'भ्रमण' ।

भ्रमना*–अ० क्रि० घूमना, भ्रमण करना; भ्रममें पड़ना, भूलना; भटकना ।

भ्रमनि*–स्त्री० दे० 'भ्रमण' ।

भ्रमर–पु० (सं०) भौंरा, मधुप; उद्धव; कामी; चाक; बटु, लड़का; चकाचौंध । **–करंडक**–पु० मधुमक्खियोंकी संदूकची जिसे चोर साथ रखते और रोशनी बुझानेके लिए मधुमक्खियोंको खोल देते थे । **–कीट**–पु० एक तरहकी भिड़ । **–गीत**–पु० वह गीत-संग्रह जिसमें भ्रमरको संबोधितकर गोपियोंने उद्धवको उलाहना दिया है । **–च्छल्ली**–स्त्री० एक लता । **–ज**–वि० भ्रमरसे उत्पन्न (मधु आदि) । **–निकर**–पु० मधुमक्खियोंका झुंड । **–पद**–पु० एक वृत्त । **–भुरवी**–स्त्री० एक राग । **–प्रिय**–पु० एक तरहका कदंब । **–मारी**–स्त्री० एक फूल । **–विलासिता**–स्त्री० एक छंद । **–सारंग,–हंसी**–रागोंके नाम । **–हस्त**–पु० एक प्रकारका हस्त-विन्यास (ना०) ।

भ्रमरक–पु० (सं०) भ्रमर; भँवर; जुल्फ, पट्टा; खेलनेका गेंद ।

भ्रमरातिथि–पु० (सं०) चंपक ।

भ्रमरानंद–वि० (सं०) बकुल वृक्ष ।

भ्रमरारि–पु० (सं०) दे० 'भ्रमर-मारी' ।

भ्रमरावली–स्त्री० (सं०) भौंरोंकी पंक्ति ।

भ्रमरिका–स्त्री० (सं०) चारों तरफ घूमना ।

भ्रमरी–स्त्री० (सं०) मादा भौंरा; पार्वती; जतुका लता ।

भ्रमात्मक–वि० (सं०) धोखेमें डालनेवाला, संदिग्ध ।

भ्रमाना*–स० क्रि० घुमाना; बहकाना, भ्रममें डालना ।

भ्रमासक्त–पु० (सं०) तलवार आदि साफ करनेवाला ।

भ्रमि–स्त्री० (सं०) चक्कर; कुम्हारका चाक; खराद; भँवर; बगूला; भ्रम, भूल; सेनाका चक्राकार व्यूह ।

भ्रमित–वि० (सं०) घूमता, चक्कर खाता हुआ; घुमाया, चक्कर खिलाया हुआ । **–नेत्र**–वि० ऐंचा-ताना ।

भ्रमी(मिन्)–वि० (सं०) घूमने, चक्कर खानेवाला; भ्रमयुक्त ।

भ्रमीन*–वि० भ्रमण करनेवाला ।

भ्रशिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) उग्रता, अतिचार ।

भ्रष्ट–वि० (सं०) नीचे गिरा हुआ; बिगड़ा हुआ; दूषित आचारवाला; क्षीण; नष्ट;–से च्युत । **–क्रिय**–वि० जिसने अपना विहित कर्म छोड़ दिया है । **–निद्र**–वि० निद्रासे वंचित । **–मार्ग**–वि० जो मार्ग भूल गया हो । **–श्री**–वि० भाग्यहीन ।

भ्रष्टा–स्त्री० (सं०) पतित स्त्री, दुश्चरित्रा ।

भ्रष्टाचार–वि० (सं०) जिसका आचार बिगड़ गया हो । पु० दूषित आचरण; बेईमानी ।

भ्रष्टाधिकार–वि० (सं०) पदच्युत ।

भ्रांत–वि० (सं०) भूला हुआ; भ्रमयुक्त; हैरान, परेशान; भ्रमता, चक्कर खाता हुआ । पु० मतवाला हाथी; धतूरा; भ्रमण, चक्कर; भूल ।

भ्रांतापह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नुति अलंकारका एक भेद, जहाँ किसीको किसी पदार्थमें अन्य पदार्थका भ्रम हो जानेपर सच्ची बात कहकर उसका निराकरण किया जाय; भ्रांति दूर करनेके लिए सच्ची बात कहना ।

भ्रांति–स्त्री० (सं०) अयथार्थ ज्ञान, भ्रम; चक्कर; अस्थिरता; संदेह; घबड़ाहट; एक अर्थालंकार जहाँ उपमानके सदृश उपमेयको देखनेपर उपमानका निश्चयात्मक भ्रम हो । **–कर**–वि० भ्रमजनक । **–नाशन**–वि० भ्रम, भ्रांतिका नाश करनेवाला । पु० शिव । **–हर**–वि० भ्रांतिका नाश करनेवाला । पु० मंत्री ।

भ्रांतिमान्(मत्)–वि० (सं०) भ्रमयुक्त; चक्कर खाता हुआ । पु० एक अर्थालंकार, भ्रांति नामक अलंकार ।

भ्राज–पु० (सं०) एक साम; सात सूर्योंमेंसे एक ।

भ्राजक–पु० (सं०) त्वचामें रहनेवाला पित्त (आ० वे०) । वि० चमकानेवाला ।

भ्राजथु–पु० (सं०) दीप्ति, चमक ।

भ्राजन–पु० (सं०) चमकाना ।

भ्राजना*–अ० क्रि० शोभित होना; चमकना ।

भ्राजमान*–वि० शोभायमान ।

भ्राजि–स्त्री० (सं०) चमक, दीप्ति ।

भ्राजिष्णु–वि० (सं०) चमकनेवाला । पु० विष्णु; शिव ।

भ्राजी(जिन्)–वि० (सं०) चमकनेवाला, दीप्तियुक्त ।

भ्रात*–पु० दे० 'भ्राता' ।

भ्राता(तृ)–पु० (सं०) सगा भाई । **–(तृ)गंधि,–गंधिक**–वि० सिर्फ नामका भाई । **–ज**–पु० भाईका पुत्र । **–जा**–स्त्री० भाईकी पुत्री । **–जाया**–स्त्री० भावज । **–दत्त**–वि० भाईसे मिला हुआ । पु० विवाहके समय भाईसे बहनको मिली हुई कोई वस्तु । **–द्वितीया**–स्त्री० कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया, भैयादूज । **–पुत्र**–पु० भतीजा । **–भांड**–पु० यमज भाई । **–भाव**–पु० भाईका-सा स्नेह, भायप, भाईचारा । **–वधू**–स्त्री० भावज । **–व्य**–पु० भतीजा । **–श्वशुर**–पु० जेठ, पतिका बड़ा भाई । **–हत्या**–स्त्री० भाईकी हत्या ।

भ्रातुष्पुत्र–पु० (सं०) भतीजा ।

भ्रातुष्पुत्री–स्त्री० (सं०) भतीजी ।

भ्रातृक–वि० (सं०) भाईका; भाईसे मिला हुआ ।

भ्रातृत्व–पु० (सं०) भायप ।

भ्रात्र–पु० (सं०) भाई ।

भ्रात्रीय–वि० (सं०) भ्राता-संबंधी । पु० भतीजी ।

भ्रात्रेय–पु० (स०) भतीजा। वि० भ्राता-संबंधी।

भ्रात्र्य–पु० (सं०) भायप, भ्रातृस्नेह।

भ्राम–वि० (सं०) भ्रमयुक्त; घूमनेवाला। पु० भूल, धोखा; भ्रम, मिथ्या ज्ञान ('यशोधरा')।

भ्रामक–वि० (सं०) भ्रमजनक; धूर्त; बहकानेवाला। पु० सियार; चुंबक; ठग।

भ्रामर–वि० (सं०) भ्रमर-संबंधी। पु० भौंरोंका इकट्ठा किया हुआ शहद; चुंबक; अपस्मार रोग; एक तरहका नृत्य।

भ्रामरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; भाँवर।

भ्रामरी(रिन्)–वि० (सं०) अपस्मार रोगसे पीड़ित; चक्कर खानेवाला; शहदसे बना हुआ।

भ्रामित–वि० (सं०) घुमाया, चक्कर खिलाया हुआ (नेत्रादि)।

भ्राष्ट्र–पु० (सं०) आकाश; वह अथरी जिसमें भड़भूंजे दाना भूनते हैं।

भ्रास्त्रिक–पु० (सं०) शरीरकी एक नाड़ी।

भ्रुकंश, भ्रूकंश–पु० (सं०) स्त्रीके वेशमें काम करनेवाला नट।

भ्रुकंस, भ्रूकंस–पु० (सं०) दे० 'भ्रुकंश'।

भ्रुकुटि, भ्रुकुटी–स्त्री० (सं०) भ्रूभंग; भौं।

भ्रुव–स्त्री० भौंह।

भ्रू–स्त्री० (सं०) भौं। **–कुटि,–कुटी**–स्त्री० भ्रूभंग। **–०सुख**–पु० एक साँप। **–क्षेप,–विक्षेप**–पु० भौं टेढ़ी करना, भ्रूभंग। **–जाह**–पु० भौंका मूल। **–भंग,–भेद**–पु० भौं टेढ़ी करना, भौं चढ़ाकर रोष प्रकट करना। **–मध्य**–पु० दोनों भवोंके बीचका स्थान। **–लता**–स्त्री० मेहराबदार भौं। **–विक्रिया**–स्त्री० भ्रूभंग। **–विलास**–पु० भवोंका मोहक संचालन, भंगी।

भ्रूण–पु० (सं०) (एम्ब्रायो) वह नन्हा पौधा जो निषेचित अण्डसे विकसित होता है (वनस्पति विज्ञान); वह नन्हा प्राणी जो निषेचित अण्डसे विकसित होनेकी अवस्थामें हो (प्राणि-विज्ञान)। **–घ्न**–वि० पु० भ्रूणहत्या करनेवाला। **–विज्ञान**–पु० (एम्ब्रियोलाजी) भ्रूणकी उत्पत्ति और विकास संबंधी शास्त्र। **–हत्या**–स्त्री० गर्भपात द्वारा गर्भस्थ शिशुकी हत्या करना। **–हा(हन्)**–वि०, पु० भ्रूणहत्या करनेवाला।

भ्रेष–पु० (सं०) नाश; गमन; डर।

भ्वहरना*–अ० क्रि० भीत होना, डरना।

म

म–देवनागरी वर्णमालामें पवर्गका अंतिम व्यंजन-वर्ण। उच्चारण-स्थान ओष्ठ और नासिका। स्पर्श वर्ण, अनुनासिक।

मंकिल–पु० (सं०) दावानल, वनाग्नि।

मंकुर–पु० (सं०) आईना।

मंक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) गोताखोर।

मंक्षण–पु० (सं०) जाँघपर बाँधनेका कवच, ऊरुत्राण।

मंक्षु–अ० (सं०) तुरंत, शीघ्रतासे; अत्यधिक; वस्तुतः, यथार्थमें।

मंख–पु० (सं०) भाट, वंदीजन; एक औषध; एक तरहके सन्न्यासी।

मंखी–स्त्री० बच्चोंके गलेमें पहनानेका एक जेवर।

मंग–स्त्री० माँग, सीमंत। पु० (सं०) नावका अगला भाग।

मँगता, मंगन–पु० भिखमंगा, याचक।

मँगनी–स्त्री० माँगनेका भाव; माँगकर, काम हो जानेपर लौटा देनेका वचन देकर ली हुई चीज; ब्याह पक्का करनेकी रस्म, सगाई। **–की चीज़**–पुनः लौटा देनेकी शर्तपर ली हुई वस्तु।

मंगल–पु० (सं०) शुभ, कल्याण; सौभाग्य; अभीष्ट अर्थकी सिद्धि; सौरमंडलका एक ग्रह जो पृथ्वीका पुत्र माना जाता है; मंगलवार; विष्णु; अग्निका एक नाम। वि० कल्याणकारी, शुभ; शुभ लक्षणयुक्त; संपन्न; वीर। **–करण,–कर्म(न्)**–पु० कार्यारंभमें सफलताके लिए प्रार्थना करना। **–कलश**–पु० दे० 'मंगलघट'। **–काम**–वि० मंगलकी कामना करनेवाला, शुभ-चिंतक। **–कामना**–स्त्री० कल्याणकी कामना। **–कारक,–कारी(रिन्)**–वि० कल्याणकारी। **–कार्य**–पु० शुभ कार्य, ब्याह, जन्म आदिका उत्सव। **–काल**–पु० शुभ घड़ी। **–क्षौम**–पु० उत्सवादिके समय पहना जानेवाला रेशमी वस्त्र। **–गान**–पु० मंगलके अवसरपर होनेवाला गाना-बजाना। **–गीत**–पु० मंगलके अवसरपर गाया जानेवाला गीत। **–ग्रह**–पु० शुभ ग्रह; मंगल नामक ग्रह। **–घट,–पात्र**–पु० शुभ कार्योंमें देवताके सामने रखा जानेवाला जलपूर्ण घट। **–चंडिका,–चंडी**–स्त्री० एक देवी। **–च्छाय**–पु० बरगद; पाकड़। **–तूर्य,–वाद्य**–पु० शुभ अवसरपर बजाये जानेवाले बाजे। **–देवता**–पु० शुभकारी देवता, इष्टदेव। **–द्वार**–पु० प्रासादका मुख्य द्वार। **–ध्वनि**–स्त्री० मंगलके अवसरपर होनेवाली ध्वनि, मंगल गीत आदि। **–पत्र**–पु० तावीजके तौरपर धारण किया जानेवाला पत्र। **–पाठक**–पु० वंदीजन, स्तुतिपाठक। **–पाणि**–वि० जिसका हाथ शुभ हो। **–पात्र**–पु० वह पात्र जिसमें मंगलकी चीजें रखी हों। **–पुष्प**–पु० मांगलिक पूजन आदिमें गृहीत पुष्प। **–प्रद**–वि० कल्याणकारी। **–प्रदा**–स्त्री० हल्दी; शमीका पेड़। **–प्रस्थ**–पु० पुराणोंमें वर्णित एक पर्वत। **–भेरी**–स्त्री० मंगलके अवसरपर बजाया जानेवाला ढोल। **–मालिका**–स्त्री० दे० 'मंगलगीत'। **–वाद**–पु० आशीर्वाद। **–वादी(दिन्)**–वि० आशीर्वाद देनेवाला। **–वार,–वासर**–पु० सोमवारके बादका दिन, भौमवार। **–विधि**–स्त्री० वह रीति या रस्म जिसका पालन कल्याणके लिए किया जाय। **–शब्द**–पु० मंगलवाचक शब्द। **–सूचक**–वि० भाग्योदयका द्योतक। **–सूत्र**–पु० हल्दीमें रँगा सूत जो ब्याहके समय वर-कन्याके हाथोंमें बाँध दिया जाता है; सधवा स्त्रियों द्वारा गलेमें पहना जानेवाला पवित्र सूत्र। **–स्नान**–पु० मांगलिक अवसरपर या मांगलिक पूजनके लिए किया जानेवाला स्नान।

मंगलमय–वि० (सं०) कल्याणमय, मंगलरूप। पु० परमेश्वर।

मंगला–वि० मंगली (पुरुष); मंगलको पैदा होनेवाला। **–मुखी**–स्त्री० वेश्या।

मंगला–स्त्री० (सं०) पार्वती; पतिव्रता स्त्री; सफेद दूब; नीली दूब; हल्दी। **–व्रत**–पु० शिव; पार्वतीके नामसे किया जानेवाला एक व्रत।

मंगलागुरु–पु० (सं०) एक तरहका अगर।

मंगलाचरण–पु० (सं०) शुभ कार्यके आरंभमें मंगल-कामनासे की जानेवाली देवस्तुति; ग्रंथारंभमें लिखा जानेवाला मांगलिक पद आदि।

मंगलाचार–पु० (सं०) मंगलकृत्यके पहले होनेवाला मंगलगान; शुभानुष्ठान।

मंगलायन–पु० (सं०) सुख-समृद्धिका मार्ग। वि० जो इस मार्गपर हो।

मंगलारंभ–पु० (सं०) गणेश।

मंगलालय–पु० (सं०) मंगलमय परमेश्वर; मंदिर।

मंगलावह–वि० (सं०) शुभ, मंगलकारी।

मंगलावास–पु० (सं०) देव-मंदिर।

मंगलाष्टक–पु० (सं०) वे मंत्र जिनका पाठ विवाहके समय वर-वधूके कल्याणार्थ किया जाता है।

मंगलाह्निक–पु० (सं०) कल्याणके लिए प्रति दिन किया जानेवाला मंगल कृत्य।

मंगली–वि० (स्त्री या पुरुष) जिसकी कुंडलीमें चौथे, आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल पड़ा हो; (वह कुंडली) जिसके चौथे, आठवें या बारहवें स्थानमें मंगल हो। स्त्री० (सं०) दे० 'मंगला'।

मंगलीय–वि० (सं०) शुभावह, भाग्यवान्।

मंगलेच्छु–वि० (सं०) मंगल, अभ्युदय चाहनेवाला।

मंगलोत्सव–पु० (सं०) मांगलिक उत्सव।

मंगल्य–वि० (सं०) मंगलकारक; सुंदर; पवित्र। पु० चंदन; सोना; बेल; पीपल; नारियलका पेड़; दही; मसूर; सिंदूर; अभिषेकके लिए लाया हुआ तीर्थजल। **–कुसुमा**–स्त्री० शंखपुष्पी।

मंगल्या–स्त्री० (सं०) दुर्गा; हल्दी; दूब; चमेलीकी-सी गंधवाला अगर; एक इत्र; ऋद्धि लता; सफेद बच; शंखपुष्पी।

मँगाना–स० क्रि० सगाई कराना। दे० 'मँगवाना'।

मँगवाना–स० क्रि० मँगानेका काम करांना; दूसरेके हाथ कोई चीज मँगाना।

मंगिनी–स्त्री० (सं०) नाव।

मँगुरी–स्त्री० एक छोटी मछली।

मंगुल–पु० (सं०) पाप।

मँगेतर–वि०, स्त्री० (लड़की) जिसकी किसीके साथ मँगनी हुई हो।

मंगोल–पु० मनुष्योंकी चार मूल जातियोंमेंसे एक जो मध्यएशिया और तिब्वत, चीन, जापान आदि देशोंमें वसती है और जिसका रंग हलका पीला तथा नाक चिपटी होती है।

मंच–पु० (सं०) खाट; मचिया; मचान; सिंहासन; रंगभूमि, (प्लेटफार्म) सार्वजनिक भाषणस्थल। **–मंडप**–पु० फसलकी रखवालीके लिए या विवाहादिके अवसरपर बनायी हुई मचान। **–यूप**–पु० मचानको संभालनेवाला खंभा।

मंचक–पु० (सं०) मंच।

मंचकाश्रय–पु० (सं०) खटमल।

मंचिका–स्त्री० (सं०) मचिया।

मंछर*–पु० मच्छर; दे० 'मत्सर'।

मंजन–पु० दाँत आदि साफ करनेके काममें लाया जानेवाला विशेष चूर्ण; * स्नान; मालिश–'मंजन कै नित न्हाय कै अंग अँगोछि कै वार झुरावन लागी'–ललित०; माँजना, रगड़ना।

मँजना–अ० क्रि० माँजा जाना; अभ्यास होना, अनुभवसे दक्षता प्राप्त होना, परिष्कृत होना।

मंजर–पु० (सं०) मोती; तिलक वृक्ष; वल्ली; दे० 'मंजरी'।

मंज़र–पु० (अं०) दृष्टिका आश्रय; दृश्य, नज्जारा; देखने योग्य वस्तु या स्थान; झरोखा।

मंजरि–स्त्री० (सं०) दे० 'मंजरी'।

मंजरित–वि० (सं०) मंजरियोंसे लदा हुआ।

मंजरी–स्त्री० (सं०) कल्ला, कोंपल; सींकेमें लगे हुए छोटे घने फूल; मोती; तिलक वृक्ष; लता; तुलसी। **–चामर**–पु० मंजरीकी शक्लका चवँर। **–नम्र**–पु० वेत।

मंजरीक–पु० (सं०) तुलसी; तिलक वृक्ष; वेत; अशोक वृक्ष; मोती।

मंजा–स्त्री० (सं०) बकरी; मंजरी; लता।

मँजाई–स्त्री० माँजनेकी क्रिया; माँजनेकी उजरत।

मँजाना–स० क्रि० मँजवाना, साफ कराना, अभ्यास कराना।

मंजारी*–स्त्री० विल्ली।

मंजि–स्त्री० (सं०) मंजरी; लता। **–फला**–स्त्री० केलेका पेड़।

मंजिका–स्त्री० (सं०) वेश्या।

मंजिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) सुंदरता, मनोहरता।

मंज़िल–स्त्री० (अ०) उतरने या ठहरनेकी जगह, पड़ाव, मुकाम; एक दिनका सफर; मकान; पांथशाला; मकानका दरजा या छत; वह स्थान जहाँ डाकके घोड़े बदले जायँ। **–गाह**–पु०, स्त्री० उतरनेकी जगह। **–(ले)मकसूद**–स्त्री० असल मुराद, कामना। **–हस्ती**–स्त्री० जिंदगी। **–मु०–उठाना**–मकान बनाना। **–भारी होना**–यात्रा पूरी करना कठिन होना। **–मारना**–यात्रा पूरी करना; मुश्किल हल करना।

मंजिष्ठा–स्त्री० (सं०) मजीठ। **–मेह**–पु० एक प्रकारका प्रमेह (सुश्रुत)। **–राग**–पु० मजीठका रंग; मजीठके रंग जैसा पक्का, स्थायी अनुराग।

मंजी–स्त्री० (सं०) मंजरी; लता।

मंजीर–पु० (सं०) घुँघरू, नूपुर; मथानीका डंडा बाँधनेका खंभा; एक जाति।

मँजीरा–पु० दे० 'मजीरा'।

मंजील–पु० (सं०) वह गाँव जिसमें मुख्यरूपसे धोबी रहते हों।

मंजु–वि० (सं०) सुंदर, मनोहर। **–केशी(शिन्)**–पु० कृष्ण। वि० सुंदर बालोंवाला। **–गति,–गमन**–वि० सुंदर चालवाला। **–गमना**–वि० स्त्री० मनोहर गतिवाली। स्त्री० हंसिनी। **–गर्त**–पु० नेपाल। **–गुंज**–पु० मनोहर गुंजन। **–घोष**–वि० मधुर, मनोहर बोलवाला। पु० पंडुक; एक पूर्व जिन; धर्मप्रचारके लिए चीन जानेवाले एक बौद्ध आचार्य। **–घोषा**–स्त्री० एक अप्सरा। **–देव**–पु० मंजुघोष। **–नाथ,–भद्र**–पु० एक पूर्व जिन, मंजुघोष। **–नाशी**–स्त्री० सुंदर स्त्री; दुर्गा; इंद्राणी, शची। **–पाठक**–पु० तोता। **–प्राण**–पु० ब्रह्मा। **–भाषिणी**–वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। **–भाषी(षिन्)**–वि० मधुरभाषी। **–वक्त्र**–वि० सुंदर मुखवाला, सुंदर। **–वादी(दिन्)**–वि० मधुरभाषी। **–श्री**–पु० मंजुघोष। **–स्वन,–स्वर**–वि० जिसकी आवाज या बोली मीठी हो।

मंजुल–वि० (सं०) सुंदर, मनोहर। पु० कुंज; सोता; कूप।

मंजूर–वि० (अ०) जो देखा गया हो; पसंद किया हुआ, स्वीकृत।

मंजूरी–स्त्री० स्वीकृति, मंजूर होना।

मंजूषा–स्त्री० (सं०) पिटारी; मजीठ; पत्थर; वह तश्तरी आदि जिसमें रखकर अभिनन्दनपत्र भेंट किया जाता है।

मंजूसा–स्त्री० दे० 'मंजूषा'।

मँझला–वि० दे० 'मझला'।

मँझधार–स्त्री० नदीके बीच, धाराके बीचमें।

मंझा–पु० दे० 'माँझा'; अटेरनके बीचकी लकड़ी; चरखेका मुँड़ला। * वि० मझला, बीचका। † स्त्री० खटिया; चौकी।

मँझाना–स० क्रि० बीचमें डालना, रखना या पड़ना।

मँझियाना–स० क्रि० धँसकर पार करना; पार करना; नाव खेना।

मँझियार–वि० बीचका।

मँझोला–वि० दे० 'मझोला'। स्त्री० मझोली।

मंठ–पु० (सं०) मैदेका बना एक पकवान, माठ।

मंड–पु० (सं०) माँड़; सार; मलाई; सुरा; एरंड; एक शाक; मट्ठा; आभूषण; मेढक। **–प**–वि० माँड़ पीनेवाला। पु० दे० क्रममें। **–हारक**–पु० मद्य बनानेवाला, कलाल।

मँड़ई–स्त्री० झोपड़ी, कुटिया।

मंडई–स्त्री० मंडी।

मंडक–पु० (स०) एक प्रकारका पिष्टक या रोटी; गीतका एक अंग।

मंडन–पु० (सं०) सजाना, शृंगार करना; आभूषण; युक्ति-प्रमाणसे पक्ष-विशेषकी पुष्टि करना; वि० शृंगार करनेवाला। **–प्रिय**–वि० अलंकारका प्रेमी। **–मिश्र**–पु० सुप्रसिद्ध मीमांसक जो कहा जाता है कि शंकराचार्यसे शास्त्रार्थमें पराजित हुए थे।

मंडना*–स० क्रि० सजाना, सँवारना; दे० 'माँड़ना'।

मंडप–पु० (सं०) छाया हुआ, पर चारों ओरसे खुला हुआ बैठनेका स्थान, मँड़वा; कुंज (जैसे लतामंडप)। वि० दे० 'मंड'में।

मंडपक–पु० (सं०) छोटा मंडप।

मंडपिका–स्त्री० (सं०) छोटा मंडप।

मंडपी–स्त्री० छोटा मंडप; मढ़ी।

मंडर*–पु० दे० 'मंडल'।

मँडरना*–अ० क्रि० मंडल बाँधना; सब ओरसे घेर लेना; चक्कर लगाना; मंडित या भूषित करना (बीसल०)।

मँडराना–अ० क्रि० मंडलाकार चक्कर देते हुए उड़ना; किसीके आस-पास चक्कर काटना; घूमते रहना।

मँडरी–स्त्री० पयालकी चटाई।

मंडल–पु० (सं०) गोल घेरा, हलका, कुंडली; सूर्य-चंद्रका बिंब; सूर्य-चंद्रके इर्द-गिर्द पड़नेवाला घेरा, परिवेश; गोल; समूह, मंडली, समिति; एक प्रकारका सैन्य-व्यूह; चाक; ऋग्वेदका एक खंड; ग्रहोंका गतिपथ, कक्षा; क्षितिज; जिला; प्रदेश; ग्राम-समूह; प्रभाग, संभाग, कमिश्नरी; एक तरहका साँप; कुत्ता; एक तरहका कुष्ठ रोग जिसमें शरीरमें गोल सफेद दाग पड़ जाते हैं; गोल बंधन; लड्डू; शरीरकी एक संधि; चक्र; एक गंध द्रव्य। राज्यविशेषके निकट और दूरके शत्रु, मित्र आदि राज्योंका मंडल। **–कार्मुक**–वि० जिसका धनुष् झुका हुआ हो। **–नृत्य**–पु० मंडलाकार घूमते हुए नाचना। **–पत्रिका**–स्त्री० लाल गदहपुरना, रक्त पुनर्नवा। **–पुच्छक**–पु० एक कीड़ा। **–वर्त्ती(र्तिन्)**–पु० मंडलका शासक। **–वर्ष**–पु० देशव्यापी वर्षा।

मंडलक–पु० (सं०) आईना; दे० 'मंडल'।

मंडलाकार, मंडलाकृत–वि० (सं०) मंडलके आकारका, गोला ।

मंडलाग्र–पु० (सं०) वह तलवार जिसकी नोक कुछ झुकी हो, खंजर ।

मंडलाधिप–पु० (सं०) दे० 'मंडलेश्वर' ।

मंडलाधीश–पु० (सं०) दे० 'मंडलेश्वर' ।

मंडलित–वि० (सं०) वर्तुलाकार बनाया हुआ ।

मंडली–स्त्री० छोटा मंडल, जमात, समुदाय; दूब; गुड़ुच ।

मंडली(लिन्)–वि० (सं०) मंडल, हलका बनानेवाला । पु० साँप; साँपका एक भेद; बिल्ली; सेंधुवार नामका जंतु; सूर्य; मंडलाधिपति; बरगद ।

मंडलीक–पु० (सं०) मंडलका राजा; करद राजा ।

मंडलीकरण–पु० (सं०) मंडल या कुंडली बनाना; कुंडली मारना ।

मंडलीश–पु० (सं०) दे० 'मंडलेश' ।

मंडलेश–पु० (सं०) देशका शासक, नरेश ।

मंडलेश्वर–पु० (सं०) एक मंडलका शासक, राजा, चार सौ योजन रकबेवाले प्रदेशका राजा ।

मँड़वा–पु० मंडप; शामियाना ।

मंडा–स्त्री० (सं०) सुरा; आँवला । † पु० जमीनकी एक नाप, दो बिस्वा ।

मंडार, मँडारा–पु० झाबा, टोकरा; गड्ढा (प०) ।

मंडित–वि० (सं०) सजाया हुआ; शोभित; भूषित ।

मंडिता(तृ)–वि० (सं०) शोभित करनेवाला (आभूषण) ।

मंडी–स्त्री० (किसी खास चीजकी) थोक-बिक्रीका बाजार, बड़ा बाजार; बाजार । **मु०–लगना**–बाजार लगना, खुलना ।

मंडील–पु० कामदार कपड़ेका मुरेठा, मंदील ।

मँड़ुआ–पु० एक मोटा अनाज ।

मंडूक–पु० (सं०) मेढक; एक ताल; एक प्रकारका नृत्य; एक रतिबंध । **–पर्णी**–स्त्री० ब्राह्मी; मंजिष्ठा । **–प्लुति**–स्त्री० मेढकका उछलना । **–गति**–वि० मेढककी तरह चलनेवाला ।

मंडूका–स्त्री० मंजीठ ।

मंडूकी–स्त्री० (सं०) मेढकी; मंडूकपर्णी; मस्त स्त्री; घोड़ेके खुरका तलवा ।

मंडूर–पु० (सं०) लोहेका मैल, कीट जो दवाके काम आता है ।

मंढा–पु० एक औजार जो कमख्वाब बुननेवालोंके काम आता है ।

मँढ़ा–पु० मंडप; कमरा, प्रकोष्ठ, कोठरी । **मु०–बेल(मँढे) चढना**–काम सफल होना ।

मंतव्य–वि० (सं०) मानने योग्य, माननीय । पु० मत ।

मंत्र–पु० (सं०) सलाह, राय; अपराध; मानवजाति; प्रजापति; राजा । स्त्री० समझ, बुद्धि ।

मंत्र–पु० (सं०) गुप्त वार्ता, कानमें कही जानेवाली बात, सलाह, मंत्रणा; वह शब्द या शब्द-समूह जिससे किसी देवताकी सिद्धि या अलौकिक शक्तिकी प्राप्ति हो; वेदका संहिताभाग; कार्यसिद्धिका गुर (मूलमंत्र) । **–कार**–पु० मंत्र रचनेवाला, मंत्रद्रष्टा । **–कुशल**–वि० मंत्रणामें पटु । **–कार्य**–पु० मंत्रणाका विषय । **–कृत**–पु० मंत्रकार; मंत्रणा करनेवाला । **–गूढ**–पु० जासूस, गुप्तचर । **–गृह**–पु० मंत्रणागृह । **–जल,–तोय**–पु० अभिमंत्रित जल । **–जिह्व**–पु० अग्नि । **–ज्ञ**–वि० मंत्रणाकुशल । पु० मंत्री; गुप्तचर; तंत्र-मंत्र जाननेवाला । **–द,–दाता(तृ)**–पु० गुरु । **–दर्शी(र्शिन्),–द्रष्टा(ष्ट)**–पु० वेदमंत्रोंका साक्षात्कार करनेवाला । **–दीधिति**–पु० अग्नि । **–देवता**–पु० मंत्र-विशेष द्वारा आवाहित देवता । **–द्रुम**–पु० छठे मन्वंतरके इंद्र । **–धर, –धारी(रिन्)**–पु० मंत्री । **–पाठ**–पु० वेदमंत्रोंका पाठ । **–पूत**–वि० मंत्र-द्वारा पवित्र किया हुआ । **–प्रयोग**–पु०,**–प्रयुक्ति**–स्त्री० मंत्रसे काम लेना । **–फल**–पु० मंत्रणाका परिणाम । **–बल**–पु० मंत्रकी शक्ति । **–बीज,–बीज**–पु० मंत्रका पहला पद । **–भेद**–पु० गुप्त वार्ताका प्रकट कर दिया जाना । **–मुग्ध**–वि० मंत्रसे मोहित, वश किया हुआ; जडवत् । **–मूर्ति**–पु० शिव । **–मूल**–पु० जादू; राज्य । **–यंत्र**–पु० मंत्रवाला तावीज । –पु० बौद्धधर्मकी एक शाखा, वज्रयान । **–योग**–पु० मंत्रका प्रयोग । **–वादी(दिन्)**–पु० मंत्रका उच्चारण करनेवाला, मंत्रज्ञ, जादूगर । **–विद्**–वि० मंत्रज्ञ । **–विद्या**–स्त्री० तंत्र-मंत्रकी विद्या । **–शक्ति**–स्त्री० मंत्रका प्रभाव । **–श्रुति**–स्त्री० वह मंत्रणा जिसे दूसरेने सुन लिया हो । **–संस्कार**–पु० मंत्रपूर्वक किया जानेवाला संस्कार; विवाह; मंत्र-ग्रहणके पूर्व किया जानेवाला उसका दशविध तंत्रोक्त संस्कार (जनन, जीवन, ताडन, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन और गोपन) । **–संहिता**–स्त्री० वेदोंका मंत्रभाग । **–साधन**–पु० मंत्रको सिद्ध करनेका यत्न करना । **–सिद्धि**–स्त्री० मंत्रका सिद्ध होना, मंत्रका प्रभावकर होना । **–सूत्र**–पु० मंत्र पढ़कर पहनाया गया डोरा । **–स्नान**–पु० स्नानके बदले पढ़ा जानेवाला मंत्र । **–हीन**–वि० बिना मंत्रका; अदीक्षित; असंस्कृत ।

मंत्रण–पु० (सं०) मंत्रणा, मशिवरा करना; एकांतमें सलाह-मश्विरा करना ।

मंत्रणा–स्त्री० (सं०) मश्विरा करना; सलाह । **–कार**–पु० (ऐडवाइजर) सलाह या मंत्रणा देनेवाला, वह जिससे बहुधा सलाह ली जाती हो ।

मंत्रणा-परिषद–स्त्री० (ऐडवाइज़री कौंसिल) किसी विषयके संबंधमें सलाह देनेवाली परिषद् ।

मंत्रालय–पु० (मिनिस्ट्री) राज्यके किसी मंत्री तथा उसके विभागका कार्यालय; मंत्री, उसके सचिव तथा अन्य कर्मचारियोंका समूह (मंत्री और उसका विभाग) ।

मंत्रिक–पु० (सं०) मंत्रियोंवाला (समासांतमें) ।

मंत्रिणी–स्त्री० (सं०) मंत्रीकी पत्नी; स्त्री जो मंत्रीका काम करे ।

मंत्रित–वि० (सं०) जिसका मंत्र द्वारा संस्कार किया गया हो, अभिमंत्रित, कथित; (विषय) जिसपर सलाह दी या ली गयी हो ।

मंत्रित्व–पु० (सं०) मंत्रीका पद, कार्य ।

मंत्रिपरिषद्–स्त्री० (कौंसिल ऑफ मिनिस्टर्स) राज्यके मंत्रियोंकी सभा जिसमें प्रशासन-संबंधी विविध प्रश्नोंपर बातचीत, विचार-विमर्श आदि किया जाता है ।

मंत्रिमंडल–पु० (कैबिनेट) किसी (लोकतंत्र) राज्यके मंत्रियोंका समूह जो शासनके विभिन्न विभागोंकी देख-भाल करता है, अमात्यमंडल ।

मंत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) जिसके साथ एकांतमें मश्विरा किया जाय, सचिव, मशीर; सलाह देनेवाला; राज्यके किसी विभागका वह प्रधान अधिकारी जिसकी सलाहसे उस विभागका कार्य संचालन हो । **–(त्रि)धुर**–वि० मंत्रीका कार्य-भार वहन करनेमें समर्थ । **–पति**–पु० प्रधान मंत्री । **–प्रकांड**–पु० सुयोग्य मंत्री । **–प्रधान,–मुख्य,–श्रेष्ठ**–पु० प्रधान मंत्री । **–मंडल**–पु० मंत्रियोंका मंडल, परिषद्, 'केबिनेट' ।

मंत्रेला*–पु० मंत्र जाननेवाला (कबीर) ।

मंत्रोक्त–वि० मंत्रमें जिसका उल्लेख हो ।

मंत्रोदक–पु० अभिमंत्रित जल ।

मंथ–पु० (सं०) मंथन; क्षोभ; मथानी; सूर्य; किरण; एक पेय; रगड़से आग पैदा करनेका एक साधन; आँखका मैल; करछुल; कृष्णसार मृगका एक भेद । **–ज**–पु० मक्खन । **–गिरि,–पर्वत**–पु० मदर पर्वत । **–गुण**–पु० मथानीकी रस्सी । **–दंड,–दंडक**–पु० मथानीका डंडा । **–विष्कंभ**–पु० वह खंभा जिसमें मथानीकी रस्सी बाँधी जाती है । **–शैल**–पु० मंदर पर्वत ।

मंथक–वि० मंथन करनेवाला ।

मंथन–पु० (सं०) मथना, बिलोना; तत्त्वबोधके लिए किसी विषयको बार-बार पढ़ना, सोचना; मथानी; रगड़से आग पैदा करना । **–घट**–पु०,**–घटी**–स्त्री० दही मथनेका मटका आदि ।

मंथनी–स्त्री० (सं०) दही मथनेका बरतन ।

मंथर–वि० (सं०) सुस्त, मंद; जड़मति; स्थूल; नीच; टेढ़ा; बड़ा, चौड़ा; गंभीर । पु० कोष; फल; बाधा; मथानी; क्रोध; सिरके बाल; मक्खन; गढ़; गुप्तचर; वैशाख मास; मंदर पर्वत; एक हरिण । **–गति**–स्त्री० मंद गति, धीमी चाल । वि० धीमी चालवाला । **–विवेक**–वि० भले-बुरेका निर्णय करनेमें जिसे देर लगे ।

मंथरा–स्त्री० (सं०) कैकेयीकी कुबड़ी दासी (इसीके बहकानेसे

रानीने दशरथसे रामको वनवास और भरतको राज्य देनेके वर माँगे)।

मंथरित–वि० (सं०) मंद किया हुआ।

मंथरु–पु० (सं०) चँवरकी हवा।

मंथा–स्त्री० (सं०) मेथी।

मंथाचल–पु० (सं०) मंदर पर्वत।

मंथाद्रि–पु० (सं०) मंदर पर्वत।

मंथान–पु० (सं०) मथानी; मंदर पर्वत; अमलतास; शिवका एक नाम।

मंथानक–पु० (सं०) एक तरहकी घास।

मंथिनी–स्त्री० (सं०) दही मथनेका मटका।

मंथी(थिन्)–वि० (सं०) मथनेवाला; पीड़क।

मंथोदक–पु० (सं०) क्षीरसागर।

मंथोदधि–पु० (सं०) क्षीरसागर।

मंथ्य–वि० (सं०) मंथन करने योग्य।

मंद–वि० (सं०) सुस्त; धीमा; गंभीर; मृदु; मूर्ख; हलका; थोड़ा; छोटा (मंदोदरी); दुर्बल (मंदाग्नि); नीच। पु० शनि; यम; अभाग्य; प्रलय; एक तरहका हाथी। **–कर्ण**–वि० कुछ-कुछ बहरा, ऊँचा सुननेवाला। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० काम न करनेवाला, आलसी। **–कांत**–वि० जिसकी कांति कुछ फीकी पड़ गयी हो। **–कांति**–पु० चंद्रमा। वि० मुरझाया हुआ। **–कारी(रिन्)**–वि० मंदगतिसे या मूर्खतापूर्वक काम करनेवाला। **–ग**–वि० मंदगामी। पु० शनि। **–गति**–वि० धीमी चालवाला। स्त्री० ग्रहोंका सूर्यसे दूर चला जाना। **–गमन,–गामी(मिन्)**–वि० धीमी चालसे चलनेवाला। **–चेता(तस्)**–वि० मंदबुद्धि। **–च्छाय**–वि० धुँधलो। **–ज्वर**–पु० लंबी अवधितक रहनेवाला हलका बुखार। **–धी,–बुद्धि**–वि० मोटी अक्लवाला, अल्पबुद्धि। **–फल**–पु० ग्रहगतिका एक भेद। वि० देरसे फल देनेवाला। **–बल**–वि० बलहीन। **–भाक्(ज्)**–वि० मंदभाग्य। **–भागी(गिन्),–भाग्य**–वि० अभागा, बदनसीब। **–मति**–वि० मोटी या खोटी अक्लवाला। **–विभव**–वि० दरिद्र, अकिंचन। **–वीर्य**–वि० शक्तिहीन। **–समीर,–समीरण**–पु० हलकी, सुखद वायु। **–स्मित,–हास,–हास्य**–पु० हलकी हँसी, मुस्कान।

मंदक–वि० (सं०) मूर्ख, बूद्धू। पु० (माडरेटर) परमाणु रिऐक्टरके अन्दर रखे गये ऐसे पदार्थ जिनमेंसे गुजरनेपर तीव्रगामी न्यूट्रान मंदगामी बन जाते हैं।

मंदकर्णि–पु० (सं०) एक ऋषि।

मंदट–पु० (सं०) पारिभद्र या देवदारु वृक्ष, फरहा।

मंदयंती–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

मंदर–पु० (सं०) वह पर्वत जो पौराणिक कथाके अनुसार समुद्र मथनेमें मथानी बनाया गया था; मंदार; स्वर्ग; आईना; आठ या सोलह लड़ियोंवाला मोतियोंका हार। वि० मंद। **–गिरि**–पु० मंदर पर्वत; मुंगेरके पासका एक पर्वत। **–वासिनी**–स्त्री० दुर्गा।

मँदरा–वि० ठिंगना। पु० एक तरहका बाजा।

मँदरी–स्त्री० एक पेड़ जिसकी लकड़ी गाड़ियाँ आदि बनानेके काम आती हैं।

मंदल*–पु० मादल, मृदंग (घन०)।

मंदला–पु० एक तरहका बाजा।

मंदसान, मंदसानु–पु० (सं०) अग्नि; प्राण; नींद।

मंदा–वि० मंद, धीमा; ढीला; जिसकी माँग कम हो, नीचे भावपर बिकनेवाला (सौदा); खराब। स्त्री० (सं०) सूर्यकी सक्रांति जो उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी नक्षत्रोंमें पड़े।

मंदाकिनी–स्त्री० (सं०) गंगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा, चित्रकूटके पासकी एक नदी –'मदाकिनिकर करहिं बखाना'–रामा०। आकाशगंगा; संक्रांतिका एक भेद; एक वर्णवृत्त।

मंदाक्रांत–वि० (सं०) धीरे-धीरे आगे बढ़नेवाला।

मंदाक्रांता–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

मंदाक्ष–वि० (सं०) संकुचित आँखवाला। पु० लज्जा।

मंदाग्नि–स्त्री० (सं०) पाचनशक्तिका दुर्बल हो जाना, हाजमेका बिगड़ जाना।

मंदात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) मूर्ख; नीच।

मंदादर–वि० (सं०) उपेक्षा करनेवाला।

मंदानल–पु० (सं०) मंदाग्नि।

मंदाना*–अ० क्रि० मंद पड़ना।

मंदानिल–पु० (सं०) धीमी, सुखद वायु।

मंदार–पु० (सं०) नंदनकाननके पाँच वृक्षोंमेंसे एक; पारिभद्र; मदार; धतूरा; हाथी; मंदारपुष्प। **–पुष्प**–पु० मंदारका फूल। मंदारके फूलोंकी माला। **–षष्ठी**–स्त्री० माघ-शुक्ला षष्ठी। **–माला**–स्त्री०, **–सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी।

मंदारक–पु० (सं०) दे० 'मंदार'।

मंदासु–वि० (सं०) जिसकी साँस क्षीण हो रही हो।

मंदिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) मंदता, सुस्ती, धीमापन।

मंदिर–पु० (सं०) घर, आलय– 'छमहु छमा मंदिर दोउ भ्राता'–रामा०; देवालय; नगर; शिविर; समुद्र। **–पशु**–पु० बिल्ली। **–मणि**–पु० शिव।

मंदिरा–स्त्री० (सं०) अस्तबल।

मंदिल*–पु० मंदिर; घर।

मंदिलरा*–पु० मृदंग–'मंदिलरा बाजै रंग सो'–घन०।

मंदी–स्त्री० मंद होनेका भाव, तेजीका उलटा, सस्ती।

मंदुरा–स्त्री० (सं०) अस्तबल; चटाई। **–पति,–पाल**–पु० साईस।

मंदोदक–वि० (सं०) जिसमें जल पूरा न हो।

मंदोदरी–स्त्री० (सं०) रावणकी पत्नी जो मय दानवकी कन्या और पंचकन्याओंमेंसे एक मानी जाती है। वि० स्त्री० छोटे, तंग पेटवाली।

मँदोवै*–स्त्री० मंदोदरी।

मंदोष्ण–वि० (सं०) थोड़ा गरम, कुनकुना।

मंद्र–पु० (सं०) गंभीर ध्वनि; संगीतके तीन स्वरसप्तकों (मंद्र, मध्य, तार) मेंसे पहला; एक बाजा, मृदंग; एक तरहका हाथी। वि० गंभीर; प्रसन्न; आह्लादकारी। **–ध्वनि**–स्त्री०,**–स्वन**–पु० गंभीर ध्वनि, गर्जन।

मंद्राज–पु० दे० 'मदरास'।

मंशा–पु० दे० 'मनशा'।

मंसना†–स० क्रि० 'मनसना'।

मंसब–पु० दे० 'मनसब'।

मंसा*–स्त्री० चाह, इच्छा; अभिप्राय।

मंसूख़–वि० दे० 'मनसूख'।

मंसूखी–स्त्री० मंसूख होनेकी क्रिया।

मंसूबा–पु० दे० मनसूबा।

मँहगा–वि० दे० 'महँगा'।

म–पु० (सं०) शिव; ब्रह्मा; विष्णु; चंद्रमा; यम; समय; विष; मगण। **–गण**–पु० पिंगलका एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं।

मइका*–पु० दे० 'मायका'।

मइमंत*–वि० दे० 'मैमंत'।

मइया–स्त्री० माँ।

मइल–वि० मैला।

मई–स्त्री० (अं० 'मे') ईसवी सन्‌का पाँचवाँ महीना जो प्रायः वैशाखमें पड़ता है। **—दिवस**–पु० १ मईको मनाया जानेवाला अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस।

मउनी†–स्त्री० दे० 'मौनी'।

मउर†–पु० दे० 'मौर'। **–छोराई**–स्त्री० विवाह समाप्तिके बाद मौर अलग करनेकी रस्म।

मउलसिरी*–स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

मउसी†–स्त्री० माँकी बहिन।

मकई–स्त्री० मक्का।

मकड़ा–पु० बड़ी मकड़ी; एक घास।

मकड़ाना–अ० क्रि० मकड़ीकी तरह चलना, अकड़कर चलना,

इतराना ।

मकड़ी–स्त्री० एक कीड़ा जो अपने पेटसे एक तरहका लुआब निकालकर जाला बुनता है और उसमें फँस जानेवाली मक्खियों आदिको खा जाता है ।

मकतब–पु० (अ०) लिखने-पढ़नेका स्थान; पाठशाला; छोटे बच्चोंकी पाठशाला; बच्चेको पाठशाला भेजनेकी रस्म, विद्यारंभ । **–का यार**–बचपनका साथी ।

मकतबा–पु० (अ०) पुस्तकालय; किताबोंकी दुक़ान ।

मक़तल–पु० (अ०) कत्ल करनेकी जगह, वधस्थल ।

मक़ता–पु० (अ०) गजल या कसीदेका आखिरी शेर जिसमें कविका उपनाम होता है ।

मकतूब–वि० (अ०) लिखा हुआ, लिखित । पु० पत्र । **–इलैह**–पु० वह जिसे पत्र लिखा गया हो ।

मक़तूल–वि० (अ०) कत्ल किया हुआ, हत ।

मकदूनिया–पु० बालकनका एक प्रदेश जो पहले यूनानका भाग था (सिकंदर पहले यहींका राजा था), 'मैसिडोनिया' ।

मकदूर–पु० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य, वस; धन । **–वाला**–वि० सामर्थ्यवाला; पैसेवाला । मु० **–चलना**–वस चलना ।

मकना–पु० दे० 'मकुना' ।

मक़नातीस–पु० (अ०) चुंबक पत्थर ।

मकफ़ूल–वि० (अ०) बीमा किया हुआ (आ०); बंधक रखा हुआ, जमानतमें दिया हुआ ।

मक़बरा–पु० (अ०) वह इमारत जिसमें किसीकी कब्र हो, समाधि, मजार ।

मक़बूज़ा–वि० (अ०) जिसपर कब्जा किया गया हो, अधिकृत (वस्तु, संपत्ति) ।

मक़बूल–वि० (अ०) कबूल किया गया, माना हुआ, प्रिय । **–(ले) ख़ुदा**–वि० खुदाका प्यारा ।

मक़बूलियत–स्त्री० (किसीका) प्रिय या प्यारा होना; लोकप्रियता ।

मकरंद–पु० (सं०) फूलोंका रस, मधु; फूलोंका केसर, किंजल्क; कोयल; भ्रमर; एक वृत्त; एक ताल ।

मकरंदवती–स्त्री० (सं०) पाटला लता ।

मकर–पु० (सं०) मगर; घड़ियाल; मछली; बारह राशियोंमेंसे दसवीं; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक । **–कर्कट**–पु० क्रांतिवृत्त । **–कुंडल**–पु० मकराकृत कुंडल । **–केतन,–केतु**–पु० कामदेव । **–क्रांति**–स्त्री० निरक्ष रेखासे २३ अंश दक्षिणमें स्थित अक्षरेखा । **–ध्वज**–पु० कामदेव; अहिरावणका द्वारपाल जिसकी उत्पत्ति हनूमान्का पसीना एक मछलीके पी लेनेसे बतायी गयी है; आयुर्वेदका एक प्रसिद्ध रस, रससिंदूर । **–राशि**–स्त्री० बारह राशियोंमेंसे एक (दसवीं) राशि । **–रेखा**–स्त्री० (ट्रॉपिक आव कैप्रिकॉर्न) पृथ्वीके दक्षिणी गोलार्धके २३½° अक्षांशकी वृत्तरेखा । यह उष्ण कटिबंधकी दक्षिणी सीमा होती है । **–लांछन**–पु० कामदेव । **–वाहन**–पु० वरुण । **–व्यूह**–पु० मकरके आकारमें की हुई सैन्य-रचना । **–संक्रांति**–स्त्री० माघ मासकी संक्रांति जिस दिन सूर्य उत्तरायण होता है । **–सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी ।

मकर–पु० दे० 'मक्र' । **–चाँदनी**–स्त्री० दे० 'मक्रचाँदनी' ।

मकरतार–पु० बादलेका तार ।

मकरांक–पु० (सं०) कामदेव ।

मकराकर–पु० समुद्र ।

मकराकृत–वि० (सं०) मकर या मछलीके आकारका । **–कुंडल**–पु० मछलीके आकारका कुंडल ।

मकराक्ष–पु० (सं०) खरका पुत्र जो रामके हाथों मारा गया ।

मकराज–स्त्री० कैंची ।

मकराना–पु० संगमरमर खानके लिए प्रसिद्ध राजस्थानका एक क्षेत्र ।

मकरालय–पु० (सं०) समुद्र ।

मकराश्व–पु० (सं०) वरुण ।

मकरी–स्त्री० (सं०) मादा मगर; मछली; † मकड़ी; जाँतेकी कीलके ऊपर लगायी जानेवाली एक लकड़ी; एक वैदिक गीत; जहाजका एक उपकरण ।

मकरी(रिन्)–पु० (सं०) समुद्र ।

मकरूज़–वि० ऋणग्रस्त ।

मकरूह–वि० (अ०) घृणित, घृणा उत्पन्न करनेवाला, दूषित; नाजायज (काम) ।

मकरौरा†–पु० एक छोटा कीड़ा ।

मकलई–स्त्री० एक तरहका गोंद ।

मक़लूब–वि० (अ०) उलटा हुआ, औंधा ।

मक़सद–पु० (अ०) इरादा, मतलब, उद्देश्य; अभीष्ट । **–वर**–वि० जिसका अभीष्ट सिद्ध हो गया हो, प्राप्तकाम ।

मक़सूद–वि० (अ०) जिसका कस्द किया गया हो, अभीष्ट, उद्दिष्ट । पु० उद्देश्य, मतलब ।

मक़सूम–वि० (अ०) बाँटा हुआ, तकसीम किया हुआ । पु० बाँटा, भाग्य; भाज्य । **–अलैह**–पु० भाजक । **–०आज़म**–पु० महत्तम समापवर्तक । मु० **–का लिखा**–भाग्यका लिखा, तकदीर ।

मकाई†–स्त्री० दे० 'मकई' ।

मकाद–स्त्री० (अ०) बैठनेकी जगह; गुदा, मलद्वार ।

मकान–पु० (अ०) रहनेका स्थान, घर । **–दार**–वि० मकानवाला । पु० मकानका मालिक । मु० **–हिला देना**–बहुत शोरगुल मचाना ।

मकानात–पु० (अ०) 'मकान'का बहु० ।

मक़ाम–पु० (अ०) दे० 'मुकाम' ।

मकुंद–पु० दे० 'मुकुंद' ।

मकु*–अ० चाहे; बल्कि; शायद ।

मकुट–पु० (सं०) मुकुट ।

मकुना–पु० बिना दाँतका या बहुत छोटे दाँतोंवाला (नर) हाथी; वह पुरुष जिसे मूँछें न हों ।

मकुनी–स्त्री० आटेमें बेसन मिलाकर या भरकर बनायी हुई बाटी ।

मकुर–पु० (सं०) आईना, मुकुर; कुम्हारका डंडा; मौलसिरी; कली ।

मकुल–पु० (सं०) कली; बकुल वृक्ष ।

मकुष्ठ–पु० (सं०) मोठ; बनमूँग ।

मकूनी*–स्त्री० दे० 'मकुनी' ।

मकूलक–पु० (सं०) कली; दंतीका पेड़ ।

मक़ूला–पु० (अ०) उक्ति, वचन, कौल; कहावत ।

मकेरुक–पु० (सं०) एक तरहका पराश्रयी कीट ।

मको–स्त्री० दे० 'मकोय' ।

मकोइया–मकोई जैसे रंगका ।

मकोई*–स्त्री० दे० 'मकोय' ।

मकोड़ा–पु० छोटा कीड़ा (कीड़ाके साथ प्रयुक्त) ।

मकोय–स्त्री० एक क्षुप जिसके फल, पत्ते आदि दवाके काम आते हैं; इसका फल; रसभरीका पौधा या फल ।

मकोरना*–स० क्रि० दे० 'मरोड़ना' ।

मकोसल–पु० एक सदाबहार पेड़ ।

मकोहा†–पु० फसलमें लगनेवाला एक कीड़ा ।

मक्कड़–पु० नर मकड़ी । **–जाला**–पु० मकड़ीका जाला ।

मक्कण†–पु० (सं०) मकुना हाथी ।

मक्कल–पु० (सं०) प्रसूताको होनेवाला एक प्रकारका शूल-रोग ।

मक्का–पु० मकई, बड़े दानेकी ज्वार; (अ०) अरबका एक प्रधान नगर जो मुहम्मदका जन्मस्थान और मुसलमानोंका सर्वप्रधान तीर्थ है ।

मक्कार–वि० (अ०) मक्र करनेवाला, छली ।

मक्कारी–स्त्री० मक्र, कपट, धोखेबाजी ।

मक्की–वि० मक्केका । पु० मक्केका रहनेवाला । दे० 'मकई' ।

मक्कूल–पु० (सं०) शिलाजतु ।

मक्कोल–पु० (सं०) खड़िया ।

मक्खन–पु० दूध या दहीकी चिकनाई जो मथनेसे निकलती है, कच्चा घी, नवनीत । **–लगाना**–चापलूसी करना ।

मक्खी–स्त्री० सर्वत्र पाया जानेवाला एक परदार कीड़ा, मक्षिका; मधुमक्खी; बंदूक, तमंचेका वह निशान जिससे लक्ष्यका निशाना

ठीक किया जाता है। –**चूस**–वि० भारी कंजूस (दाल आदिमें पड़ी मक्खीतकको चूस जानेवाला)। –**मार**–वि० मक्खियाँ मारनेवाला, घिनौना। पु० एक छोटा जंतु। –०**कागज**–पु० एक चेपदार कागज जिसपर मक्खियाँ चिपक और कुछ देर बाद मर जाती हैं। मु० –**छोड़ना हाथी निगलना**–छोटे दोषसे बचना और बड़ा करना। –**पर मक्खी मारना**–बेसमझे, पूरी नकल करना। **मक्खियाँ मारना**–बेकार बैठा रहना, कुछ न करना।

मक्र–पु० (अ०) बनावट, धोखा, छल, कपट, फरेब। –**चाँदनी**–स्त्री० पिछली रातकी चाँदनी जिससे सबेरा होनेका धोखा होता है; धोखा देनेवाली चीज।

मक्ष–पु० (सं०) क्रोध; समूह; अपना दोष छिपाना। –**वीर्य**–पु० पियाल वृक्ष।

मक्षिका–स्त्री० (सं०) मधुमक्खी; मक्खी। –**मल**–पु० मोम। मु०–**स्थाने मक्षिका**–मक्खीपर मक्खी मारना, पूरी और बेसोचे-समझे की जानेवाली नकल।

मक्षिकासन–पु० (सं०) मधुमक्खियोंका छत्ता।

मक्सी–पु० काला या काले दागवाला सब्जा घोड़ा।

मख–पु० (सं०) यज्ञ। –**क्रिया**–स्त्री० यज्ञकी विधि। –**त्राता-(तृ)**–पु० (विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा करनेवाले) राम। –**द्विट्(ष्)**–वि० यज्ञद्वेषी। पु० राक्षस। –**द्वेषी(षिन्)**–वि० यज्ञविरोधी, यज्ञनाशक। पु० शिव। –**वह्नि**–पु० यज्ञाग्नि। –**शाला**–स्त्री० यज्ञशाला। –**हा(हन्)**–पु० इंद्र; शिव।

मख़ज़न–पु० (अ०) खजाना, भंडार, जमा करनेकी जगह; गोले-बारूदका भंडार, 'मैगज़ीन'।

मखतूल–पु० काला रेशम।

मखतूली–वि० मखतूलका बना हुआ, काले रेशमका।

मख़दूम–वि० (अ०) सेवित; सेव्य, पूज्य। पु० स्वामी।

मख़दूमी–पु० पूज्य, सेव्य (संबोधन)।

मख़दूश–वि० (अ०) जिससे ख़दशा, खतरा हो, भयसंकुल।

मखन*–पु० मक्खन।

मखनिया–पु० मक्खन बनाने, बेचनेवाला। वि० मक्खन निकाला हुआ (मखनिया दूध)।

मखनी–स्त्री० एक छोटी मछली।

मख़फ़ी–वि० (अ०) छिपा हुआ, गुप्त।

मख़मल–स्त्री० (अ०) एक मोटा रेशमी कपड़ा जो ऊपरकी ओर बहुत नरम और रोयेंदार होता है; चौलाईके पौधेपर लगनेवाला फूल।

मख़मली–वि० मखमलका, मखमलका बना; मखमल-सा।

मख़मसा–पु० (अ०) झगड़ा, झमेला।

मख़मूर–वि० (अ०) नशेमें चूर, बदमस्त।

मख़रज–पु० (अ०) उद्गम, स्रोत; मूल।

मख़लूक़–वि० (अ०) जो पैदा किया गया हो, सृष्ट। स्त्री० प्राणी; सृष्टि, खिलकत।

मख़लूक़ात–स्त्री० चराचर जगत्, सृष्टि।

मख़लूत–वि० (अ०) मिला-जुला, गड्ड-मड्ड।

मख़लूतुन्नस्ल–वि० (अ०) दोगला, वर्णसंकर।

मख़सूस–वि० (अ०) खास किया हुआ, कार्यविशेषके लिए अलग किया हुआ।

मखाग्नि–स्त्री० (सं०) यज्ञमें संस्कृत अग्नि।

मखानल–पु० (सं०) दे० 'मखाग्नि'।

मखान्न–पु० (सं०) यज्ञान्न; तालमखाना।

मखामल–पु० (सं०) यज्ञशाला।

मखी*–स्त्री० दे० 'मक्खी'।

मखौना–पु० एक तरहका कपड़ा।

मखौल–पु० मजाक, ठट्ठा।

मखौलिया–वि० मखौल करनेवाला।

मगंध–पु० (सं०) सूदखोर।

मग–पु० (सं०) शाकद्वीपका एक भाग; शाकद्वीपी ब्राह्मण। –**द्विज**–पु० शाकद्वीपी ब्राह्मण।

मग*–रास्ता, मार्ग; मगध। –**दा**–वि० मार्गदर्शक।

मगज–पु० दे० 'मग्ज़'। –**चट**–वि० मगज चाटनेवाला, बकवादी। –**चट्टी**–स्त्री० मगज चाट जाना, बकवास। –**पच्ची**–स्त्री० माथापची।

मग़ज़ी–स्त्री० (फा०) मिर्जई, रजाई आदिपर लगायी जानेवाली गोट।

मगद, मगदल–पु० मूँग या उरदके बेसनका लड्डू।

मगदूर*–पु० दे० 'मक़दूर'।

मगध–पु० (सं०) दक्षिणी बिहार, कीकट देश; मगधनिवासी; भाट, मागध।

मगधा–स्त्री० (सं०) पिप्पली।

मगधाधिप, मगधेश्वर–पु० (सं०) मगधनरेश; जरासंध।

मगधीय–वि० (सं०) मगधका; मगध संबंधी।

मगन–वि० मग्न, डूबा हुआ; अति प्रसन्न, आनंदित।

मगना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; डूबना, लीन होना।

मगर–पु० एक हिंस्र जलजंतु, मकर, घड़ियाल; कानमें पहननेका एक गहना। अ० (फा०) लेकिन, पर। –**बाँस**–पु० एक तरहका कँटीला बाँस। –**मच्छ**–पु० मगर; बहुत बड़ी मछली।

मगरा–वि० घमंडी; हठी; उद्दंड।

मग़रिब–पु० (अ०) सूरज डूबनेकी जगह या दिशा, पच्छिम। –**ज़दा**–वि० पश्चिमी सभ्यतासे प्रभावित। –**की नमाज़**–शामकी नमाज।

मग़रिबी–वि० पश्चिमी। पु० पश्चिमका रहनेवाला; यूरोपीय। –**तहज़ीब**–स्त्री० पश्चिमी सभ्यता।

मगरी*–स्त्री० लकड़ी।

मग़रूर–वि० (अ०) गरूरवाला, घमंडी।

मग़रूरी–स्त्री० घमंड।

मगलो एरंड–पु० रतनजोत।

मग़लूब–वि० (अ०) दबा, दबाया हुआ, पराजित।

मगस–पु० खोई; (सं०) स्त्री० (फा०) मक्खी। –**रानी**–स्त्री० मक्खियाँ उड़ाना।

मगसर*–पु० मार्गशीर्ष, अगहन–'मगसर ठंढ बहोती पड़ै मोहिं बेगि सम्हालो हो'–मीरा।

मगसिर–पु० दे० 'मार्गशीर्ष'।

मगहा–पु० दे० 'मगध'। –**पति**–पु० जरासंध।

मगहय, मगहर*–पु० मगध देश।

मगही–वि० मगधका; मगधमें उपजनेवाला। –**पान**–पु० मगधमें होनेवाला पान जो पानकी सबसे बढ़िया किस्म माना जाता है।

मगारना*–स० क्रि० जलाना–'बिरह अंगारनि मगारि हिय होरी-सी' –घन०।

मगु*–पु० दे० 'मग'।

मगोर–स्त्री० माँगुर मछली।

मग्ग*–पु० दे० 'मग'।

मग्ज़–पु० (अ०) मींगी, गूदा, गिरी; भेजा, दिमाग; सार भाग। –**चट**–वि० मग्ज चाट जानेवाला, बक्की। –**चट्टी**–स्त्री० मग्ज चाट जाना, बकबक करके खोपड़ी खा जाना। –**पच्ची**–स्त्री० माथा-पच्ची, सिर खपाना। –**रोशन**–पु० सुँघनी। –**सखुन**–पु० बातकी तह। मु० –**के कीड़े उड़ाना**–बकवाससे खोपड़ी खा जाना। –**खा जाना,–खा लेना,–चाट जाना**–बक-बक करके खोपड़ी खाली कर देना। –**पिलपिला करना**–मारकर भरता बना देना।

मग्न–वि० (सं०) डूबा हुआ; तन्मय; हर्ष-मग्न। –**गिरि,–देय**–पु० समुद्रगर्भस्थ पर्वत।

मघ–पु० (सं०) एक द्वीप; एक म्लेच्छ देश; मघा नक्षत्र; धन; पुरस्कार।

मघई–वि० मगही (पान)।

मघवा(वन्)–पु० (सं०) इंद्र; सातवें द्वापरके व्यास; उल्लू। –**जित्**–पु० मेघनाद। –**प्रस्थ**–पु० इंद्रप्रस्थ नगर।

मघा–स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रोंमेंसे दसवाँ; एक औषध। –**त्रयोदशी**–स्त्री० भाद्र-कृष्णा त्रयोदशी। –**भव,–भू**–पु० शुक्र ग्रह।

मघोनी*–स्त्री० इंद्राणी।

मघौना–पु० नीले रंगका कपड़ा; ० दे० 'मघवा'।

मचक–स्त्री० दाब; लचक।

मचकना–अ० क्रि० लकड़ी, चमड़े आदिकी चीजका दबकर 'मच-मच' आवाज करना; लचकना। स० क्रि० लकड़ी, चमड़े आदिकी चीजोंको दबा-हिलाकर 'मच-मची' आवाज पैदा करना।

मचका–पु० मचक; झूलेकी पेंग।

मचकाना–स० क्रि० लचकाना, हिलाना।

मचना–अ० क्रि० होना; जारी, बरपा, शोर, हलचल होना; फैलना।

मचमचाना–स० क्रि० इस तरह लचकाना कि 'मच-मच'की आवाज निकले।

मचरंग–पु० किलकिला पक्षी।

मर्चाचका–स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता; अपने वर्गकी श्रेष्ठ वस्तु।

मचलना–अ० क्रि० किसी चीजको लेने या न देनेका हठ पकड़ लेना, किसी चीजके लिए रोना-धोना।

मचला–वि० मचलनेवाला, हठी। पु० वाँसकी वनी डिविया।

मचलाई*–स्त्री० हठ।

मचलाना–अ० क्रि० मतली मालूम होना। स० क्रि० 'मचलना'-का प्रे०।

मचली–स्त्री० मतली, वमनका उसवास।

मचवा–पु० खाट; मचिया।

मचान–स्त्री० खंभोंपर वाँसके फट्ठे आदि वाँधकर वनाया हुआ आसन, मंच।

मचाना–स० क्रि० मचनेका कर्ता, साधक होना; कराना; जारी या वरपा करना।

मचामच–स्त्री० 'मच-मच'की आवाज, किसी चीजके लचकनेसे होनेवाली आवाज।

मचिया–स्त्री० छोटी, चौकोर चौकी जो खाटकी तरह सुतली आदिसे वुनी गयी हो।

मचिलई*–स्त्री० मचलनेका भाव, हठ।

मचोला–पु० एक पौधा जिससे सुहागा बनता है।

मच्छ–पु० दे० 'मत्स्य'; वड़ी मछली। **–घातिनी**–स्त्री० वंसी।

मच्छड़–पु० दे० 'मच्छर'।

मच्छर–पु० एक उड़नेवाला कीड़ा जो आमतौरसे शरद और वसन्तऋतुमें पैदा होता और आदमियों-जानवरोंका खून पीता तथा कई रोगोंके फैलनेका कारण होता है। **–दानी**–स्त्री० मच्छरोंसे वचनेके लिए लगाया जानेवाला जालीदार परदा। **–मु० –पर तोप लगाना**–छोटे आदमीको दवाने, दंड देनेके लिए भारी तैयारी करना।

मच्छर*–पु० दे० 'मत्सर'। **–ता***–स्त्री० मत्सरता।

मच्छी–स्त्री० दे० 'मछली'। **–काँटा**–पु० एक तरहकी सिलाई। **–भवन**–पु० राजाओंके महलों, चिड़ियाघर आदिमें मछलियाँ पालनेके लिए बना तालाव या हौज। **–मार**–पु० मछुआ, मल्लाह।

मच्छोदरी*–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती।

मछरंग–पु० एक जलपक्षी, मणीचक, मत्स्यरंग।

मछली–स्त्री० एक प्रधान जलजीव जिसकी छोटी-वड़ी अगणित जातियाँ होती हैं और जो फेफड़ेके वदले गलफड़ेसे साँस लेता है, मत्स्य; मछलीकी शक्लका लटकन। **–गोता**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–डंड**–पु० एक कसरत। **–दार**–पु० दरीकी एक वुनावट। **–मार**–पु० मछुआ, माहीगीर। **–कातेल**–कॉड नामकी मछलीके कलेजेका तेल जो फेफड़ेके रोगोंमें लाभदायक माना जाता है। **–का मोती**–एक तरहका वनावटी मोती।

मछवा–पु० मछलीका शिकार करनेकी नाव।

मछहरी†–स्त्री० दे० 'मसहरी'।

मछुआ, मछुवा–पु० मछलियाँ पकड़नेका पेशा करनेवाला, माहीगीर।

मछुआ जहाज–पु० (ट्रॉलर) मछलीका शिकार करनेकी नाव या जहाज।

मज़कूर–वि० (अ०) जिसका जिक्र किया गया हो, कथित, उक्त। पु० चर्चा, जिक्र। **–ए-वाला**–वि० ऊपर कहा हुआ, उपर्युक्त।

मज़कूरा–वि० (अ०) कथित, उक्त।

मजकूरी–पु० समन आदि तामील करनेका काम करनेवाला; अवैतनिक चपरासी जिसे तलवानेसे उजरत दी जाय।

मजजूब–वि० (अ०) जज्ब किया हुआ; खींचा हुआ; भगवत्प्रेममें लीन; मस्त; वेसुध। पु० उन मुसलमान फकीरोंका वर्ग जो नंगे रहते और असंवद्ध, अर्थहीन वातें वकते हैं। मु० **–की वक**–असंवद्ध प्रलाप, पगलेकी वहक।

मज़दूर–पु० (फा०) उजरत, मजदूरीपर काम करनेवाला; मोटिया, वनिहार; शरीरश्रमसे जीविका करनेवाला। **–दल**–पु० संघटित श्रमिकवर्ग। **–संघ**–पु० श्रमिकों या व्यवसायविशेषके मजदूरोंका संघ। **–दिवस**–पु० दे० 'मई दिवस'।

मज़दूरी–स्त्री० (फा०) शरीरश्रम, वोझ ढोने आदिका काम; उजरत, पारिश्रमिक। **–पेशा**–वि० मेहनत, मजदूरीका पेशा करनेवाला।

मजन–पु० दे० मज्जन।

मजना*–अ० क्रि० डूवना, निमग्न होना।

मजनू–वि० (अ०) पागल, वावला; सिड़ी; आशिक, किसीपर मरनेवाला। पु० अरवीकी प्रसिद्ध प्रेमकथा लैला-मजनूका नायक, कैस; वहुत दुवला-पतला आदमी; वेद-मजनू।

मज़बह–पु० (अ०) जवह करनेकी जगह, वधस्थल।

मज़बूत–वि० (अ०) दृढ़, पक्का, टिकाऊ; पुष्ट, वलयुक्त। **–दिलका**–कड़े दिलका, दृढचित्त।

मज़बूती–स्त्री० दृढता, टिकाऊपन; सवलता, ताकत।

मजबूर–वि० (अ०) जिसपर जब्र किया गया हो, विवश, लाचार।

मजबूरन्–अ० मजवूर होकर, लाचारीसे।

मजबूरी–स्त्री० विवशता, लाचारी।

मजमा–पु० (अ०) लोगोंके जमा होनेकी जगह; भीड़, जमाव। **–उल जजायर**–पु० द्वीपपुंज।

मजमूआ–वि० (अ०) जमा किया हुआ, संगृहीत। पु० जोड़; संग्रह; राशि, ढेर। **–(ए) का इत्र**–पु० वह इत्र जिसमें कई इत्र मिले हों। **–ज़ाबिता दीवानी**–पु० दीवानी मुकदमोंकी विचार-विधि वतानेवाला कानून-संग्रह। **–ज़ाबिता फौज़दारी**–पु० फौजदारी मुकदमोंकी विचार-विधि वतानेवाला कानून-संग्रह। **–दार**–पु० मुगलकालका एक माल-कर्मचारी।

मजमूई–वि० इकट्ठा, कुलका (–कीमत); सामूहिक।

मज़मून–पु० (अ०) लेखादिका विषय, लेखादिमें निवद्ध भाव; विषय, लेख, निवंध। **–नवीस**–पु० लेख लिखनेवाला, निवंधकार। **–नवीसी**–स्त्री० लेख लिखनेका काम। **–निगार**–पु० दे० 'मज़मूननवीस'। **–निगारी**–स्त्री० दे० 'मज़मूननवीसी'। मु० **–वाँधना**–किसी भावको लेख या पद्यमें व्यक्त करना। **–लड़ना**–दो लेखों, रचनाओंके भाव मिल जाना।

मज़मूम–वि० (अ०) निंदित, वुरा; नीच।

मज़म्मत–स्त्री० (अ०) बुराई, निंदा; भर्त्सना।

मज़रूआ–वि० (अ०) जोता-वोया हुआ। पु० जोती-वोयी हुई जमीन, खेत।

मजरूव–वि० (अ०) चोट खाया हुआ, मारा हुआ। पु० सिक्का।

मजरूह–वि० (अ०) जिसे चोट लगी हो, जखमी, घायल।

मजलिस–स्त्री० (अ०) जलसेकी, वैठनेकी जगह; सभा, परिषद्, जलसा।

मजलिसी–वि० सभा-संवंधी। पु० सभामें शामिल होनेवाला, सभ्य।

मज़लूम–वि० (अ०) जिसपर जुल्म किया गया हो, पीड़ित, सताया हुआ।

मज़हब–पु० (अ०) रास्ता; पंथ, धर्म, संप्रदाय; दीन।

मज़हबी–वि० मजहव, धर्मविशेषसे संवंध रखनेवाला। पु० भंगी सिख। **–आज़ादी**–स्त्री० अपने धर्मके आचरणकी स्वतंत्रता। **–लड़ाई**–स्त्री० धर्मके नामपर, धर्मकी रक्षा या प्रचारके लिए होनेवाली लड़ाई।

मज़ा–पु० (अ०) स्वाद, रस, जायका; चसका; सुख, आनंद, लुत्फ; तमाशा; सजा, कर्मफल। **–(ज़े) दार**–वि० स्वादिष्ठ, वढ़िया, जिसमें लुत्फ, आनंद आये। **–दारी**–स्त्री० स्वाद; आनंद। मु० **–किरकिरा होना**–रसभंग होना, कार्यका आनंद

न मिलना । **–चखना,–पाना**–लुत्फ उठाना; दंड, फल भोगना । **–चखाना**–कियेका फल चखाना, दंड देना । **–लूटना**–सुख भोगना, लुत्फ उठाना । **–(ज़े)का**–मजेदार; ठिकानेका; उपयुक्त; काम चलाऊ, उपयोगी । **–की बात**–तमाशेकी, लुत्फकी बात । **–से**–सुखपूर्वक, मौजसे ।

मज़ाक़–पु० (अ०) चखनेकी चाह; स्वाद, जायका; रुचि, मनका झुकाव; हँसी, दिल्लगी । **–पसंद**–वि० हँसोड़ । मु० **–उड़ाना**–उपहास करना । **–का आदमी**–हँसोड़, परिहासप्रिय जन ।

मज़ाक़न्–अ० हँसीमें ।

मज़ाक़िया–वि० हँसोड़, विनोदी । अ० मजाकमें ।

मजाज़–वि० (अ०) अवास्तविक, कल्पित; अधिकारप्राप्त । पु० लाक्षणिक अर्थमें व्यवहृत पद; लक्ष्यार्थ । **–(ज़े) समाअत**–वि० जिसे सुनने, विचार करनेका अधिकार हो ।

मजाज़न्–अ० मानकर; लक्षणासे; नियमानुसार ।

मजाज़ी–वि० अवास्तविक, कल्पित, बनावटी; लौकिक (इश्के मजाज़ी) ।

मज़ार–पु० (अ०) जियारतकी जगह, दरगाह; क़ब्र ।

मजारी*–स्त्री० बिल्ली, मार्जारी ।

मजाल–स्त्री० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य, मक़दूर ।

मजिल†–स्त्री० दे० 'मंज़िल' ।

मजिस्ट्रेट–पु० (अं०) फौजदारी मुकदमे सुनने और शासन-प्रबंधका काम करनेवाला अफसर, दण्डाधिकारी, दण्डनायक ।

मजिस्ट्रेटी–स्त्री० मजिस्ट्रेटका पद, काम; मजिस्ट्रेटकी अदालत ।

मजीठ–स्त्री० एक लता जिसकी जड़ों और डंठलोंको उबालकर लाल रंग निकाला जाता है ।

मजीठी–वि० मजीठके रंगका, गहरा सुर्ख ।

मजीर*–स्त्री० दे० 'मंजरी' ।

मजीरा–पु० काँसेकी कटोरियोंकी जोड़ी जिसे ताल देनेके लिए बजाते हैं ।

मजूमदार–पु० बंगालियोंकी एक कुलपदवी ।

मजूर†–पु० दे० 'मज़दूर'; * दे० 'मयूर' ।

मजूरा–पु० मजदूर ।

मजूरी†–स्त्री० दे० 'मज़दूरी' ।

मजेज*–स्त्री० गर्व, घमंड ।

मज़ेदार–वि० आनन्दपूर्ण ।

मज़ेदारी–स्त्री० मजेदार होनेका भाव ।

मज्ज*–स्त्री० दे० 'मज्जा' ।

मज्जन–पु० (सं०) डूबना, गोता मारना; नहाना; मज्जा ।

मज्जना*–अ० क्रि० नहाना; गोता लगाना ।

मज्जरस–पु० (सं०) दे० 'मज्जारस' ।

मज्जा–स्त्री० (सं०) नलीकी हड्डीके भीतर भरा मुलायम पदार्थ; पेड़-पौधोंका सारभाग । **–कर**–पु० अस्थि । **–रज(स्)**–पु० एक नरक; सुरमा । **–रस**–पु० शुक्र, वीर्य । **–सार**–पु० जाती-फल ।

मज्जा(ज्जन्)–पु० (सं०) दे० 'मज्जा' ।

मज्झ*–पु० दे० 'मध्य' ।

मज्दा–पु० पारसियोंके देवता ।

मझ*–वि० मध्य, बीच । **–धार**–स्त्री० बीचधारा । मु०**–धारमें छोड़ना**–कोई कार्य अपूर्ण अवस्थामें ही छोड़ देना; किसीको ऐसी असहाय स्थितिमें छोड़ देना जब वह न इधर जा सके, न उधर ।

मझरासिगही–पु० बैलोंकी एक जातिका नाम ।

मझला–वि० बीचका, दरमियानी ।

मझाना*–अ० क्रि०, पैठना, प्रवेश करना । स० क्रि० प्रवेश कराना, घुसाना ।

मझार*–अ० बीचमें, मध्यमें ।

मझावना*–अ० क्रि० स० क्रि० 'मझाना' ।

मझियाना*–अ० क्रि० नाव खेना ।

मझियारा*–वि० मझला, बीचका ।

मझु*–सर्व० मैं; मेरा ।

मझुआ–पु० कलाईपर दूसरे गहनोंके बीचमें पहननेका एक गहना ।

मझेरन–पु० बुनकरीके कामकी एक लकड़ी ।

मझेला–पु० मोचियोंका एक औजार; † दे० 'झमेला' ।

मझोला–वि० मझला; न बहुत बड़ा, न छोटा ।

मझोली–स्त्री० मोचियोंका एक औजार; एक तरहकी बैलगाड़ी । वि० स्त्री० दे० 'मझोला' ।

मट*–पु० मटका । 'मट्टी'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । **–मँगरा**–पु० ब्याहके कुछ पहले होनेवाली एक रस्म । **–मैला**–वि० मिट्टीके रंगका, खाकी ।

मटक–स्त्री० मटकनेका भाव, नखरेका भाव, लचक । पु० (सं०) शव ।

मटकना–अ० क्रि० चलनेमें हाथ, आँख, भौं आदिको नाज-नखरेकी अदासे हिलाना, इठलाकर चलना; हिलना; हटना ।

मटकनि*–स्त्री० दे० 'मटक' ।

मटका–पु० बड़े मुँहका घड़ा, माट ।

मटकाना–स० क्रि० किसी विशेष अंगसे मटकनेकी क्रिया करना, उसे नखरेकी अदासे हिलाना, चमकाना ।

मटकिनी–स्त्री० मिट्टीका छोटा घड़ा, मटकी (टूटे काँटे) ।

मटकी–स्त्री० छोटा मटका; मटक ।

मटकीला–वि० मटकनेवाला ।

मटकौअल†–स्त्री० मटकानेका काम, मटक (समासमें, आँख-मटकौअल) ।

मटर–पु० एक द्विदल अन्न जिसकी दाल और रोटियाँ भी खायी जाती हैं । **–गश्त**–पु०, स्त्री० टहलना; आवारा फिरना । **–गश्ती**–स्त्री० दे० 'मटरगश्त' । **–चूड़ा**–पु० मटरके हरे दानोंके साथ चूड़ा मिलाकर बनायी हुई घुघरी । **–बोर**–पु० मटरके बराबर घुँघरू ।

मटराला–पु० जौमें मिला हुआ मटर ।

मटिया†–पु० एक पक्षी, कजला । स्त्री० मृत्तिका; शव । वि० मटमैला । **–फूस**–वि० जरासी ठेसमें बिखर जानेवाला, अति दुर्बल । **–मसान**–वि० मटियामेट, नष्ट । **–मेट**–वि० मिट्टीमें मिला हुआ, नष्ट । **–साँप**–पु० साँपोंका एक भेद जिसका रंग मटमैला होता है ।

मटियाना–स० क्रि० मिट्टी मलकर धोना (हाथ, बरतन आदि) ।

मटियाला–वि० मटमैला ।

मटीला†–वि० मटियाला, मटमैला (मृग०) ।

मटुक†–पु० मुकुट ।

मटुका–पु० दे० 'मटका' ।

मटुकिया, मटुकी*–स्त्री० छोटा मटका ।

मट्ट–पु० (सं०) एक तरहका ढोल; एक तरहका नृत्य ।

मट्टी–स्त्री० दे० 'मिट्टी' ।

मट्ठर–वि० सुस्त, धीमा ।

मट्ठा–पु० पानी मिलाकर मथा हुआ दही जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो, छाँछ ।

मठ–पु० (सं०) साधु-सन्न्यासियोंके रहनेका स्थान, आश्रम; देवालय । **–चिंता**–स्त्री० मठका कार्यभार । **–धारी(रिन्)**–पु० मठका प्रधान, साधु-सन्न्यासी । **–स्थिति**–वि० मठमें रहनेवाला ।

मठरना–पु० सुनारों और कसेरोंका एक औजार ।

मठरी–स्त्री० दे० 'मठली' ।

मठली–स्त्री० मैदेकी बनी एक तरहकी नमकीन टिकिया ।

मठा–पु० दे० 'मट्ठा' । **–मूसल**–पु० मठा (तक्र) और मूसल जैसी बेमेल बातें (मठा-मूसलकी धमकना–बेमेल बातें करना, मृग०) ।

मठाधीश–पु० (सं०) महंत ।

मठायतन–पु० मठ; विद्यालय ।

मठारना–स० क्रि० गोलाई लानेके लिए बरतनको मठरनेसे पीटना ।

मठिया–स्त्री० छोटा मठ; फूलकी बनी हुई चूड़ियाँ ।

मठी–स्त्री० (सं०) छोटा मठ ।

मठी(ठिन्)–पु० (सं०) मठाधीश ।

मठुली–स्त्री० दे० 'मठली' ।

मठोठा–पु० कुएँकी जगत ।

मठोर–स्त्री० दही मथनेकी मटकी; नील वनानेका माठ ।

मठौरा–पु० एक तरहका रंदा ।

मड़ई–स्त्री० लकड़ी आदिके खंभोंपर छप्पर रखकर वनायी हुई कुटी, झोपड़ी; छोटा बाजार, मंडी ।

मड़राना–अ० क्रि० दे० 'मंडराना' ।

मड़वा–पु० दे० 'मंडप' ।

मड़हट*–पु० दे० 'मरघट' ।

मड़ा–पु० 'माडा' नामक नेत्ररोग; प्रकोष्ठ, कमरा ।

मड़ाड़†–पु० छोटा तालाव, पोखरी ।

मड़ियार–पु० क्षत्रियोंकी एक जाति ।

मड़ आ–पु० एक मोटा अनाज ।

मड़ैया–स्त्री० मड़ई, झोपड़ी ।

मढ़–पु० मठ । वि० जो एक जगह वैठ जानेपर वहाँसे जल्द हटे नहीं ।

मढ़ना–स० क्रि० ऐसी चीज जड़ना, लगाना जिससे पूरी वस्तु ढक जाय (तसवीरपर शीशा, चौखट, मेजपर कपड़ा) वाजेके मुँहपर चमड़ा लगाना; थोपना (दोष) ।

मढ़वाना–स० क्रि० मढ़नेका काम कराना ।

मढ़ा–पु० मट्टीका वना हुआ घर; कमरा ।

मढ़ाई–स्त्री० मढ़नेका काम; मढ़नेकी मजदूरी ।

मढ़ी–स्त्री० छोटा मठ; छोटा मंदिर; कुटी ।

मढ़ैया†–पु० मढ़नेवाला ।

मणि–पु०, स्त्री० (सं०) वहुमूल्य और कांतियुक्त पत्थर, रत्न, जवाहिर; श्रेष्ठजन; वकरीके गलेकी थैली; लिंगका अग्रभाग; योनिका अग्रभाग; कलाई, मणिवंध; घड़ा । **–कंकण**–पु० रत्नजटित कंकण । **–कंठ**–पु० नीलकंठ पक्षी । **–कंठक**–पु० मुर्गा । **–कर्णिका**–स्त्री० मणिमय कर्णभूषण; काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ कहते हैं कि विष्णुकी उत्कट तपस्या देखकर शिवका सिर हिलनेसे उनके कानका मणिमय कुंडल गिर गया । **–कर्णेश्वर**–पु० कामरूपका एक शिवलिंग । **–कांचन**–पु० रत्न और सोना । **–०योग**–पु० रत्न और सोने जैसा शोभा-सुंदरता बढ़ानेवाला संयोग । **–काच**–पु० स्फटिक; वाणका पंखवाला हिस्सा । **–कानन**–पु० गला । **–कार**–पु० जौहरी; जड़ाऊ गहने वनानेवाला । **–कुंडल**–पु० रत्नजटित कुंडल । **–कूट**–पु० कामरूपके पासका एक पर्वत । **–गुण**–पु० एक वर्णवृत्त; शरभ; चंद्रकला । **–०निकर**–पु० मणिगुण वर्णवृत्तका एक भेद । **–ग्रीव**–पु० कुबेरका एक पुत्र । **–तारक**–पु० सारस । **–तुंडक**–पु० पानीपर रहनेवाला एक पक्षी । **–दीप**–पु० रत्नजटित दीप; दियेका काम देनेवाला मणि । **–दोष**–पु० रत्नका दोष । **–द्वीप**–पु० क्षीरसागरमें अवस्थित मणिमय द्वीप जो त्रिपुरसुंदरीका निवासस्थान माना जाता है । **–धनुष(स्)**–पु० इंद्रधनुष् । **–धर**–पु० साँप; एक समाधि । **–पद्म**–पु० एक वोधिसत्त्व । **–पुर**–पु० आसाम और वर्माकी सीमापर अवस्थित एक देशी राज्य; उसकी राजधानी । **–पुष्पक**–पु० सहदेवके शंखका नाम । **–पूर**–पु० सुषुम्ना नाडीके अंदर माने हुए छ चक्रोंमेंसे तीसरा जिसका स्थान नाभिसे कुछ ऊपर माना जाता है । **–बंध**–पु० कलाई । **–वंधन**–पु० मणियोंका वाँधा जाना; मोतियोंकी लड़ी; कलाई । **–बीज**–पु० अनारका पेड़ । **–भद्र**–पु० एक यक्ष । **–भद्रक**–पु० एक प्राचीन जाति; एक नागराज । **–भारव**–पु० सारस । **–भित्ति**–स्त्री० शेषनागका महल । **–भूमि**–स्त्री० रत्नोंकी खान; रत्नजटित भूमि । **–मंजरी**–स्त्री० मणियोंकी पंक्ति । **–मंडप**–पु० मणिखचित मंडप; शेषनागका महल । **–मंडित**–वि० रत्न जड़ा हुआ । **–मंथ**–पु० सेंधा नमक । **–माला**–स्त्री० मणियोंकी माला; लक्ष्मी; नमक; एक वर्णवृत्त । **–मेखल**–वि० मणियोंसे घिरा हुआ; मणियोंकी मेखलासे युक्त । **–मेघ**–पु० दक्षिण भारतका एक (पुराणवर्णित) पर्वत । **–यष्टि**–स्त्री० मोतियोंकी लड़ी; रत्न जड़ी हुई छड़ी । **–रथ**–पु० एक वोधिसत्त्व । **–राग**–पु० शिंगरफ; रत्नका रंग । **–राज**–पु० हीरा । **–रोग**–पु० पुरुषेंद्रियका एक रोग । **–वर**–पु० हीरा । **–शैल**–पु० मंदराचलके पूर्वमें स्थित एक पर्वत । **–श्याम**–पु० नीलम । **–सर**–पु० मोतियोंकी माला । **–सूत्र**–पु० मोतियोंकी लड़ी । **–सोपान**–पु० रत्नजटित सीढ़ी । **–सोपानक**–पु० सोनेके तारमें गुथे हुए मोतियोंकी माला । **–स्रक्(ज्)**–स्त्री० रत्नोंका हार । **–हर्म्य**–पु० रत्नजटित या स्फटिकसे वना महल ।

मणिक–पु० (सं०) मिट्टीका घड़ा; स्फटिकनिर्मित प्रासाद; योनिका अग्रभाग ।

मणिभ–पु० (क्रिस्टल) स्फटिक ।

मणिभता–स्त्री० किसी रचनामें शुद्ध भावकी ऐसी स्पष्ट अभिव्यक्ति जिसमें एक पारदर्शिता उत्पन्न हो जाए ।

मणिभीकरण–पु० स्फटिक वननेकी क्रिया; स्फाटन ।

मणिमान्(मत्)–वि० (सं०) मणियुक्त । पु० सूर्य; एक पहाड़ ।

मणी–स्त्री० दे० 'मणि' ।

मणींद्र–पु० (सं०) हीरा ।

मणीच–पु० (सं०) हाथ; फूल; मोती ।

मणीचक–पु० (सं०) चंद्रकांत मणि; मत्स्यरंग पक्षी ।

मणीवक–पु० (सं०) फूल ।

मतंग–पु० (सं०) हाथी; वादल; एक राजर्षि । **–ज**–पु० हाथी ।

मतंगी(गिन्)–पु० (सं०) हाथीका सवार ।

मत–अ० न, नहीं (निषेधात्मक, जैसे–मत करो) । स्त्री० दे० 'मति' । वि० (सं०) सम्मत, अभिप्रेत, माना हुआ; अर्चित; सोचा-विचारा हुआ; सम्मानित; वरावर किया हुआ । पु० राय, सम्मति; विचार; सिद्धांत; धर्ममत, पंथ; अभिप्राय, मंशा; चुनावमें, प्रस्ताव आदिके पक्ष-विपक्षमें, निर्धारित विधिसे प्रकट किया हुआ मत, वोट, राय (आ०) । **–गणना**–स्त्री० मतों, वोटोंकी गिनती । **–दान**–पु० चुनाव आदिमें विधिवत् मतप्रकाश । **–०कक्ष, –०कोष्ठ**–पु० (पोलिंग वूथ) किसी मतदानकेंद्रका वह कमरा, घर या घेरा जहाँ किसी विशेष मुहल्ले या मुहल्लोंके मतदाताओं या किसी एक संख्यासे किसी अन्य विशेष संख्यातकके निर्वाचकों या केवल स्त्रियों द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो । **–०केंद्र**–पु० (पोलिंग स्टेशन) वह स्थान जहाँ विधान-सभा आदिकी सदस्यताके लिए खड़े होनेवालोंके संबंधमें निर्वाचकों द्वारा मतदानकी व्यवस्था हो । **–०पेटिका**–स्त्री० (वैलट वॉक्स) वह पेटी जिसमें मतदाताओं द्वारा मतपत्र छोड़े या डाले जाते हैं । **–पत्र**–पु० (वैलट-पेपर) वह परची जिसपर चिह्न लगाकर मत दिया जाता है । **–भेद**–पु० मतकी भिन्नता, राय न मिलना । **–वाद**–पु० वह मत जो वादका रूप ग्रहण कर ले । **–संग्रह**–प्रश्नविशेषपर मतप्रकाशके अधिकारियोंकी रायोंका इकट्ठा किया जाना । **–स्वातंत्र्य**–पु० मत, विचारकी स्वतंत्रता ।

मतदाता-सूची–स्त्री० (वोटर्स लिस्ट) किसी नगर, जिले आदिके उन वालिग व्यक्तियोंकी सूची जिन्हें मतदानका अधिकार प्राप्त हो ।

मतदेय–वि० (वोटेविल) (वह विषय) या व्ययकी वह मद जिसपर सदस्योंका मत लिया जा सके ।

मतना*–अ० क्रि० मत स्थिर करना; विचारना–'मतै वैठि वादल औ गोरा'–प० ; मतवाला होना ।

मतप्रार्थी–पु० (कैनवैसर) दे० 'मतानुयाचक' ।

मतलव–पु० (अ०) अभिप्राय, आशय; अर्थ; गरज, स्वार्थ; प्रयोजन; वास्ता; सरोकार । मु० **–का आशना, का यार**–गरज निकालनेके लिए दोस्ती करनेवाला; खुदगर्ज ।

मतलवी–वि० अपनी गरज देखनेवाला, स्वार्थी ।

मतला–पु० गजलका पहला शेर ।

मतलाना–दे० 'मिचलाना' ।

मतली–स्त्री० दे० 'मचली' ।

मतलूव–वि० (अ०) चाहा हुआ, जिसकी इच्छा हो, अभिप्रेत ।

मतलूवा–वि० स्त्री० (अ०) चाही हुई, माशूका ।

मतवार, मतवारा†–वि० दे० 'मतवाला' ।

मतवाला–वि० (शरावके) नशेमें चूर, मस्त; बदमस्त; (वलादिके) गर्वसे इतराता हुआ । (स्त्री० 'मतवाली' ।) पु० किलेकी दीवारसे शत्रुपर लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर ।

मतांतर–पु० (सं०) दूसरा मत, भिन्न मत ।

मता, मतो*–पु० सलाह, उपदेश, सम्मति; सुमति–'बिना मतेको राज गयो रावणको साँईं'–गिरिधर।

मताधिकार–पु० (फ्रैंचाइज़) लोकसभा, विधानसभा, नगरपालिका आदिके लिए सदस्य चुननेका, मत प्रदान करनेका अधिकार। (वयस्क –पु० बालिग व्यक्तियोंको प्राप्त विधायक चुननेका अधिकार।)

मताधिकारी(रिन्)–वि० (सं०) मत देनेका अधिकारी।

मतानुज्ञा–स्त्री० (सं०) एक निग्रहस्थान।

मतानुयाचक–पु० (कैनवैसर) वह जो किसी क्षेत्रके मतदाताओंके पास जाकर अपने पक्षमें मत देनेका अनुरोध करे।

मतानुयायी(यिन्)–वि० (सं०) मतविशेषका अनुगमन करनेवाला।

मतारी†–स्त्री० माता।

मतावलंबी(बिन्)–वि० (सं०) मत या धर्मविशेषका अवलंबन करनेवाला।

मति–स्त्री० (सं०) बुद्धि, समझ; राय; इच्छा; अभिप्राय। –**कर्म(न्)**–पु० बुद्धिका विषय। –**गति**–स्त्री० विचारसरणी। –**गर्भ**–वि० बुद्धिमान्। –**दर्शन**–पु० दूसरोंका भाव ताड़ लेना या ताड़ लेनेकी शक्ति। –**दा**–वि० स्त्री० बुद्धि देनेवाली। स्त्री० ज्योतिष्मती लता। –**द्वैध**–पु० मतभेद। –**निश्चय**–पु० स्थिर विचार। –**पूर्वक**–अ० सोच-समझकर, इरादा करके। –**प्रकर्ष**–पु० चातुर्य। –**भेद**–पु० विचार-परिवर्तन। –**भ्रंश**–पु० बुद्धिनाश; पागलपन। –**भ्रम**–पु० बुद्धिका भ्रम, अक्लका उलटफेर। –**भ्रांति**–स्त्री० दे० 'मतिभ्रम'। –**मंद**–वि० मंदबुद्धि, कमसमझ। –**विपर्यय**–पु० भ्रम। –**विभ्रंश**,–पु०–**विभ्रांति**–स्त्री० दे० 'मतिभ्रम'। –**शाली(लिन्)**–वि० बुद्धिमान्। –**हीन**–वि० निर्बुद्धि। मु० –**मारी जाना**–बुद्धिभ्रंश होना, अक्लका मारा जाना।

मति*–अ० दे० 'मत'; सदृश।

मती–स्त्री० दे० 'मति'। अ० दे० 'मत'।

मतिमान्(मत्)–वि० (सं०) बुद्धिमान्, समझदार।

मतिमाह*–वि० दे० 'मतिमान्'।

मतीर–पु० दे० 'मतीरा'।

मतीरा–पु० तरबूज।

मतीस–पु० एक बाजा।

मतेई*–स्त्री० सौतेली माँ।

मतैक्य–पु० (सं०) मतोंकी समानता, (दो या अधिक व्यक्तियोंका) एक ही रायका होना।

मत्क–पु० (सं०) खटमल।

मत्कुण–पु० (सं०) खटमल; मकुना हाथी; बिना दाढ़ी-मूँछका मर्द; जाँघपर बाँधनेका बक्तर; नारियलका पेड़; भैंसा।

मत्त–वि० (सं०) मतवाला, मस्त; उन्मत्त; घमंडी; अतिप्रसन्न। पु० मस्त हाथी जिसके गंडस्थलसे मद झरता हो; कोयल; धतूरा; भैंसा। –**काशिनी**,–**कासिनी**–स्त्री० सुंदरी स्त्री। –**कोश**–पु० हाथी। –**गयंद**–पु० सवैया छंदका एक भेद। –**दंती(तिन्)**,–**नाग**,–**हस्ती(स्तिन्)**–पु० मस्त हाथी। –**मयूर**–पु० मस्त मोर; मेघ जिसे देखकर मोर मस्त हो जाता है। –**वारण**–पु० मस्त हाथी; बरामदा; दीवारकी खूँटी; सुपारीका चूर। –**समक**–पु० चौपाईका एक भेद।

मत्तक–वि० (सं०) जो कुछ-कुछ मत्त हो।

मत्तता–स्त्री० (सं०) मस्ती, मतवालापन।

मत्तताई†–स्त्री० दे० 'मत्तता'।

मत्ता–स्त्री० (सं०) मद्य, मदिरा; एक वर्णवृत्त।

मत्ताक्रीडा–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

मत्तालंब–पु० (सं०) बरामदा; बाड़ी।

मत्तेभ–पु० (सं०) मस्त हाथी।

मत्था–पु० माथा, ललाट; सिर; सामनेका या ऊपरका हिस्सा। मु० –**टेकना**–नमस्कार करना, वंदना करना।

मत्थे–पु० सिरपर।

मत्य–पु० (सं०) सिरावन, हेंगा; सिरावन फिराना; ज्ञानप्राप्तिका साधन।

मत्स–पु० (सं०) मछली; हँसियाकी मूठ।

मत्सर–पु० (सं०) डाह, जलन; क्रोध, द्वेष। वि० डाह करनेवाला; कृपण।

मत्सरी(रिन्)–वि० (सं०) मत्सरयुक्त, जलनेवाला; द्वेषी।

मत्स्यंडिका, मत्स्यंडी–स्त्री० (सं०) मोटी और बिना साफ की गयी खाँड़।

मत्स्य–पु० (सं०) मछली; विराट् देश; मत्स्य-नरेश; मीन राशि; विष्णुके दस अवतारोंमेंसे पहला। –**करंडिका**–स्त्री० मछलियाँ पकड़नेका झाबा। –**गंधा**–स्त्री० व्यासकी माता सत्यवती; जलपीपल। –**घात**,–**घाती(तिन्)**–पु० मछुआ। –**जाल**–पु० मछली पकड़नेका जाल। –**जीवी(विन्)**–पु० मछुआ। –**देश**–पु० विराट् देश। –**द्वादशी**–स्त्री० अगहन सुदी द्वादशी। –**द्वीप**–पु० पुराणोंमें वर्णित एक द्वीप। –**धानी**–स्त्री० मछली रखनेका झाबा। –**ध्वज**–पु० एक पर्वत। –**नारी**–स्त्री० सत्यवती। –**नाशक**,–**नाशन**–पु० कुरर पक्षी। –**न्याय**–पु० बड़ी मछली छोटी मछलीको खा जाती है, इस तर्कपर आधारित निर्बलपर सबलकी प्रधानताकी मान्यता। –**पुराण**–पु० अठारह महापुराणोंमेंसे एक। –**बंध**–पु० मछली पकड़नेवाला, मछुआ। –**बंधन**–पु० बंसी, कँटिया। –**बंधी(धिन्)**–पु० मछुआ। –**मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक पूजामें व्यवहृत एक मुद्रा। –**रंक**,–**रंग**–पु० मछरंग पक्षी। –**राज**–पु० रोहित या रोहु मछली; विराट्-नरेश। –**विन्ना**–स्त्री० एक पौधा। –**वेधन**–पु० मछली फँसानेका काँटा, बंसी। –**वेधनी**–स्त्री० बंसी, कँटिया। –**हा(हन्)**–पु० मछुआ।

मत्स्याक्षी–स्त्री० (सं०) सोमलता; ब्राह्मी; गाडर दूब।

मत्स्याद–वि० (सं०) मछली खाकर रहनेवाला।

मत्स्यावतार–पु० (सं०) विष्णुके दस अवतारोंमेंसे पहला।

मत्स्याशन–पु० (सं०) मछरंग पक्षी। वि० मछली खानेवाला।

मत्स्यासन–पु० (सं०) तांत्रिक साधनामें व्यवहृत एक आसन।

मत्स्येंद्रनाथ–पु० (सं०) मध्यकालके एक प्रसिद्ध हठयोगी जो गोरखनाथके गुरु थे।

मत्स्योत्था–स्त्री० (सं०) सत्यवती।

मत्स्योदरी–स्त्री० (सं०) मत्स्यगंधा, सत्यवती; काशीका एक तीर्थ, मछोदरी।

मत्स्योदरी(रिन्)–पु० (सं०) विराटराज।

मत्स्योदरीय–पु० (सं०) व्यास।

मत्स्योपजीवी(विन्)–पु० (सं०) मछुआ।

मथन–पु० (सं०) मथनेकी क्रिया या भाव, विलोडन; वध; क्लेश; गनियारी नामका वृक्ष; मथने या नष्ट कर देनेवाला; मथानी। –**पर्वत**–पु० मंदराचल।

मथना–स० क्रि० आलोडन करना, दूध, दहीको मथानी आदिसे बिलोना; किसी बातको बार-बार सोचना, विचारना; छान डालना; (फोड़ेका) फूटनेके लिए टीसना, क्लेशसे व्याकुल करना; नाश, दलन करना। * पु० मथानी।

मथनाचल–पु० (सं०) मंदर पर्वत।

मथनिया*–स्त्री० दे० 'मथानी'।

मथनी–स्त्री० दही मथनेका मटका; मथनेकी क्रिया; मथानी।

मथवाह–पु० हाथीवान, महावत; मस्तक-पीड़ा–'दिस्टि तरहुँडी हेर न आगे। जनु मथवाह रहे सिर लागे'–प०।

मथानी–स्त्री० दही मथनेका डंडा जिसके एक सिरेपर कटावदार खोरिया लगी होती है।

मथित–वि० (सं०) मथा हुआ; पीडित; दलित। पु० वह मट्ठा जिसमें पानी न मिलाया गया हो।

मथिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) नाश करनेवाला।

मथितार्थ–पु० किसी विषयका विवेचनात्मक अध्ययनके बाद निकाला गया अर्थ।

मथी(थिन्)–पु० (सं०) मथानी; शिश्न; वज्र; वायु।

मथुरा–स्त्री० (सं०) व्रजमंडलके अंतर्गत एक प्रसिद्ध नगरी और तीर्थ जो भारतवर्षकी सात मोक्षदायिका पुरियोंमें परिगणित है। –**नाथ**–पु० कृष्ण।

मथुरिया–वि० मथुराका।

मथुरेश–पु० (सं०) कृष्ण।

मथूल–पु० मस्तूल ।

मथ्य*–पु० दे० 'माथा' ।

मदंग–पु० (सं०) मेरा अंग (मद्+अंग) ।

मदंगजा–स्त्री० (सं०) मेरी पुत्री ।

मदंतिका, मदंती–स्त्री० (सं०) एक श्रुति (संगीत) ।

मद–स्त्री० (अ०) दे० 'मद्द', शीर्षक; खाता । पु० (सं०) मद्यके सेवनसे मनमें होनेवाला विकार, नशा; मस्ती; मस्त हाथीकी कनपटीसे झरनेवाला जल; उन्माद; हर्ष; गर्व; * दे० 'मद्य' । * वि० मत्त । **–कट** पु० हिजड़ा, नपुंसक, पंड । **–कर**–वि० नशा पैदा करनेवाला । **–करी(रिन्)**–पु० मस्त हाथी । **–कल**–वि० मस्त, मदोन्मत्त; धीरे-धीरे, अस्पष्ट बोलनेवाला; मस्तीमें भूला हुआ; बावला । **–कृत्**–वि० मदकर, नशा पैदा करनेवाला । **–कोहल**–पु० साँड़ । **–गंध***–पु० छतिवन; मद्य । **–गंधा**–स्त्री० मदिरा; अलसी । **–गमन**–पु० भैंसा । **–गल**–वि० दे० 'मदकल' । **–घ्नी**–स्त्री० पोय, पूतिका । **–च्युत**–वि० जो नशेमें चूर होकर लुढ़क रहा हो । **–जल**–पु० मस्त हाथीकी कनपटीसे झरनेवाला जल, दान । **–ज्वर**–पु० कामज्वर; बल आदिका मद, नशा । **–द्विप**–पु० मस्त हाथी । **–धार**–पु० महाभारतमें उल्लिखित एक पर्वत । **–पति**–पु० इंद्र; विष्णु । **–प्रद**–वि० मत्त करनेवाला । **–प्रसेक,–प्रस्रवण**–पु० मदजल । **–भंग**–पु० घमंड चूर होना । **–भंजिनी**–स्त्री० शतमूली । **–भरा**–वि० (हिं०) मस्त; मादकताजनक । (स्त्री० 'मदभरी') । **–मत्त**–वि० मस्त, मतवाला, मदोन्मत । **–मत्तक**–पु० एक तरहका धतूरा । **–माता**–वि० (हिं०) मस्त, मदमत्त; कामुक । (स्त्री० 'मदमाती' ।) **–मुकुलित**–वि० नशे, मस्ती आदिसे अधमुँदी (आँखें) । **–मुकुलिताक्षी**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी आँखें नशेसे बंद-सी हो रही हों । **–मुक्(च्)**–दान-स्राव करनेवाला (हाथी) । **–मोहित**–वि० नशे या घमंडसे चूर । **–राग**–पु० कामदेव; मतवाला; मुर्गा । **–लेखा**–स्त्री० मदजलसे बननेवाली लकीर; एक वर्णवृत्त । **–वारण**–पु० मस्त हाथी । **–वारि**–पु० दान-वारि । **–विक्षिप्त**–वि० मस्त, मत्त । **–विह्वल,–विह्वलित**–वि० कामातुर । **–व्याधि**–स्त्री० मदात्यय । **–शाक**–पु० पोय । **–शौंडक**–पु० जाती फल । **–सार**–पु० शहतूतका पेड़ । **–स्थल**–पु० शराबकी दुकान । **–स्थान**–पु० मद्यालय । **–स्रावी(विन्)**–वि० दे० 'मदमुक' । **–हस्तिनी**–स्त्री० एक तरहका करंज । **–हेतु**–पु० मस्तीका हेतु, कारण; धायका पेड़ ।

मदअंतिका*–स्त्री० दे० 'मदयंतिका' ।

मदक–स्त्री० अफीमके सत्त और पानके योगसे बननेवाला एक नशीला पदार्थ जिसे तंबाकूकी तरह पीते हैं । **–ची**–वि० मदक पीनेवाला ।

मदकूक़–वि० (अ०) कूटा हुआ; दिक (क्षय)का रोगी ।

मदख़ूल–वि० (अ०) दाखिल किया हुआ, प्रविष्ट ।

मदख़ला–स्त्री० (अ०) वह स्त्री जो घरमें डाल ली गयी हो, रखेली ।

मदद–स्त्री० (अ०) सहायता; कुमक । **–ख़र्च**–पु० किसीके सहायतार्थ दिया जानेवाला धन; पेशगी । **–गार**–वि० सहायक ।

मदन–पु० (सं०) कामदेव; काम; प्रेम; वसंतकाल; आलिंगनका एक भेद; भ्रमर; खंजन; मैनफल; खैर; मौलसिरी; धतूरा; मोम । वि० मदकारक । **–कंटक**–पु० सात्त्विक अनुराग-जनित रोमांच । **–कदन**–पु० शिव । **–कलह**–पु० प्रेमकलह । **–काकुरव**–पु० कपोत । **–क्लिष्ट**–वि० कामार्त्त । **–गृह**–पु० भग; जन्मकुंडलीमें लग्नसे साँतवाँ स्थान । **–गोपाल**–पु० कृष्ण । **–चतुर्दशी**–स्त्री० चैत्रशुक्ला चतुर्दशी । **–तंत्र**– पु० कामशास्त्र । **–ताल**–पु० एक ताल । **–त्रयोदशी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला त्रयोदशी । **–दमन**–पु० शिव । **–दहन**–पु० कामको जला देनेवाले, शिव । **–दिवस**–पु० मदनोत्सव । **–द्वादशी**–स्त्री० चैत्रशुक्ला द्वादशी । **–द्विट्(ष्)**–पु० शिव । **–ध्वजा**–स्त्री० चैत्रकी पूर्णिमा । **–नालिका**–स्त्री० असती स्त्री । **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० खंजन । **–पाठक**–पु० कोयल । **–पीडा, बाधा**–स्त्री० कामव्यथा । **–फल**–पु० मैनफल । **–बान**–पु० (हिं०) बेलाका एक भेद । **–भवन**–पु० नक्षत्रोंका विशेष स्थान । **–मनोहर**–पु० मनहर छंद । **–मस्त**–पु० (हिं०) चंपेकी जातिका एक तीव्र गंधवाला पुष्पवृक्ष । **–मह**–पु० कामदेव संबंधी एक उत्सव । **–महोत्सव**–पु० आधुनिक होलीसे मिलता-जुलता एक प्राचीन उत्सव जो चैत्र-शुक्ला द्वादशीसे चतुर्दशीतक होता था; होली । **–मोहन**–पु० कृष्ण । **–रिपु**–पु० शिव । **–ललित**–वि० कामक्रीड़ामें संलग्न । पु० कामक्रीड़ा । **–ललिता**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–लेख**–पु० नायक-नायिकाका एक-दूसरेको लिखा हुआ प्रेमपत्र । **–शलाका**–स्त्री० कोयल; मैना । **–सदन**–पु० भग; जन्मकुंडलीमें लग्नसे सातवाँ स्थान । **–सारिका**–स्त्री० मैना । **–हरा**–स्त्री० एक मात्रिक वृत्त ।

मदनक–पु० (सं०) मैनफल; दौना; खैर; मौलसिरी; धतूरा; मोम ।

मदनलहरी–स्त्री० (आर्गैज्म) संभोगकी प्रबल वासना, कामोन्माद ।

मदनांकुश–पु० (सं०) लिंग; नखक्षत ।

मदनांतक–पु० (सं०) शिव ।

मदना–स्त्री० (सं०) सुरा; कस्तूरी; अतिमुक्त लता ।

मदनाग्रक–पु० (सं०) कोदो ।

मदनातपत्र–पु० (सं०) भग ।

मदनातुर–वि० (सं०) कामातुर ।

मदनायुध–पु० (सं०) भग; सुंदरी स्त्री ।

मदनारि–पु० (सं०) शिव ।

मदनालय–पु० (सं०) भग; कमल; कुंडलीमें सप्तम स्थान ।

मदनी–स्त्री० (सं०) सुरा; कस्तूरी । वि० (अ०) नागरिक । पु० मदीनेका रहनेवाला ।

मदनीय–वि० (सं०) नशा पैदा करनेवाला; प्रेम या राग उत्पन्न करनेवाला ।

मदनोत्सव–पु० (सं०) मदन-महोत्सव; होली ।

मदनोद्यान–पु० (सं०) प्रमोदवन ।

मदफ़न–पु० (अ०) दफन करनेकी जगह, वह गढ़ा जिसमें मुर्देको दफन करें, कब्र ।

मदफ़ून–वि० (अ०) दफन किया हुआ ।

मदयंतिका, मदयंती–स्त्री० (सं०) वनमल्लिका; (मेहदी ?) ।

मदयिता(तृ)–वि० पु० (सं०) नशा पैदा करनेवाला; मदोन्मत्त बनानेवाला; आनंदित करनेवाला ।

मदयित्नु–वि० (सं०) मादक । पु० कामदेव; मेघ; कलवार; मद्य ।

मदयून–वि० (अ०) देनदार, ऋणी ।

मदर*–पु० चढ़ाई, हमला ।

मदरसा–पु० (अ०) पढ़ानेकी जगह, पाठशाला ।

मदरास–पु० भारतके दक्षिण पूर्वी क्षेत्रके राज्य तमिलनाडु (भूतपूर्व मद्रास प्रांत या राज्य)की राजधानी ।

मदरासी–वि० मदरास या तमिलनाडुका, वहांका रहनेवाला ।

मदहोश–वि० मतवाला; हैरान; भीरु; बेहोश ।

मदांध–वि० (सं०) जो मस्ती या बल आदिके गर्वसे अंधा हो रहा हो ।

मदांबर–पु० (सं०) इन्द्रका हाथी; मस्त हाथी ।

मदांबु, मदांभ(स्)–पु० (सं०) महजल ।

मदाकुल–वि० (सं०) मस्त (हाथी) ।

मदाढ्य–वि० (सं०) मत्त । पु० ताड़का पेड़ ।

मदातंक, मदात्यय–पु० (सं०) अति मद्यपानसे होनेवाला एक रोग ।

मदानि*–वि० स्त्री० कल्याणकारिणी ।

मदापनय–पु० (सं०) नशा उतारना ।

मदार–पु० आक; (सं०) मस्त हाथी; सूअर; कामुक; एक गंधद्रव्य; धूर्त, ठग; (अ०) ग्रह-नक्षत्रोंका भ्रमणपथ; दायरा, मंडल; आधार, जिसपर किसी वस्तुकी स्थिति हो; धुरी ।

मदारिया–पु० दे० 'मदारी' ।

मदारी–पु० बाजीगर; बंदर-भालू नचानेवाला ।

मदालस–वि० (सं०) जो नशेके कारण सुस्त हो ।

मदालसा–स्त्री० (सं०) चंद्रवंशी राजा प्रतर्दनकी विदुषी, ब्रह्मवादिनी पत्नी जिसकी कथा मार्कंडेय पुराणमें वर्णित है । वि० स्त्री० मदसे अलसायी हुई ।

मदालापी(पिन्)–पु० (सं०) कोयल ।

मदालु–वि० (सं०) जिससे मद झरता हो; मस्त ।

मदि–स्त्री० (सं०) पटेला, सिरावन ।

मदिया†–स्त्री० दे० 'मादा' ।

मदिर–वि० (सं०) नशा, मस्ती पैदा करनेवाला; मदभरा । **–दृक्(श्),–नयन**–वि० सुंदर नेत्रोंवाला ।

मदिरा–स्त्री० (सं०) मद्य, शराब; वसुदेवकी एक पत्नी । **–गृह**–पु०,**–शाला**–स्त्री० शराबखाना । **–सख**–पु० आम्रवृक्ष ।

मदिराक्षी–वि० स्त्री० (सं०) मत्त, मदभरी आँखोंवाली ।

मदिरायतनयन–वि० (सं०) बड़े-बड़े और मदभरे नयनोंवाला ।

मदिरालय–पु० (सं०) शराबखाना ।

मदिरोत्कट, मदिरोन्मत्त–वि० (सं०) नशेमें चूर ।

मदीना–पु० (अ०) नगर; अरबका एक प्रमुख नगर जहाँ मुहम्मदका मजार है । **–मुनौवरा**–पु० मदीना ।

मदीय–वि० (सं०) मेरा ।

मदीला*–वि० नशेमें चूर, मत्त; † मदभरा, उन्मादकारी (मदीली चितवन, अमर०) ।

मदुकल–पु० एक दोहेका नाम । गयंद ।

मदोत्कट–वि० (सं०) मत्त; मस्त (हाथी) । पु० मस्त हाथी; पंडुकी; एक तरहकी शराब ।

मदोद्धत–वि० (सं०) नशे या गर्वसे चूर ।

मदोन्मत्त–वि० (सं०) मतवाला, मदांध ।

मदोर्जित–वि० (सं०) घमंडमें फूला हुआ ।

मदोल्लापी(पिन्)–पु० (सं०) कोयल ।

मदोवै*–स्त्री० मंदोदरी ।

मद्(त्)–सर्व० (सं०) मैं ('अस्मद्'का एक रूप) ।

मद्गु–पु० (सं०) माँगुर मछली; एक जलपक्षी; पेड़पर रहनेवाला एक जंतु; एक वर्णसंकर जाति ।

मद्गुर–पु० (सं०) माँगुर मछली; एक वर्णसंकर जाति । **–प्रिया**–स्त्री० सिंधी मछली ।

मद्द–स्त्री० (अ०) आड़ी लकीर जिसे खींचकर नीचे लेखा या लेख लिखना आरंभ करते हैं; लेखकी समाप्तिपर खींची जानेवाली लकीर; शीर्षक; विभाग; खाता; खाना । **–(द्दे) नज़र**–वि० जो निगाहके सामने हो; उद्दिष्ट, लक्ष्य । **–फ़ाजिल**–स्त्री० बेकार मद्द, बेकार चीज । **–मुकाबिल**–वि० बराबरीका दावेदार, प्रतिस्पर्धी ।

मद्द–पु० (अ०) ज्वार । **–व जज़र**–पु० ज्वार-भाटा ।

मद्दत*–स्त्री० दे० 'मदद' ।

मद्दा–वि० दे० 'मंदा' ।

मद्दाह–वि० (अ०) मदद करनेवाला; प्रशंसक ।

मद्दाही–स्त्री० प्रशंसा, तारीफ करना ।

मद्दूसाही–पु० एक तरहका पुराना पैसा ।

मद्धिम, मद्धम–वि० मध्यम; कम अच्छा; मंदा ।

मद्धे–अ० बीचमें; मद, खातेमें ।

मद्य–पु० (सं०) महुए आदिकी पाँससे खींचा हुआ मादक अर्क, सुरा, शराब । **–कीट**–पु० सिरकेमें उत्पन्न कीड़ा । **–कुंभ**–पु० दे० 'मधुभांड' । **–द्रुम**–पु० माडका पेड़ । **–निर्माणशाला**–स्त्री० (डिस्टिलरी) शराब तैयार करनेकी जगह, अभिस्रावणी । **–पंक**–पु० शराबकी पाँस (?) । **–प**–वि० मद्य पीनेवाला, शराबी । **–पान**–पु० शराब पीना । **–पायी(यिन्)**–वि० मद्यप, शराबी । **–पुष्प,–पुष्पी**–स्त्री० धौ, धातकी । **–बीज**–पु० खमीर । **–भांड,–भाजन**–पु० शराब रखनेका घड़ा, मटका, मधुघट । **–मंड**–पु० शराबका फेन; दे० 'मद्यपाशन' । **–वासिनी**–स्त्री० दे० 'मद्यपुष्पा' । **–विक्रय**–पु० शराबकी बिक्री । **–संधान**–पु० शराब चुआना, मद्यव्यवसाय ।

मद्यपाशन–पु० (सं०) गजक, चाट ।

मद्याक्षेप–पु० (सं०) शराब पीनेकी लत ।

मद्यामोद–पु० (सं०) बकुल वृक्ष ।

मद्रंकर–वि० (सं०) मंगलकारी ।

मद्र–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद; मद्र नरेश; मद्रवासी; हर्ष; मंगल । **–सुता**–स्त्री० माद्री ।

मद्रक–पु० (सं०) मद्रवासी; मद्रका राजा । वि० मद्रमें उत्पन्न ।

मद्रिका–स्त्री० (सं०) मद्र देशकी स्त्री ।

मद्रास–पु० दे० 'मदरास' ।

मध, मधि*–पु०, वि० अ० दे०, 'मध्य' ।

मधु–पु० (सं०) शहद; मद्य; पुष्परस; वसंत ऋतु; चैतका महीना; जल; सोमरस; दूध; मुलेठी; शर्करा; अशोक; विष्णुके हाथों मारा गया एक दैत्य । वि० मीठा । **–कंठ**–पु० कोयल । **–कर**–पु० भौंरा; कामी पुरुष; रसिक व्यक्ति; एक तरहका चावल । **–करी**–स्त्री० भ्रमरी; पके अन्नकी भिक्षा जो सन्न्यासीके लिए विहित है । **–करी(रिन्)**–पु० भ्रमर । **–कर्कटिका**–स्त्री० बिजौरा नीबू । **–कर्कटी**–स्त्री० बिजौरा नीबू; खजूरका फल । **–कार,–कारी(रिन्)**–पु० मधुमक्खी; मधुपर्णी । **–किरी**–स्त्री० एक राग । **–कुक्कुटी**–स्त्री० एक नीबू जिसका फूल बदबूदार होता है । **–कुल्या**–स्त्री० पुराणोक्त एक नदी । **–कृत्**–पु० मधुमक्खी; भौंरा । **–कैटभ**–पु० विष्णुके कानके मैलसे उत्पन्न दो दैत्य–मधु और कैटभ । **–कोश,–कोष**–पु० शहदका छत्ता । **–क्रम**–पु० मधुमक्खीका छत्ता । **–क्षीर,–क्षीरक**–पु० खजूर । **–खर्जूरिका,–खर्जूरी**–पु० खजूरका एक भेद । **–गंध**–पु० अर्जुनका पेड़; मौलसिरी । **–गंधि,–गंधिक**–वि० मीठी सुगंधवाला । **–गायन**–पु० कोयल । **–गुंजन**–पु० शोभांजन वृक्ष । **–ग्रह**–पु० वाजपेय यज्ञके अंतर्गत होनेवाला शहदका होम । **–घोष**–पु० कोयल । **–चक्र**–पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता । **–च्छदा**–स्त्री० मयूर शिखा । **–ज**–पु० मोम । **–जा**–स्त्री० मिसरी; पृथ्वी । **–जालक**–पु० मधुमक्खीका छत्ता । **–जित्**–पु० विष्णु । **–जीवन**–पु० बहेड़ेका पेड़ । **–तरु,–तृण**–पु० ईख । **–त्रय**–पु० तीन मीठी चीजें–शहद, घी और शर्करा । **–दीप**–पु० कामदेव । **–दूत**–पु० आमका पेड़ । **–दूती**–स्त्री० पाटला । **–द्रुम**–पु० महुएका पेड़; आमका पेड़ । **–द्विट्(ष्)**–पु० विष्णु या कृष्ण । **–धातु**–स्त्री० माक्षिक । **–धूलि**–स्त्री० खाँड़, शकर । **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए कल्पित शहद आदिकी गाय । **–नाडी**–स्त्री० मधुमक्खीके छत्तेका कोष । **–नापित**–पु० एक संकर जाति, मोदक । **–नेता(तृ)**–पु० भौंरा । **–प**–पु० मधुकर, भ्रमर; * उद्धव; देवता (कविप्रि०) । वि० शराबी (कविप्रि०) । **–पटल**–पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता । **–पति**–पु० कृष्ण । **–पर्क**–पु० दही, घी, शहद, जल और शकरका योग जो देवता और अतिथिके सामने रखा जाता है । **–पर्क्य**–वि० मधुपर्कका अधिकारी । **–पर्णिका,–पर्णी**–स्त्री० नीलका पौधा; गुड़ुच; गंभारी । **–पवन**–पु० वासंती हवा । **–पाका**–स्त्री० खरबूजा । **–पात्र**–पु० पान-पात्र (मद्यका); शराब रखनेका बरतन । **–पायी(यिन्)**–पु० भौंरा । **–पीलु**–पु० अखरोट । **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० मथुरा । **–पुष्प**–पु० महुआ; अशोक; मौलिसरी; सिरिस । **–पुष्पा**–स्त्री० नागदंती; धौ । **–प्रणय**–पु० शराबकी लत । **–प्रतीका**–स्त्री० समाधिकी एक भूमि । **–प्रमेह**–पु० मधुमेह । **–प्राशन**–पु० एक संस्कार जिसमें नवजात शिशुको मधु चटाया जाता है । **–प्रिय**–पु० बलराम; अक्रूर; भूमि जंबु । **–फल**–पु० मीठा नारियल । **–फलिका**–स्त्री० मीठा खजूर । **–बन**–पु० (हिं०) दे० 'मधुवन' । **–बहुला**–स्त्री० माधवी लता । **–बाला**–स्त्री० भ्रमरी; शराब पिलानेवाली लड़की । **–बिंबी**–स्त्री० कुँदरू । **–बीज**–पु० अनार । **–भांड**–पु० शराबका बरतन । **–भार**–पु० एक मात्रिक छंद । **–भित्(द्)**–पु० विष्णु । **–भूमिक**–पु० मधुमती भूमिकामें स्थित योगी । **–मक्खी**–स्त्री० (हिं०) शहदकी मक्खी । **–मक्ष**–पु० भ्रमर । **–मक्षा**–स्त्री० भ्रमर । **–मक्षिका,–मक्षी**–स्त्री० शहदकी मक्खी । **–मज्ज(ज्जन्)**–पु० अखरोटका पेड़ । **–मत्त**–वि० शराबके नशेमें चूर; वसंतसे उद्दीप्त । **–मथन**–पु० विष्णु । **–मल्लिका**–स्त्री० मालती लता । **–मस्तक**–मैदेमें घी-शहद मिलाकर बनायी जानेवाली एक तरहकी मिठाई । **–मात**–पु० एक राग । **–०सारंग**–पु० सारंग रागका एक भेद । **–माधव**–पु० वसंतके दो मास–चैत और वैशाख; एक संकर राग । **–माधवी**–स्त्री० एक तरहकी शराब; एक रागिनी । **–माध्वीक**–पु० एक

तरहकी शराब । **–मारक**–पु० भ्रमर । **–मालती**–स्त्री० मालती लता । **–मास**–पु० चैतका महीना; वसंत काल । **–मूल**–पु० रतालू । **–मेह**–पु० पेशाबके साथ शकर आनेका रोग, शर्करा प्रमेह । **–मेही(हिन्)**–वि० मधुमेहका रोगी । **–यष्टिका**–स्त्री० मुलेठी । **–यष्टी**–स्त्री० ईख । **–यामिनी**–स्त्री० वर-वधूकी प्रथम मिलनरात्रि । **–रस**–वि० मधुर रसवाला, मीठा । पु० ईख; ताड़ । **–रसा**–स्त्री० मूर्वा; दाख; गंभारी; दुधिया । **–रसिक**–पु० भौंरा । **–राज***–पु० भौंरा । **–रिपु**–पु० विष्णु । **–रीछ**–पु० (हिं०) दक्षिणी अमेरिकाका एक जंतु जो शक्लमें रीछसे मिलता और शहदका शौकीन होता है । **–लग्न**–पु० लाल सहजन । **–लिट्(ह्),–लेह,–लेही(हिन्),–लोलुप**–पु० भौंरा । **–वन**–पु० वह वन जिसमें मधुदैत्य रहता था और जहाँ शत्रुघ्नने मथुरा नगरी बसायी; किष्किधाका वह वन जिसमें सुग्रीव रहते थे; कोयल । **–वल्ली**–स्त्री० मुलेठी । **–वाक्(च्)**–पु० कोयल । **–वार**–पु० शरावका दौर, वार-वार मद्य पीनेका क्रम । **–विद्विट्(ष्)**–पु० विष्णु । **–व्रत**–पु० भौंरा । **–शर्करा**–स्त्री० शहदसे वनायी हुई शकर । **–शाख**–पु० महुएका पेड़ । **–शाला**–स्त्री० मदिरालय, मयखाना । **–शिष्ट,–शेष**–पु० मोम । **–श्री**–स्त्री० वसंतश्री । **–श्रेणी**–स्त्री० मूर्वा । **–श्वासा**–स्त्री० जीवंती । **–ष्ठील**–पु० महुएका पेड़ । **–सख,–सहाय,–सारथि**–पु० कामदेव । **–सिक्थक**–पु० मोम । **–सुहृद्**–पु० कामदेव । **–सूदन**–पु० मधु दैत्यको मारनेवाले कृष्ण; भौंरा । **–सूदनी**–स्त्री० पालकका साग । **–स्थान**–पु० मधुमक्खियोंका छत्ता । **–स्रव**–पु० महुएका पेड़ । वि० जिससे शहद या मिठास झड़े । **–स्रवा**–स्त्री० मुलेठी; संजीवनी बूटी; मूर्वा । **–स्रवा(वस्)**–पु० महुएका पेड़ । **–स्वर**–पु० कोयल । **–हा(हन्)**–पु० विष्णु; मधु निकालनेवाला; एक शिकारी चिड़िया; दैवज्ञ ।

मधुक–पु० (सं०) महुआ; मुलेठी । वि० मीठा; सुरीला; शहदके रंगका ।

मधुका–स्त्री० (सं०) मुलेठी; मधु; कृष्णपर्णी लता ।

मधुमती–स्त्री० (सं०) एक नदी; समाधिकी वह अवस्था जव रज और तमका लोप होकर सत्त्व गुणका पूर्ण प्रकाश होता है; तंत्रमें वर्णित एक नायिका या योगिनी; मधु दैत्यकी कन्या; एक नदी ।

मधुमय–वि० (सं०) मधु, मिठाससे भरा हुआ ।

मधुमान्(मत्)–वि० (सं०) मीठा; मधुयुक्त; प्रिय ।

मधुर–वि० (सं०) माधुर्ययुक्त, मीठा; प्रिय; सुंदर; कोमल, तीव्रतारहित, कानोंको प्रिय लगनेवाला (स्वर); प्रियदर्शन, सौम्य । पु० मिठास; मीठी वस्तु; गुड़; मीठा पेय; धान; विष; महुआ । **–कंटक**–पु० एक मछली । **–कंठी(ठिन्)**–वि० मीठे स्वरसे गानेवाला । **–कर्कटी**–स्त्री० मीठा नीवू । **–गात्र**–वि० सुंदर । **–जंवीर**–पु० जँभीरी नीवूका एक भेद । **–त्रय**–पु० दे० 'मधुत्रय' । **–त्वक्(च्)**–पु० धौका पेड़ । **–प्रियदर्शन**–पु० शिव । **–फल**–पु० वेरका एक भेद, राजवदर । **–वीजपूर**–पु० एक तरहका नीवू । **–भाषी(षिन्)**–वि० जिसकी वोलीमें मिठास हो । (स्त्री० 'मधुरभाषिणी' ।) **–वल्ली**–स्त्री० नीवूका एक भेद । **–स्रवा**–स्त्री० पिंडखजूर । **–स्वन**–वि० मधुर शब्द करनेवाला । पु० शंख । **–स्वर**–वि० मीठे स्वरवाला ।

मधुरई*–स्त्री० मिठास, माधुर्य ।

मधुरक–वि० (सं०) मधुर; प्रिय । पु० जीवक वृक्ष ।

मधुरता–स्त्री०, **मधुरत्व**–पु० (सं०) मिठास, माधुर्य ।

मधुरा–स्त्री० मथुरा नगरी; मुलेठी; शतावर; सौंफ; मसूर; पालक; कदली-वृक्ष । वि० मीठा, मधुर ।

मधुराई*–स्त्री० मधुरता, मिठास ।

मधुराना*–अ० क्रि० मिठास पैदा होना ।

मधुरान्न–पु० (सं०) मिष्टान्न ।

मधुराम्लक–पु० (सं०) आमड़ा ।

मधुरिका–स्त्री० (सं०) वन सौंफ ।

मधुरित–वि० (सं०) मधुर वनाया हुआ, जिसमें मिठास पैदा की गयी हो ।

मधुरिन–स्त्री० (ग्लिसरीन) विना रंगका एक मीठा-सा द्रव पदार्थ जो प्रायः दवाके काममें आता है तथा विस्फोटकोंके निर्माणमें भी प्रयुक्त होता है, ग्लिसरीन ।

मधुरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) मिठास, माधुर्य ।

मधुरी*–स्त्री० दे० 'माधुरी' । * वि० स्त्री० मीठी, रुचिकर ।

मधुल–वि० (सं०) दे० 'मधुर' । पु० मद्य ।

मधुलिका–स्त्री० (सं०) राई ।

मधूक–पु० (सं०) महुएका पेड़; महुएका फूल; भ्रमर; मुलेठी ।

मधूकरी–स्त्री० भ्रमरी; दे० 'मधुकरी' ।

मधूच्छिष्ट–पु० (सं०) मोम ।

मधूत्थ–वि० (सं०) शहदसे वना हुआ । पु० मोम ।

मधूत्थित–पु० (सं०) मोम ।

मधूत्सव–पु० (सं०) वसंतोत्सव ।

मधूद्यान–पु० (सं०) वसंतोद्यान ।

मधूल–पु० (सं०) जलमहुआ ।

मधूलिका–स्त्री० (सं०) मूर्वा; मुलेठी; मधूली (गेहूँ)से वनायी हुई शराव ।

मधूली–स्त्री० (सं०) आमका पेड़; पानीमें पैदा होनेवाली मुलेठी; मध्य देशका गेहूँ ।

मध्यंदिन–पु० (सं०) दोपहर, मध्याह्न ।

मध्य–पु० (सं०) वस्तुका बीचका भाग; केंद्र; देहका मध्य भाग, कमर; वस्तुका भीतरी भाग; बीचकी अवस्था; संगीतमें बीचका सप्तक; नृत्यमें मध्यम गति । वि० बीचका, दरमियानी; अंतर्वर्ती; मध्यस्थ; न्याय्य । * अ० बीचमें । **–कर्ण**–पु० अर्द्ध व्यास । **–कुरु**–पु० उत्तर कुरु और दक्षिण कुरुके बीचका देश । **–गंध**–पु० आमका पेड़ । **–ग**–पु० (ब्रोकर) वह व्यक्ति जो कमीशन लेकर खरीदनेवाले और वेंचनेवालेके बीचमें पड़कर सौदा पटा देनेका काम करे, दलाल । **–गत**–वि० बीचमें स्थित, बीचका । **–जन**–पु० (मिडिलमैन) दो पक्षों या दलोंमें संपर्क स्थापित करानेवाला आदमी; वह व्यक्ति जो उत्पादकों तथा उपभोक्ताओंके बीचमें पड़कर मालके वितरण, खरीद-बिक्री आदिमें सहायता करता है; बिचौलिया । **–ज्या**–स्त्री० मध्यंदिन रेखा । **–तापिनी**–स्त्री० एक उपनिषद् । **–दंत**–पु० सामनेका दाँत । **–दिन**–पु० दोपहर । **–दीपक**–पु० दीपक अलंकारका एक भेद । **–देश**–पु० हिमालय और विंध्य तथा कुरुक्षेत्र और प्रयागके बीचका देश; बीचका भाग । **–नगर**–पु० नगरका भीतरी भाग । **–पदलोपी(पिन्)**–पु० दे० 'मध्यम पदलोपी' । **–पात**–पु० एक प्रकारका पात (ज्यो०); परिचय । **–पूर्व**–पु० मध्यका पूर्वार्ध (मध्यपूर्व काल); (मिडिल-ईस्ट) यूरोपीयोंकी दृष्टिसे एशियाका दक्षिण-पश्चिमी तथा अफ्रिकाका उत्तर-पूर्वी भाग । **–प्रसूता**–वि० स्त्री०, वह गाय जिसे बच्चा दिये कुछ दिन हुए हों । **–भक्त**–वि० (भोजनके) बीचमें खायी हुई (दवा) । **–भाग**–पु० बीचका भाग । **–भाव**–पु० बीचकी अवस्था । **–मणि**–पु० हारका मुख्य रत्न । **–मध्या**–स्त्री० एक मूर्च्छना (संगीत) । **–मान**–पु० एक ताल । **–युग**–पु० प्राचीन और अर्वाचीन कालके बीचका समय; भारतके इतिहासमें राजपूतकालसे मुगलकालतकका समय; यूरोपके इतिहासमें ६०० से १५०० ईसवीतकका काल । **–युगीन**–वि० (मिडीव्हल) इतिहासके मध्ययुगसे संबंध रखनेवाला, मध्ययुगका । **–रात्र**–पु०,**–रात्रि** स्त्री० आधी रात । **–लोक**–पु० मर्त्यलोक, भूलोक । **–वय(स्)**–पु०, स्त्री० अधेड़ उम्र । **–वया(यस्)**–वि० अधेड़ उम्रवाला । **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० बीचमें स्थित, केंद्रवर्ती । पु० पेच; मध्यस्थ । **–वित्त**–वि० मध्य श्रेणीका, न अमीर, न गरीब । **–वित्तवर्ग**–पु० (बूर्ज्वा) समाजके उन लोगोंकी श्रेणी जो न अमीर कहे जा सकते हैं और न गरीब, तथा जो प्रायः बुद्धिजीवी होते हैं । **–वृत्त**–पु० नाभि । **–स्थ**–पु० बिचुआ; तटस्थ, उदासीन; (मीडियेटर) वह व्यक्ति जो दो पक्षोंके बीचमें पड़कर, दोनोंको समझा-बुझाकर उनका आपसी झगड़ा या विरोध दूर करनेका प्रयत्न करे । वि० मध्यमें स्थित । **–स्थल**–पु० मध्यभाग; कमर ।

मध्यम–वि० (सं०) बीचका, मँझला; मझोला; न बढ़िया, न घटिया । पु० सात स्वरोंमेंसे चौथा; तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक

(सा०); एक राग; कमर (तनुमध्यम); माध्यम, जरिया 'हिंदीके मध्यमसे नवोत्थानका सन्देश'–हि० कवितामें युगांतर। **–पद**–पु० समासका वीचका पद। **–०लोपी(पिन्)**–पु० समास जिसमें पूर्व पदसे उत्तर पदका संवंध जोड़नेवाला पद लुप्त हो (स्वर्णकलश–सोनेका वना हुआ कलश, छायातरु)। **–पांडव**–पु० अर्जुन। **–पुरुष**–पु० पुरुषवाचक सर्वनामके तीन भेदोंमेंसे एक, वह पुरुष जिससे वात की जाय। **–रात्र**–पु० आधीरात। **–लोक**–पु० मर्त्यलोक, भूलोक, धरती। **–वय(स्)**–पु०, स्त्री० अधेड़ उम्र। **–वयस्क**–वि० अधेड़, मध्यम वयवाला। **–संग्रह**–पु० गहने-कपड़े आदि भेजकर परस्त्रीको फुसलाना। **–साहस**–पु० मनुके अनुसार कठोर और नरमके वीचका दंड–पाँच सौ पणतकका जुर्माना।

मध्यमक–वि० (सं०) वीचका; सवका। पु० किसी चीजका भीतरी भाग।

मध्यमता–स्त्री० मध्यम होनेका भाव।

मध्यमा–स्त्री० (सं०) वीचकी उँगली; वह लड़की जो रजस्वला हो चुकी हो; नायकके प्रेम या दोषके अनुसार उसका आदर-मान करनेवाली स्त्री; कमलकी कर्णिका।

मध्यमाहरण–पु० (सं०) आयत्त मान निकालनेकी क्रिया (वी० ग०)।

मध्यमिका–स्त्री० (सं०) रजःप्राप्त लड़की।

मध्यमीय–वि० (सं०) मध्य संवंधी; केंद्रीय।

मध्यमेश्वर–पु० (सं०) काशीमें स्थित एक शिवलिंग।

मध्यस्थता–स्त्री० (सं०) विचवई; तटस्थता।

मध्या–पु० (सं०) रजःप्राप्त लड़की; विचली उँगली; वह नायिका जिसमें काम और लज्जा समान हों।

मध्यान्तर–पु० अन्तराल, लघु अवकाश, अवधि। **–रेखा**–स्त्री० (मेरीडियन) वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवोंसे होती हुई किसी स्थानके पाससे पृथ्वीके चारों ओर गयी हो।

मध्यावकाश–पु० (रिसेस) दे० 'अल्पावकाश'।

मध्यावधि–वि० अवधिके वीचमें, समयसीमा समाप्त होनेके पूर्व, ही होनेवाला (–चुनाव) (मिड टर्म)।

मध्याह्न–पु० (सं०) दोपहर। **–भोजन**–पु० (लंच) दोपहरमें किया जानेवाला मुख्य भोजन।

मध्याह्नोत्तर–पु० (सं०) तीसरा पहर, दोपहरके वादका समय।

मध्ये–अ० दे० 'मद्धे'।

मध्व–पु० एक संप्रदाय-प्रवर्तक और वेदांत-सूत्रोंपर भाष्य लिखनेवाले वैष्णव आचार्य। **–संप्रदाय**–पु० मध्व द्वारा प्रवर्तित वैष्णव-संप्रदाय।

मध्वक–पु० (सं०) मधुमक्खी।

मध्वाचार्य–पु० दे० 'मध्व'।

मध्वालु, मध्वालुक–पु० (सं०) एक तरहका आमका पेड़।

मध्वावास–पु० (सं०) आमका पेड़।

मध्वाशी(शिन्)–पु० (सं०) शहद या मिठाई खानेवाला।

मध्वासव–पु० (सं०) महुएकी वनी शराव।

मध्वासवनिक–पु० (सं०) शौंडिक।

मध्वास्वाद–वि० (सं०) शहदके स्वादवाला।

मध्विजा–स्त्री० (सं०) मद्य।

मनःकल्पित–वि० (सं०) मनगढ़ंत, फर्जी।

मनःक्षेप–पु० (सं०) मनका क्षोभ।

मनःपति–पु० (सं०) विष्णु।

मनःपाप–पु० (सं०) मानसिक पाप।

मनःपीडा–स्त्री० (सं०) मानसिक कष्ट।

मनःपूत–वि० (सं०) मन जिसे पवित्र मानता हो, अंतरात्मा द्वारा अनुमोदित (मनःपूतं समाचरेत्)।

मनःप्रणीत–वि० (सं०) मनको प्रिय; कल्पित।

मनःप्रसाद–पु० (सं०) चित्तकी प्रसन्नता।

मनःप्रसूत–वि० (सं०) मनःकल्पित।

मनःप्रिय–वि० (सं०) मनको प्रिय।

मनःप्रीति–स्त्री० (सं०) चित्तकी प्रसन्नता।

मनःशक्ति–स्त्री० (सं०) मनोवल।

मनःशिल–पु० (सं०) मैनसिल।

मनःशिला–स्त्री० (सं०) मैनसिल।

मनःशीघ्र–वि० (सं०) मनकी तरह तेज।

मनःसंकल्प–पु० (सं०) दिलकी इच्छा।

मनःसंस्कार–पु० (सं०) मनपर पड़नेवाला प्रभाव; मनका परिष्कार।

मनःसंग–पु० (सं०) आसक्ति।

मनःसंताप–पु० (सं०) ग्लानि; अफसोस।

मनःसिद्धि–स्त्री० (सं०) एक देवीका नाम।

मनःसुख–वि० (सं०) मनको प्रिय। पु० मनका सुख।

मनःस्थैर्य–पु० (सं०) मनकी स्थिरता, दृढ़ता।

मन–पु० चालीस सेरका वजन; * दे० 'मणि'।

मन(स्)–पु० (सं०) ज्ञान, संवेदन, संकल्प आदिकी साधनरूप अंतरिंद्रिय, चित्त; अंतःकरणकी संकल्प-विकल्प करनेवाली वृत्ति (वै०); इच्छा, जी। ('मन' शव्दसे वने हुए नीचे लिखे सामासिक शव्दोंका प्रयोग केवल हिंदीमें होता है।)**–कामना**–स्त्री० दे० 'मनोकामना'। **–गढ़ंत, घड़ंत**–वि० मनका गढ़ा हुआ, कल्पित। **–चला**–वि० साहसी, हौसलेवाला; निडर; मनमौजी; चंचल चित्तवाला, आकर्षक वस्तुपर तुरत ललचाने और उसे प्राप्त करनेको खतरा उठानेको तैयार। **–चाहा**– वि० मनका चाहा हुआ, मनोभिलषित। **–चीता**–वि० सोचा हुआ, चाहा हुआ, मनभाया। **–जात**–पु० मनोभव, कामदेव। **–वांछित**–वि० दे० 'मनोवांछित। **–भाया**–वि० मनको भानेवाला, मनोनुकूल, प्रिय। **–भावता,–भावन***–वि० जो मनको भाये, प्रिय लगे, प्यारा। (स्त्री० 'मनभावती'।)**–मति**–वि० जो मन कहे वह करनेवाला, स्वच्छंद। **–मथन**–पु० कामदेव। **–मानता**–वि० मनमाना। **–माना**–वि० जो मनको भाये, रुचे; जो मनमें आये, जो जी चाहे। अ० यथेच्छ, जितना जी चाहे। (स्त्री० 'मनमानी'।) **–मानी**–स्त्री० मनमाना काम। **–०घर जानी**–स्त्री० स्वेच्छापूर्ण काररवाई। **–मुखी***–वि० मनमौजी। **–मुटाव**–पु० मनमें मैल या वुराई आ जाना, वैमनस्य। **–मोदक**–पु० मनका लड्डू, खयाली पुलाव। **–मोहन**–वि० मनको मोहनेवाला, प्यारा। (स्त्री० 'मनमोहनी'।) पु० कृष्ण। **–मौजी**–वि० अपनी मौजसे, अपने इच्छानुसार काम करनेवाला, स्वच्छंद। **–रंज***–पु० दे० 'मनोरंजन'। **–रंजन***–वि० मनोरंजक। पु० दे० 'मनरंजन'। **–रोचन***–वि० मन लुभानेवाला। **–लाडू***–पु० मन-मोदक। **–हर**–वि० दे० 'मनोहर'। पु० घनाक्षरी छंद। **–हरण**–वि० मनोहर। पु० मनको हरने, मोहनेकी क्रिया; एक वर्णवृत्त। **–हरन**–वि०, पु० दे० 'मनहरण'। **–हार,–हारि**–वि० दे० 'मनोहारी'। **मु०** (किसीसे)**–अटकना, –उलझना**–किसींपर दिल आना, प्रेम होना। (किसीपर)**–आना**–किसीपर दिल आना। **–कच्चा करना**– दिल छोटा करना, हिम्मत हारना। **–करना**–इच्छा होना, जी चाहना। **–का कच्चा**–कमजोर दिलका। **–का मारा**–खिन्न-हृदय। **–का मैल**–वैर-वुग्ज; दुर्भावना। **–का मैला**–खोटे, वुरे दिलका। **–की मनमें रहना**–इच्छा पूरी न होना, मनका चाहा पूरा न होना। **–की मौज**–मनकी लहर। **–के लड्डू खाना**–न होनेवाली वातकी आशा करके प्रसन्न होना, खयाली पुलाव पकाना। **–चलना**–जी चाहना, इच्छा होना। **–डोलना**–इच्छा होना, ललचना; (मनका) विचलित होना। **–देना**–मन लगाना। **–धरना***–ध्यान देना। **–फटना**–चाह-प्रीति न रहना, विरक्ति हो जाना। **–वढ़ना**–हौसला वढ़ना, उत्साहित होना। **–वढ़ाना**–उत्साह वढ़ाना, वढ़ावा देना। **–भरना**–तृप्ति होना; अघाना; तुष्टि, समाधान होना। **–भाना**–रुचना, अच्छा लगना। **–मानना**–संतोष होना; निश्चय होना; भाना; दिल मिलना, प्रीति होना; अक्ल ठिकाने लगना। **–मारना**–इच्छाओंको दवाना, मनोनिग्रह करना। **–मारे(हुए)**–खिन्नचित्त, उदास होकर। **–मिलना**–रुचि, प्रवृत्तिमें समानता होना; प्रीति होना। **–में आना**–खयाल उठना, इच्छा होना। **–में जमना**–जँचना, सही लगना। **–में**

वसना–निरन्तर ध्यानमें रहना । **–को छूना**–चित्तको प्रभावित, विचलित या पुलकित करना ।**–में मैल आना**–(किसीके विषयमें) मनमें बुराई, दुर्भाव पैदा होना । **–मैला करना**– उदास होना; मनमें दुर्भाव लाना । **–मैला होना**–किसीके बारेमें खयालका खराब होना, खिन्न होना । **–मोहना**–मन लुभाना । **–लाना***–मन लगाना । **–से उतरना**–मनमें अनादर या तिरस्कार हो जाना । **–हरना**–मन मोहना । **–ही मन**–अंदर ही अंदर, चुपचाप । **–होना**–इच्छा होना ।

मनई|–पु० आदमी, मानव ।

मनकना–अ० क्रि० हिलना, हाथ-पाँव आदिसे कोई चेष्टा करना–'.. जापता करन हारे नेकहू न मनके'–भूषण ।

मनका–पु० माला, सुमिरनी आदिका दाना, गुरिया ।

मनकूला–वि० स्त्री० (अ०) चर, चल, जिसे दूसरी जगह ले जा सकें । **–जायदाद**–स्त्री० चल संपत्ति ।

मनकूहा–वि० स्त्री० (अ०) निकाह की हुई, विवाहिता (स्त्री) ।

मनज़्म–वि० (अ०) नज्म किया हुआ, छन्दोबद्ध ।

मनन–पु० (सं०) सोचना; समझनेके लिए बार-बार विचार करना; अनुमान । **–शील**–वि० जिसे मनन करनेकी आदत हो; विचारशील ।

मननीय–वि० (सं०) मनन करने योग्य ।

मनवाँ–पु० नरमा, देवकपास ।

मनवाना–स० क्रि० माननेको प्रेरित करना; मनानेका काम कराना ।

मनशा–पु० (अ०) इच्छा, इरादा; भाव, विचार ।

मनश्चक्षु–पु० (सं०) मनकी आँख, अंतर्दृष्टि ।

मनसना*–स० क्रि० इच्छा, इरादा करना ।

मनसब–पु० (अ०) पद, उहदा; अधिकार; दरजा; सेवा; वंशपरंपरासे मिलनेवाली वृत्ति । **–दार**–पु० अधिकारी; मनसब (वृत्ति) पानेवाला ।

मनसबी–वि० मनसब, पदसे संबद्ध (फर्ज़े मनसबी–पद-संबंधी कर्तव्य) ।

मनसा*–स्त्री० मन; इच्छा; अभिलाष; इरादा; अभिप्राय; बुद्धि । वि० मनसे उत्पन्न, मानस । (सं०) जरत्कारु मुनिकी पत्नी और वासुकि नागकी बहिन । अ० मनसे, मनके द्वारा । – **–पंचमी**–स्त्री० आषाढ़-कृष्ण पंचमी । **–वाचा-कर्मणा**–अ० मन, वचन और कर्मके द्वारा ।

मनसाना–अ० क्रि० उत्साहित होना, उमंगमें आना; दे० 'मनुसाना' ।

मनसायन|–पु० चहल-पहल । वि० जहाँ चहल-पहल हो ।

मनसिकार–पु० (सं०) मनमें ग्रहण करना ।

मनसिज–पु० (सं०) काम; कामदेव; चन्द्रमा ।

मनसिमंद–वि० (सं०) जिसका प्रेम या नेह शिथिल हो ।

मनसिशय–पु० (सं०) काम ।

मनसूख़–वि० (अ०) रद्द किया हुआ, काटा हुआ (नस्ख़–रद्द करना) ।

मनसूख़ी–स्त्री० मनसूख होनेका भाव ।

मनसूब– वि० (अ०) जिससे निस्बत की गयी हो, संबद्ध; मँगेतर ।

मनसूबा–पु० योजना, तजवीज; जोड़-तोड़, युक्ति; इरादा । **–बाज़**–वि० योजना बनानेवाला, युक्ति सोचनेवाला ।

मनसूर–पु० (अ०) नवीं शतीका एक प्रसिद्ध मुसलमान सूफी जो 'अनलहक़' (अहं ब्रह्मास्मि) कहा करता था और इस अपराधमें खलीफाके हुक्मसे सूलीपर चढ़ा दिया गया । वि० विजयी ।

मनःकांत–वि० (सं०) प्यारा, मनको प्रिय लगनेवाला ।

मनःकाम–पु० (सं०) मनोरथ, मनकी इच्छा ।

मनःकार–पु० (सं०) (दुःख या सुखका) पूर्ण ज्ञान ।

मनःताप–पु० (सं०) मनका ताप, दुःख; अनुताप ।

मनःताल–पु० वह सिंह जो दुर्गाका वाहन हो ।

मनःतुष्टि–स्त्री० (सं०) मनका संतोष ।

मनःतृप्ति–स्त्री० (सं०) मनकी तृप्ति ।

मनःतोका–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

मनस्कार–पु० (सं०) किसी विषयके प्रति मनकी आसक्ति, चित्ताभोग; दे० 'मनःकार' ।

मनस्विनी–स्त्री० (सं०) मनस्वी स्त्री; प्रजापतिकी एक पत्नी सोमकी माता; दुर्गा ।

मनस्वी (स्विन्)–वि० (सं०) अच्छे, ऊँचे मनवाला, बुद्धिमान्; स्थिरचित्त, दृढ़निश्चय । पु० शरभ नामका पुराणवर्णित जंतु ।

मनहसर–वि० दे० 'मुनहसिर' ।

मनहु*–अ० मानो ।

मनहूस–वि० (अ०) अभागा; अशुभ; अशुभसूचक; उदासी भरा हुआ (मनहूस सूरत) ।

मनहूसी–स्त्री० मनहूस होनेका भाव; उदासी ।

मना–पु० (अ०) रोक, निषेध । वि० निषिद्ध, अविहित । **–ई**–स्त्री० दे० 'मनाही' ।

मनाका–स्त्री० (सं०) हथिनी ।

मनाक्, मनाग्–अ० (सं०) थोड़ा-सा, जरा-सा; धीरे-धीरे । **–(क्)कर**–वि० सुस्त, काहिल । **–प्रिय**–वि० अल्पप्रिय ।

मनादी–स्त्री० दे० 'मुनादी' ।

मनाना–स० क्रि० रूठे, बिगड़े हुएको प्रसन्न करना, राजी करना; किसी बातके होनेकी प्रार्थना करना; प्रार्थना करना, मनुहार करना ।

मनायी–स्त्री० (सं०) दे० 'मनावी' ।

मनार–पु० (अ०) मीनार, ज्योतिस्तंभ; मसजिदका वह स्तंभ जिसपर खड़ा होकर मुअज्जिन अजाँ देता है ।

मनाल–पु० चकोरका एक भेद ।

मनावन|–पु० मनानेकी क्रिया ।

मनावी–स्त्री० (सं०) मनुकी पत्नी ।

मनाही–स्त्री० मुमानियत, निषेध ।

मनि–पु०, स्त्री० दे० 'मणि' । **–धर**–पु० दे० 'मणिधर' । **–यार***–वि० चमकता हुआ; सुंदर, शोभायुक्त ।

मनिका*–पु० दे० 'मनका' ।

मनित–वि० (सं०) जाना हुआ, ज्ञात; माना हुआ ।

मनिया–स्त्री० मनका, गुरिया ।

मनिहार–पु० चूड़ी, टिकली, सिंदूर आदि (फेरी करके) बेचनेवाला ।

मनिहारन, मनिहारिन, मनिहारी–स्त्री० चूड़ी बेचने या पहनानेवाली स्त्री, चुड़िहारिन । **–लीला**–स्त्री० मनिहारिन बनकर राधाको चूड़ी पहनानेकी कृष्णकी लीला ।

मनी–स्त्री० (अ०) वीर्य; (फा०) गर्व, अभिमान; * दे० 'मणि'; (अं०) रुपया-पैसा । **–आर्डर**–पु० डाकखानेका चेक जिसके जरिये अन्यत्र स्थित जनके पास रुपया भेजा जाता है । **–बैग**–पु० चमड़ेका बना बटुआ जिसमें रुपया-पैसा रखते हैं ।

मनीक–पु० (सं०) अंजन ।

मनीजर–पु० (अं० 'मैनेजर') किसी कार्यालय, संपत्ति आदिका प्रबंधकर्ता ।

मनीषा–स्त्री० (सं०) बुद्धि; इच्छा; विचार; स्तुति (वै०) ।

मनीषिका–स्त्री० (सं०) बुद्धि, मनीषा; इच्छा ।

मनीषित–वि० (सं०) चाहा हुआ, अभिलषित ।

मनीषिता–स्त्री० मनीषी होनेकी अवस्था, बुद्धिमानी ।

मनीषी (षिन्)–वि० (सं०) बुद्धिमान्; पंडित, विचारशील । पु० बुद्धिमान् मनुष्य, पंडित, विचारशील पुरुष ।

मनु–अ० मानो । पु० (सं०) ब्रह्माके मानसपुत्र स्वायंभुव मनु जो आदिप्रजापति और मनुस्मृतिके कर्ता माने जाते तथा मन्वंतरके अधिष्ठाता होते हैं; ब्रह्माके १५ मानसपुत्रोंमेंसे कोई एक; मनुष्य; विष्णु; मन; स्तुति, मंत्र । स्त्री० मनुकी पत्नी, मानवी; वनमेथी । **–ज, –जात**–पु० मनुसंतान, मनुष्य । **–जा**–स्त्री० स्त्री । **–ज्येष्ठ**–पु० तलवार । **–श्रेष्ठ**–पु० विष्णु । **–संहिता**–स्त्री० मनुस्मृति । **–स्मृति**–स्त्री० आदि मनुका बनाया धर्मशास्त्र ।

मनुआं–पु० मन ।

मनुजता–स्त्री०, **मनुजत्व**–पु० मनुष्यता ।

मनुजाद–पु० (सं०) नरभक्षी, राक्षस ।

मनुजाधिप–पु० (सं०) राजा ।

मनुजेंद्र, मनुजेश्वर–पु० (सं०) राजा ।

मनुजोत्तम–पु० वह जो मनुष्योंमें श्रेष्ठ हो ।

मनुष⁕–पु० दे० 'मनुष्य'।

मनुष्य–पु० (सं०) मानव, आदमी, इंसान। **–कार**–पु० मनुष्यका उद्योग, पुरुषार्थ। **–कृत**–वि० मनुष्यका किया, बनाया हुआ। **–गणना**–स्त्री० मर्दुमशुमारी। **–जाति**–स्त्री० मानवसमष्टि, मनुष्य समुदाय। **–धर्मा(र्मन्)**–पु० कुबेर। **–यज्ञ**–पु० अतिथि-सत्कार। **–लोक**–पु० मृत्युलाक, धरती। **–यान**–पु० पालकी। **–शीर्ष**–पु० आदमीके-से सिरवाली एक जहरीली मछली। **–हार**–पु० मनुष्यकी चोरी, अपहरण। **–हारी(रिन्)**–पु० मनुष्यकी चोरी करनेवाला।

मनुष्यता–स्त्री० (सं०) मनुष्योचित भाव, गुण, दया, धर्म-बुद्धि, सौजन्य आदि; इंसानियत।

मनुस†–पु० मनुष्य; जवान, मर्द।

मनुसाई–स्त्री० पुरुषार्थ, मर्दानगी।

मनुसाना–अ० क्रि० पुरुषत्वका अभिमान, मर्दानगीकी भावना जगना।

मनुहार–पु० मनानेके लिए की जानेवाली बिनती, मनानेका यत्न; बिनती, खुशामद। **–नीति**–स्त्री० मनाने, प्रसन्न करनेकी नीति।

मनुहारना⁕–स० क्रि० मनुहार करना, मनाना।

मनुहारी–वि० जिसे मनानेको बार-बार मनुहार करनी पड़े।

मनूरा–स्त्री० मुरादाबादी कलई करनेमें काम आनेवाला एक चूरा।

मनै⁕–पु०, वि० दे० 'मना'।

मनौं⁕–अ० दे० 'मानों'।

मनोकामना–स्त्री० (हिं०) मनकी कामना, अभिलाष।

मनोगत–वि० (सं०) मनमें भरा, छिपा हुआ। पु० इच्छा; विचार।

मनोगति–स्त्री० (सं०) इच्छा; मनकी गति।

मनोगवी–स्त्री० (सं०) इच्छा।

मनोगुप्ता–स्त्री० (सं०) मैनसिल; एक ईख।

मनोगृहीत–वि० मन द्वारा ग्रहण किया हुआ।

मनोग्रंथि–स्त्री० कटु अनुभवोंकी स्मृति जो अनजाने व्यक्तिके आचरण और व्यवहारको प्रभावित करती है।

मनोग्राही(हिन्)–वि० आकर्षण, सुंदर।

मनोज–पु० (सं०) कामदेव।

मनोजव–वि० (सं०) मनके जैसा वेग जिसका हो, अति वेगवान्; पितृतुल्य। पु० विष्णु।

मनोजवा–स्त्री० (सं०) अग्निकी एक जिह्वा; दुर्गाकी एक शक्ति; करियारी। वि० स्त्री० दे० 'मनोजव'।

मनोजवी(विन्)–वि० मनकी तरह तेज।

मनोज्ञ–वि० (सं०) सुंदर, मनोहर।

मनोज्ञा–स्त्री० (सं०) राजकुमारी; मद्य; कलौंजी; बाँझ ककोड़ा। वि० स्त्री० दे० 'मनोज्ञ'।

मनोदंड–पु० (सं०) मनोनिग्रह।

मनोदत्त–वि० (सं०) दत्तचित्त, जिसका मन किसी वस्तुमें पूरी तरह लग रहा हो; मनसे दिया हुआ।

मनोदाह–पु० (सं०) मनका क्लेश, पीडा, मनंस्ताप।

मनोदाही(हिन्)–वि० (सं०) मनको जलानेवाला।

मनोनयन–पु० (सं०) पसंद करना, चुनना।

मनोनिग्रह–पु० (सं०) मनकी इच्छाओं, वृत्तियोंको वशमें रखना।

मनोनिवेश–पु० (सं०) मन लगाना।

मनोनीत–वि० (सं०) पसंद किया हुआ; चुना हुआ।

मनोनुकूल–वि० (सं०) मनोवाञ्छित।

मनोभंग–पु० (सं०) उदासी, विषाद; नैराश्य।

मनोभव–पु० (सं०) कामदेव।

मनोभू–पु० (सं०) कामदेव।

मनोभाव–पु० (सं०) मनका भाव, वृत्ति।

मनोभिलाष–पु० (सं०) मनकी इच्छा।

मनोभूत–पु० (सं०) चंद्रमा।

मनोमथन–पु० (सं०) कामदेव।

मनोमय–वि० (सं०) मनोरूप, मानस। **–कोष**–पु० आत्माके आवरणरूप पंचकोपोंमेंसे तीसरा।

मनोमालिन्य–पु० (सं०) मनमें मैल आना, मनमोटाव।

मनोयायी(यिन्)–वि० (सं०) इच्छानुसार गमन करनेवाला।

मनोयोग–पु० (सं०) मनको किसी विषयमें एकाग्र करके लगाना।

मनोयोनि–पु० (सं०) कामदेव।

मनोरंजक–वि० (सं०) मनोरंजन करनेवाला।

मनोरंजन–पु० (सं०) मनबहलाव, दिलका खुश होना। वि० मनोरंजक।

मनोरंजन-कर–पु० (एंटरटेनमेंट टैक्स) दे० 'प्रमोदकर'।

मनोरथ–पु० (सं०) मनकी कामना, अभिलाषा। **–कृत**–वि० इच्छानुसार चुना, वरण किया हुआ (पति)। **–दायक**–वि० इच्छा पूरी करनेवाला। **–सिद्धि**–स्त्री० इच्छाका पूर्ण होना।

मनोरम–वि० (सं०) सुंदर, मन लुभानेवाला।

मनोरमा–स्त्री० (सं०) गोरोचना; कार्तवीर्यार्जुनकी पत्नी। वि० स्त्री० दे० 'मनोरम'।

मनोरा–पु० गोबरसे बने चित्र।

मनोराग–पु० (सं०) हृदयानुराग, प्रेम।

मनोराज्य–पु० (सं०) कल्पनासृष्टि, जागतेका सपना, खयाली पुलाव।

मनोरा झूमक–पु० एक गीत।

मनोरुक्(ज्)–पु० (सं०) मनस्ताप।

मनोरोगचिकित्सक–पु० (साइकिएट्रिस्ट) मानसिक रोगोंका उपचार करनेवाला।

मनोलय–पु० (सं०) चेतनाका नाश।

मनोलीला–स्त्री० (फैनटम) मनमें ही विद्यमान कल्पनाकी वस्तु जिसका वस्तुत' कोई अस्तित्व न हो, भ्रांति, सत्य-सी प्रतीत होनेवाली कोई छाया।

मनोलौल्य–पु० (सं०) मनकी चंचलता, झक।

मनोवल्लभा–स्त्री० (सं०) प्रेमिका, प्रियतमा।

मनोवहा–स्त्री० (सं०) हृदयकी एक नलिका।

मनोवांछा–स्त्री० (सं०) मनकी अभिलाषा, इच्छा।

मनोवांछित–वि० (सं०) मनका चाहा हुआ, अभिलषित।

मनोविकार–पु० (सं०) मनकी भावना या मनका आवेग।

मनोविज्ञान–पु० (सं०) मनकी प्रकृति, वृत्तियों आदिका विवेचन करनेवाला विज्ञान, मानसशास्त्र।

मनोविनोद–पु० (सं०) मनोरंजन।

मनोविश्लेषण–पु० (सं०) मनके विचारोंकी समीक्षा, चित्त-विश्लेषण।

मनोवृत्ति–स्त्री० (सं०) मनका विकार, चित्तवृत्ति।

मनोवेग–पु० (सं०) मनका विकार, मनका आवेग।

मनोवैज्ञानिक–वि० (सं०) मनोविज्ञान-संबंधी। पु० मनोविज्ञान-का ज्ञाता।

मनोव्यथा–स्त्री० (सं०) मनस्ताप।

मनोव्याधि–स्त्री० (सं०) मानस रोग।

मनोसर⁕–पु० मनोविकार।

मनोहत–वि० (सं०) निराश।

मनोहर–वि० (सं०) मनको हरने, चुरानेवाला, सुंदर। पु० छप्पय छंदका एक भेद।

मनोहरता–स्त्री० (सं०) सुंदरता।

मनोहरताई⁕–स्त्री० मनोहरता, सुंदरता।

मनोहर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) दिल चुरा लेनेवाला।

मनोहारी(रिन्)–वि० (सं०) मन हरनेवाला, सुंदर।

मनोह्वा–स्त्री० (सं०) मैनसिल।

मनौअल–स्त्री० मनाना; माननेकी क्रिया या भाव।

मनौती–स्त्री० मनावन; मानता, मन्नत।

मन्नत–स्त्री० किसी कार्यकी सिद्धि या अनिष्टके निवारणपर किसी देवताकी पूजा करनेका संकल्प, मनौती। मु०**–उतारना**–मन्नत पूरी करना। **–मानना**–मनौती मानना।

मन्मथ–पु० (सं०) कामदेव; कैथका पेड़। **–प्रिया**–स्त्री० रति। **–बंधु**–पु० चंद्रमा। **–लेख**–पु० प्रेम-पत्र। **–सख**–पु० वसंत। **–समान**–वि० समान प्रेम अनुभव करनेवाला। **–सुहृद्**–पु० दे०

'मन्मथसख' ।

मन्मथानंद–पु० (सं०) एक तरहका आम ।

मन्मथानल–पु० (सं०) कामाग्नि ।

मन्मथालय–पु० (सं०) आमका पेड़; भग; विहार-स्थल ।

मन्मथाविष्ट–दि० (सं०) जिसके हृदयमें प्रेमका प्रवेश हो गया हो ।

मन्मथी(थिन्)–वि० (सं०) प्रेमासक्त ।

मन्मथोद्दीपन–पु० (सं०) प्रणय उद्दीप्त करना । वि० प्रणय उद्दीप्त करनेवाला ।

मन्मन–पु० (सं०) गुप्त रूपसे की जानेवाली कानाफूसी ।

मन्य–वि० (सं०) अपने आपको मानने, समझनेवाला (समासांतमें –पंडितम्मन्य) ।

मन्या–स्त्री० (सं०) गलेके पिछले भागकी एक शिरा; ज्ञान ।

मन्याका–स्त्री० (सं०) गरदनका पिछला भाग ।

मन्यु–पु० (सं०) स्वस्थ; क्रोध; अहंकार; उत्साह; दैन्य; शोक; यज्ञ; अग्नि; शिव ।

मन्युमान्(मत्)–वि० (सं०) क्रोध, अहंकार या दैन्य इत्यादिसे युक्त ।

मनन्वंतर–पु० (सं०) (मनु+अंतर) मनुका अधिकारकाल, इकहत्तर चतुर्युगी; दुर्भिक्ष ।

मफ़रूर–वि० (अ०) भागा हुआ (अपराधी) ।

मम–सर्व० (सं०) मेरा, मेरी ('अहं'का षष्ठी-एकवचनरूप) । **–कार**–पु० किसी चीजको अपनी समझना, ममता; निजी संपत्ति ।

ममता–स्त्री०, **ममत्व**–पु० (सं०) किसी चीजको अपनी समझना; अपनापन; स्नेह; अहंकार; बच्चेके प्रति माँका स्नेह; मोह ।

ममरखी†–स्त्री० मुबारकबादी, बधावा ।

ममाखी*–स्त्री० (बं० 'मौमाछी') मधुमक्खी–'जीवनमधु एकत्र कर रही उन ममाखियों-सा लेखो'–कामायनी) ।

ममान, ममाना–पु० मामाका घर ।

ममारखी*–स्त्री० दे० 'ममरखी' ।

ममास*–पु० दे० 'मवास' ।

ममिया–वि० ममेरा, मामाके दरजेवाला । **–ससुर**–पु० पति या पत्नीका मामा । **–सास**–स्त्री० पति या पत्नीकी मामी ।

ममियाउर†–पु० दे० 'ममियौरा' ।

ममियौरा†–पु० मामाका घर ।

ममी–स्त्री० (मिस्रके किसी बादशाहका) सुरक्षित रूपसे रखा हुआ शव । (अं०) स्त्री० 'मा'के लिए संबोधन ।

ममीरा–पु० हलदीकी जातिका एक पौधा जो आँखके रोगोंकी उत्तम ओषधि माना जाता है ।

ममोला–पु० एक छोटी चिड़िया, धोबिन ।

मम्मा–पु० स्तन; जल; मामा ।

मयंक*–पु० चंद्रमा ।

मयंद*–पु० मृगेंद्र, सिंह ।

मय–प्र० (सं०) जिस शब्दमें लगता है उससे बना हुआ (कनकमय), भरा हुआ (जलमय), युक्त (दयामय) आदि अर्थ उत्पन्न करता है । (स्त्री० 'मयी' ।) पु० दानव-शिल्पी जिसने इंद्रप्रस्थमें युधिष्ठिरके लिए अद्भुत सभागृह बनाया; खच्चर; घोड़ा; ऊँट; मेक्सिको (अमेरिका)में पुराने जमानेमें बसनेवाली एक जाति । **–तनया**–स्त्री० मंदोदरी ।

मय–अ० (अ०) दे० 'मै' । स्त्री० (फा०) शराब । **–कदा,–ख़ाना**–पु० मदिरालय । **–कश**–वि० शराब पीनेवाला । **–कशी**–स्त्री० शराब पीना, मद्यपान । **–ख़्वार,–नोश**–वि० दे० 'मयकश' । **–ख़्वारी,–नोशी**–स्त्री० दे० 'मयकशी' । **–परस्त**–वि० शराबी, मदिराभक्त । **–परस्ती**–स्त्री० मदिराप्रेम । **–फ़रोश**–पु० शराब बेचनेवाला ।

मयगल*–पु० मस्त हाथी ।

मयट–पु० (सं०) पर्णकुटी ।

मयन*–पु० मदन, कामदेव ।

मयमंत, मयमत्त*–वि० मदमत्त, मस्त ।

मयष्ट, मयुष्टक–पु० (सं०) बनमूंग ।

मयस्सर–वि० (अ०) दे० 'मुयस्सर' ।

मया*–स्त्री० माया; मोह; संसार; प्रेम-बंधन; दया, कृपा–'हौं तो धाइ तुम्हारे सुतकी मया करति तुम रहियो'–सूर; (सं०) घोड़ी; खच्चरी; ऊँटनी ।

मयार–वि० दयालु, कृपायुक्त ।

मयारी–स्त्री० धरन–'खंभ जंबूनद सुबिद्रुम रची रुचिर मयारि' –सू० ।

मयु–पु० (सं०) किन्नर; हिरन । **–राज**–पु० कुबेर ।

मयूख–पु० (सं०) किरण; शिखा; दीप्ति; शोभा; कील ।

मयूखी(खिन्)–वि० (सं०) चमकीला, दीप्तिमान् । पु० एक प्राचीन अस्त्र ।

मयूर–पु० (सं०) मोर; एक पर्वतका नाम । **–केतु**–पु० कार्त्तिकेय । **–गति**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–ग्रीवक**–पु० तूतिया । **–चटक**–पु० गृह-कुक्कुट । **–जंघ**–पु० सोनापाढ़ा । **–तुत्थ**–पु० तूतिया । **–ध्वज**–पु० दे० 'मोरध्वज' । **–नृत्य**–पु० एक तरहका नाच । **–पदक**–पु० मोरके पाँवकी शक्लका नखक्षत । **–पुच्छ**–पु० मोरकी पूँछ । **–रथ**–पु० कार्त्तिकेय । **–विदला**–स्त्री० अंबष्ठा । **–शिखा**–स्त्री० मोरकी चोटी; एक क्षुप ।

मयूरक–पु० (सं०) मोर; चिचड़ा; तूतिया ।

मयूरिका–स्त्री० (सं०) अंबष्ठा, मोइया ।

मयूरी–स्त्री० मोरनी ।

मयूरेश–पु० (सं०) कार्त्तिकेय ।

मरंद–पु० (सं०) मकरंद ।

मर–(सं०) मृत्यु; धरती (वै०) ।

मरक–पु० (सं०) मरी, महामारी । * स्त्री० इशारा, शह, बढावा–'अरतैं टरत न बर परे दई मरक मनु मैन'–वि० ।

मरकज़–पु० (अ०) वृत्त या दायरेका मध्यबिंदु, केंद्र; सदर मुकाम, मुख्य स्थान ।

मरकज़ी–वि० केंद्रीय, प्रधान (कमेटी, हुकूमत) ।

मरकत–पु० (सं०) पन्ना । **–पत्री**–स्त्री० पाची । **–मंदर**–पु० (हि०) पन्नाका पहाड़–'मरकत-मंदरपर संगमी रतनहार, लहरैं तरंगदार गंगा-यमुनाकी हैं'–लछिराम ।

मरकना–अ० क्रि० दबकर टूटना; दबना ।

मरकहा†–वि० (सींगसे) मारनेवाला (बैल, भैंसा इ०); हथछुट । (स्त्री० 'मरकही' ।)

मरकाना–स० क्रि० दबाकर तोड़ना ।

मरक़ूम–वि० (अ०) लिखा हुआ, लिखित (रक़म-लिखना) ।

मरक्कत*–पु० मरकत, पन्ना । **–सैल***–पु० मरकतका पहाड़–'मानो मरक्कत-सैल बिसालमैं फैलि चली बर बीरबहूटी'–तुलसी ।

मरखन्ना–वि० मरकहा, सींगसे मारनेवाला ।

मरगजा–वि०, पु० दे० 'मलगजा'–'नख सिख सुंदर चिह्न सुरतके अरु मरगजी पटोरी'–सूर ।

मरघट–पु० वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं, मसान । मु० **–का भुतना**–मसानका भूत, डरावनी शक्लका आदमी ।

मरचा–पु० दे० 'मिरचा' ।

मरज़–पु० दे० 'मर्ज़' ।

मरजाद, मरजादा–स्त्री० दे० 'मर्यादा' ।

मरजिया–पु० पानीमें डूबकर चीजें निकालनेवाला, गोताखोर–'जो मरजिया होइ तहँ सो पावै वह सीप'–प० । वि० जो मरकर जिया हो; जो मरते-मरते बचा हो; अधमरा; मरनेको उद्यत ।

मरज़ी–स्त्री० (अ०) खुशी; स्वीकृति; इच्छा; रुचि ।

मरजीवा–पु० दे० 'मरजिया' ।

मरण–पु० (सं०) मरना, मृत्यु; बछनाग । **–गति**–स्त्री० (डेथरेट) आबादीके प्रतिसहस्र व्यक्तियोंके पीछे होनेवाली मृत्युओंकी संख्या । **–धर्मा(र्मन्),–शील**–वि० मरनेवाला, मर्त्य । **–शुल्क**–पु० (डेयड्यूटी) किसीकी मृत्युके बाद उसकी संपत्तिपर लगनेवाला वह कर जो उसके उत्तराधिकारीसे वसूल किया जाय; मृत्युकर ।

मरणांतक–वि० (सं०) जिसका अंत मृत्यु हो, जानलेवा ।

मरणाशौच–पु० (सं०) मृत्युके कारण ज्ञातिजनोंको लगनेवाला अशौच ।

मरणीय–वि० (सं०) मरनेवाला, मर्त्य ।

मरणोन्मुख–वि० (सं०) जो मर रहा हो, आसन्न-मरण ।

मरत–पु० (सं०) मरण ।

मरतबा–पु० (अ०) दे० 'मर्तबा' ।

मरतबान–पु० रोगन किया हुआ मिट्टीका बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रखते हैं ।

मरता–वि० मरता हुआ; दुर्बल । मु० **–क्या न करता**–जीवनसे निराश व्यक्ति सब कुछ करनेको तैयार हो जाता है । **–(ते)को मारना**–दुखियाको और सताना । **–जीते**–किसी तरह, ज्यों-त्यों करके । **–दमतक**–आखिरी वक्ततक, जिंदगीभर । **–मरते**–मरते समय; मौतके पास पहुँचकर ।

मरद*–पु० दे० 'मर्द' । **–ई**–स्त्री० मरदानगी, वीरता ।

मरदना–स० क्रि० मसलना; माँड़ना; रौंदना, तहस-नहस करना ।

मरदनिया†–पु० मालिश करनेवाला टहलू ।

मरदानगी–स्त्री० दे० 'मर्दानगी' ।

मरदाना–वि०, अ० दे० 'मर्दाना' ।

मरदी–स्त्री० मरदानगी; संभोगशक्ति; मनुष्यता ।

मरदूद–वि० (अ०) रद्द किया हुआ; बहिष्कृत; तिरस्कृत, निकम्मा; नीच ।

मरन–पु० दे० 'मरण' ।

मरना–अ० क्रि० जीता न रहना, जीवन-क्रियाका बंद हो जाना, मरण होना; सूखना, मुरझाना; मृतप्राय हो जाना, गड़ जाना (शर्मसे मर जाना); अति श्रम, अति कष्ट करना, खपना; बुझना, प्रभावरहित हो जाना (चूना, सुहागा); दब जाना, नष्ट हो जाना (भूख, प्यास, पाखानेकी हाजत इ०); तबाह हो जाना; भस्म, कुश्ता हो जाना, (धातु इ० का); भीतर जाना, सोखना (पानी); डूबना, वसूल न होना (पावना, रुपया); पिटना, मारा जाना (गोट, मोहरा); खेलनेका अधिकारी न रहना; आसक्त, मोहित होना (किसीपर मरना) । **मु० मरकर जीना**–मरते-मरते बचना । **मर-खप जाना**–मरकर नष्ट हो जाना । **मरना-जीना**–जीवन-मरण; जीवन-मरणका चक्र; शादी-गमी । **मरनेतककी फ़ुरसत न होना**–दम मारनेको फ़ुरसत न मिलना, कामकी भारी भीड़में होना । **–पचना**–अति श्रम करना; अति कष्ट सहना; जान तोड़कर मेहनत, कोशिश करना । **मर-पिटकर, मर-मिटकर**–बड़ी कठिनाईसे । **मर-मरकर**–बड़ी मेहनतसे, जान तोड़कर । **मर मिटना**–मरकर मिट जाना, जान दे देना; तबाह हो जाना ।

मरनि*–स्त्री० दे० 'मरनी' ।

मरनी–स्त्री० मौत, अंत्येष्टि; मृत्युशोक, गमी ।

मरभुखा–वि० पेटू; भूखों मरता, कंगाल ।

मरम–पु० दे० 'मर्म' ।

मरमर–पु० (यू०) एक तरहका पत्थर जो बहुत चिकना होता और रगड़नेसे खूब चमकता है, संगमरमर (यह कई रंगोंका होता है, पर आम तौरसे सफेद रंगवालेको ही संगमरमर कहते हैं); मर्मर ध्वनि ।

मरमरा–पु० एक पक्षी । वि० जो जरा-सा दबानेमें टूट जाय ।

मरमराना–अ० क्रि० 'मर-मर'की आवाज करना; डाल आदिका दबकर टूटना ।

मरमराहट–स्त्री० दबी आवाजमें, अपने आप, असंतोष प्रकट करनेकी क्रिया; असंतोष प्रकट करनेके लिए दबी आवाजमें कहे गये शब्द–'लूट-मारके अंशने सिपाहियोंकी मरमराहट बंद कर दी'–मृग०; डाल आदिके टूटनेकी आवाज ।

मरमी–वि० दे० 'मर्मी' ।

मरम्मत–स्त्री० (अ०) टूटी-फूटी चीजको दुरुस्त करना, सुधार, दुरुस्ती; (ला०) मार, पिटाई, शारीरिक दंड । **–तलब**–वि० जिसकी मरम्मत करना जरूरी हो ।

मरम्मती–वि० मरम्मत करने लायक; मरम्मत-संबंधी ।

मरवट*–पु० मुँहपर रेखाएँ बनाना–'अंजन आँजि माँडि मुख मरवट फिरि मुख हेरो री'–घन० ।

मरवा–पु० दे० 'मरुआ' ।

मरवाना–स० क्रि० मारनेका काम कराना, मारनेको उकसाना ।

मरसा–पु० बरसातमें होनेवाला एक साग ।

मरसिया–पु० (अ०) करुण रसकी कविता जिसमें किसीकी मृत्यु या वीरगतिका वर्णन हो; करबलाके शहीदोंके विषयमें रचित इस प्रकारका काव्य; मृत व्यक्तिकी गुणावली; मातम, सियापा (कहना, पढ़ना) । **–ख़्वाँ**–पु० मरसिया पढ़नेवाला । **–ख़्वानी**–स्त्री० मरसिया पढ़ना ।

मरहट*–पु० दे० 'मरघट' ।

मरहटा, मरहठा–पु० दे० 'मराठा' ।

मरहठी–वि० मरहठोंसे संबद्ध । स्त्री० मराठी ।

मरहम–पु० (अ०) घावपर लगानेका लेप; घावकी दवा । **–पट्टी**–स्त्री० घावपर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना, जख्मका इलाज ।

मरहमत–स्त्री० (अ०) कृपा, अनुग्रह । मु० **–करना, –फ़रमाना –देना**, प्रदान करना ।

मरहला–पु० (अ०) १२ मील या दिनभरका सफर; कूचकी जगह; यात्रियोंके टिकनेकी जगह, पड़ाव; किलेके इर्द-गिर्द बनी हुई इमारत जिसपर बैठकर सैनिक युद्ध करते हैं; कठिन काम, झमेला; दर्जा । **–(ले)दार**–पु० दो पड़ावोंके बीचके रास्तेकी निगरानी करनेवाला चौकीदार ।

मरहून–वि० (अ०) रेहन किया हुआ ।

मरहूना–वि० स्त्री० (अ०) बंधक रखी हुई (संपत्ति) ।

मरहूम–वि० (अ०) बख्शा हुआ, माफ किया हुआ; स्वर्गवासी, जन्नती ।

मराठा–पु० महाराष्ट्र देशका निवासी; महाराष्ट्र देशका अब्राह्मण निवासी ।

मराठी–स्त्री० महाराष्ट्रकी भाषा । वि० मराठोंसे संबंध रखनेवाला; मराठोंका ।

मरातिब–पु० (अ०) पद, दरजा ('मरतबा'का बहु०); पताका; मकानका खंड ।

मराना–स० क्रि० दे० 'मरवाना' ।

मरायल*–वि० मारा, पीटा हुआ; मार खानेवाला–'सठहु सदा तुम मोर मरायल'–रामा०; हराया हुआ; मरियल ।

मरार–पु० काछी (छत्तीसगढ़में); (सं०) अन्न-भंडार ।

मराल–पु० (सं०) राजहंस; एक तरहकी बतख, कारंडव; बादल; काजल; घोड़ा । वि० चिकना ।

मरिंद–पु० दे० 'मलिंद'; मरंद ।

मरिखम–पु० दे० 'मलखंभ' ।

मरिच–स्त्री० (सं०) काली मिर्च ।

मरिचा†–पु० दे० 'मिरचा' ।

मरियम–स्त्री० (अ०) ईसाकी माता; कुमारी । **–का पंजा**–एक सुगंधित घास ।

मरियल–वि० बहुत दुबला, कमजोर, बेदम । **–टट्टू**–पु० बहुत दुबला, कमजोर घोड़ा ।

मरी–स्त्री० बबाई बीमारी, महामारी; प्रेतोंका एक भेद; साबूदानेका पेड़ । **–खाया**–पु० एक तरहकी गाली 'ये मरीखाये शौहर'–सरिता, जुला० १९७० ।

मरीचि–पु० (सं०) ब्रह्माके दस मानसपुत्रोंमें सबसे बड़े जिनकी गणना सप्तर्षियोंमें है; किरण; ज्योति; मरीचिका । **–गर्भ**–वि० किरणोंवाला । पु० सूर्य । **–जल, –तोय**–पु० मृगतृष्णा । **–माली-(लिन्)**–पु० सूर्य । वि० जो किरणोंकी माला धारण किये हुए हो ।

मरीचिका–स्त्री० (सं०) मृगतृष्णा; (मिराज) धूपके समय मरुभूमिमें वायुमें प्रकाश किरणोंके अपवर्तनके कारण ऐसा जान पड़ता है मानो सामने जलाशय है जिसमें दूरकी वस्तुएँ प्रतिबिम्बित हो रही हैं । इस दृष्टिभ्रमको 'मरीचिका' नाम दिया गया है ।

मरीची(चिन्)–वि० (सं०) किरणोंवाला । पु० सूर्य ।

मरीज़–वि० (अ०) जिसे रोग हो, रोगी ।

मरीज़ा–वि० स्त्री० (अ०) रोगिणी ।

मरीना–पु० (स्पे० 'मेरिन्नो') एक मुलायम ऊनी कपड़ा ।

मरुंडा–स्त्री० (सं०) ऊँचे ललाटवाली स्त्री ।

मरु–पु० (सं०) मरुभूमि, रेगिस्तान; मारवाड़; पर्वत; कुरुबक

वृक्ष, मरुआ नामक पौधा । **–जाता**–स्त्री० कौंछ । **–देश**–पु० रेगिस्तान । **–द्विप**–पु० ऊँट । **–द्वीप**–पु० मरुभूमिमें स्थित हरित स्थान, नखलिस्तान । **–धन्व,–धन्वा(न्वन्)**–पु० मरुभूमि । **–धर**–पु० मारवाड़ । **–भूमि**–स्त्री० रेगिस्तान, जलरहित रेतीला मैदान । **–भूरुह**–पु० करील । **–संभव**–पु० एक तरहकी मूली । **–संभवा**–स्त्री० महेंद्रवारुणी; छोटा जवासा; एक तरहका खदिर । **–स्थल**–पु० रेतीला मैदान, रेगिस्तान ।

मरुआ–पु० ववरी जैसा एक पौधा; वह लकड़ी जिससे हिंडोला लटकाया जाता है–'मरुआ लगे नग ललित लीला सुविधि सिल्प सँवारि'–सूर; बँड़ेर ।

मरुक–पु० (सं०) मोर ।

मरुज–पु० एक सुगंधित द्रव्य; बाँसका कल्ला ।

मरुत–पु० (सं०) वायु; देवता ।

मरुत्–पु० (सं०) प्राण; वायु (इनकी संख्या सात मानी गयी है–उग्र, भीम, ध्वांत, धुनि, सासह्व, अभियुग्व, विक्षिप); देवता; वायुका अधिष्ठाता देवता; सोना; मरुआ । **–कर**–पु० उरद । **–तनय,–सुत,–सूनु**–पु० हनूमान्; भीम । **–पट**–पु० वादवान । **–पति,–पाल**–पु० इंद्र । **–पथ**–पु० आकाश । **–प्लव**–पु० सिंह । **–फल**–पु० ओला । **–वर्त्म**–पु० आकाश । **–सख**–पु० अग्नि ।

मरुत्त–पु० (सं०) एक चंद्रवंशी राजा जिसने अनेक बड़े-बड़े यज्ञ किये थे; वायु ।

मरुत्तक–पु० (सं०) मरुआ, नागदौना ।

मरुत्वती–स्त्री० (सं०) धर्मकी पत्नी ।

मरुत्वान्(वत्)–पु० (सं०) इंद्र; हनूमान् ।

मरुदिष्ट–पु० गूगुल ।

मरुद्–'मरुत्'का समासगत रूप । **–गण**–पु० देवगण जिनकी संख्या पुराणोंमें ४९ बतायी गयी है । **–रथ**–पु० घोड़ा; देवरथ । **–वाह**–पु० धुआँ; आग ।

मरुरना*–अ० क्रि० मरोड़ा जाना, बल खाना ।

मरुल–पु० (सं०) कारंडव ।

मरुव–पु० (सं०) मरुआ ।

मरुवक–पु० (सं०) मरुआ; व्याघ्र; राहु ।

मरुवा–पु० दे० 'मरुआ' ।

मरू*–वि० कठिन । **–करि**–कठिनाईसे ।

मरूक–पु० मोर; एक तरहका हिरन ।

मरूद्भवा–स्त्री० (सं०) कपास; जवासा ।

मरूरा*–पु० मरोड़, ऐंठन ।

मरोड़–स्त्री० ऐंठन, बल; आँवके रोगमें आँतोंमें होनेवाली ऐंठन, पेचिश; * क्षोभ; ऐंठ, घमंड । **–फली**–स्त्री० पेचिशमें लाभ करनेवाली एक फली ।

मरोड़ना–स० क्रि० ऐंठना, बल देना; उमेठना (कान); मसलना; पीड़ा देना; गरदन मरोड़कर मार डालना ।

मरोड़ा–पु० ऐंठन, मरोड़; पेचिश ।

मरोड़ी–स्त्री० मरोड़, ऐंठन; गीले आटे आदिकी वत्ती जो हाथोंको मलनेसे वन जाती है ।

मरोर*–स्त्री० ऐंठन; गर्व–'साधू आवत देखिकै, मनमें करै मरोर'–साखी; क्रोध; पछतावा–'यों मन माहँ मरोर करै जिमि चोर भरे घर पैठ न पायो'–सुधानिधि ।

मरोरना*–स० क्रि० दे० 'मरोड़ना' । **मु० हाथ मरोरना**–पछताना–'काहू छुवै न पाये, गये मरोरत हाथ'–प० ।

मर्क–पु० (सं०) प्राण; देह; वंदर ।

मर्कक–पु० (सं०) मकड़ा ।

मर्कट–पु० (सं०) वंदर; मकड़ा; हरगीला पक्षी; एक रतिवंध; एक स्थावर विष; दोहेका एक भेद; छप्पयका एक भेद । **–पाल**–पु० सुग्रीव । **–पिप्पली**–स्त्री० चिचड़ा । **–प्रिय**–पु० खिरनीका पेड़ । **–वास**–पु० मकड़ीका जाला । **–शीर्ष**–पु० हिंगुल ।

मर्कत–पु० मरकत ।

मर्कटी–स्त्री० (सं०) वानरी; मकड़ी; अजमोदा; कौंछ; छंदके नौ प्रत्ययोंमेंसे अंतिम ।

मर्कर–पु० (सं०) भँगरा ।

मर्करा–स्त्री० (सं०) तहखाना; सुरंग; वंध्या स्त्री ।

मर्च, मर्ची–स्त्री० मिर्च ।

मर्चेंट–पु० (अं०) व्यापारी ।

मर्ज़–पु० (अ०) रोग, व्याधि, वीमारी, आजार; वुरी आदत, लत; दुःख ।

मर्ज़ी–स्त्री० (अ०) दे० 'मरज़ी' ।

मर्जू–पु० (सं०) धोवी; पीठमर्द । स्त्री० धोना ।

मर्त, मर्त्त–पु० (सं०) मनुष्य; भूलोक ।

मर्तबा–पु० (अ०) दरजा; पद; बार, दफा ।

मर्तबान–पु० दे० 'मरतबान' ।

मर्त्य–वि० (सं०) मरणशील, नश्वर । पु० मनुष्य । **–धर्मा(र्मन्)**–वि० मरणशील । **–भाव**–पु० मनुष्य-स्वभाव । **–मुख**–पु० किन्नर जिसका मुँह मनुष्यका और धड़ पशुका माना जाता है । **–लोक**–पु० मनुष्यलोक, भूलोक ।

मर्द–पु० (सं०) मर्दन; (फा०) पुरुष, नर; मनुष्य; वीर पुरुष; पति । **–आदमी**–पु० भला आदमी; वहादुर, मरदाना । **–बच्चा**–पु० वीर, वहादुर । **–बाज़**–वि० स्त्री० पुंश्चली । **–(दें) ख़ुदा**–पु० भगवान्‌का भक्त, खुदाका वंदा; भला आदमी । **–(दों) ज़न**–पु० स्त्री-पुरुष; आम लोग ।

मर्दक–पु० (सं०) मर्दन करनेवाला ।

मर्दन–पु० (सं०) मलना, मालिश करना; रौंदना, कुचलना; चूर्ण करना; घोंटना; नाश करना; कुचल डालनेवाला, मार डालनेवाला (अरिमर्दन) ।

मर्दना–स० क्रि० मर्दन करना, मालिश करना; रौंदना, कुचलना–'सकल मुनिगण मुकुटमणिको मर्दियो अभिमान'–राम०; गूँधना, माँड़ना; चूर्ण करना; नाश करना ।

मर्दल–पु० (सं०) मृदंगसे मिलता-जुलता एक प्राचीन वाजा ।

मर्दानगी–स्त्री० (फा०) वहादुरी; पुरुषत्व, मर्दानापन ।

मर्दाना–वि० (फा०) पुरुष-संबंधी, मर्दोंका; पुरुषोचित; वहादुर; जवाँमर्द । पु० मर्दाना वैठक । अ० मर्दोंकी तरह, पुरुषोचित प्रकारसे । **–वार**–अ० मर्दोंकी तरह, वहादुरीसे ।

मर्दित–वि० (सं०) मर्दन किया हुआ, मला, रौंदा, कुचला हुआ ।

मर्दी–स्त्री० मर्दानगी; पुंस्त्व ।

मर्दुआ–पु० तुच्छ पुरुष; गैर मर्द; पति (स्त्री०) ।

मर्दुम–पु० (फा०) मनुष्य; जनसाधारण; आँखकी पुतली । **–आज़ार**–वि० लोगोंको सतानेवाला । **–आज़ारी**–स्त्री० लोगोंको सताना, मनुष्योंका उत्पीड़न । **–ख़ोर**–पु० नरभक्षी । **–शिनास**–वि० आदमीको पहचाननेवाला । **–शुमारी**–स्त्री० देशमें रहनेवालोंकी गिनती करना, मनुष्यगणना; जनगणना ।

मर्दुमक–पु० (फा०) आँखकी पुतली ।

मर्दुमी–स्त्री० (फा०) मर्दानगी; पुंस्त्व ।

मर्द्द–पु० (सं०) दे० 'मर्द' (सं०) ।

मर्म(न्)–पु० (सं०) शरीरका वह नाजुक भाग जहाँ चोट लगनेसे अधिक पीड़ा हो या तुरत मृत्यु हो जाय, जीवनस्थान; संधिस्थान; तात्पर्य; रहस्य, तत्त्व; गूढार्थ; हृदय । **–कील**–पु० पति । **–ग**–वि० मर्मभेदी, तीव्र । **–घाती(तिन्)**–वि० मर्मपर आघात करनेवाला । **–घ्न**–वि० अत्यंत कष्टदायी । **–च्छिद**–वि० दे० 'मर्मच्छेदी' । **–च्छेदी(दिन्)**–वि० मर्मभेदी । **–ज्ञ**–वि० तत्त्व, गूढार्थको जाननेवाला, रहस्यज्ञ । **–पीडा,–व्यथा**–स्त्री० हृदयमें होनेवाली तीव्र वेदना । **–प्रहार**–पु० मर्मस्थानपर किया गया आघात । **–भेद**–पु० रहस्यका उद्घाटन, हृदयका भेदन । **–भेदन**–पु० वाण । **–भेदी(दिन्)**–वि० मर्मस्थलको छेदनेवाला; अति दुःखद; दिलको लगनेवाला । –पु० वाण । **–वचन**–पु० दिलको लगनेवाली वात; गूढ़ वात । **–वाक्य**–पु० भेदकी वात, गूढ़ वात । **–विद्**–वि० मर्मज्ञ । **–वेधी(धिन्)**–वि० मर्मभेदी । **–स्थल,–स्थान**–पु० शरीरकी नाजुक जगह, जीवनस्थान । **–स्पर्शी(र्शिन्),–स्पृक्**–वि० दिलको लगनेवाला, मर्मभेदी ।

मर्मर–पु० दे० 'मरमर'; (सं०) पत्तों या पेड़के हिलनेसे होनेवाली आवाज, पत्तोंकी खड़खड़ाहट । **–ध्वनि**–स्त्री० खड़खड़ाहट ।

मर्मरित–वि० (सं०) जिससे मर्मर ध्वनि हो रही हो ।

मर्मरी–स्त्री० (सं०) एक तरहका देवदारु; हलदी ।

मर्मरीक–पु० (सं०) निर्धन व्यक्ति; दुष्ट नर ।

मर्मांतक–वि० (सं०) मर्मस्थलको छेदनेवाला ।

मर्माघात–पु० (सं०) मर्मस्थलपर आघात, हृदयपर गहरी चोट लगना ।

मर्मातिग–वि० (सं०) मर्मको छेदनेवाला ।

मर्मान्वेषण–पु० (सं०) रहस्यका पता लगाना, तत्त्वका अनुसंधान ।

मर्माविध्–वि० (सं०) मर्मभेदी ।

मर्माहत–वि० (सं०) जिसके हृदयको कड़ी चोट पहुँची हो ।

मर्मिक–वि० (सं०) मर्मविद्, रहस्य जाननेवाला; तीव्र ।

मर्मी–वि० मर्मज्ञ, रहस्य जाननेवाला ।

मर्मोद्घाटन–पु० (सं०) रहस्य प्रकट करना ।

मर्य–पु० (सं०) मर्त्य, मनुष्य; युवा पुरुष; प्रेमी; कोतल ।

मर्या–स्त्री० (सं०) सीमा ।

मर्याद*–स्त्री० दे० 'मर्यादा' ।

मर्यादा–स्त्री० (सं०) सीमा; नदी, समुद्रका किनारा; अवधि; सीमाका चिह्न; न्याय्य पथमें स्थिति, सदाचार; आचारकी शास्त्र, परंपरा आदि द्वारा निर्धारित सीमा; प्रतिष्ठा (हिं०); समझौता । **–गिरि**–पु० सीमाका काम देनेवाला पहाड़ । **–धावन**–पु० नियत सीमा या चिह्नकी ओर दौड़ना । **–पालक**–वि० मर्यादाका पालन करनेवाला । **–पुरुषोत्तम**–पु० राम । **–बंध**–पु० सीमाके अंदर रखना । **–व्यतिक्रम**–पु० सीमोल्लंघन ।

मर्यादी(दिन्)–वि० (सं०) मर्यादाका त्याग या उल्लंघन न करनेवाला; सीमाके भीतर रहनेवाला । पु० पड़ोसी ।

मर्श–पु० (सं०) विचार, विमर्श; सुँघनी ।

मर्शन–पु० (सं०) रगड़ना; विचार करना; सलाह देना ।

मर्ष–पु० (सं०) सहन, क्षांति, धैर्य ।

मर्षण–पु० (सं०) सहना, क्षमा करना ।

मर्षणीय–वि० (सं०) क्षमा करनेके योग्य ।

मर्षित–वि० (सं०) सहा हुआ, क्षमा किया हुआ ।

मर्षी(षिन्)–वि० (सं०) सहन करनेवाला, क्षमावान् ।

मलंग–पु० मुसलमान फकीरोंका एक भेद; सफेद रंगका बड़ा बगला । दे० 'तूतमलंगा' ।

मल–पु० (सं०) मैल, गंदगी; शरीरसे निकलनेवाला मैल–मूत्र, पुरीष, कफ, पसीना, खूँट आदि; विष्ठा, गू; लौह आदिका कीट; पाप; बुराई; विकार; वात, पित्त, कफ । वि० दुष्ट; गंदा; क्षुद्र । **–कर्षण**–वि० गंदगी दूर करनेवाला । **–घ्न**–वि० मल-नाशक । पु० सेमलका मुसला । **–घ्नी**–स्त्री० नागदमनी । **–ज**–पु० पीव, मवाद । **–दूषित**–वि० गंदा, मलिन । **–द्रावी-(विन्)**–वि० विरेचक । पु० जमालगोटा । **–द्वार**–पु० गुदा । **–धात्री**–स्त्री० बच्चेका मल-मूत्रादि धोने, गंदे कपड़े आदि साफ करनेवाली धाय । **–धारी(रिन्)**–पु० एक तरहके जैन साधु जो शरीरपर मल पोते रहते हैं । **–पात्र**–पु० शौच जानेके लिए स्टूल आदिके नीचे रखा जानेवाला चीनी मिट्टीका पात्र, कमोड । **–पू**–पु० कठूमर । **–पृष्ठ**–पु० पुस्तकका पहला या बाहरी पृष्ठ । **–भांड**–पु० दे० 'मलपात्र' । **–भुक्(ज्)**–पु० कौआ । **–भेदिनी**–स्त्री० कुटकी । **–मास**–पु० अधिक मास, लौंद । **–युग**–पु० कलियुग । **–रुचि**–वि० पापमें रुचि रखनेवाला । **–रोधक**–वि० जो मलको रोके, काबिज, कब्ज करनेवाला । **–वासा**–स्त्री० ऋतुमती स्त्री । **–वाहनपद्धति**–दे० क्रममें । **–विनाशिनी**–स्त्री० शंखपुष्पी । **–विसर्जन**–पु० मलत्याग, पाखाना फिरना । **–शुद्धि**–स्त्री० पेटका साफ हो जाना, कोष्ठशुद्धि । **–हारक**–वि० मैल या पापको दूर करनेवाला । पु० भंगी ।

मलक–पु० (अ०) फरिश्ता, देवता (मुसल०) ।

मलका–पु० (अ०) अभ्याससे प्राप्त निपुणता । स्त्री० दे० 'मलिका' ।

मलकाना–पु० एक राजपूत जाति जो मुसलिम राज्यकालमें मुसलमान बन गयी । † स० क्रि० हिलाना, चलाना (आँखें) ।

मलकुलमौत–पु० (अ०) मौतका फरिश्ता ।

मलखंभ–पु० लकड़ीका खंभा जिसके सहारे एक खास कसरत की जाती है; मलखंभपर की जानेवाली कसरत ।

मलखम–पु० दे० 'मलखंभ' ।

मलखाना–पु० आल्हा-ऊदलका चचेरा भाई जो वत्सराजका पुत्र था; दे० 'मलकाना' । * वि० मलभक्षी ।

मलगजा*–वि० मला, दला हुआ, मरगजा । पु० बैगनके लंबोतरे टुकड़ोंकी पकौड़ी ।

मलठ–पु० (अं० 'मैलेट') लकड़ीका हथौड़ा ।

मलता–वि० घिसा हुआ (पैसा, रुपया इ०) ।

मलन–पु० (सं०) मर्दन, मसलना; लेप करना; तंबू ।

मलना–स० क्रि० मसलना; मालिश करना; मरोड़ना; हाथसे रगड़ना ।

मलनी–स्त्री० कुम्हारोंका एक औजार ।

मलपट–पु० ऐसा चित्र जिसमें केवल चेहरेकी ही आकृति हो ।

मलबा–पु० कूड़ा-करकट; गिरे हुए मकानके ईंट-पत्थर, मिट्टी आदि ।

मलमल–स्त्री० भारतका एक बारीक, सफेद सूती कपड़ा जो बहुत पुराने जमानेसे प्रसिद्ध था और जिसे विदेशी भी बड़े चावसे मँगाते थे ।

मलमलाना–स० क्रि० बार-बार खोलना, खोलना-बंद करना (आँख, पलक); * बार-बार आलिंगन करना ।

मलय–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक पर्वत जो सात कुलपर्वतोंके अंतर्गत है और जिसपर चंदनके वृक्षोंकी बहुलता है; पश्चिमी घाटका मैसूरके दक्षिण और त्रिवांकुरके पूर्वमें पड़नेवाला भाग; मलाबार देश; उद्यान; नंदन-कानन; पर्वतका पार्श्व, शैलांग; पुराणवर्णित १८ द्वीपोंमेंसे एक । **–गिरि**–पु० मलय पर्वत; * चंदन । **–गिरि**–पु० (हिं०) दारचीनीकी जातिका एक पेड़ । **–ज**–पु० चंदन; राहु । **–द्रुम**–पु० चंदन; मदन वृक्ष । **–वासिनी**–स्त्री० दुर्गा । **–समीर**–पु० मलय पर्वतकी ओरसे आनेवाली हवा, दक्षिणी वायु ।

मलया–स्त्री० (सं०) निसोथ; बकुची ।

मलयागिरि–पु० दे० 'मलयगिरि' ।

मलयाचल–पु० (सं०) दे० 'मलयगिरि' ।

मलयानिल–पु० (सं०) मलय-समीर ।

मलयालम–पु० दक्षिण भारतका केरल राज्य । स्त्री० उक्त प्रदेशकी भाषा ।

मलयाली–पु० मलयालममें बसनेवाली एक जाति । वि० मलयालम देशका । स्त्री० मलयालम देशकी भाषा ।

मलयोद्भव–पु० (सं०) चंदन ।

मलराना*–स० क्रि० दे० 'मल्हराना'–'कोऊ दुलरावैं मलरावैं कोऊ चुटकी बजावैं कोऊ देति करतारैं हैं'–रामरसा० ।

मलवाना–स० क्रि० मलनेका काम कराना ।

मलवाहनपद्धति–स्त्री० (कॉनसर्वेंसी सिस्टम) नगरका कूड़ा करकट, मल आदि बाहर हटवा देनेकी पद्धति ।

मलसा–पु० एक तरहका कुप्पा जिसमें घी आदि रखते हैं ।

मलहम–पु० दे० 'मरहम' ।

मलाई–स्त्री० दूध या दहीकी साढ़ी, बालाई; सार भाग; मलनेकी क्रिया; मलनेकी मजदूरी ।

मलाकर्षी(षिन्)–पु० (सं०) भंगी ।

मलाका–स्त्री० (सं०) कामवती स्त्री; दूती; हथिनी ।

मलाट–पु० मोटा, घटिया कागज जो कागजकी गाँठोंपर लपेटा रहता है ।

मलान–वि० दे० 'म्लान' ।

मलानि–स्त्री० 'म्लानि' ।

मलाबार–पु० दक्षिण भारतका अरब सागरके तटपर बसा हुआ प्रदेश । **–हिल**–पु० बम्बईकी एक पहाड़ी जहाँ धनिकोंका निवास है ।

मलाबारी–पु० मलाबारका रहनेवाला ।

मलामत–स्त्री० (अ०) झिड़की, फटकार, भर्त्सना; निंदा; गंदगी ।

मलाया–पु० बर्माके दक्षिणमें स्थित एक प्रायद्वीप ।

मलार–पु० एक राग जो वर्षा ऋतुमें गाया जाता है, मल्हार ।

मलारि–पु० (सं०) एक क्षार।

मलारी–स्त्री० वसंत रागकी एक रागिनी।

मलाल–पु० (अ०) दुःख; विषाद। मु० **–आना**–किसीकी ओरसे चित्तका खिन्न हो जाना, मनमें मैल आ जाना।

मलावरोध–पु० (सं०) कब्ज।

मलाशय–पु० (सं०) बड़ी आँतका निचला भाग जहाँ मल रहता है।

मलाह–पु० दे० 'मल्लाह'।

मलाहत–स्त्री० (अ०) नमकीनी; सलोनापन, सुंदर साँवलापन।

मलिंग*–पु० दे० 'मलंग'।

मलिंद–पु० भ्रमर।

मलिक–पु० (अ०) बादशाह, सुलतान; सरहद और पंजाबके मुसलमानोंकी एक सम्मानजनक उपाधि। **–ज़ादा**–पु० शाहज़ादा। **–मुअज्ज़म**–पु० सम्राट्।

मलिका–स्त्री० (अ०) महारानी; (सं०) दे० 'मल्लिका'।

मलिक्ष, मलिच्छ*–पु० दे० 'म्लेच्छ'।

मलिन–वि० (सं०) मैला, मलयुक्त; काला; धूमिल; उदास; पापमें रुचि रखनेवाला; क्षुद्र; खोटा। पु० पाप; भट्ठा; सुहागा। **–पक्ष**–पु० (डार्क साइड) किसी प्रश्न या विषयादिका काला, दूषित अथवा कलुषित पहलू। **–प्रभ**–वि० जिसकी प्रभा मलिन हो गयी हो। **–मुख**–वि० उदास। पु० अग्नि; प्रेत; एक तरहका बंदर, गोलंगूल।

मलिनता–स्त्री० (सं०) मैलापन; अशुद्धता; धूमिलत्व; क्षुद्रता।

मलिनांबु–पु० (सं०) स्याही।

मलिना–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री; लाल खाँड़।

मलिनाई*–स्त्री० मलिनता।

मलिनाना*–अ० क्रि० मलिन, मैला होना।

मलिनावास–पु० (मलिनावसति) स्त्री० मजदूरों या गरीबोंकी गंदी बस्तियाँ, गंदी वस्तियाँ।

मलिनी–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री।

मलिम्लुच–पु० (सं०) मलमास; वायु; अग्नि; चोर; चित्रक वृक्ष।

मलियामेट–वि० मिट्टीमें मिला हुआ, तहस-नहस (हो जाना); पूर्ण विनाश।

मलिष्ठ–वि० (सं०) अति मलिन; पापी।

मलिष्ठा–स्त्री० (सं०) रजस्वला स्त्री।

मलिस–स्त्री० सुनारोंका एक औजार।

मलीदा–पु० कश्मीरमें बननेवाला एक मोटा ऊनी कपड़ा जो मला जानेके कारण अधिक नरम और गरम होता है। (फा० मालीदा –मला हुआ।) चूरमा।

मलीन–वि० मैला, मलिन; उदास।

मलीनता–स्त्री० मलिनता।

मलीमस–वि० (सं०) मैला; काला; पापी। पु० लोहा; पीला कसीस।

मलीह–वि० नमकीन; लावण्ययुक्त।

मलू–पु० कचनारकी एक किस्म; उसकी छाल।

मलूक–पु० एक चिड़िया; एक कीड़ा। वि० सुंदर। **–दास**–पु० एक संतकवि।

मलूल–वि० (अ०) उदास, विषादयुक्त।

मलेच्छ–पु० दे० 'म्लेच्छ'।

मलेरिया–पु० (अं०) जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर जो नयी खोजके अनुसार मच्छरोंके काटनेसे पैदा होता है, मौसिमी बुखार।

मलैया†–पु० जाड़ेके दिनोंमें दूधको रातभर ओसमें रखनेके बाद उसमें शकर, केशर इलायची आदि मिलाकर मथनेसे निकला हुआ फेन, नमश।

मलोत्सर्ग–पु० (सं०) मलत्याग।

मलोल–स्त्री० मलोला, मलाल–'राधे अहो हरि भावतेको भरिकै भुज भेंटिये मेटि मलोलैं'–देव।

मलोलना–अ० क्रि० दुःखित होना, पछताना।

मलोला–पु० अरमान; दुःख।

मल्ल–पु० (सं०) कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान; एक प्राचीन व्रात्य क्षत्रिय जाति; एक प्राचीन जनपद; कपोल; पात्र। वि० बलवान्, पट्ठा। **–क्रीडा**–स्त्री० मल्लयुद्ध। **–ज**–पु० मिर्च। **–तूर्य**–पु० एक तरहका नगाड़ा। **–नाग**–पु० ऐरावत; वात्स्यायनका एक नाम। **–भू, –भूमि**–स्त्री० अखाड़ा। **–युद्ध**–पु० कुश्ती, बाहुयुद्ध। **–विद्या**–स्त्री० कुश्ती। **–शाला**–स्त्री० अखाड़ा।

मल्लक–पु० (सं०) दीपक; दीवट; दाँत; नारियलके छिलकेका बना हुआ पात्र।

मल्ला–स्त्री० (सं०) स्त्री; मल्लिका; पत्रवल्ली लता।

मल्लार–पु० (अ०) एक राग, मलार।

मल्लाह–पु० (अ०) केवट, माझी। (स्त्री०'मल्लाहिन'।)

मल्लाही–वि० मल्लाह-संबंधी। स्त्री० मल्लाहका पेशा या पद।

मल्लि–स्त्री० (सं०) मल्लिका। **–गंधि**–पु० अगर। **–नाथ**–पु० कालिदासकृत और अन्य प्रधान संस्कृत काव्योंके एक प्रसिद्ध टीकाकार (संभाव्य काल १४ वीं शती ई०)। **–पत्र**–पु० छत्राक।

मल्लिक–पु० बंगालियोंकी एक उपाधि; एक बंगाली (कायस्थ) जाति।

मल्लिका–स्त्री० (सं०) वेलेकी जातिका एक सफेद और सुगंधित फूल; एक वर्णवृत्त। **–पुष्प**–पु० कुटज वृक्ष; करुण वृक्ष; मल्लिकाका फूल।

मल्लिकाक्ष, मल्लिकाख्य–पु० (सं०) एक तरहका हंस जिसकी टाँगें और चोंच भूरी होती हैं; घोड़ेकी जाति जिसकी आँखोंपर सफेद धब्बे होते हैं।

मल्लिकामोद–पु० (सं०) तालका एक भेद।

मल्लिकार्जुन–पु० (सं०) श्रीशैलपर स्थापित एक शिवलिंग।

मल्ली–स्त्री० (सं०) मल्लिका; एक वर्णवृत्त।

मल्हनी†–स्त्री० एक तरहकी नाव।

मल्हराना, मल्हाना, मल्हारना*–स० क्रि० चुमकारना, स्नेहसे हाथ फेरना।

मल्हार–पु० एक राग।

मवक्किल–पु० दे० 'मुवक्किल'।

मवाजिब–पु० (अ०) बँधे समयपर मिलनेवाली बँधी रकम, भृति; देय धन ('मुवज्जब'का बहु०)।

मवाज़ी–वि०, अ० दे० 'मुवाज़ी'।

मवाद–पु० (अ०) मसाला, सामग्री; पीब।

मवाली–पु० दक्षिण भारतकी एक अर्धसभ्य जाति; इस जातिका जन।

मवाशी–पु० (अ०) दे० 'मवेशी' ('माशिया') (चौपाया) का बहु०)।

मवास–पु० गढ़, दुर्ग; आश्रयस्थान; किलेके परकोटे आदिपर लगे बाँस।

मवासी–स्त्री० छोटा गढ़। पु० किलेदार, नायक।

मवेशी–पु० ढोर, डंगर; दूध देने या बोझ ढोनेके काम आनेवाला चौपाया। **–ख़ाना**–पु० मवेशी रखनेका बाड़ा; वह बाड़ा जिसमें दूसरेका खेत चरनेवाले मवेशी बंद किये जाते हैं।

मश–पु० (सं०) मच्छर; क्रोध।

मशक–स्त्री० (फा०) भेड़ या बकरीकी खालको सीकर बनाया हुआ थैला जिससे भिश्ती पानी ढोते हैं। पु० (सं०) मच्छर; मस्सा; शाकद्वीपका एक प्रदेश। **–कुटी**–स्त्री० मच्छर हाँकनेकी चौरी। **–हरी**–स्त्री० मसहरी।

मशकी(किन्)–पु० (सं०) गूलरका पेड़।

मशकूक–वि० (अ०) जिसपर शक किया गया या किया जाता हो, संदिग्ध।

मशकूर–वि० (अ०) जिसका शुक्र किया गया हो; शुक्रगुजार, कृतज्ञ।

मशक़्क़त–स्त्री० (अ०) श्रम, मेहनत; कठोर श्रम।

मशक़्क़ती–वि० मशक्कत करनेवाला, मेहनती।

मशग़ला–पु० (अ०) शग़ल, काम; मन बहलानेका काम, दिलबहलाव।

मशग़ूल–वि० (अ०) किसी शग़ल या काममें लगा हुआ, कार्यरत।

मशरब–पु० (अ०) दे० 'मुशरब'।

मशरिक़–पु० (अ०) पूरब, वह दिशा जिधर सूरज निकलता है ।

मशरिक़ी–वि० पूरबी ।

मशरू–पु० रेशम और सूत मिलाकर बुना जानेवाला एक धारीदार कपड़ा ।

मशवरा–पु० (अ०) मंत्रणा, सलाह; साजिश ।

मशविरा–पु० दे० 'मशवरा' ।

मशहूर–वि० (अ०) जिसकी शुहरत हुई हो, प्रसिद्ध, नामी ।

मशान–पु० दे० 'मसान' ।

मशाल–स्त्री० (अ०) लंबी गोल लकड़ीके सिरे या लोहेकी सलाखपर कपड़ा लपेटकर बनायी हुई मोटी बत्ती जिसे तेलसे तर कर व्याह-बरात आदिमें जलाते हैं (गैस लैंपोंके चलनेसे अब इसका रिवाज उठ रहा है) । **–ची**–पु० मशाल दिखानेवाला । **मु०–लेकर ढूँढ़ना**–सावधानीसे ढूँढ़ना, अच्छी तरह तलाश करना ।

मशीख़त–स्त्री० (अ०) शेखी, घमंड । **मु० –बघारना**–लंबी-चौड़ी बातें करना, डींग मारना ।

मशीन–स्त्री० (अं०) यंत्र, कल । **–गन**–स्त्रीं० चक्राकार बंदूक जिससे लगातार सैकड़ों गोलियाँ छूटती हैं । **–मैन**–पु० मशीन चलानेवाला कर्मचारी; प्रेसमैन ।

मशीनरी–स्त्री० (अं०) किसी कारखाने आदिकी सब तरहकी मशीनें, यंत्र-समष्टि; किसी यंत्र या वस्तुके कल-पुरजे ।

मश्क़–पु० (अ०) किसी कामका अभ्यास, रब्त, कुशलता-प्राप्तिके लिए किसी कामको बार-बार करना ।

मश्शाक़–वि० (अ०) मश्क रखनेवाला, अभ्यस्त ।

मश्शाक़ी–स्त्री० अभ्यस्तता, निपुणता ।

मश्शाता–स्त्री० (अ०) स्त्रियोंका बनाव-सिंगार करनेवाली स्त्री, प्रसाधिका ।

मष–पु० दे० 'मख' ।

मषि–स्त्री० (सं०) दे० 'मसि' ।

मषी–स्त्री० (सं०) दे० 'मसि' ।

मष्ट*–वि० चुप, मौन, संस्कार-शून्य । **मु० –करना**–चुप करना, चुप होना । **–मारना**–चुप रहना ।

मस–पु० (सं०) तौल, माप; (अ०) स्पर्श, छूना; संभोग । स्त्री० (हिं०) मूछोंका आरंभिक, रोमावली रूप; † दे० 'मसि' । **मु० –(सें) भींजना या भीगना**–मूंछोंका उगना, निकलने लगना ।

मस–पु० मच्छड़ । **–हरी**–स्त्री० जालीदार कपड़ेका परदा जो मच्छरोंसे बचनेके लिए मसहरीके ऊपर लगाया जाता है; वह पलंग जिसके पायोंमें मसहरी लगानेके लिए डंडे लगे हों ।

मस–'मांस'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । **–खवा***–वि० मांस खानेवाला । **–हार**–वि०, पु० दे० 'मांसाहारी' ।

मस–'मास'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । **–वारा**–पु० प्रसूताका प्रसवके एक महीने बादका स्नान । **–वासी**–पु० साधु-सन्न्यासी जो एक जगह एक महीनेसे अधिक न रहे । स्त्री० एक पुरुषके साथ एक महीनेसे अधिक न रहनेवाली स्त्री, वेश्या ।

मसऊद–वि० भाग्यवान, प्रसन्न, पवित्र ।

मसक–पु०, स्त्री० दे० 'मशक'–'निज पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहिं अकास'–रामा० ।

मसकत*–स्त्री० दे० 'मशक़्क़त' । पु० अरब देशका एक नगर जहाँका अनार भारतमें आकर इसी नामसे बिकता है; वहाँसे आनेवाला अनार ।

मसकना–अ० क्रि० दबाव या तनावसे दरकना; कपड़ेका इस तरह फटना कि ताने-बानेमेंसे किसीके तार साबित न रहें; (चित्तका) मसोसना; विवशताकी पीड़ा अनुभव करना । स० क्रि० दबाकर या तानकर फाड़ना, दरार डाल देना; मसलना, दबाना ।

मसकरा*–वि०, पु० दे० 'मसखरा' ।

मसक़ला–पु० (अ०) सिकलीगरोंका एक औजार ।

मसका–पु० मक्खन; दहीका पानी; बँधा हुआ पारा; * मच्छड़ –'मसका कहत मेरी सखरि कौन उड़ै'–सुंद० ।

मसकीन*–वि० दे० 'मिस्कीन' ।

मसख़रा–वि० (अ०) हँसोड़, परिहासप्रिय । पु० हँसी-मजाक पसंद करनेवाला, परिहासप्रिय व्यक्ति; विदूषक । **–पन**–पु० ठट्ठेबाजी, हँसोड़पन ।

मसखरी†–स्त्री० मसखरापन ।

मसजिद–स्त्री० (अ०) सिजदा करनेकी जगह, उपासना-स्थल, वह इमारत जिसमें मुसलमान इकट्ठा होकर नमाज पढ़ते हैं । **मु० –में चिराग़ जलाना**–मन्नत पूरी करनेके लिए मसजिदके ताकोंमें दीये जलाना ।

मसन–पु० (सं०) तौलना, माप करना; ओषधि; चोट ।

मसनद–पु० (अ०) गद्दी; बड़ा तकिया । **–नशीं**–वि० मसनदपर बैठनेवाला । पु० राजा; बादशाह; अमीर । **–का गधा**–मूर्ख अमीर ।

मसनवी–स्त्री० (अ०) उर्दू-फारसीका वह प्रबंध-काव्य जिसके हर शेरके दोनों मिसरोंका काफिया एक, पर हर शेरका काफिया जुदा हो ।

मसनूई–वि० (अ०) बनावटी, कृत्रिम ।

मसमुंद*–पु० धक्कमधक्का ।

मसयारा*–पु० मशाल ।

मसरना*–स० क्रि० मसलना–'कुँवर कान्ह जमुनामैं न्हात । मसरत सुभग साँवरे गात ।'–घन० ।

मसरफ़–पु० (अ०) सर्फ (खर्च) करनेकी जगह, मौका; काम; उपयोग ।

मसरफ़ी–वि० जो व्यवहारमें आता हो ।

मसरा–स्त्री० (सं०) मसूर ।

मसरू–पु० दे० 'मशरू' ।

मसरूक़ा–वि० (अ०) चुराया हुआ, चोरीका ।

मसरूफ़–वि० (अ०) सर्फ किया गया; काममें लगा हुआ, व्यस्त ।

मसल–स्त्री० (अ०) कहावत, लोकोक्ति; मिसाल ।

मसलति*–स्त्री० दे० 'मसलहत'–'बैठे इकले जाइ करन मसलति भली'–सुजान० ।

मसलन–स्त्री० मसलनेकी क्रिया, रगड़, मर्दन–'मैं वह हलकी-सी मसलन हूँ जो बनती कानोंकी लाली'–कामायनी ।

मसलना–स० क्रि० किसी नरम चीजको दबाकर मलना, रगड़ना; माँड़ना ।

मसलन्–अ० मिसालके तौरपर, उदाहरणरूपमें ।

मसलहत–स्त्री० हितकर सलाह; हित, भलाई; उचित बात । हितकी दृष्टि, नीति । **–अंदेश**–वि० मसलहत सोचनेवाला, विचार करनेवाला । **–(ते)वक्त**–स्त्री० वह जो सामयिक आवश्यकताकी दृष्टिसे कर्तव्य हो, समयका आदेश ।

मसलहतन्–अ० (मसलहत–हित) सुविचारित और भलाईकी दृष्टिसे ।

मसला–पु० (अ०) सवाल, प्रश्न; पूछने योग्य बात; विषय (मजहबी मसले), समस्या । **मु० –हल होना**–उलझन, कठिनाईका दूर हो जाना या उसका उपाय मिल जाना । वि० दबाया, कुचला हुआ ।

मसवासी–पु० दे० 'मस' (मास)के साथ ।

मसविदा–पु० दे० 'मसौदा' ।

मसहार*–वि०, पु० दे० 'मस' (मांस)के साथ ।

मसा–पु० दे० 'मस्सा' ।

मसान–पु० मुरदे जलानेका स्थान, श्मशान, मरघट; बच्चोंको होनेवाला एक तरहका सूखा; * रणभूमि । **मु०–जगाना**–शवसाधन करना ।

मसाना–पु० (अ०) पेशाबकी थैली, मूत्राशय ।

मसानिया–पु० मसान जगानेवाला; ओझा; डोम ।

मसानी–वि० मसान जगानेवाला । स्त्री० मसानमें रहनेवाली पिशाचनी आदि ।

मसाल–स्त्री० दे० 'मशाल' । **–ची**–पु० दे० 'मशालची' । **–दुम्मा**–पु० एक चिड़िया ।

मसालह–पु० (अ०) खूबियाँ, भलाइयाँ (मसलहतका बहु०); मसाला ।

मसालहत–स्त्री० (अ०) सुलह करना, मेल-मिलाप, समझौता ।

मसाला–पु० वह सामग्री जिससे कोई चीज बनायी जाय या कार्य

संपन्न किया जाय (मकान बनानेका मसाला, अखबारका मसाला, बरतन जोड़नेका मसाला इ०); गुण, स्वाद आदि बढ़ानेवाली सामग्री (दाल, तरकारी, पना आदिका मसाला), धनिया, लौंग, मिर्च इ०; साधन, सामान (दिल्लगीका मसाला)। **–(ले)दार**–वि० जिसमें मसाला पड़ा हो (–तरकारी)। **–का तेल**–सुगंधित द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल।

मसाहत–स्त्री० (अ०) नापना, पैमाइश; क्षेत्रमिति।

मसाहति*–स्त्री० दे० 'मसाहत'।

मसिदर–पु० वह लंबा रस्सा जिससे जहाजका लंगर उठाया जाता है।

मसि–स्त्री० (सं०) स्याही, रोशनाई; कालिख; काजल; निर्गुंडी; * मूछोंका आरंभिक रूप। **–कूपी**–स्त्री० दवात। **–जल**–पु० स्याही। **–जीवी(विन्)**–वि०, पु० लेखनकार्य द्वारा जीविका चलानेवाला। **–धान**–पु०, **–धानी**–स्त्री० दवात। **–पण्य**–पु० लेखनोपजीवी, लेखक। **–पत्र**–पु० (कार्वन पेपर) वह कागज जिसपर कोयले आदिकी कालिख चढ़ा (फैला) दी गयी हो (इसे दो कागजोंके बीचमें रखकर लिखने या टाइप करनेसे ऊपरकी लिखी या टाइप की हुई सामग्री, ज्योंकी-त्यों, नीचे भी उतर आती है)। **–पथ**–पु० कलम। **–पात्र**–पु० दवात। **–प्रसू**–स्त्री० कलम; दवात। **–मुख**–वि० काले मुँहवाला। **–वर्ण**–वि० रोशनाईके रंगका, काला। **–विंदु**–पु० दिठौना।

मसिक–पु० (सं०) साँपका विल।

मसिका–स्त्री० (सं०) निर्गुंडी; नील शेफालिका।

मसित–वि० (सं०) चूर किया हुआ।

मसियर, मसियार*–पुं० मशाल।

मसियाना–अ० क्रि० भर जाना, शरीरका मांसल होना।

मसियारा*–पु० मशालची।

मसी–स्त्री० (सं०) दे० 'मसि'।

मसीका–पु० माशा।

मसीत, मसीद*–स्त्री० मसजिद–'माँगकै खैवो मसीतको सोइवो…' –कविता०।

मसीना–स्त्री० (सं०) अलसी।

मसीह–पु० (अ०) ईसाई धर्मके प्रवर्तक ईसा। **–दम,–नफ़स**–वि० दे० 'मसीहादम'।

मसीहा–पु० (फा०) मसीह; मुर्देको जिला देनेकी शक्ति रखनेवाला। **–ई**–स्त्री० मुर्देको जिंदा करने, जीवनदान करनेकी शक्ति, चमत्कार। **–दम,–नफ़स**–वि० जिसमें ईसाकी तरह मुर्देको जिंदा कर देनेकी सामर्थ्य हो (ईसाइयोंको विश्वास है कि ईसा फूँक मारकर मुर्देको जिंदा कर देते थे)।

मसीही–वि० मसीहका। पु० मसीहको माननेवाला, ईसाई।

मसुर–पु० (सं०) दे० 'मसूर'।

मसुरिया†–स्त्री० दे० 'मसूरिका'।

मसुरी–स्त्री० दे० 'मसूर'।

मसू*–स्त्री० कठिनाई।

मसूड़ा, मसूढ़ा–पु० दाँतोंके नीचे-ऊपरका मांस।

मसूर–पु० (सं०) दालके काम आनेवाला एक अन्न जो रबीकी फसलमें बोया जाता है।

मसूरक–पु० (सं०) तकिया।

मसूरा–स्त्री० (सं०) मसूर; वेश्या; * मसूरकी वरी।

मसूरिका–स्त्री० (सं०) चेचकका एक भेद जिसके दाने बड़ी मातासे छोटे, मसूरकी दालके बराबर होते हैं; कुटनी।

मसूरी–स्त्री० (सं०) मसूरिका।

मसूस, मसूसन*–स्त्री० मन मसोसनेका भाव, अंतर्व्यथा–'वाल नवेलि न रूसिवो जानति भीतर भौन मसूसनि रोवै'–रस०।

मसूसना–अ० क्रि० दे० 'मसोसना'।

मसृण–वि० (सं०) चिकना; मुलायम; चमकदार।

मसृणा–स्त्री० (सं०) अलसी।

मसेवरा*–पु० मांसकी वनी चीजें।

मसोसना–अ० क्रि० दबाना, मरोड़ना; दुःख, आकांक्षा आदिको (किसी विवशतावश) भीतर ही भीतर दवा रखना, मन ही मन दुःख करना, ऐंठना।

मसोसा–पु० मसोसनेका भाव, दुःख, कुढ़न।

मसौदा–पु० (अ० 'मसव्वदा') दुहरानेके लिए लिखित–अशोधित –लेख; प्रारूप, खर्रा; पुस्तकादिका मूल लेख; मनसूबा। **–नवीस**–पु० मसौदा बनानेवाला। **–(दे)बाज़**–वि० युक्ति सोचनेवाला, चालाक। **मु० –गाँठना**–मजमून बनाना; मनसूबा बाँधना।

मस्कर–पु० (सं०) बाँस; पोला बाँस; गति; ज्ञान।

मस्करी–स्त्री० दे० 'मसखरी' (अपढ़)।

मस्करी(रिन्)–पु० (सं०) सन्न्यासी, चतुर्थाश्रमी; चंद्रमा।

मस्का–पु० दे० 'मसका'।

मस्ख़रा–वि० पु० (अ०) दे० 'मसखरा'।

मस्जिद–स्त्री० (अ०) दे० 'मसजिद'।

मस्त–वि० नशेमें चूर, मत्त, मतवाला; बेफिक्र, बेपरवा; प्रसन्न; जिससे मस्ती टपके, मदभरा (नयन); मस्तीपर आया हुआ, कामवश, जिसकी संभोगेच्छा प्रबल हो रही हो; (सं०) ऊँचा। पु० सिर। **–दारु**–पु० देवदारु। **–मूल**–पु० गरदन। **–राम**–पु० प्रसन्न और निश्चित स्वभाववाला; एक नाम।

मस्तक–पु० (सं०) सिर, माथा। **–मूलक**–पु० गरदन। **–शूल**–पु० सिर-दर्द। **–स्नेह**–पु० दिमाग।

मस्तगी–स्त्री० (फा०) एक तरहका गोंद जो दवाके काम आता है।

मस्तरी–स्त्री० धातु गलानेकी भट्ठी।

मस्ताना–वि० मस्त; मस्त जैसा। अ० क्रि० मस्त होना, मस्तीपर आना।

मस्ति–स्त्री० (सं०) तौल, माप।

मस्तिक–पु० (सं०) मस्तक।

मस्तिष्क–पु० (सं०) भेजा, दिमाग। **–त्वक् (च्)**–पु० भेजेके ऊपरकी झिल्ली।

मस्तिष्काग्र–पु० (सेरेब्रम) दे० 'प्रमस्तिष्क'।

मस्ती–स्त्री० मस्त होनेका भाव, मतवालापन, नशा; जवानीका नशा; काम, भोगेच्छाकी प्रबलता; गर्व; वह पानी जो हाथी, ऊँट आदिके मस्त होनेपर उनकी कनपटी, गरदन आदिसे टपकता है, मद; कुछ वृक्षोंसे विशेष अवस्थाओंमें टपकनेवाला पानी। **मु०–झड़ना**–मस्ती उतरना, दूर होना, अक्ल ठिकाने आना। **–झाड़ना**–मस्ती (नशा, गर्व) दूर कर देना। **–पर आना**–मस्त होना।

मस्तु–पु० (सं०) दहीका पानी; छेनेका पानी।

मस्तुलुंग–पु० (सं०) दिमाग।

मस्तूल–पु० (पुर्त०) नाव, जहाजके बीचमें गाड़ा हुआ लंबा लट्ठा जिसमें पाल बाँधा जाता है।

मस्सा–पु० शरीरपर दानेके रूपमें उभरा हुआ मांसपिंड; बवासीरकी बीमारीमें गुदाके बाहर और भीतर निकल आनेवाला दाना।

महँ*–अ० में।

महँगा–वि० जिसके दाम अधिक या उचितसे अधिक हों, गराँ। **–ई**–स्त्री० महँगी; महँगीका भत्ता।

महँगी–स्त्री० महँगा होना, गरानी; आवश्यक वस्तुओंकी दुर्लभता।

महंत–पु० मठाधीश, साधु-संघका मुखिया; मुखिया।

महंती–स्त्री० महंतका पद या कार्य।

मह*–वि० महत्, बड़ा। अ० दे० 'महँ'। **–राज,–राजा**–पु० दे० 'महाराज'। **–राना**–पु० दे० 'महाराणा'; दे० क्रममें।

मह(स्)–(सं०) दीप्ति; उत्सव; बलि; यज्ञ; महत्ता; शक्ति; आनंद; प्रचुरता; जल।

महक–स्त्री० गंध, वास। **–दार**–वि० महकनेवाला, खुशबूदार।

महकना–अ० क्रि० महक देना, वास आना।

महकनि*–स्त्री० महक।

महकमा–पु० (अ०) हुक्म करनेकी जगह, कचहरी; विभाग, सरिश्ता।

महकान–स्त्री० गंध, वास।

महकीला–वि० महकदार।

महकूम–वि० (अ०) जिसे हुकम दिया गया हो; अधीन; शासित।

महज़–वि० (अ०) खालिस, निरा; केवल, फकत; सरासर (म० बेवकूफी)।

महज़र–पु० (अ०) हाजिर होनेकी जगह; वह साक्ष्यपत्र जिसपर बहुत-से लोगोंके हस्ताक्षर हों। **–नामा**–पु० किसी हत्या आदिके संबंधमें लिखाया गया साक्ष्यपत्र या शहादतनामा जिसपर आस-पासके बहुत-से लोगोंके हस्ताक्षर हों।

महजिद*–स्त्री० दे० 'मसजिद' (हरिश्चंद्र)।

महज्जन–पु० (सं०) दे० 'महाजन'।

महण–पु० समुद्र।

महत*–पु० महत्त्व। स्त्री० प्रतिष्ठा–'वचन कठोर कहत, कहि दाहत अपनी महत गँवावत'–सूर।

महतवान–पु० करघेमें पीछेकी ओर लगी हुई खूँटी।

महता–पु० गाँवका मुखिया, महतो; मुंशी, मुहर्रिर। * स्त्री० अपनेको बड़ा मानना; गर्व।

महताब–स्त्री० (फा०) चाँदनी; महताबी। पु० चाँद।

महताबी–स्त्री० (फा०) एक तरहकी आतिशबाजी जिसके छूटनेपर सफेद रोशनी निकलती है; चाँदनीका आनंद लेनेके लिए बनाया गया चबूतरा, (नहर आदिके किनारे) बारहदरी आदि; चकोतरा।

महतारा–पु० पिता (क्वचित्)।

महतारी†–स्त्री० माता।

महती–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'महत्'। स्त्री० नारदकी वीणा; महत्ता; वनभंटा। **–द्वादशी**–स्त्री० भाद्रपद-शुक्ला द्वादशी।

महतु*–पु० महत्त्व, बड़ाई–'वृंदावन ब्रजको महतु कापै बरन्यो जाइ'–सूर।

महतो–पु० प्रमुख कृषक; गाँवका मुखिया; कुछ कुलोंकी उपाधि।

महत्–वि० (सं०) बड़ा, बृहत्; श्रेष्ठ; ऊँचा; भारी; तीव्र; प्रधान। (स्त्री० 'महती'।) **–कथ**–वि० चापलूस। **–तत्त्व**–पु० प्रकृतिका प्रथम विकार, बुद्धितत्त्व (सां०)।

महत्तम–वि० (सं०) सबसे बड़ा। **–समापवर्तक**–पु० वह बड़ी संख्या जिसका भाग दो या अन्य संख्याओंमें पूरा-पूरा जा सके।

महत्तर–वि० (सं०) (दो पदार्थों, विषयों आदिमें) अधिक बड़ा। पु० प्रधान पुरुष; गाँवका मुखिया; दरबारी; शूद्र।

महत्तरक–पु० (सं०) दरबारी, मुसाहब।

महत्ता–स्त्री० (सं०) बड़प्पन; महिमा; गुरुता; उच्च पद।

महत्त्व–पु० (सं०) बड़प्पन, महत्ता; गुरुता; वजन; अधिक परिणाम-जनक, अधिक आवश्यक होना; श्रेष्ठता। **–पूर्ण,–युक्त,–शाली(लिन्)**–वि० महत्त्ववाला।

महत्त्वाकांक्षा–स्त्री० (सं०) बड़ा बननेकी आकांक्षा।

महदी–पु० (अ०) पथ-प्रदर्शक, रहनुमा; मुसलमानोंके बारहवें इमाम जो प्रलयकालके कुछ पहले प्रकट होंगे।

महदूद–वि० (अ०) जिसकी हद बाँध दी गयी हो, सीमित; नियत।

महद्–'महत्'का समासगत रूप। **–आवास**–पु० बहुत लंबा-चौड़ा मकान। **–आशय**–वि० ऊँचे मन, विचारवाला। **–आश्रय**–पु० बड़ेका आश्रय। **–गुण**–वि० जिसमें महान् पुरुषके गुण हों। **–वारुणी**–स्त्री० एक लता, महेंद्रवारुणी।

महन*–पु० दे० 'मथन'।

महना†–स० क्रि० दे० 'मथना'।

महनिया†–पु० मथनेवाला।

महनीय–वि० (सं०) पूजनीय, सम्मान्य; महिमा-मंडित, गौरवपूर्ण।

महनु*–पु० मथन करनेवाला; नाश करनेवाला।

महफ़िल–स्त्री० (अ०) आदमियोंके जमा होनेकी जगह; जलसा, सभा; नाच-रंगका जलसा। मु० **–जमना**–जलसा लगना, जलसेका रंग जमना।

महफ़ूज़–वि० (अ०) जिसकी हिफाजत की गयी हो, रक्षित, निरापद।

महबूब–वि० (अ०) प्यारा, प्रेमपात्र।

महबूबा–वि० स्त्री० (अ०) प्यारी, प्रेमिका।

महमंत*–वि० मदमत्त, मतवाला –'मन कुंजर महमंत था, फिरता गहिर गँभीर'–साखी।

महमद*–पु० दे० 'मुहम्मद'।

महमदी*–वि०, पु० दे० 'मुहम्मदी'।

महमह–अ० महकते हुए, सुवास-सहित।

महमहा–वि० महकता हुआ, खुशबूदार–'मुख कस्तूरी महमही वाणी फूटी बास'–कबीर।

महमहाना*–अ० क्रि० महकना, सुगंध बखेरना।

महमा*–स्त्री० दे० 'महिमा'।

महमान–पु० दे० 'मेहमान'।

महमिल–पु० (अ०) ऊँटकी पीठपर रखनेका परदेदार हौदा।

महमूद–वि० (अ०) जिसकी हमद्–प्रशंसा की गयी हो, स्तुत, प्रशस्त। (स्त्री० 'महमूदा'।) **–ग़ज़नवी**–पु० गजनीका एक इतिहास-प्रसिद्ध मुसलमान सरदार जिसने भारतपर १७ हमले किये थे।

महमूदी–स्त्री० (फा०) एक तरहकी मलमल; चाँदीका एक पुराना सिक्का।

महमेज़–स्त्री० (अ०) सवारोंके जूतेकी एड़ीपर लगा हुआ एक तरहका काँटा जिससे घोड़ेको एड़ लगाते हैं।

महम्मद–पु० दे० 'मुहम्मद'।

महम्मदी–वि०, पु० दे० 'मुहम्मदी'।

महर–वि० सुगंधित, महकता हुआ। पु० मुखिया; ब्रजमंडलमें प्रयुक्त एक आदरसूचक उपाधि; नंद; एक पक्षी; कहार; (अ०) वह धन या संपत्ति जो मुसलमान वर निकाहके समय कन्याको देता या देनेका वचन देता है। मु० **–बख्शवाना**–पतिका कह-सुनकर पत्नीसे महर माफ करा लेना। **–बाँधना**–महरकी रकम नियत करना।

महरम–वि० (अ०) भेद जाननेवाला। पु० निकट संबंधी जिससे (मुसलमान कन्या या स्त्रीका) ब्याह जायज न हो–बाप, भाई, चाचा इ०; वह पुरुष जिससे परदा जायज न हो–पति, देवर इ०। स्त्री० अँगियाकी कटोरी; अँगिया। **–(मे)राज़**–वि० भेदी।

महरा–पु० कहार। वि० बड़ा; मुखिया। **–ई***–स्त्री० महरापन, प्रधानता।

महराना–पु० महरोंकी बस्ती, गाँव; नंदके रहनेकी जगह; दे० 'मह'में।

महराब*–स्त्री० दे० 'मेहराब'।

महरि–स्त्री० स्त्रीके लिए आदरसूचक उपाधि (ब्रज); यशोदा; गृहस्वामिनी; ग्वालिन पक्षी।

महरी–स्त्री० कहारिन; ग्वालिन पक्षी।

महरूम–वि० (अ०) रोका गया, वर्जित; निषिद्ध; वंचित; हीन (किसी वस्तुसे); बेनसीब; नाकाम।

महरूमी–स्त्री० महरूम होना; बेनसीबी; नाकामी।

महरेटा–पु० महरका बेटा; कृष्ण।

महरेटी–स्त्री० महरकी बेटी; राधिका।

महर्घता–स्त्री० (सं०) दे० 'महार्घता'।

महर्लोक–पु० (सं०) ऊपरके सात लोकोंमेंसे चौथा।

महर्षि–पु० (सं०) बहुत बड़ा ऋषि, परमर्षि (व्यास, नारद आदि); ब्रह्माके दस मानसपुत्र या प्रजापति (मरीचि आदि)।

महर्षिका–स्त्री० (सं०) भटकटैया।

महल–पु० (अ०) उतरनेकी जगह; बड़ा मकान; राजा-रईसका मकान, प्रासाद; मौका, वक्त; पत्नी, बेगम (दूसरे महलसे दो बेटे हैं)। **–दार**–पु० मकानका प्रबंधक और रक्षक। **–सरा**–पु० जनानखाना, अंतःपुर। **–(ले)ख़ास** पु० बड़ी बेगम, पटरानी।

महल्ला–पु० (अ०) शहर या कसबेका एक भाग, टोला; महल्लेके लोग। **–(ल्ले)दार**–पु० महल्लेका चौधरी।

महशर–पु० (अ०) लोगोंके इकट्ठा होनेकी जगह; कयामतका दिन, प्रलयकाल; भारी उपद्रव, हंगामा। मु० **–बरपा होना**–भारी उपद्रव मचना।

महसिल*–पु० (अ० 'मुहस्सिल'।) वसूल करनेवाला।

महसूद–वि० (अ०) हसद किया गया, जिससे ईर्ष्या की जा रही हो। पु० वजीरी पठानोंकी एक शाखा।

महसूब–वि० (अ०) जिसका हिसाब कर लिया गया हो, परिगणित; मिनहा किया हुआ।

महसूर–वि० (अ०) घेरा हुआ, घेरेमें पड़ा हुआ।

महसूल–वि० (अ०) हासिल किया हुआ, संगृहीत। पु० कर;

राज़स्व; मालगुजारी; किराया।

महसूली–वि० जिसपर महसूल लगे; बैरंग।

महसूस–वि० (अ०) ज्ञानेंद्रियोंमेंसे किसीके द्वारा अनुभूत (विषय); ज्ञात; प्रकट। मु० –करना,–होना–अनुभव करना, होना।

महसूसात–पु० (अ०) इंद्रियग्राह्य विषयोंकी समष्टि।

महस्वान्(वत्), महस्वी(विन्)–वि० (सं०) तेजोयुक्त; दीप्तिमान्; महान्।

महाँ*–अ० दे० 'महँ'।

महांग–वि० (सं०) महाकाय, भारी-भरकम। पु० ऊँट; गोखरू; रक्त चित्रक पौधा; एक तरहका चूहा; शिव।

महांजन–पु० (सं०) एक पर्वत।

महांतक–पु० (सं०) मृत्यु; शिव।

महांधकार–पु० (सं०) निविड़ अंधकार; घोर अज्ञान।

महांबुज–पु० (सं०) बहुत बड़ी संख्या; एक अरब।

महा*–पु० मट्ठा। स्त्री० (सं०) गाय; गोपवल्ली। 'महत्' शब्दका समासगत रूप। –**अहि***–पु० शेषनाग। –**कंद**–पु० लहसुन; प्याज। –**कंबु**–पु० शिव। –**कच्छ**–पु० समुद्र; वरुण; एक पर्वत। –**कपित्थ**–पु० वेलका पेड़; लाल लहसुन। –**कपोत**–पु० एक जहरीला साँप। –**कर**–वि० लंबे हाथोंवाला; जिससे अच्छी आय हो। पु० एक बोधिसत्त्व। –**कर्ण**–पु० शिव; एक नाग। –**कला**–स्त्री० शुक्ल पक्षकी द्वितीयाकी रात। –**कल्प**–पु० ब्रह्मकल्प। –**कवि**–पु० बहुत बड़ा कवि; महाकाव्यका रचयिता; शुक्राचार्य। –**कांत**–पु० शिव। –**कांता**–स्त्री० धरती। –**काय**–वि० भारी-भरकम शरीरवाला। पु० शिवका एक अनुचर; हाथी। –**कार्त्तिकी**–स्त्री० कार्त्तिकी पूर्णिमा। –**काल**–पु० अखंड, अनंत काल; शिवका संहारकारी रूप, रुद्र; उज्जैनमें स्थापित प्रसिद्ध शिवलिंग जो १२ ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक है; शिवका एक अनुचर; एक लता। –**०पुर**–पु० उज्जैन। –**काली**–स्त्री० दुर्गाका एक भयानक रूप, रुद्राणी। –**काव्य**–पु० बड़ा काव्य; आठ या इससे अधिक सर्गोंवाला वह प्रबंध-काव्य जिसमें विविध ऋतुओं, दृश्यों आदिका वर्णन हो और जिसमें सभी रसों तथा विविध छंदोंका समावेश हुआ हो। –**कुमार**–पु० राजाका सबसे बड़ा बेटा, युवराज। (–**कुमारामात्य**–पु० युवराजकी मंत्रणासभाका प्रधान)। –**कुमुदा**–स्त्री० गंभारी। –**कुल**–पु० उच्च कुल; वह श्रोत्रियकुल जिसमें दस पीढ़ियोंसे वेदाध्ययन होता आ रहा हो। वि० उच्च कुलमें उत्पन्न। –**कुलीन**–वि० ऊँचे कुल, घरानेमें जनमा हुआ। –**कुष्ठ**–पु० गलित कुष्ठ। –**कृच्छ्र**–पु० भारी तपस्या; विष्णुका एक नाम। –**कृष्ण**–पु० जहरीला काला साँप। –**केतु**–पु० शिव। –**कोशल**–पु० दक्षिण कोशल, आधुनिक मध्यप्रदेशका हिंदीभाषी भाग। –**कोशा**–स्त्री० एक नदी। –**कोशातकी**–स्त्री० निनुआँ। –**क्रतु**–पु० बड़ा यज्ञ–अश्वमेध, राजसूय आदि। –**क्रम**–पु० विष्णु। –**क्रोध**–पु० शिव। –**क्षीर**–पु० ईख। –**खर्व**–पु० सौ खर्वकी संख्या। –**गंगा**–स्त्री० महाभारतमें वर्णित एक नदी। –**गंध**–पु० हरिचंदन; कुटज; जलवेत। वि० तीव्र गंधवाला। –**गंधा**–स्त्री० नागबला; केवड़ा; चामुण्डा। –**गज**–पु० दिग्गज। –**गणपति**–पु० गणेशका एक रूप; शिवका एक अनुचर। –**गद**–पु० कठिन रोग; ज्वर। –**गर्भ**–पु० विष्णु, शिव। –**गल**–वि० लंबी गर्दनवाला। –**गुण**–वि० अति गुणकारी (औषध)। –**गुरु**–पु० श्रेष्ठ गुरुजन–माता, पिता और आचार्य। –**गुल्मा**–स्त्री० सोमलता। –**गोपा**–स्त्री० अनंतमूल। –**गौरी**–स्त्री० दुर्गा। –**ग्रंथ**–पु० बड़ा ग्रंथ, अधिक महत्त्वका ग्रंथ। –**ग्रह**–पु० राहु। –**ग्रीव**–पु० ऊँट; शिव। –**घूर्णा**–स्त्री० मद्य। –**घृत**–पु० बहुत पुराना घी। –**घोष**–वि० बहुत जोरकी आवाजवाला। पु० भारी हल्ला; बाजार। –**घोषा**–स्त्री० काकड़ासिंगी। –**चंचु**–पु० चेंचका साग। –**चंड**–पु० यमदूत; शिवका एक अनुचर। –**चंडा**–स्त्री० चामुंडा। –**चक्रवर्ती(र्तिन्)**–पु० सार्वभौम नरेश, सम्राट्। –**चमू**–स्त्री० विशाल सेना। –**चेता(तस्)**–वि० ऊँचे हृदयवाला, उच्चमना–'महाचेता द्विवेदीजी'–सुधीन्द्र। –**छाय**–पु० वटवृक्ष। –**छिद्रा**–स्त्री० महामेदा। –**जंबीर**–पु० कमला नीबू। –**जन**–पु० श्रेष्ठजन, बड़ा आदमी; जाति या श्रेणी-विशेषका मुखिया; जनसमूह, जनता; देन-लेन करनेवाला, साहूकार। (–**जनी**–स्त्री० (हिं०) महाजनका पेशा, रुपयेका लेन-देन।)–**जय**–वि० बहुत बड़ा विजेता। –**जल**–पु० समुद्र। –**जाली**–स्त्री० पीताघोषा; राजकोषातकी। –**जिह्व**–वि० जिसकी जीभ बहुत लंबी हो। पु० शिव; एक दैत्य। –**ज्ञानी(निन्)**–वि० बहुत बड़ा ज्ञानी। पु० महामुनि; शिव। –**ज्योति(ष्)**–पु० सूर्य; शिव। –**ज्योतिष्मती**–स्त्री० बड़ी मालकँगनी। –**ज्वाल**–वि० भभकता हुआ, बहुत चमकता हुआ। पु० हवनकी अग्नि; शिव; एक नरक। –**डोल**–पु० बड़ी पालकी। –**तत्त्व***–पु० दे० 'महत्तत्त्व'। –**तपा(पस्)**–वि० कठोर तप करनेवाला। पु० विष्णु। –**तप्तकृच्छ्र**–पु० एक कृच्छ्र व्रत। –**तल**–पु० नीचेके सात लोकोंमेंसे पाँचवाँ। –**तारा**–स्त्री० एक तंत्रोक्त देवी; जैनोंकी एक देवी। –**तिक्त**–पु० नीम। –**तीक्ष्ण**–वि० अति तीक्ष्ण। –**तीक्ष्णा**–स्त्री० भिलावाँ। –**तेजा(जस्)**–वि० अति तेजस्वी; अति पराक्रमी। पु० वीर; पारा; कार्त्तिकेय; अग्नि। –**त्याग, –त्यागी(गिन्)**–वि० बहुत त्याग-शील। पु० शिव। –**दंड**–पु० लंबी भुजा; भारी दंड, सजा; यमदूत। –**०धर**–पु० यमराज। –**०धारी**–पु० (हिं०) यमराज। –**दंत**–पु० बड़े दाँतोंवाला हाथी; शिव। –**दंता**–स्त्री० नागबेल। –**दंष्ट्र**–पु० शिव; एक राक्षस। –**दशा**–स्त्री० मनुष्यके जीवनमें ग्रहविशेषका निर्धारित भोग्यकाल। –**दान**–पु० बड़ा दान; उन सोलह दानोंमेंसे कोई जिनका फल स्वर्ग माना गया है (तुलापुरुष, सोनेकी गौका दान, गजदान, कन्यादान इ०)। –**दारु**–पु० देवदारु। –**देव**–पु० शिव। –**देवी**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती; सबसे बड़ी रानी, पटरानी। –**देश**–पु० भूमंडलका कोई मुख्य भाग जिसके अंदर कई देश हों। –**द्रुम**–पु० पीपल; बड़ा वृक्ष। –**द्रोण**–पु० शिव; सुमेरु पर्वत। –**द्रोणा**–स्त्री० द्रोणपुष्पी। –**द्वार**–पु० बड़ा या मुख्य दरवाजा। –**द्वीप**–पु० महादेश, पुराणानुसार पृथ्वीके सात मुख्य विभाग–जंबु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर; पृथ्वीका वह बड़ा भाग जिसमें कई देश हों, जैसे एशिया, यूरोप आदि। –**धन**–वि० बहुत बड़ा धनी; बहुमूल्य। पु० सोना; बहुमूल्य वस्त्र; गंध धूप; खेती। –**धनुष्(स्)**–पु० शिव। –**धातु**–पु० सोना; सुमेरु। –**नंद**–पु० नंदवंशके अंतर्गत एक राजा; दे० क्रममें। –**नंदा**–स्त्री० बंगालकी एक नदी; सुरा, मद्य; दे० क्रममें। –**नगर**–पु० बड़ा शहर। –**नट**–पु० शिव। –**नदी**–स्त्री० बड़ी नदी, समुद्रगामिनी नदी; उड़ीसासे होकर बंगालकी खाड़ीमें गिरनेवाली एक नदी। –**नरक**–पु० २१ नरकोंमेंसे एक। –**नवमी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला नवमी। –**नाटक**–पु० दस अंकोंवाला नाटक। –**नाद**–पु० बहुत जोरकी आवाज; हाथी; गरजनेवाला बादल; बड़ा ढोल; शंख; कान; शिव; सिंह; ऊँट। –**नाभ**–पु० एक दानव। –**नारायण**–पु० विष्णु। –**नास**–पु० शिव। –**निंब**–पु० बकायन। –**निद्रा**–स्त्री० मृत्यु। –**निधान**–पु० धातुभेदी पारा। –**नियम**–पु० विष्णु। –**निर्वाण**–पु० व्यष्टि सत्ताका पूर्ण नाश, परिनिर्वाण। –**निशा**–स्त्री० रात्रिका दूसरा और तीसरा पहर; दुर्गा; प्रलयरात्रि। –**नीच**–पु० रजक। –**नील**–वि० गहरा नीला। पु० एक तरहका नीलम; भृंगराज पक्षी। –**नृत्य,–नेत्र**–पु० शिव। –**नेमि**–पु० कौआ। –**पंक**–पु० महा पाप (बौ०)। –**पंचमूल**–पु० बेल, अरनी, सोनापाढ़ा, काश्मरी और पाटला–इन पाँच पेड़ोंकी जड़ोंका योग। –**पंचविष**–पु० सिंधिया (शृंगी), कालकूट, मोथा, वछनाग और शंखकर्णी–इन पाँच विषोंका समूह। –**पक्ष**–वि० बड़े पक्ष; दल या कुटुंबवाला। पु० गरुड। –**पक्षी(क्षिन्)**–पु० उल्लू। –**पथ**–पु० राजपथ; महाप्रस्थानका पथ, मृत्यु; हिमालयके उत्तरका वह रास्ता जिससे युधिष्ठिर आदिने स्वर्गारोहण किया था; एक नरक। –**पद्म**–पु० श्वेत कमल; सौ पद्मकी संख्या; दक्षिण दिशाका दिग्गज; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; एक नंदवंशी राजा। –**०नंद** पु०–नंदवंशका अंतिम राजा। –**पवित्र**–पु० विष्णु। –**पातक**–पु० बहुत बड़ा पाप; स्मृतिवर्णित ये पाँच महापाप–ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-गमन और

इस प्रकारका पाप करनेवालोंका संसर्ग । **–पातकी(किन्)**–वि० महापातक करनेवाला । **–पात्र**–पु० प्रेतकर्म कराने और उसका दान लेनेवाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण; महामंत्री । **–पाद**–पु० शिव । **–पाप**–पु० महापातक । **–पालिका**–दे० 'नगर महापालिका' । **–पाप्मा(मन्)**–वि० महापातकी । **–पाशुपत**–पु० मौलसिरी । **–पासक**–पु० बौद्धभिक्षु । **–पुट**–पु० रस और भस्म बनानेकी एक विशेष विधि । **–पुण्य**–पु० बहुत बड़ा पुण्य; एक बोधिसत्त्व । **–पुण्या**–स्त्री० एक पुराणवर्णित नदी । **–पुर**–पु० दुर्ग आदिसे रक्षित नगर । **–पुराण**–पु० व्यासरचित अठारह महापुराणोंमेंसे कोई एक । **–पुरुष**–पु० श्रेष्ठ जन, महिमाशाली पुरुष; नारायण; दुष्ट, हजरत (व्यं०) । **–पुष्प**–लाल कनेर; कुंद वृक्ष; एक कीड़ा । **–पृष्ठ**–पु० ऊँट । **–प्रजापति**–पु० विष्णु । **–प्रतीहार**–पु० नगर या दुर्गके रक्षकोंका प्रधान । **–प्रभ**–वि० महती प्रभावाला । **–प्रभु**–पु० परमेश्वर; राजा; इंद्र; चैतन्य महाप्रभु; वल्लभाचार्य; कोई बड़ा साधु, सन्न्यासी । **–प्रलय**–पु० ब्रह्माकी आयु शेष होनेपर होनेवाला संपूर्ण सृष्टिका नाश । **–प्रसाद**–पु० भगवान् या किसी बड़े देवताका प्रसाद; जगन्नाथजीको चढ़ाया हुआ भात; देवीको बलि किये हुए बकरेका मांस । **–प्रस्थान**–पु० महायात्रा, मृत्यु । **–प्राज्ञ**–वि० परमज्ञानी; महापंडित । **–प्राण**–वि० अधिक बल, सत्त्ववाला । पु० प्रत्येक वर्गका दूसरा और चौथा अक्षर (कवर्गमें 'ख', 'घ' और चवर्गमें 'छ', 'झ' इ०); काला कौआ । **—फल**–वि० बहुत फलने या फल देनेवाला । पु० बेलका पेड़ । **–फला**–स्त्री० इंद्रवारुणी; तितलौकी; एक तरहकी बरछी । **–वन**–पु० वृंदावनके अंतर्गत एक वन । **–बल**–वि० अति बली । पु० वायु; सीसा; बुद्ध । **–बला**–स्त्री० सहदेवी; पीपल; नीलका पौधा । **–बलाधिकृत**–पु० सबसे बड़ा सैनिक अधिकारी, रक्षामंत्री । **–बलेश्वर**–पु० महाबलेश्वर नामक स्थान (उड़ीसा)में स्थापित एक शिवलिंग । **–बाहु**–वि० लंबी बाँहवाला; बलवान् । पु० विष्णु; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । **–बोधि**–पु० बुद्धदेव; बौद्ध भिक्षु । **–ब्राह्मण**–पु० वह ब्राह्मण जो प्रेतकर्म कराता और उसमें किया जानेवाला दान लेता हो, महापात्र । **–भया**–स्त्री० एक पुराणवर्णित नदी । **–भाग,–भागी(गिन्)**–वि० अतिभाग्यवान्; सुविख्यात; पुण्यात्मा । **–भागवत**–पु० परम वैष्णव; १२ महाभक्त; श्रीमद्भागवत पुराण । **–भागा**–स्त्री० दाक्षायणी । **–भारत**–पु० व्यासरचित इतिहासग्रंथ जिसमें भरतवंशका चरित और कौरव-पांडवोंमें हुए महासंग्रामका वर्णन है; कुरु-पांडव-युद्ध; महायुद्ध; महाग्रंथ । **–भाष्य**–पु० (पाणिनिकृत व्याकरण-सूत्रपर पतंजलि-लिखित) वृहद् भाष्य । **–भिक्षु**–पु० बुद्धदेव । **–भीता**–स्त्री० लजालू । **–भीम**–वि० अति भयंकर । पु० शिवका अनुचर भृंगी; राजा शांतनु । **–भीरु**–पु० ग्वालिन नामका कीड़ा । **–भीष्म**–पु० शांतनु । **–भूत**–पु० पंचभूत या उनमेंसे कोई एक; परमेश्वर । **–भैरव**–पु० शिव । **–भोग**–पु० भारी आनंद; साँप । **–भोगा**–स्त्री० दुर्गा । **–मंडल**–पु० बड़ा, प्रधान, केंद्रीय मंडल या संघ । **–मंत्र**–पु० वेदमंत्र; अति शक्तिशाली मंत्र, उत्तम सलाह । **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० प्रधानमंत्री; किसी संस्था आदिका प्रधान सचिव (जनरल सेक्रेटरी) । **–मणि**–पु० अधिक मूल्यवान् मणि, रत्न । **–मति**–वि० अति बुद्धिमान्; उदाराशय । **–मद**–पु० मस्त हाथी । **–मना(नस्)**–वि० ऊँचे दिलवाला; उदारचित्त । **–महनीय**–वि० अत्यन्त पूजनीय (महा० पुरुष), विशेष गौरवपूर्ण, उच्च प्रतिष्ठाके योग्य । **–महिम**–वि० महामहिमायुक्त; अति महत्त्वशाली । **–महोपाध्याय**–पु० बहुत बड़ा उपाध्याय, अध्यापक; महापंडित; संस्कृतके महापंडितोंकी एक उपाधि । **–मांस**–पु० नरमांस; गोमांस । **–माई**–स्त्री० (हिं०) काली, देवी । **–मात्र**–वि० बड़ा; बढ़िया । पु० महामंत्री; महावत; हाथियोंपर निगरानी रखनेवाला । **–मान्य**–वि० परम माननीय, अति सम्मानार्ह । **–माय**–पु० शिव; विष्णु । वि० भारी मायावी । **–माया**–स्त्री० जगत्की कारणभूता अविद्या; जगत्की अधिष्ठात्री दुर्गा; बुद्धदेवकी माता । **–मारी**–स्त्री० वबाई बीमारी, मरी; महाकाली । **–माष**–पु० बड़ी उरद । **–०तैल**–पु० बकरेके मांस और दवाओंके योगसे बनाया जानेवाला एक तैल (आ० वे०) । **–मुंडनिका,–मुंडी**–स्त्री० गोरख मुंडी । **–मुख**–पु० कुंभीर, घड़ियाल । **–मुद्रा**–स्त्री० एक तंत्रोक्त मुद्रा । **–मुनि**–पु० मुनिश्रेष्ठ; व्यास; अगस्त्य; बुद्धदेव । **–मूर्ति**–पु० विष्णु । **–मूल**–पु० प्याज । **–मूल्य**–वि० महँगा; दामी । पु० माणिक । **–मृग**–पु० बड़ा पशु; हाथी । **–मृत्युंजय**–पु० शिवका एक प्रसिद्ध मंत्र जो अकालमृत्यु-निवारक माना जाता है । **–मेद**–पु०,**–मेदा**–स्त्री० अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि । **–मेघ**–पु० शिव । **–मेधा**–स्त्री० दुर्गा । **–मोह**–पु० भारी मोह; विषयवासनारूप अज्ञान । **–मोहा**–स्त्री० दुर्गा । **–यज्ञ**–पु० गृहस्थके लिए नित्य कर्तव्य पंचकर्म—वेदाध्ययन, अग्निहोत्र, तर्पण, अतिथिपूजन और भूतबलि । **–यशा(शस्)**–वि० महायशस्वी, परम कीर्तिशाली । **–यात्रा**–स्त्री० मृत्यु । **–यान**–पु० बौद्धधर्मके तीन मुख्य संप्रदायोंमेंसे एक । **–युग**–पु० चारों युगोंका योग, चौकड़ी । **–युद्ध**–पु० बहुत बड़ी लड़ाई (...प्रथम महायुद्ध—यूरोपीय राष्ट्रोंका युद्ध जो १९१४ से १९१८ तक चलता रहा । द्वितीय महायुद्ध १९३९ से १९४५ तक चलनेवाला यूरोपीय युद्ध, जिसमें पीछे अमेरिका और जापान भी सम्मिलित हुए) । **–योगी(गिन्)**–पु० महान् योगी; शिव; विष्णु; मुर्गा । **–योगेश्वर**–पु० पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, पुलह, अंगिरा, क्रतु और कश्यप । **–योनि**–स्त्री० एक योनिरोग । **–रक्त**–पु० मूँगा । **–रजत**–पु० सोना; धतूरा । **–रत्न**–पु० बहुमूल्य रत्न—हीरा, मोती, वैदूर्य, पद्मराग, गोमेद, पुखराज, पन्ना, नीलम और मूँगा । **–रथ**–पु० भारी योद्धा; वह योद्धा जो अकेला दस सहस्र धनुर्धरोंसे लड़ सके । **–रथी(थिन्)**–पु० दे० 'महारथ'; किसी विषयका प्रकांड विद्वान् या किसी क्षेत्रका महान् व्यक्ति या नेता । **–रस**–वि० बहुत रसवाला । पु० ईख; खजूर; काँजी; कसेरू; पारा; अभ्रक; सोनामक्खी, कांतिसार लोहा । **–राज**–पु० बड़ा राजा, बादशाह; राजा, ब्राह्मण, साधु-संत आदिका सम्मान-सूचक संबोधन । **–राजाधिराज**–पु० राजाओंका राजा, सम्राट् । **–राजिक**–पु० एक गण-देवता । **–राज्ञी**–स्त्री० महाराजकी प्रधान रानी, महारानी; दुर्गा । **–राणा**–पु० (हिं०) मेवाड़ और धौलपुरके राजाओंकी उपाधि । **–रात्र**–पु० अर्द्ध रात्रि । **–रात्रि**–स्त्री० महाप्रलय; आधी रातके बाद दो मुहूर्तका रात्रिकाल । **–रावण**–पु० अद्भुत रामायणमें वर्णित रावण जो जानकीके हाथों मारा गया । **–रावल**–पु० (हिं०) जैसलमेर और डूंगरपुरके राजाओंकी उपाधि । **–राष्ट्र**–पु० दक्षिण-पश्चिम भारतका एक प्रदेश, उस प्रदेशका निवासी; बड़ा राष्ट्र । (**–राष्ट्री**–स्त्री० मध्यकालकी या दूसरी प्राकृतोंमेंसे एक मुख्य भाषा; महाराष्ट्र देशकी भाषा; मराठी । **–राष्ट्रीय**–वि० महाराष्ट्र-संबंधी; महाराष्ट्र देशवासी ।) **–रुद्र**–पु० शिव । **–रेता(तस्)**–पु० शिव । **–रोग**–पु० भारी रोग (आयुर्वेदके मतसे ये आठ रोग—उन्माद, क्षय, दमा, कोढ़, मधुमेह, पथरी, उदररोग और भगंदर) । **–रोगी(गिन्)**–वि० महारोगसे पीडित । (स्त्री० 'महारोगिणी' ।)–**रौद्र**–वि० अति भयानक । पु० शिव । **–रौद्री**–स्त्री० दुर्गा । **–रौरव**–पु० २१ नरकोंमेंसे एक । **–लक्ष्मी**–स्त्री० नारायणकी शक्ति, लक्ष्मी । **–लिंग**–पु० शिव । **–लील***–वि० (हिं०) महालीला करनेवाला । **–लोल**–पु० कौआ । **–लौह**–पु० चुंबक । **–वंश**–पु० ईसाकी पाँचवीं शतीमें रचित एक पालीग्रंथ जिसमें बौद्धधर्म और सिंहलका इतिहास दिया गया है । **–वक्षा(क्षस्)**–पु० शिव । वि० विशाल वक्षवाला । **–वन**–पु० घना और बड़ा जंगल; कृष्ण लीलासे संबंधित ब्रजक्षेत्रका एक तीर्थ स्थान । **–वरा**–स्त्री० दूब । **–वराह**–पु० विष्णुका बराह अवतार । **–वल्ली**–स्त्री० माधवी लता । **–वस**–पु० शिशुमार, सूँस । **–वाक्य**–पु० महदर्थ-प्रकाशक वाक्य 'अहं ब्रह्मास्मि', 'तत्त्वमसि', 'अयमात्मा ब्रह्म' आदि उपनिषद्वाक्य । **–वात**–पु० तूफानी हवा, अंधड़ । **–वादी(दिन्)**–वि० शास्त्रार्थ करनेमें तेज । **–वायु**–स्त्री० दे० 'महावात' । **–वारुणी**–स्त्री० गंगा-स्नानका एक विशेष योग जो चैत्र-कृष्णा त्रयोदशीको शतभिषा नक्षत्र और शनिवार होनेसे पड़ता है । **–वार्त्तिक**–पु० पाणिनिके सूत्रोंपर कात्यायनकृत

वार्त्तिक । **–विक्रम**–पु० सिंह; एक नाग । **–विद्या**–स्त्री० तंत्रोक्त दस देवियाँ–काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका; दुर्गा; गंगा । **–विद्यालय**–पु० (कालेज) उच्च शिक्षा देनेवाला विद्यालय । **–विरति**–पु० शिव । **–विल**–पु० आकाश । **–विष**–पु० दो-मुँहा साँप । **–विषुव**–पु० मेषकी संक्रांति (इस दिन दिन-रात बराबर होते हैं) । **–वीचि**–पु० एक नरक । **–वीर**–वि० बहुत बड़ा वीर, योद्धा । पु० सिंह; वज्र; विष्णु; गरुड; हनूमान्; यज्ञाग्नि; कोयल; सफेद घोड़ा; बाज; जैनोंके चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर (त्रिशूलाके गर्भसे उत्पन्न महाराज सिद्धार्थके पुत्र जो युवावस्थामें ही राज-पाट छोड़कर तप करने वनमें चले गये । निर्वाणकाल ५२७ ई०) । **–वीरा**–स्त्री० क्षीरकाकोली । **–वीर्य**–वि० अति वीर्यशाली । पु० ब्रह्मा; एक बुद्ध; वाराही कंद । **–वीर्या**–स्त्री० वनकपास; महाशतावरी; सूर्यकी पत्नी संज्ञा । **–वृक्ष**–पु० सेहुँड़; ताड़; बहुत बड़ा पेड़ । **–वृष**–पु० एक तीर्थ; भारी बैल, साँड़ । **–वेग**–पु० शिव; गरुड । वि० प्रबल वेगवाला । **–व्याधि**–स्त्री० महारोग । **–व्याहृति**–स्त्री० सप्त व्याहृतियोंमेंसे पहली तीन–ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः जो गायत्री मंत्रमें गृहीत हैं । **–व्रण**–पु० दुष्ट व्रण । **–व्रत**–पु० बहुत बड़ा कठिन व्रत; बारह बरस चलनेवाला प्रायश्चित्त-रूप व्रत । वि० दे० 'महाव्रती' । **–व्रती(तिन्)**–वि० महाव्रत धारण करनेवाला । पु० शिव । **–शंख**–पु० बड़ा शंख; ललाट; कनपटीकी हड्डी; सौ शंखकी संख्या; कुबेरकी एक निधि । **–शक्ति**–स्त्री० महती शक्ति; दुर्गा । पु० कार्त्तिकेय; शिव । वि० महती शक्तिवाला (ग्रेट पावर) अत्यधिक शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र । **–शठ**–पु० पीला धतूरा । **–शतावरी**–स्त्री० बड़ी सतावर । **–शल्क**–पु० झिंगा मछली । **–शाल**–पु० बड़ा गृहस्थ । **–शालि**–पु० लंबा खुशबूदार चावल । **–शासन**–पु० महत्त्वपूर्ण राजाज्ञा । वि० जिसका शासन महान् हो । **–शिरा(रस्)**–पु० एक तरहका साँप । **–शीता**–स्त्री० शतमूली । **–शुक्ति**–स्त्री० सीप । **–शुक्र**–पु० जैनियोंका एक स्वर्ग (दे० स्वर्गमें) । **–शुक्ला**–स्त्री० सरस्वती । **–शुभ्र**–पु० चाँदी । **–शूद्र**–पु० गोप । **–शूद्री**–स्त्री० अहीरिन । **–शून्य**–पु० आकाश । **–श्मशान**–पु० काशी नगरी, वाराणसी । **–श्रमण**–पु० बुद्धदेव । **–श्री**–स्त्री० बुद्धदेवकी एक शक्ति । **–श्वास**–पु० श्वास रोगका एक भेद । **–श्वेता**–स्त्री० सरस्वती; दुर्गा; सफेद शकर । **–षष्ठी**–स्त्री० दुर्गा; सरस्वती । **–संक्रांति**–स्त्री० मकर संक्रांति (?) । **–संस्कार**–पु० अंत्येष्टि । **–सती**–स्त्री० परम साध्वी, पतिव्रता । **–सत्त्व**–वि० अति बलशाली, महामना । पु० बुद्धदेव; कुबेर; बृहत्काय पशु । **–सभा**–स्त्री० बड़ा जलसा; महासंघ; बड़ा संगठन; हिंदू महासभा । **–सभाई**–वि०, पु० (हिं०) हिंदू महासभाका अनुयायी; सभाका सदस्य, सभासद । **–समंगा**–स्त्री० ककही, ओदनिका, बला । **–समुद्र**–पु० बड़ा समुद्र, महासागर । **–सर्ग**–पु० महाप्रलयके बाद होनेवाली नयी सृष्टि । **–सर्ज**–पु० कटहल । **–सह**–वि० बहुत सहनेवाला, क्षमाशील । पु० फूलवाला कुब्जक वृक्ष । **–सहा**–स्त्री० माषपर्णी, अम्लान वृक्ष; पृथ्वी, दूर्वा । **–सांतपन**–पु० एक व्रत । **–सांधिविग्रहिक**–पु० परराष्ट्र-मंत्री । **–सागर**–पु० महासमुद्र । **–सारथि**–पु० अरुण । **–साहस**–पु० अतिसाहस; बलात्कार; जबरदस्ती छीन लेना, डकैती । **–साहसिक**–वि० अति साहसी । पु० बलात्कार करनेवाला; बलपूर्वक हरण करनेवाला । **–सिंह**–पु० दुर्गाका वाहन सिंह; शरभ । **–सिद्धि**–स्त्री० एक तरहका जादू । **–सुख**–पु० शृंगार; रति; बुद्धदेव । **–सूक्ष्मा**–स्त्री० रेत । **–सूत**–पु० युद्धका डंका । **–सेन**–पु० महासेनापति; कार्त्तिकेय; शिव । **–स्कंध**–पु० ऊँट । **–स्कंधा**–स्त्री० जामुनका पेड़ । **–स्थली**–स्त्री० पृथ्वी । **–स्नायु**–पु० अस्थिबंधननाड़ी । **–स्वन**–वि० भारी शब्दवाला । पु० एक तरहका ढोल । **–हंस**–पु० विष्णु । **–हवि(ष्)**–पु० गायका घी । **–हास**–पु० अट्टहास । **–हिक्का**–स्त्री० एक तरहकी हिचकी । मु० **–माई आना**–भयसे काँपने लगना, बदहवास हो जाना ।

महाई|*–स्त्री० मथनेका काम; मथनेकी उजरत ।

महाउत*–पु० दे० 'महावत' ।

महाउर*–पु० दे० 'महावर' ।

महाक्ष–पु० (सं०) शिव, विष्णु ।

महागणनाध्यक्ष–पु० (अकाउंटेंट-जनरल) दे० 'महालेखापाल' ।

महाचार्य–पु० (सं०) प्रधान आचार्य ।

महाडाकपाल–पु० (पोस्टमास्टर-जनरल) राज्यकी राजधानीमें रहनेवाला डाक-विभागका सबसे बड़ा अधिकारी ।

महाढ्य–वि० (सं०) अति धनी; परम संपन्न ।

महातम*–पु० दे० 'माहात्म्य' ।

महात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) जिसकी आत्मा या स्वभाव महान् हो, उच्चाशय; संत, योगी; सिद्ध पुरुष; परमात्मा; शिव; महत्तत्त्व; दुष्ट (व्यं०) ।

महादेवी वर्मा–स्त्री० (जन्म सं० १९६४–) छायावादी युगकी सर्वश्रेष्ठ कवयित्री और गीतलेखिका । अव्यक्तके प्रति आत्म-निवेदन और गंभीर आध्यात्मिक वेदना आपके काव्यकी मुख्य विशेषता है । रचनाएँ : कविता–नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य-गीत, दीपशिखा; निबंध–अतीतके चलचित्र, शृंखलाकी कड़ियाँ । चित्रात्मकता और छायावादी कविताके गुणोंका समावेश आपके गद्यकी मुख्य विशेषता है ।

महाधिकारपत्र–पु० (मैग्ना कार्टा) वैयक्तिक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता प्रदान करनेवाला वह प्रसिद्ध अधिकारपत्र जो ब्रिटेनके राजा जॉनसे सन् १२१५ ई० में लिखाया गया था ।

महानंद–पु० (सं०) परमानंद; दे० 'महा'में ।

महानंदा–स्त्री० (सं०) मद्य; माघ-शुक्ला नवमी; दे० 'महा'में ।

महान–वि० दे० 'महान्' (असाधु) । **–ता**–स्त्री० दे० 'महत्ता' ।

महानक–पु० (सं०) बड़ा नगाड़ा ।

महानुभाव–पु० (सं०) ऊँचे मन, आशयवाला, महाशय ।

महान्(हत्)–वि० (सं०) बड़ा, ऊँचा, महत् ।

महान्याभिकर्त्ता–पु० 'सालिसिटर जनरल'; महावादेक्षक ।

महान्यायवादी–पु० (ऐटर्नी-जनरल) दे० 'महाप्राभिकर्ता' ।

महापौर–पु० महानगर परिषद् (मेट्रापालिटन कौंसिल) या नगर-निगमका अध्यक्ष, निगमाध्यक्ष, मेयर ।

महापगा–स्त्री० (सं०) बड़ी नदी ।

महापत्रपाल–पु० दे० 'महाडाकपाल' ।

महाप्रज्वलन–पु० (कानफ्लेग्रेशन) विशाल और भयावह अग्निकांड जिसमें आगकी लपटें बहुत दूर-दूरतक पहुँचें और जिससे भारी क्षति होनेकी संभावना हो ।

महाप्राभिकर्ता–पु० (ऐटर्नी-जनरल) वह विधिक अधिकारी जो राज्य-संबंधी मुकदमों-मामलोंमें सरकारकी ओरसे व्यवस्थादि करनेके लिए प्राधिकृत किया गया हो ।

महाबलाधिकृत–पु० (फील्डमार्शल) बलाधिकृतोंमें सबसे बड़ा या प्रधान अधिकारी ।

महाभियोग–पु० (इंपीचमेंट) राज्यके प्रधान या राज्यके किसी बड़े अधिकारीपर, किसी जघन्य अपराध या बहुत ही अनुचित आचरण-के कारण, चलाया गया अभियोग ।

महाभिषव–पु० (सं०) सोम रस ।

महामहिम–वि० (हिज़ एक्सेलेंसी) जिसकी बड़ी महिमा हो (राज्यपालादिके सम्मानार्थ प्रयुक्त शब्द) ।

महामात्य–पु० (सं०) प्रधान मंत्री; (हिज़ मैजेस्टी) अत्यंत माननीय (किसी स्वतंत्र नरेश या सम्राट्के लिए प्रयुक्त सम्मानका शब्द) ।

महाय*–वि० महा, बहुत अधिक ।

महायुद्धपोत–पु० (कैपिटल शिप) भारी रण-पोत, जंगी जहाज ।

महायुध–पु० (सं०) शिव ।

महारंभ–वि० (सं०) बड़े काम उठानेवाला; बड़ा । पु० बड़ा काम ।

महारत–स्त्री० (अ०) अभ्यास, मश्क; योग्यता; हुनरमंदी; दखल, पहुँच, जानकारी ।

महारण्य–पु० (सं०) भारी जंगल ।

महार्घ–वि० (सं०) महँगा; दामी ।

महार्घता–स्त्री० (सं०) महँगी, महँगापन ।

महार्घ्य–वि० (सं०) बहुमूल्य ।

महार्णव–पु० (सं०) महासमुद्र; शिव ।

महार्थ–वि० (सं०) बड़े, गहरे अर्थवाला, महत्त्वपूर्ण ।

महार्द्रक–पु० (सं०) जंगली अदरक; सोंठ ।

महार्बुद–पु० (सं०) एक अरब या १० अर्बुदकी संख्या ।

महार्ह–वि० (सं०) बहूमूल्य । पु० सफेद चंदन ।

महाल–पु० (अ०) महल्ला; वह जमींदरी जिसमें कई पट्टियाँ हों; विभाग । **–वार**–अ० हर महालका अलग-अलग (म० जमाबंदी) ।

महालय–पु० (सं०) विहार; मंदिर; तीर्थ; आश्विन कृष्ण पक्ष; परमात्मा ।

महालया–स्त्री० (सं०) आश्विन-कृष्णा अमावस्या ।

महालेखाकार (–०पाल)–पु० (अकाउंटेंट-जनरल) सरकारके रेल-विभाग, डाक-विभाग आदि सार्वजनिक विभागोंका प्रधान लेखापाल, महागणनाध्यक्ष ।

महावट–स्त्री० जाड़ेकी वर्षा ।

महावत–पु० हाथीवान, आंकुशिक ।

महावर–पु० लाखका रंग जिससे स्त्रियाँ पाँव रँगती हैं ।

महावरा–पु० दे० 'मुहावरा' ।

महावरी–स्त्री० महावरकी गोली ।

महावरोह–पु० (सं०) बरगद ।

महावाक्यार्थ–पु० किसी कविताका वह मूल अर्थ, जिसे हम एक वाक्यमें, सारतत्त्वके रूपमें उपस्थित कर सकें ।

महावाणिज्यदूत–पु० (कौंसल जनरल) किसी देशका वह वाणिज्य-दूत जो किसी अन्य देशकी राजधानीमें नियुक्त किया गया हो और जो उस देशमें स्थित इतर वाणिज्यदूतोंका प्रधान हो ।

महावादेक्षक–पु० 'सालिसिटर जनरल'; वह विधिक अधिकारी जो दस्तावेजों आदिको देखता, मुकदमेके कागज पत्रोंको ठीक करता और वकील या विधिज्ञको यथोचित सलाह देता है ।

महावायुपति–पु० (एयर मार्शल) वायुसेनाका सबसे बड़ा अधिकारी ।

महावीर-चक्र–पु० स्वतंत्र भारतमें सेनाके किसी वीरको रणभूमिमें असामान्य वीरता दिखानेपर दिया जानेवाला एक विशेष पदक जो परमवीर-चक्रसे छोटा माना जाता है ।

महावीरप्रसाद द्विवेदी–पु० (सं० १९२७-१९९५) आपने हिंदी भाषाको व्याकरणसम्मत, परिमार्जित और परिनिष्ठित बनाने और 'सरस्वती'का संपादन करते हुए विभिन्न विषयोंपर नये लेखकोंको उत्पन्न करनेका ऐसा ऐतिहासिक महत्त्वका कार्य किया है कि हिंदी साहित्यके इतिहासका एक युग ही आपके नामसे 'द्विवेदीयुग' कहा जाता है ।

महाशन–वि० (सं०) बहुत खानेवाला, अतिभोजी ।

महाशय–वि० (सं०) उच्चाशय, महामना, उदार । पु० ऊँचे मन, आशयवाला पुरुष; समुद्र । (स्त्री० महाशया ।)

महाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) बहुमूल्य पत्थर ।

महाष्टमी–स्त्री० (सं०) आश्विन-शुक्ला अष्टमी ।

महासि–स्त्री० (सं०) बड़ी तलवार ।

महासुरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

महास्पद–वि० (सं०) उच्चपदस्थ; शक्तिशाली ।

महाह्न–पु० (सं०) तीसरा पहर, अपराह्न ।

महिँ*–अ० दे० 'महँ' ।

महि–स्त्री० (सं०) महिमा; पृथ्वी; महत्तत्त्व । **–देव**–पु० ब्राह्मण । **–रावण**–पु० रावणके एक पुत्रका नाम (अद्‌भुत रामायण) । **–सुता**–स्त्री० सीता । **–सुर**–पु० ब्राह्मण ।

महिका–स्त्री० (सं०) हिम, पाला ।

महिख*–पु० दे० 'महिष' ।

महिफल–पु० मधु, शहद ।

महिमंड*–वि० महिमामंडित–'खोजै सिद्ध चारन मुनीस महिमंड हैं'–घन० ।

महिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) बड़ाई, बड़प्पन; महत्ता; माहात्म्य; अष्ट सिद्धियोंमेंसे एक, अपनी देहका चाहे जितना विस्तार कर लेनेकी शक्ति । **–(मा)मंडित**–वि० महिमायुक्त ।

महिमामयी–वि० स्त्री० (सं०) महिमाशालिनी ।

महिमावान्(वत्)–वि० (सं०) प्रतापी, गौरवशाली, बड़ा ।

महिम्न–पु० पुष्पदंताचार्य रचित प्रसिद्ध शिव-स्तोत्र ।

महियाँ*–प्र० में–'प्रगटे भूतल महियाँ'–सूर ।

महियाउर*–पु० महेरा ।

महिर–पु० (सं०) सूर्य ।

महिला–स्त्री० (सं०) स्त्री; भद्र नारी; मदमत्त स्त्री; प्रियंगु-लता; रेणुका । **–दीर्घा**–स्त्री० (लेडीज़ गैलरी) महिलाओंके बैठनेका लंबोतरा स्थान ।

महिष–पु० (सं०) भैंसा; महिषासुर; स्मृतियोंमें उल्लिखित एक वर्णसंकर जाति । **–घ्नी**–स्त्री० दुर्गा । **–ध्वज**–पु० यमराज । **–पाल,–पालक**–पु० भैंसे पालनेवाला । **–मर्दिनी**–स्त्री० दुर्गा । **–वाहन**–पु० यमराज ।

महिषाक्ष, महिषाक्षक–पु० (सं०) एक तरहका गुग्गुल ।

महिषाच्छन, महिषार्दन–पु० (सं०) कार्त्तिकेय ।

महिषासुर–पु० (सं०) एक असुर जो दुर्गाके हाथों मारा गया । **–घातिनी,–मर्दिनी**–स्त्री० दुर्गा ।

महिषी–स्त्री० (सं०) भैंस; अभिषिक्ता रानी, 'पटरानी'; रानी; सैरिंध्री; व्यभिचारिणी स्त्री । **–प्रिया**–स्त्री० शूली नामकी घास ।

महिषेश–पु० (सं०) महिषासुर ।

महिष्ठ–वि० (सं०) बड़ेसे बड़ा, सबसे बड़ा ।

मही–स्त्री० मट्ठा, छाछ; (सं०) धरती; मिट्टी; भूसंपत्ति, देश; गाय; एक नदी; एक वर्णवृत्त । **–क्षित्**–पु० राजा । **–ज**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; अदरक । **–जा**–स्त्री० सीता । **–दुर्ग**–पु० कच्चा किला । **–देव**–पु० ब्राह्मण । **–धर**–पु० पर्वत; विष्णु; वेदोंका भाष्य करनेवाले एक पण्डित । **–०भाष्य**–पु० महीधर-लिखित भाष्य । **–ध्र**–पु० पर्वत । **–प,–पाल**–पु० राजा । **–प्राचीर**–पु० समुद्र । **–पुत्र**–पु० मंगल; नरकासुर । **–पुत्री,–सुता**–स्त्री० सीता । **–भुक्(ज्),–भृत्**–पु० राजा । **–रुह**–पु० वृक्ष । **–लता**–स्त्री० केंचुआ । **–सुत**–पु० मंगल ग्रह; नरकासुर । **–सुर**–पु० ब्राह्मण ।

महीन–वि० बारीक; पतला ।

महीना–पु० वर्षका बारहवाँ भाग, ३० दिनका समय, मास; दरमाहा; मासिक धर्म । मु०–(ने) से होना–ऋतुमती होना ।

महीयान्(यस्)–वि० (सं०) अधिक बड़ा, महान्; शक्तिशाली । (स्त्री० 'महीयसी' ।)

महीर–स्त्री० खौलानेपर मक्खनके नीचे बैठ जानेवाला मैल दे० 'महेरा' ।

महीला–स्त्री० (सं०) दे० 'महिला' ।

महीश–पु० (सं०) पृथिवीपति, राजा ।

महुँ*–अ० दे० 'महँ' ।

महुअर–पु० मदारियों द्वारा बजाया जानेवाला एक बाजा, तूंबी । † स्त्री० दे० 'महुअरी' ।

महुअरी†–स्त्री० महुआ मिलाकर पकायी हुई रोटी ।

महुआ, महुवा–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके फूल, फल खाने और लकड़ी ईंधनके तथा इमारती कामोंमें आती है, मधूक ।

महुआरी–स्त्री० महुएका बाग ।

महुकम*–वि० दे० 'मुहकम' ।

महुर*–वि० मधुर (रासो) ।

महुर्छा*–पु० महोत्सव ।

महुला–वि० महुए जैसे रंगवाला ।

महुलिया†–पु० महुआ । स्त्री० महुवेकी शराब ।

महुवरि–स्त्री० दे० 'महुअर' ।

महूख*–पु० दे० 'मधूक' ।

महूरत–पु०, **महूरति**–स्त्री० दे० 'मुहूर्त' ।

महूष*–पु० मधूक, महुआ; शहद (कविप्रि०) ।

महेंद्र–पु० (सं०) विष्णु; इंद्र; एक कुलपर्वत । **–कदली**–स्त्री० एक प्रकारका केला । **–गिरि**–पु० दक्षिणावर्तका एक पर्वत (प्रयाग

स्तम्भ अभिलेख)। **—पुरी**–स्त्री॰ अमरावती। **–वारुणी**–स्त्री॰ बड़ी इंद्रायन।

महेंद्री–स्त्री॰ (सं॰) गुजरातकी एक नदी।

महेर–स्त्री॰ दे॰ 'महेरा'; झगड़ा, अड़चन।

महेरणा–स्त्री॰ (सं॰) शल्लकी वृक्ष।

महेरा–पु॰ मट्ठेमें नमक या मीठा डालकर पकाया हुआ चावल; मठा।

महेरि*–स्त्री॰ दे॰ 'महेरा'।

महेरी–स्त्री॰ उवाली हुई ज्वार; * दे॰ 'महेरा'। वि॰ वाधा डालनेवाला।

महेला–पु॰ पशुओंको खिलाया जानेवाला एक पुष्टिकारक द्रव्य। स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'महीला'।

महेलिका–स्त्री॰ (सं॰) महिला, स्त्री।

महेश–पु॰ (सं॰) शिव; परमेश्वर। **–बंधु**–पु॰ विल्व वृक्ष।

महेशानी–स्त्री॰ (सं॰) पार्वती।

महेश्वर–पु॰ (सं॰) शिव; परमेश्वर।

महेश्वरी–स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा।

महेषुधि–पु॰ धनुर्धारी।

महेष्वास–वि॰ (सं॰) धनुष्वाला; वड़ा योद्धा।

महेस*–पु॰ दे॰ 'महेस'।

महेसी*–स्त्री॰ पार्वती।

महेसुर*–पु॰ दे॰ 'महेश्वर'।

महैकोद्दिष्ट–पु॰ (सं॰) मरणाशौचके अंतमें किया जानेवाला एक श्राद्ध।

महैला–स्त्री॰ (सं॰) वड़ी इलायची।

महोक्ष–पु॰ (सं॰) वड़ा वैल।

महोख–पु॰ दे॰ 'महोखा'।

महोखा–पु॰ कौएके आकारकी एक चिड़िया जिसकी बोली वहुत तेज होती है।

महोगनी–पु॰ एक सदावहार पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुरसी आदि वनानेके काम आती है।

महोच्छव*–पु॰ दे॰ 'महोत्सव'।

महोछ*–पु॰ दे॰ 'महोच्छव'।

महोटी–स्त्री॰ (सं॰) वृहती नामक क्षुप।

महोती–स्त्री॰ महुएका फल।

महोत्पल–पु॰ (सं॰) पद्म; सारस पक्षी।

महोत्सव–पु॰ (सं॰) वड़ा उत्सव, समारोह।

महोत्साह–वि॰ (सं॰) दे॰ 'महोद्यम'।

महोदधि–पु॰ (सं॰) महासागर।

महोदय–वि॰ (सं॰) अति समृद्ध; गौरवशाली; महानुभाव। पु॰ कान्यकुब्ज देश; कान्यकुब्ज नगरी; स्वामी; मोक्ष।

महोदया–स्त्री॰ (सं॰) नागवला। वि॰ स्त्री॰ दे॰ 'महोदय'।

महोदर–वि॰ (सं॰) वड़े पेटवाला। पु॰ धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक राक्षस।

महोदरी–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) वड़े पेटवाली। स्त्री॰ भगवती।

महोदार–वि॰ (सं॰) अतिशय उदार।

महोद्यम–वि॰ (सं॰) अतिशय उद्यम, उत्साहवाला।

महोन्नत–वि॰ (सं॰) अतिशय उन्नत, ऊँचा।

महोपाध्याय–पु॰ (सं॰) वड़ा अध्यापक, पंडित।

महोवनी–स्त्री॰ एक वृक्ष तथा उसका फल।

महोवा–पु॰ हमीरपुर जिलेका एक कसवा जो हिंदूकालमें चंदेल राजाओंकी राजधानी था और आल्हा-ऊदलका वासस्थान होनेके कारण वहुत प्रसिद्ध है।

महोविया, महोवी–वि॰ महोवेका।

महोरग–पु॰ (सं॰) वड़ा साँप; एक सर्पगण।

महोरस्क–वि॰ (सं॰) चौड़ी छातीवाला।

महोला*–पु॰ वहाना; धोखा।

महोघ–वि॰ (सं॰) जिसकी धारा प्रखर हो।

महौजा (जस्)–वि॰ (सं॰) अति ओज, तेजवाला, परम तेजस्वी।

महौषध–स्त्री॰ (सं॰) अति गुणकारी औषध; सोंठ; लहसुन; वछनाग; अतीस।

महौषधि–स्त्री॰ (सं॰) श्रेष्ठ ओषधि; जड़ी; दूब; लजालू; शतावरी, सहदेवी आदि जिनका चूर्ण अभिषेकके जलमें मिलाया जाता है।

महौषधी–स्त्री॰ (सं॰) सफेद भटकटैया; ब्राह्मी; कुटकी; अतिवला; हिलमोचिका।

माँ*–अ॰ में। स्त्री॰ माता, जननी। **–जाई**–स्त्री॰ सगी वहन। **–जाया**–पु॰ सगा भाई। **–वाप**–पु॰ माता-पिता; मातृ-पितृ-तुल्य व्यक्ति। **–॰सरकार**–स्त्री॰ मातृ-पितृ-तुल्या (रक्षण, पालन करनेवाली) सरकार।

माँकड़ी–स्त्री॰ मकड़ी; वुनकरोंका एक औजार; पतवारमें लगनेकी एक लकड़ी।

माँख*–पु॰ दे॰ 'माख'।

माँखना*–अ॰ क्रि॰ क्रोध करना, नाराज होना।

माँखा–पु॰ मच्छर (जायसी)।

माँग–स्त्री॰ वालोंको सँवारकर वनायी हुई रेखा। **–चोटी**–स्त्री॰ माँग-पट्टी, वनाव-सिंगार। **–टीका**–पु॰ माथेपर पहननेका एक गहना। **–पट्टी**–स्त्री॰ वाल सँवारना, केश-रचना, माँगचोटी। **–फूल**–पु॰ दे॰ 'माँगटीका'। मु॰**–उजड़ना**–विधवा होना।

माँग–स्त्री॰ माँगनेकी क्रिया या भाव; याचना; चाह; तलव; अधिकाररूपमें की हुई याचना (आ॰)। **–जाँचकर,–ताँगकर**–इधर-उधरसे लेकर।

माँगन*–पु॰ माँगना, माँग; दे॰ 'मंगन'।

माँगना–स॰ क्रि॰ याचना करना, कुछ देनेकी प्रार्थना करना; चाहना; प्रार्थना करना; * वुला मँगाना–'चहौं आजु माँगों धरि केसा'–प॰।

मांगलिक–वि॰ (सं॰) मंगलजनक, मंगलसूचक। (स्त्री॰ मांगलिकी।) पु॰ नाटकमें मंगलपाठ करनेवाला पात्र।

मांगल्य–वि॰ (सं॰) मंगलकारी। पु॰ मंगलका भाव, मांगलिकता; मांगलिक द्रव्य–'वेदाध्यायी ब्राह्मणोंके उत्क्षिप्त मांगल्यसे राजमार्ग भर गया होगा'–हजारीप्र॰। **–कामा**–स्त्री॰ दूव; हलदी; गोरोचन; हर्रे। **–कुसुमा**–स्त्री॰ शंखपुष्पी।

मांगल्या–स्त्री॰ (सं॰) गोरोचन; जीवंती।

मांगल्यार्हा–स्त्री॰ (सं॰) त्रायमाणा लता।

माँचना*–अ॰ क्रि॰ फैलना, प्रसिद्ध होना–'कीरति जासु सकल जग माची'–रामा॰; शुरू होना।

माँजना–स॰ क्रि॰ रगड़कर साफ करना; रगड़कर चमकाना; माँझा देना; मश्क करना।

माँजर–पु॰ पंजर।

माँजा–पु॰ पहली वर्षाका फेन–'माँजा मनहु मीन कहँ व्यापा' –रामा॰।

मांजिष्ठ–वि॰ (सं॰) मजीठके रंगका; लाल। पु॰ लाल रंग।

माँझ*–अ॰ मध्य, भीतर।

माँझा–पु॰ पतंगकी डोरपर, उसे कड़ा और मजवूत करनेके लिए, मला जानेवाला मसाला; हलदी चढ़नेके वाद वर-कन्याको पहनाये जानेवाले पीले कपड़े; पेड़का तना; तनाव (?); नदीकी धाराके बीचका छोटा टापू। मु॰ **–ढीला होना**–कमजोरी मालूम होना। **–(झे)का जोड़ा**–हलदीकी रस्मके वाद वर-कन्याको पहनाये जानेवाले कपड़े। **–वैठना**–वर-कन्याका व्याहके दो-तीन दिन पूर्व पीले कपड़े पहनकर एकांतवास करने लगना।

माँझिल*–वि॰ दे॰ 'मँझला'।

माँझी–पु॰ नाव खेनेवाला, मल्लाह; * मध्यस्थ।

माँट*–पु॰ मटका।

माँठ–पु॰ मटका; नील घोलनेका मटका; वड़ी मठली।

माँठी†–स्त्री॰ फूलकी वनी चूड़ी; मठली।

माँड़–पु॰ पकाये हुए चावलोंका पानी, मंड, पसाव; एक तरहका मारवाड़ी गीत; ब्रह्मांड–'सकल माँड़ मैं रमि रह्या साहिव कहिये सोय'–कवीर।

माँडना–स॰ क्रि॰ फैला देना, रखना (मँडाना, छत्तीस॰)–'चौपडि माँडी चौंहटै अरध-उरध वाजार'–साखी।

माँड़ना–स० क्रि० रौंदना; मसलना; गूंधना; अनाजकी बालोंसे कुचलवाकर दाने निकालना; * लगाना, पोतना; सजाना; ठानना, शुरू करना–'हौं तुमसे फिर युद्धहि माँड़ौं'–रामचंद्रिका।

माँड़नी–स्त्री० गोट, हाशिया।

मांडलिक–पु० (सं०) मंडलका राजा, मंडलाधीश।

माँडव*–पु० मंडप।

माँडवगढ़–पु० मालवाके दक्षिण भागमें स्थित मांडूका किला। (आल्हा)।

मांडवी–स्त्री० (सं०) कुशध्वजकी कन्या जो भरतको व्याही गयी थी।

मांडव्य–पु० (सं०) एक पुराणवर्णित ऋषि।

माँड़ा–पु० आँखका एक रोग; उसपर पड़नेवाला सफेद जाला; लुचुई, एक तरहका पराठा; मंडप।

माँड़ी–स्त्री० माँड़; कपड़े या सूतपर दिया जानेवाला कलफ।

मांडूक–पु० (सं०) मंडूक शाखाके ब्राह्मण।

मांडूक्य–पु० (सं०) दस मुख्य उपनिषदोंमेंसे एक।

माँड़ौ*–पु० मंडप; विवाहमंडप।

माँड़्यो*–पु० मंडप; अतिथिशाला।

माँत*–वि० मत्त, उन्मत्त; फीका, वेआब; मात, हारा हुआ।

माँतना*–अ० क्रि० मत्त, उन्मत्त होना।

माँता*–वि० मत्त, मतवाला।

मांत्र–वि० (सं०) मंत्र-संबंधी।

मांत्रिक–वि० (सं०) मंत्र-संबंधी। पु० मंत्रवेत्ता, वेदमंत्रोंका पाठ करनेमें कुशल; जंतर-मंतर जानने, करनेवाला।

माँथ†–पु० दे० 'माथा'। **–बंधन**–पु० सिरके बाल बाँधनेकी डोरी; सिरपर लपेटनेका कपड़ा।

मांथर्य–पु० (सं०) मंथरत्व, धीमापन; सुस्ती।

माँद–स्त्री० खूंखार जानवरोंके रहनेकी जगह, गुफा। वि० फीका, बेआब, धूमिल। मु० **–पड़ना**–फीका पड़ना, बेआब होना।

माँदगी–स्त्री० (फा०) रोग; थकावट।

माँदर–पु० मृदंगका एक भेद।

माँदा–वि० (फा०) बीमार; थका हुआ; बचा हुआ, छूटा हुआ।

मांदार–पु० (सं०) मंदार वृक्ष।

मांद्य–पु० (सं०) मंदता; दुर्बलता।

मांधाता(तृ)–पु० (सं०) सूर्यवंशका दिलीप आदिसे बहुत पहले होनेवाला एक चक्रवर्ती राजा।

माँपना–अ० क्रि० मतवाला होना, नशेसे प्रभावित होना।

माँयँ†–स्त्री० मातृकापूजनके लिए बनाया गया एक पक्वान्न। अ० माँहि, में।

मांस–पु० (सं०) प्राणियोंके शरीरका मुलायम, चिकना, रक्त वर्णका वह अंश जो हड्डी, चमड़े, नस आदिसे भिन्न होता है, आमिष, गोश्त; मछलीका मांस; फलका गुदारा भाग; कीट; मांस वेचनेवाली एक जाति; समय। **–कंदी**–स्त्री० मांसकी सूजन, ददोरा। **–कच्छप**–पु० तालुमें होनेवाला एक प्रकारका फोड़ा। **–कारी(रिन्)**–पु० रुधिर, लहू। **–कीलक**–पु० बवासीरका मसा। **–केशी(शिन्)**–पु० अर्शका मसा। **–ग्रंथि**–स्त्री० मांसकी गाँठ जो शरीरमें यत्र-तत्र निकल आती है। **–च्छदा**–स्त्री० मांसरोहिणी लता। **–ज**–पु० चरबी। **–तान**–पु० गलेकी सूजनका रोग। **–तेज(स्)**–पु० चरबी। **–दलन**–पु० प्लीहघ्न। **–द्रावी(विन्)**–पु० अम्लवेत। **–निर्यास**–पु० शरीरका रोआँ। **–प**– पु० पिशाच, दैत्य। **–पचन**–पु० मांस पकानेका बरतन। **–पिंड**–पु० शरीर; मांसका लोंदा। **–पिटक**–पु० मांसकी पिटारी, बहुत-सा मांस। **–पित्त**–पु० अस्थि, हड्डी। **–पेशी**–स्त्री० शरीरके भीतर एक-दूसरेसे जुड़े हुए मांसपिंड; ८वें दिनसे १४वें दिनतकका भ्रूण। **–फल**–पु० तरबूज। **–फला**–स्त्री० भंटा। **–भक्ष,–भक्षी(क्षिन्)**–वि० मांस खानेवाला। **–भेत्ता(त्तृ),–भेदी(दिन्)**–वि०, पु० मांस काटनेवाला। **–भोजी(जिन्)**–वि० दे० 'मांसभक्ष'। **–मासा**–स्त्री० माषपर्णी। **–योनि**–पु० रक्तमांस-युक्त जीव। **–रस**–पु० मांसका रसा, शोरबा। **–रोहिणी**–स्त्री० एक लता, चर्मकषा। **–लता**–स्त्री० मांसकी सिकुड़न, चमड़ेकी झुर्री, बल। **–विक्रय**–पु० मांसकी बिक्री। **–विक्रयी(यिन्)**–पु० कसाई; धनके लिए पुत्र या पुत्रीको बेचनेवाला। **–वृद्धि**–स्त्री० मांसका बढ़ जाना। **–सार,–स्नेह**–पु० चरबी-मेद। **–हासा**–स्त्री० चमड़ा।

मांसल–वि० (सं०) गुदारा, स्थूल, पुष्ट; बलवान्। **–फला**–स्त्री० भंटा, बैंगन।

मांसलता–स्त्री० मांसल होनेकी स्थिति।

मांसाद, मांसादी(दिन्)–वि० (सं०) मांस खानेवाला।

मांसारि–पु० (सं०) अम्लवेत।

मांसार्गल–पु० (सं०) मुँहसे लटकनेवाला मांस।

मांसार्बुद–पु० (सं०) एक रोग।

मांसाशी(शिन्)–वि० (सं०) मांसाहारी। पु० राक्षस।

मांसाहारी(रिन्)–वि० (सं०) मांसका आहार करनेवाला।

मांसिक–वि० (सं०) मांस वेचकर जीविका चलानेवाला।

मांसिनी–स्त्री० (सं०) जटामांसी।

मांसी–स्त्री० (सं०) जटामांसी; कक्कोली; मांसच्छदा, इलायची, चन्दनका तेल। वि० माष(उड़द)के रंगका।

मांसेष्टा–स्त्री० (सं०) चमगादड़।

मांसोदन–पु० (सं०) मांसके साथ पकाया हुआ चावल, पुलाव।

मांसोपजीवी(विन्)–वि०, पु० (सं०) मांस वेचकर जीवन-निर्वाह करनेवाला।

माँहि*–अ० हृदयके भीतर, अपने ही अंदर–'सब अँधियारा मिटि गया जब दीपक देख्या माँहि'–साखी।

माँहीं*–अ० दे० 'माहँ'।

मा–अ० (सं०) निषेधार्थक–नहीं, मत। स्त्री० लक्ष्मी; माता; मान, माप। **–कंद**–पु० आमका पेड़। **–कंदी**–स्त्री० आँवला; पीत चंदन; महाभारतमें वर्णित एक नगरी। **–धव**–पु० विष्णु; दे० क्रममें। **–नाथ,–पति**–पु० विष्णु।

मा–सर्व० (अ०) प्रश्नवाचक–क्या, कौन; जो, जो कुछ। **–कबल,–सबक**–वि० जो पहले हो, पूर्ववर्ती; प्रथमोक्त। **–बाद**–वि० जो बादमें हो, परवर्ती। **–सिवा**–अ० इसके सिवा। पु० अनात्म पदार्थ मात्र। **–हसल**–पु० जो कुछ हासिल हो, फल, उपज; नफा।

माइँ, माईं–स्त्री० छोटे पुआ जैसा मीठा या नमकीन पकवान जो विवाहके समय बनाया जाता है; मामी; कुलदेवी।

माइकेल मधुसूदन दत्त–पु० बँगलाके महान् कवि जिन्होंने 'मेघनाद वध काव्य' आदि काव्योंकी रचना की (१८२४-१८७३)।

माइक्रोफोन–पु० एक विद्युतयंत्र जो ध्वनिकी ऊर्जाको वैद्युत ऊर्जामें परिवर्तित करता है, जिसे तार द्वारा या रेडियो तरंगों द्वारा दूरीपर ले जाकर उससे पुनः ध्वनि प्राप्त कर सकते हैं।

माइल*–वि० दे० 'मायल'।

माई–स्त्री० माता, माँ; वृद्धा, आदरणीया स्त्रीका संबोधन; किसी भी स्त्रीका संबोधन; * कुल देवता–'…अरु माइनमें थपिहौं'–सूर। **–का लाल**–हिम्मतवाला, वीर; उदार, दानी।

माकर–वि० (सं०) मकरसे संबद्ध या उत्पन्न।

माकरी–स्त्री० (सं०) माघ-शुक्ला सप्तमी।

माकलि–पु० (सं०) इंद्रका सारथि (मातलि); चंद्रमा।

माक़ूल–वि० (अ०) अक्लमें आनेवाला, बुद्धिग्राह्य; ठीक, मुनासिब; अच्छा; काफी; समझदार; शिष्ट; वादमें पराजित, कायल (–करना)। पु० तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र। **–पसंद**–वि० उचित बातको मान लेनेवाला, समझदार।

माक़ूलियत, माक़ूलीयत–स्त्री० (अ०) इंसानियत, समझ-बूझ, संजीदगी।

माकूस–वि० (अ०) उलटा, विपरीत।

माक्षिक, माक्षीक–वि० (सं०) (शहदकी) मक्खियोंका; मक्खियोंसे प्राप्त। पु० शहद; सोनामक्खी; रूपामक्खी। **–ज**–पु० मोम। **–फल**–पु० एक तरहका नारियल। **–शर्करा**–स्त्री० शहदसे बनायी हुई मिसरी।

माख*–पु० अप्रसन्नता, रोष; गर्व–'तिन्हमहुँ रावन् तैं कवन सत्य वदहि तजि माख'–रामा०।

माखन–पु० दे० 'मक्खन'। **–चोर**–पु० माखन चुरानेवाला; कृष्ण।

माखना*–अ० क्रि० रोष करना, अप्रसन्न होना ।

माखी*–स्त्री० मक्खी; सोनामक्खी ।

मागद*–पु० दे० 'मागध' ।

मागध–वि० (सं०) मगधका; मगधसे उत्पन्न । पु० मगध-नरेश; भाटका पेशा करनेवाली एक जाति; * जरासंध ।

मागधा–स्त्री० (सं०) मगधकी राजकुमारी; पिप्पली ।

मागधिक–वि० (सं०) मगध-संबंधी । पु० मगधनरेश ।

मागधिका–स्त्री० (सं०) पिप्पली ।

मागधी–स्त्री० (सं०) मगधकी भाषा; चार मुख्य प्राकृतोंमेंसे एक; मगधकी राजकुमारी, सफेद जीरा; पिप्पली; चीनी; यूथिका; एक तरहकी इलायची; एक नदी; मागध जातिकी स्त्री ।

माघ–पु० (सं०) ११ वाँ चांद्र और १० वाँ सौर मास, फाल्गुनके पहलेका महीना; शिशुपाल वधके रचयिता प्रसिद्ध संस्कृत-महाकवि (१० वीं शती ई०) । **–काव्य**–पु० शिशुपालवध ।

माघवती–स्त्री० (सं०) पूर्व दिशा ।

माघी–वि० माघका । स्त्री० (सं०) माघकी पूर्णिमा ।

माघ्य–पु० (सं०) कुंदका फूल ।

माच*–पु० दे० 'मचान' ।

माचना*–अ० क्रि० दे० 'मचना' ।

माचल*–वि० मचलनेवाला, हठी ।

माचा†–पु० वड़ी मचिया; पलंग; मचान ।

माचिका–स्त्री० (सं०) मक्खी; आमड़ेका पेड़ ।

माचिस–स्त्री० दे० 'दियासलाई' ।

माची†–स्त्री० मचिया; हलके साथ व्यवहारमें लाया जानेवाला जुआ; वैलगाड़ीमें गाड़ीवानके वैठनेकी जगह ।

माछ*–पु० मछली ।

माछर*–पु० मच्छर ।

माछी†–स्त्री० मक्खी ।

माजरा–पु० (अ०) घटना; वृत्त, हाल ।

माजू–पु० सरोंकी शक्लका एक झाड़ । **–फल**–पु० माजूके झाड़का गोंद ।

माजून–स्त्री० (अ०) चाशनीमें उवालकर वनायी हुई दवा, पाक; पिसी हुई भाँग जो चाशनीमें डालकर जमा ली गयी हो; कई चीजें मिलाकर वनायी हुई वस्तु । **–कश**–पु० माजून निकालनेकी खुचंनी या चमचा ।

माट–पु० दही रखनेका मटका; वह मटका जिसमें रंगरेज रंग रखते हैं ।

माटा–पु० चीटोंकी शक्लका एक पीला कीड़ा जो प्रायः पेड़ोंके पत्तोंमें झोंझ वनाकर रहता है ।

माटी*–स्त्री० मिट्टी; धूल; शरीर; शव ।

माठ–पु० मैदेकी मोयनदार मोटी पूड़ी जो चाशनीमें पाग ली गयी हो; मटकी; (सं०) सड़क ।

माठर–पु० (सं०) सूर्यका एक पारिपार्श्विक गण; व्यास; ब्राह्मण; कलाल ।

माठी–स्त्री० एक तरहकी कपास; (सं०) कवच ।

माड–पु० (सं०) एक वृक्ष; एक तौल ।

माड़ना–स० क्रि० धारण करना; सजाना; पूजना; * ठानना ।

मॉडल–पु० (अं०) इमारत आदिका नक्शा, खाका; अनुकरणीय वस्तु या व्यक्ति ।

माडव–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति ।

माड़वा†–पु० मंडप ।

माढ़ा–पु० दूसरी मंजिलकी वैठक; मचिया ।

माढी*–स्त्री० दे० 'मढ़ी'; मचिया ।

माणक–पु० (सं०) दे० 'मानक' ।

माणव–पु० (सं०) मनुष्य; वालक; वौना; सोलह लड़ियोंका हार ।

माणवक–पु० (सं०) वालक; वौना; वटु, ब्राह्मण-वालक; सोलह या वीस लड़ियोंका हार; मूर्ख व्यक्ति ।

माणविका–स्त्री० (सं०) वालिका, किशोरी ।

माणवीन–वि० (सं०) माणव-संबंधी ।

माणव्य–पु० (सं०) वालकोंकी मंडली, वालसमूह ।

माणिक, माणिक्य–पु० (सं०) गुलावी या लाल रंगका एक रत्न ।

माणिका–स्त्री० (सं०) आठ पलकी तौल ।

माणिक्या–स्त्री० (सं०) छिपकली ।

माणिबंध, माणिमंथ–पु० (सं०) सेंधा नमक ।

मातंग–पु० (सं०) हाथी; चांडाल; किरात; एक ऋषि । **–नक्र, –मकर**–पु० विशालकाय घड़ियाल ।

मातंगी–स्त्री० (सं०) एक महाविद्या; कश्यपकी एक कन्या ।

मात*–स्त्री० माता । वि० (अ०) पराजित, हारा हुआ । स्त्री० पराजय, हार (शतरंज आदिमें) ।

मातदिल–वि० दे० 'मोतदिल' ।

मातना*–अ० क्रि० मत्त होना, नशेमें होना ।

मातवर–वि० दे० 'मोतवर' ।

मातवरी–स्त्री० विश्वसनीयता ।

मातम–पु० (अ०) मृत्युशोक; रोना-पीटना, स्यापा । **–ख़ाना**–पु० वह घर जिसमें मृत्यु हुई हो । **–दार**–वि० मातम मनानेवाला, सोगी । **–पुरसी**–स्त्री० मृत व्यक्तिके घर जाकर समवेदना-प्रकाश करनेकी क्रिया । मु० **–मनाना**–शोक करना ।

मातमी–वि० मातम-संबंधी; शोक-सूचक । **–लिवास**–पु० शोक-सूचक पहनावा, काला या नीले रंगका कपड़ा । **–सफ़**–स्त्री० मातम करनेवालोंकी पंक्ति ।

मातरिपुरुष–पु० (सं०) वह जो माताके सामने या उसपर ही मर्दानगी दिखाये, गेहेशूर ।

मातरिश्वा(श्वन्)–पु० (सं०) वायु ।

मातलि–पु० (सं०) इंद्रके सारथिका नाम । **–सारथि,–सूत**–पु० इंद्र ।

मातहत–वि० (सं०) आज्ञाधीन; नीचे काम करनेवाला । पु० अधीन कर्मचारी, सहकारी ।

मातहती–स्त्री० मातहत होनेका भाव, अधीनता ।

माता–स्त्री० (स०) जननी ।

माता(तृ)–स्त्री० (सं०) माँ, जननी; आदरणीया, वयोवृद्ध स्त्रीका संवोधन; गाय; धरती; लक्ष्मी; दुर्गा; मातृका; शीतला, चेचक; आकाश; जीव; विभूति; रेवती; जटामासी । **–(ता)पिता(तृ)**–पु० माँ-बाप ।

माता(तृ)–वि० (सं०) मापनेवाला, मापक ।

माता*–वि० मतवाला, नशेमें चूर ।

मातामह–पु० (सं०) नाना ।

मातामही–स्त्री० (सं०) नानी ।

मातुल–पु० (सं०) मामा; धतूरा; एक तरहका धान । **–पुत्रक**–पु० मामाका वेटा; धतूरेका फल ।

मातुला, मातुलानी, मातुली–स्त्री० (सं०) मामी ।

मातुलाहि–पु० (सं०) मालुधान सर्प ।

मातुलुंग–पु० (सं०) विजौरा नीवू; खजूरका फल ।

मातुलुंगक–पु० (सं०) विजौरा नीवू ।

मातुलेय–पु० (सं०) मामाका वेटा ।

मातृ–'माता' शव्दका प्रातिपदिक रूप जो केवल समासमें व्यवहृत होता है । **–कल्याणगृह**–पु० (मैटरनिटी वेलफेयर सेंटर) वह स्थान जहाँ शीघ्र ही माता वननेवाली या पहलेसे मातृत्वको प्राप्त स्त्रियोंकी देख-भाल, चिकित्सा, शिशुजन्म आदिका विशेष प्रवन्ध रहता है । **–गण**–पु० अष्ट (या सप्त) मातृकाएँ । **–गामी-(मिन्)**–वि०, पु० माताके साथ गमन करनेवाला । **–गोत्र**–पु० माताका गोत्र, कुल । **–घातक,–घाती(तिन्)**–वि०, पु० माताकी हत्या करनेवाला । **–चक्र**–पु० मातृका-समूह । **–देव**–वि० माताको देवता मानने, पूजनेवाला । **–नंदन**–पु० कार्त्तिकेय । **–पक्ष**–पु० मातृकुल, नाना, मामा आदि । **–पितृहीन**–वि० विना माँ-वापका, अनाथ । **–पूजन**–पु० माताकी पूजा; मातृकापूजन । **–वंधु,–वांधव**–पु० मातृपक्षके संवंधी । **–भक्त**–वि० माताका भक्त, माताकी पूजा करनेवाला । **–भाषा**–स्त्री० अपने जन्म-स्थानकी, अपने घरमें वोली जानेवाली भाषा, स्वभाषा । **–भूमि**–स्त्री० जन्मभूमि, स्वदेश । **–मंडल**–पु० मातृकागण; दोनों आँखोंके वीचका स्थान । **–माता(तृ)**–स्त्री० नानी । **–मुख**–

वि० मूर्ख, जडमति। **-यज्ञ**-पु० मातृकाओंकी तुष्टिके लिए किया जानेवाला एक यज्ञ। **-रिष्ट**-पु० फलित ज्योतिषके अनुसार माँके लिए संकट या कष्टका योग। **-वियोग**-पु० माताका विछोह, माताकी मृत्यु। **-शासित**-वि० मूर्ख। **-श्री**-स्त्री० माताजी (आदरार्थ प्रयुक्त)। **-सपत्नी**-स्त्री० सौतेली माता। **-ष्वसा(सृ)**-स्त्री० मौसी। (**-ष्वस्रेय**-पु० मौसीका लड़का, मौसेरा भाई। **-ष्वस्रेयी**-स्त्री० मौसीकी लड़की। मौसेरी वहन।) **-सत्तात्मक**-वि० (मैट्रिआर्कल) (वह प्रथा या पद्धति) जिसमें माता या गृहस्वामिनीकी ही सत्ता सर्वोपरि मानी जाती रही हो। **-स्तन्य**-पु० माँका दूध। **-हंता(तृ)**-वि०, पु० माताकी हत्या करनेवाला। **-हीन**-वि० विना माँका।

मातृका-स्त्री० (सं०) माता; दादी; धाय; सौतेली माँ; वर्णमाला; ब्रह्माणी, माहेश्वरी, इंद्राणी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही तथा चामुंडा आदि तांत्रिकोंकी ये सात देवियाँ (इनकी संख्या ७ से १६ तक बतायी गयी है)। पु० एक मृग।

मातृत्व-पु० (सं०) माँ, संतानवती होना; माताका पद।

मात्र-अ० (सं०) केवल, सिर्फ।

मात्रा-स्त्री० (सं०) परिमाण; ह्रस्व वर्णके उच्चारणमें लगनेवाला काल; (संगीत) स्वरका स्थितिकाल, एक स्वरके उच्चारणमें लगनेवाला काल; अक्षरमें लगायी जानेवाली स्वर-सूचक रेखा; औषधका एक वार सेवन करने योग्य परिमाण, खूराक; इंद्रिय; इंद्रियवृत्ति; धन; कानका एक आभूषण; अवयव। **-च्युतक**-पु० ऐसी रचना जिसमें कोई मात्रा हटा देनेसे दूसरा अर्थ निकले। **-वस्ति**-स्त्री० तैलवस्ति। **-वृत्त**-पु० मात्रिक छंद। **-समक**-पु० एक छंद। **-स्पर्श**-पु० विषयके साथ इंद्रियका संयोग।

मात्रिक-वि० (सं०) मात्रा-संबंधी; मात्राओंकी गणनावाला (छंद)। **-छंद(स्)**-पु० वह छंद जिसमें मात्राओंकी गणना की जाय।

मात्सर-वि० (सं०) मत्सरयुक्त।

मात्सर्य-पु० (सं०) मत्सरता; मत्सर, दूसरेका उत्कर्ष देखकर जलना।

मात्स्य-वि० (सं०) मत्स्य-संबंधी; मछलीका। पु० एक ऋषि।

मात्स्यिक-पु० (सं०) मछुआ।

माथ-पु० (सं०) मथन; पथ; * दे० 'माथा'।

माथना*-स० क्रि० दे० 'मथना'।

माथा-पु० मस्तक, ललाट, पेशानी; वस्तुका अग्रभाग। मु० **-कूटना**-सिर पीटना। **-घिसना**-अनुनय-विनय करना; भूमिसे सिर लगाकर प्रणाम करना। **-टेकना**-भूमिसे सिर लगाकर प्रणाम करना। **-ठनकना**-किसी अनिष्टकी पहलेसे आशंका होना। **-पच्ची करना**-देरतक सोचना-समझना; विशेष परिश्रमसे समझाना, सिर खपाना। **-मारना**-सिर मारना, माथापच्ची करना। **-रगड़ना**-दे० 'माथा घिसना'। **-(थे)-पर वल पड़ना**-चेहरेसे रोष, अप्रसन्नता प्रकट होना।

माथुर-वि० (सं०) मथुराका। पु० मथुरावासी; चौबे; कायस्थोंकी एक उपजाति।

माथे-अ० माथेपर; भरोसे। मु०**-चढ़ाना**-शिरोधार्य करना। **-टीका होना**-(किसी बातका) किसीके नाम ठेका होना, खास तौरसे किसीके जिम्मे होना। **-मढ़ना**-गले लगाना, सिर थोपना।

माद-पु० (सं०) मद, मत्तता; हर्ष; गर्व।

मादक-वि० (सं०) नशा पैदा करनेवाला; हर्षजनक। (स्त्री० 'मादिका'।) पु० दात्यूह।

मादकता-स्त्री० (सं०) नशीलापन।

मादकद्रव्यविभाग-पु० (सं०) (एक्साइज डिपार्टमेंट) गाँजा, भाँग आदि मादक द्रव्योंपर नियंत्रण रखनेवाला सरकारी विभाग।

मादन-पु० (सं०) मत्तता; कामदेव; धतूरा; लौंग। वि० मादक।

मादनी-स्त्री० (सं०) भाँग।

मादनीय-वि० मादक।

मादर-स्त्री० (फा०) माँ। **-जाद**-वि० जन्मका, पैदाइशी (-अंधा); सहोदर। **-०नंगा**-वि० एकदम नंगा जिसके वदनपर सूत न हो। **-(रे)जन**-स्त्री० पत्नीकी माता, सास। **-शौहर**-स्त्री० पतिकी माता, सास।

मादरिया*-स्त्री० दे० 'मादर'-'मादरिया घर वेटी आई'-कवीर।

मादरी-वि० (फा०) माँका; पैदायशी, जन्मसिद्ध। **-ज़बान**-स्त्री० मातृभाषा।

मादा-स्त्री० (फा०) स्त्री; स्त्री प्राणी, नरका उलटा। **-ए-ख़र**-स्त्री० गधी। **-ए-गाव**-स्त्री० गाय।

मादिक*-वि० दे० 'मादक'।

मादिन-स्त्री० मादा।

मादी-स्त्री० दे० 'मादा'।

मादृक्ष, मादृश-वि० (सं०) मुझ जैसा।

माद्दा-पु० (अ०) वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु वनी हो या बनायी जाय; जड़ पदार्थ; शब्दका मूल, धातु; समझ; योग्यता; मवाद।

माद्दी-वि० (अ०) माद्दाका, भौतिक, जड़; पैदाइशी।

माद्रवती-स्त्री० (सं०) माद्री जो नकुल-सहदेवकी माता थी; परीक्षितकी पत्नी।

माद्री-स्त्री० (सं०) पांडुकी दूसरी पत्नी; कृष्णकी एक पत्नीका नाम। **-नंदन,-सुत**-पु० नकुल-सहदेव।

माद्रेय-पु० (सं०) माद्रीके पुत्र-नकुल और सहदेव।

माधव-पु० (सं०) विष्णु; कृष्ण; वसंत; वैशाख; महुएका पेड़; काली मूँग; सायणाचार्यके भाई जो पीछे विद्यारण्य मुनिके नामसे प्रसिद्ध हुए। वि० मधुनिर्मित; वासंतिक।

माधवक-पु० दे० 'माधव'

माधविका-स्त्री० (सं०) माधवी लता।

माधवी-स्त्री० (सं०) एक सुगंधित फूलोंवाली लता, वासंती; शहदसे वनी शराब; मधुशर्करा; एक रागिनी; कुटनी; दुर्गा। **-लता**-स्त्री० वासंती लता।

माधवेष्टा-स्त्री० (सं०) वाराही कंद।

माधवोचित-पु० (सं०) कक्कोल।

माधुक-पु० (सं०) मनुस्मृतिमें उल्लिखित एक वर्णसंकर जाति; महुएकी शराब।

माधुकरी-वि० स्त्री० (सं०) मधुकर जैसी, भ्रमरकी-सी।

माधुर-पु० (सं०) चमेलीका फूल। वि० मधुरसे उत्पन्न।

माधुरई*-स्त्री० मिठास, माधुरी।

माधुरता*-स्त्री० दे० 'मधुरता'।

माधुरिया*-स्त्री० दे० 'माधुरी'।

माधुरी-स्त्री० (सं०) मधुरता, मिठास; शराब।

माधुर्य-पु० (सं०) मिठास; लावण्य, सहज सुंदरता; दयालुता; पांचाली रीतिवाले काव्यका एक गुण जिसमें टवर्ग और संयुक्ताक्षरोंका अभाव, सानुस्वार वर्णोंका प्रयोग तथा मृदु समासोंका व्यवहार होता है; शब्दावलीमें मनको मोह लेनेका गुण। **-प्रधान**-वि० (काव्य) जिसमें माधुर्य गुणकी प्रधानता हो।

माधूक-वि० (सं०) मिष्टभाषी। पु० एक मिष्टभाषिणी वर्णसंकर जाति।

माधैया*-पु० दे० 'माधव'।

माधो, माधौ*-पु० दे० 'माधव'।

माध्यंदिन-वि० (सं०) मध्यम, विचला। पु० दोपहर; शुक्ल यजुर्वेदकी एक शाखा।

माध्यंदिनी-स्त्री० (सं०) शुक्ल यजुर्वेदकी एक शाखा।

माध्य-वि० (सं०) मध्यका, विचला।

माध्यम-वि० (सं०) मध्यका, विचला, मध्यवर्ती। पु० कार्य-विशेषकी वाहनरूप वस्तु, 'मीडियम'; साधन, जरीया; भाषा; सियांस अभ्यासमें वह व्यक्ति जिसके द्वारा आहूत आत्मा संदेश देता है।

माध्यमिक-वि० (सं०) मध्यका, विचला। (स्त्री० 'माध्यमिकी'।) पु० बौद्धधर्मका एक संप्रदाय।

माध्यमिक शिक्षा-स्त्री० (सेकेंडरी एजुकेशन) प्रारंभिक शिक्षाके वादकी तथा उच्च शिक्षाके पूर्वकी शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षाकी समाप्तिसे लेकर मैट्रिक (कहीं-कहीं इंटर) तककी शिक्षा।

माध्यस्थ-वि० (सं०) मध्यस्थ; तटस्थ। पु० मध्यस्थता;

निष्पक्षता ।

माध्यस्थ्य–पु० (सं०) मध्यस्थता–बीचबिचाव; निष्पक्षता ।

माध्याकर्षण–पु० (सं०) पृथ्वीकी वह आकर्षणशक्ति जिससे पृथ्वीके धरातल और वातावरणके समस्त पदार्थ उसके केन्द्रकी ओर आकर्षित होते हैं, गुरुत्वाकर्षण ।

माध्याह्निक–वि० (सं०) मध्याह्नका । पु० मध्याह्नमें करनेका कर्म ।

माध्व–वि० (सं०) मधुनिर्मित; मीठा; मध्वप्रवर्तित; मध्वका अनुयायी । **–संप्रदाय**–पु० मध्वाचार्य प्रवर्तित द्वैतवादी वैष्णव संप्रदाय ।

माध्विक–पु० (सं०) शहद इकट्ठा करनेवाला ।

माध्वी–स्त्री० (सं०) मधु आदिसे बनायी हुई शराब; माधवी लता । **–मधुरा**–स्त्री० मीठा खजूर ।

माध्वीक–पु० (सं०) महुएकी शराब ।

मान–पु० (सं०) आदर, प्रतिष्ठा; आत्म-सम्मान; अभिमान; नायकके किसी अपराधसे नायिकाका रूठना (सा०); क्रोध; परिमाण; पैमाना, मानदंड; नाप, तौल; प्रमाण; तालका एक विराम । **–कंद**–पु० एक तरहका मीठा कंद । **–कलह,–कलि**–पु० मानजनित कलह । **–गृह**–पु० कोपभवन । **–ग्रंथि**–स्त्री० प्रिय या नायककी परस्त्रीमें अनुराग प्रकट करनेवाली चेष्टासे उत्पन्न कोप; अपराध । **–चित्र**–पु० नक्शा । **–ज**–वि० मानसे उत्पन्न । पु० क्रोध । **–दंड**–पु० नापनेका डंडा; मूल्यांकनकी विधि; पैमाना । **–द**–पु० विष्णु; मानवर्द्धक । **–धन**–वि० मानका धनी, प्रतिष्ठा ही जिसका धन हो । **–धनिका**–स्त्री० ककड़ी । **–पत्र**–पु० अभिनंदनपत्र । **–परेखा***–पु० भरोसा; विश्वास, आशा । **–भंग**–पु० मानहानि; (नायिकाके) मानका टूटना । **–भरी**–वि० स्त्री० (हिं०) मिजाजदार, स्वाभिमानिनी । **–भाव**–पु० रूठनेके समयकी चेष्टा, चोचला । **–मंदिर**–पु० वेधशाला; कोपभवन । **–मनौअल**–स्त्री० रुठेको मनानेकी क्रिया या भाव । **–मनौती**–स्त्री० (हिं०) रूठना-मनाना; मन्नत । **–मरोर***–पु० बिगाड़ । **–मोचन**–पु० मान छुड़ाना, रूठे हुए प्रियको मनाना । **–रंध्रा,–रंध्री**–स्त्री० जलघड़ी । **–वर्जित**–वि० मानरहित; जलील । **–सूत्र**–पु० करधनी; नापनेका फीता । **–हानि**–स्त्री० अपमान, बेइज्जती । मु० **–रखना**–बात रखना, (किसीके) बड़प्पनका सम्मान करना (उन्होंने इस कृत्यसे मेरा मान रख लिया) ।

मानक–पु० (सं०) मानकंद; (स्टैंडर्ड) दे० 'प्रमाप' ।

मानकीकरण–पु० किसी वस्तुके उत्पादन, निर्माण आदिका ऐसा रूप स्थिर करना, जिससे उसकी अच्छाई या शुद्धता आदिके सम्बन्धमें संदेहकी जगह न रह जाय (स्टैंडर्डाइजेशन) ।

मानता–स्त्री० मनौती, मान्यता ।

मानदेय–पु० (ऑनॉरेरियम, हॉनॉरेरियम) किसी काम या सेवाके लिए स्वेच्छापूर्वक दिया जानेवाला पारिश्रमिक ।

मानन–पु० (सं०) मान, आदर करना ।

मानना–स० क्रि० स्वीकार, कबूल करना; आदर, मान करना; गुण, योग्यताका कायल होना; (किसीपर) श्रद्धा करना; तिथि, पर्व आदि स्वीकार और उस दिनके विशेष कर्तव्योंका पालन करना, मनाना; मन्नत करना; समझना, खयाल करना । अ० क्रि० समझना, फर्ज करना; राजी होना ।

माननीय–वि० (सं०) मान करने योग्य, आदरणीय ।

मानव–पु० (सं०) मनुष्यकी संतान, मनुष्य; बालक। वि० मनु-संबंधी; मनुष्योचित । **–धर्मशास्त्र**–पु० मनुस्मृति । **–पणन,–व्यापार**–पु० (ट्रैफिक इन ह्यूमन बीइंग्ज़) मनुष्योंको बेचने-खरीदनेका काम । **–पुराण**–पु० एक उपपुराण । **–वाद**–पु० मानव परिवर्तित होते हुए जैसा भी है, उसके अस्तित्वमें विश्वास और उसके प्रति आस्थाका भाव । **–विज्ञान**–पु० (ऐनथ्रोपॉलॉजी) दे० 'नृवंशविज्ञान' ।

मानवता–स्त्री० (सं०) मनुष्यता । **–वाद**–पु० मानवताके उच्च आदर्शोंके प्रति आस्थाका भाव ।

मानवती–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'मानिनी' ।

मानविकी–स्त्री० मानवहित, मानव विचारों आदि सम्बन्धी विषय (राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शन, साहित्य) (ह्यमैनिटीज़, साहित्यादि विषय) ।

मानवी–वि० मानवका; मनुष्य-संबंधी । स्त्री० (सं०) नारी, स्त्री ।

मानवीय–वि० (सं०) मानव-संबंधी, इंसानी ।

मानवेंद्र–पु० (सं०) राजा; नरश्रेष्ठ ।

मानस*–पु० मनुष्य–'मनु अनेक मानस उपजाये'–छत्रप्रकाश; (सं०) मन, चित्त; मानसरोवर; रामचरितमानस । वि० मनसे उत्पन्न; मनःकृत । (स्त्री० 'मानसी' ।) **–चारी(रिन्)**–वि० मानसरोवरमें रहनेवाला । पु० हंस । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० कामदेव । **–जप**–पु० वह जप जो मन ही मन मंत्रका उच्चारण करते हुए किया जाय । **–तीर्थ**–पु० राग, द्वेष आदिसे रहित मन । **–देव***–पु० मानवेंद्र, राजा । **–पुत्र**–पु० (ब्रह्माके) संकल्पमात्रसे उत्पन्न पुत्र । **–पूजा**–स्त्री० बाह्योपचारके बिना मनसे की जानेवाली पूजा । **–व्रत**–पु० अहिंसा, सत्य आदि व्रत । **–शास्त्र**–पु० मनकी प्रकृति, क्रियाओं, वृत्तियों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मनोविज्ञान । **–शास्त्री(स्त्रिन्)**–पु० मानसशास्त्रका पंडित । **–सन्न्यासी(सिन्)**–पु० दशनामी सन्न्यासियोंका एक भेद । **–सर,–सरोवर**–पु० मानसरोवर । **–हंस**–पु० एक वृत्त ।

मानसरोवर–पु० हिमालयमें स्थित एक पवित्र झील ।

मानसालय–पु० (सं०) हंस ।

मानसिक–वि० (सं०) मन-संबंधी ।

मानसी–स्त्री० (सं०) एक विद्यादेवी । वि० स्त्री० मनसे उत्पन्न, मनःकृत (–सृष्टि,–पूजा) । **–गंगा**–स्त्री० गोवर्द्धन पर्वतके पासका एक सरोवर ।

मानसून–पु० (अं०) भारतीय महासागरमें वहनेवाली हवा जो मईके दूसरे पखवाड़ेसे सितंबरके मध्यतक दक्षिण-पश्चिम और अक्तूबरके मध्यसे दिसंबरके मध्यतक उत्तर-पूर्व दिशासे चला करती है; भारत और आसपासके देशोंमें दक्षिण-पश्चिमी मानसूनका मौसम, बरसात; वर्षके कुछ महीनोंमें एक और कुछमें उसकी विपरीत दिशासे वहनेवाली हवा ।

मानसौका(कस्)–पु० (सं०) हंस ।

मानहुँ*–अ० दे० 'मानो' ।

माना*–स० क्रि० मापना, नाप-तौल करना । अ० क्रि० अटना, समाना ।

मानिंद–वि० (फा०) सदृश, समान ।

मानिक–पु० एक प्रसिद्ध रत्न, माणिक्य, लाल । **–चंदी**–स्त्री साधारण सुपारी । **–रेत**–स्त्री० मानिकका चूरा ।

मानिका–स्त्री० (सं०) मद्य, शराब; आठ पलका वजन ।

मानिटर–पु० (अं०) कक्षाका प्रमुख विद्यार्थी जिसका कर्तव्य कक्षामें अनुशासनकी रक्षा आदि करना होता है ।

मानित–वि० (सं०) सम्मानित ।

मानिता–स्त्री०, **मानित्व**–पु० (सं०) मानी होनेका भाव, अभिमान, गौरव ।

मानिनी–वि० स्त्री० (सं०) मान, अभिमान करनेवाली, मानवती । स्त्री० नायकके किसी अपराधसे रूठी हुई नायिका (सा०) ।

मानी–स्त्री० (सं०) नापनेका पात्र जिसमें दो अंजलिभर कोई चीज आवे; सोलह सेरका अन्नका मान; घड़ा; कुदाल आदिका छिद्र जिसमें बेंट पहनायी जाय; वह छेद जिसमें कोई चीज जड़ी जाय; चक्कीके ऊपरवाले पाटकी लकड़ी । पु० (अ०) अर्थ, मतलब, अभिप्राय; हेतु (बहु०में व्यवहृत) ।

मानी(निन्)–वि० (सं०) मान करनेवाला; मानयुक्त, प्रतिष्ठित; स्वाभिमानी; रूठा हुआ (नायक); (समासके अंतमें) माननेवाला (पंडितमानी, भटमानी) । पु० सिंह ।

मानुख*–पु० दे० 'मनुष्य' ।

मानुष–वि० (स०) मनुष्य-सबंधी, मानव । पु० मनुष्य; प्रमाणके तीन भेदोंमेंसे एक ।

मानुषक, मानुषिक–वि० (सं०) मनुष्य-संबंधी ।

मानुषी–वि० मानषीय, मनुष्यका । स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी;

चिकित्साके तीन भेदों–आसुरी, मानुषी, दैवी–मेंसे एक।

मानुष्य, मानुष्यक–पु० (सं०) मनुष्यता; मानवदेह, मनुष्यजाति; मनुष्य-समूह। वि० मनुष्य-संबंधी; मनुष्यका।

मानुस*–पु० मनुष्य, आदमी।

माने–पु० मानी, मतलब, अर्थ।

मानों, मानो–अ० जैसे, गोया।

मानोज्ञक–पु० (सं०) मनोहरता।

मानौं*–अ० दे० 'मानों'।

मान्य–वि० (सं०) मानने योग्य, आदरणीय, पूज्य। **–स्थान**–पु० मान्यता, पूज्यताका कारण (वित्त, वंधु, वय, कर्म और विद्या)।

मान्यता–स्त्री० (सं०) (किसी सिद्धांत आदिका) मान्य होना; किसी संस्थाको स्वीकृति देना या प्रामाणिक मान लेना; किसी देशकी सरकारके अस्तित्वको स्वीकार करना। **–प्राप्त**–(संस्था) जिसे सरकार द्वारा मान्यता मिल चुकी हो।

माप–स्त्री० मापनेकी क्रिया या भाव; नाप; परिमाण, मिकदार; बाट, मान। **–तौल**–पु० आकारका माप और वजन।

मापक–पु० (सं०) मापनेवाला; पैमाना; बाट; अनाज तौलनेवाला, बया (कौ०)।

मापन–पु० (सं०) नापना; तराजू।

मापना–स० क्रि० वस्तुका विस्तार, घनत्व या वजन मालूम करना, नापना, पैमाइश करना। * अ० क्रि० मत्त, मतवाला होना, मातना। स्त्री० (सं०) दे० 'मापन'।

मापनी–स्त्री० (स्केल) वह आला जिसमें सेंटीमीटर, इंच आदिके निशान बने हों और जिससे नापनेका काम लिया जाय; दे० 'अनुमान'।

माफ़–वि० (अ० 'मुआफ़') क्षमा किया हुआ, बख्शा गया। **–करो**–क्षमा करो; रास्ता लो; जान छोड़ो।

माफ़कत, माफ़िक़त–स्त्री० दे० 'मुआफ़िक़त'।

माफिक–वि० अनुकूल, अनुसार।

माफ़ी–स्त्री० क्षमा, माफ किया जाना; वह जमीन जिसकी मालगुजारी या लगान माफ हो, लाखिराज जमीन। **–दार**–वि० जिसके पास माफी जमीन हो।

माम*–पु० ममता, अहंता।

मामलत–स्त्री० (अ० 'मुआमिलत') मामला; झगड़ा, विवाद। **–दार**–पु० तहसीलदार (म० प्र०)।

मामला, मामिला–पु० काम-काज, धंधा; देन-लेन; खरीद-बेची; काम; घटना, बात; विवाद, मुकदमा। **–दानी,–रसी**–स्त्री० बातकी तहतक पहुँचना, व्यवहार-कुशलता। मु० **–करना**–तै करना, समझौता करना। **–पटाना**–सौदा करना।

मामा–पु० माँका भाई, मातुल। स्त्री० (फा०) माता; वृद्धा; खाना पकानेवाली, पाचिका; सेविका, नौकरानी। **–गिरी,–गीरी**–स्त्री० मामाका काम।

मामी–स्त्री० मामाकी पत्नी, मातुलानी; अपना दोष न मानना; स्वीकृति। –मु० **–पीना**–अपनी गलतीपर ध्यान न देना। **–भरना**–हामी भरना, समर्थन करना–'बेद भरत हैं मामी'–घन०।

मामूँ–पु० मामा, मातुल।

मामूर–वि० (अ०) भरा हुआ; आबाद; समृद्ध।

मामूल–वि० (अ०) अमल किया हुआ; जिसपर अमल किया जाय। पु० वह बात जो रोज की जाय, नित्य नियम; अभ्यास; रीति, दस्तूर; दस्तूरी; वह व्यक्ति जिसपर मिस्मेरिज्म या हिप्नाटिज्म किया जाय। मु० **–के दिन**–रजोधर्मका समय। **–से होना**–ऋतुमती होना (मुसल०)।

मामली–वि० रोज होनेवाला, साधारण।

मायँ*–अ० मध्य, बीच। मातृका।

माय–वि० (सं०) मायावी। पु० असुर; पीतांबर। * स्त्री० माता, माँ; दे० 'माया'। अ० दे० 'महिँ'।

मायक*–वि०, पु० माया करनेवाला; मायावी; मायका।

मायका–पु० पीहर।

मायण–पु० (सं०) वेदभाष्यकर्ता सायण और माधवके पिता।

मायन*–पु० विवाहमें मातृकापूजनका दिन; उस दिनका कृत्य; (सं०) दे० 'मायण'।

मायनी*–स्त्री० मायाविनी।

मायल–वि० (अ०) मेल करनेवाला, झुका हुआ, आकृष्ट; (रंगवाची शब्दोंसे समस्त होकर) मिला हुआ, युक्त (सब्जीमायल, सुर्खीमायल)।

माया–स्त्री० (सं०) धोखा, कपट; इंद्रजाल, जादू; परमेश्वरकी अव्यक्त बीजरूप शक्ति जो प्रपंचकी कारणभूता है; प्रकृति, अविद्या; जीवको बाँधनेवाले चार पाशोंमेंसे एक (शैवागम); मोहकारिणी शक्ति; लक्ष्मी; दुर्गा; प्रज्ञा (वे०); कृपा; बुद्धकी माताका नाम; लीला, करामात (यह सब उन्हींकी माया है); धन-दौलत (हिं०); ममता, (हिं०) संसारासक्ति, पुत्र-कलत्रादिमें राग; एक वर्णवृत्त। **–कार,–कृत्**–पु० जादूगर, इंद्रजाल करनेवाला। **–क्षेत्र**–पु० दक्षिणका एक तीर्थ क्षेत्र। **–जाल**–पु० माया, मोहका फंदा; घर-गृहस्थीका जंजाल। **–जीवी(विन्)**–पु० दे० 'मायाकार'। **–देवी**–स्त्री० बुद्ध देवकी माता। **–पटु**–वि० मायावी। **–पति**–पु० ईश्वर। **–पाश**–पु० मायाका फंदा। **–पुरी**–स्त्री० हरिद्वार। **–प्रयोग**–पु० छलप्रयोग, धूर्तता; जादूका प्रयोग। **–फल**–पु० माजूफल। **–मृग**–पु० सीताको छलनेके लिए मारीच राक्षस द्वारा धृत स्वर्णमृगका रूप। **–मोह**–पु० असुरोंको मोहनेके लिए विष्णुकी देहसे उत्पन्न पुरुषविशेष; माया और मोह। **–युद्ध**–पु० माया-बलसे किया जानेवाला युद्ध। **–वाद**–पु० संसारको मिथ्या माननेका सिद्धांत। **–वादी(दिन्)**–पु० मायावादको माननेवाला। **–सीता**–स्त्री० सीताहरणके पूर्व अग्निद्वारा रचित नकली सीता। **–सुत**–पु० बुद्धदेव।

मायात्ति–पु० (सं०) नरबलि।

मायाद–पु० (सं०) मगर।

मायामय–वि० (सं०) मायायुक्त।

मायावती–स्त्री० (सं०) कामदेवकी स्त्री रति।

मायावान्(वत्)–वि० (सं०) दे० 'मायावी'। पु० कंस।

मायाविता–स्त्री० (सं०) छलछंदता, धोखेबाजी।

मायावी(विन्)–वि० (सं०) माया करने, जाननेवाला, जादूगर; छलनेवाला, फरेबी। (स्त्री० 'मायाविनी'।) पु० परमात्मा; बिल्ली; माजूफल।

मायास्त्र–पु० (सं०) रामको विश्वामित्रसे प्राप्त एक अस्त्र।

मायिक–वि० (सं०) मायावाला; मायाकृत, बनावटी। पु० जादूगर; माजूफल।

मायी(यिन्)–वि० (सं०) मायावाला, मायाविशिष्ट। पु० जादूगर; छलिया; परमेश्वर; कामदेव; अग्नि; शिव।

मायु–पु० (सं०) सूर्य; पित्त; शब्द (वै०)।

मायूर–वि० (सं०) मयूर-संबंधी; मयूरपंखका बना; मयूरको प्रिय लगनेवाला। पु० मोरों द्वारा खींचा जानेवाला रथ; मोरोंका झुंड।

मायूरक, मायूरिक–पु० (सं०) मोर पकड़नेवाला।

मायूरी–स्त्री० (सं०) अजमोदा नामक पौधा।

मायूस–वि० (अ०) निराश, भग्नहृदय।

मायूसी–स्त्री० नैराश्य, नाउम्मेदी।

मार–पु० (सं०) मारण, वध; मृत्यु; विघ्न; कामदेव; प्रेम, राग; ललचाने, बहकानेवाली शक्ति (बौ०); धतूरा। **–कायिक**–पु० मारके अनुचर (बौ०)। **–जित्**–पु० शिव; बुद्ध।

मार–स्त्री० मारनेकी क्रिया, चोट; मार-पीट, लड़ाई; निशाना (तोपकी मार); कष्ट, क्लेश (गरीबीकी मार)। **–काट**–स्त्री० हरबे-हथियारकी लड़ाई, युद्ध; खूँरेजी। **–धाड़,–पीट**–स्त्री० लड़ाई, एक दूसरेको मारना।

मार–पु० (फा०) साँप। **–आस्तीन**–पु० आस्तीनका साँप, दोस्त बनकर दुश्मनी करनेवाला। **–ख़ोर**–पु० अफगानिस्तान आदिमें होनेवाला एक तरहका बकरा। **–गीर**–पु० सँपेरा। **–पेच**–पु० छल-कपट, जाल-फरेब। **–माही**–स्त्री० बाम मछली। **–(रे)गंज**–पु० खजानेकी रक्षा करनेवाला साँप।

मारक–वि० (सं०) मारनेवाला, जान लेनेवाला; नाशक; दमन या शमन करनेवाला। पु० मारणकर्ता; महामारी; बाज। **–ग्रह**–पु० दे० 'मारकेश'। **–युद्ध**–पु० संहारकारी युद्ध।

स्थान–पु० कुंडलीमें लग्नसे सातवाँ और दूसरा स्थान ।

मारका–पु० (अं० 'मार्क') चिह्न, निशान; (अ०) युद्धस्थल; युद्ध; लड़ाई-झगड़ा; हंगामा । **–आराई**–स्त्री० लड़नेके लिए पंक्तिबद्ध होना; युद्ध । **–(के)का–मुश्किल**; भारी, महत्त्वपूर्ण (मारकेकी बात) । मु० **–सर करना**–युद्धमें जयलाभ करना ।

मारकीन–पु० एक मोटा, कोरा कपड़ा ।

मारकेश–पु० (सं०) मृत्युकी संभावना उपस्थित करनेवाला ग्रहयोग ।

मारग*–पु० दे० 'मार्ग' ।

मारगन*–पु० दे० 'मार्गण' (बाण)–'राम-मारगन-गन चले लहलहात जनु ब्याल'–रामा० ।

मारजन–पु० दे० 'मार्जन' ।

मारण–पु० (सं०) मारना, जान लेना; शत्रुनाशके लिए किया जानेवाला तांत्रिक अभिचार; भस्म करना (धातुका); एक विष ।

मारतौल–पु० एक तरहका बड़ा हथौड़ा ।

मारना–स० क्रि० पीटना, प्रहार करना; चोट पहुँचाना, किसी चीजसे आघात करना; ठोंकना (मेख); पटकना (सिर); पछाड़ना; जान लेना, हत्या करना; काटना, उड़ाना (गरदन); जीतना (मैदान, कुश्ती); नाश करना, बरबाद करना; पकड़ना (मछलियाँ); शिकार करना; दबाना (गुस्सा, पित्ता); सहना (भूख, प्यास); प्रभाव रहित कर देना (जहरको मारना); भस्म, कुश्ता करना (धातु); लगाना (गोता, चक्कर)। मु०**–मार देना**–किसीको जोरसे जमीनपर पटकना, पछाड़ना ।

मारफ़त–स्त्री० (अ०) जरीया, वसीला; ज्ञान; अध्यात्मज्ञान; अध्यात्म-विषयक रचना ।

मारवा–पु० एक संकर राग ।

मारवाड़–पु० राजपूतानेका एक भाग ।

मारवाड़ी–वि० मारवाड़ देशका । पु० मारवाड़वासी । स्त्री० मारवाड़की भाषा ।

मारा–वि० मारा हुआ; ग्रस्त, पीडित । * स्त्री० माला–'टूट आँसु जनु नखतन्ह मारा'–प० । मु० **–मारा फिरना**–दुर्दशाग्रस्त होकर जहाँ-तहाँ भटकना; दर-दरकी ठोकरें खाना ।

मारात्मक–वि० (सं०) घातक, संहारकारी ।

मारामार–स्त्री० इफरात, बहुतायत; हलचल, भगदड़; दौड़धूप; मारपीट । अ० बहुत जल्दी ।

मारि–स्त्री० (सं०) महामारी, मरी; मारण, वध ।

मारिका–स्त्री० (सं०) मरी, महामारी ।

मारिच*–पु० दे० 'मारीच' ।

मारिजुआना–पु० एक मादक पदार्थ, जो एक पौधेसे निकलता है । हिप्पी, बीटनीक्स आदि तथाकथित बौद्धिकोंमें इसका सेवन अनिवार्यता बन गया है ।

मारित–वि० (सं०) मारा हुआ; नष्ट किया हुआ; भस्म किया हुआ (द्रव्य) ।

मारिष–पु० (सं०) नाटकका सूत्रधार; नाटकादिमें किसी सम्मानित व्यक्तिके संबोधनका शब्द; मरसा नामका साग ।

मारी–स्त्री० (सं०) मरी, महामारी; चंडी ।

मारीच–पु० (सं०) एक राक्षस जिसने सीता-हरणके समय सोनेका मृग बनकर सीताको ललचाया था; बड़ा हाथी 'एक मारीच हथिनी उसका पीछा कर रही थी'–नवनीत, दिस० ६२ । मिर्चके पौधोंका समूह । वि० मरीचि-रचित (मंत्र) । **–वल्ली**–स्त्री० मिर्चका पेड़ ।

मारीची–स्त्री० (सं०) बुद्धदेवकी माता, मायादेवी ।

मारुंड–पु० (सं०) साँपका अंडा; गोबर ।

मारुत–पु० (सं०) वायु; वायुके अधिष्ठाता देवता; श्वास; प्राण; स्वाती नक्षत्र । वि० मरुत्-संबंधी । **–तनय,–सुत**–पु० हनूमान् । **–व्रत**–पु० (चरोंके द्वारा) सर्वत्र प्रवेश करना (राजाके कर्तव्योंमेंसे एक) ।

मारुतात्मज–पु० (सं०) हनूमान् ।

मारुताशन–पु० (सं०) साँप; कार्त्तिकेयका एक अनुचर ।

मारुति–पु० (सं०) हनूमान्; भीम ।

मारू–पु० युद्धमें गाया-बजाया जानेवाला एक राग; डंका; मरुदेशवासी । वि० काट करनेवाला (मारू नयन); युद्धोत्साह, रणरंग जगानेवाला (मारू बाजा) । **–बाजा**–पु० एक वाद्य ।

मारूज़–वि० (अ०) अर्ज किया हुआ, निवेदित । पु० निवेदन, प्रार्थना ।

मारूफ़ा–वि० (अ०) प्रसिद्ध, ज्ञात; (क्रिया) जिसका कर्ता मालूम हो ।

मारे–अ०.. के कारण, वजहसे ।

मार्कंड–पु० (सं०) दे० 'मार्कंडेय' ।

मार्कंडेय–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि । **–पुराण**–पु० १८ मुख्य पुराणोंमेंसे एक जो एक पक्षी और मार्कंडेय ऋषिके संवादरूपमें है । (दुर्गासप्तशती इसी पुराणका एक अंश है ।)

मार्क–पु० एक जर्मन सिक्का जो अंग्रेजी शिलिंगके बराबर होता है ।

मार्कट–वि० (सं०) बंदर-संबंधी ।

मार्कव–पु० (सं०) भँगरैया ।

मार्का–पु० छाप, चिह्न । वि० चिह्नवाला (समासमें) ।

मार्केट–पु० (अं०) बाजार, मंडी ।

मार्क्विस–पु० (अं०) अंग्रेज सरदारोंकी उपाधि जिसका दर्जा ड्यूक और अर्लके बीच होता है ।

मार्ग–पु० (सं०) रास्ता, पथ; भ्रमणपथ (ग्रहका); गुदा; कस्तूरी; मृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास । **–तोरण**–पु० (अभिनंदन आदिके लिए) रास्तेमें बनाया हुआ तोरण या फाटक । **–दर्शक**–वि०, पु० रास्ता दिखानेवाला, रहनुमा । **–द्रंग**–पु० राजमार्गके इधर-उधर बसा हुआ बाजार, कस्बा आदि । **–धेनु,–धेनुक**–पु० एक योजन या चार कोस । **–बंध**–पु० रास्ता रोकनेके लिए रखे गये पत्थर, बल्ले आदि । **–रक्षक**–पु० रास्तेकी निगरानी करनेवाला; (एस्कर्ट) वह (सशस्त्र) व्यक्ति या व्यक्तिसमूह जो किसी अन्य व्यक्तिकी रक्षाके लिए मार्गमें उसके साथ-साथ चले; किसी जहाज या जहाजी बेड़ेकी रक्षाके लिए साथ-साथ चलनेवाला हवाई जहाज; विध्वंसक पोत आदि; अनुरक्षक । **–शोधक**–पु० रास्ता साफ करनेवाला, अग्रणी । **–हर्म्य**–पु० राजपथपर बनाया हुआ प्रासाद ।

मार्गण–पु० (सं०) अन्वेषण, खोज; प्रेम; याचना; याचक; बाण ।

मार्गणक–वि०, पु० (सं०) याचक, निवेदक ।

मार्गणा–स्त्री० (सं०) अन्वेषण; याचना ।

मार्गन*–पु० दे० 'मार्गण' ।

मार्गरीन–स्त्री० (मार्गरीन) शोधित वनस्पति तथा पशुओंसे प्राप्त वसा और तैलसे तैयार किया गया विशेष पदार्थ, जो मक्खन सरीखा होता है ।

मार्गव–पु० (सं०) स्मृतियोंके अनुसार एक संकर जाति ।

मार्गशिर, मार्गशीर्ष–पु० (सं०) अगहनका महीना ।

मार्गिक–पु० (सं०) पथिक; मृगोंको मारनेवाला, शिकारी ।

मार्गित–वि० (सं०) अन्वेषित ।

मार्गी–स्त्री० (सं०) संगीतमें एक मूर्च्छना । पु० ग्रहोंकी गतिका एक प्रकार (ज्योतिष) ।

मार्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) आगे बढ़कर रास्ता बतानेवाला; पथप्रदर्शक । पु० मार्गपर चलनेवाला, यात्री ।

मार्च–पु० (अं०) ईसवी सन्‌का तीसरा महीना; सैनिकोंका नपी-तुली चालसे चलना; सेनाका प्रस्थान, कूच ।

मार्ज–पु० (सं०) मार्जन; धोबी; विष्णु ।

मार्जक–वि०, पु० (सं०) मार्जन करनेवाला ।

मार्जन–पु० (सं०) धो-माँजकर साफ करना; शोधन; शरीरकी अंतर्बाह्य शुद्धिके लिए मंत्र पढ़ते हुए कुशादिसे जल छिड़कना; दोषक्षालन; लोधका पेड़ ।

मार्जना–स्त्री० (सं०) मार्जन; मृदंग-ध्वनि ।

मार्जनी–स्त्री० (सं०) झाड़ू ।

मार्जनी(निन्)–पु० (सं०) अग्नि ।

मार्जनीय–वि० (सं०) मार्जन करने योग्य ।

मार्जार–पु० (सं०) बिलाव । **–कंठ**–पु० मोर । **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० चामुंडा । **–गंधा**–स्त्री० मुद्गपर्णी ।

मार्जारक–पु० (सं०) बिल्ली; मोर।

मार्जारी–स्त्री० (सं०) मादा बिल्ली; गंधनाकुली; कस्तूरी। **–टोडी**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी।

मार्जारीय, मार्जालीय–पु० (सं०) बिल्ली; शूद्र; देहका मार्जन करनेवाला।

मार्जाल–पु० (सं०) दे० 'मार्जार'।

मार्जित–वि० (सं०) शोधित।

मार्जिता–स्त्री० (सं०) दहीमें घी, चीनी, शहद आदि डालकर बनाया जानेवाला एक खाद्य (श्रीखंड ?)।

मार्तंड–पु० (सं०) सूर्य; शूकर; आक।

मार्त्तिक–वि० (सं०) मिट्टीसे बना हुआ, मृत्तिकासे निर्मित। पु० कसोरा; पुरवा।

मार्त्य–वि० (सं०) मर्त्य, मरणशील। पु० मरणशीलता।

मार्दंग–पु० (सं०) मृदंग बजानेवाला; नगर।

मार्दंगिक–वि०, पु० (सं०) मृदंग बजानेवाला।

मार्दव–पु० (सं०) मृदुता; चित्तकी कोमलता; नरमी; परायेका दुःख देखकर दुःखी होना; एक वर्णसंकर जाति।

मार्द्वीक–वि० (सं०) मृद्वीका–अंगूरका बना हुआ। पु० मद्य।

मार्फ़त–स्त्री० (अ०) दे० 'मारफ़त'।

मार्मिक–वि० (सं०) मर्मज्ञ, खूबी-बारीकी समझनेवाला; मर्मस्पर्शी।

मार्मिकता–स्त्री० मार्मिक होनेकी अवस्था या भाव।

मार्शल–वि० (अं०) युद्धोपयोगी; वीर; युद्धप्रिय। पु० सेनापतिके दरजेका फौजी अफसर। **–ला**–पु० फौजी अफसरोंका शासन, सैनिक शासन, सैनिक कानून।

मार्ष, मार्षिक–पु० (सं०) मरसेका साग, मारिष।

मार्ष्टि–स्त्री० (सं०) मार्जन, शोधन।

माल–पु० (सं०) एक म्लेच्छ जाति; बंगालका एक प्रदेश, आधुनिक मेदिनीपुर; क्षेत्र; कपट; वन; विष्णु; हरताल।

माल*–स्त्री० दे० 'माला'; चौड़ी सड़क; चरखेके मुंडेपरसे जानेवाली सूतकी डोरी। *पु० दे० 'मल्ल' (सुंदरकांड, रामा०); † सड़कके आस पासकी कच्ची भूमि (अ०) असबाब, सामान; बहुमूल्य वस्तु; धन-दौलत; वस्तु, सामग्री; वाणिज्य-सामग्री; मालगुजारी, राजस्व; स्वादिष्ठ और तर भोज्य पदार्थ; रेल आदिसे भेजा जानेवाला सामान; वह चीज जिसपर चिट्ठी डाली जाय; उपादानभूत वस्तु; वर्गका घात; हकीकत, हस्ती (कुछ माल न समझना)। **–अदालत**–स्त्री० लगान, मालगुजारी आदिके मुकदमे सुननेवाली अदालत। **–ख़ाना**–पु० माल-असबाब रखनेका स्थान, गोदाम। **–गाड़ी**–स्त्री० माल ढोनेके काम आनेवाली ट्रेन। **–गुज़ार**–पु० मालगुजारी अदा करनेवाला, जमींदार (मध्य देश)। **–गुज़ारी**–स्त्री० भूमिकर, जमीनका महसूल जो जमींदार सरकारको अदा करता है। **–गोदाम**–पु० बड़े व्यापारीका मालखाना, व्यापारकी वस्तुएँ रखनेका स्थान; रेल, जहाज आदिसे आने-जानेवाला माल रखनेका स्थान। **–घर**–पु० (गुड्ज आफिस) मालगाड़ी द्वारा माल भेजने या आया हुआ माल छुड़ानेकी व्यवस्था करनेवाला दफ्तर। **–ज़ामिन**–पु० नगदी जमानत देनेवाला। **–टाल**–पु० रुपया-पैसा, माल-मत्ता। **–दार**–वि० धनी। **–पूआ**–पु० एक पकवान जो आटेको चीनीके रसमें घोलकर मेवे डालकर घीमें पूरीकी तरह छान लेनेसे तैयार होता है। **–बाबू**–पु० (गुड्जक्लार्क) रेल आदिसे भेजे जानेवाले व्यापारिक मालको रजिस्टरमें दर्ज कर बाहरसे भेजने या बाहरसे आये मालको पानेवालेके हाथ सौंपने आदिका काम करनेवाला रेलका कर्मचारी। **–भूमि**–स्त्री० नेपालके पूर्वमें अवस्थित एक प्रदेश। **–मंत्री**–पु० (रेवेन्यू मिनिस्टर) दे० राजस्वमंत्री। **–मता,–मत्ता**–पु० धन-दौलत, असबाब। **–मस्त**–वि० धनमदसे मत्त। **–मस्ती**–स्त्री० धनमद। **–महकमा**–पु० राजस्वका प्रबंध करनेवाला सरकारी विभाग। **–मारू**–वि० माल मारनेवाला, गबन करनेवाला। **–मु० –उड़ाना**–तर माल खाना; रुपये खर्च करना या गायब करना। **–काटना**–दूसरेका पैसा हथियाना; नाजायज तौरसे रुपया पैदा करना; चलती ट्रेन आदिसे माल चुराना। **–न समझना**–हकीकत न समझना, कुछ न गिनना। **–मारना**–दूसरेका धन हथियाना, रिशवत, खयानत आदिसे पैसा पैदा करना।

मालकँगनी–स्त्री० एक लता जिसके दानोंका तेल दवाके काम आता है।

मालक–पु० (सं०) नीम; गाँवके पासका जंगल; नरियरीका बना पात्र; स्थल-पद्म।

मालका–स्त्री० (सं०) माला।

मालकोश, मालकौश, मालकौशिक–पु० (सं०) एक ओडव राग।

मालखंभ–पु० एक खंभा जिसपर तरह-तरहकी कसरत की जाती है, मलखंभ।

मालचक्रक–पु० (सं०) कूल्हा।

मालति*–स्त्री० दे० 'मालती'।

मालती–स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध लता जिसके फूलोंमें बड़ी मीठी सुगंध होती है; चाँदनी; युवती; रात्रि; एक नदी; एक वर्णवृत्त; जायफल, कलिका। **–क्षार,–जात**–पु० सुहागा। **–टोडी**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी। **–तीरज**–पु० सुहागा। **–पत्रिका**–स्त्री० जावित्री। **–फल**–पु० जायफल। **–माला**–स्त्री० मालतीके फूलोंकी माला।

मालद–पु० (सं०) रामायणमें वर्णित एक प्रदेश।

मालदह–पु० पूर्वी बिहारका एक नगर; उस नगरके आसपास होनेवाला एक कलमी आम।

मालद्वीप–पु० हिंद महासागरका एक द्वीपपुंज।

मालन–स्त्री० दे० 'मालिन'।

मालबरी–स्त्री० एक तरहकी ईख।

मालय–वि० (सं०) मलय-संबंधी; मलयगिरिपर उत्पन्न। पु० चंदन।

मालव–पु० (सं०) मालवा; मालवाके निवासी; एक राग। **–गौड**–पु० एक संकर राग। **–श्री**–स्त्री० श्री रागकी एक रागिनी।

मालवक–पु० (सं०) मालवा; मालवाका निवासी।

मालवा–पु० मध्य भारतका एक प्रसिद्ध प्रदेश। स्त्री० एक नदी।

मालवी–वि०, पु० दे० 'मालवीय'। स्त्री० (सं०) एक रागिनी; पाढ़ा।

मालवीय–वि० (सं०) मालव-संबंधी; मालवाका। पु० मालवाका रहनेवाला; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति। **–पंडित मदनमोहन**–सुप्रसिद्ध भारतीय नेता; जन्म २५ दिसंबर, १८६१, मृत्यु १९४६; काशी हिंदू विश्वविद्यालयके संस्थापक, हिंदू सभ्यताके सजीव प्रतीक थे। ३५ वर्षतक निरंतर कांग्रेसकी सेवा की और १९०९, १९१८, १९३२ में तीन बार उसके अध्यक्ष चुने गये।

मालसी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी; केशोंको परिपुष्ट करनेवाला एक वृक्ष।

माला–स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी; हार, माल्य; लड़ी; समूह। **–कंठ**–पु० अपामार्ग। **–कंद**–पु० एक कंद। **–कर,–कार**–पु० माली, माला बनानेवाला। **–गुण**–पु० हार। **–ग्रंथि**–स्त्री० ग्रंथिदूर्वा। **–तृण**–पु० भूस्तृण। **–दीपक**–पु० दीपक अलंकारका एक भेद जहाँ पूर्व-पूर्व कथित वस्तु उत्तर-उत्तर कथित वस्तुके उत्कर्षका कारण हो (यह दीपक और एकावलीके मेलसे बनता है)। **–दूर्वा**–स्त्री० ग्रंथिदूर्वा। **–धर**–वि० जो माला धारण किये हो। **–प्रस्थ**–पु० एक प्राचीन नगर। **–फल,–मणि**–पु० रुद्राक्ष। **–रानी**–स्त्री० एक रागिनी। मु० **–फेरना**–जप करना, भगवद्भजन करना।

मालामाल–वि० धन-धान्यसे भरा हुआ, समृद्ध; भरपूर।

मालारिष्टा–स्त्री० (सं०) पाची।

मालाली–स्त्री० (सं०) पृक्का।

मालावती–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

मालिक–पु० (सं०) माली; रंगरेज; एक चिड़िया; (अ०) स्वामी, अधिपति; ईश्वर; पति।

मालिका–स्त्री० (सं०) पंक्ति; माला, हार, चंद्रमल्लिका; बेटी; अंगूरी शराब; अलसी; राजभवन; एक नदी; एक चिड़िया।

मालिकाना–पु० जमींदारीका हक जो काश्तकार जमींदारको देता

है; स्वामित्व। वि० मालिक जैसा।

मालिकी–स्त्री० स्वामित्व; मालिकाना हक; मिलकियत।

मालित–वि० (सं०) जिसे माला पहनायी गयी हो; जो घेर लिया गया हो।

मालिन–स्त्री० मालीकी स्त्री; मालीका काम करनेवाली स्त्री।

मालिनी–स्त्री० (सं०) मालिन; चंपा नगरी; दुर्गा; मंदाकिनी; विभीषणकी माता; विराट्के महलमें गुप्त वास करते समय द्रौपदीका नाम; एक नदी जिसके तटपर शकुंतलाका जन्म हुआ था; एक छंद।

मालिन्य–पु० (सं०) मलिनता; अपवित्रता; अंधकार।

मालियत–स्त्री० मूल्य; धन, दौलत।

मालिया–पु० (अ०) मालगुजारी; मालियत।

मालिश–स्त्री० (अ०) मलनेका भाव या काम, मर्दन।

माली–वि० मालका, माल-संबंधी; आर्थिक।

माली(लिन्)–वि० (सं०) जो माला पहने हो; युक्त, मंडित (अंशुमाली)। पु० माला बनाने, फूल बेचनेवाला; बागवान; एक हिंदू जाति जो फूल बेचने, माला गूँथने आदिका काम करती है।

मालीख़ूलिया–पु० (यू०) विषाद रोग, चित्तका स्वभावतः खिन्न, सशंक रहना।

मालीदा–वि० (फा०) मला हुआ। पु० चूरमा, मलीदा; ऊनी शाल या पट्टू जिसके रोएँ मलनेसे बहुत नरम हो जाते हैं।

मालु–स्त्री० (सं०) एक लता; नारी। **–धान**–पु० एक साँप। **–धानी**–स्त्री० एक लता।

मालूम–वि० (अ०) जाना हुआ, ज्ञात; प्रकट; प्रसिद्ध।

मालूर–पु० (सं०) बिल्व-वृक्ष; कैथका पेड़।

मालेय–पु० (सं०) माली।

मालेया–स्त्री० (सं०) बड़ी इलायची।

मालोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें एक उपमेयके अनेक उपमान कहे जाते हैं।

माल्य–पु० (सं०) माला, हार; पुष्प। **–जीवक**–पु० माली। **–पुष्प**–पु० सनका पौधा। **–पुष्पिका**–स्त्री० शणपुष्पी। **–वृत्ति**–पु० माली।

माल्यवान्(वत्)–वि० (सं०) जो माला धारण किये हो। पु० पुराणोंमें वर्णित एक पर्वत; एक राक्षस।

माल्यार्पण–पु० किसी दिवंगत राष्ट्रनेता, महापुरुष या हुतात्माके प्रति सम्मान प्रदर्शित करनेके लिए उसकी समाधि, चित्र या प्रतीकपर पुष्पमाला अर्पित करनेकी क्रिया।

माल्ल–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति।

माल्लवी–स्त्री० (सं०) कुश्ती।

माल्हा–पु० मल्ल। स्त्री० माला।

मावत*–पु० दे० 'महावत'।

मावली–पु० दे० 'मवाली'।

मावस*–स्त्री० दे० 'अमावस'।

मावा–पु० सत्त; माँड़; खोया; चंदनका इत्र; तंबाकूमें डाला जानेवाला सुगंधित खमीर; मसाला; (अ०) आश्रयस्थान, ठिकाना। † स्त्री० मा।

मावीत्र–पु० माँ-बाप (रासो)।

माश–पु० (फा०) उरद। मु० **–मारना**–उरदके दानोंपर मंत्र पढ़कर किसीपर फेंकना, जादू करना।

माशा–पु० आठ रत्तीका एक वजन, तोलेका बारहवाँ भाग। मु० **–तोला होना**–चित्तका स्थिर न होना, छन-छनमें बदलना।

माशाअल्लाह–अ० जो अल्लाह चाहे; क्या कहना है! (किसीकी सुंदरताकी सराहना करते हुए बोलते हैं, खुदा नजरे बदसे बचायेका-सा भाव होता है)।

माशी–वि० उरदके रंगका। पु० स्याही मायल, हरा रंग।

माशूक़–वि० (अ०) जिसपर कोई आशिक हो, प्रेमपात्र, प्यारा; सुंदर, मोहक। **–(क़े)हक़ीक़ी**–पु० ईश्वर, खुदा।

माशूक़ा–स्त्री० (अ०) प्रेयसी, प्रेमिका।

माशूक़ाना–वि० माशूकों जैसा। **–अंदाज**–पु०, **–अदा**–स्त्री० मन लुभानेवाली अदा, हाव-भाव।

माशूक़ी–स्त्री० माशूकपन; मोहक रूप, हाव-भाव।

माष*–पु० दे० 'माख'; (सं०) उरद; माशा; मस्सा; महामूर्ख। **–कलाय**–पु० उरद। **–पर्णी**–स्त्री० जंगली उरद। **–योनि**–पु० पापड़। **–वर्द्धक**–पु० सुनार।

माषना*–अ० क्रि० दे० 'माखना'।

माषाद–पु० (सं०) कछुआ।

माषाश, माषाशी(शिन्)–पु० (सं०) घोड़ा।

मास–पु० (सं०) वर्षका बारहवाँ भाग, महीना; १२की संख्या। **–कालिक**–वि० महीनेभर रहनेवाला। **–जात**–वि० एक महीनेका (शिशु)। **–देय**–वि० जिसे महीनेभरमें चुकाना हो। **–प्रमित**–पु० प्रतिपदाका चंद्रमा। **–प्रवेश**–पु० महीनेका आरंभ। **–फल**–पु० मास-विशेषका शुभाशुभ फल। **–मान**–पु० वर्ष। **–स्तोम**–पु० एक यज्ञ।

मासन्न–पु० (सं०) सोमराजी लता।

मासना*–अ० क्रि० मिलना। स० क्रि० मिलाना।

मासर–पु० (सं०) माँड़; यज्ञोंमें प्रयुक्त एक पेय; काँजी।

मासांत–पु० (सं०) महीनेका अंत; अमावस्या; संक्रांति।

मासावधिक–वि० (सं०) एक महीने बना रहने या महीने-भरमें होनेवाला।

मासिक–वि० (सं०) मास-संबंधी; प्रति मास होनेवाला; माहवार, महीनेमें एक बार निकलनेवाला (पत्र, पुस्तक)। पु० प्रतिमास निकलनेवाला पत्र, माहनामा; मासिक श्राद्ध। **–धर्म**–पु० ऋतु, रजोधर्म।

मासी–स्त्री० मौसी, माँकी बहन।

मासीन–वि० (सं०) एक महीनेका; माहवार।

मासुरी–स्त्री० (सं०) दाढ़ी।

मासूम–वि० (अ०) निष्पाप; निर्दोष; कलुष-रहित।

मासूर–वि० (सं०) मसूरका; मसूरकी आकृतिका।

मासेष्टि–स्त्री० (सं०) प्रति मास किया जानेवाला यज्ञ।

मास्टर–पु० (अं०) मालिक; गृहस्वामी; शिक्षक; व्यापारी जहाजका कप्तान; विषयविशेषमें निष्णात, उस्ताद। **–आव् आर्ट्स**–पु० साहित्यकी एक डिग्री या उपाधि, एम० ए०। **–आव् लाज़**–पु० कानूनकी एक डिग्री, एल-एल० एम०। **–की**–स्त्री० वह कुंजी जिससे अलग-अलग कुंजियोंसे खुलनेवाले बहुतसे ताले खुल जायँ। **–टेलर**–पु० होशियार और निपुण दर्जी। **–पीस**–पु० श्रेष्ठ, कलामय कृति।

मास्टरी–स्त्री० मास्टरका भाव या काम, अध्यापक-वृत्ति।

मास्य–वि० (सं०) महीनेभरका; महीनेभर बना रहनेवाला।

माहँ*–अ० मध्य, बीच, में।

माह*–पु० दे० 'माघ'; (फा०) चाँद; महीना, मास। **–ताब**–पु० चाँदनी; चाँद। **–ताबी**–स्त्री० एक आतिशबाजी; छत या चबूतरा जिसपर बैठकर चाँदनीका आनंद ले सकें; चकोतरा। **–नामा**–पु० मासिक पत्र। **–बमाह**–अ० हर महीने, माहवार। **–रुख,–रू**–वि० चाँदसे मुखड़ेवाला, चंद्रमुख। **–वार**–अ० हर महीने, प्रति मास। वि० मासिक। **–वारा**–पु० मासिक वेतन, तनखाह। **–वारी**–अ० दे० 'माहवार'। स्त्री० मासिक वेतन, भृति; मासिकधर्म, रजोदर्शन। **–(हे)कामिल**–पु० पूर्ण चंद्र, राकेश। **–नौ**–पु० दूजका चाँद। मु० **–ताब देना**–तोपके पलीतेमें आग देना।

माहकस्थली–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

माहत*–स्त्री० महत्ता, महिमा।

माहन–पु० (सं०) ब्राह्मण।

माहना*–अ० क्रि० उमड़ना, उमंगमें आना।

माहली*–पु० महलका नौकर; सेवक–'…कौन ईस कियो कीस भालु खास माहली'–कविता०।

माहाँ*–अ० दे० 'महँ'; 'माहँ'।

माहा–स्त्री० (सं०) गाय, धेनु।

माहाकुल, माहाकुलीन–वि० (सं०) महाकुल, ऊँचे घरानेमें उत्पन्न।

माहाजन, माहाजनीन–वि० (सं०) महाजनोचित, बड़े आदमीके योग्य।

माहात्म्य–पु० (सं०) महात्मता, महिमा; गौरव; किसी व्रत, स्नान, पूजनका पुण्यजनक फल; इस फलका वर्णन करनेवाली रचना।

माहाना–वि० (फा०) माहवार।

माहाराज्य–पु० (सं०) महाराजपद, अधिराजत्व।

माहिँ*–अ० मध्य, भीतर।

माहियत–स्त्री० (अ०) दे० 'माहीयत'।

माहिया–पु० प्रिय, प्रियतम; करुण या श्रृंगाररस-प्रधान पंजाबी गान।

माहियाना–वि० दे० 'माहाना'।

माहिर–पु० (सं०) इंद्र। वि० (अ०) महारत रखनेवाला; कुशल, निपुण; अच्छा जानकार; चतुर।

माहिला*–पु० माँझी।

माहिष–वि० (सं०) भैंसका (दूध, दही)।

माहिषिक–पु० (सं०) भैंस पालनेवाला; व्यभिचारिणी स्त्रीमें अनुरक्त पति; पत्नीके व्यभिचारकी कमाई खानेवाला।

माहिष्मती–स्त्री० (सं०) हैहय क्षत्रियोंकी राजधानी जो नर्मदाके तटपर संभवतः आधुनिक जबलपुरके पास बसी थी–(मंडला ?)।

माहिष्य–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति।

माही–स्त्री० (फा०) मछली। **–गीर**–पु० मछली पकड़नेवाला। **–पुश्त**–वि० जो बीचमें ऊँचा और किनारोंसे नीचा हो। पु० एक तरहका कारचोबीका काम। **–मरातिब**–पु० राजाओं, बादशाहोंकी सवारीके आगे चलनेवाले, मछली, ग्रहों आदिकी आकृतियोंवाले, सात झंडे।

माहीयत–स्त्री० (अ०) तत्त्व, जौहर; अस्लीयत।

माहुर†–पु० जहर।

माहूँ, माहोँ, माहो–पु० सरसों आदिकी फसलको लगनेवाला एक कीड़ा।

माहेंद्र–वि० (सं०) इंद्र-संबंधी; इंद्रकी पूजा करनेवाला। पु० यात्राके लिए शुभ माना जानेवाला एक योग।

माहेंद्री–स्त्री० (सं०) इंद्राणी; पूर्व दिशा; गाय; एक मातृका।

माहेय–वि० (सं०) मिट्टीका बना हुआ। पु० मंगल ग्रह; नरकासुर; मूँगा।

माहेयी–स्त्री० (सं०) गाय; माही नदी।

माहेश–वि० (सं०) महेश-संबंधी।

माहेशी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

माहेश्वर–वि० (सं०) महेश्वर-संबंधी। पु० शिवोपासक; एक उपपुराण; एक अस्त्र; शैवोंके एक उपसंप्रदायका नाम।

माहेश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; एक मातृका; वैश्योंकी एक उपजाति; यवतिक्ता लता।

माहौल–पु० परिस्थिति, पर्यावरण–'उस अजनबी माहौलमें वे उलझन सी महसूस करते रहे'।

मिंगनी–स्त्री० दे० 'मेँगनी'।

मिंगी–स्त्री० दे० 'मीँगी'।

मिंट–पु० (अं०) टकसाल।

मिँड़ाई–स्त्री० मींड़नेकी क्रिया; मींड़नेकी मजदूरी।

मिंत*–पु० मित्र।

मिंबर–पु० मसजिदके बीचमें बना वह ऊँचा स्थान जिसपर खड़े होकर इमाम धार्मिक भाषण करता है। दे० 'मेम्बर'।

मिआद–स्त्री० दे० 'मीआद'।

मिआन*–पु० पालकी, मियाना। वि० छोटे डील-डौलका, दे० 'मियाना'।

मिकदार–स्त्री० (अ०) परिमाण; माप-तौल; मात्रा।

मिक़्नातीस–पु० (सं०) चुंबक पत्थर, 'मैगनेट'।

मिक़्नातीसी–वि० चुंबकीय।

मिक़राज़–स्त्री० (अ०) कतरनी।

मिक़राज़ा–पु० (अ०) गुलगीर; वह तीर जिसके फलमें दो गाँसियाँ होती हैं।

मिकाडो–पु० जापान-सम्राट्की उपाधि।

मिक्सचर–पु० (अं०) पेय ओषधि जिसमें कई दवाएँ मिली हों।

मिग*–पु० मृग, हरिण।

मिगी–स्त्री० दे० 'मीगी'।

मिचकाना†–स० क्रि० (पलकें) झपकाना।

मिचना–अ० क्रि० (आँखोंका) बंद होना।

मिचराना–अ० क्रि० अरुचिसे थोड़ा-थोड़ा खाना।

मिचलाना–अ० क्रि० मतली आना।

मिचौनी, मिचौली–स्त्री० मीचने, मूँदनेकी क्रिया (केवल 'आँख-मिचौली' में प्रयुक्त)।

मिछा*–वि० दे० 'मिथ्या'।

मिज़राब–स्त्री० (अ०) तारका बना छल्ला जिसकी नोकसे आघात कर सितार आदि बजाते हैं।

मिज़ाज–पु० (अ०) मिलावट; पंचमहाभूतों (यूनानी और अरब दार्शनिकोंने चार ही तत्त्व माने हैं)के मिश्रणसे उत्पन्न होनेवाली अवस्था; तबीयत; प्रकृति; स्वभाव; आदत; गर्व, घमंड। **–दाँ**–वि० मिजाज समझनेवाला, रुचि, विचार जाननेवाला। **–दार**–वि० घमंडी। **–पुरसी**–स्त्री० मिजाज पूछना, तबीयतका हाल पूछना (करना)। **–वाला**–वि० घमंडी, मिजाजदार। **–शिनास**–वि० मिजाज पहचाननेवाला। **–शिनासी**–स्त्री० मिजाज पहचानना। मु० **–आली,–मुबारक,–शरीफ़**–मिजाज कैसा है ? तबीयत ठीक है तो ? **–न मिलना**–घमंडके मारे किसीसे बात न करना, इतराना। **–पहचानना**–किसीके रुचि-स्वभावको समझना। **–पाना**–मिजाज, स्वभाव पहचान लेना। **–पूछना**–तबीयतका हाल पूछना, कुशल-प्रश्न करना। **–में आना**–दिलमें आना। **–सातवें आसमानपर होना**–घमंड बहुत बढ़ जाना, गर्वसे पाँव सीधे न पड़ना। **–होना**–घमंड होना।

मिज़ाजी–वि० घमंडी, मिजाजवाला।

मिटना–अ० क्रि० चिह्न, दाग आदिका दूर होना, लुप्त होना; नष्ट होना; बरबाद होना।

मिटाना–स० क्रि० दाग, निशान आदि दूर करना; नष्ट, लुप्त करना; बरबाद करना; रद्द करना।

मिटिया–स्त्री० मिट्टीका छोटा पात्र। वि० मिट्टीके रंगका; मिट्टीका। **–फूस**–वि० दुर्बल, कमजोर। **–महल**–पु० मड़ई, झोपड़ी (व्यं०)। **–साँप**–पु० मिट्टीके रंगका साँप।

मिटियाना–स० क्रि० मिट्टी लगाकर या मिट्टी रगड़कर साफ करना।

मिट्टी–स्त्री० धरतीकी ऊपरी सतह जो टूटी हुई चट्टानोंके चूरकी बनी होती है और जिसपर पेड़-पौधे उगते हैं; जमीन; धूल, खाक; भस्म, कुश्ता; शरीरकी बनावट; शरीर; प्रकृति; ख़मीर; लाश। **–का तेल**–एक प्रसिद्ध खनिज द्रव जो लैंपों आदिमें तेलकी तरह जलाया जाता है। मु० **–उठना**–लाश, जनाजा उठना। **–करना**–खराब, बरबाद करना। **–का पुतला**–मनुष्य (ला०)। **–की मूरत**–मानव-शरीर। **–के माधव**–मूर्ख, भोंदू। **–के मोल**–बहुत सस्ते दामों (बिकना)। **–खराब (ख़्वार) होना**–अंत्येष्टि, क्रिया-कर्म ठिकानेसे न होना। **–ठिकाने लगना**–अंत्येष्टि समुचित प्रकारसे होना। **–ठिकाने लगाना**–समुचित प्रकारसे (किसीकी) अंत्येष्टि करना। **–डालना**–ऐबपर परदा डालना। **–देना**–लाशको दफन करना; लाशको कब्रमें सुलानेके बाद उपस्थित जनोंका उसपर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी डालना (मुसल०)। **–पकड़ना**–जड़ पकड़ना, अच्छी तरह जम जाना। **–पलीद होना**–दुर्दशा होना; जलील होना; क्रिया-कर्म ठिकानेसे न होना। **–में मिलना**–नष्ट, बरबाद हो जाना। **–से मिट्टी मिलना**–मुर्देका दफन होना।

मिट्ठी–स्त्री० मीठा, स्नेहमय, चुंबन (बच्चोंका शब्द), चुम्मी, पप्पी; मेलजोल, मित्रता, ('कुट्टी'का उलटा)।

मिट्ठू–वि० मधुभाषी; चुप्पा। पु० तोता।

मिठ–'मीठा'का समासमें व्यवहृत लघु रूप। **–बोला**–वि० मधुरभाषी। **–लोना**–वि० जिसमें नमक कम पड़ा हो।

मिठाई–स्त्री० मिठास; मिष्टान्न, शीरीनी (लड्डू, पेड़ा, इमरती आदि)। मु० **–चढ़ाना**–मन्नत पूरी होनेपर किसी देवी देवताको मिठाई अर्पित करना। **–बाँटना**–किसी सफलता या अभीष्ट-सिद्धिकी खुशीमें मिठाई बाँटना।

मिठाना*–अ० क्रि० मीठा होना ।

मिठास–स्त्री० मीठापन, माधुर्य । (पु० भी) 'कितो मिठास दयो दई इते सलोने रूप'–बि० ।

मिठोरी–स्त्री० उरद या चनेकी वरी ।

मिड़ना*–अ० क्रि० चिपक जाना–'घन आनँद एँड़िनि आनि मिड़ैं' ।

मिडिल–वि० (अं०) बीचका, मध्यवर्ती । **–ची**–वि० मिडिल पास (तिरस्कार-सूचक) । **–स्कूल**–पु० वह स्कूल जिसमें मिडिलतककी पढ़ाई होती हो ।

मिढुलिया|–स्त्री० मढ़िया, कुटी ।

मितंग*–पु० हाथी ।

मितंगम–वि० (सं०) थोड़ा चलनेवाला, धीरे चलनेवाला, मंदगामी । पु० हाथी ।

मितंपच–वि० (सं०) थोड़ा अन्न पकानेवाला; कंजूस ।

मित*–स्त्री० मिति, सीमा–'मतकृत दोस लिखैं वसुधाभर तऊ नहीं मित नाथ' सूर । वि० (सं०) नपा-तुला, परिमित; थोड़ा; क्षिप्त । **–द्रु**–पु० समुद्र । **–भाषी(षिन्)**–वि० कम बोलनेवाला; नपे-तुले शब्दोंमें अपनी बात कहनेवाला । (स्त्री० 'मितभाषिणी' ।) **–भुक्त,–भोजी(जिन्)**–वि० थोड़ा खानेवाला, मिताहार । **–मति**–वि० अल्पबुद्धि । **–व्ययिता**–स्त्री० किफायतशिआरी । **–व्ययी(यिन्)**–वि० कम खर्च करनेवाला, किफायतशिआर ।

मितन्नी–पु० एक जाति (खत्तियोंके पड़ोसी) ।

मिताई|–स्त्री० मित्रता, दोस्ती ।

मिताक्षरा–स्त्री० (सं०) याज्ञवल्क्य स्मृतिकी विज्ञानेश्वरकृत टीका ।

मितार्थ–वि० (सं०) परिमित अर्थवाला । पु० चतुराईके साथ थोड़ी बातें कहकर ही काम पूरा करनेवाला दूत ।

मितार्थक–पु० (सं०) वह दूत जो थोड़े शब्द कहकर ही चतुराईसे अपना काम कर ले (सा०) ।

मिताशी(शिन्)–वि० अल्पभोजी, कमखूराकी ।

मिताहार–वि० (सं०) थोड़ा खानेवाला; नपी-तुली खुराक खानेवाला । पु० परिमित आहार ।

मिति–स्त्री० (सं०) मान; सीमा; विज्ञान; समयकी सीमा ।

मिती–स्त्री० तिथि, तारीख; हुंडी आदि चुकानेकी तिथि; दिन । **–काटा**–पु० गणितकी एक रीति जिससे हुंडीकी मुद्दत और ब्याज जोड़ते हैं । मु० **–काटना**–सूद काटना । **–पूजना**–हुंडीकी अवधि पूरी होना ।

मितोपभोगयोजना–स्त्री० (आस्टेरिटी स्कीम) दे० 'अल्प-भोग-योजना' ।

मित्रराष्ट्र–पु०, **मित्रशक्ति**–स्त्री० (एलाइड पॉवर) मित्रतापूर्ण संबंध रखनेवाला देश या राज्य ।

मित्त*–पु० दे० 'मित्र' ।

मित्र–पु० (सं०) दोस्त, बंधु, सखा, साथी; युद्धादिमें साथ देनेवाला राष्ट्र; सूर्य; बारह आदित्योंमेंसे पहला । **–कर्म(न्)**–पु० मित्रोचित कार्य । **–घ्न**–वि० विश्वासघाती, दोस्तको दगा देनेवाला । **–द्रोह**–पु० मित्रका अहित, अनिष्ट करना । **–द्रोही(हिन्)**–वि० मित्रका द्रोह करनेवाला । **–पंचक**–पु० घी, शहद, घुंघची, सुहागा और गुग्गुल–इन पाँचोंका योग । **–भाव**–पु० मित्रता, दोस्ती । **–भेद**–पु० दोस्तीका टूट जाना । **–युद्ध**–पु० दोस्तोंके बीचकी लड़ाई, मित्रसे युद्ध । **–लाभ**–पु० मित्रकी प्राप्ति, किसीसे दोस्ती होना । **–वत्सल**–वि० मित्रप्रिय । **–विद्**–पु० गुप्तचर । **–षडष्टक**–पु० एक वैवाहिक योग । **–सप्तमी**–स्त्री० मार्गशीर्ष-शुक्ला सप्तमी । **–सेन**–पु० बारहवें मनुका एक पुत्र; एक बुद्ध ।

मित्रता–स्त्री०, **मित्रत्व**–पु० (सं०) दोस्ती ।

मित्रा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मण-शत्रुघ्नकी माता सुमित्रा; एक अप्सराका नाम; बंगाली कायस्थोंका एक जातिनाम ।

मित्राई*–स्त्री० मित्रता ।

मित्राक्षर–पु० (सं०) वह छंद जिसके दोनों चरणोंकी तुक मिलती हो ।

मित्रावरुण–पु० (सं०) मित्र और वरुण ।

मित्रावसु–पु० (सं०) विश्वावसुका एक पुत्र ।

मिथक–प्राचीन पुराकथाओंका तत्त्व जो नवीन स्थितियोंमें नये अर्थका वहन करे ।

मिथः(थस्)–अ० (सं०) परस्पर, अन्योन्य ।

मिथि–पु० (सं०) निमिके पुत्र जनक ।

मिथिल–पु० (सं०) राजा जनक ।

मिथिला–स्त्री० (सं०) विदेहकी राजधानी । **–पति**–पु० जनक ।

मिथु–अ० (सं०) झूठमूठ ।

मिथुन–पु० (सं०) नर-मादा, स्त्री-पुरुषका जोड़ा; संयोग; मैथुन; बारह राशियोंमेंसे तीसरी । **–भाव**–पु० जोड़ा होना; मैथुन ।

मिथुनीकरण–पु० (सं०) नर-मादाको इकट्ठा करना, जोड़ा मिलाना ।

मिथुनीभाव–पु० (सं०) मैथुन, जोड़ा खाना ।

मिथुनेचर–पु० (सं०) चक्रवाक ।

मिथ्या–वि० (सं०) झूठ, असत्य; व्यर्थ । **–कोप**–पु० बनावटी क्रोध । **–ग्रह**–पु० हठ, दुराग्रह । **–चर्या**–स्त्री० कपटाचरण, मक्कारी । **–जल्पित**–पु० असत्य-भाषण, झूठी चर्चा । **–ज्ञान**–पु० भ्रम । **–दृष्टि**–स्त्री० नास्तिकता । **–निरसन**–पु० कसम खाकर इनकार करना । **–पुरुष**–पु० दे० 'छायापुरुष' । **–प्रतिज्ञ**–वि० प्रतिज्ञाका पालन न करनेवाला । **–भाषी(षिन्)**–वि० झूठ बोलनेवाला । **–मति**–स्त्री० भ्रांति । **–योग**–पु० गलत इस्तेमाल; प्रकृतिविरुद्ध कार्य (आ०) । **–वचन,–वाद**–पु० झूठी बात, असत्य कथन । **–वादी(दिन्)**–वि० झूठा, मिथ्याभाषी । **–व्याहार**–पु० अनधिकार चर्चा । **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० झूठा गवाह । **–सादृश्य**–पु० किसी भी वस्तु, भाव या धारणाको दृष्टिमें रखकर उससे भिन्न किसी वस्तु भाव या धारणामें ऊपरी साम्य देखकर सादृश्य ढूँढ़नेकी गलत प्रवृत्ति ।

मिथ्याचार–पु० (सं०) कपटाचरण, मक्कारी ।

मिथ्यात्व–पु० (सं०) मिथ्यापन, झुठाई ।

मिथ्याध्यवसिति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ कोई झूठी कही हुई बात साबित करनेके लिए दूसरी झूठी बात कही जाय ।

मिथ्यानाम–पु० (मिसनोमर) ऐसा नाम या ऐसा शब्द जो किसी व्यक्ति, कार्य, वस्तु आदिके लिए उपयुक्त न हो ।

मिथ्यारोपण–पु० (विलिफिकेशन) आधारहीन या झूठे आरोप लगाकर बदनाम करना ।

मिथ्यापवाद–पु० (सं०) झूठी तुहमत, आरोप ।

मिथ्याभियोग–पु० (सं०) झूठा अभियोग, झूठा इलजाम लगाना ।

मिथ्याभिशंसन–पु० (सं०) झूठा दोष, तुहमत लगाना ।

मिथ्याहार–पु० (सं०) अयुक्त, प्रकृतिविरुद्ध आहार ।

मिथ्योत्तर–पु० (सं०) एक प्रकारका झूठा जवाब ।

मिथ्योपचार–पु० (सं०) गलत इलाज ।

मिन–प्र० (अ०) से; का; पर । **–जानिब**–अ०…के जानिबसे, तरफसे । **–जुमला**–अ० कुलमेंसे, सबमेंसे ।

मिनकना|–अ० क्रि० डरते-डरते या धीरेसे कुछ बोलना; दे० 'मनकना', सगबगाना ।

मिनकी–स्त्री० बिल्ली–'…मूसा इत उत फिरै, ताकि रही मिनकी' –सुंदरदास ।

मिनट–पु० (अं०) घंटेका साठवाँ भाग, ६० सेकंड ।

मिन-मिन–अ० धीमे या नाकसे मिले हुए अस्पष्ट स्वरमें । स्त्री० धीमी या नाकसे मिली हुई अस्पष्ट ध्वनि ।

मिनमिनाना–अ० क्रि० 'मिन-मिन' करना ।

मिनहा–पु० (अ०) घटाव, मुजरा, कटौती (करना, होना) । वि० जो काट लिया गया हो, जो घटा लिया गया हो । **–ई**–स्त्री० मिनहा होना, कटौती ।

मिनिट–पु० (अं०) मिनट; सभा, बैठक आदिकी काररवाईका संक्षिप्त विवरण । **–बुक**–स्त्री० बैठक आदिका कार्यविवरण लिखनेकी बही ।

मिनिस्टर–पु० (अं०) मंत्री; राजदूत; (ईसाई) धर्मोपदेशक, पादरी ।

मिनिस्टरी–स्त्री० मंत्रीका पद या विभाग, मंत्रालय; मंत्रिमंडल ।

मिन्नत–स्त्री० (अ०) बिनती, आजिजी; चापलूसी; उपकार;

कृतज्ञता । **–कश**–वि० एहसान लेनेवाला । **–गुज़ार**–वि० कृतज्ञ । मु० **–उठाना**–एहसान लेना ।

मिन्मिल–पु० (सं०) एक रोग जिससे ग्रस्त आदमी नाकसे बोलता है । वि० जिसे यह रोग हुआ हो ।

मिमियाना–अ० क्रि० 'में-में' करना, बकरी या भेड़का बोलना ।

मियाँ–पु० (फा०) सरदार; मालिक; पति; शिक्षक, उस्ताद; अमीरज़ादा, मालिकका बेटा; मुसलमान; सम्मानित जनका संबोधन; पहाड़ी राजपूतोंकी उपाधि; दूत; कुटना; † कलावंत, पक्का गवैया । **–गिरी,–गीरी**–स्त्री० पढ़ौनी, शिक्षकका कार्य । **–जी**–पु० शिक्षक, उस्ताद । **–बीबी,–बीवी**–पु० पति-पत्नी । **–मिट्ठू**–वि० मधुरभाषी; भोला, बुद्धू । पु० बच्चा; तोता । मु० **–की जूती, मियाँ का सर**–जिसकी चीज हो उसीके विरुद्ध उसका प्रयोग करना । **(अपने मुँह)–मिट्ठू बनना**–(अपने मुँह) अपनी तारीफ करना । **–मिटठू बनाना**–तोतेकी तरह रटाना, बिना समझाये पढ़ाना ।

मियाद–स्त्री० दे० 'मीयाद' ।

मियान–पु० (फा०) मध्य भाग; तलवार आदिका खोल या गिलाफ । **–तह**–स्त्री० बीचकी तह । **–तही**–स्त्री० वह विस्तर जिसमें उपरले और अस्तरके बीच रुईकी तह दी गयी हो । **–दारी**–स्त्री० दल्लाली; कुटनापन । **–वाला**–वि० मझोले कदका । मु० **–मेंसे निकला पड़ना**–बहुत तेज मिजाजका होना, बात-बात-पर लड़नेको तैयार होना ।

मियाना–वि० (फा०) बीचका, मझोला । पु० एक तरहकी पालकी; गाड़ीका बम; हारमें लड़ीके बीचका बड़ा मोती; मझोले कदका घोड़ा । **–क़द**–वि० मझोले आकारका, जिसका कद न अधिक ऊँचा हो, न नीचा । **–रव**–वि० मध्यमा वृत्तिका आश्रय करनेवाला । **–रवी**–स्त्री० बीचका रास्ता पकड़ना, अतिसे बचना ।

मियानी–स्त्री० (फा०) पाजामेमें दोनों पायँचोंके बीचका कपड़ा, रूमाल ।

मिरग*–पु० दे० 'मृग' । **–चिड़ा**–पु० एक छोटी चिड़िया । **–छाला**–पु० दे० 'मृगछाला' ।

मिरगिया–वि०, पु० मिरगीका रोगी ।

मिरगी–स्त्री० एक मानस रोग, अपस्मार ।

मिरचा–पु० लाल मिर्च ।

मिरचाई–स्त्री० काला-दाना । दे० 'मिर्च' ।

मिरची–स्त्री० मिर्च ।

मिरजई–स्त्री० कमरतकका बंददार अँगरखा ।

मिरज़ा–पु० (फा०) अमीरजादा, शहजादा; मुगलोंकी उपाधि; तैमूरिया वंशके शाहजादोंकी उपाधि । **–ई**–स्त्री० बुजुर्गी, सरदारी; मिरजापन, रईसी या हाकिमाना मिजाज; दे० 'मिरजई' । **–छैला**–पु० छैल-छबीला, रँगीला आदमी । **–फोया**–पु० दुबला-पतला, नाजुकमिजाज मनुष्य । **–मिज़ाज**–वि० नाजुकमिजाज; तुनुकमिजाज ।

मिरज़ान–पु० (फा०) मूँगा ।

मिरजानी–वि० (फा०) मूँगेका ।

मिरदंग–पु० दे० 'मृदंग' ।

मिरवना*–स० क्रि० मिलाना ।

मिरा–स्त्री० शराब; मूर्व्वा ।

मिरावा*–पु० मिलाप, मेल –'कहु सो बात जेहँ होइ मिरावा'–चंदा० ।

मिरास–पु० दे० 'मीरास' ।

मिरासन–स्त्री० गाने-बजानेका काम करनेवाली औरत (दे० मीरास) ।

मिरासी–पु० दे० 'मीरासी' ।

मिरिच–स्त्री० दे० 'मिर्च' ।

मिरियास–स्त्री० दे० 'मीरास' ।

मिरियासि*–स्त्री० बपौती, पैतृक संपत्ति–'यह तो संबुक मलिन सर करटनकी मिरियासि'–दीनद० ।

मिर्गी–स्त्री० दे० 'मिरगी' ।

मिर्च–स्त्री० काले रंगका, गोल, कटुतीक्ष्ण स्वादवाला दाना जो मसालेके रूपमें व्यवहृत होता है; लाल मिर्च, मिरचा । मु० **–(चें) लगना**–बहुत बुरा लगना, असह्य होना ।

मिल–स्त्री० (अं०) आटा आदि पीसनेकी कल या कारखाना; कपड़ा बुननेकी कल या कारखाना, पुतलीघर; लकड़ी चीरने आदिकी कल या कारखाना । **–मजदूर**–पु० मिलमें काम करने-वाला मजदूर । **–महाल**–पु० मिल-मजदूरोंकी बस्ती । **–मालिक**–पु० मिल या कारखाने आदिका मालिक या संचालक ।

मिलक*–स्त्री० दे० 'मिल्क' ।

मिलकना*–अ० क्रि० जलना–'तब फिरि जरनि भई नख सिखतें, दिया बाति जनु मिलकी'–सूर ।

मिलकाना, मुलकाना†–स० क्रि० दे० 'मलकाना' ।

मिलकी*–पु० दे० 'मिल्की' ।

मिलता-जुलता–वि० लगभग समान, एक-सा ।

मिलन–पु० (सं०) मिलना, भेंट; इकट्ठा होना; मिश्रण ।

मिलनसार–वि० जो सबसे प्रेमके साथ मिलता, मेल-जोल रखता हो; सुशील ।

मिलनसारी–स्त्री० मिलनसार स्वभाव, सुशीलता ।

मिलना–अ० क्रि० संयोग होना, जुड़ना, सटना; एक होना; मिश्रित होना; भेंट होना; भेंटना, गले मिलना; भिड़ना; छूना; समान होना; एक-सा होना; पाना (पता, नफा); लाभ होना; सुरोंका मेल होना; पक्षमें हो जाना, अनुकूल हो जाना; * दूध दुहना । मु० **मिल-जुलकर**–इकट्ठे होकर, मेलके साथ । **–(ना) जुलना**–भेंट-मुलाकात, राहोरस्म । **मिल-बाँटकर खाना**–सबको बाँट-कर नफे आदिमें दूसरोंको शामिल करके खाना या उपभोग करना ।

मिलनी–स्त्री० ब्याहकी एक रस्म, कन्यापक्षवालोंका वरपक्षवालोंसे गले मिलना और उन्हें रुपये देना ।

मिलवना*–स० क्रि० दे० 'मिलाना' ।

मिलवाई–स्त्री० मिलवानेकी क्रिया या भाव; मिलवानेके बदले दिया जानेवाला धन ।

मिलवाना–स० क्रि० दूसरेको मिलने या मिलानेके लिए प्रेरित करना; मिलन कराना; योग कराना ।

मिलाई–स्त्री० मिलानेकी क्रिया; मिलानेकी उजरत; भेंट, मिलन (कैदीके साथ); मिलनी ।

मिला-जुला–वि० मिश्रित, गड्ड-मड्ड ।

मिलान–पु० मिलानेकी क्रिया; मिलाकर जाँचना; तुलना; * पड़ाव–'ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई'–प० । **–केंद्र**–पु० (एक्स-चेंज) नगर या जिलेका मुख्य दूरवाणी-कार्यालय जिससे वहाँके सभी दूरवाणी-यंत्र संबद्ध होते हैं और जहाँ स्थानीय लोगोंसे या अन्य नगरवालोंसे दूरभाष करनेके लिए परस्पर संबंध मिला देनेकी व्यवस्था की जाती है ।

मिलाना–स० क्रि० एक चीजका दूसरी चीजमें योग करना, मिलावट करना; इकट्ठा करना, संयोग करना; सटाना, जोड़ना; भेंट कराना; एक व्यक्तिको दूसरेके पास पहुँचाना; स्त्री-पुरुषका संयोग कराना; मेल कराना; मिलाकर देखना, तुलना करना; मिलान करना; किसीको अपनी ओर करना; दूसरे पक्षसे फोड़ना; (बाजेके) स्वरोंका मेल करना ।

मिलाप–पु० मेल; भेंट; प्रेम, दोस्ती ।

मिलाव–पु० दे० 'मिलावट' ।

मिलावट–स्त्री० मिलाया जाना, मिश्रण; बढ़िया चीजमें घटिया चीजका मेल ।

मिलिंद–पु० (सं०) भौंरा ।

मिलिंदक–पु० (सं०) एक तरहका साँप ।

मिली अमीटर–पु० (मिली अमीटर) ऐसा संवेदी धारामापी यंत्र, जो विद्युत-धाराका मान मिली-ऐम्पियरमें नाप सके ।

मिलिक*–स्त्री० दे० 'मिल्क' ।

मिलिटरी–वि० (अं०) सेना-संबंधी, फौजी । स्त्री० सेना, फौज ।

मिलित–वि० (सं०) युक्त, लगा हुआ, मिला हुआ ।

मिली-जुली–वि० मिली हुई, संयुक्त ।

मिलीभगत–स्त्री० विश्वासघात, ऊपरसे मित्र रहना और गुप्त रूपसे शत्रुके साथ मिलना ।

मिलौनी–स्त्री० मिलावट, मेल, मिलनीकी रस्म या उसमें मिला हुआ रुपया ।

मिल्क–स्त्री० (अ०) अधिकारभुक्त वस्तु; माल, जायदाद; भूसंपत्ति; जागीर, माफी ।

मिल्कियत–स्त्री० दे० 'मिल्कीयत' ।

मिल्की–पु० मिल्कवाला, जमींदार, जागीरदार ।

मिल्कीयत–स्त्री० वह चीज जिसपर मालिकाना हक़ हो, जायदाद, जमीदारी ।

मिल्टन, जॉन–पु० इंगलैंडका महान् कवि जिसने 'पैराडाइज लॉस्ट' नामक महाकाव्य लिखा (१६०८-१६७४) ।

मिल्लत–स्त्री० मेल-जोल, मिलनसारी; (अ०) मजहब, दीन, संप्रदाय; जाति, फिर्का ।

मिशन–पु० (अं०) विदेश भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल; भिन्नधर्मियोंको ईसाई बनानेके लिए भेजे हुए धर्मोपदेशकोंका मंडल; प्रदेशविशेषमें धर्मप्रचार करनेवाली संस्था; जीवनका ईश्वरनियुक्त कार्य; जीवनलक्ष्य, लक्ष्य ।

मिशनरी–पु० (अं०) (ईसाई) धर्मोपदेशक, पादरी ।

मिशि, मिशी–स्त्री० (सं०) मधुरिका; शतपुष्पा; जटामासी; सौंफ, मेथी ।

मिश्र–पु० दे० मिस्र'; (स०) श्रेष्ठ, सम्मानित जन; ब्राह्मणोंकी एक उपजातिकी उपाधि; हाथियोंकी एक जाति; औषर लवण; इंद्रवन; कृत्तिका, विशाखा नक्षत्रोंका गण (ज्यो०) । वि० जिसमें कोई चीज मिली हो या मिलायी गयी हो, कई चीजोंके संयोगसे बना हुआ; संयुक्त । **–केशी**–स्त्री० एक अप्सरा । **–गुणा**–पु० (हिं०) आने-पाई, मन-सेर आदिका गुणा । **–ज**–पु० खच्चर । **–जाति**–वि० वर्णसंकर, दोगला । **–धातु**–स्त्री० (एलॉय) दो या दोसे अधिक धातुओंके परस्पर मिला दिये जानेसे बनी धातु; बढ़िया धातुके साथ घटियाके मिला दिये जानेसे बनी धातु । **–धान्य**–पु० वह धान्य जिसमें कई अनाज मिले हों, बेझड़ । **–पुष्पा**–स्त्री० मेथी । **–भाग**–पु० आने-पाई, मन-सेर आदिका भाग । **–वर्ण**–वि० दोरंगा; बहुरंगा । पु० काला अगुरु । **–०फला**–स्त्री० भंटा । **–वाक्य**–पु० वह वाक्य जिसमें एक मुख्य उपवाक्यके अलावा दो या अधिक सहायक उपवाक्य होते हैं । **–शब्द**–पु० खच्चर ।

मिश्रक–वि० मिलावट करनेवाला । पु० खारी नमक; जस्ता; नंदनवन; महाभारतमें वर्णित एक तीर्थ ।

मिश्रकावण–पु० (सं०) नंदनवन ।

मिश्रण–पु० (सं०) मिलावट, दो या अधिक चीजोंको एकमें मिलाना ।

मिश्रित–वि० (सं०) मिला या मिलाया हुआ; मिलावटवाला ।

मिश्रिता–स्त्री० (सं०) मंदा आदि सात संक्रांतियोंमेंसे एक ।

मिश्री–स्त्री० दे० 'मिस्री' ।

मिश्रेया–स्त्री० (सं०) एक साग; मधुरिका; शतपुष्पा ।

मिष–पु० (सं०) छल; बहाना; स्पर्धा, होड़ ।

मिषि, मिषिका, मिसि–स्त्री० (सं०) जटामासी; सोया; सौंफ ।

मिष्ट–वि० (सं०) मीठा; स्वादिष्ठ; सिक्त, तर । पु० मिठास; मिठाई । **–पाक**–पु० मुरब्बा । **–भाषी(षिन्)**–पु० मीठे शब्द बोलनेवाला, मधुरभाषी ।

मिष्टान्न–पु० (सं०) मिठाई, मीठा पकवान ।

मिस–पु० बहाना; ढोंग । **–हा***–वि० बहानेबाज, छली ।

मिस–स्त्री० (अं०) कुमारी, बिनब्याही लड़की । पु० (फा०) ताँबा । **–गर**–पु० कसेरा ।

मिसकीन–वि० (अ०) दे० 'मिस्कीन' ।

मिसकीनता*–स्त्री० मिस्कीनी, दीनता ।

मिसना*–अ० क्रि० मिलाया जाना; मला जाना ।

मिसमिल–स्त्री० बिसमिल्लाह कहकर पशुवधकी प्रथा । (कबीर)

मिसर–पु० दे० 'मिस्र' ।

मिसरा–पु० (अ०) दरवाजेका एक पट, किवाड़; शेर या बैतका आधा भाग । **(मिसर)ए औवल**–पु० शेरका पहला अर्ध भाग या चरण । **–तर**–पु० बढ़िया, चुस्त मिसरा । **–तरह**–पु० वह मिसरा जो रचनाका छंद, तुकांत (काफिया, रदीफ) बतानेके लिए रचा या चुना जाय, पूर्तिके लिए दी हुई समस्या ।

मिसरी–वि०, पु०, स्त्री० दे० 'मिस्री' ।

मिसरोटी–स्त्री० कई तरहकी दालोंके आटेकी बनी मोटी रोटी, बाटी ।

मिसल–स्त्री० दे० 'मिसिल' ।

मिसहा*–वि० दे० 'मिस'में ।

मिसाल–स्त्री० (अ०) नजीर, दृष्टांत, नमूना; चित्र, प्रतिकृति; फरमान; आलम असबाब (स्थूल जगत्) और आलमें अखाह (आत्माओंका लोक)के बीच एक लोक जो स्थूल जगत्का प्रतिरूप है, स्वप्नजगत् (सू०) ।

मिसाली–वि० दृष्टांतरूप में ।

मिसिल–स्त्री० (अ०) मुकदमेकी काररवाईके कागजात जो इकट्ठा करके नत्थी कर दिये गये हों; छपे हुए फार्म जो सिलसिलेसे लगाकर रखे गये हों, फौजका एक टुकड़ा ।

मिसिली–वि० जिसके बारेमें कोई मिसिल बन चुकी हो, सजायाफ्ता ।

मिस्कला–पु० सैकल करनेका औजार ।

मिस्कीन–वि० (अ०) कंगाल, अकिंचन; भूखा, दीन; असहाय । **–सूरत**–वि० जिसकी सूरतमें दीनता और भोलापन प्रकट हो, पर असलमें जो शरारती और दुष्ट हो ।

मिस्कीनी–स्त्री० मिस्कीनपन, कंगाली; दीनता ।

मिस्कोट–पु० खाना, भोजन; एक मेज या दस्तरखानपर बैठकर खाना खानेवाले; गुप्त मंत्रणा ।

मिस्टर–पु० (अं०) नाम या पद-बोधक संज्ञाके साथ लगाया जानेवाला सम्मानसूचक शब्द, महाशय, जनाब, श्रीयुतका समानार्थक ।

मिस्तर–पु० छत बनाने, पलस्तर करनेमें काम आनेवाला पिटना; नीलकी टिकिया बनानेकी कल ।

मिस्तरी–पु० कुशल कारीगर; कल-पुरजेका काम जाननेवाला । **–ख़ाना**–पु० लोहार, बढ़ई आदिके मिलकर काम करनेकी जगह ।

मिस्मिरेज़म–पु० दूसरेकी इच्छाशक्तिपर असर डालकर उसे अचेत या वशीभूत कर लेनेकी विद्या, सम्मोहनविद्या; ऐसा असर डालनेका सिद्धांत, 'मेस्मरिज़्म' ।

मिस्र–पु० (अ०) शहर; उत्तर-पूर्वी अफ्रीकाका एक देश जिसकी पुरानी सभ्यताकी गणना दुनियाकी प्राचीनतम सभ्यताओंमें की जाती है ।

मिस्री–वि० मिस्रका । पु० मिस्रनिवासी । स्त्री० चीनीकी एक मिठाई, मिसरी । मु० **–का कूजा**–कूजेमें जमायी हुई मिस्री । **–की डली**–बहुत मीठी चीज ।

मिस्ल–वि० (अ०) सदृश, तुल्य, मानिंद ।

मिस्सा–पु० मूँग, मोठ आदिका भूसा; कई तरहकी दालोंको एक साथ पीसकर बनाया हुआ आटा ।

मिस्सी–स्त्री० एक मंजन जिसे स्त्रियाँ सिंगारके लिए दाँतोंपर लगाती हैं और जिसके लगानेसे उनपर स्याह रंग चढ़ जाता है । **–काजल**–पु० बनाव-सिंगार । **–दान**–पु०, **–दानी**–स्त्री० मिस्सी रखनेका पात्र । **–सुरमा**–पु० बनाव-सिंगार । **–की धड़ी**–मिस्सीकी तह जो स्त्रियाँ ओठोंपर जमाती हैं ।

मिहचना–स० क्रि० मीचना, बंद करना ।

मिहनत–स्त्री० (अ०) दे० 'मेहनत' ।

मिहराब–स्त्री० (अ०) दे० 'मेहराब' ।

मिहानी*–स्त्री० मथानी ।

मिहिका–स्त्री० (सं०) पाला, हिम ।

मिहिचना, मिहीचना*–स० क्रि० दे० 'मीचना' ।

मिहिर–पु० (सं०) सूर्य; चंद्रमा; बादल; वायु; आक; विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमेंसे एक, वराहमिहिर । वि० बूढ़ा ।

मिहिरकुल–पु० गुप्त सम्राटोंको हरानेवाला प्रसिद्ध हूण विजेता ।

मिहिराण–पु० (सं०) शिव ।

मिहीँ*–वि० दे० 'महीन' ।

मीँगनी–स्त्री० दे० 'मेँगनी' ।

मीँगी–स्त्री० गिरी, मग्ज ।

मीँजना–स० क्रि० मसलना, दबाना, हाथसे मलना या रगड़ना,

मर्दन करना ।

मीँडक*–पु० दे० 'मेँढक' ।

मीँडना*–स० क्रि० मींजना, मसलना, हाथसे मलना ।

मीआद–स्त्री० (अ०) कार्यविशेषके लिए नियत काल, अवधि, मुद्दत; दंडकी अवधि । **मु० –गुज़रना**–अवधि बीत जाना । **–बोलना**–क़ैदकी सजा सुनाना (बो०) ।

मीआदी–वि० मीयादवाला, जिसका काल नियत हो (बुखार, हुंडी); सजायाफ्ता, जो दंड भुगत चुका हो । **–बुखार**–पु० सान्निपातिक ज्वर जो दूसरेसे चौथे और कभी-कभी छठे हफ्तेतक चला जाता है, 'टायफायड' । **–हुंडी**–स्त्री० वह हुंडी जिसका रुपया मिती पूजनेपर चुकाना पड़े ।

मीच*–स्त्री० मृत्यु, मौत ।

मीचना–स० क्रि० (आँख) मूंदना, बंद करना ।

मीजना†–स० क्रि० मलना, मसलना ।

मीज़ान–पु० (अ०) जोड़, जमा; तराज़ू; तुला राशि । **–(ने)-कुल**–पु० कुल रकमों या संख्याओंका जोड़, 'ग्रैंड टोटल' । **मु०–मिलना**–जमा-खर्चका मीजान बराबर होना ।

मीटर–पु० (अं०) खर्च हुए पानी, बिजली आदिके नापनेका यंत्र; लंबाई नापनेका एक पैमाना जो ३९.३७ इंचके बराबर होता है ।

मीटिंग–स्त्री० (अं०) बैठक, सभा ।

मीठा–वि० जिसमें मिठास हो, मधुर रसवाला; सुस्वादिष्ठ, मजेदार; प्रिय; हलका; तीव्रतारहित; मंदा, धीमा; मधुरभाषी; हिजड़ा, जनखा । पु० मिठास; गुड़; मीठी वस्तु, मिठाई, बछनाग; चकोतरा नीबू । **–आलू**–पु० शकरकंद । **–इंद्रजौ**–पु० काला कुटज । **–कद्दू**–पु० कुम्हड़ा । **–गोखरू**–पु० छोटा गोखरू । **–चावल**–पु० चीनी या गुड़ डालकर पकाया हुआ चावल, मीठा पुलाव । **–ठग**–वि० मीठी-मीठी बातें करके ठगनेवाला, बनावटी दोस्त । **–तंबाकू**–पु० वह तंबाकू जिसमें गुड़ कुछ अधिक डाला गया हो । **–तेल**–पु० तिलका तेल । **–तेलिया**–पु० बछनाग । **–नीबू**–पु० नीबूकी जातिका पर उससे बड़ा एक फल जिसका रस मीठा होता है । **–नीम**–पु० एक छोटा पेड़ जिसके पत्ते और फल नीमके-से होते हैं । **–पानी**–पु० लेमोनेड । **–पोइया**–पु० घोड़ेकी तेज और सुस्तके बीचकी चाल । **–बरस**–पु० स्त्रीका अठारहवाँ बरस (स्त्रियाँ इसे मनहूस समझती हैं) । **–भात**–पु० दे० 'मीठा चावल' । **–मीठा**–वि० हलका-हलका, थोड़ा-थोड़ा (दर्द) । **–विष**–पु० वत्सनाग विष, बछनाग । **–साल**–पु० दे० 'मीठा बरस' ।

मीठी–वि० स्त्री० मिठासयुक्त, प्रिय, मधुर । **–गाली**–स्त्री० वह गाली जो बुरी न लगे, ससुरालमें मिलनेवाली गाली । **–छुरी**–वि० दोस्त बनकर गला काटनेवाला, विश्वासघाती । **–तूँबी**–स्त्री० कद्दू । **–नजर**–स्त्री० प्रेमभरी दृष्टि । **–नीँद**–स्त्री० सुखकी नींद, निश्चिंतताकी नींद । **–मार**–स्त्री० वह मार जिसकी चोट ऊपर न दिखाई दे । **–लकड़ी**–स्त्री० मुलेठी । **मु० –छुरी चलाना**–दोस्तीके परदेमें गला काटना ।

मीड़–स्त्री० एक स्वरसे दूसरे स्वरपर जानेका एक सुंदर ढंग (संगीत) ।

मीडकी*–मेढकी ।

मीढ–वि० (सं०) मूत्रित ।

मीढुष्टम, मीढ्वा(ढ्वस्)–पु० (सं०) शिव ।

मीत†–पु० दे० 'मित्र' ।

मीन–पु० (सं०) मछली; बारह राशियोंमेंसे अंतिम । **–केतन,–केतु**–पु० कामदेव । **–गंधा**–स्त्री० मत्स्यगंधा, सत्यवती । **–गोधिका**–स्त्री० ताल, तलाव । **–घाती(तिन्)**–पु० बगला । **–ध्वज**–पु० कामदेव । **–नेत्रा**–स्त्री० गंडदूर्वा । **–रंक,–रंग**–पु० मछरंग नामका पक्षी; जलकौआ । **मु० –मेख निकालना**–दोष निकालना, छिद्रान्वेषण करना ।

मीना–पु० राजपूतानाकी एक युद्धप्रिय जाति । स्त्री० (फा०) नीला रंग; रंगबिरंगा शीशा; शीशे और सोने-चाँदीपर बनाया जानेवाला रंगीन काम; शराबकी बोतल, सुराही; (ला०) शराब । **–कार**–पु० मीनाका काम करनेवाला । **–कारी**–स्त्री० मीनाका काम । **–बाज़ार**–पु० जौहरी बाजार; सुंदर चीजोंका बाजार; वह बाजार जिसमें स्त्रियाँ ही सब चीजें बेचती हों ।

मीनार–स्त्री० (अ० 'मनार') स्तंभरूपमें बनी हुई, अधिक ऊँची इमारत; मस्जिदमें अजान देने, घड़ी लगाने, जहाजोंको रास्ता दिखानेके लिए बने हुए स्तंभ ।

मीनालय–पु० (सं०) समुद्र ।

मीमांसक–वि०, पु० (सं०) मीमांसा करनेवाला; मीमांसाशास्त्रका पंडित ।

मीमांसन–पु० (सं०) मीमांसा करना ।

मीमांसा–स्त्री० (सं०) विचारपूर्वक तत्त्वनिर्णय, विवेचना करना; ६ दर्शनोंमेंसे एक जिसमें यज्ञादि वैदिक कर्मकांडका निरूपण और मंत्रोंकी अर्थविषयक शंकाओंका समाधान किया गया है, जैमिनीय दर्शन (इसे विशेषतः पूर्वमीमांसा और वेदांतदर्शनको उत्तर-मीमांसा कहते हैं) । **—कार**–पु० मीमांसासूत्रके रचयिता जैमिनि ऋषि ।

मीमांसित–वि० (सं०) जिसकी मीमांसा की गयी हो ।

मीमांस्य–वि० (सं०) मीमांसा करने योग्य ।

मीयाद–स्त्री० (अ०) दे० 'मीआद' ।

मीयादी–वि० दे० 'मीआदी' ।

मीर–पु० (सं०) समुद्र; जल; सीमा । **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी ।

मीर–पु० (फा०) ('अमीर'का लघु रूप) सरदार; प्रधान अधिकारी; नेता; मुखिया; ताश या गंजीफेके बादशाहका पत्ता; प्रतियोगितामें जीतने, औवल होनेवाला; प्रसिद्ध उर्दू कवि मीर मुहम्मद 'तकी'का उपनाम (निधन १८१० ई०) । **–अरब**–पु० अरबके मीर अली । **–अर्ज़**–पु० बादशाहके सामने लोगोंकी अर्जियाँ पेश करनेवाला कर्मचारी । **–अलम**–पु० शाही झंडा लेकर चलनेवाला । **–आख़ोर**–पु० अस्तबलका दारोगा । **–आतिश**–पु० तोपखानेका दारोगा या अध्यक्ष । **–क़ाफ़िला,–कारवाँ**–पु० काफिलेका सरदार । **–फ़र्श**–पु० भारी पत्थर जो फर्शको दबा रखनेके लिए उसके चारों कोनोंपर रखे जाते हैं । **–काहिल**–भारतेन्दु हरिश्चन्द्रका एक उपनाम । **–बख़्शी**–पु० एक अफसर जो मुसलमानी राज्यकालमें कर्मचारियोंका वेतन बाँटता था । **–बह्र**–पु० जलसेनापति, अमीरुल बह्र । **–भुचड़ी**–पु० एक कल्पित वीर जिसे हीजड़े पूजते और अपना मूल पुरुष बताते हैं । **–मंज़िल**–पु० मुसलमानी राज्यकालका एक कर्मचारी जिसका काम शाही फौजके पहुँचनेके पहले पड़ावपर पहुँचकर वहाँका प्रबंध करना होता था । **–मजलिस**–पु० सभापति । **–मतबख़**–पु० बावरजीखानेका दारोगा । **–महल्ला**–पु० महल्लेका चौधरी । **–मुंशी**–पु० प्रधानलेखक, पेशकार । **–शिकार**–पु० राजाओं, बादशाहोंके शिकारका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी । **–सामान**–पु० नवाबों, बादशाहोंकी पाकशालाका प्रबंधक ।

मीरजा*–पु० दे० 'मिरज़ा' ।

मीराज–स्त्री० (अ०) दे० 'मेराज' ।

मीरास–स्त्री० (सं०) मृत व्यक्तिकी छोड़ी हुई संपत्ति जो उसके उत्तराधिकारियोंको मिले, तरका, बपौती ।

मीरासी–पु० एक मुसलमान जाति जो गाने-बजानेका पेशा करती है । (स्त्री० 'मीरासिन (सन)' ।)

मीरी–स्त्री० मीर होनेका भाव, सरदारी । पु० खेल, प्रतियोगिता आदिमें औवल रहनेवाला (लड़का) ।

मील–पु० (सं०) निमेष; वन; (अं०) दूरीकी एक नाप, १७६० गज (मोटे हिसाब आधा कोस) । **–के पत्थर**–दूरी या प्रगति बतानेवाले चिह्न ।

मीलन–पु० (सं०) मूंदना; सिकोड़ना ।

मीलित–वि० (सं०) मूंदा हुआ; सिकोड़ा हुआ, संकुचित । पु० एक अर्थालंकार जहाँ रूपादिका सादृश्य होनेके कारण उपमान-उपमेयमें भेद न देख पड़े, दोनों एकमें मिले हुए-से लगें ।

मीवर–पु० (सं०) सेनापति । वि० क्षतिकारक, हानिकर; पूज्य, सम्मानार्ह ।

मीवा(वन्)–पु० (सं०) उदरकृमि; वायु; छींटा, शीकर ।

मुँगरा–पु० गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोंकने-पीटनेके काम

आती है।

मुंगरी–स्त्री० छोटा मुंगरा।

मुँगौछी*–स्त्री० मूँगका बना एक पकवान।

मुँगौरा–स्त्री० मूँगकी दालकी बरी।

मुंचन*–पु० दे० 'मोचन'।

मुंचना*–स० क्रि० मुक्त करना, छोड़ना।

मुंचित*–वि० मुक्त, खुला।

मुंज–पु० (सं०) मूँज; राजा भोजका चचा जो अपभ्रंशका कवि था। **–केशी(शिन्)**–पु० विष्णु। **–ग्राम**–पु० महाभारतमें वर्णित एक प्राचीन नगर। **–मणि**–पु० पुखराज। **–मेखला**–स्त्री० मूँजकी बनी मेखला। **–मेखली(लिन्)**–पु० शिव; विष्णु। **–वट**–पु० एक प्राचीन तीर्थ।

मुंजक–पु० (सं०) घोड़ोंकी आँखोंमें होनेवाला एक रोग।

मुंजर–पु० (सं०) कमलकी जड़।

मुंजली*–वि० स्त्री० मूंजकी।

मुंजवान्(वत्)–पु० (सं०) कैलासके पासका एक पर्वत; सोमलता-का एक भेद।

मुंजातक–पु० (सं०) मूँज; एक कंद।

मुंजाद्रि–पु० (सं०) एक पर्वतका नाम।

मुंड–पु० (सं०) सिर, मूँड़, मस्तक; कटा हुआ सिर; मुँड़ा हुआ सिर; नाई; शुंभका सेनापति एक दैत्य; राहु; मुंडकोपनिषद्; पेड़का ठूंठ; एक प्रकारका लोहा, मुंडायस; बोल। वि० मुंडित; अधम। **–कर**–पु० (पोल टैक्स) प्रत्येक व्यक्तिपर लगनेवाला कर, फी आदमी पीछे वसूल किया जानेवाला कर। **किट्ट**–पु० मंडूर। **–चणक**–पु० कलाय, केराव। **–फल**–पु० नारियल। **–माला**–स्त्री० कटे हुए सिरों या खोपड़ियोंकी माला। **–माली(लिन्)**–पु० मुंडोंकी माला धारण करनेवाला, शिव। **–लौह**–पु० मंडूर। **–शालि**–पु० बोरो धान।

मुंडकरी–स्त्री० घुटनोंके बीचमें सिर रखकर बैठनेकी मुद्रा।

मुंड़चिरा–पु० एक तरहके मुसलमान फकीर जो अपने सिर, चेहरे आदिपर छूरेसे घाव करके भीख माँगते हैं। **–पन**–पु० लेन-देन आदिमें झगड़ा और हठ।

मुंडक–पु० (सं०) मूँड़नेवाला, नाई; सिर; अथर्ववेदका एक उपनिषद् जो दस प्रधान उपनिषदोंमेंसे है, मुंडकोपनिषद्।

मुंडन–पु० (सं०) मूँड़ना; द्विजादिके लिए विहित एक संस्कार, बालकके सिरके बाल पहली बार मूँड़नेकी रस्म।

मुँडना–अ० क्रि० मूँड़ा जाना, ठगा जाना।

मुँडला–पु० चरखेका वह अंग जिसपर माल रहती है।

मुंडा–वि० मुंडित; गंजा; बिना सींगका (बैल, बकरा)। पु० बिना नोकका जूता; एक आदिवासी जाति जो छोटा नागपुर, राँची, मिरजापुर आदिके जंगली भागोंमें बसती है। स्त्री० मुंडा लोगोंकी भाषा जिसके अंदर खरवार, संथाली, मुंडारी, कोरवा आदि अनेक बोलियाँ आती हैं; (सं०) मुंडिता स्त्री; सन्यासिनी, वैरागिन; गोरखमुंडी।

मुँड़ाई–स्त्री० मूँड़नेका काम; मूँड़नेकी मजदूरी।

मुँड़ाना–स० क्रि० दे० 'मुड़ाना'।

मुंडायस–पु० (सं०) एक प्रकारका लोहा, मंडूर।

मुँडासा–पु० सिरपर बाँधनेका साफा।

मुँडित–वि० (सं०) मूँड़ा हुआ। पु० लोहा।

मुँड़िया–स्त्री० दे० 'मुडिया'। * पु० सिर मुँड़ाकर बना हुआ साधु, सन्यासी।

मुंडी–स्त्री० वह स्त्री जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो; बेवा औरत; गोरखमुंडी।

मुंडी(डिन्)–वि० (सं०) जिसके सिरके बाल मूँड़ दिये गये हों; बिना सींगका। पु० नाई; शिव; सन्यासी।

मुंडीरिका, मुंडीरी–स्त्री० (सं०) गोरखमुंडी।

मुँड़ेर–स्त्री० खेतकी मेंड़; दे० 'मुँड़ेरा'।

मुँड़ेरा–पु० छतके चारों ओरकी मेंड़ जैसी दीवार; पुश्ता।

मुँड़ेरी–स्त्री० छोटा मुँड़ेरा।

मुंडो–स्त्री० सिरमुंड़ी स्त्री; राँड़।

मुँढ़िया–स्त्री० छोटा मोढ़ा या मूढ़ा।

मुंतक़िल–वि० (अ०) इंतिकाल करनेवाला; एकसे दूसरी जगह या दूसरे हाथमें जानेवाला या गया हुआ।

मुंतख़ब–वि० (अ०) इंतखाब किया हुआ, छाँटा हुआ; बढ़िया; प्रशस्त; साररूप।

मुंतज़िम–वि० (अ०) इंतजाम करनेवाला, प्रबंधक; प्रबंधकुशल; मितव्ययी।

मुंतज़िर–वि० (अ०) इंतजार करनेवाला।

मुंतशिर–वि० (अ०) बिखरनेवाला; बिखरा हुआ; चिंतित, उद्विग्न।

मुंतही–वि० (अ०) इंतिहा, हदको पहुँचानेवाला; पारगामी (विद्वान्)।

मुंथा–पु० एक नक्षत्र योग।

मुँदना–अ० क्रि० आँखका बंद होना, पलक लगना; ढँकना, बंद होना; छिपना, तिरोहित होना।

मुँदरा–पु० एक तरहका कुंडल।

मुंदरिज–वि० दर्ज किया हुआ; लिखा हुआ (–जैल––निम्न-लिखित)।

मुँदरी–स्त्री० छल्ला; अँगूठी।

मुंशियाना–वि० मुंशियों जैसा; मुंशीके उपयुक्त।

मुंशी–पु० (अ०) मजमून सोचने, लिखनेवाला; लेखक; सुंदर भाषा, सुंदर अक्षर लिखनेवाला; किरानी; मुहर्रिर; थानेका मुहर्रिर; उर्दू-फारसी पढ़ानेवाला। **–ख़ाना**–पु० उर्दू-फारसीका दफ्तर। **–गिरी**–स्त्री० लेखनवृत्ति, मुहर्रिरी।

मुंस‡–पु० पति, शौहर, खसम (बुंदेल०–तिरस्कारमें प्रयुक्त)–'मुंस पूतको कोसनेमें नहीं लजाती'–अमर०।

मुंसरिम–पु० (अ०) प्रबंध करनेवाला; जजी, कलेक्टरी आदिके दफ्तरका प्रधान।

मुंसरिमी–स्त्री० मुंसरिमका पद या काम।

मुंसिफ़–पु० (अ०) इंसाफ करनेवाला, न्यायाधीश; न्यायविभागका एक अधिकारी जिसका पद सब-जजसे छोटा होता है। **–मिज़ाज**–वि० न्यायशील, इंसाफपसंद।

मुंसिफ़ाना–वि० न्यायोचित, न्याययुक्त।

मुंसिफ़ी–स्त्री० न्यायशीलता; मुंसिफका पद; मुंसिफकी अदालत।

मुँह–पु० प्राणिदेहके शिरोभागमें स्थित वह छिद्र जिसमें आहारग्रहण और बोलनेके साधनरूप अवयव होते हैं, मुख; चेहरा; छेद, सूराख; बरतन आदिका वह छेद जिससे कोई चीज अंदर डाली जाय; बाढ़, धार; किनारा; योग्यता, लियाकत; सामर्थ्य; हिम्मत; मजाल। अ० की ओर, दिशामें (पूरब मुँह, किस मुँह बैठे हो?)। **––अँधियारे**‡–अ० दे० 'मुँहअँधेरे'। **–अँधेरे,––उजाले**–अ० बहुत सबेरे, तड़के। **–अखरी***–वि० जबानी, मौखिक। **–चंग**–पु० एक बाजा। **–चटौवल**‡–स्त्री० चूमा-चाटी; बकवाद। **–चोर**–वि० जो दूसरोंसे मुँह छिपाये, दूसरोंके सामने जानेसे बचनेवाला; झेंपू। **–चोरी**–स्त्री० मुँहचोर होना। **–छुआई**–स्त्री० पूछनेकी रस्म अदा करना। **–छुट**–वि० मुँहफट। **–ज़ोर**–वि० बहुत बोलनेवाला, लड़ाका, कल्लादराज; लगामको न माननेवाला (घोड़ा)। **–ज़ोरी**–स्त्री० ढीठता; लड़ाकापन, कल्लादराजी; बदलगामी। **–झौंसा**–वि० जिसका मुँह झुलस दिया गया हो (एक गाली)। **–तोड़**–वि० विपक्षीकी दलीलको पूरी तरह काट देनेवाला (–जवाब), विरोधीको निरुत्तर तथा अवमानित कर देनेवाला। **–दर मुँह**–अ० सामने, रू-बरू। **–दिखाई**–स्त्री० दुलहिनका मुँह देखनेकी रस्म; वह धन, आभूषण आदि जो दुलहिनका मुँह देखकर उसे दिया जाय। **–देखा**–वि० बिलकुल ऊपरी, दिखाऊ; मुँह ताकता रहनेवाला। **–नाल**–स्त्री० दे० 'मुहनाल'। **–पटा**–पु० घोड़ेका एक साज, सिरबंद। **–पातर***–वि० मुँहका हलका, मुँहफट। **–फट**–वि० जो मुँहमें आये वह बक देनेवाला, जबान-दराज, बदजबान। **–बंद**–वि० जिसका मुँह खुला न हो; बिनखिला; कुमारी (बाजारी)। **–बँधा**–पु० मुँहपर कपड़ा बाँध रखनेवाला जैन साधु। **–बोला**–वि० मुँहसे कहकर बनाया हुआ, माना हुआ, अवास्तविक (भाई, बेटा)।

(स्त्री० 'मुँहबोली'।)–**बोली बहिन**–स्त्री० वह स्त्री जिससे मुँहसे कहकर बहिनका नाता जोड़ लिया गया हो। –**भर**–अ० अच्छी तरह, दिलसे (बोलना, बात करना)। –**भराई**–स्त्री० घूस। –**माँगा**–वि० अपना माँगा हुआ (दाम); मनोभिलषित (मुँहमाँगी मुराद)। –**लगा**–वि० ढीठ, शोख, सिरचढ़ा। मु० –**आँसुओंसे धोना**–बहुत रोना। –**आना**–मुँहमें छाले पड़ना। –**इतना-सा निकल आना**–चेहरा धँस जाना, बहुत दुबला हो जाना; लज्जित हो जाना; चेहरेका आब उतर जाना। –**उजला होना**–इज्जत रह जाना, बेआबरूईसे बच जाना। –**उठाकर कहना**–बेसोचे-समझे बोलना, जो जीमें आये बक देना। –**उठाये चले जाना**–बेधड़क, बिना इधर-उधर देखे चले जाना। –**उतरना**–मुँहपर तेज, कांति न रहना; चेहरेसे सुस्ती, उदासी प्रकट होना। –**औंधाकर पड़ना या लेटना**–दुःख, रोष या मानसे अलग जाकर पड़ना। –**करना**–फोड़ेका फूटना। (**किसी ओरको**)–**करना**–किसी ओर जानेका विचार करना। –**का कच्चा**–जिसके पेटमें बात न पचे; जिसकी बातका भरोसा न हो; लगामका झटका न सहनेवाला (घोड़ा)। –**का कड़ा या सख़्त**–मुँहजोर; कटुभाषी; लगामका अंकुश न माननेवाला (घोड़ा)। –**का कौर या निवाला**–बहुत आसान काम। –**०छीनना**–किसीकी रोटी छीनना, मिलती हुई वस्तुसे वंचित करना। –**का मीठा**–ऊपरसे भला, पर दिलका खोटा; चिकनी-चुपड़ी बातें करनेवाला। –**काला करना**–(अपने) मुँहमें कालिख पोतना; व्यभिचार, बुरे कर्म करना; दूर होना, फिर मुँह न दिखाना (जा अपना मुँह काला कर); (दूसरेकी) बेइज्जती करना; दूर करना, फेंकना; लानत भेजना (मुँह काला करो ऐसी चीजका)। (**किसीका**)–**काला हो**–मुँहमें कालिख लगे; नाश हो (शाप)। –**काला होना**–मुँहमें कालिख लगना, बेइज्जत होना; दूर होना; नष्ट होना। –**का सच्चा**–बातका धनी, वादेका पक्का। –**किलना**–मुँह कील दिया जाना, जबान बंद हो जाना। –**की खाना**–थप्पड़ खाना, पिटना; कियेका फल पाना; बुरी तरह हारना, जलील होना। –**की या मुँहसे बात छीनना**–एक आदमी जो बात कहना चाहता हो दूसरेका उससे पहले कह देना। –**कील देना**–मंत्र-बलसे जबान बंद कर देना, चुप करा देना; घूससे मुँह बंद कर देना। –**के कौए उड़ जाना**–चेहरेपर हवाइयाँ उड़ने लगना; हवास गायब हो जाना। –**के टुकड़े उड़ जाना**–पानमें अधिक चूना होनेके कारण मुँहका कट जाना। –**के बल गिरना**–किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए आतुर हो जाना; धोखा खाना। –**के लच्छन झड़ना**–निर्लज्ज हो जाना। –**के लायक होना**–(किसी का) स्थितिके अनुरूप होना। –**खुलना**–(फोड़े आदिका) मुँह बड़ा होना; बोलनेमें ढीठ हो जाना, बदजबानीकी आदत लगना। –**खुलवाना**–बोलनेको लाचार करना; गुस्ताख बनाना। –**ख़ुश्क होना**–दे० 'मुँह सूखना'। –**खोलकर रह जाना**– कुछ कहते-कहते चुप हो जाना। –**चपड़ा कर देना**–कल्लेपर जोरका तमाचा लगाना। –**चलना**–मुँह चलाया जाना। –**चलाना**–खाना; घोड़ेका काटना; जबान-दराजी करना। –**चाटना**–प्यार करना; खुशामद करना। –**चिढ़ाना**–किसीकी मुखाकृति, बोलनेके ढंग आदिकी नकल (चिढ़ानेके लिए) मुँह बिगाड़कर करना। –**चूम लेना**–किसीकी शक्ति, योग्यताका कायल हो जाना, अपनेसे बहुत बड़ा मान लेना (कोई कठिन काम करनेकी चुनौती देनेका भाव होता है–तुम अमुक काम कर सके तो तुम्हारा मुँह चूम लूँगा)। –**छिपाना,–छुपाना**–लज्जावश सामने न आना, लज्जित होना। –**छूना**– दिखानेके लिए ऊपरी मनसे कहना। –**ज़हर हो जाना**–मुँहका बहुत कड़ुआ हो जाना। –**जुठारना या जूठा करना**–खानेका नाम करना, जरा-सा खाकर छोड़ देना। –**जोड़ना**–काना-फूसी करना। –**झुलसना**–मुँहको आग लगाना; लानत भेजना। –**डालना**–चौपायोंका चारेसे मुँह लगाना, खाना। –**ढाँक या ढाँपकर रोना**–मुँहपर आँचल या रूमाल रखकर रोना, अधिक विलाप करना। –**तक या ताकके रह जाना**–चकित होकर चुप रह जाना। –**तकना या ताकना**–किसीसे आस लगाये बैठे रहना; चकित, हतबुद्धि होकर किसीकी ओर देखना। –**तकने या ताकने लगना**–चकित या विवश होकर किसीका मुँह देखने लगना। –**थकना**–बकवाससे वागिंद्रियका थक जाना, मुँह दुखने लगना। –**थुथाना**–मुँह लटकाना। –**दिखाना**–सामने आना। (**किसीका**)–**देखकर**–(किसीका) लिहाज करके; (किसीको) प्रसन्न करनेके लिए (बच्चोंका मुँह देखकर सब सह रही हूँ)। –**०बात कहना**–चापलूसीकी बातें करना। –**देखकर उठना**–सवेरे आँख खुलते ही किसीपर निगाह पड़ना। –**देखकर जीना**–किसीके प्रति आशा-के सहारे या भरोसे जिन्दा रहना। –**देखना**–दे० 'मुँह तकना'। –**देखने लगना**–दे० 'मुँह तकने लगना'।–**देखी करना**–किसीकी इच्छा या खुशीका खयाल रखकर व्यवहार करना, पक्षपात करना। –**देखी बात**–लिहाज, मुरौवत, तरफदारी, चापलूसीकी बात। –**देखेकी**–ऊपरी, दिखाऊ (–प्रीति, चाह)। –**देना**–बैल, घोड़े आदिका चारेपर मुँह डालना। –**धो रखो**–इस चीजकी आशा न करो, अपना मुँह (अपनी योग्यता या सामर्थ्य) देखो। –**पकड़ना**–बोलनेसे रोकना। –**पड़ना**–हिम्मत होना। –**पर**–सामने, रू-बरू; होठोंपर, जबानपर; चेहरेपर। –**पर जाना**–लिहाज, मुरौवत करना। –**पर ठीकरी रख लेना**–बेमुरौवत हो जाना। –**पर ताला लग जाना**–जबान बंद हो जाना; चुप्पी साध लेना। –**पर थूकना**–अत्यधिक घृणाप्रकाश या तिरस्कार करना; अपमानित करना। –**पर न थूकना**–अति हेय समझना, उसकी ओर देखना तक नहीं। –**पर नाक न होना**–निर्लज्ज होना। –**पर फेंक देना या फेंक मारना**–बहुत खफा होकर कोई चीज देना या लौटा देना। –**पर महताब छूटना**–चेहरा पीला हो जाना, चेहरेपर हवाइयाँ उड़ना। –**पर मुहर लगना या हो जाना**–चुप्पी साध लेना, एक शब्द भी न कहना। –**पर रखना**–चखना, खाना; (तोप आदिके) सामने, जदपर रखना। –**पर लाना**–कहना, बयान करना। –**पर शफ़क़ फूलना**–प्रसन्नतासे चेहरेपर लाली आ जाना। –**पर हवाइयाँ उड़ना**–भय, घबराहट आदिसे चेहरेका पीला या सफेद हो जाना। –**पसारकर दौड़ना**–कोई चीज पानेके लिए लपकना। –**पसारना**–मुँह फैलाना; (कुछ) पानेके लिए आगे बढ़ना; अधिक दाम माँगना। –**पाना**–रुख या मर्जी पाना, भावानुकूल दिखना। –**पेट चलना**–कै-दस्त दोनों होना। –**फटना**–सरदी, खुश्कीके कारण होठों, कपोलोंकी त्वचा सूखकर फटना। –**फुलाना**–नाराज होना, रूठना। –**फूँकना**–मुँहको आग लगाना, लानत भेजना। –**फेर लेना**–बेरुख या नाराज हो जाना। –**फैलाना**–अधिक दाम माँगना; अधिक लोभ करना। –**बंद कर देना**–चुप कर देना; घूस देकर अपने विरुद्ध कुछ करने, कहनेसे रोक देना। –**बंद कर लेना**–चुप हो जाना। –**बनवा रखो**–दे० 'मुँह धो रखो'। –**बनाना**–चेहरेकी शक्ल बिगाड़ना; चेहरेसे रोष प्रकाश करना; मुँह चिढ़ाना। –**बाना**–दे० 'मुँह फैलाना'। –**बाये रहना**–अवसरसे लाभ उठानेके लिए आतुर रहना। –**बिगाड़ देना**–मारकर चेहरा खराब कर देना। –**बिगाड़ना**–मुँह बनाना, चेहरेसे नाराजी प्रकट करना; मुँहका स्वाद बिगाड़ देना। –**भर आना**–मुँहमें पानी आना, मतली होना। –**भरके**–लबालब; भरपूर; यथेच्छ। –**भरना**–मुँहमें कौर डालना; घूस देना, मुँह बंद करना। –**मारना**–चारेपर मुँह डालना; काटनेको मुँह चलाना, काटना; बढ़ जाना, मात करना। –**मीठा करना**–मिठाई खाना, खिलाना; घूस, इनाम आदिके रूपमें कुछ देना। –**मीठा होना**–किसीसे कुछ मिलना; मँगनी होना। –**में आना**–जबानपर आना। –**में कालिख पुतना या लगना**–भारी बदनामी होना, कलंकका टीका लगना। –**में ख़ाक**–मुँहमें खाक पड़े (अशुभ या ढिठाईकी बात अपने या दूसरेके मुँहसे निकलनेपर कहते हैं)। –**में ख़ून लगना**–चसका लगना। –**में गुड़-घी या घी-शक्कर**–तुम्हारा मुँह मीठा हो (किसीके कोई हर्षका समाचार सुनानेपर कहते हैं)। –**में घुनघुनिया भर लेना**–चुप्पी साध लेना, मूक बन जाना। –**में ज़बान न रखना**–गूँगा होना; बेजबान होना। –**में ज़बान रखना या होना**–बोलनेमें समर्थ होना, वाक्शक्ति रखना (हम भी मुँहमें जबान रखते हैं)। –**में जाना**–खाया जाना, भक्ष्य बनना। –**में तिनका लेना**–अति दीन बनना, दाँतोंमें तिनका दबाना। –**में थूकना**–जलील, बेइज्जत

करना। **–में दाँत न पेटमें आँत**–अति वृद्ध होना। **–में पढ़ना या बोलना**–इतनी धीमी आवाजमें पढ़ना या बोलना कि दूसरेको सुनाई न दे। **–में पानी भर आना**–राल टपकना, ललचाना। **–में लगाम न होना**–जवानपर अंकुश न होना, जो मनमें आये बक देना। **–में लूका लगाना**–मुँह झुलसना; मुँह काला करना। **–मोड़ना**–बेरुखी करना, ध्यान न देना; अलग हो जाना; इनकार करना; हराना; पीछे ढकेल देना। **–लगना**–हुज्जत करना, उलझना; ढिठाईसे बोलना; चस्का लगना। **–लगाना**–होंठोंसे छुवाना, चखना; ढीठ, गुस्ताख बनाना। **–लटकाना**–मुँह फुलाना, मुखाकृतिसे रोप या उदासी आदि प्रकट करना। **–लपेटकर पड़ रहना**–दु:ख या रोपमें मुँह ढककर पड़ रहना। **–लाल होना**–क्रोधसे चेहरेका लाल होना। **(अपना-सा)–लेकर रह जाना**–लज्जित होकर चुप हो जाना, खिसियाकर रह जाना। **–शक्करसे भर देना**–(हर्ष-समाचार सुनानेवालेका) मुँह मीठा करना। **–सँभालना**–जवान काबूमें रखना, सोच-समझकर बोलना (मुँह सँभालकर बातें करो)। **–सीना**–चुप्पी लगा लेना। **–सूखना**–गला, जवानका सूखना; मनमें भय भर जाना, घबरा जाना; निस्तेज होना। **–से**– जवानी, ऊपर से (–कहना)। **–से दूध टपकना या दूधकी बू आना**–बच्चा, नादान, नासमझ होना। **–से निकलना**–कहा जाना। **–से फूल झड़ना**–बोल या बातोंमें बहुत मिठास होना। **–से बात न निकलना**–डर, गुस्से या घबराहटके मारे मुँहसे आवाज न निकलना। **–से राल या लार टपकना**–किसी वस्तुके लिए लालायित होना, मनमें अति लोभ होना। **–से लाल उगलना**–मुँहसे बहुत मीठे शब्द निकालना। **–स्याह होना**–दे० 'मुँह काला होना'। **–ही मुँहमें**–चुपके-चुपके (–कहना, बातें करना)।

मुँहाचही*–स्त्री० डींग मारना–'मुँहाचही सेनापति कीन्हीं सकटासुर मन गर्व बढ़ायो'–सूर; बोल चाल; (प्रेमी-प्रेमिकाका) परस्पर मुँह देखते रहने, नित्य साथ बने रहनेकी अवस्था–'जीवन मुँहाचही को नीकों'–सूर (?)।

मुँहामुँह–अ० मुँहतक, बिलकुल ऊपरतक।

मुँहासा–पु० युवावस्थामें चेहरेपर निकलनेवाली एक तरहकी फुंसी।

मु–पु० (सं०) महेश; बंधन।

मुअज्ज़म–वि० (अ०) पूज्य, बुज़ुर्ग; महान्।

मुअज्ज़िन–पु० (अ०) अजाँ देनेवाला, नमाजके लिए आह्वान करनेवाला।

मुअत्तल–वि० (अ०) खाली, बेकार, काम न देनेवाला (अंग); कामसे कुछ अरसेके लिए अलग किया हुआ, अस्थायी रूपसे पदच्युत (कर्मचारी)।

मुअत्तली–स्त्री० मुअत्तल होनेका भाव, अस्थायी पदच्युति।

मुअद्दब–वि० (अ०) बाअदब, शिष्ट, सभ्य।

मुअद्दबाना–अ० अदबके साथ।

मुअद्दिब–पु० (अ०) अदब सिखानेवाला।

मुअम्मा–पु० (अ०) पहेली; पेचदार बात; रहस्य। **मु०–खुलना**–भेद खुलना; गुत्थी सुलझना।

मुअल्ला–वि० (अ०) ऊँचा; ऊँचे मरतबेवाला।

मुअल्लिम–पु० (अ०) इल्म देनेवाला, शिक्षक।

मुअल्लिमा–स्त्री० (अ०) शिक्षिका।

मुआ–वि० मरा हुआ, मृत; निगोड़ा, नाकारा (स्त्री०)। (स्त्री० 'मुई'।)**–बादल**–पु० इस्पंज। **–(ई) मिट्टी**–स्त्री० लाश, शव। **–०की निशानी**–मृत व्यक्तिकी संतान या स्मृतिचिह्न।

मुआइना, मुआयना–पु० (अ०) अवलोकन, निरीक्षण; जाँच-पड़ताल।

मुआफ़–वि० (अ०) दे० 'माफ़'।

मुआफ़िक़–वि० दे० 'मुवाफ़िक़'।

मुआफ़िक़त–स्त्री० अनुकूलता; मेल-जोल।

मुआफ़ी–स्त्री० माफ़ी।

मुआमला–पु० (अ०) दे० 'मामला'। **–दाँ,–फ़हम,–शिनास**–वि० बातकी तहतक पहुँचनेवाला, अनुभवी।

मुआलिज–पु० (अ०) इलाज करनेवाला, चिकित्सक; वैद्य, हकीम।

मुआलिजा–पु० (अ०) इलाज करना, चिकित्सा; औषधोपचार।

मुआवज़ा–पु० (अ०) वह चीज जो किसीके बदलेमें दी जाय, बदला, पलटा; वस्तुका मूल्य; तावान, हर्जाना।

मुआहिदा–पु० (अ०) कौल-करार; इकरारनामा।

मुकंद, मुकंदक–पु० (सं०) प्याज; कुँदरू; साठी धान।

मुकट–पु० दे० 'मुकुट'।

मुकटा†–पु० पूजाके अवसरपर पहनी जानेवाली रेशमी धोती; मुटका।

मुकतई*–स्त्री० मुक्ति, मोक्षपद।

मुकता*–पु० दे० 'मुक्ता'। † वि० बहुत, ढेर-सा।

मुकतालि*–स्त्री० मोतियोंकी लड़ी, मुक्तावली।

मुकति*–स्त्री० मुक्ति।

मुक़त्तर–वि० (अ०) टपकाया हुआ, बूँद-बूँद करके टपकाया, साफ किया हुआ।

मुकत्ता–वि० (अ०) कटा-छँटा हुआ, कतरा हुआ; सभ्य, शिष्ट। **–दाढ़ी**–स्त्री० शरअके अनुसार तराशी हुई दाढ़ी (मुसल०)।

मुकदमा–पु० (अ० 'मुकद्दमा') अदालतमें गया हुआ मामला, व्यवहार; दावा, नालिश। **–(मे) बाज़**–वि० मुकदमा लड़नेवाला, जिसे मुकदमा लड़नेका शौक हो। **–बाज़ी**–स्त्री० मुकदमा लड़ना।

मुक़द्दम–वि० (अ०) पहला, आला; जो पहले हो चुका हो, पुराना; फर्ज, अवश्य कर्तव्य। पु० गाँवका चौधरी।

मुक़द्दमा–पु० (अ०) आरंभ, प्रस्तावना; सिरनामा; घटना; अदालतमें गया हुआ मामला, व्यवहार।

मुक़द्दर–पु० (अ०) भाग्यलेख, भाग्य, तकदीर। **–आजमाई**–स्त्री० भाग्यकी परीक्षा करना।

मुक़द्दस–वि० (अ०) पवित्र, पाक। **–किताब**–स्त्री० इलहामी किताब, अपौरुषेय धर्मग्रंथ (कुरान, इंजील इ०)। **–हस्ती**–पु० संत पुरुष; महात्मा।

मुकना*–अ० क्रि० मुक्ति, छुटकारा पाना; चुकना।

मुक़फ़्फ़ल–वि० (अ०) कुफ़्ल–ताला लगाया हुआ, बंद।

मुकम्मल–वि० (अ०) पूरा किया हुआ, समाप्त; संपूर्ण, अखंड।

मुकम्मिल–वि० (अ०) पूरा करनेवाला।

मुकरना–अ० क्रि० कही हुई बातसे हटना, नटना, इनकार करना।

मुकरनी–स्त्री० दे० 'मुकरी'।

मुकराना*–स० क्रि० मुक्त कराना; मुकरनेमें प्रवृत्त करना।

मुकरी–स्त्री० वह कविता जिसमें पहले कही हुई बातका अंतमें खंडन-सा किया जाय, पहेली जैसी कविता।

मुकर्रम–वि० (अ०) सम्मानित; पूज्य। (स्त्री० 'मुकर्रमा'।)

मुकर्रमी–'मुकर्रम'का संबोधन कारकका रूप, 'मान्यवर' आदिका समानार्थक।

मुकर्रर–वि० (अ०) दुहराया हुआ, कहा हुआ, द्विरुक्त। अ० दोबारा, फिरसे (कहना)। **–से हकर्रर**–दोबारा-तिबारा, बार-बार।

मुक़र्रर–वि० (अ०) ठहराया हुआ,नियत; नियुक्त। (स्त्री० 'मुकर्ररा'।) अ० अवश्य, निश्चय।

मुक़र्ररी–स्त्री० नियुक्ति; निश्चित किया गया वेतन या राजस्व।

मुक़र्रिर–वि० (अ०) तकरीर करनेवाला, वक्ता।

मुकल–पु० (सं०) अमलतास; गुग्गुल।

मुकलाना*–स० क्रि० खोलना।

मुकलावा–पु० गौना।

मुक़व्वियात–स्त्री० (अ०) पुष्टिकारक दवाएँ।

मुक़व्वी–वि० (अ०) ताकत देनेवाला, बल बढ़ानेवाला, पुष्टिकारक।

मुक़ाबला–पु० (अ०) बराबरी करना; बराबरी; आमना-सामना; मुठभेड़; लड़ाई; विरोध; मिलाकर जाँचना, मिलान; पृथ्वीका सूर्य और चंद्रमाके बीच एक सीधमें होना। **मु० –(ले) पर या में आना**–लड़नेके लिए सामने आना; सामना करना।

मुक़ाबिल–वि० (अ०) मुकाबला, बराबरी करनेवाला; प्रतिस्पर्धी; सामनेका। अ० आमने-सामने।

मुक़ाम–पु० (अ० 'मक़ाम') ठहरने, खड़ा होनेकी जगह; पड़ाव; ठहराव; वासस्थान, घर; मौका; सरोदका परदा; साधककी अवस्थानभूमि; भूमिका (सू०)। मु० **–करना**–ठहरना, उतरना। **–बोलना**–ठहरने, पड़ाव करनेका हुक्म देना।

मुक़ामी–वि० स्थानीय, स्थानविशेषसे संबद्ध, 'लोकल'। **–अफ़सर** –पु० स्थानीय। अधिकारी–**ख़बर**–स्त्री० स्थानीय समाचार।

मुकियाना†–स० क्रि० मुक्की लगाकर शरीरकी पीड़ा दूर करनेका प्रयत्न करना; (हलके) घूँसे लगाना।

मुक़िर, मुक़िर्र–वि० (अ०) इकरार करनेवाला, स्वीकार करनेवाला; दस्तावेज लिखनेवाला। मु० **–होना**–इकबाल करना।

मुकुंद–पु० (सं०) विष्णु; कृष्ण; कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक; एक रत्न; पारा; कुँदरू।

मुकुंदक–पु० (सं०) प्याज; साठी धान।

मुकु–पु० (सं०) मोक्ष; उत्सर्ग।

मुकुट–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध शिरोभूषण जो ताजकी तरह धारण किया जाता था। **–धर,–धारी(रिन्)**–वि० मुकुट धारण करनेवाला (राजा)।

मुकुत*–वि० मुक्त। पु० मोती।

मुकुताहल*–पु० मोती।

मुकुर–पु० (सं०) दर्पण, आईना; मौलसिरी; कुम्हारका डंडा; मल्लिका लता; कोली वृक्ष; दे० 'मुकुल'।

मुकुल–पु० (सं०) कली; वह कली जिसका मुँह जरा-जरा खुल रहा हो; शरीर; आत्मा।

मुकुलित–वि० (सं०) मुकुलविशिष्ट; अधखिला; अधमुँदा।

मुकुष्टक, मुकुष्ठ–पु० (सं०) मोठ।

मुकेस–पु० दे० 'मुक़ैश'।

मुकूलक–पु० (सं०) दंती वृक्ष।

मुक़ैयद–वि० (अ०) कैद किया हुआ, बंदी, जेलमें बंद।

मुक्का–पु० घूँसा, मारनेके लिए बाँधी हुई मुट्ठी। **–(क्के) बाज़ी** –स्त्री० घूँसेबाजी, घूँसोंकी लड़ाई।

मुक्की–स्त्री० घूँसेबाजी; दर्द दूर करनेके लिए शरीरपर धीरे-धीरे मुक्के लगाना।

मुक्केस*–पु० दे० 'मुक़ैश'।

मुक़ैश–पु० सोने-चाँदीका तार, बादला; सोने-चाँदीके तारोंका बना कपड़ा, ताश।

मुक़ैशी–वि० सोने-चाँदीके तारोंका बना, जरी या ताशका बना हुआ। **–गोखरू**–पु० तारोंका बना महीन गोखरू।

मुक्खी–पु० एक तरहका कबूतर।

मुक्त–वि० (सं०) मोक्षप्राप्त, भवबंधनसे मुक्त; बंधनरहित, खुला हुआ; छूटा हुआ; क्षिप्त, फेंका हुआ। **–कंचुक**–वि० (वह साँप) जिसने केंचुल उतार दी हो। **–कंठ**–वि० जिसकी आवाज, बोली खुली, स्पष्ट हो; बेधड़क। **–कच्छ**–वि० जिसका काछ खुला हो, लुंगी पहननेवाला। पु० बौद्ध सन्न्यासी। **–केश**–वि० जिसके बाल बँधे, गुँथे न हों। **–केशी**–स्त्री० काली। वि० स्त्री० खुले बालोंवाली। **–चक्षु(स्)**–वि० जिसकी आँखें खुली हों। पु० सिंह। **–चेता(तस्)**–वि० जिसका चित्त संसारकी आसक्तिसे, जिसकी आत्मा भवबंधनसे, मुक्त हो चुकी हो। **–छंद** –काव्यकी परम्परागत मर्यादाओंका ध्यान न रखकर बनायी गयी कविता। **–द्वार**–वि० जिसका दरवाजा खुला हो, निर्बाध। **–० नीति**–स्त्री० देसावरसे आनेवाले मालपर बाधक कर न लगानेवाली वाणिज्यनीति। **–निर्मोक**–वि० जिसने हालमें केंचुली छोड़ी हो। पु० वह साँप जिसने केंचुल कुछ ही समय पहले छोड़ी हो। **–बधना**–स्त्री० मोतिया फूलका एक भेद; बेला। **–रसा**–स्त्री० रास्ना। **–लज्ज**–वि० लज्जारहित, निर्लज्ज। **–वसन**–वि० निर्वस्त्र। पु० दिगंबर जैन। **– वाणिज्य, – व्यापार**–पु० (फ्री ट्रेड) विदेशोंके साथ होनेवाला आयात-निर्यात-संबंधी बाधाओं या करोंसे मुक्त व्यापार। **–०नीति**–स्त्री० (फ्री ट्रेड पॉलिसी) बाहरसे आनेवाले मालपर बाधक कर न लगाने, किसी एक देशके साथ विशेष रिआयत न करनेकी वाणिज्य-नीति। **–वेणी**–वि० स्त्री० जिसकी वेणी बँधी न हो। स्त्री० द्रौपदी। **–भृंग**–पु० रोहू मछली। **–संग**–वि० जिसने समस्त विषयोंसे आसक्ति छोड़ दी हो। पु० परिव्राजक। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ खुला हो, दानी, उदार। मु० **–कंठसे**–ऊँची आवाजमें; खुलकर; निस्संकोच रूपमें।

मुक्तांबर–पु० (सं०) जैन।

मुक्ता–स्त्री० (सं०) मोती; वेश्या; रास्ना। **–कलाप**–पु० मोतियोंका हार। **–गुण,–दाम(न्)**–पु० मोतियोंकी लड़ी। **–गृह**–पु० सीप। **–पुष्प**–पु० कुंदका पौधा। **–प्रसू**–स्त्री० सीप। **–प्रालंब**–पु० मोतियोंका हार। **–फल**–पु० मोती; कपूर। **–मणि**–पु० मोती। **–माता(तृ)**–स्त्री० सीप। **–लता**–स्त्री० मोतियोंकी माला। **–शुक्ति**–स्त्री० वह सीप जिसमें मोती पैदा होता है। **–स्फोट**–पु० सीप। **–हल***–पु० मुक्ताफल, मोती।

मुक्तागार–पु० (सं०) सीप।

मुक्तात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) प्राप्तमोक्ष; आसक्तिरहित।

मुक्तावली–स्त्री० (सं०) मोतियोंकी लड़ी।

मुक्तावास–पु० (सं०) सीप।

मुक्ति–स्त्री० (सं०) छुटकारा; मोक्ष, जन्ममरण-रूप बंधनसे छुटकारा मिलना, ब्रह्मस्वरूपकी प्राप्ति; आजादी। **–क्षेत्र**–पु० काशी। **–धाम(न्)**–पु० मुक्ति देनेवाला स्थान, तीर्थ। **–पत्र**–पु० छुटकारेका परवाना। **–प्रद**–वि० मुक्ति देनेवाला। **–फ़ौज** स्त्री० (हिं०) ईसाइयोंका एक सेवा और धर्मप्रचारकार्य करनेवाला संघटन, 'सालवेशन आर्मी'। **–मंडप**–पु० विश्वनाथमंदिर (काशी); जगन्नाथधामस्थित स्थान विशेष। **–मार्ग**–पु० मुक्ति पानेका मार्ग, साधन। **–मुक्त**–पु० सिल्लक। **–युद्ध**–पु० (वार ऑफ लिबरेशन) दूसरे राष्ट्रकी अधीनता, दासतासे अपने देशको स्वतंत्र करने, छुटकारा दिलानेके लिए किया जानेवाला संघर्ष। **–लाभ**–पु० मुक्ति, छुटकारा मिलना। **–सेना**–स्त्री० (सालवेशन आर्मी) दे० 'मुक्तिफौज'। **–स्नान**–पु० ग्रहणकी समाप्ति, मोक्षके बाद किया जानेवाला स्नान।

मुक्तिका–स्त्री० (सं०) मोती।

मुख–पु० (सं०) मुँह, दरवाजा, निकलने-पैठनेका रास्ता। **–कमल** –पु० कमल जैसा मुख। **–कांति**–स्त्री० चेहरेका आब, सौंदर्य। **–खुर**–पु० दाँत। **–गंधक**–पु० प्याज। **–चपल**–वि० वाचाल। **–चपला**–स्त्री० आर्या छंदका एक भेद। **–चित्र**–पु० मुखपृष्ठपर छपा हुआ चित्र। **–चीरि**–स्त्री० जीभ। **–चूर्ण**–पु० चेहरेपर मलनेका सुगंधित पाउडर। **–ज**–वि० मुखसे उत्पन्न। पु० ब्राह्मण। **–ताल**–पु० गीतका पहिला पद; टेक। **–दूषण**–पु० प्याज। **–दूषिका**–स्त्री० चेहरेपर होनेवाली फुंसी। **– दोष**–पु० जीभका दोष। **–धावन**–पु० मुँह धोना। **–धौता**–स्त्री० ब्राह्मणयष्टि नामक वृक्ष। **–निरीक्षक**–वि० आलसी, निठल्लू (आदमी)। **–निवासिनी**–स्त्री० सरस्वती। **–पट**–पु० बुरका; घूंघट। **–पत्र**–पु० (आर्गन) किसी दल या संस्था द्वारा प्रकाशित वह सामयिक पत्र जिसमें उसके सिद्धांतों, उद्देश्यों आदिकी चर्चा की जाती है। **–पाक**–पु० मुँह पकना; बैलों, घोड़ों आदिको होनेवाला एक रोग। **–पात्र**–पु० (स्पोक्समैन) सरकार या किसी संस्था आदिकी तरफसे आधिकारिक रूपसे कोई कथन करनेवाला, दे० 'प्रवक्ता'। **–पिंड**–पु० ग्रास; मृत व्यक्तिके उद्देश्यसे अंत्येष्टिके पूर्व दिया जानेवाला पिंड। **–पिडिका**–स्त्री० मुँहासा। **–पूरण**–पु० मुखमें भरा हुआ पानी, कुल्ला; मुखमें कोई चीज भरना। **–पृष्ठ**–पु० पुस्तक, मासिक पत्र आदिका आवरण-पृष्ठ। **–प्रक्षालन**–पु० मुँह धोना, साफ करना। **–प्रसाद**–पु० मुखकी प्रसन्नता; मुखकी प्रसन्न मुद्रा। **–प्रिय**–वि० जो खानेमें अच्छा लगे, सुस्वादु। पु० नारंगी; ककड़ी; लवंग। **–बंद**–पु० (हिं०) घोड़ोंका एक रोग। **–बंध,–बंधन**–पु० पुस्तककी प्रस्तावना, भूमिका। **–बंधनी**–स्त्री० (हिं०) (मजिल) शैतान घोड़े, गाय आदिका मुँह बाँधनेके लिए पहनायी जानेवाली जाली, जावा। **–भूषण**–पु० पान। **–भेद**–पु० चेहरेका विकृत हो जाना। **–मंडनक**–पु० तिलक वृक्ष; मुखका आभूषण; पान। वि० मुँह की शोभा बढ़ानेवाला। **–मंडल**–पु० चेहरा। **–मार्जन**–पु० मुँह साफ करना, मुखप्रक्षालन। **–मोद–**

पु० काला सहिजन। **–यंत्रण**–पु० लगाम। **–रुचि**–स्त्री० मुखकांति। **–रोग**–पु० गले, मसूड़े, जीभ आदिमें होनेवाला रोग। **–रोधक (मुखावरोधक) अधिनियम**–स्त्री० (गैंगिग एक्ट) मुख बंद कर देने, भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देनेवाला अधिनियम। **–रोधन**–पु० (गैंगिग) बलपूर्वक किसीका मुँह बंद कर देना, बोलने या भाषण करनेपर प्रतिबंध लगा देना। **–लांगल**–पु० सूअर; कुत्ता। **–लेप**–पु० सौंदर्यके लिए मुखपर लगाया जानेवाला लेप; एक मुखरोग। **–वल्लभ**–वि० स्वादिष्ठ। पु० अनारका पेड़। **–वाचिका**–स्त्री० अंबष्ठा। **–वाद्य**–पु० मुँहसे बजाया जानेवाला बाजा। **–वास**–पु० गंधतृण नामक घास; कपूर, लौंग आदि मुँहको सुगंधित करनेवाली चीजें। **–वासन**–पु० मुखको सुवासित करनेवाली ओषधि। **–वासिनी**–स्त्री० सरस्वती। **–विष्ठा**–स्त्री० तैलपायिका नामक कीड़ा जिसके मुखस्पर्शसे ही किसी चीजमें दुर्गंधि आ जाती है। **–व्यादान**–पु० जँभाई। **–शुद्धि**–स्त्री० दातुन आदिकी सहायतासे मुख साफ करना; भोजनके बाद पान, इलायची आदि खाकर मुख शुद्ध करना; इस कार्यके लिए उपयोगी वस्तु। **–शेष**–पु० राहु। **–शोथ**–पु० मुखकी सूजन। **–शोधन**–पु० मुख शुद्ध करनेवाली वस्तु, दालचीनी, तज। **–शोधी(धिन्)**–पु० जंबीर। **–शोष**–पु० मुँह सूखना; प्यास। **–श्री**–स्त्री० मुँहकी शोभा, कांति। **–संभव**–पु० ब्राह्मण; पुष्करमूल। **–सुख**–पु० उच्चारणकी सरलता या सौंदर्य। **–स्राव**–पु० लार, लाला; थूक, लारका बहना। **–हास**–पु० प्रसन्न मुखाकृति।

मुखच्छद–पु० (मास्क) चेहरेको छिपानेके लिए पहना जानेवाला कपड़ा, नकाब।

मुखड़ा–पु० चेहरा, मुख।

मुख़तार–पु० (अ०) अधिकार-प्राप्त व्यक्तिविशेषके प्रतिनिधिरूपमें कार्य करनेका अधिकारी; एजेंट; कानूनपेशा वर्गका एक भेद जो वकीलसे छोटा होता था। **–कार**–पु० कार्याधिकारी। **–कारी**–स्त्री० मुखतारी। **–नामा**–पु० वह लेख जिसके जरिये कोई आदमी मुखतार बनाया जाय, मुखतारका अधिकार-पत्र। **–०आम**–पु० मुखतारेआम बनानेका अधिकार-पत्र। **–०खास**–पु० मुखतारेखास बनानेका अधिकार-पत्र। **–(रे) आम**–पु० वह व्यक्ति जिसे किसीकी ओरसे कोई कार्य करनेका अधिकार दिया गया हो। **–कुल**–पु० सर्वाधिकारी। **–खास**–पु० वह जिसे किसी मुकदमेकी पैरवी या और कोई खास काम करनेका अधिकार दिया गया हो।

मुख़तारी–स्त्री० मुखतारका काम या पेशा।

मुखनी|–स्त्री० मुख्य स्त्री या कार्यकर्त्री–'हमारे गोलकी मुखनी है यह'–मृग०।

मुख़न्नस–वि० (अ०) हिजड़ा, नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़–वि० (अ०) तखफीफ किया हुआ, घटाया हुआ। पु० शब्दका लघु रूप (जैसे 'माह'का 'मह'); वह शब्द जिसका कोई वर्ण या मात्रा घट गयी हो।

मुख़बिर–पु० (अ०) खबर देनेवाला, जासूस; वह मुलजिम जो अपराध स्वीकार कर सरकारी गवाह बन जाय तथा जिसे माफी दे दी जाय।

मुख़बिरी–स्त्री० जासूसी।

मुख़म्मस–वि० (अ०) पाँच कोनोंवाला, पंजगोशा। पु० वह पद्य जिसमें हर बंदमें पाँच मिसरे हों।

मुखर–वि० (सं०) अधिक बोलनेवाला, वाचाल; शोर करनेवाला; अप्रियवादी; बजता, शब्द करता हुआ। (स्त्री० 'मुखरा'।) पु० शंख; कौआ; मुखिया।

मुखरिका–स्त्री० (सं०) दे० 'मुखरी'।

मुखरित–वि० (सं०) ध्वनित, शब्दायमान।

मुखरी–स्त्री० (सं०) लगाम; मोहरी।

मुखलिस–वि० (अ०) रिक्त; मुक्त; सच्चा; अविवाहित; निश्छल।

मुखाकृति–स्त्री० (सं०) चेहरा।

मुखागर*–वि० दे० 'मुखाग्र'।

मुखाग्नि–स्त्री० (सं०) जंगलकी आग; चितामें आग लगानेके पहले शवके मुँहमें आग देनेकी क्रिया।

मुखाग्र–वि० (सं०) कंठस्थ, जबानी याद। क्रि० वि० जबानी।

मुख़ातब–वि० (अ०) जिससे खिताब किया जाय, जिससे बात-चीत की जाय, संबोध्य।

मुख़ातिब–वि० (अ०) खिताब या संबोधन करनेवाला, बात करनेवाला; मुतवज्जह।

मुखापेक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) (दूसरेका) मुँह जोहनेवाला, पराश्रित।

मुखामय–पु० (सं०) मुखरोग।

मुखारविंद–पु० कमल जैसा सुन्दर मुख, मुख कमल।

मुखारी|–स्त्री० मुखाकृति; ऊपर या सामनेका भाग; दतुअन।

मुख़ालफ़त–स्त्री० (अ०) विरोध; शत्रुता।

मुख़ालिफ़–वि० (अ०) विरोध करनेवाला; शत्रु; उलटा।

मुखालु–पु० (सं०) एक मीठा कंद, महाकंद।

मुख़ासमत–स्त्री० (अ०) झगड़ा; शत्रुता।

मुखासव–पु० (सं०) थूक; राल।

मुखास्त्र–पु० (सं०) केकड़ा।

मुखिया–पु० प्रधान व्यक्ति, अगुआ; वह व्यक्ति जिसका कर्तव्य गाँवमें होनेवाले अपराधों, दुर्घटनाओं आदिकी सूचना थानेमें भेजवाना हो; वल्लभकुलके मंदिरोंमें मूर्तिके पूजन, भोग लगाने आदिका काम करनेवाला।

मुखिल–वि० खलल डालनेवाला, बाधक ('ग़बन')।

मुखी–वि० मुखसे युक्त, मुखवाला, जैसे सूर्यमुखी, चन्द्रमुखी; दिशा या पहलूका द्योतक यथा पूर्वमुखी, बहुमुखी (यौगिक शब्दोंमें प्रयुक्त)।

मुखीय–वि० (सं०) मुख-संबंधी; मुख्य।

मुखौटा–पु० रूप बनानेके लिए मुखपर लगायी जानेवाली आकृति या चेहरा।

मुख़्तलिफ़–वि० (अ०) भिन्न, जुदा, विसदृश; कई तरहका।

मुख़्तसर–वि० (अ०) संक्षिप्त; साररूप; छोटा।

मुख़्तसरन्–अ० (अ०) थोड़ेमें, संक्षेपमें।

मुख़्तार–पु० (अ०) दे० 'मुख़तार'।

मुख्य–वि० (सं०) मुख-संबंधी; प्रधान, प्रथम, जो गौण न हो; श्रेष्ठ। पु० मुखिया, अगुआ; यज्ञादिमें शास्त्रोक्त प्रथम कल्प। **–नगर अधिकारी**–पु० (ऐग्जीक्यूटिव आफिसर) महापालिकाके कार्यों, व्यवस्था आदिकी देख-रेख करनेवाला मुख्य अधिकारी। **–निर्वाचन-आयुक्त**–पु० (चीफ इलेक्शन-कमिश्नर) वह प्रधान अधिकारी जिसे सारे देशके निर्वाचन कार्यका आयोजन तथा संचालन करने और चुनाव-संबंधी याचिकाओंपर विचार करनेके लिए विशेष न्यायाधिकरण नियुक्त करने आदिका भार सौंपा गया हो। **–न्यायाधिपति**–पु० (चीफ जस्टिस) दे० 'न्यायाधिपति'के साथ। **–न्यायाधीश**–पु० (चीफ जज) किसी लघुवाद-न्यायालय या अन्य न्यायालयके न्यायाधीशोंमें जो प्रधान हो वह। **–मंत्री-(त्रिन्)**–पु० प्रधान मंत्री; (चीफ मिनिस्टर) भारतीय गणतंत्रके किसी राज्य (प्रांत)का सबसे बड़ा मंत्री। **–सर्ग**–पु० स्थावर सृष्टि।

मुख्यतः(तस्)–अ० (सं०) प्रधानतः, खास तौरसे।

मुख्यता–स्त्री० विशेषता, मुख्य होनेका भाव।

मुख्यार्थ–पु० (सं०) शब्दका प्रधान अर्थ।

मुख्यालय–पु० (हेड क्वार्टर) प्रधान कार्यालय या मुख्य निवास।

मुख्याधिष्ठाता–पु० (रेक्टर) दे० 'अधिशिक्षक'; विश्वविद्यालयकी व्यवस्था करनेवाला मुख्य (निर्वाचित) अधिकारी, प्रधान नियामक।

मुगति*–स्त्री० मुक्ति (बीसल०)।

मुगदर–पु० गावदुम मुँगरी जो व्यायामके काममें लायी जाती है, जोड़ी (फेरना, हिलाना)।

मुग़न्नी–पु० (अ०) गवैया, कलावंत। (स्त्री० 'मुग़न्निया'।)

मुगरा–पु० दे० 'मुँगरा'।

मुगरी–स्त्री० दे० 'मुँगरी'।

मुग़ल–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध लड़ाकू तातारी जाति (जिसका

आदिस्थान मंगोलिया है और जिसमें चंगेज खाँ, हलाकू खाँ और तैमूर जैसे इतिहास-प्रसिद्ध विजेता हुए। भारतका अंतिम मुसलमान राजवंश इसी जातिका था)। **–ई**–वि० दे० क्रममें। **–पठान**–पु० जमीनपर खाने खींचकर १६ कंकड़ियोंसे खेला जानेवाला एक खेल।

मुग़लई, मुग़लाई–वि० (फा०) मुगलोंका-सा, मुगली। **–टोपी**–स्त्री० एक तरहकी ऊँचे गोशोंवाली टोपी। **–पराठा**–पु० एक विशेष प्रकारका पराठा जो मेवे, अंडे आदिके योगसे तैयार किया जाता है। **–हड्डी**–स्त्री० चौड़ी-चकली, मजबूत हड्डी।

मुग़लानी–स्त्री० (फा०) मुगल स्त्री; ; हरमसरा (अंतःपुरकी) दासी; सिलाईका काम करनेवाली स्त्री।

मुग़लिया–वि० (फा०) दे० 'मुग़लीया'।

मुग़ली–वि० (फा०) मुगलोंका; मुगलोंका-सा। **–घुट्टी**–स्त्री० मुगल बच्चोंको दी जानेवाली एक विशेष घुट्टी।

मुग़लीया–वि० (फा०) मुगलोंका। **–ख़ानदान**–पु० हिंदुस्तानका मुगल राजवंश।

मुग़ल्लज़, मुग़ल्लिज़–वि० (अ०) मोटा; गाढ़ा; मैला, गंदा; अश्लील।

मुग़ल्लज़ात, मुग़ल्लिज़ात–स्त्री० (अ०) गंदी गालियाँ।

मुग़ालता–पु० (अ०) धोखा; भ्रम।

मुगुध*–वि० दे० 'मुग्ध'। **–तिय**–स्त्री० मुग्धा नायिका-'कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनि-पुनि चंदन जानि'–ललित०।

मुग्ध–वि० (सं०) मोहित; मूढ; भोला; सुंदर। **–कर**–वि० मुग्ध, मोहित करनेवाला। (स्त्री० 'मुग्धकरी'।) **–बुद्धि**–वि० मूर्ख, नासमझ; भोला। **–बोध**–पु० बोपदेवकृत आरंभिक संस्कृत-व्याकरण।

मुग्धा–स्त्री० (सं०) यौवनप्राप्त सरल स्वभाववाली नायिका।

मुचक–पु० (सं०) लाख, लाह।

मुचकुंद–पु० (सं०) एक पेड़ जिसकी छाल और फूल दवाके काम आते हैं; दे० 'मुचुकुंद'।

मुचना–स० क्रि० दे० 'मुंचना'।

मुचलका–पु० (तु०) कोई खास काम न करने या नियत तिथिपर हाजिर होनेका प्रतिज्ञापत्र जिसका पालन न होनेपर प्रतिज्ञा करनेवाला निर्धारित अर्थदंड देना स्वीकार करता है (देना, लिखना)।

मुचिर–वि० (सं०) दाता। पु० धर्म; वायु; देवता।

मुचुकुंद–पु० (सं०) एक सूर्यवंशी राजा जो मांधाताका बेटा था और जिसकी निद्रा भंग करनेके कारण कालयवन जलकर भस्म हो गया; मुचकुंदका पेड़।

मुचुटी–स्त्री० मुट्ठी; उँगली मटकाना; सँड़सी।

मुछंदर–पु० बड़ी मूँछोंवाला; भोंड़ी शक्लवाला और भोंदू।

मुछ–'मूँछ'का समासमें व्यवहृत लघुरूप। **–मुंडा**–जिसने मूँछें मुँड़ा ली हों।

मुछाकड़ा, मुछियल, मुछैल–वि० बड़ी मूँछोंवाला।

मुछाड़िया–पु० बड़ी मूछोंवाला, मुछैल, मुछंदर।

मुज़क्कर–पु० (अ०) नर, पुरुष; पुंलिंग (व्या०)। **–समाई**–पु० जनमुरीद, जोरूका गुलाम।

मुज़क्किर–पु० (अ०) जिक्र करनेवाला, याद करने, करानेवाला; भगवान्‌का नाम जपनेवाला।

मुजतहिद–पु० (अ०) कोशिश करनेवाला; सही रास्ता निकालनेवाला; जिहाद करनेवाला।

मुजनूँ*–सर्व० मुझको।

मुजफ्फ़र–वि० (अ०) विजेता।

मुजमिल–वि० (अ०) संक्षेपमें कथित; जिसमें ब्योरा न हो; इकट्ठा किया हुआ।

मुजरा–वि० (अ०) जारी किया हुआ; हिसाबमें लिया (या मिनहा किया) हुआ। पु० कटौती, मिनहाई; अदबसे सलाम करना; राजाओं आदिके सामने जाकर सलाम करना; वेश्याका महफिलमें बैठकर गाना। **–ई**–पु० मुजरा करनेवाला; सलाम करनेवाला; दरबारी। **–गाह**–पु०, स्त्री० शाही दरबारमें वह स्थान जहाँ खड़े होकर लोग मुजरा अर्ज करें। मु० **–करना**–मिनहा करना; अदबसे सलाम करना; वेश्याका बैठकर–बिना नाचके–गाना।

मुजरिम–पु० (अ०) जुर्म करनेवाला, अपराधी।

मुजर्रत–स्त्री० (अ०) हानि; कष्ट।

मुजर्रद–वि० (अ०) अकेला; अविवाहित; विरक्त।

मुजर्रब–वि० (अ०) तजिबा किया हुआ, अनुभूत; अचूक (नुस्खा, दवा)। **–नुस्खा**–पु० अनुभूत योग।

मुजल्लद–वि० (अ०) जिल्द बँधा हुआ, जिल्ददार।

मुजव्वज़, मुजव्वज़ा–वि० (अ०) तजवीज किया हुआ; प्रस्तावित।

मुजव्विज़–पु० (अ०) तजवीज करनेवाला, प्रस्तावक।

मुजस्सम–वि० (अ०) जिस्मवाला, शरीरधारी; मूर्तिमान्।

मुजस्समा–पु० (अ०) मूर्ति, प्रतिमा।

मुजादला–पु० (अ०) युद्ध, लड़ाई, मार-काट।

मुज़ायक़ा–पु० (अ०) अड़चन; परवा।

मुजाविर–पु० (अ०) पड़ोसी; मसजिदमें रहनेवाला; दरगाह आदिमें झाड़ू लगानेवाला।

मुजाविरी–स्त्री० (अ०) मुजाविरका पद या कार्य।

मुजाहिद–पु० (अ०) कोशिश करनेवाला; जिहाद करनेवाला।

मुज़ाहिम–वि०, पु० (अ०) मुजाहिमत करनेवाला, रोकनेवाला, बाधक।

मुज़ाहिमत–स्त्री० (अ०) रोक-टोक, बाधा, विरोध।

मुज़िर–वि० (अ०) हानिकर।

मुझ–सर्व० 'मैं'का वह रूप जो कर्ता और संबंध कारकको छोड़कर शेष कारकोंमें विभक्तिके योगसे होता है।

मुझे–सर्व० 'मैं'का कर्म और संप्रदान कारकका रूप।

मुटका–पु० एक मोटा रेशमी कपड़ा जो पूजन आदिमें धोतीकी जगह पहना जाता है। वि० मोटा।

मुटरी–स्त्री० दे० 'गठरी'।

मुटाई–स्त्री० मोटापन; पुष्टि; घमंड। मु० **–चढ़ना**–घमंड बढ़ना।

मुटाना–अ० क्रि० मोटा होना; घमंडी हो जाना।

मुटासा–वि० जो पैसेवाला हो जानेके कारण घमंडी और लापरवाह हो गया हो।

मुटिया–पु० बोझा ढोनेवाला।

मुट्ठा–पु० घास-फूस, सरपत आदिका मुट्ठीमें आने लायक पूला, पुलिंदा; दस्ता, मुठिया।

मुट्ठी–स्त्री० बँधी हुई हथेली, मुश्त, मुष्टि; मुट्ठीमें आनेभर वस्तु; मुट्ठीकी चौड़ाईकी माप; पकड़, कब्जा (–में आना, होना); चुसनी; मुट्ठीभर अन्न जो दानके लिए निकाला जाय, चुटकी। मु० **–गरम करना**–हाथमें चुपकेसे रुपये धर देना, घूस देना। **–में आना या होना**–कब्जे, काबूमें आना, होना। **–में हवा बंद करना**–अनहोनी बात करनेकी कोशिश करना।

मुठभेड़–स्त्री० भिड़ंत; सामना (–होना)।

मुठिका*–स्त्री० मुट्ठी; घूँसा।

मुठिया–स्त्री० कब्जा, दस्ता; धुनियोंका बेलन जिससे वे तांतपर मारते हैं।

मुठी*–स्त्री० दे० 'मुट्ठी'।

मुठुकी*–स्त्री० काठका बना एक तरहका घुनघुना।

मुड़कना–अ० क्रि० मुरकना।

मुड़ना–अ० क्रि० सीधी चीजका झुकना; खम होना, अगल-बगल या पीछेकी ओर घूमना, गतिकी दिशा बदलना; † मूँड़ा जाना; ठगा जाना।

मुड़ला*–वि० गंजा।

मुड़वरिया†–स्त्री० सिरहाना।

मुड़वाना–स० क्रि० मूड़ने या मोड़नेका काम कराना।

मुड़वारी†–स्त्री० सिरहाना; मुँड़ेरा।

मुड़हर†–स्त्री० साड़ी या चादरका सिरके ऊपर रहनेवाला भाग, इस भागमें पड़ा हुआ तेल आदिका धब्बा।

मुड़ाना–स० क्रि० सिरके बाल उस्तरेसे बनवाना। † अ० क्रि० मुँड़ा जाना; ठगा जाना।

मुड़िया–पु० वह जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो; सन्न्यासी; बैरागी। स्त्री० मोड़ी लिपि, महाजनी लिपि।

मुड्ढ–पु० प्रधान या मुखिया।

मुतअद्दिद–वि० (अ०) गिने हुए; कई, अनेक; बहुतेरे।

मुतअद्दी–वि० (अ०) सीमाका अतिक्रमण करनेवाला; एकसे दूसरेको लगनेवाला, संक्रामक, छुतहा (रोग); सकर्मक (क्रिया)।

मुतअल्लिक़–वि० (अ०) तअल्लुक, लगाव रखनेवाला, संबद्ध; संयुक्त।

मुतअल्लिक़ा–वि० (अ०) संबद्ध।

मुतअल्लिक़ीन–पु० (अ०) घरके लोग, बाल-बच्चे।

मुतअल्लिम–पु० (अ०) इल्म सीखनेवाला, शिक्षार्थी, शिष्य।

मुतअस्सिब–वि० (अ०) तअस्सुब (धर्म, जातिका पक्षपात) करनेवाला; कट्टर।

मुतकल्लिम–पु० (अ०) कलाम करने, बोलनेवाला; उत्तम पुरुष सर्वनाम।

मुतक्का–पु० कोठे या बरामदेके किनारे रेलिंगका काम देनेके लिए खड़ी की हुई, पतली, नीची दीवार; (अ०) तकिया लगानेकी जगह, तकियागाह।

मुतना–वि० मूतनेवाला; अधिक मूतनेवाला।

मुतफ़न्नी–वि० (अ०) चालबाज, फरेबी, फसादी।

मुतफ़र्रिक़–वि० (अ०) अलग-अलग; विविध; फुटकल; बिखरा हुआ।

मुतफ़र्रिक़ात–स्त्री० (अ०) फुटकल चीजें; फुटकल खर्चोंकी मद।

मुतबन्ना–वि० (अ०) गोद लिया हुआ। पु० दत्तक पुत्र।

मुतबर्रिक–वि० (अ०) बरकत देनेवाला, पवित्र।

मुतमौवल–वि० (अ०) धनी, मालदार।

मुतरज्जिम–पु० (अ०) तरजुमा करनेवाला, उलथाकार।

मुतरद्दिद–वि० (अ०) चिंतित, फिक्रमंद; उद्विग्न।

मुतरादिफ–वि० (अ०) समानार्थक, हममानी।

मुतलक़–वि० (अ०) आजाद, बंधनरहित। अ० बिलकुल, कतई।

मुतलाशी†–वि० ढूँढ़नेवाला–'जो देखो वह हुआ नौकरीका मुतलाशी'–पूर्ण०।

मुतल्लक़ा–स्त्री० (अ०) तलाक दी हुई स्त्री।

मुतवक्क़ा–वि० (अ०) तवक्को (आशा) रखनेवाला, उम्मीदवार।

मुतवज्जह–वि० दे० 'मुतवज्जिह'।

मुतवज्जिह–वि० (अ०) तवज्जुह करनेवाला, ध्यान देनेवाला।

मुतवफ़्फ़ा–वि० (अ०) वफात पाया हुआ, मृत, परलोकगत।

मुतवल्ली–पु० (अ०) मस्जिद या वक्फ संपत्तिका प्रबंध करनेवाला; संरक्षक।

मुतवस्सित–वि० (अ०) दरमियानी, बीचका; मध्यम श्रेणीका।

मुतसद्दी–पु० (अ०) लेखक, मुंशी; हिसाब लिखनेवाला, गणक। **–गिरी**–स्त्री० मुतसद्दीका काम, क्लर्की।

मुतसिरी*–स्त्री० मोतियोंकी कंठी।

मुतहम्मिल–वि० (अ०) बर्दाश्त करनेवाला, सहनशील।

मुतहर्रिक–वि० (अ०) हरकत करनेवाला, गतिशील; स्वरयुक्त (वर्ण)।

मुताबक़त–स्त्री० (अ०) मुताबिक होना, सदृश, अनुरूप होना।

मुताबिक़–वि० (अ०) सदृश, अनुरूप। पु० शोधनके बाद छापी जानेवाली कापी। अ० अनुसार।

मुतालबा–पु० (अ०) माँगना, तलब करना; माँग; पावना।

मुतास–स्त्री० पेशाबकी हाजत।

मुताह–पु० (अ०) मीयादी, अस्थायी निकाह जो मुसलमानोंके शीया संप्रदायमें जायज है।

मुताही–स्त्री० (अ०) वह स्त्री जिससे मुताह किया गया हो; रखेली।

मुतिलाडू*–पु० मोतीचूरका लड्डू।

मुतेहरा†–पु० कलाईपर पहननेका एक गहना।

मुत्तफ़िक़–वि० (अ०) इत्तिफाक करनेवाला, सहमत; एकराय, संयुक्त।

मुत्तला–वि० (अ०) जिसे इत्तिला दी गयी हो, सूचित, आगाह।

मुत्तसिल–वि० (अ०) मिलनेवाला; लगा हुआ, निकटस्थ।

मुत्तहिद–वि० (अ०) इत्तिहाद रखनेवाला, संयुक्त; एक।

मुत्तहिदा–वि० (अ०) इकट्ठा, संयुक्त।

मुत्ती–स्त्री० मूत्र, पेशाब; बच्चोंकी मूत्रेन्द्रिय।

मुत्तिय*–पु० मोती।

मुथशील–पु० (सं०) इत्थशाल नामक योग (ज्यो०)।

मुद–पु० (सं०) हर्ष; उमंग।

मुदब्बिर–वि० (अ०) तदबीर करनेवाला; बुद्धिमान्। पु० राज्यप्रबंध करनेवाला, मंत्री।

मुदम्मिग़–वि० (अ०) दिमाग रखनेवाला; घमंडी।

मुदर्रिस–पु० (अ०) शिक्षा (दर्स) देनेवाला, अध्यापक।

मुदर्रिसी–स्त्री० (अ०) मुदर्रिसका काम, अध्यापकी।

मुदवंत*–वि० हर्षयुक्त, मुदित।

मुदा–स्त्री० (सं०) हर्ष, मोद। *अ० मोदपूर्वक, सहर्ष 'देहु कृपाल कपिन्ह कहँ मुदा'–रामा०। * अ० मतलब यह कि; लेकिन।

मुदाख़लत–स्त्री० (अ०) दखल देना, हस्तक्षेप; रोक-टोक। **–बेजा**–स्त्री० दूसरेके घर या जमीनमें उसकी इजाजतके बिना चला जाना।

मुदाम–अ० (अ०) सदा, नित्य।

मुदामी–वि० (अ०) सदा रहनेवाला।

मुदित–वि० (सं०) मोदयुक्त, आनंदित। पु० कामशास्त्रमें वर्णित एक प्रकारका आलिंगन।

मुदिता–स्त्री० (सं०) हर्ष, आनंद; चित्तकी वह अवस्था जिसमें दूसरेका सुख देखकर सुख होता है (यो०); वह परकीया जो परपुरुषकी प्रीति पानेकी कामनाके अकस्मात् पूरी हो जानेसे प्रसन्न होती है (सा०)।

मुदिर–पु० (सं०) मेघ; कामुक; व्यभिचारी; मेंढक।

मुदौवर–वि० (अ०) गोल, मंडलाकार।

मुद्ग–पु० (सं०) मूँग; जलकौआ; ढक्कन। **–पर्णी**–स्त्री० वनमूँग। **–भुक्(ज्)**,**–भोजी(जिन्)**–पु० घोड़ा। **–मोदक**–पु० मूँगका लड्डू।

मुद्गर–पु० (सं०) मुगदर; हथौड़ा; मुगरा; एक प्राचीन अस्त्र; मोगरा। **–मत्स्य**–पु० मागुर मछली।

मुद्गल–पु० (सं०) एक तृण, रोहिष; एक गोत्रप्रवर्तक मुनि।

मुद्गवन–पु० (सं०) वनमूँग।

मुद्गष्ट, मुद्गष्टक–पु० (सं०) वनमूँग।

मुद्दआ–पु० (अ०) अभिप्राय, मतलब, इच्छा। वि० जिसका दावा किया गया हो, चाहा हुआ। **–अलैह**–पु० दे० 'मुद्दालेह'। **–०तरतीबी**–पु० जो महज मुकदमेकी तरतीबके लिए मुद्दालेह बनाया गया हो, जिसके विरुद्ध कोई दादरसी न माँगी गयी हो। **–अलैहा**–स्त्री० मुद्दालेह।

मुद्दइया–स्त्री० दावा करनेवाली स्त्री।

मुद्दई–पु० (अ०) दावा करनेवाला; वादी; दावेदार; † शत्रु।

मुद्दत–स्त्री० (अ०) अरसा; लंबा अरसा; काल; अवधि, मीआद। **–दराज**–स्त्री० लंबा अरसा, बहुत दिन।

मुद्दती–वि० (अ०) मीआदवाला, सावधि।

मुद्दालेह–पु० जिसपर दावा किया गया हो, प्रतिवादी।

मुद्ध*–वि० दे० 'मुग्ध'।

मुद्धा–पु० टखना, गुल्फ।

मुद्धी–स्त्री० रस्सी, डोरीकी खिसकनेवाली गाँठ।

मुद्र–पु० (टाइप) छपाईके काममें प्रयुक्त होनेवाले सीसे आदिके अक्षर, टाइप। **–लिख**–पु० (टाइपराइटर) कागजपर टाइपके अक्षर छापनेकी मशीन, टंकण यंत्र; **–लेखक**–पु० (टाइपिस्ट) मुद्रलिखकी सहायतासे कागजपर टाइपके अक्षर छापनेवाला, टाइपकर्ता। **–लेखनयंत्र**–पु० (टाइपराइटर) दे० 'मुद्रलिख'।

मुद्रक–पु० (सं०) छापनेवाला, 'प्रिंटर'।

मुद्रण–पु० (सं०) मुहर करना; छापना; छपाई; मूँदना। **–स्वातंत्र्य**–पु० (फ्रीडम ऑफ प्रेस) सरकारी अधिकारीको दिखाये बिना या उसकी अनुमति लिये बिना किसी समाचारपत्रमें किसी विषयपर लेख लिखने, टीका करने या किसी पुस्तकादिमें उसकी

चर्चा करनेकी स्वतंत्रता ।

मुद्रणालय–पु० (सं०) छापाखाना, प्रेस ।

मुद्रांकन–पु० (सं०) मुद्रा, मुहरसे छापना: छपाई ।

मुद्रांकित-वि० (सील्ड) जिसपर (नाम, पद आदिकी) मोहर लगा दी गयी हो, जो मोहर लगाकर बंद कर दिया गया हो ।

मुद्रांकित–वि० (सं०) मुहर किया हुआ; छपा हुआ । **–पत्र**–पु० नामांकित पत्र, वह पत्र जिसपर राजाकी या किसी अधिकारीकी मुहर लगी हो, परवाना ।

मुद्रा–स्त्री० (सं०) नामकी मुहर; सिक्का; नाम खुदी हुई अँगूठी; मुख, हाथ, गर्दन आदिकी कोई विशेष भावसूचक स्थिति; मुख-चेष्टा; शरीरपर छपवाये हुए विष्णुके आयुधों–शंख, चक्र आदिके चिह्न; देवपूजनमें हाथकी उँगलियोंका विशेष विन्यास (तं०); हठयोगके आसन; परवाना राहदारी; सीसेके ढले हुए अक्षर जो छापनेके काम आते हैं, 'टाइप'; काँच या स्फटिकका बना कुंडल जो गोरखपंथी कानमें पहनते हैं; एक अलंकार जहाँ प्रकृत अर्थके अतिरिक्त पद्यमें कुछ और भी साभिप्राय नाम निकलते हैं; चालू फैशनको स्वीकार करके नकली ढंगसे स्वीकार की हुई कोई स्थिति । **–कर**–पु० मुद्रा वनानेवाला, मुद्रणका काम करनेवाला; प्राचीन कालमें वह व्यक्ति जिसके पास राजमुद्रा रहती थी । **–कार**–पु० मुहर वनानेवाला । **–टोरी**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी । **–तत्त्व**–पु० पुराने सिक्कोंके सहारे देशविशेषका प्राचीन इतिहास मालूम करनेका विज्ञान । **–बाहुल्य, –विस्तार**–पु० (इनफ्लेशन) दे० 'मुद्रास्फीति' । **–मार्ग**–पु० ब्रह्मरंध्र । **–यंत्र**–पु० छापेकी कल, प्रेस (आ०) । **–रक्षक**–पु० वह अधिकारी जिसके पास राजकीय मुहर रहे । **–राक्षस**–पु० विशाखदत्त-रचित एक संस्कृत नाटक । **–लिपि**–स्त्री० छापा । **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० (न्यूमिसमैटिक्स) मुद्राओं-संबंधी विज्ञान; पुराने सिक्कोंके आधारपर इतिहासका विवेचन करनेवाला शास्त्र, मुद्रातत्त्व । **–विस्फीति** स्त्री० (डीफ्लेशन) मुद्राके प्रचलनमें हुई असाधारण वृद्धिको घटाना या सामान्य स्थितिमें लाना, मुद्राके अत्यधिक विस्तारमें कमी करना, मुद्रासंकोच । **–संकोच**–पु० (डीफ्लेशन) दे० 'मुद्राविस्फीति' । **–स्फीति**–स्त्री० (इनफ्लेशन) किसी राज्यमें कागजी मुद्राका चलन असाधारण रूपसे बढ़ जाना, जिससे वस्तुओंके दाम वहुत चढ़ जाते हैं, मुद्राबाहुल्य, मुद्राविस्तार । **–रोधक**–वि० (एँटी इनफ्लेशनरी) मुद्रास्फीति रोकनेवाला (उपाय इ०) ।

मुद्राक्षर–पु० (सं०) मुहरका अक्षर; टाइप ।

मुद्राध्यक्ष–पु० (सं०) अन्य राज्यमें जानेका परवाना (पासपोर्ट) देनेवाला अधिकारी (कौ०) ।

मुद्रिक*–स्त्री० दे० 'मुद्रिका' ।

मुद्रिका–स्त्री० (सं०) मुहर; नाम खुदी हुई अँगूठी; अँगूठी; सिक्का ।

मुद्रित–वि० (सं०) मुहर किया हुआ; छापा हुआ; मुँदा हुआ, वंद; विनखिला ।

मुद्रोत्क्षेपण–पु० सिक्का उछालना; सिक्का उछालकर किसी बातका निर्णय करना, दे० 'निक्षेपनिर्णय' ।

मुधा–अ० (सं०) व्यर्थ, बेफायदा । * पु० झूठ ।

मुनक्का–पु० (अ०) सुखाया हुआ अंगूर, द्राक्षा ।

मुनगा–पु० सहिजन, शोभांजन ।

मुनरी*–स्त्री० मुँदरी ।

मुनब्बत–वि० (अ०) उगाया हुआ । पु० वह नक्श जो सतहसे उभरा हुआ हो । **–कारी**–स्त्री० वेल-बूटोंका काम जो लकड़ी, कपड़े आदिपर किया जाय ।

मुनमुना–पु० मैदेका बना हुआ एक पकवान ।

मुनहसर–वि० दे० 'मुनहसिर' ।

मुनहसिर–वि० (अ०) धरा हुआ; अवलंबित; आश्रित ।

मुनाजरा–पु० (अ०) वाद-विवाद, शास्त्रार्थ; तर्कशास्त्र ।

मुनादा–वि० (अ०) जिसे पुकारा, संबोधन किया जाय (व्या०) ।

मुनादी–पु० (अ०) पुकारनेवाला; ढिंढोरा पीटनेवाला । स्त्री० ढिंढोरा, ढोल पीटकर किसी बातकी घोषणा करना ।

मुनाफ़ा–पु० (अ०) नफा, लाभ, (शुद्ध 'मनाफ़ा') । **–खोर**–पु० वहुत अधिक मुनाफा लेनेवाला व्यापारी । **–खोरी**–स्त्री० मुनाफाखोर होनेकी प्रवृत्ति ।

मुनार, मुनारा–पु० दे० 'मनार'–'मुल्ला मुनारे क्या चढहि साईं न वहरा होई'–कबीर ।

मुनासबत–स्त्री० (अ०) परस्पर संबंध; मेल; उपयुक्तता ।

मुनासिब–वि० (अ०) वाजिब, ठीक, उचित ।

मुनि–वि० (सं०) मननशील । पु० मौनव्रती, वाक्संयमी, ऋषि; तपस्वी; जिन; बुद्ध; सातकी संख्या । **–कन्या**–स्त्री० मुनिकी बेटी । **–कुमार**–पु० अल्पवयस्क मुनि । **–खर्जूरी**–स्त्री० एक तरहका खजूर । **–च्छद**–पु० छतिवन । **–तरु**–पु० वक वृक्ष । **–त्रय**–पु० पाणिनी, कात्यायन और पतंजलि । **–द्रुम,–पादप** –पु० श्योनाक; वक्कम । **–धान्य**–पु० तिन्नी । **–पित्तल**–पु० ताँबा । **–पुंगव**–पु० मुनिश्रेष्ठ । **–पुत्र**–पु० दौना । **–पुत्रक**–पु० खंजन; दमन वृक्ष । **–पुष्प**–पु० मुनिद्रुमका फूल । **–भक्त** –पु० तिन्नीका चावल । **–भेषज**–पु० हड़; उपवास; अगस्त्यका फूल । **–भोजन**–पु० तिन्नीका चावल । **–वृत्ति**–वि० तपस्वीका जीवन वितानेवाला । **–व्रत**–पु० तपस्या ।

मुनियाँ–स्त्री० लाल पक्षीकी मादा; बच्चियोंके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक सामान्य नाम ।

मुनींद्र–पु० (सं०) मुनिश्रेष्ठ; बुद्धदेव ।

मुनी*–पु० दे० 'मुनि' ।

मुनीम–पु० हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी ।

मुनीमी–स्त्री० हिसाव-किताव रखनेका काम ।

मुनीश, मुनीश्वर–पु० (सं०) मुनिश्रेष्ठ; बुद्धदेव; विष्णु ।

मुन्ना, मुन्नू–पु० छोटे बच्चोंका प्यारका संबोधन ।

मुन्यन्न–पु० (सं०) तिन्नीका चावल ।

मुफ़रद–वि० (अ०) अकेला, तनहा; अमिश्रित (औषध) ।

मुफ़र्रस–वि० (अ०) फारसी बनाया हुआ । पु० दूसरी भाषाका शब्द जो फारसी बना लिया गया हो ।

मुफ़र्रह–वि० (अ०) फरहत देनेवाला, प्रसन्नता-जनक । पु० सुस्वादु और सुगंधित, दिल-जिगरको ताकत देनेवाली दवा (तिब्ब) ।

मुफ़लिस–वि० (अ०) गरीब, कंगाल, निर्धन । **–का माल**–सस्ता माल (फ़ेरीवाले) ।

मुफ़लिसी–स्त्री० (अ०) गरीबी, निर्धनता ।

मुफ़सिद–वि० (अ०) फसाद करनेवाला; झगड़ालू; झगड़ा लगानेवाला ।

मुफ़स्सल–वि० (अ०) तफसीलवार, विस्तृत; खोलकर बयान किया हुआ । अ० खोलकर, ब्योरेवार । पु० केंद्र या सदरका उलटा; केंद्रस्थ नगरके इर्द-गिर्दके स्थान ।

मुफ़स्सलात–पु० (अ०) केंद्रस्थ नगरके इर्द-गिर्दके स्थान ।

मुफ़स्सिर–पु० (अ०) तफसीर करनेवाला, व्याख्याकार ।

मुफ़ीद–वि० (अ०) फायदा करने, देनेवाला, लाभकारी । **–मतलब**–वि० प्रयोजनके अनुकूल । मु० **–पड़ना,–होना**–लाभकारी, अनुकूल होना ।

मुफ़्त–वि० (फा०) विना दामका, सेंतमें मिला हुआ । अ० विनदामों । **–ख़ोर,–ख़ोरा**–वि० विना मेहनत किये दूसरेकी कमाई खानेवाला । **–का**–विना कुछ दिये प्राप्त, सेंतका; व्यर्थका; वेफायदा । (**–का माल**, दर्दसर ।)**–में**–बिनदामों; व्यर्थ, वेकार ।

मुफ़्तरी–वि० (अ०) झूठा इलजाम लगानेवाला; झूठी बातें बनानेवाला; फसादी ।

मुफ़्ती–पु० (अ०) फतवा देनेवाला; इसलामी कानूनके अनुसार दंडाज्ञा करनेवाला, शरहे हाकिम ।

मुबर्रा–वि० (अ०) बरी, मुक्त; पाक, निर्दोष ।

मुबलग़, मुबलिग़–वि० (अ०) कुल; थोड़ा-सा; खरा; परखा हुआ । पु० मात्रा; रकम, रुपयेकी संख्या (मुबलिग़ पाँच रुपये) ।

मुबस्सिर–पु० (अ०) परखनेवाला, समीक्षक ।

मुबहिम–वि० (अ०) अस्पष्ट, गोल, द्वयर्थक (बात) ।

मुबादला–पु० (अ०) बदला, मुआवजा; अदल-बदल ।

मुबारक–वि० (अ०) जिसमें बरकत दी गयी हो; बरकतका हेतु;

सौभाग्यशाली; शुभ; भला। स्त्री० खुशखबरी। **–बाद–**स्त्री०, पु० बधाई, शुभकामना; मुबारक हो, खुदा बरकत दे, बधाई। **–बादी–**स्त्री० दे० 'मुबारकवाद'; बधाईके गीत। **–सलामत–**स्त्री० ब्याह आदिके अवसरपर एक दूसरेको मुबारकबादी देना।

मुबारकी–स्त्री० मुबारकवादी, बधाई।

मुबालग़ा–पु० (अ०) हदसे ज्यादा तारीफ या बुराई करना, अत्युक्ति; बढ़ाकर कहना। **–आमेज़–**वि० अतिरंजित, बढ़ाकर कहा हुआ।

मुबाशरत–स्त्री० (अ०) संभोग, मैथुन।

मुबाह–वि० (अ०) जायज, शरीअतके अनुकूल; विहित।

मुबाहसा–पु० (अ०) बहस, वाद; वाद-विवाद करना।

मुब्तदा–पु० (अ०) आरंभ; उद्देश्य (व्या०)।

मुब्तदी–पु० (अ०) आरंभ करनेवाला; नौसिखिया; आरंभिक कक्षाका छात्र।

मुब्तला–वि० (अ०) पकड़ा हुआ; फँसा हुआ, लगा हुआ। **–ए-बला–**वि० मुसीबतमें फँसा हुआ, विपद्ग्रस्त।

मुमकिन–वि० (अ०) जो हो सके, होनेवाला, संभाव्य।

मुमतहिन–पु० (अ०) इम्तिहान लेनेवाला, परीक्षक।

मुमलकत–स्त्री० (अ०) सल्तनत, राज्य।

मुमानिअत, मुमानियत–स्त्री० (अ०) रोक, निषेध, मनाही।

मुमुक्षा–स्त्री० (सं०) मोक्षकी कामना।

मुमुक्षु–वि० (सं०) मोक्षका अभिलाषी। पु० सन्न्यासी।

मुमुचान, मुमूचान–पु० (सं०) बादल। वि० जिसकी मुक्ति हो गयी हो।

मुमूर्षा–स्त्री० (सं०) मरनेकी इच्छा।

मुमूर्षु–वि० (सं०) जो मर रहा हो, आसन्न-मरण; मरणका इच्छुक।

मुयस्सर–वि० (अ०) आसानीसे मिलनेवाला; उपलब्ध; प्रस्तुत।

मुरंडा, मुरंदा–पु० भूने गेहूँ और गुड़का लड्डू।

मुर–पु० (सं०) एक दैत्य जो विष्णुके हाथों मारा गया; बेठन। **–ज–**पु० पखावज, मृदंग। **–०फल–**पु० कटहलका पेड़। **–जित्, –दर,–रिपु–**पु० मुरारि, कृष्ण। **–सुत–**पु० मुर दैत्यका बेटा, वत्सासुर। **–हा(हन्),–हारी(रिन्)–**पु० विष्णु; कृष्ण।

मुरई|–स्त्री० दे० 'मूली'।

मुरक–स्त्री० मुरकनेकी क्रिया या भाव।

मुरकना–अ० क्रि० मुड़ना; मोच खाना; लौटना; * हिचकना; नष्ट होना।

मुरकाना–स० क्रि० मुरकनेका कारण होना; मोड़ना; फेरना; नष्ट करना।

मुरकी–स्त्री० कानमें पहननेकी छोटी-सी बाली; कानकी लौ; दे० 'मुर्की'।

मुरखाई*–स्त्री० मूर्खता।

मुरगा–पु० एक पालतू पक्षी जिसके नरके सिरपर कलगी होती है, मुरगीका नर, मुर्ग। मु० **–बनाना–**किसीको उकड़ूँ बैठाकर और घुटनोंके बीचसे दोनों हाथ निकलवाकर कान पकड़वाना (यंत्रणादंडका एक प्रकार)।

मुरगाबी–स्त्री० दे० 'मुर्ग़ाबी'।

मुरगी–स्त्री० मुरगेकी मादा, कुक्कुटी। **–वाला–**पु० मुरगियाँ बेचनेवाला। ब० मुरगीका जना। मु० **–का–**मुरगीका जना (गाली)। **–का गू–**निकम्मी चीज। **–बिठाना–**मुरगीको अंडेपर बिठाना।

मुरचंग–पु० दे० 'मुँहचंग'।

मुरचा–पु० दे० 'मोरचा'।

मुरछना*–अ० क्रि० मूर्च्छित होना।

मुरछल–पु० मोरपंखका बना चँवर।

मुरछा–स्त्री० दे० 'मूर्च्छा'। **–वंत*–**वि० मूर्च्छित।

मुरछाना*–अ० क्रि० मूर्च्छित होना।

मुरछित–वि० दे० 'मूर्च्छित'।

मुरज–पु० मृदंग, दे० 'मुर'में।

मुरझना–अ० क्रि० कुम्हलाना।

मुरझाना–अ० क्रि० फूल-पत्तोंका सूखने लगना, कुम्हलाना; चेहरेसे शुष्कता, उदासी आदि प्रकट होना।

मुरतकिब–पु० (अ०) इरतिकाब करनेवाला; किसी कर्मका कर्ता; अपराधी।

मुरतिद–पु० (अ०) इसलामसे फिरा हुआ, मुसलमान जो काफिर हो जाय।

मुरतहिन–पु० (अ०) वह जिसके पास कोई चीज रिहन या बंधक रखी जाय, रिहनदार।

मुरत्तब–वि० (अ०) तरतीब दिया हुआ, वस्तुओंको यथास्थान रखकर रचित, प्रस्तुत।

मुरत्तिब–पु० (अ०) तरतीब देनेवाला।

मुरदा–वि० (फा०) मरा हुआ, मृत; मृतवत्; बेजान, अति दुर्बल; सूखा, मुरझाया हुआ; मारा हुआ (धातु), कुश्ता। पु० मृतक, शव, लाश। **–ख़ोर–**वि० दे० 'मुरदाख़्वार'। **–ख़्वार–**वि० मुरदा खानेवाला। **–घर–**दे० 'चीरघर' (मॉर्टुअरी)। **–दिल–**वि० जिसकी तबीयत मरी हुई हो, निरुत्साह। **–दिली–**स्त्री० मुरदादिल होना। **–बादल–**पु० स्पंज। **–संख–**पु० दे० 'मुरदासंग'। **–संग–**पु० सीसे और सेंदुरका मिश्रण जो दवाके काम आता है। **–सन*–**पु० दे० 'मुरदासंग'। मु० **–उठना–**जनाजा उठना; मरना (शाप–उसका मुरदा उठे)। **–उठाना–**मुरदेको दाह या दफन करनेके लिए ले जाना। **–कर देना–**मार डालना; अधमरा कर देना। **(किसीका)–निकले–**मर जाय, जनाजा उठे (शाप)। **–(दे)का माल–**लावारिस माल, मृत जनका छोड़ा हुआ धन। **–की क़ब्र या गोर पहचानना–**दूसरेकी चालाकी, छल-छद्मको अच्छी तरह समझना; अति चतुर होना। **–की नींद सोना–**बेखबर होकर सोना, खुर्राटे भरना। **–से शर्त बाँधकर सोना–**ऐसी नींद सोना जो जगानेसे भी जल्द न खुले।

मुरदार–वि० (फा०) मरा हुआ, मुरदा; बेजान; अपवित्र, नापाक, नाकारा (स्त्रि०)। पु० लाश; अपनी मौत मरा हुआ जानवर। **–खोर–**वि० दे० 'मुरदारख़्वार'। **–ख़्वार–**पु० मरे हुए जानवरका मांस खानेवाला। **–माल–**पु० हराम माल। मु० **–खाना–**मरे हुए जानवरका मांस खाना।

मुरधर*–पु० मरुस्थल, मारवाड़।

मुरना*–अ० क्रि० दे० 'मुड़ना'।

मुरब्बा–पु० (अ०) फलोंका पाक जो उन्हें उबालकर और चाशनीमें डालकर तैयार किया जाय; चतुष्कोण क्षेत्र जिसके चारों भुज बराबर और कोण समकोण हों; बैठनेका एक आसन। वि० चौकोर; जितना चौड़ा, उतना ही लंबा, वर्ग, वर्गीकृत। **–फ़रोश–**पु० मुरब्बे बेचनेवाला।

मुरब्बी–पु० (अ०) पालन करनेवाला; रक्षक; सर-परस्त, सहायक।

मुरमुरा–पु० भुने मक्केकी ठुर्री; भुने हुए चावल, लाई आदि। मु० **–(रों) का थैला–**मोटा-ताजा आदमी।

मुरमुराना–अ० क्रि० मुर्री या ऐंठके कारण किसी चीजका टूट जाना; किसी कठोर वस्तुके टूटनेसे इस प्रकारका शब्द होना।

मुररिया*–स्त्री० मुर्री, ऐंठन।

मुरल–पु० (सं०) एक प्राचीन वाद्य।

मुरला–स्त्री० (सं०) नर्मदा नदी; मुरली।

मुरलिका–स्त्री० (सं०) मुरली।

मुरलिया*–स्त्री० मुरली।

मुरली–स्त्री० (सं०) वंशी, बाँसुरी। **–धर–**पु० मुरली धारण करनेवाले, कृष्ण। **–मनोहर–**पु० कृष्ण।

मुरवा|–पु० पैरका गट्टा; * मोर।

मुरवी*–स्त्री० धनुष्की डोरी।

मुरशिद–पु० (अ०) सीधी राह (सन्मार्ग) दिखानेवाला; गुरु, पीर। **–कामिल–**पु० सच्चा गुरु। **–ज़ादा–**पु० गुरुभाई, पीरका बेटा।

मुरसिल–पु० (अ०) भेजनेवाला; पत्रलेखक।

मुरस्सा–वि० (अ०) जड़ा हुआ, रत्नजटित, जड़ाऊ। पु० वह ग़द्य या पद्य जिसमें हर दूसरा शब्द पहले शब्दका हमवजन और काफिया

हो। –कार–पु० गहनोंमें नगीना या रत्न जड़नेवाला, जड़िया। –कारी–स्त्री० जड़ियेका काम। –निगार–पु० बहुत सुंदर अक्षर लिखनेवाला।

मुरहाँ†–पु० सिर।

मुरहा–वि० मूल नक्षत्रमें जनमा हुआ (बालक); दुराग्रही, दुष्ट (गाली); अनाथ, नटखट। पु० दे० 'मुर'में।

मुरा–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य; चंद्रगुप्त मौर्यकी माता।

मुराड़ा*–पु० लुआठी–'हम घर जाल्या आपना लिया मुराड़ा हाथ' –कबीर।

मुराद–स्त्री० (अ०) मतलब, अभीष्ट; कामना, मनोरथ; आकांक्षा। **मु०** **–पाना,–बर आना**–कामना पूरी होना, मनोरथ सिद्ध होना। **–(दों) के दिन**–युवावस्था।

मुरादिफ़–वि० (अ०) समानार्थक, हममानी।

मुरादी–वि० मुराद रखनेवाला, जिसकी कोई कामना हो।

मुराना*–स० क्रि० चुभलाना; चबाना; दे० 'मोड़ना'।

मुराफ़ा–पु० (अ०) ऊँची अदालतमें पुनर्विचारकी प्रार्थना, अपील।

मुरायठ†–पु० पगड़ी, मुरेठा।

मुरार–पु० कमलकी जड़ जिसकी तरकारी बनती है; * दे० 'मुरारि'।

मुरारि–पु० (सं०) (मुर दैत्यको मारनेवाले) कृष्ण; विष्णु।

मुरासा*–पु० तरकी, कर्णफूल–'लसै मुरासा तियस्रवन यौं मुकुतन दुति पाइ'–वि०; दे० 'मुँड़ासा'।

मुरीद–पु० (अ०) चेला, शिष्य; अनुगमन करनेवाला।

मुरीदी–स्त्री० (अ०) शिष्यत्व, शागिर्दी।

मुरु*–पु० दे० 'मुर'। **–सुत**–पु० वत्सासुर।

मुरुआ*–पु० पैरका गट्टा।

मुरुख*–वि० दे० 'मूर्ख'।

मुरुखाई*–स्त्री० मूर्खता।

मुरुझना*–अ० क्रि० दे० 'मुरझाना'।

मुरेठा–पु० साफा।

मुरेर–स्त्री० दे० 'मरोड़'।

मुरेरना*–स० क्रि० दे० 'मरोड़ना'।

मुरेरा–पु० दे० 'मुँड़ेरा'; दे० 'मरोड़'।

मुरौवज–वि० (अ०) जारी, प्रचलित।

मुरौवजा–वि० दे० 'मुरौवज'।

मुरौवत–स्त्री० (अ०) मरदानगी; उदारता; इनसानियत; सौजन्य; दूसरोंका लिहाज; मुलाहजा।

मुरौवती–वि० मुरौवतवाला, मुलाहज।

मुर्की–स्त्री० आगे-पीछेके स्वरोंको मिलाकर किसी स्वरका उच्चारण करना (संगीत)।

मुर्ग़–पु० (अ०) चिड़िया; मुरगा **–केश**–पु० एक पौधा, जटाधारी। **–बाज़**–पु० मुरगे लड़ानेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० मुरगे लड़ाना। **–मुसल्लम**–पु० समूचा पकाया हुआ मुरगा। –**–(ग़ों)चमन**–पु० वनपक्षी; बुलबुल। **–ज़र**–पु० सूरज; मुर्गेकी शक्लका प्याला।

मुर्ग़ाबी–स्त्री० (फा०) एक जलपक्षी जो मुरगीके बराबर होता है, जलकुक्कुट।

मुर्तकिब–पु० (अ०) दे० 'मुरतकिब'।

मुर्दनी–स्त्री० (फा०) मृत्युके चिह्न जो चेहरेसे प्रकट हों; भारी भय या गहरी चिंताकी छाया (–छाना)।

मुर्दा–वि०, पु० (फा०) दे० 'मुरदा'।

मुर्दासिंगी–पु० मुर्दासंख।

मुर्मुर–पु० (सं०) भूसीकी आग; कंदर्प; सूर्यका घोड़ा।

मुर्रा–पु० मरोड़फली; मरोड़। स्त्री० भैंसोंकी एक जाति जो अधिक दुधार होती है। † पु० फरवी, मुरमुरा; एक तरहका ऐंठनदार छड़ा।

मुर्री–स्त्री० ऐंठन; धागों आदिके दो सिरोंको जोड़नेके लिए बट देना; धोतीको लपेटकर कमरपर डाला हुआ बल; कपड़ेकी धज्जी आदिको बटकर बनायी हुई बत्ती। **–दार**–वि० गाँठदार; ऐंठनदार।

मुर्वी–स्त्री० (सं०) धनुषकी डोरी।

मुर्शिद–पु० दे० 'मुरशिद'।

मुलक*–पु० दे० 'मुल्क'।

मुलकट–स्त्री० अँगियाका वह हिस्सा जो स्तनपर पड़ता है।

मुलकना*–अ० क्रि० मंद-मंद हँसना, मुस्कराना।

मुलकित*–वि० जो मुसकरा रहा हो; पुलकित, प्रसन्न।

मुलज़म, मुलज़िम–वि० (अ०) जिसपर कोई इलजाम, दोष लगाया गया हो। पु० वह व्यक्ति जिसपर किसी जुर्मका इलजाम लगाया जाय, अभियुक्त।

मुलतवी–वि० (अ०) दे० 'मुल्तवी'।

मुलतान–पु० (पश्चिमी) पंजाबका एक प्रसिद्ध नगर।

मुलतानी–वि० मुलतानका। पु० मुलतानका रहनेवाला। स्त्री० एक रागिनी। **–मिट्टी**–स्त्री० एक तरहकी चिकनी मिट्टी जो सिर मलने, रँगाईमें अस्तर देने आदिके काम आती है।

मुलना*–पु० दे० 'मुल्लाना', मुल्ला।

मुलमची–पु० मुलम्मा करनेवाला।

मुलम्मा–वि० (अ०) चमकाया हुआ; चाँदी या सोनेका पानी चढ़ाया हुआ। पु० चाँदी या सोनेका पानी जो दूसरी धातुपर चढ़ाया जाय; गिलट; कलई; मुलम्मेका काम; दिखावा, टीमटाम। **–गर,–साज़**–पु० मुलम्मा करनेवाला।

मुलहक़–वि० (अ०) लगा, जुड़ा हुआ; संयुक्त।

मुलहठी–स्त्री० दे० 'मुलेठी'।

मुलहा*–वि० दे० 'मुरहा'।

मुलहिक़–वि० (अ०) पीछेसे आकर मिलनेवाला; मिलाया जानेवाला; शामिल।

मुलहिद–वि० (अ०) धर्म (इसलाम)से विमुख हो जानेवाला; काफिर।

मुलहिम–पु० (अ०) इलहाम करनेवाला, दिलमें कोई बात डालनेवाला।

मुलाँ*–पु० मुल्ला। † अ० लेकिन, बल्कि।

मुलाक़ात–स्त्री० (अ०) एक-दूसरेसे मिलना, भेंट; मिलना-जुलना, हेल-मेल; जान-पहचान; साहब-सलामत। **–का दिन**–कैदियों, बड़े अधिकारियों आदिसे लोगोंके मिलनेके लिए नियत दिन।

मुलाक़ाती–पु० मिलनेवाला, मित्र; परिचित।

मुलाज़मत–स्त्री० (अ०) नौकरी, सेवा। **–पेशा**–वि० नौकरीसे जीविका करनेवाला।

मुलाज़िम–पु० (अ०) सदा एक साथ रहनेवाला, अनुचर; नौकर, सेवक; कर्मचारी। **–(मे)ख़ास**–पु० निजी सेवक।

मुलायम–वि० (अ०) नरम, कोमल, सुकुमार; अनुकूल। **–चारा** –पु० ऐसा भोजन जो सहजमें खाया-चबाया जा सके, नरम चारा (खिचड़ी, हलवा इ०); कोमल शरीरवाला।

मुलायमत–स्त्री० मुलायमपन, नरमी, कोमलता।

मुलायमियत, मुलायमी–स्त्री० मुलायमत।

मुलाहज़ा–पु० (अ०) देखना, निरखना; निरीक्षक; लिहाज, मुरौवत।

मुलुक–पु० दे० 'मुल्क'।

मुलेठी–स्त्री० गुंजा लताकी जड़ जो दवाके काम आती है, यष्टिमधु, जेठीमधु।

मुल्क–पु० (अ०) देश; राज्य; प्रदेश। **–गीरी**–स्त्री० दूसरे देशोंको जीतना और उनपर शासन करना, राज्य-विस्तार। –**–दारी**–स्त्री० शासन। **–रानी**–स्त्री० राज्यप्रबंध। **–(के)-ख़ुदा**–पु० दुनिया, जगत्।

मुल्की–वि० (अ०) मुल्कका, देशी; शासन-प्रबंध-संबंधी, असैनिक। **–लाट**–पु० गवर्नर-जेनरल।

मुल्तजी–पु० (अ०) इल्तिजा करनेवाला, प्रार्थी।

मुल्तवी–वि० (अ०) देर करनेवाला; आगेके लिए टालनेवाला; रोका या आगेके लिए टाला हुआ, स्थगित। पु० नब्जकी एक खास चाल।

मुल्लह–पु० कुट्टा, मुल्ला।

मुल्ला–पु० वह पक्षी जो और पक्षियोंको फँसानेके लिए पाँव बाँधकर

जालमें डाल दिया जाता है, कुट्टा; (अ०) मौलवी; मसजिदमें रहने या नमाज पढ़ानेवाला; मसजिद या मकतबमें बच्चोंको पढ़ानेवाला।

मुल्लाना–पु० मुल्ला; मसजिदकी रोटियाँ खानेवाला; कट्टर मुसलमान (मौलानाका हिंदुस्तानी रूप)।

मुल्लानी–स्त्री० मुल्लाकी पत्नी।

मुवक्कल–पु० (अ०) वह जिसे कोई काम सौंपा गया हो; रखवाला; कार्यविशेषपर नियुक्त फरिश्ता।

मुवक्किल–पु० (अ०) वकील करनेवाला; काम सौंपनेवाला। (स्त्री० 'मुवक्किला'।)

मुवज्जिन–पु० (अ०) दे० 'मुअज्जिन'।

मुवना*–अ० क्रि० मरना।

मुवल्लिद–पु० (अ०) पैदा करनेवाला, जनक।

मुवल्लिफ़–पु० (अ०) संग्राहक, संकलनकर्ता।

मुवल्लिफ़ा–वि० (अ०) संगृहीत, संकलित।

मुवस्सिर–वि० (अ०) असर करनेवाला, कारगर।

मुवाज़ी–वि० (अ०) तुल्य, सममूल्य। अ० लगभग, अंदाजन् (रुपये, बीघे आदिके साथ व्यवहृत–मु० पाँच बीघे)।

मुवाफ़िक़–वि० (अ०) अनुकूल, अनुसार; तुल्य, सदृश, मिलता-जुलता; योग्य, उचित।

मुशज्जर–वि० (अ०) बूटेदार, बेल-बूटेवाला। पु० बूटेदार कपड़ा।

मुशटी–स्त्री० (सं०) श्वेत कंगु।

मुशफ़िक़–पु० (अ०) शफकत करनेवाला, अनुग्राहक; मित्र।

मुशरब–पु० (अ०) पानी पीनेकी जगह, हौज, झरना, झील; मजहब; तौर-तरीका।

मुशरिक़–पु० (अ०) खुदाकी जातमें दूसरेको शरीक करनेवाला, ईश्वरके अतिरिक्त किसी औरकों भी पूज्य, उपास्य माननेवाला; काफिर।

मुशर्रफ़–वि० (अ०) जिसे शरफ, बड़ाई दी गयी हो, सम्मानित; विभूषित।

मुशर्रह–वि० (अ०) जिसकी शरह, व्याख्या की गयी हो; विशद, विस्तारसे कथित।

मुशल–पु० (सं०) धान इत्यादि कूटनेका मोटा डंडा, मूसल।

मुशली–स्त्री० (सं०) दे० 'मुसली'।

मुशली(लिन्)–पु० (सं०) मुशलधारी बलराम।

मुशावहत–स्त्री० (अ०) रूपसादृश्य, एक जैसा होना।

मुशाबिह–वि० (अ०) सदृश, समरूप, मानिंद।

मुशायरा–पु० (अ०) शायरोंका इकट्ठा होकर शेर पढ़ना, कविता-पाठकी मजलिस।

मुशाहरा–पु० (अ०) मासिक वेतन, वजीफा।

मुश्क–स्त्री० कंधे और कोहनीके बीचका हिस्सा, बाँह। (मु० मुश्कें बाँध लेना–बाहोंपर रस्सी कसकर कब्जेमें कर लेना, गिरफ्तार कर लेना।) पु० (फा०) कस्तूरी। **–दाना**–पु० एक वृक्षका बीज जो दवाके काम आता है। **–नाफ़ा**–पु० कस्तूरी-मृगकी नाभि। **–बार**–वि० अति सुगंधित। **–बिलाव**–पु० गंधबिलाव। **–बू**–वि० जिससे कस्तूरीकी गंध आये; सुगंधित। **–बेद**–पु० मिस्रमें होनेवाला एक तरहका बेंत जो दवाके काम आता है। **–मेंहदी**–स्त्री० शोभाके लिए लगाये जानेवाले एक पौधेका नाम।

मुश्किल–वि० (अ०) कठिन, कष्टसाध्य; क्लिष्ट, कठिनाईसे समझमें आनेवाला। **–कुशा**–वि० कठिनाई दूर करने, संकट काटनेवाला। **–कुशाई**–स्त्री० कठिनाई दूर करना, संकट काटना। **–पसंद**–पु० रचनामें क्लिष्ट शब्दावली रखनेवाला, क्लिष्टताप्रिय। मु० **–आसान होना**–कठिनाई दूर होना, संकट कटना।

मुश्कीं–वि० (फा०) कस्तूरीके रंगका, स्याह; कस्तूरीकी गंध-वाला; जिसमें कस्तूरी मिली हो।

मुश्की–वि० (फा०) कस्तूरीके रंगका, स्याह। पु० स्याह रंगका घोड़ा।

मुश्त–पु० (फा०) मुट्ठी; घूँसा, मुक्का। वि० मुट्ठीभर (चीज), थोड़ा-सा। **–ख़ाक**–स्त्री० मुट्ठीभर धूल; मिट्टीका पुतला, मनुष्य। **–ज़न**–पु० घूँसेबाज; पहलवान; हस्तमैथुन करनेवाला। **–ज़नी**–स्त्री० घूँसेबाजी; पहलवानी; हस्तमैथुन। **–पर**–पु० मुट्ठीभर पर; मृत पक्षी (ला०)। **–माल,–माली**–स्त्री० मुक्कीकी मालिश।

मुश्तइल–वि० (अ०) भड़कनेवाला, प्रज्वलित लपटें फेंकनेवाला।

मुश्तबहा–वि० (अ०) जिसपर या जिसमें शुबहा हो, संदिग्ध। **–आदमी**–पु० वह जिसपर चोरी आदि करनेका संदेह किया जाय, संदिग्ध जन।

मुश्तम्मिल–वि० (अ०) शामिल, मिला हुआ, संयुक्त।

मुश्तरक–वि० (अ०) शरीक किया हुआ, संयुक्त।

मुश्तरका–वि० (अ०) जिसमें कोई शरीक हो, साझेका, संयुक्त। **–ख़ानदान**–पु० संयुक्त परिवार। **–जायदाद**–स्त्री० संयुक्त संपत्ति, साझेकी चीज।

मुश्तरिक–वि० (अ०) शरीक, भागी। पु० अनेकार्थक शब्द।

मुश्तरी–पु० (अ०) खरीदार; बृहस्पति ग्रह।

मुश्तहर–वि० (अ०) शुहरत दिया हुआ, प्रसिद्ध, विज्ञापित।

मुश्तहिर–पु० (अ०) इश्तिहार देनेवाला, विज्ञापक।

मुश्तहो–वि० (अ०) भूख लगानेवाला; इच्छुक।

मुश्ताक़–वि० (अ०) इच्छुक, आकांक्षी, शौक रखनेवाला।

मुषक–पु० (सं०) दे० 'मूषक'।

मुषल–पु० (सं०) मूसल।

मुषली–स्त्री० (सं०) छिपकली; तालमूलिका।

मुषली(लिन्)–पु० (सं०) बलराम (मूसल जिनका एक शस्त्र है)।

मुषा–स्त्री० (सं०) धातु गलानेका पात्र, घरिया।

मुषि–स्त्री० (सं०) चोरी, मूसनेकी क्रिया।

मुषित–वि० (सं०) चुराया हुआ; वंचित।

मुषुर*–स्त्री० गुंजार।

मुष्क–पु० (सं०) अंडकोष; चोर; ढेर; मोरवा नामका पेड़। वि० मोटा-ताजा, मांसल। **–शून्य**–वि० बधिया। **–शोथ**–पु० अंडकोषकी सूजन।

मुष्कक–पु० (सं०) एक वृक्ष, गौलिक।

मुष्कर–वि०, पु० (सं०) बड़े अंडकोषवाला।

मुष्ट–वि० (सं०) चुराया हुआ।

मुष्टामुष्टि, मुष्टीमुष्टि–स्त्री० (सं०) घूँसोंकी लड़ाई, घूँसेबाजी।

मुष्टिधय–पु० (सं०) बालक।

मुष्टि*–वि० मष्ट, मौन–'संत मिलै कछु कहिये कहिये। मिलै असंत मुष्टि करि रहिये'–कबीर। स्त्री० (सं०) मुट्ठी; मुट्ठीभरकी मात्रा; घूँसा; मूँठ, कब्जा; ४ तोले (वैद्यकके मतसे ८ तोले) का परिमाण, पल; चोरी, मूसना; एक मल्ल; एक पेड़। **–करण**–पु० मुट्ठी बाँधना। **–देश**–पु० धनुषका मध्य भाग। **–द्यूत**–पु० एक तरहका जुआ जिसमें मुट्ठीके भीतरकी चीजका नाम, उसकी संख्या सम (जुफ्त) है या विषम (ताक) आदि पूछा जाता है। **–बंध**–पु० मुट्ठी बाँधना; मुट्ठीमें ग्रहण करना। **–भिक्षा**–स्त्री० मुट्ठीभर चावलकी भिक्षा। **–मेय**–वि० मुट्ठीसे नापने योग्य; मुट्ठीभर; थोड़ा। **–युद्ध**–पु० घूँसेबाजी, 'बाक्सिंग'। **–योग**–पु० आसान नुस्खा; हठयोगकी कुछ क्रियाएँ; चुटकुला।

मुष्टिक–पु० (सं०) कंसके दरबारका एक पहलवान जो बलरामके हाथों मारा गया; घूँसा; सुनार।

मुष्टिद्वंद्व–पु० (बॉक्सिंग) वह आपसका द्वंद्व जिसमें गद्दीदार (गुलगुले) दस्तानोंसे एक दूसरेपर मुक्कोंका प्रहार किया जाय।

मुष्टिकांतक–पु० (सं०) बलराम।

मुष्टिका–स्त्री० (सं०) मुट्ठी; घूँसा।

मुष्ठक–पु० (सं०) काली सरसों।

मुसकनि, मुसकनिया*–स्त्री० दे० 'मुसकान'।

मुसकराना–अ० क्रि० इस तरह हँसना कि न शब्द हो, न दाँत दिखलाई दे, होंठोंमें हँसना, मंद-मंद हँसना।

मुसकराहट–स्त्री० मुसकरानेकी क्रिया, मंद हास।

मुसका–पु० दे० 'जाबा'।

मुसकान, मुसकानि*–स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुसकाना–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकाहट–स्त्री० दे० 'मुसकिराहट'।

मुसकिराना, मुसकुराना–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसकिराहट, मुसकुराहट–स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुसकी, मुसुकी†–स्त्री० दे० 'मुसकिराहट'।

मुसक्किन–वि० (अ०) चुप करानेवाला; तसकीन देनेवाला। पु० तसकीन देनेवाली दवा।

मुसक्यान*–स्त्री० दे० 'मुसकान'।

मुसक्याना*–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसजर*–पु० दे० 'मुशज्जर'।

मुसटंडा–पु० हट्टा-कट्टा और बदमाश।

मुसटी–स्त्री० चुहिया।

मुसद्दक़ा–वि० (अ०) तसदीक़ किया हुआ, जाँचा हुआ, प्रमाणीकृत।

मुसद्दस–पु० (अ०) छः भुजोंवाला क्षेत्र या आकृति; वह पद्य जिसके हर बंदमें छः मिसरे हों।

मुसद्दिक़–वि० (अ०) तसदीक करनेवाला।

मुसद्दी–पु० (अ०) लिपिक।

मुसना–अ० क्रि० छीना या चुराया जाना–'पहराइत घर मुसो साहको रच्छा करने लागो चोर'–सुंदर। स० क्रि० दे० 'मूसना'–'चोर मुसै घर जाई'–कबीर। * पु० चूहा–'कातिक गनपति दुइ चेंगना, एक चढ़े मोरपर एक मुसना'–विद्यापति। † वि० मूसनेवाला।

मुसन्नफ़ा–वि० (अ०) तसनीफ किया हुआ, रचित।

मुसन्ना–पु० (अ०) असल(लेख)की ठीक नकल, दूसरी प्रति; रसीदका अद्धा जो देनेवालेके पास रह जाता है।

मुसन्निफ़–पु० (अ०) तसनीफ करनेवाला, रचयिता, ग्रंथकार।

मुसन्निफ़ा–स्त्री० (अ०) रचयित्री, लेखिका।

मुसफ़्फ़ी–वि० (अ०) साफ करनेवाला, शोधक। **–ए-खून**–वि० रक्तशोधक।

मुसब्बर–पु० घीकुआरका जमाकर सुखाया हुआ रस जो दवाके काम आता है।

मुसमुंद, मुसमुंध*–वि० ध्वस्त, ढहा हुआ। पु० विनाश।

मुसम्मन–वि० (अ०) अठपहल, अष्टभुज। पु० अष्टभुज क्षेत्र, आकृति। **–बुर्ज**–पु० दिल्ली, आगरे आदिके किलोंके अठपहलू बुर्ज।

मुसम्मा–वि० (अ०) (अमुक) इस्मवाला, नामधारी।

मुसम्मात–वि० स्त्री० (अ०) नामवाली, नामधेया। स्त्री० स्त्री (बो०)।

मुसरिफ़–पु० (अ०) फजूलखर्च, उड़ाऊ।

मुसर्रत–स्त्री० (अ०) खुशी, हर्ष, आह्लाद।

मुसर्रह–वि० (अ०) तसरीह किया हुआ, ब्योरेवार।

मुसल*–वि० मूर्ख–'…सोई मतिमंद कबिकेसव मुसल सो'। पु० (सं०) मूसल। **–धार**–अ०, वि० दे० 'मुसलाधार'।

मुसलमान–पु० (अ०) इसलाम मजहबको माननेवाला, मुसलिम।

मुसलमानी–वि० मुसलमान-संबंधी। स्त्री० मुसलमान होना, इसलाम, मुसलमान बच्चेकी लिंगेंद्रियके अग्रभागकी त्वचाका काटा जाना, खतना; मुसलमान स्त्री।

मुसलाधार–अ० मोटी धारसे, बड़ी-बड़ी बूंदोंसे (मेह बरसना)। वि० मोटी धारवाला। मु० **–मेह बरसना**–जोरोंकी वर्षा होना।

मुसलामुसलि–स्त्री० (सं०) मूसलोंकी लड़ाई, एक-दूसरेपर मूसलोंसे प्रहार।

मुसलायुध–पु० (सं०) बलराम।

मुसलिम–पु० (अ०) मुसलमान। **–लीग**–स्त्री० हिंदुस्तानके संप्रदायवादी मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था (१९०६ में स्था०)। **–लीगी**–पु० मुसलिम लीगका अनुयायी।

मुसलिह–पु० (अ०) इसलाह करनेवाला, सुधारक।

मुसली–स्त्री० (सं०) एक वनस्पति जिसकी जड़ दवाके काम आती है; छिपकली।

मुसली(लिन्)–पु० (सं०) मूसल धारण करनेवाले, बलराम।

मुसल्य–वि० (सं०) मूसलसे मारने या वध करने योग्य।

मुसल्लम, मुसल्लमा–वि० (अ०) तसलीम किया हुआ, माना हुआ; अखंडित, पूरा; निर्विवाद।

मुसल्लस–वि० (अ०) तिकोना। पु० त्रिकोण।

मुसल्ला–पु० (अ०) वह दरी या बोरिया जिसपर नमाज पढ़ी जाय, जानमाज; नमाज पढ़नेकी जगह, ईदगाह; * मुसलमान।

मुसल्सल–वि० सिलसिलेवार क्रमिक।

मुसव्विर–पु० (अ०) तसवीर बनानेवाला, चित्रकार; बेलबूटे बनानेवाला।

मुसव्विरी–स्त्री० (अ०) मुसव्विरका काम या पेशा; नक्काशी, चित्रकारी।

मुसहर–पु० एक जंगली (आदिवासी) जाति जो दोने, पत्तलें बनाने आदिका काम करती है।

मुसहरिन–स्त्री० मुसहरकी स्त्री।

मुसहिल–वि० (अ०) दस्त लानेवाला, विरेचक। पु० दस्त लानेवाली दवा, विरेचन।

मुसाना–स० क्रि० किसीको मूसनेमें प्रवृत्त करना, किसीके द्वारा चोरी किया जाना।

मुसाफ़िर–पु० (अ०) सफर करनेवाला, यात्री; परदेशी। **–ख़ाना**–पु० मुसाफिरोंके ठहरनेकी जगह, सराय; रेलवे स्टेशनपर (तीसरे दरजेके) मुसाफिरोंके ठहरनेके लिए बना हुआ सायवान। **–गाड़ी**–स्त्री० यात्रियोंको ले जानेवाली रेलवे ट्रेन, पैसेंजर ट्रेन। मु० **–की गठरी**–सरदीसे सुकड़ा हुआ आदमी।

मुसाफ़िरत, मुसाफ़िरी–स्त्री० (अ०) सफर, प्रवास; परदेश।

मुसाहब–पु० दे० 'मुसाहिब'।

मुसाहबत–स्त्री० (अ०) साथ उठना-बैठना, मुसाहिबी।

मुसाहिब–पु० (अ०) साथ उठने-बैठनेवाला, साथी, सुहबती; राजा-नवाबोंके वे दरबारी जिनका खास काम बातचीतसे उनका दिल बहलाना होता है।

मुसाहिबी–स्त्री० मुसाहिबका पद या काम।

मुसीबत–स्त्री० (अ०) कष्ट, दुःख; संकट; विपद्, आफत। **–ज़दा**–वि० विपद्ग्रस्त, दुखिया। मु० **–का मारा**–विपद्ग्रस्त, अभागा। **–के दिन**–दुर्दिन, कष्टकाल।

मुसुक†–स्त्री० मुश्क, कंधेसे कोहनीतकका हिस्सा।

मुसुकाना*–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुसुकाहट*–स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुसौवर–पु० दे० 'मुसव्विर'।

मुसोलिनी(बेनिटो)–पु० १८८३-१९४५; इटलीके फासिटी दलका नेता तथा इटलीका प्रधान मंत्री १९२२ से १९४३ तक।

मुस्कराना–अ० क्रि० दे० 'मुसकराना'।

मुस्कराहट–स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुस्की†–स्त्री० दे० 'मुसकराहट'।

मुस्क्यान*–स्त्री० दे० 'मुसकान'।

मुस्टंडा–वि० मोटा-ताजा, तगड़ा; बदमाश।

मुस्त, मुस्तक–पु० (सं०) नागरमोथा।

मुस्तअफ़ी–वि० (अ०) इस्तीफा देनेवाला; माफी माँगनेवाला।

मुस्तक़बिल–वि० (अ०) आगे आनेवाला, भावी। पु० भविष्यत्काल।

मुस्तक़िल–वि० (अ०) स्थिर, स्थायी, सदा रहनेवाला; पक्का, दृढ़; पदविशेषपर स्थायी रूपसे नियुक्त; स्वाधीन। **–जगह**–स्त्री० स्थायी पद, नौकरी। **–मिज़ाज**–वि० स्थिरचित्त।

मुस्तक़ीम–वि० (अ०) सीधा, ऋजु; ठीक।

मुस्तग़ीस–पु० (अ०) इस्तगासा दायर करनेवाला, फरियादी, अभियोक्ता।

मुस्ततील–वि० (अ०) लंबा, लंबोतरा। पु० समकोण चतुर्भुज।

मुस्तदई–पु० (अ०) प्रार्थना करनेवाला, इच्छुक।

मुस्तनद–वि० (अ०) सनद मानने लायक, प्रामाणिक, टकसाली, विश्वसनीय।

मुस्तफ़ा–वि० (अ०) चुना हुआ, श्रेष्ठ। पु० मुहम्मदकी पदवी। **–कमालपाशा**–पु० आधुनिक तुर्कीके निर्माता और प्रथम राष्ट्रपति।

मुस्तफ़ीद–वि० (अ०) फायदा उठानेवाला; फायदा चाहनेवाला।

मुस्तसना–वि० (अ०) अलग किया हुआ, अपवादभूत ।

मुस्तहक़्क़–वि० (अ०) हक रखनेवाला, अधिकारी; योग्य ।

मुस्ता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी घास, मोथा ।

मुस्ताद–पु० (सं०) जंगली सूअर ।

मुस्ताभ–पु० (सं०) नागरमोथा ।

मुस्तैद–वि० (अ० 'मुस्तइद') तैयार, आमादा, तत्पर; चुस्त, तेजीसे काम करनेवाला ।

मुस्तैदी–स्त्री० तैयारी, तत्परता; चुस्ती, तेजी ।

मुस्तौजिर–पु० (अ०) ठेकेदार, इजारेदार ।

मुस्तौजिरी–स्त्री० ठेकेदारी ।

मुस्तौफ़ी–पु० (अ०) हिसाब-किताबकी जाँच करनेवाला अधिकारी, आडिटर; तनखाह बाँटनेवाला ।

मुहकम–वि० (अ०) पक्का, मजबूत, टिकाऊ ।

मुहक़मा–पु० (अ०) दे० 'महकमा' ।

मुहक़्क़िक़–वि० (अ०) तहकीक करनेवाला; युक्ति-प्रमाणसे सिद्ध करनेवाला; दार्शनिक, सत्यान्वेषी ।

मुहतमिम–पु० (अ०) इहतिमाम करनेवाला, प्रबंधक । **–बंदोबस्त**–पु० बंदोबस्तके कामका प्रधान अधिकारी, 'सेटिलमेंट आफिसर' ।

मुहतरम–वि० (अ०) सम्मानित, आदरणीय ।

मुहतरमा–वि० आदरणीय (स्त्री) ।

मुहताज–वि० (अ०) जिसे किसी चीजका अभाव और आवश्यकता हो, हाजतमंद; चाह रखनेवाला; गरीब; किसी बातके लिए दूसरेपर आश्रित (ईश्वर किसीका मुहताज न करे); विवश । **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ गरीबोंको भोजन आदि दिया जाय ।

मुहताजी–स्त्री० मुहताज होना ।

मुहद्दिस–पु० (अ०) हदीसका ज्ञाता ।

मुहनाल–स्त्री० धातुकी बनी टोटी जिसे हुक्के या सटककी निगालीपर लगाते हैं ।

मुहब्बत–स्त्री० (अ०) चाह, प्रीति; प्रेम, इश्क; स्नेह, मित्रता । **–नामा**–पु० प्रेमपत्र, मित्र या प्रियजनका पत्र । **मु० –उछलना**–प्रेमका जोश मारना । **–की नज़र,–की निगाह**–प्रेमसूचक दृष्टि ।

मुहब्बती–वि० प्रेमी, स्नेहशील ।

मुहम्मद–वि० (अ०) बहुत सराहा हुआ, अति प्रशंसित । पु० इसलाम धर्मके प्रवर्तक जिन्हें मुसलमान ईश्वरका दूत और संदेशवाहक (रसूल, पैगंबर) मानते हैं और उनके विश्वासानुसार जिनके हृदयमें कुरान उतरा (५७०–६३२ ई०) । **–गोरी**–पु० शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी जिसने सन् ११९३ में महाराज पृथ्वीराजको पराजित किया ।

मुहम्मदी–वि० (अ०) मुहम्मदसे संबद्ध; मुहम्मदका । पु० मुहम्मदका अनुयायी, मुसलमान ।

मुहय्या–वि० (अ०) दे० 'मुहैया' ।

मुहर–स्त्री० किसी चीजपर खुदा हुआ नाम, पद या प्रतीक जिसे हस्ताक्षरके बदले या उसकी प्रामाणिकताके लिए छाप सकें, मुद्रा; इस प्रकार छापा हुआ नाम आदि, छाप; अँगूठी; अशर्फी । **–कन**–पु० मुहर खोदनेवाला, मुद्राकार । **–बरदार**–पु० (राजा या शासककी) मुहर रखनेवाला अधिकारी । **–शाही**–स्त्री० बादशाहकी मुहर, राजकीय मुद्रा । **मु० –करना**–मुहर लगाना । **–लगना**–(आज्ञा आदिका) पक्का हो जाना; प्रामाणिकताकी छाप लग जाना । **–लगाना**–पक्का कर देना; प्रामाणिकताकी सनद दे देना ।

मुहर*–वि० मुखर ।

मुहरा–पु० सामना, आगा; बरतन आदिका मुँह; मार, निशाना; घोड़ेके मुँहपर पहनानेका एक साज; सेनाका अग्रभाग । **मु० –लेना**–मुकाबला करना । **–(रे)पर खड़ा करना**–तोप आदिकी मारके सामने खड़ा करना ।

मुहरा–पु० (फा०) कौड़ी, सीप, शंख; शीशे या मूँगेका दाना, मनका; शतरंज या चौसरकी गोट; कागज आदि घोंटनेका आला, घोंटना । **–बाज़ी**–स्त्री० ऐयारी, बाजीगरी ।

मुहरी–स्त्री० दे० 'मोहरी'; दे० 'मोरी' ।

मुहर्रम–वि० (अ०) हराम ठहराया हुआ, निषिद्ध । पु० मुसलमानी सालका पहला महीना जिसकी दसवीं तारीखको इमामहुसैन शहीद हुए; शोककाल; काबाकी चारदीवारी । **मु० –की पैदाइश**–सदा खिन्न, उदास रहने, रोनी शक्ल बनाये रखनेवाला ।

मुहर्रमी–वि० मुहर्रमका; रोनी सूरतवाला; शोकव्यंजक ।

मुहर्रिक–पु० (अ०) हरकत देनेवाला, चालक; प्रेरक; प्रस्तावक ।

मुहर्रिर–पु० (अ०) लिखनेवाला, लेखक, मुंशी; वकीलका मुंशी । **–थाना**–पु० थानेका मुंशी । **–पेशी**–पु० अफसरकी आज्ञाएँ लिखनेवाला कर्मचारी । **–फाटक**–पु० मवेशीखानेका मुंशी ।

मुहर्रिरी–स्त्री० मुहर्रिरका काम या पेशा ।

मुहलत–स्त्री० (अ०) अवकाश, फ़ुरसत; कार्य-विशेषके लिए मिलनेवाला समय ।

मुहल्ला–पु० दे० 'महल्ला' ।

मुहसिन–पु० (अ०) इहसान, भलाई करनेवाला, उपकारकर्ता; सहायक । **–कुश**–वि० भलाई करनेवालेके साथ बुराई करनेवाला, कृतघ्न । **–कुशी**–स्त्री० कृतघ्नता ।

मुहसिल*–पु० दे० 'मुहस्सिल'; प्यादा ।

मुहस्सिल–पु० (अ०) महसूल वसूल करनेवाला, तहसीलदार; तहसीलका सिपाही ।

मुहाना–पु० समुद्रमें नदीके गिरनेका स्थान, नदीमुख ।

मुहाफ़िज़–पु० (अ०) हिफाजत करनेवाला, रक्षक । **–ख़ाना**–पु० कचहरीके अंतर्गत वह स्थान जहाँ निर्णीत मामलोंकी मिसलें रखी जाती हैं । **–दफ्तर**–पु० मुहाफिजखानेका निरीक्षक, 'रेकर्डकीपर' ।

मुहाफ़िज़त–स्त्री० (अ०) रक्षा, रखवाली, निगरानी ।

मुहार–स्त्री० (अ०) ऊँटकी नकेल ।

मुहाल–वि० (अ०) कठिन; नामुमकिन, अनहोनी । पु० दे० 'महाल' ।

मुहाला–पु० हाथीके दाँतपर चढ़ायी हुई पीतलकी चूड़ी ।

मुहावरत–स्त्री० (अ०) परस्पर बातचीत करना ।

मुहावरा–पु० (अ०) बोलचाल, बातचीत; लाक्षणिक या क्वचित् व्यंग्यार्थमें रूढ वाक्य या प्रयोग; अभ्यास ।

मुहासबा–पु० (अ०) हिसाब; हिसाबकी जाँच, हिसाबके बारेमें पूछताछ । **–मु० –तलब करना**–हिसाब माँगना ।

मुहासरा–पु० (अ०) चारों ओरसे घेर लेना, घेरा (करना) ।

मुहासिब–पु० (अ०) हिसाब जानने, करने, लेने या जाँचनेवाला ।

मुहासिल–पु० (अ०) मालगुजारी, राजस्व; पैदावार; आय; नफा (महसूलका बहु०) । **–ख़ाम**–पु० कुल पैदावार, कच्ची निकासी ।

मुहिँ*–सर्व० दे० 'मोहिं' ।

मुहिब्ब–वि० (अ०) मुहब्बत करनेवाला, प्रेमी । **–(ब्बे)वतन**–पु० देशभक्त, स्वदेशप्रेमी ।

मुहिम–स्त्री० (अ०) कठिन या भारी काम; युद्ध; चढ़ाई । **मु० –सर करना**–लड़ाई जीतना; कठिन काम करना ।

मुहिर–वि० (सं०) मूर्ख । पु० कामदेव ।

मुहीम*–स्त्री० दे० 'मुहिम' ।

मुहुः(हुस्)–अ० (सं०) बार-बार, पुनः-पुनः ।

मुहुर्भुक्(ज्)–पु० (सं०) घोड़ा ।

मुहूर्त–पु० (सं०) १२ क्षणका समय; दो दंड या ४८ मिनटका समय; विवाह, यात्रा आदिके लिए फलित ज्योतिषके अनुसार शुभाशुभ काल ।

मुहैया–वि० (अ०) तैयार, प्रस्तुत; आमादा; मौजूद ।

मुह्यमान–वि० (सं०) मूर्च्छित होता हुआ; मोहयुक्त ।

मूँग–स्त्री० दालके काम आनेवाला एक द्विदल अनाज । **मु० –की दाल खानेवाला**–बेदम; डरपोक ।

मूँगफली–स्त्री० एक क्षुप जिसके फल खाने और तेल निकालनेके काम आते हैं ।

मूँगरी–स्त्री० एक तरहकी तोप ।

मूँगा–पु० चूनेके तत्त्वसे निर्मित कई रंगोंवाला एक कठोर पदार्थ जो समुद्रमें रहनेवाले एक तरहके कीड़ोंका घर होता है और

जो रत्न माना जाता तथा दवाके भी काम आता है, प्रवाल; रेशमका एक भेद ।

मूँगिया–वि० मूँगके रंगका, हरा । पु० हरे रंगका एक भेद ।

मूँछ–स्त्री० ऊपरके होंठपर उगी हुई रोमराजि जो पुरुष होनेका चिह्न है; कुत्ते, बिल्ली, शेरके नथनोंके अगल-बगल उगनेवाले लंबे विरल बाल । मु० **–का बाल**–जिसका किसीके यहाँ बहुत मान-जान, प्रभाव हो । **–नीची होना**–लज्जित होना । **–(छें)उखड़वाना**–मूँछोंके बाल चुनवा लेना; जलील करना, गर्व चूर करना । **–उखाड़ना**–गर्व नष्ट करना; कड़ी सजा देना । **–मरोड़ना**–दे० 'मूँछों पर ताव देना' । **–मुँड़वाना**–हार मान लेना, पुरुषत्वका दावा त्याग देना (यह बात हुई तो मूँछें मुँड़वा दूँगा) । **–(छों)-का कूँड़ा**–सेवइयोंकी नमाज जो बेटेकी मसें भींगनेपर मुसलमान स्त्रियाँ दिलाती हैं । **–पर ताव देना**–मूँछोंके सिरोंके बालोंको मरोड़ना, अपनी बड़ाई करना ।

मूँज–स्त्री० एक तृण जिसके छिलकेकी बान बटते और उपनयनके समय ब्रह्मचारीको जिसकी मेखला पहनाते हैं ।

मूँड़–पु० सिर, कपाल, माथा । **–कटा**–वि०, पु० गला काटनेवाला; भारी नुकसान पहुँचानेवाला । मु० **–चढ़ाना**–सिर चढ़ाना । **नौ–का हो जाना**–बहुत शक्तिशाली और जबरदस्त हो जाना । **–मुँड़ाना**–सन्न्यास लेना ।

मूँड़न–पु० मुंडन-संस्कार । **–छेदन**–पु० मुंडन और कनछेदन ।

मूँड़ना–स० क्रि० सिरके बाल उस्तुरेसे बनाना; हजामत बनाना; चेला बनाना; ठगना ।

मूँड़ी–स्त्री० सिर । **–काटा**–वि० सिरकटा, मरने योग्य, वध्य (पुरुषोंके लिए स्त्रियोंकी एक गाली) । **–बंध**–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

मूँदना–स० क्रि० बंद करना, ढकना; रुद्ध करना ।

मूँदर*–स्त्री० मुँदरी, अँगूठी ।

मू–पु० (फा०) बाल, रोआँ । **–ब-मू**–अ० बाल-बाल; हर्फ-ब-हर्फ । **–बाफ़**–पु० वह धज्जी या फीता जिसे स्त्रियाँ चोटीमें डालकर गूँथती हैं । **–शिगाफ़**–पु० बालकी खाल खींचनेवाला । **–शिगाफ़ी**–स्त्री० बालकी खाल खींचना, नुक्ताचीनी ।

मूक–वि० (सं०) गूँगा । **–बधिर**–वि० गूँगा-बहरा । **–०विद्यालय**–पु० गूँगों-बहरोंका विद्यालय । **–भाव**–पु० मौन, गूँगापन ।

मूकता–स्त्री० मूक होनेका भाव ।

मूकना*–स० क्रि० त्यागना; बंधनमुक्त करना ।

मूका*–पु० मोखा; दे० 'मुक्का' ।

मूकिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) गूँगापन ।

मूखना*–स० क्रि० दे० 'मूसना' ।

मूचना*–स० क्रि० दे० 'मोचना' ।

मूछ–स्त्री० दे० 'मूँछ' ।

मूजिद–पु० आविष्कार करनेवाला ।

मूजिब–पु० कारण ।

मूज़ी–वि० (अ०) ईजा देने, पीडा पहुँचानेवाला, जालिम; दुष्ट । मु० **–का चंगुल**–जालिमका पंजा । **–का माल**–जालिम या कंजूसका माल ।

मूझना*–अ० क्रि० मूर्च्छित होना–'सोचनि जूझत मूझत ज्यौं'–घन ० ।

मूठ–स्त्री० कब्जा, दस्ता; मुट्ठी; मुट्ठीभर चीज; एक तरहका जुआ जो कौड़ियोंको मुट्ठीमें बंद करके खेला जाता है; एक तरहका मंत्रप्रयोग । मु० **–करना**–बटेरको मुट्ठीमें पकड़कर लड़ाईके लिए तैयार करना । **–मारना**–मंत्र पढ़कर शत्रुकी ओर कोई चीज फेंकना, टोना करना; हस्तमैथुन करना ।

मूठना*–अ० क्रि० नष्ट होना ।

मूठा–पु० दे० 'मुट्ठा' ।

मूठि*–स्त्री० दे० 'मूठ'; दे० 'मुट्ठी' ।

मूठी*–स्त्री० दे० 'मुट्ठी' ।

मूड़–पु० दे० 'मूँड़' ।

मूड़ना–स० क्रि० दे० 'मूँड़ना' ।

मूढ–वि० (सं०) मुग्ध; हक्का-बक्का, हैरान; मूर्ख, जडबुद्धि, मूर्खतापूर्ण (मूढ़ विश्वास) । पु० योगदर्शनमें मानी हुई चित्तकी पाँच भूमियोंमेंसे दूसरी, चित्तका तमोगुणके आधिक्यसे विवेकशून्य होना । **–गर्भ**–पु० मृत या बिगड़ा हुआ गर्भ । **–ग्राह**–पु० गलत धारणा; नासमझके मनमें जमी हुई बात; खब्त । **–ग्राही-(हिन्)**–वि० किसी सिद्धांत आदिका गलत अर्थ लगाकर उससे चिपका रहनेवाला, दुराग्रही । **–चेता(तस्)**,**–बुद्धि**,**–मति**–वि० मूर्ख, नासमझ । **–मूल्य शुल्क**–पु० (ऐड वैलोरम ड्यूटी) शुल्क जो वस्तुओंपर उनके मूल्य या कीमतके अनुसार लगाया जाय । **–सत्त्व**–वि० उन्मत्त, विक्षिप्त ।

मूढता–स्त्री० (सं०) मूर्खता; नासमझी ।

मूढात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) मूर्ख; भौंचक ।

मूत–पु० मूत्र, पेशाब ।

मूतना–अ० क्रि० पेशाब करना ।

मूत्र–पु० (सं०) रक्तसे गुर्दोंके द्वारा स्रवित जलीय द्रव जो मूत्राशय-(मसाना)में जमा रहता है और उपस्थ मार्गसे बाहर निकलता है, पेशाब । **–कृच्छ्र**–पु० शक्कर और कष्टके साथ पेशाब आनेका रोग । **–क्षय**–पु० एक तरहका मूत्राघात रोग । **–ग्रंथि**–स्त्री० मूत्राघात रोगका एक भेद । **–जठर**–पु० मूत्राघातके कारण उत्पन्न विकार । **–दोष**–पु० पेशाबमें कोई खराबी होना; प्रमेह । **–निरोध**,**–रोध**–पु० पेशाब रुक जानेकी बीमारी । **–पथ**,**–प्रसेक**–पु० मूत्रमार्ग, मूत्रनली । **–परीक्षा**–स्त्री० पेशाबकी जाँच, मूत्रके दोषोंका मालूम करना । **–फला**–स्त्री० त्रपुसी; कर्कोटी । **–ल**–वि० अधिक पेशाब लानेवाली (दवा) । **–वृद्धि**–स्त्री० मूत्रका प्रचुर परिमाणमें उत्पन्न होना । **–शुक्र**–पु० मूत्रके साथ वीर्य निकलनेका रोग । **–शूल**–पु० मूत्रनलीमें होनेवाला शूल, 'यूरिनरी कालिक' ।

मूत्राघात–पु० (सं०) पेशाब बंद हो जानेका रोग ।

मूत्राशय–पु० (सं०) पेड़ूमें स्थित थैली जिसमें पेशाब इकट्ठा होता है ।

मूत्रिका–स्त्री० (सं०) सलईका पेड़ ।

मूत्रित–वि० (सं०) मूत्रके रूपमें निकला हुआ; जो पेशाब लग जानेके कारण गंदा हो गया हो ।

मूर–पु० उत्तर-पश्चिम अफ्रीकामें बसनेवाली एक मुसलमान जाति; * मूल; मूल नक्षत्र; जड़ी; मूल धन ।

मूरख*–वि० दे० 'मूर्ख' ।

मूरखताई*–स्त्री० मूर्खता ।

मूरछना*–स्त्री० दे० 'मूर्च्छना' । स० क्रि० मूर्च्छित होना ।

मूरछा*–स्त्री० दे० 'मूर्च्छा' ।

मूरत–स्त्री० दे० 'मूर्ति' ।

मूरति*–स्त्री० दे० 'मूर्ति' । **–वंत**–वि० मूर्तिमान् ।

मूरध*–पु० दे० 'मूर्धा' ।

मूरि, मूरी*–स्त्री० मूल; जड़ी, बूटी; मूली ।

मूरिस–पु० (अ०) वारिस करनेवाला, वह जिससे विरसा या तरका मिले; मृत पूर्वज । **–(से)आला**–पु० वंश या कुलका आदि पुरुष, मूल पुरुष ।

मूरुख*–वि० दे० 'मूर्ख' ।

मूर्ख–वि० (सं०) मूढ, नासमझ, अज्ञ; गायत्री-रहित; अर्थसहित गायत्री न जाननेवाला । **–पंडित**–वि० पढ़ालिखा मूर्ख । **–भ्रातृक**–वि० जिसका भाई मूर्ख हो । **–मंडल**–पु०,**–मंडली**–स्त्री० मूर्खोंकी टोली, दल ।

मूर्खता–स्त्री०, **मूर्खत्व**–पु० (सं०) मूढता, नासमझी ।

मूर्खिनी*–स्त्री० मूर्खा, मूर्ख स्त्री ।

मूर्खिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) मूर्खता ।

मूर्च्छन–पु० (सं०) मूर्च्छित होना या करना; पारेका तीसरा संस्कार; बेहोश करनेका मंत्र; दे० 'मूर्च्छना' ।

मूर्च्छना–स्त्री० (सं०) मूर्च्छा; संगीतमें ग्रामका सातवाँ भाग, सातों स्वरोंका क्रमसे आरोह-अवरोह ।

मूर्च्छा–स्त्री० (सं०) बेहोशी, संज्ञालोप, सम्मोह; मूर्च्छन; वृद्धि; व्याप्ति । **–रोग**–पु० बेहोशीकी बीमारी, हिस्टीरिया रोग ।

मूर्च्छाल–वि० (सं०) मूर्च्छित, संज्ञाहीन ।

मूर्च्छित–वि० (सं०) मूर्च्छायुक्त, बेहोश; संस्कार किया हुआ (सोना, लोहा आदि); वर्धित; व्याप्त (स्वर, सुगंध इ०)।

मूर्त–वि० (सं०) मूर्तियुक्त, साकार; ठोस, कठिन।

मूर्त-विधान–पु० काल्पनिक रूप या चित्र बनानेकी क्रिया या भाव।

मूर्ति–स्त्री० (सं०) शरीर; स्वरूप या शक्ल, प्रतिमा; मूर्तता, ठोसपन। **–कला**–स्त्री० मूर्ति गढ़नेकी कला। **–कार**–पु० मूर्ति बनानेवाला। **–प**–पु० मूर्तिकी रक्षा करनेवाला; पुजारी। **–पूजक**–वि० मूर्तिकी पूजा करनेवाला, बुतपरस्त। **–पूजा**–स्त्री० देवप्रतिमाका पूजन। **–भंजक**–वि० मूर्तियोंको तोड़नेवाला, बुतशिकन। **–विद्या**–स्त्री० मूर्ति बनानेकी कला।

मूर्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) मूर्तिविशिष्ट, साकार। पु० शरीर।

मूर्तीकरण–पु० किसी अमूर्त तत्वको मूर्त रूप देनेकी क्रिया या भाव।

मूर्द्ध(न्), मूर्ध(न्)–'मूर्द्धा' या 'मूर्धा'का समासमें व्यवहृत रूप। **–कर्णी,–कर्परी**–स्त्री० छतरी, छत्र। **–खोल**–पु० (हिं०) छतरी, छत्र। **–ज**–वि० सिरसे उत्पन्न होनेवाला। पु० केश। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० ब्रह्मरंध्र। **–पुष्प**–पु० सिरिसका पेड़। **–रस**–पु० माँड़। **–वेष्टन**–पु० पगड़ी।

मूर्द्धन्य, मूर्धन्य–वि० (सं०) मूर्धासे उत्पन्न; मूर्धासे उच्चरित; श्रेष्ठ, शीर्षस्थानीय। **–वर्ण**–पु० देवनागरी वर्णमालाके मूर्धासे उच्चरित वर्ण ('ऋ', 'ॠ', टवर्ग और 'ष')।

मूर्द्धा(र्द्धन्), मूर्धा(र्धन्)–पु० (सं०) मस्तक, सिर; मुखके भीतरका तालु और कंठके बीचका वह भाग जो मस्तक या शीर्ष-स्थानके ठीक नीचे पड़ता और जहाँसे मूर्धन्य वर्णोंका उच्चारण होता है।

मूर्द्धाभिषिक्त, मूर्धाभिषिक्त–वि० (सं०) जिसके सिरपर अभिषेक किया गया हो; श्रेष्ठ; सर्वमान्य (मत, नियम)। पु० राजा; क्षत्रिय; एक वर्णसंकर जाति।

मूर्द्धाभिषेक, मूर्धाभिषेक–पु० (सं०) राजाओंके राज्यारोहणके समय सिरपर किया जानेवाला अभिषेक।

मूर्द्धाभिसिक्त, मूर्धाभिसिक्त–पु० (सं०) (दे० 'मूर्द्धाभिषिक्त'); ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति।

मूर्वा, मूर्वी–स्त्री० (सं०) मरोड़फली लता।

मूल–पु० (सं०) जड़; कंद; आदि कारण; उत्पत्तिस्थान; आरंभ; ग्रंथकारकी मूल शब्दावली (टीका, व्याख्यासे भिन्न); मूलधन; हाथ-पाँव आदिका आदि भाग (भुजमूल, पादमूल); वस्तुका निचला भाग, पादप्रदेश (पर्वतमूल); चरण; २७ नक्षत्रोंमेंसे उन्नीसवाँ; गुणित राशिका मूल; निकुंज; सूरन। वि० आद्य, प्रधान। **–कर्म(न्)**–पु० उच्चाटन, वशीकरण आदिका प्रयोग जो मंत्र और जड़ी-बूटियोंकी जड़से किया जाय, टोना। **–कार**–पु० मूल ग्रंथकर्ता। **–कारण**–पु० आदि कारण, प्रधान हेतु। **–कारिका**–स्त्री० किसी सूत्रग्रंथकी श्लोकबद्ध विवृति; मूल धनकी एक विशेष वृद्धि या ब्याज; भट्ठी। **–कृच्छ्र**–पु० ११ पर्णकृच्छ्र व्रतोंमेंसे एक। **–ग्रंथ**–पु० ग्रंथकारकी मूल रचना, असल किताब (जिसकी टीका, व्याख्या की गयी हो)। **–च्छेद,–च्छेदन**–पु० जड़से उखाड़ देना, समूल नाश। **–ज**–पु० अदरक; जड़से उत्पन्न होनेवाला पौधा। वि० मूल नक्षत्रमें उत्पन्न। **–तत्त्व**–पु० आधारभूत सिद्धांत; मूल पदार्थ। **–त्रिकोण**–पु० ग्रहोंकी कुछ विशेष राशियोंमें स्थिति। **–देव**–पु० चौरशास्त्रके प्रवर्तक एक ऋषि; कंस। **–द्रव्य,–धन**–पु० व्यापार आदिमें लगायी हुई पूँजी। **–धातु**–स्त्री० मज्जा। **–पदार्थ**–पु० भौतिक जगत्का उपादानभूत अयौगिक पदार्थ, तत्त्व। **–पर्णी**–स्त्री० मंडूकपर्णी। **–पाठ**–पु० (टेक्स्ट) किसी लेखक, विधायक या प्रस्तावकके वे मूल शब्द जिनका प्रयोग उसने स्वयं ही अपने लेख, विधेयक, प्रस्ताव आदिमें किया हो। **–पुरुष**–पु० वंशका आदि पुरुष। **–पुष्कर**–पु० पुष्करमूल। **–पोती**–स्त्री० पोय। **–प्रकृति**–स्त्री० प्रपंचकी कारणरूप शक्ति; दुर्गा; सत्त्व, रज, तमकी साम्यावस्था, प्रधान (सां०)। **–फलद**–पु० कटहल। **–बंध**–पु० हठयोगके अंतर्गत एक क्रिया। **–भूत**–वि० मूल, आधाररूप, जड़का काम देनेवाला, बुनियादी। **–भृत्य**–पु० पुराना या पुश्तैनी नौकर। **–मंत्र**–पु० कुंजी, मूल तत्त्व। **–रस**–पु० मोरटा लता। **–वाप**–पु० जड़ोंको बोने, रोपनेवाला। **–वित्त**–पु० मूल धन। **–व्यसन**–पु० प्राणदंड। **–व्याधि**–स्त्री० मुख्य रोग, असल मर्ज। **–व्रती-(तिन्)**–पु० केवल जड़ें–कंद, मूल–खाकर रहनेवाला। **–शाकट,–शाकी(किन्)**–पु० वह खेत जिसमें जड़ें पैदा हों या बढ़ें। **–स्थान**–पु० आदि स्थान, बाप-दादोंका वासस्थान; परमेश्वर; राजधानी; मुलतान नगर। **–स्थानी**–स्त्री० गौरी। **–स्रोत-(स्)** पु० झरने, नदी आदिका उद्गम-स्थान; मुख्य धारा। **–हर**–वि० जिसने अपना समस्त धन नष्ट कर दिया हो (कौटि०)।

मूलक–वि० (सं०) (समासके अंतमें) मूलवाला; मूलसे उत्पन्न (पापमूलक, भ्रांतिमूलक); मूल नक्षत्रमें उत्पन्न। पु० मूली; एक स्थावर विष। **–पर्णी**–स्त्री० शोभांजन वृक्ष। **–पोतिका**–स्त्री० मूली।

मूलतः(तस्)–अ० (सं०) मूल रूपमें; आदिमें, प्रथमतः।

मूला–स्त्री० (सं०) मूल नक्षत्र; सतावर।

मूलाधार–पु० (सं०) नाभि और शिश्नके मध्य स्थित एक चक्र।

मूलार्थ–पु० (मदर टिंचर) होम्योपैथी पद्धतिकी किसी ओषधिका मूलरस।

मूलिक–वि० (सं०) मूलगत; मौलिक; प्रधान, मुख्य। पु० जड़ें खाकर रहनेवाला; तपस्वी।

मूलिका–स्त्री० (सं०) जड़; जड़ी; जड़ोंका ढेर।

मूलिन–वि० (सं०) मूलसे उत्पन्न। पु० वृक्ष।

मूलिनी–स्त्री० (सं०) ओषधि, जड़ी।

मूली–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ और पत्ते शाककी तरह खाये जाते हैं। मु० **–गाजर समझना**–तुच्छ समझना, (किसीको) कुछ भी न गिनना।

मूली(लिन्)–वि० (सं०) मूलयुक्त। पु० वृक्ष।

मूल्य–वि० (सं०) उन्मूलनके योग्य; खरीदने योग्य; जो मूलमें हो। पु० वस्तुके बदलेमें दिया जानेवाला धन, कीमत, दाम; वेतन, पारिश्रमिक; उपयोगिता; रचनाके भीतर वर्तमान रहनेवाला ऐसा उद्देश्य जो उसे किसी सामाजिक आदर्श, व्यक्तिगत उच्चता आदिसे जोड़े। **मानव**–मनुष्यसे संबद्ध इस प्रकारके साहित्यिक मूल्य। **–रहित,–हीन**–वि० जिसका कुछ मूल्य न हो, निकम्मा। **–वृद्धि**–स्त्री० दाम बढ़ना।

मूल्यतल, मूल्यस्तर–पु० (लेवल ऑफ प्राइसेज़) मूल्योंकी ऊपरी रेखा या सतह।

मूल्यन, मूल्यनिरूपण–पु० (वैलुएशन) किसी वस्तु, संपत्ति या किसीकी योग्यता आदिका मूल्य निश्चित करना, किसी जानकार द्वारा किसी वस्तु आदिके मूल्यका अनुमान लगाया जाना।

मूल्यनियंत्रण–पु० (प्राइस कंट्रोल) वस्तुओंके मूल्यमें अनुचित वृद्धि न होने देनेकी दृष्टिसे किया जानेवाला नियंत्रण या प्रतिबंधन।

मूल्यवान्(वत्)–वि० (सं०) मूल्यवाला, दामी, कीमती।

मूल्यसूचकांक–पु० (इंडेक्स नंबर) खाद्यान्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओंका विभिन्न समयोंका मूल्य बतलानेवाला अंक। (सामान्य स्थितिके समयका मूल्य प्रायः १०० मान लिया जाता है। इससे बढ़ते या घटते हुए अंक आपेक्षिक महँगी या सस्तीके परिदर्शक होते हैं।)

मूल्यह्रास-कोष–पु० (डेप्रीशियेशन फंड) यंत्र, सामान, उपकरणों आदिके घिस जाने, पुराने तथा बेकाम हो जानेके कारण उनके मूल्यमें क्रमशः होनेवाली घटी पूरी करनेके उद्देश्यसे स्थापित कोष या निधि।

मूल्यांकन–पु० (सं०) मूल्य निर्धारित या निश्चित करनेकी क्रिया। पुस्तक या रचनाकी समीक्षा; सामान्य साहित्य प्रीक्षण। (वैलुएशन) दे० 'मूल्यन'।

मूल्यादेय वस्तुएँ–स्त्री० (वैल्युपेयेबिल आर्टिकिल्स) डाकखाने द्वारा भेजी गयी वे वस्तुएँ, (या रेल द्वारा भेजे गये मालकी वे) रसीदें, बिल्टियाँ आदि जो पानेवालेके हाथ उनपर अंकित मूल्य लेकर ही अर्पित की जा सकती हैं।

मूल्याधिरोह–पु० (एप्रीशियेशन) दे० 'मूल्योत्कर्ष'।

मूल्यानुपाती कर (शुल्क)–पु० (ऐड वैलोरिम ड्यूटी) किसी वस्तु-पर उसके मूल्यके अनुसार लगनेवाला कर या शुल्क, यथामूल्य

शुल्क ।

मूल्यापकर्ष–पु० (डेप्रीशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋणपत्रों, कारखानोंमें प्रयुक्त यंत्रादिके मूल्यमें कमी हो जाना, उतार आ जाना, मूल्यह्रास, मूल्यावरोहण ।

मूल्यावपात–पु० (स्लंप) वस्तुओंके मूल्यमें एकाएक तथा तेजीसे होनेवाली कमी या गिरावट, अर्धपतन, सस्ती ।

मूल्यावरोहण–पु० (डेप्रीशियेशन) दे० 'मूल्यापकर्ष' ।

मूल्योत्कर्ष–पु० (एप्रोशियेशन) मुद्रा, सरकारी ऋण-पत्रों आदिके सापेक्ष मूल्यमें वृद्धि होना, मूल्याधिरोह ।

मूश–पु० (फा०) चूहा । **–दान**–पु० चूहा फँसानेका संदूक या पिंजड़ा ।

मूशली–स्त्री० (सं०) तालमूली ।

मूष–पु० (सं०) चूहा; गवाक्ष, मोखा; सोना-चाँदी गलानेकी कुल्हिया ।

मूषक–पु० (सं०) चूहा; चोर । **–पर्णी**–स्त्री० आखुकर्णी । **–वाहन**–पु० गणेश ।

मूषण–पु० (सं०) मूसना, चुराना ।

मूषा–स्त्री० (सं०) चुहिया; गवाक्ष; कुल्हिया; देवताड वृक्ष । **–कर्णी**–स्त्री० आखुकर्णी । **–तुत्थ**–पु० नीला थोथा ।

मूषिक–पु० (सं०) चूहा; चोर; सिरसका पेड़; एक प्राचीन जनपद । **–रथ**–पु० गणेश । **–विषाण**–पु० चूहेका सींग, अनहोनी वात ।

मूषिकांक, मूषिकांचन–पु० (सं०) गणेश ।

मूषिका–स्त्री० (सं०) चुहिया; कुल्हिया ।

मूषिकाद, मूषिकाराति–पु० (सं०) विडाल ।

मूषिकार–पु० (सं०) नर चूहा ।

मूषी–स्त्री० (सं०) सोना आदि गलानेकी कुल्हिया ।

मूषी(षिन्)–पु० (सं०) वड़ा चूहा ।

मूषीक–पु० (सं०) वड़ा चूहा ।

मूषीकरण–पु० (सं०) कुल्हियामें सोना-चाँदी आदि गलाना ।

मूस–पु० चूहा । **–दानी**–स्त्री० चूहा फँसानेका डव्बा या पिंजड़ा ।

मूसना–स० क्रि० चुराना; चुराकर ले जाना ।

मूसर*–पु० दे० 'मूसल' ।

मूसल–पु० लकड़ीका मोटा डंडा जिससे धान कूटते हैं, मुषल । **–चंद**–पु० मुस्तंडा; धींगड़ा । **–धार**–अ० दे० 'मुसलाधार' । मु० –(लों)ढोल वजाना–वहुत खुशी मनाना, अत्यंत प्रसन्नता प्रकट करना ।

मूसली–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है; छोटा मूसल; खरलमें डालकर मसाला आदि कूटनेका पत्थर या लोहेका वट्टा या छोटा डंडा–'इमामदस्तेकी मूसली उठा लाया और लगा तालेपर दनादन प्रहार करने'–मनो०, नव० ५५ ।

मूसा–पु० चूहा; यहूदी धर्मके प्रवर्तक जो पैगंबर या ईश्वरके संदेश-वाहक माने जाते हैं । **–ई**–पु० मूसाका अनुयायी, यहूदी । **–कानी**–स्त्री० एक लता जो दवाके काम आती है ।

मूसीक़ार–पु० (फा०) एक कल्पित पक्षी; संगीतज्ञ; अरब देशका एक बाजा ।

मूसीक़ी–स्त्री० (फा०) संगीत-विद्या ।

मृकंडु–पु० (सं०) एक मुनि, मार्कंडेय ऋषिके पिता ।

मृग–पु० (सं०) पशु, जंगली जानवर; हिरन; आखेटोपयोगी पशु, कपोत; अन्वेषण; पीछा; कस्तूरी; हाथीकी एक जाति; मृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास; मकर राशि; चंद्रमाका लांछन; कामशास्त्रमें माने हुए पुरुषके चार भेदोंमेंसे एक । **–कानन**–पु० उद्यान; शिकारके जानवरोंसे भरा हुआ वन । **–चर्म(न्)**–पु० हिरनकी खाल जो पवित्र मानी जाती है । **–छाला**–पु० (हिं०) दे० 'मृगचर्म' । **–छौना**–पु० (हिं०) मृगशावक, हिरनका बच्चा । **–जल**–पु० मृगतृष्णा । **–० स्नान**–पु० मृगजलमें स्नान, अनहोनी वात । **–जालिका**–स्त्री० हिरनोंको फँसानेका जाल । **–जीवन**–पु० शिकारी, व्याध । **–तृषा,–तृष्णा,–तृष्णिका**–स्त्री० कड़ी धूपमें रेतीले मैदानोंमें होनेवाली जलधाराकी मिथ्या प्रतीति । **–दंश,–दंशक**–पु० कुत्ता । **–दाव**–पु० शिकारके जानवरोंसे भरा हुआ वन; सारनाथ । **–धर**–पु० चंद्रमा । **–धूर्त,–धूर्तक**–पु० शृगाल । **–नयना,–नयनी**–वि० स्त्री० हिरन या मृग-शावककी-सी आँखोंवाली (स्त्री) । **–नाभि**–पु० कस्तूरी; कस्तूरीमृग । **–०जा**–स्त्री० कस्तूरी । **–नेत्रा**–स्त्री० सौर मार्गशीर्षकी कुछ विशिष्ट रात्रियाँ । **–पति**–पु० सिंह । **–पालिका**–स्त्री० कस्तूरीमृग । **–पोत**–पु० मृगछौना । **–प्रिय**–पु० पर्वतपर उगी हुई घास । **–बंधिनी**–स्त्री० हिरन फँसानेका जाल । **–बधाजीव**–पु० व्याध, शिकारी । **–भक्ष्या**–स्त्री० जटामासी । **–मद**–पु० कस्तूरी । **–० वासा**–स्त्री० कस्तूरी-मल्लिका । **–मास**–पु० मार्गशीर्ष मास । **–मित्र**–पु० चंद्रमा । **–मुख**–पु० मकर राशि । **–मेद***–पु० मृगमद, कस्तूरी । **–यूथ**–पु० हिरनोंका झुंड । **–रसा**–स्त्री० सहदेई । **–राज**–पु० सिंह; व्याघ्र; चंद्रमा; मृगशिरा नक्षत्र । **–राटिका**–स्त्री० जीवंती नामक ओषधि । **–राट्(ज्)**–पु० सिंह । **–रोचना**–स्त्री० पीला अंगराग । **–रोम(न्)**–पु० ऊन । **–०ज**–पु० ऊनी कपड़ा । **–लांछन**–पु० चंद्रमा; मृगशिरा । **–लेखा**–स्त्री० चंद्रमाका धब्बा, मृगांक । **–लोचन**–पु० चंद्रमा । **–लोचना,–लोचनी**–वि० स्त्री० मृगनयनी । **–वल्लभ**–पु० एक घास । **–वारि**–पु० मृगजल । **–वाहन**–पु० वायु; स्वाति नक्षत्र । **–व्याध**–पु० शिकारी; एक नक्षत्र । **–शाव,–शावक**–पु० मृगछौना, हिरनका सुकुमार बच्चा । **–शिर(स्)**–पु०,**–शिरा**–स्त्री० २७ नक्षत्रोंमेंसे पाँचवाँ । **–शीर्ष**–पु० मृगशिरा नक्षत्र; मार्गशीर्ष मास । **–श्रेष्ठ**–पु० व्याघ्र । **–हा(हन्)**–पु० शिकारी ।

मृगणा–स्त्री० (सं०) खोज, अन्वेषण ।

मृगया–स्त्री० (सं०) शिकार, आखेट । **–यान**–पु० सदल-बल शिकारके लिए जाना । **–वन**–पु० शिकारगाह, रखौत ।

मृगयु–पु० (सं०) ब्रह्मा; शृगाल; व्याध ।

मृगव्य–पु० (सं०) मृगया ।

मृगांक–पु० (सं०) चंद्रमा; चंद्रमाका धब्बा; कपूर; वायु; एक प्रसिद्ध रसौषध ।

मृगांडजा–स्त्री० (सं०) कस्तूरी ।

मृगांतक–पु० (सं०) चीता ।

मृगा|–पु० हिरन । स्त्री० (सं०) सहदेई ।

मृगाक्षी–वि० स्त्री० (सं०) मृगनयनी ।

मृगाजिन–पु० (सं०) मृगचर्म ।

मृगाजीव–पु० (सं०) व्याध ।

मृगादन–पु० (सं०) शेर; चीता ।

मृगादनी–स्त्री० (सं०) सहदेई; इंद्रवारुणी; एक तरहकी ककोंटी ।

मृगाराति–पु० (सं०) कुत्ता; सिंह; सिंह राशि ।

मृगारि–पु० (सं०) कुत्ता; सिंह, बाघ; लाल सहिजन; सिंह राशि ।

मृगावित्(ध्)–पु० (सं०) व्याध ।

मृगाश, मृगाशन–पु० (सं०) सिंह ।

मृगित–वि० (सं०) जिसका पीछा किया गया हो, अन्वेषित; याचित ।

मृगी–स्त्री० (सं०) हिरनी; स्त्रियोंका एक भेद; मिरगी रोग । **–पति**–पु० कृष्ण ।

मृगेंद्र–पु० (सं०) सिंह; व्याघ्र । **–चटक**–पु० बाज, श्येन ।

मृगेंद्राशी–स्त्री० (सं०) अड़ूसा ।

मृगेक्षणा–वि० स्त्री० (सं०) मृगनयनी । स्त्री० मृगेर्वारु ।

मृगेर्वारु–स्त्री० (सं०) श्वेत इंद्रवारुणि ।

मृगेष्ट–पु० (सं०) मूँगका पौधा ।

मृग्य–वि० (सं०) जिसका पीछा या अन्वेषण किया जाय ।

मृच्छकटिक–पु० (सं०) संस्कृतका एक प्रसिद्ध नाटक ।

मृज–पु० (सं०) मृदंग ।

मृजा–स्त्री० (सं०) मार्जन ।

मृज्य–वि० (सं०) मार्जनीय ।

मृड–पु० (सं०) शिव ।

मृडन–पु० (सं०) अनुग्रह, अनुकंपा ।

मृडा, मृडानी, मृडी–स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा ।

मृडीक–पु० (सं०) शिव; हिरन; एक मछली ।

मृणाल–पु० (सं०) कमलनाल, कमलकी जड़; खस। **–सूत्र**–पु० कमलनालका तंतु।

मृणालिका–स्त्री० (सं०) कमलनाल।

मृणालिनी–स्त्री० (सं०) कमलका पौधा, कमलिनी; कमलसमूह; कमलोंसे भरा हुआ स्थान।

मृणाली–स्त्री० (सं०) कमलनाल।

मृणाली(लिन्)–पु० (सं०) कमल।

मृण्पात्र–पु० (पॉटरी) मिट्टीके बने बरतन, खिलौने आदि।

मृण्मय–वि० (सं०) मिट्टीका बना हुआ।

मृण्मूर्ति–स्त्री० (सं) (टैरा कोटा) मिट्टीकी मूर्ति।

मृत–वि० (सं०) मरा हुआ, मुर्दा; मृतवत्; मारा हुआ, कुश्ता (धातु)। पु० मरण; भीख माँगना। **–कल्प**–वि० मृतप्राय, मरा हुआ-सा। **–गृह**–पु० कब्र। **–चेल**–पु० मुरदेके ऊपर डाला जानेवाला कपड़ा। **–जीव**–पु० तिलक वृक्ष। **–जीवन**–पु० मुरदेको जिलाना। **–दार**–वि०, पु० रँडुआ। **–धर्मा(र्मन्)** वि० नश्वर। **–निर्यातक**–पु० मुर्दोंको श्मशान पहुँचानेका पेशा करनेवाला। **–भर्तृका**–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो, राँड़। **–मत्त,–मत्तक**–पु० शृगाल। **–मातृक**–वि० जिसकी माँ मर चुकी हो। **–वत्सा**–स्त्री० वह स्त्री या गाय जिसकी संतान जीवित न रहती हो। **–संजीवन**–वि० मुर्देको जिलानेवाला। पु० मुर्देको जिलाना। **–संजीवनी**–वि० स्त्री० मुर्देको जिलानेवाली (ओषधि)। स्त्री० मुर्देको जिलानेकी विद्या, मंत्र। **–सूत** –पु० रससिंदूर। **–सूतक**–पु० मरा बच्चा जनना। **–स्नान**–पु० किसी व्यक्तिके मरनेपर किया जानेवाला स्नान। **–हार** पु० मुर्दे ढोनेका काम करनेवाला।

मृतक–पु० (सं०) मुर्दा, शव; मरणाशौच।

मृतकांतक–पु० (सं०) गीदड़; सियार।

मृतलेखा–पु० (डेड अकाउंट) (डाकघरके सेविंग बैंकका) वह लेखा जिसमें लंबे अरसेसे कोई रकम जमा न की गयी हो अथवा न निकाली गयी हो, और इस कारण जो चालू न रह गया हो।

मृतालक–पु० (सं०) आढकी।

मृताशौच–पु० (सं०) मृत्युका सूतक।

मृति–स्त्री० (सं०) मृत्यु, मौत। **–रेखा**–स्त्री० हाथकी मृत्युसूचक रेखा।

मृतोत्थित–वि० (सं०) जो मरकर फिर जी उठा हो।

मृत्(द्)–स्त्री० (सं०) मिट्टी। **–कर**–पु० कुम्हार। **–कांस्य**–पु० मिट्टीका बरतन। **–तालक**–पु० अरहर; गोपीचंदन। **–पच**–पु० कुम्हार। **–पात्र,–(द्)भांड**–पु० मिट्टीका बरतन। **–पिंड**–पु० मिट्टीका ढेला, लोंदा।

मृत्तिका–स्त्री० (सं०) मिट्टी। **–लवण**–पु० नोना।

मृत्युंजय–वि० (सं०) मौतको जीतनेवाला। पु० शिव; शिवका एक अकालमृत्युनिवारक मंत्र। **–रस**–एक ज्वरौषध।

मृत्यु–स्त्री० (सं०) प्राणवियोग, मरण, मौत। पु० यम; ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। **–कर**–वि० मरणकारक। पु० किसीकी मृत्यु होनेपर उसकी संपत्तिके संबंधमें लगनेवाला कर। **–काल**–पु० मौतकी घड़ी। **–दूत**–पु० मौतकी खबर लानेवाला। **–नाशक**–पु० पारा। **–पत्र**–पु० वसीयतनामा। **–पाश**–पु० यमका फंदा। **–पुष्प**–पु० ईख। **–फला,–फली**–स्त्री० केला। **–बीज**–पु० बाँस। **–भीत**–वि० मौतसे डरनेवाला। **–भृत्य**–पु० रोग। – **–योग**–पु० ग्रह-नक्षत्रोंका मृत्युकारक योग। **–लेख**–पु० (टेस्टेमेंट) मृत्युके समय या मृत्युके कुछ पहले संपत्तिके विभाजन, दान आदिके संबंधमें अपनी इच्छा प्रकट करनेके लिए लिखा गया लेख या पत्र, वसीयत। **–लोक**–पु० यमलोक; मर्त्यलोक, भूलोक। **–वंचन**–पु० शिव; काला कौआ। **–शय्या**–स्त्री० वह शय्या जिसपर रोगीकी मृत्यु हो, मरनसेज; ऐसे रोगीकी शय्या जो दो-चार दिनका मेहमान हो या जिसकी मृत्यु निश्चित हो। **–सूति**–स्त्री० केकड़ेकी मादा। मु०**–शय्यापर पड़ा होना**–सांघातिक रोगसे पीडित या दो-चार दिनका मेहमान होना।

मृत्सा, मृत्स्ना–स्त्री० (सं०) अच्छी, चिकनी मिट्टी; मिट्टी–'मृत्स्ना-सा वह अंधकार'–युगवाणी।

मृत्स्न–पु० (सं०) धूल।

मृथा*–अ० व्यर्थ, नाहक।

मृदंकुर–पु० (सं०) हारीत पक्षी।

मृदंग–पु० (सं०) ढोलकी तरहका एक बाजा, मुरज। **–फल**–पु० कटहल। **–फलिनी**–स्त्री० कोशातकी। **–वादक**–पु० मृदंग बजानेवाला।

मृदंगी–स्त्री० (सं०) तोरई।

मृदंगी(गिन्)–वि०, पु० (सं०) मृदंग बजानेवाला।

मृदा–स्त्री० (सं०) मिट्टी। **–कर**–पु० वज्र।

मृदित–वि० (सं०) कुचला, मसला, चूर किया हुआ।

मृदिनी–स्त्री० (सं०) अच्छी, मुलायम मिट्टी।

मृदु–वि० (सं०) कोमल, मुलायम; दयायुक्त; जो तीखा न हो, मधुर (स्वर, वचन); मंद (गति)। **–कोष्ठ**–वि० नरम कोठेवाला, जिसे हलके विरेचनसे दस्त आ जाय। **–गण**–पु० अनुराधा, चित्रा, मृगशिरा और रेवती–इन चार नक्षत्रोंका गण। **–गमना**–स्त्री० हंसी। वि० स्त्री० मंद गतिवाली। **–चर्मी(र्मिन्),–त्वक्(च्)**–पु० भोजपत्र। **–ताल**–पु० श्रीताल वृक्ष। **–दर्भ**–पु० सफेद कुश। **–पर्व(न्)**–पु० नरकुल; बेंत। **–पुष्प**–पु० सिरिसका पेड़। **–फल**–पु० नारियल; विकंकत पौधा; कोमल फल। **–भाषी(षिन्)**–वि० मधुरभाषी। **–मंद**–वि० मंद, मधुर (गति, स्वर)। **–रोमक,–रोमा(मन्)**–पु० खरगोश। **–स्पर्श**–वि० जो छूनेमें मुलायम हो। पु० कोमल स्पर्श, बहुत हलके हाथोंसे छूना।

मृदुता–स्त्री० (सं०) नरमी, कोमलता; मंद-मधुर होना।

मृदुल–वि० (सं०) कोमल, मृदु। पु० जल।

मृदुलाई*–स्त्री० मृदुलता, नरमी।

मृदूकरण–पु० (मिटिगेशन) नरम या हलका बना देना; तीक्ष्णता कम कर देना; शमन।

मृदूत्पल–पु० (सं०) नीलोत्पल; नील पद्म।

मृद्वी–स्त्री० (सं०) अंगूर, कपिल द्राक्षा। वि० स्त्री० कोमलांगी।

मृद्वीका–स्त्री० (सं०) अंगूर, कपिल द्राक्षा।

मृद्वीकासव–पु० (सं०) अंगूरी शराब।

मृध–पु० (सं०) युद्ध; शत्रु।

मृनाल*–पु० दे० 'मृणाल'।

मृन्मय–वि० मृण्मय।

मृषा–अ० (सं०) झूठमूठ, झूठे तौरपर; वृथा। वि० झूठ, मिथ्या। **–ज्ञान**–पु० अज्ञान। **–भाषी(षिन्)**–वि० झूठ बोलनेवाला। **–वाद**–पु० झूठ; मिथ्या वाक्य; चापलूसी। **–वादी(दिन्)**–वि० झूठा, मिथ्याभाषी।

मृषाध्यायी(यिन्)–पु० (सं०) एक तरहका सारस।

मृषार्थक–वि० (सं०) असंभव; झूठा। पु० असंभव बात।

मृषालक–पु० (सं०) आमका पेड़।

मृषोद्य–पु० (सं०) मिथ्या कथन। वि० मिथ्यावादी।

मृष्ट–वि० (सं०) शोधित, साफ किया हुआ; विचारित; छुआ हुआ। पु० मिर्च।

मृष्टि–स्त्री० (सं०) शोधन; विमर्श; छूना।

में–प्र० अधिकरण कारकका चिह्न। स्त्री० बकरीकी बोली। **–में**–स्त्री० बकरीकी बोली।

मेंगनी–स्त्री० दे० 'मेगनी'।

मेंड़–पु०, स्त्री० खेतकी हदबंदी, सिंचाई आदिके लिए उसके इर्द-गिर्द बनाया हुआ मिट्टीका घेरा, डाँड़ा; * प्रतिष्ठा। **–बंदी** –स्त्री० हदबंदी, मेंड़ बनाना।

मेंडा*–सर्व० मेरा।

मेंडरा*–पु० घेरा, चौखटा, फ्रेम।

मेंडराना†–अ० क्रि० मँडराना–'राजपंखि तेहिपर मेंडराहीं'–प०।

मेंडरी†–स्त्री० जाँतके चारों ओर बनाया गया मिट्टीका घेरा जिससे आटा दूरतक न फैले।

मेंडेल-नियम–पु० (मेंडेल्स लॉ) आस्ट्रियाके जीव वैज्ञानिक मेंडेल द्वारा किये गये प्रयोगोंसे प्राप्त आनुवंशिकताके नियम जो व्यापक रूपसे पौधों और जानवरोंपर लागू होते हैं।

मेंढक–पु० दे० 'मेढक'।

मेंढकी–स्त्री० दे० 'मेढकी'।

मेंधिका, मेंधी–स्त्री० (सं०) मेहँदी।

मेंबर–पु० (अं०) सदस्य, सभासद्।

मेंबरी–स्त्री० सदस्यता, मेंबरका पद।

मेंह–पु० वर्षा, झड़ी।

मेंहदी–स्त्री० दे० 'मेहँदी'।

मेइणि*–स्त्री० मेदिनी, पृथ्वी (वीसल०)।

मेक–पु० (सं०) बकरी (नर-मादा दोनों)।

मेकअप–पु० (अं०) आकर्षक बननेके लिए सौन्दर्य प्रसाधनका प्रयोग; छापेखानेमें कम्पोज किये हुए टाइपको पेजमें बाँधना।

मेकल–पु० (सं०) अमरकंटक पर्वत। **–कन्या,–सुता**–स्त्री० नर्मदा नदी।

मेकलाद्रि, मेखलाद्रि–पु० (सं०) मेकल पर्वत। **–जा**–स्त्री० नर्मदा नदी।

मेख–पु० दे० 'मेष'।

मेख़–स्त्री० (फ़ा०) खूँटा, खूँटी; कील। मु० **–ठोंकना**–हाथ-पाँवमें कीलें ठोंक देनेकी सजा देना; हराना, दवा लेना। **–मारना**–कील ठोंकना; बाधक होना, रुकावट डालना।

मेखड़ा–पु० झाबे आदिके मुँहपर बाँधनेका बाँसकी फट्टीका घेरा।

मेखल*–स्त्री० दे० 'मेखला'। पु० (सं०) दे० 'मेकल' (समास भी)।

मेखला–स्त्री० (सं०) करधनी, किंकिणी; धागे आदिकी करधनी, कटिसूत्र; तीन लड़ोंवाली मुँज-मेखला जो उपनयनकालमें ब्रह्मचारीको धारण करनी पड़ती है; तलवार बाँधनेका कमरबंद; तलवारकी मूठ; घोड़ेका तंग; पहाड़की ढाल, शैल-नितंब; नर्मदा नदी; होमकुंडके ऊपर बना हुआ मिट्टीका घेरा।

मेखली–स्त्री० रामलीला आदिमें व्यवहृत एक पहनावा; *करधनी।

मेखली(लिन्)–पु० (सं०) मेखलाधारी, ब्रह्मचारी; शिव।

मेख़ी–वि० (फ़ा०) जिसमें मेखसे छेद किया गया हो। **–रुपया**–पु० वह रुपया जिसमें छेद करके चाँदी निकाल ली गयी और सीसा भर दिया गया हो।

मेगज़ीन–पु० (अं०) बारूदखाना; बंदूकमें गोली रखनेकी जगह; सामयिक पत्र, 'मैगज़ीन'।

मेगनी–स्त्री० भेड़-बकरी, ऊँट आदिकी लेंडी।

मेगा सायकिल–पु० (मेगा सायकिल) उच्च आवृत्तिकी प्रत्यावर्ती धारा या दोलनमय विद्युत-विसर्जनकी आवृत्ति नापनेका मात्रक।
१ मेगा सायकिल = १० लाख सायकिल
प्रति सेकण्ड   प्रति सेकण्ड।

मेघ–पु० (सं०) बादल; बरसनेवाला बादल; समूह; छ. मुख्य रागोंमेंसे एक; मोथा। **–काल**–पु० वर्षाऋतु। **–गर्जन**–पु०, **–गर्जना**–स्त्री० बादलोंका गरजना। **–चिंतक**–पु० चातक। **–जाल**–पु० मेघसमूह, घनघटा। **–जीवन**–पु० चातक। **–ज्योति(स्)**–स्त्री० बिजली। **–डंबर**–पु० बादलोंका गरजना। **–दीप**–पु० बिजली। **–दूत**–पु० महाकवि कालिदासका एक खंडकाव्य जिसमें एक बिरही यक्षने अपनी प्रेयसीके पास अपना सँदेसा भेजनेके लिए मेघको दूत बनाया है। **–द्वार**–पु० आकाश। **–नाद**–पु० मेघका गर्जन; वरुण; रावणका बेटा इंद्रजित् जो लक्ष्मणके हाथों मारा गया। **–० जित्**–पु० लक्ष्मण। **–०वध**–पु० माइकेल मधुसूदन-रचित बँगलाका प्रसिद्ध महाकाव्य। **–नादानुलासक**–पु० मोर। **–नामा(मन्)**–पु० मुस्तक। **–निर्घोष**–पु० बादलोंका गरजना। **–पुष्प**–पु० जल; ओला; विष्णु या कृष्णके रथके चार घोड़ोंमेंसे एकका नाम। **–मंडल**–पु० आकाश। **–मल्लार, मल्हार,**–पु० एक मिश्र राग। **–माला**–स्त्री० बादलोंकी पंक्ति। **–माली(लिन्)**–वि० बादलोंसे घिरा, ढका हुआ। **–मूर्ति**–स्त्री० बिजली। **–मेदुर**–वि० बादलोंसे सिक्त या स्निग्ध। **–योनि**–पु० कुहरा; धुआँ। **–रव**–पु० मेघगर्जन। **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० मेघपंक्ति। **–वर्ण**–वि० बादलके-से रंगवाला। **–वर्णा**–स्त्री० नीलका पौधा। **–वर्त्त**–पु० प्रलयकालीन बादलोंका एक भेद, संवर्त्त। **–वर्त्म(न्)**–पु० आकाश। **–वह्नि**–पु० बिजली। **–वाई***–स्त्री० मेघमाला, बादलोंका समूह। **–वाहन**–पु० इंद्र। **–विस्फूर्जिता**–स्त्री० एक वर्णवृत्त। **–वेश्म(न्)**–पु० आकाश। **–व्रती(तिन्)**–पु० चातक। **–सार**–पु० चीनिया कपूर। **–सुहृत्(द्)**–पु० मोर। **–स्तनितोद्भव**–पु० विकंटक वृक्ष।

मेघांत–पु० (सं०) वर्षाका अंत; शरत्काल।

मेघा†–पु० मेंढक।

मेघागम–पु० (सं०) वर्षाकाल; वर्षाका आरंभ।

मेघाच्छन्न–वि० (सं०) बादलोंसे ढका हुआ।

मेघाडंबर–पु० (सं०) बादलोंका गरजना।

मेघानंद–पु० बक; मयूर।

मेघानंदा–स्त्री० (सं०) बलाका।

मेघानंदी(दिन्)–पु० (सं०) मोर।

मेघारि–पु० (सं०) वायु।

मेघालय–पु० भारतके उत्तर-पूर्वमें असमके गारो पहाड़ी, खासी और जयंतिया पहाड़ी जिलोंका बना एक नवीन राज्य।

मेघावरि*–स्त्री० घनघटा।

मेघास्थि–स्त्री० (सं०) ओला।

मेघोदय–पु० (सं०) घटाका उठना।

मेचक–वि० (सं०) काला, कृष्णवर्ण। पु० कालिमा; अंधकार; मेघ; सुरमा; मयूरचंद्रिका; सहिजन; कालानमक; एक छोटा बिच्छू।

मेचकता–स्त्री० (सं०) श्यामता, स्याही।

मेचकताई*–स्त्री० मेचकता।

मेज़–स्त्री० (फ़ा०) लकड़ी, संगमरमर आदिकी बनी ऊँची चौकी जो खाना खाने, लिखने आदिमें आधारके रूपमें काममें लायी जाती है, टेबुल। **–पोश**–पु० मेजपर बिछानेका कपड़ा। **–बान**–पु० आतिथ्य करनेवाला, भोजनका निमंत्रण देनेवाला। **–बानी**–स्त्री० अतिथि-सत्कार, मेहमानदारी।

मेछ–पु० म्लेच्छ।

मेजर–पु० (अं०) एक फौजी अफसर जिसका पद कप्तानसे ऊपर और लेफ्टिनेंट कर्नलसे नीचे होता है। **–जेनरल**–पु० एक फौजी अफसर।

मेजा*–पु० मेढक।

मेजारिटी–स्त्री० (अं०) संख्या या मतोंकी अधिकता, बहुमत; बहुसंख्यक पक्ष, समुदाय।

मेज़्मरिज़्म–पु० (अं०) दे० 'मिस्मिरेज़्म'।

मेज़्मराइज़र–पु० (अं०) मिस्मिरेज़्म करनेवाला।

मेट–पु० कुलियों, मजदूरोंका मुखिया, जमादार।

मेटक*–पु० मिटाने, नाश करनेवाला।

मेटनहार*–पु० मिटाने; अन्यथा करनेवाला।

मेटना*–स० क्रि० दे० 'मिटाना'।

मेटा*–पु० भाँड़ा।

मेटिया†–स्त्री० जल, दूध आदि रखनेकी लोटेकी शक्लका, पर उससे कुछ बड़ा मिट्टीका पात्र।

मेठ–पु० दे० 'मेट'; (सं०) हाथीवान; मेढ़ा।

मेड़–पु०, स्त्री० दे० 'मेंड़'।

मेड़र†–पु० चक्कर, मंडल; घेरा; कुंडली, फेंटी।

मेडल–पु० (अं०) पदक, तमगा।

मेडिकल–वि० (अं०) चिकित्साशास्त्र-संबंधी। **–कालेज**–पु० चिकित्सा-महाविद्यालय।

मेड़िया–स्त्री० मढ़ी।

मेडिसिन–स्त्री० (अं०) चिकित्साशास्त्र; दवा।

मेढक–पु० एक छोटा जंतु जो जल-स्थल दोनोंमें रह सकता है, मंडूक।

मेढकी–स्त्री० मादा मेढक, मंडूकी। मु० **–को जुकाम होना**–छोटे आदमीमें बड़ोंकी बराबरी करनेका हौसला होना।

मेढ़ा–पु० भेड़का नर, मेष। **–सिंगी**–स्त्री० एक लता जिसकी जड़ दवाके काम आती है।

मेढ़ियाँ–स्त्री० मढ़ी, घर।

मेढी–स्त्री० तीन लड़ियोंवाली चोटी ।

मेढ़–पु० (सं०) मेढ़ा; लिंग, शिश्न । **–श्रृंगी**–स्त्री० मेढ़ासिंगी ।

मेथि–पु० (सं०) अनाज दाँनेके समय बैलोंको पहनाया जानेवाला जुआठा ।

मेथिका–स्त्री० (सं०) मेथी ।

मेथी–स्त्री० एक पत्रशाक जिसके दाने मसाले और दवाके भी काम आते हैं ।

मेथौरी–स्त्री० मेथीका साग मिलाकर बनायी हुई बरी ।

मेदः–'मेदस्'का समासगत रूप । **–पुच्छ**–पु० दुंबा । **–सारा**–स्त्री० अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि, मेदा ।

मेद*–स्त्री० दे० 'मेदा' । पु० (सं०) दे० 'मेद(स्)' । **–ज**–पु० एक प्रकारका गुग्गुल ।

मेद(स्)–पु० (सं०) मांससे उत्पन्न एक धातु, चर्बी; चर्बी या मोटाई बहुत बढ़ जानेका रोग । **–(स्)कृत**–पु० मांस ।

मेदन*–स्त्री० मेदिनी, पृथ्वी ।

मेदपाट–पु० मेवाड़ ।

मेदस्वी(विन्)–वि० (सं०) मोटा, जिसके बदनमें अधिक चर्बी हो ।

मेदा–स्त्री० (सं०) अष्टवर्गके अंतर्गत एक ओषधि । पु० (अ०) आमाशय, पेट ।

मेदिनी–स्त्री० (सं०) पृथिवी, धरती; मेदा; एक शब्दकोष ।

मेदुर–वि० (सं०) अतिशय चिकना; मोटा ।

मेदो–'मेदस्'का समासगत रूप । **–ज**–पु० हड्डी । **–वृद्धि**–स्त्री० चर्बीका बढ़ जाना, अधिक मोटा हो जाना; अंडवृद्धि ।

मेध–पु० (सं०) यज्ञ; हवि; वह पशु जिसकी यज्ञमें बलि की जाय । **–ज**–पु० विष्णु ।

मेधा–स्त्री० (सं०) धारणाशक्ति; बुद्धि; सरस्वतीका एक रूप; बल, शक्ति (वै०) । **–कर**–वि० स्मृति, बुद्धि बढ़ानेवाला । **–जित्**–पु० कात्यायन । **–रुद्र**–पु० कालिदास ।

मेधा(धस्)–पु० (सं०) स्वायंभुव मनुका एक पुत्र ।

मेधातिथि–पु० (सं०) मनुस्मृतिके एक प्रसिद्ध टीकाकार ।

मेधावान्(वत्)–वि० (सं०) मेधावी ।

मेधाविनी–वि० स्त्री० (सं०) मेधावाली । स्त्री० ब्रह्माणी ।

मेधावी(विन्)–वि० (सं०) मेधायुक्त; बुद्धिमान्; पंडित । पु० तोता; च्यवन ऋषिके पुत्रका नाम ।

मेधि–पु० (सं०) दे० 'मेथि' ।

मेधिर–वि० (सं०) मेधावी ।

मेधिष्ठ–वि० (सं०) अतिशय मेधावी ।

मेध्य–वि० (सं०) स्मृति, बुद्धि बढ़ानेंवाला, मेधाजनक; पवित्र; यज्ञ-संबंधी; यज्ञके योग्य । पु० जौ; खदिर; बकरा ।

मेध्या–स्त्री० (सं०) केतकी, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, मंडूकी आदि बुद्धिवर्द्धक बूटियाँ ।

मेनका–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा जिसके गर्भसे शकुंतलाकी उत्पत्ति हुई; हिमवान्‌की पत्नी, मेना ।

मेनकात्मजा–स्त्री० (सं०) शकुंतला; पार्वती ।

मेना–स्त्री० (सं०) हिमवान्‌की पत्नी, मेनका । **–धव**–पु० हिमालय ।

मेनाद–पु० (सं०) मोर; बिल्ली; बकरा ।

मेम–स्त्री० विवाहिता अंग्रेज या यूरोपीय स्त्री; ताशका एक पत्ता जिसे 'रानी' भी कहते हैं । **–साहबा**–स्त्री० प्रतिष्ठित अंग्रेज या यूरोपीय महिला ।

मेमना–पु० भेड़का बच्चा; * घोड़ेकी एक जाति ।

मेमार–पु० (अ०) इमारत बनानेवाला, राज, थवई ।

मेमो–पु० (अं०) मेमोरैंडमका लघु रूप; ज्ञापन ।

मेमोरियल–पु० (अं०) स्मारक, यादगार; प्रार्थना-पत्रके साथ भेजा जानेवाला तथ्य-विवरण; आवेदन-पत्र ।

मेमोरैंडम–पु० (अं०) याददाश्त; व्यापारिक लिखा-पढ़ीमें लिखा जानेवाला एक प्रकारका पत्र जिसमें संबोधन, प्रेषकका नाम आदि नहीं होता; ज्ञापन, ज्ञापिका ।

मेय–वि० (सं०) जिसकी नाप-तौल हो सके; जो जाना जा सके ।

मेयर–पु० (अं०) म्युनिसिपल कारपोरेशनका अध्यक्ष, नगर प्रमुख ।

मेर*–पु० दे० 'मेल' ।

मेरवन†–स्त्री० मिलाना; मिलावट ।

मेरवना*–स० क्रि० दे० 'मिलाना' ।

मेरा–सर्व० 'मैं'का संबंधकारक रूप, मदीय । * पु० दे० 'मेला' ।

मेराउ, मेराव*–पु० मिलाप, भेंट–'गहन छूट दिनअरकर ससि सों भयेउ मेराउ'–प० ।

मेराज–स्त्री० (अं०) सीढ़ी; ऊपर चढ़नेका साधन; मुसलमानोंके विश्वासानुसार मुहम्मदका आसमानपर जाकर ईश्वर-साक्षात्कार करना ।

मेराना†–स० क्रि० मिलाना ।

मेरु–पु० (सं०) सुमेरु पर्वत; जपमालामें सबसे ऊपर रहनेवाला प्रधान मनका; मंदिरका शिखर; करमालामें उँगलीकी पोर; हारका मध्यमणि; लघु-गुरुके विचारसे छंदोंकी संख्या जाननेकी प्रक्रिया (पिंगल); उत्तर ध्रुव । **–दंड**–पु० रीढ़; एकसे दूसरे ध्रुवको जानेवाली कल्पित सरल रेखा । **–देवी**–स्त्री० ऋषभदेवकी माता । **–धामा(मन्)**–पु० शिव । **–पृष्ठ**–पु० आकाश । **–यंत्र**–पु० तकुवेकी शक्लका चक्र; चरखा । **–शिखर**–पु० मेरुकी चोटी; 'सहस्रार' चक्र । **–सावर्ण**–पु० ग्यारहवें मनु ।

मेरुक–पु० (सं०) धूप, धूना ।

मेरुदंडी(डिन्)–वि० (सं०) मेरुदंड-विशिष्ट, रीढवाला (प्राणी) ।

मेल–पु० (सं०) मिलन, मिलाप; संग; मेला; (हिं०) प्रीति, मनका मिलन; मित्रता; अनुकूलता, संगति; मिलावट; जोड़ या टक्कर; तरह, किस्म । **–जोल,–मिलाप**–पु० प्रीति-संबंध, राहोरस्म, घनिष्ठता । मु० **–खाना,–बैठना**–पटना, अनुकूलता होना; संगतिके उपयुक्त होना ।

मेल–स्त्री० (अं०) डाकका थैला; डाक; डाकसे भेजी जानेवाली चिट्ठियाँ आदि; डाकगाड़ी । **–ट्रेन**–स्त्री० डाकगाड़ी । **–वान**–पु० रेलवेका वह डब्बा जिसमें डाक भेजी जाय ।

मेलक–पु० (सं०) मिलन; संग, जमाव; मेला; मिलानेवाला; विवाहके संबंधमें ग्रहादिका मिलान करना ।

मेलन–पु० (सं०) मिलन; संग; गुठभेड़; मिलाना; मिलावट ।

मेलना*–स० क्रि० मिलाना; डालना, उँडेलना; पहनाना–'मेली कंठ सुमनकी माला'–रामा०; फेंकना; चलाना–'जापै मेलत सूल वह सुनिये त्रिभुवन राय'–राम०; ढकेलना । अ० क्रि० मिलना, समागम होना; पहुँचना ।

मेलांधु, मेलांधुक, मेलांबुक–पु० (सं०) दवात, मसिपात्र ।

मेला–स्त्री० (सं०) मिलन, समागम; अंजन; रोशनाई; नीलका पौधा । पु० भीड़, जमाव; चीजोंकी खरीद-बिक्री, देवदर्शन, तीर्थस्थान, सैर-तमाशे आदिके लिए नियत तिथि और स्थानमें होनेवाला लोगोंका जमाव । **–ठेला,–तमाशा**–पु० मेला, सैर-तमाशा । मु० **–लगना**–जमाव होना, भीड़ लगना ।

मेलानंदा–स्त्री० (सं०) दवात, मसिपात्र ।

मेलान*–पु० मंजिल, पड़ाव; डेरा डालना–'सागर तीर मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह'–राम० ।

मेलापक–पु० (सं०) मिलानेवाला; इकट्ठा करनेवाला; ग्रहोंका संयोग; भीड़, जमाव ।

मेलायन–पु० (सं०) मिलना, संयोग, समागम ।

मेली–वि० अधिक लोगोंसे हेल-मेल रखनेवाला, मिलनसार । –पु० मित्र, संगी । **–मुलाकाती**–पु० संगी-साथी, मित्र ।

मेव–पु० राजपुतानाके मेवात प्रदेशमें बसनेवाली एक लड़ाकू जाति जो मुसलमानी शासनकालमें हिंदूसे मुसलमान हो गयी (इस जातिके लोग पहले लूट-मार करते थे) ।

मेवा–पु० (फा०) फल; सुखाया हुआ फल (चिलगोजा, बादाम आदि) । **–दार**–वि० फलदार (वृक्ष) । **–फ़रोश**–पु० ताजा या सुखाये हुए फल बेचनेवाला ।

मेवाटी–स्त्री० मेवा भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान ।

मेवाड़–पु० राजपूतानाका एक राज्य जिसकी राजधानी पहले चित्तौर और फिर उदयपुर रही और जिसका राजकुल अपनी वीरता और स्वाधीनता-प्रेमके लिए बड़े आदरकी दृष्टिसे देखा

जाता रहा है। –केसरी–पु० महाराणा प्रताप।

मेवाड़ी–वि० मेवाड़का। पु० मेवाड़निवासी।

मेवात–पु० राजपूतानाका एक इलाका जो अब गुड़गाँव जिले (हरियाणा) और अलवर तथा भरतपुर क्षेत्रके अंतर्गत है।

मेवाती–पु० मेवातका रहनेवाला, मेव।

मेवासा*–पु० दे० 'मवास'।

मेवासी*–पु० दे० 'मवासी'।

मेष–पु० (सं०) मेढ़ा; बारह राशियोंमेंसे पहली राशि। –कंबल –पु० ऊनी कंबल। –पाल,–पालक–पु० गड़ेरिया। –मास–पु० सौर वैशाख मास। –लोचन–पु० चकवँड़। –वल्ली,–विषाणिका,–विषाणी–स्त्री० मेढ़ासिंगी। –वृषण–पु० इंद्र। –शृंग–पु० एक स्थावर विष, सिंगिया। –शृंगी–स्त्री० मेढ़ासिंगी। –संक्रांति–स्त्री० सूर्यके मेषराशिमें प्रवेश और सौर वर्षके प्रारंभका दिन।

मेषा–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची।

मेषिका, मेषी–स्त्री० (सं०) भेड़; जटामासी; तिनिश वृक्ष।

मेस–पु० (अं०) विद्यार्थियों, फौजी अफसरों आदिका संयुक्त भोजनालय; छात्रावाससे संबद्ध भोजनालय।

मेसॉन–पु० (मेसॉन) नन्हा कण जिसका द्रव्यमान प्रोट्रॉन और इलेक्ट्रानके द्रव्यमानके बीच होता है। इसमें कुछमें इलेक्ट्रानके बराबर ऋण या धन आवेश होता है और कुछ आवेशरहित होते हैं।

मेस्मराइज़र–पु० (अं०) दे० 'मेज़्मराइज़र'।

मेस्मरिज़्म–पु० (अं०) दे० 'मिस्मिरेज़्म'।

मेहँदी–स्त्री० एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ हाथ-पैर रँगनेके काममें लायी जाती हैं, हिना; ब्याहकी एक रस्म (मुसल०)। मु० –का रचना–मेहँदीका रंग खिलना। –रचाना,–लगाना–हाथ-पैर रँगनेके लिए मेहँदीकी पत्तियाँ पीसकर लगाना। (पैरमें)–लगा होना–पैरोंका काममें न लाया जाना; उठकर न आना-जाना।

मेह–पु० वर्षा; झड़ी (पड़ना, बरसना)। –मु० –की आँख न खुलना–लगातार गहरी वर्षा होना।

मेह–पु० (सं०) मूत्र; प्रमेह; मेष, मेढ़ा; बकरा। –घ्नी–स्त्री० हलदी।

मेह–वि० (फा०) बड़ा, बुज़ुर्ग; सरदार। –तर–वि० अधिक बड़ा। पु० चित्रालके नवाबकी उपाधि; भंगी, मैला साफ करनेवाला।

मेहतरानी–स्त्री० भंगिन।

मेहन–पु० (सं०) मूत्र; शिश्न; मोरवा नामका पेड़।

मेहनत–स्त्री० (अ०) श्रम; कोशिश, उद्योग; कष्ट। –कश–वि० मेहनत करनेवाला; कष्ट उठानेवाला। –मजदूरी–स्त्री० शारीरिक श्रमका काम, उजरतपर की जानेवाली मजदूरी। मु० –ठिकाने लगना–श्रमका सफल होना।

मेहनताना–पु० पारिश्रमिक, मजदूरी; वकीलकी फीस।

मेहनती–वि० मेहनत करनेवाला, परिश्रमी।

मेहमान–पु० (फा०) जो दूसरेके घर जाकर टिके, अतिथि, पाहुना; भोजनके लिए निमंत्रित जन। –ख़ाना–पु० अतिथिशाला, मुसाफिरखाना। –दार–पु० अतिथिसत्कार करनेवाला, मेजबान। –दारी–स्त्री० अतिथिसत्कार, मेहमानोंकी खातिर-तवाजा; मेहमानी। –नवाज़–वि० मेहमानोंकी खातिर-तवाजा करनेवाला, खिलाने-पिलानेका शौकीन। –नवाज़ी–स्त्री० अतिथि-सत्कार।

मेहमानी–स्त्री० मेहमानदारी; किसीके यहाँ मेहमान होना, पहुनाई।

मेहर–स्त्री० दे० 'मेह्र'। –बान–वि० दे० 'मेह्रबान'। –बानी–स्त्री० दे० 'मेह्रबानी'।

मेहरवा*–पु० मेह; बादल–'उमड़ि-उमड़ि घुमड़ि-घुमड़ि रस राखिलौ नेह-मेहरवा'–घन०।

मेहरा–पु० जनखा, स्त्रैण; खत्रियोंका एक अल्ल; * वृष्टि, बादल –'उघरि-उघरि अब बरसन लाग्यौ अचरजको यह मेहरा'–घन०।

मेहराब–स्त्री० (अ०) मसजिदमें वह धनुषाकार स्थान जहाँ इमाम खड़ा होकर नमाज पढ़ाता है; डाटवाला गोल दरवाजा; दरवाजेके ऊपरकी धनुषाकार बनावट, कमान। –दार–वि० मेहराबवाला, धनुषाकार।

मेहराबी–वि० मेहराबदार। स्त्री० एक तरहकी खमदार तलवार।

मेहरारू–स्त्री० स्त्री, औरत।

मेहरी–स्त्री० स्त्री, पत्नी; दाई, महरी।

मेह्र–पु० (फा०) सूर्य। स्त्री० प्रेम, प्रीति; कृपा, दया। –बान–वि० कृपालु, अनुग्रहकर्ता; प्रीति रखनेवाला। –बानी–स्त्री० कृपा, अनुग्रह; प्रीति।

मैं–सर्व० उत्तम पुरुषका कर्ताका रूप, अहम्।

मैंगनीज–पु० एक धातु, मंगल धातु।

मैंगैनिन–पु० (अं०) (मैंगैनिन) एक मिश्रधातु जिसमें ताँबा ८३ प्रतिशत, मैंगनीज १३ प्रतिशत और निकल ४ प्रतिशत होता है।

मैंड़*–स्त्री० दे० 'मेंड़'।

मैंडा*–सर्व० मेरा।

मैंद–पु० (सं०) एक असुर जो विष्णुके हाथों मारा गया; एक वानर।

मैंनूँ*–सर्व० मुझको। (पंजाबी)।

मै*–प्र० दे० 'मय'। अ० (अ०) साथ, सहित (मैखर्च, मैसूद)। स्त्री० (फा०) मद्य, शराब। –कदा,–ख़ाना–पु० शराबखाना, मदिरालय। –कश,–ख़्वार,–नोश–पु० शराब पीनेवाला, मद्यप। –कशी,–ख़्वारी,–नोशी–स्त्री० शराबखोरी, मद्यपान। –परस्त–वि० मद्यव्यसनी। –परस्ती–स्त्री० मद्यपानका व्यसन, शराबकी लत। –फ़रोश–पु० शराब बेचनेवाला, मद्य-विक्रेता। –फ़रोशी–स्त्री० शराब बेचनेका काम या पेशा।

मैका–पु० दे० 'मायका'।

मैगनाकार्टा–पु० (अं०) अंग्रेज़ जातिकी वैयक्तिक और राजनीतिक स्वाधीनताका अधिकारपत्र जो उसने १२१५ ई० में अपने तत्कालीन बादशाह जॉनसे प्राप्त किया था।

मैगनेट–पु० (अं०) चुंबक पत्थर।

मैगल*–वि० दे० 'मदगल'।

मैग्नेटो–पु० (अं० मैग्नेटो) एक छोटे आकारका डायनमो, जिसमें विद्युत चिनगारी उत्पन्न करनेका प्रबन्ध रहता है। मोटरकार इंजिनमें पेट्रोल वाष्पको प्रज्वलित करनेके लिए इसका उपयोग किया जाता है।

मैग्नेट्रॉन–पु० (अं० मैग्नेट्रॉन) लघु तरंग-दैर्घ्य (लगभग १ सेमी) की रेडियो तरंगोंको उत्पन्न करनेकी एक विशेष निर्वातनली (वाल्व)।

मैच–पु० (अं०) मुकाबले या कुशलताकी प्रतियोगिताका खेल जो दो पक्षोंके बीच हो। स्त्री० दियासलाई। –बाक्स–पु० दियासलाईकी डिबिया।

मैजल*–स्त्री० दे० 'मंज़िल'।

मैजिक–पु० (अं०) जादू; जादूका खेल। –लैंटर्न–पु० वह यंत्र जो शीशेपर बने हुए चित्रका परिवर्द्धित प्रतिबिंब सामने कुछ दूरपर लगे हुए सफेद परदेपर डालता है।

मैजीशियन–पु० (अं०) मैजिक करनेवाला, बाजीगर।

मैटर–पु० (अं०) द्रव्य; जड़ पदार्थ; कंपोज किया हुआ लेख, समाचार आदि।

मैड़*–स्त्री० मेंड; प्रतिष्ठा।

मैत्र–वि० (सं०) मित्रका; मित्रका दिया हुआ; मित्रभावयुक्त; मित्र (सूर्य) संबंधी। पु० मित्रता; सूर्यलोक; अनुराधा नक्षत्र; गुदा; मलत्याग; ब्राह्मण; बंगाली ब्राह्मणोंका एक अल्ल।

मैत्रक–पु० (सं०) मित्रता; बौद्ध मंदिरका पुजारी।

मैत्रायण–पु० (सं०) एक ऋषिका नाम।

मैत्रावरुण, मैत्रावरुणि–पु० (सं०) अगस्त्य; वसिष्ठ (इन दोनोंकी उत्पत्ति मित्र और वरुण दोनोंके संयुक्त वीर्यसे मानी गयी है); यज्ञके १६ ऋत्विकोंमेंसे एक।

मैत्री–स्त्री० (सं०) मित्रता, दोस्ती। –बल–पु० बुद्ध।

मैत्रेय–पु० (सं०) एक भावी बुद्ध; सूर्य; एक ऋषि; एक वर्ण-संकर जाति।

मैत्रेयिका–स्त्री० (सं०) मित्रयुद्ध, दोस्तोंके बीचकी लड़ाई।

मैत्रेयी–स्त्री० (सं०) याज्ञवल्क्यकी पत्नी; अहल्या।

मैत्र्य–पु० (सं०) मित्रता।

मैथिल–वि० (सं०) मिथिलाका। पु० मिथिलानिवासी; मिथिला-नरेश (जनक)। **–कवि,–कोकिल**–पु० विद्यापति।

मैथिली–स्त्री० (सं०) सीता; मिथिलाकी भाषा।

मैथुन–पु० (सं०) जोड़ा खाना, स्त्री-पुरुषका समागम, रतिक्रिया; विवाह। **–ज्वर**–पु० कामज्वर।

मैथुनिक–वि० (सेक्शुअल) संभोग-क्रिया या संभोगवासनासे संबंध रखनेवाला; स्त्री० और पुरुषसे, उनके पारस्परिक व्यवहारादिसे जिसका संबंध हो।

मैथुनिकी–स्त्री० (वैनीरियोलॉजी) आधुनिक चिकित्सा पद्धतिकी शाखा जो रति-रोगोंका निदान और विवेचन करती है।

मैथुनी(निन्)–वि० (सं०) मैथुन करनेवाला।

मैदा–पु० (फा०) बहुत बारीक आटा। **–लकड़ी**–स्त्री० एक जड़ी। **–(दे)की लोई**–बहुत मुलायम (पेट)।

मैदान–पु० (फा०) चौड़ी-चकरी समतल जमीन; घुड़दौड़, खेल आदिका स्थान; रणक्षेत्र, अखाड़ा; कमलकी तराश; विस्तार; क्षेत्र (गजलका मैदान)। **–(ने)जंग**–पु० युद्धक्षेत्र, रणभूमि। मु० **–करना***–युद्ध करना। **–छोड़ना**–जगह छोड़ना; रणक्षेत्रसे भागना। **–जाना**–शौचके लिए बस्तीके बाहर जाना। **–जीतना,–मारना**–लड़ाई जीतना, विजय-लाभ करना। **–बदना**–लड़ने, बल-परीक्षाके लिए दिन, स्थान नियत करना। **–में आना**–लड़ने, मुकाबलेके लिए सामने आना। **–में उतरना**–कुश्तीके लिए अखाड़ेमें आना; कार्यक्षेत्रमें आना। **–साफ कर देना**–विघ्न-बाधाओंको दूर कर देना; सबको मार भगाना। **–साफ होना**–रास्तेमें कोई विघ्न-बाधा न होना; (किसीका) अकेला होना। **–हाथ रहना**–लड़ाई जीतना।

मैदानी–वि० मैदानका; मैदानमें काम आनेवाला; समतल। स्त्री० वह लालटेन जो आँगनमें लटकायी या गाड़ी जाय; आटे या मैदेका खमीरदार घोल।

मैन–पु० मोम; रालमें मिलाया हुआ मोम–'मैन तुरंग चढ़े पावक बिच नाहीं पिघरि परेंगे–' नागरीदास; कामदेव; * दे० 'मयन'। **–कामिनी**–स्त्री० कामदेवकी पत्नी रति। **–फल**–पु० एक कँटीला वृक्ष; इसका फल जो दवाके काम आता है। **–मय***–वि० कामातुर।

मैन–पु० (अं०) मनुष्य; पुरुष, व्यक्ति (पुलिसमैन, मशीनमैन आदि)।

मैनसिल–पु० एक खनिज द्रव्य जिसे शोधकर दवाके काममें लाते हैं।

मैना–स्त्री० एक चिड़िया जो अपने बोलकी मिठासके लिए प्रसिद्ध है, सारिका; पार्वतीकी माताका नाम।

मैनाक–पु० (सं०) एक पर्वत जो पुराणानुसार हिमालयका बेटा है और जिसके पंख इंद्रके हाथों काटे जानेसे बच गये हैं; एक दानव।

मैनाल–पु० (सं०) मछुआ।

मैमंत–वि० मदमत्त; गर्वीला।

मैमत*–स्त्री० ममता।

मैयत–पु० लाश, शव, अर्थी।

मैया–स्त्री० माता।

मैयार–पु० (अ०) मापने-तौलनेका आला, काँटा; कसौटी; पाठ्यक्रम, कोर्स; † घटिया किस्मकी मटियार जमीन।

मैर–स्त्री० सर्प-विषकी लहर।

मैरा†–पु० खेतकी रखवाली करनेवालेके बैठनेके लिए बनायी हुई मचान।

मैरेय–पु० (सं०) एक तरहका मद्य।

मैल–पु० शरीर, कपड़े आदिसे चिपका हुआ मल, गर्द इ०; मैला करनेवाली चीज, मल; विकार; किसीकी ओरसे मनमें संचित दुःख-दुर्भाव। **–खोरा**–वि० जो मैलको छिपा सके, गर्दखोरा (रंग)। पु० वह कपड़ा जो दूसरे कपड़ोंको मैला होनेसे बचानेके लिए नीचे पहना जाय; नमदा। मु० **–काटना**–मैल दूर करना।

मैला–वि० मैलवाला, समल, गंदा। पु० कूड़ा; गू। **–कुचैला**–वि० बहुत मैला।

मैलान–पु० (अ०) मनका झुकाव, प्रवृत्ति; रुचि।

मैली–स्त्री० मैलकी तह, दे० 'छादनी'।

मैवासा*–पु० दे० 'मवास'।

मैहर*–पु० मायका; घीका तलछट।

मों*–प्र० दे० 'में'। सर्व० दे० 'मो'।

मोंगडा–पु० एक राज्य।

मोंगरा–पु० दे० 'मुंगरा' तथा 'मोगरा'।

मोंछ–स्त्री० दे० 'मूंछ'।

मोंड़ा*–पु० लड़का, बालक।

मोंढ़ा–पु० बाँस, बेंत आदिका तिपाई जैसा गोलाकार आसन, 'स्टूल'।

मो*–सर्व० 'मैं'का एक रूप जो ब्रज और अवधीमें विभक्ति आदिके लगनेसे हो जाता है; मेरा।

मोई–स्त्री० घीमें सना हुआ आटा।

मोक–पु० (सं०) केंचुल।

मोकना*–स० क्रि० छोड़ना; फेंकना–'रोक्यो तहीं जोर नाराच मोख्यो'–राम०।

मोकल*–वि० बंधनरहित, स्वच्छंद।

मोकला*–वि० दे० 'मोकल'।

मोका–पु० दे० 'मौक़ा' तथा 'मोखा'।

मोक्ष–पु० (सं०) खुलना, बंधनसे छूटना, छुटकारा; जीवका जन्म-मरणके बंधनसे छूटना, मुक्ति; गिरना, झड़ना (आँसू, पत्ते); फेंकना (बाण); पाटलिका पेड़। **–दा**–वि० स्त्री० मोक्ष देनेवाली। **–०एकादशी**–स्त्री० मार्गशीर्ष-शुक्ला एकादशी। **–दात्री,–दायिनी**–वि० स्त्री० मोक्ष देनेवाली। **–देव**–पु० चीनी यात्री ह्वेनसांगका भारतीय नाम। **–द्वार**–पु० सूर्य; काशी तीर्थ। **–धर्म**–पु० महाभारत–शांतिपर्वका १७३ वें अध्यायके बादका अंश। **–शास्त्र**–पु० अध्यात्मविद्या। **–साधन**–पु० मोक्षका उपाय–शम, दम, योग, ज्ञान इ०।

मोक्षक–वि० (सं०) मुक्ति या छुटकारा देनेवाला। पु० मोखाका पेड़, मुष्कक।

मोक्षण–पु० (सं०) खोलना, छोड़ना, मोचन; गिराना; फेंकना।

मोक्षद–वि० मोक्ष देनेवाला।

मोक्ष्य–वि० (सं०) मोक्षके योग्य, मुक्तिका अधिकारी।

मोख–पु० मोक्ष।

मोखा–पु० रोशनदान, झरोखा; एक वृक्ष, मुष्कक।

मोगरा–पु० बड़े और अधिक सुगंधित फूलवाला बेला।

मोगल–पु० दे० 'मुग़ल'।

मोगली–पु० एक जंगली पेड़।

मोघ–वि० (सं०) निरर्थक, व्यर्थ जानेवाला। पु० बाड़ा; परकोटा। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० निरर्थक काममें लगा हुआ। **–पुष्पा**–स्त्री० वंध्या।

मोघा–स्त्री० (सं०) पाटलका फूल; विडंग।

मोघिया–स्त्री० अधिक चौड़ी, बड़ी और मोटी नरिया।

मोच–स्त्री० हाथ-पाँव, गर्दन आदि किसी अंगके जोड़की नसमें चोट आदिसे शोथ और पीड़ा होना या उसका अपनी जगहसे हट जाना (आना)। पु० (सं०) केला; सहिजन; वृक्षका निर्यास। **–निर्यास,–रस,–सार,–स्राव,–स्रुत**–पु० शाल्मलिका रस।

मोचक–वि० (सं०) छुटकारा दिलानेवाला, मुक्तिकारक। पु० विरागी; मोक्ष; केला; सहिजन।

मोचन–पु० (सं०) बंधन, कष्ट आदिसे छुड़ाना, छुटकारा देना, दिलाना; हरण (वस्त्र-मोचन)। वि० (समासमें) छुड़ानेवाला (संकटमोचन)।

मोचना*–स० क्रि० गिराना (आँसू); छुड़ाना। पु० वह औजार जिससे नाई मूँछ आदिके पके बाल उखाड़ता है; लुहारोंका एक औजार।

मोचनी–स्त्री० छोटी मोचना; (सं०) भटकटैया।

मोचयिता(तृ)–वि० (सं०) छुटकारा दिलानेवाला, मोचनकर्ता।

मोचा–स्त्री० (सं०) केला; सहिजन; नीलका पौधा; सेमल।

मोचाट–पु० (सं०) स्याह जीरा; कदली-स्तंभका भीतरी भाग; चंदन।

मोची–पु० जूते सीनेवाला, चमड़ेका काम करनेवाला। स्त्री०

(सं०) हिलमोचिका ।

मोची(चिन्)–वि० (सं०) मुक्त करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

मोच्छ*–पु० दे० 'मोक्ष' ।

मोजड़ा–पु० जूता (नरपति नाल्ह) ।

मोज़ा–पु० (फा०) पाँवमें पहननेका एक बुना हुआ कपड़ा, पायतावा; जुराव; पाँवका टखने और पिंडलीके बीचका भाग; कुश्तीका एक पेंच ।

मोजिज़ा–पु० (अ०) चमत्कार, करामात, वह काम जो मानवशक्तिसे परे हो ।

मोट–स्त्री० गठरी; पुर, चरसा । * वि० दे० 'मोटा' ।

मोटक–पु० (सं०) पितृतर्पणमें व्यवहृत दुहरा किया हुआ कुशद्वय ।

मोटकी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

मोटन–पु० (सं०) चूर्ण करना; पीसना; वायु ।

मोटर–स्त्री० (अं०) गतिशक्ति देनेवाला यंत्र; ऐसे यंत्र (आंतरिक दहनसे परिचालित इंजन) द्वारा चालित सवारी गाड़ी, मोटरकार। **–कार**–स्त्री० मोटर, हवागाड़ी । **–ख़ाना**–पु० मोटरकार रखनेका स्थान, 'मोटर-गैरेज' । **–ड्राइवर**–पु० मोटर चलानेवाला । **–बस,–लारी**–स्त्री० आदमी या माल ढोनेवाली गाड़ी जो मोटर-इंजनसे परिचालित हो । **–बोट**–स्त्री० मोटर-इंजनसे चालित नाव । **–साइकिल**–स्त्री० मोटर-इंजनसे चलनेवाली साइकिल, 'फटफटिया' ।

मोटरी–स्त्री० दे० 'गठरी' ।

मोटा–वि० जिसकी देहमें मांस-मेद अधिक हो, स्थूलकाय; मांसल; बड़े घेरेवाला; गाढ़ा, दबीज (कपड़ा, कागज); जो पतला या बारीक न हो (सूत, अक्षर, आटा); भारी; घटिया; सूक्ष्मका उलटा, स्थूल (बुद्धि, बात); भद्दा; * बलवान्, जबर्दस्त । (स्त्री० 'मोटी' ।) स्त्री० (सं०) बरियारा । **–असामी**–पु० मालदार आदमी । **–ई**–स्त्री० दे० क्रममें । **–काम**–पु० जिसमें अधिक बुद्धि या कुशलताकी आवश्यकता न हो । **–झोटा**–वि० घटिया, मामूली (अनाज, कपड़ा) । **–ताजा**–वि० हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा । **–(टी)अकल,–समझ**–स्त्री० सूक्ष्म, पेचदार बातोंको समझनेमें असमर्थ बुद्धि । (**–०का**–स्थूल-बुद्धि, मूर्ख ।) **–आवाज़**–स्त्री० भारी, भद्दी आवाज । **–चुनाई**–स्त्री० अनगढ़ ढोकोंकी जोड़ाई । **–बात**–स्त्री० खुली, सबकी समझमें आने लायक बात । **–(टे)मल**–पु० अधिक मोटा, ढीले बदनवाला आदमी । **–हिसाब**–अ० अंदाजन, लगभग, कुछ कमो-बेश । **–तौरपर**–साधारण या स्थूल रूपसे । **मु०** **–खाना,–पहनना**–सस्ता, घटिया अन्न-वस्त्र खाना-पहनना ।

मोटाई–स्त्री० मोटा होना, स्थूलता; धन या बलका गर्व । **मु०** **–चढ़ना**–घमंडी, शरारती हो जाना । **–झड़ना**–घमंड या शरारत दूर होना ।

मोटाना–अ० क्रि० मोटा होना; पैसेवाला होना; घमंडी हो जाना ।

मोटापा–पु० मोटाई, स्थूलता; घमंड, गर्व ।

मोटिया–पु० बोझ ढोनेवाला, कुली; गाढ़ा, गंजी ।

मोट्टायित–पु० (सं०) एक हाव–प्रियकी चर्चा चलनेपर नायिकाके अनुरागका, छिपानेकी चेष्टा करते हुए भी, प्रकट हो जाना ।

मोठ–पु० दालके काम आनेवाला एक मोटा अन्न, वनमूँग ।

मोठस*–वि० चुप ।

मोड़–पु० मुड़नेका भाव, घुमाव; रास्तेका घुमाव, वह जगह जहाँसे रास्ता दूसरी दिशाकी ओर गया हो; कागज आदिका मुड़ा हुआ कोना । **–तोड़**–पु० घुमाव ।

मोड़ना–स० क्रि० घुमाना; झुकाना; टेढ़ा करना; दिशा बदलना; लौटाना, पीछेकी ओर फिराना; कागज इत्यादिको किसी स्थानपर उलटकर दबा देना या दोहरा कर देना ।

मोड़ी–स्त्री० मराठी भाषाकी एक लिपि ।

मोण–पु० (सं०) सूखा फल; मगर; मक्खी; झावा ।

मोतदिल–वि० (अ०) जिसमें एतदाल (समता) हो, न गरम, न ठंडा, समशीतोष्ण; औसत दरजेका ।

मोतबर–वि० (अ०) एतबार, भरोसा करने लायक, विश्वसनीय ।

मोतबरी–स्त्री० (अ०) विश्वसनीयता ।

मोताद–पु० (अ०) नियत मात्रा, खूराक, वह मात्रा जिसकी आदत हो ।

मोतियदाम–पु० एक वर्णवृत्त ।

मोतिया–पु० बेलेका एक भेद; एक तरहका सलमा । स्त्री० एक चिड़िया । वि० मोतीके जैसा; छोटे, गोल दानोंवाला । **–बिंद**–पु० आँखोंमें पानी उतरनेका रोग जो प्रायः बुढ़ापेमें होता है ।

मोती–पु० एक बहुमूल्य रत्न जो सीपीमेंसे निकलता है, मुक्ता; कसेरोंका एक औजार । * स्त्री० बाली । **–चूर**–पु० छोटी बुँदियोंका लड्डू । **–झिरा**–पु० एक ज्वर जिसमें छाती और पेटपर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं; मीयादी बुखार, टायफाइड । **–बेल***–स्त्री० मोतिया बेला । **–भात***–पु० एक तरहका भात । **–महल**–पु० दिल्लीके किलेकी एक सुंदर इमारत । **–मसजिद**–स्त्री० दिल्लीके किलेमें बनी हुई संगमरमरकी सुंदर मसजिद । **–सिरी***–स्त्री० मोतियोंकी माला । **–(तियों)का झाला**–कानमें पहननेका एक आभूषण । **मु०** **–उगलना**–मुँहसे सुंदर मधुर शब्दावली निकालना । **–गरजना**–मोतीमें बल पड़ जाना । **–ठंढा होना**–मोतीका टूट जाना या बेआब हो जाना । **–धूलमें कोलना**–सुंदर, बहुमूल्य वस्तुकी बेकदरी करना । **–पिरोना**–मोतियोंकी लड़ी बनाना; बहुत सुंदर अक्षर लिखना; सुंदर, ललित शब्दावली लिखना, बोलना । **–रोलना**–मोती बटोरना; बिना मेहनतके धन कमाना । **–(तियों)से माँग भरना**–माँगमें मोती पिरोना, बहुत श्रृंगार करना । **–से मुँह भरना**–खुशखबरी या सुंदर बातसे रीझकर निहाल कर देना ।

मोतीलाल नेहरू–पु० जन्म ६ मई, १८६१; वकालतसे काफी रुपया और यश कमाया । जलियाँवाला बाग हत्याकांडकी जाँचके बाद आपने देशके लिए सर्वस्व त्याग दिया । देशबंधु दासके साथ मिलकर स्वराज पार्टीकी स्थापना की और भारतके लिए संविधानकी रूपरेखा भी तैयार की । ६ फरवरी, १९३१ को आपकी मृत्यु हुई । पंडित जवाहरलाल नेहरू आपके एकमात्र पुत्र थे ।

मोथरा*–वि० भोथरा, कुंद ।

मोथा–पु० नागरमोथा ।

मोद–पु० (सं०) हर्ष, आह्लाद; सुगंध । **–मोदिनी**–स्त्री० जामुन ।

मोदक–पु० (सं०) लड्डू; मिठाई; एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और शूद्रा मातासे बतायी गयी है, मधुनापित । वि० मोदजनक । **–कार**–पु० हलवाई ।

मोदकिका–स्त्री० (सं०) मिठाई ।

मोदकी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी गदा ।

मोदन–पु० (सं०) हर्ष; मोद, आनंद देना; सुगंध बिखेरना । वि० मोदजनक ।

मोदना*–अ० क्रि० आनंदित होना, प्रसन्न होना; सुगंध फैलाना–'फूलि-फूलि तरु फूल बढ़ावत । मोदत महा मोद उपजावत'–राम० । स० क्रि० प्रसन्न करना ।

मोदयंती–स्त्री० (सं०) वनमल्लिका ।

मोदा–स्त्री० (सं०) अजमोदा ।

मोदाख्य–पु० (सं०) आमका पेड़ ।

मोदाढ्य–वि० (सं०) हर्षयुक्त ।

मोदाढ्या–स्त्री० (सं०) अजमोदा । वि० स्त्री० दे० 'मोदाढ्य' ।

मोदित–वि० (सं०) मुदित, हर्षयुक्त किया हुआ ।

मोदिनी–स्त्री० (सं०) अजमोदा; जूही; चमेली; कस्तूरी; मदिरा ।

मोदी–पु० दाल, चावल आदि बेचनेवाला, परचूनिया । **–ख़ाना**–पु० भंडार ।

मोदी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला; सुगंधित; सुगंध फैलानेवाला ।

मोधुक–पु० (सं०) मछुआ ।

मोधू–वि० भोंदू, मूढ़ ।

मोन*–पु० दे० 'मोना' ।

मोना*–स० क्रि० भिगोना, नम करना, आटा, मैदा आदिमें (सानते समय) घी मिलाना, मोयन देना । † पु० झावा, पिटारा ।

मोनिया†–स्त्री० छोटा मोना ।

मोनोग्राम–पु० (अं०) दो-तीन अक्षरोंके संयोगसे बना किसी

नामका संक्षिप्त सांकेतिक रूप ।

मोनो-टाइप-मशीन–स्त्री० (अं०) कंपोज करनेवाली वह मशीन जिसमें एक-एक अक्षर ढलता और कंपोज होता चलता है ।

मोपला–पु० मलाबारमें बसनेवाली एक मुसलमान जाति ।

मोम–पु० एक हलके पीले या सफेद रंगका पिघलनेवाला पदार्थ जिससे शहदकी मक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं; जमाया हुआ मिट्टीका तेल । **–गर्द**–पु० मोमकी चीजें बनानेवाला । **–जामा**–पु० मोमका रोगन चढ़ाया हुआ कपड़ा जिसपर पानी फिसल जाता है । **–दिल**–वि० नरम दिलवाला, दयार्द्रचित्त । **–बत्ती**–स्त्री० मोटे धागेपर मोम चढ़ाकर बनायी हुई बत्ती जिसे रोशनीके लिए जलाते हैं । **मु० –की नाक**–अस्थिरचित्त व्यक्ति जिससे जो बात चाहो मनवा लो । **–की मरियम**–अति सुकुमार स्त्री । **–होना**–पिघलना, नरम होना; कठोर हृदयका दयासे द्रवित हो जाना ।

मोमिन–वि० (अ०) ईमानदार, सच्चा । पु० सच्चा मुसलमान; मुसलमान जुलाहा; शीया ।

मोमिया–स्त्री० (फा०) मसाला लगाकर रखी हुई लाश; वह मसाला जिसे सड़नेसे बचानेके लिए लाशपर लगाते थे ।

मोमियाई–स्त्री० (फा०) एक तरहका शिलाजतु । **मु०–निकालना**–कड़ी मेहनत लेना; बहुत मारना ।

मोमी–वि० मोम जैसा; मोमका बना हुआ । **–छींट**–स्त्री० एक तरहकी बहुत मुलायम छींट । **–मोती**–पु० एक तरहका नकली मोती ।

मोयन–पु० खस्तेपनके लिए गुंधे हुए आटेमें घी देना । **–दार**–वि० जिसमें मोयन दिया गया हो ।

मोरंग–पु० नेपालका पूर्वी भाग ।

मोर–पु० एक बड़ा पक्षी जो अपनी सुंदरता और नृत्यके लिए प्रसिद्ध है, मयूर । **–चंदा***–पु० दे० 'मोरचंद्रिका' । **–चंद्र**–पु०, **चंद्रिका**–स्त्री० मोरपंखके ऊपर बनी हुई चंद्राकार बूटियाँ । **–चाल**–पु० एक तरहकी कसरत । **–छल, छला**–पु० मोरकी पूंछके परोंका चँवर; मोरका पंख । **–छली**–पु० मोरछल हिलानेवाला । **–छाँह***–स्त्री० दे० 'मोरछल' । **–ध्वज**–पु० एक राजा जो कृष्णके कहनेसे अपनी देह आरेसे चिरवानेके लिए तैयार हो गया था । **–पंखी**–स्त्री० वह नाव जो मोरके पंखके आकारकी हो; एक तरहका पंखा जो खोलनेसे मंडलाकार हो जाता है; मालखंभकी एक कसरत । वि० मोरके पंखके रंगका सरोका पेड़ । **–पखा***–पु० मोरका पंख; मोरपंखकी कलगी । **–मुकुट**–पु० मोरपंखका मुकुट जिसे बाल-लीलाके समय कृष्ण धारण किया करते थे । **–शिखा**–स्त्री० एक जड़ी ।

मोरचा–पु० (फा०) किलेके रक्षार्थ उसके चारों ओर खोदी हुई खाई; युद्धके सुभीतेके लिए खोदी हुई खाई आदि; मोरचेपर या उसके भीतर रहनेवाली सेना; विपक्षियोंसे लोहा लेनेके लिए निर्मित (कई दलोंका) संघटन । **–बंदी**–स्त्री० खाई, धुस आदिसे शत्रुसेनाकी मारसे बचते हुए लड़नेका प्रबंध करना । **मु० –बाँधना**–मोरचाबंदी करना । **–मारना,–लेना**–मोरचा जीतना ।

मोरचा–पु० (फा०) नमी पहुँचनेसे लोहेपर जमनेवाली पीलापन लिये हुए लाल तह जो उसको धीरे-धीरे खा डालती है, जंग; जमा हुआ मैल; चींटियोंकी एक जाति । **मु० –खाना**–जंग लगना; काम न लेनेसे गुण-शक्तिका घटना, छीजना ।

मोरट–पु० (सं०) ईखकी जड़; प्रसवसे सात रात बादका दूध; अंकोटका फूल; कर्णपुष्प लता ।

मोरटा–स्त्री० (सं०) मूर्वा लता ।

मोरन–स्त्री० सिखरन ।

मोरना*–स० क्रि० दे० 'मोड़ना'; दहीसे मक्खन निकालना ।

मोरनी–स्त्री० मादा मोर; नथमें लटकानेका टिकरा ।

मोरवा–पु० एक वृक्ष, मुष्क; * मोर, मयूर ।

मोराना*–स० क्रि० फिराना; † पत्थरके कोल्हूमें ईखकी अँगारियाँ डालना ।

मोरी–स्त्री० नाली; गंदे पानीकी नाली; * बागडोर; मोरनी ।

मोर्चा–पु० दे० 'मोरचा' ।

मोल–पु० मूल्य, दाम । **–तोल,–भाव**–पु० दाम ठहराने, सौदा पटानेकी बातचीत (करना, होना) । **मु० –करना**–चीजके दाम तै करना; उचितसे अधिक दाम माँगना । **–बढ़ाना**–दाम चढ़ाना । **–लेना**–खरीद लेना; मनुष्यको धन देकर खरीदना, दास बनाना ।

मोलना*–पु० मौलाना, मौलवी । स० क्रि० खरीदना ।

मोलवी–पु० दे० 'मौलवी' ।

मोलाई*–स्त्री० मोल-तोल ।

मोलाना†–स० क्रि० मोल-भाव करना ।

मोल्ड–पु० (अं०) साँचा ।

मोवना–स० क्रि० दे० 'मोना' ।

मोष–पु० (सं०) चोरी; लूट; चोरीका माल; चोर; * मोक्ष–'मोहूँ दीजै मोष ज्यों अनेक अधमन दयो'–वि० ।

मोषक–पु० (सं०) चोर; वध करनेवाला ।

मोषण–पु० (सं०) चुराना; लूटना; काटना; वध ।

मोषयिता(तृ)–पु० (सं०) चोरी करानेवाला; लूट करानेवाला ।

मोसर–अ० बार, दफा । (मीराँ) ।

मोह–पु० (सं०) मूर्च्छा; अज्ञान; अविद्या; देहादिमें आत्मबुद्धि; ममता; भ्रांति; (मोहजनित) दुःख; ३३ संचारी भावोंमेंसे एक; * स्नेह । **–कलिल**–पु० मोहपाश, मायाजाल । **–निद्रा**–स्त्री० अज्ञान और अंधविश्वासमें डूबा रहना । **–निशा**–स्त्री० मोहरात्रि । **–पाश**–पु० मोहका जाल । **–भंग**–पु० भ्रांति-निवारण, अज्ञानका तिरोभाव । **–मंत्र**–पु० मोहमें डालनेवाला मंत्र । **–मुद्गर**–पु० शंकराचार्य-रचित एक स्तोत्र । **–रात्रि**–स्त्री० ब्रह्माके ५० वर्ष बीतनेपर होनेवाला प्रलय; भाद्र-कृष्णा अष्टमीकी रात । **–शास्त्र**–पु० मोह, अज्ञान उत्पन्न करनेवाला शास्त्र, ग्रंथ ।

मोहक–वि० (सं०) मोहजनक; मुग्ध कर लेनेवाला ।

मोहड़ा†–पु० बरतन आदिका मुँह; वस्तुका अगला या ऊपरका भाग; दे० 'मोहरा' ।

मोहतमिम–पु० दे० 'मुहतमिम' ।

मोहताज–वि० दे० 'मुहताज' ।

मोहन–वि० (सं०) मोहनेवाला; मोहकारक । पु० मोहना, लुभाना; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; कृष्णका एक नाम; सुरत, संभोग; (शत्रुको) बेसुध कर देनेवाला मंत्र, एक अभिचार; धतूरेका पौधा । **–भोग**–पु० (हिं०) एक तरहका हलवा । **–माला**–स्त्री० सोनेके दानोंकी बनी हुई माला ।

मोहनक–पु० (सं०) चैत्र मास ।

मोहनदास, कर्मचंद गांधी–पु० दे० 'गांधी' ।

मोहना–स० क्रि० लुभाना; छलना–'मायापति दूतहिं चह मोहा'–रामा० । अ० क्रि० मुग्ध होना ।

मोहनास्त्र–पु० (सं०) मंत्रबलसे चालित एक अस्त्र जो शत्रुको मूर्च्छित कर देता था ।

मोहनी–स्त्री० (सं०) माया; सुंदरी स्त्री; पोईका साग; मोहक प्रभाव, वशीकरण; एक तरहकी जूही । वि० स्त्री० दे० 'मोहिनी' । **मु० –डालना**–मन मोह लेना, जादू करना ।

मोहनीय–वि० (सं०) मोहने योग्य ।

मोहफिल–स्त्री० दे० 'महफ़िल' ।

मोहब्बत–स्त्री० दे० 'मुहब्बत' ।

मोहर–स्त्री० दे० 'मुहर' ।

मोहरा–पु० बरतन आदिका मुँह; किसी चीजका ऊपरका या सामनेका हिस्सा; सेनाका बढ़ाव; सेनाका अग्रभाग; पशुओंके मुँहपर बाँधी जानेवाली जाली; अँगियाका बंद या तनी; बाहर निकलनेका छेद या द्वार; (फा०) शतरंजकी गोटी ।

मोहरी–स्त्री० पाजामेका नीचेकी ओरका मुँह, पायँचा; बरतन आदिका छोटा मुँह; † वह रस्सी जो मरकहे पशुओंके मुँहपर लगाकर पगहेसे जोड़ दी जाती है ।

मोहर्रिर–पु० दे० 'मुहर्रिर' ।

मोहलत–स्त्री० दे० 'मुहलत' ।

मोहल्ला–पु० दे० 'महल्ला' ।

मोहार–पु० शहदकी मक्खियोंका छत्ता; मुहरा, मुँह, द्वार ।

मोहाल–पु० दे० 'महाल' । वि० दे० 'मुहाल' ।

मोहिं, मोहि*–सर्व० मुझे, मुझको (व्रज और अवधी)।

मोहित–वि० (सं०) मोहप्राप्त, मुग्ध; लुभाया हुआ।

मोहिनी–वि० स्त्री० (सं०) मोहने, मन लुभानेवाली। स्त्री० एक अप्सरा; विष्णुका वह नारी-रूप जो समुद्र-मंथनके समय उन्होंने दैत्योंको छलनेके लिए धारण किया था; वैशाख-शुक्ला एकादशी; जूहीका एक भेद; मोहकारक प्रभाव, जादू (आ०)।

मोही(हिन्)–वि० (सं०) मोहकारक; मोहयुक्त; स्नेह करनेवाला; लोभी।

मोहेली–स्त्री० एक तरहकी मछली।

मौंगी*–वि० स्त्री० चुप, मौन।

मौंज–वि० (सं०) मूंजका बना हुआ।

मौंजवान–वि० (सं०) मुंजवान पर्वतपर या उससे उत्पन्न।

मौंजी–स्त्री० (सं०) मूंजकी बनी हुई तीन लड़ोंकी मेखला। **–बंध, –बंधन**–पु० मूंजकी करधनी धारण करना, उपनयन।

मौंड़ा*–पु० लड़का।

मौक़ा–पु० (अ०) घटित होनेका स्थान, घटनास्थल; स्थित होनेका स्थान (मकानका मौका); उपयुक्त काल, अवसर। **–(क़े) बेमौक़े**–अ० चाहे जब, अवसर-अनवसरका विचार किये बिना। मु० **–तकना,–देखना**–अनुकूल अवसरकी राह देखना, घातमें रहना। **–देना**–अवसर, अवकाश देना। **–शर्त है**–समय मिला तो। **–(क़े)पर**–ऐन वक्तपर, आवश्यकताके समय, स्थानपर। **–से**–उपयुक्त समयपर, यथावसर।

मौकुलि–पु० (सं०) कौआ।

मौक़ूफ़–वि० (अ०) रोका, ठहराया हुआ; रद्द किया हुआ; छोड़ा हुआ; नौकरीसे छुड़ाया हुआ; वक्फ़ किया हुआ; अवलंबित, मुनहसर। पु० वह अक्षर जिसपर और जिसके पहलेके अक्षरपर मात्रा (जेर, जबर, पेश) न हो।

मौक़ूफ़ी–स्त्री० (अ०) काम या नौकरीसे अलग किया जाना, बरतरफी।

मौक्तिक–वि० (सं०) मुक्तिके लिए प्रयत्न करनेवाला। पु० मोती। **–तंडुल**–पु० सफेद मक्का। **–दाम(न्)**–पु० मोतियोंकी लड़ी; छंद-विशेष। **–प्रसवा,–शुक्ति**–स्त्री० मुक्ताशुक्ति, सीपी। **–सर**–पु० मोतियोंका हार या लड़ी।

मौक्तिकावलि–स्त्री० मोतियोंकी माला।

मौक्य–पु० (सं०) मूकता, मौन।

मौख–वि० (सं०) मुख-संबंधी। पु० मुखसे होनेवाला पाप (अभक्ष्य-भक्षण, अवाच्य-कथन इ०)।

मौखरि–पु० (सं०) एक प्राचीन हिंदूराजवंश।

मौखर्य–पु० (सं०) मुखरता।

मौखिक–वि० (सं०) मुख-संबंधी, जबानी। **–परीक्षा**–स्त्री० (व्हाइव्हा व्होसी) लिखकर नहीं, जबानी ली जानेवाली छात्रों, पदार्थियों आदिकी परीक्षा।

मौगा–वि० चुप, मौन; मूर्ख। पु० हिंजड़ा, नपुंसक।

मौग्ध्य–पु० (सं०) मुग्धता।

मौघ्य–पु० (सं०) मोघता, निरर्थकता।

मौच–पु० (सं०) केला (फल)।

मौज–स्त्री० (अ०) लहर, हिलोर; मनकी लहर, तरंग; सुख, आनंद; समृद्धि; उमंगमें दिया हुआ दान–'जाँचि निराखर हू चलै, लै लाखनकी मौज'–वि०। मु० **–मारना**–सुख भोगना, ऐश करना; लहरें उठना। **–में आना**–मनमें उठना, मनमें आना; किसीको कुछ देने आदिकी इच्छा होना। **–पानी**–पु० आनन्दपूर्वक किया जानेवाला खान-पान।

मौज़ा–पु० (अ०) स्थान, रखनेकी जगह; गाँव।

मौजी–वि० जो मनमें आये वह कर बैठनेवाला; आनंदी।

मौज़ूँ–वि० (अ०) वजन किया हुआ, तुला हुआ; ठीक, उपयुक्त, यथायोग्य; छंदोबद्ध, छंदके नियमसे शुद्ध (पद्य)।

मौजूद–वि० (फा०) उत्पन्न, सृष्ट; स्थित, विद्यमान; सामने खड़ा, उपस्थित; तैयार; उपलब्ध। **–गी**–स्त्री० उपस्थिति, हाजिरी।

मौजूदा–वि० (अ०) वर्तमान, हालका। **–ज़माना**–पु० वर्तमान काल।

मौजूदात–स्त्री० (अ०) सृष्टि, चराचर जगत्।

मौड़ा*–पु० लड़का।

मौढ्य–पु० (सं०) मूढता; बचपन।

मौत–स्त्री० (फा०) मृत्यु, मरण; शामत, मुसीबत। मु०**–आना**–शामत, आफत आना। **–का घर देख जाना (लेना)**–बार-बार मृत्यु आनेकी आशंका होना। **–का ढलका**–आसन्नमरण, रोगीकी आँखोंसे पानी बहना। **–का तमाचा**–मौतकी याद दिलानेवाली बात। **–का पसीना**–रोगीके माथेसे छूटनेवाला पसीना जो मृत्युका लक्षण माना जाता है। **–का सामना**–भारी खतरा, प्राणभय। **–का सिरपर खेलना**–मौत करीब होना, मरनेके दिन आना। **–की घड़ी**–मृत्युकाल। **–के घाट उतारना**–मार डालना। **–के दिन पूरे करना**–कष्टसे दिन काटना, कठिनाईसे जीना। **–के मुँहमें जाना**–खतरेमें पड़ना, जानकी जोखिम लेना। **–माँगना**–कष्ट, कठिनाइयोंसे ऊबकर मौत मनाना।

मौदक–वि० (सं०) मोदक, मिठाई-संबंधी।

मौदकिक–पु० (सं०) मोदक-विक्रेता, हलवाई।

मौद्गलि–पु० (सं०) कौआ।

मौद्गल, मौद्गल्य–पु० (सं०) मुद्गल मुनिका पुत्र।

मौद्गल्यायन–पु० (सं०) गौतमबुद्धके एक प्रमुख शिष्य।

मौद्गीन–पु० (सं०) मूंग उत्पन्न होने योग्य खेत।

मौद्रिक–वि० (मॉनेटरी) मुद्रा-संबंधी।

मौन–पु० (सं०) मुनिभाव; न बोलना, चुप्पी। **–भंग**–पु० मौन तोड़ना, चुप्पी त्यागकर बोलना। **–मुद्रा**–स्त्री० चुप्पी, मौनभाव। **–व्रत**–पु० न बोलनेका व्रत। **–व्रती(तिन्)**–वि० मौनव्रतधारी।

मौन*–पु० मोयन, घीका मेल।

मौना–पु० टोकरा, पिटारा।

मौनी†–छोटा मौना, पिटारी; स्त्री० (सं०) मौनी अमावास्या। **–अमावास्या**–स्त्री० माघकी अमावास्या।

मौनी(निन्)–वि० (सं०) मौनव्रतधारी। पु० मुनि; मौनव्रतधारी साधु। **–बाबा**–पु० (हिं०) मौनव्रती साधु।

मौनेय–पु० (सं०) एक प्रकारके गंधर्व।

मौर–पु० एक तरहका मुकुट जो ब्याहके अवसरपर वरको पहनाया जाता है; * गरदनका पीठकी ओरका भाग; बौर, मंजरी। वि० (समासमें) श्रेष्ठ, शिरोमणि (सिरमौर)।

मौरजिक–पु० (सं०) मुरज बनानेवाला।

मौरना–अ० क्रि० बौर लगना।

मौरसिरी*–स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

मौरी–स्त्री० छोटा मौर।

मौरूसी–वि० (अ०) विरसेमें मिला हुआ, बाप-दादाका; पैतृक (संपत्ति)। **–काश्तकार**–पु० वह काश्तकार जिसकी जमीनपर उसके वारिसोंको भी वही हक हासिल हो।

मौर्ख्य–पु० (सं०) मूर्खता।

मौर्य–पु० (सं०) भारतका एक प्राचीन राजवंश जो चंद्रगुप्तसे आरंभ हुआ।

मौर्वी–स्त्री० (सं०) धनुष्की डोरी; क्षत्रियोंके धारण करने योग्य मूर्वाकी मेखला।

मौल–वि० (सं०) मूलगत; मूलागत; पुराना, पुश्तैनी (सेवक इ०); परंपरागत (प्रथा)। पु० बड़ा जमींदार ?

मौलवी–पु० (अ०) इसलामी धर्मशास्त्र(शरा)का पंडित; अरबी-फारसीका आलिम; धर्मनिष्ठ (मुसलमान); अरबी-फारसी पढ़ानेवाला। **–गिरी**–स्त्री० मौलवीका काम, अध्यापकी।

मौलश्री–पु० दे० 'मौलसिरी'।

मौलसिरी–स्त्री० एक सदाबहार पेड़ जिसके फूल बड़ी मधुर गंधवाले होते हैं, बकुल; कुरबक।

मौला–पु० (अ०) मालिक; परमेश्वर; बादशाह; आजाद किया हुआ गुलाम; सहायक; पड़ोसी। **–दौला**–वि० भोलाभाला; बेपरवाह; बड़ा दानी।

मौलाना–पु० (अ०) अरबीका बहुत बड़ा विद्वान्, बड़ा मौलवी।

मौलि–पु० (सं०) चोटी; मस्तक; किरीट, मुकुट; अशोक वृक्ष;

स्त्री० दे० 'मौली'। –**चंद्र**–जिसके भालपर चन्द्रमा है, शिव। –**मणि**–पु० मुकुटमें जड़ा हुआ मणि। –**मुकुट**–पु० मुकुट, ताज।

मौलिक–वि० (सं०) मूल-संबंधी, मूलगत; मुख्य; अकुलीन; जो किसीकी छाया, उलथा, अनुकृति आदि न हो। पु० कंद-मूल खोदने, बेचनेवाला।

मौलिकता–स्त्री० (सं०) मौलिक होनेका भाव।

मौली–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

मौली(लिन्)–वि० (सं०) जिसके सिरपर चोटी या मुकुट हो।

मौलूद–वि० (अ०) जन्मप्राप्त (शिशु)। पु० जन्मतिथि; बेटा; दे० 'मौलूद-शरीफ'। –**ख्वाँ**–पु० मौलूदकी कथा कहनेवाला। –**शरीफ़**–पु० मुहम्मदकी जन्मकथा; वह मजलिस जिसमें उक्त कथा कही जाय।

मौल्य–पु० (सं०) मूल्य।

मौषल–वि० (सं०) मुषल-संबंधी; मूसलके आकारका। पु० महाभारतका एक पर्व।

मौष्टा–स्त्री० (सं०) घूँसेबाजी, घूँसोंकी लड़ाई।

मौष्टिक–पु० (सं०) ठग, धूर्त।

मौसम–पु० दे० 'मौसिम'।

मौसर*–वि० दे० 'मुयस्सर'।

मौसल–वि०, पु० (सं०) दे० 'मौषल'।

मौसा–पु० माँकी बहिन अर्थात् मौसीका पति।

मौसिम–पु० (अ०) काल, समय; ऋतु। –(**मे**)**ख़िज़ाँ**–पु० पतझड़। –**गुल**–पु० वसंत ऋतु। –**बहार**–पु० वसंत ऋतु।

मौसिमी–वि० (अ०) जिसका मौसिम हो, (वर्तमान) ऋतुका; मौसिमके कारण होनेवाला (बुखार इ०)। –**फल**–पु० ऋतुफल। –**बुख़ार**–पु० चैत या भादों-कुआरके महीनोंमें होनेवाला बुखार।

मौसिया†–पु० दे० 'मौसा'। वि० दे० 'मौसेरा'।

मौसी–स्त्री० मासी, माँकी बहन।

मौसूफ़–वि० (अ०) वस्फ़ किया हुआ, वर्णित; प्रशंसित। (स्त्री० 'मौसूफ़ा'।)

मौसूम–वि० (अ०) नाम रखा हुआ, नामधारी। (स्त्री० 'मौसूमा'।)

मौसूल–वि० (अ०) वस्ल किया हुआ, मिलान किया हुआ; मिला हुआ। (स्त्री० 'मौसूला'।)

मौसेरा–वि० मौसीके नातेवाला; मौसीसे संबद्ध या उससे उत्पन्न (–भाई, बहिन इ०)।

मौहूर्त–पु० (सं०) मुहूर्त जाननेवाला, ज्योतिषी।

मौहूर्तिक–वि० (सं०) मुहूर्तसे उत्पन्न। पु० मुहूर्तवेत्ता, ज्योतिषी; दक्षकी कन्या मुहूर्तासे उत्पन्न एक देवगण।

म्नात–वि० (सं०) पढ़ा या सीखा हुआ, अभ्यस्त।

म्याऊँ, म्याँव–स्त्री० बिल्लीकी बोली; बिल्ली। मु० –**की ठोर**–बिल्लीका मुँह। – – ० **पकड़ना**–सबसे अधिक खतरेका काम करना। –**म्याँव करना**–डरके मारे धीमे स्वरमें बोलना।

म्यान–पु० (फा०) तलवार आदि रखनेका कोष या गिलाफ, खड्गकोष; * शरीर।

म्याना*–स० क्रि० (तलवार आदिको) म्यानमें करना, रखना। पु० दे० 'मियाना'। वि० बीचका, मझोला; मोटा–'लांबी है न ठेंगनी न पातरी न म्यानी है'–सुंदरदास।

म्यानी–स्त्री० दे० 'मियानी'।

म्युनिसिपल–वि० (अं०) म्युनिसिपलिटी (नगरपालिका)-संबंधी (–कर्मचारी)।

म्युनिसिपलिटी–स्त्री० (अं०) स्थानीय स्वायत्तशासनका अधिकार-प्राप्त नगर या कसबा; ऐसे नगरका प्रबंध करनेवाली कमेटी, नगरसभा, नगरपालिका।

म्यूज़ियम–पु० (अं०) कला, पुरातत्त्व, प्राणिशास्त्र आदिकी निदर्शक वस्तुओंका संग्रहालय, अजायबघर।

म्योँ–स्त्री० दे० 'म्याँव'।

म्योँडी–स्त्री० एक सदाबहार पेड़, निर्गुंडी, सिंदुवार।

म्रक्ष–पु० (सं०) कपट; अपना दोष छिपाना; म्रक्षण।

म्रक्षण–पु० (सं०) तेल; स्नेहन, लेपन; मिलाना, मिश्रण; इकट्ठा करना।

म्रग, म्रग्ग*–पु० मृग।

म्रज्जाद–स्त्री० मर्यादा (चंदबरदाई)।

म्रदिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) मृदुता।

म्रदिष्ठ–वि० (सं०) अतिशय मृदु।

म्रियमाण–वि० (सं०) मरता हुआ; मरा हुआ-सा, मृतप्राय।

म्लात–वि० (सं०) कुम्हलाया हुआ, म्लान।

म्लान–वि० (सं०) कुम्हलाया, मुरझाया हुआ; दुर्बल; मलिन, गंदा। –**मना(नस्)**–वि० खिन्नचित्त, उदास।

म्लानि–स्त्री० (सं०) म्लानता, कांतिक्षय; मलिनता; उदासी।

म्लानिमा–स्त्री० (सं०) कांतिक्षय, प्रकाश या कांतिका धीमा पड़ जाना, मलिनता, उदासी।

म्लायी(यिन्)–वि० (सं०) कुम्हलाता, सूखता, छीजता हुआ।

म्लिष्ट–वि० (सं०) अस्पष्ट वाक्य बोलनेवाला; म्लान। पु० अस्पष्ट वाक्य।

म्लेच्छ–पु० (सं०) वह जो संस्कृत न बोलनेवाला हो, अनार्य; विदेशी; आर्य-सदाचारका पालन न करनेवाला; हिंगुल, शिंगरफ; ताँबा; अनार्य भाषा। वि० पापरत; नीच। –**कंद**–पु० लहसुन। –**जाति**–स्त्री० अनार्य, असंस्कृत-भाषी जाति। –**देश**–पु० अनार्य देश, चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था आदिसे रहित देश। –**भाषा**–स्त्री० अनार्य भाषा; विदेशी भाषा। –**भोजन**–पु० गेहूँ; यावक। –**मंडल**–पु० म्लेच्छ देश। –**मुख**–पु० ताँबा।

म्लेच्छाश–पु० (सं०) गेहूँ।

म्लेच्छित–पु० (सं०) म्लेच्छ भाषा; अपभाषा; परभाषा।

म्हारा*–सर्व० हमारा।

म्हौं–पु० मुँह (व्रज)।

य

य–देवनागरी वर्णमालाका छब्बीसवाँ व्यंजन वर्ण ('ई' और 'अ'के संयोगसे उत्पन्न, कुछके मतसे युक्ताक्षर)। स्पर्श और ऊष्मवर्णोंके बीचका वर्ण होनेसे इसे अंतस्थवर्ण कहते हैं। इसके उच्चारणमें कुछ आंतरिक प्रयत्न तथा कुछ बाह्य प्रयत्न भी होते हैं।

यंत, यंता(तृ)–पु० (सं०) संचालक, शासक; सारथि; महावत।

यंति–स्त्री० (सं०) दमन।

यंत्र–पु० (सं०) अंक या अक्षरोंसे युक्त विशेष आकार या कोष्ठ जिनमें देवताओंका वास माना जाता है (तं०), जंतर; औजार, कल, मशीन; वह कल या कई पुरजोंवाला ढाँचा जिसकी सहायतासे थोड़े समयमें आसानीसे अधिक काम हो जाय; ताला; वीणा; बाजा; वाद्यसे उत्पन्न संगीत; बंदूक; एक विशेष बरतन; नियंत्रण; जाल, फंदा। –**करंडिका**–स्त्री० बाजीगरकी पेटी। –**गृह**–पु० वेधशाला; यंत्रणागृह (प्राचीन कालमें अपराधियोंके लिए होते थे); स्थान या घर जहाँ कल, औजार, मशीनसे काम होता हो, कारखाना। –**चातुर्य**–पु० (टेकनीक) यंत्रादि चलाने, कल-पुरजे आदि ठीक करनेकी विशेष योग्यता, चतुरता। –**चेष्टित**–पु० बाजीगरी। –**जात**–पु० (मशीनरी) विभिन्न यंत्रोंका समूह। –**तक्षा(क्षन्)**–पु० यंत्रनिर्माता। –**तोप**–स्त्री० दे० 'मशीनगन'। –**नाल**–पु० कुएँसे जल निकालनेका नल। –**पुत्रक**–पु०,–**पुत्रिका**–स्त्री० यंत्रादिकी सहायतासे हाथ-पाँव हिलानेवाली पुतली, दे० 'यंत्रमानव'। –**पेषणी**–स्त्री० चक्की। –**प्रवाह**–पु० कृत्रिम स्रोत। –**मंत्र**–पु० टोना, टोटका। –**मातृका**–स्त्री० चौंसठ कलाओंमेंसे एक जिसमें यंत्रका बनाना और उसका व्यवहार करना शामिल है। –**मानव**–पु० (रोबॉट) मनुष्यकी आकृतिका वह यांत्रिक पुतला जो बिजली आदिकी सहायतासे विविध उपयोगी कार्य करता है। –**मार्ग**–पु० नहर। –**राज**–पु० ग्रहों, तारोंकी गतिका सूचक एक यंत्र (ज्यो०)। –**विद्**–पु० (एंजिनियर) यंत्रविद्या जाननेवाला, यंत्रशास्त्रका ज्ञाता।

–विद्या–स्त्री०,–शास्त्र–पु० (एंजिनियरिंग) यंत्र, एंजिन आदि वनाने, चलाने तथा रेलका पुल आदि निर्मित करनेकी विद्या। **–शर–पु०** यंत्रसे चलनेवाला वाण आदि। **–शाला–स्त्री०** वेधशाला; वह स्थान जहाँ मशीनें, कलें और औजार आदि हों। **–सज्ज(–सज्जित) सेना–स्त्री०** (मेकेनाइज्ड आर्मी) टैंकों, कवचित गाड़ियों, मोटरगाड़ियों तथा टेलीफोन आदि आधुनिक यंत्रोंका प्रयोग करनेवाली एवं उनसे लैस सेना। **–समुच्चय–पु०** (प्लांट) किसी कारखाने आदिमें वैठाये गये समस्त यंत्रों, उपकरणों आदिका समूह; उद्योग-यंत्रावली। **–सूत्र–पु०** कठपुतली नचानेका धागा, सूत।

यंत्रक–पु० (सं०) पट्टी, घावपर वाँधनेका कपड़ेका वंधन; शिल्पज्ञ, यंत्रज्ञ; वशमें करनेवाला।

यंत्रक, यंत्रज्ञ–पु० (मेकेनिक) दे० 'यंत्री'।

यंत्रण–पु० (सं०) नियंत्रण; वाँधना; रक्षा करना।

यंत्रणा–स्त्री० (सं०) यातना, पीड़ा, क्लेश। **–प्रिय–पु०** (सैडिस्ट) यंत्रणा देने या देखनेमें सुखका अनुभव करनेवाला; परपीडनरत। **–प्रियता–स्त्री०** (सैडिज्म) यंत्रणा-प्रिय होनेका भाव, परपीडनरति।

यंत्रणी, यंत्रिणी–स्त्री० (सं०) छोटी साली।

यंत्रापीड़–पु० (सं०) एक सान्निपातिक ज्वर जिसमें रक्तका रंग पीला हो जाता है।

यंत्रालय–पु० (सं०) यंत्रशाला; छापाखाना, प्रेस।

यंत्राश–पु० (स०) एक राग।

यंत्रिका–स्त्री० (सं०) पत्नीकी छोटी वहन, छोटी साली; छोटा ताला।

यंत्रित–वि० (सं०) यंत्रयोगसे वँधा हुआ; ताला लगाया हुआ; जकड़ा हुआ, वंद किया हुआ। **–कथ,–वाक्(च्)–वि०** चुप किया हुआ।

यंत्री(त्रिन्)–वि०, पु० (सं०) नियंत्रण करने, बाँधनेवाला; जुता, नधा हुआ; बाजा वजानेवाला; तांत्रिक; जंतरवाला; (मेकेनिक) यंत्रादिकी सहायतासे काम करनेवाला, कारीगर; यंत्र वनाने या मरम्मत करनेवाला, यंत्रक, यंत्रज्ञ।

य–पु० (सं०) गमन करनेवाला; गाड़ी; वायु; यगण; यम; यज्ञ; संयम; भाग; योग; जौ; त्याग; प्रकाश। **–गण–पु०** पिंगलका एक गण जिसमें पहला वर्ण लघु और शेष दोनों गुरु होते हैं।

यक–वि० (फा०) एक; अकेला। **–क़लम–अ०** एक ही वार कलम चलाकर; एक-वारगी। **–चश्म–वि०** काना; एक रुखका (चित्र आदि)। **–चश्मी–वि०** सवको एक निगाहसे देखनेवाला; एकरुखी (तसवीर)। **–ज़द्दी–वि०** एक दादाकी (औलाद)। **–ज़बान–वि०** वातका पक्का; एक भाषाभाषी। (मु०–० होकर कहना–मिलकर एक वात कहना।)**–ज़रबी–वि०** एकनाली (बंदूक या पिस्तौल।)**–जा–वि०** इकट्ठा; मिलाजुला। **–जाइयत – स्त्री०** इकट्ठा होना; एकत्रता। **–जाई–वि०** एकमें मिला हुआ, एकके साथ रहनेवाला। **–जान–वि०** खूब घुलामिला हुआ, एकदिल। **–तरफ़ा–वि०** एक तरफका। **–०राय–स्त्री०** वह राय जो दूसरे पक्षका विचार किये विना दी या कायम की जाय। **–०फैसला–पु०** वह फैसला जो बिना दूसरे पक्षका विचार जाने किया जाय। **–ताई–स्त्री०** अद्वितीयता। **–परा–पु०** एक तरहका सफेद कवूतर। **–फ़र्दी,–फ़सली–वि०** जो सालमें एक ही फसल पैदा करे (जमीन)। **–बग्गा–वि०** एक तरफ, तिरछे चलनेवाला (घोड़ा)। **–बयक–अ०** एकाएक, अचानक। **–बारगी–अ०** अकस्मात्, सहसा, अचानक। **–मंज़िला–वि०** एक मंजिलवाला (मकान)। **–मादरी–वि०** एक माँके (वच्चे)। **–मुश्त–अ०** इकट्ठे, एक वारमें। **–रंग,–रंगा,–रंगी–वि०** एक रंगका, अंदर-बाहरसे एक। **–रुख़ा,–रुख़ी–वि०** एक तरफा, एक रुख़का। **–रू–वि०** एक तरफ लिखा हुआ। **–रोज़ा–वि०** एक दिनका। **–लख़्त–अ०** विलकुल, तमाम। **–लाई–स्त्री०** छोटे अर्जकी, एक पाटकी चादर; नकाब; चोगा। वि० फर्दी (साड़ी या धोती)। **–लोही–वि०** जो लोहेके एक टुकड़ेका बना हो (तलवार, गँड़ासा, कड़ाही आदि)। **–लौता–वि०** एकमात्र (पुत्र)। **–लौती–वि० स्त्री०** एकमात्र (पुत्री)। **–शंबा–पु०** इतवार। **–सर–वि०** अकेला; इकट्ठा, कुल। **–साँ–वि०** एक-सा, एक प्रकारका। **–सानियत,–सानी–स्त्री०** सदृशता, यकसाँ होना। **–सार–वि०** एक जैसा। **–साला–वि०** एक सालका। **–सू–वि०** एक ओर; ठहरा हुआ; एकाग्र। **–सूई–स्त्री०** एकाग्रता; ठहराव; दिलजमई, विश्वास; स्थिति। **मु० –अंगूर सद ज़ंबूर,–अनार सद बीमार**–थोड़ी-सी चीज और बहुत-से चाहनेवाले। **–जान दो कालिब**–अभिन्न-हृदय मित्र। **–न यक**–एक या दूसरा। **–न शुद् दो शुद्**–एक बला तो थी ही, दूसरी और पीछे पड़ी। **–पीरी सद ऐब**–बुढ़ापा सौ बीमारियोंके बरावर है। **यके बाद दीगरे**–एकके वाद दूसरा। **–रियायत क़ाज़ी न सद गवाह**–हाकिमकी रियायत सौ गवाहोंसे वेहतर है। **–सर हज़ार सौदा**–एक जान और हजारों झंझट।

यकायक–अ० एकाएक।

यक़ीन–पु० (अ०) विश्वास; प्रतीति। **मु० –आना**–विश्वास होना। **–करना**–विश्वास करना। **–जानना**–एतवार करना। **–मानो**–सच जानो।

यक़ीनन्–अ० (अ०) अवश्य; नि.संदेह; विश्वासपूर्वक।

यक़ीनी–वि० (फा०) असंदिग्ध।

यकुम–स्त्री० (फा०) महीनेकी पहली तारीख, एक्कम।

यकृत्–पु० (सं०) पेटमें दायीं ओर एक थैली जिसमें भोजनको पचानेवाला रस रहता है, जिगर; यकृत्में होनेवाले रोग (शोथ, वृद्धि आदि)। **–कोष–पु०** यकृत्के ऊपरकी श्लैष्मिक कला।

यकृदात्मिका–स्त्री० (सं०) तिलचटा, चपड़ा।

यकृदुदर–पु० (सं०) यकृत्का बढ़ जाना।

यकृल्लोम–पु० आजके जालौन क्षेत्रका प्राचीन नाम।

यकोला–पु० एक पेड़।

यक्ष–पु० (सं०) एक देवयोनि; कुबेरके सेवक; कुवेर; इंद्रभवन; पूजा; प्रेत, भूत; कुत्ता; यज्ञ। **–कर्दम–पु०** कपूर, अगर, कस्तूरी और कंकोलके संयोगसे बना हुआ अंगराग। **–ग्रह–पु०** एक कल्पित ग्रह; प्रेतबाधा। **–तरु–पु०** बरगद। **–धूप–पु०** पूजाका धूप; देवदारु वृक्षका गोंद। **–नायक,–प,–पति–पु०** कुबेर। **–पुर–पु०** यक्षोंका नगर, अलकापुरी। **–रस–पु०** फूलोंके रससे तैयार की हुई शराव। **–राज–पुं०** कुवेर। **–रात्रि–स्त्री०** दीपावली। **–वित्त–पु०** वह पुरुष जो यक्षकी तरह धनकी केवल रखवाली करता हो, उसका प्रयोग न करता हो। **–स्थल–पु०** एक पौराणिक तीर्थ।

यक्षण–पु० (सं०) पूजन; भक्षण।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति–पु० (सं०) कुबेर।

यक्षामलक–पु० (सं०) पिंडखजूर।

यक्षावास–पु० (सं०) यक्षोंका वासस्थान; वटवृक्ष।

यक्षिणी, यक्षी–स्त्री० (सं०) यक्षकी स्त्री; कुबेरकी स्त्री; दुर्गाकी एक अनुचरी।

यक्षु–पु० (सं०) यज्ञ करनेवाला; एक प्राचीन जनपद; यक्षु जनपदका निवासी।

यक्षेंद्र–पु० (सं०) कुबेर।

यक्षेश्वर–पु० (सं०) कुवेर।

यक्ष्म–पु० (सं०) दे० 'यक्ष्मा'; 'यक्ष्मन्'का समासगत रूप। **–ग्रस्त–वि०** क्षय रोगसे ग्रस्त। **–ग्रह–पु०** क्षयरोग। **–घ्नी–स्त्री०** दाख, अंगूर।

यक्ष्मा–पु० (ट्यूबर क्यूलोसिस) फेफड़े, हड्डी या शरीरके अन्य अंगमें शलाकाकी शक्लके वैक्टीरिया 'बैसिलाई' द्वारा उत्पन्न रोग। ये वैक्टीरिया जो वायु या भोजनके माध्यमसे शरीरके अन्दर प्रवेश कर जाते हैं, शरीरके ऊतकोंका विनाश करने लगते हैं। मृत वैक्टीरिया 'ट्यूवर क्युलिन' विष उत्पन्न करते हैं जिसके कारण आक्रांत व्यक्ति अत्यधिक बीमार हो जाता है।

यक्ष्मा(क्ष्मन्)–पु० (सं०) क्षयरोग, तपेदिक।

यक्ष्मी(क्ष्मिन्)–वि०, पु० (सं०) क्षयरोगी।

यख़–स्त्री० (फा०) सख्त बरफ; गिरकर जमी हुई बरफ; पालेसे जमा हुआ पानी।

यख़नी–स्त्री० (फा०) शोरबा; उबले हुए मांसका रसा ।

यगानत, यगानगी–स्त्री० (फा०) समीपता; निकटका संबंध; अनोखापन; सहयोग ।

यगाना–वि० (फा०) आत्मीय; अकेला; अद्वितीय ।

यगूर–पु० एक वृक्ष ।

यग्य*–पु० दे० 'यज्ञ' ।

यच्छ*–पु० दे० 'यक्ष' ।

यच्छिनी*–स्त्री० दे० 'यक्षिणी' ।

यजंत–पु० (सं०) यज्ञकर्ता ।

यजत–पु० (सं०) ऋत्विक्; एक वैदिक ऋषि; शिव; चंद्रमा । वि० पूज्य; पवित्र; ईश्वरीय ।

यजत्र–पु० (सं०) अग्निहोत्री; यज्ञ करनेवाला ।

यजन–पु० (सं०) यज्ञ करना; यज्ञका स्थान । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० यज्ञ करनेवाला ।

यजमान–पु० (सं०) यज्ञ करनेवाला; दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणोंसे धार्मिक कृत्य करानेवाला; महादेवका एक विग्रह स्वरूप; परिवार या जातिका मुखिया । **–लोक**–पु० यज्ञ करनेवालोंको मृत्युके बाद मिलनेवाला लोक ।

यजमानक–पु० (सं०) दे० 'यजमान' ।

यजमानी–स्त्री० यजमानोंका वासस्थान; यजमानका भाव या धर्म; विवाह आदिके अवसरोंपर पुरोहित, नाई, बारीके काम करनेका अधिकार या क्षेत्र; पुरोहिती ।

यजाक–वि० (सं०) उदार; पूजक ।

यजि–पु० (सं०) यज्ञ; यज्ञकर्ता ।

यजी(जिन्)–पु० (सं०) यज्ञ करनेवाला; पूजा करनेवाला ।

यज़ीद–पु० (अ०) माबियाका लड़का, उम्मिया खानदानका दूसरा खलीफा जिसने करबलाका युद्ध कराया और जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए ।

यजुः(स्)–पु० (सं०) वेदके गद्य मंत्र (जिन मंत्रोंमें चरण या अवसान-विषयक कोई नियम न हों वे यजु हैं), दे० 'यजुर्वेद' । **–श्रुति**–स्त्री० यजुर्वेद ।

यजुर्विद्, यजुर्वेदी(दिन्)–पु० (सं०) यजुर्वेद जाननेवाला ।

यजुर्वेद–पु० (सं०) चारों वेदोंमेंसे एक, वह वेद जिसमें यजुओं (गद्य मंत्रों)का संग्रह है (इसमें विशेषतया यज्ञकी क्रियाओं और उसके भेद-प्रभेदोंका विवरण और प्रतिपादन है । इसके दो भेद हैं–कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद या तैत्तिरीय और वाजसनेयी संहिता । यजुर्वेदके दो ब्राह्मण हैं–शुक्लका शतपथ ब्राह्मण और कृष्णका तैत्तिरीय ब्राह्मण) ।

यजुर्वेदी–वि० दे० 'यजुर्वेदीय' ।

यजुर्वेदीय–वि० (सं०) यजुर्वेदका ज्ञाता; यजुर्वेदके अनुसार कृत्य करनेवाला (ब्राह्मण); यजुर्वेद-संबंधी ।

यजुष्पति–पु० (सं०) विष्णु ।

यजुष्पात्र–पु० (सं०) एक यज्ञपात्र ।

यजूदर–पु० (सं०) ब्राह्मण ।

यज्ञ–पु० (सं०) हवन-पूजनयुक्त एक वैदिक कृत्य, क्रतु, मख, याग; लोकहितके विचारसे की हुई पूजा; अनुष्ठान, होम; यज्ञ-देवता; विष्णु; अग्नि । **–कर्मा(मन्)**–वि० यज्ञमें लगा हुआ । **–कल्प**–वि० यज्ञतुल्य । पु० विष्णु । **–काम**–वि० यज्ञ करनेका इच्छुक । **–काल**–पु० यज्ञका शास्त्रनिर्दिष्ट समय; पूर्णमासी । **–कीलक**–पु० यज्ञका बलिपशु बाँधनेका खूँटा । **–कुंड**–पु० हवन करनेका कुंड, अनलकुंड । **–कृत्**–वि० यज्ञ करने, करानेवाला । **–केतु**–पु० एक राक्षस । **–कोप**–वि० यज्ञसे द्वेष रखनेवाला । पु० एक राक्षस । **–क्रतु**–पु० विष्णु, हवन-महोत्सव । **–क्रिया**–स्त्री० यज्ञके कृत्य । **–गम्य**–वि० यज्ञद्वारा प्राप्य (विष्णु) । **–गिरि**–पु० एक पर्वत । **–गुह्य**–पु० विष्णु । **–घ्न,–द्रुट(ह्)**–वि० यज्ञविध्वंसक । पु० राक्षस । **–तंत्र**–पु० यज्ञका विस्तार । **–तुरंग**–पु० यज्ञका घोड़ा । **–त्राता(तृ)**–पु० यज्ञरक्षक; विष्णु । **–दक्षिणा**–स्त्री० शुल्क, यज्ञ करानेके उपलक्ष्यमें ब्राह्मणोंको दिया हुआ धन । **–दत्तक**–पु० यज्ञके प्रसादस्वरूप प्राप्त पुत्र । **–द्वेषी(षिन्)**–वि० यज्ञविरोधी । (स्त्री० 'यज्ञद्वेषिणी' ।) **–द्रव्य**–पु० यज्ञकी सामग्री । **–धर**–पु० यज्ञ-धारणकर्ता पुरुष, विष्णु । **–धूम**–पु० होमका धुआँ । **–नेमि**–पु० कृष्णका एक नाम । **–पति**–पु० यजमान; विष्णु । **–पत्नी**–स्त्री० यजमानकी स्त्री; यज्ञकी स्त्री, दक्षिणा । **–पदी**–स्त्री० यज्ञमें स्वस्थानसे एक-दो पग बढ़नेकी क्रिया । **–पर्वत**–पु० पुराण-वर्णित एक पर्वत । **–पशु**–पु० यज्ञका बलिपशु (घोड़ा, बकरा) । **–पात्र,–भांड,–भाजन**–पु० यज्ञमें काम आनेवाले बरतन । **–पुरुष**–पु० विष्णु । **–फलद**–पु० यज्ञका फल देनेवाले, विष्णु । **–बंधु**–पु० यज्ञमें सहयोग करनेवाला । **–बाहु**–पु० अग्निका एक नाम । **–भाग**–पु० यज्ञका अंश; (यज्ञांश पानेवाले) देवता । **–०भुक्(ज्)**–पु० देवता । **–भावन**–पु० विष्णु । **–भुक्(ज्)**–पु० देवता । **–भूमि**–स्त्री० यज्ञका स्थान । **–भूषण**–पु० कुश । **–भृत्**–वि० यज्ञका आयोजन करनेवाला । पु० विष्णु । **–भोक्ता(क्तृ)**–पु० विष्णु । **–मंडप**–पु० यज्ञका मंडप । **–मंडल**–पु० यज्ञके लिए घेरा हुआ स्थान । **–मंदिर**–पु० यज्ञशाला । **–महोत्सव**–पु० यज्ञका विशाल समारोह । **–मुख**–पु० यज्ञका आरंभ । **–मूर्ति**–पु० विष्णु । **–यूप**–पु० यज्ञका बलिपशु बाँधनेका खंभा, यूपकाष्ठ, यज्ञस्तंभ । **–योग**–पु० विष्णु । **–योग्य**–वि० यज्ञके योग्य । पु० गूलरका पेड़ । **–रस**–पु० सोम । **–राट्(ज्)**–पु० चंद्रमा । **–रेत(स्)**–पु० यज्ञका बीज, सोम । **–लिंग**–पु० विष्णु । **–लिट्(ह्)**–पु० यज्ञका आस्वादनकर्ता, पुरोहित । **–वराह**–पु० विष्णुका शूकर-अवतार । **–वर्द्धन**–वि० यज्ञका विस्तार, प्रसार करनेवाला । **–वल्क**–पु० एक ऋषि, याज्ञवल्क्यके पिता । **–वल्ली**–स्त्री० सोमलता । **–वाट**–पु० वह स्थान जो यज्ञके लिए घेरा और तैयार किया गया हो । **–वाह**–वि० यज्ञका संचालन करनेवाला । **–वाहन**–पु० यज्ञ करनेवाला; ब्राह्मण; विष्णु; शिव । **–वाही(हिन्)**–वि० दे० 'यज्ञवाह' । **–विभ्रंश**–पु० यज्ञकी विफलता । **–विभ्रष्ट**–वि० यज्ञमें अकृतकार्य, विफल होनेवाला । **–वीर्य**–पु० विष्णु । **–वृक्ष**–पु० बरगद । **–वेदिका**–स्त्री० यज्ञकी वेदी । **–वेदी**–स्त्री० यज्ञकी वेदिका । **–व्रत**–वि० यज्ञ करनेवाला; यज्ञके नियमोंका पालन करनेवाला । **–शत्रु**–पु० राक्षस, असुर । **–शरण**–पु० यज्ञमंडप, वह कुशसे छाया हुआ स्थान जिसके नीचे यज्ञकार्य संपन्न होता था । **–शाला**–स्त्री० यज्ञ करनेका स्थान, यज्ञभूमि । **–शास्त्र**–पु० मीमांसा । **–शिष्ट,–शेष**–पु० यज्ञका अवशेष । **–शील**–वि० बार-बार या उत्साहसे यज्ञ करनेवाला । **–श्रेष्ठा**–स्त्री० सोमलता । **–संभार**–पु० यज्ञके लिए आवश्यक सामग्री । **–संशित**–वि० यज्ञसे उत्साहित । **–संस्तर**–पु० यज्ञभूमि । **–संस्था**–स्त्री० यज्ञका मूल रूप । **–सदन**–पु० यज्ञमंडपका स्थान, यज्ञभूमि । **–साधन**–पु० यज्ञरक्षक; विष्णु । **–सार**–पु० गूलरका पेड़; विष्णु । **–सिद्धि**–स्त्री० यज्ञकी समाप्ति । **–सूत्र**–पु० जनेऊ, यज्ञोपवीत । **–सेन**–पु० विष्णु; एक दानव; एक द्रुपदनरेश । **–स्थाणु**–पु० दे० 'यज्ञयूप' । **–हन, हा(न्)**–पु० शिव । **–हृदय**–पु० विष्णु । **–होता(तृ)**–पु० यज्ञमें देवताओंका आवाहन करनेवाला; मनुका एक पुत्र ।

यज्ञक–पु० (सं०) यज्ञकर्ता; यज्ञ ।

यज्ञांग–पु० (सं०) यज्ञ-सामग्री; गूलर; खदिर; एक हिरन, कृष्णसार; विष्णु । **–योनि**–स्त्री० यज्ञ-सामग्रीका उत्पत्ति-स्थान ।

यज्ञांगा–स्त्री० (सं०) सोमलता ।

यज्ञागार–पु० (सं०) यज्ञस्थान, यज्ञशाला ।

याज्ञात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु ।

यज्ञाधिपति–पु० (सं०) यज्ञके स्वामी, विष्णु, यज्ञपुरुष ।

यज्ञायज्ञिय–पु० (सं०) अग्निष्टोममें गाया जानेवाला एक साम; एक प्रकारका साम ।

यज्ञारि–पु० (सं०) शिव; राक्षस ।

यज्ञावयव–पु० (सं०) विष्णु ।

यज्ञाशन–पु० (सं०) देवता ।

यज्ञिक–पु० (सं०) यज्ञके प्रसादस्वरूप प्राप्त पुत्र; पलाश ।

यज्ञिय–वि० (सं०) यज्ञ-संबंधी या यज्ञके उपयुक्त; यज्ञका मंगलकर्ता; कर्मकांडके लिए उपयोगी; पवित्र । पु० देवता; द्वापर युग । **–देश**–पु० होमादिके लिए उपयुक्त देश, भारतवर्ष;

कृष्णसार मृगकी वासभूमि ।

यज्ञीय–वि० (सं०) यज्ञ-संबंधी; यज्ञका । पु० गूलरका पेड़ । –**ब्रह्मपादप**–पु० विकंकत वृक्ष ।

यज्ञेश–पु० (सं०) विष्णु; सूर्य ।

यज्ञेश्वर–पु० (सं०) विष्णु ।

यज्ञेष्ट–पु० (सं०) रोहित घास । वि० जिसे यज्ञ इष्ट हो ।

यज्ञोपकरण–पु० (सं०) यज्ञमें काम आनेवाले पात्रादि ।

यज्ञोपवीत–पु० (सं०) यज्ञ द्वारा संस्कार किया हुआ उपवीत, यज्ञसूत्र, जनेऊ । –**संस्कार**–पु० उपनयन-संस्कार, जनेऊ पहनानेका संस्कार (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यके लिए भिन्न-भिन्न वयःकाल निर्द्धारित किया गया है ।)

यज्य–पु० (सं०) यजन करने योग्य, पूजनीय । पु० यज्ञ ।

यज्या–स्त्री० (सं०) यज्ञ ।

यज्यु–पु० (सं०) यजमान; यजुर्वेदीय ब्राह्मण । वि० यज्ञ करनेवाला; यजन, पूजन करनेवाला; भक्त, श्रद्धालु ।

यज्वा(ज्वन्)–पु० (सं०) यज्ञ करनेवाला; विष्णु ।

यडर–पु० एक पक्षी ।

यतः(तस्)–अ० (सं०) क्योंकि, चूंकि ।

यत–वि० (सं०) संयत, मर्यादित; दमन किया हुआ; प्रतिबद्ध । –**चित्त**,–**मना(नस्)**,–**मानस**–वि० जिसका मन नियंत्रित हो । –**व्रत**–वि० संयमी ।

यतन–पु० (सं०) यत्न करना ।

यतनीय–वि० (सं०) यत्न करने योग्य ।

यतमान–वि० (सं०) यत्न करता हुआ, कोशिश में लगा हुआ, चेष्टाशील ।

यतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) संयतमना, संयमी ।

यति–पु० (सं०) जितेंद्रिय, विरक्त होकर मोक्षके लिए प्रयत्न करनेवाला; संन्यासी; योगी; श्वेतांवर जैन साधु; ब्रह्माका एक पुत्र; विश्वामित्रका एक पुत्र; नहुषका एक पुत्र; ब्रह्मचारी; छप्पयका एक भेद । स्त्री० गीत या छंदमें विश्रामका स्थान; रोक, रुकावट; मनोविकार; निर्देशन; एक राग; विधवा; संधि; मृदंगका एक प्रबंध । –**चांद्रायण**–पु० यतियोंका विशेप चांद्रायण व्रत । –**धर्म**–पु० सन्न्यास । –**पात्र**–पु० यतिका भिक्षापात्र । –**भंग**–पु० छंदमें यति निश्चित स्थानपर न होनेका दोष । –**भ्रष्ट** –पु० यतिभंग दोषसे युक्त छंद । –**राज**–पु० रामानुजाचार्य । –**सांतपन**–पु० पंचगव्य और कुश-जल पीकर पालन किया जानेवाला तीन दिनोंका एक व्रत; सात दिनोंका एक व्रत (जावाल) ।

यतित–वि० (सं०) चेष्टित ।

यतित्व–पु० यति होनेका भाव ।

यतिनी–स्त्री० (सं०) विधवा ।

यती(तिन्)–पु० (सं०) सन्न्यासी ।

यतीम–पु० (अ०) बे माँ-वापका वच्चा, अनाथ । वि० बिना माँ-वापका (वच्चा); वेजोड़ । –**ख़ाना**–पु० अनाथालय ।

यतुका, यतूका–स्त्री० (सं०) चकवँड़का पौधा ।

यतेंद्रिय–वि० (सं०) जितेंद्रिय, संयतेंद्रिय ।

यत्–सर्व० (सं०) जो । –**किंचित्**–अ० थोड़ा-सा, कुछ; बहुत कम । –**परो नास्ति**–जिससे उत्तम नहीं है, नितांत, अतिशय ।

यत्त–वि० (सं०) चेष्टित; सतर्क; तुला हुआ; प्रयत्नशील ।

यत्न–पु० (सं०) उद्योग, उपाय; सार-सम्हाल, रोगशांतिका उपाय, उपचार; न्यायके २४ गुणोंमेंसे एक जिसके तीन प्रकार हैं–प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवनयोनि । –**पर**–वि० दे० 'यत्नवान्' । –**पूर्वक** –अ० चेष्टापूर्वक, उपाय द्वारा । –**शील**–वि० सचेष्ट, आग्रही, अध्यवसायी ।

यत्नवती–वि० स्त्री० (सं०) यत्नमें लगी हुई ।

यत्नवान्(वत्)–वि० (सं०) प्रयत्नशील, यत्नमें लगा हुआ ।

यत्र–अ० (सं०) जहाँ । –**तत्र**–अ० जहाँ-तहाँ; जगह-जगह ।

यत्रु–स्त्री० (सं०) छाती और गलेके बीचकी मंडलाकार हड्डी, हँसली ।

यथांश–वि० (सं०) भागके अनुकूल; यथायोग्य ।

यथा–अ० (सं०) जिस प्रकार; जैसे । –**कथित**–वि० जैसा पहले कहा गया हो । –**कर्तव्य**–अ० कर्तव्यके अनुसार । –**कर्म**–अ० कर्मानुसार । –**काम**–अ० यथेच्छ, मनमाने । वि० जो इच्छाके अनुकूल हो । –**कामी(मिन्)**,–**कारी(रिन्)**–वि० स्वेच्छाचारी, मनमाना करनेवाला । –**काम्य**–अ० इच्छानुकूल । –**काय**–अ० कायाके अनुकूल । –**कार्य**–अ० कार्यके अनुकूल, जैसा करना चाहिये । –**काल**–अ० उचित समयपर । वि० समयके उपयुक्त । –**कुल**–वि० कुलानुसार । –**कृत**–वि० जैसा पहले किया गया, वैसा ही । –**क्रम**–अ० क्रमके अनुसार । पु० यथासंख्य नामक अर्थालंकार । –**क्षम**–अ० शक्तिभर । –**जात**–वि० मूर्ख; नीच । –**ज्ञान**–अ० जहाँतक मालूम हो । –**तथ**,–**तथ्य**–वि० ज्योंका त्यों, हूबहू, जैसा हुआ हो । –**तृप्ति**–अ० जी भरकर । –**दिक्(श्)**,–**दिश**–अ० चारों ओर । –**दृष्ट**–वि० जैसा देखा हो । –**नियम**–वि० नियमानुसार । –**निर्दिष्ट**–वि० जैसा निर्देश दिया गया हो । –**न्याय**–अ० न्यायानुसार । वि० न्यायानुकूल । –**पूर्व**–वि० पहलेका-सा, ज्योंका त्यों । अ० पहलेकी तरह । –**प्रयोग**–अ० प्रयोगके अनुसार । –**भाग**–वि० जितना भाग है उतना, यथोचित । अ० भागके अनुसार । –**बुद्धि**,–**मति**–अ० समझके अनुसार । –**मुखीन**–वि० जो सामने देख रहा हो । –**मूल्य**–वि० मूल्यके अनुरूप । –०**शुल्क**–पु० दे० 'मूल्यानुपाती शुल्क' (ऐड वेलोरम ड्यूटी) । –**यथ**–अ० यथोचित रूपसे । वि० यथोचित । – –**योग्य**–वि० जैसा चाहिये वैसा, उपयुक्त । –**रीति**–वि० प्रचलित प्रथाके अनुकूल । –**रुचि**–वि० इच्छाके अनुरूप । अ० इच्छानुसार । –**लब्ध**–वि० प्राप्तिके अनुरूप, यथालाभ । –**लाभ**–वि० जो मिले उसीके अनुरूप । –**वत्**–वि० ज्योंका त्यों । अ० जैसा चाहिये उसी तरह । –**विधि**–अ० विधिपूर्वक, जैसी विधि हो उसीके अनुसार । –**विहित**–वि० शास्त्रानुमोदित । –**शक्ति**–अ० शक्तिके अनुसार, शक्तिभर । –**शक्य**–अ० दे० 'यथाशक्ति' । –**शास्त्र**–अ० शास्त्रानुसार । वि० जैसा शास्त्रमें दिया हो वैसा । –**शीघ्र**–अ० जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी । –**श्रुति**–वि० वेदानुसार । –**संख्य**–पु० एक अर्थालंकार जहाँ कुछ वस्तुओंका वर्णन एक क्रमसे हो और आगे चलकर उनसे संबंधित वस्तुओंका वर्णन भी उसी क्रमसे किया जाय । –**संभव**,–**साध्य**–अ० जो हो सके, भरसक, सामर्थ्यभर । –**समय**–अ० निश्चित समयपर । –**स्थान**–अ० उचित स्थानपर । –**स्थिति**–अ० (ऐज दि केस मे बी) जैसी स्थिति हो,उसीके अनुसार ।–०**समझौता**–पु० (स्टैंडस्टिल ऐग्रीमेंट) वर्तमान या विद्यमान स्थितिको ज्योंका त्यों बनाये रखनेवाला समझौता ।

यथागत–वि० (सं०) मूर्ख ।

यथानुपूर्व–अ० (सं०) परंपराके अनुसार, क्रमानुसार ।

यथाभिप्रेत, यथाभिलषित, यथाभीष्ट–वि० (सं०) इच्छाके अनुरूप । अ० इच्छानुसार ।

यथारथ*–वि० दे० 'यथार्थ' ।

यथार्थ–वि० (सं०) सत्य, प्रकृत, उचित । –**में**–दरअसल, वस्तुतः । –**वाद**–पु० (रीयलिज्म) दार्शनिकोंका यह सिद्धांत कि दुनियामें भौतिक पदार्थोंका स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है । (सोचने या विचार करनेवाले मन, जीवात्माके चिंतनपर ही उनकी सत्ता अवलंवित नहीं है); कितने ही साहित्य-सेवियोंका यह सिद्धांत कि गुण-दोषमय इस संसारमें हमें जो वस्तुएँ जिस रूपमें देख पड़ती हैं, उनका उसी रूपमें चित्रण करना चाहिये, आदर्शवादका पुट उसमें न दिया जाय । –**वादी**–वि० (रीयलिस्ट) यथार्थवादका अनुयायी ।

यथार्थतः(तस्)–अ० (सं०) वस्तुतः, यथानुरूप ।

यथार्ह–वि० (सं०) यथायोग्य, उपयुक्त । –**वर्ण**–पु० दूत ।

यथावकाश–अ० (सं०) अवसरके अनुसार ।

यथावसर–अ० (सं०) अवसरके अनुसार, जैसा अवसर हो, उसीके अनुरूप ।

यथास्व–वि० (सं०) यथार्थ ।

यथेच्छ–वि० (सं०) इच्छानुसार, मनमाना ।

यथेच्छाचार–पु० (सं०) स्वेच्छाचार, मनमाना काम करना ।

यथेच्छाचारी(रिन्)–वि० (सं०) स्वेच्छाचारी, अपने मनकी

करनेवाला ।

यथेप्सित–वि० (सं०) यथेच्छ ।

यथेष्ट–वि० (सं०) जितना चाहिये उतना; काम चलने लायक ।

यथेष्टाचरण, यथेष्टाचार–पु० (सं०) स्वेच्छाचार, मनमाना आचरण करना, जैसा पसंद हो वैसा आचरण करना ।

यथेष्टाचारी(रिन्)–वि० (सं०) मनमाना काम करनेवाला ।

यथोक्त–वि० (सं०) जैसा कहा गया हो, वैसा; कथानानुसार । **–कारी(रिन्)**–वि० शास्त्रानुकूल काम करनेवाला; आज्ञापालक ।

यथोचित–वि० (सं०) जैसा चाहिये वैसा, समुचित ।

यथोपयुक्त–वि० (सं०) यथायोग्य, यथोपयोगी ।

यद–पु० (अ०) हाथ ।

यदपि*–अ० दे० 'यद्यपि' ।

यदा–अ० (सं०) जब, जिस समय; जहाँ । **–कदा**–अ० जब-तब, कभी-कभी ।

यदि–अ० (सं०) अगर, जो (संशय और अपेक्षा-व्यंजक पद) । **–च,–चेत्**–अ० यद्यपि, अगरचे ।

यदीय–वि० (सं०) जिसका, जिसकी ।

यदु–पु० (सं०) राजा ययातिका ज्येष्ठ पुत्र; यदुवंश; दशार्ह देश । **–कुल**–पु० दे० 'यदुवंश' । **–नंदन,–नाथ,–पति,–भूप,–राज**–पु० कृष्ण । **–राई***–पु० यदुराज, कृष्ण । **–वंश**–पु० राजा यदुका कुल । **–वंशी(शिन्)**–पु० यदुकुलमें उत्पन्न पुरुष, यादव । **–वर,–वीर**–पु० दे० 'यदुराई' ।

यदूत्तम–पु० (सं०) कृष्ण ।

यदृच्छया–अ० (सं०) मनमाने तौरपर, बिना किसी नियम या कारणके; अकस्मात्, दैवयोगसे ।

यदृच्छयाभिज्ञ–पु० (सं०) साक्षी जो घटनाके समय अकस्मात् जा पहुँचा हो ।

यदृच्छा–स्त्री० (सं०) स्वेच्छाभाव, मनमानापन; आकस्मिक संयोग; स्वतंत्रता । **–प्रवृत्त**–वि० स्वतः नियुक्त, लगा हुआ, आसक्त । **–लब्ध**–वि० दैवयोगसे उपलब्ध, अनायास प्राप्त । **–लाभसंतुष्ट**–वि० दैवयोगसे जो कुछ मिल जाय उसीमें संतोष माननेवाला । **–शब्द**–पु० व्यक्ति विशेषका स्वतंत्र नाम । **–संवाद**–पु० संयोगसे हुई भेंट या बातचीत ।

यदृच्छिक–पु० (सं०) वह पुत्र जो गोद लिये जानेके लिए इच्छुक हो ।

यद्यपि–अ० (सं०) अगरचे, यदि च ।

यद्वा–अ० (सं०) अथवा, अगरचे । **–तद्वा**–अ० जब-तब; जैसे-तैसे । पु० टालमटोल ।

यननूँ*–सर्व० इनको ।

यम–पु० (सं०) मृत्युके देवता जिनकी संख्या चौदह मानी गयी है; यमराज; जुड़वाँ संतान, यमज; संयम; निग्रह; एक मंत्रद्रष्टा ऋषि; कौआ; शनि; विष्णु; वायु; दोकी संख्या; सूर्य 'यमने तमकी बाँह गही है'–बदरीनाथ भट्ट । **–कात,–कातर**–पु० यमका छुरा; खाँडा; एक प्रकारकी तलवार । **–कीट**–पु० केंचुवा; घुन । **–कील**–पु० विष्णु । **–घंट**–पु० दीपावलीका दूसरा दिन, कार्त्तिक-शुक्ला प्रतिपदा; एक दुष्ट योग जिसमें शुभ काम वर्जित हैं । **–चक्र**–पु० यमराजका शस्त्र । **–ज**–वि० जुड़वाँ । पु० वह सदोष घोड़ा जिसका एक ओरका अंग हीन, दुर्बल और दूसरी ओर वही अंग ठीक हो; अश्विनीकुमार; जुड़वाँ बच्चे । **–जयी(यिन्)**–वि० यमको जीतनेवाला । **–जात**–वि० पु०, दे० 'यमज' । **–जातना***–स्त्री० दे० 'यमयातना' । **–जित्**–वि० मृत्युको जीतनेवाला, मृत्युंजय । **–तर्पण**–पु० यमकी तृप्तिके निमित्त किया जानेवाला एक यज्ञ । **–दंड**–पु० यमराजका दंड, कालदंड; मनुष्यके मस्तकपरकी दो प्रकारकी रेखाओंमेंसे एक । **–दंष्ट्रा**–स्त्री० यमकी दाढ़; एक विष; रोग और मृत्युके विशेष भययुक्त क्वार, कातिक और अगहन महीनोंके कुछ दिन (आ० वे०) । **–दुतिया***–स्त्री० दे० 'यमद्वितीया' । **–दूत,–दूतक**–पु० कौआ; यमके दूत । **–दूतिका**–स्त्री० इमली । **–देवता**–पु० भरणी नक्षत्र जिसके देवता यम हैं । **–द्रुम**–पु० सेमरका पेड़ । **–द्वार**–पु० यमराजके घरका दरवाजा । **–द्वितीया**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला द्वितीया, भैयादूज । **–धर,०–धार**–पु० दोनों ओर धारवाली तलवार या कटारी । **–धानी**–स्त्री० यमका निवास-स्थान । **–नक्षत्र**–पु० भरणी नक्षत्र । **–नाथ,–नाह,***–पु० यमोंके स्वामी, धर्मराज । **–पद**–पु० वह पद जिसकी आवृत्ति हुई हो । **–पाश**–पु० यमकी फाँस । **–पुर**–पु० यमका स्थान, यमलोक । **–पुरी**–स्त्री० यमनगरी, यमलोक । (मु० –० **पहुँचाना**–मार डालना, प्राण ले लेना) । **–पुरुष**–पु० यमराज; यमके दूत । **–प्रस्थ**–पु० एक प्राचीन नगर । **–प्रिय**–पु० वटवृक्ष । **–भगिनी**–स्त्री० यमुना नदी । **–यातना**–स्त्री० नरककी पीड़ा; अंतकालकी पीड़ा । **–रथ,–वाहन**–पु० भैंसा । **–राज**–पु० यमोंका स्वामी, धर्मराज । **–राज्य,–राष्ट्र,–सदन**–पु० यमलोक । **–ल**–पु० दे० क्रममें । **–वरा**–वि० स्त्री० आजन्म अविवाहिता, चिरकुमारी । **–व्रत**–पु० यमके समान निष्पक्ष राजधर्म, राजाका दंड, नियम । **–सभा**–स्त्री० यमराजकी कचहरी । **–सू**–पु० सूर्य । स्त्री० वह स्त्री जिसके जुड़वाँ बच्चे हों । **–सूर्य**–पु० ऐसे दो कमरोंवाला मकान जिनमें एक कमरेका रुख उत्तर हो और दूसरेका पश्चिम । **–स्तोम**–पु० एक दिनमें होनेवाला एक यज्ञ । **–स्वसा(सृ)**–स्त्री० यमुना नदी; दुर्गा । **–हंता(तृ)**–पु० कालका नाश करनेवाला, शिव ।

यमक–पु० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें एक ही शब्द या शब्दखंड –अगर सार्थक हो तो भिन्न अर्थोंमें एक ही पद्यमें अनेक बार प्रयुक्त होता है; एक वृत्त; सेनाका एक व्यूह; यमज; संयम । वि० जुड़वाँ; दोहरा ।

यमदग्नि–पु० (सं०) दे० 'जमदग्नि' ।

यमन–(अ०) अरबका एक प्रदेश । पु० निरोध करना; बंधन; विराम देना, रोकना; शासन; यमराज । वि० (सं०) नियंत्रण करनेवाला ।

यमनकल्यान–पु० दे० 'एमनकल्याण' ।

यमनिका–स्त्री० (सं०) दे० 'यवनिका' ।

यमनी–स्त्री० एक कीमती पत्थर, रत्न (यमनकी) ।

यमयन–पु० (सं०) शिव ।

यमया–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्रयोग ।

यमल–वि० (सं०) जो जोड़ेमें हो; जुड़वाँ । पु० दोकी संख्या; जोड़ा । **–च्छद**–पु० कचनार । **–पत्रक**–पु० अश्मंतक; कोविदार । **–सू**–स्त्री० वह गाय जिसने एक बारमें दो बच्चे दिये हों ।

यमला–स्त्री० (सं०) हिचकीका रोग, दुहरी हिचकी; एक नदी; एक तांत्रिक देवी ।

यमलार्जुन, यमलार्जुनक–पु० (सं०) गोकुलके दो पौराणिक अर्जुन वृक्ष ।

यमली–स्त्री० (सं०) जोड़ी, एकमें मिली हुई दो चीजें; घाघरा और चोली ।

यमांतक–पु० (सं०) शिव, मृत्युंजय; यम ।

यमातिरात्र–पु० (सं०) ४९ दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ ।

यमादित्य–पु० (सं०) सूर्यका एक रूप ।

यमानिका, यमानी–स्त्री० (सं०) अजवायन ।

यमानुजा–स्त्री० (सं०) यमराजकी छोटी बहन, यमुना ।

यमारि–पु० (सं०) विष्णु ।

यमालय–पु० (सं०) यमका घर, यमपुर ।

यमिक–पु० (सं०) एक प्रकारका साम ।

यमित–वि० (सं०) संयत, दबाया हुआ; बँधा हुआ ।

यमी–स्त्री० (सं०) यमकी बहन, यमुना नदी ।

यमी(मिन्)–वि० (सं०) संयमी ।

यमंड–पु० (सं०) एक ऋषि ।

यमुना–स्त्री० (सं०) जमुना नदी; यमकी बहन; दुर्गा । **–कल्याणी**–स्त्री० कर्नाटक संगीत पद्धतिका एक राग । **–जनक**–पु० सूर्य । **–पति**–पु० विष्णु । **–भिद्**–पु० यमुनाके दो भाग करनेवाले, बलराम । **–भ्राता(तृ)**–पु० यम ।

यमुनोत्तरी–पु० एक पर्वत जो यमुनाका उद्गम-स्थान है ।

यमेरुका–स्त्री० (सं०) ढोल या घड़ियाल जो घड़ी पूरी होनेपर बजाते थे ।

यमेश–पु० (सं०) भरणी नक्षत्र ।

यमेश्वर–पु० (सं०) शिव।

ययाति–पु० (सं०) चंद्रवंशके एक राजा, नहुषके पुत्र। **–पतन**–पु० महाभारतवर्णित एक तीर्थ।

ययावर–पु० (सं०) दे० 'यायावर'।

ययि–पु० (सं०) यज्ञाश्व; बादल।

ययी(यिन्)–पु० (सं०) शिव; यज्ञका घोड़ा।

ययु–पु० (सं०) यज्ञका घोड़ा; घोड़ा।

यरक़ान–पु० (अ०) जिगरकी खराबीसे होनेवाली एक खास बीमारी जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है, पीलिया।

यला–स्त्री० पृथ्वी।

यव–पु० (सं०) जौ; एक जौकी एक तौल; लंबाईकी एक नाप, तिहाई इंच; उँगली, अँगूठेकी यवाकार रेखा; वेग; वह वस्तु जो दोनों ओर उन्नतोदर हो। **–कंटक**–पु० खेतपापड़ा। **–कलश**–पु० इंद्रजौ। **–क्रीत**–पु० एक ऋषि, भरद्वाजके पुत्र। **–क्षा**–स्त्री० महाभारत-वर्णित एक नदी। **–क्षार**–पु० जौके पौधोंको जलाकर निकाला हुआ खार, जवाखार। **–क्षोद,–चूर्ण,–पिष्ट**–पु० जौका आटा। **–चतुर्थी**–स्त्री० वैशाख-शुक्ला चतुर्थी। **–ज**–पु० यवक्षार; गेहूँका पौधा; अजवायन। **–तिक्ता**–स्त्री० शंखिनी नामकी लता। **–दोष**–पु० रत्नोंको सदोष करनेवाली यवाकार रेखा। **–द्वीप**–पु० जावा द्वीपका पुराना नाम। **–नाल**–पु० जौके सूखे डंठल; जुआरका पौधा; जुआरका दाना। **–नाश्व**–पु० मिथिलाके राजा बहुलाश्वका पिता। **–फल**–पु० इंद्रजौ; प्याज; बाँस; जटामासी; कुटज; पाकड़का पेड़। **–बिंदु**–पु० वह हीरा जिसमें बिंदुसहित यवरेखा हो। **–मद्य**–पु० जौकी शराब। **–मध्य**–पु० एक तरहका ढोल; एक चांद्रायण व्रत; पाँच दिनका एक यज्ञ। **–शर्करा**–स्त्री० (माल्टोज) जौसे बनायी गयी चीनी। **–लास,–शूक,–शूकज**–पु० जवाखार। **–वर्णन**–पु० एक जहरीला कीड़ा (सुश्रुत)। **–शाक**–पु० एक प्रकारका शाक। **–श्राद्ध**–पु० एक श्राद्ध जिसमें केवल जौके आटेका व्यवहार होता है। **–सुर**–पु० जौकी शराब।

यवक–पु० (सं०) जौ।

यवक्य–वि० (सं०) जौ बोनेके उपयुक्त; जिसमें जौ बोया गया हो।

यवन–पु० (सं०) गाजर; गेहूँ; वेग; तेज घोड़ा; यूनानका निवासी, मुसलमान; कालयवन नामक राजा। **–द्विष्ट**–पु० गुग्गुल। **–प्रिय**–पु० मिर्च।

यवनाचार्य, यवनेश्वर–पु० (सं०) यवन जातिका एक ज्योतिषाचार्य।

यवनानी–स्त्री० (सं०) यूनानकी भाषा; यूनानकी लिपि।

यवनारि–पु० (सं०) कृष्ण।

यवनाश्व–पु० (सं०) मिथिलाका एक प्राचीन राजा।

यवनिका–स्त्री० (सं०) नाटकका पर्दा; कनात।

यवनी–स्त्री० (सं०) यवन जातिकी स्त्री; यवनकी स्त्री।

यवनेष्ट–पु० (सं०) एक तरहका लहसुन; एक तरहका प्याज; नीमका पेड़; मिर्च; गाजर, शलजम; सीसा।

यवनेष्टा–स्त्री० (सं०) जंगली खजूर।

यवमती–स्त्री० एक वर्णवृत्त।

यवलक–पु० (सं०) एक पक्षी।

यवस–पु० (सं०) घास; भूसा।

यवागू–पु० (सं०) जौ या चावलका सड़ाकर खट्टा किया हुआ माँड़, जौकी काँजी।

यवाग्र–पु० (सं०) जौका टूँड़। **–ज**–पु० यवक्षार; अजवायन।

यवान–वि० (सं०) वेगवान्, तेज।

यवानिका, यवानी–स्त्री० (सं०) अजवायन; खराब जौ।

यवान्न–पु० (सं०) उबाला हुआ जौ।

यवाम्ल–पु० (सं०) जौकी काँजी।

यवाश–पु० (सं०) जौकी फसलको हानि पहुँचानेवाला एक कीड़ा।

यवास, यवासक–पु० (सं०) जवासा नामका पौधा; एक तरहका खदिर।

यवासा–स्त्री० (सं०) एक तृण।

यवाह्व–पु० (सं०) यवक्षार।

यविष्ठ–पु० (सं०) सबसे छोटा भाई; नौजवान; अग्नि; ऋग्वेदके एक मंत्रद्रष्टा ऋषि, अग्नियविष्ठ। वि० सबसे छोटा, कनिष्ठ।

यवीनर–पु० (सं०) पुराणवर्णित अजमीढका एक पुत्र; भागवतके अनुसार द्विमीढका एक पुत्र।

यवीयान्(यस्)–वि०, पु० (सं०) अपेक्षाकृत छोटा। (स्त्री० 'यवीयसी'।)

यवोद्भव–पु० (सं०) जवाखार।

यव्य–वि० (सं०) दे० 'यवक्य'। पु० महीना; जौका खेत।

यव्यावती–स्त्री० (सं०) वैदिक कालकी एक नदी या नगरी।

यशःशेष–वि० (सं०) मृत।

यश(स्)–पु० (सं०) कीर्ति; सुख्याति, सुनाम; प्रशंसा। **मु०** **–गाना**–प्रशंसा करना; कृतज्ञ होना। **–मानना**–कृतज्ञ होना; निहोरा मानना।

यशद–पु० (सं०) जस्ता।

यशब, यशम–पु० (अ०) एक प्रकारका हरा पत्थर जो बिजलीसे बचानेवाला और रोग दूर करनेवाला माना जाता है, संगे यशब।

यशस्कर–वि० (सं०) कीर्तिजनक।

यशस्काम–वि० (सं०) यशोलिप्सु।

यशस्य–वि० (सं०) ख्यातिकारक, यशस्कर।

यशस्या–स्त्री० (सं०) जीवंती, ऋद्धि नामक पौधा।

यशस्वती–स्त्री० (सं०) कीर्तिमती।

यशस्वान्(वत्)–वि० (सं०) यशस्वी, कीर्तिमान्।

यशस्विनी–स्त्री० (सं०) वनकपास; महाज्योतिष्मती; गंगा। वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसे यश प्राप्त हो।

यशस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) सुख्यात, जिसका खूब यश हो।

यशी–वि० यशस्वी।

यशील*–वि० कीर्तिमान्।

यशुमति*–स्त्री० दे० 'यशोदा'।

यशोगाथा–स्त्री० (सं०) कीर्तिगान, गौरवकथा।

यशोद–पु० (सं०) पारा। वि० यश देनेवाला।

यशोदा–स्त्री० (सं०) नंदकी पत्नी; दिलीपकी माताका नाम; एक वर्णवृत्त। **–नंदन**–पु० कृष्ण।

यशोधन–वि० (सं०) यश ही जिसका धन है, यशस्वी।

यशोधर–वि० (सं०) अपना धन कायम रखनेवाला, यशस्वी। पु० रुक्मिणीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र; एक अर्हत्का नाम; सावन मासका पाँचवाँ दिन।

यशोधरा–स्त्री० (सं०) गौतम बुद्धकी पत्नी; सावन मासकी चौथी रात।

यशोधरेय–पु० (सं०) यशोधराका पुत्र, राहुल।

यशोभृत्–वि० (सं०) प्रसिद्ध, नामी।

यशोमति–स्त्री० दे० 'यशोदा'।

यशोमती–स्त्री० नंदकी पत्नी; (सं०) शुक्लपक्षकी तृतीया।

यशोमत्य–पु० (सं०) मार्कंडेय पुराणोक्त एक जातिका नाम।

यशोमाधव–पु० (सं०) विष्णु।

यशोवर्त्म(न्)–पु० (सं०) कीर्तिपथ।

यशोहा(हन्)–वि० (सं०) यशका नाश करनेवाला।

यष्टव्य–वि० (सं०) यज्ञार्ह।

यष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) यज्ञकर्ता।

यष्टि–स्त्री० (सं०) लाठी, छड़ी; पताकाका डंडा; टहनी, डाल; जेठी मधु, मुलेठी; मोतियोंका एक प्रकारका हार; लता; बाँह; ताँत; ईख। **–ग्रह**–पु० दंडधारी। **–त्रय**–पु० (विकेट्स) धावन-स्थलीके दोनों सिरोंपर खड़े किये जानेवाले वे तीन डंडे जिनके सामने खड़ा होकर बल्लेबाज दूसरी ओरसे फेंके हुए गेंदपर प्रहार करनेका प्रयत्न करता है और जिनके पीछे यष्टि-रक्षक या गोलंदाजका स्थान रहता है। **–प्राण**–वि० बहुत कमजोर। **–मधु**–पु० मुलेठी, जेठीमधु। **–यंत्र**–पु० वह धूपघड़ी जिसमें गड़ी हुई छड़ीकी छायासे समयका ज्ञान प्राप्त हो। **–रक्षक**–पु० (विकेटकीपर) यष्टित्रय (विकेट्स)के ठीक पीछे खड़ा रहनेवाला वह क्षेत्ररक्षक जो बल्लेबाजके प्रहारसे उछाले गये गेंदको लोकने अथवा धावन करनेवाले खेलाड़ीके अपने स्थानपर

न पहुँच पानेकी हालतमें वापस मिले हुए गेंदसे उनपर प्रहार करनेका प्रयत्न करता है ।

यष्टिक–पु० (सं०) डंडा; मजीठ; जलकुक्कुट; तीतर ।

यष्टिका–स्त्री० (सं०) छड़ी, लाठी; जेठी मधु; वापी, वावली; हार, यष्टी ।

यष्टिकामरण–पु० (सं०) जलको ठंडा करनेका उपाय (सुश्रुत) ।

यष्टी–स्त्री० (सं०) मुलेठी; मोतियोंकी माला जिसमें बीच-बीचमें मणि हों ।

यसार–पु० (अ०) अधिक, प्रभूत दौलत; बायाँ हाथ; अभागा मनुष्य । वि० बायाँ । –**यमन**–वि० बायाँ और दायाँ ।

यस्क–पु० (सं०) एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि, यास्कके पिता ।

यह–सर्व० निकटस्थ वस्तुका निर्देशक सर्वनाम (वक्ता और श्रोताको छोड़कर शेष सभी जीवों और पदार्थोंके लिए व्यवहृत होता है । विभक्ति लगाते समय इसका रूप खड़ी बोलीमें 'इस' और व्रजभाषामें 'या' हो जाता है) । वि० जब 'यह'के साथ कोई संज्ञा होती है तब वह विशेषणका काम करता है–जैसे'यह आदमी' ।

यहाँ–अ० इस स्थानपर, इस जगह ।

यहि–सर्व० 'यह'का विभक्ति लगनेके पहलेका पुराना हिंदी रूप । वि० संज्ञाके साथ प्रयुक्त होनेपर विशेषण हो जाता है ।

यहिया–पु० जकरियाका पुत्र जो ईसाका पूर्ववर्ती एक पैगंवर था और ईसाके (पैदा ?) होनेका समाचार लाया था (इसका वध कर दिया गया था, इसका दूसरा नाम जॉन था) ।

यही–अ० (यह+ही) निश्चित रूपसे यह, यह ही ।

यहूद–पु० (इब्र०) एक देश, ईसाका जन्म-स्थान ।

यहूदा–पु० याकूवका चौथा लड़का जिसके नामसे कौमका नाम यहूदी पड़ा ।

यहूदिन–स्त्री० यहूदीकी स्त्री ।

यहूदिया–पु० फिलस्तीन और कलन, वस्तुतः कलनका दक्षिणी भाग ।

यहूदी–पु० यहूद देशका निवासी; एक शामी जाति ।

यहूयहू–पु० कबूतरकी एक जाति ।

याँ|–अ० दे० 'यहाँ' ।

याँचना*–स्त्री० दे० 'याचना' ।

यांचा–स्त्री० माँगना, प्रार्थनापूर्वक माँगना ।

यांत्रिक–वि० (सं०) यंत्र-संबंधी । पु० (मशीनिस्ट) मशीनों, यंत्रोंको चलानेवाला, उनके कल-पुरजोंका रहस्य जाननेवाला; मशीनें बनानेवाला । वि० (मेकेनिकल) यंत्र-संबंधी; यंत्रवत् चलनेवाला । –**लाभ**–पु० (मिकैनिकल ऐडवांटेज) किसी मशीन द्वारा उठाये जानेवाले बोझ और उसपर लगाये गये बलका अनुपात 'यांत्रिक लाभ' कहलाता है ।

या–सर्व० व्रजभाषामें विभक्तिके साथ आनेवाला 'यह'का रूप । वि० संज्ञाके साथ होनेपर विशेषण होता है,–या, वा । स्त्री० (सं०) गति, चाल; रथ, यान; अवरोध, रोक; ध्यान; प्राप्ति; योनि । अ० (फा०) संदेह, विकल्पसूचक शब्द, अथवा, वा, किंवा; संबोधनसूचक हे, ऐ । –**अली**,–**इलाही**–पु० ऐ खुदा (दुआ माँगने, आश्चर्य प्रकट करनेके लिए) । –०**मदद**–शीआ लोग संकटके समय कहते हैं । –**किस्मत**–स्त्री० हसरत या अफसोसके समय दुर्भाग्यकी शिकायतके लिए प्रयुक्त । –**रब**–स्त्री० ऐ परवरदिगार (दुआ, आश्चर्य) ।

याक–पु० हिमालयपर मिलनेवाला एक जंगली बैल जिसकी पूँछके बालसे चँवर बनता है । * वि० एक (बैसवाड़ी) ।

याकूत–पु० (अ०) लाल रंगका एक बेशकीमत पत्थर, लाल; एक खास पुलाव जिसके चावल लाल हों । –**जिगरी**–पु० जिगरके रंगका याकूत ।

याग–पु० (सं०) यज्ञ । –**संतान**–पु० इंद्रपुत्र जयंत ।

याचक–पु० (सं०) माँगनेवाला, भिखारी ।

याचकता–स्त्री० (सं०) भीख माँगनेका काम, भिखमंगीका पेशा ।

याचन–पु० (सं०) दे० 'याचना' (स्त्री०) ।

याचनक–पु० (सं०) याचक ।

याचना–स० क्रि० प्रार्थना करना, माँगना । स्त्री० (सं०) माँगनेकी क्रिया ।

याचमान–वि० (सं०) याचना करनेवाला, याचक ।

याचिका–स्त्री० (पिटीशन) आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र, अर्जी ।

याचित–वि० (सं०) प्रार्थित, माँगा गया । पु० भिक्षावृत्ति ।

याचितक–पु० (सं०) मँगनीकी वस्तु ।

याचिता(तृ)–पु० (सं०) भिखारी; प्रार्थी ।

याचिष्णु–वि० (सं०) माँगनेकी जिसकी आदत हो ।

याच्ञा–स्त्री० (सं०) दे० 'यांचा' ।

याच्य–वि० (सं०) याचना करने योग्य, माँगने योग्य ।

याज–पु० (सं०) अन्न; यज्ञ करनेवाला; एक ऋषिका नाम ।

याजक–पु० (सं०) यज्ञ करने या करानेवाला; राजाका हाथी; मस्त हाथी ।

याजन–पु० (सं०) यज्ञ करने, करानेका कार्य ।

याजमान–पु० (सं०) यज्ञका वह भाग जिसे यजमान स्वयं करता है ।

याज़ा–पु० (फा०) अँगड़ाई, जँभाई ।

याजि–स्त्री० (सं०) यज्ञ । पु० यज्ञ करनेवाला ।

याजी(जिन्)–वि० (सं०) यज्ञ करनेवाला (समासांतमें) ।

याजुष–वि० (सं०) यजुर्वेद-संबंधी ।

याजुषी–वि० स्त्री० (सं०) यजुर्वेदसे संबंध रखनेवाली ।

याजूज–पु० (अ०) खयाल है, यह हजरत नूहका पोता था जो अलताई पहाड़में जा बसा, इसकी जाति और संतान भी इसीके नामसे प्रसिद्ध है । –**माजूज**–पु० दोनों भाई और उनकी संतान; दो व्यक्ति जो मिलकर शरारत करें ।

याज्ञ–वि० (सं०) यज्ञका; यज्ञ-संबंधी ।

याज्ञतूर–पु० (सं०) एक प्रकारका साम ।

याज्ञदत्ति–पु० (सं०) कुबेर ।

याज्ञवल्क्य–पु० (सं०) प्रसिद्ध ब्रह्मवादी ऋषि, राजा जनकके गुरु, मैत्रेयी और गार्गीके पति; वैशंपायनके शिष्य एक ऋषि, याज्ञवल्क्य स्मृतिके रचयिता, याज्ञवल्क्यके वंशधर ।

याज्ञसेनी–स्त्री० (सं०) यज्ञसेन (द्रुपद)की पुत्री, द्रौपदी ।

याज्ञिक–पु० (सं०) यज्ञ करने, करानेवाला; गुजराती ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; खैर; पलाश; कुश; पीपल; यजमान । वि० यज्ञ-संबंधी । –**आश्रय**–पु० विष्णु ।

याज्ञिय–वि० (सं०) यज्ञ-संबंधी; यज्ञके उपयुक्त । पु० यज्ञकर्ममें कुशल व्यक्ति ।

याज्य–वि० (सं०) यज्ञ कराने योग्य; यज्ञ करनेका अधिकारी; जिसके लिए यज्ञ किया जाय; जो यज्ञमें दिया या चढ़ाया जानेवाला हो; जो यज्ञ करनेसे प्राप्त हो (दक्षिणा) । पु० यज्ञकर्ता ।

यात–वि० (सं०) गत; व्यतीत । पु० गमन; कूच; भूतकाल । –**याम**–वि० (आऊट ऑफ डेट) जिसका समय बीत गया हो 'यह विवाद यातयाम हो गया है'–सुधीन्द्र ।

यातन–पु० (सं०) बदला, परिशोध; पुरस्कार, पारितोषिक; प्रतिशोध ।

यातना–स्त्री० (सं०) अति कष्ट, पीड़ा; यमलोककी दंड-पीड़ा ।

यातव्य–वि० (सं०) आक्रमणयोग्य (शत्रु); आक्रमणीय ।

याता(तृ)–स्त्री० (सं०) पतिके भाईकी स्त्री, जेठानी या देवरानी । वि० जानेवाला । पु० सारथि ।

यातायात–पु० (सं०) आना-जाना, (ट्रैफिक) किसी पथसे होनेवाला मालका तथा यात्रियों आदिका गमनागमन; ज्वार-भाटा ।

यातु–पु० (सं०) रास्ता चलनेवाला, पथिक; आनेवाला; काल, समय; वायु; कष्ट; हिंसा; अस्त्र; राक्षस । वि० पथिक, जानेवाला । –**घ्न**–पु० गुग्गुल । –**धान**–पु० राक्षस । –**धानी**–स्त्री० राक्षसी ।

यातृक–पु० (सं०) पथिक ।

यात्रिक–पु० (सं०) एक बौद्ध संप्रदाय ।

यात्रा–स्त्री० (सं०) जानेकी क्रिया; तीर्थयात्रा; यात्रियोंका समूह; मेला; मार्ग; कालयापन; यान; प्रस्थान; चढ़ाई, युद्धयात्रा; उपाय, व्यवहार; जीवन-निर्वाह; उत्सव; नृत्य-गानयुक्त, रासलीलाके ढंगका बंगालमें प्रचलित एक अभिनय । –**प्रसंग**–पु० तीर्थयात्रा ।

यात्राधिदेय–पु० (ट्रैवलिंग अलाउंस) यात्रा करनेमें होनेवाले

खर्चके वदले मिलनेवाला भत्ता।

यात्रावाल–पु० तीर्थयात्रियोंको देवदर्शन करानेवाला, पंडा।

यात्रिक–पु० (सं०) यात्री; राहखर्च, यात्राकी सामग्री; तीर्थयात्री; वह जो जीवन-धारणके उपयुक्त हो; यात्राका उद्देश्य; उत्सव; उपाय। वि० यात्रा-संवंधी; रीतिके अनुसार, प्रथानुकूल।

यात्री(त्रिन्)–पु० (सं०) यात्रा करनेवाला, मुसाफिर; तीर्थाटन करनेवाला। वि० जो यात्रा कर रहा हो। **–वंधु**–पु० (पैसेंजर गाइड) रेलयात्रियोंकी सुख-सुविधाओंकी व्यवस्था करनेवाला कर्मचारी।

याथातथ्य–पु० (सं०) यथार्थता, असलियत; औचित्य।

याथार्थ्य–पु० (सं०) यथार्थ होनेका भाव, यथार्थता, सत्य; उपयुक्तता।

यादःपति–पु० (सं०) समुद्र; वरुण।

याद–स्त्री० (फा०) स्मृति, स्मरणशक्ति; स्मरण करनेकी क्रिया। **–अध्यास**–स्त्री० भूतकालिक दशाकी याद। **–अल्ला**–स्त्री० खुदाकी याद; फकीरोंका सलाम, खुदाकी इवादत। (मु० –० होना–जान-पहचान होना।)**–आवरी**–स्त्री० याद करना, मिजाज-पुरसी करना, पत्र भेजना। **–गार,–गारी**–स्त्री० स्मारक, स्मृतिचिह्न। **–दाश्त**–स्त्री० स्मरणशक्ति, स्मृति; स्मरणार्थ लिखा हुआ लेख। मु० **–करोगे**–स्मरण करोगे; पछताओगे। **–किया है**–वुलाया है। **–फरमाना**–वादशाह या उच्च पदाधिकारीका किसीको वुलाना।

यादव–पु० (सं०) यदुका वंशज; कृष्ण; गोधन। वि० यदु-संवंधी। **–गिरि**–पु० एक पर्वत।

यादवी–स्त्री० (सं०) यदुकुलकी स्त्री; दुर्गा; कुट्टिनी; सुरा, मदिरा; गृहयुद्ध (आ०)।

यादवीय–वि० (सं०) यादव-संवंधी। पु० गृहयुद्ध।

यादसांनाथ, यादसांपति–पु० (सं०) दे० 'यादःपति'।

यादु–पु० (सं०) पानी; कोई तरल पदार्थ।

यादृक्ष–वि० (सं०) दे० 'यादृश'।

यादृच्छिक–वि० (सं०) स्वतंत्र; ऐच्छिक; अप्रत्याशित। **–आधि**–स्त्री० ऋणशोध किये बिना न लौटनेवाली गिरवी वस्तु।

यादृश–वि० (सं०) जैसा, जिस प्रकारका। (स्त्री० 'यादृशी')

याद्व–पु० (सं०) यदुवंशका; यदु-संवंधी।

यान–पु० (सं०) सवारी, घोड़ा-गाड़ी इत्यादि वाहन; गमन, जाना; अभियान, आक्रमण। **–कर**–पु० वढ़ई। **–पात्र**–पु० पोत। **–भंग**–पु० पोतभंग।

यानक–पु० (सं०) गाड़ी, वाहन।

यानांतरण–पु० (ट्रांशिपमेंट) यात्रियों अथवा माल-असवावका एक पोत या एक यानसे उतारकर दूसरे पोत या दूसरे यानमें पहुँचाया जाना।

यानाधिदेय–पु० (कनवेयेंस अलाउंस) किसी कर्मचारीको साइकिल, इक्का आदि सवारी रखनेके लिए मिलनेवाला अधिदेय (भत्ता)।

यानी–अ० (अ०) अर्थात्, मतलव यह है।

यापन–पु० (सं०) विताना; चलाना; व्यवहार करना; परित्याग; निरसन, निबटाना।

यापना–स्त्री० (सं०) समय काटना; चलाना; जीवन-निर्वाहके लिए दिया हुआ धन।

यापनीय–वि० (सं०) यापन करने योग्य, याप्य।

यापित–वि० (सं०) व्यतीत किया हुआ; हटाया हुआ।

याप्ता–स्त्री० (सं०) जटा।

याप्य–वि० (सं०) यापन करने योग्य; छोड़ने योग्य; गोपनीय, तक्षणीय; निंदनीय।

याफ़्त–(फा०) आमदनी, लाभ; घूस, ऊपरी आमदनी। **–नी**–पु० पाने लायक वस्तु; ऋण-विलकी रकम; अधिकार।

याफ़्तनी–वि० प्राप्य।

याफ़्ता–वि० (फा०) पाया हुआ (समस्त पदोंमें–'सनदयाफ़्ता')।

यावंदा–पु० प्राप्त करनेवाला।

याव–पु० (फा०) पानेवाला (समस्त शब्दोंमें जैसे 'कामयाव', 'फतहयाव')।

यावी–स्त्री० प्राप्त करने या होनेकी क्रिया या भाव।

यावू–पु० (फा०) टट्टू; छोटा घोड़ा।

याभ–पु० (सं०) मैथुन, संभोग।

याम–पु० (सं०) पहर, तीन घंटेका समय; काल, समय; नियंत्रण, रोक; गमन; प्रगति; यान, सवारी; सड़क; एक प्रकारके देवता। वि० यम-संवंधी। * स्त्री० रात। **–घोष**–वि० पहर-पहरपर वोलने, शब्द करनेवाला। पु० शृगाल; मुर्गा; घड़ी। **–घोषा**–स्त्री० घड़ीका यंत्र, घड़ियाल। **–नाली**–स्त्री० समय वतानेवाली घड़ी। **–नेमि**–पु० इंद्र। **–वृत्ति**–स्त्री० सतर्कता।

यामक–पु० (सं०) पुनर्वसु नक्षत्र।

यामकिनी–स्त्री० (सं०) कुलवधू; वहिन; पतोहू।

यामल–पु० (सं०) जुड़वाँ वच्चे; एक प्रकारके तंत्र-ग्रंथ–ब्रह्म, विष्णु, रुद्र, गणेश, आदित्य-यामल।

यामवती–स्त्री० (सं०) रात।

यामाता(तृ)–पु० (सं०) दे० 'जामाता'।

यामायन–पु० (सं०) वह जो यमगोत्रमें उत्पन्न हो।

यामार्द्ध–पु० (सं०) पहरका आधा भाग, डेढ़ घंटा।

यामि, यामी–स्त्री० (सं०) यामिनी, रात; कुलवधू; वहिन; कन्या; पतोहू; दक्षिण दिशा; धर्मकी पत्नीका नाम।

यामिक–पु० (सं०) पहरुआ, पहरेदार। वि० याम-संवंधी।

यामिका–स्त्री० (सं०) रात।

यामित्र–पु० (सं०) दे० 'जामित्र'। **–वेध**–पु० दे० 'जामित्रवेध'।

यामिन, यामिनि*–स्त्री० दे० 'यामिनी'।

यामिनी–स्त्री० (सं०) रात; हल्दी; कश्यपकी एक स्त्री। **–चर**–पु० राक्षस; उल्लू पक्षी; गुग्गुल।

यामीर–पु० (सं०) चंद्रमा।

यामीरा–स्त्री० (सं०) रात।

यामुन–वि० (सं०) यमुना-संवंधी; यमुनातटवर्ती। पु० अंजन; एक वैष्णव आचार्य, यामुनाचार्य; एक प्राचीन जनपद; एक तीर्थ; एक पर्वत।

यामुनेष्टक–पु० (सं०) सीसा।

यामेय–पु० (सं०) वहनका लड़का; धर्मकी पत्नी यामीका लड़का।

याम्य–पु० (सं०) यमदूत; विष्णु; शिव; अगस्त्य; चंदन; भरणी नक्षत्र। वि० यम-संवंधी; दक्षिणका। **–दिग्भवा**–स्त्री० तमालपत्री। **–द्रुम**–पु० सेमलका पेड़।

याम्या–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा; भरणी नक्षत्र; रात्रि।

याम्यायन–पु० (सं०) दक्षिणायन।

याम्योत्तरदिगंश–पु० (सं०) लंबांश; दिगंश।

याम्योत्तररेखा–स्त्री० (सं०) (मेरीडियन) एक कल्पित रेखा जो किसी स्थानसे चलकर सुमेरु-कुमेरुके चारों ओर मानी गयी है (भारतके ज्योतिषी उज्जयिनी या लंकासे इसका प्रारंभ मानते थे। आजकल इस रेखाका केंद्र प्रायः ग्रीनविच माना जाता है)।

याम्योद्भूत–वि० (सं०) दक्षिणमें उत्पन्न।

यायावर–वि० (सं०) सदा घूमनेवाला, खानावदोश, जिसका कोई नियत स्थान न हो। पु० सन्न्यासी, परिव्राजक; अश्वमेधका घोड़ा; जरत्कारु मुनि; ब्राह्मण।

यायी(यिन्)–वि० (सं०) जानेवाला।

यार–पु० (फा०) मित्र; प्रेमी; परस्त्रीसे प्रेम करनेवाला; साथी; सहायक; हिमायती। **–वाश**–वि० सवसे दोस्ती लगानेवाला। **–मार**–वि० मित्रवंचक, मित्रको लूटनेवाला। **–(रे)शातिर**–पु० पक्का, गहरा दोस्त।

यारक़ंद–पु० (तु०) कालीनका एक प्रकारका वेल-बूटा; चीनी तुर्किस्तानका एक नगर।

याराना–पु० (फा०) मैत्री; अनुचित प्रेम (स्त्री-पुरुषका)। वि० मित्रका-सा, मित्रताका।

यारि–स्त्री० प्रियतमा (विहारीलाल)।

यारी–स्त्री० मैत्री, मित्रभाव।

यार्कायन–पु० (सं०) यर्क गोत्रमें उत्पन्न पुरुष।

याल–स्त्री० (तु०) घोड़ेकी गर्दनपरके वाल, अयाल।

याव–पु० (सं०) जौका सत्तू; लाख; महावर। वि० जौसे बनाया

हुआ, जौका ।

यावक–पु० (सं०) जौ; जौका सत्तू; जौकी बनी हुई वस्तु; लाख; अलक्तक, आलता, महावर; साठी धान; उड़द; बोरो धान ।

यावज्जीवन–अ० (सं०) जीवनपर्यंत, आजीवन ।

यावत्–वि० (सं०) जितना; सब । अ० जहाँतक; जबतक (यह 'तावत्'के साथ आता है) ।

यावन–पु० (सं०) लोबान । वि० यवनका, यवन-संबंधी । **–कल्क**–पु० शिलारस ।

यावनक–पु० (सं०) लाल अंडी, रक्त एरंड ।

यावनाल–पु० (सं०) मक्का, जुआर ।

यावनाली–स्त्री० (सं०) मक्केसे बनायी हुई चीनी ।

यावनी–स्त्री० (सं०) करंकशालि नामक ईख । वि० स्त्री० यवन-संबंधी ।

यावर–वि० (फा०) सहायक; हिमायती; मित्र ।

यावरी–स्त्री० सहायता; मित्रता; हिमायत; सहारा ।

यावशूक–पु० (सं०) जवाखार ।

यावस–पु० (सं०) घासका ढेर; डंठलका पूला, भूसा इ० ।

यावा–स्त्री० (फा०) बेहूदा बातें ।

यावास–पु० (सं०) जवासेकी शराब ।

याविक–पु० (सं०) मक्का, जुआर ।

याविहोत्र–पु० (सं०) यज्ञ ।

यावी–स्त्री० (सं०) शंखिनी; यवतिक्ता लता ।

याशु–पु० (सं०) आलिंगन, परिरंभण; संभोग ।

याष्टीक–पु० (सं०) लठैत ।

यास–पु० (सं०) प्रयास, चेष्टा; लाल धमासा । स्त्री० (अ०) नैराश्य, मायूसी; भय, अंदेशा ।

यासमन, यासमीन–स्त्री० (फा०) चमेली ।

यासा–स्त्री० (सं०) कोयल; मैना ।

यासीन–स्त्री० (अ०) वाच्यार्थ, कुरानकी एक सूरत जो इसी शब्दसे आरंभ होती है ।

यासु*–सर्व० दे० 'जासु' ।

यास्क–पु० (सं०) यस्क गोत्रज पुरुष; निरुक्तके प्रणेता यास्क मुनि ।

यास्कायनि–पु० (सं०) यास्कके गोत्रमें उत्पन्न पुरुष ।

याहि*–सर्व० इसको ।

याहू–(फा०) ऐ खुदा । पु० एक प्रकारका कबूतर जिसके मुँहसे ऐसी ('याहू-याहू') ध्वनि निकलती है ।

यियक्षु–वि० (सं०) पूजाकी या यज्ञकी इच्छा करनेवाला ।

यियसा–वि० (सं०) भोगी; भोगेच्छु ।

यियासा–स्त्री० (सं०) जानेकी इच्छा ।

योशु–पु० ईसा मसीह ।

युंजान–पु० (सं०) सारथि; ब्राह्मण; अभ्यासी योगी ।

युंजानक–पु० (सं०) युंजान योगी ।

युक्त–पु० (सं०) एक मान (चार हाथ लंबा); रैवत मनुके एक पुत्रका नाम; योगी । वि० जुड़ा हुआ, जकड़ा हुआ; उचित; संयुक्त, सहित; नियुक्त; मिलित; निपुण, चतुर । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसे कोई काम सौंपा गया हो । **–मना(नस्)**–वि० दत्तचित्त । **–रथ**–पु० एक औषध-योग । **–रसा**–स्त्री० गंधरास्ना, रास्ना, रासन । **–रूप**–वि० उचित, अनुरूप । **–विकर्ष**–पु० शब्दोच्चारणकी एक प्रक्रिया (भाषा-विज्ञान) । **–श्रेयसी**–स्त्री० नाकुली कंद; गंधरास्ना ।

युक्ता–स्त्री० (सं०) एलापर्णी; एक वृत्त ।

युक्ताक्षर–पु० (सं०) संयुक्त वर्ण, मिलित वर्ण ।

युक्तायस–पु० (सं०) लोहेका एक प्राचीन शस्त्र ।

युक्तार्थ–वि० (सं०) अर्थयुक्त; अर्थगर्भ ।

युक्ताहार–पु० (सं०) उचित आहार । वि० उचित आहार करनेवाला ।

युक्ति–स्त्री० (सं०) योग, मिलन; तर्क; ऊहा; दलील, उचित विचार; हेतु, कारण; न्याय, नीति; कौशल, चातुर्य; अनुमान; उपाय, योजना; चाल, रीति; एक अलंकार जहाँ अपना मर्म छिपानेके लिए किसी क्रिया या उपाय द्वारा दूसरेको धोखा दिया जाय । **–कर,–पूर्ण**–वि० तर्कके अनुकूल; विचारपूर्ण । **–मूलक**–वि० (रैशनल) युक्ति या तर्कपर आधारित, तर्कसंगत, बुद्धिसंगत । **–युक्त**–वि० युक्तिपूर्ण, उचित; चतुर; प्रमाणित, सिद्ध । **–संगत**–वि० युक्ति या तर्कके अनुकूल ।

युक्त्याभास–पु० (सोफिस्ट्री) देखनेमें बुद्धिमत्तापूर्ण, किंतु वास्तवमें तथ्यहीन तर्क, हेत्वाभास ।

युगंकर–वि० युग-निर्माता, युग-प्रवर्तक ।

युगंधर–वि० (सं०) जूआ धारण करनेवाला । पु० हरिस, कूबर; गाड़ीका बम; तूणिके पुत्र, सात्यकिके पौत्र; एक पर्वतका नाम; अस्त्रका एक मंत्र ।

युग–पु० (सं०) युग्म, जोड़ा; पीढ़ी, पुरुष; बिसातपर चली जानेवाली पासेकी गोल गोटियाँ; पासेके खेलकी वे दो गोटियाँ जो साथ ही एक घरमें आ जायें; बृहस्पतिका एक राशिमें स्थित रहनेका पंचवर्षीय काल; समय, काल; जमाना; पुराणमतसे कालका सुदीर्घ परिमाण, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलियुग; (गाड़ीका) जूआ । वि० दोकी संख्यावाला । **–कीलक**–पु० सैला, बम और जूएके मिले छेदोंमें डाली जानेवाली लकड़ी । **–क्षय**–पु० युगका अंत । **–चर्म(र्मन्)**–पु० जुआठमें लगा हुआ दुहरा चमड़ा । **–चेतना**–स्त्री० कालविशेषकी विशिष्ट प्रवृत्ति । **–धर्म**–पु० समयानुकूल आचरण, व्यवहार । **–प**–पु० गंधर्व । **–पत्**–अ० एक जूएमें, अगल-बगल; साथ-साथ, एक साथ, एक समय । **–पत्र**–पु० वह वृक्ष जिसकी पत्तियाँ डंठलपर आमने-सामने हों; कचनार, कोविदार; पहाड़ी आबनूस । **–पत्रिका**–स्त्री० शीशमका पेड़ । **–पुरुष**–पु० युगका महान्, श्रेष्ठ पुरुष । **–प्रतीक**–पु० युगका प्रतिनिधि, श्रेष्ठतम पुरुष । **–बाहु**–वि० लंबी भुजावाला, जिसकी भुजाएँ जूएके समान दीर्घ हों । **–युग**–अ० बहुत दिनोंतक । **–ल**–पु० जोड़ा, युग्म । वि० वह जो दोकी संख्यामें हो ।

युगति*–स्त्री० दे० 'युक्ति' ।

युगम*–पु०, वि० दे० 'युग्म' ।

युगलक–पु० (सं०) जोड़ा; पद्योंका वह जोड़ा जिसका एक साथ अन्वय हो ।

युगलाख्य–पु० (सं०) बबूल वृक्ष ।

युगांत–पु० (सं०) युगकी समाप्ति; प्रलय ।

युगांतक–पु० (सं०) प्रलय; प्रलयकाल ।

युगांतकारी–वि० युगकी समाप्तिका प्रतीक, युग समाप्त करनेवाला ।

युगांतर–पु० (सं०) अन्य युग; दूसरा समय । मु० **–करना**–आमूल परिवर्तन कर देना; समय, प्रथा बदल देना ।

युगांशक–पु० (सं०) वर्ष, साल । वि० युगको विभक्त करनेवाला ।

युगादि–पु० (सं०) सृष्टिका प्रारंभ; युगका पहला दिन । वि० युगके आरंभका, पुराना । **–कृत्**–पु० शिव ।

युगाद्या–स्त्री० (स०) युगारंभकी तिथि, वह तिथि जिससे युग आरंभ हुआ (वैशाख-शुक्ला तृतीया सत्ययुग, कार्त्तिक-शुक्ला नवमी त्रेतायुग, भाद्र-कृष्णा त्रयोदशी द्वापरयुग और पौष-अमावस्या कलियुगके आरंभकी तिथि है) ।

युगाध्यक्ष–पु० (सं०) प्रजापति; शिव ।

युगावतार–पु० (सं०) युगका अवतारी, महान् पुरुष; युगस्वरूप पुरुष ।

युगेश–पु० (सं०) बृहस्पतिके साठ वर्षोंके राशिचक्रमें गतिक्रमसे पाँच-पाँच वर्षोंवाले युगोंके बारह अधिपति ।

युगोरस्य–पु० (सं०) एक तरहकी सैन्य व्यवस्था ।

युग्म–पु० (सं०) जोड़ा; अन्योन्याश्रय-संबंधयुक्त वस्तुएँ, द्वंद्व; कुलकका एक भेद, युगलक; मिथुन राशि । वि० दोकी संख्यावाले (व्यक्ति, पदार्थ आदि) । **–चारी(रिन्)**–वि० जोड़ेमें चलने, घूमनेवाले । **–ज**–पु० जुड़वाँ बच्चे, यमज, यमल । वि० जोड़ेके रूपमें उत्पन्न । **–धर्मा(र्मन्)**–वि० स्वभावतः मिलनशील, मिथुनधर्मा । **–पत्र**–पु० कचनार; भोजपत्र; सतिवन, छतिवन, युग्मपर्ण । **–पर्णा,–फला**–स्त्री० वृश्चिकाली । **–फलिनी**–स्त्री० दुधिया, दुद्धी । **–शुक्र**–पु० आँखकी पुतलीमें पड़े हुए दो सफेद बिंदु ।

युग्मक–पु० (सं०) जोड़ा, युग्म । (डबल्स) टेनिस या बैडमिंग्टनके

खेलमें दो-दो पुरुष खेलाड़ियों या दो-दो स्त्री खेलाड़ियोंका जोड़ा ।

युग्मन–पु० (कपलिंग) दो चीजों (रेलके डब्बों आदि)को एकमें जोड़ देना ।

युग्मनज–पु० (ज़ाइगोट) निषेचनके फलस्वरूप जब अण्डका केन्द्रक, शुक्राणुके केन्द्रकसे मिलता है तो युग्मनज (ज़ाइगोट केन्द्रक) बनता है । युग्मनजमें ही नवीन जीवका विकास होता है ।

युग्मांजन–पु० (सं०) स्रोतांजन और सौवीरांजनका संघात ।

युग्मेच्छा–स्त्री० (सं०) संभोगकी इच्छा ।

युग्य–पु० (सं०) जोड़ी, वह गाड़ी जिसमें दो घोड़े या बैल जुतें; दो पशु जो एक साथ गाड़ीमें जुतें; जोड़ी । वि० जोते जाने योग्य; जोता जानेवाला । **–वाह**–पु० गाड़ीवान; जोड़ी हाँकनेवाला ।

युग्याह–पु० गाड़ीवान ।

युज्य–पु० (सं०) संयोग, मिलाप; एक प्रकारका साम । वि० मिला हुआ; मिलाने योग्य; उचित ।

युत–पु० (सं०) चार हाथकी एक नाप । वि० युक्त, मिला हुआ; सहित । **–वेध**–पु० एक योग जिसमें चंद्रमा पापग्रहसे सातवें स्थानमें या पापग्रहके साथ होता है ।

युतक–पु० (सं०) जोड़ा; अंचल; एक प्राचीन परिधान; सूपके दोनों ओरके उठे हुए किनारे; मैत्रीकरण; संश्रय; संदेह ।

युति–स्त्री० (सं०) मिलन, मिलाप, योग; गाड़ीमें घोड़ेको बाँधनेकी रस्सी; नाधा जिससे जूआ और हरिसको एकमें जोड़ते हैं ।

युद्ध–पु० (सं०) परस्पर अभिघातके लिए शस्त्र-प्रहारका कर्म, संग्राम, लड़ाई, रण । **–कारी(रिन्)**–पु० योद्धा । वि० युद्ध करनेवाला । **–काल**–पु० युद्धका समय । **–क्षेत्र**–पु० दे० 'युद्ध-भूमि' । **–गांधर्व**–पु० युद्धके गाने । **–पोत**–पु० (वारशिप) लड़ाईके काम आनेवाला जहाज, रणपोत । **–परिषद्**–स्त्री० (वारकौंसिल) युद्धका संचालन करनेके लिए (मन्त्रिमंडलके कतिपय सदस्योंसे) निर्मित विशेष समिति । **–प्रवीण**–वि० युद्धकी कलामें दक्ष । **–प्राप्त**–पु० युद्धबंदी; एक प्रकारका दास, ध्वजाहृत । **–बंदी(दिन्)**–पु० लड़ाईमें पकड़ा गया शत्रुपक्षका आदमी । **–बंदी**–स्त्री० लड़ाईका बंद होना । **–भू, –भूमि**–स्त्री० रणक्षेत्र, जिस स्थानपर युद्ध हो । **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० युद्धविभाग या युद्धकार्यका संचालन करनेवाला मंत्री । **–मार्ग**–पु० युद्धकी पद्धति । **–मुष्टि**–पु० उग्रसेनका एक पुत्र । **–रंग**–पु० युद्धस्थल; षडानन, कार्त्तिकेय । **युद्धरत, युद्धलिप्त**–वि० (बेलिजरेंट) (वह राष्ट्र या दल) जो नियमित रूपसे किसीके विरुद्ध लड़ाई ठानकर युद्ध-कार्योंमें लगा हुआ हो । **–वर्ण**–पु० युद्धका प्रकार-विशेष । **–विद्या**––स्त्री०,**–शास्त्र**–पु० युद्धका शास्त्र, विज्ञान । **–विराम**–पु० युद्धका कुछ समयके लिए या अस्थायी रूपसे रोक दिया जाना । **–वीर**–पु० युद्ध करनेवाला पराक्रमी व्यक्ति; वीररसके नायकका एक भेद (सा०) । **–शक्ति**–स्त्री० युद्ध करनेकी शक्ति । **–शाली(लिन्)**–वि० युद्धप्रेमी, युद्ध पसंद करनेवाला । **–सार**–पु० घोड़ा । **युद्धस्थगन**–पु० (सीज़ फायर) युद्धमें स्थायी या अस्थायी संधि होनेके पहले लड़ाई बंद कर देनेकी स्थिति ।

युद्धक–पु० (सं०) योद्धा; युद्ध; युद्धकारी विमान (आ०) ।

युद्धमय–वि० (सं०) युद्धप्रिय; युद्ध-संबंधी ।

युद्धाचार्य–पु० (सं०) युद्ध-विद्याकी शिक्षा देनेवाला ।

युद्धाजि–पु० (सं०) एक ऋषि ।

युद्धापराधी–पु० (वारक्रिमिनल) वह जिसने युद्ध-संबंधी कोई अपराध–शत्रुके हाथ कोई उपयोगी सामग्री, समाचार, भेद आदि बेच देना–किया हो ।

युद्धोत्तर-अर्थव्यवस्था–स्त्री० (पोस्टवार एकॉनॉमी) युद्ध-समाप्तिके बादकी स्थिति देखकर उसके अनुरूप तैयार की गयी आर्थिक समस्याओंके निपटारेकी व्यवस्था या योजना ।

युद्धोत्तेजक–वि० (वारमंगर) ऐसी नीतिका अनुसरण करनेवाला जिससे युद्ध छिड़ जानेकी संभावना हो ।

युद्धोत्तेजन–पु० (वारमंगरिंग) अपने भाषणों, वक्तव्यों, नीति आदिसे युद्धको उत्तेजन देनेका कार्य ।

युद्धोन्मत्त–पु० (सं०) एक राक्षस, महोदर । वि० युद्धके लिए पागल या आतुर; युद्धमें आत्मविस्मृत ।

युद्धोपकरण–पु० (आर्मामिण्ट्स) गोला-बारूद, तोपें आदि युद्धकी सामग्री ।

युधांश्रौष्ठि–पु० (सं०) एक ऋषि ।

युधाजि–पु० (सं०) दे० 'युद्धाजि' ।

युधाजित्–पु० (सं०) केकयराजका पुत्र, भरतका मामा; राजा क्रोष्टुका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र ।

युधान–पु० (सं०) शत्रु; क्षत्रिय ।

युधामन्यु–पु० (सं०) पांडवपक्षका एक वीर ।

युधासर–पु० (सं०) नंदका एक नाम ।

युधिक–वि० (सं०) लड़नेवाला; योद्धा ।

युधिष्ठिर–पु० (सं०) कुंतीसे उत्पन्न पांडुके सबसे बड़े पुत्र, धर्मराज, धर्मपुत्र ।

युध्म–पु० (सं०) धनुष्; अस्त्र-शस्त्र; बाण; युद्ध; योद्धा ।

युध्य–वि० (सं०) युद्धके योग्य, जिससे युद्ध किया जा सके ।

युनिवर्सिटी–स्त्री० दे० 'यूनिवर्सिटी' ।

युपित–वि० (सं०) मिटाया हुआ; हटाया हुआ; भ्रांत; दुःखित ।

युयु–पु० (सं०) घोड़ा ।

युयुक्खुर–पु० (सं०) एक तरहका छोटा बाघ ।

युयुक्षमान–वि० (सं०) ब्रह्मलीन होनेका इच्छुक; मिलन, संयोगका इच्छुक ।

युयुत्सा–स्त्री० (सं०) युद्धकी इच्छा; वैरभाव, शत्रुता ।

युयुत्सु–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र । वि० युद्धका इच्छुक, लड़नेकी इच्छा रखनेवाला ।

युयुधान–पु० (सं०) योद्धा; क्षत्रिय; इंद्र; सात्यकिका एक नाम ।

युव–'युवन्'का समासगत रूप युवा । **–खलति**–वि० जिसे जवानीमें ही खल्वाट रोग हो गया हो । **–गंड**–पु० मुँहासा । **–जन**–पु० तरुण या युवक वर्ग । **–जर्त**–वि० जवानीमें ही बूढ़ा दिखाई पड़नेवाला । **–पलित**–वि० जिसके बाल जवानीमें ही सफेद हो गये हों । **–पिडिका**–स्त्री० मुँहासा । –राई*–स्त्री० युवराजका पद । पु० दे० 'युवराज' । **–राज**–पु० राज्यका उत्तराधिकारी राजकुमार । **–राजी**–स्त्री० (हिं०) युवराजका पद; (सं०) युवराजकी पत्नी । **–राज्ञी**–स्त्री० वह युवती (ज्येष्ठ कन्या) जो युवराजका पद ग्रहण करे (जैसे ब्रिटेनमें प्रिंसेज आव वेल्स) । –रानी*–स्त्री० (हिं०) दे० 'युवराज्ञी' । **–हा(हन्)**–पु० बालहंता, बालहत्या करनेवाला ।

युवक–पु० (सं०) तरुण, जवान, सोलहसे तीस वर्षकी अवस्थाका मनुष्य ।

युवति, युवती–स्त्री० (सं०) जवान स्त्री; हलदी; प्रियंगु; सोनजुही ।

युवतीष्टा–स्त्री० (सं०) सोनजुही, स्वर्णयूथिका ।

युवनाश्व–पु० (सं०) प्रसेनजित्का पुत्र और मांधाताका पिता ।

युवन्यु–वि० (सं०) जवान, तरुण ।

युवा(वन्)–वि० (सं०) तरुण, जवान ।

युवान–वि० तरुण ।

युवानक–वि० (सं०) दे० 'युवान' ।

युष्मदीय–वि० (सं०) तुम्हारा ।

यूँ–अ० दे० 'यों' ।

यू–स्त्री० (सं०) दालका जूस ।

यूक–पु० (सं०) जूँ; चीलर । **–लिक्षा**–स्त्री० जूँका अंडा, लीख ।

यूका–स्त्री० (सं०) जूँ जो सिरके बालोंमें होती है; खटमल; गूलर; अजवायन; एक परिमाण, यवका अष्टमांश, लिक्षासे अठगुना ।

यूत*–पु० दे० 'यूति' ।

यूति–स्त्री० (सं०) मेल, मिश्रण, मिलावट ।

यूथ–पु० (सं०) सजातीय जीवोंका समूह, समुदाय, झुंड; सेना, फौज । **–ग**–पु० एक देववर्ग । **–चारी(रिन्)**–वि० झुंडमें चलनेवाला (बंदर, हाथी, हिरन आदि) । **–नाथ,–प,–पति, –पाल**–पु० झुंडका स्वामी, नेता; सेनाध्यक्ष । **–बंध**–पु० सेनाकी एक टुकड़ी, समूह । **–भ्रष्ट**–वि० यूथसे निकला या निकाला

हुआ। **–मुख्य**–पु० सेनाकी किसी टुकड़ीका प्रधान।

यूथक–पु० (सं०) दे० 'यूथ'।

यूथिका, यूथी–स्त्री० (सं०) जूही (फूल, पौधा)।

यूनक–पु० गरीकी खली।

यूनान–पु० (ग्रीक-'आयोनिया') यूरोपका एक देश जो प्राचीन कालमें अपनी शूरता, सभ्यता और संस्कृतिके लिए विशेष प्रसिद्ध था (यूनान शब्द आयोनियासे बना है जो इस देशका एक द्वीप है।)

यूनानी–पु० यूनानका नागरिक। स्त्री० यूनानकी भाषा; यूनानकी शिक्षा-प्रणाली; हकीमी। वि० यूनान देशका; यूनान-संबंधी।

यूनियन–स्त्री० (अं०) संघ, सभा। **–जेक, –फ्लैग**–पु० ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंडका संयुक्त राष्ट्रीय झंडा।

यूनिवर्सिटी–स्त्री० (अं०) विविध विषयोंके शिक्षण, परीक्षण या दोनोंकी व्यवस्थाके लिए स्थापित शिक्षा-संस्था जो प्रायः कालेजों आदिका भी नियमन करती है, विद्यापीठ, विश्वविद्यालय।

यूनीफार्म–पु० (अं०) किसी विशेष संस्थाकी विशेष पोशाक।

यूनेस्को–पु० (अं०) यू एन ई एस सी ओ, इन आरंभिक अक्षरोंसे बना शब्द (यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक ऐंड कल्चरल आरगैनाइज़ेशन), संयुक्त राष्ट्रसंघकी शिक्षा, विज्ञान और सांस्कृतिक विषयों संबंधी संस्था।

यूप–पु० (सं०) यज्ञका वह स्तंभ जिसमें बलिपशु बाँधते थे; वह स्तंभ जो यज्ञकी समाप्तिका चिह्न होता है; विजय-स्तंभ। **–कटक**–पु० यूपके सिरे, आधारपरका लकड़ी या लोहेका कड़ा। **–कर्ण**–पु० यूपका घीसे सिक्त भाग। **–केतु**–पु० भूरिश्रवा। **–केशी(शिन्)**–पु० एक राक्षस। **–खर**–पु० (हिं०) वह गड्ढा जिसमें यूपका आरोपण हो। **–च्छेदन**–पु० यूप काटनेका कार्य। **–दारु**–पु० यूपकी लकड़ी, काष्ठ। **–द्रु, –द्रुम**–पु० खैरका पेड़। **–ध्वज**–पु० यज्ञ। **–मध्य**–पु० यूपका मध्य भाग। **–मूर्द्धा(र्द्धन्)**–पु० यूपका सिरा। **–लक्ष्य**–पु० एक पक्षी। **–वाह**–वि० यूप ले जानेवाला। **–वेष्टन**–पु० यूपको ढकनेवाला वस्त्र। **–संस्कार**–पु० यूपकी स्थापना, प्रतिष्ठा।

यूपक–पु० (सं०) यूप; लकड़ियोंके भेद, प्रकार।

यूपांग–पु० (सं०) यूप-संबंधी कोई भी वस्तु।

यूपाक्ष–पु० (सं०) एक राक्षस।

यूपाहुति–स्त्री० (सं०) यूपकी स्थापनाके समयका एक संस्कार।

यूपोच्चार्य–पु० (सं०) यूपकी स्थापनाका उत्सव।

यूप्य–पु० (सं०) पलाश।

यूरप–पु० दे० 'यूरोप'।

यूराल–पु० स्त्री० यूरोप-एशियाकी सीमापरकी एक नदी और एक पर्वत श्रेणीका नाम।

यूरेनस–पु० (ग्री०) एक ग्रीक देवता; ग्रहविशेष (हर्शेल-आविष्कृत)।

यूरेनियम–पु० (अं०) एक भारी और शुभ्र धातु-तत्त्व जो पानीसे १८.७ गुना भारी होता है।

यूरेशियन–पु० (अं० यूरोप-एशियन) जिनके माँ-बापमेंसे कोई एक एशियाका तथा दूसरा यूरोपका हो।

यूरोप–पु० (अं०) पूर्वी गोलार्द्धका सबसे छोटा महाद्वीप जिसके उत्तर आर्कटिक, पश्चिम अतलांतक, दक्षिण भूमध्यसागर तथा पूर्वमें काकेशस और यूराल पर्वत है।

यूरोपियन–पु० (अं०) यूरोपके किसी देशका नागरिक। वि० यूरोपका; यूरोप-संबंधी।

यूरोपीय–वि० यूरोपका; यूरोप-संबंधी।

यूष–पु० (सं०) दाल इत्यादिका पानी, जूस, शोरबा; शहतूतका पेड़।

यूसुफ–पु० (अ०) याकूबका सुंदरतम लड़का जिसे उसके भाइयोंने ईर्ष्यासे मिस्री सौदागरके हाथ बेच दिया था जहाँ बादमें वह बहुत प्रतिष्ठित पदपर पहुँचा।

यूह*–पु० समूह, झुंड; सेना।

ये–सर्व० यह सब, सर्वनाम 'यह'का बहु०।

येई*–सर्व० यही।

येऊ*–सर्व० यह भी, ये भी।

येती–पु० हिममानव जिसका अस्तित्व असंदिग्ध नहीं है।

येतो*–वि० इतना।

येन–सर्व० (सं०) जिससे। **–केन प्रकारेण**–जिस किसी भी तरहसे।

येन–पु० (जा०) जापानकी मुख्य मुद्रा।

येमन–पु० (सं०) जीमना, खाना।

येह–सर्व० दे० 'यह'।

येहू*–अ० यह भी।

यों–अ० इस प्रकार। **–ही**–अ० इसी रूपमें; इसी तरहसे; निष्प्रयोजन, बेमतलब ही, सामान्य रूपसे।

यो*–सर्व० यह।

योक्तव्य–वि० (सं०) जोड़ने योग्य; नियुक्त करने योग्य।

योक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) जोड़ने, मिलाने या बाँधनेवाला; गाड़ीवान; उभाड़नेवाला, उत्तेजित करनेवाला।

योक्त्र–पु० (सं०) रस्सी; वह रस्सी जिससे गाड़ीका बैल जूएमें बँधा हो; रस्सी बाँधनेका पेंच, औजार।

योगंधर–पु० (सं०) पीतल; मंत्र जो अस्त्र-शस्त्रोंके शोधनके लिए प्रयुक्त होता था।

योग–पु० (सं०) जोड़नेका कार्य (ग०); संयोग; संबंध, संपर्क; युक्ति, उपाय; नियम, विधान; सूत्र; उपयुक्तता; परिणाम; कौशल; वशीकरण; गाड़ी, वाहन; कवच; लाभ; धन; व्यवसाय; औषध; ध्यान; संगति; छल, विश्वासघात; शत्रुनाशके लिए आयोजित यंत्र, मंत्र, पूजा, छल, कपट आदि युक्तियाँ; दूत; सुभीता; सुयोग; चित्तवृत्तिका निरोध; मोक्षका उपाय; प्रेम; प्रयोग; मेल-मिलाप; वैराग्य; नाम; नाव आदि; शुभ काल; साम आदि चार प्रकारके उपाय; सहयोगिता; ज्योतिषमें प्रधान नक्षत्र; युक्ति, प्रयोग, अभिचारिक अनुष्ठान जो बारह हैं, जोग, उतारा-पतारा; उत्सव, पर्व (स्नान आदिका); संपत्तिका लाभ और वृद्धि; एक छंद; चंद्र-सूर्यकी विशेष स्थितिके कारण होनेवाले फलित ज्योतिषके विशिष्ट काल; विशिष्ट तिथियों, वारों और नक्षत्रोंका निश्चित नियमसे पड़ना; अष्टांग योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिका अंतर्भाव है; हठयोग। **–कन्या**–स्त्री० यशोदाकी कन्या, योगमाया। **–कुंडलिनी**–स्त्री० एक उपनिषद् जो प्राचीन नहीं मानी जाती। **–क्षेम**–पु० अलब्ध वस्तुका लाभ और लब्ध वस्तुकी रक्षा करना; राष्ट्रका सुप्रबंध; लाभ; कल्याण, मंगल; निर्वाण, शांति; दूसरेकी धन-संपत्तिकी रक्षा; वह वस्तु जो उत्तराधिकारियोंमें न बँटे। **–गति**–स्त्री० ऐक्यकी स्थिति, परस्पर संयुक्त होना। **–गामी(मिन्)**–वि० योगबलसे जानेवाला (वायुमार्गसे)। **–चक्षु(स्)**–पु० ब्राह्मण। **–चर**–पु० हनूमान्। **–चूर्ण**–पु० जादू दिखानेवाली बुकनी। **–ज**–वि० योगसे उत्पन्न। पु० योग-साधनकी एक अवस्था; अगरु लकड़ी। **–*फल**–पु० जोड़, अंकोंके जोड़नेसे प्राप्त फल। **–तत्त्व**–पु० योगके सिद्धांत; एक उपनिषद्। **–तारा**–पु० परस्पर मिले हुए तारे; किसी नक्षत्रका प्रधान तारा। **–दर्शन**–पु० महर्षि पतंजलिकृत योगसूत्र। **–दान**–पु० योगदीक्षा; सहयोग करना, हाथ बँटाना; कपटदान। **–धर्मी(र्मिन्)**–पु० योगी। **–धारणा**–स्त्री० ध्यानकी एकाग्र स्थिति। **–धारा**–स्त्री० ब्रह्मपुत्रकी एक सहायक नदी। **–नंद**–पु० मगधके नौ नंद राजाओंमेंसे एक। **–नाथ**–पु० शिव। **–नाविक**–पु० एक मछली। **–निद्रा**–स्त्री० समाधि-निद्रा, अर्द्ध समाधि और निद्रा; युगके अंतमें प्रलयकालकी विष्णु-निद्रा जो दुर्गा मानी गयी है; योगकी समाधि; युद्ध-क्षेत्रमें वीरोंकी मृत्यु। **–निद्रालु**–पु० विष्णु। **–निलय**–पु० महादेव। **–पट्ट**–पु० एक प्राचीन परिधान जो पीठसे घुटनोंतक होता था; अँचला (साधुओंका)। **–पति**–पु० शिव; विष्णु। **–पत्नी**–स्त्री० योगकी पत्नी; पीवरी; योगमाता। **–पथ**–पु० योगकी ओर ले जानेवाला मार्ग। **–पदक**–पु० चार अंगुल चौड़ा एक प्रकारका उत्तरीय जो पूजनादि अवसरोंपर उपवीतके समान धारण किया जाता था और बाघ, हिरनके चमड़े या सूतका होता था। **–पाद**–पु० अभीष्टदायक कृत्य (जै०)। **–पारंग**–पु० सिद्ध

योगी, पूर्ण योगी; शिव। **–पीठ**–पु० योगके योग्य आसन; देवोंका योगासन। **–पुरुष**–पु० स्वार्थ-सिद्धिके लिए साधा हुआ आदमी (कौ०)। **–फल**–पु० जोड़नेसे प्राप्त फल। **–बल**–पु० तपोबल; योग-साधनसे अर्जित अलौकिक शक्ति। **–भ्रष्ट**–वि० (वह योगी) जिसका योग पूर्ण न हुआ हो, योगमार्गसे च्युत। **–माता(तृ)**–स्त्री० पीवरी; दुर्गा। **–माया**–स्त्री० सूक्ष्म समाधिकी अलौकिक शक्ति; विष्णुकी शक्ति, भगवती; यशोदाकी कन्या जिसे वसुदेव-पुत्री समझकर कंसने मार डालनेकी चेष्टा की थी। **–मूर्त्तिधर**–पु० एक प्रकारके पितर; शिव। **–यात्रा**–स्त्री० योगकी यात्रा; वह यात्रा जिसमें परमात्मासे योग हो; यात्राके अनुकूल योग (फ० ज्यो०)। **–युक्त**–वि० योगस्थ, योगलग्न। **–युक्ति**–स्त्री० योगकी आसक्ति; गंभीर समाधिमें लीन होना। **–योगी(गिन्)**–पु० योगासीन योगी। **–रंग**–पु० नारंगी। **–रथ**–पु० योग प्राप्त करनेवाला साधन। **–राजगुग्गुल**–पु० गुग्गुल-प्रधान एक औषध जो गठिया, वातरोग, लकवे आदिमें उपकारक है। **–रूढ़ि**–स्त्री० दो शब्दोंके योगसे बना शब्द जिसमें युक्त शब्द अपने सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ देते हैं–जैसे पंचबाण। **–रोचना**–स्त्री० एक ऐंद्रजालिक लेप (इसको लगानेवालेमें अदृश्य होनेकी शक्ति आ जाती है, ऐसा माना जाता है)। **–वाणी**–स्त्री० हिमालयका एक तीर्थ। **–वाशिष्ठ,–वासिष्ठ**–पु० एक वेदांत-ग्रंथ जो वसिष्ठनिर्मित कहा जाता है (कुछ लोग वाल्मीकीय रामायणके अंतर्गत मानते हैं)। **–वाह**–पु० अनुस्वार और विसर्ग। **–वाही(हिन्)**–पु० औषध, द्रव्य जो कई औषधियोंको एकमें मिलने योग्य करे; योगका माध्यम; सज्जीखार; पारा। **–विक्रय**–पु० कपटपूर्ण विक्रय। **–विद्**–पु० योगका ज्ञानी; शिव; ओषधियोंके योगसे औषध बनानेवाला; बाजीगर, ऐंद्रजालिक। **–वृत्ति**–स्त्री० योग द्वारा प्राप्त चित्तकी शुभ वृत्ति। **–शक्ति**–स्त्री० योग-साधनसे प्राप्त शक्ति, तपोबल। **–शब्द**–पु० सामान्य अर्थ देनेवाला, यौगिक शब्द। **–शरीरी(रिन्)**–पु० योगी। **–शास्त्र**–पु० पतंजलि ऋषिकृत योग-विषयक ग्रंथ, छः शास्त्रोंमेंसे एक (इसमें चित्तवृत्तिके निरोधका सांगोपांग विवेचन है, तत्त्वकल्पनामें यह प्रायः सांख्यका अनुगामी है। केवल इसमें एक अधिक तत्त्व है, पुरुषविशेष। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिका इसमें विशद और विस्तृत निरूपण है)। **–शास्त्री(स्त्रिन्)**–पु० योगशास्त्रका ज्ञाता। **–शिक्षा**–स्त्री० एक उपनिषद्। **–सत्य**–पु० किसी योगके कारण पड़ा हुआ नाम–जैसे दंडसे दंडी। **–सार**–पु० सदाके लिए रोगमुक्त करनेवाले उपाय, साधन (भिन्न ऋतुओंमें भिन्न पदार्थोंका इसमें त्याग और संयम है)। **–सिद्ध**–वि० (योगी) जिसका योग पूरा हो चुका हो। **–संसिद्धि, सिद्धि**–स्त्री० योगकी सफलता। **–सूत्र**–पु० पतंजलि-प्रणीत सूत्रोंका संग्रह। **–स्थ**–वि० योगमें लगा हुआ।

योगमय–पु० (सं०) विष्णु।

योगवान्(वत्)–पु० (सं०) योगी। (स्त्री० 'योगवती'।)

योगांग–पु० (सं०) योगके अंग (ये आठ हैं–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि)।

योगांजन–पु० (सं०) सिद्धांजन (कहा जाता है कि इसके लगानेसे भूगर्भस्थ वस्तुओंका दर्शन होता है); नेत्र-रोगोंको दूर करनेवाला अंजन, प्रलेप।

योगांत–पु० (सं०) उन सात भागोंके नाम जिनमें मंगल ग्रहकी कक्षाएँ विभक्त हैं (पा० सं०)।

योगांतराय–पु० (सं०) योगके विघ्न, योगके लिए विघ्नकारक आलस्यादि।

योगांता–स्त्री० (सं०) बुधकी गति जो आठ दिन रहती है और मूल, पूर्वाषाढ तथा उत्तराषाढ नक्षत्रोंको क्रांत करती है।

योगांबर–पु० (सं०) एक बौद्ध देवता।

योगा–स्त्री० (सं०) सीताकी एक सखी।

योगाकर्षण–पु० (सं०) परमाणुको अविभाज्य रूपसे मिलानेवाली आकर्षण-शक्ति।

योगागम–पु० (सं०) योगशास्त्र।

योगाचार–पु० (सं०) बौद्धोंका एक दार्शनिक संप्रदाय जिसमें बाह्यार्थका निषेध किया गया है और समग्र प्रपंच चित्तका विविध परिणाम मात्र माना जाता है, विज्ञानवाद; योगका आचरण।

योगात्मा(मन्)–पु० (सं०) योगी।

योगानुशासन–पु० (सं०) योगशास्त्र।

योगापत्ति–स्त्री० (सं०) रीति-नीति, प्रथाओंके कारण होनेवाला संस्कार।

योगाभ्यास–पु० (सं०) योगसाधन, योगके अंगोंका यथाविधि अभ्यास।

योगाभ्यासी(सिन्)–वि० (सं०) योगसाधन करनेवाला। पु० योगी।

योगारंग–पु० (सं०) नारंगी।

योगाराधन–पु० (सं०) योगाभ्यास करना, योग-साधन।

योगारूढ–वि० (सं०) वीतराग। पु० निष्काम योगी।

योगासन–पु० (सं०) योगनिर्दिष्ट बैठनेकी विधि।

योगित–वि० (सं०) जिसपर प्रयोग (अभिचार) किया गया हो; मंत्राविष्ट, जादू मारा हुआ; पागल किया हुआ।

योगिता–स्त्री० (सं०) योगित्व; स्थिति।

योगित्व–पु० (सं०) योगी होनेका भाव या क्रिया।

योगिनी–स्त्री० (सं०) रणपिशाचिनी; दुर्गाकी सखी, चौंसठ देवियाँ; तपस्विनी, योगाभ्यासिनी; योगमाया; आषाढ़-कृष्णा एकादशी; आठ विशेष देवियाँ–ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, नारायणी, वाराही, इंद्राणी, चामुंडा और महालक्ष्मी (ज्यो०); विशेष तिथिमें विशेष दिशामें स्थित योगिनी। **–चक्र**–पु० योगिनीकी स्थितिका निर्देशक ज्योतिश्चक्र।

योगिया–पु० एक राग जिसमें गांधार छोड़कर शेष स्वर कोमल लगते हैं।

योगींद्र–पु० (सं०) सर्वश्रेष्ठ योगी।

योगी(गिन्)–वि० (सं०) जुड़ा हुआ, संबंधयुक्त; संयोगी। पु० अलौकिक शक्ति-संपन्न पुरुष; आत्मज्ञानी, सुख-दुःखादिमें सम रहनेवाला; योगसिद्ध, सिद्ध पुरुष; नारंगी; महादेव। **–(गि)कुंड**–पु० एक तीर्थ। **–दंड**–पु० बेंत। **–नाथ**–पु० शिव। **–निद्रा**–स्त्री० झपकी, हलकी नींद। **–राज**–पु० दे० 'योगींद्र'।

योगीश, योगीश्वर–पु० (सं०) योगिराज, सर्वश्रेष्ठ योगी; याज्ञवल्क्यका नाम; शिव।

योगीश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

योगेंद्र–पु० (सं०) एक प्रकारका रस (आ० वे०); महान् योगी।

योगेश, योगेश्वर–पु० (सं०) सिद्ध, योगीश्वर; कृष्ण; शिव; देवहोत्रके पुत्रका नाम; एक तीर्थ; नौ सर्वश्रेष्ठ योगी (कवि, हरि, अंतरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन)।

योगेश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गाका एक रूप, शाक्तोंकी देवी; दुर्गा; ककोड़ा।

योगेष्ट–पु० (सं०) एक धातुसे दूसरी धातु या उसी धातुका योग करनेका साधन (सीसा)।

योगोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्; गुप्त रूपसे तथा छल-कपटसे शत्रुनाशकी युक्ति।

योग्य–वि० (सं०) पात्र, अधिकारी, लायक; श्रेष्ठ, शीलवान्; उचित; जोड़ने लायक; सुंदर; आदरणीय; जोतने लायक; समर्थ; निपुण। पु० रथ, गाड़ी; पुष्य नक्षत्र; ऋद्धि नामकी ओषधि; चंदन।

योग्यता–स्त्री० (सं०) उपयुक्तता; क्षमता; बुद्धिमानी; प्रतिष्ठा; औकात; अनुकूलता; वाक्यके तीन तात्पर्यबोधक गुणोंमेंसे एक; शब्द-अर्थ-संबंधकी संभवनीयता।

योग्या–स्त्री० (सं०) युवती; अभ्यास; शल्यक्रियाका अभ्यास (सुश्रुत)।

योजक–पु० (सं०) पृथिवीका वह पतला भाग जो दो बड़े भूखंडोंको मिलाये। वि० संयुक्त करनेवाला, संयोजक, जोड़नेवाला।

योजन–पु० (सं०) एकत्रीकरण, मिलान; योग; परमात्मा; दूरीका मानविशेष (दो, चार, आठ कोसकी मतभेदमयी मितियाँ

मानी जाती हैं। कोसकी लंबाई ४००० हाथ। जैनी दस हजार कोसका योजन मानते हैं)। **–गंधा**–स्त्री० सत्यवती, शांतनुपत्नी, व्यासकी माता; सीता; कस्तूरी। **–गंधिका**–स्त्री० सत्यवती; कस्तूरी। **–पर्णी,–वल्ली**–स्त्री० मजीठ।

योजना–स्त्री० (सं०) नियुक्ति, संयोजन; व्यवस्था, आयोजन; कोई काम करनेका विचार, भावी कार्यपद्धतिकी पूर्वकल्पना, 'स्कीम', प्लान; जोड़, मिलान; बनावट, रचना; घटना; व्यवहार; प्रयोग।

योजना-आयोग–पु० (प्लैनिंग कमीशन) शासनकी एक संस्था जो देशके विकासके लिए योजना बनाती है।

योजनीय–वि० (सं०) योजना करने योग्य; मिलाने, जोड़ने योग्य।

योजन्य–वि० (सं०) योजनका; योजन-संबंधी।

योजित–वि० (सं०) युक्त, जो मिलाया गया हो; नियमित; बनाया हुआ, रचित।

योज्य–वि० (सं०) व्यवहार-योग्य; जोड़ने योग्य। पु० वे संख्याएँ जिनका योग किया जाय।

योत्र–पु० (सं०) जोत, नाधा, वह रस्सी जो जूएको बैलकी गरदनसे जोड़ती है; उपाय; संपत्ति; अवलंबन। **–संपन्न**–वि० धनी, संपत्तिशाली। **–हीन**–वि० धनहीन, निर्धन।

योद्धव्य, योध्य–वि० (सं०) युद्ध करने योग्य; जो युद्ध करता हो।

योद्धा(द्धृ)–वि० (सं०) युद्धकर्ता, रणकुशल। पु० युद्ध करनेवाला।

योध, योधेय–पु० (सं०) रणकुशल सैनिक।

योधक–पु० (सं०) योद्धा, वीर।

योधन–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई; रणसामग्री।

योधा(धृ)–वि०, पु० (सं०) दे० 'योद्धा'।

योधी(धिन्)–पु० (सं०) योद्धा, वीर। **–(धि)वन**–पु० एक विशेष जंगल (प्रा०)।

योनल–पु० (सं०) ज्वार, मक्का, यवनाल।

योनि–स्त्री० (सं०) उत्पत्तिस्थान, जहाँसे कोई वस्तु पैदा हो; स्त्रियोंकी जननेंद्रिय; देह; अंतःकरण; कारण; गर्भ; गर्भाशय; जन्म; जल; एक नदी (कुशद्वीपकी); आकर, खानि; प्राणि-विभाग (पुराणमतसे इनकी संख्या ८४ लाख है, कुछ २१ लाख मानते हैं); वास। **–कंद**–पु० योनिका रोग-विशेष जिसमें गाँठें पड़ जाती हैं। **–ज**–पु० योनिसे उत्पन्न जीव (जरायुज और अंडज)। **–देवता**–पु० पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र। **–दोष**–पु० उपदंश, गरमी। **–फूल**–पु० (हिं०) योनिके अंदरकी गाँठ जिसमें एक छेद होता है और जिससे होकर वीर्य गर्भाशयमें जाता है। **–भ्रंश**–पु० एक योनिरोग जिसमें गर्भाशय अपने स्थानसे हट जाता है। **–मुक्त**–वि० मुक्त, जो आवागमनसे छूट गया हो। **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक मुद्रा जिसमें उँगलियोंसे योनिका आकार बनाते हैं। **–यंत्र**–पु० एक अति संकीर्ण मार्ग जिसे पार करनेवालेको मोक्षका अधिकारी माना जाता है (यह गया, कामाक्षा आदिमें है)। **–रंजन**–पु० रजःस्राव। **–वाद**–पु० प्राचीन भारतका एक नास्तिक सम्प्रदाय। **–शूल**–पु० योनिकी पीड़ा, स्त्रियोंका एक रोग। **–०घ्नी**–स्त्री० शतपुष्पा। **–संकर**–पु० वर्णसंकर। **–संकोचन**–पु० योनिको सिकोड़नेका कार्य; एक औषध। **–संभव**–पु० वह जो योनिसे पैदा हो, जरायुज-अंडज। **–संवरण**–पु० गर्भवती स्त्रियोंका एक रोग जिसमें गर्भका मुँह बंद हो जानेसे बच्चा दम घुटकर मर जाता है (इसमें गर्भिणीकी जानका भी खतरा रहता है)।

योन्यर्श(स्)–पु० (सं०) योनिकंद, योनिका एक रोग जिसमें अंदर गाँठ पड़ जाती है।

योप–पु० (अ०) दिवस, दिन; तारीख, तिथि।

योरोप–पु० (अं०) दे० 'यूरोप'।

योषणा–स्त्री० (सं०) पुंश्चली, दुश्चरित्रा स्त्री; नवयुवती, बाला।

योषा–स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी।

योषिता–स्त्री० (सं०) 'योषित्'।

योषित्–स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी। **–कृत**–वि० नारीकृत। **–प्रतियातना**–स्त्री० स्त्रीकी प्रतिमा। **–प्रिया**–स्त्री० हल्दी।

योषिद्–'योषित्'का समासगत रूप। **–ग्राह**–पु० मृत पुरुषकी स्त्री ग्रहण करनेवाला पुरुष। **–रत्न**–पु० नारी-रत्न।

यौं|–सर्व० 'यह'का बैसवाड़ेका रूप।

यौक्ताश्व–पु० (सं०) एक साम।

यौक्तिक–पु० (सं०) नर्म-सखा, क्रीडा, विनोद, खेलका साथी। वि० युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

यौगंधर–पु० (सं०) अस्त्रविशेष जो अस्त्रोंका निवारण करे।

यौगंधरायण–पु० (सं०) युगंधर गोत्रका व्यक्ति; उदयनका एक मंत्री।

यौग–पु० (सं०) योग-दर्शनका अनुयायी पुरुष।

यौगक–वि० (सं०) योगका; योग-संबंधी।

यौगिक–वि० (सं०) मिला हुआ; योग-संबंधी। पु० अट्ठाईस मात्राओंवाले छंद; दो शब्दोंके मेलसे बना शब्द; (कंपाउंड) दो या अधिक तत्त्वोंसे बना हुआ पदार्थ (जैसे जल जो ओषजन तथा जलजनसे बनता है)। **–शब्द**–पु० अर्थोंका वाचक शब्द।

यौजनिक–वि० (सं०) एक योजनतक जानेवाला।

यौतक, यौतुक–पु० (सं०) विवाहमें मिला हुआ धन, दहेज; वह संपत्ति जो कन्याके पितृवर्गकी ओरसे वरपक्षको दी जाती है; चढ़ावा (दुलहिनकी सामग्री); उपहार।

यौथिक–वि० (सं०) यूथका; समूह-संबंधी; झुंडमें रहनेवाला। पु० संगी, साथी।

यौद्धिक–वि० (सं०) युद्धका, युद्ध-संबंधी।

यौध–पु० (सं०) योद्धा, सिपाही। वि० वीर।

यौधेय–पु० (सं०) योद्धा; प्राचीन कालकी एक युद्ध-कुशल जाति; एक प्राचीन देश; युधिष्ठिरका एक पुत्र।

यौन–वि० (सं०) योनिका; योनि-संबंधी। पु० जाति-विशेष (यवन ?); विवाह-संबंध। **–रोग**–पु० (वेनेरियल डिज़ीज़) दे० 'रतिज रोग'। **–विकृति**–स्त्री० कामेच्छाकी तृप्तिके लिए उत्पन्न विकृत रुचि जो अस्वाभाविक मैथुनके रूपमें प्रकट होती है।

यौनकी–स्त्री० (सैक्सालाजी) स्त्री-पुरुषकी जननेन्द्रियोंकी रचना, सम्भोग, काम विषयक संबंधोंका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

यौवत–पु० (सं०) युवतियोंका समूह; लास्यनृत्यका एक भेद।

यौवतेय–पु० (सं०) युवतीका पुत्र।

यौवन–पु० (सं०) बाल्यावस्थाके बादकी अवस्था जिसकी स्थिति १६ से ४०-४५ वर्षतक मानी जाती है, जवानी; युवतियोंका दल। **–कंटक,–पिडक**–पु० मुँहासा। **–लक्षण**–पु० लावण्य, सुंदरता; स्तन।

यौवनाधिरूढा–स्त्री० (सं०) युवती।

यौवनाश्व–पु० मांधाताका एक नाम।

यौवनिक–वि० (सं०) यौवनका; यौवन-संबंधी।

यौवनोद्भव–पु० (सं०) कामदेव, मदन।

यौवराजिक–वि० (सं०) युवराजका; युवराज-संबंधी।

यौवराज्य–पु० (सं०) युवराजका पद; युवराजत्व।

यौवराज्याभिषेक–पु० (सं०) राज्यके उत्तराधिकारी राजकुमारका अभिषेक-कर्म।

र

र–देवनागरी वर्णमालाका सत्ताईसवाँ व्यंजन और दूसरा अंतस्थ वर्ण; उच्चारण-स्थान मूर्द्धा। दूसरे वर्णसे संयुक्त होनेपर यह ˚, = और ‸ –ये तीन रूप ग्रहण करता है। र, स् और : (विसर्ग) एकजातीय वर्ण हैं–जैसे प्रातर्, प्रातस्, प्रातः।

रंक–वि० (सं०) निर्धन, गरीब; कृपण, कंजूस; मंद, सुस्त, आलसी। (स्त्री० 'रंकिणी'।) पु० निर्धन व्यक्ति; भिक्षुक; कृपण मनुष्य।

रंकु–पु० (सं०) सफेद चित्तियोंवाला हिरन।

रंग–पु० (सं०) राँगा धातु; सोहागा; नाटचस्थान; क्रीडागार;

रंगमंच; सभाभवन, स्थान; नाचघर; रणभूमि, युद्धक्षेत्र; नृत्य; क्रीडा; खदिरसार; वर्ण, किसी पदार्थका वह गुण जिससे वह सूर्य-किरणोंके कुछ रंगोंको वर्तित और कुछको परावर्तित कर आँखपर डालता तथा कुछको सोख लेता है (जैसे काला रंग सभी किरणोंके वर्तनसे होता है या ग्राहक पदार्थमेंसे किसी भी किरण, प्रकाशका परावर्तन नहीं होता। जिन पदार्थोंसे समग्र प्रकाशका परावर्तन होता है वे सफेद दिखाई देते हैं); कोई खास वर्ण; मिश्रित वर्ण; शरीरका वर्ण। **–कार**–पु० रँगनेवाला। **–काष्ठ**–पु० पतंग लकड़ी, वक्कम। **–क्षेत्र**–पु० अभिनय-स्थल; उत्सव, समारोहका स्थान। **–गृह**–पु० नाटच, अभिनयका स्थान। **–चर**–पु० नाटकमें अभिनय करनेवाला। **–ज**–पु० सिंदूर। **–जननी**–स्त्री० लाख, लाक्षा। **–जीवक**–पु० चित्रकार; अभिनेता। **–जीविक**–पु० रँगनेवाला। **–द**–पु० सोहागा; खदिरसार। **–दलिका**–स्त्री० नागवेल। **–दा,–दृढा**–स्त्री० फिटकरी। **–दायक**–पु० एक तरहकी पहाड़ी मिट्टी, कंकुष्ठ। **–देवता**–पु० रंगभूमिका अधिष्ठाता एक कल्पित देवता। **–द्वार**–पु० रंगमंचका प्रवेश-द्वार; नाटककी प्रस्तावना। **–पत्री,–पुष्पी**–स्त्री० नीली नामका पेड़। **–पीठ**–पु० नृत्यशाला। **–प्रवेश**–पु० अभिनयके लिए किसी पात्रका रंगमंचपर आना। **–बंधक**–पु० (मोर्डेन्ट) वे पदार्थ जो रंग पकड़नेमें कपड़ेकी सहायता करते हैं, जैसे फिटकरी। **–बदल**–पु० (हिं०) हलदी (साधु)। **–बिरंग,–बिरंगा**–वि० (हिं०) अनेक रंगोंवाला; भाँति-भाँतिका। **–बीज**–पु० दे० 'रंगबीज'। **–भरिया**–पु० (हिं०) रंगसाज, रंग करनेवाला; किवाड़, दीवार आदिपर चित्र बनानेवाला। **–भवन**–पु० आमोद-प्रमोद, विलास-विहारका स्थान, रंगमहल। **–भूति**–स्त्री० आश्विनी, कोजागर पूर्णिमा। **–भूमि**–स्त्री० अभिनय, नाटक खेलनेका स्थान, नाटचशाला; युद्धक्षेत्र; क्रीडास्थान, आक्रीड; उत्सव; समारोहका स्थान। **–मंच**–पु० वह स्थान जहाँ नाटकादिका अभिनय, नृत्य, खेल, जलसा इत्यादि हो। **–मंडप**–पु० रंगभूमि, नाटचशाला। **–मध्य**–पु० रंगमंच, 'स्टेज'। **–मल्ली**–स्त्री० वीणा, बीन। **–महल**–पु० (हिं०) भोग-विलासका स्थान, प्रमोदभवन; अंतःपुर; रंगभूमि, रंगशाला; रंगमंच, अभिनयका स्थान। **–माता(तृ)**–स्त्री० लाख, लाक्षा; कुटनी। **–मातृका**–स्त्री० लाख। **–रस**–पु० आनंदक्रीडा, आमोद-प्रमोद। **–रसिया**–पु० (हिं०) मौजी, विलासी पुरुष। **–राज**–पु० तालके साठ भेदोंमेंसे एक (संगीत)। **–रूप**–पु० सूरत, शक्ल। **–लता**–स्त्री० मरोड़फली, आवर्तकी लता। **–लासिनी**–स्त्री० शेफाली, शेफालिका। **–वल्लिका**–स्त्री० नागवल्ली। **–विद्याधर**–पु० अभिनेता; नृत्यप्रवीण, कुशल व्यक्ति; तालके मुख्य साठ भेदोंमेंसे एक (संगीत)। **–बीज**–पु० चाँदी। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाय, नाटचशाला; (स्टूडियो) उद्यान, जलाशय, ध्वन्यभिलेखन-यंत्रादिसे सज्जित प्रकोष्ठ तथा अन्य उपकरणोंसे युक्त वह लंबा-चौड़ा हाता जहाँ चित्रपटके लिए चलचित्र तैयार किये जाते हैं; आकाशवाणी केंद्रका वह प्रकोष्ठ जहाँसे किसी ध्वनिक्षेपक यंत्र द्वारा भाषण, सामयिक वार्त्ता, रूपक, कविसम्मेलन आदिका प्रसारण होता अथवा जहाँ उनका ध्वन्यभिलेखन किया जाता है। **मु० –आना,–चढ़ना**–भली भाँति रंग लग जाना, रंग खुलना। **–उड़ना,–उतरना**–धूल, जल आदिके कारण रंगका हल्का पड़ना, उड़ जाना। **–खेलना,–डालना,–फेंकना**–पानीमें घुला रंग हाथ, पिचकारी आदिसे किसीपर डालना (प्रायः होलीके अवसरपर ऐसा किया जाता है)। **–निखरना**–रंग चटकीला होना। **–फीका पड़ना या होना**–दे० 'रंग उतरना'। **–भरना**–चित्रमें रंग पूरना; रँगना। **–मचना**–रणक्षेत्रमें भीषण युद्ध होना। **–मचाना**–खूब युद्ध करना; धूम मचाना।

रंग–पु० शोभा, सौंदर्य; यौवन; आनंद, मौज; ठाट-बाट, साज-सामान, टीम-टाम; चाल, ढब–'तिनको दान लेत है हमसों, देखहु इनको रंग'–सूर; प्रकार, तरह; असर, प्रभाव; रोब, धाक; अद्भुत दृश्य; व्यापार (विशेषतः समृद्धि आदिके प्रदर्शनमें ईश्वर, स्वामीके प्रति कृतज्ञताके लिए–जैसे लक्ष्मीकी यह अतुल कृपा उन्हींका रंग है); प्रेम, राग, अनुराग; तरंग, मौज; दशा। **–ढंग**–पु० हाल, दशा, स्थिति; तौर-तरीका; व्यवहार, चलावा; चिह्न, लक्षण। **–तरा**–पु० बड़ी मीठी नारंगी, संतरा। **–रली**–स्त्री० आनंद, मौज, खेल। **मु० –आना**–आनंद आना। **–उखड़ना**–दूसरोंपर प्रभाव, रोब, धाक न रहना; प्रतिकूल स्थिति होना; आनंदका घट जाना, नाश हो जाना। **–उजड़ना,–उतरना**–शोभा, रौनक घटना। **–काछना***–चाल चलना, ढंग पकड़ना, ग्रहण करना। **–चढ़ना**–हर्षित होना; रंजित होना; प्रभाव, असर पड़ना। **–चूना,–टपकना**–जवानी आना, जवानी उमड़ना, यौवनका विकास होना। **–जमना**–धाक, रोब, प्रभाव, अनुकूल स्थिति होना; समा बँधना; खूब आनंद, मजा होना। **–जमाना**–प्रभाव स्थापित करना, धाक बैठाना, बाँधना। **–देना**–अपनेमें प्रेमासक्त करनेके लिए किसीके प्रति प्रेम प्रकट करना (बाजारू)। **–पकड़ना,–पर आना**–रौनक, बहारपर आना। **–बँधना**–रोब जमना, धाक बँधना। **–बदलना**–स्थितिमें परिवर्तन होना; अच्छी दशामें होना। **–बरसना**–रौनक, शोभाकी वृद्धि होना। **–बाँधना**–महत्त्व, प्रभाव स्थापित करना; रोब गाँठना। **–बिगड़ना**–रोब, प्रभाव कम होना, नष्ट होना। **–बिगाड़ना**–रोब, महत्त्व घटाना, नष्ट करना; शेखी किरकिरी करना। **–में ढलना**–किसीके प्रभाव, असरमें आना; किसीके अनुकूल आचरण करना, चलना। **–में भंग करना**–बना-बनाया खेल बिगाड़ना; आनंद, हर्षके क्षणमें उपद्रव करना। **–में रँगना**–तन्मय होना; अनुकूल होना; किसीका अनुकरण करना। **–रचाना**–उत्सव, जशन करना। **–रलना**–क्रीडा, प्रमोद करना। **–लाना**–असर दिखाना; विशेषता प्रकट करना; स्थिति, अवस्था उत्पन्न करना।

रंग–पु० (फा०) वर्ण; वह बुकनीदार चीज जो बाजारोंमें मिलती और कपड़ा, लकड़ी, आदि रँगनेके काम आती है; किरणोंका रंग (इसका प्रभाव आँखोंपर पड़ता है, और जो रंग किसी पदार्थ द्वारा परावर्तित होता है वहीं उसमें दिखाई देता है); दृश्य; ढंग, तरीका; खेल; उल्लास, आनंद; दशा, हालत; रौनक, खूबसूरती; ट्रंप, (ताशके खेलमें); चौपड़की खास रंगकी, आठ गोटियाँ। **–अफ़शानी**–स्त्री० रंग छिड़कना। **–पाशी**–स्त्री० होलीका उत्सव। **–मार**–पु० ताशका एक खेल। **–साज़**–पु० रंग बनानेवाला; दीवार, मेज आदिपर रंग चढ़ानेवाला। **–साज़ी**–स्त्री० रंगसाजका काम।

रंगई†–पु० छपे हुए कपड़े धोनेवाली धोबियोंकी एक जाति।

रंगत–स्त्री० हालत, दशा; आनंद, मजा; रंग।

रंगन†–पु० एक वृक्ष।

रँगना–स० क्रि० रंग देना (दीवार, चित्र आदिमें); रंगमें डुबोना (कपड़ा)। **रँगा सियार**–पु० सज्जन बना हुआ व्यक्ति, पाखंडी।

रंगपुरी–स्त्री० एक तरहकी नाव।

रंगवाति*–स्त्री० सुगंधित द्रव्यकी बनी वत्ती (मति०)।

रंगरूट–पु० (अं० 'रिक्रूट') नया सिपाही; नौसिखिया।

रंगरेज़–पु० (फा०) कपड़ा रँगनेका काम करनेवाला। (स्त्री० 'रँगरेजिन'।)

रँगरेली–स्त्री० दे० 'रंगरली', आनंद; खेल।

रँगरैनी†–स्त्री० लाल रंगकी चुनरी।

रँगवा†–पु० जानवरोंका एक रोग।

रँगवाई–स्त्री० दे० 'रँगाई'।

रँगवाना–स० क्रि० दे० 'रँगाना'।

रंगांगण–पु० (सं०) रंगभूमि।

रंगांगा–स्त्री० (सं०) फिटकरी।

रँगाई–स्त्री० रँगनेका काम या भाव; रँगनेकी मजदूरी।

रंगाजीव, रंगाजीवी(विन्)–पु० (सं०) रँगाईसे गुजर करनेवाला, रंगसाज।

रँगाना–स० क्रि० रँगनेका काम कराना।

रंगाभरण–पु० (सं०) तालका एक मुख्य भेद।

रंगार†–पु० राजपूतोंकी एक उपजाति; एक वैश्य उपजाति; मध्यप्रदेश और दक्षिण भारत-निवासी एक जाति (इस जातिके लोग खेतीका पेशा करते और अपनेको ब्राह्मण कहते हैं)।

रंगारि–पु० (सं०) कनेर।

रंगालय–पु० (सं०) रंगस्थल, रंगशाला।

रँगावट–स्त्री० रँगाई।

रंगावतारक–पु० (सं०) अभिनेता, रंगसाज।

रंगावतारी(रिन्)–पु० (सं०) अभिनेता।

रंगिणी–स्त्री० (सं०) शतमूली; कैवर्तिका लता। वि० स्त्री० रंगवाली; विनोदिनी, रसिका।

रँगिया†–पु० रँगाईका काम करनेवाला; रंग बनानेवाला।

रंगी(गिन्)–वि० (सं०) विनोदी, मौजी; रंगवाला; रँगनेवाला; अनुरक्त; अभिनय करनेवाला।

रंगीन–वि० (फा०) रँगा हुआ; चमत्कारपूर्ण; विलासप्रिय, ऐशपसंद; सुखद कल्पनासे युक्त।

रंगीनी–स्त्री० रंगीन होना; शृंगार, सजाव; रँगीलापन।

रंगीरेटा†–पु० एक जंगली पेड़।

रँगीला–वि० मौजी; सुंदर; प्रेमी। (स्त्री० 'रँगीली'।) **–पन** –पु० रंगीला होनेका चाव, रंगीनी। **–(ली)टोड़ी**–स्त्री० एक रागिनी, टोड़ी रागिनीका एक भेद।

रँगैया†–पु० रँगनेवाला।

रंगोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) अभिनय द्वारा रोजी कमानेवाला नट।

रंगोली–स्त्री० (रंगवल्ली) रांगोली, रंगीन बुकनी जिससे भोज, उत्सवादिके समय फर्शपर चित्र बनाये जाते हैं; अल्पना।

रंगौंधी–स्त्री० (कलर ब्लाइण्डनेस) नेत्रोंकी ऐसी कमजोरी जिससे व्यक्ति रंगकी सही पहिचान न कर सके।

रंच, रंचक–वि० थोड़ा, जरा, किंचित्।

रंज–पु० (फा०) दुःख; शोक; दर्द, तकलीफ; अफसोस; पछतावा। † वि० नाराज।

रंजक–पु० (सं०) रँगरेज; रंगसाज; ईंगुर; (डाई) रंगवाले पदार्थ (सामान्यतः कार्बनिक यौगिक) जो रंगी जानेवाली वस्तु –कपड़ा आदि–में भलीभांति मिल सकें ताकि पानी आदिके सम्पर्कसे वे आसानीसे छुड़ाये न जा सकें; जैसे नील। आधुनिक रंजक कोलतारके उपोत्पादोंसे प्राप्त किये जाते हैं; मेहदी; भिलावाँ; पित्तवर्ती एक अग्नि (सुश्रुत)। वि० रँगनेका काम करनेवाला; मनोरंजक, हर्षकारक। स्त्री० (फा०) बंदूक, तोपकी बारूदकी प्याली; बारूद जो इस प्यालीमें रखी जाय; गाँजा, तमाखूका दम (बाजारू); उत्तेजक बात; तीखा, चटपटा चूर्ण। **मु० –उड़ाना**–बंदूक, तोपकी प्यालीमें बारूद रखकर जलाना; पादना (बाजारू)। **–चाट जाना**–तोप, बंदूककी प्यालीकी बारूदका यों ही जलकर रह जाना, गोली, गोला न छूटना। **–पिलाना**–तोप, बंदूककी प्यालीमें रंजक रखना।

रंजन–पु० (सं०) रँगनेका काम, रँगना; मन प्रसन्न करना; रंग बनानेके साधनभूत पदार्थ–शेफालिका, हलदी, नील, कुसुम, मजीठ आदि; मूंज; कमीला; सोना; जायफल; लाल चंदन; पित्त। वि० रंजक। **–कारी साहित्य**–पु० (लाइट लिटरेचर) ऐसी पुस्तकें, कहानियाँ आदि जिन्हें लोग मनबहलावके लिए पढ़ते हैं और जिन्हें पढ़ने-समझनेमें विशेष आयास नहीं करना पड़ता। **–केशी**–स्त्री० नीलीका पेड़।

रंजनक–पु० (सं०) कटहल।

रंजना*–स० क्रि० हर्षित करना; भजना; रँगना।

रंजनी–स्त्री० (सं०) हलदी; पर्पटी; नागवल्ली; नीली वृक्ष; मजीठ; पहाड़ी लता; ऋषभकी तीन श्रुतियोंमें दूसरी (संगीत)। **–पुष्प**–पु० पूतिकरंज, कंजा।

रंजनीय–वि० (सं०) रँगने योग्य; हर्ष, आनंद दे सकनेवाला।

रंजा†–स्त्री० एक मछली, 'उलवी'।

रंजित–वि० (सं०) रँगा हुआ; हर्षित; अनुरक्त।

रंजिश, रंजीदगी–स्त्री० (फा०) नाराजगी; अनबन, वैमनस्य।

रंजीदा–वि० (फा०) नाराज; दुःखी।

रंझना–अ० क्रि० रंगयुक्त होना, फलना-फूलना, सुखी होना।

रंड–वि० (सं०) धूर्त; बेचैन; विफल; जिसका अंग छिन्न हो गया हो। पु० निस्संतान मरनेवाला मनुष्य; अफल वृक्ष।

रंडक–पु० (सं०) फलहीन वृक्ष।

रंडा–स्त्री० (सं०) राँड़, विधवा।

रँड़ापा–पु० वैधव्य।

रंडाश्रमी(मिन्)–पु० (सं०) ४८ वर्षकी अवस्थाके बाद रँडुआ होनेवाला पुरुष।

रँड़िया–स्त्री० राँड़।

रंडी–स्त्री० नाचने-गानेका व्यवसाय करनेवाली और धन लेकर संभोग करनेवाली स्त्री, वेश्या। **–बाज़**–पु० वेश्यागामी। **–बाज़ी**–स्त्री० वेश्यागमन। **मु० –रखना**–वेश्याको संभोग आदिके लिए साथ रखना।

रँडुआ–पु० वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो।

रँडोरा†–पु० रँड़ुआ।

रँडोरी†–स्त्री० विधवा।

रंता(तृ)–वि० (सं०) रमण, आनंद करनेवाला; * अनुरक्त।

रंति–स्त्री० (सं०) क्रीड़ा; विराम। **–देव**–पु० एक परम दानी और यज्ञकर्मा पौराणिक राजा; विष्णु; कुत्ता। **–नदी**–स्त्री० चंबल।

रंतु–पु० (सं०) सड़क, मार्ग; नदी।

रंद–पु० हवा, रोशनी आनेके लिए दीवारमें बनाये हुए छेद, रंध्र; किलेकी दीवारका मोखा जिससे तोप, बंदूक बाहरकी ओर चलाते हैं।

रँदना–स० क्रि० रंदा फेरना; चलाना; रंदेसे लकड़ीकी सतह चिकनाना।

रंदा–पु० बढ़इयोंका एक औजार जिससे लकड़ीको चिकनी और सम बनाते हैं।

रंधक–पु० (सं०) रसोइया, राँधनेवाला; बरबाद करनेवाला।

रंधन–पु० (सं०) रसोई, भोजन बनाना; नष्ट, बरबाद करना।

रंधित–वि० (सं०) पकाया, राँधा हुआ; नष्ट किया हुआ।

रंध्र–पु० (सं०) छेद; दोष; भग; लग्नसे आठवाँ स्थान।

रंध्रागत–पु० (सं०) घोड़ोंके गलेका एक रोग।

रंबा–पु० जुलाहोंका एक औजार जिसमें तानेकी रस्सी बाँधते हैं; दे० 'रंभा'।

रंभ–पु० (सं०) गर्जन; टेक, सहारा; छड़ी, डंडा; बाँस; रेणु, धूल; केला (रघु०); एक असुर।

रंभण–पु० (सं०) रँभाना; आलिंगन (?)।

रंभन*–पु० दे० 'रंभण'।

रंभा–पु० लोहेका मोटा, चिपटे सिरवाला, बड़ा डंडा जो दीवार आदिमें छेद करनेके काम आता है, खंता, सबरी, साबर। स्त्री० (सं०) केला; एक अप्सराका नाम; गायका रँभाना, चिल्लाना; गौरी; उत्तरकी दिशा; एक तरहका चावल। **–तृतीया**–स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला तृतीया। **–पति**–पु० इंद्र। **–फल**–पु० केला।

रँभाना–अ० क्रि० गायका बोलना।

रंभिणी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

रंभित–वि० (सं०) शब्द किया हुआ; बजाया हुआ।

रंभी(भिन्)–पु० (सं०) द्वारपाल; वृद्ध, बूढ़ा आदमी। वि० दंडपाणि, जिसके हाथमें डंडा हो।

रंभोरु–वि० स्त्री० (सं०) कदलीस्तंभके समान जाँघोंवाली (स्त्री); सुंदर।

रंह(स्)–पु० (सं०) वेग, गति।

रँहचटा–पु० इच्छापूर्तिकी हविस, लालच।

र–पु० (सं०) अग्नि; कामाग्नि; ताप, आँच; वेग; सितारका एक बोल; स्वर्ण; वर्ण; शब्द; दे० 'रगण'। वि० तीक्ष्ण, प्रखर। **–कार**–पु० 'र' वर्णका बोधक अक्षर। **–गण**–पु० तीन वर्णोंका शब्द जिसमें पहला, तीसरा गुरु और दूसरा लघु होता है; देवता; अग्नि।

रअय्यत–स्त्री० (अ०) रिआया, प्रजा; काश्तकार, असामी; नौकर; मुलाजिम; बिना किराया दिये मकानमें रहनेवाला आदमी। **–आज़ार**–वि० प्रजाको पीड़ा देनेवाला। **–आज़ारी**–स्त्री० प्रजापर अत्याचार करना, उत्पीड़न। **–दार**–पु० हाकिम, शासक। **–दारी**–स्त्री० हुकूमत, सल्तनत, राज्य, शासन। –

निवाज़–वि॰ प्रजाकी सहायता, रक्षा करनेवाला (शासक, स्वामी)। **–निवाज़ी**–स्त्री॰ प्रजाकी रक्षा। **–परवर**–वि॰ प्रजावत्सल, प्रजापालक। **–परवरी**–स्त्री॰ प्रजाकी रक्षा, सहायता। **–वारी**–वि॰ (बंदोबस्त) जो एक-एक काश्तकारके साथ, अलग-अलग हो। स्त्री॰ एक बंदोबस्त जिसमें काश्तकार सीधे सरकारको मालगुजारी देता है।

रइअत–स्त्री॰ दे॰ 'रअय्यत'।

रइकौ*–अ॰ कुछ भी, जरा भी।

रइबारी–पु॰ वह जो ऊंट चराता या पालता हो।

रइनि*–स्त्री॰ रजनी, रात, रैन।

रई–स्त्री॰ खैलर, मथनी, दही मथनेकी लकड़ी; गेहूँका दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण (रवाका अल्पार्थक रूप)। * वि॰ स्त्री॰ अनुरक्त, पगी हुई, डूबी हुई; सहित, युक्त; मिली हुई।

रईस–पु॰ (अ॰) ताल्लुकेदार, सरदार (राजा, नवाब, सेनापति, शाहजादा, हाकिम, उच्च वर्गका आदमी, अमीर, धनी); शरीफ, शिष्ट, प्रतिष्ठित मनुष्य। **–उल बहर**–पु॰ जल-सेनापति। **–ख़ुदमुख़्तार**–पु॰ वह सरदार जो किसीके अधीन न हो। **–ज़ादा**–पु॰ रईसका लड़का। **–ज़ादी**–स्त्री॰ रईसकी लड़की।

रईसी–स्त्री॰ अमीरी, धन-संपन्नता। वि॰ रईसों जैसा।

रउताई*†–स्त्री॰ प्रभुता, स्वामित्व।

रउरे†–सर्व॰ मध्यम-पुरुषका आदरसूचक संबोधन, आप।

रऐअत–स्त्री॰ दे॰ 'रअय्यत'।

रकछ†–पु॰ पतौड़, पत्तोंकी पकौड़ी, रिकवँच।

रकत*–पु॰ लहू, रुधिर। वि॰ लाल। **–कंद***–पु॰ मूँगा, विद्रुम; रतालू, राजपलांडु।

रकतांक*–पु॰ मूँगा; केसर, कुंकुम; लाल चंदन।

रकबा–पु॰ क्षेत्रफल, लंबाई-चौड़ाईका गुणा करनेसे प्राप्त गुणनफल; घिरी हुई जमीन, घेरा, अहाता।

रकवाहा–पु॰ घोड़ोंकी एक जाति।

रकमंजनी–स्त्री॰ एक पौधा।

रक़म–स्त्री॰ (अ॰) धन, नियत संख्याके रुपये; अरबीकी संख्याएँ जो शब्दोंके संक्षिप्त रूपसे बनी हैं; लिखना, तहरीर, लेखन; मुहर, छाप; पूरी संख्या, जोड़; प्रकार, भाँति; मूल्यवान् वस्तु; जेवर, गहना; सम्मिलित संपत्तिका एक भाग; मालगुजारी, लगानकी दर; शाहजादेकी लिखित चिट्ठी; कशीदा किया धारीदार कपड़ा; निशान; कीमतका निशान; ढंग, तौर, तरीका। **–सायर,–सिवाय**–स्त्री॰ वह आमदनी जो लगानके अलावा जमींदारको मिलती हो।

रक़मी–वि॰ निशान किया हुआ, लिखा हुआ। पु॰ एक तरहका किसान जिसके साथ कुछ रिआयत की जाती है।

रक़ाक़–पु॰ (अ॰) नरम चौरस जमीन। वि॰ गरम (दिन)।

रकान–स्त्री॰ ढंग, तरीका; लगाम।

रकाब–स्त्री॰ (अ॰) लोहेका पावदान जो जीनमें दोनों ओर रस्सी या तस्मेसे लटकता रहता है और जिसपर पैर रखकर घोड़ेपर चढ़ते हैं; बादशाहों, अमीरोंकी सवारीका घोड़ा; अठपहलू प्याला; बड़ी रकाबी। **–दार**–पु॰ घोड़ेपर चढ़ानेवाला नौकर, साईस; वह नौकर जो अमीर आदमियोंके घोड़ेके साथ दौड़ता है; खासाबरदार, बादशाहोंके साथ खाना लेकर चलनेवाला सेवक; अचार, चटनी, मिठाई वगैरह बनाकर बेचनेवाला आदमी, हलवाई; रकाबियोंमें खाना लगाकर रखनेवाला। **–धाल**–पु॰ वह चमड़ा, तस्मा जिसमें रकाब लटकती है। मु॰**–टूटना**–रकाबके चमड़े, तस्मेका सवारीमें टूट जाना। **–थामना**–घोड़ेपर किसीके चढ़ते समय साईसका रकाब पकड़ना। **–में**–सहयात्री, हमराह। **–में पाँव रखना**–घोड़ेपर सवार होना। **–में पाँव रहना**–हर वक्त चलनेको तैयार रहना।

रक़ाबत–स्त्री॰ (अ॰) एक प्रेमिकाके कई प्रेमी होना, प्रणयकी प्रतियोगिता।

रकाबा–पु॰ बड़ी रकाबी, परात।

रकाबी–स्त्री॰ तश्तरी, चीनी मिट्टी इत्यादिकी बनी थाली; छिछली छोटी थाली जिसकी दीवार बाहर मुड़ी हो; साकी; वह घोड़ा जिसे पकड़कर परेडपर ले जायँ; घोड़ेकी बगलमें लटकनेवाली तलवार; लखनऊमें प्रचलित एक प्रकारका रुपया; ऊंटोंपर लाया जानेवाला एक प्रकारका दमिश्कका तेल। **–चेहरा**–पु॰ चौड़ा मुँह, गोल मुँह। **–मज़हब**–पु॰ वह आदमी जो लोभसे कभी इधर, कभी उधर हो, खुशामदी, प्रियवादी, चाटुकार। **–सामना**–पु॰ बदशक्ल, गोल मुँह, चकला मुँह।

रक़ीक़–वि॰ (अ॰) पानीके समान द्रव, तरल; मुलायम, नरम। पु॰ गुलाम। **–उल क़ल्ब**–वि॰ नरमदिल।

रकीक़ा–स्त्री॰ बाँदी, लौंडी, कनीज।

रक़ीब–पु॰ (अ॰) प्रतिस्पर्द्धी; एक प्रेयसीके प्रेमियोंमेंसे कोई एक; संरक्षक।

रक़ीबानेदस्त, हफ्त बाम–पु॰ (अ॰) सात सितारे, सप्तर्षि।

रकेबी†–स्त्री॰ दे॰ 'रकाबी'।

रक्कास–वि॰ नाचनेवाला। (स्त्री॰ 'रक्कासी'।)

रक्कासा–स्त्री॰ नाचनेवाली।

रक्खना–स॰ क्रि॰ दे॰ 'रखना'।

रक्त–पु॰ (सं॰) लहू, रुधिर; लाल रंग; ताँबा; पुराना आँवला; कुंकुम; कमल; लाल चंदन; सिंदूर; ईंगुर; पतंगकी लकड़ी; हिज्जल, बेत (नदीतटपर होनेवाला); गुलदुपहरिया, बंधूक; एक मछली; एक जहरीला मेढक। वि॰ अनुरक्त, आसक्त; रँगा हुआ; सुर्ख, लाल; विलासी, ऐयाश; शुद्ध, शोधित। **–आतंच**–पु॰ (ब्लड क्लॉटिंग) शरीरकी त्वचा जब कट जाती है तो रक्त प्रवाह होने लगता है, तभी पीत-श्वेत रंगका स्कंदित प्रोटीनका जालीनुमा आवरण रक्त कोशोंको ढक लेता है जिससे रक्त थक्का बाँध लेता है। इस क्रियाको 'रक्त आतच' कहते हैं। इसी क्रियाके फलस्वरूप कुछ ही देरमें रक्तका बाहर निकलना रुक जाता है। **–आमातिसार**–पु॰ एक रोग जिसमें लहूके दस्त आते हैं, रक्तातिसार। **–कंगु**–पु॰ सालका पेड़ (इससे राल निकलती है)। **–कंटा**–स्त्री॰ विकंकत वृक्ष। **–कंठ**–वि॰ लाल कंठवाला; सुरीली आवाजवाला। पु॰ कोयल; भंटा। **–कंठी(ठिन्)**–वि॰ सुरीली आवाजवाला। पु॰ कोयल। **–कंद**–पु॰ मूँगा, विद्रुम; लाल प्याज। **–कंदल**–पु॰ मूँगा, प्रवाल, विद्रुम। **–कंवल**–पु॰ कुईं, नीलोफर, कुमुद। **–कदंब**–पु॰ एक प्रकारका कदंब जिसके फूल गहरे लाल रंगके होते हैं। **–कदली**–स्त्री॰ चंपाकेला। **–कमल**–पु॰ लाल रंगका कमल। **–करवीर**–पु॰ लाल कनेर। **–कांचन**–पु॰ लाल कचनारका वृक्ष। **–कांता**–स्त्री॰ लाल गदहपूरना, रक्त पुनर्नवा। **–काश**–पु॰ एक रोग जिसमें फेफड़ेसे मुँहकी राह खून निकलता है। **–काष्ठ**–पु॰ पतंगकी लकड़ी। **–कुंडल,–कुमुद**–पु॰ कुईं। **–कुरुंडक**–पु॰ लाल कटसरैया। **–कुष्ठ**–पु॰ विसर्प रोग (इसका लक्षण है–सारे शरीरमें जलन, कभी-कभी लाल रंगका हो जाना और कुष्ठकी भाँति गलना)। **–कुसुम**–पु॰ कचनार; धामिनका पेड़; मदार; पारिभद्र या फरहदका पेड़। **–कुसुमा**–स्त्री॰ अनारका पेड़। **–कृमिजा**–स्त्री॰ लाह, लाख। **–केसर**–पु॰ फरहद, पारिभद्रका पेड़। **–केशी(शिन्)**–वि॰ तामड़े, लाल रंगके बालोंवाला। **–कैरव**–पु॰ लाल कुमुद। **–कोकनद**–पु॰ लाल कमल। **–क्षय**–पु॰ रुधिर बहना, रक्तस्राव। **–क्षेपण**–पु॰ (ब्लडट्रांसफ्यूजन) एक व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंसे रक्त निकालकर किसी अन्य व्यक्ति या प्राणीकी धमनियोंमें पहुँचाना, रक्त-संक्रामण, रक्ताधान। **–खदिर**–पु॰ वह खैर जिसके फूल लाल हों; रक्तसार। **–खांडव**–पु॰ खजूरका पेड़। **–गंधक**–पु॰ एक गंधद्रव्य, बोल। **–गंधा**–स्त्री॰ असगंध, अश्वगंधा। **–गर्भा**–स्त्री॰ मेंहदीका पेड़। **–गुल्म**–पु॰ एक स्त्री-रोग जिसमें गर्भाशयमें रक्तकी गाँठ-सी बँध जाती है। **–गैरिक**–पु॰ गेरू, स्वर्णगैरिक। **–ग्रीव**–पु॰ कबूतर; राक्षस। **–ग्रंथि**–स्त्री॰ लाल लजवंती; एक रोग जिसमें शरीरमें लहूकी गाँठें बन जाती हैं। **–घ्न**–पु॰ रोहितक वृक्ष। वि॰ जिससे रक्त नष्ट हो। **–घ्नी**–स्त्री॰ एक दूब; गाँडर। **–चंचु**–पु॰ तोता, सुआ। **–चंदन**–पु॰ लाल चंदन। **–चाप**–पु॰ (ब्लडप्रेशर) हृदय द्वारा प्रक्षेपित रक्तका धमनी आदिकी दीवारपर पड़नेवाला दबाव जो

उचित मात्रासे कम या अधिक होनेपर रोग या विकृतिका सूचक होता है । **–चित्रक**–पु० लाल चीता वृक्ष । **–चूर्ण**–पु० सेंदुर; कमीला । **–च्छर्दि**–स्त्री० रक्तवमन, खूनकी कै । **–ज**–वि० रक्तसे उत्पन्न; रक्तविकारसे होनेवाला । –०**कृमि**–पु० रक्तविकार-जनित कीड़ा । **–जवा**–स्त्री० देवीफूल, जवाकुसुम, अड़हुल । **–जिह्व**–पु० शेर, सिंह । वि० लाल जीभवाला । **–जूर्ण**–पु० ज्वार, जोन्हरी । **–तुंड**–पु० तोता, सुआ । वि० जिसका मुँह लाल हो । **–तुंडक**–पु० एक कीड़ा, भूनाग, केंचुवा । **–तृण**–पु० लाल रंगका तृणविशेष । **–तृणा**–स्त्री० एक तृण, गोमूत्रिका । **–दंतिका**–स्त्री० चंडिका, एक प्रकारके उग्र दानवोंका आहार करनेवाली दुर्गा । **–दंती**–स्त्री० दे० 'रक्तदंतिका' । **–दला**–स्त्री० नलिका नामक गंधद्रव्य । **–दान-बैंक**–पु० (ब्लडबैंक) युद्धमें घायल होने या अन्य कारणोंसे जिनकी धमनियोंमें रक्तकी नितांत कमी हो गयी हो उनके शरीरमें रक्तका निक्षेपण करनेके लिए पहलेसे ही स्वस्थ व्यक्तियोंकी देहसे लिया गया रक्त संचय करनेवाली संस्था । **–दूषण**–वि० रक्त दूषित करनेवाला, खून खराब करनेवाला । **–दृक्(श्)**–पु० कोयल; कबूतर; चकोर; सारस । वि० लाल आँखोंवाला । **–द्रुम**–पु० लाल बीजासन वृक्ष । **–धारा**–स्त्री० मांसके भीतरकी दूसरी कला, झिल्ली जो रक्त धारण करती है (आ० वे०) । **–धातु**–स्त्री० गेरू; ताँबा । **–नयन**–वि०, पु० दे० 'रक्तदृक्' । **–नाडी**–स्त्री० दाँतकी जड़ोंमें होनेवाला रोग विशेष । **–नाल**–पु० सुसना, जीवशाक । **–नासिक**–पु० उल्लू । **–निक्षेपण**–दे० 'रक्त क्षेपण' । **–निर्यास**–पु० लाल बीजासन वृक्ष । **–नील**–पु० एक अत्यंत विषैला विच्छू (सुश्रुत) । **–नेत्र**–वि०, पु० दे० 'रक्तदृक्' । **–प**–पु० राक्षस । वि० रक्तपायी, रक्त पीनेवाला । **–पक्ष**–पु० गरुड । **–पट**–पु० श्रमण । वि० लाल कपड़े पहननेवाला । **–पत्र**–पु० पिंडालू । **–पत्रा**–स्त्री० नाकुली; लाल गदहपुरना । **–पदी**–स्त्री० लजवंती, लजालू । **–पर्ण**–पु० लाल गदहपुरना । **–पल्लव**–पु० अशोक वृक्ष । **–पा**–स्त्री० जोंक; डाकिनी । **–पाका**–स्त्री० बृहती लता । **–पात**–रक्त गिरना, बहना, रक्तस्राव; ऐसा प्रहार जिससे किसीका रक्त बहे; खूनखराबी, मारकाट । **–पाता**–स्त्री० जोंक । **–पाद**–पु० बरगद; तोता । **–पायी(यिन्)**–वि० रक्त पान करनेवाला, खून पीनेवाला । (स्त्री० 'रक्तपायिनी' ।) पु० खटमल, मत्कुण । **–पारद**–पु० ईंगुर, हिंगुल, शिगरफ । **–पाषाण**–पु० लाल पत्थर, गेरू । **–पिंड**–पु० जवाफूल । **–पिंडक**–पु० जवा, अड़हुल; रतालू । **–पिंडाल**–पु० रतालू । **–पित्त**–पु० एक रोग जिसमें मुँह, नाक, कान, गुदा, योनि आदिसे रक्त गिरता है । –०**हा**–स्त्री० रक्तघ्नी दूब । **–पुच्छक**–पु० रेंगनेवाला एक कीड़ा । **–पुनर्नवा**–स्त्री० लाल रंगकी पुनर्नवा, गदहपुरना, वैशाखी, पुनर्भव, रक्तपत्रिका, लोहिता, वर्षकेतु, विषघ्नी, रक्तकांता, मंडलपत्रिका, भौम, नव, पुष्पिका, नव्य । **–पुष्प**–पु० कनेर, करवीर; अनार; बंधूक; पुन्नाग; अड़हुल । **–पुष्पक**–पु० पलाश; सेमल । **–पुष्पा**–स्त्री० सेमल; चंपाकेला; सिंदूरी; नागदौन; पुनर्नवा । **–पुष्पिका**–स्त्री० लाजवंती; लाल पुनर्नवा । **–पुष्पी**–स्त्री० आवर्तकी लता, धौ; पाँड़र; नागदौन; जवा, अड़हुल । **–पूतिका**–स्त्री० लाल पोई, लाल रंगकी पूतिका । **–पूय**–पु० एक नरक (पु०) । **–पूरक**–पु० इमली । **–पूर्ण**–वि० रक्तसे भरा हुआ । **–प्रतिश्याय**–पु० जुकामका एक भेद । **–प्रदर**–पु० प्रदरका एक भेद जिसमें स्त्रीकी योनिसे रक्त-प्रवाह होता रहता है । **–प्रमेह**–पु० एक पुरुष-रोग (इसमें खूनका-सा दुर्गंधपूर्ण पेशाब होता है) । **–प्रवृत्ति**–स्त्री० पित्त-प्रकोपसे होनेवाला एक रोग । **–प्रसव**–पु० मुचकुंद वृक्ष; लाल कनेर । **–फल**–पु० सेमल; बरगद । **–फला**–स्त्री० कुँदरू, तुण्डी; स्वर्णवल्ली । **–फूल**–पु० (हिं०) अड़हुल; पलाश । **–फेनज**–पु० फेफड़ा, फुफ्फुस । **–भव**–पु० मांस, गोश्त । **–मंजर**–पु० बेंतकी लता; नीम । **–मंजरी**–स्त्री० लाल कनेर । **–मंडल**–पु० साँपोंकी एक जाति (सुश्रुत); लाल कमल; एक जहरीला पशु । **–मंडलिका**–स्त्री० लाल लाजवंती, लजालू । **–मत्त**–पु० जोंक; राक्षस । वि० जो रक्त पीकर तृप्त हो । **–मत्स्य**–पु० लाल रंगकी एक छोटी मछली । **–मस्तक**–पु० सारस । वि० लाल मस्तकवाला । **–मातृका**–स्त्री० पचे हुए भोजनसे पेटमें बननेवाला रस (आ० वे०); एक रोग (तं०) । **–मुख**–पु० रोहू मछली; यष्टिक धान्य । **–मूर्द्धा(र्द्धन्)**–पु० सारस । **–मूलक**–पु० देवसर्षप, सरसोंका पौधा । **–मूला**–स्त्री० लजालू, लाजवंती । **–मेह**–पु० दे० 'रक्तप्रमेह' । **–मोक्षण**–पु० खून खराब हो जानेपर उसे बाहर निकालनेकी क्रिया, फस्द (आ० वे०) । **–मोचन**–पु० फस्द, शरीरका खून निकालना । **–यष्टि**–स्त्री० मजीठ । **–रंगा**–स्त्री० मेंहदी । **–रज(स्)**–पु० सिंदूर । **–रस**–पु० बिजैसार । **–रसा**–स्त्री० रास्ना । **–राजि**–स्त्री० सर्षपिका कीड़ा (सुश्रुत); एक नेत्ररोग । **–रेणु**–पु० पुन्नाग; सिंदूर; पलाशकलिका । **–रैवतक**–पु० खजूर वृक्षका एक प्रकार । **–रोग**–पु० रक्तदोषसे होनेवाला रोग, जैसे कुष्ठ । **–लोचन**–वि०, पु० दे० 'रक्तनेत्र' । **–वटी**–स्त्री० चेचक, शीतला रोग । **–वरटी**–स्त्री० दे० 'रक्तवटी' । **–वर्ग**–पु० कुसुम, मजीठ, दुपहरियाका फूल, हल्दी, दारुहल्दी, लाख, ढाक और अनारका समाहार (इनसे रंग निकलता है) । **–वर्ण**–पु० इंद्रवधू, बीरबहूटी; मूँगा; कमीला, कंपिल्लक; लहसुनिया, गोमेद; लाल रंग । वि० लाल रंगका । **–वर्त्तक**–पु० लाल रंगकी बटेर । **–वर्त्मा(र्त्मन्)**–पु० मुर्गा । **–वर्द्धन**–पु० बैंगन । वि० रक्त बढ़ानेवाला । **–वर्षाभू**–स्त्री० लाल गदहपुरना । **–वल्ली**–स्त्री० मजीठ; दंडोत्पल; पयारी, नलिका; पित्ती लता । **–वसन**–पु० सन्न्यासी । वि० जिसके कपड़े लाल हों । **–वात**–पु० एक वातरोग, वातरक्त । **–वालुक**–पु० सिंदूर । **–बिंदु**–पु० रुधिरकी बूँद; लाल चिचिड़ा, अपामार्ग; लाल धब्बे, दाग । **–विद्रधि**–स्त्री० रक्त-विकार-जनित विद्रधि, फोड़ा । **–विस्फोटक**–पु० गुंजा जैसे लाल फफोले पड़नेवाला एक रोग । **–बीज**–पु० लाल बीजका अनार, बेदाना; रीठा; एक राक्षस जिसके धरतीपर गिरनेवाले रक्तके बिंदु-बिंदुसे राक्षस तैयार हो जाते थे और जिसका वध चंडिकाने किया था (देवीभागवत) । **–बीजका**–स्त्री० तरदी, एक कँटीला पेड़ । **–बीजा**–स्त्री० सिंदूरिया, सिंदूरपुष्पी । **–वृंतक**–पु० गदहपुरना, पुनर्नवा । **–वृंता**–स्त्री० शेफालिका, निर्गुंडी; हरसिंगार । **–वृष्टि**–स्त्री० आकाशसे लाल रंगके पानीकी वर्षा । **–व्रण**–पु० वह फोड़ा जिससे मवादकी जगह रक्त निकले । **–शयन**–पु० कमीला । **–शालि**–पु० लाल चावल, दाऊदखानी । **–शालुका**–पु० लाल कमलकी जड़, भसींड़ । **–शाल्मलि**–पु० लाल फूलोंवाला सेमल । **–शासन**–पु० सिंदूर । **–शिग्रु**–पु० लाल सहिजन । **–शीर्षक**–पु० सारस; गंधाबिरोजा । **–शृंग**–पु० हिमालयका एक शृंग । **–शृंगिक**–पु० एक विष । **–शेखर**–पु० पुन्नाग । **–श्वेत**–पु० अति विषैला बिच्छू (सुश्रुत) । **–ष्ठीवी**–स्त्री० घातक सन्निपातका एक भेद । **–संकोच**–पु० कुसुमका फूल । **–संज्ञक**–पु० केसर, कुंकुम । **–संदेशिका**–स्त्री० जोंक । **–संबंध**–पु० वंशगत ऐक्य, वंश, कुलका संबंध । **–संवरण**–पु० सुरमा । **–सर्षप**–पु० लाल सरसों । **–सार**–पु० लाल चंदन; खैर; पतंग; वाराही कंद; अमलबेत; रक्त बीजासन । **–स्तंभन**–पु० बहते रक्तको रोकनेका कार्य । **–स्राव**–पु० खून बहना, निकलना, गिरना; घोड़ोंका एक रोग जिसमें आँखोंसे रुधिर या लाल पानी बहता है । **–हंसा**–स्त्री० एक रागिनी । **–हर**–पु० भिलावाँ ।

रक्तक–पु० (सं०) रुधिर; लाल वस्त्र; लाल रंगका घोड़ा; लाल सहिजन; लाल रेंड़; गुल दुपहरिया; कुंकुम । वि० अनुरागी; विनोदी ।

रक्तता–स्त्री० (सं०) लालिमा, ललाई, सुर्खी ।

रक्तला–स्त्री० (सं०) कौवाठोंठी; काकतुंडी; गुंजा, रत्ती, करजनी ।

रक्तांक–पु० (सं०) मूँगा ।

रक्तांग–पु० (सं०) केसर; लाल चंदन; कमीला; मूँगा; खटमल; मंगल ग्रह; जीवंती । वि० लाल शरीरवाला ।

रक्तांगी–स्त्री० (सं०) जीवंती; कुटकी; मजीठ ।

रक्तांड–पु० (सं०) घोड़ोंके अंडकोषका एक रोग ।

रक्तांबर–वि० (सं०) लाल वस्त्र धारण करनेवाला । पु० लाल

कपड़ा (विशेषकर रेशमी); सन्न्यासी।

रक्तांबु–पु० (सीरम) रक्तका पतला, पारदर्शी भाग; वह रस जो अभी रक्तके रूपमें लाल न हुआ हो, चेप, सौम्य।

रक्ता–स्त्री० (सं०) पंचम स्वरकी चार श्रुतियोंमेंसे दूसरी (संगीत); मजीठ; लाख; ऊँटकटारा; एक तरहकी सेम; घुँघची; लक्षणाकंद; वच; एक प्रकारकी मकड़ी; शिरा, नस (कानके पासकी)। वि० स्त्री० अनुरक्ता।

रक्ताकार–पु० (सं०) मूँगा। वि० जिसकी मूर्ति लाल हो।

रक्ताक्त–वि० (सं०) रक्तसे रँगा हुआ या चुपड़ा हुआ। पु० लाल चंदन।

रक्ताक्ष–वि० (सं०) लाल नेत्रोंवाला; भयंकर। पु० कबूतर; सारस; चकोर; भैंसा; साठमेंसे अट्ठावनवाँ संवत्सर।

रक्तातिसार–पु० (सं०) वह अतिसार जिसमें खूनके दस्त आते हैं।

रक्ताधरा–स्त्री० (सं०) किन्नरी। वि० स्त्री० लाल ओठवाली।

रक्ताधान–पु० (ब्लड ट्रान्सफ़्यूज़न) चिकित्साकार्योंमें किसी व्यक्ति या जानवरके शरीरमें अन्य व्यक्ति या जानवरका रुधिर प्रविष्ट कराना। रुधिरप्रदाताका रुधिर उसी वर्गका होना चाहिये जिस वर्गका रुधिर प्राप्त करनेवालेका है। या फिर रुधिरप्रदाताका रुधिर वर्ग 'ओ'का होना चाहिए, अन्यथा रुधिर प्राप्तकर्ताके रुधिर प्रवाहमें अवधान उत्पन्न हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। दे० 'रक्तवर्ग'।

रक्ताधार–पु० (सं०) चमड़ा।

रक्ताधिमंथ–पु० (सं०) रक्तविकारसे होनेवाली आँखोंकी सूजन।

रक्तापह–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, बोल।

रक्ताभ–पु० (सं०) वीरबहूटी। वि० रक्त जैसी आभावाला।

रक्ताभा–स्त्री० (सं०) लाल जवा।

रक्ताभिष्यंद–पु० (सं०) एक नेत्ररोग जिसमें आँखोंसे लाल पानी निकलता और उनमें लाल रेखाएँ दिखाई देती हैं।

रक्ताभ्र–पु० (सं०) लाल अभ्रक।

रक्ताम्लान–पु० (सं०) लाल फूलोंवाला एक विशेष पौधा।

रक्तारि–पु० (सं०) महाराष्ट्री, एक पौधा।

रक्तार्बुद–पु० (सं०) एक रोग जिसमें पकने और बहनेवाली फुंसियाँ निकलती हैं और शरीर पीला पड़ जाता है; एक शुक्रदोष-जनित रोग जिसमें लिंगपर काले फोड़े और लाल फुंसियाँ निकलती हैं।

रक्तार्म(न्)–पु० (सं०) आँखका एक रोग जिसमें कौड़ीपर कमलके आकारवाला मांसका एक मंडल बन जाता है।

रक्तार्श(स्)–पु० (सं०) खूनी बवासीर।

रक्तालता–स्त्री० (सं०) मजीठ।

रक्तालु–पु० (सं०) रतालू।

रक्तावरोधक–वि० (सं०) खूनको बहनेसे रोकनेवाला।

रक्तावसेचन–पु० (सं०) फस्द, रक्तमोक्षण, शरीरका खून निकलवाना।

रक्ताशय–पु० (सं०) देहके सात आशयोंमेंसे चौथा जिसमें रक्तका होना माना जाता है (फेफड़ा, हृदय, यकृत आदि कोठे जिनमें रक्त रहता है)।

रक्ताशोक–पु० (सं०) लाल अशोक।

रक्ताश्वारि–पु० (सं०) लाल कनेर।

रक्ति–स्त्री० (सं०) प्रेम, अनुराग, रत्ती बराबर तौल।

रक्तिका–स्त्री० (सं०) रत्ती, घुँघची।

रक्तिम–वि० (सं०) ललाई लिये हुए, लालिमायुक्त।

रक्तिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) लाली, ललाई।

रक्तेक्षु–पु० (सं०) लाल ईख।

रक्तोत्पल–पु० (सं०) लाल कमल; सेमल।

रक्तोदर–पु० (सं०) रोहू; एक बहुत जहरीला बिच्छू (सुश्रुत)।

रक्तोपदंश–पु० (सं०) रक्तविकारसे उत्पन्न गरमी, आतशक रोग।

रक्तोपल–पु० (सं०) गेरू; लाल नामक रत्न, माणिक्य।

रक्षःसभ–पु० (सं०) राक्षसोंका समूह।

रक्ष–वि० (सं०) रक्षा करनेवाला, रक्षक। पु० रक्षा; लाह, लाक्षा, लाख; छप्पय छंदका एक उपभेद। **–पाल,–पालक**–पु० रक्षक, पहरेदार।

रक्ष(स्)–पु० (सं०) राक्षस, असुर, दैत्य।

रक्षक–वि०, पु० (सं०) पहरा देनेवाला; पालन करनेवाला; रक्षा करनेवाला; सुरक्षित रखनेवाला।

रक्षक पोत–पु० (एस्कर्ट वेसल) व्यापारिक बेड़े आदिकी रक्षाके लिए उसके साथ-साथ चलनेवाला पोत।

रक्षण–पु० (सं०) सुरक्षित रखना; रक्षा करना; रखवाली करना; पालन-पोषण। **–कर्ता(र्तृ)**–वि०, पु० रक्षा करनेवाला, रक्षक।

रक्षणारक–पु० (सं०) मूत्रकृच्छ्र रोग।

रक्षणि, रक्षणी–स्त्री० (सं०) त्रायमाणा लता।

रक्षणीय–वि० (सं०) रखने योग्य; रक्षा करने योग्य।

रक्षन*–पु० दे० 'रक्षण'।

रक्षना*–स० क्रि० रक्षा करना; सँभालना–'भगे कीस सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा'–रघुराज।

रक्षस*–पु० राक्षस, असुर।

रक्षा–स्त्री० (सं०) (कष्ट, अनिष्ट, आपत्तिसे) बचानेकी क्रिया; रखवाली; रखना; सुरक्षा; भस्म, राख; कपास या रेशमका सूत्र जो विशेष अवसरपर कलाईपर बाँधा जाता है। **–कवच**–पु० अभिमंत्रित यंत्र या कवच जो आधि-व्याधिसे रक्षा करनेके लिए पहनाया जाय; रक्षाका उपाय या साधन। **–गृह**–पु० चौकी; विश्राम-भवन; सौरी, सूतिका-गृह, जच्चाखाना। **–दल**–पु० (होमगार्ड) पुलिसके सहायक-रूपमें काम करनेवाला नागरिकोंका संघटन। **–नौका**–स्त्री० (सं०) (लाइफबोट) जहाजपर रहनेवाली वह नौका जिसपर बैठकर जहाजके यात्री संकट उपस्थित होनेपर, अपने प्राण बचा सकें। **–पति**–पु० नगरवासियोंका रक्षक (प्रा०)। **–पत्र**–पु० भोजपत्रका पेड़; सफेद सरसों। **–पाल,–पुरुष**–पु० पहरेदार, प्रहरी। **–पेटिका, –पेटी**–स्त्री० (लाइफ बेल्ट) तैरानेवाले साधनोंसे युक्त वह पेटी जिसे कमरमें बाँध लेनेसे संकटग्रस्त जहाजका यात्री डूबनेसे बचा रहता है। **–प्रदीप**–पु० वह दीपक जो भूत-प्रेतसे बचनेके लिए जलाया जाय (तं०)। **–बंधन**–पु० सलूनों या सलोनो नामका त्योहार जो श्रावणी पूर्णिमाको होता है (इस अवसरपर बहनें अपने भाइयोंकी और पुरोहित अपने यजमानोंकी कलाईमें कपास या रेशमका अभिमंत्रित रक्षासूत्र बाँधते हैं)। **–भूषण**–पु० भूषण, जंतर, कवच जो भूत-प्रेतादिसे बचनेके लिए पहना जाता है। **–मंगल**–पु० अनुष्ठान, धार्मिक क्रिया जिसे भूत-प्रेतबाधासे बचनेके लिए किया जाय। **–मणि,–रत्न**–पु० वह मणि या रत्न जो ग्रहकोपसे बचनेके विचारसे धारण किया जाय।

रक्षाइद*–स्त्री० राक्षसपन।

रक्षाधिकृत–पु० (सं०) नगररक्षा और शासनका अधिकारी (प्रा०)।

रक्षापेक्षक–पु० (सं०) प्रहरी, पहरेदार; अंतःपुरका प्रहरी; अभिनेता, नट।

रक्षिक–पु० (सं०) रक्षक, बचानेवाला; पहरेदार।

रक्षिका–स्त्री० (सं०) रक्षा; रक्षाकार्यके लिए नियुक्त स्त्री।

रक्षित–वि० (सं०) जिसकी रक्षा की गयी हो; रखा हुआ; प्रतिपालित। पु० भांड; एक प्रकारके वैद्य।

रक्षित-राज्य–पु० (प्रोटेक्टोरेट) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्यके संरक्षणमें हो।

रक्षिता–वि० स्त्री० (सं०) रक्षा की हुई; बचायी हुई। स्त्री० एक अप्सरा।

रक्षिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) रक्षा करनेवाला।

रक्षी*–पु० राक्षसोपासक।

रक्षी(क्षिन्)–पु० (सं०) पहरेदार, चौकीदार; रक्षा करनेवाला, रक्षक।

रक्षोघ्न–पु० (सं०) सफेद सरसों; भिलावेंका पेड़; हींग; बासी खट्टा माँड़। वि० राक्षसको मारनेवाला।

रक्षोघ्नी–स्त्री० (सं०) बचा, बच।

रक्ष्य–वि० (सं०) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य।

रक्ष्यमाण–वि० (सं०) जिसकी रक्षा हो रही हो; रक्षित होनेवाला; रखा जानेवाला।

रक़्स–पु० (अ०) नाच, नृत्य, मुजरा। **–चारचारा**–पु० एक तरहका नाच। **–(क़्से) ताऊस**–पु० मोरका नाच जिसमें पेशवाजके दो कोने उठाकर नाचनेवाला मोरकी-सी शक्ल बनाकर दिखाता है; घुटनोंके बल किया जानेवाला एक नाच जिसमें काछनी या पेशवाजका घेरा फैलकर चक्कर बनाने लगता है। **–दरख़्ताँ**–पु० आँधीसे पेड़-पत्तियोंका जोरसे हिलना। **–फ़ानूस**–पु० प्रकाशित मीनारका चमकना; फानूसका चक्कर करना। **–बिस्मिल**–पु० जिबह किये हुए जानवरका फड़कना। **–रवानी**–पु० एक तरहका नाच। **–सनोबर**–पु० सनोबरकी टहनियों और पत्तोंका हिलना।

रख, रखा–स्त्री० चरी, पशुओंके चरनेके लिए सुरक्षित भूमि, रखौना, रखायी हुई चरभूमि; वह जंगल या चरागाह जिसमेंसे सर्वसाधारणको लकड़ी या घास काटनेकी मनाही हो।

रखना–स० क्रि० धरना; टिकाना; ठहराना; बचाना, रक्षा करना (अपनी चीज रखना सीखो); निर्वाह, पालन करना (बात रखना); हिफाजत करना, नष्ट न होने देना (इज्जत रखना); एकत्र करना (जोड़-जोड़कर धन रखना); सौंपना, सुपुर्द करना; रेहन, बंधक करना; अपने हाथमें या अधिकारमें करना; पालन-पोषण, व्यवहारके लिए अपने अधिकारमें लेना (घोड़ा, गाय, पहलवान रखना); नियुक्त करना, तैनात करना (कामके लिए आदमी रखना); रोक लेना; चोट पहुँचाना (मुक्का, थप्पड़ रखना); मुल्तवी करना, दूसरे दिनपर टालना (यह बात कलपर रखो); उपस्थित न करना, बचना (यह जहमत अलग रखो); आरोप करना; जिम्मे लगना; थोपना (सब कुछ मेरे सिर रखो); ऋणी, कर्जदार होना (पैसा न रखना); (मनमें) अनुमान, धारणा करना (विश्वास रखना); डेरा कराना, ठहराना (उन्हें धर्मशालामें रख दिया है); स्त्री-पुरुषसे संबंध करना (औरत, मर्द रखना); संभोग करना (बाजारू); गर्भ धारण कराना (पेट रखना); (चिड़ियोंका) अंडे देना (बतक सालमें कितने अंडे रखती है); बचाना (महीनेमें खा-पीकर क्या रखते हो)।

रखनी–स्त्री० रखेल, रखी हुई स्त्री, उपपत्नी।

रखरखाव—पु० (अपकीप, मेनटेनेंस) इमारत, मंदिर आदिकी देख-रेख करते हुए उन्हें बनाये रखने, चालू रखनेकी क्रिया; पालन-पोषण।

रख़ल–पु० (फा०) सूराख, छेद; नकब; हड्डीका टूटना; तलवारका निशान; फितना, फसाद।

रखला–पु० दे० 'रहँकला'।

रखवाई–स्त्री० पहरेदारी, चौकीदारी; रखवालीकी मजदूरी; रखनेकी क्रिया या ढंग; रखनेकी उजरत; चौकीदारीका टैक्स; खेत रखाना।

रखवाना–स० क्रि० रखनेका काम दूसरेसे कराना।

रखवार*–पु० रखवाला; चौकीदार, पहरेदार; रक्षा करनेवाला।

रखवारी†–स्त्री० दे० 'रखवाली'।

रखवाला–पु० रक्षा करनेवाला, रक्षक; चौकीदार, पहरेदार।

रखवाली–स्त्री० रक्षाकार्य; हिफाजत, सुरक्षा; देखरेख।

रखशी–स्त्री० वह मद्य जिसे पहाड़ी, नेपाली पीते हैं।

रखाई–स्त्री० रक्षा करनेकी क्रिया; रक्षा करनेका भाव; वह धन जो रक्षा करनेके बदले दिया जाय।

रखान–स्त्री० रखौना, चराईकी भूमि।

रखाना–स० क्रि० रखवाना; रक्षा करना, रखवाली करना।

रखार†–पु० एक प्रकारका हेंगा जिससे बंबई राज्यमें जुते हुए खेतको समथर करते हैं।

रखिया*–पु० रखनेवाला, रक्षक।

रखियाना–स० क्रि० राखसे माँजना (बरतन आदि); पकाये खैरका कपड़ेमें लपेटकर पानी सूखने और कसाव निकलनेके विचारसे राखमें रखा जाना।

रखीसर*–पु० ऋषीश्वर (कबीर)।

रखेड़िया–पु० ढोंगी साधु, राख रगड़कर बना हुआ साधु।

रखेल, रखेली–स्त्री० रखनी, उपपत्नी (जो बिना विवाह किये घरमें रखी जाय)।

रखैया–पु० रक्षा करनेवाला, बचाव करनेवाला; रखनेवाला।

रखैल–स्त्री० दे० 'रखेल'।

रखौंड़ी†–स्त्री० राखी, रक्षासूत्र।

रखौंत, रखौना–पु० चरी, चरनेके लिए रखायी हुई सुरक्षित भूमि।

रखौनी†–स्त्री० दे० 'राखी'।

रख़्श–पु० (फा०) सफेद-लाल मिश्रित रंग; घोड़ा; रुस्तमका घोड़ा।

रगंड–पु० हाथीका गंडस्थल।

रग–स्त्री० (फा०) नस, नाड़ी; फूल-पत्तेका रेशा; आँखका डोरा; तार, तागा; नस्ल, जात; दूध पिलानेवालीका प्रभाव; बुरी आदत; हठ, जिद। **–ज़न**–वि० फस्द खोलनेवाला, दूषित रक्त निकालनेवाला। **–जाँ**–स्त्री० वह बड़ी रग जिससे सभी रगोंमें खून पहुँचता है। **–जाली**–वि० जिसमें रगोंका जाल फैला हो। **–दानी**†–स्त्री० धूर्तता, बेईमानी। **–दार**–वि० रेशेदार; बुरी आदतवाला; जिसमें कुछ सूत उभरे हुए हों (कपड़ा)। **–पट्ठा**–पु० असल-नसल इत्यादिका पता होना। **–रेशा**–पु० असल, नसल; पत्तियोंकी नसें; शरीरके भीतरी अंग। **–(गे) अब्र**–स्त्री० बादलोंकी स्याह धारी। **मु० –उतरना**–आँत उतरना; जिद दूर होना; क्रोध उतरना। **– का खुल जाना**–फस्द खुलवानेपर बेहद खून निकलना। **–खड़ी होना**–नस फूल जाना। **–खुलना**–रगसे बहुत-सा खून निकलना। **–चढ़ना**–किसी नसका अपनी जगहसे हटना; क्रोध आना; हठके वश होना। **–जानसे नज़दीक होना**–बहुत निकट होना। **–दबना**–डरना; दबाव मानना, किसीके प्रभाव, अधिकारमें होना। **–पहिचानना**–असलियत, भेद, रहस्य जानना। **–पाना**–असल बात मालूम करना। **–फड़कना**–रगका हरकत करना; अनिष्टकी शंका होना, माथा ठनकना। **–फूलना**–खूनके दबावसे रगका मोटा हो जाना। **–मिलना**–फस्द खोलनेके लिए टटोलनेपर रगका पता लगाना; रहस्य ज्ञात होना। **–में दौड़ जाना**–असर करना। **–रग फड़कना**–अधिक उत्साह, आवेशके लक्षण प्रकट होना। **–रगमें**–हर रगमें, सारे शरीरमें। **–रगसे वाक़िफ़ होना**–पूरी तरह जानना। **–रेशेमें पड़ा होना**–किसी आदमीमें किसी खोटी आदतका अत्यधिक मात्रामें होना; गोश्त-पोस्तमें शामिल होना; अमलमें होना। **–(गें) निकल आना**–बहुत दुबला होना। **–मरना**–नसोंकी ताकत जाती रहना; नामर्द हो जाना; कमजोर हो जाना। **–(गों)में खून दौड़ना**–नसोंमें खूनकी तेज चाल होना। (दुखती रग) छूना।

रगड़–स्त्री० घर्षण, घिसनेकी क्रिया या भाव; वह चिह्न जो घर्षणसे हो जाय; कड़ा परिश्रम; हठ; झगड़ा; द्वेष; धक्का (कहारोंके लहजेमें); हलकी चोट जिसमें चमड़ा छिल जाय; ढोलका जल्द-जल्द बजना। **मु० –खाना**–धक्के खाना। **–देना**–पीस डालना; तंग करना। **–पड़ना**–अधिक परिश्रम पड़ना (उसे बहुत रगड़ पड़ी, इसीसे थक गया)। **–लगना**–छिल जाना, हलकी चोट आना।

रगड़ना–स० क्रि० घिसना, घर्षण करना; पीसना (मसाला, भाँग); कोई काम बार-बार करना; कोई काम जल्द और परिश्रमपूर्वक करना (यह काम तो दस दिनोंमें रगड़ डालेंगे); कुचल देना; तंग करना, परेशान करना; स्त्रीके साथ संभोग करना (बाजारू)। अ० क्रि० विकास न करना, जहाँका तहाँ रहना; अत्यधिक परिश्रम करना।

रगड़वाना–स० क्रि० रगड़नेमें प्रवृत्त करना, रगड़नेका काम दूसरेसे लेना।

रगड़ा–पु० रगड़, घर्षण; अति परिश्रम; झगड़ा; परेशानी; जल्द अंत न होनेवाला झगड़ा। **–झगड़ा**–पु० लड़ाई-झगड़ा; बखेड़ा। **मु० –देना**–घिसना, रगड़ना।

रगड़ान–स्त्री० रगड़ा, रगड़नेकी क्रिया या भाव।

रगड़ी–वि० रगड़ा करनेवाला, झगड़ालू, उलझनेवाला।

रगद*–पु० रक्त, रुधिर (कबीर)।

रगदना–स० क्रि० दे० 'रगेदना'।

रगपत*–पु० रघुपति।

रग़बत–स्त्री० (अ०) ख्वाहिश, आरज़ू; चाह, इच्छा; प्रवृत्ति,

रुचि । मु० –आना–प्रवृत्ति होना । –की आँखों से देखना–पसंद करना, ख्वाहिश करना । –दिलाना–उकसाना, चाह पैदा करना । –रखना–इच्छा, ख्वाहिश होना ।

रगमगा*–वि० रंजित ।

रगर*–स्त्री० दे० 'रगड़'; हठ, ज़िद–'जन्म कोटि लगि रगर हमारी'–रामा० ।

रगरा†–पु० दे० 'रगड़ा' ।

रगवाना*–स० क्रि० शांत, चुप कराना; बहलाना (बच्चोंको) ।

रगा†–पु० मोर ।

रगाना†–अ० क्रि० चुप, शांत होना । स० क्रि० चुप कराना, शांत कराना ।

रगी–स्त्री० मैसूरमें होनेवाला एक मोटा अन्न । वि० दे० 'रगीला' ।

रगीला–वि० जिद्दी, हठी; पाजी, बदजात ।

रगेद–स्त्री० दौड़ाने, भगानेकी क्रिया; संभोग-प्रवृत्ति, जोड़ा खाना (पक्षियों आदिका) ।

रगेदना–स० क्रि० भगाना, खदेड़ना, दौड़ाना ।

रग्गा–पु० एक प्रकारका मोटा अन्न जो दक्षिणी पहाड़ोंपर होता है, रगी । † स्त्री० अधिक वर्षाके बादकी धूप जो खेतीके लिए लाभदायक होती है ।

रघु–पु० (सं०) सूर्यवंशोत्पन्न राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणाके पुत्र और अजके पिता, रघुवंशके मूल पुरुष; रघुवंशमें उत्पन्न मनुष्य । वि० द्रुतगामी । –कार–पु० रघुवंश-प्रणेता कालिदास । –कुल–पु० रघुका वंश, वंशधर । –० कैरव–पु० रघुवंशरूपी कुमुद । –० गौरव,–० चंद्र,–० तिलक, –०नाथ,–० पति,–० मणि,–०वर,–०वीर–पु० रामचंद्र । –कुलोत्तंस–पु० रघुकुलके मुकुटमणि, रामचंद्र । –तनय–पु० रघुके वंशज, रामचंद्र । – –तिलक–पु० रघुवंशके भूषण, रामचंद्र । –नंदन–पु० रामचंद्र । –नाथ–पु० रघुओंके स्वामी, रामचंद्र । –नायक–पु० रघुकुलमें प्रधान, रामचंद्र । –पति–पु० रघुकुलके स्वामी, रामचंद्र । –राइ,–राय*–पु० रघुकुलके राजा, रामचंद्र । –रैया*–दे० 'रघुराय' । –वंश–पु० रघुका वंश, खानदान; कालिदास-निर्मित एक महाकाव्य । –०कुमार–पु० रामचंद्र । –०मणि–पु० रघुवंशके मणि, रामचंद्र । –वंशी (शिन्)–पु० वह जो रघुके वंशमें उत्पन्न हो; क्षत्रियोंकी एक उपजाति (ये रघुके वंशमें उत्पन्न कहे जाते हैं) । –वर,–वीर,–श्रेष्ठ–पु० रघुवंशमें श्रेष्ठ, वीर रामचंद्र ।

रघूत्तम–पु० (सं०) रघुश्रेष्ठ, रामचंद्र ।

रघूद्वह–पु० (सं०) रघुवंशियोंमें प्रधान रामचंद्र ।

रघौती–स्त्री० व्यापारियों द्वारा छोटे व्यापारियोंको भेजी जानेवाली मूल्य-सूची ।

रच–वि० दे० 'रची' ।

रचक–पु० (सं०) रचयिता, रचना करनेवाला । * वि० दे० 'रंचक' ।

रचन–पु० (सं०) दे० 'रचना' ।

रचना–स्त्री० (सं०) निर्माण, बनानेकी क्रिया; निर्माणकी प्रक्रिया; व्यवस्था, प्रबंध; तैयारी; उत्पादन; नवसृष्टि; कौशल; निर्मित वस्तु (घर, मूर्ति, ग्रंथ आदि); सृष्टि; विन्यास; सँवारना (बाल, वेश आदि); गूँथना; उद्यम, उद्योग; चमत्कारपूर्ण गद्य, पद्य; विश्वकर्माकी स्त्री (पु०) । स० क्रि० सिरजना, निर्माण करना; निश्चित करना, विधान करना; ग्रंथ आदि लिखना; उत्पन्न करना; ठानना, करना; आयोजन करना; जाल रचना; कल्पना करना, काल्पनिक सृष्टि करना; शृंगार करना; क्रमसे रखना, सजाना; रँगना, रंजित करना । अ० क्रि० आसक्त या अनुरक्त होना; रँगा जाना, रंग चढ़ना ।–प्रक्रिया–स्त्री० (क्रिएटिव प्रोसेस) रचनाके निर्माणसे संबंधित स्थितियोंका विश्लेषण ।

रचनात्मक संभावना–स्त्री० किसी अच्छे स्तरकी रचना दे पानेकी क्षमताके संकेत ।

रचनात्मक संहिति–स्त्री० (स्ट्रक्चरल कंपैक्टनेस) किसी भी रचनाकी ऐसी गठन जो सर्वत्र एकात्मक प्रभावपूर्ण और एकान्वित प्रतीत हो ।

रचयिता (तृ)–वि० (सं०) निर्माता, प्रणेता, रचनेवाला । पु० ग्रंथकार ।

रचवाना–स० क्रि० (किसी औरसे) रचना कराना, रचनाके लिए किसीको प्रेरित करना; मेहँदी आदि लगवाना ।

रचाना–स० क्रि० आयोजन, संभार, समारोह करना; दे० 'रचवाना', मेहँदी, अलक्तक आदिसे (हाथ-पैर) रँगाना; (मेहँदी) लगाना ।

रचित–वि० (सं०) निर्मित, बनाया हुआ ।

रचिपचि*–अ० परिश्रम करके, गढ़गढ़कर (सूर) ।

रची†–वि० थोड़ा, जरा ।

रच्छ*–पु० दे० 'रक्ष' ।

रच्छक*–पु० दे० 'रक्षक' ।

रच्छन*–पु० दे० 'रक्षण' ।

रच्छस*–पु० दे० 'राक्षस' ।

रच्छा*–स्त्री० दे० 'रक्षा' ।

रज*–पु० राजत्व, महत्त्व–'अंजन यहै सूझहू यहै । व्रजरजसरन गहै रज रहै ।'–घनआ० ।

रज(स्)–पु० (सं०) स्त्रियोंका मासिक रक्तस्राव (यह चौदह, कभी-कभी बारह वर्षकी अवस्थासे आरंभ होकर पचास-पचपन वर्षके वयःक्रमतक रहता है), ऋतु, कुसुम, आर्तव; तीन गुणोंमेंसे दूसरा (सांख्य०); जल; बादल; भुवन, लोक; भाप; आकाश; पाप; चमड़ेसे मढ़ा हुआ एक प्राचीन बाजा; एक मान, तौल (आठ परमाणुओंका); खेत, पापड़ा; स्कंदकी एक सेना; वसिष्ठके पुत्रका नाम; * चाँदी, रजत; * धोबी, रजक । स्त्री० धूल, गर्द; पराग; रात; प्रकाश; ज्योति । –कण–पु० (हिं०) धूलिकण, रजःकण, गर्द ।

रज़–पु० (फा०) अंगूर । वि० रँगनेवाला (रँगरेज) ।

रजक–पु० (सं०) धोबी ।

रजगज–पु० शाही ठाठ-बाट ।

रजगीर–पु० कूटू, फाफर ।

रजतंत*–स्त्री० वीरता, शूरता ।

रजत–वि० (सं०) शुभ्र, धवल, उज्ज्वल, चाँदीके रंगका; चाँदीका बना हुआ । पु० चाँदी, रूपा; सोना; मुक्ताहार; धवल रंग; पहाड़; रक्त, रुधिर; हाथीदाँत । –कुंभ–पु० चाँदीका कलश । –कूट–पु० मलय पर्वतकी चोटी । –जयंती–स्त्री० (सिल्वर जुबिली) किसी व्यक्ति या संस्थाके जीवनकाल, कार्यकाल आदिके २५ वर्ष पूरे होनेपर मनाया जानेवाला उत्सव (आ०) । –द्युति–वि० रजत जैसा चमकीला । पु० हनूमान् । –नाभ–पु० एक यक्ष (पु०) । –नाभि–पु० कुबेरका एक वंशधर । –पट–पु० (सिलवर स्क्रीन) वह सफेद परदा जिसपर चलचित्र (सिनेमा)के चित्र दिखाये जाते हैं । –पर्वत–पु० चाँदीका पहाड़ । –पात्र–पु० चाँदीका बरतन । –प्रस्थ–पु० कैलास पर्वत । –भाजन–पु० रजतपात्र । –वाह–पु० एक ऋषि ।

रजतमय–वि० (सं०) चाँदीका बना हुआ ।

रजताई*–स्त्री० सफेदी ।

रजताकर–पु० (सं०) चाँदीकी खान ।

रजताचल–पु० (सं०) रजताद्रि, कैलास; चाँदीका पहाड़; चाँदीका वह कृत्रिम पहाड़ जो दानके लिए बनाया जाता है (यह महादान है –पु०) ।

रजतोपम–पु० (सं०) रूपामाखी ।

रजधानी*–स्त्री०, राज्य–'हमको लिखि-लिखि जौग पठावत आपु करत रजधानी'–सूर; दे० 'राजधानी' ।

रजन–वि० (सं०) रँगनेवाला । पु० रंगनेका काम; किरण । स्त्री० (अं० 'रेज़िन') राल; एक प्रकारका गोंद ।

रजना*–अ० क्रि० रँगा जाना; रंगमें डुबाया जाना । स० क्रि० रँगना; रंगमें डुबाना । स्त्री० संगीतकी एक मूर्च्छना ।

रजनी–स्त्री० (सं०) रात; नीली, नाल; जतुका, एक पहाड़ी लता; हल्दी; दारुहल्दी; शाल्मली द्वीपकी एक नदी (पु०); लाह, लाख । –कर–पु० चंद्रमा; कपूर । –गंधा–स्त्री० हुसना या रातकी रानी नामक पुष्पवृक्ष । –चर–पु० राक्षस; चंद्रमा । वि० जो रातको चलता, घूमता-फिरता हो । –जल–पु० ओस; पाला; नीहार ।

–द्वंद्व–पु० दो रातों और उनके बीचका (दिनका) समय । **–पति**–पु० चंद्रमा । **–मुख**–पु० सायंकाल, संध्या, प्रदोषकाल, सूर्यास्तके चार दंड बादका समय । **–रमण**–पु० रात्रिका स्वामी, चंद्रमा । **–हासा**–स्त्री० शेफाली, हरसिंगार । वि० स्त्री० रातमें जिसका ह्रास, विकास हो ।

रजनीश–पु० (सं०) चंद्रमा ।

रजपूत*–पु० दे० 'राजपूत' । (स्त्री० 'रजपूतिन' ।)

रजपूती*–स्त्री० राजपूतपन, क्षत्रियत्व; शूरता, वीरता ।

रजब–पु० (अ०) अरबी और मुसलमानोंके सालका सातवाँ चांद्र मास (पहले यह मास पवित्र समझा जाता था और इस मासमें युद्ध निषिद्ध था) ।

रजबहा–पु० नदी या नहरसे निकाला हुआ बड़ा नल ।

रजवंती, रजवती–वि० स्त्री० जिसे रजस्राव हो रहा हो, रजस्वला ।

रजवाड़ा–पु० देशी रियासत, राज्य; राजा ।

रजवार*–पु० राजद्वार; राजाका दरबार ।

रजस्वला–वि० स्त्री० (सं०) ऋतुमती । स्त्री० वह स्त्री जिसका रज प्रवाहित हो रहा हो ।

रज़ा–स्त्री० (अ०) मर्जी; इजाजत, अनुमति; खुशी, प्रसन्नताकी स्थिति; खुशनूदी; रुखसत, छुट्टी; स्वीकृति । **–कार**–वि० खुश । पु० स्वयंसेवक, वालंटियर । **–जोई**–स्त्री० दूसरेकी खुशनूदी, दूसरेको खुश करनेकी कोशिश । **–पट्टी**–स्त्री० वर्षकी छुट्टियोंकी सूची । **–मंद**–वि० राजी, खुशनूद । **–मंदी**–स्त्री० राजी-खुशी; मंजूरी ।

रजाइस, रजायस, रजायसु*–स्त्री० आज्ञा, हुक्म, अनुमति ।

रजाई–स्त्री० राजपन, राजा होनेका भाव; * दे० 'रज़ा'; दे० 'रज़ाई'; दे० 'रजाय' ।

रज़ाई–स्त्री० (फा०) रंगीन कपड़ेकी रुईदार दुलाई, छोटा लिहाफ ।

रजाना*–स० क्रि० राज्यसुख भोग कराना ('राज्य' या 'राज' शब्दके साथ ही यह प्रयुक्त होता है) ।

रजाय*–स्त्री० आज्ञा, हुक्म, मर्जी, इच्छा; दे० 'रज़ा' ।

रजिया–स्त्री० डेढ़ सेरकी एक माप जिससे अनाज नापा जाता है ।

रज़िया बेगम–स्त्री० (अ०) गुलामवंशके द्वितीय सुलतान इल्तूतमिश या अल्तमशकी लड़की जिसने १२३६ से १२४० ई० तक दिल्लीके तख्तपर शासन किया ।

रजिस्टर–पु० (अं०) सादे पन्नोंकी बड़ी किताब, बही जिसपर खानेवार, सिलसिलेवार किसी मदका आय-व्यय, किसी विषयका ब्योरेवार विवरण लिखा जाता हो, दफ्तर, याददाश्त, हाजिरीकी किताब, पंजी ।

रजिस्टर्ड–वि० (अं०) दे० 'रजिस्ट्रीशुदा'; पंजीबद्ध ।

रजिस्ट्रार–पु० (अं०) वह व्यक्ति जो रजिस्टरमें दर्ज करे, जो रजिस्ट्री करे वह; सरकारी कर्मचारीका एक पद, पंजीयक (वाणि०), प्रस्तोता, कुलसचिव (शैक्ष०) ।

रजिस्ट्री–स्त्री० (अं०) डाकघरमें महसूल देकर पत्र आदि रजिस्टरमें दर्ज कराकर भेजनेका कार्य; इस नियमसे भेजी जानेवाली चिट्ठी; रजिस्ट्रारके रजिस्टरमें कोई बात दर्ज कराना; कोई लिखित प्रतिज्ञापत्र कानूनके अनुसार सरकारी रजिस्टरोंमें दर्ज करानेका काम, पंजीयन । **–शुदा**–वि० जिसकी रजिस्ट्री करायी गयी हो; रजिस्टरमें दर्ज किया हुआ; पक्की लिखा-पढ़ीवाला ।

रजिस्ट्रेशन–पु० (अं०) रजिस्टरमें दर्ज करना (कराना, होना), पंजीयन ।

रज़ील–वि० (अ०) कमीना, पाजी; छोटी जातिका ।

रजु–स्त्री० दे० 'रज्जु' ।

रजोकुल*–पु० राजपरिवार, राजवंश ।

रजोगुण–पु० (सं०) प्रकृतिका धर्मविशेष; तीन गुणोंमेंसे एक जिसके कारण भोग, विलास, प्रदर्शनकी रुचि पैदा होती है (सांख्य०) । **–गोत्र**–पु० वसिष्ठका पुत्र (पु०) ।

रजोदर्शन, रजोधर्म–पु० (सं०) रजस्वला होना, स्त्रियोंका मासिक धर्म ।

रजोरस–पु० (सं०) अंधकार ।

रजोनिवृत्ति, रजोविरति–स्त्री० (मेंनोपॉज) स्त्रीके जीवनका वह परिवर्तन जिसमें रजःस्राव अंतिम रूपसे बंद हो जाता है । (यह प्राय: ५० वर्षके आस-पासकी अवस्थामें होता है ।)

रज़्ज़ाक–वि० (अ०) रोजी, खूराक देने, पहुँचानेवाला । पु० ईश्वर, खुदा ।

रज्जु–स्त्री० (सं०) रस्सी, डोर, जेवरी; वागडोर, लगामकी डोरी; स्त्रियोंके सिरकी चोटी । **–कंठ**–पु० एक आचार्य । वि० जिसके गलेमें रस्सी लगी या बँधी हो । **–दालक**–पु० एक जलचर पक्षी । **–वाल**–पु० एक पक्षी (स्मृ०) ।

रज़्म–स्त्री० (अ०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई ।

रझाना†–पु० रँगरेजोंका वह बरतन जिसमें रँगे कपड़ेका रंग निचोड़ते हैं ।

रटंत–स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव, रटाई ।

रटंती–स्त्री० (सं०) माघ-कृष्ण चतुर्दशीकी पुण्यतिथि ।

रट–स्त्री० किसी शब्दका बार-बार उच्चारण करना; कौवोंकी बोली ।

रटन–स्त्री० रटनेकी क्रिया या भाव । * पु० जोर-जोरसे कहना, बोलना ।

रटना–स्त्री० रटनेकी क्रिया, धुन, रट । स० क्रि० किसी शब्द, पद, वाक्यकी बार-बार आवृत्ति करना; कंठाग्र करनेके लिए किसी अंश, पद, वाक्यका बोलकर पाठ करना, घोखना । अ० क्रि० बार-बार शब्द करना; बजना ।

रठ†–वि० शुष्क, रूखा ।

रड़क–स्त्री० दे० 'ररक' ।

रढना*–स० क्रि० दे० 'रटना' ।

रढ़िया†–स्त्री० एक साधारण देशी कपास ।

रण–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम; शब्द; रमण; गति; दुंबा भेड़ा । **–कर्म(न्)**–पु० युद्ध, संघर्ष । **–कामी(मिन्)**–वि० युद्धलिप्सु, संग्राम चाहनेवाला । **–कारी(रिन्)**–सि० युद्ध, संग्राम करनेवाला । **–कोष**–पु० युद्ध-कोष, युद्धकी सहायताके लिए विशेष रूपसे इकट्ठा किया गया धन । **–क्षिति,–क्षोणी,–क्ष्मा**–स्त्री०,**–क्षेत्र**–पु० युद्धका स्थान, मैदान, स्थल । **–खेत***–पु० दे० 'रणक्षेत्र' । **–गोचर**–वि० युद्धलिप्त । **–छोड़**–पु० (हिं०) कृष्ण (जरासंधकी लड़ाईमें रणक्षेत्र छोड़कर द्वारका जानेसे यह नाम पड़ा) । **–तूर्य**–पु० रणभेरी, युद्धका वाद्य-विशेष, तुरही । **–दुंदुभी,–भेरी**–स्त्री० दे० 'रणतूर्य' । **–नीति**–स्त्री० (स्ट्रैटेजी) आक्रमण करने, युद्ध चलाने तथा सेनाका व्यूहन करने आदिका ढंग या नैपुण्य । **–पंडित**–वि० रणमें कुशल, प्रवीण, दक्ष । **–पोत**–पु० (वारशिप) युद्धके काम आनेवाला जहाज । **–प्रिय**–वि० युद्धप्रेमी । **–बंदी**–पु० (कैप्टिव) युद्धमें पकड़ा गया शत्रुका सैनिक, युद्धबंदी । **–भू,–भूमि**–स्त्री० युद्धस्थल । **–मत्त**–पु० हाथी । **–मुष्टि**–पु० कुचिला । **–मुख**–पु० संग्रामका मुख्य भाग । **–रंक**–पु० हाथीके दोनों दाँतोंके बीचकी जगह । **–नाद**–पु० युद्धमें होनेवाली ललकार तथा योद्धाओंकी गरज । **–रंग**–पु० युद्धक्षेत्र; युद्ध, संग्राम; लड़ाईका उत्साह । **–रण**–पु० व्याकुलता, व्यग्रता; प्रबल कामना; पछतावा; मच्छड़ । **–रणक**–पु० प्रबल कामना, उत्कंठा; अशांति, व्यग्रता; प्रेम; कामदेव । **–लक्ष्मी**–स्त्री० युद्धकी देवी जो विजय देनेवाली मानी जाती है, विजयलक्ष्मी । **–वाद्य**–पु० युद्धका बाजा । **–वीर**–पु० बड़ा योद्धा । **–वृत्ति**–सैनिक, योद्धा । **–शिक्षा**–स्त्री० युद्ध-विद्या, कलाकी शिक्षा । **–संकुल**–पु० तुमुल युद्ध, घनघोर युद्ध । **–सज्जा**–स्त्री० युद्धका उद्योग, युद्धकी तैयारी । **–सहाय**–पु० युद्धमें सहायक, मित्र । **–सिंघा,–सिंहा**–पु० (हिं०) तुरही, नरसिंघा । **–स्तंभ**–पु० युद्धमें प्राप्त विजयका स्मारक स्तंभ, विजयस्तंभ । **–स्थल**–पु० रणक्षेत्र, लड़ाईका मैदान । **–स्वामी(मिन्)**–पु० शिव; सेनापति, युद्धका प्रधान संचालक । **–हंस**–पु० एक वर्णवृत्त (अन्य नाम मनहंस, मानसहंस) ।

रणत्कार–पु० (सं०) झनझनाहट, शब्द; गुंजन (भ्रमरादिका) ।

रणन–अ० क्रि० (घंटा) बजाना । पु० घंटा बजनेकी ध्वनि ।

रणांगण–पु० (सं०) युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान ।

रणाजिर–पु० (सं०) रणक्षेत्र, युद्धभूमि ।

रणि–स्त्री० रजनी, रात (डिंगल) ।

रणेचर–पु० (सं०) विष्णु ।

रणेश–पु० (सं०) शिव; विष्णु ।

रणोत्कट–पु० (सं०) कार्त्तिकेयका एक अनुचर; एक दैत्य । वि० जो युद्धके लिए उन्मत्त हो ।

रत–वि० (सं०) अनुरक्त, प्रेममें पड़ा हुआ; लीन, लगा हुआ । पु० संभोग; लिंग; योनि; प्रेम । **–कील**–पु० कुत्ता । **–गुरु**–पु० पति, स्वामी । **–ताली**–स्त्री० कुटनी । **–नाराच,–नारीच**–पु० लंपट; कुत्ता; कामदेव । **–निधि**–पु० खंजन, खँडरिच । **–बंध**–पु० दे० 'रतिबंध' । **–व्रण,–शायी(यिन्)**–पु० कुत्ता । **–हिंडक**–पु० लंपट, दुश्चरित्र; स्त्री-चोर ।

रत–'रात'का समासमें व्यवहृत लघु रूप । **–जगा**–पु० रात्रि-जागरण; वह उत्सव जो रातभर जागकर हो; भाद्र-कृष्ण द्वितीयाकी तिथिका त्योहार जिसमें स्त्रियाँ कजली गाती हैं । **–वाँस**|–पु० रातका चारा (हाथियों, घोड़ोंका) ।

रतन–पु० दे० 'रत्न' । **–जोत**–स्त्री० मणिविशेष; एक औषधोपयोगी पौधा (कुमायू, कश्मीरमें होता है); वृहद्दंती, बड़ी दंती ।

रतनाकर*–पु० दे० 'रत्नाकर'; दे० 'रतनजोत' ।

रतनागर*–पु० समुद्र, सागर ।

रतनार–वि० दे० 'रतनारा' ।

रतनारा–वि० किंचित् लाल, ललछू; लाल ।

रतनारी–पु० एक विशेष धान । स्त्री० लाली, ललाई, सुर्खी । वि० स्त्री० दे० 'रतनारा' ।

रतनालिया*–वि० दे० 'रतनारा' ।

रतनावली–स्त्री० दे० 'रत्नावली' ।

रतमुँहाँ*–वि० लाल मुँहवाला । (स्त्री० 'रतमुँही' ।) पु० बंदर ।

रतवाई|–स्त्री० कोल्हू चलनेपर पहले दिन रस बाँटनेका चलन ।

रतांजली–स्त्री० लाल चंदन ।

रतांदुक–पु० (सं०) कुत्ता ।

रता|–स्त्री० फफूँद, भुकड़ी ।

रताना*–अ० क्रि० रत होना । स० क्रि० अपनेमें रत करना ।

रतायनी–स्त्री० (सं०) वेश्या, रंडी ।

रतालू–पु० पिंडालू; वाराही कंद ।

रति*–अ० दे० 'रती'; ऋतु (वीसल०) । स्त्री० (सं०) दक्षप्रजापतिकी कन्या, कामदेवकी पत्नी; प्रेम, अनुराग, प्रीति, आसक्ति; संभोग, मैथुन; सौंदर्य, शोभा; शृंगार रसका स्थायी भाव; वह कर्म जिसके उदयसे मन प्रसन्न हो; रहस्य, गुप्त भेद; सौभाग्य । **–कर**–वि० आनंदवर्द्धक; प्रेमवर्द्धक । पु० एक समाधि; कामी । **–करण**–पु० संभोग रीति या संभोग-कौशल । **–कलह**–पु० संभोग, मैथुन । **–कांत**–पु० कामदेव । **–कुहर**–पु० योनि, भग । **–केलि,–क्रिया**–स्त्री० संभोग । **–गृह**–पु० दे० 'रति-भवन' । **–ज्ञ**–पु० वह जो रतिक्रियामें प्रवीण हो; स्त्रीमें अपने प्रति प्रेम उत्पन्न करनेमें दक्ष पुरुष । **–तस्कर**–पु० कुपंथी, दुराचारी, वह जो अपने साथ स्त्रियोंको दुराचारमें प्रवृत्त करे । **–दान**–पु० प्रसंग, संभोग । **–देव**–पु० विष्णु; कुत्ता; एक राजा । **–नाग**–पु० सोलह रतिबंधोंमेंसे एक । **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० कामदेव । **–नाह***–पु० कामदेव । **–पद**–पु० एक वर्णवृत्त । **–पाश**–पु० एक रतिबंध । **–प्रिय**–वि० कामुक, जिसे मैथुन प्रिय हो । पु० कामदेव । **–प्रिया**–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसे मैथुन प्रिय हो । स्त्री० शक्तिकी मूर्ति (तं०); दाक्षायिणी । **–प्रीता**–स्त्री० कामिनी, मैथुनसे आनंदित होनेवाली स्त्री । **–फल**–वि० संभोगमें आनंद उत्पन्न करनेवाला । **–बंध**–पु० संभोगका ढंग, प्रकार, आसन । **–बंधु**–पु० पति; नायक । **–भवन,–मंदिर**–पु० प्रेमी-प्रेमिकाका रतिक्रीडागृह, मैथुनगृह; योनि, भग । **–भाव**–पु० स्त्री-पुरुषका परस्पर अनुराग, दांपत्यभाव (शृंगारका स्थायी भाव); प्रीति, अनुराग । **–भौन***–पु० दे० 'रतिभवन' । **–मदा**–स्त्री० अप्सरा । **–मित्र** पु० एक संभोगमुद्रा, आसन । **–रमण**–पु० कामदेव; मैथुन । **–रस**–वि० प्रेम जैसा मधुर । पु० रतिजन्य आनंद । **–राइ***–पु० कामदेव । **–लंपट**–वि० कामी । **–लक्ष**–पु० संभोग । **–लील**–पु० एक ताल (संगीत) । **–लोल**–पु० एक राक्षस । **–वर**–पु० कामदेव; रतिकी भेंट (जो रतिके अभिप्रायसे किसी स्त्रीको दी जाय) । **–वर्द्धन**–पु० कामशक्ति-वर्द्धक एक प्रकारका मोदक (आ० वे०) । **–वल्ली**–स्त्री० प्रेम, प्रणय, अनुराग । **–वाही(हिन्)**–पु० एक राग । **–शक्ति**–स्त्री० संभोग-शक्ति । **–शूर**–पु० पुंस्त्वयुक्त व्यक्ति । **–संयोग**–पु० संभोग । **–संहित**–वि० जिसमें प्रेम या प्रणयकी अधिकता हो । **–सत्वरा**–स्त्री० स्पृक्का । **–समर**–पु० मैथुन । **–सहचर**–पु० कामदेव । **–साधन**–पु० शिश्न, लिंग । **–सुंदर**–पु० एक रतिबंध ।

रतिक*–अ० थोड़ा-सा, जरा-सा, रत्तीभर ।

रतिका–स्त्री० (सं०) ऋषभ-स्वरकी तीन श्रुतियोंमेंसे अंतिम (संगीत) ।

रतिगर|–अ० तड़के, भुरहरे, सवेरे, प्रातःकाल ।

रतिज रोग–पु० (वेनीरियल डिज़ीज़) संभोगसे उत्पन्न या संक्रमित रोग ।

रतिवंत*–वि० खूबसूरत, सुंदर ।

रती*–स्त्री० दे० 'रति'; | ढाई जौ या आठ चावलका मान; घुँघची, गुंजा । अ० थोड़ा, कम, जरा, जरा-सा, रत्तीभर, किंचित् ।

रतीको*–अ० रत्तीभर भी, जरा भी–'केहू न छाँड़त भूमि रती-कौ –राम० ।

रतीश–पु० (सं०) कामदेव ।

रतुआ|–पु० एक घास ।

रतून|–पु० पेड़ीकी ईख ।

रतोपल*–पु० लाल कमल; गेरू; लाल सुरमा; लाल खरिया ।

रतौंधी–स्त्री० एक नेत्र-रोग जिसमें रोगीको रातके समय नहीं सूझता ।

रतौहाँ*–वि० रागमय, रक्ताक्त–'नाहर आय बसंत भयौ नखकेसू रतौहैं किये हिये खौंपनि'–घना० ।

रत्त*–वि०, पु० दे० 'रक्त' ।

रत्तक–पु० कुछ-कुछ लाल रंगका ग्वालियरकी तरफ मिलनेवाला एक पत्थर ।

रत्ती–स्त्री० ढाई जौ या आठ चावलका एक मान; घुँघची; * सौंदर्य, शोभा ।

रत्थी–स्त्री० लकड़ी या बाँसका ढाँचा, संदूक आदि जिसपर रखकर शवको अंतिम संस्कारके लिए ले जाते हैं, टिकठी, अरथी, विमान ।

रत्न–पु० (सं०) बहुमूल्य और चमकीले पदार्थ विशेषतः खनिज पत्थर जिन्हें आभूषणोंमें जड़ते हैं, हीरा, पन्ना, आदि (मुख्य रत्न नौ हैं–माणिक, नीलम, लहसुनिया, हीरा, पन्ना, पुखराज, मूँगा, मोती, गोमेद); अपने वर्गमें, जातिमें उत्कृष्ट वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ; सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र्य (जै०) । **–कर**–पु० कुबेर । **–कर्णिका**–स्त्री० कानोंका एक जड़ाऊ आभूषण (प्रा०) । **–कार**–पु० (हिं०) जौहरी–'मारवाड़ी रत्नकारोंको लूटा'–भा० वै० विकास । **–कीर्ति**–पु० एक बुद्ध । **–कूट**–पु० एक पर्वत; एक बोधिसत्त्व । **–केतु**–पु० एक बुद्ध; एक बोधिसत्त्व । **–गर्भ**–पु० कुबेर; एक बुद्ध; समुद्र । **–गर्भा**–स्त्री० पृथ्वी । **–गिरि**–पु० बिहारका एक पहाड़ (इसपर राजगृह राजधानी स्थित थी); एक प्रकारका रस (आ० वे०) । **–गृह**–पु० स्तूपके मध्यकी कोठरी जिसमें धातु रखी जाती थी (बौ०) । **–ग्रीव,–तीर्थ**–पु० एक तीर्थ । **–चंद्र**–पु० रत्नोंके अधिष्ठाता देवता; एक बोधिसत्त्व । **–चूड**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–च्छाया**–स्त्री० रत्नोंकी छाया, कांति, चमक । **–तल्प**–पु० रत्नालंकृत शय्या । **–त्रय**–पु० सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र (ज०) । **–दामा**–स्त्री० राजा जनककी स्त्री, सीताकी माता (गर्ग सं०); रत्नोंकी माला । **–दीप**–पु० कल्पित रत्नविशेष (कहा जाता है, पातालमें इसीके कारण प्रकाश रहता है); रत्नका या रत्नजटित दीपक । **–द्रुम**–पु० मूँगा । **–द्वीप**–पु० रत्नमय द्वीप; प्रवाल, मूँगाद्वीप । **–धर**–वि० धनवान्, अमीर । **–धार**–पु० एक पर्वत (पु०) । **–धारा**–स्त्री० एक नदी (पु०) । **–धेनु**–स्त्री० रत्ननिर्मित गाय (एक महादान) । **–धेय,–ध्वज**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–नाभ**–पु० विष्णु । **–निचय**–पु०

रत्नोंकी राशि। **–निधि**–पु० समुद्र; सुमेरु पर्वत; विष्णु; खंजन पक्षी, ममोला। **–परीक्षक**–पु० रत्न-पारखी, जौहरी। **–पर्वत**–पु० सुमेरु पर्वत। **–पाणि**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–पारखी***–पु० रत्न परखने, पहचाननेवाला। **–पीठ**–पु० एक तीर्थ (तं०)। **–प्रदीप**–पु० रत्नविशेष जिसमें दीपका-सा प्रकाश हो। **–प्रभ**–पु० एक प्रकारके देवता। वि० रत्नके समान दीप्तिमान्। **–प्रभा**–स्त्री० पृथ्वी। **–बाहु**–पु० विष्णु। **–माला**–स्त्री० मणियोंकी माला, हार; बलिकी कन्या। **–माली(लिन्)**–पु० देववर्ग-विशेष। **–मुकुट**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–मुख्य**–पु० हीरा। **–राज**–पु० लाल, माणिक्य। **–राशि**–स्त्री० रत्नोंका समूह। **–शाला**–स्त्री० रत्नोंके रखनेका स्थान; रत्नजटित महल। **–संभव**–पु० ध्यानी बुद्ध; एक बोधिसत्त्व। **–सानु**–पु० सुमेरु पर्वत। **–सू,–सूति**–स्त्री० पृथ्वी।

रत्नवती–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; वीरकेतुकी कन्या।

रत्ना–स्त्री० (सं०) एक नदी (पु०)।

रत्नाकर–पु० (सं०) समुद्र; वाल्मीकि मुनिका पूर्व नाम; खान, मणियोंके निकलनेका स्थान; रत्नसमूह; एक बोधिसत्त्व।

रत्नागिरि–पु० दे० 'रत्नगिरि'।

रत्नाचल–पु० (सं०) रत्नोंका ढेर; रत्नोंका कृत्रिम पहाड़ जिसे दानके लिए बनाते हैं (पु०)।

रत्नाद्रि–पु० (सं०) एक पर्वत।

रत्नाधिपति–पु० (सं०) कुबेर।

रत्नाभूषण–पु० (सं०) रत्न-जटित आभूषण, जड़ाऊ गहना।

रत्नावली–(सं०) मणियोंकी माला; एक रागिनी; एक अर्थालंकार जहाँ प्रस्तुत अर्थ निकलनेके साथ-साथ उचित क्रमसे कुछ अन्य वस्तुओं या तत्त्वोंका उल्लेख होता है; एक प्रकारका हार।

रत्नेश–पु० (सं०) कुबेर; समुद्र।

रत्नोत्तमा, रत्नोल्का–स्त्री० (सं०) एक देवी (तं०)।

रथ–पु० (सं०) वाहन, गाड़ी, यान (घोड़ों आदिसे वाहित, युद्ध, विहारका यान जिसमें दो या चार पहिये होते थे और दो या चार पशु नाधे जाते थे; पैर, चरण; शरीर; वेतस लता (आ०वे०); अंग, भाग; तिनिश वृक्ष; आनंद; क्रीडास्थान, विहारस्थल; शतरंजका एक मोहरा जिसे संप्रति ऊँट कहा जाता है। **–कल्पक**–पु० वह अधिकारी जिसके अधिकारमें राजाओंके रथ, वाहन आदि रहा करते थे (प्रा०); घर, वाहन, वेश आदिकी सज्जा, व्यवस्था करनेवाला धनपतियोंका अधिकारी (प्रा०)। **–कार**–पु० रथ बनानेवाला; एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति माहिष्य पिता (क्षत्रिय-वैश्यासे उत्पन्न) और करिणी माता (वैश्य-शूद्रासे उत्पन्न) से मानी गयी है। **–कुटुंबिक**–पु० सारथि। **–कूबर**–पु० रथका वह स्थान जहाँ जुआ बाँधा जाता है। **–क्रांत**–पु० एक प्रकारका ताल (संगीत)। **–क्रांता**–स्त्री० एक प्राचीन जनपदका नाम। **–क्षोभ**–पु० रथका हिलना-डुलना। **–गर्भक**–पु० पालकी, नालकी (कंधोंपर ले जायी जानेवाली रथाकार सवारी)। **–गुप्ति**–स्त्री० रथरक्षिणी, रथके किनारे लगा हुआ लकड़ी, लोहे आदिका घेरा जो शस्त्रोंके प्रहार और टक्करसे उसे बचाता था। **–चरण,–पाद**–पु० रथका पहिया; चकवा, चक्रवाक। **–चर्या**–स्त्री० रथसे यात्रा करना। **–०संचार**–पु० रथोंके लिए पक्की सड़क (खजूरकी लकड़ी और पत्थरसे बनायी जाती थी–प्रा०)। **–चित्रा**–स्त्री० एक प्राचीन नदी। **–द्रु**–पु० बेंत; तिनिश वृक्ष। **–नीड**–पु० रथके भीतरका स्थान, बैठनेकी जगह, गद्दी। **–पति**–पु० रथी, रथका नायक। **–पर्याय**–पु० बेंत; तिनिश वृक्ष। **–प्सा**–स्त्री० एक प्राचीन नदी। **–महोत्सव**–पु० दे० 'रथयात्रा'। **–यात्रा**–स्त्री० आषाढ़-शुक्ला द्वितीयाको पुरीमें होनेवाला उत्सव जिसमें सुभद्रा, बलराम और जगन्नाथकी मूर्तियाँ रथपर निकालते हैं (हिंदुओंके अतिरिक्त जैन और बौद्ध भी यह उत्सव मनाते हैं और रथपर जिन एवं बुद्धकी मूर्तियाँ निकालते हैं)। **–योजक**–पु० सारथि। **–वर्त्म(न्)**–पु०,**–वीथि**–स्त्री० मुख्य सड़क, राजमार्ग। **–वाह**–पु० सारथि; घोड़ा। **–वाहक**–पु० सारथि। **–वाहन**–पु० रथके पहियोंके ऊपरवाला ढाँचा। **–शाला**–स्त्री० रथ रखनेकी जगह, गाड़ीखाना। **–शास्त्र**–पु०,**– विद्या**–स्त्री० रथ चलानेकी विद्या। **–सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी, सूर्यके रथारोहणकी तिथि। **–सूत**–पु० सारथि, रथचालक। **–स्था-(स्या)**–स्त्री० रामगंगा नदीका पुराना नाम।

रथवान्(वत्)–पु० (सं०) सारथि, रथ हाँकनेवाला।

रथांग–पु० (सं०) रथका पहिया; चक्र, एक अस्त्र; चकवा। **–पाणि**–पु० चक्रपाणि, विष्णु। **–धर**–पु० (चक्रधर) श्रीकृष्ण; विष्णु। **–वर्ती(तिन्)**–पु० चक्रवर्ती, सम्राट्।

रथांगी–स्त्री० (सं०) ऋद्धि नामकी ओषधि।

रथाक्ष–पु० (सं०) रथका धुरा; पहिया; कार्त्तिकेयका एक अनुचर; चार अंगुलका एक प्राचीन परिमाण।

रथाग्र–पु० (सं०) श्रेष्ठतम योद्धा, वह योद्धा जिसका रथ युद्धमें सबसे आगे रहे।

रथाभ्र–पु० (सं०) बेंत।

रथावरोही(हिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'रथी'।

रथावर्त–पु० (सं०) एक तीर्थ।

रथिक–पु० (सं०) रथका सवार, रथी; तिनिश वृक्ष।

रथी(थिन्)–वि० (सं०) रथपर चलनेवाला। पु० योद्धा।

रथोत्सव–पु० (सं०) रथयात्राका उत्सव।

रथोद्धता–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

रथोपस्थ–पु० (सं०) रथका मध्य भाग।

रथोरग–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति।

रथोष्मा–स्त्री० (सं०) एक नदी (पु०)।

रथ्य–पु० (सं०) चक्र; पहिया; रथमें जुतनेवाला घोड़ा; सारथि।

रथ्या–स्त्री० (सं०) रथका मार्ग, लीक; राजमार्ग, सड़क, प्रशस्त पथ; २०, २१ हाथ चौड़ी सड़क (प्रा०); चौक, चौराहा; वह स्थान जहाँ कई मार्ग मिलें; रथोंका समूह; नाली, नाबदान। **–यान**–पु० (ट्राम) सड़कोंपर बिछायी गयी लोहेकी पतली पटरियोंपर बिजली आदिकी सहायतासे चलनेवाली बड़ी सवारी गाड़ी।

रद–पु० (सं०) दाँत। **–च्छद**–पु० ओष्ठ, अधर। **–छद***–पु० ओठ; दाँतोंका चिह्न (विशेषतः रतिकालका)। **–दान**–पु० दाँतोंका चिह्न डालना। **–पट**–पु० ओठ, अधर। **–वास**–पु० ओंठ।

रद–वि० खराब, रद्दी; तुच्छ; हीन; फीका! **–बदल**–पु० परिवर्तन, उलट-पुलट, अदल-बदल।

रदन–पु० (सं०) दाँत। **–च्छद**–पु० ओठ, अधर।

रदनी(निन्)–पु० (सं०) दाँतोंवाला, दँतैल। पु० हाथी।

रदी(दिन्)–पु० (सं०) हाथी।

रदीफ़–पु० (अ०) घोड़े, ऊँटपर पीछे बैठनेवाला आदमी; पीछेकी सेना; वह शब्द या पद जो शेर, गजल, कसीदेमें काफिये, अंत्यानुप्रासके पीछे बार-बार आये। **–वार**–अ० अक्षरक्रमसे। मु० **–चमकना**–रदीफका चमत्कारपूर्ण होना। **–बाँधना**–रदीफका व्यवहार करना।

रद्द–वि० (अ०) काटा, छाँटा हुआ; तोड़ा, बदला हुआ; खराब, निकम्मा। पु० झुठलाना; गलत साबित करना; न मानना; फेर देना। स्त्री० वमन, कै। **–(द्दो)बदल**–पु० फेरफार, उलट-फेर, परिवर्तन।

रद्दा–पु० तह, खंड, स्तर; चारों ओर एक बारमें उठायी जानेवाली मिट्टीकी दीवारका अंशविशेष; पूरी दीवारकी लंबाईमें एक ईंटकी जोड़ाई; मिठाइयोंका चुनाव (थालीमें); गरदनपर कुहनी और कलाईके बीचकी हड्डीसे आघात करना (कुश्ती); चमड़ेकी मोहरी (विशेषकर भालुओंके मुँहपर बाँधनेकी)। मु० **–जमाना**–आरोप करना, इलजाम लगाना। **–रखना**–एक तहपर दूसरी तह रखना; इलजाम रखना; खानेपर खाना।

रद्दी–वि० (अ०) निकम्मा, बेकार। स्त्री० बेकार फेंके हुए कागज आदि। **–ख़ाना**–पु० वह स्थान जहाँ खराब, रद्दी चीजें फेंकी, रखी जायँ।

रद्दो-बदल–दे० 'रद्द'में।

रधार†–स्त्री० दोहर, खोल।

रधेराजाल–पु० छोटे छेदोंका जाल।

रन*–पु० युद्ध; जंगल, वन। **–छोर**–पु० दे० 'रणछोड़'। –

बंका–वि० शूर-वीर; योद्धा, बहादुर। –**बरिया**–स्त्री० जंगली भेड़की एक किस्म। –**बाँकुरा**–वि० योद्धा, वीर। –**बादी**–वि० लड़ाका, योद्धा, शूर। –**वास**–पु० महलमें वह भाग जहाँ रानियोंका कक्ष होता है, अन्तःपुर।

रन–पु० (अं०) ताल, झील; समुद्रका खंड-विशेष (जैसे कच्छका रन); क्रिकेट खेलमें बल्लेबाजका एक विकेटसे दूसरे विकेटतक बिना बहिर्गत हुए दौड़ लगाना, धावन।

रनकना–अ० क्रि० (घुंघरू आदिका) मंद-मंद शब्द होना।

रनना*–अ० क्रि० शब्द करना; झनकार करना।

रनबरिया–स्त्री० नेपालमें पायी जानेवाली एक भेड़।

रनवास, रनिवास–पु० रानियोंका महल, अंतःपुर।

रनित*–वि० झंकार करता हुआ, बजता हुआ; ध्वनित।

रनी*–वि०, पु० योद्धा, वीर।

रपट†–स्त्री० आदत, अभ्यास, बान, 'रब्त'; फिसलना; ढाल, उतार; दौड़ (विशेषतः तेज दौड़); इत्तल्ला, सूचना, 'रिपोर्ट'।

रपटना–अ० क्रि० नीचे या आगेकी ओर फिसलना, सरकना, जम न पाना; तेजीसे, बिना रुके, जल्दी-जल्दी चलना। स० क्रि० अविलंब कर डालना; मैथुन करना (बाजारू)।

रपटना–स० क्रि० सरकाना, फिसलाना; रपटनेको प्रेरित करना; चटपट कोई काम पूरा कराना।

रपटीला–वि० फिसलनेवाला स्थान।

रपट्टा–पु० फिसलन, फिसलाव; चपेट, झपट्टा; दौड़-धूप।

रफ*–पु० सुंदर ढंग–'पियके अनुराग सुहागभरी रतिहेरैं न पावति रूप-रफैं'–घन०।

रफ़–वि० (अं०) कच्चा या जल्दीमें किया हुआ, नमूनेके तौरपर बना हुआ; जो साफ, ठीक न बना हो; खुरदरा।

रफते-रफ्ते–अ० दे० 'रफ़्ता-रफ़्ता'।

रफरी–पु० (अं०) वह आदमी जो किसी मामले, खेल आदिमें निर्णय करे।

रफल–पु० ऊनी चादर, 'रैपर'। स्त्री० एक प्रकारकी बंदूक, 'राइफल'।

रफ़ा–पु० (अ०) उठाना, ऊँचा करना; तरक्की; निकालना; दूर करना; पूरा करना; समाप्त करना; फैसला करना; निर्णीत बात। –**दफ़ा**–पु० खत्म करना; फैसला करना; पीछा छुड़ाना; फैसला; तयशुदा बात।

रफ़ाक़त–स्त्री० (अ०) संग; मेलजोल; वफादारी; एकता।

रफ़ात–स्त्री० (अ०) बुलंदी, ऊँचाई; पदोन्नति, प्रतिष्ठा।

रफ़ीअ–वि० (अ०) ऊँचा, बुलंद।

रफ़ीक–पु० (अ०) संगी-साथी; सहकारी; मित्र; साझीदार; मुसाहिब।

रफ़ीदा–पु० (अ०) पुराने कपड़े जो इकट्ठे सिले हों; गद्दी जिसपर जीन कसते हैं; काबुक, गद्दा; वह गद्दी जिसको लगाकर नानबाई तंदूरेमें रोटी चिपकाते हैं; गोल, बेढंगी पगड़ी (अवज्ञा, अनादर-सूचक)।

रफ़ू–पु० (अ०) जले, फटे कपड़ेके छोटे सुराखमें तागे भरकर बराबर करना, जाली लगाना। –**गर**–पु० रफू करनेवाला। –**गरी**–स्त्री० रफू करनेका काम; रफू करनेका पेशा। **मु०** –**करना**–असंबद्ध, विपरीत बातोंमें सामंजस्य जोड़ना। –**खुलना**–रफूके तागे टूट जाना। –**चक्कर होना**–चंपत, गायब, फरार होना; खिसक जाना, चुपकेसे चला जाना।

रफ़्त–स्त्री० (फा०) रवानगी, गमन (जैसे–आमद-रफ़्त)।

रफ़्तनी–स्त्री० गमन, जाना; बिक्रीके लिए माल बाहर भेजना, मालकी निकासी, निर्यात।

रफ़्तार–स्त्री० (फा०) गति, चाल; चलनेका ढंग, भाव। –**गुफ़्तार**–स्त्री० चाल-चलन, तौर-तरीका। –**ज़माना**–स्त्री० ज़मानेकी गर्दिश, गति, चाल। –(**रे**)**मस्ताना**–स्त्री० मस्तानी चाल, झूम-झूमकर चलना; नखरोंकी चाल।

रफ़्ता-रफ़्ता–अ० क्रमशः; शनैः-शनैः, धीरे-धीरे।

रब–पु० (अ०) ईश्वर, परमेश्वर, मालिक; परवरदिगार, पालन-पोषण करनेवाला; * मुसलमानी मत–'कीन्ही कल्ल मथुरा दोहाई फेरी रबकी'–भूषण।

रबड़–पु० एक वृक्षके रस या निर्यासको पकाकर बनाया जानेवाला एक लचीला पदार्थ; रबड़की बनी हुई चीज; एक वृक्ष। स्त्री० गहरा श्रम, रगड़; फजूल हैरानी; फेर, चक्कर; घुमाव, चलनेके लिए अधिक दूरी। –**क्षीर**–पु० (लेटेक्स) रबड़के वृक्षके तनेसे निकलनेवाला दूध सदृश रस जिसे शोधित करके रबड़ बनाया जाता है। –**छंद**–पु० मात्राओं आदिके बंधनोंसे मुक्त छंद।

रबड़ना–स० क्रि० फेरना; घुमाना, चलाना। अ० क्रि० घूमना, चलना।

रबड़ी–स्त्री० औटाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी मिश्रित दूध, बसौंधी।

रबदा–पु० कीचड़; बार-बार जाने-आनेसे होनेवाला श्रम। **मु०**–**पड़ना**–जोरकी वर्षा होना।

रबना–अ० क्रि० नदी, नहर आदिका मिट्टीसे भर जाना 'हुगली नदी रब जाती है'–भारतीय भूनीति; भटना, पटना।

रबरी†–स्त्री० दे० 'रबड़ी'।

रबाना–पु० एक छोटा डफ जिसमें मजीरे भी लगे रहते हैं।

रबाब–पु० (अ०) एक तरहकी सारंगी।

रबाबिया–पु० रबाब बजानेवाला।

रबी–पु० (अ०) मौसम बहार, वसंत; वसंत ऋतुमें काटी जानेवाली फसल, चैती। –**उल आख़िर या सानी**–पु० मुसलमानोंका चौथा महीना (चांद्र)। –**उल औवल**–पु० मुसलमानोंका तीसरा महीना (चांद्र)।

रबील–स्त्री० एक चिड़िया।

रब्त–पु० (अ०) अभ्यास, रपट, मश्क; संबंध, रिश्ता; मेलजोल; बंदिश, जोड़ना। –**ज़ब्त**–पु० मेल-जोल, राहरस्म; आमद-रफ़्त; निरोध करना; जब्त करना। **मु०** –**छटना**,–**छूटना**–लगाव न रहना; बंदिश दुरुस्त न रहना। –**डालना**–मश्क, अभ्यास करना।

रब्ध–वि० (सं०) आरंभ, शुरू किया हुआ। (स्त्री० 'रब्धा')।

रब्ब–पु० (अ०) दे० 'रब'।

रब्बा†–पु० (फा० 'अराबा') तोप ले जानेवाली गाड़ी; बैलसे खींची जानेवाली गाड़ी, रथ।

रब्बाब–पु० दे० 'रबाब'।

रब्बुलरबाब–पु० (अ०) पालकोंका प्रतिपालक।

रभस–पु० (सं०) औत्सुक्य; आवेश; वेग, त्वरा (जल्दबाजी–बुरे भावमें); पूर्वापरका अविचार; शोक, अनुताप, पछतावा; मिलन; हर्ष; रंग; रहस्य; प्रेमोत्साह; प्रबल कामना; क्रोध; एक राक्षस। वि० वेगयुक्त; प्रबल; हर्षयुक्त।

रभेणक–पु० (सं०) साँपके रूपमें रहनेवाला एक राक्षस।

रम–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला, आनंदकारक; सुंदर, प्रिय। पु० आनंद, हर्ष; रमण; कामदेव; लाल अशोक; पति; प्रेमी।

रमइया–पु० राम।

रमक–स्त्री० लहर, तरंग; पेंग (झूलेकी)। पु० (सं०) प्रेमी; कांत; उपपति।

रमक़–वि० (अ०) बहुत थोड़ा, ज़रा-सा। स्त्री० आखिरी साँस; नशेका असर; स्वल्प, थोड़ा-सा अंश।

रमकजरा–पु० भादोंमें पकनेवाला एक मोटा धान।

रमकना–अ० क्रि० हिंडोलेपर झूलना, पेंग मारना;–'झोटा बढ़ै रमकत दोऊ दिसि, डार परसत जाय'–हरिश्चंद्र; झूमते, इतराते हुए चलना।

रमचकरा–पु० बेसनकी मोटी रोटी।

रमचा†–पु० चमचा, छोटी करछी।

रमचेरा, रमचेरुआ–पु० टहलुआ (परिहास)।

रमजना*–पु० दे० 'रामजना'।

रमज़ान–पु० (अ०) मुसलमानी वर्षका नवाँ महीना।

रमज़ानी–वि० रमजानका; रमजान-संबंधी; रोजोंका; उनके मुतल्लिक; रमजानमें उत्पन्न। पु० मुसलमानी नाम।

रमझोल†–पु० दे० 'रमझोला'।

रमझोला–पु० नूपुर, घुंघरू।

रमठ–पु० (सं०) हींग; एक प्राचीन देश या वहाँका निवासी।

रमड़ना*–अ० क्रि० बरसना–'घमड़ि घुर-रस रमड़ि नित आनंद

घन-आसार'।

रमण–वि० (सं०) रमनेवाला; प्रिय, मनोहर। पु० केलि, विलास, क्रीडा; संभोग, मैथुन; विचरण करना, घूमना; कामदेव; पति; गधा; जघन; अंडकोश; सूर्यका सारथि, अरुण; परवलकी जड़; रम्यक नामक वर्ष; बकायन; एक वर्णवृत्त; एक वन। **–चंद्रशेखर वेंकट**–एक प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक–जन्म ७ नवम्बर १८८८; भौतिक विज्ञानमें नोबेल पुरस्कार प्राप्त १९३०। **–गमना**–स्त्री० वह नायिका जिसका नायक तो संकेत-स्थानपर पहुँच गया हो, पर वह स्वयं न उपस्थित हो पाये।

रमणक–पु० (सं०) वीतहोत्रका पुत्र; जंबूद्वीपका एक वर्ष।

रमणा–स्त्री० (सं०) रामतीर्थस्थित एक शक्ति; सुंदर स्त्री; पत्नी, प्रिया; एक वृत्त।

रमणी–स्त्री० (सं०) स्त्री; सुंदर स्त्री; एक गंधद्रव्य, वाला, सुगंधवाला।

रमणीक–वि० सुंदर, मनोहर।

रमणीय–वि० (सं०) सुंदर, रुचिर, रम्य।

रमणीयता–स्त्री० (सं०) सुंदरता, मनोहरता; स्थायी अथवा क्षण-क्षणमें नया रूप धारण करनेवाला माधुर्य (सा०)।

रमता–वि० घुमक्कड़, एक जगह स्थिर न रहनेवाला।

रमति–पु० (सं०) कामदेव; नायक, प्रेमी; स्वर्ग; काल; कौआ।

रमतूला–पु० सिंगा नामक बाजा, धुधका।

रमद–पु० (अ०) आँखोंकी एक बीमारी जिसमें आँखें सुर्ख हो जाती हैं।

रमदी†–पु० अगहन महीनेमें पकनेवाला जड़हन।

रमन*–वि०, पु० 'रमण'।

रमनक*–पु० दे० 'रमणक'।

रमनसोरा–पु० एक मछली।

रमना–अ० क्रि० विहार करना; भोग-विलास, रतिक्रीडा करना; व्याप्त होना; अनुरक्त होना; घूमना-फिरना; चलता होना, चल देना; अदृश्य हो जाना; चैन करना, दिल बहलाना; सैर करना; वसना; समाना। पु० चरागाह; घेरा, हाता; सुंदर, रमणीक स्थान।

रमनी*–स्त्री० दे० 'रमणी'।

रमनीक*–वि० दे० 'रमणीक'।

रमनीय*–वि० दे० 'रमणीय'।

रमल–पु० (अ०) फलित ज्योतिषका प्रकार-विशेष जिसमें पासे फेंककर उसके विंदुओंके अनुसार फलका अनुमान करते हैं (भारतमें इस विद्याका प्रवेश मुसलमानों द्वारा हुआ)।

रमसरा–पु० ऊखके खेतका एक पौधा।

रमा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; पत्नी; सौभाग्य; संपत्ति; वैभव; शोभा। **–कांत,–धव**–पु० विष्णु। **–नरेश***–पु० विष्णु। **–निकेत,–निवास**–पु० विष्णु। **–पति,–रमण**–पु० विष्णु। **–बीज**–पु० एक तांत्रिक मंत्र, लक्ष्मीबीज। **–वेष**–पु० श्रीवास चंदन।

रमाना–स० क्रि० लगाना, जोड़ना (रास); पोतना; मुग्ध करना, मोहित करना; अनुरक्त बनाना; रोकना, ठहरना; अनुकूल बनाना।

रमाली–पु० एक बारीक चावल।

रमास–पु० दे० 'रवाँस'।

रमित*–वि० मुग्ध, लुभाया हुआ।

रमी–स्त्री० मलाया आदिमें होनेवाली एक प्रकारकी घास जो कागज, रस्सी आदि बनानेके काम आती है; ताशका एक खेल।

रमूज़–स्त्री० (अ०) कटाक्ष; इशारा (आँखों, मुँह और भौंसे); पहेली; भेद, रहस्य ('रम्ज़'का बहु०)।

रमेना*–अ० क्रि० रमना।

रमेश, रमेश्वर–पु० (सं०) विष्णु।

रमेसर–पु० रामेश्वर।

रमेसरी–स्त्री० रामेश्वरपुरी (?)।

रमैंती–स्त्री० काम लेकर बदलेमें काम करनेकी प्रथा ('हूँड़ या पैंठ'); ऐसे काममें लगनेवाला दिन।

रमैनी–स्त्री० बीजकका दोहों-चौपाइयोंसे युक्त भाग।

रमैया*–पु० राम; ईश्वर।

रम्ज़–स्त्री० (अ०) इशारा (आँख, मुँह, भौं आदिसे); भेद, रहस्य; पेचदार बात; मंशा।

रम्मट–पु० युद्धके समय बजाया जानेवाला बाजा–'ये तुरही, रम्मट, धौंसे'–मृग०।

रम्माल–पु० (अ०) रमल फेंककर फल कहनेवाला, ज्योतिषी, नमूजी।

रम्मी–स्त्री० दीवार आदिमें छेद करनेका छोटा रंभा, खंती, सबरी।

रम्य–वि० (सं०) सुंदर, मनोहर; रमणीय, मनोरम। पु० चंपा वृक्ष, बक, अगस्त्य वृक्ष; वीर्य; वायुके सात भेदोंमेंसे एक जिसकी गति ४ से ७ कोसतक प्रति घंटा है; अग्नीध्रका एक पुत्र; परवलकी जड़। **–क्षीर**–पु० बकायन, महानिंब। **–पुष्प**–पु० सेमरका पेड़। **–फल**–पु० कुचिला। **–श्री**–पु० विष्णु। **–सानु**–पु० पहाड़की चोटीके ऊपरकी सम भूमि।

रम्यक–पु० (सं०) बकायन, महानिंब; जंबूद्वीपका एक खंड; शुक्र, धातु।

रम्या–स्त्री० (सं०) स्थलपद्मिनी; रात; गंगा नदी; इंद्रायन। वि० स्त्री० दे० 'रम्य'।

रम्याक्षि–पु० (सं०) एक ऋषि।

रम्यामली–स्त्री० (सं०) भुइँआँवला।

रम्हाना–अ० क्रि० गाय-भैंसका बोलना, रँभाना, धाड़ना।

रय–पु० (सं०) वेग, तेजी; प्रवाह; ऐलके ६ पुत्रोंमेंसे चौथा; * धूल, गर्द, रज।

रयन*–स्त्री० दे० 'रयनि'।

रयना*–अ० क्रि० बोलना, रव करना; अनुरक्त होना, प्रेममग्न होना; रँगना, रंगसे भीगना; मिलना, संयुक्त होना।

रयनि*–स्त्री० रजनी, रात।

रया–स्त्री० (अ०) जाहिरदारी, दुनियासाजी, दिखावा, बनावट; मक्कारी। **–कार**–वि० मक्कार; दुनियासाज।

रयासत–स्त्री० दे० 'रियासत'।

रयिष्ठ–वि० (सं०) धनी, संपत्तिशाली। पु० कुबेर; अग्नि; एक प्रकारका साम।

रय्यत†–स्त्री० दे० 'रअय्यत'।

ररंकार*–पु० रकारकी ध्वनि।

रर*–स्त्री० रट, रटन।

ररक†–स्त्री० ररकनेका भाव; कराह; टीस, साल, कसक।

ररकना–अ० क्रि० पीड़ा देना, सालना।

ररना*–अ० क्रि० रटना, बार-बार एक ही बात कहना; (कहकर) पुकारना–'कब जननी कहि मोहि ररै'–सूर।

ररिहा*–वि० ररनेवाला; गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला, माँगनेकी धुन लगानेवाला। पु० उल्लूकी जातिका एक पक्षी, रुरुआ, रटुआ।

ररी–वि०, पु० रार या झगड़ा करनेवाला; माँगकी रट लगानेवाला, पीछे पड़कर माँगनेवाला; अधम, नीच।

रलना*–अ० क्रि० एकमें मिलना। मु० **–मिलना**–घुलना-मिलना, एक हो जाना।

रलाना*–स० क्रि० एकमें मिलाना, सम्मिलित करना।

रली–स्त्री० क्रीडा, विहार; खुशी, प्रसन्नता; †एक प्रकारका अन्न, चेना।

रल्ल*–पु० रेला, धक्कमधक्का; धावा; हल्ला।

रल्लक–पु० (सं०) मृगविशेष; बरौनी; ऊनी वस्त्र; कंबल।

रव–पु० (सं०) ध्वनि; शब्द; शोर; भनभनाहट, गुंजार; * रवि, सूर्य। † धुन; मनःस्थिति (मूड) 'रवमें आकर वे अनाप-सनाप काम कर बैठते हैं;' 'अभी उनका रव ठीक नहीं है।'

रवक–पु० रेंड़का पेड़।

रवकना–अ० क्रि० झपटना, लपकना; उछलना, उमगना।

रवण–पु० (सं०) रव, शब्द; कोयल; ऊँट; विदूषक; भाँड़; काँसा; * रमण। वि० शब्द करता हुआ; गरम, तप्त; अस्थिर, चंचल। **–रेती***–स्त्री० यमुनातटकी रेतीली भूमि, कृष्णका विहार-स्थल।

रवताई–स्त्री० रावत (राजा) होनेका भाव; प्रभुता, स्वामित्व।

रवथ–पु० (सं०) कोयल।

रवन*–वि० क्रीडा, रमण करनेवाला। पु० पति, भर्ता, स्वामी; रमण।

रवना*–अ० क्रि० शब्द करना, बोलना; रमना; क्रीडा, रमण करना। पु० रावण।

रवन्नि, रवनी*–स्त्री० रमणी, सुंदरी, स्त्री।

रवन्ना–पु० रवाना होनेका, राहदारीका परवाना, जानेवाली चीजके साथ रहनेवाली चुंगीकी रसीद, प्रमाणपत्र; कागज जिसपर रवाना किये हुए मालका विवरण हो; घरेलू काम काज करने या सौदा लानेवाला ड्योढ़ीदार।

रवाँ–वि० (फा०) प्रवाहित, बहता हुआ; जारी; मश्क किया हुआ, अभ्यस्त; चोखा (शस्त्र आदि); दे० 'रवाना'।

रवाँस–पु० बोड़े, लोबियेकी जातिका सब्जीका पौधा।

रवा–पु० छोटा टुकड़ा, कण, दाना (चाँदी, चावल, चीनी, मिश्रीका रवा); घुँघरूका छर्रा; बारूदका दाना; सूजी। **–दार**–वि० दानेदार, रवेवाला। **–भर**–अ० जरा-सा, बहुत थोड़ा।

रवा–वि० (फा०) उचित, ठीक; प्रचलित; पूरा करनेवाला (समासमें)। **–दार**–वि० हितैषी, शुभचिंतक; संबंध, लगाव रखनेवाला। **–दारी**–स्त्री० हितैषिता; मेलजोलकी भावना। **–रवी**–स्त्री० जल्दी, भाग-दौड़।

रवाज–पु० (फा०) चलन, रीति, प्रथा, परिपाटी।

रवादक–पु० (सं०) बंधक चीजको हजम करनेवाला।

रवानगी–स्त्री० प्रस्थान, प्रयाण।

रवाना–वि० (फा०) प्रस्थित, चला हुआ; भेजा हुआ।

रवानी–स्त्री० बहाव, प्रवाह।

रवानी*–वि० स्त्री० आनंद प्रवाहमें मग्न–'आज देखौं भाँति-भाँति रावल रवानी है'–घन०।

रवाब–पु० दे० 'रबाब'।

रवाबिया–पु० लाल, बलुआ पत्थर; दे० 'रबाबिया'।

रवायत–स्त्री० (अ०) कहानी; कहावत।

रवासन–पु० एक पेड़ जिसके बीज और पत्ते दवाके काम आते हैं।

रवि–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; सरदार; आक, मदार; लाल अशोक; पहाड़; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; बारहकी संख्या। **–कर**–पु० सूर्यकिरण। **–कांतमणि**–पु० सूर्यकांतमणि। **–कुल**–पु० सूर्यवंश। **–०मणि,–० रवि**–पु० राम। **–चंचल**–पु० काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थ, लोलार्ककुंड। **–चक्र**–पु० सूर्यका मंडल; सूर्यके रथका पहिया; जीवनके शुभाशुभका निरूपण करनेवाला चक्र-विशेष (ज्यो०)। **–ज**–पु० 'रवितनय'। **–०केतु**–पु० सूर्यसे उत्पन्न तारे, पुच्छल तारे। **–जा**–स्त्री० यमुना। **–जात**–पु० सूर्यकिरण। **–तनय,–नंद,–नंदन,–पुत्र**–पु० सावर्णि मनु; वैवस्वत मनु; यमराज; शनि; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण। **–तनया,–तनुजा,–नंदिनी**–स्त्री० यमुना। **–तीर्थ**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–दिन**–पु० रविवार, इतवार। **–नाथ**–पु० कमल, पद्म; बंधूक, दुपहरिया। **–नीच**–पु० (पेरिहीलियन) ग्रहकी कक्षा या पथका सूर्यसे सबसे निकट बिन्दु। **–नेत्र**–पु० दे० 'रविलोचन'। **–पूत***–पु० दे० 'रवितनय'। **–प्रिय**–पु० लाल कमल; लाल कनेर; ताँबा। **–बाण**–पु० वह बाण जिसके चलानेसे सूर्यका-सा प्रकाश हो। **–बिंब**–पु० सूर्यका मंडल; माणिक्य। **–मंडल**–पु० सूर्यके चारों ओर दिखाई देनेवाला लाल मंडल; सूर्यका बिंब। **–मणि,–रत्न**–पु० सूर्यकांतमणि। **–रत्नक**–पु० माणिक्य। **–लोचन**–पु० विष्णु। **–लौह,–संज्ञक**–पु० ताँबा। **–वंश**–पु० सूर्यवंश। **–वंशी(शिन्)**–पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुरुष, सूर्यवंशी। **–वार,–वासर**–पु० इतवार, आदित्यवार। **–संक्रान्ति**–स्त्री० सूर्यका एकसे दूसरी राशिमें गमन। **–सारथि**–पु० अरुण। **–सुंदर**–पु० भगंदरके लिए उपकारक एक रस (आ० वे०)। **–सुअन***–पु० दे० 'रवितनय'। **–सुत,–सूनु**–पु० दे० 'रवितनय'।

रविजेंद्र–पु० (सं०) एक जैन आचार्य।

रविश–स्त्री० (फा०) बगीचेकी क्यारियोंके बीच चलनेके लिए बना हुआ पतला रास्ता; चाल, रफ्तार; ढंग, तौर; रस्म, रवाज; कानून, कायदा; चलन, रवैया।

रवींद्रनाथ ठाकुर–पु० कवि, नाटचकार, कहानी लेखक आदि, जन्म ७-५-१८६१; भारतके प्राचीन आदर्शोंके प्रेमी थे, १९०१ में शांनिकेतनकी स्थापना; १९१३ में गीतांजलिपर नोबेल पुरस्कार मिला; मृत्यु ८ अगस्त १९४१।

रवीषु–पु० (सं०) कामदेव।

रवैया–पु० चलन, प्रथा; तौर, तरीका।

रशना–स्त्री० (सं०) कांची, करधनी; रस्सी; जिह्वा; लगाम, रश्मि। **–कलाप,–गुण**–पु० एक प्रकारकी धागेकी बनी करधनी।

रशनोपमा–स्त्री० (सं०) दे० 'रसनोपमा'।

रशाद–पु० (अ०) सुमार्ग; सदाचार।

रशीद–वि० सन्मार्गपर चलने या चलनेकी प्रेरणा देनेवाला। गुरु कृपासे हुआ ज्ञानी या निपुण।

रश्क–पु० (फा०) जलन, डाह, कुढ़न, ईर्ष्या, हसद।

रश्मि–स्त्री० (सं०) किरण; रस्सी, डोरी; घोड़ेकी लगाम; बरौनी। **–कलाप**–पु० चौसठ या चौवन लड़ियोंवाला मुक्ताहार। **–केतु**–पु० कृत्तिका नक्षत्रमें स्थित होकर उदित होनेवाला केतु, पुच्छलतारा। **–पति**–पु० आदित्यपत्र। **–माली(लिन्)**–पु० सूर्य। **–मुच**–पु० सूर्य।

रष्यन†–पु० रक्षण।

रस–पु० (सं०) स्वाद, रसनेंद्रियका ज्ञान, संवेदन (इनकी संख्या ६ है–मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय और तिक्त); ६ की संख्या (न्या०); खाये हुए अन्नका प्रथम परिणाम; तत्त्व, सार; मनमें उत्पन्न होनेवाला वह भाव जो काव्यपाठ, अभिनय-दर्शन आदिसे होता है, विभाव, अनुभाव और संचारीके योग द्वारा व्यंजित स्थायी भावसे उत्पन्न चित्तवृत्ति-विशेष, आनंद (सा०) (ये नौ प्रकारके माने गये हैं–शृंगार, हास्य, करुण, वीर, वीभत्स, रौद्र, भयानक, शांत और अद्भुत); नौकी संख्या (सा०); आनंद; प्रेम; द्रव, तरल पदार्थ; जल; शराब; वेग, उमंग, जोश; इच्छा; केलि, कामक्रीड़ा; गुण; फलों, वनस्पतियोंका जलीय अंश जो कूटने, दबाने या निचोड़नेसे निकलता है; शोरबा; रसा; शरबत; वृक्षका निर्यास, गोंद; घोड़ों, हाथियोंका एक रोग (इसमें पैरसे पानी निकलता है); वीर्य; राग; विष; दूध; अमृत; गंधरस; शिलारस; पारा; हिंगुल, शिंगरफ; धातुओंको फूँककर तैयार किया हुआ भस्म (जैसे–रससिंदूर-आ० वे०); एक गंधद्रव्य, बोल; एक प्रकारकी भेड़; भाँति। **–कपूर**–पु० (हिं०) औषधोपयोगी सफेद रंगकी एक धातु। **–कर्म(न्)**–पु० पारे द्वारा रस तैयार करनेकी क्रिया (आ० वे०)। **–केलि**–स्त्री० विहार, क्रीडा; हँसी-दिल्लगी। **–केसर**–पु० कपूर। **–केसरी(रिन्)**–पु० पारे, गंधक आदिके मेलसे तैयार की जानेवाली एक रसौषध। **–कोरा**†–पु० रसगुल्ला। **–खर्पर**–पु० खपरिया, संगबसरी। **–खीर**–स्त्री० (हिं०) मीठा भात। **–गंध,–गंधक**–पु० रसौत; शिंगरफ; बोल नामक गंधद्रव्य। **–गतज्वर**–पु० शरीरकी धातुमें प्रविष्ट ज्वर। **–गर्भ**–पु० रसौत, रसांजन; ईंगुर; हिंगुल, शिंगरफ। **–गुनी**†–वि० रसज्ञ, काव्य, संगीतका ज्ञाता। **–गुल्ला**–पु० (हिं०) छेनेसे बनायी जानेवाली एक मिठाई। **–ग्रह**–पु० जीभ। **–घन**–वि० जो परम स्वादिष्ठ हो। पु० आनंदघन, कृष्ण। **–घ्न**–पु० सुहागा। **–छन्ना**†–पु० ईखका रस छाननेकी छलनी। **–ज**–पु० गुड़; रसौत; शराबकी तलछट। **–जात**–पु० रसौत। **–ज्ञ**–वि० रसका ज्ञाता; कुशल, निपुण; काव्यमर्मज्ञ। **–ज्ञा**–स्त्री० जीभ; गंगा। सि०, स्त्री० दे० 'रसज्ञ'। **–ज्येष्ठ**–पु० शृंगार रस; मधुर, मीठा रस। **–डली**–स्त्री० (हिं०) एक प्रकारका गन्ना। **–तन्मात्रा**–स्त्री० जलकी तन्मात्रा (सां०); दे० 'तन्मात्रा'। **–तालेश्वर**–पु० एक प्रकारका रस (आ० वे०)। **–तेज(स्)**–पु० रक्त, रुधिर। **–त्याग**–पु० नियम, आचारसे स्वादिष्ठ पदार्थोंका त्याग करना (जै०)। **–द**–वि० सुखद, आनंददायक; स्वादिष्ठ। पु० चिकित्सक। **–दा**–स्त्री० सफेद निर्गुंडी, सिंधुआर। **–दार**–वि० (हिं०) जिसमें रस हो, शोरबेदार; रसवाला (आम, नींबू आदि); स्वादिष्ठ। **–दालिका**–स्त्री० गन्ना, ऊख। **–द्रावी**-

(विन्)–पु० मीठा जंबीरी नीबू । **–धातु**–स्त्री० पारा; शरीरकी सात धातुओंमेंसे एक । **–धेनु**–स्त्री० दानके निमित्त निर्मित गुड़की गाय । **–नाथ**–पु० पारा । **–नाभ**–पु० रसौत । **–नायक**–पु० पारा; शिव । **–निर्यास**–पु० शाल वृक्ष । **–नेत्रिका**–स्त्री० मैनसिल । **–पति**–पु० पारा; श्रृंगार रस; राजा; पृथ्वी; चंद्रमा । **–परित्याग**–पु० दे० 'रसत्याग' । **–पर्पटी**–स्त्री० पारेको शोधकर बनाया जानेवाला एक रस (आ० वे०) । **–पाकज**–पु० गुड़; चीनी । **–पाचक**–पु० रसोइया, भोजन बनानेवाला । **–पुष्प**–पु० गंधक, पारे, नमकसे निर्मित एक दवा । **–पूतिका**–स्त्री० सतावर; मालकँगनी । **–प्रबंध**–पु० नाटक; प्रबंधकाव्य । **–फल**–पु० नारियल; आँवला । **–बंधकर**–पु० सोमलता । **–बंधन**–पु० शरीरके भीतर नाड़ीका एक अंश (आ० वे०) । **–बत्ती**–स्त्री० (हिं०) पुरानी चालकी बंदूकें-तोपें दागनेका पलीता । **–भरी**–स्त्री० (हिं०) एक फल, मकोय । **–भव**–पु० रक्त, रुधिर । **–भस्म**–पु० पारेका भस्म । **–भीना**–वि० (हिं०) आनंदमें मग्न; आर्द्र, तर । **–भेद**–पु० पारेसे तैयार की जानेवाली एक औषध; रसका भेदोपभेद (सा०) । **–भेदी(दिन्)**–पु० पककर रसकी अधिकतासे फटा हुआ फल । **–मर्दन**–पु० पारेको मारने, भस्म करनेकी क्रिया । **–मल**–पु० शरीरसे निकलनेवाले मल । **–मसा⁎**–वि० आनंदमग्न, रंगमें मस्त; पसीनेसे भरा, श्रांत; तर, गीला । **–माणिक्य**–पु० हरताल आदिसे बनायी जानेवाली एक औषध । **–माता⁎**–स्त्री० दे० 'रसमातृका' । **–मातृका**–स्त्री० जीभ । **–मारण**–पु० पारा मारने, शुद्ध करनेकी क्रिया । **–माला**–स्त्री० एक सुगंधित द्रव्य, शिलारस । **–मुंडी**–स्त्री० (बं०) एक बँगला मिठाई । **–मैत्री**–स्त्री० दो रसोंका उपयुक्त मेल (जैसे–कड़ुआ-तीता, तीता-नमकीन, श्रृंगार-हास्य इ०) । **–योग**–पु० एक औषध । **रंग**–पु० प्रेममें प्राप्त आनन्द, प्रेमक्रीड़ा, केलि । **–रंजनी**–स्त्री० संगीतकी एक रागिनी । **–राज**–पु० श्रृंगार रस; रसौत; पारा; ताँबेके भस्म, गंधक, पारे आदिके योगसे बनायी जानेवाली एक औषध । **–राय⁎**–पु० दे० 'रसराज' । **–रैना**–पु० रसिक । **ल**–वि० रसवाला, जिसमें रस हो । **–लेह**–पु० पारा; रसांजन, रसौत । **–लोह**–पु० रसांजन; पारा । **–वर्णक**–पु० कुछ विशिष्ट द्रव्य जिनसे रंग निकाला जाता है (जैसे–लाख, हलदी, मजीठ, ढाक, हरसिंगार आदि) । **–वली**–स्त्री० (हिं०) दे० 'रसडली' । **–वाद**–पु० रसालाप, प्रेम, आनंदकी बातचीत; छेड़छाड़; झगड़ा; बकवाद । **–वादी**–वि० रसवाद संबंधी, रसिक । **–वास**–पु० ढगणका पहला भेद जिसमें एक गुरु और एक लघु रहता है । **–वाहिनी**–स्त्री० भोजनसे बने रसको फैलानेवाली नाडी (आ० वे०) । **–विक्रयी(यिन्)**–पु० मधु-विक्रेता, शराब बेचनेवाला । **–विरेचन**–पु० मनमें उत्पन्न किसी भावके तनावको खाली करनेकी क्रिया (केथर्सिस) । **–विरोध**–पु० रसोंका अनुचित मेल (जैसे–तीता-मीठा, कड़ुआ-मीठा इ०–आ० वे०); एक पद्यमें दो प्रतिकूल रसोंकी स्थिति (जैसे–श्रृंगार-रौद्र, हास्य-भयानक इ०-सा०) । **–वेधक**–पु० सोना । **–शार्दूल**–पु० एक आयुर्वेदोक्त रस जो प्रसूताके लिए उपयोगी है । **–शास्त्र**–पु० रसायनशास्त्र । **–शेखर**–पु० उपदंश आदिमें उपकारक एक आयुर्वेदोक्त रस । **–शोधन**–पु० सुहागा; पारेको शुद्ध करना । **–संप्रदाय**–पु० साहित्य-क्षेत्रमें रसवादके अनुयायियोंका वर्ग । **–संभव**–पु० रक्त, खून । **–संरक्षण**–पु० पारेको शुद्ध करना, मूर्च्छित करना, बाँधना और भस्म करना । **–संस्कार**–पु० पारेका बंधन, मूर्च्छन, मारण आदि अठारह संस्कार । **–सागर**–पु० ईखके रसका प्लक्ष द्वीपस्थ एक सागर (पु०) । **–साम्य**–पु० चिकित्साके पहले परीक्षा करना कि रोगीके शरीरमें कौन रस कम और कौन अधिक है । **–सार**–पु० मधु । **–सिंदूर**–पु० पारे, गंधकके योगसे निर्मित एक रसौषध । **–सिद्ध**–वि० रसकी अभिव्यक्ति आदिमें कुशल । **–स्थान**–पु० ईंगुर, हिंगुल, शिंगरफ । **–स्राव**–पु० अमलबेत ।

रस–वि० (फा०) पहुँचानेवाला; स्थित होनेवाला; छूनेवाला । पु० वह आदमी जिसके पास कोई पहुँचे ।

रसक–पु० (सं०) खपरिया, संगेबसरी; फिटकरी । **–कारवेल्लक**–पु० संगेबसरी, पतला खपरिया । **–दर्दुर**–पु० दलदार मोटा खपरिया ।

रसका–स्त्री० (सं०) एक कुष्ट रोग ।

रसद–पु० (फा०) अनाज, खानेका सामान; भत्ता, राशन; हिस्सा, बखरा; सेनाके लिए खाद्य सामग्री । वि०, पु० (सं०) दे० 'रस'में ।

रसन–वि० (सं०) पसीना लानेवाला । पु० आस्वादन, स्वाद लेना; ध्वनि; कफ; जिह्वा; † रस्सा ।

रसना⁎–अ० क्रि० रसमग्न होना; प्रफुल्ल होना; तन्मय होना; पूर्ण होना; † धीरे-धीरे बहना; टपकना । स० क्रि० कोई द्रव पदार्थ धीरे-धीरे छोड़ना; टपकाना । स्त्री० (सं०) जीभ; रसस्वाद (न्या०); एक ओषधि, रास्ना, नागदौनी; गंधभद्रा; मेखला, करधनी; रस्सी; लगाम; चंद्रहार । **–रव**–पु० पक्षी (दाँत न होनेसे जीभसे ही बोलनेवाला) । मु०–**खोलना**–बोलना आरंभ करना । **–तालूसे लगाना**–बोलना बंद करना ।

रसनापद–पु० (सं०) नितंब ।

रसनीय–वि० (सं०) स्वाद लेने या चखने योग्य; स्वादिष्ठ ।

रसनेंद्रिय–स्त्री० (सं०) रसना, स्वादकी इंद्रिय, जीभ ।

रसनेष्ट–पु० (सं०) ईख ।

रसनोपमा–स्त्री० (सं०) उपमानका एक भेद जिसमें उपमाओंकी एक श्रृंखला रहती है और उपमेय उपमान होता जाता है ।

रसम⁎–स्त्री० रश्मि, किरण–'छूटी छवि-रसमैं चटक चोखे बसमैं'–घन० । † पु० दक्षिण भारतीयोंका, दालकी तरहका, एक खाद्य पदार्थ ।

रसमसा–वि० रस-मग्न; पसीनेसे युक्त; रसमय, आनंदमय–'गोपी औ गोपालको अति रसमसो समाज'–हरिश्चन्द्र ।

रसमसाना⁎–अ० क्रि० रसमसा होना, रस बरसना–'सदा स्यामघन इत रसमसै'–घन० ।

रसमि⁎–स्त्री० रश्मि, किरण: प्रकाश, आभा ।

रस-रस⁎–अ० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः !

रसर†–स्त्री० रस्सी–'दो घड़े काँख कर, कंधे पड़ी रसर'–'आज' (२६-१-५४) ।

रसरा†–पु० दे० 'रस्सा' ।

रसरी⁎–स्त्री० रस्सी, डोरी ।

रसवंत⁎–वि० रसभरा, रसीला । पु० रसिक; प्रेमी; रसज्ञ ।

रसवंती–स्त्री० रसौत ।

रसवत–स्त्री० दे० 'रसौत' ।

रसवती–स्त्री० (सं०) शुद्ध स्वरवाली एक संपूर्ण जातिकी रागिनी; रसोईघर । वि० स्त्री० रसपूर्ण, रसीली ।

रसवत्ता–स्त्री० (सं०) रसीलापन, रसयुक्त होना; माधुर्य, मिठास; सुंदरता ।

रसवर–पु० नावके छेदोंको भरनेका मसाला ।

रसवान्(वत्)–वि० (सं०) रसवाला, जिसमें रस हो । पु० एक अलंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रसका अंग होकर प्रयुक्त हो ।

रसाँ–वि० (फा०) पहुँचानेवाला, दूर जानेवाला (जैसे–चिट्ठीरसाँ) ।

रसांगक–पु० (सं०) श्रीवेष्ट; धूपका वृक्ष ।

रसांजन–पु० (सं०) रसौत ।

रसांतर–पु० एक रसकी स्थितिमें दूसरे रसका संचार ।

रसांतरण–पु० रसांतरकी स्थिति या भाव ।

रसा–स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी; नदी; रसातल; जिह्वा; अंगूर; आम; लोहबान; शिलारस; काकोली; कँगनी; सलई; पाढा; मेदा । **–खन**–पु० मुर्गा । **–तल**–पु० पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे छठा । (मु० –०**पहुँचाना**–बरबाद कर देना, मटियामेट करना ।) **–पति**–पु० राजा । **–पायी(यिन्)**–वि० जीभसे पानी पीनेवाला । पु० कुत्ता । **–मग्न**–पु० एक गंधद्रव्य, बोल ।

रसा–पु० शोरबा, झोल (तरकारी आदिका) । वि० (फा०) दे० 'रसाँ' । **–दार**–वि० झोल, शोरबेवाला ।

रसाइन⁎–पु० दे० 'रसायन' ।

रसाइनी*–पु० रसायनी, रसायन विद्या जाननेवाला, कीमियागर।

रसाई–स्त्री० (फा०) पहुँच; दाखिला।

रसाकर्षण–पु० (ओस्मोसिस) वह प्रक्रिया जिससे शरीरका अंग रंध्रोंसे रस ग्रहण करता है।

रसाग्रज–पु० (सं०) रसौत।

रसाज्ञान–पु० (सं०) स्वाद, रसका पता न होना; रसका अनुभव न करना, चखनेपर भी खटास, मिठास आदिका अनुभव न करना (आ० वे०)।

रसाढ्य–पु० (सं०) अमड़ा। वि० रससिक्त।

रसात्मक–वि० (सं०) रसयुक्त; सुंदर।

रसाधार–पु० (सं०) सूर्य, रवि।

रसाधिक–पु० (सं०) सुहागा।

रसाधिका–स्त्री० (सं०) किशमिश।

रसाध्यक्ष–पु० (सं०) मादक द्रव्योंकी जाँच-पड़ताल तथा विक्रयकी व्यवस्था करनेवाला राजकर्मचारी।

रसाना–अ० क्रि० आनंद लूटना–'राधा व्रज मिश्रित जस रसनि रसाइये'–नागरी०। * स० क्रि० आनंदित करना–'तिन्हैं रुचै सोई करौं रसियानि रसाऊँ'–घन०।

रसाभास–पु० (सं०) किसी रसका अनुचित प्रकरण या स्थानपर वर्णन; एक अर्थालंकार (इसमें इसी प्रकारके वर्णन रहते हैं)।

रसामृत–पु० (सं०) एक प्रकारका आयुर्वेदिक रस।

रसाम्ल–पु० (सं०) अमलबेत; वृक्षाम्ल, विषांबिल; एक खटाई, चुक।

रसाम्लक–पु० (सं०) एक तरहकी घास।

रसाम्ला–स्त्री० (सं०) लताविशेष, पलाशी।

रसायक–पु० (सं०) एक घास।

रसायन–पु० (सं०) पदार्थोंका तत्त्वगतज्ञान, दे० 'रसायनशास्त्र'; जराव्याधिनाशक ओषधि (जैसे–विडंगरस, ब्राह्मीरस इ०); ताँबेसे सोना बनानेका कल्पित योग; धातुओंको भस्म करने, एक धातुको दूसरी धातुमें परिवर्तित करनेकी विद्या; मठा, तक्र; विष; कटि, कमर; वायविडंग; गरुड। **–ज्ञ**–वि०, पु० रसायनविद्याका जाननेवाला। **–फला**–स्त्री० हड़, हर्रे। **–वर**–पु० लहसुन। **–वरा**–स्त्री० काकजंघा; कँगनी। **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० पदार्थोंमें मिलनेवाले तत्त्वोंका विवेचन करनेवाला और तत्त्वगत परमाणुओंमें परिवर्तन होनेपर पदार्थोंकी नयी स्थितिका निरूपण करनेवाला शास्त्र। **–श्रेष्ठ**–पु० पारा।

रसायनिक–पु० कीमियागर। वि०, पु० दे० 'रासायनिक'।

रसायनी–पु० कीमियागर। स्त्री० (सं०) बुढ़ापेको दूर करनेवाली ओषधि; गोरखदुद्धी, अमृतसंजीवनी; गुडुच; महाकरंज; मकोय; मजीठ; मांसरोहिणी; कंदगिलोय; कनफोड़ा लता; सफेद निसोथ; शंखपुष्पी; नाडी।

रसार*–वि०, पु० दे० 'रसाल'।

रसाल–वि० (सं०) रसीला; मीठा, मधुर; स्वादिष्ठ; सुंदर; शुद्ध, मार्जित। पु० आम; कटहल; ईख; गेहूँ; लोबान; अमल बेत; कुंदुर तृण; बोल नामक गंधद्रव्य; * राजस्व, कर, इरशाल; दे० 'रिसाल'। **–शर्करा**–स्त्री० ईखके रसकी चीनी।

रसालय–पु० (सं०) रसशाला, रसनिर्माणका स्थान; आमोद-प्रमोदका स्थान; आमका पेड़।

रसालस*–पु० कौतुक।

रसालसा–स्त्री० (सं०) पौंढ़ा, गन्ना; गेहूँ; कुंदुर तृण।

रसाला–स्त्री० (सं०) श्रीखंड, सिखरन; दही, घी, मिर्च, शहद आदिके योगसे बननेवाली एक प्रकारकी चटनी; दहीमें साना गया सत्तू; पौंढ़ा; अंगूर, दाख; दूब; विदारीकंद; जीभ। * पु० दे० 'रिसाला'।

रसालाम्र–पु० (सं०) कलमी आम।

रसालिका–वि० स्त्री० (सं०) रसयुक्त; मृदु; मधुर। स्त्री० अँबिया; सप्तला, सातला।

रसालिहा–स्त्री० (सं०) पिठवन।

रसाली–स्त्री० (सं०) पौंढ़ा।

रसाली(लिन्)–पु० (सं०) पौंढ़ा, गन्ना; चना।

रसालेक्षु–पु० (सं०) पौंढ़ा।

रसाव–पु० रसनेकी क्रिया या भाव; जोतकर तथा हेंगा चलाकर खेतको यों ही रहने देना।

रसावर, रसावल–पु० दे० 'रसौर'।

रसावा–पु० ईखका कच्चा रस रखनेका मिट्टीका पात्र।

रसावेष्ट–पु० (सं०) गंधाविरोजा।

रसाश–पु० (सं०) मद्यपान।

रसाशी(शिन्)–वि०, पु० (सं०) शराबी, मद्यप।

रसाश्वासा–स्त्री० (सं०) पलाशी लता।

रसाष्टक–पु० (सं०) पारा, लोहा, ईंगुर आदि आठ महारसोंका समाहार।

रसास्वादन–पु० किसी रसका स्वाद लेना, किसी आनन्द या सुखका उपभोग करना।

रसास्वादी(दिन्)–वि० (सं०) रसका आस्वादन करनेवाला, रस चखनेवाला; आनंद लेनेवाला। पु० भ्रमर।

रसाह्व–पु० (सं०) गंधाविरोजा। वि० रसवाचक।

रसाह्वा–स्त्री० (सं०) रास्ना; सतावर। वि० स्त्री० दे० 'रसाह्व'।

रसिआउर|–पु० ईख या गुड़के रसमें पकाया हुआ चावल, बखीर; नववधू द्वारा प्रस्तुत रसियाउर जीमते समय गाया जानेवाला गीत।

रसिआवर, रसिआवल–पु० दे० 'रसिआउर'।

रसिक–वि० (सं०) रस, स्वाद लेनेवाला; आनंदी, मौजी, क्रीडा-प्रेमी; रसयुक्त, स्वादिष्ठ; सुंदर, मनोहर। पु० प्रेमी; सहृदय व्यक्ति; काव्यमर्मज्ञ, रसिया; विषय-विशेषका पारखी, पंडित; घोड़ा; सारस; हाथी; एक छंद। **–विहारी(रिन्),–शिरोमणि**–पु० कृष्ण।

रसिकता–स्त्री० (सं०) रसिकपन; सुरुचि; हँसी-मजाक।

रसिका–स्त्री० (सं०) सिखरन, दहीका शरबत; ईखका रस; जीभ; करधनी; सारिका; शरीरकी धातु। वि० स्त्री० दे० 'रसिक'।

रसिकाई*–स्त्री० रसिकता।

रसिकेश्वर–पु० (सं०) कृष्ण।

रसित–वि० (सं०) रसयुक्त; ध्वनि करता, बजता, बोलता हुआ; मुलम्मा किया हुआ; जरा-जरा टपकता, रसता, बहता हुआ। पु० ध्वनि, शब्द; अंगूरी शराब, द्राक्षासव।

रसिया–पु० रसिक, रस लेनेवाला व्यक्ति; फागुनका एक गीत जिसके गानेका रवाज व्रज तथा बुंदेलखंडमें है।

रसियाव–पु० ईखके रसमें पका चावल, बखीर।

रसी–स्त्री० एक तरहकी सब्जी। पु० * दे० 'रसिक'।

रसीद–स्त्री० (फा०) पहुँच, प्राप्ति; किसी चीजके मिलनेका प्रमाणपत्र; खबर, पता। मु० **–करना**–(चाँटा, थप्पड़ आदि) लगाना, देना। **–काटना**–रसीद लिखकर देना।

रसील*–वि० दे० 'रसीला'।

रसीला–वि० रसयुक्त, रसपूर्ण; स्वादिष्ट, मजेदार; रस, आनंद लेनेवाला; व्यसनी, विलासी; बाँका, छैला। (स्त्री० 'रसीली'।) **–पन**–पु० रसीला होना।

रसुन–पु० (सं०) लहसुन।

रसूम–पु० (अ०) (रस्मका बहु०) रस्म; नियम, कानून; नेग, प्रथानुसार दिया जानेवाला धन; नजराना, भेंट (विशेषतः किसानोंकी ओरसे जमींदारोंको)। **–अदालत**–पु० सरकारी न्यायके लिए मुकदमा दायर करते समय दिया जानेवाला धन, कोर्टफीस, स्टांप।

रसूल–पु० पैगंबर, ईश्वरका दूत।

रसूली–वि० (अ०) रसूल-संबंधी; रसूलका। स्त्री० एक प्रकारका गेहूँ या जौ; एक प्रकारकी काली मिट्टी।

रसेंद्र–पु० (सं०) जीरा, धनिया, पीपल, त्रिकुट, शहद और रससिंदूरके योगसे बननेवाली एक रसौषध; पारा; राजमाष। **–वेधक**–पु० सोना।

रसे-रसे|–अ० धीरे-धीरे, शनैः-शनैः।

रसेश्वर–पु० (सं०) पारा; एक रसौषध; दर्शनविशेष (इसमें पारेको शिवका वीर्य और गंधकको पार्वतीका रज माना गया है)।

रसेस*–पु॰ कृष्ण; नमक।

रसोइया–पु॰ रसोई बनानेवाला, सूपकार।

रसोईं, रसोई–स्त्री॰ पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, भोजन; भोजन बनानेका घर, स्थान। **–खाना,–घर**–पु॰ भोजन बनानेका स्थान, चौका, पाकशाला। **–दार**–पु॰ रसोइया, भोजन बनानेवाला। **–दारी**–स्त्री॰ भोजन बनानेका काम या पद। **–बरदार**–पु॰ भोजन ले जानेवाला।

रसोत–स्त्री॰ दे॰ 'रसौत'; * रसमयता–'कौन घरी रूपके रसोत जगमगौंगें' ?–घन॰।

रसोदर–पु॰ (सं॰) शिगरफ, हिंगुल।

रसोद्भव–पु॰ (सं॰) ईंगुर, शिगरफ; रसौत।

रसोद्भूत–पु॰ (सं॰) रसौत।

रसोन–पु॰ (सं॰) लहसुन।

रसोपल–पु॰ (सं॰) मोती।

रसोय*–स्त्री॰ रसोई, भोजन।

रसौंत, रसौत–स्त्री॰ एक प्रसिद्ध ओषधि।

रसौता–पु॰, **रसौती**–स्त्री॰ वर्षाके पहले ही खेत जोतकर की जानेवाली धानकी बोआई।

रसौर–पु॰ ईखके रसमें पका चावल, रसिआउर।

रसौल–स्त्री॰ एक प्रकारकी बड़ी कँटीली लता जो दवाके काम आती और जिसकी पत्तियोंकी चटनी भी बनती है।

रसौली–स्त्री॰ भौहोंके पास आँखके ऊपर गिल्टी निकलनेका रोग।

रस्ता†–पु॰ दे॰ 'रास्ता'।

रस्तोगी–पु॰ वैश्योंकी एक उपजाति।

रस्म–स्त्री॰ (अ॰) प्रथा, चलन, रिवाज; बरताव, मेल-जोल।

रस्मि*–स्त्री॰ दे॰ 'रश्मि'।

रस्मी–वि॰ रस्म-संबंधी; जो रस्म या मान्य रीतिके अनुसार हो।

रस्य–पु॰ (सं॰) रक्त; शरीरमेंका मांस। वि॰ रसपूर्ण; सुस्वादु।

रस्या–स्त्री॰ (सं॰) पाढ़ी, पाठा; रास्ना।

रस्सा–पु॰ अनेक मोटे तागोंसे बनायी हुई मोटी रस्सी; पचहत्तर हाथ लंबी और पचहत्तर हाथ चौड़ी एक नाप, बीघा; घोड़ोंके पैरकी एक बीमारी।

रस्सी–स्त्री॰ डोरी, रज्जु (जो सन, रामबाँस आदिके रेशोंको बटकर बनायी जाती है); एक सब्जी। **–बाट**–पु॰ रस्सी बटने, बनानेवाला।

रहँकला–पु॰ एक हलकी गाड़ी; तोप लादनेकी गाड़ी; रहकलेपर लदी छोटी तोप।

रहँचटा*–पु॰ चसका, लिप्सा; मनोरथपूर्तिकी आकांक्षा; प्रीतिकी चाह।

रहँट–पु॰ कुएँसे पानी निकालनेका यंत्रविशेष।

रहँटा–पु॰ सूत कातनेका चर्खा।

रहँटी†–स्त्री॰ कपास ओटनेकी चर्खी; हुंडी, रुपया उधार देनेका चलन-विशेष जिसमें प्रतिमास कुछ वसूल करते रहते हैं।

रहः(स्)–पु॰ (सं॰) एकांत, निर्जन स्थान; आनंदमय लीला; यथार्थता; गुप्त भेद, रहस्य; गूढ तत्त्व, गुप्त बात (योग, तंत्र, किसी दूसरे संप्रदायकी)।

रह–'राह'का समासमें व्यवहृत संक्षिप्त रूप। **–जन**–पु॰ डाकू, लुटेरा। **–जनी**–स्त्री॰ डकैती, लुटेरापन। **–नुमा**–पु॰ पथ-प्रदर्शक। **–नुमाई**–स्त्री॰ पथप्रदर्शन। **–बर**–पु॰ मार्गदर्शक। **–बरी**–स्त्री॰ मार्गप्रदर्शन।

रह*–पु॰ रथ (रासो)।

रहचटा–पु॰ दे॰ 'रहँचटा'।

रहचह*–स्त्री॰ चहचहाहट, चिड़ियोंकी बोली।

रहठा–पु॰ अरहरका सूखा पौधा, डंठल।

रहठानि*–स्त्री॰ रहनेका स्थान–'जामैं चलि जायबे बनाई रहठानि है'–घन॰।

रहन–पु॰ (अ॰) गिरवी रखना (माल, जमीन आदि), दे॰ 'रेहन'। स्त्री॰ (हिं॰) रहना; रहनेका ढंग, व्यवहार। **–सहन**–स्त्री॰, पु॰ तौर-तरीका, ढंग, आचरण, चलावा; जीवन-निर्वाहका ढंग।

रहना–अ॰ क्रि॰ ठहरना, स्थित होना; थम जाना, रुकना; बसना; विद्यमान होना; जीवित, जिंदा रहना; नौकरी, काम करना, स्थापित, स्थित होना (पेट रहना); रखेली बनकर रहना; बचना, छूटना।

रहनि, रहनी*–स्त्री॰ रहनेकी क्रिया या ढंग, रहन; चालढाल, आचरण; लगन, प्रेम।

रहम–पु॰ (अ॰) करुणा, दया, कृपा; बच्चादानी, जरायु। **–दिल**–वि॰ दयालु।

रहमत–स्त्री॰ (अ॰) मेहरबानी, दया।

रहमान–वि॰ (अ॰) परम कृपालु। पु॰ परमात्मा।

रहर, रहरि, रहरी†–स्त्री॰ दे॰ 'अरहर'।

रहरू, रहलू–स्त्री॰ खाद ढोनेकी छोटी गाड़ी।

रहरूढभाव–पु॰ विरक्त होकर एकांतवास करना; विरक्त, एकांतवासी साधक (?)।

रहरेठा†–पु॰ कड़िया, अरहरका सूखा डंठल।

रहल–स्त्री॰ (अ॰) रवानगी; सफर; रहनेकी जगह; लकड़ीका बना वह ढाँचा जिसपर पुस्तक रखकर पढ़ते हैं।

रहवाल–स्त्री॰ घोड़ेकी चाल। † वि॰ रहनेवाला।

रहस–पु॰ (सं॰) समुद्र; स्वर्ग; * आमोद-प्रमोद, आनंद। **–बधावा**–पु॰ (हिं॰) विवाहकी एक रीति (वर नववधूको जनवासे लाता है, गुरुजन मुख देखते और उपहार देते हैं)।

रहसना*–अ॰ क्रि॰ प्रसन्न, आनंदित होना–'बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी'–रामा॰।

रहसि*–स्त्री॰ एकांत, गुप्त स्थान।

रहसू–स्त्री॰ (सं॰) व्यभिचारिणी, पुंश्चली।

रहस्य–पु॰ (सं॰) गुप्त भेद, गोपनीय विषय; मर्म, भेद; निर्जन, एकांतमें घटित वृत्त; दुर्बोध्य तत्त्व; हँसी-मजाक; एक संप्रदाय। वि॰ गुप्त; गोपनीय। **–वाद**–पु॰ चिंतन, मनन द्वारा ईश्वरसे प्रत्यक्ष संपर्क-स्थापनकी प्रवृत्ति; आत्मा-परमात्माके अभेदकी अनुभूति और अव्यक्तके प्रति आत्मनिवेदन। **–वादी(दिन्)**–पु॰ रहस्यवादका अनुयायी। वि॰ रहस्यवाद-संबंधी; रहस्यवादसे युक्त।

रहस्या–स्त्री॰ (सं॰) रास्ना; पाठा; एक नदी।

रहा–वि॰ बचा हुआ, छूटा हुआ ('रहना'का भूतकालीन रूप)। **–सहा**–वि॰ बचा-बचाया, बचा-खुचा।

रहाइश–स्त्री॰ स्थिति, सकूनत; बरदाश्त; गुंजाइश।

रहाई*–स्त्री॰ रहना; आराम, चैन।

रहाऊ†–स्त्री॰ टेक, स्थायी, गीतका पहला पद।

रहाट–वि॰ (सं॰) परामर्श देनेवाला। पु॰ मंत्री; प्रेतात्मा।

रहाना*–अ॰ क्रि॰ होना; रहना।

रहावन†–स्त्री॰ गाँवके पशुओंके खड़े होनेकीं जगह।

रहि–स्त्री॰ रास्ता।

रहित–वि॰ (सं॰)...के बिना,...से हीन, शून्य।

रहितत्व–रहित होनेका भाव। (एग्जेम्प्शन) नियम बंधन आदिसे छूट दिये जानेकी स्थिति।

रहिम–पु॰ (अ॰) गर्भाशय।

रहिला†–पु॰ चना।

रहीम–वि॰ (अ॰) रहम करनेवाला, कृपालु। पु॰ अब्दुल रहीम खानखानाका काव्यनाम; परमात्मा।

रहुवा†–पु॰ टुकड़खोर, खानेपर काम करनेवाला।

रहूगण–पु॰ अंगिरस गोत्रकी एक शाखा।

राँक*–वि॰ दे॰ 'रंक'।

राँकड़†–स्त्री॰ कम उपजाऊ भूमि (कंकरीली, पथरीली, ऊँची-नीची भूमि)।

राँकव*–वि॰ रंक–'राँकव कौन सुदामा हूतें आप समान करे'–सूर।

रांकव–पु॰ (सं॰) रंकु मृगके रोमसे बना वस्त्र आदि।

राँग–पु॰ दे॰ 'राँगा'।

राँगड़ी†–पु॰ एक प्रकारका चावल; मालवा और राजस्थानकी एक क्षेत्रीय बोली।

राँगा–पु॰ एक प्रसिद्ध धातु–रंग, बंग।

रांगोला†−पु० पीतलका बना एक छिद्रयुक्त उपकरण जिसमें सफेद या लाल बुकनी भरकर जमीनपर ढरकाते हैं जिससे सुन्दर चित्र या चौक बन जाते हैं (भोज या मांगलिक अवसरपर प्रयुक्त)।

रांगोली†−स्त्री० वह रंगीन पाउडर या बुकनी जिसे रांगोलेमें भरकर ढरकानेसे भूमिपर चित्र बन जाते हैं।

राँच*−वि० दे० 'रंच'। अ० जरा भी।

राँचना*−अ० क्रि० प्रेम करना, अनुरक्त होना, रंग पकड़ना। स० क्रि० रँगना, रंग चढ़ाना।

राँजना†−अ० क्रि० आँखमें काजल लगना। स० क्रि० रँगना; राँगेसे जोड़ना, टाँका लगाना (फूटे बरतन आदिमें)।

राँटा†−पु० टिटिहरी, टिट्टिभ; दे० 'रहँटा'। स्त्री० चोरोंकी सांकेतिक भाषा।

राँड़−स्त्री० बेवा, विधवा, जिस स्त्रीका पति मर चुका हो; वेश्या, रंडी (क्व०)।

राँढ़†−पु० एक बंगाली चावल।

राँढना†−अ० क्रि० रोना, विलाप करना।

राँध−अ० पास, निकट। वि० परिपक्व बुद्धिवाला (प०)। −**पड़ोस**−अ० आस-पास, अड़ोस-पड़ोसमें।

राँधना−स० क्रि० पकाना (भोजन), पाक करना।

राँपी†−स्त्री० मोचियोंका चमड़ा छीलने, तराशनेका एक औजार।

राँभना−अ० क्रि० बँबाना, बोलना, चिल्लाना (गाय, बैल, भैंस आदिका)।

राआ*−पु० राजा।

राइ*−पु० राय, सरदार, छोटा राजा।

राइता−पु० दे० 'रायता'।

राइफल−स्त्री० (अं०) एक तरहकी बंदूक।

राइरंगा†−पु० दे० 'रामदाना'।

राई−स्त्री० एक छोटी सरसों; अल्प परिमाण; * राजसी, राजा होना। −**भर**−अ० बहुत थोड़ा। मु० −**काई करना या होना**−टुकड़े-टुकड़े करना, होना। −**नोन उतारना**−नजराये बच्चेके सिरके चारों ओर राई नमक घुमाकर आगमें डालनेका टोटका। −**रत्ती करके**−बारीकसे बारीक हिसाब करके। −**से पर्वत करना**−जरा-सी बातको बहुत बढ़ाना; हीनको महान् बनाना।

राउ*−पु० राजा।

राउत†−पु० राजवंशीय व्यक्ति; क्षत्रिय; वीर पुरुप; अहीर; कहार (छत्तीस०)।

राउर*−पु० (राज+पुर, राअ+उर) अंतःपुर, जनानखाना (राजाओंका)−'गे सुमंत तब राउर माहीं'−रामा०। सर्व० आपका, श्रीमान्‌का।

राउल*−पु० राजकुलोत्पन्न पुरुष; राजा।

राकस*−पु० राक्षस। −**गद्दा**−पु० कदंब नामक बेल; इस बेलकी जड़। −**ताल**−पु० कैलासके उत्तरकी एक झील, रावणह्रद, मानतलाई। −**पत्ता**−पु० जंगली बबूल।

राकसिन, राकसी*−स्त्री० राक्षसी।

राका−स्त्री० (सं०) पूर्णिमाकी रात; पूर्णिमा; पहले-पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री; खुजलीका रोग। −**पति**−पु० चंद्रमा।

राक़िम−वि० (अ०) लिखनेवाला, मुहर्रिर।

राकेट−पु० (अं०) गावदुम शक्लकी नलीका बना ऐसा साधन जिसके अन्दर ईंधन तथा ऑक्सीकारक दोनों मौजूद रहते हैं और उनके दहनसे उत्पन्न हुई गैसें पूँछके रास्ते तेजीसे बाहर निकलती हैं तो प्रतिक्रियाके कारण राकेटको सामने भागनेके लिए प्रणोद (थ्रस्ट)का बल मिलता है। अतः अंतरिक्षके निर्वात प्रदेशमें केवल राकेट ही उड़ सकते हैं।

राकेश−पु० (सं०) चंद्रमा।

राक्षस−पु० (सं०) दैत्य, निशाचर; दुष्ट, दुर्वृत्त व्यक्ति; कुबेरके कोश-रक्षक; पारे और गंधकके योगसे बना एक रस; उनचासवाँ संवत्सर; एक गण (ज्यो०)। −**विवाह**−पु० वह विवाह जिसमें युद्ध द्वारा कन्या प्राप्त की जाय।

राक्षसी−स्त्री० (सं०) राक्षसकी स्त्री; राक्षस स्त्री; दुष्ट, क्रूर स्वभाववाली स्त्री। वि० राक्षसों जैसा (−व्यवहार)।

राख़−स्त्री० जले पदार्थका शेष, भस्म। −**दानी**−स्त्री० सिगरेट आदिकी राख गिराने, छोड़नेकी रकाबी।

राखना*−स० क्रि० रक्षा करना; रोकना; कपट करना, छिपाना; दे० 'रखना'।

राखी−स्त्री० रक्षाबंधनका डोरा, रक्षा, मंगलसूत्र (जो ब्राह्मण तथा बहनें श्रावणी पूर्णिमाको बाँधती हैं); † राख, भस्म।

राग−पु० (सं०) रंजन, मनको प्रसन्न करना; प्रीति, अनुराग; आकर्पण (प्रिय वस्तु, सांसारिक सुख-संबंधी); पंचक्लेशोंमें एक (यो०); कष्ट, क्लेश; ईर्ष्या, द्वेष; सुगंधित लेप, अंगराग (चंदन, कपूर, कस्तूरी आदिसे निर्मित); अलक्तक, आलता; रंग (विशेषतः लाल); राजा; चंद्रमा; सूर्य; स्वरों, वर्णों, स्वरांगोंसे युक्त, विशिष्ट ताल-लय-युक्त ध्वनि (स्वरभेदसे रागके तीन प्रकार होते हैं−संपूर्ण−सातों स्वरोंवाला, षाडव−छ स्वरोंवाला और ओडव−पाँच स्वरोंवाला। मतंगके मतसे तीन भेद ये हैं−शुद्ध, सालंक और संकीर्ण या संकर। छ राग ये हैं−श्री, वसंत, पंचम, भैरव, मेघ और नर-नारायण)। −**चूर्ण**−पु० कामदेव; खैरका पेड़; लाख। −**च्छन्न**−पु० राम; कामदेव। −**दारी**−स्त्री० ठीक राग गानेका ढंग या क्रिया। −**दालि**−पु० मसूर। −**द्रव्य**−पु० रंग। −**पुष्प,−प्रसव**−पु० दुपहरिया, बंधुजीव; रक्ताम्लान। −**पुष्पी**−स्त्री० जवा। −**युक्(ज्)**−पु० माणिक्य। वि० रागान्वित। −**रंग**−पु० गाना-बजाना, रंग छिड़कना आदि। −**रज्जु**−पु० कामदेव। −**लता**−स्त्री० रति, कामदेवकी स्त्री। −**षाडव**−पु० अनार, दाखसे बननेवाला एक प्राचीन खाद्य; आमका मुरब्बा। −**सारा**−स्त्री० मैनसिल।

रागना*−अ० क्रि० रँग जाना; अनुरक्त होना; निमग्न होना। स० क्रि० गाना, अलापना।

रागांगी−स्त्री० (सं०) मजीठ।

रागान्वित−वि० (सं०) आसक्त, अनुरक्त; क्रुद्ध, कुपित।

रागारु−वि० (सं०) देनेकी आशा बँधाकर न देनेवाला।

रागारुण−प्रेमसे आह्लादित या लाल।

रागाशनि−पु० (सं०) बुद्धदेव।

रागिनी−स्त्री० (सं०) रागकी पत्नी (कुल छत्तीस रागिनियाँ मानी जाती हैं−संगीत); जयश्री नाम्नी लक्ष्मी; विदग्धा या मतवाली स्त्री।

राग़िब−वि० (अ०) इच्छुक, ख्वाहिशमंद।

रागी*−स्त्री० रानी, राजाकी स्त्री। दे० 'रगी'।

रागी(गिन्)−पु० (सं०) प्रेमी; अशोक वृक्ष; मडुआ; मकरा; छ मात्राओंके छंद। वि० रँगा हुआ, रंजित; लाल, अरुण; विषयासक्त; रंजन करने, रँगनेवाला।

राघव−पु० (सं०) राम; रघुकुलका व्यक्ति; दशरथ; अज; एक बहुत बड़ी समुद्री मछली।

राचना*−स० क्रि० रचना। अ० क्रि० रचा जाना; रँगा जाना; प्रेम करना, अनुरक्त होना; लीन, मग्न होना; शोभा देना, फबना; प्रसन्न होना। वि० रचनेवाला। (स्त्री० राचनी।)

राछ−पु० कारीगरोंका औजार; तानेका तागा उठाने-गिरानेका जुलाहोंका एक औजार; लकड़ीके भीतरका साल, हीर; देवदर्शनके लिए वरको मंदिर मंदिर ले जाना; जुलूस; बरात; हथौड़ा; चक्कीके बीचका खूँटा। −**बँधिया**−पु० राछ बाँधनेका काम करनेवाला जुलाहा या आदमी। मु० −**घुमाना,−फिराना**−वरको पालकीपर चढ़ाकर कुएँ आदिकी परिक्रमा कराना या देवदर्शन कराना।

राछस*−पु० दे० 'राक्षस'।

राज−'राजा'का समासमें व्यवहृत रूप (यह अनेक शब्दोंके साथ प्रयुक्त होकर बड़ाई, श्रेष्ठता आदिका अर्थ प्रकट करता है)। −**कथा**−स्त्री० इतिहास; राजाकी कथा। −**कदंब**−पु० बड़े, स्वादिष्ठ फलोंवाला कदंब। −**कन्या**−स्त्री० राजपुत्री; केवड़ेका फूल। −**कर**−पु० राजस्व, खिराज। −**कर्कटी**−स्त्री० ककड़ी। −**कर्ण**−पु० हाथीकी सूँड़। −**कर्ता(र्तृ)**−वि० राजा बनानेवाला, किसी भी व्यक्तिको राज्यासनपर प्रतिष्ठित करने, उतारनेकी

शक्ति रखनेवाला। –कला–स्त्री० चंद्रमाकी एक कला। –कशेरु–पु० नागरमोथा, भद्रमुस्ता। –कार्य–पु० राज्य संबंधी कार्य; राजाज्ञा। –कुँअर*–पु० राजकुमार। –कुंजर–पु० शक्तिशाली राजा। –कुमार–पु० राजाका पुत्र। –कुमारी–स्त्री० राजाकी पुत्री। –कुल–पु० राजवंश; राजदरबार; न्यायालय; राजप्रासाद; राजमार्ग। –कुलक–पुं० परवलकी बेल। –कुष्मांड–पु० बैंगन। –कोल–पु० बड़ा बेर। –कोलाहल–पु० तालके साठ भेदोंमेंसे एक। –कोष–पु० सरकारी खजाना। –०पत्र–पु० वे विनिमय पत्र जो सरकारी खजाने द्वारा अस्थायी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए जारी किये जाते हैं, सरकारी हुंडियाँ (ट्रेजरी बिल्स)। –कोषातक–पु०,–कोषातकी–स्त्री० बड़ा नेनुआ, घिया; तरोई। –क्षवक–पु० एक तरहकी राई। –खर्जूरी–स्त्री० पिंडखजूर। –गद्दी–स्त्री० (हिं०) राजसिंहासन; राज्याधिकार; राज्याभिषेक। –गवी–स्त्री० गायकी जातिका एक पशु। –गामी–पु० (एस्चीट) वारिस न होनेपर राज्यके पास आनेवाली सम्पत्ति, नजूल। –गिद्ध–पु० एक प्रकारका गिद्ध। –गिरि–पु० बथुआ; मगधका एक पर्वत। –गृह–पु० राजाका महल; बिहारमें एक ऐतिहासिक स्थान। –घ्न–वि० राजाकी हत्या करनेवाला; तीक्ष्ण। –चंपक–पु० पुन्नागका फूल। –चिह्न–पु० राजाके चिह्न–छत्र, चँवर आदि। –चिह्नक–पु० शिश्न, उपस्थ। –चूडामणि–पु० तालके साठ भेदोंमेंसे एक। –जंबू–पु० बड़ा जामुन; पिंडखजूर। –जक्ष्मा(क्ष्मन्)–पु० दे० 'राजयक्ष्मा'। –जीरक–पु० एक जीरा। –तंत्र–पु० वह शासनप्रणाली जिसमें राज(स्टेट)का अधिपति राजा हो। –तरंगिणी–स्त्री० कश्मीरके इतिवृत्त संबंधी संस्कृत काव्य जिसकी रचना कल्हणने की थी। –तरु–पु० कनियारी, कर्णिकार; अमलतास। –तरुणी–स्त्री० एक तरहका सफेद गुलाब; बड़ी सेवती, सुवर्णपुष्प। –ताल–पु० सुपारीका पेड़। –तिमिश,–तिमिष–पु० तरबूज। –तिलक–पु० राज्याभिषेक, नये राजाके राज्यारोहणका उत्सव। –दंड–पु० राजशासन; राजाज्ञा, विधानसे दिया हुआ दंड। –दंत–पु० चौका, सामनेके नीचे और ऊपरके दो-दो बड़े दाँत। –दया–स्त्री० (क्लीमेंसी) प्राणदंड आदिकी सजा पाये हुए बंदीके प्रति राजा या प्रधान शासक द्वारा, क्षमा-प्रदान, दंडन्यूनन आदिके रूपमें दिखायी गयी दया। –दूत–पु० किसी राज्य या राजाका (संधि, विग्रह, नैतिक कार्यादि-संबंधी) संदेश लेकर किसी अन्य राज्यमें जानेवाला व्यक्ति, प्रतिनिधि (प्राचीन कालमें राजदूत विशेष अवसरोंपर भेजे जाते थे, अब स्थायी रूपसे सभी देशोंमें सभी देशोंके राजदूत रहा करते हैं। युद्धारंभके समय शत्रुदेशोंसे राजदूतोंको वापस बुला लिया जाता है और शत्रुदेशके राजदूतोंको लौटा दिया जाता है)। –दूतावास–पु० (एंबैसी) राजदूतका निवासस्थान। –दूर्वा–स्त्री० बड़ी पत्तियों, मोटे कांडोंवाली दूब, गाँडर। –दृषद्–स्त्री० चक्कीका नीचेका पाट। –देशीय–वि० राजाके समान, राजकल्प। –द्रुम–पु० अमलतास,आरग्वध। –द्रोह–पु० राज्य या राजाके विरुद्ध आचरण, बगावत, विद्रोह। –द्रोही(हिन्)–वि० राजद्रोह करनेवाला, बागी। –द्वार–पु० राजका द्वार; न्यायालय। –धर्तूरक–पु० एक धतूरा, कनक धतूरा। –धर्म–पु० राजाका धर्म, कर्तव्य (शांतिस्थापन, प्रजापालन आदि); महाभारतके शांतिपर्वका राजकर्तव्य-विषयक अंशविशेष। –धर्मा(र्मन्)–पु० कश्यपका एक पुत्र; सारसोंका राजा (म० भा०)। वि० राजाके समान आचरण करनेवाला। –धानी–स्त्री० मुख्य नगर, शासन-केंद्र; राजा, शासकके रहनेका नगर। –धान्य–पु० एक धान, श्यामा धान। –धुर–पु० शासनभार। –धुस्तूरक–पु० बड़े फूल और बहु आवरणयुक्त धतूरा, कनक धतूरा। –नय–पु० राजनीति (डिप्लोमेसी) कूटनीति। –नयिक–पु० राज्योंके आपसी प्रश्नों आदिके संबंधमें कुशलतापूर्वक बातचीत करनेवाला व्यक्ति, कूटनीतिज्ञ, 'डिप्लोमैट'। –नामा(मन्)–पु० परवल। –नायक–पु० राजमर्मज्ञ, राजा। –नीति–स्त्री० राज्यकी रक्षा और शासनको दृढ़ करनेका उपाय बतानेवाली नीति। –नीतिक–वि० राजनीति-संबंधी। –नील–पु० पन्ना, मरकत मणि। –पंखी*–पु० (हिं०) बड़ा पक्षी (दे० मँड़राना)। –पटोल–पु० परवल। –पट्ट–पु० एक उपरत्न। –पट्टिका–स्त्री० चातकी। –पति–पु० सम्राट्। –पत्नी–स्त्री० रानी। –पत्र (गज़ट) शासनकी ओरसे प्रकाशित पत्र जिसमें राजाज्ञाएँ, नियम, अध्यादेश, विधेयक, अधिकारियोंकी नियुक्ति आदिका उल्लेख रहता है। –पत्रित–वि० (गॅज़ेटेड) (वह अधिकारी) जिसकी नियुक्ति, पदवृद्धि, स्थानांतरण, छुट्टीपर जाने आदिकी सूचना सरकारी गजटमें छपती हो। –पथ–पु० बड़ी सड़क, मुख्य मार्ग। –पद्धति–स्त्री० राजनीति; राजमार्ग। –पर्णी–स्त्री० प्रसारिणी लता। –पलांडु–पु० लाल प्याज। –पाल–पु० राजा; प्रांतका शासक, 'गवर्नर'; राज्यका रक्षक (जैसे–सेना)। –पीलु–पु० महापीलु वृक्ष। –पुत्र–पु० राजकुमार; क्षत्रिय; एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और कर्ण मातासे कही जाती है (पु०); बड़ी जातिका आम; बुध ग्रह। –पुत्रक–पु० राजकुमार। –पुत्रा–स्त्री० राजमाता, जिस स्त्रीका पुत्र राजा हो। –पुत्रिका–स्त्री० राजकुमारी; श्वेत जूही; एक चिड़िया, शरारि; पीतल। –पुत्री–स्त्री० राजकन्या; राजपूत वाला; जूही; मालती, कड़ुवा कद्दू; रेणुका; छछूँदर। –पुर–पु० राजाका नगर, राजधानी। –पुरुष–पु० राजकर्मचारी। –पुष्प–पु० कनकचंपा; नागकेसर। –पुष्पी–स्त्री० वनमल्लिका; जाती; करुणी फूल (कोंकणमें)। –पूजित–पु० ब्राह्मण। वि० जिसकी जीविकाका प्रबंध राजाकी ओरसे हो। –पूज्य–पु० सुवर्ण। –पूत–पु० (हिं०) राजपुत्र; (राजपूतानाके क्षत्रिय)। –पूताना–पु० (हिं०) राजस्थान। –प्रासाद–पु० राजभवन। –प्रिय–पु० करुणीका फूल; लाल प्याज; लाल धान। –प्रिया–स्त्री० लाल धान, तिलवासिनी; लाल प्याज। –प्रेष्य–पु० राज-कर्मचारी। –फणिज्झक–पु० नारंगीका पेड़। –फल–पु० बड़ा आम; परवल; खिरनी। –फला–स्त्री० जामुन। ––फल्गु–पु० कठगूलर, कठूमर। –बदर–पु० पेउँदी बेर; नमक; आँवला। –बाड़ी–स्त्री० (हिं०) राजवाटिका, राजाका उद्यान। –बाहा–पु० (हिं०) बड़ी नहर। –बीजी(जिन्)–वि० राजकुलका। –भंडार–पु० राजकोष, राजाका खजाना। –भक्त–वि० राज्य या राजामें भक्ति रखनेवाला। –भक्ति–स्त्री० राज्य या राजाके प्रति प्रेम। –भट्टिका–स्त्री० हापुत्री, गोभांडीर नामक जलपक्षी। –भत्ता–पु० (प्रिवी पर्स) दे० 'राजाधिदेय'। –भद्रक–पु० पारिभद्रक या फरहद वृक्ष; सफेद मदार; नीम; कुष्ठ। –भवन–पु० राजमहल, प्रासाद। –भाषा–स्त्री० देशकी वह भाषा जो राजकार्यों तथा न्यायालयों आदिमें प्रयुक्त हो। –भूय–पु० राजत्व। –भृत्य–पु० राजाका सेवक, वेतनभोगी नौकर। –भोग–पु० (हिं०) एक महीन धान। –भोग्य–पु० चिरौंजी, पियाल; राजभोग धान; जावित्री। –मंडल–पु० राज्यके आस-पासके चारों ओरके राज्य (नीति-शास्त्रमें बारह राज-मंडल माने गये हैं)। –मंडूक–पु० बड़ा मेढक, वर्षा-घोष। –मंत्रधर,–मंत्री(त्रिन्)–पु० राजाका अमात्य। –मराल–पु० राजहंस। –महल–पु० (हिं०) राजाका भवन; बंगालका एक समुद्र-तटवर्ती पहाड़। –महिषी–स्त्री० पटरानी। –माता(तृ)–स्त्री० राजाकी माता। –मात्र–पु० नाममात्रका राजा। –मानुष–पु० राज-कर्मचारी; राजमंत्री। –मार्ग–पु० मुख्य सड़क, राजपथ। –माष–पु० बड़ी उरद, नील माष। –माष्य–पु० वह खेत जो उरद बोनेके योग्य हो। –मुद्ग–पु० सुनहले रंगकी मूँग। –मुद्रा–स्त्री० राजाके नामकी या सरकारी मुहर। –मुनि–पु० राजर्षि। –मृगांक–पु० यक्ष्मामें दिया जानेवाला एक मिश्र रस। –यक्ष्मा(क्ष्मन्)–पु० क्षयरोग, तपेदिक। –यक्ष्मी(क्ष्मिन्)–वि० क्षयरोगी। –यान–पु० राजाकी सवारी; राजाका जुलूस, सवारी निकालना; पालकी। –योग–पु० योगशास्त्रोक्त एक योग, अष्टांगयोग; किसीके जन्मके समय ग्रहोंका ऐसा सन्निपात जिसके प्रभावसे उसके राजा या राजाके समान हो जानेकी संभावना रहती है। –योग्य–वि० राजाके उपयुक्त। पु० चंदन। –रंग–पु० चाँदी। –रथ–पु० राजाका रथ। –राज–पु० कुबेर; चंद्रमा; सम्राट्। –राजेश्वर–पु० एक रसौषध

(दाद, कुष्ठादिमें उपयोगी); राजाधिराज। **–राजेश्वरी–**स्त्री० दस महाविद्याओंमेंसे एक; महारानी। **–रीति–**स्त्री० काँसा। **–रोग–**पु० असाध्य रोग; क्षय रोग। **–लक्षण–**पु० वे चिह्न जिनके होनेसे मनुष्य राजा होता है (सामुद्रिक)। **–लक्ष्म(न्)–**पु० राजचिह्न। **–लक्ष्मा(क्ष्मन्)–**पु० युधिष्ठिर। वि० राजलक्षणयुक्त (पुरुष)। **–लक्ष्मी–**स्त्री० राजश्री, राजवैभव; राजाकी शक्ति और शोभा। **–वंश–**पु० राजाका कुल। **–वंश्य –**वि० राजवंशका, राजाके कुलमें उत्पन्न। पु० राजाका वंशज। **–वर्चस–**पु० राजशक्ति; राजपद। **–वर्त्म(र्त्मन्)–**पु० राजमार्ग; वड़ी चौड़ी सड़क; एक रत्न। **–वला–**स्त्री० गंधप्रसारिणी। **–वल्लभ–**पु० वड़ा आम; चिरौंजी; खिरनी; पेउँदी वेर; एक रसौषध। वि० राजाका प्रिय। **–वल्ली–**स्त्री० करैलेकी बेल। **–वसति–**स्त्री० राजमहल। **–वारुणी–**स्त्री० मद्यविशेष। **–वाह–**पु० घोड़ा। **–वाह्य–**पु० राजाका हाथी। **–विजय–**पु० संपूर्ण जातिका एक राग। **–विद्या–**स्त्री० राजनीति। **–विद्रोह–**वि० राजद्रोह, वगावत। **–विद्रोही(हिन्)–**वि० राजद्रोह करनेवाला, वागी। **–विनोद–**पु० एक ताल (संगीत)। **–वीजी(जिन्)–**वि० राजवंशका। **–वीथी –**स्त्री० राजमार्ग। **–वृक्ष–**पु० अमलतास; प्रियाल वृक्ष; भद्रचूड़ वृक्ष; श्योनाक वृक्ष। **–वृत्ति–**स्त्री० (प्रिवी पर्स) दे० 'राजाधिदेय'। **–वैद्य–**पु० राजाओंके यहाँ रहनेवाला वैद्य; कुशल चिकित्सक। **–शण–**पु० पटसन। **–शफर–**पु० हिलसा मछली। **–शाक–**पु०,**–शाकनिका–**स्त्री० वथुआ, वास्तुक। **– –शालि–**पु० महीन सुगंधित चावल, राजभोग। **–शिंबी–**स्त्री० चौड़ी, गूदेदार सेम। **–शुक–**पु० एक वड़ी जातिका लाल तोता, प्राज्ञ। **– ० ज–**पु० एक धान। **–शृंग–**पु० राजछत्र; मागुर मछली। **–श्री–**स्त्री० राजाका वैभव, राजाकी शोभा; सम्राट् हर्षवर्धनकी वहन। **–संसद्–**स्त्री० राजसभा, दरवार; न्यायालय, धर्माधिकरण जिसमें राजा हो। **–सत्ता–**स्त्री० राजशक्ति; राजतंत्र (आ०); देशविशेषकी प्रजा, जनताके भरण-पोषणके लिए स्थापित शासन-व्यवस्था। **–सफर–**पु० दे० 'राजशफर'। **–सभा–**स्त्री० दरबार, राजाकी सभा; राजाओंकी सभा। **–समाज–**पु० राजसभा; राजमंडली, राजागण। **–सर्प–**पु० एक वड़ा साँप, भुजंगभोजी। **–सर्षप–**पु० राई। **–सायुज्य–**पु० राजत्व। **–सारस–**पु० मोर। **–सिंह–**पु० श्रेष्ठ राजा। **–सिंहासन–**पु० वह सिंहासन जिसपर राजा वैठता है। **–सिरी* –**स्त्री० दे० 'राजश्री'। **–सूय–**पु० यज्ञविशेष जिसे करानेसे किसी राजाको 'सम्राट्' कहलानेका अधिकार प्राप्त हो जाता है। **–सूयिक–**वि० राजसूय यज्ञ-संबंधी। **–स्कंध** पु० घोड़ा, अश्व। **–स्तंब–**पु० एक ऋषि। **–स्थान–**पु० राजपूताना। **–स्व–**पु० राजाका अंश, भूमि आदिका राजाको दिया जानेवाला कर, राजधन। **–स्वामी(मिन्)–**पु० विष्णु। **–हंस–**पु० सोना पक्षी (इसकी चोंच और पैर लाल होते हैं); मालव, मनोहर राग और श्री रागके मेलसे बना एक संकर राग।

राज–पु० राज्य, शासित देश; जनपद; प्रजापालनकी व्यवस्था, शासन; अधिकारकाल (वाप-दादोंका राज); प्रभाव, पूरा अधिकार; सुव्यवस्थित राजनीतिक इकाई। **–काज–**पु० राज्य-प्रबंध, व्यवस्था। **–कोषीय नीति–**स्त्री० (फिस्कल पॉलिसी) सरकारी कोष या आय-संबंधी नीति। **–चिह्न–**पु० (इनसिग्निया) राजाओंके अधिकारसूचक चिह्न–जैसे छत्र, दंड आदि, दे० 'पदसूचक चिह्न'। **–पद्धति–**स्त्री० (पालिटी) नागरिक शासनका प्रकार, राजशासनकी प्रणाली। **–पाट–**पु० शासन, राजसिंहासन; देश, जनपद (एक राजा, राज्यके अधीन)। **–पुरुष–**पु० (स्टेट्समैन) राज्यकेशासन, प्रबंध आदिमें प्रमुख रूपसे भाग लेनेवाला अथवा उसकी कला या नीतिका जानकार, राजनेता, राष्ट्र-नायक। **–प्रमुख–**पु० मैसूर, त्रिवांकुर आदि राज्यों या मध्यभारत आदि राज्य-संघोंमें राज्यपालका स्थान ग्रहण करनेवाला प्रमुख राजा। **–भवन–**पु० (गवर्नमेंट हाउस) राजधानीका वह सरकारी भवन जहाँ राज्यपाल या उपराज्यपाल निवास करता है। **–सभा (राज्य सभा)–**स्त्री० (कौंसिल ऑफ स्टेट्स) दे० 'राज्य-परिषद्'। **–साक्षी–**पु० (ऐप्रूवर) अपराधियोंमेंसे वह व्यक्ति जो क्षमा-याचना कर सरकारी गवाह बन जाय और अपने पहलेके साथियोंका अपराध प्रमाणित करानेमें पुलिसकी सहायता करे, इकवाली गवाह। मु० **–देना–**शासनभार देना। **–पर बैठना –**राजाका, राजकीय अधिकार पाना।

राज–पु० मकान बनानेवाला, थवई। **–गीर–**पु० मकान बनानेवाला। **–गीरी–**स्त्री० राजगीरका काम या पद।

राज़–पु० (फा०) रहस्य, भेद, गुप्त वात।

राजक–वि० (सं०) दीप्तिमान्, चमकनेवाला। पु० काला अगर; राजा।

राजकीय–वि० (सं०) राजा या राज्यसे संबंध रखनेवाला। **–पक्ष –**पु० (ऑफिशल पार्टी) वह दल जिसके हाथमें देशका शासनसूत्र हो, जो राज्यका संचालन कर रहा हो, सरकारी दल। **–प्राभियोक्ता–**पु० (गवर्नमेंट प्रासीक्यूटर) दे० 'प्राभियोक्ता'के साथ।

राजगी–स्त्री० राजाका पद।

राजगोपालाचारी(चक्रवर्ती)–पु० जन्म १८७९; वकालत छोड़कर सत्याग्रहमें शामिल १९१९; कांग्रेसके महामंत्री १९२१; मद्रासके मुख्यमंत्री १९३७-१९३९; प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल १९४८-५०; पुनः मद्रासके मुख्य-मंत्री १९५२ से १९५४ तक रहे। –मृत्यु–

राजत–वि० (सं०) चाँदीका; चाँदी-संबंधी। पु० चाँदी।

राजता–स्त्री०, **राजत्व–**पु० (सं०) राजाका भाव या कर्म, राजपद।

राजना*–अ० क्रि० विराजना; रहना; शोभित होना।

राजन्य–पु० (सं०) राजा; क्षत्रिय; अग्नि; खिरनीका पेड़। **–बंधु–**पु० क्षत्रिय, क्षत्रबंधु (हीनार्थ)।

राजर्षि–पु० (सं०) राजवंश, क्षत्रियकुलमें उत्पन्न ऋषि।

राजस–वि० (सं०) रजोगुणसे उत्पन्न। पु० आवेश, क्रोध; गर्व।

राजसात्करण–पु० (सं०) (कानफिस्केशन) दे० 'समपहरण'।

राजसिक–वि० (सं०) रजोगुणसे उत्पन्न, राजस।

राजसी–वि० राजाओंका-सा; राजाके योग्य। वि० स्त्री० (सं०) रजोगुणमयी।

राजस्व–पु० (रेवेन्यू) राज्यकी या सरकारकी भूमिकर आदिसे होनेवाली आय। **–न्यायालय–**पु० (रेवेन्यूकोर्ट) दे० 'माल अदालत'। **–मंत्री–**पु० (रेवेन्यूमिनिस्टर) माल मुहकमेकी देखरेख करनेवाला मंत्री।

राजांक–पु० (इनसिग्निया) दे० 'राजचिह्न'।

राजांगण–पु० (सं०) राजप्रासादका आँगन।

राजा(जन्)–पु० (सं०) किसी देश, मंडल, जातिका शासक और नियामक, नरेश, अधिपति, स्वामी; अंग्रेजी शासनके समयकी एक उपाधि; धनी; प्रिय, प्रेमपात्र (बाजारू)।

राजाग्नि–स्त्री० (सं०) राजाका क्रोध।

राजाज्ञा–स्त्री० (सं०) राजाकी आज्ञा।

राजातन–पु० (सं०) प्रियाल, चिरौंजीका वृक्ष।

राजात्यवर्तक–पु० (सं०) राजावर्त्त, लाजवर्द पत्थर।

राजादन–पु० (सं०) खिरनी; चिरौंजी; टेसू।

राजादनी–स्त्री० (सं०) खिरनी।

राजाद्रि–पु० (सं०) वड़ा अदरक; एक पहाड़।

राजाधिकारी(रिन्), राजाधिकृत–पु० (सं०) न्यायाधीश, विचारपति; राजकर्मचारी।

राजाधिदेय–पु० (प्रिवी पर्स) राजा या शासकको निजी खर्चके लिए सरकारी खजानेसे दी जानेवाली बँधी हुई रकम।

राजाधिराज–पु० (सं०) राजाओंका राजा, सम्राट्।

राजाधिष्ठान–पु० (सं०) वह नगर जहाँ राजाका भवन हो, राजधानी।

राजाध्वा(ध्वन्)–पु० (सं०) राजमार्ग।

राजानक–पु० (सं०) छोटा राजा, सामंत।

राजान्न–पु० (सं०) राजाका अन्न; एक धान, दीर्घशूकक।

राजाभियोग–पु० (सं०) राजाका प्रजासे बलपूर्वक कोई काम लेना।

राजाभिषेक–पु० (सं०) राजतिलक।

राजाम्र–पु० (सं०) छोटी गुठली, अधिक गूदेवाला बड़ा आम,

राजफल, स्मराभ्र ।

राजाम्ल–पु० (सं०) अमलवेत ।

राजार्क–पु० (सं०) सफेद आक ।

राजार्ह–पु० (सं०) कपूर; अगर; एक धान, राजान्न; जामुनका पेड़ । वि० राजाके योग्य ।

राजार्हण–पु० (सं०) राजा द्वारा प्रदत्त वस्तु; उपहार ।

राजालाबु–पु०, **राजालाबू**–स्त्री० (सं०) बड़ा लौआ, कद्दू ।

राजालुक–पु० (सं०) मूली ।

राजावर्त–पु० (सं०) एक उपरत्न, लाजवर्द ।

राजासन–पु० (सं०) सिंहासन, तख्त ।

राजासनी–स्त्री० (सं०) यज्ञमें सोम रखनेकी चौकी या पीढ़ा ।

राजाहि–पु० (सं०) दुमुँहा साँप ।

राजि–स्त्री० (सं०) पंक्ति, कतार; रेखा, लकीर; राई । पु० ऐलके पौत्र, आयुके पुत्र । **–फला**–स्त्री० चीना ककड़ी ।

राज़िक–वि० (अ०) रोजी देनेवाला, परवरदिगार ।

राजिका–स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी; क्यारी; रेखा; काली सरसों; मड़ुआ; कठगूलर; छोटी फुंसियोंका रोग (धूप लगने, गर्मीके तापसे होता है); एक परिमाण । **–चित्र**–पु० सरसोंके दाने जैसी चित्तियोंवाला एक साँप । **–फला**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी ।

राजित–वि० (सं०) शोभित, शोभायमान; उपस्थित ।

राजिमान्(मत्)–पु० (सं०) एक साँप ।

राजिल–पु० (सं०) एक विषहीन सर्प । **–फला**–स्त्री० खरबूजा; ककड़ी ।

राजिव*–पु० कमल ।

राजी–स्त्री० (सं०) कतार, श्रेणी; काली सरसों; राई । **–फल**–पु० परवल ।

राजी*–स्त्री० रजामंदी ।

राज़ी–वि० (अ०) अनुकूल, सहमत; सम्मत; नीरोग; खुश; सुखी; संतुष्ट । **–नामा**–पु० वादी-प्रतिवादीके मतैक्यसे मुकदमा उठाने, इच्छित निर्णय देनेके लिए दिया हुआ लेख (मराठीमें त्यागपत्र) ।

राजीव–पु० (सं०) कमल; नील कमल; एक प्रकारका सारस; रैया मछली; एक प्रकारका मृग; हाथी । वि० धारीदार; राजवृत्तिसे निर्वाह करनेवाला । **–गण**–पु० एक मात्रिक छंद, माली । **–लोचन**–वि० कमल जैसे नेत्रोंवाला ।

राजीविनी–स्त्री० (सं०) कमलिनी ।

राजुक–पु० (सं०) एक प्रांतका प्रबंध करनेवाला राजकर्मचारी (मौर्य) ।

राजुदल–पु० (सं०) एक वृक्ष ।

राजेंद्र–पु० (सं०) राजाधिराज; एक पहाड़, राजाद्रि ।

राजेंद्रप्रसाद–पु० स्वतंत्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति; जन्म ३ दिसंबर, १८८४; मृत्यु २८ फरवरी, १९६३; कांग्रेसके महामंत्री १९२२; कांग्रेसके अध्यक्ष १९३४ तथा १९३९; केंद्रके खाद्यमंत्री १९४७; भारतीय गणतंत्रके राष्ट्रपति १९५० से मई १९६२ तक ।

राजेय–पु० (सं०) परवल ।

राजेश्वर–पु० (सं०) महाराज, राजाधिराज, सम्राट् ।

राजेष्ट–पु० (सं०) राजभोग्य; राजान्न धान; लाल प्याज ।

राजेष्टा–स्त्री० (सं०) केला; पिंडखजूर ।

राजोपकरण–पु० (सं०) राजचिह्न (झंडा, निशान, नौबत इ०) ।

राजोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) राजकर्मचारी; राजाकी सेवा करके जीविका अर्जन करनेवाला व्यक्ति ।

राजोपसेवी(विन्)–पु० (सं०) राजाका सेवक ।

राज्ञी–स्त्री० (सं०) रानी; सूर्यकी पत्नी, संज्ञा, (मत्स्य पु०); नील वृक्ष; काँसा ।

राज्य–पु० (सं०) शासन; एक राजा या राज्यपद्धतिका देश (जैसे–ईरान, रूस आदि); मंडल, राष्ट्र, देश, विषय । **–कर्ता-(र्तृ)**–पु० शासक, अधिकारी, राजा । **–च्युत**–वि० राजसिंहासनसे हटाया हुआ, राज्यभ्रष्ट (राजा) । **–च्युति**–स्त्री० राजाका राजसिंहासन, राज्याधिकारसे वंचित किया जाना । **–तंत्र**–पु० शासनका ढंग, प्रणाली, पद्धति । **–त्याग**–पु० राज्य करनेका, शासन करनेका अधिकार छोड़ देना । **–द्रव्य**–पु० राजतिलकका उपकरण, सामग्री । **–धुरा**–स्त्री० राज्यका, शासनभार, शासनकी जिम्मेदारी । **–परिषद्**–स्त्री० (कौंसिल ऑफ स्टेट्स) राज्योंसे चुने हुए प्रतिनिधियोंकी वह उच्चपरिषद् जो निम्न सदनके निर्णयोंपर पुनर्विचार करती है, राजसभा । **–पाल**–पु० (गवर्नर) किसी प्रदेश (भारतमें 'क' श्रेणीके किसी राज्य)का सर्वोच्च पदाधिकारी और शासक जिसकी नियुक्ति प्रायः राष्ट्रपति अथवा सर्वोच्च राजसत्ताकी स्वीकृतिसे होती है । **–प्रतिरोध**–पु० दे० 'प्रजाक्षोभ' (इनसर्जेंसी) । **–प्रद**–वि० राज्य देनेवाला । **–भंग**–पु० राज्यका नाश, ध्वंस । **–लक्ष्मी**–स्त्री० विजयगौरव; राज्यवैभव । **–लोभ**–पु० राज्यका लोभ, राज्य-प्राप्तिकी आकांक्षा; भारी लोभ । **–व्यवस्था**–स्त्री० राज्यका नियम, नीति, विधान, कानून । **–संचालनपरिषद्**–स्त्री० (रीजेंसी काउंसिल) राजाकी अल्पवयस्कता, लंबी बीमारी आदिके समय राज्यका संचालन करनेके निमित्त नियुक्त कतिपय व्यक्तियोंकी परिषद् । **–संरक्षक**–पु० (रीजेंट) वह व्यक्ति जिसे राजाकी अल्पवयस्कता, दीर्घकालीन रुग्णता आदिके समय राज्यकी देख-रेख, व्यवस्था आदिका भार सौंपा गया हो । **–स्थायी(यिन्)** पु० शासक, राजा ।

राज्यक्षेत्रातीत अधिकार–पु०. (एक्स्ट्रा टेरिटोरियल राइट) एक राज्यके क्षेत्रके भीतर न्याय आदिके मामलेमें विदेशियोंको अपने ही देशके अधिकार प्राप्त होना ।

राज्यत्ता–स्त्री० (सं०) रायता ।

राज्यांग–पु० (सं०) प्रकृति, राज्यके साधक अंग (राजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल, सुहृत्) ।

राज्याभिषिक्त–वि० (सं०) जिसका राजतिलक या राज्याभिषेक हुआ हो ।

राज्याभिषेक–पु० (सं०) राज्यारोहण, राजगद्दीपर बैठानेकी रीति (वेदमंत्रसे पवित्र तीर्थोंके जल और औषधियोंसे अभिषेक किया जाता है); राजसूय यज्ञके बाद राजाका तीर्थजलादिसे अभिषेक ।

राज्याश्रयी–वि० (वे लेखक) जो सरकारी दबाव, प्रोत्साहन या सम्मानके लिए सरकारोंका समर्थन करते हैं ।

राज्योपकरण–पु० (सं०) राजचिह्न ।

राटि–पु० (सं०) पक्षी । स्त्री० युद्ध ।

राटुल–पु० लकड़ी, लोहा आदि तौलनेका बड़ा तराजू ।

राट्(ज्)–पु० (सं०) राजा; सरदार, श्रेष्ठ पुरुष (यौगिक शब्दोंके अंतमें इसका प्रयोग होता है) ।

राठ*–पु० राज्य; राजा ।

राठवर*–पु० दे० 'राठौर' ।

राठौर–पु० राजस्थानका एक प्रसिद्ध राजवंश; राजपूतोंकी एक उपजाति ।

राड़–वि० निकम्मा; हीन, नीच; कायर, भगोड़ा ।

राड़ा–पु० सरसों; कुशकी जातिकी एक घास, राढ़ी ।

राढ़–वि० दे० 'राड़' । † स्त्री० रार, झगड़ा ।

राढा–स्त्री० (सं०) एक पुरीका नाम (प्रा०); कांति, चमक ।

राढि–पु० उत्तरीय वंग (प्रा०) ।

राढ़ी–स्त्री० एक मोटी घास; आमका एक प्रकार । वि० झगड़ालू, रार करनेवाला ।

राण–पु० (सं०) पत्ता; मोरकी पूँछ ।

राणा–पु० राजा (राजपूतानाके कुछ राजाओं तथा नेपालके सरदारोंके लिए प्रयुक्त) ।

राणिका–स्त्री० (सं०) लगाम ।

रात–स्त्री० संध्यासे सवेरेतकका समय जब सूर्यका प्रकाश नहीं मिलता, रात्रि, रजनी । **–दिन**–अ० सदा, सर्वदा । **–राजा**–पु० उल्लू । **–रानी**–स्त्री० एक पौधा और उसका फूल जो रातमें फूलता है, रजनीगंधा ।

रातड़ी, रातरी†–स्त्री० रात ।

रातना*–अ० क्रि० अनुरक्त होना, मुग्ध होना; रँगा जाना; लाल हो जाना; लाल रंगसे रँगा जाना ।

राता*–वि० रँगा हुआ; लाल, सुर्ख, किरमिजी। (स्त्री० 'राती'।)

राति*–स्त्री० दे० 'रात'। **–चर**–पु० राक्षस, निशाचर।

रातिब–पु० (अ०) पशुओंका दैनिक आहार; हाथियोंका खाद्य (विशेषत: अन्न)।

रातुल–पु० दे० 'राटुल'।

रातैल–पु० जुआरके लिए हानिकर एक छोटा लाल कीड़ा।

रात्रक–वि० (सं०) रात्रि-संबंधी। पु० वेश्याके घर वर्षभर रहनेवाला।

रात्रिंचर–वि० (सं०) रातमें घूमनेवाला। पु० राक्षस, निशाचर।

रात्रिंदिव–अ० (सं०) रात-दिन।

रात्रि–स्त्री० (सं०) रात, निशा; हलदी। **–कर,–कार**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–चर,–चारी(रिन्)**–वि०, पु० दे० 'रात्रिंचर'। **–ज**–पु० तारे आदि। **–जल**–पु० ओस। **–जागर**–पु० रातमें जागना या पहरा देना; कुत्ता। वि० रातमें जागता रहनेवाला। **–०द**–पु० मच्छड़। **–तिथि**–स्त्री० शुक्ल पक्षकी रात। **–नाथ**–पु० चंद्रमा। **–नाशन**–पु० सूर्य। **–पाठशाला**–स्त्री० वह पाठशाला जहाँ रातमें पढ़ाईकी व्यवस्था हो। **–पुष्प**–पु० रातमें खिलनेवाला पुष्प, कुईं। **–बल,–भट**–पु० राक्षस, असुर। **–मणि**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–रक्ष,–रक्षक**–पु० प्रहरी। **–राग** पु० अँधेरा। **–वास(स्)**–पु० अंधकार; रातमें पहननेका कपड़ा। **–विगम,–विराम**–पु० निशांत, प्रभात, प्रातःकाल। **–विश्लेषगामी(मिन्)**–पु० चकवा। **–वेद,–वेदी(दिन्)**–पु० मुरगा। **–साम(न्)**–पु० साम-विशेष। **–सूक्त**–पु० ऋग्वेदका एक सूक्त; दुर्गा सप्तशतीके अंतर्गत एक सूक्त। **–हास**–पु० कुमुद। **–हिंडक**–पु० (राजाओंके) अंतःपुरका प्रहरी; रातमें गश्त लगानेवाला।

रात्रिक–वि० (सं०) दे० 'रात्रक'; कुछ रातोंके लिए पर्याप्त।

रात्रिका–स्त्री० (सं०) रात्रि।

रात्र्यंध–वि० (सं०) रतौंधीका रोगी; रातको देख सकनेमें असमर्थ।

रात्र्यट–पु० (सं०) राक्षस; चोर।

राद–पु० (अ०) बिजलीकी कड़क; बादलोंका फरिश्ता।

राद्ध–वि० (सं०) राँधा हुआ; ठीक, सिद्ध किया हुआ; पूरा किया हुआ।

राद्धांत–पु० (सं०) सिद्धांत।

राद्धि–स्त्री० (सं०) सिद्धि; साफल्य।

राध–पु० (सं०) वैशाख; कृपा, अनुग्रह; अभ्युदय; धन; † मवाद। **–रंक**–पु० हल; वर्षा; ओला।

राधन–पु० (सं०) साधना; प्राप्ति; तोष, संतोष।

राधना*–स० क्रि० पूजा, आराधना करना; पूरा, सिद्ध करना; साधना, काम निकालना। स्त्री० (सं०) वाणी।

राधनी–स्त्री० (सं०) पूजा।

राधा–स्त्री० (सं०) वैशाखकी पूर्णिमा; अनुराग, प्रीति; वृषभानुकन्या, कृष्णकी प्रेमिका; विद्युत्; विशाखा नक्षत्र; आँवला; एक वर्णवृत्त; अधिरथकी पत्नी जिसने कर्णका पालन किया था। **–कांत,–वल्लभ**–पु० कृष्ण। **–कुंड**–पु० गोवर्द्धनके पासका एक कुंड। **–तंत्र**–पु० एक तंत्र (इसमें मंत्रोंके साथ-साथ राधाकी रहस्यमयी उत्पत्तिका वर्णन है)। **–वल्लभी**–पु० (हिं०) एक वैष्णव संप्रदाय। **–स्वामी**–पु० (हिं०) एक मतप्रवर्तक आचार्य; एक संप्रदाय।

राधाकृष्णन् (सर्वपल्ली)–पु० जन्म ५ सितंबर, १८८८; दर्शनके प्राध्यापक मद्रास १९११-१७, कलकत्ता वि० वि० १९३१-३६; काशी हिंदू विश्वविद्यालयके कुलपति १९३९-४८– रूसमें भारतके राजदूत १९५१-५२; भारतके उपराष्ट्रपति १९५३ से मई १९६२ तक; राष्ट्रपति मई १९६२ से मई १९६७ तक।

राधाष्टमी–स्त्री० (सं०) भाद्रपद-शुक्ला अष्टमी।

राधिका–स्त्री० (सं०) राधा, वृषभानुकन्या; एक मात्रिक छंद।

राधी–स्त्री० (सं०) वैशाखी पूर्णिमा।

राधेय–पु० (सं०) कर्ण (राधा–अधिरथकी पत्नीका अपत्य म० भा०)।

राध्य–वि० (सं०) आराधनाके योग्य।

रान–स्त्री० (फा०) जाँघ।

रानतुरई–स्त्री० कड़वी तरोई।

रानना†–स० क्रि० स्वीकार करना, कबूलना।

राना–पु० दे० 'राणा'। **–पति**–पु० सूर्य।

राना*–अ० क्रि० अनुरक्त होना–'कौन कली जो भौंर न राई'–प०।

राना–वि० (अ०) अंदाज, नजाकतसे चलनेवाला; नाजुक; सुंदर। **–ई**–स्त्री० (अ०) खुशखिरामी; खूबसूरती।

रानी–स्त्री० राजाकी स्त्री; स्वामिनी; प्रेमिकाके लिए स्नेहयुक्त संबोधन; स्त्रियोंके लिए सम्मानसूचक शब्द; ताशका एक पत्ता, बेगम; नाउन (पंजाब)। **–काजर**–पु० एक धान। **–मक्खी** स्त्री० मधुमक्खियोंकी रानी जो छत्तेमें रहकर केवल अंडे देती हैं।

रापड़–पु० बंजर।

रापती–स्त्री० एक नदी (नेपालसे निकलकर सरयूमें गिरती हैं)।

रापरंगाल–पु० एक तरहका नृत्य।

रापी–स्त्री० दे० 'राँपी'।

राब–स्त्री० खाँड़, गाढ़ा सीरा (जिसमें दाने पड़ जाते हैं); † नावमें लंबाईके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक लगी हुई लकड़ी।

राबड़ी–स्त्री० रबड़ी, बसौंधी, औंटकर गाढ़ा बनाया हुआ दूध।

राबना–स० क्रि० खेतमें एक विशेष ढंगसे खाद देना।

राबिता–पु० (अ०) संबंध, मेल-मिलाप; कोई चीज जो मिलाये, बाँधे, दुरुस्त करे; जोड़, मेल।

राबिस–स्त्री० ईंटोंके भट्ठों आदिसे निकला कोयलेका चूरा और राख जो इमारत बनानेमें काम आता है।

राभस्य–पु० (सं०) प्रसन्नता; वेग।

राम–पु० (सं०) परशुराम; बलराम; दाशरथि राम (दे० 'रामचंद्र'); तीनकी संख्या; घोड़ा; प्रेमी; वरुण; ईश्वर; बथुआ; अशोक वृक्ष; रमण: एक मात्रिक छंद। **–अंजीर**–पु० (हिं०) पाकर वृक्ष। **–कजरा**–पु० (हिं०) एक धान। **–कपास**–स्त्री० (हिं०) नरमा, देवकपास। **–कली**–स्त्री० (हिं०) एक रागिनी, भैरव रागकी स्त्री। **–कहानी**–स्त्री० जीवनमें बीती हुई घटनाओंका विस्तृत वृत्तांत। **–काँटा**–पु० (हिं०) एक प्रकारका बबूल। **–कुंती**–स्त्री० कर्नाटकी संगीतकी एक रागिनी। **–कुसुमावली**–स्त्री० कर्नाटकी संगीतकी एक रागिनी। **–केला**–पु० (हिं०) एक प्रकारका केला; एक प्रकारका आम। **–क्रिय**–पु० कर्नाटकी संगीतका एक राग। **–क्षेत्र**–पु० दक्षिण भारतका एक तीर्थ। **–गंगा**–स्त्री० एक नदी (पीलीभीतसे चलकर गंगामें मिलनेवाली)। **–गिरि**–पु० रामटेक, नागपुरकी एक पहाड़ी (मेघदूतमें वर्णित)। **–गिरी**–स्त्री० दे० 'रामकली'। **–चंगी**–स्त्री० (हिं०) एक तरहकी तोप। **–चंद्र**–पु० कौशल्याके गर्भसे उत्पन्न राजा दशरथके पुत्र (रामायण, रामचरितमानस आदि काव्योंके नायक, विष्णुके मुख्य दस अवतारोंमेंसे एक); दे० क्रममें। **–चक्र**–पु० उड़दकी पीठीसे निर्मित एक पकवान, बड़ा; मोटी रोटी, बाटी। **–जननी**–स्त्री० रेणुका; कौशल्या; रोहिणी। **–जना**–पु० (हिं०) जिस व्यक्तिके पिताका पता न हो, वर्णसंकर; जातिविशेष (इस जातिकी लड़कियाँ वेश्या-वृत्ति करती हैं)। **–जनी**–स्त्री० (हिं०) रामजना जातिकी स्त्री; जिस स्त्रीके पिताका पता न हो; वेश्या। **–जमनी**–पु० (हिं०) एक बारीक चावल। **–जवाइन,–ज्वाइन**–पु० एक महीन चावल। **–जयंती**–स्त्री० एक देवीमूर्ति। **–जामुन**–पु० (हिं०) एक मझोले आकारका जामुनका वृक्ष। **–जौ**–पु० (हिं०) एक प्रकारकी जई (दाने जौसे बड़े)। **–झोल**–पु० (हिं०) पायल, पाजेब। **–टेक**–पु० (हिं०) नागपुरके पासकी एक पहाड़ी, 'रामगिरि'। **–टोड़ी**–स्त्री० (हिं०) एक संकर रागिनी। **–तरुणी**–स्त्री० सीता; सेवती। **–तरोई**–स्त्री० (हिं०) भिंडी। **–तारक**–पु० रामोपासकोंका मंत्र 'रां रामाय नम:'। **–तिल**–पु० एक तिल। **–तीर्थ**–पु० रामगिरि पर्वत; आधुनिक भारतके विख्यात योगी स्वामी रामतीर्थ जिन्होंने विदेशोंमें भारतीय संस्कृतिकी लोकप्रियता बढ़ायी। **–तुलसी**–स्त्री० दे० 'रामातुलसी'। **–तेजपात**–पु० (हिं०) एक प्रकारका तेजपात। **–दल**–पु० रामकी वानरी सेना; बड़ी और अजेय सेना। **–दाना**

–पु० (हिं०) सफेद दानोंवाला मरसेकी जातिका एक पौधा; उसके बीज; एक धान। **–दास**–पु० हनूमान्; समर्थ रामदास, शिवाजीके गुरु; एक धान। **–दूत**–पु० हनुमान्। **–दूती**–स्त्री० एक तुलसी, पर्वपुष्पी, विशल्या; नागदौन; नागपुष्पी। **–देव**–पु० राम; राजस्थानसे प्रचलित एक पंथ। **–धनुष्**–पु० इंद्रधनुष्। **–धाम(न्)**–पु० साकेत लोक। **–ननुआ**–पु० (हिं०) लौकी, घीया। **–नवमी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला नवमी, रामका जन्म-दिवस। **–नामी**–स्त्री० (हिं०) चादर, दुपट्टा जिसमें राम-नामकी छाप लगी हो; सोनेका कंठहार। **–नौमी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'रामनवमी'। **–पात**–पु० (हिं०) नीलकी जातिकी एक झाड़ी। **–पुर**–पु० अयोध्या; स्वर्ग। **–फटाका**–पु० रामानंदी तिलक (तीन खड़ी लकीरें), ऊर्ध्वपुंड्र। **–फल**–पु० सीताफल, शरीफा। **–बँटाई**–स्त्री० (हिं०) दोमें सम-विभाजन, आधे आधकी बँटाई। **–बबूल**–पु० (हिं०) एक प्रकारका बबूल, कीकर। **–बाँस**–पु० (हिं०) एक मोटा बाँस (इससे नालकीका डंडा बनाते हैं); केतकीकी जातिका एक पौधा। **–बान**–पु० (हिं०) एक प्रकारका नरसल, रामशर; दे० 'रामवाण'। **–बिलास**–पु० (हिं०) एक धान। **–भोग**–पु० (हिं०) एक तरहका आम; एक तरहका चावल। **–मंत्र**–पु० दे० 'रामतारक'। **–रक्षास्तोत्र**–पु० विश्वामित्ररचित एक स्तोत्र। **–रज(स्)**–स्त्री० एक प्रकारकी पीली मिट्टी। **–रस**–पु० नमक; † बनी हुई भंग। **–०डाली**–स्त्री० (हिं०) एक प्रकारकी ईख। **–राज्य**–पु० रामका शासन; सुशासन, रामका-सा प्रजा-सुखकारी शासन; मैसूर। **–राम**–पु० नमस्कार, प्रणाम। स्त्री० भेंट, मुलाकात। अ० घृणा, आश्चर्य आदि सूचक शब्द, छिः, वाह। **–रौला**–पु० (हिं०) व्यर्थका शोरगुल। **–लड्डू**–पु० प्याज (साधुओंकी भाषा)। **–लवण**–पु० साँभर नमक। **–लीला**–स्त्री० रामके चरित्रका अभिनय; रामके चरित्रके अभिनयके लिए होनेवाला समारोह। **–वल्लभी**–पु० (हिं०) एक वैष्णव संप्रदाय। **–वाण**–पु० अजीर्णके लिए उपयोगी एक रसौषध। वि० शीघ्र गुणकारी, उपयोगी, लाभदायक, अमोघ (औषध)। **–वीणा**–स्त्री० एक वीणा। **–शर**–पु० ईखके आकार-प्रकारका एक नीरस पौधा। **–शिला**–स्त्री० गयाकी एक पहाड़ी। **–श्री**–पु० एक राग। **–संडा**–पु० काँस। **–सखा**–पु० सुग्रीव। **–सनेही**–पु० (हिं०) एक वैष्णव संप्रदाय। **–सीता**–पु० (हिं०) सीताफल, शरीफा। **–सेतु**–पु० रामेश्वरम्के निकट समुद्रस्थ चट्टानोंका समूह (इसे रामके सेतुका अवशेष मानते हैं)। **–सेनुर**–पु० (हिं०) काँसा, एक प्रकारकी घास।

रामकृष्ण परमहंस–पु० स्वामी विवेकानंदके गुरु (१८३६-१८८६)।

रामचंद्रशुक्ल–(१८८४-१९४१ ई०) हिंदीके महान् साहित्य-समीक्षक जिन्होंने सर्वप्रथम हिंदी समीक्षाका सर्वांगीण-विकास किया। आपने मनोवेगोंपर उच्च कोटिके निबंध भी लिखे हैं जिनका हिंदी साहित्यमें विशिष्ट स्थान है। रचनाएँ—तुलसी, सूर और जायसीके साहित्यकी समीक्षाएँ, हिंदीसाहित्यका इतिहास, निबंध-संग्रह–चिंतामणि (दो भागोंमें)।

रामठ–पु० (सं०) अखरोट; हींग; मैनफल; चिचड़ा; एक देश; इस देशका निवासी।

रामठी–स्त्री० (सं०) हींग।

रामणीयक–पु० (सं०) रमणीयता। वि० सुंदर, मनोहर।

रामति*–स्त्री० भिक्षाके लिए घूमना-फिरना, भिक्षाटन।

रामना*–अ० क्रि० विचरना, घूमना-फिरना।

राममोहन राय, राजा–पु० विद्वान् तथा प्रसिद्ध समाज-सुधारक, 'साधारण ब्रह्मसमाज'की. स्थापना आपने की (१७७४-१८३३ ई०)।

रामल–वि० (सं०) रमल-संबंधी।

रामा–स्त्री० (सं०) सुंदरी बाला, स्त्री; गान-कलाकुशल स्त्री; अशोक; भटकटैया; घीकुआर; गोरोचन; हींग; ईंगुर; गेरू; रुक्मिणी; राधा; सीता; लक्ष्मी; छंदोंके विभिन्न भेद। **–तुलसी**–स्त्री० सफेद डंठलवाली तुलसी। **–प्रिय**–पु० दारचीनी।

रामानंद–पु० (सं०) रामायत संप्रदायके प्रवर्तक एक वैष्णव आचार्य (१३५६-१४६७ ई०)।

रामानंदी–वि० रामानंद-संबंधी। पु० रामानंद संप्रदायका अनुयायी।

रामानुज–पु० (सं०) रामके छोटे भाई, लक्ष्मण; श्रीवैष्णव संप्रदायके प्रवर्तक एक आचार्य (सं० १०७३-११९४)।

रामायण–स्त्री० (सं०) रामचरित्र-संबंधी वाल्मीकि मुनि-रचित आदि काव्यग्रंथ (अन्य कई ग्रंथ भी इसी नामसे परिचित हैं–जैसे अध्यात्म रामायण, अग्निवेश रामायण, तुलसीदासका रामचरितमानस इ०)।

रामायणी–वि० रामायण-संबंधी; रामायणका। पु० रामायणका पाठ करनेवाला; रामायणका पंडित, कथावाचक।

रामायत–पु० रामानंद द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय।

रामायन*–पु० दे० 'रामायण'।

रामायुध–पु० (सं०) धनुष्।

रामावत–पु० (सं०) रामानंद द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव उपसंप्रदाय।

रामिज़–वि० (अ०) इशारा करनेवाला (रम्ज्–इशारा करना)।

रामिल–पु० (सं०) प्रेमी; पति; कामदेव; प्रेमपात्र।

रामी–स्त्री० काँस नामक घास।

रामेश्वर–पु० (सं०) दक्षिणके रामेश्वरम् नामक स्थानमें स्थापित एक शिव-लिंग जिसके स्थापक राम कहे जाते हैं, चार बड़े तीर्थोंमेंसे एक तीर्थ।

रामेषु–पु० (सं०) रामशर या रामवाण नामक पौधा; ईखका एक भेद।

रामोपनिषद्–स्त्री० (सं०) अथर्ववेदकी एक उपनिषद्।

राम्या–स्त्री० (सं०) रजनी, रात।

राय–पु० राजा; सरदार; मुस्लिम कालमें हिंदुओंको दी जानेवाली एक उपाधि; भाट। **–करौंदा**–पु० बड़ा करौंदा। **–कवाल**–पु० वैश्योंकी एक उपजाति। **–बेल**–स्त्री० सुंदर, सुगंधित फूलोंवाली एक लता। **–भोग**–पु० राजभोग धान। **–मुनिया,–मुनी**–स्त्री० लाल पक्षीकी मादा। **–रायान**–पु० राजाधिराज; मुस्लिम कालकी एक उच्च उपाधि। **–रासि***–स्त्री० राजकोश, राजाका खजाना। **–साहब,–बहादुर**–पु० संपन्न हिंदू राजभक्तोंको मिलनेवाली ब्रिटिश कालकी उपाधियाँ।

राय–स्त्री० (फा०) मत; परामर्श, सलाह; समझ, विचार; सुझाव, तदबीर। मु०–**कायम करना**–निर्णय करना, एक निश्चयपर पहुँचना।

रायगाँ–वि० (फा०) (रास्तेपर पड़ा हुआ) व्यर्थ, अकारथ, बेवक्त।

रायज–वि० (अ०) प्रचलित, जारी; जो रीतिके अनुसार हो।

रायटर–पु० (अं०) पाल ज्यूलियस बैरन फाक्स, एक जर्मन व्यापारी जिसने समाचार-पत्रोंको तार द्वारा खबरें भेजनेके लिए एजेंसी खोली थी; समाचार भेजनेवाली एक एजेंसी।

रायता–पु० उबले साग, कद्दू, कुम्हड़ा, बुँदिया आदिमें राई, नमक, मिर्च, जीरा आदि मसाले तथा दही डालकर तैयार किया हुआ एक भोज्य पदार्थ।

रायल–वि० (अं०) शाही, राजकीय। स्त्री० कागजकी २० इंच चौड़ी और २६ इंच लंबी नाप; इस नापका कागज छापनेवाली मशीन।

रायसा–पु० डिंगलमें लिखित किसी राजाका चरित्र-विषयक काव्य-ग्रंथ, रासो (जैसे–पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो); किसी वीर पुरुष या सती नारीका यशोगीत।

रायहर–पु० राजमहल (रासो)।

राया*–वि० सुंदर (वीसल०)।

रार–स्त्री० झगड़ा, तकरार।

रारि*–दे० 'रार'–'रारि-सी मची है त्रिपुरारिके तबेलामें'–भूधर।

राल–स्त्री० दक्षिणी भारतके जंगलोंमें मिलनेवाला एक सदाबहार पेड़; इस पेड़का निर्यास, गोंद (काला, सफेद), धूप (वार्निश, औषधके काम आता है); पतला, लसदार थूक; पशुओंका एक रोग।

राली†–स्त्री० छोटे दानोंका बाजरा।

राव–पु० (सं०) शब्द, गुंजार, आवाज; (हिं०) राजा; दरबारी

सरदार; राजाओंकी पदवी (कच्छ, राजपूतानाके कुछ भागोंमें); धनी, अमीर; बंदीजन, भाट, चारण; † हिमालयकी तराईमें मिलनेवाला एक पेड़। **–बहादुर**–पु० ब्रिटिश कालकी एक उपाधि। **–रखा**†–पु० हिमालयपर होनेवाला एक वहुत वड़ा पेड़। **–साहव**–पु० ब्रिटिश शासनकालकी एक उपाधि।

रावचाव–पु० राग-रंग; नाच-गाना; प्यार-दुलार।

रावट†–पु० राजप्रासाद; महल।

रावटी–स्त्री० कपड़े आदिका घर, छोलदारी; वारहदरी।

रावण–वि० (सं०) रुलानेवाला; हाहाकार करनेवाला। पु० लंकाका प्रसिद्ध राजा जिसका वध रामने युद्धमें किया, दशानन, लंकेश (इसके पिताका नाम विश्वश्रवा तथा माताका कैकसी था)। **–गंगा**–स्त्री० सिंहलकी एक नदी (पु०)।

रावणारि–पु० (सं०) राम।

रावणि–पु० (सं०) रावणका कोई पुत्र; मेघनाद।

रावत–पु० सरदार, सामंत; छोटा राजा; शूर; वीर; योद्धा; सेनापति; राउत, अहीर; जाति नाम।

रावन*–पु० दे० 'रावण'। **–गढ़**–पु० लंका।

रावना*–सं० क्रि० दूसरोंको रुलाना।

रावर*–पु० अंतःपुर, रनिवास। सर्व० आपका।

रावरखा–पु० वुरुल नामक वृक्ष।

रावरा*–सर्व० दे० 'रावर'।

रावल–पु० राजा; कुछ राजाओंकी उपाधि; सरदार; आदरसूचक संवोधन (संपन्न क्षत्रियोंके लिए); * अंतःपुर, रनिवास; राधाका ममियौरा।

रावी–स्त्री० पंजावकी पाँच नदियोंमेंसे एक।

राशन–पु० (अं०) रसद, सिपाहियोंकी खूराक; नियंत्रित मूल्य तथा मात्रामें वस्तुओंके वितरणकी व्यवस्था।

राशि–स्त्री० (सं०) समान जातिकी वहुत-सी वस्तुओंका ढेर; क्रांतिवृत्तमें आनेवाले विशेष तारासमूह (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन)। **–चक्र**–पु० ग्रहोंके चलनेका मार्ग, वृत्त; आकाशका वह कटिवंध जिसमें सूर्य, चन्द्र तथा ग्रह गति करते हुए प्रतीत होते हैं। राशि चक्रका कटिवंध क्रांतिवृत्त (एक्लिप्टिक)के दोनों ओर ९ अंश तक फैला हुआ है। सम्पूर्ण राशिचक्रकी वृत्तीय पट्टीको १२ वरावर खण्डोंमें वाँटा गया है; प्रत्येक खण्ड 'राशि' कहलाता है; राशियोंका चक्र, मंडल। **–नाम(न्)**–पु० जन्मकालकी राशिके अनुसार रखा हुआ नाम। **–प**–पु० किसी राशिका स्वामी, अधिपति देवता। **–भाग**–पु० भग्नांश, किसी राशिका भाग, अंश। **–भोग**–पु० किसी ग्रहकी किसी राशिमें स्थिति; किसी ग्रहकी किसी राशिमें स्थितिका काल। **–राशि**–वि० ढेर-सा, वहुत-सा; वहुसंख्यक–'राशि-राशि रचनाएँ'–सुधीन्द्र। मु० **–आना**–अनुकूल होना। **–मिलना**–मेल मिलना; दो व्यक्तियोंकी एक राशिमें उत्पत्ति होना।

राशी–वि० (अ०) रिशवत लेनेवाला, घूसखोर।

राष्ट्र–पु० (सं०) देश; राज्य; जाति, 'नेशन'; पुरूरवाके वंशज काशीका पुत्र; ईति, देशव्यापी वाधा। **–कर्षण**–पु० राजा या शासकका प्रजापर अत्याचार करना। **–कूट**–पु० एक क्षत्रिय राजवंश, राठौर। **–गोप**–पु० राजा; राजाका प्रतिनिधि। वि० राष्ट्रकी रक्षा करनेवाला। **–चेता**–वि० राष्ट्रको उद्‌वुद्ध करनेवाला (कवि)। **–तंत्र**–पु० राज्य, शासन-पद्धति। **–ध्वज**–पु० किसी देशका राष्ट्रीय झंडा। **–पताका**–स्त्री० दे० 'राष्ट्रध्वज'। **–पति**–पु० राष्ट्रका स्वामी; (प्रेसीडेंट) गणतंत्रका निर्धारित अवधितकके लिए चुना गया प्रधान (सर्वोच्च पदाधिकारी)। **–०भवन**–पु० राष्ट्रपतिका (भारतमें दिल्लीस्थित) सरकारी निवासस्थान। **–०शासन**–पु० वह शासन जिसमें राष्ट्रपति ही सर्वोपरि शासक हो; मंत्रिमंडलका वहुमत न रह जाने या विधान सभाके भंग कर दिये जाने आदिकी विशेष स्थितिमें कुछ समयके लिए स्थापित राष्ट्रपतिका शासन। **–पाल**–पु० राजा; कंसका एक भाई। **–भाषा**–स्त्री० किसी राष्ट्रकी वह मुख्य प्रचलित भाषा जिसका प्रयोग उस राष्ट्रके अन्य भाषा-भाषी नागरिक भी सार्वजनिक कार्योंमें करें। **–भृत्**–पु० राजा; प्रजा; शासक। **–भृत्य**–पु० राष्ट्रका रक्षक, शासक; प्रजा। **–भेद**–पु० शत्रुराज्यमें विप्लव, विद्रोह उत्पन्न करानेकी नीति। **–मंडल**–पु० (कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स) समान हित और समान भावनासे आवद्ध स्वतंत्र राष्ट्रोंका समूह। **–वाद**–पु० (नैशनलिज़्म) देशवासियोंमें राष्ट्रीयताकी भावनाके दृढ़ीकरण, राष्ट्रीय परंपराओंका गौरव अक्षुण्ण वनाये रखने तथा राजनीतिक एकता स्थापित करने या पराधीनतासे मुक्ति आदिके लिए किया जानेवाला आंदोलन। **–वादी(दिन्)**–पु० (नैशनलिस्ट) राष्ट्रके हितको सर्वाधिक महत्त्व देने तथा उसकी एकता, संपन्नता आदिके लिए प्रयत्न करनेवाला। **–वासी(सिन्)**–पु० राष्ट्रमें निवास करनेवाला, प्रजा। **–विप्लव**–पु० वलवा, विद्रोह। **–संघ**–पु० (लीग ऑफ नेशन्स) विश्वके राष्ट्रोंका संघ जो प्रथम महायुद्धके वाद राष्ट्रोंके आपसी झगड़े शांतिपूर्वक हल करनेके उद्देश्यसे वनाया गया था।

राष्ट्रक–पु० (सं०) राज्य; देश। वि० राष्ट्र-संवंधी।

राष्ट्रांतपालक–पु० (सं०) राज्यका सीमारक्षक।

राष्ट्रिक–पु० (सं०) राजा; प्रजा। वि० राष्ट्र-सवंधी; राष्ट्रका।

राष्ट्रिका–स्त्री० (सं०) भटकटैया, कंटकारि।

राष्ट्रिय, राष्ट्रीय–वि० (सं०) राष्ट्र-संवंधी; राष्ट्रका। पु० राजा; राजाका साला (ना०)।

राष्ट्रीयकरण–पु० (नैशनैलिज़ेशन) मुआवजा देकर या विना मुआवजाके देशके विशेष उद्योगों, भूमि आदिपर सरकारका अधिकार कर लेना और समूचे राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे उनकी व्यवस्था करना।

राष्ट्रीयता–स्त्री० (सं०) किसी राष्ट्रका नागरिक होनेका भाव; राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति।

रास–पु० (सं०) शब्द, ध्वनि; कोलाहल; नृत्यक्रीडा (माना जाता है कि इसका प्रवर्तन कार्त्तिककी पूर्णिमाको कृष्णने किया); कृष्ण-लीलाके अभिनययुक्त नाटक; एक लोकगान, रसिया; विलास; नर्तकोंका समाज; शृंखला। **–ताल**–पु० १३ मात्राओंका एक ताल (संगीत)। **–धारी(रिन्)**–पु० कृष्णचरितका अभिनय करनेवाला व्यक्ति या समाज (यह अभिनय गीत, नृत्य, वाद्यसे युक्त रहता है)। **–नृत्य**–पु० नृत्यका एक भेद। **–पूर्णिमा**–स्त्री० रास आरंभ होनेकी तिथि, कार्त्तिककी पूर्णिमा। **–भूमि**–स्त्री० रासक्रीडाका स्थान। **–मंडल**–पु० रासक्रीडा करनेवालोंका वृत्ताकार समूह; रासधारियोंका अभिनय; रासधारियोंका समाज। **–मंडली**–स्त्री० रासधारियोंकी टोली। **–यात्रा**–स्त्री० शरत्पूर्णिमाका एक उत्सव (पु०); चैत्रपूर्णिमाका एक शाक्त उत्सव। **–लीला**–स्त्री० कृष्णका गोपियोंके साथ कृत नृत्य, क्रीड़ा; रासधारियोंका कृष्णलीला-संवंधी अभिनय। **–विलास**–पु० रासका नृत्य, क्रीडा। **–विहारी(रिन्)**–पु० कृष्ण।

रास–स्त्री० लगाम, वाग; ढेर; मेषादि राशि; चौपायोंका समूह; जोड़; व्याज। पु० एक छंद; लास्य नामक नृत्य; एक स्थान; गोद, दत्तक। **–चक्र**–पु० दे० 'राशिचक्र'। **–नशीन**–पु० वह जो गोद लिया गया हो, मुतवन्ना। मु० **–वैठाना,–लेना**–गोद लेना।

रास–पु० (अ०) अंतरीप; घोड़ों, वैलोंकी संख्याके लिए प्रयुक्त शब्द (दो रास वैल, चार रास घोड़े)। वि० ठीक, दुरुस्त; मुवारक (रास्तका संक्षिप्त रूप)। मु० **–आना**–अनुकूल होना, ठीक होना।

रासक–पु० (सं०) दृश्य काव्यका एक भेद (एक अंकका, पात्र पाँच–हास्यरसप्रधान, नायक मूर्ख, नायिका चतुर, सूत्रधार नहीं होता)।

रासन–वि० (सं०) जीभ-संवंधी; सुस्वादु, स्वादिष्ठ; शब्द करनेवाला। पु० आस्वादन करना; शब्द करना।

रासना–स्त्री० दे० 'रास्ना'।

रासभ–पु० (सं०) गधा।

रासभी–स्त्री० (सं०) गधी।

रासविहारी घोष–पु० वंगालके सुख्यात विधिज्ञ जिन्होंने कलकत्ता

विश्वविद्यालयको भारी रकम दानमें दी थी (१८४५-१९२१) ।

रासायन–वि० (सं०) रसायन-संबंधी; रसायनका ।

रासायनिक–वि० (सं०) रसायनशास्त्र या तत्त्व-संबंधी । पु० रसायनशास्त्री । **–परीक्षक**–पु० (केमिकल एग्ज़ामिनर) मिलावट या बनावट आदिका पता लगानेकी दृष्टिसे किसी वस्तुके रासायनिक तत्त्वोंका विश्लेषण करनेवाला । **–शाला**–स्त्री० रसायनशास्त्र, तत्त्वविषयक प्रयोग, परीक्षाका स्थान ।

रासि–स्त्री० दे० 'राशि' ।

रासिख़–वि० (अ०) पक्का; मजबूत, पायदार; विश्वसनीय; खालिस, खरा ।

रासी†–स्त्री० रद्दी, निकृष्ट शराव (तीसरी बार खींची हुई); सज्जी । वि० नकली, खराब (रासी तार) ।

रासु*–वि० ठीक; सीधा ।

रासेरस–पु० (सं०) रासविहार; क्रीडा; उत्सव; हास्यविनोद; गोष्ठी; शृंगार ।

रासेश्वरी–स्त्री० (सं०) राधा ।

रासो–पु० डिंगल भाषामें लिखित काव्यग्रंथ (इसमें किसी राजाका चरित्र, युद्ध, वीरता, प्रेम-विषयक वर्णन रहता है–जैसे पृथ्वीराज रासो, खुमान रासो, बीसलदेव रासो इ०) ।

रास्त–वि० (फा०) उचित; अनुकूल, मुआफिक; दाहिना, दाहिनी ओरका; दुरुस्त, ठीक, सही; सोधा; सच्चा; नेक । **–गो**–वि० उचित, सत्य बोलनेवाला । **–बाज़**–वि० सच्चा, ईमानदार । **–बाज़ी**–स्त्री० सचाई, ईमानदारी ।

रास्ता–पु० (फा०) राह; चाल, प्रथा; उपाय । मु० **–कटना** –मंजिल, रास्ता तय होना । **–काटना**–चलनेवालेके आगे होकर एक ओरसे दूसरी ओर निकल जाना (अपशकुनसूचक–बिल्ली आदिके लिए प्रयुक्त) । **–देखना**–बाट जोहना, प्रतीक्षा करना । **–बताना**–टालना, हटाना । **–(स्ते) पर लाना**–ठीक करना; उचित मार्गपर लाना, सुमार्गपर चलाना ।

रास्ना, रास्निका–स्त्री० (सं०) एक कंद, गंधनाकुली, घोड़रासन; एक ओषधि, एलापर्णी; रुद्रकी प्रधान पत्नी ।

रास्प–पु० (सं०) घृतपात्र (महाकालके लिए) ।

रास्य–पु० (सं०) कृष्ण ।

राह*–पु० दे० 'राहु' । स्त्री० (फा०) रास्ता, बाट, मार्ग; रीति-रिवाज, प्रथा । **–ख़र्च**–पु० मार्गव्यय । **–गीर**–पु० पथिक; मुसाफिर । **–चबैनी**†–स्त्री० स्वर्गके मार्गमें मृतात्माकी तृप्तिके उद्देश्यसे किया जानेवाला बेसनके लड्डू आदिका दान; अक्षय तृतीयाको दिया जानेवाला बेसनके लड्डू, चनेका भूंजा, पानी भरा झंझर, पंखे आदिका दान । **–चलता**–पु० रास्ता चलनेवाला; पथिक; साधारण आदमी; अजनबी । **–चाह**–स्त्री० रंग-ढंग । **–चौरंगी**–पु० चौरस्ता, चौमुहानी । **–ज़न**–पु० लुटेरा, डाकू । **–ज़नी**–स्त्री० लूट, डकैती । **–दानी**–स्त्री० पारपत्र, 'पासपोर्ट' । **–दारी**–स्त्री० राह, सड़कका महसूल, कर; चुंगी । **–(०का परवाना**–आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी मार्गसे जाने, माल ले जानेका अधिकार दिया गया हो, परवाना राहदारी) । **–बर** –पु० मार्गप्रदर्शक । **–बरी**–स्त्री० मार्गप्रदर्शन । **–रस्म,–रीति** –स्त्री० व्यवहार, लेन-देन; परिचय । **–(हे) ख़ुदा**–(अ०) खुदाके लिए, खुदाके नामपर । स्त्री० ईश्वर-प्राप्तिका साधन, मार्ग । मु० **–ताकना,–देखना**–प्रतीक्षा करना । **–पड़ना***–लूट, डाका पड़ना । **–पूछना**–रास्ता मालूम करना । **–बायन होना**–राह अलग होना । **–लगना**–काम देखना; रास्ते जाना ।

राहड़†–पु० एक घटिया कंवल ।

राहत–स्त्री० (अ०) आराम, चैन, आसूदगी, सुख, करार ।

राहना†–स० क्रि० चक्कीके पाटों या रेती आदिको खुरदरा करना ।

राहर†–पु० अरहर ।

राहा†–पु० चक्कीका नीचेका पाट बैठानेके लिए बनाया हुआ मिट्टीका चबूतरा ।

राहि*–स्त्री० राधा ।

राहित्य–पु० (सं०) रहित होनेका भाव, अभाव, न होना ।

राहिन–पु० (अ०) रेहन, बंधक रखनेवाला ।

राहिम–वि० (अ०) रहम करनेवाला ।

राही*–स्त्री० राधा । पु० यात्री, मुसाफिर । मु० **–करना**–टालना, चलता करना । **–होना**–चल देना ।

राहु*–पु० एक मछली, रोहू–'हना राहु अरजुनके बाना'–प० ; (सं०) त्याग; छायारूप अंधकार; नौ ग्रहोंमेंसे एक, विप्रचित्ति और सिंहिकाका पुत्र (समुद्रमंथनके बाद अमृत-वितरणके समय इसने भी छिपकर अमृतका पान कर लिया था । यह भेद सूर्य-चंद्रने मोहिनी (विष्णु)से खोल दिया जिसपर विष्णुने इसे चक्रसे मारा । फलतः इसके सिर और धड़ अलग हो गये, पर यह मरा नहीं । तभीसे सूर्य-चंद्रसे वैरशोधनके लिए यह दोनोंको ग्रसता है जिससे सूर्य-चंद्र-ग्रहण होता है—पु०) । **–ग्रसन,–ग्रास,–दर्शन,– सूतक, –स्पर्श**–पु० ग्रहण, उपराग, सूर्य-चंद्रका राहु द्वारा ग्रस्त होना । **–च्छत्र**–पु० आदी, अदरक । **–भेदी (दिन्),–मूर्द्धभिद्**–पु० विष्णु । **–माता (तृ)**–स्त्री० सिंहिका । **–रत्न**–पु० गोमेद मणि ।

राहुल–पु० (सं०) यशोधरासे उत्पन्न गौतमबुद्ध का पुत्र ।

राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट–पु० (सं०) लहसुन ।

रिंखण–पु० (सं०) दे० 'रिंगण' ।

रिंग–स्त्री० (अं०) अँगूठी, छल्ला; गोल बड़ी चूड़ी; बेंत इत्यादिका चक्र; घेरा, मंडल । **–मास्टर**–पु० सरकसके बीचकी घिरी हुई भूमिमें घोड़े आदि जानवरोंसे तरह-तरहके काम लेनेवाला कर्मचारी ।

रिंगण–पु० (सं०) रेंगना, दबकर धीरे-धीरे चलना; सरकना, फिसलना; डिगना, विचलित होना ।

रिंगन*–स्त्री० दे० 'रिंगण' ।

रिंगनी†–स्त्री० मध्य प्रदेशमें होनेवाली एक तरहकी ज्वार ।

रिंगल†–पु० एक पहाड़ी बाँस ।

रिँगाना*–अ० क्रि० रेंगना, धीरे-धीरे चलना । स० क्रि० घुमाना-फिराना, धीरे-धीरे चलाना; परिश्रमपूर्वक दौड़ाना (बच्चोंके लिए) ।

रिँगावना*–स० क्रि० दे० 'रिँगाना' ।

रिंगिन†–स्त्री० जहाजके मस्तूलमें बाँधनेकी रस्सी ।

रिंद–पु० (फा०) धार्मिक बंधनोंको न माननेवाला, स्वच्छंद, मनमौजी आदमी–'मनसोन या जगत् माँहि रिंद है'–सुंद० ।

रिंदा†–वि० उद्धत, निरंकुश ।

रिअना†–पु० एक तरहका कीकर ।

रिआयत–स्त्री० (अ०) रहम, नरमी; बचाव, हिफाजत; मिहरबानी, ध्यान, खयाल; साधारण नियमोंकी कड़ाई छोड़कर, दया, कृपापूर्ण बरताव करना; लिहाज, तरफदारी ।

रिआयती–वि० रिआयत किया हुआ । **–रुख़सत**–स्त्री० ग्यारह महीने काम करनेके बाद एक महीनेके लिए सवेतन मिलनेवाली छुट्टी ।

रिआया–स्त्री० (अ०) ('रअय्यत'का बहु०, उर्दू में एकवचन) प्रजा ।

रिकवँछ†–स्त्री० बेसन या उरदकी पीठी और अरुईके पत्तों आदिसे बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।

रिकशा–पु० (अं०) दो पहियोंकी एक छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचता है; साइकिलके ढंगकी गाड़ी जिसमें तीन पहिये होते हैं ।

रिकसा†–स्त्री० लीख ।

रिकाब–स्त्री० दे० 'रकाब' ।

रिकाबी–स्त्री० दे० 'रकाबी' ।

रिकेट्स–पु० (रिकेट्स) बच्चोंका सूखा रोग जो आहारमें विटैमिन-डीकी कमीके कारण उत्पन्न हो जाता है । इसमें शरीरकी हड्डियाँ दृढ़ नहीं होने पातीं ।

रिक़्क़त–स्त्री० (अ०) पतलापन; रोना; वीर्य पतला होना; रोना; दया, कृपा ।

रिक्त–वि० (सं०) शून्य, खाली (जैसे–रिक्तघट, रिक्तहस्त); निर्धन । पु० जंगल । **–कुंभ**–पु० रिक्तघट (की ध्वनि), निरर्थक भाषा, दुर्बोध्य भाषा । **–भांड**–पु० खुक्खा बरतन । **–स्थान**–पु० (वैकेंसी) दो या अधिक स्थानोंके बीचकी खाली जगह; दे० 'रिक्ति' । **–हस्त**–वि० निर्धन; खाली हाथ ।

रिक्तता–स्त्री० (सं०) शून्यता, खाली होना; (वैकेंसी) किसी पद, नौकरी या स्थानका खाली होना, किसी कार्यालय आदिमें कोई जगह (पद) रिक्त होना।

रिक्ता–स्त्री० (सं०) चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियाँ जो मांगलिक कार्योंके लिए निषिद्ध हैं।

रिक्तार्क–पु० (सं०) रविवारको पड़नेवाली रिक्ता तिथि।

रिक्ति–स्त्री० (वैकेंसी) वह पद या स्थान जिसपर अभी किसी अधिकारी या कार्यकर्ताकी नियुक्ति न हुई हो; रिक्तता, दे० 'रिक्त-स्थान'। **–पूरक**–पु० (फिलर) रिक्त स्थानको भरनेवाली वस्तु।

रिक्थ–पु० (सं०) उत्तराधिकारमें प्राप्त धन; (एस्टेट) भूसंपत्ति, धन; (एसेट्स) कारबारमें लगी वह पूंजी जो संपत्ति, सामान आदिके रूपमें हो। **–ग्राही(हिन्)**–वि० रिक्थ ग्रहण करनेवाला (पुत्र आदि)। **–पत्र**–पु० (विल) वह पत्र जिसमें रिक्थ (अर्थात् उत्तराधिकारमें मिलनेवाले धन)के अमुक-अमुक प्रकारसे बँटवारेके संबंधमें इच्छा प्रकट की गयी हो, इच्छापत्र। **–हारी(रिन्)**–पु० उत्तराधिकारमें धन पानेवाला व्यक्ति; मामा।

रिक्थी(थिन्)–पु० (सं०) दे० 'रिक्थहारी'।

रिक्ष–पु० दे० 'ऋक्ष'। **–पति**–पु० दे० 'ऋक्षपति'।

रिक्षा–स्त्री० (सं०) लीख, जूंका अंडा; त्रसरेणु।

रिक्शा–पु० दे० 'रिकशा'।

रिखभ*–पु० दे० 'ऋषभ'।

रिखि*–पु० ऋषि।

रिग*–पु० दे० 'ऋक्'।

रिगाना†–स० क्रि० चिढ़ाना।

रिचा*–स्त्री० दे० 'ऋचा'।

रिचीक*–पु० दे० 'ऋचीक'।

रिच्छ–पु० भालू।

रिजक़–पु० (अ०) खूराक; रोजी, जीविका; खाना–'तेरो तो रिजक तेरे घर बैठे आइहै'–सुंद०।

रिज़र्व–वि० (अं०) खास किया हुआ; विशेष प्रयोजनके लिए रक्षित, निश्चित किया हुआ; अंतमें प्रयोगके लिए सुरक्षित।

रिज़ल्ट–पु० (अं०) फल, नतीजा; परीक्षाफल।

रिज़वान–पु० (अ०) बिहिश्त, स्वर्ग; बिहिश्तका दारोगा; बरकत; रजा।

रिज़ाला–वि० (अ०) रजील, पाजी, कमीना।

रिजीली*–स्त्री० निर्लज्जता।

रिजु–वि० दे० 'ऋजु'।

रिज़्क़–पु० (अ०) दे० 'रिज़क़'।

रिझकवार*–पु० रीझनेवाला; विशेषता या गुणपर प्रसन्न होनेवाला।

रिझवना–स० क्रि० दे० 'रिझावना'।

रिझवार*, **रिझवैया**–पु० (गुण, विशेषता, रूप आदिपर) प्रसन्न होनेवाला; अनुरागी, प्रेमी–'रीझत नहिं रिझवार वह बिना हियेके साँच'–रतनहजारा।

रिझाना–स० क्रि० अपने ऊपर किसीको प्रसन्न या तुष्ट करना; लुभाना, मोहित करना।

रिझायल*–वि० प्रसन्न होने, रीझनेवाला।

रिझाव–पु० प्रसन्न होना, रीझना।

रिझावना*–स० क्रि० दे० 'रिझाना'।

रिझौना*–वि० रीझनेवाला।

रिटर्निंग अफ़सर–पु० (अं०) चुनावके समय मतकी गणना करके फलकी घोषणा करनेवाला अधिकारी।

रिटायर–वि० (अं० 'रिटायर्ड') जो कार्यसे अवसर ग्रहण कर चुका हो, अवकाशप्राप्त, पेंशनयाफ्ता।

रिण–पु० ऋण।

रिणवास*–पु० रनिवास।

रिणाई–स्त्री० ऋणी (रासो)।

रित, रितु*–स्त्री० दे० 'ऋतु'। **–राज**–पु० वसंत। **–वंती**–वि० स्त्री० ऋतुमती या रजस्वला (स्त्री)।

रितुसारी–पु० एक तरहका चावल।

रितना*–अ० क्रि० खाली होना।

रितवना*–स० क्रि० खाली करना।

रितौना*–स० क्रि० दे० 'रितवना'।

रिद्धि*–स्त्री० दे० 'ऋद्धि'। **–सिद्धि**–स्त्री० दे० 'ऋद्धि-सिद्धि'।

रिध–स्त्री० रिद्धि।

रिधम–पु० (सं०) वसंत; प्रेम।

रिन*–पु० दे० 'ऋण'। **–बंधी**–वि० कर्जदार।

रिनिआँ, रिनियाँ*–वि० ऋणी।

रिनी†–वि० ऋणी, कर्जदार।

रिप–पु० (सं०) शत्रु; हिंसा; पृथ्वी।

रिपटना†–अ० क्रि० रपटना, फिसलना, खिसलना–'चंद्रमाकी रिपटती हुई झिलमिल'–मृग०।

रिपु–पु० (सं०) शत्रु, वैरी; लग्नसे छठा स्थान; ध्रुवका पौत्र, श्लिष्टिका पुत्र। **–घाती(तिन्)**,**–घ्न**,**–सूदन**–वि० शत्रुओंका नाशक। पु० शत्रुघ्न।

रिपुता–स्त्री० (सं०) शत्रुता, वैर।

रिपोर्ट–स्त्री० (अं०) सूचनार्थ घटनाविशेषका विस्तृत वर्णन; प्रतिवेदन; कार्यका विवरण (संस्था, आंदोलन, उत्सव, आदिका); ज्ञातव्य बातोंका विवरण (वस्तु, व्यक्ति आदिके विषयमें)।

रिपोर्टर–पु० (अं०) संवाददाता (समाचारपत्रका); सभा-समितिका व्याख्यान, विवरण लिखनेवाला; अदालत, कौंसिल आदिकी रिपोर्ट लिखनेवाला सरकारी आदमी।

रिपोर्ताज–पु० (अं०) किसी घटना, समारोह आदिका, अपनी विशिष्ट आन्तरिक प्रतिक्रियाओं सहित, दिया गया साहित्यिक विवरण।

रिप्र–पु० (सं०) पातक, पाप; कालुष्य। वि० नीच। **–वाह**–वि० पापनाशक।

रिफ़ार्म–पु० (अं०) सुधार, संस्कार, दोष या त्रुटि दूर करना।

रिफ़ार्मर–पु० (अं०) समाज-सुधारक।

रिफ़ार्मेशन–स्त्री० (अं०) सुधार, संशोधन (ईसाई मतका वह सुधार जिसका परिणाम प्रोटेस्टेंट मत है)।

रिबन–(अं०) पु० केश बाँधनेकी पतली पट्टी; फीता, रेशमी पट्टी।

रिभु–पु० दे० 'ऋभु'।

रिमझिम–स्त्री० फुहार पड़ना, छोटी-छोटी बूँदें पड़ना।

रिमाइंडर–पु० (अं०) याददिहानी, याददास्त।

रिमार्क–पु० (अं०) राय, मत प्रकट करना।

रिमिका–स्त्री० काली मिर्चकी बेल।

रिया–स्त्री० (अ०) दिखावा, बनावट, दुरंगी, मक्कारी। **–कार**–वि० मक्कार। **–कारी**–स्त्री० मकर, फरेब (करना, होनाके साथ)।

रियाई–वि० (अ०) मक्कार।

रियाज़–पु० (अ०) बाग; 'रोजा'का बहु०; दे० 'रियाजत'। मु० **–मारना**–परिश्रम करना; व्यायाम करना।

रियाज़त–स्त्री० (अ०) मिहनत, मसक्कत; अभ्यास; व्यायाम; मजदूरका पेशा।

रियाज़ी–स्त्री० (अ०) गणित (अंक, बीज़, रेखा ग०)। † वि० मेहनती; कसरती।

रियायत–स्त्री० दे० 'रिआयत'।

रियायती–वि० दे० 'रिआयती'। **–छुट्टी**–स्त्री० दे० 'रिआयती रुखसत'।

रियासत–स्त्री० (अ०) राज, शासन, हुकूमत; रईसकी हुकूमतमें रहनेवाला इलाका; रईस होना, अमीरी।

रियासती–वि० रियासतका; रियासत-संबंधी।

रियाह–स्त्री० (अ०) हवाएँ; अफरा, पेटकी वायु।

रिरंसा–स्त्री० (सं०) रमण, विहार या संभोगकी इच्छा।

रिरंसु–वि० (सं०) रमण, विहार या संभोगका इच्छुक।

रिर*–स्त्री० जिद, हठ।

रिरना†–अ० क्रि० दीनता प्रकट करना, गिड़गिड़ाना।

रिरियाना–अ० क्रि० दे० 'रिरना'।

रिरिहा†–पु० गिड़गिड़ाकर, रट लगाकर माँगनेवाला ।

रिरी–स्त्री० (सं०) पीतल ।

रिलना*–अ० क्रि० घुसना, पैठना; मिल जाना, एक हो जाना; भरभराकर एक ओरको गिर पड़ना ।

रिलीफ़–पु० (अं०) सहायता, साहाय्य (दीन-दुखियों, पीड़ितोंके लिए) ।

रिवाज–पु० (अ०) रीति, प्रथा, चलन ।

रिवायत–स्त्री० (अ०) दूसरेके शब्द दुहराना, दूसरेकी बातकी नकल; किस्सा, कहानी; हदीस, इस्लामी परंपरा; तहरीरी फतवे ।

रिवाल्वर–पु० (अं०) एक तरहका तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ भरी और एक-एक कर छोड़ी जाती हैं ।

रिव्यू–स्त्री० (अं०) नवप्रकाशित पुस्तककी संक्षिप्त आलोचना; आलोचना लेख (किसी पुस्तकके विषयमें); अनेक विषयोंपर विचार प्रस्तुत करनेवाली पत्रिकाएँ (जैसे–माडर्न रिव्यू, इंडियन रिव्यू); नजरसानी, दिये हुए फैसलेपर पुनर्विचार (अदालत) ।

रिश्ता–पु० (फा०) संबंध, नाता । **–(श्ते)दार**,–पु० संबंधी । **–दारी**–स्त्री० संबंध । **–मंद**–पु० रिश्तेदार । **–मंदी**–स्त्री० रिश्तेदारी ।

रिश्य–पु० (सं०) मृग ।

रिश्वत–स्त्री० (अ०) लाँच, घूस, उत्कोच, नियमविरुद्ध काम करानेके लिए किसीको दिया जानेवाला धन । **–ख़ोर**–वि०, पु० घूस खानेवाला । **–ख़ोरी**–स्त्री० घूस लेना ।

रिषभ–पु० दे० 'ऋषभ' ।

रिषि–पु० दे० 'ऋषि' ।

रिषीक–पु० (सं०) शिव । वि० हानिकारक ।

रिष्ट–पु० (सं०) मंगल; उन्नति; अशुभ; हानि; पाप; दुर्भाग्य; नाश; न होना । वि० घायल; बरबाद, नष्ट; * प्रसन्न; मोटाताजा ।

रिष्टि–स्त्री० (सं०) अशुभ; खड्ग ।

रिष्यमूक–पु० (सं०) एक पहाड़ (इसीपर राम-सुग्रीवकी मैत्री हुई थी) ।

रिस–स्त्री० क्रोध, कोप । मु० **–मारना**–क्रोधको दबाना, गुस्सा पी जाना ।

रिसना–अ० क्रि० नन्हें-नन्हें छेदोंसे तरल द्रव्य (पानी, तेल, घी आदि) का निकलना ।

रिसवाना†–स० क्रि० दे० 'रिसाना' ।

रिसहा*–वि० क्रोधी, बात-बातपर बिगड़नेवाला, चिड़चिड़ा ।

रिसहाया*–वि० कुपित, क्रुद्ध ।

रिसान–पु० तानेके सूतोंको साफ करना ।

रिसाना*–अ० क्रि० क्रुद्ध, नाराज होना । स० क्रि० किसीपर क्रोध करना ।

रिसानी*–स्त्री० क्रोध–'घोर धार भृगुनाथ रिसानी'–रामा० ।

रिसाल†–पु० अन्य स्थानोंसे वसूल करके राजधानी भेजा जानेवाला कर । **–दार**–पु० दे० क्रममें ।

रिसालत–स्त्री० (अ०) पैगंबरी ।

रिसालदार–पु० (फा०) रिसाले, घुड़सवार सेनाका अफसर; रिसाल, राजकर ले जानेवालोंका मुख्य संचालक, चढ़नदार ।

रिसाला–पु० (अ०) छोटी किताब; पत्र (मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक आदि); सौ सवारोंका दस्ता; अश्वारोही सेना ।

रिसि*–स्त्री० दे० 'रिस' ।

रिसिआना, रिसियाना*–अ० क्रि० क्रुद्ध, कुपित होना । स० क्रि० किसीपर बिगड़ना, क्रोध करना ।

रिसिक–स्त्री० खड्ग, तलवार ।

रिसौंहा*–वि० किंचित् कुपित, क्रुद्ध ।

रिस्टवाच–स्त्री० (अं०) कलाईघड़ी ।

रिहड़ी–स्त्री० रेतीली जमीन ।

रिहन–पु० (अ०) गिरवी; गिरवी रखना, किसीको (माल, जमीन आदि) कोई चीज देकर ऋण लेना । **–नामा**–पु० रेहनकी दस्तावेज ।

रिहर्सल–पु० (अं०) काम ठीक ढंगसे तथा ठीक समयपर करनेके पहले उसका अभ्यास, तैयारी करना; नाटकके अभिनयका पूर्वाभ्यास ।

रिहल–स्त्री० (अ०) पोथी रखकर पढ़नेके लिए काठकी बनी एक प्रकारकी खुलने और बंद होनेवाली तख्ती ।

रिहलत–स्त्री० (अ०) रवानगी, कूच; मौत (करना, होनाके साथ) ।

रिहा–वि० (फा०) छूटा हुआ, मुक्त (बंधन, कारा आदिसे); उबरा, बचा हुआ (संकट आदिसे) ।

रिहाई–स्त्री० मुक्ति, छुटकारा ।

रींधना–स० क्रि० पकाना, उबालना, राँधना ।

री–अ० एरी, अरी (सखियों आदिके लिए संबोधन) । स्त्री० (सं०) क्षरण, टपकना; गति; वध; शब्द ।

रीगन†–पु० भादों-कुआरमें होनेवाला धान ।

रीगना†–अ० क्रि० चिढ़ना ।

रीछ–पु० भालू । **–पति**,**–राज**–पु० जामवंत ।

रीज्या–स्त्री० (सं०) घृणा; भर्त्सना, निंदा ।

रीझ–स्त्री० रीझने, प्रसन्न होने या मोहित होनेकी क्रिया ।

रीझना–अ० क्रि० प्रसन्न होना; मुग्ध, मोहित होना; † चुरना, पकना–'एकपर रीझे उर्दा भात'–ग्राम० ।

रीठ*–स्त्री० तलवार; युद्ध । वि० खराब; अशुभ ।

रीठा†–पु० चूना बनानेके लिए कंकड़ फूँकनेका भट्ठा; (सं०) करंज; करंजकी जातिका एक वृक्ष; फेनिल (इसके फलको भिगोकर मलनेसे फेन निकलता है जिससे ऊनी कपड़े साफ किये जाते हैं) । **–करंज**–पु० रीठा नामका पेड़ ।

रीठी–स्त्री० दे० 'रीठा' ।

रीढ़–स्त्री० मेरुदंड, गर्दनसे कटितक जानेवाली एक अस्थि-शृंखला; आधारभूत अंग या तत्त्व । **–रज्जु**–स्त्री० (स्पाइनल कार्ड) गरदनके पिछले भागसे कमर तक रीढ़की हड्डीके साथ फैली एक मोटी नस ।

रीढक–पु० (सं०) रीढ़ ।

रीढा–स्त्री० (सं०) अवज्ञा ।

रीण–वि० (सं०) क्षरित, स्रुत, चुआ, टपका हुआ ।

रीत–स्त्री० दे० 'रीति' ।

रीतना*–अ० क्रि० रिक्त, खाली होना ।

रीता–वि० रिक्त, शून्य, खाली ।

रीति–स्त्री० (सं०) क्षरण, झरना, टपकना; ढंग, ढब, प्रकार, तरीका; रवाज, चलन, परिपाटी; नियम, कायदा; विशिष्ट पदरचना जिसके कारण ओज, माधुर्य, प्रसादकी स्थिति हो (इसके तीन भेद हैं–वैदर्भी, गौडी और पांचाली–सा०); पीतल; स्वभाव; गति; प्रशंसा, स्तुति; मंडूर, लोहेका मैल; जले सोनेका मैल । **–काल**–पु० हिंदी साहित्यका वह काल जब रीतिग्रंथ लिखनेकी विशेष प्रवृत्ति थी (१६ वीं से १९ वीं सदीतक) । **–काव्य**–काव्यशास्त्रके नियमोंको ध्यानमें रखकर लिखा गया काव्य; हिन्दीका उत्तर मध्ययुगीन काव्य । **–ग्रंथ**–पु० नायिका-भेद, नखशिख, बारहमासा, अलंकार आदिका विवेचन करने तथा उनके उदाहरण प्रस्तुत करनेवाली रचना । **–पुष्प**–पु० कुसुमांजन । **–वाद**–पु० (फार्मलिज्म) वह मत कि काव्य संबंधी परम्परागत रीतियोंका पालन होना चाहिये ।

रीतिक–पु० (सं०) पुष्पांजन ।

रीतिका–स्त्री० (सं०) पीतल; जस्तेका भस्म ।

रीम–स्त्री० (अं०) बीस दस्ते कागजकी गड्डी जिसमें प्रायः ५०० ताव होते हैं; † पीब, मवाद; तलछट ।

रीर–स्त्री० दे० 'रीढ़' ।

रीरी–स्त्री० (सं०) पीतल ।

रीश्माँ–स्त्री० (फा०) रस्सी, डोरी ।

रीषमूक*–पु० दे० 'रिष्यमूक' ।

रीस–स्त्री० दे० 'रिस'; * डाह; स्पर्धा, बराबरी–'देवन सीस चढाय कौन तव रीस करैगो'–दीनदयाल ।

रीसना*–अ० क्रि० क्रुद्ध, खफा होना ।

रीसा, रीहा–स्त्री० एक झाड़ी, वनरीहा ।

रीह–स्त्री० (अ०) हवा; गठिया ।

रुंज*–पु० एक प्रकारका बाजा ।

रुंटगेन–पु० (दी रुंटगेन) नाभिकीय विकिरण द्वारा उद्भासनका मात्रक । एक रुंटगेन उतनी एक्सकिरण मात्रा या गामा किरण मात्राको कहेंगे जो एक घन सेमी शुष्क वायुमें आयनोंकी इतनी संख्या उत्पन्न कर दे कि उनका कुल विद्युत् आवेश एक स्थिर-विद्युत्-मात्रक (इलेक्ट्रो-स्टैटिकयूनिट)के वरावर हो ।

रुंड–पु० (सं०) धड़ जिसमें सिर न हो, कबंध; विना हाथ-पाँवका शरीर ।

रुंडिका–स्त्री० (सं०) रणभूमि, लड़ाईका मैदान; विभूति; दूतिका; देहरी ।

रुँदवाना–स० क्रि० पैरोंसे कुचलवाना, खुँदवाना, रौंदवाना ।

रुंधती*–स्त्री० अरुंधती, वसिष्ठकी पत्नी ।

रुँधना–अ० क्रि० रुकना; मार्ग न मिलनेसे रुकना; फँसना, उलझना; रोक, रक्षाके लिए काँटेदार झाड़ियोंकी वाढ़ लगना, घिरना; किसी काममें लगना ।

रु–पु० (सं०) ध्वनि, शब्द, रुत; वध; गति । * अ० 'अरु'का संक्षिप्त रूप, और ।

रुआँ*–पु० रोआँ, शरीरके छोटे बाल; † एक आनेका चतुर्थांश, पुराना पैसा ।

रुआघास–स्त्री० एक सुगंधित घास; इस घाससे सुवासित तेल ।

रुआना*–स० क्रि० दे० 'रुलाना' ।

रुआब†–पु० दवदबा, धाक, रोब; आतंक, भय ।

रुआली–स्त्री० रुईकी पोली बत्ती, पूनी ।

रुईं–स्त्री० एक पेड़ जिसकी छाल, पत्तियाँ रँगाईके काम आती हैं ।

रुई–स्त्री० कपासकी ढोंढ़ी, कोशका भीतरी घूआ, रेशा, तूल (ढोंढ़ी पक जानेपर फट जाती है और रुई वाहर दिखाई देती है, फिर इसे इकट्ठा करते हैं । रुई मोटी, वारीक कई तरहकी होती है, लंबे रेशेकी रुई अच्छी समझी जाती है) । वि० रुईके समान नरम, मुलायम (कोई चीज) । **–दार**–वि० जिसमें रुई भरी हो । मु० **–का गाला**–रुईके गाले-सा सफेद, कोमल । **–की तरह तूमना**–नोचना; वहुत मारना-पीटना; उखाड़-पछाड़ करना, गालियाँ देना । **–की तरह धुनना**–खूब मारना-पीटना । **–सा**–रुईके समान नरम ।

रुकना–अ० क्रि० थमना, ठहरना; आगे न वढ़ना; कार्यमें वाधा होना; आगा-पीछा करना; बंद होना (साथियों विना काम रुका है); क्रम टूटना (वाढ़का रुकना); स्तंभन, वीर्यका गिरनेसे रुकना (वाजारू) । **रुक-रुककर**–ठहर-ठहरकर ।

रुकमंगद*–पु० दे० 'रुक्मांगद' ।

रुकमंजनी–स्त्री० सजावटके लिए बागमें लगाया जानेवाला एक पौधा; रुक्मांजनीका फूल ।

रुकमिनी–स्त्री० दे० 'रुक्मिणी' ।

रुकरा†–पु० एक तरहकी ईख ।

रुकवाना–स० क्रि० रोकनेका काम कराना ।

रुकाव–पु० अवरोध, अटकाव; मलावरोध, कब्ज; स्तंभन ।

रुकावट–स्त्री० रोक, वाधा ।

रुकुम*–पु० दे० 'रुक्म' ।

रुकुमी*–पु० दे० 'रुक्मी' ।

रुक्(च्)–स्त्री० (सं०) शोभा, कांति; इच्छा; आनंद ।

रुक्(ज्)–स्त्री० (सं०) दे० 'रुजा' । **–(क्) प्रतिक्रिया**–स्त्री० चिकित्सा ।

रुक़्क़ा–पु० (अ० 'रुक़्क़अ़') पुर्जा, चिट, छोटा पत्र; निमंत्रणपत्र; हुंडी, कर्जदारकी ओरसे महाजनको लिखा हुआ कागज ।

रुक्ख*–पु० रुख, पेड़ ।

रुक्म–पु० (सं०) सोना; लोहा; धतूरा; नागकेशर; रुक्मिणीका एक भाई । वि० चमकीला । **–कारक**–पु० सुनार । **–केश**–पु० विदर्भराज भीष्मकका पुत्र । **–पाश**–पु० सूतका फंदा, जिसकी सहायतासे गहने आदि पहने जाते हैं । **–पुर**–पु० एक नगर, पुराणानुसार गरुडका वासस्थान । **–रथ**–पु० द्रोणाचार्य; भीष्मकका पुत्र; शल्यका पुत्र । **–वाहन**–पु० द्रोणाचार्य ।

रुक्मवती–स्त्री० (सं०) एक छंद, चंपकमाला ।

रुक्मांगद–वि० (सं०) सोनेके वाजूबंद पहननेवाला । पु० एक भगवद्भक्त राजा ।

रुक्मांजनी–स्त्री० एक फूलदार पौधा ।

रुक्मि–पु० (सं०) रम्यक और हैरण्यवर्षके बीच स्थित पाँचवाँ वर्ष (जै०) ।

रुक्मिण–स्त्री० दे० 'रुक्मिणी' ।

रुक्मिणी–स्त्री० (सं०) कृष्णकी प्रथम पत्नी जो विदर्भ-नरेश भीष्मककी पुत्री थी (इसका विवाह शिशुपालसे निश्चित था, पर कृष्णने हरण करके इससे विवाह किया) ।

रुक्मी(क्मिन्)–पु० (सं०) भीष्मकका ज्येष्ठ पुत्र, रुक्मिणीका भाई (इससे कृष्णका भारी युद्ध हुआ था जिसमें पराजित होकर यह अपने नगरमें नहीं गया और दूसरा नगर बसाकर वहीं रहने लगा) । **–(क्मि),दर्प,–दारण,–दारी(रिन्),–भिद्**–पु० बलदेव । **–शासन** पु० कृष्ण । **–सेन**– पु० रुक्मिणीका छोटा भाई ।

रुक्ष–वि० (सं०) जो स्निग्ध, चिकना न हो, रूखा; नीरस; कठोर; सूखा; ऊवड़-खावड़ । पु० वृक्ष ।

रुक्षता–स्त्री० (सं०) रूखापन, रुखाई ।

रुख–पु० तृण, घास; "रुख"का समासमें व्यवहृत रूप । **–चढ़वा**–पु० वंदर; भूत (पेड़पर रहनेवाला) ।

रुख़–पु० (फा०) चेहरा, मुख; गाल, कपोल; आकृति, चेहरेका भाव; कृपादृष्टि; मुखाकृतिसे प्रकट होनेवाला भाव; ध्यान; आगेका भाग; एक कल्पित विशाल पक्षी जो हाथीतक को उठा ले जाता है; शतरंजका एक मोहरा । अ० तरफ, ओर; सामने ।

रुख़दार–पु० (फा०) वाजारभाव (घटता हुआ) ।

रुख़सत–स्त्री० (अ०) छुट्टी, तातील; परवानगी, आज्ञा, इजाजत; बिदाई, प्रस्थान, रवानगी; मुहलत, अवकाश ।

रुख़सताना–पु० (फा०) बिदाईके समय दिया जानेवाला धन, बिदाई ।

रुख़सती–वि० जिसे छुट्टी मिली हो । स्त्री० विदाई (दुलहिनकी); बिदाईके समय दिया जानेवाला धन, बिदाई ।

रुख़सार–पु० (फा०) कपोल, गाल ।

रुखा–वि० पार्श्व या रुखवाला ।

रुखाई–स्त्री० रूखापन, रूखा होनेकी क्रिया या भाव; शुष्कता; वेमुरौवती, शीलका त्याग, व्यवहारकी कठोरता ।

रुखान–स्त्री० दे० 'रुखानी' ।

रुखाना*–अ० क्रि० रूखा होना, चिकना न रहना; सूखना । स० क्रि०···की तरफ रुख करना, लगाना ।

रुखानी–स्त्री० वढ़इयोंका एक औजार (जिससे लकड़ी छीलते, काटते और उसमें छेद करते हैं); संगतराशोंकी टाँकी; तेलीका घानी चलानेका औजार ।

रुखावट, रुखाहट–स्त्री० रुखाई ।

रुखिता*–स्त्री० क्रोध करनेवाली नायिका, मानवती ।

रुखिया†–स्त्री० पेड़ोंसे ढकी जमीन ।

रुखुरी†–स्त्री० भुना हुआ चना, चवैना; छोटा पौधा ।

रुखौंहा–वि० रूखा-सा, जो रुखाई लिये हो । (स्त्री० 'रुखौंही' ।)

रुगना†–पु० टपका, एक पशुरोग ।

रुगिया†–वि० दे० 'रोगी' ।

रुग्ण–वि० (सं०) बीमार, अस्वस्थ; झुका हुआ; टेढ़ा; टूटा हुआ ।

रुग्णतावकाश–पु० (मेडिकल लीव) बीमारीके कारण ली गयी छुट्टी ।

रुग्–'रुक्'का समासगत रूप । **–दाह**–पु० (सं०) ज्वर-विशेष, सन्निपात ज्वर (यह बीस दिन रहता है, रोगी बकता है, व्याकुलता, जलन, पेटमें दर्द, प्यास रहा करती है, दुःसाध्य) । **–भय**–पु० रोगका भय । **–भेषज**–पु० रोगकी दवा ।

रुग्मी(मिन्)–पु० (सं०) जंबूद्वीपका एक पर्वत ।

रुच*–स्त्री० दे० 'रुचि' । **–दान**–वि० रुचने, अच्छा लगनेवाला, योग्य । **–रुच***–अ० मनोयोगपूर्वक ।

रुचक–वि० (सं०) स्वादिष्ठ, जायकेदार; रुचिकर । पु० चौकोर

खंभा; घोड़ोंका साज, गहना; नमक; माला; सज्जीखार; काला नमक; निष्क, सोनेका एक प्राचीन सिक्का; वायबिडंग; रोचना; मांगल्य द्रव्य; बिजौरा नीबू; दाँत; कबूतर; दक्षिण दिशा; एक तरहकी इमारत जिसमें तीन ओर छज्जा हो और उत्तरकी ओर बंद हो।

रुचता*–वि० दे० 'रुचित'।

रुचना–अ० क्रि० प्रिय, अच्छा जान पड़ना, पसंद आना।

रुचा–स्त्री० (सं०) दीप्ति, प्रकाश; इच्छा; शोभा, सुंदरता; चिड़ियों (मैना, तोता, बुलबुल आदि)का बोलना।

रुचि–पु० (सं०) एक प्रजापति, रौच्य मुनिके पिता। स्त्री० इच्छा; अनुराग; किसी रचनाको समुचित ढंगसे आस्वादित कर सकनेकी अर्जित संस्कारिता, आस्वादनकी नियामिका प्रवृत्ति; प्रवृत्ति, पसंद; कांति; किरण; शोभा, सुंदरता–'शोभत दंडककी रुचि बनी'–राम०; भूख, खानेकी इच्छा; स्वाद; गोरोचन; आलिंगनका एक प्रकार। **–कर**–वि० प्रिय, अच्छा लगनेवाला; उम्दा, स्वादिष्ठ। **–कारक**–वि० रुचि पैदा करनेवाला; स्वादिष्ठ। **–कारी(रिन्)**–वि० सुस्वादु, स्वादिष्ठ; प्रिय, मनोहर; रुचिकारक। **–धाम(न्)**–पु० सूर्य। **–फल**–पु० नासपाती। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० सूर्य; स्वामी, मालिक। **–वर्द्धक**–वि० रुचि बढ़ाने, पैदा करनेवाला; भूख बढ़ानेवाला।

रुचित–वि० (सं०) इच्छित, मनचाहा। पु० इच्छा; मीठा पदार्थ।

रुचिता–स्त्री० (सं०) रुचि होना; रोचकता; शोभा, सुंदरता; अनुराग; एक छंद, अतिजगतीका एक भेद।

रुचिमती–स्त्री० (सं०) देवकीकी माता, कृष्णकी नानी, उग्रसेनकी पत्नी।

रुचिर–वि० (सं०) चमकीला; सुंदर, मनोहर; मीठा, मधुर; भूख बढ़ानेवाला। पु० मूली; केशर; कुंकुम; लौंग। **–केतु**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–वृत्ति**–पु० एक अस्त्र-निवारण। **–श्रीगर्भ**–पु० एक बोधिसत्त्व।

रुचिरता–स्त्री० रुचिर होनेकी स्थिति; सुंदरता।

रुचिरांजन–पु० (सं०) सहिजन, शोभांजन।

रुचिरा–स्त्री० (सं०) केशर; मूली; लौंग; एक वर्णवृत्त; एक मात्रिक छंद; एक नदी।

रुचिराई*–स्त्री० सुंदरता, मनोहरता।

रुचिष्य–पु० (सं०) मधुर, मीठा खाद्यपदार्थ। वि० जिसे पानेकी इच्छा हो।

रुची–स्त्री० (सं०) दे० 'रुचि'।

रुच्छ*–वि० कठोर (व्यवहारमें); कुपित, क्रुद्ध; रुखा। पु० दे० 'रूख'।

रुच्य–वि० (सं०) पसंद आनेवाला, रुचिकर; खूबसूरत, सुंदर। पु० स्वामी, पति; जड़हन धान; सेंधा नमक; पुष्टिकारक वस्तु; कतक वृक्ष। **–कंद**–पु० सूरन, ओल।

रुज–पु० (सं०) रोग; घाव; कष्ट; भाँग; चमड़ेसे मढ़ा एक प्राचीन बाजा। **–ग्रस्त**–वि० रोगी, जिसे कोई बीमारी हो।

रुजा–स्त्री० (सं०) रोग; कष्ट; भेड़; भंग; थकावट; कोढ़। **–कर**–वि० रोगकारक। पु० कमरख फल; व्याधि। **–सह**–पु० एक वृक्ष, धन्वग।

रुजापह–वि० (सं०) रोग दूर करनेवाला।

रुजार्त–वि० (सं०) रोगसे पीडित, रोगी।

रुजाली–स्त्री० (सं०) रोग, पीड़ाका समूह।

रुजी*–वि० रोगी, बीमार।

रुजू–वि० (अ० 'रजूअ़') प्रवृत्त। पु० किसी ओर जी लगना, झुकाव होना।

रुझना*–अ० क्रि० भरना, पूजना (घाव आदिका); दे० 'अरुझना', 'उलझना'।

रुझनी–स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

रुझान–पु० झुकाव, किसी ओर प्रवृत्त होना।

रुट्(ष्)–स्त्री० (सं०) क्रोध।

रुट*–पु० क्रोध, गुस्सा।

रुठना†–अ० क्रि० दे० 'रूठना'। वि० रूठने-मचलनेवाला

रुठाना–स० क्रि० नाराज, असंतुष्ट करना।

रुणा–स्त्री० (सं०) सरस्वती नदीकी एक शाखा।

रुणित–वि० (सं०) बजता, झनकारता, शब्द करता हुआ।

रुत–पु० (सं०) कलरव, चिड़ियोंका बोलना; ध्वनि, शब्द। *स्त्री० दे० 'ऋतु'।

रुतबा–पु० (अ०) ओहदा, दरजा, मर्तबा; इज्जत, हुरमत; कदर, पाया, प्रतिमान; सीढ़ी, जीना। **–दार**–वि० शरीफ, ऊँचे दरजेका, प्रतिष्ठित। **–शिनास**–वि० पद, रुतबा पहचाननेवाला। **–शिनासी**–स्त्री० रुतबा पहचानना।

रुदंतिका–स्त्री० (सं०) दे० 'रुदंती'।

रुदंती–स्त्री० (सं०) एक छोटा पौधा, संजीवनी, महामांसी। वि० स्त्री० रोती हुई।

रुदथ–पु० (सं०) बच्चा; कुत्ता; मुर्गा।

रुदन–पु० रोदन, रोना, विलाप, क्रंदन।

रुदरा*–पु० 'रुद्राक्ष–'कंठ जाप रुदरा कै मेली'–चंदा०।

रुदराछ*–पु० दे० 'रुद्राक्ष'।

रुदित–वि० (सं०) रोया हुआ; रोता हुआ, जो रो रहा हो। पु० रुदन, क्रंदन।

रुदुव†–पु० अगहनिया धान।

रुदुवा†–पु० चावलका एक भेद।

रुद्ध–वि० (सं०) रोका हुआ; घेरा हुआ; रुका हुआ; मुँदा हुआ; जिसकी गति रोक दी गयी हो। **–कंठ**–वि० जिसका गला रुँध, फँस गया हो और बोलनेमें असमर्थ हो। **–मूत्र**–पु० मूत्रकृच्छ्र, पीड़ाके साथ पेशाब उतरना।

रुद्धक–पु० (सं०) नमक।

रुद्र–पु० (सं०) एक प्रकारके गणदेवता (इनकी संख्या ग्यारह मानी जाती है–अजैकपाद, अहिर्ब्रघ्न, त्वष्टा, विश्वरूपहर, बहुरूप, त्र्यंबक, अपराजित, वृषाकपि, शंभु, कपर्दी और रैवत। इनकी उत्पत्ति सृष्टिमें असफल ब्रह्माके मुखसे मानी जाती है। वेदमें रुद्र शब्द अग्नि, मित्र, वरुण, पूषा, सोम आदिके लिए भी व्यवहृत है); ग्यारहकी संख्या; शिवका रूप-विशेष; विश्वकर्माका पुत्र; एक प्रकारका बाण; आक, मदार; रौद्र रस; आर्द्रा नक्षत्र। वि० रोनेवाला, क्रंदन करनेवाला; चिल्लानेवाला; भयंकर। **–कमल**–पु० रुद्राक्ष। **–कलश**–पु० ग्रहशांतिके समय प्रयोगमें लाया जानेवाला कलश। **–काली**–स्त्री० दुर्गाकी एक विशेष मूर्ति। **–कुंड**–पु० एक तीर्थ (व्रजमें)। **–कोटि**–स्त्री० एक प्राचीन तीर्थ। **–गण**–पु० शिवके अनुचर (इनकी संख्या तीस करोड़ मानी जाती है। ये योगसाधनाके विघ्न दूर करते हैं)। **–गर्भ**–पु० अग्नि। **–ज**–पु० पारा। **–जटा**–स्त्री० ईसरमूल, सुपत्रा, रुद्रा; सौंफ; तीन-चार हाथ ऊँचा एक पौधा (इसके पत्ते तनेकी ओर बड़े और ऊपर क्रमशः छोटे होते जाते हैं, फल लाल, श्वास, कास, हृदयरोगमें उपकारक), सुपत्रा, रुद्राणी, ईश्वरी, नेत्रपुष्पा। **–तनय**–पु० तीसरे कृष्ण (जैन हरिवंश)। **–ताल**–पु० मृदंगका एक ताल। **–नेज**–(हिं०) पु० कार्त्तिकेय। **–पति**–पु० शिव। **–पत्नी**–स्त्री० दुर्गा; अलसी। **–पीठ**–पु० एक तीर्थ (तं०)। **–पुत्र**–पु० बारहवें मनु, रुद्रसावर्णि। **–प्रमोक्ष**–पु० वह स्थान जहाँसे शिवने त्रिपुर राक्षसपर बाणवर्षा की थी। **–प्रिया**–स्त्री० पार्वती; हर्रे। **–बीसी**–स्त्री० दे० 'रुद्रविंशति'। **–भूमि**–स्त्री० श्मशान, मरघट; एक विशेष भूमि (ज्यो०)। **–भैरवी**–स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति। **–यज्ञ**–पु० रुद्रके उद्देश्यसे किया जानेवाला यज्ञ। **–यामल**–पु० भैरव-भैरवीके संवादसे युक्त एक तांत्रिक ग्रंथ। **–रोदन**–पु० सोना। **–रोमा**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका। **–लता**–स्त्री० रुद्रजटा पौधा। **–लोक**–पु० वह लोक जहाँ शिव, रुद्रोंका वास माना जाता है। **–वट**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–वदन**–पु० शिवके पाँच मुँह; पाँचकी संख्या। **–विंशति**–स्त्री० रुद्रबीसी, प्रभवादि ६० वर्षोंमेंसे अंतिम बीस साल। **–वीणा**–स्त्री० एक तरहकी वीणा। **–सावर्णि**–पु० बारहवें मनु। **–सुंदरी**–स्त्री० देवीकी एक मूर्ति। **–सू**–स्त्री० ग्यारह पुत्रोंकी जननी। **–स्वर्ग**–पु० रुद्रलोक। **–हिमालय**–पु० हिमालयकी एक चोटी। **–हृदय**–पु० एक उपनिषद्।

रुद्रक†–पु० रुद्राक्ष।

रुद्रज–पु० पारा। वि० रुद्रसे उत्पन्न।

रुद्रट–पु० (सं०) काव्यालंकार ग्रंथके रचयिता, भट्ट वामुकके पुत्र, रुद्रभट्ट, शतानंद।

रुद्रता–स्त्री०, **रुद्रत्व**–पु० (सं०) रुद्रका भाव या धर्म।

रुद्रवंती–स्त्री० एक वनौषधि।

रुद्रवान्(वत्)–वि० (सं०) रुद्रगणोंसे युक्त। पु० सोम; इंद्र; अग्नि।

रुद्रा–स्त्री० (सं०) रुद्रजटा पौधा; विद्रुमलता, एक गंधद्रव्य।

रुद्राक्रीड–पु० (सं०) श्मशान, मरघट।

रुद्राक्ष–पु० (सं०) एक बड़ा वृक्ष जिसके दानोंकी माला जपनेके लिए परम पवित्र मानी जाती है और शैवोंमें जिसका बहुत आदर है। वि० लाल आँखोंवाला।

रुद्राणी–स्त्री० (सं०) रुद्रपत्नी, पार्वती; रुद्रजटा नामक लता।

रुद्रारि–पु० (सं०) कामदेव।

रुद्रावास–पु० (सं०) शिवका वासस्थान–काशी, कैलास, श्मशान।

रुद्रिय–वि० (सं०) रुद्र-संबंधी; रुद्रका; भयानक। पु० प्रसन्नता, आनंद।

रुद्री–स्त्री० (सं०) रुद्रवीणा।

रुद्रोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

रुद्रोपस्थ–पु० (सं०) एक पर्वत।

रुधिर–पु० (सं०) रक्त, खून, लहू; लाल वर्ण; मंगल ग्रह; एक मणि, दे० 'रुधिराख्य'। वि० लाल रंगका। **–गुल्म**–पु० एक स्त्री-रोग जिसमें पेटमें शूल, दाह होता और गोला-सा घूमता है जिससे गर्भका भी भ्रम हो जाता है। **–पायी(यिन्)**–वि० खून पीनेवाला। (स्त्री० 'रुधिरपायिनी'।) पु० राक्षस। **–पित्त**–पु० रक्तपित्त; नकसीर, रुधिरामय। **–प्लीहा(हन्)**–पु० एक तरहकी पिलही। **–वर्ग**–पु० (ब्लड ग्रूप) मानव शरीरका रुधिर चार प्रमुख वर्गोंमें विभाजित किया जा सकता है; 'ए' वर्ग, 'बी' वर्ग, 'ए बी' वर्ग तथा 'ओ' वर्ग। रक्ताधान क्रियामें ए वर्गके रुधिरवाले मनुष्यके शरीरमें बी वर्गका रुधिर यदि प्रविष्ट कराया जाय तो रक्त-कोश थक्का बाँध लेते हैं, फलस्वरूप रक्तप्रवाह अवरुद्ध हो जाता है, अतः उस मनुष्यकी मृत्यु हो जाती है। 'ओ' वर्गका रुधिर सभी वर्गोंके रुधिरवाले व्यक्तियोंके लिए अनुकूल पड़ता है। इसी प्रकार 'ए. बी.' वर्गके रुधिरवाले व्यक्तिको किसी भी वर्गका रुधिर दिया जा सकता है। समान वर्गके रुधिरवाले व्यक्तियोंके बीच रक्ताधान निरापद रूपसे कराया जा सकता है। **–वृद्धिदाह**–पु० रोगविशेष (रक्तकी अधिकतासे धुआँ-सा निकलना, शरीर और आँखका रंग ताँबे-सा हो जाना, मुँहसे रक्तकी गंध आना)।

रुधिर विज्ञान–पु० (हेमेकॉलॉजी) आधुनिक चिकित्साशास्त्रकी वह शाखा जिसमें रक्तमें निहित और उसमें पैदा होनेवाले कीटाणुओं, विकारोंका अध्ययन होता है।

रुधिराक्त–वि० (सं०) खूनसे भीगा हुआ; रक्त-सा लाल।

रुधिराख्य–पु० (सं०) एक स्वल्प मणि (कहते हैं, हीरा इसीका परिणाम है)।

रुधिरानन–पु० (सं०) मंगलकी वक्र गति (ज्यो०)।

रुधिरामय–पु० (सं०) एक रोग, रक्तपित्त।

रुधिराशन–पु० (सं०) राक्षस। वि० रुधिर पीने, रुधिरसे जीनेवाला।

रुधिराशी(शिन्)–वि० (सं०) खून पीनेवाला।

रुधिरोद्गारी(रिन्)–पु० (सं०) बृहस्पतिके साठ वर्षोंमेंसे सत्तावनवाँ। वि० रुधिर वमन करनेवाला।

रुनझुन–स्त्री० नूपुर आदिकी झनकार।

रुनाई*–स्त्री० अरुणाई, लालिमा।

रुनित*–वि० बजता, झनकार करता हुआ।

रुनी–पु० घोड़ोंकी एक जाति।

रुनुक-झुनुक–स्त्री० नूपुर आदिकी लगातार होनेवाली झनकार।

रुनुझुनु*–स्त्री० नूपुर आदिकी झनकार।

रुनुल–पु० एक प्रकारका बेत।

रुन्नी†–स्त्री० अमरूद।

रुपना–अ० क्रि० जमना, लगाया, गाड़ा या रोपा जाना; अड़ना, हट जाना।

रुपमनी*–वि० स्त्री० रूपवती–'एक सों एक चाहि रुपमनीं'–प०।

रुपया–पु० भारतका मुख्य सिक्का जो धातुसे बनता है; धन-संपदा। **–पैसा**–पु० धन-दौलत। **–वाला**–वि० धनी, अमीर। **मु०–उठाना**–रुपया खर्च करना। **–उड़ाना**–रुपया खर्च, बरबाद करना। **–जोड़ना**–धन बटोरना, संचित करना। **–ठीकरी करना**–अमित व्यय, अनावश्यक खर्च करना। **–पानीमें फेंकना**–पैसा बरबाद करना।

रुपहरा†–वि० दे० 'रुपहला'।

रुपहला–वि० चाँदीके रंगका, चाँदी जैसा। (स्त्री० 'रुपहली'।)

रुपा†–पु० घटिया चाँदी, रूपा।

रुपिका–स्त्री० (सं०) मदार, आक।

रुपैया†–पु० दे० 'रुपया'।

रुपौला†–वि० दे० 'रुपहला'।

रुबाई–स्त्री० (अ०) चार मिसरोंका एक उर्दू-फारसी छंद (प्रथम तीन चरण सानुप्रास होते हैं)। **–एमन**–पु० शालक रागका एक भेद। **–तराना**–पु० रुबाई जिसके चारों चरण सानुप्रास हों।

रुमंच*–पु० दे० 'रोमांच'।

रुमण–पु० (सं०) सौ कोटि वानरोंका यूथपति एक वानर (रामा०)।

रुमण्वान्(वत्)–पु० (सं०) एक ऋषि; नमककी खानवाला एक पर्वत।

रुमांचित*–वि० दे० 'रोमांचित'।

रुमा–स्त्री० (सं०) सुग्रीवकी पत्नी; नमककी एक खान; एक नदी।

रुमाल–पु० दे० 'रूमाल'।

रुमाली–स्त्री० तिकोना लँगोट; मुगदर भाँजने, हिलानेका एक हाथ।

रुमावली*–स्त्री० दे० 'रोमावली'।

रुरना*–अ० क्रि० शोभित होना, छा जाना–'दसननि जोतिजाल मोतीमाल-सी रुरैं'–घन०।

रुराई*–स्त्री० सौंदर्य, शोभा।

रुरु–पु० (सं०) काला हिरन; एक ऋषि; विश्वेदेवोंका एक गण; एक फलदार वृक्ष; एक भैरव।

रुरुआ–पु० बड़ी जातिका एक प्रकारका उल्लू।

रुरुक्षु–वि० रुखा, रुक्ष, जो चिकना न हो।

रुलना†–अ० क्रि० मारा-मारा फिरना, आवारागर्द होना; इधर-उधर फिरना, हिलना-डुलना; दबा रह जाना–'मनकी मसूसैं मन ही में रुलि जाति हैं'–रत्नाकर।

रुलनी–स्त्री० रोहिणीकी तरहकी एक वनस्पति।

रुलाई–स्त्री० रोना; रोनेकी इच्छा या प्रवृत्ति।

रुलाना–स० क्रि० किसीको रोनेमें प्रवृत्त करना; भटकाना, फिराना; बरबाद करना।

रुल्ल, रुल्ला†–स्त्री० वह जमीन जिसकी उर्वरा शक्ति घट गयी हो।

रुवा†–पु० सेमलकी रुई।

रुवाई–स्त्री० दे० 'रुलाई'।

रुवाब–पु० दे० 'रुआब'।

रुवु, रुवुक, रुवूक–पु० (सं०) एरंड वृक्ष।

रुशंगु–पु० (सं०) एक ऋषि, नृषंगु।

रुशना–स्त्री० (सं०) रुद्रकी एक पत्नी।

रुष–पु० (सं०) क्रोध।

रुषा–स्त्री० (सं०) क्रोध, गुस्सा।

रुषान्वित–वि० (सं०) क्रोधसे भरा हुआ।

रुषित–वि० (सं०) क्रुद्ध, कुपित, दुःखी।

रुष्कर–पु० (सं०) कस्तूरी बूटी; भिलावाँ।

रुष्ट–वि० (सं०) क्रुद्ध, कुपित, नाराज।

रुष्टता–स्त्री० (सं०) रुष्ट होनेका भाव, अप्रसन्नता।

रुष्टपुष्ट†–वि० दे० 'हृष्ट-पुष्ट'।

रुष्टि–स्त्री० (सं०) क्रोध, रोष ।

रुसना*–अ० क्रि० दे० 'रूसना' ।

रुसवा–वि० (फा०) निंदित; जलील, लांछित; ख्वार, अपमानित; बदनाम, बेगैरत । * पु० बदनामी । **–ई**–स्त्री० फजीहत; बेइज्जती; ख्वारी ।

रुसा–पु० दे० 'रूसा' ।

रुसित*–वि० रुष्ट, अप्रसन्न ।

रुसूख़–पु० (अ०) पहुँच, रसाई; एतवार; पक्कापन; मजबूती ।

रुसूम–पु० दे० 'रसूम' ।

रुसूल–पु० (अ०) खुदाकी तरफसे पैगाम लानेवाला व्यक्ति, पैगंवर, रसूल ।

रुस्ट*–वि० दे० 'रुष्ट' ।

रुस्त–स्त्री० (फा०) उगना । वि० मजवूत; ताकतवर; दिलेर । **–ख़ेज़**–वि० उगा हुआ ।

रुस्तनी–वि० (फा०) जो उगे; जहाँ कोई चीज उगे ।

रुस्तम–पु० (फा०) फारसका प्रसिद्ध पहलवान, जीलका बेटा । वि० वीर, बहादुर; निर्भीक; छिपा हुआ गुणी । **–(मे)वक्त**–वि० विश्वविजयी, अपने समयका सबसे बड़ा पहलवान । **–हिंद**–वि० हिंदुस्तानका सबसे बड़ा पहलवान ।

रुहक–पु० (सं०) छेद, सूराख ।

रुहठि*–स्त्री० रूठना ।

रुहा–स्त्री० (सं०) दूब; लाजवंती; ककड़ी; अतिवला; मांस-रोहिणी लता ।

रुहिर*–पु० रक्त, लहू, रुधिर ।

रुहेलखंड–पु० रुहेले पठानोंका प्रदेश (अवधके पश्चिम-उत्तरमें वसा) ।

रुहेला–पु० पठानोंकी एक जाति ।

रुँख–पु० रुख, वृक्ष ।

रूँखड़–पु० 'अलख-अलख' कहकर भीख माँगनेवाले भिक्षुक; दे० 'रूख' ।

रूँगटा–पु० दे० 'रोँगटा' ।

रूँगटाली–स्त्री० भेड़ ।

रूँगा–पु० घेलवा ।

रूँदना–स० क्रि० दे० 'रौँदना' ।

रूँध–वि० रुका हुआ ।

रूँधना–स० क्रि० (रक्षाके लिए) काँटेदार पौधों आदिसे घेर देना, वारी या घेरा वना देना; रास्ता बंद कर देना ।

रू–पु० (फा०) चेहरा, मुँह; शक्ल, सूरत; सामनेका हिस्सा, आगा; ऊपरी भाग, सिरा; कारण, वजह; ध्यान; वहाना, हीला, टालमटोल; रुखसार; (समस्त पदोंमें व्यवहृत–जैसे खूबरू, माहरू) । **–ए-ज़मीन**–पु० धरातल, जमीनकी सतह । **– ए-ज़र्द**–पु० पीला चेहरा । वि० लज्जित, शर्मिंदा । **–ए-दाद**–स्त्री० दे० 'रूदाद' । **–ए-सख़न** पु० संकेत, इशारा; संबोधन, खिताव । **–गिरदानी**–स्त्री० मुँह फेरना; वगावत, विद्रोह, अवज्ञा करना । **–गिर्द**–वि० मुँह फेरनेवाला; फरार हो जानेवाला; क्रुद्ध, अप्रसन्न; जिसका भीतर-ऊपर यकसाँ हो (कपड़ा); वेदिमाग, बुद्धिहीन; भीतरी भाग वाहर किया हुआ (कपड़ा) । **–दाद**–स्त्री० गुजरी हुई वातें; समाचार; हाल; विवरण; किस्सा, हालत; अदालती काररवाई; घटना; हादसा, भय; व्यवस्था; मुकदमेका रंग-ढंग । **–नुमाँ**–वि० मुँह दिखानेवाला; जाहिर, प्रकट होनेवाला । **–नुमाई**–स्त्री० मुँह दिखाना; मुँह दिखौआ (वह धन जो दुलहिनको उसके संवंधी मुँह दिखानेके बदलेमें भेंट करते हैं) । **–पाक**–पु० रूमाल । **–पोश**–वि० जो मुँह छिपाये हुए हो (पोश–पोशीदाका संक्षिप्त रूप) । पु० वह अपराधी जो किसी मुकदमेकी जाँचके समय भाग जाय; अनुपस्थित हो जाना । **–पोशी**–स्त्री० मुँह छिपाना; भाग जाना; गायव हो जाना । **–बकार**–पु० परवाना, तहरीरी हुक्म; वह खत जो बराबरीके अफसरको भेजा जाय । वि० कामके लिए तैयार; आनेवाला; होनेवाला । **–बकारी**–स्त्री० मुकदमेकी पेशी । **–बराह**–वि० सुधार, इसलाह किया हुआ; प्रस्थान, यात्राके लिए तैयार; कामके लायक, काविल, तैयार । **–बरू**–अ० सामने, आगे, मुकाविल (आना, करना, लाना, होना क्रियाओंके साथ व्यवहृत) । **–ब-सेहत**–वि० अच्छा होनेकी तरफ मायल । **–रिआयत**–स्त्री० पास, लिहाज, तरफदारी (करना, होनाके साथ व्यवहृत) । **–शिनास**–वि० जानपहचानी, परिचित । **–शिनासी**–स्त्री० परिचय करना, साहव-सलामत । **–सफ़ेद**–वि० गोरे चेहरेका; खूबसूरत; प्रतिष्ठित, इज्जतदार; पाकदामन; निर्दोष, वेऐव; दयानतदार (होनाके साथ व्यवहृत) । **–सियह,–स्याह**–वि० काले मुँहका; गुनहगार; वदचलन, वदकार; जलील; कमवख्त, वदकिस्मत; वेइज्जत; मुजरिम, अपराधी । पु० आकाश; सूर्य ।

रूआ–स्त्री० एक सुगंधित घास; छोटी और बहुत पतली रोटी या फुलका ।

रूई–स्त्री० दे० 'रुई' । **–दार**–वि० दे० 'रुईदार' ।

रूक–पु० बलुआ; एक औषधोपयोगी वृक्ष । * स्त्री० तलवार ।

रूक्ष–पु० वृक्ष । वि० (सं०) जो कोमल, चिकना न हो ।

रूख–पु० वृक्ष, पेड़ । * वि० रूखा ।

रूखड़ा†–पु० पेड़ ।

रूखना*–अ० क्रि० रूठना, नाराज होना ।

रूखरा–पु० दे० 'रूखड़ा' । वि० दे० 'रूखा' ।

रूखा–वि० जिसमें चिकनापन न हो (जैसे–रूखे वाल); विना तेल-घीका वना हुआ, अरुचिकर, स्वादहीन (भोजन); नीरस, शुष्क, रसहीन; खुरदरा, असम; स्नेहहीन, प्रेमशून्य; कठोर; विरक्त, उदासीन । **–पन**–पु० रुखाई, रूखा होना; नीरसता; कड़ाई, कठोरता; स्वादहीनता; उदासीनता । **–माल**–पु० नक्काशीदार वरतन (कसेरा) । **–सूखा**–वि० विना घी और मसालेका वना; जिसमें चरपरापन न हो (भोजन) । मु० **–पड़ना**–शील-संकोच-रहित होना, बेमुरौवत होना; तीखा पड़ना, नाराज होना ।

रूचना*–अ० क्रि० दे० 'रुचना' ।

रूज–पु० (अं०) गालों और ओठोंपर सुर्खी लानेके लिए लगाया जानेवाला एक विशेष प्रकारका पाउडर; एक तरहकी बुकनी जिससे सोने-चाँदी आदिपर कलई करते हैं (खरिया-पारा मिलाकर इससे बरतनपर कलई करते हैं) ।

रूजवेल्ट (फ्रैंकलिन डी०)–पु० १८८२-१९४५, अमेरिकन राष्ट्रपति १९३३ से १९४५ तक; **(थिओडोर)** १८५८-१९१९ अमेरिकन राष्ट्रपति १९०१ से १९०९ तक ।

रूझना*–अ० क्रि० दे० 'अरुझना', 'उलझना' ।

रूठ*–स्त्री० रूठना, नाराज होना, क्रोध ।

रूठन–स्त्री० रूठनेकी क्रिया या भाव ।

रूठना–अ० क्रि० अप्रसन्न, नाराज होना ।

रूठनि*–दे० 'रूठन' ।

रूड–पु० (अं०) पाँच गजका एक मान ।

रूड़, रूड़ा*–वि० उत्तम; श्रेष्ठ । (स्त्री० 'रूड़ी' ।)

रूढ–वि० (सं०) उत्तम, संजात; प्रचलित, प्रसिद्ध; अविभाज्य, अकेला; (वह संख्या) जो विभक्त न हो; चढ़ा हुआ, आरूढ़; * गँवार, उजड्ड; कठोर, कड़ा । पु० वह शब्द जो समुदायशक्तिसे अर्थबोधक हो, जिसका खंड न हो (यौगिकका विलोम–जैसे घट, गौ इ०); व्युत्पत्तिप्राप्त अर्थ, प्रकृति-प्रत्यय-युक्त अर्थ, के स्थानपर दूसरे अर्थका प्रकाशक शब्द । **–यौवना**–स्त्री० दे० 'आरूढ़-यौवना' ।

रूढा–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, प्रचलित अर्थमें विनियुक्त लक्षणा (सा०) ।

रूढि–स्त्री० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; प्रसिद्धि; ख्याति; प्रथा, चाल; चढ़ाई, चढ़नेका भाव; वृद्धि; उभार, उठान; शब्दकी शक्ति जो यौगिक न होनेपर भी अर्थ स्पष्ट करती है । **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाके दो प्रमुख भेदोंमेंसे एक (साहित्य) ।

रूतना–अ० क्रि० काममें रत होना ।

रूद–पु० (फा०) नदी; नाला; साजका तार; गीत; आनंद; सुंदर युवक; पर-नुचा पक्षी ।

रूप–पु० (सं०) सूरत, शक्ल; दृश्य पदार्थ, वस्तु (विशेष वर्णसे

भिन्न); प्रकृति, स्वभाव; वेश; सौंदर्य; शरीर; विभक्ति, प्रत्ययके योगसे बने शब्दका रूपांतर, स्वरूप; देश-कालका भेद, दशा, लक्षण, चिह्न; विकार, भेद; रूपक; *रूपा, चाँदी। वि० समान, अनुरूप; रूपवान्–'समय समय सुंदर सबै रूप कुरूप न कोइ'–वि०। **–कर्ता(र्तृ),–कृत्**–पु० विश्वकर्मा। **–कांता**–स्त्री० एक वर्णवृत्त। **–गर्विता**–स्त्री० वह नायिका जिसे अपने रूपका गर्व हो। **–घनाक्षरी**–स्त्री० एक वृत्त, दंडकका एक भेद। **–चतुर्दशी**–स्त्री० कातिक वदी चौदस, नरक चतुर्दशी (इस तिथिको उवटन लगाते हैं)। **–जीविनी**–स्त्री० वेश्या। **–जीवी(विन्)**–पु० वहुरुपिया। **–धर**–वि० खूबसूरत, सुंदर। **–धारी(रिन्)**–वि० रूपवान्; सुंदर; वेश वदलनेवाला (नट, वहुरुपिया)। **–धेय**–पु० (कार्टूर) किसी ठोस पदार्थकी रूपरेखा। **–नाशक**–पु० उल्लू। **–पति**–पु० विश्वकर्मा, त्वष्टा। **–मंजरी**–स्त्री० एक फूल; एक धान। **–माला**–स्त्री० एक मात्रिक छंद। **–माली**–स्त्री० एक वर्णवृत्त। **–रेखा**–स्त्री० किसी कार्य या योजनाका स्थूल रूप, वह चित्र जो अभी केवल रेखाओंके रूपमें हो; किसी आकृति या चित्रका रेखामय रूप। **–रूपक**–पु० रूपकालंकारका सावयव रूपक। **–शाली(लिन्)**–वि० रूपवान्, सुंदर। **–श्री**–स्त्री० एक संकर रागिनी। **–संपत्ति,–संपद्**–स्त्री० सुंदरता, सुरूपता।

रूपक–पु० (सं०) (रूपका आरोप करना) अभिनय-प्रदर्शन-युक्त दृश्य काव्य (इसके दस भेद और अठारह उपभेद उपरूपक हैं); एक अर्थालंकार, जहाँ साधर्म्यके कारण उपमेयमें उपमानका आरोप किया जाय–उपमानकी तद्रूपता होनेपर तद्रूप और दोनोंमें अभेद होनेपर अभेदरूपक होता है; सात मात्राका एक दोताला ताल (संगीत); मूर्ति, प्रति-कृति; चाँदी; रुपया; एक परिमाण। **–कार्यक्रम**–पु० (फीचर प्रोग्राम) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित नाटक, प्रहसन आदि-संबंधी कार्यक्रम। **–भेद**–पु० (माडिफिकेशन) अर्थ या स्वरूप आदिमें आंशिक परिवर्तन करना, इधर-उधर वदल देना। **–भेदित**–वि० (माडिफाइड) जिसमें इधर-उधर आवश्यक परिवर्तन कर दिया गया हो।

रूपकातिशयोक्ति–स्त्री० (सं०) अतिशयोक्तिका एक भेद जिसमें उपमेय, वाचक धर्मादिका लोप कर केवल उपमानका उल्लेख किया जाता है।

रूपण–पु० (सं०) आरोपण, आरोप करना; परीक्षा; प्रमाण।

रूपता–स्त्री० (सं०) रूपत्व; सुंदरता।

रूपमनी*–वि० स्त्री० रूपवती (दे० 'रुपमनी')।

रूपमय–वि० (सं०) परम सुंदर। (स्त्री० 'रूपमयी'।)

रूपया–पु० दे० 'रुपया'।

रूपवंत, रूपव*–वि० सुंदर, रूपवान्–'रूपव कौन अधिक सीता तें जन्म वियोग भरे'–सू०।

रूपवती–स्त्री० (सं०) एक छंद (केशव), गौरी (काव्य-प्रभाकर); रुक्मवती, चंपकमाला वृत्त। वि० स्त्री० सुंदरी।

रूपवान्(वत्)–वि० (सं०) सुंदर; जिसकी कोई आकृति हो; जो किसी रंग, वर्णका हो।

रूपसी*–स्त्री० रूपवती स्त्री।

रूपांकन–पु० (डिजाईनिंग) किसी भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदिकी रूप-रेखा वनाना, मनमें किसी योजना आदिका रूप निश्चित करना, वनावट-वुनावट आदिका कोई विशेष ढंग या तर्ज सोचना, निर्धारित करना; दे० 'अभिकल्पन'। **–कार**–पु० (डिजाइनर) भावी कार्य या तैयार की जानेवाली वस्तु आदिकी रूप-रेखा, वनावट-वुनावट आदिका ढंग निश्चित करने या सोचनेवाला।

रूपांतर–पु० (ट्रांसफॉरमेशन) किसी वस्तुका वदला हुआ रूप।

रूपांतरण–पु० (ट्रांसफॉरमेशन) किसी वस्तुके रूप, आकार आदिका वदल दिया जाना, उनमें परिवर्तन हो जाना; समूचे व्यक्तित्वको वदलनेकी प्रक्रिया।

रूपांतरित–वि० (ट्रांसफार्म्ड) जिसका रूप, आकार आदि वदल गया हो या वदल दिया गया हो।

रूपा–पु० चाँदी; घटिया चाँदी; सफेद वैल; श्वेत रंगका घोड़ा।

रूपाजीवा–स्त्री० (सं०) (रूपके बलपर जीविका चलानेवाली) वेश्या, रंडी।

रूपात्मक समीक्षा–अमेरिकामें प्रचलित वह समीक्षा पद्धति जो काव्यका अध्ययन उसके रूप (स्ट्रक्चर) के आधारपर करनेका आग्रह करती है।

रूपाधिबोध–पु० (सं०) दृश्य पदार्थ, वस्तुका इंद्रिय-लब्ध ज्ञान।

रूपाध्यक्ष–पु० (सं०) टकसालका प्रधान अफसर, नैष्ठिक; कोषाध्यक्ष।

रूपायन–पु० किसी चीजका ढाँचा प्रस्तुत करना या उसे कार्यान्वित करना।

रूपावचर–पु० (सं०) एक प्रकारका चित्त (रूप-लोकका ज्ञान करानेवाला); ध्यानकी एक भूमि (प्रथमा आदि चार भेदोंसे युक्त); एक प्रकारके देवता (बौ०)।

रूपाश्रय–पु० (सं०) सुंदर पुरुष।

रूपाश्रयी साहित्य–पु० वह साहित्य जो विषयवस्तुकी अपेक्षा रूप-तत्त्व, शैली, शिल्प आदिपर ज्यादा वल देता है।

रूपास्त्र–पु० (सं०) कामदेव।

रूपिका–स्त्री० (सं०) सफेद मदार, आक।

रूपी(पिन्)–वि० (सं०) रूपवाला, रूपधारी; समान, सदृश; सुंदर, रूपवान्।

रूपेंद्रिय–स्त्री० (सं०) आँख, नेत्र।

रूपेश्वर–पु० (सं०) एक शिवलिंग।

रूपोपजीविनी–स्त्री० (सं०) वेश्या।

रूपोपजीवी(विन्)–पु० (सं०) वहुरुपिया; नट।

रूप्य–पु० (सं०) सोना; चाँदी; रुपया। वि० सुंदर; उपमेय; मुद्रांकित।

रूप्यक–पु० (सं०) रुपया।

रूप्याध्यक्ष–पु० (सं०) खजांची।

रूबुक–पु० (सं०) रेंड, एरंडका पेड़।

रूम*–पु० रोम, लोम (मीरा)।

रूम–पु० (फा०) तुर्की, पूर्वी कैसर कानिस्तंताइनका राज्य जिसकी राजधानी कुस्तुंतुनिया थी; (अं०) कमरा।

रूमना*–अ० क्रि० झूमना, झूलना।

रूमानिया–पु० एक यूरोपीय देश।

रूमानी–पु० रूमानियाका निवासी। वि० दे० 'रोमानी'।

रूमाल–पु० (फा०) हाथ-मुंह पोंछनेका कपड़ेका चौकोर टुकड़ा; चिकन, चौकोन शालका टुकड़ा (तिकोना दुहरकर ओढ़ते हैं। मुसलमानी समयमें कमर भी बाँधते थे); मियानी, पाजामेकी मोहरियोंको जोड़नेवाला चौकोर टुकड़ा; ठगोंका रूमाल (एक सिरेपर चाँदीका एक टुकड़ा बँधा रहता था; गलेमें फँसाकर इसी टुकड़ेको घाँटीके पास इतना दवाते थे कि यात्री मर जाता था)। मु० **–पर रूमाल भिगोना**–वहुत अधिक रोना।

रूमाली–स्त्री० दे० 'रुमाली'।

रूमी–वि० (फा०) रूम-निवासी; रूमका; रूममें होनेवाला।

रूर–वि० (सं०) गरम, उत्तप्त; जला हुआ।

रूरना*–अ० क्रि० जोर-जोरसे शब्द करना, चिल्लाना–'संगहि सबै चलो माधवके ना तो मरिहौं रूरि'–सू०।

रूरा–वि० अच्छा, उत्तम।

रूल–पु० (अं०) नियम, कायदा; रेखा, लकीर खींचनेका डंडा; सतर, कागजपर सीधी खींची हुई लकीर। **–दार**–वि० जिसमें लकीरें खिंची हों (कागज)।

रूलना*–स० क्रि० दवा देना।

रूलर–पु० (अं०) रेखा, लकीर खींचनेका डंडा; पटरी, पैमाना; शासक।

रूष*–पु० दे० 'रूख'।

रूषक–पु० (सं०) अड़ूसा, वासक। वि० मिलाने, लीपापोती करनेवाला; सजानेवाला।

रूषण–पु० (सं०) भूषित करना, सजाना; अनुलेपन।

रूषा*–वि० दे० 'रूखा'।

रूषित–वि० (सं०) धूलि आदिसे भरा, सना हुआ; जो चिकना

न हो ।

रूस–पु० (फा०) सोवियत रूस, यूरोप-एशियाके भूखंडपर फैला हुआ, पृथ्वीके विस्तारके षष्ठांशमें स्थित एक विशाल देश ।

रूसना–अ० क्रि० रोष करना, नाराज होना, रूठना–'तेहि रिसहौं पर हेली, रूसेउ नागर नाहँ'–प० ।

रूसा–पु० अडूसा, बासक; एक सुगंधित घास, मोतिया, सौंफिया (पकनेपरका नाम), रोहिष, गंधबेला, भूतृण ।

रूसी–स्त्री० सिरपर जमा हुआ मैल; रूसकी भाषा । वि० रूसका; रूसमें उत्पन्न । पु० रूस-निवासी ।

रूह–स्त्री० (अ०) आत्मा; दिल, जी; आभ्यंतरिक इच्छा; सत, सार (जैसे–रूहगुलाब) । **–अफ़ज़ा**–वि० ताजगी देनेवाला । मु० **–कब्ज हो जाना**–भयसे सन्न या जड़ीभूत हो जाना–'कुत्तेकी एक ही गुर्राहटसे रूह कब्ज हो जाती थी ।'

रूहड़–स्त्री० पुरानी रुई ।

रूहना*–अ० क्रि० उमड़ना; चढ़ना । स० क्रि० घेरना, आवेष्टित करना ।

रूहानी–वि० (अ०) आत्मासंबंधी, आध्यात्मिक (ताकत इ०) ।

रूहानियत–स्त्री० अध्यात्मवाद, आत्मवाद ।

रूहिर*–पु० रुधिर, रक्त ।

रूही–स्त्री० एक वृक्ष, खौरी, मायरी, अहिगंधा, ईसरमूल । **–मूल**–पु० रूहीकी छाल और जड़ ।

रेंकना–अ० क्रि० गधेका बोलना; भद्दे प्रकारसे गाना ।

रेंगटा–पु० गधेका बच्चा ।

रेंगना–अ० क्रि० कीड़ों, सरीसृपोंका चलना; धीरे-धीरे चलना ।

रेंगनी–स्त्री० भटकटैया ।

रेंगाना–स० क्रि० पेटके बल या धीरे-धीरे चलाना ।

रेंट–पु० (अं०) घर, भूमि आदिका किराया, लगान ।

रेंट–पु० नाकका मल (कहीं-कहीं स्त्री०) ।

रेंटा–पु० लिसोड़ेका फल ।

रेंड़–पु० औषध, जलाने आदिके काम आनेवाला एक छोटा वृक्ष, एरंड । **–खरबूजा,–मेवा**–पु० पपीता ।

रेंड़ना†–अ० क्रि० गर्भित होना, प्रौढ़ होना, विशेषतः धान, गेहूँ, जौ आदिका उस अवस्थाको प्राप्त होना जिसके कुछ ही समय बाद उसमें बालें फूटती हैं ।

रेंड़ा–पु० कुआर-कातिकमें होनेवाला एक धान ।

रेंड़ी–स्त्री० रेंड़का बीज ।

रेंदी–स्त्री० ककड़ी, खरबूजेकी बतिया ।

रें-रें–स्त्री० लड़कोंके रोनेका शब्द ।

रेंवजा, रेंवझा,–पु० एक पेड़ जो कुछ-कुछ बबूलके पेड़से मिलता है ।

रे–अ० (सं०) संबोधनका शब्द, अरे, ए, ओ (नीचोंके संबोधन, भर्त्सना, तिरस्कार और स्नेहके भावोंका व्यंजक) । पु० ऋषभ स्वरका चिह्न (संगीत) ।

रे ऑन–पु० (रे ऑन) कृत्रिम धागा, जो काष्ठ-गूदे या रुईके छोटे साइज़के रेशेको रासायनिक द्रवमें घोलकर उसे नन्हें छिद्रवाले साँचेमेंसे अत्यधिक दाब द्वारा भेजनेपर प्राप्त होता है ।

रेउँछा–पु० दे० 'रेवँछा' ।

रेउड़ा–पु० दे० 'रेवड़ा' ।

रेउड़ी†–स्त्री० दे० 'रेवड़ी' ।

रेउरा†–पु० दे० 'रेवरा' ।

रेक–पु० (सं०) विरेचन, दस्त लाना; नीच, छोटी जातिका व्यक्ति; शंका; संदेह; मेढ़क ।

रेकान–पु० नदीके पानीकी पहुँचके बाहरकी भूमि ।

रेकार्ड–पु० (अं०) मिसिल, मुकदमा; इंदराज; दफ्तरके कागज-पत्र; ग्रामोफोनकी प्लेट, तवा ।

रेख–स्त्री० रेखा, लकीर; चिह्न, निशान; गिनती, गणना; यौवनारंभमें हलकी रेखाकी तरह निकलती हुई मूँछें, मसें; हीरेका एक दोष (जिसमें लकीरें दिखाई दें) । मु० **–आना,–भीजना,–भीनना**–मूँछें निकलना शुरू होना । **–खाँचना,–खीँचना**–रेखा अंकित करना; कोई बात जोर देकर कहना ।

रेख़ता–पु० (फा०) अरबी-फारसी-मिश्रित हिंदीका गाना, गजल; उर्दूका आरंभिक नाम ।

रेखना*–स० क्रि० रेखा, लकीर खींचना; चिह्न करना; खरोंचना ।

रेखांकन–पु० चित्ररेखा खींचनेका काम; अधोरेखा खींचनेका काम।

रेखांकित–वि० जिसमें अधोरेखा खींची गयी हो या रूपरेखा बनायी गयी हो । **–करना**–किसी चीज़पर ज़ोर देना । किसी शब्द या वाक्यके नीचे रेखा खींचकर उसे महत्त्वपूर्ण बताना ।

रेखा*–स्त्री० कण, टुकड़ा–'पानी माहिं पखानकी रेखा टोंकत उठै भभूका'–कबीर० । स्त्री० (सं०) बिंदुकी गति जिसमें केवल लंबाई हो (ज्यामिति), लकीर; सूचक चिह्न (किसी पदार्थ, वस्तु आदिका –जैसे कर्म, भाग्य-रेखा); गणना; आकार, सूरत; हाथ, तलवे आदिकी टेढ़ी-सीधी लकीरें (इनके आधारपर भविष्यकथन, शुभाशुभ-निर्णय किया जाता है); हीरेकी बीचकी दोषसूचक लकीर । **–गणित**–पु० (ज्यामेट्री) वह गणित जिसमें रेखाओं, कोणों, वृत्तों आदिका विवेचन होता है । **–चित्र**–पु० (स्केच) किसी व्यक्ति या वस्तुका केवल रेखाओंसे बना हुआ चित्र; व्यक्ति, स्थान, दृश्य आदिका शाब्दिक आकलन । चित्रकलासे लिया हुआ शब्द । (चार्ट) दे० 'रेखा-पत्र' । **–पत्र**–पु० (चार्ट) विशेष सूचना या जानकारी प्रदान करनेवाला, मुख्य रूपसे रेखाओंका बना वह चित्र जिसमें मुख्य-मुख्य बातें यथास्थान दिखायी गयी हों; खाने बनाकर तालिकाओं आदिके रूपमें दिया गया विवरण; नाविकों, जहाजके कप्तानों आदिके पास रहनेवाला वह समुद्री नक्शा जिसमें समुद्रतट, चट्टानें, खतरेके स्थान आदि दिखाये गये रहते हैं; वस्तुओंके उत्पादन एवं मूल्यादि-संबंधी तथा तापमानके घटने-बढ़ने आदि-संबंधी परिवर्तन ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरनेवाली रेखाओं द्वारा दिखलानेवाला पत्र । **–पुर**–पु०, लंका-सुमेरुकी मध्यवर्ती कल्पित रेखापर स्थित प्रदेश (प्रा० ज्यो०) । **–बंधनी**–स्त्री० (विनक्यूलम) गणितकी दो या अधिक राशियोंको एक साथ बाँधनेवाली वह आड़ी रेखा जो उनके ऊपर खींच दी जाती है । **–भूमि***–स्त्री० दे० 'रेखापुर' । **–चेक**–पु० (क्रास्ड चेक) वह चेक जिसमें बायीं ओर नीचेसे ऊपरतक दो समानांतर रेखाएँ खींच दी गयी हों (इसका रुपया किसीके बैंकके खानेमें जमा होनेके बाद ही निकाला जा सकता है) ।

रेखित*–वि० अंकित, लिखित, खिंचा हुआ; मसका, फटा हुआ; रेखा, लकीर खींचा हुआ ।

रेग–स्त्री० (फा०) बालू । **–मार,–माल**–पु० बालूवाला कागज जिसे लकड़ी आदिपर रगड़कर खुरदरापन दूर किया जाता है ।

रेगिस्तान–पु० बालूका मैदान, मरुस्थल ।

रेघाना–स० क्रि० ताल-लयके साथ गान; रेंकना ।

रेचक–वि० (सं०) दस्त लानेवाला, दस्तावर । पु० प्राणायामकी एक क्रिया (खींची हुई साँसको बाहर निकालना); जवाखार; जमालगोटा; पिचकारी ।

रेचन–पु० (सं०) दस्त लाना, कोठा शुद्ध करना; जुलाब, मल निकालकर पेटको साफ करनेवाली दवा ।

रेचनक–पु० (सं०) कमीला, कंपिल्लक ।

रेचना–स्त्री० (सं०) कमीला । * स० क्रि० वायु, मल बाहर निकालना ।

रेचनी–स्त्री० (सं०) कमीला; वटपत्री; दंती ।

रेचित–पु० (सं०) घोड़ोंकी एक चाल; नृत्यमें हस्तचालन । वि० साफ किया हुआ, मल बाहर निकाला हुआ ।

रेच्य–पु० (सं०) छोड़ी या बाहर की हुई वायु (प्राणायाम); भेदक जुलाब ।

रेज़–वि० (फा०) बहानेवाला, तर करनेवाला (जैसे–खूँरेज) ।

रेजगारी†–स्त्री० खुर्दा, छुट्टा (एकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी आदि) ।

रेज़गी–स्त्री० (फा०) खुर्दा, छुट्टा; सोने-चाँदीके तारका छोटा टुकड़ा ।

रेज़श–स्त्री० (फा०) बहाना; डालना; नाकसे पानी बहना ।

रेजस,–रेजसछीमा–पु० घोड़ोंका जुकाम ।

रेजा†–पु० अँगिया, सीनाबंद ।

रेज़ा–पु० (फा०) बहुत छोटी चीज, छोटा टुकड़ा, खंड; मजदूर लड़का (बड़े राजगीरोंके साथ काम करनेवाला); सुनारोंका एक

औजार; थान–'ज्यों कोरी रेजा बुनै'–कबीर०; नग, अदद।

रेजिडेंट–पु० (अं०) अँगरेजी राजप्रतिनिधि जो देशी राज्योंमें रहा करता था।

रेज़िश–स्त्री० (फा०) जुकाम।

रेजीमेंट–स्त्री० (अं०) सेनाका एक स्थायी विभाग (कर्नलके अधीन और कई टुकड़ियोंमें विभक्त)।

रेजू–पु० ब्रश बनानेका एक तरहका रेशा।

रेट–पु० (अं०) भाव, दर, निर्ख; चाल, गति।

रेटिना–पु० (रेटिना, 'दृष्टि पटल') नेत्र कोटरकी पिछली दीवारकी सतह, जो संवेदनशील कोशिकाओंकी बनी होती है।

रेडियम–पु० (अं०) एक प्रकाशमय बहुमूल्य धातु। **–रेडार**–पु० वह वैज्ञानिक यंत्र जिसकी सहायतासे इसका पता चल जाता है कि कोई जहाज या विमान कहाँसे आ रहा है या कहाँ जा रहा है।

रेडियो–पु० (अं०) एक तरहका विद्युत् यंत्र जिसकी सहायतासे बिना तारके ही वार्त्ता, संगीत, समाचार आदि बहुत दूर-दूरतक प्रसारित किया जा सकता है; वह यंत्र जिससे आकाशवाणीकेंद्र द्वारा प्रसारित ऐसा समाचार या संगीत आदि सुना जा सके। **–ऐक्टिवता**–स्त्री० (रेडियो ऐक्टिविटी) अनेक तत्त्वोंके परमाणु नाभिकका स्वतः विघटन होता रहता है जिसके फलस्वरूप उनसे प्रायः एल्फ़ा कण तथा बीटा कण और गामा किरणें उत्सर्जित होती हैं। इस गुणको रेडियो ऐक्टिवता कहते हैं, तथा ऐसे तत्त्व रेडियो ऐक्टिव तत्त्व कहलाते हैं। **–चिकित्सा**–स्त्री० (रेडियो थिरैपी) रेडियो किरणोंके द्वारा रोगका उपचार। **–चित्रण**–पु० (रेडियोग्राफी) क्ष-किरणोंके द्वारा किसी ठोस पदार्थ या अंगका अन्दरका छाया चित्र लेनेकी विधि। (रेडियो फोटाग्राफी) रेडियो तरंगोंसे फोटोका दूर स्थानों या देशान्तर प्रेषण। **–रूपक**–पु० आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किया जानेवाला नाटक या नाटक जैसी रचना जिसमें प्रायः पात्रोंके कथोपकथन द्वारा घटनाविकासका चित्रण किया जाता है। **–टेलीफोनी**–स्त्री० (अं०) विद्युत् चुंबकीय तरंगोंके माध्यमसे ध्वनिका प्रेषण।

रेणु–स्त्री० (सं०) धूल; बालू; कणिका, बहुत छोटा परिमाण; सँभालू; विडंग। **–रूषित**–पु० गधा। वि० धूलमें सना हुआ। **–वास**–पु० भौंरा। **–सार,–सारक**–पु० कपूर।

रेणुका–स्त्री० (सं०) धूल; बालू; परशुरामकी माता; सँभालू; सह्याद्रिपर स्थित एक तीर्थ; *पृथ्वी। **–सुत**–पु० परशुराम।

रेतःकुल्या–स्त्री० (सं०) एक नरक, रेतकुंड।

रेत–स्त्री० बालू; बलुई भूमि। **–कुंड**–पु० एक नरक; कुमायूंका एक तीर्थस्थान।

रेत(स्)–पु० (सं०) वीर्य; जल; पारा। **–ज**–पु० पुत्र। **–जा**–स्त्री० बालू।

रेतन–पु० (सं०) वीर्य।

रेतना–स० क्रि० रेतीसे रगड़कर काटना, चिकना करना; औजारकी धार रगड़ना; धीरे-धीरे रगड़कर काटना; (जैसे–गला रेतना)।

रेतल–पु० एक पक्षी।

रेतला–वि० दे० 'रेतीला'।

रेतवा†–पु० रेतनेवाला।

रेता–पु० बालू; धूल, मिट्टी; बलुई भूमि।

रेतिया–पु० रेतनेवाला।

रेती–स्त्री० लोहेका एक औजार जिससे रगड़कर कोई वस्तु काटी या चिकनी की जाती है; नदी, समुद्रतटकी बलुई भूमि; नदीका द्वीप, टापू, पानी घटनेसे धाराके बीच निकली रेतीली भूमि।

रेतीला–वि० बलुआ, बालुकामय। (स्त्री० 'रेतीली'।)

रेत्य–पु० (सं०) पीतल।

रेत्र–पु० (सं०) वीर्य, शुक्र; पारा; अमृत, पीयूष; पटवास।

रेना†–स० क्रि० किसी चीजके सहारे लटकाना।

रेनी–स्त्री० अलगनी; रंग देनेवाली वस्तु।

रेनु*–स्त्री० दे० 'रेणु'।

रेनुका*–स्त्री० दे० 'रेणुका'।

रेप–वि० (सं०) क्रूर; निंदित, घृणित; कृपण।

रेफ–पु० (सं०) 'र' अक्षर; 'र्'का किसी वर्णके पहले आनेपर मस्तकस्थ रूप "ˊ" (जैसे–दर्प, धर्म, कर्म आदिमें); राग; शब्द। वि० कुत्सित, निंदित, घृणित।

रेभ–पु० (सं०) ऋग्वेदमें उल्लिखित एक ऋषि जिन्हें असुरोंने कुएँमें डाल दिया था; एक कश्यप-वंशीय ऋषि।

रेरिहान–पु० (सं०) शिवका एक नाम; असुर; चोर।

रेरुआ, रेरुवा–पु० घुग्घू, बड़ा उल्लू।

रेल–स्त्री० बहाव, धारा; भीड़; बहुतायत। **–ठेल,–पेल**–स्त्री० भीड़भाड़; धक्कमधक्का; अधिकता, बहुतायत।

रेल–स्त्री० (अं०) लोहेकी शहतीर, सलाख जोड़ी हुई लाइन जो जमीनपर बिछी रहती है, लोहेकी पटरी (जिसपर रेलगाड़ी चलती है); रेलगाड़ी। **–इंजिन**–पु० रेलका इंजिन। **–गाड़ी**–स्त्री० लोहेकी पटरियोंपर चलनेवाली गाड़ी, 'रेलवे ट्रेन'। **–पुल**–पु० रेलगाड़ी आने-जानेके लिए बना हुआ नदी, नाले आदिका पुल। **–मंत्री**–पु० मंत्रिमंडलका वह सदस्य जिसके जिम्मे रेलका मोहकमा हो। **–मोटर**–स्त्री० वह मोटर जो रेलकी सड़कपर चले। **–रोड**–पु०, **–लाइन**–स्त्री० रेलकी पटरी, रास्ता। **–वे**–स्त्री० रेलकी सड़क; रेलका विभाग। **–मंडल**–पु० (रेलवे बोर्ड) रेलोंकी व्यवस्था, संचालन, विकास आदिके कार्योंका नियंत्रण करनेवाली समिति।

रेलना–स० क्रि० धक्का देना, ढकेलना; अधिक खा लेना, छकना। अ० क्रि० अधिक होना, खूब भरा होना।

रेला–पु० धावा, चढ़ाई, आक्रमण; भीड़भाड़; जलका बहाव, तोड़; अधिकता; समूह; पंक्ति; महीन और सुंदर बोलोंको बजानेकी रीति (तबला)।

रेलिंग–स्त्री० (अं०) रोकके लिए लगाया जानेवाला छड़दार या ईंट पत्थर आदिका ढाँचा।

रेवँछा†–पु० दालके काम आनेवाला एक द्विदल अन्न।

रेवंत–पु० (सं०) सूर्यके एक पुत्र।

रेवंद–पु० (फा०) हिमालयपर मिलनेवाला एक पेड़। **–चीनी**–स्त्री० चीनमें मिलनेवाली इस पेड़की किस्म।

रेवट–पु० (सं०) सूअर; बाँस; विषवैद्य; दक्षिणावर्त शंख।

रेवड़–पु० भेड़ोंका समूह, गल्ला; पशुओंका झुंड।

रेवड़ा–पु० चीनी या गुड़का चाशनी फेंटकर बनाया हुआ टुकड़ा जिसपर तिल जमाया होता है।

रेवड़ी–स्त्री० छोटी-छोटी टिकियाके रूपमें बना रेवड़ा। मु० **–के फेरमें आना**–लालचमें पड़ना।

रेवत–पु० (सं०) जंबीरी नीबू; अमलतास, आरग्वध वृक्ष; एक राजा, रेवतीका पिता और बलरामका श्वशुर।

रेवतक–पु० (सं०) एक तरहका खजूर, पारेवत वृक्ष।

रेवती–स्त्री० (सं०) सताईसवाँ नक्षत्र; गाय; एक बालग्रह; दुर्गा; रैवत मनुकी माता; बलरामकी पत्नी। **–भव**–पु० शनि। **–रमण**–पु० बलराम।

रेवना†–स० क्रि० दे० 'रेना'।

रेवरा†–पु० दे० 'रेवड़ा'। स्त्री० एक तरहकी ईख।

रेवा–स्त्री० (सं०) नर्मदा नदी; कामदेवकी स्त्री, रति; नीलका पौधा; एक साम; दुर्गा; नर्मदाका प्रवाहक्षेत्र, रीवाँ; दीपक रागकी एक रागिनी।

रेश–स्त्री० (फा०) बड़ी और लंबी दाढ़ी। **–सफ़ेद**–पु० बूढ़ा आदमी।

रेशम–पु० (फा०) उम्दा, मजबूत और चमकीला रेशा जिसे रेशमका कीड़ा कोया–अपना कोश–बनानेके लिए निर्मित करता है; रेशमका सूत; रेशमका कपड़ा। **–की गाँठ**–रेशमके रेशे, तारकी गाँठ जो बड़ी कठिनाईसे खुलती है। (मु० **–० पड़ना**–किसी कामका बहुत मुश्किल होना।) **–के लच्छे**–रेशमके धागोंका गुच्छा; एक मिठाई जो रेशमके धागोंकी तरह होती है।

रेशमी–वि० रेशमका; रेशमसे बना हुआ; रेशम-सा मुलायम या चिकना, बहुत ही नरम।

रेशा–पु० (फा०) सुतड़ा, सूतकी-सी इकहरी चीज (जंतुओं-वनस्पतियों, फलों आदिमें मिलता है)। **–खत्मी**–स्त्री० एक वनस्पति जो हकीमी दवाईके काम आती है। **–दार**–वि० रेशेवाला।

रेष–पु० (सं०) हानि; क्षति; हिंसा। * स्त्री० दे० 'रेख'।

रेषण–पु० (सं०) घोड़ेका हिनहिनाना; शेर या सिंहका गरजना।

रेषा–स्त्री० (सं०) ह्रेषा, हींसना, घोड़ेका हिनहिनाना; सिंहका गरजना।

रेस्तोरां, रेस्त्रां–पु० (फ्रें०) वह स्थान जहाँ नाश्ता और भोजन आदि मिलता है, उपाहारगृह।

रेह–स्त्री० खारमिश्रित धूल; रेखा–'लसत कसौटीमें मनो तनक कनककी रेह'–मतिराम।

रेहण–पु० रेहन।

रेहन–पु० (फा०) ऋण देनेवालेको कुछ धन-संपत्ति उस समयतकके लिए देना जबतक उसका हिसाब चुका न दिया जाय, वंधक, गिरवी। **–दार**–पु० जिसके पास कोई जायदाद वंधक रखी हो। **–नामा**–पु० वह कागज जिसपर रेहनकी शर्तोंकी लिखा-पढ़ी की गयी हो।

रेहल–स्त्री० (अ०) दे० 'रिहल'।

रेहुआ–वि० रेहवाला, जिसमें रेह अधिक हो।

रेहू–पु० दे० 'रोहू'।

रैअति*–स्त्री० दे० 'रैयत'।

रैकेट–पु० (अं०) टेनिस खेलनेका वल्ला।

रैता–पु० रायता।

रैतिक–वि० (सं०) पीतलका; पीतल-संवंधी।

रैतुवा–पु० दे० 'रायता'।

रैत्य–पु० (सं०) पीतलका वरतन।

रैदास–पु० रामानंदका शिष्य और कवीर आदिका समकालीन एक चमार भक्त; चमार।

रैदासी–पु० मोटा धान, जड़हन। वि० रैदास-प्रवर्तित संप्रदायका।

रैन, रैनि*–स्त्री० रात; रेणु–'श्रीवैकुंठनाथ उर वासिनि चाहत जा पद रैन'–सूर। **–वसेरा**–पु० रात विता सकनेका स्थान; संकटके समयका अस्थायी निवास; वड़े नगरोंमें गरीवोंके लिए वना रात वितानेका स्थान।

रैनी–स्त्री० तार खींचनेकी चाँदी-सोनेकी गुल्ली।

रैमुनिया–स्त्री० लाल चिड़ियाकी मादा; एक अरहर।

रैयत–स्त्री० (अ०) प्रजा, रिआया।

रैयाराव–पु० छोटा राजा; एक पुरानी पदवी जो राजे अपने सरदारोंको प्रदान करते थे।

रैल*–स्त्री० राशि, समूह, झुंड।

रैवत–पु० (सं०) एक पर्वत; एक साममंत्र; शिव; एक दैत्य जिसकी गणना वालग्रहमें हैं; आनर्तका एक राजा; रेवतीके गर्भसे उत्पन्न पाँचवें मनु।

रैवतक–पु० (सं०) द्वारकाके पासका एक पर्वत।

रैवत्य–पु० (सं०) धन, दौलत; एक प्रकारका साम।

रैसा†–पु० विवाद; झगड़ा, लड़ाई।

रैहर–पु० झगड़ा, युद्ध।

रैहाँ–पु० (अ०) एक सुगंधित पौधा; वख्शिश (खुदाकी); औलाद; गुजारा; रहम, इनायत।

रोंआँ–पु० दे० 'रोयाँ'।

रोंग–पु० रोम, रोयाँ।

रोंगटा–पु० रोयाँ, लोम। मु०–(टे) **खड़े होना**–रोमांच होना।

रोंगटी–स्त्री० वेईमानी (खेलमें)–'रोंगटि करत तुम खेलतहीमें परी कहा यह वानि'–सूर।

रोंघट–स्त्री० मैल, मिट्टी, धूल।

रोंठा†–पु० अमहर, सुखायी हुई आमकी खटाई।

रोंत*–स्त्री० ठकुराई।

रोंव*–पु० रोआँ।

रोंसा†–पु० लोविया, वोड़ेकी फली।

रोआव–पु० दे० 'रुआव'।

रोंआसा–वि० रोनेको उद्यत।

रोक–पु० (सं०) नक़्द रुपया, रोकड़; नक़्द दाम देकर चीज खरीदना; छिद्र; दीप्ति; नौका। वि० चल, गतिमान्। स्त्री० (हिं०) अटकाव, रुकाव, छेंक; रोकनेवाली चीज (विशेषतः जानवरोंको रोकनेके लिए वनायी हुई वाड़, चहारदीवारी आदि); काम करनेपर प्रतिवंध; मनाही, निषेध। **–झोंक, –टोक**–स्त्री० वाधा, अवरोध, प्रतिवंध; निषेध, मनाही। **–थाम**–स्त्री० रोकटोक, अवरोध।

रोकड़–स्त्री० नक़्द रकम, रुपया; जमा, पूँजी। **–वही**–स्त्री० वह वही जिसमें नक़्द रुपयोंके लेन-देनका हिसाव हो। **–वाकी**–स्त्री० (कैश-वैलेन्स)–आय-व्ययकी गणनाके वाद शेष वचा हुआ नक़्द धन। **–विक्री**–स्त्री० वह विक्री जो नक़्द दामपर की गयी हो। मु० **–मिलाना**–आय-व्ययका हिसाव लगाकर रकमके घटने-वढ़नेका पता लगाना।

रोकड़िया–पु० नक़्द रुपया, रोकड़ रखनेवाला, मुनीम, खजांची।

रोकना–स० क्रि० गति, चाल वंद करना (जैसे–मोटर रोकना, पानीकी धार रोकना); जानेसे मना करना; किसी काम, वातका क्रम वंद करना; वाधा, अड़चन डालना; मना करना; ऊपर न आने देना (लाठी, तलवार आदिका प्रहार लाठी, तलवार आदिसे रोकना); वश, कावूमें रखना, संयत रखना (मन रोकना, लालसा रोकना); सामना करना (धावा, आक्रमण रोकना); छेंकना (रास्ता रोकना, प्रकाश रोकना)।

रोख*–पु० दे० 'रोष'।

रोग–पु० (सं०) शरीरकी विकारपूर्ण अवस्था, वीमारी; कोई वीमारी (हैजा, प्लेग, चेचक इ०)। **–कारक**–वि० वीमारी पैदा करनेवाला। **–काष्ठ**–पु० वक्कमकी लकड़ी। **–ग्रस्त**–वि० वीमार, रोगसे पीड़ित। **–घ्न**–वि० रोगनाशक। पु० औषध; आयुर्वेद-शास्त्र। **–नाशक**–वि० वीमारी दूर करनेवाला। **–निदान**–पु० (डायग्नोसिस) रोगके मूल कारण, उसके लक्षणोंकी पहचान करना। **–निरोधक द्रव्य**–पु० (प्रोफिलैक्टिक ड्रग) रोगोंकी उत्पत्ति तथा प्रसार रोकनेवाली दवा। **परीसह**–पु० कड़ेसे कड़े रोगको विना कुछ ध्यान दिये वरदाश्त करना (जै०)। **–मुरारि**–पु० ज्वरकी एक औषध। **–राज**–पु० यक्ष्मा, क्षयरोग। **–लक्षण**–पु० रोगके लक्षण जिनसे रोगकी पहचान हो। **–विज्ञान**–पु० (पैथालॉजी) आधुनिक चिकित्सा-विज्ञानकी शाखा जो रोग, उसका कारण और रूप आदिका विवेचन करती है। **–शिला**–स्त्री० मैनसिल। **–शिल्पी (पिन्)**–पु० सोनालूका पेड़। **–ह**–पु० औषध। **–हर**–वि० रोगनाशक। **–हारी (रिन्)**–वि० रोगनाशक। पु० वैद्य।

रोगदई, रोगदैया–स्त्री० दे० 'रोंगटी'।

रोग़न–पु० (फा०) कोई चिकनी चीज, तेल, घी इ०; एक पतला लेप, वार्निश, पालिश (जूते, लकड़ी आदिपर चमक लानेके लिए व्यवहार की जाती है); लाख आदिका वना मसाला (मिट्टीके वरतनोंपर चढ़ाया जाता है); वरेंके तेलका वना मसाला (चमड़ेको मुलायम करनेके लिए लगाया जाता है)। **–जोश**–पु० एक तरहका सावुन। **–दाग़**–पु० करछा, करछुल जिसमें घी दागते हैं। **–दार**–वि० रोगन चढ़ाया हुआ, चमकीला। **–फ़रोश**–पु० तेली। **–(ने) गुल**–पु० गुलावके फूलका तेल। **–ज़र्द**–पु० घी। **–तलख़**–पु० कड़वा तेल। **–सियाह**–पु० अलसीका तेल; कड़वा तेल।

रोग़नी–वि० (फा०) तेल, घी लगा या चुपड़ा हुआ; वार्निश किया हुआ; जिसके खमीरमें रोगन मिलाया गया हो। **–रोटी**–स्त्री० खमीरमें रोगन मिलायी हुई रोटी; घी चुपड़ी हुई रोटी।

रोगाक्रांत–वि० (सं०) रोगी, रोगसे पीड़ित।

रोगाणु–पु० वे विषैले जीवाणु जो शरीरमें पहुँचकर रोग पैदा करते हैं।

रोगाणुनाशी–पु० (डिस इन्फ़ेक्टैन्ट) ऐसे रासायनिक पदार्थ जो वैक्टीरियाका नाश कर सकते हैं, जैसे कार्वोलिक अम्ल।

रोगातुर–वि० (सं०) रोगसे घवराया हुआ, पीड़ित।

रोगार्त–वि० (सं०) रोगसे दुःखी, व्याकुल।

रोगाह्वय–पु० (सं०) कुष्ठकी एक ओषधि, कुट।

रोगिणी–वि० स्त्री० (सं०) रोगसे पीड़ित (स्त्री)।

रोगित–वि० (सं०) रोगी, पीड़ित। पु० कुत्तेका पागलपन।

रोगिया–पु० वीमार, रोगी।

रोगी (गिन्)–वि० (सं०) अस्वस्थ, व्याधिग्रस्त, वीमार। –

(गि) **तरु**–पु० अशोक।

रोगीवाहक गाड़ी–स्त्री० (एंबुलेंसकार) दे० 'परिचारगाड़ी'; अस्पताल गाड़ी।

रोगोत्तर स्वास्थ्यलाभ–पु० (कनवेलेसेंस) रोग अच्छा हो जानेके बाद स्वास्थ्यकी पूर्वस्थिति तथा पूर्वबल प्राप्त करनेकी क्रिया या स्थिति।

रोचक–वि० (सं०) रुचनेवाला, प्रिय; मनोरंजक, दिलचस्प। पु० भूख; केला; राजपलांडु; ग्रंथिपर्णी, भँडेउर (नेपाली)। **–द्वय**–पु० विट और सैंधव लवण।

रोचन–वि० (सं०) प्रिय, अच्छा लगनेवाला; शोभावान्; दीप्तियुक्त। पु० कूट; काला सेमर; सफेद सहिजन; प्याज; करंज; देश, अँकोट; अनार; अमलतास; कमीला, कांपिल्य; गोरोचन; रोचना, रोली; रोगके अधिष्ठाता देवता (हरिवंश); कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; स्वारोचिष् मन्वंतरके इंद्र। **–फल**–पु० बिजौरा नीबू।

रोचनक–पु० (सं०) जंबीरी नीबू; वंशलोचन।

रोचना–स्त्री० (सं०) रक्त कमल; वंशलोचन; उज्ज्वल आकाश; काला सेमर; गोरोचन; सुंदर स्त्री; वसुदेवकी स्त्री; टीका, तिलक।

रोचनी–स्त्री० (सं०) आँवला; मैनसिल; सफेद निसोथ; गोरोचना; कमीला; दंती; तारा।

रोचमान–वि० (सं०) चमकता हुआ; शोभायुक्त, सुंदर। पु० घोड़ेकी गरदनपरकी एक भँवरी; स्कंदका एक अनुचर।

रोचि(स्)–स्त्री० (सं०) प्रभा, चमक, कांति; किरण, रश्मि; ज्योति; प्रकट होती हुई शोभा।

रोचिष्णु–वि० (सं०) चमकदार; अलंकारों आदिसे जगमगाता हुआ; रुचि (भूख) जगानेवाला।

रोची–स्त्री० (सं०) एक शाक, हिलमोचिका।

रोज*–पु० रोना-धोना; विलाप, रोना-पीटना।

रोज़–पु० (फा०) दिन; वक्त। अ० प्रतिदिन, हर रोज, नित्य। **–अफ़ज़ूँ**–वि० प्रतिदिन बढ़नेवाला (धन, यश आदि)। **–नामचा**–पु० वह किताब जिसमें दैनिक विवरण लिखा जाय, 'डायरी'; वह वही जिसमें रोजका हिसाब लिखा जाय, दर्ज हो; वह रजिस्टर या किताब जिसमें पटवारी अपना हर रोजका काम लिखता है; पुलिस थानेका रजिस्टर नं० १ जिसमें पुलिसके दैनिक कार्योंका विवरण लिखा जाता है। **–नामा**–पु० तिथिपत्र; दैनिक पत्र। **–ब-रोज़**–अ० प्रतिदिन, हर रोज; क्रमशः, लगातार। **–मर्रा**–अ० नित्य, प्रतिदिन, हर रोज। पु० अहले जबानकी भाषा, बोलचालके शब्द और मुहावरे। **–रोज़**–अ० प्रतिदिन, हर रोज। **–व शब**–अ० रात-दिन; हमेशा, नित्य। –(**ज़े**) **क़याम**,**–क़यामत**–पु० कयामतका दिन। **–जज़ा**–पु० कर्मोंका फल मिलनेका दिन, कयामतका दिन। **–दाद**–पु० दे० 'रोजेहश्र'। **–नजात**–पु० दुश्मनसे रिहाई पानेका दिन; कयामतका दिन। **–फ़िराक़**–पु० विरह, वियोगका काल, समय, अवधि, दिन। **–बद**–पु० बुरे दिन। **–हश्र**,**–हिसाब**–पु० कयामतका दिन।

रोज़गार–पु० (फा०) जीविका, धनसंचयका काम, उद्यम, व्यवसाय। **–कार्यालय**–पु० बेकार लोगोंको काम या नौकरी दिलानेमें सहायता करनेवाला दफ्तर; (एम्प्लॉयमेंट एक्सचेंज); अधिनियोजनालय, नियोजनालय, काम दिलाऊ दफ्तर। मु० **–चमकना**–व्यापार, व्यवसायमें लाभ होना।

रोज़ा–पु० (फा०) एक मजहबी फर्ज जिसमें प्रातःकाल एक घड़ी रातसे संध्याके एक घड़ी बादतक बिलकुल नहीं खाते; उपवास, अनाहार; रोजेका दिन; रोजेका महीना, रमजान। **–ख़ोर**,**–ख़्वार**–पु० रोजा न रखनेवाला आदमी। **–दार**–पु० वह जो रोजा रखता है। मु० **–अफ्तार करना**–रोजा खोलना। **–खाना**–नियत रोजोंमें कोई न रखना। **–खोलना**–दिनभर व्रत रहनेके बाद संध्याको पहले पहल कुछ खाना। **–टूटना**–व्रत खंडित होना।

रोज़ाना–अ० (फा०) नित्य, हर रोज।

रोज़ी–स्त्री० (फा०) खूराक, रिज्क; जीविका। **–दार**–वि० जिसे खर्चके लिए नित्य कुछ दिया जाय। **–बिगाड़**–वि० लगी रोजी बिगाड़नेवाला, निकम्मा। **–रसाँ**–वि० रोजी पहुँचानेवाला। पु० परवरदिगार। **–रोजगार**–पु० आजीविका, जीवन निर्वाहका साधन।

रोज़ीना–पु० (फा०) दैनिक वेतन, मजदूरी (जो रोजाना मिले); खूराक (जो रोजाना दी जाय); पेंशन, वजीफा। † अ० नित्य, प्रतिदिन।

रोझ*–स्त्री०, पु० नीलगाय–'हम भी पाहन पूजते होते बनके रोझ' –साखी।

रोट–पु० बहुत मोटी रोटी; शरबत, महुएके रसमें बनायी हुई मोटी रोटी; लिट्ट, हाथियोंका रातिब।

रोटका†–पु० बाजरा।

रोटिका–स्त्री० (सं०) फुलकी, हलकी, छोटी रोटी।

रोटिहा†–पु० रोटियोंके (खानेके) बदलेमें काम करनेवाला नौकर।

रोटिहान†–पु० पकी रोटियाँ रखनेका छोटा चबूतरा।

रोटी–स्त्री० गुँधे आटेकी तवेपर या आगपर सिकी और बेलन या हाथसे दबाकर बढ़ायी हुई गोल टिकिया, चपाती, फुलका; खाना, आहार, भोजन। **–कपड़ा**–पु० खाना-कपड़ा, गुजर-बसरकी सामग्री। **–दाल**–स्त्री० रोटी और दाल; भोजन। **–फल**–पु० एक फल; इस फलका पेड़। मु०**–कमाना**–जीविका, रोजी चलाना, पैदा करना। **–की पीठ**–उलटकर सेंका जानेवाला रोटीका पहलू।

रोठा†–पु० एक तरहका बाजरा।

रोड–पु० (अं०) सड़क, राजमार्ग।

रोडवेज–पु० (अं०) सरकारी मोटर गाड़ियों द्वारा यात्रियोंके गमनागमनकी नियमित व्यवस्था।

रोड़ा–पु० कंकड़, ईंट-पत्थरके टुकड़े; एक पंजाबी धान; पंजाबकी एक जाति; अरोड़ा; (ला०) बाधा। मु० **–डालना**–बाधा खड़ी करना। –(**ड़े**) **अटकाना**–बाधा डालना।

रोड़ी–स्त्री० पत्थर या ईंटकी गिट्टियाँ जो सड़क आदि बनानेके काम आती है।

रोद(स्)–पु० (सं०) स्वर्ग; भूमि; द्यावापृथिवी। (स्त्री० दे० 'रोदसी'।)

रोदन–पु० (सं०) रोना, विलाप करना।

रोदसी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; स्वर्ग–'पूरति है भूरि धूरि रोदसीके आस-पास'–राम०।

रोदा–पु० धनुष्की डोरी, प्रत्यंचा; बारीक, सूक्ष्म ताँत; पेड़की शाख।

रोध–पु० (सं०) रोक, निषेध, बाधा; घेरा; तीर, किनारा; वारी। **–कृत्**–पु० साठ संवत्सरोंमेंसे पैंतालीसवाँ (बृ० सं०)। **–वक्रा**–स्त्री० टेढ़े किनारेवाली नदी।

रोधक–वि० (सं०) रोकनेवाला।

रोधन–पु० (सं०) बुध ग्रह, रोक, अवरोध; दमन।

रोधना*–स० क्रि० रोकना।

रोधनी–स्त्री० (स्टाप कॉक) नलमें लगा हुआ वह काग या डाँट जो पानीकी सतह निर्धारित सीमातक पहुँच जानेके बाद पानीका भरना या नलमेंसे आना अपने आप रोक देता है।

रोध्र–पु० (सं०) पाप; अपराध; लोध्र, लोधका पेड़।

रोना–अ० क्रि० शोक, कष्टजनित विकलताके कारण कुछ कह उठना, कुछ विशेष प्रकारके स्वर निकलना और आँसू बहना; चिल्लाना तथा आँसू बहाना, रुदन या विलाप करना; शिकायत करना; अफसोस करना, झींकना; रंज, गम, शोक करना; कुढ़ना; वावैला करना, फरियाद करना; दुःख बयान करना; पछताना। वि० रोनेवाला; मुहर्रमी; चिड़चिड़ा। पु० रुदन, अश्रुपात; कुहराम; मातम; अफसोस, गम; शिकायत; तकलीफ; फरियाद; वावैला; कुढ़न। मु० **–आना**–दिल भर आना, अफसोस होना। **–पड़ना**–मातम होना, कुहराम मचना। **–पीटना**–चिल्लाकर, छाती पीटकर रोना।

रोनी-धोनी–वि० स्त्री० रोनेधोनेवाली, मुहर्रमी। स्त्री० रुदन, विलापकी प्रवृत्ति; मनहूसी।

रोप–पु० (सं०) रोपण (धान, पेड़ आदिके लिए); ठहराव, रुकावट;

छिद्र; छेद; वाण; बुद्धि फेरना, मोहन; † हरिसके छोरपरकी जंघेके पारवाली हलमें लगी लकड़ी ।

रोपक–वि० (सं०) जमाने, लगानेवाला; स्थापित करनेवाला; (दीवार आदि) उठानेवाला । पु० सोने-चाँदीकी तौलका एक मान, सुवर्णका सत्तरवाँ अंश ।

रोपण–पु० (सं०) लगाना, बैठाना (बीज, पौधा); स्थापित करना; ऊपर रखना; खड़ा करना; उठाना (दीवार आदि); मोहित करना, मोहन; बुद्धि फेरना, बुद्धि, विचारमें गड़बड़ी पैदा करना; घावपर पपड़ी बँधना, सूखना; किसी प्रकारका लेप लगाना ।

रोपना–स० क्रि० लगाना, जमाना; पौधा लगाना, एक जगहसे दूसरी जगह गाड़ना; स्थापित करना, रखना; ठहराना, टिकाना; बीज बोना; रखना; हथेली या कोई वस्त्र फैलाना, कोई पात्र आगे बढ़ाना (कोई वस्तु लेनेके लिए) ।

रोपनी–स्त्री० रोपाई, रोपने (धान आदिके पौधोंको गाड़ने) का काम ।

रोपित–वि० (सं०) जमाया, लगाया हुआ; उठाया, खड़ा किया हुआ; रखा हुआ, स्थापित; मोहित, भ्रांत ।

रोब–पु० (अ० 'रुअ़ब') धाक, दबदबा; तेज, प्रताप; आतंक । **–दाब**–पु० तेज; आतंक । **–दार**–वि० तेजस्वी; प्रभावशाली । मु० **–में आना**– धाक, प्रभाव मानना; भय मानना ।

रोबीला–पु० रोबयुक्त, प्रभावशाली ।

रोमंथ–पु० (सं०) जुगाली, पागुर ।

रोम–पु० इटलीकी राजधानी; (सं०) छिद्र; जल दे० 'रोम(न्)' ।

रोम(न्)–पु० (सं०) रोयाँ, रोंगटा, शरीरपरके बाल; पर । **–कर्णक**–पु० खरगोश । **–कूप,–द्वार**–पु० त्वचाके वे छोटे-छोटे छेद जिनसे रोयें निकलते हैं । **–केशर,–गुच्छ** –पु० चँवर । **–पाट***–पु० ऊनी कपड़ा । **–पाद**–पु० अंगदेशका एक राजा जिसने (दशरथपुत्री) शांताको गोद लिया था । **–बद्ध**–पु० वह वस्त्र जो रोयेंसे बुना, बँधा हो । वि० रोयेंसे बाँधा, बुना हुआ । **–भूमि**–स्त्री० चमड़ा, त्वचा । **–राजी,–लता**–स्त्री० रोमावली, रोमोंकी श्रेणी; पेटपरके गहरे बाल, नाभिसे ऊपरके बाल । **–हर्ष**–पु० रोयें, रोंगटे खड़े होना, रोमांच । **–हर्षण**–पु० रोमोंका खड़ा होना (हर्ष, शोक, भय आदिके कारण); वेदव्यासके एक शिष्य, सूत पौराणिक । वि० रोंगटे खड़े करनेवाला, भयंकर, भीषण । –मु० **–रोममें**–सारे शरीरमें, अंग-अंगमें । **–रोमसे**–पूर्ण हृदयसे, तन-मनसे ।

रोमक–पु० (स०) साँभर झीलका नमक, साकंभरी, पांशुलवण; ज्योतिषका एक सिद्धांत; एक प्रकारका चुंबक ।

रोमन–पु० (अं०) रोम-निवासी । **–कैथलिक**–पु० ईसाइयोंका एक पुराना संप्रदाय (इस संप्रदायमें मरियमकी उपासनाकी प्रथा है और गिरजाघरोंमें मूर्तियाँ भी रखी जाती हैं) ।

रोमांच–पु० (सं०) रोयोंका उभरना, खड़ा होना (आनंद, भय आदिसे), पुलक ।

रोमांचक–वि० जिसे पढ़नेसे मनुष्य रोमांचित हो उठे । रोमांसके पर्यायके रूपमें भी प्रयुक्त । शौर्य और प्रेमसे संवलित (उपन्यास) ।

रोमांचित–वि० (सं०) पुलकित, हृष्टरोमा, जिसके रोयें खड़े हों ।

रोमांतिक मसूरिका–स्त्री० (सं०) चेचक जैसा एक रोग, छोटी माता ।

रोमाग्र–पु० (सं०) रोयेंका सिरा ।

रोमानी–वि० जिसमें मुख्य रूपसे शारीरिक प्रेमका वर्णन हो ।

रोमाली–स्त्री० (सं०) रोमावली, रोमराजी, रोमोंकी पंक्ति ।

रोमावलि, रोमावली–स्त्री० (सं०) रोमोंकी पंक्ति; नाभिसे ऊपरकी ओर जानेवाली रोमपंक्ति ।

रोमिका–स्त्री० छोटा रोआँ, वनस्पति आदिपर उगनेवाले बहुत छोटे रोएँ ।

रोमिल–वि० रोयेंदार, बालोंवाला ।

रोमोद्गम, रोमोद्भेद–पु० (सं०) रोमहर्ष, रोमांच ।

रोम्याँरोलाँ–पु० (१८६६–१९४४) प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक; नोबेल पुरस्कार-विजेता, १९१५; विश्वशांतिके समर्थक ।

रोयाँ–पु० लोम, रोम, रोंगटा । मु० **–खड़ा होना**–रोमांच होना । **–टेढ़ा न होना**–कुछ न बिगड़ पाना, कोई क्षति न होना (बाल बाँका न होना) । **–पसीजना**–दया उपजना, करुणार्द्र होना ।

रोर–स्त्री० रौला, कोलाहल, हल्ला; बहुतसे लोगोंकी एक साथ निकली हुई ध्वनि; रोने-चिल्लानेका शब्द; हलचल, धूमधाम; उपद्रव; निर्धनता, गरीबी–'रोरके जोरतें सोर घरनी कियो चल्यो द्विज द्वारका जाय ठाड्यो'–सूर; विपत्ति । वि० दुर्दमनीय, प्रचंड; उद्धत; दुष्ट, अत्याचारी ।

रोरा–पु० गाँज़ेका चूर; दे० 'रोर' ।

रोरी†–स्त्री० दे० 'रोली'; * धूम, चहल-पहल, दौड़धूप–'रोरि परी गोकुलमें जँह तहँ गाइ फिरत पय दोहनको'–सूर । वि० स्त्री० रुचिर, सुंदर । पु० लहसुनिया नग ।

रोरुदा–स्त्री० (सं०) रुदन, विलाप, जार-जार रोना ।

रोलंब–पु० (सं०) मधुप, भ्रमर; शुष्क भूमि । वि० अविश्वासी ।

रोल–पु० पानीका रेला, तोड़, बहाव; रुखानी जैसा एक औजार जिससे बरतनकी नक्काशीकी जमीन साफ करते हैं; (सं०) हरा अदरक । * स्त्री० हल्ला, कोलाहल; शब्द, ध्वनि, आवाज ।

रोलर–पु० (अं०) ढुलकनेवाली चीज, बेलन; छापेकी मशीनमें टाइपों या अक्षरोंपर स्याही देनेका बेलन । **–फ्रेम**–पु० बेलनकी कमानी । **–मोल्ड**–पु० सरेसका रोलर ढालनेका साँचा ।

रोला–पु० शोरगुल, कोलाहल; बेलन; घोर युद्ध; २४ मात्राओंका एक छंद; † चौका-बरतन करनेका काम ।

रोली–स्त्री० हलदी-चूनेकी बनी लाल बुकनी, श्री (जिसका तिलक लगाते हैं) । पु० लहसुनिया नग ।

रोवनहार*–वि०, पु० रोनेवाला; मृत्युका शोक करनेवाला, आत्मीय ।

रोवना–वि० बहुत जल्दी रोनेवाला, बुरा माननेवाला; चिढ़नेवाला, खेल, हँसीमें बुरा माननेवाला । * अ० क्रि० दे० 'रोना' ।

रोवनिहारा*–वि०, पु० दे० 'रोवनहार' ।

रोवनी-धोवनी†–स्त्री० दे० 'रोनी-धोनी' ।

रोवाँ–पु० दे० 'रोयाँ' ।

रोवाँसा–वि० रोनेको तैयार, जिसे रुलाई आ रही हो । (स्त्री० 'रोवाँसी' ।)

रोशन–वि० (फा०) जलता हुआ; प्रकाशित; प्रकाशपूर्ण, चमकदार; प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर; जाहिर, प्रकट । **–आरा(बेगम)**–स्त्री० शाहजहाँकी पुत्री । **–चौकी**–स्त्री० एक किस्मके बाजेवालोंकी चौकी, शहनाई, नफीरी (धनियों, राजाओंके द्वारपर पहर-पहरपर बजनेके कारण इसका यह नाम पड़ा है) । **–ज़मीर, –दिमाग़**–वि० अक्लमंद, सुबुद्ध । **–दान**–पु० प्रकाश आने देनेके लिए दीवारमें बना मोखा, झरोखा ।

रोशनाई–स्त्री० स्याही, मसि; प्रकाश, रोशनी ।

रोशनी–स्त्री० प्रकाश, उजाला; चिराग, दिया; दीपमालाका प्रकाश, दीपोत्सव; ज्ञान, शिक्षाका प्रकाश । मु० **–डालना**–किसी बात या विषयको स्पष्ट करना, सामने लाना, उजागर करना ।

रोष–पु० (सं०) क्रोध; विद्वेष, विरोध; चिढ़; लड़नेका उत्साह, उमंग, जोश ।

रोषण–पु० (सं०) पारा; कसौटी; ऊसर भूमि । वि० क्रोधशील; क्रुद्ध ।

रोषान्वित, रोषित–वि० (सं०) क्रुद्ध ।

रोषी(षिन्)–वि० (सं०) रोष करनेवाला, क्रोधी ।

रोस*–पु० दे० 'रोष' । स्त्री० दे० 'रौस' ।

रोसनाई–स्त्री० दे० 'रोशनाई' ।

रोसनी–स्त्री० दे० 'रोशनी' ।

रोसा–पु० एक सुगंधित घास, रूसा ।

रोह–पु० (सं०) चढ़ाई; चढ़ना; अंकुर, अँखुआ; कली; नील गाय । * वि० चढ़नेवाला । **–ग**–पु० सिंहलका एक पहाड़, आदमीकी चोटी, विदूर पर्वत ।

रोहक–वि० (सं०) चढ़नेवाला । पु० सवार ।

रोहज†–पु० आँख।

रोहण–पु० (सं०) चढ़ना; अंकुरित होना, उगना; ऊपरकी ओर बढ़ना; वीर्य; विदूराद्रि; एक राज्य।

रोहन–पु० एक पेड़, सूहन या सूमी वृक्ष।

रोहना*–अ० क्रि० चढ़ना; ऊपरको बढ़ना, जाना; सवार होना। स० क्रि० चढ़ाना; ऊपर करना; धारण करना, अपने ऊपर रखना; सवार कराना।

रोहा–पु० आँखका एक रोग; नाली।

रोहि–पु० (सं०) बीज, वृक्ष। वि० धार्मिक, व्रती।

रोहिण–पु० (सं०) बरगदका पेड़; गूलरका पेड़; भूतृण, रोहिश घास; पंद्रह भागोंमें विभक्त दिनका नवाँ भाग (इसकी देवी रोहिणी है)।

रोहिणिका–स्त्री० (सं०) लाल चेहरेवाली स्त्री (क्रोध या अरुण राग लेपके कारण)।

रोहिणी–स्त्री० (सं०) गाय; बिजली; कटुतुंबी; कंजा, करंज; रीठा; महाश्वेता, सफेद कौआठोंठी; लाल गदहपुरना; विद्यादेवी (जै०); गंभारी; मजीठ, मंजिष्ठा; ब्राह्मी बूटी; जरा लंबी पीली हर्र, व्रणरोपिणी; रोहूकी-सी एक मछली; नववर्षीया कन्या; पंचवर्षीया कुमारी; वसुदेवकी एक स्त्री, बलरामकी माता; सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे चौथा (यह रथके आकारका और पाँच तारोंसे बना माना जाता है। पुराणानुसार यह दक्षकी कन्या और चंद्रमाकी पत्नी है); त्वचाकी छठी परत; गलेका एक रोग। **–कांत**–पु० चंद्रमा। **–पति, –वल्लभ**–पु० चंद्रमा; वसुदेव। **–योग**–पु० रोहिणी नक्षत्रका चंद्रमाके साथ योग (आषाढ़के कृष्णपक्षमें यह घटित होता है)। **–व्रत**–पु० भाद्र-कृष्णाष्टमीको किया जानेवाला एक व्रत।

रोहिणीश–पु० (सं०) चंद्रमा; वसुदेव।

रोहित–वि० (सं०) लाल रंगका, लोहित। पु० लाल रंग; रक्त, खून; इंद्रधनुष; केसर; कुंकुम; रोहितक रोहेड़ा वृक्ष; बर्रेका फूल; रोहू मछली; एक मृग; गंधर्वोंकी एक जाति। **–वाह**–पु० अग्नि।

रोहितक–पु० (सं०) रोहेड़ा, कूटशाल्मली।

रोहिताश्व–पु० (सं०) अग्नि; राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र; रोहतासगढ़ (सोनतटपर)।

रोहितेय–पु० (सं०) रोहितक वृक्ष।

रोहित्–पु० (सं०) सूर्य। स्त्री० मृगी, हरिणी; लाल रंगकी घोड़ी, बडवा; नदी; एक लता।

रोहिनी*–स्त्री० दे० 'रोहिणी'।

रोहिश–पु० (सं०) एक घास जिसकी जड़ सुगंधित होती है, रूसा।

रोहिष–पु० (सं०) रूसा घास; रोहू मछली; गधेसे मिलता-जुलता एक मृग।

रोही(हिन्)–वि० (सं०) चढ़नेवाला। पु० वट वृक्ष; अश्वत्थ वृक्ष; उदुंबर वृक्ष; रूसा घास; रुहेड़ा, रोहित वृक्ष; एक मृग; रोहू मछली; * एक अस्त्र।

रोहुन–पु० रोहन पेड़।

रोहू–पु०, स्त्री० एक मछली जो बहुत अच्छी मानी जाती है (यह सामान्यतः पाँचसे दस सेरतककी होती है। इसके लाल पर होते हैं, अतः लालपरी भी कहते हैं); दार्जिलिंगमें होनेवाला एक पेड़।

रौंट–स्त्री० खेल-हँसीमें बुरा मानना, रोना; चिढ़कर बेईमानी करना।

रौंटि–स्त्री० बच्चोंका रूठना, चिढ़ जाना।

रौंद–स्त्री० रौंदनेका भाव या काम; चक्कर, गश्त, 'राउंड' (सिपाही)। मु० –पर जाना–गश्तके लिए निकलना।

रौंदन–स्त्री० रौंदनेकी क्रिया या भाव, मर्दन।

रौंदना–स० क्रि० पैरोंसे कुचलना, पददलित करना; बरबाद, तहस-नहस करना; लातोंसे मारना-पीटना।

रौंदी†–स्त्री० जानवरोंके रहनेका बाड़ा, घेरा।

रौंस*–पु० घट्ठा, निशान–'रामहि राम पुकारतो जिभ्या परिगो रौंस'–कबीर।

रौंसा–पु० बोड़ा, लोबिया; लोबियेके बीज; केवाँच; केवाँचके बीज।

रौ–स्त्री० (फा०) चाल, गति; वेग; पानीका बहाव, तोड़, रेला; ढंग, चाल; धुन, खयाल; जोश। † पु० एक तरहका पेड़; * दे० 'रव'।

रौक्म–वि० (सं०) रुक्म-संबंधी; सोनेका बना हुआ।

रौक्ष्य–पु० (सं०) रूखापन, रुखाई।

रौखुर†–स्त्री० वह भूमि जो बाढ़में बालू आ जानेसे खराब हो गयी हो।

रौग़न–पु० (अ०) चिकनी चीज, तेल, घी आदि; लाख आदिसे निर्मित पक्का रंग।

रौग़नी–वि० तेलका; रौगन फेरा, लगाया हुआ।

रौचनिक–वि० (सं०) रोली, गोरोचन-संबंधी; रोली, गोरोचनसे रँगा हुआ।

रौच्य–पु० (सं०) तेरहवें मनु; बिल्वदंडधारी सन्न्यासी।

रौज़न–पु० (फा०) सूराख, छेद; दरार; रोशनदान।

रौज़ा–पु० (अ०) बाग; मकबरा, समाधि (विशेषतः गुंबददार)।

रौत†–पु० ससुर।

रौताइन–स्त्री० राव, रावतकी पत्नी; ठकुराइन; स्त्रियोंके लिए एक आदरसूचक संबोधन; † कहारिन (छत्तीस०)।

रौताई–स्त्री० राव, रावत होना; ठकुराई, सरदारी; राव, रावतका पद।

रौद†–पु० धूप, घाम।

रौदा†–पु० दे० 'रोदा'।

रौद्र–वि० (सं०) रुद्र-संबंधी; रुद्रका, भयंकर; क्रोधपूर्ण। पु० काव्यके नौ रसोंमेंसे एक जिसका स्थायी भाव क्रोध है; क्रोध; धूप, घाम; यमराज; ग्यारह मात्राओंके छंद जिनकी संख्या १४४ तक है; एक अस्त्र; एक केतु; साठमेंसे चौवनवाँ संवत्सर। **–केतु**–पु० एक केतु (पूर्व-दक्षिण आकाशमें शूलके अगले हिस्सेका-सा; आकाशके तीन भागोंतकमें गमन करनेवाला–बृ० सं०)। **–दर्शन**–वि० देखनेमें भयानक।

रौद्रता–स्त्री० (सं०) भयंकरता; प्रचंडता, उग्रता।

रौद्रार्क–पु० (सं०) २३ मात्राओंके छंदोंका नाम।

रौद्री–स्त्री० (सं०) रुद्रकी पत्नी, गौरी; गांधार स्वरकी पहली श्रुति।

रौन*–पु० रमण करनेवाला, पति।

रौनक़–स्त्री० (अ०) चमक, ताब; खूबी; ताजगी; चहल-पहल; बहार। **–अफ़रोज़**–वि० रौनक बढ़ानेवाला। **–दार**–वि० बहारदार; सजा हुआ। **–(क़े) महफ़िल**–वि० सभाभूषण, जो महफिलको आनंदमय बनाये।

रौनी*–स्त्री० दे० 'रमणी'।

रौप्य–वि० (सं०) चाँदीका; चाँदीका बना हुआ। पु० चाँदी, रूपा।

रौमक, रौमलवण–पु० (सं०) साँभर नमक।

रौर†–पु० रोर, हल्ला, शब्द।

रौरव–वि० (सं०) डरावना, भयंकर; कपटी, धूर्त; बातपर दृढ़ न रहनेवाला; रुरु मृग-संबंधी। पु० एक भीषण नरक।

रौरा†–पु० दे० 'रौला'। सर्व० रावरा, आपका। (स्त्री० 'रौरी'।)

रौराना†–अ० क्रि० बकना, हल्ला, प्रलाप करना।

रौरि*–स्त्री० कोलाहल, शोर।

रौरे†–सर्व० आदरसूचक संबोधन, आप।

रौला–पु० हल्ला, हुल्लड़; ऊधम, हलचल।

रौल, रौलि†–स्त्री० धौल, तमाचा, झापड़।

रौशन–वि० दे० 'रोशन'।

रौशनी–स्त्री० दे० 'रोशनी'।

रौस–स्त्री० गति, हरकत, चाल; चाल-ढाल, रंग-ढंग; बागकी क्यारियोंके बीचका रास्ता; मकानकी ऊपरवाली मंजिलमें (आँगनके ऊपरका) चारों तरफका पतला रास्ता।

रौसली†–स्त्री० चिकनी, उपजाऊ मिट्टी।

रौसा–पु० दे० 'रौंसा'।

रौहाल†–स्त्री० घोड़ेकी एक चाल; घोड़ोंकी एक जाति।

रौहिण–पु० (सं०) चंदन।

रौहिणेय–पु० (सं०) रोहिणीपुत्र, बलराम; बुध ग्रह; बछड़ा; मरकत, पन्ना।

र्यासद–स्त्री० दे० 'रियासत'।

र्योरी–स्त्री० दे० 'रेवड़ी'।

–वाब–पु० दे० 'रोब'।

ल

ल–देवनागरी वर्णमालाका अठाईसवाँ व्यंजन और तीसरा अंतस्थ वर्ण। उच्चारणस्थान दंत।

लंक*–स्त्री० कमर; लंका नामक द्वीप, रावणकी वासभूमि। **–नाथ,–नायक,–पति**–पु० रावण; विभीषण। **–टंकटा**–स्त्री० सुकेश राक्षसकी माँका नाम; संध्याकी कन्याका नाम (पुराण)। **–दीप**–पु० लंका।

लंकलाट–पु० (अं० 'लांगक्लाथ') एक मजबूत मोटा सूती कपड़ा।

लंका–स्त्री० (सं०) भारतके दक्षिणका एक द्वीप, सिंहल (कहते हैं, रावण इसी द्वीपका शासक था); एक झील; असबरग; काला चना; शाखा, डाली; दो दलोंवाले (द्विदल) अन्न जो दालके काम आते हैं, शिंबी धान्य; कुलटा; दे० 'लंकिनी'। **–दाही(हिन्)**–पु० हनूमान। **–नाथ,–पति**–पु० रावण; विभीषण।

लंकाधिनाथ, लंकाधिपति, लंकाधिराज–पु० (सं०) रावण; विभीषण।

लंकापिका, लंकायिका, लंकारिका–स्त्री० (सं०) असबरग।

लंकारि–पु० (सं०) रामचंद्र।

लंकिनी–स्त्री० एक राक्षसी जिसका वध हनूमान्ने किया था।

लंकूर*–पु० दे० 'लंगूर'।

लंकेश, लंकेश्वर–पु० (सं०) रावण; विभीषण।

लंकोई–स्त्री० दे० 'लंकोयिका'।

लंकोदय–पु० ज्योतिषके अनुसार लंका, उज्जैन और रोहतकसे गुजरनेवाली अक्षांश रेखापर सूर्यके उदयका समय।

लंकोटिका, लंकोपिका, लंकोयिका–स्त्री० (सं०) असबरग।

लंखनी–स्त्री० (सं०) लगामका मुँहमें रहनेवाला अंश।

लंग–स्त्री० लाँग, काछ। पु० (सं०) मेल; उपपति; (फा०) लँगड़ापन। वि० लँगड़ा, पाँव दबाकर चलनेवाला।

लंगक–पु० (सं०) उपपति।

लँगटा†–वि० नंगा।

लँगटी†–स्त्री० लँगोटी। वि० स्त्री० नंगी।

लंगड़–वि० लँगड़ा। पु० लंगर।

लँगड़ा–वि० जिसका एक पैर टूटा, बेकार हो (आदमी, जानवर); जिसका कोई पाया टूटा हो (पलंग आदि); बेकार, अप्रभावकारी 'कानून लँगड़े साबित होते हैं।' † पु० एक प्रसिद्ध कलमी आम। **–पन**–पु० लँगड़ा होनेकी स्थिति या भाव।

लँगड़ाना–अ० क्रि० लँगड़ाकर चलना।

लँगड़ी–स्त्री० एक छंद; पशुओंकी एक बीमारी, जिसमें गला, पेट आदि फूल जाता और अक्सर दम निकल जाता है। वि० स्त्री० दे० 'लँगड़ा'।

लंगन–पु० लाँघना, लंघन।

लंगनी–स्त्री० अलगनी।

लंगर–पु० (फा०) लोहेका बहुत भारी काँटा जिसे नाव या जहाजको खड़ा करनेके लिए रस्सी या जंजीरसे बाँधकर नदी या समुद्रमें गिरा देते हैं; मोटा रस्सा या जंजीर; वह स्थान जहाँ गरीबोंको पका खाना बाँटा जाय, पके खानेका सत्र; पहलवानोंका लँगोट; बखिया करनेके पहले कपड़ेमें भरे जानेवाले टाँके; हरहाई गायके गलेमें बाँधा जानेवाला खूंटा; घड़ियों आदिमें तार आदिके सहारे लटकायी जानेवाली भारी चीज; कमरके नीचेका हिस्सा; पैरमें पहननेका चाँदीका तोड़ा; * बागडोर। वि० वजनदार; शरारती, ढीट –'लरिका लैवेके मिसनि लंगर मो ढिग आइ'–बि०; लँगड़ा। **–ई**–स्त्री० दे० 'लँगराई'। **–ख़ाना**–पु० पके खानेका सत्र। **–गाह**–पु०, स्त्री० लंगर करने, जहाजोंके ठहरनेका स्थान। **–दार**–वि० भारी (नदी, जिसकी धारा मंथर गतिसे बहे।) मु०–**उठाना**–रुके हुए जहाजका रवाना होना। **–करना**–जहाजका ठहरना, पड़ाव करना; शरारत करना। **–डालना**–जहाजका लंगर समुद्रमें फेंकना, जहाज खड़ा करना। **–बाँधना**–पहलवानी करना; लड़नेको प्रस्तुत होना; ब्रह्मचर्य धारण करना। **–लँगोट(किसी के) आगे रखना या (किसीको) देना**–पहलवानी सीखनेके लिए किसीकी शिष्यता स्वीकार करना।

लँगराई*–स्त्री० शरारत, ढिठाई।

लँगराना†–अ० क्रि० दे० 'लँगड़ाना'।

लँगरी*–स्त्री० शरारत।

लँगरैया*–स्त्री० शरारत, धृष्टता।

लंगल–पु० (सं०) हल।

लंगी–स्त्री० कुश्तीका एक दाँव।

लंगुरा–स्त्री० (सं०) एक तरहका धान्य।

लंगूर–पु० लांगूली, बंदर; दुम (बंदरकी); एक बड़ा बंदर (इसकी दुम बड़ी और मुँह, हथेलियाँ और तलवे काले होते हैं)। **–फल**–पु० नारियल।

लंगूरी–स्त्री० घोड़ेकी उछलकर चलनेकी चाल; चोरोंको चोरी गये पशुओंका पता बतानेके बदले दिया जानेवाला इनाम।

लंगूल–पु० लांगूल, दुम, पूँछ।

लँगोचा†–पु० कुलमा, गुलमा, कीमेसे भरकर तली हुई जानवरकी आँत।

लँगोट, लँगोटा–पु० कमरपर बाँधनेका वस्त्रविशेष जिससे उपस्थ और नितंब आवृत रहते हैं (पहलवान या कसरती लोग कुश्ती या व्यायामके समय इसे ही बाँधते हैं)। **–(ट)बंद**–वि० ब्रह्मचारी; लँगोट बाँधनेवाला। मु० **–का ढीला**–कामी। **–का सच्चा**–जो स्त्री-सहवाससे बचा रहे। **–फाड़ डालना**–कुश्ती छोड़ देना। **–बाँधना**–कुश्तीके लिए तैयार होना।

लँगोटिया यार–पु० बालमित्र।

लँगोटी–स्त्री० छोटा लँगोट, कौपीन। मु० **–पर फाग खेलना**–थोड़ा साधन होनेपर विलासकी ओर दौड़ना। **–बँधवाना**–दरिद्र बना देना। **–बाँध लेना**–दरिद्र होना; सांसारिक सुखोंका त्याग करना। **–बाँधे फिरना**–गरीबीके कारण नंगा फिरना। **–बिकवाना**–ऐसा करना जिससे किसीके पास लँगोटीतक न रह जाय। **–में मस्त**–गरीबीकी हालतमें खुश रहनेवाला।

लंघक–वि० (सं०) लाँघनेवाला; नियम तोड़नेवाला।

लंघन–पु० (सं०) अनाहार, उपवास; डाँकना, लाँघना; अतिक्रमण करना; घोड़ेकी बहुत तेज चाल; किसी काममें सुगमता लानेका उपाय।

लंघनक–पु० (सं०) लाँघने, पार जानेका साधन; पुल।

लंघनट–पु० कलाबाजी दिखानेवाला नट।

लंघना*–स० क्रि० लाँघना, डाँकना। * वि० जिसने लंघन किया हो, भूखा–'सिंह बचा जो लंघना तौ भी घास न खाय'–कबीर। स्त्री० (सं०) उपेक्षा, अवमानना।

लंघनीय–वि० (सं०) लाँघनेके योग्य; उल्लंघन करने योग्य।

लँघाना–स० क्रि० पार उतारना या करना।

लंघित–वि० (सं०) लाँघा हुआ; उल्लंघित; उपेक्षित।

लंघ्य–वि० (सं०) लाँघने योग्य; अतिक्रमण करने योग्य; उपवास कराने योग्य।

लंच–पु० (अं०) दोपहरका जलपान।

लंचा–स्त्री० (सं०) रिश्वत।

लंज–पु० (सं०) पैर; काछ; द्रुम; स्रोत; लंपटता, कुकर्म।

लंजा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; निद्रा, नींद; सोता; कुलटा।

लंजिका–स्त्री० (सं०) वेश्या।

लंठ–वि० मूर्ख; असभ्य, उजड्ड।

लंड–पु० लिंग, शिश्न; (सं०) विष्ठा, मल।

लंडी–स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री।

लँडूरा–वि० दुमकटा (पक्षी) ।

लंतरानी–स्त्री० (अ०) डींग, आत्मप्रशंसा ।

लंदराज–पु० एक तरहकी मोटी चादर ।

लंप–पु० (अं० 'लैंप') चिराग, दीपक ।

लंपक–पु० (सं०) एक जैन संप्रदाय ।

लंपट–त्रि० (सं०) कामी, विषयी । पु० कामी पुरुष ।

लंपटता–स्त्री० (सं०) कुकर्म, कामुकता ।

लंपाक–वि० (सं०) लंपट, कुकर्मी । पु० मुरंड नामक एक प्राचीन देश जो पश्चिमोत्तर सीमापर था ।

लंफ–पु० कूद ।

लंब–पु० (सं०) किसी सरल रेखाके आधारपर समकोण बनानेवाली रेखा; एक रागका भेदविशेष; नाचनेवाला; भेंट, रिश्वत; पति; अंग; विषुव रेखाकी समानांतर एक रेखा (ज्यो०); ग्रहोंकी विशेष गति (ज्यो०); एक राक्षस, प्रलंबासुर; एक दैत्य; एक मुनि । वि० लंबा । * स्त्री० दे० 'विलंब' । **–कर्ण**–वि० जिसके कान बड़े हों । पु० बकरा; हाथी; गधा; खरगोश; बाज; राक्षस; अंकोट वृक्ष । **–केश**–वि० जिसके बाल लटकते हों । **–ग्रीव**–पु० ऊँट । **–जठर**–वि० तोंदवाला । **–तड़ंग**–वि० (हिं०) ताड़-सा लंबा । **–दंता**–स्त्री० सिंहलकी पिप्पली । **–पयोधरा**–स्त्री० कार्त्तिकेयकी एक मातृका । **–बीजा**–स्त्री० एक तरहकी पिप्पली । **–स्तनी**–स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तन लटकते हों ।

लंब–पु० (परपेंडीक्यूलर) किसी सरल रेखाके आधारपर दोनों तरफ एक-एक समकोण बनानेवाली रेखा । **–मान**–वि० दूर तक गया या फैला हुआ ।

लंबक–पु० (सं०) लंब रेखा; किसी ग्रंथका कोई अध्याय; पात्रविशेष; मुखका रोगविशेष; एक तरहका योग (इसका जोड़ पंद्रह होता है–ज्यो०) ।

लंबन–पु० (सं०) नाभितक लटकनेवाला हार; झूलनेकी क्रिया; अवलंब, आश्रय; कफ; शिवका एक नाम ।

लंबमान–वि० (सं०) दूरतक गया या फैला हुआ ।

लंबर–पु० दे० 'नंबर'; (सं०) एक तरहका ढोल । **–दार**–पु० (हिं०) दे० 'नंबरदार' ।

लंबा–स्त्री० (सं०) दुर्गा, लक्ष्मी; रिश्वत; एक तरहकी कड़वी ककड़ी । वि० (हिं०) जिसके दोनों सिरे एक दूसरेसे दूर हों, जिसका विस्तार चौड़ाईसे अधिक हो (जैसे लंबा बाँस, रास्ता, सफर); जो अधिक ऊँचा हो (लंबा आदमी, पेड़); अधिक विस्तारवाला (समय, कालमानके लिए–जैसे गरमीके दिन और जाड़ेकी रातें लंबी होती हैं); दीर्घ, परिमाणमें अधिक (जैसे लंबा खर्च) । **–चौड़ा**–वि० विस्तृत । **–सफर**–पु० दूरकी यात्रा; मृत्यु । मु० **–करना**–किसीको चलता या चित करना; दराज करना । **–बनना, –होना**–चल देना, भाग जाना । **–हाथ**–प्रभावशाली–'दयालु दीनबंधुके बड़े विशाल हाथ हैं'–(मैथिलीशरण गुप्त) । **–०मारना**–बड़ी सफलता पाना ।

लंबाई–स्त्री० लंबा होनेका भाव; लंबानका परिमाण । **–चौड़ाई**–स्त्री० लंबान-चौड़ानका परिमाण ।

लंबान–स्त्री० लंबाई । **–चौड़ान**–स्त्री० लंबाई-चौड़ाई ।

लंबाना†–स० क्रि० लंबा करना ।

लंबायमान–वि० बहुत लंबा; लेटा हुआ ।

लंबिक–पु० (सं०) कोयल ।

लंबिका–स्त्री० (सं०) घाँटी, गलेके अंदरकी घंटी ।

लंबित–वि० (सं०) लटकता हुआ; अवलंबित; धँसा, डूबा हुआ । (पेंडिंग) (वह कार्य, मामला आदि) जिसके संबंधमें अभी कोई निर्णय या अंतिम निश्चय न हुआ हो, जो अनिश्चित (या अनिश्चयकी) अवस्थामें हो ।

लंबिनी–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका ।

लंबी–वि० स्त्री० दे० 'लंबा' । मु० **–चौड़ी हाँकना**–डींग मारना । **–तानकर सोना**–बेफिक्र होकर सोना । **–तानना**–बेफिक्रीसे सो जाना; बेखबर होकर देरतक सोना । **–साँस भरना या लेना**–शोक-दुःखसे साँस लेना, आहें भरना ।

लंबी(बिन्)–वि० (सं०) लटकनेवाला (समासांतमें) ।

लंबुक–पु० (सं०) लंबक, ज्योतिषमें एक योगका नाम; एक नाग ।

लंबू–वि० लंबी टाँगोंवाला (आदमी, व्यंग्यमें) ।

लंबूषा–स्त्री० (सं०) सात लड़ियोंका हार ।

लंबोतरा–वि० कुछ-कुछ लंबा, जो लंबाई लिये हुए हो ।

लंबोदर–पु० (सं०) गणेश । वि० पेटू, अधिक खानेवाला; बड़ी तोंदवाला ।

लंबोष्ठ–पु० (सं०) ऊँट; एक देवता । वि० लंबे ओठवाला ।

लंबौष्ठ–वि०, पु० (सं०) दे० 'लंबोष्ठ' ।

लंभ–पु० (सं०) प्राप्ति ।

लंभक–वि०, पु० (सं०) प्राप्त करनेवाला ।

लंभन–पु० (सं०) प्राप्ति; ध्वनि; लांछन ।

लंभनीय–वि० (सं०) प्राप्य ।

लंभित–वि० (सं०) प्राप्त कराया हुआ ।

लंभुक–वि० (सं०) जिसे बराबर प्राप्ति होती रहे ।

लँहगा–पु० दे० 'लहँगा' ।

ल–पु० (सं०) इंद्र; पृथ्वीबीज (तं०); लघु मात्राका संकेत (छंदःशास्त्र) ।

लउ*–स्त्री० लौ, लगन ।

लउआ†–पु० लौआ ।

लउकी†–स्त्री० लौकी ।

लउटी*–स्त्री० लकुटी ।

लऊक़–पु० (अ०) चाटकर खानेकी दवा, अवलेह ।

लक–पु० (सं०) ललाट; जंगली धानकी बाल ।

लकच–पु० (सं०) दे० 'लकुच' ।

लकड़दादा–पु० परदादासे बड़ा दादा ।

लकड़बग्घा–पु० भेड़ियेकी जातिका एक जंगली जानवर ।

लकड़हारा–पु० जंगल आदिसे लकड़ियाँ तोड़कर बेचनेवाला ।

लकड़ा–पु० लकड़ीका बड़ा और मोटा कुंदा ।

लकड़ाना†–अ० क्रि० सूखकर लकड़ीकी तरह सख्त हो जाना; बिना मांसका हो जाना, हाड़-हाड़ हो जाना, बिलकुल दुबला हो जाना ।

लकड़ी–स्त्री० पेड़का कोई भी सूखा हुआ भाग, शाखा, टहनी आदि; मेज, कुर्सी आदि बनाने या जलानेके लिए काटकर सुखाया हुआ पेड़; ईंधन; लाठी, बैसाखी; गतका; पटा, बिनवट । मु० **–चलना**–लाठी चलना, मार-पीट होना । **–देना**–मुरदा जलाना । **–सा**–बहुत दुबला । **–होना**–दुबला और कमजोर होना ।

लक़दक़–पु० (फा०) चटियल मैदान, बीरान बंजर, वह मैदान जहाँ पेड़-पौधे और घास न हो । † वि० साफ-सुथरा; उज्ज्वल, स्वच्छ; चिकना ।

लक़ब–पु० (अ०) गुण, योग्यता या पद-सूचक नाम, पदवी ।

लकरी†–स्त्री० दे० 'लकड़ी' ।

लक़लक़–पु० (अ०) लंबी टाँग और गर्दनवाला एक जलपक्षी, सारस । वि० लंबी टाँगोंवाला; दुबला-पतला (आदमी) ।

लकलका–पु० साँपोंकी आवाज; रोब, दबदबा ।

लक़वा–पु० (अ०) एक बीमारी जिसमें मुँह टेढ़ा हो जाता है और अन्य अंगोंपर भी इसका असर होता है; एक नाडी-संबंधी रोग जिसके कारण प्रभावित अंग निश्चेतन और शक्तिहीन हो जाता है, पक्षाघात, फालिज । मु० **–मारना**–लकवा रोगसे ग्रस्त होना ।

लकसी–स्त्री० एक प्रकारकी लग्गी (इसके सिरेमें कैंचीनुमा तिरछी लकड़ी या लोहेकी अर्द्धवृत्ताकार अँकसी बँधी होती है और इससे ऊँचे पेड़ोंसे फल, सूखी लकड़ियाँ आदि तोड़ते हैं) ।

लक़्क़ा–पु० (फा०) 'लक्का' ।

लकाटी†–स्त्री० बिल्लियोंकी एक जाति (नरके कोशोंसे एक तरहका मुश्क निकलता है), मुश्कबिलाव ।

लकालक–वि० पूर्णतः स्वच्छ ।

लकीर–स्त्री० कागज, स्लेट आदिपर खींचा हुआ लंबा निशान, रेखा; जमीनपर उँगली आदिसे बनायी हुई लंबी रेखा; साँपकी गतिका चिह्न; धारी; छकड़ों और गाड़ियोंके पहियोंका निशान; कतार, क्रम; पंक्ति । मु० **–का फकीर**–पुरानी रीतियोंपर आँख

मूंदकर चलनेवाला। **–पर चलना**–पुराने तरीकेपर चलना। **–पीटना**–पुरानी प्रथाओंपर चलना; पछताना।

लकुच–पु० (सं०) बड़हर; * दे० 'लकुट'।

लकुट–पु० एक पेड़ जो विशेषतः वंगालमें होता है, लुकाठ, लखोट; (सं०) छड़ी; लाठी।

लकुटिया, लकुटी*–स्त्री० छड़ी।

लकुटी(टिन्)–वि० (सं०) जिसके पास लाठी हो।

लकुरी*–स्त्री० लकुटी, लकड़ी।

लकोटा†–पु० पहाड़ी वकरोंकी एक जाति जिसके वालोंसे शाल-दुशाले आदि वनते हैं।

लक्कड़–पु० दे० 'लकड़ा'।

लक्का–पु० (फा० 'लक़ा') चील; गिद्ध; एक कबूतर जिसकी पूंछ पंखेकी तरह और ऊपर उठी होती है तथा गर्दन पीछेको झुको होती है। **–कबूतर**–पु० नाचकी एक मुद्रा जिसमें नर्तक कमरके वल बगलसे झुककर सिरको जमीनके समीपतक ले जाता है; दे० 'लक्का'।

लक्खी–पु० घोड़ोंका एक भेद; लखपती। वि० लाखके रंगका।

लक्त–वि० (सं०) लाल। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० लाल लोध्र।

लक्तक–पु० (सं०) अलक्तक, महावर; लत्ता, चिथड़ा।

लक्तिका–स्त्री० (सं०) गोह।

लक्ष–वि० (सं०) सौ हजार। पु० सौ हजारकी संख्या, १०००००; निशान, चिह्न; पैर; मोती; वहाना; अस्त्रका संहार-विशेष; दे० 'लक्ष्य'। **–पति**–पु० लखपती। **–वेधी(धिन्)**–वि० निशानेका वेध करनेवाला। **–सुप्त**–वि० सोनेका वहाना करनेवाला।

लक्षक–वि० (सं०) लक्ष करानेवाला, प्रकट करनेवाला। पु० संवंध या प्रयोजनसे अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द (सा०); एक लाखकी संख्या।

लक्षण–पु० (सं०) विशेषता-सूचक शब्द; शरीरस्थ रोगसूचक चिह्न; शुभाशुभकी सूचना देनेवाले अंगस्थित चिह्न (सामुद्रिक); शरीरपर स्थित विशेष प्रकारका काला दाग, लच्छन; निर्धारित दर; लक्ष्य, उद्देश्य; प्रस्तुत विषय; नाम; दर्शन; परिभाषा; चाल-ढाल; दे० 'लक्ष्मण'; सारस पक्षी। वि० वतलानेवाला, सूचक। **–कर्म(न्)**–पु० गुणोंका वर्णन; परिभाषा। **–ज्ञ**–वि० शरीरपरके चिह्नोंको जाननेवाला। **–प्रशस्त**–वि० अच्छे चिह्नोंके कारण विख्यात। **–भ्रष्ट**–वि० अच्छे चिह्नोंसे वंचित, भाग्यहीन। **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद जिसमें एकका लक्षण दूसरेको प्राप्त हो जाता है (सा०)।

लक्षणक–पु० (सं०) चिह्न, निशान।

लक्षणा–स्त्री० (सं०) वह शब्दशक्ति जो सामान्य अर्थसे भिन्न अर्थ प्रकट करती है, अभिप्रेत अर्थ प्रकट करनेवाली शब्दशक्ति (सा०); लक्ष्य, उद्देश्य; हंसी; सारसी; भटकटैया (छोटी)।

लक्षणी(णिन्)–वि० (सं०) चिह्न या लक्षणवाला; लक्षणोंका पारखी।

लक्षण्य–वि० (सं०) चिह्नका काम देनेवाला; शुभ चिह्नोंवाला।

लक्षना*–अ० क्रि० दिखाई पड़ना। स० क्रि० देखना। स्त्री० दे० 'लक्षणा'।

लक्षा–स्त्री० (सं०) एक लाखकी संख्या, १०००००।

लक्षि*–स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'। पु० दे० 'लक्ष्य'।

लक्षित–वि० (सं०) देखा हुआ; अनुमानतः समझा, जाना हुआ; लक्षण, चिह्नवाला। **–लक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक भेद।

लक्षितव्य–वि० (सं०) जिसे चिह्नित करना हो; जिसकी परिभाषा करनी हो।

लक्षिता–स्त्री० (सं०) वह नायिका जिसका परपुरुष-प्रेम प्रकट हो गया हो।

लक्षितार्थ–पु० (सं०) लक्षणा-शक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ।

लक्षी–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

लक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) अच्छे चिह्नोंवाला।

लक्ष्म(न्)–पु० (सं०) चिह्न; दाग; विशेषता; प्रधान; परिभाषा।

लक्ष्मण–पु० (सं०) सुमित्रासे उत्पन्न दशरथके पुत्र; चिह्न; नाम; सारस; नाग; दुर्योधनका एक पुत्र। वि० चिह्नोंवाला; भाग्यशाली; उन्नतिशील। **–प्रसू**–स्त्री० सुमित्रा। **–रेखा**–स्त्री० (सं०) ऐसी सीमा, मर्यादा, आज्ञा आदि जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण न किया जा सके।

लक्ष्मणा–स्त्री० (सं०) एक पुत्रदा जड़ी, श्वेत कंटकारी; हंसी; मद्रनरेश वृहत्सेनकी कन्या, कृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक; दुर्योधनकी पुत्री।

लक्ष्मा(मन्)–पु० (सं०) सुमित्राके वड़े पुत्र; सारस पक्षी।

लक्ष्मी–स्त्री० (सं०) एक देवी जो धनकी अधिष्ठात्री मानी जाती है (समुद्रमंथनसे प्राप्त १४ रत्नोंमें एक यह भी थी और विष्णु द्वारा पत्नीरूपमें स्वीकार की गयी), महालक्ष्मी, कमला, श्री, लोकमाता; सुंदरता, शोभा; प्रभुशक्ति; चंद्रमाकी ग्यारहवीं कला; अभ्युदय; सौभाग्य; सफलता; वीरांगना; गृह-स्वामिनी; दुर्गा; सीताका एक नाम; ऋद्धि ओषधि; वृद्धि नामकी ओषधि; मोती; फलवान् वृक्ष; कमल; हलदी; शमी, छोकर, सफेद कीकर; सफेद तुलसी; मेढ़ासिंगी; एक वर्णवृत्त। **–कांत**–पु० विष्णु; नरेश। **गृह–**–पु० लाल कमल। **–जनार्दन,–नारायण**–पु० चक्रचिह्नयुक्त एक तरहके काले शालग्राम। **–टोड़ी**–स्त्री० (हिं०) एक सुंदर रागिनी। **–ताल**–पु० एक तरहका ताल वृक्ष; १८ मात्राओंका एक ताल (संगीत)। **–धर**–पु० विष्णु; स्रग्विणी छंद। **–नाथ**–पु० विष्णु। **–निधि**–पु० जनकका पुत्र। **–नृसिंह**–पु० दो चक्र तथा वनमाला-चिह्नित शालग्राम। **–पति**–पु० विष्णु; राजा; लौंगका पेड़; सुपारीका पेड़। **–पुत्र**–पु० लव-कुश; घोड़ा; कामदेव; धनी आदमी। **–पुष्प**–पु० लाल, माणिक; लौंग; कमल। **–पूजा**–स्त्री० लक्ष्मीके पूजनका त्योहार जो दीपावलीके दिन होता है। **–फल**–पु० श्रीफल, वेल। **–रमण,–वल्लभ**–पु० विष्णु। **–वसति**–स्त्री० लाल कमल। **–वार**–पु० गुरुवार। **–वेष्ट**–पु० तारपीन। **–सनाथ**–वि० शोभा या ऐश्वर्यसे संपन्न। **–समाह्वया**–स्त्री० सीता। **–सहज,–सहोदर**–पु० चंद्रमा; कपूर; इंद्रका घोड़ा; शंख।

लक्ष्मीक–वि० (सं०) धनी; भाग्यशाली।

लक्ष्मीवान्(वत्)–वि० (सं०) धनवान्, संपत्तिमान्; सुंदर। पु० विष्णु; कटहल; श्वेत रोहित वृक्ष।

लक्ष्मीश–पु० (सं०) विष्णु; आमका पेड़; संपन्न व्यक्ति।

लक्ष्य–पु० (सं०) निशाना लगानेकी वस्तु (विंदु, निश्चित स्थान, पशु या अन्य कोई जीव जिसपर निशाना लगाया जाय); निशाना; अभीष्ट वस्तु, उद्देश्य; अस्त्रोंका संहारविशेष; अनुमानका विषय, अनुमेय; लक्षणा-शक्तिसे प्राप्त अर्थ; व्याज, वहाना; लाखकी संख्या। वि० दर्शनीय; जिसका लक्षण वनाया जाय, जो उद्देश्य वनाया जाय। **–ग्रह**–पु० निशाना लेना। **–ज्ञ**–वि०, पु० लक्ष्यका ज्ञानी। **–ज्ञत्व**–पु० लक्षणोंके दर्शनसे उत्पन्न ज्ञान; दृष्टांतजन्य ज्ञान। **–भेद**–पु० लक्ष्यका भेदन करना (विशेषतः गतिशील लक्ष्यका)। **–वीथी**–स्त्री० उद्देश्य सिद्ध करनेवाला कर्म, उपाय; व्रह्मलोकका पथ, देवयान-मार्ग। **–वेध**–पु० दे० 'लक्ष्यभेद'। **–वेधी(धिन्)**–वि० लक्ष्यभेद करनेवाला (विशेषतः गतिशील लक्ष्यका)। **–सिद्धि**–स्त्री० उद्देश्यकी प्राप्ति। **–सुप्त**–वि० दे० 'लक्षसुप्त'। **–हा(हन्)**–पु० वाण।

लक्ष्यता–स्त्री०, **लक्ष्यत्व**–पु० (सं०) लक्ष्य होनेका भाव।

लक्ष्यार्थ–पु० (सं०) शब्दकी लक्षणा-शक्ति द्वारा प्राप्त अर्थ।

लक्ष्योपमा–स्त्री० उपमा अलंकारका एक भेद।

लक्स–पु० (लक्स) सतहकी प्रदीप्ति (इल्यूमिनेशन)की नापका मात्रक। एक लक्स = एक ल्यूमेन प्रति वर्ग मीटर।

लख–'लाख'का समासगत रूप। **–पती**–पु० लाखों रुपयोंका मालिक, बहुत धनी आदमी। **–पेड़ा**–वि० लाख, अधिक पेड़ोंवाला (वाग)। **–राउँ,–रावँ**–पु० लाख पेड़ोंवाला वाग, बहुत वड़ा वाग। **–लुट***–वि० लाखों लुटा देनेवाला, अपव्यय करनेवाला।

लखघर, लखाघर*–पु० दे० 'लाक्षागृह'।

लखन*–पु० लक्ष्मण, रामके छोटे भाई। स्त्री० देखनेका भाव।

लखना*–स० क्रि० देखना; समझना; जानना; ताड़ जाना।

लखर–पु० एक वृक्ष, काकड़ासिंगी, अरकोल ।

लख़लख़–वि० (फ़ा०) दुवला-पतला । स्त्री० भूख-प्याससे गला सूख जानेपर उससे निकलनेवाली आवाज ।

लख़लख़ा–पु० (अ०) अंवर, कस्तूरी, अगर आदिका योग जो वेहोशी दूर करनेके काम आता है; वह पात्र जिसमें यह चीज रखी जाती है ।

लखवट–पु० लुकाठ ।

लखवाना†–स० क्रि० लाखकी वनी चूड़ियाँ तथा कंगन आदि पहनवाना (वुंदेल०) ।

लखाइ*–स्त्री० पहचान ।

लखाउ*–पु० दे० 'लखाव'; 'और एक तोहि कहउँ लखाऊ'–रामा० ।

लखाना*–अ० क्रि० दिखाई देना । स० क्रि० दिखाना; सुझाना, अनुमान कराना ।

लखाव*–पु० पहचान, चिह्न; निशानी, पहचानकी चीज ।

लखिमी*–स्त्री० लक्ष्मी ।

लखिया*–पु० लखनेवाला । † वि० लाख वर्ष, वहुत दिन जीनेवाला ।

लखी–पु० लाखके रंगका घोड़ा, लाखी ।

लखुआ, लखुवा†–पु० गेहूँका एक रोग, लाखा, लाही; दे० 'लखिया' ।

लखूखा–पु० लाखका बहुवचन, लाखों ।

लखेदना*–स० क्रि० खदेड़ना ।

लखेरा–पु० लाखकी चूड़ियाँ वनानेवाला; लाखकी चूड़ियाँ बनानेवाली एक हिंदू उपजाति; आवाण ।

लखोट, लखोठ–पु० लुकाठ नामक पेड़ या उसका फल ।

लखौट*–स्त्री० लाखकी चूड़ियाँ ।

लखौटा–पु० लिखावट; लेख-पत्र; * सिंदूरकी डिविया; लाखकी चूड़ी–'हाथनि लखौटा पाइ चूरा पच मनी···'–रसविलास; एक सुगंधित लेप ।

लखौरी–स्त्री० भँवरीका घर; पुराने ढंगकी छोटी और पतली ईंट; किसी देवताको उसके प्रिय तरुका पत्ता, फूल एक लाखकी संख्यामें चढ़ाना ।

लख़्त–पु० (फ़ा०) टुकड़ा, खंड । **–(ख़्ते)जिगर**–पु० कलेजेका टुकड़ा; वहुत प्रिय व्यक्ति; वेटा ।

लगंत–स्त्री० लगना, आसक्त होना; संभोग करना ।

लग*–अ० तक, पर्यंत; समीप, पास; लिए, वास्ते; संग, साथ; के समान । स्त्री० प्रेम, लगन ।

लग़ज़िश–स्त्री० (फ़ा०) फिसलन; लड़खड़ाहट; भूलचूक ।

लगड–वि० (सं०) सुंदर ।

लगड़-पेंच–पु० दाँव-पेंच ।

लगढग–अ० दे० 'लगभग' ।

लगण–पु० (सं०) पलकोंका एक रोग जिसमें गाँठ पड़ जाती है ।

लगदी†–स्त्री० कथरी, वह विस्तरा जो वच्चोंके नीचे कपड़ोंको मल-मूत्रसे वचानेके लिए डाल दिया जाता है ।

लगन–स्त्री० मन, प्रवृत्तिका किसी ओर लगना, झुकना, लौ, धुन; प्यार, प्रेम । पु० विवाहका मुहूर्त, लग्न; सहालग, जिन दिनों विवाह आदि होते हैं वे दिन; (फ़ा०) मोमवत्ती जलानेकी थाली; आटा गूँधने, मिठाई आदि रखनेकी थाली; विवाहकी एक रीति जिसमें वरके लिए थालीमें सजाकर मिठाइयाँ भेजी जाती हैं (मुसल०); * एक मृग । **–पत्री**–स्त्री० विवाह-तिथिसूचक चिट्ठी (जिसमें विवाहका दिन, मुहूर्त निश्चित किया जाता है । यह कन्याके पिताकी ओरसे वरके पिताको भेजी जाती है) । **मु० –धरना**–विवाहका मुहूर्त ठहराना ।

लगनवट*–स्त्री० प्रेम, लगन ।

लगना*–पु० एक मृग । अ० क्रि० जुड़ना, किसी चीजमें दूसरी चीजका जोड़ा जाना; सटना, एक चीजका दूसरी चीजसे मिलना; जड़ा जाना, सिया जाना; रगड़ खाना;···से मारा-पीटा जाना; भिड़ना; रगड़से छिल जाना, कट जाना; गड़ना, धसना, चुभना; वंद होना; तलपर पहुँचना; पकड़ना, संयोग होना; चाट, चस्का पड़ना; हुज्जत करना; प्रभाव, असर करना; हानिकर प्रभाव होना;···का असर करना, अनुभव होना, जान पड़ना;···का पीछा करना;···का आतंक होना;···का बंसीमें फँसना; पीछा करना, साथ धरना; पद, संवंध, रिश्ता होना; काम आना, खर्च होना; सो जाना; प्यार, प्रेम होना; दिलचस्पी होना; जलन, चुनचुनाहट करना; आरंभ होकर जारी रहना; कमजोर, कृश होना; नशीली चीजोंका दिलोदिमागपर तेज असर होना; फल आदिका सड़ना; फलीभूत होना; छूना, समीप जाना; उलझना, छेड़छाड़ करना; वदलेमें जाना; छोर, ठिकानेपर पहुँचना; पौधोंका उगना, जमना, जड़ पकड़ना; फलना; काममें लाया जाना; दुहा जाना, दूध देते रहना; वाजी, दाँव रखना; छपना, निशान होना; निश्चित कार्य, स्थानपर पहुँचना; होना; लेप किया जाना; सन जाना, लिपट जाना; विछना; जारी होना; दरकार, आवश्यक होना; क्रम, सिलसिलेमें रखा, सजाया जाना; व्यवस्था होना; सफेद होना; पानी जल जानेके वाद पकनेवाले पदार्थका जलकर तहमें वैठ जाना; मिलना;···में लोगोंका उपस्थित होना; देयका निश्चित होना; आरोप किया जाना; जलना; रोशनी होना; ठीक वैठना (कुंजी); हिसाब होना,···का ठहराव करना; ताकमें रहना; जानवरोंका जोड़ा लगना; प्रवृत्त होना । **मु० लग चलना**–किसीका साथ पकड़ना । **लगती वात**–चुभने, अखरनेवाली वात, चुटीली वात । **लगी-लगायी**–लगी हुई, मुकर्रर । **लगे हाथ या हाथों**–साथ ही, इसी सिलसिलेमें, योहीं । **–लगन लगना,–लगी है**–प्रेमभाव वना हुआ है ।

लगनि*–स्त्री० दे० लगन ।

लगनी–स्त्री० रिकावी, छोटी थाली; पानदानके अंदरकी पान रखनेकी तश्तरी; परात ।

लगनीय–वि० (सं०) जो संवद्ध, संयुक्त किया जाय ।

लगभग–अ० करीव-करीव ।

लगमात–स्त्री० व्यंजन वर्णोंमें जोड़े जानेवाले स्वर-चिह्न ।

लगर*–पु० एक शिकारी चिड़िया, वाज ।

लगलग*–वि० कमजोर, दुवला-पतला, लकलक ।

लगव*–वि० वेकार, झूठ ।

लगवाना–स० क्रि० लगानेका काम कराना ।

लगवार*–पु० यार, उपपति ।

लग़वीयत–स्त्री० (अ०) वेहूदगी ।

लगहर†–पु० पासंगदार काँटा, तराजू । वि० लगा, सड़ा हुआ । वि० स्त्री० दूध देनेवाली (गाय) ।

लगाई–स्त्री० लगाव; आरोप । **–बझाई**–स्त्री० इधरकी वात उधर जा सुनाना । **–लतरी**–स्त्री० एककी बुराई दूसरेसे कहना, लगाई-बझाई ।

लगाऊ–वि० लगानेवाला, जड़नेवाला ।

लगातार–अ० निरंतर, बराबर, बिना रुके हुए, सिलसिलेसे ।

लगान–पु० राजा, सरकार, जमींदारको मिलनेवाला भूमि-कर, पोत, राजस्व; वह स्थान जहाँ वोझिया बोझ रखकर सुस्ताये; नावोंके ठहरनेका स्थान; दो मकानोंका सटा हुआ अंश जहाँसे आना-जाना संभव हो, लाग; लगना; लगाना; जंगलमें शिकारकी टोहमें वैठनेके लिए ठीक किया गया स्थान–'जंगलमें लगान कहाँ-कहाँ हैं, किसको कहाँ वैठना है, निश्चित हो गया'–मृग० । **–मुकर्ररी**–पु० जमीनके लिए मुकर्रर किया हुआ लगान । **–वाकई**–पु० असली भूमिकर ।

लगाना–स० क्रि० जोड़ना, दो चीजोंको जोड़ना; एकमें करना, संलग्न करना; सजाना, सिलसिलेसे रखना; रोपना; सटाना, चिपकाना; कोई चीज रगड़ना, पोतना, मलना; कायम करना, व्यवस्था करना; अनुभव करना; किसीमें नयी आदत डालना; प्रहार, चोट करना; फिट करना, जड़ना; डालना; सड़ाना; भीड़, मजमा कर लेना; अपराधी बनाना; दातव्य ठहराना; गाड़ना, ठोकना; नियुक्त, मुकर्रर करना; दूध दुहना; अपने साथ, पीछे किसीको ले चलना या लिये फिरना; हिसाव करना; संयुक्त, संबद्ध करना; चुगली करना; वंद करना; बाजी, दाँवपर रखना; अपने आपको किसी विषयमें बढ़-चढ़कर समझना; धारण करना, ओढ़ना; छुलाना, स्पर्श, संपर्क कराना; ध्यान देना, पास पहुँचाना; नियत स्थानपर पहुँचाना; धार तेज करना, सान धरना; दाम

कूतना, तय करना, ठहराना; बदलेमें देना, करना; चिह्नित करना; फैलाना, बिछाना; करना; खर्च करना; विचार करना। **–(ने)वाला**–वि० चुगुलखोर, इधरकी उधर करनेवाला। मु० **–बझाना**–झगड़ा कराना। **–बुझाना**–झगड़ा कराके सुलह करना। **(किसीको)मुंह**–इतनी तरह देना कि वह अशिष्ट हो जाय।

लगाम–स्त्री० (फा०) लोहेका दाँतेदार छड़ जो घोड़ेके मुंहमें लगाया जाता है; इस छड़के सिरोंपर बँधी रस्सी, चमड़ा, रास, वाग। मु० **–कड़ी करना**–घोड़ेकी चाल धीमी करना; कार्यादिका नियंत्रण करना। **–चढ़ाना,–देना**–कोई काम करनेसे किसीको रोकना, प्रतिबद्ध करना, संयत करना। **–ढीली करना**–घोड़ेको मनचाही चाल चलने देना; कार्यादिका नियंत्रण न रखना। **–लिये फिरना**–किसीको पकड़ने, क़ाबूमें करनेके लिए ढूंढ़ना, पीछा करना। **(किसी चीज़की)–हाथमें लेना**–संचालनसूत्र हाथमें लेना। **जबानपर–न होना**–अनावश्यक रूपसे स्पष्टवादी होना।

लगाय*–स्त्री० प्रेम, लगन–'सूर जहाँ लौ स्याम गात हैं तिनसों क्यों कीजिये लगाय'–सूर।

लग्रायत–अ० (अ०) अंततक(वाक्यमें 'से', 'तक'का अर्थ देता है)।

लगार*–स्त्री० सिलसिला, क्रम; लगन, प्रेम; घनिष्ठ संवंध; लगाव, संबंध; बरावर कोई काम करते जाना, वँधेज; वह स्थान जहाँ जुआरियोंको निश्चित ठिकानेका पता मिले। पु० संवंधी; भेद लेनेवाला।

लगालगी–स्त्री० लाग, प्यार; मेल-जोल; लगने या लगानेकी क्रिया; उलझनेकी क्रिया।

लगाव–पु० संबंध, ताल्लुक।

लगावट–स्त्री० संवंध; प्रेम, प्यार; रब्त-जब्त।

लगावन–स्त्री० रोटीके साथ खायी जानेवाली चीज, तीवन, सालन; * लगाव, संबंध।

लगावना*–स० क्रि० दे० 'लगाना'।

लगि*–अ० दे० 'लग'। स्त्री० लगन; दे० 'लग्गी'।

लगित–वि० (सं०) संयुक्त, संवद्ध; प्राप्त; प्रविष्ट।

लगिष्णु–वि० (टेनेशस) किसी कार्यमें दृढ़तासे जुटा रहनेवाला; किसी सिद्धांत, नियम आदिपर डटा रहनेवाला।

लगी–स्त्री० मेल, प्रेम; ख्वाहिश; भूख; तरफदारी; आग; * दे० 'लग्गी'। **–लपटी**–स्त्री० तरफदारी। मु० **–बुझना**–इच्छा पूरी होना। **–बुरी होती है**–इश्क बुरी वला है।

लगुआ–पु० लग्गू।

लगुड, लगुर, लगुल–पु० (सं०) लाठी, दंड; एक तरहका छोटा लौहदंड; लाल कनेर। **–(ड)वंशिका**–स्त्री० एक तरहका छोटा बाँस। **–हस्त**–पु० छड़ी-वरदार। वि० दंड धारण करनेवाला।

लगुडी(डिन्)–वि० (सं०) दंडधारी।

लगुवा*–पु० प्रेमी, लागू–'लटुवा भयो फिरत दिन-रजनी लगुवा गोरी-भोरीके'–घन०। † वि० पीछे चलनेवाला, साथ-साथ जानेवाला।

लगूर, लगूल*–पु० दुम।

लगें†–अ० दे० 'लग'।

लगो–वि० (अ०) बेकार, व्यर्थ; असंगत, वेतुका। स्त्री० वेहूदा वात।

लगौंहाँ–वि० लगनेवाला, रिझवार।

लग्गत–स्त्री० लागत या निवेश।

लग्गा–पु० अँकसीदार लंवा-पतला वाँस (यह पेड़ोंसे फल तोड़नेके काम आता है); लंबा बाँस; नाव खेनेका बाँस; लंबा बाँस लगाकर वनाया हुआ घास, कीचड़ हटानेका फरसा; काम शुरू करना, काममें हाथ डालना (लगना, लगानाके साथ)। मु० **–लग जाना**–काम शुरू हो जाना, कार्यका सूत्रपात हो जाना। **–लगाना**–कामको सिलसिला देना, वरावर चलाये जाना।

लग्गी–स्त्री० छोटा लग्गा।

लग्गू–वि० लगनेवाला। **–बज्झू**–पु० जी हुजूरी करनेवाला।

लग्घड़–पु० वाज; एक तरहका चीता, लकड़वग्घा।

लग्घा–पु० दे० 'लग्गा'।

लग्घी–स्त्री० दे० 'लग्गी'।

लग्न–पु० (सं०) राशिविशेषके उदयकालका दिनांश (ज्यो०); किसी कामको करनेका शुभ मुहूर्त (ज्यो०); विवाहका समय; व्याह; सहालग; वंदी, राजाकी स्तुति करनेवाला। वि० लगा हुआ; जुड़ा हुआ; पीछे लगा हुआ; मस्त (हाथी); शुभ; लज्जित। **–कंकण**–पु० विवाहके पहले वर-कन्याके हाथमें वाँधा जानेवाला मंगल-सूत्र। **–कुंडली**–स्त्री० जन्मपत्नी, जन्मकुंडली। **–ग्रह**–वि० आग्रही। **–दंड**–पु० गाते-वजाते समय स्वरकी श्रुतियोंका सुंदरतासे संयोग करना। **–दिन**–पु० विवाह आदिका शुभ दिन। **–पत्र**–पु०, **पत्रिका, पत्री**–स्त्री० वह पत्र जिसमें विवाहकर्म, उसकी तिथि आदिका उल्लेख हो। **–मुहूर्त**–पु० विवाहका शुभ काल।

लग्नक–पु० (सं०) प्रतिभू, जामिन; रागविशेष।

लग्नाचार्य–पु० (सं०) ज्योतिषी।

लग्नायु(स्)–स्त्री० (सं०) लग्नके अनुसार स्थिर की हुई आयु।

लग्नाह–पु० (सं०) दे० 'लग्नदिन'।

लग्निका–स्त्री० (सं०) दे० 'नग्निका'।

लग्नेश–पु० (सं०) लग्नका स्वामी ग्रह (ज्यो०)।

लग्नोदय–पु० (सं०) लग्नका उदयकाल; लग्नके उदयसे उत्पन्न कार्य, प्रभाव।

लघटि, लघट्–पु० (सं०) वायु।

लघड़वग्गा–पु० लकड़बग्घा।

लघिमा(मन्)–स्त्री० एक सिद्धि जिसके प्रभावसे सिद्ध पुरुष यथेष्ट छोटा, हलका हो सकता है; हलकापन, लघुत्व।

लघुंमन्यता–स्त्री० (इनफीरियारिटी कॉम्प्लेक्स) अपनेको छोटा या हीन समझनेकी भावना, हीनमन्यता।

लघु–वि० (सं०) फुर्तीला; हलका; छोटा; निर्वल; तुच्छ, क्षुद्र; कम, अल्प; निस्सार; अस्थिरचित्त; स्वस्थ; ह्रस्व, एक मात्रा-वाला; प्रिय। पु० खस; काला अगर; पंद्रह क्षणोंकी एक कालगणना; बारह मात्राओंका प्राणायाम; एक मात्राके स्वर–अ, इ, उ, ऋ (व्या०); एक मात्रा (छंद); पृक्का; चाँदी; स्वस्थ व्यक्ति। **–कंकोल**–पु० एक छोटा कंकोल। **–कंटकी**–स्त्री० लजालू। **–कटाई**–स्त्री० (हिं०) दे० 'कंटकारी'। **–कण**–पु० सफेद जीरा। **–कर्कंधु**–पु० भुइँवेर। **–कर्णी**–स्त्री० मूर्वा। **–काय**–पु० वकरा। वि० छोटे शरीरवाला। **–काश्मर्य**–पु० कट्फल। **–काष्ठ**–पु० डंडेका वार रोकनेके काम आनेवाला हलका डंडा। **–किन्नरी**–स्त्री० तंत्रयुक्त एक प्राचीन वाद्य। **–क्रम**–पु० द्रुत गति, तेज चाल। वि० तेज चलनेवाला। **–क्रिया**–स्त्री० छोटी वात। **–खट्‌विका**–स्त्री० आरामकुर्सी; मचिया। **–ग**–पु० वायु। **–गण**–पु० अश्विनी, पुष्य, हस्त नक्षत्रसमूह। **–गति**–वि० तेज चलनेवाला। **–गर्ग**–पु० टेंगरा, तीन काँटेकी मछली (त्रिकंटक); खैरा मछली। **–चंदन,–नामा-(मन्)**–पु० अगर, सुगंधयुक्त लकड़ी। **–चच्चरी**–स्त्री० एक ताल (संगीत)। **–चित्त**–वि० चंचल चित्तवाला। **–चिर्भिटा**–स्त्री० श्वेत इंद्रवारुणी। **–चेता(तस्)**–वि० नीच, नीचाशय। **–च्छदा**–स्त्री० वड़ी सतावर। **–जंगल**–पु० लवा पक्षी। **–ताल**–पु० एक तरहका ताल (संगीत)। **–तिक्त**–पु० मुरदासंख। **–तुपक**–स्त्री० (हिं०) तमंचा, पिस्तौल। **–दंती**–स्त्री० छोटी दंती। **–दुंदुभी**–स्त्री० डुग्गी। **–द्राक्षा**–स्त्री० किशमिश। **–द्रावी(विन्)**–वि० जल्द पिघलने या बहनेवाला (पारा)। **–नाम-कर्म(न्)**–पु० वह कर्म जिससे शरीर न अधिक गुरु होता है, न लघु (जै०)। **–नालिक**–पु० छोटी वंदूक। **–पंचक,–पंचमूल**–पु० गोखरू, शालिपर्णी, छोटी कटाई, पिठवन, बड़ी कटेहरी–इन पाँच वनस्पतियोंकी जड़ोंका संघात जो उपयोगी औषध है। **–पत्र**–पु० कमीला। **–पत्रक**–पु० रोचनी। **–पत्री**–स्त्री० पीपलका पेड़। **–परिपथ**–पु० (शॉर्ट सर्किट) किसी विद्युत् परिपथमें यदि अनेक विद्युत् यंत्र (विद्युत् पंखा, रेडियो आदि) लगे हों और यदि अकस्मात् ही मेनसे उस परिपथमें धारा ले आनेवाले दोनों तार नंगी दशामें एक दूसरेको छू लें तब विद्युत्-धारा पूरे परिपथमें प्रवाहित होनेके वजाय केवल इन दोनों तारोंमेंसे ही (न्यूनतम प्रतिरोध मार्ग) प्रवाहित होगी। ऐसी दशामें हम

कहते हैं कि लघु परिपथ हो गया। इसमें अत्यधिक ऊँची धारा वहती है जिससे फ्यूज़ उड़ जाते हैं। **–पर्णी**–स्त्री० मरोड़फली, मूर्वा; सतावर। **–पाक**–वि० सुपाच्य; जल्द पकनेवाला। पु० सुपाच्य खाद्य पदार्थ। **–पाकी(किन्)**–पु० चेना, एक प्रकारका अन्न। वि० जल्द पचनेवाला। **–पिच्छिल**–पु० भूकर्वुदारक। **–पुष्प**–पु० भुइँकदंव। **–पुष्पा**–स्त्री० पीला केवड़ा। **–प्रयत्न**–वि० आलसी, काहिल। **–फल**–पु० गूलर। **–वदर**–पु० एक तरहका छोटा वेर। **–भुक्(ज्)**–वि० कम खानेवाला। **–मंथ**–पु० गनियारी (छोटी)। **–मति**–वि० स्वल्प-बुद्धि, कमवूझ, मूर्ख। **–मना(नस्)**–वि० दे० 'लघुचेता'। **–मांस**–पु० तीतर पक्षी। **–मांसी**–स्त्री० छोटी जटामासी। **–मान**–पु० नायिकाका (नायकपर) क्षणस्थायी रोष। **–मेरु**–पु० एक ताल (संगीत)। **–लता**–स्त्री० करेलेकी वेल; अनंतमूल। **–लय**–पु० खस; लामज्जक नामकी घास। **–लिपि**–स्त्री० (शार्ट हैंड) दे० 'शीघ्रलिपि'। **–लघुलेख**–पु० संक्षिप्त आलेख या नोट लेना, 'अपने उपयोगके लिए लघुलेख लेना आरंभ किया' –सुधीन्द्र। **–लोणिका**–स्त्री० लोनी, एक साग। **–वाद-न्यायालय**–पु० (स्मॉल कॉज़ कोर्ट) छोटे वादों-(मामलों, मुकदमों) पर विचार करनेवाली अदालत। **–वृत्ति**–वि० हलके दिलका; अव्यवस्थित। **–शंका**–स्त्री० पेशाव करना। **–शंख**–पु० घोंघा। **–शिखर**–पु० एक ताल (संगीत)। **–शीत**–पु० लिसोड़ा। **–समुत्थ**–पु० वह राजा या राज्य जिसे युद्धके लिए शीघ्र तैयार किया जा सके। **–सदाफला,–हेमदुग्धा**–स्त्री० लघूदुंवरिका। **–हस्त**–वि० तेजीसे वाण चलानेवाला। पु० अच्छा धनुर्धर।

लघुक–वि० (सं०) हलका; महत्त्वहीन, तुच्छ।

लघुतम–वि० (सं०) सबसे छोटा। **–समापवर्त्य**–पु० वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओंसे पूरी-पूरी वँट जाय।

लघुता–स्त्री०, **लघुत्व**–पु० (सं०) लघु होनेका भाव, हलकापन, छोटाई। **–की भावना**–अपनेको छोटा या असमर्थ समझनेकी प्रवृत्ति।

लघूकरण–पु० (कम्यूटिंग) कड़ी सजा घटाकर हलकी कर देना, दंडादेशको कुछ मुलायम कर देना।

लघ्वाशी(शिन्)–वि० (सं०) अल्पाहारी, कम खानेवाला।

लघ्वाहार–वि० (सं०) दे० 'लघ्वाशी'।

लघ्वी–स्त्री० (सं०) वेर; असवरग; छोटा रथ; कोमल अंगोंवाली पतली स्त्री।

लच–स्त्री० लचकन, लचन; किसी वस्तुके दवने, झुकनेका गुण।

लचक, लचकन–स्त्री० लचकनेका भाव या क्रिया।

लचकना–अ० क्रि० लंवी चीजका दवाव आदिसे झुकना; स्त्रियोंकी कमरका नखरे-नजाकतसे झुकना; चलते समय स्त्रियोंका प्रायः झुक-झुककर चलना; † मोच खाना (वुंदेल०)।

लचकनि*–स्त्री० लचक; लचीलापन।

लचका–पु० एक तरहका गोटा।

लचकाना–स० क्रि० झुकाना, लचाना।

लचकीला–वि० दवने या लचनेवाला, लचकदार।

लचकौंहा*–वि० लचकीला, लचकनेवाला; झुका हुआ।

लचन, लचनि–स्त्री० दे० 'लचक'।

लचना–अ० क्रि० दे० 'लचकना'; लफना।

लचर–वि० जो टिक न सके, तथ्यहीन, कमजोर (दलील)।

लचलचा–वि० लचकदार। **–पन**–पु० लचक, झुकावका गुण।

लचाना–स० क्रि० लचकाना।

लचार*–वि० दे० 'लाचार'।

लचारी*–स्त्री० दे० 'लाचारी'; † ग्रामगीतोंका एक भेद जो विहारके कुछ स्थानोंमें प्रचलित है; सिर्फ नमकसे बना हुआ आमका अचार, नोनअँचरा; * बड़ोंको दी जानेवाली भेंट, उपायन, नजर।

लचीला–वि० लचकनेवाला, जो आसानीसे मुड़ सके; जल्द वल खानेवाला। **–पन**–पु० वस्तुओंके झुकने, लचकनेका भाव।

लचुई†–स्त्री० मैदेसे वनी मुलायम पूरी, लुचुई।

लच्छ*–पु० वहाना, व्याज; निशानेके लिए निश्चित स्थान; वस्तु; सौ हजारकी संख्या, लाख। स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'। वि० सौ हजार या एक लाख।

लच्छण, लच्छन*–पु० लक्षण, चिह्न; लक्ष्मण।

लच्छना*–स्त्री० दे० 'लक्षणा'। स० क्रि० अच्छी तरह देखना।

लच्छमण–पु० लक्ष्मण।

लच्छमी–स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छा–पु० तरतीवदार तार, डोरेका गुच्छा, झुप्पा (रेशम, सूत आदिका लच्छा); लंवे, पतले, वारीक कटे हुए टुकड़े; लच्छेके ढंगकी वनायी हुई कोई चीज; मैदेसे वनी एक मिठाई जो सूत-सी लंवी और रेशेदार होती है; घटिया केसर; एक गहना जो तारोंकी कई लड़ोंसे वनता है और पाँवमें पहना जाता है। **–(च्छे)दार**–वि० जिसमें लच्छे पड़े हों (कोई खानेकी चीज); देरतक चलनेवाली, मनोहर (वात)। **–साख**–स्त्री० एक संकर रागिनी।

लच्छि*–पु० लाख, एक लाखकी संख्या। स्त्री० लक्ष्मी। **–नाथ, –निवास**–पु० विष्णु।

लच्छित*–वि० लक्ष्य, चिह्नित किया हुआ; लक्षणयुक्त; आलोचित।

लच्छिमी*–स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लच्छी–पु० घोड़ेका एक भेद। स्त्री० अंटी, ऊन, कलावत्तू, सूत आदिका लपेटा हुआ गुच्छा; * दे० 'लक्ष्मी'–'लच्छी-सी जहँ मालिन वोलै'–सूर।

लछन*–पु० लक्षण; लक्ष्मण।

लछना†–स० क्रि० दे० 'लखना'।

लछमन–पु० दे० 'लक्ष्मण'। **–झूला**–पु० रस्सों, तारोंका लटकनेवाला पुल; वदरीनारायणके रास्तेमें एक स्थान जहाँ ऐसा पुल है; एक वेल।

लछमना–स्त्री० दे० 'लक्ष्मणा'।

लछमी, लछिमी*–स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

लछियाना–स० क्रि० डोरा या ऊनकी लच्छी वनाना।

लछारा*–वि० लंवा; वड़ा।

लज*–स्त्री० लज्जा, शर्म।

लजकारिका–स्त्री० (सं०) लज्जालु नामक पौधा।

लजना*–अ० क्रि० शर्मिंदा, लज्जित होना।

लजनी†–स्त्री० लजालू पौधा।

लजवंती*–वि० स्त्री० लज्जाशीला। स्त्री० लजालू पौधा।

लजवाना–स० क्रि० लज्जित, शर्मिंदा करना।

लजाधुर†–वि० शर्मीला, वहुत लजानेवाला। पु० लज्जालु नामक पौधा।

लजाना–अ० क्रि० अपने अनुचित, भद्दे, बुरे आचरणका अनुभव करके संकुचित होना, शर्माना। स० क्रि० लज्जित करना।

लजारू*–पु० दे० 'लजालू'।

लजालू–पु० स्पर्शसे सिकुड़ जानेवाला एक पौधा।

लजावन–पु० लज्जित करानेवाला।

लजावनहारा०–पु० लज्जित करनेवाला।

लजावना*–स० क्रि० दे० 'लजवाना'।

लजियाना–अ० क्रि० दे० 'लजाना'। स० क्रि० लजवाना, लज्जित करना।

लजीज़–वि० (अ०) स्वादिष्ठ, लज्जतदार; प्यारा।

लजीला–वि० शर्मीला, लज्जाशील।

लजुरी†–स्त्री० रस्सी, डोर. लेजुर (कुएँसे पानी भरनेकी)।

लजोर*–वि० लज्जाशील।

लजोहा*–वि० लज्जाशील, शर्मीला।

लजौना*–वि० शर्मीला; लज्जित करनेवाला–'सूर नंदसुत मदन-लजौना'–सूर।

लजौहाँ*–वि० लज्जाशील।

लज्जका–स्त्री० (सं०) वनकपास।

लज्ज़त–स्त्री० (अ०) स्वाद, मजा; सुख। **–दार**–वि० स्वादु, जायकेदार।

लज्जरी–स्त्री० (सं०) लजालू।

लज्जा–स्त्री० (सं०) स्वभाव या अपने किसी अनुचित आचरणके

कारण हुई मनकी संकोचपूर्ण अवस्था, व्रीडा; मान, प्रतिष्ठा; लजालू। **–कर,–कारी(रिन्),–प्रद,–वह**–वि० लज्जाजनक, शर्मिंदा करनेवाला। **–प्राया**–स्त्री० मुग्धा नायिकाके चार भेदोंमेंसे एक (केशव)। **–प्रिया**–स्त्री० मुग्धा नायिकाका एक भेद। **–शील**–वि० शर्मीला; विनम्र। **–शून्य,–हीन**–वि० जिसमें लज्जा न हो, निर्लज्ज।

लज्जापयिता(तृ)–वि० (सं०) लजवानेवाला।

लज्जायित–वि० (सं०) शर्मिंदा, लज्जित।

लज्जालु–पु० (सं०) लजालू नामका पौधा। वि० लज्जाशील।

लज्जावंत–वि० लजीला। पु० लजालू, लाजवंती।

लज्जावती–स्त्री० (सं०) लाजवंती। वि० स्त्री० शर्मीली।

लज्जावान्(वत्)–वि० (सं०) लज्जाशील।

लज्जित–वि० (सं०) लजाया हुआ, लज्जायुक्त, शर्मिंदा।

लज्जिनी, लज्जिरी–स्त्री० (सं०) लजालू।

लज्जी*–स्त्री० प्रियतमा (रासो)।

लट–पु० (सं०) चोर; बच्चों या मूर्खोंकी तरह बात करनेवाला; दोष, ऐब। **–पर्ण**–पु० दारचीनी।

लट–स्त्री० नीचे लटकनेवाले सिरके लंबे बालोंका एक गुच्छा; उलझे हुए बालोंका गुच्छा; एक बेंत; आँतमें पड़नेवाले बारीक कीड़े, चुन्ना; * लपट। **–जीरा**–पु० चिचड़ा; एक जड़हन। मु० **–छिटकाना**–सिरके बालोंको खोलकर बिखेरना। **–पड़ना**–सिरके बालोंका उलझना, लिपटना।

लटक–स्त्री० लटकन; झुकाव; सुंदर चाल, अंग-भंगी। पु० (सं०) ठग; दुष्ट व्यक्ति, दुर्जन।

लटकन–पु० लटकनेकी क्रिया; लटकनेवाली चीज; सुंदर चाल; नाकका एक गहना; सिरपेचमें लगा हुआ रत्नगुच्छ; मालखंभका एक व्यायाम; एक वृक्ष।

लटकना–अ० क्रि० ऊँची जगहके आश्रयसे नीचेकी ओर अवलंबित होना; ऊँची जगहसे किसी चीजका आधारच्युत होकर झूलना; टँगना; कुछ चल-विचल होना; किसीके आसरेमें रहना; काम पूरा न होना, देर होना। **लटकती चाल**–बल खाती हुई सुंदर चाल।

लटकवाना–स० क्रि० लटकानेका काम कराना।

लटका–पु० टोटका; रोग आदिका छोटा नुसखा; गति, ढब; बात-चीतका बनावटी ढंग; एक तरहका चलता गाना।

लटकाना–स० क्रि० लटकनेमें प्रवृत्त करना; टाँगना; किसी खड़ी वस्तुको किसी ओर झुकाना; इंतजार कराना, फँसा रखना; देर करना।

लटकीला–वि० बल खानेवाला, लचकनेवाला, झूमनेवाला।

लटकू|–पु० एक पेड़ जिसकी छालसे रंग निकालते हैं।

लटकौआ, लटकौवा–वि० लटकनेवाला। **–मालखंभ**–पु० वह मालखंभ जिसकी लकड़ी भूमिमें गड़ी न हो।

लटना–अ० क्रि० थककर गिरना; रोग, परिश्रम आदिसे कमजोर पड़ जाना; ढीला, सुस्त पड़ना; व्याकुल होना; * इच्छा करना, ललचाना; अनुरक्त, आसक्त होना–'चंद करौं मुख देखि निछावरि केहरि कोटि लटे कटि ऊपर'–भावविलास।

लटपट–वि० दे० 'लटपटा'।

लटपटा–वि० गिरता-पड़ता; ढीला-ढाला, सरका हुआ; टूटा फूटा (शब्द); अंट-संट, जो व्यवस्थित न हो; बेबस, शिथिल, थका हुआ; न बहुत गाढ़ा, न पतला, लुटपटा; मला-मसला, गींजा हुआ, सलवटदार (कपड़ा)।

लटपटान–स्त्री० लड़खड़ाहट; सुंदर चाल, लचक।

लटपटाना–अ० क्रि० कमजोरी, नशे आदिके कारण सीधे न चल पाना, लड़खड़ाना, गिरना-पड़ना; विचलित, अस्थिर होना; चूक जाना; ठीक न चल सकना; मोहित हो जाना; अनुरक्त, आसक्त होना।

लटभ, लटह–वि० (सं०) सुंदर।

लटा*–वि० दुबला; लुच्चा; पतित; तुच्छ; लंपट; बुरा–'ससिकै सीतल चाँदनी सुंदर सबहिं सुहाइ। लगै चोर चितमें लटी घटि रहीम मन आइ'–रहीम।

लटापटी–स्त्री० लटपटाना; लड़ाई-झगड़ा; भिड़ंत; मिश्रण।

लटापोट*–वि० लहालोट; मुग्ध, आसक्त।

लटिया–स्त्री० लच्छी, आँटी। **–सन**–पु० पटसन। मु० **–करना**–सूतको लपेटकर आँटी, लच्छा बनाना।

लटी–स्त्री० गप, झूठी बात; बुरी बात; वेश्या; साधुनी। वि० स्त्री० दे० 'लटा'। मु० **–मारना**–गप हाँकना–'अरु झूठनके वदन निहारत मारत फिरत लटी'–सूर।

लटुआ*–पु० दे० 'लट्टू'।

लटुक–पु० लुकाट।

लटुरी*–स्त्री० दे० 'लटूरी'।

लटू*–पु० दे० 'लट्टू'।

लटूरा|–पु० कुप्पा।

लटूरी*–स्त्री० सिरके बालोंका लटकनेवाला गुच्छा, अलक।

लटोरा–पु० एक पेड़, लहटोरा, लिसोड़ा।

लट्ट–पु० (सं०) दुर्जन।

लट्टपट्ट|–वि० दे० 'लथपथ'।

लट्टू–पु० लकड़ीका चढ़ाव-उतारदार एक प्रकारका गोल बट्टा (इसके नीचे एक कील लगी होती है जिसमें सूत लपेट कर झटकेसे खींचनेपर यह चक्कर खाकर नाचने लगता है); बिजलीका बल्ब। **–दार**–वि० लट्टू जैसा; लट्टूवाला। **–०पगड़ी**–स्त्री० वह पगड़ी जिसके ऊपर गोला-सा बना होता है और आगे छज्जा-सा बाहर निकला होता है, छज्जेदार पगड़ी। मु० **–होना**–मोहित, मुग्ध होना; चाहमें उत्कंठित, हैरान होना।

लट्ठ–पु० मोटी लाठी। **–बंद**–पु० लठैत, लाठी बाँधनेवाला आदमी। **–बाज़**–वि० लाठी चलानेवाला; लाठी बाँधनेवाला। **–बाज़ी**–स्त्री० लाठीकी लड़ाई। **–मार**–वि० मारनेवाला; कठोर, जिसमें शिष्टता या शालीनता न हो, कड़ी (बात)। मु० **–लिये फिरना**–लाठी लेकर चलना; किसी वस्तु, सिद्धांत, व्यक्तिका बराबर विरोध करना, विरुद्ध आचरण करना (जैसे–अक्लके पीछे लट्ठ लिये फिरना)।

लट्ठर|–वि० कड़ा, कठोर।

लट्ठा–पु० जमीन नापनेका बाँस जो साढ़े पाँच हाथ लंबा होता है; लकड़ीका लंबा टुकड़ा, शहतीर; लकड़ीका खंभा; छाजन, पाटनमें लगा बल्ला, कड़ी; गाढ़ा, मोटा कपड़ा, गफ मारकीन। **–बंदी**–स्त्री० लट्ठेसे की जानेवाली जमीनकी नाप।

लट्व–पु० (सं०) घोड़ा; एक राग; नाचनेवाला लड़का; एक जाति।

लट्वा–स्त्री० (सं०) लट, अलक; पुंश्चली, व्यभिचारिणी; गौरैया; तूलिका, चित्र बनानेका साधन; कुसुंभ; करंजका एक भेद; द्यूत।

लट्वाका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी, लट्वा।

लठ–पु० दे० 'लट्ठ'।

लठियल|–वि० लठैत।

लठिया|–स्त्री० लाठी, डंडा।

लठैत–वि० लाठी चलानेमें कुशल, लट्ठबाज।

लड़ंत–स्त्री० भिड़ंत; मुकाबला।

लड़ंता–पु० लड़ाका, लड़नेवाला।

लड़–स्त्री० किसी वस्तुकी क्रमबद्ध–गोल, लंबाईमें संलग्न पंक्ति; रस्सीके एकमें मिलाकर बटे हुए तारोंमेंसे कोई एक; पंक्ति; कतार, क्रम; फूलों, बौरोंका छड़ीके ढंगका गुच्छा। मु० **–मिलाना**–मेल, मित्रता करना। **–में रहना**–किसी दल, पक्षमें शामिल होना, रहना।

लड़क–'लड़का'का समासमें व्यवहृत रूप। **–खेल,–खेलवा**–पु० बच्चोंका खेल; मामूली बात, आसान काम। **–पन**–पु० बालावस्था; बच्चोंकी-सी चंचलता। **–बुद्धि,–बुध**–स्त्री० बच्चों जैसी बुद्धि, अपरिपक्व मति।

लड़कई|–स्त्री० लड़कपन; नादानी; चिलबिलापन, नटखटी।

लड़कना*–अ० क्रि० ललकना–'जुगल कुँवरकों लड़कि लड़ावै। परम प्रेमरस पारस पावै।'–घन०।

लड़का–पु० बालक (जो सोलह वर्षसे कम वयका हो); पुत्र। **–ई**|–स्त्री० दे० 'लड़कई'। **–वाला**–पु० संतान, औलाद;

परिवार, पुत्र-कलत्रादि । **–(कों)का खेल**–आसान या महत्त्वहीन काम ।

लड़किनी†–स्त्री० दे० 'लड़की' ।

लड़की–स्त्री० वालिका (जिसकी अवस्था १६ वर्षसे कम हो); पुत्री, बेटी । **–वाला**–पु० (व्याहके अवसरपर) कन्याका पिता या संरक्षक; कन्यापक्ष ।

लड़कैयाँ†–स्त्री० लड़कपन ।

लड़कोर, लड़कोरी†–वि० स्त्री० 'लड़कौरी' ।

लड़कौरी–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी गोदमें वच्चा हो ।

लड़खड़ाना–अ० क्रि० डगमगाना, हिलना-डुलना; डग-मगाकर गिरना, झोंका खाकर गिर पड़ना; विचलित, अस्थिर होना; चूक जाना ।

लड़खड़ी–स्त्री० लड़खड़ाहट, डगमगाहट ।

लड़ना–अ० क्रि० एक पदार्थ, व्यक्तिका दूसरे पदार्थ, व्यक्तिसे टक्कर खाना, भिड़ जाना; कुश्ती करना, एक दूसरेको पटकनेका प्रयत्न करना; एक दूसरेपर प्रहार करना; झगड़ा, वाग्युद्ध करना; वहस करना; प्रतिपक्षकी चालोंको वेकार करनेके लिए कानूनी कोशिश करना; मेल खाना, पूरा पड़ना, अनुकूल पड़ जाना, संयुक्त होना ।

लड़बड़ा†–वि० न गाढ़ा, न पतला, लटपटा; नपुंसक ।

लड़बड़ाना–अ० क्रि० दे० 'लड़खड़ाना' ।

लड़बावरा, लड़बावला–वि० दुर्ललित, दुलरुआ; उजड्ड और नासमझ, लड़कपन (वुरे अर्थमें)से भरा हुआ; गँवार ।

लड़बौरा–वि० दे० 'लड़वावरा' ।

लडह–वि० दे० 'लटह' ।

लड़ाई–स्त्री० प्रहार, चोट करनेवालेपर प्रहार, चोट करना, युद्ध; दो सेनाओं, राज्योंका एक दूसरेपर आक्रमण, संग्राम; कुश्ती, मल्लयुद्ध; झगड़ा, कलह; वहस; टक्कर; कानूनी दाँव-पेच करना; वैर, अनवन ।

लड़ाका–वि० लड़नेवाला, योद्धा; झगड़ालू, फसादी ।

लड़ाकू–वि० लड़नेवाला, लड़ाईका काम करनेवाला, जैसे लड़ाकू जहाज ।

लड़ाना–स० क्रि० एक-दूसरेमें लड़ाई कराना; झगड़े, कलहमें लगाना; फेंकना, डालना; फँसाना, उलझाना; कामयावी, सफलताके लिए सोच-विचार करना; एक चीजको दूसरी चीजसे सवेग भिड़ाना; प्यार, दुलार करना; * प्रेमसे देना ।

लड़ायता*–वि० लड़ैता, प्यारा ।

लडित–वि० (सं०) इधर-उधर घूमता हुआ ।

लड़ी–स्त्री० कतार, पंक्ति; छड़ीके रूपका गुच्छा; एक साथ मिलाकर बटे हुए रस्सी, गुच्छेके तार; एक सीधमें गुँथी, लगी हुई किसी चीजकी माला, पंक्ति ।

लड़ीला–वि० लाड़ला, प्यारा ।

लड़ुआ, लड़ुवा–पु० लड्डू ।

लड़ैता–वि० लड़नेवाला, लड़ाका; लाड़ला, जिसका वहुत अधिक प्यार किया जाय ।

लड़ैया–वि० लड़नेवाला, वीर । † पु० सियार (बुंदेल०) । (**गज भर–नौ गज पूँछ**–आवश्यकतासे बड़े वस्त्रादि धारण करना, अपने वित्त या सामर्थ्यसे वाहर कोई काम करना । इससे मिलती-जुलती कहावत है, 'वित्तै भरके वित्तनमियाँ सवा हाथकी डाढ़ी' ।)

लड्ड–पु० (सं०) दे० 'लट्ट' ।

लड्डु, लड्डुक–पु० (सं०) दे० 'लड्डू' ।

लड्डू–पु० पिंडीके आकारकी बनी हुई एक मिठाई, मोदक । मु० **(मनके)–खाना**–ऐसे लाभकी कल्पना करना जिसका होना कठिन हो । **–खिलाना**–उत्सव, दावत करना । **–बँटना,–मिलना**–लाभ होना ।

लड़याना*–स० क्रि० अधिक लाड़-प्यार करना ।

लढ़ंत–पु० कुश्तीका एक पेंच ।

लढ़ा*–पु० बैलगाड़ी–'जातहिं देहैं लदाय लढ़ा भरि'–सुदामाचरित ।

लढ़िया†–स्त्री० छोटी बैलगाड़ी ।

लत–स्त्री० बुरी आदत, वान, टेव; 'लात'का समासमें व्यवहृत रूप । **–खोर,–खोरा**–वि० हमेशा लात खानेवाला; नीच । पु० दास; चौखट, देहली; पायंदाज, दरवाजेपर रखा हुआ पैर पोंछनेका कपड़ा आदि । **–मर्दन** पु० पैरसे रौंदना; पैरोंका आघात । **–हा**–वि० लात मारनेवाला (घोड़ा, बैल आदि) ।

लतड़ी–स्त्री० दे० 'लतरी' ।

लतपत–वि० दे० 'लथपथ' ।

लतर–स्त्री० बेल, लता ।

लतरा–पु० एक मोटा अन्न, रेंवछ ।

लतरी–स्त्री० मोठ, केसारी; एक तरहकी चप्पल; पुराना जूता जो चलते समय जमीनसे रगड़ खाता रहता है ।

लतहा–पु० वि० लात मारनेवाला (स्त्री० लतही) ।

लतांगी–स्त्री० (सं०) काकड़ासिंगी ।

लता–स्त्री० (सं०) जमीन या किसी आधारपर फैलनेवाला पौधा, बेल; कोमल शाखा, कांड; प्रियंगु; दूव; माधवी; जूही, जाती; स्पृक्का; ज्योतिष्मती; सुंदरी स्त्री; कशा; मोतियोंकी लड़ी; लीक, रेखा । **–करंज**–पु० एक तरहका कंजा । **–कर**–पु० हाथ हिलानेका एक ढंग (नृत्यकला) । **–कस्तूरी,–कस्तूरिका**–स्त्री० एक पौधा । **–कुंज**–पु० लतासे घिरा, छायामय स्थान । **–गण**–पु० फैलनेवाले पौधे । **–गृह,–भवन**–पु० लताओंसे मंडपकी तरह निर्मित स्थान । **–जिह्व**–पु० साँप । **–तरु**–पु० नारंगी; ताड़; साखू । **–ताल**–पु० हिंतालका पेड़ । **–द्रुम**–पु० लताशाल । **–पता**–पु० (हिं०) लता और पत्ते, पेड़-पौधे; हरियाली; जड़ी, बूटी । **–पनस**–पु० तरबूज । **–पर्ण**–पु० विष्णु । **–पर्णी**– स्त्री० तालमूल; मधूरिका । **–पाश**–पु० लताओंका जाल, समूह । **–प्रतान**–पु० लता तंतु । **–फल**–पु० परवल, पटोल । **–बंध**–पु० कामशास्त्रमें एक संभोग आसन । **–बाण**–पु० कामदेव । **–भद्रा**–स्त्री० भद्राली लता । **–मंडप**–पु० लताओंको सघन करके बनाया हुआ घर, स्थान । **–मंडल**–पु० लताओंका घेरा, कुंज । **–मणि**–पु० मूँगा । **–मरुत्**–पु० पृक्का । **–मृग**–पु० बंदर; बनमानुस । **–यष्टि**–स्त्री० मजीठ । **–यावक**–पु० प्रवाल; अँखुवा, अंकुर । **–रद**–पु० हाथी । **–रसन**–पु० सर्प । **–वलय**–पु० लतागृह । **–वितान**–पु० लताओंसे बना हुआ मंडप । **–वृक्ष**–पु० सलई, शल्लकी वृक्ष; नारियल । **–वेष्ट**–पु० एक रतिबंध; एक पहाड़ । **–वेष्टन**–पु० आलिंगनका एक प्रकार । **–वेष्टित**–वि० लताओंसे आच्छादित । पु० एक पहाड़ । **–वेष्टितक**–पु० आलिंगनका एक प्रकार । **–शंकुतरु**–पु० शाल । **–शंख**–पु० साखूका वृक्ष । **–साधन**–पु० एक साधना जिसका अधिकरण लता अर्थात् स्त्री है (वाममार्ग) ।

लताड़–स्त्री० दे० 'लथाड़' ।

लताड़ना–स० क्रि० रौंदना, कुचलना; लातसे मारना; फटकारना; हैरान करना, थकाना ।

लतानन–पु० (सं०) हस्तचालनका एक प्रकार (नृत्यकला) ।

लताफ़त–स्त्री० (अ०) लतीफ होना; सूक्ष्मता, सुकुमारता; सुंदरता, लालित्य; स्वच्छता; शोभा; रस, रोचकता; सुरुचि ।

लतार्क–पु० (सं०) हरित पलांडु, हरा प्याज ।

लतालक–पु० (सं०) हाथी ।

लतिका–स्त्री० (सं०) बेल, छोटी लता; मोतियोंकी लड़ी ।

लतियर, लतियल–वि० लतखोर ।

लतियाना–स० क्रि० रौंदना; पैरोंसे दवाना; लातोंसे खूब मारना ।

लतिहर, लतिहल–वि० दे० 'लतियर' ।

लतिहाव–पु० लात मारना, लात चलाकर चोट पहुँचाना; अशोभनीय आक्षेप अथवा प्रहार ।

लतीफ़–वि० (अ०) बारीक; साफ-सुथरा; रसमय, जायकेदार; अच्छा, बढ़िया; नरम, सुपाच्य (भोजन) । **–गिज़ा**–स्त्री० जल्द पचनेवाला आहार । **–मिज़ाज**–वि० खुशमिजाज, जिंदादिल, रसिक ।

लतीफ़ा–पु० (अ०) खूबी; नाजुक और उम्दा चीज; चुटकुला, हास्यरसकी लघु कहानी; हँसी-मजाककी बात; अनूठी, चमत्कारपूर्ण बात । **–गो**–वि० अनूठी बातें कहनेवाला । **–बाज़**–वि० चुटकुले छोड़नेवाला, विनोदी । मु० **–कसना**–दे० 'चुटकुला

छोड़ना'।

लत्ता–पु० फटा-पुराना कपड़ा; कपड़ेका टुकड़ा; कपड़ा। मु० –उड़ जाना–टुकड़े-टुकड़े हो जाना, नष्ट होना। लत्ते लेना–बनाना, हँसी उड़ाना।

लत्तिका–स्त्री० (सं०) गोह।

लत्ती–स्त्री० मारनेके लिए चलाया, उठाया हुआ पैर (घोड़े, गधे, बैल आदिका); लात मारना; कपड़ेकी लंबी चीर, धज्जी।

लथपथ–वि० तर, भींगा हुआ; सना हुआ; लिपटा हुआ।

लथाड़–स्त्री० पटककर घसीटना, लोटाना; पराजय; हानि; झिड़की, डाँट-फटकार। मु० –खाना–पटका, पछाड़ा जाना; ध्वस्त, नष्ट किया जाना; झिड़का जाना। –पड़ना–झिड़का जाना।

लथाड़ना–स० क्रि० कीचड़ आदि पोतकर गंदा करना; पछाड़ना; बुरी तरह डाटना; खरीखोटी सुनाना; पछाड़ लोटाना; झिड़कना; रौंदना; हैरान करना।

लथेड़ना–स० क्रि० कीचड़ आदि लपेटना, सानना; गंदा करना; पटककर भूमिपर घसीटना, रगड़ना; पटकना, पछाड़ना; थकाना, हैरान, परेशान करना; डाँटना-डपटना।

लदन–स्त्री० लदाव।

लदना–अ० क्रि० भारयुक्त होना; किसी चीजसे किसी चीजका ढक, भर जाना; किसी भारी चीजका दूसरी चीजपर रखा जाना; सामान ले जानेवाली सवारियोंपर असबाब रखा जाना; कैद होना; चोला छूटना, मर जाना; गत होना, समाप्त होना (पुराना जमाना लद गया)। वि० बोझ ढोनेवाला, लदुवा। लदा-फँदा –वि० भाराक्रांत।

लदनी–स्त्री० लदान।

लद-लद–अ० (किसी गीली और गाढ़ी चीजके गिरनेसे उत्पन्न होनेवाले) 'लद-लद' शब्दके साथ।

लदवाना–स० क्रि० लादनेका काम कराना।

लदाई–स्त्री० लादनेकी क्रिया या भाव; लादनेकी उजरत।

लदाउ, लदाऊ *–पु० लदाव, भराव।

लदान–स्त्री० (माल) लादनेकी क्रिया।

लदाना–स० क्रि० दे० 'लदवाना'।

लदाव–पु० लादनेका काम; बोझ; छत आदिका पटाव; बिना कड़ी धरनके ठहरनेवाली ईंटकी जोड़ाई; छत, मिहराव जिसमें बिना कड़ी, धरनके ईंटकी जोड़ाई ठहरे।

लदावना *–स० क्रि० लदवाना; माल लादकर ले जाना।

लदुआ, लदुवा–वि० बोझ ढोनेवाला।

लदूषक–पु० (सं०) एक पक्षी।

लद्दू–वि० बोझ ढोनेवाला, लदुआ।

लद्धड़–वि० सुस्त, काहिल। –पन–पु० ढिलाई, सुस्ती।

लद्धना *–स० क्रि० पाना; भेंटना।

लनतरानी–स्त्री० दे० 'लंतरानी'।

लनी†–स्त्री० पनवारीकी क्यारी।

लप–पु० लचीली छड़ीको तेजीसे हिलानेसे उत्पन्न शब्द; तलवार, आदिकी चमककी चाल, तेजी; अंजलि; अंजलिभर कोई वस्तु। –झप–वि० चंचल, अस्थिर; अधीर; तेज, फुर्तीला। स्त्री० तेजी; चंचलता; हाथकी सफाई; नारीकी सुकुमारता; प्रेम आदिकी व्यंजक एक चेष्टा जो लीलाके अंतर्गत है। –०चाल–स्त्री० बेढंगी या तेज चाल। मु० –लप करना–लचीली छड़ीको हवामें तेजीसे हिलाकर ध्वनि उत्पन्न करना; झलकाना, चमकाना। –से–त्वरापूर्वक, झटसे।

लपक–स्त्री० लपट, लौ; चमक; तेजी, वेग; फुरती।

लपकना–अ० क्रि० झटपट चल पड़ना; तेजीसे जाना; किसीपर झपटना, टूट पड़ना, आक्रमण करना; कोई चीज पानेके लिए हाथ बढ़ाना।

लपकी–स्त्री० एक तरहकी सीधी सिलाई।

लपट–स्त्री० आगकी लौ, ज्वाला; तपी हुई हवा, आँच, गरमी; गंध; गंधपूरित वायुका झोंका; झलका; † लिपटनेकी क्रिया।

लपटना–अ० क्रि० आलिंगन करना; सटना, लग्न होना; घिरना; लगा रहना; सूत आदिका लपेटा जाना।

लपटा–पु० गीली और गाढ़ी चीज; एक तरहकी गाढ़ी कढ़ी; लेई; † दे० 'लपटौना'।

लपटाना–स० क्रि० लिपटाना, चिपटाना; आलिंगन करना, गले लगाना; घेरना; सूत, डोर जैसी चीजसे फेरे डालकर घेरना, लपेटना। अ० क्रि० सटना, लगना; फँसना, उलझना; * लथपथ होना।

लपटीला *–वि० रपटीला; पिच्छल, फिसलनवाला–'ऊँची नीची राह लपटीली पाँव नहीं ठहराई'–मीरा।

लपटौआँ–वि० लिपटनेवाला; सटा हुआ। पु० एक जंगली तृण।

लपटौना†–पु० एक तरहकी घास जिसकी बाल कपड़ेसे चिपक जाती है। वि० दे० 'लपटौआँ'।

लपन–स्त्री० लपनेकी क्रिया। पु० (सं०) मुख; कथन, भाषण।

लपना–अ० क्रि० पतली, लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे लचना; झुकना; तेजीसे चलना; * ललचना; † हैरान, परेशान होना।

लपलपाना–अ० क्रि० लचीली छड़ी आदिका घुमानेसे झुकना; लंबी, पतली चीज (जीभ आदि) का हिलना-डुलना; तलवार आदिका चमकना। स० क्रि० तलवार आदिको घुमाकर झुकाना; लंबी, पतली चीजको हिलाना-डुलाना; तलवार आदिको निकालकर चमकाना।

लपलपाहट–स्त्री० किसी पतली, लचीली वस्तुके दबाव या झोंकसे झुकनेकी क्रिया; चमक।

लपसी–स्त्री० कम घी डालकर बनाया हुआ आटेका हलवा; लपटा, लेई।

लपहा–पु० पानकी बेलमें लगनेवाला एक रोग।

लपाना–स० क्रि० लचनेवाली चीजको तेजीसे घुमाकर झुकाना; आगे बढ़ाना।

लपित–वि० (सं०) कहा हुआ, कथित। पु० कथन, बोली।

लपेट–स्त्री० लपेटनेकी क्रिया; फेरा; किसी चीजकी मोटाईका विस्तार; बल, ऐंठन; कपड़ेकी तह जो गठरी बाँधनेमें लगती है; चक्कर, उलझन; पकड़; कुश्तीका एक दाव।

लपेटन–स्त्री० लपेट; घुमाव, फेरा; उलझन, फँसाव; मरोड़, ऐंठन। पु० लपेटनेवाली चीज, बाँधने, घेरनेके काम आनेवाली चीज; वह चीज जो पैरमें उलझे; पैरमें फँसनेवाली चीज।

लपेटना–स० क्रि० सूत, कपड़े आदिको किसी चीजके चारों ओर फेरा, घेरा देकर लगाना, बाँधना; किसी चीजको तह लगाकर मोड़ना, समेटना; बेठन आदिमें बाँधना; समस्त शरीरको बटोरकर घेरना; काबू, पकड़में करना, चाल, गति बंद करना; झंझट, उलझनमें डालना, फँसाना; गाढ़ी, गीली, चिपकनेवाली चीजको मलना या पोतना।

लपेटवाँ–वि० लपेटी हुई; लपेटने योग्य; लपेटकर बनी हुई; चाँदी, सोनेके तार लपेटकर बनायी हुई; जिसका अर्थ गूढ़ हो; घुमाव-फिराववाला, चक्करदार।

लपेटा–पु० पगड़ी–'केसरी लपेटा छैल बिधिसों लपटे'–घन०; दे० 'लपेट'।

लपेत–पु० (सं०) एक दैत्य जो बालग्रह माना जाता है।

लप्पड़†–दे० 'थप्पड़'।

लप्सिका–स्त्री० (सं०) लपसी।

लप्सुद–पु० (सं०) बकरेकी दाढ़ी।

लप्सुदी(दिन्)–वि० (सं०) दाढ़ीवाला (बकरा)।

लफंगा–वि० (फा० 'लफ़ंग') आवारा, शोहदा; बदमाश, दुश्चरित्र।

लफटेंट–पु० (सेनाका) एक छोटा अधिकारी।

लफना *–अ० क्रि० दे० 'लपना'।

लफलफाना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'लपलपाना'।

लफलफानि *–स्त्री० लफलफानेकी क्रिया; चमक।

लफाना *–स० क्रि० दे० 'लपाना'।

लफ़्ज़–पु० (अ०) शब्द, अर्थयुक्त ध्वनि; बात। –ब-लफ़्ज़–अ० शब्दशः।

लफ़्ज़ी–वि० शाब्दिक, वाच्य। –मानी–पु० शब्दार्थ, वाच्यार्थ।

लफ़्फ़ाज़–वि० (अ०) लच्छेदार बातें करनेवाला, अतिरंजना

करनेवाला, वातूनी ।

लफ़्फ़ाज़ी–स्त्री० वाचालता, लच्छेदार शब्दावलीका प्रयोग, वाक्याडंबर, वातूनीपन ।

लब–पु० (फा०) ओठ, होंट; किनारा, तट । **–ब-लब**–वि० मुँहसे मुँह मिलाये हुए । **–रेज़**–मुँहतक भरा हुआ । **–(बे)-आब**–पु० नदी, सरोवर आदिका किनारा । **–जू**–पु० नदीका किनारा । **–दरिया**–पु० दरियाका किनारा । **–सड़क**–अ० सड़कके किनारे । **–(बो)-लहजा**–पु० बोलनेका ढंग; उच्चारण और स्वराघातकी विशेषता । **मु० –खुश्क होना**–होंठ सूखना । **–खोलना**–बोलना, बात करना । **–पर आना**–होंठोंपर आना, कहा जाना । **–सीना**–मुँह बंद करना । **–हिलना**–बात निकलना । **–(बों)पर जान या दम आना**–मरणासन्न होना । **–से लगाना**–मुँहसे लगाना ।

लबझना*–अ० क्रि० फँसना, उलझना ।

लबड़धोंधों–स्त्री० व्यर्थका गुल-गपाड़ा, हल्ला-गुल्ला; अंधेर, अव्यवस्था; अनीति, अन्याय; भुलावा देनेवाली बातें, बेईमानी ।

लबड़ना*–अ० क्रि० झूठ बोलना, गप मारना; लबारी करना ।

लबड़ा†–वि० दे० 'लबरा' ।

लबदा–पु० मोटा, अनगढ़ डंडा ।

लबदी–स्त्री० छोटा लबदा ।

लबनी†–स्त्री० लंबी हाँड़ी जिसमें ताड़ी चुआयी जाती है; शीरा निकालनेका डौवा ।

लबरा*–वि० गप्पी; झूठा, झूठ बोलनेवाला; † बायाँ ।

लबलबी–स्त्री० बंदूकके घोड़ेकी कमानी, लिबलिबी ।

लबलहका†–वि० कोई भी चीज देखकर पानेके लिए लपकनेवाला, लोभी; अधीर, चंचल; बिना मतलब किसी चीजपर हाथ चलानेवाला ।

लबाड़िया–पु० दे० 'लबार' ।

लबादा–पु० (फा०) एक लंबा और ढीला-ढाला पहनावा, चोगा, अबा; रुईदार चोगा ।

लबाब–वि० (अ०) खालिस, बेमेल । पु० सारांश, खुलासा; गूदा; मग्ज ।

लबार†–वि० झूठा; गप्पी, बक्की ।

लबारी–स्त्री० झूठ बोलना । * वि० चुगलखोर; झूठा ।

लबालब–अ० मुँह या किनारेतक (भरा हुआ) ।

लबी†–स्त्री० खाँड़, राब ।

लबूब–पु० (अ०) 'लब'का बहु०; एक तरहका माजून ।

लबेद–पु० रूढि, रीति, लोकाचार, परंपरा; वेदविरुद्ध नियम ।

लबेदा–पु० अनगढ़, मोटा और छोटा डंडा ।

लबेदी–स्त्री० छोटा, पतला डंडा; जबरदस्ती ।

लबेरा–पु० लसोड़ा ।

लब्ध–वि० (सं०) प्राप्त, मिला हुआ; भाग करनेसे प्राप्त (फल–ग०); अर्जित, पैदा किया हुआ । **–काम**–वि० जिसकी वांछा पूरी हो गयी हो । **–कीर्ति,–नामा(मन्),–प्रतिष्ठ**–वि० प्रसिद्ध, यशस्वी । **–चेता(तस्),–संज्ञ**–वि० होशमें आया हुआ । **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जिसने जन्म लिया है । **–तीर्थ**–वि० जिसे अवसर प्राप्त हुआ है । **–दास**–पु० अन्यसे प्राप्त दास । **–नाश**–पु० प्राप्त वस्तुका नाश । **–प्रशमन**–पु० प्राप्त धन सुपात्रको दान करना । **–लक्ष,–लक्ष्य**–वि० जिसका निशाना लग गया हो; जिसको इष्ट वस्तु मिल गयी हो । **–लक्षण**–वि० जिसे कोई काम करनेका अवसर मिला हो । **–लाभ**–वि० जिसे लाभ हुआ हो, उद्देश्यकी प्राप्ति हुई हो । **–वर**–वि० जिसे वरदान मिला हो । **–वर्ण**–वि० विद्वान्, पंडित । **–विद्य**–वि० विद्वान् । **–शब्द**–वि० लब्धनामा । **–सिद्धि**–वि० जिसको सिद्धि प्राप्त हो गयी हो ।

लब्धक–वि० (सं०) मिला हुआ, प्राप्त ।

लब्धव्य–वि० (सं०) प्राप्त करने योग्य ।

लब्धांक–पु० (सं०) भागफल (ग०) ।

लब्धा–स्त्री० (सं०) विप्रलब्धा, संकेतस्थलपर नायकके न आनेसे निराश हुई नायिका ।

लब्धा(ब्धृ)–वि०, पु० (सं०) प्राप्त करनेवाला ।

लब्धातिशय–वि० (सं०) जिसे असाधारण शक्ति प्राप्त हो ।

लब्धि–स्त्री० (सं०) लाभ, प्राप्ति; भाज्यको भाजक द्वारा विभक्त करनेसे प्राप्त भागफल (ग०) ।

लभन–पु० (सं०) प्राप्त करनेकी क्रिया; गर्भधारण ।

लभनी†–स्त्री० दे० 'लबनी' ।

लभस–पु० (सं०) पिछाड़ी, वह रस्सी जिससे घोड़ेकी पिछली टाँगें बाँधते हैं; धन; याचक ।

लभ्य–वि० (सं०) पाने योग्य; उचित, न्याय्य ।

लम–'लंबा'का समासगत रूप । **–गिरदा**–पु० मोटी दानेदार रेती । **–गोड़ा,–टंगा**–वि० लंबी टाँगवाला । **–घिचा**–वि० लंबी गरदनवाला । **–छड़**–पु० कबूतरबाजोंका लग्गा; लंबी बंदूक (पुराने ढंगकी); भाला, साँगा । वि० लंबा और पतला । **–छुआ**–वि० लंबोतरा । **–तड़ंग**–वि० लंबा-तगड़ा (आदमी) ।

लमई†–स्त्री० एक तरहकी मधुमक्खी ।

लमक–वि० (सं०) लंपट, विलासी । पु० उपपति ।

लमकना*–अ० क्रि० उत्सुक, उत्कंठित होना; लपकना; † मंद-मंद चलना (हवाका) ।

लमगजा–पु० इकतारा ।

लमचा†–पु० एक बरसाती घास ।

लमजक, लमज्जक–पु० कुशकी जातिकी एक महकनेवाली घास, लामज ।

लमढींग†–पु० एक जंगली जानवर ।

लमधर–पु० कुदालके फलका टेढ़ा भाग ।

लमधी†–पु० समधीका पिता ।

लमहा–पु० (अ०) निमेष, पल, क्षण ।

लमाना*–स० क्रि० लंबा करना; दूरतक बढ़ाना । अ० क्रि० दूर बढ़, निकल जाना ।

लय–स्त्री० स्वर; स्वरके आरोह, अवरोहका ढंग, गानेकी धुन, शैली; सम (संगीत) । पु० (सं०) मिलना, एक वस्तुका दूसरीमें मग्न, विलीन होना; ध्यानका एकाग्र होना; कार्यका कारणमें लीन होना; प्रकृतिका विपरिणाम, सृष्टिका प्रलयावस्थामें अव्यक्त हो जाना; लोप, विनाश; क्रीडा; गाने और बाजेके स्वरोंका मेल; स्थैर्य, विश्राम; विश्राम-स्थल; मानसिक निष्क्रियता; आलिंगन; परमेश्वर; मूर्च्छा; हेंगा, पाटा । **–गत**–वि० जो विलीन हो गया हो । **–नालिक**–पु० बौद्ध मंदिर । **–पुत्री**–स्त्री० नर्तकी । **–बद्ध**–वि० लयसे बँधा हुआ ।

लयन–पु० (सं०) लय होना, शांति; विश्रामका स्थान; शरण, आश्रय लेना ।

लयारंभ, लयालंभ–पु० (सं०) नर्तक, अभिनेता ।

लयार्क–पु० (सं०) प्रलयकालका सूर्य ।

लर*–स्त्री० दे० 'लड़' ।

लरकई*–स्त्री० लड़कपन, नादानी ।

लरकना*–अ० क्रि० लटकना; झुकना; तिरछा होना ।

लरका*–पु० दे० 'लड़का' ।

लरकाना*–स० क्रि० लटकाना; झुकाना; तिरछा करना; हटाना, जरा इधर-उधर स्थित करना ।

लरकिनी*–स्त्री० लड़की ।

लरखरना*–अ० क्रि० दे० 'लड़खड़ाना' ।

लरखरनि*–स्त्री० डगमगाहट; स्थिति, गतिमें च्युति, लड़खड़ाहट ।

लरखराना*–अ० क्रि० दे० 'लड़खड़ाना' ।

लरजना*–अ० क्रि० काँपना, हिलना-डुलना; दहल जाना, भयभीत होना–'तिनको तुजुक देखि नेक हू न लरजा'–भूषण; झेंपना ।

लरजाँ–वि० (फा०) काँपनेवाला ।

लरज़ा–पु० (फा०) कँपकँपी, थरथराहट; भूडोल; जूड़ी-बुखार ।

लरज़िश–स्त्री० (फा०) कँपकँपी, थरथराहट ।

लरझर*–वि० बहुत अधिक मात्रामें उपलब्ध; प्रचूर; बरसता हुआ ।

लरना*–अ० क्रि० दे० 'लड़ना' ।

लरनि*–स्त्री० लड़ाई; होड़–'बदन बिधु जित्यो लरनि'–गीता०; लड़नेका तरीका ।

लरम†–वि० नरम। पु० वैभव।

लराई*–स्त्री० दे० 'लड़ाई'।

लराका*–वि० दे० 'लड़ाका'।

लरिकई*–स्त्री० दे० 'लरिकाई'।

लरिकसलोरी*–स्त्री० शैतानी; लड़कोंका खेल–'सूरदास प्रभु करत दिनहि दिन ऐसी लरिकसलोरी'–सूर।

लरिका*–पु० दे० 'लड़का'। **–ई***–स्त्री० बचपन, बाल्यावस्था; लड़कोंका आचरण; चंचलता।

लरिया*–पु० दुपट्टा।

लरिकिनी*–स्त्री० दे० 'लड़की'।

लरी*–स्त्री० दे० 'लड़ी'।

लर्ज–पु० सितारका पाँचवाँ तार जो पीतलका होता है।

ललंतिका–स्त्री० (सं०) नीचेतक लटकनेवाला हार; गोह।

लल–वि० (सं०) कंपित (जीभ); हिलानेवाला; प्रेमी; क्रीडाशील; इच्छुक। पु० एक गंधद्रव्य; अंकुर; उद्यान। **–जिह्व**–वि० जीभ लपलपानेवाला; जीभ लपलपाता हुआ; भयंकर। पु० कुत्ता; ऊँट।

ललक–स्त्री० बलवती इच्छा, गहरी लालसा।

ललकना–अ० क्रि० किसी चीजके लिए अत्यधिक उत्सुक होना, गहरी लालसा होना; उमंगसे भर जाना।

ललकार–स्त्री० लड़नेके लिए प्रतिपक्षीको चुनौती देना, प्रचारणा; किसीको लडनेके लिए बढ़ावा देना।

ललकारना–स० क्रि० विपक्षीको लड़नेकी चुनौती देना; किसीको किसी आदमीसे लड़नेका बढ़ावा देना, उभाड़ना।

ललकित–वि० गहरी चाहसे प्रेरित।

ललचना–अ० क्रि० किसी अभिलषित वस्तुकी प्राप्तिके लिए उत्सुक, अधीर होना; आसक्त, लुब्ध होना; लालसा करना।

ललचाना–स० क्रि० किसीको कुछ पानेकी आशा बँधाकर अधीर करना; कोई लुभावनी चीज दिखाकर पानेके लिए आकुल, व्यग्र, अधीर करना; मोहित, मुग्ध करना। अ० क्रि० दे० 'ललचना'।

ललचौंहाँ*–वि० ललचाया हुआ; लालच उत्पन्न करनेवाला।

ललछौहाँ–वि० हलके लाल रंगवाला।

ललज्जिह्व–वि०, पु० (सं०) दे० 'ललजिह्व'।

ललदंबु–पु० (सं०) नीबूका पेड़।

ललन–वि० (सं०) क्रीड़ाशील। पु० क्रीड़ा; जिह्वाका चालन, लपलपाना; लड़का, बच्चा; साल, प्रियाल, चिरौंजीका वृक्ष; * नायकके लिए प्रेमव्यंजक शब्द।

ललना–स्त्री० (सं०) स्त्री; कामिनी; जीभ; एक वर्णवृत्त। **–प्रिय**–पु० कदंबका पेड़; एक गंधद्रव्य, ह्रीवेर। वि० जीभको प्रिय लगनेवाला, स्वादिष्ठ; रमणीको प्रिय लगनेवाला। **–चक्र**–पु० शरीरमें स्थित एक चक्र या कमल (योग)।

ललनिका–स्त्री० (सं०) छोटी स्त्री; तुच्छ स्त्री।

ललनी*–स्त्री० बाँसकी नली–'कहहि कबीर ललनीके सुगना तोहि कौने पकरो'–बीजक।

ललरी–स्त्री० कानकी लोलकी।

ललल्ल–पु० (सं०) अस्पष्ट उच्चारण।

ललही छठ–स्त्री० भाद्रकृष्णा षष्ठी, हलषष्ठी।

लला–पु० लड़कोंका सामान्य संबोधन; लड़का (जो प्यारा, दुलारा हो); प्रेमी, नायकका संबोधन।

ललाई–स्त्री० सुर्खी; लाली।

ललाक–पु० (सं०) शिश्न।

ललाट–पु० (सं०) माथा; भाग्य। **–तट**–पु० ललाटकी ढाल या तल। **–पटल,–पट्ट,–फलक**–पु० माथेका तल, विस्तार। **–रेखा,–लेखा**–स्त्री० मस्तककी रेखाएँ; भाग्यलेख। मु० **–का लिखा**–भाग्यका लेख। **–में होना**–भाग्य, तकदीरमें होना।

ललाटक–पु० (सं०) ललाट; सुंदर ललाट।

ललाटाक्ष–पु० (सं०) शिव।

ललाटाक्षी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

ललाटिका–स्त्री० (सं०) माथेका एक आभूषण, टीका; तिलक, टीका।

ललाटूल–वि० (सं०) सुंदर ललाटवाला।

ललाट्य–वि० (सं०) ललाट-संबंधी; ललाटके उपयुक्त।

ललाना*–अ० क्रि० किसी चीजपर मोहित, लुब्ध होना; किसी चीजके लिए ललचना; पानेके लिए अधीर होना; लाल होना।

ललाम–वि० (सं०) चिह्नवाला; सुंदर, रमणीय; श्रेष्ठ, उत्तम। पु० भूषण; रत्न; तिलक; चिह्न, प्रभाव, ध्वज, दंड और पताका; पंक्ति; द्रुम; घोड़ा; माथेपरका चिह्न (गाय, घोड़े आदिके); घोड़ेका आभूषण; अयाल।

ललाम(न्)–पु० (सं०) आभूषण, सजावट; सांप्रदायिक चिह्न; चिह्न; झंडा; द्रुम; सींग; घोड़ा; प्रधान।

ललामक–पु० (सं०) फूलकी माला (माथेपर लपेटनेके लिए)।

ललामी–स्त्री० सुंदरता; लाली; (सं०) कानका एक गहना।

ललित–वि० (सं०) क्रीडाशील; कामी; सुंदर, रमणीय; सरल; निर्दोष; ईप्सित, प्रिय; दोलायमान, हिलता-डोलता हुआ। पु० श्रृंगार रसका एक कायिक हाव; एक अलंकार जहाँ वर्ण्य वस्तुके संबंधमें जो कुछ कहना हो उसे न कहकर उसका प्रतिबिंबरूप कथन किया जाय, जैसे 'लिखत सुधाकर लिखिगा राहू'–राज्य देना था, दे दिया वनवास; नृत्यमें हाथोंकी एक विशेष मुद्रा; एक राग; एक विषम वर्णवृत्त; क्रीडा; सौंदर्य। **–कला**–स्त्री० सौंदर्यके आश्रयसे व्यक्त होनेवाली कला (संगीत, काव्य आदि)। **–कांता**–स्त्री० दुर्गा। **–गौरी**–स्त्री० एक रागिनी। **–ताल**–पु० संगीतका एक ताल। **–निबंध**–पु० वैचारिक निबंधोंसे भिन्न ऐसे निबंध जिनमें आत्मानुभवोंकी प्रधानता हो और जो लालित्यपूर्ण शैलीमें लिखे गये हों। **–पद**–वि० सुंदर पद, शब्दवाला। पु० एक मात्रिक छंद, सार, दोवै। **–पुराण**–पु० ललितविस्तर, बुद्धका चरित्रग्रंथ। **–प्रहार**–पु० हलका आघात। **–प्रिय**–पु० संगीतका एक ताल। **–लोचन**–वि०–सुंदर नेत्रोंवाला। **–विस्तर**–पु० दे० 'ललितपुराण'। **–व्यूह**–पु० एक समाधि (बौ०); एक बोधिसत्त्व।

ललितई*–स्त्री० दे० 'ललिताई'।

ललितक–पु० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ।

ललिता–स्त्री० (सं०) एक मूर्च्छना; पार्वती; कामिनी; राधाकी एक सखी (पद्म०, ब्रह्म०वै० पु०); कस्तूरी; एक नदी (पु०); एक वर्णवृत्त। वि० स्त्री० सुंदरी। **–पंचमी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला पंचमी। **–षष्ठी**–स्त्री० भाद्र-कृष्णा षष्ठी। **–सप्तमी**–स्त्री० भाद्र-शुक्ला सप्तमी।

ललिताई*–स्त्री० सुंदरता।

ललितार्थ–वि० (सं०) श्रृंगार-रस-प्रधान (रचना)।

ललितोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक उपभेद जहाँ उपमेय तथा उपमानमें सादृश्य दिखलानेके लिए इव, लौं, सम आदि वाचक शब्दोंका प्रयोग न कर ईर्ष्या, निरादर, बराबरी आदिके सूचक पद रखे जायँ।

ललिया†–पु० लाल रंगवाला बैल।

लली–स्त्री० लड़कियोंके संबोधनका शब्द; प्यार, दुलारसे पली लड़की; नायिकाके लिए प्रेमव्यंजक संबोधन।

ललोतिका–स्त्री० (सं०) एक तीर्थ (म० भा०)।

ललौहाँ*–वि० ललाई लिये हुए, आताम्र।

लल्लर–वि० (सं०) हकलानेवाला।

लल्ला–पु० लड़कोंके लिए प्यारका संबोधन; प्यार, दुलारका लड़का; नौजवानोंका स्नेहपूर्ण संबोधन (पश्चिम), 'लाला'।

लल्लूलाल–पु० (सं० १८२०-१८८२) सिंहासन-बत्तीसी, बैताल-पचीसी, माधवविलास, प्रेमसागर आदिके रचयिता जिनकी गणना हिंदी गद्यके आरंभिक लेखकोंमें की जाती है।

लल्लो–स्त्री० जीभ। **–चप्पो,–पत्तो**–स्त्री० चाटुकारिता, ठकुर-सुहाती, चिकनी-चुपड़ी बात।

लल्हरा†–पु० एक तरहका साग।

लवंग–पु० (सं०) लौंग; लौंगका पेड़। **–कलिका**–स्त्री० लौंग। **–पुष्प**–पु० लवंगका फूल। **–लता**–स्त्री० लौंगका पेड़; राधिकाकी एक सखी; (हिं०) एक तरहकी मिठाई।

लव*–स्त्री० दे० 'लौ'। **–लीन**–वि० तन्मय, मग्न।

लव–पु० (सं०) अल्प मात्रा, थोड़ा अंश; कालका एक मान, ३६ निमेषका समय; लवा पक्षी; काटना; विनाश; वह जो काटा जाय; ऊन, बाल; काटा हुआ अंश; सुरा गायकी पूँछके बाल; लामज्जक; जायफल; लवंग; रामके एक पुत्रका नाम। **–लेश** –पु० स्वल्प मात्रा; थोड़ा संबंध। **–लेस***–पु० दे० 'लवलेश'।

लवक–वि० (सं०) काटनेवाला। पु० एक विशेष द्रव्य।

लवकना†–अ० क्रि० चमकना, कौंधना; दिखाई देना।

लवका†–स्त्री० चमक, कौंध; बिजली।

लवढ़ना*–अ० क्रि० लिपट जाना–'ज्यौं मैं खोले किवार त्यौंही आनि लवढ़ि गौ गरैं'–घन०।

लवण–वि० (सं०) नमकीन; सुंदर; काटनेवाला। पु० लोन, नमक; (सॉल्ट) वह यौगिक जो किसी धातु तथा अम्लकी क्रिया द्वारा बने (नमक, नीलाशोरा, कसीस, नौसादर); एक राक्षस; काटनेकी क्रिया; काटनेका औजार, हँसिया, छुरी आदि। **–क्रीतक**–पु० लवण-विक्रेता। **–क्षार**–पु० एक तरहका नमक। **–जल,–तोय**–वि० खारे-पानीवाला। पु० समुद्र। **–तृण**–पु० एक साग, लोनी, अमलोनी; कुल्फा, कुल्माष, पिंडी। **–त्रय**–पु० सैंधव, विट और सचल नामक तीन नमकोंका समुच्चय। **–धेनु** –स्त्री० गायके रूपमें स्थापित नमककी राशि। **–पाटलिका**–स्त्री० नमककी थैली (बौ०)। **–प्रगाढ**–वि० जिसमें लवण अधिक हो। **–भास्कर**–पु० तीनों नमक और कई ओषधियोंके योगसे तैयार किया हुआ एक पाचक चूर्ण। **–मद**–पु० खारी नमक। **–मेह**–पु० प्रमेह रोगका एक भेद (आ० वे०)। **–यंत्र** –पु० ओषधियोंका पाक बनानेके लिए एक प्रकारका पात्र (आ० वे०)। **–वर्ष**–पु० कुशद्वीपका एक खंड। **–वारि**–वि०, पु० दे० 'लवण जल'। **–व्यापत्**–पु० अधिक नमक खानेसे होनेवाला घोड़ोंका एक रोग। **–समुद्र**–पु० खारे पानीका समुद्र।

लवणांतक–पु० (सं०) लवणासुरको मारनेवाले, शत्रुघ्न; नीबू।

लवणा–स्त्री० (सं०) आभा, चमक; चँगेरी; अमलोनी; चुक; ज्योतिष्मती लता; लूनी नदी।

लवणाकर–पु० (सं०) नमककी खान; सौंदर्यका आगार।

लवणांचल–पु० (सं०) दान देनेके लिए कल्पित नमकका पहाड़ (मत्स्य पु०)।

लवणापण–पु० (सं०) नमकका बाजार।

लवणाब्धि–पु० (सं०) समुद्र। **–ज**–पु० समुद्री नमक।

लवणार्णव–(सं०) समुद्र।

लवणालय–पु० (सं०) समुद्र; मधुपुरी (लवणासुरकी बसायी पुरी, आधुनिक मथुरा)।

लवणासुर–पु० (सं०) एक राक्षस (इसका वध शत्रुघ्नने किया था। यह मधुका पुत्र था)।

लवणित–वि० (सं०) नमक मिलाया हुआ।

लवणिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) नमकीनी, सलोनापन; सौंदर्य।

लवणोत्कट–पु० (सं०) वह भोजन जिसमें नमक आवश्यकतासे अधिक पड़ गया हो।

लवणोत्तम–पु० (सं०) सेंधा नमक।

लवणोत्था–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती लता।

लवणोदक–पु० (सं०) खारा पानी; समुद्र।

लवणोदधि–पु० (सं०) लवणसमुद्र।

लवन–पु० (सं०) काटना; खेतकी कटाई, लुनाई; लौनी, खेत काटनेकी मजदूरीमें दिया गया अन्न (जो डंठलके साथ दिया जाता है); खेत काटनेका औजार, हँसिया।

लवना–स० क्रि० फसलको काटकर बटोरना। * अ० क्रि० चमकना–'चटक-चोप चपला हिय लवै'–घन०। वि० नमकीन; सुंदर। **–ई**–स्त्री० सुंदरता।

लवनि–स्त्री० लवन, पकी खेती काटना; खेत काटनेकी मजदूरी।

लवनी*–स्त्री० नवनीत, मक्खन; दे० 'लवनि'; (सं०) शरीफेका पेड़ या फल; काटनेकी क्रिया; काटनेकी उजरत; काटनेका औजार।

लवनीय, लव्य–वि० (सं०) काटने योग्य।

लवर–स्त्री० आँच, ज्वाला, लपट।

लवलासी*–स्त्री० प्रेमसंबंध।

लवली–स्त्री० (सं०) पीले रंगकी एक लता; एक विषम वर्णवृत्त; * हरफारेवड़ीका वृक्ष या उसका फल।

लवलीन–वि० (प्रेम में) लीन या मग्न।

लवहर†–पु० जुड़वाँ बच्चे।

लवा–पु० एक पक्षी; † लाजा, लावा, खील।

लवाई–वि० स्त्री० सद्यः-प्रसूता, हालकी ब्यायी हुई (गाय)। स्त्री० लवनी, खेतकी कटाई; खेत काटनेकी मजदूरी।

लवाक–पु० (सं०) हँसिया; काटनेकी क्रिया।

लवाजिम–पु० (अ०) 'लाज़िमा'का बहु०, दे० 'लवाज़िमा'।

लवाजिमा–पु० (अ०) जरूरी सामान; यात्रा आदिमें साथ रहनेवाला सामान।

लवाजिमात–पु० (अ०) 'लवाज़िम'का बहु०, उपकरण, साधन, सामग्री।

लवानक–पु० (सं०) हँसिया।

लवारा†–पु० बछड़ा।

लवासी*–वि० गप्पी, बक्की; लंपट।

लवि–वि० (सं०) काटनेवाला, तेज धारवाला। पु० काटनेके काम आनेवाला औजार।

लवित्र–पु० (सं०) हँसिया।

लवेटिका–स्त्री० (सं०) अन्न।

लवोपल–पु० (सं०) वर्फका टुकड़ा।

लश–पु० (सं०) गोंद।

लशकर–पु० (फा०) सेना; सशस्त्र दल (खासकर सरहदी पठानोंका); अनियमित सेना; विशाल जनसमुदाय; छावनी। **–कशी**–स्त्री० चढ़ाई, हमला। **–गाह**–पु०, स्त्री० छावनी, शिविर। **–नवीस**–पु० सेनामें तनखाह बाँटनेवाला कर्मचारी, फौजका बख्शी।

लशुन, लशून–पु० (सं०) लहसुन।

लश्करी–पु० (फा०) सैनिक; जहाजपर काम करनेवाला। वि० सेना-संबंधी; जहाजी। स्त्री० जहाजियोंकी भाषा। **–बोली**–स्त्री० फौजवालोंकी बोली जो आमतौरसे खिचड़ी होती है।

लषण–वि० (सं०) इच्छा करनेवाला।

लषन*–पु० दे० 'लखन'।

लषना*–स० क्रि० दे० 'लखना'।

लषित–वि० (सं०) इच्छित।

लष्व–पु० (सं०) नर्तक, नाचनेवाला; अभिनेता।

लस–वि० (सं०) चमकता हुआ; हिलता हुआ। पु० ऊँटका ज्वर; लाल चंदन; (हिं०) चिपकनेका गुण; चिपकानेवाली चीज, गोंद, लासा; आकर्षण। **–दार**–वि० लसवाला।

लसक–वि० (सं०) नर्तक, लास्य नृत्य करनेवाला। पु० एक वृक्ष।

लसकर, लसगर†–पु० दे० 'लशकर'।

लसदंशु–वि० (सं०) चमकती हुई आँखोंवाला (जैसे सूर्य)।

लसना–अ० क्रि० चमकना, झलकना; स्थित होना, दिखाई देना, विराजना; नाचना। स० क्रि० चिपकाना, सटाना।

लसनि*–स्त्री० शोभित होना; बिराजना, उपस्थिति।

लसम*–वि० खोटा, निकम्मा (सोना आदि)।

लसरका†–पु० संबंध, ताल्लुक (लखनऊ)।

लसलसा–वि० चिपचिपा, गोंदकी तरह चिपकनेवाला, लसदार। **–हट**–स्त्री० चिपचिपाहट।

लसलसाना–अ० क्रि० चिपचिपाना, चिपकना।

लसा–स्त्री० (सं०) हल्दी; केसर।

लसिका–स्त्री० (सं०) थूक, लाला; पेशी।

लसित–वि० (सं०) सुशोभित; प्रकट; क्रीडाशील।

लसी–स्त्री० लस, चिपक; आकर्षण; संसर्ग, संबंध; लोभ, प्राप्तिकी आशा; दूध या दही और बर्फके मेलसे बना शरबत।

लसीका–स्त्री० लाला; माँस और चमड़ेके बीच रहनेवाला रस; ऊतक कोशिकाओंके चारों ओर पाया जानेवाला विशेष द्रव। यह द्रव मुख्यतः रक्त प्लैज्माका बना होता है जिसमें पोषकतत्व, ऑक्सीजन, श्वेत रक्त कोशिकाएँ तथा ऊतकसे निष्काषित पदार्थ

आदि मौजूद रहते हैं; दे० 'चर्मोदक'; (लिफ); ईखका रस।

लसीला–वि० चिपचिपा, लसदार; मोहक, सुंदर।

लसुन–पु० दे० 'लहसुन'।

लसुनिया–पु० एक बहुमूल्य पत्थर।

लसोड़ा–पु० एक वृक्ष या उसका फल जो झड़बेरी जैसा छोटा और लसदार होता है।

लसोढ़ा–पु० दे० 'लसोड़ा'।

लसौटा–पु० बहेलियोंका चिड़िया फँसानेके लिए लासा रखनेका बाँसका चोंगा, गोंददानी।

लस्टमपस्टम–अ० किसी-किसी तरह, ज्यों-त्यों करके; धीरे-धीरे; अव्यवस्थित रूपमें।

लस्त–वि० थका हुआ, ढीला; अशक्त, कमजोर; (सं०) क्रीडित; साज, शोभायुक्त; आलिंगित; कुशल, दक्ष।

लस्तक–पु० (सं०) धनुष्की मूठ, बीचका अंश।

लस्तकी(किन्)–पु० (सं०) धनुष्।

लस्तगा†–पु० प्रारंभ करना (इस कामका लस्तगा लगा दो); लगाव, संबंध; सिलसिला (दूरतक लस्तगा चला गया है)।

लस्सान–वि० (अ०) बहुत बोलनेवाला, वाचाल; लच्छेदार भाषा बोलनेवाला; सुवक्ता।

लस्सानी–स्त्री० वाचालता; खुशबयानी।

लस्सी–स्त्री० चिपचिपाहट, लस; मठा (पश्चिम); दूध या दही और बर्फके योगसे बनाया हुआ शरबत।

लहँगा–पु० स्त्रियोंका कमरसे नीचेका घेरादार एक पहनावा जो कमरमें नारेसे बाँधा जाता है, घाँघरा।

लहँड़ा–पु० जानवरोंका झुंड, गल्ला।

लहँदी–स्त्री० पश्चिमी पंजाबकी बोली।

लहक–स्त्री० आगकी लपट; चमक; शोभा।

लहकना–अ० क्रि० हवाका चलना, झोंके देना; लहराना, हिलना-डुलना (हवाके जोरसे पेड़-पौधेका); आगका जगना, जल उठना, धधकना; लोभ, चाहसे कोई चीज पाने, देखनेके लिए बढ़ना, लपकना; चाहसे अधीर होना।

लहका†–पु० लचका; पतला गोटा।

लहकाना–स० क्रि० झोंका खिलाना; आगे बढ़ाना; बढ़ावा देना; लोभ, चाहसे लपकाना, बढ़ाना; आग दहकाना; ताव दिलाना, उभाड़ना (किसीके विरुद्ध)।

लहकारना–स० क्रि० उभाड़ना, बढ़ावा देना, ताव दिलाना; प्रोत्साहित करना; कुत्ता छोड़ना, कुत्तेको सनकारना (शिकार आदिपर)।

लहकौर, लहकौरि*–स्त्री० दूल्हे और दुलहिनका कोहबरमें एक दूसरेको अपने हाथसे कुछ खिलाना।

लहजा–पु० (अ०) बोलने या शब्दोंके उच्चारणका खास ढंग; बोलचाल; लय।

लहद–स्त्री० (अ०) कब्र।

लहन–पु० पाना, प्राप्त करना; लाभ करना; † एक कँटीली झाड़ी, कंजा।

लहनदार–पु० महाजन, ऋणदाता।

लहना*–स० क्रि० पाना; लाभ करना; † काटना; फसल काटना; छीलना, तराशना। पु० उधार, ऋण दिया हुआ धन; कामके बदले मिलनेवाला धन; भाग्य, तकदीर। **–बही**–स्त्री० वह महाजनी बही जिसमें ऋण लेनेवालोंके नाम, पते और रकमका ब्योरा रहता है। **मु० –चुकाना,–पटाना,–साफ करना**–ऋण दे देना, कर्ज अदा करना।

लहनी–स्त्री० लब्धि, प्राप्ति; फलभोग; † ठठेरोंका बर्तन छीलनेका औजार।

लहपटा†–पु० थप्पड़, लप्पड़।

लहबर–पु० लंबी और ढीली पोशाक, चोगा, लबादा; एक तरहका तोता; छड़ी; झंडा, निशान।

लहबरी–पु० एक तरहका तोता।

लहम–पु० (अ०) मांस।

लहमा–पु० क्षण, पल, मिनट, अत्यल्प काल।

लहमी–वि० गोश्तवाला।

लहर–स्त्री० वायुकी गति और स्पर्शसे पानीमें होनेवाली चढ़ाव-उतारदार हरकत, हिलकोर, हिलोरा; जोश, उमंग; वेगमयी भावना, मनकी मौज; किसी विजातीय द्रव्यके संसर्गसे शरीरमें रह-रहकर बेहोशी, पीड़ा आदिका अनुभव करना; आनंद, हर्ष, उल्लासका वेग; वायुमें होनेवाला स्वरकंप, गूँज; मोड़ लेती हुई टेढ़ी चाल; वक्र, कुटिल रेखा; हवाका झोंका; कसीदेकी धारी। **–दार**–वि० लहरोंवाला; वक्रगतिसे जानेवाला; लहरियादार। **–पटोर**–पु०,**–पटोरी**–स्त्री० लहरियादार रेशमी कपड़ा। **–बहर**–स्त्री० आनंद और सुख। **मु० –आ जाना**–धुन बँधना; इच्छाका जोर मारना। **–आना**–मौज उठना; उमंग पैदा होना; साँपके काटनेपर बदनमें लहर उठना। **–उठना**–मौज आना, जोश होना, उमंग उठना। **–छूटना**–उमंग पैदा होना। **–देना या मारना**–रह-रहकर कष्ट या पीड़ा होना; सीधा न चलकर मुड़ते हुए जाना। **–लेना**–लहरमें नहाना; दरियाका मौज मारना। **–(रें)गिनना**–बेकार रहना, बेशगलीमें रहना।

लहरना*–अ० क्रि० दे० 'लहराना'; † परचना।

लहरा–पु० लहर; मजा, आनंद; बाजोंकी गत जिसमें ताल-स्वरोंकी केवल लय होती है; बादलोंका कुछ देर जोरसे बरसना, झड़; † एक घास।

लहराना–अ० क्रि० हवाके झोंकेसे हिलना-डुलना, थर-थराना; हवाका चलना; पानीका हवाके झोंकेसे हलकोरा लेना; काले-काले बादलोंका उमड़ना; टेंढ़ी-मेढ़ी चाल चलना; उमंग, उल्लासमें हो जाना; उत्कंठित होना, लपकना (किसी वस्तुके लिए); दहकना, भड़कना (आगका); विराजना, शोभायमान होना। स० क्रि० हिलाना-डुलाना (वायुके प्रवेगमें); टेढ़ा-मेढ़ा चलाना।

लहरि–स्त्री० (सं०) तरंग।

लहरिया–पु० टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओंका समूह, श्रेणी; गोटे, लच्चके आदिकी लहरदार टँकाई; रंगीन साड़ी, कपड़ा जिसपर टेढ़ी रेखाएँ बनी हों; जरीके कपड़ेके किनारेपर बने हुए बेल-बूटे; एक कपड़ा। * स्त्री० लहर। **–दार**–वि० लहरिया बना हुआ, लहरदार; बेल-बूटोंवाला।

लहरी–स्त्री० (सं०) लहर, तरंग। † वि० मनमौजी।

लहरीला–वि० लहरदार।

लहल–पु० एक राग (दीपकका पुत्र)।

लहलह–वि० हरा-भरा, लहलहाता हुआ। अ० लहरके साथ।

लहलहा–वि० डहडहा, हराभरा; प्रफुल्ल; आनंदमय; हृष्ट-पुष्ट।

लहलहाट–स्त्री० लहलहानेकी अवस्था या भाव।

लहलहाना–अ० क्रि० हरा-भरा, सरसब्ज होना; खुशीसे भर जाना; सूखे, मुरझाये पौधे, पेड़में विकासके लक्षण आना, पनपना; मोटाना, हृष्ट-पुष्ट होना।

लहली†–स्त्री० दलदल।

लहसुआ–पु० दे० 'लहसुवा'।

लहसुन–पु० एक पौधा जिसकी जड़ पंक्तिबद्ध जवोंसे बनी होती है (इसकी गंध प्याजकी तरह उग्र होती है); माणिकका एक दोष, अशोभक।

लहसुनिया–पु० धूमिल रंगका एक कीमती पत्थर जो लाल, पीले और हरे रंगका भी होता है।

लहसुवा†–पु० लसोड़ा; लसोड़ेके फूलका साग।

लहा*–पु० दे० 'लाह'।

लहाछेह–पु० नाचकी एक गति; नाच, नृत्यकी द्रुत गति। * स्त्री० उछल-कूद–'लहाछेह कहाँ धौं मचाय रहे ब्रजमोहन हौ उखनींद भरे हौ'–घन०। वि० मूसलधार, द्रुतगतिवाली (वर्षा)।

लहालह*–वि० हरा-भरा; प्रफुल्ल।

लहालोट–वि० हँसीसे लोटता हुआ; प्रसन्न; उल्लसित; मुग्ध; लुब्ध, लट्टू।

लहास†–स्त्री० लाश।

लहासी–स्त्री० नाव, जहाज बाँधनेकी मोटी रस्सी; रस्सी।

लहि*–अ० तक, पर्यंत।

लहिला†–पु० दे० 'रहिला'।

लहीम–वि० (अ०) मोटा-ताजा, मांसल ।

लहु*–अ० पर्यंत, तक । वि० लघु, छोटा ।

लहुरा*–वि० लघु, छोटा, कनिष्ठ । (स्त्री० 'लहुरी' ।)

लहू–पु० खून, रक्त । **–लुहान**–वि० खूनसे तर । मु० **–उवलना** –सख्त गुस्सा आना । **–उभर आना**–किसी जगहसे लहू थोड़ा-थोड़ा करके निकलना । **–औंटना**–क्रोध या गमसे जोश पैदा होना । **–का घूंट पीकर रह जाना**–गुस्सा सह लेना । **–का प्यासा**–जानी दुश्मन । **–ख़ुश्क कर देना**–वहुत डरा देना । **–पसीना एक करना**–दे० 'लहू-पानी एक करना' । **–पानी एक करना**–सख्त मुसीवत उठाना । **–पानी एक होना**–गुस्सेके मारे खाना-पीना अंग न लगना । **–पानी होना**–क्रोधाभिभूत होना । **–पी जाना**–कत्ल करना । **–पीना**–तकलीफ देना । **–पीकर रह जाना**–गुस्सा चुपचाप वर्दाश्त कर लेना । **–विगड़ना**–खूनका खराव होना । **–वोलना**–हत्याका स्वयं प्रकट होना । **–में नहाना**–क्षत-विक्षत होना । **–लगा या मलकर शहीद होना**–थोड़ा काम करके बड़ा काम करनेवालोंमें अपनी गणना करना । **–सफ़ेद हो जाना**–सहानुभूति या दयाका न रहना ।

लहेरा–पु० रेशम रँगनेवाला रँगरेज; लाहका काम करनेवाला ।

लहेसना†–स० क्रि० पलस्तर करना; टिपकारी करना; वरतन ढालनेके लिए साँचेके पल्लोंको वैठाना ।

लह्न–पु० (अ०) ध्वनि, स्वर; मधुर स्वर ।

लाँक*–स्त्री० लंक, कमर, कटि; तुरंतकी कटी हुई फसल; भूसा; परिमाण, मात्रा, मिकदार ।

लाँग–स्त्री० धोतीका वह सिरा जिसे जाँघोंके वीचसे पीछे ले जाकर कमरमें वँधे हुए फेटेमें खोंसते हैं, काछ ।

लांगप्राइमर–पु० (अं०) एक तरहका छापेका टाइप ।

लांगल–पु० (सं०) हल; चाँदका आधा उठा हुआ श्रृंग; लिंग; एक फूल; ताड़ वृक्ष; हलकी शक्लकी लकड़ी; फल तोड़नेका लग्गा; एक तरहका चावल । किसान; हलवाहा । **–चक्र** –पु० एक विशेष चक्र जिससे कृषिका शुभाशुभ फल जाना जाता है (फ० ज्यो०) । **–दंड**–पु० हरिस । **–ध्वज**–पु० वलराम ।**–पद्धति**–स्त्री०,**–मार्ग**–पु० हल जोतनेसे वनी हुई रेखा । **–फाल** –पु० हलका लोहेका वह भाग जो जमीनमें धँसता चलता है ।

लांगलक–पु० (सं०) भगंदर रोगमें शल्यक्रिया द्वारा बनाया हुआ हलके आकारका घाव ।

लांगलकी–स्त्री० (सं०) औषधके रूपमें काम आनेवाली कुछ ओषधियाँ, कलियारी आदि ।

लांगलिक–पु० (सं०) एक तरहका स्थावर विष । वि० हल-संवंधी।

लांगलिका, लांगलिकी–स्त्री० (सं०) दे० 'लांगलकी' ।

लांगलिनी–स्त्री० (सं०) कलियारी ।

लांगली–स्त्री० (सं०) कलियारी; मंजिष्ठा; नारियल; केवाँच; जल-पिप्पली; गज-पीपल; पिठवन; चव्य; एक पुराणोक्त नदी ।

लांगली(लिन्)–पु० (सं०) वलराम, हलधर; नारियल; साँप ।

लांगलीश–पु० (सं०) एक शिव-लिंग ।

लांगलीषा–स्त्री० (सं०) हरिस, हलका लट्ठा ।

लांगुल–पु० (सं०) दुम; लिंग ।

लांगूल–पु० (सं०) दे० 'लांगूल'; अन्न-भांडार । **–चालन,–विक्षेप**–पु० पूँछ हिलाना ।

लांगूलिका–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी ।

लांगूली(लिन्)–पु० (सं०) लंगूर, बंदर; ऋषभ नामक ओषधि ।

लाँघना–स० क्रि० डाँक जाना, नाँघना, पार करना ।

लाँच†–स्त्री० घूस, रिश्वत ।

लांछन–पु० (सं०) दाग; निशान, चिह्न; नाम; दोष, कलंक; चंद्रमापरका दाग; अंकन ।

लांछना–स्त्री० (सं०) दोष, कलंक; निंदा ।

लांछनित*–वि० दे० 'लांछित' ।

लांछित–वि० (सं०) दोषयुक्त, कलंकित; अलंकृत ।

लाँजी–पु० एक तरहका धान ।

लाँझि*–स्त्री० लंघन, वाधा ।

लांठनी–स्त्री० (सं०) असती स्त्री ।

लाँड़ा†–पु० दे० 'लंड' (हिं०) ।

लांतव–पु० (सं०) सातवाँ स्वर्ग (जै०) ।

लांपट्य–पु० (सं०) लंपटता; व्यभिचार ।

लाँवा†–वि० दे० 'लंवा' ।

ला–स्त्री० (सं०) लेने या देनेकी क्रिया । अ० (अ०) न, नहीं, विना । **–इलाज**–वि० जिसका इलाज, उपाय न हो, असाध्य । **–इल्म**–वि० विद्यारहित; अनभिज्ञ; वेखबर । **–इल्मी**–स्त्री० अनभिज्ञता; वेखवरी । **–उवाली**–वि० स्वच्छंद; वेपरवा; निडर । **–० कारख़ाना**–पु० भारी कुप्रवंध । **–कलाम**–वि० जिसमें कुछ कहनेकी गुंजाइश न हो । अ० निस्संदेह, अवश्य । **–ख़िराज**–वि० (जमीन) जिसपर लगान या मालगुजारी न देनी पड़े । स्त्री० माफी-जमीन । **–ख़ैरा**–वि० आवारा, वेकार । **–चार**–वि० विवश, मजवूर; अशक्त; दीन, असहाय । अ० विवश होकर, मजवूरन् । **–चारी**–स्त्री० लाचार होना, विवशता, अशक्तता, असहायता । **–जवाव**–वि० निरुत्तर; वादमें हारा हुआ; वेजोड़ । **–ज़वाल**–वि० सदा रहनेवाला, नित्य । **–तादाद**–वि० अगणित, वेहिसाव । **–दवा**–वि० लाइलाज, असाध्य । **दावा**–वि० दावा न रखनेवाला, दस्तवरदार । पु० दस्तवरदारी; वेवाकी (–लिख देना) । **–पता**–वि० जिसका पता न हो । (मु० **–०हो जाना**–गायव हो जाना ।) **–परवा,–परवाह**–वि० वेपरवा, वेफिक्र । **–परवाई**–स्त्री० वेपरवाई । **–मकान** –वि० जिसके रहनेका कोई विशेष स्थान न हो, देशसे अनवच्छिन्न (ईश्वरका विशेषण) । पु० खुदाके रहनेका स्थान, विहिश्त । **–मज़हव**–वि० जिसका कोई धर्म, मजहव न हो, वेदीन; नास्तिक । **–मज़हवी**–स्त्री० नास्तिकता, किसी मजहवको न मानना । **–मानी**–वि० निरर्थक, वेमानी । **–मिसाल**–वि० अद्वितीय, वेजोड़ । **–मुहाल,–मुहाला**–अ० अवश्य, निरुपाय होकर । **–रेव**–अ० निस्संदेह । **–वल्द**–वि० निस्संतान, वेऔलाद । **–वारिस**–वि० (व्यक्ति) जिसका कोई वारिस, उत्तराधिकारी न हो, निगोड़ा, निपूता; (माल) जिसका कोई अधिकारी या दावेदार न हो । **–वारिसी**–वि० लावारिस (माल) । **–०माल**–पु० वह चीज जिसका कोई अधिकारी, दावेदार न हो । **–शरीक**–वि० जिसका कोई शरीक न हो, अकेला (ईश्वरका विशेषण) । **–सानी**–वि० वेजोड़, जिसका सानी न हो । **–हल**–वि० जो हल न हो सके, कठिन, असाध्य । **–हासिल**–वि० जिससे कुछ लाभ न हो, निरर्थक, वेफायदा ।

लाइ*–स्त्री० अग्नि; प्रेमकी लगन ।

लाइक†–वि० लायक, योग्य ।

लाइची†–स्त्री० दे० 'इलायची' ।

लाइट–स्त्री० (अं०) रोशनी, प्रकाश; उजाला । **–हाउस**–पु० जहाजको चट्टानसे टकरानेसे बचानेके विचारसे बनाया हुआ स्तंभ जिसपर तेज प्रकाशकी व्यवस्था रहती है, प्रकाशगृह, प्रकाशस्तंभ ।

लाइन–स्त्री० (अं०) सतर, पंक्ति, लैन; कतार; रेलकी सड़क; सिपाहियोंका आवास, वारिक; पेशा, व्यवसाय । **–क्लियर**–पु० रेलगाड़ीको आने-जानेके लिए दी जानेवाली सूचना, संकेत ।

लाइनो टाइप मशीन–स्त्री० वह मशीन जिसमें पूरी लाइन या पंक्ति ढलकर कंपोज होती है ('मोनोटाइप'से भिन्न) ।

लाइफ़–स्त्री० (अं०) जिंदगी, जीवन । **–बॉय**–पु० समुद्रमें जीवन-रक्षा करनेवाला यंत्र । **–बेल्ट**–स्त्री० डूबनेसे बचनेके लिए बाँधी जानेवाली एक तरहकी पेटी । **–बोट**–स्त्री० जहाज डूबते समय प्राण बचानेवाली नौका ।

लाइब्रेरियन–पु० (अं०) पुस्तकाध्यक्ष ।

लाइब्रेरी–स्त्री० (अं०) पुस्तकालय; पुस्तकोंका संग्रहस्थान ।

लाइसेंस–पु० (अं०) कोई विशेष कार्य करनेके लिए दिया गया अधिकारपत्र, अनुज्ञप्ति ।

लाई–स्त्री० (फा०) एक रेशमी कपड़ा; एक तरहकी ऊनी चादर; शराबकी तलछट; † धानका लावा; भुजिया चावलका लावा; चुगली, निंदा । **–लुतरी**–स्त्री० चुगली; चुगलखोरी ।

लाउड-स्पीकर–पु० (अं०) बिजलीका यंत्र जिससे आवाज दूर तक पहुँचायी जाती है, ध्वनिविस्तारक यंत्र ।

लाऊ–पु० लौकी ।

लाकड़ी, लाकरी*–स्त्री० दे० 'लकड़ी' ।

लाकिनी–स्त्री० (सं०) एक योगिनी (तं०) ।

लाकुच–वि० (सं०) लकुच-संबंधी ।

लाकुटिक–वि० (सं०) डंडा धारण करनेवाला । पु० पहरेदार; सेवक ।

लॉकेट–पु० (अं०) घड़ीकी जंजीर आदिमें शोभाके लिए लगाया जानेवाला लटकन ।

लाक्षकी–स्त्री० सीता, जानकी ।

लाक्षण–वि० (सं०) लक्षण-संबंधी; लक्षणोंसे परिचित ।

लाक्षणिक–वि० (सं०) लक्षणोंको प्रकट करनेवाला; लक्षण-संबंधी; लक्षणोंको जाननेवाला; लक्ष्यार्थवाला; गौण; पारिभाषिक । पु० लक्षण पहचानने, जाननेवाला; पारिभाषिक शब्द; एक छंद जिसके प्रत्येक चरणमें ३२ मात्राएँ होती हैं ।

लाक्षण्य–वि० (सं०) लक्षण-संबंधी; लक्षण बतलानेवाला; लक्षणोंका ज्ञान रखनेवाला ।

लाक्षा–स्त्री० (सं०) एक तरहका लाल रंग; लाख, लाह; एक कीड़ा जिससे लाल रंग तैयार किया जाता है । **–गृह**–पु० लाखका घर जिसे दुर्योधनने पांडवोंको जीवित जला देनेके लिए वारणावर्तमें बनवाया था । **–तरु**–पु० पलाश, ढाक । **–तैल**–पु० हल्दी, लाख, मजीठ डालकर पकाया हुआ तेल (ज्वर, दाहका नाशक–आ० वे०) । **–प्रसाद,–प्रसादन**–पु० लाल लोध्र वृक्ष । **–भवन**–पु० दे० 'लाक्षागृह' । **–रक्त**–वि० लाखसे रँगा हुआ । **–रस**–पु० महावर, अलक्तक । **–वृक्ष**–पु० पलाश; कौशाम्र ।

लाक्षिक–वि० (सं०) लाखका; लाख-संबंधी; लाखसे रँगा हुआ; बड़ी संख्या (लाख) संबंधी ।

लाख–वि० लक्ष, सौ हजार; बहुत अधिक । पु० सौ हजारकी संख्या । अ० बहुत, हदसे ज्यादा, बहुत तरहसे । स्त्री० पीपल आदि वृक्षोंपर लगनेवाले एक तरहके कीड़ोंसे बना हुआ पदार्थ-विशेष; लाल रंगके छोटे-छोटे कीड़े जिनसे लाह निकलती है; लाखकी बनी चूड़ियाँ या कंगन (बुंदेल०) । **–पती**–पु० लखपती । मु० **–टकेकी बात**–बहुत उपयोगी बात । **–से लीख होना**–सब कुछ खो बैठना, कुछ न रह जाना ।

लाखना*–स० क्रि० लाखसे फूटे बरतनका छेद बंद करना; लाखकी चूड़ी पहनाना (बुंदेल०); जान लेना, समझ लेना ।

लाखा–पु० लाखसे बना हुआ एक रंग जिससे स्त्रियाँ होंठ रंगती हैं; गेहूँके पौधोंका एक रोग । * स्त्री० लाख । **–गृह**–पु० दे० 'लाक्षागृह' ।

लाखी–वि० मटमैला, धुँधला लाल, लाखके रंगका । पु० लाखका-सा, मटमैला लाल रंग; इस रंगका घोड़ा ।

लाखों–वि० कई लाख, बहुसंख्यक ।

लाग–स्त्री० संबंध, लगाव; प्रेम; सहारा; लगन, धुन, लगावट; उपाय, तरकीब; चढ़ा-ऊपरी; कौशलपूर्ण स्वाँग (इसमें छुरी, कटारीको पेट, गर्दनमें धँसी हुई, आरपार दिखाते हैं); बैर, दुश्मनी; जादू, टोना; टीका लगानेका चेप, 'लोशन'; धातुको फूंककर तैयार किया हुआ रस; नेग, नियत धन (जो भाट, नाई, ब्राह्मणको दिया जाता है); लगान, भूमिकर; नृत्यका एक भेद; * रसद । * अ० तक, पर्यंत । **–डाट**–स्त्री० होड़; दुश्मनी ।

लागत–स्त्री० किसी चीजकी तैयारीमें लगनेवाला खर्च ।

लागना*–पु० टोहमें रहनेवाला; शिकारी । अ० क्रि० दे० 'लगना' ।

लाग़र–वि० (फा०) दुबला-पतला; कमजोर ।

लाग़री–स्त्री० दुबलापन; कमजोरी ।

लागि*–अ० तक, पर्यंत; से, जरिये, द्वारा; हेतु, के कारण; निमित्त, वास्ते ।

लागुडिक–वि० (सं०) जो डंडेसे लैस हो । पु० प्रहरी ।

लागू–वि० लगने योग्य; लगनेवाला; संगत, चरितार्थ होनेवाला । * पु० प्रेमी–'साँवलिया मेरे मनको लागू नित इत आवै'–घन० ।

लागे*–अ० लिए, वास्ते ।

लाघरक–पु० (सं०) एक तरहका पांडु रोग ।

लाघरकोलस–पु० (सं०) दे० 'लाघरक' ।

लाघव–पु० (सं०) छोटा होना, लघुता; फुर्ती, त्वरा, तेजी; अल्पता, कम होना; आरोग्य; नपुंसकता; अविवेक; महत्त्व-हीनता । * अ० फुर्ती, जल्दीसे; सहज ही । **–कारी(रिन्)**–वि० अपमानजनक, अशोभन ।

लाघविक–वि० (सं०) संक्षिप्त, छोटा ।

लाघवी*–स्त्री० फुर्ती, जल्दी ।

लाघवी(विन्)–पु० (सं०) बाजीगर ।

लाची†–स्त्री० दे० 'इलायची' । **–दाना**–पु० इलायचीके योगसे चीनीकी बनी एक मिठाई जो प्रायः मिर्चके आकारकी होती है ।

लाछन*–पु० लांछन, कलंक ।

लाछी*–स्त्री० लक्ष्मी ।

लाज–स्त्री० लज्जा, शर्म; प्रतिष्ठा । **–वंत**–वि० लज्जावान् । हयादार । **–वंती,–वती**–स्त्री० लजालू । मु० **–के मारे**–लज्जाके कारण । **–रखना**–आबरू बचाना । **–से गठरी होना**–लज्जावश सिकुड़ जाना । **–से गड़ जाना या गड़ना**–बहुत ज्यादा शर्मिंदा होना ।

लाज–पु० (सं०) धानका लावा, खील; खस; पानीमें भींगा चावल । **–पेया**–स्त्री०,**–मंड**–पु० खीलका माँड़ । **–भक्त**–पु० रोगियोंको पथ्यके रूपमें दिया जानेवाला खोईका भात । **–शक्तु**–पु० खोईका सत्तू । **–होम**–पु० एक होम जिसमें खोईका हवन किया जाता था ।

लाजक–पु० (सं०) धानका लावा ।

लाजना*–अ० क्रि० लजाना, लज्जित होना । स० क्रि० लज्जित करना ।

लाजपतराय (लाला)–पु० पंजाबके देशभक्त नेता जिन्हें अपने उग्र विचारोंके कारण कुछ समयतक निर्वासित अवस्थामें रहना पड़ा । साइमन कमीशनके बहिष्कारकी सभामें पुलिस द्वारा आहत होनेसे आपकी मृत्यु हुई (१८६५-१९२८) ।

लाजवर्द–पु० (फा०) नीले रंगका एक पत्थर जिसकी गणना रत्नोंमें है, राजावर्त; एक तरहका विलायती नीला रंग ।

लाजवर्दी–वि० लाजवर्दके रंगका, नीला ।

लाजा–स्त्री० (सं०) चावल; धानका लावा, खील ।

लाज़िम–वि० (फा०) लगा हुआ, जो अलग न किया जा सके; फर्ज, अवश्य कर्तव्य । **–मलज़ूम**–वि० एक दूसरेसे संबद्ध, (दो चीजें) जो एक दूसरेसे अलग न की जा सकें; अवश्य कर्तव्य ।

लाज़िमा–पु० (अ०) संबद्ध वस्तु; जरूरी सामान ।

लाज़िमी–वि० दे० 'लाज़िम' ।

लाट–स्त्री० मोटा ऊँचा खंभा (यह पत्थर, लकड़ी या किसी धातुका होता है, जैसे अशोककी लाट, तालाबकी लाट) । पु० (अं० 'लार्ड') अंग्रेजी हुकूमतके समयका प्रांत या देशका सबसे बड़ा शासक, गवर्नर; (सं०) अनुप्रास अलंकारका एक भेद जिसमें शब्द-अर्थ एक रहते हैं, पर अन्वय करनेपर वाक्यार्थ बदल जाता है; पानीके बहावको रोकनेके लिए बनाया हुआ बाँध; गुजरातके एक भागका प्राचीन नाम; लाटका निवासी; जीर्ण-शीर्ण कपड़ा या गहना; कपड़ा; बालकों जैसी भाषा । वि० लाट-संबंधी; पुराना, फटा हुआ; बच्चोंका-सा । **–पत्र,–पर्ण**–पु० दारचीनी ।

लॉट–पु० (अं०) एक साथ रखी हुई चीजोंका ढेर (बेचने, नीलाम करने आदिके लिए) ।

लाटक–वि० (सं०) लाट देश-संबंधी ।

लॉटरी–स्त्री० (अं०) रुपये या सामानके रूपमें पुरस्कार देनेकी एक व्यवस्था जिसमें चिट्ठी डालकर या टिकटके सहारे विजेताका नाम निश्चित किया जाता है ।

लाटा†–पु० भुने महुए और तिलका लड्डू; भुना महुआ ।

लाटानुप्रास–पु० (सं०) अनुप्रासका एक भेद (दे० 'लाट') ।

लाटिका–स्त्री० (सं०) छोटे-छोटे पद और समासवाली रचनारीति (इसके अतिरिक्त तीन और रीतियाँ हैं–वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली) ।

लाटी*–स्त्री० थूक और ओठ सूखनेकी दशा–'सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी'–रामा०; (सं०) दे० 'लाटिका' ।

लाटीय–वि० (सं०) दे० 'लाटक' ।

लाठ–पु० दे० 'लाट' । स्त्री० दे० 'लाट' ।

लाठालाठी–स्त्री० लाठीसे परस्पर प्रहार करना ।

लाठी–स्त्री० डंडा, बाँसकी लंबी लकड़ी (जो गाँठोंको छीलकर बनायी जाती है और टेकने, मारपीट आदिके काम आती है) । **–चार्ज**–पु० भीड़को तितर-बितर करनेके लिए पुलिसका लाठीसे प्रहार करना । मु० **–चलना**–लाठीसे मारपीट होना । **–चलाना**–लाठीसे मारपीट करना । **–बाँधना**–लाठी साथ रखना, लिये रहना ।

लाड़*–पु० लालन, प्यार, दुलार । **–चाव**–पु० प्यार-दुलार । **–लड़ैता**–वि० बड़े प्यारके साथ पला हुआ ।

लाड़ला–वि० प्यारा, दुलारा । (स्त्री० 'लाडली' ।)

लाड़ा†–पु० दूल्हा । (स्त्री० 'लाड़ी' ।)

लाडिक–पु० (सं०) लड़का; नौकर ।

लाडू*–पु० लड्डू; दक्षिणी नारंगी ।

लाढ़िया†–पु० दूकानदारसे मिला हुआ दलाल जो ग्राहकको धोखा देकर माल बिकवाता है । **–पन**–पु० धूर्तता, धोखेबाजी; लाढ़ियेका काम ।

लात–स्त्री० पैर, पद; पाद-प्रहार । वि० (सं०) प्राप्त, लिया हुआ । मु० **–खाना**–मार खाना; पैरकी ठोकरसे मारा जाना । **–चलाना**–लातसे मारना । **–जाना**–दुहनेवालेको लात मारकर दुधार जानवरोंका हट जाना । **–मारकर खड़ा होना**–प्रसवके बाद स्त्रीका चलने-फिरनेके योग्य होना; निरोग होकर चलने-फिरने लगना । **–मारना**–किसी वस्तुको तुच्छ समझकर छोड़ देना; उपेक्षा, घृणा करना ।

लातर†–स्त्री० पुराना जूता ।

लाति–स्त्री० (सं०) पानेकी क्रिया ।

लातीनी–स्त्री० (अ०) लैटिन भाषा ।

लाथ†–पु० बहाना ।

लाद–स्त्री० चीजें दूसरी जगह ले जानेके लिए ऊँट, बैल, गाड़ी आदिपर लादना; पानी निकालनेके लिए ढेंकीके दूसरे सिरेपर लगा हुआ बोझा, मिट्टीका ढोंका आदि । **–फाँद**–स्त्री० लादनेका काम ।

लाद–स्त्री० आँत, अँतड़ी, पेट । मु० **–निकलना**–तोंद निकलना; अँतड़ी निकल आना ।

लादना–स० क्रि० अनेक चीजोंको एकपर एक रखना; ढोनेके लिए बोझ भरना; किसीपर जिम्मेदारी, भार डालना ।

लादिया–पु० बोझ लादकर ले जानेका काम करनेवाला (बैल, टट्टू, ऊँट आदिपर) ।

लादी–स्त्री० धोबियोंकी गठरी; बोझा (किसी पशुपर लादनेका) ।

लाधना*–स० क्रि० पाना, प्राप्त करना–'जो सुख शिव सनकादि न पावत सो सुख गोपिन लाधो'–सूर ।

लान–पु० (अ०) फटकार, धिक्कार, भर्त्सना । **–तान**–पु० भर्त्सना, लानत-मलामत ।

लान–पु० (अं०) आमोद-प्रमोद आदिके लिए बना हुआ हरीघासवाला मैदान । **–टेनिस**–पु० छोटे मैदानमें खेला जानेवाला गेंदका एक खेल ।

लानत–स्त्री० (अ०) फटकार, धिक्कार, भर्त्सना । **–मलामत**–स्त्री० भर्त्सना, धिक्कार, फटकार । मु० **–का तौक़ (गलेमें) पड़ना**–बदनाम, बेइज्जत होना । **–का मारा**–घृणित, कुत्सित; अभागा । **–की बौछार**–लगातार, अत्यधिक भर्त्सना । **–बरसना**–चेहरेपर उदासी, मनहूसी होना; लानतकी बौछार होना । **–भेजना**–धिक्कारना; कोसना; घृणापूर्वक त्याग देना, ठुकराना ।

लानती–वि० लानतके योग्य; लानतका मारा ।

लाना–स० क्रि० ले आना, कहींसे कोई वस्तु लेकर आना; उपस्थित करना, सामने रखना; पैदा करना (पेड़ोंका फल आदि); * आग लगाना; लगाना ।

लाने*–अ० लिए, वास्ते ।

लाप–पु० (सं०) बोलना, कथन ('वार्ता'के साथ समस्त-रूपमें प्रयुक्त) ।

लापता–वि० जिसका कोई पता-ठिकाना न हो, गायब । **–चिट्ठीघर**–पु० (डेड लेटर ऑफिस) डाक-विभागका वह कार्यालय जहाँ ऐसे पत्रादि, जिनपर पता लिखना छूट गया हो या जिनपर गलत या अपर्याप्त पता लिखा गया हो, खोलकर पढ़े जाते और उन्हें यथासंभव भेजनेवालेके पास लौटा देनेका प्रयत्न किया जाता है ।

लापनिका–स्त्री० (सं०) वार्तालाप, बातचीत ।

लापसी*–स्त्री० दे० 'लपसी' ।

लापिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली ।

लापी(पिन्)–वि० (सं०) बोलनेवाला; पश्चात्ताप करनेवाला ।

लापु–पु० (सं०) एक औजार; एक बनौषधि, रुद्रवंती ।

लाप्य–वि० (सं०) बोलने, कहने योग्य ।

लाफ़–स्त्री० (फा०) आत्मप्रशंसा, डींग । **–ज़न**–वि० डींग हाकनेवाला । **–ज़नी**–स्त्री० डींग हाँकना ।

लाब, लावक–पु० (सं०) एक पक्षी ।

लाबत–स्त्री० (अ०) ज्वालामुखीसे निकलनेवाला तप्त, तरल पदार्थ, लावा ।

लाबर*–वि० झूठ बोलनेवाला, लबार ।

लाबु–पु०, **लाबू**–स्त्री० (सं०) एक तरहका लौआ, कद्दू ।

लाबुकी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी वीणा ।

लाबुद–अ० (अ०) अवश्य, निश्चय ।

लाबुदी–वि० अनिवार्य, अवश्यकर्तव्य ।

लाभ–पु० (सं०) प्राप्ति, लब्धि; फायदा, नफा; भलाई, उपकार; अनुभूति, ज्ञान; विजय । **–कर,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्–दायक**–वि० जिससे लाभ हो । **–०जोत**–स्त्री० (एकॉनॉमिक होल्डिंग) काश्तकार द्वारा जोती-बोयी जानेवाली वह भूमि जिसकी उपज आर्थिक दृष्टिसे लाभकर या भरण-पोषणके लिए पर्याप्त हो । **–क्षायिक**–पु० कर्मक्षयके बाद प्राप्त होनेवाला पुण्य (जै०) । **–मद**–पु० वह अभिमान जिससे कोई अपनेको लाभान्वित और दूसरेको पुण्यहीन समझे (जै०) । **–लिप्सा**–स्त्री० लाभकी प्रबल इच्छा । **–विभाजन-योजना**–स्त्री० (प्रॉफिट शेयरिंग स्कीम) किसी व्यापारिक संस्था आदिमें होनेवाले लाभका नियोजकों तथा नियुक्तोंमें–मालिकों और श्रमिकोंमें–उचित ढंगसे वितरण करनेकी योजना । **–स्थान**–पु० जन्मकुंडलीमें लग्नसे ग्यारहवाँ स्थान (जो धन, विद्या आदिका द्योतक होता है) ।

लाभांतराय–पु० (सं०) वह कर्म जिसके उदयसे लाभमें विघ्न पड़ता है (जै०) ।

लाभांश–पु० (डिविडेंड) कारखाने आदिमें लगी हुई पूँजीपर मिलनेवाले ब्याज या लाभकी रकमका वह हिस्सा जो वितरित किये जानेपर हिस्सेदारको मिले ।

लाभालाभ–पु० (सं०) हानि-लाभ ।

लाम–पु० फौजका दस्ता (जिसमें पैदल, सवार और तोपखाना होता है), ब्रिगेड; समूह (लोगोंका, सेनाका) । मु० **–पर जाना**–लड़ाईके मोर्चेपर जाना । **–बाँधना**–सामान और बहुत-से लोगोंको एकत्र करना ।

लाम†–अ० दूर । पु० (अ०) अरबी वर्णमालाका एक वर्ण । **–काफ़**–पु० बेहूदा बातें; खरी-खोटी, अपशब्द । मु० **–काफ़ कहना**–बुरा-भला कहना, लानत-मलामत करना ।

लामबंदी–स्त्री० (मोबिलाइज़ेशन) सेनाको युद्धपर जानेके लिए तैयार रखना ।

लामज–पु० दे० 'लामज्जक' ।

लामज्जक–पु० (सं०) वीरणमूल ।

लामन*–पु० लटकना; हिलना; † लहँगा ।

लामय†–पु० ऊसरमें पैदा होनेवाली एक घास ।

लामा–पु० (ति०) तिब्बत और मंगोलियाके बौद्धोंका धर्माध्यक्ष और शासक । † वि० लंबा ।

लामी†–पु० एक फल (दिल्ली, राजपूतानाकी ओर होता है और साग, तरकारीके काम आता है) ।

लामें†–अ० दूर ।

लाय*–स्त्री० लपट, ज्वाला; अग्नि ।

लायक*–पु० लाजक, धानका लावा ।

लायक़–वि० (अ०) योग्य; गुणवान्; अधिकारी; उपयुक्त, मुनासिब ।

लायकियत–स्त्री० योग्यता, लायकी ।

लायक़ी–स्त्री० योग्यता ।

लायची†–स्त्री० इलायची ।

लायन†–पु० गिरवी रखी हुई चीज ।

लार–स्त्री० कोई चीज खाते समय मुंहसे निकलनेवाला लसदार तरल द्रव्य, लाला; कतार; लुआब । मु० **–आना,–टपकना**–किसी चीजको पानेका लोभ होना ।

लार*–अ० साथ, पीछे । मु० **–लगाना**–फँसाना ।

लारी–स्त्री० (अं०) माल और मुसाफिरोंको ढोनेके काम आनेवाली बड़ी मोटर गाड़ी ।

लारू*–पु० लड्डू ।

लार्ड–पु० (अं०) इंग्लैंडके जमींदारों और रईसोंकी उपाधि; जमींदार; मालिक; ईश्वर । **–सभा**–स्त्री० इंग्लैंडकी पार्लमेंटकी वह शाखा जिसमें अभिजातवर्गीय प्रतिनिधि रहते हैं ।

लाल–वि० माणिक, रक्त आदिके रंगका; अत्यधिक क्रुद्ध; बीचके खानेमें पहुँची हुई (चौसरकी गोटी); –'परो दाव तेरो खरो करिले सारी लाल'–दीनदयाल; जिसकी सब गोटियाँ बीचके खानेमें पहुँच गयी हों (चौसरका खेलाड़ी); सबसे पहले सफल होनेवाला (खेलाड़ी); साम्यवादका अनुसरण करनेवाला (जैसे लालचीन) । **–अंगारा,–भभूका**–वि० निहायत सुर्ख, बहुत लाल; गुस्सेकी वजहसे लाल, क्रोधसे तमतमाया हुआ । **–अंबारी**–स्त्री० एक पटुवा । **–अगिन**–पु० एक पक्षी । **–आलू**–पु० रतालू; अरबी । **–इलायची**–स्त्री० बड़ी इलायची । **–कच्चू**–पु० बंडा, गजकर्ण आलू । **–कलपी**–पु० गुलचाँदनी (पौधा, फूल) । **–घास**–स्त्री० एक तृण, गोमूत्र तृण । **–चंदन**–पु० रक्त चंदन । **–चीता**–पु० लाल फूलका चित्रक, चीता । **–चीनी**–पु० सिरपर लाल बिंदियों-वाला सफेद कबूतर । **–दाना**–पु० लाल रंगका पोस्तेका दाना, लाल खसखस । **–परी**–स्त्री० शराब; लाल पंखोंवाली परी । **–पानी**–पु० शराब । **–पिलका**–पु० सफेद डैनों और दुमवाला एक लाल कबूतर । **–पेठा**–पु० कुम्हड़ा । **–फीता**–पु० दे० क्रममें । **–बुझक्कड़**–पु० बिना मर्म जाने अटकलसे मतलब लगानेवाला, अगम्य बातोंको समझनेका दावा करनेवाला । **–बेग**–पु० एक परदार लाल कीड़ा; मुसलमान भंगियोंका एक पीर । **–बेगी**–पु० लाल बेगका अनुयायी व्यक्ति, भंगी, मेहतर । **–मरेंड़ा**–पु० एक झाड़ । **–मिर्च**–स्त्री० मिरचा । **–मुनिया**–स्त्री० एक छोटी चिड़िया । **–मुँहा**–पु० एक तरहका निनावाँ । **–मुरगा**–पु० एक पक्षी; मयूरशिखा; गुलमखमली पौधा । **–मूली**–स्त्री० सलजम । **–लाडू**–पु० एक विशेष प्रकारकी नारंगी । **–शक्कर**–स्त्री० बिना साफ की हुई चीनी, खाँड़ । **–सफरी**–पु० अमरूद । **–समुद्र**–पु० दे० 'लाल सागर' । **–सर**–पु० एक पक्षी (गर्दन, सिरका रंग लाल, छाती चितकबरी, पीठ काली, डैना सुनहला) । **–साग**–पु० मरसा । **–सागर**–पु० अरब और अफ्रीकाके मध्य स्थित एक समुद्र जिसका पानी लाल दिखाई देता है । **–सिखा,–सिखी***–पु० मुर्गा–'भानु आगमन जानिकै लाल-सिखा धुनि कीन'–रघुराज । **–सिरा**–स्त्री० लाल सिरवाली बत्तख । **–सेना**–स्त्री० साम्यवादी देशकी सेना जिसके झंडेका रंग लाल हो । मु० **–आँखें दिखाना या निकालना**–गुस्सेसे देखना । **–पड़ना या होना**–क्रोध करना । **–पीला हो जाना या होना**–क्रोध करना । **–होना**–निहाल होना ।

लाल–स्त्री० लाला, थूक, राल; * लालसा, इच्छा; पु० भूरापन लिये लाल रंगकी छोटी चिड़िया; चौपायोंका एक रोग; प्यारा बच्चा; पुत्र, लड़का; प्रिय, प्यारा व्यक्ति; प्रणयी; प्रेमी आदमी; * लालन, प्यार, दुलार; (फा०) माणिक; सुर्ख रंग । **–मन***–पु० कृष्ण; एक तरहका तोता । मु०**–उगलना**–अच्छी प्यारी, महत्त्वकी बातें कहना ।

लालक–वि० (सं०) दुलार-प्यार करनेवाला । पु० विदूषक ।

लालकीन–पु० दे० 'नानकीन' ।

लाल कुरतीवाला दल–पु० भारतके असहयोग आंदोलनके समय सीमाप्रांतका वह राष्ट्रीय दल जिसके नेता सीमांत गांधी खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ थे और जिसके सदस्य लाल कुरते पहना करते थे ।

लालच–पु० कोई चीज पानेकी बहुत बढ़ी हुई इच्छा, लोभ ।

लालचहाँ*–वि० जिसे बहुत अधिक लोभ हो, लालची ।

लालची–वि० लोभी, लोलुप ।

लालटेन–स्त्री० (अं० 'लैंटर्न') हाथमें लटकाने लायक चिमनीदार लैंप ।

लालड़ी–स्त्री० नथ और बालियोंमें मोतीके दोनों ओर लगाया जानेवाला लाल रंगका पत्थर ।

लालन–पु० बालक, प्यारा बच्चा; प्रिय व्यक्ति; † चिरौंजी; (सं०) प्यार करना; बहुत अधिक लाड़ करना; प्यार; चूहे जैसा एक विषैला जंतु । वि० प्यार करनेवाला ।

लालना*–स० क्रि० प्यार करना; इच्छा करना ।

लालनीय–वि० (सं०) प्यार करने योग्य ।

लाल फीता–पु० (रेडटेपिज्म) सरकारी कागजपत्रों, फाइलों आदि-को बाँधनेमें काम आनेवाला लाल फीता; सरकारी कार्योंमें जाब्तेके बहुत अधिक अनुसरणसे, होनेवाली देरी, दीर्घसूत्रता ।

लाल बहादुर शास्त्री–पु० (१९०४-१९६६) स्वतंत्र भारतके द्वितीय प्रधानमंत्री । १९३५-३८ तक उत्तर प्रदेश कांग्रेसके प्रबंधमंत्री; १९३७ में उ० प्र० की विधानसभाके सदस्य; १९४७ में उ० प्र०के गृहमंत्री; १९५७ में केंद्रीय संचारमंत्री; १९६१ में स्वराष्ट्रमंत्री; पाकिस्तान युद्धके बाद ताशकंदमें निधन ।

लाल बुझक्कड़–पु० दे० 'लाल'में ।

लालमी–स्त्री० एक तरहका छोटी जातिका खरबूजा ।

लालरी–स्त्री० लालड़ी, लाल रंगका नगीना ।

लालस–वि० (सं०) चंचल; जिसे किसी चीजकी प्रबल इच्छा हो; लोलुप; लीन; उत्सुक । पु० लालसा; तल्लीनता ।

लालसक–वि० (सं०) दे० 'लालस' ।

लालसा–स्त्री० (सं०) किसी चीजके पानेके लिए अत्यधिक इच्छा, अभिलाषा; औत्सुक्य; गर्भिणीकी इच्छा, दोहद; एक वृत्त; खेद; अनुनय ।

लालसी*–वि० इच्छुक, उत्सुक, इच्छा करनेवाला ।

लालसीक–पु० (सं०) रसा, शोरबा ।

लाला–पु० आदर-सूचक संबोधन; कायस्थ, खत्री आदि जातियोंका सूचक शब्द; छोटे, प्रिय व्यक्तिके लिए संबोधनका शब्द; (फा०) एक प्रसिद्ध फूल । * पु० दे० 'लालो'; आफत–'लाला प्राननको परत लहत न कोऊ त्राण'–कलस । वि० लाल रंगका । स्त्री० (सं०) मुखस्राव, राल, थूक । **–क्लिन्न**–वि० लारसे तर । **–पान**–पु० अँगूठा चूसना । **–प्रमेह,–मेह**–पु० प्रमेह रोगका एक भेद जिसमें रालकी तरह पेशाब निकलता है । **–भक्ष**–पु० एक नरक (पु०) । **–विष**–पु० वह जंतु जिसकी रालमें विष हो (मकड़ी आदि) । **–स्रव**–पु० राल बहना; मकड़ी । **–स्राव**–पु० राल, थूक बहना; मकड़ीका जाला ।

लालाटिक–वि० (सं०) ललाट-संबंधी; निकम्मा । पु० दत्तचित्त रहनेवाला नौकर; बेफिक्र रहनेवाला, आलसी आदमी; आलिंगन-का एक प्रकार ।

लालाटी–स्त्री० (सं०) ललाट ।

लालाध–पु० (सं०) मूर्च्छा ।

लालायित, लालालु–वि० (सं०) लार टपकाता हुआ; लुब्ध, ललचाया हुआ; प्यारा; दुलारा ।

लालि–स्त्री० लालसा ।

लालिक–पु० (सं०) भैंसा ।

लालित–वि० (सं०) प्यार-दुलार किया हुआ । पु० आनंद; प्रेम ।

लालितक–पु० (सं०) प्रिय व्यक्ति ।

लालित्य–पु० (सं०) ललित होनेका भाव, सौंदर्य, रमणीयता; हाव-भाव ।

लालिनी–स्त्री० (सं०) कामुक स्त्री ।

लालिमा–स्त्री० लाली, सुर्खी ।

लाली–स्त्री० लालिमा, सुर्खी; इज्जत, आबरू; पीसी हुई ईंट, सुरखी; प्रेताविष्ट होना; * लाड़ली लड़की, लली ।

लाली(लिन्)–पु० (सं०) (स्त्रियोंको) कुमार्गपर ले जानेवाला

पुरुष। वि॰ दुलार-प्यार करनेवाला।

लालील–पु॰ (सं॰) अग्नि।

लालुका–स्त्री॰ (सं॰) एक तरहका हार।

लाले–पु॰ अरमान, हविस। **मु॰ –पड़ना**–किसी चीजको पाने, देखनेके लिए तरसना, लालायित होना।

लालो*–पु॰ दे॰ 'लाले'; संकट।

लाल्य–वि॰ (सं॰) लालन, प्यार करने योग्य।

लाल्हा*–पु॰ लाल रंगका एक साग।

लाव–पु॰ (सं॰) लवा नामक पक्षी; काटना; खंड-खंड करना; नष्ट करना। वि॰ काटनेवाला; नष्ट करनेवाला। * स्त्री॰ आँच, आग; लौ, लगन, प्रीति; † रस्सी; बंधक रखी हुई चीजपर दी जानेवाली रकम; एक चरसेसे एक दिनमें सींची जाने योग्य भूमि। **–दार**–पु॰ तोपमें वत्ती लगानेवाला। वि॰ दागनेके लिए तैयार (तोप)। **–लश्कर**–पु॰ सामग्री, सामान, असवाव। **मु॰ –चलाना**–चरसेसे पानी निकालकर खेत सींचना।

लावक–पु॰ (सं॰) लवा पक्षी; काटनेवाला, विभाजक; † धानकी फसल (जाड़ेकी); चरसा; मोट, पुरवटमें वैलोंके एक वार जाने-आनेका फेरा, काल।

लावज–पु॰ चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्राचीन वाजा।

लावण–वि॰ (सं॰) लवणयुक्त, नमकीन; जिसका संस्कार लवणसे किया गया हो (औषध आदि)। पु॰ जंवुद्वीपके चारों ओरका समुद्र; सुँघनी, नस्य। **–सैंधव**–वि॰ समुद्र-तटवर्ती।

लावणा†–पु॰ वनियोंकी एक जाति।

लावणिक–वि॰ (सं॰) लवण-संवंधी; नमकका; लवण द्वारा संस्कृत (औषधादि); सुंदर। पु॰ लवण-विक्रेता; लवण-पात्र।

लावण्य–पु॰ (सं॰) लवणत्व, नमकीनी; सलोनापन; सुंदरता; सुशीलता। **–कलित**–वि॰ सौंदर्यविशिष्ट। **–लक्ष्मी,–श्री**–स्त्री॰ अत्यधिक सुंदरता।

लावण्या–स्त्री॰ (सं॰) व्राह्मी बूटी।

लावण्यार्जित–वि॰ (सं॰) सौंदर्य द्वारा प्राप्त। पु॰ स्त्री धन; दहेज।

लावनता*–स्त्री॰ लावण्य, सुंदरता।

लावना*–स॰ क्रि॰ लाना।

लावनि*–स्त्री॰ लावण्य, सुंदरता।

लावनी–स्त्री॰ एक गीत-छंद; एक तरहका चलता गाना। **–वाज**–वि॰ लावनीका शौकीन; लावनी गानेवाला।

लावबाली–वि॰ निडर, वेफिक्र। स्त्री॰ आवारगी, वेफिक्री, शोखी। पु॰ आवारा या वेफिक्र आदमी।

लावा–पु॰ लवा पक्षी; लाजा, खील। **–परछन**–पु॰ एक वैवाहिक रीति जिसमें कन्याका भाई उसकी झोलीमें लावा डालता है। **मु॰ –मेल देना***–मंत्रसे उच्चाटन करना।

लावा–पु॰ (अं॰) ज्वालामुखी पर्वतसे निकलनेवाला द्रव पदार्थ।

लावाणक–पु॰ (सं॰) मगधके पासका एक प्राचीन देश।

लावारा†–वि॰ आवारा।

लाविक–पु॰ (सं॰) भैंसा।

लाविका–स्त्री॰ (सं॰) लवा पक्षी; भैंस।

लावु–पु॰ (सं॰) दे॰ 'लावु'; कद्दू; लौकी।

लाव्य–वि॰ (सं॰) काटने योग्य।

लाश–स्त्री॰ (फा॰) मृत देह, शव। **मु॰–उठना**–मर जाना। **–गलियोंमें खिंचवाना**–मरनेके वाद जलील करना। **–पर लाश गिरना**–(युद्धमें) लाशोंका ढेर लग जाना।

लाशा–पु॰ (फा॰) अति दुर्वल, क्षीणकाय जन; मृतदेह; लाश।

लाष*–स्त्री॰ लाख, लाह। वि॰ लाख, सौ हजार–'पैका पैका जोड़ताँ जुडिसी लाष करोड़ि'–कवीर।

लाषना*–स॰ क्रि॰ लाहसे छेद वंद करना।

लाषुक–वि॰ (सं॰) लोलुप, लालची।

लास–पु॰ (सं॰) उछल-कूद; नृत्य; रास; स्त्रियोंका कोमल भावमय नृत्य; जूस, रसा; लार।

लासक–वि॰ (सं॰) क्रीडारत। पु॰ मयूर; नाचनेवाला; अभिनेता; शिवका एक नाम; आलिंगन; एक अस्त्र; सबसे ऊपरकी मंजिलपरका कमरा; घड़ा।

लासकी–स्त्री॰ (सं॰) नर्तकी, अभिनेत्री।

लासन–पु॰ (सं॰) पद-संचालन; नाचना।

लासा–पु॰ लसदार या चिपकनेवाली चीज; गोंद, चेप। **मु॰ –लगाना**–झगड़ा कराना; फाँसना। **–हो जाना**–चिपक जाना; पीछा न छोड़ना।

लासि, लासु*–पु॰ दे॰ 'लास्य'।

लासिक–वि॰ (सं॰) नाचनेवाला।

लासिका–स्त्री॰ (सं॰) नर्तकी, वेश्या; उपरूपकका एक भेद।

लासी†–स्त्री॰ गेहूँमें लगनेवाला एक काला कीड़ा, लाही; लस्सी।

लासी(सिन्)–वि॰ (सं॰) नृत्य करनेवाला।

लास्फोटनी–स्त्री॰ (सं॰) छेद करनेका एक औजार।

लास्य–पु॰ (सं॰) नृत्य; वह नृत्य जिसमें वाद्य और गीतका योग हो; स्त्री-नृत्य; नर्तक, अभिनेता।

लास्यक–पु॰ (सं॰) नृत्य।

लास्या–स्त्री॰ (सं॰) नर्तकी, अभिनेत्री।

लाह*–स्त्री॰ लाक्षा, लाख, लाही; चमक, कांति। पु॰ लाभ, मुनाफा (रामा॰)।

लाहल*–पु॰ दे॰ 'लाहौल'।

लाहिक़–वि॰ (फा॰) जो पीछेसे आकर मिले; लगा, जुड़ा हुआ; पीछे लगा हुआ (होना)।

लाहिक़ा–वि॰ (अ॰) संयुक्त, संलग्न।

लाही†–स्त्री॰ लाख; लाख पैदा करनेवाला लाल कीड़ा; फसलके लिए हानिकर एक कीड़ा जो विशेषकर गेहूँ-जौमें लगता है; सरसों; लाई, खील। वि॰ मटमैलापन लिये लाल, लाहके रंगसे मिलता हुआ।

लाहौरी नमक–पु॰ सेंधा नमक।

लाहौल–(अ॰) शैतान या दुष्ट अनात्माओंको भगानेके लिए प्रयुक्त, 'लाहौल वला कूवत इल्लाविल्ला'का पहला शब्द जो घृणा, विरक्ति या बुरी वातपर खेद प्रकट करनेके लिए बोलते हैं। **मु॰ –पढ़ना**–पिशाच आदिको भगानेके लिए 'लाहौल वला कूवत...' पढ़ना; लानत भेजना।

लिंग–पु॰ (सं॰) चिह्न, किसी वस्तु, पदार्थकी पहचानका साधन; नकली चिह्न; प्रमाण; कारण, अनुमान, साधक हेतु (न्या॰); प्रधान, मूल प्रकृति (सां॰); पुरुषकी जननेंद्रिय, शिश्न; शिवलिंग; देवमूर्ति; शब्दोंका पु॰, स्त्री॰ आदि-संबंधी भेद (व्या॰); रोगसूचक लक्षण; अर्थद्योतक शक्ति; लिंगनिर्णयके छः लक्षण (मी॰); एक पुराण। **–देह**–स्त्री॰, **–शरीर**–पु॰ सूक्ष्म देह, मृत्युके वाद फलभोगके लिए जीवात्माके साथ लगा रहनेवाला सूक्ष्म शरीर। **–शरीरी**–पु॰ लिंग शरीरधारी। **–धर**–वि॰ केवल चिह्न धारण करनेवाला, ढोंगी। **–धारी(रिन्)**–वि॰ चिह्न धारण करनेवाला। **–नाश**–पु॰ परिचायक चिह्नका नाश; अंधकार; नीलिका नामक नेत्र रोग; शिश्नका नाश। **–पीठ**–पु॰ अरघा। **–पुराण**–पु॰ अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–पूजक**–पु॰ लिंगकी पूजा करनेवाला। **–पूजा**–स्त्री॰ (शिव) लिंगकी अर्चना। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री॰ शिवलिंगकी स्थापना। **–मात्र**–पु॰ प्रज्ञा। **–वर्ति**–स्त्री॰ जननेंद्रियका एक रोग। **–वर्द्धन**–वि॰ लिंगमें उत्तेजन लानेवाला। पु॰ कैथ। **–वर्द्धिनी**–स्त्री॰ चिचड़ा, अपामार्ग। **–वर्द्धी(द्धिन्)**–वि॰ दे॰ 'लिंगवर्द्धन'। **–वृत्ति**–पु॰ वेश वनाकर जीविका अर्जन करनेवाला; नकली साधु। वि॰ ढोंगी, आडंवरी। **–वेदी**–स्त्री॰ अरघा। **–शोफ़**–पु॰ शिश्नकी सूजन। **–स्थ**–पु॰ ब्रह्मचारी।

लिंगक–पु॰ (सं॰) कैथका पेड़।

लिंगन–पु॰ (सं॰) गले मिलना, आलिंगन।

लिंगवान्(वत्)–वि॰ (सं॰) चिह्नवाला। पु॰ एक शैव संप्रदाय जो गलेमें लिंग धारण करता है, लिंगायत।

लिंगायत–पु॰ एक शैव संप्रदाय, लिंगवान्।

लिंगार्चन–पु॰ (सं॰) शिवलिंगका पूजन।

लिंगार्श(स्), लिंगोपदंश–पु॰ (सं॰) जननेंद्रियका एक रोग।

लिंगालिका–स्त्री॰ (सं॰) एक तरहका चूहा।

लिंगिक–पु० लँगड़ापन ।

लिंगिनी–स्त्री० (सं०) धर्मका आडंबर करनेवाली स्त्री; एक लता ।

लिंगी(गिन्)–पु० (सं०) ब्रह्मचारी; वेशभूषासे काम, जीविका चलानेवाला; हाथी; शिवलिंग पूजनेवाला; ढोंगी; परमात्मा; कारण, मूल; एक शैव संप्रदाय । वि० चिह्नवाला; आडंबरी; चिह्न धारण करनेका अधिकारी; जिसके मन और कर्ममें अनुरूपता हो; लिंगदेही । **–(गि) वेष**–पु० ब्रह्मचारीकी पोशाक ।

लिंगेंद्रिय–स्त्री० (सं०) शिश्न, पुरुषकी मूत्रेंद्रिय ।

लिंट–पु० (अं०) घावमें भरनेका एक तरहका नरम कपड़ा ।

लिंटर–पु० (अं० 'लिंटेल') दरवाजे आदिके ऊपरकी जानेवाली एक तरहकी ईंटोंकी जोड़ाई जिसमें नीचे कोई सहारा देनेकी आवश्यकता नहीं रहती ।

लिंद्र–वि० (सं०) जिसपर पैर फिसले, पिच्छिल ।

लिंप–पु० (सं०) लेप करना, पोतना; शिवका एक अनुचर ।

लिंपट–वि० (सं०) कामुक । पु० कामुक व्यक्ति ।

लिंपाक–पु० (सं०) जंबीरी नीबू; गर्दभ, गधा ।

लिंपि–स्त्री० (सं०) दे० 'लिपि' ।

लिए–निमित्त, प्रयोजन आदिके सूचनके लिए ('के'के साथ) प्रयुक्त होनेवाली संप्रदान-कारककी विभक्ति ।

लिकिन†–लंबी टाँगोंवाला पक्षिविशेष ।

लिकुच–पु० (सं०) दे० 'लकुच' ।

लिक्खाड़–पु० बहुत बड़ा लेखक (व्यंग्यमें) ।

लिक्षा–स्त्री० (सं०) लीख, जूँका अंडा; एक परिमाण जो बहुत छोटा, आठ त्रसरेणुके बराबर होता है ।

लिक्षिका–स्त्री० (सं०) लीख ।

लिख–वि०, पु० (सं०) लिखनेवाला ।

लिखत–स्त्री० दे० 'लिखित' पु० । **–पढ़त**–स्त्री० लिखापढ़ीका कागज ।

लिखत–पु० (इंस्ट्रूमेंट) वह लिखितपत्र जिसमें दो पक्षोंके बीच हुए किसी समझौतेकी शर्तें आदि दी गयी हों, विलेख ।

लिखधार*–पु० एक लेखक, मुहर्रिर ।

लिखन–पु० (सं०) लिखनेकी क्रिया; चित्रकारी; दस्तावेज; ललाट-रेखा, होनी ।

लिखना–स० क्रि० कोई बात लिपिबद्ध करना, कागज आदिपर उतारना; रेखाएँ, चिह्न खींचना; चित्र बनाना; ग्रंथ रचना । मु० **–पढ़ना**–अध्ययन करना, विद्यार्जन करना । (**किसीके नाम लिखना**–किसीके जिम्मे पावना दिखलाना ।)

लिखनी†–स्त्री० लेखनी, कलम; लिखनेकी क्रिया या काम; प्रारब्ध, होनी ।

लिखवाई–स्त्री० दे० 'लिखाई' ।

लिखवाना–स० क्रि० दे० 'लिखाना' ।

लिखवार*–पु० दे० 'लिखधार' ।

लिखाई–स्त्री० लिखनेका काम; लिखनेकी मजदूरी; लिखावट; लेख, लिपि । **–पढ़ाई**–स्त्री० विद्योपार्जन ।

लिखाना–स० क्रि० लिखनेका काम किसी अन्यसे कराना । मु० **–पढ़ाना**–शिक्षा देना; लिपिबद्ध कराना ।

लिखापढ़ी–स्त्री० किसी ठहराव, शर्तको कागजपर लिखकर पक्का करना; पत्र-व्यवहार, चिट्ठियोंका आदान-प्रदान ।

लिखावट–स्त्री० लिखनेका ढंग; लिपि, लेख ।

लिखित–वि० (सं०) लिखा हुआ । पु० लिखी बात, लेख; प्रमाणपत्र, दस्तावेज; रचना, पुस्तक । **–पाठक**–पु० हस्तलिखित लेख आदि पढ़नेवाला ।

लिखितक–पु० (सं०) एक तरहके पुराने चौकोर अक्षर ।

लिखितव्य–वि० (सं०) लिखने, चित्रित करने योग्य ।

लिखिता(तृ)–पु० (सं०) चित्रकार ।

लिखेरा–पु० लेखक ।

लिख्य–पु० (सं०) लिक्षा ।

लिख्या–स्त्री० (सं०) दे० 'लिक्षा' ।

लिगु–पु० (सं०) मूर्ख; हिरन; हृदय; भू-प्रदेश ।

लिच्छवि–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजवंश (इसका शासन नेपाल, मगध और कोशलमें था । बुद्ध, महावीर इसी वंशमें हुए थे) ।

लिजलिजा–वि० बेढंगा; अशोभनीय; अनुचित 'अपना व्यवहार खुद मुझे ही बड़ा लिजलिजा लगा था ।' **–(जी) भावुकता**–स्त्री० कभी जिसे छायावादी भावप्रवणता कहते थे, उसे ही नवलेखनमें लिजलिजी भावुकता कहते हैं ।

लिटमस–पु० (अं०) विभिन्न प्रकारके 'लाइकेनों'से प्राप्त किया गया रंगवाला पदार्थ । रसायन शास्त्रमें यह अम्ल या क्षारकी जाँचके लिए प्रयुक्त होता है ।

लिटर–पु० (अं०) आयतन नापनेका मात्रक (१००० घन सें० मी) ।

लिटाना–स० क्रि० पौढ़ाना, किसीको लेटनेमें प्रवृत्त करना ।

लिटोरा–पु० लिसोड़ा ।

लिट् (ह्)–वि० (सं०) चाटनेवाला (समासांतमें) । पु० मंद पवन ।

लिट्ट–पु० मोटी रोटी (विशेषकर आगपर सेंकी हुई) ।

लिट्टी–स्त्री० आगपर सेंककर तैयार की जानेवाली बाटी ।

लिठोर†–सु० एक नमकीन पकवान ।

लिडार†–पु० गीदड़ । * डरपोक, कायर ।

लिडौरी†–स्त्री० रबीकी फसल पीटनेके बाद डाँठमें लगे रह जानेवाले दाने ।

लिप–पु० (सं०) पोतना, लेप करना ।

लिपटना–अ० क्रि० सट जाना, चिपकना; आलिंगन करना; किसी काममें मनोयोगपूर्वक लग जाना ।

लिपटाना–स० क्रि० सटाना, चिमटाना; गले लगाना ।

लिपड़ा–पु० कपड़ा । वि० चिपचिपा ।

लिपड़ी–स्त्री० लेईकी तरह गीला पदार्थ, कपड़ा-लत्ता ।

लिपना–अ० क्रि० गीली चीजसे पोता जाना; रंग आदिका फैल जाना । **लिपापुता**–वि० साफ, स्वच्छ; जिसपर रंग या और कोई चीज फैल गयी हो ।

लिपवाना–स० क्रि० लीपनेका काम कराना ।

लिपाई–स्त्री० लीपनेकी क्रिया; लीपनेकी उजरत ।

लिपाना–स० क्रि० लेप करना, पुताना, गोबर, मिट्टी आदिकी तह चढ़वाना ।

लिपि–स्त्री० (सं०) लिखावट; लिखनेका पद्धति (जैसे रोमन, नागरी, अरबी लिपि); पत्र, लेख, आदि; लेप; चित्रकारी; वाह्य रूप । **–कर,–कार**–पु० लेखक, क्लर्क; लेप करनेवाला । **–कर्म(न्)**–पु० चित्रकारी । **–काल**–पु० किसी ग्रंथ या रचनाके लिखे जानेका समय । **–ज्ञान,–शास्त्र**–पु० लिखनेकी कला । **–न्यास**–पु० लिखनेकी क्रिया । **–फलक**–पु० पत्थर, धातुपत्र, तख्ती, पत्र आदि । **–बद्ध**–वि० लिखा हुआ । **–सज्जा**–स्त्री० लिखनेका साधन ।

लिपिक–पु० (सं०) पु० (क्लार्क) लिखनेका काम करनेवाला कर्मचारी, मुंशी, किरानी । **–विभ्रम**–पु० (क्लेरिकल मिस्टेक) लिपिक या लेखक द्वारा की गयी भूल ।

लिपिका–स्त्री० (सं०) दे० 'लिपि' ।

लिपी–स्त्री० (सं०) दे० 'लिपि' ।

लिप्त–वि० (सं०) किसी चीजसे पुता हुआ, चर्चित; आसक्त, अनुरक्त; ढका हुआ, फँसा हुआ, व्यसनादिमें डूबा हुआ; खराब किया हुआ; विषाक्त किया हुआ; खाया हुआ; मिला हुआ ।

लिप्तक–वि० (सं०) विषमें बुझाया हुआ । पु० विषमें बुझाया हुआ बाण ।

लिप्ता–स्त्री० (सं०) मिनटके बराबर एक कालमान; अंशका साठवाँ भाग ।

लिप्ति–स्त्री० (सं०) लेप ।

लिप्तिका–स्त्री० (सं०) दे० 'लिप्ता' ।

लिप्यंतरण–पु० किसी भाषामें लिखे लेख, विचारादिको ज्योंका त्यों दूसरी लिपिमें लिखनेका कार्य (ट्रांसलिटरेशन) ।

लिप्सा–स्त्री० (सं०) पानेकी इच्छा; इच्छा ।

लिप्सित–वि० (सं०) जिसे प्राप्त करनेकी इच्छा की गयी हो, अभिलषित ।

लिप्सितव्य–वि० (सं०) अभिलषणीय ।

लिप्सु–वि० (सं०) पानेकी इच्छा रखनेवाला, इच्छुक ।

लिफ़ाफ़ा–पु० (अ०) खोल; कागजका थैला; कागजका चौकोर थैला जिसमें चिट्ठियाँ इ० रखकर भेजते हैं; मुर्देका कफन; (ला०) पहनावा; (ला०) दिखाऊ सामान, ठाटबाट; (ला०) जल्दी, टूटने-फटनेवाली चीज । मु० **–खुल जाना**–भेद प्रकट होना । **–बदलना**–ठाट बदलना, नयी वेश-भूषा धारण करना । **–बनाना**–ठाट बनाना ।

लिफ़ाफ़िया–वि० कमजोर, चंदरोजा (गहने इ०); दिखाऊ ।

लिबड़ना–अ० क्रि० लथपथ होना, सनना (कीचड़, गीली वस्तु आदिमें) ।

लिबड़ी–स्त्री० (अं० 'लिवरी') लुगड़ी, कपड़ा-लत्ता । **–बरताना, –बारदाना**–पु० गुजर, निर्वाहका सामान ।

लिबरल–वि० (अं०) उदार; उदारनीतिवाला । **–पार्टी**–स्त्री० एक राजनीतिक दल (इंगलैंड, भारत) ।

लिबलिबी–स्त्री० कमानी; (ट्रिगर) पिस्तौल, बंदूक आदिकी कमानी जिसके खिचनेपर गोली छूटती है ।

लिबास–पु० (अ०) पहननेका वस्त्र, पोशाक; भेस; बुर्का । (रस्मी लिबास–पु० दरबारी, खास मौकोंपर पहननेकी पोशाक ।)

लिबि, लिवि, लिबी–स्त्री० (सं०) दे० 'लिपि' ।

लियाक़त–स्त्री० (अ०) योग्यता, बुद्धिमत्ता; गुण; शील; पात्रता; सामर्थ्य ।

लिलाट*–पु० दे० 'ललाट' ।

लिलार*–पु० माथा; कुएँसे सटकर मोटका पानी उडेलनेका जरा गहरा बना हुआ स्थान ।

लिलारी†–पु० रँगरेज ।

लिलोही*–वि० लालची, लोभी ।

लिव*–स्त्री० लौ, लगन–'केवल राम रहहु लिव लाइ'–कबीर ।

लिवर–पु० (अं०) भार उठानेवाला दंड या यंत्र; यकृत ।

लिवाना–स० क्रि० थमाना, पकड़ना; लानेका काम कराना; साथ लाना ।

लिवाल–पु० खरीदार; लेनेवाला ।

लिवैया†–पु० लेनेवाला; लानेवाला ।

लिष्ट–वि० (सं०) क्षयप्राप्त, जो क्षीण हो गया हो ।

लिष्व–पु० (सं०) नर्तक, अभिनेता ।

लिसान–स्त्री० (अ०) जीभ, जबान; भाषा ।

लिसोड़ा–पु० दे० 'लसोड़ा' ।

लिस्ट–स्त्री० (अं०) सूची, फेहरिस्त ।

लिह–वि० (सं०) चाटनेवाला (समासांतमें) ।

लिहाज़–पु० (फा०) ध्यानसे देखना; ध्यान, खयाल; खास खयाल; रिआयत, मुलाहजा; संकोच, अदब; लज्जा (करना, रखना) ।

लिहाज़ा–अ० (अ०) इसलिए, अतः; निदान ।

लिहाड़ा–वि० नीच, खराब; निकम्मा ।

लिहाड़ी†–स्त्री० हँसी, निंदा । मु० **–लेना**–निंदा करना, बनाना ।

लिहाफ़–पु० (अ०) मोटी रजाई; घोड़ेकी झूल; किसी चीजका रस, भस्म बनाते समय उसके ऊपर रखी जानेवाली दवा (ति०) ।

लिहित*–वि० चाटता हुआ ।

लीक–स्त्री० लंबी रेखाके रूपमें बना हुआ चिह्न; सर्प या गाड़ीके पहिये आदिके चलनेसे बनी हुई रेखा; पगडंडी; मर्यादा; लोक-रीति, रस्म-रिवाज; पुरानी परंपरा; गणना; प्रतिबंध; लांछन, दाग; जूँका अंडा । मु० **–करके**–लीक खींचकर । **–खींचना**–दृढ़ निश्चय करना । **–पीटना**–पुरानी रस्मपर चलते जाना । **–लीक चलना**–रास्तेपर चलना; पुरानी रस्मपर चलना । **–से बेलीक होना**–गुमराह होना; पुरानी चाल छोड़ना ।

लीक्षा–स्त्री० (सं०) दे० 'लिक्षा' ।

लीख–स्त्री० जूँका अंडा; एक बहुत छोटी तौल; † लीक; मर्यादा ।

लीग–स्त्री० (अं०) सभा; संघ; एक नाप (स्थलपर ३ मील, समुद्रपर साढ़े तीन मील) ।

लीचड़, लीचर–वि० सुस्त; चिपटनेवाला; लेन-देन साफ न रखनेवाला ।

लीची–स्त्री० एक वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है; इस वृक्षका फल ।

लीझी–स्त्री० उबटन आदि मलनेपर निकलनेवाला देहका मैल; सीठी, रसहीन गूदा, रेशा । वि० नीरस; निस्सार, बेकाम ।

लीड–स्त्री० (अं०) क्रिकेट आदिके खेलमें पहली टीम या पक्षके बाद खेलनेवाले दलका कुछ रनोंसे आगे बढ़ जाना, बढ़त ।

लीडर–पु० (अं०) नेता, मुखिया, अग्रणी; तीन-चार बिंदियोंवाला टाइप जिसका प्रयोग किसी असमाप्त कथन या छूट आदिकी सूचनाके लिए होता है–'...'; अग्रलेख ।

लीडिंग आर्टिकल–पु० (अं०) अग्रलेख ।

लीढ–वि० (सं०) चाटा, खाया हुआ; आस्वादित । **–मुक्त**–वि० जायका देखकर अस्वीकार किया हुआ ।

लीथो–पु० (अं०) दे० 'लीथोग्राफ' ।

लीथोग्राफ–पु० (अं०) पत्थरका छापा (इसमें एक विशेष प्रकारके कागजपर हाथसे लिखकर गरम किये हुए विशेष पत्थरपर छाप उतारते हैं । यह उलटा रहता है । बादमें कागजपर छापनेपर अक्षर सीधे हो जाते हैं ।) ।

लीथोग्राफर–पु० (अं०) लीथोकी छपाईका काम करनेवाला ।

लीथोग्राफी–स्त्री० (सं०) पत्थरपर छपाईकी कला ।

लीद–स्त्री० गधे, घोड़े, खच्चर आदि पशुओंका मल ।

लीन–वि० (सं०) विलीन; तन्मय; तत्पर; किसीके सहारे टिका हुआ; छिपा हुआ; ध्यानमग्न; संलग्न; अभिशोषित; पिघला हुआ; घुला हुआ; लुप्त । पु० संलग्नता; अभिशोषण; लोप ।

लीनता–स्त्री० (सं०) संलग्नता; तल्लीनता; निःसंगता, उदासीनता ।

लीन्हें–अ० लिये, वास्ते (सूर) ।

लीपना–स० क्रि० पोतना; सफाईके लिए जमीन, दीवारपर मिट्टी, गोबरका लेप चढ़ाना । मु० **–पोतना**–सफाई करना । **लीप-पोतकर बराबर करना**–काम बिगाड़ना, चौपट करना ।

लीवर*–वि० मैल, कीचड़ आदिसे भरा हुआ । –'अँखियाँ लीवर बेसवै नासैं'–ग्रामगीत । पु० कीचड़, गंदगी, मैलापन ।

लीम–पु० एक प्रकारका चीड़ वृक्ष, एक पक्षी ।

लीमू*–पु० नीबू ।

लीर*–स्त्री० पतला टुकड़ा, धज्जी–'बागाको दावन फट गयो और लीर झाड़ पै रह गयो'–अष्टछाप ।

लील*–वि० नीले रंगका । पु० नील । **–कंठ**†–पु० दे० 'नीलकंठ' । **–गऊ,–गाय**†–स्त्री० दे० 'नीलगाय' । **–गर**†–पु० रँगरेज ।

लीलक–पु० देशी जूतेकी नोकपर लगाया जानेवाला हरा चमड़ा । वि० नील ।

लीलना*–स० क्रि० निगलना ।

लीलया–अ० (सं०) खेलमें; सहज ही ।

लीलहिं*–अ० खेलमें, अनायास–'अति उतंग तरु सैल गन लीलहिं लेहिं उठाइ'–रामा० ।

लीलांबुज–पु० (सं०) दे० 'लीलाकमल' ।

लीला*–पु० गोदना; काला घोड़ा । * वि० नीला । स्त्री० (सं०) क्रीड़ा, केलि; विलास, विहार; सौंदर्य; श्रृंगार-चेष्टा; प्रेमीका अनुकरण; अवतारोंके चरित्रका अभिनय; रहस्यपूर्ण कार्य; एक मात्रावृत्त; एक वर्णवृत्त । **–कमल,–तामरस,–पद्म**–पु० विनोद या क्रीड़ाके लिए हाथमें लिया हुआ कमल । **–कलह**–पु० क्रीड़ाके लिए किया जानेवाला कलह, प्रणयकलह । **–गृह, –गेह –वेश्म(न्)**–पु० क्रीड़ा-भवन । **–चतुर**–वि० क्रीड़ामें कुशल । **–ताल**–पु० संगीतका एक ताल । **–नटन,–नृत्य**–पु० क्रीड़ापूर्ण नृत्य । **–पुरुषोत्तम**–पु० विष्णुका अवतार । **–मनुष्य**–पु० नकली मनुष्य । **–वज्र**–पु० वज्रके आकारका औजार । **–वापी**–स्त्री० वह जलाशय जिसमें क्रीड़ा की जाय । **–शुक**–पु० विनोदके लिए पाला हुआ तोता । **–साध्य**–वि० सहज ही संपन्न होनेवाला । **–स्थल**–पु० क्रीड़ाका स्थान ।

लीलाब्ज, लीलारविंद–पु० (सं०) दे० 'लीलाकमल' ।

लीलाभरण–पु० (सं०) केवल क्रीड़ाके लिए पहना हुआ भूषण

(जैसे कमलका कंकण आदि)।

लीलामय–वि० (सं०) क्रीड़ायुक्त; क्रीड़ा-संबंधी।

लीलायित–वि० (सं०) क्रीड़ा करनेवाला; अभिनय करनेवाला। पु० क्रीड़ा; सहजसिद्ध कार्य।

लीलावतार–पु० (सं०) पृथ्वीपर अनेक तरहकी लीलाएँ करनेके लिए हुए भगवान्के विविध अवतार।

लीलावती–वि० स्त्री० (सं०) क्रीड़ा, विलास करनेवाली। स्त्री० दुर्गाका एक नाम; सुंदर स्त्री; भास्कराचार्यकी पुत्री और उनकी बनायी हुई गणितकी एक प्रसिद्ध पुस्तक; एक शुद्ध स्वरोंकी रागिनी; एक मात्रिक छंद।

लीलावान्(वत्)–वि० (सं०) सौंदर्यमय, रमणीय; क्रीड़ाशील।

लीलोद्यान–पु० (सं०) वह उद्यान जिसमें क्रीड़ा की जाय।

लीवर–पु० (अं०) तालेमें खटकेकी वह स्थिति जो उसमें लगनेवाली तालीको बनावटसे मालूम होती है।

लीह–स्त्री० लीक, रेखा; चिह्न।

लुकंदर–वि० जो लुकता-छिपता हो, भागनेवाला।

लुंग–पु० (सं०) एक नीबू, मातुलुंग।

लुंगा†–वि० आवारा, लफंगा, बदमाश।

लुंगाड़ा–वि० लुच्चा, बदमाश।

लुंगी–स्त्री० छोटी धोती, तहमत; कपड़ेका टुकड़ा; खारुवा।

लुंच–वि० (सं०) काटने, छीलने, नोचने, उखाड़नेवाला। पु० काटना; छीलना; उखाड़ना।

लुंचन–पु० (सं०) काटने, नोचने, छीलने आदिकी क्रिया; जैन यतियोंका केशोत्पाटन।

लुंचना–स्त्री० (सं०) संक्षिप्त भाषण।

लुंचित–वि० (सं०) नोचा, उखाड़ा, काटा, छीला हुआ। **–केश, –मूर्धज**–पु० जैन यति (जिसके सिरके वाल नुचे हों)।

लुंज–वि० विना हाथ-पैरका, लँगड़ा-लूला; पत्रादिसे रहित (वृक्ष)।

लुंटक–पु० (सं०) एक साग।

लुंटा–स्त्री० (सं०) दे० 'लुंठा'।

लुंटाक–पु० (सं०) दे० 'लुंठाक'।

लुंटित–वि० (सं०) दे० 'लुंठित'।

लुंठ–पु० (सं०) एक तरहकी घास।

लुंठक–पु० (सं०) चोर, लुटेरा।

लुंठन–पु० (सं०) चोरी, लूट; लुढ़कन।

लुंठा–स्त्री० (सं०) चोरी; लुढ़कन।

लुंठाक–पु० (सं०) डाकू; कौआ।

लुंठि–स्त्री० (सं०) लूटपाट।

लुंठित–वि० (सं०) लुढ़का हुआ; लूटा या चुराया हुआ।

लुंठी–स्त्री० (सं०) चोरी, लूटपाट; लुढ़कना, लोटना।

लुंड*–पु० रुंड, कबंध। **–मुंड**–वि० विना सिर-पैर-हाथका (धड़); लँगड़ा-लूला; शाखा-पत्रहीन, ठूँठ; गठरीका-सा लपेटा हुआ।

लुंडा–वि० पुच्छ-पंखहीन (पक्षी); (वैल आदि) जिसकी पूँछपर वाल न हों। पु० लपेटे हुए सूतकी पिंडी।

लुंडिका–स्त्री० (सं०) गेंद; डोरी आदिका लपेटा हुआ गोल पिंड।

लुंडियाना†–स० क्रि० पिंडीके रूपमें लपेटना (सूत, रस्सी आदि)।

लुंडी–वि० जिसकी पूँछ या पर झड़ गया हो (चिड़िया)। स्त्री० पिंडी, गोली (लपेटे हुए सूतकी); (सं०) सद्व्यवहार; विवेकशीलता।

लुंबिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका ढोल।

लुंबिनी–स्त्री० (सं०) कपिलवस्तुके पासका एक वन जहाँ बुद्धका जन्म हुआ था; एक राजकुमारी।

लुआठ–पु० दे० 'लुआठा'।

लुआठा–पु० जलती हुई या अधजली लकड़ी।

लुआठी–स्त्री० छोटा लुआठा।

लुआब–पु० (अ०) थूक; लसदार रस (विहीदाने, इसवगोल आदिका)। **–दार**–वि० जिससे लुआब निकले; लसदार।

लुआर*–स्त्री० लू, गरम हवा–'कैधों यह ग्रीषमकी भीषम लुआर है' –रत्नाकर।

लुकंजन*–पु० एक अंजन जो लगानेवालेको अदृश्य कर देता है।

लुक–पु० एक रोगन जो मिट्टीके वरतनोंपर चमक लानेके लिए लगाया जाता है; आगकी लपट; चिनगारी। **–दार**–वि० जिसपर लुक फेरा गया हो। **–साज़**–पु० लुक फेरनेका काम करनेवाला।

लुकना–अ० क्रि० छिपना, आड़में हो जाना। **मु० लुक छिपकर**–बहुत ही गुप्त रूपसे।

लुक़मा–पु० (अ०) कौर, ग्रास; उत्तेजना, वढ़ावा 'अस्माने लुक़मा दिया'–कादं०, अग० ६६।

लुक़मान–पु० (अ०) कुरानमें वर्णित एक हकीम जो अपनी वुद्धिमत्ताके लिए प्रसिद्ध है। **मु० –के पास दवा नहीं**–रोगका असाध्य होना। **–को हिकमत सिखाना**–वुद्धिमानको अक्ल सिखाना; वेवकूफीकी वात करना।

लुकरी†–स्त्री० लुआठी, जली या जलती हुई लकड़ी।

लुका-छिपी–स्त्री० लुकने-छिपनेका एक खेल।

लुकाट–पु० एक वृक्ष या उसका फल।

लुकाठ*–पु० दे० 'लुआठ'; दे० 'लुकाट'।

लुकाना–स० क्रि० छिपाना। अ० क्रि० छिपना, लुकना।

लुकार*–स्त्री० अग्नि, जलानेवाली शक्ति–'ल्यावते लुकार कहाँते काम जारनको'–रत्ना०।

लुकारी†–स्त्री० एक सिरेपर जलती हुई लकड़ी या फूसका पूला।

लुकेठा*–पु० जलती हुई लकड़ी, लुआठा।

लुकोना*–स० क्रि० छिपाना–'··चोर करैं फेरि लखि मुख ना लुकोवै तू'–दीनदयाल।

लुक्(च्)–पु० (सं०) लोप।

लुक्कायित–वि० (सं०) छिपा हुआ, अदृश्य, अंतर्हित।

लुखरी†–स्त्री० लोखरी, लोमड़ी (बुंदेल०)।

लुखिया–स्त्री० धूर्त औरत; पुंश्चली, वेश्या, कुलटा।

लुगड़ा–पु० कपड़ा; ओढ़नी।

लुग़त–स्त्री० (अ०) शब्द; भाषा; शब्दकोष। **मु० –छाँटना, –झाड़ना**–पांडित्य-प्रदर्शनके लिए क्लिष्ट, अप्रचलित शब्दोंका व्यवहार करना। **–तराशना**–शब्द गढ़ना; क्लिष्ट शब्दावलीका व्यवहार करना।

लुगदा–पु० गीली चीजका गोला, लोंदा (कागज आदि वनानेके लिए तैयार वस्तुका प्रारंभिक विकार)।

लुगदी–स्त्री० पीसी हुई गीली वस्तुका पिंड।

लुगरा*–पु० कपड़ा; ओढ़नी, छोटी चादर; फटा कपड़ा। †वि० चुगलखोर।

लुगरी–स्त्री० फटी-पुरानी धोती; † पीठ पीछे किसीका दोष कहना, चुगली।

लुग़वी–वि० (अ०) लुगतका, कोशगत; असली, मूल (अर्थ)। **–मानी**–पु० शब्दार्थ, असली मानी।

लुगाई–स्त्री० स्त्री; पत्नी।

लुग़ात–पु० (अ०) 'लुग़त'का वहु०; शब्दावली; शब्दकोश।

लुगी*–स्त्री० लुंगी; फटी धोती; लहँगेका किनारा।

लुग्गा*–पु० कपड़ा।

लुघड़ना†–अ० क्रि० लुढ़कना।

लुचकना–स० क्रि० झटकेसे कोई चीज छीन लेना।

लुचरी–स्त्री० दे० 'लुचुई'।

लुचवाना–स० क्रि० नोचवाना।

लुचुई*–स्त्री० (मैदेकी) नरम और पतली पूरी।

लुच्चा–वि० कोई चीज लुचककर भागनेवाला, चाई; कमीना, वदमाश; दुराचारी, लंपट।

लुच्ची–स्त्री० दे० 'लुचुई'। वि० स्त्री० दे० 'लुच्चा'।

लुटंत*–स्त्री० लूट।

लुटकना*–अ० क्रि० दे० 'लटकना'।

लुटना–अ० क्रि० डाकुओं आदि द्वारा लूटा जाना; वरवाद, तवाह होना; लोटना; निछावर होना–'क्यों न शलभपर लुट-लुट जाऊँ।'

लुटरना–अ० क्रि० लोटना; लुढ़कना।

लुटरा–वि० घुँघराला। (स्त्री० 'लुटरी')।

लुटाना–स० क्रि० किसीको लूटने देना; उचितसे कम दाम पर कोई चीज ग्राहकको दे देना; बरबाद करना; अंधाधुंध, बेरोक दान या खर्च करना।

लुटावना*–स० क्रि० दे० 'लुटाना'।

लुटिया–स्त्री० छोटा लोटा। मु० **–डुबाना**–अपयशका काम करना; काम चौपट करना।

लुटेरवा†–पु० एक प्रकारका पक्षी।

लुटेरा–पु० लूटनेवाला, डाकू।

लुठन–पु० (सं०) लुढ़कने या लोटनेकी क्रिया।

लुठना*–अ० क्रि० भूमिपर लोट जाना, लोटना; लुढ़कना–'लुटत सक्के सीस चरन तर युग गुन गन समये'–सूर।

लुठाना*–स० क्रि० लोटाना; लुढ़काना।

लुठित–वि० (सं०) लुढ़का, गिरा या लोटा हुआ। पु० लोटना (जैसे घोड़ेका)।

लुड़कना–अ० क्रि० दे० 'लुढ़कना'।

लुड़काना–स० क्रि० दे० 'लुढ़काना'।

लुड़की, लुदकी†–स्त्री० दहीमें बनी हुई भांग।

लुड़खुड़ाना–अ० क्रि० लड़खड़ाना।

लुढ़कना–अ० क्रि० चक्कर खाते हुए आगे बढ़ना या गिरना, नीचे-ऊपर होते हुए घिसटना, रपटना।

लुढ़काना–स० क्रि० कोई चीज इतनी तेजीसे फेंकना, ढकेलना कि चक्कर खाती हुई बढ़े।

लुढ़ना*–अ० क्रि० लुढ़कना; गिरना; (पुष्प आदिका) चयन किया जाना, लोढ़ा जाना।

लुढ़ाना*–स० क्रि० दे० 'लुढ़काना'–'कबहूँ दह्यो देत लुढाइ'।

लुढ़ियाना–स० क्रि० गोल तुरपना, गुलना।

लुतरा–वि० झगड़ा लगानेवाला, निंदक, चुगलखोर; शरारती; बदमाश। (स्त्री० 'लुतरी'।)

लुत्ती†–स्त्री० दे० 'लूती'।

लुत्थ*–स्त्री० लोथ, लाश।

लुत्फ़–पु० (अ०) रस, मजा; आनंद; खूबी; अनुग्रह; सौजन्य। **–(फ़े)ज़िंदगी**–पु० जीवनका सुख, जीनेका मजा।

लुथ्थि*–स्त्री० लोथ।

लुदरा–पु० एक अगहनी धान।

लुनना–स० क्रि० फसल काटना; नष्ट करना; हटाना।

लुनाई–स्त्री० सुंदरता, सलोनापन; फसल काटनेकी क्रिया या मजदूरी।

लुनेरा–पु० फसल काटनेवाला; एक जाति जो शोरा आदि बनानेका काम करती है, नोनिया।

लुपना*–अ० क्रि० लुकना, छिपना।

लुप्त–वि० (सं०) छिपा हुआ; अदृश्य; भग्न; नष्ट; जो लूट लिया गया हो; जिसका लोप हो गया हो; जिसका प्रयोग न होता हो। पु० लूटा हुआ माल। **–पद**–वि० जिसमें पद (शब्द)का अभाव हो। **–पिंडोदकक्रिय**–वि० जो श्राद्धादिसे वंचित हो गया हो। **–प्रतिज्ञ**–वि० जिसने अपनी प्रतिज्ञा भंग कर दी है। **–प्रतिभ**–वि० विवेकहीन।

लुप्ताकार–पु० संस्कृत भाषामें लुप्त 'अ'का चिह्न–ऽ।

लुप्तोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें उसके एक या एकाधिक अंग लुप्त होते हैं।

लुबधना*–अ० क्रि० लुब्ध होना।

लुबरी–स्त्री० पानी आदिमें नीचे बैठा हुआ मैल, तलछट, गाद।

लुबुध*–वि० लुब्ध, लुभाया या ललचाया हुआ। पु० शिकारी; प्रेमी।

लुबुधना†–अ० क्रि० लुब्ध, मोहित होना।

लुब्ध–वि० (सं०) आसक्त, राग, आकांक्षावाला; ललचाया, लुभाया हुआ; मोहित; घबड़ाया हुआ। पु० व्याध; कामुक।

लुब्धक–पु० (सं०) लोभी व्यक्ति; लंपट; बहेलिया; एक प्रकाशमान तारा।

लुब्धना*–अ० क्रि० लुब्ध होना।

लुब्धापति–स्त्री० प्रौढ़ा नायिकाका एक भेद (केशव)।

लुब्ब–पु० (अ०) सार भाग, गूदा, खुलासा। **–(ब्बे) लुबाब**–पु० सारका सार, निचोड़; इत्र।

लुभाना–अ० क्रि० आकृष्ट, मोहित, रागयुक्त होना; लालचमें पड़ना; लालसा करना। स० क्रि० मोहमें डालना, बहकाना।

लुभित–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, अशांत; मुग्ध।

लुभौहाँ–वि० लुभावना।

लुर–पु० ईरानी नस्लकी एक पहाड़ी जाति जो उजड्डपनके लिए प्रसिद्ध है। **–पन,–पना**–पु० मूर्खता, उजड्डपन।

लुरकना†–अ० क्रि० झूलना, लटकना।

लुरका–पु० झुमका।

लुरकी–स्त्री० कानका एक आभूषण, कानकी बाली; † दे० 'लुड़की'।

लुरना*–अ० क्रि० लटकना, झूलना; झुक पड़ना; हिलना-डोलना; एक बारगी आ जाना; मुग्ध, आकृष्ट होना।

लुरियाना*–अ० क्रि० एकाएक आ जाना; प्रवृत्त होना; प्रेमपूर्वक स्पर्श करना, लपटना-झपटना–'बाघनके लेरुवा लरत लुरियात हैं'–रत्नाकर।

लुरी–स्त्री० हालकी ब्यायी गाय।

लुलन–पु० (सं०) लटकना, लटकते हुए हिलना-डोलना, झूलना।

लुलना*–अ० क्रि० लहराना, लटकते हुए झूलना।

लुलाप–पु० (सं०) भैंसा। **–कंद**–पु० महिषकंद। **–कांता**–स्त्री० भैंस।

लुलाय–पु० (सं०) दे० 'लुलाप'। **–केतु**–पु० शिवका एक गण। **–लक्ष्मा(क्ष्मन्)**–पु० यम।

लुलित–वि० (सं०) लटकता, झूलता हुआ; अशांत; बिखरा हुआ; दबाया हुआ; ध्वस्त; क्लांत; सुंदर। **–कुंडल** वि० जिसके कुंडल हिल रहे हों। **–पल्लव**–वि० हिलती हुई टहनियोंवाला (वृक्ष)। **–मंडन**–वि० अस्थिरतामें जिसके आभरण हिलते हों। **–स्रगाकुल**–वि० (विस्तर) जिसपर पुष्पहार बिखरे हों।

लुवार*–स्त्री० गरम और तपी हुई हवा, लू, लुआर।

लुषभ–पु० (सं०) मस्त हाथी।

लुस्त–पु० (सं०) धनुष्का छोर।

लुहँगी†–स्त्री० लोहा-मढ़ी लाठी, लोहबंदा।

लुहना*–अ० क्रि० मोहित होना, ललचना।

लुहनी†–पु० एक अगहनी धान।

लुहार–पु० लोहेका काम करनेवाला; लोहेका काम करनेवाली एक जाति। (स्त्री० 'लुहारिन'।)

लुहारी–स्त्री० लोहेका काम; लुहारकी स्त्री।

लूँण–पु० नमक–'खूब खाँड़ है खीचड़ी माँहि पड़ै टुक लूंण'–साखी।

लूँबरी*–स्त्री० लोमड़ी।

लू–स्त्री० तपी हुई वायु या उसका झोंका। मु० **–मारना,–लगना**–तप्त हवा लगनेसे ज्वर आदि हो जाना।

लूक–पु० टूटा हुआ तारा, उल्का–'दिन ही लूक परन विधि लागे'–रामा०; आगकी लपट, ज्वाला; जलती लकड़ी (जिसका कोई छोर जल रहा हो)–'यक लूक लीन्हों बारि'–रघुराज। स्त्री० गरमीकी तपी हुई हवा, लू।

लूकट*–पु० आग; लुआठी–'जिहि मुख पाँचों अमृत खाये। तेहि मुख देखत लूकट लाये'–कबीर।

लूकना*–स० क्रि० आग लगाना, जलाना। अ० क्रि० छिपना।

लूका–पु० आगकी लपट, ज्वाला; चिनगारी; लकड़ी जिसका सिरा जलता हो–'हम घर जारा आपना, लूका लीन्हा हाथ'–साखी; † मछली फँसानेका जाल। मु० **–लगाना**–आग लगाना, जलाना। **(मुँहमें)–लगाना**–मुँह जलाना, तिरस्कार, अपमान करना (औरतोंकी गाली)।

लूकी†–स्त्री० चिनगारी; जलती हुई पतली लकड़ी। मु० **–लगाना**–आग लगाना; किसीको उत्तेजित होनेपर और उत्तेजना देना।

लूक्ष–वि० (सं०) रूखा।

लूखा*–वि० दे० 'रूखा'।

लूगड़–पु० कपड़ा; चादर, ओढ़नी।

लूगा†–पु० वस्त्र; धोती।

लूघर*–पु० लुआठ, जलती हुई लकड़ी।

लूट–स्त्री० लूटनेकी क्रिया, डकैती; अपहृत, लूटा हुआ माल। **–खसोट**–स्त्री० लूटमार; आर्थिक शोषण। **–खूँद,–पाट,–मार**–स्त्री० लोगोंको शारीरिक यंत्रणा देकर उनका धन छीनना।

लूटक*–पु० लुटेरा, डाकू; सुंदरतामें बढ़ जानेवाला।

लूटना–स० क्रि० जबरदस्ती छीनना; बरबाद, तबाह करना; धोखे, अन्याय, अनुचित ढंगसे किसीका धन ले लेना; उचितसे अधिक दाम लेना, ठगना; बहुत सस्तेमें खरीदना; वशीभूत करना, मोहना; भोगना। मु० **–खाना**–नाजायज ढंगसे किसीका धन भोगना, ले लेना। **–पाटना**–लूटमार करना।

लूटि*–स्त्री० दे० 'लूट'।

लूत–पु० एक पैगंबर जो इब्राहीमके भतीजे थे और जिनके द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय, कुरानके अनुसार, पुरुषमैथुनके पापसे, ईश्वरका कोपभाजन होकर, नष्ट हो गया। * स्त्री० मकड़ी। वि० (सं०) खंडित, विभक्त।

लूता–स्त्री० (सं०) मकड़ी; फफोले जैसी फुंसियाँ (कहा जाता है, ये मकड़ीके मूतनेसे होती हैं); चींटी। **–तंतु**–पु० मकड़ीका जाल। **–पट्ट**–पु० मकड़ीका अंडा। **–मर्कटक**–पु० बनमानुस।

लूतात–पु० (सं०) चींटा।

लूतामय–पु० (सं०) मकड़ी नामक रोग।

लूतारि–पु० (सं०) एक क्षुप।

लूतिका–स्त्री० (सं०) छोटी मकड़ी।

लूती–पु० लूत नामके पैगंबर द्वारा प्रवर्तित संप्रदाय या वंशका व्यक्ति; लौंडेबाज। † स्त्री० लुआठी। मु० **–लगाना**– झगड़ा, आग लगाना।

लून–पु० दे० 'लोन'; (सं०) पूँछ। वि० कटा हुआ; नष्ट किया हुआ; कुतरा हुआ; आहत; छिदा हुआ। **–दुष्कृत**–वि० जिसने अपने पाप नष्ट कर दिये हैं। **–पक्ष**–वि० जिसके पर कटे हों, परकैंच। **–विष**–वि० दे० 'लूमविष'।

लूनक–पु० सज्जीखार; अमलोनी; (सं०) विभाग; घाव; प्रकार; अंतर; एक जानवर; कटा या टूटा हुआ पदार्थ। वि० कटा हुआ, विभक्त।

लूनना*–स० क्रि० (फसल) काटना।

लूम–पु० एक राग (शुद्ध स्वरोंका); (सं०) पूँछ, लांगुल। **–विष**–वि० पूँछसे डंक मारनेवाला। पु० ऐसा जीव (बिच्छू आदि)।

लूमड़ी†–स्त्री० लोमड़ी।

लूमना*–अ० क्रि० झूलना, लटकना।

लूमर†–वि० सयाना, जवान (तिरस्कारमें)।

लूरना–अ० क्रि० दे० 'लुरना'।

लूला–वि० बिना हाथका; बेकाम; असहाय।

लूलुक–पु० (सं०) मेढक।

लूलू†–वि० नासमझ, उजड्ड। मु० **–बनाना**–मूर्ख ठहराना (बातोंमें); उपहास, निंदा करना।

लूह†–स्त्री० लू।

लूहर*–स्त्री० लू; लूका।

लेंड–पु० (सं०) मल।

लेंड़–पु० बँधा हुआ मल जो मोटी बत्तीके रूपमें निकलता है।

लेंड़ी–स्त्री० बकरी आदिका गोल बँधा हुआ मल।

लेंडुआ†–पु० कागजका एक खिलौना जो गिराने या लुढ़कानेपर खड़ा हो जाता है।

लेंस–पु० (अं०) किरणोंको केंद्रीभूत करनेवाला शीशेका ताल; पारदर्शी पदार्थका टुकड़ा जिसके दोनों ओरकी या एक ओरकी सतह गोलीय या सिलिण्डराकार हो। लेंससे गुजरनेपर प्रकाशकी किरणें या तो अभिसरित हो जाती हैं या अपसारित हो जाती हैं। प्रकाशयंत्रों (केमरा, दूरबीन, सूक्ष्मदर्शी) में लेंसकी सहायतासे ही प्रतिबिम्बोंका निर्माण होता है।

लेंहड़ी†–स्त्री० दे० 'लेंहड़ा'।

लेंहड़ा–पु० (चौपायोंका) समूह, झुंड।

लेंहड़ी–स्त्री० (भेड़ों, बकरियों आदिका) झुंड।

ले†–अ० शुरू होकर; तक।

लेइ†–अ० तक, पर्यंत।

लेई–स्त्री० लपसी; चिपकानेके कामके लिए घोलकर पकाया हुआ आटा; ईंटोंकी जोड़ाईके लिए गाढ़ा घोला हुआ सुरखी मिश्रित बारीक चूना। **–पूँजी**–स्त्री० सर्वस्व, सारी जमा।

लेक्चर–पु० (अं०) व्याख्यान, भाषण, प्रवचन। **–बाजी**–स्त्री० खूब लेक्चर देना; बहुत बोलना, बकवास करना। मु० **–झाड़ना**–जोशके साथ बोलना या व्याख्यान देना।

लेक्चरर–पु० (अं०) वक्ता, भाषण करनेवाला; उप-प्राध्यापक।

लेख–पु० (सं०) पंक्ति; लिपि; लिखावट; लिखी बात; पत्र; लेखा, हिसाब-किताब; देवता। * वि० लिखने या लेखा करने योग्य। * स्त्री० पक्की बात; रेखा। **–पत्र**–पु०,**–पत्रिका**–स्त्री० पत्र; दस्तावेज। **–पद्धति,–प्रणाली**–स्त्री० लिखनेकी शैली। **–शाला**–स्त्री० लिखना सिखलानेका विद्यालय। **–शालिक**–पु० लेख-शालाका छात्र। **–साधन**–पु० लिखनेका साधन। **–हार,–हारक**–पु० पत्रवाहक। **–हारी(रिन्)**–वि० पत्र ले जानेवाला।

लेखक–पु० (सं०) लिपिकार; लिखनेवाला, क्लर्क; चित्रकार; ग्रंथ-रचयिता; पत्रादिके लिए लेख लिखनेवाला; पत्र; कूत। **–प्रमाद**–पु० लिपिकारकी भूल।

लेखकी–स्त्री० लेख या पुस्तकादि लिखनेका काम या वृत्ति 'लेखकी गले पड़ी'–आत्माराम।

लेखकीय वर्कशाप–अमेरिकाके अनेक विश्वविद्यालयोंमें लेखकोंके प्रशिक्षणके लिए स्थापित विभाग, जिनमें वस्तु और शिल्पपर प्रायोगिक कार्य होते हैं।

लेखन–वि० (सं०) खुरचनेवाला; उत्तेजक। पु० लिखनेका काम; लिखनेकी कला; चित्रकारी; कूतना, लेखा लगाना; कै, वमन करना; औषधसे रसादि सात धातुओं, त्रिदोषोंको पतला करना; उत्तेजन; काटना; खरोंचना (आ० वे०); त्रिदोषोंका लघ्वीकरण करनेवाली औषध; भोजपत्र; ताड़-पत्र, एक तरहका सरकंडा (जिसकी कलम बनायी जाती है); खाँसी; खुरचनेका औजार। **–की स्वतंत्रता, –स्वातंत्र्य**–किसी भी प्रकारके बन्धनको अस्वीकार करनेवाली लेखककी वह आन्तरिक विशेषता, जो रचनाके लिए स्वतंत्रताको सबसे बड़ा मूल्य मानती है। **–बस्ति**–स्त्री० सात धातुओं, त्रिदोषों, वमन आदिको पतला करनेवाली पिचकारी। **–साधन**–पु० कलम आदि। **–सामग्री**–स्त्री० (स्टेशनरी) कागज, स्याही आदि सामग्री जो लिखनेका कार्य करते समय आवश्यक हो। **–हड़ताल**–स्त्री० (पेन-डाउन स्ट्राइक) दे० 'लेखनी कर्मरोधन'।

लेखनहार*–वि० लिखनेवाला, लेखक।

लेखना*–स० क्रि० लिखना; चित्र बनाना; हिसाब लगाना; सोचना, समझना। मु० **–जोखना**–अंदाज लगाना; कूतना; जाँच करना।

लेखनिक–पु० (सं०) पत्रवाहक; लिखनेवाला; अपने बदले दूसरेसे हस्ताक्षर करानेवाला निरक्षर व्यक्ति।

लेखनिका–स्त्री० (सं०) तूलिका।

लेखनी–स्त्री० (सं०) लिखने, अक्षर बनानेका साधन, कलम, वर्णतूलिका; करछी। **–कर्मरोधन**–पु० (पेनडाउन स्ट्राइक) किसी कार्यालयके कर्मचारियोंका अधिकारियोंके किसी आदेश, व्यवहारादिका विरोध करनेके लिए लिखने-पढ़नेका काम स्थगित कर अपने स्थानपर चुपचाप बैठ रहना। **–जिह्वा**–स्त्री० (निब) अंग्रेजी ढंगकी कलमोंके सिरेपर खोंसी जानेवाली लोहे, ताँबे आदिकी बनी वह नोकदार वस्तु जिससे लिखा जाता है। **–धर**–पु० लेखनी धारण करनेवाला, लेखक। मु० **–उठाना**–लिखना शुरू करना।

लेखनीय–वि० (सं०) लिखने योग्य; मोटापा आदि घटानेमें उपयोगी।

लेखपाल–पु० दे० 'पटवारी'।

लेखर्षभ–पु० (सं०) देव-श्रेष्ठ, इंद्र।

लेखांश, लेख्यांश–पु० (सं०) (पैसेज) किसी लेखादिका अंश।

लेखा–स्त्री० (सं०) रेखा; चित्रण; लिपि; चिह्न; किनारा; मंद चंद्रशृंग; शरीरपर चंदनादिसे रेखाएं बनाना। **–चित्र**–पु० (ग्राफ)–रेखाओं और चतुर्भुजोंकी सहायतासे उत्पादन, विकास, घटना, मौसम आदिका उतार-चढ़ाव बतानेवाला अंकन। **–वलय**–पु० चारों ओरसे घेरनेवाली रेखा। **–विधि**–स्त्री० चित्रांकन। **–संधि**–स्त्री० भौंहोंका संधिस्थल।

लेखा–पु० हिसाब; आय-व्ययका ब्योरा; गणना, अंदाज; विचार। **–कर्म**–पु० (अकाउंटेंसी) हिसाब-किताब रखनेका कार्य, मुनीमी। **–छलयोजन**–पु० (मैनिपुलेशन ऑफ अकाउंट्स) हिसाब तैयार करनेमें चालबाजी करना। **–पत्तर**–पु०, हिसाब-किताबका कागज; रोकड़बही। **–परीक्षक**–पु० (ऑडिटर) आय-व्ययकी जाँच-पड़ताल करनेवाला; दे० 'अंकेक्षक'। **–परीक्षण**–पु० (ऑडिट) हिसाबकी जाँच-पड़ताल। **–पाल**–पु० (अकाउंटेंट) हिसाब (लेखा) रखने या लिखनेवाला, जो लेखा रखनेमें चतुर हो, मुनीम। **–पुस्तिका**–स्त्री० (पास बुक) बैंक या डाकखानेसे मिलनेवाली पुस्तिका जिसमें खातेदारका जमा-खर्चका ब्यौरा होता है। **–बही**–स्त्री० दे० 'लेखा पत्तर'। **मु० –डेवढ़ करना** हिसाब साफ करना; चौपट करना। **–पूरा या साफ करना**–हिसाब चुकता करना।

लेखा*–पु० देवता 'भये अलेख सोच बस लेखा'–रामा०।

लेखाध्यक्ष–पु० (अकाउंटेंट) दे० 'लेखापाल'।

लेखार्ह, लेखार्ह्य–पु० (सं०) लिखनेके कामका ताडपत्र।

लेखिका–स्त्री० (सं०) छोटी रेखा; लिखनेवाली, क्लर्क; लेख या ग्रंथ लिखनेवाली।

लेखित–वि० (सं०) लिखवाया हुआ; लिखा हुआ।

लेखिनी–स्त्री० (सं०) करछी।

लेखी (खिन्)–वि० (सं०) खींचने, खरोचनेवाला; छूनेवाला।

लेखीलक–पु० (सं०) पत्र-वाहक।

लेखे–अ० विचारानुसार, समझमें।

लेख्य–वि० (सं०) खरोंचने योग्य; लिखने योग्य; जो लिखनेके लिए हो। पु० लेख लिखनेकी कला; चित्र; पत्र; दस्तावेज; (डाकूमेंट) दे० 'प्रलेख'। **–कृत**–वि० जो लिखा-पढ़ी करके पक्का किया गया हो। **–चूर्णिका**–स्त्री० कलम, तूलिका आदि। **–दल**–पु० श्रीताल-पत्र। **–पत्र,–पत्रक**–पु० लेख; पत्र; दस्तावेज; ताड़का पत्ता। **–प्रसंग**–पु० दस्तावेज; शर्तनामा। **–स्थान**–पु० दफ्तर।

लेख्यारूढ–वि० (सं०) लिखा-पढ़ी किया हुआ, दस्तावेजी।

लेज†–स्त्री० दे० 'लेजुर'।

लेजम–पु० (फा०) एक तरहकी कमान जिसमें ताँतकी जगह लोहेकी जंजीर लगी होती है और जिसके सहारे कसरत की जाती है; नरम और लचीली कमान जिसपर तीरंदाजीका अभ्यास किया जाता है।

लेजरंग†–पु० पत्तेका एक विशेष रंग या गुण।

लेजिम–पु० दे० 'लेजम'।

लेजिस्लेटिव–वि० (अं०) व्यवस्था, विधान-संबंधी। **–एसेंबली**–स्त्री० व्यवस्थापिका सभा। **–कौंसिल**–स्त्री० व्यवस्थापिका परिषद्।

लेजुर*–स्त्री० रस्सी; कुएँसे पानी निकालनेकी रस्सी।

लेजुरा–पु० दे० लेजुर; † एक अगहनी धान।

लेजुरी†–स्त्री० दे० 'लेजुर'।

लेट–स्त्री० लेटने, पौढ़नेकी क्रिया; सुरखी आदिके योगसे बना हुआ फर्श; गच। वि० (अं०) नियत समयके बाद आनेवाला, देर कर आनेवाला (कर्मचारी, ट्रेन आदि)। **–फ़ी**–स्त्री० समय बीत जानेपर डाकखाने आदिमें कोई चीज जमा करनेकी फीस।

लेटना–अ० क्रि० किसी आधारपर पड़ रहना; पौढ़ना; आराम करना; किसी चीजका झुककर गिरना; मर जाना।

लेटर–पु० (अं०) अक्षर; चिट्ठी, पत्र। **–बक्स**–पु० भेजी जानेवाली चिट्ठी डालनेका संदूक; आनेवाली चिट्ठी छोड़नेका, मकानके द्वारपर लगा हुआ संदूक।

लेटा†–पु० मंडी।

लेटाना–स० क्रि० दे० 'लिटाना'।

लेड–पु० (अं०) एक धातु, सीसा; टाइपके अक्षरोंको ऊपर नीचे होनेसे बचाने और सीधा रखनेके लिए पंक्तियोंके बीचमें लगाया जानेवाला चौड़ा पत्तर। **–मोल्ड**–पु० लेड ढालनेका साँचा।

लेडी–स्त्री० (अं०) लार्ड, सरदारकी पत्नी; महिला, भले घरकी स्त्री; अंग्रेजी फैशनवाली स्त्री (बुरे अर्थमें)। **–डॉक्टर**–स्त्री० स्त्री-डॉक्टर।

लेढा†–पु० छोटा या बच्चा कटहर जिसकी तरकारी अच्छी बनती है। **–लगाना**–चौपट कर देना।

लेत–पु० (सं०) आँसू।

लेथो–पु० दे० 'लीथो'।

लेद†–पु० फागुनमें गाया जानेवाला एक तरहका गीत।

लेदवा†–पु० एक तरहकी ककड़ी, फूट।

लेदी†–स्त्री० तालाबके पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया; कूँड़ चौड़ी करनेके लिए हलके नीचेके हिस्सेमें बँधा हुआ घासका पूला; घास, चारा।

लेन–पु० (हि०) लेनेकी क्रिया; प्राप्य धन, लहना, पावना। **–दार**–पु० महाजन, लहनेदार, उत्तमर्ण। **–देन**–पु० लेना-देना, आदान-प्रदान; ऋण लेने-देनेका काम, महाजनी। **मु० –देन न होना**–सरोकार-संबंध न होना।

लेन–स्त्री० (अं०) गली।

लेनहार*–पु० लहनेदार; लेनेवाला।

लेना–स० क्रि० प्राप्त करना, पकड़ना, थामना; खरीदना; जीतना, अधिकार, कब्जेमें करना; उधार, कर्ज लेना; भागते हुएको पकड़ना; अगवानी करना, किसी कामका भार उठाना; किसीको स्वीकार, धारण करना (पूजाके लिए फूल लेना); सेवन करना; संभोग करना। पु० लेनेकी क्रिया, लेन। **लेना-देना**–पु० लेन-देन। **ले आना**–लाना। **मु० ले उड़ना**–कोई चीज लेकर भाग जाना; बिना समझे बातका बतंगड़ करना। **ले डालना**–नष्ट, खराब करना; हराना; पूरा करना, निबटाना (कोई काम)। **ले डूबना**–अपने साथ दूसरोंको भी नष्ट करना। **ले-देकर**–जोड़-जाड़कर; कठिनाईसे। **ले-दे करना**–हुज्जत, तकरार करना; अत्यधिक परिश्रम, यत्न करना। **लेना एक न देना दो**–कोई प्रयोजन, मतलब न होना। **लेनेके देने पड़ना**–लाभके बदले हानि होना। **ले पालना**–गोद, दत्तक लेना। **ले बैठना**–बोझ सहित डूब जाना (नाव आदिका); अपने साथ नष्ट करना; किसी कारबारका पूँजी सहित नष्ट हो जाना। **ले मरना**–अपने साथ बरबाद करना। **ले रखना**–खरीदकर रख छोड़ना।

लेनिन (निकोलव)–१८७०-१९२४ रूसी क्रांतिका नेता, सोवियत् शासनका संस्थापक तथा १९१७ से १९२४ तक उसका प्रधान।

लेप–पु० (सं०) लेपने, पोतनेकी क्रिया; पोतनेके काम आनेवाली कोई गीली चीज; उबटन, मरहम; लगाव, संबंध; दाग; खाद्य; बर्तन आदिमें लगा हुआ मैल; पाप। **–कामिनी**–स्त्री० साँचेमें ढली हुई स्त्रीकी मूर्ति।

लेपक–वि० (सं०) लेप करनेवाला; सफेदी करनेवाला; ईंट पाथनेवाला। पु० एक जाति, पलगंड।

लेपन–पु० (सं०) लेपनेकी क्रिया, लेप चढ़ाना; उबटन, अंगराग; तुरुष्क नामक गंधद्रव्य; मांस।

लेपना–स० क्रि० गीली चीज पोतना, चुपड़ना।

लेपनीय–वि० (सं०) लेपके योग्य।

लेपालक–पु० दत्तक पुत्र, मुतबन्ना।

लेपी (पिन्)–वि० (सं०) लेप करनेवाला; लिप्त।

लेप्य–वि० (सं०) लेपन करने लायक; साँचेमें ढालने लायक। **–कार,–कृत्**–वि०, पु० लेप करनेवाला; ईंट पाथनेवाला; साँचा बनानेवाला। **–नारी,–स्त्री**–स्त्री० वह स्त्री जिसपर चंदन आदिका लेप लगा हो; दे० 'लेप-कामिनी'।

लेप्यमयी–स्त्री० (सं०) पत्थर, काष्ठ, मिट्टीकी पुत्तलिका।

लेफ़्टिनेंट–पु० (अं०) सहायक कर्मचारी; कप्तानकी अधीनतामें काम करनेवाला सेनाध्यक्ष। **–कर्नल**–पु० कर्नलका सहायक।

–जेनरल–पु० जेनरलका सहायक।

लेबर–पु० (अं०) शारीरिक, मानसिक परिश्रम; समाजकी आवश्यकताओंको पूर्ण करनेके लिए किया हुआ श्रम; परिश्रम द्वारा उत्पादन करनेवाला, श्रमिकोंका संघ। **–पार्टी**–स्त्री० मजदूरोंका प्रतिनिधित्व करनेवाला दल। **–मेंबर**–पु० शासनकी कार्यसमिति-का वह सदस्य जो श्रम और श्रमिकोंकी समस्याओंका उत्तरदायित्व वहन करता है। **–यूनियन**–स्त्री० श्रमिक, मजदूर संघ।

लेबरर–पु० (अं०) मजदूर, श्रमजीवी।

लेबुल–पु० (अं०) बोतल, बंडल आदिपर लगा हुआ पता या विवरण-पत्र।

लेबोरेटरी–स्त्री० (अं०) वैज्ञानिक परीक्षाका स्थान; प्रयोगशाला।

लेमन–पु० (अं०) नीबू। **–चूस,–जूस**–पु० नीबू आदिका सत मिलाकर बनायी हुई शक्करकी टिकियाँ।

लेमनेड–पु० (अं०) नीबूके सतके योगसे बनाया हुआ मीठा पानी।

लेमू–पु० (फा०) नीबू। **-निचोड़**–पु० वह आदमी जो हर एकके साथ खानेमें शामिल हो जाय।

लेय–पु० (सं०) सिंह राशि।

लेरुआ*–पु० बछड़ा; † लड्डू।

लेरुवा†–पु० दे० 'लेरुआ'।

लेला–स्त्री० (सं०) कंपन। † पु० भेड़, बकरीका बच्चा; साथ लगनेवाला व्यक्ति।

लेलायमाना–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

लेलितक, लेलीतक–पु० (सं०) गंधक।

लेलिह–पु० (सं०) जूँ; साँप।

लेलिहा–स्त्री० (सं०) उँगलियोंकी एक मुद्रा।

लेलिहान–वि० (सं०) चखने, बार-बार चाटनेवाला; लुब्ध, ललचाया हुआ। पु० साँप; शिव।

लेलिहाना–स्त्री० (सं०) उँगलियोंकी एक मुद्रा।

लेव–पु० घाव आदिपर लगानेकी दवा; आँचसे बचानेके लिए हंडी आदिकी पेंदीपर लगाया जानेवाला राख या मिट्टीका लेप; दीवार-पर लगानेका गिलावा; इतना पानी बरसना कि मिट्टी पानी मिलकर एक हो जाय। मु० **–चढ़ना**–मोटा होना (व्यं०)। **–लगना**–(धान आदि बोनेके लिए) मेंड़के बराबर पानी होना; मेंड़तक पानी भरे हुए खेतका जोतकर धान रोपने लायक किया जाना।

लेवथा†–पु० एक वृक्ष।

लेवरना, लेवारना†–स० क्रि० कहगिल करना।

लेवा–वि० लेनेवाला (यौगिक रूपमें प्रयुक्त–जैसे नामलेवा)। पु० कहगिल, गिलावा; वर्षाके पानीमें मिट्टीका घुल जाना; लेप; थन; † कथरी। मु० **–लगना**–धान बोने लायक स्थिति होना।

लेवादेई–स्त्री० लेन-देन।

लेवार†–पु० लेव, गिलाव, कहगिल।

लेवारना–पु० गिलाव करना, लेप, लेवा लगाना।

लेवाल–पु० लेने, खरीदनेवाला।

लेश–पु० (सं०) अणु; सूक्ष्म अंश, अल्पता; समयका एक मान; एक अर्थालंकार जहाँ गुणको दोषके समान और दोषको गुणके सदृश दिखानेका प्रयत्न किया जाय। एक तरहका गाना (?)। वि० अल्प, थोड़ा।

लेशिक–पु० (सं०) घासकटा।

लेशी(शिन्)–वि० (सं०) जिसमें सूक्ष्म अंश हो।

लेशोक्त–वि० (सं०) संक्षेप या संकेतमें कहा हुआ।

लेश्या–स्त्री० (सं०) प्रकाश; जीवकी विशेष अवस्था जिसके कारण कर्म उसे बाँधता है (जै०)।

लेष*–पु० दे० 'लेश', 'लेख'।

लेषना*–स० क्रि० दे० 'लखना', 'लिखना'।

लेषनी*–स्त्री० दे० 'लेखनी'।

लेषे*–अ० दे० 'लेखे'।

लेष्ट–पु० (सं०) मिट्टीका ढेला। **–घ्न,–भेदन**–पु० ढेला तोड़नेका एक औजार।

लेस*–पु० दे० 'लेश'; † गिलावा, कहगिल; पानीमें घोलकर गाढ़ी बनायी हुई चीज, लस। **–दार**–वि० लसीला, लसदार; गोटेदार; बेल लगाया हुआ।

लेसक, लेसिक–पु० (सं०) गजारोही।

लेसना†–स० क्रि० जलाना, प्रज्वलित करना–'लेसा हिये प्रेमकर दीया'–प०; पोतना, चिपकाना; दीवारपर मिट्टी आदि लेवारना; चुगली खाना, उसकाना।

लेसर–पु० (लेसर) एक ऐसी युक्ति जो प्रकाशकिरणका उपयोग अन्तरिक्ष संचारके लिए कर सकती है।

लेसो–पु० छः ढोली पानका गट्टा।

लेहँड़ा–पु० लहँड़ा।

लेह–पु० एक वृक्ष, लोध; (सं०) चाटनेवाला; चाटनेकी वस्तु; आहार; ग्रहणका एक भेद।

लेहन–पु० (सं०) चाटनेकी क्रिया।

लेहना–पु० खेतमें कटे डंठलोंका पूला; नट, नाई, धोबी, लवनी करनेवालों आदिको दिया जानेवाला फसलका भाग; दोनों हाथोंके बीच उठाने लायक डंठल; पावना; † चारा।

लेहसित–वि० लसित, सुन्दर लगनेवाला।

लेहसुआ–पु० एक तरहकी बरसाती घास (यह कोमल और लसीली होती है, पत्ती तलनेपर रोटीकी तरह फूलती है और इसे सागके तौरपर खाते और जानवरोंको भी खिलाते हैं)।

लेहसुर†–पु० मिट्टीको ठीक करनेका कुम्हारोंका औजार।

लेहाज़ा–अ० दे० 'लिहाजा'।

लेहाड़ा†–वि० दे० 'लिहाड़ा'।

लेहाड़ी–स्त्री० दे० 'लिहाड़ी'। मु० **–करना,–लेना**–बनाना, हँसी उड़ाना।

लेहाफ़–पु० दे० 'लिहाफ़'।

लेहिन–पु० (सं०) सुहागा।

लेही–स्त्री० (सं०) कानके सिरेपर होनेवाला एक रोग।

लेही(हिन्)–वि० (सं०) चाटनेवाला।

लेह्य–पु० (सं०) चाटने योग्य चीज, चटनी। वि० चाटने योग्य।

लैंग–वि० (सं०) लिंग संबंधी (व्या०)। पु० एक पुराण और एक उपपुराण। **–धूम**–पु० वह पुरोहित जिसे देवताओं आदिका ज्ञान हो।

लैंगिक–वि० (सं०) लिंग, चिह्नोंसे प्राप्त (प्रमाण)। पु० अनुमान प्रमाण (वैशे०); भास्कर, शिल्पी; (सेक्सुअल) लिंग-संबंधी; स्त्री-पुरुषकी जननेंद्रियसे संबंध रखनेवाला, यौन।

लैंगी–स्त्री० (सं०) लिंगिनी नामक बूटी।

लैंडो–स्त्री० (अं०) एक तरहकी घोड़ागाड़ी।

लैंप–पु० (अं०) चिराग, दीपक, लालटेन।

लैं*–अ० तक, पर्यंत।

लैटिन–स्त्री० इटलीकी पुरानी भाषा जो रोमनकालमें प्रचलित थी, लातीनी।

लैतोलाल–पु० (अ०) टालमटोल, हीलाहवाला।

लैन–स्त्री० (अं० 'लाइन') रेखा; सीमा-रेखा; पंक्ति; पैदल सेना; सिपाहियोंका निवासस्थान, बैरक। **–डोरी**–स्त्री० पेशखेमा।

लैया†–पु० जड़हन, अगहनी धान। स्त्री० गुड़, चीनीमें पागकर बनायी फरुई आदिकी रोटीकी शक्लकी कतरी; चुगली। मु० **–लगाना**–चुगली खाना।

लैरू–पु० बछड़ा, छोटा बच्चा।

लैल–स्त्री० (फा०) रात। **–(लो)निहार**–पु० रात-दिन।

लैला–स्त्री० (फा०) लैला-मजनूँकी प्रेम-कहानीकी नायिका और मजनूँकी प्रेमिका; प्रेयसी; सुंदरी; श्यामा। **–मजनूँ**–पु० लैला और मजनूँ; लैला-मजनूँकी कहानी; आशिक-माशूक।

लैवेंडर–पु० (अं०) विलायती इत्र जो एक फूलसे तैयार किया जाता है।

लैसंस–पु० (अं० 'लाइसेंस') विशेष अधिकारका प्रमाणपत्र, सनद।

लैस–वि० तैयार, कीलकाँटेसे दुरुस्त, सजा हुआ; * निमग्न। पु० फीता (कपड़ेपर चढ़ानेका); एक तरहका सिरका; कमानी; * एक तरहका बाण।

लोँ*—अ० समान; तक ।

लोँड़ी†—स्त्री० कानकी लौ ।

लोँदा—पु० किसी गीली वस्तुका पिंड ।

लो—अ० किसीका ध्यान आकृष्ट करने या आश्चर्य प्रकट करनेके लिए प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द ।

लोअर कोर्ट—पु० (अं०) नीचेकी अदालत; खफीफा ।

लोइ*—पु० लोक, लोग । स्त्री० चमक; लौ, ज्वाला ।

लोइन*—पु० नमकीनी, नमक; सौंदर्य; लोचन, नेत्र ।

लोई—स्त्री० रोटी बनानेके लिए साने हुए आटेकी गोली; एक तरहका ऊनी कंबल । * पु० लोग ।

लोकंजन*—पु० दे० 'लुकंजन' ।

लोकंदा*—पु० पहली बार ससुराल जानेवाली लड़कीके साथ दासीका जाना ।

लोकंदी†—स्त्री० पहली बार ससुराल जानेवाली लड़कीके साथ जानेवाली दासी ।

लोक—पु० (सं०) विश्वका एक विभाग, भुवन (साधारणतः स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—ये तीन लोक माने जाते हैं, पर विशेष विभागके अनुसार १४ माने जाते हैं—७ ऊपर, ७ नीचे, दे० 'सप्तपाताल', 'सप्तलोक'); संसार; पृथ्वी; मानवजाति, समाज; प्रजा; समूह; भूभाग, प्रांत; निवासस्थान; दिशा; सांसारिक व्यवहार; दृश्य; ७ या १४ की संख्या; यश । **—कंटक**—पु० दुष्ट व्यक्ति । वि० (पब्लिक न्यूसेंस) सर्वसाधारणको तंग करनेवाला, सतानेवाला, हानि पहुँचानेवाला । **—कथा**—स्त्री० जन-समाजमें प्रचलित कथा । **—कर्ता(र्तृ)**—पु० ब्रह्मा; विष्णु; महेश । **—कांत**—वि० सर्वप्रिय । **—कांता**—स्त्री० ऋद्धि नामक ओषधि । **—काम**—वि० विशेष लोकका इच्छुक । **—काम्या**—स्त्री० मानव-प्रेम । **—कार**—पु० शिव । **—कार्य**—पु० (पब्लिक अफेयर्स) लोक या सर्वसाधारणसे संबंध रखनेवाले कार्य । **—क्षित्**—वि० स्वर्गमें रहनेवाला । **—गति**—स्त्री० लोकाचार । **—गाथा**—स्त्री० परंपराप्राप्त गीतादि । **—गीत**—पु० साधारण जनतामें प्रचलित गीत । **—घोषण**—स्त्री० दे० 'नीति घोषण' । **—चक्षु(स्)**—पु० सूर्य । **—चार,—चारित**—पु० लोकाचार । **—जननी, माता(तृ)**—स्त्री० लक्ष्मी । **—जित्**—वि० लोकविजयी । पु० ऋषि; बुद्ध । **—ज्येष्ठ**—पु० बुद्ध । **—तंत्र**—पु० जनतंत्र । **—तंत्रिक**—वि० लोकतंत्र संबंधी । **—तंत्री (त्रिन्)**—वि० लोकतंत्रका समर्थक, प्रतिपादक । **—तंत्रीकरण**—पु० (डिमॉक्रैटिजेशन) किसी राज्य, शासनपद्धति आदिको लोकतंत्रका रूप देना, उसे लोकतांत्रिक सिद्धांतोंके अनुरूप बनाना । **—तत्त्व**—पु० मानवजातिका ज्ञान । **—तुषार**—पु० कपूर । **—त्रय**—पु०,**—त्रयी**—स्त्री० तीनों लोक—आकाश, पाताल और मर्त्यलोक । **—दंभक**—वि० दुनियाको ठगनेवाला । **—दूषण**—वि० लोगोंको क्षति पहुँचानेवाला । **—द्वय**—पु० स्वर्ग और पृथ्वी । **—द्वार**—पु० स्वर्गका द्वार । **—धर्म**—पु० जनसाधारणके भूतवादी विचार-विश्वास । **—धाता(तृ)**—पु० शिव । **—धारिणी**—स्त्री० पृथ्वी । **—धुनि***—स्त्री० दे० 'लोकध्वनि' । **—ध्वनि**—स्त्री० अफवाह, जनश्रुति । **—नाट्य**—पु० नाटयकलाकी जानकारीके बिना सामान्य रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत नौटंकी, रास, राम-लीला, आदि । **—नाथ**—पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; राजा; बुद्ध । **—नायक**—पु० लोकोंका नयन करनेवाला (सूर्य) । **—निर्माण-विभाग**—पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) सार्वजनिक भवन, सड़कें इत्यादि तैयार करनेवाला विभाग । **—नृत्य**—पु० (फोक डांस) सामान्य जनतामें प्रचलित नृत्य । **—नेता(तृ)**—पु० शिव । **प,—पाल**—पु० दिक्पाल; नरेश । **—पति**—पु० ब्रह्मा; विष्णु; नरेश । **—पथ**—पु०,**—पद्धति**—स्त्री० दुनियाका तरीका । **—पाल**—पु०—राजा; दिक्पाल । **—पालक**—पु० राजा । **—पालिनी**—स्त्री० दुर्गा । **—पितामह**—पु० ब्रह्मा । **—पीड़क**—पु० दे० 'लोककंटक' । **—प्रकाशन**—पु० सूर्य । **—प्रत्यय**—पु० वह जो संसारमें सर्वत्र प्रचलित हो (प्रथा आदि) । **—प्रदीप**—पु० बुद्ध । **—प्रवाद**—पु० सर्वसाधारणमें प्रचलित बात । **—प्रवाही(हिन्)**—वि० दुनियाके साथ बहनेवाला । **—प्रसिद्ध**—वि० विश्वविख्यात, सर्वज्ञात । **—प्रिय**—वि० जो बहुतसे लोगोंको प्रिय लगे, रुचे । **—बंधु,—बांधव**—पु० शिव; सूर्य । **—बाह्य**—वि० दुनियासे भिन्न; सनकी; समाजसे बहिष्कृत । **—भर्ता(र्तृ)**—पु० संसारका भरण-पोषण करनेवाला । **—भावन,—भावी(विन्)**—पु० लोककी भलाई करनेवाला; लोकरचना करनेवाला । **—मत**—पु० जनताकी राय । **—मर्यादा**—स्त्री० लोकप्रथा । **—महेश्वर**—पु० विष्णु । **—माता(तृ)**—स्त्री० लक्ष्मी; गौरी । **—मार्ग**—पु० लोकप्रचलित प्रथा । **—यात्रा**—स्त्री० लोकव्यापार; संसार में रहकर जीवन बिताना; आचरण, व्यवहार । **—रंजन**—पु० जनताको संतुष्ट कर उसका विश्वास प्राप्त करना । **—रक्ष**—पु० नरेश । **—रव**— पु० अफवाह, जनश्रुति । **—लीक**—स्त्री० (हिं०) लोकमर्यादा । **—लेख**—पु० साधारण पत्र । **—लोचन**—पु० सूर्य । **—वचन**—पु० अफवाह । **—वाद**—पु०,**—वार्ता**—स्त्री० अफवाह । **—वाहन**—पु० जनताका सामान ढोनेके लिए प्रयुक्त मोटर ट्रक; **—विकृष्ट**—वि० लोकनिंदित । **—विज्ञात**—वि० लोकप्रसिद्ध । **—विद्विष्ट**—वि० जिससे सब लोग घृणा करते हों । **—विरुद्ध**—वि० जनमतके विरुद्ध; सबसे भिन्न मत रखनेवाला । **—विश्रुत**—वि० जगद्विख्यात । **—विसर्ग**—पु० संसार, सृष्टिका अंत । **—विसर्गी(र्गिन्)**—वि० संसारकी रचना करनेवाला । **—वृत्त**—पु० लोकरीति । **—व्यवहार**—पु० लोकाचार । **—शासन**—पु० जनताके मतसे बननेवाला शासन । **शिक्षण-संचालक**—पु० (डायरेक्टर ऑफ पब्लिक एजुकेशन) सार्वजनिक शिक्षा-विभागका प्रधान अधिकारी । **—श्रुति**—स्त्री० लोकख्याति, अफवाह । **—संग्रह**—पु० लोककल्याण; लोगोंकी भलाई चाहना; मानवसंपर्कसे प्राप्त अनुभव; लोकोंका संग्रह, सारा विश्व । **—संग्राही(हिन्)**—वि० लोगोंको संतुष्ट करनेवाला । **—संपन्न**—वि० लौकिक बुद्धिसे युक्त । **—संव्यवहार**—पु० सारे संसारमें होनेवाला व्यापार या संपर्क; सांसारिक कार्य । **—सत्ता**—स्त्री० वह शासन-व्यवस्था जिसमें सत्ता जनताके हाथमें हो । **—सत्तात्मक**—वि० जनता द्वारा संचालित (शासन) । **—सभा**—स्त्री० (हाउस ऑफ पीपुल) लोकतंत्रवादी राज्योंमें विधान आदि बनानेवाली जनप्रतिनिधियोंकी सभा; भारतीय गणराज्यकी संसद्का निम्न सदन । **—सारंग**—पु० विष्णु । **—सिद्ध**—वि० लोक या समाज द्वारा स्वीकृत; प्रचलित । **—सुंदर**—वि० सर्वप्रशंसित । पु० बुद्ध । **—सेवक**—पु० सार्वजनिक काम करनेवाला । (पब्लिक सर्वेंट) जनताके सेवा-संबंधी कार्योंमें नियुक्त सरकारी कर्मचारी । **—सेवा**—स्त्री० (पब्लिक सर्विस) जनताके हितकी दृष्टिसे किया जानेवाला कार्य; राज्यकी या सरकारी नौकरी जिससे जनताकी सेवा या कष्टनिवारण हो । **—सेवा-आयोग**—पु० (पब्लिक सर्विस कमीशन) प्रशासनकार्य चलानेके लिए उच्च श्रेणीके लोक-सेवकोंका परीक्षादि द्वारा चुनाव करनेमें सहायता देनेवाला आयोग । **—स्वास्थ्य**—पु० (पब्लिक हेल्थ) जनताका स्वास्थ्य । **—हाँदी**†—स्त्री० एक तरहकी हल्दी । **—हार**—पु० संसारका नाश करनेवाला । **—हास्य**—वि० लोकनिंदित । **—हित**—पु० मानवमात्रका कल्याण; (पब्लिक गुड) सर्वसाधारणका हित या लाभ । वि० संसारका कल्याण करनेवाला ।

लोकटी*—स्त्री० लोमड़ी—'सिंहहिं कहा लोकटीको डर'—अष्ट० ।

लोकन—पु० (सं०) देखनेकी क्रिया ।

लोकना—स० क्रि० किसी चीजको गिरनेसे पहले ही हाथोंसे पकड़ लेना; किसी बातके बीचमें ही दखल देकर कुछ कहने लगना; रास्तेमें ही उड़ा लेना ।

लोकनी†—स्त्री० दे० 'लोकंदी' ।

लोकनीय—वि० (सं०) देखने योग्य; दृश्य ।

लोकरा†—पु० चिथड़ा ।

लोकल—वि० (अं०) स्थानीय, स्थानविशेषसे संबद्ध । **—बोर्ड**—पु० निर्वाचकों द्वारा चुनी हुई विशेषसमिति जो भूभागविशेषके सार्वजनिक कामों, सड़क, सफाई आदिका प्रबंध करती है ।

लोकसभा—स्त्री० दे० 'लोक' शब्द में ।

लोकांतर—पु० (सं०) परलोक (वह लोक जहाँ मरनेपर जीवको जाना पड़ता है) । **—गमन**—पु० परलोकगमन, स्वर्गवास ।

लोकांतरिक—वि० (सं०) लोकोंके बीच अवस्थित ।

लोकांतरित–वि० (सं०) परलोक गया हुआ, मृत।

लोकाकाश–पु० (सं०) अवकाश, आकाश; जीवों और तत्त्वोंका आश्रय, विश्व (जै०)।

लोकाचार–पु० (सं०) संसारका व्यवहार, चलन।

लोकाट–पु० एक वृक्ष या उसका फल जो बेरके बराबर तथा पकनेपर पीला और मीठा होता है।

लोकातिग–वि० (सं०) असाधारण।

लोकातिशय–वि० (सं०) असाधारण।

लोकादि–पु० (सं०) विश्वका आरंभ; सृष्टिकर्ता।

लोकाधिक–वि० (सं०) असाधारण।

लोकाधिप–पु० (सं०) लोकपाल; बुद्ध; नरेश।

लोकाना–स० क्रि० कोई चीज उछालना; किसीको कोई चीज उछालकर देना (जैसे गेंद आदि)।

लोकानुकंपक–वि० (सं०) लोगोंपर दया करनेवाला।

लोकानुग्रह–पु० (सं०) लोगोंका कल्याण, जनहित।

लोकापवाद–पु० (सं०) लोकनिंदा, बदनामी।

लोकाभिलषित–वि० (सं०) संसार द्वारा इच्छित। पु० बुद्ध।

लोकाभ्युदय–पु० (सं०) संसारकी उन्नति।

लोकायत–पु० (सं०) इसी लोकपर आस्था, विश्वास रखनेवाला व्यक्ति; चार्वाकका अनुयायी; चार्वाक-दर्शन (परोक्ष, परलोकवादका खंडन करनेवाला नास्तिक मत); दुर्मिल छंद।

लोकायतन, लोकायतिक–पु० (सं०) नास्तिक; चार्वाक; चार्वाकका अनुयायी।

लोकायन–पु० (सं०) नारायण।

लोकालोक–पु० (सं०) सातों समुद्रोंको परिवेष्टित करनेवाली पौराणिक पर्वतश्रेणी, चक्रवाल।

लोकित–वि० (सं०) देखा हुआ।

लोकी(किन्)–वि० (सं०) जो लोकका स्वामी हो; जो लोकमें निवास करे।

लोकेश–पु० (सं०) लोकका स्वामी; बुद्ध; पारा।

लोकेश्वर–पु० (सं०) लोकका स्वामी; बुद्ध।

लोकैषणा–स्त्री० (सं०) उत्कर्ष, सम्मान आदिकी कामना; सुखकी अभिलाषा।

लोकोक्ति–स्त्री० (सं०) कहावत; एक अलंकार (इसमें लोकोक्तिका प्रयोग किया जाता है)।

लोकोत्तर–वि० (सं०) लोकमें प्राप्त पदार्थोंसे उत्तम; असाधारण, विलक्षण।

लोकोपकार–पु० (सं०) सार्वजनिक लाभका काम।

लोकोपयोगी सेवा–स्त्री० (पब्लिक यूटिलिटी सर्विस) वह सेवा, कार्य या व्यवस्था जो जनताके लिए विशेष उपयोगी या कामकी हो (जैसे नगरकी जलकल-व्यवस्था, बिजली, सफाई आदिका काम)।

लोखड़ी*–स्त्री० लोमड़ी।

लोखर–पु० नाई, बढ़ई आदिके लोहेके औजार; किसबत।

लोखरिया†–स्त्री० लोखड़ी, लोमड़ी (बुंदेल०)।

लोग–पु० मनुष्य (बहु०में प्रयुक्त)। **–बाग**–पु० सर्वसाधारण, जनता।

लोगाई*–स्त्री० दे० 'लुगाई'।

लोच–स्त्री० लचीलापन, लचक; (फ्लेक्सिबिलिटी) रचनामें खास प्रकारकी नमनीयता; कोमलता, मृदुता; अच्छा ढंग; * रुचि; अभिलाषा; लुंचन, नोचना, उखाड़ना। पु० (सं०) आँसू। **–मर्कट,–मस्तक**–पु० रुद्रजटा नामक ओषधि। **–मालक**–पु० आधी रातके पहलेका स्वप्न।

लोचक–वि० (सं०) मूर्ख; जिसका आहार दूध हो। पु० मांसपिंड; आँखका तारा; काजल; निर्बुद्धि व्यक्ति; स्त्रियोंके ललाट या कानका एक गहना; नीला कपड़ा; कदली, केला; केंचुली; प्रत्यंचा; झुर्रियोंवाली त्वचा या ललाट।

लोचन–वि० (सं०) चमकानेवाला। पु० आँख; देखनेकी क्रिया। **–गोचर**–पु० दे० 'लोचनपथ'। वि० दृश्य। **–पथ,–मार्ग**–पु० दृष्टिपथ, दृष्टिके अंदर पड़नेवाला क्षेत्र। **–परुष**–वि० क्रोधपूर्ण दृष्टिसे देखनेवाला। **–पात**–पु० दृष्टिपात, नजर डालना। **–हिता**–स्त्री० तुत्थांजन।

लोचनांचल–पु० (सं०) आँखका कोना।

लोचना†–स० क्रि० रुचि, हविस पैदा करना; इच्छा करना; * प्रकाशित करना। अ० क्रि० चाहना, ललचना; विराजना। † पु० कन्याके संतानवती होनेपर पितृगृहसे भेजा जानेवाला मांगलिक उपहार जिसमें सोंठ, गुड़ आदि चीजें रहती हैं। स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी।

लोचनापात–पु० (सं०) दृष्टिपात।

लोचनामय–पु० (सं०) आँखका रोग।

लोचनी–स्त्री० (सं०) महाश्रावणिका नामक ओषधि।

लोचारक–पु० (सं०) एक नरक (पु०)।

लोचून–पु० लोहेका चूरा; लोहेके मैलका चूर्ण।

लोट–स्त्री० लुढ़कना, लोटनेकी क्रिया। पु० घाट; * त्रिवली; † नोट, कागजी मुद्रा। **–पटा**–*पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें वर-वधूके पीढ़े बदले जाते हैं; उलट-फेर। **–पोट**–स्त्री० आराम करना, लेटना। वि० हँसीके प्रवेगसे अधीर। मु० **–पोट होना** हँसीका दृश्य या बात देख-सुनकर हँसते-हँसते गिर पड़ना। **–मारना**–लेटना; किसीके प्रेममें अधीर होना। **–लगाना**–लुढ़कना; लेट जाना; किसी चीजपर आशिक होना; जिद करना। **–हो जाना,–होना**–रीझना; व्याकुल होना।

लोटन–पु० भूमिपर लुढ़कनेवाला एक कबूतर; गहरी जोताई करनेका एक हल; रास्तेपरका कंकड़। **–सज्जी**–स्त्री० एक तरहकी सज्जी।

लोटना–अ० क्रि० नीचे-ऊपर होते हुए जाना, लुढ़कना; करवटें बदलना, छटपटाना, आराम करना, लेटना। **–पोटना**–अ० क्रि० लेटना; सोना। मु० **लोट जाना**– लुढ़कना; संज्ञाहीन होना या मर जाना। **लोटता फिरना**–तड़पता फिरना, व्याकुल होना। **लोट-पोटकर उठ खड़ा होना**–बीमार होकर अच्छा हो जाना। **लोटा-लोटा फिरना**–दर्द आदिसे तड़पना।

लोटा–पु० जल रखनेका धातुका एक छोटा पात्र। स्त्री० (सं०) एक साग, अमलोनी।

लोटिका–स्त्री० (सं०) एक साग, अमलोनी।

लोटिया–स्त्री० छोटा लोटा।

लोटी–स्त्री० छोटा लोटा।

लोठ–पु० (सं०) जमीनपर लोटना, लुढ़कना। **–भू**–स्त्री० घोड़ेके लोटनेका स्थान।

लोठन–पु० (सं०) सिर हिलानेकी क्रिया।

लोडन–पु० (सं०) हिलाने-डुलाने, क्षुब्ध या अशांत करनेकी क्रिया, मंथन।

लोड़ना*–स० क्रि० चाहना, जरूरत महसूस करना।

लोडित–वि० (सं०) मथित, क्षुब्ध किया हुआ।

लोढ़कना†–अ० क्रि० दे० 'लुढ़कना'।

लोढ़ना–स० क्रि० ओटना; साफ करना; * (फूल) तोड़ना– 'वह माली यह फूल किते दिन लोढ़त आयो'–दीनद०। * अ० क्रि० लोटना, जमीनपर घसिटना।

लोढ़ा–पु० सिलपर पीसनेके लिए बना हुआ पत्थरका गोल, लंबा टुकड़ा, बट्टा। **–ढाल**–वि० चौपट (करना)। मु० **–डालना** –सम करना।

लोढ़िया–स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लोण–पु० दे० 'लोन'; (सं०) लोनीका साग।

लोणा, लोणाम्ला–स्त्री० (सं०) क्षुद्राम्लिका।

लोणार–पु० एक तरहका क्षार।

लोणिका–स्त्री० (सं०) दे० 'लोणाम्ला'।

लोणी–स्त्री० अमलोनी।

लोत–पु० (सं०) आँसू; चिह्न; नमक; लूटका माल।

लोत्र–पु० (सं०) चोरी या लूटका धन; आँसू।

लोथ–स्त्री० शव, लाश। **–पोथ**–वि० लथपथ, बहुत थका हुआ। मु० **–गिरना**–निहत होना, मारा जाना। **–डालना**–हत्या करना, मार डालना।

लोथड़ा–पु० मांसका वड़ा टुकड़ा ।

लोथरा*–पु० दे० 'लोथड़ा' ।

लोथारी†–स्त्री० कम पानीमेंसे नावको किनारे खींच लाना । **–लंगर**–पु० एक तरहका छोटा लंगर ।

लोथि*–स्त्री० दे० 'लोथ' ।

लोद–पु० दे० 'लोध' ।

लोदी, लोधी–पु० पठानोंकी एक जाति ।

लोध–पु० एक वृक्ष जिसके फूल लाल या सफेद होते हैं ।

लोधरा–पु० जापानसे आनेवाला एक तरहका ताँबा ।

लोध्र–पु० (सं०) लोधका पेड़ । **–तिलक**–पु० उपमा अलंकारका एक भेद । **–रेणु**–पु० लोध्र वृक्षके फूलकी वुकनी जिसका प्रयोग अंगरागकी तरह किया जाता था ।

लोध्रक–पु० (सं०) लोध वृक्ष ।

लोन*–पु० लवण, नमक; सुंदरता, लावण्य । **–हरामी***–वि० नमकहराम, कृतघ्न । (मुहावरोंके लिए 'नमक' शब्द देखिये ।)

लोना–वि० नमकीन; सलोना, सुंदर । पु० क्षार, नोना; एक साग, अमलोनी । * स० क्रि० लुनना, काटना । स्त्री० एक जादूगरनी ।

लोनाई*–स्त्री० सुंदरता ।

लोनार†–पु० नमक वनने, मिलनेका स्थान ।

लोनिका–स्त्री० लोनी नामका साग ।

लोनिया–पु० नमक बनाने और बेचनेका व्यवसाय करनेवाली एक जाति, नोनियाँ । स्त्री० लोनी साग ।

लोनी–स्त्री० एक साग, अमलोनी; चनेकी पत्तियोंपर मिलनेवाला खार, क्षार; शोरा या नमक निकालनेकी मिट्टी ; लोना; * सुंदर नायिका । * पु० नवनीत ।

लोप–पु० (सं०) नाश; उपेक्षा; भंग; लूट; अभाव; छिपना; शब्दमेंके किसी अक्षरका लुप्त होना । **–विभ्रम**–पु० (एरर्स एंड ओमिशंस) (हिसाव, ब्यौरे आदिमें हुई) भूल और छूट, भूल-चूक ।

लोपक–वि० (सं०) बाधा डालनेवाला; नाश करनेवाला । पु० भंग ।

लोपन–पु० (सं०) भंग करना; लुप्त करना; नष्ट करना; मुख ।

लोपना*–स० क्रि० मिटाना, लुप्त करना; भंग करना; छिपाना । अ० क्रि० मिला, लुप्त होना; छिपना ।

लोपांजन–पु० (सं०) एक अंजन जिसे लगानेवाला अदृश्य हो जाता है ।

लोपा, लोपामुद्रा–स्त्री० (सं०) विदर्भनरेशकी पालित पुत्री और अगस्त्यकी पत्नी; अगस्त्यमंडलके पास उदित होनेवाला एक तारा ।

लोपाक–पु० (सं०) एक तरहका गीदड़ ।

लोपापक–पु० (सं०) दे० 'लोपाक' ।

लोपापिका–स्त्री० (सं०) शृगाली ।

लोपायिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया ।

लोपाश, लोपाशक–पु० (सं०) गीदड़, जंवुक, लोमड़ी ।

लोपिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मिठाई ।

लोपी(पिन्)–वि० (सं०) क्षति पहुँचानेवाला; भंग करनेवाला; जो लुप्त हो सके, लोप करनेवाला ।

लोप्ता(प्तृ)–वि० (सं०) भंग करनेवाला ।

लोप्त्र–पु० (सं०) चोरी या लूटका माल ।

लोबत–स्त्री० (अ०) गुड़िया; पुतली; खिलौना; चित्र । **–बाज़**–पु० कठपुतलियोंका तमाशा करनेवाला ।

लोबान–पु० (अ०) एक वृक्षका निर्यास जिसे सुगंधके लिए आगपर जलाते और दवाके भी काममें लाते हैं ।

लोबानी–वि० जिसमें लोबान हो या जिससे लोबान निकले; लोबान जैसा, सफेद । **–ऊद**–पु० एक तरहका सफेद ऊद ।

लोबिया–पु० बोड़ेका एक भेद जिसकी तरकारी बनाते और बीजोंसे दाल और दालमोठ तैयार करते हैं । **–कंजई**–पु० गहरा हरा रंग ।

लोभ–पु० (सं०) दूसरेका धन लेनेकी इच्छा, लालच; लालसा, आकांक्षा; अधीरता; कंजूसी; त्यागमें बाधक होनेवाला कर्म (जै०) । **–मोहित**–वि० लोभसे विचलित । **–विजयी(यिन्)**–वि० धन लेकर युद्ध न करनेवाला (राजा–कौ०) । **–विरह**–पु० लोभका अभाव । **–शून्य**–वि० लोभरहित ।

लोभन–पु० (सं०) लालच; लालसा; सुवर्ण । वि० लुभानेवाला ।

लोभना*–अ० क्रि० आसक्त, लुब्ध होना । स० क्रि० लुभाना, मुग्ध करना ।

लोभनीय–वि० (सं०) लुभानेवाला, मनोहर, आकर्षक ।

लोभाना*–स० क्रि० मोहना, मुग्ध करना । अ० क्रि० मोहित, मुग्ध होना ।

लोभार*–वि० लुभाने, मुग्ध करनेवाला ।

लोभित–वि० (सं०) मुग्ध, लुब्ध ।

लोभी(भिन्)–वि० (सं०) किसी वस्तुका लोभ रखनेवाला, लालची; लुब्ध ।

लोभ्य–वि० (सं०) 'लोभनीय' ।

लोम(न्)–पु० (सं०) शरीरपरके बाल, रोम; पूँछ; * लोमड़ी । **–करणी**–स्त्री० एक पौधा, जटामासी । **–कर्कटी**–स्त्री० अजमोदा । **–कर्ण**–पु० खरगोश । **–कीट**–पु० जूँ । **–कूप,–गर्त,–रंध्र,–विवर**–पु० रोएँकी जड़मेंका छेद । **–घ्न**–पु० बालोंको नष्ट करनेवाला रोग, गंजापन । **–द्वीप**–पु० जूँ जैसा एक कीट । **–पाद**–पु० अंगके राजा (यह अयोध्यानरेश दशरथके मित्र थे) । **–पुर**–पु० चंपा नगरी, वर्तमान भागलपुर । **–फल**–पु० भव्य । **–यूक**–पु० जूँ । **–राजि**–स्त्री० लामावली । **–लताधार**–पु० तोंद । **–वाहन**–वि० बाल काटने लायक तेज । **–वाही(हिन्)**–वि० वालोंवाला या बाल काटनेके लायक तेज । **–विष**–वि० जिसके वालमें विष हो । पु० व्याघ्रादि । **–शातन**–पु० हरताल । **–हर्ष**–पु० रोमांच । **–हर्षक**–वि० रोमांचकारी । **–हर्षण**–पु० व्यासका एक शिष्य, उग्रश्रवाका पुत्र, सूत; रोमांच । वि० अत्यधिक भय, हर्ष आदि द्वारा रोएँ खड़े कर देनेवाला (दृश्य, वृत्त आदि) । **–हारी(रिन्)**–वि० बाल काट देनेवाला । **–हृत**–पु० हरताल ।

लोमकी(किन्)–पु० (सं०) पक्षी ।

लोमटक–पु० (सं०) लोमड़ी ।

लोमड़ी–स्त्री० गीदड़की जातिका एक जानवर ।

लोमरी†–स्त्री० दे० 'लोमड़ी' ।

लोमश–पु० (सं०) एक ऋषि (ये अमर माने जाते हैं–पु०); मेष, भेड़ा; एक पौधा । वि० घने रोओंसे युक्त; जिसपर घास जमी हो । **–कर्ण**–पु० माँदमें रहनेवाला एक जानवर । **–कांडा**–स्त्री० ककड़ी । **–पत्रिका**–स्त्री० एक तरहका कुम्हड़ा । **–पर्णी,–पर्णिनी**–स्त्री० मापपर्णी ओषधि । **–पुष्पक**–पु० शिरीष, सिरिस । **–मार्जार**–पु० कोमल वालोंवाला एक बिलार जिसके शरीरसे सुगंध निकलती है, गंधबिलाव ।

लोमशा–स्त्री० (सं०) काकजंघा; मांसी; वच; शुकशिंबी; महामेदा; कसीस; लोमड़ी; शृगाली; एक तरहकी बदरी; दुर्गाकी एक अनुचरी; वेदमंत्र रचनेवाली एक स्त्री ।

लोमशी–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

लोमश्य–पु० (सं०) झबरीलापन ।

लोमस–पु० दे० 'लोमश' ।

लोमांच–पु० (सं०) दे० 'रोमांच' ।

लोमा–स्त्री० (सं०) बच ।

लोमाद–पु० (सं०) जूँकी जातिका एक कीट ।

लोमालि, लोमाली, लोमावली–स्त्री० (सं०) सीनेसे नाभितक उगे हुए घने बाल ।

लोमालिका–स्त्री० (सं०) लोमड़ी ।

लोमाश–पु० (सं०) गीदड़, शृगाल; लोमड़ी ।

लोमाशिका–स्त्री० (सं०) शृगाली; लोमड़ी ।

लोय*–पु० लोक, लोग; आँख । स्त्री० ज्वाला, लौ–'···करनी बिसकी लोय'–साखी० । अ० दे० 'लौ' ।

लोयन*–पु० लोचन, आँख; लावण्य ।

लोर*–वि० लोल, चंचल; उत्कंठित, उत्सुक । पु० कानकी लोलकी, ललरी; कानका कुंडल; लटकन, झुमका; आँसू–'चारु आनन लोरधारा बरनि कापै जाय'–सूर ।

लोरना*–अ० क्रि० चंचल होना; झुकना; लपकना, ललकना;

लोटना; लिपटना; तैरना।

लोरवा†–पु० आँसू, लोर।

लोरिस–पु० प्रज्वलित नेत्रोंवाला एक अरण्य-निवासी जीव जो टिड्डों, छिपकलियों तरु-मण्डूकों आदिपर जीवित रहता है। अफ्रीकी आदिवासी इसे 'झाड़ी शिशु' कहते हैं।

लोरी–स्त्री० बच्चोंको सुलाते समय गानेका गीत; तोतेकी एक जाति।

लोल–वि० (सं०) चंचल; हिलता-डोलता; क्षुब्ध, अशांत; क्षणिक, अस्थिर; बदलनेवाला, परिणामी, परिवर्तनशील; उत्सुक; लोभी। पु० लिंग। **–कर्ण**–वि० सबकी बात सुननेवाला। **–घट**–पु० वायु। **–चक्षु(स्),–नयन,–नेत्र,– लोचन**–वि० जिसकी आँखें चारों तरफ दौड़ती हों। **–जिह्व**–वि० लालची। पु० सर्प। **–दिनेश**–पु० लोलार्क।

लोलक–पु० नथ आदिका लटकन; घंटेका लटकन; लोलकी।

लोलकी–स्त्री० कानका निचला भाग, ललरी।

लोलना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना; चंचल होना। स० क्रि० हिलाना।

लोला–स्त्री० (सं०) जीभ; लक्ष्मी; चंचला स्त्री; एक वर्णवृत्त; बिजली; एक विशेष प्रकारकी नाव। † पु० बच्चोंका एक खिलौना।

लोलाक्षिका, लोलाक्षी–स्त्री० (सं०) चंचल नेत्रोंवाली स्त्री।

लोलार्क–पु० (सं०) एक सूर्य। **–कुंड**–पु० काशीका एक तीर्थ।

लोलिका–स्त्री० (सं०) एक शाक, चांगेरी।

लोलित–वि० (सं०) हिला हुआ, क्षुब्ध।

लोलिनी–स्त्री० (सं०) चंचला स्त्री।

लोलुप–वि० (सं०) लालची, लोभी; कोई वस्तु पानेके लिए अधीर, उत्सुक; चटोर; नाशक।

लोलुपता–स्त्री०, **लोलुपत्व**–पु० (सं०) लालच, लालसा।

लोलुषा–स्त्री० (सं०) अत्यधिक इच्छा, लालसा।

लोलुभ–वि० (सं०) दे० 'लोलुप'।

लोलुव–वि० (सं०) बार-बार काटनेवाला।

लोलेक्षण–वि० (सं०) दे० 'लोलचक्षु'।

लोवा–स्त्री० लोमड़ी। पु० लवा नामका पक्षी।

लोशन–पु० (अं०) घाव आदि धोनेके लिए पानीमें दवा मिलाकर तैयार किया हुआ द्रव।

लोष्ट–पु० (सं०) ढेला; चिह्नका काम देनेवाली कोई वस्तु; लोहेका मैल, मुरचा। **–घात**–पु० ढेलेसे आघात करना। **–घ्न,–भंजन,–भेदन**–पु० ढेले फोड़नेका साधन, पटेला। **–मर्दी-(र्दिन्)**–वि० ढेला तोड़नेवाला।

लोष्टक, लोष्टु–पु० (सं०) दे० 'लोष्ट'।

लोहँड़ा*–पु० लोहेका पात्र, तसला आदि।

लोह–वि० (सं०) ताँबेके रंगका, लाल; लोहेका बना। पु० लोहा; ताँबा, सोना आदि कोई भी धातु; लाल बकरा; रक्त; हथियार; मछली फँसानेका काँटा; अगर। **–कंटक**–पु० मदन वृक्ष। **–कटक**–पु० लोहेकी जंजीर। **–कांत**–पु० चुंबक। **–कार,–कारक**–पु० लोहार। **–कार्षापण**–पु० एक सिक्का या बाट। **–किट्ट**–पु० लोहेका मैल। **–गंध**–पु० एक जाति। **–घातक**–पु० लोहार। **–चारक,–दारक**–पु० एक नरक। **–चालिका**–स्त्री० एक तरहका बख्तर (कौ०)। **–चुम्बकीय**–वि० (फेरोमैग्नेटिक) ऐसे पदार्थ (लोहा, कोबाल्ट तथा निकल) जो बहुत अधिक चुंबकीय गुण प्रदर्शित करते हैं। **–चून**–पु० (हिं०) दे० 'लोहाचूर्ण'। **–चूर्ण**–पु० लोहेका मैल, मोरचा; लोहेका बुरादा। **–ज**–पु० लोहकिट्ट; काँसा। **–जाल,–वर्म(न्)**–पु० झिलम। **–जित्**–पु० हीरा। **–द्रावी-(विन्)**–पु० सुहाग; अम्लवेत। **–नाल**–पु० लोहेका बाण, नाराच। **–पट्टिका**–स्त्री० लोहेकी तख्ती। **–पाश**–पु० जंजीर। **–पृष्ठ**–पु० एक पक्षी, कंक। **–प्रतिमा**–स्त्री० निहाई; लोहेकी मूर्ति। **–बंदा**–पु० (हिं०) दे० 'लोहाँगी'। **–बद्ध**–वि० लोहा जड़ा हुआ। **–मल**–पु० मोरचा। **–मारक**–पु० एक साग। **–मुक्तिका**–स्त्री० लाल मोती। **–रज(स्)**–स्त्री० दे० 'लोहमल'। **–राजक**–पु० चाँदी। **–लंगर**–पु० (हिं०) जहाजका लंगर; कोई बहुत भारी चीज। **–लिंग**–पु० रक्तसे भरा हुआ फोड़ा। **–शंकु**–पु० एक नरक; बरछी। **–शृंखल**–पु० हाथी बाँधनेकी जंजीर। **–संकर**–पु० कई धातुओंका मिश्रण; इस्पात। **–संश्लेषक**–पु० सुहागा। **–सार**–पु० फौलाद; फौलादकी जंजीर।

लोहनी†–स्त्री० नावका पानी उलीचनेका लोहेका बना तसला।

लोहबान–पु० दे० 'लोबान'।

लोहल–वि० (सं०) लोहेसे बना हुआ; अस्पष्ट बोलता हुआ। पु० शृंखलाका मुख्य छल्ला।

लोहांगारक–पु० (सं०) एक नरक।

लोहाँगी–स्त्री० वह लाठी जिसमें किसी सिरेपर लोहा लगा हो।

लोहा–पु० एक प्रसिद्ध धातु; सोना इत्यादि कोई धातु (दे० लोहोत्तम); हथियार; लोहनिर्मित वस्तु; युद्ध–'दुवौ अनी सनमुख भई लोहा भयेउ असूझ'–प०; धाक; लाल बैल; धोबीकी इस्तरी। वि० लाल; बहुत बड़ा, कठोर, दृढ़। **मु० –करना,–देना**–इस्तरी करना, इस्तरी गरम करके कपड़ेकी शिकन दूर करना। **–गहना***–युद्ध करना; युद्धके लिए तैयार होना। **–बजना**–युद्ध, संघर्ष होना। **–बरसना**–घमासान युद्ध चलना। **(किसीका)–मानना**–(किसीका) प्रभाव, प्रभुत्व मानना; हार मानना। **(किसीसे)–लेना**–लड़ना, साहसपूर्वक सामना करना। **–(हे)का दिल**–निष्ठुर दिल। **–का पानी**–तलवार आदिपर चढ़ाया जानेवाला पानी। **–की छाती**–सख्त दिल। **– के चने चबाना**–बहुत कठिन कार्य करना। **–ठंढा होना**–उमंगका कम हो जाना।

लोहाख्य–पु० (सं०) अगुरु।

लोहाज–पु० (सं०) लाल बकरा।

लोहाना–अ० क्रि० लोहेके पात्रमें रहनेके कारण किसी वस्तुमें उसका स्वाद या रंग आना।

लोहाभिहार–पु० (सं०) नीराजन-विधि जिसमें युद्धयात्राके लिए शस्त्रोंकी सफाई होती है।

लोहामिष–पु० (सं०) लाल बकरेका मांस।

लोहायस–वि० (सं०) ताँबेका बना हुआ।

लोहार–पु० लोहेका काम करनेवाली एक उपजाति। **–ख़ाना**–पु० लोहारके काम करनेका स्थान। **–की भट्ठी**–वह भट्ठी जिसमें लोहार लोहा गरम करता या पिघलाता है। **–की स्याही**–कसीस। **मु० –ख़ानेमें सेवइयाँ बेचना**–बेवकूफीका काम करना।

लोहारी–स्त्री० लोहारका काम या व्यवसाय।

लोहि–पु० (सं०) एक तरहका सुहागा।

लोहिका–स्त्री० (सं०) लोहेका तसला।

लोहित–वि० (सं०) लाल; ताँबेका बना हुआ। पु० लाल रंग; मंगल ग्रह; सर्प; एक हिरन; एक धान; ब्रह्मपुत्र नद; ताँबा; रक्त; केसर; युद्ध; रक्त चंदन; रोहित मत्स्य; एक समुद्र; एक झील; पलकका एक रोग; एक रत्न, लाल; लाल वस्तु। **–क्षयक**–वि० रक्ताभाव रोगसे ग्रस्त। **–ग्रीव**–पु० अग्नि। **–चंदन**–पु० केसर। **–चूल**–वि० लाल शिखावाला। **–नयन**–वि० जिसकी आँखें (क्रोधसे) लाल (हो गयी) हों। **– पादक**–वि० जिसके तलवे अभी लाल हों (बच्चा)। **–पुष्पक**–पु० अनार। **–मुक्ति**–स्त्री० एक कीमती पत्थर। **–मृत्तिका**–स्त्री० गेरू। **–राग**–पु० लाल रंग। **–वासा(सस्)**–वि० जिसके वस्त्र लाल हों या रक्तसे रँगे हों। **–शतपत्र**–पु० लाल कमल।

लोहितक–पु० (सं०) लाल नामक रत्न; मंगल ग्रह; ताँबा; काँसा; एक धान।

लोहितांग–पु० (सं०) मंगल ग्रह; कांपिल्ल वृक्ष।

लोहिताक्ष–पु० (सं०) एक तरहका साँप; कोयल; विष्णु; स्कंदका एक अनुचर; लाल पासा; काँख; जाँघ।

लोहिताक्षक–पु० (सं०) एक साँप।

लोहिताधिप–पु० (सं०) मंगल ग्रह।

लोहितानन–वि० (सं०) लाल मुँहवाला। पु० नेवला।

लोहिताय(स्)–पु० (सं०) ताँबा।

लोहितायस–वि० (सं०) लाल धातुसे निर्मित। पु० ताँबा।

लोहिताश्व–पु० (सं०) अग्नि; शिव।

लोहितिमा (मन्)–स्त्री० (सं०) लालिमा ।

लोहितीक–पु० (सं०) एक बाट या सिक्का ।

लोहितेक्षण–त्रि० (सं०) लाल आँखोंवाला ।

लोहितोद–पु० (सं०) एक नरक । वि० लाल पानीवाला ।

लोहित्य–पु० (सं०) ब्रह्मपुत्र नद; एक समुद्र; एक तरहका धान ।

लोहित्या–स्त्री० (सं०) एक नदी; एक अप्सरा ।

लोहिनिका–स्त्री० (सं०) एक धमनी; एक पौधा ।

लोहिनी–स्त्री० (सं०) लाल वर्णकी स्त्री ।

लोहिनीका–स्त्री० (सं०) लाल कांति ।

लोहिया–पु० लोहेका कारबार या व्यापार करनेवाला; मारवाड़ी बनियोंकी एक जाति; लाल बैल; लोहेकी गोली । वि० लोहेका; लाल रंगका (जानवर आदि) ।

लोही–स्त्री० प्रत्यूषकी लाली–'होत भोर लोही लागत कुसके जनम भये'–ग्रामगीत; लोई; * चुगली । मु० **–फटना**–पौ फटना ।

लोहू–पु० रक्त, लहू ।

लोहोत्तम–पु० (सं०) सोना ।

लोह्य–पु० (सं०) पीतल ।

लौं*–अ० तक, पर्यंत; समान, बराबर ।

लौंकना*–अ० क्रि० चमकना, रह रहकर तीव्र पीड़ाका अनुभव होना; चकाचौंध होना; सूझना, दिखाई देना ।

लौंग–स्त्री० एक प्रकारका वृक्ष या उसकी कली; नाक, कानका एक आभूषण । **–चिड़ा**–पु० बेसनके मेलसे बनाया जानेवाला एक तरहका कबाब । **–मुश्क**–पु० एक तरहका फूल । **–लता**–स्त्री० एक बँगला मिठाई ।

लौंगरा–पु० बरसातमें उगनेवाली एक घास ।

लौंगिया मिर्च–स्त्री० एक तरहकी छोटी मिर्च जो बहुत कड़वी होती है ।

लौंडा–पु० छोकरा, लड़का; नमकीन, सुंदर लड़का । वि० नादान । **–पन**–पु० लौंडा होना; लड़कपन; छिछोरपन । **–(डे)बाज़**–वि०, पु० बालकोंसे प्रेम और अप्राकृतिक संबंध करनेवाला । वि०, स्त्री० किशोरवयके बालकोंसे अनुचित संबंध रखनेवाली प्रौढ़ा (स्त्री) । **–बाज़ी**–स्त्री० लौंडेबाज होना, लौंडोंसे अनुचित संबंध रखना ।

लौंडा†–पु० दे० 'लौड़ा' ।

लौंडिया–स्त्री० लड़की ।

लौंड़ी–स्त्री० दासी, टहलनी, मजदूरनी; लौंडिया ।

लौंद–पु० मलमास ।

लौंदरा†–पु० पहली वर्षा ।

लौंदा–पु० दे० 'लोंदा' ।

लौ–स्त्री० लपट, ज्वाला; दीपशिखा; लोलकी; चाह, लाग; धुन; आशा, कामना ।

लौआ†–पु० लाबु, कद्दू, लौकी ।

लौकना†–अ० क्रि० देख पड़ना, दिखाई देना ।

लौकांतिक–पु० (सं०) पाँचवें स्वर्ग, ब्रह्मलोकमें वास करनेवाले जीव (जै०) ।

लौका†–पु० कद्दू ।

लौकायतिक–पु० (सं०) चार्वाकका अनुयायी, नास्तिक ।

लौकिक–वि० (सं०) लोकका, सांसारिक; व्यवहार-संबंधी, व्यावहारिक; सामान्य । पु० सांसारिक व्यवहार, चलन; सात मात्राओंके छंद । **–राज्य**–पु० धर्मनिरपेक्ष राज्य । **–विवाह**–पु० (सिविल मैरेज) कानून या विधिके अनुसार विवाह जो धर्मके अनुसार विवाहसे भिन्न है ।

लौकिकाग्नि–स्त्री० (सं०) वह अग्नि जिसका संस्कार न हुआ हो, सामान्य अग्नि ।

लौकी†–स्त्री० लौआ, कद्दू; भबकेमें लगाकर शराब चुआनेकी नली ।

लौक्य–वि० (सं०) जो सारे संसारमें फैला हो, सामान्य ।

लौगाक्षि–पु० (सं०) धर्मशास्त्रके एक प्राचीन आचार्य ।

लौछियाना†–अ० क्रि० रुकावटके रहते हुए भी किसी चीजके पीछे पड़ जाना 'बिल्ली दूधके पीछे लौछिया गयी है, पीकर ही शान्त होगी ।'

लौज़–स्त्री० (अ०) बादाम; बादाम मिलाकर बनायी हुई एक तरहकी बरफी ।

लौज़ात–स्त्री० (अ०) दे० 'लौज़ियात' । **–की गोट**–समोसेकी गोट ।

लौज़ियात-स्त्री० (अ०) लौज़का बहु०; बादामका हलवा ।

लौज़ीना–पु० बादामका हलवा; एक मिठाई जिसमें बादाम-पिस्ता पीसकर डालते हैं ।

लौजोरा†–पु० धातु गलानेका काम करनेवाला ।

लौट–स्त्री० लौटना, घुमाव । **–पटा**–पु० दे० 'लोटपटा'; पटाफेर । **–पौट**–स्त्री० दो रुखी छपाई; उलटने-पलटनेका काम; दे० 'लोटपोट' । **–फेर**–पु० भारी परिवर्तन, उलट-फेर ।

लौटना–अ० क्रि० वापस आना, फिरना; पीछे मुँह फेरना; मुकर जाना । स० क्रि० उलटना, पलटना, इधरसे उधर करना ।

लौटान–स्त्री० लौटनेकी क्रिया ।

लौटाना–स० क्रि० वापस करना; फेरना, बदलना; उलटे पैर वापस करना; उलट-पुलट करना ।

लौटानी–अ० लौटती बार ।

लौड़ा–पु० पुरुषकी जननेंद्रिय ।

लौद, लौदरा†–पु० छाजनके काम आनेवाली अरहरकी नरम टहनी ।

लौन*–पु० लवण, नमक ।

लौनहार†–पु० फसल काटनेवाला ।

लौना†–पु० जानवरोंका अगला और पिछला पैर साथ बाँधनेकी रस्सी; फसलकी कटाई; ईंधन, जलावन । * वि० सुंदर ।

लौनी–स्त्री० फसलकी कटाई; अँकवारमें आनेवाला कटा हुआ डंठल । * पु० नवनीत, मक्खन ।

लौरी*–स्त्री० बछिया–'सो सुनि राधिका काँपि गई डरि दौरि कै लौरिहि-सी लपटानी'–सुधानिधि ।

लौल्य–पु० (सं०) चंचलता, अस्थिरता; लोभ; लालसा ।

लौस–पु० (फा०) लिप्त होना; मिलावट; धब्बा; (दे० 'बेलौस') ।

लौह–पु० (सं०) लोहा; शस्त्रास्त्र, हथियार । वि० लोहे या ताँबेका बना हुआ; लाल; लाल बकरेसे संबंध रखनेवाला । **–कार**–पु० लोहार । **–चारक**–पु० एक नरक । **–ज**–पु० मोरचा । **–पुरुष**–पु० दृढ़ निश्चयवाला व्यक्ति जो कठिनाइयों, बाधाओं, या किसीकी धमकियोंसे विचलित न हो । **–बंध**–पु० लोहेकी जंजीर; हथकड़ी । **–भांड**–पु० लोहेका पात्र । **–भू**–स्त्री० लोहेकी कड़ाही । **–मल**–पु० लोहेका मैल । **–युग**–पु० लोहेके प्राथमिक प्रयोगका ऐतिहासिक काल । **–शंकु**–पु० दे० 'लोहशंकु' । **–सार**–पु० लौहनिर्मित एक नमक ।

लौह–स्त्री० (अ०) लिखनेकी तख्ती, पटिया; पुस्तकका पन्ना । **–आवरण, –पट**–पु० (आयरन करटेन) ऐसा आवरण या प्रतिबंध-व्यवस्था जिसकी आड़में होनेवाली बातें दूसरोंपर प्रकट न होने पायें (विशेषकर आधुनिक रूस या रूसके शिकंजेमें पड़े देशकी स्थितिके लिए प्रयुक्त) । **–दीवार**–स्त्री० (आयरन करटेन) दे० 'लौहपट' । **–नवीस**–पु० पुस्तकके पहले पृष्ठकी सजावट करनेवाला चित्रकार । **–भांड**–पु० (हार्डवेयर) लोहे-ताँबेके बने पात्र तथा अन्य वस्तुएँ । **–लेखनी**–स्त्री० (दृढ़ निश्चयवाले, लेखक, संपादककी) लेखनी जो कर्तव्य-पथसे न डिगे । **–शकट**–पु० रेलगाड़ी । **–(हे)पाक**–स्त्री० कोरी पटिया । **–पेशानी**–स्त्री० कपाललेख, भाग्यलेख । **–महफूज़**–स्त्री० मुसलमानोंके विश्वासानुसार वह पटिया जिसपर मनुष्यके संपूर्ण कर्म लिखे होते हैं और जिसमें कोई हेर-फेर नहीं हो सकता ।

लौहा*–पु० दे० 'लोहा' । स्त्री० (सं०) लोहे आदिकी कड़ाही ।

लौहाचार्य–पु० (सं०) धातुविद्या जाननेवाला ।

लौहायस–वि० (सं०) लोहे या ताँबेका बना ।

लौहासव–पु० (सं०) लोहेके योगसे बननेवाला एक आसव ।

लौहित–पु० (सं०) शिवका त्रिशूल । वि० लोहित ।

लौहिता–पु० लोहेका कारबार करनेवाली एक जाति, लोहिया ।

लौहिताश्व–पु० (सं०) दे० 'लोहिताश्व' ।

लौहितीक–वि० (सं०) जिसमें लाली हो ।

लौहित्य–पु० (सं०) एक तरहका धान; ब्रह्मपुत्र नद; एक सागर; पर्वत; एक तीर्थ; लाल रंग, लाली ।

लौहेतर–वि० (नॉन-फेरस) जिसमें लोहेका मेल न हो, लोहेको छोड़कर अन्य (धातु) अलौह ।

लौहेष–वि० (सं०) (रथ) जिसका बम लोहे या और किसी धातुका वना हो ।

ल्याना, ल्यावना*–स० क्रि० दे० 'लाना' ।

ल्यारी†–पु० भेड़िया ।

ल्यौ*–स्त्री० लौ, ध्यान ।

ल्वारि*–स्त्री० लू ।

ल्हासा–पु० तिब्बतकी राजधानीका नाम । दे० 'लासा' ।

ल्हीक–स्त्री० लीक, लकीर ।

व

व–देवनागरी वर्णमालाका उनतीसवाँ और चौथा अंतस्थ वर्ण । उच्चारणस्थान दंतोष्ठ ।

वंक–वि० टेढ़ा, झुका हुआ । पु० (सं०) नदीका घुमाव, नदीवक्र; आवारा आदमी । **–नाल**–स्त्री० शरीरकी एक नाडी । **–नाली**–स्त्री० सुषुम्ना नाडी । **–सेन**–पु० अगस्तका पेड़ ।

वंकट–वि० टेढ़ा; विकट ।

वंकटक–पु० (सं०) एक पहाड़ ।

वंकर–पु० (सं०) नदीका मोड़ ।

वंका–स्त्री० (सं०) चारजामेका अगला हिस्सा जो रोकके लिए ऊँचा बना होता है ।

वंकाला–स्त्री० (सं०) वंगालकी पुरानी राजधानी ।

वंकिणी–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

वंकिम–वि० कुछ-कुछ टेढ़ा ।

वंकिल–पु० (सं०) काँटा ।

वंक्य–वि० (सं०) टेढ़ा; लचीला, नमनशील ।

वंक्रि–स्त्री० (सं०) पर्शुका; (घोड़े आदि) जानवरोंकी पसली; कड़ी; एक प्राचीन बाजा ।

वंक्षण–पु० (सं०) पेड़ू और जाँघके वीचका भाग; ऊरु-संधि ।

वंक्षु–स्त्री० (स०) अक्सस नदी; गंगाकी एक शाखा ।

वंग–पु० (सं०) बंगाल; एक धातु, राँगा; राँगेका भस्म; कपास; वैगन; एक चंद्रवंशी राजा; एक पहाड़; एक वृक्ष । **–ज**–पु० सिंदूर; पीतल । वि० बंगालमें उत्पन्न; बंगाली । **–जीवन**–पु० चाँदी । **–देश**–पु० बंगाल । **–मल**–पु० एक धातु, सीसा । **–शुल्मज**–पु० पीतल; काँसा । **–सेन,–सेनक**–पु० लाल फूलोंवाला अगस्त्य ।

वंगक–पु० (सं०) एक वृक्ष ।

वंगन–पु० (सं०) वैंगन ।

वंगला–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

वंगारि–पु० (सं०) हरताल ।

वंगाल–पु० (सं०) एक राग ।

वंगाली–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

वंगीय–वि० (सं०) वंगालका; बंगाल-संबंधी ।

वंगेरिका–स्त्री० (सं०) टोकरी, डलिया ।

वंघ–पु० (सं०) वृक्ष-विशेष ।

वंचक–वि० (सं०) ठग, धूर्त; खल । पु० गीदड़; नीच आदमी; पालतू नेवला ।

वंचकता–स्त्री० (सं०) ठगी, धूर्तता ।

वंचति–पु० (सं०) अग्नि ।

वंचथ–पु० (सं०) धूर्त; कोयल; समय ।

वंचन–पु० (सं०) ठगी; धूर्तता, प्रतारण । **–चंचुता**–स्त्री० ठगीमें कुशलता । **–प्रवण**–वि० ठगीकी ओर प्रवृत्त । **–योग**–पु० ठगीका अभ्यास ।

वंचना*–स० क्रि० ठगना, धोखा देना; † पढ़ना, बाँचना । स्त्री० (सं०) छल; ठगी; नष्ट काल या श्रम । **–पंडित**–वि० ठगीमें कुशल ।

वंचनीय–वि० (सं०) परित्याग करने योग्य; जो ठगा जा सके ।

वंचयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) ठग; धूर्त ।

वंचित–वि० (सं०) ठगा, धोखा खाया हुआ, प्रतारित; रहित, विमुख ।

वंचितक–पु० व्यंग्य ।

वंचिता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली ।

वंचुक, वंचूक–वि० (सं०) धूर्त; बेईमान ।

वंच्य–वि० (सं०) ठगा जानेवाला; त्याज्य; वंचनीय ।

वंछना–स० (सं०) वांछा करना, चाहना ।

वंजारि*–स्त्री० मार्जार, बिल्ली ।

वंजुल–पु० (सं०) तिनिश; अशोक; वेतस; स्थलपद्म; एक पक्षी; एक नदी । **–द्रुम**–पु० अशोक । **–प्रिय**–पु० वेंत ।

वंजुलक–पु० (सं०) एक पौधा; एक पक्षी ।

वंजुला–स्त्री० (सं०) अधिक दूध देनेवाली गाय; एक नदी ।

वंट–वि० (सं०) पुच्छहीन; अविवाहित । पु० अविवाहित पुरुष; भाग; हँसिया आदिका दस्ता ।

वंटक–पु० (सं०) हिस्सा, भाग; बाँटनेवाला ।

वंटन–पु० (सं०) हिस्सा लगाना, बाँटना । पु० (एलॉटमेंट) दे० 'आवंटन' ।

वंटनीय–वि० (सं०) जो बाँटा जाय, बाँटने योग्य ।

वंटाल–पु० (सं०) कुदाल, खनित्र; नाव; युद्धका एक प्रकार ।

वंटित–वि० (सं०) बँटा हुआ, विभाजित ।

वंटितांश–पु० (कोटा) वह अंश या हिस्सा जो किसीको वंटित या किसीके लिए निर्धारित किया गया हो, नियतांश ।

वंठ–वि० (सं०) विकलांग, पंगु; अविवाहित । पु० अविवाहित पुरुष; सेवक; बौना; भाला ।

वंठर–पु० (सं०) ताड़का कल्ला; बाँसके नये कल्लेके ऊपरका पत्ता या आवरण; बकरी आदि बाँधनेकी रस्सी; स्तन; कुत्ता; कुत्तेकी दुम; बादल ।

वंठाल–पु० (सं०) दे० 'वंटाल' ।

वंड–पु० (सं०) वह जिसके लिंगाग्रपर चमड़ा न हो; ध्वजभंग । वि० विकलांग ।

वंडर–पु० (सं०) कंजूस; खोजा, अंतःपुरमें रहनेवाला सेवक । स्त्री० व्यभिचारिणी ।

वंडा–स्त्री० (सं०) पांशुला, व्यभिचारिणी ।

वंद–वि० (सं०) प्रशंसक । प्रत्य० (फा०) वाला, स्वामी ।

वंदक–पु० (सं०) एक परोपजीवी पौधा, बंदा; चारण; भिक्षु; वंदना करनेवाला ।

वंदका–स्त्री० (सं०) वंदा ।

वंदथ–पु० (सं०) चारण; वंदनाके योग्य व्यक्ति ।

वंदन–पु० (सं०) स्तुति; पूजन; नमस्कार; एक विष; एक रोग; बाँदा; एक असुर; सिंदूर; शरीरपर बनाये जानेवाले तिलक आदि चिह्न; दे० 'बंदन' । **–धूरि**–स्त्री० अबीर, गुलाल आदि । **–माल,–माला,–मालिका**–स्त्री० वंदनवार । **–वार**–पु० (हिं०) दे० 'बंदनवार' ।

वंदनक–पु० (सं०) सम्मानयुक्त अभिवादन; वंदना ।

वंदना–स्त्री० (सं०) स्तुति; स्तुतिपरक गीत; पूजन; वंदन; बौद्धोंकी एक पूजा; होमभस्मका तिलक ।

वंदनी–स्त्री० (सं०) स्तुति, पूजा; याचना या चोरी; मरे हुएको जिलानेकी एक दवा, जीवातु; वटी; गोरोचन; तिलक ।

वंदनीय–वि० (सं०) वंदना या सम्मानके योग्य । पु० पीत भृंगराज ।

वंदनीयता–स्त्री० (सं०) वंदनीय होनेका भाव या गुण ।

वंदनीया–स्त्री० (सं०) गोरोचना ।

वंदा–स्त्री० (सं०) एक परोपजीवी पौधा, बाँदा; भिक्षुकी;

वंदिनी।

वंदाक–पु० (सं०) वाँदा।

वंदाका, वंदाकी–स्त्री० (सं०) दे० 'वंदाक'।

वंदार–पु० (सं०) एक परोपजीवी पौधा, बाँदा।

वंदारु–पु० (सं०) वंदा, बाँदा; स्तोत्र; चारण। वि० विनम्र, वंदनशील।

वंदि, वंदी–स्त्री० (सं०) कैद। पु० कैदी; वंदना, स्तुति; सोपान। **–कार,–ग्राह**–पु० डाकू। **–चोर**–पु० चोर; डाकू। **–जन**–पु० (हिं०) चारण, भाट। **–पाल**–पु० कैदियोंका रक्षक, जेलर।

वंदित–वि० (सं०) पूजित; पूज्य।

वंदितव्य–वि० (सं०) पूज्य, पूजा करने योग्य; वंदनीय।

वंदिता(तृ)–पु० (सं०) स्तुति करनेवाला; प्रशंसक।

वंदी(दिन्)–पु० (सं०) वंदी, चारण; कैदी। **–प्रत्यक्षीकरण**–पु० (हैबिअस कॉर्पस) एक व्यवस्था जिसमें वंदी व्यक्ति न्यायालयसे माँग कर सकता है कि उसे अदालतमें वुलाकर निर्णय किया जाय कि उसका वन्दी वनाना वैध है या नहीं।

वंदीक–पु० (सं०) इंद्र।

वंद्य–वि० (सं०) आदरणीय, पूज्य, वंदनीय।

वंद्या–स्त्री० (सं०) वाँदा; गोरोचना।

वंद्र–वि० (सं०) पूजा, भक्ति करनेवाला। पु० भक्त; अभ्युदय, कल्याण; प्राचुर्य।

वंधु–पु० दे० 'वंधु'।

वंधुर–पु० (सं०) कोचवानके वैठनेकी जगह। वि० दे० 'वंधुर'।

वंध्य–वि० (सं०) अनुत्पादक; निष्फल; सदोष। **–फल**–वि० फलहीन, वेकार। **–करण**–पु० (सं०) अनुर्वरीकरण।

वंध्या–स्त्री० (सं०) वाँझ, वह स्त्री या गाय जिसे बच्चा न होता हो; एक गंधद्रव्य। **–कर्कटिका**–स्त्री० एक ओषधि। **–कर्कोटकी**–स्त्री० एक ओषधि, दिव्या। **–तनय,–पुत्र,–सुत,–सूनु**–पु० कोई कल्पित वस्तु, खयाली चीज, असंभव पदार्थ। **–दुहिता(तृ)**–स्त्री० कोई कल्पित वस्तु।

वंध्यीकरण–पु० (स्टेरिलाइजेशन) विशेष प्रक्रिया द्वारा (भूमिको) अनुत्पादक या (स्त्रीको) वंध्या वना देना; उत्पादनक्षमता या पुंस्त्वसे रहित कर देना।

वंभ–पु० (सं०) बाँस।

वंभारव–पु० (सं०) रंभानेकी आवाज।

वंश–पु० (सं०) वाँस; बाँसकी गाँठ; फूल; ईख; शहतीर; वँड़ेर; वाँसुरी; मेरुदंड; नाककी ऊपरकी हड्डी; कोई लंबी-पोली हड्डी; तलवारके वीचका चौड़ा भाग; कुल, परिवार; जाति; संतान; एक ही जैसी वस्तुओंका समूह; युद्धोपकरण; लंवाई नापनेका एक पैमाना (१२ हाथ); विष्णु; वंशलोचन; दर्प; शालवृक्ष। **–कठिन**–पु० वाँसका जंगल। **–कपूर**–पु० (हिं०) दे० 'वंशकर्पूर'; वंशलोचन। **–कफ**–पु० आकाशमें उड़नेवाला सूत। **–कर**–पु० वंशप्रवर्तक; पूर्वज; पुत्र। **–करा,–धरा,–धारा**–स्त्री० महेंद्र पर्वतसे निकलनेवाली एक नदी। **–कर्पूर**–पु० वंसलोचन। **–कर्म(न्)**–पु० बाँसकी टोकरी आदि वनानेका काम। **–कार**–पु० गंधक। **–कीर्ति**–वि० जिसका वंश प्रसिद्ध हो। **–कृत्**–पु० मूल पुरुष। **–कृत्य**–पु० वाँसुरी वजाना। **–क्रम**–पु० वंशतालिका। **–क्रमागत**–वि० आनुवंशिक। **–क्षय**–पु० वंशका नाश। **–क्षीरी**–स्त्री० बंसलोचन। **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० कुलका संरक्षक। **–घटिका**–स्त्री० बच्चोंका एक खेल। **–चरित**–पु० वंशका इतिहास। **–चिंतक**–पु० कुरसीनामा तैयार करनेवाला। **–चछेत्ता(त्तृ)**–पु० वंशका अंतिम व्यक्ति। **–ज**–वि० बाँसका बना हुआ; ···के वंशमें उत्पन्न। पु० बाँसका बीज; संतान। **–जा**–स्त्री० वंसलोचन; कन्या। **–तंडुल**–पु० बाँसका चावल। **–तालिका**–स्त्री० वंशवृक्ष। **–तिलक**–पु० एक छंद। **–दला**–स्त्री० एक तृण, जीरिका। **–धर,–धारी(रिन्)**–पु० बाँस धारण करनेवाला; कुलका रक्षक; संतान। **–धान्य**–पु० बाँसका चावल। **–नर्ती(र्तिन्)**–पु० भाँड़, मसखरा। **–नाडिका,–नाडी,–नालिका**–स्त्री० वाँसकी नली; वाँसुरी। **–नाथ**–पु० कुलका मुखिया। **–नाश**–पु० एक विशेष योग (ज्यो०); कुलका अंत। **–निश्रेणी**–स्त्री० वाँसकी सीढ़ी। **–नेत्र**–पु० एक तरहकी ईख; ईखकी जड़ या पोर जिसमें अंकुर होते हैं। **–पत्र**–पु० हरताल; बाँसका पत्ता; एक छंद; एक तरहका सरकंडा। **–पत्रक**–पु० सरकंडा; एक तरहकी ईख; एक मछली; हरताल। **–पत्रपतित**–पु० एक छंद। **–पत्री**–स्त्री० एक तृण, वाँसा; एक तरहकी हींग। **–पात्र**–पु० वाँसकी टोकड़ी आदि। **–पीत**–पु० गुग्गुल। **–पुष्पा**–स्त्री० एक लता, सहदेई। **–पूरक**–पु० ईखकी जड़ जिसमें अँखुआ होता है। **–पोट**–पु० वाँसका अंकुर; अच्छे कुलका वच्चा। **–बाह्य**–वि० कुलसे वाहर किया हुआ। **–भव**–वि० वाँसका वना हुआ; सद्वंशजात। **–भृत्**–पु० कुलका प्रधान व्यक्ति। **–भोज्य**–वि० जिसपर वंशगत अधिकार हो। पु० मौरूसी जायदाद। **–मूल**–पु० ईखकी जड़। **–यव**–पु० बाँसका चावल। **–राज**–पु० वहुत लंवा वाँस। **–रोचना**–स्त्री० वंसलोचन। **–लक्ष्मी**–स्त्री० कुलकी संपत्ति। **–लून**–वि० कुलसे पृथक्, अकेला। **–लोचन**–पु० वाँसके पोले भागमें वननेवाला सफेद पदार्थ। **–लोचना**–स्त्री० दे० 'वंशलोचन'। **–वक्त्रा**–स्त्री० एक अर्धसम वर्णिक वृत्त। **–वर्धन**–वि० कुलकी उन्नति करनेवाला। पु० वंशकी उन्नति करना। **–वितति**–स्त्री० वाँसका जंगल। **–विस्तर**–पु० पूरा वंशवृक्ष। **–वृक्ष**–पु० बाँसका पेड़; किसी कुलके पूर्वपुरुषों तथा वर्तमान सदस्योंकी वृक्षके ढंगपर वनायी हुई तालिका, कुरसीनामा। **–वृद्धि**–स्त्री० कुलोन्नति। **–शर्करा**–स्त्री० वंशलोचन। **–शलाका**–स्त्री० वीणामूल, नीचेके भागमें लगायी जानेवाली खूँटी। **–संहार-नीति**–स्त्री० (जेनोसाइड) किसी वंश, जाति या संप्रदाय-विशेषके सामूहिक संहार या विनाशकी नीति, जातिसंहार-नीति। **–स्थ**–पु० एक वृत्त। **–स्थविल**–पु० एक छंद; बाँसके अंदरका पोला भाग। **–हीन**–वि० जिसके वंशमें कोई न हो; संतानहीन।

वंशक–पु० (सं०) एक मछली; एक वड़ी ईख; एक तरहका छोटा वाँस; अगर नामक गंध द्रव्य।

वंशांकुर–पु० (सं०) वाँसका अंकुर।

वंशागत–वि० (सं०) वंशपरंपरासे प्राप्त; उत्तराधिकारमें प्राप्त।

वंशाग्र–पु० (सं०) बाँसका छोर।

वंशानुकीर्तन–पु० (सं०) वंशवृक्षका उल्लेख।

वंशानुक्रम(ण)–पु० (सं०) वंश परम्परा।

वंशानुगत–वि० वंशपरंपरासे प्राप्त। **–त्रुटियाँ**–स्त्री० किसीके व्यक्तित्वमें निहित वे त्रुटियाँ जो वंशपरंपरासे चली आ रही हों। साहित्यमें इसे रूढ़िवादिताका ही पर्याय कहा जाता है।

वंशानुचरित–पु० (सं०) वंशवृत्त।

वंशावली–स्त्री० (सं०) वंशतालिका।

वंशाह्व–पु० (सं०) वंसलोचन।

वंशिक–पु० (सं०) अगर; काला गन्ना; चार स्तोमकी एक प्राचीन माप; शूद्र और वेणीसे उत्पन्न पुत्र।

वंशिका–स्त्री० (सं०) बाँसुरी; अगर; पिप्पली।

वंशी–स्त्री० (सं०) बाँसुरी; धमनी; चार कर्षका एक मान; बंसलोचन। **–धर**–पु० कृष्ण। **–रव**–पु० वंशीकी ध्वनि। **–वट**–पु० वह बरगदका पेड़ जिसके नीचे कृष्ण वंशी बजाते थे। **–वादन**–पु० वंशी बजाना।

वंशी(शिन्)–वि० (सं०) वंशविशेषका; वंशविशेषसे संबंध रखनेवाला।

वंशीय–वि० (सं०) वंशविशेषसे संवद्ध; एक ही कुलमें उत्पन्न; अच्छे वंशका।

वंशोद्भव–वि० (सं०) कुल, वंशमें उत्पन्न।

वंशोद्भवा–स्त्री० (सं०) बंसलोचन।

वंश्य–पु० (सं०) पूर्वज; संतान; विद्वान्; शिष्य; रीढ़, पीठकी हड्डी; बँड़ेर, छाजनके बीचकी लकड़ी; सात पुश्त ऊपर-नीचेका संबंधी; वंशके सदस्य। वि० बँड़ेरसे लगा हुआ; मेरुदंडसे संबद्ध; सद्वंशमें उत्पन्न; वंश-संवंधी।

वंश्या–स्त्री० (सं०) धनिया।

व–पु० (सं०) वायु; वरुण; मंत्रणा; वसन; बाण; बाहु; समुद्र; पानी; सांत्वना; आदर; कल्याण; वासस्थान; सेरकी, कोई का

कंद; व्याघ्र; वंदन; अस्त्र; राहु; खड्गधारी पुरुष; एक लता; कलशसे आविर्भूत ध्वनि; मद्य; प्रचेता; वृक्ष। वि० शक्तिशाली, बलवान्। अ० (फा०) और; भी (संयोजक अव्यय जो प्रायः पूर्वाक्षरके अकारसे मिलकर 'ओ' हो जाता है–जैसे मर्दोजन, कमोबेश।)

वक–पु० (सं०) दे० 'बक' (समास भी)। **–चित्**–पु० श्रीकृष्ण; भीमसेन। **–पंचक**–पु० कार्तिक शुक्ल एकादशी-से कार्तिक पूर्णिमा तककी पाँचों तिथियाँ। **–यंत्र**–पु० आसव, अर्क खींचनेका भवका। **–वृत्ति**–स्त्री० मछली पकड़नेकी घातमें खड़े शांत बगलेकी-सी धोखा देकर काम निकालनेकी वृत्ति। **–व्रत**–पु० बगलेकी तरह शांत और सीधे बनकर किसीका अनिष्ट करनेकी ताकमें रहना; ऐसा धोखेबाज व्यक्ति।

वक़अ, वक़अत–स्त्री० (अ०) इज्जत, प्रतिष्ठा; साख, विश्वास; बड़ाई, ऊँचाई; मूल्य, महत्त्व, बलंदी।

वकल–पु० (सं०) भीतरकी छाल।

वकाची–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मछली।

वक़ार–पु० (अ०) बड़ाई, प्रतिष्ठा; गांभीर्य; मानमर्यादा; महत्त्व।

वकालत, विकालत–स्त्री० (अ०) वकीलका काम, पेशा; दूसरेकी ओरसे मुकदमेकी पैरवी करना, प्रतिनिधित्व; किसीके पक्षका मण्डन (व्यंग्य)। **–न्**–अ० वकीलके जरिये। **–नामा**–पु० किसी मुकदमेमें वकील होनेका प्रमाणपत्र, वह लेख जिसके जरिये किसी वकीलको किसी मुकदमेकी पैरवीका अधिकार दिया जाय।

वकासुर–पु० (सं०) एक राक्षस।

वक़ाह–वि० (अ०) निर्लज्ज, बेशर्म, धृष्ट।

वकी–स्त्री० (सं०) दे० 'बकी'।

वक़ीअ–वि० (अ०) वक़अतवाला, प्रतिष्ठित; ऊँचा; साखवाला।

वकीअत–स्त्री० (अ०) निन्दा; कुत्सा; युद्ध।

वकील–पु० (अ०) प्रतिनिधि; दूसरोंकी ओरसे मुकदमोंकी पैरवी करनेवाला; वकालत करनेका अधिकारी; राजप्रतिनिधि। **–सरकार**–पु० वह वकील जो सरकारकी ओरसे मुकदमोंकी पैरवी करे।

वकीली|–स्त्री० वकीलका कार्य या पेशा; वकील जैसी बहस। वि० वकीलका; वकील जैसा।

वकुल–पु० (सं०) दे० 'बकुल'।

वकुला–स्त्री० (सं०) एक ओषधि, कुटकी।

वकुली–स्त्री० (सं०) बकुलका फूल; एक ओषधि, काकोली।

वकुश–पु० (सं०) शरीर, ग्रंथ, भक्तों आदिकी चिंता करनेवाला यति (जै०); वृक्षोंकी पत्रावलीमें रहनेवाला एक जंतु।

वक़ूअ–पु० (अ०) जाहिर होना, घटित होना। मु० **–में आना**–जाहिर या घटित होना।

वक़ूआ–पु० (अ०) घटना, वारदात; हंगामा, फसाद।

वक़ूफ़–पु० (अ०) समझ; जानना, आगाही, खबर; अनुभव; ठहरना; काम करनेका अच्छा ढंग, शऊर। **–दार**–वि० जानकार, अनुभवी। मु० **–पकड़ना**–अक्ल सीखना।

वक़्त–पु० (अ०) समय, काल; अवकाश; मौका; नियत काल; मौतकी घड़ी; मुसीबतकी घड़ी, मुश्किल; वर्तमानकाल, ऋतु। **–का**–वर्तमानकालिक, जमानेका। **–का पाबंद**–जो सब काम नियत समयपर करता हो; समयपालक। **–का बादशाह**–वर्तमान कालमें राज्य करनेवाला राजा; निश्चित, निर्द्वंद्व। **–की ख़ूबी**–कालका प्रभाव; दुर्भाग्यकी देन। **–की चीज़**–सामयिक वस्तु; काल या ऋतुविशेषके अनुरूप राग, रागिनी। **–ना वक़्त**–दे० 'वक्त बेवक़्त'। **–बेवक़्त**–समय-कुसमय; किसी समय, हमेशा। मु० **–आ जाना**–नियतकाल, मौतकी घड़ी आ जाना। **–गुज़ारना**–समय नष्ट करना; दिन काटना। **–तंग होना**–कालका प्रतिकूल होना। **–देना**–किसीसे मिलने, बातचीत आदिके लिए समय नियत कर देना। **–पड़ना**–मुसीबत आना, कठिनाईमें पड़ना। **–पड़ेपर**–मुसीबतके वक्त। **–पर**–मौकेपर; काम पड़नेपर, गाढ़े वक्तपर। **–फ़राग़त**–पु० छुट्टीका समय; समृद्धिका ···समय; कार्यनिवृत्तिका समय। **–बेवक़्त काम आना**–जरूरतके समय काम आना।

वक़्तन् फवक़्तन्–अ० (अ०) जबतब, समय-समयपर।

वक्तव्य–वि० (सं०) कहने योग्य; निंदनीय; तुच्छ, क्षुद्र; उत्तरदायी। पु० कथन, वचन; किसी विषयमें कथनीय बात; निंदा; नियम; सीख।

वक्ता (क्तृ)–वि० (सं०) कहने, बोलनेवाला; भाषणकलामें प्रवीण, विद्वान्; ईमानदार। पु० कथा कहनेवाला पुरुष, व्यास; अध्यापक; बुद्धिमान् व्यक्ति।

वक़्ती–वि० (अ०) वक्तका, सामयिक।

वक्तुकाम–वि० (सं०) बोलनेका इच्छुक।

वक्तुमना (नस्)–वि० (सं०) जो बोलना चाहता हो।

वक्तृक–पु० (सं०) बोलनेवाला, भाषणकर्ता, वक्ता।

वक्तृता–स्त्री० (अ०) दे० 'वक्तृत्व'।

वक्तृत्व–पु० (सं०) व्याख्यान; भाषण; वाक्कौशल, वाग्मिता। **–कला**–स्त्री० प्रभावशाली ढंगसे भाषण करनेकी विद्या। **–शास्त्र**–पु० व्याख्यान कलाका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

वक्त्र–पु० (सं०) मुख, थूथन, चोंच; दंत; तगर मूल; एक छंद; बाणकी नोक; कार्यारंभ; एक तरहकी पोशाक। **–खुर**–पु० दाँत। **–ज**–पु० ब्राह्मण; दाँत। वि० मुखसे उत्पन्न। **–ताल**–पु० मुँहसे उत्पन्न किया हुआ ताल; मुँहसे बजाया जानेवाला एक बाजा। **–तुंड**–पु० गणेश। **–दल**–पु० तालू। **–पट्ट**–पु० तोबड़ा। **–परिस्पंद**–पु० वार्ता। **–बहु**–पु० बाराही कंद। **–भेदी (दिन्)**–वि० बहुत चरपरा। **–वास**–पु० नारंगी। **–शल्या**–स्त्री० गुंजा, घुँघची। **–शोधन**–पु० मुखशुद्धि; भव्य। **–शोधी (धिन्)**–वि० मुखशोधक। पु० जमीरी नीबू।

वक्त्रासव–पु० (सं०) राल, लाला; अधरमधु।

वक़्फ़–पु० (अ०) खुदाके नामपर छोड़ी हुई चीज; देवोत्तर संपत्ति; लोकोपकारार्थ दी हुई वस्तु (अर्पित करना)। **–नामा**–पु० वह लेख जिसके द्वारा कोई चीज वक्फ की जाय। मु० **–कर देना**–ईश्वरार्पण कर देना, (पुण्यकार्यमें) लगा देना; दान देना।

वक़्फ़ा–पु० ठहराव, विराम; देर; अल्प विलंब।

वक्र–वि० (सं०) टेढ़ा, झुका हुआ; तिरछा; चालबाज; बेईमान; निर्दय, क्रूर। पु० नासिका; नदीका मोड़; शनि; मंगल; रुद्र; वक्र ग्रह; पर्पट; अस्थिभंगका एक प्रकार; त्रिपुर राक्षस; एक राक्षस; पीछेकी ओर हटना। **–कंट**–पु० बेरका वृक्ष। **–कंटक**–पु० खदिर वृक्ष। **–कील**–पु० हाथीके लिए प्रयोगमें आनेवाला अंकुश। **–खड्ग, –खड्गक**–पु० करवाल। **–गति**–वि० उलटी गतिवाला (ग्रहादि); बेईमान, कुटिल। स्त्री० उलटी, टेढ़ी चाल। पु० मंगल; सूर्यसे पाँचवेंसे आठवेंतक ग्रह। **–गल**–पु० (हिं०) फूंकसे बजानेका एक बाजा। **–गामी (मिन्)**–वि० दे० 'वक्रगति'। **–ग्रीव**–पु० ऊँट। **–चंचु**–पु० तोता। **–ताल, –नाल**–पु० मूँहसे बजानेका एक बाजा। **–तुंड**–पु० तोता; गणेश। **–दंष्ट्र**–पु० सूअर। **–दृष्टि**–स्त्री० टेढ़ी निगाह; क्रोधपूर्ण दृष्टि; मंद दृष्टि। **–धर***–पु० शिव (जो दूजके वक्र चाँदको धारण करते हैं)। **–धी, –बुद्धि, –मति**–वि० धूर्त; बेईमान। स्त्री० धूर्तता, बेईमानी। **–नक्र**–पु० चुगलखोर, पिशुन; तोता। **–नाल**–पु० एक पुराना बाजा। **–नासिक**–पु० उल्लू। वि० टेढ़ी नाकवाला। **–पाद**–वि० जिसका पैर टेढ़ा हो। **–पुच्छ, –पुच्छिक, –बालधि, –लांगूल**–पु० कुत्ता। **–पुष्प**–पु० अगस्त्य; पलाश। **–भणित**–पु० कुटिल वाक्य। **–भुज**–पु० गणेश। **–रेखा**–स्त्री० (कर्व्ड लाइन) वह रेखा जो सरल या सीधी न होकर टेढ़ी, घुमावदार हो। **–वक्त्र**–पु० सूअर। **–शल्या**–स्त्री० कुटुंबिनी नामक क्षुप।

वक़्र–पु० (अ०) बड़ाई, सम्मान; गौरव; पद। मु० **–खोना**–मान, प्रतिष्ठा गँवाना।

वक्रता–स्त्री०, **वक्रत्व**–पु० (सं०) टेढ़ापन; कुटिलता; स्त्री० साहित्यमें किसी रचनाका अद्भुत चमत्कार; पीछेकी ओर हटना।

वक्रम–पु० (सं०) पलायन।

वक्रय–पु० (सं०) मूल्य।

वक्रांग–वि० (सं०) टेढ़े अंगवाला। पु० हंस; साँप।

वक्राख्य–पु० (सं०) टीन।

वक्राग्र–पु० (सं०) आगेका टेढ़ा भाग; एक पौधा।

वक्रि–वि० (सं०) झूठ बोलनेवाला; कुटिलभाषी।

वक्रित–वि० (सं०) टेढ़ा, झुका हुआ, वक्रीभूत।

वक्रिम–वि० (सं०) टेढ़ा, कुटिल।

वक्रिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) टेढ़ापन, कुटिलता, वक्र होनेकी क्रिया या भाव, वक्रता।

वक्री(क्रिन्)–वि० (सं०) कुटिल; गरदन टेढ़ी करने, झुकानेवाला; पीछेकी ओर गमन करनेवाला (ग्रह); बेईमान; धूर्त। पु० वक्र ग्रह; बुद्ध या जैन; वह जिसके अंग जन्मसे ही टेढ़े हों।

वक्रोक्ति–स्त्री० एक अलंकार जिसमें काकु या श्लेषके बलपर भिन्न अर्थ किया जाता है; चमत्कारपूर्ण उक्ति; काकु उक्ति। **–गर्विता**–स्त्री० (सं०) गर्विता (नायिका)। **–जीवित**–पु० आचार्य कुंतककृत साहित्यका एक प्रख्यात ग्रंथ जिसमें वक्रोक्तिको ही काव्यकी आत्मा कहा गया है।

वक्रोष्ठि, वक्रोष्ठिका–स्त्री० (सं०) मंद हँसी, मुसकान।

वक्वस–पु० (सं०) एक तरहकी शराब (सुश्रुत)।

वक्षःसम्लादिनी–स्त्री० (सं०) पत्नी।

वक्षःस्थल–पु० (सं०) दे० 'वक्षस्थल'।

वक्ष(स्)–पु० (सं०) पेट और गलेके बीचका हिस्सा, छाती; बैल।

वक्षण–पु० (सं०) सोना; अग्नि; शक्ति प्रदान करनेवाला पदार्थ।

वक्षणा–स्त्री० (सं०) पेट; नदी या उसका पाट।

वक्षश्छद–पु० (सं०) कवच।

वक्षस्थल–पु० (सं०) सीना, हृदय।

वक्षु–स्त्री० (सं०) दे० 'वंक्षु'।

वक्षोग्रीव–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र।

वक्षोज, वक्षोरुह–पु० (सं०) कुच, स्तन।

वक्षोमंडली(लिन्)–पु० (सं०) नृत्यमें हाथोंकी एक विशेष स्थिति।

वक्षोमणि–पु० (सं०) सीनेपर पहननेका रत्न।

वक्ष्यमाण–वि० (सं०) वक्तव्य; जो कहा जा रहा हो, कथनका विषय हो।

वगला, वगलामुखी–स्त्री० (सं०) दस महाविद्याओंमेंसे एक (तं०)।

वगाहना*–स० क्रि० अवगाहना।

वग़ैरह–अ० (अ०) इत्यादि; प्रमुख।

वग्नु–पु० (सं०) वक्ता। वि० बड़बड़िया।

वचंडा, वचंडी–स्त्री० (सं०) दीयेकी वत्ती; कटार; मैना।

वच–पु० (सं०) तोता; सूर्य; कारण। वि० बोलनेवाला (समासांतमें)।

वच(स्)–पु० (सं०) शब्द; वाक्य; पक्षियोंका गाना; परामर्श; आदेश।

वचक्नु–वि० (सं०) बहुत बोलनेवाला, बकवादी। पु० ब्राह्मण।

वचन–पु० (सं०) बोलनेकी क्रिया; आदमीके मुंहसे निकले हुए सार्थक शब्दोंका समूह, बात, वाणी; कही हुई बात; शास्त्रादिका वाक्य; आदेश; घोषणा; उच्चारण; शब्दका अर्थ या भाव; राय, शिक्षा; सोंठ; एक, अनेकका बोध करानेवाला व्याकरणका विशेष विधान। **–कर**–वि० बोलनेवाला; आज्ञाकारी। **–कार, –कारी(रिन्)**–वि० आज्ञापालक। **–गुप्ति**–स्त्री० अशुभ वृत्तियोंसे बचनेके लिए वाणीका संयम (जै०)। **–गौरव**–पु० आज्ञाका आदर। **–ग्राही(हिन्)**–वि० आज्ञाकारी। **–पटु**–वि० बोलनेमें कुशल। **–बद्ध**–वि० जिसने कोई वादा किया हो, प्रतिश्रुत। **०–ता**–स्त्री० (कमिटमेंट) वचनबद्ध होनेकी अवस्था। **–रचना**–स्त्री० भाषणका अच्छा क्रम। **–लक्षिता**–स्त्री० वह परकीया नायिका जिसकी बातोंसे उसका प्रेम प्रकट हो। **–विदग्धा**–स्त्री० वह परकीया नायिका जो वाक्चातुर्यसे किसीको वशीभूत करे। **–सहाय**–पु० मिलनसार साथी।

वचनपत्र–पु० (प्रामिसरी नोट) वह ऋणपत्र जिसमें सरकार प्रजासे कुछ ऋण लेकर यह प्रतिज्ञा करती है कि अमुक व्यक्तिसे इतना ऋण लिया गया और उसका सूद इस हिसाबसे ऋणदाताको दिया जायगा; दे० 'प्रतिज्ञा पत्रमुद्रा'; दे० 'ऋणबंधन-पत्र' (प्रोनोट)।

वचनबंध–पु० (एंगेजमेंट) किसीसे मिलने या भविष्यमें कोई काम करने आदिका आपसी निश्चय या वचन देना।

वचनानुग–वि० (सं०) आज्ञाकारी।

वचनावक्षेप–पु० (सं०) अपशब्दपूर्ण बात।

वचनीय–वि० (सं०) कहने योग्य; निंदनीय। पु० निंदा। **–दोष**–पु० निंदात्मक होनेका दोष।

वचनोपक्रम–पु० (सं०) भाषणका आरंभ।

वचर–पु० (सं०) मुर्गा; नीच व्यक्ति, दुष्ट।

वचलु–पु० (सं०) शत्रु; दोष, अपराध।

वचस–वि० (सं०) बहुत बोलनेवाला; चतुर।

वचसांपति–पु० (सं०) बृहस्पति।

वचसा–अ० (सं०) वचन द्वारा।

वचस्कर–वि० (सं०) दे० 'वचनकर'।

वचस्वी(स्विन्)–वि० (सं०) भाषणपटु, वाक्पटु।

वचा–स्त्री० (सं०) एक ओषधि; मैना।

वचो–'वचस्'का समासगत रूप। **–ग्रह**–पु० कान। **–विद्**–वि० बोलनेमें कुशल। **–हर**–पु० संवादवाहक।

वच्छ*–पु० वक्ष, छाती; वत्स, बच्चा; बछड़ा।

वज़न–पु० (अ०) तौलनेकी क्रिया; तौल; भार; छंदके वर्णों या मात्राओंकी माप (उर्दू-फारसी); वकअत, महत्त्व; मान, प्रतिष्ठा। **–कश**–पु० तौलनेवाला। **–दार**–वि० बोझवाला; भारी; महत्त्वयुक्त, वकअत रखनेवाला।

वज़नी–वि० वजन रखनेवाला, भारी; महत्त्वयुक्त।

वजह–स्त्री० (अ०) कारण, सबब; जरिया; चेहरा, मुख; प्रकृति, तत्त्व; ढंग, रीति। **–(हे)मआश**–स्त्री० जीविकाका साधन। **–रंजिश**–स्त्री० मनमुटावका कारण।

वज़ा(वज़अ)–पु० (अ०) रखना; तरतीब देना; बनाना; बनावट; ढंग; रीति-नीति; वेशभूषाका प्रचलित ढंग, फैशन; प्रसव; मिनहाई; काटकर निकाला, घटाया हुआ; बाद या मुजरा किया हुआ (धन)। **–दार**–वि० सजधजका शौकीन, तरहदार; सुंदर; फैशनका खयाल रखनेवाला; जो अपनी वजापर कायम रहे, अपनी रीति-नीतिका त्याग न करे। **–दारी**–स्त्री० सुंदर वेशभूषा; तरहदारी; अपनी रीति-नीतिका निर्वाह। **–हमल**–पु० प्रसव, बच्चा जनना।

वज़ाअत–स्त्री० (अ०) पवित्रता; सुंदरता; निर्दोष; नीचता।

वज़ारत–स्त्री० (अ०) वजीरका काम या पद।

वजाहत–स्त्री० (अ०) सुंदरता; भव्यता; मुखश्री; प्रतिष्ठा; सम्मानित होना; बड़प्पन।

वज़ाहत–स्त्री० (अ०) खोलकर कहना, विस्तारसे बताना।

वज़ीफ़ा–पु० (अ०) नित्यकर्म; नित्यपाठकी प्रार्थना; दैनिक वृत्ति; मासिक वेतन; पेंशन; छात्रवृत्ति (स्कालरशिप)। **–ख़्वार, –दार**–पु० वजीफा पानेवाला। **–गोई**–स्त्री० गुणगान करना।

वज़ीर–पु० (अ०) मंत्री, सचिव; राजदूत; शतरंजका एक मोहरा। **–(रे)आज़म**–पु० प्रधान मंत्री। **–खारिजा**–पु० परराष्ट्रमंत्री। **–जंग**–पु० युद्धमंत्री। **–तालीम**–पु० शिक्षामंत्री। **–माल**–पु० अर्थमंत्री।

वज़ीरिस्तान–पु० (फा०) वजीरी कबीलेका प्रदेश।

वज़ीरी–पु० सरहदी पठानोंका एक कबीला या जाति। स्त्री० वजीरका काम या पद, दे० 'वज़ारत'।

वजीह–वि० (अ०) सुंदर; भव्याकृति; खुशवजा; सम्मानित।

वज़ू–पु० दे० 'वुज़ू'।

वजूद–पु० (अ०) विद्यमानता, मौजूदगी, अस्तित्व; शरीर और उसके अंग-प्रत्यंग –'उसका सारा वजूद हँसता था'–कादं०, अगस्त १९६९; जिंदगी। मु० **–पकड़ना, –पाना**–अस्तित्वमें आना।

वजूहात, वुजूह–स्त्री० (अ०) 'वजह'का बहु०।

वज्द–पु० (अ०) आनंदातिरेक; आनंदातिरेक या (काव्य, संगीतकी) रसानुभूतिसे होनेवाली आत्मविस्मृति। मु०–में

आना–आनंदातिरेकसे झूमने लगना या आत्म-विस्मृत हो जाना।

वज्र–वि० (सं०) बहुत कठोर; भीषण; जिसपर किसीका प्रभाव न पड़े; अनीदार, काँटेदार। पु० इंद्रका अस्त्र, कुलिश, अशनि (कहा जाता है कि यह दधीचिकी अस्थिसे बनाया गया था); बिजली; कोई घातक अस्त्र; भाला; हीरा आदि छेदनेका औजार; हीरा; काँजी; एक व्यूह; एक तरहका श्वेत कुश; एक तरहका खंभा; इस्पात; अभ्रक; वज्र जैसी कटु भाषा; बच्चा; वज्रपुष्प; धात्री; कोकिलाक्ष वृक्ष; थूहर; एक योग (ज्यो०); विष्णुके चरणोंका चिह्न; अनिरुद्धका एक पुत्र; चक्र जैसा चिह्न (बौ०); एक आसन; एक व्रत। **–कंटक**–पु० हनूमान्। **–कंटक**–पु० सेहुँड़; कोकिलाक्ष पेड़। **–कंटशाल्मली**–स्त्री० एक नरक। **–कंद,–कर्ण**–पु० जंगली सूरन; शकरकंद; ताल वृक्षका फूल। **–कर्षण**–पु० इंद्र। **–कपाली(लिन्)**–पु० एक बुद्ध (बौ०)। **–कवच**–पु० बहुत मजबूत, अभेद्य कवच; एक तरहकी समाधि। **–कांति**–स्त्री० संगीतकी एक रागिनी। **–कारक**–पु० नख नामक द्रव्य। **–कालिका**–स्त्री० मायादेवी, बुद्धकी जननी। **–काली**–स्त्री० एक जिन-शक्ति। **–कीट**–पु० एक कीड़ा (पत्थर, काष्ठका भेदन करनेवाला); बन रोहू। **–कील**–पु० बिजली। **–कुच**–पु० एक विशेष समाधि। **–कूट**–पु० एक पहाड़; हिमालयपर स्थित एक पौराणिक नगर। **–केतु**–पु० नरकासुर। **–क्षार**–पु० एक क्षार। **–गर्भ**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–गोप**–पु० इंद्रबहूटी, बीरबहूटी, इन्द्रगोप। **–घात**–पु० वज्रका आघात। **–घोष**–पु० बिजलीकी कड़क जैसी आवाज। **–चंचु**–पु० गृध्र। **–चर्मा(र्मन्)**–पु० गैंडा। **–जित्**–पु० गरुड़; बिजली। **–ज्वाला**–स्त्री० वैरोचनकी एक पौत्री; कुंभकर्णकी पत्नी। **–टीक**–पु० एक बुद्ध। **–डाकिनी**–स्त्री० एक उपास्य डाकिनीवर्ग (बौ०)। **–तुंड**–पु० गणेश; गरुड़; गीध; मच्छर; सेहुँड़; थूहड़। **–तुल्य**–पु० नीलम। **–दंड**–पु० एक अस्त्र (इंद्र द्वारा अर्जुनको प्रदत्त)। **–दंत**–पु० चूहा; सूअर। **–दंती**–स्त्री० एक पौधा (दातूनके काम आता है)। **–दंष्ट्र**–पु० बीरबहूटी; एक राक्षस (भा०)। **–दशन**–पु० चूहा। **–देहा**–स्त्री० एक देवी। **–द्रुम**–पु० सेहुँड़। **–धर**–पु० इंद्र; बोधिसत्त्व; उल्लू। **–धात्वीश्वरी**–स्त्री० वैरोचनकी पत्नी; एक तंत्रदेवी। **–धार**–वि० हीरेकी तरह कठिन धारवाला। **–धारक**–वि० वज्र धारण करनेवाला; दे० 'तडित्रोधक'। **–नख**–वि० नृसिंह। **–नाभ**–पु० कृष्णका चक्र; स्कंदका एक अनुचर; दानवोंका एक राजा। **–निर्घोष,–निष्पेष**–पु० बिजलीका कड़कना। **–पतन**–पु० वज्रका गिरना। **–परीक्षा**–स्त्री० हीरेकी परख। **–पाणि**–पु० इंद्र; ब्राह्मण; एक बोधिसत्त्व। **–पात**–पु० वज्रका या वज्र-सा गिरना; भारी विपत्ति। **–पुष्प**–पु० तिलका फूल। **–पुष्पा**–स्त्री० शतपुष्पा। **–प्रभ**–पु० एक विद्याधर। **–प्राकार**–पु० एक समाधि। **–प्राय**–वि० बहुत कठोर। **–बाहु**–पु० इंद्र; अग्नि; रुद्र। **–बीजक,–वीजक**–पु० लताकरंज। **–भृकुटी**–स्त्री० एक तंत्रदेवी (बौ०)। **–भृत्**–पु० इंद्र। **–भैरव**–पु० एक बौद्ध देवता। **–मणि**–पु० हीरा। **–मति**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–माला**–स्त्री० एक प्रकारकी समाधि। **–मुख**–पु० एक तरहकी समाधि। **–मुष्टि**–पु० इंद्र; क्षत्रिय, योद्धा; एक हथियार; बाण चलानेके समयकी हाथकी एक विशेष स्थिति; जंगली ओल। **––मूली**–स्त्री० माषपर्णी। **–यान**–पु० (सं०) बौद्धोंका एक साधना मार्ग, पंथ। **–योगिनी**–स्त्री० एक देवी, वरदयोगिनी (तं०)। **–रथ**–पु० क्षत्रिय। **–रद**–पु० शूकर। **–राग**–पु० (सं०) वज्रयानी साधनामें करुणासे उत्पन्न सांसारिक राग (बौ०)। **–लेप**–पु० एक पलस्तर, दीवार आदिपर लगानेका एक मसाला। **–लोहक**–पु० चुंबक। **–वध**–पु० वज्रपातसे होनेवाली मृत्यु। **–वल्ली**–स्त्री० अस्थिसंहार लता। **–वारक**–पु० पाँच ऋषि जिनके स्मरणसे वज्रपातका निवारण होता है (जैमिनि, वैशंपायन, पुलस्त्य, पुलह (अगस्त्य ?), सुमंत ऋषि)। **–वाराही**–स्त्री० एक तंत्रदेवी (बौ०); मायादेवी, बुद्धकी माता। **–विष्कंभ**–पु० गरुड़का एक पुत्र। **–विहत**–वि० विद्युत् द्वारा निहत। **–वीर**–पु० महाकालरुद्र। **–वृक्ष**–पु० सेहुंड़। **–वेग**–पु० एक राक्षस; एक विद्याधर। **–व्यूह**–पु० दुधारी तलवारके आकारकी सेनारचना। **–शल्य**–पु० साही नामक जानवर। **–शाखा**–स्त्री० वज्रस्वामी द्वारा प्रवर्तित एक संप्रदाय (जै०)। **–शृंखला**–स्त्री० सोलह महाविद्याओंमेंसे एक (जै०)। **–संघात**–पु० पत्थर जोड़नेका मसाला; भीम। **–संहत**–पु० एक बुद्ध। **–सत्त्व**–पु० ध्यानी बुद्ध। **–समाधि**–स्त्री० एक समाधि (बौ०)। **–सार**–पु० हीरा। वि० बहुत कठोर। **–सूचि,–सूची**–स्त्री० वह सूई जिसकी नोकपर हीरा लगा हो। **–सूर्य**–पु० एक बुद्ध। **–सेन**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–हस्त**–पु० इंद्र; अग्नि; मरुत्; शिव। **–हृदय**–वि० बहुत कड़े दिलका।

वज्रक–पु० (सं०) हीरा; वज्रक्षार; सूर्यका एक उपग्रह; चर्मरोगके लिए विशेष प्रकारसे तैयार किया जानेवाला एक तेल; एक श्रुति (संगीत)।

वज्रांग–पु० (सं०) हनुमान्; साँप।

वज्रांगी–स्त्री० (सं०) कौड़िल्ला नामक पक्षी; एक लता, हड़जोड़ (चोटपर गुणकारी)।

वज्रांबुजा–स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी।

वज्रांशु–पु० (सं०) कृष्णका एक पुत्र।

वज्रा–स्त्री० (सं०) दुर्गा; सेंहुड़; गुड़ुच।

वज्राकर–पु० (सं०) हीरेकी खान।

वज्राकार, वज्राकृति–वि० (सं०) वज्रकी शक्लका।

वज्राक्षी–स्त्री० (सं०) सेंहुड़।

वज्राख्य–पु० (सं०) एक बहुमूल्य पत्थर।

वज्राघात–पु० (सं०) बिजलीका आघात, अत्यंत कठोर आघात।

वज्राचार्य–पु० (सं०) एक तांत्रिक बौद्ध आचार्य, लामा (यह स्त्री-पुत्र सहित विहारमें रह सकता है)।

वज्राभ–पु० (सं०) एक बहुमूल्य पत्थर।

वज्राभिषवन–पु० (सं०) एक प्राचीन अनुष्ठान (इसमें तीन दिन केवल जौका सत्तू खाकर रहते थे)।

वज्राभ्र–पु० (सं०) काले रंगका अभ्रक।

वज्रायुध–पु० (सं०) इंद्र।

वज्रावर्त–पु० (सं०) एक मेघ।

वज्राशनि–पु० (सं०) वज्र।

वज्रासन–पु० (सं०) एक तरहका आसन; बुद्ध; गयामें बोधिवृक्षके नीचेकी वह शिला जिसपर बुद्धने आसन लगाकर बुद्धत्व प्राप्त किया था।

वज्रास्थि–स्त्री० (सं०) सेंहुड़। **–शृंखला**–स्त्री० कोकिलाक्ष वृक्ष।

वज्री–स्त्री० (सं०) सेंहुड़।

वज्री(ज्रिन्)–पु० (सं०) इंद्र; उल्लू; बौद्ध सन्न्यासी। **–(ज्रि)जित्**–पु० गरुड़।

वज्रेश्वरी–स्त्री० (सं०) एक देवी (बौ०); एक तांत्रिक अनुष्ठान।

वज्रोद्गत–पु० (सं०) एक समाधि।

वज्रोली–स्त्री० (सं०) उँगलियोंकी एक विशेष मुद्रा (हठयोग)।

वट–पु० (सं०) बरगदका वृक्ष; कौड़ी; गोली; बटिका; छोटा गेंद; शून्य; एक तरहकी रोटी; रस्सी; एकरूपता; एक तरहका पक्षी। **–गमनी**–स्त्री० (हिं०) एक मैथिली लोकगीत। **–च्छद, –पत्र**–पु० एक तरहकी सफेद तुलसी। **–पत्रा**–स्त्री० एक तरहकी चमेली। **–पत्री**–स्त्री० पत्थरफोड़ नामक पौधा। **–वासी(सिन्)**–पु० यक्ष। **–सावित्री व्रत**–पु० सौभाग्यवती स्त्रियोंका एक व्रत।

वटक–पु० (सं०) बड़ा, पकौड़ा; बट्टा; गोली; आठ माशेकी तौल।

वटर–पु० (सं०) एक चिड़िया, बटेर; एक सुगंधित तृण; बिछौना; एक तरहका भ्रमर; मथानी; पगड़ी; चटाई; चोर।

वटाकर, वटारक–पु० (सं०) रस्सी।

वटाश्रय–पु० (सं०) कुबेर।

वटि–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चींटी।

वटिक–पु० (सं०) शतरंजका मोहरा।

वटिका–स्त्री० (सं०) गोली; बटी; शतरंजकी गोटी।

वटी–स्त्री० (सं०) गोली; रस्सी।

वटी(टिन्)–वि० (सं०) जिसमें डोरी लगी हो; गोल। पु० दे० 'वटिक'।

वटु–पु० (सं०) ब्रह्मचारी; बालक।

वटुक–पु० (सं०) भैरव-विशेष; बालक; ब्रह्मचारी।

वटोदका–स्त्री० (सं०) एक नदी (भा०)।

वट्टक–पु० (सं०) गोली, वटिका।

वठर–पु० (सं०) चिकित्सक; जलपात्र; शब्द गढ़नेवाला पंडित; दुष्ट जन; मूर्ख। वि० मूर्ख; दुष्ट; धीमा, मन्द।

वडव–पु० (सं०) वह घोड़ा जो घोड़ी जैसा हो। **–धेनु**–स्त्री० घोड़ी।

वडवा–स्त्री० (सं०) घोड़ी; अश्विनी नक्षत्र; दासी; वेश्या; ब्राह्मण जातिकी स्त्री। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० उच्चैःश्रवा। **–मुख**–पु० वडवानल; शिव। **–सुत**–पु० अश्विनीकुमार।

वडसा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया।

वडभि, वडभी–स्त्री० (सं०) सबसे ऊपरकी मंजिलपरका कमरा; मकानकी ढालू छाजन।

वडव–पु० (सं०) दे० 'वडव'।

वडवा–स्त्री० (सं०) दे० 'वडवा'।

वडहंसिका, वडहंसी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

वडा–स्त्री० (सं०) गोली, वटिका।

वडिश–पु० (सं०) कँटिया, बंसी; नश्तर लगानेका एक औजार।

वडू–वि० (सं०) बड़ा, बृहत्।

वण–पु० (सं०) शब्द, शोरगुल।

वणिक्(ज्)–पु० (सं०) वाणिज्य, व्यापार करनेवाला; बनिया। **–(क्)कटक**–दे० 'वणिक्सार्थ'। **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० बनियेका पेशा, सौदागरी। **–पथ**–पु० व्यापार; दुकान; तुला राशि। **–वाद**–पु० वाणिज्यवाद (अर्थ०)। **–सार्थ**–पु० व्यापारियोंका गिरोह, कारवाँ।

वणिग्ग्राम–पु० (सं०) व्यापारियोंका मंडल।

वणिग्बंधु–पु० (सं०) नीलका पौधा।

वणिग्भाव–पु० (सं०) व्यापार।

वणिग्वह–पु० (सं०) ऊँट।

वणिग्वीथी–स्त्री० (सं०) हाट, बाजार।

वणिग्वृत्ति–स्त्री० (सं०) व्यापार।

वणिज–पु० (सं०) सौदागर; शिव; तुला राशि; एक करण (ज्यो०)।

वणिजक–पु० (सं०) व्यापारी।

वणिजा–स्त्री० (सं०) व्यापार।

वणिज्य–पु०, **वणिज्या**–स्त्री० (सं०) व्यापार, सौदागरी, वाणिज्य।

वतंस–पु० (सं०) कर्णभूषण; शेखर; हार।

वतंसित–वि० (सं०) दे० 'अवतंसित'।

वत–अ० (सं०) खेद, अनुकंपा, संतोष, विस्मय आदिका बोधक एक शब्द।

वतन–पु० (अ०) जन्मस्थान; मूल वासस्थान, स्वदेश। **–दोस्त**–पु० देश-हितैषी। **–परस्ती**–स्त्री० देशभक्ति। **–फरोश**– वि० देशद्रोही।

वतनी–वि० अपने देशका, स्वदेशी; स्वदेशवासी।

वतीरा–पु० (अ०) तरीका, दस्तूर, चलन, राह, प्रथा, टेव।

वतू–स्त्री० (सं०) स्वर्गकी एक नदी। पु० सड़क; आँखका एक रोग; सच बोलनेवाला व्यक्ति।

वतोका–स्त्री० (सं०) वंध्या स्त्री; वह स्त्री या गाय जिसका गर्भ दुर्घटना आदिसे गिर जाय।

वत्–अ० (सं०) सादृश्य या समानतासूचक एक शब्द जो संज्ञा या विशेषणके अंतमें जोड़ा जाता है।

वत्स–पु० (सं०) बछड़ा, गायका बच्चा; संतान; पुत्र (प्रायः प्यारका सूचन करनेके लिए संबोधनमें प्रयुक्त); वर्ष; वत्सासुर; वक्ष, छाती; इन्द्रजौ; एक देश। **–कामा**–वि० स्त्री० बच्चोंको प्यार करनेवाली; बच्चेकी चाह करनेवाली (स्त्री या गाय)। **–घोष**–पु० नक्षत्रोंके प्रथम वर्गमें स्थित एक देश। **–तंती,–तंत्री**–स्त्री० बछड़ोंको बाँधनेकी लंबी रस्सी। **–दंत**–पु० एक तरहका बाण। **–नाभ**–पु० एक विषैला पौधा, एक तेज जहर, बछनाग। **–पाल,–पालक**–पु० बछड़ोंकी देखभाल करनेवाला; कृष्ण; बलराम। **–पीता**–स्त्री० वह गाय जो बछड़ेको दूध पिला चुकी हो। **–राज**–पु० वत्स देशका राजा, उदयन। **–रूप**–पु० छोटा बछड़ा। **–शाला**–स्त्री० वह स्थान जहाँ बछड़े रखे जायँ।

वत्सक–पु० (सं०) बछड़ा; छोटा बछड़ा; शिशु, बच्चा; कुटज; पुष्पकसीस; इंद्र जौ; निर्गुंडी। **–बीज**–पु० इंद्र जौ।

वत्सतर–पु० (सं०) जवान बछड़ा जो हलमें न जोता गया हो।

वत्सतरी–स्त्री० (सं०) तीन सालकी बछिया, कलोर।

वत्सर–पु० (सं०) वर्ष, साल।

वत्सरांतक–पु० (सं०) वर्षका अंतिम मास।

वत्सरादि–पु० (सं०) वर्षका पहला मास।

वत्सरार्ण–पु० (सं०) एक वर्षके लिए लिया या दिया हुआ ऋण।

वत्सल–वि० (सं०) पुत्र-प्रेमसे युक्त; छोटोंके प्रति पुत्र-सा प्रेम करनेवाला। पु० पुत्रादिके प्रति प्रेमभाव; तृणकी आग; विष्णुका एक नाम; प्यार।

वत्साक्षी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ककड़ी।

वत्सादन–पु० (सं०) भेड़िया।

वत्सादनी–स्त्री० (सं०) गुड़ुच।

वत्सासुर–पु० (सं०) कंसका अनुचर एक असुर जिसे कृष्णने मारा था।

वत्सिका–स्त्री० (सं०) बछिया।

वत्सिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) बचपन, बाल्यावस्था।

वत्सी(त्सिन्)–पुं० (सं०) विष्णु। वि० जिसके बहुत-से बच्चे हों।

वत्सीय–पु० (सं०) गोपालक। वि० वत्स-संबंधी।

वदंति, वदंती–स्त्री० (सं०) बात, कथन; कथा।

वद–वि० (सं०) बोलनेवाला (समासांतमें–जैसे प्रियंवद)।

वदक–पु० (सं०) वक्ता, कहनेवाला।

वदतोव्याघात–पु० (सं०) कथनका दोष, पहले कही हुई बातके विरुद्ध कहना।

वदन–पु० (सं०) चेहरा, मुखड़ा; मुख; शक्ल; भाषण, कथन; अग्रभाग; त्रिभुजका शीर्ष। **–पवन,–मारुत**–पु० साँस। **–मदिरा**–स्त्री० मुखामृत, अधरामृत। **–श्यामिका**–स्त्री० मुखका एक रोग; चेहरेपरका कालापन।

वदनामय–पु० (सं०) मुखका रोग।

वदनासव–पु० (सं०) लार, थूक; अधरमधु।

वदनोदर–पु० (सं०) मुखका गह्वर।

वदन्य, वदान्य–वि० (सं०) उदार; अत्यंत दानशील; वाग्मी; मधुरभाषी, बातसे संतुष्ट करनेवाला। पु० उदार व्यक्ति।

वदमान–वि० (सं०) बोलनेवाला, भाषण करनेवाला।

वदर–पु० (सं०) बेर; कपासका बीज।

वदरा–स्त्री० (सं०) कपासका पौधा।

वदाद–पु० (अ०) इच्छा; आकांक्षा; कामना।

वदाम–पु० (सं०) बादाम नामक फल।

वदाल–पु० (सं०) आवर्त, भँवर; एक मछली, पहिना, पाठीन।

वदालक–पु० (सं०) एक तरहकी मछली, वदाल।

वदावद–वि० (सं०) बहुत बोलनेवाला।

वदि–अ० (सं०) कृष्णपक्षमें (महीनेके नामके अंतमें जोड़ा जाता है)।

वदितव्य–वि० (सं०) कहने योग्य।

वदिता(तृ)–पु० (सं०) बोलने, कहनेवाला।

वदी–अ० दे० 'वदि'।

वदीअत–स्त्री० (अ०) अमानत, धरोहर।

वदीद, वदूद–वि० (अ०) मित्र, सखा।

वदुसना–स० क्रि० भला-बुरा कहना, दोषारोप करना।

वद्य–वि० (सं०) कहने योग्य, अनिंद्य। पु० बात, कथन; कृष्ण पक्षके दिन। **–पक्ष**–पु० कृष्ण पक्ष।

वध–पु० (सं०) मार डालना, नाश, हनन; मृत्यु *या शारीरिक दंड*;

आघात; लकवा; विलोप; गुणनक्रिया । **–कर्मचारी**–पु० (हैंगजमैन) फांसी देनेका काम करनेवाला कर्मचारी; दे० 'वधकर्माधिकारी' । **–कर्माधिकारी(रिन्)**–पु० जल्लाद । **–कांक्षी(क्षिन्)**–वि० मृत्युकी इच्छा करनेवाला । **–काम**–वि० मारनेकी इच्छा रखनेवाला । **–काम्या**–स्त्री० मारनेकी इच्छा । **–क्षम**–वि० वधके योग्य । **–जीवी(विन्)**–पु० वधका काम करके रोजी कमानेवाला–कसाई, जल्लाद, व्याधा आदि । **–दंड,–निग्रह**–पु० फाँसीकी सजा । **–निर्णेक**–पु० हत्याका प्रायश्चित्त । **–भूमि**–स्त्री०,**–स्थान**–पु० वह स्थान जहाँ प्राणदंड दिया जाय, वधस्थल ।

वधक–वि० (सं०) हत्या करनेवाला; घातक । पु० जल्लाद; व्याधा; मृत्यु; एक तरहका सरकंडा ।

वधत्र–पु० (सं०) घातक हथियार ।

वधना–अ० क्रि० बढ़ना, उन्नति करना । स० क्रि० किसीका वध करना ।

वधांगक–पु० (सं०) कारागृह ।

वधार्ह–वि० (सं०) वधके योग्य ।

वधालय–पु० (स्लॉटर हाउस) पशुओंके वध करनेका स्थान, बूचड़खाना ।

वधिक–पु० दे० 'वधिक'; (सं०) कस्तूरी ।

वधित्र–पु० (सं०) कामदेव; कामासक्ति ।

वधिर–वि० (सं०) दे० 'बधिर' ।

वधु, वधुका–स्त्री० (सं०) पुत्रवधू; दुलहिन; युवती ।

वधुटी, वधूटी–स्त्री० (सं०) पिताके साथ रहनेवाली नवयुवती; पुत्रवधू ।

वधू–स्त्री० (सं०) दुलहिन; पत्नी; पतोहू; स्त्री; मादा जानवर । **–गृहप्रवेश**–पु० स्त्रीका पतिके घरमें प्रवेश करनेकी एक विधि । **–धन**–पु० स्त्रीका निजी धन । **–पक्ष**–पु० कन्यापक्षके लोग । **–वस्त्र**–पु० विवाहके समय कन्याको दिया जानेवाला वस्त्र ।

वधूत*–पु० दे० 'अवधूत' ।

वधोदर्क–वि० (सं०) जिसकी परिणति मृत्युमें हो ।

वधोद्यत–वि० (सं०) मारनेको तत्पर । पु० हत्यारा ।

वधोपाय–पु० (सं०) मारनेका हथियार या उपाय ।

वध्य–वि० (सं०) हंतव्य, मार डालने योग्य; दंड्य । पु० वह जिसका वध या सजा की जानेवाली हो । **–घातक,–घ्न**–वि०, पु० प्राणदंड पाये हुए व्यक्तिका वध करनेवाला । **–चिह्न**–पु० प्राणदंड पाये हुए अपराधीका चिह्न । **–डिंडिम**–पु० 'वध्यपटह' । **–पट**–पु० वधदंड दिये जानेके समयका लाल वस्त्र । **–पटह**–पु० फांसी देनेके समय की जानेवाली मुनादी । **–पाल**–पु० कारारक्षक, 'जेलर' । **–भूमि**–स्त्री०,**–स्थल,–स्थान**–पु० दे० 'वधभूमि' । **–माला**–स्त्री० प्राणदंड पानेवालेके सिरपर पहनाया जानेवाला हार । **–वास(स्)**–पु० प्राणदंड पाये हुए व्यक्तिका वस्त्र । **–शिला**–स्त्री० वहाँ शिला या वेदी जिसपर वध किया जाता है ।

वध्या–स्त्री० (सं०) वध, हत्या ।

वध्र–पु० (सं०) एक धातु, सीसा; चमड़ेका तसमा ।

वध्रक–पु० (सं०) सीसा ।

वध्रि–वि० (सं०) वधिया ।

वध्रिका–पु० (सं०) बधिया पुरुष, खोजा ।

वध्री–स्त्री० (सं०) चमड़ेका तसमा ।

वध्र्य–पु० (सं०) जूता ।

वन–पु० (सं०) जंगल; बाग, उपवन; जल; घर; झरना; पद्मादिका समूह; पुष्पस्तवक, फूलोंका गुच्छा; संन्यासियोंकी एक उपाधि; काठका पात्र; काष्ठ; अरण्य-निवास; प्रकाशकी किरण । **–कंडूल**–पु० एक अच्छी जातिका सूरन । **–कटाई**–स्त्री० दे० 'वननाशन' । **–कणा**–स्त्री० वनपिप्पली । **–कदली**–स्त्री० जंगली केला ।**–करी(रिन्)**–पु०दे० 'वनकुंजर' । **–काम**–वि० जंगलमें रहनेका इच्छुक ।**–कुंजर,–गज**–पु० जंगली हाथी । **–कोकिलक**–पु० एक वृत्त । **–कोद्रव**–पु० एक कदन्न ।**–कोलि**–स्त्री० जंगली बेर । **–ग**–पु० वनवासी ।**–गमन**–पु० संन्यासग्रहण । **–गहन**–पु० घना जंगल । **–गुप्त**–पु० जासूस ।**–गोचर**–वि० प्रायः जंगलमें जानेवाला; जलमें रहनेवाला । पु० व्याधा; वनवासी; जंगल । **–ग्राही(हिन्)**–पु० व्याधा । **–चंदन**–पु० अगरु, देवदारु । **–चंद्रिका,–ज्योत्स्ना**–स्त्री० एक तरहकी चमेली । **–चंपक**–पु० चंपाका एक भेद । **–चर**–पु० वनमें भ्रमण करनेवाला आदमी; जंगली आदमी; पशु; एक जीव; शरभ । **–चारी(रिन्)**–पु० वनचर । **–छाग**–पु० जंगली बकरा; सूअर । **–ज**–वि० वनमें उत्पन्न । पु० जंगलमें रहनेवाला; हाथी; कमल; मोथा; जंगली बिजोरा नीबू; वनकुलथी; एक फल, तुंबुरु । **–जा**–स्त्री० वनतुलसी, वनकपासी; अश्वगंधा; निर्गुंडी; मुद्गपर्णी; सफेद कंटकारि । **–जात**–वि० वनमें उत्पन्न । **–जीर**–पु० काली जीरी । **–जीवी(विन्)**–पु० लकड़हारा; बहेलिया । **–तिक्त**–पु० हड़, हरीतकी । **–तिक्ता,–तिक्तिका**–स्त्री० पाठा । **–तुलसी**–स्त्री० बर्बरी । **–द**–पु० बादल । – **–दाह**–पु० वनाग्नि । **–दीप**–पु० वनचंपक । **–देव,–देवता**–पु० जंगलका अधिष्ठाता देवता । (स्त्री० 'वनदेवी' ।) **–द्विप**–पु० वनकुंजर । **–धान्य**–पु० जंगली अन्न । **–धेनु**–स्त्री० गवयी । **–नाशन**–पु० (डीफॉरेस्टेशन) किसी क्षेत्रको जंगल या जंगलोंसे रहित कर देना ।**–पल्लव**–पु० शोभांजन नामक वृक्ष । **–पांसुल**–पु० व्याधा । **–पाल**–पु० (रेंजर) जंगल या वनकी देख-भाल करनेवाला अधिकारी । **–पिप्पली**–स्त्री० छोटी पीपल । **–पूरक**–पु० जंगली बिजौरा नीबू । **–प्रवेश**–पु० दे० 'वनगमन' । **–प्रस्थ**–वि० तपस्वी । **–प्रिय**–पु० कोयल; साँभर हिरन; बहेड़ेका पेड़; कपूरकचरी । **–भूषणी**–स्त्री० कोयल । **–मक्षिका**–स्त्री० डाँस । **–मल्लिका**–स्त्री० सेवतीका पौधा या फूल । **–महोत्सव**–पु० (सं०) वर्षा ऋतुमें वृक्षारोपणका कार्यक्रम । **–मातंग**–पु० वनकुंजर । **–मानुष**–पु० एक तरहका बंदर । **–माला**–स्त्री० वनके फूलोंकी माला; घुटनोंतक लंबी ऋतु-कुसुमोंकी माला (कृष्णकी) । **–मालिनी**–स्त्री० द्वारकापुरी; वाराही । **–माली(लिन्)**–वि० वनमाला पहननेवाला । पु० कृष्ण । **–मुक्(च्)**, **–मूत**–पु० बादल । **–मुद्ग**–पु० मुकुष्टक । **–मुद्गा**–स्त्री० मुद्गपर्णी । **–मूर्द्धजा**–स्त्री० जंगली बिजौरा नीबू; काकड़ासिंगी । **–मोचा**–स्त्री० जंगली केला । **–रक्षक,–संरक्षक**–पु० (कनसर्वेटर ऑफ फॉरेस्ट्स) वनोंका संरक्षण करनेवाला; उन्हें हानि या विनाशसे बचानेवाला । **–राज**–पु० सिंह; एक वृक्ष, अश्मंतक । **–राजि,–राजी**–स्त्री० वन, जंगल, वृक्षसमूह; जंगलकी पगडंडी; वासुदेवकी एक दासी । **–रुह**–पु० कमल । **–रोपण**–पु० (एफॉरेस्टेशन) किसी भूमिको वन या जंगलके रूपमें परिणत करनेका काम । **–लक्ष्मी**–स्त्री० वनकी शोभा; केला । **–लता**–स्त्री० जंगली बेल । **–वर्वरिका**–स्त्री० वनबबुरी । **–वास**–पु० वनमें रहना । (मु०–०देना–बस्ती छोड़कर वनमें रहनेकी आज्ञा देना । –०लेना–बस्ती छोड़कर वनमें रहना ।) **–वासक**–पु० शाल्मली कंद; एक प्राचीन नगर । **–वासन**–पु० गंधबिलाव । **–वासी(सिन्)**–वि० वनमें रहनेवाला । पु० वनमें रहनेवाला व्यक्ति; एक ओषधि, ऋषभ, वाराही कंद; शाल्मली कंद; द्रोणकाक, काला कौआ; नीलमहिष नामक कंद; एक प्राचीन नगर । **–विज्ञान**–पु० (सिलवी कलचर) वृक्षारोपण आदिसंबंधी विज्ञान । **–विलासिनी**–स्त्री० एक लता, शंखपुष्पी । **–बीज,–बीजक**–पु० जंगली बिजौरा नीबू । **–वृंताकी**–स्त्री० वनभंटा । **–वृत्ति**–स्त्री० जंगलसे जीविका चलाना । **–व्रीहि**–पु० तिन्नी । **–शूकर**–पु० जंगली सूअर । **–शूकरी**–स्त्री० केवाँच; जंगली सूअरी । **–शृंगाट,–शृंगाटक**–पु० गोखरू । – **–शोभन**–पु० कमल । **–श्वा (श्वन्)**–पु० गीदड़; बाघ; गंधबिलाव । **–संकट**–पु० मसूर । **–संस्कृति**–स्त्री० (फॉरेस्ट कल्चर) आदिकालीन अरण्य संस्कृति । **–समूह**–पु० घना जंगल । **–सरोजिनी**–स्त्री० बनकपासी । **–सिंधुर**–पु० वनकुंजर । **–स्थ**–पु० वनवासी व्यक्ति; वानप्रस्थ; मृग । **–स्थली**–स्त्री० वनकी भूमि, जहाँ वन हो । **–स्था**–स्त्री० पीपल वृक्ष; वटवृक्ष । **–स्थायी(यिन्)**–वि० जंगलमें रहनेवाला । पु० तपस्वी । **–स्रक्(ज्)**–स्त्री० वनमाला, जंगली फूलोंकी माला । **–हरि**–पु० सिंह । **–हरिद्रा**–स्त्री० वनहलदी । **–हव**–पु० एक एकाह यज्ञ ।

–हास–पु० काँस; एक फूल, कुंद। **–हासक**–पु० काशतृण। **–हुताशन**–पु० वनाग्नि।

वनर–पु० (सं०) वनमानुस।

वनस्पति–स्त्री०, पु० (सं०) बिना फूलोंके वृक्ष (गूलर, पीपल, पाकर आदि–मनु०); लता, वृक्ष आदि; मूँगफली आदिका जमाया हुआ तेल (आ०); बरगद; सोम; तना; यज्ञस्तंभ; फाँसीकी टिकठी। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; विष्णु; सन्न्यासी। **–विज्ञान,–शास्त्र**–पु० पेड़, पौधों आदिके विषयमें सांगोपांग विवेचन करनेवाला विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान।

वनांत–पु० (सं०) वनकी भूमि; वनका सीमांत भाग।

वनांतर–पु० (सं०) अन्य वन; वनका भीतरी भाग।

वनाखु–पु० (सं०) खरहा।

वनाग्नि–स्त्री० (सं०) वनमें लगनेवाली आग, दावानल।

वनाज–पु० (सं०) जंगली बकरा।

वनाटन–पु० (सं०) वन-भ्रमण।

वनाटु–पु० (सं०) एक तरहकी नीली मक्खी।

वनायु–पु० (सं०) एक प्राचीन प्रदेश (अच्छे घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध); वनायुका निवासी; पुरूरवाका एक पुत्र। **–ज**–पु० वनायुमें उत्पन्न घोड़ा।

वनारिष्टा–स्त्री० (सं०) वनहरिद्रा।

वनार्चक–पु० (सं०) हार बनानेवाला।

वनालक्त, वनालक्तक–पु० (सं०) गेरू।

वनालिका–स्त्री० (सं०) एक लता, हाथीसुंडी।

वनाश–वि० (सं०) केवल जल पीकर रहनेवाला। पु० एक तरहका छोटा जौ।

वनाश्रय–पु० (सं०) काला कौआ; जंगलमें रहनेवाला।

वनाहिर–पु० (सं०) जंगली सूअर।

वनि–पु० (सं०) अग्नि; ढेर; याचना। स्त्री० इच्छा।

वनिका–स्त्री० (सं०) छोटा वन, कुंजवन।

वनित–वि० (सं०) याचित; सेवित; अभिलषित; पूजित।

वनिता–स्त्री० (सं०) स्त्री; प्रिया, प्रेयसी; मादा; एक वृत्त, तिलका, डिल्ला। **–द्विट्(ष्)** –पु० रमणी-द्वेषी। **–भोगिनी**–स्त्री० नागिन जैसी स्त्री। **–मुख**–पु० एक जाति। **–विलास**–पु० स्त्रियोंका विहार, क्रीड़ा आदि।

वनी–स्त्री० (सं०) छोटा वन।

वनी(निन्)–पु० (सं०) वानप्रस्थ; वृक्ष; सोम।

वनीक, वनीपक, वनीयक–पु० (सं०) भिक्षुक; सन्न्यासी।

वनेंकिशुक–पु० (सं०) अचानक या सहज मिलनेवाली वस्तु।

वनेचर–पु० (सं०) वनचर, जंगलमें फिरनेवाला; जंगली आदमी; सन्न्यासी; पशु।

वनेज्य–पु० (सं०) बढ़िया आम; पापड़ा, पर्पट।

वनेविल्वक–पु० (सं०) दे० 'वनेंकिशुक'।

वनोत्सर्ग–पु० (सं०) मंदिर, कूप आदि बनवाकर सार्वजनिक उपयोगके लिए दान करना; ऐसे उत्सर्गकी शास्त्रीय विधि।

वनोत्साह–पु० (सं०) गैंड़ा।

वनोद्भवा–स्त्री० (सं०) बनकपासी।

वनोपप्लव–पु० (सं०) वनदाह।

वनोपल–पु० (सं०) सूखा गोबर, कंडा।

वनौका(कस्)–पु० (सं०) तपस्वी; अरण्यवासी; बंदर, शूकर आदि जानवर।

वनौषधि–स्त्री० (सं०) जंगली जड़ी-बूटी।

वन्न–पु० (सं०) साझीदार, भागी।

वन्नरवाल*–स्त्री० (सं०) वंदनवार।

वन्य–वि० (सं०) वनमें पैदा होनेवाला; जंगली; अशिष्ट। पु० जंगली जानवर; जंगली पौधा; वाराहीकंद; बनसूरन; शंख; त्वचा; राख। **–द्विप**–पु० जंगली हाथी। **–पक्षी(क्षिन्)**–पु० जंगली चिड़िया। **–वृत्ति**–स्त्री० जंगलमें उत्पन्न पदार्थ। वि० ऐसी चीजोंपर जीवन वितानेवाला।

वन्या–स्त्री० (सं०) सघन वन; वनोंका समूह; जल-प्लावन; जलराशि; गोपाल-ककड़ी; असगंध; घुँघची; मुद्गपर्णी; भद्रमुस्ता।

वन्योपोदकी–स्त्री० (सं०) वनपोय।

वप–पु० (सं०) मुंडन; बीज बोना; वयन; बोनेवाला।

वपन–पु० (सं०) बीज बोना; केश-मुंडन; शुक्र; नाईकी दुकान; तंतुशाला; करवा।

वपनी–स्त्री० (सं०) बाल बनाने या कपड़ा बुननेका स्थान।

वपनीय–वि० (सं०) बोने योग्य; मुंडनके योग्य।

वपा–स्त्री० (सं०) मेद; बाँबी; विवर; आँतोंका पर्दा। **–कृत्**–पु० मज्जा।

वपित–वि० बोया हुआ।

वपिल–पु० (सं०) जनक, पिता।

वपुःस्रव–पु० (सं०) शरीरका रस।

वपु–पु० (सं०) शरीर।

वपु(स्)–पु० (सं०) शरीर, देह; आकृति; सौंदर्य; सुंदर रूप।

वपुन–पु० (सं०) ज्ञान; देवता।

वपुमान–वि० वपुष्मान्, सुंदर और पुष्ट देहवाला; सुंदर; साकार, मूर्त।

वपुर्धर–वि० (सं०) मूर्त; सुंदर।

वपुष–पु० (सं०) आकृति-सौंदर्य।

वपुषा–स्त्री० (सं०) हवुषा।

वपुष्टमा–वि० स्त्री० (सं०) परम सुंदरी। स्त्री० पद्मचारिणी लता; जनमेजयकी पत्नी।

वपुष्मान्(ष्मत्)–वि० (सं०) शरीरी, मूर्त; सुंदर।

वपोदर–वि० (सं०) तोंदवाला।

वप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) पिता, जनक; नाई; बीज बोनेवाला, किसान; कवि (कोशगत अर्थ)।

वप्र–पु० (सं०) भीटा, ढूहा, मिट्टीका स्तूप; दुर्ग, नगरकी खाईसे निकली मिट्टी; साँड़ आदिका सींगसे ढूह आदिकी मिट्टी कुरेदना; ऊँचा किनारा, तट; खेत; धूल; पहाड़ोंकी ढाल; पहाड़की चोटी; अधित्यका; नींव; दुर्गस्थ नगरका सिंहद्वार; परिखा; मैदान; घेरा; एक प्रजापति; सीसा; पिता; व्यास, कृष्णद्वैपायन; चौदहवें मनुका एक पुत्र। **–क्रिया,–क्रीड़ा**–स्त्री० साँड़ आदिका ढूहकी मिट्टी कुरेदना।

वप्रक–पु० (सं०) पहियेका घेरा; परिधि।

वप्रा–स्त्री० (सं०) मजीठ; तीर्थंकर निमिकी माता (जै०); मिट्टीका चिपटे सिरेका बाँध।

वप्रि–पु० (सं०) समुद्र; क्षेत्र; दुर्गति, स्थानकी दुर्गमता।

वप्री–स्त्री० (सं०) बाँबी, मिट्टीका ढूहा।

वफ़ा–पु० (अ०) वचनका पालन; (प्रीति, मित्रता आदिका) निर्वाह; कर्तव्यपालन; मुरौवत; कृतज्ञता; निष्ठा। **–ओ जफ़ा**–स्त्री० वफादारी और अत्याचार। **–कोश**–वि० प्रेम निबाहनेकी कोशिश करनेवाला। **–दार**–वि० वचन-पालक; प्रीति, मित्रता आदिका निर्वाह करनेवाला; स्वामिभक्त, राजभक्त। **–दारी**–स्त्री० वफादार होना; प्रीति आदिका निर्वाह; स्वामिभक्ति, राजभक्ति; निष्ठा। **–दुश्मनी**–स्त्री० वफासे चिढ़, वैर। **–परस्ती**–स्त्री० अत्यधिक वफादारी। **–शनास**–वि० प्रेमी। **–शिकन**–वि० वेवफा।

वफ़ात–स्त्री० (अ०) मृत्यु, मौत। मु० **–पाना**–मर जाना।

वफ़्द–पु० (अ०) दूतमंडल, प्रतिनिधि-मंडल, 'डेपुटेशन'।

वबा–स्त्री० (अ०) मरी, महामारी, एक ही वक्तमें बहुतोंको होनेवाला रोग (हैजा, प्लेग इ०)। **–ई**–वि० महामारीरूप, छुतही (बीमारी)। **–ए आम**–स्त्री० महामारी।

वबर–पु० (अ०) बाल; ऊन।

वबाल–पु० (अ०) कठिनाई; बोझ, भार; बला, अभिशाप; पापका फल। वि० भाररूप, दूभर। **–(ले) जान**–वि० जानका अजाब, भारी कष्टका कारण (हो जाना)। मु० **–पड़ना**–दुखियाकी आह पड़ना।

वम–पु० (सं०) वमन, कै।

वमति–स्त्री० (सं०) वमन करनेकी क्रिया।

वमथु–पु० (सं०) वमन; थूक; मतली; हाथीकी सूँड़से निकाला हुआ पानी।

वमन–पु॰ (सं॰) उलटी, कै करना; बाहर निकालना; पीड़ा; आहुति; वमन करानेवाली दवा; भाँग।

वमना*–स॰ क्रि॰ कै करना।

वमनी–स्त्री॰ (सं॰) जोंक।

वमनीया–स्त्री॰ (सं॰) मक्खी।

वमि–स्त्री॰ (सं॰) वमनका रोग; वमन करानेवाली दवा। पु॰ अग्नि; दुष्ट; धतूरा।

वमित–वि॰ (सं॰) वमन किया हुआ; वमन कराया हुआ।

वमी–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'वमि'।

वमी(मिन्)–वि॰ (सं॰) वमि रोगसे ग्रस्त।

वम्य–वि॰ (सं॰) जिससे वमन कराया जाय।

वम्र–पु॰ (सं॰) दे॰ 'वम्री'।

वम्रक–पु॰ (सं॰) चींटा; दीमक। वि॰ बहुत छोटा।

वम्री–स्त्री॰ (सं॰) चींटी; दीमक। **–कूट**–पु॰ बाँबी, बिमौट।

वयः–पु॰ (सं॰) उम्र, अवस्था। **–क्रम**–पु॰ उम्र, अवस्था। **–परिणति**–स्त्री॰ अवस्थाकी प्रौढ़ता। **–प्रमाण**–पु॰ जीवनकाल। **–संधि**–स्त्री॰ बाल्य और तारुण्यके बीचका काल। **–स्थ**–वि॰ जवान; बली; प्रौढ़। पु॰ समसामयिक व्यक्ति; समवयस्क मित्र। **–स्था**–स्त्री॰ शाल्मलि; युवती; आमलका; हरीतकी; गुडुची; छोटी इलायची; काकोली; अत्यम्लपर्णी; मत्याक्षी; युवती; सखी। **–स्थान**–पु॰ यौवन। **–स्थापन**–पु॰ जवानी बनाये रखना।

वय–पु॰ (सं॰) जुलाहा।

वय(स्)–पु॰, स्त्री॰ (सं॰) उम्र, अवस्था; जवानी; पक्षी; वया; शक्ति, स्वास्थ्य; जुलाहा। **–(स्)कर,–कृत्**–वि॰ स्वास्थ्य-वर्द्धक।

वयन–पु॰ (सं॰) बुनना, बुननेकी क्रिया।

वयम्–सर्व॰ (सं॰) हम सब।

वयस–स्त्री॰ अवस्था, उम्र। पु॰ (सं॰) पक्षी।

वयसिका–स्त्री॰ दे॰ 'वयस्यिका'।

वयस्क–वि॰ (सं॰) उम्र, अवस्थाका (समस्तरूपमें प्रयुक्त–जैसे अल्पवयस्क, समवयस्क); सयाना, बालिग। **–मताधिकार**–पु॰ (ऐडल्ट सफरेज) विधानसभा आदिके प्रतिनिधि चुननेका वह अधिकार जो राज्यके सभी वयस्क नागरिकोंको, बिना किसी भेद-भावके, प्राप्त होता है।

वयस्थ–वि॰ (सं॰) दे॰ 'वयःस्थ'।

वयस्य–वि॰ (सं॰) समवयस्क; समसामयिक। पु॰ हमजोली, मित्र (प्रायः संबोधनमें प्रयुक्त)। **–भाव**–पु॰ मैत्री।

वयस्यक–पु॰ (सं॰) समसामयिक व्यक्ति; सखा, मित्र।

वयस्या–स्त्री॰ (सं॰) सहेली; अंतरंग सखी; ईंट।

वयस्यिका–स्त्री॰ (सं॰) सखी, सहेली; विश्वस्त दासी।

वया–स्त्री॰, **वयाक**–पु॰ (सं॰) डाली, टहनी; लता।

वयार*–स्त्री॰ दे॰ 'बयार'।

वयुन–पु॰ (सं॰) ज्ञान; मंदिर; आदेश, नियम; रीति; स्पष्टता।

वयोगत–वि॰ (सं॰) अधिक अवस्थाका, प्रौढ। पु॰ प्रौढावस्था।

वयोत्तर–वि॰ (ओव्हर-एज) जिसकी उम्र अधिक हो गयी हो, जो निर्धारित वयसे अधिकका हो।

वयोधा–स्त्री॰ (सं॰) शक्ति; शक्तिकी वृद्धि।

वयोधा(धस्)–पु॰ (सं॰) मध्य अवस्थाका व्यक्ति।

वयोधिक–वि॰ (सं॰) अवस्थामें अधिक।

वयोबाल–वि॰ (सं॰) अल्प अवस्थाका।

वयोरंग–पु॰ (सं॰) सीसा।

वयोवंग–पु॰ (सं॰) सीसा।

वयोविशेष–पु॰ (सं॰) अवस्थाका अंतर।

वयोवृद्ध–वि॰ (सं॰) बूढ़ा, अधिक उम्रवाला।

वयोहानि–स्त्री॰ (सं॰) शक्तिका ह्रास; बुढ़ापा आना।

वरंच–अ॰ (सं॰) बल्कि, अपितु; लेकिन।

वरंड–पु॰ (सं॰) बंसीकी डोरी; मुँहासा; घासका ढेर; राशि, समूह; दो लड़नेवाले हाथियोंको अलग करनेवाली फीलखानेकी दीवार। **–लंबुक**–पु॰ बंसीकी डोरी।

वरंडक–पु॰ (सं॰) ढूहा, टीला, मिट्टीका भीटा; दीवार; हौदा; मुँहासा। वि॰ गोल; बड़ा; दुःखी; डरा हुआ।

वरंडा–स्त्री॰ कटार; चिरागकी बत्ती; सारिका; बरामदा।

वरंडालु–पु॰ (सं॰) एरंड वृक्ष।

वर–पु॰ (सं॰) चुनाव; पसंद; इच्छा; देवता या गुरुजनोंसे इच्छा-पूर्तिके लिए की जानेवाली प्रार्थना या उनकी कृपासे मिलनेवाला फल; भेंट; दान; घेरा; बाधा; दूल्हा; प्रेमिका; लंपट; दहेज; जामाता; बालक, लड़का; गौरा; केसर; चिरौंजी; मौलसिरी; हल्दी; अदरक; दारचीनी; सेंधा नमक। वि॰ श्रेष्ठ (समासके अंतमें जैसे विप्रवर, प्रियवर इ॰)। **–क्रतु**–पु॰ इंद्र। **–कोद्रव**–पु॰ कचनार। **–चंदन**–पु॰ काला चंदन; देवदारु। **–ज**–वि॰ बड़ा, ज्येष्ठ, अग्रज। **–तंतु**–पु॰ एक ऋषि। **–तनु**–वि॰ सुंदर अंगोंवाला। **–तनू**–स्त्री॰ सुंदर स्त्री। **–तिक्त**–पु॰ कुटज, कोरैया; पर्पट; रोहितक; नीम। **–तिक्तिका**–स्त्री॰ पाठा। **–त्वच**–पु॰ नीमका पेड़। **–द,–दाता(तृ)**–वि॰ वर देनेवाला। **–दक्षिणा**–स्त्री॰ कन्यापक्षकी ओरसे विवाहके समय वरको दिया जानेवाला धन, दहेज। **–दल**–पु॰ (सं॰) बरात। **–दा**–स्त्री॰ कन्या; हुरहुर; अड़हुल; वाराही कंद; अश्वगंधा। **–॰चतुर्थी**–स्त्री॰ माघशुक्ला चतुर्थी, वरदा चौथ। **–दाता(तृ)**–वि॰ वर देनेवाला। **दान**–पु॰ देवता या गुरुजनका प्रसन्न होना; किसीको इष्ट वस्तु देना; किसीकी कृपासे प्राप्त वस्तु; (प्रकृति, ईश्वर या किसीसे प्राप्त) लाभ और सुखकी वस्तु (अभिशापका उलटा), नियामत। **–दानी(निन्)**–वि॰ वर देनेवाला। **–दायक**–वि॰ वर देनेवाला। पु॰ एक समाधि। **–दारुक**–पु॰ एक पौधा जिसकी पत्तियाँ विषैली होती हैं। **–द्रुम**–पु॰ एक तरहका अगर। **–निश्चय**–पु॰ वर, पतिका चुनाव। **–पक्ष**–पु॰ बराती। **–पर्णाख्य**–पु॰ क्षीरकंचुकी। **–पीतक**–पु॰ अबरक। **–प्रद**–वि॰ (सं॰) वरदाता। **–प्रदा**–स्त्री॰ लोपामुद्रा। **–प्रदान**–पु॰ वर देना। **–प्रभ**–वि॰ अच्छी कांतिवाला। पु॰ एक बोधिसत्त्व। **–प्रस्थान**–पु॰ वरयात्रा। **–फल**–पु॰ नारियल। **–बाह्लिक,–बाह्लीक**–पु॰ केसर। **–मुखी**–स्त्री॰ रेणुका नामक गंधद्रव्य। **–यात्रा**–स्त्री॰ ब्याहके समय वरका बाजे-गाजेके साथ कन्याके घर जाना; बरात। **–युवति,–युवती,–योषित्**–स्त्री॰ सुंदर स्त्री। **–योग्य**–वि॰ वरदानके योग्य; विवाहके योग्य। **–रुचि**–पु॰ एक प्रख्यात वैयाकरण और कवि। **–लब्ध**–वि॰ जिसने वर पाया है; वररूपमें प्राप्त। पु॰ चंपक वृक्ष। **–वत्सला**–स्त्री॰ सास। **–वरण**–पु॰ चुनाव; वरका चुनाव। **–वराह**–पु॰ बर्बर। **–वर्ण**–पु॰ सोना। **–वर्णिनी**–स्त्री॰ उत्तम स्त्री; सरस्वती; लक्ष्मी; गौरी; काकुन, कँगनी; गोरोचन; लाख; हल्दी। **–वर्णी(र्णिन्)**–वि॰ अच्छे रंगका। **–वृद्ध**–पु॰ शिव। **–शिख**–पु॰ एक असुर (इंद्र द्वारा परिवार सहित निहत)। **–सुंदरी**–स्त्री॰ बहुत सुंदर स्त्री। **–सुरत**–वि॰ रतिक्रियाके रहस्योंको जाननेवाला। **–स्त्री॰**–स्त्री॰ शरीफ औरत। **–स्रक्(ज्)**–स्त्री॰ दूल्हेको पहनायी जानेवाली माला, जयमाल।

वर–वि॰ (फा॰) 'आवर'का लघु रूप (संज्ञापदोंसे मिलकर वाला या रखनेवालाका अर्थ देता है–जानवर, किस्मतवर, नामवर)।

वरअ़–स्त्री॰ (अ॰) संयम; इंद्रियनिग्रह।

वरक–पु॰ (सं॰) वस्त्र; लबादा; नावका चँदोवा; कमरमें लपेटनेका अँगोछा; काकुन, प्रियंगु; झड़बेरी; बनमूँग; विवाहकी प्रार्थना करनेवाला।

वरक़–पु॰ (अ॰) कटा हुआ कागज, पुस्तकका पन्ना; सोने, चाँदीका पत्तर; फूलकी पँखुड़ी। **–गरदानी**–स्त्री॰ पुस्तकको उलट-पुलटकर देखना; पढ़नेका ढोंग करना। **–साज़**–पु॰ चाँदी, सोनेका पत्तर बनानेवाला। मु॰ **–उलटना**–पुस्तकको उलट-पलटकर देखना, पुस्तकपर सरसरी निगाह डालना; भारी परिवर्तन, क्रांति होना। **–स्याह करना**–बहुत लिखना।

वरक़ा–पु॰ (अ॰) पुस्तकका पन्ना।

वरक़ी–वि॰ वरकवाला, परतदार।

वरक़ुलख़याल–पु॰ (अ॰) भंग, भांग, विजया।

वरज़िश–स्त्री॰ (फा॰) अभ्यास; शारीरिक श्रम; कसरत,

व्यायाम ।

वरज़िशी–वि० कसरती, व्यायामसे हृष्ट-पुष्ट ।

वरट–पु० (सं०) हंस; भिड़; एक अन्न; कुसुमका बीज; एक फूल, कुंद; शिल्पियोंका एक वर्ग ।

वरटक–पु०, **वरटिका**–स्त्री० (सं०) कुसुम नामक पौधेका बीज ।

वरटा–स्त्री० (सं०) हंसिनी; वर्रे; एक कीड़ा, गँधिया; कुसुमका बीज ।

वरटी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी भिड़; कुंदका फूल ।

वरण–पु० (सं०) चुनना; याचना करना; घेरना; ढकना; रक्षण; पतिका चुनाव; निवारण; पूजन, सत्कार; पुरोहित आदिको दिया जानेवाला दान; परकोटा; पुल; वरुण नामक वृक्ष; ऊँट; धनुष्का एक अलंकार; एक अस्त्र-मंत्र; इंद्र; ❋ रंग । **–माला,–स्रक्(ज्)**–स्त्री० जयमाल । **–स्वातंत्र्य**–पु० (फ्रीडम ऑफ चॉइस) वरण करने, चुननेकी स्वतंत्रता । **–की स्वतंत्रता**–हर मनुष्यको अपने मनोनुकूल चुनाव करनेकी स्वतंत्रता । धारणा, आदर्श, मूल्य आदिमें आत्मनिर्णयकी चेतना ।

वरणक–वि० (सं०) ढकने, छिपानेवाला ।

वरणा–स्त्री० (सं०) एक नदी, वरुणा; सिंधकी एक सहायक नदी; अरहर ।

वरणी–स्त्री० किसी धार्मिक कार्यके लिए वस्त्र, पात्रादि द्वारा पुरोहितादिका सम्मान ।

वरणीय–वि० (सं०) चुनने योग्य; ग्रहण करने योग्य; प्रार्थना करने योग्य (वरके लिए); पूजनीय ।

वरत्रा–स्त्री० (सं०) वरेता; चमड़ेका तसमा; हाथी या घोड़ेका तंग । **–कांड**–पु० तसमेका टुकड़ा ।

वरदी–स्त्री० (अं०) किसी विभागके कर्मचारियोंका विशेष प्रकारका वस्त्र ।

वरना❋–पु० वरण, ऊँट । ❋ स० क्रि० वरण करना । अ० (फा०) नहीं तो, फिर ।

वरन्–अ० वरम्, बल्कि, ऐसा नहीं (क्व०) ।

वरम–पु० कवच; (अ०) शोथ, सूजन । **–(मे)जिगर**–पु० जिगर, यकृतका शोथ ।

वरमेल्हा–पु० एक लाल चंदन ।

वरयिता(तृ)–पु० (सं०) विवाहके लिए प्रार्थना करनेवाला, पति ।

वरल–पु० (सं०) भिड़ ।

वरला–स्त्री० (सं०) हंसिनी; भिड़ ।

वरस–पु० (अ०) उत्तराधिकारी लोग; वारिस लोग ।

वरहक–पु० (सं०) एक जनपद ।

वरहों❋–पु० मोर; विवाहमें वधूके लिए सोनेकी लम्बी पट्टी, टीका ।

वरांग–पु० (सं०) मस्तक; भग, योनि; मुख्य भाग; सुंदर रूप; विष्णु; टहनी; एक नक्षत्र; दारचीनी; हाथी; एक नक्षत्रवर्ष । वि० सुंदर शरीरवाला ।

वरांगक–पु० (सं०) दारचीनी । वि० सुंदर अंगोंवाला ।

वरांगना–स्त्री० (सं०) सुंदर स्त्री ।

वरांगीं–स्त्री० (सं०) हरिद्रा; नागदंती; मंजिष्ठा ।

वरांगी(गिन्)–पु० (सं०) अम्लवेत, हाथी । वि० श्रेष्ठांगयुक्त ।

वरा–स्त्री० (सं०) अड़हुल; बैंगन; मद्य; हल्दी; ब्राह्मी; त्रिफला; गुड़ुच; रेणुका; पाठा; विडंग; मेदा; सोमराजी; शतमूली; श्वेत अपराजिता; पार्वती; चित्रकला । वि० स्त्री० वरण करनेवाली (इसका पदांतमें ही प्रयोग मिलता है–जैसे स्वयंवरा, पतिवरा आदि) ।

वरा–वि० (अ०) परे, पीछे, आगे, दूर; अलावा । पु० संसार, विश्व । **–ए नज़र**–पु० दृष्टिके परे ।

वराक–पु० (सं०) शिव; युद्ध; पर्पट, पापड़ा । वि० दीन, बेचारा; दयनीय; भाग्यहीन; दुःखी; नीच, हीन, बुरा (धन) ।

वराकक–वि० (सं०) बुरा, खराब ।

वराकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) मनोरथ-सिद्धिके लिए प्रार्थना करनेवाला ।

वराजीवी(विन्)–पु० (सं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी ।

वराट–पु० (सं०) कौड़ी; रस्सी; कमलगट्टेका बीज ।

वराटक–पु० (सं०) कौड़ी; रस्सी; पद्म-बीज, कमलगट्टा । **–रजा(जस्)**–पु० नागकेसर वृक्ष ।

वराटिका–स्त्री० (सं०) कौड़ी; नागकेसर; तुच्छ वस्तु; एक वानस्पतिक विष ।

वराटी, वराडी–स्त्री० (सं०) एक राग ।

वराण–पु० (सं०) इंद्र; वरुण वृक्ष ।

वराणसी–स्त्री० (सं०) दे० 'वाराणसी' ।

वरादन–पु० (सं०) राजादन, पियाल ।

वरानन–वि० (सं०) सुंदर मुखवाला । पु० सुंदर मुख ।

वरानना–स्त्री० (सं०) सुमुखी, सुंदर स्त्री ।

वरान्न–पु० (सं०) उत्तम अन्न ।

वराभिध–पु० (सं०) अमलबेत । वि० श्रेष्ठनामा ।

वराम्र–पु० (सं०) करौंदा ।

वरायन–पु० (सं०) विवाहकी एक रीति ।

वरारक–पु० (सं०) हीरा ।

वरारणि–स्त्री० (सं०) माता ।

वरारोह–पु० (सं०) विष्णु; एक पक्षी; सवार; गजारोही; सवारी करना । वि० अच्छे नितंबोंवाला ।

वरारोहा–वि० स्त्री० (सं०) नितंबिनी । स्त्री० सुंदर स्त्री; कटि ।

वरार्था–वि० स्त्री० (सं०) पति-कामिनी ।

वरार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) वर चाहनेवाला ।

वरार्द्धक–पु० (सं०) केसर, चंदन आदिसे बनी एक पूजासामग्री (?) ।

वरार्ह–वि० (सं०) वर देने योग्य, जो वरका पात्र हो; बहुमूल्य ।

वराल, वरालक–पु० (सं०) लौंग ।

वरालि–पु० (सं०) चंद्रमा ।

वरालिका–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

वराशि, वरासि–पु० (सं०) मोटा कपड़ा ।

वरासत–स्त्री० (अ०) वारिस होना; उत्तराधिकार; मृत पुरुषकी छोड़ी हुई संपत्ति, तरका, रिक्थ । **–की सनद**–वारिस होनेका प्रमाण-पत्र । **–नामा**–पु० उत्तराधिकार-पत्र ।

वरासतन्–अ० वारिस होनेके अधिकारसे, उत्तराधिकाररूपमें ।

वरासन–पु० (सं०) दूल्हेके बैठनेका पीढ़ा; उत्तम आसन; सिंहासन; अड़हुल; द्वारपाल; उपपति, जार; नपुंसक ।

वरासी–स्त्री० (सं०) एक तरहका मोटा कपड़ा ।

वराह–पु० (सं०) सूअर; भेड़ा; साँड़; बादल; मोथा; सूँस; मगर; विष्णु; एक मान; एक पहाड़; वाराही कंद; एक द्वीप; एक पुराण; वराहमिहिर; सेनाका वराहाकार व्यूह; विष्णुका एक अवतार । **–कंद,–नामा(मन्)**–पु० वाराही कंद । **–कर्ण**–पु० एक तरहका बाण । **–कर्णिका**–स्त्री० एक अस्त्र । **–कर्णी, –पत्री**–स्त्री० असगंध । **–कल्प**–पु० वह काल जिसमें विष्णुने वराहका अवतार लिया था । **–कांता**–स्त्री० वाराही । **–काली(लिन्)**–पु० सूर्यमुखी फूल । **–क्रांता**–स्त्री० लजालू; वराही । **–दंष्ट्र**–पु० एक क्षुद्र रोग । **–मिहिर**–पु० एक प्रसिद्ध ज्योतिषी । **–मुक्ता**–स्त्री० एक मोती जो वराहसे उत्पन्न माना जाता है । **–यूथ**–पु० सूअरोंका झुंड । **–व्यूह**–पु० युद्धकालमें सेनाकी एक विशेष स्थिति । **–शिला**–स्त्री० एक पवित्र शिला (हिमालयपर स्थित) । **–शृंग**–पु० शिव । **–शैल**–पु० एक पहाड़ । **–संहिता**–स्त्री० वराहमिहिर-प्रणीत एक ज्योतिष ग्रंथ, बृहत्संहिता ।

वराहक–पु० (सं०) एक नागराज; हीरा (?); सूँस (?) ।

वराहांगी–स्त्री० (सं०) क्षुद्रदंती (?) ।

वराहिका–स्त्री० (सं०) केवाँच ।

वराही–स्त्री० (सं०) सूअरी; नागरमोथा; अश्वगंधा; एक छोटा पक्षी; वाराही कंद ।

वरि–स्त्री० (सं०) पत्नी । अ० ऊपर, भाँति । ❋ अव्य० निकट (बीसल०) ।

वरिक–पु० (अ०) नितम्ब; कटिदेश ।

वरिता(तृ)–वि० (सं०) चुनने, पसंद करनेवाला; ढकने, पर्दा करनेवाला ।

वरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) उत्तमता; श्रेष्ठता, प्रधानता।

वरियान्–वि० (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ।

वरिवसित, वरिवस्यित–वि० (सं०) पूजित, आदृत, उपासित।

वरिवस्या–स्त्री० (सं०) पूजा; शुश्रूषा।

वरिशी–स्त्री० (सं०) मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी।

वरिष–पु० (सं०) वर्ष; वर्षा।

वरिषा–स्त्री० (सं०) वर्षा; वर्षा ऋतु। **–प्रिय**–पु० चातक।

वरिष्ठ–वि० (सं०) पूजनीय; सबसे अच्छा; बहुत भारी, बहुत बड़ा; (सीनियर) पद या क्रममें बड़ा; बहुत खराब, दुष्ट। पु० तीतर; ताँबा; नारंगीका वृक्ष; मिर्च; एक ऋषि। **–तम**–वि० पदमें सबसे बड़ा, सर्वोच्च (सीनियर मोस्ट)।

वरिष्ठा–स्त्री० (सं०) हल्दी; एक पौधा, हुरहुर।

वरिहिष्ठ–पु० (सं०) सुगंधवाला; खस।

वरी–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी संज्ञा; सतावर।

वरीता(तृ)–पु० (सं०) प्रणयाकांक्षी, विवाहाकांक्षी; ढकने, परदा करनेवाला।

वरीद–वि० (अ०) बागवान, माली; गुलकंद बनानेवाला।

वरीमा(मन्)–स्त्री० (सं०) दे० 'वरिमा'।

वरीयता–स्त्री० (प्रेफरेंस) दे० 'अधिमान्यता', तरजीह।

वरीयान्(यस्)–वि० (सं०) बड़ा, श्रेष्ठ; नवयुवक, नौजवान। पु० पुलह ऋषिका एक पुत्र; २७ योगोंमेंसे एक।

वरीवर्द–पु० (सं०) बैल।

वरीषु–पु० (सं०) कामदेव।

वरु–अ० दे० 'वरं'।

वरुक–पु० (सं०) एक कदन्न।

वरुट–पु० (सं०) एक म्लेच्छ जाति।

वरुड–पु० (सं०) बेंतका काम करनेवाली एक अंत्यज जाति।

वरुण–पु० (सं०) एक आदित्य; एक देवता जो जलके अधिपति और पश्चिमके दिक्पाल कहे गये हैं; जल; समुद्र; सूर्य; आकाश; एक वृक्ष; एक ऋषि; एक ग्रह, 'नेपच्यून'। **–गृहीत**–वि० जलोदर रोगसे ग्रस्त। **–ग्रह**–पु० घोड़ोंका रोग-विशेष; लकवा। **–देव,–दैवत**–पु० शतभिषा नक्षत्र। **–पाश**–पु० वरुणका अस्त्र, पाश, फंदा; एक जलचर, नाक, नक्र। **–प्रघास**–पु० वरुणके पाशसे मुक्ति पानेके लिए आषाढ़की पूर्णिमाको किया जानेवाला एक अनुष्ठान। **–मंडल**–पु० (रेवती, पूर्वाषाढ़, आर्द्रा, आश्लेषा, शतभिषा आदि) नक्षत्रोंका एक मंडल। **–लोक**–पु० वरुणका क्षेत्र; जल।

वरुणक–पु० (सं०) वरुण वृक्ष।

वरुणांगरुह–पु० (सं०) अगस्त्य।

वरुणा–स्त्री० (सं०) एक नदी जो काशीमें गंगाके साथ मिलती है।

वरुणात्मजा–स्त्री० (सं०) वारुणी, शराब।

वरुणादिगण–पु० (सं०) पेड़-पौधोंका एक वर्ग।

वरुणालय–पु० (सं०) समुद्र।

वरुणावास–पु० (सं०) समुद्र।

वरुणानी–स्त्री० (सं०) वरुणकी स्त्री।

वरुणावि–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।

वरुणेश–पु० (सं०) शतभिषा नक्षत्र।

वरुणोद–पु० (सं०) एक समुद्र।

वरुत्र–पु० (सं०) उत्तरीय, उपरना।

वरुल–वि० (सं०) संभक्त।

वरूथ–पु० (सं०) बख्तर, सन्नाह; बचाव; रथपरका घेरा; ढाल; सेना; समूह; कोयल; मकान; समय। **–प**–पु० दलनायक; सेनापति।

वरूथवती–स्त्री० (सं०) सेना।

वरूथाधिप–पु० (सं०) सेनानायक।

वरूथिनी–स्त्री० (सं०) सेना; वैशाख-कृष्णपक्षकी एकादशी।

वरूथी(थिन्)–पु० (सं०) हाथीकी काठी; रक्षक; रक्षाके लिए बना हुआ घेरा; रथ। वि० रथारूढ़; कवचधारी; सेनासे रक्षित; बचानेवाला।

वरेंद्र–पु० (सं०) इंद्र; राजा; बंगालका एक भाग।

वरेंद्री–स्त्री० (सं०) गौड़ देश।

वरें–अ० परे, दूर; उस ओर, उधर।

वरे–वि० (अ०) संयमी, निग्रही, यतात्मा।

वरेण–पु० (सं०) भिड़।

वरेणुक–पु० (सं०) अन्न।

वरेण्य–वि० (सं०) मुख्य; पूजनीय; जिसकी इच्छा की जाय; सर्वोत्कृष्ट। पु० महादेव; केसर; भृगुका एक पुत्र।

वरेश्वर–पु० (सं०) शिव।

वरोट–पु० (सं०) मरुवा नामक पौधा या उसका फूल।

वरोरु, वरोरू–वि० स्त्री० (सं०) उत्तम जाँघोंवाली; सुंदरी।

वरोल–पु० (सं०) बर्रे।

वर्क–पु० (अं०) काम। पु० (अ०) पृष्ठ।

वर्कर–पु० (अं०) काम करनेवाला; (सं०) जवान; तरुण पशु; बकरा; मेमना, भेड़का बच्चा; जवान पालतू जानवर; परिहास। **–कर्कर**–पु० बकरा आदि बाँधनेका तसमा।

वर्करा–स्त्री० (सं०) पठिया, जवान बकरी।

वर्कराट–पु० (सं०) कटाक्ष; स्त्रीके कुचपरका नखक्षत; ऊपर उठते हुए सूर्यका प्रकाश।

वर्क़ा–स्त्री० (अ०) फाख़्ता; पंडुक।

वर्क़ाक–पु० (अ०) चिड़ीमार, बहेलिया।

वर्किंग कमिटी–स्त्री० (अं०) कार्यकारिणी समिति, कार्यसमिति।

वर्किंग क्लास–पु० (अं०) श्रमिक वर्ग।

वर्कुट–पु० (सं०) कीला, किल्ली।

वर्ग–पु० (सं०) स्वजातीय या समान-धर्मियोंका समूह; कक्षा; श्रेणी; दल; एक स्थानसे उच्चरित होनेवाले वर्णोंका समूह; ग्रंथका विभाग, अध्याय; समान अंकोंका घात; वह समकोण चतुर्भुज जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर हो; शक्ति; क्षेत्र; अर्थ, धर्म, काम–त्रिवर्ग। **–चर**–पु० पाठीन मछली। **–चेतना**–स्त्री० (क्लास कांशसनेस) मजदूर वर्गका धनिक वर्गसे, तथा धनिक वर्गका मजदूर वर्गसे, अपनेको पृथक् समझनेका भाव। **–पद**–पु० वर्गमूल, वह संख्या जिसके घात, गुणनसे वर्गका अंक प्राप्त हो। **–पहेली**–स्त्री० (क्रॉसवर्ड पजल) वह पहेली जिसमें दिये हुए संकेतोंके अनुसार खड़े और पड़े स्तंभोंके रिक्त खानोंमें, जिनकी संख्या दोनों ओरसे (लंबाईके बल, चाहे चौड़ाईके बल) बराबर होती है, उपयुक्त अक्षर बैठाकर शब्द बनाने पड़ते हैं तथा जहाँ एकसे अधिक शब्द बनानेकी गुंजाइश हो वहाँ स्वविवेकसे सर्वोचित शब्दका चुनाव करना पड़ता है। **–फल**–पु० समान राशियोंका गुणनफल। **–मूल**–पु० वह संख्या जिससे वर्गांक बनता है। **–युद्ध**–पु० गृहयुद्ध। **–संघर्ष**–पु० (क्लास स्ट्रगल) विभिन्न वर्गोंमें होनेवाला पारस्परिक संघर्ष। **–स्थ**–वि० अपने पक्षका साथ देनेवाला।

वर्गणा–स्त्री० (सं०) गुणन, घात।

वर्ग़लाना–स० क्रि० (फा०) उकसाना; बहकाना; किसीको उकसाकर कोई काम कराना।

वर्गांक–पु० (सं०) वह अंक जो किसी संख्याका वर्ग हो।

वर्गित–भू० कृ० (क्लैसिफायड) अनेक वर्गोंमें विभाजित।

वर्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) वर्ग-विशेषसे संबद्ध। **–कृत**–वर्गित।

वर्गीकरण–पु० (सं०) (क्लेसिफिकेशन) वर्गके अनुसार वस्तुओंका विभाग करना।

वर्गीण–वि० (सं०) वर्ग-विशेषसे संबद्ध।

वर्गीय–वि० (सं०) वर्ग-विशेषसे संबद्ध। पु० एक ही वर्गका सदस्य, अक्षर आदि; सहपाठी।

वर्गोत्तम–पु० (सं०) राशियोंका अंश जिसमें स्थित होनेसे ग्रह शुभ होते हैं (फ० ज्यो०); प्रथम पाँच व्यंजन-वर्गोंका अंतिम वर्ण।

वर्ग्य–वि० (सं०) एक ही वर्ग, एक ही जाति या समूहका। पु० सहयोगी; सहपाठी; समाजका सदस्य।

वर्चःस्थान–पु० (सं०) पाखाना (पराशरस्मृति)।

वर्च(स्)–पु० (सं०) रूप; शक्ति; कांति; तेज; अन्न; विष्ठा; शुक्र।

वर्चटी–स्त्री० (सं०) एक तरहका धान; वेश्या।

वर्चस्क–पु० (सं०) तेज; शक्ति; विष्ठा।

वर्चस्य–वि० (सं०) शक्तिवर्द्धक; मल-विसर्जनपर असर डालनेवाला।

वर्चस्व–पु० शक्ति, तेज (संस्कृत वर्चस्); प्रावल्य, प्राधान्य–'राघवन्‌का उत्साह उसके शारीरिक बल और मानसिक वर्चस्वसे सीमित था'–अमर०।

वर्चस्वान्(वत्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; तेजोमय।

वर्चस्वी(विन्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; उत्साही। पु० चंद्रमा; शक्तिशाली मनुष्य।

वर्चा(र्चस्)–पु० (सं०) चंद्रपुत्र।

वर्चोग्रह, वर्चोविनिग्रह–पु० (सं०) कोष्ठवद्धता, कब्ज।

वर्चोभेद–पु० (सं०) अतीसार।

वर्चोमार्ग–पु० (सं०) गुदा।

वर्ज–वि० (सं०) रहित, मुक्त, परित्यक्त। पु० परित्याग।

वर्जक–वि० (सं०) परित्याग करनेवाला, छोड़नेवाला; निषेध करनेवाला।

वर्जन–पु० (सं०) निषेध; छोड़ना, त्याग; हिंसा, वध।

वर्जना*–स० क्रि० निषेध करना, रोकना; असभ्य और आदिम जातियोंमें परम्परागत निषेध। स्त्री० (सं०) दे० 'वर्जन'।

वर्जनीय–वि० (सं०) निषिद्ध; निषेध योग्य; अग्राह्य, छोड़ने योग्य; अनुचित, निंद्य।

वर्जयिता(तृ)–वि० (सं०) वर्जन, त्याग करनेवाला; उडेलनेवाला; बरसानेवाला।

वर्जित–वि० (सं०) त्यक्त, छोड़ा हुआ; अग्राह्य; निषिद्ध; रहित।

वर्ज़िदः–वि० (फा०) स्वीकार करनेवाला; अभ्यासी।

वर्ज़िश–स्त्री० दे० 'वरज़िश'। **–गाह**–स्त्री० अखाड़ा, व्यायामशाला।

वर्जी(र्जिन्)–वि० (सं०) निषेध, परित्याग करनेवाला।

वर्ज्य–वि० (सं०) वर्जनीय; निषिद्ध। पु० चंद्रमाकी वह विशेष स्थिति जिसमें कोई नया काम शुरू करना मना है। **–सूची**–स्त्री० (सं०) (ब्लैकलिस्ट) निषिद्ध पदार्थोंकी सूची।

वर्ड्‌जवर्थ, विलियम–पु० अंग्रेजीके एक प्रसिद्ध कवि। फ्रांसकी राज्यक्रांतिका इनपर बड़ा प्रभाव पड़ा था (१७७०-१८५०)।

वर्ण–पु० (सं०) रंग; रँगने, लिखनेके काम आनेवाला रंग; जाति; भेद; अक्षर; शब्द; स्वर; ख्याति, यश; अच्छा गुण; प्रशंसा; वाह्य रूप; पोशाक; आकृति; लबादा; ढक्कन, आवरण; भीत आदिकी बंदिश; एक ताल; पदार्थका धर्म; अज्ञात राशि (ग०); एकको संख्या; सोना; धार्मिक कृत्य; अंगरागलेपन; केसर; एक रंगीन गंधद्रव्य; हाथीकी झूल; तसवीर। **–कंट**–पु० तूतिया। **–कवि**–पु० कुबेरका एक पुत्र। **–कूपिका**–स्त्री० मसिपात्र। **–क्रम**–पु० रंगोंका क्रम; वर्णमालाके अक्षरोंका क्रम; दे० 'वर्णपट', (स्पेक्ट्रम)। **–खंडमेरु**–पु० छंदःशास्त्रकी एक क्रिया जिसके अनुसार विना मेरुके निश्चित वर्णोंके वृत्तों आदिकी संख्या मालूम हो जाती है। **–गत**–वि० रंगा हुआ, वर्णित; बीजगणित-संबंधी। **–गुरु**–पु० राजा। **–चारक**–पु० चित्रकार; रंगसाज। **–ज्येष्ठ, –श्रेष्ठ**–पु० ब्राह्मण। **–तूलि–तूलिका,–तूली**–स्त्री० चित्र बनानेकी कूची, कलम (चित्रकारकी)। **–द**–पु० एक तरहकी सुगंधित पीली लकड़ी, कालीयक। वि० रंग देनेवाला। **–दात्री**–स्त्री० हल्दी। **–दूत**–पु० पत्र आदि; लिपि। **–दूषक**–पु० जातिभ्रष्ट करनेवाला, पतित मनुष्य। **–धर्म**–पु० जातिविशेषका कर्तव्य या पेशा। **–धातु**–स्त्री० गेरू, ईंगुर आदि। **–नष्ट**–पु० छंदःशास्त्रकी एक क्रिया जिससे निश्चित वर्णोंके किसी भेदका लघु-गुरुके हिसाबसे रूप मालूम होता है। **–नाश,–पात**–पु० किसी अक्षरका शब्दमेंसे लुप्त हो जाना। **–पट**–पु० (स्पेक्ट्रम) किसी छिद्र या दरारसे आनेवाले प्रकाशके त्रिपार्श्वकाच (प्रिज्म)पर पड़नेसे दिखाई देनेवाले सात रंगोंकी पट्टी, वर्णच्छटा (ये रंग वही होते हैं जो इंद्रधनुषके होते हैं)। **–पताका**–स्त्री० छंद-शास्त्रकी एक विधि जिससे वर्ण-वृत्तोंके भेदोंमें आनेवाली लघु और गुरु मात्राओंकी संख्या मालूम हो जाती है। **–पत्र**–पु० वे पात्र जिनमें चित्रकार रंग रखता है। **–परिचय**–पु० संगीतका ज्ञान; अक्षरज्ञान; अक्षरोंका ज्ञान करानेवाली पुस्तिका। **–परिध्वंस**–पु० जातिभ्रंश। **–पाताल**–पु० छंदःशास्त्रकी एक प्रक्रिया जिससे निश्चित संख्याके वर्णोंके संपूर्ण वृत्तों और लघु, लघ्वंत आदि मात्राओंकी संख्याका बोध होता है। **–पात्र**–पु० दे० 'वर्णपत्र'। **–पुर**–पु० शुद्ध रागका एक भेद। **–पुष्प,–पुष्पक**–पु० राजतरुणी नामक पुष्प; पारिजात। **–प्रत्यय**–पु० बर्णवृत्तोंके कुल भेद जाननेकी छंदःशास्त्रकी विशेष प्रक्रिया। **–प्रसादन**–पु० अगुरु। **–प्रस्तार**–पु० निश्चितसंख्यक वर्णोंके भेद-उपभेद और स्वरूप प्रकट करनेवाली छंदःशास्त्रकी विशेष प्रक्रिया। **–भिन्न**–पु० एक ताल। **–भीरु**–पु० एक ताल। **–भेद**–पु० (सं०) (रेशल डिस्क्रिमिनेशन) रंग या जातिके कारण होनेवाला भेदभाव। **–भेदिनी**–स्त्री० बाजरा। **–मंचिका**–स्त्री० एक ताल। **–मर्कटी**–स्त्री० छंदःशास्त्रकी एक विशेष प्रक्रिया जिससे निश्चितसंख्यक वर्णोंके संभाव्य वृत्तों आदिका पता लगता है। **–माता(तृ)**–स्त्री० लेखनी। **–मातृका**–स्त्री० सरस्वती। **–माला,–राशि**–स्त्री० अक्षरोंकी यथाक्रम सूची, स्वर-व्यंजन सहित सभी अक्षर। **–यति**–स्त्री० एक ताल। **–रेखा,–लेखा,–लेखिका**–स्त्री० खड़िया। **–लील**–पु० एक ताल। **–वर्ति,–वर्तिका**–स्त्री० चित्र बनानेकी तूली। **–वादी(दिन्)**–पु० चारण। **–विकार**–पु० किसी वर्णका दूसरे वर्णका रूप ग्रहण करना (निरुक्त)। **–विक्रिया**–स्त्री० जातिके प्रति शत्रुता। **–विक्षेपण**–पु० (डिस्पर्शन) मिश्रित तरंग दैर्घ्योंवाले प्रकाशका विभिन्न रंगोंके प्रकाशमें विभक्त होकर स्पेक्ट्रम बनाना। **–विचार**–पु० वर्णोंके आकार, उच्चारण और संधिके नियमोंसे युक्त व्याकरणका एक भाग। **–विद्वेष**–पु० (कलर प्रेजुडिस) (अश्वेत) वर्ण या रंगके कारण किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूहसे विद्वेष करनेकी प्रवृत्ति। **–विपथन**–पु० (क्रोमैटिक एबेरेशन) लेन्स द्वारा किसी श्वेत वस्तुके प्रतिबिम्बके निर्माणमें रंगोंका प्रकट होना। इसका कारण यह है कि विभिन्न रंगकी प्रकाशकिरणोंके लिए काँचके वर्त्तनांक भिन्न होते हैं अतः श्वेत प्रकाशका विक्षेपण हो जाता है। **–विपर्यय**–पु० वर्णोंका उलट-फेर होना (निरुक्त)। **–विभाग**–पु० हिंदू-समाजका ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र–इन चार जातियोंमें धर्मशास्त्रानुसार विभाजन। **–विलासिनी**–स्त्री० हल्दी। **–विलोडक**–पु० सेंध मारनेवाला; रचना-चौर। **–विवृति**–स्त्री० हिज्जे। **–वृत्त**–पु० वह छंद जिसके चरणोंमें लघु-गुरु यथाक्रम और वर्णसंख्या समान हो। **–वैकृत**–पु० जातिभ्रंश। **–व्यतिक्रांता**–स्त्री० अपनेसे नीच वर्णके साथ संबंध करनेवाली स्त्री। **–व्यवस्था–व्यवस्थिति**–स्त्री० वर्ण-विभाग। **–श्रेष्ठ**–पु० (सं०) ब्राह्मण। **–संकर**–पु० दो भिन्न जातियोंके स्त्री-पुरुषके सहवाससे उत्पन्न व्यक्ति। **–संसर्ग**–पु० अंतर्जातीय विवाह। **–संहार**–पु० प्रतिमुख संधिका एक अंग (ना०)। **–समाम्नाय**–पु० वर्णमाला। **–सूची**–स्त्री० छंदःशास्त्रकी एक प्रक्रिया जिसके अनुसार वर्णवृत्तोंकी शुद्ध संख्या और भेदोंमें आदि-अंत लघु तथा आदि-अंत गुरुकी संख्या मालूम की जाती है। **–स्थान**–पु० गला। **–हीन**–वि० जातिच्युत।

वर्णक–पु० (सं०) नकाब; अभिनेताकी पोशाक; रंग; अंगराग; चरण; सिंदूर; चंदन; अक्षर; हरताल; घेरा, परिधि; पुस्तकका अध्याय; चित्रकार।

वर्णका–स्त्री० (सं०) नकाब; रंग, रँगनेका साधन; चंदन; अध्याय; वृत्त।

वर्णच्छटा–स्त्री० (स्पेक्ट्रम) दे० 'वर्णपट'।

वर्णन–पु० (सं०) चित्रण; रँगना; लिखना; कोई बात ब्योरेवार कहना, बयान; प्रशंसा, गुणकथन; उल्लेख।

वर्णना–स्त्री० (सं०) ब्योरेवार कुछ कहना; प्रशंसा, गुणकथन।

वर्णनातीत–वि० (सं०) जिसका वर्णन न किया जा सके।

वर्णनीय–वि० (सं०) चित्रण या वर्णनके योग्य।

वर्णवली–स्त्री० (सं०) हल्दी।

वर्णसि–पु० (सं०) जल।

वर्णांका–स्त्री० (सं०) लेखनी।

वर्णांतर–पु० (सं०) भिन्न जाति, दूसरी जाति।

वर्णांध–पु० (कलर ब्लाइंड) वह जो कुछ रंगोंके बीचका भेद न पहचान सके।

वर्णा–स्त्री० (सं०) अरहर।

वर्णागम–पु० (सं०) शब्दमें किसी अक्षरका आ मिलना।

वर्णाट–पु० (सं०) चित्रकार; गायक; प्रेमिका; पत्नी द्वारा अर्जित धनसे निर्वाह करनेवाला।

वर्णात्मक–वि० (सं०) (शब्द) जो वर्णोंमें लिखा जा सके।

वर्णात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) शब्द।

वर्णाधिप–पु० (सं०) वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रियादि) के अधिपति ग्रह (फ० ज्यो०)।

वर्णानुक्रमणिका–स्त्री० (सं०) अक्षर क्रमसे तैयार की हुई सूची।

वर्णानुक्रमसे–अ० (एलफाबेटिकली) वर्णोंके अनुक्रमसे।

वर्णानुप्रास–पु० (सं०) एक शब्दालंकार, दे० 'अनुप्रास'।

वर्णापसद–पु० (सं०) वह जो जातिच्युत हो।

वर्णापेत–वि० (सं०) वर्णहीन।

वर्णार्ह–पु० (सं०) मूंग।

वर्णावर–वि० (सं०) निम्नतर जातिका।

वर्णाश्रम–पु० (सं०) जाति और आश्रम। **–गुरु**–पु० शिव। **–धर्म**–पु० वर्ण और आश्रम-संबंधी कर्तव्य।

वर्णि–पु० (सं०) सोना; अंगराग।

वर्णिक–पु० (सं०) लेखक। वि० वर्ण-संबंधी। **–गण**–पु० (कर्म० स०) छंदशास्त्रके ८ गण। **–छंद,–वृत्त**–पु० दे० 'वर्णवृत्त'।

वर्णिका–स्त्री० (सं०) चित्र या चित्र-शैलीमें व्यवहृत विशिष्ट वर्णों, रंगोंका समवाय; स्याही, मसि; सोनेका पानी; खड़िया; चंद्रमा; विलेपन; अभिनेताकी पोशाक। **–परिग्रह**–पु० रूप-ग्रहण (ना०)। **–भंग**–पु० भावानुसार चित्रमें वर्णोंका प्रयोग।

वर्णित–वि० (सं०) कथित; वर्णन, बयान किया हुआ; चित्रित; प्रशंसित।

वर्णिनी–स्त्री० (सं०) स्त्री; किसी एक वर्णकी स्त्री; हल्दी।

वर्णी(र्णिन्)–पु० (सं०) चित्रकार; लेखक; ब्रह्मचारी; चारों वर्णोंमेंसे किसी एक वर्णका व्यक्ति। वि० विशेष रंग या वर्णका (समासके अंतमें)।

वर्णु–पु० (सं०) एक नद; सूर्य; एक प्रदेश, बन्नू।

वर्णोद्दिष्ट–पु० (सं०) छंदःशास्त्रकी एक प्रक्रिया जिससे किसी वर्णवृत्तके किसी भेदका कोई विशिष्ट रूप जाना जाय।

वर्ण्य–पु० (सं०) प्रस्तुत विषय; उपमेय; केसर; गंधक; वन-तुलसी। वि० वर्णन या चित्रणके योग्य।

वर्त–पु० (सं०) आहार, जीविका (प्रायः समासके अंतमें प्रयुक्त–कल्यवर्त–प्रातःकालका भोजन)। **–जन्मा(न्मन्)**–पु० बादल, मेघ। **–तीक्ष्ण,–लोह**–पु० एक तरहका पीतल या इस्पात।

वर्तक–पु० (सं०) नर बटेर; बटुआ; घोड़ेका खुर; एक तरहका पीतल। वि० रहनेवाला; बनानेवाला; जिसका अस्तित्व हो; अनुरक्त।

वर्तका, वर्तकी–स्त्री० (सं०) मादा बटेर।

वर्तन–वि० (सं०) रहने, ठहरनेवाला; गतिमान करनेवाला; जीवित रखनेवाला। पु० बौना; चक्कर खाना; ऐंठना; फेर-फार; ठहरना; जीविका; वेतन, वृत्ति; व्यापार; व्यवहार, आचरण; प्रयोग, काममें लाना; तकला; गेंद; बार-बार कहा हुआ शब्द; घोड़ेके लोटनेकी जगह; क्वाथ; पीसना; बटुआ; पात्र; विष्णु; कौआ; सलाई लगाकर घावका रूप देखना। **–दान**–पु० जीविका देना। **–विनियोग**–पु० वेतन।

वर्त्तन–पु० (कमीशन) एजेंट या दलालको किसी सौदेपर मिलनेवाली छूट या रकम, दस्तूरी। **–अभिकर्ता**–पु० (कमीशन एजेंट) कमीशन या दलाली लेकर किसी बड़े व्यवसायी या व्यापारिक संस्थाके प्रतिनिधि, अभिकर्ता (एजेंट)का काम करनेवाला, आढ़तिया।

वर्तना–स्त्री० (सं०) वर्तन, चित्रमें रंग भरना।

वर्तनार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) नौकरी चाहनेवाला।

वर्तनि–पु० (सं०) पूर्व देश; मार्ग; शुद्ध रागका एक भेद; स्तोत्र। स्त्री० मार्ग; लीक; पगनी।

वर्तनी–स्त्री० (सं०) मार्ग; पिसाई; तकला; रहना; हिज्जे (स्पेलिंग)।

वर्तमान–वि० (सं०) चलता हुआ, घूमता हुआ, चालू; उपस्थित, विद्यमान; साक्षात्; आधुनिक, हालका। **–काल**–पु० व्याकरण-का एक काल जिससे सूचित होता है कि क्रिया मौजूदा समयमें होती या हो रही है; वृत्तांत; चलता व्यवहार।

वर्तरूक–पु० (सं०) द्वारपाल; गतिहीन जल; आवर्त; कौएका घोंसला; एक नदी; कर्दम-पूर्ण क्षुद्र जलाशय।

वर्ति–स्त्री० (सं०) कोई लपेटी हुई वस्तु, बत्ती; अंजन; घावमें भरनेकी बत्ती; घावपर बाँधनेकी एक तरहकी पट्टी; औषध बनानेकी क्रिया। **–ग्रह**–पु० (बर्नर) किसी दीपक, लैंप आदिका वह भाग जिसमें बत्ती पड़ी रहती है तथा जो उसकी लौका नियंत्रण करता है (कुछ लोग इसे 'ज्वालक' या 'दग्धक' भी कहते हैं); उबटन, अनुलपन; गोली, वटी; रेखा; गलेकी सूजन; जादूका चिराग; कपड़ेके छोरपर झालर। **–लेख**–पु० (सं०) खर्रा।

वर्तिक, वर्तिर–पु० (सं०) बटेर।

वर्तिका, वर्ती–स्त्री० कागज या स्लेटपर लिखनेकी पेंसिल; स्त्री० (सं०) बत्ती; सलाई, शलाका; तूलिका; रंग; बटेर; एक वृक्ष, अजश्रृंगी। **–बिंदु**–पु० हीरेका एक दोष।

वर्तित–वि० (सं०) घुमाया, चलाया हुआ; संपादित; बिताया हुआ। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० उत्पादित।

वर्तिष्णु–वि० (सं०) चक्कर खानेवाला; रहनेवाला; वर्तुलाकार; स्थिर; युद्धमें अडिग रहनेवाला।

वर्ती–स्त्री० (सं०) दे० 'वर्ति'।

वर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) बरतनेवाला; स्थित रहनेवाला (पदांतमें –जैसे दूरवर्ती आदि); करनेवाला।

वर्तीर–पु० (सं०) बटेर।

वर्तुल–वि० (सं०) गोल, वृत्ताकार। पु० गाजर; मटर; गुंडतृण; सुहागा; गेंद; शिवका एक गण; वृत्त।

वर्तुला–स्त्री० (सं०) तकुएके छोरपरकी घुंडी।

वर्तुलाकार, वर्तुलाकृति–वि० (सं०) गोल।

वर्तुलाक्ष–पु० (सं०) एक तरहका बाज।

वर्तुली–स्त्री० गज-पिप्पली।

वर्त्म(न्)–पु० (सं०) मार्ग; लीक; प्रथा; पलक; पलकोंका एक रोग; औंठ, बारी, किनारी; आधार, आश्रय; अवकाश, क्षेत्र। **–कर्दम**–पु० एक नेत्ररोग जिसमें आँखमें कीचड़ आता है। **–कर्म(न्)**–पु० पथ-निर्माण। **–पातन**–पु० घातमें रहना। **–बंध,–बंधक**–पु० आँखका एक रोग जिसमें पलकें सूजकर नहीं खुलतीं। **–मक्षिका**–स्त्री० सोनामाखी। **–रोग**–पु० पलकका रोग। **–शर्करा**–स्त्री० पलकमें होनेवाली एक तरहकी फुंसी।

वर्त्मनि, वर्त्मनी–स्त्री० (सं०) सड़क, रास्ता।

वर्त्मायास–पु० (सं०) रास्तेकी थकावट।

वर्त्मार्बुद–पु० (सं०) पलकोंका एक रोग जिसमें पलकोंके अंदर गाँठ बन जाती है।

वर्त्मावरोह–पु० (सं०) पलकोंका रोगविशेष।

वर्दी–स्त्री० दे० 'वरदी'।

वर्द्ध, वर्ध–पु० (सं०) सीसा; ब्राह्मणयष्टिका; काटना; विभाजन; बढ़ती; पूर्ति।

वर्द्धक, वर्धक–वि० (सं०) बढ़ानेवाला; पूर्तिकारक; काटने, छीलनेवाला। पु० बढ़ई; ब्राह्मणयष्टिका।

वर्द्धकि, वर्धकि–पु० (सं०) दे० 'वर्द्धकी'।

वर्द्धकी(किन्), वर्धकी(किन्)–पु० (सं०) बढ़ई।

वर्द्धन, वर्धन–पु० (सं०) काटना, छीलना; वृद्धि, बढ़ाना; अभ्युदय करनेवाला; दूसरे दाँतपर जमनेवाला दाँत; शिव; शिक्षण। वि० (समासांतमें) बढ़ानेवाला (हर्षवर्द्धन)।

वर्द्धनिका, वर्धनिका–स्त्री० (सं०) पवित्र जल रखनेका छोटा घड़ा।

वर्द्धनी, वर्धनी–स्त्री० (सं०) झाड़ू; अरथी; कलसी, छोटा घड़ा; कर्णाटकी पद्धतिकी एक रागिनी (सं०)।

वर्द्धमान, वर्धमान–वि० (सं०) बढ़ता हुआ; वृद्धिशील। पु० एरंडका वृक्ष; एक तरहकी पहेली; विष्णु; बंगालका एक जिला

या नगर, वर्दवान; एक पात्र, कसोरा; वह मकान जिसमें दक्षिणकी ओर द्वार न हो; एक रहस्यमय रेखाचित्र या उसी तरहका बना हुआ प्रासाद या मंदिर; मीठा नीबू, संतरा; नृत्यकी एक मुद्रा; एक वर्णवृत्त; जिन-विशेष, जैनियोंके २४ वें तीर्थंकर, महावीर (जै॰)।

वर्द्धमानक, वर्धमानक–पु॰ (सं॰) छोटा पात्र या ढक्कन, कसोरा। वि॰ वृद्धिविशिष्ट।

वर्द्धयिता(तृ), वर्धयिता(तृ)–पु॰ (सं॰) बढ़ानेवाला।

वर्द्धा, वर्धा–स्त्री॰ (सं॰) गोदावरीकी एक सहायक नदी; नागपुरके पासका एक नगर।

वर्द्धापन, वर्धापन–पु॰ (सं॰) काटना; नाडी-छेदन (वह नाडी जिसका संबंध नाभिसे होता है), नाल काटना; जन्म लेनेके दिनका नाडी-छेदनसे संबद्ध एक उत्सव; वह उत्सव जिसमें तरक्कीकी कामना करते या तरक्कीपर बधाई देते हैं।

वर्द्धित, वर्धित–वि॰ (सं॰) बढ़ा हुआ; कटा हुआ; भरा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु–वि॰ (सं॰) वृद्धिशील।

वर्द्ध्म, वर्ध्म–पु॰ (सं॰) अंत्र-भेद, आँत उतरना, 'हर्निया'; वंक्षणस्थ व्रण।

वर्द्ध्र, वर्ध्र–पु॰ (सं॰) चमड़ा; चमड़ेका तसमा; सीसा।

वर्द्ध्रिका, वर्द्ध्री, वर्ध्रिका, वर्ध्री–स्त्री॰ (सं॰) बद्धी, चमड़ेकी पेटी; बद्धी नामका गहना।

वर्म–पु॰ (फा॰) शरीरके किसी अंगका शोथ।

वर्म(न्)–पु॰ (सं॰) बख्तर, कवच; आश्रयस्थान; बचाव; पित्तपापड़ा; छाल। **–कंटक**–पु॰ पित्तपापड़ा, पर्पटक। **–कशा, –कषा**–स्त्री॰ सप्तला। **–धर,–हर**–वि॰ कवच धारण करनेवाला, कृतसन्नाह।

वर्मण–पु॰ (सं॰) नारंगीका पेड़।

वर्मा(र्मन्)–पु॰ (सं॰) एक उपाधि जिसका क्षत्रिय, कायस्थ, खत्री आदि प्रयोग करते हैं।

वर्मि–पु॰ (सं॰) एक मछली।

वर्मिक–वि॰ (सं॰) कवचयुक्त।

वर्मित–वि॰ (सं॰) जिसने कवच धारण किया हो।

वर्मितांग–वि॰ (सं॰) जिसका शरीर कवचसे ढका हो।

वर्मी(र्मिन्)–वि॰ (सं॰) दे॰ 'वर्मिक'।

वर्मुष–पु॰ (सं॰) एक तरहकी मछली।

वर्य–वि॰ (सं॰) श्रेष्ठ; चुनने योग्य; प्रधान (पदांतमें प्रयुक्त–जैसे पंडितवर्य)। पु॰ कामदेव।

वर्या–स्त्री॰ (सं॰) कन्या; पतिंवरा कन्या।

वर्वट–पु॰ (सं॰) बोड़ा, लोबिया।

वर्वणा–स्त्री॰ (सं॰) नीली मक्खी।

वर्वर–पु॰ (सं॰) एक देश; नीच जाति; वर्वर देशका निवासी (घुँघराले बालवाला); मूर्ख; जातिभ्रष्ट व्यक्ति; शस्त्रोंके संघातसे उत्पन्न शब्द; घुँघराले बाल; नृत्यका एक ढंग; इंगुर; पीला चंदन। वि॰ छल्लेदार; अस्पष्ट (शब्द)।

वर्वरक–पु॰ (सं॰) एक चंदन।

वर्वरा–स्त्री॰ (सं॰) एक मक्खी; वनतुलसी।

वर्वरी–स्त्री॰ (सं॰) वनतुलसी।

वर्वरीक–पु॰ (सं॰) वनतुलसी; भारंगी; महाकाल; घुँघराले बाल।

वर्वा–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'वर्वरी'।

वर्वि–वि॰ (सं॰) पेटू।

वर्वुर, वर्वूर–पु॰ (सं॰) बबूल।

वर्ष–पु॰ (सं॰) वृष्टि; वर्षाके रूपमें गिरना; शुक्रस्राव; ३६५ दिनका काल-परिमाण, साल (सौर, चांद्र, नाक्षत्र और सावन); पृथ्वीका खंड; भारत; बादल। **–कर**–पु॰ बादल, मेघ। **–करी**–स्त्री॰ झींगुर। **–काम**–पु॰ वृष्टि चाहनेवाला। **–कामेष्टि**–स्त्री॰ वर्षाके लिए किया जानेवाला यज्ञ। **–काली**–स्त्री॰ जीरा। **–केतु**–पु॰ लाल पुनर्नवा। **–कोश,–कोष**–पु॰ ज्योतिषी; महीना; उड़द। **–गाँठ**–स्त्री॰ (हिं॰) दे॰ 'बरसगाँठ'। **–घ्न**–पु॰ पवन, हवा; वर्षानाशक ग्रह-योग; अंतःपुरका नपुंसक रक्षक, वर्षधर। वि॰ वर्षा रोकने या वर्षासे बचानेवाला। **–ज**–वि॰ वर्षाकाल या द्वीपांशमें उत्पन्न होनेवाला; वर्षासे उत्पन्न; एक सालका। **–त्र,–त्राण**–पु॰ छाता। **–धर**–पु॰ बादल; पहाड़; वर्षका शासक; अंतःपुरका रक्षक, खोजा; पृथ्वीको वर्षोंमें विभक्त करनेवाले पर्वत (जै॰)। **–धर्ष**–पु॰ खोजा। **–प,–पति**–पु॰ वर्षका अधिपति (ग्रह)। **–पर्वत,–लंभक**–पु॰ पृथ्वीका वर्षोंमें विभाग करनेवाला पहाड़। **–पाकी(किन्)**–पु॰ आम्रातक, आमला। **–पुष्पा**–स्त्री॰ सहदेई नामक पौधा। **–प्रतिबंध**–पु॰ सूखा, अवर्षण। **–प्रवेश**–पु॰ नये सालका आरंभ। **–प्रिय**–पु॰ चातक। **–फल**–पु॰ वर्षभरका शुभाशुभ, इष्टानिष्ट सूचित करनेवाली कुंडली। **–बोध**–पु॰ (ईयर बुक) प्रतिवर्ष प्रकाशित होनेवाली वह पुस्तक जिसमें वर्षभरकी मुख्य घटनाओं, सामाजिक और राजनीतिक हलचल तथा विशेष जानकारीकी बातोंका संकलन किया गया हो; अब्दकोष। **–वर**–पु॰ खोजा, अंतःपुरका रक्षक। **–वसन**–पु॰ बौद्धोंका वर्षाऋतुमें मकानमें रहना। **–वृद्धि**–स्त्री॰ जन्मदिन।

वर्षक–वि॰ (सं॰) बरसानेवाला; वर्षा करनेवाला।

वर्षण–पु॰ (सं॰) वृष्टि।

वर्षणी–स्त्री॰ (सं॰) वृष्टि; रहना; कर्म।

वर्षांक–पु॰ (सं॰) किसी संवत् या सन्‌का संख्याक्रम।

वर्षांग–पु॰ (सं॰) महीना।

वर्षांगी–स्त्री॰ (सं॰) पुनर्नवा।

वर्षांबु–पु॰ (सं॰) वर्षाका जल।

वर्षांश–पु॰ (सं॰) मास, महीना।

वर्षा–स्त्री॰ (सं॰) वृष्टि; बरसात; किसी वस्तुका लगातार चलनेवाला क्रम, जैसे गोली-वर्षा। **–काल**–पु॰ बरसात। **–घोष**–पु॰ बड़ा मेढक। **–धृत**–वि॰ वर्षामें धारण किया जानेवाला (वस्त्र)। **–प्रभंजन**–पु॰ तेज हवा, आँधी। **–प्रिय**–पु॰ चातक। **–बीज**–पु॰ ओला। **–भव**–पु॰ रक्त पुनर्नवा। वि॰ बरसातमें उत्पन्न। **–भू**–पु॰ मेढक; केंचुवा; इंद्रगोप। स्त्री॰ पुनर्नवा। वि॰ वर्षाकालमें उत्पन्न। **–भ्वी**–स्त्री॰ भेकी; पुनर्नवा; केंचुवा। **–मंगल**–पु॰ वर्षाके लिए वरुणसे प्रार्थना; इससे सम्बन्धी उत्सव। **–मद**–पु॰ मोर। **–मापक**–पु॰ (रेनगेज) वर्षा नापनेवाली बोतल या नल। **–रात्र**–पु॰,**–रात्रि**–स्त्री॰ वर्षाऋतु। **–लंकायिका**–स्त्री॰ पृक्का। **–शाटी**–स्त्री॰ वर्षामें पहननेका वस्त्र।

वर्षागम–पु॰ (सं॰) वर्षाका आरंभ; नये वर्षका आगमन।

वर्षाधिप–पु॰ (सं॰) वर्षका अधिपति (ग्रह)।

वर्षार्चि(स्)–पु॰ (सं॰) मंगल ग्रह।

वर्षार्ह–वि॰ (सं॰) एक वर्षके लिए पर्याप्त।

वर्षाल–पु॰ (सं॰) पतंग, फतिंगा।

वर्षाशन–पु॰ (सं॰) वर्षभरके भोजनके रूपमें दिया जानेवाला अन्नदान।

वर्षाहिक–पु॰ (सं॰) एक तरहका बरसाती साँप।

वर्षिक–वि॰ (सं॰) वर्ष या वर्षा-संबंधी। पु॰ अगुरु।

वर्षित–वि॰ (सं॰) बरसा हुआ; बरसाया हुआ। पु॰ वर्षा।

वर्षिता(तृ)–वि॰ (सं॰) वर्षा करनेवाला।

वर्षिष्ठ–वि॰ (सं॰) अतिशय वृद्ध।

वर्षी(र्षिन्)–वि॰ (सं॰) (समासमें) वर्षा करनेवाला; सालका।

वर्षीका–स्त्री॰ (सं॰) वृत्त-विशेष।

वर्षीण, वर्षीय–वि॰ (सं॰)··सालका।

वर्षुक–वि॰ (सं॰) वर्षा करनेवाला; जलमय।

वर्षुकांबुद, वर्षुकाब्द–पु॰ (सं॰) बरसनेवाला बादल।

वर्षेज–वि॰ (सं॰) दे॰ 'वर्षज'।

वर्षेश–पु॰ (सं॰) दे॰ 'वर्षाधिप'।

वर्षैक–वि॰ (सं॰) वार्षिक, सालाना।

वर्षोपल–पु॰ (सं॰) ओला।

वर्ष्म–पु॰ (सं॰) शरीर।

वर्ष्म(न्)–पु॰ (सं॰) शरीर; परिमाण; ऊँचाई; सुंदर आकृति; सतह; नदियों आदिका बाँध।

वर्ह–पु॰ (सं॰) मोरका पंख; पत्ता; ग्रंथिपर्णी।

वर्हण–पु० (सं०) पत्ता।

वर्हिःशुष्मा(ष्मन्)–पु० (सं०) अग्नि।

वर्हि(स्)–पु० (सं०) अग्नि; जल; यज्ञ; कुशा; चित्रक वृक्ष; दीप्ति; एक राजा; पानी।

वर्हिण–वि० (सं०) मयूरके पंखोंसे अलंकृत। पु० मोर; भारतवर्ष-का एक लघुद्वीप। **–वाज,–वासा(सस्)**–वि० (वाण) जिसमें मोरका पंख लगा हो। **–वाहन**–पु० स्कंद।

वर्हिर्ज्योति(स्)–स्त्री० (सं०) अग्नि।

वर्हिमुख–पु० (सं०) अग्नि देवता।

वर्हिषद्–पु० (सं०) एक पितृगण।

वर्हिष्केश–पु० (सं०) अग्नि।

वर्हीं(र्हिन्)–पु० (सं०) मोर; कश्यपका पुत्र; तगर। **–(र्हि)-कुसुम,–पुष्प,–शिख**–पु० ग्रंथिपर्ण। **–च्छद**–पु० मयूर-पंख। **–ध्वज,–यान,–वाहन**–पु० स्कंद। **–वर्ह**–पु० एक गंधद्रव्य।

वलंब–पु० (सं०) अवलंब; लंब।

वल–पु० (सं०) मेघ; शहतीर; एक असुर जो वृत्रका भाई था और जिसे इंद्रने पराजित किया था। **–(द्विट्(ष्),–नाशन,–भिद्,–सूदन,–हंता(तृ)**–पु० इंद्र। **–रसा**–स्त्री० गंधक।

वलक–पु० (सं०) तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि; शहतीर; यात्रा, जुलूस।

वलक्ष–वि०, पु० (सं०) दे० 'बलक्ष'।

वलग्न–पु० (सं०) कटि, कमर।

वलन–पु० (सं०) घूमना, चक्कर खाना; क्षोभ; ग्रह आदिका मार्गसे विचलित होकर चलना, वक्र गति।

वलनांश–पु० (सं०) ग्रहादिकी वक्र गतिकी दूरी।

वलना–स० क्रि० घेरना; घुमाना फिराना; लपेटना, पहनना (राज०)। अ० क्रि० किसी ओर घूमना या मुड़ना; लौटना।

वलनिक–वि० (सं०) (फोल्डिंग) जो तह करके या मोड़कर रखा जा सके।

वलभि, वलभी–स्त्री० (सं०) वडभी, चंद्रशाला; घरकी चोटी; गुमटी; छाजन; सौराष्ट्रकी एक पुरानी नगरी।

वलय–पु० (सं०) दो-दो पंक्तियोंकी सैनिक स्थिति; कंकण; छल्ला, अँगूठी; कटिबंध; परिधि (समासांतमें); घेरा; शाखा; एक तरहका गलरोग।

वलयित–वि० (सं०) घिरा हुआ, वेष्टित; चक्कर खाता हुआ; गोल मुड़ा हुआ।

वलयिता(तृ)–वि० (सं०) परिवेष्टन करनेवाला।

वलयी(यिन्)–वि० (सं०) कंकणयुक्त; घिरा हुआ, जड़ा हुआ।

वलाक–पु० (सं०) वक, वगला।

वलाका–स्त्री० (सं०) वकी, मादा वगला; वकपंक्ति; प्रियतमा।

वलाकी(किन्)–वि० (सं०) दे० 'वलाकी'।

वलाट–पु० (सं०) मूँग।

वलायत–स्त्री० (अ०) वली होना; दे० 'विलायत'।

वलासक–पु० (सं०) कोयल; मेढक।

वलाहक–पु० (सं०) दे० 'बलाहक', मेघ; पर्वत; कृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एकका नाम।

वलि–स्त्री० (सं०) देवताओंको चढ़ायी जानेवाली वस्तु, पशु आदि; एक दैत्य; ववासीरका मसा; सिकुड़न, झुर्री; चंदनादिसे शरीरपर बनी हुई रेखा; ओलती; गंधक; एक वाद्य (संगीत); पेटमें पड़नेवाला वल; कतार; धार्मिक कर (कौ०)। **–मुख,–वदन**–पु० वानर।

वलिक–पु० (सं०) ओलती।

वलित–वि० (सं०) वल खाया हुआ; मोड़ा, झुकाया हुआ; घेरा हुआ; संबद्ध; युक्त; सिकुड़नदार; लिपटा हुआ; ढका हुआ; सहित। पु० काली मिर्च; नृत्यमें हाथ मोड़नेकी एक मुद्रा। **–कंधर,–ग्रीव**–वि० जिसकी गरदन झुकी हो।

वलितक–पु० (सं०) एक तरहका आभूषण।

वलिन, वलिम–वि० (सं०) जिसपर झुर्रियाँ पड़ी हों, सिकुड़नदार।

वलिमान्(मत्)–वि० (सं०) झुर्रियोंवाला, सिकुड़नदार।

वलिर–वि० (सं०) ऐंचा-ताना।

वलिश–पु०,**–वलिशि; वलिशी**–स्त्री० (सं०) मछली फँसानेका काँटा, वंसी।

वली–स्त्री० (सं०) दे० 'वलि'; तरंग, लहर। **–भृत्**–वि० छल्लेदार। **–मुख**–पु० बंदर; एक वानर; गरम दूधमें मट्ठा मिलनेसे होनेवाला विकार। **–वदन**–पु० बंदर।

वली–पु० (अ०) स्वामी; संरक्षक; अल्लाहका प्यारा; सिद्ध पुरुष; नावालिगकी जायदादकी रक्षाके लिए जिम्मेदार आदमी। **–अल्लाह**–पु० अल्लाहका प्यारा, खुदारसीदा; सिद्ध मुसलमान फकीर। **–अहद**–पु० युवराज। **–अहदी**–स्त्री० युवराजका पद, युवराजत्व।

वलीक–पु० (सं०) ओलती; सरकंडा।

वलीवर्द–पु० (सं०) वैल।

वलूक–पु० (सं०) कमलकी जड़, भसींड़; एक पक्षी। वि० लाल या काला।

वलूल–वि० (सं०) वलवान्, शक्तिशाली।

वले–अ० (फा०) लेकिन, मगर, पुनः।

वलेकिन–अ० (अ०) दे० 'लेकिन'।

वल्क–पु० (सं०) वक्ता; पेड़की छाल; खंड; मछलीकी चोईं; पट्टिका लोध्र। **–तरु**–पु० सुपारीका पेड़। **–द्रुम**–पु० भोजपत्र-का पेड़। **–फल**–पु० अनार। **–रोध्र,–लोध्र**–पु० एक तरहका लोधवृक्ष। **–वास(स्)**–पु० छालका वस्त्र।

वल्कनीकरण–पु० (वल्कनाइज़ेशन) प्राकृतिक रवड़को गंधक (सल्फ़र)की अल्पमात्राके साथ गर्म करना। वल्कनीकरणके फलस्वरूप ऐसा रवड़ तैय्यार हो जाता है जो प्रत्यास्थ तो होता है किन्तु उसकी दृढ़ता वढ़ जाती है।

वल्कल–पु० (सं०) पेड़की छाल; पेड़की छालका कपड़ा; एक तरहका लोध; एक दैत्य; ऋग्वेदकी वाष्कल शाखा। **–संवीत**–वि० जो छालका कपड़ा पहने हो।

वल्कला–स्त्री० (सं०) एक तरहका पौधा जो दवाके काम आता है, तेजवल; शिलावल्का।

वल्कली(लिन्)–वि० (सं०) वल्कल धारण करनेवाला, जिसमें छाल हो।

वल्कवान्(वत्)–पु० (सं०) मछली। वि० वल्कयुक्त।

वल्किल–पु० (सं०) काँटा।

वल्कुत–पु० (सं०) छाल।

वल्गक–पु० (सं०) कूदने, नाचनेवाला।

वल्गन–पु० (सं०) सरपट चाल (घोड़ेकी); व्यर्थकी उछल कूद; वहुत वोलना।

वल्गा–स्त्री० (सं०) लगाम, वाग।

वल्गित–वि० (सं०) उछला, कूदा हुआ; घुमाया, नचाया हुआ। पु० घोड़ेकी सरपट चाल; डींग।

वल्गु–पु० (सं०) वकरा; वोधिद्रुमका एक अधिष्ठाता देवता (बौ०); वरौनी। वि० सुंदर, रुचिर; मधुर; वहुमूल्य। –(स्त्री० 'वल्गुजा')। **–दंतीसुत**–पु० इंद्र। **–नाद**–वि० मधुर गानेवाला (पक्षी)। **–पत्र**–पु० वनमूँग। **–पोदिका**–स्त्री० लहसुआ साग; एक लता।

वल्गुक–वि० (सं०) सुंदर। पु० चंदन; एक वृक्ष; वन; क्रय-विक्रय; मूल्य।

वल्गुल–पु० (सं०) चमगादड़; गीदड़।

वल्गुला–स्त्री० (सं०) चमगादड़; वकुची।

वल्गुलिका–स्त्री० (सं०) कत्थई रंगका एक कीड़ा, तैलपायी; पिटारी, मंजूषा।

वल्गुली–स्त्री० (सं०) चमगादड़; मंजूषा।

वल्द–पु० (अ०) वेटा; पुत्र।

वल्दियत–स्त्री० (अ०) माँ-वापका नाम, वंश-परिचय।

वल्भन–पु० (सं०) भोजन करना; आहार।

वल्भित–वि० (सं०) खाया हुआ।

वल्मिक, वल्मिकि–पु० (सं०) विमौट।

वल्मी–स्त्री० (सं०) चींटी; दीमक। **–कूट**–पु० बिमौट।

वल्मीक–पु० (सं०) दीमक, चींटी आदिकी चाली हुई मिट्टीका ढेर,

बिमौट; श्लीपद नामक रोग; वाल्मीकि; वाल्मीकिके पिता; मेघ जिसपर सूर्य किरणें पड़ रही हों। **–भौम**–पु० बिमौट। **–शीर्ष**–पु० सुरमा। **–संभवा**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी।

वल्ल–पु० (सं०) एक मान (तीन रत्तीके बराबर); ओसाना, फटकना; आवरण; निषेध; एक तरहका गेहूँ; एक माशा चाँदी; सलई; घुँघची।

वल्लक–पु० (सं०) एक समुद्री जंतु, तिमिंगिलगिल (?)।

वल्लकी–स्त्री० (सं०) वीणा; सलईका पेड़।

वल्लभ–वि० (सं०) प्रिय, प्यारा; निरीक्षण करनेवाला, प्रधान। पु० प्रियजन; नायक; पति; अध्यक्ष; स्वामी; सुलक्षण घोड़ा; एक सेम; दे० 'वल्लभाचार्य'। **–पाल,–पालक**–पु० साईस। **–संप्रदाय**–पु० पुष्टिमार्ग।

वल्लभक–पु० (सं०) एक समुद्री जंतु, तिमिंगिलगिल (?)।

वल्लभा–स्त्री० (सं०) प्रियतमा, प्रेयसी। वि० स्त्री० प्यारी।

वल्लभाचार्य–पु० (सं०) ये पुष्टिमार्गके प्रवर्तक थे जो १५वीं सदीमें हुए थे। इन्होंने कृष्णभक्तिका प्रचार किया। सूरदास आदि अष्टछापके प्रमुख कवि इन्हींके शिष्य थे।

वल्लभायित–पु० (सं०) एक रतिबंध।

वल्लभी–स्त्री० (सं०) गुजरातका एक राजनगर; गोपिका।

वल्लर–पु० (सं०) निकुंज; वन; लता; अगर; मंजरी।

वल्लरि, वल्लरी–स्त्री० (सं०) लता; मंजरी; मेथी; वच; एक वाजा।

वल्लव–पु० (सं०) गोप; रसोइया; भीमका एक नाम; एक दैत्य।

वल्लवी–स्त्री० (सं०) गोपिका।

वल्लाह्–अ० (अ०) खुदा कसम, सचमुच।

वल्लि–स्त्री० (सं०) लता; पृथ्वी। **–कंटकारिका**–स्त्री० अग्निदमनी नामक क्षुप। **–ज**–पु० मिर्च; विषैले फूलोंवाला एक पौधा। **–दूर्वा**–स्त्री० एक तरहकी घास, मालादूर्वा। **–सूरण**–पु० अत्यम्लपर्णी।

वल्लिका–स्त्री० (सं०) लता; वेला; एक साग, पोई।

वल्लिकाग्र–पु० (सं०) मूँगा।

वल्लिकी–स्त्री० (सं०) वाद्य-विशेष (संगीत)।

वल्लिन्नी–स्त्री० (सं०) वल्लिदूर्वा।

वल्ली–स्त्री० (सं०) लता; अजमोदा; अग्निदमनी; कैवर्तिका; चव्य; सारिवा, गुडुची, विदारी और रजनीका एक वर्ग। **–गद**–पु० एक मछली। **–ज**–पु० मिर्च। **–बदरी**–स्त्री० एक तरहका बेर। **–वृक्ष**–पु० साल वृक्ष।

वल्लीया–स्त्री० (अ०) स्त्री वली।

वल्लुर–पु० (सं०) कुंज; मंजरी; क्षेत्र, खेत; परती जमीन; सूखा, निर्जल स्थान; रेगिस्तान; वीरान; फूलोंका गुच्छा; सुखाया हुआ मांस।

वल्लूर–पु० (सं०) धूपमें सुखाया हुआ मांस; जंगली सूअरका मांस; ऊसर; जंगल; उजाड़; खारी जमीन।

वल्ल्या–स्त्री० (सं०) धात्री वृक्ष।

वल्वग–पु० (सं०) आँवला।

वल्वज–पु०, **वल्वजा**–स्त्री० (सं०) एक तृण, उलप।

वल्वल–पु० (सं०) एक असुर जिसे बलरामने मारा था।

वल्वलः–पु० (अ०) उत्साह, उमंग; आवेश; आत्मविस्मृति, वेखुदी। **–अंगेज़**–वि० उत्साहवर्द्धक।

वल्हिक–पु० (सं०) दे० 'वल्हीक'।

वव–पु० (सं०) एक करण (ज्यो०)।

वशंकर–वि० (सं०) वशमें करनेवाला।

वशंकृत–वि० (सं०) वशमें किया हुआ।

वशंवद–वि० (सं०) वशवर्ती; आज्ञाकारी।

वश–पु० (सं०) किसीका प्रभाव, शक्ति जिससे दूसरेसे कोई काम करा लिया जाय; काबू; इच्छा, चाह; किसी बातको अपने अनुकूल करानेकी शक्ति; अधिकारमें करना; जन्म; चकला, वेश्याओंका निवासस्थान। वि० अधीन; आज्ञाकारी; मुग्ध। **–कर**–वि० वशमें करनेवाला। **–क्रिया**–स्त्री० वशीकरण। **–ग**–वि० आज्ञाकारी। **–गत**–वि० वशीभूत। **–गमन**–पु० दूसरेके अधिकारमें जाना। **–गा**–स्त्री० आज्ञामें रहनेवाली स्त्री। **–गामी(मिन्)**–वि० वशमें जानेवाला। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० जो किसीके वशमें हो। मु०**–का**–जिसपर जोर या अधिकार हो। **–चलना**–कुछ कहनेकी शक्ति होना। **–में होना**–अधिकार, आज्ञामें होना।

वश–प्र० (फा०) संज्ञापदोंसे युक्त होकर सा, समका अर्थ देता है (माहवश–चाँद-सा–सुंदर)।

वशक–वि० (सं०) वशमें किया हुआ, वशमें करनेवाला।

वशका–स्त्री० (सं०) आज्ञामें रहनेवाली पत्नी।

वशन–पु० (सं०) इच्छा करना।

वशा–स्त्री० (सं०) स्त्री; गाय; हथिनी; कन्या; ननद; बाँझ स्त्री या गाय।

वशाकु–पु० (सं०) एक चिड़िया।

वशाढचक–पु० (सं०) सूँस।

वशानुग–पु० (सं०) आज्ञाकारी, दास। वि० वशीभूत, वशवर्ती।

वशि–स्त्री० (सं०) वशमें करना।

वशिक–वि० (सं०) शून्य, रिक्त।

वशिका–स्त्री० (सं०) अगर।

वशिता–स्त्री०, **वशित्व**–पु० (सं०) अधीनता; सम्मोहन; योगकी एक सिद्धि।

वशिनी–स्त्री० (सं०) शमी, छोंकरका पेड़; बाँदा।

वशिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) वशमें करनेकी योगसे प्राप्त शक्ति; आठ सिद्धियोंमें एक सिद्धि।

वशिर–पु० (सं०) समुद्री नमक; गजपिप्पली; वचा; चव्य; अपामार्ग; एक लाल मिर्च।

वशिष्ठ–पु० (सं०) दे० 'वसिष्ठ'।

वशी(शिन्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; संयमी, अपनेको वशमें रखनेवाला; वशमें किया हुआ, अधीन, वशवर्ती। पु० शासक; ऋषि।

वशीकर–वि० (सं०) वशमें करनेवाला।

वशीकरण–पु० (सं०) वशमें लाना, मंत्रादिके प्रयोगसे किसीको वशीभूत करना।

वशीकार–पु० (सं०) वशमें करना।

वशीकृत–वि० (सं०) वशमें किया हुआ; मंत्र द्वारा वशमें किया हुआ।

वशीभूत–वि० (सं०) अधीन; पराधीन।

वशेंद्रिय–वि० (सं०) जितेंद्रिय।

वश्य–वि० (सं०) वशमें किये जाने योग्य या किया जानेवाला; वशमें किया हुआ। पु० दास; आश्रित; लौंग। **–मित्र**–पु० वह मित्र (राष्ट्र, राजा) जिसका इच्छानुसार उपयोग किया जा सके।

वश्यक–वि० (सं०) आज्ञाकारी।

वश्यका–स्त्री० (सं०) आज्ञामें रहनेवाली स्त्री।

वश्यता–स्त्री० (सं०) अधीनता।

वश्या–स्त्री० (सं०) वशीभूता स्त्री; लगाम; गोरोचन; नील अपराजिता।

वषट्–अ० (सं०) यज्ञाहुतिके समय उच्चार्यमाण शब्द। **–कर्तृ(र्तृ)**–पु० वषट्का उच्चारण करनेवाला। **–कार**–पु० वषट्का उच्चारण; होम।

वष्कय–पु० (सं०) एक सालका बछड़ा।

वष्कयणी, वष्कयिणी–स्त्री० (स०) वह गाय जिसका बछड़ा बड़ा हो गया हो, बकेना गाय।

वसंत–पु० (सं०) छ ऋतुओंमेंसे एक जो चैत्र-वैशाखमें होती है (वसंत देवरूपमें कामदेवका सहचर माना जाता है); अतिसार; मसूरिका; विदूषकका प्रचलित नाम (ना०); एक वृत्त; एक राग; एक ताल; पुष्पगुच्छ। **–काल**–पु० वसंत ऋतु। **–कुसुम**–पु० वृक्षविशेष। **–गीर्वाणी**–स्त्री० एक कर्नाटकी रागिनी (संगीत)। **–घोष,–घोषी(षिन्)**–पु० कोकिल। **–जा**–स्त्री० सफेद जूही; माधवी लता; वसंतोत्सव। **–तिलक**–पु० एक पौधा और उसके फूल। **–तिलका**–स्त्री० एक वर्णवृत्त।

–दूत–पु० कोकिल; आम्र वृक्ष; चैत्र मास; हिंदोल राग। **–दूती**–स्त्री० पाटली वृक्ष; माधवी लता; गनिकारी; कोयल। **–द्रु,–द्रुम**–पु० आम्र वृक्ष। **–पंचमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला पंचमी और उस दिन होनेवाला त्योहार। **–पुष्प**–पु० एक पुष्प; एक तरहका कदंब। **–पूजा**–स्त्री० एक धार्मिक समारोह। **–बंधु**–पु० कामदेव। **–भूपाल**–पु० एक कर्णाटकी राग। **–भैरवी**–स्त्री० एक रागिनी। **–महोत्सव**–पु० होलिकोत्सव। **–मारू**–पु० (हिं०) शुद्ध स्वरोंका एक संपूर्ण जातिका राग। **–मालिका**–स्त्री० एक छंद। **–यात्रा**–स्त्री० वसंतोत्सव। **–योध**–पु० कामदेव। **–राज**–पु० ऋतुराज। **–व्रण**–पु० मसूरिका। **–व्रत**–पु० कोयल; वसंतोत्सव। **–सख**–पु० कामदेव; मलयानिल। **–सखा**–पु० (हिं०) दे० 'वसंतसख'। **–सहाय**–पु० कामदेव।

वसंतक–पु० (सं०) वसंत ऋतु; एक तरहका श्योनाक।

वसंता–पु० एक चिड़िया।

वसंतार्त्त–पु० (सं०) बहेड़ा, विभीतकका पेड़।

वसंतिका–स्त्री० (सं०) संगीतकी एक रागिनी।

वसंती–पु० वसंत ऋतु सम्बन्धी; सरसोंके फूल जैसा एक हलका पीला रंग। वि० वसंती रंगका। स्त्री० वासंती लता।

वसंतोत्सव–पु० (सं०) होलिकोत्सव।

वसअत–स्त्री० (अ०) फैलाव; कुशादगी; गुंजाइश; आराम; मौका; फ़ुरसत; बहुतायत; शक्ति, सामर्थ्य।

वसति, वसती–स्त्री० (सं०) वास, रहना; घर; शिविर; आबादी, बस्ती; आधार; विश्राम-काल; रात; साधुओंका मठ (जै०)।

वसथ–पु० (सं०) रहनेका स्थान, घर; नीड।

वसन–पु० (सं०) वस्त्र; ढकनेकी वस्तु, आवरण; निवास; मकान; स्त्रियोंका कमरका एक गहना, रसना; तेजपात। **–पर्याय**–पु० वस्त्र-परिवर्तन। **–सद्म(न्)**–पु० खेमा।

वसन–पु० (अ०) मूर्ति, प्रतिमा।

वसना, वसनी–स्त्री० (सं०) कमरका एक गहना।

वसनार्णवा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

वसनी–वि० (अ०) मूर्तिपूजक।

वसमा–पु० (अ०) नीलके पत्ते जिन्हें मेंहदीमें मिलाकर बालोंमें खिजाब करते हैं; एक तरहका छपा हुआ कपड़ा। **–दार**–वि० वस्मेसे रँगा हुआ। **–पोश**–पु० वस्मेसे रँगा हुआ कपड़ा पहननेवाला। मु० **–करना**–बालोंमें खिजाब लगाना।

वसल–पु० (अ०) संयोग, वस्ल।

वसली–स्त्री० (अ०) गत्तां, दफ्ती। **–गर**–पु० दफ्ती बनानेवाला।

वसवस्त–पु० (अ०) दे० 'वसवास'।

वसवास–पु० (अ०) भुलावा; भ्रम; शंका; संदेह; दुविधा।

वसवासी–वि० भुलावेमें डालनेवाला; शक करनेवाला।

वसह*–पु० बैल।

वसा–स्त्री० (सं०) मेद; मेद या चरबीवाला पदार्थ; (फ़ैट) कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजनसे बने यौगिक जो ग्लिसरॉल तथा वसा-अम्लके एस्टर होते हैं। वसा पौष्टिक पदार्थ है जिसके ऑक्सीकरणसे कार्बोहाइड्रेटकी तुलनामें दोगुनी ऊर्जा प्राप्त होती है; भेजा; अदरक जैसा एक मूल। **–केतु**–पु० एक धूमकेतु। **–छटा**–स्त्री० भेजा। **–पायी(यिन्)**–पु० कुत्ता। **–पावा(वन्)**–वि० मेद पीनेवाला। पु० एक वैदिक देवता। **–प्रमेह,–मेह**–पु० एक प्रमेह जिसमें मूत्रके साथ वसा निकलती है। **–मूर**–पु० एक जनपद। **–रोह**–पु० कुकुरमुत्ता।

वसाढ्य, वसाढ्यक–पु० (सं०) सूँस।

वसातत–स्त्री० (अ०) मध्यस्थता, जरिया; द्वार।

वसाति–स्त्री० (सं०) एक जनपद; उषा। पु० वसाति जनपदका निवासी; इक्ष्वाकुका एक पुत्र; जनमेजयका पुत्र।

वसादनी–स्त्री० (सं०) पीला शीशम।

वसायत–स्त्री० (अ०) अभिभावकता।

वसार–पु० (सं०) इच्छा, अभिप्राय; प्रयोजन।

वसालत–स्त्री० (अ०) वसीला; माध्यम।

वसि–स्त्री० (सं०) वस्त्र; मकान।

वसिक–वि० (सं०) रिक्त, खाली। पु० पद्मासनमें बैठनेवाला।

वसित–वि० (सं०) पहना हुआ; बसा हुआ; जमा किया हुआ। पु० वस्त्र; वास-स्थान।

वसितव्य–वि० (सं०) पहनने, धारण करने योग्य।

वसिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पहननेवाला।

वसिर–पु० (सं०) समुद्री नमक; गजपिप्पली; लाल चिचड़ा; जलनीम।

वसिष्ठ–पु० (सं०) एक ऋषि (वेदके बहुतसे मंत्रों, विशेषतः ऋग्वेदके सातवें मंडलके रचयिता यही कहे जाते हैं। इनका नाम रामायण, महाभारत और पुराण-ग्रंथोंमें प्रायः आता है। ये सुदासके पुरोहित थे। विश्वामित्रसे यज्ञ करानेपर सुदाससे क्रुद्ध हुए और विश्वामित्रसे भी वैर हुआ। पुराणोंमें ये ब्रह्माके मानसपुत्र कहे गये हैं); सप्तर्षिमंडलका एक तारा; एक स्मृतिकार। **–निह्नव**–पु० एक साम। **–पुराण**–पु० एक उपपुराण। **–प्राची**–स्त्री० एक जनपद। **–यज्ञ**–पु० यज्ञविशेष। **–शफ**–पु० एक साम। **–शिक्षा**–स्त्री० एक शिक्षा। **–संसर्प**–पु० चार दिन चलनेवाला एक यज्ञ। **–संहिता**–स्त्री० एक स्मृति। **–सिद्धांत**–पु० एक ज्योतिष-ग्रंथ।

वसिष्ठक–पु० (सं०) वसिष्ठ ऋषि।

वसिष्ठांकुश–पु० (सं०) एक साम।

वसिष्ठानुपद–पु० (सं०) एक साम।

वसिष्ठोपपुराण–पु० (सं०) एक उपपुराण।

वसी–पु० (अ०) वह व्यक्ति जिसको वसीयत की गयी हो या जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो।

वसी(सिन्)–पु० (सं०) ऊदबिलाव।

वसीअ–वि० (अ०) चौड़ा फैला हुआ; विस्तृत।

वसीअत, वसीयत–स्त्री० (अ०) मृत्यु या लंबी यात्राके अवसरपर मृत्युके बाद अपनी संपत्तिके प्रबंध, उपभोग आदिके विषयमें किया हुआ आदेश। **–नामा**–पु० मृत्युके बादके कर्तव्योंका आदेश-पत्र, मृत्युपत्र।

वसीक़–वि० (अ०) दृढ़, मजबूत; टिकाऊ।

वसीक़ा–पु० कौल-करार; इकरारनामा; दस्तावेज; ऋणपत्र; धर्मकार्य आदिके लिए जमा धन; उस धनसे मिलनेवाली वृत्ति। **–दार**–वि० जिसके हकमें वसीक़ा लिखा गया हो; महाजन। **–सरकारी**–पु० सरकारी ऋणपत्र, 'गवर्मेंट बांड'।

वसीम–वि० (अ०) सुंदर।

वसीला–पु० (अ०) जरिया; सहारा; सहायता; लगाव।

वसुंधरा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; देश; राज्य; क्षिति; श्वफल्ककी कन्या, सांबकी पत्नी; एक देवी। **–धर**–पु० पहाड़। **–धव**–पु० राजा। **–भृत्**–पु० पहाड़। **–शुनासीर**–पु० राजा।

वसु–वि० (सं०) सबमें बसनेवाला; मधुर; शुष्क। पु० धन; रत्न; सोना; जल; पदार्थ; एक नमक; पीली मूँग; आठ देवताओंका एक वर्ग; आठकी संख्या; कुबेर; शिव; अग्नि; वृक्ष; सरोवर; लगाम, बागडोर; जुवा बाँधनेकी रस्सी; सूर्य; विष्णु; चंद्रमा; मौलसिरी; एक तरहकी मछली; छप्पयका एक भेद। स्त्री० प्रकाश, दीप्ति; प्रकाश-रश्मि; एक जड़ी, वृद्धि; अमरावती; अलका; दक्षकी एक कन्या। **–कर्ण**–पु० एक मंत्रद्रष्टा ऋषि। **–कीट,–कृमि**–पु० भिक्षुक। **–क्र**–पु० एक ऋषि। **–चारुक**–पु० सोना। **–च्छिद्रा**–स्त्री० महामेदा। **–द**–वि० धन देनेवाला। पु० कुबेर; विष्णु। **–दा**–स्त्री० पृथ्वी; एक देवी; स्कंदकी एक मातृका। **–दान**–पु० विदेहराजका एक पुत्र; बृहद्रथका एक पुत्र। **–दामा(मन्)**–पु० बृहद्रथका एक पुत्र। **–देव**–पु० कृष्णके पिता। **–० भू,–सुत**–पु० कृष्ण। **–देवत**–पु० धनिष्ठा नक्षत्र। **–देव्या**–स्त्री० धनिष्ठा नक्षत्र; पक्षकी नवीं तिथि। **–दैव,–दैवत**–पु० दे० 'वसुदेवत'। **–द्रुम**–पु० गूलर। **–धर्मिका**–स्त्री० स्फटिक। **–धा**–स्त्री० पृथ्वी, क्षिति; राज्य; लक्ष्मी। **–० तल**–पु० धरातल। **–० धर**–पु० पहाड़; विष्णु। **–० नगर**–पु० कुबेरकी राजधानी। **–धान**–पु० धनदान; पृथ्वी। **–धार**–वि० धन, कोश रखनेवाला। पु० एक पहाड़। **–धारा**–स्त्री० एक देवी (बौ०); एक शक्ति (जै०); कुबेरकी

पुरी, अलका; एक तीर्थ; नांदीमुख श्राद्धका कृत्यविशेष; एक नदी; धन या दानका प्रवाह। **–धारिणी**–स्त्री० पृथ्वी। **–नीत, –नेत्र**–पु० ब्रह्मा (बौ०)। **–नीथ**–पु० अग्नि। **–पति**–पु० कृष्ण। **–पाता(तृ)**–पु० कृष्ण। **–पाल**–पु० राजा। **–प्रद**–वि० धन देनेवाला। पु० शिव; कुबेर; स्कंदका एक अनुचर। **–प्रभा**–स्त्री० अग्निकी एक जिह्वा; कुबेरका राजनगर। **–प्राण**–पु० अग्नि। **–बंधु**–महायान शाखाके एक प्राचीन बौद्ध आचार्य। **–भ**–पु० धनिष्ठा नक्षत्र। **–भरित**–वि० धनपूर्ण। **–मना(नस्)**–पु० एक मंत्रद्रष्टा ऋषि; एक कोसलनरेश। **–मित्र**–पु० वैभाषिक संप्रदायके एक आचार्य (महायान बौद्ध)। **–रक्षित**–पु० एक बौद्ध आचार्य। **–रात**–पु० एक ऋषि। **–रुचि**–पु० एक गंधर्व। **–रूप**–पु० शिव। **–रेता(तस्)**–पु० शिव; अग्नि। **–रोचि(स्)**–पु० यज्ञ। **–वन**–पु० एक पौराणिक देश। **–वाह**–पु० एक ऋषि। **–विंद**–वि० धन प्राप्त करनेवाला। **–विद्**–पु० अग्नि। **–व्रत**–पु० एक तरहका अनुष्ठान। **–श्रवा(वस्)**–पु० शिव। **–श्री**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–श्रुत**–वि० धनके लिए विख्यात। **–श्रेष्ठ**–वि० वसुओंमें श्रेष्ठ (कृष्ण)। पु० चाँदी। **–षेण**–पु० कर्ण; विष्णु। **–संपत्ति**–स्त्री० धन-प्राप्ति। **–सारा,–स्थली**–स्त्री० कुबेरका राजनगर, अलका नगरी। **–हंस**–पु० वसुदेवका एक पुत्र। **–हट्ट,–हट्टक**–पु० वक वृक्ष।

वसुक–पु० (सं०) साँभर नमक, पांशुलवण; एक ताल; अर्क वृक्ष; एक पुष्प; काला अगर; बड़ी मौलसिरी।

वसुकोदर–पु० (सं०) तालीशपत्र।

वसुधाधिप–पु० (सं०) राजा।

वसुन–पु० (सं०) यज्ञ।

वसुमती–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; देश; राज्य; जमीन; एक वृत्त। **–पति**–पु० राजा। **–पृष्ठ**–पु० धरातल। **–सूनु**–पु० नरक।

वसुर–वि० (सं०) मूल्यवान्।

वसुल–पु० (सं०) देवता।

वसूक–पु० (सं०) वक वृक्ष या उसका पुष्प; साँभर नमक।

वसूज–पु० (सं०) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

वसूत्तम–पु० (सं०) भीष्म।

वसूमती–स्त्री० (सं०) धनी स्त्री।

वसूरा–स्त्री० (सं०) वेश्या।

वसूल–पु० (अ०) मिलना, प्राप्ति; पहुँचना; उगाही, मिली, पहुँची हुई रकम या चीज। वि० मिला हुआ, प्राप्त।

वसूली–वि० वसूल होने योग्य, प्राप्तव्य। स्त्री० वसूल करनेकी क्रिया, उगाही। दे० 'वसूल'।

वस्क–पु० (सं०) गमन; अध्यवसाय।

वस्कय–पु० (सं०) दे० 'वष्कय'।

वस्कयनी–स्त्री० (सं०) दे० 'वष्कयणी'।

वस्कराटिका–स्त्री० (सं०) वृश्चिक।

वस्त–पु० (सं०) बकरा; रहनेका स्थान या मकान। † स्त्री० वस्तु। **–कर्ण**–पु० शाल वृक्ष। **–गंधा**–स्त्री० अजगंधा। **–मोदा**–स्त्री० अजमोदा।

वस्त–अ० (अ०) बीच, दरमियान। पु० मध्य भाग; कटि। **–(स्ते)हिंद**–पु० मध्यभारत।

वस्तक–पु० (सं०) कृत्रिम लवण।

वस्तव्य–वि० (सं०) रहने, ठहरने योग्य; व्यतीत करने योग्य।

वस्तांत्री–स्त्री० (सं०) एक पौधा, वृषपत्रिका।

वस्ता(तृ)–वि० (सं०) वस्त्र धारण करनेवाला; चमकनेवाला।

वस्ति–स्त्री० (सं०) पेड़ू, नाभिके नीचेका भाग; मूत्राशय; पिचकारी (एनिमा); निवास; कपड़ेका छोर। **–कर्म(न्)**–पु० लिंग, गुदा आदिमें पिचकारी देना। **–कर्माढ्य**–पु० अरिष्ट वृक्ष। **–कुंडल**–पु०,**–कुंडलिका**–स्त्री० मूत्राशयका एक रोग जिससे उसमें गाँठ पड़ जाती है। **–कोश**–पु० मूत्राशय। **–मल**–पु० मूत्र, पेशाब। **–वात**–पु० एक मूत्ररोग। **–शिर(स्)**–पु० एनिमाकी टोंटी; मूत्राशयका ऊपरका संकीर्ण भाग। **–शीर्ष**–पु० मूत्राशयका ऊपरका संकीर्ण भाग। **–शोधन**–पु० मदन, मैनफल।

वस्ती–वि० दरमियानी, बीचका।

वस्तु–स्त्री० (सं०) किसी चीजका आधार, पीठ; वह पदार्थ जिसकी स्थिति, सत्ता हो; सत्य; चीज, पदार्थ; व्यावहारिक पदार्थ; धन, संपत्ति; उपकरण; वृत्तांत, इतिवृत्त; नाटककी कहानी, घटना, कथा-वस्तु; धर्म, स्वभाव; योजना। **–कृत**–वि० अभ्यस्त। **–जगत्**–पु० दृश्यमान जगत्। **–जात**–पु० वस्तुओंका योग। **–ज्ञान**–पु० वस्तुकी पहचान; तत्त्वज्ञान, मूल तत्त्वका बोध। **–निर्देश**–पु० वह मंगलाचरण जिसमें कथाका कुछ संकेत, आभास रहता है; सूची। **–निष्ठा**–वि० (आब्जेक्टिविटी) –भौतिक पदार्थोंमें निष्ठा; 'आत्मनिष्ठा'का विपर्याय। **–प्रेषणादेश**–पु० (इनडेंट) माल भेजनेके लिए (देशके बाहरसे) दिया गया लिखित आदेश। **–बल**– पु० वस्तुका गुण या शक्ति। **–भाव**–पु० यथार्थता। **–भेद**– पु० वास्तविक अंतर। **–मात्र**–पु० किसी विषयका बाह्य रूप। **–रचना**–स्त्री० शैली; कथावस्तुका विकास। **–वाद** –पु० एक दार्शनिक सिद्धांत जिसमें दृश्य जगत्को यथारूप सत् मानते हैं, भूतवाद। **– विनिमय**–पु० वस्तुओंका अदल-बदल (बार्टर)। **–वृत्त**–पु० यथार्थ विषय। **–शून्य**–वि० जिसमें यथार्थता न हो, नकली। **–स्थिति**–स्त्री० परिस्थिति; वास्तविक स्थिति।

वस्तुक–पु० (सं०) सार भाग; एक साग, वास्तुक।

वस्तुकी–स्त्री० (सं०) श्वेत चिल्ली शाक।

वस्तुतः(तस्)–अ० (सं०) (डी फ़ैक्टो) यथार्थतः, असलमें।

वस्तूपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद, धर्मलुप्तापमा।

वस्तूत्प्रेक्षा–स्त्री० (सं०) उत्प्रेक्षा अलंकारका एक भेद।

वस्त्य–पु० (सं०) निवासस्थान, मकान, बस्ती।

वस्त्र–पु० (सं०) कपड़ा; पोशाक। **–कुट्टिम**–पु० छाता; खेमा, डेरा। **–कोश**–पु० वस्त्र रखनेका थैला। **–गृह**–पु० खेमा। **–गोपन**–पु० ६४ कलाओंमेंसे एक। **–ग्रंथि**–स्त्री० इजारबंद, नाड़ी, नीवी। **–घर्घरा**–स्त्री० छलनी या छाननेका वस्त्र। **–दशा**–स्त्री० कपड़ेकी किनारी। **–धारणी**–स्त्री० अलगनी। **–धावी(विन्)**–वि० कपड़ा धोनेवाला। **–निर्णेजक**–पु० धोबी। **–पंजल**–पु० एक कंद, कोलकंद। **–प**–पु० वस्त्र-विशेषज्ञ राजकर्मचारी (शुक्रनीति); एक तीर्थस्थान। **–पट**–पु० कपड़ेपर हाथसे अंकित चित्र। **–पुत्रिका**–स्त्री० गुड़िया। **–पूत**–वि० कपड़ेसे छाना हुआ। **–पेटा**–स्त्री० कपड़ेकी टोकरी। **–पेशी**–स्त्री० झालर। **–बंध**–पु० नीवी, नाड़ा। **–भवन**–पु० खेमा। **–भूषण**–पु० रक्तांजन। **–भूषणा,–रंजनी**–स्त्री० मजीठ। **–भेदक,–भेदी(दिन्)**–पु० दर्जी। **–योनि**–स्त्री० वस्त्रका उपादान, रुई आदि। **–रंजक,–रंजन**–पु० कुसुमका पौधा। **–विलास**–पु० वेश-भूषाप्रियता। **–वेश,–वेश्म(न्)**–पु० खेमा। **–वेष्टित**–वि० कपड़ेसे आवृत।

वस्त्रक–पु० (सं०) कपड़ा।

वस्त्रांचल, वस्त्रांत–पु० (सं०) कपड़ेका छोर।

वस्त्रांतर–पु० (सं०) ऊपरका कपड़ा, उपरना।

वस्त्रागार–पु० (सं०) कपड़ेकी दुकान।

वस्न–पु० (सं०) वस्त्र; निवास; धौका पेड़; छाल; वेतन; मजदूरी; मूल्य; द्रव्य; धन; मृत्यु।

वस्नन–पु० (सं०) स्त्रियोंका कमरका एक गहना, करधनी, कटिभूषण।

वस्नसा–स्त्री० (सं०) स्नायु; नस।

वस्निक–वि० (सं०) वेतनोपजीवी; क्रय्य।

वस्फ़–पु० (अ०) गुण, खूबी; प्रशंसा; पहचान।

वस्म(न्)–पु० (सं०) वस्त्र; निवासस्थान।

वस्मा–पु० दे० 'वसमा'।

वस्र–पु० (सं०) दिन; मकान, निवास-स्थान; चौराहा।

वस्ल–पु० (अ०) मिलन, प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन; संभोग, सहवास; आत्मा-परमात्माका मिलन; मृत्यु।

वस्ला–पु० (अ०) मिलन; जोड़; पैबंद।

वस्ली–स्त्री० दो बीचसे जुड़ी हुई दफ्तियाँ जिनपर बढ़िया कागज चिपकाकर उर्दू-फारसीके छात्र खुशनवीसीका अभ्यास करते हैं। वि० मिलनेवाला, वस्ल हासिल करनेवाला।

वस्वौकसारा–स्त्री० (सं०) इंद्रपुरी; कुबेरपुरी; गंगा; इंद्रनदी; कुबेरनदी।

वहंत–पु० (सं०) वायु; शिशु।

वह–सर्व० बात-चीतमें दूरस्थित, परोक्ष व्यक्तिके संकेतका शब्द; दूरस्थ, परोक्ष पदार्थोंका संकेत (विशेषणके रूपमें भी प्रयुक्त होता है–जैसे वह लड़का)। पु० (सं०) घोड़ा; वाहन; वायु; मार्ग; नद; प्रवाह, धारा; बैलका कंधा; ले जाने, ढोनेकी क्रिया; चार द्रोणका एक मान। वि० ले जानेवाला; वहन करनेवाला (पदांतमें–जैसे गंधवह, भारवह)।

वहत–पु० (सं०) बैल; पथिक।

वहति–पु० (सं०) वायु; मित्र; सचिव; बैल।

वहती–स्त्री० (सं०) गाय; नदी।

वहतु–पु० (सं०) बैल; पथिक।

वहदत–स्त्री० (अ०) एक, अकेला होना, अद्वैतभाव, खुदाका एक, अद्वय होना। **–ख़ाना**–पु० एकांतवासका स्थान। **–(ते)वुजूद**–स्त्री० सृष्टिके संपूर्ण पदार्थोंको ब्रह्मकी ही अभिव्यक्ति मानना, 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म'का विश्वास (सूफी)। **–परस्त**–वि० अद्वैतवादी। **–परस्ती**–स्त्री० अद्वैतवाद।

वहदानी–वि० एकसे संबद्ध, अद्वैतवादी।

वहदानियत, वहदानीयत–स्त्री० (अ०) अकेला, अद्वय होना, यकताई, तौहीद; अद्वैतवाद।

वहन–पु० (सं०) बेड़ा, नाव; यान; खींचकर लादकर कहीं ले जाना; सिर, कंधेपर लेना, धारण करना, उठाना; कर्तव्यके रूपमें भार उठाना; वहना; खंभेका सबसे नीचेका हिस्सा (वास्तु)। वि० ले जानेवाला। **–भंग**–पु० पोत आदिका भंग होना, डूब जाना।

वहनक–पु० (सं०) संवाहक, गाड़ी, ठेला, नाव आदि।

वहनीय–वि० (सं०) उठा या खींचकर ले जाने योग्य; धारणीय, ऊपर लेने योग्य।

वहब–स्त्री० (अ०) देन; दान; पुरस्कार।

वहबी–वि० (अ०) ईश्वरप्रदत्त।

वहम–पु० (अ०) शक; शंका; कल्पना; भ्रममूलक, गलत खयाल। **–का पुतला**–वहमी। **–नाक** वि० भ्रमपूर्ण।

वहमी–वि० भ्रमजनित; वहम करनेवाला; शक्की।

वहल–स्त्री० (अ०) कीचड़, कर्दम। स्त्री० ध्यान बँटना। पु० (सं०) नाव, बेड़ा। वि० कर्कश; झबरीला; दृढ़, मजबूत; भार ढोने या खींचनेमें अभ्यस्त (बैल आदि)। **–गंध**–पु० शंबर चंदन। **–०चक्षु(स्)**–पु० मेषशृंगी। **–त्वच**–पु० श्वेत लोध्र।

वहला–स्त्री० (सं०) सौंफ, शतपुष्पा; बड़ी इलायची; दीपक रागकी एक रागिनी।

वहश–पु० (अ०) जंगली जानवर।

वहशत–स्त्री० वहशीपन, आदमियोंसे भड़कनेका भाव; घबराहट; चित्तकी अति चंचलता; भय, सनक; पागलों-सा व्यवहार, मानसिक विक्षेप। **–असर**–वि० घबराहट पैदा करनेवाला। **–नाक**–वि० डरावना।

वहशियाना–अ० वहशीकी तरह, जंगली जानवर या आदमीके अनुरूप।

वहशी–वि० जंगली, आदमियोंकी सुहबतसे घबराने, भागनेवाला; उजड्ड, असभ्य। पु० जंगली जानवर; जंगली आदमी; असभ्य जन। **–क़ौम**–स्त्री० जंगली, असभ्य जाति। **–मिज़ाज**–वि० जिसके स्वभावमें वहशीपन हो।

वहाँ–अ० उस जगह (दूरके लिए)।

वहा–स्त्री० (सं०) नदी; धारा।

वहाबी–पु० मौलवी अब्दुल वहाब-प्रवर्तित एक मुसलिम संप्रदाय जो केवल कुरानको मानता है, हदीसोंको प्रमाण नहीं मानता; उक्त सम्प्रदायका अनुयायी।

वहिः(हिस्)–अ० (सं०) बाहर (समस्त पदोंमें प्रयुक्त)।

वहित–वि० (सं०) ढोया हुआ; ज्ञात; विख्यात; प्राप्त।

वहित्र–पु० (सं०) पोत; एक तरहका रथ। **–कर्ण**–पु० योगका एक आसन। **–भंग**–पु० दे० 'वहन-भंग'।

वहित्रक–पु० (सं०) दे० 'वहित्र'।

वहिनी–स्त्री० (सं०) नाव।

वहिर्–'वहिस्'का समासगत रूप। **–अंग**–वि०, पु० दे० 'वहिरंग'। **–इंद्रिय**–स्त्री० दे० 'बहिरिंद्रिय'। **–गत**–वि० दे० 'वहिर्गत'। **–०जगत्**–पु० दृश्यमान जगत्। **–देश**–पु० दे० 'बहिर्देश'। **–द्वार**–पु० दे० 'बहिर्द्वार'। **–ध्वजा**–स्त्री० दे० 'बहिर्ध्वजा'। **–भूत**–वि० दे० 'बहिर्भूत'। **–मुख**–वि०, पु० दे० 'बहिर्मुख'। **–योग**–पु० दे० 'वहिर्योग'। **–लंब**–वि० अधिक कोणवाला। पु० अधिक कोण त्रिभुज। **–लापिका**–स्त्री० टेढ़ा प्रश्न, वाक्य, ऐसी पहेली जिसका उत्तर प्रश्नके बाहर होता है। **–विकार**–पु० दे० 'बहिर्विकार'। **–वृत्ति**–स्त्री० बाह्यरूप। **–व्यसन**–पु० कामुकता।

वहिश्चर–वि०, पु० (सं०) दे० 'वहिश्चर'।

वहिष्–'वहिस्'का समासगत रूप। **–करण**–पु० दे० 'वहिष्करण'। **–कार**–पु० 'बहिष्कार'। **–कुटीचर**–पु० दे० 'वहिष्कुटीचर'। **–कृत**–वि० दे० 'वहिष्कृत'। **–प्राण**–पु० दे० 'बहिष्प्राण'।

वहिष्क–वि० (सं०) बाहरका।

वहिष्ठ–वि० (सं०) अधिक भार उठानेवाला।

वहीँ–अ० उसी जगह (दूर, परोक्षके लिए)।

वही–सर्व० पूर्ववर्णित व्यक्ति, निर्दिष्ट व्यक्ति, दूसरा नहीं। स्त्री० (अ०) ईश्वरीय संदेश या आदेश जो किसी पैगंबरको मिले, इलहाम, देववाणी। **–ए मुंज़ल**–स्त्री० ईश्वरप्रेरित आदेश।

वही(हिन्)–वि० (सं०) भार ढोनेवाला। पु० बैल।

वहीरु–पु० (सं०) एक नाडी-वर्ग; पेशी।

वहूदक–पु० (सं०) सन्न्यासियोंका एक भेद।

वहेडुक, वहेदुक–पु० (सं०) एक वृक्ष, बहेड़ा।

वहै*–सर्व० वह ही, वही।

वह्नि–पु० (सं०) अग्नि; जठराग्नि; पाचन; क्षुधा; यान; घोड़ा आदि जोते जानेवाले जानवर; तीनकी संख्या; चित्रक; भिलावा; देवता; मरुत्; सोम; कृष्णका एक पुत्र; तुर्वसुका एक पुत्र; पुरोहित; आँठवाँ कल्प। **–कर**–पु० चकमक; बिजली; जठराग्नि। **–करी**–स्त्री० धात्रीश्वरी नामक पुष्प, धव। **–काष्ठ**–पु० दाहागुरु। **–कुंड**–पु० आग रखनेके लिए बना हुआ गड्ढा। **–कुमार**–पु० एक देवगण (जै०)। **–कोण**–पु० अग्निकोण। **–गंध**–पु० गंधद्रव्य; यक्षधूप। **–गर्भ**–पु० बाँस। **–गर्भा**–स्त्री० शमी वृक्ष। **–चक्रा**–स्त्री० कलियारी। **–जाया**–स्त्री० स्वाहा। **–ज्वाल**–पु० एक नरक। **–ज्वाला,–पुष्पी**–स्त्री० धातकी वृक्ष। **–दमनी**–स्त्री० अग्निदमनी क्षुप। **–दीपक**–पु० कुसुंभ। **–दीपिका**–स्त्री० अजमोदा। **–दैवत**–वि० अग्नि-पूजक। **–धौत**–वि० अग्नि जैसा शुद्ध। **–नामा(मन्)**–पु० चित्रक, भिलावाँ। **–नी**–स्त्री० जटामासी; गजपिप्पली। **–बीज**–पु० सोना; 'रं' बीज; बिजौरा नीबू। **–भूतिक**–पु० चाँदी। **–भोग, –भोग्य**–पु० घी। **–मंथ**–पु० गनियारी; अग्निमंथ। **–मारक**–पु० पानी। **–मित्र**–पु० वायु। **–मुख**–पु० देवता। **–रेता(तस्)**–पु० शिव। **–लोह**–पु० ताँबा। **–लोहक**–पु० ताँबा; काँसा। **–वक्त्रा**–स्त्री० कलियारी। **–वधू**–स्त्री० स्वाहा। **–वर्ण**–पु० रक्तोत्पल। **–वल्लभ**–पु० धूना। **–वल्लभा**–स्त्री० स्वाहा। **–शिख**–पु० केसर; कुसुंभ। **–शिखर**–पु० लोचमस्तक। **–शिखा**–स्त्री० आगकी लपट; कलियारी; धातकी; गजपीपल। **–शुद्ध**–वि० अग्नि जैसा पवित्र। **–शेखर**–पु० केसर। **–संज्ञक**–पु० चित्रक। **–सख**–पु० वायु; जीवक। **–सुत**–पु० अभ्ररस। **–स्फुलिंग**–पु० चिनगारी।

वह्निक, वह्नीक–पु० (सं०) गरम, तप्त। पु० ताप, गरमी।

वह्नीश्वरी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।

वह्य–पु० (सं०) वाहन, यान; गाड़ी।

वह्यक–पु० (सं०) ले जानेवाला, वाहक; जोता जानेवाला जानवर।

वाँ†–अ० वहाँ, उस जगह; एक प्रत्यय, जैसे पाँचवाँ, सातवाँ।

वांक–पु० (सं०) समुद्र ।

वांगाल–पु० (सं०) एक राग ।

वांगाली–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

वांछक–वि०, पु० (सं०) इच्छा करनेवाला, इच्छुक ।

वांछन–पु० (सं०) इच्छा करना ।

वांछनीय–वि० (सं०) चाहने योग्य, अभिलषणीय ।

वांछा–स्त्री० (सं०) इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

वांछित–वि० (सं०) इच्छित, चाहा हुआ । पु० इच्छा, चाह; एक ताल ।

वांछितव्य, वांछ्य–वि० (सं०) अभिलषणीय, जिसकी इच्छा की जाय ।

वांछिनी–स्त्री० (सं०) पुंश्चली ।

वांछी(छिन्)–वि० (सं०) इच्छुक, चाहनेवाला; लंपट ।

वांत–वि० (सं०) वमन किया हुआ, मुँहसे निकाला हुआ; जिसने वमन किया है । पु० वमन; वमन किया हुआ पदार्थ ।

वांताद–पु० (सं०) वमन खानेवाला, कुत्ता; एक पक्षी ।

वांतान्न–पु० (सं०) वमन किया हुआ अन्न ।

वांताशी(शिन्)–वि० (सं०) वमन खानेवाला । पु० कुत्ता; गोत्रादिका उल्लेख कर भीख माँगनेवाला ।

वांति–स्त्री० (सं०) वमन करनेकी क्रिया । **–कृत्**–वि० वमन करानेवाला । पु० लौह कंटक वृक्ष, मैनफल । **–दा**–स्त्री० कटुकी । **–शोधनी**–स्त्री० जीरा ।

वांतिका–स्त्री० (सं०) कटुकी ।

वांश–वि० (सं०) बाँसका बना हुआ; वंश सम्बन्धी ।

वांशिक–पु० (सं०) बाँस काटनेवाला; बाँसुरी बजानेवाला ।

वांशी–स्त्री० (सं०) वंसलोचन ।

वा:किटि–पु० (सं०) सूँस ।

वा:पुष्प–पु० (सं०) लौंग ।

वा:सदन–पु० (सं०) जलपात्र, जलाधार ।

वा:स्थ–वि० (सं०) जो पानीमें खड़ा हो ।

वा–अ० (सं०) संशय, संदेह, विकल्प आदिका व्यंजन शब्द–या, अथवा; (अ०) दे० 'वाय' । * सर्व० 'वह'का बिगड़ा हुआ रूप ।

वाइ*–सर्व० उसको । स्त्री० वापी ।

वाइकाउंट–पु० (अं०) इंगलैंडके भूस्वामियोंकी एक उपाधि ।

वाइज़–वि०, पु० (अ०) वाज, नसीहत करनेवाला; धर्म या नीतिका उपदेश करनेवाला; मुल्ला ।

वाइदा–पु० (अ०) दे० 'वादा' ।

वाइस–पु० (अं०) प्रतिनिधिके रूपमें, दूसरेके स्थानपर काम करनेवाला व्यक्ति (समस्त पदोंमें) । **–चांसलर**–पु० उपकुलपति, विश्वविद्यालयका एक उच्च अधिकारी जो चांसलरका सहायक होता है और विश्वविद्यालयकी व्यवस्था आदि करता है । **–चेयरमैन**–पु० उपाध्यक्ष । **–प्रेसिडेंट**–पु० उपसभापति । **–राय**–पु० ब्रिटिश शासनकालमें हिंदुस्तानका सर्वोच्च शासक जो इंगलैंडके राजप्रतिनिधिकी हैसियतसे भारतमें रहता था ।

वाउचर–पु० (अं०) खर्चकी ब्योरेवार मद दिखानेवाला पुरजा, प्रमाणक ।

वाक–पु० (सं०) वाक्य; वेदोंका एक विशिष्ट अंश; बिना नापे खेतोंकी कूत; बगलोंका झुंड; बगलोंकी उड़ान । वि० बक-संबंधी । * स्त्री० वाणी, सरस्वती ।

वाक़ई–अ० (अ०) वस्तुतः, सचमुच । वि० ठीक, दुरुस्त; सच्चा ।

वाक़िआ, वाक़ेआ–पु० (अ०) घटना; वृत्त; दुर्घटना, हादिसा; युद्ध । **–नवीस,–निगार**–पु० खबरें लिखनेवाला, वृत्तलेखक ।

वाक़िआत–पु० (अ०) वाकिआका बहु०, घटनाएँ, दुर्घटनाएँ, वारदात ।

वाक़िआती–वि० घटनामूलक, परिस्थितिसे प्राप्त । **–शहादत**–स्त्री० (घटनाकी) परिस्थितिसे मिलनेवाली (अप्रत्यक्ष) शहादत ।

वाकिनी–स्त्री० (सं०) एक देवी (तं०) ।

वाक़ी–वि० (अ०) निरीक्षक ।

वाक़िफ़–वि० (अ०) जानकार, जानने, समझनेवाला; अभिज्ञ । **–कार**–वि० किसी कामको जानने, समझनेवाला, परिचित । **–कारी**–स्त्री० जानकारी, परिचय ।

वाक़िफ़ीयत–स्त्री० (अ०) जानकारी, अभिज्ञता, परिचय ।

वाकुची–स्त्री० (सं०) ओषधिविशेष, बकुची ।

वाकुल–पु० (सं०) बकुल, मौलसिरीका फल ।

वाक़, वाक़ेअ–वि० (अ०) होनेवाला, घटित होनेवाला, सामने आनेवाला; असली । मु० **–होना**–घटित होना ।

वाकोपवाक–पु० (सं०) बात, संवाद, कथोपकथन ।

वाकोवाक्य–पु० (सं०) कथोपकथन, बातचीत; तर्क ।

वाक्(च्)–स्त्री० (सं०) शब्द; वाणी, वाक्य; कथन; वाद; बोलनेकी इंद्रिय; सरस्वती । **–कलह**–पु० झगड़ा, कहासुनी । **–कीर**–पु० साला । **–केलि,–केली**–स्त्री० हँसी-मजाक । **–क्षत**–पु० लगनेवाली बात । **–चपल**–वि० बड़बड़िया, बातूनी, बात करनेमें चतुर । **–छल**–पु० बहाना, टालमटूलवाली बात; काकुके सहारे वितंडा खड़ा करना (क्विब्लिंग) । **–पटु**–वि० बात करनेमें चतुर । **–पति**–पु० बृहस्पति; विष्णु; पुष्य नक्षत्र; भाषण-कुशल व्यक्ति, वाग्मी; निर्दोष, पटु वचन । **–पथ**–पु० भाषणके योग्य अवसर; भाषणका क्षेत्र । **–पाटव**–पु० भाषणपटुता । **–पारुष्य**–पु० कर्कशता, अपशब्द आदि । **–पीठ**–पु० (फोरम) सामयिक विषयोंपर विचार-विमर्षके लिए सामूहिक मंच । **–पुष्प**–पु० ऊँची उड़ानवाले शब्द । **–प्रतोद**–पु० ताना । **–प्रदा**–स्त्री० सरस्वती नदी । **–प्रलाप**–पु० वाग्मिता । **–प्रसारी(रिन्)**–वि० भाषण-पटु । **–शलाका**–स्त्री० लगनेवाली बात । **–संग**–पु० धीरे-धीरे बोलना । **–संयम**–पु० वाणीका संयम । **–सायक**–पु० वेधनेवाली बात । **–सिद्धि**–स्त्री० एक सिद्धि, मुँहसे जो निकले, वह सत्य सिद्ध हो । **–स्तंभ**–पु० अवाक् रह जाना, बोल न निकलना ।

वाक्का–स्त्री० (सं०) एक पक्षी ।

वाक्य–पु० (सं०) पदोंका वह समूह जिससे वक्ताका अभिप्राय स्पष्टतः समझमें आ जाय; कथन; आदेश; साक्ष्य; तर्क; पक्षियोंका कलरव । **–कंठ**–वि० जिसके कंठमें बात हो, जो बोलनेवाला ही हो । **–कर**–पु० आदेश पूरा करनेवाला; संदेशवाहक । वि० झूठी बातें बनानेवाला । **–खंड**–पु० दे० 'उपवाक्य' । **–खंडन**–पु० तर्कका खंडन । **–ग्रह**–पु० मुँहका पक्षाघातसे ग्रस्त होना । **–पद्धति**–स्त्री० वाक्य बनानेका नियम । **–भेद**–पु० किसी बातका परस्पर विरोधी अर्थ करना; परस्पर विरोधी वाक्य । **–रचना**–स्त्री० वाक्य बनाना । **–वक्रता**–स्त्री० साहित्यका एक सौंदर्यसूचक तत्व । **–वज्र**–पु० बहुत कड़ी भाषा । **–विन्यास**–पु० पदोंका यथास्थान रखा जाना (व्या०) । **–विशारद**–वि० भाषण-पटु । **–विश्लेषण**–पु० व्याकरणकी वह क्रिया जिसमें शब्दोंके प्रकार, भेद आदिका विवेचन किया जाता है । **–शलाका**–स्त्री० दे० 'वाक्-शलाका' । **–सारथि**–पु० प्रवक्ता; बोलनेवालोंका मुखिया । **–हारिणी**–स्त्री० दूती ।

वाक्याडंबर–पु० (सं०) दीर्घ और क्लिष्ट शब्दयुक्त वाक्यावली ।

वागंत–पु० (सं०) उच्चतम स्वर ।

वागतित–पु० (सं०) एक संकर जाति ।

वागधिप–पु० (सं०) बृहस्पति ।

वागन*–अ० क्रि० दे० 'बागना', बोलना, कहना; चलना-फिरना –'ठुमुकि-ठुमुकि बागैं कौसिलाके आँगनमें'–रघुराज ।

वागपेत–वि० (सं०) गूँगा ।

वागर–पु० (सं०) निर्णय; वाड़वानल; निर्भय व्यक्ति; भेड़िया; सान; कसौटी; पंडित; मुमुक्षु; बाधा ।

वागा–स्त्री० (सं०) लगाम ।

वागारु–पु० (सं०) वचन भंग करनेवाला; आशाहंता; विश्वासघाती ।

वागाशनि–पु० (सं०) एक बुद्ध ।

वागीश–पु० (सं०) कवि; वक्ता; ब्रह्मा; बृहस्पति । वि० अच्छा बोलनेवाला, वक्ता ।

वागीशा, वागीश्वरी–स्त्री० (सं०) सरस्वती ।

वागीश्वर–पु० (सं०) कवि; ब्रह्मा; बृहस्पति; एक बोधिसत्त्व, मंजुघोष । वि० बहुत अच्छा वक्ता ।

वागीसा*–स्त्री० दे० 'वागीशा'; वाणी–'तदपि देबि मैं देब असीसा। सफल होन हित निज वागीसा'–रामा०।

वागुंजार–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

वागुज़ार–पु० (फ़ा०) छोड़ देना, मुक्ति।

वागुज़ाश्ता–वि० (फ़ा०) छोड़ा हुआ; दिया हुआ; लौटाया हुआ।

वागुजी–स्त्री० (सं०) एक औषधि, बकुची, सोमराजी।

वागुण–पु० (सं०) बैंगन; कमरख।

वागुरा–स्त्री० (सं०) फंदा, जाल, मृग आदि फँसानेका जाल। –**वृत्ति**–स्त्री० मृग आदि पकड़कर जीविका चलाना। वि० इस प्रकार अपनी जीविका चलानेवाला।

वागुरि–स्त्री० (सं०) जाल, पाश।

वागुरिक–पु० (सं०) हिरन फँसानेवाला व्याधा।

वागुस–पु० (सं०) एक तरहकी बड़ी मछली।

वागेसरी–स्त्री० दे० 'वागीश्वरी।'

वागृषभ–पु० (सं०) विद्वान्; अच्छा भाषण करनेवाला।

वाग्गुण–पु० (सं०) भाषणकी उत्तमता।

वाग्गुद–पु० (सं०) एक तरहका चमगादड़ या पक्षी।

वाग्गुलि, वाग्गुलिक–पु० (सं०) पान देनेवाला राजसेवक, खवास।

वाग्जाल–पु० (सं०) बातोंकी लपेट; (सरकमलोक्यूशन) सीधी-सादी बातको टेढ़े-मेढ़े ढंगसे कहना, शब्द-बाहुल्यका प्रयोग कर असली बात छिपा जाना।

वाग्दंड–पु० (सं०) डाँट-फटकार, भर्त्सना; वाणीका नियंत्रण।

वाग्दत्त–वि० (सं०) जिसको देनेकी बात कह दी गयी हो।

वाग्दत्ता–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसके विवाहकी ठहरौनी किसीके साथ हो चुकी हो।

वाग्दल–पु० (सं०) ओठ।

वाग्दान–पु० (सं०) किसीके साथ कन्याका विवाह-संबंध तय करना।

वाग्दुष्ट–वि० (सं०) कटुभाषी; अशुद्धभाषी। पु० निंदक; वह ब्राह्मण जिसका उपयुक्त समयपर उपनयन-संस्कार न हुआ हो।

वाग्देवता–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वाग्देवताक, वाग्दैवत्य–वि० (सं०) जो सरस्वतीके लिए पवित्र हो।

वाग्देवी–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वाग्दोष–पु० (सं०) बोलनेकी त्रुटि; व्याकरण-संबंधी दोष; निंदा, गाली।

वाग्बद्ध–वि० (सं०) मौन।

वाग्भट–पु० (सं०) भावप्रकाश आदिके रचयिता एक आयुर्वेदाचार्य; अलंकारतिलक आदिके प्रणेता एक साहित्याचार्य।

वाग्मिता–स्त्री०, **वाग्मित्व**–पु० (सं०) पांडित्य; भाषण-पटुता।

वाग्मी(ग्मिन्)–वि० (सं०) भाषण-पटु, अच्छा बोलनेवाला; बहुत बोलनेवाला; पंडित। पु० बृहस्पति; विष्णु; तोता; पुरुवंशका एक राजा; वक्ता।

वाग्य–वि० (सं०) मितभाषी; सत्यभाषी। पु० संदेह; विकल्प; विनम्रता; निर्वेद।

वाग्यत–वि० (सं०) मौन, कम बोलनेवाला।

वाग्यम–पु० (सं०) वह जिसका वाणीपर संयम हो, मुनि।

वाग्यमन–पु० (सं०) वाणीका नियंत्रण।

वाग्याम–पु० (सं०) मूक, गूँगा; वह व्यक्ति जो किसी कारणसे मौन हो।

वाग्युद्ध–पु० (सं०) शब्दोंका युद्ध, झगड़ा।

वाग्रोध, वाग्लोप–पु० (सं०) (एफ़ेशिया) स्मृतिनाशसे उत्पन्न एक मनोवैज्ञानिक रोग जिसमें पढ़ सुन कर भी मनुष्य अर्थ नहीं समझता।

वाग्वज्र–पु० (सं०) कठोर वाणी; शाप।

वाग्वद–पु० (सं०) एक तरहका चमगादड़।

वाग्वादिनी–स्त्री० (सं०) एक देवी; सरस्वती।

वाग्विदग्ध–वि० (सं०) पंडित; वार्ताकुशल।

वाग्विभव–पु० (सं०) वर्णनशक्ति; भाषाका विशेष ज्ञान।

वाग्विरोध–पु० (सं०) कहासुनी।

वाग्विलास–पु० (सं०) मौज, दिल-बहलावके लिए बातचीत करना।

वाग्विलासी(सिन्)–पु० (सं०) कबूतर; पेंडुकी।

वाग्विश्वास–पु० (सं०) (पैरोल) कैदियोंको उनके वचनपर विश्वास करके छोड़ देना।

वाग्विसर्ग, वाग्विसर्जन–पु० (सं०) मौन-भंग; बोल निकलना।

वाग्वीर–पु० (सं०) वह व्यक्ति जो बोलनेमें विशेष कुशल हो; कोरी बातें बनानेवाला।

वाग्वैदग्ध्य–पु० (सं०) भाषण, कथोपकथनमें चतुरता; अलंकार और चमत्कारमयी उक्तियोंमें दक्षता, प्रवीणता।

वाग्व्यापार–पु० (सं०) बोलनेका अभ्यास; वार्तालाप; भाषण-शैली।

वाङ्निष्ठा–स्त्री० (सं०) वचनबद्धता; विश्वासपालता।

वाङ्मती–स्त्री० (सं०) एक नदी, वागमती (नेपाल)।

वाङ्मधुर–वि० (सं०) मधुरभाषी।

वाङ्मय–वि० (सं०) वाक्यात्मक; वाक्य, वचन-संबंधी; वचन, वाणीसे किया हुआ (जैसे–वाङ्मय पाप); पठन-पाठन-संबंधी। पु० गद्य-पद्यरूपमें लिखित वाक्य, वाक्य समूह; ग्रंथ, ग्रंथ-समूह, साहित्य।

वाङ्मयी–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वाङ्मुख–पु० (सं०) भाषणका आरंभिक अंश, भूमिका।

वाङ्मूर्ति–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वाचंयम–वि० (सं०) वाणीपर नियंत्रण करनेवाला; मौन-व्रतधारी (मुनि)।

वाच*–स्त्री० दे० 'वाक्'। पु० (सं०) एक मछली; मदन नामक पौधा। स्त्री० (अं०) छोटी घड़ी।

वाचक–वि० (सं०) सूचक, बतानेवाला; मौखिक। पु० पाठक, पढने या पढकर सुनानेवाला; बोलनेवाला; दूत; महत्त्वपूर्ण शब्द; संज्ञा, संकेत, नाम। –**धर्मलुप्ता**–स्त्री० वह उपमा जिसमें वाचक और साधारण धर्मका लोप हो। –**पद**–पु० साभिप्राय शब्द, सार्थक शब्द। –**लुप्ता**–स्त्री० वह उपमा जिसमें उपमा-वाचक शब्द न हो।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता–स्त्री० (सं०) वह उपमा जिसमें वाचक, उपमान और धर्म लुप्त हों।

वाचकोपमानलुप्ता–स्त्री० (सं०) वह उपमा जिसमें वाचक और उपमान न हों।

वाचकोपमेयलुप्ता–स्त्री० (सं०) वह उपमा जिसमें वाचक और उपमेयका लोप हो।

वाचक्नवी–स्त्री० (सं०) गार्गी।

वाचन–पु० (सं०) पढ़नेमें प्रवृत्त करना; उच्चारण करना, बाँचना; कहना; प्रतिपादन; (रीडिंग) विधानसभा या लोकसभामें किसी विधेयकके रखे जानेपर उसका विचार, बहस आदिके लिए पहली, दूसरी या तीसरी बार पढ़ा जाना, जिसके बाद ही वह अंतिम रूपसे स्वीकार किया जा सकता है।

वाचनक–पु० (सं०) पढ़ना, उच्चारण; पहेली; एक तरहकी मिठाई।

वाचनालय–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ समाचारपत्र और पत्रिकाएँ पढ़नेके लिए रखी जाती हैं; (रीडिंग रूम)।

वाचनिक–वि० (सं०) मौखिक, शब्दों द्वारा व्यक्त।

वाचयिता(तृ)–वि० (सं०) बाँचनेवाला; पाठ करानेवाला, पाठ-संचालक।

वाचसांपति–पु० (सं०) बृहस्पति।

वाचस्पति–पु० (सं०) बृहस्पति; सोम; प्रजापति; ब्रह्मा; सुवक्ता; एक कोशकार; पुष्य नक्षत्र।

वाचस्पत्य–पु० (सं०) भाषण-पटुता; सुंदर भाषण। वि० वाचस्पति-संबंधी; वाचस्पति द्वारा कथित या निर्मित।

वाचा–अ० (सं०) वचनसे, वचन द्वारा। स्त्री० वचन, शब्द; वाणी; शपथ; सरस्वती। –**पत्र**–पु० प्रतिज्ञापत्र। –**बंध***–वि० प्रतिज्ञाबद्ध। –**बंधन**–पु० प्रतिज्ञामें बंधना। –**बद्ध**–वि० वादे, प्रतिज्ञासे विवश। –**विरुद्ध**–वि० जो कथनके योग्य न हो। –**सहाय**–पु० वार्तालाप करने योग्य, मिलनसार दोस्त।

वाचाट–वि० (सं०) बकवादी, बातूनी; डींग मारनेवाला।

वाचाल–वि० (सं०) बोलनेमें तेज, पटु; बकवादी; डींग मारनेवाला; शब्दमय।

वाचालता–स्त्री० (सं०) बहुभाषण; बकवादीपन; बातचीतकी निपुणता।

वाचिक–वि० (सं०) वाणी-संबंधी; मौखिक, वाणी द्वारा व्यक्त। पु० अभिनयका एक भेद जिसमें केवल वाणीके आश्रयसे अभिनय किया जाता है; मौखिक समाचार, संवाद। **–पत्र**–पु० इकरारनामा; पत्र; समाचारपत्र। **–हारक**–पु० पत्र; संवादवाहक, दूत।

वाची(चिन्)–वि० (सं०) वाक्ययुक्त, बोलता हुआ; बोधक, सूचक (पदांतमें)।

वाचोयुक्ति–वि० (सं०) भाषणपटु, वाग्मी। स्त्री० अच्छा भाषण; वक्तव्य। **–पटु**–वि० वाग्मी।

वाच्य–वि० (सं०) कहने योग्य; जिसका अभिधाशक्तिसे बोध हो; निंद्य। पु० निंदा; अभिधेयार्थ; क्रियाका एक रूप (व्या०)। **–चित्र**–पु० अवर, निम्न कोटिका काव्य। **–वज्र**–पु० कड़ी भाषा।

वाच्यता–स्त्री०, **वाच्यत्व**–पु० (सं०) निंदा, बदनामी; वाच्य होनेका भाव।

वाच्यार्थ–पु० (सं०) मूल अर्थ, शब्दका नियत अर्थ, अभिधेयार्थ।

वाच्यावाच्य–पु० (सं०) कहने-न कहने योग्य बात।

वाज–पु० (सं०) पंख, पर; आवाज; घी; अन्न; खाद्य; यज्ञ; श्राद्धमें दिया जानेवाला तंडुल-पिंड; धन; चैत्र मास; जल; पलक; बल; युद्ध, संघर्ष; दौड़; बाणमें पीछे लगा हुआ पंख; वेग; एक मुनि; तीन ऋतुओंमेंसे एक; लूटमें प्राप्त धन; प्रतियोगितामें मिला हुआ पुरस्कार; यज्ञके अंतमें पढ़ा जानेवाला मंत्र। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० युद्धमें संलग्न रहनेवाला। **–गंध्य**–वि० जिसके पास गाड़ीभर माल या लूटका धन हो। **–दावा(वन्)**–वि० धन, पुरस्कार आदि देनेवाला। **–पति**–पु० अग्नि। **–पीत**–वि० जिसने पान द्वारा शक्ति बढ़ायी है। **–पेय**–पु० सर्वोच्च-स्थान प्राप्त करनेके निमित्त किये जानेवाले सोमयज्ञके सात रूपोंमेंसे एक। **–भर्मीय**–पु० एक साम। **–भृत्**–पु० एक साम। **–भोजी(जिन्)**–पु० वाजपेय यज्ञ। **–वाल**–पु० मरकत, पन्ना। **–श्रवा(वस्)**–पु० अग्नि; वेन। **–सन**–पु० विष्णु; शिव। **–सनि**–पु० सूर्य। **–स्रजाक्ष**–पु० वेन।

वाज़–पु० (अ०) उपदेश, शिक्षा; धर्मोपदेश। वि० (फा०) स्पष्ट; प्रकट। **–गो**–वि० धर्मोपदेशक।

वाजपेयक–वि० (सं०) वाजपेय यज्ञसे संबद्ध।

वाजपेयी(यिन्)–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

वाजप्य–पु० (सं०) वाजप्यायन गोत्रके प्रवर्तक एक ऋषि।

वाजयु–वि० (सं०) युद्ध या प्रतियोगिताके लिए इच्छुक; तेज; शक्तिशाली; उत्साही; धन देनेवाला।

वाजवत–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि।

वाजस–पु० (सं०) एक साग।

वाजसनेय–पु० (सं०) यजुर्वेदकी एक शाखा; याज्ञवल्क्य।

वाजसनेयक–वि० (सं०) याज्ञवल्क्यसे संबद्ध या उनके द्वारा रचित।

वाजसनेयी(यिन्)–पु० (सं०) शुक्ल यजुर्वेदीय शाखाके प्रवर्तक याज्ञवल्क्य या इस शाखाका अनुयायी।

वाज़ा–वि० (अ०) ज्ञात, विदित।

वाजित–वि० (सं०) पंखवाला, पंखयुक्त (बाण आदि)।

वाजिद–वि० (अ०) प्राप्तकर्ता; आविष्कारक।

वाजिन–पु० (सं०) शक्ति, होड़, संघर्ष; छाँछ या छेनेका पानी।

वाजिनी–स्त्री० (सं०) घोड़ी; उषा; असगंध।

वाजिब–वि० (अ०) जरूरी, उचित; कर्तव्य, फर्ज। पु० तनखाह; पावना।

वाजिबात–पु० (अ०) 'वाजिब'का बहु०, जरूरी चीजें; चढ़ी हुई तनखाहें; पावने।

वाजिबी–वि० उचित; आवश्यक।

वाजिबुल अदा–वि० (अ०) जिसको अदा करना आवश्यक हो, देय।

वाजिबुल अर्ज़–पु० (अ०) शर्तें जो बंदोबस्तकी समाप्तिपर जमींदारों और काश्तकारोंके पारस्परिक अधिकारों, कर्तव्योंके विषयमें लिखी जायें।

वाजिबुल क़त्ल–वि० (अ०) वध्य, क़तल करने योग्य।

वाजिमान्(मत्)–पु० (सं०) पटोल, परवल।

वाज़िह, वाज़ेह–वि० (अ०) खुला हुआ, स्पष्ट; विशद; स्पष्ट अक्षरोंमें लिखित। **–रहे,–हो**–मालूम हो, विदित हो।

वाजी(जिन्)–पु० (सं०) घोड़ा; अड़ूसा; वाजसनेयी शाखाका अनुयायी; फटे दूधका पानी; इंद्र; बृहस्पति; सातकी संख्या; बाण; लगाम; पक्षी; हवि। वि० तेज, तीव्र; सुदृढ़; वीर; सशक्त; पंखदार। **–(जि)गंधा**–स्त्री० असगंध। **–दंत,–दंतक**–पु० अड़ूसा, वासक। **–पृष्ठ**–पु० अम्लान पुष्प। **–भ**–पु० अश्विनी नक्षत्र। **–भक्ष**–पु० चना। **–भोजन**–पु० मूंग। **–मेध**–पु० अश्वमेध। **–योजक**–पु० सईस; रथ चलानेवाला। **–राज**–पु० उच्चैःश्रवा; विष्णु। **–विष्ठा**–स्त्री० वटवृक्ष। **–वेग**–वि० घोड़े जैसे वेगवाला। **–शत्रु**–पु० कनेरका पेड़। **–शाला**–स्त्री० घुड़सार, अस्तबल। **–शिरा(रस्)**–पु० एक दानव; भगवान्का एक अवतार।

वाजीकर–वि० (सं०) शक्तिवर्द्धक; कामोद्दीपक।

वाजीकरण–पु० (सं०) औषध द्वारा शक्तिवर्द्धन या कामोद्दीपन।

वाजीक्रिया–स्त्री० (सं०) कामोद्दीपक औषधका प्रयोग।

वाज़े, वाज़ेअ–वि०, पु० (अ०) वजा करनेवाला, बनानेवाला, आविष्कारक।

वाट–वि० (सं०) वटवृक्षकी लकड़ीका बना हुआ। पु० बाड़ा, घेरा, चहारदीवारी; उद्यान; सड़क; भवन, इमारत; मंडप; एक अन्न; वंक्षण। **–धान**–पु० एक जनपद (कश्मीरसे नैर्ऋत्य कोणमें स्थित); एक वर्णसंकर जाति (स्मृ०); सैनिकोंके स्वभावसे परिचित अधिकारी। **–शृंखला**–स्त्री० वह शृंखला या जंजीर जिससे कोई स्थान घिरा हो।

वाट–पु० (अं०) बिजलीके प्रकाश या चालक शक्तिकी इकाई; शक्ति (कार्य करनेकी समय-दर)का मात्रक। कार्य करनेकी दर जब 'एक जूल' या '१०^{७} अर्ग' प्रति सेकण्ड हो तब शक्ति एक वाट मानी जाती है। अतः ४० वॉटके लैम्पसे अभिप्राय होगा कि यह लैम्प एक सेकण्डमें ४० जूल ऊर्जा व्यय करता है।

वाटक–पु० (सं०) बाड़ा, घेरा; उद्यान।

वाटर–पु० (अं०) पानी; जलाशय, समुद्र आदि; मूत्र; हीरेका आब। **–कलर**–पु० पानी और गोंद मिलाकर तैयार किया हुआ रंग; जल और गोंद मिले रंगसे तैयार किया हुआ चित्र। **–गेट**–पु० पानी रोकने, खोलनेके लिए नहर, नदी, नाले, आदिमें बनाया हुआ फाटक। **–गैस**–स्त्री० जलवाष्प। **–टाइट**–पु० जलरुद्ध। **–टप**–पु० कल। **–पाइप**–पु० कल। **–पूल**–पु० जलकुंड। **–पेंटिंग**–पु० जल और गोंद मिले रंगसे चित्र बनाना। **–प्रूफ़**–वि० जिसपर पानीका असर न हो। पु० वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर पानीका असर न हो; बरसाती कोट; जलसह। **–फ़ाल**–पु० जलप्रपात। **–मार्क**–पु० पानीकी सतह, गहराईका सूचक चिह्न; कागजपर छपा हुआ निर्माण-स्थान आदिका पता जो आँखों और प्रकाशके बीच करनेसे दिखाई देता है। **–मेन**–पु० वाटर सप्लाईका मेनपाइप। **–रेट**–पु० जलकर, आबियाना। **–लेवेल**–पु० मैदान, जलाशयके पानीकी सतह। **–वर्क्स**–पु० वह स्थान जहाँसे नगरमें पानीका वितरण होता है, जलकल।

वाटली–स्त्री० (सं०) अंगूठी; छोटी कमोरी।

वाटि–स्त्री० (सं०) घिरा हुआ स्थान। **–दीर्घ**–पु० एक तरहकी घास या सरपत।

वाटिका–स्त्री० (सं०) उद्यान; वह जमीन जिसपर इमारत बनायी जाय; इमारत; हिंगुपत्री।

वाटी–स्त्री० (सं०) इमारतकी जमीन; मकान; उद्यान; रास्ता; एक अन्न; ऊरुमूल।

वाट्टक–पु० (सं०) बहुरी, भुना हुआ जौ।

वाट्य–पु० (सं०) बरियारा; भुना जौ। वि० उद्यान-संबंधी; वटकी लकड़ीसे बना हुआ। **–पुष्प**–पु० केसर; चंदन। **–पुष्पी**–स्त्री० अतिबला नामक पौधा। **–मंड**–पु० भुने और दले हुए जौका माँड़।

वाट्या, वाट्याली–स्त्री० (सं०) बरियारा, अतिबला।

वाट्यायनी–स्त्री० (सं०) श्वेत पुष्पवाली अतिबला।

वाट्याल, वाट्यालक–पु० (सं०) दे० 'वाट्या'।

वाड–पु० (सं०) वेष्टन।

वाडब, वाडव–वि० (सं०) घोड़ी-संबंधी। पु० समुद्रके अंदरकी आग; ब्राह्मण; घोड़ा या घोड़ियोंका समूह; एक बैयाकरण; एक नरक; एक रतिबंध। **–हरण**–पु० घोड़ेका चारा। **–हारक**–पु० एक जल-जंतु।

वाडवाग्नि–स्त्री० (सं०) समुद्रके अंदरकी आग।

वाडवानल–पु० (सं०) दे० 'वाडवाग्नि'।

वाडवेय–पु० (सं०) साँड़; घोड़ा; ब्राह्मण; अश्विनद्वय।

वाडव्य–पु० (सं०) ब्राह्मण-मंडली।

वाढ–वि० (सं०) दृढ़; अतिशय; उच्च स्वरयुक्त।

वाढम्–अ० (सं०) निश्चय ही, अवश्य ही; बस; हाँ (उत्तरमें); बहुत अधिक।

वाण–पु० (सं०) दे० 'बाण'।

वाणि–स्त्री० (सं०) बुननेकी क्रिया; करघा; वाणी, वचन; सरस्वती।

वाणिज–पु० (सं०) व्यापारी; बडवाग्नि।

वाणिजक–पु० (सं०) दे० 'वाणिज'। **–विध**–वि० वणिकोंसे आबाद।

वाणिजिक–पु० (सं०) सौदागर; वंचक, ठग; वाडवानल।

वाणिज्य–पु० (सं०) (कॉमर्स) बड़े पैमानेपर किया जानेवाला व्यापार जिसमें बैंकोंका कारबार, कंपनियोंके हिस्सोंकी खरीद-बिक्री, बीमा-संबंधी उद्योग आदि भी सम्मिलित हैं। **–चिह्न**–पु० (सं०) (मर्केन्टाइल मार्क) व्यापारियोंका विशिष्ट और पार्थक्य-सूचक चिह्न। **–दूत**–पु० (कौंसल) किसी देशका वह प्रतिनिधि जो अन्य देशमें स्वदेशके व्यापारिक हितोंकी रक्षाके लिए नियुक्त हो। **–वाद**–पु० (मर्केन्टाइलिज्म) पाश्चात्य देशोंमें मध्ययुगीन एक मत।

वाणिज्यालय–पु० (एंपोरियम) वाणिज्यका मुख्य स्थान, बाजार, बड़ी दूकान।

वाणिज्यक–पु० (सं०) व्यापारी।

वाणिज्या–स्त्री० (सं०) व्यापार।

वाणिता–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

वाणिनी–स्त्री० (सं०) अभिनेत्री, नर्तकी; कुलटा; धूर्त, मत्त स्त्री; एक वर्णवृत्त।

वाणी–स्त्री० (सं०) सरस्वती; सार्थक शब्द, वचन; वाक्शक्ति; जीभ, रसना, वाणीकी इंद्रिय; स्वर; ग्रंथ-रचना; प्रशंसा; बुनाई; सरकंडा। **–मु०** **–फुरना**–मुंहसे बात निकलना। (व्यंग्य)।

वात–पु० (सं०) वायु; पवनदेव; शरीरसे निकली हुई हवा; शरीरस्थ वायुके प्रकोपसे होनेवाला रोग, गठिया आदि। वि० बढ़ा हुआ; इच्छित; आक्रांत; आहत। **–कंटक**–पु० पाँवके जोड़ोंमें होनेवाला वातरोग। **–कर,–कृत्**–वि० (शरीरमें) वात उत्पन्न करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० पाद, गोज़। **–कुंडलिका,–कुंडली**–स्त्री० एक मूत्ररोग जिसमें पेशाब पीड़ा देकर बूंद-बूंद उतरता है। **–कुंभ**–पु० हाथीके मस्तकका नीचेका भाग; नखक्षत। **–केतु**–पु० धूल, गर्द। **–केलि**–स्त्री० प्रेमालाप; प्रेमिक या प्रेमिकाके शरीरपर दातों या नखोंका क्षत। **–कोपन**–वि० शरीरस्थ वातको कुपित करनेवाला। **–गंड**–पु० वातजन्य गलगंड रोग। **–गामी(मिन्)**–पु० पक्षी। **–गुल्म**–पु० वातके प्रकोपसे उत्पन्न होनेवाला गठिया रोग; तूफान। **–ग्रस्त**–वि० गठिया रोगसे पीड़ित। **–घ्नी**–स्त्री० शालपर्णी; असगंध। **–चक्र**–पु० ज्योतिष-संबंधी एक योग (इसमें वायुकी दिशासे फलाफलका विचार किया जाता है); बवंडर। **–चटक**–पु० तीतर। **–ज**–वि० वायुसे उत्पन्न। पु० एक तरहका शूल। **–जात**–पु० वायुपुत्र, हनुमान्। **–ज्वर**–पु० वात कुपित होनेसे उत्पन्न होनेवाला एक ज्वर। **–तूल**–पु० हवामें इधर-उधर उड़नेवाला सफेद और बारीक तागा, बुढ़ियाका सूत, इंद्रतूल। **–थूडा**–स्त्री० तेज हवा; कठिन वातरोग; एक तरहकी मसूरिका; सुंदर स्त्री। **–ध्वज**–पु० मेघ, बादल; धूलि। **–नाडी**–स्त्री० वायु-प्रकोपसे दाँतकी जड़में होनेवाला एक तरहका नासूर (पायोरिया)। **–पंड**–पु० एक तरहका क्लीब। **–पट**–पु० पताका, ध्वजा; नावका पाल। **–पत्नी**–स्त्री० दिशा। **–पर्याय**–पु० आँखका एक रोग। **–पित्त**–पु० एक तरहका गठिया रोग। **–पुत्र**–पु० हनूमान्; भीम; वंचक; नेवला। **–पोथ,–पोथक**–पु० पलाश। **–प्रकृति**–वि० जिसकी प्रकृति वायु-प्रधान हो। **–प्रकोप**–पु० वायुकी अधिकता। **–प्रमी**–पु०, स्त्री० हिरन; घोड़ा; नेवला। **–प्रमेह,–मेह**–पु० एक तरहका मूत्र रोग। **–प्रशमिनी**–स्त्री० आलूबुखारा। **–फुल्लांत्र**–पु० फुप्फुस; आँतका वायुसे फूलना। **–भक्ष**–वि० हवा पीकर रहनेवाला। **–मंडली**–स्त्री० वातावर्त। **–मृग**–पु० हवाके रुखकी ओर दौड़नेवाला मृग। **–रंग**–पु० पीपलका पेड़। **–रक्त,–शोणित**–पु० एक रोग। **–० घ्न**–पु० कुक्कुर वृक्ष। **–रथ**–पु० मेघ। **–रूप**–पु० इंद्रधनुष्; तूफान; रिश्वत। **—–रोग,–विकार**–पु० वात-व्याधि। **–रोहिणी**–स्त्री० जीभपर चारों ओर काँटेकी तरह मांस उभरनेका रोग। **–ल**–पु० चना; वायु। वि० वायु बढ़ानेवाला; तूफानी। **–वस्ति**–स्त्री० मूत्र रोकना। **–वैरी(रिन्)**–पु० एरंड; बादाम। **–व्याधि**–स्त्री० गठिया। **–शीर्ष**–पु० पेड़ू, वस्ति। **–सख**–पु० अग्नि। **–सह**–वि० गठिया रोगवाला। **–सार**–पु० बेल। **–सारथि**–पु० अग्नि। **–स्कंध**–पु० आकाशका वह भाग जहाँ वायु गतिशील रहती है। **–स्वप्न**–पु० अग्नि। **हत**–वि० उन्माद-ग्रस्त। **–हा(हन्)**–वि० वायुनाशक।

वातक–पु० (सं०) जार; अशनपर्णी। **–पिंडक**–पु० जन्मजात क्लीव (जिसके अंड न हों)।

वातकी(किन्)–वि० (सं०) वातरोगसे ग्रस्त।

वातमज–पु० (सं०) एक हिरन।

वातर–वि० (सं०) तूफानी; तेज।

वातरक्तारि–पु० (सं०) पित्तघ्नी लता।

वातरायण–पु० (सं०) बाण; बाणका चलना; चोटी; आरा; उन्मत्त मनुष्य; निकम्मा आदमी; सालवृक्ष; कांड; लोटा; कुट नामक ओषधि।

वातर्द्धि–पु० (सं०) लोहे और काष्ठसे बना हुआ पात्र।

वातांड–पु० (सं०) अंडकोषकी सूजन।

वाता(तृ)–पु० (सं०) वायु।

वाताट–पु० (सं०) हिरन; सूर्यका घोड़ा।

वातात्मज–पु० (सं०) हनुमान्; भीम।

वाताद, वाताम–पु० (सं०) बादाम।

वातानुकूलन–पु० (एयर कंडीशनिंग) कमरे, रेलके डब्बे आदिके भीतरकी हवाको कृत्रिम रूपसे समशीतोष्ण बनाये रखनेकी क्रिया, ताप-नियंत्रण।

वातानुकूलित–वि० (एयर कंडीशण्ड) जिसके भीतरकी हवाका तापमान सम स्थितिमें रखा गया हो, ताप-नियंत्रित।

वातापि–पु० (सं०) एक राक्षस (कहते हैं यह भेड़ बन जाता था और उसका भाई आतापि इसे मारकर ऋषियोंको खिला देता था और फिर नाम लेकर पुकारता तो यह पेट फाड़कर निकल आता। ऐसे ही एक अवसरपर अगस्त्य इसे पचा गये।) **–द्विट्(ष्),–सूदन,–हा(हन्)**–पु० अगस्त्य।

वाताप्य–पु० (सं०) शोथ; खमीर; जल; सोम।

वातामोदा–स्त्री० (सं०) कस्तूरी।

वातायन–पु० (सं०) झरोखा, खिड़की; छज्जा; घोड़ा; एक मंत्रद्रष्टा ऋषि; एक जनपद (रा०)।

वातायनी–स्त्री० (सं०) (वेण्टिलेटर) झरोखा।

वातायु–पु० (सं०) हिरन।

वातारि–पु० (सं०) एरंड; शतमूली; शेफालिका; यवानी, भार्गी; स्नुही; विडंग; सूरन; जतुका; शतावर; नीलका पौधा;

तिलक।

वाताली–स्त्री० (सं०) तूफान, वातावर्त्त।

वातावरण–पु० (सं०) (एटमॉस्फ़ियर) पृथ्वीके चतुर्दिक् स्थित वायु; परिस्थिति, जीवनको प्रभावित करनेवाली परिस्थिति।

वातावर्त्त–पु० (सं०) बवंडर।

वाताश, वाताशी (शिन्)–पु० (सं०) साँप।

वाताश्व–पु० (सं०) बौढ़िया, तेज घोड़ा।

वाताष्ठीला–स्त्री० (सं०) पेटका एक रोग जिसमें नाभिके नीचे कड़ा अर्बुद बन जाता है।

वातास*–स्त्री० बयार, हवा।

वाताहार–वि० (सं०) हवा पीकर जीनेवाला।

वाति–पु० (सं०) सूर्य; वायु; चंद्र।

वातिक–वि० (सं०) तूफानी; वातग्रस्त, गठिया रोगसे पीड़ित; पागल। पु० पागल; बड़बड़िया; चातक; एक तरहका ज्वर।

वातिग–पु० (सं०) बैंगन। वि० खनिजशास्त्री।

वातिगम–पु० (सं०) बैंगन।

वातीक–पु० (सं०) एक छोटा पक्षी।

वातीय–वि० (सं०) वायु-संबंधी। पु० चावलकी लपसी, काँजी।

वातुल–वि० (सं०) वातग्रस्त, गठिया रोगसे पीड़ित; वायु-प्रकोपसे जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, पागल। पु० तूफान, वातावर्त्त।

वातुलि–स्त्री० (सं०) चमगादड़।

वातूल–वि०, पु० (सं०) 'वातुल'।

वातोदर–पु० (सं०) एक वातरोग जिसमें पेट फूल जाता है और शरीरमें पीड़ा होती है।

वातोन्माद–पु० (हिस्टीरिया) एक तरहका मूर्च्छा रोग जो विशेष रूपसे स्त्रियोंको होता है, अपतंत्रक रोग।

वातोना–स्त्री० (सं०) गोजिह्वा।

वातोर्मि–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; वायुके संयोगसे उठी हुई लहर।

वात्या–स्त्री० (सं०) (गेल) बवंडर; तूफान, अंधड़। **–चक्र**–. पु० बवंडर। **–भट्टी**–स्त्री० (ब्लैस्ट फर्नेस) लौह आक्साइडके अयस्कसे लोहा प्राप्त करनेके लिए इस भट्टीको काममें ले आते हैं। इस भट्टीमें कोकके दहनके लिए हवाका झोंका प्रयुक्त होता है, इसी कारण इसे वात्या भट्टी कहते हैं; झोंका भट्टी।

वात्स–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि; एक साम।

वात्सक–पु० (सं०) बछड़ोंका झुंड।

वात्सरिक–वि० (सं०) वार्षिक। पु० ज्योतिषी।

वात्सल्य–पु० (सं०) प्रेम, स्नेह, संतानके प्रति माता-पिताका स्नेह। **–भाजन**–पु० जिसपर संतान जैसा प्रेम हो। **–रस**–पु० एक भाव (कुछ आचार्य वात्सल्य रसको दसवाँ रस मानते हैं)।

वात्सि, वात्सी–स्त्री० (सं०) ब्राह्मणसे उत्पन्न शूद्राकी कन्या। **–पुत्र**–पु० नाई, हज्जाम।

वात्स्य–पु० (सं०) एक ऋषि; एक गोत्र।

वात्स्यायन–पु० (सं०) न्यायदर्शनके भाष्यकार; कामसूत्रकार ऋषि।

वाद–पु० (सं०) बात-चीत; किसी तत्त्व, सिद्धांत (इज़्म) आदिपर विचार-विमर्शके लिए होनेवाली बात-चीत; तर्क; बहस; विवरण; व्याख्या; सिद्धांत; ध्वनि; ध्वनि करना; अफ़वाह; उत्तर; दावा (सूट); किसी शास्त्रके विशेषज्ञों द्वारा निश्चित मूलभूत तत्त्वों या सिद्धांतोंका समाहार (थियरी) (प्रगतिवाद, यथार्थवाद, स्वच्छंदतावाद, प्राकृतवाद, छायावाद, रहस्यवाद इ०)। **–कर, –कृत्**–वि० जो झगड़े, विवादका कारण हो। **–कर्ता (र्तृ)**–पु० संगीत-वाद्य बजानेवाला। **–ग्रस्त**–वि० अनिश्चित, अनिर्णीत, विवादास्पद। **–चंचु**–वि० शास्त्रार्थमें दक्ष, कुशल; मजाक करनेमें कुशल। **–दंड**–पु० सारंगी आदि बाजोंकी कमानी। **–पत्र**–पु० (प्लेंट) वादी द्वारा किसीके विरुद्ध न्यायालयमें उपस्थित किया गया लिखित आरोप। **–पद**–पु० (इशू) न्यायालयके सामने रखा गया वह विषय जो उभय पक्षोंके बीचके झगड़ेका मूल कारण हो। **–मूल**–पु० (कॉज ऑफ ऐक्शन) कोई व्यवहार या मुकदमा न्यायालयमें उपस्थित किये जानेका कारण; वह झगड़ा जिसके कारण न्यायालयमें मामला चलाया जाय। **–प्रतिवाद**–पु० बहस, उत्तर-प्रत्युत्तर; शास्त्रीय तत्त्वविचारमें होनेवाला कथोपकथन। **–युद्ध**–पु० झगड़ा, बहस। **–रंग**–पु० पीपलका पेड़। **–रत**–वि० पक्षसमर्थनमें लगा हुआ; बहस करनेका आदी। **–विवाद**–पु० झगड़ा, बहस (डिबेट)। **–विषय**–पु० (मैटर फॉर डिसकशन, सबजेक्ट मैटर) वह विषय जिसके संबंधमें विवाद या चर्चा की जाय, विचारणीय विषय। **–व्यय**–पु० (कॉस्ट्स) वाद या मुकदमेका व्यय जो न्यायालय द्वारा जीतनेवाले पक्षको दिलाया जाय। **–समाप्ति**–स्त्री० (अबेटमेंट ऑफ सूट) मामले या मुकदमेका खारिज कर दिया जाना। **–साधन**–पु० तर्कका प्रमाण; अपकार करना। **–हेतु**–पु० (इशू) झगड़ेका विषय जो न्यायालयके सामने उपस्थित हो और जिसके संबंधमें न्यायाधीशको निर्णय करना हो; दे० 'वादमूल'।

वा'द–पु० (अ०) शुभ समाचार। **–ए वस्ल**–पु० मिलनेका, साथ सोनेका वादा।

वादक–पु० (सं०) बोलनेवाला; शास्त्रार्थ करनेवाला; बजानेवाला; ढोल बजानेका एक खास ढंग। **–दल, वृंद**–पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशालामें विशेष स्थानपर समवेत होकर बाजा वालोंका दल या समूह।

वादन–पु० (सं०) बाजा बजाना; बाजा बजानेवाला; बाजा।

वादनक–पु० (सं०) संगीत वाद्य बजाना; बाजा।

वादनीय–पु० (सं०) सर।

वादर–पु० (सं०) कपासके सूतका कपड़ा; कपासका पौधा; बेरका पेड़। वि० सूती।

वादरा–स्त्री० (सं०) कपासका पौधा।

वादरायण–पु० (सं०) दे० 'बादरायण'।

वादरायणि–पु० (सं०) दे० 'बादरायणि'।

वादरि–पु० (सं०) वादरायणके पिता।

वादरिक–पु० (सं०) बेर बीननेवाला।

वादल–पु० अंधकाराच्छन्न दिवस; (सं०) मुलेठी, जेठीमधु।

वादा–पु० (अ० 'वायदा') वचन, प्रतिज्ञा, इकरार; कर्ज अदा करनेका वक्त। **–ख़िलाफ़**–वि० वचन भंग करनेवाला, जो वादोंको पूरा न करे। **–ख़िलाफ़ी**–स्त्री० वचन-भंग। **–फ़रामोश**–वि० अपने वचन, वादेको भूल जानेवाला। **–शिकन**–वि० वादोंको तोड़नेवाला। **–शिकनी**–स्त्री० वचन-भंग।

वादानुवाद–पु० (सं०) शास्त्रार्थ, तर्क-वितर्क।

वादान्य–वि० (सं०) वदान्य, उदार।

वादाम–पु० (सं०) बादाम।

वादाल–पु० (सं०) एक मछली, सहस्रदंष्ट्रा।

वादि–वि० (सं०) विद्वान्; चतुर; बोलनेवाला। **–राट् (ज्)**–पु० मंजुघोष।

वादिक–वि० (सं०) बात करनेवाला; तर्क करनेवाला। पु० बाजीगर।

वादित–वि० (सं०) बजाया हुआ; बोलनेमें प्रवृत्त किया हुआ। पु० वाद्य-संगीत।

वादितव्य–वि० (सं०) कहे जाने योग्य। पु० वाद्य-संगीत।

वादित्र–पु० (सं०) बाजा; संगीत। **–लगुड**–पु० नगाड़ा आदि बजानेकी लकड़ी।

वादिर–पु० (सं०) बेर जैसे छोटे फलवाला एक वृक्ष।

वादिश–पु० (सं०) विद्वान्; ऋषि। वि० सत्यभाषी।

वादींद्र–पु० (सं०) बौद्ध विद्वान् मंजुघोष।

वादी–स्त्री० (फा०) घाटी; नदीके किनारेका मैदान; जंगल। **–गर्द**–वि० घाटियोंमें मारा-मारा फिरनेवाला।

वादी (दिन्)–पु० (सं०) बोलनेवाला, वक्ता; पूर्ववक्ता, अदालतमें कोई अभियोग, मुकदमा चलानेवाला, मुद्दई; गायक; बाजा बजानेवाला; रागका मुख्य स्वर; कीमियागर; बुद्ध।

वादुलि–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र।

वाद्य–पु० (सं०) बाजा, बाजेका स्वर बजाना; कथन, भाषण। वि० जो कहा या बजाया जानेको हो। **–कर**–पु० बाजा बजाने-

वाला। **–धर**–पु० बाजा बजानेवाला। **–निर्घोष**–पु० बाजेका स्वर। **–भांड**–पु० मुरज, मृदंग आदि बाजे। **–वृंद**–पु० बाजोंका समूह।

वाद्यक–पु० (सं०) संगीत-वाद्य; बाजा बजानेवाला।

वाद्यमान–वि० (सं०) जो बजने या बोलनेमें प्रवृत्त किया जाय। पु० वाद्य-संगीत।

वाद्यसंगीत–पु० (इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक) वाद्य-यंत्रों द्वारा उत्पन्न की गयी मधुर ध्वनि।

वाद्यस्थान–पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशाला या वाद्य-भवनका वह स्थान जहाँ सामूहिक रूपसे बाजा बजानेवाले बैठते हैं।

वाध–पु० (सं०) प्रतिरोध; प्रतिबंध, बाधा।

वाधन–पु० (सं०) बाधा।

वाधा–स्त्री० (सं०) पीड़ा; निषेध।

वाधूक्य, वाधूक्य–पु० (सं०) विवाह, पाणिग्रहण।

वाधू–स्त्री० (सं०) पात्र; बेड़ा, नाव।

वाधूल–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि, वाधौल गोत्रके मूल पुरुष।

वाध्रीणस–पु० (सं०) गैंडा।

वान–वि० (सं०) बहा हुआ; सुखाया हुआ; जंगल-संबंधी। पु० बहना; सुगंध; रहना; गमन; लुढ़कना; तरंगोंका उठना, वातोर्मि; सूखा फल; एक तरहका वंसलोचन; बुनने या बोनेकी क्रिया; खटिया बुननेकी रस्सी; चटाई; घना जंगल; जंगलोंका समूह; चतुर व्यक्ति; यम; बाना; दीवारमेंका छेद; सुरंग। (**वान्**) एक प्रत्यय, जैसे ऐश्वर्यवान्; गाड़ीवान। **–दंड**–पु० बाना लपेटनेकी लकड़ी; करघा।

वॉन-एलेन पट्टी–स्त्री० (वॉन-एलेन बेल्ट) पृथ्वीके वायुमण्डलमें लगभग २५०–८५० मीलकी ऊँचाईपर विद्युत् आवेशित कणों (इलेक्ट्रान तथा प्रोटान) वाला प्रदेश। इसमें मौजूद विद्युत कण तीव्र गतिसे हरकत करते हैं। यह पट्टी अन्तरिक्ष यात्रियोंके लिए ख़तरेका कारण बन सकती है।

वानक–पु० (सं०) ब्रह्मचर्यावस्था।

वानप्रस्थ–पु० (सं०) आर्योंके चार जीवन-विभागों, आश्रमोंमेंसे तीसरा; इस आश्रममें प्रविष्ट व्यक्ति; उदासी; सन्यासी; महुएका पेड़; पलाश। वि० वानप्रस्थ-संबंधी।

वानप्रस्थ्य–पु० (सं०) वानप्रस्थकी अवस्था।

वानर–पु० (सं०) बंदर; एक गंधद्रव्य; दोहेका एक भेद। वि० बंदर-संबंधी; बंदर जैसा। **–केतन,–केतु,–ध्वज**–पु० अर्जुन। **–प्रिय**–पु० खिरनीका पेड़। **–युद्ध**–पु० छापामार लड़ाई। **–सेना**–स्त्री० किसी विशिष्ट उद्देश्यसे बनी बालसेना।

वानराक्ष–पु० (सं०) जंगली बकरा, वनछाग।

वानराघात–पु० (सं०) लोध्र वृक्ष।

वानरापसद–पु० (सं०) तुच्छ व्यक्ति।

वानरी–स्त्री० (सं०) केवाँच; मर्कटी, बंदरी; वानरोंकी सेना– 'करिहौं महि बिनु वानरी, बाढ़ी मन मह जोम'–रघुराज। **–तप**–पु० बन्दरोंकी भाँति वृक्षोंपर रहकर की जानेवाली तपस्या।

वानरेंद्र–पु० (सं०) सुग्रीव या हनुमान्।

वानल–पु० (सं०) काली वनतुलसी।

वानवासक–पु० (सं०) वैदेही मातासे उत्पन्न वैश्यका पुत्र।

वानवासिका–स्त्री० (सं०) सोलह मात्राओंका एक छंद।

वानस्पतिक खाद–स्त्री० (कंपोस्ट) गोबर, मल, पौधों आदि (के मिश्रण) से निर्मित खाद, कूड़े आदिसे बनी खाद।

वानस्पत्य–वि० (सं०) वृक्ष-संबंधी; वृक्षसे प्राप्त या प्रस्तुत होनेवाला; वृक्षके नीचे होनेवाला (यज्ञादि); वृक्षके नीचे रहनेवाला (शिव)। पु० पौधा; फूल-फल देनेवाला वृक्ष, आम, जामुन आदि; किसी वृक्षका फल; वृक्षोंका समूह; वनस्पतिसे सम्बद्ध शास्त्र (आरबोरि कल्चर)।

वाना–स्त्री० (सं०) बटेर।

वानायु–पु० (सं०) भारतके पश्चिमोत्तरमें अवस्थित एक देश; हिरन। **–ज**–पु० वानायु देशका घोड़ा।

वानिक–वि० (सं०) जंगलमें रहनेवाला; वनवासी।

वानीय–पु० (सं०) केवटी मोथा; गोन। वि० बुनने योग्य।

वानीर–पु० (सं०) बेंत या सरकंडा; चित्रक; पाकर वृक्ष। **–गृह**–पु० सरकंडेका मंडप। **–ज**–पु० कुष्ठ नामक विष।

वानारक–पु० (सं०) मूंज।

वानेय–पु० (सं०) पानीमें होनेवाला तृणविशेष, केवटी मोथा। वि० जंगलमें रहने या उत्पन्न होनेवाला; जल-संबंधी।

वान्य–वि० (सं०) वन-संबंधी।

वान्या–स्त्री० (सं०) वन-समूह; मृतवत्सा गौ।

वाप–पु० (सं०) बोना; बुनना; मुंडन; खेत; बोनेवाला; बीज। **–दंड**–पु० करघा।

वापक–पु० (सं०) बोनेवाला।

वापन–पु० (सं०) बीज बोना; मुंडन।

वापस–वि० (फा०) लौटा हुआ, लौटाया, फेरा हुआ।

वापसीं–वि० (फा०) आखिरी, अंतिम (साँस)।

वापसी–वि० फेरा, लौटाया हुआ। स्त्री० वापस होने, करनेका भाव। **–किराया**–पु० वापसी यात्राका किराया। **–टिकट**–पु० वापसी यात्राके लिए मिलनेवाला टिकट (रिटर्न टिकट)। **–मुलाक़ात**–स्त्री० मुलाकातके बदलेमें की जानेवाली मुलाकात। **–यात्रा**–स्त्री०,**–सफ़र**–पु० प्रस्थानके स्थानको लौटनेकी यात्रा।

वापि–स्त्री० (सं०) तालाब।

वापिका–स्त्री० (सं०) चौड़ा कुआँ, बावली, छोटा तालाब।

वापित–वि० (सं०) बोया हुआ; मूंड़ा हुआ। पु० एक तरहका धान।

वापी–स्त्री० (सं०) तालाब; बावली। **–विस्तीर्ण**–पु० बहुत बड़ा छेद (बड़ी सेंध)। **–ह**–पु० चातक पक्षी।

वापी(पिन्)–वि० (सं०) बोनेवाला।

वाप्य–पु० (सं०) बावलीका पानी; बोवारी धान; कुट। वि० वापीसे प्राप्त होनेवाला (जल); जो बोया जानेको हो।

वाफ़ी–वि० (अ०) पूरा, संपूर्ण; यथेष्ट; प्रचुर; वफा करनेवाला, वचनपालक।

वाबस्तगी–स्त्री० (फा०) लगाव, संबंध, प्रेम।

वाबस्ता–वि० (फा०) बँधा हुआ; लगा, जुड़ा हुआ; संबद्ध; संबंधी; आत्मीय।

वाम*–स्त्री० स्त्री, वामा। वि० (सं०) बायाँ; विरुद्ध; टेढ़ा; नीच; बुरा; कठोर, निर्दय; इच्छुक; सुंदर; प्रिय। पु० कामदेव; वामदेव; एक रुद्र; शिव; वरुण; चंद्रमाके रथका एक अश्व; स्तन; धन; बथुआ; बायाँ पार्श्व; बायाँ हाथ; प्राणी; वमन, मतली; सर्प; निषिद्ध कर्म; दुर्भाग्य; संकट; ऋचीकका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; एक वर्णवृत्त; वामाचार। **–कक्ष**–पु० एक गोत्रकार ऋषि, वामकक्षायन गोत्रके मूल पुरुष। **–दृक्-(श्)**–स्त्री० नारी। **–दृशी**–स्त्री० दे० 'वामनयना'। **–देव**–पु० शिव; गौतम गोत्रोत्पन्न एक वैदिक ऋषि। **–देवी**–स्त्री० दुर्गा; सावित्री। **–नयना,–लोचना**–स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री। **–नी**–वि० धन लानेवाला। **–पंथी,–पक्षी**–पु० (लेफ़्टिस्ट) राजनीति आदिमें उग्र विचारोंका अनुयायी। **–भ्रू**–स्त्री० सुंदर भौंओंवाली स्त्री; बायीं भौं। **–मार्ग**–पु० वेदविरुद्ध तंत्रमत (इसमें मद्य, मांस, मैथुन आदि निषिद्ध बातोंका विधान है)। **–मोष**–पु० बहुमूल्य वस्तुओंकी चोरी। **–रथ**–पु० एक गोत्रकार ऋषि, वामरथ्य गोत्रके मूल पुरुष। **–शील**–वि० बुरे स्वभावका। **–स्वभाव**–वि० अच्छे स्वभावका। **–हस्त**–पु० बकरेका गलस्तन या गलकंबल। **–हस्तिक**–वि० (लेफ्ट हैंडर) दे० 'बयँहत्था'।

वाम–पु० (फा०) कर्ज, उधार (हिंदीमें केवल 'कर्ज-वाम'में प्रयुक्त)। **–ख़्वाह**–वि० कर्जदार, ऋणी।

वामक–वि० (सं०) वमन करनेवाला; प्रतिकूल; निष्ठुर। पु० एक संकर जाति; एक भावभंगी; एक चक्रवर्त्ती (बौ०)।

वामकी–स्त्री० (सं०) एक देवी (जादूगर और तांत्रिक अभीष्ट-सिद्धिके लिए इसका पूजन करते हैं)।

वामदेव्य–पु० (सं०) एक साम; एक पहाड़; एक ऋषि। वि० वामदेवसे उत्पन्न।

वामन–वि० (सं०) बौना, बहुत छोटे डील-डौलका; ह्रस्व, खर्व, नीच; बौना या विष्णु-संबंधी; झुका हुआ। पु० बौना आदमी;

शिव; एक दिग्गज; एक मास; छोटे डील-डौलका एक घोड़ा; एक नाग; गरुड़वंशी पक्षिविशेष; अंकोट वृक्ष; नाटा बैल; क्रौंच द्वीपका एक पर्वत; विष्णुका एक अवतार; अदिति-पुत्र; अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–द्वादशी–स्त्री०** भाद्र-शुक्ला द्वादशी, वामनकी पूजा-तिथि। **–पुराण–पु०** अठारह पुराणोंमेंसे एक।

वामनक–वि० (सं०) छोटे कदका, बौना। पु० छोटे कदका आदमी, बौना; एक पहाड़; ठिंगनापन।

वामना–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

वामनिका–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक अनुचरी; बौनी स्त्री।

वामनी–स्त्री० (सं०) बौनी स्त्री; घोड़ी; एक योनिरोग; एक तरहकी स्त्री।

वामलूर–पु० (सं०) दीमकोंका भीटा, वल्मीक, बिमौट।

वामांगिनी, वामांगी–स्त्री० (सं०) पत्नी।

वामाँदगी–स्त्री० वामाँदा होना।

वामाँदा–वि० (फा०) पीछे छूटा हुआ; थका हुआ; लाचार; उच्छिष्ट।

वामा–स्त्री० (सं०) स्त्री; दुर्गा, गौरी; लक्ष्मी; सरस्वती; एक वर्णवृत्त; स्कंदकी एक अनुचरी; पार्श्वनाथकी माता।

वामाक्षि–पु० (सं०) बायीं आँख; दीर्घ ईकार।

वामाक्षी–स्त्री० (सं०) दे० 'वामनयना'।

वामागम, वामाचार–पु० (सं०) एक तांत्रिक मत (इसमें पंच मकारोंके आश्रयसे उपास्यकी पूजा की जाती है)।

वामाचारी(रिन्)–पु० (सं०) तांत्रिक मतका अनुयायी, वाममार्गी।

वामापीड़न–पु० (सं०) पीलु वृक्ष।

वामारंभ–वि० (सं०) अदम्य, न झुकनेवाला।

वामावर्त्त–वि० (सं०) बायीं ओरको घूमा हुआ; (एंटी क्लाक-वाइज); बायीं ओरसे घूमकर की जानेवाली (परिक्रमा)। पु० वह शंख जिसमें बायीं ओरका घुमाव हो।

वामिका–स्त्री० (सं०) चंडिका, दुर्गा।

वामिल–वि० (सं०) सुंदर; घमंडी; धूर्त।

वामी–स्त्री० (सं०) घोड़ी; गधी; गीदड़ी; हथिनी; वमन।

वामी(मिन्)–वि० (सं०) वामाचारी; वमन करनेवाला।

वामेक्षणा–स्त्री० (सं०) दे० 'वामनयना'।

वामोरु, वामोरू–स्त्री० (सं०) सुंदर ऊरु–जाँघोंवाली स्त्री; सुंदरी स्त्री।

वाम्नी–स्त्री० (सं०) एक गोत्रकार स्त्री।

वाम्य–पु० (सं०) अदम्यता; वामदेव ऋषिका घोड़ा। वि० वामदेव-संबंधी; वमन करानेवाली दवाओंसे अच्छा किया जानेवाला।

वाम्र–पु० (सं०) एक साम; एक ऋषि।

वाय–पु० (सं०) बुनना; सीना; तागा; पक्षी; नायक। * स्त्री० वापी; वायु। * सर्व० वाहि, उसको। **–दंड–पु०** करघा, करघेका हत्था, ढरकी। **–रज्जु–स्त्री०** करघेकी वै।

वाय–अ० (फा०) हा, हाय (दुःख या व्यथाकी व्यंजनामें व्यवहृत)। वि० खुला हुआ, पुन·। **–किस्मत,–तक़दीर–**हाय किस्मत।

वायक–पु० (सं०) जुलाहा; राशि, समूह।

वायन–पु० (सं०) देवपूजाके लिए या विवाहादिके अवसरपर बननेवाली मिठाई; सौगात; एक गंधद्रव्य; बुनना। **–क्रिया–स्त्री०** बुननेकी क्रिया। **–रज्जु–स्त्री०** दे० 'वाय-रज्जु'।

वायनक–पु० (सं०) देवपूजा आदिके लिए बनी हुई मिठाई; एक गंधद्रव्य।

वायरस–पु० (वायरस) रोग उत्पन्न करनेवाले कारक जो जीव तथा निर्जीवकी विभाजक रेखापर रखे जा सकते हैं। इन्हें प्रकाशीय सूक्ष्मदर्शीसे देख पाना संभव नहीं है, केवल इलेक्ट्रान-सूक्ष्मदर्शीसे इनकी फोटो ली जा सकती है। ये परजीवी होते हैं तथा परपोषी जीवसे ही अपने लिए आहार प्राप्त करते हैं–इस क्रियामें उस परपोषीके ऊतक विनष्ट हो जाते हैं। जुकाम, खसरा (मीज़िल्स), तथा पोलियो सरीखी बीमारियाँ वायरस द्वारा उत्पन्न होती हैं।

वायव–वि० (सं०) वायु-संबंधी; पश्चिमोत्तर।

वायवी–स्त्री० (सं०) उत्तर-पश्चिमका कोण।

वायवीय–वि० (सं०) वायु-संबंधी; (एरियल) वायुसे चलनेवाला। **–पुराण–पु०** अठारह पुराणोंमेंसे एक।

वायव्य–वि० (सं०) वायु-संबंधी। पु० पश्चिमोत्तरकोण; स्वाति नक्षत्र; वायुपुराण; एक अस्त्र।

वायव्या–स्त्री० (सं०) पश्चिमोत्तर दिशा।

वायस–पु० (सं०) अगर; तारपीन; कौआ; उत्तर-पूर्वकी तरफ रुखवाला मकान। वि० काक-संबंधी। **–जंघा–स्त्री०** एक पौधा, काक-जंघा। **–तंतु,–तुंड–पु०** हनुका जोड़; कौआ-ठोंठी। **–पीलु–पु०** एक वृक्ष, काकपीलु।

वायसांतक–पु० (सं०) उल्लू।

वायसादनी–स्त्री० (सं०) एक लता, महाज्योतिष्मती; काकतुंडी, कौआठोंठी।

वायसाराति, वायसारि–पु० (सं०) उल्लू।

वासाह्वा–स्त्री० (सं०) काकमाची।

वायसी–स्त्री० (सं०) कौएकी मादा; काकमाची, छोटी मकोय; महाज्योतिष्मती; कौआठोंठी; सफेद घुंघची; महाकरंज; काकजंघा।

वायसेक्षु–पु० (सं०) काँस।

वायसोलिका, वायसोली–स्त्री० (सं०) काकोली; महाज्योतिष्मती।

वाया–पु० (फा०) मनोकामना; अफीम आदिकी रोजकी मात्रा।

वायु–स्त्री० (सं०) हवा (पाँच तत्त्वोंमेंसे एक); साँस; प्राणवायु, जीवनवायु (जो पाँच प्रकारकी है–प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान; दे० 'पंचप्राण'। सात भेद दे० 'अनिल' तथा 'मरुत्'। शरीरस्थ पाँच वायुओंके नाम—तक्षक (या नागवायु), धनंजय, देवदत्त, क्रुकर, कूर्म। इस प्रकार कुल दस भेद हुए); वातप्रकोप। **–अपनयन–पु०** वायुका धूल, बालू आदि उड़ाकर अन्यत्र ले जाना (विज्ञान)। **–केतु–पु०** धूल। **–कोण–पु०** पश्चिम-उत्तरका कोना। **–गंड–पु०** अजीर्ण, अफरा। **–गति–वि०** वायुकी तरह तेज चालवाला। **–गतिकी–स्त्री०** विज्ञानकी वह शाखा जिसमें इस बातका विशेष रूपसे अध्ययन किया जाता है कि वायुमें गति करनेवाली वस्तुपर वायुके कारण कितना अवरोध बल लगता है तथा उसपर दाब कितना पड़ता है (एयरो डायनेमिक्स)। **–गीत–वि०** वायु द्वारा गाया हुआ (सर्वविदित)। **–गुल्म–पु०** बगूला, बवंडर, वातचक्र; पेटका एक रोग, बायगोला; भँवर। **–ग्रस्त–वि०** गठिया या उन्माद रोगसे आक्रांत। **–घट–पु०** (गैसजार) बेलनकी शक्लका शीशेका लंबा-सा विशेष पात्र जिसमें ओषजन आदि वायव्य द्रव्य भरकर विविध प्रयोग किये जाते हैं। **–जात,–तनय,–नंदन,–पुत्र,–संभव,–सुत,–सूनु–पु०** हनूमान्; भीम। **–दाबमापक–पु०** (बैरोमीटर) तापक्रम मापनेका यंत्र। **–दार,–दारु–पु०** मेघ। **–देव–पु०** स्वाति नक्षत्र। **–निघ्न–वि०** पागल, उन्मत्त। **–पंचक–पु०** शरीरस्थ पाँच वायुओंका समाहार। **–पति–पु०** (एयर वाइस मार्शल) वायुसेनाका उच्चाधिकारी जो महावायुपतिसे छोटा होता है। **–पथ,–मार्ग–पु०** (एयरवेज़, एयर रूट, आकाशमें वायुयानोंके आने-जानेका –विमान-यात्राका–मार्ग। **–पुराण–पु०** अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–फल–पु०** उपल; इंद्रधनुष्। **–भक्ष,–भोजन–वि०** वायु पीकर रहनेवाला। पु० साँप; योगी, तपस्वी। **–भक्षक–वि० पु०** हवा पीकर रहनेवाला। **–भक्षण–पु०** वायु पीकर रहना; हवा पीकर रहनेवाला –सर्पादि। **–भक्ष्य–वि०** हवा पीकर रहनेवाला। पु० सर्प। **–भार–पु०** (सं०) (एटमास्फेरिक प्रेशर) वायुमंडलमें हवाका भार। **–०मापक यंत्र–पु०** (बैरोमीटर) वायु-मंडलमें हवाका दबाव या भार मापनेका यंत्र। **–०लेखी–** (बैरोग्राफ) हवाका दबाव अंकित करनेवाला यंत्र। **–भुक्(ज्)–वि०, पु०** दे० 'वायुभक्ष'। **–मरुल्लिपि–स्त्री०** एक लिपि (ललितविस्तर)। **–मंडल–पु०** आकाश; वातावरण; बवंडर। **–मापी–पु०** (सं०) (यूडिओमीटर) वायुकी शुद्धि और ओषजन मापनेवाला यंत्र। **–मिति–स्त्री०** (सं०) (यूडिओमैट्री) वायुकी शुद्धता मापनेकी प्रक्रिया। **–यान–पु०** हवाई जहाज। **–रुजा–स्त्री०** आँखका एक रोग। **–रोषा–स्त्री०** रात। **–लोक–पु०** एक लोक (पु०)। **–वर्त्म(न्)–पु०** आकाश। **–वाह–पु०**

धुआँ; वाष्प। **–वाहन**–पु० धुआँ; विष्णु; शिव। **–वाहिनी** –स्त्री० शिरा। **–विज्ञान**–पु० (एयरॉलाजी) वायुमण्डलकी विशेषताओंका अध्ययन करनेवाला शास्त्र। **–वेगक,–वेगी (गिन्)**–वि० हवाकी तरह तेज। **–सख,–सखा**–पु० अग्नि। **–संवलन**–पु० वातानुकूलन। **–सेना**–स्त्री० (एयर फोर्स) हवाई सेना। **–सेवा**–स्त्री० विमान द्वारा यात्री या डाक ले जानेकी सेवा। **–स्नान**– पु० (एयर बाथ) खुले शरीरपर खुली हवा लेना। **–हा(हन्)**–पु० एक ऋषि।

वायुर–वि० (सं०) वायु-युक्त; तूफानी।

वाय्वास्पद–पु० (सं०) आकाश।

वारक–पु० (सं०) पक्षी।

वारंग–पु० (सं०) तलवारकी मूठ; नष्ट शल्य निकालनेका एक औजार।

वारंट–पु० (अं०) वह आज्ञापत्र जिससे किसीको कोई विशेष कार्य करनेका अधिकार दिया जाय। **–गिरफ्तारी**–पु० किसीको गिरफ्तार करनेके लिए सरकारी कर्मचारीको दिया गया अधिकार-पत्र। **–तलाशी**–पु० किसी सरकारी कर्मचारीको किसी स्थान, व्यक्तिकी तलाशी लनेके लिए दिया हुआ अधिकारपत्र। **–रिहाई** –पु० अदालतका आज्ञापत्र जिसके अनुसार सरकारी कर्मचारी बंदाको मुक्त कर सके या कुर्क जायदाद वापस कर सके।

वारंवार–अ० दे० 'वारंवार'।

वार–पु० आक्रमण; आघात; नदी आदिका इधरका किनारा– 'हरि सुमिरै सो वार है गुरु सुमिरै सो पार'–साखी; (सं०) रोक; ढक्कन; द्वार; घिरा हुआ स्थान; नियत समय; वारी, दफा; दिन (सोम, भौम आदि); अवसर; समूह; वाण; शिव; मदिरापात्र, पानपात्र; एक कृत्रिम विष; कुज वृक्ष; जल, जलराशि। **–कन्यका, –कन्या, –नारी,–मुखी, –युवती,–योषित्** –स्त्री० वेश्या। **–तिय***–स्त्री० वेश्या। **–पार**–पु० (हिं०) नदी आदिके दोनों किनारे। अ० इस ओरसे उस ओरतक। (मु०–०करना–पूरी मोटाई वेधकर दूसरी ओर निकलना। –० होना–पूरा विस्तार तै करना)। **–पाशि,–पाश्य**–पु० दे० 'वारवासि'। **–बाण,–वाण,–वारण**–पु० कवच। **–बुषा,–बृषा**–स्त्री० कदली। **–मुख्य**–पु० गवैया या नर्तक। **–मुख्या**–स्त्री० प्रधान वेश्या। **–रामा,–वधू,–वनिता**–स्त्री० वेश्या। **–वाणि**–पु० बाँसुरी बजानेवाला; मुख्य गवैया; न्यायाधीश; एक संवत्सर; ज्योतिषी। **–वाणी**–स्त्री० वेश्या। **–वासि,–वास्य** –पु० एक जनपद। **–विलासिनी,–सुंदरी,–स्त्री***–स्त्री० वेश्या। **–सेवा**–स्त्री० कसब, वेश्यावृत्ति। मु० **–खाली जाना**–आघात-का निशानेपर न लगना; युक्तिका सफल न होना।

वार–पु० (अं०) युद्ध। **–शिप**–पु० जंगी जहाज।

वार–पु० (फा०) आघात, आक्रमण; योग्य; पात्र; पद्धति। (प्रत्यय) करनेवाला जैसे, तक़्सीरवार।

वारक–वि० (सं०) रोकनेवाला, प्रतिरोधक; निवारक। वाधा; एक तरहका पात्र; वारी; घोड़ेका कदम; एक तरहका घोड़ा; एक गंधतृण; कष्टका स्थान।

वारकी(किन्)–पु० (सं०) प्रतिबंधक, प्रतिरोधक; शत्रु; समुद्र; अच्छे लक्षणोंवाला घोड़ा; पर्णजीवी; यती।

वारकीर–पु० (सं०) द्वारपाल; वाडवाग्नि; साला; छोटी कंघी; जूँ; युद्धाश्व।

वारट–पु० (सं०) क्षेत्र या क्षेत्र-समूह।

वारटा–स्त्री० (सं०) हंसी।

वारण–पु० (सं०) निवारण; प्रतिरोध; निषेध; (स्क्रेप्शन); हाथी; अंकुश; कवच; प्रतिरोधका साधन; काला शीशम; पारिभद्र; हरताल; सफेद कोरैया; एक वृत्त। **–कणा**–स्त्री० गजपिप्पली। **–कर**–पु० हाथीकी सूंड़। **–कृच्छ्र**–पु० एक कृच्छ्र व्रत। **–बुषा,–वल्लभा**–स्त्री० केला। **–शाला**–स्त्री० हस्ति-शाला। **–साह्वय**–पु० हस्तिनापुर। **–हस्त**–पु० एक तरहका तारदार वाजा।

वारणसी–स्त्री० (सं०) वाराणसी।

वारणानन–पु० (सं०) गणेश।

वारणावत–पु० (सं०) गंगातटवर्ती एक नगर जहाँ दुर्योधनने पांडवोंको जलाकर मारनेके लिए लाक्षागृहका निर्माण कराया था।

वारणीय–वि० (सं०) निषेध करने योग्य, मना करने लायक; हाथी-संबंधी।

वारत्र–पु० (सं०) चमड़ेकी पट्टी, तसमा।

वारत्रा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया।

वारद*–पु० बादल।

वारदात–स्त्री० दे० 'वारिदात'।

वारन*–स्त्री० निछावर। पु० बंदनवार; हाथी।

वारना–स० क्रि० बलि जाना; उत्सर्ग करना; राई, नोन आदि उतारना। पु० निछावर। मु० **वारने जाना**–निछावर होना।

वारनिश–स्त्री० (अं० 'वार्निश') लकड़ी आदिपर चमक लानेके लिए लगाया जानेवाला एक रोगन।

वार-फेर–स्त्री० निछावर, वलि; दूल्हा-दुलहिनके सिरके चौगिर्द घुमाकर लुटाया जानेवाला रुपया-पैसा।

वारफ़्तगी–स्त्री० (फा०) आत्मविस्मृति, वेखुदी।

वारफ़्ता–वि० (फा०) आत्मविस्मृत, सुध-बुध भूला हुआ, वेखुद। **–मिज़ाज**–वि० जो खोया खोया-सा रहता हो।

वारयितव्य–वि० (सं०) निवारण करने योग्य।

वरयिता(तृ)–पु० (सं०) रक्षक; चुननेवाला, पति।

वारला–स्त्री० (सं०) बर्रे; हंसी।

वारलीक–पु० (सं०) बल्वजा।

वारस्तगी–स्त्री० (फा०) स्वच्छंदता, निश्चिंतता; आजादी।

वारस्ता–वि० (फा०) स्वच्छंद; निश्चिंत; बेफिक्र।

वारांगणा–स्त्री० (सं०) वेश्या।

वारांनिधि–पु० (सं०) समुद्र।

वारा–पु० बचत, किफायत; लाभ; नदी आदिका इधरका किनारा। वि० सस्ता; उत्सर्गीकृत, जो निछावर हुआ हो। **–न्यारा**–पु० फैसला, निपटारा। **–पार**–पु० अंतिम सीमा; यह पार और वह पार। **–फेरा**–पु० शुभ अवसरपर धन न्यौछावर करना। मु०–**पड़ना,–बैठना**–बचत होना। **–होना**–निछावर होना।

वाराणसी–स्त्री० (सं०) काशी, बनारस।

वाराणसेय–वि० (सं०) काशीमें उत्पन्न या बना हुआ।

वारालिका–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

वारावस्कंदी(दिन्)–पु० (सं०) अग्नि।

वाराशि–पु० (सं०) समुद्र।

वाराह–वि० (सं०) शूकर-संबंधी; वराह अवतार-संबंधी; बराहमिहिरकृत। पु० विष्णुका एक अवतार; शूकरांकित ध्वजा; वाराही कंद; एक पहाड़; कृष्ण यजुर्वेदकी एक शाखा; एक साम; एक तीर्थ; एक पेड़, काली मैनी; जलके पास होनेवाला बेंत, अंबुवेतस। **–कंद**–पु० एक तरहका कंद जिसपर शूकरके-से बाल होते हैं। **–कर्णी,–पत्री**–स्त्री० असगंध। **–कल्प**–पु० इस नामका ब्रह्माका दिन जो इस समय बीत रहा है। **–द्वादशी**–स्त्री० माघ-शुक्ला द्वादशी। **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक।

वाराहांगी–स्त्री० (सं०) दंती वृक्ष।

वाराही–स्त्री० (सं०) शूकरी; वराह रूपधारी विष्णुकी शक्ति; स्कंदकी एक मातृका; एक कंद; पृथ्वी; एक मान; एक नदी; कँगनी; श्यामा पक्षी। **–कंद**–पु० एक महाकंद, गेंठी।

वारि–पु० (सं०) जल; वर्षा; सुगंधबाला, ह्रीवेर; एक वृत्त। स्त्री० सरस्वती; हाथी बाँधनेकी जंजीर; हाथी फँसानेका गड्ढा या फंदा; हाथी बाँधनेका स्थान; वंदिनी; वाणी; गगरा; (हिं०) निछावर। **–कंटक**–पु० सिंघाड़ा। **–कफ**–पु० समुद्र। **–कर्णिका**–स्त्री० कुंभिका। **–कर्पूर**–पु० एक मछली। **–कुब्ज, –कुब्जक**–पु० सिंघाड़ा। **–कूट**–पु० नगरकी रक्षाके लिए बना हुआ दूहा। **–कृमि**–पु० जोंक। **–कोल**–पु० कछुआ। **–कोश** –पु० दिव्य परीक्षाका अभिमंत्रित जल। **–गर्भ**–पु० बादल। **–चत्वर**–पु० कुंभिका; जलखंड। **–चर**–पु० पानीके जीव-जंतु; मछली; शंख। **–०केतु**–पु० मीनकेतन, कामदेव–'कोपेउ तबहिं वारिचरकेतू'–रामा०। **–चामर**–पु० सेवार। **–चारी(रिन्)**

–वि० जलमें रहनेवाला (जंतु)। **–ज**–पु० कमल; मछली; शंख; घोंघा; द्रोणी लवण; कौड़ी; उत्तम, खरा सोना; लौंग; एक साग। वि० जलमें उत्पन्न। **–जात**–पु०, वि० दे० 'वारिज'। **–जीवक**–वि० जलसे जीविका चलानेवाला, मछुआ। **–तर**–पु० खस। **–तस्कर**–पु० सूर्य; बादल। **–त्रा**–स्त्री० छाता। **–द**–पु० मेघ; नागरमोथा; बाला नामक गंधद्रव्य। वि० जल देनेवाला। **–दुर्ग**–वि० जलके कारण दुर्गम। पु० दे० 'जलदुर्ग'। **–द्र**–पु० चातक। **–धर**–वि० जल धारण करनेवाला। पु० बादल; नागरमोथा; एक वृत्त। **–धानी**–स्त्री० जलाधार। **–धार**–पु० एक पर्वत। **–धारा**–स्त्री० जलकी धारा –वर्षा। **–धि,–निधि**–पु० समुद्र। **–नाथ**–पु० बादल; वरुण; समुद्र; नागलोक। **–प**–वि० जल पीनेवाला; जलकी रक्षा करनेवाला। **–पथिक**–वि० जलके मार्गसे गमन करनेवाला। **–पर्णी,–पूर्णी,–पृश्नी**–स्त्री० जलकुंभी; पानीकी काई। **–प्रवाह**–पु० जलधारा; जलप्रपात। **–बंधन**–पु० बाँध बाँधकर जलको रोकना। **–बदर**–पु० दे० 'वारि-वदन'। **–बालक**–पु० एक गंधद्रव्य। **–भव**–पु० रसांजन। वि० दे० 'वारिज'। **–मुक्(च्)**–पु० बादल। **–मूली**–स्त्री० दे० 'वारिपर्णी'। **–यंत्र**–पु० पानी खींचनेका यंत्र; फौवारा। **–रथ**–पु० नाव, जहाज। **–राज**–पु० वरुण। **–राशि**–पु० समुद्र। **–रुह**–पु० कमल। **–लोमा(मन्)**–पु० वरुण। **–वदन**–पु० पानी-आमला। **–वर**–पु० करौंदा। **–वर्णक**–पु० बालू। **–वर्त**–पु० एक मेघ। **–वल्लभा**–स्त्री० विदारी। **–वह**–वि० पानी ले जानेवाला। **–वास**–पु० कलाल, शराब बनानेवाला। **–वाह**–पु० मेघ; मोथा। वि० जल ले जानेवाला। **–वाहन**–पु० मेघ। **–वाही(हिन्)**–वि० जल ढोनेवाला। **–विहार**–पु० जलक्रीड़ा। **–श**–पु० विष्णु। **–शय**–वि० जलमें सोनेवाला। **–शास्त्र**–पु० गर्गप्रणीत फलित ज्योतिषका एक ग्रंथ (इससे वृष्टिके स्थान और समयका पता लगाया जाता है)। **–संभव**–पु० लौंग; एक तरहका सीसा; उशीर। **–साम्य**–पु० दूध।

वारित–वि० (सं०) जिसका निवारण किया गया हो, रोका हुआ; मना किया हुआ; अभिनिषिद्ध; छिपाया हुआ, ढका हुआ। **–वाम**–वि० निषिद्ध वस्तुओंके लिए लालायित। **–साहित्य**–पु० (प्रोस्क्राइब्ड लिटरेचर) वह प्रकाशित पुस्तक, लेख आदि जिसे पढ़ने या पासमें रखनेकी सरकार द्वारा मनाही कर दी गयी हो।

वारित्र–पु० (सं०) निषिद्ध, अविहित कार्योंका आचरण।

वारिद–वि० (अ०) उतरनेवाला, आनेवाला; पहुँचनेवाला। पु० (सं०) दे० 'वारि'में।

वारिदात–स्त्री० (अ०) ('वारिदा'का बहु०, हिंदी-उर्दूमें एकवचनमें व्यवहृत) घटना; दुर्घटना; हाल, वृत्त; जुर्म, चोरी-डकैती इत्यादि।

वारियाँ–स्त्री० निछावर, बलि।

वारिस–पु० (अ०) उत्तराधिकारी, मृत जनकी संपत्तिका अधिकारी; मालिक; खोज-खबर लेनेवाला; रक्षक। **–(से) ताजोतख़्त**–पु० राज्यका उत्तराधिकारी, युवराज।

वारींद्र–पु० (सं०) समुद्र।

वारी–स्त्री० (सं०) दे० 'वारि' स्त्री।

वारीट–पु० (सं०) हाथी।

वारीफेरी–स्त्री० किसी प्रिय जनकी बाधा दूर करनेके लिए उसके सिरके चारों ओर घुमाकर कोई वस्तु उत्सर्ग करना।

वारीश–पु० (सं०) समुद्र, उदधि।

वारुंड–पु० (सं०) सर्पराज; नावका पानी उलीचनेका पात्र; खूंट, कानका मैल; आँखका कीचड़।

वारुंडी–स्त्री० (सं०) द्वारपिंडी, द्वारसोपान।

वारु–पु० (सं०) वह हाथी जिसपर विजयपताका रहती है, विजय-कुंजर; घोड़ा।

वारुक–वि० (सं०) चुननेवाला।

वारुठ–पु० (सं०) मरणशय्या; टिकठी, अरथी।

वारुण–वि० (सं०) जल, वरुण, भृगु या पश्चिम दिशा-संबंधी। पु० जल; एक नक्षत्र, शतभिषा; भारतका एक प्रदेश; हरताल; एक उपपुराण; एक पेड़, वरुण वृक्ष; जलजंतु; वरुणकी संतान; एक अस्त्र; पश्चिम दिशा। **–कर्म(न्)**–पु० जलाशय (कुआँ, पोखरा) आदि बनवानेका काम। **–पाशक**–पु० एक बड़ा समुद्री जंतु।

वारुणक–पु० (सं०) एक जनपद।

वारुणि–पु० (सं०) अगस्त्य; सत्यधृति; वसिष्ठ; भृगु; एक जनपद; वरुण वृक्ष; दँतैल हाथी। स्त्री० शराब।

वारुणी–स्त्री० (सं०) पश्चिम दिशा; शराब, मदिरा; वरुणकी स्त्री या पुत्री; उपनिषद् विद्या (वरुण-उपदिष्ट होनेसे); घोड़ेकी एक चाल; दूब; गंडदूर्वा; एक नदी; शतभिषा नक्षत्र; इंद्रवारुणी, इँदारुन; हथिनी; शतभिषायुक्त चैत्र कृष्णा त्रयोदशी; बलरामके लिए वरुण द्वारा प्रेरित कदंबका रस; कदंबके फलका मद्य। **–वर**–पु० चौथा द्वीप और उसका समुद्र (जै०)। **–वल्लभ**–पु० वरुण।

वारुणीश–पु० (सं०) विष्णु।

वारुण्य–वि० (सं०) वरुणसे संबद्ध। पु० भ्रम।

वारुद–पु० (सं०) अग्नि।

वारूढ–पु० (सं०) अग्नि; पिंजड़ा; वस्त्रका छोर; दरवाजेका पल्ला; पाथेय।

वारेंद्र–पु० (सं०) गौड़ देशका एक प्राचीन जनपद (राजशाही जिलेके अंतर्गत)।

वारेंद्री–स्त्री० (सं०) दे० 'वारेंद्र'।

वार्–पु० (सं०) जल; रक्षक। **–आसन**–पु० जलाधार। **–गर**–पु० साला। **–दर**–पु० दे० क्रममें। **–दल**–पु० दे० क्रममें। **–धानी**–स्त्री० घड़ा। **–धारा**–स्त्री० जलकी धारा। **–धि**–पु० समुद्र। **–० भव**–पु० समुद्री नमक। **–धेय**–पु० समुद्री नमक। **–भट**–पु० घड़ियाल। **–मुक्(च्)**–पु० बादल। **–राशि**–पु० समुद्र। **–वट**–पु० पोत। **–वाह**–पु० बादल।

वार्क्ष–वि० (सं०) वृक्ष-संबंधी; वृक्ष या काष्ठसे निर्मित; छालका बना हुआ। पु० जंगल।

वार्क्षी–स्त्री० (सं०) प्रचेताकी स्त्री।

वार्क्ष्य–वि० (सं०) लकड़ीका बना हुआ। पु० जंगल; वृक्षोंसे घिरा हुआ स्थान।

वार्च–पु० (सं०) हंस।

वार्ड–पु० (अं०) रक्षा; हिफाजत; किसी खास कामके लिए घेरा हुआ स्थान; बड़े नगरोंमें कई मुहल्लोंका समूह (प्रबंध आदिकी सुविधाके विचारसे बनाया जाता है); अलग कमरा, विभाग (जेल, अस्पतालमें)।

वार्डन–पु० (अं०) रक्षक; गार्जियन, अभिभावक; छात्रावासके किसी विभागका व्यवस्थापक।

वार्डर–पु० (अं०) रक्षक, रक्षा करनेवाला; जेलके भीतर रहनेवाला पहरेदार।

वार्णिक–वि०, पु० (सं०) लेखक।

वार्तक, वार्त्तक–पु० (सं०) बटेर।

वार्तमानिक–वि० (सं०) वर्तमानकाल-संबंधी; जो विद्यमान हो।

वार्ता–स्त्री० दे० 'वार्त्ता'।

वार्ताक, वार्त्ताक–पु० (सं०) बैंगन; बटेर। **–शाकट,–शाकिन**–पु० भंटेका खेत।

वार्ताकी, वार्त्ताकी–स्त्री० (सं०) बैंगन।

वार्ताकु, वार्त्ताकु–पु० (सं०) बैंगन।

वार्तीक, वार्त्तीक–पु० (सं०) बटेरका एक भेद।

वार्तीर, वार्त्तीर–पु० (सं०) दे० 'वार्त्तीक'।

वार्त्त–पु० (सं०) स्वास्थ्य, आरोग्य; कल्याण। वि० स्वस्थ; हल्का; निर्बल; असार; कोई पेशा करता हुआ, किसी रोजगारमें लगा हुआ; जीविकायुक्त; साधारण; ठीक।

वार्त्ता–स्त्री० (सं०) ठहरना, रहना; जनश्रुति, अफवाह; घटना; वृत्तांत, हाल; विषय, प्रसंग; बातचीत; ज्ञानवर्द्धक वार्ता (टाक); वृत्ति, जीविका (कृषि, वाणिज्य आदि); दुर्गा; भंटा; अन्य द्वारा खरीदा-बेचा जाना। **–पति**–पु० कामपर लगानेवाला, जीविकाका प्रबंध करनेवाला। **–वह**–पु० दूत; नीति-शास्त्रका आय-व्ययसे संबद्ध भाग; पनसारी। **–वृत्ति**–पु० गृहस्थ,

विशेषकर वैश्य। **–हर,–हर्ता(र्तृ),–हार**–पु० दूत।

वार्त्तानुकर्षक–पु० (सं०) जासूस; दूत।

वार्त्तानुजीवी(विन्)–वि० (सं०) व्यापारसे जीविका चलानेवाला।

वार्त्तायन–पु० (सं०) गुप्तचर; एलची, दूत।

वार्त्तारंभ–पु० (सं०) व्यापार, कारबार।

वार्त्तालाप–पु० (सं०) बातचीत।

वार्त्ताविशेष–वि० (सं०) मृत।

वार्त्तावहन मंत्री–पु० (मिनिस्टर ऑफ कॉम्युनिकेशन्स) डाक-तार विभागका मंत्री।

वार्त्तिक–पु० (सं०) व्याख्या-ग्रंथ (कात्यायन आदिका); किसान; व्यवसायी; वैद्य; व्याख्या; विवाहका भोजन; आचारशास्त्रका अध्ययन करनेवाला; दूत, चर, जासूस; भंटा। वि० व्यवसाय-कुशल; समाचार-संबंधी; व्याख्यात्मक। **–कार**–पु० कात्यायन।

वार्त्तिका–स्त्री० (सं०) व्यवसाय; बटेर।

वार्त्तिकाह्य–पु० (सं०) एक साम।

वार्त्रघ्न–पु० (सं०) अर्जुन, जयंत। वि० इंद्र-संबंधी।

वार्त्रतूर–पु० (सं०) एक साम।

वार्दर–पु० (सं०) दक्षिणावर्त शंख; घोड़ेकी गरदनपरकी दायीं ओरकी भौंरी जो शुभ मानी जाती है; आम्रबीज; कृष्णलाबीज; काकचिंचा; जल; रेशम।

वार्दल–पु० (सं०) वर्षावाला दिन, खराब दिन; मसिपात्र; मसि, स्याही।

वार्दलिका–स्त्री० (सं०) वर्षा ऋतु।

वार्दली–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

वार्द्–पु० (सं०) बादल, मेघ।

वार्द्धक–पु० (सं०) बूढ़ा आदमी; बुढ़ापा; बुढ़ापेकी कमजोरी; बूढ़ोंकी मंडली। **–भाव**–पु० बुढ़ापा।

वार्द्धक्य–पु० (सं०) बुढ़ापा।

वार्द्धि–पु० (सं०) समुद्र। **–भव**–पु० समुद्री नमक।

वार्द्धुष, वार्द्धुषि, वार्द्धुषिक, वार्द्धुषी(षिन्)–पु० (सं०) सूदखोर, अधिक सूद लेनेवाला।

वार्द्धुषी–स्त्री०, **वार्द्धुष्य**–पु० (सं०) सूदखोरी।

वार्द्धेय–पु० (सं०) समुद्री लवण।

वार्द्ध्य–पु० (सं०) बुढ़ापा।

वार्द्ध्र–पु०, **वार्द्ध्री**–स्त्री० (सं०) चमड़ेकी पट्टी, तसमा, चर्मरज्जु।

वार्द्ध्रीणस–पु० (सं०) लंबे कानोंवाला बकरा; एक पक्षी; गैंडा।

वार्बट, वार्वट–पु० (सं०) नाव।

वार्मण–पु० (सं०) कवचोंका समूह।

वार्मिण–पु० (सं०) कवचधारियोंका दल।

वार्मुच–पु० (सं०) बादल; मोथा।

वार्य–वि० (सं०) वारण योग्य, जिसे रोकना, वारण करना हो; वरण करने योग्य; बहुमूल्य; जल-संबंधी। पु० वरदान; संपत्ति; दीवार। **–वृत**–वि० वरके रूपमें प्राप्त।

वार्युद्भव–पु० (सं०) कमल। वि० जलसे उत्पन्न।

वार्योका(कस्)–स्त्री० (सं०) जोंक।

वार्वणा–स्त्री० (सं०) वर्वणा, नीले रंगकी बड़ी मक्खी।

वार्ष–वि० (सं०) वर्षा-संबंधी; वार्षिक।

वार्षक–पु० (सं०) सुद्युम्न द्वारा विभक्त पृथ्वीके दस भागोंमेंसे एक (पु०)।

वार्षगण–पु० (सं०) एक तरहके वैदिक आचार्य।

वार्षभ–वि० (सं०) वृषभ, बैल-संबंधी।

वार्षभानवी–स्त्री० (सं०) वृषभानुकी पुत्री, राधा।

वार्षल–पु० (सं०) शूद्रका पेशा। वि० शूद्र-संबंधी।

वार्षलि–पु० (सं०) शूद्रापुत्र।

वार्षाहर–पु० (सं०) एक साम।

वार्षिक–वि० (सं०) वर्ष-संबंधी; प्रति वर्ष होनेवाला (एनुअल); वर्षा-कालमें होनेवाला; एक वर्ष टिकनेवाला। पु० त्रायमाणा लता।

वार्षिक वित्तविवरण–पु० (एन्नुअल फाइनैनशल स्टेटमेंट) राज्यकी या किसी संस्थाकी वर्षभरकी वित्तीय स्थितिका विवरण।

वार्षिकी–स्त्री० (सं०) त्रायमाणा लता; बेलेका फूल; वर्षमें नियमित रूपसे होनेवाली पूजा आदि; मृत्युकी बरसी; (एन्नुइ-टीज़) वार्षिक रूपसे मिलनेवाली वृत्ति, लाभांश, अनुदान आदि।

वार्षिक्य–वि० (सं०) वर्ष-संबंधी। पु० वर्षाकाल।

वार्षिला–स्त्री० (सं०) ओला, करका।

वार्षी–स्त्री० (सं०) वर्षा ऋतु।

वार्षुक–वि० (सं०) बरसनेवाला, वर्षणशील।

वार्ष्ण–पु० (सं०) कृष्ण।

वार्ष्णेय–पु० (सं०) वृष्णिका वंशज; कृष्ण; नलका सारथि।

वार्ह–वि० (सं०) मोरके पंखसे बना हुआ।

वार्हत–पु० (सं०) बृहती फल, एक तरहका भंटा।

वार्हद्रथ, वार्हद्रथि–पु० (सं०) बृहद्रथका पुत्र, जरासंध।

वार्हस्पत–वि० (सं०) बृहस्पतिसे संबद्ध या उत्पन्न।

वार्हस्पत्य–वि० (सं०) बृहस्पति-संबंधी। पु० बृहस्पतिका शिष्य; नास्तिक; अग्नि; पुष्य नक्षत्र; बृहस्पतिका अर्थशास्त्र।

वार्हिण–वि० (सं०) मयूर-संबंधी।

वालंटियर–पु० (अं०) पुरस्कार या वेतन न लेकर सेना इ० में काम करनेवाला व्यक्ति, स्वयंसेवक।

वाल–पु० (सं०) (घोड़े आदिकी) पूँछके बाल; बाल; एक प्रत्यय, जैसे गयावाल, कोठीवाल, देवाल, लेवाल। **–कूर्चाल**–पु० नये उगते हुए बाल। **–केशी**–स्त्री० एक तरहका यज्ञतृण। **–धान**–पु० पूँछ। **–धि**–पु० पूँछ; एक मुनि; भैंसा। **–नाटक**–पु० एक कदन्न। **–पाशक**–पु० हाथीकी पूँछका एक विशेष भाग। **–पाश्या**–स्त्री० बाल गुहनेकी मोतियोंकी लड़ी। **–पुत्र**–पु० मूँछ। **–प्रिय,–मृग**–पु० गायकी जातिका एक जानवर जिसकी पूँछका चँवर बनता है। **–बंध,–बंधन**–पु० घोड़ेकी पूँछ बाँधनेकी डोरी। **–मात्र**–पु० बालकी मोटाई। **–बीज्य**–पु० जंगली बकरा। **–व्यजन**–पु० चमर। **–हस्त**–पु० पूँछ।

वालक–पु० (सं०) घोड़े या हाथीकी पूँछ; बालछड़; कंगन; अँगूठी।

वालखिल्य–पु० (सं०) दे० 'बालखिल्य'।

वालव–पु० (सं०) एक करण (ज्यो०)।

वाला–स्त्री० (सं०) नारियल; एक तरहकी चमेली; वृत्तविशेष; एक प्रत्यय। वि० (फा०) ऊँचा; बड़ा; बुजुर्ग। **–गुहर,–गौहर**–वि० कुलीन, आलीखानदान। **–जाह**–वि० ऊँचे मरतबे-वाला। **–शान**–वि० ऊँची शानवाला। **–हिम्मत**–वि० बड़ा हिम्मती, साहसी।

वालाक्षी–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

वालाग्र–पु० (सं०) बालकी नोक; एक मान। वि० बालकी नोक जैसा।

वालि–पु० (सं०) एक वानर, सुग्रीवका भाई; एक मुनि। * राजा (बीसल०) दे० 'वाली'।

वालिका–स्त्री० (सं०) मुहरकी अँगूठी, मुद्रा; बालू; कानका एक गहना; पत्तियोंकी सरसराहट; दे० 'बालिका'।

वालिद–पु० (अ०) बाप, पिता। **–बुजुर्गवार**–पु० पूज्य पिता। **–(दे) माजिद**–पु० पूज्य पिता।

वालिदा–स्त्री० (अ०) माँ। **–(दए) मोहतरमा**–स्त्री० पूज्य माता।

वालिदैन–पु० (अ०) माँ-बाप।

वालिनी–स्त्री० (सं०) अश्विनी नक्षत्र।

वाली–स्त्री० (सं०) स्तंभ; एक गहना; गड्ढा। पु० (अ०) मालिक; शासक, राजा; सहायक, संरक्षक; मित्र, दोस्त। **–(लिये)मुल्क**–पु० बादशाह।

वाली(लिन्)–पु० (सं०) एक वानर, सुग्रीवका बड़ा भाई। **–(लि)हंता(तृ)**–पु० राम।

वालुंक–पु०, **वालुंकी**–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ककड़ी।

वालु–पु० (सं०) एलवालु, कपित्थकी छाल; एक गंधद्रव्य।

वालुक–पु० (सं०) एक विष; एक गंधद्रव्य; पनियाला। वि० बालूवाला या बालू जैसा; नमकसे बना हुआ।

वालुकांबुधि–पु० (सं०) मरुभूमि।

वालुका–स्त्री० (सं०) रेत, बालू; चूर्ण; कपूर; ककड़ी; शाखा (हस्त-पाद आदि)। **–गड**–पु० एक तरहकी मछली। **–प्रभा**–स्त्री० एक नरक (जै०)। **–यंत्र**–पु० औषध सिद्ध करनेका यंत्रविशेष।

वालुकात्मिका–स्त्री० (सं०) शर्करा, चीनी।

वालुकाब्धि, वालुकार्णव–पु० (सं०) रेगिस्तान, मरुभूमि।

वालुकेल–पु० (सं०) एक तरहका नमक।

वालुकेश्वर–पु० (सं०) शिव।

वालूक–पु० (सं०) एक विष।

वालेय–पु० (सं०) पुत्र; गधा; एक करंज, अंगार-वल्लरी। वि० वलिसे उत्पन्न; कोमल; भेंट या पूजामें देने योग्य।

वालेह–वि० (अ०) मुग्ध, आसक्त।

वाल्क–वि०, पु० (सं०) दे० 'वाल्कल'।

वाल्कल–वि० (सं०) छालका बना हुआ। पु० छालका बना वस्त्र।

वाल्कली–स्त्री० (सं०) मदिरा।

वाल्गुक–त्रि० (सं०) बहुत सुंदर।

वाल्गुद–पु० (सं०) एक तरहका चमगादड़।

वाल्मिकि–पु० (सं०) दे० 'वाल्मीकि'।

वाल्मीक–त्रि० (सं०) वाल्मीकि द्वारा रचित। पु० चित्रगुप्तका एक पुत्र; दे० 'वाल्मीकि'।

वाल्मीकि–पु० (सं०) रामायणके प्रणेता एक मुनि (ये जातिके ब्राह्मण थे और अयोध्याके राजाओंसे इनका अधिक संबंध था। कहा जाता है कि ये पहले डाकू थे, पर एक ऋषिकी बातोंने इनके विचार बिलकुल पलट दिये और ये ध्यानावस्थित होकर बहुत दिनोंतक एक ही स्थितिमें रहे और वल्मीक (बाँबी)से ढँक गये जिससे इनका उक्त नाम पड़ा। एक दिन स्नान करनेके लिए तमसा किनारे जाते समय एक क्रौंच पक्षीको व्याध द्वारा निहत और क्रौंचीको व्याकुल देखकर इनके मुखसे भावावेशमें एक अनुष्टुप् छंद–'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥' निकल आया और फिर मुख्यतः इसी छंदमें उन्होंने समस्त रामायणकी रचना की।)

वाल्मीकीय–वि० (सं०) वाल्मीकि-संबंधी; वाल्मीकि प्रणीत।

वाल्लभ्य–पु० (सं०) प्यार; प्रिय होनेका भाव; लोकप्रियता।

वाल्हा*–पु० प्रियतम, वल्लभ–'मीरा कहे गोपिनको वाल्हो, हमसूँ भयो ब्रह्मचारी'–मीरा।

वावदूक–पु० (सं०) कुशल वक्ता; बातूनी व्यक्ति।

वावय–पु० (सं०) एक तरहकी तुलसी।

वावुट–पु० (सं०) नाव, बेड़ा।

वावृत्त–वि० (सं०) चुना हुआ; नियुक्त।

वावैला–पु० (अ०) रोना-पीटना, क्रंदन, ऊँची आवाजमें किया जानेवाला विलाप (–मचाना)।

वाश–पु० (सं०) एक साम।

वाशक–वि० (सं०) चिल्लाने, निनाद करनेवाला; रोनेवाला। पु० अड़ूसा।

वाशन–पु० (सं०) गीदड़ों आदिका बोलना, चिड़ियोंका चहचहाना; मक्खियोंका भनभनाना। वि० चिल्लानेवाला, शब्द करनेवाला।

वाशा, वाशिका–स्त्री० (सं०) अड़ूसा।

वाशि–पु० (सं०) आग, अग्निदेव।

वाशित–पु० (सं०) शब्द, ध्वनि (पशु, पक्षीकी)। वि० चिल्लाया, शब्द किया हुआ।

वाशिता–स्त्री० (सं०) वह हथिनी, गाय या अन्य मादा पशु जिसे नरकी इच्छा हो; पत्नी; स्त्री। **–गृष्टि**–स्त्री० जवान हथिनी।

वाशिष्ठ–पु० (सं०) एक उपपुराण; एक प्राचीन तीर्थ। वि० वशिष्ठ-संबंधी।

वाशिष्ठी–स्त्री० (सं०) गोमती नदी।

वाशी–स्त्री० (सं०) नोकदार छुरा, कुल्हाड़ी आदि (वै०); स्वर, आवाज। वि० (अ०) झूठा; निन्दक, चुगलखोर; छिद्रान्वेषी।

वाशुदा–वि० (फा०) विकसित, प्रफुल्ल, शिगुफ्ता।

वाशुरा–स्त्री० (सं०) रात्रि।

वाश्र–पु० (सं०) चौराहा; मकान; दिन; बैल; गोबर।

वाश्रा–स्त्री० (सं०) सवत्सा गौ; माता।

वाष्कल–वि० (सं०) बड़ा। पु० योद्धा।

वाष्प–पु० (सं०) भाफ; आँसू; उष्मा; भटकटैया; लोहा; गौतम बुद्धका एक शिष्य। **–कंठ**–वि० जिसका कंठ वाष्पसे भर आया हो। **–तापन**–पु० (फोमेंटेशन) दे० 'प्रस्वेदन'। **–दुर्दिन**–वि० वाष्पाच्छन्न (नेत्र)। **–पूर**–पु० आँसुओंकी बाढ़। **–प्रकर**–पु० अश्रुधार। **–मुख**–वि० जिसका मुख आँसुओंसे गीला हो। **–मोक्ष,–मोक्षण**–पु० अश्रुपात। **–वृष्टि**–स्त्री० आँसुओंकी वर्षा। **–शील**–वि० (वोलैटाइल) (द्रव) जो शीघ्रतापूर्वक वाष्प बनकर उड़ जाय; अस्थिर (ला०)। **–स्नान**–पु० (एयर बाथ) खौलते पानीकी भाप शरीरपर लेना।

वाष्पक–पु० (सं०) एक साग, मरसा।

वाष्पका–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्री।

वाष्पन, वाष्पायन–पु० (वैपाराइजेशन) वाष्पमें परिणत कर देना।

वाष्पांबु–पु० (सं०) अश्रुजल।

वाष्पाकुल–वि० (सं०) जो आँसुओंके कारण धुंधला हो गया हो।

वाष्पाविलेक्षण–वि० (सं०) जिसकी आँखें आँसुओंसे धुंधली हो गयी हों।

वाष्पासार–पु० (सं०) अश्रुवृष्टि।

वाष्पिका–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्री।

वाष्पित्र–पु० (बॉइलर) इंजनका भाप तैयार करनेवाला भाग।

वाष्पी, वाष्पीका–स्त्री० (सं०) दे० 'वाष्पिका'।

वाष्पीकरण–पु० (इवैपोरेशन) किसी पदार्थका, विशेषकर द्रवपदार्थका, वाष्परूपमें परिणत होना, भाप बन जाना।

वासंत–पु० (सं०) कोकिल; ऊँट; मलय पवन; मूँग; मैनफल; जवान हाथी या और कोई जानवर; व्यभिचारी पुरुष। वि० वसंती, वसंतमें उत्पन्न या उससे संबद्ध; युवा; परिश्रमी, कार्यमें संलग्न रहनेवाला।

वासंतक–वि० (सं०) वसंत-संबंधी; वसंतमें बोया हुआ।

वासंतिक–पु० (सं०) विदूषक; भाँड़; नर्तक; अभिनेता; वसंतोत्सव। वि० वसंत-संबंधी; वसंतकालीन।

वासंतिकता–पु० (सं०) वसंतका आनंद।

वासंती–स्त्री० (सं०) जूही; माधवी; नेवारी; गनियारी; मदनोत्सव; दुर्गा; एक वृत्त; एक रागिनी।

वासंदर–स्त्री० (सं०) अग्नि।

वासःकुटी–स्त्री० (सं०) खेमा, पटसदन।

वासःखंड–पु० (सं०) कपड़ेका टुकड़ा, चिथड़ा।

वासःपल्पूली–पु० (सं०) कपड़ा धोनेवाला।

वास–पु० (सं०) निवास, रहना; घर, मकान; कपड़ा, पोशाक; अवस्थिति, स्थान; अड़ूसा; सुगंध; गंध; एक दिनकी यात्रा; पत्रक। **–कर्णी**–स्त्री० यज्ञशाला। **–गृह,–गेह,–भवन,–वेश्म(न्)**–पु० अंतःपुर, शयनागार। **–धृक्**–वि० वस्त्र धारण करनेवाला। **–पर्याय**–पु० रहनेकी जगहका परिवर्तन। **–यष्टि**–स्त्री० पालतू पक्षियोंके लिए बनी हुई छतरी। **–योग**–पु० कई द्रव्योंका मिश्रित चूर्ण; अबीर। **–व्यवस्था**–स्त्री० (ऐक्कोमोडेशन) रहने या ठहरनेका स्थान, सुविधा या प्रबंध। **–सज्जा**–स्त्री० दे० 'वासकसज्जा'।

वास(स्)–पु० (सं०) वस्त्र; बाणका पंख; रुई; परदा; मकड़ेका जाल; रातमें रहनेका स्थान।

वासक–पु० (सं०) वस्त्र; गंध; अड़ूसा; वासर दिन; वासस्थान; शयनागार; ध्रुवकका एक भेद; एक गानांग। वि० बासने, सुगंधित करनेवाला; रहनेके लिए प्रेरित करनेवाला। **–सज्जा,–सज्जिका**–स्त्री० शृंगार करके नायककी प्रतीक्षा करनेवाली नायिका।

वासका–स्त्री० (सं०) अड़ूसा; शयनागार।

वासकेट–पु० दे० 'वास्कट'।

वासत–पु० (सं०) गधा।

वासतेय–वि० (सं०) रहने, बसने योग्य।

वासतेयी–स्त्री० (सं०) रात।

वासन–पु० (सं०) वासना, सुगंधित करना; वस्त्र; वास; बसाना;

ज्ञान; जलपात्र; संदूक; मंजूषा; योगका एक आसन। वि० वास-संबंधी; रहने योग्य।

वासना–स० क्रि० दे० 'बासना'। स्त्री० (सं०) संस्कार; भावना; कल्पना; इच्छा, कामना; अज्ञान, भ्रम, मिथ्या-संस्कार; स्मृति-हेतु; प्रमाण; एक छंद; प्रत्याशा; आस्था; ज्ञान; दुर्गा; अर्ककी पत्नी।

वासनीय–वि० (सं०) जो माथापच्ची करनेपर समझमें आये।

वासयिता(तृ)–पु० (सं०) वस्त्राच्छादित करनेवाला; रक्षा करनेवाला।

वासर–पु० (सं०) दिन; एक नाग; नवदंपतीका पहली रातका शयनमंदिर; बारी। वि० प्रातःकाल-संबंधी। **–कन्यका**–स्त्री० रात्रि। **–कृत्,–मणि**–पु० सूर्य। **–संग**–पु० प्रातःकाल।

वासराधीश, वासरेश–पु० (सं०) सूर्य।

वासव–पु० (सं०) इंद्र; धनिष्ठा नक्षत्र। वि० वसु-संबंधी; इंद्र-संबंधी। **–चाप**–पु० इंद्रधनुष्। **–ज**–पु० अर्जुन; जयंत; बालि। **–दिक्(श्)**–स्त्री० पूर्व दिशा।

वासवावरज–पु० (सं०) विष्णु।

वासवावास–पु० (सं०) आकाश।

वासवाशा–स्त्री० (सं०) पूर्व दिशा।

वासवि–पु० (सं०) इंद्रपुत्र–अर्जुन, जयंत, बालि।

वासवी–स्त्री० (सं०) व्यासकी जननी, मत्स्यगंधा, सत्यवती; इंद्रकी शक्ति, शची, इंद्राणी।

वासवेय–पु० (सं०) वासवीपुत्र, व्यास।

वासा–स्त्री० (सं०) अड़ूसा; माधवी लता।

वासागार–पु० (सं०) दे० 'वासगृह'।

वासात्य–वि० (सं०) उषाकालीन।

वासामात्य–पु० (सं०) (रेजिडेन्ट) अन्य राज्यमें शासन आदिपर दृष्टि रखनेके लिए नियुक्त राज्य अधिकारी।

वासायनिक–वि० (सं०) घर-घर घूमनेवाला।

वासि–पु० (सं०) बसूला; वास, रहना।

वासिक़–वि० (अ०) दृढ़, मजबूत।

वासिका–स्त्री० (सं०) वासक।

वासित–वि० (सं०) बसाया, सुगंधित किया हुआ; मसाला डाला हुआ; कपड़ेसे ढका, वस्त्राच्छादित; ठहराया हुआ, रोका हुआ; किसी स्थानपर बसाया हुआ; प्रसिद्ध; रखनेवाला, युक्त; बासी, जो ताजा न हो। पु० बसानेकी या आबादी घनी करनेकी हिकमत; स्मृतिजन्य ज्ञान, संस्कार; पक्षियोंका कलरव। (अ०) बिचुआ, मध्यस्थ; घटक; अरबका एक नगर।

वासिता–स्त्री० (सं०) स्त्री; आर्या छंदका एक उपभेद; दे० 'वाशिता'।

वासिफ़–वि० (अ०) वसफ, प्रशंसा करनेवाला।

वासिल–वि० (अ०) पहुँचनेवाला, मिलनेवाला; संयोगी (प्रेमी); जुड़ा, मिला हुआ; जो वसूल हो चुका हो। **–नवीस**–पु० तहसीलका कर्मचारी जो वसूलशुदा और बाकी मालगुजारीका हिसाब रखता है। **–बाकी**–स्त्री० वसूल हो चुकी और बाकी रकमें; ऐसी रकमोंका हिसाब।

वासिलात–स्त्री० वसूली, वसलशुदा रकमोंका जोड़।

वासिष्ठ–वि० (सं०) वसिष्ठ-संबंधी; वसिष्ठ द्वारा रचित या दृष्ट। पु० रक्त, खून; वसिष्ठके पुत्र।

वासिष्ठी–स्त्री० (सं०) गोमती नदी।

वासी–स्त्री० (सं०) तक्षणी, बसूला आदि।

वासी(सिन्)–वि० (सं०) रहनेवाला, अधिवासी; सुगंधित; वस्त्राच्छादित।

वासुंधरेय–पु० (सं०) एक नरक।

वासुंधरेयी–स्त्री० (सं०) सीता।

वासु–पु० (सं०) आत्मा; परमात्मा; विष्णु; पुनर्वसु नक्षत्र। **–पूज्य**–पु० एक जिन। **–भद्र**–पु० कृष्ण। **–मंद**–पु० दो साम।

वासुकि–पु० (सं०) एक देवता; आठ प्रमुख नागराजोंमेंसे एक (समुद्र-मंथनमें इसका रज्जुके रूपमें उपयोग किया गया था)। **–सुता**–स्त्री० सुलोचना।

वासुकी–पु० दे० 'वासुकि'।

वासुकेय–पु० (सं०) वासुकि। **–स्वसा(सृ)**–स्त्री० वासुकिकी बहन, मनसा देवी।

वासुदेव–पु० (सं०) वसुदेव-पुत्र, कृष्ण; अश्व; पीपल वृक्ष (बो०); एक उपनिषद्। वि० कृष्ण-संबंधी। **–धर्म**–पु० कृष्णोपासक एक प्राचीन धार्मिक सम्प्रदाय। **–प्रियंकरी**–स्त्री० शतावरी। **–प्रिय**–पु० कार्त्तिकेय।

वासुदेवक–पु० (सं०) कृष्ण; कृष्णका उपासक; वासुदेव नामको कलंकित करनेवाला।

वासुदेवी–स्त्री० (सं०) शतावरी।

वासुरा–स्त्री० (सं०) स्त्री; हथिनी; रात; भूमि।

वासू–स्त्री० (सं०) बालाओंका संबोधन (ना०)।

वासोख़्त–पु० (फा०) विरक्ति, बेजारी; मुसद्दसके रूपमें लिखित काव्य जिसमें नायिकाकी निंदा और अपनी वेदनाका वर्णन हो। **–अमानत**–पु० 'अमानत' लखनवीरचित उर्दूका एक प्रसिद्ध काव्य।

वासोख़्ता–वि० (फा०) जला हुआ; दिलजला।

वासोद–वि० (सं०) कपड़ा देनेवाला।

वासोभृत्–वि० (सं०) वस्त्र धारण करनेवाला।

वासौक(स्)–पु० (सं०) वासगृह।

वास्कट–स्त्री० (अं० 'वेस्टकोट') फतुही, बिना आस्तीनका परिधान जिसे कोटके नीचे और कमीजके ऊपर पहनते हैं।

वास्त–वि० (सं०) बकरेसे प्राप्त या संबद्ध।

वास्तव–वि० (सं०) यथार्थ, सत्य, निश्चित। पु० असल तत्त्व, परमार्थभूत वस्तु। **–में**–सत्यतः, यथार्थतः, सचमुच।

वास्तविक–वि० (सं०) (रीअल) सत्य, परमार्थभूत; यथार्थ, ठीक। पु० यथार्थवादी; माली।

वास्तविकता–स्त्री० (सं०) यथार्थता, सच्ची स्थिति।

वास्तवोषा–स्त्री० (सं०) रात्रि।

वास्तव्य–वि० (सं०) (निकम्मा समझकर) किसी स्थानपर छोड़ा हुआ; बसा हुआ, आबाद; रहनेवाला; वास योग्य। पु० बस्ती।

वास्ता–पु० (अ०) संबंध, लगाव; नाता; मित्रता; जरिया; काम, सरोकार; बिचुआ, मध्यस्थ। मु० **–देना**–बीचमें डालना; शपथ देना, दुहाई देना। **–पड़ना**–काम पड़ना; सरोकार होना।

वास्तिक–पु० (सं०) पु० बकरोंका झुंड।

वास्तु–पु० (सं०) मकान बनाने योग्य स्थान; गृह, भवन; मकानकी नींव; कमरा; एक वसु; बथुआ; पुनर्नवा; एक अन्न। **–कर्म(न्)**–पु० गृहनिर्माण। **०–कार, ०–ज्ञ**–पु० (आर्किटेक्ट) इमारत, पुल आदि बनानेकी कला जाननेवाला। **–कला**–स्त्री० (आर्किटेक्चर) गृहनिर्माण कला। **–काल**–पु० गृह-निर्माणके लिए उपयुक्त समय। **–कालिंग**–पु० तरबूज, कलींदा (?)। **–कीर्ण**–पु० एक तरहका पटमंडप। **–ज**–वि० गृहज, घरेलू। **–ज्ञान**–पु० गृह-निर्माणकी विद्या। **–देव, –देवता**–पु० गृहदेवता। **–नर**– पु० देवतारूपमें माना हुआ आदर्श भवन। **–प,–पति,–पुरुष**– पु० घरवाले स्थानका देवता। **–पूजा**–स्त्री० वास्तुदेवकी पूजा। **–प्रशमन,–शमन**–पु० घरकी शुद्धि या संस्कार। **–बंधन,–विधान** –पु० गृहनिर्माण। **–याग**–पु० दे० 'वास्तुशांति'। **–विद्या**– स्त्री०,**–शास्त्र**–पु० गृहनिर्माण-संबंधी विद्या। **–शांति**–स्त्री० गृह-प्रवेशके समय किया जानेवाला शांतिकर्म। **–शाक**–पु० बथुआ। **–संपादन**–पु० भवन-निर्माण। **–स्थापन**–पु० भवन-निर्माण।

वास्तुक–पु० (सं०) बथुआ; पुनर्नवा।

वास्तुकी–स्त्री० (सं०) एक साग।

वास्तूक–पु० (सं०) बथुआ।

वास्तूपशम, वास्तूपशमन–पु० (सं०) दे० 'वास्तु-प्रशमन'।

वास्ते–अ० (अ०) लिए, हेतु, कारण।

वास्तेय–वि० (सं०) आबाद करने योग्य, बसाने योग्य; वस्ति, वस्तु या वास्तु-संबंधी।

वास्तोष्पति–पु० (सं०) वास्तुपति; इंद्र।

वास्त्र–वि० (सं०) वस्त्रसे बना हुआ; वस्त्रसे ढका हुआ। पु०

वस्त्राच्छादित रथ ।

वास्प–पु० (सं०) भाप; गरमी; लोहा ।

वास्पेय–पु० (सं०) नागकेसर ।

वास्य–वि० (सं०) आच्छादित करने योग्य; बसाये जाने योग्य । पु० कुल्हाड़ा ।

वास्त्र–पु० (सं०) दिन ।

वाह–वि० (सं०) खींचने या ले जानेवाला; बहता हुआ (समासके अंतमें) । पु० ले जाना, ढोना; वाहन, सवारी; भारवाहक पशु, घोड़ा, बैल, भैंसा आदि; वायु; मोटिया; लादकर, खींचकर ले जानेवाला; धारा; एक प्राचीन यान; बाहु; एक पुरानी तौल । **–द्विषन्(त्),–रिपु**–पु० भैंसा । **–श्रेष्ठ**–पु० घोड़ा ।

वाह–अ० (फा०) साधु, धन्य, शाबाश, प्रशंसासूचक अव्यय, कभी-कभी आश्चर्य और व्यंग्यमें निंदाका भाव भी प्रकट करता है । **–वाह**–अ० साधु-साधु, धन्य-धन्य, क्या कहना है ! **–वाही**–स्त्री० वाह-वाह होना, बहुतोंके मुँहसे वाह-वाह निकलना, साधुवाद ।

वाहक–वि० (सं०) ढोने, ले जानेवाला; बहानेवाला; गति प्रदान करनेवाला । पु० बोझ ढोनेवाला, भारवाहक; सारथि या आरोही; एक विषैला कीड़ा । **–तरंग**–स्त्री० नियत आयाम और आवृत्तिकी रेडियो तरंग जो रेडियोप्रेषीसे प्रसारित की जाती है; वाहक तरंगपर ही माइक्रोफोनकी चढ़ाव उतारवाली धाराको आरूढ़ कराकर उसे संग्राही यंत्र तक पहुँचाया जाता है । **–चेक(धनादेश)**–पु० (बेयरर चेक) वह चेक जिसका रुपया किसी भी ऐसे व्यक्तिको दिया जा सकता है जो उसे ले जाकर बैंकके सामने उपस्थित करे । **–नलिका**–स्त्री० (जाइनिंग ट्यूब) एक पात्रसे दूसरे पात्रमें ले जाने, पहुँचानेवाली नलिका ।

वाहन–पु० (सं०) घोड़ा, रथ या अन्य कोई सवारी; ढोना; ले जाना; सवारीके काम आनेवाला या माल ढोनेवाला जानवर; हाथी; प्रयत्न, उद्योग करना । **–कार**–पु० रथादि बनानेवाला । **–प**–पु० भारवाही पशुकी देखरेख करनेवाला, साईस । **–श्रेष्ठ**–पु० घोड़ा ।

वाहना–स्त्री० (सं०) सेना । * स० क्रि० दे० 'बाहना' ।

वाहनिक–पु० (सं०) भारवाहक पशुओंके पालन आदिका पेशा करनेवाला ।

वाहनीय–पु० (सं०) भारवाहक पशु ।

वाहला–स्त्री० (सं०) धारा, प्रवाह, स्रोत ।

वाहला, वाहली–स्त्री० * छोटी नदी (बीसल०); दे० 'वाहला' (सं०) ।

वाहस–पु० (सं०) अजगर; झरना; अग्नि; एक साग ।

वाहा–स्त्री० (सं०) बाहु ।

वाहावाहवि–अ० (सं०) हाथसे हाथ, दस्त-बदस्त, आमने-सामने (भिड़ना) ।

वाहावाहवी–स्त्री० (सं०) बाहुयुद्ध ।

वाहि–पु० (सं०) ढोना, ले जाना ।

वाहिक–पु० (सं०) छकड़ा, गाड़ी; ढोल, नगाड़ा; भारवाहक ।

वाहिका–स्त्री० (सं०) (वेसल) रक्तवाहिनी शिरा ।

वाहित–वि० (सं०) ढोया हुआ, वहन किया हुआ; व्यतीत किया हुआ; प्रवाहित; चालित, चलाया हुआ; वंचित; नष्ट किया हुआ; जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो । पु० भारी बोझ ।

वाहिता(तृ)–पु० (सं०) चलानेवाला, नायक ।

वाहित्थ–पु० (सं०) गजकुंभके नीचेका हिस्सा, हाथीके मस्तकका बीचका हिस्सा ।

वाहिद–वि० (अ०) एक, अकेला, अद्वय । पु० एककी संख्या; खुदाका एक नाम ।

वाहिदिया–पु० मुसलमानोंका एक संप्रदाय ।

वाहिनी–स्त्री० (सं०) सेना; सेनाका एक विभाग, (डिवीजन) (८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े, ४०५ पैदल); नदी; वहन करनेवाली नली । **–निवेश**–पु० सेनाका पड़ाव, शिविर । **–पति**–पु० सेनानायक; नदीश, समुद्र । (ब्रिगेडियर) वह सेना नायक जो वाहिनी (ब्रिगेड) का नेतृत्व करे; **–य**–वि० (वैस्क्यूलर) शरीरकी वाहिनियोंसे सम्बद्ध । **–हीन ग्रंथि**–स्त्री० (डक्टलेस ग्लैंड) ऐसी ग्रन्थि जिससे उत्पन्न होनेवाले हार्मोन शरीरमें सीधे ही पहुँच जाते हैं–इसके लिए किसी वाहिनीकी आवश्यकता नहीं पड़ती; थायरॉयड ग्रन्थि एक वाहिकाहीन ग्रन्थि है ।

वाहिनीक–पु० (सं०) दे० 'वाहिनी' ।

वाहिनीश–पु० (सं०) सेनानायक ।

वाहिम–वि० (अ०) वहम करनेवाला; सोचने, कल्पना करनेवाला ।

वाहिमा–स्त्री० (अ०) कल्पना-शक्ति ।

वाहियात–वि० (फा०) 'वाहीयत'का बहु०, बेहूदा, निकम्मी (बातें) । स्त्री० खुराफात; बदमाशी, आवारगी ।

वाही–वि० (अ०) टूटा-फूटा हुआ; कमजोर; निकम्मा; बेहूदा, बेसिर-पैरकी (बात); आवारा, बदचलन; अश्लील, गंदा । **–तबाही**–वि० निरर्थक, बेहूदा (बातें) (–बकना, हांकना) ।

वाही(हिन्)–वि० (सं०) वहन करनेवाला, ढोनेवाला; बहनेवाला; बहानेवाला; उत्पन्न करनेवाला; पूरा करनेवाला । पु० रथ ।

वाहीक–पु० (सं०) दे० 'बाहीक' ।

वाहु–स्त्री० (सं०) दे० 'बाहु' ।

वाहुक–पु० (सं०) दे० 'बाहुक' ।

वाहुल–पु० (सं०) कार्त्तिक मास; शाक्यमुनिका पुत्र ।

वाहुवार–पु० (सं०) बहेड़ेका पेड़ ।

वाह्य–पु० (सं०) यान, सवारी; घोड़ा, हाथी आदि भारवाहक पशु । वि० खींचा, ढोया या चढ़ा जानेवाला; दे० 'बाह्य' । **–आतिथ्य**–पु० विदेशी माल ।

वाह्यक–पु० (सं०) रथ ।

वाह्यकी–स्त्री० (सं०) एक विषैला कीड़ा ।

वाह्यांतर–वि० (सं०) बाहर-भीतरका । अ० बाहर-भीतर ।

वाह्याली–स्त्री० (सं०) घोड़ेके लायक बनी हुई सड़क ।

वाह्येंद्रिय–स्त्री० (सं०) बाह्य विषयोंका ग्रहण करनेवाली पाँच ज्ञानेंद्रियाँ (आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा) ।

वाह्लि–पु० (सं०) दे० 'बाल्हीक' । **–ज**–पु० बलखका घोड़ा ।

वाह्लीक–पु० (सं०) दे० 'बाल्हीक' ।

विंख–पु० (सं०) घोड़ेका खुर ।

विंगेश–पु० (सं०) अग्नि ।

विंजामर–पु० (सं०) आँखका सफेद हिस्सा ।

विंजोली–स्त्री० (सं०) श्रेणी, कतार ।

विंद–पु० (सं०) दिनका भागविशेष; प्राप्ति, लाभ; एक राजा (अवंती); धृतराष्ट्रका एक पुत्र; * समूह; विंदु ।

विंदक–पु० (सं०) प्राप्त करनेवाला; * जाननेवाला, वेत्ता ।

विंदु–वि० (सं०) बुद्धिमान्, चतुर; उदार; प्राप्त करनेवाला । पु० एक बूंदका परिमाण; हाथीके शरीरपर बनायी हुई रंगकी बिंदी; अनुस्वारका चिह्न; शून्य; जलानेसे बना हुआ बिंदी जैसा चिह्न; भौंहोंके बीच बनी हुई बिंदी; रत्नका एक दोष; दंतक्षत; छोटा टुकड़ा; मूंजका धुआँ; (पाइंट) रेखागणितमें वह अत्यंत छोटा कल्पित स्थान जिसमें केवल स्थिति हो, किंतु लंबाई, चौड़ाई, मोटाई न हो । **–चित्रक**–पु० सफेद चित्तियोंवाला हिरन । **–तीर्थ**–पु० काशीका पंचनदतीर्थ । **–त्रिवेणी**–स्त्री० स्वर साधनकी एक प्रणाली (सं०) । **–पातक**–पु० (ड्रॉपर) आँख, कान, आदिमें दवा छोड़नेकी शीशेकी वह नलिका जिसमें ऊपरकी ओर रबड़ लगा रहता है (इसे दबानेसे एक-एक बूंद टपकानेमें आसानी होती है) । **–माधव**–पु० काशीकी एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति । **–मालिनी**–स्त्री० एक कर्नाटकी रागिनी । **–राजि**–पु० बुंदकियोंवाला एक सर्प । **–रेख**–पु० अंकनकी एक प्रक्रिया । **–सर**–पु० कैलाश पर्वतके दक्षिण एक सरोवर । दे० 'बिंदु' (समास भी) ।

विंदुक–पु० (सं०) माथेका टीका या बिंदी; (ड्रापर) बूंद बूंद डालनेकी शीशेकी पिचकारी ।

विंदुर*–पु० बुंदकी ।

विंध*–पु० विंध्याचल पर्वत ।

विंधपत्र–पु०, **विंधपत्री**–स्त्री० (सं०) ज्वरापहा नामक पौधा ।

विंध्य–पु० (सं०) भारतके मध्यमें स्थित एक पर्वतश्रेणी जो उत्तर

भारतको दक्षिणसे अलग करती है और पूर्वीघाट तथा पश्चिमी घाट नामक पहाड़ोंके उत्तरी सिरेतक पहुँच गयी है। **–कूट,–कूटक,–कूटन**–पु० अगस्त्य मुनि। **–कैलासवासिनी**–स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति। **–गिरि,–पर्वत,–शैल**–पु० विंध्यश्रेणी। **–चूलिक**– पु० विंध्य पर्वतके दक्षिणमें बसनेवाली एक जाति; उक्त प्रदेश। **–निलया**–स्त्री० दुर्गाकी एक मूर्ति। **–निवासी(सिन्)**–पु० दे० 'विंध्यवासी'। **–वासिनी**–स्त्री० देवीकी एक मूर्ति। **–वासी(सिन्),–स्थ**–पु० व्याडि मुनि। वि० विंध्यपर रहनेवाला।

विंध्या–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची; लवली नामक पौधा।

विंध्याचल–पु० (सं०) विंध्य पर्वत; विंध्य पर्वतकी एक शाखापर स्थित एक बस्ती जहाँ विंध्यवासिनी देवीका मंदिर है।

विंध्याटवी–स्त्री० (सं०) विंध्य पर्वतपरका जंगल।

विंध्याद्रि–पु० (सं०) विंध्य पर्वत।

विंध्यारि–पु० (सं०) अगस्त्य मुनि।

विंध्यावली–स्त्री० (सं०) राजा बलिकी स्त्री जो बाणकी माता थी।

विंब–पु० (सं०) दे० 'बिंब'।

विंबक–पु० (सं०) दे० 'बिंबक'।

विंबट–पु० (सं०) दे० 'बिंबट'।

विंबा, विंबी–स्त्री० (सं०) दे० 'बिंबा'।

विंबिका–स्त्री० (सं०) दे० 'बिंबिका'।

विंबित–वि० (सं०) दे० 'बिंबित'।

विंबु–पु० (सं०) दे० 'बिंबु'।

विंबाष्ठ, विंबौष्ठ–वि०, पु० (सं०) दे० 'बिंबोष्ठ'।

विंश–वि० (सं०) बीसवाँ। पु० बीसवाँ भाग।

विंशक–वि० (सं०) जिसमें बीसकी वृद्धि की गयी हो; जिसमें बीस भाग हों; बीस।

विंशत–वि० (सं०) बीस (कुछ समस्त पदोंमें)।

विंशति–वि० (सं०) बीस; बीसकी संख्याका। स्त्री० बीसकी संख्या; बीसकी संख्याका सूचक अंक, २०; एक प्रकारका व्यूह। **–प**–पु० बीस गाँवोंका स्वामी। **–बाहु,–भुज**–पु० रावण। **–वार्षिक**–वि० बीस वर्ष टिकनेवाला।

विंशतिम–वि० (सं०) बीसवाँ।

विंशतीश, विंसतीशी(शिन्)–पु० (सं०) बीस गाँवोंका स्वामी।

विंशद्बाहु–पु० (सं०) रावण।

विंशी(शिन्)–वि० (सं०) जिसमें बीस हिस्से हों।

विंशोत्तरी–स्त्री० (सं०) मनुष्यकी १२० वर्ष आयु मानकर शुभाशुभ जाननेकी विशेष रीति (ज्यो०)।

विःक्रुंघिका–स्त्री० (सं०) मेढ़कोंकी बोली; कर्कश ध्वनि।

वि–उप० (सं०) एक उपसर्ग जो शब्दोंके पूर्व लगनेपर पार्थक्य (वियोग), कार्यवैपरीत्य (विक्रय, विस्मरण), भाग या अंशीकरण (विभाग), अंतर (विशेष), क्रम (विधा), प्रतिकूलता (विरोध), आधिक्य (विध्वंस), निषेध या राहित्य (विमल), परिवर्तन (विकार) आदिका सूचन करता है। पु० घोड़ा; अन्न; आकाश; आँख। पु०, स्त्री० पक्षी।

विकंकट–पु० (सं०) गोखरू।

विकंकत–पु० (सं०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ीसे श्रुवा बनाते थे, श्रुवावृक्ष, कंटाई, किंकिणी।

विकंकता–स्त्री० (सं०) अतिबला।

विकंटक–पु० (सं०) जवासा; विकंकट।

विकंप–वि० (सं०) काँपता हुआ, चंचल, अस्थिर।

विकंपन–पु० (सं०) एक राक्षस; (सूर्यका) काँपना, गति।

विकंपित–वि० (सं०) काँपता हुआ, अस्थिर। पु० मंद पड़ते हुए स्वरका एक भेद; स्वरोंका सदोष उच्चारण।

विकंपी–स्त्री० (सं०) एक श्रुति (संगीत)।

विकंपी(पिन्)–वि० (सं०) काँपता हुआ, हिलता हुआ।

विक–पु० (सं०) तुरंतकी ब्यायी हुई गायका दूध, पेयूष।

विकच–पु० (सं०) ध्वजा; एक धूमकेतु; एक दानव, बालोंका समूह, लट; एक तरहका बौद्ध सन्न्यासी। वि० खिला हुआ, विकसित; फैला हुआ; केशहीन, बिना बालोंका; जो बिलकुल स्पष्ट हो गया हो।

विकचा–स्त्री० (सं०) एक क्षुप, महामुंडी, कदंबपुष्पी।

विकचित–वि० (सं०) खुला हुआ; खिला हुआ।

विकच्छ–वि० (सं०) (वह नदी) जिसके किनारे दलदल न हो।

विकट–वि० (सं०) भद्दा; विशाल; भयंकर; दुर्गम; बड़ा, विस्तृत; घमंडी; सुंदर; टेढ़ा; मुश्किल; लंबे दाँतोंवाला, दंतुर; विकृत; अस्पष्ट। पु० सोमलता; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; स्कंदका एक अनुचर; फोड़ा, अर्बुद; बैठनेकी एक मुद्रा; एक विष। **–मूर्ति**–वि० भद्दी शक्लवाला। **–वदन**–वि० भद्दी शक्लवाला। पु० दुर्गाका एक अनुचर। **–विषाण,–शृंग**–पु० बारहसिंघा।

विकटक–वि० (सं०) जिसके शरीरकी आकृति खराब हो गयी हो।

विकटा–स्त्री० (सं०) बुद्धकी जननी, मायादेवी; टेढ़े पैरोंवाली लड़की जो विवाहके योग्य न हो।

विकटाकृति–वि० (सं०) भयावनी शक्लवाला।

विकटाक्ष–वि० (सं०) डरावनी आँखोंवाला।

विकटानन–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र। वि० जिसकी शक्ल भद्दी हो।

विकत्थन–वि० (सं०) डींग मारनेवाला। पु० डींग मारना; व्यंग्य; मिथ्या श्लाघा; प्रशंसा।

विकत्था–स्त्री० (सं०) डींग; प्रशंसा; मिथ्या प्रशंसा; व्यंग्य; उद्घोषणा।

विकत्थी(त्थिन्)–वि० (सं०) डींग मारनेवाला।

विकथा–स्त्री० (सं०) बेकार, बेसिर-पैरकी बात; कुत्सित बात (जै०); विशिष्ट बात।

विकद्रु–पु० (सं०) एक यादव।

विकर–पु० (सं०) रोग; युद्धका एक तरीका; तलवारका एक हाथ। वि० हस्तहीन (दंडके कारण)।

विकरण–वि० (सं०) ज्ञानेंद्रियोंसे हीन। पु० धातु और प्रत्ययके बीचका वर्णागम।

विकरार*–वि० विकराल, भयंकर; विकल, व्याकुल।

विकराल–वि० (सं०) भीषण, भयंकर।

विकराला–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

विकराली(लिन्)–वि० (सं०) गरम, तप्त। पु० ताप।

विकर्ण–पु० (सं०) कर्णका एक पुत्र; दुर्योधनका एक भाई; एक साम; एक प्रकारका बाण, रेखागणितमें चतुर्भुजको दो भागोंमें विभक्त करनेवाली रेखा (डायगनल)। वि० बड़े कानोंवाला; कर्णरहित; बहरा।

विकर्णक–पु० (सं०) गँठिवनका एक भेद; शिवका एक गण।

विकर्णिक–पु० (सं०) सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी ईंट (यज्ञ-वेदी बनानेके काम आनेवाली)।

विकर्णी(र्णिन्)–पु० (सं०) एक तरहका बाण।

विकर्तन–पु० (सं०) सूर्य; मदार; पिताको राज्यच्युत कर स्वयं राजा बननेवाला पुत्र। वि० काटनेवाला, खंड करनेवाला।

विकर्म(न्)–पु० (सं०) निषिद्ध, अनुचित कर्म; विभिन्न प्रकारके कार्य; कामसे अवसर ग्रहण करना। **–क्रिया**–स्त्री० अविहित या अधार्मिक कार्य। **–स्थ**–वि०, पु० वेद-विरुद्ध कार्य करनेवाला; पापी।

विकर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) दुराचारी, कर्मभ्रष्ट; कर्म न करनेवाला।

विकर्मिक–वि० (सं०) अनुचित काम करनेवाला; विभिन्न कार्योंमें संलग्न। पु० बाजार या मेलेका निरीक्षक।

विकर्ष–पु० (सं०) बाण; फासला; प्रत्यंचा खींचना।

विकर्षण–पु० (सं०) विपरीत दिशामें होनेवाला आकर्षण, खींचना (प्रत्यंचा); हटाना; छीनाझपटी करना; नष्ट करना; खानेसे परहेज करना; कुश्तीका एक दाँव; जाँच; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; आकर्षण-शास्त्र; विपरीत कर्षण, विरुद्ध दिशाकी ओर खिंचना, विरोधके कारण दूर हटना, हटाना (रिपल्शन) प्रतिकर्षण (आ०)।

विकलंक–वि० (सं०) चमकीला, बेदाग।

विकल–वि० (सं०) भीत; बेचैन, व्याकुल; क्षुब्ध; हतोत्साह;

अपूर्ण; खंडित; अपंग; घटा हुआ, न्यून, ह्रासप्राप्त; अस्वाभाविक; असमर्थ; प्रभावहीन; मुरझाया हुआ। **–करण**–वि० क्षीण, निस्तेज, हीनवल। **–करुण**–वि० असहाय, दयनीय। **–पाणिक**–जिसके हाथ कटे हों, हस्तहीन, लूला।

विकलन–पु० (डेबिट) किसीको ऋणादिके रूपमें दी गयी रकम, या दिये गये माल आदिके मूल्यरूपमें प्राप्य धन; खातेमें उसके नाम लिखना; किसीके खातेमें खर्चकी ओर कोई रकम लिखना।

विकलांग–वि० (सं०) वेकार या खंडित अंगोंवाला (म्यूटिलेटेड), लँगड़ा-लूला; अंगहीन, न्यूनांग।

विकला–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका स्राव आरंभ हो गया हो, रजस्वला; ऋतुहीना; वुधकी गतिकी एक विशेष अवस्था; समयका एक वहुत छोटा मान, कलाका ६० वाँ भाग।

विकलाना*–अ० क्रि० व्याकुल होना।

विकलास–पु० चमड़ा मढ़कर बनाया जानेवाला एक प्राचीन बाजा।

विकलित–वि० व्याकुल, वेचैन; दु:खी, पीड़ित।

विकलीकृत–वि० (डिसेविल्ड) जो विकलांग (लँगड़ा, लूला आदि) हो जानेके कारण अपना काम करनेमें असमर्थ हो गया हो।

विकलेंद्रिय–वि० (सं०) जिसकी इंद्रियाँ विकृत हों; जिसका अपनी इंद्रियोंपर अधिकार न हो।

विकल्प–पु० (सं०) विभिन्नता; उपाय; भेदयुक्त ज्ञान; अनिश्चय, संदेह; भूल; अज्ञान; वक्तव्य, कथन; भ्रांत धारणा; गणना; चिंतन; संवंध; एक समाधि; अवांतर कल्प; वैचित्र्य; कई वातों, विषयों या नियमों आदिमेंसे एकका ग्रहण (आप्शन); एक अर्थालंकार जहाँ दो समान वलवाली विरुद्ध बातोंको लेकर कहा जाय कि या तो यही वात होगी, नहीं तो वह–या तो काम ही पूरा करूँगा या शरीर छोड़ दूँगा (आल्टरनेटिव)। **–जाल**–पु० तरह-तरहकी दुविधाएँ। **–संप्राप्ति**–स्त्री० रोगोंमें वातादि दोषोंका अनुमान (आ० वे०)। **–सम**–पु० न्यायदर्शनकी एक जाति।

विकल्पन–पु० (सं०) अनिश्चय, संदेह मानना; दो या दोसे अधिक विषयोंमेंसे किसी एकको मानना।

विकल्पित–वि० (सं०) व्यवस्थित; विभक्त; अनिश्चित, संदिग्ध; अनियमित।

विकल्मष–वि० (सं०) निर्दोष; पापरहित।

विकवच–वि० (सं०) जिसके शरीरपर कवच न हो।

विकश्वर–वि०, पु० (सं०) दे० 'विकस्वर'।

विकषा, विकसा–स्त्री० (सं०) मजीठ।

विकस–पु० (सं०) चंद्रमा।

विकसन–पु० (सं०) खिलना, प्रस्फुटन।

विकसना–अ० क्रि० खिलना, प्रस्फुटित होना

विकसाना–स० क्रि० दे० 'बिकसाना'।

विकसित–वि० (सं०) प्रस्फुटित, प्रफुल्ल; प्रसन्न।

विकस्वर–वि० (सं०) खुला हुआ; प्रफुल्ल; विकासशील; साफ सुनाई देनेवाला (शब्द); निष्कपट। पु० एक काव्यालंकार (इसमें विशेष बातकी पुष्टि सामान्य बातसे की जाती है)।

विकस्वरा–स्त्री० (सं०) रक्त पुनर्नवा।

विकांक्ष, विकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) इच्छारहित, निष्काम।

विकांक्षा–स्त्री० (सं०) इच्छाका अभाव; द्विविधा, अनिश्चय।

विक़ाअ–पु० (अ०) युद्ध; सहवास, मैथुन।

विकाम–वि० (सं०) इच्छारहित, निष्काम।

विक़ाया–पु० (अ०) रक्षा; देखरेख।

विकार–पु० (सं०) रूप, धर्म आदि स्वाभाविक अवस्थाका परिवर्तित होना; परिवर्तन; मल; रोग; विचार, उद्देश्य आदिमें परिवर्तन होना; भावना; वासना; क्षोभ; आकृति, शक्लका विकृत होना; मूल रूप, प्रकृतिका विकसित रूप; जख्म, क्षत। **–हेतु**–पु० प्रलोभन या क्षोभ उत्पन्न करनेवाला विषय या वस्तु।

विक़ार–पु० दे० 'वक़ार'।

विकारित–वि० (सं०) परिवर्तित या खराव किया हुआ।

विकारी(रिन्)–वि० (सं०) परिवर्तनशील; विकारयुक्त, विकारवाला; क्रोध आदि दुष्ट मनोविकारोंवाला; आसक्त; विकारग्रस्त, परिवर्तित। पु० एक संवत्सर।

विकार्य–वि० (सं०) परिवर्तनशील। पु० अहंकार।

विकाल, विकालक–पु० (सं०) दिनांत, संध्या; उपयुक्त समय वीत जानेके वादका समय, अतिकाल।

विकालिका–स्त्री० (सं०) जलघड़ी।

विकाश–पु० (सं०) प्रदर्शन; प्रकाश; विस्तार, फैलाव; खुलना, प्रसार; आकाश; वक्र या सीधा मार्ग; खिलना, प्रस्फुटन; आनंद; अभिलाषा; उत्कंठा; एक काव्यालंकार जहाँ किसी वस्तुका, निजी आधारका परित्याग किये विना, अधिक विकसित होना दिखाया या कहा जाय; वृद्धिके लिए वस्तुके रूप आदिमें निरंतर परिवर्तन होना (इवोल्यूशन); एकांत स्थान, विजन स्थान।

विकाशक–वि० (सं०) दे० 'विकासक'।

विकाशन–पु० (सं०) दे० 'विकासन'।

विकाशित–वि० (सं०) दे० 'विकासित'।

विकाशिनी–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका।

विकाशी(शिन्)–वि० (सं०) चमकने या देख पड़नेवाला; खुलने या खिलनेवाला, विकासशील।

विकास–पु० (सं०) खिलना; खुलना (मुख आदिका); प्रसन्नता, आनंद; फैलाव; वाढ़। **–वाद**–पु० डार्विन द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि प्राणियोंका प्रादुर्भाव एक ही मूल तत्त्वसे हुआ है और वे क्रमश: विकसित होते हुए वर्तमान रूपमें पहुँचे हैं।

विकासक–वि० (सं०) खोलने या (वृद्धि) बढ़ानेवाला।

विकासन–पु० (सं०) प्रदर्शन; खिलना; फैलना; खुलना।

विकासना*–स० क्रि० विकसित करना; प्रकट करना; निकालना। अ० क्रि० प्रकट या विकसित होना।

विकासित–वि० (सं०) प्रकाशित; प्रदर्शित; प्रस्फोटित; विस्तारित।

विकिर–पु० (सं०) पक्षी; कुँआ; बिखेरना; बिखेरी जानेवाली वस्तु; पूजाके समय विघ्न-निवारणके लिए इधर-उधर फेंका जानेवाला चावल; बूंद-बूंद करके चूनेवाला पानी।

विकिरण–पु० (सं०) छितरानेकी क्रिया, तितर-वितर करना; चारों ओर फैलाना; फाड़ना; मारना, हिंसन; ज्ञान; अर्क वृक्ष; किरणोंका एकत्रीकरण (जैसे आतिशी शीशेमें); एक समाधि। –पु० किरणोंकी दूरव्यापी प्रक्रिया; (रैडियेशन) एक स्थान या केंद्रसे ताप, प्रकाश आदिका सीधी रेखाओंमें चलकर इधर-उधर फैलना। **–ता**–स्त्री० (रेडिओ एक्टिविटी) अणु बम आदिके विस्फोटसे निकली विपाक्त किरणोंका कुप्रभाव। **–मापी**–पु० (रेडिओ मीटर) तापरश्मिमापक यंत्र। **–विज्ञान**–पु० (रेडिओलोजी) किरणोंके प्रकार, उपयोग आदिका शास्त्र।

विकिष्कु–पु० (सं०) बढ़इयोंका एक गज जो ४२ इंचका होता था।

विकीरण–पु० (सं०) आक, मदार।

विकीर्ण–वि० (सं०) छितराया, फैलाया हुआ; भरा हुआ; मशहूर। पु० स्वरके उच्चारणका एक दोष। **–कारी**–वि० (हिं०) फैलानेवाला। **–केश,–मूर्धज**–वि० जिसके वाल विखरे हों। **–रोम(न्),–संज्ञ**–पु० एक सुगंधित पौधा।

विकीर्णक–पु० (सं०) छिटफुट या विविध विषयोंका संग्रह अथवा अध्याय।

विकुंचित–वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ।

विकुंज–पु० (सं०) महाभारतोक्त एक जाति।

विकुंठ–वि० (सं०) तेज धारवाला; जो कुंठित न हो; जो रोका न जा सके; बहुत भोथरा। पु० विष्णु; विष्णुलोक, वैकुंठ।

विकुंठा–स्त्री० (सं०) मनका केंद्रीकरण; विष्णुकी माता।

विकुंठित–वि० (सं०) भोथरा; निर्बल।

विकुंभांड–पु० (सं०) एक दानव।

विकुक्षि–पु० (सं०) अयोध्याके राजा कुक्षिका पुत्र। वि० तोंदवाला, तुंदिल।

विकुत्सा–स्त्री० (सं०) अत्यधिक निंदा।

विकुर्वण–पु० (सं०) शिव; इच्छानुसार रूप धारण करनेकी क्षमता (वौ०)।

विकुर्वाण–वि० (सं०) परिवर्तनशील; अपना सुधार करनेवाला; प्रसन्न।

विकुर्वित–पु० (सं०) विभिन्न रूप धारण करना।

विकुस्र–पु० (सं०) चंद्रमा।

विकूजन–पु० (सं०) पक्षियोंका कूजना, भनभनाना; पेटका गुड़गुड़ाना।

विकूजित–पु० (सं०) गुंजार; पक्षियोंका कलरव।

विकूणन–पु० (सं०) तिरछी चितवन।

विकूणिका–स्त्री० (सं०) नाक, नासिका।

विकृत–वि० (सं०) परिवर्तित; विकारयुक्त, बिगड़ा हुआ; असंस्कृत; भद्दा, कुरूप; बीभत्स; अलंकृत; अस्वाभाविक; अधूरा, अपूर्ण; अराजक, विद्रोही; रोगी; उद्विग्न; भावाविष्ट। पु० दूसरा प्रजापति; रोग; परिवर्त राक्षसका पुत्र; विरक्ति (पु०); साठमेंसे चौबीसवाँ संवत्सर; गर्भपात। **–दर्शन**–वि० जिसकी सूरत बदल गयी हो। **–दृष्टि**–पु० ऐंचाताना। **–रक्त**–वि० लाल रंगमें रँगा हुआ या लाल धब्बोंसे भरा हुआ। **–वदन**–वि० बदसूरत। **–वेषी(षिन्)**–वि० असाधारण वस्त्र धारण करनेवाला। **–स्वर**–पु० नियत स्थानसे हटकर दूसरी श्रुतियोंपर ठहरनेवाला स्वर।

विकृत टंक–पु० (डिफेस्ड कॉइन) वह सिक्का जो घिसकर बदशक्ल-सा हो गया हो और जिसकी लिखावट पढ़नेमें भी कठिनाई हो।

विकृता–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

विकृति–स्त्री० (सं०) (विचार, उद्देश्य आदिका) परिवर्तन; असाधारण या आकस्मिक घटना; रोग; उत्तेजना, क्षोभ; भावावेश; काम वासना; मद्य आदि जिसमें खमीर पैदा हो गया हो; शत्रुता; गर्भपात; परिवर्तित रूप; विकास; माया; एक वृत्त। **–विज्ञान**–पु० (पैथालोजी) रोग विज्ञान। **–विज्ञानी,–वेत्ता**–पु० (पैथॉलाजिस्ट) विकृति विज्ञानका ज्ञाता।

विकृती–स्त्री० (सं०) रोग; डिंब; विकार; मद्य। **–करण**–पु० (केरिकेचर) हँसानेके लिए किसीकी आकृति, कृति या बोलीकी नकल या विकृति।

विकृष्ट–वि० (सं०) खींचा हुआ, आकृष्ट; पृथक् किया हुआ; फैलाया हुआ; लुटा हुआ; ध्वनित। **–सीमांत**–वि० जिस (ग्राम)की सीमाएँ बढ़ गयी हों।

विकेंद्रीयकरण–पु० (डिसेंट्रलाइज़ेशन) केंद्रमें प्रस्थापित सत्ता, अधिकार आदिको आस-पासके अंगों, अधीन राज्यों आदिमें बाँटना।

विकेट–पु० (अं०) (क्रिकेट) दोनों ओरके तीन-तीन स्टंप और दो-दो गुल्लियाँ। **–डोर**–पु० अहाते, बाग आदिमें जानेका वह चक्करदार फाटक जिसमेंसे मनुष्य तो जा सकते हैं पर चौपाये नहीं जा सकते।

विकेतु–वि० (सं०) जो ध्वजसे वंचित हो गया हो, जिसके पास झंडा न हो।

विकेश–वि० (सं०) गंजा; जिसके बाल खुले हों। पु० एक मुनि; एक प्रेत; पुच्छल तारा।

विकेशी–स्त्री० (सं०) मही; महीरूप शिवकी पत्नी; एक राक्षसी, पूतना; बिखरे बालोंवाली स्त्री; केशरहित स्त्री; केशगुच्छ। वि० स्त्री० केशवर्जिता।

विकोक–पु० (सं०) वृकासुरका पुत्र, कोकका अनुज।

विकोश, विकोष–वि० (सं०) कोश, म्यानसे बहिर्गत (तलवार); जिसपर किसी तरहका आवरण, आच्छादन न हो; जिसपर भूसी या छिलका न हो।

विकौतुक–वि० (सं०) जिसमें कोई औत्सुक्य या दिलचस्पी न हो, उदासीन।

विक्क–पु० (सं०) हाथीका बच्चा।

विक्टोरिया–स्त्री० (अ०) फिटनसे मिलती-जुलती एक तरहकी घोड़ा-गाड़ी; ब्रिटेनकी सुख्यात रानी (१८१९-१९०१)। पु० एक छोटा ग्रह।

विक्त–वि० (सं०) पृथक् किया हुआ; रिक्त।

विक्रम–पु० (सं०) विष्णु; बल, तेज आदिकी अधिकता; विपरीत गति; वीरता; शक्ति; कदम; गमन, गति; ढंग; मार्ग; पैर; स्थिरता; क्रमहीन वेदपाठकी प्रणाली; चौदहवाँ संवत्सर; दे० 'विक्रमादित्य'। ❋ वि० श्रेष्ठ, उत्तम; क्रमरहित। **–पट्टन**–पु० उज्जयिनी। **–शिला**–स्त्री० एक प्राचीन नगरी।

विक्रमक–पु० (सं०) कार्तिकेयका एक गण।

विक्रमण–पु० (सं०) चलना; साहसपूर्वक आगे बढ़ना; वीरता; डग भरना, कदम रखना।

विक्रमाजीत–पु० दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य–पु० (सं०) उज्जयिनीका एक प्रतापी राजा (यह विक्रम नामक संवत्का प्रवर्तक माना जाता है और कहा जाता है कि इसने शकोंको पराजित कर भगाया था और सारा उत्तरभारत इसके शासनमें था। धन्वंतरि, कालिदास आदि इसीके दरबारके नवरत्न थे)।

विक्रमाब्द–पु० (सं०) विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित संवत्, विक्रम संवत्।

विक्रमार्क–पु० (सं०) दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमी–वि० विक्रमादित्य-संबंधी।

विक्रमी(मिन्)–वि० (सं०) बल, पराक्रमवाला, वीर; विक्रम सम्बन्धी। पु० शूर; विष्णु; शेर।

विक्रमीय–वि० (सं०) विक्रमादित्य-संबंधी।

विक्रय–पु० (सं०) दाम लेकर कोई चीज देना; बेचना। **–कर**–पु० (सेल्स टैक्स) राजकीय बिक्री-कर। **–पत्र**–पु० वह कागज जिसमें किसी चीजका नाम, दाम और ग्राहक तथा विक्रेताका विवरण रहता है; नगदी चिट्ठा, 'कैश मेमो'। **–धन**–पु० (टर्नओवर) व्यापारी द्वारा की गयी एक दिन, एक सप्ताह आदिकी बिक्रीसे प्राप्त कुल धनराशि। **–प्रतिक्रोष्टा(ष्टृ)**–पु० नीलाम करनेवाला, बोली बोलकर माल बेचनेवाला।

विक्रयक–पु० (सं०) बेचनेवाला।

विक्रयण–पु० (सं०) बिक्री, बेचना।

विक्रयपंजी–स्त्री० (सेल्स जर्नल) प्रतिदिनकी बिक्री आदिका विवरण लिखनेकी पंजी, बिक्री-बही।

विक्रयप्रपंजी–स्त्री० (सेल्स लेजर) वह खाता-बही जिसमें विभिन्न तिथियोंको बेची गयी विभिन्न वस्तुओंका ब्यौरा, प्रत्येकका पृथक्-पृथक् लिखा रहता है।

विक्रयलेख–पु० (सेलडीड) वह कागद या लेख-पत्र जिसमें खेत, घर आदिकी बिक्रीका पूरा ब्यौरा (नाम, पता, शर्तें, मूल्य आदि) लिपिबद्ध कर दिया गया हो तथा जिसका विधिवत् पंजीयन करा दिया गया हो, बैनामा।

विक्रयिक–पु० (सं०) विक्रेता, बेचनेवाला (सेल्समैन)।

विक्रयी(यिन्)–पु० (सं०) विक्रेता, बेचनेवाला।

विक्रय्य–वि० (सं०) जो बेचा जानेको हो।

विक्रांत–वि० (सं०) पदाक्रांत; साहसी, वीर; विजयी; प्रतापी। पु० योद्धा; सिंह; कदम; वीरता, पराक्रम; वैक्रांत मणि; एक प्रजापति; चलनेका ढंग; एक तरहका मद्य; व्याकरणकी एक संधि। **–गति**–पु० सुंदर चालवाला मनुष्य। **–योधी(धिन्)**–पु० श्रेष्ठ योद्धा।

विक्रांता–स्त्री० (सं०) लाल लजालू; एक लता; हंसपदी; अड़हुल; जयंती; अरणी; अग्निमंथ; मूसाकानी; अपराजिता।

विक्रांता(तृ)–वि० (सं०) वीर; विजयी। पु० सिंह; शूर।

विक्रांति–स्त्री० (सं०) गति; बल, शक्ति; विक्रम; साहस, वीरता; घोड़ेकी सरपट चाल।

विक्राम–पु० (सं०) डगकी लंबाई।

विक्रायिक–पु० (सं०) बेचनेवाला, विक्रेता।

विक्रिया–स्त्री० (सं०) परिवर्तन; उत्तेजना; क्रोध; अप्रसन्नता; बुराई; शत्रुता; क्षति; असफलता; निर्वाण (दीपका); भ्रूसंकोच; कर्तव्यका पालन न होना, रोमांच; चावल पकाना; प्रतिक्रिया; विकार; खराबी; अस्वस्थता।

विक्रियोपमा–स्त्री० (सं०) एक तरहका उपमालंकार।

विक्री–स्त्री० बेचनेकी क्रिया; बेचनेसे मिला हुआ धन।

विक्रीत–वि० (सं०) बेचा हुआ।

विक्रुष्ट–पु० (सं०) गोहार; गाली, अपशब्द। वि० उद्घोषित; कठोर; कर्कश।

विक्रेतव्य, विक्रेय–वि० (सं०) पणितव्य, विकनेवाला, विकने योग्य।

विक्रेता (तृ)–पु० (सं०) बेचनेवाला।

विक्रेय–वि० विकाऊ, बेचने योग्य।

विक्रोध–वि० (सं०) क्रोधरहित।

विक्रोश–पु० (सं०) गोहार; गाली।

विक्रोशन–पु० (सं०) पुकारना; गाली देना।

विक्रोष्टा (ष्टृ)–पु० (सं०) गोहार करनेवाला; गाली देनेवाला।

विक्लव–वि० (सं०) बेचैन; भयाक्रांत; डरपोक; अभिभूत; क्षुब्ध; घबड़ाया हुआ; विरक्त; ऊबा हुआ; कंपित; अस्थिर। पु० बेचैनी; घबड़ाहट।

विक्लवित–पु० (सं०) भय या नैराश्यपूर्ण वचन।

विक्लांत–वि० (सं०) हतोत्साह; श्रांत; थका हुआ।

विक्लित्ति–स्त्री० (सं०) आर्द्र, गीला होना।

विक्लिध–वि० (सं०) जो पसीनेसे आर्द्र हो गया हो।

विक्लिन्न–वि० (सं०) सड़ा-गला; जीर्ण; गीला; बहुत पुराना; अत्यधिक आर्द्र; पकाकर मुलायम किया हुआ। **–हृदय**–वि० दयार्द्र।

विक्लिष्ट–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त; उत्पीड़ित; नष्ट किया हुआ। पु० एक उच्चारण-दोष।

विक्लेद–पु० (सं०) आर्द्र होना; आर्द्रता; द्रावण; विगलन, क्षय।

विक्लेदन–पु० (सं०) (उबाल या पकाकर) मुलायम या आर्द्र करनेकी क्रिया।

विक्षत–वि० (सं०) आहत, घायल, चोट खाया हुआ। पु० घाव, जख्म।

विक्षय–पु० (सं०) अति मद्यपानसे होनेवाला एक रोग (आ० वे०)।

विक्षर–पु० (सं०) विष्णु; कृष्ण; एक असुर। वि० प्रवाहित।

विक्षरण–पु० (सं०) बहना।

विक्षालित–वि० (सं०) धोया हुआ; स्नात।

विक्षाव–पु० (सं०) खाँसी; छींक; शब्द, स्वर; चिल्लाहट।

विक्षित–वि० (सं०) नीचे गिराया गया; दुःखी।

विक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका, बिखेरा हुआ; त्यक्त, छोड़ा हुआ; भेजा हुआ; पागल; व्यग्र, व्याकुल; जिसका खंडन किया गया हो। पु० योगकी पाँच अवस्थाओंमेंसे एक जिसमें चित्तवृत्ति प्रायः अस्थिर हो जाती है; बिखेरा जाना।

विक्षिप्तक–पु० (सं०) विदीर्ण किया हुआ शव।

विक्षिप्तता–स्त्री० (सं०) पागलपन, उन्माद।

विक्षिप्तालय–पु० (लूनैटिक असाइलम) पागल या विक्षिप्त मनुष्योंके रहनेका वह स्थान जहाँ उनकी देख-रेख तथा उपचारादिकी व्यवस्था हो।

विक्षीणक–पु० (सं०) देवमंडली; विनाशकर्ता; वह स्थान जहाँसे आमिषाहारी हटा दिये गये हों; शिवके अनुचरोंका एक मुखिया।

विक्षीर–पु० (सं०) आक, मदार।

विक्षीरणी–स्त्री० (सं०) दुद्धी।

विक्षुण्ण–वि० (सं०) रौंदा हुआ; चूर्ण किया हुआ; प्रेरित, प्रोत्साहित किया हुआ।

विक्षुद्र–वि० (सं०) जो अपेक्षाकृत छोटा हो।

विक्षुब्ध–वि० (सं०) अशांत; जिसका मन शांत या स्थिर न हो।

विक्षुभा–स्त्री० (सं०) छायाका एक नाम।

विक्षेप–पु० (सं०) बिखेरना, तितर-बितर करना; फेंकना; इधर-उधर घूमना; हिलाना; चिल्ला चढ़ाना; असंयम; वक्त बर्बाद करना; अनवधानता; घबड़ाहट; भय; चित्तकी अस्थिरता; अपशब्द कहना; करुणा; प्रेषण; तर्कका खंडन; शिविर; एक रोग; ध्रुवीय अक्षरेखा; बढ़ाव; एक अस्त्र; बाधा। **–लिपि**–स्त्री० एक प्राचीन लिपि। **–शक्ति**–स्त्री० अविद्याकी शक्ति।

विक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; बिखेरना; भेजना; हिलाना, झटका देना; धनुष्की डोरी खींचना; विघ्न, बाधा; भूलके कारण होनेवाली घबड़ाहट।

विक्षेप्ता (प्तृ)–पु० (सं०) बिखेरने, तितर-बितर करनेवाला।

विक्षोभ–पु० (सं०) मनका आवेग, क्षोभ; उद्वेग; उथलपुथल; गति; भय; आतंक; संघर्ष; विदीर्ण करना; हाथीके वक्षका एक भाग, पार्श्व।

विक्षोभण–पु० (सं०) एक दानव; मनमें क्षोभ होना या पैदा करना; हिलाना।

विक्षोभित–वि० (सं०) हिलाया हुआ; क्षुब्ध, अशांत किया हुआ।

विक्षोभी (भिन्)–वि० (सं०) क्षोभ उत्पन्न करनेवाला।

विखंड–वि० (सं०) खंड खंड किया हुआ, टुकड़ोंमें बँटा हुआ। **–राशि** पु० (डेट्रिलस)–चट्टानोंसे टूटे कंकड़ोंका समूह।

विखंडन–पु० (ऐग्रोगेशन) दे० 'उत्सादन'; (स्प्लिटिंग) अणुके परमाणु अलग होनेकी वैज्ञानिक क्रिया; परमाणु नाभिकका लगभग दो बराबर भागोंमें खंडित हो जाना; न्यूट्रानके प्रहारसे युरैनियम २३५ नाभिकके विखंडनके फलस्वरूप बैरियम और क्रिप्टनके नाभिक मिलते हैं और इस क्रियामें द्रव्यमानका क्षुद्रांश ऊर्जामें परिणत हो जाता है। (फिशन)।

विखंडित–वि० (सं०) टुकड़ोंमें कटा हुआ; विघटित किया हुआ; अंग-भंग किया हुआ; दो भागोंमें बँटा हुआ; क्षुब्ध; जिसका खंडन किया गया हो (तर्क०)।

विखंडी (डिन्)–वि० (सं०) तोड़नेवाला; नष्ट करनेवाला।

विखंडीकरण–पु० (सं०) (फ्रैगमेंटेशन) खेतोंका टुकड़ोंमें विभाजित किया जाना।

विख–वि० (सं०) नासिकाहीन। * पु० विष, जहर।

विखनन–पु० (सं०) खोदनेकी क्रिया।

विखना (नस्)–पु० (सं०) ब्रह्मा; एक मुनि।

विखहा–पु० दे० 'विषहा'; गरुड़ (?)।

विखाद–पु० (सं०) खाना, निगलना; नष्ट करना; * दे० 'विषाद'।

विखादितक–पु० (सं०) मांसाहारी जानवरों द्वारा भक्षित शव (बौ०)।

विखान*–पु० दे० 'विषाण'।

विखानस–पु० (सं०) एक तरहके संन्यासी। दे० 'वैखानस'।

विखायँध–स्त्री० जहरकी-सी कड़वी गंध।

विखासा–स्त्री० (सं०) जीभ, रसना।

विखु, विख्य, विखू, विखु–वि० (सं०) दे० 'विख'।

विखुर–पु० (सं०) राक्षस; चोर। वि० खुरहीन।

विखेद–वि० (सं०) अक्लांत; चौकस।

विख्यात–वि० (सं०) प्रसिद्ध, मशहूर, सर्वविदित; नामधारी; स्वीकार किया हुआ।

विख्याति–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, शोहरत।

विख्यापन–पु० (सं०) प्रसिद्ध करना; घोषणा करना; व्याख्या करना; स्वीकार करना।

विगंडीर–पु० (सं०) एक तरहका फूल।

विगंध–वि० (सं०) गंधहीन; बदबूदार।

विगंधक–पु० (सं०) इंगुदीका वृक्ष।

विगंधिका–स्त्री० (सं०) हपुषा; अजगंधा, अजमोदा।

विगंधकीकरण–पु० (सं०) (डीसल्फ़राइज़ेशन) लोहे आदि धातुओंमें मिली गंधकको दूर करनेकी रासायनिक प्रक्रिया।

विगणन–पु० (सं०) ऋणशोधन, कर्ज चुकाना; गणना करना; विचार करना।

विगणित–वि० (सं०) चुकाया हुआ (ऋण); जिसकी गणना की गयी हो; विचारित।

विगत–वि० (सं०) अतीत, बीता हुआ; बीते हुएसे पूर्वका; मृत; नष्ट; अंधकारावृत; अनुपस्थित, इधर-उधर गया हुआ; प्रभाहीन; मुक्त, विहीन, रहित (समस्त पदोंमें)। पु० चिड़ियोंकी उड़ान। **–कल्मष**–वि० जो पापमुक्त हो गया हो। **–क्लम**–वि० जिसकी क्लांति दूर हो गयी हो। **–ज्ञान**–वि० जिसकी समझ मारी गयी हो। **–नयन**–वि० जिसके नेत्र न हों, अंधा। **–भय, –भी**–वि० निर्भीक। **–राग**–वि० जिसमें राग न रह गया हो। **–लक्षण**–वि० अभागा। **–श्रीक**–वि० जिसकी कांति

चली गयी हो; अभागा। **–स्पृह**–वि० जिसमें इच्छा शेष न हो।

विगता–स्त्री० (सं०) वह लड़की जो विवाह योग्य न रह गयी हो; परकीया।

विगतार्तवा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका मासिक स्राव बंद हो गया हो, जो गर्भधारणकी अवस्था पार कर गयी हो।

विगतासु–वि० (सं०) जिसके प्राण निकल गये हों, मृत।

विगति–स्त्री० (सं०) दुर्दशा, दुर्गति।

विगतोद्धव–पु० (सं०) बुद्ध।

विगद–वि० (सं०) रोगरहित, नीरोग। पु० एक साथ कई तरहकी वातें या शब्द होना; होहल्ला, शोरगुल; किसी बातका प्रचार करना।

विगदित–वि० (सं०) जिसके संबंधमें बातचीत की गयी हो; जो चारों ओर फैला हुआ हो (जनरव)।

विगम–पु० (सं०) प्रस्थान, प्रयाण; पार्थक्य; अनुपस्थिति; त्याग; हानि; नाश; समाप्ति; मृत्यु; मोक्ष।

विगर–पु० (सं०) दिगंबर यति; पहाड़; भोजनका त्याग करनेवाला व्यक्ति।

विगर्जा–स्त्री० (सं०) (समुद्रका) गर्जन।

विगर्हण–पु०, **विगर्हणा**–स्त्री० (सं०) निंदा; भर्त्संना; डाँटना-फटकारना।

विगर्हणीय–वि० (सं०) निंदनीय; दुष्ट।

विगर्हा–स्त्री० (सं०) निंदा; डाँट-फटकार।

विगर्हित–वि० (सं०) निंदित; कुत्सित, बुरा; निषिद्ध; डाँटा-फटकारा हुआ, निर्भर्त्सित। पु० निंदा।

विगर्ही(र्हिन्)–वि० (सं०) निंदा करनेवाला।

विगर्ह्य–वि० (सं०) डाँटने, निंदा करने योग्य; भर्त्सनीय।

विगलन–पु० (सं०) नाश; पिघलना; गलना; रिसना; वह जाना; गायब होना; घुल जाना; शिथिल होना; मनका द्रवित होना।

विगलित–वि० (सं०) बहा हुआ; पिघला हुआ; टपककर, रिसकर निकला हुआ; गिरा हुआ; सूखा हुआ; ढीला पड़ा हुआ, शिथिल; विगड़ा हुआ; विखरा हुआ; विकृत; लुप्त; विदीर्ण (हिं०)। **–केश**–वि० जिसके बाल विखरे हों। **–नीव**–वि० जिसकी ग्रंथि या इजारबंद खुल गया हो। **–बंध**–वि० जिसका बंधन खुल गया हो। **–लज्ज**–वि० जिसमें लज्जा न रह गयी हो, धृष्ट। **–वसन**–वि० नंगा।

विगाढ–वि० (सं०) स्नात; घुसा हुआ, डूबा हुआ; धँसा हुआ (हथियार); आगे बढ़ा हुआ; गहरा; अत्यधिक।

विगाथा–स्त्री० (सं०) आर्या छंदका एक भेद।

विगाधा(धृ)–पु० (सं०) डुबकी लगानेवाला; प्रवेश करनेवाला; क्षुब्ध करनेवाला।

विगान–पु० (सं०) निंदा, अपवाद; असामंजस्य; विरोध; घृणा।

विगाह–पु० (सं०) डुबकी लगाना; प्रवेश करना; स्नान करना, अवगाहन।

विगाहमान–वि० (सं०) विलोडन या अवगाहन करनेवाला।

विगाहा–स्त्री० दे० 'विगाथा'।

विगाह्य–वि० (सं०) डुबकी लगाने या प्रवेश करने योग्य (जैसे गंगा)।

विगीत–वि० (सं०) परस्पर विरोधी; बुरे ढंगसे गाया हुआ; निंदित; विभिन्न प्रकारसे कथित।

विगीति–स्त्री० (सं०) आर्याछंदका एक भेद।

विगुण–वि० (सं०) गुणहीन, निर्गुण; बुरा; जिसमें डोरी न हो; असफल; प्रभावहीन; अधूरा; अव्यवस्थित; विकृत।

विगुल्फ–वि० (सं०) प्रचुर।

विगूढ–वि० (सं०) गुप्त, छिपा हुआ; जिसकी निंदा की गयी हो।

विगृहीत–वि० (सं०) फैलाया या विभक्त किया हुआ; विश्लेषण किया हुआ; पकड़ा हुआ; जिसका विरोध या सामना किया गया हो; रोका हुआ।

विगृह्यगमन–पु० (सं०) आक्रमण; आक्रामकोंसे घिर जानेपर जलमार्गसे भागना।

विगृह्ययान–पु० (सं०) आक्रमण।

विगृह्यवाद–पु० (सं०) कहा-सुनी, वाक्कलह।

विगृह्यास–पु० (सं०) शत्रुकी शक्ति आदिका बिना पता लगाये ही आक्रमण कर बैठना; अंधाधुंध चढ़ाई।

विगृह्यासन–पु० (सं०) शत्रुकी भूमि दवा रखना; शत्रुको जीतनेमें असमर्थ होनेपर दुर्गका अवरोध करना।

विग्गाहा–स्त्री० आर्या छंदका एक भेद।

विग्न–वि० (सं०) क्षुब्ध; भीत।

विग्र–वि० (सं०) दे० 'विख'; वली।

विग्रह–पु० (सं०) अलगाना; फैलाना; विस्तार; विभाग; पार्थक्य; समस्त पदके खंडोंको अलग करना (व्या०); कलह; युद्ध; शरीर; रूप; फूट पैदा करना; खंड, भाग; सजावट; तत्त्व; शिव; मूर्ति, प्रतिमा; आकृति; स्कंदका एक अनुचर। **–ग्रहण**–पु० रूप-ग्रहण। **–पर**–वि० युद्ध करनेपर तुला हुआ।

विग्रहण–पु० (सं०) रूप धारण करना; विभाजन; फैलाना; पकड़ना।

विग्रहावर–पु० (सं०) शरीरका पृष्ठ भाग।

विग्रही(हिन्)–वि० (सं०) युद्ध करनेवाला; लड़ाई-झगड़ा करनेवाला; मूर्तिपूजक। पु० युद्ध-मंत्री।

विग्रहेच्छु–वि० (स०) युद्धका इच्छुक।

विग्राहित–वि० (स०) जिसके मनमें कोई बुरी धारणा जम गयी हो।

विग्राह्य–वि० (स०) लड़ाई करने योग्य, योद्धव्य।

विग्रीव–वि० (स०) जिसकी गर्दन ऐंठ या काट दी गयी हो।

विघटन–पु० (सं०) अलग करना; तोड़ना; छिन्न-भिन्न हो जाना, अवच्छेद, विशृंखलन; नाश, बरवादी; (डिसइंट्रिगेशन) परमाणुका छिन्न-भिन्न होना। विघटनके फलस्वरूप परमाणु नाभिकमेंसे एकाध कण पृथक् हो जाते हैं तो नया तत्त्व प्राप्त होता है जिसका परमाणु-भार मूल परमाणुके भारसे कम होता है। जैसे रेडियमके विघटनमें रेडियम (परमाणु-भार २२६) परमाणुसे एक अल्फाकण (२ प्रोटॉन+२ न्यूट्रान) निकल जाता है तो रेडॉनका परमाणु मिलता है जिसका परमाणु-भार २२४ है।

विघटिका–स्त्री० (सं०) समयका एक लघु मान, घड़ीका चौबीसवाँ हिस्सा (किसी-किसीके मतसे ६० वाँ हिस्सा), पल।

विघटित–वि० (सं०) तोड़ा, पृथक् किया हुआ; विभक्त; अवच्छिन्न, नष्ट किया हुआ (संस्था, समिति आदि)।

विघट्टन–पु० (सं०) रगड़ना; हिलाना; खोलना, अलग करना; व्यथित करना, नाराज करना।

विघट्टनीय–वि० (सं०) हिलाने, तोड़ने योग्य; अलग करने योग्य।

विघट्टित–वि० (सं०) रगड़ा हुआ; तोड़ा-फोड़ा हुआ; खोला हुआ; व्यथित या रुष्ट किया हुआ।

विघट्टी(ट्टिन्)–वि० (सं०) रगड़नेवाला।

विघन–पु० (सं०) हथौड़ा; आघात करना; नष्ट या पराभूत करनेवाला; इंद्र; *दे० 'विघ्न'। वि० कठिन; नरम; बादलोंसे रहित, निरभ्र।

विघर्षण–पु० (सं०) रगड़ने, घिसनेकी क्रिया।

विघस–पु० (सं०) अर्द्धचर्वित ग्रास; आहार; शेप अन्न, (देवता, पितर आदिके उपयोगके बाद बचा हुआ) खाद्य पदार्थ; खानेके बाद बचा हुआ अंश; मोम।

विघसाश, विघसाशी(शिन्)–वि०, पु० (सं०) देवतादिके उपयोगके बाद बचा हुआ अंश खानेवाला।

विघात–पु० (सं०) चोट, आघात; टुकड़े-टुकड़े करना; निवारण; रोक; विरोध; परित्याग; विफलता; तोड़ना-फोड़ना; नाश, हत्या; व्याकुलता। **–सिद्धि**–स्त्री० बाधा दूर करना।

विघातक–वि० (सं०) घातक; बाधक।

विघातन–पु० (सं०) विघात करनेका काम, क्रिया; हत्या करना। वि० निवारण करनेवाला; हटानेवाला।

विघाती(तिन्)–वि० (सं०) हत्याकारी; चोट पहुँचानेवाला; विरोध करनेवाला, बाधक।

विघुष्ट–वि० (सं०) उद्घोषित; ऊँची आवाजमें कहा हुआ।

विघूणिका–स्त्री० (सं०) नाक।

विघूर्णन–पु० (सं०) घुमाना, चक्कर देना; किसी अक्षके चारों ओर चक्कर लगाना (जाइरेशन)।

विघूर्णित–वि० (सं०) घुमाया या चक्कर दिलाया हुआ।

विघोषण–पु० (सं०) ऊँची आवाजमें घोषित करनेकी क्रिया, चिल्लाना।

विघ्न–पु० (सं०) बाधा, अड़चन, कठिनाई; विरोध; नाश या भंग करनेवाला; गणेश; कृष्णपाक फल, काली मकोय। **–कर**, **–कर्ता(र्तृ)**, **–कृत्**–वि० बाधा उपस्थित करनेवाला। **–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'विघ्नक'; देखनेमें भयानक। **–जित्**, **–नायक**, **–नाशक**–पु० गणेश। **–पति**, **–राज**, **–विनायक**, **–हंता(तृ)**, **–हरण**, **–हारी(रिन्)**–पु० गणेश। **–पतिवाहन**–पु० चूहा। **–प्रतिक्रिया**–स्त्री०, **–विघात**–पु० बाधा दूर करना। **–सिद्धि**–स्त्री० बाधाका दूर होना।

विघ्नक–पु० (सं०) अड़चन, बाधा डालनेवाला, विघ्नकारी।

विघ्नांतक–पु० (सं०) गणेश।

विघ्नित–वि० (सं०) जिसमें विघ्न या बाधा डाली गयी हो; घबड़ाया हुआ।

विघ्नेश–पु० (सं०) गणेश। **–कांता**–स्त्री० सफेद दूब। **–वाहन**–पु० चूहा।

विघ्नेशान–पु० (सं०) गणेश।

विघ्नेश्वर–पु० (सं०) गणेश।

विचंद्र–वि० (सं०) चंद्रहीन।

विचकित–वि० (सं०) घबराया हुआ, भौंचक, चकित।

विचकिल–पु० (सं०) एक तरहकी चमेली; मदन वृक्ष।

विचक्र–पु० (सं०) एक दानव (पु०)। वि० चक्ररहित।

विचक्षण–वि० (सं०) विद्वान्, दूरदर्शी, चतुर; पारंगत; दक्ष; चमकता हुआ, प्रकाशमान। पु० चतुर आदमी।

विचक्षणा–स्त्री० (सं०) नागदंती।

विचक्षा(क्षस्)–पु० (सं०) आध्यात्मिक गुरु।

विचक्षु(स्)–वि० (सं०) अंधा; उदास; घबड़ाया हुआ।

विचच्छन*–वि०, पु० दे० 'विचक्षण'।

विचय, विचयन–पु० (सं०) इकट्ठा करना; परीक्षा करना; सिलसिलेवार, तरतीबसे रखना; चुरायी-छिपायी वस्तुकी तलाश करना। **–प्रकाश**–पु० खोजबत्ती (सर्च-लाइट)।

विचर–वि० (सं०) भ्रमण किया हुआ; भूला-भटका हुआ।

विचरण–पु० (सं०) घूमना-फिरना, चलना, भ्रमण करना, पर्यटन। वि० जिसके पैर न हों।

विचरणीय–वि० (सं०) आचरण करने योग्य।

विचरन*–पु० दे० 'विचरण'।

विचरना–अ० क्रि० इतस्ततः घूमना।

विचरनि*–स्त्री० दे० 'विचरण'।

विचरित–वि० (सं०) इतस्ततः घूमा हुआ, पर्यटित। पु० भ्रमण, पर्यटन।

विचर्चिका–स्त्री० (सं०) खुजली नामक रोग।

विचर्चित–वि० (सं०) लेपा हुआ।

विचर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) जिसके पास ढाल न हो।

विचल–वि० (सं०) निरंतर घूमने या हिलनेवाला; अस्थिर; स्थानसे हटा हुआ; प्रण, प्रतिज्ञासे हटा हुआ; घबड़ाया हुआ; घमंडी।

विचलता–स्त्री० (सं०) अस्थिरता; घबराहट।

विचलन–पु० (सं०) जहाँ-तहाँ घूमना; कार्य, निश्चय या विचारमें अस्थिरता; कर्त्तव्य या पथसे हट जाना; घमंड।

विचलना*–अ० क्रि० स्थानभ्रष्ट होना; प्रतिज्ञासे डिगना; विचलित होना।

विचलाना*–स० क्रि० विचलित करना; घबड़ाहटमें डालना।

विचलित–वि० (सं०) गया हुआ; अस्थिर; चंचल; स्थान या प्रतिज्ञासे डिगा हुआ; घबड़ाया हुआ।

विचार–पु० (सं०) निर्णय; तत्त्व-निर्णय; तत्त्व-परीक्षा; किसी विषयपर गंभीरताके साथ सोचना; कार्यविधि; स्थान-परिवर्तन; घूमना फिरना, विचरण; संदेह; हिचक; वाद-विवाद; चुनाव; विज्ञता; अभियोग आदिका निर्णय; मुकदमेकी सुनवाई (ट्रायल)। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सोचने-विचारनेवाला; अभियोगका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश। **–गोष्ठी**–स्त्री० (सेमिनार) अनेक विद्वानोंका एक स्थानपर एकत्र होकर किसी महत्त्वपूर्ण विषयके संबंधमें अपने-अपने विचार प्रकट करनेकी क्रिया तथा उसका आयोजन। **–ज्ञ**–वि० विचार करनेमें कुशल, प्रवीण। पु० न्यायाधीश, जज। **–धारा**–स्त्री० (आइडिऑलॉजी) किसी जाति या संप्रदायविशेषकी विचारशैली; किसी राजनीतिक या आर्थिक सिद्धांत-परंपराके मूलमें रहनेवाली विचार-सरणी। **–पति**–पु० मुकदमेका फैसला करनेवाला जज। **–भू**–स्त्री० न्यायालय। **–मूढ**–वि० जिसे सोचने-समझनेकी शक्ति न हो। **–विमर्श**–पु० सलाह मशवरा; किसी विषयके संबंधमें परस्पर बातचीत। **–शक्ति**–स्त्री० विचार करनेकी शक्ति (इंटेलेक्ट)। **–शास्त्र**–पु० मीमांसा शास्त्र। **–शील**–वि० सोच-विचार करनेकी शक्तिवाला। **–शीलता**–स्त्री० बुद्धिमानी, समझदारी। **–सरणी**–स्त्री० विचार करनेकी पद्धति। **–स्थल**–पु० किसी विषयपर विचारका स्थान; न्यायालय, अदालत; तर्क। **–स्वातंत्र्य**–विचार प्रकट करनेकी स्वतंत्रता (लिबर्टी ऑफ़ थॉट)।

विचारक–वि० पु० (सं०) विचार करनेवाला, दार्शनिक। पु० जज, न्यायाधीश; नेता, पथप्रदर्शक; गुप्तचर।

विचारण–पु० (सं०) विचार करनेकी क्रिया; परीक्षा; संदेह; हिचक; स्थान-परिवर्तन।

विचारणा–स्त्री० (सं०) परीक्षण; तर्क; विचार करना; घूमना-फिरना; संदेह; मीमांसा शास्त्र।

विचारणीय–वि० (सं०) विचार करने योग्य; चिंत्य; विचाराधीन; संदिग्ध; प्रमाणित करने योग्य।

विचारना–स० क्रि० गौर करना; खोज करना, ढूँढ़ना।

विचारवान्(वत्)–वि० (सं०) विचारशील, सोचने-विचारनेवाला।

विचाराधिकार–पु० (सं०) (कॉग्निजैन्स) न्यायालयको अपराधकी ओर ध्यान देकर उसका प्रतिकार करनेकी क्षमता।

विचाराध्यक्ष–पु० (सं०) प्रधान विचारक, जज।

विचारालय–पु० (सं०) न्यायालय।

विचारिका–स्त्री० (सं०) गृहोद्यानकी देख-भाल करनेवाली दासी; मामला-मुकदमा देखनेवाली स्त्री।

विचारित–वि० (सं०) विचार किया हुआ; सोचा-समझा हुआ; संदिग्ध; अनिश्चित, विचाराधीन, जिसपर विचार होता हो। पु० विचार; संदेह; हिचक।

विचारी(रिन्)–वि० (सं०) लंपट; विचरण करने, घूमने-फिरनेवाला; विचार करनेवाला। पु० कवंधका एक पुत्र।

विचारु–पु० (सं०) कृष्णका एक पुत्र।

विचार्य–वि० (सं०) विचार योग्य, विचारणीय; संदिग्ध।

विचाल–पु० (सं०) पृथक् करना; विभाग करना; बीचका काल या स्थान, अंतराल। वि० बीचका।

विचालन–पु० (सं०) हटाना; नष्ट करना।

विचिंतन–पु० (सं०) फिक्र-चिंता करना, सोचना।

विचिंतनीय–वि० (सं०) विचारणीय।

विचिंता–स्त्री० (सं०) सोच-विचार; देख-भाल।

विचिंतित–वि० (सं०) जिसपर विचार किया गया हो।

विचिंतिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) विचार करनेवाला।

विचिंत्य–वि० (सं०) चिंतन, विचार करने योग्य; संदिग्ध; जिसकी देख-भाल की जाय।

विचि, विची–स्त्री० (सं०) लहर, तरंग।

विचिकित्सा–स्त्री० (सं०) संदेह; अनिश्चय; भूल।

विचिक्षण*– वि० विचक्षण।

विचिचीषा–स्त्री० (सं०) तलाश करनेकी इच्छा।

विचिचीषु–वि० (सं०) तलाश करनेका इच्छुक।

विचित–वि० (सं०) जिसकी खोज की गयी हो।

विचिति–स्त्री० (सं०) विचार; अन्वेषण।

विचित्त–वि० (सं०) अचेत; कर्तव्यविमूढ।

विचित्ति–स्त्री० (सं०) विभ्रम, बेहोशी; चित्त ठिकाने न रहना।

विचित्र–वि० (सं०) कई प्रकारके रंगों, वर्णोंवाला; असाधारण; चकित, विस्मित करनेवाला; सुंदर; मनोरंजक; विलक्षण, असाधारण; चित्रित; रंगा हुआ। पु० रौच्य मनुका एक पुत्र (पु०); एक अर्थालंकार (इसमें फलसिद्धिके लिए उलटा प्रयत्न दिखाया जाता है); विभिन्न रंगोंका समुदाय; अचंभा। **–चरित्र** –वि० विचित्र ढंगसे आचरण करनेवाला। **–देह**–वि० जिसका शरीर रँगा हो; जिसकी बनावट सुंदर हो। पु० बादल। **–रूप** –वि० कई तरहके रूपोंवाला। **–वीर्य**–पु० शांतनु-सत्यवतीके द्वितीय पुत्र (ये निःसंतान मरे। द्वैपायनने इनकी पत्नियोंसे नियोग द्वारा धृतराष्ट्र और पांडुको पैदा किया था)। **–०सू**–स्त्री० विचित्रवीर्यकी माता, सत्यवती। **–शाला**–स्त्री० अजायबघर, 'म्यूज़ियम'।

विचित्रक–पु० (सं०) भोजपत्रका पेड़; आश्चर्य, अचंभा। वि० आश्चर्यजनक।

विचित्रता–स्त्री० (सं०) रंगवैभिन्न्य; अनोखापन।

विचित्रांग–पु० (सं०) मयूर; व्याघ्र।

विचित्रा–स्त्री० (सं०) एक रागिनी; एक तरहका सफेद हिरन।

विचित्रित–वि० (सं०) तरह-तरहके रंगोंसे चित्रित, रंग-बिरंगा; आश्चर्यजनक; आभूषित (समासमें)।

विचिन्वक–पु० (सं०) तलाश, अन्वेषण; वीर, योद्धा।

विचिलक–पु० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

विचीर्ण–वि० (सं०) जिसपर गमन या कब्जा किया गया हो; जिसमें प्रवेश किया गया हो।

विचुंबन–पु० (सं०) चुंबन।

विचुंबित–वि० (सं०) विशेष रूपसे चूमा हुआ; स्पर्श किया हुआ।

विचूर्णित–वि० (सं०) अच्छी तरह पीसा हुआ।

विचेतन–वि० (सं०) संज्ञाहीन, अचेत; मूर्ख, विवेकरहित; विस्मरणशील; निर्जीव, मृत। पु० संज्ञाशून्य स्थिति, संवेदन हरण (ऐनेस्थीशिया)। **–क**–वि० संज्ञाशून्य करनेवाला (ऐनीस्थेटिक)।

विचेता(तस्)–वि० (सं०) मूर्ख; अचेत; दुष्ट; विमूढ; चतुर, विशेषज्ञ।

विचेष्ट–वि० (सं०) निश्चेष्ट, चेष्टाहीन; गतिहीन, अचल।

विचेष्टन–पु० (सं०) छटपटाना, इधर-उधर लोटना, तड़पना (पीड़ासे); लात फेंकना या लोटना (घोड़ेका)।

विचेष्टा–स्त्री० (सं०) क्रिया; प्रयत्न; गति; व्यवहार; कुचेष्टा।

विचेष्टित–वि० (सं०) जिसके लिए प्रयत्न किया गया हो; परीक्षित; मूर्खतापूर्वक किया हुआ; अविचारित; अन्वेषित। पु० शरीरकी गति या संचालन; इंगित; कार्य; आचार; बुरा कार्य, दुष्कर्म।

विच्छंद–वि० (सं०) जिसमें कई तरहके छंद हों। पु० दे० 'विच्छंदक'।

विच्छंदक–पु० (सं०) कई मंजिलोंवाला मकान, राजप्रासाद आदि।

विच्छत्रक–पु० (सं०) एक साग, सुसना।

विच्छर्दक–पु० (सं०) विच्छंदक, देवमंदिर, महल।

विच्छर्दन–पु० (सं०) वमन, कै; उपेक्षा; अवमानना; क्षय।

विच्छर्दिका–स्त्री० (सं०) वमन।

विच्छर्दित–वि० (सं०) वमित, कै किया हुआ; परित्यक्त; उपेक्षित; क्षीण; न्यून किया हुआ।

विच्छल–पु० (सं०) बेंतकी लता।

विच्छाय–पु० (सं०) पक्षियोंके झुंडकी छाया; मणि; वह जिसकी छाया न पड़ती हो। वि० विवर्ण, कांतिहीन; छायारहित।

विच्छित्ति–स्त्री० (सं०) काटकर अलग, टुकड़े करना, भंग करना; विनाश; पार्थक्य; विच्छेद; रोक, बाधा; कमी, त्रुटि; अभाव; अंगराग; वेषभूषा आदिकी लापरवाही, बेढंगापन; शरीरको चित्रित करना (रंगों आदिसे); एक तरहका हार; एक हाव (थोड़े शृंगारसे पुरुषको मुग्ध करनेका प्रयत्न); यति (छंद); सीमा, हद (मकानकी)।

विच्छिन्न–वि० (सं०) काटकर अलग किया हुआ, विभक्त; जुदा, अलग; जिसका अंत किया जा चुका हो; कुटिल; निवारित; विभिन्न रंगोंसे चित्रित; छिपा हुआ; लेपित।

विच्छुरण–पु० (सं०) छिड़कना; लेपना, मलना।

विच्छुरित–वि० (सं०) छिड़का हुआ; लेपा हुआ; ढका हुआ। पु० एक प्रकारकी समाधि।

विच्छेद–पु० (सं०) काटकर अलग करना; क्रम टूटना; अलग, टुकड़े-टुकड़े करना; क्षति; नाश; निषेध; अलगाव; मतभेद; परिच्छेद, अध्याय (पुस्तकका); बीचका अवकाश; यति (छंद); वंशक्रमका भंग होना।

विच्छेदक–वि०, पु० (सं०) विच्छेद करनेवाला; काटकर अलग करनेवाला; विभाग करनेवाला।

विच्छेदन–पु० (सं०) (एम्पूटेशन) काटकर अलग करना; अंगच्छेदन; नष्ट, बरबाद करना; भेद करना।

विच्छेदनीय–वि० (सं०) विच्छेद करने योग्य; काटकर अलग करने लायक; विभाग करने योग्य।

विच्छेदी(दिन्)–वि० (सं०) विच्छेद करनेवाला; जिसमें विच्छेद या मध्यावकाश हो।

विच्छेद्य–वि० (सं०) दे० 'विच्छेदनीय'।

विच्युत–वि० (सं०) गिरा हुआ; स्थानभ्रष्ट; जीवित अंगसे काटकर निकाला हुआ (आ० वे०); विनष्ट; विक्षरित; असफलीभूत।

विच्युति–स्त्री० (सं०) वियोग, पार्थक्य; पतन; किसी चीजका अपने स्थानसे हट जाना; गर्भपात।

विछलना*–अ० क्रि० फिसलना, स्थानभ्रष्ट होना।

विछेद*–पु० विच्छेद, वियोग।

विछोई*–वि०, पु० वियोगी, जिसका प्रियसे वियोग हुआ हो।

विछोह*–पु० वियोग, प्रियसे पृथक् होना।

विछोही*–वि०, पु० वियोगी।

विजंघ–वि० (सं०) जंघाहीन; (गाड़ी) जिसमें पहिया न हो।

विजई–वि० दे० 'विजयी'।

विजट–वि० (सं०) खुले हुए, जिनकी कबरी न बनी हो (बाल)।

विजड़–वि० (सं०) पूर्णतः जड़।

विजड़ीकरण–पु० (सं०) विजड़ करनेकी क्रिया या भाव।

विजड़ित–वि० दे० 'जड़ित'।

विजन–वि० (सं०) जनशून्य, एकांत। पु० निर्जन या एकांत स्थान; साक्षीका अभाव; * दे० 'विजना' 'विजन डुलाती वे विजन डुलाती हैं'–भूषण।

विजनता–स्त्री० (सं०) एकांतता, जनशून्य होना।

विजनन–पु० (सं०) जनन, प्रसव करना; वैज्ञानिक प्रक्रियासे सन्तान उत्पन्न करना।

विजना*–पु० पंखा, बीजन।

विजनित–वि० (सं०) जात, उत्पन्न; जन्म लिया हुआ।

विजन्मा(न्मन्)–पु० (सं०) उपपतिका पुत्र; जातिच्युत व्यक्तिका पुत्र; एक वर्णसंकर जाति (मनु०)। वि० जारज।

विजन्या–वि०, स्त्री० (सं०) गर्भिणी (स्त्री)।

विजपिल–पु० (सं०) पंक। वि० दे० 'विजिल'।

विजयंत–पु० (सं०) इंद्र।

विजयंतिका–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

विजयंती–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा; ब्राह्मी बूटी।

विजय–स्त्री० (सं०) जीतका पारितोषिक; लूटका माल; बहस, युद्ध आदिमें होनेवाली जीत (कॉन्क्वेस्ट)। पु० दिनका एक विशेष घंटा; एक संवत्सर; वर्षका तीसरा मास; एक सैन्य-व्यूह; प्रदेश, जिला; एक तरहकी बाँसुरी; एक मान; देवताओंका रथ, विमान; यम; जयंतका पुत्र; कृष्णका पुत्र; अर्जुन; विष्णुका एक पार्षद; रुद्रका त्रिशूल; कल्किपुत्र; मत्तगयंद सवैयाका एक भेद (केशव); † जीमना, भोजन करना। **–कर**–वि० विजय करनेवाला। **–कुंजर**–पु० युद्धक्षेत्रमें जानेवाला हाथी; राजाकी सवारीका हाथी। **–केतु**–पु० शत्रुको जीतकर फहरायी जानेवाली ध्वजा; एक विद्याधर। **–चिह्न**–पु० युद्धमें विजयके परिणामस्वरूप प्राप्त शत्रुके शस्त्रास्त्र तथा अन्य सामग्री (ट्राफी)। –

च्छंद–पु० पाँच सौ मोतियोंका हार; ५०४ लड़ियोंका हार। –**डिंडिम**–पु० युद्धका एक प्राचीन बाजा। –**तीर्थ**–पु० एक तीर्थ (पु०)। –**दंड**–पु० सदा विजयी होनेवाला सैन्यसमूह; सेनाका वह विभाग जिसपर विजय निर्भर हो; विजयसूचक दंड। –**दशमी**–स्त्री० दे० 'विजयादशमी'। –**दीपिका**–स्त्री० एक कर्नाटकी रागिनी। –**दुंदुभि**–स्त्री० विजयके समय बजाया जानेवाला नगाड़ा। –**नंदन**–पु० इक्ष्वाकुवंशी राजा जय। –**नगर**–पु० कर्णाटकका एक नगर। –**पताका**–स्त्री० जीतके समय फहरायी जानेवाली ध्वजा; विजय-सूचक चिह्न। –**पर्पटी**–स्त्री० संग्रहणीमें दिया जानेवाला एक रस (आ० वे०)। –**पूर्णिमा**–स्त्री० विजयादशमीके बादकी पूर्णिमा, क्वारकी पूर्णिमा। –**प्रत्यर्थी(र्थिन्)**–वि० विजयकी इच्छा रखनेवाला। –**मर्दल**–पु० दे० 'विजय-डिंडिम'। –**यात्रा**–स्त्री० विजय, जीतकी कामनासे की जानेवाली यात्रा। –**लक्ष्मी**, –**श्री**–स्त्री० विजयकी अधिष्ठात्री देवी। –**वसंत**–पु० एक कर्नाटकी रागिनी। –**शील**–पु० सदा जीतनेवाला। –**सार**–पु० इमारत आदि बनानेके कामकी लकड़ीवाला एक बड़ा वृक्ष। –**सिद्धि**–स्त्री० सफलता; जीत।

विजयक–वि० (सं०) विजय प्राप्त करनेमें कुशल।

विजया–स्त्री० (सं०) दुर्गा; दुर्गाकी एक सखी; एक विद्या जिसे विश्वामित्रने रामको सिखलाया था; विजयोत्सव; यमकी पत्नी; एक योगिनी; वर्तमान अवसर्पिणीके द्वितीय अर्हत्‌की माता; दक्षकी एक कन्या; कृष्णकी माला; इंद्रकी एक छोटी ध्वजा; एक पौधेकी विषैली जड़; राजकीय खेमा; एक तरहका मंडप; कश्मीरका एक पुण्यस्थान; शमीका एक भेद; वचा; मजीठ; अग्निमंथ; हर्रे; जयन्ती; भाँग; एक वृत्त। –**एकादशी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला एकादशी; फाल्गुन-कृष्णा एकादशी। –**दशमी**–स्त्री० आश्विन-शुक्ला दशमीको होनेवाला हिंदुओं, विशेषतः क्षत्रियोंका एक त्योहार (इसी दिन प्राचीन कालमें राजा लोग युद्ध-जयके लिए ससैन्य निकलते थे)। –**सप्तमी**–स्त्री० रविवारको पड़नेवाली किसी मासकी शुक्ला सप्तमी।

विजयानंद–पु० (सं०) तालका एक भेद (संगीत)।

विजयाभ्युपाय–पु० (सं०) विजय प्राप्त करनेका साधन।

विजयार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) विजय चाहनेवाला।

विजयार्ध–पु० (सं०) एक पर्वत।

विजयास्त्र–पु० विजय दिलानेवाला अस्त्र या साधन।

विजयी(यिन्)–वि० (सं०) जिसकी जीत हुई हो। पु० विजेता, जीतनेवाला। (स्त्री० 'विजयिनी'।)

विजयेश–पु० (सं०) विजयके अधिष्ठाता देवता, शिव।

विजयोत्सव–पु० (सं०) विजयादशमीका उत्सव; विजयके उपलक्ष्यमें मनाया जानेवाला उत्सव।

विजयोपहार–पु० (ट्रॉफी) युद्धमें हुई जीत या हॉकी, क्रिकेट आदिके खेलमें प्राप्त विजयके स्मृतिस्वरूप रखी जानेवाली कोई वस्तु (शील्ड, कप आदि)।

विजर–वि० (सं०) जराहीन, जो कभी बूढ़ा न हो; नया, नवीन। पु० डंठल।

विजरा–स्त्री० (सं०) ब्रह्मलोककी एक नदी।

विजर्जर–वि० (सं०) जीर्ण; सड़ा-गला।

विजल–वि० (सं०) निर्जल, जलरहित। पु० अवर्षण, सूखा।

विजला–स्त्री० (सं०) एक साग; चावलके योगसे बनी हुई एक तरहकी लपसी।

विजल्प–पु० (सं०) अनापशनाप बकना, बकवाद; द्वेषसे झूठी बातें कहना।

विजल्पित–वि० (सं०) कथित; अस्पष्ट कहा गया; बे-सिर-पैरकी उड़ायी हुई (बात)।

विजवल–वि० (सं०) पिच्छिल।

विजाग*–पु० वियोग।

विजागी*–वि०, पु० वियोगी।

विजात–वि० (सं०) उत्पन्न, जनमा हुआ; दोगला, हरामजादा; दूसरे रूपमें परिणत। पु० सखी छंदका एक भेद।

विजाता–स्त्री० (सं०) जारज, दोगली लड़की; सद्यःप्रसूता स्त्री; माता।

विजाति–वि० (सं०) भिन्न जातिका, अन्य वर्गका। स्त्री० भिन्न जाति या वर्ग।

विजातीय–वि० (सं०) (हैट्रोजीनियस) दूसरी जातिका, भिन्न जाति, वर्गका।

विजानक–वि० (सं०) जाननेवाला, परिचित।

विजानता–स्त्री० (सं०) चातुर्य, जानकारी।

विजानना*–स० क्रि० विशेष रूपसे जानना।

विजानु–पु० (सं०) लड़नेका एक ढंग, तलवारके ३२ हाथोंमेंसे एक।

विजापयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) विजय दिलानेवाला।

विजार|–पु० एक तरहकी मटिया भूमि जिसमें धान बोया जाता है।

विज़ारत–स्त्री० (अ०) वजीरका पद या कार्य; वजीरका दफ्तर; मंत्रिमंडल। –**ख़ाना**–पु० मंत्रालय।

विजिगीत–वि० (सं०) प्रसिद्ध, विख्यात।

विजिगीष–वि० (सं०) विजय चाहनेवाला।

विजिगीषा–स्त्री० (सं०) विजयकी कामना।

विजिगीषु–वि० (सं०) विजयका इच्छुक। पु० योद्धा; आक्रामक; विरोध करनेवाला व्यक्ति; प्रतिपक्षी।

विजिघत्स–वि० (सं०) जिसे भूख न लगती हो।

विजिघांसु–वि० (सं०) मारने या नष्ट करनेकी इच्छा रखनेवाला।

विजिज्ञासा–स्त्री० (सं०) जाननेकी इच्छा; अन्वेषण।

विजिज्ञासु–वि० (सं०) सीखने या जाननेकी इच्छा रखनेवाला।

विज़िट–स्त्री० (अं०) भेंट, मुलाकात; देखने, मिलनेके लिए जाना, आना; रोगीको देखनेके लिए डाक्टरका उसके घर जाना; इसके लिए डाक्टरको मिलनेवाली फीस।

विज़िटर–पु० (अं०) आगंतुक, देखने या मिलनेके लिए आनेवाला।

विज़िटर्स बुक–स्त्री० (अं०) वह पुस्तक जो होटलों, विद्यालयों, रेलवे स्टेशनों आदि सार्वजनिक स्थानोंमें आगंतुकोंके विचार, राय लिखनेके लिए रखी रहती है।

विज़िटिंग कार्ड–पु० (अं०) छोटा-सा कार्ड जिसपर किसीका नाम और पता दर्ज रहता है और जिस किसीसे मिलना होता है उसके पास वह उस व्यक्तिके आनेकी सूचना देनेके लिए भेज दिया जाता है।

विजित–वि० (सं०) जीता हुआ, जिसपर विजय हुई हो; जिससे डरा जाय। पु० जीता हुआ देश, भूखंड; वह ग्रह जो दूसरे ग्रहसे युद्धमें न्यूनबल हो (ज्यो०); विजय। –**रूप**–वि० पराजितके रूपमें आनेवाला।

विजितवान्(वत्)–वि० (सं०) विजयी।

विजिता(तृ)–पु० (सं०) पृथक् या विभाजन करनेवाला; भेद करनेवाला; निर्णायक; वह जो डर गया हो।

विजितात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) शिव।

विजितामित्र–पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसने शत्रुओंको पराभूत कर दिया हो।

विजितारि–पु० (सं०) एक राक्षस। वि० जिसने शत्रुओंको पराभूत कर दिया हो।

विजिताश्व–पु० (सं०) राजा पृथुका एक पुत्र।

विजितासु–पु० (सं०) एक मुनि।

विजिति–स्त्री० (सं०) विजय; कब्जा, प्राप्ति।

विजिती(तिन्)–वि० (सं०) विजयी।

विजितेंद्रिय–वि० (सं०) जिसने अपनी इंद्रियोंको वशमें कर लिया है।

विजितेय–वि० (सं०) जिसपर नियंत्रण या विजय प्राप्त करनी हो।

विजित्वर–वि० (सं०) विजयी, विजेता।

विजित्वरा–स्त्री० (सं०) एक देवी।

विजिन, विजिल–वि० (सं०) (लपसी आदि) जिसमें अधिक रस न हो। पु० एक तरहकी लपसी।

विजिविल–वि० (सं०) दे० 'विजिल'।

विजिहीर्षा–स्त्री० (सं०) घूमने या मनोरंजनकी इच्छा।

विजिहीर्षु–वि० (सं०) घूमने या मनोविनोदकी इच्छा रखनेवाला।

विजिह्म–वि० (सं०) टेढ़ा, झुका हुआ; तिरछा; बेईमान।

विजिह्व–वि० (सं०) जिह्वारहित, जिसके जीभ न हो।

विजीवित–वि० (सं०) मृत, बेजान।

विजीष–वि० (सं०) जयका इच्छुक, विजिगीषु।

विजु–पु० (सं०) पक्षीके शरीरका वह भाग जहाँसे डैने निकलते हैं।

विजुल–पु० (सं०) शाल्मलीका वृक्ष या कंद।

विजुली–स्त्री० (सं०) एक देवी; † विद्युत्, बिजली।

विजृंभ–पु० (सं०) सिकोड़ना (भौं); जँभाई।

विजृंभक–पु० (सं०) एक विद्याधर।

विजृंभण–पु० (सं०) जँभाई लेना; खुलना; खिलना; प्रफुल्ल होना; कामक्रीड़ा; फैलाना; झुकाना; धनुष् चढ़ाना; सिकोड़ना (भौं)।

विजृंभा–स्त्री० (सं०) जँभाई।

विजृंभिका–स्त्री० (सं०) जँभाई; हाँफ।

विजृंभित–वि० (सं०) जृंभायुक्त; खिला हुआ; फैला हुआ; खींचा या झुकाया हुआ (धनुष्); क्रीडित (कामवश)। पु० प्रदर्शन; चेष्टा, आचार; परिणाम; जँभाई।

विजृंभी(भिन्)–वि० (सं०) निकलने या प्रकट होनेवाला।

विजेतव्य–वि० (सं०) जीतने योग्य।

विजेता(तृ)–पु० (सं०) जय प्राप्त करनेवाला; वह जिसने जय प्राप्त का हो।

विजेय–वि० (सं०) पराजित करने योग्य।

विजै*–स्त्री० जीत, विजय। **–सार,–साल**–पु० एक वृक्ष।

विजोग*–पु० वियोग।

विजोगी*–वि०, पु० वियोगी।

विजोर†–पु० बिजौरा नीबू। वि० कमजोर, निर्बल।

विजोहा–पु० विमोहा, एक वृत्त।

विज्–पु० (सं०) पक्षी; पण।

विज्जल–वि० (सं०) फिसलाहटवाला, पिच्छिल। पु० एक तरहका बाण; शाल्मलीकंद; एक तरहकी चावलकी लपसी।

विज्जिल–पु० (सं०) दे० 'विजिल'।

विज्जु*–स्त्री० बिजली। **–लता***–स्त्री० विद्युल्लता; बिजली।

विज्जुल–पु० (सं०) दारचीनीका छिलका; त्वचा।

विज्जुलिका–स्त्री० (सं०) एक लता, जतुका, पहाड़ी।

विज्जोहा–पु० दे० 'विजोहा'।

विज्द–पु० (अ०) शक्तिशाली होना।

विज्दान–पु० (अ०) खोये हुएको पाना, जानना; सहृदयता; काव्यरसज्ञता।

विज्ञ–वि० (सं०) जानकार; समझदार, विद्वान्। पु० चतुर मनुष्य; मुनि। **–बुद्धि**–स्त्री० जटामासी। **–राज**–पु० ऋषिराज; पंडितराज।

विज्ञता–स्त्री०, **विज्ञत्व**–पु० (सं०) जानकारी; बुद्धिमत्ता।

विज्ञप्त–वि० (सं०) सूचित, जनाया हुआ।

विज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) सूचित करनेकी क्रिया; इश्तहार, विज्ञापन; निवेदन, प्रार्थना; अधिकारी व्यक्तिकी ओरसे प्रकाशित सूचना (कम्यूनीक)।

विज्ञप्तिका–स्त्री० (सं०) निवेदन, प्रार्थना।

विज्ञात–वि० (सं०) जाना, समझा हुआ; प्रसिद्ध। **–वीर्य**–वि० जिसके बल या शक्तिका लोगोंको ज्ञान हो। **–स्थाली**–स्त्री० ज्ञात या साधारण ढंगसे तैयार किया हुआ पात्र।

विज्ञातव्य–वि० (सं०) जानने, समझने योग्य।

विज्ञाता(तृ)–वि०, पु० (सं०) जानने, समझनेवाला।

विज्ञातार्थ–वि० (सं०) जो वस्तुस्थितिसे भली भाँति परिचित हो।

विज्ञाति–स्त्री० (सं०) समझ, ज्ञान; जानकारी; एक देवयोनि; एक कल्प।

विज्ञान–पु० (सं०) ज्ञान, समझ, प्रज्ञा; विवेक, निश्चयात्मिका बुद्धि; दक्षता, कार्यकुशलता; अनुभवजन्य ज्ञान; आकाश; कारबार; संगीत; चौदहों विद्याओंका ज्ञान; किसी विषयका क्रमबद्ध और व्यवस्थित ज्ञान; कर्म; आत्मा, ब्रह्म; मोक्ष आदिका ज्ञान। **–कृत्स्न**–पु० एक तांत्रिक कृत्स्न (बौ०)। **–केवल**–पु० जीवात्मा (व्यक्तिविशेषकी)। **–कोश**–पु० (सं०) ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि (वे०); आत्माको परिवृत्त करनेवाला पहला आवरण; दे० 'विज्ञानमय कोश'। **–घन**–पु० विशुद्ध ज्ञान। **–पति**–पु० श्रेष्ठ ज्ञानी। **–पाद**–पु० व्यास। **–मातृक**–पु० बुद्धि। **–वाद**–पु० योगाचारका सिद्धांत जिसमें केवल ज्ञानकी सत्ता मानी जाती है, वस्तुकी नहीं। **–वादी(दिन्)**–वि० विज्ञानवादका सिद्धांत माननेवाला; आधुनिक विज्ञानका पक्षपाती।

विज्ञानता–स्त्री० (सं०) अनुभूति; समझ।

विज्ञानमय–वि० (सं०) प्रज्ञायुक्त। **–कोश,–कोष**–पु० ज्ञानेंद्रियोंके साथ बुद्धि।

विज्ञानिक–वि० (सं०) विज्ञ; जानकार।

विज्ञानिता–स्त्री० (सं०) किसी विषयका ज्ञान या पूर्ण परिचय; विज्ञानी होनेका भाव।

विज्ञानी(निन्)–वि० (सं०) किसी विषयका उत्तम ज्ञाता; किसी विज्ञानमें निष्णात, वैज्ञानिक; आत्मा-परमात्माके स्वरूपका तत्त्व जाननेवाला।

विज्ञानीय–वि० (सं०) विज्ञान-संबंधी।

विज्ञापक–वि०, पु० (सं०) समझाने, बतलानेवाला; इश्तहार करनेवाला।

विज्ञापन–पु० (सं०) समझाना; सूचना देना; इश्तहार; समाचार पत्रों आदिमें प्रचार (एडवरटाइजमेंट); निवेदन, प्रार्थना। **–पत्र**–पु० विज्ञापनका अखबार। **–पुस्तिका**–स्त्री० वह किताब जिसमें विक्रेय वस्तुओंका परिचय दिया रहता है, सूचीपत्र।

विज्ञापनदाता–पु० (ऐडवरटाइजर) पत्रों आदिमें विज्ञापन छपवानेवाला।

विज्ञापना–स्त्री० (सं०) विज्ञप्ति करना, जतलाना, बतलाना; निवेदन।

विज्ञापनीय–वि० (सं०) विज्ञापनके योग्य, सार्वजनिक रूपसे सूचित करने या बताये जाने योग्य; सिखलाये जाने योग्य।

विज्ञापित–वि० (सं०) विज्ञप्त, बतलाया हुआ; सूचित, इश्तहार किया हुआ (नोटिफ़ायड)। **–क्षेत्र**–पु० (नोटिफ़ायड एरिया) स्थानिक स्वशासनके लिए नियत छोटा क्षेत्र।

विज्ञापी(पिन्)–वि० (सं०) सूचना देने, जतलाने, बतलानेवाला।

विज्ञाप्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्य–वि० (सं०) बतलाने, सूचित करने योग्य; विज्ञापनीय। पु० प्रार्थना, निवेदन।

विज्ञीप्सु–वि० (सं०) सूचना देने या निवेदन करनेकी इच्छा करनेवाला।

विज्ञेय–वि० (सं०) जानने, समझने, सीखने योग्य।

विज्य–वि० (सं०) गुणरहित (धनुष)।

विज्वर–वि० (सं०) ज्वररहित; चिंतारहित; संदेहहीन; शोक, क्लेशहीन; प्रसन्न; अक्षय्य।

विझर्झर–वि० (सं०) बेमेल; अप्रिय।

विटंक, विटंकक–वि० (सं०) सुंदर, रुचिर। पु० सबसे ऊँचा सिरा, स्थान; कबूतरका दरबा या छतरी; पक्षियोंका पिंजरा; बड़ी ककड़ी।

विटंकित–वि० (सं०) मुद्रांकित।

विट–पु० (सं०) कामुक, कामी; लंपट; वेश्याप्रेमी, वेश्या रखनेवाला; वैशिक; धूर्त; विदूषककी श्रेणीका एक नाटकीय पात्र, नायकका सखा; नायकका एक भेद; एक पहाड़; एक खैर; नारंगी; चूहा; साँचर नमक; एक खनिज द्रव्य; कोंपलदार टहनी; मकान। **–कांता**–स्त्री० हल्दी। **–प**–पु० दे० क्रममें। **–पेटक**–पु० धूर्तमंडली। **–प्रिय**–पु० मोगरा। **–भूत**–पु० एक असुर। **–माक्षिक**–पु० एक खनिज द्रव्य, सोनामाखी। **–लवण**–पु० साँचर नमक। **–वल्लभा**–स्त्री० पाटलीका पेड़।

विटक–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति; नर्मदा तटस्थित एक प्रदेश (पु०); फोड़ा।

विटका–स्त्री० (सं०) विटोंके परस्पर मिलनेका कमरा।

विटप–पु० (सं०) पेड़ या लताकी नयी शाखा, कोंपल; झाड़ी, छतनार पेड़; पेड़; आदित्य-पत्र; फैलाव; विटोंको रखनेवाला; अंडकोशके बीच या नीचेकी रेखा।

विटपक–पु० (सं०) वृक्ष; धूर्त ।

विटपी(पिन्)–वि० (सं०) शाखाओंवाला । पु० वृक्ष; झाड़ी; वटवृक्ष । **–(पि)मृग**–पु० बंदर ।

विटाटिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका मोथा; विटोंके परस्पर मिलनेका कमरा ।

विटामिन–पु० (अं०) (विटैमिन) खाद्यान्नों आदिमें पाया जानेवाला नव आविष्कृत पोषक तत्व; ऐसे कार्बनिक यौगिक जो जीवोंके स्वास्थ्यके लिए अत्यल्प मात्रामें अनिवार्यतः आवश्यक होते हैं; खाद्याज ।

विटाश्रय–पु० (सं०) विटके रहनेका मकान ।

विटि–स्त्री० (सं०) पीत चंदन । **–कंठीरव**–पु० मध्य-सिद्धांत-कौमुदीके रचयिता वरदराज ।

विटी–स्त्री० (सं०) दे० 'विटि' ।

विट्(श्)–पु० (सं०) प्रवेश; वैश्य, वनिया; मनुष्य । स्त्री० कन्या; प्रजा; जाति; परिवार । **–कुल**–पु० वैश्यका घर, परिवार । **–पण्य**–पु० व्यापारिक वस्तुएं । **–पति**–पु० नरेश; वैश्योंका मुखिया; जामाता; प्रधान व्यापारी ।

विट्(ष्)–स्त्री० (सं०) मल, विष्ठा; प्रसार; कन्या । **–कारिका**–स्त्री० एक पक्षी । **–कृमि**–पु० आँतमें पड़नेवाला कृमि, चुन्ना, चुनचुना । **–खदिर**–पु० एक तरहका बदबूदार खैर । **–चर**–पु० पालतू सूअर । **–शूल**–पु० एक तरहका उदरशूल । **–संग**–पु० कब्ज । **–सारिका,–सारी**–स्त्री० एक तरहकी मैना ।

विट्क–पु० (सं०) विष्ठा ।

विट्ठल–पु० (सं०) एक देवता जो विष्णुके अवतार माने जाते हैं (कहा जाता है कि महाराष्ट्रमें पंढरपुरके पुंडरीक नामक ब्राह्मणमें विष्णुका बहुत कुछ अंश आ गया था; उनकी मूर्ति वहीं स्थापित है और विष्णुके प्रतीकके रूपमें पूजी जाती है) । **–कवच**–पु० एक प्रसिद्ध कवच ।

विठंक–वि० (सं०) नीच, कमीना, खराब ।

विठर–वि० (सं०) वाग्मी । पु० बृहस्पति ।

विठल–पु० (सं०) दे० 'विट्ठल' ।

विठोबा–पु० दे० 'विट्ठल' ।

विडंग–पु० (सं०) वायविडंग नामक पौधा जो कृमिनाशक होता है; घोड़ा । वि० चतुर, कुशल ।

विडंब–पु० (सं०) नकल; चिढ़ाना; हेय समझना; कष्ट देना; खिन्न करना, कुढ़ाना; छेड़खानी । वि० अनुकरणशील ।

विडंबक–वि० (सं०) पूरी-पूरी नकल करनेवाला; नकल उतारकर चिढ़ानेवाला; निंदा करनेवाला ।

विडंबन–पु०, **विडंबना**–स्त्री० (सं०) नकल उतारना; चिढ़ाना; छेड़खानी करना; कष्ट देना; निंदा करना; निराश करना; छलना; उपहासका विषय; (पैरोडी) किसी कविताकी उन्हीं छन्दों या तुकोंमें नक़ल करके उसका मजाक उड़ानेका प्रयत्न । दम्भ ।

विडंबनीय–वि० (सं०) अनुकरण, नकल करने योग्य; उपहास्य ।

विडंबित–वि० (सं०) जिसकी नकल उतारी गयी हो, विकृत किया हुआ; जो परेशान किया गया हो; नीच; दीन; धोखा खाया हुआ; निराश ।

विडंबी(बिन्)–वि०, पु० (सं०) विडंबना करनेवाला ।

विडंब्य–पु० (सं०) घृणा या उपहासका विषय ।

विड–पु० (सं०) काला नमक; नोनहा नमक; टुकड़ा, एक प्रदेश । **–गंध**–पु० विड्लवण । **–लवण**–पु० एक लवण जो दवाके काम आता है, काला नमक ।

विडरना*–अ० क्रि० चौंकना; डरना; भागना; तितर-बितर होना ।

विडराना*–स० क्रि० चौंकाना; भगाना; तितर-बितर करना; नष्ट करना ।

विडारक–पु० (सं०) बिलाव ।

विडारना*–स० क्रि० दे० 'विडराना' ।

विडाल–पु० (सं०) दे० 'बिडाल' (समास भी) ।

विडालक–पु० (सं०) दे० 'बिडालक' ।

विडालाक्ष–वि० (सं०) दे० 'बिडालाक्ष' ।

विडालाक्षी–स्त्री० (सं०) एक राक्षसी ।

विडाली–स्त्री० (सं०) बिल्ली; विदारीकंद ।

विडीन–पु० (सं०) चिड़ियोंके उड़नेका एक प्रकार ।

विडीनक–पु० (सं०) अलग-अलग उड़ना ।

विडुल–पु० (सं०) एक तरहका बेंत ।

विडूरज–पु० (सं०) एक रत्न, वैदूर्य मणि ।

विडोजा, विडौजा(जस्)–पु० (सं०) इंद्र ।

विड्–'विष्'का समासगत रूप । **–गंध**–पु० विड्लवण । **–ग्रह,–बंध**–पु० मलरोध । **–घात**–पु० मल-मूत्रका रुकना । **–ज,–भव**–पु० विष्ठासे उत्पन्न कृमि । वि० मलसे उत्पन्न । **–भंग,–भिद्,–भेद**–पु० दस्त आना, पेट चलना । **–भुक्(ज्), –भोजी(जिन्)**–वि० मल खानेवाला । पु० गुबरैला । **–भेदी(दिन्)**–पु० दस्तावर दवा । **–लवण**–पु० साँचर नमक । **–वराह**–पु० ग्राम्य शूकर । **–विघात**–पु० एक मूत्र-रोग ।

विड्डु–पु० (सं०) अस्थि, हड्डी ।

विढ्ढल–पु० दे० 'विट्ठल' ।

वितड–पु० (सं०) एक तरहका ताला; हाथी ।

वितंडा–स्त्री० (सं०) अपने पक्षकी स्थापना; निरर्थक दलील, हुज्जत; एक शाक, कचूर; शिलारस; कर्वीरी; कबूतर; दूब; करछी । **–वाद**–पु० निरर्थक दलीलका सहारा लेना ।

वितंत*–पु० बिना तारका बाजा । वि० बिना तारका ।

वितंतु–पु० (सं०) अच्छा घोड़ा । स्त्री० विधवा ।

वितंत्री–स्त्री० (सं०) वह वीणा जिसके तारोंका स्वर बेमेल हो ।

वितंस–पु० (सं०) पक्षियों या छोटे पशुओंको फँसानेका जाल या उन्हें बाँधनेका साधन; पिंजड़ा ।

वित*–वि० कुशल; जानकार, वेत्ता । पु० धन, वैभव; शक्ति ।

वितघ्नी–स्त्री० (सं०) छोटी अरणी ।

वितत–वि० (सं०) विस्तृत, चौड़ा; फैला हुआ; खींचा हुआ (धनुष्का गुण); झुकाया हुआ (धनुष्); ढका हुआ; भरा हुआ; प्रस्तुत किया हुआ । पु० वीणा आदि तारवाले बाजे; ढोल आदिका शब्द । **–धन्वा(न्वन्)**–वि० जिसने धनुष्को पूरा खींचा हो । **–वपु(स्)**–वि० लंबे-चौड़े शरीरवाला ।

विततध्वर–वि० (सं०) जिसने यज्ञकी तैयारी की हो ।

वितताना*–अ० क्रि० अधीर होना ।

विततायुध–वि० (सं०) दे० 'विततधन्वा' ।

वितति–स्त्री० (सं०) विस्तार, फैलाव; आतिशय्य; परिमाण; समूह; झुंड ।

विततोत्सव–वि० (सं०) जिसने उत्सवका आयोजन किया हो ।

विततोरसि–वि० (सं०) चौड़ी छातीवाला; उदारहृदय ।

वितथ–वि० (सं०) मिथ्या; व्यर्थ, निरर्थक । पु० भारद्वाज; गृहदेवताओंका एक वर्ग । **–प्रयत्न**–वि० जिसके प्रयत्न निरर्थक हों । **–मर्याद**–वि० जिसका आचार विहित न हो । **–वादी(दिन्)**–वि० मिथ्या कथन करनेवाला ।

वितथाभिनिवेष–पु० (सं०) झूठ बोलनेकी प्रवृत्ति ।

वितथ्य–वि० (सं०) मिथ्या, असत्य ।

वितद्रु–स्त्री० (सं०) झेलम, वितस्ता नदी ।

वितन*–वि० दे० 'वितनु' ।

वितनिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) फैलानेवाला ।

वितनु–वि० (सं०) अति सूक्ष्म; शरीररहित; सारहीन; कोमल; सुंदर । पु० कामदेव ।

वितपन्न*–वि० व्युत्पन्न, कुशल, प्रवीण; विकल ।

वितमस्क–वि० (सं०) अंधकाररहित; अज्ञान या तमोगुणशून्य ।

वितमा(मस्)–वि० (सं०) दे० 'वितमस्क' ।

वितर–वि० (सं०) आगे ले जानेवाला (मार्ग आदि) ।

वितरक–पु० वितरण करने, बाँटनेवाला; बिक्री-प्रबन्धक (डिस्ट्रीब्यूटर) ।

वितरण–पु० (सं०) अर्पित करना, देना; दान; बाँटना; बाँटनेवाला; पार करना; पार करनेवाला; व्यापारिक क्षेत्रमें बिक्रीके लिए माल दुकानदारोंको देना (डिस्ट्रीब्यूशन), उत्पत्तिको

उत्पादनके साधनोंमें बाँटना (अर्थशास्त्र)।

वितरन*–पु० बाँटना; बाँटनेवाला।

वितरना*–स० क्रि० वितरण करना, बाँटना।

वितरिक्त*–अ० व्यतिरिक्त, सिवा।

वितरित–वि० (सं०) बाँटा हुआ।

वितरिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) दान देनेवाला; बाँटनेवाला।

वितरेक*–अ० व्यतिरिक्त, सिवा। पु० दे० 'व्यतिरेक'।

वितर्क–पु० (सं०) विचार; संदेह; संदेहका विषय; अनुमान; दलील; कुतर्क; साहित्यका एक संचारी भाव; एक अर्थालंकार जहाँ एक तरहके संदेह या वितर्कका वर्णन हो किंतु कुछ निर्णय न दिखाया जाय; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; आध्यात्मिक गुरु; प्रयोजन; अभिप्राय; योगियोंका एक वर्ग।

वितर्कण–पु० (सं०) तर्क या विचार करनेकी क्रिया; संदेह; वाद-विवाद।

वितर्कित–वि० (सं०) जिसपर तर्क या विचार किया गया हो; पहलेसे समझा हुआ।

वितर्क्य–वि० (सं०) विचारणीय; संदिग्ध; विलक्षण।

वितर्दि, वितर्दिका, वितर्दी–स्त्री० (सं०) वेदिका, मंच; छज्जा।

वितर्द्धि, वितर्द्धिका, वितर्द्धी–स्त्री० (सं०) दे० 'वितर्दि'।

वितल–पु० (सं०) सात अधोलोकोंमेंसे एक।

वितली(लिन्)–पु० (सं०) वितल लोकको धारण करनेवाले, बलदेव।

वितष्ट–वि० (सं०) काटा, खोदा हुआ; समतल किया हुआ।

वितस्ता–स्त्री० (सं०) झेलम नदी।

वितस्ताख्य–पु० (सं०) तक्षक नागका कश्मीरस्थ निवास-स्थान।

वितस्ताद्रि–पु० (सं०) एक पहाड़।

वितस्ति–पु० (सं०) बित्ता, बालिश्त; बारह अंगुलकी माप। **–देश्य**–वि० जो लगभग एक बित्ता लंबा हो।

विताडन–पु० (सं०) दे० 'ताडन'।

वितान–पु० (सं०) फैलाव, विस्तार; राशि; समूह; प्राचुर्य; प्रगति; वृद्धि; यज्ञ; चँदोवा; शून्यस्थान; सिरकी चोटपर बाँधनेकी एक पट्टी; एक वृत्त; गद्दी; वेदी; अवसर; अवकाश; घृणा। वि० खाली, रिक्त; उदास; धीमा; दुष्ट; परित्यक्त। **–मूल,–मूलक**–पु० खस, उशीर।

वितानक–पु० (सं०) विस्तार; चँदोवा; नृत्य आदिके लिए कमरेमें बिछाया जानेवाला बड़ा कपड़ा; परिमाण; माडवृक्ष; धनिया; संपत्ति।

वितानना*–स० क्रि० शामियाना, तंबू आदि तानना; तानना, चढ़ाना (धनुष् आदि)–'जिन रघुनाथ पिनाक वितान्यो तोर्यो निमिष मही'–सूर।

वितामस–पु० (सं०) प्रकाश। वि० अंधकाररहित; तमोगुणरहित।

वितार–पु० (सं०) एक तरहका केतु, पुच्छल तारा। वि० तारकहीन।

वितारक–पु० (सं०) एक जड़ी, विधारा।

विताल–वि० (सं०) जो तालमें न हो (संगीत)। पु० गलत ताल (संगीत)।

वितिक्रम*–पु० व्यतिक्रम, क्रमभंग।

वितिमिर–वि० (सं०) दे० 'वितमस्क'।

वितिलक–वि० (सं०) तिलक, सांप्रदायिक चिह्नसे रहित।

वितीत*–वि० व्यतीत, बीता हुआ।

वितीपात†–पु० दे० 'व्यतीपात'।

वितीपाती†–वि० नटखट, शरारती (लड़का)।

वितीर्ण–वि० (सं०) जो पार गया हो; दूरवर्ती; प्रदत्त; पूरा किया हुआ; पराभूत; परित्यक्त; नीचे गया हुआ; क्षमा किया हुआ; लड़ा हुआ (युद्ध)।

वितुंड–पु० हाथी।

वितुद–पु० (सं०) एक भूतयोनि।

वितुन्न–वि० (सं०) छेदा या चीरा हुआ। पु० एक साग, सुसना; सेवार।

वितुन्नक–पु० (सं०) धनिया; तूतिया; तामलकी नामक पौधा; बाली पहननेका कानका छेद।

वितुन्ना, वितुन्निका–स्त्री० (सं०) भुंइआँवला।

वितुष–वि० (सं०) जिसका छिलका निकाल दिया गया हो।

वितुष्ट–वि० (सं०) असंतुष्ट; अप्रसन्न।

वितृट्(ष्)–वि० (सं०) जो प्यासा न हो, पिपासारहित।

वितृण–वि० (सं०) तृणरहित।

वितृप्त–वि० (सं०) सतुष्ट।

वितृप्तक–वि० (सं०) दे० 'वितृप्त'।

वितृष–वि० दे० 'वितृट्'।

वितृष्ण–वि० (सं०) तृष्णारहित, उदासीन, निस्पृह।

वितृष्णा–स्त्री० (सं०) तृष्णाका अभाव; संतुष्टि; विरक्ति; प्रबल इच्छा, विकट तृष्णा।

वितोय–वि० (सं०) जलहीन।

वित्त–वि० (सं०) प्राप्त; ज्ञात; विचारित; परीक्षित; प्रसिद्ध। पु० धन-संपत्ति; प्राप्त वस्तु; अधिकार; शक्ति; (फाइनेंस) किसी राज्य या संस्था आदिके आय-व्ययके साधन, राज्यकी सार्वजनिक पूंजी या धन; राज्यकी वित्त-संबंधी व्यवस्था। **–काम**– वि० धनका इच्छुक; लोभी। **–कोश**–पु० रुपया-पैसा रखनेकी थैली। **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० कुबेर। **–जाय**–वि० विवाहित, जिसने पत्नी प्राप्त की है। **–द**–वि० धन देनेवाला; सहायक। **–दा**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–नाथ**–पु० कुबेर। **–निचय**–पु० धनकी बहुत बड़ी राशि। **–प**–वि० धनकी रक्षा करनेवाला। पु० कुबेर। **–पति,–पाल**–पु० कुबेर; खजांची। **–पेटा,–पेटी**–स्त्री० रुपया रखनेकी थैली। **–प्रबंधक**–पु० (फाइनैंशियर) सरकारी आय या धनका प्रबंध करनेवाला अधिकारी। **–मंत्री**–पु० (फाइनेंस मिनिस्टर) राज्यके धन, आय-व्ययके साधनों आदि-संबंधी विभागकी देख-रेख करनेवाला मंत्री। **–मात्रा**–स्त्री० संपत्ति। **–रक्षी(क्षिन्)**–पु० धनी व्यक्ति। **–वर्धन**–वि० जिससे अच्छी आय हो। **–वर्ष**–पु० वित्तीय वर्ष १ अप्रैलसे ३१ मार्च तक। **–विधेयक**–पु० (फाइनेंस बिल) संसद् या विधान-सभामें पुरःस्थापित किया जानेवाला आयव्ययक-संबंधी विधेयक। **–विवर्धी(र्धिन्)**–वि० धनकी वृद्धि करनेवाला। पु० सूद। **–शाठ्य**–पु० देन-लेनमें धोखेबाजी। **–संचय**–पु० धन जमा करना। **–समागम**–पु० धनागम। **–साधन**–पु० (फाइनेंसेज़) राज्य या संस्था आदिके धन प्राप्त करनेके जरिये। **–हीन**–वि० निर्धन; गरीब।

वित्तक–वि० (सं०) बहुत प्रसिद्ध।

वित्तवान्(वत्)–वि० (सं०) धनवान्।

वित्तागम–पु० (सं०) धनकी प्राप्ति या प्राप्तिका साधन।

वित्ताढ्य–वि० (सं०) बहुत धनी।

वित्ताप्ति–स्त्री० (सं०) धनकी प्राप्ति।

वित्तायन–वि० (सं०) धन लानेवाला।

वित्तार्थ–पु० (सं०) कुशल, निपुण व्यक्ति।

वित्ति–स्त्री० (सं०) विचार; ज्ञान; चेतना; संभावना; अस्तित्व; प्राप्त वस्तु; प्राप्ति, लाभ।

वित्तीय–वि० (सं०) (फाइनेंशल) वित्त-संबंधी; वित्तकी व्यवस्थाके विचारसे चलनेवाला (वित्तीय वर्ष)।

वित्तेश, वित्तेश्वर–पु० (सं०) कुबेर।

वित्तेहा, वित्तैषणा–स्त्री० (सं०) धनकी इच्छा; लालच।

वित्थार*–विस्तार, फैलाव।

वित्त्व–पु० (सं०) जानकार होनेका भाव या स्थिति।

वित्रप–वि० (सं०) बेहया, निर्लज्ज।

वित्रस्त–वि० (सं०) डरा हुआ, भीत।

वित्रस्तक–वि० (सं०) कुछ-कुछ डरा हुआ।

वित्रास–वि० (सं०) भय, डर; आतंक। वि० भयंकर।

वित्रासन–पु० (सं०) डरानेकी क्रिया। वि० डरावना।

वित्रासित–वि० (सं०) डरवाया हुआ।

वित्सन–पु० (सं०) बैल।

विथक–पु० पवन।

विथकना*–अ० क्रि० थकना, शिथिल पड़ना; मुग्ध या चकित होनेपर कुछ बोल न सकना।

विथकित*–वि० थका हुआ; जो मुग्ध या चकित होनेके कारण कुछ बोलनेमें असमर्थ हो।

विथराना, विथारना*–स० क्रि० फैलाना, छितराना।

विथा*–स्त्री० व्यथा, पीड़ा, कष्ट।

विथित*–वि० व्यथित, दुःखित, कष्टमें पड़ा हुआ।

विथुर–पु० (सं०) क्षय, नाश; चोर; राक्षस। वि० थोड़ा, अल्प; दुःखी, व्यथित; जो ठोस न हो; सदोष।

विथुरा–स्त्री० (सं०) वियोगिनी, विरहिणी; विधवा।

विथ्या–स्त्री० (सं०) गोजिह्वा, गोभी।

विदंड–पु० (सं०) अर्गला (?)।

विदंत–वि० (सं०) दंतहीन (हस्ती)।

विदंता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी कौड़ी।

विदंश–पु० (सं०) प्यास उत्पन्न करनेवाली चरपरी चीज; काटना, डँसना।

विदग्ध–वि० (सं०) नागर; निपुण; पंडित; रसिक, रसज्ञ; जला हुआ; जठराग्निसे पका हुआ, पचा हुआ; नष्ट; गला हुआ; जो जला या पचा न हो; सुंदर; भद्रतापूर्ण। पु० चतुर या धूर्त आदमी; रसिक; एक घास।

विदग्धक–पु० (सं०) जलती हुई लाश (बौ०)।

विदग्धता–स्त्री० (सं०) विद्वत्ता, पांडित्य; कुशलता; रसिकता।

विदग्धा–स्त्री० (सं०) चतुरतासे परपुरुषको अपनेमें अनुरक्त करनेवाली नायिका।

विदग्धाजीर्ण–पु० (सं०) एक तरहका अजीर्ण।

विदग्धाम्लदृष्टि–स्त्री० (सं०) एक नेत्ररोग।

विदग्धालाप–वि० (सं०) वाक्पटु।

विदत्त–वि० (सं०) दिया हुआ; बाँटा हुआ।

विदथ–पु० (सं०) विद्वान्; सेना; युद्ध; संत, सन्न्यासी; ऋषि; यज्ञ।

विदथो(थिन्)–पु० (सं०) एक वैदिक ऋषि।

विददंक्षु–वि० (सं०) काटने या खानेका इच्छुक।

विदमान*–वि० विद्यमान, उपस्थित, मौजूद। अ० मौजूदगीमें, सामने।

विदर–पु० (सं०) कंकारी वृक्ष; फाड़ना, विदारण करना; दरार, चीर।

विदरण–पु० (सं०) फाड़ना, विदारण करना; एक रोग, विद्रधि।

विदरना*–अ० क्रि० फटना। स० क्रि० फाड़ना।

विदर्भ–पु० (सं०) आधुनिक बरार; एक राजा; एक ऋषि; मसूड़ेका एक रोग; दाँत हिलना। **–जा**–स्त्री० अगस्त्य-पत्नी, लोपामुद्रा; दमयंती; रुक्मिणी। **–तनया,–सुभ्रू**–स्त्री० दमयंती। **–राज**–पु० विदर्भका राजा, भीष्मक।

विदर्भा–स्त्री० (सं०) विदर्भका राजनगर, कुंडिननगर; एक नदी; मनु चाक्षुषकी पत्नी।

विदर्भाधिपति–पु० (सं०) कुंडिनपति भीष्मकराज।

विदर्भि–पु० (सं०) एक ऋषि।

विदर्व्य–वि० (सं०) फणहीन (साँप)।

विदर्शना–स्त्री० (सं०) ज्ञान, विवेक।

विदल–पु० (सं०) विभाग, पार्थक्य; टुकड़ा; फट्टा; बेंत; सोना; लाल रंगका सोना; अनारका छिलका; डलिया (बाँसकी); टहनी; मिठाई; पीठी; चना; मटरकी दाल। वि० खिला हुआ; फटा हुआ; बिना दलका, पत्रहीन।

विदलन–पु० (सं०) मलने, दबाने, दलनेकी क्रिया; टुकड़े-टुकड़े करना; दमन; फाड़ना; फटना।

विदलना*–स० क्रि० दलित, नष्ट करना।

विदला–स्त्री० (सं०) लताविशेष, त्रिवृत्।

विदलान्न–पु० (सं०) पकाई हुई दाल; चना, अरहर आदि दो दलोंवाले अन्न।

विदलित–वि० (सं०) दला, रौंदा, मला हुआ; टुकड़े-टुकड़े किया हुआ; फाड़ा हुआ; फैला हुआ; खिला हुआ।

विदश–वि० (सं०) (कपड़ा) जिसमें किनारी न हो।

विदस्त–वि० (सं०) क्षीण।

विदा–स्त्री० (सं०) ज्ञान; समझ; विद्या; (अ० 'विदाअ') विदाई, रुखसती; दुलहिनकी मैकेसे विदाई। **–ई**–स्त्री० विदा होनेकी क्रिया (फ़ेयरवैल); विदा होनेकी अनुमति; जानेके समय दी जानेवाली रकम।

विदान–पु० (सं०) विभक्त करना; टुकड़े-टुकड़े करनेकी क्रिया।

विदाय–पु० (सं०) विभाग; वितरण; प्रस्थान; जानेकी अनुमति, विदा; विसर्जन; दान।

विदायी(यिन्)–पु० (सं०) ठीक-ठीक चलाने, रखनेवाला, नियामक; दान करनेवाला।

विदार–पु० (सं०) युद्ध; प्लावन, जलाशयके पानीका ऊपरसे बहना; दे० 'विदारण'।

विदारक–पु० (सं०) धाराके बीच स्थित वृक्ष या चट्टान; सूखी नदीमें पानीके लिए खोदा हुआ गड्ढा; नौसादर। वि० फाड़ने, विदारण करनेवाला।

विदारण–पु० (सं०) टुकड़े करना, फाड़ना; प्रवाहके बीच स्थित वृक्ष या चट्टान जिससे नाव बाँधी जाय; रौंदना; युद्ध, लड़ाई; मुँह खोलना; जंगल आदि काटकर साफ करना; कष्ट देना; वध करना; दूसरोंका पाप घोषित करना (जै०); कनेर; खपरिया, नौसादर।

विदारणा–स्त्री० (सं०) युद्ध, लड़ाई।

विदारना*–स० क्रि० फाड़ना।

विदारि–स्त्री० (सं०) शालपर्णी। **–गंधा**–स्त्री० दे० 'विदारि'।

विदारिका–स्त्री० (सं०) एक डाकिनी; कड़वी तूंबी; विदारी-कंद; गंभारी; शालपर्णी; जंघामूलकी सूजन।

विदारिणी–स्त्री० (सं०) काश्मरी।

विदारित–वि० (सं०) फाड़ा हुआ।

विदारी–स्त्री० (सं०) शालपर्णी; भूमिकुष्मांड; एक कंठ-रोग; बगल या पट्ठेकी सूजन; कानका एक रोग; क्षीरकाकोली; वाराहीकंद; एक ओषधिगण। **–कंद**–पु० भूमिकुष्मांड। **–गंधा,–गंधिका**–स्त्री० शालपर्णी।

विदारी(रिन्)–वि० (सं०) फाड़नेवाला; काटनेवाला।

विदारु–पु० (सं०) गिरगिट, कृकलास।

विदाह–पु० (सं०) पित्तके प्रकोपसे उत्पन्न जलन; हाथ-पैरकी जलन; आँतोंमें खाद्य पदार्थोंसे अम्ल बननेकी क्रिया।

विदाहक–पु० (सं०) विदाह करनेवाला; कास्टिक पोशाक।

विदाही(हिन्)–वि० (सं०) जलन उत्पन्न करनेवाला, दाहजनक; तीक्ष्ण; चरपरा। पु० दाह उत्पन्न करनेवाला द्रव्य।

विदिक्(श्)–स्त्री० (सं०) दो दिशाओंके बीचका कोना। वि० विभिन्न दिशाओंमें गमन करनेवाला। **–(क्) चंग**–पु० हरिद्रांग पक्षी।

विदित–पु० (सं०) कवि, विद्वान्; ऋषि; सूचना; प्रसिद्धि; लाभ, प्राप्ति। वि० प्रसिद्ध; जाना हुआ, अवगत; सूचित किया हुआ; स्वीकृत; जिसके लिए वचन दिया गया हो।

विदिता–स्त्री० (सं०) एक देवी (जै०)।

विदिथ–पु० (सं०) विद्वान्; योगी।

विदिश–स्त्री० दे० 'विदिक्'।

विदिशा–स्त्री० (सं०) दशार्ण जिलेकी राजधानी, वर्तमान भेलसा; दिशाहीनता; एक नदी; दे० 'विदिक्'।

विदिसा*–स्त्री० दे० 'विदिक्'।

विदीधिति–वि० (सं०) जिसमें किरणें न हों, रश्मिहीन।

विदीपक–पु० (सं०) दीपक, दीया, 'लैंप'।

विदीपित–वि० (सं०) प्रकाशित; प्रज्वलित; धूपित।

विदीप्त–वि० (सं०) चमकीला। **–तेजा(जस्)**–वि० कांतिमान्।

विदीर्ण–वि० (सं०) फाड़ा हुआ; टूटा हुआ; मार डाला हुआ, निहत; फैला हुआ; खुला हुआ। **–मुख**–वि० जिसका मुख खुला हो। **–हृदय**–वि० जिसका दिल फट गया हो, मर्माहत।

विदु–पु० (सं०) हाथीके कुंभोंके बीचका खात; घोड़ेके कानके बीचका भाग; जलहस्ती; बोधिवृक्षका एक देवता। वि०

बुद्धिमान्, चतुर।

विदुत्तम–पु० (सं०) सब कुछ जाननेवाला; विष्णु।

विदुर–वि० (सं०) चतुर; जानकार; कुशल; नागर; धीर। पु० चतुर व्यक्ति; विद्वान्; षड्यंत्रकारी; धृतराष्ट्र और पांडुके भाई जो व्यास द्वारा अंबिकादासीके पुत्र थे; एक प्राचीन पर्वत।

विदुल–पु० (सं०) बेंत; अंबुवेतस, जलवेत; एक गंधद्रव्य, गंधरस।

विदुला–स्त्री० (सं०) थूहर, सातला; विट्खदिर; एक महाभारतोक्त स्त्री।

विदुष*–पु० पंडित, विद्वान्।

विदुषी–स्त्री० (सं०) पंडिता स्त्री।

विदुष्कृत–वि० (सं०) पापरहित।

विदू–पु० (सं०) दे० 'विदु'।

विदून–वि० (सं०) पीड़ित, कष्टग्रस्त।

विदूर–वि० (सं०) सुदूरवर्ती। पु० दूरस्थ देश, प्रदेश; एक देश; एक पहाड़ जहाँ वैदूर्य मणिकी प्राप्ति होती है; कुरुका एक पुत्र। **–ग**–वि० दूरतक फैला हुआ; दूर जानेवाला। **–ज,–रत्न**–पु० विदूर पर्वतसे प्राप्त मणि। **–जात**–वि० दूरवर्ती स्थानमें उत्पन्न। **–भूमि**–स्त्री० विदूर देश। **–विगत**–वि० अंत्यज। **–संश्रव**–वि० दूरतक सुनाई देनेवाला।

विदूरथ–पु० (सं०) एक मुनि; बारहवें मनुका एक पुत्र; वृष्णिका एक वंशज; कुरुका एक पुत्र।

विदूराद्रि–पु० (सं०) विदूर नामक पहाड़।

विदूरित–पु० (सं०) दूर किया हुआ।

विदूरोद्भावित–पु० (सं०) वैदूर्य मणि।

विदूषक–पु० (सं०) कामी, कामुक व्यक्ति; नकल आदि करके हँसानेवाला (पुराने समयमें राजाओंके मनोरंजनके लिए ऐसे व्यक्तिकी नियुक्ति होती थी); चार नायकोंमेंसे एक; परनिंदा करनेवाला, खल। वि० दूषित या गंदा करनेवाला, भ्रष्ट करनेवाला; मजाक करनेवाला; परनिंदक।

विदूषण–पु० (सं०) गंदा, भ्रष्ट-करना; निंदा करना; व्यंग्य करना; दोषारोप करना।

विदूषना*–स० क्रि० सताना, कष्ट देना; दोषी ठहराना। अ० क्रि० दुःखी होना।

विदूषित–वि० (सं०) गंदा किया हुआ; अपमानित, लांछित।

विदृक्(श्)–वि० (सं०) अंधा; देखनेमें भिन्न।

विदृति–स्त्री० (सं०) खोपड़ीका जोड़।

विदेघ–पु० (सं०) एक ऋषि; दे० 'विदेह'।

विदेय–वि० (सं०) जो देने योग्य हो।

विदेव–वि० (सं०) देवरहित; देवताओंका विरोधी (राक्षस); देवताओंके बिना किया जानेवाला (यज्ञादि)। पु० राक्षस; यक्ष; पासेका खेल।

विदेवन–वि० (सं०) पासा खेलना।

विदेश–पु० (सं०) दूसरा देश, परदेश, देशांतर। **–ग**–वि० देशांतर गमन करनेवाला। **–गत**–वि० प्रवसित, परदेश गया हुआ। **–गमन**–पु० परदेश जाना। **–ज**–वि० दूसरे देशमें उत्पन्न। **–निरत**–वि० विदेश-भ्रमणमें आनंद माननेवाला। **–वास**–पु० दूसरे देशमें रहना। **–वासी(सिन्)**–वि० परदेशमें रहनेवाला। **–स्थ**–वि० परदेशमें रहने या घटित होनेवाला।

विदेशी–वि० दे० 'विदेशीय'। पु० परदेशका रहनेवाला।

विदेशीय–वि० (सं०) परदेशी, दूसरे देशका।

विदेह–वि० (सं०) शरीररहित; अचेत, बेसुध; मृत; विरागी; दैहिक चिंताओंसे रहित; जिसकी उत्पत्ति माता-पितासे न हो (देवता आदि)। पु० राजा जनक; निमि; मिथिला; मिथिलाके निवासी; शरीररहित व्यक्ति। **–कुमारी,–जा**–स्त्री० सीता। **–कूट**–पु० एक पर्वत। **–कैवल्य**–पु० मृत्युके बाद मिलनेवाला मोक्ष, निर्वाण। **–नगर,–पुर**–पु० जनककी राजधानी, जनकपुर।

विदेहक–पु० (सं०) एक पर्वत; एक वर्ष।

विदेहत्व–पु० (सं०) शरीर न होनेका भाव। **–गत**–वि० मृत।

विदेहा–स्त्री० (सं०) मिथिला।

विदेही(हिन्)–पु० (सं०) ब्रह्मा। स्त्री० सीता।

विदोष–पु० (सं०) पाप; अपराध। वि० निर्दोष।

विदोह–पु० (सं०) अधिक दुहना; किसी चीजसे अत्यधिक लाभ उठाना; शोषण।

विद्–वि० (सं०) जानकार; पंडित, विद्वान् (समासांतमें)। पु० बुध ग्रह; तिलका पौधा; विद्वान् व्यक्ति। स्त्री० समझ; ज्ञान; जानकारी।

विद्ध–वि० (सं०) छेदा हुआ; आहत; बाधित; विदीर्ण; पंडित, विद्वान्; चालित; तुल्य; आबद्ध; मिला हुआ; फेंका हुआ; चलाया हुआ; टेढ़ा। पु० जख्म। **–कर्ण**–वि० जिसके कान छिदे हों। पु० विद्धकर्णी। **–कर्णा,–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० वृक्ष-विशेष, पाठा। **–व्रण**–पु० काँटा चुभने, उसकी नोंक टूटनेसे होनेवाला घाव।

विद्धक–पु० (सं०) मिट्टी खोदनेका एक पुराना औजार। वि० विद्ध करनेवाला।

विद्धा–स्त्री० (सं०) एक क्षुद्र रोग जिसमें फुंसियाँ निकलती हैं।

विद्धायुध–पु० (सं०) एक विशेष लंबाईका धनुष्।

विद्धि–स्त्री० (सं०) छेदने आदिकी क्रिया; छेदनेसे होनेवाला छिद्र; आघात, चोट।

विद्य–पु० (सं०) प्राप्ति, लाभ।

विद्यमान–वि० (सं०) उपस्थित, वर्तमान; यथार्थ। **–मति**–वि० चतुर।

विद्यमानता–स्त्री०, **विद्यमानत्व**–पु० (सं०) उपस्थिति, मौजूदगी।

विद्या–स्त्री० (सं०) ज्ञान-विज्ञान; किसी विषयका विशेष ज्ञान; दुर्गा; मंत्र; जादू; गनियारी; छोटी घंटी; एक वृत्त; जादूकी एक गोली जिसे मुखमें रखनेपर उड़नेकी शक्ति प्राप्त हो जानेकी बात कही जाती है। **–कर**–वि० ज्ञानकी प्राप्ति करानेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० शास्त्रादिका अध्ययन। **–गुरु**–पु० शिक्षक, पढ़ानेवाला। **–गृह**–पु० विद्या पढ़ानेका स्थान, विद्यालय। **–चण,–चुंचु**–वि० विद्वान्, विद्वत्ताके लिए प्रसिद्ध। **–तीर्थ**–पु० एक प्राचीन तीर्थ; शिव। **–दल**–पु० भोजपत्रका पेड़। **–दाता(तृ)**–पु० पढ़ानेवाला, शिक्षक। **–दान**–पु० विद्या पढ़ाना; ग्रंथ, पुस्तक आदि देना। **–दायाद**–पु० विद्याका उत्तराधिकारी। **–देवी**–स्त्री० सरस्वती; एक जिन देवी। **–दोही**–पु० विद्यार्थी, विद्याप्रेमी। **–धन**–पु० विद्या द्वारा अर्जित धन; विद्यारूपी धन। **–धर**–वि० विद्यावाला, जादूगर। पु० एक देवयोनि (गंधर्व, किन्नर आदि); एक रतिबंध; एक वृत्त; एक ताल; एक यंत्र। **–धरी**–स्त्री० विद्याधर जातिकी स्त्री। **–धारी(रिन्)**–पु० एक वर्णवृत्त। **–ध्र**–पु० विद्याधर। **–पति**–पु० राजदरबारका सबसे बड़ा विद्वान्; एक प्रसिद्ध मैथिल कवि। **–पीठ**–पु० शिक्षाकेंद्र; बड़ा विद्यालय। **–बल**–पु० जादूकी शक्ति; विद्या, शास्त्रज्ञानका बल। **–भाक्(ज्)**–वि० विद्वान्। **–मंडलक**–पु० पुस्तकालय। **–मंदिर**–पु० विद्यालय। **–मठ**–पु० महाविद्यालय; साधुओंका विद्यालय। **–मणि**–पु० विद्याधन; छोटी घंटी। **–मद**–पु० विद्याका घमंड। **–महेश्वर**–पु० शिव। **–मार्ग**–पु० मोक्षदायक मार्ग। **–राज**–पु० विष्णु। **–राशि**–पु० शिव। **–लब्ध**–वि० विद्याकी सहायतासे प्राप्त। **–लाभ**–पु० विद्याकी प्राप्ति। **–वंश**–पु० किसी विद्याके अध्यापकोंकी सूची। **–वधू**–स्त्री० विद्याकी देवी, सरस्वती। **–विक्रय**–पु० धन लेकर पढ़ाना। **–विद्**–वि० विद्वान्। **–विरुद्ध**–वि० जिसका विज्ञानसे मेल न खाता हो। **–विशिष्ट**–वि० विद्वत्ताके लिए प्रसिद्ध। **–विहीन**–वि० मूर्ख। **–वृद्ध**–वि० विद्या या ज्ञानमें बढ़ा हुआ। **–वेश्म(न्),–सद्म(न्)**–पु० विद्यालय। **–व्यवसाय,–व्यसन**–पु० विद्या प्राप्त करनेकी क्रिया, अध्ययन। **–व्रत**–पु० गुरुके पास रहकर विद्योपार्जन करना। **–स्थान**–पु० ज्ञानका एक अंग। **–स्नात,–स्नातक**–पु० वह जो वेदादिका अध्ययन पूरा कर चुका हो। **–हीन**–वि० अशिक्षित, मूर्ख। **मु०** **–चलना**–चतुराई, करतब (बाजीगरोंका), धूर्तताका सफल होना। **–झूठी पड़ना**–चतुराई, करतब (बाजीगरी), धूर्तताका नाकामयाब होना। **–फलना**–विद्याका फलीभूत, सफल होना। **–लगना**–दे० 'विद्या चलना'। **–लौटाना**–सिखायी हुई विद्याको मंत्रबलसे

वापस करना।

विद्याकर–पु० (सं०) विद्याका आकर, विद्वान् व्यक्ति।

विद्यागम–पु० (सं०) विद्या, ज्ञानकी प्राप्ति।

विद्याधरेंद्र–पु० (सं०) जांबवान्।

विद्याधार–पु० (सं०) बहुत बड़ा विद्वान्।

विद्याधिदेवता–स्त्री० (सं०) विद्याकी अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप–पु० (सं०) शिव; विद्वान्।

विद्याधिराज–पु० (सं०) श्रेष्ठ विद्वान्; पूर्ण पंडित।

विद्यानुपालन–स्त्री० (सं०) अध्ययन आदिको प्रोत्साहन देना; अध्ययन।

विद्यानुसेवन–पु० (सं०) विद्याध्ययन।

विद्याभिमान–पु० (सं०) विद्वान् होनेकी मनोवृत्ति।

विद्याभ्यास–पु० (सं०) विद्याध्ययन।

विद्यारंभ–पु० (सं०) विद्याकी पढ़ाई आरंभ करनेका संस्कार।

विद्यार्जन–पु० (सं०) विद्याकी प्राप्ति; ज्ञान या शिक्षा द्वारा कुछ प्राप्त करना।

विद्यार्जित–वि० (सं०) विद्याके द्वारा प्राप्त।

विद्यार्थ–वि० (सं०) विद्याप्राप्तिका इच्छुक। पु० विद्या प्राप्त करनेकी इच्छा।

विद्यार्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) विद्या पढ़नेवाला, छात्र, शिष्य। वि० विद्याका इच्छुक।

विद्यालय–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ अध्ययन किया जाता है, विद्यागृह।

विद्यावान्(वत्)–वि० (सं०) विद्वान्।

विद्यासागर, ईश्वरचंद्र–पु० प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री और समाजसुधारक, आधुनिक बंगला गद्यके जनक (ईसवी सन् १८२०–१८९१)।

विद्यु–स्त्री० बिजली।

विद्युच्चालक–वि० (सं०) (वह पदार्थ) जिसके एक सिरेसे स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरेतक चली जाय (ताँबा आदि)।

विद्यच्छिखा–स्त्री० (सं०) विषैली जड़वाला एक पौधा; एक राक्षसी।

विद्युज्जनित्र–पु० (इलेक्ट्रिक जेनेरेटर) बिजली उत्पन्न करनेका यंत्र।

विद्युज्ज्वाल–पु० (सं०) एक नाग।

विद्युज्ज्वाला–स्त्री० (सं०) कलिकारी पौधा; बिजलीकी कौंध, तडित्प्रभा।

विद्युज्जिह्व–पु० (सं०) एक राक्षस, शूर्पणखाका पति; एक यक्ष। वि० बिजला जैसी जीभवाला।

विद्युज्जिह्वा–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका।

विद्युता–स्त्री० (सं०) एक विशेष शक्ति; बिजली; एक अप्सरा।

विद्युताक्ष–पु० (सं०) स्कंदका एक अनुचर।

विद्युत्–स्त्री० (सं०) बिजली; वज्र; ऊषा; एक तरहकी उल्का; एक वृत्त; एक वीणा; प्रजापति बाहुपुत्रकी चार कन्याएँ। पु० एक विशेष समाधि; एक असुर; एक राक्षस। वि० बहुत चमकीला; निष्प्रभ। **–कंप**–पु० बिजलीका कौंधना। **–केश, –केशी(शिन्)**–पु० एक राक्षस। **–चुंबकीय तरंगें**–स्त्री० अनुप्रस्थ (ट्रान्सवर्स) तरंगें जो विद्युत् आवेशके दोलनसे उत्पन्न होती हैं। विद्युत् चुम्बकीय तरंगोंके संचरणके लिए किसी भी भौतिक माध्यमकी आवश्यकता नहीं पड़ती। तरंग दैर्घ्यके बढ़ते हुए क्रमके अनुसार, विद्युत् चुंबकीय तरंगोंमें निम्नलिखित शामिल हैं : गामा किरणें, एक्स किरणें, पराबैंगनी किरणें, दृश्य प्रकाश, अवरक्त किरणें, उष्मा विकिरण, तथा रेडियो तरंगें (इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव)। **–दाब**–स्त्री० (वोल्टेज) दाबके आधारपर बिजलीकी गतिका मान। **–पताक**–पु० प्रलयके सात मेघोंमेंसे एक। **–परिपथ**–पु० विद्युत्धाराके प्रवाहित होनेवाले मार्गका पूरा घेरा (इलेक्ट्रिक सर्किट)। **–पर्णा**–स्त्री० एक अप्सरा। **–पात,–प्रपतन** –पु० बिजलीका गिरना, वज्रपात। **–पुंज**–पु० एक विद्याधर। **–प्रभ**–पु० एक ऋषि; एक दैत्य। वि० बिजली जैसा चमकनेवाला। **–प्रभा**–स्त्री० दैत्यराज बलिकी पौत्री; अप्सराओंका एक गण; एक नागकन्या। **–प्रिय**–पु० काँसा। **–विश्लेषण**–पु० (इलेक्ट्रोलिसिस) बिजली द्वारा खनिज-पदार्थोंमेंसे धातुएँ निकालनेकी वैज्ञानिक प्रक्रिया।

विद्यत्य–वि० (सं०) बिजलीमें रहने या उससे उत्पन्न होनेवाला।

विद्युत्वान्(वत्)–वि० (सं०) बिजलीवाला। पु० बादल; एक पहाड़।

विद्युदक्ष–पु० (सं०) एक दैत्य।

विद्युदणु–पु० (इलेक्ट्रान, प्रोटान) दे० 'ऋणविद्युदणु' तथा 'धनविद्युदणु'।

विद्युद्घात–पु० (इलेक्ट्रोक्यूशन) विद्युत्का संस्पर्श कराकर दिया जानवाला प्राणदंड; बिजलीके संस्पर्शसे होनेवाली मृत्यु।

विद्युदुन्मेष–पु० (सं०) बिजलीकी कौंध।

विद्युद्गौरी–स्त्री० (सं०) शक्तिकी एक मूर्ति।

विद्युद्दर्शक यंत्र–पु० (इलेक्ट्रॉसकोप) कोई दी हुई वस्तु विद्युन्मय है या नहीं, यह बतलानेवाला यंत्र। **–दर्शी**–पु० (इलेक्ट्रॉस्कोप) ऐसा उपकरण जो विद्युत् आवेशकी उपस्थिति और उसकी जाति (ऋण या धन आवेश) दर्शा सके।

विद्युद्दाम(न्)–पु० (सं०) बिजलीकी चमक या उसकी रेखा।

विद्युद्द्योत–पु० (सं०) बिजलीकी चमक।

विद्युद्धारक–पु० (लाइटनिंग अरेस्टर) बिजली गिरते समय टेलाफोन, रेडियो आदिके यंत्रोंको क्षतिग्रस्त होनेसे बचानेके लिए लगाया जानेवाला साधन।

विद्यद्ध्वज–पु० (सं०) एक असुर; प्रलयके सात मेघोंमेंसे एक, विद्युत्पताक।

विद्यद्रथ–वि० (सं०) रथके रूपमें बिजलीका प्रयोग करनेवाला।

विद्युद्वर्णा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

विद्युद्वल्ली–स्त्री० (सं०) बिजलीकी कौंध।

विद्युद्विभव–पु० अनन्त दूरीसे इकाई धनविद्युत् आवेशको किसी बिंदु तक ले आनेमें किया गया कार्य उस बिंदुका विद्युद्-विभव कहलाता है।

विद्युन्मापक–पु० (सं०) (इलेक्ट्रो मीटर) बिजलीकी शक्ति, गति आदिकी दिशा मालूम करनेका यंत्र।

विद्युन्माल–पु० (सं०) एक वानर (रा०)।

विद्युन्माला–स्त्री० (सं०) बिजलीका समूह; एक छंद; एक पक्षी।

विद्युन्माली(लिन्)–वि० (सं०) विद्युत्की माला धारण करनेवाला। पु० एक देवता; एक विद्याधर; एक असुर; एक छंद।

विद्युन्मुख–पु० (सं०) एक उपग्रह।

विद्युल्लता–स्त्री० (सं०) बिजलीकी टेढ़ीमेढ़ी रेखा।

विद्युल्लेखा–स्त्री० (सं०) बिजलीकी लीक; एक वर्णवृत्त।

विद्युल्लेपन–पु० (इलेक्ट्रो प्लेटिंग) किसी धातुके लवणका विद्युत्-अपघटन करके उस धातुकी पतली तहका लेप अन्य धातुकी सतहपर चढ़ानेका प्रक्रम।

विद्युल्लोचन–पु० (सं०) एक तरहकी समाधि।

विद्युल्लोचना–स्त्री० (सं०) एक नागकन्या।

विद्येश–पु० (सं०) शिव।

विद्येश्वर–पु० (सं०) एक उन्नत योनि।

विद्योत–पु० (सं०) बिजलीकी चमक। वि० चमकनेवाला।

विद्योतक, विद्योती(तिन्)–वि० (सं०) प्रकाशमान करनेवाला।

विद्योतन–पु० (सं०) बिजली। वि० चमकानेवाला।

विद्योता–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

विद्योपयोग, विद्योपार्जन–पु० (सं०) विद्या प्राप्त करना, ज्ञानार्जन, अध्ययन।

विद्योपार्जित–वि० (सं०) जो विद्याके सहारे प्राप्त हुआ हो।

विद्र–पु० (सं०) फाँक; छिद्र; गड्ढा; छेद करना; फाड़ना।

विद्रध–वि० (सं०) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा; पक्का, मजबूत, दृढ़; सन्नद्ध, समुद्यत। पु० विद्रधि।

विद्रधि–स्त्री० (सं०) फोड़ा, विशेषकर अंदरका। **–घ्न,–नाशन** –पु० सहिजन, शोभांजन।

विद्रधिका–स्त्री० (सं०) प्रमेहजन्य व्रण।

विद्रव–पु० (सं०) बहना; पिघलना; भागना, पलायन; आतंक,

घबड़ाहट; वुद्धि; भय; युद्ध; निंदा, शिकायत।

विद्रवण–पु० (सं०) भागना, पलायन।

विद्राण–वि० (सं०) सोतेसे जगाया हुआ, जाग्रत् अवस्थामें लाया हुआ।

विद्राव–पु० (सं०) दे० 'विद्रव'।

विद्रावक–वि० (सं०) भगानेवाला; पिघलानेवाला।

विद्रावण–वि० (सं०) भगानेवाला; घबड़ाहटमें डालनेवाला। पु० भगाना; फाड़ना; नष्ट करना; पराभूत करना; पलायन; पिघलाना; एक दानव।

विद्राविणी–स्त्री० (सं०) कौआठोंठी।

विद्रावित–वि० (सं०) पराभूत किया हुआ; भगाया हुआ; तितर-बितर किया हुआ; पिघलाया हुआ।

विद्रावी(विन्)–वि० (सं०) भागनेवाला; भगानेवाला; पिघलनेवाला; पिघलानेवाला।

विद्राव्य–वि० (सं०) भगाने योग्य, जो भगाया जाय।

विद्रुत–वि० (सं०) गला हुआ; पिघला हुआ; भागा हुआ; डरा हुआ; घबड़ाया हुआ; नष्ट। पु० युद्धका एक ढंग।

विद्रुति–स्त्री० (सं०) गलना; पिघलना; भागना, पलायन; नष्ट होना।

विद्रुम–पु० (सं०) प्रवाल, मूंगा; मुक्ताफल, रत्नवृक्ष; नया पत्ता, कोंपल; एक पहाड़। वि० वृक्षरहित। **–च्छवि**–पु० शिव। – **–दंड**–पु० रत्नवृक्षकी शाखा। **–फल**–पु० एक सुगंधित गोंद, कुंदुर। **–लता**–स्त्री० रत्नवृक्षकी शाखा; नली नामक गंधद्रव्य; मूंगा। **–लतिका**–स्त्री० नलिका नामक गंधद्रव्य।

विद्रूप–पु० (सं०) कटाक्ष, आक्षेप, ताना–'कविने शिक्षापर विद्रूप किया है'–सुधीन्द्र; विकृत या बिगड़ा रूप। वि० जिसका रूप बिगड़ गया हो, कुरूप, भद्दा। **–काव्य**–पु० (सैटायर) वह काव्य जिसमें किसीपर आक्षेप या कटाक्ष किया गया हो।

विद्रोह–पु० (सं०) हानि पहुँचानेके विचारसे किया हुआ कार्य; किसी राज्य या सरकारको उलटनेके लिए किया जानेवाला बलवा, उपद्रव, क्रांति।

विद्रोही(हिन्)–वि० (सं०) विद्रोह, द्वेष, वैर करनेवाला; राज्यका अनिष्ट करनेवाला, क्रांतिकारी।

विद्वज्जन–पु० (सं०) विद्वान्, चतुर आदमी; ऋषि।

विद्वत्कल्प–वि० (सं०) जो अधिक पढ़ा न हो।

विद्वत्तम–वि० (सं०) वहुत वड़ा विद्वान्। पुं० शिव।

विद्वत्ता–स्त्री०, **विद्वत्त्व**–पु० (सं०) पांडित्य, वुद्धि, ज्ञान।

विद्वद्देशीय, विद्वद्देश्य–वि० (सं०) दे० 'विद्वत्कल्प'।

विद्वद्वाद–पु० (सं०) विद्वानोंके बीच होनेवाला विवाद।

विद्वान्(द्वस्)–वि० (सं०) विद्याविशिष्ट; अत्यधिक शिक्षित, पंडित; तत्त्ववेत्ता, तत्त्वज्ञ; सर्वज्ञ। पु० पंडित, चतुर व्यक्ति।

विद्विट्(ष्), विद्विष–वि० (सं०) द्वेष, शत्रुता रखनेवाला। पु० शत्रु।

विद्विषाण–वि० (सं०) द्वेष करनेवाला।

विद्विष्ट–वि० (सं०) जिसके प्रति द्वेष किया गया हो।

विद्विष्टता–स्त्री० (सं०) विद्विष्ट होनेका भाव, द्वेष।

विद्विष्टि–स्त्री० (सं०) विद्वेष, वैर।

विद्वेष–पु० (सं०) शत्रुता, वैर; घृणा, किसीको नीचा दिखाने या हानि पहुंचानेवाला वैर (स्पाइट)।

विद्वेषक–वि०, पु० (सं०) विद्वेष करनेवाला, शत्रुता करनेवाला।

विद्वेषण–पु० (सं०) वैर; दो जनोंमें वैर करा देनेकी क्रिया; शत्रु; घृणा करनेवाला।

विद्वेषणी–स्त्री० (सं०) कोपना स्त्री; द्वेष करनेवाली स्त्री।

विद्वेषिता–स्त्री० (सं०) शत्रुता, वैर।

विद्वेषी(षिन्), विद्वेष्टा(ष्टृ)–वि० विद्वेष करनेवाला। पु० शत्रु।

विद्वेष्य–वि० (सं०) घृणा, द्वेष, वैरके योग्य। पु० कंकोल।

विधंस*–वि० विध्वस्त, नष्ट। पु० विध्वंस, नाश।

विधंसना*–स० क्रि० विध्वस्त करना, नष्ट करना।

विध–पु० (सं०) वेधन; प्रकार, किस्म; हाथीका चारा; तरीका; ऋद्धि; * ब्रह्मा।

विधत्री–स्त्री० (सं०) ब्रह्माकी शक्ति; महा सरस्वती।

विधन–वि० (सं०) धनहीन, दरिद्र।

विधनता–स्त्री० (सं०) गरीवी।

विधना–स्त्री० होनी, अदृष्ट। * पु० दैव, ब्रह्मा। स० क्रि० फँसाना; वेधना; प्राप्त करना; ऊपर लेना; अपने साथ लगना। अ० क्रि० बेधा जाना; फँसाया जाना।

विधनुष्क, विधन्वा(न्वन्)–वि० (सं०) जिसके पास धनुष् न हो।

विधमन–पु० (सं०) धोंकना, हवा पहुँचाकर सुलगाना; वुझाना; उड़ाना, नष्ट करना। वि० हवा करके उड़ाने या वुझानेवाला।

विधर†–अ० उधर, उस तरफ।

विधरण–पु० (सं०) रोकना, पकड़ना। वि० रोकने, पकड़नेवाला।

विधर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) प्रवंधक; सँभालनेवाला।

विधर्म–वि० (सं०) वुरा, अन्याय्य; निर्गुण। पु० अन्याय; परधर्म।

विधर्मक, विधर्मिक–वि० (सं०) धर्म-विरुद्ध आचरण करनेवाला; परधर्म माननेवाला।

विधर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) अन्याय, अनुचित कर्म करनेवाला।

विधर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) स्वधर्मके विरुद्ध आचरण करनेवाला, धर्मभ्रष्ट; परधर्मका अनुयायी; विभिन्न प्रकारका।

विधवन–पु० (सं०) हिलाना; कँपाना; कंपन।

विधवा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके पतिकी मृत्यु हो गयी हो, मृतभर्तृका, बेवा, रांड़। वि० स्त्री० 'धव' वृक्षसे रहित 'विधवा बनी न नारि'–राम०। **–गामी(मिन्)**–वि० विधवासे यौन संवंध रखनेवाला। **–विवाह**–पु० विधवासे विवाह करना।

विधवापन–पु० वैधव्य, रँड़ापा।

विधवावेदन–पु० (सं०) विधवासे विवाह करना।

विधवाश्रम–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ विधवाओंके भरण-पोषण आदिका प्रवध हो।

विधव्य–पु० (सं०) कंपन, हिलना।

विधस–पु० (सं०) मोम।

विधाँसना*–स० क्रि० विध्वस्त करना, वरवाद करना।

विधा–स्त्री० (सं०) विभाग, हिस्सा; प्रकार, तरीका; हाथी आदिका चारा; ऋद्धि; वेतन; मजदूरी; भाड़ा, किराया; उच्चारण; वेधन कर्म।

विधा(धस्)–पु० (सं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

विधातव्य–वि० (सं०) निर्धारित करने योग्य; प्राप्त करने योग्य; पूरा करने योग्य; कर्तव्य।

विधाता–स्त्री० (सं०) मदिरा।

विधाता(तृ)–वि० (सं०) व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला। पु० विभाग, व्यवस्था करनेवाला; वनानेवाला, निर्माता; देनेवाला; ब्रह्मा; प्रारब्ध; विष्णु; शिव; कामदेव; विश्वकर्मा। **–(तृ)भू**–पु० नारद।

विधातृका–वि० स्त्री० (सं०) विधायिका, विधान करनेवाली।

विधात्रायु(स्)–पु० (सं०) सूर्यप्रभा; सूर्यमुखी फूल।

विधात्री–स्त्री० (सं०) रचने, विधान करनेवाली; ब्रह्माणी, सरस्वती–'शची, विधात्री, इंदिरा'–रामा०; जननी; व्यवस्था करनेवाली; पीपल, पिप्पली।

विधान–पु० (सं०) कार्यका आयोजन; प्रवंध, व्यवस्था; नियंत्रण; आदेश; काम करनेका ढंग, प्रणाली; तरह, प्रकार 'वाहन अपर अनेक विधाना–रामा०, 'वाजन बाजे विविध विधाना'–रामा०। निर्माण; साधन; संपादन; हाथीका चारा; शत्रुतापूर्ण आचरण; भेजना, प्रेरण; रस्म; पूजा; प्राप्ति; प्रयोग; धन-संपत्ति; कानून (ला); (लेजिस्लेशन) राज्यके विधानमंडल द्वारा स्वीकृत कोई अधिनियम, व्यवस्था या विधि जैसा प्रभाव रखनेवाला विनिश्चय; उपसर्ग या प्रत्ययका योग; भाव-द्वंद्व। **–ग**–पु० पंडित; शिक्षक, आचार्य। **–ज्ञ**–वि० विधान जाननेवाला। पु० शिक्षक, आचार्य। **–परिषद्**–स्त्री० वह परिषद्, सभा जो व्यवस्थाको सुचारु रूपसे चलानेके लिए कानून बनाये, (लेजिस्लेटिव कौंसिल) (भारतके) जिस राज्यमें विधानमंडलके दो

सदन हों उसका वह दूसरा (अर्थात् विधानसभाको छोड़कर अन्य) सदन, जिसके सदस्य नगरपालिकाओं, विश्वविद्यालयके स्नातकों तथा शिक्षा-संस्थाओंके अध्यापकोंके बने निर्वाचनमंडलों द्वारा और विधानसभाके सदस्यों द्वारा निर्वाचित किये जायं। **–मंडल**–पु० (लेजिस्लेचर) राज्यके लिए विधान बनानेवाले व्यक्तियोंका समूह–भारतके जिन राज्योंमें दो सदन हैं, वहाँ उन दोनों (और जिनमें एक ही सदन हैं उनमें उक्त सदन) तथा राज्यपालको संयुक्त रूपसे यह नाम दिया गया है। **–युक्त**–वि० विधानके अनुकूल। **–व्रत**–पु० सूर्यका व्रतविशेष जो माघ-सुदी सप्तमीसे लेकर पौषतक चलता है।**–सप्तमी**–स्त्री० माघ-शुक्ला सप्तमी। **–सभा**–स्त्री० (लेजिस्लटिव असेंबली) जनप्रतिनिधियोंकी वह सभा जो राज्यके लिए विधान बनाती, आयव्ययक स्वीकार करती तथा शासन-कार्योंका नियंत्रण करती हैं।

विधानक–वि० (सं०) व्यवस्था करनेवाला; विधान जाननेवाला। पु० विशेष आदेश (शासन); कष्ट, व्यथा।

विधानिका–स्त्री० (सं०) बृहती।

विधानी(निन्)–वि० (सं०) विधानज्ञ; विधिवत् कार्य करनेवाला।

विधायक–वि० (सं०) कार्य करनेवाला; बनानेवाला; व्यवस्था देनेवाला; रचनात्मक; सुपुर्द करनेवाला। पु० संस्थापक, निर्माता; (लेजिस्लेटर) विधानसभाका सदस्य, विधान-संहिताके निर्माणका कार्य करनेवाला।

विधायन–पु० (लेजिस्लेशन) विधान करना या बनाना; विधानसभा आदि द्वारा विधान या अधिनियमका कार्य।

विधायी(यिन्)–वि० (सं०) व्यवस्था देनेवाला; बनाने, पूरा करनेवाला; सुपुर्द करनेवाला। पु० संस्थापक, निर्माता।

विधायी कार्य–पु० (लेजिस्लेटिव बिजनेस) (विधानसभा आदिमें) विधान-निर्माणका कार्य।

विधारण–पु० (सं०) रोकना; वहन करना; सँभालना। वि० पृथक् करनेवाला।

विधारणा–स्त्री० (सं०) विपरीत धारणा; किसीके विरुद्ध पहलेसे कायम कर ली गयी राय, 'प्रेजुडिस', पूर्वाग्रह।

विधारा–पु० एक लता जो उपदंश, क्षय आदि रोगोंमें बहुत गुणकारी होती है।

विधारी(रिन्)–वि० (सं०) रोक-थाम करनेवाला।

विधावन–पु० (सं०) इधर-उधर दौड़ना।

विधावित–वि० (सं०) विभिन्न दिशाओंमें पलायित, तितर-बितर।

विधाव्य–पु० (सं०) कंपन।

विधि–स्त्री० (सं०) कार्य करनेका ढंग (प्रोसेस); संगति, मेल; प्रयोग; शास्त्रसम्मत व्यवस्था; धर्मग्रंथ, शास्त्र द्वारा निश्चित कर्तव्य-निर्देश; क्रियाका वह रूप जिसमें किसीको काम करनेका आदेश किया जाता है (व्या०); एक अर्थालंकार जिसमें सिद्ध विषयका फिर विधान होता है; कार्य; भाग्य; एक देवी; चाल-ढाल, आचार-व्यवहार; (लॉ) मनुष्योंके हितों, अधिकारों आदिकी रक्षाके लिए राजा, मंत्रिमंडल या विधानसभा आदि द्वारा निर्मित वे विधान या अधिनियम जिनका पालन करना प्रत्येक व्यक्तिके लिए अनिवार्य होता है और जिनकी अवहेलना करनेपर उसे दंड मिलता है या मिल सकता है। पु० सृष्टिकी रचना करनेवाला, ब्रह्मा; विष्णु; अग्नि; समय; हाथी आदिका चारा; पूजा, अभ्यर्थना करनेवाला। **–कर,–कृत्**–वि० हुक्म बजा लानेवाला। पु० सेवक। **–कर्ता**–पु० (ला मेकर) कानून बनानेवाला व्यक्ति। **–ग्राह्य मुद्रा**–स्त्री० (लीगल टेंडर मनी) वह मुद्रा जिसका प्रयोग ऋण चुकानेके लिए करना विधिविहित हो। **–घ्न**–पु० नियमोंल्लंघन करनेवाला। **–ज्ञ**–वि० विधि-विधान जाननेवाला। **–दर्शक,–दर्शी(र्शिन्)–देशक**–पु० यज्ञमें होता आदिके कार्योंपर दृष्टि रखनेवाला। **–दृष्ट**–वि० विधानादिष्ट। **–द्वैध**–पु० नियमभिन्नता। **–निषेध**–पु० कोई काम करने या न करनेका शास्त्रीय निर्देश। **–पत्नी,–रानी**–स्त्री० सरस्वती। **–परामर्शी**–पु० (लीगल रिमेंब्रेंसर) सरकारको विधि (कानून)-संबंधी सलाह देनेवाला पदाधिकारी। **पर्यागत**–वि० भाग्यसे प्राप्त। **–पाट**–पु० मृदंगके चार वर्णोंमेंसे एक। **–पालक**–वि० (लॉ अबाइडिंग) राज्यकी विधियों (कानूनों)का पालन करते हुए जीवन-यापन करनेवाला (नागरिक)। **–पुत्र**–पु० ब्रह्माके पुत्र नारद। **–पुर**–पु० ब्रह्मलोक। **–पूर्वक,–वत्**–अ० नियमानुसार। **–प्रयोग**–पु० नियमका प्रयोग। **–बोधित**–वि० शास्त्रविहित। **–भंग**–पु० (ब्रीच ऑफ लॉ), विधि (कानून)की उपेक्षा करना, विधिविरोधी कार्य द्वारा विधिका उल्लंघन। **–यज्ञ**–पु० विधिपूर्वक किया हुआ यज्ञ। **–योग**–पु० नियमपालन; भाग्यका प्रभाव। **–रानी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'विधिवधू'। **–लोक**–पु० ब्रह्मलोक, सत्यलोक। **–लोप**–पु० नियमोल्लंघन। **–वधू**–स्त्री० ब्रह्माकी पत्नी, सरस्वती। **–वशात्**–अ० दैवयोगसे; भाग्यवशात्। **–वाहन**–पु० हंस। **–विज्ञान, शास्त्र**–पु० (ज्यूरिसप्रूडेंस) नियमों, विधियों, सिद्धांतों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **–विपर्यय**–पु० भाग्यकी प्रतिकूलता। **–विहित**–वि० नियम या शास्त्रके अनुसार प्रतिष्ठापित; शास्त्रानुमोदित। **–वेत्ता**–पु० (जूरिस्ट) विधिशास्त्रका उत्तम ज्ञाता। **–षेध**–पु० विधि और निषेध। **–सचिव**–पु० (लीगल सेक्रेटरी) विधि संबंधी प्रश्नोंमें सलाह देने या पत्रव्यवहारादि करनेवाला सचिव। **–स्नातक**–पु० (बैचलर ऑफ लाज) वह व्यक्ति जिसने विधि (कानून)की परीक्षामें उत्तीर्ण होकर उपाधि प्राप्त की हो। **–हीन**–वि० अनियमित, अविहित। मु० **–बैठना**–मेल खाना; इच्छानुकूल कार्य होना। **–मिलना**–अनुरूपता होना।

विधिक–वि० (लीगल) विधि (कानून)-संबंधी; जो विधिके अनुकूल या अनुरूप हो। **–प्रतिनिधि**–पु० (लीगल रिप्रेजेंटेटिव) न्यायालयमें कानूनी काररवाई करनेका अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधि। **–व्यवहार**–पु० (लीगल प्रोसीडिंग) कानूनी प्रक्रिया।

विधितः–अ० (सं०) कानूनके अनुसार (बाई लॉ); कानूनकी दृष्टिमें या कानूनके विचारसे (डीजूरी; लॉ फुली)।

विधित्समान–वि० (सं०) जो करने या देनेकी इच्छा रखता हो; स्वार्थी।

विधित्सा–स्त्री० (सं०) करनेकी इच्छा, मतलब, प्रयोजन।

विधित्सित–वि० (सं०) जिसे करनेकी इच्छा की गयी हो। पु० नीयत, अभिप्राय।

विधित्सु–वि० (सं०) जो करना चाहता हो।

विधुंत*–पु० दे० 'विधुंतुद'।

विधुंतुद–पु० (सं०) चंद्रमाको कष्ट देनेवाला, राहु।

विधु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; ब्रह्मा; विष्णु; शिव; एक राक्षस; युद्ध; अस्त्र; जलस्नान; पैरों आदिका प्रक्षालन, वायु; एक प्रायश्चित्त; समय। **–क्रांत**–पु० एक ताल (संगीत)। **–क्षय**–पु० चंद्रमाका क्षीण होना; असित पक्ष। **–दार**–स्त्री० चंद्रमाकी स्त्री, रोहिणी। **–पंजर,–पिंजर**–पु० खड्ग, खाँड़ा। **–परिध्वंस**–पु० चंद्रग्रहण। **–प्रिया**–स्त्री० रोहिणी; कुमुदिनी। **–बंधु**–पु० कुमुदका फूल। **–बैनी***–स्त्री० दे० 'विधुमुखी'। **–मंडल**–पु० चंद्रमंडल। **–मणि**–पु० चंद्रकांत मणि। **–मुखी,–वदनी**–स्त्री० सुंदरी स्त्री, चंद्रमाके समान मुखवाली स्त्री।

विधुत–वि० (सं०) दे० 'विधूत'। **–पक्ष**–वि० जिसने अपने पंख हिलाये हों। **–बंधन**–वि० बंधनमुक्त। **–मार्त्य**–वि० जो पार्थिव पदार्थोंका परित्याग कर चुका हो।

विधुति–स्त्री० (सं०) दे० 'विधूति'।

विधुर–वि० (सं०) दुःखी; वियोगी; वंचित; अभावग्रस्त; विरोधी, शत्रुतापूर्ण; घबराया, डरा हुआ; विकल, व्याकुल; असमर्थ, असहाय, अशक्त; परित्यक्त; एकाकी; विमूढ; जिसमें धुरा न हो (गाड़ी)। पु० भय; कष्ट; वियोग; मोक्ष; शत्रु; एक राक्षस; वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गयी हो। **–दर्शन**–पु० किसी भयजनक पदार्थका दर्शन; अशांति।

विधुरा–स्त्री० (सं०) कानके पासकी एक ग्रंथि; दहीकी लस्सी।

विधुवन–पु० (सं०) कंपन।

विधूत–वि० (सं०) कँपाया या हिलाया हुआ; काँपता हुआ; अस्थिर; परित्यक्त; हटाया, दूर किया हुआ; निकाला हुआ। **–कल्मष,–पाप्मा(प्मन्)**–वि० पापमुक्त। **–केश**–वि० जिसके बाल बिखरे या लहरा रहे हों। **–निद्र**–वि० जगाया हुआ, जाग्रत्

अवस्थामें लाया हुआ। **–वेश**–वि० जिसके वस्त्र उड़ या हिल रहे हों।

विधूति–स्त्री० (सं०) हिलना, कंपन।

विधूनन–पु० (सं०) हिलाना; कंपन; अनिच्छा, विकर्षण। वि० कंपानेवाला।

विधूनित–वि० (सं०) हिलाया हुआ; कंपित; उत्पीड़ित; क्षुब्ध।

विधूम–वि० (सं०) धूमरहित (अग्नि)।

विधूम्र–वि० (सं०) धूसर, मटमैला।

विधृत–वि० (सं०) ग्रहण, धारण किया हुआ; अलग किया हुआ; रोका हुआ; स्वायत्तीकृत; समर्थित; सँभाला हुआ; रक्षित। पु० आज्ञाकी अवमानना; असंतोष।

विधृति–स्त्री० (सं०) पार्थक्य; विभाजन; व्यवस्था; नियमन; पृथक् रखना; सीमा; विभाजक रेखा।

विधेय–वि० (सं०) देने योग्य; प्राप्य; करने योग्य; स्थापनाके योग्य; प्रदर्शित करने योग्य; प्रज्वलित करने योग्य; अधीन, वशवर्ती; विनम्र; शासित करने योग्य;..... द्वारा पराभूत। पु० कर्तव्य कर्म; आवश्यकता; वाक्यका वह अंश जो किसीके संबंधमें कहा गया हो (व्या०); प्रियके मानमोचनके दो उपचारोंमेंसे एक (साहित्य)। **–ज्ञ**–वि० कर्तव्य समझनेवाला। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० दूसरेकी आज्ञामें रहनेवाला।

विधेयक–पु० (बिल) किसी विधान, अधिनियम आदिका वह प्रारूप (मसौदा) जो पारित होनेके लिए लोकसभा, विधानसभा आदिमें रखा जाय।

विधेयता–स्त्री० (सं०) विधिके योग्य होना; अधीनता।

विधेयत्व–पु० (सं०) उपयोगिता; निर्भरता; अधीनता।

विधेयात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु। वि० जिसकी आत्मा संयत हो।

विधेयाविमर्ष–पु० (सं०) वाक्य-रचनाका वह दोष जिसमें प्रधान बात दबी रह जाय।

विधौत–वि० (सं०) धोकर साफ किया हुआ।

विध्मापन–वि० (सं०) छितराने या तितर-बितर करनेवाला।

विध्य–वि० (सं०) छिदने योग्य; जिसे बेधना, छेदना हो।

विध्यनुकूल–वि० (वैलिड) विधि (कानून)की दृष्टिसे जिसमें कोई त्रुटि न हो; जिसमें विधिक आवश्यकताओंका भली भाँति पालन या अनुसरण किया गया हो।

विध्यपराध–पु० (सं०) नियमका उल्लंघन।

विध्यपाश्रय–पु० (सं०) नियमका पालन।

विध्यलंकार–पु०, **विध्यलंक्रिया**–स्त्री० (सं०) एक काव्यालंकार जहाँ किसी सिद्ध बातका, विशेष अभिप्रायसे, पुनः विधान किया जाय।

विध्यात्मक–वि० (सं०) विधिसे संबद्ध; सकारात्मक (पाज़िटिव)।

विध्याभास–पुं० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें भारी अनिष्टकी संभावना प्रदर्शित करते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बातकी अनुमति दी जाय।

विध्वंस–पु० (सं०) विनाश; क्षति; वैमनस्य; घृणा; अनादर, अपमान; वैर।

विध्वंसक–वि० (सं०) नाशक; लंपट। पु० विनाशक रण-पोत (डेस्ट्रायर)।

विध्वंसन–पु० (सं०) नाश, बरबाद करना; अपमान करना। वि० नाश करनेवाला; सतीत्व नष्ट करनेवाला।

विध्वंसित–वि० (सं०) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ; नष्ट किया हुआ।

विध्वंसी(सिन्)–वि० (सं०) नष्ट होनेवाला; नाशक; (सतीत्वका) नाश करनेवाला; शत्रु, वैरी।

विध्वस्त–वि० (सं०) नष्ट; बरबाद किया हुआ; तितर-बितर किया हुआ; ग्रस्त (ज्यो०)।

विनंशी(शिन्)–वि० (सं०) नष्ट, लुप्त होनेवाला।

विन†–सर्व० विभक्ति लगनेपर बना हुआ 'वह'का बहु०। *अ० बिना, बगैर।

विनग्न–वि० (सं०) बिलकुल नंगा।

विनटन–पु० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करना।

विनत–वि० (सं०) झुका हुआ, नमित; विनम्र; शिष्ट; वक्र; कुबड़ा; हतोत्साह; खिन्न; लस्त। पु० एक तरहकी चींटी; एक बंदर; शिव। **–काय**–वि० जिसका शरीर झुका हो, नमित।

विनतक–पु० (सं०) एक पर्वत।

विनतड़ी*–स्त्री० दे० 'विनती'।

विनता–स्त्री० (सं०) कूबड़वाली लड़की; दक्ष प्रजापतिकी पुत्री, कश्यपकी पत्नी, गरुड़की माता; एक तरहकी टोकरी; प्रमेहजन्य पीठ या पेटका भयंकर फोड़ा; व्याधि लानेवाली एक राक्षसी। **–तनया**–स्त्री० विनताकी पुत्री सुमति। **–नंदन,–सुत,–सूनु**–पु० गरुड़; अरुण।

विनति–स्त्री० (सं०) झुकाव; नम्रता; विनती, प्रार्थना; दमन; रोक, निवारण; विनियोग।

विनती–स्त्री० प्रार्थना।

विनतोदर–वि० (सं०) कमरके पास झुका हुआ।

विनद–पु० (सं०) ध्वनि, शब्द, शोरगुल; छतिवन नामक पेड़।

विनदी(दिन्)–वि० (सं०) दे० 'विनादी'।

विनद्ध–वि० (सं०) जुड़ा या मिला हुआ, संयोजित; बंधन-मुक्त किया हुआ।

विनमन–पु० (सं०) झुकाना, लचाना; झुकना, लचना।

विनमित–वि० (सं०) झुकाया या (किसी तरफ) घुमाया हुआ; झुका हुआ।

विनम्र–वि० (सं०) झुका हुआ; विनीत, विनयी, सुशील। पु० तगरका फूल। **–कंधर**–वि० जिसकी गरदन झुकी हो।

विनम्रक–पु० (सं०) तगर-पुष्प।

विनय–वि० (सं०) क्षिप्त; गुप्त; दुर्वृत्त। स्त्री० मार्गप्रदर्शन; अनुशासन; शासन; भद्रता; शिष्टता; आदेशोंका विधिवत् पालन, अनुशासन (डिसिप्लिन); नम्रता (मॉडेस्टी); आचरण; प्रार्थना; पृथक् करना। पु० जितेंद्रिय, संयमी; व्यवसायी, व्यापारी। **–कर्म(न्)**–पु० शिक्षण। **–ग्राही(हिन्)**–वि० अनुशासन-संबंधी नियमोंका पालन करनेवाला। **–धर**–पु० पुरोहित। **–पिटक**–पु० अनुशासन-संबंधी नियमोंका संग्रह (बौ०)। **–प्रमाथी(थिन्)**–वि० अनुशासन भंग करनेवाला। **–भाक्(ज्)**–वि० विनम्र। **–योगी(गिन्)**–वि० विनम्र। **–वाक्(च्)**–वि० मधुरभाषी। **–शील**–वि० विनम्र। **–स्थ**–वि० आज्ञाकारी।

विनयन–पु० (सं०) विनय; शिक्षण; निराकरण; दूरीकरण।

विनयवान्(वत्)–वि० (सं०) नम्र, शिष्ट।

विनया–स्त्री० (सं०) बाटचाली, बरियारा।

विनयावनत–वि० (सं०) विनय या शिष्टतासे झुका हुआ, विनम्र।

विनयी(यिन्)–वि० (सं०) विनम्र, विनययुक्त।

विनयोक्ति–स्त्री० (सं०) मधुर वचन।

विनवना*–स० क्रि० प्रार्थना, अनुरोध करना।

विनशन–पु० (सं०) हानि, नाश; लोप; वह स्थान जहाँ सरस्वती रेतमें लुप्त हो जाती हैं। वि० नश्वर।

विनशना*–अ० क्रि० नष्ट होना, बरबाद होना।

विनशाना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना। अ० क्रि० नष्ट होना।

विनश्वर–पु० (सं०) नष्ट होनेवाला, नाशवान्; जो चिरस्थायी न हो, अनित्य।

विनश्वरता–स्त्री०, **विनश्वरत्व**–पु० (सं०) अनित्यता, नश्वरता।

विनष्ट–वि० (सं०) ध्वस्त; विलुप्त; मरा हुआ; बिगड़ा हुआ, विकृत; भ्रष्ट। पु० शव। **–चक्षु(स्)**–वि० जिसकी आँख नष्ट हो गयी हो। **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि नष्ट हो गयी हो। **–धर्म**–वि० जिसके विधान भ्रष्ट हों (देश)।

विनष्टि–स्त्री० (सं०) नाश; पतन; लोप।

विनष्टोपजीवी(विन्)–वि० (सं०) मुर्दा खाकर जीनेवाला।

विनस–वि० (सं०) नासिकाहीन; बेशर्म।

विनसना*–अ० क्रि० नष्ट होना।

विनसाना*–अ० क्रि० नष्ट होना। स० क्रि० नष्ट करना।

विना–अ० (सं०) न होनेपर, अभावमें, बगैर। **–कृत**–वि० पृथक् किया हुआ; परित्यक्त। **–भव,–भाव**–पु० पार्थक्य; पृथक

होना। –वास–पु० अपने प्रियसे पृथक् निवास करना।

विनाट, विनाड–पु० (सं०) चमड़ेकी थैली।

विनाडि, विनाडिका, विनाडी–स्त्री० (सं०) घटिकाका साठवाँ भाग (२४ सेकंड), पल।

विनाती*–स्त्री० विनती, प्रार्थना।

विनाथ–वि० (सं०) अनाथ, निराश्रय, परित्यक्त, रक्षकहीन, अरक्षित।

विनादित–वि० (सं०) शब्दायमान किया हुआ।

विनादी(दिन्)–वि० (सं०) गरजने, शोर करनेवाला।

विनाम–पु० (सं०) वक्रता; (पीड़ासे) शरीरका झुक जाना।

विनामित–वि० (सं०) झुकाया हुआ।

विनायक–वि० (सं०) ले जानेवाला; हटानेवाला। पु० गणेश; नायक; गरुड; बुद्धदेव; देवीका एक स्थान; गुरु, आचार्य; विघ्न। –केतु–पु० गरुडध्वज, कृष्ण। –चतुर्थी–स्त्री० गणेश-चौथ, माघ-सुदी चौथ।

विनायिका–स्त्री० (सं०) गरुड या गणेशकी पत्नी।

विनारुहा–स्त्री० (सं०) त्रिपर्णिका।

विनाल–वि० (सं०) जिसमें डंठल न हो।

विनाश–पु० (सं०) अस्तित्व न रहना, नाश; क्षय; लोप; हानि; बिगड़ जाना। –धर्मा(र्मन्),–धर्मी(र्मिन्)–वि० नश्वर, नष्ट होनेवाला; क्षणभंगुर। –संभव–पु० नाशका मूल कारण। –हेतु–पु० मृत्युका कारण।

विनाशक–वि० (सं०) नाश करनेवाला; बिगाड़नेवाला।

विनाशन–पु० (सं०) नाश करना; लुप्त करना; हटाना; एक असुर। वि० नाश करनेवाला।

विनाशयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) नाश करनेवाला।

विनाशांत–पु० (सं०) मृत्यु।

विनाशित–वि० (सं०) नष्ट-ध्वस्त किया हुआ।

विनाशी(शिन्)–वि० (सं०) नश्वर; नाश करनेवाला (डेस्ट्रायर); खराब करनेवाला, बिगाड़नेवाला।

विनाशोन्मुख–वि० (सं०) नाशकी ओर प्रवृत्त; नाशोद्यत; पका हुआ।

विनाश्य–वि० (सं०) नष्ट करने योग्य।

विनास–वि० (सं०) नासिकाहीन। * पु० दे० 'विनाश'; † नासिका (–फूटना = नाकसे खून जाना)।

विनासक, विनासिक–वि० (सं०) नासिकाहीन।

विनासन*–पु० दे० 'विनाशन'।

विनासना*–स० क्रि० नष्ट करना, बरबाद करना; खराब करना।

विनासिका–स्त्री० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

विनाह–पु० (सं०) कुएँका ढक्कन।

विनिंद–वि० (सं०) हँसनेवाला; बढ़ जानेवाला।

विनिंदक–वि० (सं०) निंदा करनेवाला; बढ़ जानेवाला।

विनिंदा–स्त्री० (सं०) शिकायत, निंदा।

विनिंदित–वि० (सं०) जिसकी बहुत निंदा की गयी हो, लांछित।

विनिःसरण–पु० (सं०) बाहर जानेकी क्रिया।

विनिःसृत–वि० (सं०) निकला हुआ, बाहर गया हुआ; बच निकला हुआ, भागा हुआ।

विनिःसृति–स्त्री० (सं०) पलायन।

विनिःसृष्ट–वि० (सं०) फेंका, चलाया हुआ।

विनिकषण–पु० (सं०) खुरचना, छीलना।

विनिकार–पु० (सं०) अपराध; क्षति।

विनिकीर्ण–वि० (सं०) छितराया हुआ; इधर-उधर फेंका हुआ; तोड़ा हुआ; ढँका हुआ; भरा हुआ।

विनिकृंतन–पु० (सं०) काटना, टुकड़े-टुकड़े करना। वि० काटने; टुकड़े-टुकड़े करनेवाला।

विनिकृत–वि० (सं०) जिसे क्षति पहुँचायी गयी हो, जिसके प्रति बुरा व्यवहार हुआ हो।

विनिकृत्त–वि० (सं०) काटा हुआ, चीरा हुआ।

विनिकेत–वि० (सं०) गृहहीन।

विनिकोचन–पु० (सं०) (भौंहोंको) संकुचित करना।

विनिक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; नीचे दबाया हुआ।

विनिक्षेप–पु० (सं०) फेंकना; उछालना; भेजना; पार्थक्य।

विनिगड–वि० (सं०) जिसके पैरोंमें बेड़ियाँ न पड़ी हों।

विनिगमक–वि० (सं०) दो पक्षोंमेंसे किसी एकको सिद्ध करनेवाला।

विनिगमना–स्त्री० (सं०) परस्पर विरोधी दो पक्षोंमेंसे एकका युक्ति और प्रमाणसे निश्चय करना (वैशे०); सिद्धांत; विचारपूर्ण निर्णय; परिणाम।

विनिगूहित–वि० (सं०) ढका या छिपाया हुआ।

विनिगूहिता(तृ)–पु० (सं०) ढकने, छिपानेवाला।

विनिग्रह–पु० (सं०) पार्थक्य; विभाजन; प्रतिबंध; संयम; अवरोध; रुकावट, बाधा, व्याघात; पारस्परिक विरोध।

विनिग्राह्य–वि० (सं०) रोकने योग्य।

विनिघूर्णित–वि० (सं०) घूमता हुआ; क्षुब्ध; अशांत; हिलता-डुलता हुआ।

विनिघ्न–वि० (सं०) नष्ट, बरबाद; गुणा किया हुआ।

विनिद्र–पु० (सं०) अस्त्रका एक संहार जिससे निद्रित या मूर्च्छितकी बेहोशी दूर होती है। वि० निद्रारहित, जाग्रत्; जागकर बिताया हुआ; खिला या फैला हुआ; उन्मीलित।

विनिद्रता–स्त्री०, **विनिद्रत्व**–पु० (सं०) प्रबोध, जागरूकता; निद्राका अभाव; जाग्रत् अवस्था।

विनिधान–पु० (सं०) (एलाकेशन) किसी उद्देश्यसे योजनानुसार किसीको अलग करके कहीं रखना; कार्यपद्धतिकी सूचना।

विनिध्वस्त–वि० (सं०) नष्ट, बरबाद किया हुआ।

विनिपतित–वि० (सं०) नीचे गिरा हुआ।

विनिपात–पु० (सं०) पतन; ध्वंस, विनाश; संकट (कैलेमिटी); नरक; दुर्घटना; कष्ट; मृत्यु; वध; हत्या; गर्भपात; अनादर, अवमान; असफलता। –गत–वि० विपन्न, संकटग्रस्त। –प्रतीकार–पु० संकटसे बचनेका उपाय। –शंसी(सिन्)–वि० विपत्तिकी सूचना देनेवाला।

विनिपातक–वि० (सं०) विनाशकारी, संहारकारी; अपमान करनेवाला; गिरानेवाला।

विनिपातन–पु० (सं०) गर्भपात करनेवाला।

विनिपातित–वि० (सं०) गिराया हुआ; नष्ट किया हुआ; मारा हुआ।

विनिपाती(तिन्)–वि० (सं०) नष्ट करनेवाला।

विनिबंध–पु० (सं०) किसी वस्तुसे संबंध या लगाव होना (बौ०)।

विनिमग्न–वि० (सं०) डूबा हुआ।

विनिमय–पु० (सं०) अदल-बदल, परिवर्तन (बार्टर), प्रतिदान; बंधक; वर्णपरिवर्तन; एक देशकी मुद्राका दूसरेकी मुद्रामें परिवर्तन; (एक्सचेंज) गिरवी या बंधक रखना; एक अर्थालंकार। –बैंक–पु० (एक्सचेंज बैंक) वह अधिकोष (बैंक) जहाँ एक देशकी मुद्राके बदले दूसरे देशकी मुद्रा देने या बाहर प्रेषित करने आदिका काम होता है।

विनिमित्त–वि० (सं०) जिसका कोई वास्तविक कारण न हो; जो किसी कारणसे न हुआ हो।

विनिमीलन–पु० (सं०) बंद होना, मुँदना (आँख, फूल आदिका)।

विनिमीलित–वि० (सं०) जो बंद हो गया हो; मुंदा हुआ।

विनिमीलितेक्षण–वि० (सं०) जिसने आँखें बंद कर ली हों या जिसकी आँखें बंद हो गयी हों।

विनिमेष, विनिमेषण–पु० (सं०) पलकोंका गिरना; पलक मारना।

विनियंत्रण–पु० (डी-कंट्रोल) युद्धस्थिति या उपलब्धिकी कमी आदिके कारण किसी वस्तुपर लगायी गयी मूल्य या वितरण-संबंधी नियंत्रण-व्यवस्थाका उठा लिया जाना।

विनियत–वि० (सं०) नियंत्रित; संयत। –चेता(तस्)–वि० जिसका मन नियंत्रणमें हो।

विनियताहार–वि० (सं०) जिसका आहार संयत हो, मिताहारी, अधिक खानेसे परहेज करनेवाला।

विनियम–पु० (सं०) रोक; संयम; नियंत्रण; शासन; (रेगुलेशन) वह विशेष नियम जो किसी संस्था आदिके प्रबंध या नियंत्रणके लिए प्राधिकृत आदेशसे या विशेष निश्चयके अनुसार बनाया गया हो।

विनियमक–वि० (रेगुलेटर) (पंखे आदिकी) गति या वेगका नियंत्रण करनेवाला आला।

विनियमन–पु० (रेगुलेशन, रेगुलेटिंग) नियमादि बनाकर नियंत्रित करना; गति, वेग, विस्तार आदि अधिक न बढ़ने देना, आवश्यकतानुसार घटाना-बढ़ाना या ठीक करना।

विनियम्य–वि० (सं०) रोक-थाम करने योग्य; संयत, नियंत्रित करने योग्य।

विनियुक्त–वि० (सं०) काममें लगाया हुआ, नियोजित; अर्पित; आदिष्ट; प्रेरित; कार्यसे मुक्त किया हुआ।

विनियुक्तात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसने किसी विषयपर अपना मन जमा रखा हो।

विनियोक्तव्य–वि० (सं०) नियुक्त करने योग्य; आदिष्ट करने योग्य।

विनियोक्ता(क्तृ)–वि०, पु० (सं०) नियुक्त करनेवाला।

विनियोग–पु० (सं०) विभाग, बँटवारा; नियुक्ति; कार्यभार; प्रयोग; संबंध; (ऐप्रोप्रियेशन) दे० 'उपयोजन'; संपत्ति आदि बेचकर निकालना (डिस्पोज़ल)। **–विधेयक**–पु० (ऐप्रोप्रियेशन बिल) वह विधेयक जिसमें इस बातका भी ब्यौरा दिया रहता है कि राजस्वका कितना अंश किस मदमें खर्च किया जायगा।

विनियोजन–पु० (सं०) विनियोग करना; भेजना; अर्पण।

विनियोजित–वि० (सं०) नियुक्त, लगाया हुआ; अर्पित; प्रेरित।

विनियोज्य–वि० (सं०) काममें लगाया जानेवाला; प्रयोगमें लाया जानेवाला।

विनिरोध–वि० (सं०) अप्रभावित; निष्क्रिय।

विनिरोधी(धिन्)–वि० (सं०) रोकने, बाधा डालनेवाला।

विनिर्गत–वि० (सं०) बाहर निकला हुआ; मुक्त; व्यतीत।

विनिर्गति–स्त्री० (सं०) बाहर निकलना।

विनिर्गम–पु० (सं०) बाहर होना; प्रस्थान; फैल जाना।

विनिर्घोष–पु० (सं०) उच्च स्वर।

विनिर्जन–वि० (सं०) बिलकुल सुनसान, जनशून्य।

विनिर्जय–स्त्री० (सं०) पूर्ण विजय।

विनिर्जित–वि० (सं०) पूर्णतः पराभूत।

विनिर्णय–पु० (सं०) निश्चित नियम; पूर्ण निश्चय।

विनिर्णीत–वि० (सं०) निश्चित; जिसका स्पष्ट रूपसे निर्णय किया गया हो।

विनिर्दग्ध–वि० (सं०) पूर्णतः जलाया या नष्ट किया हुआ।

विनिर्दहन–पु० (सं०) पूर्णतः जला देना या नष्ट कर देना।

विनिर्दिष्ट–वि० (सं०) जिसका निर्देश किया गया हो; सौंपा हुआ।

विनिर्देश–पु० (स्पेसिफिकेशन) निश्चित रूपसे कोई बात कहना या निर्देश करना; इस प्रकार कही हुई बात; विशेषताओं-संबंधी विवरण।

विनिर्देश्य–वि० (सं०) जिसका निर्देश, उल्लेख किया जाय।

विनिर्धुत–वि० (सं०) कँपाया, क्षुब्ध किया हुआ; फेंका हुआ।

विनिर्धूत–वि० (सं०) फेंका हुआ; हटाया हुआ।

विनिर्बंध–पु० (सं०) अध्यवसाय।

विनिर्बाहु–पु० (सं०) तलवारका एक हाथ।

विनिर्भिन्न–वि० (सं०) फटा हुआ; छिदा हुआ।

विनिर्भोग–पु० (सं०) एक कल्प।

विनिर्मल–वि० (सं०) अत्यधिक स्वच्छ, जिसमें जरा भी मल न हो।

विनिर्माण–पु० (सं०) अच्छी तरह बनाना।

विनिर्माता(तृ)–पु० (सं०) बनानेवाला।

विनिर्मित–वि० (सं०)···से बना हुआ; रचित; मनाया हुआ (उत्सव); निर्धारित, निश्चित।

विनिर्मिति–स्त्री० (सं०) निर्माण, रचना।

विनिर्मुक्त–वि० (सं०) छोड़ा हुआ; बंधनरहित; निकला हुआ।

विनिर्मुक्ति–स्त्री० (सं०) छुटकारा, मुक्ति।

विनिर्मूढ–वि० (सं०) जो हतबुद्धि न हो। **–प्रतिज्ञ**–वि० अपने वचनका पालन करनेवाला।

विनिर्मोक–वि० (सं०) आवरण-रहित; वस्त्रहीन।

विनिर्याण–पु० (सं०) प्रस्थान।

विनिर्यात–वि० (सं०) प्रस्थित, गया हुआ।

विनिर्वृत्त–वि० (सं०) पूर्ण किया हुआ, संपन्न; निकला हुआ, उत्पन्न।

विनिवर्तक–वि० (सं०) पलटनेवाला; रद करनेवाला।

विनिवर्तन–पु० (सं०) लौटना; अंत होना।

विनिवर्ति–स्त्री० (सं०) विराम, निवृत्ति।

विनिवर्तित–वि० (सं०) लौटाया हुआ; पलटा हुआ।

विनिवर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) लौटने, पलटनेवाला।

विनिवारण–पु० (सं०) रोक, नियंत्रण; दूर रखना।

विनिविष्ट–वि० (सं०) बसा हुआ; रखा हुआ; भिन्न।

विनिवृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; हटा हुआ; समाप्त; मुक्त; लुप्त। **–काम**–वि० जिसकी इच्छाओंका अंत हो गया हो। **–शाप**–वि० शापके प्रभावसे मुक्त।

विनिवृत्ति–स्त्री० (सं०) विराम, अंत; छुटकारा।

विनिवेदन–पु० (सं०) घोषित करना।

विनिवेदित–वि० (सं०) घोषित, जनाया हुआ।

विनिवेश–पु० (सं०) प्रवेश; आबाद होना; छाप; पुस्तकादिमें उल्लेख करना।

विनिवेशन–पु० (सं०) निर्माण; व्यवस्था; छाप डालना; प्रवेश; स्थिति; अधिष्ठान।

विनिवेशित–वि० (सं०) प्रविष्ट; टिका, ठहरा हुआ; बसा हुआ; निर्मित।

विनिवेशी(शिन्)–वि० (सं०) प्रवेश, करनेवाला; रहने, बसनेवाला; अधिष्ठित।

विनिश्चय–पु० (डेसीज़न) कोई काम करने आदिके संबंधमें किसी सभा आदिमें विशेष रूपसे कुछ निश्चय किया जाना, किसी प्रश्नका निपटारा।

विनिश्चल–वि० (सं०) अकंपित, दृढ़, स्थिर।

विनिश्वसित–पु० (सं०) प्रश्वास।

विनिश्वास–पु० (सं०) गहरी साँस, उसाँस।

विनिषिद्ध व्यापार–पु० (कंट्राबैंड ट्रेड) उन वस्तुओंका व्यापार जिनके आयात या निर्यातकी मनाही कर दी गयी हो या जिन्हें युद्धग्रस्त देशोंके हाथ बेचना तटस्थ राष्ट्रोंके लिए अनुचित ठहराया गया हो।

विनिषूदित–वि० (सं०) पूर्णतः नष्ट किया हुआ।

विनिष्कंप–वि० (सं०) अकंपित, स्थिर।

विनिष्टप्त–वि० (सं०) खूब भूना हुआ।

विनिष्पतित–वि० (सं०) झपटा हुआ।

विनिष्पात–पु० (सं०) झपटना, टूट पड़ना।

विनिष्पाद्य–वि० (सं०) जिसे पूरा करना हो।

विनिष्पेष–पु० (सं०) पीसना, रगड़ना; मलना।

विनिस्मृत–वि० (सं०) लिखित, वर्णित।

विनिहत–वि० (सं०) आहत, चोट खाया हुआ; विनष्ट; मारा हुआ; पूर्णतः पराभूत; लुप्त; उल्लंघित; पीड़ित। पु० दैविक ताप; भारी विपत्ति; धूमकेतु।

विनिहित–वि० (सं०) रखा हुआ, जमाया हुआ; पृथक् किया हुआ। **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि किसी चीजपर लगी हो। **–मना(नस्)**–वि० जो किसी बातपर तुला हो।

विनिह्नुत–वि० (सं०) छिपा हुआ; अस्वीकार किया हुआ।

विनीत–वि० (सं०) हटाया हुआ, ले गया हुआ; फैलाया हुआ; शिथिल; नम्र, विनयी; शिक्षित, जानकार, ज्ञान रखनेवाला; जितेंद्रिय; सुंदर; स्वच्छ (वस्त्र)। पु० सिखलाया हुआ घोड़ा; वृषभ; व्यापारी; पुलस्त्यका एक पुत्र; दमनक। **–वेष**–पु० सादी पोशाक।

विनीतक–पु० (सं०) सवारी, शिविका आदि; वाहक।

विनीतता–स्त्री०, **विनीतत्व**–पु० (सं०) नम्रता, शिष्टता, भद्रता।

विनीति–स्त्री० (सं०) शिक्षा; शिष्ट व्यवहार; नम्रता; आदर, सम्मान।

विनीय–पु० (सं०) कल्क, तलछट; पाप, अपराध।

विनीलक–पु० (सं०) वह शव जो नीला हो गया हो (बौ०)।

विनु*–अ० विना ।

विनुत्ति–स्त्री० (सं०) दूर करना, हटाना; एक एकाह कृत्य ।

विनुन्न–वि० (सं०) भगाया, हटाया हुआ; आहत ।

विनूठा†–वि० अनूठा, अजीब ।

विनेता(तृ)–पु० (सं०) नायक, रहनुमा; गुरु; शासक ।

विनेय–वि० (सं०) नेतव्य, जो ले जाया या हटाया जाय; जो शिक्षित किया जाय; जो शासित किया जाय । पु० शिष्य ।

विनोक्ति–स्त्री० (सं०) एक काव्यालंकार जहाँ किसी एक वस्तुके विना अपर वस्तुका शोभित होना या शोभित न होना दिखाया जाय ।

विनोद–पु० (सं०) दूर करना, हटाना; मनोरंजन; क्रीड़ा; कौतूहल; मनोरंजक बात; परिहास; प्रबल इच्छा; आलिंगन-विशेष; एक प्रकारका प्रासाद; प्रमोद । **–रसिक**–वि० क्रीडाशील । **–वृत्ति**–स्त्री० (सेन्स ऑफ ह्यूमर) विनोदपूर्ण बातें करनेकी तथा उन्हें प्रसन्नतापूर्वक सहनेकी आदत ।

विनोदन–पु० (सं०) हटाना, दूर करना; क्रीडा करना; मन बहलाना ।

विनोदित–वि० (सं०) दूर किया हुआ; हृष्ट, प्रसन्न ।

विनोदी(दिन्)–वि० (सं०) दूर करनेवाला; कौतूहली, क्रीड़ाशील; मौजी; हँसोड़, हँसी दिल्लगी करनेवाला ।

विन्न–वि० (सं०) प्राप्त, लब्ध; विचारित; रखा हुआ; जिसका अस्तित्व हो; ज्ञात, जाना हुआ; विवाहित ।

विन्नक–पु० (सं०) अगस्त्य ।

विन्ना–स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री ।

विन्यय–पु० (सं०) स्थिति ।

विन्यसन–पु० (सं०) रखना, डालना ।

विन्यस्त–वि० (सं०) रखा हुआ; जमाया, जड़ा हुआ; डाला हुआ; फेंका हुआ; प्रवृत्त किया हुआ; व्यवस्थित; अर्पित; जमा किया हुआ ।

विन्याक–पु० (सं०) छतिवन ।

विन्यास–पु० (सं०) रखना, स्थापन; जड़ना; धारण करना; सुपुर्द करना; व्यवस्थित करना; (एरेंजमेंट) सिलसिलेसे रखने, क्रम ठीक करने आदिका काम, सजाना; अंगोंकी स्थिति; फैलाना; प्रदर्शन; आधार; संग्रह; समूह ।

विपंच–पु० (अंपायर) पंचोंके बीच मतभेद होनेपर अभिनिर्णयके लिए आमंत्रित अन्य व्यक्ति ।

विपंचनक, विपंचिक–पु० (सं०) भविष्यद्वक्ता ।

विपंचिका, विपंची–स्त्री० (सं०) एक तरहकी वीणा; क्रीड़ा; केलि ।

विप–वि० (सं०) विद्वान् ।

विपक्त्रिम–वि० (सं०) खूब पका हुआ; विकासको प्राप्त ।

विपक्व–वि० (सं०) अच्छी तरह पका हुआ; पूर्ण अवस्थाको प्राप्त; पकाया हुआ; कच्चा ।

विपक्ष–पु० (सं०) विरोधी पक्ष; शत्रु, विरोधी; प्रतिवादी; किसी बातके विरोधमें कुछ कहना; किसी नियमके विरुद्ध व्यवस्था, बाधक नियम, अपवाद (व्या०); वह पक्ष जिसमें साध्यका अभाव हो (न्या०); निष्पक्षता; वह दिन जब पख बदले । वि० प्रतिकूल, उलटा; पक्षपातरहित, निष्पक्ष; बिना पंखका । **–भाव**–पु०,**–वृत्ति**–स्त्री० शत्रुताकी स्थिति । **–रमणी**–स्त्री० वह स्त्री जिसकी दूसरीके साथ प्रतिद्वंद्विता चल रही हो ।

विपक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) विरुद्ध पक्षका; बिना पंखका । पु० शत्रु ।

विपचन–पु० (सं०) (मेटोबोलिज्म) शरीरमें पोषक तत्वोंका रसोंमें परिवर्तित होना, उपापचयन, चयापचयन ।

विपज्जनक–वि० (सं०) विपत्ति उत्पन्न करनेवाला, विपत्ति लानेवाला ।

विपण–पु० (सं०) विक्रय; छोटा व्यापार; बाजार; शिव ।

विपणन–पु० (सं०) विक्रय, व्यापार ।

विपणि, विपणी–स्त्री० (सं०) हाट; दुकान; बिक्रीका माल; व्यापार; बिक्री ।

विपणी(णिन्)–पु० (सं०) व्यापारी, दुकानदार ।

विपताक–वि० (सं०) ध्वजहीन ।

विपतित–वि० (सं०) उड़ा हुआ; गिरा हुआ । **–लोमा(मन्)**–वि० जिसके बाल गिर गये हों ।

विपत्–'विपद्'का समासगत रूप । **–कर**–वि० संकट उत्पन्न करनेवाला । **–काल**–पु० संकटके दिन; दुर्दिन । **–फल**–वि० संकट लानेवाला । **–सागर**–पु० बहुत बड़ा संकट ।

विपत्तन–पु० (सं०) देशनिकाला (डिपोर्टेशन) ।

विपत्ति–स्त्री० (सं०) संकट, आफत; मृत्यु; नाश; यातना । **–कर**–वि० संकट उत्पन्न करनेवाला । **–काल**–पु० कष्टके दिन । मु० **–उठाना,–झेलना**–तकलीफ सहना । **–काटना**–दुःखके दिन बिताना । **–ढहना**–किसीपर सहसा भारी दुःख पड़ना । **–भोगना**–कष्ट सहना । **–में डालना**–किसीको दुःख देना । **–में पड़ना**–संकटग्रस्त होना । **–मोल लेना**–जान-बूझकर संकटमें पड़ना । **–सिरपर लेना**–व्यर्थ झंझट, दिक्कतमें पड़ना ।

विपत्र–पु० (बिल) किसी महाजन, बैंक, खजाने आदि द्वारा दिया गया वह पत्र जिसमें लिखा हो कि इसमें निर्दिष्ट रकम अमुक तिथितक चुका दी जायगी, हुंडी; खरीदे या मँगाये गये मालका मूल्य चुकानेके लिए जारी किया गया वह लिखित पत्र या साधन जा ऋण चुकानेके लिए दोनों पक्षों द्वारा स्वीकार किया गया हो, विनिमय-पत्र ।

विपथ–पु० (सं०) भिन्न मार्ग; गलत रास्ता; अनुचित कार्योंमें प्रवृत्त होना; एक बड़ी संख्या; एक तरहका रथ । **–गति**–स्त्री० बुरे रास्तेपर जाना । **–गा**–वि० स्त्री० कुमार्गपर जानेवाली । स्त्री० नदी । **–गामी(मिन्)**–वि० कुमार्गगामी, चरित्रहीन ।

विपथन–पु० (एबरेशन) नियत पथसे हटकर इधर उधर होना ।

विपदा–स्त्री० (सं०) विपत्ति, दुःख, शोक, संकट ।

विपद्–स्त्री० (सं०) आफत, संकट; मृत्यु; नाश । **–आक्रांत**–वि० संकट-ग्रस्त । **–उद्धरण,–उद्धार**–पु० संकटसे छुटकारा । **–गत,–ग्रस्त**–वि० संकटापन्न । **–दशा**–स्त्री० संकटकी अवस्था ।

विपन्न–वि० (सं०) मृत; नष्ट; संकटग्रस्त; नष्ट शक्ति; धोखेमें पड़ा हुआ; भाग्यहीन, अभागा । पु० सर्प ।

विपन्नक–वि० (सं०) बदनसीब; मृत; नष्ट ।

विपरिक्रांत–वि० (सं०) साहसी, वीर ।

विपरिच्छिन्न–वि० (सं०) कटा हुआ; नष्ट । **–मूल**–वि० जिसकी जड़ बिलकुल कट गयी हो ।

विपरिणमन–पु० (सं०) परिवर्तन ।

विपरिणाम–पु० (सं०) परिवर्तन; पकना, प्रौढ होना ।

विपरिणामी(मिन्)–वि० (सं०) जिसकी अवस्था बदलती हो ।

विपरिधान–पु० (सं०) परिवर्तन, विनिमय; विशेष प्रकारका परिधान; (यूनीफार्म) सेना, पुलिस आदिके कर्मचारियोंके लिए निर्धारित विशेष पहनावा, जो प्रायः सबके लिए एक-सा होता है, समपरिधान, वरदी, गणवेश ।

विपरिवर्तन–वि० (सं०) लौटानेवाला । पु० चक्कर खाना; लोटना ।

विपरिवर्तनी विद्या–स्त्री० (सं०) अनुपस्थित व्यक्तिको लौटनेके लिए प्रेरित करनेवाला मंत्र या जादू ।

विपरिवर्तित–वि० (सं०) लौटाया हुआ ।

विपरिवृत्ति–स्त्री० (सं०) लौटना ।

विपरीत–वि० (सं०) उलटा; प्रतिकूल; नियमविरुद्ध; असत्य; विरुद्ध; बेमेल; अशुभ; भिन्न । पु० एक अर्थालंकार जहाँ कार्य-सिद्धिमें स्वयं साधकका ही बाधक होना दिखलाया जाय (केशव); एक रतिबंध । **–कर,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि० विरुद्ध काम करनेवाला । **–गति**–वि० उलटी दिशामें जानेवाला । **–चेता(तस्),–बुद्धि,–मति**–वि० जिसका दिमाग फिर गया हो । **–रति**–स्त्री० रतिका एक प्रकार जिसमें रतिके समय पुरुष नीचे और स्त्री ऊपर रहे । **–लक्षणा**–स्त्री० व्यंग्यमें उलटी बात कहना । **–वृत्ति**–वि० प्रतिकूल कार्य करनेवाला ।

विपरीतक–वि० (सं०) उलटा, प्रतिकूल । पु० विपरीत रति ।

विपरीततः भी–अ० (वाइस वर्सा) (पहले कहे हुएके) उलटे प्रकार या क्रमसे भी, विपर्ययसे भी ।

विपरीतता–स्त्री०, **विपरीतत्व**–पु० (सं०) विपर्यय, विपरीत होनेका भाव ।

विपरीता–स्त्री० (सं०) दुश्चरित्रा, पुंश्चली स्त्री ।

विपरीतार्थ–वि० (सं०) उलटे अर्थवाला ।

विपरीतोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक प्रकार; जहाँ कोई भाग्यवान् व्यक्ति अति हीन दशामें दिखाया जाय (केशव) ।

विपर्ण–वि० (सं०) जिसमें पत्ते न हों । पु० आमने सामने लगी रसीदोंका बाहरी भाग जो लिखकर दिया जाता है (आउटर फॉयल) ।

विपर्णक–वि० (सं०) विना पत्तोंका । पु० पलाशका पेड़ ।

विपर्यय–पु० (सं०) व्यतिक्रम (ट्रांसपोजीशन); विपरीतता; प्रतिकूलता; चक्कर; पलायन; समाप्ति; परिवर्तन (स्थान, वस्त्रादिका); अनस्तित्व; हानि; विनाश; विनिमय; भूल; संकट; शत्रुता; विरोध; उलटकर पहले रूपमें लाना (रिवर्शन); भ्रम; अव्यवस्था ।

विपर्ययशः–अ० (वाइस वर्सा) दे० 'विपरीतत: भी' ।

विपर्यस्त–वि० (सं०) परिवर्तित; अस्त-व्यस्त; उलटा-पलटा हुआ; औरका और समझा हुआ । **–पुत्रा**–स्त्री० वह स्त्री जिसे पुत्र न होता हो ।

विपर्याण–वि० (सं०) विना चारजामेका ।

विपर्याय–पु० (एंटॉनिम) किसी शब्दका विलकुल विरोधी अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

विपर्यास–पु० (सं०) परिवर्तन; विपरीतता, प्रतिकूलता; उलट-पलट; भ्रम, भूल, मिथ्या ज्ञान ।

विपल–पु० (सं०) समयका एक वहुत छोटा मान, पलका साठवाँ भाग ।

विपलायन–पु० (सं०) भागना; विभिन्न दिशाओंमें भागना ।

विपलायित–वि० (सं०) भागा हुआ; भगाया हुआ ।

विपलायी(यिन्)–वि० (सं०) भागनेवाला ।

विपलाश–वि० (सं०) पत्रहीन ।

विपवन–वि० (सं०) पवित्रकारक; वायु-रहित । पु० विशुद्ध पवन ।

विपव्य–वि० (सं०) विशेष रूपसे शुद्ध करने योग्य ।

विपश्चित्–वि० (सं०) सूक्ष्मदर्शी, विद्वान्, पंडित । पु० विद्वान् व्यक्ति ।

विपश्यन–पु० (सं०) यथार्थ वोध, प्रकृत ज्ञान (वौ०) ।

विपश्यी(श्यिन्)–पु० (सं०) एक वुद्ध ।

विपश्वी(श्विन्)–पु० (सं०) एक वुद्ध ।

विपांडु, विपांडुर–वि० (सं०) पीला ।

विपांडुरा–स्त्री० (सं०) महामेदा ।

विपांसुल–वि० (सं०) धूलिरहित ।

विपाक–पु० (सं०) पकाना; पकना; पूर्ण दशाको प्राप्त होना; पचना; फल; कर्मका फल; अवस्था-परिवर्तन; कठिनाई, संकट ।

विपाट–पु० (सं०) एक तरहका वाण ।

विपाटक–वि० (सं०) फाड़ने, फोड़ने, उखाड़नेवाला ।

विपाटन–पु० (सं०) खोदने, उखाड़ने, फोड़नेकी क्रिया ।

विपाटल–वि० (सं०) वहुत लाल । **–नेत्र**–वि० जिसकी आँखें लाल हों ।

विपाटित–वि० (सं०) फाड़ा हुआ; उन्मूलित; पृथक् किया हुआ ।

विपाट्(श्)–स्त्री० (सं०) दे० 'विपाशा' ।

विपाठ–पु० (सं०) एक तरहका वड़ा वाण ।

विपात–पु० (सं०) नाश, पतन ।

विपातक–वि०, पु० (सं०) गलाने, पिघलानेवाला; नाश करनेवाला ।

विपातन–पु० (सं०) नाश कराना; गलाना; गिराना ।

विपादन–पु० (सं०) वध; नाश करना ।

विपादिका–स्त्री० (सं०) पैरका एक रोग, पादस्फोट, वेवाई; पहेली ।

विपादित–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ; वध किया हुआ ।

विपाद्य–वि० (सं०) वध या नाशके योग्य ।

विपाप–वि० (सं०) निष्पाप, पाप-रहित ।

विपापा–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

विपाप्मा(प्मन्)–वि० (सं०) निष्पाप; कष्टरहित ।

विपाल–वि० (सं०) रक्षकहीन, अरक्षित, अनाथ ।

विपाश–वि० (सं०) वंधनरहित, वंधन-मुक्त ।

विपाशन–पु० (सं०) वंधनसे मुक्त करना ।

विपाशा–स्त्री० (सं०) व्यास नदी ।

विपासा–स्त्री० दे० 'विपाशा' ।

विपिन–पु० (सं०) जंगल, वन; उपवन । वि० घना, सघन । **–चर**–पु० वनचर; जंगली आदमी; पशु, पक्षी आदि । **–तिलका**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–पति**–पु० सिंह । **–विहारी(रिन्)**–पु० वनमें विहार करनेवाला; कृष्ण ।

विपिनौका(कस्)–पु० (सं०) वनमानुस; वंदर ।

विपुंसक–वि० (सं०) जिसमें पौरुषकी कमी हो, पुंस्त्वहीन ।

विपुंसी–स्त्री० (सं०) पुरुषके-से स्वभाववाली स्त्री, मर्दानी औरत ।

विपुत्र–वि० (सं०) पुत्रहीन ।

विपुर–वि० (सं०) जिसके रहनेका स्थान निश्चित न हो ।

विपुल–वि० (सं०) वृहत्, वड़ा; विस्तृत; अधिक, प्रचुर; गहरा, अगाध; रोमांचयुक्त । पु० मेरु पर्वत; हिमालय; सम्मानित व्यक्ति; एक तरहकी इमारत । **–ग्रीव**–वि० लंबी गरदनवाला । **–च्छाय**–वि० घनी छायावाला । **–जघना**–स्त्री० वड़े नितंबोंवाली स्त्री । **–द्रव्य**–वि० धनी । **–पार्श्व**–पु० एक पहाड़ । **–प्रज्ञ,–वुद्धि,–मति**–वि० विशेष वुद्धिमान् । **–रस**–पु० ईख । **–श्रोणि**–वि० जिसके नितंव वड़े हों । **–स्कंध**–वि० चौड़े कंधोंवाला । पु० अर्जुन । **–स्रवा**–स्त्री० घीकुवार । **–हृदय**–वि० उदाराशय ।

विपुलक–वि० (सं०) वहुत विस्तृत; पुलक, रोमांच-रहित ।

विपुलता–स्त्री०, **विपुलत्व**–पु० (सं०) आधिक्य; प्राचुर्य; विस्तार ।

विपुला–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; एक छंद; आर्या छंदके तीन भेदोंमेंसे एक; एक सती, वहुला; एक ताल; विपुल पर्वतकी अधिष्ठात्री देवी ।

विपुलाई*–स्त्री० दे० 'विपुलता' ।

विपुलास्रवा–स्त्री० (सं०) दे० 'विपुल-स्रवा' ।

विपुलेक्षण–वि० (सं०) वड़ी आँखोंवाला ।

विपुलोरस्क–वि० (सं०) चौड़े वक्ष:स्थलवाला ।

विपुष्ट–वि० (सं०) जो पुष्ट न हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो ।

विपुष्टि–स्त्री० (सं०) अभ्युदय ।

विपुष्प–वि० (सं०) पुष्पहीन (वृक्ष) ।

विपुष्पित–वि० (सं०) प्रसन्न, प्रफुल्ल ।

विपूय–पु० (सं०) मूँज । वि० शुद्ध करनेवाला ।

विपूयक–पु० (सं०) सड़ायँध; सड़ा हुआ मुर्दा (वौ०) ।

विपृक्(च्)–वि० (सं०) पृथक्, अलग ।

विपृक्त–वि० (सं०) विभक्त, वियुक्त, अलग किया हुआ ।

विपृक्वत्–वि० (सं०) जिसमें मिलावट न हो, विशुद्ध ।

विपोहना*–स० क्रि० पोहना, छेदना; लीपना, पोतना; संहार करना ।

विप्र–पु० (सं०) व्राह्मण; पुरोहित; चतुर आदमी; पापर या रेणुका नामक पौधा; पीपलका वृक्ष; सिरिसका पेड़; चंद्रमा; भाद्रपद; स्तुतिपाठक । वि० मेधावी; विद्वान् । **–काष्ठ**–पु० कपासका पौधा । **–कुंड**–पु० व्राह्मणकी जारज संतान । **–चरण,–पद**–पु० विष्णुके हृदयपर अंकित भृगुका चरण-चिह्न । **–तापस**–पु० व्राह्मण सन्न्यासी । **–प्रिय**–पु० पलाश वृक्ष । **–वंधु**–पु० नीच व्राह्मण । **–भाव**–पु० व्राह्मणका पद । **–राम**–पु० परशुराम । **–शेषित**–पु० व्राह्मणका उच्छिष्ट । **–समागम**–पु० व्राह्मणोंसे मेल-जोल रखना । **–स्व**–पु० व्राह्मणकी संपत्ति ।

विप्रक–पु० (सं०) नीच व्राह्मण ।

विप्रकर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) अपमान, क्षति करनेवाला ।

विप्रकर्ष–पु० (सं०) खींच ले जाना; दूरी, फासला; भेद, अंतर ।

विप्रकर्षण–पु० (सं०) खींच ले जानेकी क्रिया; दूर करना; कार्य

समाप्त करना।

विप्रकार–पु० (सं०) अपकार, अनादर; तिरस्कार; क्षति; प्रतिशोध; विभिन्न ढंग।

विप्रकारी(रिन्)–वि० (सं०) अनादर, अपकार करनेवाला; विरोध करनेवाला; प्रतिशोध करनेवाला।

विप्रकीर्ण–वि० (सं०) छितराया हुआ; बिखरा हुआ; अव्यवस्थित; फैलाया हुआ; विस्तृत। **–शिरोरुह**–वि० जिसके बाल बिखरे हों।

विप्रकृत–वि० (सं०) अपकृत, अनादृत; क्षतिग्रस्त।

विप्रकृति–स्त्री० (सं०) अपकार; परिवर्तन; क्षति; विरोध; प्रतिशोध।

विप्रकृष्ट–वि० (सं०) खींचकर हटाया हुआ, दूर किया हुआ; दूरवर्ती; फैलाया हुआ।

विप्रकृष्टक–वि० (सं०) दूरस्थ।

विप्रगीत–वि० (सं०) जिसके संबंधमें मतभिन्नता हो (जै०)।

विप्रचित्ति–पु० (सं०) दनुपुत्र, दानव।

विप्रच्छन्न–वि० (सं०) छिपा हुआ, गुप्त।

विप्रणाश–पु० (सं०) नाश, लोप; मृत्यु।

विप्रतारक–पु० (सं०) बहुत धोखेबाज।

विप्रतारित–वि० (सं०) जो छला गया हो।

विप्रतिकार–पु० (सं०) विरोध; खंडन; प्रतिशोध।

विप्रतिकृत–वि० (सं०) जिसका विरोध या प्रतिशोध किया गया हो।

विप्रतिपत्ति–स्त्री० (सं०) विरोध; मतभिन्नता; दो नियमोंका परस्पर विरुद्ध होना; भ्रांत धारणा; संदेह; विरोधी भाव; पारस्परिक संबंध; घबड़ाहट; अभिज्ञता; अपकीर्ति; विकृति।

विप्रतिपद्य–वि० (सं०) जिसका विरोध किया जाय; विभिन्न प्रकारसे सिद्ध किया जानेवाला।

विप्रतिपद्यमान–वि० (सं०) पापी।

विप्रतिपन्न–वि० (सं०) परस्पर विरुद्ध; हतबुद्धि; जिसका विरोध किया गया हो; गलत; निषिद्ध; अग्राह्य; संदिग्ध; अप्रमाणित; अभिज्ञ; परस्पर संबद्ध। **–बुद्धि**–वि० जिसका मत भ्रममूलक हो।

विप्रतिषिद्ध–वि० (सं०) निषिद्ध, वर्जित; जिसका विरोध किया गया हो; विरुद्ध अर्थवाला।

विप्रतिषेध–पु० (सं०) नियंत्रण, रोक; दो कथनोंका परस्पर विरोध; वर्जन, निषेध।

विप्रतिसार, विप्रतीसार–पु० (सं०) पश्चात्ताप; दुष्टता, कुटिलता; क्रोध।

विप्रतिसारी(रिन्)–वि० (सं०) अनुतापयुक्त, विषण्ण।

विप्रतीप–वि० (सं०) उलटा, विपरीत, प्रतिकूल।

विप्रत्यनीक, विप्रत्यनीयक–वि० (सं०) शत्रुतापूर्ण।

विप्रत्यय–पु० (सं०) अविश्वास; विश्वासका अभाव।

विप्रथित–वि० (सं०) प्रसिद्ध।

विप्रदुष्ट–वि० (सं०) भ्रष्ट; पापी; कामी; नीच। **–भाव**–वि० कुटिल स्वभावका।

विप्रद्रुत–वि० (सं०) भागा हुआ, पलायित।

विप्रधर्ष–पु० (सं०) परेशानी, विरक्ति।

विप्रनष्ट–वि० (सं०) जो पूर्णतः नष्ट हो गया हो; लुप्त; निष्फल, बेकार।

विप्रपात–पु० (सं०) उड़नेका एक विशेष ढंग; बिलकुल नीचे जाना; खड्ड।

विप्रबुद्ध–वि० (सं०) जगा हुआ, जागरूक; ज्ञानी।

विप्रबोधित–वि० (सं०) जिसका जिक्र हो चुका हो; विचारित।

विप्रमत्त–वि० (सं०) प्रमादरहित।

विप्रमना(नस्)–वि० (सं०) खिन्न, विषण्ण, अनमना; हतोत्साह।

विप्रमाथी(थिन्)–वि० (सं०) मथन करनेवाला, क्षुब्ध करनेवाला; नष्ट करनेवाला।

विप्रमुक्त–वि० (सं०) बंधनसे मुक्त किया हुआ; छोड़ा, फेंका हुआ; ···से मुक्त (समासमें)। **–भय**–वि० भय, खतरेसे मुक्त किया हुआ।

विप्रमोक्ष–पु० (सं०) बंधनसे छुटकारा; मुक्ति।

विप्रमोच्य–वि० (सं०) जिसे मुक्त करना हो।

विप्रमोह–पु० (सं०) नियमादिका भंग, अपराध करना।

विप्रमोहित–वि० (सं०) हतबुद्धि।

विप्रयाण–पु० (सं०) चल देना; पलायन।

विप्रयात–वि० (सं०) पलायित; सभी दिशाओंमें भागा हुआ।

विप्रयुक्त–वि० (सं०) अलग किया हुआ; वियुक्त; मुक्त किया हुआ; वंचित, विहीन।

विप्रयोग–पु० (सं०) वियोग (विशेषकर प्रियसे), विच्छेद, अलगाव; अभाव; कलह, मतभेद; योग्य या पात्र होना; अशुभ या दुःखद समाचार; विप्रलंभका एक भेद (सा०)।

विप्रर्षि–पु० ब्राह्मण कुलमें उत्पन्न ऋषि।

विप्रयोगी(गिन्)–वि० (सं०) (प्रिय आदिसे) वियुक्त, जो अलग हो।

विप्रयोजित–वि० (सं०)···से मुक्त किया हुआ।

विप्रलंभ–पु० (सं०) छल, धोखा, बहकावा; नैराश्य; छला जाना; निराश होना; प्रेमियोंका वियोग; विच्छेद; अनुचित कार्य; अलंकारका एक भेद (सा०); कलह। **–श्रृंगार**–पु० वियोग-श्रृंगार जिसमें विरह-वर्णन होता है।

विप्रलंभक–वि० (सं०) धोखा देनेवाला, वंचक, धूर्त।

विप्रलंभन–पु० (सं०) छल करना, धोखा देना।

विप्रलंभी(भिन्)–वि० (सं०) दे० 'विप्रलंभक'।

विप्रलपित–वि० (सं०) जिसपर तर्क किया गया हो, विचारित।

विप्रलप्त–पु० (सं०) तर्क, बहस, वाद-विवाद; विलाप।

विप्रलब्ध–वि० (सं०) वंचित; छला हुआ; निराश; क्षतिग्रस्त; विरही।

विप्रलब्धा–स्त्री० (सं०) संकेत-स्थलमें प्रियके न मिलनेसे दुःखी नायिका।

विप्रलब्धा(ब्धृ)–वि० (सं०) छल करनेवाला।

विप्रलय–पु० (सं०) विलोप, विलय, पूर्णतः विलीन हो जाना।

विप्रलाप–पु० (सं०) बेमतलब बकना; परस्पर खंडन-मंडन करना; विवाद; दुर्वचन; वचनका उल्लंघन। वि० जिसमें सारयुक्त बात न हो।

विप्रलापी(पिन्)–वि० (सं०) बकवादी, बातूनी।

विप्रलीन–वि० (सं०) बिखरा, छितराया हुआ; तितर-बितर किया हुआ (सैन्य)।

विप्रलुंपक–वि० (सं०) छीन-झपटकर ले लेनेवाला; उत्पीड़क; अधिक कर लेनेवाला शासक; लोलुप, लालची।

विप्रलुप्त–वि० (सं०) लूटा हुआ; जिसमें बाधा डाली गयी हो; अपहृत; लुप्त किया हुआ।

विप्रलून–वि० (सं०) कटा, तोड़ा हुआ; एकत्र किया हुआ।

विप्रलोक–पु० (सं०) चिड़ीमार, बहेलिया।

विप्रलोडित–वि० (सं०) अस्त-व्यस्त किया हुआ; खराब किया हुआ।

विप्रलोप–पु० (सं०) ध्वंस, नाश, पूर्ण लोप।

विप्रलोपी(पिन्)–वि० (सं०) तोड़नेवाला।

विप्रलोभी(भिन्)–पु० (सं०) किंकिरात नामक पौधा।

विप्रवसित–वि० (सं०) गत, प्रस्थित।

विप्रवाद–पु० (सं०) विवाद; कलह; दुर्वचन; मतभेद।

विप्रवास–पु० (सं०) विदेशगमन या विदेशमें रहना; भिक्षुओंका एक अपराध जो अपना वस्त्र दूसरेको देनेके कारण होता है (बौ०)।

विप्रवासन–पु० (सं०) देसनिकाला; परदेशमें रहना।

विप्रवासित–वि० (सं०) हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ (पापादि)।

विप्रविद्ध–वि० (सं०) तितर-बितर किया हुआ; जोरसे मारा या हिलाया हुआ।

विप्रव्राजिनी–स्त्री० (सं०) दो पुरुषोंसे संबंध रखनेवाली स्त्री।

विप्रश्न–पु० (सं०) अदृष्ट-संबंधी प्रश्न।

विप्रश्निक–पु० (सं०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।

विप्रश्निका–स्त्री० (सं०) दैवज्ञा।

विप्रसारण–पु० (सं०) फैलाना, विस्तार करना।

विप्रहृत–वि० (सं०) मारा हुआ; पराभूत (सैन्य); रौंदा हुआ।

विप्रहरण–पु० परित्याग, मुक्त।

विप्रहाण–पु० (सं०) लाप, अंत।

विप्रहाण–वि० (सं०) लुप्त; वंचित, रहित।

विप्राधप–पु० (सं०) चद्रमा।

विप्रियंकर–वि० (सं०) दे० 'विप्रिय-कर'।

विप्रिय–पु० (सं०) अप्रिय कार्य; अपराध, विरह, वियोग। वि० जो आनंददायक न हो; अप्रिय। –कर,–कारी(रिन्)–वि० अप्रिय कार्य करनेवाला।

विप्रुट्(श्)–स्त्री० (सं०) जलसीकर; चिनगारी; कण; बिंदी।

विप्रुष–पु० (सं०) बूंद; सीकर; पक्षी।

विप्रद्र–पु० (सं०) ब्राह्मणोंका प्रधान।

विप्रेक्षण–पु० (स०) चारों ओर देखना।

विप्रेक्षित–पु० (सं०) दृष्टिपात, चारों ओर देखना।

विप्रेक्षिता(तृ)–वि० (सं०) चारों ओर दृष्टिपात करनेवाला।

विप्रेत–वि० (सं०) गत; जा तितर-बितर हो गया हो।

विप्रेषक–पु० (रेमिटर) किसी दूर रहनेवाले व्यक्तिके पास रुपया-पैसा या अन्य वस्तु भेजनेवाला।

विप्रेषण–पु० (रेमिटेंस) किसी दूरस्थ आदमीके पास रुपया-पैसा आदि भेजना; वह वस्तु जो दूर भेजी जाय।

विप्रोषित–वि० (सं०) परदेशमें रहनेवाला; निष्कासित। –भर्तृका–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति विदेशमें हो।

विप्लव–वि० (सं०) पोतरहित। पु० विभिन्न दिशाओंमें बहना; विरोध, प्रतिकूलता; प्लावन; किसी वस्तुका पानीमें डूबना; अशांति; कष्ट; संकट; हल्ला-गुल्ला; उपद्रव, विद्रोह; नाश, बर्बादी; क्षति; (सतीत्व) भंग करना; पोत-भंग; शत्रु-भय; अशुभ चिह्न; आईनेपरका धब्बा; व्याप्ति; नियम आदिका भंग; पाप; दुष्टता; होहल्ला मचाकर शत्रुको भीत करना; प्रसिद्ध करना; अत्याचार; अनादर; अपहरण; अच्छा अध्ययन न होते हुए वेदका अनादर करना; घोड़ेकी तेज चाल।

विप्लवक–वि० (सं०) विप्लव करनेवाला।

विप्लवी(विन्)–वि० (सं०) क्षणभंगुर, अस्थायी; विप्लव, क्रांति करनेवाला।

विप्लाव–पु० (सं०) घोड़ेकी सरपट चाल; जलप्लावन; बर्बादी; होहल्ला, उपद्रव मचाना।

विप्लावक–पु० (सं०) विप्लव, उपद्रव करनेवाला, बलवाई, विद्रोही, क्रांतिकारी; बाढ़ लानेवाला; फैलानेवाला।

विप्लावन–पु० (सं०) निंदा करना; अपशब्द करना।

विप्लावित–वि० (सं०) बहाया हुआ; घबड़ाहटमें डाला हुआ; नष्ट किया हुआ।

विप्लावी(विन्)–पु० (सं०) उपद्रवी; बाढ़ लानेवाला; फैलानेवाला; निंदक।

विप्लुट्(ष्)–स्त्री० (सं०) दे० 'विप्रुट्'।

विप्लुत–वि० (सं०) बिखरा हुआ; अस्तव्यस्त; घबड़ाया हुआ; भटका हुआ; नष्ट-भ्रष्ट; जो धुँधला हो गया हो (नेत्र); भग्न (प्रतिज्ञा आदि); उत्तेजित; आचारहीन; जिसका उपचार गलत हुआ हो; कुटिल; प्रतिकूल; जलप्लावित। पु० फटना, स्फोट। –नेत्र,–लोचन–वि० जिसकी आँखें अश्रुपूर्ण हों। –भाषी(षिन्)–वि० अस्पष्ट बोलनेवाला। –योनि–स्त्री० दे० 'विप्लुता'।

विप्लुता–स्त्री० (सं०) एक स्त्री-रोग (योनिमें सदा पीड़ा रहना)।

विप्लुति–स्त्री० (सं०) हलचल, अशांति; नाश, बर्बादी।

विप्लुष्ट–वि० (सं०) झुलसा, जलाया हुआ।

विप्सा–स्त्री० क्रम, सिलसिला; दे० 'वीप्सा'।

विफल–वि० (सं०) बिना फलका, फलहीन (वृक्ष); व्यर्थ; बेकार, निरर्थक; असफल; हताश, निराश; अंडहीन; अप्रभावकर।

विफला–स्त्री० (सं०) केतकी।

विफ़ाक़–पु० (अ०) मेल, मित्रता; अनुकूलता; संघ। –(क़े) हिंद–पु० भारतीय संघ।

विबंध–पु० (सं०) घेर लेना, बंधनमें डालना; कड़ा बंधन; हथकड़ी; राजमार्ग; प्रजासे प्राप्त आय; अनाज, भूसे आदिका ढेर; बैलोंका जुआ; एक तरहकी गोल पट्टी (आ० वे०); कोष्ठबद्धता। –वर्त्ति–स्त्री० घोड़ोंका एक मूत्ररोग। –हृत्–वि० कब्ज दूर करनेवाला।

विबंधन–वि० (सं०) कब्ज करनेवाला। पु० (पीठ आदिका फोड़ा) दोनों ओरसे बाँधनेकी क्रिया; बाधा, रोक।

विबंधु–वि० (सं०) बंधुहीन; जिसके कोई संबंधी न हो; असहाय।

विबद्ध–वि० (सं०) बँधा हुआ; बद्ध (कोष्ठ)।

विबल–वि० (सं०) बलहीन, निर्बल; विशेष बलवान्।

विबाध–पु० (सं०) हटाना, दूरीकरण। वि० बाधारहित।

विबाधा–स्त्री० (सं०) कष्ट, पीड़ा, यंत्रणा।

विबाहु–वि० (सं०) भुजाहीन।

विबुक–पु० (सं०) मल्लीसे उत्पन्न वैश्यका पुत्र।

विबुद्ध–वि० (सं०) जागा हुआ; विकसित, चतुर, दक्ष; अचेत, बेहोश।

विबुध–वि० (सं०) विद्वानोंसे रहित। पु० विद्वान्, चतुर व्यक्ति; देवता; चंद्रमा। –गुरु–पु० बृहस्पति। –तटिनी,–नदी–स्त्री० आकाशगंगा। –तरु–पु० कल्पवृक्ष। –द्विट्(ष्),–रिपु,–शत्रु–पु० दैत्य। –धेनु–स्त्री० कामधेनु। –पति–पु० इंद्र। –प्रिया–स्त्री० देवांगना; एक वृत्त। –बेलि–स्त्री० (हिं०) कल्पलता। –मति–वि० चतुर। –राज–पु० इंद्र। –वन–पु० नंदनवन। –विद्विट्(ष्)–पु० दैत्य। –विलासिनी–स्त्री० अप्सरा। –वैद्य–पु० अश्विनीकुमार। –सद्म(न्)–पु० स्वर्ग। –स्त्री–स्त्री० देवांगना; अप्सरा।

विबुधाचार्य–पु० (सं०) बृहस्पति।

विबुधाधिप, विबुधाधिपति–पु० (सं०) इंद्र।

विबुधान–पु० (सं०) आचार्य; पंडित।

विबुधापगा–स्त्री० (सं०) आकाशगंगा।

विबुधावास–पु० (सं०) देवमंदिर; स्वर्ग।

विबुधेंद्र–पु० (सं०) इंद्र।

विबुधेश्वर–पु० (सं०) इंद्र।

विबोध–वि० (सं०) अनवधान। पु० जागरण; अनुभूति; प्रज्ञा, समझ; एक विभाव (निद्राके पश्चात् या अविद्या दूर होनेपर चैतन्य लाभ–सा०); अनवधानता; उद्देश्यसिद्धिमें गुणों या शक्तिका व्यक्ति होना (ना०); एक पक्षी।

विबोधन–पु० (सं०) जागना; जगाना; समझाना; तसल्ली देना; प्रस्फुटित करना, खिलाना।

विबोधित–वि० (सं०) जगाया हुआ; सिखलाया, समझाया हुआ; विकासित।

विब्बोक–पु० (सं०) दे० 'बिब्बोक'।

विभंग–पु० (सं०) झुकाना, संकुचन (भौंका); तह; झुर्री; भ्रूभंग; विघ्न; बाधा; रोक; छल; तरंग; भंग, टूटना (फ़ैक्चर); विभाग; बौद्धोंका एक वर्ग; सोपान; प्रकट होना; प्रस्फुटन; वस्तुओंको यथास्थान सजाना। वि० चपल।

विभंगि–स्त्री० (सं०) अनुकृति; भंगि।

विभंगी(गिन्)–वि० कंपनशील; झुर्रियोंवाला।

विभंगुर–वि० (सं०) अस्थिर (दृष्टि)।

विभक्त–वि० (सं०) बँटा हुआ; विभाग किया हुआ; अलग किया हुआ; भिन्न; विभिन्न प्रकारका; अलंकृत; मापा हुआ; अपना हिस्सा पाया हुआ; जो पृथक् हो गया हो; अपसृत; सम-परिमित। पु० एकांतवास; हिस्सा; संपत्ति (विभक्त); पार्थक्य; कार्तिकेय। –गात्र–वि० जिसके अंग अलंकृत हों। –ज–पु० संपत्तिके बँटवारेके बाद पैदा होनेवाला लड़का।

विभक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) व्यवस्था करनेवाला; विभाग करनेवाला।

विभक्ति–स्त्री० (सं०) बंटवारा; विभाग; उत्तराधिकारमें प्राप्त हिस्सा; पार्थक्य; कारकका चिह्न (व्या०)।

विभग्न–वि० (सं०) टूटा-फूटा हुआ; छिन्न-भिन्न।

विभज–पु० (सं०) एक बड़ी संख्या (बौ०)।

विभजनीय–वि० (सं०) विभागयोग्य।

विभज्य–वि० (सं०) जिसका विभाग करना हो; विभाज्य;

जिसका भेद दिखलाना हो ।

विभजन–पु० (सं०) पार्थक्य; भेद ।

विभय–वि० (सं०) भयसे मुक्त । पु० भयसे मुक्ति ।

विभर–वि० तेजस्वी, प्रकाशमान ।

विभव–वि० (सं०) धनी; शक्तिशाली । पु० सर्वव्यापकता; विकास; शक्ति; बाहुल्य, अधिकता; ऐश्वर्य; महत्ता; उच्च पद; उदाराशयता; प्रभाव; धनसम्पत्ति, अनावश्यक, भोगविलासकी वस्तु; मोक्ष; एक संवत्सर; प्रलय (बौ०); एक ताल । **–कर**–पु० (वैल्थ टैक्स) धन सम्पत्तिपर लगनेवाला कर । **–क्षय**–पु० ऐश्वर्यनाश । **–मद**–पु० ऐश्वर्यका मद । **–शाली(लिन्)**–वि० दे० 'विभववान्' ।

विभववान्(वत्)–वि० (सं०) धनी, ऐश्वर्यशाली; शक्तिशाली ।

विभवी(विन्)–वि० (सं०) दे० 'विभववान्' ।

विभांडक–पु० (सं०) एक ऋषि, ऋष्यश्रृंगके पिता ।

विभांडिका–स्त्री० (सं०) आहुल्य नामक वृक्ष ।

विभांडी–स्त्री० (सं०) आवर्तकी लता ।

विभाँति–स्त्री० भेद, प्रकार, किस्म । वि० कई तरहका । अ० कई तरहसे ।

विभा–स्त्री० (सं०) प्रभा, कांति; किरण; सौंदर्य । **–कर**–पु० सूर्य; आक; चित्रक वृक्ष; अग्नि; राजा; चंद्रमाका सूर्य द्वारा प्रकाशित अंश । **–वसु**–पु० अग्नि; सूर्य; चंद्रमा; एक तरहका हार; एक वसु; एक दानव; नरक दैत्यका एक पुत्र; एक ऋषि; गायत्रीसे सोमकी चोरी करनेवाला एक गंधर्व; चित्रक; आक ।

विभा(स्)–स्त्री० (सं०) चमक, कांति ।

विभाग–पु० (सं०) बँटवारा; पैतृक संपत्तिका हिस्सा; किसी विशिष्ट कार्यका निश्चित क्षेत्र या खण्ड (डिवीज़न); किसी वस्तु या कार्यका कोई भाग (सेक्शन); भिन्नका अंश; पार्थक्य; अध्याय; व्यवस्था; मुहकमा (डिपार्टमेण्ट) । **–कल्पना**–स्त्री० हिस्से बैठाना । **–ज्ञ**–वि० अंतर, भेद समझनेवाला । **–धर्म**–वि० बँटवारा-संबंधी कानून । **–पत्रिका**–स्त्री० वह दस्तावेज जिसमें बँटवारेका ब्योरा दिया गया हो । **–भाक्(ज्)**–वि० पैतृक संपत्तिमें हिस्सा पानेका अधिकारी । **–रेखा**–स्त्री० सीमा-रेखा ।

विभागक–पु० (सं०) बँटवारा करनेवाला; व्यवस्था करनेवाला ।

विभागतः(तस्)–अ० (सं०) हिस्सेके मुताबिक ।

विभागशः(शस्)–अ० (सं०) हिस्सेके हिसाबसे ।

विभागाध्यक्ष–पु० (डिपार्टमेंटल हेड) किसी विभागका अध्यक्ष या प्रधान अधिकारी ।

विभागी(गिन्)–पु० (सं०) विभाग, बँटवारा करनेवाला; हिस्सेदार ।

विभागीय–वि० (सं०) किसी विभागसे सम्बद्ध (डिपार्टमेंटल) ।

विभाजक–पु० (सं०) विभाजन करनेवाला, बाँटनेवाला; वह संख्या जिससे भाग दिया जाय, भाजक । वि० बाँटनेवाला; टुकड़े करनेवाला ।

विभाजन–पु० (सं०) बाँटना, विभाग करना; बँटवाना ।

विभाजन-घंटी–स्त्री० (डिवीजन बेल) संसद् या विधान-सभामें किसी प्रस्ताव आदि-संबंधी विवाद समाप्त हो जानेपर सभाका मत जाननेके लिए सदस्योंको अपना-अपना स्थान ग्रहण कर दो पृथक्-पृथक् समूहोंमें विभक्त होनेके लिए तैयार रहनेकी सूचना देनेवाली घंटी ।

विभाजयिता(तृ)–वि० (सं०) बँटवानेवाला ।

विभाजित–वि० (सं०) बँटवाया हुआ; बँटा हुआ; पृथक् किया हुआ ।

विभाज्य–वि० (सं०) जिसका बँटवारा किया जाय; भाग करने योग्य । पु० वह संख्या जिसमें किसी संख्यासे भाग दिया जाय ।

विभात–पु० (सं०) सवेरा । वि० चमका हुआ । **–वायु**–स्त्री० सवेरेकी हवा ।

विभाति–स्त्री० (सं०) चमक; शोभा; सुंदरता ।

विभाना*–अ० क्रि० चमकना; शोभा देना ।

विभारना*–अ० क्रि० चमकना ।

विभाव–पु० (सं०) भावके तीन अंगोंमेंसे एक–वह वस्तु या अवस्था जो मनमें किसी भावको उत्पन्न या उद्दीप्त करे (आलंबन, उद्दीपन–ये दो भेद हैं); भावोदय या भावोद्दीपनका कारण (सा०); मित्र, परिचित व्यक्ति; शिव ।

विभावक–वि० (सं०) अभिव्यक्त करनेवाला; वाद, तर्क करनेवाला ।

विभावन–पु० (सं०) कल्पना; चिंतन; अनुभूति; तर्क; परीक्षण; वह मानसिक व्यापार जिसके द्वारा काव्यके नायकादिके साथ श्रोता या पाठकका तादात्म्य होता है, साधारणीकरण (सा०) ।

विभावना–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ (१) कारणके बिना या (२) अपर्याप्त कारणसे अथवा (३) कारणका प्रतिबंध करनेवाली वस्तुके रहते हुए भी कार्यकी उत्पत्ति हो; (४) अथवा जहाँ अहेतुसे या (५) विपरीत हेतुसे कार्यकी उत्पत्ति दिखायी जाय या फिर (६) कार्यसे ही कारणकी उत्पत्तिका वर्णन हो ।

विभावनीय–वि० (सं०) जिसकी स्पष्ट अनुभूति या निश्चय किया जाय, जिसकी भावना हो सके ।

विभावरी–स्त्री० (सं०) रात; तारोंवाली रात; हल्दी; प्रचेतसकी नगरीका नाम; रखैल; कुटनी; वेश्या; मुखर स्त्री; कुटिल, चालबाज स्त्री; एक वृत्त । **–कांत**–पु० चंद्रमा । **–मुख**–पु० संध्या ।

विभावरीश–पु० (सं०) चंद्रमा ।

विभावित–वि० (सं०) प्रकट, व्यक्त किया हुआ; समझा हुआ, जाना हुआ; विचारित, विचिंतित; स्थापित, प्रमाणित ।

विभावी(विन्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; प्रकट करनेवाला; भावका उदय करनेवाला ।

विभाव्य–वि० (सं०) जिसकी अनुभूति की जाय; जिसका विवेक या निश्चय किया जाय; जिसपर ध्यान दिया जाय ।

विभाषा–स्त्री० (सं०) विकल्प, चुनाव, पसंदकी स्वतंत्रता; व्याकरणका वह स्थान जहाँ अपवाद और विधान दोनों पाये जायँ; प्राकृत भाषाओंका एक वर्ग; किसी भाषाके स्थानिक भेद, प्रभेद, बोली (डायलेक्ट); एक रागिनी; बृहत् कारिका (बौ०) ।

विभाषित–वि० (सं०) वैकल्पिक ।

विभास–पु० (सं०) चमक; एक सूर्य; एक राग; एक देवता, एक ऋषि ।

विभासक–वि० (सं०) चमकने या चमकानेवाला; प्रकट, प्रकाशित करनेवाला ।

विभासना*–अ० क्रि० चमकना, झलकना ।

विभासा–स्त्री० (सं०) चमक, झलक, कांति ।

विभासिका–वि० स्त्री० (सं०) चमकनेवाली ।

विभासित–वि० (सं०) दीप्त; चमकाया हुआ; प्रकाशित, प्रकटित ।

विभित्ति–स्त्री० (सं०) भेदन, काटकर अलग करना; खंडित करना ।

विभिन्न–वि० (सं०) काटा, तोड़ा हुआ; छिदा हुआ; आहत; भगाया हुआ; घबड़ाया हुआ; हताश; कई तरहका; मिश्रित; चित्र; प्रकटित; जो अविश्वसनीय हो गया हो; विकसित; परिवर्तित; जो अलग हो गया हो; भेद-भावयुक्त; विरोधी । पु० शिव ।

विभिन्नता–स्त्री० (सं०) विभिन्न होनेका भाव, अलगाव ।

विभी–वि० (सं०) निर्भीक ।

विभीत–वि० (सं०) डरा हुआ, भयभीत । पु० विभीतक, बहेड़ा ।

विभीतक–पु० (सं०) बहेड़ेका पेड़ ।

विभीतकी, विभीता–स्त्री० (सं०) बहेड़ा ।

विभीति–स्त्री० (सं०) भय; आशंका; सन्देह ।

विभीषक–वि० (सं०) भयोत्पादक ।

विभीषण–वि० (सं०) अति भयानक, बहुत डरावना; देशद्रोही (आधु०) । पु० रावणका एक भाई जो रामका पक्ष लेकर रावणसे लड़ा; गर्भपात; नरसल; डरानेकी क्रिया या साधन; एक मुहूर्त ।

विभीषणा–स्त्री० (सं०) एक मुहूर्त; स्कंदकी एक मातृका ।

विभीषिका–स्त्री० (सं०) भयप्रदर्शन, डरवाना; आतंक; डरवानेका साधन; भयंकर कांड; भयकी अधिकता, त्रास ।

विभु–वि० (सं०) सर्वव्यापक; शक्तिशाली; योग्य, सक्षम; जितेंद्रिय; कठिन; स्थिर; स्थायी; विस्तृत; महान्; ऐश्वर्यशाली। पु० आकाश; अवकाश; काल; आत्मा; स्वामी, प्रभु; दास, सेवक; ईश्वर; ब्रह्म; ब्रह्मा; शिव; विष्णु; सूर्य; चंद्र; कुबेर; एक देववर्ग; बुद्ध।

विभुता–स्त्री०, **विभुत्व**–पु० (सं०) स्वामित्व, प्रभुत्व; ऐश्वर्य; शक्ति; व्यापकता।

विभूत–वि० (सं०) उत्पन्न; उत्थित; व्यक्त; महान्; शक्तिशाली।

विभूति–स्त्री० (सं०) शक्ति; अलौकिक शक्ति; महत्ता; सृष्टि; एक दिव्यास्त्र; अभ्युदय, समृद्धि; उच्च पद; प्राचुर्य; गोबरकी राख; श्मशानकी राख या भस्म जिसे शिवजी धारण करते हैं; शक्ति-प्रदर्शन; प्रभुता; ऐश्वर्य; लक्ष्मी; एक श्रुति (संगीत)।

विभूतिमान्(मत्)–वि० (सं०) शक्तिशाली; ऐश्वर्यवान्; अलौकिक शक्तिसंपन्न; भस्म धारण किया हुआ।

विभूमा(मन्)–पु० (सं०) कृष्ण। स्त्री० महत्ता; शक्ति। वि० शक्तिशाली; ऐश्वर्यवान्।

विभूरसि–पु० (सं०) अग्निकी एक मूर्ति।

विभूषण–वि० (सं०) अलंकृत करनेवाला। पु० सजाना; अलंकार; मंजुश्री (बौ०); सौंदर्य; कांति। **–कला**–स्त्री० एक समाधि।

विभूषणा–स्त्री० (सं०) आभूषण; सजावट।

विभूषना*–स० क्रि० अलंकृत करना, सजाना; शोभित करना।

विभूषा–स्त्री० (सं०) आभूषण, अलंकार; अलंकरण; सजानेकी क्रिया; सौंदर्य, शोभा; कांति।

विभूषित–वि० (सं०) अलंकृत; सजाया हुआ; गुणादिसे युक्त; शोभित। पु० आभूषण।

विभूषी(षिन्)–वि० (सं०) सजा हुआ, अलंकृत; भूषित करनेवाला।

विभूष्णु–वि० (सं०) विभूतियुक्त; सर्वव्यापक। पु० शिव।

विभूष्य–वि० (सं०) अलंकृत करने योग्य, सजाने लायक।

विभृत–वि० (सं०) धारण किया हुआ; जिसका पोषण किया गया हो।

विभेंटन*–पु० भेंटनेकी क्रिया, आलिंगन।

विभेत्ता(तृ)–वि० (सं०) तोड़ने, काटनेवाला; नष्ट करनेवाला।

विभेद–पु० (सं०) भेद-प्रभेद; खंड, विभाग; मिश्रण; तोड़ना, खंडित करना; विभाग करना; छेदना; संकोच; बाधा; परिवर्तन; मत-भिन्नता; फूट; पार्थक्य; अंतर; प्रकार; आहत करना; विरोध, खंडन; घबड़ाहटमें डालना; वैर। **–कर,–कारी(रिन्)** वि० छेदने, काटनेवाला; अंतर करनेवाला; फूट डालनेवाला।

विभेदक–वि०, पु० (सं०) काटने, छेदनेवाला; भेद दिखानेवाला; अंतर डालनेवाला; बहेड़ा।

विभेदन–पु० (सं०) काटने, फाड़ने आदिकी क्रिया; धँसाना; फूट डालना, पृथक् करना। वि० काटने, छेदनेवाला।

विभेदना*–स० क्रि० काटना; छेदना; प्रवेश करना।

विभेदिक–वि० (सं०) पृथक् करनेवाला; विभाग करनेवाला।

विभेदी(दिन्)–वि० (सं०) काटने, छेदनेवाला; दूर, नष्ट करनेवाला; छेदकर प्रवेश करनेवाला; फर्क करनेवाला।

विभेदीकरण–पु० (डिसक्रिमिनेशन) करारोपण या व्यवहारादिमें एककी तुलनामें दूसरेसे विभेद करना, विभेद या पार्थक्यका ध्यान रखना (अनुपालन करना)।

विभेद्य–वि० (सं०) काटने, छेदने, पृथक् करने योग्य।

विभो–(सं०) 'विभु'का संबोधन कारकका रूप।

विभोर–वि० निमग्न, तल्लीन।

विभौ*–पु० विभव, ऐश्वर्य, धन; प्रभुत्व।

विभ्रंश–पु० (सं०) अतीसार; क्षय, विनाश; पतन; वंचित होना; कगार; अधित्यका। **–यज्ञ**–पु० एक एकाह यज्ञ।

विभ्रंशित–वि० (सं०) विनष्ट किया हुआ; गिराया हुआ। **–ज्ञान**–वि० नासमझ। **–पुष्प-पत्र**–वि० जिसके पुष्प-पत्र तोड़ दिये गये हों।

विभ्रंशी(शिन्)–वि० (सं०) टुकड़े-टुकड़े होनेवाला; गिरनेवाला।

विभ्रम–पु० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करना; चक्कर खाना; लुढ़कना; अस्थिरता; उग्रता; जल्दबाजी; घबड़ाहट; संदेह; भ्रांति, निर्मूल भ्रम (हैल्यूसिनेशन); भूल; वहम; गलत फहमी (मिसअंडरस्टैंडिंग); सौंदर्य, शोभा; प्रणय-केलि; एक हाव (सा०)।

विभ्रमवती–स्त्री० (सं०) कन्या, लड़की।

विभ्रमा–स्त्री० (सं०) बुढ़ापा, जरा, वृद्धावस्था।

विभ्रमी(मिन्)–वि० (सं०) चारों ओर, इतस्ततः भ्रमण करनेवाला, चक्कर खानेवाला।

विभ्रांत–वि० (सं०) घूमा हुआ; चक्कर खाता, घूमता हुआ; चारों ओर फैला हुआ; भ्रममें पड़ा हुआ, घबड़ाया हुआ; अस्थिर। **–नयन**–वि० तिरछी चितवनवाला। **–मना(नस्)**–वि० हतबुद्धि। **–शील**–वि० जिसका दिमाग खराब हो गया हो; मत्त। पु० बंदर; सूर्य या चंद्रमाका मंडल।

विभ्रांति–स्त्री० (सं०) चक्कर खाना; जल्दबाजी, घबड़ाहट; भूल, भ्रम।

विभ्राजित–वि० (सं०) चमकाया हुआ; कांतियुक्त किया हुआ।

विभ्राट–पु० उत्पात, बखेड़ा, गड़बड़ी; आफत।

विभ्राट्(ज्)–वि० (सं०) अलंकारसे दीप्त, चमकीला।

विभ्रातृव्य–पु० (सं०) प्रतिद्वंद्विता; वैर, शत्रुता।

विभ्रेष–पु० (सं०) अपराध करना।

विमंडन–पु० (सं०) सजाना, अलंकरण; अलंकार।

विमंडित–वि० (सं०) सजाया हुआ, अलंकृत; ···से युक्त।

विमंथन–पु० (सं०) अच्छी तरह मथना।

विमज्जित–वि० (सं०) डूबा हुआ, निमग्न।

विमत–वि० (सं०) भिन्न या विरुद्ध मतका; तिरस्कृत, उपेक्षित; संदिग्ध। पु० विपरीत मत, असहमति (डिस्सेंट); शत्रु। **–निर्णय**–पु० बहुमतके प्रतिकूल या उससे भिन्न दिया गया निर्णय (डिस्सेंटिंग जजमेंट)।

विमति–वि० (सं०) भिन्न या विपरीत मतका; मूर्ख। स्त्री० मतभेद, मतविरोध; नापसंदगी; मूर्खता। **–टिप्पणी**–स्त्री० (मिनिट ऑफ डिस्सेंट) किसी विषयकी जाँच, अध्ययन आदिके बाद तैयार किये गये प्रतिवेदनमें बहुमतने जो सम्मति दी हो, उससे अपना मतभेद प्रकट करनेके लिए एक या एकाधिक सदस्यों द्वारा अलगसे जोड़ी गयी टिप्पणी या वक्तव्य।

विमत्त–वि० (सं०) मदयुक्त; मस्त (हाथी)।

विमत्सर–वि० (सं०) द्वेषरहित; निःस्वार्थ।

विमद–वि० (सं०) मदरहित; निरानंद; जो मस्त न हो (हाथी)।

विमद्य–वि० (सं०) जो कुछ कालतक मद्यका सेवन न करे।

विमध्य–वि० केन्द्र या मध्यसे हटा हुआ; उत्केन्द्र (एक्सेन्ट्रिक)।

विमध्यम–वि० (सं०) बीचका, उदासीन।

विमन–वि० खिन्न, उदास, अनमना।

विमनस्क–वि० (सं०) खिन्न, उदास; व्याकुल, अधीर।

विमन(नस्)–वि० (सं०) उदास; खिन्न; घबड़ाया हुआ; विरोधी भाव रखनेवाला।

विमनिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) उदासी, खिन्नता।

विमन्यु–वि० (सं०) क्रोधरहित।

विमय–पु० (सं०) विनिमय।

विमर्द–पु० (सं०) रगड़ना, पीसना; रौंदना; संघर्ष, युद्ध; नाश; छेड़छाड़, बाधा; संपर्क; खग्रास; क्लांति; कालंकत वृक्ष। **–क्षम**–वि० रौंदना सहन करनेवाला (धरातल)।

विमर्दक–वि० (सं०) मलने, रौंदने, पीसने, नष्ट करनेवाला। पु० पीसने, नष्ट करनेकी क्रिया; ग्रहण; चक्रमर्द।

विमर्दन–पु० (सं०) मसलना; मलना; नष्ट करना; सुगंधि; एक राक्षस; पीसने, कुचलनेकी क्रिया; युद्ध; नाश, बर्बादी; ग्रहण; अंकुरित या प्रस्फुटित होना (सांख्य)।

विमर्दनीय–वि० (सं०) मलने, पीसने योग्य।

विमर्दित–वि० (सं०) पीसा, रौंदा हुआ; रगड़ा हुआ, मला हुआ।

विमर्दी(र्दिन्)–वि० (सं०) मलनेवाला; पीसकर चूर करनेवाला; नष्ट करनेवाला।

विमर्दोत्थ–पु० (सं०) मर्दनसे उत्पन्न सुगंधि।

विमर्श–पु० (सं०) विचार, विवेचन; परीक्षण; समीक्षा; गुणदोष-की मीमांसा (डेलिबरेशन); परामर्श; तर्क; ज्ञान; शिव; चरम विंदु; एक संधि जिसमें बीजका अधिक विकास होता है किंतु फल प्राप्त होनेके पहले ही शापादिके कारण बाधाएँ उपस्थित होने लगती हैं। (ना०)। **–वादी(दिन्)**–वि० तर्क करनेवाला।

विमर्शन–पु० (सं०) तर्क-वितर्क; परीक्षण; समीक्षा।

विमर्शित–वि० (सं०) विचारित, आलोचित।

विमर्शी(शिन्)–वि० (सं०) विचार करनेवाला; समीक्षक।

विमर्ष–पु० (सं०) विचारणा; आलोचना; उद्वेग; व्याकुलता; क्षोभ।

विमल–वि० (सं०) साफ, वेदाग; विशुद्ध; निर्दोष; स्पष्ट; पारदर्शक; श्वेत; सुंदर। पु० एक अस्त्रसंबंधी मंत्र; एक समाधि; एक लोक; एक चांद्र वर्ष; एक तीर्थंकर; एक उपधातु; पद्मकाष्ठ; सेंधा नमक; अबरक। **–कीर्ति**–पु० एक बौद्ध आचार्य। **–गर्भ**–पु० एक समाधि। **–दत्त**–पु० एक समाधि। **–दान**–पु० देवप्रीत्यर्थ दिया जानेवाला दान। **–ध्वनि**–पु० एक वृत्त। **–निर्भास**–पु० एक समाधि। **–नेत्र**–पु० एक बुद्ध। **–प्रदीप**–पु० एक समाधि; एक बुद्ध। **–भास**–पु० एक समाधि। **–मणि**–पु० स्फटिक। **–मति**–वि० शुद्ध हृदयवाला।

विमलक–पु० (सं०) एक बहुमूल्य नग।

विमला–स्त्री० (सं०) सप्तला; एक देवी; सिद्धिकी दस भूमियों, अवस्थाओंमेंसे एक; चाँदीका मुलम्मा; सरस्वती। **–पति**–पु० ब्रह्मा।

विमलात्मक–वि० (सं०) निर्मल।

विमलात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसका मन पवित्र हो। पु० चंद्रमा।

विमलाद्रि–पु० (सं०) गिरनार पर्वत (गुजरात)।

विमलार्थक–वि० (सं०) निर्मल।

विमलाशोक–पु० (सं०) एक तीर्थस्थान; संन्यासियोंका एक भेद।

विमलोदका, विमलोदा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

विमांस–पु० (सं०) (कुत्ते आदिका) अखाद्य मांस।

विमा–स्त्री० (सं०) आयाम, विस्तार; किसी भी दिशामें होनेवाला विस्तार जो नापा जा सकता हो, जैसे लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई या ऊँचाई, क्षेत्रफल, (डाइमेंशन) इत्यादि।

विमाता(तृ)–स्त्री० (सं०) सौतेली माँ। **–(तृ)ज**–पु० सौतेला भाई।

विमात्र–वि० (सं०) जिसका मान बराबर न हो।

विमान–वि० (सं०) असम्मानित। पु० असम्मान; देवयान; वायुयान; सात मंजिलोंवाला मकान; राजप्रासाद; देवमंदिर; मंदिरका ऊपरवाला चौकोर भाग 'मंदिरका विमान ३४ फुट ऊँचा है और अलंकरण मेरु तक है'–कादं० अग० १९६९; सजी हुई अरथी; रामलीला आदिमें काम आनेवाला एक तरहका यान; एक तरहकी मीनार; कुंज; पोत; अश्व; फैलाव। **–कर्मी**–पु० (एअर क्रू) विमानमें काम करनेवाला कर्मचारी। **–गृह, –घर**–पु० (हैंगर) वायुयान रखनेका घर। **–चारी(रिन्),–यान**–वि० विमानसे यात्रा करनेवाला। **–चालक**–पु० वायुयान चलानेवाला, 'पायलट'। **–चालन**–पु० (ऐवियेशन) हवाई जहाज चलानेकी विद्या या क्रिया, उड्डयन। – ० **विज्ञान**–पु० (एरोनॉटिक्स) विमान चलाने आदिको विद्या। **–निर्व्यूह**–पु० एक समाधि। **–पत्तन**–पु० (सं०) हवाई अड्डा (एअर पोर्ट)। **––परिचारिका**–स्त्री० (एअर-होस्टेस) विमान द्वारा यात्रा करनेवालोंकी सुख-सुविधाका ध्यान रखनेवाली महिला-कर्मचारी। **–राज**–पु० देवयानका चालक; बहुत अच्छा विमान। **–वाहक पोत**–पु० (एयर क्राफ्ट कैरियर) विमानोंको ढोकर ले जानेवाला जहाज। **–वेधी तोप**–स्त्री० (एंटी एअरक्राफ्ट गन) विमानोंपर गोले बरसाकर उन्हें नष्ट कर डालनेवाली तोप। **–सेनाधिकारी**–पु० (विंग कमांडर) विमान सेनाकी टुकड़ीका नायक।

विमानक–पु० (सं०) वायुयान; सात मंजिलोंवाला मकान या मीनार।

विमानन–पु० (एअर नैविगेशन) विमान-चालनकी क्रिया या विद्या।

विमानना–स्त्री० (सं०) अनादर, तिरस्कार।

विमानास्थान–पु० (एयरबेस) हवाई जहाजोंके ठहरने, रखे जाने आदिका स्थान या केंद्र।

विमानित–वि० (सं०) अनादृत, तिरस्कृत।

विमानीकृत–वि० (सं०) निरादृत; विमान बनाया हुआ 'विमानीकृत राजहंस'–राम०।

विमार्ग–पु० (सं०) कुमार्ग; झाड़ना; झाड़ू। वि० कुमार्गपर जानेवाला। **–ग,–गामी(मिन्)**–वि० बुरे रास्तेपर जानेवाला। **–गा**–वि० स्त्री० पुंश्चली। **–दृष्टि**–वि० बुरे विषयोंकी ओर दृष्टिपात करनेवाला। **–प्रस्थित,–स्थ**–वि० जो कुमार्गपर हो।

विमार्गण–पु० (सं०) किसी चीजकी तलाश करना।

विमार्जन–पु० (सं०) धोना, साफ करना; पवित्र करना।

विमित–पु० (सं०) चार खंभोंपर टिकी हुई वर्गाकार शाला; बड़ा कमरा, इमारत। वि० परिमित; निश्चित; निर्मित।

विमिश्र–वि० (सं०) मिला हुआ; जिसमें कई तरहकी चीजें मिली हों। पु० सूदके साथ मूल धन।

विमिश्रा–स्त्री० (सं०) बुध ग्रहकी गतिका एक अंश।

विमिश्रित–वि० (सं०) एकमें मिलाया हुआ, विमिश्र।

विमीय–वि० (सं०) विमा सम्बन्धी (डाइमेंशनल)।

विमुक्त–वि० (सं०) मुक्त किया हुआ, छोड़ा हुआ; स्वतंत्र; परित्यक्त; फेंका, चलाया हुआ; वंचित, जिसने अभी केंचुली छोड़ी हो (सर्प); धीर, शांत; ···से स्रवित; बचा हुआ; बरी किया हुआ; बरखास्त, कार्यमुक्त। **–कंठ**–वि० जोरसे चिल्लाने या रोनेवाला। **–प्रग्रह**–वि० जिसकी लगाम ढीली कर दी गयी हो। **–शाप**–वि० जिसे शापसे छुटकारा मिल गया हो।

विमुक्ति–स्त्री० (सं०) रिहाई, छुटकारा; कार्यभार, नियम, बंधन आदिसे मुक्ति (एग्ज़ेम्प्शन); पार्थक्य; मुक्ति, मोक्ष। – **–पथ**–पु० मोक्षका मार्ग।

विमुख–वि० (सं०) बहिर्मुख; विरत; प्रतिकूल; वंचित; हताश; परहेजगार; उदासीन; मुखहीन; छिद्ररहित।

विमुग्ध–वि० (सं०) हतबुद्धि, घबड़ाया हुआ; भ्रममें पड़ा हुआ; भीत; मोहित; मत्त। **–कारी(रिन्)**–वि० मोहनेवाला; भ्रममें डालनेवाला।

विमुग्धक–पु० (सं०) मोहनेवाला; अभिनयका एक प्रकार।

विमुद–वि० (सं०) निरानंद, खिन्न। पु० एक बड़ी संख्या (बौ०)।

विमुद्र–वि० (सं०) विना मुहरका; खिला हुआ; प्रचुर।

विमुद्रण–पु० (सं०) खिलनेमें प्रवृत्त करना; मुद्रा या छाप तोड़ना।

विमुद्रीकरण–पु० (डीमॉनेटाइजेशन) किसी सिक्का, नोट आदिका मुद्राके रूपमें चलन बंद कर देना, उसका विधिग्राह्य न रह जाना (किसी धातु आदिका मुद्राके रूपमें) व्यर्थीकरण।

विमूढ–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ; मूर्ख; बेसुध; मोहित; चतुर। पु० एक देवयोनि; एक संगीतकला। **–गर्भ**–पु० वह गर्भ जिसमें बच्चा मर गया हो और प्रसवमें कष्ट हो। **–चेता(तस्), –धी**–वि० मूर्ख, नासमझ। **–भाव**–पु० बेसुध होनेकी अवस्था। **–संज्ञ**–वि० घबड़ाया, चकराया हुआ।

विमूढक–पु० (सं०) एक तरहका प्रहसन (ना०)।

विमूर्च्छ–वि० (सं०) जिसकी मूर्छा दूर हो गयी हो।

विमूर्च्छित–वि० (सं०) जो जमकर गाढ़ा हो गया हो; ...से गूंजता हुआ; ...से पूर्ण; मिश्रित; बेहोश।

विमूर्त–वि० (सं०) जमा हुआ; जो ठोस हो गया हो।

विमूर्धज–वि० (सं०) गंजा, खल्वाट।

विमूल–वि० (सं०) जड़से उखाड़ा हुआ; मूलहीन; नष्ट।

विमूलन–पु० (सं०) मूलोच्छेद करना; नाश करना।

विमृत्यु–वि० (सं०) अमर।

विमृदित–वि० (सं०) दे० 'विमर्दित'।

विमृश–पु० (सं०) सोच-विचार, विवेचन।

विमृश्य–वि० (सं०) जिसपर विवेचन या विचार करना हो; जिसकी समीक्षा करनी हो।

विमृष्ट–वि० (सं०) विचारित, विवेचित; आलोचित; रगड़ा

हुआ; झुका हुआ।

विमोक–पु० (सं०) मुक्त करना; अंत; परित्याग; विषयादिसे छुटकारा; आवरण-हीन; स्वच्छ, साफ, स्पष्ट। वि० मलहीन; रागहीन।

विमोक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) मुक्त करनेवाला।

विमोक्ष–पु० (सं०) छुटकारा; मुक्ति, निर्वाण; आजाद करना; दान; (बाण) चलाना; मेरु पर्वत; ग्रहणका अंत, उग्रह।

विमोक्षक–वि० (सं०) मुक्त करनेवाला।

विमोक्षण–पु० (सं०) विमोचन, बंधनमुक्त करना; परित्यजन; (बाण आदि) चलाना।

विमोक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) जिसे मुक्ति, निर्वाण प्राप्त हुआ हो।

विमोघ–वि० (सं०) व्यर्थ, बेकार, निष्फल; अमोघ।

विमोचक–वि० (सं०) मुक्त करनेवाला; गिरानेवाला, छोड़नेवाला।

विमोचन–पु० (सं०) दूर करना; मुक्त करना; जुएसे हटाना; निकालना; फेंकना, गिराना; शिव; (रिडेंपशन) मूल्य चुकाकर वापस लेना या बंधनादिसे छुड़ाना; बंधन या कैदसे छूटना। वि० मुक्त करनेवाला।

विमोचना*–स० क्रि० बंधन-मुक्त करना; छोड़ना; बहाना, गिराना।

विमोचनीय–वि० (सं०) छोड़ने योग्य।

विमोचित–वि० (सं०) खोला हुआ; मुक्त किया हुआ। पु० शिव।

विमोचितावास–पु० (सं०) अनुपयुक्त समझकर छोड़े हुए स्थानमें निवास करना (जै०)।

विमोच्य–वि० (सं०) छोड़ने, मुक्त करने योग्य।

विमोह–पु० (सं०) मतिभ्रंश; भ्रम; अज्ञान; आसक्ति; एक नरक।

विमोहक–वि० (सं०) भ्रममें डालनेवाला; लुब्ध करनेवाला। पु० एक राग।

विमोहन–पु० (सं०) भ्रम; बुद्धिभ्रंश; आकुल करनेकी विद्या, उच्चाटन; लुभाना; एक नरक; कामदेवका एक बाण। –**शील** –वि० भ्रममें डालनेवाला; मुग्ध करनेवाला।

विमोहना*–अ० क्रि० मुग्ध होना; धोखा खाना। स० क्रि० मुग्ध करना, लुभाना; प्रभावित कर वशीभूत करना; भ्रांत करना।

विमोहा–स्त्री० (सं०) एक छंद।

विमोहित–वि० (सं०) लुब्ध, मुग्ध; बेसुध, मूर्च्छाग्रस्त; वशीकृत।

विमोही(हिन्)–वि० (सं०) मुग्ध करनेवाला; भ्रममें डालनेवाला; अचेत करनेवाला; मोहरहित।

विमौट–पु० वमीठा, बाँबी।

विम्लापन–पु० (सं०) मुरझानेमें प्रवृत्त करनेवाला।

वियंग*–पु० दो अंगोंवाला, महादेव; सीधा।

विय*–वि० दो; दूसरा।

वियति–पु० (सं०) एक पक्षी; नहुष राजाका एक पुत्र।

वियत्–पु० (सं०) आकाश; वायुमण्डल। वि० गतिशील। –**पताका**–स्त्री० बिजली। –**पथ**–पु० वायुमंडल।

वियद्–'वियत्'का समासगत रूप। –**गंगा**–स्त्री० आकाश गंगा। –**गत**–वि० आकाशमें उड़नेवाला। –**भूति**–स्त्री० अंधकार।

वियन्मणि–पु० (सं०) सूर्य।

वियम–पु० (सं०) दे० 'वियाम'।

वियव–पु० (सं०) एक प्रकारका आंत्र कृमि।

वियात–वि० (सं०) धृष्ट; बेहया; अशिष्ट; परित्यक्त; दुःखी।

वियाम–पु० (सं०) संयम, इन्द्रियनिग्रह; सहिष्णुता; रोक; विराम; कष्ट।

वियुक्त–वि० (सं०) अलग किया हुआ, परित्यक्त; रहित, वंचित; जिसका किसीसे पार्थक्य हुआ हो, जुदा; अभावग्रस्त।

वियुग्म–वि० (सं०) अकेला; गणितकी वह राशि जिसमें दोसे भाग देनेपर १ शेष रहे (ऑड); जिसमें कुछ अस्वाभाविकता हो।

वियुत–वि० (सं०)···से वियुक्त; वंचित, रहित।

वियूथ–वि० (सं०) यूथभ्रष्ट, जो अपने झुंडसे अलग हो गया हो।

वियो*–वि० दूसरा।

वियोग–पु० (सं०) विच्छेद; पार्थक्य; विरह; अभाव; छुटकारा; व्यवकलन, घटाव। –**भाक्(ज्)**–वि० विरहातुर। –**शृंगार**–पु० शृंगाररसका वह भेद जिसमें प्रेमियोंके विरहका वर्णन होता है, विप्रलंभ-शृंगार।

वियोगांत–वि० (सं०) जिसके कथानकका अंत वियोगमें हो, दुःखांत (नाटकादि)।

वियोगावसान–वि० (सं०) जिसका वियोगमें अंत हो।

वियोगावह–वि० (सं०) विच्छेद करानेवाला।

वियोगिन–स्त्री० दे० 'वियोगिनी'।

वियोगिनी–स्त्री० (सं०) प्रेमीसे बिछुड़ी हुई स्त्री, विरहिणी।

वियोगी(गिन्)–वि० (सं०) प्रियासे बिछुड़ा हुआ, विरही। पु० विरही पुरुष; चक्रवाक।

वियोजक–वि० (सं०) पृथक् करनेवाला। पु० घटायी जानेवाली छोटी संख्या।

वियोजन–पु० (सं०) पृथक् करना; जुदाई; व्यवकलन।

वियोजित–वि० (सं०) पृथक् किया हुआ; वंचित, रहित।

वियोज्य–वि० (सं०) अलग करने योग्य, जिसे पृथक् करना हो। पु० वह संख्या जिसमेंसे कोई संख्या घटायी जाय।

विरंग–वि० (सं०) जिसका रंग अच्छा न हो, बदरंग; कई रंगोंका। पु० (हिं०) एक तरहकी मिट्टी, कंकुष्ठ; विराग। –**काबुली**–पु० वायविडंग।

विरंच–पु० (सं०) ब्रह्मा। –**सुत**–पु० नारद।

विरंचन, विरंचि, विरंच्य–पु० (सं०) दे० 'विरंच'।

विरंजन–पु० (ब्लीचिंग) रासायनिक विधियोंसे रंग उड़ानेका कार्य; धोकर साफ करना।

विरंजफूल–पु० एक धान।

विरंजित–वि० (सं०) जिसका प्रणय या आसक्ति मंद पड़ गयी हो।

विरक्त–वि० (सं०) गहरा लाल; जिसके रंग, स्वभाव आदिमें परिवर्तन हो गया हो; अननुरक्त; उदासीन; खिन्न; अनासक्त। पु० ताल देनेके काम आनेवाले बाजे।

विरक्ति–स्त्री० (सं०) भाव आदिका परिवर्तन; विराग; अनासक्ति; उदासीनता; खिन्नता।

विरचन–पु० (सं०) सजानेकी क्रिया; धारण करना; निर्माण, रचना।

विरचना*–स० क्रि० निर्माण करना, सजाना। * अ० क्रि० विरक्त होना, उदासीन होना।

विरचता(तृ)–पु० (सं०) निर्माण, रचना करनेवाला।

विरचित–वि० (सं०) निर्मित; पूरा किया हुआ; लिखित, रचित; धारण किया हुआ; कथित।

विरज–वि० स्वच्छ, निर्मल; धूलसे रहित; रजोगुणी प्रवृत्तिसे रहित; जिसका रजोधर्म रुक गया हो (स्त्री)। पु० शिव, विष्णु।

विरजन–वि० (सं०) रंग-परिवर्तन करनेवाला; रंग-परिवर्तनके लिए उपयोगी।

विरजस्–वि० (सं०) दे० 'विरजा(जस्)'। –**(ज)–तमा(मस्)**–वि० तमोगुणसे रहित, सत्त्वगुणयुक्त। –**प्रभ**–पु० एक बुद्ध।

विरजस्क–वि० (सं०) दे० 'विरजा (जस्)'।

विरजस्का–स्त्री० (सं०) गतार्तवा स्त्री।

विरजा–स्त्री० (सं०) कपित्थानी नामक पौधा; दूर्वा; नहुषकी स्त्री; कृष्णकी एक सखी; जगन्नाथ क्षेत्र।

विरजा(जस्)–वि० (सं०) धूलिरहित, स्वच्छ; विरक्त। पु० विष्णु; एक तीर्थ; एक ऋषि; वसिष्ठका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। स्त्री० गतार्तवा स्त्री; दुर्गा।

विरजाक्ष–पु० (सं०) मेरुके उत्तर स्थित एक पर्वत।

विरट–पु० (सं०) कंधा; एक तरहका काला अगर।

विरण–पु० (सं०) एक सुगंधित घास।

विरत–वि० (सं०) जिसका अंत हो गया हो; निवृत्त; जिसने हाथ खींच लिया हो; विरक्त, अननुरक्त; लीन, संलग्न।

विरति–स्त्री० (सं०) विराम, अंत; मनका हट जाना, उदासीनता, विराग।

विरथ–वि० (सं०) रथ-रहित 'रावण रथी विरथ रघुबीरा'–रामा०; रथसे गिरा हुआ; पैदल। पु० पैदल सिपाही।

विरथ्य–पु० (सं०) शिव ।

विरथ्या–स्त्री० (सं०) बुरा रास्ता ।

विरद–पु० प्रसिद्धि, नाम; यश, कीर्ति । वि० (सं०) दंतहीन ।

विरदावली–स्त्री० कीर्तिकथा, गुणवर्णन ।

विरदैत*–वि० नामवर, यशस्वी; विरद बखाननेवाला ।

विरम–पु० (सं०) समाप्ति, अंत; सूर्यास्त; त्याग ।

विरमण–पु० (सं०) रुकना, ठहरना; हाथ खींच लेना, त्याग करना; रमना ।

विरमना*–अ० क्रि० रमना, मन लगाना; ठहरना; मुग्ध होकर रुक जाना; देर लगाना ।

विरमाना*–स० क्रि० मुग्ध करना; फँसा रखना; भ्रममें डाले रखना ।

विरल–वि० (सं०) अवकाश द्वारा पृथक् किया हुआ, घना नहीं; कम मिलनेवाला; बारीक; थोड़ा; ढीला; पतला; दूरवर्ती । पु० दही । –जानुक–वि० जिसके घुटने बहुत अलग हों । –द्रवा–स्त्री० चावल या अन्य किसी अन्नसे बनी हुई एक तरहकी लपसी । –पातक–वि० जो शायद ही पाप करे । –भक्ति–वि० जिसमें भिन्नता न हो, एक ही तरहका (काम आदि) ।

विरला–वि० विरल; क्वचित् ही मिलनेवाला; कोई एकाध ।

विरलागत–वि० (सं०) जो शायद ही कभी घटित होता हो ।

विरलिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका झीना कपड़ा ।

विरलित–वि० (सं०) जो घना न हो ।

विरलीकरण–पु० (सं०) सघन वस्तुको विरल करनेकी क्रिया ।

विरव–वि० (सं०) बिना शब्दका, नीरव ।

विरश्मि–वि० (सं०) जिसमें किरणें न हों ।

विरस–वि० (सं०) नीरस; स्वादहीन; अप्रिय; जी उबानेवाला; कष्टकर; निष्ठुर । पु० कष्ट; काव्यके रसका भंग होना ।

विरसा–पु० (अ०) मृत व्यक्तिकी संपत्ति, तरका, मीरास ।

विरह–पु० (सं०) जुदाई, वियोग; अभाव; अविद्यमानता; परित्याग; वियोगमें अनुभूत होनेवाला अनुराग; मानसिक कष्ट या दुःख । वि० रहित, हीन । –ज,–जनित,–जन्य–वि० वियोगसे उत्पन्न । –ज्वर–पु० विरहजन्य ताप । –निवेदन–पु० (सं०) नायिकाके दुःखका नायकके अथवा नायकके दुःखका नायिकाके पास निवेदन (सा०) । –विरस–वि० विरहका खयाल होनेपर कष्ट देनेवाला ।

विरहा–पु० बिरहा (गीत) ।

विरहागि*–स्त्री० दे० 'विरहानल' ।

विरहाग्नि–स्त्री० (सं०) दे० 'विरहानल' ।

विरहानल–पु० (सं०) विरहकी अग्नि, वियोगजन्य ताप ।

विरहिणी–स्त्री० (सं०) पति, प्रियसे बिछुड़ी हुई दुःखिनी नायिका; मजदूरी, पारिश्रमिक ।

विरहित–वि० (सं०) परित्यक्त; रहित ।

विरही(हिन्)–वि० (सं०) प्रियाके वियोगसे दुःखी; प्रियासे वियुक्त; एकाकी ।

विरहोत्कंठिता–स्त्री० (सं०) नायकके किसी कारणसे न आनेसे दुःखी नायिका ।

विराग–पु० (सं०) रंगका परिवर्तन; रागका अभाव; असंतोष; अरुचि; विकर्षण; विरक्ति; वह राग जिसमें दो राग मिले हों । वि० रागहीन, उदासीन ।

विरागी(गिन्)–वि० (सं०) चाह, अनुरागरहित, उदासीन; विरक्त, निर्विषय ।

विराज–वि० (सं०) चमकीला; राज्यरहित । पु० मंदिरका एक विशेष रूप; एक तरहका एकाह; एक पौधा; एक प्रजापति; राजा; क्षत्रिय; ब्रह्माण्ड ।

विराजन–पु० (सं०) शासन करना; ख्यात होना; शोभित होना ।

विराजना–अ० क्रि० शोभित होना; बैठना; रहना ।

विराजमान–वि० (सं०) प्रकाशयुक्त, चमकता हुआ; वर्तमान, विद्यमान; बैठा हुआ ।

विराजित–वि० (सं०) उपस्थित; सुशोभित; प्रकाशित; प्रसिद्ध ।

विराज्ञी–स्त्री० (सं०) रानी (वै०) ।

विराज्य–पु० (सं०) शासन; राज्य ।

विराट–पु० (सं०) मत्स्य देश (अलवर, जयपुर आदिका भूभाग); मत्स्य देशका राजा; बुद्ध; एक ताल (संगीत) । –ज–पु० विराटदेशीय हीरक, राजपट्ट । –पर्व(न्)–पु० महाभारतका एक खंड ।

विराटक–पु० (सं०) दे० 'विराटज' ।

विराट्–वि० बहुत बड़ा । पु० विश्व; ब्रह्मा; क्षत्रिय ।

विराट्(ज्)–पु० (सं०) प्राधान्य; मरतबा; ब्रह्माकी पहली संतान; आदि पुरुष, विश्वरूप ब्रह्मा; सौंदर्य; कांति; क्षत्रिय; शरीर; एक एकाह ।

विराण–वि० (फा०) बेगाना, पराया, दूसरेका ।

विराणी(णिन्)–पु० (सं०) हाथी ।

विरातक–पु० (सं०) अर्जुन वृक्ष ।

विराद्ध–वि० (सं०) जिसका सामना, विरोध किया गया हो; अपमानित; अपकृत ।

विराध–पु० (सं०) विरोध; कुढ़ाना, तंग करना; कष्ट देना; एक बली राक्षस जिसे रामने मारा था । वि० कष्टदाता ।

विराधन–पु० (सं०) विरोध; अपकार करना; तंग करना; कष्ट, पीड़ा ।

विराधा–स्त्री० (सं०) अपकार ।

विराधान–पु० (सं०) कष्ट, पीड़ा ।

विराम–पु० (सं०) ठहराव, अंत; छंदमें विश्रामका स्थान; विश्राम; वाक्यांश, वाक्य आदिके बाद रुकनेका स्थान; विष्णु; –चिह्न–पु० लेखन, छपाई आदिमें प्रयुक्त चिह्न (पंक्चुएशन) । –ताल–पु० ब्रह्म तालका एक भेद । –संधि–स्त्री० (आर्मिस्टिस, ट्रूस)किसी विशेष स्थितिमें दोनों पक्षोंकी स्वीकृतिसे कुछ समयके लिए युद्ध बंद रखनेकी संधि ।

विरामण–पु० (सं०) ठहराव ।

विराल–पु० (सं०) मार्जार, बिलाव ।

विराव–पु० (सं०) शब्द; चिल्लाहट; हल्ला, शोर; भनभनाहट ।

विरावण–वि० (सं०) शोरगुल करानेवाला ।

विराविणी–वि० स्त्री० (सं०) बोलने, शब्द करनेवाली; रोने-चिल्लानेवाली । स्त्री० झाड़ू; एक नदी ।

विरावित–वि० (सं०) शब्दायमान किया हुआ ।

विरावी(विन्)–वि० (सं०) शब्द करनेवाला; रोने-चिल्लानेवाला; गूंजनेवाला । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

विरावृत्त–पु० (सं०) काली मिर्च ।

विरास*–पु० दे० 'विलास' ।

विरासत–स्त्री० (अ०) तरका, विरसा; उत्तराधिकारमें मिलनेवाला माल ।

विरासी*–वि० दे० 'विलासी' ।

विरिंच, विरिंचि–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु; शिव ।

विरिक्त–वि० (सं०) खाली किया हुआ; निकालकर साफ किया हुआ; जिसे दस्त कराये गये हों ।

विरिक्ति–स्त्री० (सं०) खाली करानेकी क्रिया; विरेचन ।

विरिब्ध–पु० (सं०) स्वर; ध्वनि ।

विरुक्मान्(क्मत्)–पु० (सं०) चमकदार हथियार या गहना ।

विरुग्ण–वि० (सं०) खंडित, विदीर्ण; नष्ट; झुका हुआ; मंद, सुस्त; बहुत बीमार ।

विरुच–पु० (सं०) एक अस्त्र-संबंधी मंत्र ।

विरुज–वि० (सं०) तोड़ने, विदीर्ण करनेवाला; पीड़ा देनेवाला; नीरोग, निरुज ।

विरुजालय–पु० (सं०) (क्लिनिक) जहाँ रोगोंका उपचार होता हो, चिकित्सालय ।

विरुझना*–अ० क्रि० उलझना ।

विरुझाना*–स० क्रि० उलझाना । अ० क्रि० मचलना; उलझना ।

विरुत–वि० (सं०) चिल्लाया हुआ; गूंजता हुआ; शब्दायमान । पु० चिल्लाहट; शोर; गान; गुंजन; कलरव ।

विरुद–पु० (सं०) कीर्ति-गाथा, वह कविता आदि जिसमें किसीके यश आदिका वर्णन किया गया हो; प्रशंसासूचक पदवी; चिल्ला-

हट; घोषणा। **–ध्वज**–पु० राजकीय पताका।

विरुदावली–स्त्री० (सं०) विस्तृत यशोगान।

विरुदित–पु० (सं०) रोना-चिल्लाना; शोक।

विरुद्ध–वि० (सं०) बाधित, रोका हुआ; जिसका प्रतिरोध किया गया हो; अवरुद्ध; संदिग्ध; खतरनाक; विरोधी, प्रतिकूल; शत्रुतापूर्ण; अप्रिय, जो अनुकूल न पड़े (आहार आदि); जो मेलमें न हो; असंगत। पु० विरोध; वैर; एक अर्थालंकार; एक हेत्वाभास (न्या०)। अ० विरोधमें। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० असंगत कार्य करनेवाला; श्लेष अलंकारका एक भेद (सा०)। **–धी**–वि० शत्रुतापूर्ण भाव रखनेवाला। **–प्रसंग**–पु० निषिद्ध कार्य। **–मतिकारिता**–स्त्री० पदका अनुचित अर्थका द्योतक होना (सा०)। **–हेत्वाभास**–पु० एक प्रकारका हेत्वाभास (न्या०)।

विरुद्धता–स्त्री० (सं०) प्रतिकूलता, वैपरीत्य।

विरुद्धाचरण–पु० (सं०) बुरा आचरण, बुरा कर्म।

विरुद्धार्थ–वि० (सं०) विराधी अर्थवाला। पु० विपरीत अर्थ। **–दीपक**–पु० दीपक अलंकारका एक भेद जहाँ एक ही बातसे दो परस्पर विरोधी क्रियाएँ साथ-साथ दिखायी जायँ।

विरुद्धाशन–पु० (सं०) निषिद्ध या वर्जित आहार।

विरुद्धोक्ति–स्त्री० (सं०) प्रतिकूल वचन, कलह।

विरूक्ष–वि० (सं०) रूखा, कड़ा, कर्कश (वचन)।

विरूक्षण–वि० (सं०) सुखाने, रूखा करनेवाला; संकोचक। पु० रूखा करनेकी क्रिया; निंदा; शाप।

विरूक्षित–वि० (सं०) रूखा बनाया हुआ; लेप किया हुआ; आवृत।

विरूज–पु० (सं०) एक अग्नि जिसका स्थान जलमें माना जाता है।

विरूढ–वि० (सं०) अंकुरित; उत्पन्न; चढ़ा हुआ। **–बोध**–वि० जिसकी बुद्धि बढ़ या परिपक्व हो गयी हो।

विरूढक–पु० (सं०) अंकुरित अन्न; एक लोकपाल (बौ०); इक्ष्वाकुका एक पुत्र।

विरूढि–स्त्री० (सं०) अंकुरित होना।

विरूथिनी–स्त्री० (सं०) वैशाख-कृष्णा एकादशी।

विरूप–वि० (सं०) बदशक्ल, भद्दा; जिसकी आकृति विकृत हो गयी हो; कदाकार; विभिन्न प्रकारका; परिवर्तित; एक कम। पु० पांडु रोग; शिव; एक असुर; कुरूपता; रूप-भिन्नता; भद्दी शक्ल; पिप्पलीमूल। **–करण**–पु० आकृति विकृत करना; क्षति पहुँचाना। **–चक्षु(स्)** पु० शिव। **–परिणाम**–पु० एककी अनेकमें परिणति। **–रूप**–वि० बदशक्ल, कुरूप।

विरूपक–वि० (सं०) कुरूप; भयंकर; अनुचित। पु० एक असुर; व्यंगसूचक नाम।

विरूपता–स्त्री० (सं०) कुरूपता; विभिन्नता, बहुरूपता।

विरूपा–स्त्री० (सं०) यमकी पत्नी; अतिविषा; दुरालभा।

विरूपाक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें कुरूप हों; तरह-तरहके काम करनेवाला। पु० शिव; शिवका एक गण; एक रुद्र; एक यक्ष; एक दानव; एक राक्षस; एक नाग; एक लोकपाल।

विरूपी(पिन्)–वि० (सं०) भद्दा, कुरूप। पु० गिरगिट।

विरेक–पु० (सं०) आँतकी सफाई, मल-निष्कासन; दिमागकी सफाई; जुलाब, विरेचन।

विरेचक–वि० (सं०) सारक, दस्त लानेवाला।

विरेचन–पु० (सं०) दस्तावर दवा, जुलाब; दस्त लाना; पीलु वृक्ष। वि० खोलनेवाला।

विरेचित–वि० (सं०) दस्त कराया हुआ।

विरेची(चिन्)–वि० (सं०) दस्तावर।

विरेच्य–वि० (सं०) दस्तावर दवा देने योग्य।

विरेफ–पु० (सं०) धारा, नदी।

विरेभित–वि० (सं०) शब्दित।

विरोक–पु० (सं०) चमक, कांति; सूर्य-रश्मि; चन्द्रमा; विष्णु; दरार; छिद्र; गड्ढा।

विरोग–पु० (सं०) आरोग्य, रोगराहित्य। वि० स्वस्थ।

विरोचन–वि० (सं०) प्रकाशित करनेवाला। पु० सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; अर्क; एक तरहका करंज; एक तरहका श्योनाक; रोहित वृक्ष; राजा बलिका पिता; विष्णु। **–सुत**–पु० राजा बलि।

विरोद्धा(द्धृ)–वि० (सं०) विरोध करनेवाला, सामना करनेवाला।

विरोध–पु० (सं०) बाधा; प्रतिरोध; विपक्षता; अवरोध; रोक, प्रतिबंध; सामंजस्यहीनता; विपरीतता (ऑपोज़ीशन); विपरीत तत्व (रिपग्नेंसी); संघर्ष (कॉन्फ्लिक्ट); वैर, शत्रुता; अनबन; कलह; संकट; एक अर्थालंकार, विरोधाभास जहाँ विरोध न होनेपर भी विरोध-सा भान हो–जाति, द्रव्य, गुण, क्रियामेंसे किसी एकका दूसरी जाति, द्रव्यादिसे विरोध जान पड़े; कथावस्तुकी प्रगतिमें पड़नेवाली बाधा। **–कारक**–वि० कलह पैदा करनेवाला। **–कारी(रिन्)**–वि० कलह बढ़ानेवाला। **–कृत्**–वि० विरोध करनेवाला। पु० शत्रु। **–क्रिया**–स्त्री० झगड़ा, संघर्ष। **–परिहार**–पु० विरोधका दूर होना, सामंजस्य स्थापित होना। **–पीठ**–पु० (ऑपोज़ीशन बेंच) विधायिका सभामें विरोध पक्षके बैठनेका स्थान। **–वचन**–पु० खंडन, प्रतिकूल बात। **–शमन**–पु० कलह शांत करना।

विरोधक–वि० (सं०) कलह पैदा करनेवाला; बाधक। पु० अवर्णनीय विषय (ना०)।

विरोधन–वि० (सं०) विरोध करनेवाला, लड़नेवाला। पु० बाधा; रोक; कलह; संघर्ष; प्रतिरोध; क्षतिग्रस्त करना; असामंजस्य; अवरोध; नाश।

विरोधना*–स० क्रि० वैर, विरोध करना।

विरोधाचरण–पु० (सं०) शत्रुतापूर्ण कार्य; विरुद्ध कार्य।

विरोधाभास–पु० (सं०) विरोधका आभास; एक अर्थालंकार जहाँ वास्तविक विरोध न होकर विरोधका आभास-मात्र हो, दे० विरोध (अलंकार)।

विरोधित–वि० (सं०) जिसका विरोध किया गया हो; क्षतिग्रस्त; अस्वीकृत।

विरोधिता–स्त्री० (सं०) विरोधी होनेका भाव; नक्षत्रोंकी प्रतिकूल दृष्टि (ज्यो०)।

विरोधिनी–स्त्री० (सं०) वैर, विरोध करनेवाली स्त्री; एक राक्षसी (दुःसहकी पुत्री)।

विरोधी(धिन्)–वि० (सं०) विरोध करनेवाला; बाधक; अवरोध करनेवाला; हटानेवाला; वैरी; अनुकूल न पड़नेवाला (आहार); प्रतिकूल; बेमेल; प्रतिस्पर्धा करनेवाला; झगड़ालू। पु० पचीसवाँ संवत्सर, शत्रु; विपक्षी। **–(धि)श्लेष**–पु० एक प्रकारका श्लेषालंकार जहाँ श्लिष्ट शब्दों द्वारा दो वस्तुओंमें भेद या विरोध दिखाया जाय (केशव)।

विरोधोक्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'विरोध-वचन'।

विरोधोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद जहाँ किसी वस्तुकी उपमा एक साथ दो विरोधी उपमानोंके साथ दी जाय।

विरोध्य–वि० (सं०) जिसका विरोध करना हो।

विरोपण–पु० (सं०) पौधा लगाना, रोपना; लेप लगाना; घावका भरना। वि० रोपनेवाला; घाव भरनेवाला; लेप लगानेवाला।

विरोपित–वि० (सं०) रोपा हुआ; भरा हुआ (घाव)। **–व्रण**–वि० जिसका घाव भर गया हो।

विरोम, विरोमा(मन्)–वि० (सं०) बिना रोयेंका, रोमरहित।

विरोलित–वि० (सं०) अस्त-व्यस्त किया हुआ।

विरोह–पु० (सं०) अंकुरित होना; जमनेका स्थान, उद्भव-स्थान।

विरोहण–पु० (सं०) अंकुरित होना; रोपना; एक नाग। वि० (घावको) भरनेवाला।

विरोही(हिन्)–वि० (सं०) रोपने, पौधा लगानेवाला; अंकुरित होनेवाला।

विलंघन–पु० (सं०) लाँघना, फाँद जाना; अपकार, अपराध; उल्लंघन; भोजनादिसे परहेज।

विलंघना–स्त्री० (सं०) लाँघना; पराभूत करना, पराजित करना।

विलंघनीय–वि० (सं०) लाँघने या पराभूत करने योग्य।

विलंघित–वि० (सं०) लाँघा हुआ; उल्लंघित; पराजित, पराभूत। पु० भोजनादिसे परहेज।

विलंघी(घिन्)–वि० (सं०) लाँघनेवाला; उल्लंघन करनेवाला; चढ़नेवाला ।

विलंघ्य–वि० (सं०) पार करने योग्य (नदी आदि); पराभूत करने योग्य; सहन करने योग्य ।

विलंब–पु० (सं०) लटकना, झूलना; देर; दीर्घसूत्रता; सुस्ती; एक संवत्सर । वि० लटकनेवाला । **–कारी प्रस्ताव**–पु० (डाइलेटरी मोशन) विधान-सभा आदिके सामने उपस्थित किसी विषयकी काररवाई समाप्त होनेमें अधिकसे अधिक विलंव लगे, इसी उद्देश्यसे प्रस्थापित किया जानेवाला प्रस्ताव । **–शुल्क**–पु० (डेमरेज) पारसल आदि अधिक देरसे छुड़ानेपर लगनेवाला अर्थदंड; रेलका डब्वा या जहाज निर्दिष्ट अवधिके बाद भी रोक रखनेपर हरजानेके रूपमें ली जानेवाली रकम; किसी काममें देर होनेपर लगनेवाला अर्थदण्ड (लेट फ़ी) ।

विलंबन–पु० (सं०) लटकना; देर होना; सुस्ती; दीर्घ-सूत्रता; आश्रय लेना ।

विलंबना*–अ० क्रि० देर करना; रम जाना; लटकना; अवलंब लेना ।

विलंबिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका अजीर्ण या मलावरोध जो कुछके मतसे हैजेकी अंतिम अवस्था है ।

विलंबित–वि० (सं०) लटकता हुआ; आश्रित; अवलंबित; जिसमें देर हुई हो; धीमी लयवाला, द्रुतका उलटा (संगीत) । पु० सुस्त जानवर; सुस्ती; देर । **–गति**–स्त्री० एक वृत्त । **–फल**–वि० जिसका फल मिलनेमें देर हो । **मु० –करना**–स० क्रि० (पोस्टपोन) (कोई प्रश्न, कार्य, विचारादि) किसी भावी तिथि या समयके लिए टाल देना, निश्चित या अनिश्चित कालतक रोक रखना ।

विलंबी(बिन्)–वि० (सं०) लटकने, सहारा लेनेवाला; देर करनेवाला । पु० एक संवत्सर, विलंब ।

विलंभ–पु० (सं०) भेंट; दान; औदार्य ।

विल–पु० (सं०) दे० 'विल' (सं०) ।

विलक्ष–वि० (सं०) परिचायक चिह्नोंसे रहित; हतबुद्धि, घबड़ाया हुआ; चकित; शर्मिंदा, लज्जित; अप्राकृतिक, बनावटी (हँसी आदि); लक्ष्यरहित; निशाना चूक जानेवाला; असाधारण, अलौकिक ।

विलक्षण–वि० (सं०) अलौकिक, असाधारण; भिन्न चिह्नोंवाला; जिसमें कोई विशेष लक्षण न हो; वह अवस्था जिसका कारण न जान पड़े; अशुभ चिह्नोंवाला । पु० गौरसे देखना; वह अवस्था जिसका कोई कारण न हो ।

विलक्षणा–स्त्री० (सं०) शय्या-विशेष ।

विलक्षित–वि० (सं०) अचिह्नित; जो गौरसे देखा, समझा गया हो; हतबुद्धि, चकराया हुआ; कुढ़ा हुआ; जिसका भेद न किया गया हो, पार्थक्य न दिखलाया गया हो ।

विलक्ष्य–वि० (सं०) जिसका कोई लक्ष्य न हो; निशाना चूक जानेवाला (वाण) ।

विलखना–अ० क्रि० दुःखी होना, * ताड़ जाना, भाँप लेना ।

विलखाना*–स० क्रि० कष्ट देना, दुःख देना । अ० क्रि० दुःखित होना ।

विलग–वि० अलग । पु० अंतर, भेद; दे० 'बिलग' ।

विलगाना*–स० क्रि० अलग करना । अ० क्रि० अलग होना ।

विलगित–वि० (सं०) संबद्ध, संलग्न ।

विलग्न–वि० (सं०) आबद्ध, संबद्ध, संलग्न; अवलंबित; लटकता हुआ; पिंजरबद्ध (पक्षी); व्यतीत; पतला, नाजुक; कोमल; पु० कमर, कटि; नितंब; राशियोंका उदय; जन्मपत्रिका । **–मध्या**–स्त्री० पतली कमरवाली स्त्री ।

विलच्छन*–वि० दे० 'विलक्षण' ।

विलज्ज–वि० (सं०) निर्लज्ज, बेहया ।

विलज्जित–वि० (सं०) लजाया हुआ, शर्मिंदा ।

विलपन–पु० (सं०) विलाप करना; गप-शप करना, तेल आदिका नीचे बैठा हुआ मैल । **–विनोद**–वि० रोकर शोक दूर करना ।

विलपना*–अ० क्रि० रोना, विलाप करना ।

विलपाना*–स० क्रि० रुलाना, विलाप करना ।

विलपित–वि० (सं०) रोया, विलाप किया हुआ । पु० विलाप ।

विलब्ध–वि० (सं०) प्रदत्त; पृथक् किया हुआ ।

विलब्धि–स्त्री० (सं०) दूर करना, हटाना ।

विलम†–पु० विलम्ब ।

विलय–पु० (सं०) द्रवण, विलगन; विलीन होना; लोप; मत्यु; नाश; प्रलय; दे० 'विलयन' ।

विलयन–पु० (सं०) द्रवण, विगलन; क्षय होना; हटाना, दूर करना; क्षय करना; क्षय करनेवाला पदार्थ; विलीन होनेकी क्रिया, विलय; (मर्जर) किसी छोटे राज्यका पड़ोसके बड़े राज्यमें एक हो जाना, इस तरह संयुक्त हो जाना कि उसकी पृथक् सत्ताका विलोप हो जाय ।

विलसन–पु० (सं०) चमकना; क्रीडन ।

विलसना*–अ० क्रि० शोभित होना; विलास करना; मौज, आनंद करना ।

विलसाना*–स० क्रि० भोगना; भोगनेमें प्रवृत्त करना ।

विलसित–वि० (सं०) चमकता हुआ; व्यक्त; शोभित; क्रीड़ाप्रिय, विनोदी । पु० चमक; चमकनेकी क्रिया; अभिव्यक्ति; क्रीडा; परिणाम, फल; अंगभंगी ।

विलहबंदी–स्त्री० जिलेके बंदोबस्तका ब्योरा ।

विलाता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया ।

विलाप–पु० (सं०) रोना; शोक करना ।

विलापन–वि० (सं०) रुलानेवाला, जो विलापका कारण हो (शस्त्रादि); पिघलानेवाला; नष्ट करनेवाला । पु० शिवका एक गण; रुलानेकी क्रिया; नाश; मृत्यु; नाशका साधन; पिघलानेका साधन ।

विलापना*–अ० क्रि० विलाप करना ।

विलापयिता(तृ)–वि० (सं०) घोलने, पिघलानेवाला ।

विलापित–वि० (सं०) घोला, पिघलाया हुआ ।

विलापी(पिन्)–वि० (सं०) रोने, विलाप करनेवाला ।

विलायत–स्त्री० (अ०) शासन; एक राजाके अधीन देश, राज्य; ईरान-अफगानिस्तान; ब्रिटेन; यूरोप; विदेश; वलीका पद; संरक्षकता; ईश्वरका सामीप्य ।

विलायती–वि० विलायतका; ईरानी; यूरोपीय; विदेशी । **–अनन्नास**–पु० रामबाँस । **–कद्दू**–पु० एक तरहका कद्दू । **–कासनी**–स्त्री० कासनीका एक भेद । **–कीकर**–पु० पहाड़ी कीकर । **–डाक**–स्त्री० युरोपसे आनेवाली चिट्ठियाँ, अखबार आदि । **–नील**–पु० नीला रंग-विशेष (चीनका) । **–पटुआ**–पु० लाल पटुआ । **–पात**–पु० रामबाँस, कृष्ण केतकी । **–प्याज**–पु० एक तरहका प्याज (इसमें गूदेदार जड़ होती है) । **–बैंगन, –भंटा**–पु० एक तरहका सफेद बैंगन; टमाटर । **–माल**–पु० विदेशी माल, यूरोपका माल । **–लहसुन**–पु० मसालेके काम आनेवाला एक तरहका लहसुन । **–सिरिस**–पु० एक विदेशी सिरिस । **–सेम**–स्त्री० एक तरहकी सेम ।

विलायन–पु० (सं०) एक प्रस्वापनास्त्र ।

विलायित–वि० (सं०) द्रावित, पिघलाया हुआ ।

विलाल–पु० (सं०) मार्जार, विडाल ।

विलावल–पु० दे० 'बिलावल' ।

विलावली–स्त्री० एक रागिनी ।

विलास–पु० (सं०) चमकना; व्यक्त होना; क्रीड़ा; प्रणय-क्रीड़ा; हाव-भाव; सजीवता; लंपटता; सौंदर्य; आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष; सुखोपभोग; शौकीनी (लक्जरी); अंग-भंगी; किसी चीजका सुंदर ढंगसे हिलना-डुलना; एक वृत्त । **–कानन**–पु० प्रमोदवन । **–कोदंड, –चाप, –धन्वा(न्वन्), –बाण**–पु० कामदेव । **–गृह, –भवन, –मंदिर, –वेश्म(न्), –सद्म(न्)**–पु० प्रमोद-गृह । **–वातायन**–पु० छज्जा ।

विलासक–वि० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करनेवाला; नृत्य करनेवाला ।

विलासन–पु० (सं०) क्रीड़ा; प्रेमालिंगन; विमोहन ।

विलासिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका श्रृंगार-प्रधान एकांकी

रूपक; नर्तकी।

विलासिनी–स्त्री० (सं०) सुंदरी युवती; कामुक स्त्री; वेश्या, पुंश्चली; एक वर्णवृत्त। वि० विलासिताप्रिय (स्त्री)।

विलासी(सिन्)–वि० (सं०) चमकदार; इधर-उधर घूमनेवाला; क्रीड़ाशील; कामी; आरामतलब। पु० नायक; अग्नि; चंद्रमा; सर्प; कृष्ण; शिव; कामदेव; वरुण।

विलास्य–पु० (सं०) एक तंत्रवाद्य। वि० विलासके योग्य।

विलिंग–वि० (सं०) लिंग-रहित; भिन्न लिंगका। पु० चिह्नका अभाव।

विलिंपित–वि० (सं०) लेपा हुआ।

विलिखन–पु० (सं०) खरोंचना; लिखना।

विलिखित–वि० (सं०) खरोंचा हुआ; लिखा हुआ।

विलिप्त–वि० (सं०) लिपा हुआ; जिसमें दाग लग गया हो, कलुषित; अस्तव्यस्त।

विलिष्ट–वि० (सं०) टूटा हुआ; अस्त-व्यस्त। **–भेषज**–पु० अस्थिभंगकी दवा।

विलीक*–वि० व्यलीक, अनुचित।

विलीन–वि० (सं०) संवद्ध, संलग्न; जड़ा हुआ; उतरा, उतरकर बैठा हुआ (पक्षी); छिपा हुआ; लुप्त; मृत; नष्ट; आड़में छिपा हुआ, ओझल; घुला हुआ, पिघला हुआ; संवद्ध।

विलीयन–पु० (सं०) पिघलना; घुलना।

विलुंचन–पु० (सं०) नोचना; छीलना।

विलुंठन–पु० (सं०) लूटना; चोरी करना; लोटना।

विलुंठित–वि० (सं०) जो लूटा गया हो; लोटा हुआ।

विलुंपक–वि० (सं०) तोड़ने-फोड़नेवाला। पु० लुटेरा; नष्ट करनेवाला।

विलुठित–वि० (सं०) क्षुब्ध, उत्तेजित; लुढ़कता हुआ।

विलुनन–पु० (सं०) नष्ट करना।

विलुप्त–वि० (सं०) खंडित, विदीर्ण; भंग किया हुआ, क्षीण; नष्ट; अपहृत; लूटा हुआ। **–वित्त**–वि० जिसका धन लूट लिया गया हो।

विलुप्तायोनि–स्त्री० (सं०) एक योनि-रोग।

विलुभित–वि० (सं०) अस्त-व्यस्त; क्षुब्ध। **–प्लव**–वि० क्षुब्ध ढंगसे गमन करनेवाला।

विलुलित–वि० (सं०) हिलता हुआ, लहराता हुआ; अस्थिर; क्षुब्ध; अस्त-व्यस्त। **–केशा**–वि० स्त्री० जिसके सिरके वाल विखरे हों (स्त्री)।

विलून–वि० (सं०) काटकर अलग किया हुआ।

विलेख–पु० (सं०) खरोंचना; फाड़ना; आहत करना; (डीड) वह लिखित या मुद्रित साधनपत्र जिसमें किसी समझौते, संविदा, विक्रय आदिका विवरण दिया गया हो और जिसपर निष्पादकने विधिवत् हस्ताक्षर किये हों (तथा उसे दूसरे पक्षके पास भेज दिया हो), संलेख।

विलेखन–पु० (सं०) खरोंचना; खोदना; उखाड़ना; चिह्न वनाना; चीरना; नदीका मार्ग; विभाग करना। वि० खरोंचनेवाला।

विलेखा–स्त्री० (सं०) खरोंच; चिह्न; इकरारनामा।

विलेखी(खिन्)–वि० (सं०) खरोंचनेवाला; चिह्न वनानेवाला; अनुवंध लिखनेवाला।

विलेप–पु० (सं०) लेप, चुपड़नेकी चीज; अंगराग; गारा, पलस्तर; लेपना; गारा लगाना।

विलेपन–पु० (सं०) अंगराग लगाना; लगाने, लेप करनेका पदार्थ, अंगराग।

विलेपनी–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे अंगराग लगा हो; सुवेशा स्त्री; माँड़।

विलेपी(पिन्)–वि० (सं०) लेप करनेवाला; पलस्तर करनेवाला; लसदार; चिपका हुआ, साथ लगा हुआ।

विलेप्य–वि० (सं०) जिसका लेप या पलस्तर किया जाय (गारा आदि)।

विलेप्या–स्त्री० (सं०) माँड़।

विलेय–वि० (सं०) (सोल्यूबल) पानी या किसी तरल द्रव्यमें घुल सकनेवाला (पदार्थ); जिसका विलय हो सके।

विलवासी(सिन्)–पु० (सं०) सर्प।

विलेशय–पु० (सं०) विलमें रहनेवाला जीव, सर्प, चूहा, गोह, खरहा आदि।

विलोक–पु० (सं०) नजर, दृष्टिपात; दृश्य; जनराहित्य, जनाभाव। वि० एकांत।

विलोकन–पु० (सं०) देखना; विचार करना; तलाश करना; जानकारी हासिल करना; ध्यान देना, अध्ययन करना।

विलोकना*–स० क्रि० देखना; निरीक्षण करना, ढूँढ़ना।

विलोकनि*–स्त्री० देखनेकी क्रिया या भाव; दृष्टि।

विलोकनीय–वि० (सं०) देखने योग्य; समझने योग्य; सुंदर।

विलोकित–वि० (सं०) देखा हुआ; जाना हुआ; विवेचित। पु० एक ताल; नजर; परीक्षण।

विलोकी(किन्)–वि० (सं०) देखनेवाला; जानकारी हासिल करनेवाला।

विलोक्य–वि० (सं०) देखने योग्य।

विलोचन–वि० (सं०) आँख विकृत या वक्र करनेवाला; आँखसे रहित। पु० आँख; नजर; एक हिरन। **–पथ**–पु० दृष्टिपथ। **–पात**–पु० दृष्टिपात।

विलोचनांवु–पु० (सं०) आँसू।

विलोट, विलोटन–पु० (सं०) लुढ़कना।

विलोटक–पु० (सं०) एक मछली।

विलोड–पु० (सं०) लुढ़कना, लोटना; आंदोलित होना; मंथन।

विलोडक–पु० (सं०) चोर।

विलोडन–पु० (सं०) मथना; हिलाना; इधर-उधर करना; चुराना।

विलोड़ना–स० क्रि० मथना; क्षुब्ध करना; हिलाना।

विलोडित–वि० (सं०) हिलाया हुआ; क्षुब्ध; मथित; लुढ़कता हुआ। पु० मठा।

विलोना–स० क्रि० दे० 'विलोना'।

विलोप–पु० (सं०) अपहरण, लेकर भाग जाना; बाधा; क्षति; चोट, आघात; नाश; आपत्ति; हानि; कोई वस्तु चुराकर ले भागना; दे० 'विलोपन'। **–भृत**–पु० लूट-पाटका लोभ दिखलाकर जमा की हुई सेना (कौ०)।

विलोपक–वि० (सं०) दे० 'विलुंपक'।

विलोपन–पु० (सं०) भंग करना; नष्ट करना; काटकर या तोड़कर अलग करना (डिलीशन); लूटना; चोरी करना; छोड़ देना; लुप्त करना। (ओमीशन) किसी वाक्य, रचना आदिसे कुछ अंश निकाल देनेकी क्रिया; (कैंसेलेशन) रद कर देना; काट देना, निकाल देना; (एक्सटिंक्शन) अस्तित्वका पूर्णतः लोप।

विलोपना*–स० क्रि० लोप करना; लेकर भागना; वाधा डालना।

विलोपित–वि० (सं०) भंग किया हुआ; नष्ट किया हुआ; लुप्त किया हुआ।

विलोपी(पिन्)–पु० (सं०) नाश, विलोप करनेवाला; भंग करनेवाला।

विलोपीकरण–पु० (रिपील) विलुप्त कर देना, रद या अप्रभावी कर देना।

विलोप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) चोर; डाकू।

विलोप्य–वि० (सं०) तोड़ने, भंग करने, नष्ट करने योग्य।

विलोभ–पु० (सं०) आकर्षण; प्रलोभन; भ्रम, मोह; वहकावा। वि० निर्लोभ, लोभशून्य।

विलोभन–पु० (सं०) भ्रममें डालना; वहकाना; प्रलोभन; चाटुकारिता; प्रशंसा (ना०)।

विलोभित–वि० (सं०) लुभाया हुआ; वहकाया हुआ; छलित; प्रशंसित।

विलोम–वि० (सं०) उलटा, विपरीत; क्रम या रीतिविरुद्ध; उलटे क्रमसे उत्पन्न; पीछेका; लोमरहित। पु० उलटा क्रम; सर्प; कुत्ता; वरुण; पानी निकालनेका एक यंत्र; स्वरका अवरोह (संगीत)। **–काव्य**–पु० वह काव्य जो उलटा भी पढ़ा जा सके।

–क्रिया–स्त्री० उलटे क्रमसे करना, अंतकी ओरसे आदिकी ओर जानेकी क्रिया। **–ज,–जात–वर्ण**–वि० उलटा जन्मा (बच्चा), वि० पिताकी अपेक्षा उच्चतर वर्णवाली मातासे उत्पन्न (संतान)। **–जिह्व,–रसन**–पु० हाथी। **–पाठ**–पु० अंतकी ओरसे पढ़ना।

विलोमक–वि० (सं०) उलटा, विपरीत, प्रतिकूल; (डेपिलेटरी) बाल झाड़ देनेवाली (ओषधि या वस्तु)।

विलोमतः–अ० विपरीत दशा या रूपमें (कॉन्वर्सली)।

विलोमन–पु० (सं०) मुखसंधिका एक अंग (ना०)।

विलोमा(मन्)–वि० (सं०) उलटी ओर मुड़ा हुआ; केशरहित; मुखसंधिका एक अंग (ना०)।

विलोमाक्षरकाव्य–पु० (सं०) दे० 'विलोमकाव्य'।

विलोमित–वि० (सं०) उलटा हुआ।

विलोमी–स्त्री० (सं०) आँवला।

विलोल–वि० (सं०) चंचल, अस्थिर; क्षुब्ध; ढीला; अस्त-व्यस्त; बिखरे हुए (बाल); सुंदर। **–तारक**–वि० चंचल आँखोंवाला। **–लोचन**–वि० जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हों। **–हार**–वि० जिसका हार हिल रहा हो।

विलोलन–पु० (सं०) हिलाना, चंचल करना; क्षुब्ध करना।

विलोलित–वि० (सं०) घुमाया, हिलाया हुआ; क्षुब्ध किया हुआ। **–दृक्(श्)**–वि० जिसकी आँखें चंचल हों।

विलोलुप–त्रि० (सं०) तृष्णारहित, जिसे किसी वस्तुका लोभ न हो।

विलोहित–वि० (सं०) गाढ़ा लाल। पु० रुद्र; शिव; एक तरहका प्याज; एक नरक।

विलोहितक–पु० (सं०) वह शव जिसका रंग लाल हो गया हो।

विलोहिता–स्त्री० (सं०) अग्निकी एक जिह्वा।

विल्ल–पु० (सं०) दे० 'बिल्ल'।

विल्व–पु० (सं०) दे० 'बिल्व'। **–मंगल**–पु० महाकवि सूरदासका अंधा होनेके पहलेका नाम।

विल्वांतर–पु० (सं०) वृक्षविशेष।

विल्वेश–पु० (सं०) भिलसाका पुराना नाम।

विवंचिषु–वि० (सं०) छल करनेवाला, धोखेबाज।

विवंदिषु–वि० (सं०) जो वंदना या प्रशंसा करना चाहता हो।

विव*–वि० दूसरा; दो।

विवक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) कहनेवाला; व्याख्याता; सुधार करनेवाला; अध्यापक, 'लेक्चरर'।

विवक्षा–स्त्री० (सं०) कहने, व्यक्त करनेकी इच्छा; इच्छा; अभिप्राय, आशय; संदेह; हिचक; फलके रूपमें या आनुषंगिक रूपसे होनेवाली बात (इम्प्लिकेशन)।

विवक्षित–वि० (सं०) कथनीय; कथित, उक्त; अभिप्रेत, इच्छित, अभिलषित; अपेक्षित; प्रधान; प्रिय; शाब्दिक। पु० प्रयोजन, अभिप्राय; उद्देश्य; आशय, अर्थ; जो कहनेकी इच्छा हो।

विवक्षु–वि० (सं०) बोलनेकी इच्छा रखनेवाला।

विवत्स–वि० (सं०) संतानहीन।

विवत्सा–स्त्री० (सं०) वह गाय जिसे बछड़ा न हो।

विवत्सु–वि० (सं०) जो बोलना चाहता हो।

विवदन–पु० (सं०) झगड़ना; मुकदमेबाजी।

विवदना*–अ० क्रि० झगड़ा, विवाद करना।

विवदित–वि० (सं०) झगड़ा करनेवाला; विवादग्रस्त; जिसके लिए मुकदमा लड़ा गया हो।

विवदिषा–स्त्री० (सं०) बोलनेकी इच्छा।

विवदिषु–वि० (सं०) बोलनेका इच्छुक।

विवध–पु० (सं०) भारदंड, जुआ; अन्न या भूसेका ढेर; एक एकाह; सड़क, राजमार्ग; घड़ा; राजकर।

विवधा–स्त्री० (सं०) जुआ, जुआठा; बंधन, हथकड़ी।

विवधिक–पु० (सं०) भारवाहक; फेरीवाला; बिसाती।

विवर–पु० (सं०) बिल; गड्ढा; दरार; गुफा; ठोस वस्तुमें खोखला स्थान (कैविटी); अवकाश; एकांत स्थान; छिद्र, दोष; अंतर; कटने आदिका घाव; नौकी संख्या; फैलाव, विस्तार। **–दर्शक**–वि० दोष दिखलानेवाला। **–नालिका**–स्त्री० बाँसुरी।

विवरण–पु० (सं०) प्रदर्शन; स्पष्ट करना; व्याख्या; वर्णन; ब्योरा; वाक्य। **–पंजी**–स्त्री० (मिनिटबुक) किसी सभा आदिमें हुई कार्रवाईका संक्षिप्त विवरण लिखनेका रजिस्टर। **–पत्र**–पु० रिपोर्ट। **–पत्रिका**–स्त्री० (प्रास्पेक्टस) किसी विद्यालय या किसी परीक्षा आदिकी नियमावली, पाठ्यक्रम तथा अन्य विवरण देनेवाली पुस्तिका; दे० 'विवरणिका'।

विवरणिका–स्त्री० (सं०) किसी घटना या संस्था आदिकी कारररवाईका क्रमबद्ध विवरण जो किसीके लिए तैयार किया जाय।

विवरणी–स्त्री० (रिटर्न) आँकड़ों आदिके साथ तैयार की गयी पैदावार आदिकी (सरकारी) रिपोर्ट जो उच्चाधिकारियोंके पास भेजी जाय।

विवरना–अ० क्रि० दे० 'बिवरना'।

विवरानुग–वि० (सं०) छिद्रान्वेषी।

विवर्चा(र्चस्)–वि० (सं०) कांतिहीन।

विवर्जक–वि० (सं०) त्याग करनेवाला।

विवर्जन–पु० (सं०) त्याग, परहेज; उपेक्षा; निरादर; निषेध।

विवर्जित–वि० (सं०) मना किया हुआ; परित्यक्त; वंचित; प्रदत्त; बाँटा हुआ; जिसमेंसे कुछ घटाया या छोड़ा जाय।

विवर्ण–वि० (सं०) वर्णहीन; बदरंग; बेआब; श्रीहत; नीच; संकर जातिका; अशिक्षित, मूर्ख। पु० वह जो जातिमें न हो; नीच जातिका आदमी; एक भाव जिसमें भय आदिके कारण चेहरेका रंग बदल जाता है।

विवर्त–पु० (सं०) घूमना, गोलाईमें चक्कर लगाना; लुढ़कना, ढुलकना; ढेर, राशि, समूह; नाच; रूपांतर; भ्रम; आकाश; परिवर्तन; सुधार; भँवर; अविद्याजन्य मिथ्या रूप। **–कल्प**–पु० कल्पविशेष जिसमें अवनति होती है (बौ०)। **–वाद**–पु० वेदांतका एक सिद्धांत (इसमें दृश्य जगत्को मिथ्या और ब्रह्मको सत्य मानते हैं)। **–स्थायिकल्प**–पु० कल्पांत।

विवर्तक–वि० (सं०) विवर्तन करनेवाला, चक्कर लगानेवाला।

विवर्तन–पु० (सं०) घूमना, चक्कर खाना; पीछेकी ओर घूमना; (डिफ्रैक्शन) प्रकाशकी किरणपुंज जब किसी सूराखसे होकर गुजरती है, या अपारदर्शी अवरोधके हाशियेको स्पर्श करती हुई गुजरती है, तो किरणपुंजके हाशिएपर अदीप्त बैन्ड (पट्टियाँ) दिखाई देते हैं। इस घटनाको 'विवर्तन' कहते हैं और इसका कारण प्रकाशकी तरंग प्रकृति है; नीचेकी ओर लुढ़कना; अस्तित्व होना, रहना; अभिवंदना; सत्ताकी विभिन्न अवस्थाओंको पार करना; परिवर्तित अवस्था; एक तरहका नृत्य; परिक्रमा; विकास; अरविंद दर्शनमें चेतनाका उत्तरोत्तर विकास (इवोल्यूशन)।

विवर्तित–वि० (सं०) घूमा या घुमाया हुआ; चक्कर खाया हुआ; परिवर्तित; निवारित; स्थानभ्रष्ट; खंडित; उन्मीलित; व्यक्त; सिकोड़ा हुआ।

विवर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) घूमने, चक्कर खानेवाला; परिवर्तित होनेवाला; रहनेवाला।

विवर्त्म(न्)–पु० (सं०) कुमार्ग।

विवर्द्धन, विवर्धन–पु० (सं०) बाढ़, वृद्धि; अभ्युदय; विभाग, खंडित करना। वि० बढ़ानेवाला; वृद्धि, अभ्युदय करनेवाला।

विवर्द्धित, विवर्धित–वि० (सं०) बढ़ा या बढ़ाया हुआ; उन्नत किया हुआ; संतुष्ट; प्रसन्न; विभक्त, खंडित।

विवर्द्धिनी–स्त्री० (सं०) एक कर्नाटकी रागिनी (सं०)।

विवश–वि० (सं०) शक्तिहीन; लाचार; अधीन; स्वतंत्र; अनियंत्रित; जिसका अपनेपर वश न हो; संज्ञाहीन; मृत; नष्ट; मृत्युसे शंकित; मृत्यु चाहनेवाला।

विवशता–स्त्री० (सं०) लाचारी; असहायावस्था।

विवस*–वि० दे० 'विवश'।

विवसता*–स्त्री० दे० 'विवशता'।

विवसन–वि० (सं०) वस्त्रहीन, नग्न। पु० दिगंबर जैन।

विवस्त्र–वि० (सं०) वस्त्ररहित, नंगा।

विवस्वती–स्त्री० (सं०) सूर्यनगरी।

विवस्वान्(स्वत्)–पु० सूर्य; सूर्यका सारथि अरुण; एक प्रजापति; अर्क, मदार वृक्ष; वर्तमान मनु; देवता; एक दैत्य।

विवह–पु० (सं०) सात पवनोंमेंसे एक; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

विवाक–पु० (सं०) विवेचन करनेवाला; विवादका निर्णय करनेवाला, न्यायाधीश।

विवाचक–पु० (आर्बिट्रेटर) मध्यस्थ।

विवाचन–पु० (सं०) मध्यस्थता (आर्बिट्रेशन); पंचायत; पंच फैसला।

विवाच्य–वि० (सं०) सुधार करने योग्य।

विवात–पु० (सं०) प्रचंड वायु, प्रभंजन।

विवाद–पु० (सं०) बहस; झगड़ा (डिस्प्यूट); खंडन; मतभेद; मुकदमा; चिल्लाना; आदेश। **–पद**–पु० मुकदमेका विषय। **–भीरु**–वि० विवाद, कलहसे डरनेवाला। **–वस्तु**–स्त्री० दे० 'विवाद-पद'। **–शमन**–पु० झगड़ा तै करना। मु० **–उठाना**–बहस करना; झगड़ा खड़ा करना।

विवादक–वि० झगड़ालू, विवाद करनेवाला।

विवादनिवारक समिति–स्त्री० (कंसीलियेशन बोर्ड) श्रमिकों तथा कारखानेदारों आदिके बीच चलनेवाले झगड़ोंको निपटानेका प्रयत्न करनेवाली समिति।

विवादांतप्रस्ताव–पु० (मोशन ऑफ क्लोजर) (संसद् या विधान-सभा आदिमें) विवाद समाप्त करनेके लिए पूरी सभा द्वारा किया गया प्रस्ताव, समापनप्रस्ताव।

विवादार्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) वादी, मुद्दई; मुकदमा लड़नेवाला।

विवादास्पद–पु० (सं०) विवादका विषय, विवाद-वस्तु। वि० विवादका, विवादके योग्य (हिं०); जिस (मत, विचार, प्रस्ताव) पर विवाद चल सकता हो (कांट्रोवर्शल)।

विवादी(दिन्)–वि० (सं०) कलह करनेवाला, झगड़ालू; मुकदमेबाज; (स्वर) जो रागके अनुकूल न पड़नेके कारण बहुत काम आये (संगीत)। पु० मुकदमा लड़नेवाला।

विवाद्य–वि० (सं०) (डिबेटेबुल) जिस (विषय) पर विवाद हो सकता हो।

विवार–पु० (सं०) फैलाना, व्यादन।

विवारी(रिन्)–वि० (सं०) रोकने, निवारण करनेवाला।

विवास–पु० (सं०) गृहत्याग; निर्वासन; पार्थक्य। **–करण**–पु० निर्वासन, देसनिकाला।

विवासन–पु० (सं०) निर्वासित करना, निर्वासन।

विवासित–वि० (सं०) निर्वासित।

विवास्य–वि० (सं०) निकाल देने योग्य, निर्वासनके योग्य।

विवाह–पु० (सं०) शादी, हिन्दू धर्मके सोलह संस्कारोंमें एक; विवाहके अवसरपर होनेवाला धार्मिक कृत्य; दांपत्यसूत्रमें आवद्ध होनेकी एक प्रथा (जो धर्मशास्त्रमें आठ प्रकार–आर्ष, ब्राह्म, दैव, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच–की मानी गयी है); एक पवन; यान; एक बड़ी संख्या (बौ०)। **–काम**–वि० विवाहेच्छु। **–काल,–समय**–पु० ब्याह करनेका उचित समय। **–चतुष्टय**–पु० चार विवाह करना। **–दीक्षा**–स्त्री० विवाह-संस्कार। **–विच्छेद**–पु० पति-पत्नीका विवाह-संबंध तोड़ना, तलाक (डाइवोर्स)। **–विधि**–स्त्री० विवाह-संबंधी नियम, पद्धति। **–संबंध**–पु० विवाहके द्वारा होनेवाला संबंध।

विवाहना*–स० क्रि० दे० 'ब्याहना'।

विवाहित–वि० (सं०) ब्याहा हुआ।

विवाहिता–वि० स्त्री० (सं०) जिस (स्त्री)का पाणिग्रहण संस्कार हो चुका हो, ब्याही हुई।

विवाही*–वि० विवाहिता, ब्याही हुई।

विवाह्य–वि० (सं०) ब्याह करने योग्य; विवाह द्वारा संवद्ध। पु० जामाता; दूल्हा।

विवि*–वि० दो; दूसरा।

विविक्त–वि० (सं०) वियुक्त, पृथक् किया हुआ; अकेला; स्वच्छ, पवित्र; स्पष्ट; विवेकी; प्रगाढ़ (विचार); जिसका भेद स्पष्ट किया गया हो; जनहीन;...से मुक्त, रहित; निविष्ट। पु० एकांत स्थान; एकाकीपन; त्यागी; संन्यासी। **–चरित**–वि० निर्दोष चरित्रवाला। **–चेता(तस्)**–वि० शुद्ध मनवाला। **–दृष्टि**–वि० स्पष्ट दृष्टिवाला। **–शय्यासन**–पु० एक आचार जिसमें त्यागीको एकांत स्थानमें रहना पड़ता है (जै०)। **–शरण**–वि० एकांत चाहनेवाला। **–सेवी(विन्)**–वि० एकांतमें रहनेवाला।

विविक्ता–स्त्री० (सं०) बदकिस्मत औरत; वह स्त्री जिसका पति उसे न चाहता हो।

विविक्ति–स्त्री० (सं०) पार्थक्य, विभाग; विवेक करना।

विविग्न–वि० (सं०) क्षुब्ध; बहुत क्रुद्ध; शंकित।

विविचार–वि० (सं०) विवेकहीन; आचारहीन।

विविचारी(रिन्)–वि० (सं०) विचारहीन; मूर्ख; कुकर्मी, बदचलन।

विवित्ति–स्त्री० (सं०) प्राप्ति, लाभ।

विवित्सा–स्त्री० (सं०) जाननेकी इच्छा।

विवित्सु–वि० (सं०) दे० 'विविदिषु'।

विविदिषा–स्त्री० (सं०) ज्ञानप्राप्तिकी इच्छा।

विविदिषु–वि० (सं०) जाननेका इच्छुक।

विविध–वि० (सं०) विभिन्न प्रकारका, कई तरहका। पु० विभिन्न प्रकारके काम; एक एकाह।

विविर–पु० गुफा, खोह; बिल; दरार।

विवीत–पु० (सं०) घिरा हुआ स्थान, विशेषकर गोचर भूमि; पशुओंका बाड़ा। **–धर्ता(र्तृ)**–पु० गोचर भूमिका स्वामी।

विवीताध्यक्ष–पु० (सं०) चरागाहोंका निरीक्षक (कौ०)।

विवृक्त–वि० (सं०) छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

विवृक्ता–स्त्री० (सं०) दुर्भगा, पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री।

विवृत–वि० (सं०) व्यक्त; स्पष्ट, प्रत्यक्ष; अनावृत, खुला हुआ; घोषित; जिसकी व्याख्या की गयी हो; फैला हुआ; विस्तृत; नग्न; तरुहीन। पु० नग्न भूमि; प्रकाशन; उच्चारणका एक प्रयत्न। **–द्वार**–वि० जिसका द्वार खुला हो; अनियंत्रित; असीम। **–पौरुष**–वि० अपनी शक्तिका प्रदर्शन करनेवाला। **–भाव**–वि० निष्कपट, स्वच्छ-हृदय। **–स्नान**–पु० सबके सामने स्नान करना। **–स्मयन**–पु० वह मुसकान जिसमें बतीसी नजर आ जाय।

विवृता–स्त्री० (सं०) एक योनिरोग; एक पौधा।

विवृताक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें खुली हों। पु० कुक्कुट।

विवृतानन–वि० (सं०) जिसका मुँह खुला हो।

विवृतास्य–वि० (सं०) जिसका मुँह खुला हो।

विवृति–स्त्री० (सं०) भाष्य, टीका; प्रकटीकरण; किसी बातका अपनी बुद्धिसे अर्थ लगाना (इंटरप्रिटेशन); विवृत नामक प्रयत्न (भाषा०)।

विवृतोक्ति–स्त्री० (सं०) स्पष्ट कथन; एक अर्थालंकार, जहाँ श्लेषसे छिपायी हुई बात कवि द्वारा स्वयं प्रकट कर दी जाय।

विवृत्त–वि० (सं०) ऐंठा हुआ; चलित; चक्कर खाता हुआ; भ्रमणशील; लौटा हुआ; अनावृत; प्रदर्शित। **–दंष्ट्र**–वि० जिसका मुँह खुला हो, दाँत नजर आ रहे हों। **–वदन**–वि० जिसने मुँह फेर लिया हो।

विवृत्तांग–वि० (सं०) कष्टसे जिसका वदन ऐंठ रहा हो।

विवृत्ता–स्त्री० (सं०) एक तरहका चर्मरोग।

विवृत्ताक्ष–वि० (सं०) दे० 'विवृताक्ष'।

विवृत्तास्य–वि० (सं०) दे० 'विवृतास्य'।

विवृत्ति–स्त्री० (सं०) फैलाव, विकास; चक्कर खाना; लुढ़कना; ग्रंथकी व्याख्या या टीका।

विवृद्ध–वि० (सं०) बढ़ा हुआ; प्रौढ़, पूर्णतः विकसित; बड़ा; प्रचुर; शक्तिशाली। **–मत्सर**–वि० जिसका क्रोध या द्वेष बहुत बढ़ गया हो।

विवृद्धि–स्त्री० (सं०) बाढ़; वृद्धि; उन्नति, तरक्की; समृद्धि। **–कर,–द**–वि० उन्नति करनेवाला। **–भाक्(ज्)**–वि० वृद्धिशील।

विवृह–पु० (सं०) वह जो दूसरोंसे पृथक् हो जाय।

विवेक–पु० (सं०) यथार्थज्ञान; विचार, छानबीन; भले-बुरेकी

पहचान; सद्विचारकी योग्यता; वस्तुओंमें उनके गुणके अनुसार भेद करनेकी शक्ति; दृश्य जगत्, प्रकृतिका अदृश्य ब्रह्म, पुरुषसे भेद करनेकी शक्ति; एक जलपात्र, जलद्रोणी; प्रिय पदार्थोंका त्याग (जै०)। **–ख्याति**–स्त्री० यथार्थ ज्ञान। **–परिपंथी(थिन्)**–वि० विचार-कार्यमें बाधक होनेवाला। **–भाक्(ज्)**–वि० चतुर, ज्ञानी। **–भ्रष्ट**–वि० ज्ञानहीन; जिसका विवेक नष्ट हो गया हो। **–रहित**–वि० ज्ञानहीन। **–वादी**–पु० विवेकके अनुसार काम करनेवाला। **–विरह**–पु० अज्ञान। **–विशद**–वि० स्पष्ट, बोधगम्य। **–विश्रांत**–वि० मूर्ख, ज्ञानहीन।

विवेकवान्(वत्)–वि० ज्ञानी, विचारवान्।

विवेकाधिकार–पु० (डिसक्रीशनरी पावर) विवेक-बुद्धिके अनुसार निर्णय करनेका अधिकार।

विवेकाधीन–वि० (इन दि डिसक्रीशन ऑफ) (किसीकी) विवेक-बुद्धिके अधीन या उसपर अवलंबित।

विवेकानंद, स्वामी–पु० रामकृष्ण परमहंसके शिष्य, प्रकांड विद्वान्, सुचतुर वक्ता एवं महान् धर्मप्रचारक जो अमेरिका भी गये थे (१८६३–१९०२)।

विवेकिता–स्त्री० (सं०) विवेकी, ज्ञानी होनेका भाव, विचारशीलता।

विवेकी(किन्)–वि० (सं०) भले-बुरेकी पहचान करनेवाला; ज्ञानी, विचारवान्; छान-बीन करनेवाला। पु० देवसेनका पुत्र; विचारकर्ता; न्यायाधीश।

विवेचक–वि० (सं०) जो विवेचन, भले-बुरेका भेद कर सके; चतुर, ज्ञानी।

विवेचन–पु० (सं०) विवेक, सदसत्का निर्णय; अनुसंधान; मीमांसा; परीक्षण, तर्कवितर्क।

विवेचना–स्त्री० विवेचन; विवेचन करनेकी शक्ति।

विवेचनीय–वि० (सं०) विवेचन करने योग्य।

विवेचित–वि० (सं०) निश्चित; तै किया हुआ; विवेचन किया हुआ; जिसका अनुसंधान किया गया हो।

विवेच्य–वि० (सं०) विवेचनीय।

विव्वोक–पु० (सं०) दे० 'विब्बोक'।

विशंक–वि० (सं०) शंकारहित, निर्भय; निरापद।

विशंकट–वि० (सं०) विस्तृत; बड़ा, विशाल; उग्र, प्रचंड; भयंकर।

विशंकनीय–वि० (सं०) डरने, शंका करने योग्य; संदिग्ध; जिसमें कोई शंका न हो।

विशंका–स्त्री० (सं०) संदेह, आशंका; भय; शंकाका अभाव।

विशंकी(किन्)–वि० (सं०) भय, आशंकायुक्त।

विशंक्य–वि० (सं०) संदेह, भय, आशंका करने योग्य, पूछने योग्य।

विशंवरा–स्त्री० (सं०) पल्ली।

विश–पु० (सं०) दे० 'बिस' (सं०)। **–कंठा**–स्त्री० वह स्त्री जिसका कंठ मृणालके समान हो; बलाका।

विशद–वि० (सं०) साफ, स्वच्छ; बेदाग; श्वेत; चमकीला; सुंदर; स्पष्ट; प्रकट; शांत; चिंतारहित। पु० सफेद रंग; कसीस; वनभंटा; जयद्रथका एक पुत्र। **–प्रज्ञ**–वि० विचक्षण, कुशाग्र-बुद्धि। **–प्रभ**–वि० स्वच्छ प्रकाश विकीर्ण करनेवाला।

विशदित–वि० (सं०) साफ किया हुआ।

विशब्दित–वि० (सं०) उल्लिखित, कथित।

विशय–पु० (सं०) संदेह, अनिश्चय; आश्रय, पनाह; मध्य, केंद्र।

विशयी(यिन्)–वि० (सं०) संदिग्ध, अनिश्चित; संशयी।

विशर–पु० (सं०) वध; नाश; विदारण।

विशरण–पु० (सं०) वध; नाश; विस्फोटन। वि० असहाय, अरक्षित।

विशरद–पु० दे० 'विशारद'।

विशरारु–वि० (सं०) भंग होनेवाला, नश्वर।

विशर्द्धन्–पु० (सं०) अपान वायुका त्याग।

विशल्य–वि० (सं०) कष्टहित; काँटेसे मुक्त; जिसका बाणका घाव भर गया हो; जिसमें नोक न हो (बाण)। **–करण**–वि० बाणका घाव भरनेवाला। **–करणी**–स्त्री० एक ओषधि। **–कृत्**–पु० विशाली वृक्ष। वि० विशल्यकारी।

विशल्या–स्त्री० (सं०) गुडुची; अग्निशिखा; दंती; त्रिपुटा; कलिकारी; अजमोदा; लक्ष्मणकी पत्नी उर्मिलाका दूसरा नाम।

विशसन–वि० (सं०) घातक, मारक। पु० वक्र खड्ग; एक नरक; काटना, चीरना; वध; युद्ध; कठोर व्यवहार।

विशसित–त्रि० (सं०) काटा, चीरा हुआ।

विशसिता(तृ)–पु० (सं०) काटने, चीरने, छेदन करनेवाला; चांडाल।

विशस्त–वि० (सं०) काटा हुआ; उजड्ड, धृष्ट; प्रशंसित, विख्यात।

विशस्ता(स्तृ)–पु० (सं०) वध, हत्या करनेवाला; चांडाल।

विशस्ति–स्त्री० (सं०) वध।

विशस्त्र–वि० (सं०) शस्त्रहीन।

विशांपति–पु० (सं०) राजा; जामाता; व्यापारियोंका मुखिया।

विशा–स्त्री० (सं०) जाति; लोक।

विशाकर–पु० (सं०) भद्रचूड़; दंती; पाटला वृक्ष।

विशाख–पु० (सं०) कार्तिकेय; शिव; भिक्षुक; तकुआ; एक देवता; बाण चलाते समयकी एक मुद्रा; शिव; पुनर्नवा; बच्चोंके लिए खतरनाक समझा जानेवाला एक दैत्य (अपस्मार रोग)। वि० शाखाहीन; हस्तहीन; विशाखा नक्षत्रमें उत्पन्न। **–ग्रह**–पु० बेलका पेड़। **–ज**–पु० नारंगीका पेड़। **–दत्त**–पु० मुद्राराक्षस नाटकका रचयिता। **–पत्र**–पु० एक शिशु-रोग (आ० वे०)। **–यूप**–पु० एक देश, विशाखपत्तन।

विशाखक–वि० (सं०) शाखाओंवाला।

विशाखल–पु० (सं०) बाण चलानेके समयकी एक विशेष मुद्रा।

विशाखा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र; दूर्वा; श्वेत पुनर्नवा; काली अपराजिता; एक प्राचीन जनपद।

विशाखिका–स्त्री० (सं०) शाखायुक्त दंड; गदहपूरना; नीली अपराजिता; करेला।

विशातन–पु० (सं०) विष्णु; काटना, खंडित करना; नष्ट करना। वि० नष्ट करनेवाला; मुक्त करनेवाला।

विशाप–पु० (सं०) एक मुनि। वि० शापमुक्त।

विशाय–पु० (सं०) प्रहरियोंका बारी-बारीसे सोना।

विशायक–पु० (सं०) एक लता; विशाकर।

विशारण–पु० (सं०) मारण; वध; विदारण।

विशारद–वि० (सं०) अनुभवी, कुशल; विद्वान्; चतुर; चातुर्यपूर्ण (भाषण); स्पष्ट विचारवाला; प्रसिद्ध; वक्तृत्व-शक्तिसे रहित; साहसी, धीर। पु० बकुल वृक्ष।

विशारदा–स्त्री० (सं०) केवाँच; क्षुद्र दुरालभा।

विशाल–वि० (सं०) बृहत्, बड़ा; विस्तृत; ...से पूर्ण; प्रख्यात; शक्तिशाली। पु० एक पक्षी; एक हिरन; तक्षकका पिता; एक असुर; इक्ष्वाकुका एक पुत्र; एक पहाड़; एक वृक्ष; एक तीर्थ। **–कुल**–पु० प्रसिद्ध वंश। **–तैलगर्भ**–पु० अखरोट। **–त्वक्(च्)**–पु० छतिवन, सप्तपर्ण। **–दा**–स्त्री० एक लता। **नेत्र**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–पत्र**–पु० हिंताल; मानकच्चू। **–पत्री**–स्त्री० एक कंद शाक। **–फलक**–वि० जिसमें बड़े फल लगते हों। **–फलिका**–स्त्री० निष्पावी। **–लोचना**–स्त्री० बड़ी आँखोंवाली स्त्री। **–विजय**–पु० एक तरहकी व्यूह-रचना।

विशालक–पु० (सं०) कैथ; गरुड़; एक यक्ष।

विशालता–स्त्री० (सं०) बड़ापन; विस्तार; ख्याति।

विशाला–स्त्री० (सं०) इंद्रवारुणी; उज्जयनी नगरी; उपोदकी; महेंद्रवारुणी; एक तीर्थ; दक्षकी एक कन्या; एक मूर्च्छना (संगीत); एक नदी।

विशालाक्ष–वि० (सं०) बड़ी आँखोंवाला। पु० एक तरहका उल्लू; शिव; गरुड़; गरुड़का एक पुत्र; एक नाग; धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

विशालाक्षी–स्त्री० (सं०) बड़ी आँखोंवाली स्त्री; नागदंती; पार्वती; स्कंदकी एक मातृका; एक योगिनी।

विशाली–स्त्री० (सं०) पलासी लता; अजमोदा।

विशिका–स्त्री० (सं०) बालू, रेत।

विशिख–वि० (सं०) शिखाहीन; गंजा; रोगीका आवास;

(वाण) जिसकी नोक भोथरी हो गयी हो; (आग) जिसमें लपट न हो; पुच्छहीन (धूमकेतु)। पु० वाण; भाला; एक तरहका सरकंडा।

विशिखा–स्त्री० (सं०) कुदाल; छोटा वाण; एक तरहकी सूई; तकुवा; सड़क, मार्ग; वह मार्ग जिसपर सुनारों और जौहरियोंकी दुकानें हों (कौ०); नाइन; रुग्णालय।

विशिखाश्रय–पु० (सं०) तूणीर।

विशित–वि० (सं०) तेज, तीक्ष्ण।

विशिप–पु० (सं०) मकान; प्रासाद; देवमंदिर।

विशिरस्क–पु० (सं०) मेरु पर्वतके पासका एक पर्वत। वि० मस्तकहीन।

विशिरा(रस्), विशीर्षा(र्षन्)–वि० (सं०) मस्तकहीन।

विशिष्ट–वि० (सं०) विशेषतायुक्त; असाधारण; प्रसिद्ध; उत्तम; ···में सर्वश्रेष्ठ; युक्त; विशेष रूपसे शिष्ट, भद्र। पु० विष्णु; सीसा (?)। **–कुल**–वि० सद्वंशजात। पु० उत्तम कुल। **–चरित्र, –चारी(रिन्)**–पु० एक वोधि-सत्त्व। **–पत्र**–पु० गँठिवन। **–वुद्धि**–स्त्री० विवेक। **–लिंग**–वि० भिन्न लिंगका। **–वर्ण**–वि० उत्तम रंगका।

विशिष्टजनीन मतसंग्रह–पु० (गैलप-पाल) सर्वसाधारण जनताका प्रतिनिधित्व कर सकनेवाले विशिष्ट जन-समूह द्वारा किसी विषयपर प्रकट किये गये मतोंका संग्रह, जिसकी व्यवस्था प्रायः किसी समाचारपत्रादि या मत-संग्रह करनेवाली संस्थाओं द्वारा की जाती है।

विशिष्टता–स्त्री० (सं०) विशेषता।

विशिष्टांग–पु० (फीचर्स) किसी वस्तु, नाटक, खेल, समाचारपत्र आदिकी मुख्य विशेषताएँ।

विशिष्टाद्वैत–पु० (सं०) रामानुज द्वारा प्रवर्तित एक मत जिसमें प्रकृति और पुरुषको भिन्न और सत्य मानते हुए भी दोनोंको अभिन्न मानते हैं। **–वादी(दिन्)**–वि० विशिष्टाद्वैत मतका अनुयायी।

विशिष्टाधिकार–पु० (प्रीरोगेटिव) राजा या प्रधान शासकका वह विशिष्ट अधिकार जिसपर सिद्धांततः किसी तरहका प्रतिवंध न हो (परमाधिकार); वह विशेष अधिकार जिसका और कोई भागीदार न हो; किसीके विशेष पद, स्थिति आदिसे उद्भूत होनेवाला विशेष अधिकार।

विशिष्टी–स्त्री० (सं०) शंकराचार्यकी माता।

विशिष्टीकरण–पु० (स्पेशलाइज़ेशन) विशिष्ट लक्षणोंके अनुसार किसी वस्तुको पृथक् या स्वतंत्र करना; विशेषता-सूचक (विशिष्ट) रूप देना; किसी विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त करना, विशिष्ट अध्ययन करना, विशेषता प्राप्त करना।

विशीर्ण–वि० (सं०) क्षीण; भग्न; विखरा हुआ; जो तितर-वितर हो गया हो (सैन्य); गिरा हुआ (दंतादि); अपव्यय किया हुआ, उड़ाया हुआ (खजाना); मला, रगड़ा हुआ (गंधद्रव्य); विफलीभूत; नष्ट, ध्वस्त; वहुत पुराना; शुष्क। **–पर्ण**–पु० नीम। **–मूर्ति**–वि० जिसका शरीर नष्ट हो गया हो। पु० कामदेव।

विशील–वि० (सं०) दुश्चरित्र, दुष्ट, वदमाश।

विशुंडि–पु० (सं०) कश्यपका एक पुत्र।

विशुद्ध–वि० (सं०) साफ किया हुआ; पवित्र; निष्पाप; वेदाग; ठीक; धर्मात्मा; विनम्र; चमकता हुआ सफेद; सुनिश्चित; सर्फ, खर्च किया हुआ (खजाना)। पु० शरीरका एक चक्र। **–करण**–वि० जिसके काम धर्ममय हों। **–कविता**–राजनीतिक तथा अन्य तत्त्वोंके दखलको अस्वीकार करनेवाला वह आन्दोलन जो मानवीय काव्यात्मक भावनाओंको ही कविताका आधार मानता है। **–चरित्र**–वि० शुद्ध चरित्रवाला। पु० एक वोधिसत्त्व। **–धी**–वि० धार्मिक वुद्धिवाला। **–प्रकृति**–वि० धार्मिक स्वभावका। **–भाव, –मना(नस्)**–वि० पवित्र मनवाला। – **–सत्त्व**–वि० शुद्धाचारी।

विशुद्धात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसका मन पवित्र हो।

विशुद्धि–स्त्री० (सं०) पवित्रता, शुद्धता; संदेह आदि दूर करना; (वैर, ऋणका) परिशोध; भूलसुधार; पूर्ण ज्ञान; सादृश्य। **–चक्र**–पु० एक चक्र जिसका स्थान गलेमें माना जाता है। **–वाद**–पु० (प्यूरिटैनिज्म) विशुद्ध या कठोर धार्मिक जीवनको प्रधानता देनेवाला प्रोटेस्टैंट ईसाइयोंका सिद्धांत, कठोरतावाद; कठोर जीवन।

विशूचिका–स्त्री० दे० 'विसूचिका'।

विशून्य–वि० (सं०) पूर्णतः रिक्त; जिसमें वायु तक न रह गयी हो (वैकुम)।

विशूल–वि० (सं०) कुंतहीन, बिना भालेका।

विशृंखल–वि० (सं०) शृंखलारहित, वंधनहीन; अनियंत्रित; अदम्य; लंपट; वहुत अधिक शब्द करनेवाला।

विशृंग–वि० (सं०) बिना सींगका, शृंगहीन; (वह पर्वत) जिसके कोई चोटी न हो।

विशेष–वि० (सं०) असाधारण, असामान्य; अधिक; प्रचुर। पु० भेद; अंतर करना; विचित्रता; तारतम्य; पदार्थ; व्यक्ति; सार; खास धर्म, गुण या परिचायक चिह्न, अंतर करनेवाला चिह्न; रोगकी वह अवस्था जव सुधार आरंभ होता है; अंग; प्रकार, किस्म; श्रेष्ठता, उत्तमता; द्रव्योंका (जिनकी संख्या नौ है) खास गुण(न्या०); सात प्रकारके पदार्थोंमेंसे एक; वर्ग, जाति; तिलक; विशेषण; एक अर्थालंकार, इसके तीन भेद हैं–(१) जहाँ विना आधारके ही आधेयका वर्णन हो; (२) थोड़ा-सा काम करनेपर ही वड़ा काम या लाभ हो अथवा (३) जहाँ एक वस्तुका एक साथ कई स्थानोंमें होना वर्णित हो। **–कृत्**–वि० अंतर करनेवाला। **–ज्ञ, –विद्**–वि० किसी विषयका विशेष ज्ञान रखनेवाला। **–दृश्य**–वि० भव्य रूपवाला। **–पतनीय**–पु० एक खास अपराध या पाप। **–प्रतिपत्ति**–स्त्री० सम्मान-सूचक विशेष चिह्न। **–भाग**–पु० हाथीके मस्तकका एक विशेष भाग। **–मति**–पु० एक वोधि-सत्त्व। **–लक्षण, –लिंग**–पु० विशेष चिह्न।

विशेषक–वि० (सं०) भेद स्पष्ट करनेवाला (चिह्न)। पु० भेद करनेवाला गुण; तिलक; तिलका पौधा; चित्रक; रंगीन गंधद्रव्यसे शरीरपर रेखाएं खींचना; एक अर्थालंकार जहाँ तीन पदोंमें एक ही क्रिया होनेसे उनका अन्वय एक साथ ही हो; एक तरहका पद्य जिसके तीन श्लोकोंकी एक ही क्रिया होती है; तिलक वृक्ष। **–चिह्न**–पु० (डायाक्रिटिकल मार्क्स) अक्षरों या वर्णोंका विशिष्ट उच्चारण सूचित करनेवाले चिह्न। **–च्छेद्य**–पु० चौसठ कलाओंमेंसे एक (ललाटपर तिलक बनानेकी कला)।

विशेषण–वि० (सं०) विशेषताद्योतक। पु० विशेष्यका धर्म; संज्ञाका गुण वतलानेवाला शब्द (एडजेक्टिव) (व्या०); विशेषता, अंतर प्रकट करनेवाला चिह्न; प्रकार, किस्म; बढ़ जाना। **–विपर्यय**–(ट्रांस्फर्ड एपिथेट) पु० किसी विशेषण या गुणका धारकके वदले धारितमें उल्लिखित होना, जिस वस्तुसे उसका संवंध हो उसके वजाय किसी अन्यमें उसका वर्णित होना–'एक ही क्रुद्ध वाणने उसके प्राण ले लिये।' (क्रुद्ध विशेषणका प्रयोग वाण चलानेवालेके वजाय खुद वाणके लिए किया गया है)।

विशेषता–स्त्री० (सं०) खसूसियत, खूवी।

विशेषना*–स० क्रि० विशेषता प्रदान करना।

विशेषांक–पु० (सं०) किसी सामयिक पत्रादिका वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसरपर, विशेष प्रकारकी उपयोगी सामग्रीके साथ प्रकाशित किया गया हो।

विशेषाधिकार–पु० (सं०) (प्रिविलेज) किसी विशिष्ट व्यक्तिको प्राप्त विशेष प्रकारका अधिकार।

विशेषित–वि० (सं०) विशेषणयुक्त; लक्षित; विशेष गुणके द्वारा जिसका भेद किया गया हो; उत्तम, श्रेष्ठ। **–स्वीकृति**–स्त्री० (क्वालिफाइड ऐक्सेप्टेंस) किसी प्रस्ताव आदिके संवंधमें विशेष प्रतिवंधोंके साथ या सीमित स्थितिमें दी गयी स्वीकृति, सप्रतिवंध स्वीकृति।

विशेषी(षिन्)–वि० (सं०) पृथक्, भिन्न; होड़ करनेवाला।

विशेषोक्ति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण या समर्थ कारणके रहते हुए भी कार्यका न होना दिखाया जाय।

विशेष्य–पु० (सं०) विशेषणयुक्त संज्ञा (व्या०)। वि० जिसका भेद करना हो, विशेषता दिखलानी हो। **–लिंग**–पु० जिस शब्दका लिंग विशेष्यके लिंगके अनुरूप निरूपित हो (व्या०)।

विशेष्यासिद्धि–स्त्री० (सं०) स्वरूपकी असिद्धि करनेवाला हेत्वाभास।

विशोक–पु० (सं०) शोकका अंत; अशोकका पेड़; भीमका सारथि; ब्रह्माका एक मानसपुत्र; एक ऋषि; एक दानव; एक पर्वतश्रेणी। वि० शोकरहित; जिसमें शोककी कोई चर्चा न हो। **–कोट**–पु० एक पहाड़। **–षष्ठी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला षष्ठी।

विशोका–स्त्री० (सं०) संप्रज्ञात समाधिके पहलेकी चित्तवृत्ति, ज्योतिष्मती (यो०); शोकराहित्य; स्कंदकी एक मातृका।

विशोणित–वि० (सं०) रक्तहीन।

विशोध–वि० (सं०) विशुद्ध करनेके योग्य।

विशोधन–पु० (सं०) शुद्ध करना, साफ करना; विष्णु; पेड़की डालियोंका छँटाई; रेचन; निर्णीत होना; व्यवकलन; प्रायश्चित्त। वि० शुद्ध, साफ करनेवाला।

विशोधनी–स्त्री० (सं०) ब्रह्माकी पुरी; दंती; पान; नीली नामक पौधा।

विशोधनीय–वि० (सं०) शुद्ध, साफ करने योग्य; रेचन कराने योग्य; सुधार करने योग्य।

विशोधित–वि० (सं०) साफ, शुद्ध किया हुआ; मैल, दाग आदिसे मुक्त किया हुआ।

विशोधिनी–स्त्री० (सं०) नागदंती। **–बीज**–पु० जमालगोटा।

विशोधी(धिन्)–वि० (सं०) शुद्ध, साफ करनेवाला।

विशोध्य–वि० (सं०) शुद्ध, साफ करने योग्य; जो घटाया जाय। पु० ऋण।

विशोभित–वि० (सं०) सजाया हुआ, अलंकृत।

विशोष–पु० (सं०) शुष्कता।

विशोषण–वि० (सं०) शुष्क करनेवाला; (घाव) सुखानेवाला। पु० शुष्क करनेकी क्रिया।

विशोषित–वि० (सं०) शुष्क किया हुआ; मुर्झाया हुआ।

विशोषी(षिन्)–वि० (सं०) अच्छी तरह सोखनेवाला; सुखानेवाला।

विश्न–पु० (सं०) कांति, चमक; गति।

विश्पति–पु० (सं०) राजा; व्यापारियोंका मुखिया; बड़ा व्यापारी।

विश्यार्पण–पु० (सं०) एक यज्ञ।

विश्रंभ–पु० (सं०) विश्वास; घनिष्ठता, आत्मीयता; प्रेम; गोपनीय विषय; विश्राम; प्रणय-कलह; वध; स्वच्छन्द भ्रमण; स्नेहपूर्वक पूछताछ करना। **–कथा**–स्त्री० प्रेमालाप। **–पात्र**–पु०, **भूमि**–स्त्री०,**–स्थान**–पु० विश्वास करने योग्य विषय या व्यक्ति। **–भृत्य**–पु० विश्वस्त सेवक।

विश्रंभण–पु० (सं०) विश्वास प्राप्त करना।

विश्रंभी(भिन्)–वि० (सं०) विश्वास करनेवाला; विश्वस्त; प्रेम-संबंधी; गोपनीय (वार्ता)।

विश्रणन, विश्राणन–पु० (सं०) दान; दान करना।

विश्रब्ध–वि० (सं०) विश्वसनीय; निर्भीक; शांत; धीर; दृढ़; विनम्र; अतिशय। **–नवोढा**–स्त्री० नायकपर विश्वास करनेवाली नवोढ़ा नायिका। **–प्रलापी(पिन्)**– वि० विश्वस्त या गुप्त बातें कहनेवाला। **–सुप्त**–वि० शांतिपूर्वक सोनेवाला।

विश्रम–पु० (सं०) आराम, विश्राम।

विश्रमण–पु० (सं०) आराम करना, अंगोंका तनाव दूर करना।

विश्रमित–वि० (सं०) विश्राम कराया हुआ।

विश्रय–पु० (सं०) सहारेका साधन, आश्रयस्थान।

विश्रयी(यिन्)–वि० (सं०) आश्रय, सहारा लेनेवाला।

विश्रव(स्)–पु० (सं०) बड़ा नाम, विख्याति।

विश्रवण–पु० (सं०) एक ऋषि।

विश्रवा(वस्)–वि० (सं०) विख्यात। पु० एक ऋषि जो रावण, कुबेर आदिके पिता थे।

विश्रांत–वि० (सं०) सुस्ताया हुआ, विश्राम किया हुआ; विश्राम करनेवाला; शांत; घटा हुआ (दुःखादि); रुका हुआ; समाप्त; रहित, वंचित; क्लांत। **–कर्णयुगल**–वि० कानोंतक पहुँचनेवाला। **–पुष्पोद्गम**–वि० जिसका फूलना बंद हो गया हो। **–विलास**–वि० जिसने क्रीडा आदिका परित्याग कर दिया हो। **–वैर**–वि० जिसने दुश्मनी छोड़ दी हो।

विश्रांति–स्त्री० (सं०) आराम, विश्राम; कमी; अंत; एक तीर्थ। **–काल**–पु० (रिसेस) दे० 'अल्पावकाश'। **–कृत्**–वि० विश्राम देनेवाला। **–भूमि**–स्त्री० विश्रामका साधन।

विश्राणित–वि० (सं०) प्रदत्त; विभक्त।

विश्राम–पु० (सं०) आराम; शांति; गहरी साँस लेना (श्रमके बाद); आराम करनेकी जगह; कमी; अंत; विराम; मकान। **–भवन**–पु० (रेस्ट-हाउस) यात्रा या दौरेपर जानेवाले व्यक्तियों अथवा छोटे अधिकारियों आदिके ठहरने, भोजन, विश्रामादि करनेके लिए बनाया गया भवन। **–भू**–स्त्री० विश्रामस्थान। **–वेश्म(न्)**–पु० आराम करनेका कमरा। **–स्थान**–पु० आराम या मनोरंजनका स्थान या साधन।

विश्रामण–पु० (सं०) विश्राम कराना।

विश्रामालय–पु० (सं०) पांथशाला, यात्रियोंके विश्राम करनेका स्थान; दे० 'विश्रामभवन'।

विश्राव–पु० (सं०) बहना, क्षरण; शोर-गुल; ध्वनि; विख्याति।

विश्रावण–पु० (सं०) बहाना; खून बहाना; सुनाना, वर्णन करना।

विश्रि–स्त्री० (सं०) मृत्यु।

विश्री–वि० (सं०) श्रीहीन, कांतिहीन; बदशक्ल।

विश्रुत–वि० (सं०) बहा हुआ; बहता हुआ; विख्यात; प्रसन्न। पु० वसुदेवका एक पुत्र; भवभूति; प्रसिद्धि; विद्या।

विश्रुतात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु।

विश्रुति–स्त्री० (सं०) ख्याति; क्षरण, श्राव; एक श्रुति (संगीत)।

विश्लथ–वि० (सं०) ढीला; बंधनमुक्त; क्लांत।

विश्लथित–वि० (सं०) ढीला, बंधनमुक्त किया हुआ।

विश्लिष्ट–वि० (सं०) ढीला किया हुआ; पृथक् किया हुआ; दलसे अलग किया हुआ; स्थान-भ्रष्ट (अंगादि)। **–भाषा**–पदसे अलग विभक्तियोंको सुरक्षित रखकर विकसित होनेवाली भाषा। इसे अयोगात्मक और व्यवहितिप्रधान भी कहते हैं। **–संधि**–स्त्री० अस्थि-भंग, संधि-भंग (आ० वे०)।

विश्लेष–पु० (सं०) वियोग; विप्रलंभ; पार्थक्य; हानि; विकास; अभाव; दरार, छिद्र।

विश्लेषण–पु० (सं०) (ऐनेलिसिस) पृथक् करना, किसी चीजके अंगोंको अलग-अलग करना; वास्तविक स्वरूपके स्पष्टीकरणके लिए सब अंगोंकी छानबीन; भंग करना; फोड़ेमें वायु प्रकोपसे होनेवाली पीड़ा (आ० वे०)।

विश्लेषणात्मक–वि० (एनैलिटिकल) विश्लेषणवाली प्रक्रियाके अनुसार (विचार या निश्चय)।

विश्लेषित–वि० (सं०) वियुक्त, पृथक् किया हुआ; विदीर्ण किया हुआ; भंग किया हुआ।

विश्लेषी(षिन्)–वि० (सं०) विश्लेषण करनेवाला; बिखरनेवाला; ढीला किया हुआ; (प्रिय वस्तुसे) अलग, वियुक्त।

विश्लोक–वि० (सं०) जिसका नाम, ख्याति न हो।

विश्वंकर–वि० (सं०) सबका निर्माण करनेवाला। पु० नेत्र।

विश्वंतर–वि० (सं०) सबका पराभव करनेवाला; भगवान् बुद्धका एक नाम (बौ०)।

विश्वंभर–वि० (सं०) सबका भरण करनेवाला। पु० ईश्वर, विष्णु; एक तरहका बिच्छू; अग्नि; इंद्र।

विश्वंभरक–पु० (सं०) एक तरहका बिच्छू।

विश्वंभरा, विश्वंभरी–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; एक कर्नाटकी रागिनी (सं०)।

विश्व–पु० (सं०) एक देववर्ग; समग्र ब्रह्मांड; संसार; सोंठ; विष्णु; शिव; आत्मा; जीव; देह; नागर, नगरनिवासी; तेरहकी संख्या; एक गंधद्रव्य; पितरोंका एक वर्ग। वि० समग्र, सकल; प्रत्येक; सर्वव्यापक। **–कद्रु**–वि० नीच, कमीना। पु० शब्द; शिकारी कुत्ता। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सृष्टिका रचयिता, परमेश्वर। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० देव-शिल्पी; सूर्य; सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक; संत, महात्मा; परमेश्वर; शिव; राज; बढ़ई; लुहार; चेतना नामक धातु। **–काय**–वि० ब्रह्मांड जिसका शरीर है। पु० विष्णु। **–काया**–स्त्री० दाक्षायणीकी एक

मूर्ति; दुर्गा । **–कारक**–पु० शिव । **कारु**–पु० विश्वकर्मा । **–कार्य**–पु० सूर्यकी सात प्रमुख रश्मियोंमेंसे एक । **–कूट**–पु० हिमालयकी एक चोटी । **–कृत**–वि० विश्वकर्माका बनाया हुआ । **–कृत्**–पु० विश्वकर्मा; सृष्टिकर्ता । **–कृष्टि**–वि० सबमें रहनेवाला; सबके प्रति सद्भाव रखनेवाला । **–केतु**–पु० अनिरुद्ध । **–कोश,–कोष**–पु० (एनसाइक्लोपीडिया) वह भंडार जिसमें विश्वकी सारी वस्तुएं संगृहीत हों; वह ग्रंथ जिसमें संसारके सारे विषयोंका विवरण हो । **–क्षय**–पु० प्रलय । **–क्षिति**–वि० दे० 'विश्वकृष्टि' । **–गंगा**–स्त्री० बरारकी एक नदी । **–गंध**–वि० सर्वत्र गंध फैलानेवाला । स्त्री० प्याज; एक गंधद्रव्य । **–गंधा**–स्त्री० पृथ्वी । **–गंधि**–पु० पृथुका एक पुत्र । **–ग**–वि० सर्वत्र गमन करनेवाला । पु० ब्रह्मा; पूर्णिमासे उत्पन्न मरीचिका एक पुत्र । **–गत**–वि० सर्वव्यापक । **–गर्भ**–वि० सभी वस्तुओंको धारण करनेवाला । पु० विष्णु; शिव; रैवतका एक पुत्र । – –पु० लोकपिता, विष्णु । **–गोचर**–वि० सबके लिए बोधगम्य । **–गोत्र**–वि० सभी कुलोंसे संबद्ध । **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० विष्णु; शिव; इंद्र । **–ग्रंथि**–स्त्री० हंसपदी; लाल लजालू । **–चंद्र**–वि० पूर्ण दीप्तिसे युक्त । **–चक्र**–पु० ब्राह्मणोंको दानमें दिया जानेवाला एक तरहका सुवर्ण-चक्र । **–चक्ष**–वि० सबको देखनेवाला । **–चक्षु(स्)**–वि० सबको देखनेवाला । पु० सब चीजोंको देखनेवाला नेत्र; विष्णु । **–च्यवा(वस्)**–पु० सूर्यकी एक रश्मि । **–जन**–पु० मानव-जाति । **–जनीन,–जनीय,–जन्य**–वि० सबके लिए उपयुक्त; सबके लिए लाभदायक । **–जयी(यिन्)**–वि० संसारको जीतनेवाला । **–जित्**–वि० सबको जीतनेवाला । पु० एक एकाह; अग्निका एक रूप; वरुणका पाश; विष्णु; एक दानव । **–जीव**–पु० विश्वात्मा, ईश्वर । **–ज्योति(स्)**–वि० पूर्ण दीप्तिसे युक्त । पु० एक एकाह । **–ज्योतिष**–पु० एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि । **–तनु**–वि० ब्रह्मांड जिसका शरीर है । पु० विष्णु । **–तुलसी**–स्त्री० बनतुलसी । **–तृप्त**–वि० प्रत्येक वस्तुसे संतुष्ट । पु० विष्णु । **–तोय**–वि० जिसमें सबके लिए जल हो । **–तोया**–स्त्री० गंगा । **–त्रय**–पु० आकाश, पाताल और मर्त्यलोक । **–दंष्ट्र**–पु० एक असुर । **–दानि**–वि० सबको देनेवाला । **–दाव**–वि० सबको झुलसानेवाला । **–दासा**–स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । **–दृक्(श्)**–वि० सबको देखनेवाला । **–देव**–पु० एक देवता; एक देववर्ग । **–देवा**–स्त्री० रक्त दंडोत्पल; नागबला; छोटी गवेधुका । **–दैव,–दैवत**–पु० उत्तराषाढ़ा नक्षत्र । **–धर**–पु० सबका धारण करनेवाला विष्णु । **–धरण**–पु०,**–धा**–स्त्री० विश्वका धारण-पोषण । **–धाता(तृ)**–वि०, पु० विश्वको धारण करनेवाला । **–धाम(न्)** पु० ईश्वर । **–धार**–पु० मेधातिथिका एक पुत्र; उसके द्वारा शासित एक वर्ष । **–धारिणी**–स्त्री० पृथ्वी । **–धारी(रिन्)**–वि० विश्वको धारण करनेवाला । पु० देवता । **–धृक्,–धृत्**–वि० प्रत्येक पदार्थको धारण करनेवाला । **–धेना**–स्त्री० पृथ्वी । **–नंद**–पु० ब्रह्माका एक मानस पुत्र । **–नाथ**–पु० शिव; काशीका एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग । **–०नगरी,–०पुरी**–स्त्री० काशी । **–० भट्ट**–पु० साहित्यदर्पणके रचयिता । **–नाभ**–पु० विष्णु । **–नाभि**–स्त्री० विश्वकी नाभि, विष्णुका चक्र । **–पति**–पु० ईश्वर; कृष्ण; अग्नि-विशेष । **–पदिक** वि० (सं०) (पैण्डेमिक) सारे विश्वमें फैल सकनेवाला (रोग या विकार) । **–पर्णी**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–पा**–पु० सबकी रक्षा करनेवाला; सूर्य; चंद्रमा; अग्नि । **–पाचक**–वि० सबको पकानेवाला (अनल) । **–पाणि**–पु० एक ध्यानी बोधिसत्त्व । **–पाता(तृ)**–पु० एक पितृवर्ग । **–पाल**– –पु० विश्वका पालन करनेवाला, ईश्वर । **–पावन**–वि० सबको पवित्र करनेवाला । **–पावनी,–पूजिता**–स्त्री० तुलसी । **–पुट्(ष्)**–वि० सबका पोषण करनेवाला । **–पूजित**–वि० सबके द्वारा पूजा जानेवाला । **–पूज्य**–वि० सर्वसम्मान्य । **–प्रकाश,–प्रकाशक**–वि० सबको प्रकाशित करनेवाला । पु० सूर्य । **–प्रबोध**–वि० सबको जाग्रत् करनेवाला । पु० विष्णु । **–प्सा(प्सन्)**–पु० देवता; सूर्य; चंद्रमा; अग्नि; विश्वकर्मा । **–बाहु** पु० (सं०) विष्णु; शिव । **–बंधु**–पु० विश्वका मित्र, शिव । **–बीज**–पु० मूल प्रकृति । **–बोध**–पु० बुद्ध । **–भद्र**–पु० सर्वतोभद्र नामक चक्र । वि० पूर्णतः अनुकूल । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० सबका भरण करनेवाला; ईश्वर । **–भर**–पु० ब्रह्मा । वि० जिससे विश्व उत्पन्न हुआ हो । **–भव**–पु० वह जिससे सबकी उत्पत्ति हुई है, ब्रह्म । **–भाव,–भावन**–वि० सबकी सृष्टि करनेवाला । पु० ईश्वर । **–भुक(ज्)**–वि० सबका भोग करनेवाला । पु० ईश्वर; इंद्र; इंद्रका एक पुत्र; अग्नि; एक पितृवर्ग । **–भुजा**–स्त्री० एक देवी । **–भू**–पु० एक बुद्ध । **–भेषज**–पु० सबकी दवा, सोंठ । **–भोजन**–पु० सब प्रकारकी चीजें खाना । **–मदा**–स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । **–महेश्वर**–पु० शिव । **–माता(तृ)** –स्त्री० विश्वकी माता, दुर्गा । **–मुखी**–स्त्री० एक दाक्षायणी (जालंधरमें पूजित) । **–मूर्ति**–वि० सब रूपोंमें रहनेवाला, सर्वव्यापक । पु० ईश्वर; शिव । **–मोहन**–वि० सबको मुग्ध करनेवाला । पु० विष्णु । **–योनि**–पु० ब्रह्मा; विष्णु । **–रथ**–पु० गाधिका एक पुत्र । **–राज,–राट्(ज्)**–पु० सारे विश्वका प्रभु । **–राष्ट्र**–पु० संसारके समस्त देशोंके प्रतिनिधियों द्वारा संचालित एक राष्ट्र या राष्ट्रीय संस्थाकी राजनीतिज्ञोंकी कल्पना । **–रुचि**–पु० एक देवयोनि; एक दानव । **–रुची**–स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक । **–रूप**–वि० सर्वव्यापक । पु० विष्णु; शिव; देवता; एक तरहका धूमकेतु; एक असुर; एक तीर्थ; अर्जुनको गीताका उपदेश देते समय दिखाया श्रीकृष्णका व्यापक रूप । **––रूपक**–पु० काला अगर; खिरनी । **–रूपी**–स्त्री० अग्निकी एक जिह्वा । **–रूपी(पिन्)**–वि० विभिन्न रूपोंमें प्रकट होनेवाला । **–रेता(तस्)**–पु० ब्रह्मा; विष्णु । **–रोचन**–पु० कचूर; नाड़ीच नामका साग । **–लोचन**–पु० सूर्य; चंद्रमा । **–लोप**–पु० एक वृक्ष; एक वैदिक ऋषि । **–वनि**–वि० सब कुछ देनेवाला । **–वर्णा**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–वसु**–पु० पुरूरवाका एक पुत्र । **–वाक्(च्)**–पु० महापुरुष । **–वाद**–पु० (सं०) (युनिवर्सलिज़्म) तत्त्वज्ञान सम्बन्धी बातें सारे विश्वमें समानरूपसे मिलती हैं, यह सिद्धान्त; (कॉज़मिज़्म) एक दार्शनिक मतवाद कि सारा विश्व एक स्वतंत्र सत्ता है और सतत विकासशील है । **वास**–पु० सभी वस्तुओंका आधार; संसार 'विश्वबास प्रकटे भगवाना'–रामा० । **–वाह**–वि० सबको धारण करनेवाला । **–वाहु**–पु० विष्णु । **–विख्यात**–वि० जो सारे संसारमें प्रसिद्ध हो । **–विजयी(यिन्)**–वि० सबको विजित करनेवाला । **–विद्** –वि० सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ । पु० ईश्वर । **–विद्यालय**–पु० (यूनीवर्सिटी) वह संस्था जहाँ सारी विद्याओंकी ऊँची शिक्षा दी जाय । **–विद्वान्(द्वस्)**–वि० सब कुछ जाननेवाला । **–विधायी(यिन्)**–पु० स्रष्टा; देवता । **–विभावन**–पु० विश्वकी रचना । **–विश्रुत**–वि० विश्वविख्यात । **–विश्व**–पु० विष्णु । **–विसारी(रिन्)**–वि० सर्वत्र फैलनेवाला । **–विस्ता**–स्त्री० वैशाखी पूर्णिमा । **–वृक्ष**–पु० विष्णु । **–वेदा(दस्)**–वि० सर्वज्ञ । पु० ऋषि । **–व्यापक,–व्यापी(पिन्)**–वि० (यूनीवर्सल) जो सर्वत्र व्याप्त हो । पु० ईश्वर । **–व्याप्ति**–स्त्री० सर्वव्यापकता । **–श्रवा(वस्)**–पु० रावणका पिता । **–श्री**–वि० सबके लिए उपयोगी (अग्नि) । **–संप्लव**–पु० प्रलय । **–संभव**–वि० जिससे सब कुछ उत्पन्न हुआ हो । पु० ईश्वर । **–संहार**–पु० विश्वका नाश । **–सख**–पु० सबका मित्र । **–सत्तम**–पु० विष्णु; कृष्ण । **–सह**–वि० सब कुछका सहन करनेवाला । **–सहा**–स्त्री० पृथ्वी; अग्निकी एक जिह्वा । **–साक्षी(क्षिन्)**–वि० सब कुछ देखनेवाला । पु० ईश्वर । **–सार**–पु० तंत्रविशेष । **–सारक**–पु० विदर वृक्ष, कंकारी । **–सृक्(ज्)**–वि० सबकी रचना करनेवाला । पु० ब्रह्मा । **–सृष्टि**–स्त्री० विश्वकी रचना । **–स्था**–स्त्री० शतावरी । **–स्पृक्(श्)**–वि० सबका स्पर्श करनेवाला (महापुरुष) । **–स्रष्टा(ष्टृ)** पु० सृष्टिका रचयिता । **–स्वास्थ्यसंघटन**–पु० (वर्ल्ड हेल्थ-आरगैनाइजेशन) संसारके विभिन्न देशोंमें लोकस्वास्थ्यकी उन्नतिके प्रयत्नोंमें सहायता करनेवाली अंतरराष्ट्रीय संस्था । **–हर्ता(र्तृ)**–पु० शिव । **–हेतु**–पु० सबकी उत्पत्तिका कारण, विष्णु ।

विश्वक–वि० (सं०) समग्र; सर्वव्यापक; विश्वव्यापी । पु०

पृथुका एक पुत्र।

विश्वकर्मजा, विश्वकर्मसुता–स्त्री० (सं०) सूर्यपत्नी, संज्ञा।

विश्वक्शेन–पु० (सं०) दे० 'विष्वक्शेन'।

विश्वचक्रात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु।

विश्वतः(तस्)–अ० (सं०) चारों ओर, सर्वत्र।

विश्वथा–अ० (सं०) सब जगह, सर्वत्र; सदा।

विश्वयु–पु० (सं०) वायु।

विश्वसन–पु० (सं०) विश्वास करना; ऋषियोंका वासस्थान।

विश्वसनीय–वि० (सं०) विश्वास-योग्य, जिसका एतबार किया जा सके।

विश्वसित–वि० (सं०) विश्वासपूर्ण; निर्भय; संदेह न करनेवाला; विश्वस्त।

विश्वस्त–वि० (सं०) विश्वसनीय; विश्वासपूर्ण; निर्भय। **–घाती(तिन्)**–वि० विश्वास करनेवालेका नाश करनेवाला। **–वंचक**–वि० विश्वास करनेवालेको धोखा देनेवाला।

विश्वस्ता–स्त्री० (सं०) विधवा।

विश्वांड–पु० (सं०) ब्रह्मांड।

विश्वा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; सोंठ; पिप्पली; चोरपुष्पी; अतिविषा; शतावरी; अग्निकी एक जिह्वा; एक परिमाण; दक्षकी एक कन्या; एक नदी।

विश्वाक्ष–वि० (सं०) सबपर दृष्टि रखनेवाला। पु० ईश्वर।

विश्वाची–स्त्री० (सं०) एक वैदिक अप्सरा; एक तरहका लकवा जिसमें पीठ और हाथ निश्चेष्ट हो जाते हैं।

विश्वातिथि–पु० (सं०) वह जो सबका अतिथि बने, सन्न्यासी।

विश्वातीत–वि० (सं०) सबसे परे। पु० ईश्वर।

विश्वात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) ईश्वर; सूर्य; ब्रह्मा; शिव; विष्णु।

विश्वाद–वि० (सं०) सबका भक्षण करनेवाला। पु० अग्नि।

विश्वाधाया(यस्)–पु० (सं०) देवता।

विश्वाधार–पु० (सं०) विश्वका सहारा, ईश्वर।

विश्वाधिप–पु० (सं०) विश्वका स्वामी, ईश्वर।

विश्वानर–पु० (सं०) सविता; इंद्र; अग्निके पिता।

विश्वाप्सु–वि० (सं०) जो सब तरहका रूप धारण कर सके।

विश्वाभू–वि० (सं०) सर्वव्यापक। पु० ईश्वर; इंद्र।

विश्वामित्र–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि (ये मूलतः क्षत्रिय थे। इनके पिताका नाम गाधि था और ये कान्यकुब्जके नरेश थे। एक गाय–नंदिनी–के लिए वसिष्ठसे इनका युद्ध हुआ जिसमें ये पराजित हो गये। ब्राह्मणत्वका इनपर इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि ये उसे प्राप्त करनेके लिए तपस्या करने लगे। अंतमें उसमें इन्हें सफलता मिली और वसिष्ठने भी इन्हें ब्रह्मर्षिके रूपमें स्वीकार कर लिया)। **–प्रिय**–पु० नारियल; कार्त्तिकेय; राम।

विश्वामित्रा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

विश्वामृत–वि० (सं०) जिसकी कभी मृत्यु न हो।

विश्वायन–वि० (सं०) सबमें प्रवेश करनेवाला, सर्वज्ञ।

विश्वाराट्(ज्)–वि० (सं०) सबपर शासन करनेवाला। पु० ईश्वर।

विश्वावसु–वि० (सं०) सबका उपकार करनेवाला। पु० विष्णु; एक गंधर्व; एक संवत्सर; एक मरुत्वान्; पुरूरवाका एक पुत्र; जमदग्निका एक पुत्र; एक मनु। स्त्री० रात।

विश्वावास–पु० (सं०) वह जो प्रत्येक वस्तुका आधार हो; ईश्वर, परमात्मा।

विश्वास–पु० (सं०) किसीके विषयमें उसके विशेष प्रकारका होनेकी धारणा, यकीन; भरोसा; धर्म, ईश्वर, देवता आदिके सम्बन्धमें निश्चित धारणा (बिलीफ़); गुप्त संवाद या भेद। **––कारक,–कृत्**–वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला। **–कारण**–पु० विश्वासका कारण। **–कार्य**–पु० गोपनीय कार्य। **–घात**–पु० विश्वासके विपरीत कार्य करना; जिसने विश्वास किया हो, उसे ही धोखा देना। **–घातक,–घाती(तिन्)**–वि० विश्वास भंग करनेवाला; विश्वासके विपरीत कार्य करनेवाला। **–परम**–वि० विश्वासपूर्ण। **–पात्र,–भाजन,–भूमि**–वि० जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय। **–प्रद**–वि० विश्वास उत्पन्न करनेवाला। **––प्रस्ताव**–पु० (मोशन ऑफ कॉनफिडेंस) किसी मंत्रिमंडलमें या किसी संस्थाके अध्यक्षादिमें विश्वास प्रकट करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला प्रस्ताव। **–भंग**–पु० विश्वासके प्रतिकूल कार्य करना। **–स्थान**–पु० विश्वासका पात्र; प्रतिभू, ओल। **–हंता(तृ),–हर्ता(र्तृ)**–वि० विश्वासघाती। **मु०–जमाना,–दिलाना**–विश्वास उत्पन्न करना।

विश्वासन–पु० (सं०) विश्वास उत्पन्न करना।

विश्वासिक–वि० (सं०) जो विश्वास योग्य हो।

विश्वासित–वि० (सं०) जिसके मनमें विश्वास उत्पन्न किया गया हो।

विश्वासी(सिन्)–वि० (सं०) विश्वास करनेवाला; जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वास्य–वि० (सं०) विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य, विश्वास-पात्र।

विश्वाह्वा–स्त्री० (सं०) सोंठ।

विश्वेक्षिता(तृ)–वि० सबको देखनेवाला।

विश्वेदेव–पु० (सं०) अग्नि; एक देववर्ग; तेरहकी संख्या; महापुरुष; एक असुर; एक देवता।

विश्वेभोजा(जस्)–पु० (सं०) इंद्र।

विश्वेवेदा(दस्)–पु० (सं०) अग्नि।

विश्वेश–पु० (सं०) विश्वका स्वामी (ब्रह्मा; विष्णु; शिव); ब्रह्म; एक लिंग; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

विश्वेशा–स्त्री० (सं०) दक्षकी एक कन्या।

विश्वेश्वर–पु० (सं०) ईश्वर; शिवकी एक मूर्ति (काशीस्थ); उत्तराषाढ़ा नक्षत्र। **–पत्तन**–पु० काशी।

विश्वैकसार–पु० (सं०) एक पुराना तीर्थ (कश्मीर)।

विश्वोत्पत्ति-विज्ञान–पु० (कॉस्मोगोनी) विश्वकी उत्पत्ति तथा विकासका विवेचन करनेवाला विज्ञान, सृष्टिविज्ञान।

विश्वौषध–स्त्री० (सं०) सोंठ।

विषंग–वि० (सं०) संलग्न; लटका हुआ।

विषंगी(गिन्)–वि० (सं०) संलग्न होनेवाला; ···से लिप्त।

विषंड–पु० (सं०) कमलनाल।

विष–पु० (सं०) जहर, गरल; वत्सनाभ; जल; कमल-नाल; एक सुगंधित गोंद; 'म्' की ध्वनि (तं०)। **–कंट**–पु० इंगुदी। **–कंटक**–पु० दुरालभा। **–कंटका–कंटकिनी,–कंटकी** – स्त्री० वंध्याकर्कोटकी। **–कंठ**–पु० शिव। **–कंठिका**–स्त्री० बगला। **–कंद**–पु० नीलकंद। **–कन्यका,–कन्या**–स्त्री० वह विषाक्त कन्या जिससे संभोग करनेवालेकी मृत्यु हो जाती है। **–कुंभ**–पु० विषपूर्ण घट। **–कृत**–वि० विषाक्त। **–कृमि**–पु० विषमें उत्पन्न कीड़ा। **–० न्याय**–पु० एक न्याय जिसके अनुसार दूसरोंके लिए घातक सिद्ध होनेवाला पदार्थ उसमें उत्पन्न हुएके लिए घातक नहीं होता। **–गंधक**–पु० तृण-विशेष। **–गंधा**–स्त्री० कृष्ण अपराजिता। **–गिरि**–पु० वह पहाड़ जिसपर उगनेवाले पेड़-पौधे जहरीले हों। **–ग्रंथि**–स्त्री० एक पौधा। **–घटिका**–स्त्री० एक सौर मास। **–घा**–स्त्री० गुड़ुच। वि० विष दूर करनेवाला। **–घात**–पु० विषवैद्य। **–घातक**–वि० विषका प्रभाव हरण करनेवाला; विषका प्रयोग कर मारनेवाला। **–घाती(तिन्)**–वि० विषका प्रभाव नष्ट करनेवाला। पु० शिरीष। **–घ्न**–वि० विषनाशक। पु० सिरिसका पेड़; जवासा; भिलावाँ; चंपक; गंधतुलसी; भूकदंब। **–घ्ना**–स्त्री० अतिविषा, अतीस। **–घ्निका**–स्त्री० सफेद चिचड़ा। **–घ्नी**–स्त्री० हिलमोचिका; वनवर्बरिका; भूम्यामलकी; रक्त पुनर्नवा; हरिद्रा; वृश्चिकाली; महाकरंज; इंद्रवारुणी; स्वल्पफला; देवदाली; कठकेला; रास्ना; सफेद चिचड़ा। **–चक्र**–पु० चकोर पक्षी। **–ज**–वि० विषसे उत्पन्न। **–जल**–पु० विष मिला हुआ पानी। **–जित्**–पु० एक तरहका मधु। **–जिह्व**–पु० देवताड़। **–जुष्ट**–वि० विषैला; विषाक्त। **––ज्वर**–पु० विषके कारण उत्पन्न ज्वर; भैंसा। **–तंत्र**–पु० साँप आदिका विष दूर करनेकी प्रक्रिया (आ० वे०)। **–तरु**–पु० कुचला; विषैला वृक्ष। **–तिंदु**–पु० कुचला। **–तिंदुक**–पु० एक विषैला पौधा। **–तुल्य**–वि० घातक। **–दंड**–पु० विषका हरण करनेवाली जादूकी लकड़ी; कमलनाल।

–दंतक–पु० सर्प। **–दंष्ट्रा**–स्त्री० सर्पकंकाली। **–द**–वि० विषैला; स्वच्छ। पु० सफेद रंग; पुष्पकासीस; बादल; अतिविषा, अतीत। **–दर्शनमृत्युक**– पु० चकोर। **–दा**–स्त्री० अतिविषा, अतीस। **–दाता(तृ),–दायक,–दायी (यिन्)**–वि०, पु० जहर देनेवाला। **–दिग्ध**–वि० विषाक्त किया हुआ। **–दुष्ट**–वि० विष मिलाया हुआ। **–दूषण**–वि० विष दूर करनेवाला। पु० भोजनादिमें विष देना। **–दोषहर**–वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला। **–द्रुम**–पु० कारस्कर, कुचला। **–द्विषा**–स्त्री० गुडुचीका एक भेद। **–धर**–वि० विषैला। पु० साँप; जलाधार। **–०निलय**–पु० नागलोक, पाताल। **–धरी**–स्त्री० सर्पिणी। **–धर्मा**–स्त्री० केवाँच। **–धात्री**–स्त्री० मनसा देवी, जरत्कारु ऋषिकी पत्नी। **–ध्वंसी(सिन्)**–पु० नागरमोथा। **–नाडी**–स्त्री० एक अशुभ मुहूर्त। **–नाशन**–पु० सिरिसका पेड़; मानकंद; विष दूर करना। वि० विष नष्ट करनेवाला। **–नाशिनी**–स्त्री० एक लता, सर्पकंकाली; वंध्याकर्कोटकी। **–नुत्(द्)**–पु० श्योनाक। **–पत्रिका**–स्त्री० जहरीला पत्ता; जहरीले बीजका छिलका; विषैले पत्तोंवाला एक पौधा। **–पन्नग**–पु० जहरीला साँप। **–पर्णी**–स्त्री० न्यग्रोध। **–पादप**–पु० विषैला वृक्ष। **–पीत**–वि० जिसने विषका पान किया है। **–पुच्छ**–पु० विच्छू। **–पुट**–पु० एक ऋषि। **–पुष्प** विषैला फूल; अलसींका फूल; नीला पद्म; मैनफल, मदन। **–पुष्पक,–मुष्कक**–पु० मैनफल; विषपुष्प खानेसे होनेवाला रोग। **–प्रदिग्ध**–वि० विषाक्त। **–प्रयोग**–पु० औषधके लिए विषका प्रयोग करना; हत्याके लिए विष देना। **–प्रशमनी**–स्त्री० वंध्याकर्कोटकी। **–प्रस्थ**–पु० एक पर्वत (म० भा०)। **–भक्षण**–पु० जहर खाना। **–भद्रा**–स्त्री० वृहद्दंती। **–भद्रिका**–स्त्री० लघुदंती। **–भिषक्-(ज्)**–पु० विषवैद्य। **–भुजंग**–पु० जहरीला साँप। **–भृत्**–वि० विषैला। पु० सर्प। **–मंत्र**–पु० सर्पदंशका मंत्र; मंत्र द्वारा सर्पविष दूर करनेवाला, सँपेरा। **–मर्दनिका,–मर्दनी,–मर्दिनी**–स्त्री० गंधनाकुली। **–माधुर**–पु० शृंगी विष, सींगिया। **–मुक्(च्)**–वि० जहरीला (शब्दादि)। पु० सर्प। **–मुष्टि**–पु० एक क्षुप। **–मुष्टिका**–स्त्री० बकायन। **–मूला**–स्त्री० शिरामलक। **–मृत्यु**–पु० चकोर। **–रस**–पु० विष मिला हुआ पेय। **–रूपा**–स्त्री० मीठी नीम; अतिविषा; खेकसा। **–रोग**–पु० विषजन्य रोग। **–लता**–स्त्री० कमलकी नाल; एक लता, इंद्रवारुणी। **–लांगल**–पु० कलियारी। **–वंचिका**–स्त्री० विच्छू नामक पौधा। **–वमन**–पु० जहर उगलना; बहुत ही अप्रिय एवं कड़वी बातें करना। **–वल्लरी,–वल्लि,–वल्ली**–स्त्री० एक लता, इंद्रवारुणी। **–विटपी(पिन्)**–पु० विषैला वृक्ष। **–विद्या**–स्त्री० विषघ्न मंत्र। **–विज्ञान**–पु० (टॉक्सिकॉलॉजी) विषोंकी उत्पत्ति, प्रभाव आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **–विधान**–पु० **विधि**–स्त्री० अपराधी, निरपराध ठहरानेकी एक दिव्य परीक्षा। **–वृक्ष**–पु० विषैला वृक्ष; गूलर। **–० न्याय**–पु० एक न्याय जिसमें कहा जाता है कि वस्तु बुरी होते हुए भी उत्पादकको उसे नष्ट नहीं करना चाहिये। **–वेग**–पु० विषका शरीरमें व्याप्त होना। **–वैद्य**–पु० मंत्र आदिसे विषका प्रभाव दूर करनेवाला। **–वैरिणी**–स्त्री० निर्विषा। **–व्रण**–पु० एक तरहका विषैला फोड़ा, जहरबाद। **–शालूक**–पु० पद्मकंद, भसींड़। **–शूक,–शृंगी(गिन्)** पु० भिड़, भृंगरोल। **–संयोग**–पु० सिंदूर। **सूचक**–पु० एक पक्षी, चकोर। **–सृक्वा(क्वन्)**–पु० भृंगरोल, भिड़। **–हंता(तृ)**–वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला। पु० सिरिस। **–हंत्री**–स्त्री० अपराजिता; निर्विषा। **–ह**–वि० विष हरण करनेवाला; विषघ्न। पु० निर्विषा; देवदाली। **–हर**–पु० विषका प्रभाव हरनेवाला मंत्र या औषध; चोरक। **–हरा**–स्त्री० निर्विषी; देवदाली, बंदाल; मनसा देवी। **–हरी**–स्त्री० मनसा देवी। **–हा**–स्त्री० बंदाल, देवदाली; निर्विषा। **–हा(हन्)**–वि० विष नष्ट करनेवाला। पु० एक तरहका कदंब। **–हारक**–पु० एक तरहका कदंब। **–हारिणी**–स्त्री० निर्विषा। **–हीन**–वि० जिसमें विष न हो (सर्प आदि)। **–हृदय**–वि० कुटिलहृदय, बुरे दिलका। **–हेति**–पु० सर्प।

विषक्त–वि० (सं०) जड़ा, दृढ़तासे जमाया हुआ; चिपका, लिपटा हुआ; लटका हुआ; उत्पादित।

विषज्जित–वि० (सं०) चिपका हुआ, संलग्न।

विषणि–पु० (सं०) एक साँप।

विषण्ण–वि० (सं०) दुःखी, विषादयुक्त; शोकमग्न। **–चेता(तस्),–मना(नस्)**–वि० खिन्न, उदास। **–मुख,–वदन**–वि० जिसके चेहरेसे उदासी झलकती हो।

विषण्णता–स्त्री० (सं०) उदासी; जड़ता।

विषण्णांग–पु० (सं०) शिव।

विषम–वि० (सं०) जो समतल न हो, असम; असमान, दोसे पूरा-पूरा न बँटनेवाली (संख्या); कठिन; दुर्बोध, जो जल्द समझमें न आये; विकट, जटिल, जो जल्द हल न हो; दुर्गम; रुखड़ा, मोटा; कष्टकर; उग्र, प्रचंड; खतरनाक; बुरा, प्रतिकूल; असाधारण, अद्वितीय; बेईमान, छली; दुष्ट; सविराम, अतर देकर होनेवाला (ज्वर आदि); भिन्न। पु० विष्णु; असमता; असाधारणता; सम न होनेका भाव; खतरनाक स्थिति; संकट; खड्ड; ऊबड़-खावड़ जमीन; असम वृत्त, ऐसा छंद जिसके चरणोंके अक्षरादि बराबर न हों; एक काव्यालंकार जहाँ अत्यंत विलक्षणता, विभिन्नताके कारण दो वस्तुओंका संयोग 'कहाँ यह, कहाँ वह' कहकर अयोग्य बतलाया जाय या जहाँ कार्य और कारण एक दूसरेके बिलकुल विरूप या विरुद्ध हों या फिर कोई अच्छा काम करनेकी चेष्टा करनेपर लाभ न होकर उलटे हानि उठानी पड़े; एक तरहका ताल; असम राशियाँ; एक जठराग्नि। **–कर्ण**–वि० जिसके कर्ण असमान हों। पु० असम कर्णोंवाला चतुर्भुज; समकोण-त्रिकोणका कर्ण। (ज्या०)। **–कर्म(न्)**–पु० असाधारण कार्य। **–काल**–पु० अशुभ या प्रतिकूल समय। **–कोण**–पु० असमकोण, समकोणसे भिन्न कोण (ज्या०)। **–खात**–पु० वह घन जिसमेंके गड्ढे या पार्श्व बराबर न हों। **–गत**–वि० जो ऊबड़-खावड़ जमीनपर रखा हो; संकटग्रस्त। **–चतुरस्र,–चतुर्भुज,–चतुष्कोण**–पु० वह चतुर्भुज जिसकी भुजाएँ असमान हों। **–च्छद**–पु० सप्तपर्ण नामक वृक्ष। **–च्छाया**–स्त्री० छाया-घड़ीकी दोपहरके समयकी छाया। **–ज्वर**–पु० जीर्णज्वर; क्षयरोगमें होनेवाला ज्वर; जूड़ी, शीत ज्वर; मलेरिया। **–त्रिभुज**–पु० वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ असमान हों (ज्या०)। **दृष्टि**–वि० ऐंचाताना। **–धातु**–वि० अस्वस्थ (वात, पित्त और कफकी असंतुलित अवस्था)। **–नयन,–नेत्र,–विलोचन**–पु० शिव। **–पलाश**–पु० सप्तपलाश, छतिवन। **–पाद**–वि० जिसके चरण असमान हों। **–बाण,–विशिख,–शर**–पु० कामदेव। **–लक्ष्मी**–स्त्री० कुसमय, दुर्भाग्य। **–वल्कल**–पु० नारंगी। **–विभाग**–पु० संपत्तिका असमान बँटवारा। **–वृत्त**–पु० वह छंद जिसके चरणोंकी मात्राएँ आदि समान न हों; (विशस सर्किल) दे० 'अपचक्र'। **–व्यूह**–पु० एक प्रकारकी व्यूहरचना। **–शिष्ट**–पु० प्रायश्चित्तकी व्यवस्थाका एक दोष। वि० (प्रायश्चित्तकी व्यवस्था) जो गलत दी गयी हो; जिसका बँटवारा उचित रूपमें न हुआ हो (मरनेके समय संपत्तिका)। **–शील**–वि० चिड़चिड़ा, जिसका मिजाज एक-सा न रहता हो। पु० विक्रमादित्य। **–संधि**–स्त्री० एक तरहकी संधि, समसंधिका विलोम। **–साहस**–पु० औद्धत्य। **–स्थ**–वि० जो दुर्गम स्थानपर, करारेपर या संकटमें हो। **–स्पृहा**–स्त्री० दूसरेका धन बेईमानीसे लेनेका लालच।

विषमक–वि० (सं०) असमान; जिसकी पालिश बराबर न हुई हो (मोती आदि)।

विषमता–स्त्री०, **विषमत्व**–पु० (सं०) असमता; अंतर; निरापदता; भीषणता; जटिलता।

विषमा–स्त्री० (सं०) झरबेरी; एक तरहका बछनाग।

विषमाक्ष–पु० (सं०) शिव।

विषमाग्नि–स्त्री० (सं०) एक जठराग्नि (आ० वे०)।

विषमान्न–पु० (सं०) अनियमित आहार।

विषमायुध–पु० (सं०) कामदेव।

विषमावतार–पु० (सं०) ऊबड़-खावड़ जमीनपर उतरना।

विषमाशन–पु० (सं०) निश्चित समयपर भोजन न करना; आव-

श्यकतासे कम या अधिक भोजन करना।

विषमाशय–वि० (सं०) बेईमान; कपटी।

विषमित–वि० (सं०) असम या दुर्गम बनाया हुआ; अव्यवस्थित; जो खतरनाक, वैरी वन गया हो; सिकोड़ा हुआ।

विषमेक्षण–पु० (सं०) शिव।

विषमेषु–पु० (सं०) कामदेव।

विषय–पु० (सं०) ज्ञानेंद्रियों द्वारा गृहीत होनेवाले पदार्थ (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द), इंद्रियार्थ; भौतिक पदार्थ; कारबार; इंद्रियजन्य आनंद; संभोग; लक्ष्य; क्षेत्र, विस्तार; विभाग; जिस वस्तु या कार्यके उद्देश्यसे कोई क्रिया की जाय (सबजेक्ट); किसी ग्रंथ, लेख आदिमें विवेचित सामग्री (मैटर); व्याख्या आदिका प्रकरण; प्रसंग; मजमून; काव्य या नाटककी विषयवस्तु (थीम); उपमेय; देश; राज्य; शासन-व्यवस्थायुक्त वृहत् क्षेत्र; आश्रय-स्थान; ग्राम-समूह; जिला; पति; शुक्र; व्रत, धार्मिक अनुष्ठान; पाँचकी संख्या। **–कर्म(न्)**–पु० सांसारिक कार्य। **–काम**–पु० भौतिक पदार्थों या आनंदकी इच्छा। **–ग्राम**–पु० इंद्रियार्थोंका समूह। **–ज्ञ**–वि० विशेष विषयका अच्छा ज्ञान रखनेवाला। **–ज्ञान**–पु० सांसारिक कार्योंका ज्ञान। **–निरति**–स्त्री० विषयासक्ति। **–निर्धारिणी,–समिति,–निर्वाचनी समिति**–स्त्री० किसी सभामें उपस्थित किया जानेवाला विषय, प्रस्ताव आदिका निश्चय करानेवाली उपसमिति (सबजेक्ट्स कमेटी)। **–पति**–पु० राज्यपाल, 'गवर्नर'। **–पराङ्मुख**–वि० सांसारिक विषयोंसे विरक्त। **–प्रत्यभिज्ञान**–पु० इंद्रियार्थोंका ज्ञान। **–प्रवण**–वि० विषयासक्त। **–प्रसंग**–पु० विषयासक्ति। **–रत**–वि० विषयभोगमें लीन रहनेवाला। **–लोलुप**–वि० विषय-सुखका लोभी। **–वस्तु**–स्त्री० (सं०) (थीम) किसी कृतिका मूल विषय। **–वासी(सिन्)**–वि०, पु० देशवासी; सांसारिक कार्योंमें लगा हुआ। **–संग**–पु० विषयासक्ति। **–समिति**–स्त्री० दे० 'विषय-निर्धारिणी समिति'। **–सुख**–पु० इंद्रियजन्य सुख। **–स्नेह**–पु०,**–स्पृहा**–स्त्री० विषय-सुखकी इच्छा।

विषयक–वि० (सं०) संबंधी, विषयका।

विषयांत–पु० (सं०) देशकी सीमा।

विषयांतर–पु० (सं०) प्रसंगको छोड़कर भिन्न विषयका उपस्थापन करना; मूल विषयको छोड़कर इधर-उधरकी चर्चा करना। वि० जो बिलकुल पासका हो, पड़ोसका।

विषया–स्त्री० विषयवासना; विषयवासनाकी वस्तु।

विषयाज्ञान–पु० (सं०) क्लांति; तंद्रा।

विषयात्मक–वि० (सं०) विषय-संबंधी; इंद्रिय-संबंधी।

विषयाधिकृत–पु० (सं०) राज्यपाल, 'गवर्नर'।

विषयाधिप–पु० (सं०) दे० 'विषय-पति'।

विषयाधिपति–पु० (सं०) प्रांतका शासक, 'गवर्नर'; राजा।

विषयानुक्रमणिका–स्त्री० (सं०) विस्तृत विषयसूची, 'इंडेक्स'।

विषयाभिरति–स्त्री०, **विषयाभिलाष**–पु० (सं०) विषयभोग।

विषयायी(यिन्)–पु० (सं०) राजा; ज्ञानेंद्रिय; जड़वादी, नास्तिक; कामदेव।

विषयासक्त–वि० (सं०) विषय-रत।

विषयासक्ति–स्त्री० (सं०) विषयभोगमें लीन रहना।

विषयी(यिन्)–वि० (सं०) विलासी, कामी। पु० कामी पुरुष; नास्तिक; राजा; कामदेव; ज्ञान; अमीर; अहंभाव; ज्ञानेंद्रिय; उपमान, अवर्ण्य (सा०)।

विषयीय–वि० (सं०) विषय-संबंधी। पु० विषय, पदार्थ।

विषयैषी(षिन्)–वि० (सं०) विषयवासनामें लिप्त; सांसारिक कामोंमें लगा हुआ।

विषयोपरम–पु० (सं०) विषय-वासनाका त्याग।

विषयोपसेवा–स्त्री० (सं०) विषयासक्ति।

विषल–पु० (सं०) विष।

विषह्य–वि० (सं०) सहने योग्य; पराभूत करने योग्य; संभव; जिसका निश्चय किया जा सके।

विषांकुर–पु० (सं०) विषयुक्त किया हुआ अंकुर; भाला (जिसकी नोक विषाक्त हो)।

विषांगना–स्त्री० (सं०) दे० 'विषकन्या'।

विषांतक–पु० (सं०) शिव। वि० विषका प्रभाव दूर करनेवाला।

विषा–स्त्री० (सं०) बुद्धि; कड़वी तरोई; कड़वी कँदूरी; काकोली; कलियारी; अतिविषा।

विषाक्त–वि० (सं०) विषमिश्रित।

विषाख्या–स्त्री० (सं०) अतिविषा।

विषाग्नि–स्त्री०, **विषानल**–पु० (सं०) विषजन्य अनल।

विषाग्रज–पु० (सं०) तलवार।

विषाण–पु० (सं०) शृंग (बाजा); सींग; शूकर, हाथी या गणेशका दाँत; केंकड़ेका पंजा; मेढ़ा सिंगी; एक औषधि, ऋषभक; इमली; चोटी, सिरा; मथानी; शिवके सिरपरकी सींग जैसी जटा; चूचुक; अपने वर्गका प्रधान; तलवार। **–कोश**–पु० सींगका खोखला भाग।

विषाणक–पु० (सं०) सींग; हाथी।

विषाणांत–पु० (सं०) गणेशका दाँत।

विषाणिका–स्त्री० (सं०) मेषशृंगी; कर्कटशृंगी; आवर्तकी; सातला; ऋषभक।

विषाणी–स्त्री० (सं०) ऋषभक; कर्कटशृंगी; क्षीरकाकोली; इमली।

विषाणी(णिन्)–वि० (सं०) सींगवाला; दाँतवाला। पु० सींग या दाँतवाला जानवर; हाथी; ऋषभक; शृंगाटक।

विषाणु–पु० (सं०) किसी रोगका शरीरमें उत्पन्न विषाक्त तत्व जो दूसरे शरीरोंमें वही रोग उत्पन्न कर सकता है।

विषाद–पु० (सं०) अवसाद, उदासी; गम; नैराश्य (ग्लूम); उत्साहहीनता (डिस्पॉन्डेन्सी); तंद्रा, क्लांति; एक मानसिक रोग जिसमें रोगी अत्यन्त उदास और दुखी रहता है (मेलान्कोलिया); सुस्ती; जड़ता; मन उचट जाना; एक संचारी भाव (कार्य-सिद्धिके उपायोंका अभाव होनेसे उत्पन्न दुःख); शिव। वि० विष खानेवाला। **–कृत्,–जनक**–वि० खिन्नता आदि उत्पन्न करनेवाला।

विषादन–वि० (सं०) उदासी पैदा करनेवाला। पु० विषाद उत्पन्न करना; कष्ट; नैराश्य; एक अर्थालंकार।

विषादनी–स्त्री० (सं०) पलाशी लता।

विषादित–वि० (सं०) विषण्ण, विषादयुक्त किया हुआ।

विषादिता–स्त्री० (सं०) विषादकी अवस्था; विषण्णता।

विषादी (दिन्)–वि० (सं०) विषपान करनेवाला; विषण्ण, खिन्न; अधीर।

विषाद्–वि० (सं०) विष खानेवाला। पु० शिव।

विषानन–पु० (सं०) साँप।

विषान्न–पु० (सं०) विषमिश्रित खाद्य पदार्थ।

विषापवादी(दिन्)–वि० (सं०) मंत्र द्वारा विषका प्रभाव दूर करनेवाला।

विषापह–वि० (सं०) विषनाशक। पु० गरुड़; मुष्कक नामक वृक्ष।

विषापहरण–पु० (सं०) विषका प्रभाव नष्ट करना।

विषापहा–स्त्री० (सं०) अर्कमूला; इंद्रवारुणी; निर्विषा; नागदमनी; सर्पकंकालिका।

विषाभावा–स्त्री० (सं०) निर्विषा।

विषायुध–पु० (सं०) साँप; विषैला जंतु; जहरमें बुझा अस्त्र।

विषार–पु० (सं०) साँप।

विषाराति–पु० (सं०) कृष्ण धत्तूरक।

विषारि–पु० (सं०) महाचंचु या घृतकरंज। वि० विषनाशक।

विषाला–स्त्री० (सं०) एक मछली।

विषालु–वि० (सं०) विषैला, जहरीला (प्वायजनस)।

विषास्त्र–पु० (सं०) साँप; जहरमें बुझाया हुआ हथियार।

विषास्य–पु० (सं०) साँप।

विषास्या–स्त्री० (सं०) भिलावाँ।

विषी(षिन्)–वि० (सं०) विषयुक्त, विषाक्त। पु० विषधर साँप।

विषुण–पु० (सं०) विषुव रेखा।

विषुद्ग्रह–पु० (सं०) बाण।

विषुप–पु० (सं०) विषुव रेखा।

विषुप्त–वि० (सं०) सोया हुआ।

विषुव–पु० (सं०) वह समय जब दिन-रातका मान बराबर होता है; (इक्विनॉक्स) वह क्षण (या खगोलीय दृष्टिसे वह बिन्दु) जिसपर सूर्य आभासी रूपसे खगोलीय विषुवद्वृत्तको काटता है–अर्थात् खगोलीय विषुवद्वृत्त और क्रांतिवृत्तका कटान बिन्दु। **–च्छाया**–स्त्री० मध्याह्नके समय धूपघड़ीके काँटेकी छाया। **–दिन**–पु० दे० 'विषुवद्दिन'। **–रेखा**–स्त्री० वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवोंके बीचोबीच पृथ्वी-तलपर चारों ओर गयी है (इक्वेटर)।

विषुवत्–वि० (सं०) बीचका, मध्यस्थित। पु० दे० 'विषुव'।

विषुवद्–'विषुवत्'का समासगत रूप। **–दिन,–दिवस**–पु० वह दिन जब दिन-रातके मानमें कोई अंतर नहीं होता। **–देश**–पु० विषुव रेखाके नीचे पड़नेवाले देश। **–वलय,–वृत्त**–पु० विषुव रेखा।

विषूचिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका अजीर्ण जिसमें कै और दस्त होता है और पेशाब नहीं उतरता, हैजा।

विषैला–वि० विषयुक्त, जहरीला।

विषौषधी–स्त्री० (सं०) नागदंती; विषनाशक औषधि।

विष्कंद–पु० (सं०) बिखरना, तितर-बितर होना; दूर चले जाना।

विष्कंध–पु० (सं०) बाधा, गतिरोध।

विष्कंभ–पु० (सं०) बाधा, रोक; अर्गल; शहतीर; स्तंभ; वृक्ष; मंथन-दंड; फैलाव, विस्तार; वृत्तका व्यास; पर्वत-श्रेणी; सत्ताइस योगोंमेंसे एक (ज्यो०); अंकोंके मध्य रखा जानेवाला वह अंश जिसमें कथानककी प्रगतिका संकेत रहता है (ना०); योगका एक बंध; कार्य-संपादन, कोई काम करना।

विष्कंभक–वि० (सं०) सहारा देनेवाला। पु० दे० 'विष्कंभ' (ना०); एक योग (ज्यो०)।

विष्कंभन–पु० (सं०) बाधा डालना; विदारणका साधन।

विष्कंभित–वि० (सं०) जिसमें बाधा पड़ी हो; अस्वीकृत; ···से युक्त।

विष्कंभी(भिन्)–पु० (सं०) शिव; अर्गल; एक बोधिसत्त्व; एक तांत्रिक देवता। वि० बाधा डालनेवाला।

विष्क–पु० (सं०) बीस वर्षका हाथी।

विष्कन्न–वि० (सं०) बिखरा हुआ, जो तितर-बितर हो गया हो; जो चला गया हो।

विष्कब्ध–वि० (सं०) सहारा दिया हुआ; जमाया, स्थिर किया हुआ।

विष्कर–पु० (सं०) अर्गल; एक दानव; युद्धका एक ढंग; पक्षी।

विष्कल–पु० (सं०) ग्रामशूकर।

विष्कलन–पु० (सं०) भोजन।

विष्किर–पु० (सं०) पक्षी; अन्नको छितराकर खानेवाले पक्षी (कबूतर आदि); एक तरहका साँप; एक अग्नि; फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना।

विष्टंभ–पु० (सं०) रोक; बाधा; सहन; प्रतिरोध; मलमूत्रका रोध; पक्षाघात; पदक्रमण, आक्रमण; भलीभाँति जमाना, स्थिर करना।

विष्टंभन–वि० (सं०) सहारा देनेवाला; रोकने, दबानेवाला। पु० रोकना, दबाना।

विष्टंभित–वि० (सं०) दृढ़तापूर्वक जमाया, जकड़ा हुआ; ···से भरा या ढका हुआ।

विष्टंभी(भिन्)–वि० (सं०) सहारा देनेवाला; रोकनेवाला; गतिहीन करनेवाला। पु० (मल आदिका) रोधक पदार्थ।

विष्ट–वि० (सं०) घुसा हुआ; भरा हुआ, युक्त।

विष्टप–पु० (सं०) भुवन, लोक; पात्र; प्याला। **–हारी(रिन्)**–वि० लोगोंको प्रसन्न करनेवाला।

विष्टप्–स्त्री० (सं०) स्थान, भूभाग; स्वर्गलोक।

विष्टब्ध–वि० (सं०) दृढ़तासे जमाया या बाँधा हुआ; कड़ा पड़ा हुआ; रोका हुआ; सहारा दिया हुआ; भरा हुआ; जो पचा न हो। **–गात्र**–वि० जिसके अंग कड़े पड़ गये हों।

विष्टब्धि–स्त्री० (सं०) दृढ़तासे जमाना; सहारा देना।

विष्टभ–पु० (सं०) लोक।

विष्टर–पु० (सं०) बैठनेके लिए फैलायी हुई थोड़ी-सी घास; यज्ञके ब्रह्माका आसन; पचीस कुश-तृणोंका बना हुआ आसन; वृक्ष; एक देवता; आसन, कुरसी; पलंग। वि० विस्तृत। **–भाक्(ज्)**–वि० आसनासीन। **–श्रवा(वस्)**–पु० विष्णु; शिव; कृष्ण।

विष्टरा–स्त्री० (सं०) एक घास, गुंडासिनी।

विष्टराश्व–पु० (सं०) पृथुका एक पुत्र।

विष्टरुहा–स्त्री० (सं०) पीली केतकी।

विष्टि–स्त्री० (सं०) व्याप्ति; काम, पेशा; मजदूरी, वेतन; जबर्दस्ती लिया जानेवाला काम, बेगार; प्रेषण; नरकवास; एक करण, भद्रा (ज्यो०); एक व्रत; वृष्टि। **–कर**–पु० दासोंका मालिक; अत्याचारी। **–कृत्**–पु० दास। **–भार**–पु० बेगारीका भार।

विष्ठल–पु० (सं०) दूरवर्ती स्थान।

विष्ठा–स्त्री० (सं०) मल, पाखाना; पेट; गंदी, त्याज्य वस्तु। **–भुक्(ज्)**–पु० शूकर। **–भू**–पु० मलकृमि। **–भूदारक**–पु० ग्राम-शूकर।

विष्ठित–वि० (सं०) निकटवर्ती, मौजूद।

विष्ठेष्टा–स्त्री० (सं०) हल्दी।

विष्णु–पु० (सं०) हिंदुओंके एक प्रधान देवता (वेदोंके देवताओंमें विष्णुका स्थान गौण है, ब्राह्मण ग्रंथों और पुराणोंमें इनका महत्त्व बढ़ा। इनकी त्रिदेवमें गणना है और ये पालनकर्ता माने जाते हैं। विष्णुके उपासकोंको वैष्णव कहते हैं। विष्णुके दस अवतार कहे गये हैं। इनमें मुख्यतया राम और कृष्णकी उपासना होती है); अग्नि; वसु देवता; बारह आदित्योंमेंसे प्रथम; एक धर्मशास्त्र-प्रणेता ऋषि; श्रवण नक्षत्र; संत, महात्मा। **–कंद**–पु० एक तरहका बड़ा कंद। **–कांची**–स्त्री० दक्षिणका एक तीर्थ। **–कांता**–स्त्री० नीली अपराजिता। **–कांति**–पु० एक गहरा आसमानी रंग (सेरुलियन)। **–कांती**–स्त्री० एक प्राचीन तीर्थ। **–काक**–पु० एक लता, कोयल, नीली अपराजिता। **–क्रांत**–पु० इश्कपेचा लता; उसका फूल; एक ताल (संगीत)। **–क्रांता**–स्त्री० अपराजिता; बाराहीकंद; कृष्ण शंखपुष्पी। **–क्रांति**–स्त्री० अपराजिता। **–क्षेत्र**–पु० एक तीर्थ। **–गंगा**–स्त्री० एक नदी। **–गंधि**–स्त्री० रक्त शंखपुष्पी। **–गुप्त**–पु० एक ऋषि और वैयाकरण; चाणक्य, कौटिल्यका असली नाम; विष्णुकंद। **–गुप्तक**–पु० बड़ी मूली। **–गृह**–पु० ताम्रलिप्त। **–गोल**–पु० विषुव रेखा। **–ग्रंथि**–स्त्री० शरीरकी एक संधि। **–चक्र**–पु० सुदर्शन चक्र। **–ज**–वि० श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न। पु० अठारहवाँ कल्प। **–तिथि**–स्त्री० एकादशी; द्वादशी। **–दैवत**–पु० श्रवण नक्षत्र (इसके स्वामी विष्णु हैं)। **–दैवत्या**–स्त्री० दे० 'विष्णुतिथि'। **–द्विट्(ष्)**–पु० विष्णुके शत्रु। **–द्वीप**–पु० एक द्वीप (पु०)। **–धर्म**–पु० एक श्राद्ध। **–धर्मोत्तर**–पु० विष्णु-पुराणका एक अंग, एक उपपुराण। **–धारा**–स्त्री० एक प्राचीन तीर्थ; एक नदी। **–पंजर**–पु० विष्णुका एक कवच (पु०)। **–पत्नी**–स्त्री० लक्ष्मी; अदिति। **–पद**–पु० आकाश; कमल; क्षीरसागर; एक पहाड़; विष्णुका चरणचिह्न (गयामें)। **–पदी**–स्त्री० गंगा नदी; वृष, कुंभ, वृश्चिक, सिंह आदिकी संक्रांतियाँ; द्वारकापुरी। **–परायण**–वि०, पु० वैष्णव, विष्णुकी भक्ति करनेवाला। **–पर्णिका**–स्त्री० पृश्निपर्णी, पिठवन। **–पर्णी**–स्त्री० भुइँआँवला। **–पीठ**–पु० एक पीठ, तीर्थस्थान (तं०)। **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–पुरी**–स्त्री० वैकुंठ, विष्णुलोक। **–प्रिया**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसीका पौधा। **–प्रीति**–स्त्री० विष्णु-पूजाके लिए ब्राह्मणोंको दी जानेवाली भूमि। **–भ**–पु० श्रवण नक्षत्र। **–माया**–स्त्री० दुर्गा। **–यशा(शस्)**–पु० ब्रह्मयशाका पुत्र और कल्कि अवतारका पिता। **–यान,–रथ**–पु० गरुड़। **–रात**–पु० राजा परीक्षित्। **–लिंगी**–स्त्री० बटेर। **–लोक**–पु० वैकुंठ, गोलोक। **–वल्लभा**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसीका

पौधा; कलियारी, अग्निशिखा। **–वाहन,–वाह्य**–पु० गरुड़। **–वृद्ध**–पु० एक गोत्रकार ऋषि। **–शक्ति**–स्त्री० लक्ष्मी। **–शिला**–स्त्री० शालग्राम; काले-चिकने पत्थरकी गोल बटिया। **–शृंखला**–पु० श्रवण नक्षत्रकी द्वादशी। **–श्रुत**–पु० आशीर्वाद, विष्णु तुम्हारा कल्याण करे। **–संहिता,–स्मृति**–स्त्री० एक प्रसिद्ध स्मृति **–सर्वज्ञ**–पु० एक आचार्य, सायणके गुरु। **–हिला**–स्त्री० तुलसीका पौधा; मरुआ।

विष्णूत्तर–पु० (सं०) विष्णुकी पूजाके निमित्त भूमिका दान।

विष्पद–पु० (सं०) दे० 'विस्पंद'।

विष्पंदन–पु० (सं०) कंपन, धड़कन; आटे, घी और चीनीके योगसे बना हुआ एक व्यंजन।

विष्पर्त्ता–पु० (सं०) पक्षी, चिड़िया।

विष्पर्धा–स्त्री० (सं०) प्रधानता प्राप्त करनेके लिए की जानेवाली होड़। पु० स्वर्ग। वि० स्पर्द्धाशून्य।

विष्फार–पु० (सं०) दे० 'विस्फार'।

विष्यंद–पु० (सं०) बूंद; चूना, बहना, क्षरण; प्रवाह।

विष्यंदन–पु० (सं०) एक तरहकी मिठाई; चूना, बहना; उपटकर बहना; पिघलना।

विष्य–वि० (सं०) विष देकर मार डालने योग्य।

विष्व–वि० (सं०) हिंस्र, हानिकारक; दुष्ट।

विष्वक्(ष्वंच्)–अ० (सं०) सर्वत्र, चारों ओर। पु० विषुव। वि० सर्वव्यापक (यूनिवर्सल); पृथ्वीके अतिरिक्त सारे ब्रह्माण्डका (कॉस्मिक)। **–कच**–वि० जिसके बाल बिखरे हों। **–सम**–वि० जो चारों ओर बराबर हो। **–सेन**–पु० विष्णु; शिव; विष्णुका एक अनुचर; एक मनु; एक ऋषि। **–०कांता**–स्त्री० प्रियंगु। **–०प्रिया**–स्त्री० लक्ष्मी; प्रियंगु **–सेना**–स्त्री० प्रियंगु।

विष्वग्–'विष्वक्'का समासगत रूप। **–अवेक्षण**–वि० चारों ओर देखनेवाला। **–गति**–वि० सर्वत्र जानेवाला। **–वात**–पु०,**–वायु**–स्त्री० एक तरहकी सब ओरसे बहनेवाली हानिकारक वायु। **–वृत**–वि० चारों ओरसे घिरा हुआ। **–सिद्धान्त**–पु० (डॉक्ट्रिन ऑफ यूनीवर्सल्स) वह सिद्धान्त जो सभी तत्वोंके लिए समान रूपसे लागू होता हो। **–सेन**–पु० एक मनु; विष्णु; शिव।

विसंकट–पु० (सं०) सिंह; इंगुदी। वि० भयानक, खौफनाक।

विसंकुल–वि० (सं०) जो घबड़ाया न हो, धीर। पु० घबड़ाहटका न होना।

विसंक्रमण–पु० (सं०) (स्टरिलाइज़ेशन) कीटाणुओंको अत्यधिक ताप द्वारा नष्ट करनेकी प्रक्रिया; शल्य चिकित्सामें चीर फाड़से पूर्ण औजारोंको खौलते पानीमें डालकर धोने आदिकी क्रिया।

विसंगत–वि० (सं०) बेमेल, जिसके साथ संगति न हो।

विसंगति–स्त्री० संगतिका अभाव; (एबसर्डिटी) आजके जीवनकी एक स्थिति, जहाँ प्रत्येक मूल्य या धारणाका ठीक उलटा रूप दिखाई पड़ता है।

विसंचारी(रिन्)–वि० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करनेवाला।

विसंज्ञ–वि० संज्ञाहीन, बेहोश।

विसंज्ञित–वि० (सं०) संज्ञावंचित।

विसंधि–स्त्री० (सं०) मनमाने ढंगसे संधियोंको बिगाड़ना (सा०)।

विसंधित–वि० (सं०) जिनकी संधि संभव न हो।

विसंभरा–स्त्री० (सं०) छिपकली।

विसंभोग–पु० (सं०) पार्थक्य, जुदाई।

विसंमतिलेख–पु० (नोट ऑफ डिस्सेंट) दे० विमति-टिप्पणी।

विसंयुक्त–वि० (सं०) वियुक्त, पृथक्।

विसंवाद–पु० (सं०) झूठा कथन; धोखा; प्रतिज्ञा भंग करना; निराश करना; खंडन, असहमति।

विसंवादक–वि०, पु० (सं०) धोखा देनेवाला; प्रतिज्ञा भंग करनेवाला।

विसंवादी(दिन्)–वि० (सं०) धोखा देनेवाला; वचन भंग करनेवाला; निराश करनेवाला; खंडन करनेवाला। पु० रागमें कभी-कभी लगनेवाला स्वर (संगीत)।

विसंवाहन–पु० (इनस्यूलेशन) विद्युत् या तापका प्रवाह रोकनेके लिए किसी वस्तुको कुचालक पदार्थ द्वारा पृथक् कर देना।

विसंवाहक–पु० (इनस्यूलेटर) चीनी मिट्टी आदिका बना वह कुचालक पदार्थ जो विद्युत् या तापका प्रवाह रोकनेके लिए विद्युन्मय या तापमय पदार्थ तथा विद्युद्विहीन, तापविहीन पदार्थके बीचमें लगा दिया जाता है, अवरोधी।

विसंष्ठुल–वि० (सं०) अस्थिर, क्षुब्ध; विषम, जो समतल न हो।

विसंहत–वि० (सं०) अलग किया हुआ; ढीला किया हुआ।

विस–पु० (सं०) दे० 'बिस'। † सर्व० उस। **–वर्त्म**–पु० आँखोंका एक रोग।

विसदृश–वि० (सं०) असमान, भिन्न (डिस्सिमिलर); असाधारण।

विसभाग–वि० (सं०) जिसका हिस्सा न हो।

विसम–वि० दे० 'विषम'।

विसमाप्ति–स्त्री० (सं०) कार्यका पूरा न होना।

विसयना, बिसवना*–अ० क्रि० अस्त होना।

विसर–पु० (सं०) विभिन्न दिशाओंमें जाना, फैलना; भीड़; झुंड; बड़ी राशि।

विसरण–पु० (सं०) फैलना; ढीला पड़ना; (डिफ्यूज़न) गैसों या द्रवोंका एक दूसरेके साथ मिश्रित हो जाना। इस प्रक्रियामें अणुओंकी गतिके कारण द्रव या गैस पूरे पात्रमें वितरित हो जाती है।

विसर्ग–पु० (सं०) प्रेषण; ढालना, बहाना; फेंकना; दान; हटाना, पृथक् करना; पार्थक्य; निर्माण; परित्याग; कार्य निपटाना (डिस्पोज़ल); मल-त्याग; मोक्ष; कांति, दीप्ति; दक्षिणी अयन; वर्षा; शरद् और हेमन्त ऋतुओंका समूह; शिश्न; एक अक्षरका संकेत (:) जिसका उच्चारण आधे 'ह्' के समान होता है; प्रलय; शिव। **–चुंबन**–पु० विदा होते समयका चुंबन। **–लुप्त**–पु० विसर्गका लोप।

विसर्गी(गिन्)–वि० (सं०) दान करनेवाला; त्याग करनेवाला; विसर्गसे युक्त।

विसर्जन–पु० (सं०) (सं०) दान; अंत, समाप्ति; मलत्याग; त्याग; फेंकना; किसी कामपर भेजना; हाँक ले जाना (पशुओंको); प्रतिमाका धारामें बहाया जाना; विशेष अवसरपर साँड़ छोड़ना; क्षति पहुँचाना; निर्माण; प्रश्नका उत्तर देना; आहूत देवताओंसे जानेकी प्रार्थना करना (आवाहनका उलटा)।

विसर्जनी–स्त्री० (सं०) गुदाके मुँहपरके तीन वलयोंमेंसे एक।

विसर्जनीय–वि० (सं०) भेजा, निकाला जानेवाला। पु० एक अक्षरका संकेत, विसर्ग।

विसर्जयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) त्याग करनेवाला।

विसर्जिका–स्त्री० (सं०) त्रेता युग।

विसर्जित–वि० (सं०) भेजा हुआ; हटाया हुआ; त्यक्त; समाप्त।

विसर्प–पु० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करना; रेंगना; फैलना; कार्यका अप्रत्याशित दुःखद परिणाम (ना०); एक चर्मरोग, खुजली। **–घ्न**–पु० मोम।

विसर्पण–पु० (सं०) सरकना; रेंगना; साँपकी तरह लहराती आकृति या स्थिति (मिएण्डर); फैलना; फेंकना; स्थान-त्याग; वृद्धि, बाढ़; फोड़ेका स्फोट।

विसर्पि, विसर्पिका–स्त्री० (सं०) खुजली नामका रोग।

विसर्पिणी–स्त्री० (सं०) शंखिनी; यवतिक्ता।

विसर्पी(पिन्)–वि० (सं०) पसरने, फैलनेवाला (पौधा या बेल) (क्रीपिंग); रेंगनेवाला, लहरियादार (मिएण्डर); खुजली रोगसे पीड़ित। पु० खुजली रोग; एक नरक।

विसल–पु० (सं०) दे० 'बिसल'।

विसादा–पु० (अ०) मस्नद, बड़ा तकिया।

विसामग्री–स्त्री० (सं०) साधनका अभाव; कार्य उत्पन्न करनेवाले कारणोंका न रहना।

विसार–पु० (सं०) फैलाव; उत्पत्ति; विस्तार; निकास; प्रवाह; मछली; काष्ठ; बल्ला; रेंगना; सरकना; निकलना।

विसारण–पु० (सं०) फैलाना; कार्यसम्पादन।

विसारथि–वि० (सं०) जिसके साथ सारथि न हो।

विसारिणी–स्त्री० (सं०) माषपर्णी।

विसारित–वि० (सं०) फैलने, चलनेमें प्रवृत्त किया हुआ; संपादित।

विसारी (रिन्)–वि० (सं०) निकलनेवाला; चलनेवाला; फैलनेवाला। पु० मछली।

विसाल*–वि० दे० 'विशाल'। पु० (अ०) मिलन, संयोग (प्रेमी-प्रेमिकाका, आत्मा-परमात्माका); संभोग; मृत्यु।

विसिनी–स्त्री० (सं०) कमलका पौधा; मृणाल; पद्म-समूह।

विसिल–वि० (सं०) विस; पद्मनालसे संबंध रखनेवाला।

विसुकृत–वि० (सं०) सुकर्मरहित। पु० दुष्कर्म।

विसुकृत्–वि० (सं०) जिसके कर्म अच्छे न हों।

विसुख–वि० (सं०) निरानंद।

विसुहृत् (द्)–वि० (सं०) मित्रहीन।

विसूचन–पु० (सं०) जनानेकी क्रिया; सूचित करना।

विसूचिका, विसूची–स्त्री० (सं०) दे० 'विपूचिका'।

विसूत्र–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न; विरक्त।

विसूरण–पु०, **विसूरणा**–स्त्री० (सं०) दुःख, शोक; चिता; विरक्ति।

विसूरित–पु० (सं०) अनुताप, शोक; दुःख।

विसूरिता–स्त्री० (सं०) ज्वर।

विसृज्य–वि० (सं०) भेजा, छोड़ा जानेवाला; उत्पन्न किया जानेवाला।

विसृत–वि० (सं०) फैला, फैलाया हुआ; ताना हुआ; कथित, उक्त।

विसृत्वर–वि० (सं०) फैलने, व्याप्त होनेवाला; रेंगनेवाला।

विसृमर–वि० (सं०) रेंगने, सरकनेवाला; चारों ओर फैलनेवाला।

विसृष्ट–वि० (सं०) त्यक्त, छोड़ा हुआ; प्रेषित; फेंका हुआ; निर्मित; प्रदत्त; हटाया हुआ। पु० विसर्जनीय, विसर्ग (व्या०)।

विसृष्टि–स्त्री० (सं०) प्रेषण; परित्याग; प्रदान; स्राव; निर्माण; संतान।

विसैन्यीकरण–पु० (सं०) (डिमिलिटराइज़ेशन) सैन्य विघटन, दे० 'असैनिकीकरण'।

विसोढ–वि० (सं०) सहन किया हुआ।

विसोम–वि० (सं०) सोमरहित; चंद्रहीन।

विसौख्य–पु० (सं०) दुःख, कष्ट।

विस्खलन–पु० (सं०) गिरना, स्खलन; कर्तव्य या नीति पथसे हट जाना।

विस्खलित–वि० (सं०) (स्वर) जो ठीक तरह न निकलता हो; गिरता हुआ; भूल करता हुआ; भटका हुआ।

विस्त–पु० (सं०) दे० 'विस्त'।

विस्तर–वि० (सं०) विस्तृत; लंबा; प्रभूत। पु० फैलाव, विस्तार; ब्योरा, ब्योरेवार विवरण; व्याप्ति; प्राचुर्य; राशि; समूह; आसन, पीठ, पलंग; प्रणय; शिव; आधार।

विस्तरण–पु० (सं०) विस्तार करना।

विस्तरणी–स्त्री० (स्ट्रेचर) असमर्थ रोगी या हताहत व्यक्तिको उठाने-ले जानेका फैला हुआ ढाँचा जिसे दोनों ओरसे दो आदमी थामे रहते हैं। **–वाहक**–पु० (स्ट्रेचर-बेयरर) विस्तरणीमें रोगी या आहत व्यक्तिको उठाकर ले जानेवाला (प्रत्येक) व्यक्ति।

विस्तार–पु० (सं०) फैलाव; लंबाई-चौड़ाई; विशालता; ब्योरा; वृत्तका व्यास; क्षुप; वृक्षकी शाखाएँ। **–वाद**–पु० (एक्सपैंशनिज्म) अधिकार क्षेत्र और सीमाओंका विस्तार करते रहनेका सिद्धान्त।

विस्तारण–पु० (सं०) पैर आदि फैलानेकी क्रिया; कार्यक्षेत्र बढ़ाना।

विस्तारना*–स० क्रि० फैलाना।

विस्तारिणी–स्त्री० (सं०) एक श्रुति (संगीत)।

विस्तारित–वि० (सं०) फैलाया हुआ; विस्तारपूर्वक कहा हुआ।

विस्तारी (रिन्)–वि० (सं०) विस्तारयुक्त; बड़ा; शक्तिशाली। पु० वटवृक्ष।

विस्तारी विधेयक–पु० (एक्सटेंडिंग बिल) किसी पुराने अधिनियम आदिकी अवधि बढ़ानेके लिए विधानसभा आदिमें उपस्थापित विधेयक।

विस्तीर्ण–वि० (सं०) फैला हुआ, विस्तृत; लंबा-चौड़ा, विशाल; अत्यधिक; ··· से आवृत। **–कर्ण**–पु० हाथी। **–जानु**–स्त्री० वक्र पैरोंवाली लड़की (विवाहके अयोग्य)। **–पर्ण**–पु० मानकंद। **–भेद**–पु० एक बुद्ध।

विस्तृत–वि० (सं०) ··· से ढका हुआ; फैला हुआ; खुला हुआ; विस्तारवाला; बड़ा, विशाल; प्रचुर; व्याप्त।

विस्तृति–स्त्री० (सं०) फैलाव; विस्तार; व्याप्ति; लंबाई चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई; वृत्तका व्यास।

विस्थान–वि० (सं०) दूसरे स्थान या अंगसे संबंध रखनेवाला।

विस्थापन–पु० (सं०) (डिस्प्लेसमेंट) बलपूर्वक किसी स्थानसे हटाना।

विस्थापित–वि० (डिसप्लेस्ड) जो अपने निवासस्थानसे जबरन् हटा दिया गया हो, उद्वासित।

विस्थिति–स्त्री० (सं०) उलट-फेरकी सम्भावनावाली विकट स्थिति।

विस्पंद–पु० (सं०) स्पंदन, धड़कन; एक व्यंजन; जब वायुमें दो ध्वनि तरंगें, जिनकी आवृतिमें थोड़ा ही अन्तर हो, गमन करती हैं तो किसी स्थानपर खड़े श्रोताको आवाज़में नियमित चढ़ाव उतार सुनाई पड़ता है। एक चढ़ाव-उतार एक विस्पन्द कहलाता है।

विस्फार–पु० (सं०) कंपन, थरथराहट; ज्याकी टंकार; खुलना; विकास; विस्तार; तेजी, फुर्ती।

विस्फारक–पु० (सं०) एक सन्निपात ज्वर। वि० विस्फार करनेवाला।

विस्फारण–पु० (सं०) फैलाना (डैना); खोलना; फाड़ना; धनुष चढ़ाना।

विस्फारित–वि० (सं०) खोला, फैलाया हुआ; फाड़ा हुआ; प्रकाशित; प्रकट किया हुआ। पु० धनुष् चढ़ाना या वाण चलाना।

विस्फीत–वि० (सं०) प्रचुर।

विस्फीति–स्त्री० (डीप्लेशन) बहुत फूले हुए पदार्थमेंसे हवा निकाल लेने, फुलाव कम कर देनेकी क्रिया; मुद्राका बाहुल्य या विस्तार घटाकर पूर्व स्थितिपर पहुँचा देना।

विस्फुट, विस्फुटित–वि० (सं०) खिला हुआ; खुला हुआ।

विस्फुर–वि० (सं०) जिसकी आँखें खूब खुली हों।

विस्फुरण–पु० (सं०) (विद्युत्का) कंपन; स्पंदन; कौंध।

विस्फुरणी–स्त्री० (सं०) एक वृक्ष, तेंदू।

विस्फुरित–वि० (सं०) कंपित; स्फूर्तियुक्त, चंचल; बढ़ा हुआ, सूजा हुआ।

विस्फुलिंग–पु० (सं०) चिनगारी; एक विष।

विस्फुलिंगक–वि० (सं०) चमकता हुआ।

विस्फूर्ज–पु० (सं०) गर्जन।

विस्फूर्जन–पु० (सं०) गर्जन; वृद्धि, बढ़ना; फैलना।

विस्फूर्जनी–स्त्री० (सं०) तेंदू, तिंदुक वृक्ष।

विस्फूर्जित–वि० (सं०) शब्दायमान; स्फुटित; फैलाया हुआ; क्षुब्ध, कंपित। पु० गरजना; सिकोड़ना; स्फुटन।

विस्फोट–पु० (सं०) फटना, फूट पड़ना; गैस, बारूद आदिका अग्निके कारण जोरका शब्द करते हुए फूट पड़ना (एक्सप्लोज़न); जहरीला फोड़ा।

विस्फोटक–पु० (सं०) बड़ा फोड़ा; एक प्रकारका कुष्ठ; चेचक; फूटने, भड़कनेवाला पदार्थ। वि० भड़कने, फूटनेवाला।

विस्फोटन–पु० (सं०) (ब्लैस्टिंग) भभकनेवाले पदार्थोंका फूट पड़ना;. फोड़ा निकलना; गर्जन।

विस्मयंकर, विस्मयंगम–वि० (सं०) आश्चर्यजनक।

विस्मय–वि० (सं०) गर्वहीन; जिसका गर्व नष्ट हो गया हो। पु० आश्चर्य, अचंभा; एक स्थायी भाव (समझमें न आनेवाले पदार्थके देखने-सुनने आदिसे होनेवाला आश्चर्य–सा०); घमंड; संदेह; अनिश्चय; दे० 'विसमय'; विषाद, दुःख। **–कर, –कारी (रिन्)**–वि० आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।

विस्मयन–पु० (सं०) आश्चर्य, अचंभा।

विस्मयाकुल–वि० (सं०) आश्चर्ययुक्त।

विस्मया दिबोधक–पु० (सं०) आश्चर्य, खेद, दुःख, प्रसन्नता आदि व्यक्त करनेवाला अव्यय (व्या०); जैसे, वाह, ओह, हाय !

विस्मयी (यिन्)–वि० (सं०) विस्मययुक्त; अचंभेमें पड़ा हुआ।

विस्मरण–पु० (सं०) भूल जाना, भुलाना ।

विस्मापक–वि० (सं०) आश्चर्यजनक ।

विस्मापन–पु० (सं०) बाजीगर; भ्रम, छल; कामदेव; गंधर्व-नगर; आश्चर्यमें डालना; अचंभेमें डालनेका साधन । वि० आश्चर्यकारक ।

विस्मारक–वि० (सं०) भुला देनेवाला ।

विस्मारित–वि० (सं०) भूल जानेके लिए प्रेरित किया हुआ ।

विस्मित–वि० (सं०) आश्चर्ययुक्त, चकित; घमंडी । पु० एक वृत्त ।

विस्मिति–स्त्री० (सं०) आश्चर्य, अचंभा, विस्मय ।

विस्मृत–वि० (सं०) भूला हुआ । **–पूर्वसंस्कार**–वि० पहलेका वादा या निश्चय भूल जानेवाला । **–संस्कार**–वि० वादा आदि भूल जानेवाला ।

विस्मृति–स्त्री० (सं०) विस्मरण, भूल जाना ।

विस्मर–वि० (सं०) आश्चर्यान्वित, चकित, विस्मित ।

विस्रंभ–पु० (सं०) दे० 'विश्रंभ' ।

विस्रंस–पु० (सं०) पतन; क्षरण; क्षय; ढीलापन; निर्बलता ।

विस्रंसन–पु० (सं०) गिराना, पतनका कारण होना; ढीला करना; बंधन खालना; रेचन ।

विस्रंसा–स्त्री० (सं०) दे० 'विस्रंस' ।

विस्रंसिका–स्त्री० (सं०) आहुति देनेका एक उपकरण ।

विस्रंसी(सिन्)–वि० (सं०) गिरनेवाला, सरक या फिसलकर गिर जानेवाला (जैसे हार) ।

विस्र–पु० (सं०) कच्चे मांसकी गंध; रक्त; वसा । **–गंध**–स्त्री० कच्चे मांसकी गंध । वि० कच्चे मांसकी गंधवाला । **–गंधा**–स्त्री० हपुषा नामका पौधा । **–गंधि**–स्त्री० हरताल ।

विस्रब्ध–वि० (सं०) दे० 'विश्रब्ध' ।

विस्रव–पु० (सं०) क्षरण, बहाव; धारा ।

विस्रवण–पु० (सं०) बहना, क्षरण, रसना ।

विस्रसा–स्त्री० (सं०) क्षीणता; अशक्तता; वृद्धावस्था ।

विस्रस्त–वि० (सं०) बिखरा हुआ; ढीला पड़ा हुआ; कमजोर, अशक्त । **–चेता(तस्)**–वि० उदास, विषण्ण । **–बंधन**–वि० जिसके बंधन खुल गये हों । **–वसन**–वि० जिसके वस्त्र ढीले पड़ गये हों । **–हार**–वि० जिसका हार सरककर गिर गया हो ।

विस्रस्य–वि० (सं०) ढीला किया जानेवाला; खोला जानेवाला ।

विस्रा–(सं०) बिसायँध; हपुषा; चरबी ।

विस्राम*–पु० विश्राम, आराम ।

विस्राव–पु० (सं०) दे० 'विस्रव'; माँड़ ।

विस्रावण–पु० (सं०) बहाना; रक्त बहाना; अर्क चुलाना; एक तरहकी गुड़की शराब ।

विस्रावित–वि० (सं०) बहाया हुआ ।

विस्रुत–वि० (सं०) बहा हुआ, रिसा हुआ ।

विस्रुति–स्त्री० (सं०) बहना, क्षरण ।

विस्वर–वि० (सं०) स्वरहीन; बेमेल (स्वर); कर्कश ।

विस्वाद–वि० (सं०) स्वादहीन ।

विहंग–पु० (सं०) पक्षी; बाण; बादल; सूर्य; चंद्रमा; एक नाग । वि० आकाशमें गमन करनेवाला । **–राज**–पु० गरुड़ । **–हा(हन्)**–पु० बहेलिया ।

विहंगक–पु० (सं०) छोटी चिड़िया । वि० आकाशमें गमन करनेवाला ।

विहंगम–पु० (सं०) पक्षी; सूर्य; एक देववर्ग । **–मार्ग**–पु० योग साधनाका एक मार्ग; पिपीलिका मार्गसे भिन्न ।

विहंगमा–स्त्री० (सं०) चिड़िया (मादा); बहँगी ।

विहंगमिका–स्त्री० (सं०) बहँगी ।

विहंगाराति–पु० (सं०) बाज ।

विहंगिका–स्त्री० (सं०) बहँगी ।

विहँडना*–स० क्रि० नष्ट करना, ध्वस्त करना; मार डालना ।

विहंतव्य–वि० (सं०) वध करने योग्य; नष्ट करने योग्य ।

विहँसना*–अ० क्रि० मुसकाना ।

विहग–पु० (सं०) पक्षी; बाण; सूर्य; चंद्र; मेघ; ग्रह; ग्रहोंका एक विशेष अवस्थान । **–पति,–राज**–पु० गरुड़ । **–वेग**–पु० एक विद्याधर ।

विहगेंद्र–पु० (सं०) गरुड़ ।

विहगेश्वर–पु० (सं०) गरुड़ ।

विहत–वि० (सं०) विदीर्ण; मारा हुआ; आहत; निवारित; जिसका प्रतिरोध किया गया हो; बाधित । पु० जैनमंदिर ।

विहति–स्त्री० (सं०) आघात; वध; रोक; निवारण; भगाना; विफलता; पराभव । पु० मित्र, साथी ।

विहनन–पु० (सं०) हिंसा, वध; चोट पहुँचाना; प्रतिरोध करना; बाधा डालना; धुनकी ।

विहर–पु० (सं०) हरण; स्थान-परिवर्तन; पार्थक्य, वियोग; अभाव ।

विहरण–पु० (सं०) हटाना, ले जाना; स्थान बदलना; खोलना, फैलाना; आनंदके लिए घूमना-फिरना; मौज; वियोग ।

विहरना*–अ० क्रि० विहार करना, घूमना-फिरना ।

विहर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) डाकू; इधर-उधर घूमकर मौज लेनेवाला ।

विहर्ष–पु० (सं०) अत्यधिक प्रसन्नता । वि० आनंदरहित ।

विहव–पु० (सं०) यज्ञ; युद्ध ।

विहसतिका, विहसितिका–स्त्री० (सं०) मुसकान ।

विहसन–पु० (सं०) मंद, मधुर हास्य, मुसकान; किसीकी हँसी उड़ाना ।

विहसित–पु० (सं०) मुसकान । वि० मुसकराता हुआ; जो हँसा गया हो ।

विहस्त–वि० (सं०) हस्तहीन; व्याकुल, हतबुद्धि; बेबस; अननुभवी; अशक्त; विद्वान्, चतुर ।

विहस्तित–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, व्याकुल ।

विहाग–पु० एक राग ।

विहान–पु० भोर, प्रातःकाल, अंत (दे० बिहान) । † अ० कल ।

विहाना*–स० क्रि० छोड़ना, अपनेको पृथक् करना । अ० स० विहाना (बीतना, बिताना) ।

विहापित–वि० (सं०) त्याग करनेके लिए प्रेरित; प्रदत्त । पु० दान ।

विहाय(स्)–पु० (सं०) आकाश ।

विहायगति–स्त्री० आकाशमें गमन करनेकी शक्ति (जै०) ।

विहायस–पु० (सं०) आकाश; पक्षी, दान ।

विहाया(यस्)–पु० (सं०) पक्षी ।

विहार–पु० (सं०) हरण; मटरगश्ती; घूमकर मनोरंजन करना; कदम बढ़ाना; क्रीड़ा; क्रीड़ोद्यान, मनोरंजनका स्थान; भिक्षुओंका मठ; कंधा; इंद्रका प्रासाद या ध्वजा; प्रासाद; फैलाव; एक पक्षी; बिंदुरेखक । **–गृह**–पु० क्रीड़ा-भवन । **–देश**–पु० मनोरंजनका स्थान । **–भूमि**–स्त्री० मनोरंजनका स्थान; चरागाह । **–वन**–पु० क्रीड़ोद्यान । **–वापी**–स्त्री० क्रीड़ाके लिए बना हुआ तालाब । **–स्थली**–स्त्री०,**–स्थान**–पु० क्रीड़ास्थान ।

विहारक–वि० (सं०) घूम-फिरकर विहार करनेवाला; बौद्ध मठ-संबंधी ।

विहारिका–स्त्री० (सं०) बौद्ध मठ ।

विहारी(रिन्)–वि० (सं०) मनोरंजनके लिए घूमनेवाला;... तक फैलनेवाला (समासमें); अवलंबित; आनंद लेनेवाला; सुंदर । पु० कृष्ण ।

विहास–पु० (सं०) मुसकान ।

विहिंसक–वि० (सं०) क्षति, हानि पहुँचानेवाला ।

विहिंसन–पु० (सं०) किसीको हानि, क्षति पहुँचाना ।

विहिंस्र–वि० (सं०) बुराई करनेवाला, हानिकारक ।

विहि–पु० (सं०) विधाता; विधान । स्त्री० विधि ।

विहित–वि० (सं०) किया हुआ, कृत; निर्मित; निश्चित; आदिष्ट; नियुक्त; रखा हुआ; विभक्त; करने योग्य; उचित; जिसका विधान किया गया हो । पु० आदेश ।

विहित-निषिद्ध कर्म–पु० (ऐक्ट्स ऑफ कमीशन ऐंड ओमिशन) वे कर्म जिन्हें करनेका शास्त्रीय आदेश हो तथा वे जिन्हें न करनेका शास्त्रीय विधान हो; वे कर्म जिन्हें करना चाहिये तथा वे जिन्हें न करना चाहिये ।

विहिति–स्त्री० (सं०) कार्यका विधान; कार्य-विधि; कार्य-संपादन; व्यवस्था।

विहीन–वि० (सं०) पूर्णत: त्यक्त; नीच; वंचित, रहित। **–जाति, –योनि, –वर्ण**–वि० नीच जातिका। **–तिलक**–वि० सांप्रदायिक चिह्नसे रहित।

विहीनित–वि० (सं०)···से रहित, वंचित।

विहुंडन–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर।

विहून*–वि० रहित।

विहृत–वि० (सं०) क्रीड़ित; विभक्त; फैलाया हुआ; हटाया हुआ; हरण किया हुआ। पु० स्त्रियोंके दस हावोंमेंसे एक, लज्जाके कारण कहनेके समय भी वातका न कहना (सा०)।

विहृति–स्त्री० (सं०) हरण, ले जाना; क्रीड़ा, विहार; फैलाव; वाढ़, वृद्धि।

विहेठ–पु० (सं०) क्षति, वुराई; उत्पीड़न।

विहेठक–वि० (सं०) हानि पहुँचानेवाला, वुराई करनेवाला; निंदक।

विहेठन–पु० (सं०) हानि पहुँचाना; रगड़ना, पीसना; पीड़ा देना; कष्ट; रंज।

विह्वल–वि० (सं०) क्षुब्ध, अशांत; व्याकुल, घवड़ाया हुआ; भयाभिभूत; आपेसे वाहर; हतवुद्धि; कष्टग्रस्त; हताश; पिघला हुआ। **–चेतन, –चेता(तस्), –हृदय**–वि० जिसका मन वहुत व्याकुल हो; हतोत्साह। **–तनु**–वि० जिसका शरीर शिथिल पड़ गया हो। **–लोचन**–वि० जिसकी आँखें स्थिर न हों।

विह्वलता–स्त्री०, **विह्वलत्व**–पु० (सं०) क्षोभ, घवड़ाहट; चिंता, परेशानी।

विह्वलांग–वि० (सं०) दे० 'विह्वल-तनु'।

विह्वलित–वि० (सं०) दे० 'विह्वल'। **–सर्वांग**–वि० जिसका सारा शरीर काँप रहा हो।

वींखा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चाल; नाच, नर्तन; घोड़ेकी एक चाल; संधि; शूकशिंवी।

वीक–पु० (सं०) वायु; पक्षी; मन; (अं०) सप्ताह। वि० कमजोर, दुर्वल।

वीकाश–पु० (सं०) निर्जन स्थान; चमक, कांति; प्रकाश।

वीक्ष–पु० (सं०) दृष्टि, नजर, निगाह; आश्चर्य; दृश्य वस्तु। (लेंस) किरणोंको केंद्रीभूत करनेवाला शीशेका ताल, लेंस।

वीक्षण–पु० (सं०) विशेष रूपसे देखना; निरीक्षण; जाँच; दृष्टि, नजर; आँख।

वीक्षणीय–वि० (सं०) देखने योग्य; दर्शनीय; विचार करने योग्य; दृग्गोचर।

वीक्षा–स्त्री० (सं०) देखना; दर्शन; जाँच-पड़ताल; ज्ञान; वेहोशी।

वीक्षित–वि० (सं०) देखा हुआ। पु० दृष्टि, नजर।

वीक्षिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) देखनेवाला।

वीक्ष्य–पु० (सं०) आश्चर्य, विस्मय; आश्चर्यजनक पदार्थ; दृश्य; नर्तक, अभिनेता; घोड़ा। वि० दर्शनीय; आश्चर्यजनक।

वीचि, वीची–स्त्री० (सं०) तरंग, लहर; अविवेक; अवकाश; सुख; चमक, दीप्ति; अल्पता; किरण। **–क्षोभ**–पु० तरंगोंका उठना। **–तरंगन्याय**–पु० लगातार उठनेवाली लहरोंकी तरह एकके वाद दूसरा कार्य होना। **–माली(लिन्)**–पु० समुद्र। **–काक**–पु० एक पक्षी, जलकौआ।

वीज–पु० (सं०) दे० 'वीज' (समास भी)। **–कर**–पु० उड़दकी दाल।

वीजक–पु० (सं०) दे० 'वीजक'। **–सार**–पु० विजय-सारके वीज; विजौरा नीवूका सार; सफेद सहिजन।

वीजका–स्त्री० (सं०) मुनक्का।

वीजकाह्व–पु० (सं०) एक पेड़, विजौरा नीवू।

वीजन–पु० (सं०) पंखा; चँवर; पंखा झलना; चकोर; जीवंजीव नामक पक्षी; पदार्थ, वस्तु; चादर; लोध।

वीजांकुरन्याय–पु० (सं०) दे० 'वीजांकुरन्याय'।

वीजा–स्त्री० (सं०) विजली। वि० दूसरा। पु० (अं० वीजा) पार-पत्रपर अंकित लेख जिसके आधारपर विदेशी यात्रीको विदेशमें घूमनेका अधिकार प्राप्त होता है।

वीजाम्ल–पु० (सं०) वृक्षाम्ल, चूका।

वीजाविक–पु० (सं०) ऊँट।

वीजित–वि० (सं०) झला हुआ, पंखा झलकर ठंढा किया हुआ; जलसे सींचा हुआ।

वीजी(जिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'वीजी'।

वीजोदक–पु० (सं०) दे० 'वीजोदक'।

वीज्य–वि० (सं०) पंखा झलने योग्य; दे० 'वीज्य'।

वीटक–पु० (सं०) पानका वीड़ा।

वीटनीक–अमेरिकाका एक ऐसा युवक समूह जो पुरानी रूढ़ियोंका भंजक है तथा जो अराजकताकी हदतक स्वतंत्र होनेके लिए कृतसंकल्प है।

वीटा–स्त्री० (सं०) प्राचीन कालका लड़कोंका एक खेल, एक तरहका गुल्ली-डंडा; गुल्ली। **–मुख**–पु० मुँहमें गुल्ली पकड़ना।

वीटि, वीटी–स्त्री० (सं०) नागवल्ली; पानका वीड़ा; पहने कपड़ेमें लगायी जानेवाली गाँठ।

वीटिका–स्त्री० (सं०) दे० 'वीटि'; कपड़ेका वंधन या गाँठ।

वीण–स्त्री० दे० 'वीणा'।

वीणा–स्त्री० (सं०) सितार जैसा एक वाजा जिसके दोनों सिरोंपर तुंवे लगे रहते हैं; विजली; एक योगिनी; ग्रहोंका एक विशेष अवस्थान (ज्यो०); साधकोंकी भाषामें जीवकी काया। **–गणकी(किन्), –गणगी(गिन्)**–पु० गायकदलका मुखिया। **–गाथी(थिन्)**–पु० वीणावादक। **–तंत्र**–पु० एक तंत्र। **–दंड**–पु० वीणाका लंवा दंड, तुंवोंके वीचका हिस्सा। **–धारी**–स्त्री० एक कर्नाटकी रागिनी। **–पाणि**–पु० नारद। स्त्री० सरस्वती। **–प्रसेव**–पु० वीणाका वह पुरजा जिससे तारका स्वर मंद या तीव्र किया जाता है। **–रव**–पु० वीणाका स्वर। वि० वीणाकी तरह गुनगुनानेवाला। **–वंश-शलाका**–स्त्री० नीचेकी वह खूंटी जिसमें तार वाँधे जाते हैं। **–वाद**–पु० वीणा वजाना। वि० वीणा वजानेवाला। **–वादक**–पु० वीणा वजानेवाला। **–वादन**–पु० मिजराव; वीणा वजाना। **–वादिनी**–स्त्री० सरस्वती। **–वाद्य**–पु० वीणा वजाना। **–विनोद**–पु० एक विद्याधर। **–शिल्प**–पु० वीणा वजानेकी कला। **–हस्त**–पु० शिव। वि० जिसके हाथमें वीणा हो।

वीणानुबंध–पु० (सं०) वीणाका नीचेके हिस्सेका वह भाग जहाँ तार वाँधे जाते हैं।

वीणावती–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वीणास्य–पु० (सं०) नारद।

वीणी(णिन्)–वि० (सं०) वीणायुक्त; वीणा वजानेवाला।

वीतंस–पु० (सं०) चिड़ियों या जानवरोंको फँसाने या वंद करनेका जाल, पिंजड़ा या इस तरहका कोई साधन।

वीत–वि० (सं०) गत, लुप्त; प्रस्थित; छोड़ा हुआ; अपवाद किया हुआ; स्वीकृत; जो युद्धमें काम आने योग्य न हो; शांत; पालतू; रहित, निवृत्त; इच्छित; धारण किया हुआ, पहना हुआ, आवृत। पु० युद्धके अनुपयुक्त हाथी या घोड़ा; हाथीको अंकुश गड़ाकर और पैरोंसे दवाकर चलनेके लिए प्रेरित करना; अनुमानका एक प्रकार। **–कल्मष**–वि० पापसे मुक्त.। **–काम**–वि० इच्छासे रहित। **–घृण**–वि० निष्ठुर। **–चिंत**–वि० चितामुक्त। **–जन्म-जरस**–वि० जन्म और वुढ़ापेसे मुक्त। **–त्रसरेणु**–वि० रागहीन। **–तृष्ण**–वि० जिसमें वासनाएँ न रह गयी हों। **–दंभ**–वि० निरभिमान, विनम्र। **–भय**–वि० निर्भीक। पु० विष्णु; शिव। **–भी**–वि० निर्भीक। **–भीति**–वि० निर्भीक। पु० एक असुर। **–मत्सर**–वि० मत्सररहित, द्वेषादिसे रहित। **–मल**–वि० स्वच्छ; निष्पाप। **–मोह**–वि० मोहसे रहित। **–राग**–वि० वासनारहित; इच्छाहीन; शांत; विना रंगका। पु० वह व्यक्ति जिसने आसक्ति आदिका परित्याग कर दिया है; वौद्ध या जैन महात्मा। **–विष**–वि० साफ, शुद्ध, निर्मल। **–व्रीड़**–वि० निर्लज्ज। **–शंक**–वि० नि:शंक, निर्भय। **–शोक**–वि० शोकरहित, गतशोक। पु० अशोक वृक्ष। **–सूत्र**–पु० जनेऊ। **–स्पृह**–वि० इच्छारहित।

–हव्य–पु० (सं०) यज्ञमें हव्य या आहुति देनेवाला। **–हिरण्मय**–वि० जिसके पास सुवर्णपात्र न हो। **–होत्र**–पु० (सं०) अग्नि; सूर्य; याज्ञिक।

वीतक–पु० (सं०) कपूर और चंदनका चूर्ण रखनेका पात्र; घिरी हुई जमीन, बाड़ा।

वीतार्चि(स्)–वि० (सं०) जिसकी ज्वाला, लपट समाप्त हो गयी हो।

वीति–स्त्री० (सं०) दावत; गति; कांति; पार्थक्य; प्रजनन; भोग; सफाई करना। पु० घोड़ा। **–होत्र**–पु० अग्नि; सूर्य। **–०दयिता,–०प्रिया**–स्त्री० स्वाहा।

वीतिका–स्त्री० (सं०) मुलेठी; नीलिका।

वीती(तिन्)–पु० (सं०) एक ऋषि।

वीतोत्तर–वि० (सं०) निरुत्तर।

वीथि, वीथी–स्त्री० (सं०) पंक्ति, कतार; दौड़का चक्र; घुड़दौड़का रास्ता; बाजार; दुकान; चित्रोंकी कतार; नक्षत्रोंके अवस्थानका एक भाग; सूर्यका मार्ग; मकानमें सामनेका छज्जा; दीर्घा (गैलरी); दृश्य काव्यका एक भेद जिसमें एक ही अंक, एक-दो पात्र और विषय शृंगारप्रधान होता है और पात्र आकाश-भाषितके रूपमें बोलता है।

वीथिका–स्त्री० (सं०) पंक्ति; सड़क; चित्रोंकी पंक्ति; चित्रांकित दीवार या पट्ट; छज्जा; काव्यका एक भेद (दे० 'वीथी')।

वीथ्यंग–पु० (सं०) वीथीका एक अंग (ना०)।

वीध*–स्त्री० विधि, प्रकार।

वीध्र–पु० (सं०) आकाश; वायु; अग्नि। वि० शुद्ध, स्वच्छ।

वीनाह–पु० (सं०) कुएँका जँगला या ढक्कन।

वीनाही(हिन्)–पु० (सं०) कुआँ।

वीप–वि० (सं०) जलहीन।

वीपा–स्त्री० (सं०) बिजली।

वी० पी०–पु० (अं०) (वेल्यू पेएबुल) डाक द्वारा भेजे पदार्थोंका मूल्य वसूल करनेकी व्यवस्था; इस प्रकार भेजी गयी वस्तु।

वीप्सा–स्त्री० (सं०) व्याप्ति; कार्यका नैरंतर्य सूचित करनेके लिए शब्दकी आवृत्ति (जैसे बोलते बोलते), पुनरुक्ति; एक शब्दालंकार जहाँ आदर, आश्चर्य आदिका भाव प्रकट करनेके लिए एक शब्द कई बार कहा जाय।

वीभत्स–पु० (सं०) बीभत्स।

वीरंधर–पु० (सं०) मोर, मयूर; जंगली जानवरोंके साथ होनेवाली लड़ाई; चमड़ेकी फतूही।

वीर–वि० (सं०) बहादुर, जवाँमर्द; शूर; शक्तिशाली; बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठ। पु० योद्धा; एक रस (जिसके चार भेद हैं–दानवीर, धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर); एक मात्रिक छंद, आल्हा (सा०); तांत्रिक साधनका एक प्रकार; अभिनेता; अग्नि; यज्ञाग्नि; पुत्र; पति; अर्जुन वृक्ष; जैन; करवीर वृक्ष; विष्णु; सरकंडा; काली मिर्च; काँजी; खस; चौलाईका साग; तुरई; उशीरमूल; शृंगी विष; सिंदूर; लोहा; पुष्करमूल; आरुक; वाराही कंद; बाय विडंग; एक असुर; धृतराष्ट्रका पुत्र; भारद्वाजका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; * भाई। स्त्री० दे० 'वीरा' (स्त्री०)। **–करा**–स्त्री० एक नदी। **–कर्म(न्)**–पु० वीरतापूर्ण कार्य। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० वीरोचित कर्म करनेवाला। **–काम**–वि० पु० पुत्रका इच्छुक, पुत्रैषी। **–काव्य**–पु० युद्धादिका वर्णन करनेवाला वीररसका काव्य; रासो। **–कीट**–पु० तुच्छ सैनिक। **–कुक्षि**–स्त्री० वीर पुत्र पैदा करनेवाली स्त्री; पुत्र जननेवाली स्त्री। **–केशरी(रिन्),–केसरी(रिन्)**–वि० वीरोंमें सिंहके समान पराक्रमी। **–क्षुरिका**–स्त्री० कटार। **–गति**–स्त्री० युद्धमें प्राणांत होनेपर मिलनेवाली गति, स्वर्ग। **–गाथा**–स्त्री० वीरोंकी गाथा। **–०काल**–पु० हिन्दी साहित्यका एक विशिष्ट काल, जिसमें वीररस प्रधान काव्यका बाहुल्य रहा है, (सं० १०७५–१३७५)। **–गीत**–पु० (बैलड) वीरता-सूचक या वीररसपूर्ण गीत। **–गोत्र**–पु० वीरोंका कुल। **–गोष्ठी**–स्त्री० वीरोंका आपसका वार्तालाप। **–चक्र**–पु० एक तांत्रिक चक्र; वीरोंकी सेना; वीरतापूर्ण कार्योंके लिए सैनिकोंको भारत सरकार द्वारा दिया जानेवाला पदक; विष्णु। **–चक्षुष्मान्(ष्मत्)**–पु० विष्णु। **–चर्या**–स्त्री० वीरतापूर्ण, साहसिक कार्य। **–ज**–वि० वीरसे उत्पन्न। **–जनन**–वि० वीर उत्पन्न करनेवाला। **–जननी**–स्त्री० वीर उत्पन्न करनेवाली स्त्री। **–जयंतिका**–स्त्री० सैनिकोंका वह नृत्य जो युद्धमें जाते समय या विजय-प्राप्तिके बाद होता है; युद्ध। **–तरु**–पु० बिल्वांतर वृक्ष; अर्जुन वृक्ष; भिलावाँ; कोकिलाक्ष वृक्ष; सरकंडा। **–ताड़क**–पु० विधारा। **–तृण**–पु० सरकंडा। **–द्रु**–पु० अर्जुन वृक्ष। **–धन्वा(न्वन्)**–पु० कामदेव। **–नाथ**–वि० जिसका सहायक वीर हो। **–पट्ट**–पु० एक प्रकारका सैनिक वस्त्र (ललाटपर पहननेका)। **–पत्नी**–स्त्री० वीरकी भार्या। **–पत्रा**–स्त्री० विजया। **–पत्री**–स्त्री० एक कंद। **–पर्ण**–पु० सुरपर्ण। **–पाण,–पाणक**–पु० एक पेय जो युद्धमें जाते समय या युद्धमें सैनिक पीते थे। **–पान,–पानक**–पु० दे० 'वीरपाण'। **–पुष्प**–पु० एक पौधा। **–पुष्पी**–स्त्री० सिंदूरपुष्पी; सहदेई। **–पूजा**–स्त्री० (हीरोवर्शिप) जाति या देशके लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले योद्धा या महापुरुषके प्रति प्रकट की जानेवाली श्रद्धा। **–प्रजायिनी,–प्रजावती**–स्त्री० दे० 'वीरजननी'। **–प्रमोक्ष**–पु० एक तीर्थ। **–प्रसवा,–प्रसविनी,–प्रसू**–स्त्री० दे० 'वीरजननी'। **–बाहु**–पु० विष्णु; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; रावणका एक पुत्र; एक वानर। **–भट**–पु० योद्धा। **–भद्र**–पु० अश्वमेधका घोड़ा; खस; शिवकी जटासे उत्पन्न एक वीर; श्रेष्ठ वीर। **–भद्रक**–पु० उशीर, खस। **–भार्या**–स्त्री० वीरपत्नी। **–भुक्ति**–स्त्री० वीरभूमि (बंगाल)का प्राचीन नाम। **–मत्स्य**–पु० एक जाति। **–मर्दन**–पु० एक दानव। **–मर्दल,–मर्दलक**–पु० युद्धका नगाड़ा। **–माता(तृ)**–स्त्री० वीरजननी। **–मानी(निन्)**–वि० अपनेको वीर समझनेवाला। **–मार्ग**–पु० स्वर्ग। **–मुद्रिका**–स्त्री० पैरकी बीचकी उँगलीका छल्ला। **–योगवह**–वि० वीरोंका वर्धन करनेवाला। **–रज(स्)**–पु० सिंदूर। **–रस**–पु० एक काव्यरस; वीरताका भाव। **–राघव**–पु० राम। **–रेणु**–पु० भीमसेन। **–ललित**–पु० वीरके कार्य करनेका ढंग; एक वृत्त। **–लोक**–पु० स्वर्ग; वीर लोग। **–वह**–पु० (सं०) रथ। **–वत्सा**–स्त्री० वीरमाता। **–वल्ली**–स्त्री० एक लता, देवदाली। **–वाक्य**–पु० वीरताद्योतक शब्द। **–वाद**–पु० वीरताजन्य कीर्ति। **–वाह**–पु० रथ। **–विक्रम**–पु० एक ताल (संगीत)। **–विप्लावक**–पु० शूद्रसे धन लेकर हवन करनेवाला। **–वृक्ष**–पु० सावाँ; बिल्वांतर वृक्ष; देवधान्य, महाशालि; भिलावाँ; अर्जुन वृक्ष; शालका पेड़। **–वेतस**–पु० अमलबेंत। **–व्यूह**–पु० एक तरहका व्यूह। **–व्रत**–वि० दृढ़संकल्प, दृढ़व्रत। पु० वीरता; मधु और सुमनाका पुत्र; नैष्ठिक ब्रह्मचारी; अपने व्रतपर अडिग रहनेवाला व्यक्ति। **–शंकु**–पु० बाण। **–शय,–शयन**–पु०,**–शय्या**–स्त्री० वीरोंके सोनेका स्थान, रणक्षेत्र; बाणोंकी शय्या। **–शाक**–पु० बथुआ। **–शैव**–पु० एक प्रकारके शैव। **–श्रेष्ठ**–पु० अद्वितीय वीर। **–समन्वित**–वि० वीरोंसे युक्त। **–सू**–स्त्री० वीरमाता, वीरजननी। **–सेन**–पु० राजा नलके पिता; एक दानव; आरुक, आलू बुखारा। **–०ज,–०सुत**–पु० राजा नल। **–सैन्य**–पु० लहसुन। **–स्कंध**–पु० भैंसा। **–स्थ**–पु० यज्ञका बलिपशु (?)। **–स्थान**–पु० साधकोंका एक आसन, वीरासन; स्वर्ग। **–हत्या**–स्त्री० नरहत्या; पुत्रहत्या। **–हा(हन्)**–पु० विष्णु; वह अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसकी अग्नि आलस्य आदिके कारण बुझ जाय। वि० मनुष्यों या शत्रुओंका वध करनेवाला। **–होत्र**–पु० विंध्य-स्थित एक प्रदेश।

वीरक–पु० (सं०) श्वेत करवीर; साधारण योद्धा।

वीरचक्रेश्वर–पु० (सं०) विष्णु।

वीरण–पु० (सं०) एक प्रजापति; उशीर, खस।

वीरणक–पु० (सं०) एक नाग।

वीरणी–स्त्री० (सं०) तिरछी चितवन; नीची भूमि, गहरी जगह; वीरणकी पुत्री और चाक्षुषकी माता।

वीरतर–वि० (सं०) अधिक वीर। पु० बड़ा वीर; बाण; खस।

वीरवती–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति और पुत्र जीवित हो; मांसरोहिणी लता।

वीरा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पिता और पुत्र जीवित हो; वीर-भार्या; पत्नी; माता; मादक पेय, मदिरा; एक श्रुति (संगीत); मुरा नामक गंधद्रव्य; एलवालुक; क्षीर-काकोली; केलेका पेड़; दुग्धिका; विदारी; मलपू; क्षीरविदारी; महाशतावरी; काकोली; ब्राह्मी; अतिविषा; शीशम; एक नदी।

वीराचारी(रिन्)–पु० (सं०) वाममार्गियोंका एक भेद जो मद्यादिमें देवताओंकी कल्पना करते हैं।

वीराद्रु–पु० (सं०) अर्जुन वृक्ष।

वीरान–वि० (फा०) उजड़ा हुआ, जनहीन; तबाह, बरबाद। पु० बंजर। **–कुन**–वि० वीरान, बर्बाद करनेवाला।

वीराना–पु० (फा०) उजाड़ जगह; जंगल। **–नशीं**–वि० जंगलमें रहनेवाला। **–पसंद**–वि० एकान्तप्रिय।

वीरानी–स्त्री० (फा०) तबाही, बरबादी; वीरान हो जाना।

वीराम्ल–पु० (सं०) अम्लवेतस।

वीरारुक–पु० (सं०) आरुक नामक ओषधि।

वीराशंसन–पु० (सं०) युद्धमें खतरेका स्थान; युद्धभूमि; पहरा देना; त्यक्त आशा।

वीराष्टक–पु० (सं०) कार्तिकेयका एक अनुचर।

वीरासन–पु० (सं०) आसनका एक प्रकार, एक घुटना टेककर बैठना; युद्धभूमि; खुली जगहमें सोना; प्रहरीका स्थान।

वीरिण–पु० (सं०) ऊसर जमीन।

वीरिणी–स्त्री० (सं०) वीरणकी एक पुत्री, आशिक्नी; एक प्राचीन नदी।

वीरुत्(ध्)–स्त्री० (सं०) लता; शाखा; टहनी; काट देनेपर पुनः बढ़ जानेवाला पौधा; क्षुप।

वीरुधा–स्त्री० (सं०) दे० 'विरुत्'।

वीरेंद्र–पु० (सं०) वीरोंका प्रधान।

वीरेंद्रा–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

वीरेश, वीरेश्वर–पु० (सं०) महादेव; बहुत बड़ा योद्धा।

वीरोज्झ–पु० (सं०) वह ब्राह्मण जो यज्ञाग्निमें आहुति देनेमें लापरवाही करता हो।

वीरोपजीविक–पु० (सं०) अग्निहोत्रका बहाना कर दान द्वारा जीविका चलानेवाला ब्राह्मण।

वीर्य–पु० (सं०) वीरता, पौरुष; शक्ति, बल; पुंस्त्व; शरीरकी एक धातु, शुक्र, रेत; साहस; (औषधकी) प्रभावकारिता; विष; कांति, दीप्ति; ओज; पौधोंका बीज; गौरव, महत्त्व; सार तत्त्व। **–कर**–पु० मज्जा। **–काम**–वि० पुंस्त्व चाहनेवाला। **–कृत**–वि० पौरुषसे किया हुआ। **–कृत्**–वि० पौरुषके कार्य करनेवाला। **–ज**–पु० पुत्र। **–धर**–पु० प्लक्ष द्वीपका क्षत्रियवर्ग। **–पण**–वि० वीरता द्वारा क्रीत। **–पारमिता**–स्त्री० छः सिद्धियोंमेंसे एक, शक्तिका चरमोत्कर्ष (बौ०)। **–प्रपात**–पु० शुक्रपात, वीर्यका क्षरण। **–वाही(हिन्)**–वि० बीज उत्पन्न करनेवाला। **–विभूति**–स्त्री० शक्तिकी अभिव्यक्ति। **–विरहित**–वि० शक्तिहीन। **–वृद्धिकर**–वि० वीर्य बढ़ानेवाला। पु० वाजीकरण, कामोद्दीपक औषधादि। **–शाली(लिन्)**–वि० शक्तिशाली, पराक्रमी। **–शुल्क**–पु० विवाहादिके लिए कोई शक्तिशाली शर्त। वि० शक्तिके बलपर प्राप्त या क्रीत। **–संपन्न**–वि० शक्तिशाली। **–सेचन**–पु० कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान करानेकी क्रिया (इनसेमिनेशन), शुक्रसेचन। **–हानि**–स्त्री० क्लीवता, शक्तिहीनता। **–हारी(रिन्)**–पु० एक दानव। **–हीन**–वि० शक्तिहीन; कायर; क्लीव; जिसमें बीज न हो।

वीर्यवान्(वत्)–वि० (सं०) बलवान्, शक्तिशाली; पुष्ट।

वीर्यांतराय–पु० (सं०) स्वस्थ होते हुए भी मनुष्यको शक्तिहीन करनेवाला दुष्कर्म (जै०)।

वीर्या–स्त्री० (सं०) शक्ति; पुंस्त्व; एक नागकन्या।

वीर्याधान–पु० (सं०) गर्भाधान।

वीर्यान्वित–वि० (सं०) शक्तिशाली।

वीर्यावदान–पु० (सं०) शक्ति द्वारा कार्यका संपादन।

वीर्यावधूत–वि० (सं०) शक्तिमें पराजित।

वीवध–पु० (सं०) दे० 'विवध'।

वीवधिक–पु० (सं०) बहँगी ढोनेवाला; फुटकर चीजें बेचनेवाला, बिसाती।

वीवाह–पु० (सं०) ब्याह, शादी।

वीशित–वि० (सं०) फैला हुआ।

वीस–पु० (सं०) नृत्यका एक भेद।

वीसा–पु० (अं०) दे० 'वीज़ा'।

वीहार–पु० (सं०) मंदिर, मठ (बौ०, जै०)।

वुक़ूअ–पु० (अ०) घटित होना, प्रकट होना; (पक्षीका) नीचे उतरना।

वुक़ूआ–पु० घटना; वारिदात; झगड़ा, मारपीट।

वुक़ूफ़–पु० (अ०) जानना, वाकिफ होना, ज्ञान; बुद्धि।

वुज़ू–पु० (अ०) नमाजसे पहले यथाविधि हाथ-पाँव और मुँह धोना। **–शिकन** वि० वुज़ू तोड़ देनेवाला; तप भंग कर देनेवाला। मु०**–ढीला या शिकस्त होना**–हिम्मत हार जाना, संकल्प शिथिल हो जाना।

वुजूद–पु० (अ०) होना, अस्तित्व; जीवन; अभिव्यक्ति; व्यष्टिप्राणी। **–बेवूद**–पु० अस्तित्वहीन वस्तु, स्वप्न या कल्पना-जगत्की वस्तुएँ।

वुडित–वि० (सं०) डूबा हुआ, निमग्न।

वुराना*–अ० क्रि० उराना, समाप्त होना (वि०)।

वुरूद–पु० (अ०) वारिद होना, उतरना, आना; पहुँचना, पधारना। **–(दे) मसऊद**–पु० शुभागमन।

वुवूर्षु–वि० (सं०) चुनने, पसंद करनेका इच्छुक।

वुसूक़–पु० (अ०) दृढ़ता, मजबूती; भरोसा।

वुसूल–पु० (अ०) पहुँचना; मिलना; हासिल, प्राप्ति। **–कर्ज़**–पु० कर्जके रुपयेका वापस मिलना। **–बाक़ी**–स्त्री० वह रकम जो प्राप्त न हुई हो; रहा हुआ रुपया वसूल करना।

वुसूली–वि० वसूल करने योग्य। स्त्री० वह रकम जिसे वसूल करना हो।

वूर्ण–वि० (सं०) चुना, पसंद किया हुआ।

वृंत–पु० (सं०) भंटा; बौड़ी, ढेंढ़ी; डंठल, पर्णवृंत (पेटिओल); स्तनका अगला भाग, चूचुक; घड़ा रखनेकी तिपाई आदि। **–तुंबी**–स्त्री० एक तरहकी गोल लौकी। **–फल**–पु० बैंगन, भंटा। **–यमक**–पु० यमकालंकारका एक भेद।

वृंतक–पु० (सं०) डंठल।

वृंताक–स्त्री० (सं०) बैंगन।

वृंताकी–स्त्री० (सं०) भंटा, बैंगन।

वृंतिका–स्त्री० (सं०) छोटा डंठल।

वृंतिता–स्त्री० (सं०) कटुका।

वृंद–पु० (सं०) राशि, समूह, झुंड; गुच्छा; एक मुहूर्त; सौ करोड़की संख्या; सम्मिलित गान; गलेका अर्बुद। वि० बहुसंख्यक। **–गायक**–पु० कई गायकोंके साथ गानेवाला। **–वाद्य**–पु० (आरकेस्ट्रा) नाट्यशाला आदिमें विशेष स्थानपर समवेत वादकोंद्वारा सामूहिक रूपसे प्रस्तुत किया गया वाद्य। **–संगीत**–पु० समवेत गान।

वृंदा–स्त्री० (सं०) तुलसी; राधा। **–वन**–पु० गोकुलके पासका एक वन; तुलसीका पौधा लगानेका चबूतरा।

वृंदाक–पु० (सं०) परगाछा।

वृंदार–पु० (सं०) देवता। वि० दे० 'वृंदारक'।

वृंदारक–पु० (सं०) श्रेष्ठ जन; नायक; देवता; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। वि० श्रेष्ठ; सुंदर, मनोज्ञ।

वृंदारण्य–पु० (सं०) वृंदावन।

वृंदावनेश, वृंदावनेश्वर–पु० (सं०) कृष्ण।

वृंदावनेश्वरी–स्त्री० (सं०) राधा।

वृंदी(दिन्)–वि० (सं०) समूहवाला।

वृंहण–वि० (सं०) पुष्ट करनेवाला, मोटा करनेवाला। पु० पौष्टिक पदार्थ; पुष्ट करनेकी क्रिया; एक तरहकी मिठाई; हाथीका चिग्घाड़ना; दाख; असगंध; भूमिकुष्मांड; एक प्रकारका धूमपान। **–वस्ति**–स्त्री० वस्तिका एक प्रकार।

वृंहित–वि० (सं०) पुष्ट किया हुआ। पु० हाथीकी चिग्घाड़।

वृक–पु० (सं०) भेड़िया; गीदड़; उल्लू; कौआ; चोर; वज्र; क्षत्रिय; चंद्रमा; सूर्य; एक वृक्ष; अगस्तका वृक्ष; गंधाविरोजा; एक असुर; कृष्णका एक पुत्र; मध्यदेशवर्ती एक जनपद। –**कर्मा(र्मन्)**–वि० भेड़ियेकी तरह काम करनेवाला। –**गर्त**–पु० एक जनपद। –**दंत**–पु० एक राक्षस, कुंभकर्णका श्वसुर। –**दंश**–पु० कुत्ता। –**दीप्ति**–पु० कृष्णका एक पुत्र। –**देव**–पु० वसुदेवका एक पुत्र। –**देवा,–देवी**–स्त्री० देवकी, देवककी कन्या, वसुदेव-पत्नी। –**धूप**–पु० अनेक सुगंधित द्रव्योंके योगसे बना धूप; तारपीन, सरल वृक्षका निर्यास। –**धूमक**–पु० एक पौधा। –**धूर्त**–पु० गीदड़। –**धूर्तक**–पु० भालू; गीदड़। –**धोरण**–पु० एक तरहका जानवर। –**निवृत्ति**–पु० कृष्णका एक पुत्र। –**प्रेक्षी(क्षिन्)**–वि० भेड़ियेकी तरह किसी चीजकी ओर देखनेवाला। –**रथ**–पु० अधिरथका एक पुत्र (म० भा०)। –**वाला**–स्त्री० दरवाजेके पास लगायी जानेवाली लकड़ी। –**स्थली**–माहिष्मती नामकी नगरी।

वृकल–पु० (सं०) वल्कल-वस्त्र (बौ०)।

वृकला–स्त्री० (सं०) एक नाड़ी।

वृका–स्त्री० (सं०) पाढ़ा, अंवष्ठा लता; एक प्राचीन परिमाण।

वृकाक्षी–स्त्री० (सं०) त्रिवृत्।

वृकाजिन–पु० (सं०) एक ऋषि।

वृकाम्लिका–स्त्री० (सं०) एक खट्टा नीबू।

वृकायु–वि० (सं०) भेड़ियेके-से स्वभाववाला, हिंस्र। पु० जंगली कुत्ता; चोर।

वृकाराति, वृकारि–पु० (सं०) कुत्ता।

वृकाश्वकि–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि।

वृकास्य–पु० (सं०) कृष्णका एक पुत्र।

वृकी–स्त्री० (सं०) भेड़ियेकी मादा; शृगाली; पाठा।

वृकोदर–पु० (सं०) भीमसेन; ब्रह्मा; शिवका एक अनुचर-वर्ग।

वृक्क, वृक्कक–पु० (सं०) शरीरका अंग जिसकी शक्ल सेमके बीज सदृश होती है। यह नाइट्रोजन युक्त मल पदार्थों (यूरिया, लवण तथा जल) का निष्कासन करता है। वृक्क आमाशयकी पीछेवाली सतहसे जुड़ा रहता है–मेरुदण्डके दोनों ओर एक एक वृक्क होता है, गुरदा।

वृक्का–स्त्री० (सं०) हृदय।

वृक्ण–वि० (सं०) छिन्न।

वृक्त–वि० (सं०) ऐंठा हुआ; फैलाया हुआ; साफ किया हुआ।

वृक्ष–पु० (सं०) पेड़; विटप; कोई बड़ा क्षुप, पौधा, वनस्पति; वंशवृक्ष, कुरसीनामा; उद्दीपक पदार्थ; कुटज; कफन (वै०)। –**कंद**–पु० विदारीकंद। –**कुक्कुट**–पु० जंगली मुर्गा। –**कोटर**–पु० पेड़का खोड़रा। –**खंड**–पु० कुंज। –**गृह**–पु० पक्षी। –**चर**–पु० बंदर। –**च्छाय**–पु० कुंज। –**च्छाया**–स्त्री० वृक्षकी छाया। –**ज**–वि० लकड़ीका बना हुआ। –**तक्षक**–पु० लकड़हारा। –**दल,–पर्ण**–पु० वृक्षका पत्ता। –**दोहद**–पु० कृत्रिम उपायोंसे वृक्षोंका असमयमें खिलना खिलाना; कवियोंकी एक मान्यता: जैसे, सुन्दरियोंके पैरकी ठोकरसे अशोकका खिलना, उनके नृत्यसे कचनारका खिलना, उनके संगीतसे आमका बौराना। –**धूप**–पु० सरल, चीड़का पेड़। –**नाथ,–नायक,–पाक**–पु० वड़का पेड़। –**निर्यास**–पु० पेड़से निकलनेवाला रस, गोंद। –**पाल**–पु० जंगली शाल; जंगलका रक्षक। –**प्रतिष्ठा**–स्त्री० पुण्यफलकी प्राप्तिके लिए पेड़ लगाना। –**भक्षा**–स्त्री० परगाछा, वंदा, वंदाक। –**भवन**–पु० वृक्षकोटर। –**भित्,–भिद्**–स्त्री० कुल्हाड़ी, रुखानी आदि। –**भेदी(दिन्)**–पु० कुल्हाड़ी, बसूला आदि। –**मर्कटिका**–स्त्री० गिलहरी। –**मार्जार**–पु० एक तरहका जानवर। –**मूल**–पु० पेड़की जड़। –**मूलिक**–वि० पेड़की जड़से संबंध रखनेवाला। –**मृद्धू**–पु० जलवेतस। –**राज**–पु० पारिजात, परजाता। –**राट्(ज्)**–पु० वटवृक्ष। –**रुहा**–स्त्री० परगाछा, वंदाका; अमरबेलि; कंघी; जतुका लता; विदारीकंद। –**रोपक,–रोपयिता(तृ)**–पु० वृक्ष लगानेवाला। –**रोपण**–पु० वृक्ष लगाने तथा उनकी रक्षा करनेकी क्रिया या कला (आरबरिकल्चर)। –**वाटिका,–वाटी**–स्त्री० उपवन, बाग। –**वासी** त्रि० (आरबोरियल) वृक्षपर निवास करनेवाला। –**श**–पु० गिरगिट। –**शायिक**–पु० लंगूर। –**शायिका**–स्त्री० गिलहरी। –**संकट**–पु० घने पेड़ोंके बीचकी पगडंडी। –**सारक**–पु० गूमा, द्रोणपुष्पी। –**सेचन**–पु० वृक्षमें पानी देना, सींचना। –**स्नेह**–पु० पेड़का निर्यास, गोंद।

वृक्षक–पु० (सं०) छोटा वृक्ष; कुटज; उद्दीपक पदार्थ।

वृक्षांघ्रि–पु० (सं०) पेड़का जड़।

वृक्षादन–पु० (सं०) कुल्हाड़ी; बसूला; पियालका पेड़; अश्वत्थ वृक्ष; मधुमक्खीका छत्ता, मधुच्छत्र।

वृक्षादनी–स्त्री० (सं०) विदारीकंद; वंदा, वंदाक।

वृक्षादिनी–स्त्री० (सं०) वंदा।

वृक्षाधिरुहक, वृक्षाधिरूढक–पु० (सं०) आलिंगनका एक प्रकार।

वृक्षाधिरूढि–स्त्री० (सं०) लताका वृक्षमें लिपटना; आलिंगनका एक प्रकार।

वृक्षामय–पु० (सं०) लाख।

वृक्षाम्ल–पु० (सं०) इमली; अमड़ा; एक खटाई; चुक; अमलबेंत।

वृक्षायुर्वेद–पु० (सं०) वृक्षोंके रोग और चिकित्सा-संबंधी शास्त्र।

वृक्षारोपण–पु० दे० 'वृक्षरोपण'।

वृक्षार्हा–स्त्री० (सं०) महामेदा।

वृक्षालय–पु० (सं०) चिड़िया।

वृक्षावास–पु० (सं०) वृक्षकोटरमें रहनेवाला तपस्वी; पक्षी, साँप।

वृक्षाश्रयी(यिन्)–पु० (सं०) एक तरहका छोटा उल्लू।

वृक्षोत्थ–वि० (सं०) वृक्षपर उत्पन्न होनेवाला।

वृक्षोत्पल–पु० (सं०) कर्णिकार, कनक चम्पा।

वृक्षौका(कस्)–पु० (सं०) बनमानुस।

वृक्ष्य–पु० (सं०) पेड़का फल, फूल, पत्ती। वि० वृक्ष सम्बन्धी।

वृज–पु० दे० 'व्रज'।

वृजन–पु० (सं०) निपटारा, निराकरण; पाप; संकट; घेरी हुई जमीन, चरागाह आदि; आकाश; शक्ति; युद्ध; बाल; घुंघराले बाल; कुटिलता, छल; नीचता। वि० टेढ़ा, कुटिल; नश्वर।

वृजन्य–वि० (सं०) ग्राममें रहनेवाला, सरल (व्यक्ति)।

वृजि–स्त्री० (सं०) व्रज; मिथिला।

वृजिन–पु० (सं०) पाप; दुःख, कष्ट; बाल; घुंघराले बाल; दुष्ट जन; रक्त चर्म। वि० कुटिल, टेढ़ा; दुष्ट, पापी।

वृज्य–वि० (सं०) घुमाया, मोड़ा जानेवाला।

वृत–वि० (सं०) वरण किया, चुना हुआ; ढका हुआ; छिपा हुआ; घेरा हुआ; स्वीकृत; प्रार्थित; नियुक्त; दूषित किया हुआ, खराब किया हुआ; सेवित; गोल। पु० धन। –**पत्रा**–स्त्री० पुत्रदावी लता।

वृताक्ष–पु० (सं०) मुरगा।

वृतिकर–वि० (सं०) घेरनेवाला। पु० विकंकत वृक्ष।

वृति–स्त्री० (सं०) वरण, चुनाव; छिपाना; याचना; प्रार्थना; घेरने, ढकनेका उपकरण; नियुक्ति, नियुक्त करना।

वृत्त–वि० (सं०) जिसका अस्तित्व रहा हो; घटित; पूरा किया हुआ; निष्पन्न, किया हुआ; गत, व्यतीत; गोलाकार; मृत; स्थिर, दृढ़; अधीन; ···से व्युत्पन्न; प्रसिद्ध; ढका हुआ, आवृत; मुड़ा हुआ। पु० कच्छप; घटना; इतिहास; वृत्तांत; समाचार; पेशा; जीविका; आचरण, चालचलन; सुकर्म; विहित नियम; छंद; एक तृण; सफेद ज्वार; अंजीर; स्तनका अग्र भाग; वृत्तासुर; वर्तुलाकार मंदिर; परिवर्तन; एक नाग; एक तरहका छंद; वह वर्तुलाकार क्षेत्र जिसकी सीमा केंद्रसे सर्वत्र बराबर दूरीपर हो, मंडल; (सरकिल) वह समक्षेत्र जो ऐसी वक्र रेखासे घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उक्त क्षेत्रके केंद्र या मध्य बिंदुसे समान दूरीपर हो; परिधि। –**कर्कटी**–स्त्री० खरबूजा। –**कोशा**–स्त्री० देवदाली लता। –**खंड**–पु० वृत्तका कोई भाग; (सेक्टर) दो त्रिज्याओं (अर्द्धव्यास रेखाओं) तथा चापके द्वारा घिरा वृत्तका अंश। –**गंधि,–गंधी(धिन्)**–पु० सानुप्रास, समासयुक्त गद्य जो पद्य जैसा हो। –**गुंड**–पु० गोंदला, दीर्घनाल। –**चित्र**–पु० विशिष्ट घटना या कार्यकी जानकारीके लिए दिखाया जानेवाला सिनेमा-चित्र (न्यूजरील)। –**चूड**–वि०

जिसका चूड़ाकरण संस्कार हो चुका हो। वि० मेहराबदार (झरोखा)। –चेष्टा–स्त्री० रहन-सहन, आचरण। –चौल–वि० दे० 'वृत्तचूड'। –ज्ञ–वि० रीतिरिवाज जाननेवाला। –तंडुल–पु० यावनाल। –तुंड,–वक्त्र–वि० गोल मुँहवाला। –पत्र–पु० (जर्नल) वह बही या पंजी जिसमें प्रतिदिनके कार्य या घटनावलीका विवरण अथवा जिसमें विधान-सभा आदिके प्रतिदिनके विनिश्चयोंका संक्षिप्त अभिलेख लिखा जाता है। –पत्रक–पु० (हिस्ट्रीशीट) वह पत्रक या फलक जिसपर किसी वंदीके पूर्वापराधोंका इतिहास या लेखा दिया रहता है, अपराध-लेखा, दुर्वृत्त-फलक, पूर्वापराध-पत्र। –पत्रा–स्त्री० एक लता। –परिणाह–पु० वृत्तका घेरा, परिधि। –पर्णी–स्त्री० पाठा; बड़ी शणपुष्पी। –पुष्प–पु० कदंब; सिरिस; वानीर; कुब्जक; मुद्गर; चमेली। –पूरण–पु० छंदकी पूर्ति करना। –फल–पु० अनार; बेर; कैथ; लालचिचड़ा; तरबूज; खरबूजा; करंज; काली मिर्च। –फलक–पु० दे० 'वृत्त पत्रक'। –फला–स्त्री० आँवला; बैंगन; कड़वी ककड़ी। –बंध–पु० छंदोबद्ध रचना। –बीज–पु० भिंडी; लोबिया। –बीजका–स्त्री० पांडुरफली; अरहर, आढकी। –बीजा–स्त्री० आढकी, अरहर। –भंग–पु० छंदोभंग; आचरण-भ्रंश। –भोजन–पु० गंडिनी नामका साग। –मल्लिका–स्त्री० सफेद आक; त्रिपुरमल्लिका। –युक्त,–वान्(वत्),–शाली(लिन्)–वि० सदाचारी। –शस्त्र–वि० धनुर्वेदका ज्ञाता, शस्त्रविद्या जाननेवाला। –श्लाघी(घिन्)–वि० अपने कामकी प्रशंसा करनेवाला; सदाचारके लिए प्रशंसित। पु० क्षत्रिय। –संकेत–वि० जो अपनी स्वीकृति दे चुका हो। –संपन्न,–स्थ–वि० दे० 'वृत्तयुक्त'। –सादी(दिन्)–वि० प्रथा नष्ट करनेवाला; नीच, कमीना। –हीन–वि० आचरणहीन।

वृत्तक–पु० (सं०) छंद; बौद्ध; जैन; गद्यका एक प्रकार जो सरल होता है, पर शब्दयोजना कुछ-कुछ छंद जैसी होती है।

वृत्तांगी–स्त्री० (सं०) प्रियंगु।

वृत्तांत–पु० (सं०) अवसर; घटना; समाचार; विवरण; वर्णन; आख्यान; विषय; प्रकार, किस्म; विधि, ढंग; अवस्था; समग्रता; विश्राम; धर्म, स्वभाव; ग्रंथका अध्याय। वि० एकांत, एकाकी। –दर्शी(शिन्)–वि० जिसने कार्य होते हुए देखा हो।

वृत्तांतानुमेय साक्ष्य–पु० (सरकम्सटैंशल एवीडेंस) कोई बात सावित करनेमें सहायता करनेवाली ऐसी बातें जो किसीने अपने वयानमें न कही हों, पर परिस्थिति या जानी हुई घटनाओंके आधार-पर जिनका अनुमान किया जा सके।

वृत्ता–स्त्री० (सं०) झिंझिरिष्टा; रेणुका; मांसरोहिणी; महाकोषातकी; प्रियंगु; नागदमनी; सफेद सेम।

वृत्तानुवर्ती(तिन्)–वि० (सं०) शुद्धाचारी; रीति-नीतिका पालन करनेवाला।

वृत्तानुसारी(रिन्)–वि० (सं०) विहित कार्य करनेवाला; शुभ, शुद्ध आचरण करनेवाला।

वृत्तार्ध–पु० (सं०) वृत्तका अर्धभाग।

वृत्ति–स्त्री० (सं०) अस्तित्व; रहना; मनकी अवस्था; चित्त, मन आदिका कोई व्यापार; चित्तकी विशिष्ट अवस्थाएँ (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध); आचार शास्त्र; हालत; कार्य; व्यापार; तरीका, ढंग; पेशा; स्वभाव; रहन-सहन (समासांतमें); जीविका; पारिश्रमिक; कार्यका कारण; सम्मानपूर्ण वर्ताव; व्याख्या, कारिका; चक्कर खाना; लुढ़कना; चक्र या वृत्तकी परिधि; शब्द-शक्ति (अभिधा आदि); रचनाशैली (कैशिकी, भारती, सात्वती, आरभटी); सहायतार्थ दिया जानेवाला धन; विचारसरणी; आधेय; एक अस्त्र; प्रचलन; अनुप्रासका एक भेद, दे० 'वृत्त्यनुप्रास'; रुद्रकी पत्नी; तुक। –कर–वि० जीविका प्रदान करनेवाला। पु० वृत्ति या पेशेपर लगनेवाला कर। –कर्षित–वि० जीविकाभावके कारण कष्टग्रस्त। –कार,–कृत्–पु० सूत्रपर वृत्ति नामक व्याख्याका लेखक। –क्षीण–वि० दे० 'वृत्तिकर्षित'। –च्छेद–पु० जीविकारहित होना। –दाता(तृ)–वि०, पु० पालन करनेवाला। –निबंधन–पु० जीविकाका साधन। –निरोध–पु० कार्यमें उपस्थित होनेवाली बाधा। –भंग,–वैकल्य,–ह्रास–पु० जीविका-हानि। –मूल–पु० जीविकाकी व्यवस्था, जीविकाका आधार। –मूलक प्रतिनिधित्व–पु० (फ़ंक्शनल रेप्रेज़ेंटेशन) दे० 'व्यावसायिक प्रतिनिधित्व'। –विरोध–पु० साहित्यिक रचनाका एक दोष (सा०)। –रुशना–स्त्री० रुद्रकी एक स्त्री। –स्थ–वि० जो किसी अवस्थामें हो या कोई पेशा या काम करता हो; अच्छे आचरणका। पु० गिरगिट। –हंता(तृ),–हा(हन्)–वि० जीविकाका साधन नष्ट करनेवाला। –हेतु–पु० जीविकाका आधार।

वृत्तिका–वि० मूल स्वभावसे सम्बद्ध; सहज, स्वाभाविक (इंस्टिंक्टिव); जीवक (केरियर)।

वृत्तेर्वारु–पु० (सं०) खरबूजा।

वृत्त्यनुप्रास–पु० (सं०) अनुप्रास अलंकारका एक भेद जहाँ एक या अनेक वर्णोंकी समानता कई बार दिखायी जाय।

वृत्त्युपाय–पु० (सं०) जीविकाका साधन।

वृत्त्युपरोध–पु० (सं०) जीविकामें बाधा पड़ना।

वृत्य–वि० (सं०) नियुक्तिके योग्य; वरणके योग्य; घेरा जाने योग्य; रखा जाने योग्य।

वृत्र–पु० (सं०) अंधकारका मूर्त रूप एक दानव जिसे इंद्रने मारा था; वादल; अंधकार; शत्रु; ध्वनि; चक्र; इंद्र; एक पर्वत; पर्वत; धन; पत्थर। –खाद–पु० इंद्र; वृहस्पति। –घ्न–पु० इंद्र; वैदिक कालीन एक देश। –घ्नी–स्त्री० एक नदी। –तूर्य–पु० युद्ध। –द्रुह्(ह्),–द्विट्(ष्),–नाशन,–रिपु,–वैरी(रिन्),–शत्रु,–हंता(तृ),–हा(हन्)–पु० इंद्र। –भोजन–पु० गंडीर नामक शाक। –शंकु–पु० प्रस्तर-स्तंभ।

वृत्रारि–पु० (सं०) इंद्र।

वृत्रासुर–पु० (सं०) वृत्र नामक राक्षस।

वृथा–अ० (सं०) वेकार, वेमतलब, निष्प्रयोजन; मूर्खतासे; भूलसे। वि० अनुचित; झूठ; निरर्थक, निरुपयोगी। –कथा–स्त्री० गपशप। –कर्म(न्)–पु० निष्प्रयोजन या मनोरंजनके लिए किया जानेवाला काम। –घात–पु० वेमतलब मारना या हत्या करना। –जन्म(न्)–पु० निरर्थक जन्म। –दान–पु० अपात्रको दिया हुआ दान। –पक्व–वि० केवल अपने लिए पकाया हुआ (खाना जो जैसे-तैसे तैयार कर लिया जाता है)। –पलित–वि० दे० 'वृथा-वृद्ध'। –प्रजा–स्त्री० वह स्त्री जिसने वेकार ही पुत्र उत्पन्न किया हो। –प्रतिज्ञ–वि० विना समझे-बूझे, योंही प्रतिज्ञा करनेवाला। –मति–वि० मूर्ख। –मांस–पु० वह मांस जो देवताओं या पितरोंको अर्पित करनेके लिए नहीं, सिर्फ अपने लिए हो। –लिंग–वि० जिसका कोई वास्तविक कारण न हो। –लिंगी(गिन्)–वि० अधिकारी न होते हुए भी सांप्रदायिक चिह्न धारण करनेवाला। –वाक्(च्)–स्त्री० झूठी बात। –वादी(दिन्)–वि० झूठ वोलनेवाला। –वृद्ध वि० जो व्यर्थ ही वृद्ध हो गया हो, जो वयोवृद्ध होते हुए भी मूर्ख हो। –श्रम–पु० वह श्रम जिसका कोई उपयोग न हो।

वृथोक्त–वि० (सं०) जो वेकार ही कहा गया हो।

वृथोत्पन्न–वि० (सं०) जो वेकार ही जनमा हो।

वृथोदक–पु० (सं०) वह जल जो उचित मार्गसे न वहकर इधर-उधर वेकार वह रहा हो।

वृथोद्यम–वि० (सं०) वेकार मेहनत करनेवाला।

वृद्ध–वि० (सं०) बढ़ा हुआ; पूरा बढ़ा हुआ; बूढ़ा, अधिक अवस्थाका; बड़ा; चतुर, विद्वान्; योग्य या सम्मानित; राशीभूत। पु० बूढ़ा आदमी; सम्मानित व्यक्ति (एल्डर); ऋषि; वंशज; शैलज नामक गंधद्रव्य; वह शब्द जिसके प्रथम स्वरकी वृद्धि हुई हो (आ, ऐ, औ); अस्सी वर्षका हाथी। –कंट–पु० इंगुदी, हिंगोटका पेड़। –काक–पु० द्रोण-काक। –काल–पु० बुढ़ापा। –कावेरी–स्त्री० एक नदी। –कृच्छ्र–पु० बूढ़े व्यक्तियों द्वारा किया जानेवाला एक व्रत; एक कृच्छ्र रोग। –केशव–पु० सूर्यकी एक मूर्ति। –कोश–पु० बहुत अमीर आदमी। –क्रम–पु० वृद्ध व्यक्तिका पद या दरजा। –गंगा–स्त्री० एक नदी, बूढ़ी गंगा। –गर्भा–स्त्री० वह स्त्री जिसका गर्भ अधिक समयका हो गया हो। –गोनस–पु० एक साँप। –तिक्ता–स्त्री० पाढ़ा। –दार,–दारक,

–दारु–पु० वीरताड़क, विधारा। **–धूप**–पु० सिरिस; सरलका पेड़। **–धूमा**–स्त्री० लिसोड़ा। **–नाभि**–वि० जिसकी नाभि उन्नत हो; तुंदिल, तोंदल। **–पराशर**–पु० एक धर्मशास्त्र-प्रणेता। **–प्रधान,–प्रपितामह**–पु० परदादाका पिता। **–प्रमातामह**–पु० परनानाका पिता। **–वला**–स्त्री० एक क्षुप, ककही, महावला। **वृहस्पति**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–वौधायन**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–भाव**–पु० वुढ़ापा। **–मत**–पु० प्राचीन ऋषियोंका मत। **–मनु**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–याज्ञवल्क्य**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–युवती**–स्त्री० कुटनी; दाई, धात्री। **–योषित्**–स्त्री० वूढ़ी स्त्री। **–राज**–पु० अमलवेंत। **–वशिष्ठ**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–वासिनी**–स्त्री० शृगाली। **–वाहन**–पु० आमका पेड़। **–विभीतक**–पु० अमड़ा। **–विष्णु**–पु० एक धर्मशास्त्रकार। **–वीवधा**–स्त्री० पुरानी रीतियोंका वंधन। **–वृष्णीय**–वि० वहुत शक्तिशाली। **–वेग**–वि० प्रचंड वेगवाला। **–शोली(लिन्)**–वि० जिसका स्वभाव वृद्धोंका-सा हो। **–श्रवा(वस्)**–पु० इंद्र; एक मुनि। **–श्रावक**–पु० कापालिक। – **–संघ**–पु० वृद्धों, वड़ों, पंडितोंकी सभा, समिति। **–सूत्रक**–पु० रुईका गाला; द्रतूल, वुढ़ियाका सूत। **–सेवी(विन्)**–वि० वृद्धोंका आदर करनेवाला। **–हारीत**–पु० एक धर्मशास्त्रकार।

वृद्धक–वि० (सं०) अधिक अवस्थाका, बूढ़ा। पु० वृद्ध व्यक्ति; आख्यान, कथा।

वृद्धता–स्त्री० (सं०) वृद्धावस्था, वुढ़ापा। **–अधिदेय**–पु० (सूपर अनुएशन अलाउंस) वृद्धताके कारण किसी कर्मचारीके काम करनेमें असमर्थ हो जानेपर दी जानेवाली वृत्ति या भत्ता।

वृद्धांगुलि–स्त्री०, **वृद्धांगुष्ठ**–पु० (सं०) अँगूठा (पैर तथा हाथका)।

वृद्धांत–पु० (सं०) सम्मान्य पद या व्यक्ति।

वृद्धा–वि० स्त्री० बुढ़िया, वुड्ढी; वंशजा। स्त्री० अँगूठा; महाश्रावणिका; बूढी स्त्री।

वृद्धाचल–पु० (सं०) एक तीर्थ।

वृद्धार्क–पु० (सं०) डूबता हुआ सूर्य; संध्याकाल।

वृद्धावस्था–स्त्री० (सं०) वुढ़ापा।

वृद्धाश्रम–पु० (सं०) सन्न्यास।

वृद्धि–स्त्री० (सं०) बढ़ती, वाढ़; प्रगति; चंद्रकलाका वढ़ना; धन-संपत्तिका वढ़ना; वृत्ति, वेतन आदिमें होनेवाली वढ़ती (इन्क्रीमेंट); अभ्युदय; सफलता; संपत्ति; व्याज, सूद; राशि; समूह; सूदखोरी; लाभ, मुनाफा; अंडकोशका वढ़ना; शोथ; अ, इ, उ आदिका आ, ऐ, औ आदि रूप ग्रहण करना (व्या०); जलका वढ़ना; अष्टवर्गकी एक ओषधि; जननाशौच; एक योग (ज्यो०); राजनीतिमें आठों वर्गोंका वढ़ना (रा०); छेदन; संपत्तिका अपवर्तन, हरण। **–कर**–वि० वृद्धि करनेवाला। **–कर्म(न्)**–पु० नांदीमुखश्राद्ध। **–जीवक**–वि० सूदसे निर्वाह करनेवाला। **–जीवन**–वि० दे० 'वृद्धि-जीवक'। पु० दे० 'वृद्धि-जीविका'। **–जीविका**–स्त्री० सूदसे जीवन-निर्वाह करना। **–द**–वि० अभ्युदय करनेवाला, वढ़ानेवाला। पु० जीवक; शूकरकंद। **–दात्री**–स्त्री० एक पौधा। **–पत्र**–पु० चीरनेका एक औजार। **–श्राद्ध**–पु० नांदीमुखश्राद्ध।

वृद्धिका–स्त्री० (सं०) वृद्धि नामकी ओषधि; अर्कपुष्पी; श्वेत अपराजिता।

वृद्धिमान्(मत्)–वि० (सं०) वढ़ा हुआ; धनी; उन्नतिशील।

वृद्ध्याजीव, वृद्ध्याजीवी(विन्), वृद्ध्युपजीवी(विन्)–वि० (सं०) सूदसे जीविका चलानेवाला।

वृद्ध्युदय–वि० (सं०) जिसके उदयसे लाभ ही लाभ हो।

वृधसान–पु० (सं०) मनुष्य।

वृधसानु–पु० (सं०) मनुष्य; पत्ता; कर्म, कृति।

वृधु–पु० (सं०) एक प्राचीन सूत्रकार।

वृध्य–वि० (सं०) बढ़ाने योग्य।

वृध्र–वि० (सं०) कटा हुआ; नष्ट किया हुआ। पु० कटा हुआ अंश, टुकड़ा।

वृश–पु० (सं०) अड़ूसा; चूहा; अदरक।

वृशा–स्त्री० (सं०) एक ओषधि।

वृश्चन–पु० (सं०) विच्छू।

वृश्चिक–पु० (सं०) विच्छू; एक राशि; मार्गशीर्ष मास; एक रोआँदार कीड़ा; गोवरका कीड़ा; कनखजूरा; केकड़ा; पुनर्नवा; मदन वृक्ष। **–पत्रा**–स्त्री० पूतिका, पोय। **–विषापहा**–स्त्री० नकुलकंद; रास्ना।

वृश्चिकर्णी–स्त्री० (सं०) मूसाकानी; आखुकर्णी।

वृश्चिका–स्त्री० (सं०) विच्छू नामकी घास; ग्रंथिपर्ण; श्वेत पुनर्नवा।

वृश्चिकाली–स्त्री० (सं०) एक क्षुप, नागदंतिका।

वृश्चिकेश–पु० (सं०) वृश्चिक राशिका देवता, वुध ग्रह।

वृश्चिपत्री, वृश्चिपर्णी–स्त्री० (सं०) मेषशृंगी; वृश्चिकाली।

वृश्चीक–पु० (सं०) एक ओषधि।

वृश्चीर, वृश्चीव–पु० (सं०) श्वेत पुनर्नवा।

वृष–पु० (सं०) वैल, साँड़; एक राशि; वह जो अपने वर्गमें सर्वश्रेष्ठ हो (प्राय. समासांतमें); मजबूत, हट्टा-कट्टा आदमी (कामशास्त्रके अनुसार चार प्रकारके पुरुषोंमेंसे एक); वैरी, शत्रु; चूहा; शिवका नंदी; नैतिकता; पुण्यकर्म; पति; गेहूँ; कर्ण; कामदेव; सूर्य; विष्णु; इन्द्र; श्रीकृष्ण; एक ओषधि; मुख्य पासा; मोरका पर; शिव; शुक्र; जल; मंदिरका एक विशेष आकार; एक पर्वत; चंद्रमाका एक अश्व; स्कंदका एक अनुचर। **–कर्णिका, –कर्णी**–स्त्री० सुदर्शना लता। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० वैलकी तरह काम करनेवाला। **–केतन**–पु० शिव। **–केतु**–पु० शिव; रक्त पुनर्नवा। **–क्रतु**–पु० इंद्र। **–खादि**–वि० कुंडलधारी। **–गंधा**–स्त्री० वस्तांत्री। **–ग**–पु० शिव। **–गण**–पु० वैदिक ऋषियोंका एक गण। **–चक्र**–पु० कृषिसंवंधी फलाफल जाननेका एक चक्र जिसमें वैलके विभिन्न अंगोंमें नक्षत्रादि रखे जाते हैं। **–दंत, –दंश,–दंशक,–दंशकक**–पु० विडाल। **–दर्भ**–पु० श्रीकृष्ण; राजा शिविका एक पुत्र। **–द्वीप**–पु० एक द्वीप। **–धर**–पु० शिव। **–ध्वज**–पु० शिव; गणेश; धर्मात्मा; एक पर्वत। **–ध्वजा**–स्त्री० दुर्गा। **–ध्वांक्षी**–स्त्री० नागरमुस्ता। **–नादी(दिन्)**–वि० वैलकी तरह आवाज करनेवाला। **–नाशन**–पु० विडंग; विष्णु। **–पति**–पु० शिव; छोड़ा हुआ साँड़; षंड, नपुंसक। **–पत्रिका**–स्त्री० वस्तांत्री। **–पर्णी**–स्त्री० मूसाकानी; सुदर्शना लता। **–पर्वा(र्वन्)**–पु० विष्णु; शिव; एक दानव; एक राजर्षि; एक वंदर; जलपात्र, भृंगारु; कसेरू। **–पुष्प**–पु० एक साग। **–प्रिय**–पु० विष्णु। **–भासा**–स्त्री० अमरावती। **–भान***–पु० राधाके पिताका नाम। **–भानु**–पु० वृषका सूर्य; दे० 'वृषभान'। **–०जा,–०नंदिनी,–०सुता**–स्त्री० राधा। **–मन्यु**–वि० वीर, साहसी। **–मूल**–पु० अड़ूसेकी जड़। **–रवि**–पु० वृषभानु। **–राजकेतन**–पु० शिव। **–लक्षणा**–स्त्री० मरदानी लड़की। **–लांछन**–पु० शिव। **–लोचन**–पु० चूहा। **–वासी(सिन्)**–वि० वृष पर्वतपर रहनेवाले (शिव)। **–वाह**–पु० वृषकी सवारी करना। **–वाहन**–पु० शिव। **–शत्रु**–पु० विष्णु। **–शील**–पु० वृषल। **–षंड**–पु० एक प्रवरकार ऋषि। **–सानु**–पु० मनुष्य; मृत्यु। **–साह्वया**–स्त्री० एक नदी। **–साह्वा**–स्त्री० एक नदी। **–सृक्की(क्किन्)**–पु० भिड़। **–सेन**–पु० कर्णका एक पुत्र; दसवें मनुका एक पुत्र। **–स्कंध**–वि० वैलकी तरह मजबूत कंधोंवाला। पु० शिव।

वृषक–पु० (सं०) साँड़; ऋषभक; आमका एक भेद; अड़ूसा; सुवलका पुत्र; भिलावाँ; चूहा; दुरालभा।

वृषण–वि० (सं०) सिंचन करनेवाला; उपजाऊ वनानेवाला। पु० अंडकोश; अंड; शिव; इन्द्र; विष्णु; साँड़; घोड़ा; वृक्ष; कार्तवीर्यका एक पुत्र। **–कच्छू**–स्त्री० अंडकोशका व्रण।

वृषणश्व–पु० (सं०) एक वैदिक राजा; इंद्रका घोड़ा; एक गंधर्व।

वृषभ–पु० (सं०) वैल, साँड़; नर जानवर; वह जो अपने वर्गमें सर्वश्रेष्ठ हो (समासांतमें); वृष राशि; एक ओषधि, ऋषभ; वैदर्भी रीतिका एक भेद (सा०); हाथीका कान; कर्णरंध्र; एक असुर; गिरिव्रजका एक पहाड़; एक मुहूर्त; मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक; वर्तमान अवसर्पिणीका प्रथम अर्हत् (जै०)। **–केतु,–ध्वज**–पु० शिव। **–गति**–पु० शिव। **–धुज***–पु० दे० 'वृषभध्वज'। –

Digitized by Siddhahta eGangotri Gyaan Kosha

ध्वजा–स्त्री० बड़ी दंती । **–पल्लव**–पु० अड़ूसा । **–यान**–पु० बैलगाड़ी । **–वीथि**–स्त्री० शुक्रके मार्गके नौ मार्गोंमेंसे एक । **–स्कंध**–वि० चौड़े और दृढ़ कंधोंवाला ।

वृषभांक–पु० (सं०) शिव ।

वृषभा–स्त्री० (सं०) एक नदी; मघा, पूर्वा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र ।

वृषभाक्ष–पु० (सं०) विष्णु । वि० बैल जैसी आँखोंवाला ।

वृषभाक्षी–स्त्री० (सं०) इनारुन, इंद्रवारुणी लता ।

वृषभाद्रि–पु० (सं०) एक पर्वत ।

वृषभी–स्त्री० (सं०) विधवा; केवाँच ।

वृषभेक्षण–पु० (सं०) विष्णु ।

वृषय–पु० (सं०) आश्रय, पनाह ।

वृषल–पु० (सं०) शूद्र; नर्तक; अश्व; बैल; गृंजन; जातिच्युत ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य; अधार्मिक व्यक्ति; चंद्रगुप्त मौर्य; बड़ी पिप्पली । **–पाचक**–पु० शूद्रके लिए भोजन बनानेवाला । **–याजक**–पु० शूद्रके लिए यज्ञ करनेवाला ।

वृषलक–पु० (सं०) तुच्छ शूद्र ।

वृषली–स्त्री० (सं०) शूद्रा; अविवाहित रजस्वला कन्या; वह स्त्री जिसे रजःस्राव हो रहा हो; वंध्या स्त्री; वह स्त्री जिसे मरा बच्चा पैदा हुआ हो । **–पति**–पु० शूद्र स्त्रीका पति । **–पुत्र**–पु० शूद्राका पुत्र । **–फेनपीत**–वि० जिसने शूद्राका चुंबन किया हो । **–सेवन**–पु० शूद्राका सहवास ।

वृषस्यंती–स्त्री० (सं०) कामुक स्त्री; मस्त गाय ।

वृषांक–पु० (सं०) शिव; धर्मात्मा; भिलावाँ; षंड, क्लीव; मोर । **–ज**–पु० डमरु ।

वृषांचन–पु० (सं०) शिव ।

वृषांड–पु० (सं०) एक असुर ।

वृषांतक–पु० (सं०) विष्णु ।

वृषा–स्त्री० (सं०) गौ; मूसाकानी; केवाँच; दंतिका, उदुंबरपर्णी; बड़ी दंती; मालकँगनी; असगंध ।

वृषा(षन्)–पु० (सं०) साँड़; वृष राशि; वह जो अपने वर्गका प्रधान हो; अश्व; दुःख, शोक; वेदनाका अज्ञान; इंद्र; कर्ण; अग्नि; सोम ।

वृषाकपायी–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; गौरी; शची; स्वाहा; उषा; इंद्र-माता; शतावर; जीवंती ।

वृषाकपि–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; विष्णु; शिव; इंद्र ।

वृषाकर–पु० (सं०) उड़द ।

वृषाकृति, वृषाक्ष–पु० (सं०) विष्णु ।

वृषाण–पु० (सं०) शिवका एक अनुचर ।

वृषाणक–पु० (सं०) शिव; शिवका एक अनुचर ।

वृषाणी–स्त्री० (सं०) एक अष्टवर्गीय ओषधि, ऋषभक ।

वृषादनी–स्त्री० (सं०) इनारुन, इंद्रवारुणी ।

वृषादर्भ–पु० (सं०) शिविका एक पुत्र (भा०) ।

वृषादित*–पु० दे० 'वृषादित्य' ।

वृषादित्य–पु० (सं०) वृष (ज्येष्ठ)की संक्रांतिके सूर्य ।

वृषाद्रि–पु० (सं०) एक पहाड़ (केरल) ।

वृषान्न–पु० (सं०) पौष्टिक आहार ।

वृषायण–पु० (सं०) शिव; गौरैया पक्षी, चटक ।

वृषायणी, वृषाश्रिता–स्त्री० (सं०) वृष या शिव (की जटा) ही जिसका घर है, गंगा ।

वृषारव–पु० (सं०) कर्कश स्वरवाला एक जंतु; नगाड़ा आदि बजानेकी लकड़ी ।

वृषावाह–पु० (सं०) एक तरहका जंगली अन्न या चावल ।

वृषाशील–पु० (सं०) दे० 'वृषल' ।

वृषासुर–पु० (सं०) एक असुर, भस्मासुर ।

वृषाहार–पु० (सं०) चूहोंका आहार करनेवाला, बिलाव ।

वृषाही(हिन्)–पु० (सं०) विष्णु ।

वृषी(षिन्)–पु० (सं०) मयूर ।

वृषेंद्र–पु० (सं०) अच्छा साँड़, बैल ।

वृषोत्सर्ग–पु० (सं०) एक धार्मिक कृत्य, मृत जनके नामपर चक्रसे दागकर साँड़ छोड़ना ।

वृषोत्साह, वृषोदर–पु० (सं०) विष्णु ।

वृष्ट–वि० (सं०) बरसा हुआ; वर्षाके रूपमें गिरा हुआ; जिसने वर्षा की हो ।

वृष्टि–स्त्री० (सं०) वर्षा, मेघसे जलबिंदुओंका गिरना; वर्षाकी तरह किसी चीजका बहुत बड़ी संख्या या परिमाणमें गिरना; झड़ी । **–कर**–वि० वृष्टि करनेवाला । **–काम**–वि० वर्षाका इच्छुक । **–कामना**–स्त्री० वर्षाकी इच्छा । **–काल**–पु० बरसात, प्रावृट् । **–घ्नी**–स्त्री० छोटी इलायची । **जीवन**–वि० (जमीन)–जो खेतीके लिए वर्षापर निर्भर हो, देवमातृक । पु० चातक । **–पात,–संपात**–पु० वर्षाका होना । **–भू**–पु० मेढक । **–मान,–मापक**–पु० वर्षा मापनेका यंत्र । **–वैकृत**–पु० अतिवर्षण या अवर्षण ।

वृष्टचंबु–पु० (सं०) वर्षाका जल ।

वृष्णि–वि० (सं०) क्रोधी; क्रुद्ध; पाषंड; नास्तिक, धर्म-विरोधी; प्रचंड । पु० मेष; साँड़; प्रकाश-रश्मि; वायु; शिव; विष्णु; इंद्र; अग्नि; यादव । **–गर्भ**–पु० कृष्ण । **–पाल**–पु० गड़ेरिया । **–वरेण्य**–पु० कृष्ण । **–वृद्ध**–पु० यादवोंमें श्रेष्ठ व्यक्ति ।

वृष्णिक–पु० (सं०) एक ऋषि ।

वृष्ण्य–पु० (सं०) वीर्य, पुंस्त्व ।

वृष्य–वि० (सं०) पुंस्त्व बढ़ानेवाला; कामोद्दीपक, बाजीकर । पु० शिव; माष, उरद; ऋषभ; आँवला; मृणाल । **–कंदा**–स्त्री० विदारीकंद । **–गंधा**–स्त्री० वृद्धदारक; अजांत्री; अतिबला । **–गंधिका**–स्त्री० अतिबला । **–चंडी**–स्त्री० मूसाकानी । **–पर्णी**–स्त्री० विदारीकंद । **–फला**–स्त्री० आमलकी । **–वल्लिका,–वल्ली**–स्त्री० विदारीकंद ।

वृष्या–स्त्री० (सं०) ऋद्धि ओषधि; भूम्यामलकी; केवाँच; अतिबला; शतावरी; विदारी; बड़ी दंती ।

वृहच्चंचु–पु० (सं०) महाचंचु नामक शाक ।

वृहच्चक्रभेद–पु० (सं०) जयंती ।

वृहच्चित्त–पु० (सं०) फलपूर, बिजौरा नीबू ।

वृहच्छद–पु० (सं०) अखरोट ।

वृहच्छफरी–स्त्री० (सं०) सफरी मछली ।

वृहच्छल्क–पु० (सं०) चिंगट, झिंगवा मछली ।

वृहच्छालपर्णी–स्त्री० (सं०) महाशालपर्णी ।

वृहच्छिबी–स्त्री० (सं०) सेम ।

वृहज्जीरक–पु० (सं०) मँगरैला ।

वृहज्जीवंती, वृहज्जीवा–स्त्री० (सं०) वृहत् जीवंतिका, बड़ी जीवंती ।

वृहड्ढक्का–स्त्री० (सं०) पलाशका एक भेद ।

वृहतिका–स्त्री० (सं०) वृहती; उत्तरीय वस्त्र ।

वृहती–स्त्री० (सं०) दे० 'वृहती' ।

वृहत्–वि० (सं०) बड़ा, महान्; भारी । **–कंद**–पु० विष्णुकंद; गाजर । **–कालशाक**–पु० पुनर्नवा । **–काश**–पु० खड्गट, खगड़ा । **–कुक्षि**–वि० तोंदल । **–कोशातकी**–स्त्री० नेनुआ; तरोई । **–खर्जूरिका**–स्त्री० छुहारा । **–ताल**–पु० श्रीताल वृक्ष, हिंताल । **–तिक्ता**–स्त्री० छोटा पाठा । **–तृण**–पु० बाँस । **–त्वक्(च्)**–पु० ग्रहनाशन वृक्ष, छतिवन । **–त्वच**–पु० नीम । **–पंचमूल**–पु० बेल, सोनापाठा, गंभारी, पाँडर और गनियारीका एक वर्ग । **–पत्र**–पु० बथुआ; पठानी लोध; हस्तिकंद । **–पत्रा,–पत्रिका**–स्त्री० त्रिपर्णिका; कासमर्द । **–पर्ण**–पु० पठानी लोध । **–पर्णी**–स्त्री० बड़ी बनसनई । **–पाटलि**–पु० धतूरा । **–पाद**–पु० बड़का पेड़ । **–पारेवत**–पु० महापारेवत । **–पाली(लिन्)**–पु० काली जीरी, वनजीरक । **–पीलु**–पु० पहाड़ी अखरोट, महापीलु । **–पुष्प**–पु० केला; पेठा । **–पुष्पा**–स्त्री० बनसनई । **–पुष्पी**–स्त्री० सनई । **–फल**–पु० कुम्हड़ा; कटहल; जामुन; चिचड़ा । **–फला**–स्त्री० लौकी, कद्दू; तितलौकी; महेंद्रवारुणी; महाजंबू, बड़ा जामुन; पेठा, सफेद कुम्हड़ा ।

वृहद्–'वृहत्'का समासगत रूप । **–अंग**–पु० हाथी । **–अम्ल**–पु० रुजाकर, कमरख । **–एला**–स्त्री० बड़ी इलायची । **–गुह**–पु०

कारुप देश । –गोल–पु० तरबूज । –दंती–स्त्री० बड़ी दंती । –दल –पु० पट्टिकालोध्र; छातवन; हिंताल वृक्ष; लाजवंती । –दला–स्त्री० लजालू । –द्रोणी–स्त्री० एक परिमाण । –धान्य–पु० ज्वार, यवनाल । –बदर–पु० बड़ा बेर । –बल–पु० महालांगल। –बला–स्त्री० सहदेई; पठानी लोध; लाजवंती । –बीज–पु० अमड़ा । –भंडी–स्त्री० त्रायमाणा लता । –भट्टारिका–स्त्री० दुर्गा । –भानु–पु० अग्नि; सूर्य; चित्रक । –रथ–पु० यज्ञपात्र; मंत्रविशेष; इंद्र; सामवेदका एक अंश । वि० बहुत बड़े रथवाला। –रथा–स्त्री० एक प्राचीन नदी । –रावी(विन्)–पु० क्षुद्र उलूक। –वर्ण–पु० सोनामक्खी । –वल्क,–वल्कल–पु० पट्टिकालोध्र; छतिवन । –वल्ली–स्त्री० करेला । –वात–पु० देवधान्य, अश्मरीहर । –वारुणी–स्त्री० महेंद्रवारुणी । –वीज–पु० अमड़ा ।

वृहन्–'वृहत्'का समासगत रूप । –नल–पु० अर्जुन; बाहु; एक तरहका बड़ा नरसल । –नला–स्त्री० विराटराजके यहाँ अज्ञातवास करते समय अर्जुनका नाम । –नाल–पु० बड़ा नरसल । –निंब–पु० बकायन । –मरिच,–मरीच–पु० काली मिर्च।

वृहल्लोणा–स्त्री० (सं०) कुलफा नामका साग ।

वृहस्पति–पु० (सं०) दे० 'बृहस्पति' ।

वृहा–पु० (सं०) साठी धान ।

वेंक–पु० (सं०) दक्षिण भारतका एक प्राचीन जनपद ।

वेंकट–पु० (सं०) द्रविड़ देशका एक पवित्र पर्वत जिसकी चोटीपर विष्णुका मंदिर है । –गिरि–पु० वेंकट नामक पर्वत ।

वेंकटाचल, वेंकटाद्रि–पु० (सं०) दे० 'वेंकट' ।

वेंकटेश, वेंकटेश्वर–पु० (सं०) विष्णु (वेंकटस्थ मूर्ति) ।

वेंघर–पु० (सं०) रूपका गर्व ।

वे–सर्व० 'वह'का बहु० ।

वेकट–पु० (सं०) एक मछली, भाकुर; विदूषक; युवा; जौहरी ।

वेक्षण–पु० (सं०) अच्छी तरह देखना, देख-भाल ।

वेग–पु० (सं०) तीव्र प्रवृत्ति; चलने या बहनेकी तेज गति; किसी विशेष दिशामें समयके इकाई मात्रकमें तय की गयी दूरी । वेग एक सदिश राशि है । इसकी नाप 'सेमी प्रति सेकण्ड' 'फुट प्रति सेकण्ड' या 'किलोमीटर प्रति घण्टा' आदिमें की जाती है । प्रचंडता; प्रवाह, धारा; संकल्प; रेत; शुक्र; मल-मूत्रके निकलनेकी प्रवृत्ति; शक्ति; संचार (विषादिका); त्वरा, जल्दी, शीघ्रता; बाणकी गति; प्रगाढ़ प्रणय; आंतरिक भावकी बाह्य अभिव्यक्ति, अनुभाव; आनंद, प्रसन्नता; क्षोभ; भावातिरेक; रोगका आक्रमण; उद्यम; वृद्धि; महाज्योतिष्मती; लाल इनारुन; तेज, वायु आदिमें पाया जानेवाला एक गुण (न्या०) । –ग–वि० तेज जाने या बहनेवाला । –गा–स्त्री० नदी । –घ्न–वि० तेजीसे मारनेवाला । –दंड–पु० हाथी । –धारण–पु० मल-मूत्रका वेग रोकना । –नाशन–पु० वेगको रोकनेवाला; श्लेष्मा; कफ । –परिक्षय–पु० रोगकी उग्रताका कम होना । –मापक–पु० गतिमान वस्तुका वेग मापनेवाला यंत्र । –रोध–पु० गतिमें बाधा पड़ना, रोक; कब्ज । –वाहिनी–स्त्री० गंगा; बाण; एक प्राचीन नदी । –वाही(हिन्)–वि० तेजीसे बहने, उड़ने या जानेवाला । –विघात–पु० मलका वेग रोकना । –विधारण–पु० दे० 'वेगरोध' । –विरोधी(धिन्)–स्त्री० गतिमें बाधक होनेवाला; कब्ज करनेवाला । –वृद्धि–स्त्री० (ऐक्सेलरेशन) वेग या रफ्तार बढ़नेकी क्रिया । –वृष्टि–वि० घोर, तेज, मूसलधार वर्षा । –संपन्न–वि० वेगवाला, तेज । –सर–पु० खच्चर ।

वेगवती–स्त्री० (सं०) एक नदी; एक ओषधि; एक वृत्त; एक विद्याधरी । वि० स्त्री० वेगवाली ।

वेगवान्(वत्)–वि० (सं०) क्षुब्ध; तीव्र, उग्र; वेगयुक्त; तेज चलनेवाला । पु० चीता; एक असुर; एक विद्याधर; कृष्णका एक पुत्र; विष्णु ।

वेगा–स्त्री० (सं०) महाज्योतिष्मती ।

वेगाघात–पु० (सं०) दे० 'वेगविधारण' ।

वेगानिल–पु० (सं०) प्रचंड वायु, प्रभंजन ।

वेगावतरण–पु० (सं०) तेजीसे नीचे आना ।

वेगित–वि० (सं०) वेगयुक्त; क्षुब्ध; तेज किया हुआ ।

वेगिनी–स्त्री० (सं०) नदी; एक विशेष आकारकी नाव ।

वेगी(गिन्)–वि० (सं०) वेगयुक्त, तेज; उग्र । पु० बाज पक्षी, हरकारा । –(गि)हरिण–पु० एक मृग, श्रीकारी ।

वेगोदग्र–वि० (सं०) जिसका बहुत तेज असर हो (जैसे विषका) ।

वेचा–स्त्री० (सं०) मजदूरी, पारिश्रमिक; मूल्य ।

वेजानी–स्त्री० (सं०) सामराजी ।

वेट–पु० (सं०) पीलु वृक्ष ।

वेटा–स्त्री० (सं०) वेश्यांकी बस्ती ।

वेटी–स्त्री० (सं०) नाव ।

वेटेरिनरी–वि० (अं०) पालतू पशुओंके रोगोंसे संबंध रखनेवाला । –अस्पताल–पु० पशु-चिकित्सालय, 'वेटेरिनरी हॉस्पिटल' ।

वेट्–पु० (सं०) यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाला स्वाहा जैसा एक शब्द ।

वेड–पु० (सं०) एक तरहका चंदन ।

वेड़ा–स्त्री० (सं०) नाव, बेड़ा ।

वेढमिका–स्त्री० (सं०) उड़दकी पीठी भरी हुई रोटी, बेढ़ई ।

वेण–पु० (सं०) एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो गानेका पेशा करती थी; एक सूर्यवंशी राजा जिसे ऋषियोंने अत्याचारी होनेके कारण मार डाला था; नरसलका काम करनेवाला । –योनि–स्त्री० एक लता ।

वेणवी(विन्)–वि० (सं०) वेणुवाला । पु० शिव ।

वेणा–स्त्री० (सं०) खस; कृष्णाकी एक सहायक नदी ।

वेणि–स्त्री० (सं०) चोटी गूँथना; बालोंकी लटकती हुई चोटी (प्रायः प्रवत्स्यत्पतिका आदिका चिह्न); जल-प्रवाह; दो या अधिक नदियोंका संगम; गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम; एक नदी; देवदाली । –बंध–पु० बालोंकी चोटी । –माधव–पु० प्रयागस्थ देवता विशेष । –वेधनी–स्त्री० जलौका, जोंक । –वेधिनी–स्त्री० कंघी ।

वेणिक–पु० (सं०) एक जनपद; वहाँका निवासी ।

वेणिका–स्त्री० (सं०) बालोंकी चोटी; अविच्छिन्न प्रवाह; नरसलका बेड़ा ।

वेणिनी–स्त्री० (सं०) चोटीवाली स्त्री ।

वेणी–स्त्री० (सं०) बालोंकी चोटी; धारा; देवताड़; एक नदी; मेषी, भेड़; बाँध, पुल । –ग,–मूलक–पु० खस । –दान–पु० प्रयागमें बाल कटवानेका एक संस्कार । –संवरण,–संहरण,–संहार–पु० चोटी गूँथना, जूड़ा बाँधना । –स्कंध–पु० एक नाग ।

वेणी(णिन्)–पु० (सं०) एक नाग ।

वेणीर–पु० (सं०) रीठा, अरिष्ट वृक्ष; नीम ।

वेणु–पु० (सं०) बाँस; नरसल; बाँसुरी; एक यादव नरेश; एक पर्वत; एक नदी; राजा वेण । –कर्कर–पु० करील; कनेर (?) । –कार–पु० बाँसुरी बनानेवाला । –काव्य–पु० (लिरिक) गाये जा सकने योग्य काव्य ('सुधीन्द्र' द्वारा प्रयुक्त), गीति-काव्य । –गुल्म,–जाल–पु० बाँसका झुरमुट । –जंघ–पु० एक मुनि । –ज–पु० बाँसका चावल; काली मिर्च । वि० बाँससे उत्पन्न (जैसे अग्नि) । –०मुक्ता–स्त्री० बाँससे होनेवाला गोल दाना, मोती । –दत्त–पु० एक प्राचीन ऋषि । –दल–पु० बाँसका फट्टा । –दारी(रिन्)–वि० बाँस फाड़नेवाला । पु० एक दानव । –ध्म–पु० बाँसुरी बजानेवाला । –निर्लेखन–पु० बाँसकी छाल । –निस्रुति–पु० ईख । –नृत्या–स्त्री० एक तांत्रिक देवी । –प–पु० एक प्राचीन जनपद । –पत्र–पु० बाँसका पत्ता । –पत्रक–पु० एक तरहका साँप । –पत्रिका,–पत्री–स्त्री० हिंगुपर्णी, वंशपत्री । –पुर–पु० एक नगर । –बीज–पु० बाँसका चावल । –मंडल–पु० कुशद्वीपका एक वर्ष । –मुद्रा–स्त्री० उँगलियोंकी एक विशेष मुद्रा (तं०) । –यव–पु० बाँसका चावल । –यष्टि–स्त्री० बाँसकी छड़ी । –वन–पु० बाँसका वन; एक जंगल । –वाद,–वादक–पु० बाँसुरी बजानेवाला । –वादन,–वाद्य–पु० बाँसुरी बजाना । –विदल–पु० बाँसका फट्टा । –वीणाधरा–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका । –वैदल–वि० बाँसके फट्टोंका बना हुआ । –शय्या–स्त्री० बाँसकी खाट । –हय–पु० यदुका एक वंशज । –होत्र–पु० धृष्टकेतुका एक पुत्र ।

वेणुक–पु० (सं०) बाँसुरी; बाँसकी मुठियावाला एक तरहका दंड

(हाथीको चलानेके लिए); पैना, चावुक; एक जनपद; इलायची।

वेणुका–स्त्री० (सं०) विषैले फलोंवाला एक वृक्ष; बाँसके दस्तेवाला एक तरहका दंड (हाथीको चलानेका)।

वेणुकीय–वि० (सं०) वेणु-संबंधी।

वेणुकीया–स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ बाँस अधिक उपजे।

वेणुग्रध–पु० (सं०) एक ओषधि।

वेणुन–पु० (सं०) काली मिर्च।

वेणुमती–स्त्री० (सं०) एक नदी।

वेणुमय–वि० (सं०) बाँसका बना हुआ।

वेणुमान्(मत्)–पु० (सं०) एक पर्वत; एक पौराणिक पर्व; ज्योतिष्मान्का एक पुत्र; वेणुमान् द्वारा शासित एक वर्ष। वि० बाँसका बना हुआ।

वेतंड–पु० (सं०) हाथी।

वेतंडा–स्त्री० (सं०) दुर्गाका एक रूप।

वेतंद–पु० (सं०) दे० 'वेतंड'।

वेत–पु० (सं०) बेंत, वेत्र।

वेतन–पु० (सं०) नियत समयपर, प्रायः महीने-महीने दिया जानेवाला पारिश्रमिक, तनख्वाह (पे); वृत्ति; जीविका; चाँदी। **–कल्पना**–स्त्री० वेतन नियत करना। (कौ०)। **–कालातिपातन**–पु० वेतन देनेमें देर करना (कौ०)। **–क्रम**–पु० (ग्रेड ऑफ पे) वेतनका क्रम या दरजा। **–जीवी(विन्)**–वि० वेतनसे अपना निर्वाह करनेवाला; वेतन लेकर काम करनेवाला। **–दाता**–पु० (पेमास्टर) सैनिकों, श्रमिकों आदिको वेतन वितरित करनेवाला। **–दान**–पु० पारिश्रमिक देना। **–नाश**–पु० वेतन या मजदूरीकी जब्ती। **–फलक**–पु० (पे-शीट) कर्मचारियों, कर्मियोंको मिलनेवाले किसी मासके वेतनका पूरा-पूरा ब्यौरा देनेवाला कागज या फलक। **–भुक्(ज्),–भोगी(गिन्)**–पु० नौकर, कर्मचारी; वेतन लेकर काम करनेवाला, वैतनिक कर्मचारी।

वेतनादान–पु० (सं०) वेतन न चुकाना।

वेतनी(निन्)–वि० (सं०) वेतन, वृत्ति पानेवाला।

वेतस–पु० (सं०) बेंत; जल-बेंत; एक तरहका नीबू; अग्नि; वड़वानल। **–गृह**–पु० बेंतका बना हुआ मंडप। **–पत्र**–पु० बेंतका पत्ता; चीर-फाड़का एक औजार जो बेंतके पत्तेकी शक्लका होता था। **–परिक्षिप्त**–वि० बेंतसे घिरा हुआ।

वेतसक–पु० (सं०) एक जनपद।

वेतसाम्ल–पु० (सं०) अम्लवेतस।

वेतसिनी–स्त्री० (सं०) एक पुराणोक्त नदी।

वेतसी–स्त्री० (सं०) बेंत; दे० 'वेतस-पत्र'।

वेता–स्त्री० (सं०) वेतन।

वेताल–पु० (सं०) प्रेत (विशेषकर जिसका शवपर अधिकार हो); शिवका एक गणाधिप; द्वारपाल; छप्पय छंदका एक भेद। **–कर्मज्ञ**–वि० वेतालके कर्म जाननेवाला। **–ग्रह**–पु० एक प्रकारका प्रेतावेश। **–जननी**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–भट्ट**–पु० विक्रमादित्यके दरबारके नौ रत्नोंमेंसे एक। **–साधन**–पु० साधना द्वारा वेतालको वशमें करना। **–सिद्धि**–स्त्री० वेतालकी अलौकिक शक्ति (बौ०)।

वेताला, वेताली–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

वेतालासन–पु० (सं०) आसनका एक प्रकार।

वेत्ता(त्तृ)–वि० (सं०) जानकार, ज्ञाता; अनुभव करनेवाला। पु० ऋषि जिसे आत्मा-परमात्माका ज्ञान हो; प्राप्त करनेवाला; विवाहमें प्राप्त करनेवाला, पति।

वेत्र–पु० (सं०) बेंत; डंडा; द्वारपालका दंड। **–करीर**–पु० बेंतकी नयी कोंपल। **–कार**–पु० बेंतका काम करनेवाला। **–कूट**–पु० हिमालयकी एक चोटी। **–गंगा**–स्त्री० हिमालयकी एक नदी। **–ग्रहण**–पु० द्वारपालका काम। **–दंडिक**–पु० द्वारपाल। **–धर,–धारक**–पु० द्वारपाल; छड़ीबरदार। **–धारी(रिन्)**–पु० रईसका नौकर। **–पाणि,–हस्त**–पु० छड़ीबरदार। **–भृत्**–पु० दे० 'वेत्र-धर'। **–मूला**–स्त्री० यवतिक्ता। **–यष्टि**–बेंतकी छड़ी। **–लता**–स्त्री० बेंतकी छड़ी। **–हा(हन्)**–पु० इंद्र।

वेत्रक–पु० (सं०) सरपत।

वेत्रकीय–वि० (सं०) वेत्रपूर्ण।

वेत्रवती–स्त्री० (सं०) एक नदी, बेतवा; द्वारपालिका।

वेत्राघात, वेत्राभिघात–पु० (सं०) बेंत लगाना, बेंतकी छड़ीसे मारना।

वेत्राम्ल–पु० (सं०) दे० 'वेतसाम्ल'।

वेत्रावती–स्त्री० (सं०) एक नदी।

वेत्रासन–पु० (सं०) बेंतकी कुरसी या बेंतकी कुरसीनुमा डोली।

वेत्रासुर–पु० (सं०) एक पुराणोक्त असुर राजा जिसे इंद्रने मारा था।

वेत्रिक–पु० (सं०) द्वारपाल; एक जनपद।

वेत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) द्वारपाल; आसाबरदार, चोबदार। वि० जिसके हाथमें बेंत हो।

वेद–पु० (सं०) ज्ञान; यथार्थ ज्ञान; हिंदुओंके आदि धर्म-ग्रंथ (पहले ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद–ये ही तीन थे, पीछे अथर्ववेद भी मिलाया गया); विष्णु; यज्ञका एक अंश; व्याख्या, कारिका; एक छंद; प्राप्ति; चारकी संख्या; कुशका पूला; अनुभूति। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० वेदका रचयिता; सूर्य; विष्णु; शिव; वर-वधूको आशीर्वाद देनेवाले गुरुजन। **–कार**–पु० वेदका रचयिता। **–कारण**–पु० विष्णु। **–कुशल**–वि० वेदज्ञ। **–कौलेयक**–पु० शिव। **–गंगा**–स्त्री० दक्षिण भारतकी एक नदी। **–गत**–वि० जो चौथे स्थानपर हो। **–गर्भ**–वि० वेदोंसे पूर्ण। पु० ब्रह्मा; ब्राह्मण; विष्णु। **–गर्भा**–स्त्री० सरस्वती। **गांभीर्य**–पु० वेदोंका गूढ़ अर्थ। **–गाथ**–पु० एक ऋषि। **–गुप्त**–पु० पराशरपुत्र कृष्ण। **–गुप्ति**–स्त्री० (ब्राह्मणों द्वारा) वेदोंकी रक्षा। **–गुह्य**–पु० विष्णु। **–घोष**–पु० वेदपाठकी ध्वनि। **–जननी**–स्त्री० गायत्री। **–ज्ञ**–वि० वेदोंका जानकार; ब्रह्म ज्ञानी। **–तत्त्व**–पु० वेदोंका रहस्य, मुख्य अभिप्राय। **–तात्पर्य**–पु० वेदोंका यथार्थ अर्थ। **–त्रय**–पु०,**–त्रयी**–स्त्री० ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेदका समाहार। **–दक्षिणा**–स्त्री० वेद पढ़ानेकी दक्षिणा या शुल्क। **–दर्शन**–पु० वेदमें उल्लिखित होना। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० वेदज्ञ। **–दल**–वि० चार पत्तोंवाला। **–दान**–पु० वेदका अध्यापन। **–दीप**–पु० वाजसनेयी संहिताका महीधरकृत भाष्य। **–दृष्ट**–वि० वेदानुमोदित। **–धारण**–पु० वेदोंको स्मृतिमें रखना, याद रखना। **–ध्वनि**–स्त्री०,**–नाद**–पु० दे० 'वेदघोष'। **–निंदक**–पु० वेदोंमें अविश्वास करनेवाला, नास्तिक, बौद्ध, जैन। **–निंदा**–स्त्री० वेदोंमें अविश्वास। **–निंदी(दिन्)**–पु० दे० 'वेदनिंदक'। **–निधि**–पु० ब्राह्मण। **–पठिता(तृ)**–वि०, पु० वेद पढ़ने या उसका पाठ करनेवाला। **–पथ,–पथी(थिन्)**–पु० वेदका मार्ग। **–पाठ**–पु० वेदोंका पाठ करना। **–पाठक,–पाठी(ठिन्)**–वि०, पु० वेदका पाठ करनेवाला। **–पारग**–वि० वेदज्ञ। पु० वेदज्ञ ब्राह्मण। **–पुण्य**–पु० वेदपाठ करनेका पुण्य। **–प्रदान**–पु० दे० 'वेद-दान'। **–प्लावी(विन्)**–पु० वह व्यक्ति जो सार्वजनिक रूपसे वेदोंकी शिक्षा देता है। **–फल**–पु० वेदपाठसे होनेवाला पुण्य। **–बाहु**–पु० मनुरैवतके अधीन सात ऋषियोंमेंसे एक; कृष्णका एक पुत्र; पुलस्त्यका एक पुत्र। **–बाह्य**–पु० वेदमें विश्वास न करनेवाला; वेदविरुद्ध। **–बीज**–पु० कृष्ण। **–ब्रह्मचर्य**–पु० वेदपाठ करनेकी अवस्था। **–भू**–पु० देवताओंका एक गण। **–मंत्र**–पु० वेदके मंत्र; एक जनपद। **–माता(तृ)**–स्त्री० सरस्वती; गायत्री; दुर्गा। **–मातृका**–स्त्री० सावित्री। **–मुंड**–पु० एक असुर। **–मूर्ति**–पु० वेदज्ञ ब्राह्मण; सूर्य। **–मूल**–वि० जिसका आधार वेद हो। **–यज्ञ**–पु० वेदाध्ययन आदि; वैदिक यज्ञ। **–रक्षण**–पु० वेदोंकी रक्षा (जो ब्राह्मणोंका कर्तव्य है)। **–रहस्य**–पु० उपनिषद्। **–वचन**–पु० वेदमें आये हुए वचन या मंत्र। **–वती**–स्त्री० एक प्राचीन नदी; सीताका पूर्वजन्मका नाम। **–वदन**–पु० व्याकरण; ब्रह्मा। **–वाक्य**–पु० वेदका वाक्य; पूर्णतः प्रामाणिक वाक्य; अखंडनीय बात। **–वाद**–पु० वेदोंके संबंधमें होनेवाली बहस। **–वादी(दिन्)**–वि० वेदज्ञ। **–वास**–पु० ब्राह्मण। **–वाह**–वि० वेदज्ञ, वेदपरायण। **–वाहन**–पु० सूर्य। **–वाह्य**–वि० दे० 'वेद-बाह्य'।

–विक्रयी(यिन्)–वि० धन लेकर वेद पढ़ानेवाला। **–विद्**–वि० वेदज्ञ। पु० विष्णु; वेदज्ञ ब्राह्मण। **–विहित**–वि० वेदानुमोदित। **–वैनाशिका**–स्त्री० एक नदी। **–व्यास**–पु० दे० 'कृष्ण द्वैपायन'। **–व्रत**–पु० वेदोंका स्वाध्यायी। **–व्रती(तिन्)**–वि० वेदाध्ययनका व्रत रखनेवाला। **–शिर**–पु० एक अस्त्र (पु०); कृशाश्वका पुत्र (भा०)। **–शिरा(रस्)**–पु० मार्कंडेयका पुत्र, भार्गवोंका मूल पुरुष। **–शीर्ष**–पु० एक पहाड़। **–श्री**–पु० एक ऋषि। **–श्रुत**–पु० एक देववर्ग। **–श्रुति**–स्त्री० वेदपाठ; एक नदी। **–सन्न्यास**–पु० वैदिक कर्मोंका त्याग। **–सम्मत**–वि० वेदानुमोदित। **–सम्मित**–वि० वेदके समान महत्त्वका; वेदानुमोदित। **–सार**–पु० विष्णु। **–स्मृता,–स्मृति,–स्मृती**–स्त्री० एक नदी। **–हीन**–वि० जिसे वेदोंका ज्ञान न हो।

वेदक–वि० (सं०) जनानेवाला; होशमें लानेवाला।

वेदन–पु०, **वेदना**–स्त्री० (सं०) ज्ञान; अनुभूति; पीड़ा, दुःख; प्राप्ति; संपत्ति; विवाह; भेंट, उपहार; शूद्राका उच्चतर वर्णके पुरुषसे विवाह; जताना।

वेदनी–स्त्री० (सं०) त्वचा।

वेदनीय–वि० (सं०) पीड़ा, कष्ट देनेवाला; जनाने योग्य; जानने योग्य।

वेदमुख्य–पु० (सं०) एक तरहका कीड़ा, एक तरहका पंखदार खटमल।

वेदयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) जानने, अनुभव करनेवाला।

वेदांग–पु० (सं०) वेदोंके अंग, वेदोंके अंगस्वरूप कुछ ग्रंथ जो वेदमंत्रोंके उच्चारण, अर्थ समझने आदिमें सहायक होते हैं (इनकी संख्या ६ है–शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, ज्योतिष और व्याकरण); सूर्य।

वेदांत–पु० (सं०) ब्रह्मविद्या (उपनिषद् और आरण्यकके अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा और जगत्का निरूपण किया गया है); उत्तर मीमांसा, छः दर्शनोंमेंसे अंतिम। (इसमें ब्रह्मको ही पारमार्थिक सत्ता कहा है और जीव और जगत् अतिरिक्त पदार्थ नहीं माने गये हैं)। **–ग**–वि० वेदज्ञ। पु० वेदांत दर्शनका अनुयायी। **–ज्ञ**–वि० वेदांत जाननेवाला। **–वादी(दिन्)**–वि० वेदांत दर्शन माननेवाला। **–विद्, वेदी(दिन्)**–वि० वेदांतका जानकार। **–सूत्र**–पु० व्यासकृत ब्रह्मसूत्र।

वेदांती(तिन्)–वि० (सं०) वेदांतका पंडित, ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वेदात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) विष्णु; सूर्य।

वेदादि–पु० (सं०) प्रणव, ओ३म्। **–बीज,–वर्ण**–पु० प्रणव, ओ३म्।

वेदाधिगम–पु० (सं०) वेदोंका अध्ययन।

वेदाधिदेव–पु० (सं०) ब्रह्मा; ब्राह्मण।

वेदाधिप, वेदाधिपति–पु० (सं०) वेदोंके अधिपति ग्रह (जो ऋक्, यजु, साम और अथर्वके क्रमशः बृहस्पति, शुक्र, मंगल और बुध हैं); विष्णु।

वेदाध्यक्ष–पु० (सं०) विष्णु।

वेदाध्ययन–पु० (सं०) वेदोंका अध्ययन।

वेदाध्यापक–पु० वेदका अध्यापन करनेवाला, आचार्य।

वेदाध्यायी(यिन्)–वि० (सं०) वेदोंका पाठ करनेवाला।

वेदानुवचन–पु० (सं०) वेदपाठ, वेद-वचन।

वेदाप्ति–स्त्री० (सं०) वेदकी प्राप्ति।

वेदार–पु० (सं०) गिरगिट।

वेदार्ण–पु० (सं०) एक तीर्थ।

वेदाश्र–वि० (सं०) चार कोणोंवाला।

वेदाश्वा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

वेदि–पु० (सं०) विद्वान्, ऋषि; आचार्य। स्त्री० दे० 'वेदी'। **–करण**–पु० वेदी तैयार करना। **–जा**–स्त्री० द्रौपदी। **–पुरीष**–पु० वेदीकी ढीली मिट्टी। **–भाजन**–पु० वेदीके वदले काम देनेवाला स्थान। **–मध्या**–वि० स्त्री० (वह स्त्री) जिसकी कमर वेदी जैसी हो। **–मान,–विमान**–पु० वेदीके लिए जगहकी पैमाइश। **श्रोणि,–श्रोणी**–स्त्री० वेदीका कटिप्रदेश जैसा भाग। **–संभवा**–स्त्री० दे० 'वेदिजा'।

वेदिक–पु० (सं०) आसन, चौकी।

वेदिका–स्त्री० (सं०) वेदी, यज्ञभूमि; धार्मिक कृत्योंके लिए बनाया हुआ छोटा चबूतरा; आँगनमें बना हुआ खुला मंडप; लतामंडप; आसन।

वेदित–वि० (सं०) निवेदित, सूचित; देखा हुआ।

वेदितव्य–वि० (सं०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।

वेदिता(तृ)–वि० (सं०) जाननेवाला; चतुर; विद्वान्।

वेदी–स्त्री० (सं०) यज्ञ इत्यादिके लिए तैयार किया हुआ स्थान; मंदिर या प्रासादके प्रांगणमें बना हुआ चतुष्कोण स्थान या मंडप; मुहर करनेकी अँगूठी; सरस्वती; उँगलियोंकी एक मुद्रा; भूभाग; ज्ञान, विज्ञान; कोई वस्तु रखनेका आधार; अंबष्ठा।

वेदी(दिन्)–वि० (सं०) विद्वान्; ज्ञाता; अनुभव करनेवाला; विवाह करनेवाला; सूचित करनेवाला। पु० ब्रह्म; जाननेवाला; आचार्य; विद्वान् ब्राह्मण; एक पौधा, अंबष्ठ।

वेदीश–पु० (सं०) ब्रह्मा।

वेदुक–वि० (सं०) ज्ञाता; पानेवाला।

वेदेश्वर–पु० (सं०) ब्रह्मा।

वेदोक्त–वि० (सं०) वेदोल्लिखित, वेदानुमोदित।

वेदोदय–पु० (सं०) सूर्य।

वेदोदित–वि० (सं०) वेदविहित।

वेदोपकरण–पु० (सं०) वेदांग।

वेदोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

वेद्धव्य–वि० (सं०) छेदने योग्य।

वेद्धा(द्धृ)–वि० (सं०) छेदने या निशाना मारनेवाला।

वेद्य–वि० (सं०) जानने, समझने योग्य; कथनीय, कहने योग्य; बतलाने योग्य; स्तुत्य; प्राप्त करने योग्य; विवाह करने योग्य।

वेध–पु० (सं०) बेधना, छेद करना; घुसाना; आहत करना; छिद्र, बिल; खुदाई; गड्ढेकी गहराई; समयका एक मान; निशाना मारना; घोड़ोंका एक रोग; सूर्य, ग्रह आदिका स्थान निश्चित करना; किसी ग्रहका दूसरे ग्रहके सामने पहुँचना; छेड़छाड़; रसोंका मिश्रण; पारेकी एक क्रिया। **–गुप्त**–पु० एक राग। **–मुख्य**–पु० कचूर। । **–मुख्यक**–पु० हल्दीका पौधा। **–मुख्या**–स्त्री० कस्तूरी। **–शाला**–स्त्री० ((आबजर्वेटरी) वह स्थान जहाँ यंत्रोंकी सहायतासे ग्रहों आदिकी गतिका पर्यवेक्षण किया जाता है।

वेधक–वि० (सं०) छेद करनेवाला, छेदनेवाला (रत्नों आदिको); घाव करनेवाला; प्रभावित करनेवाला। पु० कपूर; चंदन; अम्लवेतस; एक नरक (जिसमें बाण बनानेवाले जाते हैं); धनिया; सैंधव नमक; धान्यक, बालमें लगा हुआ धान।

वेधन–पु० (सं०) छेदनेकी क्रिया; (बाणसे) निशाना मारना; प्रवेश; खनन; गहराई; गड़ाना, आहत करना।

वेधनिका–स्त्री० (सं०) (रत्नमें) छेद करनेकी तेज नोकवाली बरमी।

वेधनी–स्त्री० (सं०) रत्नमें छेद करनेकी बरमी; हाथीका अंकुश।

वेधनीय–वि० (सं०) छेदा जाने योग्य, भेदनीय।

वेधस–पु० (सं०) हाथके अँगूठेकी जड़के पासका भाग, अंगुष्ठमूल, ब्राह्मतीर्थ।

वेधा(धस्)–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु; शिव; सूर्य; धर्म; पंडित; अर्क; हरिश्चन्द्रके पिता।

वेधालय–पु० (सं०) दे० 'वेधशाला'।

वेधित–वि० (सं०) छेदा हुआ, विद्ध; (ग्रह या नक्षत्र) जिसका ठीक ठीक पर्यवेक्षण हो चुका हो।

वेधिनी–स्त्री० (सं०) जोंक; मेथिका।

वेधी(धिन्)–वि० (सं०) वेध करनेवाला, छेद करनेवाला; निशाना मारनेवाला। पु० अम्लवेतस।

वेध्य–वि० (सं०) वेधन करने योग्य; स्थानका निश्चय या पर्यवेक्षण करने योग्य। पु० निशाना, लक्ष्य।

वेध्या–स्त्री० (सं०) एक संगीतवाद्य।

वेन–पु० (सं०) वेण नामक राजा; प्रजापति।

वेन्ना–स्त्री० (सं०) दक्षिण भारतकी एक नदी, वेणा ।

वेन्य–पु० (सं०) सुंदर; वेण ।

वेपथु–पु० (सं०) कंपकँपी, कंप । **–परीत**–वि० कंपन-ग्रस्त । **–भृत्**–वि० कंपायमान ।

वेपन–पु० (सं०) काँपना, कंपन; वातरोग । वि० काँपनेवाला, जो काँप रहा हो; कँपानेवाला ।

वेपित–वि० (सं०) कंपित ।

वेम, वेमा(मन्)–पु० (सं०) करघा, वापदंड ।

वेमक–पु० (सं०) जुलाहा ।

वेर–पु० (सं०) शरीर; केसर; भंटा; मुख ।

वेरक–पु० (सं०) कर्पूर ।

वेरट–पु० (सं०) बेरका फल; नीच या संकर जातिका आदमी ।

वेरि–स्त्री० (सं०) (बेंत आदिका बना हुआ) परिधान या वकतर ।

वेल–पु० (सं०) उपवन; कुंज; एक वड़ी संख्या (बौ०); आमका पेड़ । **–ज**–पु० कड़वा, नमकीन और चरपरा स्वाद । वि० कड़वा; नमकीन; चरपरा ।

वेलव–पु०(सं०)शूद्र और क्षत्रियोंसे गुप्त रूपमें उत्पन्न संतान ।

वेला–स्त्री० (सं०) सीमा, मर्यादा; फासला; समुद्र और स्थलकी सीमा; तट, कूल; समुद्रतट; समुद्रकी लहर; समय; समयका मान, घंटा या पहर; अवसर; अवकाश; तरंग; प्रवाह; वाणी; रोग; मृत्युकाल; भोजनका समय; भोजन; कष्टरहित मृत्यु; मसूड़ा; बुद्धकी स्त्री; राग, आसक्ति । वि० इस पारका; इधर का । **–कूल**–पु० समुद्रतट; ताम्रलिप्त देश ।**–जल,–सलिल**–पु० (टाइडल वाटर्स) चंद्रमाके आकर्षणसे ऊपर उठनेवाला समुद्रका जल, ज्वारजल । **–ज्वर**–पु० मरणकालमें होनेवाला ज्वर । **–तट**–पु० समुद्रतट । **–धर**–पु० एक पक्षी, भारंड । **–पत्रक**–पु० (टाइम-टेबिल) समय-सारणी, समय-तालिका । **–मूल**–पु० समुद्रतट । **–वित्त**–पु० एक तरहका राज्याधिकारी । **–विलासिनी**–स्त्री० वेश्या । **–वीची**–स्त्री० तटसे टकरानेवाली लहर । **–हीन**–वि० असमय या समयके पहले होनेवाला ।

वेलातिक्रम–पु० (सं०) विलंब ।

वेलातिग–वि० (सं०) किनारेके ऊपरसे बहनेवाला ।

वेलाद्रि–पु० (सं०) समुद्रतटवर्ती पर्वत ।

वेलाधिप–पु० (सं०) दिन-रातके अष्टमांशका अधिपति ।

वेलान–वि०, पु० (सं०) दे० 'वेलज' ।

वेलायनि–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि ।

वेलावलि–स्त्री० दे० 'बिलावल' ।

वेलिका–स्त्री० (सं०) समुद्रतटवर्ती देश; ताम्रलिप्त ।

वेलिभुक्प्रिय–पु० (सं०) सौरभयुक्त आम्र ।

वेलोर्मि–स्त्री० (सं०) दे० 'वेला-जल' ।

वेल्लंतर–पु० (सं०) एक वृक्ष, वीरतरु ।

वेल्ल–पु० (सं०) गमन; कंपन; विडंग; एक नगर, वेल्लूर । **–गिरिका**–स्त्री० प्रियंगु । **–ज,–भव**–पु० मिर्च ।

वेल्लन–पु० (सं०) गमन; कंप; (घोड़ेका) लोटना; (तरंगोंका) लुढ़कना; वेलन; गुल्मपुंज; झुकना; लिपटना ।

वेल्लनी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी दूर्वा; काली मिर्च ।

वेल्लरी–स्त्री० (सं०) माला दूब; कृष्ण विधारा ।

वेल्लहल–पु० (सं०) लंपट ।

वेल्लि–स्त्री० (सं०) लता ।

वेल्लिका, वेल्लिकाख्या–स्त्री० (सं०) वृक्षविशेष ।

वेल्लित–वि० (सं०) कंपित; झुका हुआ, वक्र; लिपटा हुआ । पु० कंपन; गमन; घोड़ेका लोटना ।

वेल्लितक–पु० (सं०) एक साँप ।

वेल्ली–स्त्री० (सं०) दे० 'वेल्लि' ।

वेशंत–पु० (सं०) छोटा तालाव; अग्नि ।

वेश–पु० (सं०) प्रवेश; पहुँच; मकान; चकला, वेश्यालय; वेश्याका वर्ताव; कार-बार; वैश्य और उग्रीका पुत्र; खेमा; पारिश्रमिक; बाना; भेस (डिस्गाइज़) । **–कार**–पु० (आउट फ़िटर) अनेक प्रकारके वस्त्र बनानेवाला; दर्जी; पुतलियाँ बनाकर उनका शृंगार करनेवाला । **–दान**–पु० दे० 'वेपदान' । **–धर, –धारी(रिन्)**–वि० दूसरेका बाना धारण करनेवाला; छलिया; एक जैन सम्प्रदाय । **–भंगिनी**–स्त्री० सरस्वती । **–भाव**–पु० वेश्याकी प्रकृति । **–भूषा**–स्त्री० पहनावा, पोशाक । **–युवती, –योषित्,–वधू,–वनिता**–स्त्री० वेश्या । **–रथ्या**–स्त्री० वेश-वीथी । **–वास**–पु० चकला । **–वीथी**–स्त्री० वेश्याओंकी गली या बाजार । **–स्त्री,–स्था**–स्त्री० वेश्या । मु० **(किसीका)–धारण करना** = किसीकी पोशाक आदिकी नकल करना ।

वेशक–वि० (सं०) प्रवेश करनेवाला । पु० घर ।

वेशन–पु० (सं०) प्रवेश करना; मकान ।

वेशनी–स्त्री० (सं०) ड्योढ़ी, पौरी ।

वेशर–पु० (सं०) खच्चर ।

वेशवार–पु० (सं०) दे० 'वेसवार' ।

वेशांत, वेषांत–पु० (सं०) छोटा तालाव ।

वेशिक–पु० (सं०) हाथकी कारीगरी, शिल्पविद्या ।

वेशिका–स्त्री० (सं०) प्रवेश ।

वेशी(शिन्)–वि० (सं०) प्रवेश करनेवाला ।

वेशीजाता–स्त्री० (सं०) एक लता, पुत्रदात्री ।

वेश्म(न्)–पु० (सं०) घर, मकान । **–कर्म(न्)**–पु० गृहनिर्माण । **–कलिंग,–कुलिंग**–पु० गौरवा, चटक । **–कूल**–पु० चिचड़ा । **–चटक**–पु० गौरैयाका एक भेद । **–धूम**–पु० एक पौधा । **–नकुल**–पु० छछूँदर । **–पुरोधक**–पु० सेंध लगाकर चोरी करनेवाला (कौ०) । **–भू**–स्त्री० मकान बनाने योग्य स्थान । **–वास**–पु० शयनागार । **–स्थूणा**–स्त्री० घरका मुख्य स्तंभ । **–स्त्री**–स्त्री० वेश्या ।

वेश्मांत–पु० (सं०) अंतःपुर, जनानखाना ।

वेश्मा–पु० (सं०) वेश्याका घर; वेश्यावृत्ति ।

वेश्मादीपिक–पु० (सं०) घरमें आग लगानेवाला (कौ०) ।

वेश्य–पु० (सं०) वेश्याका घर; निकटवर्ती या अधीन भूभाग; वेश्यावृत्ति । **–कामिनी,–स्त्री**–स्त्री० वेश्या ।

वेश्यांगना–स्त्री० (सं०) पुंश्चली ।

वेश्या–स्त्री० (सं०) नाच-गान तथा कसबसे जीविका चलानेवाली स्त्री, गणिका; पाढ़ा; एक वृत्त । **–गमन**–पु० कामवासनाकी तृप्तिके लिए गणिकाके पास जाना । **–गामी(मिन्)**–पु० रंडीबाज । **–गृह**–पु० चकला । **–घटक**–पु० वेश्या पहुँचानेवाला दलाल । **–जन**–पु० वेश्यासमूह । **– ०समाश्रय**–पु० वेश्यालय । **–पण**–पु० वेश्याको भोगके लिए दी जानेवाली रकम । **–पत्तन**–पु० चकला । **–पति**–पु० वेश्याका पति, जार । **–पुत्र**–पु० वेश्याका पुत्र, अवैध पुत्र । **–वास**–पु० वेश्यालय । **–वृत्ति**–स्त्री० (प्रॉस्टीट्यूशन) कसब कमाना, धन लेकर परपुरुषोंसे संभोग कराना; स्वार्थसिद्धिके लिए गुण, शक्ति और बुद्धिका निंद्य उपयोग । **–वेश्म(न्)**–पु० वेश्यालय ।

वेश्याचार्य–पु० (सं०) रंडीका दलाल, भँड़ुआ; पीठमर्द, वेश्याएँ रखनेवाला ।

वेश्यायत्त–वि० (सं०) जो निर्वाहके लिए वेश्यापर निर्भर हो ।

वेश्यालय–पु० (सं०) (ब्रॉथेल) वेश्या या वेश्याओंके रहनेकी जगह, चकला ।

वेश्याश्रय–पु० (सं०) वेश्यालय ।

वेश्वर–पु० (सं०) खच्चर ।

वेष–पु० (सं०) वेश; नेपथ्य, रंगमंचके पीछे वेश-रचनाका स्थान; वेश्यालय; कर्म; बदला हुआ भेस । **–कार**–पु० वेष्टन, बेठन । **–दान**–पु० सूर्यमुखी । **–धर**–वि० दूसरेका भेस धारण करनेवाला । **–धारी(रिन्)**–वि० दे० 'वेशधारी'; ढोंगी । **–श्री**–वि० सुंदरतापूर्वक अलंकृत ।

वेषण–पु० (सं०) कासमर्द क्षुप; सेवा; वेष बनानेकी क्रिया

वेषणा–स्त्री० (सं०) धनिया ।

वेषवार–पु० (सं०) दे० 'वेसवार' ।

वेषिका–स्त्री० (सं०) चमेली ।

वेषी(षिन्)–वि० (सं०) भेस बनानेवाला ।

वेष्क–पु० (सं०) बलिपशुओंका गला घोंटनेकी फँसरी ।

वेष्ट–पु० (सं०) घेरा; फँसरी; दाँतका गड्ढा; मरुमें होनेवाला एक

रोग; गोंद; धूपका पेड़; ब्रह्म आकाश; पगड़ी। **–वंश–**पु० एक तरहका बांस; रंध्रवंश। **–सार–**पु० धूप; गंधाबिरोजा।

वेष्टक–पु० (सं०) घेरा, दीवार, परकोटा; पेठा; पगड़ी; छाल; आवरण; गोंद; धूप। वि० घेरनेवाला।

वेष्टकापथ–पु० (सं०) एक शिवस्थान (पु०)।

वेष्टन–पु० (सं०) घेरना, लपेटना; लपेटनेवाली चीज; बेठन; पगड़ी; पट्टी; बंध; मुकुट; चहारदीवारी; आवरण, खोल; कर्णकुहर; एक अस्त्र; नृत्यकी एक मुद्रा; यज्ञस्तंभमें लपेटी हुई रस्सी; गुग्गुल; ग्रहण करना। **–वेष्टक–**पु० एक रतिबंध।

वेष्टनक–पु० (सं०) एक रतिबंध।

वेष्टनीय, वेष्टच–वि० (सं०) घेरने, लपटने योग्य।

वेष्टा–स्त्री० (सं०) हरीतकी।

वेष्टित–वि० (सं०) घेरा हुआ; लपेटा हुआ; वस्त्राच्छादित; रोका हुआ, रुद्ध; ऐंठा हुआ (रस्सीकी तरह)। पु० नृत्यकी एक मुद्रा; घेरना; लपेटना; एक रतिबंध; पगड़ी।

वेष्प–पु० (सं०) जल।

वेष्य–वि० (सं०) जिसने भेस बदला है (अभिनेताके रूपमें)। पु० श्रम; कर्म; पगड़ी; पट्टी; जल।

वेसन–पु० (सं०) चने आदिकी दालसे तैयार किया हुआ आटा, द्विदलचूर्ण, बेसन।

वेसर–पु० (सं०) खच्चर, अश्वतर।

वेसवार–पु० (सं०) पिसा हुआ मसाला; पिसे हुए मांसमें गुड़, घृत और मिर्च मिलाकर तैयार किया हुआ एक व्यंजन; वेश्याका घर।

वेस्ट–पु० (अं०) पश्चिम।

वेस्टकोट–पु० (अं०) फतुही, जाकेट।

वेहत्–स्त्री० (सं०) वंध्या या वह गाय जिसका गर्भ गिर जाय।

वेहानस–पु० (सं०) एक तरहकी निषिद्ध आत्महत्या (जै०)।

वेहार–पु० (सं०) भारतका एक प्रांत (राज्य)–बिहार।

वैकि–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

वैंदवि–पु० (सं०) एक युद्धप्रिय प्राचीन जाति।

वैंध्य–वि० (सं०) विंध्यपर्वत-संबंधी; विंध्यवासी।

वैंशतिक–वि० (सं०) बीसमें खरीदा हुआ।

वै*–वि० दो। अ० (सं०) एक निश्चयबोधक शब्द।

वैकंक–पु० (सं०) एक पर्वत।

वैकंकत–वि० (सं०) विकंकतका बना हुआ। पु० दे० 'विकंकत'।

वैकक्ष–पु० (सं०) जनेऊके ढंगपर पहना हुआ हार; उत्तरीय।

वैकक्षक, वैकक्षिक–पु० (सं०) जनेऊकी तरह पहना हुआ हार।

वैकटिक–पु० (सं०) जौहरी, रत्नपरीक्षक।

वैकटच–पु० (सं०) विकटता; विशालता; भीषणता।

वैकतिक–पु० (सं०) जौहरी, मणिकार।

वैकथिक–वि०, पु० (सं०) बढ़-बढ़कर बातें कहनेवाला, डींग मारनेवाला।

वैकरंज–पु० (सं०) एक तरहका साँप।

वैकर्ण–पु० (सं०) वात्स्य मुनि, एक प्राचीन जनपद।

वैकर्णायन–पु० (सं०) वात्स्यका वंशधर।

वैकर्त–पु० (सं०) बलिपशुका वध करनेवाला; बलिपशुका एक विशेष भाग, कटि (?)।

वैकर्तन–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी। पु० सूर्यका पुत्र, कर्ण; सुग्रीव। **–कुल–**पु० सूर्यवंश।

वैकर्म–पु० (सं०) वात्स्य मुनि; दुष्कर्म।

वैकल्प–पु० (सं०) अनिश्चयता, विकल्पता।

वैकल्पिक–वि० (सं०) ऐच्छिक (आप्शनल); संदिग्ध, अनिश्चित। **–सदस्य–**पु० (आलटरनेटिव मेंबर) दोमें एक; एकके सदस्यता स्वीकार न करने आदिकी स्थितिमें जो उसका स्थान ग्रहण कर सके।

वैकल्य–पु० (सं०) विकलता; क्षोभ, उत्तेजना; दोष, त्रुटि; न्यूनता; पंगुता; निर्बलता, शक्तिहीनता; अनस्तित्व। वि० अपूर्ण; अधूरा।

वैकायन–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि।

वैकारिक–वि० (सं०) विकार-संबंधी; विकृत, बिगड़ा हुआ; परिवर्तनशील; परिवर्तित। पु० विकार; भावावेश। **–काल–**पु० भ्रूणके निर्माणमें लगनेवाला समय। **–बंध–**पु० बंधनके तीन भेदोंमेंसे एक (सां०)।

वैकार्य–पु० (सं०) परिवर्तनशीलता; परिवर्तन, विकार।

वैकाल–पु० (सं०) अपराह्ण; संध्या।

वैकालिक–वि० (सं०) संध्या-संबंधी; संध्या समय होनेवाला। पु० संध्याकालकी प्रार्थना; ब्यालू।

वैकालीन–वि० (सं०) दे० 'वैकालिक'।

वैकिर–वि० (सं०) टपकाकर छाना हुआ। **–वारि–**पु० टपकाकर छाना हुआ जल।

वैकुंठ–पु० (सं०) इंद्र; विष्णु; तुलसी; विष्णुलोक; स्वर्ग; अभ्रक; एक देववर्ग; एक ताल (संगीत)। **–गति–**स्त्री० विष्णुलोकमें जाना। **–चतुर्दशी–**स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला चतुर्दशी। **–पुरा–**स्त्री० विष्णुका नगर। **–भुवन,–लोक–**पु० विष्णुलोक।

वैकुंठीय–वि० (सं०) वैकुंठ-संबंधी।

वैकृत–वि० (सं०) विकृत, विकारग्रस्त; विकारजन्य; परिवर्तित; परिवर्तनशील, विकारी; दुस्साध्य। पु० अहंकार, अहंभाव; परिवर्तन, विकार, रूपविकृति; विकृत अवस्था; घृणा; बीभत्स रस; शत्रुता; उद्वेग; संकट-सूचक घटना या लक्षण। **–ज्वर–**पु० एक तरहका ऋतुविपरीत ज्वर। **–विवर्त–**पु० क्लेश; दुरवस्था।

वैकृतिक–वि० (सं०) विकृत, परिवर्तित; विकारशील; विकार-संबंधी (सां०); नैमित्तिक।

वैकृत्य–पु० (सं०) परिवर्तन, विकार; अपकर्ष; दुरवस्था; उद्वेग; बीभत्सा।

वैक्रम–वि० (सं०) विक्रम-संबंधी; शक्ति-संबंधी।

वैक्रमीय–वि० (सं०) विक्रमका; विक्रम-संबंधी (संवत्)।

वैक्रांत–पु० (सं०) एक मणि, चुन्नी।

वैक्रिय–वि० (सं०) विकारजन्य; विकारशील, विकारी, परिवर्तनशील।

वैक्लव, वैक्लव्य–पु० (सं०) विकलता, व्याकुलता; पीड़ा; शोक; अस्तव्यस्तता।

वैक्सीन(टीका)–पु० (वैक्सीन) ऐसा औषधि-द्रव जिसे प्राणीके शरीरके अन्दर सुई द्वारा प्रविष्ट करा देनेपर किसी विशेष बीमारीकी रोकथाम हो सके। यह वैक्सीन उस बीमारीको उत्पन्न करनेवाले मृत या दुर्बलीकृत रोग कीटाणुओंसे तैयार किया जाता है जो शरीरके अन्दर पहुँचकर प्रति-पिंड (एन्टी बॉडी) उत्पन्न करता है।

वैखरी–स्त्री० (सं०) कंठसे उच्चार्यमाण स्वरविशेष; वाक्शक्ति; वाग्देवी, सरस्वती।

वैखान–पु० (सं०) विष्णु।

वैखानस–वि० (सं०) वानप्रस्थ आश्रम-संबंधी। पु० वानप्रस्थ, तपस्वी; कृष्ण यजुर्वेदकी एक शाखा; भागवतका एक स्कंध।

वैखानसि–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि।

वैखानसीयोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

वैखारक–वि० (सं०) चरपरा और नमकीन। पु० ऐसा स्वाद।

वैगंधिक–पु० (सं०) गंधक।

वैगंधिका–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

वैगन–पु० (अं०) मालगाड़ीका डिब्बा।

वैगनेट–स्त्री० (अं०) एक तरहकी चौपहिया घोड़ागाड़ी जिसका ऊपरका परदा समेटा जा सकता है।

वैगलेय–पु० (सं०) एक प्रेतवर्ग।

वैगुण्य–पु० (सं०) गुणका अभाव, गुणराहित्य; अच्छे गुणोंका अभाव; दोष, त्रुटि; अपराध; गुण या धर्मकी भिन्नता, हीनता; अकुशलता; नीचता।

वैग्रहिक–वि० (सं०) शरीर-संबंधी, शारीरिक।

वैघटिक–पु० (सं०) जौहरी।

वैघसिक–वि० (सं०) जूठन खानेवाला।

वैघात्य–वि० (सं०) घात करने, मार डालने लायक।

वैचक्षण्य–पु० (सं०) चातुर्य; कुशलता।

वैचारिकी–स्त्री० (आइडियालोजी) विचारधारा ।

वैचित्य–पु० (सं०) मनकी अस्तव्यस्तता; गम; अन्यमनस्कता; संज्ञाहीनता ।

वैचित्र–पु० (सं०) विचित्रता । –**वीर्य**–पु० धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर । –**वीर्यक**–वि० विचित्रवीर्य-संबंधी ।

वैचित्र्य–पु० (सं०) विचित्रता, अनोखापन; भिन्नता; भेद, अंतर; सुंदरता; आश्चर्य; गम; नैराश्य ।

वैच्युत–पु० (सं०) एक ऋषि ।

वैच्युति–स्त्री० (सं०) विचलता; पतन ।

वैजनन–पु० (सं०) गर्भका अंतिम मास । वि० प्रजनन-संबंधी ।

वैजन्य–पु० (सं०) एकांत, निर्जनता ।

वैजयंत–पु० (सं०) इंद्रप्रासाद; घर; इंद्र; स्कंद; एक पर्वत; अरणी, अग्निमंथ वृक्ष; ध्वजा; इंद्रकी ध्वजा; सातों स्वर्गोंसे ऊपर स्थित एक लोक (जै०) ।

वैजयंतिक–वि० (सं०) (हेरल्ड) झंडाबरदार, झंडा उठानेवाला ।

वैजयंतिका–स्त्री० (सं०) पताका, झंडा; एक तरहका मुक्ताहार; अग्निमंथ; जयंती वृक्ष ।

वैजयंती–स्त्री० (सं०) झंडा; चिह्न; विजयमाल; जानुतक लटकनेवाली पाँच रंगोंकी एक तरहकी माला; विष्णुकी माला; जयंती वृक्ष; अग्निमंथ ।

वैजयिक–वि० (सं०) विजय-संबंधी; विजयदायक; विजयसूचक ।

वैजयी(यिन्)–वि० (सं०) दे० 'वैजयिक' ।

वैजवन–पु० (सं०) वैदिक शाखा-विशेषके प्रवर्तक एक ऋषि ।

वैजात्य–पु० (सं०) विजातीयता; वर्ग-भिन्नता, वर्ण या जातिकी भिन्नता; वैचित्र्य; जातिसे पृथक् किया जाना; लंपटता ।

वैजिक–वि० (सं०) दे० 'बैजिक' ।

वैज्ञानिक–पु० (सं०) विज्ञानका पंडित । वि० विज्ञान-संबंधी ।

वैडाल–वि० (सं०) दे० 'बैडाल' ।

वैडूर्य–पु० (सं०) एक रत्न, वैदूर्य; एक पर्वत । वि० वैदूर्य-निर्मित । –**कांति**–वि० जिसमें वैदूर्य मणि जैसी चमक हो । –**प्रभ**–पु० एक नाग । –**मणि**–पु० इस नामका रत्न । –**शिखर**–पु० एक पर्वत ।

वैण–पु० (सं०) बाँसका काम करनेवाला, बँसोड़; एक साम ।

वैणव–वि० (सं०) बाँसका बना हुआ; बाँससे उत्पन्न; जव या अन्नका बना हुआ; बाँसुरी-संबंधी । पु० बाँसुरी; ब्रह्मचारीका दंड; बँसोड़, बाँसका काम करनेवाला; माहिष्यसे उत्पन्न ब्राह्मणीका पुत्र; बाँसका चावल; वेणु नदीसे प्राप्त सोना; कुशद्वीपका एक वर्ष ।

वैणविक–पु० (सं०) वंशी बजानेवाला, वेणुवादक ।

वैणवी–स्त्री० (सं०) वंशलोचन ।

वैणवी(विन्)–वि० (सं०) बाँसुरीवाला । पु० शिव ।

वैणावत–पु० (सं०) धनुष् ।

वैणिक–पु० (सं०) वीणा बजानेवाला; मलकी गंध ।

वैणुक–पु० (सं०) बाँसुरी बजानेवाला; एक तरहका हाथीका अंकुश जो बाँसका नोकदार टुकड़ा होता है ।

वैणुकीय–वि० (सं०) वैणुक-संबंधी ।

वैणुकेय–वि० (सं०) बाँस-संबंधी ।

वैणेय–पु० (सं०) वेदकी एक शाखा ।

वैण्य–पु० (सं०) वेणका पुत्र, पृथु ।

वैतंडिक–वि० (सं०) वितंडा, झगड़ा करनेवाला; तर्कप्रिय; वितंडा-संबंधी । पु० व्यर्थका झगड़ा करनेवाला ।

वैतंडी(डिन्)–पु० (सं०) एक ऋषि ।

वैतंसिक–पु० (सं०) बहेलिया; मांसविक्रेता; पक्षियों आदिको फँसानेकी क्रिया ।

वैतत्य–पु० (सं०) फैलाव, विस्तार ।

वैतथ्य–पु० (सं०) मिथ्यात्व, असत्यता ।

वैतनिक–वि० (सं०) वेतन या मजदूरी लेकर काम करनेवाला । पु० मजदूर; वेतन लेकर काम करनेवाला कर्मचारी ।

वैतरण–वि० (सं०) नदी पार करनेका इच्छुक; वैतरणी नामकी नदी पार करनेवाला (साधन) ।

वैतरणि, वैतरणी–स्त्री० (सं०) एक पौराणिक नदी (कहते हैं कि यह पृथ्वी और यमलोकके बीचमें है और इसमें खून, अस्थि, बाल आदि भरे हैं और जल गरम हैं । पापी इसमें बहुत दिन दुःख-भोग करते हैं किन्तु पुण्यात्मा सहज ही पार कर जाते हैं); इस नदीको पार करानेवाली गाय (जो ब्राह्मणको दी जाती है); उड़ीसाकी एक पवित्र नदी ।

वैतस–वि० (सं०) बेंत-संबंधी; बेंत जैसा (प्रबल शत्रुके सामने झुक जाना) । पु० बेंतकी बनी हुई टोकरी; पुरुषेंद्रिय; अमलबेंत ।

वैतसी वृत्ति–स्त्री० (सं०) बेंतकी तरह झुक जानेकी आदत, नम्रताकी प्रवृत्ति ।

वैतसेन–पु० (सं०) वीतसेनका पुत्र, राजा पुरूरवा ।

वैतस्त, वैतस्त्य–वि० (सं०) वितस्ता नदी-संबंधी, वितस्तासे प्राप्त ।

वैतस्तिक–वि० (सं०) एक बालिश्त लंबा (बाण) ।

वैताढ्य–पु० (सं०) एक पर्वत ।

वैतान–वि० (सं०) यज्ञ-संबंधी; पवित्र । पु० तंबू; एक यज्ञ-संबंधी विधि; यज्ञका हवि ।

वैतानिक–वि० (सं०) वैतान नामक यज्ञ-विधि संबंधी; यज्ञ-संबंधी; पवित्र (जैसे अग्नि) । पु० श्रौत होम; अग्निहोत्रकी अग्नि ।

वैताल–वि० (सं०) वेतालका; वेताल-संबंधी । पु० दे० 'वेताल'; स्तुतिपाठक ।

वैतालकि–पु० (सं०) ऋग्वेदकी एक शाखाके प्रवर्तक ऋषि ।

वैतालिक–पु० (सं०) स्तुतिपाठक, स्तुति-पाठ करके राजाओंको सवेरे जगानेवाला; वेतालका उपासक या अनुचर; बाजीगर; वह जो तालमें न गाता हो (?); चौंसठ कलाओंमेंसे किसी एकका ज्ञान । –**व्रत**–पु० स्तुतिपाठका कार्य ।

वैताली(लिन्)–पु० (सं०) स्कंदका एक अनुचर ।

वैतालीय–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त । वि० वेताल-संबंधी ।

वैतुष्य–पु० (सं०) भूसीका निकाला जाना ।

वैतृष्ण्य–पु० (सं०) प्यास बुझाना; इच्छासे रहित होना, उदासीनता ।

वैत्तपाल्य–वि० (सं०) कुबेर-संबंधी ।

वैत्तिक–वि० (सं०) वित्त या धन-संबंधी ।

वैत्रक–वि० (सं०) बेंतदार ।

वैत्रकीय–वि० (सं०) बेंत या छड़ी-संबंधी ।

वैत्रासुर–पु० (सं०) एक असुर ।

वैद–पु० (सं०) विद्वान् व्यक्ति; विद ऋषिके वंशज । पु० वैद्य । वि० विद्वान् संबंधी; विद्वान् ।

वैदक†–पु० चिकित्सा शास्त्र ।

वैदग्ध, वैदग्ध्य–पु० (सं०) दक्षता; चतुरता; पांडित्य; धूर्तता; सौंदर्य; रसिकता; उपस्थित बुद्धि ।

वैदग्धी–स्त्री० (सं०) दे० 'वैदग्ध' ।

वैदत–वि० (सं०) जानकार ।

वैदनृत–पु० (सं०) एक साम ।

वैदर्भ–वि० (सं०) विदर्भ-संबंधी; वाक्पटु । पु० विदर्भनरेश; दमयंतीके पिता भीम; रुक्मिणीके पिता भीष्मक; मसूड़ेका फोड़ा; वाक्पटुता ।

वैदर्भक–वि० (सं०) विदर्भ-संबंधी । पु० विदर्भ-निवासी ।

वैदर्भी–स्त्री० (सं०) विदर्भकी राजकुमारी; अगस्त्य-पत्नी; दमयंती; रुक्मिणी; एक रीति जिसमें माधुर्य-व्यंजक वर्णोंका प्रयोग किया जाता है (सा०); विदर्भकी राजधानी, कुंडिन ।

वैदल–वि० (सं०) बाँसके फट्टे या बेंतका बना हुआ । पु० द्विदलान्न; एक विषैला कीड़ा; एक तरहकी पीठी; बेंतकी बनी हुई डलिया; संन्यासियोंका भिक्षापात्र ।

वैदांतिक–वि० (सं०) वेदांत जाननेवाला ।

वैदारिक–पु० (सं०) एक तरहका सान्निपातिक ज्वर ।

वैदिक–वि० (सं०) वेद-संबंधी; जो वेदके अनुकूल हो, वेदविहित; पवित्र; वेदज्ञ । पु० वेदज्ञ ब्राह्मण; वेदवचन । –**कर्म(न्)**–पु० वेदविहित कर्म । –**धर्म**–पु० वैदिक युगमें प्रचलित आर्योंका धर्म । –**पाश**–पु० वह जिसे वेदका बहुत थोड़ा ज्ञान हो । –**युग**–पु० वेदोंकी रचनाका युग; वैदिक काल ।

वैदिका–स्त्री० (सं०) बनजामुन ।

वैदिश–वि० (सं०) विदिशा नगर-संबंधी । पु० विदिशा-नरेश; विदिशा-निवासी; विदिशा नदीके तटपर अवस्थित एक नगर ।

वैदिश्य–पु० (सं०) विदिशाके पासका एक प्राचीन नगर ।

वैदुरिक–पु० (सं०) विदुरका भाव या सिद्धांत ।

वैदुल–वि० (सं०) विदुल नामके बेंतका बना हुआ । पु० बेंतकी जड़ ।

वैदुष–वि० (सं०) पंडित, विद्वान् ।

वैदुषी–स्त्री० (सं०) विद्वत्ता; विज्ञान ।

वैदुष्य–पु० (सं०) विद्वत्ता, पांडित्य ।

वैदूर्य–वि० (सं०) विदूरसे प्राप्त या लाया हुआ । पु० एक रत्न, लहसुनिया (लैपिस लजूलो); हरे रत्नोंका वर्ग (बेरिल) ।

वैदेशिक–वि० (सं०) विदेशका; विदेश-संबंधी । पु० दूसरे देशका व्यक्ति, विदेशी । **–नीति**–स्त्री० किसी राष्ट्रका परराष्ट्र या अन्य राष्ट्रोंके साथ बरती जानेवाली नीति । **–व्यापार**–पु० किसी देशका अन्य देशोंके साथ होनेवाला व्यापार ।

वैदेश्य–वि० (सं०) विदेशीय । पु० विदेशी होनेका भाव । **–सार्थ** –पु० विदेशी माल (कौ०) ।

वैदेह–वि० (सं०) विदेह देश-संबंधी; सुंदर आकृतिवाला । पु० विदेह-नरेश; एक वर्णसंकर जाति, वैश्यासे उत्पन्न शूद्रका या ब्राह्मणीसे उत्पन्न वैश्यका पुत्र; वणिक्; अंतःपुरका सेवक ।

वैदेहक–पु० (सं०) वणिक्, व्यापारी; विदेह जातिका व्यक्ति । **–व्यंजन**–पु० व्यापारीके वेशमें रहनेवाला गुप्तचर (कौ०) ।

वैदेहिक–पु० (सं०) विदेह जातिका व्यक्ति; वणिक् ।

वैदेही–स्त्री० (सं०) विदेहकी राजकुमारी; विशेषतः सीता; रोचना; पिप्पली; वैदेह जातिकी स्त्री; विदेह देशकी गाय ।

वैद्य–वि० (सं०) वेद-संबंधी; वेदविहित; आयुर्वेद-संबंधी । पु० विद्वान्; वेदज्ञ व्यक्ति; आयुर्वेदका ज्ञाता, चिकित्सक; एक ऋषि; जातिविशेष; इस जातिका व्यक्ति; अड़ूसा । **–क्रिया**–स्त्री० चिकित्सा करनेका पेशा । **–नाथ**–पु० शिव; धन्वंतरि; विहारका एक तीर्थ जहाँ इस नामका शिवलिंग है । **–बंधु**–पु० आरग्वध वृक्ष । **–माता(तृ)**–स्त्री० वासक, अड़ूसा; वैद्यकी माता । **–मानी(निन्)**–वि० अपनेको वैद्य माननेवाला । **–राज**–पु० धन्वंतरि; शार्ङ्गधरके पिता; श्रेष्ठ वैद्य । **–राट्(ज्)**–पु० धन्वंतरि । **–विद्या**–स्त्री० चिकित्साशास्त्र । **–शास्त्र**–पु० चिकित्सा-संबंधी ग्रंथ या विद्या । **–सिंही**–स्त्री० अड़ूसा ।

वैद्यक–पु० (सं०) चिकित्सक; चिकित्साशास्त्र । वि० चिकित्सा-संबंधी ।

वैद्या–स्त्री० (सं०) काकोली; वैद्यकी स्त्री; स्त्री वैद्य ।

वैद्याधर–वि० (सं०) विद्याधर-संबंधी ।

वैद्यावृत्य–वि० (सं०) खुरदा, फुटकल (थोकका उलटा) ।

वैद्युत–वि० (सं०) बिजलीका; बिजली-संबंधी । पु० वपुष्मान्का एक पुत्र; बिजलीकी अग्नि; वैद्युत द्वारा शासित एक वर्ष । **–अपघटन**–पु० (इलेक्ट्रॉलिसिस) किसी रासायनिक यौगिककी पिघली अवस्थामें या उसके घोलमें दिष्ट धाराको प्रवाहित करके उसका अपघटन करना ।

वैद्योत–वि० (सं०) क्रुद्ध ।

वैद्रुम–वि० (सं०) विद्रुम, मूँगेका ।

वैध–वि० (सं०) विधि-संगत, विहित; जायज; कानूनके मुताबिक ।

वैधर्मिक–वि० (सं०) जो धर्मसंगत न हो, अविहित ।

वैधर्म्य–पु० (सं०) असमानता, अंतर; धर्म या गुणकी भिन्नता; कर्तव्यकी भिन्नता; वैपरीत्य; अवैधता; नास्तिकता ।

वैधव–पु० (सं०) विधु–चंद्रमाका पुत्र, बुध । वि० विधु-संबंधी ।

वैधवेय–पु० (सं०) विधवाका, विधवाके गर्भसे उत्पन्न पुत्र ।

वैधव्य–पु० (सं०) रँड़ापा । **–लक्षणोपेता**–स्त्री० वैधव्यके चिह्नोंसे युक्त कन्या (जो विवाहके अयोग्य मानी जाती है) । **–वेणी**–स्त्री० विधवाकी कबरी ।

वैधस–पु० (सं०) वेधसका पुत्र, राजा हरिश्चंद्र । वि० भाग्यजात; ब्रह्मा द्वारा रचित ।

वैधातकि–पु० (सं०) दे० 'वैधात्र' ।

वैधात्र–वि० (सं०) ब्रह्मासे उत्पन्न । पु० विधाताके पुत्र, सनत्कुमार ।

वैधात्री–स्त्री० (सं०) ब्राह्मी लता ।

वैधानिक–वि० (सं०) विधान-संबंधी; विधानानुकूल ।

वैधिक–वि० (सं०) दे० 'वैध' ।

वैधी–स्त्री० (सं०) शास्त्रानुकूल भक्ति । जैसे, भजन कीर्तन आदि ।

वैधीकरण–पु० (वैलिडेशन) विधिके अनुरूप या अनुकूल बना देना, वैध रूप दे देना ।

वैधुरी–स्त्री० (सं०) विपत्ति; दैवकी प्रतिकूलता ।

वैधुर्य–पु० (सं०) विधुरता; वियोग; अविद्यमानता; कातरता; नैराश्य; कष्ट; कंपन; क्षोभ; संदेह; भ्रम ।

वैधूमाग्नी–स्त्री० (सं०) शाल्व देशका एक प्राचीन नगर ।

वैधृत–पु० (सं०) विधृतिका वंशज; एक इंद्र (ग्यारहवाँ मन्वंतर); दे० 'वैधृति' । **–वासिष्ठ**–पु० एक साम ।

वैधृति–स्त्री० (सं०) चंद्र और सूर्यकी विशेष स्थिति, सत्ताईस योगोंमेंसे एक जो अशुभ माना जाता है (ज्यो०); एक देवता, विधृतिके पुत्र ।

वैधृत्य–पु० (सं०) दे० 'वैधृति' ।

वैधेय–वि० (सं०) विधि-संबंधी; विहित; मूर्ख । पु० मूर्ख आदमी; याज्ञवल्क्यका एक शिष्य ।

वैध्यत–पु० (सं०) यमका एक द्वारपाल ।

वैन–वि० (सं०) वेन-संबंधी । पु० वेनपुत्र, पृथु ।

वैनतक–पु० (सं०) एक प्राचीन पात्र जिसमें घी रखते या जिससे यज्ञाग्नि आदिमें घी डालते थे ।

वैनतेय–पु० (सं०) विनता-पुत्र; गरुड़; अरुण; गरुड़का एक पुत्र ।

वैनतेयी–स्त्री० (सं०) एक वैदिक शाखा ।

वैनत्य–वि० (सं०) विनम्र, विनयशील । पु० विनत होनेका भाव, विनम्रता, विनीतता ।

वैनदी–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नदी ।

वैनभृत–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि; एक वैदिक शाखा ।

वैनयिक–वि० (सं०) विनय, शिष्टता या अनुशासन-संबंधी; नैतिकताका पालन करानेवाला; शास्त्रोंका अध्ययन करनेवाला; अपराध-संबंधी अफसरों द्वारा किया हुआ; युद्धके अभ्यासमें काम आनेवाला । पु० युद्धाभ्यासमें काम आनेवाला रथ, युद्ध-रथ ।

वैनायक–वि० (सं०) विनायक, गणेश-संबंधी । पु० एक दानववर्ग ।

वैनायिक–पु० (सं०) बौद्ध दर्शन-विशेष; इस दर्शनका अनुयायी, बौद्ध ।

वैनाशिक–वि० (सं०) विनाश-संबंधी; नश्वर; विनाशमें विश्वास करनेवाला; विनाश करनेवाला; अधीन, परतंत्र । पु० बौद्ध दर्शन; बौद्ध; मकड़ा; ज्योतिषी; दास; अधीनस्थ व्यक्ति; जन्मनक्षत्रसे तेईसवाँ नक्षत्र । **–तंत्र,–समय**–पु० बौद्ध दर्शन ।

वैनीतक–पु० (सं०) एक तरहकी पालकी जिसे ढोनेके लिए कई कहार होते हैं और बारी-बारीसे बदलते रहते हैं; वाहनका साधन (कहार, घोड़ा आदि) ।

वैनेय–पु० (सं०) शुक्ल यजुर्वेदकी एक शाखा; धर्मका शिक्षार्थी । वि० जिसे धार्मिक शिक्षा देनी हो ।

वैन्य–पु० (सं०) वेनपुत्र, पृथु ।

वैपंचमिक–पु० (सं०) भविष्यद्वक्ता ।

वैपथक–वि० (सं०) विपथ, कुमार्ग-संबंधी; कुमार्गगामी ।

वैपरीत्य–पु० (सं०) विपरीत होनेका भाव, प्रतिकूलता; असंगति । **–लज्जालु**–पु०, स्त्री० एक तरहका लजालू पौधा ।

वैपश्चित–पु० (सं०) तार्क्ष्य ऋषि ।

वैपश्यत–वि० (सं०) बुद्धिमान्-संबंधी । पु० तार्क्ष्य ऋषि ।

वैपादिक–वि० (सं०) पादव्रणसे पीड़ित ।

वैपादिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका कुष्ठ रोग ।

वैपार†–पु० दे० 'व्यापार' ।

वैपारी†–पु० दे० 'व्यापारी' ।

वैपित्र–वि० (सं०) एक ही माता, पर भिन्न पिताओंसे उत्पन्न (संतानें) ।

वैपुल्य–पु० (सं०) प्राचुर्य, अधिकता; विशालता ।

वैप्रीताख्य–पु० (सं०) नृत्यका एक प्रकार ।

वैप्लव–पु० (सं०) श्रावण मास ।

वैफल्य–पु० (सं०) विफलता; निरर्थकता, उपयोगराहित्य; साहित्यिक रचनाका एक दोष ।

वैबाध–पु० (सं०) अन्य वृक्षको फोड़कर निकला हुआ पीपल । –**प्रणुत्त**–वि० जिसे फोड़कर पीपलका पेड़ निकला हो ।

वैबुध–वि० (सं०) देवता-संबंधी ।

वैबोधिक–पु० (सं०) रातका पहरेदार; वह पहरेदार जो घंटा बजाकर जगाता है; स्तुतिपाठ द्वारा राजाको जगानेवाला व्यक्ति, स्तुतिपाठक ।

वैभांडि–पु० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि ।

वैभव–पु० (सं०) शक्ति; अलौकिक शक्ति; ऐश्वर्य; गौरवान्वित पद; महत्ता । –**शाली(लिन्)**–वि० वैभव-विशिष्ट; ऐश्वर्यवाला ।

वैभविक–वि० (सं०) समर्थ, कार्यक्षम ।

वैभांडकि–पु० (सं०) ऋष्यश्रृंग ।

वैभाजन–वि० (सं०) जो कई सड़कोंसे विभक्त हो ।

वैभाजित्र–पु० (सं०) विभाजन; वितरण ।

वैभातिक–वि० (सं०) ऊषा-संबंधी ।

वैभार–पु० (सं०) एक पर्वत, वैहार (राजगृहके पास) ।

वैभावर–वि० (सं०) रात्रि-संबंधी; रातका ।

वैभाषिक–वि० (सं०) वैकल्पिक; विभाषा संबंधी । पु० विभाषा (एक बौद्ध संप्रदाय)का अनुयायी ।

वैभाष्य–पु० (सं०) विस्तृत व्याख्या ।

वैभिन्न्य–पु० (सं०) विभिन्नता ।

वैभीत, वैभीतक–वि० (सं०) विभीतक, बहेड़ेका बना हुआ ।

वैभूतिक–वि० (सं०) विभूति-संबंधी ।

वैभोज–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति ।

वैभ्र–पु० (सं०) विष्णुलोक ।

वैभ्राज–पु० (सं०) विष्वक्सेन; एक लोक; एक पर्वत; एक देवोद्यान; देवोद्यानस्थ सरोवर; एक अरण्य ।

वैभ्राजक–पु० (सं०) एक देवोद्यान ।

वैमत्य–पु० (सं०) मतभेद, फूट; नापसंदी; शुक्ल यजुर्वेदकी एक शाखा ।

वैमत्यसूचक–वि० (डिसकॉर्डेंट) असहमति या भिन्न मत सूचित करनेवाला ।

वैमनस्य–पु० (सं०) अन्यमनस्कता, खिन्नता, उदासी; अस्वस्थता; मन-मुटाव, रंजिश, वैर ।

वैमल्य–पु० (सं०) निर्मलता, स्वच्छता, विशुद्धता ।

वैमात्र–वि० (सं०) सौतेला । पु० सौतेला भाई ।

वैमात्रक–पु० (सं०) सौतेला भाई ।

वैमात्रा, वैमात्री, वैमात्रेयी–स्त्री० (सं०) सौतेली बहन ।

वैमात्रेय–वि० (सं०) विमाता सम्बन्धी; सौतेला; सौतेली माताकी तरहका (स्टेप मदरली) । पु० दे० वैमात्र ।

वैमानिक–वि० (सं०) विमानमें उत्पन्न; विमान-संबंधी । पु० विमानारोही; गगनपर्यटक; एक तीर्थ; स्वर्गस्थ जीव (जै०); (एयरमैन; पायलट) । विमान-चालन आदिका काम करनेवाला, विमानका चालक या अन्य कर्मचारी ।

वैमानिकी–स्त्री० (सं०) (एयरोनाटिक्स) हवामें विमान चलानेकी विद्या; वायुमें परिवहनका विज्ञान तथा उसका अभ्यास ।

वैमित्रा–स्त्री० (सं०) स्कंदकी सात माताओंमेंसे एक ।

वैमुक्त–पु० (सं०) मुक्ति, मोक्ष वि० मुक्त ।

वैमुख्य–पु० (सं०) पलायन; घृणा; विरक्ति; विमुखता ।

वैमूढक–पु० (सं०) स्त्रीकी पोशाकमें पुरुषोंका नृत्य ।

वैमूल्य–पु० (सं०) मूल्यकी भिन्नता; मूल्यमें अंतर ।

वैमृध–पु० (सं०) इंद्र । वि० इंद्रार्पित ।

वैमृध्य–वि० (सं०) दे० 'वैमृध'; रणदक्ष (?) ।

वैमेय–पु० (सं०) विनिमय, बदला ।

वैम्य–पु० (सं०) गोत्रकार ऋषि ।

वैयक्तिक–वि० (सं०) (पर्सनल; प्राइवेट) व्यक्तिगत । –**बंध**–पु० (पर्सनल बांड) किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया ऐसा प्रतिज्ञापत्र जिसमें लिखी हुई बातें पूरी करनेको वह बाध्य हो तथा जिन्हें पूरा न करनेपर निर्धारित धन दंड-स्वरूप देनेके लिए वह अपने आपको जिम्मेदार समझे ।

वैयक्तिक विधि–स्त्री० (पर्सनल ला) विशिष्ट स्थितियोंमें कहींके निवासियोंपर लागू किया जानेवाला कानून ।

वैयग्र, वैयग्र्य–पु० (सं०) व्यग्रता, व्याकुलता, घबड़ाहट; तल्लीनता ।

वैयधिकरण्य–पु० (सं०) भिन्न स्थानोंमें होनेका भाव ।

वैयमक–पु० (सं०) एक जाति (म० भा०) ।

वैयर्थ्य–पु० (सं०) व्यर्थता; अनुत्पादकता ।

वयशन–पु० (सं०) एक साम ।

वैयसन–वि० (सं०) व्यसन-संबंधी ।

वैया–प्र० एक प्रत्यय = वाला (कोई काम करनेवाला–करवैया) ।

वैयाकरण–पु० (सं०) व्याकरण जाननेवाला; व्याकरण शास्त्रकी रचना करनेवाला । वि० व्याकरण-संबंधी । –**पाश**–वि० जिसे व्याकरणका अच्छा ज्ञान न हो । –**भार्य**–वि० जिसकी स्त्री व्याकरण जानती हो ।

वैयाख्य–वि० (सं०) व्याख्या-संबंधी; व्याख्यायुक्त । पु० व्याख्या ।

वैयाघ्र–वि० (सं०) व्याघ्र-संबंधी; व्याघ्र जैसा; व्याघ्र-चर्मसे आवृत । पु० व्याघ्र-चर्मसे ढकी हुई गाड़ी । –**परिच्छद**–वि० व्याघ्र-चर्मसे आवृत ।

वैयाघ्रच–वि० (सं०) व्याघ्र जैसा (बैठनेकी मुद्रा, आसन) । पु० एक आसन; व्याघ्रकी अवस्था ।

वैयात्य–पु० (सं०) धृष्टता; निर्लज्जता; अविनय; उजड्डपन ।

वैयावृत्य–पु० (सं०) यति-सेवा (जै०) ।

वैयास–वि० (सं०) व्यासका; व्यास-संबंधी ।

वैयासकि–वि० (सं०) व्यासके वंश, गोत्रमें उत्पन्न ।

वैयासिक–वि० (सं०) व्यासनिर्मित । पु० व्यासका पुत्र ।

वैयास्क–पु० (सं०) एक आचार्य ।

वैयुष्ट–वि० (सं०) तड़के होनेवाला ।

वैरंकर–वि० (सं०) शत्रुता दिखलानेवाला ।

वैरंगिक–वि० (सं०) जितेंद्रिय; विरागार्ह ।

वैरंडेय–वि० (सं०) एक गोत्रकार ऋषि ।

वैरंभ, वैरंभक–पु० (सं०) एक तरहकी वायु ।

वैर–पु० (सं०) विरोध, शत्रुता, दुश्मनी; घृणा; शौर्य; हत्याके लिए दंडस्वरूप दिया जानेवाला धन । –**कर**,–**कार**,–**कारक**–वि० शत्रुता पैदा करनेवाला । –**करण**,–**कारण**–पु० दुश्मनीका कारण । –**कारी(रिन्)**,–**कृत्**–वि० झगड़ालू । –**खंडी(डिन्)** वि० शत्रुता नष्ट करनेवाला । –**निर्यातन**–पु०,–**यातना**–स्त्री० वैरपरिशोध । –**पुरुष**–पु० शत्रु । –**प्रतिक्रिया**–स्त्री०,–**प्रतीकार**–पु० वैर-प्रतिशोध । –**प्रतिमोचन**–पु० शत्रुतासे छुटकारा । –**प्रतियाचन**–पु० दे० 'वैर-निर्यातन' । –**भाव**–पु० शत्रुता । –**रक्षी(क्षिन्)**–वि० शत्रुताका निवारण करनेवाला । –**विशुद्धि**,–**शुद्धि**–स्त्री० वैरका बदला । – **व्रत**–पु० शत्रुताका व्रत, प्रतिज्ञा । –**साधन**–पु० वैरका कारण या उद्देश्य ।

वैरक–पु० (सं०) शत्रुता ।

वैरक्त–पु० (सं०) वैराग्य, विरक्ति, उदासीनता ।

वैरथ–पु० (सं०) ज्योतिष्मान्‌का पुत्र; उसके द्वारा शासित एक वर्ष ।

वैरमण–पु० (सं०) वेदाध्ययनकी समाप्ति ।

वैरल्य–पु० (सं०) विरलता, एकान्त; न्यूनता ।

वैरस, वैरस्य–पु० (सं०) विरसता; अनिच्छा, इच्छा न होना, अरुचि ।

वैरसेनि–पु० (सं०) राजा नल ।

वैरागिक–वि० (सं०) विरक्त ।

वैरागी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

वैरागी(गिन्)–पु० (सं०) एक वैष्णव संप्रदाय, उदासी । वि० विषयकी इच्छासे रहित, विरक्त, उदासीन ।

वैराग्य–पु० (सं०) रंग बदलना, विवर्ण होना; विषयवासना और सांसारिक संबंधोंसे मनका उचट जाना, विरक्ति, उदासीनता;

अनासक्ति (डिटैचमेंट)।

वैराज–वि० (सं०) ब्रह्मा-संबंधी। पु० पुरुष, परमात्मा; ब्रह्मा; मनु; ऋषभ नामके एक वैदिक ऋषि; सत्ताईसवाँ कल्प; एक देववर्ग; एक पितृवर्ग; वैराज्य।

वैराजक–पु० (सं०) उन्नीसवाँ कल्प।

वैराज्य–पु० (सं०) दो राजाओंका संयुक्त शासन, दुराज; ऐसे शासनवाला देश; विदेशी शासन; विस्तृत साम्राज्य।

वैराट–वि० (सं०) विराट(मत्स्य-नरेश)-संबंधी; विस्तृत। पु० बीरबहूटी; एक फुनगा; एक रत्न; एक विशेष रंग या उस रंगकी वस्तु; एक देश। **–राज**–पु० मत्स्य-नरेश।

वैराटक–पु० (सं०) एक विषैला कंद; विषाक्त अर्बुद।

वैराट्या–स्त्री० (सं०) दे० 'वैरोट्या'।

वैरातंक–पु० (सं०) अर्जुन वृक्ष।

वैरायित–पु० (सं०) शत्रुता।

वैरिंच–वि० (सं०) ब्रह्मा-संबंधी।

वैरिंच्य–पु० (सं०) ब्रह्माके पुत्र।

वैरि–पु० (सं०) वैरी, दुश्मन।

वैरिण–पु० (सं०) शत्रुता।

वैरी(रिन्)–वि० (सं०) शत्रुतापूर्ण। पु० शत्रु; योद्धा।

वैरूप–पु० (सं०) एक साम; एक गोत्रकार ऋषि; एक पितृवर्ग। वि० विरूप साम-संबंधी।

वैरूपाक्ष–पु० (सं०) विरूपाक्षका वंशज; एक मंत्र।

वैरूप्य–पु० (सं०) विरूपता; विकृति; कुरूपता; रूप-भिन्नता।

वैरेकीय–वि० (सं०) विरेचक।

वैरेचन, वैरेचनिक–वि० (सं०) विरेचन-संबंधी।

वैरोचन–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी; विरोचनसे उत्पन्न। पु० सूर्यका एक पुत्र; विष्णुका एक पुत्र; अग्निका एक पुत्र; विरोचनका पुत्र, बलि; एक समाधि; एक ध्यानी बुद्ध; एक सिद्ध-वर्ग; एक लोक (बौ०)। **–निकेतन**–पु० पाताल। **–मुहूर्त**–पु० दिनका एक मुहूर्त। **–रश्मि-प्रतिमंडित**–पु० एक लोक (बौ०)।

वैरोचनि–पु० (सं०) बलि; एक बुद्ध; सूर्यका एक पुत्र; अग्निका एक पुत्र।

वैरोचि–पु० (सं०) बलिका पुत्र; बाण; बलि।

वैरोट्या–स्त्री० (सं०) सोलह विद्यादेवियोंमेंसे एक (जैन)।

वैरोद्धार–पु० (सं०) वैर-परिशोध।

वैरोधक, वैरोधिक–वि० (सं०) अनुकूल न पड़नेवाला (आहार)।

वैल–वि० (सं०) बिल, विवर-संबंधी; बिलमें रहनेवाला। पु० बिल, माँद, बेल (?)। **–स्थान**–पु० शव गाड़नेका स्थान।

वैल–पु० (अ०) हायहाय, अफसोस; शत्रुता; आपत्ति; रोनाधोना; दोज़ख़का एक तल। **–कश**–वि० शत्रुता निबाहनेवाला; बदीका बदला लेनेवाला।

वैलती*–स्त्री० ओलती, ओरी–'आनँद घन कितहूँ किनि बरसौ ये बरुनी वैलतियाँ'।

वैलक्षण्य–पु० (सं०) विचित्रता; विभिन्नता; अंतर।

वैलक्ष्य–पु० (सं०) चिह्नाभाव; वैपरीत्य; अस्वाभाविकता; वैचित्र्य; लज्जा।

वैलिंग्य–पु० (सं०) परिचायक चिह्नका अभाव; लिंगहीनता।

वैलोम्य–पु० (सं०) क्रम-वैपरीत्य, विपरीतता; विलोमता।

वैल्व–पु० (सं०) बिल्व, बेलका फल।

वैवक्षिक–वि० (सं०) जिसे कहना अभिप्रेत हो।

वैवधिक–पु० (सं०) भारवाहक; मजदूर; फेरी करके माल बेचनेवाला; गल्ला आदि बेचनेवाला; दूत, संवादवाहक।

वैवर्ण–पु० दे० 'वैवर्ण्य'।

वैवर्णिक–पु० (सं०) वह जो जातिच्युत कर दिया गया हो।

वैवर्ण्य–पु० (सं०) विवर्णता, रंग बदल जाना; मालिन्य; सौंदर्याभाव; भिन्नता; जातिच्युति।

वैवर्त–पु० (सं०) पहियेके समान घूमना।

वैवश्य–पु० (सं०) विवशता; दुर्बलता; आत्मनियंत्रणका अभाव।

वैवस्वत–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी; यम-संबंधी; मनु-संबंधी। पु० यम; मनु; शनि ग्रह; एक रुद्र; सातवाँ मन्वंतर; एक तीर्थ। **–द्रुम**–पु० मोगरा चावल।

वैवस्वती–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा; सूर्यकी एक पुत्री; यमी; यमुना।

वैवस्वतीय–वि० (सं०) मनु वैवस्वत-संबंधी।

वैवाह–वि० (सं०) विवाह-संबंधी।

वैवाहिक–वि० (सं०) विवाह-संबंधी। पु० विवाह-संबंधी तैयारी, विवाहोत्सव; विवाह; विवाहके कारण होनेवाला संबंध; कन्या या वरका श्वशुर।

वैवाह्य–वि० (सं०) विवाह-संबंधी; विवाह द्वारा संबद्ध। पु० विवाह-संस्कार।

वैविक्त्य–पु० (सं०)· · ·से मुक्ति।

वैवृत्त–पु० (सं०) उदात्त स्वरोंका क्रम।

वैशंपायन–पु० (सं०) वेदव्यासके शिष्य (इन्होंने जनमेजयको महाभारतकी कथा सुनायी थी); एक प्राचीन ऋषि।

वैशंफल्या–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वैशद्य–पु० (सं०) विशदता, निर्मलता; कांति; स्पष्टता; सफेदी।

वैशली–स्त्री० (सं०) वसुदेवकी एक पत्नी; एक नगरी, वैशाली।

वैशल्य–पु० (सं०) (गर्भभारके) कष्टसे मुक्ति।

वैशस–वि० (सं०) घातक, विनाशकारी। पु० खंड-खंड करना; वध; युद्ध; कष्ट; संकट; बर्बादी; नरक; एक नरक।

वैशस्त्र–पु० (सं०) अधिकार; शासन; शस्त्रराहित्य। वि० शस्त्रहीन।

वैशाख–पु० (सं०) चांद्र वर्षका एक मास जो चैत्रके बाद पड़ता है; मंथन-दंड; बाण चलाते समयकी एक मुद्रा। वि० वैशाख मास-संबंधी। **–नंदन**–पु० गधा (बो०)। **–रज्जु**–स्त्री० मथानीकी रस्सी।

वैशाखी–स्त्री० (सं०) वैशाखकी पूर्णिमा; रक्त पुनर्नवा; वसुदेवकी एक पत्नी।

वैशाखी(खिन्)–पु० (सं०) हाथीके अगले पैरका एक विशेष भाग।

वैशाखी–स्त्री० (सं० वरसाक्षी) बरातके आगमन तथा कन्यादानकी रस्म शुरू होनेके बीच जनवासेमें जाकर वरको देखने और उसे सम्मानित करनेकी रीति।

वैशाख्य–पु० (सं०) एक मुनि।

वैशारद–वि० (सं०) अनुभवी, कुशल, विद्वान्। पु० प्रगाढ पांडित्य।

वैशारद्य–पु० (सं०) दक्षता, पांडित्य; बुद्धि; बुद्धिकी स्पष्टता या स्वच्छता; भगवान् बुद्धका आत्मविश्वास।

वैशाल–पु० (सं०) विशाला नामक स्थानके राजा।

वैशालक, वैशालिक–वि० (सं०) वैशाली-संबंधी।

वैशालाक्ष–पु० (सं०) शिवरचित एक शास्त्र।

वैशाली–स्त्री० (सं०) विशाल नामक राजा द्वारा स्थापित एक नगर जहाँ महावीर वर्द्धमानका जन्म हुआ था; विशाल नामक राजाकी पुत्री; वसुदेवकी एक पत्नी।

वैशालीय–पु० (सं०) जैन धर्म प्रवर्तक महावीर वर्द्धमान।

वैशालेय–पु० (सं०) विशाल-वंशोत्पन्न तक्षक।

वैशिक–वि० (सं०) वेश्यागामी; वेश्यावृत्तिसे संबंध रखनेवाला। पु० वेश्यवृत्ति; तीन प्रकारके नायकोंमेंसे एक (जो वेश्याओंसे संबंध रखता है)।

वैशिक्य–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति।

वैशिष्ट–पु० (सं०) विशिष्टता, विशेषता; अंतर।

वैशिष्ट्य–पु० (सं०) विशेष धर्मसे युक्त होना; विशेषता, अंतर; श्रेष्ठता; विशिष्टता।

वैशीपुत्र–पु० (सं०) वैश्याका पुत्र।

वैशेषिक–वि० (सं०) विशेषतायुक्त; श्रेष्ठ; विशेष विषय-संबंधी; वैशेषिक दर्शन-संबंधी। पु० कणाद-प्रवर्तित एक दर्शन जिसमें तत्त्वोंका विवेचन किया गया है; इस दर्शनका अनुयायी।

वैशेष्य–पु० (सं०) विशेषता; प्राधान्य।

वैश्मिक–वि० (सं०) मकानमें रहनेवाला।

वैश्य–पु० (सं०) द्विजातियोंमें तीसरा और अंतिम वर्ण (जिसका पेशा कृषि, वाणिज्य आदि है)। वि० वैश्य जाति संबंधी। **–कर्म-**

(न्)–पु० वैश्यका पेशा–कृषि, वाणिज्य आदि । **–ध्वंसी(सिन्)** –वि० वैश्योंका नाश करनेवाला । **–भद्रा**–स्त्री० एक देवी (बौ०) । **–यज्ञ**–पु० वैश्य द्वारा किया जानेवाला यज्ञ । **–रत**–वि० वैश्योंपर निर्वाहके लिए अवलंबित । **–वृत्ति**–स्त्री० वैश्यका पेशा । **–सव**–पु० एक यज्ञ । **–स्तोम**–पु० एक एकाह यज्ञ ।

वैश्यता–स्त्री० वैश्यका धर्म; वैश्यत्व ।

वैश्या–स्त्री० (सं०) वैश्यकी स्त्री; हल्दी; एक देवी (बौ०) ।

वैश्रंभक–वि० (सं०) जाग्रत् करनेवाला; विश्वस्त । पु० एक देवोद्यान ।

वैश्रवण–पु० (सं०) कुबेर; रावण; चौदहवाँ मुहूर्त । वि० कुबेर-संबंधी ।

वैश्रवणानुज–पु० (सं०) रावण ।

वैश्रवणालय–पु० (सं०) कुबेरपुरी; वटवृक्ष ।

वैश्रवणावास, वैश्रवणोदय–पु० (सं०) वटवृक्ष ।

वैश्लेषिक–वि० (एनैलिटिकल) विश्लेषण सम्बन्धी; विश्लेषणसे ज्ञात होनेवाला ।

वैश्व–वि० (सं०) विश्वदेव-संबंधी । पु० एक नक्षत्र, उत्तराषाढ़ा ।

वैश्वजनीन–वि० (सं०) विश्व, दुनियाभरके लोगोंसे संबंध रखनेवाला; समस्त विश्वके जनोंका कल्याण साधक ।

वैश्वदेव–वि० (सं०) सब देवोंसे संबंध रखनेवाला । पु० विश्वदेवके उद्देश्यसे किया हुआ होम, यज्ञ; एक एकाह; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।

वैश्वदेवत, वश्वदैवत–पु० (सं०) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्वदेव कहे जाते हैं ।

वैश्वदेविक, वैश्वदेव्य–वि० (सं०) विश्वदेव-संबंधी ।

वैश्वमनस–पु० (सं०) एक साम ।

वैश्वयुग–पु० (सं०) वृहस्पतिके पाँच संवत्सरोंका समाहार ।

वैश्वरूप–वि० (सं०) वहुतसे रूपोंवाला; विभिन्न प्रकारका । पु० विश्व ।

वैश्वरूप्य–वि० (सं०) दे० 'वैश्वरूप' । पु० वहुरूपता; विभिन्नता ।

वैश्वानर–वि० (सं०) अग्नि-संबंधी । पु० अग्नि; जठराग्नि, 'पित्त; चेतन; एक दैत्य; चित्रक वृक्ष । **–पथ,–मार्ग**–पु० चंद्रवीथीका एक भाग । **–मुख**–वि० अग्नि जिसका मुख हो (शिव) । **–विद्या**–स्त्री० एक उपनिषद् ।

वैश्वानरी–स्त्री० (सं०) दे० 'वैश्वानर-पथ' ।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक–वि० (सं०) विश्वामित्र-संबंधी ।

वैश्वासिक–वि० (सं०) विश्वसनीय, विश्वस्त ।

वैश्वी–स्त्री० (सं०) उत्तराषाढ़ा नक्षत्र ।

वैषम–पु० (सं०) असमानता; परिवर्तन ।

वैषम्य–पु० (सं०) विषमता; समतल न होना; अनुपात-राहित्य; कठिनाई; संकट; कठोरता; अनौचित्य; भूल; एकाकीपन ।

वैषयिक–वि० (सं०) विषय-संबंधी; प्रदेश, भूभाग-संबंधी; संबंधी, विषयक (समासमें) । पु० कामी, लंपट ।

वैषिक–वि० विष-संबंधी (टॉक्सिक) ।

वैषुवत–पु० (सं०) विषुव (संक्रांति); केंद्र, मध्य । वि० मध्यवर्ती; विषुव रेखा-संबंधी ।

वैषुवतीय–वि० (सं०) दे० 'वैषुवत' ।

वैष्क–पु० (सं०) दे० 'बैष्क' ।

वैष्किर–वि० (सं०) जिसमें विष्किर, पक्षी आदि हों (झुंड, समूह); चेंगनेसे तैयार किया हुआ (शोरवा आदि) । पु० पशु; पक्षी ।

वैष्टंभ–पु० (सं०) एक साम ।

वैष्टिक–पु० (सं०) वह जिससे जमींदार जवरदस्ती काम ले, वेगार करनेवाला ।

वैष्टुत, वैष्टुभ–पु० (सं०) होमका भस्म ।

वैष्ट्र–पु० (सं०) भुवन; विष्णु; स्वर्ग; वायु ।

वैष्णव–वि० (सं०) विष्णु-संबंधी; विष्णुको पूजनेवाला । पु० विष्णुकी उपासना, आराधना करनेवाला; एक धार्मिक संप्रदाय (जिसमें विष्णुकी उपासना की जाती है); यज्ञकुण्डकी भस्म; विष्णुपुराण । **–स्थानक**–पु० रंगमंचपर लंबे डग भरना (ना०) ।

वैष्णवाचार–पु० (सं०) वैष्णवोंका आचार-विचार ।

वैष्णवी–स्त्री० (सं०) वैष्णव-संप्रदायकी स्त्री; विष्णुकी शक्ति; दुर्गा और मनसा; अपराजिता; शतावरी; तुलसी; श्रवण नक्षत्र; होम-भस्म; मूर्च्छनाका एक भेद ।

वैष्णव्य–वि० (सं०) विष्णु-संबंधी ।

वैसंदर–पु० वैश्वानर, अग्नि ।

वैसर्गिक–वि० (सं०) त्याज्य, विसर्जनीय; विसर्ग सम्बन्धी ।

वैसर्जन–पु० (सं०) विसर्जन करना; यज्ञकी वलि; विसर्जनीय वस्तु ।

वैसर्प–वि० (सं०) विसर्प रोगसे ग्रस्त । पु० विसर्प रोग ।

वैसा–वि० उस तरहका । अ० उस प्रकार; उतना ।

वैसादृश्य–पु० (सं०) विषमता, असमानता; अंतर ।

वैसारिण–पु० (सं०) मत्स्य ।

वैसूचन–पु० (सं०) पुरुषका स्त्रीका पार्ट करना (ना०) ।

वैसे–अ० उस प्रकारसे; यों ।

वैस्तारिक–वि० (सं०) विस्तृत, लंबा-चौड़ा; विस्तार-संबंधी ।

वैस्पष्ट्य–पु० (सं०) स्पष्टता ।

वैस्वर्य–वि० (सं०) स्वरसे वंचित करनेवाला । पु० स्वरसे वंचित होना; स्वर-विकृति; गला बैठना ।

वैह–पु० (अ०) अहो ! खूब !; हाय हाय; हा हन्त ! डांट-फटकार । **–कल्लाह**–ईश्वर तुझे वर्बाद करे ।

वैहंग–वि० (सं०) पक्षी-संबंधी ।

वैहग–वि० (सं०) पक्षी-संबंधी ।

वैहायस–वि० (सं०) आकाशमें विचरण करनेवाला; आकाशस्थ; वायु-संबंधी । पु० देवता; एक झील ।

वैहार–पु० (सं०) मगधका एक पर्वत ।

वैहारिक–पु० (सं०) विहारके लिए काममें आनेवाला ।

वैहार्य–वि० (सं०) जिसके साथ मजाक किया जा सके (साला आदि) । पु० हँसी-मजाक, परिहास; साला ।

वैहाली–स्त्री० (सं०) आखेट ।

वैहासिक–पु० (सं०) विदूषक; अभिनेता । वि० हँसानेवाला ।

वैह्वल–पु० (सं०) विकलता; निर्बलता, अशक्तता ।

वोंट–पु० (सं०) वृंत ।

वोक*–अ० तरफ, ओर–'सूर स्याम कालीपर निर्तत आवत ब्रजकी वोक'–सूर ।

वोक्काण–पु० (सं०) एक स्थान; उस स्थानके निवासी ।

वोछा*–वि० दे० 'ओछा' ।

वोट–पु० (अं०) किसी व्यक्तिके निर्वाचनके लिए दिया जानेवाला मत ।

वोटर–पु० (अं०) वह व्यक्ति जिसे वोट, सम्मति देनेका अधिकार प्राप्त हो । **–लिस्ट**–स्त्री० मतदाताओंकी सूची ।

वोटा–स्त्री० (सं०) दासी ।

वोटिंग–स्त्री० (अं०) मतदान; मतग्रहण ।

वोड–पु० (सं०) सुपारी ।

वोड़ना*–स० क्रि० फैलाना, पसारना ।

वोड्र–पु० (सं०) गोनस सर्प; एक मछली ।

वोड्री–स्त्री० (सं०) पणका चौथा भाग ।

वोढ–वि० (सं०) विवाहित । पु० कदंब; दे० 'वोढू' ।

वोढ़ना*–स० क्रि० दे० 'ओढ़ना'–'वोढ़ैं काला कपड़ा नाँव धरावैं सेत'–साखी ।

वोढव्य–वि० (सं०) सहनीय; ले जाये जाने योग्य, वाह्य; पूरा किये जाने योग्य ।

वोढव्या–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका विवाह होनेवाला हो ।

वोढा–स्त्री० (सं०) ऋषभक नामकी ओषधि ।

वोढा(ढृ)–पु० (सं०) ढोने, ले जानेवाला; नायक, नेता; पति; साँड़; सारथि ।

वोढु–पु० (सं०) पीहरमें रहनेवाली स्त्रीका लड़का ।

वोढू–पु० (सं०) मुनिविशेष ।

वोद–वि० (सं०) आर्द्र, गीला।

वोदर, वोद्र*–पु० उदर ।

वोदार–पु० (सं०) मुरदासिंगी, कंकुष्ठ ।

वोदाल–पु० (सं०) एक मछली, वोआरी ।

वोपदेव–पु० (सं०) संस्कृतके एक प्राचीन विद्वान् ।

वोर*–स्त्री० अंत; तरफ ।

वोरक, वोलक–पु० (सं०) लेखक ।

वोरट–पु० (सं०) कुंदका पौधा या फूल ।

वोरव–पु० (सं०) वारो धान ।

वोरखान–पु० (सं०) एक विशेष रंगका घोड़ा ।

वोल–पु० (सं०) एक गंध द्रव्य, रसगंध ।

वोल्ट–पु० (अं०) ऊर्ज (विजलीका) । **–मीटर**–पु० (अं० वोल्टमोटर) ऐसा विद्युत् यंत्र जो विभवान्तरको 'वोल्ट'में नाप सकता है ।

वोल्टेज–पु० (अं०) ऊर्ज-मान ।

वोल्लाह–पु० (सं०) एक विशेष प्रकारका अश्व (दुम और अयाल छोटा होता है) ।

वोहथ्थ*–पु० वाहित्थ, जहाज ।

वोहित्थ–पु० (सं०) जहाज, पोत, वड़ी नाव ।

वौद्ध–वि० (सं०) दे० 'वौद्ध' ।

वौषट्–अ० (सं०) हविर्दानके समय उच्चारण किया जानेवाला एक शब्द या मंत्र, वषट् ।

व्यंकुश–पु० (सं०) अनियंत्रित, निरंकुश ।

व्यंग–वि० (सं०) शरीर-हीन; चक्रहीन; विकलांग; खंज, लंगड़ा; अव्यवस्थित । पु० विकलांग व्यक्ति; मेढक; गालपरके काले धब्बे; एक रत्न; एक रोग; इस्पात; ताना (आइरनी) ।

व्यंगार–वि० (सं०) जिसमें अंगारे, अग्नि न हो ।

व्यंगार्थ, व्यग्यार्थ–पु० (सं०) व्यंजना-शक्तिके द्वारा प्राप्त अर्थ, संकेतितार्थ (सा०) ।

व्यंगिता–स्त्री० (सं०) विकलांगता ।

व्यंगी(गिन्)–वि० (सं०) विकलांग ।

व्यंगुल–पु० (सं०) अंगुलका साठवाँ भाग ।

व्यंगुष्ठ–पु० (सं०) एक गुल्म ।

व्यंग्य–वि० (सं०) व्यंजनावृत्ति द्वारा वोधित, संकेतित । पु० संकेतितार्थ, गूढार्थ; नवलेखनमें प्रयुक्त एक शब्द, जो यह स्वीकार करता है कि स्थितियोंका सही रूप कलात्मक विश्लेषणसे नहीं, उन्हें विडंवित करके स्पष्ट किया जा सकता है; चिढ़ाने, नीचा दिखाने आदिके उद्देश्यसे कहे गये विपरीतार्थ-वोधक शब्द, ताना (आइरनी) । **–गीति**–स्त्री० (सैटायर) किसीकी हँसी उड़ानेके लिए प्रस्तुत पद्यात्मक रचना । **–चित्र**–पु० (सं०) वह चित्र जो किसी व्यक्ति या घटना आदिको लक्ष्यकर मजाक उड़ानेके लिए वनाया गया हो, 'कार्टून' । **–विदग्धा**–स्त्री० व्यंग्य द्वारा हाल जाननेका संकेत करनेवाली नायिकाकी सखी (सा०) ।

व्यंग्योक्ति–स्त्री० (सं०) गूढ भाषा, वह उक्ति जिसमें व्यंग्य हो ।

व्यंजक–वि० (सं०) प्रकट करनेवाला, प्रकाशक; अर्थका संकेत करनेवाला । पु० आंतरिक भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा, अभिनय; संकेत; व्यंजना शक्ति द्वारा अर्थ प्रकट करनेवाला शब्द ।

व्यंजन–पु० (सं०) प्रकट करना, प्रकाशन; स्वरहीन वर्ण; चिह्न; छद्मवेश; उपस्थ; पदचिह्न, परिचायक चिह्न; तारुण्यद्योतक चिह्न; डाढ़ी-मूँछ; अंग; पकवान; भोजन-सामग्री, मसाले आदि; दिन; वलिपशुका संस्कार; पका हुआ भोजन (वोलचाल); पंखा (व्यंजनका विकृत रूप); दे० 'व्यंजना' (सा०); गुप्तचर; गुप्तचरमंडल । **–कार**–पु० भोजन वनानेवाला । **–तालिका**–स्त्री० (मेनू) (होटल आदिमें) परोसे जा सकने योग्य व्यंजनोंकी सूची, व्यंजिनी, व्यंजनिका । **–संधि**–स्त्री० व्यंजन वर्णोंका संयोग । **–हारिका**–स्त्री० एक चुड़ैल जो विवाहिता कन्याका वनाया हुआ खाद्यपदार्थ (किसी-किसीके मतसे भगस्थ वाल) हरण कर लेती है ।

व्यंजना–स्त्री० (सं०) तीन प्रकारकी शब्दशक्तियोंमेंसे एक जो अभिधा और लक्षणाके विरत हो जानेपर संकेतितार्थ प्रकट करती है; व्यक्त करनेकी क्रिया । **–वृत्ति**–स्त्री० व्यंग्यपूर्ण भाषा लिखनेकी शैली; व्यंजना-शक्ति ।

व्यंजनिका–स्त्री० दे० 'व्यंजनतालिका' ।

व्यंजिनी–स्त्री० (सं०) (मेनू) (होटलमें तैयार) व्यंजनोंका समूह (जैसे कमलिनी = कमल-समूह; दे० 'व्यंजन-तालिका') ।

व्यंजित–वि० (सं०) प्रत्यक्ष, प्रकट किया हुआ; चिह्नित; संकेतित ।

व्यंत–वि० (सं०) दूरवर्ती, दूरस्थ ।

व्यंतर–पु० (सं०) एक तरहके पिशाच और यक्ष (जै०); अवकाश; अंतराभाव ।

व्यंश–पु० (सं०) सिंहिका और विप्रचित्तिका पुत्र ।

व्यंशक–पु० (सं०) पहाड़ ।

व्यंशुक–वि० (सं०) वस्त्रहीन, नग्न ।

व्यंस–वि० (सं०) चौड़े कंधोंवाला । पु० एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था; दे० 'व्यंश' ।

व्यंसक–पु० (सं०) धूर्त, छली आदमी; वाजीगर ।

व्यंसन–पु० (सं०) धोखा देना, ठगना; वितरण ।

व्यंसित–वि० (सं०) वंचित, जो छला गया हो, प्रतारित ।

व्य–पु० (सं०) परदा करनेवाला, ढकनेवाला ।

व्यक्त–वि० (सं०) प्रकट; विकसित; प्रत्यक्ष, स्पष्ट, दृश्य; निर्दिष्ट; ज्ञात; चतुर, विद्वान्; उष्ण । पु० दीक्षित साधु; विद्वान् मनुष्य; विष्णु; ग्यारह गणाधिपोंमेंसे एक (जै०); अव्यक्तका व्यक्त, स्थूल रूप (सां०) । **–कृत्य**–पु० सार्वजनिक कार्य । **–गणित**–पु० अंकगणित । **–गंधा**–स्त्री० पिप्पली; स्वर्णयूथिका; नीली अपराजिता । **–तारक**–वि० चमकीले सितारोंवाला । **–दृष्टांत, –दृष्टार्थ**–वि० प्रत्यक्षदर्शी (साथी) । **–भुक्(ज्)**–वि० सारे दृश्य पदार्थोंका भक्षण करनेवाला (काल) । **–मानव**–पु० समूहमानव या भीड़के आरोपित अनुशासनसे विद्रोह करते हुए अपनी निजी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए प्रयत्नशील अकेला मनुष्य । साहित्यमें अतिचर्चित मूल्यका रूप ले चुका है । **–राशि**–स्त्री० ज्ञात राशि । **–रूप**–पु० विष्णु । **–लक्ष्मा(क्ष्मन्)**–वि० प्रकट चिह्नोंवाला । **–लवण**–वि० जिसमें अधिक नमक पड़ा हो । **–वाक्(च्)**–स्त्री० स्पष्ट वचन । **–विक्रम**–वि० शक्ति प्रकट करनेवाला ।

व्यक्ताक्षेप–पु० (सं०) आक्षेप अलंकारका एक भेद (सा०) ।

व्यक्ति–स्त्री० (सं०) व्यक्त, प्रकट होनेकी क्रिया; प्रकट रूप; स्पष्टता; लिंग (व्या०); अंतर करना; वास्तविक प्रकृति; पदार्थ; प्रकाश । पु० व्यष्टि, जन (जाति या समष्टिका उलटा) । **–क**–वि० (सं०) (इण्डीवीजुअल) किसी एक ही व्यक्तिसे सम्वन्ध रखनेवाला । **–गत**–वि० एक व्यक्तिका, अपना, निजी । **–वाद**–पु० (इण्डीवीजुअलिज़्म) अपने निजी हितको सर्वोपरि स्थान देनेका सिद्धान्त ।

व्यक्तित्व–पु० (सं०) (पर्सनैलिटी) व्यक्तिकी विशेषता, गुण; वह विशेषता जो किसी व्यक्तिमें असामान्य-रूपसे पायी जाय; व्यक्त होनेका भाव (इण्डीविजुएल्टी) ।

व्यक्तीकरण–पु० (सं०) व्यक्त, प्रकट करनेकी क्रिया ।

व्यक्तीकृत–वि० (सं०) प्रकट किया हुआ ।

व्यक्तीभूत–वि० (सं०) जो प्रकट हो गया हो ।

व्यग्र–वि० (सं०) हतवुद्धि, व्याकुल, परेशान, घवड़ाया हुआ; डरा हुआ; संलग्न, व्यस्त; उद्योगी; आसक्त; हठी; अस्थिर; गतिशील (जैसे चक्र) । पु० विष्णु । **–मना(नस्)**–वि० घवड़ाया हुआ । **–हस्त**–वि० जिसके हाथ किसी काममें लगे हों ।

व्यज–पु० (सं०) पंखा ।

व्यजन–पु० (सं०) पंखा झलना; पंखा; पंखेके काम आनेवाला ताड-पत्रादि; किसी प्रश्नकी ओर लोगोंका ध्यानाकर्षण । **–क्रिया**–स्त्री० पंखा झलनेकी क्रिया । **–चामर**–पु० पंखेके रूपमें काम आनेवाली चँवरी गायकी पूँछ ।

व्यजनक–पु० (सं०) पंखा ।

व्यजनिक–पु० पंखा हाँकनेवाला नौकर ।

व्यजनी(निन्)–पु० (सं०) वह पशु जिसकी पूँछ चँवर वनानेके काम आती है ।

व्यज्य–वि० (सं०) पु० व्यंग्य ।

व्यडंवक, व्यडंवन–पु० (सं०) एरंडका पेड़ ।

व्यड–पु० (सं०) दे० 'व्याडि'।

व्यतिकर–वि० (सं०) अन्योन्य, परस्पर अनुवर्ती; व्यापक; संलग्न। पु० संयोग, मिलन; मिश्रण; संबंध, संपर्क; बाधा; घटना; अवसर; संकट; अन्योन्य संबंध; विनिमय; परिवर्तन; वैपरीत्य; नाश, अंत; व्यसन।

व्यतिकरित–वि० (सं०) मिश्रित; संयुक्त किया हुआ।

व्यतिकीर्ण–वि० (सं०) मिश्रित; बिखेरा हुआ; गड्ड-मड्ड।

व्यतिकृत–वि० (सं०) व्याप्त।

व्यतिक्रम–पु० (सं०) बीतना, गुजरना (समय); उल्लंघन; उपेक्षा; रीति-भंग; पाप; क्रम-विपर्यय; संकट; बाधा।

व्यतिक्रमण–पु० (सं०) क्रमभंग करना; पाप करना, बुराई करना।

व्यतिक्रमी(मिन्)–वि० (सं०) पापी, अपराधी।

व्यतिक्रांत–वि० (सं०) भंग किया हुआ; उल्लंघित; विपर्यस्त; बिताया हुआ। पु० अतिक्रमण; पाप।

व्यतिक्रांति–स्त्री० (सं०) पाप करना; बुराई करना।

व्यतिक्षेप–पु० (सं०) अदल-बदल; वितंडा, कहासुनी, झगड़ा।

व्यतिगत–वि० (सं०) बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय)।

व्यतिचार–पु० (सं०) पापाचरण, दुष्कर्म; दोष।

व्यतिपात–पु० (सं०) विष्कंभ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे एक।

व्यतिभिन्न–वि० (सं०) अभेद्य रूपमें संयुक्त।

व्यतिभेद–पु० (सं०) युगपत् स्फोट होना; व्याप्ति, प्रवेश।

व्यतिमूढ–वि० (सं०) बहुत घबड़ाया हुआ।

व्यतियात–वि० (सं०) बीता, गुजरा हुआ।

व्यतिरिक्त–वि० (सं०) अतिशय, बहुत अधिक; पृथक, भिन्न; ···से मुक्त, रहित; रोका हुआ; अपवाद किया हुआ। अ० सिवा, अलावा, छोड़कर।

व्यतिरिक्तक–पु० (सं०) उड़नेका एक प्रकार।

व्यतिरेक–पु० (सं०) भेद, अंतर, पार्थक्य; अभाव, राहित्य; वृद्धि, बढ़ती; अतिक्रमण; असंबंध-रूप पदार्थ (अन्वयका उलटा –न्या०); एक तरहकी व्याप्ति (न्या०); तुलनामें वैपरीत्य दिखलाना; एक काव्यालंकार जहाँ उपमानकी अपेक्षा उपमेयकी अधिकता कही जाय।

व्यतिरेकी(किन्)–वि० (सं०) अतिक्रमण करनेवाला; पदार्थोंमें विशेषता उत्पन्न करनेवाला, अंतर दिखानेवाला; भिन्न; विपरीत; अभावात्मक।

व्यतिरेचन–पु० (सं०) तुलनामें अंतर दिखलाना।

व्यतिरोपित–वि० (सं०) निष्कासित; बेदखल किया हुआ।

व्यतिलंघी(घिन्)–वि० (सं०) गिरने, फिसलनेवाला।

व्यतिव्यस्त–वि० (सं०) अस्त-व्यस्त।

व्यतिषंग–पु० (सं०) परस्पर मिलना, संयोग; आपसका संबंध; लगाव-बझाव; भिड़ंत; विनिमय; अभिशोषण; एक साथ बाँधना।

व्यतिषक्त–वि० (सं०) परस्पर मिला हुआ; आसक्त; ओतप्रोत; जिनमें अंतर्विवाह हुआ हो।

व्यतिहार, व्यतीहार–पु० (सं०) विनिमय, बदला; गाली-गलौज; मारपीट।

व्यतीकार–पु० (सं०) भिड़ंत; दे० 'व्यतिकर'।

व्यतीत–वि० (सं०) बीता हुआ, गत; प्रस्थित; मृत; त्यक्त; उपेक्षित; लापरवाह। –काल–वि० जिसका समय गुजर गया हो; असामयिक; अनवसर।

व्यतीतना*–अ० क्रि० व्यतीत होना, बीतना, गुजरना।

व्यतीपात–पु० (सं०) दे० 'व्यतिपात'; भारी उपद्रव, उत्पात; अनादर; धनिष्ठा, आर्द्रा आदि नक्षत्रोंमें चंद्रमाके रहनेपर रविवारको पड़नेवाली अमावस्या।

व्यत्यय–पु० (सं०) व्यतिक्रम; विपर्यय, वैपरीत्य; विनिमय, परिवर्तन; विरोध; बाधा। –ग–वि० विपरीत दिशामें गमन करनेवाला।

व्यत्ययक–पु० (सं०) अक्षरोंका व्यतिक्रम सूचित करनेवाला लिखाई-छपाईका एक संकेत।

व्यत्यस्त–वि० (सं०) विपरीत क्रममें रखा हुआ; विपरीत; असंगत; इस प्रकार रखी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरीको काटती हो।

व्यत्यास–पु० (सं०) दे० 'व्यत्यय'।

व्यथक–वि० (सं०) पीड़ा देनेवाला; त्रस्त करनेवाला।

व्यथन–वि० (सं०) क्षुब्ध करनेवाला; उद्वेजक; कष्ट देनेवाला। पु० पीड़ा, व्यथा; कंपन; परिवर्तन (स्वरका); कष्टानुभूति; कष्ट देना; छेदना।

व्यथयिता(तृ)–वि० (सं०) पीड़ा देनेवाला; दंड देनेवाला।

व्यथा–स्त्री० (सं०) पीड़ा, दुःख; तकलीफ; डर, शंका; क्षति; बेचैनी; रोक। –कर–वि० कष्टदायक।

व्यथाकुल–वि० (सं०) कष्टग्रस्त, व्यथित।

व्यथाक्रांत–वि० (सं०) दे० 'व्यथित'।

व्यथातुर–वि० (सं०) दे० 'व्यथित'।

व्यथान्वित–वि० (सं०) व्यथित, व्यथाकुल।

व्यथित–वि० (सं०) पीड़ित, दुःखित; डरा हुआ।

व्यथी(थिन्)–वि० (सं०) व्यथित, कष्टग्रस्त।

व्यथ्य–वि० (सं०) जिसे व्यथा दी जा सके; पीड़ा उत्पन्न करनेवाला।

व्यध–पु० (सं०) भेदन; छेदना; चोट करना; आहत करना; आघात, वार।

व्यधन–पु० (सं०) बेधना, विद्ध करना; आखेट। वि० विद्ध करनेवाला।

व्यधा–स्त्री० (सं०) रक्त-क्षरण, रक्त-पात।

व्यधिकरण–वि० (सं०) जिसका आधार भिन्न हो; दूसरे कारकसे संबद्ध (व्या०)। पु० भिन्न आधारपर होना।

व्यधिक्षेप–पु० (सं०) निंदा, शिकायत; भर्त्सना।

व्यध्य–वि० (सं०) छेदने, भेदन करने योग्य। पु० धनुषकी डोरी, प्रत्यंचा; निशाना, लक्ष्य।

व्यध्व–पु० (सं०) कुपथ, बुरी सड़क; मार्गका मध्य।

व्यनुनाद–पु० (सं०) दूरतक जानेवाली ऊँची आवाज; जोरकी गूँज।

व्यपकर्ष–पु० (सं०) अपवाद।

व्यपकृष्ट–वि० (सं०) हटाया हुआ, निकालकर अलग किया हुआ।

व्यपगत–वि० (सं०) गया हुआ, प्रस्थित, ··से गिरा हुआ; वंचित, रहित; (लैप्स्ड) ढिलाई या भूलसे उचित समयपर काममें न लाये जानेके कारण जो हाथसे निकल गया हो या बेकार (रद्द) हो गया हो। –रश्मि–वि० जिसकी किरणें विलीन हो गयी हों।

व्यपगति–स्त्री०, **व्यपगमन**–पु० (लैप्स) किसी अधिकार, अनुदान, सुविधा आदिका उचित समयके भीतर प्रयोग न होनेके कारण हाथसे निकल जाना या रद्द हो जाना।

व्यपगम–पु० (सं०) प्रस्थान; लोप; (समय) बीतना।

व्यपत्रप–वि० (सं०) निर्लज्ज; धृष्ट।

व्यपदिष्ट–वि० (सं०) निर्दिष्ट; दिखलाया हुआ; सूचित; बहाना बनाया हुआ; छला हुआ; वंचित; निन्दित।

व्यपदेश–पु० (सं०) सूचना; निर्देश; नाम; अल्ल; उपाधि; कुल; जाति; ख्याति; निद्रा; वंचना; दाँव, छल; बहाना, छिपाव; व्याख्या (जै०)।

व्यपदेशक–वि० (सं०) नाम-निर्देश करनेवाला।

व्यपदेशी(शिन्)–वि० (सं०) अल्ल, उपाधिवाला; सूचक; परामर्शके अनुसार चलनेवाला।

व्यपदेश्य–वि० (सं०) जिसका निर्देश करना हो; निंद्य।

व्यपदेष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) निर्देश करनेवाला; छली।

व्यपनय–पु० (सं०) त्याग; हटाना, दूर करना; विनाश।

व्यपनयन–पु० (सं०) छोड़ देना, विसर्जन, त्याग।

व्यपनीत–वि० (सं०) हटाया हुआ, दूरीकृत।

व्यपनुति–स्त्री० (सं०) त्याग, दूरीकरण।

व्यपमूर्धा(र्धन्)–वि० (सं०) बिना सिरका।

व्यपरोपण–पु० (सं०) उन्मूलन; काटना; तोड़ लेना; दूर करना, निष्कासन; आघात पहुँचाना।

व्यपवर्ग–पु० (सं०) पार्थक्य; विभाग; अंतर; अंत (जै०)।

व्यपवर्जन–पु० (सं०) परित्याग, छोड़ देना; दे देना; हटाना।

व्यपवर्तन–पु० (सं०) लौटना, वापस होना।

व्यपवृक्त–वि० (सं०) पृथक् किया हुआ; विभक्त।

व्यपसारण–पु० (सं०) भगाना, निकाल बाहर करना।

व्यपाकृत–वि० (सं०)· · ·से मुक्त, रहित।

व्यपाकृति–स्त्री० (सं०) अपह्नव; अस्वीकार; निवारण, दूराकरण।

व्यपाय–पु० (सं०) विराम, अंत।

व्यपाश्रय–वि० (सं०) जिसका कोई सहारा न हो, स्वावलंबी। पु० गमन; अंत, विराम; आसन; आश्रयस्थान, सहारा; आशा।

व्यपाश्रित–वि० (सं०) जिसने आश्रय ग्रहण किया हो।

व्यपेक्ष–वि० (सं०) आशायुक्त; उत्सुक; सावधान।

व्यपेक्षा–स्त्री० (सं०) अनुरोध; इच्छा; आकांक्षा; आशा; ध्यान देना, खयाल रखना; आपसका संबंध; प्रयोग।

व्यपेक्षित–वि० (सं०) जिसकी आशा की गयी हो; जिसपर ध्यान दिया गया हो, परस्पर संबद्ध; प्रयुक्त।

व्यपेत–वि० (सं०) जो अलग हो गया हो; गया हुआ; जिसका अंत हो गया हो; विपरीत। **–कल्मष**–वि० निष्पाप। **–घृण**–वि० निर्दय। **–धैर्य**–वि० अधीर। **–भय,–भी**–वि० निर्भीक। **–मद**–वि० गर्वहीन। **–हर्ष**–वि० अप्रसन्न।

व्यपोढ–वि० (सं०) हटाया हुआ, दूर किया हुआ; विरुद्ध, विपरीत; प्रकट किया हुआ, दिखलाया हुआ।

व्यपोह–पु० (सं०) निवारण; नाश; अस्वीकार; बहारना।

व्यपोह्य–वि० (सं०) अस्वीकार्य।

व्यभिचरण–पु० (सं०) संदेह, अनिश्चय।

व्यभिचार–पु० (सं०) सत्पथका परित्याग, कुमार्ग-गमन; पाप, दुराचार, दुष्कर्म; अनुचित यौन संबंध (एडल्टरी); नियमका अपवाद; गलत तर्क, एक तर्क छोड़कर दूसरेका सहारा लेना; गलत हेतु, साध्यरहित हेतु (न्या०)। **–कृत्**–वि० अनुचित यौन संबंध करनेवाला।

व्यभिचारिणी–वि० स्त्री० (सं०) पुंश्चली, कुलटा; स्थिर न रहनेवाली (बुद्धि)।

व्यभिचारी(रिन्)–वि० (सं०) कुमार्गगामी; दुश्चरित्र; अनुचित यौन संबंध करनेवाला; जो स्थिर न रहे, अस्थायी; भंग करनेवाला, उल्लंघन करनेवाला; नियम-विरुद्ध; कई गौण अर्थोंवाला (शब्द)। पु० कोई अस्थायी पदार्थ। **–(रि)भाव**–पु० संचारी भाव, एक प्रकारके भाव जो स्थायी न रहकर सभी रसोंमें सहायकके रूपमें संचरण करते हैं (आचार्योंने इनकी संख्या तैंतीस या चौंतीस मानी है–निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिंता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीडा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, सुप्त, विबोध, अमर्ष, अवहित्थ, उग्रता, मति, उपालंभ, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क। –सा०)।

व्यभिमान–पु० (सं०) गलत धारणा; भ्रांत दृष्टिकोण।

व्यभिहास–पु० (सं०) परिहास, उपहास।

व्यभीचार–पु० (सं०) दुष्कर्म; अपराध; परिवर्तन।

व्यभ्र–वि० (सं०) मेघरहित (आकाश)।

व्यम्ल–वि० (सं०) अम्लसे रहित।

व्यय–पु० (सं०) क्षय, लोप, नाश; धन आदिका किसी काममें लगना, खर्च (आयका उलटा); त्याग; लग्नसे बारहवाँ स्थान; एक संवत्सर; रुपया-पैसा; एक नाग। **–कर**–वि० रुपया देनेवाला। **–करण,–करणक**–पु० वेतन बाँटनेवाला कर्मचारी। **–गत,–गुण**–वि० सब खर्च कर डालनेवाला। **–गृह**–पु० लग्नसे बारहवाँ स्थान। **–प्राङ्मुख**–वि० कंजूस। **–भवन,–स्थान**–पु० दे० 'व्यय-गृह'। **–शाली(लिन्),–शील**–वि० अपव्ययी। **–सह**–वि० रिक्त न होनेवाला (कोश)। **–सहिष्णु**–वि० धनकी हानि बर्दाश्त करनेवाला।

व्ययक–वि० (सं०) खर्च करनेवाला; रुपया देनेवाला।

व्ययमान–वि० (सं०) अपव्ययी।

व्ययिक–वि० व्यय सम्बन्धी; व्ययके कारण होनेवाला।

व्ययित–वि० (सं०) खर्च, व्यय किया हुआ।

व्ययी(यिन्)–वि० (सं०) खूब खर्च करनेवाला; क्षय होनेवाला।

व्यर्ण–वि० (सं०) जलरहित; उत्पीडित।

व्यर्थ–वि० (सं०) निरुपयोगी, बेकार; निष्फल; संपत्तिहीन, धनहीन; बेहक; बेमानी; असंगत। अ० योंही, बिना मतलबके, नाहक। **–नामक,–नामा(मन्)**–वि० जिसमें नामके अनुरूप गुण न हों। **–यत्न**–वि० विफलप्रयत्न; जिसका प्रयत्न बेकार हो।

व्यर्थक–वि० (सं०) निष्फल, निरर्थक।

व्यर्थन–पु० (नलिफिकेशन) पहलेके किसी आदेश या निर्णयादिको रद्द कर व्यर्थ बना देना।

व्यलीक–वि० (सं०) असत्य; अप्रिय; कष्टकर; अनुचित, अकार्य; अपरिचित; वैलक्ष्य। पु० नागर; विट; अप्रिय वस्तु; दुःखका कारण; अपराध; कामज अपराध; छल, फरेब; मिथ्यात्व; वैपरीत्य; अप्रियता; कष्टकारिता, बुराई। **–निःश्वास**–पु० शोकोच्छ्वास।

व्यवकलन–पु० (सं०) पार्थक्य, जुदाई; एक संख्यामेंसे दूसरी संख्या घटाना, बाकी, घटाव।

व्यवकलित–वि० (सं०) वियोगित; हीनित; व्यवकलन किया हुआ, घटाया हुआ। पु० दे० 'व्यवकलन'।

व्यवकिरणा–स्त्री० (सं०) मिश्रण।

व्यवकीर्ण–वि० (सं०) मिश्रित;. . .से भरा हुआ; फैलाया हुआ।

व्यवक्रोशन–पु० (सं०) गाली-गलौज; निंदा, अपशब्द, गाली।

व्यवगाढ–वि० (सं०) निमग्न, गोता लगाया हुआ।

व्यवगृहीत–वि० (सं०) नीचे लाया हुआ; झुकाया हुआ।

व्यवच्छिन्न–वि० (सं०) काटकर अलग किया हुआ; पृथक् किया हुआ; विभक्त; भिन्न; विशेषित; बाधित।

व्यवच्छेद–पु० (सं०) काटकर अलग करना; विभाजन; शवच्छेद; पृथक्त्व; पृथक् करना; अंतर दिखलाना; निश्चय; (बाण आदि) चलाना; छुटकारा; विराम; विशेषता दिखलाना; पुस्तकका अध्याय या खंड। **–विद्या**–स्त्री० शरीर-रचना-विज्ञान।

व्यवच्छेदक–वि० (सं०) भिन्न करनेवाला, विशेषता दिखलानेवाला, अलग करनेवाला।

व्यवदात–वि० (सं०) साफ; चमकीला।

व्यवदान–पु० (सं०) शुद्धि, संस्कार, सफाई।

व्यवदीर्ण–वि० (सं०) खंडित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो; हतबुद्धि।

व्यवधा–स्त्री० (सं०) वह जो बीचमें आ पड़े, व्यवधान; परदा, आवरण; छिपाव।

व्यवधाता(तृ)–वि० (सं०) पृथक् करनेवाला, बीचमें आ पड़नेवाला; परदा करनेवाला, आड़ करनेवाला।

व्यवधान–पु० (सं०) बीचमें पड़नेवाली वस्तु; बाधा; ओटमें हो जाना; आदरण, परदा; पार्थक्य, विभाग; अंत, समाप्ति; अवकाश।

व्यवधायक–वि० (सं०) परदा करनेवाला, ओटमें करनेवाला; ढकनेवाला; खलल डालनेवाला, बाधक।

व्यवधारण–पु० (सं०) निर्धारण, विशेष लक्षण या व्याख्या; ठीक-ठीक निश्चय करना।

व्यवधि–स्त्री० (सं०) छिपाना, ओटमें करना, बीचमें पड़ना।

व्यवधूत–वि० (सं०) उदासीन, विरक्त।

व्यवभासित–वि० (सं०) आलोकित किया हुआ।

व्यवलोकित–वि० (सं०) देखा हुआ।

व्यवशाद–पु० (सं०) गिरना; गिर जाना (पृथक् हो जाना)।

व्यवसर्ग–पु० (सं०) मुक्त करना, छुटकारा; वितरण, बाँटना; देना; परित्याग।

व्यवसाय–पु० (सं०) प्रयत्न, प्रयास, उद्योग; अभिप्राय; इच्छा; संकल्प; व्यापार, कारबार; कर्म; प्रथम अनुभूति; अवस्था; कौशल; छल; पेशा (प्रोफेशन); कोई पेशा करना; आचरण; डींग; विष्णु; शिव; धर्मका एक पुत्र; जीविका; वृत्ति। **–बुद्धि**–वि० व्यापार करनेकी क्षमता या कुशलता; दृढ़निश्चय। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० दृढ़निश्चयके साथ काम करनेवाला।

व्यवसाय-प्रशिक्षण–पु० (वोकेशनल ट्रेनिंग) किसी व्यवसाय या

पेशेमें योग्यता प्राप्त करनेके लिए दिया जानेवाला प्रशिक्षण ।

व्यवसायसंघ–पु० (ट्रेडयूनियन) किसी व्यवसाय, कारखाने आदिमें काम करनेवाले श्रमिकों तथा अन्य कर्मचारियोंकी संस्था जो मालिकों या नियोजकोंके सामने कर्मियोंके हितके संबंधकी बातें रखने आदिमें उनका प्रतिनिधित्व करे ।

व्यवसायात्मक–वि० (सं०) संकल्प; उत्साहसे पूर्ण ।

व्यवसायात्मिका–वि० स्त्री० (सं०) दे० 'व्यवसायात्मक' । –**बुद्धि**–स्त्री० निश्चयात्मिका बुद्धि ।

व्यवसायी(यिन्)–वि० (सं०) उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी; दृढ़संकल्प; अध्यवसायी; कोई काम करता हुआ; किसी पेशेमें लगा हुआ । पु० व्यापारी; कारबार करनेवाला; शिल्पी ।

व्यवसित–वि० (सं०) जिसके लिए प्रयत्न, उद्योग किया गया हो; आरंभ किया हुआ; जिसके लिए निश्चय या संकल्प किया गया हो; कृतसंकल्प; आयोजित; प्रयत्न, उद्यम करनेवाला; उत्साही; छला हुआ, वंचित; हताश; पूरा किया हुआ । पु० छल; निश्चय, संकल्प ।

व्यवसिति–स्त्री० (सं०) संकल्प, निश्चय; व्यवसाय ।

व्यवस्था–स्त्री० (सं०) प्रबंध, इंतजाम (मैनेजमेंट); आपेक्षिक अंतर; एक स्थानपर रहना, स्थिरता; दृढ़ता; अध्यवसाय; निश्चित सीमा; विधान; अवस्था, स्थिति; अवसर; शर्त; वस्तुओंकी स्थिति या क्रम, उन्हें करीनेसे रखना; पार्थक्य; निम्न अधिकारीके निर्णयके विरुद्ध उच्च अधिकारीका निर्णय; बँटवारे आदिकी योजना (डिस्पोज़ीशन); कानूनमें विशिष्ट उद्देश्यसे निकाली गुंजाइश (प्राविज़न) । –**पत्र**–पु० किसी विषयका लिखित शास्त्रीय विधान; दस्तावेज ।

व्यवस्थाता(तृ)–वि०, पु० (सं०) निश्चय करनेवाला; किसी विषयपर व्यवस्था देनेवाला; प्रबंधक ।

व्यवस्थान–पु० (सं०) प्रबंध; निश्चय; विधान; स्थिरता; दृढ़ता; अध्यवसाय; पार्थक्य; अवस्था; विष्णु । –**प्रज्ञप्ति**–स्त्री० एक बहुत बड़ी संख्या (बौ०) ।

व्यवस्थापक–पु० (सं०) प्रबंध करनेवाला (मैनेजर); करीनेसे रखनेवाला; निश्चय करनेवाला; किसी विषयपर व्यवस्था देनेवाला; व्यवस्थापिका सभाका सदस्य, विधायक (एम०एल०ए०)।

व्यवस्थापन–पु० (सं०) व्यवस्था करना; विधिपूर्वक रखना; निश्चय करना; निर्द्धारण; विधानका निर्देशन; रखना ।

व्यवस्थापनीय–वि० (सं०) व्यवस्थापन करने योग्य ।

व्यवस्थापिका सभा–स्त्री० (सं०) विधान बनानेवाली वह सभा जिसके अधिकतर सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित किये गये होते हैं, विधान सभा (असेम्बली) ।

व्यवस्थापित–वि० (सं०) जिसकी व्यवस्था की गयी हो; विधिपूर्वक रखा या रखवाया हुआ; नियमित ।

व्यवस्थाप्य–वि० (सं०) जिसका विधान, निश्चय करना हो । पु० व्यवस्थित किये जानेकी स्थिति ।

व्यवस्थित–वि० (सं०) ठीक हालतमें किया हुआ, विधिपूर्वक रखा हुआ; व्यूहबद्ध; स्थित; निश्चित; निर्णीत; विधान द्वारा निर्दिष्ट; अवलंबित, आधृत; जो ठहरा हो; अविकारी; वर्तमान । –**विभाषा**–स्त्री० निश्चित विकल्प (व्या०) । –**विषय**–वि० जिसका क्षेत्र सीमित हो ।

व्यवस्थिति–स्त्री० (सं०) अलग रखा जाना, भेद किया जाना; ठहरना, रहना; लगा रहना, अध्यवसाय; निश्चित नियम; व्यवस्था; व्यवस्थापन ।

व्यवहरण–पु० (सं०) मुकदमा लड़ना; मुकदमेकी पेशी ।

व्यवहरिया*–दे० 'व्योहरिया', हिसाब करनेवाला ।

व्यवहर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) कारबार करनेवाला; रीति-नीतिका पालन करनेवाला । पु० किसी कारबारका प्रबंधक या संचालक; विचारपति; मुकदमा लड़नेवाला; वादी; साथी; वैश्य ।

व्यवहार–पु० (सं०) कार्य; अनिवार्य कार्य; आचरण; दूसरोंसे किया जानेवाला बर्ताव; यज्ञोपवीत, विवाहादिके समय कुछ देने लेनेकी रीति; प्रयोग; कारबार; पेशा; व्यापार; महाजनी; विषय, माजरा; रीति, प्रथा, रिवाज; शर्त, पण; स्थिति; विवाद; मुकदमा; मुकदमेका कारण; मुकदमेका विचार; दंड; कारबार सँभालनेकी योग्यता; औचित्य (विधानके विचारसे); संबंध; पद; खड्ग; एक वृक्ष । –**जीवी(विन्)**–पु० वकालत या मुकदमेसे अपना जीवन चलानेवाला । –**ज्ञ**–वि० दुनियाके तौर-तरीकोंका जानकार; अपना कारबार सँभालने योग्य, बालिग; मुकदमेकी काररवाई समझनेवाला । –**तंत्र**–पु० आचारशास्त्र । –**दर्शन**–पु० मुकदमेकी जाँच, मुकदमेका विचार । –**दशा**–स्त्री० जीवनकी साधारण स्थिति । –**द्रष्टा(ष्टृ)**–पु० विचारपति । –**निरीक्षक**–पु० (कोर्ट इंसपेक्टर) वह कर्मचारी जो सामान्य मुकदमोंमें सरकारकी ओरसे पैरवी करता है । –**न्यायालय**–पु० (सिविल कोर्ट) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादोंपर विचार करनेवाला न्यायालय, दीवानी अदालत । –**पद**–पु० व्यवहार, मुकदमेका विषय । –**पाद**–पु० मुकदमेके चार चरणों–पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, क्रियापाद और निर्णयपाद–मेंसे कोई; निर्णयपाद । –**प्राप्त**–वि० जिसकी अवस्था सोलह वर्षसे अधिक हो गयी हो, बालिग । –**मातृका**–स्त्री० मुकदमेकी काररवाई; न्याय-कार्यसे संबंध रखनेवाला कोई विषय । –**मार्ग**–पु० मुकदमेकी काररवाईका क्रम, व्यवहार-विषय । –**लक्षण**–पु० मुकदमेकी जाँच-संबंधी विशेषता । –**वाद**–पु० (सिविल सूट) नागरिकोंके अधिकारों आदि-संबंधी विवादका मामला; दीवानी मुकदमा । –**विधि**–स्त्री० व्यवहारका विधान, न्यायशास्त्र । –**विषय,**–**स्थान**–पु० मुकदमेका विषय । –**शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें विवाद-संबंधी बातोंका विवेचन किया गया हो । –**सिद्धि**–स्त्री० धर्मशास्त्रके अनुसार मुकदमेका निर्णय । –**स्थिति**–स्त्री० मुकदमेके विचारसे संबंध रखनेवाली काररवाई ।

व्यवहारक–पु० (सं०) व्यापारी; वकील; वयस्क ।

व्यवहारतः–अ० (सं०) व्यवहारकी दृष्टिसे; प्रायोगिक दृष्टिसे ।

व्यवहारांग–पु० (सं०) दीवानी और फौजदारीके कानून ।

व्यवहारांश–पु० (सं०) मुकदमेकी काररवाईका कोई हिस्सा ।

व्यवहाराभिशस्त–वि० (सं०) अभियुक्त, जिसके खिलाफ मुकदमा दायर किया गया हो ।

व्यवहारार्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) वादी, मुद्दई ।

व्यवहारासन–पु० (सं०) न्यायासन, विचारासन ।

व्यवहारास्पद–पु० (सं०) फरियाद, नालिश ।

व्यवहारिक–वि० (सं०) कारबार-संबंधी; कारबारमें लगा हुआ; कानून-संबंधी; मुकदमेबाज; व्यवहारके योग्य; प्रचलित, व्यवहारमें आनेवाला । –**जीव**–पु० ज्ञानमय कोष (वे०) ।

व्यवहारिका–स्त्री० (सं०) रीति-रिवाज; झाड़; इंगुदी; दुनियादारी ।

व्यवहारी(रिन्)–वि० (सं०) कारबारमें लगा हुआ; मुकदमा लड़नेवाला; प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो ।

व्यवहार्य–वि० (सं०) व्यवहारके योग्य, काममें लाने योग्य; करने योग्य; जिसके साथ व्यवहार किया जा सके, जिसका साथ किया जा सके; प्रचलित; प्रयोगमें लाने योग्य; मुकदमेके लायक (विषय) । पु० खजाना ।

व्यवहित–वि० (सं०) अलग रखा हुआ, किसी वस्तुके द्वारा पृथक् किया हुआ; रोका हुआ, बाधित; आवृत, परदा किया हुआ, छिपाया हुआ; दूरवर्ती; जिसका लगातार संबंध न हो; पूरा किया हुआ, संपादित; उपेक्षित, छोड़ा हुआ; विरोधी, शत्रुता करनेवाला; नीचा दिखाया हुआ ।

व्यवहृत–वि० (सं०) आचरित, अनुष्ठित; व्यवहार या प्रयोगमें लाया हुआ । पु० व्यापार; संपर्क ।

व्यवहृति–स्त्री० (सं०) आचरण, कार्य; संपर्क; व्यापार; मुनाफा; कार्यकौशल; मुकदमा; बात; अफवाह ।

व्यवाय–पु० (सं०) बाधा; पार्थक्य; व्याप्ति, प्रवेश; परिवर्तन; मैथुन; लंपटता, कामुकता; आवृत्त करना; लोप; शुद्धि; विघ्न; अवकाश; प्रकाश, कांति, तेज; बेवाई ।

व्यवायी(यिन्)–वि० (सं०) पृथक् करनेवाला, बीचमें आनेवाला; व्याप्त होनेवाला, व्यापक; कामुक; गलनेवाला । पु० लंपट; कामोद्दीपक पदार्थ ।

व्यवेत–वि० (सं०) पृथक् किया हुआ (बीचमें अक्षर आदि रखकर); भिन्न।

व्यशन–वि० (सं०) भोजनसे परहेज, उपवास करनेवाला।

व्यष्टक–पु० (सं०) काली सरसों, राई।

व्यष्टका–स्त्री० (सं०) कृष्णपक्षकी प्रतिपदा।

व्यष्टि–स्त्री० (सं०) प्राप्ति; सफलता; एक होनेका भाव; समष्टिका एक स्वतंत्र अंश या इकाई; व्यक्तिकी स्वतंत्र सत्ता। **–वाद**–पु० व्यष्टिकी स्वतंत्र सत्ता तथा अधिकार माननेका सिद्धांत।

व्यष्ठ–पु० (सं०) ताँबा।

व्यसन–पु० (सं०) निकालना; पृथक् करना; भंग करना; हानि; नाश; पराजय; खामी, त्रुटि; संकट, विपत्ति; दुर्भाग्य; (सूर्यादिका) अस्त होना; पाप, दुराचरण; बुरी आदत, लत; संलग्नता; बहुत ज्यादा आदी होना; दंड; अशक्तता; अयोग्यता; निष्फल प्रयत्न; वायु; व्यष्टि, एकता; प्रिय विषय। **–काल**–पु० संकटका समय, दुर्दिन। **–प्रहारी(रिन्)**–वि० कष्ट देनेवाला; (शत्रुके) कमजोर अंगपर वार करनेवाला। **–प्राप्ति**–स्त्री० दुर्दिन आना। **–ब्रह्मचारी(रिन्)**–पु० साथ-साथ दुःख भोगनेवाला। **–महार्णव**–पुं० विपत्तिका सागर। **–रक्षी(क्षिन्)**–वि० संकटसे बचानेवाला। **–वागुरा**–स्त्री० संकटका जाल। **–संस्थित**–वि० किसी व्यसनमें संलग्न रहनेवाला।

व्यसनाक्रांत–वि० (सं०) संकटग्रस्त।

व्यसनागम–पु० (सं०) दुर्दिनका आना।

व्यसनातिभार–पु० (सं०) बहुत बड़ी विपत्ति। वि० विपत्तिके भारसे दबा हुआ।

व्यसनात्यय–पु० (सं०) संकटका गुजर जाना।

व्यसनान्वित, व्यसनाप्लुत–वि० (सं०) संकटमें पड़ा हुआ, विपद्ग्रस्त।

व्यसनार्त–वि० (सं०) संकटापन्न।

व्यसनी(निन्)–वि० (सं०) जिसे किसी विषयका बहुत शौक हो; विषयासक्त; किसी बुरी चीजका आदी; पापी; बदनसीब; लगनके साथ परिश्रम करनेवाला, किसी कार्यमें जी-जानसे लगा हुआ।

व्यसनोत्सव–पु० (सं०) पानोत्सव, भैरवीचक्र।

व्यसनोदय–पु० (सं०) दुर्दिनका आना।

व्यसि–वि० (सं०) खड्गहीन।

व्यसु–वि० (सं०) निर्जीव, मृत।

व्यस्त–वि० (सं०) फेंका हुआ, उछाला हुआ; तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ; हटाया हुआ; निकाला हुआ, पृथक् किया हुआ; व्यष्टि रूपमें ग्रहण किया हुआ; समासरहित (व्या०); विभिन्न; घबड़ाया हुआ; क्षुब्ध; जो क्रममें न हो, जो ठीक हालतमें न हो; उलटा हुआ; व्याप्त, निहित; कार्यादिमें संलग्न, उलझा हुआ; परिवर्तित। **–केश**–वि० जिसके बाल बिखरे हों। **–गतागत**–पु० (सं०) कौशलपूर्ण चित्रकाव्य जिसे सीधे पढ़ें तो एक अर्थ, उल्टे पढ़ें तो दूसरा अर्थ निकले। **–न्यास**–वि० ऊबड़-खाबड़; सिमटा हुआ (बिस्तर आदि)। **–पद**–पु० अदालतमें दिया हुआ गड़बड़ बयान, प्रत्यारोप; समास-रहित पद (व्या०)। **–वृत्ति**–वि० (शब्द) जिसका वास्तविक अर्थ बदल दिया गया हो।

व्यस्तार–पु० (सं०) मस्त हाथीके मस्तकसे दानका बहना, मदस्राव।

व्यस्थक–वि० (सं०) अस्थिहीन।

व्यह(न्), व्यह्न–वि० (सं०) एक ही दिन न होकर भिन्न दिवसोंपर होनेवाला।

व्याकरण–पु० (सं०) वह विद्या जिसके द्वारा भाषाके शब्दों, उनके रूपों, प्रयोगों आदिका ज्ञान होता है; भेद, अंतर; व्याख्या; प्रकाशन; भविष्यद्वाणी (बौ०); निर्माण, रचना; धनुष्की टंकार। **–प्रक्रिया**–स्त्री० शब्द-व्युत्पत्ति। **–सिद्ध**–वि० जो व्याकरणके नियमके अनुसार हो।

व्याकरणक–पु० (सं०) बुरा व्याकरण।

व्याकरणोत्तर–पु० (सं०) शिव।

व्याकर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) स्रष्टा, परमेश्वर; व्याख्याकार।

व्याकर्षण–पु० (सं०) आकृष्ट करना, लुभाना।

व्याकार–पु० (सं०) रूप-परिवर्तन; विकार, अंगविकृति।

व्याकीर्ण–वि० (सं०) फैलाया, बिखेरा हुआ; अस्त-व्यस्त; व्याकुल, क्षुब्ध। पु० अस्तव्यस्तता; गड़बड़।

व्याकुंचन–पु० (सं०) सिकोड़ना, मोड़ना, टेढ़ा करना।

व्याकुचित–वि० (सं०) मुड़ा हुआ, सिकुड़ा हुआ; वक्र, कुटिल।

व्याकुल–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि; व्यग्र; भीत; अभिभूत; किसी काममें लगा हुआ; तेजीसे इधर-उधर चलता हुआ, कंपित (जैसे विद्युत्)। **–चित्त,–चेता(तस्),–मनस,–मना(नस्),–हृदय**–वि० जिसका दिल बहुत घबड़ाया हुआ हो, व्यग्र। **–मूर्धज**–वि० जिसके बाल बिखरे हों। **–लोचन**–वि० जिसकी दृष्टि मंद हो गयी हो।

व्याकुलात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दे० 'व्याकुल-चित्त'।

व्याकुलित–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ; भीत। **–चेतन,–मना(नस्),–हृदय**–वि० डरा हुआ; घबड़ाया हुआ; अभिभूत।

व्याकुलेंद्रिय–वि० (सं०) दे० 'व्याकुल-चित्त'।

व्याकूत–पु० (सं०) मानसिक कष्ट; पीड़ा; अफसोस।

व्याकूति–स्त्री० (सं०) छल, कपट; बुरी नीयत।

व्याकृत–वि० (सं०) पृथक्-पृथक् किया हुआ; प्रकट किया हुआ; विश्लेषण किया हुआ, जिसकी व्याख्या की गयी हो; रूपांतरित, परिवर्तित, विकृत।

व्याकृति–स्त्री० (सं०) पार्थक्य, भेद, अंतर; विश्लेषण; व्याख्या; रूप-परिवर्तन; व्याकरण।

व्याकोच–वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित।

व्याकोप–पु० (सं०) खंडन, विरोध।

व्याकोश, व्याकोष–वि० (सं०) विकासप्राप्त, पूर्णतः विकसित, प्रफुल्ल।

व्याक्रोश–पु० (सं०) गाली देना, भर्त्सना करना; चिल्लाना।

व्याक्षिप्त–वि० (सं०) फैलाया हुआ; . . .से भरा हुआ; हतबुद्धि, हैरान।

व्याक्षेप–पु० (सं०) घबड़ाहट; अस्तव्यस्तता; बाधा; व्यवधान; परदा; विलंब; भर्त्सना।

व्याक्षेपी(पिन्)–वि० (सं०) दूर करनेवाला; हटानेवाला।

व्याक्षोभ–पु० (सं०) क्षोभ, मानसिक अशांति।

व्याख्या–स्त्री० (सं०) (एक्सप्लेनेशन) कठिन पदादिका अर्थ स्पष्ट करनेवाला विवरण, टीका; वर्णन; अपनी दृष्टिसे अर्थ निकालना (इंटरप्रिटेशन)। **–गम्य**–वि० व्याख्याके जरिये समझा जानेवाला। पु० अस्पष्ट बयान। **–स्थान**–पु० व्याख्यान-भवन; विद्यालय। **–स्वर**–पु० मध्यम स्वर (न ऊँचा, न नीचा)।

व्याख्यात–वि० (सं०) जिसकी व्याख्या, टीका की गयी हो; वर्णित; कथित।

व्याख्यातव्य–वि० (सं०) व्याख्या करने योग्य, जिसकी व्याख्या करनी हो।

व्याख्याता(तृ)–वि०, पु० (सं०) व्याख्या करनेवाला; भाषण करनेवाला; कालेजमें व्याख्यान देनेवाला अध्यापक (लेक्चरर)।

व्याख्यान–पु० (सं०) टीका करना, व्याख्या करना; समता द्वारा स्मरण दिलाना; वर्णन; भाषण, वक्तृता (लेक्चर)। **–शाला**–स्त्री० व्याख्यान, भाषणके लिए बना हुआ स्थान; विद्यालय।

व्याख्यानपीठ–पु० (रास्ट्रम) मंचका वह ऊँचा स्थान जहाँ खड़ा होकर कोई वक्ता व्याख्यान देता या भाषण करता है।

व्याख्येय–वि० (सं०) व्याख्या करने, समझाने लायक।

व्याघट्टन–पु० (सं०) रगड़नेकी क्रिया, संघर्षण; मंथन, आलोडन।

व्याघट्टित–वि० (सं०) रगड़ा हुआ, मथित, आलोडित।

व्याघात–वि० (सं०) चोट, आघात; स्वत्व या अधिकारपर होनेवाला आघात (इन्फ्रिजमेण्ट); पराजय; क्षोभ; खलल; बाधा, विघ्न; (दो कथनोंका) परस्पर विरोध; एक काव्यालंकार जहाँ एक व्यक्ति द्वारा जिस उपायसे जो कार्य किया जाय, वहाँ अन्य व्यक्ति द्वारा उसी उपायसे उसके विपरीत किया जाय अथवा जहाँ परस्पर विरोधिनी क्रियाओं द्वारा एक ही कार्यकी सिद्धि होना दिखलाया जाय; सत्ताईस योगोंमेंसे एक (ज्यो०)।

व्याघातक, व्याघाती(तिन्)–वि० (सं०) आघात करनेवाला; विरोध, प्रतिरोध करनेवाला; बाधक।

व्याघातिम–पु० (सं०) घातक आघात लगनेपर भोजन-त्यागसे तत्काल होनेवाली मृत्यु।

व्याघारण–पु० (सं०) छिड़कना, छींटा देना।

व्याघारित–वि० (सं०) जिसपर घी, तेलका छींटा दिया गया हो।

व्याघुटन–पु० (सं०) लौटना, वापस होना।

व्याघुष्ट–वि० (सं०) गूँजता हुआ, शब्दायमान।

व्याघूर्णित–वि० (सं०) चक्कर खाया हुआ; लुढ़का हुआ।

व्याघ्र–पु० (सं०) एक हिंस्र जंतु, बाघ; (समासांतमें विशेषण रूपमें प्रयुक्त) सर्वश्रेष्ठ, प्रधान; रक्त एरंड; करंज; एक राक्षस। **–गिरि**–पु० एक पुराणोक्त पर्वत। **–ग्रीव**–पु० एक जनपद। **–घंटा,–घंटी**–स्त्री० एक लता, किंकिणी। **–चर्म(न्)**–पु० बाघकी खाल। **–तल,–दल**–पु० एरंड वृक्ष। **–दंष्ट्र**–पु० एक गुल्म। **–नख**–पु० बाघका नख या पंजा; नखी नामक गंधद्रव्य; बाघके नखका क्षत; एक कंद। **–नखक**–पु० एक गंधद्रव्य; एक प्रकारका नखक्षत। **–नखी**–स्त्री० नखी नामक गंधद्रव्य। **–नायक**–पु० शृगाल। **–पद**–पु० एक पौधा। **–पद्**–वि० बाघके-से पैरोंवाला। एक पौधा। **–पात्(द्)**–पु० विकंकत; एक मुनि। वि० दे० 'व्याघ्रपद्'। **–पाद**–पु० विकंकत। वि० बाघके-से पैरोंवाला। **–पादपी**–स्त्री० विकंटक। **–पुच्छ, –पुच्छक**–पु० बाघकी पूँछ; एरंड। **–पुष्प**–पु० नख नामक गंधद्रव्य। **–मुख**–पु० एक पहाड़; एक जनपद; विलाव। वि० बाघ जैसे मुखवाला; (मकान) जिसका सामनेका भाग चौड़ा और पीछेका सँकरा हो, गोमुखका उलटा (ऐसा मकान अमंगलकारी माना जाता है)। **–रूपा**–स्त्री० वंध्याकर्कटी। **–लोम(न्)**–पु० शेर के बाल; मुँहपरके बाल, मूँछ। **–वक्त्र**–वि० बाघके-से मुखवाला। पु० विडाल; शिवका एक गण। **–श्वा(श्वन्)**–पु० व्याघ्र जैसा कुत्ता। **–सेवक**–पु० शृगाल। **–हस्त**–पु० रक्त एरंड।

व्याघ्राक्ष–पु० (सं०) स्कंदका एक अनुचर; एक राक्षस (पु०)। बाघकी-सी आँखोंवाला।

व्याघ्राट–पु० (सं०) लवा पक्षी।

व्याघ्राण–पु० (सं०) सूँघनेकी क्रिया।

व्याघ्रादनी, व्याघ्रादिनी–स्त्री० (सं०) त्रिवृता।

व्याघ्रायुध–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, नख।

व्याघ्रास्य–पु० (सं०) बिल्ली; शेरका मुख। वि० शेरके-से मुखवाला।

व्याघ्रास्या–स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी।

व्याघ्री–स्त्री० (सं०) बाघिन; कंटकारी, एक तरहकी कौड़ी; एक गंधद्रव्य, नखी; एक बौद्ध देवी।

व्याज–पु० (सं०) छल, धोखा, फरेब; बहाना; कौशल, धूर्तता; दुष्टता; बाधा, विघ्न; विलम्ब। **–खेद**–पु० बनावटी थकान। **–गुरु**–पु० ऊपरसे गुरु जान पड़नेवाला, नकली गुरु। **–तपोधन**–पु० नकली तपस्वी। **–निंदा**–स्त्री० स्तुतिकी ओटमें निंदा; एक काव्यालंकार जहाँ किसीकी स्तुतिसे वस्तुतः निंदा ही प्रकट हो अथवा जहाँ एककी निंदा करनेसे किसी अन्यकी निंदा प्रकट हो। **–निद्रित**–वि० सोनेका बहाना करनेवाला। **–व्यवहार**–पु० कौशलपूर्ण, धूर्ततापूर्ण व्यवहार। **–सखी**–स्त्री० नकली सहेली। **–सुप्त**–वि० दे० 'व्याजनिद्रित'। **–स्तुति**–स्त्री० निंदाके बहाने स्तुति; एक काव्यालंकार जहाँ देखनेमें तो किसीकी निंदा की जाय किंतु समझनेपर वह स्तुति प्रकट हो अथवा जहाँ किसी एककी बड़ाई करनेसे अन्यकी बड़ाई जान पड़े। **–हत**–वि० धोखा देकर मारा हुआ।

व्याजाभिप्राय–पु० (सं०) बनावटी राय।

व्याजाह्वय–पु० (सं०) बदला हुआ, नकली नाम।

व्याजिह्म–वि० (सं०) झुका हुआ, कुटिल।

व्याजी–स्त्री० (सं०) तौलनेके बाद कुछ दे देना, घलुआ।

व्याजोक्ति–स्त्री० (सं०) छलपूर्ण बात; एक काव्यालंकार जहाँ प्रकट होती हुई वस्तुका कपटसे, बहाना आदि बनाकर, गोपन किया जाय।

व्याड–पु० (सं०) (व्याघ्रादि) शिकारी जानवर; सर्प; खल, दुष्ट; इंद्र। वि० द्वेषी; बुराई करनेवाला।

व्याडायुध–पु० (सं०) नख नामक गंधद्रव्य।

व्याडि–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध वैयाकरण।

व्यात्त–वि० (सं०) खोला हुआ, फैलाया हुआ (मुखके लिए)। पु० खोला या फैलाया हुआ मुख।

व्यात्तानन, व्यात्तास्य–वि० (सं०) जिसका मुख खुला हो।

व्यात्युक्षी–स्त्री० (सं०) जलक्रीड़ा; खेलमें एक दूसरेपर पानी उछालना।

व्यादान–पु० (सं०) खोलने, फैलानेकी क्रिया; निर्देश; वितरण।

व्यादित–वि० (सं०) खोला, फैलाया हुआ; निर्दिष्ट; वितरित।

व्यादिश–पु० (सं०) विष्णु।

व्यादिष्ट–वि० (सं०) निर्दिष्ट; आदिष्ट; व्याख्यात; पहले ही कहा हुआ।

व्यादीर्ण–वि० (सं०) फैलाया हुआ।

व्यादीर्णास्य–पु० (सं०) सिंह।

व्यादेश–पु० (सं०) विशेष आदेश; किसी कामको रोकनेके लिए न्यायालयसे जारी आदेश (इंजंक्शन); निषेधाज्ञा।

व्याध–पु० (सं०) शिकार द्वारा जीविका चलानेवाली एक संकर जाति; यह पेशा करनेवाला आदमी, बहेलिया; नीच या कमीना आदमी। **–गीति**–स्त्री० बहेलियेकी (जानवरोंको बुलानेकी) बोली। **–भीत**–पु० हिरन।

व्याधक–पु० (सं०) शिकारी, बहेलिया।

व्याधाम, व्याधाव–पु० (सं०) (इंद्रका) वज्र।

व्याधि–स्त्री० (सं०) पीड़ा; रोग; विपत्ति; कुष्ठ; कष्ट पहुँचानेवाला व्यक्ति या वस्तु (ला०); कुट; एक संचारी भाव, वियोगादिके कारण ज्वरादिका उत्पन्न होना (सा०)। **–कर**–वि० रोग उत्पन्न करनेवाला, अस्वास्थ्यकर। **–खड्ग**–पु० व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। **–ग्रस्त**–वि० रोग-ग्रस्त, रुग्ण, बीमार। **–घात,–घातक,–जित्**–पु० आरग्वध वृक्ष। **–घ्न**–वि० रोगनाशक। पु० आरग्वध। **–निग्रह**–पु० रोगका दबाया जाना। **–निर्जय**–स्त्री० रोगका दमन। **–पीड़ित**–वि० रोगग्रस्त। **–बहुल**–वि० प्रायः रोगोंका शिकार होनेवाला (ग्रामादि)। **–भय**–पु० रोगका भय। **–मंदिर**–पु० शरीर। **–युक्त**–वि० रुग्ण। **–रहित**–वि० रोगमुक्त, नीरोग। **–रिपु**–पु० आरग्वध; एक प्रकारका आरग्वध। **–विपरीत**–वि० जो रोगके प्रतिकूल पड़े। पु० रोगके विपरीत प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दवा। **–समुद्देशीय**–वि० रोगका स्वरूप बतलानेवाला। **–स्थान**–पु० शरीर। **–हंता(तृ)**–वि० दे० 'व्याधिघ्न'। पु० वाराही कंद; आरग्वध। **–हर**–वि० रोगनाशक।

व्याधिकी–स्त्री० (सं०) रोगविज्ञान।

व्याधित–वि० (सं०) रोगग्रस्त, रुग्ण।

व्याधी–स्त्री० रोग।

व्याधी(धिन्)–वि० (सं०) भेदन करनेवाला; जहाँ शिकारी प्रायः जाते हों; रोगग्रस्त।

व्याधूत–वि० (सं०) कंपनयुक्त; कंपित।

व्याध्मातक–पु० (सं०) फूला हुआ शव।

व्याध्य–पु० (सं०) शिव। वि० भेदन करने योग्य (शिरा आदि); व्याधिका; व्याध सम्बन्धी।

व्याध्यार्त–वि० (सं०) रोगग्रस्त।

व्याध्युपशमन–पु० (सं०) रोगमुक्त करना।

व्यान–पु० (सं०) शरीरस्थ पाँच वायुओंमेंसे एक जो सारे शरीरमें व्याप्त रहती है। **–दा**–स्त्री० व्यान वायु देनेवाली शक्ति। **–भृत्**–वि० व्यान वायुको कायम रखनेवाला।

व्यानत–वि० (सं०) झुका हुआ, जिसका सिर जमीनकी ओर झुका हो। पु० एक प्रकारका रतिबंध। **–करण**–पु० एक रतिबंध।

व्यानद्ध–वि० (सं०) परस्पर संबद्ध; परम्परासे सम्बद्ध।

व्यानम्र–वि० (सं०) झुका हुआ, नत।

व्यापक–वि० (सं०) दूरतक, सर्वत्र फैला हुआ, जो किसी चीजके सारे विस्तारमें हो (कॉम्प्रिहेंसिव); आच्छादक; जिसमें बहसके

सारे विचारणीय विषयोंका अंतर्भाव हो; जो एक भावसे किसीमें हमेशा रहता हो; जो व्याप्यसे अधिक विस्तृत हो (न्या०)। पु० वह गुण जा पदार्थमें हमेशा रहे (न्या०)। **–न्यास**–पु० एक तरहका तांत्रिक अंगन्यास। **–पुरुषमताधिकार**–पु० (यूनिवर्सल मैनहुड सफरेज) देशके या राज्यके प्रायः प्रत्येक प्राप्तवयस्क व्यक्तिको, जो पागल न हो तथा जिसने किसी बड़े अपराधमें दंड न पाया हो, दिया गया मत प्रदान करनेका अधिकार।

व्यापक*–स्त्री० व्यापकता–'मधुकरके पठये ते तुम्हरी व्यापक न्यून परी'–सूर।

व्यापत्ति–स्त्री० (सं०) संकटमें पड़ना; असफलता; हानि; बरबादी; मृत्यु; किसी अक्षरका लोप या उसकी जगह दूसरे अक्षरका आना (व्या०)।

व्यापद्–स्त्री० (सं०) संकट, दुर्दिन; नाश; मृत्यु।

व्यापन–पु० (सं०) सर्वत्र फैलना, भरना, व्याप्त होना, आच्छादन करना, ढकना।

व्यापना–अ० क्रि० व्याप्त होना, फैलना।

व्यापनीय–वि० (सं०) व्याप्त करने योग्य।

व्यापन्न–वि० (सं०) संकटग्रस्त; नष्ट; मृत; लुप्त; परिवर्तित (स्वरादिके आगमके कारण–व्या०)।

व्यापाद–पु० (सं०) नाश, बरबादी; मृत्यु; बुरी नीयत, द्वेषबुद्धि; दस पापामेंसे एक (बौ०)।

व्यापादक–वि० (सं०) नाशकारी; घातक (जैसे रोग)।

व्यापादन–पु० (सं०) अपकारचिंता; वध; नाश, बरबादी।

व्यापादनीय, व्यापाद्य–वि० (सं०) नष्ट, वध करने योग्य।

व्यापादित–वि० (सं०) नष्ट किया हुआ, ध्वस्त; हत, मारित; द्रोहचिंतित।

व्यापार–पु० (सं०) कार्य, काम; क्रिया; कारबार (बिजिनेस), पेशा; वाणिज्य (कॉमर्स, ट्रेड); प्रयोग; अभ्यास; उद्योग; प्रभाव; सहायता करना; किसी बातमें दखल देना; आचरण, व्यवहार (कंडक्ट)। **–चिह्न**–पु० (ट्रेडमार्क) किसी व्यापारी या उद्योगपति द्वारा अपने मालपर अंकित किया जानेवाला वह विशेष चिह्न जिससे उक्त माल अन्य किसीके मालसे अलग पहचाना जा सके। **–तुला**–स्त्री० (सं०) (ट्रेड बैलेंस) दूसरे देशोंसे होनेवाले व्यापारिक लेनदेनकी स्थिति (जो आयातसे निर्यात अधिक होनेपर पक्षमें, अन्यथा विपक्षमें समझी जाती है)। **–निर्देशिका**–स्त्री० किसी देश या प्रदेशके व्यापारियों आदिके नाम, पते आदिकी सूची देनेवाली पुस्तक। **–मंडल**–पु० (चेंबर ऑफ कामर्स) व्यापारियोंका प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था। **–संतुलन**–पु० विदेशोंसे होनेवाले व्यापारमें बराबरकी स्थिति।

व्यापारक–वि० (सं०) व्यापारवाला, व्यापार करनेवाला।

व्यापारण–पु० (सं०) किसी कार्यमें नियोजित करना।

व्यापारिक–वि० (सं०) व्यापार-संबंधी।

व्यापारित–वि० (सं०) काममें लगाया हुआ; किसी स्थानपर रखा या जमाया हुआ।

व्यापारी–वि० व्यापार-संबंधी।

व्यापारी(रिन्)–पु० (सं०) काम करनेवाला; रोजगारी, व्यवसायी; अभ्यास करनेवाला। वि० किसी व्यवसाय या कार्यमें लगा हुआ।

व्यापित–वि० (सं०) व्याप्त कराया हुआ।

व्यापी(पिन्)–वि० व्याप्त होनेवाला; सर्वत्र फैलनेवाला; आच्छादक। पु० विष्णु; व्याप्त होनेवाला पदार्थ।

व्यापीत–वि० (सं०) गहरे पीले रंगका।

व्यापृत–वि० (सं०) कार्यादिमें संलग्न; रखा हुआ; जमाया हुआ। पु० मंत्री; उच्च कर्मचारी।

व्यापृति–स्त्री० (सं०) कार्य; व्यवसाय; उद्योग, क्रिया; पेशा; अभ्यास।

व्याप्त–वि० (सं०) पूरित, भरा हुआ; आच्छादित; समाक्रांत; स्थापित; परिवेष्टित; प्राप्त; ढकनेवाला; अंतर्भूत; प्रसिद्ध; फैला हुआ; नित्य साथ रहनेवाला।

व्याप्ति–स्त्री० (सं०) व्याप्त होनेका भाव; एक पदार्थमें दूसरेका पूर्णतः मिल जाना; नित्य साहचर्य; विश्वजनीन नियम; पूर्णता; प्राप्ति; व्यापकता (जेनैरलिटी); आठ ऐश्वर्योंमेंसे एक। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसका काम प्राप्त करना हो। **–ग्रह**–पु० विशेष बातोंके आधारपर विश्वजनीन नियमका निर्धारण (न्या०)। **–ज्ञान**–पु० नित्य सहचर या व्याप्त पदार्थका ज्ञान (न्या०)। **–निश्चय**–पु० नित्य सहचर या व्याप्त पदार्थका निश्चय करना। **–लक्षण**–पु० नित्य साहचर्यका चिह्न या प्रमाण।

व्याप्य–वि० (सं०) व्यापनीय, व्याप्त होने योग्य। पु० साधन, हेतु (न्या०); एक ओषधि।

व्याबाध–पु० (सं०) रोग।

व्याभग्न–वि० (सं०) खंडित, जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो।

व्याभाषण–पु० (सं०) बोलनेका ढंग।

व्याभुग्न–वि० (सं०) झुका हुआ।

व्याभ्युक्षी–स्त्री० (सं०) दे० 'व्यात्युक्षी'।

व्याम, व्यामन–पु० (सं०) लंबाईकी एक माप (हाथोंको अगल-बगल पूरा फैलानेपर उँगलियोंके सिरेतककी लंबाई)।

व्यामर्श, व्यामर्ष–पु० (सं०) अधीरता; रगड़कर मिटाना।

व्यामिश्र–वि० (सं०) एक साथ मिला हुआ; विभिन्न प्रकारका; ...से युक्त; क्षुब्ध, अन्यमनस्क। **–व्यूह**–पु० वह व्यूह जिसमें पैदल, रथदल आदि चारों तरहके दल मिले हों। **–सिद्धि**–स्त्री० पक्ष-विपक्ष दोनोंका अपने अनुकूल होना (कौ०)।

व्यामूढ–वि० (सं०) बहुत घबड़ाया हुआ।

व्यामृष्ट–वि० (सं०) रगड़कर मिटाया हुआ।

व्यामोक–पु० (सं०) छुटकारा, मुक्ति।

व्यामोह–पु० (सं०) अज्ञान; घबड़ाहट।

व्यायत–वि० (सं०) फैलाया हुआ; फैला हुआ; अभ्यस्त; मशगूल, कार्यादिमें संलग्न; दृढ़; शक्तिशाली; अतिशय; गहरा। **–पाती(तिन्)**–वि० दूरतक दौड़नेवाला (जैसे अश्व)।

व्यायतत्व–पु० (सं०) पेशियोंका विकास।

व्यायाम–पु० (सं०) फैलाना; कसरत (एक्सरसाइज़); अभ्यास; ठीक अभ्यास या शिक्षण (बौ०); लंबाईकी एक माप; दुर्गम मार्ग; कठिनाई; आयास; क्लांति; श्रम; व्यापार, काम; युद्धकी तैयारी; फौजकी कवायद। **–कर्शित**–वि० व्यायामके कारण जो दुबला हो गया हो। **–भूमि, –शाला**–स्त्री० व्यायाम करनेका स्थान। **–युद्ध**–पु० आमने-सामनेकी लड़ाई। **–शील**–वि० कसरती।

व्यायामिक–वि० (सं०) व्यायाम-संबंधी।

व्यायामी(मिन्)–वि० (सं०) व्यायाम, कसरत करनेवाला, कसरती; परिश्रमी।

व्यायुक–वि० (सं०) भाग जानेवाला; बच निकलनेवाला।

व्यायुध–वि० (सं०) शस्त्रहीन।

व्यायोग–पु० (सं०) एक प्रकारका रूपक जो एक ही अंकका और वीररसप्रधान होता है।

व्यायोजिम–वि० (सं०) खुली हुई, ढीली (पट्टी)।

व्यारोष–पु० (सं०) क्रोध।

व्यार्त–वि० (सं०) कष्टग्रस्त, दुःखी।

व्यालंब–वि० (सं०) नीचे लटकता हुआ। पु० रक्त एरंड।

व्यालंबी(बिन्)–वि० (सं०) लटका हुआ।

व्याल–वि० (सं०) शठ, दुष्ट; अपकारी; बुरा; निष्ठुर; जंगली; भयंकर। पु० दुष्ट हाथी; हिंस्र, जंतु, श्वापद; सर्प; सिंह; बाघ; चीता; राजा; ठग; विष्णु; एक वृत्त; आठकी संख्या। **–करज, –खड्ग, –नख**–पु० व्याघ्रनख नामक गंधद्रव्य। **–गंधा**–स्त्री० नाकुली। **–ग्राह, –ग्राही(हिन्)**–पु० सर्प पकड़नेवाला, सँपेरा। **–ग्रीव**–पु० एक जनपद। **–जिह्वा**–स्त्री० महासमंग। **–दंष्ट्र, –दंष्ट्रक**–पु० गोखरू। **–पत्रा**–स्त्री० एर्वारु। **–पाणि, –प्रहरण, –बल, –वल**–पु० दे० 'व्यालनख'। **–मृग**–पु० खूँखार जानवर, हिंस्र जंतु; बाघ; शेर। **–रूप**–पु० शिव। **–सूदन**–पु० गरुड़।

व्यालक–पु० (सं०) दुष्ट हाथी; शिकारी जानवर; सर्प।

व्यालाद–पु० (सं०) सर्प खानेवाला, गरुड़।

व्यालायुध–पु० (सं०) दे० 'व्यालनख'।

व्यालि–पु० (सं०) एक वैयाकरण, व्याडि।

व्यालिक–पु० (सं०) सँपेरा।

व्याली(लिन्)–पु० (सं०) शिव।

व्यालीढ–पु० (सं०) सर्पदंशका एक प्रकार (दाँतके चिह्न हों, पर रक्त न निकला हो)।

व्यालीन–वि० (सं०) साथ चिपका हुआ, घना।

व्यालुप्त–पु० (सं०) सर्पदंशका एक प्रकार (दाँत गड़े हों और रक्त भी निकला हो)।

व्यालूं–पु० दे० 'व्यालू'।

व्यालून–वि० (सं०) कटा हुआ, छिन्न।

व्यालोल–वि० (सं०) चक्कर खाता हुआ; अस्थिर, चंचल; कंपित।

व्यावकलन–पु० (सं०) दे० 'व्यवकलन'।

व्यावक्रोशी–स्त्री० (सं०) गाली-गलौज।

व्यावचोरी–स्त्री० (सं०) आपसकी चोरी।

व्यावभाषी–स्त्री० (सं०) गाली-गलौज।

व्यावर्ग–पु० (सं०) विभाजन; विभाग।

व्यावर्त–पु० (सं०) चक्कर खाना; परिवेष्टित करना; पृथक् करना; नियोजित करना; नाभिकंटक, उभरी हुई नाभि; चक्रमर्द।

व्यावर्तक–वि० (सं०) अलग करनेवाला, हटानेवाला; भेद, अंतर करनेवाला; चक्कर खाने, खिलानेवाला।

व्यावर्तन–पु० (सं०) पराङ्मुख होना; निवारण; अलग करना; सर्पकुंडली; लौटना, मुड़ना; चक्कर खाना; परिवेष्टित करना।

व्यावातत–वि० (सं०) मोड़ा, लौटाया हुआ, चक्कर खिलाया हुआ; बदला हुआ।

व्यावल्गित–वि० (सं०) झोंकेके साथ चलता हुआ।

व्यावसायिक–वि० (सं०) व्यवसायसे सम्बद्ध। **–प्रतिनिधित्व**–पु० (फंक्शनल रेप्रेजेंटेशन) व्यवसाय या पेशेके आधारपर दिया गया प्रतिनिधित्व।

व्यावसायिकता–स्त्री० व्यावसायिक होनेका भाव या कर्म; रचनाकी जीवनसे विच्छिन्न होकर वाज़ारकी माँगके अनुरूप लोकप्रिय होनेकी विवशता।

व्यावहारिक–वि० (सं०) साधारण जीवन, व्यवहार, कार्य-संबंधी; प्रचलित; वास्तविक; मिलनसार; व्यवहारशील; मुकदमा-संबंधी; व्यवहारमें आने लायक। पु० मंत्री; कारबार, व्यापार; विचारपति। **–ऋण**–पु० व्यवसाय आदिके लिए लिया हुआ ऋण। **–कला**–स्त्री० (सं०) (ऐप्लाइड आर्ट्स) कपड़ा, मिट्टीके बर्तन, मेज, कुर्सी आदि प्रयोगमें आनेवाली वस्तुओंकी रचनासे सम्बद्ध कला। **–विज्ञान**–पु० (सं०) (एक्सपेरिमेंटल साइंस) वह विज्ञान जिसकी सारी वातें प्रयोग द्वारा ठीक सिद्ध की जा सकती हों।

व्यावहारी–स्त्री० (सं०) आदान-प्रदान, परस्परहरण।

व्यावहार्य–वि० (सं०) योग्य; सक्षम; जो जीर्ण-शीर्ण न हो।

व्यावहासी–स्त्री० (सं०) परस्पर हँसना।

व्यावाध–पु० (सं०) दे० 'व्यावाध'।

व्याविद्ध–वि० (सं०) क्षिप्त; चक्कर खाता हुआ; विकृत किया हुआ; प्रविष्ट किया हुआ।

व्याविध–वि० (सं०) विभिन्न प्रकारका।

व्यावृत–वि० (सं०) खुला हुआ, अनावृत; ढका हुआ, परदा किया हुआ; हटाया हुआ, पृथक् किया हुआ; अपवाद किया हुआ; निषिद्ध।

व्यावृति–स्त्री० (सं०) आवृत करना; ढकना; पृथक् करना, छाँटना; अनावृत करना (?)।

व्यावृत्–स्त्री० (सं०) भेद, अंतर; प्राधान्य; विराम। **–काम**–वि० प्राधान्य प्राप्त करनेका इच्छुक।

व्यावृत्त–वि० (सं०) हटा हुआ; अलग किया हुआ, छाँटा हुआ; निवृत्त; निषेधित; विभक्त; खंडित; अविद्यमान; चक्कर खाया हुआ; परिवेष्टित; विरत; विभक्त; भिन्न; तोड़ा-मरोड़ा हुआ; लौटा हुआ; असंगत; मुक्त; गत, लुप्त; पसंद किया हुआ; घेरा हुआ; प्रशंसित। **–गति**–वि० जिसकी चाल मंद हो गयी हो। **–चेता(तस्)**–वि० जिसका मन फिर गया हो। **–देह**–वि० जिसका शरीर फट गया हो (पहाड़)।

व्यावृत्ति–स्त्री० (सं०) मुँह मोड़ना; घेरना; पीछेकी ओर लुढ़कना; घुमाना (नेत्रादि); आवृत्ति; छुटकारा, मुक्ति; वंचित होना, छोड़ दिया जाना; निषेध; बाधा; निराकरण; नियोग; बचाया धन; हटाया जाना, अस्वीकार किया जाना; भेद, अंतर, पार्थक्य, भिन्नता; स्पष्टता; विराम, अंत; एक प्रकारका यज्ञ; ढकना; प्रशंसा, स्तुति; खंडन; पसंद; अविद्यमानता।

व्याशा–स्त्री० (सं०) विदिशा।

व्याश्रय–वि० (सं०) दूसरेका सहारा ग्रहण करनेवाला। पु० साहाय्य, सहारा।

व्यासंग–पु० (सं०) घनिष्ठ संपर्क; अत्यधिक आसक्ति; प्रबल इच्छा; भक्ति; अध्यवसायपूर्ण अध्ययन; मनोयोग; पार्थक्य, विलगाव; घबड़ाहट; योग, जोड़।

व्यासंगी(गिन्)–वि० (सं०) अत्यधिक आसक्त; मनोयोगपूर्वक संलग्न होनेवाला।

व्यास–पु० (सं०) पार्थक्य; अंगोंमें विभाग करना; समस्त पदके अंगोंको अलग-अलग करना; मिश्र पदार्थ आदिका विश्लेषण; चौड़ाई; केंद्रसे होकर परिधिके दोनो छोरोंतककी दूरी (डाइमीटर); विस्तार, 'कहेउं नाथ हरिचरित अनूपा। व्यास समास स्वमति अनुरूपा'–रामा०; विस्तृत विवरण; एक उच्चारण-दोष; संकलन करना; संकलनकर्ता; एक मुनि, कृष्ण-द्वैपायन (ये सत्यवतीके गर्भसे पराशरसे उत्पन्न हुए थे। पांडु, धृतराष्ट्र और विदुर नियोग द्वारा इन्हींसे उत्पन्न हुए थे। इन्होंने वेदोंका वर्तमान रूपोंमें संकलन किया और महाभारत, वेदांतसूत्र तथा १८ पुराणोंकी रचना की।); रामायण; महाभारत आदिकी कथाएं लोगोंको सुनानेवाला ब्राह्मण, कथावाचक; सौ पल वजनका धनुष्। **–कूट**–पु० महाभारतमें आये हुए कूट-श्लोक; वे कूट-श्लोक जो रामने माल्यवान् पर्वतपर रहते समय मनवहलावके लिए रचे थे। **–गद्दी, –पीठ**–स्त्री० वह आसन जिसपर वैठकर व्यास कथा कहते हैं। **–गीता**–स्त्री० कूर्मपुराणका एक अध्याय। **–तीर्थ, –यति, –राज**–पु० एक तीर्थ। **–देव**–पु० वादरायण, कृष्ण-द्वैपायन। **–पूजा**–स्त्री० गुरु और व्यासकी पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमाको होती है। **–माता(तृ), –सू**–स्त्री० सत्यवती। **–मापक**–पु० (कैलिपर्स) दे० 'काला पासा'। **–मूर्ति**–पु० शिव। **–वन**–पु० एक पवित्र वन। **–समास**–पु० वढ़ाना-घटाना, विस्तार-संक्षेप। **–सरोवर**–पु० महाभारतोक्त एक सरोवर जिसमें दुर्योधन युद्धके अन्तमें जाकर छिपा था। **–सूत्र**–पु० ब्रह्मसूत्र। **–स्थली**–स्त्री० एक स्थान। **–स्मृति**–स्त्री० एक स्मृतिग्रंथ।

व्यासक्त–वि० (सं०) अत्यधिक आसक्त; संवद्ध; संलग्न; आलिंगित; वियुक्त; अनासक्त; हतवुद्धि, व्याकुल।

व्यासारण्य–पु० (सं०) दे० 'व्यास-वन'।

व्यासार्द्ध–पु० (सं०) केंद्रसे परिधितककी दूरी।

व्यासासन–पु० (सं०) कथावाचकका आसन; व्यासपीठ।

व्यासिद्ध–पु० (सं०) निषिद्ध; वर्जित (माल)।

व्यासीय–वि० (सं०) व्यास-संबंधी; व्यासका।

व्यासेध–पु० (सं०) निषेध; वर्जन; रोक, प्रतिबंध।

व्याहंतव्य–वि० (सं०) उल्लंघनीय, अतिक्रमण करने योग्य।

व्याहत–वि० (सं०) चोट पहुँचाया हुआ; जिसे बाधा पहुँचायी गयी हो; निवारित; निषिद्ध; विफल किया हुआ, हताश; व्यर्थ; परस्पर विरोधी; घवड़ाया हुआ; डरा हुआ। पु० साहित्यका एक अर्थदोष।

व्याहतार्थता–स्त्री० (सं०) एक रचना-दोष जहाँ पूर्व-कथित बात उत्तरकथनसे विगड़ जाय–पहलेके उत्कर्षमें हीनता आ जाय।

व्याहृति–स्त्री० (सं०) बाधा डालना; परस्पर विरोध, विरुद्ध पड़ना (न्या०)।

व्याहनस्य–वि० (सं०) बहुत अश्लील।

व्याहरण–पु० (सं०) उक्ति, कथन, उच्चारण।

व्याहार–पु० (सं०) स्वर, ध्वनि; वाक्य; वचन; वार्तालाप; प्रश्न करना; (पक्षियोंका) कलरव; मजाक, परिहास (ना०)।

व्याहृत–वि० (सं०) कथित; जिसने कोई बात कही है; खाया हुआ। पु० बोलना; वार्तालाप करना; निर्देश; अस्पष्ट स्वर (पक्षियों आदिका)। **–संदेश**–पु० संदेशवाहक।

व्याहृति–स्त्री० (सं०) उक्ति; कथन; भूः, भुव. आदि सप्त-लोकात्मक मंत्र (किसी-किसीके मतसे इसके आरंभिक तीन मंत्र) जिनका जप संध्या करते समय किया जाता है।

व्युंदन–पु० (सं०) तर करना, गीला करना।

व्युच्चरण–पु० (सं०) अतिक्रमण, उल्लंघन।

व्युच्छित्ति–स्त्री० (सं०) उन्मूलन, विनाश।

व्युच्छिन्न–वि० (सं०) उन्मूलित, विनष्ट।

व्युच्छेत्ता(त्तृ)–वि०, पु० (सं०) विनाशक।

व्युच्छेद–पु० (सं०) दे० 'व्युच्छित्ति'।

व्युत–वि० (सं०) दे० 'व्यूत'।

व्युति–स्त्री० (सं०) बुनना, सीना; बुननेकी मजदूरी।

व्युत्क्रम–पु० (सं०) सन्मार्गका त्याग; अतिक्रमण; व्यतिक्रम, क्रमभंग; अस्तव्यस्तता; अपराध; मृत्यु।

व्युत्क्रमण–पु० (सं०) मार्गत्याग; अलग होना; उल्लंघन।

व्युत्क्रांत–वि० (सं०) उल्लंघित, अतिक्रांत; प्रस्थित, गत; उपेक्षित; भिन्न दिशामें जानेवाला। **–जीवित**–वि० निर्जीव, मृत। **–धर्म**–वि० कर्तव्यकी उपेक्षा करनेवाला। **–रजा(जस्)**–वि० कलुषरहित, निष्पाप; वासनाहीन। **–वर्त्मा(र्त्मन्)**–वि० जिसने सन्मार्गका त्याग कर दिया हो।

व्युत्क्रांता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली।

व्युत्त–वि० (सं०) आर्द्र, तर किया हुआ।

व्युत्थान–पु० (सं०) सचेष्टता, सक्रियता; (रिवोल्ट, अपराइजिंग) राजा या राज्य-शासनके विरुद्ध उठ खड़ा होना; बाधा डालना; स्वेच्छापूर्वक कार्य करना; कर्तव्यकी उपेक्षा; चित्तकी क्षिप्त, मूढ़ और विक्षिप्त अवस्थाएँ; समाधिका अंत (यो०); नृत्यका एक प्रकार; उठनेमें प्रवृत्त करना (हाथीको); खंडन, विरोध करना; वश्यता स्वीकार करना, नीचा देखना, दबना।

व्युत्थापित–वि० (सं०) उठनेमें प्रवृत्त किया हुआ; जगाया हुआ।

व्युत्थित–वि० (सं०) अस्थिरबुद्धि; अत्यधिक क्षुब्ध; कर्तव्य-पथसे विचलित।

व्युत्पत्ति–स्त्री० (सं०) उत्पत्ति; मूल, उद्गम; शब्दका मूल रूप। बाढ़, विकास; दक्षता; प्रगाढ पांडित्य; स्वर-भिन्नता। **–रहित**–वि० जिसका मूल रूप अज्ञात हो। **–विज्ञान**–शब्दोंके मूल उद्गमका विवेचन करनेवाला शास्त्र (एटिमोलॉजी)।

व्युत्पत्तिक–वि० (सं०) (डेरिवेटिव) व्युत्त्पत्तिसे सम्बद्ध।

व्युत्पन्न–वि० (सं०) उत्पादित; मूल रूपसे बनाया हुआ; जिसकी व्युत्पत्ति की गयी हो; पूरा किया हुआ; पूर्ण पंडित।

व्युत्पादक–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला, शब्दकी व्युत्पत्ति करनेवाला।

व्युत्पादन–पु० (सं०) व्युत्पत्ति, मूल रूपकी व्याख्या; शिक्षण।

व्युत्पाद्य–वि० (सं०) जिसकी या जिसके मूल रूपकी व्याख्या की जा सके।

व्युत्सर्ग–पु० (सं०) त्याग, विरक्ति; शरीरके मोहका त्याग (जै०)।

व्युत्सेक–पु० (सं०) चारों ओर जल छिड़कना।

व्युद, व्युदक–वि० (सं०) जलहीन।

व्युदस्त–वि० (सं०) फेंका, हटाया हुआ; बिखेरा हुआ; अस्वीकृत।

व्युदास–पु० (सं०) फेंकना; परित्याग; अस्वीकार; निषेध; उपेक्षा; नाश; वध (शत्रुका); विराम, अंत।

व्युदित–वि० (सं०) जिसपर विवाद या बहस की गयी हो।

व्युन्मिश्र–वि० (सं०) गंदा किया हुआ; मिलावटी।

व्युपकार–पु० (सं०) कर्तव्यादिका पूर्ण रूपसे पालन करना।

व्युपदेश–पु० (सं०) बहाना; ठगी।

व्युपद्रव–वि० (सं०) दुर्दिनसे अशांत न होनेवाला; जो भाग्यके फेरमें न पड़े।

व्युपपत्ति–स्त्री० (सं०) पुनर्जन्म।

व्युपरत–वि० (सं०) जो रुक गया हो, बंद हो गया हो।

व्युपरम–पु० (सं०) बाधा; विराम, अंत।

व्युपवीत–वि० (सं०) यज्ञोपवीतहीन।

व्युपशम–पु० (सं०) अशांति; विरामका न होना; पूर्ण रूपमें विराम।

व्युप्त–वि० (सं०) बिखेरा हुआ, छितराया हुआ; मुंडित, कटा हुआ। **–केश**–वि० जिसने बाल कटाये हों; जिसके बाल बिखरे हों। पु० रुद्र; अग्नि। **–जटाकलाप**–वि० जिसकी जटा बिखरी हो।

व्युष–स्त्री० (सं०) उषा काल, सवेरा।

व्युषित–वि० (सं०) घरसे अनुपस्थित; बसाया हुआ, आबाद। पु० सवेरा।

व्युष्ट–पु० (सं०) तड़का, प्रभात; दिन; फल, परिणाम। वि० जला, दग्ध; प्रभातीभूत; प्रकाशयुक्त; स्पष्ट; रहा हुआ; गुजरा हुआ।

व्युष्टि–स्त्री० (सं०) परिणाम, फल; सौंदर्य; समृद्धि; अभ्युदय; प्रशंसा, स्तुति; सवेरा, प्रभात; प्रकाश; इच्छा; जलन; हर आठवें दिन भोजन करना।

व्यूक–पु० (सं०) एक जनपद।

व्यूढ–वि० (सं०) फैला हुआ; विकसित; दृढ़; व्यवस्थित; उत्तम; बढ़िया; समान; व्यूहबद्ध; जिसका स्थान परिवर्तित हो गया हो; विवाहित; बड़ा, विशाल। **–कंकट**–वि० जिसने कवच धारण किया हो, सन्नद्ध।

व्यूढापति–पु० (सं०) अपनी विवाहित पत्नीमें ही अनुरक्त।

व्यूढि–स्त्री० (सं०) विधिपूर्वक रखना, सजावट; व्यूह।

व्यूढोरस्क–वि० (सं०) चौड़े सीनेवाला।

व्यूढोरु–वि० (सं०) जिसकी जाँघें मांसल हों।

व्यूत–वि० (सं०) बुना हुआ; बराबर किया हुआ (मार्गादि)।

व्यूति–स्त्री० (सं०) दे० 'व्युति'।

व्यूघ्नी–स्त्री० (सं०) बड़े थनवाली गाय आदि।

व्यूह–पु० (सं०) यथास्थान, विधिपूर्वक रखना; सैनिकोंको युद्ध-भूमिमें उपयुक्त स्थानपर रखना; अलग करना, विभाग करना; स्थान-परिवर्तन; अस्त-व्यस्त करना; विस्तृत व्याख्या; अध्याय; रचना; समूह; शरीर; श्वास-प्रश्वास; अंग; तर्क। **–पार्ष्णि, –पृष्ठ**–पु० सेनाका पृष्ठभाग। **–भंग, –भेद**–पु० सैनिकोंका यथास्थान न रहना, सेनाका छिन्न-भिन्न होना। **–मति**–पु० एक देवपुत्र। **–रचना**–स्त्री० सैनिकोंको यथास्थान रखना। **–राज**–पु० सर्वोत्तम व्यूह; एक बोधिसत्त्व; एक समाधि।

व्यूहक–पु० (सं०) रूप।

व्यूहन–पु० (सं०) व्यूह-रचना, सैनिकोंको विशेष स्थितिमें रखना; शरीरके अंगोंकी बनावट; स्थानपरिवर्तन; विकास (भ्रूणका)। वि० अलग करनेवाला; स्थानभ्रष्ट करनेवाला (शिव)।

व्यूहित–वि० (सं०) व्यूहबद्ध।

व्यृद्ध–वि० (सं०) संपत्तिसे वंचित, दुर्भाग्यग्रस्त; विफल; सदोष; अपराधी।

व्यृद्धि–स्त्री० (सं०) अवनति; दुर्भाग्य, संकट।

व्योका(कस्)–वि० (सं०) अलग रहनेवाला।

व्योकार–पु० (सं०) लोहार।

व्योम(न्)–पु० (सं०) आकाश; अवकाश; शरीरस्थ वायु; जल; मेघ; अभ्रक; सूर्यमंदिर; एक बड़ी संख्या (बौ०); कल्याण; एक एकाह; एक प्रजापति; विष्णु। **–केश, –केशी(शिन्)**–पु० शिव। **–गंगा**–स्त्री० आकाशगंगा। **–ग, –गामी(मिन्)**–वि० गगनचारी। पु० देवता आदि। **–गमनीविद्या**–स्त्री० आकाशमें उड़नेकी विद्या। **–गुण**–पु० शब्द। **–चर**–वि० गगनचारी। पु० तारा इत्यादि। **–चारी(रिन्)**–वि० दे० 'व्योम-ग'। पु० पक्षी; देवता; संत; ब्राह्मण; आकाशीय पिंड। **–देव**–पु० शिव। **–धारण**–पु० पारा (?)। **–धूम**–पु० बादल। **–ध्वनि**–स्त्री० आकाशसे आनेवाली आवाज। **–नासिका**–स्त्री० भारती पक्षी। **–पंचक**–पु० शरीरके पाँच छिद्र। **–पाद**–पु०

विष्णु। **–पुढम**–पु० कल्पित वस्तु, आकाश-कुसुम। **–पुष्प**–पु० असंभव वस्तु। **–मंजर,–मंडल**–पु० झंडा, पताका। **–माय**–वि० गगनचुंबी। **–मुद्गर**–पु० हवाका तेज झोंका। **–मृग**–पु० चंद्रमाके दस अश्वोंमेंसे एक। **–यान**–पु० वायुयान, विमान (स्पेस शिप; एराप्लेन)। **–रत्न**–पु० सूर्य। **–वर्त्म(न्)**–पु० आकाश-मार्ग। **–वल्ली**–स्त्री० अमरबेल। **–शब्द**–पु० दे० 'व्योम-ध्वनि'। **–संभवा**–स्त्री० चितकबरी गाय। **–सद्**–पु० देवता; गंधर्व; प्रेत। **–सरिता**–स्त्री० (हिं०) आकाशगंगा। **–सरित्**–स्त्री० आकाशगंगा। **–स्थली**–स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

व्योमक–पु० (सं०) एक तरहका आभूषण (बौ०)।

व्योमाख्य–पु० (सं०) अभ्रक; मूल कारण।

व्योमाधिप–पु० (सं०) शिव।

व्योमाभ–पु० (सं०) बुद्ध।

व्योमारि–पु० (सं०) एक विश्वेदेव।

व्योमी(मिन्)–पु० (सं०) चंद्रमाके दस अश्वोंमेंसे एक।

व्योमोदक–पु० (सं०) वर्षाका जल।

व्योम्निक–पु० (सं०) आकाश-संबंधी।

व्योष–पु० (सं०) त्रिकुट–सोंठ, पीपल और मिर्चका समाहार।

व्रज–पु० (सं०) मार्ग, सड़क; गमन, भ्रमण; समूह, झुंड; गोस्थान, गोष्ठ; विश्रामस्थल; बादल; मथुराके पासका एक स्थान; गोपोंकी बस्ती। **–किशोर,–नाथ**–पु० कृष्ण। **–प्रयग्र**–पु० पशुओंकी गणना। **–भाषा**–स्त्री० मथुरा आदिकी तरफ बोली जानेवाली एक बोली जो कई सौ वर्षोंतक हिंदी काव्यकी मुख्य भाषा रही है। **–भू**–वि० व्रजमें उत्पन्न। पु० कदंबका एक भेद। स्त्री० व्रजभूमि। **–मंडल**–पु० व्रजका क्षेत्र। **–मोहन,–राज,–वर,–वल्लभ**–पु० कृष्ण। **–युवती,–रामा,–वधू,–वनिता,–सुंदरी,–स्त्री**–स्त्री० गोपिका। **–लाल**–पु० (हिं०) कृष्ण।

व्रजक–पु० (सं०) भ्रमण करनेवाला सन्न्यासी।

व्रजन–पु० (सं०) गमन, भ्रमण; देशत्याग; अजामीढका एक पुत्र।

व्रजस्पति–पु० (सं०) कृष्ण।

व्रजांगन–पु० (सं०) गोष्ठ।

व्रजांगना–स्त्री० (सं०) व्रजकी रहनेवाली स्त्री; गोपी।

व्रजाजिर–पु० (सं०) गोष्ठ।

व्रजावास–पु० (सं०) ग्वालोंकी बस्ती।

व्रजित–वि० (सं०) गया हुआ, प्रस्थित। पु० गमन, भ्रमण।

व्रजी(जिन्)–वि० (सं०) झुंडके रूपमें एकत्र।

व्रजेंद्र, व्रजेश, व्रजेश्वर–पु० (सं०) कृष्ण।

व्रजौका(कस्)–पु० (सं०) गोप।

व्रज्य–वि० (सं०) गोष्ठ-संबंधी।

व्रज्या–स्त्री० (सं०) भ्रमण; गति; सन्न्यासीके रूपमें भ्रमण करना; कूच, आक्रमण; श्रेणी, वर्ग; दल; वर्गीकरण; समूह; रंग-भूमि; पगडंडी।

व्रण–पु० (सं०) फोड़ा; घाव, जख्म; (अल्सर) एक प्रकारका घाव या जख्म जो त्वचापर गहराई तक प्रकट होता है या शरीरके अन्दर भीतरी सतहपर भी उत्पन्न हो सकता है; विद्रधि; अर्बुद; छिद्र, दोष (निर्जीव पदार्थोंमें)। **–कारक गैस**–स्त्री० (ब्लिस्टर गैस) एक तरहकी विषाक्त गैस, जिसका संस्पर्श होनेसे शरीरपर चकत्ते-से निकल आते हैं। **–कारी(रिन्)**–वि० आहत करनेवाला। **–कृत्**–वि० व्रणकारी; क्षयग्रस्त। पु० भिलावाँ। **–केतुघ्नी**–स्त्री० दुग्धफेनी नामक क्षुप। **–ग्रंथि**–स्त्री० फोड़ेकी गाँठ। **–चिंतक**–पु० जर्राह, सर्जन, फोड़ेका उपचार करनेवाला। **–जिता**–स्त्री० गोरखमुंडी। **–द्विट्(ष्)**–वि० व्रण अच्छा करनेवाला। पु० ब्राह्मणयष्टिका। **–धूपन**–पु० फोड़ेमें धुआँ देना, फोड़ेका वाष्पोपचार। **–पट्ट,–पट्टक**–पु०,**–पट्टिका**–स्त्री० फोड़ेपर बाँधी जानेवाली पट्टी। **–भृत्**–वि० आहत, जिसे घाव लगा हो। **–युक्त**–वि० जिसे घाव लगा हो। **–रोपण**–वि०, पु० दे० 'व्रण-विरोपण'। **–रोपिणी**–स्त्री० हर्रे, रोहिणी। **–वास्तु**–पु० फोड़ेकी जगह, वह स्थान जहाँ फोड़ा हो सकता है। **–विरोपण**–वि० जख्म भरनेवाला। पु० घावका भरना। **–शोथ**–पु० घावकी सूजन। **–शोधन**–पु० घावकी सफाई। **–शोषी(षिन्)**–वि० फोड़ेके कारण क्षीण होनेवाला। **–संरोहण**–पु० घावका भरना। **–हृ**–वि० फोड़ा दूर करनेवाला। पु० एरंड। **–हा**–स्त्री० गुडुची। **–हृत्**–पु० कालकारी।

व्रणन–पु० (सं०) भेदन, छेद करना।

व्रणायाम–पु० (सं०) व्रणजन्य पीड़ा; एक असाध्य रोग (आ० वे०)।

व्रणारि–पु० (सं०) बोल नामक गंधद्रव्य; अगस्त्यका पेड़।

व्रणास्राव–पु० (सं०) फोड़ेसे पूय आदिका बहना।

व्रणित–वि० (सं०) जिसे घाव लगा हो, (अलसरेटेड) जो व्रणमें परिणत हो गया हो; जिसमें व्रण हो गया हो; आहत; जिसे व्रण हुआ हो। **–हृदय**–वि० मर्माहत।

व्रणिल–वि० (सं०) क्षतिग्रस्त (वृक्ष)।

व्रणी(णिन्)–वि० (सं०) जिसे व्रण हुआ हो; आहत। पु० ऐसा व्यक्ति; हृदयपर गहरी चोटवाला व्यक्ति।

व्रणीय–वि० (सं०) व्रण-संबंधी।

व्रण्य–वि० (सं०) फोड़ेमें लाभदायक।

व्रत–पु० (सं०) धार्मिक कृत्य, धार्मिक अनुष्ठान, नियम, संयम आदि; पुण्यके विचारसे उपवास करना; प्रतिज्ञा; भक्तिका विषय; जीवन-यापनका ढंग; आदेश, विधि, विधान; कर्म; योजना; भक्षण; एक ही तरहका पदार्थ खाना; दुग्धाहार। **–ग्रहण**–पु० कोई धार्मिक कार्य करनेका संकल्प करना; सन्न्यास लेना। **–चर्या**–स्त्री० धार्मिक अनुष्ठान, व्रत रखना। **–चारी(रिन्)**–वि० धार्मिक अनुष्ठानमें संलग्न; व्रत करनेवाला। **–दंडी(डिन्)**–वि० दंड-धारणका व्रत पालन करनेवाला। **–दान**–पु० व्रतके उपलक्ष्यमें दिया जानेवाला दान। **–धर**–वि० व्रत धारण करनेवाला। **–धारण**–पु० धार्मिक अनुष्ठान पूरा करना। **–पक्ष**–पु० भाद्र-शुक्ल पक्ष। **–पारण**–पु०,**–पारणा**–स्त्री० व्रत, उपवासकी समाप्ति। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० स्वेच्छासे कोई धार्मिक अनुष्ठान करना। **–भंग**–पु० व्रत, प्रतिज्ञाका खंडित हो जाना। **–भिक्षा**–स्त्री० यज्ञोपवीत-संस्कारके समय माँगी जानेवाली भिक्षा। **–रुचि**–वि० व्रतमें आनंद माननेवाला। **–लुप्त**–वि० जिसने अपना व्रत भंग कर दिया है। **–लोप,–लोपन**–पु० व्रत-भंग। **–विसर्ग**–पु० अनुष्ठानकी समाप्ति। **–विसर्जन**–पु० व्रत समाप्त करना। **–वैकल्य**–पु० व्रतका पूरा न होना। **–संग्रह**–पु० कोई व्रत ग्रहण करना; यज्ञोपवीतके अवसरपर गुरुसे ली जानेवाली दीक्षा। **–संपादन**–पु० धार्मिक अनुष्ठान पूरा करना। **–संरक्षण**–पु० व्रतका पालन। **–समापन**–पु० व्रतकी पूर्ति। **–स्थ**–वि० जिसने व्रत धारण किया है। पु० ब्रह्मचारी। **–स्नात**–वि० जिसने व्रत पूरा करनेपर स्नान किया है। **–स्नातक**–वि० जिसने ब्रह्मचारीका व्रत पूरा कर लिया है; दे० 'व्रत-स्नात'। **–स्नान**–पु० व्रतके बादका स्नान। **–हानि**–स्त्री० व्रतका परित्याग।

व्रतक–पु० (सं०) धार्मिक अनुष्ठान।

व्रतति, व्रतती–स्त्री० (सं०) लिपटनेवाली लता; फैलाव, विस्तार। **–वलय**–पु० कंगनकी तरह लिपटनेवाली लता।

व्रताचरण–पु० (सं०) किसी व्रतका पालन।

व्रताचारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) व्रताचरण करनेवाला।

व्रतादान–पु० (सं०) व्रत धारण करना।

व्रतादेश–पु० (सं०) उपनयन, यज्ञोपवीत-संस्कार।

व्रतादेशन–पु० (सं०) उपनयन संस्कारके बाद ब्रह्मचारीको दिया जानेवाला वेदका उपदेश।

व्रतापत्ति–स्त्री० (सं०) धार्मिक कृत्य या व्रतका परित्याग।

व्रतिक–पु० (सं०) व्रताचारी।

व्रतिनी–स्त्री० (सं०) साधुनी।

व्रती(तिन्)–वि० (सं०) व्रतका अनुष्ठान करनेवाला; धर्माचारी। पु० ब्रह्मचारी; सन्न्यासी; यजमान; एक मुनि।

व्रतेश–पु० (सं०) शिव।

व्रतोपनयन–पु० (सं०) उपनयन-संस्कार।

व्रतोपवास–पु० (सं०) व्रतके लिए किया जानेवाला उपवास।

व्रतोपायन–पु० (सं०) धार्मिक अनुष्ठान आरंभ करना, व्रतारंभ।

व्रतोपोह–पु० (सं०) एक साम।

व्रत्य–वि० (सं०) व्रताचारी; व्रतके उपयुक्त । पु० व्रतोपवासके उपयुक्त आहार; ब्रह्मचारी ।

व्रध्न–पु० (सं०) दे० 'ब्रध्न' ।

व्रश्चन–वि० (सं०) काटनेवाला; जो काट सके । पु० छोटी आरी; कुल्हाड़ा; सुनारोंकी छेनी; लकड़ीका बुरादा; वृक्षका छेदन करनेपर उससे बहनेवाला रस; छेदन ।

व्रह्म(न्)–पु० (सं०) दे० 'ब्रह्म(न्)' ।

व्राचट, व्राचड–स्त्री० एक अपभ्रंश भाषा जो पहले सिंधमें बोली जाती थी, पैशाचिक भाषाका एक भेद ।

व्राज–पु० (सं०) गमन, गति; दल, समूह (वै०); पालतू मुर्गा या कुत्ता । **–पति**–पु० दलनायक ।

व्राजि–स्त्री० (सं०) तूफान, आँधी ।

व्राजिक–पु० (सं०) सन्यासियों द्वारा किया जानेवाला एक प्रकारका उपवास जिसमें वे केवल दूधपर रहते हैं ।

व्रात–पु० (सं०) समूह, दल, झुंड, विवाहोत्सवमें सम्मिलित होनेवाले लोग; मनुष्य; जाति-च्युत ब्राह्मणकी संतान, व्याधादि; शारीरिक श्रम; दैनिक श्रम, मजदूरी । **–जाति**–स्त्री० झुंड बनाकर चलनेवाली जाति । **–जीवन**–वि० मजदूरीसे जीविका चलानेवाला । **–पति**–पु० संघका अध्यक्ष ।

व्रातिक–पु० (सं०) एक धार्मिक अनुष्ठान ।

व्रातीन–वि० (सं०) मजदूरी करके जीविका चलानेवाला; गुंडईसे जीविका चलानेवाला, जरायमपेशा; संघजीवी ।

व्रात्य–पु० (सं०) संस्कारहीन, जातिच्युत द्विज; शूद्र और क्षत्रियासे उत्पन्न एक संकर जाति; नीच आदमी । वि० महाव्रत-संबंधी । **–गण**–पु० खानाबदोश, भ्रमणकारी जाति या वर्ग । **–ब्रुव**–पु० वह जो अपनेको व्रात्य कहता हो । **–यज्ञ**–पु० एक प्रकारका यज्ञ । **–याजक**–पु० व्रात्यके लिए यज्ञ करनेवाला । **–स्तोम**–पु० यज्ञविशेष (जो संस्कार न करनेके कारण छिने हुए अधिकार प्राप्त करनेके लिए किया जाता था) ।

व्रीड–पु० (सं०) लज्जा ।

व्रीडन–पु० (सं०) अपकर्ष; शर्म, लज्जा; नम्रता ।

व्रीडा–स्त्री० (सं०) लज्जा; संकोच; नम्रता ।

व्रीडानत, व्रीडान्वित–वि० (सं०) लज्जित; विनीत ।

व्रीडित–वि० (सं०) लज्जित; विनीत । पु० लज्जा; विनय ।

व्रीलस–वि० (सं०) दे० 'व्रीडित' ।

व्रीहि–पु० (सं०) चावल; चावलका दाना; बरसातमें पकनेवाला धान; कोई अन्न; धानका खेत । **–कंक,–कांचन**–पु० मसूर । **–द्रोण**–पु० एक द्रोण चावल । **–पर्णिका,–पर्णी**–स्त्री० शालपर्णी । **–भेद,–राजिक**–पु० चेना । **–मुख**–पु० चावलके दाने जैसा एक शस्त्र (आ० वे०) । **–वाप**–पु० धानकी बोआई । **–वापी(पिन्)**–वि० धान बोनेवाला । **–वेला**–स्त्री० धान काटनेका समय । **–श्रेष्ठ**–पु० एक बढ़िया धान, शालि धान्य ।

व्रीहिक, व्रीहिल–वि० (सं०) धानवाला; धान उत्पन्न करनेवाला ।

व्रीही(हिन्)–वि० (सं०) (वह खेत) जिसमें धान बोया गया हो ।

व्रीह्यपूप–पु० (सं०) चावलका पूआ । (प्रा०) ।

व्रीह्यागार–पु० (सं०) चावल आदि रखनेका गोदाम, अन्नागार ।

व्रीह्याग्रयण–पु० (सं०) धानका अँगौंगा ।

व्रीह्यर्वरा–स्त्री० (सं०) धानका खेत ।

व्रुडित–वि० (सं०) डूबा हुआ, निमग्न; भटका हुआ, भूला हुआ (जंगलमें) ।

व्रैह–वि० (सं०) चावलका बना हुआ ।

व्रैहिक–वि० (सं०) धानके साथ उपजाया हुआ ।

व्रैहेय–वि० (सं०) धान बोने योग्य; धानके साथ बोया हुआ; चावलका बना हुआ । पु० धानका खेत ।

व्लीन–वि० (सं०) कुचला हुआ; गत; सँभाला हुआ ।

व्लेष्क–पु० (सं०) जाल, फंदा, फँसरी । **–हत**–वि० फँसरी लगाकर मारा हुआ ।

व्हिस्की–स्त्री० (अं०) एक विदेशी शराब ।

व्हेल–पु० (अं०) दे० 'ह्वेल' ।

श

श–देवनागरी वर्णमालाका तीसवाँ और ऊष्मवर्गका प्रथम व्यंजन वर्ण । उच्चारण-स्थान तालु ।

शंक*–स्त्री० शंका, संदेह ।

शंकन–पु० (सं०) भय उत्पन्न करना ।

शंकना*–अ० क्रि० संदेह करना; डरना ।

शंकनीय–वि० (सं०) जिसके संबंधमें शंका करनेकी गुंजाइश हो, शंकायोग्य ।

शंकर–पु० (सं०) शिव; शंकराचार्य; एक छंद; एक राग; भीमसेनी कपूर; * दे० 'संकर' । वि० कल्याणकारी, शुभंकर । **–किंकर**–पु० शिवका भक्त । **–चूर**–पु० एक तरहका विषैला सर्प । **–जटा**–स्त्री० पिठवनका एक भेद; सागू; जटाधारी । **–ताल**–पु० एक ताल (संगीत) । **–प्रिय**–पु० तीतर पक्षी; धतूरका, द्रोणपुष्पी । **–मत्त**–पु० एक तरहका लोहा । **–शुक्र**–पु० पारा । **–शैल**–पु० कैलास पर्वत । **–श्वशुर**–पु० हिमालय ।

शंकरा–स्त्री० (सं०) पार्वती; एक राग; मंजिष्ठा; शमी वृक्ष । वि० स्त्री० मंगल करनेवाली ।

शंकराचारी–पु० शंकरमतका अनुयायी ।

शंकराचार्य–पु० (सं०) अद्वैतवादके प्रवर्तक प्रसिद्ध दार्शनिक (७८८-८२० ई०) । (इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र', 'श्रीमद्भगवद्गीता' तथा 'उपनिषदों'का भाष्य किया । बौद्धोंका खंडन कर वैदिक धर्मका पुनः प्रचार-प्रसार किया । भारतके चारों कोनोंपर चार पीठ स्थापित किये, जिनके नाम हैं–बदरिकाश्रम, करवीर-पीठ, द्वारका-पीठ तथा शारदापीठ । इनके अधिष्ठाता आज भी 'शंकराचार्य' कहे जाते हैं ।)

शंकराभरण–पु० (सं०) एक राग ।

शंकरालय–पु० (सं०) कैलास पर्वत ।

शंकरावास–पु० (सं०) एक तरहका कपूर; कैलास ।

शंकराह्वा–स्त्री० (सं०) शमी वृक्ष ।

शंकरी–स्त्री० (सं०) पार्वती; मजीठ; शमी वृक्ष; एक रागिनी । वि० स्त्री० मंगल करनेवाली ।

शंकर्षण–पु० (सं०) विष्णु; रोहिणीका पुत्र ।

शंकव–पु० (सं०) सकुची मछली ।

शंका–स्त्री० (सं०) संशय; भय; एक संचारी भाव । **–जनक**–वि० शंका उत्पन्न करनेवाला । **–निवारण**– पु० संशयका दूर होना या दूर किया जाना । **–निवृत्ति**–स्त्री० दे० 'शंका-निवारण' । **–शंकु**–पु० भयका काँटा । **–शील**–वि० शंका करना जिसका स्वभाव हो, जो प्रायः शंका किया करता हो । **–समाधान**–पु० शंकाका निराकरण; शंका और समाधान ।

शंकित–वि० (सं०) शंकायुक्त; भीत । पु० चोरक नामक गंधद्रव्य । **–मना(नस्)**–वि० संशयालु; डरपोक । **–वर्ण,–वर्णक**–पु० चोर ।

शंकी(किन्)–वि० (सं०) संशयालु; डरपोक ।

शंकु–पु० (सं०) भाला; कील; खूँटी; बाणकी नोक; ठूँठ; जुएका दाँव; पाप, अपराध; विष; बाँबी; पत्तेकी नसोंका बाल; लिंग; राक्षस; हंस; शिव; कामदेव; शाल वृक्ष; नखी नामक गंधद्रव्य; एक प्रकारका खंभा; एक मछली; 'शंख'की संख्याका नाम; बारह अंगुलकी एक नाप; सूर्य, दीपकी छाया नापनेके लिए काष्ठादिकी निर्मित बारह अंगुलकी नुकीली मापक वस्तु; प्राचीन कालका एक बाजा; (कोन) गावदुम लंबोतरा बेलन जैसा घन जिसकी ऊपरी नोक कील जैसी हो । **–कर्ण, –श्रवण**–वि० नोकदार कानोंवाला । पु० गदहा । **–कर्णी(र्णिन्)**–पु० महादेव । **–तरु,–वृक्ष**–साखूका पेड़ । **–पुच्छ**–पु० भौंरेका डंक । **–फणी(णिन्)**–पु० एक जलचर । **–मुख**–पु० मूषक; ग्राह । **–मुखी**–स्त्री० जोंक । **–रूप**–वि० (कोनिकल) जिसका आकार

या रूप शंकु(कोन) जैसा हो ।

शंकुक–पु॰ (सं॰) छोटा खूंटा ।

शंकुगणित–पु॰ (सं॰) (कानिक्स) शंकुका मान स्थिर करनेवाले गणितकी क्रिया (ज्या॰) । **–मती**–स्त्री॰ (सं॰) एक वैदिक छन्द ।

शंकुचि–स्त्री॰ (सं॰) सकुची मछली ।

शंकुर–वि॰ (सं॰) डरावना, भयानक ।

शंकुला–स्त्री॰ (सं॰) सुपारी काटनेका औजार, सरौता ।

शंकोच–पु॰, **शंकोचि**–स्त्री॰ (सं॰) शंकु मत्स्य; सकुची मछली ।

शंक्य–वि॰ (सं॰) शंका, संदेह करने योग्य ।

शंक्वाकारघन–पु॰ (कान) दे॰ 'शंकु' ।

शंख–पु॰ (सं॰) समुद्रमें पैदा होनेवाले एक जंतुका खोल या घर जो पत्थर-सा कड़ा और सफेद होता है (वैद्य इसका भस्म बनाकर औषधके काममें लाते हैं । शंख बड़ा पवित्र और शुभ माना जाता है तथा पूजन, युद्ध आदिके अवसरोंपर बजाया जाता है); सौ पद्मकी संख्या; कुबेरकी एक निधि; युद्धका नगाड़ा; एक द्वीप; शंखासुर (जो विष्णु द्वारा मारा गया); छप्पय छंदका एक भेद; दंडक वृत्तका एक भेद; ललाट; हाथीके दोनों दाँतोंके बीचका भाग; कुबेरकी एक निधि; एक दैत्य; एक स्मृतिकार (लिखितका भाई); विराटराजका पुत्र । वि॰ सौ पद्म । **–कर्ण**–पु॰ शिवका एक अनुचर । **–कार,–कारक,–दारक**–पु॰ एक जाति जो शंखकी चीजे बनाती है । **–कुसुम**–पु॰ शंखपुष्पी; श्वेत अपराजिता । **–कूट**–पु॰ एक नाग । **–क्षीर**–पु॰ असंभव बात । **–चरी,–चर्चो**–स्त्री॰ (ललाटका) चंदनका टीका । **–चूड़**–पु॰ एक असुर जो कृष्ण द्वारा मारा गया; एक विषैला नाग, एक तीर्थ । **–ज**–पु॰ शंखसे निकला बड़ा मोती जो कपोतके अंडेके समान होता है । **–द्राव,–द्रावक**–पु॰ आयुर्वेदके अनुसार एक रस जिसमें शंख गल जाता है; एक औषध-विशेष । **–धर**–पु॰ विष्णु; कृष्ण । **–धरा**–स्त्री॰ हिलमोचिका । **–ध्मा**–पु॰ शंखवादक । **–नख**–पु॰,**–नखा,–नखी**–स्त्री॰ छोटा शंख, घोंघा; नखी नामक गंधद्रव्य । **–नाभि**–स्त्री॰ एक तरहका शंख । **–नाभी**–स्त्री॰ एक पौधा । **–नाम्नी**–स्त्री॰ शंखपुष्पी । **–नारी**–स्त्री॰ एक वर्णवृत्त जिसे सोमराजी भी कहते हैं । **–पलीता**–पु॰ (हिं॰) एक रेशदार खनिज पदार्थ । **–पाणि,–भृत्**–पु॰ विष्णु । **–पाल**–पु॰ एक तरहका सर्प; सूर्य । **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री॰ एक क्षुप जिसे प्रायः ग्रीष्म ऋतुमें पीसकर पीते हैं (यह शीतल तथा बुद्धि और स्वरवर्द्धक है) । **–प्रस्थ**–पु॰ चंद्रमाका कलंक । **–मालिनी**–स्त्री॰ शंखपुष्पी । **–मुख**–पु॰ घड़ियाल । **–मूलक**–पु॰ मूली । **–यूथिका**–स्त्री॰ जूही । **–लिखित**–पु॰ न्यायी राजा; शंख और लिखित नामक दो स्मृतिकार । वि॰ निर्दोष । **–वटी**–स्त्री॰ पेटके रोगोंके लिए गोली (आ॰ वे॰) । **–वात**–पु॰ मस्तकपीड़ा । **–विष**–पु॰ संखिया । **–शुक्तिका**–स्त्री॰ सीप । **–स्वन**–पु॰ शंखध्वनि । मु॰ **–बजना**–सफलता मिलना । **–बजाना**–सफलता मिलनेपर आनंद करना; (व्यं॰) असफल होनेपर पछताना, बकबक करना आदि । **–फूंकना**–युद्धकी घोषणा करना; देश, व्यक्ति, जातिमें जागरण, उत्साह आदिकी भावना भरना ।

शंखक–पु॰ (सं॰) शंख; शंखका बना कड़ा; ललाट; एक निधि; एक शिरोरोग ।

शंखनक–पु॰ (सं॰) छोटा शंख ।

शंखस–पु॰ (सं॰) शंखवलय ।

शंखांतर–पु॰ (सं॰) ललाट ।

शंखाख्य–पु॰ (सं॰) वृहन्नखी ।

शंखालु, शंखालुक–पु॰ (सं॰) सफेद शकरकंद ।

शंखावर्त–पु॰ (सं॰) शंबुकावर्त, भगंदर रोगका एक प्रकार ।

शंखासुर–पु॰ (सं॰) ब्रह्माके यहाँसे वेद चुराकर समुद्रमें छिपानेवाला एक राक्षस (इसीको मारनेके लिए विष्णुने मत्स्यावतार लिया था); मुर राक्षसका पिता ।

शंखाह्वा–स्त्री॰ (सं॰) शंखपुष्पी ।

शंखिका–स्त्री॰ (सं॰) चोरपुष्पी ।

शंखिनिका–स्त्री॰ (सं॰) ग्रंथिपर्णी ।

शंखिनी–स्त्री॰ (सं॰) कामशास्त्रके अनुसार स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक; बौद्धों द्वारा मानी जानेवाली एक शक्ति (देवी); एक प्रकारकी अप्सरा; एक वनौषधि, चोरपुष्पी; मुखनाड़ी । **–डंकिनी**–स्त्री॰ उन्मादका एक भेद । **–फल**–पु॰ शिरीष वृक्ष । **–वास**–पु॰ आखेट वृक्ष ।

शंखी(खिन्)–पु॰ (सं॰) विष्णु; समुद्र । वि॰ शंखका काम करनेवाला; शंख बनानेवाला; जिसके पास एक शंखकी निधि हो; शंखवाला ।

शंखोदरी–स्त्री॰ (सं॰) वृक्षविशेष ।

शंगर†–पु॰ एक प्रकारका वृक्ष ।

शंगरफ–पु॰ (फा॰) ईंगुर, शिंगरफ । वि॰ शिंगरफके रंगका, लाल ।

शंग, शंगुल–वि॰ (फा॰) चंचल, चपल; चोर; लुटेरा ।

शंजरफ–पु॰ (फा॰) ईंगुर ।

शंठ–पु॰ (सं॰) मूर्ख व्यक्ति; हिजड़ा ।

शंड–पु॰ (सं॰) साँड़; एक दैत्य; नपुंसक; पद्म आदिका समूह; पागल व्यक्ति; अंतःपुरका परिचारक; दही ।

शंडामर्क–पु॰ (सं॰) शंड और मर्क नामक दैत्य ।

शंडील–पु॰ (सं॰) एक ऋषि जिनके नामपर 'शांडिल्य' गोत्र चलता है ।

शंढ–पु॰ (सं॰) राजाके अंतःपुरमें स्त्रियोंका रक्षक; नपुंसक; वंध्य पुरुष; साँड़ । वि॰ उन्मत्त ।

शंतनु–पु॰ (सं॰) भीष्मके पिता (इन्हें गंगा और सत्यवती नामकी दो रानियाँ थीं । पहलीसे भीष्म उत्पन्न हुए थे और दूसरीसे विचित्रवीर्य तथा चित्रांगद) । **–सुत**–पु॰ भीष्म ।

शंपा–स्त्री॰ (सं॰) बिजली, विद्युत्; मेखला ।

शंपाक, शंपात–पु॰ (सं॰) आरग्वध, अमलतास ।

शंब–पु॰ (सं॰) इंद्रका वज्र; मूसरके सिरेपर लगी लोहेकी गड़ारीके ढंगकी वस्तु जिससे अन्न आदि कूटनेमें सुविधा होती है; कमरमें पहनी जानेवाली लोहेकी सिकड़ी; लंबाईकी एक माप; एक असुर; अनुलोम कर्षण, दुबारा की गयी जोताई । वि॰ भाग्यशाली; सुखी; दरिद्र; भाग्यहीन ।

शंबर–पु॰ (सं॰) जल; बादल; चित्र; धन; युद्ध; व्रत; बौद्धोंका एक विशेष व्रत; शैवविशेष; एक जिन; एक राक्षस; एक प्रकारकी मछली; साबर मृग; चित्रक वृक्ष; लोध्र वृक्ष; अर्जुन वृक्ष; एक पहाड़का नाम । वि॰ श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । **–कंद**–पु॰ वाराहीकंद । **–घ्न**–पु॰ प्रद्युम्न । **–चंदन**–पु॰ एक चंदन । **–दारण,–रिपु,–सूदन**–पु॰ कामदेव (प्रद्युम्न) । **–हा(हन्)**–पु॰ इंद्र ।

शंबरारि–पु॰ (सं॰) प्रद्युम्न ।

शंबरी–स्त्री॰ (सं॰) आखुपर्णी लता; माया; जादूगरनी । **–गंधा**–स्त्री॰ वनतुलसी ।

शंबल–पु॰ (सं॰) तट; यात्राके लिए भोज्य पदार्थ; पाथेय; मत्सर, ईर्ष्या, डाह ।

शंबली–स्त्री॰ (सं॰) कुटनी ।

शंबा–पु॰ (फा॰) शनिवार । (फारसी उच्चारण 'शंबेह') ।

शंबु, शंबुक, शंबुक्क–पु॰ (सं॰) घोंघा ।

शंबुकावर्त–पु॰ (सं॰) भगंदर रोगका एक प्रकार ।

शंबूक–पु॰ (सं॰) घोंघा; शंख; हाथीके कुंभका अंतिम भाग; हाथीकी सूँड़की नोक; एक दैत्य; त्रेतायुगमें रामराज्यमें बसा एक शूद्र तपस्वी (शूद्र होनेके कारण इसकी तपस्यासे एक ब्राह्मणपुत्र अकाल ही मर गया, अतः रामने इसका वध किया और ब्राह्मणका मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ) । **–पुष्पी**–स्त्री॰ शंखपुष्पी ।

शंबूका–स्त्री॰ (सं॰) सीपी; घोंघा ।

शंभ–पु॰ (सं॰) प्रसन्न व्यक्ति; इंद्रका वज्र; मूसलकी सामी ।

शंभली–स्त्री॰ (सं॰) कुट्टनी ।

शंभु–पु॰ (सं॰) शिव; ग्यारह रुद्रोंमें प्रधान रुद्र; ब्रह्मा; ऋषि; विष्णु; बुद्ध; सिद्ध व्यक्ति; सफेद आकका वृक्ष; एक वर्णवृत्त । वि॰ समृद्धिकारक । **–तनय,–नंदन,–सुत**–पु॰ कार्तिकेय;

गणेश। **–तेज(स्),–बीज**–पु० पारा। **–प्रिया**–स्त्री० दुर्गा; आमलकी। **–भूषण**–पु० चद्रमा। **–लोक**–पु० कैलास, शिव-लोक। **–वल्लभ**–पु० श्वेत कमल।

शंव–पु० (सं०) दे० 'शंब'।

शंस–पु०, **शंसा**–स्त्री० (सं०) प्रशंसा; इच्छा; मंगल-कामना; वर्णन; कथन; प्रतिज्ञा।

शंसन–पु० (सं०) प्रशसा करना; वर्णन करना; पाठ करना।

शंसित–वि० (सं०) निश्चित; स्तुत; कथित; इच्छित; जिसपर झूठा दोष लगाया गया हो।

शंसी(सिन्)–वि० (सं०) (प्रायः समासांतमें) प्रशंसा करने, कहनेवाला; भविष्यद्वक्ता।

शंस्ता(तृ)–पु० (सं०) चारण; मंत्रपाठक।

शंस्य–वि० (सं०) तारीफके लायक; अभिलषित; कथित।

श–पु० (सं०) कल्याण, मंगल; सौख्य; समृद्धि; शास्त्र; शिव; शस्त्र; काटनेवाला। वि० शुभ।

शऊर–पु० (अ०) दे० 'शुऊर'। **–दार**–वि० कामका ढंग जाननेवाला, सलाकादार।

शक, शक्क–पु० (अ०) संदेह, संशय; शंका; भ्रांति (पड़ना, होना)। **–आमेज़**–वि० शक पैदा करनेवाला; शंकाजनक।

शक–पु० (सं०) प्राचीन कालमें शकद्वीप (मध्य एशिया)में रहनेवाला एक समृद्ध जाति (इसकी उत्पत्ति पुराणोंमें वर्णित सूर्यवंशी राजा नरिष्यंतसे मानी जाती है। इस जातिवाले अपनेको देवपुत्र कहते थे। ईसासे दो सौ वर्ष पूर्व भारतके मथुरा और महाराष्ट्र प्रदेशोंपर इस जातिका शासन १९० वर्षोंतक रहा। प्रसिद्ध सम्राट् कनिष्क इसी जातिके थे); तातार देशके निवासी, तातारी; महान युद्ध; विजय; शकोंका एक राजा। **–संवत्**–पु० ईसवी सन्‌के ७८ वर्ष पीछे महाराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत्।

शक़–वि० (अ०) फटा हुआ, दरार पड़ा हुआ।

शकट–पु० (सं०) गाड़ा जिसे पशु अथवा मनुष्य खींचे, छकड़ा, सग्गड़; बैलगाड़ी; गाड़ीका बोझ; गाड़ीपर लदा बोझ जो दो हजार पलोंके बराबर होता है; एक व्यूह; शरीर; तिनिस नामका वृक्ष; धवका पेड़; एक राक्षस जिसका वध कृष्णने किया था; रोहिणी नक्षत्र। **–भिद्**–पु० विष्णु। **–बिल**–पु० एक जलपक्षी। **–व्यूह**–पु० शकटके आकारमें रचित व्यूह, सैन्यरचना। **–हा(हन्)**–पु० कृष्ण।

शकटार–पु० (सं०) नंदवंशीय अंतिम सम्राट् महानंदका प्रधान मंत्री जिसे अपनी ओर करके चाणक्यने नंदवंशका नाश किया; एक शिकारी पक्षी।

शकटारि–पु० (सं०) शकटासुरका वध करनेवाले कृष्ण।

शकटासुर–पु० (सं०) शकट नामक राक्षस (इसे कंसने कृष्णको मारनेके लिए गोकुल भेजा था किंतु यह स्वयं ही कृष्ण द्वारा मारा गया)।

शकटाह्वा–स्त्री० (सं०) रोहिणी नक्षत्र।

शकटिका, शकटी–स्त्री० (सं०) छोटी बैलगाड़ी; घोड़ागाड़ी; बच्चोंके खेलनेकी छोटी गाड़ी।

शकटी(टिन्)–पु० शकट हाँकनेवाला व्यक्ति।

शकठ–पु० मचान।

शकर–पु० (फ़ा०) चीनी, शर्करा, बूरा। **–कंद**–पु० मोटी मूलीकी शक्लका एक कंद जो काफी मीठा होता है और जिसे उबाल या भूनकर खाते हैं। **–ख़ोरा**–पु० लंबी चोंचवाला एक पक्षी जो मीठी चीजोंको बड़ी रुचिसे खाता है। वि० मीठी चीजें, तर माल खानेवाला। **–ख़्वाब**–पु०,**–ख़्वाबी**–स्त्री० मीठी नींद सोना। **–ज़बान**–वि० मधुरभाषी। **–पारा,–पाला**–पु० एक तरहका मीठा (या नमकीन) पकवान; एक फल। **–पीटन**–पु० एक कंटीली झाड़ी। **–फ़रोश**–वि० शकर-विक्रेता; मिष्टभाषी। **–बादाम**–पु० खूबानी। **–रंजी**–स्त्री० मित्रोंमें हो जानेवाली मामूली अनबन या बिगाड़। **–रेज़**–पु० वरवधूपर न्यौछावर; खुशीका रोना। **–लब**–वि० मीठे होठोंवाला; (ला०) माशूक। **–सफेद**–स्त्री० सफेद, पक्की चीनी। **–हर्फ़**–वि० मिष्टभाषी। **मु० –से मुंह भरना**–खुशखबरी सुनानेवालेको मिठाई खिलाना।

शकराब–स्त्री० (फ़ा०) मनोमालिन्य, मनमुटाव।

शकरिस्तान–पु० (फ़ा०) गन्नेका खेत; खंडसाल, शकरका कारखाना।

शकरी–वि० शकरका; शकरके रंगका। पु० एक तरहका फालसा।

शकल–पु० (सं०) चमड़ा; छिलका, छाल; खंड, टुकड़ा; आँवला; दालचीनी; कमलनाल; चीनी; (मछलीका) चोइयाँ; मनुस्मृतिमें उल्लिखित एक देश।

शकल–स्त्री० दे० 'शक्ल'। **–सूरत**–स्त्री० मुखाकृति, रूप (–से भला आदमी जान पड़ना)।

शकलित–वि० (सं०) खंड-खंड किया हुआ।

शकली(लिन्)–पु० (सं०) शकलवाला मत्स्य, चोइयाँदार मछली।

शकांतक–पु० (सं०) शक लोगोंको देशके बाहर निकाल देनेवाला, विक्रमादित्य।

शकाब्द–पु० (सं०) शकसंवत्। (ईसवी सन्‌के ७८ वर्ष पश्चात् आरम्भ)।

शकार–पु० (सं०) राजाकी अनूढा पत्नीका भाई, अनूढा-भ्राता (संस्कृत-नाटकोंमें इसका चरित्र मद, मूर्खता, अभिमान, कुलहीनता इत्यादि दोषोंसे युक्त दिखाया गया है); शकवंशका व्यक्ति।

शकारि–पु० (सं०) दे० 'शकांतक'।

शक़ी–वि० (अ०) निष्ठुर, निर्दय; भाग्यहीन।

शक़ीक़ा–पु० (अ०) कनपटी; आधा सीसीका दर्द।

शक़ीस–वि० (अ०) साझीदार; शरीफ; अच्छी चालका घोड़ा।

शक़ीह–वि० (अ०) कुरूप, भद्दा; निकृष्ट।

शकील–वि० (अ०) सुंदर, रूपवान्। (स्त्री० 'शकीला'।)

शकुंत–पु० (सं०) चिड़िया; भास पक्षी; नीलकंठ; एक कीड़ा।

शकुंतक–पु० (सं०) एक छोटी चिड़िया; पक्षी।

शकुंतला–स्त्री० (सं०) मेनका और विश्वामित्रके सहवाससे उत्पन्न तथा कण्व ऋषि द्वारा पालित-पोषित कन्या, दुष्यंतकी पत्नी तथा उनके पुत्र भरतकी माता; कालिदासका एक प्रसिद्ध नाटक।

शकुंति–पु० (सं०) पक्षी।

शकुंतिका–स्त्री० (सं०) चिड़िया; एक चिड़िया; झींगुर या टिड्डी।

शकुन–पु० (सं०) विशिष्ट पशु, पक्षी, व्यक्ति, वस्तु, व्यापारके देखने, सुनने, होने आदिसे मिलनेवाली शुभ, अशुभकी पूर्व-सूचना, सगुन; शुभ घड़ी, शुभ अवसरपर होनेवाले, मंगल-कार्यमें गाये जानेवाले गीत; पक्षी; गृध्र नामक पक्षी, गिद्ध। **–ज्ञ**–वि० शकुन जाननेवाला। **–ज्ञा**–स्त्री० छिपकली। **–ज्ञान**–पु० शकुनकी जानकारी। **–द्वार**–पु० यात्रा आदिके अवसरोंपर शुभ-अशुभ दोनों प्रकारके शकुनोंका होना। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र जिसमें शकुनके शुभाशुभ होने तथा उसके फलोंका विचार किया गया हो। **मु० –आना,–जाना**–विवाह आदि शुभ अवसरोंपर मंगल-सूचक वस्तुओंका आना, जाना। **–करना**–शुभ अवसरोंपर मंगलके लिए कार्य करना। **–देखना,–निकालना,–विचारना**–कोई कार्य करनेके पूर्व ज्योतिष आदि साधनों द्वारा शुभ तिथि और मुहूर्त अथवा उस (कार्य)के शुभाशुभ फल जानना।

शकुनक–पु० (सं०) पक्षी।

शकुनाहृत–वि० (सं०) चिड़ियों द्वारा लाया हुआ। पु० एक तरहका चावल; एक मछली; एक रोग।

शकुनि–पु० (सं०) पक्षी, चिड़िया; गिद्ध; चिल्ल, चील; मुर्गा; एक नाग; एक दैत्य; गांधारराज सुबलका पुत्र जो दुर्योधनका मामा और महाभारतके कारणभूत उसके कुकर्मोंका प्रधान प्रेरक था। वि० दुष्ट; पापाचारी। **–ग्रह**–पु० एक बालग्रह। **–प्रपा**–स्त्री० चिड़ियोंके पानी पीनेका स्थान या पात्र। **–वाद**–पु० पक्षियोंका कलरव; मुर्गेका बाँग देना।

शकुनिका–स्त्री० (सं०) मादा पक्षी; स्कंदकी एक मातृका।

शकुनी–स्त्री० (सं०) श्यामा चिड़िया; मादा गौरैया; पुराणोक्त एक पूतना जो बच्चोंके लिए बहुत ही कष्टद मानी गयी है; सुश्रुतके उल्लेखानुसार बालकोंका एक ग्रह।

शकुनी(निन्)–वि०, पु० (सं०) सगुनी, सगुन विचारनेवाला, शकुनज्ञ।

शकुनीश्वर–पु० (सं०) गरुड़।

शकुल–पु० (सं०) सौरी मछली। **–गंड**–पु० एक मछली।

शकुलाक्ष–पु० (स०) श्वेत दूर्वा; गंड दूर्वा, गाँडर दूब।

शकुलाक्षा, शकुलाक्षी–स्त्री० (सं०) सफेद दूध; गाँडर दूब।

शकुलादनी–स्त्री० (सं०) एक ओषधि, चक्रांगी।

शकुलार्भक–पु० (सं०) गड़ुई मछली।

शकुली–स्त्री० (सं०) दे० 'शकुल'।

शकूक–वि० (अ०) शक्की; शब्द करनेवाला।

शकूर–वि० (अ०) शुक्र करनेवाला; कृतज्ञ; आभारी; धन्यवाद देनवाला।

शकृत्–पु० (सं०) विष्ठा; जानवरका मल। **–करि**–पु० वत्स, वछड़ा। **–करी**–स्त्री० वत्सतरी, वछिया। **–द्वार**–पु० गुदा। **–पिंड,–पिंडक**–पु० गोबरका पिंड।

शक्कर–स्त्री० दे० 'शकर'। पु० (सं०) वैल। वि० (अ०) **–अफ़शां**–मिष्टभाषी। **–दहानो,–शिकनी,–सुखनी**–स्त्री० मीठी वातें करना।

शक्करि–पु० (सं०) वैल।

शक्करीं–वि० (फा०) मीठा, शर्करायुक्त। **–गुफ्तार**–वि० मिष्टभाषी। **–लब**–वि० मिष्टभाषी; प्रेमिका।

शक्करी–स्त्री० (सं०) मेखला; एक पुरानी नदी; वर्णवृत्तका एक भेद; अपवित्र जातिकी स्त्री; उँगली।

शक्की–वि० (अ०) शक करनेवाला, शंकाशील।

शक्त–वि० (सं०) शक्तिमान्; धनी; समर्थ; अर्थद्योतक; चतुर; पटु; मधुरभाषी।

शक्तव–पु० (सं०) सत्तू।

शक्ति–स्त्री० (सं०) वल, सामर्थ्य (पावर) कार्य करनेकी समय दर। इसकी नाप 'वाट' मात्रकमें की जाती है। एक वाट शक्तिसे अभिप्राय है एक जूल अर्थात् १०७ अर्ग कार्य प्रति सेकण्डकी दर। एक अश्वशक्ति (हार्स पावर) ७४६ वाट; क्षमता, योग्यता; वश; सेना (फोर्स); प्रभाव; एक तरहका बाण; साँग; तलवार; तंत्रमतवर्णित किसो पीठकी सृष्टि, पालन, प्रलय आदि सामर्थ्यसे युक्त अधिष्ठात्री देवी; दुर्गा; लक्ष्मी; गौरी; ईश्वर-शक्ति (माया, प्रकृति); देव-शक्ति (वैष्णवी, रौद्री इ०); राज-शक्ति (प्रभु, मंत्र, उत्साह); शब्द-शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना); रचना-शक्ति, कवित्व-शक्ति; अधिकार; .बड़ा राष्ट्र या राज्य; भग। **–कुंठन**–पु० शक्तिका कुंठित हो जाना, नरम पड़ना। **–ग्रह**–पु० शब्द-शक्ति-ज्ञान, शब्दकी अर्थबोधक वृत्तिकी जानकारी; शिव; कार्त्तिकेय। वि० शक्तिग्राहक; भाला धारण करनेवाला। **–ग्राहक**–वि० शब्दार्थका निश्चय करनेवाला। पु० कार्त्तिकेय। **–त्रय**–पु० राज्यकी तीन शक्तियाँ (दे० 'शक्ति')। **–धर**–पु० स्वामी कार्त्तिकेय; भालावरदार। वि० शक्ति धारण करनेवाला। **–ध्वज**–वि० शक्ति-अस्त्रधारी। पु० स्वामि कार्त्तिकेय। **–पर्ण**–पु० सप्तपर्ण वृक्ष। **–पाणि**–पु० स्वामि कार्त्तिकेय। वि० शक्ति-अस्त्रधारी। **–पूजक**–पु० शक्तिका उपासक, शाक्त, तांत्रिक। **–पूजा**–स्त्री० शक्तिकी उपासना। **–पूर्व**–पु० पराशर। **–भृत्**–पु० स्वामी कार्त्तिकेय। **–वादी(दिन्)** वि०, पु० शक्तिका उपासक। **–वीर**–पु० वाममार्गी; शक्तिका उपासक। **–वैकल्य**–पु० शक्तिका नाश। **–शोधन**–पु० शाक्तोंका एक संस्कार। **–ष्ठ**–वि० शक्तिमान्, वलवान्। **–संतुलन**–पु० (वैलेंस ऑव पॉवर) परस्पर विरोध करनेवाले देशोंका ऐसा विभाजन या गुटवंदी जिससे दोनों ओरकी शक्ति संतुलित रहे, वलसाम्य। **–संपन्न**–पु० शक्तिशाली, वलवान्। **–हीन**–वि० निर्वल, सामर्थ्यरहित। **–हेतिक**–पु० भालावरदार। **मु० –देखना**–किसी विषयमें किसीके वल, सामर्थ्य इत्यादिका परिचय मिलना। –**–रखना**–किसी कार्यके करनेमें समर्थ होना। **–लगना,–लगाना**–वल प्रभाव इत्यादिका प्रयोग होना, करना।

शक्तिपरस्तात्–अ० (अलट्रावायर्स) किसीकी शक्ति या अधिकारके वाहर।

शक्तिमत (मान्)–वि० (सं०) शक्तिशाली, प्रवल, वलिष्ठ।

शक्तिमत्ता–स्त्री०, **शक्तिमत्त्व**–पु० (सं०) शक्तियुक्त होनेका भाव।

शक्ती–स्त्री० एक मात्रिक छंद।

शक्तु–पु० (सं०) दे० 'सक्तु'।

शक्तुक–पु० (सं०) एक विष।

शक्न, शक्नु–वि० (सं०) प्रियंवद।

शक्य–वि० (सं०) होने योग्य, साध्य, संभव। **–प्रतीकार**–वि० जिसका प्रतिकार हो सके।

शक्यार्थ–पु० (सं०) शब्दकी अभिधा शक्तिसे ज्ञेय अर्थ।

शक्र–पु० (सं०) इंद्र; शिव; ज्येष्ठा नक्षत्र; उल्लू; अर्जुन वृक्ष; कुटज वृक्ष; इंद्रजौ; रगणका चौथा भेद; चौदहकी संख्या (चौदह इद्र होनेके कारण)। **–कार्मुक**–पु० इंद्रधनुष्। **–काष्ठा**–स्त्री० पूर्व दिशा। **–केतु**–पु० इंद्रध्वज। **–गोप,–गोपक**–पु० इंद्रगोप, वीरवहूटी। **–चाप**–पु० इंद्रधनुष्। **–ज,–जात**–पु० कौआ। **–जा**–स्त्री० इनारुन लता। **–जाल**–पु० इंद्रजाल। **–जित्**–पु० मेघनाद। **–दंती(तिन्)**–पु० ऐरावत। **–दारु,–द्रुम**–पु० देवदारु। **–दिक्(श)**–स्त्री० पूर्व दिशा। **–देव**–पु० इन्द्र। **–दैवत**–पु० ज्येष्ठा नक्षत्र। **–नंदन**–पु० अर्जुन। **–पर्याय**–पु० कुटज वृक्ष। **–पादप**–पु० कुटज वृक्ष; देवदारु। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० अमरावती। **–पुष्पा,–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० अग्निशिखा वृक्ष। **–प्रस्थ**–पु० इंद्रप्रस्थ, भारतका एक प्राचीन नगर। **–बीज**–पु० इंद्रजौ। **–भवन,–भुवन,–लोक,–वास**–पु० स्वर्ग। **–भिद्**–पु० मेघनाद। **–भूभवा,–वल्ली**–स्त्री० इंद्रवारुणी। **–भूरुह,–वृक्ष**–पु० कुटज। **–माता(तृ)**–स्त्री० इंद्रकी माता; भार्गी। **– मूर्द्धा(र्द्धन्)**–पु० बाँबी। **–वाहन**–पु० मेघ। **–शरासन**–पु० इन्द्रधनुष। **–शाखी(खिन्)**–पु० कुटज। **–शाला**–स्त्री० यज्ञशाला। **–शिर(स्)**–पु० बाँबी। **–सारथि**–पु० मातलि। **–सुत**–पु० जयंत; वालि; अर्जुन। **–सुधा**–स्त्री० कुँदरू। **–सृष्टा**–स्त्री० हरीतकी।

शक्राख्य–पु० (सं०) उल्लू।

शक्राग्नि–पु० विशाखा नक्षत्र।

शक्राणी–स्त्री० (सं०) शची, इंद्राणी; निर्गुण्डी।

शक्रात्मज–पु० (सं०) जयंत; अर्जुन।

शक्राशन–पु० (सं०) कुटज; भंग।

शक्रासन–पु० इंद्रका आसन।

शक्रि–पु० (सं०) वज्र; पर्वत; हाथी; वादल।

शक्रोत्सव–पु० इंद्रध्वज नामक उत्सव।

शक्ल–वि० (सं०) प्रियंवद। स्त्री० (अ०) रूप, आकृति; चेहरा; नकशा, वनावट; ढंग; अंदाज; उपाय, ढव (निकलना, निकालना); रेखा-गणितकी कोई आकृति। **–(ले)-मिसाली**–स्त्री० नमूना। **(लो) शबाहत**–स्त्री० डीलडौल। **मु० (अपनी) –तो देखो (देखिये)**–अपनी योग्यता, अपनी सामर्थ्य तो देखो (अनधिकार चेष्टापर व्यंग्य)। **–दिखाना**–मिलना, सामने आना। **–देखते रह जाना,–देखा करना**–चकित, मुग्ध हो जाना। **–न दिखाना**–न मिलना, मुँह छिपाना। **–पकड़ना**–रूप, आकार ग्रहण करना। **–पहचानना**–सूरतसे पहचानना; चेहरा या सूरत देखकर शीलस्वभाव जान लेना (मैं चोरको शक्लसे पहचानता हूँ)। **–बनाना**–शक्ल बिगाड़ना; असुंदर वन जाना। **–बिगाड़ना**–चेहरेको असुंदर कर लेना या कर देना; पीटकर मुँहको सुजा देना।

शक्वर–पु० (सं०) साँड़।

शक्वरी–स्त्री० (सं०) उँगली; मुद्रिका; गाय; मेखला; एक छन्द।

शक्वा(क्वन्)–पु० (सं०) हाथी।

शक्वा–पु० (अ०) शिकायत, उलाहना। **–गुजार** वि० शिकायत करनेवाला।

शख़्स–पु० (अ०) मानवदेह; व्यक्ति, आदमी।

शख़्सी–वि० एक आदमीका, वैयक्तिक। **–हुकूमत**–स्त्री० एकतंत्र राज्य।

शख़्सीयत–स्त्री० वैयक्तिक विशेषताएँ; व्यक्तित्व।

शग़ल–पु० (अ०) काम; धंधा; मनवहलाव या मनवहलावका कोई काम, (हॉवी); भगवान्का ध्यान। **मु० –करना**–किसी, खासकर खाने-पीने, हुक्का पीने आदिके, काममें लगना।

शगाल–पु० (फा०) शृगाल, गीदड़।

शगुन†–पु० दे० 'शकुन'; विवाह पक्का होनेकी रस्म; तिलक ।

शगूफ़ा–पु० दे० 'शिगूफ़ा' ।

शचि, शची–स्त्री० (सं०) इंद्राणी; बल; क्रियाशक्ति; वाणी, वाक्शक्ति; पवित्र कर्म; प्रज्ञा; सतावर । **–पति**–पु० इंद्र ।

शजर–पु० (अ०) पेड़, तनेदार वृक्ष । **–(रे)कलीम**–पु० वह पेड़ जिसपर हज़्रत मूसाको ईश्वरका प्रकाश दिखाई पड़ा था । **–(रे) मम्नूआ**–पु० गेहूँका पेड़ ।

शजरा–पु० (अ०) वंशवृक्ष; पटवारियोंके पास रहनेवाला खेतोंका नकशा ।

शजाअत–स्त्री० (अ०) वीरता, रणकौशल ।

शजीअ–वि० (अ०) शूरवीर, बहादुर ।

शट–वि० (सं०) अम्ल, खट्टा । पु० खटाई; तेजाब ।

शटा–स्त्री० (सं०) जटा; सिंहकेसर, शेरका अयाल ।

शटि, शटी–स्त्री० (सं०) कचूर; आमाहलदी; कपूरकचरी; नेत्रवाला ।

शट्टक–पु० (सं०) जल और घीमें सना हुआ चावलका चूर्ण ।

शठ–वि० (सं०) धूर्त, छली । पु० छलिया; आलसी आदमी; मूर्ख; नकली प्रेम करनेवाला नायक; मध्यस्थ; धतूरा; सफेद सरसों; केसर; तगर; लोहा; ताड़का पेड़; चित्रका – **धी,–बुद्धि,–मति**–वि० दुष्ट बुद्धिवाला ।

शठता–स्त्री०, **शठत्व**–पु० (सं०) शठका भाव, कर्म अथवा धर्म ।

शठांबा–स्त्री० (सं०) अंबष्ठा ।

शठिका–स्त्री० (सं०) बनअदरक; कपूरकचरी ।

शण–पु० (सं०) सनका क्षुप; भंग । **–कंद**–पु० चर्मकषा नामक द्रव्य । **–घंटिका**–स्त्री० शणपुष्पी । **–पर्णी**–स्त्री० अशनपर्णी । **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० वनसनई; अरहर । **–सूत्र**–पु० कुश आदिकी बनी पवित्री ।

शणाल, शणालुक–पु० (सं०) अमलतास ।

शणिका–स्त्री० (सं०) शणपुष्पी ।

शणीर–पु० (सं०) सोन नदीके मध्यका पुलिन; गंगा और सरयूके बीचका स्थल, दोआबा ।

शत–पु० (सं०) सौकी संख्या; विष्णु । वि० सौ; असंख्य । **–कर्मा(र्मन्)**–पु० शनि ग्रहका नाम । **–कुंडी(डिन्)**–पु० एक प्रकारका यज्ञ । **–कुंत,–कुंद**–पु० करवीर, सफेद कनेर । **–कुंभ**–पु० सफेद कनेर; एक पहाड़ जहाँसे सोना निकलता है । **–कुलीरक**–पु० एक तरहका कठिन आवरणवाला जीव । **–कुसुमा**–स्त्री० सौंफ । **–कोटि**–पु० इंद्रका वज्र; हीरा; सौ करोड़की संख्या । वि० सौ करोड़ । **–क्रतु**–पु० इंद्र; वह जिसने सौ यज्ञ किये हों । **–खंड**–पु० सोना, सुवर्ण । **–गु**–वि० सौ गायोंका मालिक । **–ग्रंथि**–स्त्री० दूब । **–घ्नी**–स्त्री० पत्थरमें लोहेकी कीलोंको गाड़कर बनाया गया चार ताल लंबा प्राचीन शस्त्र; एक बारमें सौ आदमियोंको मारनेवाला अस्त्र (या तोप); वृश्चिकाली; करंजका पेड़; एक प्राणघातक गलरोग । **–च्छद**–पु० सौ पंखड़ियोंवाला कमल; कठफोड़वा पक्षी । **–जटा**–स्त्री० सतावर । **–जिह्व**–पु० शिव । **–तारा**–पु० शतभिषा नामक चौबीसवाँ नक्षत्र (इसके अधिष्ठाता वरुण हैं । इसकी आकृति मंडलाकार है और इसमें सौ तारे हैं । यह अधोमुख माना जाता है) । **–दंतिका**–स्त्री० नागदंती । **–दल**–पु० कमल । **–दला**–स्त्री० शतपत्री । **–द्रु**–स्त्री० पंजाबकी पाँच नदियोंमेंसे एक, सतलज नदी । **–धन्वा**–पु० एक योद्धा । **–धा**–स्त्री० दूर्वा । अ० दे० क्रममें । **–धामा(मन्)**–पु० विष्णु । **–धार**–पु० इंद्रका वज्र । **–०वन**–पु० एक नरक । **–धृति**–पु० इंद्र; ब्रह्मा; स्वर्ग । **–नेत्रिका**–स्त्री० सतावर । **–पति**–पु० सौ सैनिकोंका सरदार । **–पत्र**–पु० कमल; मयूर; सारस; कठफोड़वा; तोता; तोतेकी जातिका एक पक्षी । **–०निवास**–पु० ब्रह्मा । **–पत्रक**–पु० कठफोड़वा; एक विषैला कीड़ा; एक पर्वत । **–पत्रा**–स्त्री० दूर्वा । **–पत्री**–स्त्री० सेवती; सफेद गुलाब । **–पथब्राह्मण**–पु० महर्षि याज्ञवल्क्यकृत एक प्रसिद्ध 'ब्राह्मण' जो शुक्ल यजुर्वेदके अंतर्गत आता है । **–पथिक**–वि० बहुतसे मतोंको माननेवाला । **–पद**–पु० कनखजूरा, गोजर । **–पदचक्र**–पु० ज्योतिषके अनुसार सौ कोष्ठोंवाला एक चक्र (इससे नक्षत्रोंका ज्ञान किया जाता है) । **–पदी**–स्त्री० दे० 'शतपद' । **–पद्म**–पु० श्वेत कमल । **–परिवार**–पु० एक समाधि । **–पर्वा-(र्वन्)**–पु० बाँस; ईखका एक प्रकार । स्त्री० दूर्वा; वचा; भार्गवपत्नी; कोजागर पूर्णिमा; कटुका । **–पर्विका**–स्त्री० दूब; जौ । **–पादिका**–स्त्री० दे० 'शतपद'; काकाली । **–पाद्**–पु० दे० 'शतपद' । **–पुत्री**–स्त्री० सतपुतिया । **–पुष्पा,–पुष्पिका,–प्रसूना**–स्त्री० सोआका साग; एक विशेष क्षुप, सोफ । **–प्रास**–पु० करवीर । **–बाहु**–पु० एक राक्षस; एक प्रकारका कीड़ा; बौद्धमतके अनुसार मारका पुत्र । **–भिष**–पु०,**–भिषा**–स्त्री० दे० 'शततारा । **–भीरु**–स्त्री० मल्लिका । **–मख**–पु० इंद्र; उल्लू । **–मन्यु**–वि० महाक्रोधी । पु० इंद्र; उल्लू । **–मयूख**–पु० चंद्रमा । **–मान**–पु० पौने चार सेरकी पुरानी तौल आढ़क; रूपामक्खी; सोना चाँदी तौलनेका सौ मानका बटखरा । **–मार्ज**–पु० अस्त्रकारक । **–मूला**–स्त्री० दूर्वा; वचा; सतावर । **–मूलिका**–स्त्री० द्रवंती । **–मूली**–स्त्री० शतावरी; वचा; तालमूली । **–यष्टिक**–पु० सौ लड़ीवाला हार । **–रूपा**–स्त्री० ब्रह्माकी कन्या तथा पत्नी; स्वायंभुव मनुकी माता; विष्णुपुराणके अनुसार स्वायंभुव मनुकी पत्नी । **–लोचन**–वि० सौ नेत्रवाला । पु० एक ऋषि; स्कंदका एक अनुचर । **–वादन**–पु० सौ० (बहुसंख्यक) बाजोंका एक साथ बजना । **–वार्षिक**–वि० सौ वर्षोंपर होनेवाला । **–वार्षिकी**–वि० (सेंटेनरी) स्त्री० सौ वर्षोंमें होनेवाली; सौ वर्ष-व्यापिनी । स्त्री० सौ वर्षपर होनेवाला उत्सव । **–वीर**–पु० विष्णु । **–वीर्या**–स्त्री० श्वेत दूर्वा । **–वेधी(धिन्)**–पु० अम्लवेतस; चूका । **–शलाका**–स्त्री० छतरी, छत्र । **–शीर्ष**–पु० विष्णु । **–सुता**–स्त्री० सतावर । **–ह्रदा**–स्त्री० बिजली; वज्र ।

शतक–वि० (सं०) सौकी संख्यासे संबद्ध । पु० प्रायः एक ही प्रकार अथवा एक ही व्यक्तिकी सौ वस्तुओं, रचनाओं आदिका संग्रह (जैसे–शृंगारशतक); (सेंचुरी) सौ पद्यों, सौ वर्षों या सौ वस्तुओंका समूह; क्रिकेटके खेलमें किसी एक बल्लेबाज द्वारा किये गये सौ धावनोंका समूह; शती, शताब्दी; विष्णु ।

शतधा–अ० (सं०) सौ प्रकारसे । स्त्री० दे० 'शत'में ।

शतरंज–पु०, स्त्री० (फा०) एक प्रसिद्ध खेल जिसके मुहरे बादशाह, वजीर, हाथी, घोड़ा, प्यादे आदि होते हैं (संस्कृत चतुरंग या फारसी शतरंगका विकृत रूप) । **–का नक्शा**–शतरंजके कुछ मोहरोंकी ऐसी चाल जिससे विपक्षीको मात दी जा सके । **–बाज**–पु० शतरंज खेलनेवाला । **–बाज़ी**–स्त्री० शतरंज खेलना ।

शतरंजी–स्त्री० (फा०) रंग-बिरंगी या शतरंजके खानोंकी-सी बनावटवाली मोटी चादर जो दरी आदिके ऊपर बिछायी जाती है; रंग-बिरंगी दरी; शतरंज खेलनेकी बिसात; मिस्सीकी रोटी । पु० शतरंजबाज । **–जाफ़**–पु० शतरंजी बुननेवाला ।

शतशः(शस्)–अ० (स०) सैकड़ों प्रकारसे ।

शतरुद्र–पु० (सं०) रुद्रका एक रूप; एक शक्ति ।

शतांग–पु० (सं०) तिनिश वृक्ष; रथ; एक राक्षस । वि० सौ अंगोंवाला ।

शतांगुल–पु० (सं०) ताल वृक्ष ।

शतांश–पु० (सं०) सौवाँ हिस्सा । **–तापमापक**–पु० (सेंटीग्रेड थर्मामीटर) सौ अंशोंमें विभक्त तापमापक यंत्र ।

शताक्षी–स्त्री० (सं०) रात्रि; पार्वती, दुर्गा; सौंफ ।

शतानंद–पु० (सं०) राजा जनकके राजपुरोहित; कृष्ण; ब्रह्मा; विष्णु; विष्णुका रथ; गौतम मुनि ।

शतानक–पु० (सं०) श्मशान, ङरघट ।

शतानन–पु० (सं०) श्रीफल, बेल ।

शतानना–स्त्री० (सं०) एक देवी ।

शतानीक–पु० (सं०) वृद्ध; श्वशुर; व्यासके शिष्य एक मुनि; जनमेजयके पुत्र और सहस्रानीकके पिता; राजा सुदासके पुत्र; नकुलके पुत्र; एक राक्षस ।

शताब्द–पु०, **शताब्दी**–स्त्री० (सं०) (सेंचुरी) शती, सौ सालोंकी अवधि ।

शतामघ–पु० (सं०) इंद्र ।

शतायु(स्)–वि० (सं०) सौ वर्षोंकी आयुवाला ।

शतायुध–वि० (सं०) सौ आयुध धारण करनेवाला ।

शतार–पु० (सं०) वज्र; सुदर्शन चक्र ।

शतारुक–पु० (सं०) एक तरहका कुष्ठ रोग ।

शतारुष–पु०, **शतारुषी**–स्त्री० (सं०) दे० 'शतारुक' ।

शतावधान–पु० (सं०) मनोयोगपूर्वक बिना त्रुटिके सौ अथवा बहुतसे कामोंको एक साथ करनेवाला व्यक्ति; शतावधानका कार्य ।

शतावधानी(निन्)–पु० (सं०) राघवेंद्र; शतावधान ।

शतावधानी–स्त्री० शतावधानका कार्य ।

शतावर–स्त्री० सतावर, सफेद मूसली ।

शतावरी–स्त्री० (सं०) सतावर; शटी, कचूर; शची ।

शतावर्त–पु० (सं०) विष्णु; शिव ।

शतावर्ती(र्तिन्)–पु० (सं०) विष्णु ।

शताह्वया–स्त्री० (सं०) सोआ; सतावर; सौंफ ।

शताह्वा–स्त्री० (सं०) शतावरी; सौंफ; अजमोदा ।

शतिक–वि० (सं०) सौवाला; सौसे संबद्ध; सौमें खरीदा हुआ; प्रति सौके हिसाबसे लगनेवाला (कर) ।

शती–स्त्री० (सं०) सौका संग्रह (जैसे–'आर्यासप्तशती'); सदी, शताब्दी, शतक ।

शतेर–पु० (सं०) शत्रु; हिंसा; चोट ।

शतोदर–पु० (सं०) शिव; शिवका एक गण; एक अस्त्र-मंत्र ।

शतोदरी–स्त्री० (सं०) कार्तिकेयकी एक मातृका ।

शत्य–वि० (सं०) दे० 'शतिक' ।

शत्रि–पु० (सं०) हाथी; बल ।

शत्रुंजय–वि० (सं०) शत्रुको जीतनेवाला । पु० एक पर्वत; परमेश्वर ।

शत्रु–पु० (सं०) वैरी, दुश्मन । **–घात,–घाती(तिन्)**–वि० शत्रुहंता । **–घ्न**–वि० शत्रु-नाशक । पु० सुमित्रासे उत्पन्न दशरथके छोटे पुत्र । **–जित्**–वि० शत्रुको जीतनेवाला । **–दमन, –निर्वहण**–वि० शत्रुनाशक । **–भंग**–स्त्री० मूंज । **–मर्दन**–पु० शत्रुघ्न । **–विग्रह**–पु० शत्रुका आक्रमण । **–विनाशन**–पु० शिव । **–सह,–साह**–वि० शत्रुका सामना करनेवाला । **–साल**–वि० शत्रुके मनमें भय उत्पन्न करनेवाला । **–हंता(तृ)**–वि० दे० 'शत्रुहा' । **–हा(हन्)**–वि० शत्रुको मारनेवाला ।

शत्रुता–स्त्री०, **शत्रुत्व**–पु० (सं०) दुश्मनी, वैर ।

शत्रुताई*–स्त्री० शत्रुता ।

शत्वरी–स्त्री० (सं०) रात्रि ।

शद–पु० (सं०) खाद्य शाक (फल, मूल इ०); कर ।

शदक–पु० (सं०) छिलके या भूसी सहित अन्न ।

शदीद–वि० (अ०) कठिन; तीव्र, बहुत जोरका ।

शद्द–पु० (अ०) किसी अक्षरको दो बार पढ़ना, द्वित्व, तशदीद; आवाजको जोर देना । **–(व,–द्दो)मद**–पु० धूमधाम; जोर, तेजी (–से तारीफ करना) ।

शद्दा–पु० (अ०) झंडा, पताका; मुहर्रमका अलम ।

शद्दाद–पु० (अ०) आदि जातिका एक प्रतापी सम्राट् जिसने खुदाईका दावा किया और बिहिश्तके नमूनेपर अरम-उद्यान (बागे अरम) बनवाया, पर उसके दरवाजेपर कदम रखते ही मौतका शिकार हुआ; अत्यधिक अत्याचारी ।

शद्रि–पु० (सं०) हाथी; बादल; अर्जुन । स्त्री० बिजली; मिश्री; खंड ।

शद्रु–वि० (सं०) चलनेवाला; नष्ट होनेवाला; गिरानेवाला । पु० विष्णु ।

शन–पु० (सं०) शांति; मौनावलंबन; शण ।

शनकावलि–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली ।

शनपर्णी–स्त्री० (सं०) कटुकी ।

शनवा–वि० (फा०) सुननेवाला । **–ई**–स्त्री० सुनवाई ।

शनाअत–स्त्री० (अ०) बुराई; निकृष्टता ।

शनाख़्त–स्त्री० (फा०) पहचान; परिचय; भले-बुरे, सच्चे-झूठेका भेद समझनेकी शक्ति, परख । **–कुनिंदा**–वि० पहचाननेवाला । मु० **–करना**–पहचानना ।

शनावर–वि० (फा०) तैरनेवाला, तैराक ।

शनावरी–स्त्री० तैरना; तैराकी ।

शनास–वि० (फा०) पहचाननेवाला, विवेक करनेवाला (समासमें व्यवहृत–**हकशनास**–हकको पहचानने, हकनाहकका विवेक करनेवाला ।

शनासा–वि० (फा०) पहचानने, परखनेवाला । **–ई**–स्त्री० जान-पहचान, परिचय ।

शनि–पु० (सं०) नवग्रहोंमेंसे सातवाँ ग्रह; सप्ताहका अंतिम दिन, शनिवार; शिव; सूर्यपुत्र; दुर्भाग्य । **–चक्र**–पु० शुभाशुभ जाननेका एक चक्र (ज्यो०) । **–ज**–पु० काली मिर्च । **–प्रदोष**–पु० वह प्रदोष जो पक्षकी त्रयोदशी शनिवारके दिन पड़नेपर मनाया जाय । **–प्रसू**–स्त्री० छाया । **–प्रिय**–पु० नीलम । **–रुह**–पु० शनि ग्रहका वाहन; भैंसा । **–वार,–वासर**–पु० शुक्रवारके बादका दिन ।

शनिश्चर–पु० शनि ।

शनीअ–वि० (अ०) बुरा, खराब, निकृष्ट ।

शनीद–वि० (फा०) सुना हुआ । स्त्री० सुननेकी क्रिया, श्रवण । **–नी**–वि० सुनने योग्य ।

शनीदा–वि० (फा०) सुना हुआ, श्रुत ।

शनैः–अ० (सं०) धीरे, चुपचाप; क्रमशः; उत्तरोत्तर; मुलायमियतसे । **–प्रमेह**–पु० प्रमेह रोगका एक प्रकार । **–शनैः**–अ० धीरे-धीरे, क्रमशः ।

शनैर्मेह–पु० (सं०) दे० 'शनैःप्रमेह' ।

शनैश्चर–पु० (सं०) दे० 'शनि' । वि० धीरे चलनेवाला ।

शन्न–वि० (सं०) मुर्झाया हुआ, क्षीण ।

शन्नाह–पु० (फा०) वह मशक जिसके सहारे तैरते या तैरनेका अभ्यास करते हैं ।

शप–पु० (सं०) शाप; शपथ । वि० (फा०) तेज, द्रुत । **–शप**–स्त्री० बेंत, कमची या तलवार मारनेकी आवाज; कुत्तों आदिके चाटनेसे होनेवाली चपड़-चपड़की आवाज । अ० जल्दीसे, झपझप । **–से**–जल्दीसे ।

शपथ–स्त्री० (सं०) सौगंद, कसम (ओथ); शाप; प्रतिज्ञा (करना, लेना) । **–पत्र**–पु० हलफनामा ।

शपथग्रहण–पु० (ओथटेकिंग) कोई पदादि ग्रहण करते समय निष्ठा एवं गुप्तता आदिकी शपथ लेना ।

शपथपत्र–पु० (ऐफीडेविट) किसी न्यायालयमें शपथपूर्वक दिया गया लिखित वक्तव्य जो प्रमाणके रूपमें प्रयुक्त किया जा सके ।

शपथभंग–पु० शपथ लेकर उसका पालन न करना ।

शपन–पु० (सं०) शपथ; दुर्वचन, गाली ।

शपाशप–स्त्री०, अ० दे० 'शपशप' ।

शप्त–पु० (सं०) उलूक नामक एक घास; शापग्रस्त व्यक्ति । वि० अभिशापग्रस्त; भर्त्सित ।

शपुश–स्त्री० (फा०) सिर और कपड़ेका जूँ ।

शप्पर, शप्परा–पु० (फा०) चमगादड़ । **–चश्म**–वि० जिसे चमगादड़की तरह दिनमें दिखाई न पड़े ।

शप्लक़–पु० (तुर्की) चाँटा, थप्पड़, तमाचा ।

शफ–पु० (सं०) खुर; पेड़की जड़; नखी ।

शफ़क़–स्त्री० (अ०) सूर्योदयके पूर्व और सूर्यास्तके पीछे क्षितिजपर प्रकट होनेवाली लाली (अधिकतर संध्याकी लालीके लिए प्रयुक्त); सांध्य राग । **–का टुकड़ा**–अति सुंदर । मु० **–फूलना**–शफकका प्रकट होना ।

शफ़क़त–स्त्री० (अ०) अनुग्रह; दया; प्रेम, ममता, आत्मीयता ।

शफ़त–पु० (अ०) होठ, ओष्ठ ।

शफ़तालू–पु० (फा०) एक तरहका फल, सतालू ।

शफर–पु० (सं०) पोठी मछली ।

शफराधिप–पु० (सं०) हिलसा नामकी मछली ।

शफरी–स्त्री० (सं०) दे० 'शफर' ।

शफ़ही–वि० (अ०) होठवाला, होंठ द्वारा उच्चरित अक्षर ।

शफ़ा–स्त्री० (अ०) नीरोगता, स्वास्थ्य । **–ख़ाना**–पु० अस्पताल, चिकित्सालय ।

शफ़ाअत–स्त्री० (अ०) पाप क्षमा कर देनेकी सिफारिश; सिफारिश। **–गर**–पु० शफाअत करनेवाला।

शफ़ीअ़–वि० (अ०) शफाअत करनेवाला; शफाका हक रखनेवाला, क़ियामतके दिन मोक्ष दिलानेवाला।

शफ़ीक़–वि० (अ०) अनुग्रहकर्ता; हमदर्द; प्यारा।

शफोरु–स्त्री० (सं०) गायके फटे खुर जैसी जंघाओंवाली स्त्री।

शफ़्फ़ाफ़–वि० (अ०) अति स्वच्छ; पारदर्शी; निर्मल; कलई किया हुआ।

शब–स्त्री० (फा०) रात। **–कोर**–वि० जिसे रातको दिखाई न दे। **–कोरी**–स्त्री० रतौंधी, निशांधता। **–ख़ून**–पु० रातमें असावधान शत्रुपर किया जानेवाला हमला। **–ख़्वानी**–स्त्री० वह कहानी जो दास्तानगो रातमें नींद लानेके लिए सुनाये। **–ख़्वाबी**–स्त्री० रातको सोते समय पहननेके कपड़े। **–गिर्द**–वि० रातको फिरने या पहरा देनेवाला। पु० चौकीदार; कोतवाल; चोर; चंद्रमा। **–गोर**–वि० जो रातको जगाता रहे। पु० पिछली रातका सफर; झींगुर। **–गून**–वि० रातके रंगका, काला। **–चराग़,–चिराग़**–पु० एक लाल जो रातमें अधिक चमकता है; रातका चिराग़, चन्द्रमा। **–ताब**–वि० रातको चमकनेवाला। पु० रातकी रोशनी; जुगनू; चंद्रमा; दीपक; काली बिल्ली। **–नम**–स्त्री० ओस। (**मु० –०का रोना**–ओसका गिरना।) **–बख़ैर**–(पद) रात सकुशल बीते (सवेरे कोई काम करनेका विचार होनेपर बोलते हैं)। स्त्री० रातको विदा होनेके समयका अभिवादन। **–बाश**–वि० रातमें टिकनेवाला; सहवास करनेवाला। **–बेदार**–वि० जो रातभर जागता रहे; रातको जागकर भगवद्भजन करनेवाला। **–बेदारी**–स्त्री० रातको जागते रहना। **–मेराज**–स्त्री० २६-२७ रजबके बीचकी रात जब मुसलमानोंके विश्वासानुसार मुहम्मदने आसमानपर जाकर खुदास साक्षात्कार किया। **–रंग**–वि० (रातके रंगका) स्याह। पु० स्याह रंगका घोड़ा। **–रौ**–वि० रातको चलनेवाला, रात्रिचर। पु० चोर; चौकीदार; कोतवाल। **–(बे) इंतज़ार**–स्त्री० वह रात जो किसीकी (विफल) प्रतीक्षामें कटे। **–उम्मीद**–स्त्री० मिलन-रात्रि। **–औवल,–ज़िफ़ाफ़**–स्त्री० (मिलनकी प्रथम रात्रि), सुहाग-रात। **–क़द्र**–स्त्री० मुसलमानोंके विश्वासानुसार एक अति पवित्र रात (अधिकांशके मतसे, रमजानकी २७वीं रात)। **–ग़म**–स्त्री० वियोगकी रात। **–गश्त**–वि० रातको फिरने, गश्त करनेवाला। स्त्री० रातमें फिरना, भ्रमण करना। **–तार,–तारीक**–स्त्री० अँधेरी रात। **–बरात**–स्त्री० शाबान महीनेकी १५वीं रात (मुसलमानोंके विश्वासानुसार इस रातमें आयुका हिसाब और रोजी बाँटनेका काम होता है। हिंदुस्तानी मुसलमान आतिशबाजी छोड़ते और बुजुर्गोंका फातिहा करके हलवा-रोटी बाँटते हैं)। **–०का चाँद**–शाबानका महीना। **–महताब,–मार**–स्त्री० चाँदनी रात। **–वसाल**–स्त्री० मिलनरात्रि; वह रात जिसमें कोई सिद्ध पुरुष शरीर छोड़े। **–वस्ल**–स्त्री० मिलनरात्रि; वह रात जिसमें प्रेमीका प्रेमिकासे मिलन हो। **–शहादत**–स्त्री० मुहर्रमकी नवीं रात जिसके सबेरे इमाम हुसैनकी शहादत हुई। **– हिज्र**–स्त्री० विरहरात्रि। **–(बो)रोज़**–अ० रात-दिन, हर वक्त।

शबका–पु० (अ०) तारोंका बना जाल; कबूतर फँसानेका तिकोना जाल जो लकड़ीमें बँधा हुआ होता है।

शबनम–स्त्री० (फा०) दे० 'शब'में; सफेद रंगका एक निहायत बारीक कपड़ा।

शबनमी–स्त्री० (फा०) वह कपड़ा जो ओससे बचनेके लिए छपर-खटपर तान देते हैं; मसहरी।

शबर–पु० (सं०) दक्षिण भारतकी एक पहाड़ी और असभ्य जाति; जंगली मनुष्य; शिव; एक प्रसिद्ध मीमांसक; हाथ; जल। **–कंद**–पु० एक मीठा कंद। **–चंदन**–पु० एक चंदन जो श्वेत-रक्त वर्णका होता है।

शबरक–पु० (सं०) जंगली आदमी।

शबरी–स्त्री० (सं०) शबर जातिकी नारी; रामायणमें वर्णित शबर जातिकी एक रामभक्त नारी।

शबल–वि० (सं०) विविध रंगोंवाला; कई रंगोंसे अंकित; विभिन्न भागोंमें विभक्त; अनुकृत, किसी वस्तुकी नकलपर बना हुआ। पु० विभिन्न प्रकारका रंग; जल। **–चेतन,–हृदय**–वि० पीड़ा, संताप आदिसे व्यथित, व्यग्र।

शबला–स्त्री० (सं०) चितकबरी गाय; कामधेनु।

शबलिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी चिड़िया।

शबली–स्त्री० (सं०) दे० 'शबला'।

शबाना–वि० (फा०) रातका। अ० रातको। पु० रातका खाना, कपड़े या मजदूरी; रातकी बची हुई रोटी। **–रोज़**–अ० रात-दिन, हर वक्त।

शबाब–पु० (अ०) जवानी, बीससे चालीस बरसतककी उम्र; चढ़तीका जमाना; तारुण्य; सौंदर्य; किसी वस्तुकी उत्तम अवस्था। **मु० –फट पड़ना**–जवानीका जोरपर होना, पूरी तरह खिल उठना।

शबाहत–स्त्री० (अ०) रूप, आकृति; समानता, समरूपता।

शबिस्तान–पु० (फा०) (राजा-बादशाहके) सोनेका कमरा; अंतःपुर; पलंग; मसजिदमें वह स्थान जहाँ रातको इबादत करते हैं।

शबीना–वि० (फा०) रातका; बासी; रमज़ानके महीनेमें रातमें ख़त्म होनेवाला क़ुरानका पाठ।

शबीह–स्त्री० (अ०) रूपसाम्य; चित्र, अनुरूप चित्र (खींचना, लिखना)।

शब्द–पु० (सं०) परमात्माका मुख्य नाम–ओम्; आकाशमें किसी भी प्रकारसे उत्पन्न क्षोभ जो वायुतरंग द्वारा कानोंतक जाकर सुनाई पड़े अथवा पड़ सके (शब्दके दो प्रकार हैं–वर्णात्मक तथा ध्वन्यात्मक। वाग्यंत्रसे उत्पन्न शब्द वर्णात्मक हैं और ताल, मृदंगादिसे उत्पन्न शब्द ध्वन्यात्मक। वर्णात्मक शब्दके भी दो प्रकार हैं–व्यक्त (सार्थक), अव्यक्त (निरर्थक)); निर्विभक्तिक नाम जो वर्णसमूह द्वारा निर्मित और सार्थक हो (वर्ड); ध्वनि, आवाज (साउण्ड); आप्त-वचन, आप्त पुरुष द्वारा व्यक्त ज्ञान, शिक्षा आदिकी बातें। **–काम**–वि० बात करनेका शौकीन। **–कार,–कारी(रिन्)**–वि० शब्द करनेवाला। **–कोश,–कोष**–पु० वह ग्रंथ जिसमें शब्दोंके सम्यक् वर्ण-विन्यास, अर्थ, प्रयोग, पर्याय आदि हों, अभिधान। **–गत**–वि० शब्दमें निहित। **–ग्रह**–पु० श्रवणेंद्रिय, कान। वि० शब्द-ग्राहक, शब्द पकड़नेवाला। **–ग्राम**–पु० शब्द-समूह। **–चातुर्य**–पु० शब्द-प्रयोगकी कला, चातुरी, बोलनेके ढंगकी निपुणता। **–चित्र**–पु० एक शब्दालंकार जहाँ छंद-रचनामें ऐसे वर्ण रखे जायँ जिनके द्वारा विशेष-विशेष विन्याससे विशेष चित्र बन जाय; साहित्यरचनाका एक नवीन प्रकार जिसमें शब्दों द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति आदिका रूप खड़ा किया जाता है, 'स्केच'। **–चोर**–पु० दूसरेकी रचनाके शब्द उड़ाकर अपनी कविता, लेखादिमें प्रयोग करनेवाला। **–नृत्य**–पु० नृत्यका एक प्रकार। **–पति**–पु० कहनेभरको स्वामी या राजा। **–पाती(तिन्)**–वि० केवल शब्दके आधारपर निशाना लगानेवाला। **–प्रमाण**–पु० मौखिक प्रमाण; आप्तप्रमाण। **–बोध**–पु० मौखिक साक्ष्यादिसे प्राप्त ज्ञान। **–ब्रह्म(न्)**–पु० वेद; ओंकार; कुंडलिनीसे ऊपर उठनेवाले नादका रूप (योग); शब्दरूपमें ब्रह्मज्ञान; स्फोट नामक शब्दका एक गुण। **–भेद**–पु० (पार्ट्स ऑव स्पीच) वाक्यमें प्रयुक्त शब्दोंका, व्याकरणके अनुसार, उनके कार्यों, प्रयोग आदिकी दृष्टिसे, किया गया भेद; व्याकरणमें अपने कार्य, स्थिति, संबंध आदिके आधारपर किया गया शब्दोंका वह विभाजन जिससे निश्चय होता है कि कोई शब्द संज्ञा है या सर्वनाम, क्रिया या अव्यय, इत्यादि (शब्दोंके आठ भेद ये हैं–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधसूचक, अव्यय, संयोजक, विस्मयादिबोधक)। **–भेदी(दिन्)**–पु० दे० 'शब्दवेधी'। **–महेश्वर**–पु० शिव (कहा जाता है कि पाणिनिने अपना व्याकरण महेश्वरकी आज्ञासे लिखा था। यह भी कहा जाता है कि पाणिनिके व्याकरणके आरंभिक चौदह सूत्र महेश्वर (शिव)के रचे हैं, अतः वे 'माहेश्वर-सूत्र' कहलाते हैं। इन्हीं कारणोंसे शिवका यह नाम पड़ा)। **–योनि**–स्त्री० धातु; शब्दका उत्पत्तिस्थान। **–विद्या**–स्त्री०

शब्दशास्त्र, व्याकरण। **–विरोध**–पु० केवल शब्द-द्वारा किया जानेवाला विरोध। **–वृत्ति**–स्त्री० शब्दका कार्य (सा०)। **–वेधी(धिन्)**–पु० वह व्यक्ति जो केवल शब्द सुनकर बिना देखे ही लक्ष्यपर बाण मारे; एक प्रकारका बाण; अर्जुन; दशरथ। **–शक्ति**–स्त्री० शब्दकी विशेष अर्थबोधक शक्ति (यह तीन प्रकारकी होती है–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना)। **–शास्त्र**–पु० व्याकरण। **–श्लेष**–पु० किसी शब्दका दो या दोसे अधिक अर्थोंमें प्रयुक्त होना। **–शूर**–पु० बातें बनानेमें बहादुर। **–संक्षेप**–पु० शब्दका छोटा बनाया हुआ रूप, जैसे पंडितसे पं०, अव्ययसे अ०। **–संग्रह**–पु० शब्दोंका चयन; शब्दकोष। **–संभव**–पु० वायु। **–साधन**–पु० शब्दोंकी व्युत्पत्ति, रूपांतर आदि दिखानेवाला व्याकरणका भाग। **–सौंदर्य**–पु० दे० 'शब्दसौष्ठव'। **–सौकर्य**–पु० शब्दोंके उच्चारण-की सरलता, सुगमता, मुखसुख। **–सौष्ठव**–पु० रचना-शैलीके शब्दोंका सौंदर्य, किसी शब्दयोजनाकी सुंदरता। **–हीन**–पु० अप्रचलित शब्दका प्रयोग। वि० ध्वनि-रहित।

शब्दन–वि० (सं०) शब्द करनेवाला। पु० शब्द करना; शब्द, ध्वनि; आह्वान।

शब्दशः(शस्)–अ० (सं०) (किसीके लिखे या कहे गये) प्रत्येक शब्दके अनुसार, उसका ठीक-ठीक अनुसरण करते हुए।

शब्दाक्षर–पु० (सं०) ॐ, प्रणव।

शब्दाख्येय–वि० (सं०) जिसका जोरसे उच्चारण किया जा सके।

शब्दाडंबर–पु० (सं०) अनावश्यक रूपसे और बिना प्रसंग विद्वत्ताके ज्ञापनार्थ बड़े-बड़े शब्दोंका प्रयोग जिसमें भावाभिव्यक्तिकी कमी हो, शब्दोंका घटाटोप, शब्दजाल (बोम्बॉस्ट)।

शब्दातिग–पु० (सं०) विष्णु।

शब्दातीत–वि० (सं०) जिसका शब्दों द्वारा वर्णन न हो सके, वर्णनातीत। पु० ईश्वर।

शब्दाधिष्ठान–पु० (सं०) कान, श्रवणेंद्रिय।

शब्दाध्याहार–पु० (सं०) वाक्यगत संपूर्ण अर्थकी प्राप्तिके लिए उसमें आवश्यक शब्दोंका समावेश करना।

शब्दानुकरण–पु०, **शब्दानुकृति**–स्त्री० (सं०) शब्दका अनुकरण।

शब्दानुशासन–पु० (सं०) व्याकरण।

शब्दायमान–वि० (सं०) शब्द करता हुआ, शब्दकारी।

शब्दार्थ–पु० (सं०) शब्दका अर्थ या अभिप्राय।

शब्दार्थी–स्त्री० (ग्लॉसरी) अर्थ, पर्याय और व्याख्याके साथ कठिन शब्दोंकी सूची।

शब्दालंकार–पु० (सं०) वह अलंकार जिसमें रचनाका चमत्कार या माधुर्य विशिष्ट शब्दों अथवा वर्णोंके प्रयोगपर निर्भर करता है, उनके अर्थपर नहीं।

शब्दाल–वि० (सं०) शब्दकारी।

शब्दावली–स्त्री० (सं०) (वोकेबुलरी) किसी कथन या रचनामें प्रयुक्त शब्द-समूह; पारिभाषिक शब्दोंकी सूची (टर्मिनालॉजी)।

शब्दित–वि० (सं०) ध्वनित; वादित; आहूत; जिसकी व्याख्या की गयी हो; आम तौरपर जनाया हुआ। पु० शोर।

शब्देंद्रिय–स्त्री० (सं०) कान।

शब्बर–पु० (अ०) हज़्रत इमाम हुसैन।

शब्बो–स्त्री० (फा०) गुलशब्बो; रजनीगंधा।

शब्बीर–पु० (अ०) हज़्रत इमाम हसन।

शम–पु० (सं०) शांति; मानसिक स्थिरता; मुक्ति; अंतःकरण और मनका संयम; बहिरिंद्रियका संयम; सभी सांसारिक कार्योंसे निवृत्ति; शांत रसका स्थायी भाव; उपचार; हाथ। **–पर,–प्रधान**–वि० शांत। **–लोक**–पु० शांतिलोक, स्वर्ग।

शमई–वि० शमाका; शमाके रंगका। **–रंग**–पु० स्याही मायल हरा रंग।

शमक–वि० (सं०) शांत करनेवाला; सुलह करानेवाला; त्वचाकी जलन और शोथको मिटानेवाली (दवा) (डिमल्सेंट)।

शमथ–पु० (सं०) शांति; मनकी शांति; मंत्रदाता।

शमन–पु० (सं०) शांति; शांत करना; बुझाना; दूर करना; दबाना; यज्ञके लिए पशु-बलि; हिंसा; समाप्ति; आघातकर्म; यम; एक मृग; कलाय; चबानेकी क्रिया। वि० निवारक, निवारण करनेवाला, दूर करनेवाला। **–स्वसा(सृ)**–स्त्री० यमकी बहिन, यमुना। **–बस्ति**–स्त्री० मुलेठी, नागरमोथा आदिको दूधमें पीसकर उसकी पिचकारी देना।

शमनी–स्त्री० (सं०) रात्रि। **–षद**–पु० निशाचर।

शमल–पु० (सं०) विष्ठा; पाप; अपवित्रता; विपत्ति, दुर्भाग्य।

शमला–पु० (अ०) शाल जो कंधोंपर डाली या सिरसे बाँधी जाय; एक खास तरहकी पगड़ी जिसे पुराने वकील गाउनके ऊपर पहना करते थे; पगड़ीका सिरा, तुर्रा।

शमशाद–पु० (फा०) एक लंबा, सुंदर वृक्ष जो सरोका एक भेद है और उर्दू-फारसीकी कवितामें नायिकाके कदका उपमान है। **–क़द**–वि० सरो वृक्षकी भाँति सुडौल और लम्बे डीलवाला (वाली)।

शमशीर, शमशेर–स्त्री० (फा०) तलवार; बीचसे झुकी हुई तलवार। (मूल रूप शमशेर–शम–नाखुन, शेर–सिंह)। **–का खेत**–रणक्षेत्र। **–ज़न**–वि० तलवार चलाने या मारनेवाला; असिजीवी, सिपाही। **–ज़नी**–स्त्री० तलवारकी लड़ाई। **–दम**–वि० तलवारकी बाढ़ रखने, तलवारकी काट करनेवाला। **–(शेर)जंग**–पु० वीरत्वसूचक पदवी। **–बकफ़**–वि० खड्गहस्त। **–बहादुर**–वि० खड्गवीर, तलवारका धनी।

शमांतक–पु० (सं०) मानसिक शांतिका नाशक, कामदेव।

शमा–स्त्री० (अ० 'शमअ') मोम; मोमबत्ती; दीया। **–ए-अंजुमन,–महफ़िल**–वि० जिससे महफिलकी शोभा हो। **–ए-काफ़ूरी**–स्त्री० सफेद मोमबत्ती। **–ए-ख़ामोश**–स्त्री० बुझा हुआ दीप। **–ए-मजार**–स्त्री० मजारका दीया। **–ऐमन,–तूर**–स्त्री० हज़्रत मूसाको दिखनेवाला प्रकाश। **–ए-बज़्म,–महफ़िल**–स्त्री० सभामें जलनेवाला दीपक, प्रेमिकाकी गोष्ठीका चिराग़। **–ए-शब अफ़्रोज़**–स्त्री० चन्द्रमा। **–ए-सहरी**–स्त्री० प्रभातका, जल्दी बुझनेवाला दीया। **–दान**–पु० वह चीज जिसमें मोमबत्ती लगाकर जलाते हैं; दीवट। **–रुख़,–रुख़सार,–रू**–वि० सुंदर; जिसका मुखमंडल दीप्तिमान् हो। **–व परवाना**–पु० दीपक और पतंग; (ला०) प्रेमी और प्रेमपात्र।

शमामा–पु० (अ०) सुगंध, खुशबू।

शमि–स्त्री० (सं०) शिंबा नामक धान्य; सफेद कीकर नामक वृक्ष। पु० यज्ञ। **–पत्र**–पु० लजालू नामक पौधा। **–पत्रा**–स्त्री० दे० 'शमिपत्र'। **–रोह**–पु० शिव।

शमिका–स्त्री० (सं०) शमीका पेड़।

शमित–वि० (सं०) जिसका शमन किया गया हो; शांत।

शमिता (तृ)–पु० (सं०) बलि चढ़ाकर शान्ति-रक्षाका प्रयत्न करनेवाला 'हरिश्चंदके यज्ञमें शमिताने नरबलि देनेसे इनकार किया।'–हिं० विश्वकोश।

शमिर–पु० (सं०) शमीकी जातिका छोटा पेड़; छोटा शमी वृक्ष।

शमी–स्त्री० (सं०) सफेद कीकर, एक वृक्ष (कहा जाता है कि इसकी लकड़ीके भीतर विशेष आग होती है जो रगड़नेपर निकलती है); शिंबा; वागुजि। **–गर्भ**–पु० अग्नि; पुरोहित-वर्गका ब्राह्मण। **–जाति**–स्त्री० एक द्विदल, कलाय। **–धान,–धान्य**–पु० मसूर, मूँग आदि। **–पत्रा**–स्त्री० पानीमें उत्पन्न होनेवाली लज्जावती लता।

शमी(मिन्)–वि० (सं०) शांत; आत्मसंयमी।

शमीक–पु० (सं०) एक ऋषि जिनके गलेमें तपस्या करते समय, राजा परीक्षित्ने मरा सर्प डाल दिया था।

शमीकरण–पु० (पैसिफिकेशन) दो पक्षोंके बीच चलनेवाले झगड़े या विवादको दूर करना; शांति स्थापित करना; क्रुद्ध या उत्तेजित व्यक्तियों (सेना, भीड़ आदि)को शांत करना।

शमीदा–वि० (फा०) सूँघा हुआ, मूर्छित; उद्विग्न।

शमीर–पु० (सं०) दे० 'शमिर'।

शमीला–स्त्री० (अ०) स्वभाव, प्रकृति, आदत।

शम्मा*–स्त्री० दे० 'शमा'।

शम्स–पु० (अ०) सूरज; तसबीहमें लगानेका फुँदना।

शम्सी–वि० सूर्य-संबंधी, सौर। स्त्री० छमाही तनखाह (शाही जमानेमें हर छ महीनेपर मिला करती थी)। **–साल**–पु० सौर

वर्ष ।

शम्सुल उलमा–पु० (अ०) विद्वानोंमें सूर्यके समान; आलिमोंको दी जानेवाली एक उपाधि ।

शयंड–वि० (सं०) वहुत सोनेवाला । वि० एक जनपद ।

शयंडक–पु० (सं०) गिरगिट ।

शय–पु० (सं०) शय्या; निद्रा; साँप; दाँव; हाथ; शाप; भर्त्सना । वि० सोनेवाला (समासांतमें) ।

शयत–पु० (सं०) निद्राशील व्यक्ति; चंद्रमा (?) ।

शयथ–वि० (सं०) सोया हुआ । पु० मृत्यु; एक तरहका साँप, अजगर; शूकर; मछली; गहरी नींद; यम ।

शयन–पु० (सं०) निद्रा; शय्या; मैथुन, नारी-सहवास । **–आरती**–स्त्री० रात्रिमें देवताओंको सुलाते समय की जानेवाली आरती । **–कक्ष,–गृह**–पु० सोनेका घर, शयनागार । **–पालिका**–स्त्री० शय्याकी रक्षिका । **–वोधिनी**–स्त्री० अगहन वदी एकादशी । **–भूमि**–स्त्री० सोनेका स्थान । **–भोग**–पु० मंदिरोंमें रात्रिका नैवेद्य । **–मंदिर**–पु० दे० 'शयन-कक्ष' । **–रचन**–पु० शय्या सजाना । **–वास(स्)**–पु० सोनेके समय पहने जानेवाले वस्त्र । **–शाला**–स्त्री० (डॉरमिटरी) वह वड़ा शयनकक्ष जिसमें कई व्यक्तियोंके सोनेकी व्यवस्था हो । **–स्थान**–पु० दे० 'शयन-भूमि' ।

शयनागार–पु० (सं०) दे० 'शयनकक्ष' ।

शयनासन–पु० (सं०) सोनेके लिए वना आसन; पलंग, चारपाई चौकी आदि ।

शयनीय–वि० (सं०) शयन करने योग्य । पु० शय्या ।

शयनैकादशी–स्त्री० (सं०) हरिशयनी एकादशी जो आषाढ़ मासके शुक्ल पक्षमें पड़ती है ।

शयांड–पु० (सं०) एक जनपद ।

शयांडक–पु० (सं०) गिरगिट ।

शयानक–पु० (सं०) गिरगिट; एक प्रकारका सर्प, अजगर ।

शयालु–वि० (सं०) निद्राशील; सोया हुआ । पु० अजगर; कुत्ता; गीदड़ ।

शयित–पु० (सं०) निद्रा । वि० निद्रित, सोया हुआ; लेटा हुआ ।

शयिता(तृ)–पु० (सं०) सोनेवाला ।

शयु, शयुन–पु० (सं०) भारी साँप, अजगर ।

शय्या–स्त्री० (सं०) सेज, पलंग, खाट; विस्तर । **–काल**–पु० सोनेका समय । **–गत**–वि० पलंगपर सोया हुआ; अस्वस्थताके कारण खाटपर पड़ा हुआ, वीमार । **–गृह**–पु० शयनागार । **–दान**–पु० मृतककर्मके अंतर्गत प्रेत-शांतिके लिए एकादशाह तथा द्वादशाहको महापात्र या पुरोहितको दिया जानेवाला पलंग, विछावन आदिका दान, सेजियादान । **–पाल,–पालक**–पु० राजाके शयनगृहका प्रवंधक ।

शय्याव्रण–पु० (वेडसोर) रोगीके बहुत दिनोंतक शय्याग्रस्त रहनेके कारण उसकी रीढ आदिके छिल जानेसे होनेवाला घाव ।

शय्याद–वि० (अ०) छली, धूर्त ।

शय्याध्यक्ष–पु० (सं०) दे० 'शय्यापाल' ।

शरंगेज़–वि० (फा०) फूट डालनेवाला, उपद्रवी ।

शरंड–पु० (सं०) पक्षी; गिरगिट; चतुष्पद; छलिया; लंपट; छिपकली; एक आभूषण । वि० धूर्त; कामी ।

शर–पु० (सं०) वाण; शरपत्र, सरपत; सरकंडा; खस; हिंसा; चिता; 'पाँच'की संख्या; दधिसार, दहीकी मलाई; जल । **–कांड**–पु० सरकंडा । **–कार**–पु० वाण वनानेवाला । **–कोट**–पु० तीरोंका घेरा । **–गुल्म**–पु० सरकंडा । **–घात**–पु० तीरंदाजी । **–ज**–पु० मक्खन; कार्त्तिकेय । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० कार्त्तिकेय । **–जाल,–चालक**–पु० वाणोंका समूह । **–तल्प,–पंजर**–पु० वाण-शय्या । **–दंड**–पु० चावुक; सरकंडा; एक नदी । **–दुर्दिन**–पु० वाणवर्षा । **–धि**–पु० तरकश । **–पंख**–पु० जवासा । **–पट्टा***–पु० एक शस्त्र । **–पर्णी**–स्त्री० एक क्षुप । **पुंख**–पु० तीरमें लगा पंख जिससे वह अधिक वेगसे जाकर चोट करता है; सरफोंका नामक वनौषधि; सुश्रुतमें वर्णित एक यंत्र । **–पुंखा**–स्त्री० दे० 'शरपुंख' । **–भंग**–पु० एक ऋषि । **–भू**–पु० कार्त्तिकेय । **–भेद**–पु० वाणका जख्म । **–मल्ल**–पु० कमनैत; एक पक्षी । **–यंत्रक**–पु० लिखित ताड़पत्रोंको नाथनेकी डोरी । **–वनोद्भव**–पु० दे० 'शरभू' । **–वाणि**–पु० शराग्र; वाण चलाकर जीविका कमानेवाला व्यक्ति, शरजीवी; पदाति । **–वारण**–पु० ढाल । **–वृष्टि**–स्त्री० वाणोंकी वर्षा । पु० एक मरुत्वान् । **–शय्या**–स्त्री० वीरगति प्राप्त योद्धाके लिए निर्मित वाणोंकी शय्या । **–संधान**–पु० वाण द्वारा लक्ष्य-साधन, निशाना लगाना ।

शर–पु० (अ०) दे० 'शर्र' । **–पसंद**–वि० कलहप्रिय, झगड़ालू ।

शरअ–स्त्री० (अ०) सीधी राह; वह सीधी राह जो ईश्वरने वनायी और वंदोंके लिए वतायी हो; इसलामी धर्मशास्त्र, शरीअत । **–मुहम्मदी**–स्त्री० इसलामी कानून ।

शरई–वि० शरअके अनुकूल । **–दाढ़ी**–स्त्री० एक मुट्ठी और दो अंगुल लंवी दाढ़ी । **–पाजामा**–पु० वह पाजामा जो टखनोंसे ऊँचा हो । **–शादी**–स्त्री० विना धूमधाम, गाजे-वाजेका व्याह ।

शरग़ा–पु० (अ०) वह घोड़ा जिसका सारा शरीर वादामी रंगका हो ।

शरघा–स्त्री० मधुमक्खी (कविप्रि०) ।

शरच्चंद्र–पु० (सं०) शरद् ऋतुका चंद्रमा ।

शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय–पु० अपने समयके सर्वश्रेष्ठ वंगला औपन्यासिक (१८७६-१९३८) । रचनाएँ–देवदास, चरित्रहीन, श्रीकांत आदि ।

शरच्चंद्रिका–स्त्री० (सं०) शरद् ऋतुकी चाँदनी ।

शरज्ज्योत्स्ना–स्त्री० (सं०) शरद् ऋतुकी चाँदनी ।

शरट–पु० (सं०) गिरगिट; कुसुंभका साग ।

शरण–स्त्री० (सं०) आश्रय; घर; रक्षाका स्थान । पु० अधीन व्यक्ति; रक्षक; वध । **–गृह**–पु० (शेल्टर) हवाई हमलेसे रक्षाके लिए जमीनके नीचे वना हुआ आश्रयस्थान, भुंइघरा । **–द,–दाता(तृ),–प्रद**–वि० आश्रयदाता, रक्षक । **–स्थान**–पु० (सैंक्टुअरी) वह स्थान जहाँ शरण लेनेसे कोई आदमी सजा पाने, पकड़े जाने आदिसे अपने आपको वचा सकता है ।

शरणा–स्त्री० (सं०) प्रसारणी लता ।

शरणागत–वि० (सं०) शरणमें आया हुआ ।

शरणागति–स्त्री० (सं०) रक्षाके लिए शरणमें जाना ।

शरणापन्न–वि० (सं०) दे० 'शरणागत' ।

शरणार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) शरण चाहनेवाला, अपनी रक्षाका अभिलाषी । पु० (रिफ्यूजी) वह जो एक देशसे विस्थापित होकर दूसरे देशमें आश्रय ग्रहण करे । **–वस्ती**–स्त्री० (रिफ्यूजी टाउनशिप) ऐसे लोग जहाँ वस गये या वसाये गये हों वह वस्ती ।

शरणार्पक–वि० (सं०) शरणापन्न ।

शरणि–स्त्री० (सं०) मार्ग; पृथ्वी; पंक्ति, अवली; हनन, हिंसा ।

शरणी–स्त्री० (सं०) पथ; पृथ्वी; अवली, पंक्ति; इंद्रकी पुत्री जयंती; जयंती लता; प्रसारणी लता । * वि० स्त्री० शरण देनेवाली ।

शरण्य–वि० (सं०) रक्षाके योग्य, शरण देने योग्य; दुःखी या असहाय; शरण देनेवाला; शरणागतका रक्षक । पु० आश्रय-स्थान; रक्षा; शिव ।

शरण्या–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

शरण्यु–पु० (सं०) पालक, रक्षक; वायु; वादल । स्त्री० सूर्यपत्नी ।

शरता–स्त्री० वाण चलानेकी विद्या, तीरंदाजी (कविप्रि०) ।

शरत्–स्त्री० (सं०) एक ऋतुका नाम जो क्वारसे कार्त्तिक तक रहती है; वत्सर, वर्ष । **–कामी(मिन्)**–पु० कुत्ता । **–काल**–पु० शरत् ऋतुकी अवधि, क्वार और कार्त्तिकका महीना । **–पद्म**–पु० श्वेत कमल । **–पर्व(न्)**–पु० क्वार महीनेकी पूर्णिमा, कोजागरी पूर्णिमा । **–पुष्प**–पु० आहुल्य । **–पूर्णिमा**–स्त्री० दे० 'शरत्पर्व' ।

शरदंत–पु० (सं०) शरत् ऋतुका अंत, हेमंत ऋतु ।

शरद–स्त्री० दे० 'शरत्' ।

शरदा–स्त्री० (सं०) शरत् ऋतु; साल ।

शरदिंदु–पु० दे० 'शरच्चंद्र' ।

शरदिज–वि० (सं०) जिसकी उत्पत्ति शरत् ऋतुमें हो ।

शरदुद्भव–पु० (सं०) वृत्तपत्र नामका साग ।

शरद्घन–पु० (सं०) शरत्कालीन बादल ।

शरन्मुख–पु० (सं०) शरद् ऋतुका आरंभ ।

शरन्मेघ–पु० (सं०) दे० 'शरद्घन' ।

शरफ़–पु० (अ०) बड़ाई; श्रेष्ठता; खूबी; भलाई; मान, प्रतिष्ठा । **–याब**–वि० सम्मान पानेवाला ।**–(फ़े) ख़िदमत, –मुलाज़िमत**–पु० सेवाका सम्मान । **–(फ़े) ज़ियारत**–पु० देखनेका सौभाग्य । **मु० –ले जाना**–बढ़ जाना ।

शरबत–पु० (अ०) पेय; पेयकी वह मात्रा जो एक बारमें पी ली जाय; फल, फूल या औषधिका अर्क जो चीनी या मिसरीमें पका लिया जाय; शकर, खाँड़ आदिको पानीमें घोलकर प्रस्तुत किया पेय, रस । **–पिलाई**–स्त्री० शरबत पिलानेकी रस्मका नेग (मुसल०) । **–(ते)दीदार**–पु० शरबतरूप (शरबत सरीखा मधुर, तृप्ति–शांतिकर) दर्शन । **–मर्ग**–पु० मौतका शर्बत, मृत्यु । **–(ते) वस्ल**–पु० सहवासका आनन्द । **मु० –पिलाना**–ब्याहके पहले या पीछे बरातियोंको शरबत पिलाना (एक रस्म) । **–के प्यालेपर निकाह कर या पढ़ा देना**–बिना कुछ खर्च किये ब्याह कर देना ।

शरबती–वि० शरबतके रंगका; रसदार, सरस । पु० हलका पीला रंग जिसमें थोड़ी सुर्खी भी हो; मलमलसे मिलता-जुलता एक निहायत बारीक और बढ़िया कपड़ा; एक तरहका कबूतर; चकोतरा नीबू । **–डाँक**–पु० शरबती रंगका कागज जिसे नगीनेके नीचे रखते हैं । **–नीबू**–पु० मीठा नीबू, चकोतरा । **–फ़ालसा**–पु० फालसेका एक भेद जो कुछ बड़ा और खट-मीठा होता है ।

शरबान–पु० अगियाघास ।

शरभंग–पु० दे० 'शर'के साथ ।

शरभ–पु० (सं०) हाथीका बच्चा; ऊँट; सिंहसे भी बलवान् एक कल्पित पशु जिसे 'अष्टपाद' (आठ पैरोंवाला) कहते हैं; टिड्डी; टिड्डा; एक वर्णवृत्त; दोहेका एक भेद; एक कपि-यूथप ।

शरभा–स्त्री० (सं०) वह कन्या जो अंगोंके शुष्क होनेके कारण विवाहके अयोग्य हो; एक काष्ठयंत्र ।

शरम–स्त्री० दे० 'शर्म' (फा०) ।

शरमाऊं|–वि० दे० 'शरमीला' ।

शरमाना–स० क्रि० लज्जित करना । अ० क्रि० लज्जित होना ।

शरमालू|–वि० दे० 'शरमीला' (असाधु) ।

शरमाशरमी–अ० शर्मकी वजहसे ।

शरमिंदगी–स्त्री० दे० 'शर्मिंदगी' ।

शरमिंदा–वि० दे० 'शर्मिंदा' ।

शरमीला–वि० लजाधुर, लज्जाशील ।

शरयु, शरयू–स्त्री० (सं०) दे० 'सरयू' ।

शरर–पु० (अ०) चिनगारी । **–अंगेज़**–वि० उपद्रवी, चिनगारी छोड़नेवाला । **–बार**–वि० आग बरसानेवाला ।

शरल–वि० (सं०) दे० 'सरल'; कुटिल ।

शरलक–पु० (सं०) जल ।

शरव्य–पु० (सं०) तीरका निशाना बननेवाला व्यक्ति; वाणका लक्ष्य ।

शरह–स्त्री० (अ०) खोलकर कहना; वर्णन; व्याख्या; दर, भाव । **–बंदी**–स्त्री० भावोंकी तालिका । **–मुअइयन**–वि० जिसकी मालगुजारी सुनिश्चित हो, अतः जिसमें वृद्धि की संभावना न हो । **–लगान**–स्त्री० लगानकी दर । **–सूद**–स्त्री० ब्याजकी दर ।

शराकत–स्त्री० (अ०) हिस्सेदारी, साझा । **–नामा**–पु० वह पत्र जिसमें हिस्सेदारीकी शर्तें लिखी हों ।

शराटि, शराटिका, शराडि, शराति–स्त्री० (सं०) एक चिड़िया जो प्रायः जलके निकट रहती है, टिट्टिभ, कुररी ।

शरापना*–स० क्रि० शाप देना ।

शराफ–पु० दे० 'सराफ' ।

शराफ़त–स्त्री० (अ०) शरीफ होना, भलमनसी; भद्रता; कुलीनता । **–पनाह**–वि० शरीफोंको आश्रय देनेवाला (मातहत अफसरोंके लिए परवानोंमें लिखा जाता है) । **–पेशा**–वि० उच्च वंशका ।

शराफा–पु० दे० 'सराफा' ।

शराफी–स्त्री० दे० 'सराफी' ।

शराब–स्त्री० (अ०) पेय; मद्य । **–कश**–वि० शराबी । **–ख़ाना**–पु० शराबकी दुकान, मदिरालय । **–ख़ोर**–पु० दे० 'शराबख़्वार' । **–ख़ोरी**–स्त्री० दे० 'शराबख़्वारी' । **–ख़्वार**–पु० शराबी, मद्य-व्यसनी । **–ख़्वारी**–स्त्री० शराब पीनेका व्यसन । **–ज़दा**–वि० मतवाला । **–(बे)तहूर**–स्त्री० बिहिश्तमें मिलनेवाली पवित्र शराब । **–साज़ी**–स्त्री० सुराकर्म, शराब बनाना । **मु० –का दौर चलना**–पानगोष्ठीमें सम्मिलित लोगोंका प्यालेपर प्याला खाली करना, पीनेवालोंके प्यालोंका भरा और खाली किया जाना ।

शराबी–वि०, पु० शराब पीनेवाला, मद्यव्यसनी ।

शराबोर–वि० भींगा हुआ, बिलकुल गीला ।

शरायुध–पु० (सं०) धनुष् ।

शरार–पु० (अ०) चिनगारी; पतिंगा । **–पसंद**–वि० उपद्रवी, शरारती ।

शरारत–स्त्री० (अ०) शरीर (दुष्ट) होनेका भाव, पाजीपन, शैतानियत । **–आमेज़**–वि० शरारतसे भरा हुआ ।

शरारि, शरारी, शरालि–स्त्री० (सं०) शराटि, टिट्टिभ पक्षी । **–(री)मुखी**–स्त्री० एक प्राचीन कैंचीनुमा औजार ।

शरारु–वि० (सं०) हानिकर; चोट पहुँचानेवाला । पु० हानिकारक जीव ।

शरारोप–पु० (सं०) धनुष्, कमान ।

शराव–पु० (सं०) जलका रक्षा करनेवाला मृत्पात्र; एक प्रकारका मिट्टीका बरतन; तश्तरी; थाल; वैद्योंकी एक तौल जो चौसठ तोलकी होती है ।

शरावक–पु० (सं०) ढक्कन ।

शरावती–स्त्री० (सं०) वाणगंगा; एक प्राचीन नगरी जहाँ लवने अपनी राजधानी बनायी थी ।

शरावर–पु० (सं०) ढाल; तूणीर ।

शरावरण–पु० (सं०) ढाल ।

शरावाप–पु० (सं०) धनुष्; तूणीर ।

शराविका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी फुंसी जो भीतर गहरी होती है ।

शराश्रय–पु० (सं०) तूणीर, तरकश ।

शरास–पु० (सं०) धनुष् ।

शरासन–पु० (सं०) धनुष् ।

शरास्य–पु० (सं०) धनुष् ।

शरिष्ठ–वि० दे० 'श्रेष्ठ' ।

शरी(रिन्)–वि० (सं०) वाणयुक्त ।

शरीअत–स्त्री० (अ०) खुदाके बनाये हुए कानून; मजहबी कानून; न्याय; सूफी साधनाके चार साधनोंमेंसे एक (शेष तीन हैं–तरीकत, मारफत और हकीकत) । **–(ते)मुहम्मदी**–स्त्री० मुहम्मदके चलाये हुए कानून ।

शरीक–वि० (अ०) शिरकत रखनेवाला, मिला हुआ, शामिल; साझी; जोड़ीदार; साथ देनेवाला । **–(के)जलसा**–वि० सभामें उपस्थित (जन) । **–(के)ज़िन्दगी, –हयात**–वि० पत्नी, अर्धांगिनी । **–जुर्म**–वि० अपराधमें साथ देने, सहायता करनेवाला । **–दर्द**–वि० संकटमें साथ देनेवाला । **–दार**–वि० साझीदार । **–राय**–वि० सहमत, एकराय । **–हाल**–वि० दुःख-सुखमें साथ देनेवाला ।

शरीजा–पु० (अ०) कबूतरोंका दरबा, काबुक ।

शरीफ़–वि० (अ०) भला, नेक; कुलीन, ऊँचे घरानेका; प्रतिष्ठित; पवित्र (अन्य शब्दसे युक्त होकर सम्मानका अर्थ प्रकट करता है–'कुरानशरीफ', 'मक्काशरीफ') । पु० भला मानस, कुलीन, प्रतिष्ठित जन; मक्केके शासककी पदवी । **–ख़ानदान**–वि० ऊँचे घरानेका कुलीन । **–ज़ादा**–पु० शरीफका बेटा; कुलीन जन । **–ज़ादी**–स्त्री० शरीफकी बेटी; कुलीना स्त्री ।

शरीफा–पु० एक फल, सीताफल (इसका छिलका गोल और उभरे हुए छोटे-छोटे खंडोंसे बना होता है, इसका गूदा मीठा तथा सुफेद और लंबोतरे काले बीजोंमें लिपटा रहता है); इस फलका वृक्ष ।

शरीर–वि० (अ०) दुष्ट, नटखट, पाजी। पु० (सं०) अस्थि, मांस, मज्जा आदिसे निर्मित स्थलचर, जलचर, नभचर जीवोंके सम्पूर्ण अंगोंका समुच्चय (यही स्थूल शरीर कहलाता है। भारतीय दर्शन-ग्रंथोंमें सूक्ष्म अथवा लिंग शरीरका भी वर्णन है, जो बुद्धि, अहंकार, मन, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच कर्मेंद्रिय तथा पंच तन्मात्रसे निर्मित माना जाता है)। **–कर्ता(र्तृ),–कृत्**–पु० पिता। **–ग्रहण**–पु० शरीर धारण करना। **–ज**–पु० कामदेव; काम-वासना; पुत्र; रोग। **–त्याग**–पु० मृत्यु। **–दंड**–पु० शारीरिक दंड; शरीरको कष्ट देना। **–देश**–पु० शरीरका कोई भाग; शरीरावशेष (बुद्धका)। **–निपात**–पु० मर जाना। **–पतन**–पु० शरीरका क्रमशः जीर्ण होना; मृत्यु। **–पाक**–पु० शरीरका धीरे-धीरे दुर्बल होते जाना। **–पात**–पु० मृत्यु। **–प्रभव**–पु० पिता। **–बंध**–पु० देहयष्टि, शरीरका ढाँचा। **–बंधक**–पु० ओल, प्रतिभू। **–भृत्**–पु० वह जिसने शरीर धारण किया है, शरीरधारी; आत्मा; विष्णु। **–भेद**–पु० शरीरका (आत्मासे) पृथक् होना, मृत्यु। **–यष्टि**–स्त्री० पतला बदन। **–यात्रा**–स्त्री० जीवन-रक्षणके साधन; जीवन-वर्धनकी वस्तुएँ; जीवन। **–रक्षक**–पु० आक्रमण आदिसे राजा, अमीर-उमरा आदिके शरीरकी रक्षा करनेवाला व्यक्ति, अंगरक्षक। **–रचना विज्ञान**–पु० (एनोटॉमी) शरीरका वैज्ञानिक अध्ययन, जिसमें शरीरके विभिन्न अंगों तथा ऊतकोंके स्वरूप और उनकी संरचनाका अध्ययन शामिल है, किन्तु इन अंगोंकी कार्यप्रणालीका अध्ययन इसमें नहीं आता। **–विज्ञान**–पु० दे० 'शरीर-शास्त्र'। **–वृत्ति**–स्त्री० शरीर-रक्षाके लिए व्यापार, नौकरी इ०, जीविका। **–वैकल्य**–पु० अस्वस्थता। **–शास्त्र**–पु० शरीरके बाहरी-भीतरी अवयवोंकी रचना, क्रिया आदिकी विवेचना करनेवाला शास्त्र, शरीर-विज्ञान। **–शोधन**–पु० शरीरका मल निकालनेवाला पदार्थ; ऐसी ओषधि। **–संपत्ति**–स्त्री० अच्छा स्वास्थ्य। **–संबंध**–पु० विवाह-संबंध। **–संस्कार**–पु० शरीरको पवित्र, शुद्ध करनेवाले वेदविहित सोलह संस्कार; शरीरके सौंदर्यके लिए उसकी सफाई, उसका शृंगार; शरीर-शुद्धि। **–साद**–पु० शरीरकी क्लांति। **–सेवा**–स्त्री० शरीरको सुखी रखनेके काम। **–स्थ**–वि० शरीरमें रहनेवाला। **–स्थान**–पु० शरीर-संबंधी सिद्धांत। **–स्थिति**–स्त्री० दे० 'शरीर-वृत्ति'।

शरीरक–पु० (सं०) शरीर; लघु शरीर; आत्मा।

शरीरांत–पु० (सं०) मृत्यु, देहावसान; बाल।

शरीरांतर–पु० (सं०) दूसरा शरीर; शरीरका भीतरी भाग।

शरीरार्पण–पु० (सं०) (प्रायः) सत्कार्यके लिए शरीरके स्वास्थ्यास्वास्थ्यपर ध्यान दिये बिना उसमें जुट जाना; सत्कार्यके लिए जीवनार्पण।

शरीरावरण–पु० (सं०) चमड़ा; शरीर ढकनेकी वस्तु, वेष्टन; ढाल।

शरीरास्थि–स्त्री० (सं०) कंकाल।

शरीरी(रिन्)–वि० (सं०) शरीरधारी; जीवित। पु० मनुष्य; वह जो शरीरमें रहता हो, आत्मा; प्राणी।

शरु–पु० (सं०) बाण; हथियार; इंद्रका वज्र; क्रोध; हिंसा; विष्णु; बाण चलानेका अभ्यास। वि० शीर्ण; सूक्ष्म; पतला।

शरेज–पु० (सं०) कार्तिकेय।

शरेष्ट–पु० (सं०) आमका पेड़। * वि० श्रेष्ठ।

शर्क़–पु० (अ०) पूरब।

शर्कर–पु० (सं०) चीनी; बालुकाकण; कंकड़; एक प्रकारका जीव जो जलमें पैदा होता है; एक तरहका ढोल। वि० कणदार। **–कंद**–पु० शकरकंद। **–जा**–स्त्री० मिस्री।

शर्करक–पु० (सं०) मीठा नीबू।

शर्करा–स्त्री० (सं०) शक्कर, खादार चीनी; बालुकाकण; कंकड़; उपल; ठीकरा; खंड, टुकड़ा; पथरी रोग; एक जनपद। **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए शक्करकी बनी गाय। **–प्रभा**–स्त्री० एक नरक (जै०)। **–प्रमेह**–पु० मधुमेह रोग। **–मापी**–पु० (सैक्रिमीटर) तरल पदार्थमें चीनीका अंश नापनेका यंत्र। **–सप्तमी**–स्त्री० वैशाख-शुक्ला सप्तमीको पड़नेवाला एक पर्व (इस दिन स्वर्णाश्व देवके सम्मुख चीनीभरा कलश रखकर उनकी पूजा की जाती है)।

शर्कराचल–पु० (सं०) दानके लिए चीनीका कृत्रिम पहाड़।

शर्करार्बुद–पु० (सं०) एक तरहका अर्बुद (आ० वे०)।

शर्कराल–वि० (सं०) (आंधी) जिसमें कंकड़ी भरी हो।

शर्करासव–पु० (सं०) चीनीसे बनी शराब।

शर्करिक, शर्करिल–वि० (सं०) शर्करायुक्त; कंकड़भरा।

शर्करी–स्त्री० (सं०) सरिता; लेखनी; (पर्वतकी) मेखला; एक वर्णिक छंद।

शर्करी(रिन्)–वि० (सं०) पथरी रोगसे ग्रस्त।

शर्करीय–वि० (सं०) शर्करा-संबंधी।

शर्करोदक–पु० (सं०) चीनीका शरबत।

शर्क़ी–वि० पूर्वीय।

शर्कोटि–पु० (सं०) सर्प।

शर्ज़ा–पु० (अ०) अत्यधिक क्रोधी।

शर्ट–स्त्री० (अं०) कुरते जैसा ऊर्ध्वांगमें पहननेका एक सिला हुआ वस्त्र, कमीज।

शर्त–स्त्री० (अ०) प्रतिज्ञा, किसी संधि-समझौतेकी अंगभूत प्रतिज्ञा; वह बात जिसपर किसी बातका होना, किया जाना, कायम रहना अवलंबित हो; वस्तु या कार्यविशेषके लिए अनिवार्य वस्तु (टर्म्स); कैद, पाबंदी; होड़, बाजी। **–बंद**–वि० शर्तसे बँधा हुआ; प्रतिज्ञापत्र लिखकर नियत अवधितक काम करनेको बँधा हुआ (मजदूर), 'गिरमिटिया'। मु० **–बदकर सोना**–बहुत देरतक सोना, बड़ी लंबी नींद लेना। **–बदना, बाँधना**–बाजी लगाना। **(किसी बातकी)–होना**–किसी बातके लिए अनिवार्य, अत्यावश्यक होना। **–यह है**–इस शर्तपर।

शर्तिया, शर्तीया–वि० अचूक, पक्का (–इलाज)। अ० शर्त बदकर।

शर्ती–वि० किसी शर्त, प्रतिज्ञापर आश्रित। अ० दे० 'शर्तिया'।

शर्धंजह–वि० (सं०) बाई पैदा करनेवाला। पु० एक तरहकी दाल या सेम।

शर्ध–पु० (सं०) शक्ति; सेना; अपान वायुका त्याग।

शर्धन–पु० (सं०) अपान वायुका त्याग करना।

शर्बत–पु० दे० 'शरबत'।

शर्बती–वि० दे० 'शरबती'।

शर्म–स्त्री० (फा०) लज्जा, हया; इज्जत, लाज (रखना, रहना); खयाल, लिहाज। **–गाह**–पु०, स्त्री० गोपनीय अंग; भग। **–गीं**–वि० शर्मिंदा, लज्जायुक्त। **–नाक**–वि० लजानेलायक, लज्जाजनक। **–सार**–वि० शर्मिंदा, लज्जित; लज्जावान्। **–(में) हजूर,–हजूरी**–स्त्री० सामने होनेका लिहाज, संकोच, आँखकी लाज। मु० **–आना**–लाज लगना। **–करना**–लज्जित होना; लिहाज करना। **–की बात**–लज्जाजनक कार्य। **–खाना**–लज्जा अनुभव करना। **–से गठरी हो जाना**–(दुलहिनका) लाजके मारे सिकुड़कर गठरी-सा बन जाना, जमीनमें गड़ जाना।

शर्म(न्)–पु० (सं०) सुख; गृह (वै०); आश्रय; आशीर्वचन; रक्षा। वि० सुखी; संपन्न। **–द**–वि० आनंददायक। पु० विष्णु।

शर्मर–पु० (सं०) एक तरहकी पोशाक।

शर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) ब्राह्मणवर्णबोधक उपाधि। वि० प्रसन्न, सुखी।

शर्माऊ, शर्मालू–वि० लज्जाशील, शर्मीला।

शर्माना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'शरमाना'।

शर्माशर्मी–अ० लज्जावश, संकोचवश।

शर्मिंदगी–स्त्री० (फा०) शर्मिंदा होना। मु० **–उठाना**–लज्जित होना।

शर्मिंदा–वि० (फा०) लज्जित, लजाया हुआ।

शर्मिष्ठा–स्त्री० (सं०) राजा ययातिकी छोटी रानी, दैत्यराज वृषपर्वाकी कन्या और देवयानीकी सखी।

शर्मिसार–वि० (फा०) लज्जित, शर्मिंदा।

शर्मिसारी–स्त्री० शर्मिंदगीका भाव।

शर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) सुखी; भाग्यशाली।

शर्मीला–वि० लज्जाशील ।

शर्यण–पु० (सं०) एक वैदिककालीन जनपद ।

शर्यणावत्–पु० (सं०) एक सरोवर तीर्थ ।

शर्या–स्त्री० (सं०) रात्रि; अँगुली; वाण (वै०) ।

शर्याति–पु० (सं०) वैवस्वत मनुके पुत्र ।

शर्र–पु०, स्त्री० (फा०) शरारत, झगड़ा, फसाद; बुराई ।

शर्रोफ़साद–पु० (फा०) झगड़ा-फसाद ।

शर्व–पु० (सं०) शिव; विष्णु । **पत्नी**–स्त्री० पार्वती । **–पर्वत**–पु० कैलास ।

शर्वर–पु० (सं०) कंदर्प, कामदेव; अंधकार; संध्याकाल ।

शर्वरी–स्त्री० (सं०) संध्याकाल; रात्रि; हल्दी; स्त्री । पु० एक संवत्सर । **–कर**–पु० चंद्रमा; विष्णु । **–नाथ**–पु० चंद्रमा । **–पति**–पु० चंद्रमा; शिव ।

शर्वरीश, शर्वरीश्वर–पु० (सं०) चंद्रमा ।

शर्वला, शर्वली–स्त्री० (सं०) तोमर अस्त्र ।

शर्वाणी–स्त्री० (सं०) शिव-पत्नी, पार्वती ।

शर्शरीक–पु० (सं०) खल; हिंसक; आग; अश्व । वि० दुष्ट, पाजी ।

शलंग–पु० (सं०) लवण-विशेष; राजा, लोकपाल । स्त्री० (फा०) कूद, छलाँग ।

शलंदा–स्त्री० (सं०) पातालगारुड़ी ।

शल–पु० (सं०) कुंत नामक अस्त्र; साहीका काँटा; भृंगी; ऊँट; ब्रह्मा; कंसका एक मल्ल; कंसका एक मंत्री; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; शल्यराज; एक वृक्ष । वि० (अ०) दे० 'शल्ल' ।

शलक–पु० (सं०) मकड़ा; एक पक्षी ।

शलग़म–पु० (फा०) एक कंदशाक जिसकी जड़ तरकारी, अचार आदिके रूपमें और पत्ते सागकी तरह खाये जाते हैं ।

शलजम–पु० (फा०) दे० शलग़म' ।

शलजमी–वि० शलजमसे मिलता-जुलता । **–आँखें**–स्त्री० बड़ी-बड़ी आँखें ।

शलभ–पु० (सं०) पतंग, फतिगा; टिड्डी; छप्पय छंदका एक भेद; एक असुर । (साहित्यमें शलभ (पतंग)को प्रेमीका प्रतीक माना गया है ।)

शलल–पु० (सं०) साही; शल्लकी-लोम, साहीका काँटा । **–चंचु**–पु० साहीके काँटेकी कलम ।

शलली–स्त्री० (सं०) साहीका काँटा; छोटी साही ।

शलाकधूर्त–पु० (सं०) जुएका धूर्त, बेईमान खेलाड़ी; बहेलिया ।

शलाका–स्त्री० (सं०) किसी धातु, लकड़ी आदिकी बनी सलाई, सीख; सुरमा लगानेकी सलाई; फोड़े, घाव आदिकी गहराई नापनेवाली डाक्टरी सलाई; छातेकी तीली; पासा; वाण; भाला; चित्रकारकी कूँची, तूली; सलई; मदन वृक्ष; अँखुवा उँगली; साही; शारिका नामक पक्षी; हड्डी । **–और शंकु**–पु० (राड्स एण्ड कोन्स) नेत्रके रेटिनापर स्थित कोशिकाएँ जो वस्तुतः प्रकाश ऊर्जाकी ग्राही होती हैं । शलाकाएं अत्यन्त मन्द प्रकाशके प्रति विशेषरूपसे सुग्राही होती हैं किन्तु ये न तो रंगोंका भेद कर सकती हैं और न ही प्रतिविम्बके ब्योरेकी पहचान कर सकती हैं । इसके प्रतिकूल शंकु रंगभेद तथा प्रतिविम्बके ब्योरेके प्रति विशेषरूपसे सुग्राही होते हैं; (वैलट) वह छोटी रंगीन गोली, पुरजी या टिकट जो चुनावके समय मतदाता द्वारा गुप्त रूपसे मतदान-पेटीमें डाला जाता है; इस प्रकारका गुप्त मतदान । **–पत्र**–पु० (सं०) (वैलट पेपर) मतदान पत्र । **–पुरुष**–पु० जैनोंके तिरसठ देवपुरुष ।

शलाट–पु० (सं०) एक शकट परिमाण, दो हजार पलोंका, गाड़ीका एक बोझ ।

शलाटु–पु० (सं०) मूलविशेष, एक कंद; वेल । वि० अपक्व, कच्चा ।

शलातुर–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद जिसमें प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि रहते थे ।

शलाभोलि–पु० (सं०) ऊँट ।

शलालु–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

शली–स्त्री० (सं०) साही नामक जंतु जिसके शरीरभरमें काँटे होते हैं ।

शलूका–पु० (फा०) कमरतकका एक पहनावा ।

शल्क–पु० (सं०) वल्कल, वृक्षकी छाल; मछलीकी चोईं; छिलका; खंड, टुकड़ा ।

शल्कल–पु० (सं०) दे० 'शल्क' ।

शल्कली(लिन्)–पु० (सं०) मछली ।

शल्की(ल्किन्)–पु० (सं०) मछली ।

शल्पदा, शल्पपर्णिका–स्त्री० (सं०) दे० 'शल्यदा' ।

शल्फ़–स्त्री० (फा०) कुलटा, व्यभिचारिणी, पुंश्चली ।

शल्मलि–पु०, **शल्मली**–स्त्री० (सं०) शाल्मली नामक पेड़, सेमलका वृक्ष ।

शल्य–पु० (सं०) कील, खूँटी; काँटा; शलाका; वाण; भाला; डाक्टरका चीर-फाड़ करनेका औजार; विष; दुर्वचन; पाप; संकट; अस्थि; सीमा; शरीरकुपित वात, पित्त, कफादि तथा शरीरके वाहरसे प्रविष्ट काँटा, शीशा आदि वस्तुएँ जिनसे शरीरमें असह्य पीड़ा होती है; मदन वृक्ष; विल्व वृक्ष; लोध्र; खैर; टट्टी, बाड़; साही जानवर; एक मछली; छप्पयका एक भेद; मद्र देशके राजा; पांडुकी द्वितीय पत्नी माद्रीके भाई, नकुल और सहदेवके मामा । **–कंठ**–पु० साही । **–कर्ता(र्तृ)**,**–कार**–पु० (सर्जन) जर्राह, सर्जन, चीर-फाड़ द्वारा चिकित्सा करनेवाला, शल्य-चिकित्सक; वाणनिर्माता । **–कारी**,**–क्रिया**,**– चिकित्सा**–स्त्री० शल्य अथवा शस्त्र-चिकित्सा; शल्य निकालनेकी क्रिया । **–चिकित्सक**–पु० (सर्जन) फोड़ों, विकृत या रुग्ण अंगोंको चीर-फाड़कर ठीक करनेवाला तथा टूटी या स्थानच्युत हड्डी आदिको जोड़ने-बैठानेवाला चिकित्सक । **–ज्ञान**,**–तंत्र**–पु० शल्य-शास्त्र-संबंधी आयुर्वेदीय ग्रंथ, सुश्रुतमें वर्णित आठ तंत्रोंमेंसे एक तंत्र जिसमें चीर-फाड़के शस्त्रों आदिका वर्णन है । **–दा**,**–पर्णिका**,**–पर्णी**–स्त्री० मेदा नामक ओषधि । **–पीडित**–वि० वाणादिसे जख्मी । **–प्रोत**–वि० जिसके शरीरमें वाण घुसा हो । **–लोम(न्)**–पु० साहीका काँटा । **–विज्ञान**–पु०, **–विद्या**–स्त्री० (सर्जरी) चीर-फाड़ द्वारा फोड़े या विकृत एवं रुग्ण अंगादि ठीक करनेकी विद्या या शास्त्र, सर्जरी । **–शास्त्र**–पु० शरीरोपचार-विधिकी वह पद्धति जिसके द्वारा शरीरके फोड़े आदिको चीर-फाड़कर उसे नीरोग किया जाता है; वह शास्त्र जिसमें शल्यचिकित्साका वर्णन हो । **–श्रंसन**–पु० शरीरसे शल्य निकालना । **–हृत्**–पु० सर्जन ।

शल्यक–पु० (सं०) भाला; काँटा; मदन वृक्ष; साही ।

शल्या–स्त्री० (सं०) मेदा नामक ओषधि; नागवल्ली लता; विकंकत नामक वृक्ष; एक तरहका नृत्य ।

शल्यारि–पु० (सं०) शल्यराजको मारनेवाले युधिष्ठिर ।

शल्याहरण–पु० (सं०) शरीरमें गड़े काँटे, वाण आदिको निकालनेका कार्य ।

शल्योद्धरण–पु० (सं०) दे० 'शल्याहरण' ।

शल्योद्धार–पु० (सं०) दे० 'शल्याहरण' ।

शल्योद्योग–पु० (सर्जिकल इंस्ट्रुमेंट्स इंडस्ट्री) शल्य-चिकित्सामें प्रयुक्त होनेवाले औजारोंके निर्माणका उद्योग ।

शल्योपचार–पु० (आपरेशन) चीरफाड़ ।

शल्ल–पु० (सं०) त्वचा; वल्कल, पेड़की छाल; मेढक । वि० (अ०) जो हिलाया-डुलाया न जा सके; थका-माँदा । मु० **–हो जाना**–थककर चूर हो जाना, (हाथ-पाँवका) हिलाने लायक़ न रहना ।

शल्लक–पु० (सं०) सलईका पेड़; दे० 'शल्ल'; साही ।

शल्लकी–स्त्री० (सं०) साही; सलई । **–द्रव**, **–रस**–पु० सिल्हक, शिलारस ।

शल्ली–स्त्री० (सं०) सलई; साही नामक जंतु ।

शल्व–पु० (सं०) शाल्वदेश ।

शल्वार–स्त्री० (फा०) सलवार, एक प्रकारका ढीला पाजामा ।

शव–पु० (सं०) लाश, मृत शरीर; निर्जीव वस्तु; पानी । **–कर्म(न्)**–पु० दाह-संस्कार । **–काम्य**–पु० कुत्ता । **–कृत्**–पु० कृष्ण ।

–दहन,–दाह–पु० मृत शरीर जलानेकी क्रिया। **–० स्थान–**पु० श्मशान। **–दूष्य–**पु० कफन। **–परीक्षणालय–**पु० (पोस्टमार्टम रूम) वह कमरा या स्थान जहाँ शवोंका परीक्षण किया जाता है। **–परीक्षा–**स्त्री० (पोस्ट मार्टम) मृत्युके कारणका पता लगानेके लिए की गयी शवकी जाँच। **–भस्म(न्)–**पु० जले मुर्देकी राख। **–मंदिर–**पु० श्मशान। **–यात्रा–**स्त्री० शवके साथ-साथ कुछ लोगोंका श्मशानकी ओर जानेका कार्य। **–यान,–रथ–**पु० श्मशानतक शव ले जानेके लिए वाँस, लकड़ी आदिकी वनी अरथी, टिकठी। **–शयन–**पु० श्मशान। **–शिविका–**स्त्री० अरथी। **–समाधि–**स्त्री० शवको भूगर्भ अथवा जलमें रखने, डालनेका संस्कार। **–साधन–**पु० श्मशानमें शवपर बैठकर मंत्र जगानेकी तंत्रशास्त्रोक्त क्रिया, साधना।

शवता–स्त्री० (सं०) निष्प्राणत्व, निश्चेष्टता, मुर्दापन।

शवर–पु० (सं०) दे० 'शवर'। **–लोध्र–**पु० सफेद लोध्र।

शवरी–स्त्री० दे० 'शवरी'।

शवल–वि०, पु० (सं०) दे० 'शवल'।

शवलित–वि० (सं०) मिश्रित।

शवली–स्त्री० (सं०) दे० 'शवली'।

शवसान–पु० (सं०) पथिक, राही; मार्ग; श्मशान।

शवाग्नि–स्त्री० (सं०) चिताकी अग्नि।

शवाच्छादन–पु० (सं०) कफन।

शवान्न–पु० (सं०) गला-पचा अन्न; अखाद्य अन्न; शव मांस।

शवासन–पु० (सं०) हठयोगका एक आसन जिसमें शवकी भांति लेटकर सारे अंग शिथिल कर दिये जाते हैं।

शव्य–वि० (सं०) शव-संवंधी। पु० शवको अंत्येष्टि क्रियाके लिए ले जाते समयका कृत्य।

शव्वाल–पु० (अ०) हिजरी सन्‌का दसवाँ महीना।

शश–पु० (सं०) शशक, खरगोश, खरहा; चंद्रलांछन, चाँदका धव्वा; लोध्र वृक्ष; वोल गंधद्रव्य; कामशास्त्रोक्त पुरुषके चार प्रकारोंमेंसे एक प्रकार (शश पुरुष मृदुभाषी, सुशील, कोमल शरीरवाला, सुकेश, सकलगुणनिधान और सत्यभाषी होता है)। **–घातक,–घाती(तिन्)–**पु० वाज पक्षी। **–धर–**पु० चंद्रमा; कपूर। **–०मुखी–**स्त्री० चंद्रवदनी। **–०मौलि–**पु० शिव। **–प्लुतक–**पु० नखक्षत। **–भृत्–**पु० चंद्रमा। **–लक्षण–**पु० चंद्रमा। **–लांछन–**पु० चंद्रमा; कपूर। **–विंदु–**पु० विष्णु; राजा चित्ररथका पुत्र; चंद्रमा। **–विषाण,–शृंग–**पु० आकाशकुसुम, असंभव वात। **–शिंबिका–**स्त्री० जीवंती। **–स्थली–**स्त्री० गंगा और यमुनाके वीचका क्षेत्र। **–हा(हन्)–**पु० वाज।

शश–वि० (फा०) पाँच और एक, छ। पु० ६ की संख्या। **–ख़ाना–**वि० ६ कमरोंवाला (मकान)। पु० एक साज। **–गानी–**पु० फिरोजशाहके जमानेमें प्रचलित चादीका सिक्का। **–दर–**पु० चौसरके खेलमें एक घर जहाँ जाकर गोटी वंद हो जाती है और खेलनेवाला निरुपाय हो जाता है। वि० (ला०) चकित, हैरान (रहना, होना)। **–पंज,–(शशो)पंज–**पु० सोचविचार, आगापीछा, उधेड़बुन (...में पड़ना)। **–पहल,–पहलू–**वि० छ कोनोंवाला, षट्कोण। **–माही–**वि० हर छ महीनेमें होनेवाला (परीक्षा इ०), छमाही। स्त्री० छ महीनेका समय। **–रोज़–**पु० मुसलमानोंके विश्वासानुसार सृष्टिकी उत्पत्तिके छ दिन। **–सरी–**पु० विना मिलावटका सोना, कुंदन। **–साला–**वि० छ वरसोंका।

शशक–पु० (सं०) खरहा। **–विषाण–**पु० असंभव वात।

शशांक–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर। **–कांत–**वि० चंद्रमा जैसा सुंदर। **–ज–**दे० 'शशांक-सुत'। **–मुकुट,–शेखर–**पु० शिव। **–शत्रु–**पु० राहु। **–सुत–**पु० चंद्रमाका पुत्र, बुध ग्रह।

शशांकित–वि० (सं०) शशकके चिह्नवाला (चंद्रमा)।

शशांकोपल–पु० (सं०) चंद्रकांत मणि।

शशांडुलि, शशांडुली–स्त्री० (सं०) कड़वी ककड़ी।

शशा–पु० दे० 'शश'। (फ०) शव्वाल महीनेके शुरूके ६ दिन जिनमें रोजा रखते हैं।

शशाद, शशादन–पु० (सं०) वाज नामक चिड़िया।

शशि*–पु० दे० 'शशी'।

शशिक–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

शशी(शिन्)–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर; एककी संख्या; रगणका दूसरा भेद; छप्पय छंदका एक भेद। **–(शि)कर–**पु० चंद्रमाकी किरण। **–कला–**स्त्री० चंद्रकला; चंद्रमाका अंश; एक वर्णवृत्त (चार नगण, एक सगण) जिसे 'मणिगण' और 'शरभ' भी कहते हैं। **–कांत–**पु० चंद्रकांत मणि; कुमुद। **–केतु–**पु० वुद्ध। **–खंड–**पु० चंद्रमाकी कला। **–गुह्या–**स्त्री० मुलंठी। **–ग्रह–**पु० चंद्रग्रहण। **–ज–तनय,–**पु० बुध ग्रह। **–तिथि–**स्त्री० पूर्णिमा। **–दैव–**पु० मृगशिरा नक्षत्र। **–धर–**पु० शिव। **–पर्ण–**पु० परवल। **–पुत्र–**पु० बुध ग्रह। **–पुष्प–**पु० कमल। **–पोषक–**पु० शुक्ल पक्ष। **—प्रभ–**वि० जो चंद्रमाके सदृश प्रभासे युक्त हो। पु० मोती; कुमुद। **–प्रभा–**स्त्री० चाँदनी। **–प्रिय–**पु० मोती। **–प्रिया–**स्त्री० सत्ताईसों नक्षत्र जिन्हें पुराणोंने चंद्रमाकी पत्नियाँ माना है। **–भाल,–भूषण,–भृत्–**पु० शिव। **–मंडल–**पु० चंद्रमंडल, चंद्रमाका घेरा। **–मणि–**पु० चंद्रकांत मणि। **–मुख–**वि० चंद्रमाके समान मुखवाला। (स्त्री० 'शशिमुखी'।) **–मौलि–**पु० शिव। **–रस–**पु० सुधा, अमृत। **–रेखा–**स्त्री० चंद्रकला। **–लेखा–**चंद्ररेखा, एक वर्णवृत्त; गुडुंची। **–वदना–**स्त्री० एक वर्णवृत्त। वि० स्त्री० शशिमुखी। **–वाटिका–**स्त्री० गदहपूरना, पुनर्नवा। **–शिखमणि,–शेखर–**पु० शिव। **–शोषक–**पु० कृष्ण पक्ष। **–सुत–**पु० वुध। **–हीरा–**पु० (हिं०) चंद्रकांत मणि।

शशिशाला*–स्त्री० शीशमहल।

शशीश–पु० (सं०) शिव।

शश्वत्–अ० (सं०) हमेशा, पुनःपुनः।

शष्कुल–पु० (सं०) करंज।

शष्कुलि, शष्कुली शस्कुली–स्त्री० (सं०) कानका छेद; कानकी एक वीमारी; एक पक्वान्न, पूरी; माँड़; सौरी मछली; करंज।

शष्प, शस्प–पु० (सं०) नवतृण; प्रतिभाक्षय; ज्ञाननाश; पशम।

शसन–पु० (सं०) यज्ञके अवसरपर की गयी पशुबलि; हत्या; वलि।

शसा*–पु० खरहा।

शसि, शसी*–पु० चंद्रमा।

शस्त–पु० (सं०) कल्याण; सुख; उत्तमता; मांगलिकता; लक्ष्य, निशाना; भूमि नापनेका एक यंत्र; मछली फँसानेकी वंसी, कांटा; शरीर; अंगुलित्राण। वि० कल्याणयुक्त; जिसकी तारीफ की गयी हो, प्रशस्त, प्रशंसित; कहा गया, वार-वार कहा गया; उत्तम; आहत। (फा०) वि० साठ। पु० शल्य; फंदा। स्त्री० निशाना; मछली पकड़नेकी लम्बी डोर। **–गीर–**वि० तीरंदाज़।

शस्तक–पु० (सं०) अंगुलित्राण। पु० (फा०) लिंग; शिश्न।

शस्ति–स्त्री० (सं०) प्रशंसा; स्तुति, स्तोत्र।

शस्त्र–पु० (सं०) (वेपन) हथियार; हाथमें रखकर प्रयोगमें लाया जानेवाला हथियार, तलवार आदि; औजार; स्तोत्र; कथन; कविता आदिका पाठ; लोहा। **–कर्म(न्)–**पु० फोड़े आदिके चीरने-फाड़नेका काम। **–कार,–कारक–**पु० शस्त्र-निर्माता। **–केतु–**पु० दे० 'शस्त्रांख्य'। **–कोष–**पु० शस्त्र रखनेका खाना, म्यान। **–०तरु–**पु० महामदनवृक्ष। **–क्रिया–**स्त्री० फोड़े आदिको चीरने-फाड़नेका काम। **–क्षार–**पु० सोहागा। **–गृह–**पु० जहाँ अनेक प्रकारके शस्त्र रखे जाते हों, शस्त्रागार। **–ग्रह–**पु० युद्ध। **–घात–**पु० तलवारका आघात। **–चिकित्सा–**स्त्री० शस्त्र द्वारा उपचार, शल्यविद्या, सर्जरी। **–चूर्ण–**पु० लोहेका चूरा। **–जीवी(विन्)–**वि० युद्ध ही जिसकी जीविका हो। **–त्याग–**पु० हथियार डाल देना, शस्त्रन्यास। **–धर,–धारी(रिन्),–भृत्–**पु० योद्धा, सैनिक। वि० शस्त्र धारण करनेवाला। **–निर्माणशाला–**स्त्री० (आर्डनैंस फैक्टरी) तोपें, गोले तथा शस्त्रादि तैयार करनेका कारखाना। **–न्यास–**पु० शस्त्रोंका परित्याग। **–पाणि–**पु०, वि० दे० 'शस्त्रधर'। **–पूत–**वि० शस्त्रों द्वारा रणभूमिमें निहत होनेके कारण जो पवित्र हो गया हो। **–प्रहार–**पु० शस्त्रकी चोट या आघात। **–मार्ज–**पु० सिकलीगर। **–वार्त्त–**वि० दे० 'शस्त्रजीवी'। **–विद्या–**स्त्री० शस्त्र चलानेका ज्ञान,

कौशल; धनुर्वेद । –वृत्ति–वि० जिसकी जीविका शस्त्र चलानेपर ही आश्रित हो । –शाला–स्त्री० शस्त्रगृह, शस्त्रागार । –शास्त्र –पु० दे० 'शस्त्रविद्या' । –हत–वि० शस्त्र द्वारा मारा गया (आदमी, जानवर आदि) । –हस्त–वि० शस्त्रधारी ।

शस्त्रांगा–स्त्री० (सं०) एक तरहका चूक ।

शस्त्राख्य–पु० (सं०) शस्त्रकेतु, पूर्वमें उदित होनेवाला एक प्रकारका केतु जिसके दिखाई देनेपर महामारी फैलती है; लोहा ।

शस्त्रागार–पु० (सं०) दे० 'शस्त्रगृह' ।

शस्त्राजीव–पु० (सं०) दे० 'शस्त्रजीवी' ।

शस्त्राभ्यास–पु० (सं०) युद्धकलाका अभ्यास ।

शस्त्रायस–पु० (सं०) लोहा, इस्पात ।

शस्त्रास्त्र–पु० (सं०) शस्त्र और अस्त्र, हाथमें लेकर और फेंककर मारनेके हथियार ।

शस्त्री–स्त्री० (सं०) छोटा शस्त्र, छुरी ।

शस्त्री(स्त्रिन्)–वि० (सं०) शस्त्रधारी, शस्त्रसे सुसज्जित । पु० सैनिक । –करण–पु० सेना तथा नागरिकोंको शस्त्रोंसे सज्जित करना ।

शस्त्रोपजीवी(विन्)–वि० (सं०) दे० 'शस्त्रजीवी' ।

शस्य–वि० (सं०) प्रशंसनीय; श्रेष्ठ, बढ़िया; काटकर गिराने योग्य । पु० नयी घास; फसल; अन्न, धान्य; वृक्षादिसे निकला हुआ फल, फूल आदि; योग्यता, गुण । –क्षेत्र–पु० अनाजका क्षेत्र । –घ्नी–स्त्री० चोरपुष्पी । –ध्वंसी(सिन्)–पु० तूनका पेड़ । वि० धान्यका नाश करनेवाला । –पाल,–रक्षक–पु० खेतकी रखवाली करनेवाला । –भक्षक–वि० अनाज खानेवाला । –मंजरी–स्त्री० गेहूँ आदिकी नयी बाल, कणिश । –मारी(रिन्) –पु० एक तरहका बड़ा चूहा । –वेद–पु० कृषिशास्त्र । –शाली(लिन्),–संपन्न–वि० धान्यसे परिपूर्ण । –संपद्–स्त्री० धान्यकी बहुलता । –संवर–पु० शालका वृक्ष, साखूका पेड़ । –हंता(तृ),–हा(हन्)–वि० फसल नष्ट करनेवाला । पु० एक दैत्य ।

शस्यक–पु० (सं०) तलवार; एक रत्न ।

शस्यागार–पु० (सं०) अन्न रखनेका स्थान, खलिहान ।

शस्याल–पु० (सं०) शमी वृक्षका एक भेद ।

शहंशा, शहंशाह–पु० (फा०) राजाओंका राजा, सम्राट् ।

शहंशाही–स्त्री० शहंशाहका भाव या कार्य; शाही रंगढंग; लेनदेनमें खरा व्यवहार; शहंशाहका पद । वि० शाही ढंगका, राजसी ।

शह–पु० (फा०) (शाहका लघु रूप) बादशाह । स्त्री० मदद; हिमायत; उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहको दी गयी किश्त; पतंगको धीरे-धीरे डोर पिलानेकी क्रिया, ढील । –कार –पु० दे० 'शाहकार' । –कारा–स्त्री० बदचलन, बदजबान स्त्री । –खर्च–वि० मुक्तहस्त; अत्यधिक खर्च करनेवाला । –चाल–स्त्री० शतरंजके बादशाहकी चाल जो कोई और मुहरा न रह जानेपर चली जाती है । –ज़ादा–पु० शाहका बेटा, राजकुमार । –ज़ादी–स्त्री० शाहकी बेटी, राजकुमारी । –ज़ोर–वि० अति बली । –ज़ोरी–स्त्री० बलवान् होना; जबरदस्ती । –तरा–पु० दे० 'शाहतरा' । –तीर–पु० पाटनके नीचे दी जानेवाली बड़ी कड़ी । –तूत–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ और उसका फल जो पकनेपर काफी मीठा होता है । –नगी–पु० शहना होनेका भाव; शस्यरक्षकका कार्य; चौकीदारको देनेके लिए वसूल किया जानेवाला कर । –नशीं–स्त्री० दे० 'शाहनशीं' । –पर–पु० पक्षीके डैनेका सबसे बड़ा पर । (मु० –०झाड़ना–पक्षीका डैनेको फैलाकर जोरसे हिलाना कि खराब और कमजोर पर झड़ जायँ ।) –बाज़ –पु० बड़ा बाज; बड़ी जातिका बाज । –बाला–पु० विवाहकी प्रायः सभी रस्मोंमें वरके साथ रहनेवाला छोटा लड़का जो आम तौरसे उसका छोटा भाई होता है । –बुलबुल–स्त्री० लाल देह और कालीगर्दनवाली बुलबुल । –मात–स्त्री० शतरंजमें बादशाहको ऐसी जगह किश्त देना कि उसके चलनेके लिए कोई घर न रह जाय और मात हो जाय; (ला०) निरुत्तर, चुप कर देनेवाली बात । (मु०–०करना–निरुत्तर, चुप कर देना) । –रग–स्त्री० दे० 'शाहरग' । –रुख़–स्त्री० शतरंजमें बादशाहको रुख (हाथी)की शह । –रुख़ी–स्त्री० बादशाहको ऐसे घरमें रखना जिससे रुखकी शह पड़े; सामनेकी चोट । –सवार–पु० कुशल घुड़सवार । –सवारी–स्त्री० अच्छी घोड़सवारी । मु० –देना–लड़ने-झगड़नेको उकसाना, उभारना; शतरंजमें बादशाहको किश्त देना; पतंगको डोर पिलाना, ढील देना ।

शहद–पु० (अ०) किंचित् लाली लिये हुए पीले या सफेद रंगका मीठा शीरा जो मधुमक्खियों और कुछ अन्य कीड़ों द्वारा संगृहीत पुष्परसका रूपांतर होता है, मधु । वि० अति मधुर । –आमेज़ –वि० (फा०) मधुर । –गुफ्तार–वि० मिष्टभाषी । –की छुरी –मीठी छुरी; जबानका मीठा, दिलका खोटा । –की मक्खी–मधुमक्खी; लोभी और पीछा न छोड़नेवाला आदमी । मु०–(जबानमें)–घुलना–मिठाससे भर जाना । (कानोंमें)–घोलना –अति मधुर, सुखद वचन बोलना । –लगाकर अलग हो जाना–झगड़ा लगाकर आप अलग हो जाना, दूरसे तमाशा देखना । –लगाकर चाटना–निरर्थक चीजको यत्नसे रखे रहना (व्यंग्य) ।

शहना–स्त्री० (फा०) नफीरी । पु० दे० 'शह्ना' ।

शहनाई–स्त्री० (फा०) मुँहसे फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा, नफीरी; दे० 'शह्नाई' ।

शहर–पु० (फा०) नगर । –ख़बरा–वि० शहरभरकी, घर-घरकी खबर रखनेवाला । –गश्त,–गिर्द–वि० शहरमें घूमनेवाला, पतरौल । –दार–पु० शहरका रहनेवाला, शहरी । –पनाह–स्त्री० परकोटा, नगरके रक्षार्थ बनायी हुई चहारदीवारी । –बंद –पु० जेलखाना; कैदी । –बदर–वि० निर्वासित (करना, होना) । –बशहर–अ० एकसे दूसरे और दूसरेसे तीसरे शहरतक; जगह-जगह । –बाश–पु० शहरका रहनेवाला, शहरी । –यार –पु० बादशाह; समकालीन बादशाहोंमें प्रमुख । –यारी–स्त्री० बादशाही; शाहाना दबदबा । –शमला–पु० अंधेरनगरी, वह स्थान जहाँ न्याय न हो । मु० –की दाई–घर-घरकी खबर रखनेवाली स्त्री ।

शहला–वि० (अ०) श्याम नयना; नर्गिस ।

शहवत–स्त्री० (अ०) कामना; भोगेच्छा; संभोगकी इच्छा; संभोग । –अंगेज़–वि० कामवर्धक । –(ते) कल्बी–स्त्री० भूख बढ़ जानेका रोग । –कुश–वि० इंद्रिय दमन करनेवाला । –परस्त–वि० कामुक, ऐयाश । –परस्ती–स्त्री० ऐयाशी, कामुकता ।

शहादत–स्त्री० (अ०) गवाही, साक्ष्य; खुदाकी राहमें शहीद होना; धर्मयुद्धमें लड़ते हुए मारा जाना; वध । –गाह–स्त्री० शहीद होनेका स्थान । –नामा–पु० वह पुस्तक जिसमें इमाम हुसैनकी शहादतका वर्णन हो; कपड़ेपर लिखा हुआ शहादतका कलमा जिसे मुसलमान मुर्देके कफनमें रख देते हैं । –(ते) हक़्क़ा–स्त्री० सच्ची गवाही; सच्चा बलिदान; सत्यके लिए कुर्बानी ।

शहाना–वि० (फा०) ('शाहाना'का लघु रूप) राजसी, राजोचित; सुंदर, बढ़िया । पु० दूल्हेको पहनाया जानेवाला लाल जोड़ा; ब्याहका एक गीत; एक गत; संपूर्ण जातिका एक राग । –कान्हड़ा–पु० कान्हड़ा रागका एक भेद । –जोड़ा–पु० दूल्हेका सुर्ख जोड़ा; सुर्ख पोशाक । –वक्त–पु० शामका वक्त; सुहावना समय ।

शहानी–वि० स्त्री० दे० 'शहाना' । –चूड़ियाँ–स्त्री० लाल रंगकी सुंदर चूड़ियाँ । –मेंहदी–स्त्री० गहरे रंगवाली मेंहदी ।

शहाब–पु० (फा०) गहरा लाल रंग; कुसुमको भिगोकर निकाला जानेवाला गहरा लाल रंग; कुत्तेका पिल्ला; दो भाग पानी मिला हुआ दूध ।

शहाबी–वि० शहाबके रंगका, लाल । स्त्री० एक तरहकी सुर्ख महताबी ।

शहाबुद्दीनग़ोरी–पु० गजनीका शासक जिसने ११९३ ई० में महाराज पृथ्वीराजको हराकर हिंदुस्तानमें सच्चे अर्थमें मुसलिम साम्राज्यकी नींव डाली ।

शहामत–स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता; वीरता; प्रसन्नता; फुर्ती; जोर ।

शही–स्त्री० बादशाही; मिठाई ।

शहीद–वि० (अ०) जो खुदाकी राहमें धर्मके लिए लड़ते हुए मारा जाय; हत, कतल किया हुआ; देशके लिए, कर्तव्यके लिए अपनेको बलि, कुरबान कर देनेवाला । –(दे)इश्क़–पु० प्रेमके लिए प्राण

उत्सर्ग करनेवाला । **–करबला**–पु० इमाम हुसैन । **–मर्द**–पु० वह व्यक्ति जो खुदाकी राहमें, धर्मके नामपर लड़ते हुए मरा हो; घोड़ा । **–(दे)वतन**–पु० देशके लिए प्राण न्यौछावर करनेवाला । –ई० ।

शहीदी–वि० शहीद होनेको तैयार; लाल । **–जत्था**–पु० शहीद होनेको तैयार जनोंका जत्था । **–तरबूज**–पु० तरबूजकी एक बढ़िया किस्म जिसके छिलकेतक सुर्ख होते हैं ।

शहीम–वि० (अ०) मेदुर; अधिक चरबीवाला ।

शहीर–वि० (अ०) प्रसिद्ध, मशहूर ।

शहीह–वि० (अ०) कृपण, कंजूस ।

शह्ना–पु० (अ०) चौकीदार, कोतवाल; फसलकी रखवाली करनेवाला; लगान वसूल करनेवाला सरकारी कर्मचारी ।

शह्नाई–स्त्री० बंदोबस्त; कोतवालका काम; रक्षण; चौकीदारी ।

शांकर–पु० (सं०) शंकराचार्यके मत, संप्रदायका अनुयायी; वृष, बैल, बरधा, साँड़; आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिपति शंकर हैं; एक छंद । वि० शिव-संबंधी; शंकराचार्य-संबंधी ।

शांकरि–पु० (सं०) कार्तिकेय; गणेश; आग ।

शांकरी–स्त्री० (सं०) शिवसूत्र; शंकरमिश्रका भाष्य ।

शांकुची–स्त्री० (सं०) शकुचा मछली ।

शांख–पु० (सं०) शंख-ध्वनि । वि० शंख-निर्मित, शंखका; शंख-संबंधी ।

शांखायन–पु० (सं०) एक ऋषि जिन्होंने गृह्य और श्रौत सूत्र तथा कौशीतकी ब्राह्मण और उपनिषद्का निर्माण किया ।

शांखारि–पु० (सं०) शंखका व्यापार करनेवाली एक जाति ।

शांखिक–वि० (सं०) शंखनिर्मित; शंख-संबंधी । पु० शांखारि जाति; शंखवादक ।

शांख्य–वि० (सं०) दे० 'शांख' ।

शांगुष्ठा–स्त्री० (सं०) गुंजा ।

शांचा–स्त्री० (सं०) शाकका एक भेद ।

शांडाकी–स्त्री० (सं०) एक जानवर ।

शांडिक–पु० (सं०) गिरगिट जैसा एक जंतु, साँड़ा ।

शांडिल्य–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि जिन्होंने एक स्मृतिग्रंथका निर्माण किया; एक गोत्रका नाम; उक्त गोत्रमें उत्पन्न व्यक्ति; बेलका पेड़; अग्निका एक रूप या प्रकार ।

शांत पापं–अ० (सं०) 'पाप शान्त हो', किसी बड़ेके क्रोधसे त्राण पानेके लिए इस पदका प्रयोग होता था ।

शांत–वि० (सं०) शांतियुक्त; मौन, चुप; निःशब्द, सुनसान; धीर, स्थिरमना, अचंचल, अनुद्वेगशील; श्रांत, थका हुआ; स्थित, रुका हुआ; शमित, मिटा हुआ; संतुष्ट; जीवनके लक्षणोंसे हीन, मृत; सांसारिकतासे निवृत्त; इंद्रियोंको दमित करने या जीतनेवाला; पूत; शुभ; उत्साहहीन, अप्रयत्नशील, शिथिल; वशमें किया हुआ; शिष्ट, सौम्य प्रकृतिवाला, विनम्र; समाप्त, बुझा हुआ; क्रोधादिसे निवृत्त, मनोविकारहीन, स्वस्थमना; किसी घटना, किसी बात, किसी मनोभाव आदिसे प्रभावित न होनेवाला । पु० साहित्यशास्त्र-वर्णित नौ रसोंमेंसे एक रस (इसका स्थायी भाव 'निर्वेद' है); जितेंद्रिय योगी, विरागी; तुष्टीकरण । **–क्रोध**–वि० जिसका क्रोध शांत हो गया है । **–गुण**–वि० मृत । **–चेता(तस्)**–वि० स्थिरमना । **–मना(नस्)**–वि० जिसका मन शांत हो । **–रस**–पु० एक काव्यरस; दे० 'शांत' ।

शांतता–स्त्री० (सं०) शांति ।

शांतनव–पु० (सं०) शांतनुके पुत्र, भीष्म ।

शांतनु–पु० (सं०) प्रतीपके पुत्र, भीष्मके पिता (ये चंद्रवंशी थे और द्वापर युगमें हुए थे); कर्कटी, ककड़ी; एक कदन्न ।

शांता–स्त्री० (सं०) दशरथकी कन्या जिसे अंगराज लोमपादने गोद लिया और जो शृंगी ऋषिको ब्याही गयी थी ।

शांति–स्त्री० (सं०) (पीस) निःशब्दता, सूनापन; धीरता, मनकी स्थिरता, अनुद्वेगशीलता; सांत्वना, तसल्ली; काम, क्रोध, रोग, पीड़ा, अग्नि, ताप आदिका शमन; आराम, चैन, सुख; मृत्यु; जितेंद्रियता; शिष्टता, सौम्यता; क्रोधादि मनोविकारोंसे निवृत्ति, मनकी स्वस्थता, सांसारिकतासे विराग; विराम; दोषसे बरी होना; क्षुधा-तृप्ति; सुरक्षा; दुर्गा; सौभाग्य; युद्धादिका रुक जाना या न होना; अनिष्ट, अमंगल आदिका पूजा, व्रत, यज्ञ आदि द्वारा शमन (जैसे ग्रह-शांति आदि); दुर्गा । **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० शांति करने, लानेवाला । **–कर्म(न्),–कार्य**–पु० दे० 'शांतिक' । **–कलश**–पु० शांतिके लिए स्थापित कलश । **–काम**–वि० शांतिका इच्छुक । पु० शांतिकी इच्छा । **–गृह**–पु० यज्ञके अंतमें शांति-जलसे स्नान करनेका घर; विश्रामगृह । **–घट**–पु० दे० 'शांतिकलश' । **–जल,–सलिल**–पु० यज्ञ, पूजा आदिमें सुख, शांतिदायक मंत्रपूत अवशिष्ट जल । **–द,–दाता(तृ),–दायक,–दायी(यिन्)**–वि० शांति देनेवाला । **–नाथ**–पु० एक जैन तीर्थंकर । **–निकेतन**–पु० शांतियुक्त, शांतिदायक गृह, स्थान; विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा बंगाल प्रांतके बोलपुर नामक स्थानमें स्थापित एक अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्यासंस्था । **–पर्व(न्)**–पु० 'महाभारत'का बारहवाँ पर्व (इसमें युद्धकी विभीषिकासे तप्त युधिष्ठिरके मनकी शांतिके लिए ज्ञान, उपदेश आदिके प्रसंग वर्णित हैं) । **–पात्र**–पु० यज्ञ, पूजा आदिके अवसरोंपर ग्रह, अमंगल आदिकी शांतिके लिए जलयुक्त पात्र । **–पूर्ण सहअस्तित्व**–पु० सब राष्ट्रोंका परस्पर शांतिपूर्वक रहनेका सिद्धांत (पीसफुल को-एग्ज़िस्टेंस) । **–प्रद**–वि० शांतिदायक । **–प्रिय**–वि० (वह व्यक्ति) जिसे शांति प्रिय हो, शांतिका अभिलाषी । **–भंग**–पु० शांति-नाश, उपद्रवका होना; शासन, अनुशासन आदिका न माना जाना, विघ्नोत्पादन (ब्रीच ऑफ़ पीस) । **–रक्षक**–पु० अमन कायम रखनेवाला । **–रक्षा**–स्त्री० उपद्रव-निवारण । **–वाचन**–पु० प्रेतबाधा, रोग आदिकी शांतिके लिए यज्ञ, पूजा आदिके अवसरोंपर मंत्र-पाठ । **–वाद**–पु० (पैसिफिज्म) विश्वमें शांति बनाये रखने, किसी भी स्थितिमें युद्ध न होने देनेपर जोर देनेका सिद्धांत या इसके लिए किया जानेवाला आंदोलन । **–वादी**–वि० (पैसिफिस्ट) शांतिवादके सिद्धांतका अनुयायी । **–संधि**–स्त्री० (पीसट्रीटी) युद्धरत राष्ट्रोंके बीच होनेवाली संधि । **–सद्म(न्)**–पु० दे० 'शांतिगृह' । **–सेना**–स्त्री० शांतिस्थापनार्थ सेना (पीसफोर्स) । **–स्थापन**–पु० अमन कायम करना । **–होम**–पु० अमंगल आदिके निवारणार्थ होम, यज्ञ आदि ।

शांतिक–वि० (सं०) शांति-संबंधी; शांतिकर । पु० विपद्, अमंगल, दुष्ट ग्रहादिके निवारणार्थ होनेवाला पूजापाठ, यज्ञ इत्यादि कर्म, शांतिकर्म ।

शांतिमय–वि० (सं०) शांतियुक्त, शांतिपूर्ण; शांतिगुणयुक्त; निर्विघ्न ।

शांत्वति–स्त्री० (सं०) ब्राह्मणयष्टिका ।

शांब–पु० (सं०) जांबवतीसे उत्पन्न कृष्णका पुत्र ।

शांबर–वि० (सं०) शंबर मृग-संबंधी; शंबर राक्षस-संबंधी । पु० लोधका पेड़ । **–शिल्प**–पु० इन्द्रजाल, जादू ।

शांबरिक–पु० (सं०) ऐंद्रजालिक, जादूगर ।

शांबरी–स्त्री० (सं०) इंद्रजाल, मायाविद्या, जादू (शंबर दैत्यने इसका निर्माण किया था, अतः इसे 'शांबरी' कहते हैं); ऐंद्रजालिका, जादूगरनी ।

शांबरी(रिन्)–पु० (सं०) चंदनका एक प्रकार; लोध; मूसाकानी लता ।

शांबविक–पु० (सं०) शांखिक, शंख-व्यवसायी ।

शांबुक, शांबूक–पु० (सं०) घोंघा ।

शांभर–पु० (सं०) दे० 'साँभर' ।

शांभव–वि० (सं०) शंभु-संबंधी । पु० शंभुका पुत्र; शंभुका उपासक, शैव; कपूर; गुग्गुल; विषका एक प्रकार; शिवमल्लीका पौधा; देवदारु वृक्ष ।

शांभवी–स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा; नीली दूब; ब्रह्मरंध्र ।

शाइक़–वि० (अ०) इच्छुक, उत्कंठित; व्यसनी ।

शाइक–वि० (अ०) कांटेदार, कांटोंवाला ।

शाइर–पु० (अ०) कवि । (स्त्री० शाइरा) ।

शाइरी–स्त्री० (अ०) कविता ।

शाइस्तगी–स्त्री० (फा०) शिष्टता, सभ्यता; विनय; भलमनसी ।

शाइस्ता–वि० (फा०) शिष्ट, सभ्य, विनीत, सुशील; सीधा, शरारत न करनवाला (–घोड़ा)। **–ख़ाँ**–पु० दाक्षणका सूबेदार जिसने औरंगजेबकी आज्ञासे शिवाजीपर चढ़ाई की और उनके हाथों घायल होकर भाग गया।

शाकंट–पु० (स०) बथुआ।

शाकंभरा–स्त्रा० (सं०) दुर्गा; शांभरी (साँभर) नामक नगर।

शाकंभरीय–वि० (सं०) साँभर झीलसे उत्पन्न। पु० साँभर नमक।

शाक़–वि० (अ०) भारी; दूभर; कष्टदायक (काम)।

शाक–पु० (अ०) सिपाही; शक करनेवाला। पु० (सं०) खाद्य जड़, डंठल, पत्तां, फूल, फल आदि जो प्रायः उबाल, पकाकर खाये जाते हैं, साग़, तरकारां; एक वृक्ष, सागौनका पेड़; शिरीष वृक्ष; भोजपत्र; शाकद्वीप; शकराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित संवत्; एक राजा; बल, शक्ति, जीवट। वि० शक जातिसे संबद्ध; शक राजा संबंधी। **–कलंबक**–पु० प्याज; लहसुन। **–काल**–पु० शक संवत्। **–चुक्रिका**–स्त्री० इमली। **–तरु,–द्रुम**–पु० सागौन का पेड़। **–दीक्षा**–स्त्री० केवल शाक खाकर रहना। **–द्वीप**–पु० दे० एक द्वीप। **–द्वीपीय**–पु० शक द्वीपका निवासी; ब्राह्मणोंकी शाखा। **–पण**–पु० मुट्ठीभर साग; मुट्ठीभरका परिमाण। **–पत्र**–पु० शिग्रु वृक्ष, सहिजनका पेड़। **–बालेय**–पु० ब्रह्मयष्टि। **–भक्ष**–पु० वह व्यक्ति जो शाक ही खाता हो, मांस न खाता हो। वि० केवल शाक खानेवाला। **–योग्य**–पु० धान्यक, धनिया। **–राज**–पु० बास्तूक, बथुआ। **–वल्ली**–स्त्री० लता, करंज। **–वाट,–वाटक**–पु०,**–वाटिका**–स्त्री० सब्जीकी बाड़ी। **–विदक**–पु० बेलका पेड़। **–विल्व,–विल्वक**–वार्ताकु, भंटा, बैंगन। **–वीर**–पु० वास्तूक शाक, बथुआ; जीवशाक; गदहपूरना। **–वृक्ष**–पु० सागौनका पेड़। **–शाकट,–शाकिन**–पु० शाकका खेत। **–शाल**–पु० बकायनका वृक्ष। **–श्रेष्ठ**–पु० दे० 'शाकवीर'। **–श्रेष्ठा**–स्त्री० जीवंती; डोड़ी क्षुप; बैंगन; पेठा।

शाकट–वि० (सं०) शकट-संबंधी; गाड़ीपर लदा हुआ या जाता हुआ। पु० गाड़ीमें जुता पशु; गाड़ीमें जाती हुई वस्तु; श्लेष्मांतक वृक्ष; धव वृक्ष; खेत। **–पोतिका**–स्त्री० पोयका पौधा।

शाकटायन–पु० (सं०) शकटात्मज; आठ प्राचीन वैयाकरणोंमेंसे एक जिसका उल्लेख पाणिनि तथा यास्कने प्रायः किया है।

शाकटिक–वि० (सं०) दे० 'शाकट'।

शाकटीन–पु० (सं०) बीस तुलाकी एक तौल; गाड़ीमें लदी हुई वस्तु। वि० दे० 'शाकट'।

शाकरी–स्त्री० (सं०) दे० 'शाकारी'।

शाकल–वि० (सं०) शकल या टुकड़ेसे संबद्ध। पु० ऋग्वेदकी एक शाखा; इस शाखाके अनुयायी (प्रायः बहुवचन); एक द्वीपका नाम; हवन-सामग्री।

शाकलि, शाकली(लिन्)–पु० (सं०) मछली।

शाकलिक–वि० (सं०) शकल-संबंधी, टुकड़े या अंशसे संबंध रखनेवाला, शाकल।

शाकल्य–पु० (सं०) पाणिनि द्वारा उल्लिखित एक वैयाकरण (कहा जाता है कि इन्होंने ही पहले-पहल ऋग्वेदका पद-पाठ व्यवस्थित किया था)।

शाकांग–पु० (सं०) काली मिर्च।

शाका–स्त्री० (सं०) हरीतकी, हड़।

शाकाम्ल–पु० (सं०) वृक्षाम्ल; इमली। **–भेदन**–पु० चुक्र या चूक।

शाकारी–स्त्री० प्राकृत भाषाका एक निम्न रूप, प्रकार।

शाकाष्टका, शाकाष्टमी–स्त्री० (सं०) फाल्गुनके कृष्ण पक्षमें पड़नेवाली अष्टमी (इस तिथिको पितरोंकी तुष्टिके लिए शाकदान किया जाता है)।

शाकाशन–वि० (सं०) शाकाहारी।

शाकाहार–पु० (सं०) पत्र, फूल, फल, अन्न आदि खाद्य पदार्थ अथवा इनका भोजन।

शाकाहारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'शाकभक्ष' (वेजीटेरियन)।

शाकिन–पु० (सं०) खेत, शाकट।

शाकिनी–स्त्री० (सं०) शाकयुक्त भूमि, साग बोयी हुई जमीन; दुर्गाकी एक अनुचरी, डाकिनी; चुड़ैल।

शाकिर–वि० (अ०) शुक्र करनेवाला, कृतज्ञ; संतोष करनेवाला। **–(रे) नेमत**–पु० ईश्वरको उसकी नेमतोंके लिए धन्यवाद देनेवाला; कृतज्ञ।

शाकी–वि० (अ०) शिकायत करनेवाला; फरियाद करनेवाला; चुगलखार।

शाकुंतल, शाकुंतलेय–वि० (सं०) शकुंतला-संबंधी। पु० शकुंतलासे संबद्ध कालिदासकृत 'अभिज्ञान शाकुंतल' नाटक; शकुंतलाका पुत्र भरत।

शाकुंतिक–पु० (सं०) चिड़ीमार, बहेलिया।

शाकुन–वि० (सं०) पक्षियों-संबंधी; पक्षियोंका; शकुन(सगुन) सबंधी। पु० पक्षा आदिके रूप, लक्षण आदि देखकर मनुष्यके शुभाशुभका निश्चय करानेवाला शास्त्र; सगुन बतानेवाला; पक्षी पकड़नेवाला।

शाकुनि, शाकुनी–पु० (सं०) बहेलिया; शकुनज्ञ; एक प्रेत।

शाकुनिक–पु० (स०) चिड़ीमार, बहेलिया, व्याध; सगुन बतानेवाला, शकुनज्ञ; शकुन-विचार।

शाकुनेय–पु० (सं०) छोटा उल्लू; वृकासुर। वि० पक्षि-संबंधी।

शाकुलिक–पु० (सं०) मल्लाह, मछुवा; मछलियोंका ढेर। वि० मछला-सबंधी।

शाकेक्षु–पु० (सं०) ईखका एक प्रकार।

शाकोल–पु० (सं०) एक लता।

शाक्कर–पु० (सं०) दे० 'शाक्वर'।

शाक्त–वि० (सं०) शक्ति-संबंधी। पु० वह जो शक्तिकी उपासना करता हो, दुर्गा, काली आदि देवियोंका उपासक; तंत्र-संप्रदायमें दीक्षित (शाक्तोंके अनेक संप्रदाय हैं। ये प्रायः वाममार्गी होते हैं और अपने संप्रदायमें विहित मद्य, मांस आदिको अग्राह्य नहीं मानते। नारीको ये शक्तिका प्रतीक मानते हैं और उसकी पूजा और उसके सेवनमें रत रहते हैं)।

शाक्तागम–पु० (सं०) शाक्त तंत्र, तंत्र-शास्त्र।

शाक्तिक–पु० (सं०) शाक्त, शक्तिका उपासक; शक्ति, भाला नामक हथियार रखने, चलानेवाला व्यक्ति। वि० शाक्त-सम्बन्धी।

शाक्तीक–पु० (सं०) शक्ति, भाला धारण करनेवाला सैनिक, भालाबरदार। वि० भाला-संबंधी।

शाक्तेय, शाक्त्य–पु० (सं०) शक्तिकी उपासना करनेवाला व्यक्ति।

शाक्य–पु० (सं०) एक प्राचीन क्षत्रियकुल जिसमें गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे; बुद्धदेव; बुद्धके पिता शुद्धोदन; बौद्ध भिक्षु। **–केतु,–पुंगव**–पु० बुद्ध। **–पुत्रीय**–पु० बौद्ध भिक्षु। **–भिक्षु,–भिक्षुक**–पु० बौद्ध सन्न्यासी। **–मुनि,–सिंह**–पु० बुद्धदेव।

शाक्र–वि० (सं०) शक्र, इंद्र-संबंधी; इंद्रार्पित। पु० इंद्रदेवके लिए दिया गया हवि आदि; ज्येष्ठा नक्षत्र।

शाक्री–स्त्री० (सं०) इंद्रपत्नी; शक्र-तुल्य पराक्रमवाली दुर्गा।

शाक्वर–पु० (सं०) वृष, बैल; एक रीति या संस्कार।

शाख–पु० (सं०) कार्त्तिकेय; करंज; भांग।

शाख़–स्त्री० (फा०) शाखा, डाली; पौधेकी कलम; सींग; दूषित रक्त निकालनेके लिए सींगका बना एक उपकरण; नदी या नहरकी मुख्य धारासे निकली हुई छोटी धारा; टुकड़ा; फाँक; अंश; (ला०) वंश; कमानकी लकड़ी; एक पकवान जो मैदेके खमीरमें शकर मिलाकर बनाया जाता है। **–चा**–पु० छोटी शाख; तुहमत, मिथ्यारोप। **–० बंदी**–स्त्री० पेड़में कलम लगाना; तुहमत लगाना। **–दरशाख़**–वि० दूरतक फैला हुआ, शाखा-प्रशाखाओंवाला। **–बदीदार**–वि० घमण्डी, उद्दण्ड। **–सार**–पु० शाखाप्रचुर वृक्षोंका झुरमुट। वि० बहुत-सी शाखाओंवाला। **–(ख़े) दरिया**–स्त्री० नदीकी छोटी धारा जो मुख्य धारासे अलग होकर दूसरी ओर बहती जाय। **–दार**–वि० शाखाओंवाला; सींगवाला (पशु)। मु० **–निकलना**–टहनी निकलना; सींग पैदा होना; ऐब निकलना; नयी बात पैदा होना। **–निकालना**–टहनी निकालना; ऐब निकालना, नुक्ताचीनी करना; नयी बात पैदा करना। **–लगना**–टहनी लगना; पख लगना; ऐब होना।

शाख़साना–पु० (फा० 'शाख़शाना') झगड़ा, बहस; पख, दोष; वातका पहलू; ईरानमें फकीरोंका एक फिरका जो अपने आपको घायल कर लेनेकी धमकी देकर लोगोंसे पैसे लेता है।

शाखा–स्त्री० (सं०) विटप, पेड़की डाल; दर्वाजेकी चौखट; घरका किसी ओर निकला कोना; किसी दुकान या बैंककी शाखा, मूलवस्तुका दूरस्थ अंग; बाहु; शरीरावयव; ग्रंथपरिच्छेद, अध्याय; पक्षांतर, प्रतिपक्ष; किसी वस्तु आदिका अंग, भाग, भेद; किसी दर्शन, शास्त्र आदिका भेद, संप्रदाय (स्कूल); वेदकी संहिताओंका पदपाठ और स्वरकी दृष्टिसे व्यवस्थित करनेवाले किसी ऋषिके नामपर उसके वंशजों अथवा शिष्यों द्वारा परंपराके रूपमें चलाया जानेवाला संप्रदाय। **–कंट**–पु० थूहरका पेड़। **–कार्यालय**–पु० किसी व्यापारिक संस्था या अन्य संस्थाका वह छोटा कार्यालय जो प्रधान कार्यालयके मातहत या उसके नियंत्रणमें हो। **–चंक्रमण**–पु० एक डालसे दूसरी डालपर कूदना; हाथमें लिये एक कामको पूरा किये बिना ही दूसरा काम करने लगना, कोई कार्य अव्यवस्थित रूपसे करना। **–चंद्रन्याय**–पु० अवास्तविक वस्तु, घटना आदिको सत्य मान लेनेके अवसरपर कही जानेवाली एक उक्ति (किसी विशेष स्थानसे देखनेपर ज्ञात होता है कि चंद्र वृक्षकी शाखापर ही है, मगर स्थिति ऐसी होती नहीं। इसी स्थितिके आधारपर यह उक्ति बनी है)। **–दंड**–पु० अपनी शाखाके प्रति विश्वासघात करनेवाला ब्राह्मण। **–नगर,–नगरक**–पु० उपनगर। **–पित्त**–पु० हाथ-पैरमें जलन पैदा करनेवाला एक रोग। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० दे० 'शाखानगर'। **–भृत्**–पु० वृक्ष। **–मृग**–पु० वानर; गिलहरी। **–रंड**–पु० अन्यशाखक, वेदकी अपनी शाखाको छोड़कर दूसरेकी शाखाका अध्येता। **–रथ्या**–स्त्री० बड़ी सड़कसे निकली हुई छोटी सड़क। **–लंबी**–वि० वृक्षकी शाखापर लटकनेवाला। पु० बन्दर। **–वात**–पु० एक प्रकारका वातरोग। **–शिफा**–स्त्री० पेड़की डालसे निकलकर जमीनकी ओर बढ़नेवाली जटा (यह जमीनमें धँसकर कभी स्वतंत्र पेड़का रूप भी धारण कर लेती है; जैसे वटवृक्षकी जटा, बरोह)।

शाख़ा–पु० (फा०) टहनी, शाखा; सींग; सींगकी शक्लका प्याला; वह लकड़ी जिसमें अपराधीका सिर और हाथ देकर उसे दंड देते हैं। वि० (समासमें) शाखोंवाला (पंजशाखा)।

शाखाम्ला–स्त्री० (सं०) इमली।

शाखाल–पु० (सं०) वानीर वृक्ष, जलमें उत्पन्न होनेवाला बेंत।

शाखी(खिन्)–वि० (सं०) शाखाओंवाला। पु० वृक्ष; वेद; वेदकी किसी शाखाका अधिकारी, अनुयायी; तुर्क; पीलू वृक्ष।

शाखोच्चार–पु० (सं०) विवाह-मंडपमें पाणि-ग्रहणके अवसरपर वर तथा कन्या-पक्षके पुरोहितों द्वारा अपने-अपने यजमानकी कुलीनताके ज्ञापनार्थ उनकी वंशावलीका बखान।

शाखोट, शाखोटक–पु० (सं०) सिहोरका पेड़।

शाख्य–वि० (सं०) शाखा-संबंधी; शाखाके सदृश।

शागिर्द–पु० (फा०) गुरुसे विद्या या शिक्षा प्राप्त करनेवाला, विद्यार्थी, शिष्य। **–पेशा**–पु० किसी दफ्तर या विभागके (मातहत) कर्मचारियोंकी समष्टि, अमला, नौकर-चाकर; नौकर-चाकरके रहनेके मकान जो बँगलों आदिमें एक किनारे या पास ही बना दिये जाते हैं। **–(र्दे)–रशीद**–पु० प्यारा शिष्य जिसे सारे भेद बता दिये हों।

शागिर्दाना–वि० (फा०) शिष्योचित, शागिर्दकी तरह। पु० गुरुदक्षिणा।

शागिर्दी–स्त्री० शागिर्द होना, शिष्यता। मु० **–करना**–शागिर्द बनकर सीखना, शिष्य होना।

शागिल–वि० (अ०) मना करनेवाला, निषेधक; संलग्न।

शाचि, शाचिव–पु० (सं०) जौका दलिया। वि० प्रबल; प्रसिद्ध।

शाज़–वि० (अ०) दुर्लभ, कमयाब; अनोखा। **–(ज़ो) नादिर**–अ० कभी-कभी, यदा-कदा।

शाट, शाटक–पु० (सं०) कपड़ेका टुकड़ा; वस्त्र, पोशाक; साया।

शाटिका, शाटी–स्त्री० (सं०) साड़ी; वस्त्र।

शाट्यायन–पु० (सं०) एक मुनि; यज्ञकर्मके दोषकी शांतिके लिए किया गया एक होम।

शाठ्य–पु० (सं०) शठता; छल; छद्म। **–ग्रंथि**–स्त्री० दुष्टताके उद्देश्यसे की जानेवाली साँठगांठ (कोल्यूज़न)।

शाड्वल–पु० (सं०) दे० 'शाद्वल'।

शाण–पु० (सं०) सान, एक प्रकारका कृत्रिम पत्थर जिसपर रगड़कर हथियार, औजार आदिकी धार तेज की जाती है; सन-(शण)का बना वस्त्र; कसौटी; चार माशेकी एक तौल; करपत्र, आरा। वि० सनका बना हुआ। **–वास**–पु० सनका बना वस्त्र पहननेवाला; जैनोंका एक अर्हत्।

शाणक–पु० (सं०) सनका बना वस्त्र।

शाणाजीव–पु० (सं०) शाणपर काम करके अपनी जीविका चलानेवाला व्यक्ति, हथियारों, औजारों आदिकी सफाई, उन्हें तेज करनेवाला व्यक्ति, अस्त्र-मार्जक।

शाणाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) सान धरनेका पत्थर; कसौटी।

शाणि–स्त्री० (सं०) पट्टवृक्ष, पटुआ।

शाणित–वि० (सं०) जो तेज या तीक्ष्ण किया गया हो, सान रखा हुआ; कसौटीपर कसा हुआ।

शाणी–स्त्री० (सं०) सनके रेशोंसे बना वस्त्र; टाट; तंबू; छिद्रमय वस्त्र, फटी पोशाक; उपनयन संस्कारके अवसरपर ब्रह्मचारीको पहननेके लिए दिया जानेवाला सनका बना वस्त्र; सान; कसौटी; आरा; चार माशेकी तौल; हाथों और आँखोंसे किया जानेवाला इशारा।

शाणोपल–पु० (सं०) सान धरनेका पत्थर।

शात–वि० (सं०) निशित, तेज किया हुआ; पतला; दुबला, कमजोर; पतित; सुंदर, सुखी; दीप्तिशाली। पु० धतूरा; सुख; आनंद, प्रसन्नता। **–पीरु**–पु० मल्लिका पुष्पका एक भेद। **–ला**–स्त्री० चर्मकषा नामक वृक्ष, दे० 'सातला'।

शातकर्णि–पु० (सं०) एक ऋषि।

शातकुंभ–पु० (सं०) कंचन; धतूरा; करवीर वृक्ष।

शातकौंभ–वि० (सं०) स्वर्णनिर्मित। पु० स्वर्ण।

शातक्रतव–पु० (सं०) इंद्रधनुष्।

शातन–पु० (सं०) तीक्ष्ण, तेज करना; गिरवाना; कटवाना; पातन; छीलना, तराशना, लकड़ी रँदना; काटना, उच्छेदन, विभाजन; क्षीण होना; मुरझाना, नष्ट होना।

शातपत्रक–पु०, **शातपत्रकी**–स्त्री० (सं०) ज्योत्स्ना, चंद्रप्रकाश।

शातभिष–वि० (सं०) शतभिषा नक्षत्रमें उत्पन्न।

शातभीरु–पु० (सं०) एक तरहकी मल्लिका, मदनमाली।

शातवाहन–पु० (सं०) दे० 'शालिवाहन'।

शातातप–पु० (सं०) 'स्मृति' निर्माता एक ऋषि।

शातिन–वि० (अ०) दुराचारी।

शातिर–वि० (अ०) चालाक, काइयाँ। पु० चोर, गठकतरा; पक्का चोर; शतरंज खेलनेवाला; दूत। **–ज़ादा**–पु० तेज और फुर्तीला नौकर।

शातोदर–वि० (सं०) दुबला-पतला; क्षीण कटि।

शातोदरी–स्त्री० (सं०) क्षीण कटिवाली औरत।

शात्रव–(सं०) शत्रुता, दुश्मनी, शत्रुसमूह, दुश्मनोंका गिरोह। वि० शत्रु-संबंधी।

शाद–पु० (सं०) नयी, हरी घास, तृण, दूब; कीचड़। वि० (फा०) प्रसन्न, हर्षयुक्त; पूर्ण; भरा हुआ। **–काम**–वि० सफल; समृद्ध। **–कामी**–स्त्री० सफलता; समृद्धि; खुशी। **–ख़्वार**–वि० धनवान; बेरोकटोक शराब पीनेवाला। **–गून**–स्त्री० गायिका; गद्दा तोशक। **–बाश**–(पद) खुश रहो। **–मान**–वि० खुश, प्रसन्न। **–० दिल**–वि० प्रसन्न चित्त; आनंदित।

शादा–स्त्री० (सं०) ईंट।

शादाब–वि० (फा०) सींचा हुआ; सुसिक्त; हरा-भरा।

शादाबी–स्त्री० (फा०) सुसिक्त, हरा-भरा होना।

शादियाना–पु० (फा०) ब्याहमें बजायी जानेवाली नौबत; खुशीका बाजा; ब्याह या खुशीके मौकोंपर गाया जानेवाला गीत; बधावा; किसानों द्वारा शादीके अवसरपर जमींदारको दी जानेवाली रकम।

शादी–स्त्री० (फा०) खुशी; हर्षोत्सव; ब्याह; जन्मोत्सव

(स्त्री०)। **–सर्ग**–स्त्री० हर्षातिरेकसे होनेवाली मृत्यु। वि० हर्षातिरेकसे मरनेवाला। मु०–**रचाना**–ब्याहका सामान, आयोजन करना।

शाद्वल–वि० (सं०) नयी, हरी घाससे युक्त, नवतृणबहुल, नवतृणाच्छादित; हरा। पु० घासका मैदान, हरित भूमि, गोचारणभूमि।

शाद्वलाक्ष–पु० (सं०) एक हरा कीड़ा।

शान–पु० (सं०) शाण; निकष, कसौटी। **–पाद**–पु० चंदन रगड़नेका पत्थर; पारियात्र पर्वत।

शान–स्त्री० (फा०) गौरव, बड़प्पन; दबदबा; ताकत, कुदरत (खुदाकी शान); प्रतिष्ठा (शान घटना); ठाट; ठसक; आन, अंदाज; रूप, शक्ल; अवसर। **–गुमान**–पु० दे० 'सानगुमान'। **–शौकत**– **–दार**–वि० शानवाला, भड़कीला, भव्य, सुंदर। **–शौकत**–ठाट-बाट। –(**ने**)**नज़ल**–स्त्री० कुरानकी किसी आयतके उतरनेका अवसर। मु० **–बरसना**–गौरव, दबदबा प्रकट होना। (**किसीकी**)**–में–के** विषयमें (की शानमें गुस्ताखी करना)। **–में बट्टा लगना**–प्रतिष्ठा घटना, हेठी होना।

शाना–पु० (फा०) मोढ़ा, कंधा; मोढ़ेकी हड्डी; कंघी, जुलाहोंका कंघा। मु०– **शानेसे शाना छिलना**–भारी भीड़, धक्कम-धक्का होना।

शानीला–वि० शानदार, रोबवाला।

शाप–पु० (सं०) 'अमुकका बुरा हो' ऐसी बुरी भावना व्यक्त करना, आक्रोश, बददुआ; धिक्कार, भर्त्सना; झूठी कसम जिसका दुष्परिणाम शापका-सा हो; जली-कटी सुनाना। **–ग्रस्त**–वि० अभिशप्त। **–ज्वर**–पु० गुरुजनोंके अभिशापके कारण आया हुआ ज्वर (इस ज्वरके विषयमें ऐसा माना जाता है कि इसकी सत्यता भुक्तभोगी ही प्रमाणित कर सकते हैं)। **–निवृत्ति**–स्त्री० शापसे मुक्ति। **–प्रद**–वि० शाप देनेवाला। **–मुक्त**–वि० अभिशप्त होकर बादमें जो किसी कारणवश उससे मुक्त हो गया हो। **–मुक्ति**–स्त्री०,**–मोक्ष**–पु० शापसे मुक्त होना।

शापटिक–पु० (सं०) मोर पक्षी।

शापना*–स० क्रि० दे० 'सापना'।

शापांत–पु० (सं०) शापकी समाप्ति।

शापांबु–पु० (सं०) वह जल जिसे हाथमें लेकर शाप दिया जाय, शापोदक (प्राचीन कालमें शाप देनेकी यही पद्धति मिलती है)।

शापावसान–पु० (सं०) दे० 'शापांत'।

शापास्त्र–पु० (सं०) वह जिसका शाप ही अस्त्र हो, ऋषि।

शापित–वि० (सं०) जिसे शाप दिया गया हो, अभिशप्त; जिसे शपथ दिलायी गयी हो।

शापोत्सर्ग–पु० (सं०) शाप देनेकी क्रिया; शापका कथन।

शापोद्धार–पु० शापसे छूटना, शापके प्रभावसे बच जाना, शाप-मुक्ति।

शाफरिक–पु० (सं०) मछली मारनेवाला व्यक्ति, मछुआ, मल्लाह।

शाफ़ा–पु० (फा०) रुईकी बत्ती जो दवामें भिगोकर जख्मके अंदर रखी जाय; आँखके ऊपर रखा जानेवाला रुईका फाया; साबुनकी बत्ती जो पाखाना लानेके लिए गुदामें रखी जाती है।

शाफ़ी–वि० (अ०) शिफा, आरोग्य देनेवाला; सांत्वना देनेवाला।

शाफ़े–वि० (अ० 'शाफ़ेअ') शफाअत करनेवाला; सिफारिश करनेवाला।

शाबर–वि० (सं०) शबर-संबंधी; जंगली, क्रूर; नीच। पु० अपराध, गलती; पाप; दुष्टता; बदमाशी; लोध्र वृक्ष; शबर मृगका चमड़ा; ताँबा; एक तरहका चंदन; अँधेरा। **–तंत्र**–पु० शिवनिर्मित एक तंत्र ग्रंथ। **–भाष्य** –पु० मीमांसासूत्रपर किया गया शबर स्वामीका भाष्य। **–भेदाक्ष**,**–भेदाख्य**–पु० ताँबा।

शाबरिका–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी मोटी और लंबी जोंक जो प्रायः भैंसोंको लगती है, भैंसहिया जोंक, सबरी जोंक।

शाबरी–स्त्री० (सं०) शबर जातिकी भाषा; प्राकृत भाषाका एक निम्न प्रकार जो पहाड़ी और जंगली जातियों द्वारा बोली जाती थी।

शाबल्य–पु० (सं०) शबलता, कई रंगों या वस्तुओंका मेल।

शाबस्ती–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नगर।

शाबाश–अ० (फा० 'शाहबाश'का लघु रूप) खुश रहो; वाहवा; साधु-साधु। स्त्री० साधुवाद (देना)।

शाबाशी–स्त्री० सराहना, साधुवाद।

शाब्द–वि० (सं०) शब्द-संबंधी; शब्दमय; शब्दपर ही आश्रित ('आर्थ'का उलटा); शब्दाडंबरसे युक्त (व्याख्यान, शैली); मौखिक। पु० वैयाकरण। **–बोध**–पु० वाक्यमें प्रयुक्त शब्दोंके अर्थका ज्ञान (न्याय-शास्त्रके अनुसार इसे वाक्यमें प्रयुक्त पद (शब्द)के अर्थके ज्ञानसे उत्पन्न ज्ञान कहते हैं। इसका करण पदज्ञान है और इसका कारण पदशक्तिज्ञान। इस प्रकार वाक्यगत योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति द्वारा तात्पर्यज्ञान शाब्दबोध है)। **–व्यंजना**–स्त्री० वाक्यमें प्रयुक्त शब्दविशेषके आधारपर हुई व्यंजना (सा०)।

शाब्दिक–वि०, पु० (सं०) दे० 'शाब्द'।

शाब्दी–स्त्री० (सं०) सरस्वती, भारती। वि०, स्त्री० दे० 'शाब्द'। **–व्यंजना**–स्त्री० दे० 'शाब्द-व्यंजना'।

शाम–पु० अरबके उत्तरमें अवस्थित एक देश, जिसकी राजधानी दमिश्क है, सीरिया; *श्याम। वि० (सं०) शम, शांति-संबंधी। स्त्री० सूर्यास्तका समय, संध्या; (ला०) अंतक (शामे जवानी, शामे जिंदगी); छड़ी, औजार आदिके नीचे लगाया जानेवाला लोहे या पीतलका छल्ला। –(**मे**) **अवध**–स्त्री० लखनऊकी शाम (वहाँकी शामकी चहल-पहल प्रसिद्ध है)। (**मो**) **सहर**–स्त्री० रात दिन, हर समय, सदा सर्वदा। मु० **–का फूलना**–सूर्यास्त-कालमें पश्चिमी क्षितिजपर लालीका छिटकना, शफक फूलना। **–की सुबह करना**–सारी रात जागकर बिताना, सवेरा कर देना। **–सुबह करना या लगाना**–टाल-मटोल करना।

शामक–वि० (सं०) (सेडीटिव) शमन करनेवाला; कष्ट या पीड़ा कम करनेवाली (दवा)।

शामत–स्त्री० (अ०) दुर्भाग्य, कमबख्ती; मुसीबत। **–ज़दा**–वि० मुसीबतका मारा हुआ। –(**ते**)**–आमाल**–पु० कर्मफल, कियेकी सजा। मु० **–आना**–बुरे दिन आना, दुर्दैवकी प्रेरणा होना, कमबख्ती आना। **–का मारा**–जिसकी शामत आयी हो, अभागा, दुर्दशाग्रस्त। **–की मार**–दुर्भाग्य, कमबख्ती। –(**किसीपर**)**–सवार होना**–दे० 'शामत आना'।

शामती–वि० शामतका मारा, अभागा।

शामन–पु० (सं०) शमन; शांति; मारण; बलि; हत्या; अंत; यम।

शामनी–स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा (यम जिसके देवता या स्वामी हैं)।

शामित्र–पु० (सं०) बलिके निमित्त पशुको यूपमें बाँधना; यज्ञमें पशुबलि, हिंसा; बलि-पशुका मांस पकानेकी अग्नि; यह मांस पकानेका स्थान; यज्ञ; यज्ञपात्र; घातक मार, चोट। वि० बलि चढ़ानेवालेसे संबद्ध।

शामियाना–पु० (फा०) बड़ा और साधारणतः चारों ओर खुला हुआ तंबू।

शामिल–वि० (अ०) मिला हुआ; इकट्ठा। **–मिसिल**–वि० मुकदमेके कागजातके साथ नत्थी किया हुआ। **–हाल**–वि० दुःख-सुखका साथी, शरीके हाल।

शामिलात–स्त्री० साझेकी जायदाद, अनेक हिस्सेदारोंकी संयुक्त संपत्ति; हिस्सेदारी (यह महाल शामिलात है)।

शामिलाती–वि० संयुक्त।

शामी–वि० शाम देशके बारेमें, शाम देश-संबंधी या शाम देशका। पु० शाम कर देनेवाला। स्त्री० छड़ी या औजार आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला लोहे, पीतल आदिका छल्ला। **–कबाब**–पु० एक तरहका कबाब।

शामीन–पु० (सं०) भस्म; यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाली करछी, स्रुवा।

शामील–पु० (सं०) भस्म।

शामीली–स्त्री० (सं०) माला।

शाम्य–पु० (सं०) शमता, शमत्व; शांति; भ्रातृत्व, भाईपन। वि० शांति-संबंधी।

शाय–पु० (सं०) लेटना; सोना।

शायक–पु० (सं०) वाण; तलवार।

शायक़–वि० (अ०) शौक करनेवाला; इच्छुक, चाहनेवाला।

शायद–अ० (फ़ा०) कदाचित्; संभवतः।

शायर–पु० (अ०) शेर कहनेवाला, कवि।

शायरा–स्त्री० (अ०) स्त्री कवि, कवयित्री।

शायराना–वि० कविसुलभ; कविका-सा; कवित्वमय; अतिरंजित।

शायरी–स्त्री० शेर कहना; कविकर्म; कविता; अतिरंजना।

शायाँ–वि० (फ़ा०) योग्य, अनुरूप।

शाया–वि० (अ०) प्रकट; विज्ञापित; प्रकाशित (पुस्तक आदि)। मु० **–करना**–प्रकाशित करना।

शायिक–पु० (सं०) शय्या-रचनाका जानकार, शय्यारचना द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला।

शायिका–स्त्री० (सं०) शयन, निद्रा।

शायित–वि० (सं०) सोया, लेटा हुआ; सुलाया, लेटाया हुआ; गिरा, पड़ा हुआ, पतित।

शायी(यिन्)–वि० (सं०) सोने, लेटनेवाला।

शारंग–पु० (सं०) दे० 'सारंग' (समस्त शब्दोंके लिए भी)।

शारंगष्टा–स्त्री० (सं०) मकोय; काक जंघा; घुंघची।

शारंगी–स्त्री० (सं०) दे० 'सारगी'।

शारंबर–पु० (सं०) जनपद-विशेष।

शार–स्त्री० (फ़ा०) नगर; बस्ती; साड़ी।

शा'र–पु० (अ०) वाल, केश।

शार–वि० (सं०) कर्बुरवर्ण, चितकवरा, विभिन्न वर्णयुक्त; पीला। पु० चितकवरा रंग; हरा रंग; वायु; पासा; शतरंजका मोहरा; हिंसनक्रिया, चोट पहुँचाना। स्त्री० कुशा, कुश।

शारअ, शारिअ–पु० (अ०) राजमार्ग; धर्मशास्त्री।

शारजिक–वि० (सं०) शरण चाहनेवाला। पु० शरणागतका रक्षक व्यक्ति।

शारद–वि० (सं०) शरत्कालमें उत्पन्न; शरत्कालसे संबद्ध; वार्षिक, वर्ष-संबंधी; नवीन; अभिनव, ताजा; विनम्र, लज्जाशील। पु० शरत्काल; वर्ष; श्वेत कमल; वकुल वृक्ष; कास; हरी, पीला मूंग; शरत्कालमें उत्पन्न होनेवाला अन्न; शरत्कालमें अधिकतर होनेवाला एक रोग; शरत्कालकी धूप। **–चंद्र**–पु० शरत् ऋतुका चंद्रमा जो वर्षाके वाद इस ऋतुमें आकाशके साफ रहनेके कारण विशेष उज्ज्वल और आह्लाददायक होता है। **–ज्योत्स्ना**–स्त्री० शरत् ऋतुकी चाँदनी जो उज्ज्वलता और शीतलताके लिए प्रसिद्ध है। **–निशा**–स्त्री० शरत् ऋतुकी रात जो शीतल और आह्लाददायक होती है। **–पूर्णिमा**–स्त्री० कोजागर, आश्विनपूर्णिमा, शरदपूनो। **–मेघ**–पु० शरत् ऋतुका वादल जो जलहीन और श्वेत होता है। **–यामिनी,–रात्रि,–शर्वरी**–स्त्री० दे० 'शारदनिशा'। **–शशी(शिन्)**–पु० दे० 'शारदचंद्र'।

शारदक–पु० (सं०) एक तरहका दर्भ।

शारदांबा–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

शारदा–स्त्री० (सं०) सरस्वती; दुर्गा; एक प्रकारकी वीणा; ब्राह्मी; सारिवा, श्यामा लता; पंजाव और कश्मीरमें प्रचलित एक प्राचीन लिपि।

शारदिक–पु० (सं०) शरत् ऋतुकी धूप; इस ऋतुमें होनेवाला रोग; इस ऋतुमें किया जानेवाला श्राद्ध; वार्षिक श्राद्ध।

शारदी–स्त्री० (सं०) कोजागर पूर्णिमा; सप्तपर्ण; तोय-पिप्पली, जलपीपल। वि० स्त्री० शरत् ऋतु-संबंधी।

शारदी(दिन्)–वि० (सं०) शरत्काल-संबंधी।

शारदीय–वि० (सं०) शरत्ऋतु-संबंधी। **–महापूजा**–स्त्री० नवरात्रिकी दुर्गापूजा।

शारद्य–वि० (सं०) शारदीय, शरत् ऋतु-संबंधी। पु० शरत्में होनेवाला अन्न।

शारद्वत–पु० (सं०) कृपाचार्य (म० भा०); गौतम।

शारि–पु० (सं०) जुआ खेलनेका सामान, पासेकी गोट; शतरंजकी गोटी; छोटा गेंद। स्त्री० शारिका, मैना; हाथीकी झूल; कपट; निंदा; एक गान। **–पट्ट,–फल,–फलक**–पु० बिसात जिसपर शतरंज, चौसर आदिके मुहरे बिछाकर खेलते हैं। **–पुत्र**–पु० गौतमके दो प्रधान शिष्योंमेंसे एक। **–शृंग**–पु० एक तरहका पासा।

शारिका–स्त्री० (सं०) मैना पक्षी; वीणा आदिका वादन; तांत्रिक (सारंगी आदि) वाद्योंको वजानेकी धनुष्की तरहकी कमानी; शतरंजकी गोटी; शतरंज आदि खेलना; दुर्गा। **–कवच**–पु० यामल तंत्रोक्त दुर्गाका एक कवच।

शारित–वि० (सं०) रंगीन; रंग-बिरंगा।

शारिवा–स्त्री० (सं०) दे० 'सारिवा'।

शारी–स्त्री० (सं०) मैना; कुशा; मूंज; शतरंजकी गोट; गेंद।

शारीर–वि० (सं०) शरीर-संबंधी; शरीरसे संबद्ध; शरीरसे उत्पन्न, देहज। पु० शरीरस्थित जीवात्मा, आत्मा; मल; वृष, वैल, साँड़; शरीररचनाशास्त्र; शरीरका ढाँचा। **–तत्त्व**–पु० शारीरिक तत्त्वों, अवयवों, रचना, अंतर्बाह्य क्रिया आदिके विवेचनसे संबंधित विज्ञान। **–विज्ञान**–पु०**–विद्या**–स्त्री०,**–विधान**–पु० शारीरिक जीवनिर्माण, उत्पत्ति-संबंधी शास्त्र; शरीररचना, क्रिया आदि-संबंधी विज्ञान, शरीरशास्त्र। **–शास्त्र**–पु० (एनाटमी) दे० 'शारीरतत्त्व', 'शारीरविद्या'।

शारीरक–पु० (सं०) देह-संबंधी; देहज। पु० आत्मा। **–भाष्य**–पु० शंकराचार्यकृत ब्रह्मसूत्रका भाष्य। **–सूत्र**–पु० वेदव्यासकृत वेदांतसूत्र।

शारीरकीय–वि० (सं०) दे० 'शारीरक'।

शारीरिक–वि० (सं०) दे० 'शारीरक'।

शारुक–वि० (सं०) हिंसक, चोट पहुँचानेवाला; दुष्ट, शरारती, शरीर।

शार्क–पु० (सं०) शर्करा; (अं०) एक बड़ी मछली जिसका तेल औषधके रूपमें प्रयुक्त होता है।

शार्कक–पु० (सं०) शर्करापिंड; दुग्धफेन, दूधका झाग; मलाई।

शार्कर–वि० (सं०) शर्करानिर्मित, चीनीका या चीनीसे बना हुआ; शर्करायुक्त; रवीला, रवेदार; कंकरीला। पु० जूसी; दुग्धफेन; कंकरीला स्थान; लोधका पेड़।

शार्करक, शार्करिक, शार्करीय–वि० (सं०) कंकरीला।

शार्करसय–पु० (सं०) जौ और चीनीसे वनायी जानेवाली एक शराव।

शार्ङ्ग–वि० (सं०) शृंग-संबंधी; सींगका बना हुआ; धनुर्धर। पु० धनुष्; विष्णुका धनुष्; आदी। **–धन्वा(न्वन्),–धारी(रिन्),–पाणि,–भृत्**–पु० विष्णु; धनुर्धर सैनिक।

शार्ङ्गक, शार्ङ्गिक–पु० (सं०) एक तरहका पक्षी।

शार्ङ्गष्टा–स्त्री० (सं०) महाकरंज।

शार्ङ्गायुध–पु० (सं०) दे० दे० 'शार्ङ्गधन्वा'।

शार्ङ्गी(ङ्गिन्)–पु० (सं०) 'शार्ङ्गधन्वा'।

शार्दुल*–पु० दे० 'शार्दूल'।

शार्दूल–पु० (सं०) व्याघ्र, वाघ; चीता; शरभ पशु; एक राक्षस; पक्षि-विशेष; चित्रक वृक्ष; दोहा छंदका एक भेद; यजुर्वेदकी एक शाखा। वि० श्रेष्ठ (यौगिक शब्दके उत्तरपदमें, जैसे–नरशार्दूल)। **–कंद**–पु० जंगली प्याज। **–वाहन**–पु० एक जिन (जै०)। **–ललित,–लसित,–विक्रीडित**–पु० वर्णवृत्त-विशेष।

शार्व–वि० (सं०) शिव-संबंधी।

शार्वर–वि० (सं०) शर्वरी, रात्रि-संबंधी, निशाकालीन; घातक, दुष्टतापूर्ण। पु० अंधतमस्, अत्यधिक अंधकार।

शार्वरिक–वि० (सं०) रात्रि-संबंधी।

शार्वरी–स्त्री० (सं०) रात; लोध।

शार्वरी(रिन्)–पु० (सं०) चौंतीसवाँ संवत्सर।

शालंकायन–पु० (सं०) विश्वामित्रके एक पुत्र; नंदी। **–जा**–स्त्री० शालंकायनकी पुत्री सत्यवती, व्यास-माता।

शालंकि–पु० (सं०) पाणिनि।

शाल–पु० (सं०) साखू, सखुआका पेड़; वृक्ष; मत्स्यविशेष; घेरा, चहारदीवारी; राजा शालिवाहन। **–कल्याणी**–स्त्री० एक साग। **–ग्राम**–पु० गंडकी नदीके किनारे बसा एक ग्राम, वैष्णवोंका तीर्थ; जलप्रवाहसे घिसी, गोल, चिकनी, श्यामवर्ण पत्थरकी बटिया जिसपर चक्रका चिह्न रहता है (जिसे उपवीत कहते हैं) और जो

विष्णुके रूपमें पूजी जाती है। **–०गिरि**–पु० एक पर्वतका नाम (पु०)। **–०शिला**–स्त्री० शालग्रामकी बटिया। **–ज**–वि० शाल वृक्षसे उत्पन्न। पु० शाल वृक्षका रस, गोंद या राल; शाल मत्स्य। **–निर्यास,–रस**–पु० सर्ज-रस, शालका गोंद; शाल वृक्ष। **–पत्रा**–स्त्री० जिस पेड़के पत्ते शाल वृक्षके पत्तोंके समान हों, सरिवन वृक्ष। **–र्पणिका**–स्त्री० मुरा गंधद्रव्य; एकांगी ओषधि। **–पर्णी**–स्त्री० दे० 'शालपत्रा'। **–भंजिका**–स्त्री० काष्ठपुत्तलिका, कठपुतली; वेश्या। **–भंजी**–स्त्री० कठपुतली। **–वेष्ट**–पु० शालका रस, राल, गोंद। **–सार**–पु० बड़ा पेड़; हींग; शालका गोंद।

शाल–स्त्री० शल्य, एक तरहकी बरछी (कविप्रि०)। (फा०) ऊनी या रेशमी चादर; कश्मीरमें बननेवाली दुंबेके बालोंकी चादर। **–दोज़**–पु० शालपर बेल-बूटे बनानेवाला। **–बाफ़**–पु० शाल बुननेवाला। स्त्री० एक तरहका सुर्ख रेशमी कपड़ा। **–बाफ़ी**–स्त्री० शाल बुननेका काम। वि० शालबाफका।

शालक–पु० (सं०) एक राग; विदूषक; पटुआ।

शालभ–वि० (सं०) शलभ-संबंधी।

शालव–पु० (सं०) लोध्र वृक्ष।

शालांकी–स्त्री० (सं०) पुतली; गुड़िया।

शालांचि–पु० (सं०) एक शाक।

शाला–स्त्री० (सं०) गृह; स्थान; मकानका एक हिस्सा, गृहांश; पेड़की बड़ी, प्रधान डाल। **–कर्म(न्)**–पु० गृहनिर्माण। **–मुख**–पु० घरका द्वार; एक तरहका चावल। **–मृग**–पु० शृगाल, सियार; कुत्ता। **–वृक**–पु० कुत्ता; बिल्ली; बंदर; हिरन; गीदड़।

शालाक–पु० (सं०) पाणिनि; झाड़झंखाड़; उससे उत्पन्न अग्नि।

शालाकी(किन्)–पु० (सं०) शल्य-चिकित्सक, अस्त्र-वैद्य; नाई; बरछी धारण करनेवाला।

शालाक्य–पु० (सं०) आयुर्वेदोक्त शल्य-चिकित्सा-संबंधी एक शाखा जिसमें गर्दनके ऊपरकी इंद्रियोंकी चिकित्साका विवेचन है; उक्त इंद्रियोंका शल्यचिकित्सक। **–तंत्र,–शास्त्र**–पु० गर्दनके ऊपरकी चिकित्सा-संबंधी विद्या।

शालाजिर–पु० (सं०) मिट्टीका प्याला, कसोरा।

शालातुरीय–पु० (सं०) पाणिनि (ये शालातुर नामक ग्राममें उत्पन्न हुए थे, इसी कारण इनका यह नाम पड़ा)।

शालानी–स्त्री० (सं०) विदारी, शालपर्णी।

शालार–पु० (सं०) हस्तिनख; दीवारमें गड़ी खूंटी; सीढ़ी, सोपान; पक्षि-पंजर, चिड़ियाका पिंजड़ा।

शालि–पु० (सं०) चावल; जड़हन चावल, जिसका पौधा रोपा जाता है, यह हेमंत ऋतुमें होता है; गन्ना; कालाजीरा; एक यज्ञ; गंधमार्जार, मुश्कबिलाव, जिसकी नाभिसे एक प्रकारकी कस्तूरी निकलती है। **–कण**–पु० चावलका दाना। **गोपी**–स्त्री० खेत, विशेषतः धानके खेतकी रखवाली करनेवाली स्त्री। **–चूर्ण**–पु० चावलका आटा। **धान**–पु० (हिं०) बासमती चावल, अगहनी चावल। **–र्पणिका**–स्त्री० एकांगी नामक एक ओषधि। **–पर्णी**–स्त्री० माषपर्णी। **–पिष्ट**–पु०. चावलका आटा; स्फटिक, बिल्लौर। **–वाहन**–पु० शक-संवत्का प्रवर्तक शक जातीय एक प्रसिद्ध राजा। **–होत्र**–पु० घोड़ा; अश्वशास्त्र-प्रवर्तक एक राजा, अश्वशास्त्रके लेखकका नाम। **–होत्री(त्रिन्)**–पु० घोड़ोंका चिकित्सक; घोड़ा।

शालिक–पु० (सं०) जुलाहा; कारीगरोंका गाँव; एक तरहका कर, टैक्स। वि० भवन-संबंधी; शाल-संबंधी।

शालिका–स्त्री० (सं०) शारिका; विदारिका कंद; शालपर्णी; आधार, स्थान; गृह।

शालिनी–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; गृहिणी, गृहस्वामिनी। वि० स्त्री० दे० 'शाली (लिन्)'।

शाली–स्त्री० (सं०) काला जीरा; मेथी।

शाली(लिन्)–वि० (सं०) युक्त, सहित (समासमें); शाला-संबंधी।

शालीन–वि० (सं०) शाला-संबंधी; अधृष्ट, विनम्र; लज्जाशील; सुशील; समान, तुल्य; धनी। पु० गृहस्वामी।

शालीनता–स्त्री० (सं०) विनम्रता; लज्जा।

शालीना–स्त्री० (सं०) मिश्रेया।

शालीय–वि० (सं०) शाला-संबंधी।

शालु–पु० (सं०) कुमुद आदिकी जड़, भसींड़; जातीफल; कषाय द्रव्य; चोरक ओषधि; मेंढक।

शालुक–पु० (सं०) कमल आदिकी जड़; जायफल।

शालूक–पु० (सं०) भसींड़; जातिफल; मेंढक; एक रोग।

शालूर–पु० (सं०) मेंढक।

शालेय–पु० (सं०) वह खेत जिसमें शालि धान पैदा हो; सौंफ। वि० शाला तथा शाल वृक्ष-संबंधी।

शालोत्तरीय–पु० (सं०) दे० 'शालातुरीय'।

शाल्मल–पु० (सं०) शाल्मली, सेमलका पेड़; शाल्मली वृक्षका गोंद; पृथ्वीके सात खंडोंमेंसे एक खंड।

शाल्मलि–पु०, स्त्री० (सं०) नरकविशेष (पु०); दे० 'शाल्मल'। **–पत्रक**–पु० सप्तच्छद वृक्ष। **–स्थ**–पु० गरुड़।

शाल्मलिक–पु० (सं०) रोहितक वृक्ष; घटिया किस्मका शाल्मलि वृक्ष।

शाल्मलिनी–स्त्री० (सं०) सेमलका पेड़।

शाल्मली–स्त्री० (सं०) शाल्मलि, सेमलका पेड़; पातालकी एक नदी; एक नरक। **–कंद**–पु० शाल्मलिकी जड़, एक ओषधि। **–फलक**–पु० सुश्रुतोक्त काठकी पटरी जिसपर रगड़कर चीर-फाड़के औजारोंकी धार तेज की जाती थी। **–वेष्ट,–वेष्टक**–पु० सेमलका निर्यास।

शाल्मली(लिन्)–पु० (सं०) गरुड़।

शाल्व–पु० (सं०) मेरु प्रदेशके राजा; उत्तर भारतका एक प्राचीन प्रदेश।

शाव–पु० (सं०) शिशु, विशेषतः पशु-पक्षीका शिशु; शावक, बच्चा; शव; श्मशान; भूरा रंग। वि० शव-संबंधी; मृत्युके कारण उत्पन्न (अशौच इ०); भूरे रंगका।

शावक–पु० (सं०) पशु-पक्षीका बच्चा।

शावर–वि, पु० (सं०) दे० 'शाबर'। **–भेदाक्ष**–पु० दे० 'शाबर-भेदाक्ष'।

शावरी–स्त्री० (सं०) केवाँच, शूकशिंबी।

शाश्वत–वि० (सं०) नित्य, निरंतर; सततस्थायी; सब। पु० वेदव्यास; शिव; सूर्य; स्वर्ग; नित्यता, नैरंतर्य। **–वाद**–पु० दार्शनिक सिद्धान्त कि आत्मा नित्य, चिरन्तन, अमर और अविकारी है।

शाश्वतिक–वि० (सं०) दे० 'शाश्वत'।

शाश्वती–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

शाष्कुल–वि० (सं०) मांसभक्षक; मत्स्यभक्षी।

शाष्कुलिक–पु० (सं०) सेंकी हुई रोटियोंका ढेर।

शासक–पु० (सं०) राजा, शासन करनेवाला व्यक्ति, शासनकर्ता, शास्ता; राज्य-शासनका संचालक, व्यवस्थापक, हाकिम; दंड देनेवाला व्यक्ति; वह हाकिम जिसे दंड देनेका अधिकार हो। **–मंडली**–स्त्री०,**–वर्ग**–पु० राज्यके विभिन्न विभागके संचालकों, हाकिमोंका संघ, समूह।

शासन–पु० (सं०) किसी सरकार द्वारा किसी व्यक्ति, जाति, नगर, प्रांत, देशके नियंत्रण, संचालन, हुकूमतका कार्य; सरकार, हुकूमत (गवर्नमेण्ट); आज्ञा, हुक्म; राज्यादेश, सरकारी हुक्म; किसीके कार्यादिकी देखरेख, निर्देशन, नियंत्रण; अनुशासन; इंद्रियोंका नियंत्रण; किसीको वशमें रखना; कागज, ताम्रपट्ट आदिपर लिखित दान आदि; लिखित शर्त, प्रतिज्ञा, समझौता आदि; राजा द्वारा दी गयी भूमि; स्मृति, शास्त्र; शास्ति, दंड। वि० नष्ट करनेवाला; दण्ड देनेवाला। **–कर**–पु० गुप्तकालीन एक अधिकारी जो निम्न अधिकारियोंके पास राज्यादेश भेजा करता था। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० शासक। **–तंत्र**–पु० राज्यशासनप्रणाली, रीति, पद्धति। **–दूषक**–वि० राजाज्ञाका उल्लंघन करनेवाला। **–धर**–पु० दे० 'शासनहर'। **–पत्र**–पु० राज्यादेशपत्र, राजाज्ञा-पत्र, सरकारी हुक्मनामा, फरमान; ताम्रपत्रादिपर खुदी भूमि-

दानादि-संबंधी राज्याज्ञा । **–प्रणाली**–स्त्री० शासनकी विधि या पद्धति । **–व्यवस्था**–स्त्री० शासन-संबंधी प्रबंध, शासन-प्रणाली । **–वाहक**–पु० राजदूत । **–शिला**–स्त्री० जिस शिलापर राजाज्ञा अंकित हो । **–हर,–हारक,–हारी(रिन्)**–पु० राजदूत, राजाज्ञावाहक ।

शासनांतर्गत, शासनाधीन–वि० (सं०) जो शासनमें, शासनके भीतर हो; अधिकृत; वशीभूत ।

शासनातिवृत्ति–स्त्री० (सं०) राजाज्ञा आदिका उल्लंघन ।

शासनादिष्टप्रदेश–पु० (मैनडेटेड टेरीटरी) वे पिछड़े हुए प्रदेश या भूखंड जिनका शासनभार प्रथम महायुद्धके बाद राष्ट्रसंघके आदेशसे ब्रिटेन आदि उन्नत विजेता राष्ट्रोंको सौंप दिया गया था ।

शासनादेश–पु० (मैनडेट) प्रथम महायुद्धके पूर्व जर्मनी तथा तुर्कीके अधिकारमें जो उपनिवेश या क्षेत्र थे, उनपर उनके स्वशासनयोग्य होनेतक शासन करनेका ब्रिटेन, फ्रांस आदिको राष्ट्रसंघ द्वारा दिया गया आदेश ।

शासनिक विपर्यय–पु० (कूडेटा) शासन व्यवस्थामें एकाएक एवं बलपूर्वक किया गया परिवर्तन; बलात् सत्तापहरण ।

शासनी–स्त्री० (सं०) धर्मोपदेश करनेवाली स्त्री ।

शासनीय–वि० (सं०) शासन या नियंत्रणके योग्य; दंडनीय; सुधार करनेके योग्य ।

शासपत्र–पु० दे० 'चार्टर' ।

शासपत्र–पु० (सं०) किसी व्यक्ति या संस्थाको दिया गया राजकीय पत्र (चार्टर) ।

शासपत्रित लेखाकार–पु० (चार्टर्ड अकाउंटेंट) हिसाब किताबकी जाँच इत्यादिका काम भलीभाँति जाननेवाला व्यक्ति जिसे उपयुक्त परीक्षाके बाद सरकारसे इसका प्रमाण-पत्र मिला हो ।

शासित–वि० (सं०) जिसका शासन किया गया हो; दंडित ।

शासिता(तृ)–वि० (सं०) शासन करनेवाला; दंड देनेवाला ।

शासिनिकाय–पु० (गवर्निंग बॉडी) (किसी विद्यालय, चिकित्सालय आदिका) प्रबंध या नियंत्रण करनेवाले व्यक्तियोंका समूह या मंडल ।

शासी(सिन्)–पु० (सं०) शासक (यह यौगिक शब्दके उत्तरपदके रूपमें आता है) ।

शास्ता(स्तृ)–पु० (सं०) शासक; राजा; शिक्षक, गुरु; पिता; बुद्ध; जिन; बौद्धों और जैनोंका देवतुल्य उपदेष्टा; निरंकुश शासक, अधिनायक ।

शास्ति–स्त्री० (सं०) शासन; आज्ञा; दंड; शासनका चिह्न, राजदंड; नियमविरुद्ध कार्य करनेवाले व्यक्तिको दिया गया अर्थदण्ड (पेनैलिटी); अनुशास्ति, किसी व्यक्ति, राज्य, संस्थाको सही रास्तेपर लानेके लिए की गयी दण्डात्मक क्रिया (सैन्क्शन), दे० 'दंडोपबंध' ।

शास्त्र–पु० (सं०) आदेश; धर्म, दर्शन, विज्ञान, साहित्य, कला आदि-संबंधी ग्रंथ जिनके द्वारा मानव-समाज तथा जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंकी स्थिति और रक्षाकी प्रत्यक्ष या परोक्षरूपसे शिक्षा मिलती है; ज्ञान; सिद्धांत; ज्ञानकी कोई शाखा; हिन्दुओंमें ऋषिमुनि प्रणीत मुख्यतः १४ शास्त्र माने जाते हैं–४ वेद, ६ वेदांग, पुराण मात्र, आन्वीक्षिकी, मीमांसा और स्मृति । इनके अतिरिक्त शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष और अलंकारशास्त्रकी शास्त्रोंमें गणना की जाती है । **–कार,–कृत्**–पु० शास्त्र-निर्माता; शास्त्रकर्ता ऋषि । **–कोविद**–वि० शास्त्रोंका विशेष-ज्ञान रखनेवाला । **–गंड**–पु० साधारण रूपमें पढ़नेवाला । **–चक्षु(स्)**–पु० व्याकरण जो शास्त्रोंके अध्ययनके लिए नेत्र (परम आवश्यक वस्तु) है । **–चर्चा**–स्त्री० शास्त्रका अध्ययन, मनन, अनुशीलन; शास्त्रपर विचार-विमर्श । **–चारण**–पु० शास्त्रका प्रचारक, शास्त्रज्ञाता, शास्त्रदर्शी । **–ज्ञ**–वि०, पु० शास्त्रज्ञाता, शास्त्रका जाननेवाला । **–तत्त्व**–पु० शास्त्रोक्त तत्त्व, सत्य; धार्मिक ग्रंथोंमें वर्णित आचार, व्यवहार आदि-संबंधी तात्त्विक नियम । **–०ज्ञ**–वि० शास्त्रतत्त्वका जानकार । **–ज्ञान**–पु० शास्त्रकी जानकारी । **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० जिसने शास्त्र देखा, सुना है, शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ । **–दृष्टि**–वि० जिसकी दृष्टि शास्त्रपर विशेष रहती हो, जो शास्त्रानुसार ही व्यवहार करता हो; शास्त्रवेत्ता । स्त्री० शास्त्रीय दृष्टि, विचार । **–प्रवक्ता(क्तृ),–वक्ता(क्तृ)**–पु० शास्त्रोपदेशक; आचार, व्यवहार आदिके संबंधमें शास्त्रपर दृष्टि रखते हुए निर्णय देनेवाला, घोषणा करनेवाला व्यक्ति । **–प्रसंग**–पु० शास्त्रका विषय; किसी धार्मिक प्रश्न या धार्मिक ग्रंथोंके विषयपर होनेवाला विवाद । **–मति**–वि० शास्त्रज्ञ । **–वर्जित**–वि० जो शास्त्रसम्मत न हो । **–वित्,–विद्**–वि० शास्त्रज्ञ । **–विधान**–पु०,**–विधि**–स्त्री० आचार, व्यवहार-संबंधी शास्त्रोक्त आदेश, अनुशासन । **–विमुख**–वि० जो शास्त्राध्ययन न करता हो; शास्त्रोंसे जिसे चिढ़ हो । **–विरुद्ध**–वि० जिसका विधान शास्त्रमें न हो, शास्त्राविहित, अशास्त्रीय; अवैध । **–विहित**–वि० शास्त्रानुमोदित, शास्त्र-सम्मत । **–व्युत्पत्ति**–स्त्री० धर्मग्रंथोंका परिज्ञान, शास्त्रनैपुण्य । **–शिल्पी(ल्पिन्)**–पु० शास्त्रज्ञान द्वारा जीविका चलानेवाला; कश्मीर; कश्मीरनिवासी; भूमि । **–संगत,–सम्मत**–वि० दे० 'शास्त्र-विहित' । **–सिद्ध**–वि० शास्त्र द्वारा प्रमाणित; शास्त्रानुकूल ।

शास्त्राचरण–पु० (सं०) शास्त्रादेशका पालन; शास्त्रका अध्ययन, मनन, अनुशीलन ।

शास्त्रातिग–वि० (सं०) शास्त्र न माननेवाला ।

शास्त्रानुमोदित–वि० (सं०) दे० 'शास्त्र-विहित' ।

शास्त्रानुशीलन–पु० (सं०) शास्त्रका अध्ययन, मनन ।

शास्त्रानुष्ठान–पु० (सं०) शास्त्रके आदेशोंका पालन ।

शास्त्रार्थ–पु० (सं०) शास्त्रका अर्थ, तात्पर्य, अभिप्राय; वाद-विवाद (जो शास्त्रके अर्थ, ज्ञानके सहारे होता है) ।

शास्त्रिक–वि० (सं०) शास्त्रज्ञ ।

शास्त्री(स्त्रिन्)–वि० (सं०) शास्त्रका जानकार, शास्त्रज्ञ । पु० वह व्यक्ति जिसने शास्त्रका पक्का ज्ञान कर लिया है, शास्त्रका पूर्ण अधिकारी, विद्वान्, पंडित; परीक्षामें उत्तीर्ण होनेपर प्राप्त होनेवाली एक उपाधि ।

शास्त्रीकरण–पु० (सं०) किसी विषयकी सारी बातोंको व्यवस्थित करके शास्त्रीय पद्धतिसे उसे शास्त्रीय रूप प्रदान करना ।

शास्त्रीय–वि० (सं०) शास्त्र-संबंधी; शास्त्र-सम्मत, शास्त्रानुमोदित; वैज्ञानिक; शास्त्रीय ज्ञानपर आश्रित (एकेडेमिक) ।

शास्त्रीयप्रमाण–पु० (ऑथारिटी) किसी कृत्य या तर्कादिकी पुष्टिमें दिया जाने या माँगा जानेवाला धर्मशास्त्र, विधिशास्त्र या किसी अन्य शास्त्रका प्रामाणिक हवाला ।

शास्त्रोक्त–वि० (सं०) शास्त्र द्वारा कथित; शास्त्रविहित, वैध ।

शास्य–वि० (सं०) शासन-योग्य; शिक्षणीय; दंडनीय ।

शाहंशाह–पु० (फा०) शाहोंका शाह, सम्राट्, राजाधिराज ।

शाहंशाही–स्त्री० (फा०) शाहंशाह, राजाधिराजका पद या कार्य ।

शाह–पु० (फा०) स्वामी; राजा, बादशाह; मुसलमान फकीरोंकी पदवी; ताश और गंजीफेका एक पत्ता; शतरंजका एक मोहरा । (कर्मधारय समासमें बड़ा, प्रधान, श्रेष्ठका अर्थ देता है–'शाहकार', 'शाहरग' इ० ।) । वि० बहुत बड़ा; श्रेष्ठ; शाहोंकी भाँति । **–कार**–पु० किसी कलाकारकी सबसे अच्छी कृति । **–खर्च**–वि० शाहोंकी तरह, बहुत अधिक, खर्च करनेवाला । **–गाम**–पु० घोड़ेकी एक अच्छी चाल । **–जादा**–पु० बादशाहका बेटा, राजकुमार । **–जादी**–स्त्री० बादशाहकी बेटी, राजकुमारी । **–जी**–पु० मुसलमान फकीरोंकी पदवी । **–तरा**–पु० पितपापड़ा । **–तीर**–पु० दे० 'शहतीर' । **–तूत**–पु० दे० 'शहतूत' । **–दरा**–पु० गाँव या बस्ती जो शाही महल या किलेके नीचे या सामने हो; दिल्लीके पास यमुनाके उस पार बसा हुआ एक कसबा । **–दरिया**–पु० (मुसलमान) स्त्रियों द्वारा कल्पित एक जिन या पिशाच । **–दाना**–पु० भाँगका बीज; बड़ा मोती । **–दारू**–पु० मद्य (शराबको जमशेदका दिया हुआ नाम, अर्थ–औषधराज) । **–नशीं**–स्त्री० बादशाहके बैठनेकी जगह; बहुमूल्य आसन; राजमहलके झरोखेके आगेका वह स्थान जहाँ बैठकर मुगल बादशाह प्रजाको दर्शन दिया करते थे; दालानके अंदर बना हुआ छोटे दरोंवाला ऊँचा दालान । **–नामा**–पु० फिरदौसीरचित फारसी भाषाका प्रसिद्ध वीररसप्रधान महाकाव्य जिसमें ईरानके पुराने

बादशाहोंका वृत्त और उनके युद्धोंका वर्णन है; बादशाहोंका इतिहास। **-पर**-पु० पक्षीके डैनेका सबसे बड़ा पर, शहपर। **-पसंद**-पु० एक तरहकी दाल; एक बड़ा पक्षी। **-बंदर**-पु० देशविशेषका प्रधान बंदरगाह। **-बलूत**-पु० बलूतका एक भेद जो बहुत मीठा होता है। **-बाज़**-पु० बड़ा बाज जिससे बादशाह चिड़ियोंका शिकार करते थे। वि० राजसी, राजोचित। **-बाला**-पु० दे० 'शहबाला'। **-बैत**-स्त्री० कसीदे या गजलका सबसे अच्छा शेर। **-बुलबुल**-स्त्री० एक प्रकारकी बुलबुल। **-मात**-स्त्री० दे० 'शहमात'। **-मुहरा**-पु० साँपका मणि। **-रग**-स्त्री० गलेसे होकर जानेवाली बड़ी रग। **-राह**-स्त्री० राजमार्ग, चौड़ा और आम रास्ता। **-वार**-वि० बादशाहोंके लायक; बहुत बढ़िया, बहुमूल्य। **-सवार**-पु० दे० 'शहसवार'। **-साहब**-पु० दे० 'शाहजी'। **-(हे)जहाँ**-पु० मुगल-वंशका एक सम्राट्, अकबरका पोता (१५९३-१६६६ ई०) जिसने ताजमहल बनवाया था; दुनियाका बादशाह, विश्वसम्राट्। **-(हो)गदा**-पु० राजा और रंक, बादशाह और फकीर।

शाहाना-वि० (फा०) बादशाहके लायक, राजसी, राजोचित; बहुत बढ़िया। पु० शहानी चूड़ियोंका जोड़ा। **-जोड़ा**-पु० दूल्हेको पहनाया जानेवाला सुर्ख जोड़ा; सुर्ख पोशाक। **-मिज़ाज**-पु० राजसी, नाजुक मिजाज।

शाहिद-पु० (अ०) शहादत देनेवाला, गवाह; देखनेवाला। वि० सुंदर, प्यारा, माशूक। **-परस्त**-वि० सौंदर्यप्रेमी; वेश्यागामी। **-(दे) ग़ैब**-वि० परोक्षज्ञाता, ईश्वर। **-(दे) बाज़ारी**-स्त्री० वेश्या, रूपाजीवा। **-(दे) रोज़**-पु० सूर्य।

शाहीँ-पु० (फा०) एक शिकारी चिड़िया; (तु०) तराजूकी डाँड़ी।

शाही-वि० (फा०) बादशाहका; शाहाना। स्त्री० बादशाहत, राज्य। **-ज़माना**-पु० भारतीय इतिहासका मुसलिम राज्यकाल।

शाहे नजफ़-पु० (अ०, फा०) हज़रत अली।

शाहेहिजाज़-पु० (अ०, फा०) हजरत मुहम्मद साहिब; मक्के मदीनेका शासक।

शिंगरफ-पु० ईंगुर।

शिंगरफी-वि० ईंगुर जैसा लाल।

शिंघण-पु० (सं०) नाकका मल; दाढ़ी।

शिंघाण-पु० (सं०) काँच, शीशेका पात्र; फेन, गाज; लौहमल, लोहेका मुरचा, जंग; नासिकामल; कफ, श्लेष्मा; दाढ़ी; तराजूकी डंडीके ऊपरकी सुई; फूला हुआ अण्डकोश।

शिंघाणक-पु० (सं०) नासिकामल; कफ, बलगम।

शिंघाणी(णिन्)-पु० (सं०) नाक।

शिंघित-वि० (सं०) सूंघा हुआ।

शिंघिनी-स्त्री० (सं०) नाक।

शिंजंजिका-स्त्री० (सं०) कटिबंध, करधनी।

शिंज-पु० (सं०) झनकार (गहनोंकी)।

शिंजन-पु० (सं०) कंगन, करधनी, नुपूर आदि आभूषणोंकी पहननेवालोंके चलने, फिरने आदिसे उत्पन्न झनकार; धातुखंडों तथा इनसे बनी वस्तुओंके हिलने, डुलने, घर्षित होने आदिसे उत्पन्न ध्वनि, आवाज; झंकार।

शिंजा-स्त्री० (सं०) शिंजन; प्रत्यंचा, धनुषकी डोरी। **-लता**-स्त्री० धनुष्की डोरी।

शिंजित-वि० (सं०) झंकृत, झनझनाता हुआ, ध्वनि करता हुआ; बजता हुआ। पु० झंकार, ध्वनि ('साकेत')।

शिंजिनी-स्त्री० (सं०) प्रत्यंचा; धनुषकी डोरी; नूपुर।

शिंजी(जिन्)-वि० (सं०) अलंकारोंकी ध्वनिसे युक्त; मधुर ध्वनि करनेवाला।

शिंब-पु० (सं०) चक्रमर्द, चकवँड़का पौधा; दे० 'शिंबा'।

शिंबा-स्त्री० (सं०) छीमी; सेम।

शिंबि-स्त्री० (सं०) दे० 'शिंबा'। **-जा**-स्त्री० छीमीमें उत्पन्न होनेवाला दो दलयुक्त अन्न। **-पर्णिका,-पर्णी**-स्त्री० मुद्गपर्णी।

शिंबिक-पु० (सं०) कृष्ण मुद्ग, काली मूंग।

शिंबिका-स्त्री० (सं०) छीमी; सेम।

शिंबिनी-स्त्री० (सं०) श्यामा पक्षी; सेम।

शिंबी-स्त्री० (सं०) छीमी; सेम; मुद्गपर्णी; केवाँच, कपिकच्छु। **-धान्य**-पु० द्विदलान्न। **-फल**-पु० आहुल्य।

शिंश-पु० (सं०) एक फलवृक्ष।

शिंशपा-स्त्री० (सं०) शिशु वृक्ष, शीशमका पेड़; अशोक वृक्ष।

शिंशुपा*-स्त्री० दे० 'शिंशपा'।

शिंशुमार-पु० (सं०) दे० 'शिशुमार'।

शि-पु० (सं०) मंगल; समृद्धि; शांति; शिव।

शिआर-पु० (अ०) तौर; तरीका, चाल, शील (समासमें)।

शिकंज-स्त्री० (फा०) शिकन, झुर्री; चुटकी; चेंटुआ।

शिकंजवीन-पु० दे० 'सिकंजवीन'।

शिकंजा-पु० (फा०) यंत्रणा देनेका यंत्र जिसमें पुराने जमानेमें अपराधियोंके हाँथ-पाँव देकर दबा दिये जाते थे; एक यंत्र जिसमें जिल्दसाज किताबें दबाकर पन्ने काटते हैं; रुई दबानेकी कल; कोल्हू; घुमावदार बंद बनानेका जुलाहोंका तागा; (ला०) यंत्रणा; पकड़, दबाव। मु० **-(जे)में खींचना**-यंत्रणा देना; कठोर दंड देना।

शिकंबा-पु० (फा०) पक्वाशय, पेटकी थैली जिसमें अन्न पचता है।

शिक़-स्त्री० (अ०) वस्तुका अर्द्ध भाग; बैल आदिका एक ओरका बोझ; एक ओरका भाग, जानिब; खंड; देशका विभाग जो एक तहसीलदारके मातहत हो। **-दार**-पु० तहसीलदार।

शिकन-स्त्री० (फा०) सिलवट, सिकुड़न। वि० (समासमें) तोड़नेवाला (बुतशिकन, दिलशिकन)। मु० **-चेहरेपर शिकन आना**-चेहरेसे चिन्ता, असंतोष या कष्ट आदिका भाव प्रकट होना।

शिकम-पु० (फा०) पेट। **-परवर**-वि० पेट पालनेवाला, पेटू। **-पुर**-वि० भोजनसे तृप्त। **-सेर**-वि० जिसका पेट भरा हुआ हो; तृप्त। मु० **-सेर होकर खाना**-पेट भरकर खाना।

शिकमी-वि० (फा०) पेटका; पैदाइशी; भीतरी (शिकमी शरीक)। पु० वह काश्तकार जो असल काश्तकारसे जमीन लेकर जोते-बोये। मु० **-देना**-किसी दूसरेका लगान आदिपर जमीन देना।

शिकरम-पु० एक तरहकी घोड़ागाड़ी।

शिकरा-पु० (फा०) एक शिकारी पक्षी जो बाजसे कुछ छोटा होता है। मु० **-पालना**-बोझ अपने सिर लेना।

शिकवा-पु० (फा०) शिकायत, उलाहना, ग्लानि।

शिकस्त-स्त्री० (फा०) हार, मात (खाना, देना, पाना); टूट-फूट (शिकस्तन = टूटना)। **-ख़ुर्दगी**-स्त्री० पराजय। **-गी**-स्त्री० टूट-फूट। **-फ़ाश**-स्त्री० पक्की या गहरी हार। **-बंद**-पु० एक तरहका छल्ला जो टूटता और बंद हो जाता है।

शिकस्ता-वि० (फा०) टूटा हुआ, भग्न; घसीट (लिखावट)। **-ख़ातिर,-दिल**-वि० खिन्न, भग्नहृदय। **-गुरूर**-वि० जिसका गर्व चूर हो गया हो, भग्नगर्व। **-नवीस**-वि०, पु० घसीट लिखनेवाला। **-पर,-बाज़**-वि० अशक्त, असहाय। **-हाल**-वि० फटेहाल, गरीब; परीशान।

शिक़ाक-पु० (अ०) शत्रुता; रंजिश; विपरीतता।

शिकायत-स्त्री० (अ०) दोषकथन, गिला, निंदा, बुराई; दुखड़ा; रोग, पीड़ा (पेटकी शिकायत); दोष माननेका कारण, शिकायतकी वजह। **-कुनाँ,-गर**-वि० शिकायत करनेवाला। **-नामा**-पु० वह पुस्तक जिसमें शिकायतें लिखी जाती हों (कम्प्लेंट बुक)। मु० **-करना**-गिला करना, दुखड़ा रोना, बुराई करना; उलाहना देना; पीड़ा बताना (सिरदर्दकी शिकायत करना)।

शिकायती-वि० शिकायत करनेवाला; जिसमें शिकायत हो (चिट्ठी)।

शिकार-पु० (अ०) आखेट; पशु-पक्षियोंको (क्रीड़ा या आहारके लिए) मारना; मारा हुआ पशु-पक्षी या उसका मांस; लूटका माल; दलाल, वेश्या, डाकू आदिके फंदेमें आया हुआ आदमी। **-गाह**-पु०, स्त्री० शिकार खेलनेकी जगह, जंगल, रमना; जंगलमें बना हुआ वह मंच जिसपर बैठकर शेर, बनैले सूअर आदिका शिकार किया जाता है। **-बंद**-पु० वह तसमा जो घोड़ेकी दुमके पास चारजामेके पीछे शिकार या दूसरी जरूरी चीज बाँध लेनेके

लिए लगा होता है। **–की टट्टी**–छोटी-सी टट्टी जिसपर घास बिछाकर बहेलिये अपने साथ रखते हैं। मु० **–करना**–आखेट करना; फंदेमें फाँसना; मुट्ठीमें करना। **–खेलना**–आखेट करना। (किसीका)**–होना**–फंदेमें फँसना; किसी रोग, दुर्घटना आदिसे मरना या पीड़ित होना; किसीके रोषादिकी बलि होना।

शिकारा–पु० कश्मीरी ढंगकी लंबी नाव जिसके बीचमें सायादार बैठनेका स्थान होता है।

शिकारी–वि०, पु० शिकार करनेवाला व्याध; शिकार संबंधी; जिसका शिकार किया जाय; जिसके द्वारा, जिस हथियार द्वारा शिकार किया जाय। **–कुत्ता**–पु० शिकार पकड़नेवाला, शिकारमें सहायक कुत्ता। **–जानवर**–पु० वह जानवर जो आहारके लिए दूसरे पशुओंका शिकार करता है।

शिकाल–पु० (अ०) एक या तीन सफेद टाँगोंवाला घोड़ा जो ऐबी माना जाता है। (फा०) छल, धोखा, फरेब।

शिकोह–पु० (फा०) डर, भय; दे० 'शुकोह'।

शिक्कु–वि० (सं०) निठल्ला, बेकार; आलसी।

शिक्थ–पु० (सं०) मधुमक्खीके छत्तेका मोम, मधुसंभव, मधुशेष।

शिक्य–पु०, **शिक्या**–स्त्री० (सं०) छींका, सिकहर; रस्सीकी जालीमें ढोया जानेवाला बोझ; रस्सीकी जालीमें रखा सामान; तुलाकी डोरी।

शिक्यित–वि० (सं०) सिकहरपर रखा हुआ।

शिक्षक–पु० (सं०) शिक्षा देनेवाला; अध्यापक, गुरु; सीखनेवाला।

शिक्षण–पु० (सं०) शिक्षा देनेका काम; शिक्षा लेनेका काम, शिक्षाप्राप्ति, ज्ञानप्राप्ति। **–कला**–स्त्री० पढ़ानेकी कला। **–शास्त्र**–पु० (पेडेगाजी) छात्रोंको पढ़ाने, शिक्षा देनेकी विद्या।

शिक्षणीय–वि० (सं०) शिक्षाके योग्य, शिक्षा देने लायक; पढ़ाने योग्य।

शिक्षमाण–पु० (सं०) विद्यार्थी, छात्र।

शिक्षा–स्त्री० (सं०) व्यवस्थित रूपसे किसी शिक्षा संस्थामें या शिक्षक, गुरु आदिसे ज्ञान या विद्याकी प्राप्ति; चारित्रिक तथा मानसिक शक्तियोंका विकास; दक्षता; निपुणता; मंत्रणा; व्याकरणमें अक्षरों या वर्णोंका सही उच्चारण और लेखन प्रकारका विवेचन (ऑर्थोग्रैफी); प्रशिक्षण, ट्रेनिंग (जैसे–'व्यायाम-शिक्षा'); उपदेश; सबक, दंड (व्यं०); विद्या, विज्ञान, कला (जैसे–'संगीत-शिक्षा', 'रण-शिक्षा'); वेदके षडंगोंमेंसे एक अंग जिसमें वेदमंत्रोंके उच्चारणकी विवेचना है; उच्चारण-विज्ञान, 'फोनेटिक्स' (जैसे–"पाणिनीय शिक्षा'); विनम्रता; श्योनाक वृक्ष। **–कर**–पु० शिक्षक; व्यास मुनि। वि० शिक्षा देनेवाला। **–गुरु**–पु० शिक्षक; ज्ञानदाता गुरु, 'दीक्षागुरु'का विलोम। **–दंड**–पु० सबकके तौरपर दिया हुआ दंड। **–दीक्षा**–स्त्री० शिक्षा, उपदेश आदि द्वारा किसीका बौद्धिक, चारित्रिक, मानसिक आदि विकास। **–नर**–पु० इंद्र। **–पद्धति**–स्त्री० शिक्षा देनेका ढंग। **–परिषद्**–स्त्री० वैदिक शिक्षाके अध्ययन-अध्यापनके लिए तत्कालीन शिक्षालय जहाँ उसके अधिकारी किसी विशेष ऋषिकी शिक्षा-पद्धति चलती थी और जो उसीके नामसे प्रसिद्ध होता था; किसी विद्यापीठ (विश्वविद्यालय)के अध्यापकों तथा अन्य शिक्षा-विशेषज्ञोंकी वह परिषद् जो पाठ्यक्रम, शिक्षणनीति आदिका निर्णय करती है। **–प्रणाली**–स्त्री० दे० 'शिक्षा-पद्धति'। **–प्रद**–वि० शिक्षादायक। **–प्रसार-योजना**–स्त्री० (एजुकेशन एक्सपैंशन स्कीम) बालकों, स्त्रियों, प्रौढ़ों, अंधों आदिमें अधिकाधिक विस्तारपूर्वक शिक्षा फैलानेकी योजना। **–मंत्री(त्रिन्)**–पु० शिक्षा-विभागका सर्वोच्च अधिकारी। **–विद्**–पु० शिक्षाका जानकार, शिक्षा-शास्त्री। **–विभाग**–पु० शिक्षाकी व्यवस्था तथा उसके सँभालनेके निमित्त बना विभाग। **–व्रत**–पु० गार्हस्थ्य धर्मका एक प्रमुख अंग (जै०)। **–शक्ति**–स्त्री० शिक्षा-ग्रहणकी शक्ति, पढ़नेका माद्दा। **–शास्त्र**–पु० शिक्षाविधिका विवेचन करनेवाला शास्त्र।

शिक्षाक्षेप–पु० (सं०) केशवदास द्वारा वर्णित एक अलंकार।

शिक्षार्थी(र्थिन्)–पु० (सं०) शिक्षाप्राप्तिके लिए इच्छुक व्यक्ति, विद्यार्थी, छात्र।

शिक्षालय–पु० (सं०) विद्यालय, स्कूल, कालिज।

शिक्षित–वि० (सं०) शिक्षायुक्त; अधीत; मेधावी, निपुण; विनीत; पालतू; विद्वान्, विज्ञ; आधुनिक शिक्षा-दीक्षा-संपन्न (ला०)।

शिक्षिताक्षर–पु० (सं०) शिक्षक; छात्र; लेखक, मुहर्रिर।

शिक्षितायुध–वि० (सं०) शस्त्रादिके संचालनमें निपुण।

शिक्ष्यमाण–पु० (ऐप्रेंटिस) दे० 'पदशिक्षार्थी'।

शिखंड, शिखंडक–पु० (सं०) चोटी, कलँगी, शिखा; मयूरपुच्छ; काकपक्ष, काकुल।

शिखंडिक–पु० (सं०) मुर्गा, कुक्कुट।

शिखंडिका–स्त्री० (सं०) शिखा।

शिखंडिनी–वि०, स्त्री० (सं०) शिखंडयुक्ता। स्त्री० मोरनी; यूथिका, जूही; गुंजा, घुँघची; राजा द्रुपदकी कन्या।

शिखंडी(डिन्)–वि० (सं०) शिखायुक्त। पु० मोर; मोरकी पूँछ; मुर्गा; स्वर्णयूथिका; घुँघची; बाण; विष्णु; शिव; बृहस्पति; द्रुपदका पुत्र जो स्त्रीरूपमें उत्पन्न हुआ था मगर तपस्या द्वारा एक यक्षसे अपने स्त्रीरूपको बदलकर पुरुष हो गया था (महाभारत-युद्धमें अर्जुनने इसे भीष्मसे लड़नेके लिए सामने खड़ा कर उनको आहत कर युद्धसे सदाके लिए विरत कर दिया था। यह अंतमें अश्वत्थामा द्वारा मारा गया)।

शिख*–स्त्री० शिखा ('नखशिख'में प्रयुक्त)।

शिखर–पु० (सं०) पर्वताग्र, पहाड़का सबसे ऊँचा भाग, शृंग, कूट; जैनोंका एक प्रसिद्ध तीर्थ; मकानका सबसे ऊँचा हिस्सा, मुँडेर; मंदिर मसजिद आदिका सर्वोच्च भाग, कलश, गुंबद; कँगूरा; वृक्षका सबसे ऊपरी हिस्सा, सिरा; तलवारकी नोक; किसी भी वस्तुका सिरा, अग्रभाग, उसकी चोटी, नोक आदि; शिखा; पके अनारदानेकी आभावाला माणिक्य या एक रत्न; पुलक; शुष्क तृण; कक्ष, काँख, शरीरमें कंधेके नीचेकी खाली जगह; कुंदकली; जूही। **–वासिनी**–स्त्री० दुर्गा; पार्वती। **–सम्मेलन**–पु० (समिट कॉनफरेंस) किसी गंभीर समस्यापर विचार-विमर्श करनेके लिए आयोजित विभिन्न देशोंके शीर्षस्थ नेताओंका सम्मेलन।

शिखरन–पु० दहीमें चीनी, केशर आदि मिलाकर तैयार किया गया पेय या लेह्य पदार्थ।

शिखरा–स्त्री० (सं०) मूर्वा।

शिखरिणी–स्त्री० (सं०) नारीरत्न, उत्तम वर्गकी नारी; एक स्वादिष्ट लेह्य या पेय पदार्थ, श्रीखंड; रोमावली जो वक्षःस्थलसे चलकर नाभितक जाती है; मल्लिका; नवमल्लिका, नेवाड़ी; द्राक्षाविशेष, किशमिश; मूर्वा; एक वर्णवृत्त। वि० स्त्री० शिखरवाली, शिखरयुक्ता।

शिखरी–स्त्री० एक गदा; शिखरा।

शिखरी(रिन्)–वि० (सं०) शिखरयुक्त। पु० पर्वत; पहाड़ी किला; वृक्ष; अपामार्ग, चिचड़ा; बंदाक; कुंदुरुक; कर्कटशृंगी, काकड़ासिंगी; यावनाल, ज्वार; सिखरन।

शिखलोहित–पु० (सं०) कुकुरमुत्ता।

शिखांडक–पु० (सं०) काकपक्ष।

शिखांत–पु० (सं०) शिखाका सबसे ऊपरी भाग।

शिखा–स्त्री० (सं०) चूड़ा, चोटी, चुटिया; अग्निज्वाला, आगकी लपट; दीयेकी लौ; प्रकाशकी किरण; मोर, मुर्गा आदिके सिरपरकी कलँगी; वस्त्र, पोशाकका सिरा या अंचल; किसी वस्तुकी नोंक या नुकीला सिरा; पैरके पंजेका अगला हिस्सा; पेड़की जटायुक्त जड़; पेड़ (विशेष रूपसे जड़ पकड़ते हुए)की शाखा; स्वामी, नेता, प्रधान; पुरुषरत्न; कामज्वर; चुचुक; तुलसी; वच; जटामासी; कलियारी नामक विष; एक वर्णवृत्त; दे० 'शिखर'। **–कंद**–पु० शलजम; गृंजन। **–तरु**–पु० दीपाधार, दीवट। **–धर**–पु० मयूर; मंजुघोष। वि० नुकीला; चोटीवाला। **–धार, –धारक**–पु० मोर। वि० चूड़ाधारी। **–पाश**–पु० चोटी; बड़ी चुटिया। **–पित्त**–पु० हाथ तथा पैरकी उँगलियोंमें सूजन और जलन पैदा करनेवाला एक रोग। **–बंध**–पु० बालका गुच्छा। **–बंधन**–पु० चुटिया बाँधना। **–मणि**–पु०

सिरपर पहननेका रत्न। **–मूल**–पु० गाजर; शलजम; ऐसा कंद जिसके ऊपर पत्तियोंका समूह हो। **–वर**–पु० पनस वृक्ष, कटहलका पेड़। **–वृक्ष**–पु० दे० 'शिखातरु'। **–वृद्धि**–स्त्री० प्रति दिन बढ़नेवाला ब्याज (कम्पाउण्ड इन्टरेस्ट)। **–सूत्र**–पु० चुटिया और जनेऊ जो द्विजोंके चिह्न हैं।

शिखाभरण–पु० (सं०) शिरोभूषण।

शिखालु–पु० (सं०) मयूरशिखा, मोरकी कलँगी।

शिखावती–स्त्री० (सं०) मूर्वा।

शिखावर्त–पु० (सं०) एक यक्ष।

शिखावल–पु० (सं०) मयूर। वि० शिखायुक्त।

शिखावला–स्त्री० (सं०) मयूरशिखा वृक्ष।

शिखावली–स्त्री० (सं०) मयूरी, मोरनी।

शिखावान्(वत्)–वि० (सं०) शिखायुक्त; ज्वालयुक्त। पु० दीपक; अग्नि; चित्रक वृक्ष; केतु ग्रह; पुच्छल तारा।

शिखि–पु० (सं०) मयूर; तामस मन्वंतरके इंद्र; कामदेव; अग्नि।

शिखिनी–स्त्री० (सं०) मोरनी; मुर्गी; जटाधारीका पौधा। वि० स्त्री० शिखावाली।

शिखींद्र–पु० (सं०) तिंदुक वृक्ष, तेंदूका पेड़; आवनूसका पेड़।

शिखी(खिन्)–वि० (सं०) शिखायुक्त, शिखावाला; नुकीला; अभिमानी। पु० मोर, मयूर; कुक्कुट; बैल; सारस, बगुला; घोड़ा; अग्नि; दीपक, दीया; बाण; पर्वत; वृक्ष; चित्रक वृक्ष; अजमोदा; सतावर; मेथिका, मेथी; एक विष; बाण; इन्द्र; केतु ग्रहका नाम; ब्राह्मण; धार्मिक भिक्षु, भिक्षापर जीवन-निर्वाह करनेवाला साधु; तीनकी संख्या (क्योंकि अग्नि तीन प्रकारकी होती है)। **–(खि) कंठ,–ग्रीव**–वि० मयूरके कंठ जैसा। पु० तुत्थ, तूतिया। **–कण**–पु० आगकी चिनगारी। **–ध्वज**–पु० धूम, धुआँ; मयूरध्वज राजा; कार्त्तिकेय। **–पिच्छ,–पुच्छ**–पु० मोरकी पूँछ, दुम। **–प्रिय**–पु० वनबेर, लघुबदर। **–भू**–पु० स्कंद। **–मंडल**–पु० वरुण वृक्ष। **–मोदा**–स्त्री० मोरको आनंद देनेवाली वस्तु, अजमोदा। **–यूप**–पु० श्रीकारी मृग। **–वर्द्धक**–पु० कुष्मांड, गोल लौकी। **वाहन**–पु० कार्त्तिकेय। **शिखा**–स्त्री० अग्नि-ज्वाला, आगकी लपट; मोरके शिरकी कलँगी। **–शृंग**–पु० एक हिरन जिसके शरीरपर चित्ते होते हैं। **–शेखर**–पु० मोरकी कलँगी।

शिखीश्वर–पु० (सं०) स्वामी कार्त्तिकेय। **–मास**–पु० कार्त्तिक मास।

शिगाफ़–पु० (फा०) चीरा; दरार; झरी; नरकुल आदिकी लेखनीके बीचोबीच दिया जानेवाला चीरा। **–दार**–वि० जिसमें शिगाफ, दरार हो। मु० **–देना**–कलमको चीरना; नश्तर लगाना।

शिगाफ़ा–पु० (फा०) मिजराब; वीणावादन।

शिगार, शिगाल, शिग़ाल–पु० (फा०) गीदड़, शृगाल।

शिगुफ़्तगी–स्त्री० (फा०) शिगुफ्ता होना, प्रफुल्लता; प्रसन्नता; हरा-भरा होना।

शिगुफ़्ता–वि० (फा०) खिला हुआ, प्रफुल; प्रसन्न; हरा भरा। **–पेशानी**–वि० हँसमुख, प्रसन्नचित्त।

शिगूफ़ा–पु० (फा०) कली; अनोखी बात; चुटकुला। मु० **–खिलाना**–कोई अनोखी बात करना; झगड़ा उठाना। **–छोड़ना**–झगड़ा-फसाद खड़ा करानेवाली बात कहना, करना।

शिग्रु–पु० (सं०) साग; सहिजनका पेड़। **–ज**–पु० सहिजन।

शित–वि० (सं०) तेज किया हुआ, सान धरा हुआ; दुबला-पतला, क्षीण, कृश; कमजोर, दुर्बल; * सफेद। पु० विश्वामित्रका एक पुत्र। **–धार**–वि० तेज धारवाला। **–शूक**–पु० यव, जौ; गेहूँ।

शितद्रु–स्त्री० (सं०) शतद्रु, सतलज नदी; मोरट।

शिताग्र–पु० (सं०) काँटा।

शिताफल–पु० (सं०) सीताफल, शरीफा।

शिताब–अ० (फा०) जल्द, झटपट। वि० जल्दबाज, तेज। **–कार**–वि० जल्दबाज, उतावला।

शिताबी–स्त्री० (फा०) जल्दी; उतावली, घबराहट।

शिति–वि० (सं०) सफेद; काला। पु० भूर्ज वृक्ष। **–कंठ**–पु० मोर; दात्यूह पक्षी; चातक; शिव। **–कंठक**–वि० श्याम कंठवाला। **–कुंभ**–पु० करवीर वृक्ष। **–केश**–पु० स्कंदका एक अनुचर। **–चंदन**–पु० कस्तूरी। **–चार**–पु० शाक-विशेष। **–च्छद,–पक्ष**–पु० हंस। **–मांस**–पु० चर्बी। **–रत्न**–पु० नीलम। **–वासा(सस्)**–पु० बलराम। **–सार,–सारक**–पु० तिंदु वृक्ष, तेंदूका पेड़।

शिथिल–वि० (सं०) ढीला; बिन बँधा, खुला हुआ; सुस्त, जल्दी-जल्दी काम न करनेवाला, आलसी; वृद्धावस्था, बीमारी या श्रमसे थका हुआ; (डालसे) गिरा, टूटा हुआ; बिना पूरे दबावका, जिसे कुछ छूट दी गयी हो; बिना पूरी पाबंदीके जिसका पालन हो, पूरी सावधानीसे जिसका पालन न हो। पु० ढीला बंधन; आलस्य, सुस्ती। **–प्रयत्न**–वि० जिसका प्रयत्न ढीला पड़ गया हो। **–बल**–वि० जिसकी ताकत कम पड़ गयी हो। **–वसु**–वि० जिसका धन क्षीण हो गया हो। **–शक्ति**–वि० दे० 'शिथिलबल'। **–समाधि** वि० जिसकी समाधि भंग हो गयी हो।

शिथिलता–स्त्री० (सं०) ढीलापन; सुस्ती, आलस्य; श्रांति; छूट देना, पूरा दबाव न डालना, नियमका पालन करानेपर पूरा ध्यान न देना; काव्य-रचना, वाक्य-रचना आदिमें दोषके कारण चुस्तीका न होना; तर्क आदिकी अपुष्टता।

शिथिलाई*–स्त्री० शिथिलता।

शिथिलाना*–अ० क्रि० ढीला पड़ना, मंद पड़ना, थकना।

शिथिलित–वि० (सं०) जो श्लथ हो गया हो, जो ढीला हो गया हो।

शिथिलीकरण–पु० (सं०) शिथिल करनेकी क्रिया, ढीला करनेका काम।

शिथिलीकृत–वि० (सं०) शिथिल किया हुआ, ढीला किया हुआ।

शिथिलीभूत–वि० (सं०) दे० 'शिथिलित'।

शिद्दत–स्त्री० (अ०) कठिनाई; कष्ट; तीव्रता; कठोरता; अधिकता, प्रबलता (बारिशकी, जाड़ेकी शिद्दत)। **–का**–जोर-का, तीव्र (शिद्दतका बुखार,**–का** जाड़ा)।

शिना–स्त्री० (फा०) तैरनेका काम। **–वर**–पु० तैराक। **–वरी** स्त्री० तैराकी।

शिनाख्त–स्त्री० (फ़ा०) दे० 'शनाख़्त'।

शिनास–वि० (फा०) पहचाननेवाला; जानकार।

शिनि–पु० (सं०) यादवोंके पक्षका एक वीर; गर्गके एक पुत्रका नाम। **–बाहु**–पु० एक नदी। **–वास**–पु० एक पर्वत।

शिपविष्ट–वि० (सं०) दे० 'शिपिविष्ट'।

शिपि–पु० (सं०) प्रकाशकी किरण; जल। स्त्री० चमड़ा, त्वक्, खाल। **–विष्ट**–वि० किरणाच्छादित, किरणोंसे ढका हुआ; गंजी खोपड़ीवाला; दुश्चर्मा। पु० कोढ़ी; गंजी खोपड़ीवाला आदमी; शिव; विष्णु; शिश्नाग्रच्छद-विहीन पुरुष।

शिपिश–स्त्री० (फा०) बालोंमें पड़नेवाला जूँ।

शिप्र–पु० (सं०) हिमालय पर्वतके एक सरोवरका नाम।

शिप्रा–स्त्री० (सं०) शिप्र सरोवरसे निकली एक नदीका नाम जिसके तटपर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है; शिरस्त्राण।

शिफ–पु० (सं०) दे० 'शिफा'।

शिफर*–पु० सिपर, ढाल।

शिफा–स्त्री० (सं०) पेड़की रेशेदार जड़; भसींड़, कमलकी जड़; जड़; हल्दी; लता; शतपुष्पा; मांसिका, जटामासी; नदी; शिखा; माता, माँ; कोड़ेकी मार, कोड़ेसे चोट करनेकी क्रिया। **–कंद**–पु० पद्ममूल, कमलकी जड़, भसींड़। **–धर**–पु० शाखा। **–रुह**–पु० वटवृक्ष।

शिफ़ा–स्त्री० (अ०) स्वास्थ्य, आरोग्य, रोगसे मुक्ति (देना, पाना)। **–ख़ाना,–गाह**–पु० चिकित्सालय, अस्पताल। **–याब**–वि० रोगमुक्त।

शिफाक–पु० (सं०) दे० 'शिफाकंद'।

शिबि–पु० (सं०) 'शिवि'।

शिबिका–स्त्री० (सं०) दे० 'शिविका'।

शिमाल–स्त्री० (अ०) उत्तर दिशा; दे० 'शुमाल'।

शिमृडी–स्त्री० (सं०) पंगुत्वहारिणी।

शिया, शीया–पु० मुसलमानोंका एक सम्प्रदाय। दे० 'शीआ'।

शिरःकपाली–पु० (सं०) नर-कपालधारी सन्न्यासी, कापालिक सन्न्यासी।

शिरःकृंतन–पु० (सं०) शिरश्छेद।

शिरःखंड–पु० (सं०) मस्तक, कपालकी हड्डी।

शिरःपट्ट–पु० (सं०) पगड़ी।

शिरःपीडा–स्त्री० (सं०) सिरदर्द; सिरदर्दका रोग।

शिरःफल–पु० (सं०) नारियल।

शिरःशूल–पु० (सं०) दे० 'शिरःपीड़ा'।

शिरःस्थ–पु० (सं०) मुखिया; नेता; वादी।

शिर–पु० (सं०) सिर; पिप्पलीमूल; शय्या; अजगर। **–ज**–पु० बाल, केश। **–त्राण***–पु० दे० 'शिरस्त्राण'। **–पेंच**–पु० (हिं०) दे० 'सिरपेंच'। **–फूल**–पु० (हिं०) सीसफूल नामक आभूषण। **–मौर**–पु० (हिं०) सरदार, श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिर(स्)–पु० (सं०) सिर; खोपड़ी; पर्वतकी चोटी, शिखर; पेड़का सिरा, वृक्षाग्र; किसी वस्तुका सर्वोच्च भाग; सेनाका अगला भाग; नायक, मुखिया, प्रधान; पिप्पलीमूल; पिपरामूल; बिछौना, शय्या; अजगर; पद्यके चरणका आरम्भ।

शिरकत–स्त्री० (अ०) शामिल या शरीक होना; मिलना; साझा; योग। **–नामा**–पु० वह दस्तावेज जिसमें साझेकी शर्तें लिखी हों।

शिरकती–वि० साझेका; संयुक्त।

शिरशिज, शिरसिरुह–पु० (सं०) दे० 'शिरज'।

शिरश्चंद्र–पु० (सं०) शिव।

शिरश्छेद, शिरश्छेदन–पु० (सं०) सिर काटना। **–यंत्र**–पु० (गिलोटिन) शिरश्छेद कर देने, धड़से सिरको उड़ा देनेके निमित्त प्रयुक्त होनेवाला यंत्र।

शिरसा–अ० (सं०) आदरपूर्वक, शिरोधार्य करते हुए।

शिरस्क–पु० (सं०) पगड़ी; शिरस्त्राण।

शिरस्का–स्त्री० (सं०) पालकी।

शिरस्तापी(पिन्)–पु० हाथी।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण–पु० (सं०) लोहेका टोप, जो युद्धके अवसरोंपर अस्त्र-शस्त्रसे सिरके रक्षार्थ पहना जाता है।

शिरस्थ–पु० (सं०) दे० 'शिरःस्थ'।

शिरस्य–वि० (सं०) शिरका, सिरपर स्थित। पु० स्वच्छ केश।

शिरहन*–पु० सिरहाना; तकिया।

शिरा–स्त्री० (सं०) (वेन) प्राणियोंके शरीरमें स्थित रक्तवाहिकाएँ जो शरीरकी कोशिकाओं (कैपिलटीज़) से रुधिरको वापस हृदय तक ले जाती हैं। खूनकी नाड़ी, रक्तवहा नाड़ी; पानीका सोता; पानी खींचनेका डोल। **–ग्रह**–पु० गलेकी रक्त-नाड़ियोंको काला कर देनेवाला एक प्रकारका वातरोग। **–जाल**–पु० खूनकी नसोंका समूह; आँखका एक रोग। **–पत्र**–पु० हिंताल वृक्ष; पिप्पल वृक्ष; कपित्थ वृक्ष। **–पीड़िका**–स्त्री० एक नेत्ररोग जिसमें पुतलीके पास फुंसी निकल आती है; बहुमूत्रके रोगियोंको निकलनेवाली घातक फुंसी, प्रमेह-पीडिका। **–प्रहर्ष**–पु० आँखका एक रोग। **–फल**–पु० नारियल। **–मल**–पु० नाभि। **–मूल**–पु० नाभि। **–वृत्त**–पु० सीसा। **–हर्ष**–पु० शिरा, नाड़ीका झनझनाना; एक नेत्र-रोग।

शिराकत–स्त्री० दे० 'शिरकत'। **–नामा**–पु० दे० 'शिरकतनामा'।

शिराज–स्त्री० चमड़ेका काम करनेवाली एक जाति।

शिरायु–पु० (सं०) भालू, रीछ।

शिराल–वि० (सं०) शिरा-संबंधी; शिरायुक्त, शिराबहुल। पु० कमरख, कर्मरंग।

शिरालक–पु० (सं०) अस्थिभंग वृक्ष।

शिरावरोध–पु० (सं०) (थ्राम्बोसिस) शरीरस्थ किसी शिरमें रक्तके कणोंकी गांठ बन जानेका रोग जिससे रक्त-संचारमें बाधा पड़ती है।

शिरि–पु० (सं०) तलवार; बाण; हिंसक, जानसे मार डालनेवाला व्यक्ति; शलभ, फतिंगा, टिड्डी।

शिरीष, शिरीषक–पु० (सं०) अति कोमल फूलोंवाला एक वृक्ष, सिरिस।

शिरोगद–पु० (सं०) सिरका रोग।

शिरोगृह, शिरोगेह–पु० (सं०) सबसे ऊपरका घर, चंद्रशाला।

शिरो गौरव–पु० सिरका भारीपन।

शिरोग्रह–पु० (सं०) सिरदर्द; समलवाई नामक रोग।

शिरोज–पु० (सं०) बाल।

शिरोदाम(न्)–पु० (सं०) पगड़ी, मुरेठा, साफा।

शिरोदुःख–पु० (सं०) सिरदर्द।

शिरोधरा–स्त्री० (सं०) ग्रीवा।

शिरोधाम(न्)–पु० (सं०) सिरहाना।

शिरोधार्य–वि० (सं०) शिरपर धारण करने योग्य, सादर स्वीकार करने योग्य, अतिशय मान्य।

शिरोधि–स्त्री० (सं०) गरदन जिसके आधारपर शिर टिका है।

शिरोपाव–पु० दे० 'सिरोपाव'।

शिरोभूषण–पु० (सं०) सिरपर पहननेका आभूषण (जैसे–कलंगी, टीका, सीसफूल आदि); श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोभूषा–स्त्री० (सं०) टोपी, पगड़ी आदि सिरपर धारण किये जानेवाले वस्त्र।

शिरोभ्यंग–पु० (सं०) सिरमें तेल मालिश करना।

शिरोमणि–पु० (सं०) मस्तकपर धारण करनेका रत्न, शिरोरत्न, चूड़ामणि; श्रेष्ठ पुरुष। वि० सर्वश्रेष्ठ।

शिरोमर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) शूकर, सूअर।

शिरोमाली(लिन्)–पु० (सं०) मुंडमालधारी शिव।

शिरोमौलि–पु० (सं०) सिरका आभूषण या रत्न; श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोरक्षी(क्षिन्)–पु० (सं०) (बॉडीगॉर्ड) अंगरक्षक।

शिरोरत्न–पु० (सं०) दे० 'शिरोमणि'।

शिरोरुजा–स्त्री० (सं०) सप्तपर्ण वृक्ष; सिरदर्द, मस्तक पीड़ा।

शिरोरुह–पु० (सं०) सिरके बाल।

शिरोरोग–पु० (सं०) सिर-दर्द, मस्तकपीड़ा।

शिरोवर्ती(र्तिन्)–वि० (सं०) प्रधान, मुखिया, नायकके रूपमें रहनेवाला। पु० प्रधान, मुखिया, नायक; किसी संस्था, विभाग, सेना आदिका प्रधान।

शिरोवल्ली–स्त्री० (सं०) मयूरशिखा; मयूरके सिरकी कलँगी।

शिरोवस्ति–स्त्री० (सं०) सिरदर्दका एक प्रकारका तैलोपचार।

शिरोबिंदु–पु० (ऐपेक्स) किसी त्रिकोण या शंक्वाकार घनका शीर्ष या ऊपरी बिंदु। (जेनिथ) आकाशमें सिरके ठीक ऊपर पड़नेवाला बिन्दु।

शिरोवृत्त–पु० (सं०) मरिच। **–० फल**–पु० रक्त अपामार्ग, लाल चिचड़ा।

शिरोवेष्ट, शिरोवेष्टन–पु० (सं०) शिरोदाम, पगड़ी, मुरेठा।

शिरोहर्ष–पु० (सं०) एक नेत्र-रोग।

शिरोहारी(रिन्)–पु० (सं०) मुंडमालधारी शिव।

शिर्क–पु० (अ०) खुदाके साथ किसी औरको शरीक जानना, ईश्वरमें द्वैतभावना रखना।

शिलंब–पु० (सं०) ऋषि; जुलाहा।

शिल–स्त्री० शिला; दे० 'सिल'। पु० (सं०) उंछ, सिला, सिलहारी, खेत कट जानेके पश्चतात् उसमेंसे शेष अन्न या अन्नबाली बीननेकी क्रिया; जीवनोपायविशेष। **–रति**–वि० उंछ वृत्तिसे संतुष्ट। **–वृत्ति**–वि० उंछसे निर्वाह करनेवाला।

शिलक, शिल्लुक–स्त्री० नकद, रोकड़।

शिलगर्भज–पु० (सं०) पाषाणभेदन।

शिलांजनी–स्त्री० (सं०) कालांजनी नामक पेड़; काली कपास।

शिलांत–पु० (सं०) अश्मंतक वृक्ष।

शिला–स्त्री० (सं०) पत्थर; पत्थरकी पटिया, पट्टी, भोट; चट्टान; चक्कीका नीचेका पाटा; द्वारके नीचेका काठ; खंभेका सिरा, शिरोभाग; मनःशिला, मैनसिल; कपूर; शिलाजीत; गेरू; रोड़ा, कंकड़; हर्रे; नीलका पौधा; दूब; गोरोचन; उंछ वृत्ति; शिरा। **–कर्णी**–स्त्री० सलईका पेड़। **–कुट्ट, –कुट्टक**–पु० पत्थर काटने, तोड़नेकी छेनी। **–कुसुम**–पु० एक गंधद्रव्य, शैलेय। **–क्षार**–पु० चूना। **–खंड**–पु० चट्टान; किसी घटनाका पत्थर। **–घन**–वि० पत्थर जैसा कठिन। **–चक्र**–पु० पत्थरपर बना हुआ चक्र। **–चय**–पु० पर्वत। **–ज**–पु० शिलाजीत; लोहा; पेट्रोल।

–जतु–पु० शिलाजीत; गेरू । **–जा**–स्त्री० संगमरमर । **–जित्** –पु० सूर्यके तापसे तपी शिलाओंसे निकला काला रस जो वैद्यकके अनुसार पुष्टिकारक माना गया है (इसका सेवन प्रायः जाड़ेके दिनोंमें किया जाता है) । **–जीत**–पु० (हिं०) दे० 'शिलाजित्' । **–दद्रु**– **–तल**–पु० पत्थरका ऊपरी भाग, शिला, पाषाण-पृष्ठ । पु० शैलेय गंधद्रव्य । **–दान**–पु० पुराणोक्त एक दान जिसमें ब्राह्मणको शालग्रामकी बटिया दी जाती है । **–धातु**–स्त्री० खड़िया; पीले रंगका गेरू । **–निर्माण-विज्ञान**–पु० (पिट्रोलॉजी) चट्टानोंकी रचना, स्वरूप आदिका अध्ययन करनेकी विद्या । **–निर्यास**–पु० दे० 'शिलाजित्' । **–न्यास**–पु० (भवनादिकी नींवका) पत्थर रखना । **–पट्ट,–पट्टक**–पु० कोई चीज पीसनेके लिए शिलाखंड, सिल; बैठनेके लिए शिला-खंड, पत्थरकी चौंकी; पत्थरका टुकड़ा, चट्टान । **–पुत्र,–पुत्रक**–पु० किसी वस्तुको पीसनेवाला थोड़ा लंबा और गोला पत्थर, लोढ़ा । **–पुष्प,–प्रसून**–पु० दे० 'शिलाकुसुम' । **–पेश**–पु० चक्की । **–प्रतिकृति**–स्त्री० प्रस्तरमूर्ति । **–प्रमोक्ष**–पु० युद्धमें पत्थर फेंकने या लुढ़कानेकी क्रिया । **–फलक**–पु०. शिलापट्टक, पत्थरकी पटिया । **–बंध**–पु० पत्थरका बना परकोटा, किलेकी चहारदीवारी । **–भव**–पु० शिलाजीत; शैलेय । **–भेद**–पु० पत्थरको काटने, तोड़नेका औजार, छेनी, टाँकी; पाषाणभेदी पौधा । **–मल**–पु० शिलाजीत। **–मुद्रण**–पु० (लीथोग्राफ) पत्थरकी शिलापर अंकित चिह्नों या अक्षरोंकी सहायतासे छपाई । **–मुद्रित**–वि० (लिथोग्राफड) विशेष प्रकारसे पत्थरपर लिख या खोदकर छापा हुआ । **–रस**–पु० शैलेय नामक गंधद्रव्य । **–रोपण**–पु० दे० 'शिलान्यास' । **–लिपि**–स्त्री०,**–लेख**–पु० सम्राट्,धर्माचार्य आदि विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किसी वस्तुके प्रचार, प्रमाण, स्थायित्व आदिके लिए पत्थरपर खोदवाया अनुशासन, आदेश, दान आदि। **–०विद्**–पु० (एपिग्राफिस्ट) पुरालेखविद्, शिलालेखोंको पढ़नेमें प्रवीण व्यक्ति। **–वल्कल**–पु०,**–वल्कला,–वल्का**–स्त्री० औषधविशेष। **–विज्ञान**–पु० दे० 'शिलानिर्माण विज्ञान' । **–वृष्टि**–स्त्री० पत्थरसहित वृष्टि; उपलवृष्टि । **–वेश्म(न्)**–पु० गुफा; पत्थरका बना निवास । **–व्याधि**–स्त्री० शिलाजतु, शिलाजीत । **–सार**–पु० लोहा । **–स्वेद**–पु० शिलाजीत । **–हरि**–पु० शालग्रामकी बटिया, मूर्ति ।

शिलाटक–पु० (सं०) अटारी; छिद्र, बिल; चहारदीवारी, घेरा ।

शिलात्मज–पु० (सं०) लोहा ।

शिलात्मिका–स्त्री० (सं०) किसी वस्तु, विशेषतः धातुको गलानेका पात्र, गलानेकी घरिया ।

शिलात्व–पु० (सं०) शिलाका भाव या धर्म, पत्थरपन ।

शिलादित्य–पु० (सं०) सम्राट् हर्षवर्धन ।

शिलायु–पु० (सं०) गलेकी एक व्याधि ।

शिलारंभा–स्त्री० (सं०) काष्ठकदली ।

शिलाली(लिन्)–पु० (सं०) एक प्राचीन नाट्यशास्त्री ।

शिलासन–पु० (सं०) पत्थरका आसन, पत्थरकी बनी चौकी आदि; शैलेय गंधद्रव्य ।

शिलाहारी(रिन्)–वि०, पु० (सं०) उंछ वृत्तिवाला, शिलाके सहारे जीवनयापन करनेवाला ।

शिलाह्व, शिलाह्वय–पु० (सं०) शिलाजतु ।

शिलिंग–पु० (अं०) इंगलैंडमें प्रचलित चाँदीका एक सिक्का जिसका मूल्य लगभग ७५ नये पैसे होता है ।

शिलिंद–पु० (सं०) एक प्रकारकी मछली । .

शिलि–पु० (सं०) भूर्जपत्र वृक्ष । स्त्री० दरवाजेमें नीचेका काठ, देहली ।

शिलींध्र–पु० (सं०) कदली-कुसुम, केलेका फूल; करका, ओला, पत्थर; एक प्रकारकी मछली, शिलिंद मछली; कुकुरमुत्ता ।

शिलींध्रक–पु० (सं०) गोमयच्छत्रिका, गोबरछत्ता, कुकुरमुत्ता ।

शिलींध्री–स्त्री० (सं०) मृत्तिका, मिट्टी; केंचुआ; एक तरहकी चिड़िया ।

शिली–स्त्री० (सं०) दरवाजेके चौखटकी नीचेकी लकड़ी, डेहरी; स्तंभशीर्ष; भाला; बाण; मेंढकी; केंचुआ; भोजपत्र । **–मुख**–पु० भ्रमर; युद्ध; बाण; मूर्ख ।

शिलीपद–पु० (सं०) श्लीपद, पादस्फीति, फीलपाँव रोग ।

शिलूष–पु० (सं०) एक प्राचीन नाट्यशास्त्री; बेलका पेड़ ।

शिलेय–वि० (सं०) शिला-संबंधी; पथरीला । पु० शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजीत ।

शिलोंछ–पु० (सं०) सिल तथा उंछवृत्ति ।

शिलोंछी(छिन्)–वि० (सं०) उंछ वृत्तिसे निर्वाह करनेवाला ।

शिलोच्चय–पु० (सं०) पहाड़, पर्वत; बड़ी चट्टान ।

शिलोत्थ–पु० (सं०) शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजीत ।

शिलोद्भव–पु० (सं०) शैलेय गंधद्रव्य; एक प्रकारका चंदन, पीला चंदन; सोना ।

शिलोद्भेद–पु० (सं०) पाषाण-भेदन ।

शिलौका(कस्)–पु० (सं०) गरुड़ । वि० पर्वतपर होनेवाला ।

शिल्प–पु० (सं०) कला आदि कर्म (वात्स्यायनने चौंसठ कलाएँ गिनायी हैं), हुनर, कारीगरी; स्रुवा; दक्षता; टेकनीक, शैलीसे ज्यादा व्यापक वह उपादान जिसके द्वारा रचनाकार अपनी भावनाओंको किसी विशेष ढंगसे ही व्यक्त कर पाता है । हस्तकर्म; रूप, आकृति; निर्माण, सृष्टि; धार्मिक कृत्य, अनुष्ठान । **–कर**–पु० दे० 'शिल्पकार' । **–कला**–स्त्री० दस्तकारीका कौशल, हुनरकी दक्षता । **–कार,–कारक,–कारी(रिन्)**–पु० शिल्पी, कारीगर; मकान बनानेवाला राज, मेमार । **–कौशल**–पु० शिल्पकला, शिल्पचातुर्य । **–गृह,–गेह**–पु० कारीगरोंके काम करनेका स्थान, कारखाना । **–जीवी(विन्)**–पु० कारीगरीका काम करके जीवन-यापन करनेवाला व्यक्ति, शिल्पी । **–प्रजापति**–पु० विश्वकर्मा जो सभी शिल्पोंके अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं । **–यंत्र**–पु० शिल्पके काममें आनेवाले औजार, कल, मशीन । **–लिपि**–स्त्री० पत्थर आदिपर अक्षर खोदना । **–विद्या**–स्त्री० वस्तुनिर्माण-पद्धतिका ज्ञान, चीजोंको बनानेके ढंगकी जानकारी । **–विद्यालय**–पु० शिल्प-शिक्षाके लिए स्थान, शिल्प-शिक्षाका स्कूल । **–शाला**–स्त्री० शिल्प-विद्यालय; शिल्प-संबंधी काम करनेका स्थान या घर, शिल्पगृह, कारखाना । **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र, विद्या, ग्रंथ जिसमें शिल्प-संबंधी निर्माणका ज्ञान, विवेचन हो, शिल्प-विद्या, शिल्प-विज्ञान; वास्तु शास्त्र; गृहनिर्माण कला ।

शिल्पक–पु० (सं०) एक प्रकारका नाटक जिसमें इंद्रजाल तथा अध्यात्म-संबंधी बातोंका वर्णन रहता है ।

शिल्पाजीवी(विन्)–पु० (सं०) दे० 'शिल्पजीवी' ।

शिल्पालय–पु० (सं०) शिल्पगृह ।

शिल्पिक–पु० (सं०) शिल्पी; दस्तकारी; यंत्रकी कला; शिल्पक नामक नाटक; शिव । वि० हाथ-संबंधी; यंत्र-संबंधी ।

शिल्पी(ल्पिन्)–पु० (सं०) शिल्पकार, कारीगर । वि० शिल्प-संबंधी; कलाकुशल; शिल्पकर्ता । **–(ल्पि)शाला**–स्त्री० शिल्पशाला ।

शिवंकर–वि० (सं०) दे० 'शिवकर' । पु० एक बालग्रह ।

शिवंतिका–स्त्री० (सं०) गुलदाउदी ।

शिवंसा–पु० (सं०) शैव साधुओंके लिए कटनीके समय अलग छांटा हुआ फसलका अंश ।

शिव–पु० (सं०) महादेव, महेश, हिंदुओंके तीन प्रधान देवताओं (त्रिमूर्ति)मेंसे एक जिनका कार्य सृष्टिसंहार है (इसी कार्यके कारण इन्हें 'रुद्र' भी कहा जाता है; शिवकी प्रतिष्ठा 'रुद्र'के रूपमें वेदोंमें भी मिलती है); मंगल, कल्याण; सुख; वेद; लिंग; अद्वैत ब्रह्म; परमेश्वर; एक नृत्य; मोक्ष; जल; सेंधा नमक; फिटकरी; सुहागा; समुद्रजलसे बना नमक; बालू; पारद, पारा; गुल्गुल, गुगुल; काला धतूरा; पुंडरीक वृक्ष; तिलका फूल; चंदन; सिंदूर; आँवला; गुड़की मद्य; कील ग्रह, मंगलकारी ग्रह; विष्कुंभादि सत्ताईस योगोंमेंसे बीसवाँ; पशु बाँधनेका खूँटा; स्यार; कौआ; नीलकंठ पक्षी; एक छंद । वि० मंगलकारी, शुभावह; सुखी । **–कर**–वि० मंगलकारी; सुखकर । पु० एक जिन । **–कर्णी**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका । **–कांची**–स्त्री० दक्षिण भारतस्थित शैवोंका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान (कांची सप्तपुरियोंमेंसे एक पुरी है, शिव

तथा विष्णुकांची जिसके दो खंड हैं)। **–कांता**–स्त्री० पार्वती, दुर्गा। **–कारिणी**–स्त्री० दुर्गा। **–कारी(रिन्)**–वि० दे० 'शिवकर'। **–कीर्तन**–पु० शिवकी स्तुति; शिवका स्तुतिकर्ता, शैव; विष्णु; शिवका स्तुतिकर्ता भृंगी। **–केसर**–पु० एक गुल्म। **–गति**–पु० जैनोंके एक अर्हत्। वि० सुखी; समृद्ध। **–गिरि**–पु० कैलास पर्वत। **–घर्मज**–पु० मंगल ग्रह। **–चतुर्दशी**–स्त्री० शिवरात्रिका व्रत जो फाल्गुनकृष्णा चतुर्दशीको पड़ता है। **–जा**–स्त्री० शिवलिंगी लता। **–ज्ञ**–वि० शुभका ज्ञान रखनेवाला; शिवकी पूजा करनेवाला। **–ज्ञा**–स्त्री० शिवोपासिका; शुभ शकुन जाननेवाली नारी। **–ज्ञान**–पु० शुभाशुभका बोधक शास्त्र। **–ताति**–स्त्री० कल्याण, शुभ। वि० जिसका अंत कल्याणमय हो। **–तीर्थ**–पु० शिवका प्रमुख तीर्थ काशीपुरी। **–तेज(स्)**–पु० पारद, पारा। **–दत्त**–पु० शिव द्वारा विष्णुको दिया गया सुदर्शन-चक्र। **–दारु**–पु० देवदारु वृक्ष। **–दिक्(श्)**,**–दिशा**–स्त्री० ईशान नामक कोण। (उपदिशा) जिसके देवता शिव हैं। **–दूतिका**–स्त्री० मातृका-विशेष। **–दूती**–स्त्री० दुर्गा; योगिनी-विशेष। **–दैव**–पु० आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठातृदेव शिव हैं। **–द्रुम**–पु० बेलका पेड़। **–द्विष्टा**–स्त्री० केतकी (केतकीको 'शिवद्विष्टा' इसलिए कहा गया कि इसे शिवपर चढ़ाना निषिद्ध है)। **–धातु**–स्त्री० पारा; गोदंत मणि। **–नंदन**–पु० गणेश। **–नाभि**–पु० शिवलिंगविशेष, जो सभी शिवलिंगोंमें विशिष्ट माना जाता है। **–नामी**–स्त्री० चादर जिसपर अनेक स्थानोंपर 'शिव' 'शिव' छपा हो। **–नारायणी(णिन्)**–पु० हिंदू धर्मगत एक संप्रदाय। **–निर्माल्य**–पु० शिवार्पित वस्तु, शिवपूजनकी सामग्री, शिवभोग आदि; अग्राह्य वस्तु। **–पुर**–पु० जैनोंके मतानुसार उनका स्वर्गस्थल; काशीपुरी। **–पुराण**–पु० शैवपुराण जिसमें शिवमाहात्म्यका वर्णन है (अपने मतके प्रचारके लिए यह शिव-रचित कहा जाता है)। **–पुरी**–स्त्री० काशीपुरी, वाराणसी, बनारस। **–पुष्पक**–पु० मदार। **–प्रिय**–वि० जो शिवको प्रिय हो। पु० रुद्राक्ष; स्फटिक; धतूरा; बिल्वपत्र; वक वृक्ष। **–प्रिया**–स्त्री० दुर्गा। **–प्रीति**–स्त्री० बिल्ववृक्ष। **–बीज**–पु० पारा। **–भक्त**–पु० शैव। **–भक्ति**–स्त्री० शिवकी पूजा, अर्चना। **–भागवत**–पु० शैव। **–मल्लक**–पु० अर्जुन वृक्ष। **–मल्लिका**–स्त्री० वसूक वृक्ष। **–मल्ली**–स्त्री० वक वृक्ष। **–मौलिसुता**–स्त्री० गंगा। **–रस**–पु० उबले चावलका पानी। **–राजी**–पु० एक बड़ा कबूतर। **–रात्रि**–स्त्री० दे० 'शिवचतुर्दशी'। **–रानी**–(हिं०) स्त्री० पार्वती। **–लिंग**–पु० मिट्टी, पत्थरकी शिवकी लिंगमूर्ति, पिंडी। **–लिंगी(गिन्)**–पु० शिवलिंगकी पूजा करनेवाला। **–लोक**–पु० वह लोक जहाँ शिव निवास करते हैं, कैलास। **–वल्लभ**–पु० आम्र वृक्ष। **–वल्लभा**–स्त्री० शतपत्री, सेवती; सफेद गुलाब; दुर्गा, पार्वती। **–वल्लिका**,**–वल्ली**–स्त्री० लिंगिनी। **–वाहन**–पु० नंदी बैल। **–वीर्य**–पु० पारा। **–वृषभ**–पु० नंदी बैल। **–शेखर**–पु० वक वृक्ष; धतूरा; शिव-मस्तक; शिवका शिरोभूषण, चंद्रमा। **–सायुज्य**–पु० दे० 'शिवता'; मोक्ष। **–सुंदरी**–स्त्री० दुर्गा।

शिवक–पु० (सं०) कील; गाय आदि पशुओंके शरीरको खुजलानेके लिए गड़ा खूँटा; शिवमूर्ति।

शिवता–स्त्री०, **शिवत्व**–पु० (सं०) शिवपद, शिवसायुज्य; अमरता; मोक्ष।

शिवांक–पु० (सं०) वक वृक्ष, अगस्त्य वृक्ष।

शिवा–स्त्री० (सं०) शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा; स्यारिन, शृगाली; मुक्ति; कल्याणी नारी, भाग्यशालिनी स्त्री; बुद्धिशक्ति-विशेष; हर्र, हरीतकी; आमलकी, आँवला; हरिद्रा, हल्दी; शमी वृक्ष; श्यामा लता; सोआ नामक साग; दूर्वा, नील दूर्वा; गोरोचन। **–घृत**–पु० औषधके काममें लानेके लिए बना हुआ एक प्रकारका घी। **–प्रिय**–पु० बकरा, खसी जिसके बलिदानसे दुर्गा संतुष्ट तथा प्रसन्न होती हैं। **–फला**–स्त्री० शमी वृक्ष। **–बलि**–स्त्री० दुर्गाको दी जानेवाली बलि (तंत्रशस्त्रानुसार दुर्गाको दी जानेवाली मांसादिकी बलि)। **–रुत**–पु० शृगाल-ध्वनि, गीदड़की आवाज (इसकी बोली द्वारा यात्रा आदिका शकुन विचारा जाता है)। **–विद्या**–स्त्री० गीदड़की बोलीसे शकुनका विचार करनेकी विद्या। **–स्मृति**–स्त्री० जयंतीका पेड़।

शिवाक्ष–पु० (सं०) रुद्राक्ष।

शिवाजी–पु० एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र विजेता (ये महाराष्ट्र राज्यके संस्थापक तथा मुगल साम्राज्यके परम शत्रु थे। अपने प्रताप और युद्ध-कौशलके बलपर ये सामान्य सैनिकसे राजा हो गये। गौ और ब्राह्मण-सेवाको ये अपना परम ध्येय मानते थे। राज्यस्थापना-के बाद इन्होंने क्षत्रपतिकी उपाधि ग्रहण की। इनके पिताका नाम शाहजी भोंसला था और गुरुका नाम समर्थ गुरु रामदास। इनका जन्म सन् १६२७ में हुआ और मृत्यु सन् १६८० में)।

शिवाटिका–स्त्री० (सं०) श्वेत पुनर्नवा; हिंगुपत्री; वंशपत्री।

शिवात्मक–पु० (सं०) सेंधा नमक।

शिवादेशक–पु० (सं०) भविष्यद्वक्ता।

शिवानी–स्त्री० (सं०) शिवकी पत्नी, पार्वती, दुर्गा; जयंतीका पेड़।

शिवापीड–पु० (सं०) वक वृक्ष।

शिवायतन–पु० (सं०) शिवालय।

शिवाराति–पु० (सं०) कुत्ता (शिवा–शृगाली); कामदेव।

शिवालय–पु० (सं०) वह मंदिर जिसमें शिवमूर्ति, शिवलिंग स्थापित हो; रक्त तुलसी, लाल तुलसी; श्मशान।

शिवाला–पु० शिवालय।

शिवालु–पु० (सं०) स्यार, शृगाल।

शिवाह्लाद–पु० (सं०) एक वृक्ष।

शिवाह्वय–पु० (सं०) पारा; वटवृक्ष; आक।

शिवाह्वा–स्त्री० (सं०) रुद्रजटा।

शिवि–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध धर्मात्मा राजा (ये उशीनरके पुत्र थे; पुराणोंमें ये जीव-दया और दान-शीलताके लिए प्रसिद्ध हैं; बाजरूप इंद्र द्वारा कपोतरूप अग्निका उसके मांसभक्षणार्थ पीछा कराकर देवताओंने इनकी दानशीलताकी परीक्षा ली थी जिसमें ये अपने सारे शरीरका मांस बाजको देनेके लिए उद्यत होकर खरे उतरे थे); हिंस्र पशु, शिकारी जानवर; भूर्ज वृक्ष।

शिविका–स्त्री० (सं०) डोली, पालकी; अरथी; चबूतरा; कुबेरका एक अस्त्र।

शिविपिष्ट–पु० (सं०) शंकर, महादेव।

शिविर–पु० (सं०) (कैम्प) सेनाके लिए विश्रामस्थल, सेना-निवेश; तंबू, खेमा; दुर्ग, किला; एक धान्य।

शिवीरथ–पु० (सं०) शिविका।

शिवेतर–वि० (सं०) अमंगल, अशुभ।

शिवेश–पु० (सं०) स्यार।

शिवेष्ट–पु० (सं०) वक वृक्ष; बेल।

शिवेष्टा–स्त्री० (सं०) दूर्वा।

शिवोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

शिशिर–पु० (सं०) छ ऋतुओंमेंसे एक ऋतु जो माघ और फाल्गुनमें पड़ती है; ओस, हिम; शीत, शीतकाल; एक अस्त्र; प्लक्ष द्वीपका एक वर्ष। वि० शीतल। **–कर**,**–किरण**,**–गु**,**–दीधिति**–पु० चंद्रमा। **–काल**,**–समय**–पु० जाड़ेकी ऋतु, शिशिर ऋतु। **–घ्न**–पु० अग्नि। **–मयूख**,**–रश्मि**–पु० चंद्रमा।

शिशिरता–स्त्री० (सं०) शिशिरका भाव, शीतका भाव।

शिशिरांत–पु० (सं०) शिशिर ऋतु समाप्त होनेपर आनेवाली ऋतु, वसंत ऋतु।

शिशिरांशु–पु० (सं०) चंद्रमा।

शिशिराक्षी–पु० (सं०) एक पर्वत।

शिशिरात्यय–पु० (सं०) वसंत।

शिशिरित–वि० (सं०) ठंढा किया हुआ।

शिशु–पु० (सं०) नवजातसे लेकर लगभग आठ वर्षतककी उम्रका बालक; बालक; बच्चा; जानवरों, पक्षियों आदिका बच्चा, शावक; छात्र; स्कंद। **–कल्याण-केंद्र**–पु० (चाइल्ड वेलफेयर सेंटर) वह स्थान जहाँ बच्चोंके स्वास्थ्य आदिकी देखभाल की जाती और विविध उपायों द्वारा उनके हित-साधनका प्रयत्न किया जाता है। **–कृच्छ्र**–पु० शिशुचांद्रायण-व्रत जिसमें चार पिंड

(ग्रास) प्रातः और चार पिंड सायंकाल खाकर व्रत रखा जाता है (इसे स्वल्प चांद्रायण भी कहते हैं) । **–गंधा**–स्त्री० एक प्रकारकी मल्लिका । **–गृह**–पु० दे० 'शिशुशाला' । **–चांद्रायण**–पु० दे० 'शिशुकृच्छ्र' । **–धानी**–स्त्री० (सं०) कुछ विशिष्ट जंतुओंमें पेटके आगेकी वह थैली जिसमें वे अपने नवजात बच्चेको रखकर चलते हैं । **–नाग**–पु० हाथीका बच्चा; साँपका बच्चा; एक प्रकारका राक्षस; मगधका एक प्राचीन राजा । **–नामा(मन्)**–पु० ऊँट । **–पाल**–पु० चेदि(वर्तमान बुंदेलखंड)का एक प्रसिद्ध राजा (इसके पिताका नाम दमघोष था; इसे कृष्णने मारा था) । **–० निषूदन**–पु० कृष्ण । **–० वध**–पु० महाकवि माघरचित एक महाकाव्य जिसमें कृष्ण द्वारा शिशुपालके मारे जानेकी कथा वर्णित है । **–० हा(हन्)**–पु० कृष्ण जिन्होंने शिशुपालको मारा था । **–पालक**–पु० शिशुपाल; केलिकदंब, नीमका पेड़ । वि० बच्चोंको पालनेवाला । **–प्रिय**–पु० कुमुद; शीरा, चोटा । **–मार**–पु० सूँस नामका जलजीव; सूँसकी आकृतिका तारा-मंडल-विशेष; सौरजगत; कृष्ण; विष्णु । **–० चक्र**–पु० सौरमंडल । **–वाहक,–वाह्यक**–पु० बनैला, जंगली बकरा । **–शाला**–स्त्री० वह कमरा, भवन या स्थान जहाँ धात्रियोंकी देखरेखमें, छोटे बच्चे रहते हों (नर्सरी) ।

शिशुक–पु० (सं०) सूँस नामका जलजीव; सूँसकी आकृतिकी एक मछली; डिंभ, जलसर्प जो विषहीन होता है; एक पेड़ ।

शिशुता–स्त्री० (सं०) लड़कपन, बचपन ।

शिशुताई*–स्त्री० दे० 'शिशुता' ।

शिशुत्व–पु० (सं०) दे० 'शिशुता' ।

शिशुपन–पु० बचपन, लड़कपन ।

शिशूल–पु० (सं०) दे० 'शिशु' ।

शिश्न–पु० (सं०) पुरुषकी जननेंद्रिय, पुरुषका उपस्थ । **–देव**–पु० कामुक व्यक्ति ।

शिश्नोदरंभर–वि० (सं०) दे० 'शिश्नोदरपरायण' ।

शिश्नोदरपरायण–वि० (सं०) कामुक और उदरंभरि, लंपट और पेटू ।

शिश्नोदरवाद–पु० (सं०) वह वाद, मत जिसका संबंध जननेंद्रिय और उदरसे हो; फ्रायडका काम-सिद्धांत तथा मार्क्सका समाजवाद (व्यं०) ।

शिष*–पु० शिष्य । स्त्री० सीख, शिक्षा, नेक सलाह; चोटी, चुटिया ।

शिषरी*–पु० चिचड़ा । वि० शिखरसंपन्न, शिखरवाला ।

शिषा*–स्त्री० शिखा ।

शिषि*–शिष्य ।

शिषी*–पु० मोर ।

शिष्ट–वि० (सं०) सभ्य; शिक्षा-दीक्षा द्वारा संस्कृत, सभ्य समाजमें रहने योग्य; आधुनिक लोकाचार, व्यवहार आदिमें पटु; सुशील; शांत; बुद्धिमान्; धीर; विनीत; नीतिमान्; प्रधान; उच्च कोटिका, श्रेष्ठ; वशीभूत, आज्ञाधीन; अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ; आदिष्ट । पु० मंत्रदाता, सलाहकार; किसी सभाके सदस्य, सभ्य, पार्षद्; श्रेष्ठ व्यक्ति; चतुर मनुष्य । **–प्रयोग**–पु० शिष्टों द्वारा व्यवहारमें लाया जाना । **–मंडल**–पु० (डेलीगेशन) किसी सभा, संधि-वार्ता आदिमें भाग लेनेके लिए भेजे गये अधिकृत प्रतिनिधियोंका दल; प्रतिनिधिमण्डल; राज्य आदि द्वारा चुना गया अधिकार प्राप्त कुछ व्यक्तियोंका समूह जो दूसरी संस्था, दूसरे राज्यमें किसी कार्यके उद्देश्यसे जाय, 'मिशन' । **–सभा**–स्त्री० शिष्ट-परिषद्, राज्य-परिषद् । **–समाज**–पु० सभ्य-समाज । **–सम्मत**–वि० शिष्टों द्वारा अनुमोदित ।

शिष्टता–स्त्री०, **शिष्टत्व**–पु० (सं०) शिष्ट होनेका भाव, कर्म आदि; भलमनसाहत, सौजन्य, सभ्यता ।

शिष्टाचार–पु० (सं०) शिष्ट व्यक्तियोंका आचार, व्यवहार, सदाचार; विनम्रता; किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण, 'फारमैलिटी' । वि० शिष्टतापूर्वक आचरण करनेवाला ।

शिष्टाचारी(रिन्)–वि० (सं०) शिष्ट आचरण करनेवाला, सदाचारी; विनम्र; किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार आचरण करनेवाला ।

शिष्टादिष्ट–वि० (सं०) जो शिष्टोंको मान्य हो ।

शिष्टि–स्त्री० (सं०) शासन; आज्ञा, आदेश; दंड, परिष्कार, मार्जन, सुधार; सहायता ।

शिष्य–वि० (सं०) शिक्षणीय; उपदेश्य; शासनयोग्य । पु० छात्र, विद्यार्थी; (शिक्षकसे शिक्षा प्राप्त करनेवाला या धार्मिक गुरुसे मंत्र लेनेवाला) चेला (डिसाइपुल); नया श्रावक; गुरुकुलमें रहकर विद्या ग्रहण करनेवाला व्यक्ति; क्रोध; हिंसा । **–परंपरा**–स्त्री० किसी गुरुसंप्रदायकी परंपरित शिष्यमंडली । **–शिष्टि**–स्त्री० छात्रकी भर्त्सना ।

शिष्यता–स्त्री०, **शिष्यत्व**–पु० (सं०) शिष्य होनेका भाव, कर्म आदि ।

शिस्त–स्त्री० (फा०) सीध, निशाना; मछली पकड़नेका काँटा; वह अंगुलित्राण या अंगुश्ताना जिसे दरजी या तीरंदाज उँगलीमें पहनते हैं; अंगूठा; जमीन नापनेका दूरबीनकी तरहका एक यंत्र । **–बाज़**–पु० मछलीमार; निशानेबाज ।

शिह्ल, शिह्लक–पु० (सं०) शिलारस ।

शी–स्त्री० (सं०) निद्रा; शांति ।

शीआ–पु० (अ०) मुसलमानोंके दो बड़े संप्रदायोंमेंसे एक जो मुहम्मदके बाद अलीका ही खिलाफतका हकदार और उनके पहलेके तीन खलीफाओंको अपहारक मानता है ।

शीकर–पु० (सं०) वायुप्रेरित जलकण, फुहार; जलकण; तुषार; वायु; सरल नामक वृक्ष या उसका गोंद ।

शीघ्र–अ० (सं०) क्षिप्र, आशु, अविलंब, सत्वर, त्वरित, जल्द, तुरत, झटपट । पु० दंती नामक वृक्ष; ग्रहयोग (ज्यो०); वायु । **–कारी(रिन्)**–वि० तुरत काम करनेवाला; तुरत असर करनेवाला (भोजन, औषध आदि) । पु० सन्निपात ज्वरका एक भेद । **–कृत्**–वि० तेजीसे काम करनेवाला । **–कोपी(पिन्)**–वि० जल्द क्रुद्ध हो उठनेवाला, चिड़चिड़ा । **–ग**–वि० द्रुतगामी । पु० वायु; सूर्य; खरगोश । **–गमन,–गामी(मिन्)**–वि० दे० 'शीघ्रग'। **–चेतन**–पु० कुक्कुर, कुत्ता । वि० द्रुत चेतनायुक्त । **–जन्मा(न्मन्)**–पु० एक प्रकारका करंज, काँटा-करंज । **–जीर्ण**–पु० चौलाईका साग । **–पतन**–पु० नारीसंभोग करते समय वीर्यका शीघ्र स्खलन । **–पुष्प**–पु० अगस्तका पेड़ । **–बुद्धि**–वि० कुशाग्रबुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धिवाला । **–बोध**–वि० जो जल्द समझमें आ जाय । **–यान**–पु० तेज गति । वि० तेज जानेवाला । **–लिपि**–स्त्री० (शार्ट हैंड) लिखनेका वह ढंग या प्रणाली जिसमें बोलनेवालेके शब्द अत्यंत शीघ्रतासे, उनके उच्चरित होनेके साथ-साथ लिखे जा सकें, त्वरालिपि, लघुलिपि । **–लेखक**–पु० दे० 'आशुलिपिक' । **–वेधी(धिन्)**–वि० निशानेपर तुरत तीर चलानेवाला, कुशल बाण चलानेवाला, लघुहस्त ।

शीघ्रता–स्त्री०, **शीघ्रत्व**–पु० (सं०) अविलंबत्व, जल्दी, क्षिप्रता, फुर्ती ।

शीघ्रा–स्त्री० (सं०) दंती वृक्ष ।

शीघ्रिय–वि० (सं०) तेज, तीव्र । पु० विष्णु; शिव; बिल्लियोंका लड़ना ।

शीघ्री(घ्रिन्)–वि० (सं०) शीघ्रकारी, शीघ्रगामी; तुरत उच्चारण करनेवाला ।

शीघ्रीय–वि० (सं०) तेज, तीव्र ।

शीघ्र्य–पु० (सं०) शीघ्रता, जल्दी, तेजी ।

शीत–वि० (सं०) शीतल; आलस्ययुक्त; निद्रालु । पु० शीतकाल जो अगहन, पूस, माघ तीन महीनोंका होता है; जाड़ा, ठंडक, शीतलता; सरदी, जुकाम; जल; चन्दन; तुषार; वेतस वृक्ष; बहुवारक वृक्ष; अशनपर्णी; नीमका पेड़; कपूर; पर्पट, पित्तपापड़ा । **–कटिबंध**–पु० (फ्रिजिडज़ोन) भूमंडलके उत्तरी तथा दक्षिणी अंशोंके दो कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखाके ६६॥ अंश उत्तर तथा इतने ही अंश दक्षिणसे शुरू होकर ध्रुवप्रदेशतक फैले हैं (शीतप्रधान देश इन्हीं कटिबंधोंमें हैं जहाँ वसंत ऋतुमें कुछ कम और अन्य ऋतुओंमें अत्यधिक सरदी पड़ती है) । **–कण**–पु०

जीरा। –कर–पु० हिमकर, चंद्रमा; कपूर। वि० शीतल हाथोंवाला; शीतल करनेवाला। –कषाय–पु० कुटा हुआ द्रव्यफल, काष्ठौपध आदिका कषाय जो उनके छगुने जलमें रातभर भीगे रहनेसे प्रस्तुत होता है। –कारीयंत्र–पु० (रेफ्रीजरेटर) ठंढक पहुँचाने, ठंढा बनानेवाला यंत्र; ठंढा बनाये रखकर भोजन आदिको शीघ्र खराब होनेसे बचानेवाला आलमारी या संदूकके ढंगका ढाँचा। –काल–पु० जाड़ेका मौसिम जो अगहन, पूस और माघमें पड़ता है, हेमंत और शिशिर ऋतु; अगहन और पूस महीनोंमें पड़नेवाली हेमंत ऋतु। –कालीन–वि० शीतकालसंबंधी; शीतकालमें होनेवाला। –किरण–पु० चंद्रमा। –कुंभ–पु० करवीर, कनेर। –कुंभिका,–कुंभी–स्त्री० शीतली, जलकुंभी नामक जललता। –कूचिका–स्त्री० बरियारा नामक पौधा जो बिना बोये ही ईखके खेतोंमें पैदा होता है (इसकी पत्तियाँ और जड़ औषधके काममें आती हैं)। –कृच्छ्र,–कृच्छ्रक–पु० एक व्रत। –क्षार–पु० श्वेत टंकण, साफ किया हुआ सोहागा। –गंध–पु० श्वेत चदन। –गात्र–पु० सन्निपात ज्वर-विशेष। –गु–पु० चंद्रमा। –चंपक–पु० दर्पण, आईना; दीपक। –च्छाय–पु० वटवृक्ष जिसकी छाया शीतल होती है। –ज्वर–पु० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर, जूड़ी, जड़ैया बुखार, अंतरिया बुखार जो कुछ दिनोंके अंतरपर आता है, मलेरिया बुखार। –तरंग–स्त्री० दे० 'शीत लहरी'। –दंत–पु० शीतल वायु या जलका दाँतोंके कमजोर होनेपर लगना (दर्द उत्पन्न करना); एक दंतरोग (आ० वे०)। –दंतिका–स्त्री नागदंती लता। –दीधिति–पु० चंद्रमा। –दीप्य–पु० सफेद जीरा। –दूर्वा–स्त्री० शीतकालीन दूर्वा, श्वेत दूर्वा, सफेद दूब। –द्युति–पु० चंद्रमा। –निष्क्रियता–स्त्री० (हिवरनेशन) जाड़ेके दिनोंमें कुछ प्राणियों (भालू, कीड़े, मेंढक तथा चूहे आदिका खाना पीना छोड़कर शीतनिद्रामें पड़े रहनेकी स्थिति जिसमें सभी शारीरिक क्रियाएँ मन्द पड़ जाती हैं तथा श्वसन क्रिया भी धीमी हो जाती है। –पंक–पु० सुरासार, स्पिरिट। –पत्रा–स्त्री० श्वेत लाजवंती पौधा। –पर्णी–स्त्री० अर्कपुष्पिका। –पल्लवा–स्त्री० भूमि-जंबु। –पाकिनी–स्त्री० काकोली नामकी अष्टवर्गीय औषधि; महासमंगा। –पाकी–स्त्री० गुंजा, घुँघची; दे० 'शीतपाकिनी'। –पित्त–पु० वात और पित्तके कुपित होनेसे उत्पन्न हुआ एक चर्मरोग (इसमें शरीरमें चकत्ते निकल आते हैं और अत्यधिक पीड़ा और जलन होती है), रक्तपित्त, जुड़पित्ती (यूरिकेरिआ)। –पाणि–वि० ठंडे हाथों या किरणोंवाला। –पुष्प–पु० शिरीष वृक्ष। –पुष्पक–पु० मदारका पेड़; शैलेय, छरीला। –पुष्पा,–पुष्पी–स्त्री० अतिबला। –पूतना–स्त्री० एक बालग्रह। –प्रधान–वि० (वह स्थान) जहाँ शीतका प्राधान्य हो; (वह वस्तु) जिसमें शीतगुणका आधिक्य, प्राधान्य हो। –प्रभ–पु० कपूर। –प्रिय–पु० पर्पट, पित्तपापड़ा। –फल–पु० गूलर; कठगूलर। –बला–स्त्री० शीतपुष्पा, महासमंगा। –भानु–पु० हिमकर, चंद्रमा। –भीरु–स्त्री० मल्लिका। वि० शीतसे डरनेवाला। –भीरुक–वि० दे० 'शीतभीरु'। पु० एक तरहका धान; काली निर्गुंडी। –मंजरी–स्त्री० शेफाली, हरसिंगार। –मयूख,–मरीचि–पु० चंद्रमा; कपूर। –मूलक–पु० उशीर, खस। वि० ठंढी जड़वाला। –मेह–पु० प्रमेह रोग-विशेष। –मेही(हिन्)–वि० शीतमेहसे ग्रस्त। –युद्ध–पु० (कोल्ड वार) वह स्थिति जिसमें सेनाओं और शस्त्रास्त्रोंके प्रत्यक्ष प्रयोगकी भीषणता न होते हुए भी राष्ट्रोंमें परस्पर अमैत्रीपूर्ण भाव विद्यमान हो, एक दूसरेके विरुद्ध प्रचारकार्य किया जा रहा हो तथा आर्थिक विध्वंसका भी प्रयत्न हो रहा हो। –रम्य–पु० दीपक। –रश्मि–पु० चंद्रमा; कपूर। –रस–पु० ईखके कच्चे रससे प्रस्तुत मद्यविशेष। –रुक् (च्),–रुचि–पु० चंद्रमा। –रुह–पु० श्वेत कमल। –लहरी–स्त्री० (कोल्ड वेव) किसी स्थान या क्षेत्रमें तुषारपात आदि होनेके कारण ठंढ बहुत अधिक बढ़ जानेसे उसके प्रभावमें आयी हुई हवाकी लहर जो अन्य स्थानोंमें भी जाड़ा या गलाव उत्पन्न कर देती है। –वल्क–पु० गूलरका पेड़। –वल्लभ–पु० पित्तपापड़ा। –वल्ली–स्त्री० नीली दूब। –वीर्य–वि० जिसका प्रभाव ठंढक लानेवाला हो। पु० पाषाणभेदन; पाकड़; पित्तपापड़ा; पद्मकाष्ठ; वचा; नीली दूब। –वीर्यक–पु० पाकरका पेड़। –शिव–पु० सेंधा नमक; सोहागा; शैलेय गंधद्रव्य; सौंफ; शमी वृक्ष। –शिवा–स्त्री० शमी वृक्ष; सौंफ। –शूक–पु० यव, जौ। – संग्रह,–संचय–पु० (कोल्ड स्टोरेज) विशेष रूपसे ठंढे बनाये गये कोष्ठ या कमरेमें रखी गयी वस्तुओंका संग्रह जिसमें वे सड़ने-बिगड़ने न पायें; शीतागार। –सह–पु० पीलू नामक पेड़। वि० शीत सहन करनेवाला। –सहा–स्त्री० एक फूल, नील सिंधुवार, नीलिका, शेफालिका; वासंती लता। –स्पर्श–वि० जो छूनेमें ठंढा हो, ठंढक पहुँचानेवाला।

शीतक–वि० (सं०) ठंढा। पु० ठंढी वस्तु; शीतकाल; आलसी, दीर्घसूत्री व्यक्ति; निश्चिंत मनुष्य; बिच्छू।

शीतल–वि० (सं०) शीतगुणयुक्त, ठंढा; सौम्य, मृदु; शांत, ठंढे दिमानवाला; संतुष्ट, आनंदित। पु० पीत चंदन; शैलेय; पुष्पकासीस, कसीस; कमल, पद्म; वीरणमूल; अशनपर्णी; चपक; एक प्रकारका कपूर; राल; मोती; चंद्रमा; ताड़पीन; ठंढक, शैत्य, शीतलता; व्रतविशेष (जै०)। –चीनी –स्त्री० (हिं०) एक प्रकारका मसाला, कबाव-चीनी। –च्छद–पु० चंपक वृक्ष। –जल–पु० कमल। –पाटी–स्त्री० (हिं०) बेंतकी जातिके एक पेड़के छिलकेसे निर्मित एक प्रकारकी पतली और चिकनी चटाई। –प्रद–पु० चंदन। वि० ठंढक पहुँचानेवाला। –वात–पु० शीतल समीरण। –वातक–पु० अशनपर्णी।

शीतलक–पु० (सं०) श्वेत कमल; मरुवक, मरुआ।

शीतलता–स्त्री० (सं०) शैत्य, ठंढापन, ठंढक; शीतल होनेका भाव, गुण आदि; जड़ता।

शीतलताई*–स्त्री० दे० 'शीतलता'।

शीतलत्व–स्त्री० (सं०) दे० 'शीतलता'।

शीतला–स्त्री० (सं०) एक विस्फोटक रोग जो वसंत और ग्रीष्म ऋतुओंमें अधिक होता है (यह छूतकी बीमारी है; इसे चेचक या वसंतरोग भी कहते हैं); इस रोगकी अधिष्ठातृ देवियाँ सात हैं और संबंधसे बहिनें हैं; शीतली वृक्ष; कुटुंबिनी वृक्ष; आरामशीतला; बालू। –पूजा–स्त्री० शीतला देवीकी पूजा। –वाहन–पु० गधा। –षष्ठी–स्त्री० माघ शुक्ला षष्ठी, इस तिथिको शीतलाकी पूजा होती है।

शीतलाष्टमी–स्त्री० (सं०) चैत्र-कृष्ण अष्टमी (इस दिन शीतलाकी पूजा होती है और बासी पक्वान्न खाया जाता है, इस दिनको बसूड़ा, बसिऔरा भी कहते हैं)।

शीतली–स्त्री० (सं०) जलमें पैदा होनेवाला एक पौधा, शीतकुंभी; चेचक रोग।

शीतांग–पु० (सं०) शीत सन्निपात।

शीतांगी–स्त्री० (सं०) हंसपदी।

शीतांबु–पु० (सं०) दुद्धी घास।

शीतांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

शीताकुल–वि० (सं०) ठंढसे व्याकुल; जाड़ेसे ठिठुरा हुआ।

शीतागार–पु० (कोल्ड स्टोरेज) वस्तुओंको गर्मीके कुप्रभावसे सुरक्षित रखनेके लिए विशेष ढंगसे बनाया गया ठंडा गोदाम, शीत-संग्रह।

शीतातप–पु० (सं०) जाड़ा और गर्मी।

शीताद–पु० (सं०) मसूड़ोंके पक जाने या उनमें व्रण हो जानेका रोग, पायरिया।

शीताद्रि–पु० (सं०) हिमवान् पर्वत, हिमालय पर्वत।

शीताबला–स्त्री० (सं०) महासमंगा।

शीताभ–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

शीतार्त–वि० (सं०) दे० 'शीताकुल'।

शीतार्द्र–वि० (सं०) ओससे गीला; शीतार्त।

शीतालु–वि० (सं०) शीतार्त, शीतसे पीड़ित; शीतसे काँपता हुआ।

शीताश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) चंद्रकांत मणि।

शीतिका, शीतिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) ठंढक।

शीतीभाव–पु० (सं०) ठंढापन, शीतलत्व; मोक्ष, छुटकारा।

शीतेतर–वि० (सं०) उष्ण।

शीतोत्तम–पु० (सं०) जल।

शीतोष्ण–वि० (सं०) ठंढा और गरम।

शीत्कार–पु० (सं०) रतिकालमें संभोग्य स्त्री द्वारा की गयी अव्यक्त, अस्फुट ध्वनि, रतिकालमें स्त्री द्वारा 'सी-सी' करनेकी क्रिया।

शीत्य–वि० (सं०) ठंढा करने योग्य; जोते जाने योग्य।

शीधु–पु० (सं०) ईखके पके रस द्वारा प्रस्तुत मद्य, सिद्धू। **–गंध** –पु० सिद्धू शरावकी महक; बकुल वृक्ष। **–प**–वि०, पु० मद्यप।

शीन–वि० (सं०) जमा हुआ, घनीभूत। पु० अजगर; जड़, मूर्ख; (अ०) अरबी-फारसी वर्णमालाका एक वर्ण जो देवनागरीके तालव्य 'श'का काम करता है। मु० **–क़ाफ़ दुरुस्त न होना**–उच्चारण शुद्ध, अस्खलित न होना। **–के शटवके**–'श'का शुद्ध उच्चारण न कर सकना।

शीफर–वि० (सं०) आनंदप्रद; मनोहर।

शीफालिका–स्त्री० (सं०) शेफालिका।

शीभर–पु० (सं०) शीकर, जलकी फुहार। वि० शीफर, आनंददायक।

शीभ्य–पु० (सं०) शिव; बैल।

शीर–पु० (सं०) अजगर; (फा०) दूध, क्षीर। **–ख़ाना**–पु० दुग्धालय; मधुशाला। **–ख़िस्त**–स्त्री० एक रेचक दवा। **–खोर**–वि० दे० 'शीरख़्वार'। **–ख़्वार**–वि० दूधपीता (बच्चा)। **–गर्म**–वि० थोड़ा गरम, कुनकुना। **–फ़रोश**–वि० ग्वाला, दूध बेचनेवाला। **–बिरंज**–स्त्री० खीर। **–माल**–पु० घी देकर पकायी हुई खमीरी रोटी जिसे पकाते समय दूधका छींटा देते हैं। **–(रे) मादर**–पु० माँका दूध। वि० हलाल, जायज (ला०)। **–मुर्ग़**–पु० चमगादड़। **–(रो)शकर**–पु० दूध और शकर; एक रेशमी कपड़ा; (ला०) दूध-चीनीकी तरह परस्पर घुल-मिल जानेवाली चीजें; घनिष्ठता; परस्पर अतिशय स्नेह रखनेवाले (मित्र-प्रेमी)। मु० **–० हो जाना**– घुल मिल जाना; अतिशय स्नेह होना।

शीराँ–पु० (फा०) चाशनी, किवाम; किसी चीजको घोंट-छानकर प्रस्तुत किया हुआ पेय (बादामका शीराँ)।

शीरा–पु० दे० 'शीराँ'।

शीराज़–पु० (फा०) ईरानका एक प्रसिद्ध नगर।

शीराज़ा–पु० (फा०) किताबकी जुजबंदीके बंद जो पुश्तेके दोनों ओर लगा दिये जाते हैं; पुस्तक और पुट्ठोंपर की जानेवाली सिलाई; (ला०) प्रबंध; शृंखला; कपड़ोंकी सिलाई, सीयन। **–बंद**–वि० (पुस्तक) जिसकी सिलाई, जिल्दबंदी हो चुकी हो। मु० **–बँधना**–किताबके जुजोंकी सिलाई होना; बिखरी हुई चीजोंका इकट्ठा, शृंखलित किया जाना। **–बिखरना**–विशृंखलित हो जाना, बिगड़ जाना।

शीराज़ी–वि० (फा०) शीराजका। पु० शीराजका रहनेवाला; कबूतरका एक भेद। स्त्री० शीराजकी बनी मदिरा, 'शीराजी और उसके अनेक बढ़िया भेद···' टूटे काँटे।

शीरीं–वि० (फा०) मीठा, मधुर; प्यारा, प्रिय। स्त्री० फरहादकी प्रेयसी। **–कलाम,–ज़बान**–वि० मधुरभाषी, सुंदर भाषा बोलनेवाला। **–बयान**–वि० मधुरभाषी। **–बयानी**–स्त्री० मधुरभाषण, मीठा बोलना।

शीरी(रिन्)–पु० (सं०) हरिदर्भ, कुश, मूँज, कलिहारी।

शीरीनी–स्त्री० (फा०) मिठास; मिठाई (चढ़ाना, बाँटना)।

शीरो शकर–वि० (फा०) दे० 'शीर'में।

शीर्ण–वि० (सं०) कुम्हलाया हुआ; सड़ा-गला, नष्ट; टूटा-फूटा, चिथड़े-चिथड़े हुआ; छितराया हुआ, विकीर्ण; कृश; शुष्क। पु० एक गंधद्रव्य, स्थौणेयक। **–काय**–वि० कृश शरीरवाला। **–दंत**–वि० जिसके दाँत गिर गये हों। **–दल**–पु० नीम। **–नाला**–स्त्री० दे० 'शीर्णमाला'। **–पत्र**–पु० कर्णिकार वृक्ष, कनियारीका पेड़; पट्टिकालोध्र, पठानी लोध; नीम। **–पर्ण**–पु० कुम्हलाया हुआ पत्ता; नीमका पेड़। **–पाद**–पु० यम (पुराणोंमें लिखा है कि यमकी विमाताके शापसे उनके पैर कृश हो गये थे)। **–पुष्पिका,–पुष्पी**–स्त्री० सौंफ। **–माला**–स्त्री० पृश्निपर्णी, पिठवन। **–वृंत**–पु० हिनवाना, तरबूज, वृहद्गोल।

शीर्णता–स्त्री०, **शीर्णत्व**–पु० (सं०) शीर्ण होनेका भाव या धर्म।

शीर्णाङ्घ्रि–पु० (सं०) यम।

शीर्णि, शीर्ति–स्त्री० (सं०) नष्ट-भ्रष्ट करनेकी क्रिया।

शीर्य–वि० नाशवान, भंगुर; तोड़ने फोड़ने योग्य। पु० एक घास।

शीर्वि–वि० (सं०) हानि करनेवाला; हिंसाकारी; जंगली।

शीर्ष–पु० (सं०) सिर; मस्तक, माथा, ललाट; किसी वस्तुका सिरा, सबसे ऊपरी हिस्सा; (वरटेक्स) वह बिंदु जिसपर दो सरल रेखाएँ कोई कोण बनायें; कृष्णागुरु; खातेमें किसी मदका नाम (हेड); एक घास; एक पर्वत। **–कोण**–पु० (वर्टिकल एंगिल) किसी आकृतिका तलके ठीक ऊपरी भागमें खड़े बलमें बना कोण (ज्या०)। **–घाती(तिन्)**–वि० सिर काटनेवाला। पु० जल्लाद। **–च्छेद,–च्छेदन**–पु० सिर काटनेकी क्रिया, मस्तकच्छेदन। **–च्छेदिक,–च्छेद्य**–वि० वध्य, मार डालने योग्य। **–त्राण** –पु० शिरस्त्राण। **–पट,–पटक**–पु० शिरमें बाँधनेका कपड़ा, पगड़ी, साफा आदि। **–रक्ष,–रक्षण**–पु० शिरस्त्राण। **–रेखा**–स्त्री० किसी वर्णके ऊपरवाली रेखा; देवनागरीमें अक्षरोंके ऊपरकी सीधी वेड़ी रेखा। **–लंब**–पु० दे० 'त्रिभुजलंब'। **–वर्तन**–पु० अभियुक्त या तथाकथित दोषोंके निर्दोष सिद्ध होनेपर अभियोग चलानेवाले द्वारा दंड भोगनेकी स्वीकृति देना। **–वार्ता** –स्त्री 'शीर्षस्थ नेताओं, प्रधान-मंत्रियों आदिके बीच चलनेवाली बातचीत। **–बिंदु**–पु० सिरका सबसे ऊपरी स्थान; दे० 'ऊर्ध्वबिंदु'; मोतियाबिंद। **–वेदना,–व्यथा**–स्त्री०,**–शोक**–पु० सिरदर्द, मस्तकपीड़ा। **–स्थ**–वि० शीर्षस्थानीय, चोटीका, प्रधान। **–स्थान**–पु० माथा; सिर; सर्वोच्च स्थान। **–स्थानीय** –वि० मूर्धन्य, सर्वोच्च, प्रधान, श्रेष्ठ।

शीर्षक–पु० (सं०) सिर; मस्तक; सिरा; सिरकी रक्षा करनेवाली वस्तु (जैसे–शिरस्त्राण, लोहेका टोप आदि); सिरकी हड्डी, शिरोस्थि; निर्णय, फैसला; पगड़ी, टोपी, साफा आदि सिरपर देनेकी वस्तु; सिरमें लपेटनेकी माला; किसी निबंध, ग्रंथ आदिके विषयका परिचायक शब्द, शब्दसमूह जो इन (निबंध, ग्रंथ आदि)के ऊपर रखा जाता है, 'हेडिंग'; राहु ग्रह; पलँगक।

शीर्षण्य–पु० (सं०) शिरस्त्राण; साफ, सुलझे सिरके बाल; पगड़ी, साफा आदि सिरमें बाँधनेकी वस्तु; सिरकी ओरका हिस्सा; चारपाईका सिरहाना। वि० श्रेष्ठ।

शीर्षासन–पु० (सं०) हठयोगका एक प्रसिद्ध आसन जिसमें सिर नीचे और पैर ऊपर करके सीधे खड़े होते हैं।

शीर्षोदय–पु० (सं०) मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीनको दिया गया नाम।

शील–पु० (सं०) चरित्र, चालचलन; मनकी स्थायी वृत्ति, स्वभाव; सद्वृत्ति, शुद्ध चरित्र; सत्स्वभाव; नैतिक सिद्धान्त (पंच–); रागद्वेष-विहीनता, तटस्थ व्यवहार; (माडेस्टी) नम्रता, विनयशीलता; संकोची प्रकृति, मुरौवत; अजगर; सौंदर्य। वि० प्रवृत्त, उन्मुख; स्वभाववाला (समासमें)। **–त्याग**–पु० सद्वृत्तिका त्याग। **–धारी(रिन्)**–वि० शील धारण करनेवाला। पु० शिव। **–भंग**–किसी किशोरी या युवतीके साथ किया गया नैतिक दुर्व्यवहार, व्यभिचार, बलात्कार। **–वंचना**–स्त्री० किसीके आचरणके संबंधमें धोखा होना। **–वर्जित**–वि० दुर्वृत्त। **–वृद्ध**–वि० सदाचारी। मु० **–तोड़ना**–बेमुरौवत होना, निःसंकोच हो रिआयत, दया आदि न करना। **(आँखोंमें)–न होना** –बे-मुरौवत होना, क्रूरताका व्यवहार करना। **–निभाना**–किसीके द्वारा अपना अनिष्ट होनेपर भी पूर्वकी भाँति ही उसके साथ सद्वृत्तिपूर्वक व्यवहार करना; सत्स्वभावको न छोड़ना। **–मर जाना**–संकोच, सद्भाव, सद्वृत्ति आदिका किसी व्यक्तिसे निकल जाना, दुर्वृत्त होना; बेमुरौवत होना। **–रखना**–मुरौवत न छोड़ना, सद्व्यवहार रखना, करना।

शीलक–पु० (सं०) कर्णमूल।

शीलन–पु० (सं०) अभ्यास; विवेचना; प्रवर्तन; धारण करना, ग्रहण करना।

शीलवान्(वत्)–वि० (सं०) अच्छे शील या आचरणवाला, सुशील,

नेकचलन; शीलोंका पालन करनेवाला (बौ०)।

शीलित–वि० (सं०) अभ्यस्त; धारण किया हुआ; दक्ष; युक्त; उषित; निर्मित। पु० अभ्यास।

शीली(लिन्)–वि० (सं०) शीलवान्, सदाचारी; अभ्यस्त।

शीवल–पु० (सं०) शैलेय; शैवाल, सेवार।

शीवा(वन्)–पु० (सं०) अजगर।

शीश*–पु० सिर। **–फूल**–पु० एक शिरोभूषण। **–तरंग**–पु० जलतरंगकी तरहका एक बाजा।

शीश–पु० 'शीशा'का केवल समासमें व्यवहृत रूप। **–ए-दिल**–पु० शीशे जैसा नाजुक, जरा-सी ठेससे टूट जानेवाला दिल। **–ए-साइत**–पु० रेतघड़ी। **–गर**–पु० शीशेकी चीजें बनानेवाला। **–गरी**–स्त्री० शीशेकी चीजें बनानेका काम। **–महल**–पु० वह कमरा या भवन जिसमें हर तरफ शीशे जड़े हों। **–० का कुत्ता**–पु० बौखलाया हुआ कुत्ता; बावला आदमी।

शीशम–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुर्सी आदि बनानेके काम आती है, शिंशपा।

शीशा–पु० (फा०) काँच; आईना; काँचकी सुराही, बोतल; काँचके बने सजावटी सामान; चिकनी चमकीली वस्तु (लाक्षणिक प्रयोग)। **–आलात**–पु० रोशनीका साज-सामान; झाड़फानूस। **–(ए) दिल**–पु० नाज़ुक दिल। **–बाज़**–पु० शीशेको विभिन्न अंगोंपर रखकर नाचनेवाला; बाजीगर। **–बाशा**–वि० अति सुकुमार। **–(ए)मै**–पु० शराबकी बोतल। **मु०–(शे)में उतारना**–भूत-प्रेतको शीशे-बोतलमें उतार लेना; वशमें कर लेना।

शीशी–स्त्री० शीशेका छोटा पात्र जिसमें दवा आदि रखी जाय। **मु० –सुंघाना**–चीरफाड़ आदिके पहले बेहोशीकी दवा सुंघाना।

शीस–पु० (अ०) आदमका तीसरा बेटा जिसे मुसलमान अपना पैगंबर मानते हैं।

शुंग–पु० (सं०) वटवृक्ष; आम्रातक वृक्ष, आमड़ेका पेड़; शूक, अन्नका टूँड़; प्राचीन भारतका एक ब्राह्मण राजवंश (इस वंशमें पुष्यमित्र नामक प्रसिद्ध सेनापति हुआ जो अपने पौरुषसे मौर्यवंशके राजाको मारकर स्वयं सिंहासनपर बैठा तथा शुंग-राजकी स्थापना की)।

शुंगा–स्त्री० (सं०) पर्कटी वृक्ष, पकड़ीका पेड़; कलीकी नवीन पंखुरियोंका रक्षक हरा ढक्कन; अन्न आदिका शूक, टूँड़। **–कर्म(न्)**–पु० पुंसवन संस्कार।

शुंगी(गिन्)–पु० (सं०) प्लक्षवृक्ष, पाकर; वटवृक्ष।

शुंठि, शुंठी–स्त्री० (सं०) सूखा अदरक. सोंठ।

शुंड–पु० (सं०) जवान हाथीके गंडस्थल, कनपटीसे बहनेवाला मद, दान; एक प्रकारकी शराब; हाथीकी सूँड़। **–रोह**–पु० भूतृण।

शुंडक–पु० (सं०) शराब उतारनेवाला, शौंडिक; रणभेरी, युद्धवेणु; एक रणगान।

शुंडा–स्त्री० (सं०) हाथीकी सूँड़; मदिरा, सुरा; मद्यपान-गृह; शराबखाना, हौली; वेश्या; कुटनी; कमलनाल। **–दंड**–पु० हाथीकी सूँड़। **–पान**–पु० मद्यशाला।

शुंडार–पु० (सं०) शुंडक; नये हाथीकी सूँड़; साठ सालका हाथी; कलवार।

शुंडाल–पु० (सं०) हाथी।

शुंडिक–पु० (सं०) शराबका व्यवसायी; शराब बनानेवाली एक जाति; कलवार; मद्यशाला।

शुंडिका–स्त्री० (सं०) ललरी, गलेका कौआ, घंटी, घाँटी; ग्रंथिकी सूजन; दे० 'शुंडा'।

शुंडी–स्त्री० (सं०) हस्तिशुंडी वृक्ष; ग्रंथिकी सूजन।

शुंडी(डिन्)–पु० (सं०) शौंडिक, मद्य बेचनेवाला; हाथी। **–(डि)मूषिका**–स्त्री० छछूँदर।

शुंभ–पु० (सं०) एक दानव जो गवेष्ठीका पुत्र और प्रह्लादका पौत्र था (यह दुर्गा द्वारा मारा गया था)। **–घातिनी,–नाशिनी,–मथनी,–मर्दिनी,–हननी**–स्त्री० दुर्गा। **–निशुंभ**–पु० शुंभ और निशुंभ। **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० एक नगर, आधुनिक संभलपुर।

शुंशुमार–पु० (सं०) सूँस नामक जलजंतु।

शुआअ–स्त्री० (अ०) किरण; ज्योति, प्रकाश। **–(ए)–माह**–स्त्री० (फा०) ज्योत्स्ना, चंद्रकिरण। **–मेह**–स्त्री० (फा०) सूर्यरश्मि; धूप।

शुऊर–पु० (अ०) ज्ञान; बुद्धि; ढंग; सलीका। **–दार**–वि० जिसे कामका ढंग आता हो, तमीजदार।

शुक–पु० (सं०) सुग्गा, तोता; वस्त्र, पोशाक; वस्त्रांचल, वस्त्रका छोर; शिरस्त्राण; सिरमें बाँधनेकी पगड़ी, साफा आदि; व्यास मुनिके पुत्र, शुकदेव; शिरीष वृक्ष; ग्रंथिपर्ण; शोणक वृक्ष; लोध; भड़भाँड; तालीश पत्र; एक पौराणिक अस्त्र। **–कर्णी**–स्त्री० एक पौधेका नाम। **कीट**–पु० हरे रंगवाला एक फतिंगा जो वर्षा और शरत् ऋतुओंमें अधिक दिखाई पड़ता है। **–कूट**–पु० दो खंभोंके बीच लटकायी हुई माला। **–च्छद**–पु० ग्रंथिपर्ण; सुग्गेका पर; तेजपत्ता। **–जिह्वा**–स्त्री० सुआठोंठीका पौधा। **–तरु**–पु० सिरीसका पेड़। **–तुंड**–पु० सुग्गेकी चोंच; हाथोंकी एक मुद्रा। **–तुंडी**–स्त्री० दे० 'शुकजिह्वा'। **–देव**–पु० कृष्ण-द्वैपायन वेदव्यासके पुत्र–शुकीके रूपमें पृथ्वीपर भ्रमण करती स्वर्गकी अप्सरा घृताची तथा व्यासके सहवाससे इनका जन्म हुआ, इसीलिए ये 'शुक' कहलाये। कहा जाता है कि इन्होंने 'भागवत पुराण'के रूपमें महाराज परीक्षित्को उनकी मृत्युके पूर्व धर्मोपदेश दिया था। ये परमज्ञानी और विरक्त थे। ये रंभाके सौंदर्यसे भी नहीं प्रभावित हुए और उसे उपदेश दिया। **–द्रुम**–पु० दे० 'शुकतरु'। **–नलिका-न्याय**–पु० लोभवश फँसनेकी रीति (पक्षी फँसानेकी लासा लगी नलिनी, नलिका लगाकर उसके पास चारा रख देते हैं, सुग्गा (या पक्षी) चारेके लोभसे नलिनीपर बैठता है और उसके पंजे लासेमें फँस जाते हैं। लोभवश फँसनेकी इसी क्रियाके आधारपर यह न्याय बना)। **–नामा(मन्)**–पु० दे० 'शुकजिह्वा'। **–नाशन**–पु० दद्रुघ्न, चकवँड़का पौधा। **–नास**–पु० श्योनाक वृक्ष; बाणभट्टकी 'कादंबरी'में आये 'तारापीड'के मंत्रीका नाम; अगस्त वृक्ष; एक गंध द्रव्य, नलिका; केवाँच; गंभारी। वि० तोतेकी चोंच जैसी नाकवाला। **–नासिका**–स्त्री० सुग्गेकी ठोरकी-सी नाक। **–पुच्छ**–पु० सुग्गेकी पूँछ; गंधक। **–पुच्छक**–पु० ग्रंथिपर्ण। **–पुष्प**–पु० स्थौणेय; शिरीष वृक्ष। **–प्रिय**–पु० शिरीष वृक्ष; कमरख। **–प्रिया**–स्त्री० जंबू, जामुन। **–फल**–पु० मदारका पेड़, अर्क वृक्ष; सेमल। **–बर्ह**–पु० गंधद्रव्य-विशेष। **–वल्लभ**–पु० दाड़िम, अनार। **–वाक्(च)**–वि० तोतेकी-सी बोलीवाला। **–वाह,–वाहन**–पु० कामदेव जिसका वाहन शुक माना गया है। **–शिबा,–शिबी**–स्त्री० केवाँच, कपिकच्छु। **–सेचन**–पु० शुक्र कोशिका और अंड कोशिकाका संगमन कराना; वीर्यसेचन।

शुकाख्या–स्त्री० (सं०) सुआठोंठीका पौधा।

शुकादन–पु० (सं०) दाड़िम, अनार।

शुकानना–स्त्री० (सं०) दे० 'शुकाख्या'।

शुकायन–पु० (सं०) बुद्ध; अर्हत।

शुकी–स्त्री० (सं०) सुग्गी।

शुकेष्ट–पु० (सं०) सिंरिसका पेड़।

शुकोदर–पु० (सं०) तालीशपत्र।

शुकोह–पु० (फा०) दबदबा, प्रताप; आतंक (दाराशुकोह)। **–(हे) अलफ़ाज़**–स्त्री० शब्दाडंबर।

शुक्का–पु० (अ०) शाही फरमान, राजाज्ञा; वह लिखित आज्ञा जो बड़े अधिकारी द्वारा छोटे अधिकारीको दी जाय; वह कपड़ा जो अलममें बाँधते हैं।

शुक्त–वि० (सं०) साफ; चमकदार; पवित्र; संयुक्त; मिश्रित; श्लिष्ट; अम्ल, खट्टा; निष्ठुर; कठोर; कड़ा; खुरदरा; निर्जन। पु० मांस; कांजिक, काँजी; वह वस्तु जो कुछ दिन रखी रहनेके कारण खट्टी हो गयी हो; खमीर; सिरका; खटाई; द्रव्यविशेष; खट्टापन; वसिष्ठका एक पुत्र; कठोर शब्द।

शुक्ता–स्त्री० (सं०) चुक्रिका; कांजी।

शुक्ति–स्त्री० (सं०) सीपी, सुतुही नामक जलजीव; सुतुही नामक जलजंतुका कड़ा खोल (वैद्य इसका भस्म बनाकर औषधके काममें भी लाते हैं); शंख; शंखनख, छोटा शंख; नखी गंधद्रव्य; कपाल-

खंड; अश्वावर्त, घोड़ेकी छाती (गरदन) पर बालोंकी भौंरी; एक नेत्ररोग; अर्श रोग, बवासीर; दो कर्ष या चार तोलेके बराबर एक तौल। **–कर्ण**–वि० सीप जैसे कानोंवाला। पु० एक नागदैत्य। **–खलति**–वि० बिलकुल गंजा। **–ज**–पु० मोती। **–पत्र,–पर्ण**–पु० सप्तपर्ण वृक्ष, छतिवनका पेड़। **–पुट**–पु०, **–पेशी**–स्त्री० सीपका खोल, सुतुही। **–बीज,–मणि**–पु० मोती। **–वधू**–स्त्री० सीपी; सीपीके भीतर रहनेवाला कीड़ा। **–स्पर्श**–पु० मोतीपरका धब्बा।

शुक्तिक–पु० (सं०) एक नेत्ररोग।

शुक्तिका–स्त्री० (सं०) सीप; चुक्रिका, चूकका साग।

शुक्त्युद्भव–पु० (सं०) मोती।

शुक्र–पु० (सं०) वीर्य, बीज, रेत; सार, तत्त्व; बल, शक्ति; एक ग्रह, सुकवा; सप्ताहका छठा दिन (यह शुक्र ग्रहका भोग्य दिन माना जाता है); शुक्राचार्य, दैत्यगुरु; अग्नि; ज्येष्ठ मास; चित्रक वृक्ष; एरंड; एक नेत्ररोग, फूली; शुद्ध सोम; एक योग (ज्यो०); प्रथम तीन व्याहृतियाँ–भूर्, भुवः, स्वर्; वसिष्ठका एक पुत्र; तीसरे मनुका एक पुत्र; चमकीलापन; सत्कर्म; सोना; धन सम्पत्ति। वि० चमकीला; श्वेत, उज्ज्वल; विशुद्ध। **–कर**–पु० मज्जा (इसीसे वीर्य बनता है)। वि० वीर्यवर्द्धक। **–कृच्छ्र**–पु० सूजाक, मूत्र-कृच्छ्र। **–ज**–पु० पुत्र; एक देववर्ग (जै०)। **–द**–पु० गेहूँ। **–दोष**–पु० वीर्यके दोषके कारण हुई नपुंसकता। **–प्रमेह**–पु० वीर्यक्षीणता (यह रोग माना गया है)। **–भुक्(ज्)**–पु० मयूर, मोर। **–भू**–पु० मज्जा। **–मेह**–पु० दे० 'शुक्रप्रमेह'। **–ल**–वि० शुक्र-संबंधी; वीर्यवृद्धि करनेवाला। **–ला**–स्त्री० उच्चटा। **–वार,–वासर**–पु० सप्ताहका छठा दिन। **–शिष्य**–पु० शुक्राचार्यके शिष्य, दैत्य, राक्षस। **–स्तंभ**–पु० बहुत दिनोंतक ब्रह्मचर्य रखनेके कारण उत्पन्न एक रोग, नपुंसकताका एक भेद, ध्वजभंग।

शुक्र–पु० (अ०) कृतज्ञताप्रकाश, उपकार मानना, ईश्वरके उपकारोंकी बड़ाई। **–गुज़ार**–वि० एहसान माननेवाला, शुक्र अदा करनेवाला। **–गुज़ारी**–स्त्री० कृतज्ञता प्रकट करना। मु० **–करना–(खुदाका)** एहसान मानना; भगवान्‌के कियेपर संतुष्ट, प्रसन्न रहना। **–बजा लाना**–कृतज्ञता प्रकाश करना। **–है**–खुदाका शुक्र है, भगवान्‌का परम अनुग्रह है।

शुक्रांग–पु० (सं०) मोर पक्षी।

शुक्रा–स्त्री० (सं०) वंशलोचन।

शुक्राचार्य–पु० (सं०) एक ऋषि जो भृगुके पुत्र और राक्षसोंके गुरु थे (पुराणोंमें कहा गया है कि दैत्यराज बलिको वामनको पृथ्वी-दान देनेसे रोकनेके लिए ये कमंडलुकी टोटीमें जा बैठे; इन्होंने सोचा कि ऐसा करनेसे न जल निकलेगा और न दानका संकल्प होगा, मगर जल निकालनेके लिए सींकसे टोंटी साफ करनेमें इनकी एक आँख फूट गयी, ये काने हो गये; (इसीलिए व्यंग्यमें कानेको 'शुक्राचार्य' कहते हैं)।

शुक्राणु–पु० (सं०) (स्पर्म) नरके शरीरसे प्राप्त होनेवाली प्रजनक कोशिका (इसमें अनेक अगुणित (हैप्लायड) क्रोमोसोम मौजूद होते हैं। प्राणी वर्गमें शुक्राणु नरके वृषणमें बनता है। वनस्पति वर्गमें शुक्राणुका निर्माण फलवाले पौधे (नर) की पराग नलीमें होता है); पुरुष वीर्यका वह अणु जिसके नारी गर्भमें प्रविष्ट होनेपर गर्भाधान होता है।

शुक्राना–पु० (फा०) वह रकम जो वकील या पेशकारको मुकदमा जीतनेके बाद, मेहनतानेके अतिरिक्त दी जाय।

शुक्रिय–वि० (सं०) दे० 'शुक्ल'। पु० चमक।

शुक्रिया, शुक्रीया–पु० (फा०) कृतज्ञताप्रकाश, उपकार मानना (करना, अदा करना)। अ० धन्यवाद।

शुक्ल–वि० (सं०) श्वेत, सफेद, शुभ्र; शुद्ध, सात्विक; यशस्कर। पु० रजत, चाँदी; ताजा नवनीत, मक्खन; श्वेत वर्ण, शुभ्र वर्ण; शुक्ल पक्ष, उजाला पाख; शुक्ल नामक योग जिसमें शुभ कार्य करनेका विधान है (ज्यो०); चूक; वैशाख मास; एक संवत्सर; कुंद पुष्प; श्वेत लोध; धव वृक्ष; आँखके सफेद अंशमें होनेवाला एक रोग; श्वेत एरंड वृक्ष; शिव; विष्णु; ब्राह्मणोंकी एक उपाधि। **–कंठ,–कंठक**–पु० दात्यूह पक्षी, पनडुब्बी चिड़िया, जलकाक। **–कंद**–पु० महिषकंद; श्वेतकंद; अतिविषा; अतीस। **–कंदा**–स्त्री० अतिविषा, सफेद अतीस। **–कर्कट**–पु० सफेद केकड़ा। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० सुकर्मशील। **–कुष्ठ**–पु० सफेद कोढ़। **–क्षीरा**–स्त्री० काकोली। **–दुग्ध**–पु० सिंघाड़ा नामक जल-फल। **–धातु**–स्त्री० खड़िया मिट्टी। **–पक्ष**–पु० महीनेके दो भागोंमेंसे वह भाग जिसमें चंद्रमाकी कला प्रतिदिन बढ़ती है और रात उजेली होती जाती है। **–पुष्प**–पु० छत्रक; कुंद; मरुवक, मरुआ। **–पुष्पा**–स्त्री० नागदंती; शीतकुंभी; कुंद। **–पुष्पी**–स्त्री० नागदंती। **–पृष्ठक**–पु० सिंधुक वृक्ष। **–फल**–पु० मदार। **–फला**–स्त्री० मदार; शमी। **–फेन**–पु० समुद्रफेन नामक औषध। **–बल**–पु० एक जिन देव। **–मंजरी**–स्त्री० सफेद निर्गुंडी। **–मंडल**–पु० काली पुतलीके अतिरिक्त आँखका सफेद अंश। **–मेह**–पु० प्रमेह रोगका एक प्रकार। **–यजुस्**–पु० यजुर्वेदके दो भागोंमेंसे एक। **–रोहित**–पु० सफेद और लाल रंग; श्वेत रोहित वृक्ष; श्वेत रोहित मछली। **–वायस**–पु० बगला पक्षी; श्वेत काक। **–वृत्त**–वि० सदाचारी। **–शाल**–पु० श्वेतशाल वृक्ष; गिरिनिंब।

शुक्लक–पु० (सं०) शुक्ल पक्ष; श्वेत वर्ण। वि० श्वेत।

शुक्लल–वि० (सं०) श्वेत।

शुक्लांग–पु० (सं०) मोर।

शुक्लांगा–स्त्री० (सं०) शेफालिका।

शुक्लांगी–स्त्री० (सं०) शेफालिका।

शुक्लांबर–पु० (सं०) श्वेत वस्त्र। वि० श्वेत वस्त्रधारी; विष्णु।

शुक्ला–स्त्री० (सं०) सरस्वती; शर्करा; काकोली; विदारी; स्नुही, सेंहुड़; श्वेत वर्णवाली स्त्री।

शुक्लाचार–वि० (सं०) शुद्ध आचरणवाला।

शुक्लापांग–पु० (सं०) मयूर।

शुक्लाभिसारिका–स्त्री० (सं०) शुक्ल पक्षमें सजधजकर प्रेमीसे मिलनेके लिए संकेत स्थलपर जानेवाली परकीया नायिका (सा०)।

शुक्लाम्ल–पु० (सं०) अम्ल, चुक्रिका शाक।

शुक्लार्क–पु० (सं०) सफेद मदार।

शुक्लार्म(न्)–पु० (सं०) आँखोंके सफेद अंशमें होनेवाला एक रोग।

शुक्लिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) श्वेतता।

शुक्लोपला–स्त्री० (सं०) रवादार चीनी।

शुक्लोदन–पु० (सं०) अरवा चावल।

शुक्षि–स्त्री० (सं०) वायु; तेज; प्रकाश; अग्नि।

शुग़ल–पु० (अ०) दे० 'शग़ल'।

शुगुन–पु० दे० 'शकुन'।

शुचा–स्त्री० (सं०) शोक, सोच, दुःख।

शुचि–वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध; अनुपहत, निर्दोष, निरपराधी; निर्मल, साफ; निष्कपट, निश्छल, शुद्धहृदय; श्वेत, उजला; चमकदार, देदीप्यमान। पु० अग्नि; सौराग्नि, सूर्यकी अग्नि; सूर्य; चंद्र; शुक्र; ज्येष्ठ; आषाढ़; ग्रीष्म ऋतु; श्वेत वर्ण; शृंगार; शिव; कार्तिकेय; ब्राह्मण; चित्रक वृक्ष; अर्क वृक्ष, मदारका पेड़; शुद्धाचरण, सदाचार; प्रकाश-रश्मि; सच्चा मंत्री, ईमानदार सलाहकार; सच्चा मित्र; अन्नप्राशनके समयका होम। स्त्री० पवित्रता, सफाई। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० पवित्र कर्म करनेवाला, अच्छे काम करनेवाला। **–द्रुम**–पु० पीपलका पेड़, अश्वत्थ वृक्ष। **–प्रणी**–स्त्री० आचमन। **–मल्लिका**–स्त्री० नवमल्लिका, नेवाड़ीका फूल। **–रोचि(स्)**–पु० चंद्र। **–वाक्(च्)**–पु० एक पक्षी। **–व्रत**–वि० पवित्र संकल्प करनेवाला, अच्छे कामका बीड़ा उठानेवाला। **–श्रवा(वस्)**–पु० विष्णु; एक प्रजापति। **–स्मित**–वि० शुभ्र हास्ययुक्त; निश्छल हँसी हँसनेवाला।

शुचि(स्)–स्त्री० (सं०) दीप्ति, प्रकाश।

शुचिकापुष्प–पु० (सं०) केतकी, केवड़ा।

शुचिता–स्त्री०, **शुचित्व**–पु० (सं०) शुचिका भाव; पवित्रता।

शुचिष्मान्(ष्मत्)–वि० (सं०) देदीप्यमान, प्रकाशयुक्त।

शुचि(चिन्)–वि० (सं०) दे० 'शुचि'।

शुजा–वि० (अ०) वीर, बहादुर। **–आना**–वि० बहादुरों जैसा, वीरतापूर्ण।

शुजाअत–स्त्री० (अ०) वीरत्व, बहादुरी।

शुटीर–पु० (सं०) वीर।

शुटीरता–स्त्री० (सं०) वीरता; वीर्य।

शुटीर्य–पु० (सं०) दे० 'शुटीरता'।

शुतुद्रि, शुतुद्रु–स्त्री० (सं०) शतद्रु नदी, सतलज नदी।

शुतुर–पु० (फा०) ऊँट। **–कीना**–वि० ऊँटकी तरह वैर रखने और बदला लेनेवाला, जिसका कीना, द्वेष कभी न निकले। **–ख़ाना**–पुं० ऊँटोंका अस्तबल, उष्ट्रशाला। **–ग़मज़ा**–पु० बेजा नाज-नखरा; कपट। **–गाव**–पु० एक चौपाया जिसकी गरदन ऊँटकी-सी और खुर बैलका-सा होता है, जिराफ। **–दिल**–वि० डरपोक, बुज़दिल। **–नाल**–स्त्री० छोटी तोप जो ऊँटकी पीठपर लादी और उसीपरसे चलायी जाती है। **–बे मुहार**–वि० बिना सोचे समझे इधर उधर चल पड़नेवाला। **–मुर्ग़**–पु० एक विशालकाय पक्षी जिसकी गरदन ऊँटकी तरह लंबी होती है और जो पर होते हुए भी उड़ नहीं सकता। **–सवार**–पु० साँड़नीसवार।

शुतुरी–वि० (फा०) ऊँट-संबंधी; ऊँटके रंगका; ऊँटके बालोंसे बना।

शुदनी–स्त्री० (फा०) भवितव्यता, आगे होनेवाली बात, होनहार; आकस्मिक दुर्घटना। वि० होनेवाला, होनहार।

शुदबुद–स्त्री० (फा०) किसी वस्तुका अल्पज्ञान।

शुदा–वि० (फा०) जो हो या बीत चुका हो (समासमें–पासशुदा, रजिस्ट्रीशुदा)।

शुद्ध–वि० (सं०) पवित्र; निर्मल, साफ; निर्दोष; सही, ठीक; श्वेत, सफेद; चमकीला; बिना मिलावटका, सच्चा, असली; साफ, निर्मल किया हुआ; निश्छल; केवल; अद्वितीय; अधिकारप्राप्त; तेज किया हुआ; अननुनासिक; निष्पाप; निष्कलंक। पु० सेंधा नमक; काली मिर्च; शुद्धात्मा; कोई शुद्ध वस्तु; शिव। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० शुद्ध कार्य करनेवाला; पवित्र। **–जंघ**–पु० गधा। **–जड**–पु० चतुष्पद। **–दंत**–वि० दे० 'शुद्धदत्'; शुद्ध हाथी दाँतका बना। **–दत्**–वि० सफेद दाँतोंवाला। **–धी,–बुद्धि,–मति**–वि० शुद्ध विचारोंवाला, सच्चा, ईमानदार। **–पक्ष**–पु० शुक्ल पक्ष। **–प्रतिभास**–पु० एक समाधि। **–मांस**–पु० विशिष्ट ढंगसे पकाया हुआ मांस (आ० वे०)। **–मुख**–पु० अच्छी तरह सिखलाया हुआ घोड़ा। **–लाभ**–पु० (सं०) (नेट प्रॉफिट) लागत या कुल खर्चा काटनेके बाद होनेवाला लाभ। **–वंश्य**–वि० निर्दोष वंशका। **–वल्लिका**–स्त्री० गुडूची, गुड़ूच। **–व्यूह**–पु० व्यूहका एक प्रकार जिसके अगले भागमें हाथी, मध्यमें तीव्रगामी घोड़े और पक्षमें मत्त गज होते हैं। **–शुक्र**–पु० आँखकी पुतलीका एक तरहका विकार। **–हार**–पु० एक शीर्षक मोतीवाला हार। **–हृदय**–वि० जिसका हृदय पवित्र हो।

शुद्धता–स्त्री०, **शुद्धत्व**–पु० (सं०) शुद्ध होनेका भाव।

शुद्धांत–पु० (सं०) अंतःपुर, रनिवास। **–चारी(रिन्),–पालक,–रक्षक**–पु० अंतःपुररक्षक।

शुद्धांता–स्त्री० (सं०) राजपत्नी, रानी।

शुद्धा–स्त्री० (सं०) इंद्रजौ।

शुद्धाचारवाद–पु० (प्यूरिटनिज्म) दे० 'कठोरतावाद'।

शुद्धात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) शिव। वि० पवित्र, शुद्ध, साफ हृदयवाला।

शुद्धाद्वैत–पु० (सं०) वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित एक वेदान्तिक सम्प्रदाय जिसमें यह माना जाता है कि मायारहित ब्रह्म ही अद्वैततत्व है और जगतका सारा प्रपंच उसीकी लीला है।

शुद्धापह्नुति–स्त्री० (सं०) अपह्नुति अलंकारका एक भेद, जहाँ वास्तविक उपमेयका निषेध करके उपमानकी स्थापना की जाय।

शुद्धाशय–वि० (सं०) साफ हृदयवाला।

शुद्धि–स्त्री० (सं०) शुद्ध करनेकी क्रिया, मार्जन; पवित्रता; चमक, कांति; सफाई; परिशोध; ऋण आदिका चुकाया जाना; सचाई; निर्दोषता; रिहाई; सुधार; गणितमें घटानेकी क्रिया; बाकी; व्यवकलन, बुरा कर्म करने, दूसरे धर्ममें परिवर्तित होने आदिके कारण अशुद्ध, अपवित्र हुए व्यक्तिको शुद्ध करते समयका संस्कार (वैदिक धर्म); दुर्गा। **–कंद**–पु० लहसुन। **–कर**–वि० पवित्र करनेवाला। **–कृत्**–पु० धोबी। **–पत्र**–पु० वह पत्र, सूची, लिस्ट जिसमें (प्रायः) शब्द या अर्थ सही, शुद्ध करके रख गये हों ('शुद्धिपत्र' (एराटा) प्रायः गलत छपी किताबोंके अंतमें लगाया जाता है); शुद्धिके पश्चात् धर्मशास्त्रज्ञ पंडितों द्वारा शुद्धि या प्रायश्चित्तके प्रमाणरूप दिया गया व्यवस्थापत्र (शुक्रनीति)।

शुद्धोद–पु० (सं०) समुद्र।

शुद्धोदन–पु० (सं०) बुद्धके पिता जिनकी राजधानी कपिलवस्तु थी।

शुद्ध्यशुद्धि–स्त्री० (सं०) शुद्ध और अशुद्धका भाव।

शुनःशेप, शुनःशेफ–पु० (सं०) एक ऋषि जो वैदिक ऋषि अजीगर्तके मँझले पुत्र थे ('ऐतरेय ब्राह्मण'में हरिश्चन्द्रोपाख्यानमें इनकी कथा इस प्रकारकी मिलती है–निःसंतान महाराज हरिश्चंद्रने मनौती मानी कि पुत्र होनेपर मैं उसे वरुणदेवकी बलि चढ़ा दूँगा। उन्हें रोहित नामक पुत्र हुआ, परंतु उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी नहीं की, उसे टालते गये। राजाके वरुण द्वारा पीड़ित किये जानेपर रोहितने अजीगर्तको सौ गायें देकर बलिके लिए शुनःशेपको खरीदा। यूपसे बाँधे जानेपर शुनःशेपने विष्णु, इंद्र आदि देवताओंकी स्तुति की और इन देवताओंकी कृपासे वे मृत्युसे बच गये। करुणार्द्र हो विश्वामित्रने शुनःशेपको अपने पुत्रके रूपमें ग्रहण कर लिया और उनका नाम देवरथ रखा। पुराणोंमें भी इनके विषयमें इस प्रकारकी कई कथाएँ मिलती हैं।); कुत्तेका लिंग।

शुन–पु० (सं०) कुत्ता।

शुनक–पु० (सं०) कुत्ता; कुत्तेका पिल्ला; भृगुवंशके एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि। **–चंचुका**–स्त्री० चंचु शाक, चेंच नामक साग। **–चिल्ली**–स्त्री० एक साग, बथुआ।

शुनाशीर, शुनासीर–पु० (सं०) दो वैदिक देवता जिनकी कृपासे अन्नको उत्पत्ति और रक्षा होती हैं (उक्त दोनों देवता ये माने गये हैं–वायु और आदित्य, इंद्र और वायु या इंद्र और सूर्य); इंद्र; उल्लू।

शुनि–पु० (सं०) कुत्ता।

शुनी–स्त्री० (सं०) कुक्कुरी, कुतिया; कुष्मांडी।

शुनीर–पु० (सं०) कुक्कुरीसमूह, कुतियोंका झुंड।

शुन्य–वि० (सं०) खाली, रिक्त। पु० शून्य; कुतियोंका समूह।

शुबहा–पु० (अ०) भ्रम, धोखा, संदेह।

शुभंकर–वि० (सं०) मंगलकारी, कल्याणकर।

शुभंकरी–वि० स्त्री० (सं०) मंगलकारिणी। स्त्री० पार्वती, दुर्गा; शमी वृक्ष।

शुभंयु–वि० (सं०) मंगलान्वित।

शुभ–वि० (सं०) मंगलमय, कल्याणकर; सुखद; अनुकूल; अच्छा; चमकीला; सुंदर; भाग्यशाली; वेदज्ञ। पु० मंगल, कल्याण; सुख; एक सुगंधित लकड़ी; पद्मकाष्ठ, पदुमकाठ; बकरा; चाँदी; एक आभूषण; जल; विष्कंभादि सत्ताईस योगोंमेंसे तेईसवाँ योग (ज्यो०)। **–कथ**–वि० अच्छी बातें कहनेवाला। **–कर**–वि० कल्याणकारी, मंगलकारक। **–करी**–वि० स्त्री० मंगलकारिणी। स्त्री० पार्वती। **–कर्म(न्)**–पु० सत्कर्म। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० अच्छा कर्म करनेवाला। पु० स्कंदका एक अनुचर। **–काम**–वि० कल्याण चाहनेवाला। **–कृत्**–वि० दे० 'शुभकर'। **–कूट**–पु० लंकाका एक पर्वत। **–गंधक**–पु० एक गंधद्रव्य, बोल। **–ग**–वि० सुंदर; भाग्यवान्। **–गा**–स्त्री० शक्तिका नाम। **–ग्रह**–पु० मंगलकारी, अनुकूल ग्रह, सौम्य ग्रह जो ये हैं–गुरु, शुक्र, अपापयुक्त बुध और अर्द्धाधिक चंद्र। **–चिंतक**–वि० किसीकी भलाई चाहनेवाला, हितैषी। **–ताति**–स्त्री० कल्याण, अभ्युदय। **–दंती**–स्त्री० सुंदर दाँतोंवाली स्त्री। **–द**–पु० अश्वत्थ वृक्ष। वि० मंगलप्रद। **–दर्श,–दर्शन**–वि० सुंदर; जिसके दर्शनसे मंगल हो, जिसका मुंह देखनेसे शुभ शकुन हो। **–दायी(यिन्)**–वि० मंगलप्रद। **–दृष्टि**–वि० दे० 'शुभदर्श'।

–नामा–स्त्री० शुक्ल पक्षकी पंचमी, दशमी और पूर्णिमा। **–पत्रिका**–स्त्री० शालपर्णी। **–प्रद**–वि० कल्याणकारी। **–लक्षण**–वि० अच्छे लक्षणोंवाला। **–लग्न**–पु० शुभ मुहूर्त, मंगल घड़ी। **–वासन**–पु० मुखको सुगंधित करनेवाला द्रव्य। **–विमलगर्भ**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–शंसी(सिन्)**–वि० मंगलकी सूचना देनेवाला। **–शकुन**–पु० मंगल शकुनवाला पक्षी। **–सूचक**–वि० मंगलकी सूचना देनेवाला। **–सूचन**–पु०,**–सूचना**–स्त्री० मंगलज्ञापन, मंगलसूचना। **–स्थली**–स्त्री० मंगलभूमि; यज्ञस्थल।

शुभांग–वि० (सं०) सुंदर।

शुभांगी–वि० स्त्री० (सं०) सुंदरी (नारी)। स्त्री० कामदेवकी पत्नी रति; कुबेरकी पत्नी; एक कर्नाटकी रागिनी।

शुभांगी(गिन्)–वि० (सं०) दे० 'शुभांग'।

शुभांजन–पु० (सं०) शोभांजन वृक्ष।

शुभा–स्त्री० (सं०) शोभा, सौंदर्य; दीप्ति, कांति; सुंदरी या अच्छी स्त्री; बकरी; अरारोट; सोआका साग; पुरइन; कामना, इच्छा; वंशलोचन; गोरोचन; शमी; प्रियंगु; श्वेत दूर्वा; देवसभा। पु० दे० 'शुवहा'।

शुभाकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) हितैषी, हितेच्छु।

शुभाक्ष–पु० (सं०) शिव।

शुभागमन–पु० (सं०) मंगलप्रद आगमन, सुखद आगमन।

शुभानुष्ठान–पु० (सं०) मांगलिक कर्म।

शुभान्वित–वि० (सं०) मंगलयुक्त।

शुभापांगा–स्त्री० (सं०) सुंदर स्त्री।

शुभावह–वि० (सं०) मंगलकारी।

शुभाशय–वि० (सं०) अच्छे आशयवाला।

शुभाशीर्वाद–पु० (सं०) मंगलकारी, मंगलसूचक आशीर्वचन।

शुभाशीष–पु० दे० 'शुभाशीर्वाद'।

शुभाशुभ–वि० (सं०) शुभ और अशुभ, भला और बुरा।

शुभिका–स्त्री० (सं०) पुष्पहार।

शुभेक्षण–वि० (सं०) सुंदर नेत्रोंवाला।

शुभोदय–वि० (सं०) भाग्यशाली।

शुभ्र–वि० (सं०) उज्ज्वल; देदीप्यमान, चमकीला; सफेद। पु० श्वेत वर्ण, सफेद रंग; चंदन; अभ्रक, अबरक; सेंधा नमक; चाँदी; वंशलोचन; चीनी; फिटकरी; चरबी; कसीस; खस; स्वर्ग। **–कर**–पु० (श्वेत किरणोंवाला) चंद्रमा; कपूर। **–दंती**–स्त्री० सुदंती; पुष्पदंत दिग्गजकी भार्या। **–भानु**–पु० चंद्रमा। **–रश्मि**–पु० चंद्रमा।

शुभ्रक–वि० (सं०) शुभ्र करनेवाला। पु० (ब्रिलियन्टीन) बालोंको चमकानेवाला एक तैलाक्त तरल पदार्थ, अंगराग।

शुभ्रता–स्त्री० (सं०) उज्ज्वलता, सफेदी; दीप्ति।

शुभ्रांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

शुभ्रा–स्त्री० (सं०) गंगानदी; स्फटिक; फिटकिरी; वंशलोचन; चीनी।

शुभ्रालु–पु० (सं०) महिष कंद; श्वेतालु।

शुभ्रि–पु० (सं०) ब्रह्मा; सूर्य।

शुभ्रिका–स्त्री० (सं०) मधुशर्करा।

शुमार–पु० (फा०) भय, आतंक; गिनती; तखमीना। वि० गिननेवाला (समासमें)। **–कुनिंदा**–पु० गणना करनेवाला; भिन्नमें ऊपरकी संख्या, अंश (ग०)। **–दाना**–पु० तसबीहमें हर सौ दानोंके बाद रहनेवाला बड़ा दाना। **–नवीस**–पु० गिनती लिखने, हिसाब करनेवाला। मु० **–बाँधना**–अनुमान करना, कल्पना करना। **–में न रहना,–में न होना**–बेशुमार, संख्यातीत होना; बिलकुल मामूली, अदना होना। **–में न लाना**–कुछ न समझना, नितांत उपेक्षणीय मानना।

शुमारी–स्त्री० (फा०) गिननेकी क्रिया (समासमें)।

शुमाल–पु० (अ०) बायाँ हाथ; उत्तर दिशा। **–रू,–रूया**–वि० (मकान) जिसका सामना उत्तरकी ओर हो।

शुमाली–वि० उत्तरका, उत्तरी। **–अमरीका**–पु० उत्तरी अमरीका। **–सरकार**–स्त्री० उत्तरी सरकार।

शुरबा–पु० शोरबा।

शुरुआत–स्त्री० (अ०) 'शुरूअ'का बहु० (हिंदीमें एकवचनमें प्रयुक्त), आरंभ; पहल।

शुरू–पु० (अ० शुरूअ) आरंभ, इब्तदा; उठान।

शुरूक़–पु० (अ०) प्रकाश; सूर्योदय।

शुल्क–पु० (सं०) कर, महसूल जो राज्य द्वारा घाट, मार्ग आदिपर लिया जाता है; राज्य द्वारा लिया जानेवाला कर; चुंगी; आवेदनपत्र देने, पढ़ने आदिका कर, फीस (जैसे–प्रवेशशुल्क आदि); कन्याके माता-पिता द्वारा वरके माता-पितासे अथवा स्वयं वरसे कन्या देनेके बदले लिया हुआ द्रव्य; दहेज; स्त्री-धनका भेद (जैसे–भगिनी-शुल्क); संभोगके बदले दिया गया द्रव्य; ग्राह्य धन–मूल्य, कीमत; लाभ। **–ग्राहक,–ग्राही(हिन्)**–पु० शुल्क एकत्र करनेवाला। **–द**–पु० विवाहके लिए शुल्क देनेवाला। **–शाला**–स्त्री० शुल्क जमा करनेकी जगह। **–स्थान**–पु० शुल्कशाला; वह स्थान जिसका उपयोग करनेपर फीस देनी पड़े।

शुल्काध्यक्ष–पु० (सं०) चुंगीका अध्यक्ष।

शुल्कार्ह–वि० (ड्यूटिएबिल) शुल्क या कर बैठाये जाने योग्य, जो उन वस्तुओंकी सूचीके अंतर्गत हो जिनपर शुल्क ग्रहण करनेका निश्चय हुआ हो।

शुल्ब, शुल्व–पु० (सं०) ताँबा; रस्सी; आचार; नियम; यज्ञ-कर्म; जलसान्निध्य। **–ज**–पु० पीतल।

शुल्ल–पु० (सं०) रस्सी; ताँबा।

शुल्वारि–पु० (सं०) गंधक।

शुश्रू–स्त्री० (सं०) बच्चेकी सेवा करनेवाली माता।

शुश्रूषक–वि० (सं०) सेवा-कार्य करनेवाला; आज्ञाकारी। पु० नौकर, दास।

शुश्रूषण–पु० (सं०) सेवा करनेकी क्रिया, परिचर्या; आज्ञापालन; कर्तव्यनिष्ठता; सुननेकी इच्छा।

शुश्रूषा–स्त्री० (सं०) सेवा-टहल; (बच्चेका) पालन-पोषण; खिदमतगारी; स्वास्थ्यकी देखरेख, परिचर्या; कथन; सुननेकी इच्छा; चापलूसी। **–प्रणाली**–स्त्री० रोगीकी यथोचित सेवाका ढंग, नियम।

शुश्रूषिता(तृ), शुश्रूषी(षिन्)–वि० (सं०) आज्ञाकारी।

शुश्रूषु–वि० (सं०) सेवा करनेको उत्सुक; आज्ञानुवर्त्ती; सुननेका अभिलाषी।

शुष–पु०, **शुषी**–स्त्री० (सं०) सूखना; विवर, बिल।

शुषि–स्त्री० (सं०) शोष, सूखना; विवर, बिल, सुराख; साँपके जहरीले दाँतका सुराख; बल।

शुषिर–वि० (सं०) विवरयुक्त, सुराखोंसे भरा हुआ। पु० विवर, छेद; वंशी आदि मुँहसे फूँककर बजाये जानेवाले बाजे; वायुमंडल, आकाश; अग्नि; चूहा; लौंग; भूसा।

शुषिरा–स्त्री० (सं०) नदी; नली नामक गंधद्रव्य; पृथ्वी।

शुषिल–पु० (सं०) वायु।

शुष्क–वि० (सं०) सूखा, अनार्द्र, जिसमें गीलापन न हो; शीर्ण; नीरस, कठिन, दिमागको थकानेवाला (जैसे–शुष्क कार्य); समाजके सुख-दुःखपर ध्यान न रखनेवाला, हृदयहीन (जैसे–शुष्क व्यक्ति); निष्प्रयोजन, निस्सार; रिक्त; जिसका कोई कारण न हो; कठोर। **–कलह**–पु० ऐसा कलह जिसका कोई कारण न हो। **–कास**–पु० सूखी खाँसी। **–गर्भ**–पु० एक स्त्री-रोग जिसमें वात-दोषवश गर्भ सूख जाता है। **–गोमय**–पु० कंडी। **–चर्चन**–पु० निरर्थक बात। **–तर्क**–पु० बेकार बहस। **–तोय**–वि० (तालाब, नाला आदि) जिसका जल सूख गया हो। (स्त्री० 'शुष्कतोया'।) **–रुदित**–पु० ऐसा रोना जिसमें आँसू न निकलते हों। **–रेवती**–स्त्री० एक बालग्रह। **–वृक्ष**–पु० धव वृक्ष। **–व्रण**–पु० वह घाव जो सूख गया हो, अच्छा हो गया हो, भरा, पूजा घाव। **–सेल**–स्त्री० (ड्राई सेल) लेक्लैंशी सेलका एक सुधरा हुआ रूप। इसके अन्दर कोई भी द्रव स्वतंत्र रूपमें नहीं होता।

शुष्कक–वि० (सं०) सूखा हुआ; क्षीण।

शुष्कता–स्त्री० (सं०) नीरसता, सूखापन; कठिनता; हृदयहीनता; व्यर्थता।

शुष्कल–वि० (सं०) मांसभक्षी। पु० सूखा मांस; मांस।

शुष्कली–स्त्री० (सं०) सूखा मांस; मांस।

शुष्कांग–वि० (सं०) जिसका शरीर सूख गया हो, दुबला-पतला। पु० धव वृक्ष।

शुष्कांगी–स्त्री० (सं०) गोधिका, गोह; बगलेकी जातिकी एक चिड़िया।

शुष्का–स्त्री० (सं०) योनिकंद नामक स्त्रियोंका रोग।

शुष्कार्द्र, शुष्कार्द्रक–पु० (सं०) सोंठ, शुंठी।

शुष्ण–पु० (सं०) सूर्य, सूरज; आग; शक्ति।

शुष्म–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; वायु; लौ, लपट; दीप्ति, तेज; पराक्रम; पक्षी; शक्ति।

शुष्मा(ष्मन्)–पु० (सं०) शौर्य; दीप्ति, तेज; अग्नि; चित्रक वृक्ष।

शुस्ता–वि० (फा०) शुद्ध; स्वच्छ; शिष्ट, सभ्य; शिक्षित, संस्कृत; सज्जन।

शुहदा–पु० (अ०) 'शहीद'का बहु०; गुंडा; बदमाश, बदचलन। **–पन,–पना**–पु० गुंडई, बदमाशी।

शुहरत–स्त्री० (अ०) ख्याति, प्रसिद्धि, चर्चा; नेकनामी; बदनामी (देना, पाना, होना)।

शुहरा–पु० (अ०) दे० 'शुहरत'।

शूक–पु० (सं०) किसी वस्तुका चिकना, नुकीला अग्रभाग; जौ आदिकी बालका नुकीला हिस्सा, टूँड़; कीड़ोंका नुकीला रोयाँ; दाढ़ी; शिखा; दया; शोक, गम; जल-मलमें पैदा होनेवाला जहरीला कीड़ा; एक अन्न; लिंगवर्धक शूकप्रधान औषधके प्रयोगसे होनेवाला रोग। **–कीट,–कीटक**–पु० नुकीले रोयोंवाला एक कीड़ा। **–ज**–पु० जवाखार। **–तृण**–पु० सूकड़ी नामकी घास जो निर्बल पशुओंके लिए बलवर्धक होती है। **–धान्य**–पु० टूँड़वाले अनाज (जैसे जौ आदि)। **–पत्र**–पु० विषहीन सर्प। **–पाक्य**–पु० जवाखार। **–पिंडि,–पिंडी,–शिंबा,–शिंबिका,–शिंबी**–स्त्री० केवाँच, कपिकच्छु। **–वृंत**–पु० एक विषैला कीड़ा।

शूक–पु० (पिन) दे० 'कंटिका'। **–धानी**–स्त्री० (पिनकुशन) दे० 'कंटिकाधार'।

शूकक–पु० (सं०) टूँड़; वर्षाकाल; रस; एक प्रकारका जौ जैसा अन्न; दया।

शूकर–पु० (सं०) वाराह, सूअर नामक पशु। **–कंद**–पु० वाराही कंद। **–क्षेत्र**–पु० सूकर खेत, सोरों नामक तीर्थस्थान। **–दंष्ट्र,–दंष्ट्रक**–पु० गुदभ्रंश, सूअरदाढ़ नामक रोग। **–पादिका**–स्त्री० कोलशिंबी; सेमकी फली। **–मुख**–पु० एक नरक।

शूकराक्रांता–स्त्री० (सं०) वराहक्रांता।

शूकरी–स्त्री० (सं०) सूअरी, वाराही; वराहक्रांता; सूँस।

शूकरेष्ट–पु० (सं०) मुस्ता, मोथा; कसेरू।

शूकल–पु० (सं०) अड़ियल घोड़ा, भड़कनेवाला घोड़ा।

शूकवती–स्त्री० (सं०) केवाँच, कपिकच्छु।

शूका–स्त्री० (सं०) दे० 'शूकवती'।

शूकाक्ष–पु० (सं०) सिरिस।

शूकाढ्य–पु० (सं०) शूकतृण।

शूकी(किन्)–वि० (सं०) टूँड़दार, छोटा नुकीला काँटा (स्पाइक)।

शूकुल–पु० (सं०) एक मछली; एक सुगंधित तृण।

शूचिवेधन–पु० (इनजेक्शन) सूईकी सहायतासे दवाका प्रवेश कराना, अंतःक्षेपण; सूई (सूई देना,–लगाना)।

शूची*–स्त्री० सूई।

शूति–स्त्री० (सं०) वृद्धि, बढ़ती। **–पर्ण**–पु० आरग्वध वृक्ष, अमलतासका पेड़।

शूद्र–पु० (सं०) वैदिक आर्यों द्वारा निर्धारित वर्णव्यवस्थामें चतुर्थ वर्ण, सबसे निम्न वर्ण जिसका कर्तव्य अन्य तीन वर्णोंकी सेवा है (इस वर्णकी उत्पत्ति ब्रह्माके पैरोंसे मानी गयी है); अछूत, हरिजन; निम्न कोटिका व्यक्ति। **–कल्प**–वि० शूद्रसे मिलता-जुलता। **–कृत्य,–धर्म**–पु० शूद्रका कर्तव्य। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० शूद्रसे उत्पन्न। **–प्रिय**–पु० पलांडु, प्याज। **–प्रेष्य**–पु० शूद्रकी परिचर्या, सेवा करनेवाला ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य। **–भोजी(जिन्)**–वि० शूद्रके घर खानेवाला। **–याजक**–पु० शूद्रके लिए यज्ञ करानेवाला। **–योनि**–स्त्री० शूद्राकी कोख। **–वृत्ति**–स्त्री० शूद्रका पेशा। **–सेवन**–पु०,**–सेवा**–स्त्री० शूद्रकी परिचर्या या नौकरी करना।

शूद्रक–पु० (सं०) 'मृच्छकटिक' नाटकके रचयिता प्रसिद्ध कवि और राजा।

शूद्रा–स्त्री० (सं०) शूद्र वर्णकी स्त्री। **–परिणयन,–वेदन**–पु० शूद्रासे विवाह करना। **–भार्य**–पु० वह जिसकी पत्नी शूद्रा हो। **–वेदी(दिन्)**–पु० शूद्रासे विवाह करनेवाला उच्च वर्णका व्यक्ति। **–सुत**–पु० किसी भी वर्णके सहवास द्वारा शूद्राके गर्भसे उत्पन्न पुत्र।

शूद्राणी–स्त्री० (सं०) शूद्रकी स्त्री, शूद्री।

शूद्रान्न–पु० (सं०) शूद्र वर्णके स्वामीका अन्न; शूद्र वर्णके स्वामीसे प्राप्त जीविका।

शूद्रार्ता–स्त्री० (सं०) प्रियंगु वृक्ष।

शूद्री–स्त्री० (सं०) शूद्राणी, शूद्रकी स्त्री।

शूद्रोदक–पु० (सं०) वह जल जो शूद्रके स्पर्शसे अपवित्र हो गया हो।

शून–वि० (सं०) शून्य; फूला हुआ, रोगके कारण सूजा हुआ; वर्द्धित, बढ़ा हुआ।

शूना–स्त्री० (सं०) घंटी, अधोजिह्विका; प्राणिवधस्थान; थूहड़; गृहस्थीके वे स्थान या वस्तुएँ जहाँ या जिससे छोटे-छोटे जीवोंकी हत्या होनेकी संभावना रहती है (वे स्थान या वस्तुएँ ये हैं–अग्निस्थल (चूल्हा), चक्की, झाड़ू, ऊखल, जलपात्र)।

शून्य–वि० (सं०) असंपूर्ण, रिक्त, खाली; निर्जन; तुच्छ; हीन, रहित (जैसे–ज्ञानशून्य); अर्थहीन; निराकार; उदास। पु० रिक्तता; अभावसूचक चिह्न, बिंदु; निर्जन स्थान; खाली जगह; आकाश; अभाव; ब्रह्म; एक कर्णाभूषण, कर्णफूल। **–कर्ण**–पु० कर्णफूलसे अलंकृत कान। **–गर्भ**–पु० एक फल, पपीता। वि० निःसार; मूर्ख; जिसके गर्भमें कुछ न हो। **–दिक्पाती रेखा**–स्त्री० (एगानिक लाइन) वह काल्पनिक रेखा जो भू-पृष्ठके उन सभी स्थानोंसे गुज़रती है जहाँ दिक्पातका कोण शून्य है। **–दृष्टि**–स्त्री० लक्ष्यहीन, उदास दृष्टि। **–पथ**–पु० आकाश; निर्जन मार्ग। **–पदवी**–स्त्री० ब्रह्मरंध्र। **–पाल**–पु० स्थानापन्न व्यक्ति; प्रतिशासक (रीजेंट)। **–बहरी**–स्त्री० (हिं०) एक रोग जिसमें शरीरका कोई भाग संवेदनशून्य हो जाता है, सुनबहरी। **–मंडल**–पु० सहस्रार चक्र (योग)। **–मध्य**–वि० (वह वस्तु) जिसका भीतरी हिस्सा खाली हो (नल, नलिका, नरकट आदि)। **–मनस्क,–मना(नस्)**–वि० अन्यमनस्क, भग्नचेता, कोई काम करते, किसीकी बात सुनते हुए भी मनको दूसरी ओर लगाये रखनेवाला। **–मूल**–वि० जिसका आधार अरक्षित हो (सेना)। **–वाद**–पु० वह दार्शनिक सिद्धांत जो जीव, ईश्वर आदिकी सत्ता स्वीकार नहीं करता, बौद्ध दर्शन; नास्तिकता (निहिलिज्म)। **–वादी(दिन्)**–पु० बौद्ध; नास्तिक। **–हर**–पु० सोना। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ खाली हो। **–हृदय**–वि० शून्यमनस्क; खुले दिलवाला; जिसके मनमें किसी तरहका संदेह न हो।

शून्यता–स्त्री०, **शून्यत्व**–पु० शून्य होनेका भाव।

शून्या–स्त्री० (सं०) नली, नलिका, पोला नरकट; महाकंटकिनी, स्नुही, थूहर, सेंहुँड़; वंध्या, बाँझ स्त्री।

शून्यालय–पु० (सं०) एकान्त स्थान।

शून्यावस्था–स्त्री० (सं०) शून्यचक्र या सहस्रारमें पहुँचकर आत्माकी द्वंद्वातीत अवस्था (नाथपंथ)।

शूप–पु० दे० 'शूर्प'।

शूम–वि० (अ०) मनहूस; कंजूस, सूम। **–कदम**–वि० चौपट-चरण; मनहूस। **–(ए) क़िस्मत**–स्त्री० भाग्यहीन।

शूमी–स्त्री० (फा०) मनहूसी, अभागापन। वि० अनिष्ट, बुराई, कृपणता।

शूरंगम–पु० (सं०) एक समाधि; एक बोधिसत्त्व।

शूर–वि० (सं०) शौर्यशाली, वीर; शक्ति-संपन्न। पु० शौर्यवान् या वीर व्यक्ति; सूर्य; सिंह; शूकर; कुत्ता; मुर्गा; चित्रक वृक्ष; साल वृक्ष; अर्क, मदारका पेड़; लिकुच, लकुच; मसूर; कृष्णके पितामह; उत्तर दिशाका एक देश (जं०)। **–कीट**–पु० कमजोर योद्धा। **–पुत्रा**–स्त्री० अदिति। **–भू,–भूमि**–स्त्री० उग्रसेनकी

एक कन्या। –मानी (निन्)–वि० अपनी वीरतापर घमंड करनेवाला, अपनी वीरताके विषयमें लंबी-चौड़ी हाँकनेवाला। –वाणेश्वर–पु० विष्णु। –विद्या–स्त्री० युद्ध-विद्या। –वीर–पु० वीर व्यक्ति, योद्धा। –श्लोक–पु० वीरोंके शौर्यपूर्ण कार्योंकी स्तुति, प्रशंसा, कहानी। –सेन–पु० मथुरा और उसके आस-पासका प्रदेश; कृष्णके पितामहका नाम जो शूरसेन प्रदेशके राजा थे। –सेनप–पु० शूरोंकी सेनाके पालक, रक्षक, कार्त्तिकेय। –सेना–स्त्री० मथुरा।

शूरण–पु० (सं०) एक जमीकंद, सूरन, ओल; श्योनाक, शोणाकका पेड़।

शूरणोद्भुज–पु० (सं०) हरिद्रांग पक्षी।

शूरता–स्त्री०, **शूरत्व**–पु० (सं०) शूर होनेका भाव, वीरता।

शूरताई*–स्त्री० दे० 'शूरता'।

शूरम्मन्य–वि० (सं०) शूर न होते हुए भी जो व्यर्थ ही अपनेको शूर मानता हो, शूरमानी।

शूरा–स्त्री० (सं०) ओषधिविशेष। * पु० शूर, योद्धा; सूर्य, रवि।

शूरिमृग–पु० (सं०) वन्यपशु।

शूर्प–पु० (सं०) अन्न साफ करने, पछोड़नेके लिए सींक, बाँसके छिलके आदिका बना पात्र, सूप; दो द्रोणका एक परिमाण। –कर्ण–पु० वह जिसके कान सूपके सदृश हों–हाथी; गणेश। –णखा,–णखी–स्त्री० रावणकी बहिन जिसने रामके रूपपर मोहित हो दंडकारण्यमें जा उनसे विवाहका प्रस्ताव किया और एकपत्नीव्रत रामने इसपर संकेत कर लक्ष्मण द्वारा उसे नाक-कान-विहीन करा दिया। –नखा–स्त्री० (हिं०) दे० 'शूर्पणखा'। –पर्णी–स्त्री० शिंबीविशेष, वनमूंग, वनउर्द। –वात–पु० सूपके हिलानेसे उत्पन्न हवा। –श्रुति–पु० शूर्पकर्ण, हाथी।

शूर्पक–पु० (सं०) कामदेवका शत्रु एक राक्षस।

शूर्पकाराति, शूर्पकारि–पु० (सं०) कामदेव।

शूर्पी–स्त्री० (सं०) छोटा सूप; शूर्पणखा; एक खिलौना।

शूर्म–पु०, **शूर्मि, शूर्मिका, शूर्मी**–स्त्री० (सं०) लौह-प्रतिमा, लोहेकी मूर्ति; निहाई।

शूल–पु० (सं०) (कॉलिकपेन) शरीरगत वातप्रकोपजन्य एक वेदना-रोग (यह अधिकतर पेटमें होता है। इस रोगके होनेपर ऐसा अनुभव होता है कि कोई बार-बार काँटा-सा चुभो रहा है); वेदना, व्यथा; चुभने या कष्ट देनेवाली बात; पीड़ा; गठिया; खूब नुकीला लोहेका काँटा; त्रिशूल; शिवका त्रिशूल; एक शस्त्र, बरछा, भाला; प्राचीन कालमें मृत्यु-दंड देनेका एक औजार, सूली; मांस भूननेका काँटा, सीखचा; केतन, ध्वज, झंडा; मृत्यु; ज्योतिषके अनुसार विष्कंभ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे नवाँ योग। –गव–पु० शिव। –ग्रंथि–स्त्री० माला नामक दूब। –ग्रह,–ग्राही(हिन्)–पु० शिव। –घातन–पु० एक आयुर्वेदीय औषध, मंडूर, लोहकिट्ट। –घ्न–पु० तुंबुरु वृक्ष। वि० पीड़ाका नाश करनेवाला, वेदनाहर। –घ्नी–स्त्री० नरसल जैसा एक पौधा; सज्जी मिट्टी (?)। –द्विट्(ष्)–पु० हिंगु, हींग। –धन्वा(न्वन्),–धर–पु० शिव।–धरा,–धारिणी–स्त्री० दुर्गा। –धारी(रिन्)– पु० शिव। –धृक्(ष्)–पु० शिव। –नाशन–पु० सौवर्चल लवण; हींग; पुष्कर मूल; कई ओषधियोंको मिलाकर बना हुआ एक चूर्ण जो शूल रोगमें खाया जाता है (आ० वे०)। –नाशिनी–स्त्री० हींग। –पत्री–स्त्री० शूली नामक घास। –पाणि–पु० शिव। –पानि*–पु० दे० 'शूलपाणि'। –प्रोत–पु० एक नरक। –भृत्–पु० शिव। –मर्दन–पु० तालमखाना। –शत्रु–पु० एरंड वृक्ष। –हंत्री–स्त्री० यवानी, अजवाइन। –हर–पु० पुष्करमूल। –हस्त–वि० शूल धारण करनेवाला। पु० शिव। –हृत्–पु० हींग। मु० –उठना–शूल चुभानेकी-सी पीड़ाका होना। –देना–तीव्र व्यथा उत्पन्न करना।

शूलक–पु० (सं०) दुर्विनीत घोड़ा, भड़कनेवाला, अड़ियल टट्टू।

शूलना*–अ० क्रि० शूलकी भाँति गड़ना; पीड़ा उत्पन्न करना।

शूलांक–वि० (सं०) जिसपर शिवके त्रिशूलकी छाप हो।

शूला–स्त्री० (सं०) सूली; वेश्या; छड़, सलाख।

शूलाकृत–पु० (सं०) लोहेकी सलाखपर भूना गया मांस।

शूलारि–पु० (सं०) इंगुदी।

शूलि–वि० (सं०) कुंतधारी। पु० शिव। स्त्री० शूली।

शूलिक–पु० (सं०) कबाब; शशक, खरहा; मुर्गा; शूलीपर चढ़ानेवाला; ब्राह्मण और शूद्रासे उत्पन्न संतान। वि० शूल धारण करनेवाला; सीखचेपर भूना हुआ।

शूलिका–स्त्री० (सं०) सलाख जिसमें मांस गोदकर भूनते हैं।

शूलिन–पु० (सं०) बरगदका पेड़।

शूलिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

शूली–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी घास, शूलपत्री; शूल, तीव्र वेदना; दे० 'सूली'।

शूली(लिन्)–वि० (सं०) शूल धारण करनेवाला; शूल रोगसे पीड़ित। पु० शिव; भालाबरदार; खरहा।

शूलोत्खा, शूलोत्था–स्त्री० (सं०) एक लता, सोमराजी।

शूल्य–वि० (सं०) शूलमें खोंसकर पकाया हुआ; सूली देने योग्य। पु० कबाब। –पाक,–मांस–पु० कबाब। –वाण–पु० भूत योनि।

शृंखल–पु० (सं०) शृंखला, सिक्कड़, सिकड़ी; हाथीका पैर बाँधनेकी लोहेकी जंजीर, निगड़, पादबंधन; लोहेकी सिक्कड़, बेड़ी; बंधन; कमरमें पहननेका एक गहना, करधनी; नापनेकी जंजीर; परंपरा, सिलसिला। –बद्ध–वि० जंजीर या बेड़ीमें जकड़ा हुआ।

शृंखलक–पु० (सं०) उष्ट्र, ऊँट; हाथी सदृश जानवरोंके पैरोंको बाँधनेके लिए काठकी बनी एक प्रकारकी बेड़ी जिससे वे भाग न सकें; दे० 'शृंखला'।

शृंखलता–स्त्री० (सं०) क्रमिकता, शृंखलाबद्धता।

शृंखला–स्त्री० (सं०) परंपरा, क्रम; कोटिक्रम, श्रेणी; वस्तुओंकी क्रमानुसार माला (सीरीज़); लड़ी (चेन); कुछ दूरतक चलनेवाला क्रम (रेंज); कमरकी पेटी जिससे पुरुष अपनी धोती आदि बाँधते हैं, कमरबंद; करधनी; एक अलंकार; दे० 'शृंखल'। –अभिक्रिया–स्त्री० (चेन रिऐक्शन) ऐसी अभिक्रिया जिसमें इतनी ऊर्जा उत्पन्न होती है कि त्वरित रफ्तारसे अभिक्रिया स्वतः जारी रह सके। नाभिकीय विखंडनमें मन्दगामी न्यूट्रान जब युरेनियम २३५से टकराता है तो उसके नाभिकको यह दो भागोंमें विखंडित करता है जिससे ऊर्जा विमुक्त होती है और औसत रूपसे २ या ३ न्यूट्रान उत्सर्जित होते हैं, जो अन्य युरेनियम नाभिकोंका विखंडन करते हैं; यही क्रम शृंखलाबद्ध आगे चलता रहता है जिससे एक सेकंडके लाखवें अंशमें ही करोड़ों नाभिकोंका विखंडन हो जाता है और इसके फलस्वरूप ढेर-सी ऊर्जा विमुक्त होती है। –बद्ध–वि० क्रमयुक्त, शृंखलित।

शृंखलित–वि० (सं०) सिकड़ीसे जकड़ा हुआ; बँधा हुआ; क्रमयुक्त।

शृंखली–स्त्री० (सं०) कोकिलाक्ष, तालमखाना।

शृंग–पु० (सं०) पर्वतशिखर, पहाड़की चोटी, सानु; मकान, मंदिर आदिका ऊपरी हिस्सा, कँगूरा; ऊपरी भाग; कोटि, सिरा; चंद्रमाकी नोक, शशिविषाण; गजदंत; बाणकी नोक; सींग; सींगका या अन्य वस्तुओंका बना सींगके आकारका फूँकनेसे बजनेवाला बाजा, सिंघा, विषाण; शृंगी ऋषि, ऋष्य-शृंग जो दशरथके जामाता थे; प्रभुत्व, अधिकार, शासन, प्रधानता; उत्कर्ष, अभ्युदय; कामोद्रेक; चिह्न; स्तन; पिचकारी; कमल; कूर्च्यशीर्षक वृक्ष; उत्स; एक प्रकारका व्यूह; सोंठ; अदरक; जीवक नामक ओषधि-मूल। वि० नुकीला; तीक्ष्ण। –कंद–पु० शृंगाटक, सिंघाड़ा। –कूट–पु० एक पर्वत। –गिरि–पु० शृंगकूट। –ग्राहिकान्याय–पु० मरकहे साँड़का एक सींग पकड़ लेनेपर दूसरा सींग भी आसानीसे पकड़ा जा सकता है, इसी तथ्यके आधारपर यह न्याय बना है; इसका तात्पर्य यह है कि किसी दुष्कर कार्यका कुछ हिस्सा हो जानेपर उसका शेष भाग भी संपन्न हो जाता है। –ज–पु० अगुरु चंदन, अगर; बाण। वि० शृंगसे उत्पन्न। –धर–पु० पर्वत। –नाद–पु० सिंगी बाजा। –नाम–पु० एक विष। –पुर–पु० दे० 'शृंगवेरपुर'। –प्रहारी(रिन्)–वि० सींगसे मारनेवाला, सींग चलानेवाला। –प्रिय–पु० शिव। –मूल–पु० सिंघाड़ा। –मोही(हिन्)–पु० चंपक, चंपा।

—वाद्य—पु० बजानेका सींग। **—० प्रिय**—पु० कृष्ण। **—वेर**—पु० एक नाग; अदरक; एक नगर, शृंगवेरपुर। **—वेरक**—पु० आदी; सोंठ। **—वेरपुर**—पु० प्राचीन उत्तर कोसलकी सीमाके वाहर, आधुनिक इलाहाबाद जिलेका गंगातटपर स्थित सिंगरौर नामक स्थान (यह निषादराज गुहकी राजधानी थी; राम यहींसे सुमंतको विदा कर वन चले गये थे)। **—वेराभमूलक**—पु० गुंदातृण। **—वेरिका**—स्त्री० गोभी। **—सुख**—पु० सिंघा बाजा। **—सोर**—पु० सोर मछली।

शृंगक—पु० (सं०) सिंघा बाजा; सींग जैसी नुकीली चीज; पिचकारी; चंद्रशृंग, शशिकोटि, शशिविषाण; जीवक वृक्ष।

शृंगला—स्त्री० (सं०) अजशृंगी।

शृंगवान्(वत्)—वि० (सं०) शृंगयुक्त। पु० पहाड़; एक पौराणिक पर्वत।

शृंगाट—पु० (सं०) सिंघाड़ा; सिंघाड़ेका पौधा; चतुष्पथ, चौरस्ता, चौराहा; कामाख्या, आधुनिक ढाकाका एक पर्वत।

शृंगाटक—पु० (सं०) सिंघाड़ा; सिंघाड़ेका पौधा; प्राचीन समयका सिंघाड़ेके आकारका मांस, आलू आदि द्वारा प्रस्तुत एक खाद्य पदार्थ, चाप, समोसा; तीन चोटियोंवाला पर्वत; चौरस्ता; दरवाजा।

शृंगार—पु० (सं०) साहित्यशास्त्रके नौ रसोंमेंसे एक प्रधान रस। (इसे रसराज कहते हैं जिसका कारण इसकी व्यापकता है, अर्थात् जीवनके दो प्रधान पक्षों संयोग तथा वियोग दोनोंतक इसकी पहुँच है। इसीसे इसके दो भेद माने गये हैं—संयोगशृंगार और वियोग या विप्रलंभशृंगार। इसके रसराज कहे जानेका एक कारण यह भी है कि इसमें रसके सभी अवयव—विभाव, अनुभाव और संचारी प्रायः सभी भेदों सहित प्राप्त होते हैं; इसका वर्ण श्याम और इसके देवता कृष्ण माने गये हैं। साहित्य-दर्पणके अनुसार पुरुषमें स्त्रीके साथ और स्त्रीमें पुरुषके साथ संभोगकी रतिक्रीड़ा आदि मूलक स्पृहाको शृंगार कहते हैं); सुरत, संभोग, सहवास; सौंदर्यके प्रसाधनों द्वारा स्त्री या पुरुष-शरीरका बनाव-सजाव; किसी वस्तुका सजाव; शोभाकी वस्तु; हाथीके शरीरपर बनाये गये सेंदुरके निशान; लौंग; अदरक; कालागुरु; सिंदूर; चूर्ण; सोना। **—गर्व**—पु० प्रेमका गर्व। **—चेष्टा**—स्त्री०, **—चेष्टित**—पु० कामचेष्टा; संभोग चेष्टा, अनुरक्ति प्रकट करना। **—जन्मा-(न्मन्)**—पु० कामदेव। **—धारी(रिन्)**—वि० अलंकृत (हाथी)। **—भाषित**—पु० कामवार्ता, प्रेमालाप; प्रणय-कथा। **—भूषण**—पु० सिंदूर; हरताल। **—योनि**—पु० कामदेव। **—रस**—पु० साहित्यशास्त्रमें वर्णित नौ रसोंमेंसे एक रस। **—लज्जा**—स्त्री० प्रेमसे उत्पन्न लज्जा। **—वेश**—पु० रमणीय, आकर्षक; सुंदर वेशभूषा जिसे धारण कर प्रेमी अपने प्रियसे मिलनेके लिए जाता है। **—सहाय**—पु० प्रेम-व्यापारमें सहायक व्यक्ति, नर्मसचिव। **—सामग्री**—स्त्री० (कोस्मेटिक्स) अंगराग; सौंदर्य बढ़ानेवाले पदार्थ। **—हाट**—स्त्री० (हिं०) वेश्याओंके बैठनेका बाजार; चकला; वेश्याओंके ठहरनेका स्थान।

शृंगारक—पु० (सं०) प्रेम; सिंदूर; लौंग; अदरक; काला अगर। वि० सींगवाला।

शृंगारण—पु० (सं०) सजानेकी क्रिया; शृंगारचेष्टा; प्रेम-प्रदर्शन।

शृंगारना*—स० क्रि० सजाना, भूषित करना, सँवारना।

शृंगारिक—वि० (सं०) शृंगारसे संबंध रखनेवाला; शृंगारका।

शृंगारिणी—स्त्री० (सं०) खूब बनाव-सजाव करनेवाली नारी; एक कर्नाटकी रागिनी।

शृंगारित—वि० (सं०) सजाया हुआ; सजा हुआ; सिंदूरसे रँगा हुआ; मुग्ध, प्रेमाभिभूत।

शृंगारिया—पु० शृंगार करनेवाला; बहुरुपिया।

शृंगारी(रिन्)—वि० (सं०) शृंगारकी वृत्तिसे युक्त; शृंगारिक; सिंदूरसे रँगा हुआ। पु० कामुक, प्रेमी व्यक्ति; सुपारीका पेड़; माणिक्य, मानिक; सुंदर वेशवाला या बना-ठना व्यक्ति; बनाव-सजाव; पानके बीड़े लगाना; हाथी।

शृंगरुहा—स्त्री० (सं०) सिंघाड़ा।

शृंगालिका, शृंगाली—स्त्री० (सं०) विदारीकंद।

शृंगाह्व—पु०, **शृंगाह्वा**—स्त्री० (सं०) जीवक नामक ओषधि मूल; सिंघाड़ा।

शृंगि—स्त्री० (सं०) सिंघी मछली; आभूषण बनानेका सोना; * सींगोंवाला पशु।

शृंगिक—पु० (सं०) एक प्रकारका विष, सिंघिया विष।

शृंगिका—स्त्री० (सं०) विषाण, सिंगी बाजा; अतिविषा, अतीस; पीपल।

शृंगिण—पु० (सं०) जंगली मेष, मेढ़ा। वि० सींगवाला।

शृंगिणी—स्त्री० (सं०) गाय; श्लेष्मघ्नी वृक्ष; मल्लिकाका पौधा; ज्योतिष्मती लता।

शृंगी—स्त्री० (सं०) सिंघी नामक मछली; गहना बनानेके लिए सोना; विष; अतिविषा, अतीस; ऋषभ औषध; कर्कट शृंगी, काकड़ासिंघी; प्लक्ष, पाकड़; वट; मजीठ; आँवला; पोईका साग। **—कनक**—पु० गहना बनानेके लिए सुवर्ण।

शृंगी(गिन्)—वि० (सं०) शृंगयुक्त; दाँतोंवाला (हाथी)। पु० पर्वत; वृक्ष; हाथी; मेष, भेड़ा; वृक्ष; शमीकके पुत्र एक ऋषि (इन्हींके शापसे परीक्षित्को तक्षकने डँसा था जिससे उनकी मृत्यु हुई); सिंघा बाजा; शिव; शिवका एक गण। **—(गि)गिरि**—पु० एक पहाड़ जिसपर शृंगी ऋषिने तपस्या की थी।

शृंगेरी—पु० (सं०) एक स्थान जो मैसूर राज्यमें है (ऋष्यशृंगका जन्म यहीं हुआ था। शंकराचार्य द्वारा भारतवर्षके चारों कोनोंमें स्थापित चार मठोंमेंसे एक यहाँ भी स्थापित है)।

शृंगोन्नति—स्त्री० ग्रहोंकी एक गति (ज्यो०)।

शृंगोष्णीश—पु० (सं०) सिंह।

शृकाल—पु० (सं०) शृगाल।

शृग*—पु० शृगाल।

शृगाल—पु० (सं०) सियार; कृष्ण; चरवाहा; एक राक्षस; डरपोक, दुष्ट, धूर्त या निर्दय व्यक्ति (विशेषणके ढंगके ये सभी अर्थ लाक्षणिक हैं)। **—कंटक**—पु० सत्यानासी, भड़भाँड़का काँटेदार पौधा। **—कोलि**—पु० क्षुद्रकोलि वृक्ष, कर्कंधु। **—घंटी**—स्त्री० तालमखाना। **—जंबू**—स्त्री० तरबूज; बेरका फल। **—योनि**—पु० शृगालकी योनिमें जन्म लेना। **—रूप**—पु० शिव। **—विन्ना**—स्त्री० पृश्निपर्णी।

शृगालिका—स्त्री० (सं०) मादा सियार, सियारी; लोमड़ी; भूमिकुष्मांड; छोटा सियार; त्राससे पलायन।

शृगाली—स्त्री० (सं०) सियारकी मादा; विदारीकंद; कोकिलाक्ष, तालमखाना; भयसे पलायन, डरके कारण भागना।

शृणि—स्त्री० (सं०) अंकुश; प्रतोद, पैना।

शृत—वि० (सं०) खौला हुआ, पका हुआ। पु० काढ़ा; खौला हुआ दूध। **—पाक**—वि० अच्छी तरह पकाया हुआ। **—शीत**—वि० उबालकर ठंढा किया हुआ।

शृद्ध—वि० (सं०) नीचेकी ओर शरीरसे निष्कासित (जैसे अपान वायु); आर्द्र।

शृधु—पु० (सं०) बुद्धि, समझ; मलद्वार।

शेक्सपियर, विलियम—पु० अंग्रेजीके एक महान् कवि और नाटककार। इन्होंने ३५ नाटक लिखे हैं, जिनमेंसे कुछ ये हैं—जूलियस सीजर, मैकबेथ, मर्चेंट ऑफ वेनिस, हैमलेट (१५६४-१६१६)।

शेख*—वि० बाकी; समाप्त। पु० समाप्ति; बाकी।

शेख़—पु० दे० 'शैख़'; मुसलमानोंकी चार जातियों (शेख, सैयद, मुगल और पठान)मेंसे एक। **—का बकरा**—शेखसद्दोके नामपर बलि किया जानेवाला बकरा। **—चिल्ली**—पु० एक कल्पित मूर्ख जिसकी मूर्खताकी अनेक कहानियाँ जनसाधारणमें प्रसिद्ध हैं; बड़ी-बड़ी हवाई योजनाएँ बनानेवाला व्यक्ति। **—० का मनसूबा**—हवाई योजना। **—डोंडूं, —डोंडू**—पु० वृष्टि रोकनेका एक टोटका, कपड़ेका गुड्डा जिसे कमरमें गठरी बाँधकर वृष्टिमें लकड़ीके सहारे खड़ा कर देते हैं। **—सद्दो**—पु० अपढ़ स्त्रियोंमें पूजित एक पीर या जिन।

शेखड़ा—पु० शेखका बेटा (तिरस्कारसे)।

शेखर—पु० (सं०) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट आदि; सिरपर लपेटी

हुई माला; पर्वत-शिखर, शृंग, चोटी; गीतका ध्रुवविशेष; अपने वर्ग, समूहका श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु (समासके अंतमें); टगणका पाँचवाँ भेद, लघुशेखर; लौंग; शिग्रुमूल।

शेखरापीडयोजन–पु० (सं०) फूलोंसे सिर या सिरके वाल सजानेकी क्रिया (यह चौंसट कलाओंमेंसे एक कला मानी गयी है)।

शेखरित–वि० (सं०) जो शिरोभूषणका काम दे; शिरोभूषणयुक्त।

शेखरी–स्त्री० (सं०) वंदा।

शेखावत–पु० राजपूतोंका एक उपभेद।

शेख़ी–स्त्री० (फा०) घमंड; डींग। **–ख़ोर**–वि० दे० 'शेखीवाज़'। **–वाज़**–वि० डींग मारनेवाला, दूनकी लेनेवाला। **–शान**–स्त्री० शेखी और शान, घमंड, ऐंठ। **मु० –किरकिरी होना,–झड़ना** –घमंड चूर होना; हलका, लज्जित होना। **–वघारना**–डींग मारना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू वनना,अपनी वड़ाई करना।

शेप–पु० (सं०) लिंग; फोता; पूँछ, दुम।

शेपाल–पु० (सं०) सेवार।

शेफ–पु० (सं०) दे० 'शेप'।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली–स्त्री० (सं०) निर्गुंडी, नीलिका, नील सिंधुवारका पौधा।

शेमुषी–स्त्री० (सं०) वुद्धि।

शेयर–पु० (अं०) भाग; किसी सीमित (लिमिटेड) व्यापारिक संस्थामें लगी पूंजीके निर्धारित हिस्से जिनमेंसे कुछ उन्हें खरीदने पड़ते हैं जो उसमें सम्मिलित होना चाहें, पत्ती। **–होल्डर**–पु० अनेक व्यक्तियोंके सम्मिलित धन या पूँजीसे संचालित किसी कंपनी, कारखाने, वैंक आदिका (शेयरर) हिस्सेदार।

शेर–पु० (अ०) गजलके दो चरण; पद्य; (फा०) वाघ, व्याघ्र; सिंह; (ला०) वीर पुरुष; निडर व्यक्ति। (स्त्री० 'शेरनी')। **–अफ़गन**–वि० शेरको गिराने, पछाड़नेवाला; वीर, साहसी। **–० खाँ**–पु० नूरजहाँके पूर्वपति अलीकुली वेगको अकवरसे मिली हुई पदवी। **–दरवाज़ा**–पु० वह द्वार या फाटक जिसके दोनों ओर शेरकी प्रतिमा बनी हो, सिंहद्वार। **–दहाँ, मुहाँ**–वि० शेरके-से मुँहवाला (कड़ा); (मकान) जो सामने अधिक और पीछे कम चौड़ा हो। पु० शेरकी शक्ल जो हौजों, परनालों आदिपर वना देते हैं; एक तरहका असा। स्त्री० एक तरहकी वंदूक। **–०कड़ा** –पु० वह कड़ा जिसकी घुंडियोंकी शक्ल शेरके मुँहकी-सी होती है। **–गढ़ी**–स्त्री० चार शेरोंके मुँहवाली अशोक स्तम्भोंकी आकृति; स्वतंत्र भारतका राजचिह्न। **–दिल**–वि० वीर, निडर। **–नुमा** –वि० शेरकी शक्लवाला। **–पंजा**–पु० एक हथियार, वघनखा। **–वकरी**–स्त्री० लड़कोंका एक खेल। **–वच्चा**–पु० शेरका वच्चा; एक तरहकी छोटी वंदूक। वि० वीर, साहसी। **–ववर**–पु० सिंह। **–मर्द**–वि० वीर, निडर, पुरुषसिंह। **–मादा**–स्त्री० शेरनी। **–का कान**–भंग छाननेकी साफी। **–का नाख़ुन**– वघनखा, वाघका नख जो वच्चोंके गलेमें उन्हें कुदृष्टिसे वचानेके लिए पहनाया जाता है। **–का वाल**–शेरकी मूँछका वाल जो विष है (कहा जाता है कि इसे खानेसे कलेजा कटकर गिर पड़ता है)। **–की ख़ाला**–विल्ली। **मु० –करना**–हौसला वढ़ा देना, निडर वना देना; (वत्ती) वढ़ाकर रोशनी तेज करना। – **–का मुँह झुलसना**–शेरको मारनेके वाद उसकी मूँछोंको जला देना (शिकारी ऐसा किया करते हैं)। **–की नज़र घूरना**–कोपभरी दृष्टिसे देखना। **–की बोली वोलना**–(ला०) कै करना। **–के मुँहमें जाना**–जान-जोखिमवाले स्थानमें जाना। **–के मुँहसे शिकार लेना**–जवरदस्तसे कोई चीज छीन लेना। **–वकरीका एक घाट पानी पीना**–शुद्ध न्यायका राज्य होना, छोटे-वड़े सवके साथ एक-सा व्यवहार होना। **–होना**–हौसला वढ़ना; प्रवल होना; अधिक होना (नमक शेर होना–दिल्ली)।

शेरपा–पु० नेपाली पहाड़ी मजदूर; नेपाली या गोरखा जातिका व्यक्ति जो हिमालय आदि ऊँचे पहाड़ोंपर चढ़ने तथा दूसरोंको चढ़ानेमें कुशल हों; वाघ, चीता।

शेरवानी–स्त्री० एक तरहका आधुनिक ढंगका अँगरखा।

शेरोसुख़न–पु० (अ०, फा०) कविता, काव्य; साहित्य।

शेल*–पु० शल्य, वरछी (कविप्रि०)।

शेलु–पु० (सं०) वहुवार वृक्ष; वनमेथी।

शेलुक–पु० (सं०) लिसोड़ा; वनमेथी; लोध।

शेलुका–स्त्री० (सं०) वनमेथी।

शेव–पु० (सं०) लिंग, सर्प, नाग; ऊँचाई; निधि, संपत्ति, संपदा; मछली; सुख; अग्नि। **–धि**–पु० निधि; कुवेरकी नौ निधियों-मेंसे एक।

शेवड़ा–पु० (सं०) जैन यति।

शेवल–पु० (सं०) शैवाल, सेवार।

शेवलिनी–स्त्री० (सं०) नदी (विशेषतः सेवारवाली नदी)।

शेवह–स्त्री० (सं०) लिंगका रूप या लिंग। पु० (फा०) तौर-तरीका, ढंग; पद्धति।

शेवा–वि० (फा०) वाक्पटु; कलात्मक ढंगसे वात करनेवाला। **–वयानी**–स्त्री० वातचीतकी पटुता और सुन्दरता।

शेवाल–पु० (सं०) सेवार।

शेवाली–स्त्री० (सं०) एक तरहकी जटामासी।

शेष–वि० (सं०) वचा हुआ, वाकी, अवशिष्ट; छोड़ा हुआ; उच्छिष्ट; समाप्त। पु० स्वीकृत वस्तुसे अतिरिक्त वस्तु; अध्याहार; कामकी चीजके अलावा वची चीज; भागकी वाकी (ग०); किसी वड़ी संख्यामेंसे किसी छोटी संख्याको घटानेके पश्चात् वची संख्या, व्यवकलन-फल (ग०); कथनका छोड़ा हुआ अंश; वध; नाश, ध्वंस; मरण, अंत; जमालगोटा; प्रसाद; अनंत नामक सर्पराज जिसे सहस्र फण हैं और जो विष्णुका शयन-स्थल, शय्या है। (पु०); लक्ष्मण; संकर्षण, वलराम; एक प्रजापति; एक दिग्गज; हाथी; भगवान् विष्णुकी दूसरी मूर्ति जिसे 'काल' कहते हैं; ईश्वर, अनंत; शेषशयन-प्रकार; टगणका पाँचवाँ भेद; छप्पयका पचीसवाँ भेद। **–कारित**–वि० अधूरा। **–काल**–पु० मरणकाल, मृत्युक्षण। **–जाति**–स्त्री० शेषको मिलाने, तुलना करनेका कार्य (ग०) **–धर**–पु० शिव। **–नाग** –पु० सर्पराज शेष। **–भुक्(ज्)**–वि० जूठा खानेवाला। **–भूषण**–पु० विष्णु (?)। **–भोजन**–पु० उच्छिष्ट-भक्षण। **–राज**–पु० एक वर्णवृत्त, विद्युल्लेखा; शेषनाग। **–रात्रि**–स्त्री० रात्रिका अंतिम प्रहर, पिछली रात। **–शयन,–शायी(यिन्)**–पु० विष्णु।

शेषक–पु० (सं०) शेषनाग।

शेषर*–पु० दे० 'शेखर'।

शेषव–पु० (सं०) अनुमानका एक भेद, कार्य द्वारा कारणका निश्चय (न्या०)।

शेषांश–पु० (सं०) वचा भाग, अंतिम भाग।

शेषा–स्त्री० (सं०) किसी उपास्य, देवताको अर्पित माला या भोग जिसे पूजाके वाद उपासकों, पूजकों, भक्तोंमें वाँटते हैं, प्रसाद।

शेषावस्था–स्त्री० (सं०) वुढ़ापा।

शेषाहि–पु० (सं०) शेषनाग।

शेषोक्त–वि० (सं०) सवके या सव कुछ कह लेनेके वाद अंतमें कहा हुआ; सवके अंतमें लिखा हुआ।

शेष्य–वि० (सं०) छोड़ देने या उपेक्षा करने योग्य।

शै–स्त्री० (अ०) चीज, वस्तु; वात; वढ़ती, वरकत; भूत प्रेत। **–मक्फ़ूला**–स्त्री० वंधक चीज; रेहन रखी जायदाद। **–मत्लूवा**–स्त्री० आवश्यक वस्तु।

शैक्य–वि० (सं०) छीकेपर लटकाया हुआ; नुकीला।

शैक्ष–पु० (सं०) शिक्षाशास्त्र (ध्वनिशास्त्र) पढ़नेवाला विद्यार्थी ('शिक्षा'का ज्ञान हो जानेपर वेदाध्ययन किया जाता है); नौसिखुआ आदमी (ला०)। वि० जो शिक्षा या नियमके अनुसार हो।

शैक्षणिक–स्त्री० (सं०) शिक्षा-संवंधी (एजुकेशनल); शास्त्रीय (एकेडेमिक)।

शैक्षिक–पु० (सं०) 'शिक्षा'-शास्त्रमें प्रवीण, शिक्षाशास्त्रका जानकार (एजूकेशनिस्ट)। वि० शिक्षा-संवंधी (एजुकेशनल)।

शैक्ष्य–पु० (सं०) पांडित्य; नैपुण्य, पटुता।

शैख–पु० (सं०) नीच व्राह्मणकी संतान (स्मृ०)।

शैख़–पु० (अ०) वृद्ध; गुरुजन; धर्मशास्त्र, धार्मिक साहित्यका

पंडित; खानकाह या दरगाहका खलीफा; महंत; अरब कबीलोंका सरदार; मुसलमानोंकी चार जातियोंमेंसे एक। **−(ख़े)वक़्त**−वि० अपने समयका सबसे बड़ा विद्वान्।

शैखरिक, शैखरेय−पु० (सं०) अपामार्ग, चिचड़ा।

शैखिन−वि० (सं०) मयूर संबंधी।

शैख़ुलइसलाम−पु० (अ०) मुसलिम-जगत्‌का सबसे बड़ा धर्माचार्य या धार्मिक नेता।

शैख़ुल जामिआ−पु० (अ०) विश्वविद्यालयका कुलपति (चांसलर)।

शैख़ोशाब−पु० (अ०) बूढ़े और जवान, सब लोग।

शैख्य−वि० (सं०) नुकीला।

शैग्रव−पु० (सं०) गहिजनका बीज।

शैघ्र, शैघ्र्य−पु० (सं०) शीघ्रता, तेजी।

शैतनत−स्त्री० (अ०) शैतानियत; दुष्टता; चपलता। **−पसंद**−वि० बड़ा दुष्ट।

शैतान−पु० (अ०) कुरानके अनुसार अजाजील जिन जो बड़ा पंडित था और फिरिश्तोंको पढ़ाया करता था, पर आदमको सिजदा करनेकी खुदाकी आज्ञाका अहंकारवश पालन न करनेके कारण स्वर्गसे निकाला गया और तबसे वह आदमकी संतान मनुष्य जातिको सन्मार्गसे बहकानेका काम करने लगा, इबलीस; प्रेत, पिशाच। वि० बहकानेवाला; नटखट; दुष्ट; उपद्रव खड़ा करानेवाला। **−सूरत**−वि० शैतानकी शक्लका, पिशाचरूप। **−का बच्चा**−भारी दुष्ट, खुराफाती आदमी। **−का लश्कर**−नटखट लड़कोंका समूह। **−की आँत**−बहुत लंबी चीज; वह चीज जिसका सिलसिला बहुत दूरतक चला जाय; लंबी कथा। **−की ख़ाला**−दुष्ट, कलह करनेवाली स्त्री। **−की डोर**−मकड़ीके जालेका तार जो अक्सर रास्तेमें उड़ता रहता और आँखमें पड़ जाता है। **(ने)-मुजस्सम**−पु० सिरसे पैरतक शैतानीसे भरा। **मु०** **−उतरना**−क्रोध शांत होना; बुराई या उपद्रवकी प्रवृत्ति या हठका दूर होना। **−उठाना या मचाना**−झगड़ा खड़ा करना। **−के कान हरे**−मंगलाकांक्षा, ईश्वर करे शैतान इसे न सुने। **−के कान काटना**−शैतानीमें शैतानसे बढ़ जाना। **−(सिरपर) चढ़ना या सवार होना**−गुस्सा चढ़ना; शरारत, बुराईपर आमादा होना; जिद चढ़ना; भूतप्रेतका आवेश।

शैतानी−वि० शैतानका। स्त्री० शैतानका काम; शरारत, दुष्टता। **−लश्कर**−पु० दे० 'शैतानका लश्कर'। **−हरकत**−स्त्री० दुष्टता, शरारत।

शैत्य−पु० (सं०) शीतलता, सर्दी।

शैथिलिक−वि० (सं०) ढीला; आलसी।

शैथिल्य−पु० (सं०) शिथिलता, सुस्ती; ढीलापन।

शैद−पु० (अ०) छल, धोखा।

शैदा−वि० (फा०) प्रेममें पागल हो जाने, सुध-बुध खो देनेवाला। **−ई**−वि० प्रेमी। **−ए इल्म**−वि० विद्याका अत्यधिक अभिलाषी। **−ए वतन**−वि० देशप्रेमी।

शैनेय−पु० (सं०) कृष्णका सारथि सात्यकि।

शैन्य−पु० (सं०) शिनिके वंशज।

शैब−पु० (अ०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

शैरीयक, शैरेयक−पु० (सं०) नीलझिंटी।

शैल−वि० (सं०) शिला-संबंधी; पथरीला; पत्थर जैसा कठोर। पु० पर्वत, पहाड़; बड़ा पत्थर या शिला; शैलेय गंधद्रव्य; शिलाजतु; रसौत; लिसोड़ा; बाँध; बैठनेका एक ढंग; सातकी संख्या। **−कंपी(पिन्)**−पु० स्कंदका एक अनुचर। **−कटक**−पु० पहाड़की ढाल या उसका पार्श्व। **−कन्या,−कुमारी**−स्त्री० गिरिजा, पार्वती, शिव-पत्नी। **−कूट**−पु० पहाड़की चोटी। **−गंगा**−स्त्री० गोवर्धन पर्वतकी एकनदी। **−गंध**−पु० शाबर चंदन। **−गर्भाह्वा**−स्त्री० एक औषध द्रव्य, शिलावल्का। **−गुरु**−पु० हिमालय। **−गृह**−पु० पर्वत या चट्टान खोदकर बनाया हुआ भवन या मंदिर। **−ज,−जात**−पु० शैलेय। **−जन**−पु० पहाड़ी आदमी। **−जा**−स्त्री० पार्वती, दुर्गा; सैंहली; गजपिप्पली। **−जाता**−स्त्री० गजपिप्पली; काली मिर्च। **−तटी**−स्त्री० पहाड़की घाटी। **−तनया,−दुहिता(तृ)**−स्त्री० पार्वती। **−धन्वा(न्वन्)**−पु० शिव। **−धर**−पु० गोवर्धनधारी कृष्ण। **−धातुज**−पु० शिलाजतु। **−नंदिनी**−स्त्री० गिरिजा, पार्वती। **−निर्यास**−पु० शिलाजीत। **−पति**−पु० पहाड़ोंका स्वामी हिमवान् पर्वत, सर्वोच्च पर्वत हिमालय। **−पत्र**−पु० विल्व वृक्ष, बेलका पेड़। **−पुत्री**−स्त्री० पार्वती; गंगा जिसका उद्‌गम हिमालय पहाड़ है। **−पुष्प**−पु० शिलाजतु। **−प्रतिमा**−स्त्री० प्रस्तरमूर्ति। **−बाला**−स्त्री० निर्झरी। **−बीज**−पु० भिलावाँ। **−भित्ति**−स्त्री० पत्थरको तराशने, तोड़ने आदिका औजार, छेनी, टाँकी। **−भेद**−पु० पाषाणभेदन, पत्थरफोड़। **−मल्ली**−स्त्री० कोरैया। **−मृग**−पु० जंगली बकरा। **−रंध्र**−पु० गुफा, गह्वर। **−राज**−पु० हिमालय। **−० सुता**−स्त्री० पार्वती, दुर्गा; गंगा नदी। **−राट्-(ज्)**−पु० हिमालय। **−वल्कला**−स्त्री० शिलावल्कला। **−बीज**−पु० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँ। **−शिखर,−शृंग,−शेखर**−पु० पहाड़की चोटी। **−शिविर**−पु० समुद्र (इंद्र द्वारा पर्वतोंके आक्रांत होनेपर कुछ पर्वत−विंध्य आदि−समुद्रमें छिप गये, इसीसे यह शब्द समुद्रका द्योतक हुआ−पु०)। **−संधि**−स्त्री० घाटी, दर्रा। **−संभव**−पु० शैलज; शिलाजतु। **−संभूत**−पु० गेरू। **−सार**−वि० शैलके समान अचल; दृढ़। **−सुता**−स्त्री० गिरिजा; ज्योतिष्मती; दुर्गा; गंगा।

शैलक−पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, शैलज, गूगुल; शिलाजतु।

शैलांग−पु० (सं०) पर्वतका पार्श्व।

शैलाख्य−पु० (सं०) शिलाजतु; शैलेय नामक गंधद्रव्य।

शैलाग्र−पु० (सं०) पर्वत-शिखर।

शैलाट−पु० (सं०) पर्वत-निवासी, किरात; सिंह; देवल; शुक्ल काच, स्फटिक।

शैलादि−पु० (सं०) नंदी।

शैलाधारा−स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

शैलाधिप, शैलाधिराज−पु० (सं०) हिमालय।

शैलाभ−पु० (सं०) एक विश्वेदेव।

शैलाली(लिन्)−पु० (सं०) नट, अभिनेता; नर्तक।

शैलासा−स्त्री० (सं०) पार्वती।

शैलाह्व−पु० (सं०) शिलाजतु।

शैलिक−पु० (सं०) शिलाजतु।

शैलिक्य−पु० (सं०) वह व्यक्ति जिसका शील, आचार गर्हित, निंदित हो, पाखंडी; ऐसा व्यक्ति जिसके मन और वाणीमें एकता न हो, सर्वलिंगी।

शैली−स्त्री० (सं०) किसी कामके करनेका ढंग, तरीका, रीति, पद्धति; साहित्य, कला आदिकी रचना, अभिव्यक्तिकी रीति; इनकी रचना, अभिव्यक्तिका कौशल; सदाचार, सच्चरित्र; पत्थरकी मूर्ति; काठिन्य। **−कार**−पु० साहित्य, कला आदिकी विशिष्ट, आकर्षक शैलीका निर्माण करनेवाला व्यक्ति।

शैलू−पु० लिसोड़ा। स्त्री० एक प्रकारकी चटाई।

शैलूक−पु० (सं०) लिसोड़ा; भसींड।

शैलूष−पु० (सं०) नट, अभिनेता; नर्तक; तालधारक; संगीत-मंडलीका प्रधान; गंधर्वोंका नेता; धूर्त, शैतान; बेलका पेड़।

शैलूषिक−पु० (सं०) अभिनय द्वारा जीवननिर्वाह करनेवाला व्यक्ति, नट।

शैलूषिकी−स्त्री० (सं०) शैलूप जातिकी स्त्री, शैलूपपत्नी, नटी।

शैलेंद्र−पु० (सं०) हिमालय। **−जा**−स्त्री० गंगा। **−दुहिता(तृ), −सुता**−स्त्री० पार्वती; गंगा। **−स्थ**−पु० भूर्ज वृक्ष।

शैलेय−वि० (सं०) शैल-संबंधी; शैलसे उत्पन्न; पथरीला; पहाड़ सदृश अचल; पत्थरके समान कठिन। पु० शैलज नामक गंधद्रव्य; शिलाजतु; तालपर्णी; मूसलीकंद; सैंधव, सेंधा नमक; सिंह; मधुकर।

शैलेयक−पु० (सं०) शैलेय।

शैलेयी−स्त्री० (सं०) पार्वती।

शैलेश्वर−पु० (सं०) शिव, महादेव।

शैलोद्भवा−स्त्री० (सं०) क्षुद्र पाषाणभेदी।

शैल्य−वि० (सं०) शिला-संबंधी; पथरीला; पत्थर-सा कड़ा। पु० कड़ापन, कठोरता।

शैव–वि० (सं०) शिवका या शिवसे संबंध रखनेवाला। पु० शिव-संबंधी संप्रदाय, मत, दर्शनका अनुयायी; शिवोपासक, शिव-भक्त; हिंदू धर्मके तीन प्रमुख संप्रदायों–वैष्णव, शैव, शाक्त–मेंसे एक संप्रदाय (इसमें शिवको सब देवताओंमें प्रधान माना जाता है और सृष्टिकर्ता, पालक और संहारकरूप स्वीकार कर उनकी पूजा की जाती है। पूजा शिव-लिंगकी होती है। शैव ललाटपर त्रिपुंड्र, शरीरमें भस्म और गलेमें रुद्राक्षकी माला धारण करते हैं); सेवार; शिवपुराण; कल्याण; वसुक नामक पौधा; अड़ूसा; पाँचवें कृष्ण या वासुदेव (जै०); पाशुपतास्त्र; धतूरा; आचार या पूजाका एक भेद। **–पत्र**–पु० बेलका पेड़। **–मल्लिका**–स्त्री० लिंगिनी।

शैवल–पु० (सं०) पद्मकाष्ठ; सेवार।

शैवलिनी–स्त्री० (सं०) नदी, सरिता।

शैवागम–पु० (सं०) शैव मतके धर्मग्रंथ।

शैवाल–पु० (सं०) सेवार।

शैव्य–पु० (सं०) कृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एक; घोड़ा; पांडवोंकी सेनाका एक यूथप। वि० शिव-संबंधी।

शैव्या–स्त्री० (सं०) राजा हरिश्चंद्रकी पत्नी।

शैशव–पु० (सं०) शिशुकी अवस्था, बचपन, शिशु-वृत्ति। वि० शिशु-संबंधी।

शैशविकी–स्त्री० (सं०) (पैड्रियाट्रिक्स) शिशुपालनकी आधुनिक चिकित्साप्रणाली।

शैशिर–वि० (सं०) शिशिर ऋतु-संबंधी; शिशिर ऋतुमें उत्पन्न। पु० श्याम चटक, काली गौरैया नामक चिड़िया; श्याम चातक; ऋग्वेदकी एक शाखाके प्रवर्तक ऋषि।

शैशुनाग–वि० (सं०) राजा शिशुनागके वंशसे संबद्ध या उसमें उत्पन्न।

शोक–पु० (सं०) इष्ट वस्तु अथवा प्रिय व्यक्ति (बंधुबांधव) के वियोग, नाशसे मनमें बार-बार उठनेवाली व्यथा, अत्यधिक दुःख, मनःपीड़ा (साहित्यशास्त्रमें शोक करुण रसका स्थायी भाव है)। **–कर्षित**–वि० शोकसे व्याकुल। **–कारक**–वि० शोकदायक, पीड़ा देनेवाला। **–गीत**–पु० (एलेजी) किसीकी मृत्युपर या किसीके वियोगमें लिखी गयी कविता। **–घ्न,–नाश**–पु० अशोकका पेड़। **–नाशन**–वि० शोक दूर करनेवाला। **–परायण**–वि० शोकसे ग्रस्त, पीडाभिभूत। **–परिप्लुत**–वि० शोकाभिभूत। **–विकल,–विह्वल**–वि० शोकाकुल। **–संतप्त**–वि० गमसे जला हुआ, शोक-पीड़ित। **–सूचक**–वि० शोककी सूचना देनेवाला, शोक-प्रकाशक। **–स्थान**–पु० शोकका कारण। **–हर**–वि० शोकहर्ता। पु० एक मात्रिक छंदका नाम। **–हारी**–स्त्री० वनबर्बरिका।

शोकाकुल–वि० (सं०) शोकसे विह्वल, व्याकुल।

शोकातुर–वि० (सं०) शोकसे छटपटानेवाला, शोकसे विह्वल।

शोकापनोद–पु० (सं०) शोकका निवारण।

शोकाभिभूत–वि० (सं०) शोकसे त्रस्त, पीड़ित, गमसे बदहवास।

शोकारि–पु० (सं०) कदंब वृक्ष।

शोकार्त–वि० (सं०) शोकके कारण दीन-हीन बना हुआ, शोकके कारण जिसकी अवस्था कारुणिक हो गयी हो।

शोकाविष्ट–वि० (सं०) शोकत्रस्त, शोकका आतंक जिसपर छा गया हो।

शोकावेग–पु० (सं०) गमका दौर, बार-बार शोककी तीव्र अनुभूतिका होना।

शोकी–स्त्री० (सं०) रात्रि, रजनी।

शोकी(किन्)–वि० (सं०) शोकपूर्ण, रंजोगमसे भरा हुआ; अत्यंत उदास।

शोकोपहत–वि० (सं०) गमका मारा।

शोख़–वि० (फा०) ढीठ; चंचल; (उर्दू कवितामें प्रेमपात्रका विशेषण); नटखट; तेज, गहरा (रंग)। **–चश्म**–वि० निर्लज्ज, धृष्ट। **–ज़बाँ**–वि० मुँहफट। **–तब्अ,–मिज़ाज**–वि० चंचल, विनोदी।

शोख़ी–स्त्री० ढिठाई; चंचलता; नटखटपन; (रंगका) गहरापन। **–ए अल्फ़ाज़**–स्त्री० विनोदी भाषाका प्रयोग। **–ए तक़दीर**–स्त्री० दुर्भाग्य।

शोच–पु० (सं०) चिंता; शोक; दुःख, पीड़ा।

शोचन–पु० (सं०) शोच करनेकी क्रिया; रंजोगम, चिंता।

शोचनीय–वि० (सं०) चिंत्य, चिंतनीय, शोच्य; जिसे देखकर पीड़ा, रंज हो; गम, रंज करने लायक।

शोचि(स्)–स्त्री० दीप्ति, प्रभा, प्रकाश; लौ; रंग, वर्ण।

शोचिष्केश–पु० (सं०) अग्नि; चित्रक वृक्ष।

शोच्य–वि० (सं०) शोचनीय; चिंतनीय; दयनीय।

शोटीर्य–पु० (सं०) वीरता, पुरुषार्थ, पराक्रम।

शोठ–वि० (सं०) मूर्ख; नीच, दुष्ट, बदमाश; धूर्त; पापी; आलसी, अहदी। पु० मूर्ख व्यक्ति; खल; आलसी आदमी।

शोण–वि० (सं०) लाल; लालिमायुक्त; पीला-सा। पु० लाल रंग; लालिमा, लाली; रुधिर, रक्त, लहू; सिंदूर; मंगल ग्रह; अग्नि; लाल ईख; एक प्रकारका शोणक; चित्रक; लोहिताश्व; रक्त पुनर्नवा; सोनापाठा; पद्मराग मणि; सोन नद जो गोंडवानासे निकलकर पटनाके पास गंगामें मिला है; एक समुद्रका नाम, लाल सागर। **–गिरि**–पु० मगधका एक पहाड़। **–झिंटिका**–स्त्री० रक्त सैरेय। **–झिंटी**–स्त्री० कुरुवक; कंटकिनी। **–पत्र**–पु० रक्त पुनर्नवा। **–पद्म,–पद्मक**–लाल कमल, रक्त पद्म। **–पुष्पक**–पु० कोविदारका पेड़। वि० लाल फूलसे युक्त। **–पुष्पी**–स्त्री० सिंदूरपुष्पी। **–भद्र**–पु० **–भद्रा**–स्त्री० सोन नद। **–मणि,–रत्न**–पु० पद्मराग मणि, लाल, मानिक। **–संभव**–पु० पिप्पलीमूल।

शोणक–पु० (सं०) शोणाक वृक्ष।

शोणांबु–पु० (सं०) एक तरहका बादल जो प्रलयके समय दिखाई देता है।

शोणा–स्त्री० (सं०) सोन नदी; लाल रंगकी वस्तु; श्योनाक वृक्ष।

शोणाक–पु० (सं०) शोणा, शुकनास, श्योनाक वृक्ष।

शोणाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) दे० 'शोणोपल'।

शोणित–वि० (सं०) लाल, रक्त वर्णवाला। पु० रक्त, खून, लहू; कुंकुम; सिंदूर; ताँबा; केसर; तृणकेसर; जाफरान; वनस्पतियोंका रस। **–चंदन**–पु० लाल चंदन। **–प**–वि० रुधिर पीनेवाला। **–पुर**–पु० बाणासुरकी राजधानी। झाँसी जिलेमें 'बानपुर' नामसे प्रसिद्ध। **–मेही(हिन्)**–वि० जिसे मूत्रके साथ रक्त आता हो। **–शर्करा**–स्त्री० मधुशर्करा।

शोणितार्श–पु० (सं०) पलकका एक रोग।

शोणितार्बुद–पु० (सं०) लिंगपर फुंसियाँ होनेका रोग।

शोणिताह्वय–पु० (सं०) कुंकुम; केसर, जाफरान।

शोणितोपल–पु० (सं०) माणिक्य, मानिक, लाल।

शोणिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) लालिमा।

शोणी–स्त्री० (सं०) लाल कमलके रंगके समान रंगवाली स्त्री।

शोणोपल–पु० (सं०) दे० 'शोणितोपल'।

शोथ–पु० (सं०) सूजन; वात, पित्त, कफमेंसे किसी एकके कुपित होनेपर शरीरके किसी अवयवके सूजनेका रोग (इन्फ्लेमेशन)। **–घ्न**–वि० दे० 'शोथजित्'। **–घ्नी**–स्त्री० पुनर्नवा, गदहपूरना; शालपर्णी। **–जित्**–पु० भिलावाँ, भल्लातक। वि० शोथ दूर करनेवाला। **–जिह्म**–पु० पुनर्नवा। **–रोग**–पु० हाथ-पाँव आदिमें सूजन होनेका रोग। **–हृत**–पु० भल्लातक, भिलावाँ। वि० दे० 'शोथघ्न'।

शोथक–पु० (सं०) शोथ; मुरदासंग।

शोथारि–पु० (सं०) गदहपूरना; पुनर्नवा।

शोद्धव्य–वि० (सं०) शुद्ध करने योग्य।

शोध–पु० (सं०) शुद्धि, सफाई; गलतको सही, शुद्ध करनेकी क्रिया, संस्कार; चुकाना, अदा करना (जैसे–ऋणशोध आदि); प्रतिकार, परिशोध; खोज, अनुसंधान (रिसर्च)। **–निबन्ध**–किसी गम्भीर विषयकी भलीप्रकार जाँच करके किसी मतकी प्रस्थापना करनेवाला खोजपूर्ण निबन्ध। **–पत्र**–पु० शुद्धिपत्र। **–प्रबंध**–पु० (थीसिस) दे० 'प्रबंध'। **–शाला**–स्त्री० (रिफ़ाइनरी) रासायनिक प्रक्रियासे धातु, तैल आदि प्राकृतिक पदार्थोंके

शोधनका कारखाना।

शोधक–पु० (सं०) शुद्धिकर्ता, सफाई करनेवाला व्यक्ति; त्रुटि शुद्ध करनेवाला व्यक्ति; खोजी, अन्वेषक; वह संख्या जिसे घटानेसे वर्गमूल निकल जाय (ग०); एक तरहकी मिट्टी, कंकुष्ठ। वि० शुद्ध करनेवाला।

शोधन–वि० (सं०) शुद्धिकारक, साफ करनेवाला। पु० निर्दोषीकरण, शुद्धीकरण; संशोधन, सही करनेकी क्रिया; परिष्करण, मार्जन करने, साफ करनेका कार्य; ऋण-परिशोधन, ऋण चुकानेकी क्रिया; अन्वेषण, खोज करनेका कार्य; धातु-निर्दोषीकरण, धातुको औषधरूपमें प्रयोगके लिए उसे शुद्ध करनेकी क्रिया (आ० वे०); किसी शुभ कार्यके लिए विहित-अविहित मास, दिन आदिके विचार करनेकी क्रिया (ज्यो०); पाप, अपराध आदिसे शुद्धि, प्रायश्चित्त; आचरण, चरित्र-शुद्धिके लिए दंड देनेका कार्य; शरीर-शुद्धिके लिए विरेचन; सफाई आदिके लिए वस्तुओंका हटाना, अपनयन; भाज्यमेंसे भाजकको घटाना (ग०); कंकुष्ठ; मल, विष्ठा; कसीस; निंबूक, नीबू। **–निधि**–स्त्री० दे० 'निक्षेपनिधि', 'ऋण परिशोध कोष'।

शोधनक–पु० (सं०) प्राचीन-कालीन दंड-न्यायालयका एक अधिकारी; शोधन करनेवाला।

शोधना–स० क्रि० शुद्ध करना; गलतको सही करना; साफ करना, परिष्कार करना; खोज करना; धातुको औषधरूपमें प्रयोगके लिए शुद्ध करना (आ० वे०); किसी शुद्ध कार्यके लिए मास, तिथि आदिका विचार करना (ज्यो०)।

शोधनी–स्त्री० (सं०) मार्जनी, झाड़ू; ताम्रवल्ली; नीली। **–बीज**–पु० जमालगोटा।

शोधनीय–वि० (सं०) शोधनके योग्य, शोध्य।

शोधवाना–स० क्रि० शोधका कार्य कराना; साफ कराना; ठीक कराना; मुहूर्त आदि दिखवाना; खोज कराना।

शोधा†–पु० सोना-चाँदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति।

शोधाक्षम–वि० (सं०) दिवालिया, ऋण चुकानेमें अक्षम (व्यक्ति)।

शोधित–वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ, शुद्धीकृत; सही किया हुआ, सुधारा हुआ; मार्जित, साफ किया हुआ; चुकाया हुआ; अन्वेषित; अपनीत।

शोधैया–पु० शोधक, शुद्ध करनेवाला।

शोध्य–वि० (सं०) शोधनीय। पु० अपनेपर लगाये गये अभियोगके विषयमें सफाई देनेवाला व्यक्ति, अभियुक्त। **–पत्र**–पु० (प्रूफ) किसी छपनेवाली वस्तुका वह नमूना जो उसकी छपाईके पहले अशुद्धियाँ ठीक करनेके लिए तैयार किया जाता है। **–शोधक**–पु० (प्रूफरीडर) शोध्यपत्र (प्रूफ) पढ़कर उसकी अशुद्धियाँ दूर करनेवाला व्यक्ति 'ईक्ष्यवाचक'।

शोफ–पु० (सं०) शोथ, सूजन; ऐसी सूजन जिसमें जलन न हो; अर्बुद। **–घ्नी**–स्त्री० शालपर्णी; रक्त पुनर्नवा, लाल गदहपूरना। **–जित्,–हृत्**–पु० भल्लातक वृक्ष, भिलावाँका पेड़। **–नाशन**–पु० नील वृक्ष; रक्त पुनर्नवा। वि० सूजन दूर करनेवाला। **–हारी(रिन्)**–पु० वनबर्बरी।

शोफारि–पु० (सं०) हस्तिकंद।

शोफित–वि० (सं०) जिसे सूजन हो।

शोबदा–पु० (अ०) जादू या इंद्रजालका काम; हाथकी सफाईका काम, करतब, बाजीगरी; छल, धोखा। **–गर,–बाज़**–वि० शोबदा करनेवाला, बाजीगर; छलिया।

शोबा–पु० (अ०) टुकड़ा, विभाग; शाखा; विभागकी शाखा।

शोभ–वि० (सं०) सुंदर; दीप्तिमान्। पु० कांति (समासमें); एक देववर्ग; ॐ शोभा। **–कृत्**–वि० सुंदर बनानेवाला। पु० एक संवत्सर।

शोभक–वि० (सं०) सुंदर; कांतिमान्।

शोभन–वि० (सं०) दीप्तिमान्; सुंदर, मनोहर; मंगल, शुभ; सज्जित। पु० दीप्ति; सौंदर्य; अलंकार, मंडन; शुभ; पद्म, कमल; सिंदूर, राँगा; ग्रह; विष्कुंभ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे पाँचवाँ योग; शिव; सिंहिका नामक मात्रिक छंद; संगीतका एक राग।

शोभनक–पु० (सं०) शोभांजन वृक्ष, सहिजनका पेड़।

शोभना–स्त्री० (सं०) हरिद्रा, हल्दी; गोरोचना; सुंदर स्त्री। ॐ अ० क्रि० सोहना, शोभा देना, शोभित होना।

शोभांजन–पु० (सं०) शोभनक वृक्ष, सहिजनका पेड़।

शोभा–स्त्री० (सं०) प्रभा, कांति, चमक; (शारीरिक तथा प्राकृतिक) सौंदर्य, छवि; काव्यगत दस गुणोंमेंसे एक; एक काव्यालंकार (यह अलंकार तब होता है जब काव्यगुणकी वृद्धि न कर किसी अन्य गुणके अधीन हो जाता है); एक वर्णवृत्त; हरिद्रा, हल्दी; गोरोचना। **–कर**–वि० सौंदर्य उत्पन्न करनेवाला। **–धर**–वि० शोभा धारण करनेवाला, सुंदर। **–यात्रा**–स्त्री० बाजेगाजे या भजन-कीर्तन आदिके साथ निकाला गया जुलूस; बारात (बंगला)। **–शून्य,–हीन**–वि० असुंदर, सौंदर्यरहित।

शोभाकर–पु० (सं०) सौंदर्य-समूह; अत्यंत सुंदर व्यक्ति। वि० दे० 'शोभा'में।

शोभान्वित–वि० (सं०) सौंदर्यपूर्ण, छविमय।

शोभामय–वि० (सं०) सौंदर्ययुक्त।

शोभायमान–वि० (सं०) जो देखनेमें सुंदर लगता हो, विराजमान।

शोभित–वि० (सं०) शोभायुक्त, शोभान्वित; सज्जित; विराजमान।

शोभिनी–वि० स्त्री० (सं०) शोभा देनेवाली, सुंदरी।

शोभी(भिन्)–वि० (सं०) दीप्तिमान्, कांतिमान; शोभा देनेवाला, सुंदर।

शोर–पु० (फा०) हल्ला, कोलाहल (करना, मचना, मचाना); धूम, प्रसिद्धि; व्यापक चर्चा (लाक्ष०); खारी नमक; ऊसर जमीन; उन्माद। वि० खारी; बुरा, अशुभ। **–गुल**–पु० हल्ला। **–चश्म**–वि० जिसकी नज़र लग जाती हो। **–बख़्त**–वि० अभागा। **–बख़्ती**–स्त्री० दुर्भाग्य, बदनसीबी। **–(रे)-क़यामत**–पु० प्रलयका कोलाहल। **–(रो)शर**–पु० कोलाहल, दंगा, हंगामा।

शोरबा, शोरवा–पु० (फा०) तरकारी, माँस आदिका रसा। **–(बे)दार**–वि० रसेदार।

शोरा–पु० (फा०) एक क्षार जो बारूद बनाने, पानी ठंडा करने आदिके काममें आता है। **–आलू**–पु० जंगली आलू। **–पुश्त**–वि० उद्दंड, सरकश; लड़ाका। **–पुश्ती**–स्त्री० उद्दंडता; झगड़ालूपन। **–(रे)की पुतली**–अति गौरवर्ण युवती। मु० **–(रे)-में झालना**–पानीकी सुराहीको नमक और शोरा मिले हुए पानीमें रखकर ठंढा करना।

शोरिश–स्त्री० (फा०) शोर-गुल, कोलाहल; उपद्रव, विप्लव; नमकीनपन। **–कदा**–पु० उपद्रवस्थल।

शोरीदा–वि० (फा०) आतुर; उद्विग्न; उन्मत्त।

शोला–पु० (अ०) आगकी लपट; आँच; एक छोटा पेड़।

शोली–स्त्री० (सं०) वनहरिद्रा।

शोलीदा–वि० (फा०) स्तब्ध; व्याकुल; हैरान, परेशान।

शोशा–पु० (फा०) छोटा टुकड़ा, रेजा; सोनेका डला; फारसी-अरबी अक्षरोंके नीचे लगाया जानेवाला चिह्न; फारसी-अरबीके 'स', 'श' आदिके सिरेपर निकली हुई नोक या दाँत; (ला०) अनोखी बात, झगड़ा उठानेवाली या शैतानीसे भरी बात। मु०**–छोड़ना**– अनोखी या झगड़ा खड़ा करनेवाली बात कहना।

शोष–पु० (सं०) शुष्कता, सूखापन; सूखनेका भाव या क्रिया; क्षीण होने, दुबले-पतले होने, मुरझानेका भाव; यक्ष्मा रोगका एक प्रकार जिसमें आदमी क्षीण और पीला होता जाता है; सुखंडी रोग। **–घ्न**–पु० बनप्याज। **–संभव**–पु० पिप्पलीमूल। **–हा(हन्)**–पु० अपामार्ग।

शोषक–वि०, पु० (सं०) (एक्सप्लाइटर) शोषण करनेवाला, सोखनेवाला; सुखानेवाला; चूसनेवाला; क्षीण करनेवाला।

शोषण–पु० (सं०) सोखनेकी क्रिया (एब्जार्पशन); सुखानेकी क्रिया, चूसनेकी क्रिया; रस, स्नेहसे रहित करना; क्षीण करनेकी क्रिया; किसीके श्रमसे या व्यापार आदिसे अनुचित लाभ उठाना (एक्सप्लाइटेशन); सोंठ; पिप्पली; सोनापाढ़ा; श्योनाक वृक्ष; मदनका एक बाण; अग्नि।

शोषणीय–वि० (सं०) शोषणके योग्य ।

शोषयितव्य–वि० (सं०) शोषण योग्य ।

शोषयिता(तृ)–वि०, पु० शोषण करनेवाला ।

शोषापहा–स्त्री० (सं०) क्लीतनक, मुलेठी ।

शोषित–वि० (सं०) सोखा हुआ; सुखाया हुआ; क्षीण किया हुआ; खत्म किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

शोषी(षिन्)–वि० (सं०) शोषण करनेवाला ।

शोषु–पु० (सं०) प्यास ।

शोहदा–पु० दे० 'शुहदा' । –**पन**–दे० 'शुहदापन' ।

शोहरत–स्त्री० (अ०) प्रसिद्धि, ख्याति; धूम, जोरदार खबर ।

शोहरा–पु० (अ०) दे० 'शोहरत' ।

शौंगेय–पु० (सं०) गरुड़, श्येन, बाजपक्षी ।

शौंड–वि० (सं०) मत्त; मतवाला; मद्य पीनेका आदी, शराबी; दक्ष, कुशल, चतुर ।

शौंडता–स्त्री० (सं०) मत्तता; दक्षता, कुशलता, चातुर्य ।

शौंडा–स्त्री० (सं०) मदिरा ।

शौंडिक–पु० (सं०) प्राचीन कालकी जातिविशेष जो मद्य प्रस्तुत कर इसका व्यापार करती थी (पराशरपद्धतिने शौंडिककी उत्पत्ति गांधिक माता और कैवर्त पितासे मानी है) ।

शौंडिकी, शौंडिनी–स्त्री० (सं०) शौंडिक जातिकी स्त्री ।

शौंडी–पु० (सं०) गजपिप्पली; चव्य; कटभी; मेघपंक्ति ।

शौंडी(डिन्)–पु० (सं०) शौंडिक, मद्यविक्रेता ।

शौंडीर–वि० (सं०) अहंकारी, घमंडी, गर्वान्वित; उद्दंड ।

शौंडीर्य–पु० (सं०) गर्व, घमंड ।

शौआल, शौवाल–पु० (अ०) मुसलमानोंका दसवाँ चांद्र मास जिसकी पहली तारीखको ईद मनायी जाती है ।

शौक–पु० (सं०) शुकगण, सुग्गोंका समूह; एक रतिबंध; शोक मचना ।

शौक़–पु० (अ०) प्रबल इच्छा, चाह; रुचि; चसका, व्यसन; सुखभोग; उत्साह; धुन । –(क़े) **इबादत**–पु० पूजाका शौक । मु० –**करना**–भोग करना (हुक्का, सिगरेट आदि देते समय 'शौक कीजिये' कहते हैं) । –**चर्राना**–इच्छाका तीव्र होना । –**से**–रुचिपूर्वक; खुशीसे; निस्संकोच ।

शौकत–स्त्री० (फा०) बल, शक्ति; प्रताप, दबदबा; गौरव, शान; डंक ।

शौकर, शौकरव–पु० (सं०) दे० 'शूकरक्षेत्र' ।

शौकरी–स्त्री० (सं०) वाराही कंद ।

शौक़िया–अ० दे० 'शौक़ीया' ।

शौक़ीन–वि० चाह या रुचि रखनेवाला; बनाव-सिंगारका शौक रखनेवाला, छैला; विलासी; तमाशबीन ।

शौक़ीनी–स्त्री० शौकीन होनेकी क्रिया या आदत; ऐयाशी ।

शौक़ीया–अ० शौकसे, शौक होनेसे; दिल-बहलावके लिए ।

शौक्त–वि० (सं०) अम्ल, तेजाबी; सीपीका बना हुआ ।

शौक्तिक–वि० (सं०) सीपीसे उत्पन्न; मोती-संबंधी; अम्ल । पु० मोती ।

शौक्तिकेय, शौक्तेय–पु० (सं०) मुक्ता ।

शौक्र–वि० (सं०) शुक्र ग्रहसंबंधी; वीर्यसंबंधी ।

शौक्लिकेय–पु० (सं०) एक तरहका विष ।

शौक्ल्य–पु० (सं०) शुक्लता, उज्ज्वलता, सुफेदी ।

शौच–पु० (सं०) शुद्धि, पवित्रता, शुचिता; किसी निकट-संबंधीकी मृत्यु होनेपर लोक-व्यवहारके अनुसार निश्चित समयपर क्षौरकर्म आदि कराकर शुद्ध होना; प्रातःकालीन नैमित्तिक कर्म द्वारा शुद्धि; मल-त्याग द्वारा शरीर-शुद्धि, पाखाने जाना; मनु-कथित धर्मके दस लक्षणोंमेंसे पाँचवाँ लक्षण; योग-शास्त्रोक्त पंच नियमोंमेंसे (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान) पहला । –**कर्म(न्)**–पु० लोक-व्यवहार और शास्त्रानुसार शुद्धिकी क्रिया । –**कूप**–पु० संडास । –**गृह**–पु० पाखानेकी कोठरी आदि । –**विधि**–स्त्री० शुद्ध होने, शुद्धि-क्रियाकी पद्धति, रीति ।

शौचक–वि० (सं०) शुद्ध, पवित्र । पु० शुद्धता ।

शौचागार–पु० (सं०) शौचगृह ।

शौचाचार–पु० (सं०) दे० 'शौच-कर्म' ।

शौचालय–पु० (लेवेटरी) शौच जानेकी कोठरी या स्थान, वह कोठरी या कक्ष जिसमें पानीकी तथा लघुशंका इत्यादिकी व्यवस्था हो; दे० 'प्रक्षालनगृह' ।

शौचालन–पु० (सं०) शौच पात्र; कमोड ।

शौचिक–पु० (सं०) पवित्र, शुद्ध करनेवाला व्यक्ति; एक वर्णसंकर जाति ।

शौचेय–पु० (सं०) धोबी, रजक ।

शौटीर–वि० (सं०) गर्वयुक्त, गर्वीला; उदार । पु० वीर, योद्धा; त्यागी, सन्यासी ।

शौटीरता–स्त्री०, **शौटीर्य**–पु० (सं०) वीरता, पराक्रम; त्याग; गर्व ।

शौत*–स्त्री० सौत ।

शौद्धोदनि–पु० (सं०) शुद्धोदनके पुत्र गौतम बुद्ध ।

शौद्र–वि० शूद्र जाति-संबंधी । पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य वर्णके पुरुष तथा शूद्र वर्णकी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र ।

शौध*–वि० शुद्ध, निर्मल, पूत, पवित्र । *स्त्री० सुधि (सूर) ।

शौधिका–स्त्री० (सं०) रक्त कंगु, लाल ककुनी ।

शौन–पु० (सं०) वध-स्थल, कसाईखानेमें रखा मांस । वि० कुत्ता संबंधी ।

शौनक–पु० (सं०) एक ऋषि जो ऋग्वेदप्रातिशाख्य तथा अन्य कई ग्रंथोंके रचयिता माने जाते हैं (ये नैमिषारण्यमें रहते थे और एक बार इन्होंने बारह वर्षोंतक चलनेवाला यज्ञ किया था) ।

शौनिक–पु० (सं०) मांसविक्रेता, कसाई; बहेलिया, वधिक, शिकारी; मृगया, शिकार । वि० श्वान या आखेट संबंधी । –**शास्त्र**–पु० आखेटशास्त्र ।

शौभ–पु० (सं०) देवता; गुवाक, सुपारी; हरिश्चंद्रपुर, व्योमचारिपुर (पु०) ।

शौभनेय–पु० (सं०) सुंदर स्त्रीका पुत्र । वि० सुंदर वस्तु-संबंधी ।

शौभांजन–पु० (सं०) दे० 'शोभांजन' ।

शौभिक–पु० (सं०) इंद्रजालिक, जादूगर; वधिक, चिड़ीमार; यज्ञस्तंभ ।

शौभ्रेय–वि० (सं०) शुभ्र वस्तु या व्यक्ति-संबंधी । पु० एक लड़ाकू जाति ।

शौरसेन–पु० (सं०) शूरसेनका राज्य, आधुनिक ब्रजमंडल (इसकी राजधानी शूरसेन–मथुरा थी) ।

शौरसेनिका–स्त्री० (सं०) दे० 'शौरसेनी' ।

शौरसेनी–स्त्री० (सं०) प्राचीन कालमें शौरसेन प्रदेशमें (मथुराके आस-पास) बोली जानेवाली प्राकृत भाषा; प्राचीन कालमें उक्त प्रदेशमें व्यवहृत अपभ्रंश भाषा (खड़ी बोली हिंदीके निर्माणमें उक्त प्राकृत तथा अपभ्रंशका बड़ा हाथ है) ।

शौरि–पु० (सं०) वसुदेव; कृष्ण; बलदेव; शनि ग्रह । –**प्रिय**–पु० हीरा । –**रत्न**–पु० नीलम ।

शौर्प, शौर्पिक–वि० (सं०) सूप-संबंधी; सूपसे नापा हुआ ।

शौर्य–पु० (सं०) शूरता, वीरता; पराक्रम; आरभटी नामक नाट्यवृत्ति जिसका उपयोग वीर और अद्भुत रसोंके अभिनयमें होता है ।

शौल–पु० (सं०) हलका एक भाग ।

शौला–पु० (अ०) मूल नक्षत्र ।

शौल्क–वि० (सं०) शुल्क-संबंधी । पु० दे० 'शौल्किक' ।

शौल्किक–वि० (सं०) शुल्क-संबंधी; मांस-मछली खानेवाला । पु० कर वसूल करनेवाला; शुल्क, कर, महसूल, टैक्स उतारनेकी व्यवस्था करनेवाला अफसर, शुल्काध्यक्ष, शुल्काधिकारी ।

शौल्किकेय–पु० (सं०) विषका एक भेद ।

शौल्फ–पु० (सं०) सुलफेका साग; सौंफ ।

शौल्विक, शौल्विक–पु० (सं०) ताँबेका काम करनेवाला, ताँबेका बर्तन बनानेवाला, कसेरा; एक जाति ।

शौव–वि० (सं०) कुत्ता-संबंधी; आगामी कल संबंधी । पु० कुत्तोंका झुंड; कुत्तेका स्वभाव ।

शौवन–वि० (सं०) कुत्ता-संबंधी; कुत्तेके गुण, स्वभावसे संयुक्त ।

पु० कुत्तोंका झुंड; कुत्तेकी औलाद; कुत्तेका स्वभाव।

शौवस्तिक–वि० (सं०) आगामी कल-संबंधी; आगामी कलतक टिकनेवाला, खराब न होनेवाला।

शौवापद–वि० (सं०) श्वापद-संबंधी, वन-पशु-संबंधी; जंगली।

शौष्कल–वि० (सं०) मांसभक्षी; मछलीका मांस खानेवाला। पु० मांसका मूल्य; मांसका विक्रेता।

शौहर–पु० (फा०) पति, स्वामी, खाविंद। **–कुश**–स्त्री० पतिघातिनी। **–ख़्वाह**–स्त्री० पतिकामा। **–परस्त**–स्त्री० पतिव्रता।

श्नुष्टि–स्त्री० (सं०) गल्ला नापनेका एक छोटा परिमाण।

श्म(न्)–पु० (सं०) मुख; शरीर; शव, मृत देह।

श्मशान–पु० (सं०) शवदाह-स्थान, मसान, मरघट; बिजलीसे शव जलानेका स्थान (क्रेमेटोरियम)। **–कालिका,–काली**–स्त्री० श्मशान-निवासिनी काली जिनकी अर्चना मद्य, मांसका प्रयोग कर और नंगे शरीर की जाती है (तं०)। **–गोचर**–वि० श्मशानमें घूमनेवाला। **–निलय**–पु० शिव। **–निवासी(सिन्)**–पु० शिव; भूत; प्रेत। वि० श्मशानमें रहनेवाला। **–पति**–पु० शिव। **–पाल**–पु० चांडाल, डोम चौधरी। **–भाक्(ज्)**–पु० शिव। **–भैरवी**–स्त्री० श्मशानमें रहनेवाली देवियाँ (तं०)। **–वर्ती(र्तिन्)**–पु० दे० 'श्मशानवासी'। **–वाट**–पु० श्मशानका घेरा। **–वासिनी**–स्त्री० कालिका, काली। **–वासी(सिन्)**–पु० भूत; प्रेत; शिव; डोम चौधरी, चांडाल। **–वेताल**–पु० एक प्रकारकी भूतयोनि जिसमें पड़कर जीव श्मशानमें रहते और वहाँके मुर्दे आदि खाते हैं। **–वेश्मा(श्मन्)**–पु० शिव; भूत; प्रेत। **–वैराग्य**–पु० श्मशानमें जानेपर संसारकी अनित्यता देखनेसे उत्पन्न क्षणिक वा अस्थायी वैराग्य। **–शूल**–पु० प्राचीन कालमें श्मशान-स्थित खदिरकी लकड़ी या लोहेकी शूली जिसपर बैठाकर अपराधीको मृत्यु-दंड देते थे। **–साधन**–पु० तांत्रिकोंके अनुसार श्मशानमें मुर्देकी छातीपर बैठकर किसी सिद्धिके लिए अर्ध रात्रिमें मंत्र-साधना करना (यह साधना विशेषतः आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विनमें की जाती है)।

श्मशानालय–पु० (सं०) मरघट, प्रेतभूमि।

श्मशानिक–वि० (सं०) श्मशानमें रहनेवाला (पक्षी आदि)।

श्मश्रु–पु० (सं०) दाढ़ी-मूँछ। **–कर**–पु० डाढ़ी बनानेवाला, नाई। **–कर्म(न्)**–पु० क्षौर कर्म। **–धर,–धारी(रिन्)**–वि० दाढ़ी रखनेवाला। **–मुखी**–स्त्री० दाढ़ी-मूँछवाली औरत। **–वर्धक**–पु० नाई, नापित। **–शेखर**–पु० नारिकेल वृक्ष, नारियलका पेड़।

श्मश्रुल–वि० (सं०) दाढ़ी-मूँछवाला, श्मश्रुधारी।

श्मीलन–पु० (सं०) आँख मुलकाना, नयन-निमीलन।

श्मीलित–पु० (सं०) पलक मारना, पलकका गिरना, नयननिमीलन, निमेष। वि० पलक मारा हुआ।

श्यान–वि० (सं०) गत; जो जमकर गाढ़ा हो गया हो, गाढ़ा; सिकुड़ा हुआ, सूखा। पु० धुआँ।

श्याम–वि० (सं०) काला, साँवला; काला और नीला मिश्रित; गाढ़ा हरा। पु० कृष्ण (श्यामवर्ण होनेके कारण इनका यह नाम पड़ा); काला रंग; गाढ़ा हरा रंग; काला और नीला मिश्रित रंग; मेघ, बादल; कोयल, क़ोकिल; प्रयागका प्रसिद्ध वटवृक्ष जो यमुनाके किनारे है; प्राचीन भारतमें कन्नौजके पश्चिममें एक प्रदेश; वृद्धदारक; पीलू वृक्ष; दौनेका पौधा; गंधतृण; श्यामक, साँवाँ चावल; धतूरा; काली मिर्च; समुद्री नमक। **–कंठ**–पु० शिव; नीलकंठ पक्षी; मयूर, मोर। **–कंदा**–स्त्री० अतिविषा, अतीस। **–कर्ण**–वि० काले कानोंवाला। पु० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर श्वेत और केवल कान काले हों (यह सुलक्षण है और अश्वमेधके उपयुक्त माना जाता है)। **–कांडा,–ग्रंथि**–स्त्री० गंडदूर्वा। **–चटक**–पु०,**–चूड़ा**–स्त्री० श्यामा पक्षी। **–जीरा**–पु० (हिं०) एक प्रकारका अगहनिया धान; काला जीरा। **–टीका**–पु० (हिं०) दिठौना। **–तीतर**–पु० (हिं०) एक पक्षी जो प्रायः पहाड़ी प्रदेशोंमें मिलता है। **–पट्ट**–पु० विद्यालयोंकी प्रत्येक कक्षामें रहनेवाला वह काला तख्ता जिसपर खरिया मिट्टीसे लिखकर अध्यापक गणित आदिके प्रश्न विद्यार्थियोंको समझाता है (ब्लैकबोर्ड)। **–पत्र**–पु० तमाल वृक्ष। **–पत्रा**–स्त्री० जंबू वृक्ष, जामुनका पेड़। **–पर्ण**–पु० शिरीष वृक्ष, सिरिसका पेड़। **–पूरवी**–पु० एक संकर राग। **–भूषण**–पु० काली मिर्च। **–मंजरी**–स्त्री० एक प्रकारकी काली मिट्टी जिसका उपयोग वैष्णव तिलक लगानेके लिए करते हैं (यह पुरीके आस-पास पायी जाती है)। **–लता**–स्त्री० सारिका। **–वल्ली**–स्त्री० काली मिर्च। **–वर्त्म(न्)**–पु० एक प्रकारका नेत्र-रोग। **–शर**–पु० श्यामलेक्षु। **–शबल**–पु० यमके द्वारपर पहरा देनेवाले दो कुत्ते। **–शालि**–पु० काला धान, रमकजरवा धान, दखिनहवाँ धान। **–सार**–पु० काले खैरका पेड़। **–सुंदर**–पु० कृष्ण; एक वृक्ष।

श्यामक–पु० (सं०) साँवाँ चावल; रोहिष तृण; शूरके एक पुत्र, वसुदेवके भाई (भा०); स्याम देश। वि० काला।

श्यामता–स्त्री० (सं०) श्याम, काला होनेका भाव, कालापन; कालुष्य; उदासी; मलिनता; एक रोग जिसमें शरीर काला होने लगता है।

श्यामल–वि० (सं०) श्याम वर्णवाला। पु० काला रंग; भ्रमर; पीपलका पेड़; काली मिर्च; पूतिका। **–चूड़ा**–स्त्री० गुंजा, घुँघची।

श्यामलता–स्त्री० (सं०) श्यामता।

श्यामला–स्त्री० (सं०) पार्वती, अश्वगंधा; कटभी; जंबू, जामुन; कस्तूरी।

श्यामलिका–स्त्री० (सं०) नीली।

श्यामलित–वि० (सं०) काला, धूमिल किया हुआ।

श्यामलिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) कालापन, श्यामता।

श्यामलेक्षु–पु० (सं०) काली ईख, कजरवा ईख।

श्यामांग–पु० (सं०) बुध ग्रह। वि० काले शरीरवाला।

श्यामा–स्त्री० (सं०) श्याम, कृष्णकी पत्नीं राधा; काली, कालिका देवी; पार्वती; श्याम वर्णकी स्त्री; षोडशवर्षीया युवती; सुंदरी नारी; तरुणी स्त्री जिसे संतान न हुई हो, अप्रसूतांगना; तपे हुए सोनेके रंगकी युवती जो सर्वांग शीतमें सुखोष्ण और ग्रीष्ममें सुखशीतल होती है; श्यामा नामकी चिड़िया, कृष्ण सारिका; कबूतरी; क़ाली गाय; यमुना; (अंधकारमयी) रात्रि; छाया; कमलगट्टा; प्रियंगु; वागुजि; कृष्ण त्रिवृत्तिका; नीलिका; गुग्गुल; सोमलता; गुंद्रा; गुडूची; कस्तूरी; वटपत्नी; बंदा; नील पुनर्नवा; पिप्पली; हल्दी, हरिद्रा; नील दूर्वा; तुलसी; पद्मबीज; शिंशपा।

श्यामाक–पु० (सं०) साँवाँ चावल।

श्यामाप्रसाद मुखोपाध्याय–पु० बंगालके अर्थमंत्री, हिंदू महासभाके अध्यक्ष तथा स्वतंत्रभारतकी केंद्रीय सरकारके उद्योगमंत्री (१९५० में)। अखिल भारतीय जनसंघ (राजनीतिक दल) के संस्थापक। कश्मीरमें नजरबंदीकी हालतमें मृत्यु (१९०१-१९५३)।

श्यामिका–स्त्री० (सं०) कालापन, श्यामता; अपवित्रता; खोटापन; मलिनता; मैल (बरतन आदिका)।

श्यामित–वि० (सं०) काला किया हुआ।

श्यामेक्षु–पु० (सं०) काले रंगकी ईख, श्यामलेक्षु।

श्याल–पु० (सं०) साला, पत्नीका भाई; * शृंगाल, सियार।

श्यालक–पु० (सं०) श्याल, साला।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली–स्त्री० (सं०) साली, पत्नीकी भगिनी।

श्याव–वि० (सं०) कपिश, काला और पीला मिला हुआ। पु० कपिश रंग। **–तैल**–पु० आम्र वृक्ष, आमका पेड़। **–दंत**–पु० प्रकृतितः काले रंगवाले दाँत। वि० काले रंगके दाँतोंवाला। **–दंतक**–वि० काले रंगके दाँतोंवाला। **–वर्त्म(न्)**–पु० आँखका एक रोग।

श्यावास्य–वि० (सं०) कपिश रंगके मुखवाला।

श्येत–वि० (सं०) श्वेत, सफेद, शुक्ल। पु० शुक्ल वर्ण। **–कोलक**–पु० एक मछली, सफर नामक मछली।

श्येनंपाता–स्त्री० (सं०) बाज पक्षी द्वारा पक्षियोंका शिकार कराना; मृगया।

श्येन–पु० (सं०) बाज पक्षी; हिंसा; पांडुर वर्ण, पीला रंग; दोहेका एक भेद। वि० पीले रंगका। **–करण**–पु० बाजकी भाँति

झपटकर किसी काममें लगना, बाजकी भाँति तीव्रता और निश्चयतापूर्वक कोई काम करना; उतावलापन। **–घंटा**–स्त्री० दंती वृक्ष। **–चित**–पु० अग्निविशेष। **–चित्**–पु० बाजकी रक्षा करने, पालनेवाला व्यक्ति, श्येनजीवी। **–जीवी(विन्)**–पु० बाज पकड़ और उसे बेचकर जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति। **–व्यूह**–पु० दंडव्यूहका एक प्रकार जिसमें पक्ष तथा कक्षके सैनिकोंको स्थिर रखकर उरस्यके (सामनेके) सैनिकोंको आगे बढ़ाया जाता है।

श्येनिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त जिसका नाम 'श्येनी' भी है; मादा बाज।

श्येनी–स्त्री० (सं०) दे० 'श्येनिका'।

श्यैनंपात–वि० (सं०) बाज उड़ानेके योग्य (स्थान)।

श्यैनंपाता–स्त्री० (सं०) बाजके द्वारा पक्षियोंका शिकार करना; मृगया।

श्यैन–वि० (सं०) बाज-संबंधी।

श्यैनिक–पु० (सं०) एक एकाह।

श्यैनेय–पु० (सं०) जटायु।

श्योणाक, श्योनाक–पु० (सं०) एक वृक्ष; सोना पाढ़ा।

श्योरा–पु० (लश०) लोहेका छल्ला और नुकीला लोहा लगा तंबू तानने, उठानेका बाँस।

श्रंथ–पु० (सं०) ढीला करना, शिथिल करना; मुक्त करना; ढीलापन, शिथिलता; बाँधना; (मुक्त करनेवाला) विष्णु।

श्रंथन–पु० (सं०) ढीला करना, खोलना; मुक्त करना; नुकसान पहुँचाना; मार डालना; नष्ट कर देना; बाँधना।

श्रंथित–वि० (सं०) ढीला; मुक्त; संबद्ध, एक साथ बाँधा हुआ; नुकसान पहुँचाया हुआ; वध किया हुआ; विनष्ट; हर्षित, प्रसन्न।

श्रथन–पु० (सं०) ढीला या शिथिल करनेकी क्रिया, शिथिलीकरण; बाँधना; खोलना, मुक्त करना; बार-बार खुश करना; प्रयत्न, प्रयास; वध।

श्रद्दधान–वि० (सं०) श्रद्धायुक्त।

श्रद्ध–वि० (सं०) विश्वास करनेवाला, श्रद्धावान्। पु० श्रद्धा।

श्रद्धांजलि–स्त्री० (सं०) गुरुजन या आदरणीय व्यक्तिके प्रति श्रद्धा प्रकट करनेके लिए कहे गये शब्द।

श्रद्धा–स्त्री० (सं०) प्रेम और भक्तियुक्त पूज्यभाव; संप्रत्यय, विश्वास; आदर; शुद्धि, पवित्रता; स्पृहा, कामना; दोहद, गर्भवती स्त्रीकी इच्छा; किसी धर्म, संप्रदाय, शास्त्र, दर्शन आदिमें आस्था, पूर्ण विश्वास; घनिष्ठता; मन.शांति, मनकी प्रसन्नता; प्रजापतिकी पुत्री; आदित्य या सूर्यकी कन्या; दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी (म० भा०); कामकी माता (मार्कंडेयपुराण); कर्दमकी कन्या और वैवस्वत मनुकी पत्नी, कामायनी (भा०)।

श्रद्धालु–वि०(सं०) श्रद्धायुक्त; कामनायुक्त। स्त्री० किसी वस्तुकी कामना करनेवाली गर्भिणी स्त्री, दोहदवती।

श्रद्धावान्(वत्)–वि० (सं०) श्रद्धायुक्त।

श्रद्धास्पद–वि० (सं०) श्रद्धाका पात्र, श्रद्धा करने योग्य, श्रद्धेय।

श्रद्धेय–वि० (सं०) प्रेम और भक्तिके योग्य, पूजनीय, विश्वसनीय, श्रद्धा-भाजन।

श्रपण–पु०, **श्रपणा**–स्त्री० उबालनेकी क्रिया।

श्रपित–वि० (सं०) बिना घी, तेल डाले पकाया हुआ, उबाला हुआ। पु० उबाला हुआ मांस।

श्रपिता–स्त्री० (सं०) माँड़; काँजी।

श्रम–पु० (सं०) परिश्रम, मेहनत; प्रयत्न, प्रयास, दौड़धूप; जीविकोपार्जनके लिए किया जानेवाला कोई काम; श्रांति, थकान; कष्ट; व्यायाम, कवायद; तप; शास्त्राभ्यास; खेद; साहित्यशास्त्रोक्त एक संचारी भाव। **–कण**–पु० शारीरिक श्रम, परिश्रम, मेहनत करनेसे निकली पसीनेकी बूँदें। **–कर**–वि० क्लांतिकारक। **–कार्यालय**–पु० (लेबर ब्यूरो) श्रमिकोंकी संख्या, स्थिति आदि-संबंधी जानकारी देनेवाला कार्यालय। **–क्लांत**–वि० श्रमसे थका हुआ। **–घ्न**–वि० थकान दूर करनेवाला। **–जल**–पु० प्रस्वेद, पसीना। **–जित्**–वि० (हिं०) श्रमसे न थकनेवाला। **जीवी(विन्)**–वि० शारीरिक तथा बौद्धिक परिश्रम कर जीविका चलानेवाला। पु० मेहनतकश, मजदूर। **–दान**–पु० सड़क, विद्यालय, कुआँ आदि बनाने तथा सार्वजनिक हितके अन्य कार्य करनेके लिए कोई पारिश्रमिक न लेकर स्वेच्छासे अपने श्रमका दान करना, निर्माणकार्यमें सहयोग देना। **–प्रमुख**–पु० दे० 'फोरमैन'। **–भंजिनी**–स्त्री० नागवल्ली लता। **–मोहित**–वि० श्रमके कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। **–वारि,–बिंदु**–पु० प्रस्वेद, स्वेद, पसीना। **–विनयन**–वि० क्लांति दूर करनेवाला। **–विभाजन,–विभाग**–पु० कामका बँटवारा, किसी कामको पूर्ण करनेके लिए उसके विभिन्न अंगोंको विभिन्न व्यक्तियोंके जिम्मे कर, बाँट देना (अर्थशास्त्र) (डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ लेबर); श्रमिकोंके हितादि-संबंधी मामलोंकी देख-रेख करनेवाला सरकारी मुहकमा (लेबर डिपार्टमेंट)। **–विवाद**–पु० (लेबर डिसप्यूट) श्रमिकोंके वेतन, अधिलाभांश तथा अन्य प्रश्नोंके संबंधमें उठ खड़ा हुआ विवाद या झगड़ा। **–शीकर,–सीकर**–पु० श्रमजल, पसीना, प्रस्वेद-बिंदु। **–शील**–वि० परिश्रमी। **–संघ**–पु० (लेबर यूनियन) कारखानों आदिमें काम करनेवाले श्रमिकोंका संघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हितरक्षाकी ओर ध्यान देता है। **–साधना**–स्त्री० मेहनतसे कोई कठिन काम करना; किसी कार्यका अभ्यास। **–साध्य**–वि० जो (काम) परिश्रम, दौड़-धूप, प्रयत्नसे पूर्ण, प्राप्त, खत्म हो सके, परिश्रमसे होने, सधनेवाला। **–सहिष्णु**–वि० मेहनती। **–स्थान**–पु० श्रम करनेका स्थान; कारखाना।

श्रमण–पु० (सं०) श्रम; बौद्ध सन्न्यासी, बौद्ध भिक्षु। वि० श्रम करनेवाला; नीच, नंगा।

श्रमणक–पु० (सं०) बौद्ध या जैन सन्न्यासी।

श्रमणा–स्त्री० (सं०) जटामासी; मुंडी; सुंदरी स्त्री; सुदर्शना ओषधि; भिक्षुणी; मेहनती स्त्री।

श्रमणी–स्त्री० (सं०) बौद्ध सन्न्यासी।

श्रमिक–पु० (सं०) शारीरिक श्रम कर रोजी कमानेवाला, मेहनतकश, मजदूर। **–कल्याण-कार्य**–पु० (लेबर वेलफेयर वर्क) श्रमिकोंकी भलाईके लिए किया जानेवाला कार्य (स्वास्थ्य-रक्षा, साफ और हवादार मकानोंकी व्यवस्था आदि)। **–कल्याण-केंद्र**–पु० (लेबर वेलफेयर सेंटर) वह केंद्र या स्थान जहाँ श्रमिकोंकी भलाईके विभिन्न कार्य किये जाते हैं। **–क्षतिपूर्ति-अधिनियम**–पु० (वर्कमेंस कंपेनसेशन ऐक्ट) श्रमिकों तथा कर्मकारोंको काम करते समय लगनेवाली चोट या अन्य रूपसे होनेवाली हानिके बदलेमें मालिकों या व्यावसायिक संस्थाओंसे हरजाना दिलानेके लिए बनाया गया अधिनियम, कर्मकार-हानि-पूरण-अधिनियम। **–दिन**–पु० (मैन डेज) एक दिनमें एक आदमी द्वारा किये गये कामको इकाई मानकर हड़ताल आदिके समय हुई हानिका हिसाब लगानेसे प्राप्त दिनोंकी संख्या। **–संघ**–पु० दे० 'श्रमसंघ'।

श्रमित–वि० परिश्रम करके थका हुआ।

श्रमी(मिन्)–पु० (सं०) परिश्रमी व्यक्ति। वि० मेहनती।

श्रय, श्रयण–पु० (सं०) आश्रय।

श्रव–पु० (सं०) कान; शब्द; त्रिभुजका कर्ण; स्राव, क्षरण; यश।

श्रव(स्)–पु० (सं०) कान; यश; धन; स्तुति; स्तुत्यकार्य।

श्रवण–पु० (सं०) श्रवणेंद्रिय, कर्ण, कान; सुननेकी क्रिया; कर्णेंद्रियज्ञान, कानसे सुनकर हुआ ज्ञान; नौ प्रकारकी भक्तियोंमेंसे एक जिसके अनुसार भक्त भगवान्के नाम, रूप, गुण, लीला आदिका श्रवण करता है; अध्ययन, सुनकर प्राप्त किया गया ज्ञान; यश, कीर्त्ति; धन; अंधतापसका पुत्र जो माता-पिताका अनन्य भक्त था (आखेट करते समय अनजानमें दशरथने इसका वध किया था, इसपर अंधने उन्हें पुत्र-वियोगमें मरनेका शाप दिया था); सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे बाईसवाँ नक्षत्र (इसमें तीन तारे होते हैं); बहना, टपकना, क्षरण, रसना। **–कातरता**–सुननेकी उत्सुकता। **–गोचर**–वि० जो सुनाई पड़नेकी सीमामें हो, श्रवणप्रत्यक्ष। **–द्वादशी**–स्त्री० वामनद्वादशी जो भादों मासके शुक्ल पक्षमें पड़ती है, (इसे वामनावतारका दिन मानते हैं–पु०)। **–पथ**–पु० सुननेकी शक्तिसे युक्त श्रवणेंद्रिय, कान। **–परुष**–वि० जो कानोंके लिए कठोर हो, कर्णकटु। **–पालि,–पाली**–स्त्री० कानकी ललरी। **–पुटक**–पु० कर्णरंध्र। **–पूरक,–भूषण**–पु० कर्णफूल आदि कानके

गहने । **–प्रत्यक्ष**–वि० श्रवण-गोचर । **–विद्या**–स्त्री० वह विद्या जो कानसे सुनकर ग्रहण की जाती हो । **–विवर**–पु० कानका छेद । **–विषय**–पु० श्रवणेंद्रियकी सीमामें आनेवाला विषय, श्रवणगोचर वस्तु, व्यापार आदि । **–शीर्षिका**–स्त्री० श्रावणी वृक्ष । **–हारी(रिन्)**–वि० कानोंको प्रिय लगनेवाला ।

श्रवणा–स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र; दे० 'श्रवण'; मुंडरिका, मुंडी ।

श्रवणावभास–पु० (सं०) श्रवणपथ ।

श्रवणाह्वया–स्त्री० (सं०) निर्विषी; जलचौलाई ।

श्रवणी–स्त्री० (सं०) महामुंडी; मुंडेरी ।

श्रवणीय–वि० (सं०) श्रवण योग्य, सुनने योग्य ।

श्रवणेंद्रिय–स्त्री० (सं०) सुननेकी शक्ति; कान ।

श्रवणोदर–पु० (सं०) कान ।

श्रवन*–पु० कान; सुनना ।

श्रवना*–अ० क्रि० वहना, टपकना, चूना । स० क्रि० वहाना, गिराना, टपकाना, चुआना ।

श्रवस्य–पु० (सं०) यश, नाम; नामवरीका काम ।

श्रवित–वि० क्षरित, टपका हुआ, वहा हुआ ।

श्रविष्ठा–स्त्री० (सं०) धनिष्ठा नामक नक्षत्र । **–ज,–भू**–पु० बुध ग्रह ।

श्रव्य–वि० (सं०) सुनने योग्य । **—काव्य**–इंद्रियप्रत्यक्षकी दृष्टिसे भारतीय साहित्यशास्त्र द्वारा निर्धारित काव्यके दो भेदों–दृश्य, श्रव्य–मेंसे एक (श्रव्य काव्य सुना जाता है, इसका अभिनय नहीं होता) ।

श्रांत–वि० (सं०) श्रमयुक्त, श्रांतियुक्त, थका हुआ; खिन्न, दुःखी; शांत; सुखभोगसे तृप्त, अपनी इंद्रियोंको वशमें करनेवाला, जितेंद्रिय । पु० तपस्वी । **–चित्त,–मना(नस्)–हृदय**–वि० खिन्न, विपण्ण । **–संवाह,–संवाहन**–पु० थके हुएको आसन आदि देकर आराम पहुँचाना ।

श्रांति–स्त्री० (सं०) थकान; श्रम; खेद ।

श्राग–वि० (सं०) पक्व, पका हुआ; भूना हुआ; घृत, दूध, जल आदिमें बिना डाले पकाया हुआ; तर । पु० उवाला हुआ मांस ।

श्रागा–स्त्री० (सं०) यवागू, काँजी ।

श्राद्ध–वि० (सं०) श्रद्धायुक्त । पु० शास्त्रविहित पितृ-कर्म, शास्त्र तथा लोक-विधिके अनुसार पितरोंका क्रिया-कर्म; पितरोंकी प्रसन्नताके लिए श्रद्धा-पूर्वक दिया जानेवाला अन्न, वस्त्र आदिका दान; विश्वास । **–कर्ता(र्तृ),–कृत्**–पु० श्राद्धकर्म करनेवाला । **–कर्म(न्)**–पु०,**–क्रिया**–स्त्री० श्राद्धके सिलसिलेमें होनेवाले (शास्त्रोक्त, लोक-व्यवहारके) काम । **–दिन**–पु० वार्षिक श्राद्धका दिन, किसी व्यक्तिके मरनेकी तिथि जिस तिथिको वर्षमें एक बार उसके लिए श्राद्धकर्म किया जाता है । **–देव,–देवता**–पु० श्राद्ध-कर्मके अवसरपर पूजे जानेवाले कोई देवता; यम; संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न विवस्वान्के पुत्र, वैवस्वत मनु; वैवस्वतमनुके पिता विवस्वान्; ब्राह्मण । **–पक्ष**–पु० क्वारका कृष्ण पक्ष जिसे पितृपक्ष भी कहते हैं । **–भुक(ज्),–भोक्ता(क्तृ)**–पु० पितर । **–शाक**–पु० काल-शाक । **–सूतक**–पु० श्राद्धमें खिलाने-पिलानेके लिए प्रस्तुत खाद्य पदार्थ । मु० (किसी चीजका)**–करना**–कोई काम चौपट कर देना; बुरे ढंगसे करना (व्यं०) ।

श्राद्धिक–वि० (सं०) श्राद्ध-संबंधी । पु० श्राद्धभोक्ता, श्राद्धमें दी गयी वस्तुका उपभोग करनेवाला; श्राद्ध-संबंधी वस्तु ।

श्राद्धी(द्धिन्)–पु० (सं०) श्राद्ध-भोक्ता ।

श्राद्धीय–वि० (सं०) श्राद्ध-संबंधी ।

श्राप*–पु० शाप ।

श्रापी(पिन्)–पु० (सं०) पाचक, सूपकार ।

श्राम–पु० (सं०) समय; महीना, मास; मंडप, अस्थायी छाजन ।

श्रामणेर, श्रामणेरक–पु० (सं०) नया भिक्षु (बौ०) ।

श्राय–पु० (सं०) आश्रय, शरण; मकान ।

श्रावंती–स्त्री० (सं०) धर्मपुरी; कालीमिर्च ।

श्राव–पु० (सं०) सुननेकी क्रिया, श्रवण; वहनेकी क्रिया ।

श्रावक–वि० (सं०) सुननेवाला । पु० बौद्ध भिक्षु; जैन-सन्न्यासी; नास्तिक; जैनी, जैन धर्मका अनुयायी; छात्र; शिष्य; दूरध्वनि; कौवा । **–मान**–पु० हीनयानका आदरसूचक नाम (बौ०) ।

श्रावग*–पु० दे० 'श्रावक' ।

श्रावगी–पु० जैन ।

श्रावण–पु० (सं०) चांद्र वर्षके वारह महीनोंमेंसे पाँचवाँ जो वर्षाकालमें आपाढ़के बाद पड़ता है; श्रवणेंद्रियग्राह्य ज्ञान; पाषंड; श्रवण नामक मातृ-पितृभक्त बालक । वि० श्रवणेंद्रिय-संबंधी; श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न; योग मार्गके पाँच विघ्नोंमेंसे एक (पुरा०) । **–प्रत्यक्ष**–पु० श्रवणेंद्रिय द्वारा किया गया प्रत्यक्ष, उक्त इंद्रिय द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

श्रावणा–स्त्री० (सं०) दध्याली वृक्ष ।

श्रावणिक–पु० (सं०) चांद्र श्रावण मास; गुप्तकालीन कचहरीका वह कर्मचारी जो मुकदमा शुरू होनेपर वादी, प्रतिवादी और गवाहके नामकी पुकार करता था । वि० श्रावण मास-संबंधी ।

श्रावणिका–स्त्री० (सं०) ओषधि विशेष ।

श्रावणी–स्त्री० (सं०) चांद्र श्रावण मासकी पूर्णिमा या उस दिन किया जानेवाला विशिष्ट धार्मिक कृत्य; रक्षा-बंधनका त्योहार, सलोनो; दध्याली; मुंडी ।

श्रावन*–पु० गिराने, वहानेकी क्रिया ।

श्रावना*–स० क्रि० वहाना, टपकाना ।

श्रावस्त–पु० (सं०) राजा श्रावकके पुत्र (इन्होंने ही श्रावस्ती नगरी बसायी थी) ।

श्रावस्ति, श्रावस्ती–स्त्री० (सं०) उत्तर कोसलस्थित लवकी पुरी, रामायणमें इसे 'शरावती' कहा गया है । इसे 'धर्मपत्तन' और 'धर्मपुरी' भी कहते हैं । (अब यहाँ 'सहेत-महेत' हैं जो उत्तरी अवधमें हैं । यह बौद्धोंके लिए तीर्थतुल्य है, क्योंकि कुछ दिनोंतक बुद्धने यहाँ निवास किया था) ।

श्रावा–स्त्री० (सं०) माँड़ ।

श्रावित–वि० (सं०) सुनाया गया; कथित ।

श्रावित(तृ)–पु० (सं०) सुनानेवाला ।

श्राविष्ठ–वि० (सं०) श्राविष्ठा नक्षत्र-संबंधी ।

श्रावी(विन्)–पु० (सं०) सज्जी । वि० सुननेवाला ।

श्राव्य–वि० (सं०) सुनने योग्य; घोषित करने योग्य; सूचित किये जाने योग्य ।

श्रित–वि० (सं०) आश्रित; सेवित; पका हुआ; रक्षित ।

श्रितवान्(वत्)–वि० (सं०) आश्रयदाता; सेवक ।

श्रिति–स्त्री० (सं०) आश्रय, सहारा ।

श्रिय*–स्त्री० कल्याण, अभ्युदय ।

श्रियम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको योग्य माननेवाला; घमंडी ।

श्रिया–स्त्री० (सं०) श्रीधर (विष्णु)की पत्नी ।

श्री–स्त्री० (सं०) शोभा, सौंदर्य; संपद्, संपत्ति; विभूति, शान-शौकत; राजोचित गौरव; वेश-विन्यास, वेश-रचना; सजावट; प्रभा; कीर्ति, यश; वृद्धि; सिद्धि; विष्णुकी पत्नी, लक्ष्मी; सरस्वती, वाणी; त्रिवर्ग धर्म, अर्थ, काम; प्रकार; उपकरण, साधन; अधिकार; ऋद्धि नामक ओषधि; लवंग; सरल वृक्ष; कमल; विल्व वृक्ष; श्वेत चंदन; पकाना; एक तरहका तिलक; वेंदी; चंद्रमाकी बारहवीं कला । पु० ब्रह्मा; विष्णु; कुवेर; वैल; रागविशेष; वैष्णवोंका निंबार्क संप्रदाय; आदर-सूचक शब्द जो प्रायः व्यक्तियोंके नामके पूर्व लगाया जाता है; एक एकाक्षर वृत्त । वि० मिश्रित; योग्य; सुंदर; शुभ, श्रेष्ठ । **–कंठ**–पु० शिव; महाकवि भवभूतिका नामांतर; एक राग; कुरुजांगल नामक भूभाग । **–० पदलांछन**–पु० भवभूति । **–०सखा**–पु० कुवेर । **–कंदा**–स्त्री० वंध्या कर्कोटकी । **–कर**–पु० विष्णु; रक्तोत्पल, लाल कमल । वि० कल्याणकारक । **–करण**–पु० लेखनी, कलम; कोसलकी प्राचीन राजधानी । **–कांत**–पु० कमलापति, विष्णु । **–काम**–वि० यश चाहनेवाला । **–कारी(रिन्)**–पु० एक प्रकारका मृग । **–कीर्ति**–स्त्री० तालका एक भेद (संगीत) । **–कृच्छ्र**–पु० व्रतविशेष । **–कृष्ण**–पु० वासुदेव । **–क्षेत्र**–पु० जगन्नाथपुरी । **–खंड**–पु० चन्दन; सिखरन, एक पेय पदार्थ । **–० शैल**–पु० मलयाचल । **–गणेश**–पु० आरंभ । **–गदित**–पु० अठारह उपरूपकोंमेंसे एक । **–गर्भ**–पु० विष्णु; तलवार; राजाका शयना-

गार । **–ग्रह**–पु० पक्षियोंके पानी पीनेका स्थान, पक्षिपानीयस्थान । **–घन**–पु० बुद्ध; दधि, दही । **–चक्र**–पु० त्रिपुर-सुंदरीकी पूजाके लिए एक यंत्र-विशेष (तं०) ; पृथ्वीका वृत्त; इन्द्रक रथका चक्का । **–चंदन**–पु० चन्दनका एक भेद । **–ज**–पु० कामदेव; शांब । **–टंक**–पु० रागविशेष । **–तरु**–पु० सालका पेड़ । **–तल**–पु० एक नरक । **–ताल**–पु० हिंताल । **–तेजा(जस्)**–पु० बुद्ध । **–द**–पु० कुबेर । वि० शोभादायक; श्रीवर्द्धक । **–दयित**–पु० विष्णु । **–दामा(मन्)**–पु० कृष्णके एक सखा; सुदामा । **–द्रुम**–पु० श्री वृक्ष । **–धर**–पु० विष्णु; 'श्रीमद्भागवत' आदि वैष्णव पुराणोंका प्रसिद्ध टीकाकार; एक तीर्थंकर । वि० शोभायुक्त । **–धाम(न्)**–पु० लक्ष्मीके रहनेका स्थान, कमल । **–नंदन**–पु० लक्ष्मी-पुत्र, कामदेव; संगीतमें एक ताल । **–नगर**–पु० कश्मीरकी राजधानी; उत्तराखंडका एक नगर । **–नाथ**–पु० विष्णु । **–निकेत**–पु० कमल; सरलनियास; सोना; वैकुण्ठ । **–निकेतन**–पु० सरल-निर्यास; लक्ष्मीका वासस्थान; वैकुण्ठ; विष्णु । **–नितंबा**–स्त्री० राधा । **–निधि**–पु० विष्णु । **–निवास**–पु० विष्णु; लक्ष्मीका निवासस्थान; विष्णुलोक, वैकुण्ठ । **–पंचमी**–स्त्री० वसंतपंचमी जो माघ-शुक्ला पंचमीको पड़ती है । **–पति**–पु० लक्ष्मीपति, विष्णु; राजा, नृपति । **–पथ**–पु० राजमार्ग । **–पदी**–स्त्री० मल्लिका । **–पद्म**–पु० कृष्ण । **–पर्ण**–पु० कमल; अग्निमंथ वृक्ष । **–पर्णिका**–स्त्री० कट्फल वृक्ष । **–पर्णी**–स्त्री० गंभारी वृक्ष; कट्फल वृक्ष; शाल्मली वृक्ष; हठवृक्ष; अग्निमंथ वृक्ष । **–पा**–वि० समृद्धिकी रक्षा करनेवाला । **–पिष्ट**–पु० सरल वृक्षका रस, गोंद, गंधाबिरोजा । **–पुत्र**–पु० कामदेव; इंद्रका घोड़ा; घोड़ा; चन्द्रमा । **–पुष्प**–पु० लवंग; पद्मकाष्ठ; श्वेत कमल । **–प्रद**–वि० कल्याणकारक । **–प्रसून**–पु० लवंग । **–प्रिय**–पु० हरताल । **–फल**–पु० बिल्व वृक्ष, बेलका पेड़; राजादनी वृक्ष, खिरनीका पेड़; शरीफा; आँवला; कच्ची सुपारी; लक्ष्मीकी कृपाका फल, धन, द्रव्य; नारियल । **–फला**–स्त्री० नीली; क्षुद्र कारवेल्ली । **–फलिका**–स्त्री० क्षुद्र कारवेल्ली; महानीली वृक्ष । **–फली**–स्त्री० आमलकी, आँवला; नीली । **–बंधु**–पु० अमृत; चंद्रमा । **–बन**–पु० वृन्दावन । **–भक्ष**–पु० मधुपर्क । **–भद्रा**–स्त्री० भद्रमुस्तक । **–भ्राता (तृ)**–पु० चंद्रमा; घोड़ा (समुद्रमंथनके समय श्री–लक्ष्मीके साथ उत्पन्न होनेके कारण ये उनके भ्राता कहलाते हैं) । **–मंजरी**–स्त्री० तुलसी । **–मंडप**–पु० (प्रेजेंस चेम्बर) प्राचीन भारतमें महलका वह भाग जहाँ राजा लोग अतिथियोंसे भेंट करते थे । **–मद**–पु० धनका घमंड । **–मलापहा**–स्त्री० तंबाकू, धूम्रपत्रा । **–मस्तक**–पु० रसोन, लहसुन । **–माल**–पु० विष्णुकी माला; गलेका एक आभूषण । **–मुख**–पु० शोभायुक्त आनन, मुख; विष्णुका मुख, वेद; कालचक्रका सातवाँ वर्ष; पत्रमें लिखित 'स्वस्ति' आदि वाचक 'श्री' शब्द; रवि, सूर्य (केशव) । **०–वचन**–पु० भगवद्वाक्य । **–मूर्ति**–स्त्री० विष्णु या लक्ष्मीकी प्रतिमा; प्रतिमा । **–युक्त,–युत**–वि० लक्ष्मीवान्; सौंदर्यपूर्ण; आदरसूचनार्थं (जीवित) पुरुषोंके नामके पूर्व लगाया जानेवाला विशेषण । **–रंग**–पु० विष्णु; तालका एक भेद (संगीत) । **–० पट्टन**–पु० मैसूर राज्यांतर्गत एक तीर्थस्थान जहाँ 'रंगस्वामी'का मंदिर है । **–रमण**–पु० विष्णु; एक संकर राग । **–रवन***–पु० विष्णु । **–रस**–पु० तारपीन; रंजन, गंधाबिरोजा । **–राग**–पु० रागविशेष । **–राम**–पु० दशरथ-पुत्र तथा सीतापति राम । **–० नवमी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला नवमी (यह रामकी जन्म-तिथि मानी जाती है) । **–लता**–स्त्री० महाज्योतिष्मती; बड़ी मालकँगनी । **–वत्स**–पु० विष्णु; विष्णुके वक्षस्थलपर दाहिनी ओर सफेद बालोंकी भँवरी, यह अँगूठेभरकी मानी जाती है । भृगुके द्वारा विष्णुके वक्षपर लात मारे जानेका यह चिह्न है; अर्हतोंका एक ध्वज; सुरंग, सेंधका एक भेद । **–० धारी (रिन्)**, **–० भृत्**, **–० लक्ष्मा(क्ष्मन्)**, **–० लांछन**–पु० विष्णु । **–वत्सक**, **–वत्सकी(किन्)**–पु०एक प्रकारका घोड़ा जिसकी छातीपर सफेद बालोंकी भँवरी होती है । **–वत्सांक**–पु० विष्णु । **–वर**–पु० विष्णु । **–वराह**–पु० वराहावतार धारण करनेवाले विष्णु । **–वर्द्धन,–वर्धन**–पु० शिव । **–वल्लभ**–पु० विष्णु; जो व्यक्ति लक्ष्मीका प्रिय है, धनी व्यक्ति । **–वल्ली**–स्त्री० एक प्रकारकी कंटकप्रधान लता; मल्लिकाका एक भेद । **–वाटी**–स्त्री० एक प्रकारकी नागवल्ली । **–वारक**–पु० सितावर नामक शाक । **–वास**–पु० विष्णु; शिव; कमल; सरल वृक्षका रस, तारपीनका तेल । **–वासा(सस्)**–पु० तारपीन । **–विद्या**–स्त्री० एक महाविद्या, त्रिपुरसुंदरी (तं०) । **–वृक्ष**–पु० अश्वत्थ वृक्ष; बिल्व वृक्ष; घोड़ेकी छातीपरकी सफेद बालोंकी एक प्रकारकी भँवरी । **–वृक्षक**–पु० घोड़ेकी छातीपरकी सफेद बालोंकी एक प्रकारकी भँवरी । **–वृद्धि**–स्त्री० बोधिवृक्षकी एक देवी; धन,ऐश्वर्यकी वृद्धि; उन्नति । **–वेष्ट,–वेष्टक**–पु० तारपीन; रंजन । **–वैष्णव**–पु० रामानुज; विशिष्टाद्वैत संप्रदायके वैष्णव । **–संज्ञ**–पु० लौंग, लवंग ।**–संपदा**–स्त्री० ऋद्धि नामक ओषधि । **–सदा**–स्त्री० (हिं०) रात्रि । **–समाध**–पु० एक राग । **–सहोदर**–पु० (समुद्र-मंथनमें लक्ष्मीके साथ उत्पन्न होनेवाला) चन्द्रमा । **–सूक्त**–पु० एक वैदिक सूक्तका नाम । **–हट्ट**–पु० सिलहट नामक एक नगर । **–हत**–वि० सौंदर्यहीन; कांतिहीन । **–हरि**–पु० विष्णु । **–हर्ष**–पु० संस्कृतके प्रसिद्ध महाकाव्य 'नैषधीयचरितम्'के रचयिता । **–हस्तिनी**–स्त्री० नागदंती नामक वृक्ष; सूर्य-मुखीका पौधा ।

श्रीमंत–वि० धनी, लक्ष्मीवान्; सौंदर्य-शाली । पु० एक शिरोभूषण ।

श्रीमती–स्त्री० (सं०) राधिका; स्त्रियोंके नामके पूर्व जोड़ा जानेवाला आदरसूचक शब्द; पुरुषोंके नामके पूर्व आदरसूचनार्थ लगाये जानेवाले 'श्रीमान्' शब्दका स्त्रीलिंग रूप जिससे उनकी पत्नीका बोध होता है; पत्नी ।

श्रीमान्(मत्)–वि० (सं०) शोभायुक्त; धनी, संपत्तिशाली, संपन्न, गौरवशाली । पु० विष्णु; शिव; कुबेर; तिलक वृक्ष; पीपलका पेड़; पुरुषोंके नामके पूर्व आदरसूचनार्थ लगाया जानेवाला शब्द ।

श्रील–वि० (सं०) लक्ष्मीवान्; शोभायुक्त; जो अश्लील न हो ।

श्रीवंत*–वि० श्रीमंत, श्रीमान् ।

श्रीश–पु० (सं०) लक्ष्मीपति विष्णु ।

श्रुग्दारु–पु० (सं०) विकंकत वृक्ष ।

श्रुघ्निका–स्त्री० (सं०) सर्जिकाक्षार, सज्जीखार ।

श्रुत–वि० (सं०) सुना हुआ, आकर्णित; विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात; ज्ञात । पु० परम्परासे सुनकर रक्षित वेद; शास्त्र; श्रवणका विषय । **–काम**–वि० वेदादिके ज्ञानका इच्छुक । **–कीर्ति**–स्त्री० जनकके भाई कुशध्वजकी कन्या जिसका विवाह शत्रुघ्नसे हुआ था । वि० कीर्तियुक्त; जिसकी कीर्ति सुनी गयी हो । पु० अर्जुनका एक पुत्र । **–केवली–(लिन्)**–पु० जैन अर्हतोंका एक वर्ग । **–देवी**–स्त्री० वाणी, सरस्वती । **–धर**–पु० कान । वि० सुनकर स्मरण रखनेवाला । **–निगदी(दिन्)**–वि० किसी बात, मजमून आदिको एक बार सुनकर ज्योंका त्यों कह देनेवाला । **–निष्क्रय**–पु० शिक्षाशुल्क । **–पूर्व**–वि० पहले सुना हुआ, पूर्वश्रुत । **–विज्ञ**–वि० वेद, शास्त्रका पंडित । **–वित्त**–वि० वैदिक ज्ञानका धनी, वेदका पंडित । **–वृद्ध**–वि० विद्वान् । **–शील**–वि० जिसका शील, सदाचार विश्रुत, प्रसिद्ध हो । पु० विद्या, ज्ञान और सदाचरण । **–श्रवा(वस्)**–स्त्री० शिशुपालके पिता । **–श्रवानुज**–पु० शनि ग्रह । **–श्रोणी**–स्त्री० द्रवंती ।

श्रुतादान–पु० (सं०) ब्रह्मवाद ।

श्रुताध्ययन–पु० (सं०) वेदका अध्ययन ।

श्रुतानुश्रुत–पु० (हियरसे) बहुतोंसे सुनी हुई बात, गप्प, किंवदंती । वि० बहुतोंसे सुना हुआ; इधर-उधर जिसकी चर्चा हो । **–साक्ष्य**–पु० (हियरसे एव्हीडेंस) विभिन्न लोगोंकी सुनी हुई बातोंपर आधृत साक्ष्य ।

श्रुतान्वित–वि० (सं०) वेदज्ञ, वेदका ज्ञाता, जानकार; शास्त्रज्ञ ।

श्रुतायु–पु० (सं०) एक सूर्यवंशीय नरेश ।

श्रुतार्थ–पु० (सं०) सुनी हुई या जबानी कही हुई बात ।

श्रुति–स्त्री० (सं०) सुननेकी क्रिया; कान; शब्द, ध्वनि; ज्ञान; वार्ता, बातचीत; किंवदंती, जनश्रुति; श्रवण नक्षत्र; चारों वेद (स्मृतिसे भिन्न; परवर्ती कालमें उपनिषदोंकी भी गणना श्रुतिमें

होने लगी)। नाम; संज्ञा; विद्वत्ता; विद्या; कर्दम ऋषिकी पत्नी; चारकी संख्या; अनुप्रासका एक प्रकार; एक स्वरसे दूसरे स्वरपर जाते समयका अत्यंत सूक्ष्म स्वरांश (संगीत); समकोण त्रिभुजकी कर्णरेखा, सामनेकी रेखा। **–कट**–पु० साँप; तपस्या। **–कटु,–दुष्ट**–वि० कर्णकटु, कानोंको खटकने, कठोर लगनेवाला। पु० एक काव्य-दोष जो कर्णकटु वर्णों, 'ट' वर्ग आदिके प्रयोगसे आ जाता है। **–कथित**–वि० वेदोंमें कहा गया या बताया गया। **–कीर्ति**–स्त्री० दे० 'श्रुतकीर्ति'। **–गम्य,–गोचर**–वि० जो सुना जा सके, श्रवणेंद्रियग्राह्य; श्रुत, सुना हुआ। **–जीविका**–स्त्री० धर्मशास्त्र। **–धर**–वि० केवल सुनकर स्मरण रखनेवाला, श्रवणमात्रसे अभ्यास करनेवाला; वेदज्ञ; शास्त्रज्ञ; सुननेवाला। **–निगदी(दिन्)**–वि० 'श्रुतनिगदी'। **–निदर्शन**–पु० वेदका आदेश, वेदका दृष्टांत। **–पथ**–पु० कर्ण-कुहर, श्रवणेंद्रियका मार्ग; वेदमार्ग, वेद-विहित पथ। **–पुट**–पु० कर्णरंध्र। **–प्रमाण**–पु० वेदका प्रमाण, वेदकी स्वीकृति। **–प्रसादन**–वि० दे० 'श्रुतिमधुर'। **–प्रामाण्य**–पु० वेदकी प्रामाणिकता, वेदोंकी स्वीकृति। **–भाल**–पु० चतुरानन, ब्रह्मा। **–मंडल**–पु० कानका बाहरी घेरा। **–मधुर**–वि० कानको मीठा लगनेवाला, कर्णसुखद। **–मुख**–पु० ब्रह्मा। **–मूल**–पु० कर्णमूल, कानकी जड़; वेदका मूल पाठ, वेद-संहिता। **–मूलक**–वि० वेदके आधारपर स्थित, वेदाधृत। **–रंजक,–रंजन**–वि० कानोंको आनंददायक, कर्ण-मधुर। **–लेख**–पु० (डिक्टेशन) किसीके बोले हुए वाक्योंको सुनकर लिखना या इस तरह जो कुछ लिखा जाय, आलेख, इमला। **–वर्जित**–वि० बहिरा, बधिर; जो वेद द्वारा विहित न हो; जो वेदज्ञ न हो। **–विवर**–पु० कर्णकुहर। **–विषय**–पु० श्रवणेंद्रियका विषय, शब्द, ध्वनि; वेदगत विषय, वेदवर्णित वस्तु। **–वेध**–पु० कर्णवेध संस्कार, कनछेदन। **–व्यवस्था**–स्त्री० बड़े बड़े कमरोंमें ऐसी व्यवस्था जिससे आवाज गूँजे नहीं और साफ साफ सुनाई दे (एकाउस्टिक्स); श्रवणगुण। **–सागर**–पु० विष्णु। **–सुख**–वि० कानोंके लिए सुखद। पु० श्रवणेंद्रिय द्वारा प्राप्त आनंद, संगीत आदि द्वारा मिली कर्ण-तृप्ति। **–० कर,–०द**–वि० कर्णमधुर, श्रवणानंददायक। **–स्फोट**–पु० सान्निपातिक ज्वर, मियादी बुखारके अंतमें कानकी जड़में होनेवाला फोड़ा जो प्रायः प्राणघातक होता है; कानकी जड़ या इसके भीतरका फोड़ा। **–स्फोटा**–स्त्री० कर्ण-स्फोटा लता। **–स्मृति**–स्त्री० वेद और धर्मशास्त्र। **–हर, हारी(रिन्)**–वि० श्रवणेंद्रियको आकृष्ट करनेवाला (जैसे–सगीत आदि)।

श्रुत्य–वि० (सं०) श्रवणीय, सुना जाने योग्य; विश्रुत, विख्यात। पु० नामवरीका काम।

श्रुत्यनुप्रास–पु० (सं०) अनुप्रासका एक भेद जिसमें मुखके एक ही स्थानसे उच्चरित होनेवाले व्यंजनोंकी कई बार आवृत्ति हो।

श्रुव–पु० (सं०) यज्ञ, याग; स्रुवा।

श्रुवा–स्त्री० (सं०) स्रुवा; मूर्वा। **–वृक्ष**–पु० विकंकत वृक्ष।

श्रूयमाण–वि० (सं०) जो सुना जाय; सुना जाता हुआ; प्रसिद्ध।

श्रेटी, श्रेढी–स्त्री० (सं०) (प्रोग्रेशन) भिन्न जातीय द्रव्योंको मिलानेके लिए गणनांगभेद (लीलावती); संख्या आदिकी नियमित वृद्धि या इसका ह्रास (ग०)। **–फल**–पु० श्रेढीका योग, जोड़। **–व्यवहार**–पु० श्रेढी-गणनाका एक ढंग (लीलावती)।

श्रेढिक–वि० (सं०) (प्रोग्रेसिव) प्रगतिशील; क्रमशः आगे बढ़ता हुआ; श्रेढी-संबंधी, श्रेढीसे युक्त।

श्रेणि–स्त्री० (सं०) विच्छेद-रहित पंक्ति, शृंखला (सीरीज़) रेखा; समूह, संघ (कारपोरेशन); दल, वर्ग (क्लास); एक ही व्यापार, शिल्पकार्य आदि करनेवालोंका संघटन, संघ; जल-पात्र, बालटी; जंजीर; सीढ़ी। **–बद्ध**–वि० पंक्तिबद्ध।

श्रेणिक–पु० (सं०) सामनेका दाँत।

श्रेणिका–स्त्री० (सं०) तंबू; एक वृत्त।

श्रेणी–स्त्री० (सं०) दे० 'श्रेणि'। **–धर्म**–पु० किसी संप्रदाय, वर्ग, दल आदिके नियम; व्यापारिवर्गकी रीति, इसका नियम। **–पाद**–पु० श्रेणी-प्रधान राष्ट्र, जनपद। **–प्रमाण**–पु० किसी श्रेणीके नियमोंको मानकर चलनेवाला व्यापारी, शिल्पी। **–बंध**–पु० पंक्ति बनाना। **–बद्ध**–वि० एक पंक्तिमें स्थित; एक शृंखलामें बँधा हुआ; दलबद्ध। **–भुक्त**–वि० श्रेणीके बीच आया, मिला हुआ, श्रेणीबद्ध। **–समाजवाद**–पु० (गिल्ड सोशलिज्म) समाजवादका वह सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक उद्योगके संचालन तथा लाभादिका नियंत्रण उसके सदस्योंके हाथमें हो।

श्रेणीकरण–पु० (सं०) क्रमसे सजाने, लगानेका कार्य, वर्गीकरण; क्रमस्थापन; काटिबंध।

श्रेणीकृत–वि० (सं०) क्रमसे लगाया हुआ, वर्गीकृत।

श्रेणीयन–पु० बिकनेवाली वस्तुओं आदिका उनकी कोटि या अच्छाईके अनुसार विभाजन।

श्रेय(स्)–पु० (सं०) धर्म; मुक्ति (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अर्थात् चतुर्वर्गको भी श्रेय कहा गया है); शुभ, मंगल; कल्याण; शुभ अवसर; यश; सुख; पुण्य (श्रेयान्)। वि० अपेक्षाकृत अच्छा, बेहतर; श्रेष्ठ; उपयुक्त; हितकर, मंगलमय। **–मार्ग**–पु० कल्याण मार्ग; मोक्षदाता मार्ग।

श्रेयसी–स्त्री० (सं०) हरीतकी, हर्र; पाठा; गजपिप्पली; रास्ना। वि० स्त्री० मंगलमयी।

श्रेयस्कर–वि० (सं०) मंगलकारी, कल्याणकर। (स्त्री० 'श्रेयस्करी')।

श्रेष्ठ–वि० (सं०) सबसे अच्छा, अति उत्तम, उत्कृष्ट; सर्वप्रधान; वयमें सबसे बड़ा, ज्येष्ठ; अत्यंत प्रिय। पु० गायका दूध; ब्राह्मण; राजा; विष्णु; शिव; कुबेर। **–काष्ठ**–पु० शाक वृक्ष, सागौनका पेड़।

श्रेष्ठा–स्त्री० (सं०) (सौंदर्य, शील आदिमें) उत्तम नारी; स्थलपद्मिनी; मेदा ओषधि।

श्रेष्ठाम्ल–पु० (सं०) वृक्षाम्ल; इमली।

श्रेष्ठाश्रम–पु० (सं०) गृहस्थाश्रम (इस आश्रमको श्रेष्ठ इसलिए कहा गया कि इसमें रहकर तीनों आश्रमोंका पालन-पोषण हो सकता है); गृहस्थ।

श्रेष्ठी(ष्ठिन्)–पु० (सं०) व्यापारियों, व्यवसायियों, बनियोंका प्रधान; सेठ; अत्यंत धनी व्यक्ति। **–चत्वर**–पु० (सं०) वह चबूतरा जिसपर व्यापारियोंका पारस्परिक लेनदेन होता था।

श्रोण–वि० (सं०) पंगु, लँगड़ा। पु० एक रोग; * शोण, लहू।

श्रोणा–स्त्री० (सं०) माँड़; कांजिक, काँजी; श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि–स्त्री० (सं०) कटि, कमर; नितंब; मार्ग। **–तट**–पु० नितंबकी ढाल। **–देश**–पु० नितंबवाला क्षेत्र। **–फल,–फलक**–पु० कटि-प्रदेश। **–बिंब**–पु० गोल नितंब; कमर-पट्टा। **–सूत्र**–पु० मेखला; कमरसे लटकती हुई तलवार आदिका बंधन।

श्रोणिका, श्रोणीका–स्त्री० (सं०) नितंब।

श्रोणित*–पु० दे० 'शोणित'।

श्रोणी–स्त्री० (सं०) दे० 'श्रोणि'; मध्यभाग। **–फल**–पु० नितंब। **–भार**–पु० नितंबोंका भार। **–सूत्र**–पु० करधनी।

श्रोतःआपत्ति–स्त्री० (सं०) साधकका निर्वाणके श्रोतमें पड़ जाना, निर्वाणेच्छुक साधककी प्रथमावस्था जिसमें उसके सांसारिक माया-मोह-बंधन कम होने लगते हैं (बौ०)।

श्रोत(स्)–पु० (सं०) कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय; इंद्रिय (जिनके मार्गसे शरीरके मल तथा आत्मा निकलती है); हाथीकी सूँड़; (नदीकी) धारा, स्रोत।

श्रोतव्य–वि० (सं०) श्रवणीय, श्रव्य, जो सुना जाय, सुनने योग्य।

श्रोता(तृ)–वि०, पु० (सं०) श्रवणकर्ता, सुननेवाला।

श्रोतृवर्ग–पु० (आडिएंस) एक स्थानमें समवेत होकर किसी नेता, उपदेशक, व्याख्याता आदिका भाषण, उपदेश, प्रवचन सुननेवाले समस्त लोग।

श्रोत्र–पु० (सं०) कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय; वेद, श्रुति; वेद-विषयक नैपुण्य। **–कांता**–स्त्री० एक पौधा जो दवाके काम आता है। **–ग्राह्य**–वि० कानों द्वारा जिसका ग्रहण हो; जो सुना जा सकता हो। **–पदवी**–स्त्री० श्रवणक्षेत्र। **–पदानुग**–वि० श्रुतिप्रिय। **–पालि**–स्त्री० कानकी ललरी। **–पेय**–वि० कानों द्वारा ग्रहण

करने योग्य, श्रवणीय । –मार्ग,–वर्त्म(न्)–पु० श्रवणपथ । –मूल–पु० कर्णमूल । –सुख–वि०, पु० दे० 'श्रुतिसुख' । –हीन –वि० बहरा ।

श्रोत्रिय–वि० (सं०) वेदज्ञ, वेदाध्ययनकर्ता । पु० वेदज्ञ ब्राह्मण, वेदाध्ययन करनेवाला ब्राह्मण; ब्राह्मणोंकी एक शाखा ।

श्रोत्रियता–स्त्री० (सं०) श्रोत्रियका धर्म ।

श्रोत्री–पु० दे० 'श्रोत्रिय' ।

श्रोन*–पु० दे० 'शोण' ।

श्रोनित*–पु० दे० 'शोणित' ।

श्रौत–वि० (सं०) श्रवण, कर्ण-संबंधी; वेद, श्रुति-संबंधी; वेदोक्त, वेदसम्मत; यज्ञ-संबंधी । पु० यज्ञाग्नि (जो तीन प्रकारकी होती है–गार्हपत्य, आहवनीय तथा दक्षिण) । –कर्म(न्)–पु० वैदिक कृत्य । –जन्म(न्)–पु० उपनयन संस्कार । –मार्ग–पु० कर्ण-पथ । –सूत्र–पु० कल्प नामक वेदांगका कर्मकांड-संबंधी निर्देशग्रंथ ।

श्रौतश्रव–पु० (सं०) श्रुतश्रवाका पुत्र, शिशुपाल ।

श्रौती–स्त्री० (सं०) पूर्णिमाके दो भेदोंमेंसे एक (सा०) ।

श्रौत्र–पु० (सं०) कर्ण, कान; श्रोत्रियकर्म ।

श्रौन*–पु० दे० 'श्रवण' ।

श्लक्ष्ण–वि० (सं०) अल्प या महीन; चिक्कण, चिकना; कोमल, नरम; मधुर, मनोहर, सुंदर; सच्चा । –त्वक्(च्)–पु० अश्मंतक वृक्ष; सुंदर वल्कल । –पत्रक–पु० आबनूस । –वादी(दिन्)–वि० मधुरभाषी ।

श्लक्ष्णक–वि० (सं०) श्लक्ष्ण । पु० पूगफल, सुपारी ।

श्लथ–वि० (सं०) शिथिल, ढीला; ढीला किया हुआ; छूटा हुआ, बिखरा हुआ (जैसे–बाल); दुर्बल ।

श्लथांग–वि० (सं०) जिसके अंग ढीले या शिथिल हो गये हों ।

श्लाघन–पु० (सं०) (अपनी) प्रशंसा, तारीफ करना; चापलूसी करना । वि० आत्मप्रशंसी ।

श्लाघनीय–वि० (सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय ।

श्लाघा–स्त्री० (सं०) प्रशंसा; चापलूसी; आत्म-प्रशंसा, आत्मगुण-कथन; अभिलाष; परिचर्या ।

श्लाघित–वि० (सं०) प्रशंसित ।

श्लाघ्य–वि० (सं०) श्लाघनीय, प्रशस्य ।

श्लिकु–पु० (सं०) लंपट; दास; आश्रित व्यक्ति; ज्योतिष ।

श्लिषा–स्त्री० (सं०) आलिंगन; संयोग ।

श्लिष्ट–वि० (सं०) आलिंगित, परिरंभित; सम्मिलित, संयुक्त (सिन्थेटिक); श्लेषयुक्त, द्वयर्थक, अनेकार्थक । –रूपक–पु० वह अलंकार जहाँ श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपकका विधान किया गया हो । –वर्त्म(न्)–पु० पलकोंका चिपकना ।

श्लिष्टि–स्त्री० (सं०) आलिंगन; सटाव, लगाव ।

श्लिष्टोक्ति–स्त्री० (सं०) द्वयर्थक बात ।

श्लीपद–पु० (सं०) पैर फूलनेका रोग, फीलपाँव, हाथी-पाँव । –प्रभव–पु० आम्र वृक्ष ।

श्लीपदापह–पु० (सं०) पुत्रजीवका पेड़ ।

श्लीपदी(दिन्)–वि० (सं०) फीलपाँवका रोगी ।

श्लील–वि० (सं०) जो अश्लील न हो; शिष्ट समाजमें दिखाये या पढ़े जाने योग्य, सभ्योचित; श्रेष्ठ; शोभायुक्त; लक्ष्मीवान् ।

श्लेष–पु० (सं०) आलिंगन; संयोग; लगाव; एक शब्दालंकार जिसमें एक शब्दके कई अर्थों द्वारा काव्यमें चमत्कार उत्पन्न होता, किया जाता है (पैरोनोमेशिया) । –चित्र–पु० कूटचित्र, द्विअर्थक चित्र (सा०) ।

श्लेषोक्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'श्लिष्टोक्ति' ।

श्लेषोपमा–स्त्री० (सं०) एक काव्यालंकार ।

श्लेषी(षिन्)–वि० (सं०) आलिंगन करनेवाला ।

श्लेष्म–'श्लेष्मा(ष्मन्)'का समासगत रूप । –घन–पु० केतकी; जूही । –घ्ना–स्त्री० मल्लिका; केतकी । वि० स्त्री० कफका नाश करनेवाली । –घ्नी–स्त्री० मल्लिका; ज्योतिष्मती; त्रिकटु –सोंठ, पीपर और मिर्च । –ज–वि० श्लेष्मासे उत्पन्न । –भू–पु० फुफ्फुस । –हृ–पु० कट्फल वृक्ष । वि० कफ-नाशक । –हर –वि० कफ नष्ट करनेवाला ।

श्लेष्मक–पु० (सं०) दे० 'श्लेष्मा' ।

श्लेष्मण–वि० (सं०) कफ-संबंधी; कफवाला ।

श्लेष्मणा–स्त्री० (सं०) एक पौधा ।

श्लेष्मल–वि० (सं०) श्लेष्मायुक्त । पु० लिसोड़ेका पेड़ ।

श्लेष्मांतक–पु० (सं०) लिसोड़ेका पेड़, बहुवार वृक्ष ।

श्लेष्मा(ष्मन्)–पु० (सं०) कफ, बलगम; बाँधनेकी रस्सी ।

श्लेष्मात, श्लेष्मातक–पु० (सं०) बहुवार वृक्ष ।

श्लैष्मिक–वि० (सं०) श्लेष्मा, कफ-संबंधी; श्लेष्मा उत्पन्न करनेवाला, कफ पैदा करनेवाला ।

श्लेष्मी(ष्मिन्)–पु० (सं०) गंधाबिरोजा ।

श्लोक–पु० (सं०) यश, कीर्ति (जैसे–पुण्यश्लोक); प्रशंसा या प्रशंसाका विषय; संस्कृतका (प्रशंसात्मक) पद्य; संस्कृतका अनुष्टुप् छंद; ध्वनि; पुकार । –कार–पु० श्लोक बनानेवाला । –बद्ध–वि० छंदोबद्ध ।

श्लोण–पु० (सं०) लँगड़ा आदमी ।

श्वः(श्वस्)–पु० (सं०) आगामी कल ।

श्व–'श्वा(श्वन्)'का समस्त पदोंमें व्यवहृत रूप । –कंटक–पु० व्रात्य और शूद्रासे उत्पन्न संतान । –क्रीडी(डिन्)–पु० (खेलाड़ी) कुत्तोंको पालनेवाला व्यक्ति । –गणिक–पु० शिकारी; कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति । –ग्रह–पु० कुत्ते पकड़नेवाला; बच्चोंको त्रास देनेवाला एक असुर । –जीविका–स्त्री० गुलामी, दासता । –दंष्ट्रक–पु० गोक्षुर, गोखुरू; गोखरूका पौधा । –दंष्ट्रा–स्त्री० कुत्तेकी दाढ़; गोखुरू; गोखुरूका पौधा । –धूर्त–पु० शृगाल, स्यार । –नर–पु० कमीना आदमी; नीच व्यक्ति । –पक्(च्), –पच,–पाक–पु० चांडाल; वधिक, फाँसी देनेवाला; कुत्तेका मांस पकाने, खानेवाला । –पति–पु० कुत्तोंका मालिक, कुत्ते पालनेवाला । –पद–पु० कुत्तेका पैर; कुत्तेके पदचिह्न जैसा निशान । –फाजन–पु० पपरी नामक पौधा । –पुच्छ–पु० कुत्तेकी पूँछ; बिच्छू । –पुच्छा–स्त्री० पिठवन । –फल–पु० बीजपूर नामक नीबू; बीजपूर वृक्ष । –फल्क–पु० अक्रूरके पिता । –भीरु–पु० (कुत्तेसे डरनेवाला) स्यार, शृगाल । –वानर (बेबून)–पु० आफ्रिका और अरबमें मिलनेवाला एक बंदर जिसकी थूथन और दाँत कुत्तेके-से होते हैं । –वृत्ति–स्त्री० (कुत्तेके समान) पराधीन वृत्ति, सेवा, नौकरी; कुत्तेकी भाँति जूठन खाने, चाटने-वाली वृत्ति, पराश्रित रहनेकी आदत । –व्याघ्र–पु० हिंस्र पशु; चीता; बाघ । –सुत,–सुन–पु० कुकरौंधा । –हा(हन्)–पु० शिकारी ।

श्वक–पु० (सं०) भेड़िया ।

श्वभ्र–पु० (सं०) छेद, दरार ।

श्वय, श्वयन–पु० (सं०) सूजन; वृद्धि, स्फीति ।

श्वयथु–पु० (सं०) सूजन, शोथ ।

श्वयीची–स्त्री० (सं०) रोग ।

श्वशुर, श्वशुरक–पु० (सं०) ससुर–पति या पत्नीका पिता ।

श्वशुर्य–पु० (सं०) श्वशुरका पुत्र, पति या पत्नीका भाई–देवर; साला ।

श्वश्रू–स्त्री० (सं०) पति या पत्नीकी माता–सास ।

श्वसन–पु० (सं०) साँस लेना; हाँफना; आह भरना; निःश्वास; पवन, वायु, मदन वृक्ष; एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था । –रंध्र–पु० नाकका छेद ।

श्वसनाशन–पु० (सं०) (हवा ही आहार है जिसका) साँप, सर्प ।

श्वसनीशोथ–पु० दे० 'श्वासनली शोथ' ।

श्वसनेश्वर–पु० (सं०) अर्जुन वृक्ष ।

श्वसनोत्सुक–पु० (सं०) सर्प ।

श्वसान–वि० (सं०) जीवित ।

श्वसित–पु० (सं०) श्वास; आह । वि० श्वास निकालने, ग्रहण करनेवाला; श्वासयुक्त, जीवित; आह भरनेवाला ।

श्वस्तन–वि० (सं०) आगामी कल-संबंधी; भविष्य-संबंधी । (स्त्री० 'श्वस्तनी' ।) पु० आगामी कल; भविष्य ।

श्वस्त्य–वि० (सं०) दे० 'श्वस्तन' ।

श्वा(श्वन्)–पु० (सं०) कुत्ता ।

श्वागणिक–पु० (सं०) कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति, कुत्ता पालकर जीवन-निर्वाह करनेवाला व्यक्ति ।

श्वाग्र–पु० (सं०) कुत्तेकी दुम ।

श्वाण्निक–पु० (सं०) शिकारी; कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति ।

श्वाद–पु० (सं०) दे० 'श्वपाक' ।

श्वान–पु० (सं०) कुक्कुर, कुत्ता; दोहेका एक प्रकार; छप्पयका एक प्रकार । **–चिल्लिका**–स्त्री० बथुआ साग । **–निद्रा**–स्त्री० कुकुर-निँदिया, कुत्तेकी नीँद, कुत्तेकी भाँति तुरत खुल जानेवाली नीँद, गाढ़ी नहीं, हलकी नीँद । **–वैखरी**–स्त्री० कुत्तेका गुर्राना ।

श्वानी–स्त्री० (सं०) कुतिया ।

श्वापद–वि० (सं०) जंगली, बर्बर; डरावना, भयंकर । पु० हिंस्र पशु (जैसे–व्याघ्र, चीता आदि) ।

श्वावित्, श्वाविद्, श्वाविध्–पु० (सं०) शल्य, साही ।

श्वाश्व–पु० (सं०) भैरव (जिनका वाहन कुत्ता है) ।

श्वास–पु० (सं०) नाकसे प्राणवायु, ताजी हवा शरीरके भीतर ले जाने तथा भीतरसे दूषित वायु निकालनेका कार्य, साँस (ब्रेथ); श्वासित; आह; हाँफनेकी क्रिया; वायु; श्वास; दमा नामक रोग (एज़्मा) । **–कष्ट**–पु० साँस लेने और निकालनेकी तकलीफ ('श्वास-कष्ट'का प्रयोग प्रसंगतः 'दमा' रोगके लिए भी होता है) । **–कास**–पु० श्वासयुक्त कास रोग, श्वासजनित खाँसी, दमा । **–क्रिया**–स्त्री० श्वासग्रहण और त्यागका कार्य । **–कुठार**–पु० श्वास रोगकी एक ओषध (आ० वे०) । **–धारण**–पु० दम रोकनेका काम, कुंभक प्राणायाम । **–नली**–स्त्री० (ट्रैकिया) साँस लेने निकालनेकी नली । **–नलीशोथ**–पु० (ब्रान्काइटिस) फेफड़ेकी श्वसनी नलिकाकी भीतरी सतहमें सूजन उत्पन्न होना । **–प्रश्वास**–पु० साँस लेना और निकालना । **–० धारण**–पु० प्राणायाम । **–रोध**–पु० साँस लेनेकी क्रियाको बंद रखना; श्वासका रुद्ध होना, दम घुटना । **–हिक्का**–स्त्री० एक प्रकारकी हिचकी । **–हीन**–वि० मृत । **–हेति**–स्त्री० गाढ़ी नीँद (जिसमें श्वास, दमा थोड़े समयके लिए रुक जाता है) ।

श्वासा*–स्त्री० साँस ।

श्वासारि–पु० (सं०) पुष्करमूल ।

श्वासावरोध–पु० (सं०) (एस्फिकिया) दम घुटना ।

श्वासी(सिन्)–पु० (सं०) वायु; श्वास लेनेवाला प्राणी ।

श्वासोच्छ्वास–पु० (सं०) वेगपूर्वक साँस लेना और बाहर निकालना ।

श्वित–वि० (सं०) श्वेत, सफेद । पु० श्वेतता, सफेदी ।

श्विति–स्त्री० (सं०) श्वेतता, सफेदी ।

श्वित्य, श्वित्न्य–वि० (सं०) श्वेत जैसा, सफेदी लिये हुए ।

श्वित्र–पु० (सं०) श्वेत कुष्ठ, सफेद कोढ़ । **–घ्नी**–स्त्री० पीतपर्णी, वृश्चिकाली । **–हर**–वि० कुष्ठनाशक ।

श्वित्री(त्रिन्)–वि० (सं०) श्वेत कुष्ठ-संबंधी; सफेद कोढ़वाला । पु० श्वेत कुष्ठका रोगी ।

श्वेत–वि० (सं०) सफेद, उज्ज्वल, उजला; बेधब्बेका, निष्कलंक; गौर, गोरा (जैसे–श्वेत जाति) । पु० शुक्ल वर्ण, सफेद रंग (वैज्ञानिकोंका मत है कि श्वेतवर्णमें सातों वर्ण अंतर्भुक्त हैं । सूर्यकी किरणें श्वेत हैं, किंतु इनमें सातों रंग मिलते हैं); चाँदी, रूपा; कौड़ी, कपर्दक; शंख; श्वेत घन, सफेद बादल; शुक्र ग्रह; एक द्वीप; पर्वतविशेष; जीवक नामक ओषधि; सफेद जीरा; शिवका एक अवतार; एक राजा; वराहकी सफेद मूर्ति; स्कंदका एक अनुचर; सहिजन; एक पुच्छल तारा । **–कंटकारी**–स्त्री० श्वेत वर्णके पुष्पसे युक्त कंटकारी । **–कंद**–पु० प्याज । **–कंदा**–स्त्री० अतिविषा, अतीस । **–कपोत**–पु० एक तरहका चूहा; एक सर्प । **–कल्प**–पु० कल्पविशेष । **–कांडा**–स्त्री० सफेद रंगकी दूब । **–काक**–पु० सफेद कौआ–कोई अनहोनी-सी बात । **–कापोती**–स्त्री० एक पौधा । **–किणिही**–स्त्री० शतपत्रा । **–कुंजर**–पु० इंद्रका ऐरावत हाथी; सफेद हाथी । **–कुक्षि**–पु० एक मछली । **–कुष्ठ**–पु० सफेद कोढ़ । **–कृष्णा**–स्त्री० एक विषैला कीड़ा । **–केतु**–पु० बुद्ध; केतु ग्रह; एक ऋषि । **–केश**–पु० रक्त शिग्रु; पका बाल, सफेद बाल । **–कोल**–पु० शफर नामक मत्स्य । **–क्षार**–पु० शोरा । **–गज**–पु० दे० 'श्वेत-कुंजर' । **–गरुत,–गरुत्**–पु० (सफेद पंखोंवाला) हंस । **–गुंजा**–स्त्री० सफेद रंगकी घुँघची । **–घंटा**–स्त्री० नागदंती । **–चंदन**–पु० सफेद चंदन । **–चरण**–पु० एक पक्षी । **–चिलिका,–चिल्ली**–स्त्री० एक साग । **–च्छत्र**–पु० सफेद छाता । वि० सफेद छत्रवाला । **–च्छद**–पु० हंस; बनतुलसी । **–जीरक**–पु० सफेद जीरा । **–टंकक,–टंकण**–पु० सादा सोहागा । **–दूर्वा**–स्त्री० सफेद दूब । **–द्युति**–पु० चंद्रमा । **–द्रुम**–पु० वरुण वृक्षका एक भेद । **–द्विप**–पु० दे० 'श्वेत-कुंजर' । **–द्वीप**–पु० चंद्रद्वीप; वैकुंठ नामक विष्णु-धाम; यूरोपका 'ह्वाइट आइसलैंड' । **–धातु**–स्त्री० खड़िया मिट्टी; सफेद रंगका धातु । **–धामा–(मन्)**–पु० चंद्रमा; कपूर; समुद्रफेन; अपामार्ग; अपराजिता । **–नील**–पु० बादल । **–पटल**–पु० जस्ता । **–पत्र**–पु० हंस; किसी वार्ता, संधि-चर्चा आदिके अंतमें उसमें तय हुई बातोंकी (लिखित) घोषणा (ह्वाइट पेपर) (राजनीति) । **–०रथ**–पु० ब्रह्मा (श्वेतपत्र, हंस जिनका रथ–वाहन है) । **–पर्णा**–स्त्री० वारिपर्णी । **–पर्णास**–पु० श्वेत तुलसी । **–पाद**–पु० शिवका एक गण । **–पिंग**–पु० सिंह । **–पिंगल**–पु० सिंह; महादेव । **–पिंगलक**–पु० सिंह । **–पुष्प**–पु० सिंधुवार वृक्ष; सफेद फूल । **–पुष्पक**–पु० करवीर वृक्ष । वि० श्वेत पुष्पवाला । **–पुष्पा**–स्त्री० घोषातकी; नागदंती; मृगेर्वारु । **–पुष्पिका**–स्त्री० पुत्रदात्री लता; महाशणपुष्पिका । **–प्रदर**–पु० (ल्यूकोरिया) प्रदरका एक भेद जिसमें जननेंद्रियसे सफेद रंगका गाढ़ा, बदबूदार स्राव होता है (नारी रोग) । **–प्रस्तर**–पु० श्वेत मर्मर, सफेद संगमर्मर । **–बर्बर**–पु० एक प्रकारका चंदन । **–बिंदुका**–स्त्री० सफेद धब्बोंवाली (अतः विवाहके अयोग्य) लड़की । **–बुह्ना**–स्त्री० वनतिक्ता । **–भंडा**–स्त्री० श्वेत अपराजिता । **–भानु**–पु० चाँद, चंद्रमा । **–भिक्षु**–पु० श्वेत वस्त्रधारी सन्न्यासी । **–भुजंग**–पु० ब्रह्माका एक अवतार । **–मंडल**–पु० एक तरहका सर्प । **–मंदारक**–पु० सफेद आक । **–मध्य**–पु० मोथा । **–मयूख**–पु० चंद्रमा । **–मरिच**–पु० सहिजनका बीया; सफेद मिर्च । **–माल**–पु० धूम, धुआँ; बादल, मेघ । **–मूल**–पु०,**–मूला**–स्त्री० पुनर्नवाका एक भेद । **–रंजन**–पु० सीसक, सीसा नामकधातु । **–रक्त**–पु० पाटल वर्ण, गुलाबी रंग । **–रथ**–पु० शुक्र नामक ग्रह । **–रस**–पु० मट्ठा । **–राजी**–स्त्री० चचेंड़ा, चिचिंड़ा । **–रोचि(स्)**–पु० चंद्र, चाँद । **–रोहित**–पु० गरुड़; एक प्रकारका पौधा जिसका फूल श्वेत और फल लाल होता है । **–लोध्र**–पु० पट्टिका लोध्र, पठानी लोध । **–वक्त्र**–पु० स्कंदका एक अनुचर । **–वचा**–स्त्री० शुक्ल वचा, सफेद वच; अतीस, अतिविषा । **–वल्कल**–पु० गूलरका पेड़ । **–वाजी(जिन्)**–पु० चंद्रमा; सफेद घोड़ा; अर्जुन; कपूर । **–वाराह**–पु० एक कल्प । **–वासा(सस्)**–पु० श्वेत वस्त्रधारी सन्न्यासी । **–वाह**–पु० इंद्र; अर्जुन । **–वाहन**–पु० अर्जुन; इंद्र; शिवका एक रूप; चंद्र; कर्पूर; मकर । **–वाही(हिन्)**–पु० अर्जुन । **–वृक्ष**–पु० वरुण वृक्ष । **–शुंग,–शृंग**–पु० यव, जौ । **–शूरण**–पु० बनसूरन; एक प्रकारकी तरकारी । **–सर्प**–पु० वरुण वृक्ष; सफेद सर्प । **–सार**–पु० खदिर, खैर; (स्टार्च) सफेद सत्त जैसा खाद्यतत्त्व जो आलू, चावल इत्यादिमें अधिक मात्रामें पाया जाता है (कपड़ोंपर कलफ करनेमें इसका प्रयोग किया जाता है) । **–सुरसा**–स्त्री० शुक्ल शेफालिका । **–स्पंदा**–स्त्री० अपराजिता । **–हय**–पु० इंद्रका उच्चैःश्रवा घोड़ा; सफेद घोड़ा; अर्जुन; इंद्र । **–हस्ती(स्तिन्)**–पु० इंद्रका ऐरावत हाथी ।

श्वेतक–पु० (सं०) रजत, चाँदी; वराटक, कौड़ी; एक सर्पराजका नाम । वि० श्वेत गुणयुक्त, सफेद-सा ।

श्वेतांक–पु० (वाटर-मार्क) कागजके भीतर, उसकी बनावटमें ही, विशेष प्रक्रिया द्वारा बनाया हुआ सफेद-सा चिह्न, छाप या अक्षरावली ।

श्वेतांकित–वि० (वाटरमार्क्ड) जिसपर श्वेतांक बना हो ।

श्वेतांग–वि० (सं०) जिसके शरीरका रंग सफेद हो, गौरवर्णका, गौरांग ।

श्वेतांबर–पु० (सं०) श्वेत, सफेद वस्त्र; जैनोंके एक प्रमुख संप्रदायका नाम (दूसरे प्रमुख संप्रदायका नाम 'दिगंबर' है)।

श्वेतांशु–पु० (सं०) दे० 'श्वेत-मयूख'।

श्वेता–वि० स्त्री० (सं०) शुभ्रा, श्वेत वर्ण, सफेद रंगवाली। स्त्री० शरीरका तृतीय त्वक्, शरीरके चमड़ेकी तीसरी तह; वराटिका, कौड़ी; काष्ठपाटला; शंखिनी; अतिविषा, अतीस; सितापराजिता; श्वेत कंटकारी, पाषाणभेदिनी; श्वेत दूर्वा; वंशलोचन; मिस्री; शिला-वल्कल; श्वेत वृहती; स्फटी, फिटकिरी; अग्निकी एक जिह्वा।

श्वेताक्ष–पु० (सं०) सोम लताका एक भेद।

श्वेताभ–वि० (सं०) श्वेत कांतिसे संयुक्त।

श्वेताम्लि, श्वेताम्ली–स्त्री० (सं०) इमली।

श्वेतार्क–पु० (सं०) शुक्लार्क वृक्ष।

श्वेतार्चि(स्)–पु० (सं०) चंद्रमा।

श्वेतावर–पु० (सं०) सितावर शाक।

श्वेतालु–पु० (सं०) महिष्कंद।

श्वेताश्व–पु० (सं०) अर्जुन।

श्वेताश्वतर–पु० (सं०) एक उपनिषद्का नाम; कृष्ण यजुर्वेदकी एक शाखाका नाम।

श्वेताह्वा–स्त्री० (सं०) श्वेत पाटला।

श्वेतिका–स्त्री० (सं०) सौंफ।

श्वेतित–वि० (सं०) सफेद किया हुआ।

श्वेतिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) श्वेतता, शुभ्रता, शुक्लता, सफेदी।

श्वेतोदर–पु० (सं०) कुबेर; एक सर्प; एक पर्वत।

श्वेतौही–स्त्री० (सं०) इंद्रपत्नी; इंद्राणी, शची।

श्वेत्र–पु० (सं०) श्वेत कुष्ठ।

श्वैत्य–पु० (सं०) शुभ्रता, श्वेतता, सफेदी; श्वेत कुष्ठ।

श्वैत्र, श्वैत्र्य–पु० (सं०) श्वेत कुष्ठ।

ष

ष–नागरी वर्णमालाका इकतीसवाँ और ऊष्मवर्गका दूसरा व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारणस्थान मूर्द्धा है, इसलिए इस मूर्द्धन्य ष कहते हैं। हिंदी-भाषामें संस्कृतभाषाके विपरीत इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा न रहकर तालु रह गया है, अतः इसमें 'ष'का काम 'श'की ध्वनि दे देता है। व्रज और अवधीमें यह ध्वनि 'ख'के रूपमें परिवर्तित हो गयी है।

ष्वंजन–पु० आलिंगन, मिलन।

षंड–पु० (सं०) बैल, साँड़; नपुंसक, हिजड़ा; ढेर, राशि; समूह, झुंड; भेड़ों आदिका झुंड; एक नाग; पद्म-समूह।

षंडक–पु० (सं०) नपुंसक, हिजड़ा।

षंडाली–स्त्री० (सं०) तालाब, ताल; बदचलन औरत, व्यभिचारिणी; तेलका एक मान, छटाँक।

षंढ–पु० (सं०) नपुंसक, क्लीब; क्लीब लिंग; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–तिल**–पु० वन्ध्य तिल; (ला०) निकम्मा आदमी। **–योनि**–स्त्री० दे० 'षंढीयोनि'। **–वेष**–वि० नपुंसकके वेषमें रहनेवाला।

षंढा–स्त्री० (सं०) पुरुष जैसी प्रवृत्तिवाली स्त्री, मरदानी औरत।

षंढिता–स्त्री० (सं०) दे० 'षंडयोनि'।

षंडीयोनि–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसमें नारीत्व न हो, न तो स्तनोंका विकास हुआ हो और न रजःस्राव होता हो।

ष–पु० (सं०) कच, केश, बाल; स्वर्ग; बुद्धिमान्, विद्वान् व्यक्ति; निद्रा; अंत; शेष, बची वस्तु; ज्ञान-हानि; हानि, ध्वंस; चूचुक; स्वर्ग; मोक्ष; गर्भविमोचन; गर्भस्राव; भ्रूण; सहिष्णुता, धैर्य। वि० विज्ञ, विद्वान्; बुद्धिमान्; श्रेष्ठ, उत्तम।

षट*–छकी संख्या। **–दस***–पु० सोलहो शृंगार।

षट(ष्)–वि० (सं०) छः; पाँच और एक। **–कर्ण**–वि० छः कानोंवाला; छः कानों द्वारा सुना गया (ऐसी बातके संबंधमें प्रयुक्त जिसे कहने-सुननेवालेके अतिरिक्त तीसरेने भी सुना हो)। पु० एक तरहकी वीणा जिसमें छः खूँटियाँ होती हैं; संगीतका एक राग। **–कर्म(न्)**–पु० ब्राह्मणोंके छः कर्तव्य (अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह); ब्राह्मणोंके निर्वाह-संबंधी छः कर्म (उंछ, प्रतिग्रह, भिक्षा, वाणिज्य, कृषि और पशुपालन); छः तांत्रिक कर्म (मारण, उच्चाटन, स्तंभन, मोहन (वशीकरण), शांति और विदूषण); योग-संबंधी छः कर्म (धौती, वस्ती, नेती, त्राटक, नौलिक और कपालभाती); सामान्य लोगोंके छः कर्म (स्नान, संध्या, तर्पण, पूजन, जप और होम); व्यर्थके झगड़े बखेड़े या प्रपंच (बोलचालमें)। **–कर्मा(र्मन्)**–पु० शास्त्र-विहित षट्कर्म करनेवाला ब्राह्मण; तांत्रिक, योगी या गृहस्थ। **–कल**–वि० छः कला टिकनेवाला। **–कला**–स्त्री० ब्रह्मतालका एक भेद (संगीत)। **–कूटा**–स्त्री० भैरवीका एक रूप। **–कोण**–वि० (वह क्षेत्र) जिसमें छः कोण हों (हेक्सेंगुलर); छपहला। पु० इंद्रका वज्र; हीरा; लग्नसे छठा स्थान; एक यंत्र (तं०)। **–खंड**–वि० जिसमें छः भाग हों। **–चक्र**–पु० शरीरके भीतर सुषुम्ना नाड़ीके मध्यस्थित अति सूक्ष्म कमलाकार छः चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा); झगड़े टंटेके काम; षड्यंत्र। **–चरण**–वि० छः पैरोंवाला। पु० भ्रमर; जूँ; टिड्डी। **–चिति,–चितिक**–वि० जिसमें छः परतें हों। **–तंत्री**–स्त्री० षड्दर्शन। **–ताल**–पु० एक ताल (संगीत)। **–तिला**–स्त्री० माघ-कृष्णा एकादशी। **–पत्र**–वि० छः पत्तोंवाला। **–पद**–वि० छः पैरोंवाला। पु० छः पैरोंवाला प्राणी; भ्रमर; किलनी; छः पदोंवाला छंद। **–०ज्य**–पु० कामदेवका धनुष। **–०प्रिय**–पु० नागकेशर; कमल। **–पदा,–पदिका**–स्त्री० प्राकृत छंदोंका एक वर्ग। **–पदी**–वि० स्त्री० छः पैरोंवाली। स्त्री० भ्रमरी; किलनी; छः चरणोंवाला छंद। **–पाद**–वि० छः पैरोंवाला। पु० भ्रमर। **–प्रज्ञ**–वि० चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष), लोकार्थ और तत्त्वार्थका ज्ञाता। पु० लंपट, कामुक; नेक पड़ोसी। **–रस**–पु० दे० 'षड्रस'। **–राग**–पु० दे० 'षड्राग'। **–रिपु**–पु० दे० 'षड्रिपु'। **–शास्त्र**–पु० वेदको प्रमाण मानकर चलनेवाले छः हिंदू-दर्शन (न्याय, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा और वैशेषिक)। **–शास्त्री(स्त्रिन्)**–पु० वह जो छः हिंदू-दर्शनोंका ज्ञाता हो।

षट्क–वि० (सं०) छःगुना; छःमें खरीदा हुआ; छठी बार होने या किया जानेवाला। पु० छःकी संख्या; छःका समाहार; काम, मद आदि छः विकारोंका समाहार। **–मासिक**–वि० छःमासके लिए ठेके आदिपर लिया हुआ। **–संपत्ति**–स्त्री० शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान–ये छः वृत्तियाँ।

षट्पदातिथि–पु० (सं०) आम्र वृक्ष (जहाँ भ्रमर अतिथिके रूपमें रसग्रहणार्थ जाता है); चंपाका पेड़।

षट्पदानंदवर्धन–पु० (सं०) (भ्रमरके लिए आनंदवर्धक) अशोक वृक्ष या किंकिरात।

षड्–'षष्'का समासगत रूप। **–अंग**–वि० छः अंगोंवाला। पु० छठा भाग; शरीरके छः अवयव (शिर, धड़, दो हाथ और दो पैर); वेदके छः अंग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण, ज्योतिष); गायसे प्राप्त छः पदार्थ (मूत्र, गोमय, क्षीर, सर्पि, दधि और रोचन); किन्हीं छः वस्तुओंका समाहार; छोटा गोखरू। **–०जित्**–वि० छहों अंगोंको जीतनेवाला। पु० विष्णु। **–०धूप**–पु० चीनी, गोघृत, मधु, गुग्गुल, अगुरु काष्ठ और श्वेत चंदनके मिश्रणसे बत्तीके समान बनाकर सुखाया हुआ धूप। **–०समन्वागत**–पु० बुद्ध। **–अंगिनी**–स्त्री० सारे अंगोंसे पूर्ण सेना। **–अंघ्रि**–पु० भ्रमर। **–अक्षरी**–स्त्री० रामानुज संप्रदायका मुख्य मंत्र। **–अक्षीण**–पु० मत्स्य। **–अग्नि**–स्त्री० कर्मकांड-संबंधी छः प्रकारकी अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि)। **–अभिज्ञ**–पु० बुद्ध। **–अर्च**–पु० छः पद्मोंका समूह। **–अष्टक**–पु० एक योग (ज्यो०)। **–अह**–पु० छः दिनोंका समय। **–आत्मा(त्मन्)**–वि० छः प्रकारके स्वरूपोंवाला (अग्निके लिए प्रयुक्त)। **–आनन**–वि० छः मुखोंवाला।

पु० कार्त्तिकेय; संगीतमें स्वर साधनाका एक प्रकार। **–आम्नाय**–पु० छः तंत्र। **–आयतन**–पु० छः इंद्रियोंके छः स्थान। वि० विज्ञान, क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर–इन छः आयतनोंसे युक्त। **–०भेदक**–पु० बुद्ध। **–आर**–वि० छः कोणोंवाला। **–ऊषण**–पु० पीपल, काली मिर्च, सोंठ, पिपरामूल, चव्य और चीता–ये छः कटु मसाले। **–ऋतु**–स्त्री० छः ऋतुएँ। **–गया**–स्त्री० गया, गयासुर, गायत्री, गयागज, गयादित्य और गदाधर जो मुक्तिदायक माने गये हैं। **–गवाय**–वि० छः बैलोंसे खींचा जानेवाला। **–गुण**–वि० छगुना; छः गुणोंसे युक्त। पु० परराष्ट्रनीति की सफलताके लिए राजा द्वारा व्यवहार्य छः उपाय–संधि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय; छः गुणोंका समाहार। **–ग्रंथ**–पु० एक तरहका करंज; मीठा वच। **–ग्रंथा**–स्त्री० वचा; श्वेत वचा; शटी; महाकरंज। **–ग्रंथि**–स्त्री० पिप्पलीमूल। **–ग्रंथिका**–स्त्री० शटी। **–ज**–पु० भारतीय संगीतके सप्तकका प्रथम और कुछके अनुसार चतुर्थ स्वर (यह नाम पड़नेका कारण इसका जिह्वा, दंत, तालु आदि छः अंगोंसे उत्पन्न होना है। यह मयूरके शब्दसे मिलता है और इसका संकेत 'सा' है); ब्रह्माका सोलहवाँ कल्प। **–दर्शन**–पु० षट्शास्त्र, सांख्य, योग आदि हिंदुओंके छः दर्शन। वि० इन दर्शनोंका ज्ञाता। **–दर्शनी**–(हिं०)पु० दे० 'षट्शास्त्री'। **–बिंदु**–पु० दे० 'षट्बिंदु'। **–भाषा**–स्त्री० चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासोमें मिलनेवाली एक प्राचीन मिश्र भाषा जिसमें ये छः भाषाएँ हैं–संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, मागधी और पैशाची। **–भुज**–वि० छः भुजाओंवाला। पु० छः भुजाओंका क्षेत्र। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा; खरबूजा। **–यंत्र**–पु० दुरभिसंधि, किसी व्यक्तिके अनजानमें उसके अनिष्टसाधनका उपाय करना, साजिश (कान्सपिरेसी)। **–योग**–पु० योगाभ्यासमें प्रयुक्त छः तरीके। **–योनि**–पु० शिलाजतु। **–रस**–वि० छः प्रकारके स्वादोंवाला। पु० छः प्रकारके स्वाद–मीठा, नमकीन, कड़वा, तीता, कसैला और खट्टा। **–रसासव**–पु० लसीका। **–राग**–पु० भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोस और दीपक–ये छः राग; झंझट, बखेड़ा। **–रिपु**–**विकार**–पु० काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर–ये षड्विकार। **–रेखा**–स्त्री० खरबूजा। **–लवण**–पु० सैंधव, सामुद्र आदि छः प्रकारके नमक। **–वक्त्र,–वदन**–वि० छः मुखोंवाला। पु० स्कंद। **–वर्ग**–पु० छः पदार्थों आदिका समाहार; षड्रिपु; पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और मन। **–०वश्य**–वि० जो षड्रिपुओंके वशमें हो। **–विंदु**–पु० विष्णु; एक प्रकारका कीड़ा जिसकी पीठपर छः बिंदियाँ रहती हैं; एक प्रसिद्ध तेल (आ० वे०)। **–विकार**–पु० शरीरधारी (जीव)के छः विकार–उत्पत्ति, वृद्धि, बाल्यावस्था, यौवन, वार्धक्य और मृत्यु। **–विध**–वि० छः प्रकारका।

षड्धा–अ० (सं०) छः प्रकारसे।

षण्–'षष्'का समासगत रूप। **–णाडीचक्र**–पु० एक तरहका वृत्ताकार चक्र (ज्यो०)। **–णाभि,–णाभिक**–वि० छः नाभियोंवाला (पहिया)। **–मतस्थापक**–पु० शंकराचार्य। **–मास**–पु० छः मास। **–मासिक**–वि० अर्धवार्षिक। **–मास्य**–पु० छः मासका समय। वि० छः मासका। **–मुख**–वि० छः मुखोंवाला। पु० स्कंद; एक बोधिसत्त्व। **–मुखा**–स्त्री० खरबूजा।

षबंपी–स्त्री० (सं०) खंजनकी जातिकी एक छोटी चिड़िया।

षष्ट–वि० (सं०) साठवाँ (समासमें)।

षष्टि–स्त्री० (सं०) साठकी संख्या। वि० साठ। **–पूर्ति**–स्त्री० साठ वर्षकी उम्र पूरी होना '–के अवसरपर पंतजीका अभिनंदन।' **–भाग**–पु० शिव। **–मत्त**–पु० साठकी अवस्थामें युवा होनेवाला हाथी (जब उसके गंडस्थलसे मद-स्राव होता है)। **–लता**–स्त्री० भ्रमरमारी नामकी लता। **–वर्षी(र्षिन्)**–वि० साठ बरसकी अवस्थाका। **–वासरज**–पु० साठी धान। **–शालि**–पु० साठी धान। **–हायन**–वि० साठ वर्षका। पु० साठ वर्षका काल; साठ वर्षका पट्ठा हाथी; साठी धान। **–ह्रद**–पु० एक तीर्थ।

षष्टिक–वि० (सं०) साठ (रुपये आदि)में खरीदा हुआ। पु० साठ दिनोंमें तैयार होनेवाला एक धान, साठी; साठकी संख्या।

षष्टिका–स्त्री० (सं०) साठी धान।

षष्टिक्य–वि० (सं०) जिसमें साठी धान बोया गया हो; साठी धान बोने योग्य। पु० वह खेत जिसमें यह धान बोया गया हो।

षष्ट्यंशक–पु० (सं०) एक यंत्र जिससे नक्षत्रोंके सहारे जहाजकी स्थिति निर्धारित की जाती है।

षष्ठ–वि० (सं०) छठा। **–काल**–पु० छठा भोजन-काल। **–कालोपवास**–पु० एक व्रत जिसमें हर तीसरे दिन शामको भोजन करते हैं। **–भक्त**–वि० तीसरे दिन शामको खानेवाला। पु० छठा भोजन।

षष्ठक–वि० (सं०) छठा।

षष्ठांश–पु० (सं०) छठा भाग, विशेषकर अन्नका वह छठा भाग जो राजस्वके रूपमें दिया जाता था। **–वृत्ति**–पु० वह राजा जो करके रूपमें मिले हुए अन्नके षष्ठांशसे अपना काम चलाता है।

षष्ठिका–स्त्री० (सं०) षष्ठी; बच्चोंके जन्मसे छठा दिन।

षष्ठी–स्त्री० (सं०) पक्षकी छठी तिथि; संतानोत्पत्तिके दिनसे छठा दिन, छट्ठी; सोलह मातृकाओंमेंसे एक; कात्यायनी (दुर्गाका एक नाम) जिनकी बच्चेके कल्याणके लिए छट्ठीको पूजा होती है; संबंधकारककी विभक्ति; इंद्रसेना। **–जाय**–वि० जिसने छठा विवाह किया हो। **–तत्पुरुष**–पु० तत्पुरुष समासका एक भेद जिसमें पूर्वपद संबंधकारककी विभक्ति, षष्ठीमें होता है (जैसे–विद्यालय)। **–पूजन**–पु०,**–पूजा**–स्त्री० प्रसवके छठे दिन होनेवाली षष्ठी देवीकी पूजा। **–प्रिय**–पु० स्कंद। **–व्रत**–पु० व्रतविशेष। **–समास**–पु० दे० 'षष्ठी-तत्पुरुष'।

षष्ठ्य–पु० (सं०) छठा भाग।

षहसानु–पु० (सं०) यज्ञ; मोर, मयूर।

षांड–पु० (सं०) शिव।

षांड्य–पु० (सं०) नपुंसकता, क्लीवता।

षाट्कौशिक–वि० (सं०) छः तहोंमें लिपटा हुआ।

षाट्पौरुषिक–वि० (सं०) जिसका छः पीढ़ियोंसे संबंध हो।

षाडव–पु० (सं०) गान; रस; रागकी एक जाति जिसमें केवल छः स्वर आते हैं; मिठाई।

षाड्गुण्य–पु० (सं०) षड्गुणसमुच्चय, छः गुणोंका समूह; राजनीतिमें व्यवहार्य छः अंग, कर्म, दे० 'षड्गुण'; किसी संख्याको छःसे गुणा करनेपर प्राप्त गुणनफल। **–प्रयोग**–पु० राजनीतिके छः अंगोंका प्रयोग। **–वेदी(दिन्)**–वि० राजनीतिके छः अंगोंका ज्ञाता। **–संयुत**–वि० राजनीतिके छः अंगोंसे युक्त।

षाड्रसिक–वि० (सं०) जिसमें छः प्रकारके स्वाद हों।

षाड्वर्गिक–वि० (सं०) पाँचों इंद्रियों और मनसे संबंध रखनेवाला।

षाण्मातुर–पु० (सं०) कार्त्तिकेय (जिनका पालन छः माताओंने किया था)।

षाण्मासिक–वि० (सं०) छमाही; छः महीनेका। पु० मृत्युके छः महीने पश्चात् होनेवाला मृतक-श्राद्ध।

षादतर–पु० मंद्रसे नीचेका एक बनावटी सप्तक (संगीत)।

षाष्टिक–वि० (सं०) साठ बरसकी अवस्थाका।

षाष्ठ–वि० (सं०) षष्ठ, छठा (भाग)।

षाष्ठिक–वि० (सं०) छठा-संबंधी; जिसकी छठे (अध्याय)में व्याख्या की गयी हो। पु० चार मासका एक व्रत जिसमें दूधके साथ केवल हर छठे दिन भोजन किया जाता है।

षिड्ग–पु० (सं०) कामुक व्यक्ति; विट; वेश्या रखनेवाला पुरुष।

षु–पु०,**षू**–स्त्री० (सं०) प्रसव।

षोडंत–वि० (सं०) छः दाँतोंवाला।

षोडन्(त्)–वि० (सं०) छः दाँतोंवाला। पु० छः दाँतोंवाला बैल।

षोडश–वि० (सं०) सोलहवाँ।

षोडश(न्)–वि० (सं०) सोलह। पु० सोलहकी संख्या। **–कल**–वि० सोलह अंशोंवाला। **–कला**–स्त्री० चंद्रमाकी सोलह कलाएँ (अंश)–अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता–जो यथातिथि घटती-बढ़ती रहती हैं। **–गण**–पु० पंच ज्ञानेंद्रियाँ, पंच कर्मेंद्रियाँ, पंचभूत और एक मनका समूह। **–दान**–पु० श्राद्ध आदिके अवसरपर देय सोलह वस्तुएँ–भूमि, आसन, गाय, सोना, चाँदी, पानी, कपड़ा, दीपक, अन्न, पान, छत्र, सुगंधि, फूलमाला,

फल, सेज और खड़ाऊँ। **–पक्षशायी(यिन्)**–वि० सोलह पक्ष
निश्चेष्ट रहनेवाला। पु० मेढक। **–पूजन**–पु० दे० 'षोडशो-
पचार'। **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा। **–भेदित**–वि० सोलह वर्गोंमें
विभक्त। **–मातृका**–स्त्री० गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री,
विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि,
मातरः और आत्मदेवता–ये सोलह देवियाँ। **–विधि**–वि०
सोलह प्रकारका। **–शृंगार**–पु० साज-सज्जाके सोलह अंग;
संपूर्ण शृंगार (उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना,
बाल सवाँरना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना,
भालपर तिलक बनाना, ठोड़ीपर तिल बनाना, मेंहदी रचाना,
सुगंधित द्रव्योंका प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार
पहनना, पान खाना, ओठ रँगना और मिस्सी लगाना)। –
–संस्कार–पु० वेद, शास्त्रविहित गर्भाधानसे लेकर मृत्युतकके
सोलह संस्कार (दे० संस्कार)।

षोडशक–वि० (सं०) सोलह अंशोंवाला। पु० सोलहकी संख्या, १६।

षोडशांग–वि० (सं०) सोलह अंगों, भागों, प्रकारोंवाला। पु० सोलह प्रकारके गंधद्रव्योंसे तैयार किया हुआ धूप।

षोडशांगुलक–वि० (सं०) सोलह अंगुल अर्जवाला।

षोडशांघ्रि–पु० (सं०) कर्कट, केकड़ा।

षोडशांशु–पु० (सं०) शुक्र ग्रह।

षोडशात्मक–पु० (सं०) सोलह गुणोंवाली आत्मा।

षोडशार–वि० (सं०) सोलह आरोंवाला (पहिया); सोलह पँखड़ियोंवाला। पु० एक तरहका कमल।

षोडशार्चि(स्)–पु० (सं०) शुक्र ग्रह।

षोडशावर्त–पु० (सं०) शंख।

षोडशाश्रि–पु० (सं०) सोलह कोनोंवाला घर (बृ० सं०)।

षोडशाह–पु० (सं०) सोलह दिन चलनेवाला उपवास आदि व्रत; मृतकका षोड्शकी नामक कृत्य।

षोडशिक–वि० (सं०) सोलह अंगों, प्रकारोंवाला; सोलहसे संबंध रखनेवाला।

षोडशिका–स्त्री० (सं०) एक तौल।

षोडशिकाम्र–पु० (सं०) एक तौल, पल।

षोडशी–स्त्री० (सं०) दस या बारह महाविद्याओंमेंसे एक; सोलह वर्षकी स्त्री, तरुणी; प्रेतकर्मविशेष; सोलह वस्तुओंका वर्ग–ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम।

षोडशी(शिन्)–वि० (सं०) सोलह भागोंवाला (स्तोत्रादि)। पु० एक तरहका सोमपात्र।

षोडशीबिल्व–पु० (सं०) एक प्राचीन तौल।

षोडशोपचार–पु० (सं०) देवपूजनके सोलह अंग (आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना)।

षोढा–अ० (सं०) छः प्रकारसे। **–न्यास**–पु० मंत्र पढ़ते हुए शरीर-स्पर्शके छः प्रकार (तं०)। **–मुख**–पु० स्कंद। **–विहित** वि० छः भागोंवाला।

षोदन्(त्)–वि०, पु० (सं०) दे० 'षोडन्'।

ष्ठीवन–पु० (सं०) थूकनेकी क्रिया; थूक, लार।

ष्ठीवित–वि० (सं०) थूका हुआ।

ष्ठीवी–स्त्री० (सं०) थूकनेकी क्रिया।

ष्ठेव–पु० (सं०) थूकना।

ष्ठेवन–पु० (सं०) दे० 'ष्ठीवन'।

ष्ठेविता(तृ)–वि० (सं०) थूकनेवाला।

ष्ठ्यूत–वि० (सं०) ष्ठीवित।

ष्ठ्यूति–स्त्री० (सं०) थूकनेकी क्रिया।

स

स–देवनागरी वर्णमालाका बत्तीसवाँ और ऊष्म वर्गका तीसरा व्यंजनवर्ण। इसका उच्चारणस्थान दंत है इसलिए इसे दंत्य स कहते हैं।

सं–उप० (सं०) 'सम्'का संधिगत रूप।

सँइतना†–स० क्रि० जोड़ना, जोड़कर रखना, बटोरना; सुरक्षित रखना; सहेजना; लीपना, पोतना।

सँउपना*–स० क्रि० दे० 'सौंपना'।

संक*–स्त्री० शंका, डर; भ्रम।

संकट–वि० (सं०) घनीभूत, संकीर्ण, तंग; घना; दुर्गम; खतरनाक; ···से पूर्ण, भरा हुआ। पु० तंग रास्ता; दर्रा; कठिनाई; खतरा; विपत्ति, मुसीबत; भीड़। **–चतुर्थी**–स्त्री० माघ-कृष्णा चतुर्थी। **–नाशन**–वि० कष्ट दूर करनेवाला। – **–मुख**–वि० जिसका मुँह तंग हो। **–मोचन**–पु० हनूमान्‌की एक काशीस्थ मूर्ति। वि० दे० 'संकटनाशन'। **–संकेत**–पु० (एस. ओ. एस., 'एसोएस') डूबते हुए जहाज, ध्वस्त होते हुए विमान आदिसे भयंकर संकटकी सूचना देनेके लिए बेतारके तार द्वारा प्रेषित संदेश। **–स्थ**–वि० विपद्ग्रस्त।

संकटा–स्त्री० (सं०) बनारसमें प्रसिद्ध एक देवी; आठ योगिनियोंमेंसे एक (शेष सात ये हैं–मंगला, पिंगला, धन्या, भ्रमरी, भद्रिका, उल्का और सिद्धि–ज्यो०)।

संकटाक्ष–पु० (सं०) धव वृक्ष। वि० कटाक्षसहित।

संकटापन्न–वि० (सं०) विपद्ग्रस्त, कष्टमें पड़ा हुआ।

संकटी(टिन्)–वि० (सं०) जो संकटमें पड़ा हो।

संकटोत्तीर्ण–वि० (सं०) जो संकटसे पार हो गया हो।

संकत*–पु० दे० 'संकेत'।

संकथन–पु० (सं०) वर्णन करना; वार्ता।

संकथा–स्त्री० (सं०) वर्णन; बातचीत।

संकथित–वि० (सं०) वर्णित, कथित।

संकना*–अ० क्र० डरना; शंका, संदेह करना।

संकर–पु० (सं०) मिश्रण; योग, एकमें मिलना; दो जातियोंका मिश्रण; (हिब्रिड) ऐसे पौधे या प्राणी जो प्रजनिक दृष्टिसे भिन्न स्पीसीजके नर तथा मादाके संगमनसे उत्पन्न होते हैं; अंतर्जातीय संबंधसे उत्पन्न संतान; एक ही वाक्यमें दो या अधिक अलंकारोंका मिश्रण (सा०); एक ही पदार्थमें अत्यन्ताभाव और समानाधिकरण होना (न्याय); वह वस्तु जो स्पर्शसे गंदी हो जाय; गोबर; कूड़ा; आगके जलनेका शब्द। **–ज**–वि० मिश्र जातिसे उत्पन्न। **–जात,–जाति,–जातीय**–वि० दे० 'संकरज'। **–पद**–पु० दो भाषाओंके योगसे बना पद। **–समास**–पु० दो भाषाओंके शब्दोंसे बना हुआ समास।

संकर*–पु० दे० 'शंकर'। (स्त्री० 'संकरी'।) **–घरनी**–स्त्री० पार्वती।

संकरक–वि० (सं०) मिलाने, मिश्रण करनेवाला।

संकरण–पु० (सं०) (क्रॉस ब्रीडिंग) अलग-अलग जातिके पौधों या जीवोंका पारस्परिक संसर्ग या मेल द्वारा उत्पन्न होना, अन्योन्य प्रजनन।

संकरा–पु० एक राग।

सँकरा†–वि० तंग, संकीर्ण। पु० संकट। स्त्री० सिकड़ी, जंजीर। मु०–**(रे)में पड़ना**–कष्टमें पड़ना।

सँकराना–स० क्रि० तंग, संकुचित, संकीर्ण करना।

संकराश्व–पु० (सं०) खच्चर।

संकरित–वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित।

संकरिया–पु० एक प्रकारका हाथी।

संकरी(रिन्)–वि० (सं०) दोगला; मिश्र; अवैध संबंध रखनेवाला।

संकरीकरण–पु० (सं०) मिलाना; जातिका अवैध मिश्रण; नौ प्रकारके पापोंमेंसे एक (जो भैंसे आदिके वधसे होता है)।

संकर्ष–पु० (सं०) पासमें खींच लाना।

संकर्षण–पु० (सं०) खींचकर निकालना; संयोगका साधन; पास लाना; जोतना; छोटा करना; बलराम; एक रुद्र; निंबार्क द्वारा प्रवर्तित एक वैष्णव संप्रदाय; कानूनी अधिकारमें नाम

परिवर्तन (सबरोगेशन)। **–विद्या**–स्त्री० एक स्त्रीके पेटसे बच्चा निकालकर दूसरी स्त्रीके पेटमें रखनेकी विद्या।

संकर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) खींचकर मिलानेवाला; छोटा करनेवाला।

संकल–पु० (सं०) एकत्र करना; राशि, ढेर; योग; जोड़ (ग०)। † स्त्री० साँकल, जंजीर; जानवरोंको बाँधनेका सिक्कड़।

संकलन–पु० (सं०) एकत्रीकरण; संपर्क, संबंध; योग; मिलन; जोड़ (ग०); अच्छे विषयोंको चुनकर एकत्र करना; इस ढंगसे बना हुआ ग्रंथ (कम्पाइलेशन)।

संकलना–स्त्री० (सं०) एकत्र करना; मिलाना, जोड़ना।

संकलप*–पु० दे० 'संकल्प'।

संकलपना*–स० क्रि० संकल्प करना, निश्चय करना, दानादि धार्मिक कृत्य करनेका निश्चय या प्रतिज्ञा करना। अ० क्रि० इरादा करना।

संकला–पु० शकद्वीप। स्त्री० (सं०) जोड़ना, मिलाना; एकत्र करना।

संकलित–वि० (सं०) राशीकृत, एकत्रीकृत (एग्रेगेट); योग किया हुआ, मिलाया हुआ; गृहीत; जोड़ा हुआ (ग०)। पु० जोड़ (ग०)।

संकलुष–पु० (सं०) सदोषता, अशुद्धता।

संकल्प–पु० (सं०) इच्छा; निश्चय; प्रयोजन, उद्देश्य; नीयत; विचार, कल्पना; मन; कोई धार्मिक कृत्य करनेकी प्रतिज्ञा; धार्मिक कृत्यसे फलकी आशा; सती होनेकी इच्छा; मंत्रोच्चारणके साथ धार्मिक कृत्य करनेकी प्रतिज्ञा करना; सभा समितिमें विचारपूर्वक किया गया कोई निश्चय (रिज़ोल्यूशन)। **–जन्मा-(न्मन्)**–वि० इच्छासे उत्पन्न। पु० कामदेव। **–जूति**–वि० इच्छा द्वारा प्रेरित। **–भव**–वि०, पु० दे० 'संकल्पजन्मा'। **–योनि**–वि० इच्छा जिसका मूल हो। पु० प्रणय; कामदेव। **–रूप**–वि० जो इच्छाके अनुरूप हो। **–संपत्ति**–स्त्री० इच्छापूर्ति। **–संभव**–वि० इच्छा जिसका आधार हो। पु० प्रणय; कामदेव। **–सिद्धि**–स्त्री० इच्छाशक्ति द्वारा उद्देश्यकी पूर्ति।

संकल्पक–वि० (सं०) संकल्प करनेवाला; विचार करनेवाला।

संकल्पना–स० क्रि०, अ० क्रि० दे० 'संकलपना'।

संकल्पा–स्त्री० (सं०) दक्षकी एक कन्या, धर्मकी पत्नी।

संकल्पात्मक–वि० (सं०) जिसमें संकल्प या प्रतिज्ञा हो।

संकल्पित–वि० (सं०) जिसका संकल्प, निश्चय किया गया हो; जिसकी कल्पना की गयी हो, कल्पित।

संकल्य–वि० (सं०) जिसका संकलन हो सकता हो; संकलनके योग्य।

संकष्ट–पु० दे० 'संकट'।

संकसुक–वि० (सं०) अस्थिर, चंचल; अनिश्चित; संदिग्ध; बुरा, दुष्ट; निर्बल।

संका*–स्त्री० शंका, डर।

सँकाना*–अ० क्रि० शंकित होना, डरना।

संकाय–स्त्री० (सं०) उच्चकोटिके अध्ययनके लिए ज्ञानविज्ञानका कोई विशिष्ट विभाग (फ़ैकल्टी)।

संकायाध्यक्ष–पु० (सं०) (डीन ऑफ़ फ़ैकल्टी) विश्वविद्यालयमें किसी संकायका प्रधान अधिकारी।

संकार–पु० (सं०) कूड़ा; आगके जलनेका शब्द; † संकेत। **–कूट**–पु० कूड़ेका ढेर।

संकारना*–स० क्रि० संकेत, इशारा करना।

संकारी–स्त्री० (सं०) वह लड़की जिसका कौमार्य अभी-अभी भंग हुआ हो, नयी दुलहिन।

संकाश–वि० (सं०) तुल्य, सदृश (समासमें); निकटवर्ती। अ० निकट, पास। पु० पड़ोस; उपस्थिति; कांति, द्युति।

संकास*–वि०, पु० दे० 'संकाश'।

संकिल–पु० (सं०) लूका।

संकिस्त–वि० (सं०) संकरा, तंग।

संकीर*–वि० संकीर्ण।

संकीर्ण–वि० (सं०) मिलाया हुआ; मिश्रित; संयुक्त; मिलावटी; विकृत; भरा हुआ; तंग, संकुचित; नीच; तुच्छ; अनुदार (ला०); फैलाया, बिखेरा हुआ; अस्पष्ट; दान बहाता हुआ, मस्त (हाथी)। पु० संकर जातिका व्यक्ति; मिश्र राग; मस्त हाथी; संकट; एक प्रकारकी गद्यशैली। **–जाति,–योनि**–वि० वर्णसंकर। **–नेरि**–पु० नृत्यका एक प्रकार। **–युद्ध**–पु० विभिन्न प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंसे लड़ा जानेवाला युद्ध।

संकीर्णता–स्त्री० (सं०) संकीर्ण होनेकी भावना; ओछापन; नीचता; क्षुद्रता; तंगी; व्यतिक्रम (शब्दोंका)।

संकीर्णा–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी पहेली।

संकीर्तन–पु० (सं०) सम्यक् वर्णन; प्रशंसा; स्तुति; देवताके नामका जप, गुणगान आदि।

संकीर्तित–वि० (सं०) सम्यक् रूपसे वर्णित; प्रशंसित; स्तुत।

संकुंचित–वि० (सं०) झुका हुआ; वक्र, कुटिल।

संकु–पु० (सं०) छिद्र (?); * बर्छी।

संकुचन–पु० (सं०) सिकुड़ना, संकुचित होना; एक बाल-रोग।

सँकुचना–अ० क्रि० दे० 'सकुचना'।

सँकुचाना–अ० क्रि०, स० क्रि० 'सकुचाना'।

संकुचित–वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ; तंग; संकीर्ण; अनुदार; बंद; नत; लज्जित।

संकुपित–वि० (सं०) क्रुद्ध; उत्तेजित, प्रवर्द्धित।

संकुल–वि० (सं०) घना; प्रचंड; घबड़ाया हुआ; बाधित; भरा हुआ; संकीर्ण; असंगत; जटिल। पु० भीड़, मजमा; झुंड; युद्ध; असंगत वाक्य, परस्पर विरोधी कथन; कष्ट, दुःख।

संकुलता–स्त्री० (सं०) परिपूर्णता; गड़बड़; जटिलता; घनापन।

संकुलित–वि० (सं०) भरा हुआ, पूरित (समासमें); अस्त-व्यस्त; घबड़ाया हुआ।

संकुश–पु० (सं०) एक मछली, शंकु।

संकूजित–पु० (सं०) चक्रवाककी बोली।

संकृति–वि० (सं०) एकत्र करनेवाला; व्यवस्थित करनेवाला; तैयार करनेवाला। स्त्री० वृत्त-विशेष। पु० एक साम।

संकृत्त–वि० (सं०) काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ; बिंधा हुआ।

संकृष्ट–वि० (सं०) खींचकर नजदीक लाया हुआ; एक साथ किया हुआ।

संकेंद्रण–पु० (कॉनसेंट्रेशन) केंद्रकी ओर ले जाना, जमाना, एक स्थान या केंद्रपर लगाना, इकट्ठा करना (ध्यान, शक्ति, फौजें)। **–शिविर**–पु० बन्दीशिविर (कॉनसेंट्रेशन कैम्प)। **–सिद्धांत**–पु० (थिअरी ऑफ कॉनसेंट्रेशन) मार्क्सवादका यह सिद्धांत कि बड़े-बड़े पूंजीपति अंततोगत्वा प्रायः सभी छोटे पूंजीपतियोंको या तो निकाल बाहर करेंगे या अपनेमें मिला लेंगे जिससे सारी पूंजी थोड़ेसे शक्तिशाली गुटों, न्यासों (ट्रस्टों) या बैंकोंमें संकेंद्रित हो जायगी।

संकेंद्रित प्रयास–पु० (कॉनसेंट्रेटेड एफर्ट) वह प्रयास जिसमें सारी शक्ति एक ही स्थान या कामपर लगा दी गयी हो।

संकेत–पु० (सं०) अभिप्रायसूचक अंगचेष्टा, इंगित, इशारा; चिह्न; ठहराव; प्रेमी-प्रेमिकाका आपसका ठहराव; प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका निर्दिष्ट स्थान; शर्त। **–केतन,–गृह** दे० 'संकेतनिकेत'। **–चिह्न,–रूप**–पु० (ऍब्रीवियेशन) नाम, पद आदिके सूचक वे चिह्न या लघु रूप जो संकेतकी तरह प्रयुक्त होते हैं (जैसे अ० क्रि०–अकर्मक क्रिया)। **–लिपि**–स्त्री० गूढ़ संहिता लिखनेकी लिपि (साइफ़रकोड)। **–निकेत,–निकेतन**–पु० प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका स्थान। **–भूमि**–स्त्री०,**–स्थल,–स्थान**–पु० दे० 'संकेत-केतन'। **–मिलित**–वि० आपसके ठहराव-से मिला हुआ। **–वाक्य**–पु० वह विशेष शब्द जो स्वपक्षका परिचायक चिह्न हो। **–हेतु**–पु० मिलनेका प्रयोजन।

सँकेता†–वि० दे० 'सँकरा'।

संकेतक–पु० (सं०) ठहराव; मिलन-स्थान; संकेत करनेवाला प्रेमिक; रेडियो द्वारा विमानोंको दिया जानेवाला विशिष्ट संकेत (बेकन)।

संकेतन–पु० (सं०) आपसका ठहराव, निश्चय; मिलन-स्थान।

संकेतना*–स० क्रि० संकट, विपत्तिमें डालना। अ० क्रि० संकुचित

होना–'कँवल सँकेता, कुमुदिनि फूली'—प० ।

संकेताक्षर–पु० (साइफर) संकेत रूपमें लिखे गये अक्षर, गुप्त लिपि ।

संकेतित–वि० (सं०) ठहराया हुआ, निश्चित; आमंत्रित; इशारा किया हुआ ।

सँकेलना†–स० क्रि० समेटना, बटोरना, खींचकर इकट्ठा करना ।

संकोच–पु० (सं०) सिकुड़ना; वंद होना, मुँदना (नेत्रका); असमंजस; संक्षेपमें बहुत-सी बातें कहना; लज्जा; भय; संक्षेप; सूखना (जलाशयका); बंधन; एक मछली; कमी (स्थल संकोच); केसर; हिचक; एक अलंकार जिसमें किसी वस्तुका प्रतिक्षण संकोच दिखाया जाता हो; एक असुर । **–कारी(रिन्)**–वि० झुकनेवाला, विनम्र; शरमानेवाला । **—पत्रक**–पु० पौधोंका एक रोग जिसमें उनके पत्ते सिकुड़ जाते हैं । **–पिशुन**–पु० केसर । **–रेखा**–स्त्री० झुर्री, सिलवट ।

संकोचक–वि० (सं०) संकुचित करनेवाला ।

संकोचन–पु० (सं०) सिकाड़ना; (कॉम्प्रेशन) दवाव डालकर किसी वस्तुका आयतन कम करना । एक पहाड़ । वि० संकोच करनेवाला; सिकोड़नेवाला ।

सँकोचना*–स० क्रि० संकुचित करना । अ० क्रि० संकोच करना ।

संकोचनी–स्त्री० (सं०) लजालू ।

संकोचित–पु० (सं०) युद्धका या तलवार चलानेका एक ढंग; लज्जित, संकोचयुक्त ।

संकोची(चिन्)–वि० (सं०) संकुचित होनेवाला (पुष्पादि); सिकुड़नेवाला; लजानेवाला; संकोचशील ।

संकोपना*–अ० क्रि० क्रोध करना ।

संक्रंद–पु० (सं०) शब्द करना; रोना-चिल्लाना; युद्ध ।

संक्रंदन–पु० (सं०) इंद्र; मनुभौत्यका एक पुत्र; सम्यक् क्रंदन; युद्ध । **–नंदन**–पु० अर्जुन; वालि ।

संक्रम–पु० (सं०) साथ जाना; गमन; भ्रमण; प्रगति; संक्रमण; सूर्य या नक्षत्रकी वीथी; सूर्यकी दक्षिणायन गति; तंग रास्ता; दुर्गम मार्ग; कठिनाईसे आगे बढ़ सकना; पुल; सेतु; खाई, नाले आदिपर बने ऐसे पुल जो आवश्यकता होनेपर हटा लिये जा सकते हैं; घाट; उद्देश्यपूर्तिका साधन; तारेका टूटना; स्कंदका एक अनुचर ।

संक्रमण–पु० (सं०) गमन; भ्रमण; मिलन, संयोग; प्रवेश; आरंभ; राश्यंतरमें सूर्यका प्रवेश, संक्रांति; सूर्यके उत्तरायण होनेका दिन; परलोकयात्रा, मृत्यु; पार करनेका साधन, एक स्थिति या अवस्थासे दूसरीमें प्रवेश; हस्तांतरण; रोग, कीटाणु आदिका फैलना, एकसे दूसरेको लगना । **–काल, संक्रांति-काल**–पु० (ट्रांजीशनल पीरियड) एक स्थति या युगसे निकलकर पूर्ण रूपसे दूसरी स्थिति या युगमें संक्रमित (प्रविष्ट) हो जानेके बीचका समय । **–नाश**–पु० (डिसइनफेक्शन) रोगके संक्रमणसे बचाव या मुक्ति । **–नाशक**–वि० (डिसइनफेक्टेंट) जो रोग फैलनेवाले कीटाणुओंका नाश कर सके, रोगका संक्रमण न होने दे (दवा इ०) ।

संक्रमणका–स्त्री० (सं०) प्रकोष्ठ, 'गैलरी' ।

संक्रमित–वि० (सं०) पहुँचाया, प्रवेश कराया हुआ; परिवर्तित किया हुआ । **–माल**–पु० (गुड्स इन ट्रांजिट) वह माल जो किसी स्थानसे रवाना कर दिया गया हो, पर अभी उद्दिष्ट स्थानतक पहुँचा न हो–बीचमें, यात्रामार्गमें ही हो ।

संक्रमिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) संकमण करनेवाला; जानेवाला, गमन करनेवाला; प्रवेश करनेवाला ।

संक्रांत–वि० (सं०) गत, गुजारा हुआ, प्रविष्ट; स्थानांतरित; प्राप्त; गृहीत; प्रतिफलित, प्रतिबिंबित; चित्रित, अंकित; संक्रांतियुक्त । पु० पतिसे प्राप्त स्त्रीकी संपत्ति; क्रमागत धन ।

संक्रांति–स्त्री० (सं०) साथ गमन; मिलन; एक विंदुसे दूसरे विंदुतकका मार्ग; सूर्य या किसी ग्रहका एक राशिसे दूसरी राशिमें प्रवेश करना; दो युगों या विचारधाराओंके संघर्षसे या परिवर्तित होते वातावरणसे उत्पन्न स्थितियाँ; हिन्दुओंका एक विशेष पर्व; हस्तांतरण; प्रतिबिंब; अंकन; गुरुसे शिष्योंका विद्याग्रहण । **–चक्र**–पु० एक नक्षत्रांकित चक्र जिससे शुभाशुभ फल जाना जाता है (ज्यो०) ।

संक्राम–पु० (सं०) गुजरना; कठिनाईसे गमन करना; दुर्गम मार्ग ।

संक्रामक–वि० (सं०) (कांटेजस) एकसे दूसरेमें संक्रमण करनेवाला; छूत आदिसे फैलनेवाला (रोग) ।

संक्रामित–वि० (सं०) हस्तांतरित किया हुआ; दूसरेको वतलाया हुआ ।

संक्रामी(मिन्)–वि० (सं०) संक्रमण करनेवाला, फैलनेवाला; संपर्क द्वारा फैलानेवाला; हस्तांतरित होनेवाला ।

संक्रीड–पु० (सं०) क्रीड़ा, खेल, परिहास; एक साम ।

संक्रीडन–पु० (सं०) क्रीड़ा करना, खेल, परिहास करना; साथ खेलना ।

संक्रीडित–वि० (सं०) खेला, क्रीडा किया हुआ । पु० रथकी घरघराहट ।

संक्रुद्ध–वि० (सं०) वहुत ज्यादा नाराज ।

संक्रोन*–पु० संक्रांति, संक्रमण–'काहू पुण्य न पाइयत वैससंधि संक्रोन'–वि० ।

संक्रोश–पु० (सं०) साथ-साथ चिल्लाना, जोरसे शब्द करना; क्रोधमें चिल्लाना ।

संक्लिन्न–वि० (सं०) विलकुल गीला, तर-बतर ।

संक्लिष्ट–वि० (सं०) कुचला हुआ; जिसपर धब्बा आदि पड़ गया हो (जैसे अंधा आइना); कठिनाइयोंसे पूर्ण । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसे हर एक काममें कठिनाई होती हो ।

संक्लेद–पु० (सं०) अत्यधिक आर्द्रता; गर्भाधानके वाद प्रथम मासमें स्रवित होनेवाला रस जिसमें भ्रूणके आरंभिक रूपका निर्माण होता है ।

संक्लेश–पु० (सं०) कष्ट, पीड़ा । **–निर्वाण**–पु० पीड़ासे छुटकारा ।

संक्लेशन–पु० (सं०) कष्ट देना ।

संक्षय–पु० (सं०) विनाश, वरवादी; अंत; लोप; प्रलय; एक मरुत्वान् ।

संक्षर–पु० (सं०) साथ मिलकर वहना; दो नदियोंका संगम ।

संक्षरण–पु० (कोरोज़न) मोरचा आदि लगनेके कारण किसी पदार्थका क्रमशः नष्ट या क्षीण होते जाना ।

संक्षालन–पु० (सं०) वह जल जो धोने, नहानेके काम आये; धोना ।

संक्षालना–स्त्री० (सं०) धोना; स्नान ।

संक्षिप्त–वि० (सं०) फेंका हुआ; राशीकृत; छोटा किया हुआ; घटाया हुआ; खुलासा; गृहीत; तंग; छोटा; संयत । **–दैर्घ्य**–वि० जिसकी लंबाई घटायी गयी हो । **–लिपि**–स्त्री० लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें विशेष ध्वनियोंके लिए छोटे-छोटे चिह्न निश्चित रहते हैं, 'शार्टहैंड राइटिंग' । **–विधिक विचार**–पु० (समरी ट्रायल) न्यायालय द्वारा किसी वाद या मामलेपर विधिक दृष्टिसे संक्षेपमें किया गया विचार ।

संक्षिप्ता–स्त्री० (सं०) वुध ग्रहकी सात गतियोंमेंसे एक (ज्यो०) ।

संक्षिप्ति–स्त्री० (सं०) फेंकना; ठोस करना; घटाना; घात लगाना; एक प्रकारकी आरभटी, भावका एकाएक परिवर्तन (ना०) ।

संक्षिप्तीकरण–पु० (सं०) किसी कथा, विषय आदिको संक्षिप्त करना, संक्षेपण ।

संक्षेप–पु० (सं०) फेंकना; भेजना; हरण; नष्ट करना; ठोस करना; घटाना; छोटा रूप; दूसरेके कार्यमें सहायता देना; ठोस करनेका साधन; तंगदस्ती; चुम्बक पत्थर । **–दोष**–पु० विस्तारसे कहना आवश्यक होनेपर संक्षेपमें कहकर दुर्बोध वनाना (सा०) ।

संक्षेपक, संक्षेप्ता(प्तृ)–वि०, पु० (सं०) फेंकनेवाला; नष्ट करनेवाला; संक्षेप करने या छोटा रूप देनेवाला ।

संक्षेपण–पु० (सं०) फेंकना; वटोरना; संक्षिप्त करने, विस्तार घटा देनेकी क्रिया (एब्रिजमेंट); लेकर चल देना ।

संक्षेपतः(तस्)–अ० (सं०) संक्षेपमें, थोड़ेमें ।

संक्षेपतया–अ० (सं०) दे० 'संक्षेपतः' ।

संक्षोभ–पु० (सं०) तेज धक्का; उत्तेजन; चंचलता; कंपन;

अस्त-व्यस्तता, उलट-पलट; गर्व, घमंड; किसी अप्रिय घटनाके कारण मनको लगनेवाला आघात (शॉक)।

संख–पु० दे० 'शंख'। **–नारी**–स्त्री० एक छंद।

संखहुली–स्त्री० दे० 'शंखपुष्पी'।

संखा|–पु० चक्कीका हत्था।

संखार|–पु० एक पक्षी।

संखिया–पु० एक उपधातु जो बहुत तेज विष है; इस उपधातुकी भस्म; सोमल।

संख्य–पु० (सं०) युद्ध, संघर्ष। वि० दे० 'संख्येय'।

संख्यक–वि० (सं०) संख्यावाला (समासांतमें)।

संख्यांक–पु० (न्यूमरल) संख्यासूचक अंक। **–न** (नम्बरिंग) किसीपर क्रमसे संख्यासूचक अंक लगाना।

संख्या–स्त्री० (सं०) गणना, गिनती, शुमार; अंक; तादाद; योग; विचारणा; प्रज्ञा, बुद्धि; तरीका; आख्या, नाम; एक विशेष संख्या (बौ०); लिखे गये पत्रों या सामयिक पत्रादिपर दिया गया क्रमांक; किसी सामयिक पत्रादिकी विशिष्ट संख्या या क्रमांकवाली प्रति। **–पद**–पु० अंक। **–परित्यक्त**–वि० असंख्य, अनगिनत। **–मंगलग्रंथि**–स्त्री० बरसगाँठका उत्सव। **–लिपि**–स्त्री० लिखनेकी एक प्रणाली जिसमें अक्षरोंकी जगह अंक रखते हैं। **–वाचक**–वि० संख्याका सूचक। पु० अंक। **–विभाग**–पु० (सं०) (स्टैटिक्स डिपार्टमेंट) जनन-मरण, उत्पादन आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े तैयार करनेवाला विभाग। **–शब्द**–पु० अंक। **–समापन**–पु० शिव।

संख्याक–वि० (सं०) दे० 'संख्यक'।

संख्यात–वि० (सं०) गिना हुआ, शुमार किया हुआ; विचारित। पु० गिनती, संख्या; राशि, समूह।

संख्याता–स्त्री० (सं०) संख्याके सहारे बनी हुई एक तरहकी पहेली।

संख्यातिग–वि० (सं०) दे० 'संख्यातीत'।

संख्यातीत–वि० (सं०) अगणित, बेशुमार।

संख्यान–पु० (सं०) गणना, शुमार; राशि, संख्या, माप; देखा जाना, नजर आना; प्रकाश; ध्यान।

संख्यावान्(वत्)–वि० (सं०) संख्यावाला; समझदार, बुद्धिमान्। पु० विद्वान् व्यक्ति।

संख्येय–वि० (सं०) गणनीय, जो गिना जा सके; अगणित नहीं; विचारणीय।

संग–पु० (सं०) मिलन, साथ होना; योग; दो नदियोंका मिलना, संगम; संसर्ग; स्पर्श, संपर्क; मैत्री; साथ; आसक्ति; विषय-वासना; युद्ध; बाधा। अ० (हिं०) साथ, सहित। **–कर**–वि० आसक्तिजनक। **–त्याग**–पु० विरक्ति। **–रहित,–वर्जित**–वि० आसक्तिरहित। **–रोध**–पु० (सं०) (क्वारंटीन) देशको संक्रामक रोगोंसे बचानेके लिए विदेशी यात्रियोंको परीक्षणके लिए रोकनेकी सरकारी व्यवस्था; दे० 'संसर्गरोध'; यात्रियोंको इस तरह कुछ समय तक रोक रखनेका स्थान; निरोधा; (संगरोध कक्ष)। **–विच्युति**–स्त्री० विषयानुरागसे पृथक् होना। **–साथ**–पु० (हिं०) मैत्री, दोस्ती। मु० **–करना**–साथ होना; दोस्ती करना। **–छोड़ना**–साथ छोड़ना। **–जाना**–साथ जाना, हमराह होना। **–लग लेना**–साथ हो लेना; ख्वाहमख्वाह साथ हो जाना, पीछा करना। **–लेना**–साथ ले चलना। **–सोना**–सहवास करना। **–होना**–साथ होना, हमराह होना।

संग–पु० (फा०) पत्थर, चट्टान। **–अंदाज़**–पु० ढेलवाँस, किलेकी दीवारमें शत्रुपर पत्थर फेंकनेके लिए बने हुए छेद; इन छेदोंसे शत्रुपर पत्थर फेंकनेवाला; किलेके वे छेद जिनसे बंदूक चलायी जाती है। **–आसिया**–पु० चक्कीका पत्थर। **–ख़ारा**–पु० एक तरहका कड़ा पत्थर। **–ख़ुर्दा**–वि० पत्थरसे घायल। **–ख़्वार**–पु० शुतुरमुर्ग। **–चक़माक़**–पु० एक तरहका पत्थर जिसपर चोट लगनेसे आग निकलती है। **–चा**–पु० ओला। **–चीनी**–पु० एक तरहका पत्थर। **–ज़र**–पु० कसौटी। **–जराहत**–पु० एक तरहका सफेद चिकना पत्थर। **–जाँ**–वि० निर्दयी; जिसके प्राण मुश्किलसे निकलें। **–तराज़ू**–पु० तराज़ूका बाट। **–तराश**–पु० पत्थर गढ़नेका काम करनेवाला। **––दान,–दाना**–पु० परिंदका पोटा। **–दिल**–वि० निर्दय, बेरहम। **–दिली**–स्त्री० बेरहमी, निर्दयता। **–पुश्त**–पु० कछुवा। **–फ़र्श**–पु० पत्थरका फर्श। **बसरी**–पु० बसरामें पाया जानेवाला एक तरहका पत्थर। **–बस्त**–वि० दृढ़, मजबूत। **–बार**–वि० पत्थर फेंकनेवाला। पु० पथरीली जमीन। **–बारान**–पु० पत्थरोंकी बौछार। **–मरमर,–मर्मर**–पु० एक तरहका सफेद पत्थर जो इमारतोंमें लगाया जाता है। **–मुरदार**–पु० मुरदासंख। **–मूसा**–पु० एक तरहका काला पत्थर। **–यशब**–पु० एक तरहका कीमती पत्थर। **–रेजा**–पु० पत्थरकी गिट्टी; कंकड़ी। **–लरजा**–पु० एक तरहका पत्थर जो हिलानेसे काँपता है। **–लाख़**–पु० पथरीली जमीन। वि० कठिन, मुश्किल। **–साज़**–पु० छापेका पत्थर दुरुस्त करनेवाला। **–सार**–पु० एक तरहकी सजा, पत्थर मारकर मार डालना। वि० पत्थर मारनेवाला। **–सारी**–स्त्री० दे० 'संगसार'। **–सुर्ख़**–पु० एक तरहका लाल पत्थर। **–सुलेमानी**–पु० एक तरहका पत्थर जो काला और सफेद होता है। **–(गे) असवद**–पु० वह काला पत्थर जो काबाकी दीवारमें लगा है। **–आतिश**–पु० चकमाक। **–तुर्बत**–पु० कब्रपर लगा पत्थर। **–पा**–पु० पैरका मैल साफ करनेका पत्थर, झाँवाँ। **–बालिश**–पु० साधुसंत जिस पत्थरको सिरहाने तकियाकी जगह लगाते हैं। **–बुनियाद**–पु० नींव, आधार शिला। **–मज़ार**–पु० कब्रमें लगा हुआ वह पत्थर जिसपर मृत व्यक्तिका नाम आदि अंकित हो। **–मसाना** पु० पथरी। **–माही**–पु० एक सफेद पत्थर जो मछलीके सिरसे निकलता है। **–यहूद**–पु० एक तरहका पत्थर जो दवाके काम आता है। **–राह**–पु० रास्तेपर पड़ा हुआ पत्थर जिससे आने-जानेवालोंको कष्ट हो। **–सितारा**–पु० एक तरहका पत्थर जिसमें छोटे-छोटे सितारे चमकते हैं। **–सुरमा**–पु० एक तरहका काला पत्थर जिससे सुरमा बनाते हैं।

संग–स्त्री० दे० 'साँग'–'बियै संग सौं फोरि डारै करेजा'–सुजा०।

संगठन–पु० दे० 'संघटन'।

संगठित–वि० दे० 'संघटित'।

संगणक–पु० (कांप्यूटर) हिसाब लगाने, आँकड़ोंका ज़ोड़ इत्यादि शीघ्रतापूर्वक कर देनेवाली मशीन।

संगणना–स्त्री० (कांप्यूटेशन) गिनकर या हिसाब लगाकर देखना, आँकड़ों आदिके आधारपर ठीक-ठीक अंदाज लगाना; अभिकलन।

संगणिका–स्त्री० (सं०) सुंदर वार्ता; समाज, दुनिया।

संगत–वि० (सं०) मिला हुआ, युक्त; एकत्रीभूत; संभोग-लग्न; विवाहित; उपयुक्त, मौजूं; ठीक तरहसे बैठने, खप जानेवाला (रेलेवेन्ट); सिकुड़ा हुआ, संकुचित। स्त्री० मेल, मिलन; मैथुन; साथ; मैत्री; तर्कसंगत वाणी; आसक्ति; गाने आदिके साथ बाजा बजाना (हिं०); उदासी साधुओंका मठ (हिं०)। **–गात्र**–वि० जिसका बदन सिकुड़ा हो। **–संधि**–स्त्री० मैत्रीके बाद होनेवाली सुलह; मैत्रीके आधारपर हुई संधि; समय-कुसमय एक-सी रहनेवाली संधि; कांचन संधि। मु० **–करना**–गानेवालेके साथ कोई वाद्य बजाना।

संगतरा–पु० (फा०) संतरा।

संगतार्थ–वि० (सं०) उपयुक्त अर्थवाला। पु० उपयुक्त अर्थ।

संगति–स्त्री० (सं०) मिलन, योग; संघ; सभा, समाज; मोक्ष; साथ; संपर्क, संसर्ग; मैथुन; मिलनेके लिए जाना; सामंजस्य (हार्मनी); पूर्वापरके विचारसे मेल बैठना (कन्सिस्टेंसी, रेलेवेन्सी); उपयुक्तता, मौजूं होना (कम्पैटिबिलिटी); संयोग, इत्तिफाक; ज्ञान; ज्ञानवृद्धिके लिए प्रश्न करना; अधिकरणके पाँच अवयवोंमेंसे एक (वे०)।

संगतिया, संगती–पु० साथी; गाने आदिके साथ साज बजानेवाला।

संगथ–पु० (सं०) संघर्ष, युद्ध।

संगथा–स्त्री० (सं०) दो नदियोंका संगम।

संगम–पु० (सं०) मिलन, संयोग; साथ, संगति; संपर्क, स्पर्श; नर तथा मादाका सन्तानोत्पादन हेतु मिलन (मेटिंग); मैथुन; नदियोंका मिलन; दो अधिक रेखाओं, वस्तुओं आदिके मिलनका भाव या स्थान (जंकशन); उपयुक्तता; युद्ध, मुकाबला; (ग्रहोंका) योग। **–साध्वस**–पु० मैथुनके समयकी घबड़ाहट।

संगमक–वि० (सं०) मार्ग दिखलानेवाला ।

संगमन–पु० (सं०) मेल, मिलन; यम; पारस्परिक मेलमिलाप, पत्नाचार; संचार (कम्यूनिकेशन); युद्धलिप्त देशोंके सैनिक अधिकारियोंका समझौतेकी बातचीतके लिए एकत्र होना, (कानवेंशन), दे० 'अभिसमय' ।

संगमर–पु० वैश्योंकी एक उपजाति ।

संगमित–वि० (सं०) मिलाया, संयुक्त किया हुआ ।

संगर–पु० (फा०) खेत या बागके चारों ओर बनायी जानेवाली काँटोंकी बाड़; दीवार जो लड़ाईके मौकेपर बनायी जाती है; मोरचा; खाई; (सं०) संघर्ष, युद्ध; रजामंदी, ठहराव, वादा; अंगीकार; सौदा; ज्ञान; भक्षण; विष; आपत्, संकट; शमीका फल । **–क्षम**–वि० युद्धमें भिड़ने योग्य । **–स्थ**–वि० युद्धमें संलग्न ।

संगरण–पु० (सं०) सौदा, करार; रजामंदी ।

सँगरा–पु० बाँसका टुकड़ा जिससे पेशराज पत्थर उठाते हैं; कुएँके ढक्कनका वह छेद जिसमें पंप लगा रहता है ।

संगराम*–पु० दे० 'संग्राम' ।

संगरासिख–पु० ताँबेका मैल जिससे खिजाब बनाते हैं ।

संगल†–पु० एक तरहका रेशम ।

संगव–पु० (सं०) प्रातःस्नानके तीन मुहूर्त बादका समय जो दिनके पाँच भागोंमेंसे दूसरा है और जब गाय दुहनेके बाद चरनेके लिए ले जायी जाती है । **–काल**–पु०,**–वेला**–स्त्री० दोहनके लिए गायोंके एकत्र होनेका समय ।

संगविनी–स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ गायें दुहनेके लिए एकत्र की जाती हैं ।

संगसी–स्त्री० दे० 'सँड़सी' ।

सँगाती–पु० साथ रहनेवाला, साथी, संगी; दोस्त ।

संगायन–पु० (सं०) साथ-साथ गाना या स्तुति करना; कोई बड़ी धर्मसभा; प्राचीनकालीन बौद्धसभा जिसमें भिक्षु लोग मिलकर भगवान बुद्धके उपदेशोंका पाठ करते थे ।

संगाव–पु० (सं०) वार्तालाप; वाद ।

संगिनी–स्त्री० (सं०) साथ रहनेवाली, साथिन; पत्नी ।

संगिस्तान–पु० (फा०) पथरीला प्रदेश ।

संगी–वि० (फा०) पत्थरका, संगीन । पु० एक तरहका रेशमी कपड़ा । **–जिगर**–वि० कठोर । **–दस्त**–वि० कामचोर । **–दिल**–वि० पाषाण हृदय । **–दिली**–स्त्री० कठोरता ।

संगी(गिन्)–वि० (सं०) चिपकने, साथ लगनेवाला; संपर्कमें आनेवाला; आदी; आसक्त; कामुक; अविच्छिन्न । पु० साथी; दोस्त ।

संगीत–वि० (सं०) साथ मिलकर गाया हुआ । पु० वह गाना जिसे कई आदमी मिलकर गायें; वाद्योंके साथ गाया जानेवाला गाना; नृत्य, वाद्य और गीतका समाहार; नृत्य और वाद्यके साथ गानेकी कला । **–रूपक**–पु० रेडियोसे प्रसारित होनेवाला गीत-प्रधान छोटा नाटक या रूपक । **–वेश्म(न्)**–पु०**–शाला**–स्त्री० संगीत-भवन । **–व्यापृत**–वि० संगीतरत । **–विद्या**–स्त्री० वह विद्या जिसमें संगीत-संबंधी विषयोंका निरूपण हो । **–शास्त्र**–पु० संगीतविद्या । **–सहायिनी**–स्त्री० साथ गानेवाली स्त्री ।

संगीतक–पु० (सं०) वाद्यमेल 'कन्सर्ट'; गान, नृत्य और वाद्य द्वारा लोगोंका रंजन ।

संगीतज्ञ–पु० (सं०) संगीत विद्याका ज्ञाता, गायक या वादक ।

संगीति–स्त्री० (सं०) वार्तालाप; संगीत; संगीतकला; आर्या छंदका एक भेद; बौद्धोंकी धर्मसभा ।

संगीतिका–स्त्री० (सं०) (ऑपेरा) पाश्चात्यशैलीका गेय नाटक ।

संगीन–वि० (फा०) पत्थरका, पत्थरका बना हुआ; सख्त, कठोर; मजबूत । स्त्री०, पु० एक तरहका नोकदार हथियार जो बंदूकपर चढ़ाया जाता है । **–जुर्म**–पु० ऐसा अपराध जो कठिन दंडके योग्य हो । **–दिल**–वि० दे० 'संगदिल' । **–दिली**–स्त्री० बेरहमी ।

संगीनी–स्त्री० मजबूती; ठोसपन ।

संगीर्ण–वि० (सं०) इकरार किया हुआ; वादा किया हुआ ।

संगुण–वि० (सं०) गुणित (समासमें) ।

संगुप्त–वि० (सं०) भली-भाँति छिपाया हुआ; सुरक्षित । पु० एक बुद्ध ।

संगुप्ति–स्त्री० (सं०) सुरक्षा; छिपाव ।

संगूढ–वि० (सं०) सुरक्षित; छिपाया हुआ; संक्षिप्त; संयुक्त; एकत्र, राशीकृत (अन्न जो रेखाओंसे घेर दिया जाता है) ।

संगृहीत–वि० (सं०) संग्रह किया हुआ, एकत्र किया हुआ; जकड़ा हुआ; संयत किया हुआ, शासित; प्राप्त, स्वीकार किया हुआ; संक्षिप्त किया हुआ । **–राष्ट्र**–वि० (वह राजा) जिसका राज्य सुशासित हो ।

संगृहीता–पु० दे० 'संग्रहीता' ।

संगृहीति–स्त्री० (सं०) जानवरों आदिको निकालने, सिखलानेकी क्रिया ।

संगोतरा–पु० संतरा ।

संगोपन–पु० (सं०) छिपाना । वि० छिपानेवाला ।

संगोपनीय–वि० (सं०) छिपाने लायक ।

संग्रंथन–पु० (सं०) एक साथ बाँधना ।

संग्रथन–पु० (सं०) एक साथ बाँधना; एक साथ बाँधकर मरम्मत करना ।

संग्रसन–पु० (सं०) खा जाना, चट कर जाना; अधिक खाना; दबोचना ।

संग्रह–पु० (सं०) पकड़ना; मुट्ठी बाँधना; रक्षण; (भोजन, औषध आदि) ग्रहण करना; समर्थन करना, अपनाना; जमा करना, एकत्र करना; शासन, नियंत्रण करना; राशीकरण; संयोग; अंतर्भाव; (ग्रंथादिका) संकलन; संक्षिप्त, छोटा रूप; जोड़; सूची; भांडार-गृह; एक साथ इकट्ठा की हुई वस्तुएँ; प्रयत्न; उल्लेख; गौरव; कल्याण (लोकसग्रह); इंद्रियनिग्रह, संयम; उच्चता; वेग; मंत्रबलसे प्रक्षिप्त अस्त्र लौटा लेना; कोष्ठबद्धता; विवाह; सभा; गोष्ठी; मैथुन; शिव; संरक्षक; धारणा । **–कार**–पु० संकलनकर्ता । **–पाल**–पु० दे० 'संग्रहाध्यक्ष' । **–वस्तु**–स्त्री० संग्रहके योग्य, लोकप्रिय वस्तु । **–श्लोक**–पु० वह श्लोक जिसमें पूर्वकथनका उपसंहार किया गया हो ।

संग्रहण–पु० (सं०) ग्रहण करनेकी क्रिया; प्राप्त करना; संकलन करना, एकत्र करना; (रत्नादि) जड़ना; पूर्णोल्लेख; नियंत्रण करना; अपनी ओर कर लेना; मैथुन; व्यभिचार; स्त्रीके वर्जित अंगोंका स्पर्श; नारीका अपहरण; आशा करना ।

संग्रहणी–स्त्री० (सं०) अतीसारका एक रूप जिसमें खाना बिना पचे ही मलके रूपमें निकल जाता है (स्प्रू) ।

संग्रहणीय–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; (औषधके रूपमें) सेवन करने योग्य; नियंत्रणके योग्य; एकत्र करने योग्य ।

संग्रहना*–स० क्रि० संग्रह, संचय करना; अपनाना ।

संग्रहाध्यक्ष, संग्रहालयाध्यक्ष–पु० (क्यूरेटर) किसी संग्रहालय (म्यूजियम)की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला मुख्याधिकारी ।

संग्रहालय–पु० (सं०) वह स्थान जहाँ विशेष प्रकारकी वस्तुओंका संग्रह किया गया हो (म्यूजियम) ।

संग्रही(हिन्)–पु० (सं०) संग्रह, जमा करनेवाला; प्राप्त करनेवाला ।

संग्रहीता(तृ)–वि० (सं०) एकत्र, संग्रह करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; अपनानेवाला । पु० सारथि ।

संग्राम–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई । **–कर्म(न्)**–पु० युद्धकर्म, भिड़ंत । **–जित्**–वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला । **–तुला**–स्त्री० युद्धके रूपमें अग्निपरीक्षा । **–तूर्य**–पु० युद्धपटह । **–पटह**–पु० युद्धमें बजाया जानेवाला नगाड़ा । **–भूमि**–स्त्री० समरभूमि, युद्धक्षेत्र । **–मृत्यु**–स्त्री० वीर-गति ।

संग्रामांगण–पु० (सं०) युद्धक्षेत्र, लड़ाईका मैदान ।

संग्रामार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) युद्धेच्छु ।

संग्रामी(मिन्)–वि० (सं०) युद्धरत ।

संग्राह–पु० (सं०) पकड़ना, ग्रहण करना; बलात् पकड़ना; मुट्ठी बाँधना; मुक्का; ढालका दस्ता ।

संग्राहक–पु० (सं०) एकत्र, संग्रह, जमा करनेवाला; संकलनकर्ता;

सारथि। वि० एकत्र करनेवाला; कब्ज करनेवाला, काबिज; अपनी ओर खींचनेवाला।

संग्राही(हिन्)–वि० (सं०) एकत्र करनेवाला; कब्ज करनेवाला; अपने साथ करने, अपनानेवाला। पु० कुटज वृक्ष।

संग्राह्य–वि० (सं०) संग्रह, एकत्र करने योग्य; रोकने योग्य; (किसी पदपर) नियुक्त करने योग्य; अपनाने योग्य; हृदयंगम करने योग्य।

संघ–पु० (सं०) समूह, झुंड, दल, मंडली; विशेष उद्देश्यसे एक साथ रहनेवाले व्यक्तियोंका समूह; समाज; विशेष-उद्देश्यकी पूर्तिके लिए बना हुआ संघटन; बौद्ध भिक्षुओं आदिका समूह; प्राचीन भारतमें प्रचलित एक प्रकारका प्रजातन्त्र; राज्यों, राष्ट्रों आदिका पारस्परिक समझौतेसे बना संघटन (फेडरेशन); मठ; घनिष्ठ संपर्क। **–चारी(रिन्)**–वि० झुंडमें चलनेवाला। पु० मछली। **–जीवी(विन्)**–वि० दल बनाकर रहनेवाला। पु० मजदूर। **–न्यायालय**–पु० (फेडेरेल कोर्ट) संघराज्यका सर्वोच्च न्यायालय। **–पति**–पु० दलनायक। **–पुरुष**–पु० बौद्ध संघका परिचारक। **–पुष्पी**–स्त्री० धातकी, धव वृक्ष। **–भेद**–पु० संघमें फूट डालना जो पाँच अक्षम्य अपराधोंमें गिना जाता है (बौ०)। **–भेदक**–वि० संघमें फूट डालनेवाला (बौ०)। **–वृत्ति**–स्त्री० साथ मिलनेकी वृत्ति, दलमें रहने या काम करनेका भाव। **–समाजवाद**–पु० (सिंडिकेलिज्म) वह क्रांतिकारी श्रमिक आंदोलन जो व्यवसायसंघों (ट्रेड यूनियन्स)को ही सामाजिक क्रांतिका तथा भावी समाजका आधार मानता है (हड़ताल करना इसका मुख्य साधन और लक्ष्य है); राज्यसंस्था समाप्त कर व्यवसायसंघोंकी सत्ता स्थापित करना।

संघक–पु० (सं०) समूह।

संघट–वि० (सं०) राशीकृत, ढेर लगाया हुआ। पु० राशि; * झगड़ा; संयोग। (हिंदीमें संघट्टके अर्थमें भी प्रयुक्त होता है)।

संघटन–पु० (सं०) संयोग; मेल; (हिं०) निर्माण, रचना, व्यवस्थित करनेका कार्य, गठन; संग्रथन; कार्यविशेषकी सिद्धिके लिए निर्मित कोई संस्था (आर्गेनाइजेशन)।

संघटना–स्त्री० (सं०) मिलाना, संयुक्त करना; स्वरों या शब्दोंका संयोग।

संघटित–वि० (सं०) एकत्रीभूत; वादित (संगीत); (हिं०) कार्यविशेषके लिए परस्पर संबद्ध; व्यवस्थित।

संघट्ट–पु० (सं०) संघर्ष; मुठभेड़, भिड़ंत; स्पर्द्धा; आघात, चोट; संयोग; आलिंगन; दूतोंकी सहायतासे नायक-नायिकाका मिलन। **–चक्र**–पु० एक चक्र जिसके सहारे युद्धके लिए उपयुक्त समयका निश्चय किया जाता है (ज्यो०)। **–पणित**–पु० बाजी, दावँ।

संघट्टन–पु०, **संघट्टना**–स्त्री० (सं०) संघर्षण; टक्कर; घनिष्ठ संपर्क; दो पहलवानोंकी भिड़ंत; गुत्थमगुत्था।

संघट्टा–स्त्री० (सं०) लता, बेल।

संघट्टित–वि० (सं०) घर्षित; माँड़ा, गूँधा हुआ; एकत्रीकृत; परिचालित।

संघती†–पु० साथी।

संघनन–पु० (कॉण्डेनसेशन) घना या ठोस बना देना।

संघरना*–स० क्रि० संहार, नाश करना; वध करना।

संघर्ष–पु० (सं०) दो चीजोंका आपसमें रगड़ खाना; होड़; स्पर्द्धा; द्वेष; दो विरोधी दलों या पक्षोंका टकराव (स्ट्रगल); कामोत्तेजना; धीरे-धीरे लुढ़कना, रेंगना, संसर्प। **–शाली(लिन्)**–वि० स्पर्द्धा, द्वेष करनेवाला। **–समिति**–स्त्री० (कमिटी ऑव ऐक्शन) स्वाधीनता या प्राप्य अधिकारों, माँगों आदिकी पूर्तिके लिए चलाये जानेवाले आंदोलन या संघर्षका संचालन करनेवाली समिति, आंदोलनसमिति।

संघर्षण–पु० (सं०) रगड़ खाने या रगड़नेकी क्रिया; रगड़ने, मलनेके काम आनेवाली वस्तु, उबटन आदि।

संघर्षा–स्त्री० (सं०) तरल लाख।

संघर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) रगड़नेवाला; स्पर्द्धा, द्वेष करनेवाला।

संघस–पु० (सं०) खाद्य पदार्थ।

संघाट–पु० (सं०) काष्ठ-खंडोंका जोड़ मिलाना; दारुकृत्य, बढ़ईका काम; पात्र; दलमें रहनेवाला।

संघाटि, संघाटी–स्त्री० (सं०) बौद्ध भिक्षुओंका वस्त्र, चीवर।

संघाटिका–स्त्री० (सं०) युग्म, जोड़ा; स्त्रियोंकी एक पुरानी पोशाक; कुटनी; घ्राण; जलकंटक, सिंघाड़ा।

संघाणक–पु० (सं०) नाकसे निकलनेवाला कफ।

सँघात–पु० संग, साथ। अ० संग या साथमें–'धुआँ उठै मुख साँस सँघाता'–प०।

संघात–पु० (सं०) आघात; टक्कर (इम्पैक्ट); वध; बंद करना (द्वार); युद्ध; ठोस, घनीभूत करना; संयोग; समूह, झुंड; राशि; साथ यात्रा करनेवालोंका दल, कारवाँ; श्लेष्मा; अस्थि; शरीर; घनता; प्रचंडता; एक ही वृत्तमें रचित काव्य; समास (व्या०); चलनेका एक विशेष ढंग (ना०); एक नरक। **–कठिन**–वि० जो मिलकर ठोस हो गया हो। **–चारी(रिन्)**–वि० दलमें रहनेवाला। **–ज**–वि० वात, पित्त और कफके विकारसे उत्पन्न, सान्निपातिक। **–पत्रिका**–स्त्री० सोआ; शतपुष्पा, सौंफ। **–बल-प्रवृत्त**–पु० एक प्रकारका आधिभौतिक रोग। **–विहारी(रिन्)**–पु० बुद्ध। **–शिला**–स्त्री० पत्थर जैसा कठिन पदार्थ; बहुत कड़ा पत्थर।

संघातक–पु० (सं०) साथ रहनेवालोंका पृथक् होना। वि० घातक; नाशक।

संघातन–पु० (सं०) वध करना; नाश करना।

संघातिका–स्त्री० (सं०) अरणिकी लकड़ी जिसे रगड़कर आग उत्पन्न करते हैं।

संघाती–पु० साथ देनेवाला, साथी; दोस्त।

संघाती(तिन्)–वि० (सं०) घातक, प्राणहारी।

सँघाती*–पु० दे० 'संघाती'।

संघाधिप–पु० (सं०) संघका प्रधान (जै०)।

संघार*–पु० दे० 'संहार'।

संघारना*–स० क्रि० संहार, नाश करना; वध करना।

संघाराम–पु० (सं०) बौद्ध भिक्षुओंके रहनेका स्थान, विहार।

संघावशेष–पु० (सं०) वे पाप जिनके लिए संघसे कुछ दिनोंतक निकालनेका दंड दिया जाता था (बौ०)।

संघी–वि० (सं०) किसी संघसे सम्बद्ध। पु० किसी संघका सदस्य।

संघीय–वि० (सं०) (फेडरल) संघ सम्बन्धी।

संघीय संविधान–पु० (फेडेरल कांस्टिटयूशन) उन राज्योंके संघका संविधान जो आंतरिक मामलोंमें तो प्रायः स्वतंत्र हों, किन्तु रक्षा एवं परराष्ट्र-नीतिके संबंधमें केंद्रीय या संघसरकारके अधीन हों।

संघुषित–वि० (सं०) ध्वनित; घोषित। पु० ध्वनि; शोर, चिल्लाहट।

संघुष्ट–वि० (सं०) ध्वनित, गुंजायमान; घोषित; विक्रयार्थ प्रस्तुत। पु० ध्वनि, आवाज।

संघृष्ट–वि० (सं०) रगड़ खाया हुआ; रगड़ा हुआ।

सँघेरना†–स० क्रि० रस्सीसे एक गायके दायें पैरको दूसरी गायके बायें पैरके साथ बाँधना।

सँघेरा†–पु० दो गायोंके पैरोंको एकमें बाँधनेकी रस्सी।

संघेला†–पु० साथी; मित्र।

संघोष–पु० (सं०) जोरका शब्द; घोष, ग्वालोंकी बस्ती।

संघोषिणी–स्त्री० (सं०) एक प्रेतवर्ग।

संच–पु० (सं०) ग्रंथ-लेखनके काम आनेवाले पत्रोंका संग्रह; * एकत्र करना; रक्षण; कुशल; शांति; लिखनेकी स्याही। **–कर***–वि० संचय करनेवाला, कंजूस।

संचक–पु० (सं०) साँचा; संचय करनेवाला (हिं०)।

संचकित–वि० (सं०) अचंभेमें पड़ा हुआ; भीत, कंपित।

संचक्ष–पु० (सं०) ऋषि; आचार्य; पुरोहित।

संचत्–पु० (सं०) प्रतारक, ठग; दुष्ट; ठगी, धोखा।

संचना*–स० क्रि० जमा करना, बटोरना; रक्षा, देखभाल करना।

संचय–पु० (सं०) एकत्र करना; भांडार, राशि, ढेर; बड़ी राशि या परिमाण; जोड़, संधि।

संचयन–पु० (सं०) एकत्र करनेकी क्रिया, ढेर लगाना (एक्यूमुलेशन); जले हुए शवकी अस्थियाँ एकत्र करना ।

संचयिक–वि० (सं०) संग्रह करनेवाला ।

संचयी(यिन्)–वि० (सं०) संचय करनेवाला; कंजूस, कृपण; धनवान् ।

संचर–पु० (सं०) रास्ता, मार्ग; तंग रास्ता; गमन; एक राशिसे दूसरी राशिमें संक्रमण; पुल; प्रवेशद्वार; शरीर; वध; विकास, प्रगति; साथी ।

संचरण–पु० (सं०) गमन; गति; भ्रमण; पार करना; गतिमान् करना; प्रयोगमें लाना; फैलाना ।

संचरना*–अ० क्रि० चलना, फिरना; फैलना; पहुँचना । स० क्रि० चलाना ।

संचर्वण–पु० (सं०) चबानेकी क्रिया ।

संचल–वि० (सं०) कंपित, हिलता हुआ; घूमता हुआ । पु० साँचर नमक । –**नाड़ी**–स्त्री० धमनी ।

संचलन–पु० (सं०) हिलना, काँपना; घूमना ।

संचान–पु० (सं०) श्येन, बाज; शिकरा ।

संचायक सेल–स्त्री० (एक्यूमूलेटर) ऐसा सेल जिसमें विद्युत्धारा प्रवाहित करके विद्युत् ऊर्जाको रासायनिक ऊर्जाके रूपमें संचित कर लेते हैं (इस क्रियाको 'आवेशन' कहते हैं), तदुपरान्त उससे विद्युतधारा प्राप्त की जा सकती है ।

संचाय्य–पु० (सं०) एक यज्ञ जिसमें सोम एकत्र किया जाता था ।

संचार–पु० (सं०) गमन; भ्रमण; सूर्यका दूसरी राशिमें प्रवेश; रोग-संक्रमण; मार्ग, रास्ता; मार्गदर्शन; संदेशवाहक साधन प्रकार और क्रिया (कम्यूनिकेशन); (ला०) ढंग; जीवन-व्यापार; कठिन यात्रा; गुप्तचरोंका एक भेद; कष्ट; कठिनाई; नेतृत्व; बढ़ावा देना; सर्पमणि । –**जीवी(विन्)**–वि० खानाबदोश; शरणापन्न । –**पथ**–पु० टहलनेका स्थान । –**व्याधि**–स्त्री० एक संक्रामक रोग । –**साधन**–पु० (मीन्स ऑव कम्यूनिकेशन) दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियोंके बीच संबंध स्थापित करनेके साधन–डाक, तार, समुद्री तार, रेडियो आदि (वार्तावहनके साधन) ।

संचारक–वि० (सं०) ले जाने, चलाने, फैलानेवाला । पु० नायक; बढ़ावा देनेवाला; वक्ता; स्कंदका एक अनुचर ।

संचारण–पु० (सं०) नजदीक लाना या ले जाना; मिलाना, जोड़ना; संवाद कहना ।

संचारणी–स्त्री० (सं०) एक देवी (बौ०) ।

संचारना*–स० क्रि० फैलाना; प्रवेश कराना; उत्पन्न करना; प्रयोगमें लाना; चलाना ।

संचारयिता(तृ)–पु० (सं०) नायक, नेता ।

संचारिका–स्त्री० (सं०) कुटनी; दूती; वह दासी जिसके पास रुपये-पैसेका हिसाब रहता है; नाक; घ्राण; युगल, जोड़ा ।

संचारिणी–स्त्री० (सं०) हंसपदी लता; लाल लजालू । वि० संचरण करनेवाली; चलने-फिरने या डोलनेवाली ।

संचारित–वि० (सं०) गतिमान् किया हुआ, चलाया हुआ; उकसाया हुआ, जिसे बढ़ावा दिया गया हो; संक्रमित किया हुआ (रोग) । पु० अपने स्वामीके विचारोंको कार्यान्वित करनेवाला व्यक्ति ।

संचारी(रिन्)–वि० (सं०) गतिशील, चल; भ्रमणकारी; एकसे दूसरेमें संक्रमण करनेवाला, संक्रामक (रोग); चढ़ने-उतरनेवाला (स्वर); प्रवेश करनेवाला; साथ आने, मिलनेवाला; संलग्न; क्षणस्थायी; अस्थिर; गतिमान् करनेवाला; दुर्गम; आनुवंशिक । पु० गंधद्रव्य, धूप या धूपके जलनेसे उठा हुआ धुआँ; वायु; एक प्रकारके भाव जो तैंतीस या चौंतीस माने जाते हैं और स्थायी भावको पुष्ट कर विलीन हो जाते हैं, दे० 'व्यभिचारी भाव' (सा०); गीतके चार चरणोंमेंसे तीसरा; अस्थिरता, क्षणस्थायित्व ।

संचाल–पु० (सं०) कंपन; चलना ।

संचालक–पु० (सं०) संचालन करनेवाला, गति प्रदान करनेवाला; कार्य, विभाग, संस्था, कारखाने आदिके ठीकसे चलते रहने, कायम रहनेका प्रबंध करनेवाला (डाइरेक्टर) ।

संचालन–पु० (सं०) चलाना, गति देना; नियंत्रण । –**व्यय**–पु० (वर्किंग एक्सपेंसेज) किसी कारखाने, संस्था, प्रमंडल आदिके चलानेका व्यय । –**समिति**–स्त्री० (स्टीयरिंग कमिटी) दे० 'कर्णधार-समिति' ।

संचाली–स्त्री० (सं०) गुंजा ।

संचिंतन–पु० (सं०) चिंता, विचारणा ।

संचिंतित–वि० (सं०) सुविचारित; अभिप्रेत; निश्चित ।

संचित–वि० (सं०) इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, ढेर लगाया हुआ (एक्यूमुलेटेड); संचिका या नत्थीमें लगाया हुआ; घना (जैसे जंगल); ...से युक्त; गिना हुआ; जिसमें बाधा पड़ी हो; अभ्यास किया हुआ । –**कर्म(न्)**–पु० पूर्वजन्मके वे कर्म जिनका फलभोग नहीं हुआ है; यज्ञाग्नि संचित करनेके बाद किया जानेवाला कर्म । –**कोष**–पु० (प्रॉविडेंट फंड) दे० 'भविष्यनिधि' ।

संचिता–स्त्री० (सं०) एक वनस्पति ।

संचिति–स्त्री० (सं०) एकत्र करने, जमा करनेकी क्रिया; जमा की हुई रक़म; तह लगाना; शतपथब्राह्मणका नवाँ खंड ।

संचिन्ना–स्त्री० (सं०) मूषाकर्णी नामक लता ।

संचु–पु० (सं०) कारिका, व्याख्या ।

संचूर्णन–पु० (सं०) टुकड़े-टुकड़े करना, चूर करना ।

संचूर्णित–वि० (सं०) टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, चूर किया हुआ ।

संचेय–वि० (सं०) संचय करने, एकत्र करने योग्य ।

संचोदक–पु० (सं०) एक देवपुत्र (बौ०) ।

संचोदन–पु० (सं०) बढ़ावा देना, उत्तेजित करना ।

संचोदना–स्त्री० (सं०) उद्दीप्त या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ; उत्तेजित करना; प्रेरणा ।

संचोदित–वि० (सं०) प्रेरित; आदिष्ट ।

संछन्न–वि० (सं०) पूर्णतः ढका हुआ; छिपा हुआ; अज्ञात ।

संछर्दन–पु० (सं०) उगलना (ग्रहणके मोक्षके दस भेदोंमेंसे एक) ।

संछादन–पु० (सं०) छिपाना ।

संछादनी–स्त्री० (सं०) त्वचा, खाल ।

संछिदा–स्त्री० (सं०) नाश, बर्बादी ।

संछिन्न–वि० (सं०) काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

संछेद–पु० (सं०) काटना, विभाजन करना; हटाना, दूर करना ।

संज–पु० (सं०) शिव; ब्रह्मा । वि० (फा०) तौलनेवाला (समासमें); बजायी जानेवाली काँसेकी दो कटोरियाँ, झाँझ, मजीरा ।

संजन–पु० (सं०) बंधन; संघट्टन ।

संजनन–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला । पु० उत्पादन; रचना; प्रगति ।

संजनित–वि० (सं०) उत्पादित; रचित ।

संजनी–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन हथियार जिससे वध करते थे ।

संजम*–पु० दे० 'संयम' ।

संजमना*–स० क्रि० संयमित, व्यवस्थित करना–'पलटिपट संजमत केंसनि मृदुल अंग अँगोछि'–घन० ।

संजमी–वि० दे० 'संयमी' ।

संजय–स्त्री० (सं०) विजय । पु० एक प्रकारका व्यूह; धृतराष्ट्रका एक सारथि जो उन्हें युद्धका समाचार सुनाया करता था; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

संजर–पु० (फा०) बादशाह, सम्राट् ।

संजल्प–पु० (सं०) वार्तालाप; गपशप; शोरगुल, होहल्ला ।

संजवन–पु० (सं०) आँगन बनानेवाले चार मकानोंका समाहार; मार्गदर्शक स्तंभ ।

संजा–स्त्री० (सं०) छागी, बकरी । पु० (फा०) तराजू; वजन; पासंग ।

संजात–वि० (सं०) उत्पन्न; व्यक्त; व्यतीत (समय आदि); प्राप्त, मिला हुआ । –**कोप**–पु० क्रुद्ध । –**कौतुक**–वि० चकित । –**निद्रा-प्रलय**–वि० जिसकी नींद समाप्त हो गयी हो । –**निर्वेद**–वि० विरक्त । –**बलि**–वि० मृत प्राणियोंका मांस खानेवाला । पु० डोम कौआ । –**लज्ज**–वि० लज्जित । –**वेपथु**–वि० कंपित ।

संजाफ़–पु० (फा०) हाशिया, गोट; एक तरहका कपड़ा जिसकी गोट लगाते हैं; मगजी। पु० आधा लाल, आधा सफेद (या हरा) घोड़ा।

संजाफ़ी–वि० हाशियादार, (कपड़ा) जिसमें किनारी लगी हो। **–गंजा**–पु० वह गंजा जिसकी चँदियापर ही वाल हों।

संजाब–पु० (फा०) नेवलेकी जातिका एक जानवर या उसकी खाल जिससे पोस्तीन बनाते हैं; *एक तरहका घोड़ा।

संजावन–पु० (सं०) गरम दूधमें जामन डालना।

संजी–स्त्री० (फा०) वजन करना (समासमें)।

संजीदगी–स्त्री० संजीदा होना; गांभीर्य; समझदारी, शिष्टता।

संजीदा–वि० (फा०) तुला हुआ; गांभीर्ययुक्त; शिष्ट, समझदार; शांत; सहिष्णु।

संजीव–पु० (सं०) साथ पुनरुज्जीवित करना; पुनः जीवित करनेवाला (समासमें); एक नरक। वि० जीवित। **–करण**–पु० पुनः जीवित करना। **–करणी**–स्त्री० पुनर्जीवित करनेकी विद्या; एक कल्पित बूटी।

संजीवक–वि० (सं०) साथ जीने, रहनेवाला; पुनर्जीवित करनेवाला।

संजीवन–पु० (सं०) साथ जीना, रहना; पुनर्जीवित करना; एक नरक; दे० 'संजवन'; आहार; एक बूटी। वि० जीवनशक्ति देनेवाला।

संजीवनी–स्त्री० (सं०) मृतको जीवित करने, जीवनदान देनेवाली ओषधि; एक ओषधि, रुदंती। वि० स्त्री० जीवन देनेवाली। **–विद्या**–स्त्री० मृत व्यक्तिको जिलानेकी एक कल्पित विद्या।

संजीवित–वि० (सं०) पुनर्जीवित किया हुआ।

संजीवी(विन्)–वि० (सं०) मृतको जीवित करनेवाला।

संजुक्त†–वि० दे० 'संयुक्त'।

संजुग*–पु० युद्ध, संग्राम।

संजुत*–वि० मिला हुआ, सहित।

संजुता–स्त्री० एक छंद।

संजुष्ट–वि० (सं०)···से भरा हुआ, आवाद।

सँजूत*–वि० तैयार, सन्नद्ध; सावधान।

सँजोइ*–अ० संग, साथमें। पू० क्रि० इकट्ठाकर, जुटाकर।

सँजोइल*–वि० इकट्ठा किया हुआ; सज्जित।

सँजोउ*–पु० संयोग; तैयारी–'अवहूँ बेगहिं करौ सँजोऊ'–प०; सामग्री।

संजोग*–पु० दे० 'संयोग'।

संजोगिता–स्त्री० जयचंदकी कन्या जिसका पृथ्वीराजने हरण किया था।

संजोगिनी*–स्त्री० दे० 'संयोगिनी'।

संजोगी†–पु० तीतर रखनेके लिए साथ जुड़े हुए पिंजड़े; * वह पुरुष जो अपनी प्रियाके साथ हो। * वि० दे० 'संयोगी'।

सँजोना–स० क्रि० सजाना; एकत्र करना; पूरा करना; संचित करना।

सँजोवना*–स० क्रि० दे० 'सँजोना'।

सँजोवल*–वि० सजा हुआ; सन्नद्ध; सैन्यादिविशिष्ट।

सँजोवा†–पु० सजावट; जमाव।

सँजोह†–पु० बाना कसनेका हत्था जिसपर राछ लगा रहता है।

संज्ञ–वि० (सं०) जिसके घुटने चलते समय आपसमें टकराते हों; नामवाला; पूर्ण जानकार; होशमें आया हुआ। पु० एक तरहका पीला सुगंधित काष्ठ।

संज्ञक–वि० (सं०) नामवाला (समासमें)।

संज्ञपन–पु० (सं०) बलिपशुका (गला दबाकर) वध करना; छल करना, धोखा देना; सूचित करना।

संज्ञप्त–वि० (सं०) सूचित किया हुआ; बलि चढ़ाया हुआ।

संज्ञप्ति–स्त्री० (सं०) वध करना; सूचित करना।

संज्ञा–स्त्री० (सं०) बोध, ज्ञान; होश (सेन्स); प्रज्ञा; बुद्धि; पारिभाषिक रूपमें प्रचलित नाम (टेकनिकल टर्म); संकेत, इंगित; नाम; वह शब्द जो किसी व्यक्ति, वस्तु आदिका नाम हो (नाउन) (व्या०); गायत्रीमंत्र; एक बड़ी संख्या (बौ०); सूर्यकी स्त्री जो विश्वकर्माकी पुत्री थी। **–करण**–पु० नाम रखना। **–पुत्री**–स्त्री० यमुना। **–सुत**–पु० शनि। **–हीन**–वि० बेहोश।

संज्ञात–वि० (सं०) अच्छी तरह जाना, समझा हुआ।

संज्ञान–पु० (सं०) बोध, ज्ञान; सम्यक् अनुभूति; संकेत।

संज्ञापन–पु० (सं०) सूचित करना; बतलाना, सिखलाना; वध।

संज्ञावान्(वत्)–(सं०) होशदार; नामयुक्त।

संज्ञिका–स्त्री० (सं०) नाम, आख्या।

संज्ञित–वि० (सं०) सूचित, संकेत द्वारा जतलाया हुआ; अभिहित।

संज्ञी(ज्ञिन्)–वि० (सं०) चेतन, सज्ञान; नामधारी। पु० जीव (जै०)।

संज्ञु–वि० (सं०) जिसके घुटने चलते समय टकराते हों।

संज्वर–पु० (सं०) तीव्र ताप या ज्वर; क्रोधादिका आवेश।

संज्वरी(रिन्)–वि० (सं०) ज्वरयुक्त।

संज्वलन–पु० (सं०) वह जो जले, ईंधन।

सँझला†–वि० संध्या-संवंधी; मँझलेसे छोटा (भाई)।

सँझवाती–स्त्री० विवाहादिमें शामको गाया जानेवाला गीत; शामको जलाया जानेवाला दीप। वि० संध्या-संवंधी।

संझा*–स्त्री० संध्या।

सँझिया, सँझैया†–पु० संध्याकालका भोजन, ब्यालू।

सँझोखा*–पु० संध्याकाल।

सँझोखैं*–अ० संध्याकालमें।

सँठ†–पु० दे० 'शठ'; चुप्पी। मु० **–मारना**–मौन रहना, चुप्पी लगाना।

संड–पु० साँड़; (सं०) दे० 'षंढ'। **–मुसंड**–वि० (हिं०) मोटा-ताजा।

सँड़सा–पु० दो छड़ोंका बना हुआ एक कैंचीनुमा औजार जो गरम चीजें आदि पकड़नेके काम आता है।

सँड़सी–स्त्री० एक तरहका छोटा सँड़सा जिससे गरम बटलोई आदि पकड़कर उतारते हैं, संदंशिका।

संडा–वि० मोटा-ताजा, मजबूत।

सँड़ाई†–स्त्री० मशक जैसा चमड़ेका बना हुआ एक बड़ा थैला जिसमें हवा भरकर नावकी तरह इस्तेमाल करते हैं।

संडास–पु० शौचकूप; कुएँ जैसा बना हुआ पाखाना जिसे मेहतर साफ नहीं करता, मल जमा होनेपर सोडा आदि डाल देते हैं; ऊपरकी मंजिलपर इसी तरहका बना हुआ पाखाना जिसमें मल नीचे गिरता और मेहतरसे साफ कराया जाता है। **–टंकी**–स्त्री० (सेप्टिक टैंक) लोहेकी वह टंकी जिसमें मल एकत्र होता है।

सँडास*–स्त्री० सँडसी (प०)।

संडिश–पु० (सं०) सँडसा, सँड़सी।

संडीन–पु० (सं०) पक्षियोंकी एक तरहकी उड़ान।

संढिका–स्त्री० (सं०) ऊँटनी।

संत–पु० (सं०) अंजलि, संहततल; ('सत्'का प्रथमाका बहुवचनांत रूप) साधु, धर्मात्मा, विरक्त, महात्मा; गृहस्थाश्रममें प्रवेश करनेवाला साधु; एक छंद। वि० अत्यन्त निर्मल और पवित्र। **–समागम**–पु० संतोंका सत्संग। **–स्थान**–पु० साधुओंका स्थान, मठ।

संतक्षण–पु० (सं०) ताना, व्यंग्य, लगनेवाली बात।

संतत–वि० (सं०) फैलाया हुआ; अविच्छिन्न; बहुत; बराबर रहनेवाला। अ० हमेशा; लगातार, निरन्तर। * स्त्री० संतति, संतान। **–ज्वर**–पु० बराबर रहनेवाला ज्वर, विषम ज्वर। **–द्रुम**–वि० (जंगल) जिसमें वृक्ष बहुत घने हों। **–वर्षी(षिन्)**–वि० लगातार बरसनेवाला।

संतति–स्त्री० (सं०) फैलाव, विस्तार; नैरंतर्य; अविच्छिन्नता; अविच्छिन्न पंक्ति, धारा आदि; राशि, समूह; कुल; संतान; घनता; अनुभूति। **–नियंत्रण,–नियमन,–निरोध**–पु० प्राकृतिक (संयम आदि) अथवा कृत्रिम उपायों द्वारा गर्भाधान न होने देना (बर्थकंट्रोल)। **–पथ**–पु० योनि। **–होम**–पु० पुत्रेष्टि यज्ञ।

संततिक–पु० (सं०) संतान।

संतपन–पु० (सं०) बहुत तपना; तप्त करना; कष्ट देना, उत्पीड़न।

संतप्त–वि० (सं०) तप्त, जलता हुआ; जला हुआ; झुलसा हुआ; पिघला हुआ; कष्टग्रस्त, पीड़ित; क्लांत। पु० कष्ट; शोक; दुःख। **–चामीकर**–पु० पिघला हुआ सोना। **–वक्षा(क्षस)**–वि० जिसके सीनेमें या साँस लेनेमें कष्ट हो। **–हृदय**–वि० मनस्तापयुक्त।

संतम(स्)–पु० (सं०) विश्वव्यापी अंधकार; महामोह।

संतमक–पु० (सं०) श्वासकष्ट।

संतमस–पु० (सं०) दे० 'संतम'। वि० तमसाच्छन्न।

संतरण–वि० (सं०) पार करनेवाला; उद्धारक। पु० पार करनेकी क्रिया। (लांचिंग) तैयार हो जानेपर किसी पोत आदिको पहली बार पानीमें उतारना, तैराना। **–शील**–वि० पानीमें उतराता हुआ। **–शील हिमशिला**–स्त्री० (आइसवर्ग) पानीमें उतराती हुई वर्फकी चट्टान।

संतरा–पु० एक तरहका नींबू, बड़ी नारंगी।

संतरी–पु० (अं० 'सेंट्री') प्रहरी, पहरेदार; द्वारपाल।

संतर्जन–पु० (सं०) धमकाना; डाँट-डपट करना; भर्त्सना करना; कार्त्तिकेयका एक अनुचर।

संतर्जना–स्त्री० (सं०) धमकी; डाँट-डपट।

संतर्पक–वि० (सं०) तृप्त करनेवाला, ताजगी लानेवाला।

संतर्पण–पु० (सं०) तृप्त करना, ताजगी लाना; ताजगी लानेका साधन, शक्तिवर्धक पदार्थ; एक चूर्ण जो दाख, केला, खजूर, अनार, चीनी, लाई आदिके योगसे तैयार किया जाता था; एक वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसमें कोई घोल किसी वस्तुमें भरा जाता है।

संतर्पित–वि० (सं०) तृप्त किया हुआ।

संतान–पु० (सं०) अविच्छिन्न क्रम, पंक्ति, धारा आदि; विस्तार, फैलाव; शाखा प्रशाखा; स्नायु; विचार-प्रवाह; कल्पवृक्ष या उसका पुष्प; एक पौराणिक अस्त्र। स्त्री० संतति, औलाद। **–कर्म(न्)**–पु० संतानोत्पादन, प्रजनन। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० संतानोत्पादक। **–गणपति**–पु० एक गणेश जिनकी संतानोत्पत्तिके लिए पूजा की जाती है। **–गोपाल**–पु० कृष्णकी एक मूर्ति जिसकी संतानके लिए पूजा की जाती है। **–निग्रह**–पु० दे० 'संततिनिरोध'। **–वर्धन**–पु० वंशकी वृद्धि करना। **–संधि**–स्त्री० विवाह-संबंध द्वारा पुष्ट की हुई संधि।

संतानक–पु० (सं०) फैलानेवाला। पु० कल्पतरु या उसका पुष्प; लोकविशेष।

संतानिक–वि० (सं०) कल्पतरुके फूलोंसे वना हुआ (हार)।

संतानिका–स्त्री० (सं०) मकड़ेका जाल; मलाई; छेना; फेन; छुरी आदिका फल; स्कंदकी एक मातृका।

संतानिनी–स्त्री० (सं०) मलाई, साढ़ी। वि० सन्तानवती (स्त्री)।

संतानी(निन्)–पु० (सं०) विचारप्रवाहका विषय।

संताप–पु० (सं०) तेज गरमी; अग्नि; कष्ट, पीड़ा; क्रोध; ग्लानि, पापादिसे उत्पन्न अनुताप; प्रायश्चित्त। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० कष्ट देनेवाला। **–हर,–हारक**–वि० ताप दूर करनेवाला, ठंडक पहुँचानेवाला; आराम देनेवाला; सांत्वना देनेवाला।

संतापन–पु० (सं०) ताप देना, तप्त करना; जलाना; कष्ट, पीड़ा, दुःख देना; कामके पाँच वाणोंमेंसे एक; एक हथियार (पु०); शिवका एक अनुचर; एक वालग्रह। वि० तापकारी, जलानेवाला; दुःख, कष्ट देनेवाला।

संतापना*–स० क्रि० पीड़ा, कष्ट देना।

संतापित–वि० (सं०) तपाया हुआ, झुलसा हुआ; पीड़ित।

संतापी(पिन्)–वि० (सं०) कष्टकारक, दुःखद।

संताप्य–वि० (सं०) तपाने, जलाने योग्य; कष्ट, दुःख देने योग्य।

संति–स्त्री० (सं०) अंत, विनाश; दान।

संती*–अ० द्वारा; † बदलेमें।

संतुलन–पु० (सं०) आपेक्षिक तौल बराबर होना या रखना (बैलेंस)।

संतुलित–वि० (सं०) जिनमें संतुलन हो, जिन (दो देशों, पक्षों, राशियों, वस्तुओं आदि) का भार, बल, फैलाव आदि बराबर रखा गया हो (बैलेन्स्ड)।

संतुष्ट–वि० (सं०) जिसे संतोष हो गया हो; तृप्त; ···से प्रसन्न; राजी, रजामंद।

संतुष्टि–स्त्री० (सं०) संतुष्ट होनेका भाव; तृप्ति, इच्छापूर्ति; प्रसन्नता।

संतोख*–पु० जो मिले उसीसे तुष्ट रहनेका भाव।

संतोखी*–वि० दे० 'संतोषी'।

संतोष–पु० (सं०) जो मिले उसीसे प्रसन्न रहनेका भाव; तृप्ति; प्रसन्नता; धैर्य; अँगूठा और तर्जनी।

संतोषक–वि० (सं०) संतुष्ट करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला।

संतोषण–पु० (सं०) संतुष्ट, प्रसन्न करनेकी क्रिया।

संतोषना*–स० क्रि० संतुष्ट करना। अ० क्रि० संतुष्ट होना।

संतोषित–वि० (सं०) सतुष्ट, प्रसन्न किया हुआ; * संतुष्ट।

संतोषी(षिन्)–वि० (सं०) संतुष्ट रहनेवाला; सब्र करनेवाला।

संतोष्य–वि० (सं०) संतोष करने योग्य।

संत्यक्त–वि० (सं०) परित्यक्त; ···से रहित, वंचित।

संत्यजन–पु० (सं०) परित्याग करनेकी क्रिया।

संत्याग–पु० (सं०) परित्याग।

संत्रस्त–वि० (सं०) बहुत डरा हुआ, भयसे काँपता हुआ। **–गोचर**–वि० जिसे देखनेसे भय हो।

संत्राण–पु० (सं०) रक्षण, उद्धार।

संत्रास–पु० (सं०) अत्यधिक भय, आतंक; भयमिश्रित वेदनाका भाव। नवलेखनमें आधुनिक सामाजिक जीवनके साथ इसे प्रायः जोड़ा जाता है।

संत्रासन–पु० (सं०) डराना, त्रस्त करना।

संत्रासित–वि० (सं०) डरवाया हुआ।

संत्री–पु० दे० 'संतरी'।

संत्वरा–स्त्री० (सं०) जल्दबाजी, शीघ्रता।

संथा–स्त्री० पाठ, सबक।

संदंश–पु० (सं०) सँडसी; चिमटी; एक नरक; स्वरके उच्चारणमें ओठों या दंतपंक्तियोंको आपसमें मिलाना; शरीरके वे अंग जिनसे पकड़नेका काम लिया जाता है (अंगूठा आदि); पुस्तकका खंड या अध्याय; एक एकाह; प्रतिपक्षीका सँडसीकी तरह जकड़ लेना (न्यायशास्त्र, तर्क)।

संदंशक–पु० (सं०) चिमटा; सँडसी।

संदंशिका–स्त्री० (सं०) सँड़सी; चिमटी; (फारसेप्स) दे० 'गर्भशंकु'; (चोंचसे) काटनेकी क्रिया।

संदंशित–वि० (सं०) कवचयुक्त। पु० मुद्दालह।

संद†–पु० छेद, बिल; * दबाव; सनंदन–'महा आधार सनकसुक संदके'–घन०।

संदर्प–पु० (सं०) गर्व, घमंड।

संदर्भ–पु० (सं०) पिरोना; एक साथ बाँधना; बुनना; संकलन करना; व्यवस्थित करना; साहित्यिक रचना, निबंध आदि; संबंध-निर्वाह; लेख, पुस्तक आदिमें आया हुआ प्रसंग जिसका उल्लेख हो; (रेफेरेंस) व्यापक अर्थमें स्थिति, वातावरण तथा घटना और उसके देशकालकी स्थिति; अर्थ-प्रकाशक ग्रंथ। **–ग्रंथ,–साहित्य** (रिफरेन्स बुक्स) प्रामाणिक आकरग्रंथ, जिनसे प्रामाणिक जानकारी मिल सके। जैसे, कोश, विश्वकोश, साहित्य कोश; दे० 'निर्देशग्रंथ'। **–विरुद्ध**–वि० जिसमें संबंधका निर्वाह न हुआ हो। **–शुद्ध**–वि० जिसमें संबंधका अच्छा निर्वाह हुआ हो। **–शुद्धि**–स्त्री० संबंध-निर्वाहकी स्पष्टता।

संदर्भिका–स्त्री० (सं०) (बिब्लियोग्राफ़ी) किसी विशिष्ट विषयके संदर्भ ग्रंथोंकी सूची।

संदर्श–पु० (सं०) दृश्य।

संदर्शन–पु० (सं०) अच्छी तरह देखना; टकटकी लगाकर देखना; पर्यवेक्षण, विचार; अवलोकन, नजर; परस्पर मिलना; सूरत; दिखलानेकी क्रिया। **–द्वीप**–पु० एक द्वीप। **–पथ**–पु० दृष्टिपथ।

संदर्शयिता(तृ)–वि० (सं०) दिखलानेवाला।

संदर्शित–वि० (सं०) दिखलाया हुआ।

संदल–पु० (अ०) चंदन। **–का बुरादा**–चंदनका चूरा।

संदलित–वि० (सं०) आर-पार छेदा हुआ ।

संदली–वि० चंदनका; चंदनके रंगका । स्त्री० चौकी; ऊँची तिपाई जिसपर चढ़कर दीवारपर सफेदी आदि करते हैं ।

संदष्ट–वि० (सं०) दाँतसे काटा या दबाया हुआ । पु० दंत-पंक्तियोंको सटाकर रखनेसे होनेवाला एक उच्चारणदोष; वीणा, सितार आदिकी तूंबीकी घोड़ियामें तार बैठानेके खांचे ।

संदान–पु० (सं०) काटना, विभाजित करना; हाथीके मस्तकका वह भाग जहाँसे दान झरता है; रस्सी; जंजीर; बाँधनेकी क्रिया; हाथीके पैरका वह भाग जहाँ वह बाँधा जाता है; (फा०) एक तरहकी निहाई ।

संदानिका–स्त्री० (सं०) अरिखदिर ।

संदानित–वि० (सं०) बद्ध ।

संदानिनी–स्त्री० (सं०) गोशाला, गोष्ठ ।

संदाव–पु० (सं०) पलायन ।

संदाह–पु० (सं०) जलना; मुख, ओठ आदिकी जलन ।

संदि*–स्त्री० मेल, संधि ।

संदिग्ध–वि० (सं०)···से लिप्त, आवृत्त; जिसके संबंधमें भ्रम हुआ हो, अनिश्चित, जिसमें संदेह हो; जो खतरेसे खाली न हो (पोतादि) । पु० अस्पष्ट कथन; अनिश्चय; लेपन; व्यंग्यका एक प्रकार; तर्कमें एक प्रकारका मिथ्या उत्तर; वह व्यक्ति जिसके अपराधी होनेका संदेह हो (ससपेक्टेड) । **–जनसूची** –स्त्री० (ब्लैक लिस्ट) दे० 'दुर्वृत्तसूची' – । **–निश्चय**–वि० जिसे किसी किसी बातपर दृढ़ होनेमें हिचक हो । **–फल**–पु० विषाक्त बाण । वि० जिसका परिणाम अनिश्चित हो । **–बुद्धि,–मति**–वि० शकी, जो हर बातमें संदेह किया करे । **–लेख्य**–पु० वह लेख जिसका अर्थ संदिग्ध हो, स्पष्ट न हो ।

संदिग्धता–स्त्री०, **संदिग्धत्व**–पु० (सं०) एक दोष जो वाक्यका अर्थ स्पष्ट न होनेपर माना जाता है; संदिग्ध होनेका भाव या क्रिया ।

संदिग्धार्थ–वि० (सं०) जिसका अर्थ संदेहयुक्त हो । पु० विवादग्रस्त विषय ।

संदित–वि० (सं०) पकड़ा या बाँधा हुआ ।

संदिष्ट–वि० (सं०) कहा हुआ; निर्दिष्ट; वादा किया हुआ । पु० संवादवाहक; संवाद ।

संदिष्टार्थ–पु० (सं०) दूत, संदेश ले जानेवाला ।

संदिहान–वि० (सं०) संदिग्ध, संशयपूर्ण ।

संदी–स्त्री० (सं०) आसंदी, खाट, पलंग ।

संदीपक–वि० (सं०) उद्दीपक ।

संदीपन–पु० (सं०) उद्दीपन; कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक; एक ऋषि, कृष्णके गुरु । वि० उद्दीप्त करनेवाला ।

संदीपनी–स्त्री० (सं०) पंचम स्वरकी एक श्रुति (संगीत) ।

संदीपित–वि० उद्दीप्त; जलाया हुआ ।

संदीप्त–वि० (सं०) उद्दीप्त; प्रज्वलित; उत्तेजित किया हुआ, उकसाया हुआ ।

संदीप्ति–स्त्री० (ल्यूमिनिसेन्स) यदि वस्तुका ताप ऊँचा किये बिना ही, अन्य किसी कारणसे उस वस्तुसे प्रकाशका उत्सर्जन होता है तो इस घटनाको 'संदीप्ति' कहते हैं ।

संदीप्य–पु० (सं०) मयूरशिखा वृक्ष । वि० उद्दीपनके योग्य ।

संदुष्ट–वि० (सं०) कलुषित किया हुआ, खराब किया हुआ; दुष्ट, कमीना ।

संदूक–पु० (अ०) लकड़ी या लोहेका बकस जो कपड़े आदि रखनेके काम आता है; वह लंबा बकस जिसमें मुरदे दफन करनेके लिए ले जाते हैं, ताबूत । **–साज**–वि० संदूक बनानेवाला । **–(क़े) मुर्दा**–पु० ताबूत ।

संदूक़चा–पु० छोटा संदूक ।

संदूक़ची–स्त्री० छोटा संदूकचा ।

संदूक़ड़ी–स्त्री० छोटा संदूक ।

संदूक़ी–वि० संदूककी शक्लका । **–क़ब्र**–स्त्री० सीधी खुदी हुई कब्र ।

संदूख*–पु० दे० 'संदूक़' ।

संदूर*–पु० दे० 'सिंदूर' ।

संदूषण–पु० (सं०) कलुषित करना, गंदा करना, खराब करना ।

संदूषित–वि० (सं०) खराब किया हुआ; जिसकी हालत और खराब हो गयी हो (रोग); निंदित ।

संदृश्य–वि० (सं०)···जैसा देख पड़नेवाला ।

संदृष्ट–वि० (सं०) अच्छी तरह देखा हुआ; पहले ही जाना हुआ ।

संदेग्धा(ग्धृ)–वि० (सं०) शकी, संदेहकी प्रवृत्तिवाला ।

संदेश–पु० (सं०) संवाद; आदेश; भेंट, उपहार; छेनेकी बनी एक बंगला मिठाई; कोई प्रेरणादायक या उपदेशात्मक विचार । **–काव्य**–पु० विरहीकी विरह वेदना संदेशके रूपमें प्रियके निकट भेजनेका वर्णन करनेवाला काव्य, जैसे, मेघदूत । **–गिर्,–वाक्(च्)**–स्त्री० संवाद । **–वाहक,–हर,–हारक,–हारी(रिन्)**–पु० संवादवाहक ।

संदेशक–पु० (सं०) संवाद ।

संदेशा–पु० संवाद, खबर ।

संदेशी(शिन्)–पु० (सं०) दूत, संदेशवाहक ।

संदेस–पु० दे० 'संदेश' ।

संदेसा–पु० दे० 'संदेश' ।

सँदेसा–पु० दे० 'संदेशा' ।

सँदेसो†–पु० दे० 'संदेशी' ।

संदेह–पु० (सं०) (सस्पिशन) शक, अनिश्चय; खतरा; एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तुके संबंधमें सादृश्यके कारण अन्य वस्तु होनेका संदेह हो और वह दूर न होकर बना रहे । **–गंध**–स्त्री० संदेहकी झलक, थोड़ा संदेह । **–च्छेदन**–पु० संदेहका निवारण । **–दायी(यिन्)**–वि० संदेह उत्पन्न करनेवाला । **–दोला**–स्त्री० संदेहका झूला, कुछ निश्चय न हो सकना, द्विविधा । **–भंजन**–पु० संदेह दूर करनेकी क्रिया । **–वाद**–पु० (स्केप्टिसिज्म) सत्यके संबंधमें किसी स्थिर विश्वास या सिद्धांतपर न पहुँच सकनेकी स्थिति या प्रवृति, संशयवाद । **–वादी**–वि० (स्केप्टिक) वस्तुतः सत्य या तत्त्व क्या है, इस संबंधमें जो कोई निश्चय न कर सका हो, जिसके मनमें बराबर संदेह बना रहता हो (ऐसा दार्शनिक); अविश्वासी, संशयात्मा ।

संदेहात्मक–वि० (सं०) संदेहपूर्ण, संदिग्ध ।

संदेही(हिन्)–वि० (सं०) संदेहयुक्त ।

संदोल–पु० (सं०) एक आभूषण, कनफूल ।

संदोह–पु० (सं०) दुहना, साथ दुहना; सारा दूध (सारे झुंडका); राशि; प्राचुर्य ।

संद्रव–पु० (सं०) पलायन; गूँथनेकी क्रिया ।

संद्राव–पु० (सं०) पलायन; दौड़नेका स्थान; चाल, गति ।

संध–वि० (सं०) धारण करनेवाला; संयुक्त । पु० योग; संबंध; संधि ।

संधना*–अ० क्रि० मिलना, संयुक्त होना ।

संधा–स्त्री० (सं०) योग, मेल, साथ; घनिष्ठ संबंध; वादा, प्रतिज्ञा; अवस्था; सीमा; स्थिरता; साँझ; सुबह शाम सूर्यकी लाली; अनुसंधान; सुरा आदि चुलाना; किसी हालतका बना रहना; अभिप्राय । **–भाषा**–स्त्री० तांत्रिकोंकी एक प्राचीन भाषा । **–भाषित,–भाष्य,–वचन**–पु० अस्पष्ट कथन ।

संधाता(तृ)–पु० (सं०) विष्णु; शिव; (वेल्डर) लोहे आदिके पदार्थों, टुकड़ोंका जोड़नेवाला ।

संधान–पु० (सं०) मिलाना, जोड़ना (वेल्डिंग); योग; संधि; संघटन; मिश्रण; सुधार; निशाना लगाना; लक्ष्य–'एक पंथ औ एक संधाना'–प०; ध्यान; दिशा; सँभालना; मदिरा चुलाना; किसी वस्तुको सड़ाकर खमीर उठाना (फोमेंटेशन); एक मदिरा; पीनेकी इच्छा उत्तेजित करनेवाली चटपटी चीजें; अचार आदि बनाना; सीमा; घावका भरना; मैत्री, दोस्ती; किसीका किसीसे मिल जाना (एलायन्स); अनुभूति; काँजी; काँसा; सौराष्ट्र; अन्वेषण । **–कर्ता(र्तृ)**–वि० जोड़नेवाला, मिलानेवाला । **–ताल,–भाव**–पु० एक ताल (संगीत) ।

संधानना*–स० क्रि० बाण चढ़ाना, निशाना लगाना; चलानेके लिए कोई अस्त्र ठीक करना ।

संधाना–पु० अचार–'पुनि संधाने आये बसाँधै'–प० ।

संधानिका–स्त्री० (सं०) एक तरहका अचार।

संधानित–वि० (सं०) जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ; बद्ध।

संधानिनी–स्त्री० (सं०) गोष्ठ।

संधानी–स्त्री० (सं०) मिश्रण; शराव चुलाना; काँसा आदि ढालनेका कारखाना; शरावकी भट्ठी; एक तरहका बैंगन; प्राप्ति, लाभ; बंधन; अन्वेषण; पालनपोषण।

संधानी(निन्)–वि० (सं०) निशाना लगानेमें कुशल। पु० शराव चुलानेवाला; मिलाने, बाँधनेवाला।

संधापगमन–पु० (सं०) निकटस्थ शत्रुसे संधि करके दूसरेपर आक्रमण करना।

संधारण–पु०, **संधारणा**–स्त्री० (सं०) रोकना, धारण करना; आचरण करना; सहन करना; शरीरन्यास।

संधारणीय–वि० (सं०) धारण करने या जीवित करने योग्य।

संधार्य–वि० (सं०) धारण या वहन करने योग्य; निवारणके योग्य; (नौकर) रखने योग्य।

संधि–स्त्री० (सं०) संयोग, मेल, संवंध; समझौता; दोस्ती; राजाओं या राज्योंके वीच हुआ समझौता (ट्रीटी); सुलह; शरीरका जोड़ (ज्वाइण्ट); सुरंग, छेद, दरार; सेंध; विभाग, पार्थक्य; भग; संघटन; दो अक्षरोंके निकट आने या मिल जानेसे होनेवाला वर्णविकार, संहिता; अवकाश, विराम; परिवर्तन-काल; शुभ अवसर; युगांत-काल; कलाली; नाटककी पाँचों अवस्थाओंको मिलानेवाले स्थल, मुखसंधि आदि; तारुण्य, कैशोर आदि अवस्थाओंका योग। **–कुशल**–वि० मैत्री-स्थापनमें चतुर। **–कुसुमा**–स्त्री० एक फूलदार पोधा, त्रिसंधि। **–गुप्त**–पु० शत्रुपर छापा मारनेके लिए सैनिकोंके छिपकर वैठनेका स्थान। **–गृह**–पु० मधु-मक्खीका छत्ता। **–ग्रंथि**–स्त्री० वह ग्रंथि जो दो अंगोंके जोड़पर स्थित हो। **–चोर,–चौर,–तस्कर**–पु० सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। **–च्छेद,–च्छेदन**–पु० सेंध मारना; संधिकी शर्तें तोड़ना। **–च्छेदक**–पु० दे० 'संधिचोर'। **–ज**–पु० मदिरा; गाँठका फोड़ा। वि० चुलानेसे प्राप्त; संधि-द्वारा उत्पन्न (व्या०)। **–जीवक**–वि०, पु० स्त्रियोंको पुरुषोंसे मिलाकर जीविका अर्जन करनेवाला। **–तटी***–स्त्री० संधिस्थल –'सोभा सुमेरुकी संधितटी किधौं'–घन०। **–दूषण**–पु० संधि, सुलह तोड़ देना। **–प्रच्छादन**–पु० स्वरसाधनकी एक रीति (संगीत)। **–प्रवंधन**–पु० दे० 'संधि-वंधन'। **–बंध**–पु० भुइँचंपा; नस, सिरा; चूना, सीमेंट। **–बंधन**–पु० नस, सिरा, वंधनी। **–भंग,–मोक्ष**–पु० संधिकी शर्तें तोड़ देना; किसी जोड़का संवंध छूट जाना। **–भग्न**–पु० एक रोग जिसमें जोड़ोंमें पीड़ा रहती है। **–मुक्त**–वि० जो छटक गया हो (जोड़)। पु० दे० 'संधि-भंग'। **–मुक्ति**–स्त्री० किसी जोड़का संवंध छूट जाना। **–रंध्रका**–स्त्री० सुरंग, सेंध। **–राग**–पु० सिंदूर; संध्याकी लालिमा। **–ला**–स्त्री० सेंध, दरार; सुरंग; गड्ढा; मदिरा; नदी। **–विग्रह**–पु० संधि कर लेने तथा (या) युद्ध करनेका कार्य। **–विग्रहक,–विग्रहिक**–पु० संधि और युद्धका निर्णायक मंत्री। **–विचक्षण**–वि० संधिकी वातें करनेमें कुशल। **–विच्छेद**–पु० समझौता तोड़ना या टूटना; व्याकरणके संधिगत शब्दोंको अलग-अलग करना। **–विद्ध**–पु० एक रोग (इसमें हाथ-पैरके जोड़ोंमें सूजन और पीड़ा रहती है)। **–वेला**–स्त्री० संध्या; वह समय जिसमें दो समयोंका मेल हो। **–शूल**–पु० आमवात। **–सितासित**–पु० एक नेत्ररोग। **–हारक**–पु० दे० 'संधि-चोर'।

संधिक–पु० (सं०) जोड़; एक तरहका ज्वर।

संधिका–स्त्री० (सं०) शराव चुलाना।

संधिग–पु० (सं०) एक तरहका ज्वर।

संधिच्छेदन–स० क्रि० (डिस्कनेक्ट) जोड़ या संवंध काट देना, पृथक् कर देना।

संधित–वि० (सं०) युक्त; आवद्ध; मिलाया हुआ; रखा हुआ (जैसे–धनुष्पर वाण); जिसने सुलह की है। पु० अचार; मदिरा; सीमंतके कारण अलग हुए वालोंको वाँधना।

संधिनी–स्त्री० (सं०) पाल खाती हुई या पाल खायी हुई गाय; दूध देनेवाली हालकी ही गाभिन गाय; वेसमय, दूसरे दिन दूध देनेवाली गाय।

संधी(धिन्)–पु० (सं०) वह मंत्री जो संधि इत्यादिका कार्य करता है।

संधुक्षण–वि० (सं०) उद्दीपक, उत्तेजक। पु० उद्दीप्त करना, उत्तेजित करना।

संधुक्षित–वि० (सं०) उद्दीप्त, उत्तेजित।

संधेय–वि० (सं०) जोड़ने, मिलाने योग्य; शांत करने योग्य, राजी करने योग्य।

संध्यंग–पु० (सं०) मुखसंधि आदि संधियोंके अंग (ना०)।

संध्य–वि० (सं०) संधि-संवंधी; संहितापर आधृत; जिसकी संधि होनेवाली हो; विचारमें प्रवृत्त।

संध्यर्क्ष–पु० (सं०) दो राशियोंका मध्यवर्ती नक्षत्र।

संध्यांश, संध्यांशक–पु० (सं०) युग-संधि।

संध्या–स्त्री० (सं०) योग, मेल; सुवह, दुपहरी या शामका वह समय जव दिनके भागोंका मेल होता है; इन समयोंपर किये जानेवाले धार्मिक कृत्य; दो युगोंके वीचका समय; साँझ; वादा, ठहराव; सीमा; विचारणा; एक फूल; एक नदी; दिनका कोई भाग; ब्रह्माकी पुत्री; सूर्यकी स्त्री; संधान। **–कार्य**–पु० संध्योपासन। **–काल**–पु० उत्तर काल, उतरती अवस्था। **–कालिक**–वि० संध्याकाल-संवंधी। **–नाटी(टिन्)**–पु० शिव। **–पुष्पी**–स्त्री० चमेली; जायफल। **–बल**–पु० निशाचर। **–वेला**–स्त्री० 'संध्याकाल'। **–राग**–पु० शामकी लालिमा; शामको गाया जानेवाला राग (शाम-कल्याण); सिंदूर। वि० जिसकी लालिमा संध्या-कालकी-सी हो। **–वंदन**–पु० संध्योपासन।

संध्याचल–पु० (सं०) एक पहाड़, अस्ताचल।

संध्याराम–पु० (सं०) ब्रह्मा।

संध्यालोक–पु० संध्याका प्रकाश।

संध्यासन–पु० (सं०) पारस्परिक संघर्षसे शत्रुपक्षका दुर्वल हो जाना।

संध्योपासन–पु० (सं०) संध्याके समय की जानेवाली पूजा आदि।

संध्वान–वि० (सं०) स्वर उत्पन्न करनेवाला (पवन)।

संनिपात–दे० 'सन्निपात'।

संन्यास–पु० (सं०) दे० 'सन्न्यास'।

संन्यासी(सिन्)–पु० (सं०) दे० 'सन्न्यासी'।

संपक्व–वि० (सं०) अच्छी तरह उवाला, पकाया हुआ; पका हुआ; जिसकी मरनेकी अवस्था हो गयी हो।

संपति*–स्त्री० दे० 'संपत्ति'।

संपत्–'संपद्'का समासगत रूप। **–कुमार**–पु० विष्णुकी एक मूर्ति। **–प्रदा**–स्त्री० भैरवीकी एक मूर्ति; एक बौद्ध देवी।

संपत्ति–स्त्री० (सं०) अभ्युदय, समृद्धि; ऐश्वर्य; धन, जायदाद; सफलता, सिद्धि; वहुतायत, प्राचुर्य; लाभ; अस्तित्व; अच्छी अवस्था; सामंजस्य, अनुकूलता; एक जड़ी; एक कला। **–कर**–पु० (प्रापर्टी टैक्स) संपत्तिके विचारसे लगाया जानेवाला कर। **–दान**–पु० धन-संपत्तिका दान।

संपत्नीय–पु० (सं०) तर्पण-विशेष।

संपद–वि० (सं०) संपन्न। पु० पैरोंको वरावर या साथ रखकर खड़ा होना।

संपदा–स्त्री० धन-संपत्ति, ऐश्वर्य।

संपदी(दिन्)–पु० (सं०) अशोकका एक पौत्र।

संपद्–स्त्री० (सं०) सफलता, सिद्धि; सफलताकी स्थिति; उद्देश्य-प्राप्ति; सामंजस्य; संपत्ति, धन; समृद्धि; अभ्युदय; सौभाग्य; पूर्णता; वाहुल्य; कोश, खजाना; सद्गुणोंकी वृद्धि; अलंकरण; सही ढंग; मुक्ताहार; गौरव; सौंदर्य; कांति; एक ओषधि, वृद्धि। **–वर**–पु० राजा। **–वसु**–पु० सूर्यकी सात प्रमुख रश्मियोंमेंसे एक।

संपन्न–वि० (सं०) उन्नतिशील; धनी; भाग्यवान्; कृतकाम; साधित, पूरा किया हुआ; पूर्ण; पूर्णतः विकसित; प्राप्त, लब्ध; सही; ...से युक्त; जानकार; जो हुआ हो; घटित। पु० शिव; धन, संपत्ति; सुस्वादु भोजन। **–क्रम**–पु० एक समाधि। –

क्षीरा–वि० स्त्री० अच्छा दूध देनेवाली ।

संपराय–पु० (सं०) मृत्यु; अनादिकालागत अस्तित्व; संघर्ष, युद्ध; संकट; भविष्य ।

संपरायक, संपरायिक–पु० (सं०) युद्ध, भिड़ंत, मुठभेड़ ।

संपरीक्षण–पु० (स्क्रूटिनी) किसी लेख, मनोनयनपत्र, कार्य आदिकी सूक्ष्म जाँचकर यह देखना कि वह ठीक और नियमानुरूप है या नहीं ।

संपरेत–वि० (सं०) मरणशील; मृत ।

संपर्क–पु० (सं०) मिश्रण; संयोग, मिलना; स्पर्श; मैथुन; जोड़, योग; संगति । **–पदाधिकारी**–पु० (लियेजाँ आफिसर) मित्र देशकी सेनाओंमें या सरकार और प्रजाजनोंमें परस्पर संबंध स्थापित करनेवाला पदाधिकारी, ग्रथनाधिकारी ।

संपवन–पु० (सं०) विशुद्धीकरण ।

संपा–स्त्री० (सं०) बिजली । साथ पान करना ।

संपाक–वि० (सं०) अच्छी तरह तर्क करनेवाला, तर्कक; धूर्त; लंपट; अल्प । पु० परिपाक होना; अच्छी तरह पकना; आरग्वध वृक्ष ।

संपाचन–पु० (सं०) पकाना; उबालकर मुलायम करना; फोड़ा (सेंककर) मुलायम करना ।

संपाट–पु० (सं०) त्रिभुजकी बढ़ी हुई भुजासे किसी रेखाका मिलना; तकुवा ।

संपाठ–पु० (सं०) क्रम-बद्ध पाठ ।

संपाठ्य–वि० (सं०) जो साथ पढ़ा जाय ।

संपात–पु० (सं०) एक साथ गिरना या मिलना; भिड़ंत, टक्कर; पतन; प्रवेश, पैठ, पहुँच; पक्षियोंकी उड़ानका एक ढंग; चिड़ियोंका उतरना; (बाणका) चलना; गमन; हटाया जाना; तलछट; संगम; मिलनस्थान; वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरीसे मिले या काटकर आगे बढ़ जाय; युद्धका एक ढंग; घटित होना; गरुड़का पुत्र । **–पाटव**–पु० कूदनेकी कुशलता ।

संपाति–पु० (सं०) एक पौराणिक पक्षी जो गरुड़का ज्येष्ठ पुत्र और जटायुका बड़ा भाई था; एक राक्षसका नाम; एक बंदरका नाम ।

संपातिक–पु० (सं०) एक पौराणिक पक्षी, संपाति ।

संपाती(तिन्)–वि० (सं०) एक संग कूदने, झपटनेवाला; एक साथ उड़नेवाला; उड़नेमें होड़ करनेवाला । पु० एक पौराणिक पक्षी, संपाति; एक राक्षस ।

संपाद–पु० (सं०) कार्यसाधन; प्राप्ति ।

संपादक–वि० (सं०) पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला; प्राप्त करनेवाला । पु० वह व्यक्ति जो दूसरेकी रचना शुद्ध कर प्रकाशनके योग्य बनाता या सामयिक, दैनिक आदि पत्रका संपादन-संचालन करता है (एडीटर) ।

संपादकीय–वि० (सं०) संपादक-संबंधी; संपादकका । पु० संपादकका लिखा लेख या टिप्पणी ।

संपादन–पु० (सं०) पूरा करना; प्रस्तुत करना; क्रम आदि ठीक करना; ग्रंथादि शुद्ध कर प्रकाशनके योग्य बनाना; सामयिक या दैनिक पत्र विषय आदिकी दृष्टिसे ठीक करना और उसका संचालन करना (एडिटिंग) । **–कला**–स्त्री० पत्र, पुस्तकें आदि संपादित करनेकी विशेष कला ।

संपादना✻–स० क्रि० पूरा करना, ठीक करना–'विविध अन्न संपति संपादहु'–रघु० ।

संपादयिता(तृ)–वि०, पु० (सं०) पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला; उत्पन्न करनेवाला ।

संपादित–वि० (सं०) निष्पन्न, पूरा किया हुआ; प्रस्तुत, तैयार किया हुआ; ठीक कर प्रकाशनके योग्य बनाया हुआ (ग्रंथादि) ।

संपादी(दिन्)–वि० (सं०) उपयुक्त; पूरा करनेवाला; प्रस्तुत करनेवाला ।

संपालक–पु० (कस्टोडियन) दे० 'अभिरक्षक' ।

संपिंडित–वि० (सं०) राशीकृत, पिंडीकृत ।

संपिष्ट–वि० (सं०) कुचला हुआ; चूर किया हुआ, पीसा हुआ; नष्ट किया हुआ ।

संपीड–पु० (सं०) दबाना; निचोड़ना; कष्ट देना; क्षुब्ध करना; आगे बढ़ना, चलाना ।

संपीडन–पु० (सं०) (कॉम्प्रेशन) दबाना; दबाकर निचोड़ना; घटाकर छोटा करना; प्रेषण; दंड, क्षुब्ध करना; कष्ट देना; एक उच्चारण-दोष ।

संपीडा–स्त्री० (सं०) कष्ट, दुःख ।

संपीडित–वि० (सं०) दबाया हुआ; निचोड़ा हुआ; ग्रस्त ।

संपीति–स्त्री० (सं०) साथ पीना, गोष्ठीमें पान करना ।

संपुट–पु० (सं०) कटोरे जसी कोई वस्तु; दोना; अंजलि; रसादि फूंकनेका मिट्टीका बना हुआ पात्र; रत्न-मंजूषा; गोलार्द्ध; कुरबक पुष्प; एक तरहका रतिबंध; बाकी, उधार; पुष्पकोष; घुँघरू; मृतकका कपाल, खोपड़ी, खप्पर; रस पकानेके लिए गीली मिट्टीसे लपेटकर बनाया गया पात्रका विशेषरूप (आ० वे०) । ✻ वि० बंद ।

संपुटक–पु० (सं०) आवरण; गोल मंजूषा; एक रतिबंध ।

संपुटका, संपुटिका–स्त्री० (सं०) आभूषणपूर्ण मंजूषा; आवरणमें बन्द दवाकी टिकिया (कैपस्यूल) ।

संपुटी–स्त्री० प्याली, छोटी कटोरी या तश्तरी (जिसमें चंदन, अक्षत आदि रखते हैं) ।

संपुष्टि–स्त्री० (कारोबोरेशन) किसीके कथन, वक्तव्यकी अन्य सूत्रोंसे पुष्टि हो जाना; पक्का कर देना; दे० 'अभिपुष्टि' (कानफर्मेशन) ।

संपूजन–पु० (सं०) बहुत अधिक सम्मान करना ।

संपूज्य–वि० (सं०) बहुत आदरणीय ।

संपूयन–पु० (सं०) पूर्णतः शुद्ध होनेकी क्रिया, पूर्ण शुद्धि ।

संपूरक–वि० (सं०) अच्छी तरह (पेट) भर लेनेवाला; वस्तुकी सार्थकता बढ़ानेके लिए उसके अन्तमें मिलाया जानेवाला (काम्प्लिमेंटरी) ।

संपूरण–पु० (सं०) खूब भर लेना; अच्छी तरह पेट भर लेना ।

संपूर्ण–वि० (सं०) पूरे तौरसे भरा हुआ, युक्त, भरा-पूरा; सारा; अत्यधिक, अतिशय; पूरा किया हुआ, संपन्न । पु० रागकी एक जाति जिसमें सातों स्वर लगते हैं; एक खंजन जिससे शकुनका काम लेते हैं; आकाश तत्त्व, 'ईथर' । **–काम**–वि० इच्छासे भरा हुआ; जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो । **–कालीन**–वि० पूरे या उचित समयपर होनेवाला । **–पुच्छ**–वि० पूँछ फैलानेवाला (मोर) । **–मूर्च्छा**–स्त्री० युद्धका एक ढंग । **–लक्षण**–वि० पूर्णसंख्यक । **–विद्य**–वि० विद्यासे पूर्ण । **–स्पृह**–वि० जिसकी इच्छा पूरी हो गयी हो ।

संपूर्णतः(तस्), संपूर्णतया–अ० (सं०) पूर्ण रूपसे, अच्छी तरह ।

संपूर्णा–स्त्री० (सं०) एक एकादशी ।

संपृक्त–वि० (सं०) मिश्रित, मिला हुआ; संयुक्त; संबद्ध; संपर्कमें आया हुआ; पूर्ण, भरा हुआ; खचित ।

संपृष्ट–वि० (सं०) जिससे प्रश्न किये गये हों, पूछ-ताछ की गयी हो ।

सँपेरा–पु० साँप पकड़ने, पालने या साँपका तमाशा दिखलानेवाला ।

संपेषण–पु० (सं०) पीसनेकी क्रिया ।

संपै✻–स्त्री० दे० 'संपत्ति'–'संपै देखि न हर्षिये बिपति देखि ना रोइ' –कबीर; शंपा, बिजली ।

सँपोला–पु० साँपका बच्चा ।

सँपोलिया–पु० साँप पकड़नेवाला ।

संपोषित–वि० (सं०) पोषण किया हुआ, पालित ।

संपोष्य–वि० (सं०) पालन-पोषणके योग्य ।

संप्रकीर्ण–वि० (सं०) मिश्रित, मिला हुआ ।

संप्रकीर्तित–वि० (सं०) वर्णित; अभिहित ।

संप्रक्षाल–वि० (सं०) विधिपूर्वक स्नान करनेवाला । पु० एक प्रकारका सन्यासी; एक ऋषि ।

संप्रक्षालन–पु० (सं०) धो-बहा ले जाना, जलप्रलय; भली भाँति धोना, स्नान करना; पूरी धुलाई, पूर्ण शुद्धि ।

संप्रक्षालनी–स्त्री० (सं०) जीविकाविशेष (बौ०) ।

संप्रक्षुभित–वि० (सं०) विशेष रूपसे क्षुब्ध । **–मानस**–वि० व्याकुल, घबड़ाया हुआ ।

संप्रगर्जित–पु० (सं०) जोरकी चिल्लाहट (बौ०) ।

संप्रज्ञात–वि० (सं०) अच्छी तरह जाना हुआ । –योगी (गिन्) –पु० वह योगी जिसका विषय-बोध बना हुआ हो । –समाधि–स्त्री० समाधिका एक भेद जिसमें विषयोंका बोध बना रहता है ।

संप्रज्वलित–वि० (सं०) खूब जलता हुआ ।

संप्रणाद–पु० (सं०) ध्वनि, आवाज ।

संप्रणादित–वि० (सं०) ध्वनित किया हुआ, गुंजाया हुआ ।

संप्रणेता (तृ)–पु० (सं०) नायक, नेता; शासक; विचारपति ।

संप्रतर्दन–वि० (सं०) भेदन, छेदन करनेवाला, विदारक ।

संप्रतापन–पु० (सं०) तप्त करना, जलाना; कष्ट देना, उत्पीड़न; एक नरक ।

संप्रति–अ० (सं०) मुकाबलेमें, सामने; ठीक ढंगसे; ठीक समयपर; ठीक-ठीक; अब इस काल, वर्तमान समयमें । पु० एक जैन अर्हत् (५१ वीं उत्सर्पिणीके चौबीसवें) । –विद्–वि० केवल वर्तमान समझनेवाला, जो आगेकी बात, भविष्य न समझ सके ।

संप्रतिनंदित–वि० (सं०) जिसका खूब स्वागत, आवभगत हुई हो ।

संप्रतिपत्ति–स्त्री० (सं०) गति, पहुँच; प्राप्ति, लाभ; सही ज्ञान, ठीक समझ; प्रत्युत्पन्नमतित्व; स्वीकृति; मतैक्य; उपस्थिति; विशेष प्रकारका उत्तर-स्वीकार या अस्वीकार (मुकदमेमें); आक्रमण; सहयोग; पूरा करना ।

संप्रतिपन्न–वि० (सं०) पहुँचा हुआ; उपस्थित; स्वीकार किया हुआ; संपन्न, पूरा किया हुआ ।

संप्रतिपादन–पु० (सं०) प्राप्त कराना; देना; ··· पर नियुक्त करना ।

संप्रतिप्राण–पु० (सं०) प्राण वायु ।

संप्रतीत–वि० (सं०) लौटा हुआ; जिसे पूरा विश्वास हो गया हो; कृतसंकल्प; ज्ञात; प्रसिद्ध; विनम्र ।

संप्रतीति–स्त्री० (सं०) पूर्णविश्वास; पूर्ण ज्ञान; विनय, विनम्रता ।

संप्रत्यय–पु० (सं०) स्वीकृति, अंगीकरण; दृढ़ विश्वास; यथार्थ-बोध; भावना; धारणा ।

संप्रदातन–पु० (सं०) इक्कीस नरकोंमेंसे एक ।

संप्रदान–पु० (सं०) देना, प्रदान करना, हस्तांतरित करना; दीक्षा, शिक्षण; देना; व्याह देना; दान; भेंट; चंदा; चतुर्थ कारक (व्या०); किसी वस्तुको उसके मालिकको लौटा देना या यथास्थान पहुँचा देना (डेलिवरी) ।

संप्रदानीय–पु० (सं०) भेंट, नजर; चंदा ।

संप्रदाय–पु० (सं०) देनेवाला, नजर करनेवाला; गुरुपरंपरासे प्राप्त मंत्र, सिद्धांत आदि; परंपरागत विश्वास या प्रथा; विशेष धार्मिक मत (सेक्ट) या सिद्धान्त; किसी मतके अनुयायियोंका समूह (स्कूल) । –प्राप्त–वि० परंपराप्राप्त । –वाद–पु० केवल अपने संप्रदायको ही विशेष महत्त्व देना और अन्य संप्रदायवालोंसे द्वेष करना; जातिवाद (सेक्टेरियनिज्म) । –वादी (दिन्)–वह कट्टर विचारोंवाला व्यक्ति जो केवल अपने संप्रदायको श्रेष्ठता प्रदान करे तथा अन्य संप्रदायवालोंको हेय समझे । –विगम–वि० परंपराका अभाव । –विद्–वि० परंपरागत विश्वासों या प्रथाओंका जानकार ।

संप्रदायी (यिन्)–वि० (सं०) पूरा करनेवाला, संपादन करनेवाला; देनेवाला । पु० किसी विशेष धार्मिक मतका माननेवाला, किसी संप्रदायका सदस्य ।

संप्रदिष्ट–वि० (सं०) स्पष्ट रूपसे निर्देश किया हुआ; विशेष रूपमें ज्ञात, अभिहित ।

संप्रधान–पु० (सं०) विचार; निश्चय ।

संप्रधारण–पु० (सं०) विचार; निर्णय; उचित-अनुचित होनेका निश्चय करना ।

संप्रपद–पु० (सं०) भ्रमण, पर्यटन ।

संप्रपन्न–वि० (सं०) पहुँचा हुआ; ···से युक्त; प्रविष्ट ।

संप्रभग्न–वि० (सं०) छिन्न-भिन्न, जो तितर-बितर हो गया हो (सैन्य०) ।

संप्रभिन्न–वि० (सं०) फटा हुआ, विदीर्ण; मस्त, दान बहाता हुआ (हाथी) ।

संप्रभु–वि० (सं०) (सावरेन) सर्वप्रधान सत्ताधारी, जिसे संपूर्ण अधिकार प्राप्त हो, (व्यक्ति या राष्ट्र) ।

संप्रभुता–स्त्री० (सं०) (सावरेनटी) संप्रभु होनेकी स्थिति, गुण या भाव ।

संप्रमत्त–वि० (सं०) उत्तेजित, मस्त (हाथी); बहुत लापरवाह ।

संप्रमापण–पु० (सं०) वध ।

संप्रमार्ग–पु० (सं०) मार्जन ।

संप्रमुखित–वि० (सं०) शीर्षस्थानीय, प्रधान ।

संप्रमोद–पु० (सं०) अतिशय आनंद ।

संप्रमोष–पु० (सं०) हानि; नाश ।

संप्रमोह–पु० (सं०) विमूढ़ता, व्यामोह ।

संप्रयाण–पु० (सं०) प्रस्थान, गमन, कूच ।

संप्रयुक्त–वि० (सं०) जोता हुआ; संबद्ध; युक्त; संपर्कमें आया हुआ; मैथुनरत; भिड़ा हुआ, मुकाबला करता हुआ; संलग्न; दत्तचित्त; आबद्ध; निर्भर; प्रेरित; प्रयोगमें लाया हुआ; आदी ।

संप्रयुक्तक–वि० (सं०) सहयोग करनेवाला ।

संप्रयुद्ध–वि० (सं०) युद्धरत ।

संप्रयोग–पु० (सं०) जोड़ना, नाधना; संबंध, योग, मेल; संपर्क; समागम; मैथुन, रति; चंद्रमा और राशिका योग; क्रमबद्ध व्यवस्था; आपसका संबंध; इस्तेमाल, प्रयोग; जादू; उच्चाटन, मोहन, वशीकरण आदिका प्रयोग ।

संप्रयोगी (गिन्)–वि० (सं०) जोड़ने, मिलानेवाला; कामी । पु० जादूगर; जोड़नेवाला; लंपट ।

संप्रयोजन–पु० (सं०) जोड़ना, मिलाना, एकत्र करना ।

संप्रयोजित–वि० (सं०) जोड़ा हुआ, संबद्ध किया हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ; प्रस्तुत किया हुआ; उपयुक्त ।

संप्रवदन–पु० (सं०) वार्तालाप करना, बातचीत; कथोपकथन ।

संप्रवर्तक–पु० (सं०) चालू, जारी करनेवाला; आगे बढ़ानेवाला; निर्माण करनेवाला ।

संप्रवर्तन–पु० (सं०) चालू करना, जारी करना; शीघ्रतामें इतस्ततः गमन करना; घुमाना; मोड़ना ।

संप्रवर्ती (र्तिन्)–वि० (सं०) ठीक, व्यवस्थित करनेवाला ।

संप्रवाह–पु० (सं०) अजस्र धारा; अविच्छिन्न क्रम ।

संप्रवृत्त–वि० (सं०) प्रस्थित, आगे बढ़ा हुआ; वर्तमान, उपस्थित; प्रस्तुत, जो बिलकुल पास हो; आरब्ध; गत, व्यतीत; संलग्न ।

संप्रवृत्ति–स्त्री० (सं०) प्रकट होना, घटित होना; उपस्थिति, विद्यमानता; संलग्नता, आसक्ति; संघटन; मिलकर एक होना ।

संप्रशांत–वि० (सं०) मृत; लुप्त ।

संप्रश्न–पु० (सं०) जाँच, पूछताछ ।

संप्रश्रय–पु० (सं०) विनम्रता; शिष्टता ।

संप्रश्रित–वि० (सं०) शिष्ट; नम्र, विनयी ।

संप्रसत्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'संप्रसाद' ।

संप्रसाद–पु० (सं०) पूर्ण शांति (निद्रावस्थाकी मानसिक शांति); अनुग्रह; धीरता, गंभीरता; विश्वास; आत्मा ।

संप्रसादन–पु० (सं०) अच्छी तरहसे प्रसन्न करना । वि० शांत करनेवाला ।

संप्रसाधन–पु० (सं०) आभूषण, शृंगारका साधन; पूरा करना, संपन्न करना ।

संप्रसारण–पु० (सं०) विस्तार करना; य्, व्, र्, ल्का इ, उ, ऋ, लृमें परिवर्तन (व्या०) ।

संप्रसिद्ध–वि० (सं०) अच्छी तरह पकाया हुआ ।

संप्रसिद्धि–स्त्री० (सं०) सफलता; सौभाग्य ।

संप्रस्थान–पु० (सं०) आगे बढ़ना, कूच ।

संप्रहर्षण–वि० (सं०) कामोत्तेजक । पु० प्रोत्साहन (जै०) ।

संप्रहार–पु० (सं०) हनन; मारकाट, भिड़न्त; युद्ध; गमन, गति ।

संप्रहास–पु० (सं०) जोरकी हँसी; किसीपर हँसना, चिढ़ाना ।

संप्रहित–वि० (सं०) फेंका; धकेला हुआ ।

संप्राप्त–वि० (सं०) अच्छी तरह प्राप्त; जिसने प्राप्त किया है, पहुँचा हुआ; प्रस्तुत (काल); उत्पन्न; घटित । –यौवन–वि० बालिग, युवा । –विद्य–वि० जिसने पूरी विद्या प्राप्त कर ली है ।

संप्राप्ति–स्त्री० (सं०) पहुँच; उदय; सम्यक् प्राप्ति, लाभ; शरीरमें किसी रोगके कीटाणु प्रविष्ट होनेके बाद उसके परिपक्व होनेतककी प्रक्रिया (इन्क्यूबेशन); उद्भवन काल, परिपाक।

संप्रीणित–वि० (सं०) तुष्ट, प्रसन्न किया हुआ।

संप्रीत–वि० (सं०) पूर्ण रूपसे तुष्ट, प्रसन्न।

संप्रीति–स्त्री० (सं०) पूर्ण तुष्टि, प्रसन्नता; प्रेम; सद्भावना; मैत्री।

संप्रेक्षक–पु० (सं०) दर्शक।

संप्रेक्षण–पु० (सं०) भली भाँति देखना; निरीक्षण, जाँच करना।

संप्रेष–पु० (सं०) दे० 'संप्रैप'।

संप्रेषक–वि० (सं०) संप्रेषण करनेवाला (ट्रांसमिटर)।

संप्रेषण–पु० (सं०) भेजना; (ट्रांसमिशन) एक स्थान या एक व्यक्तिके पाससे दूसरे स्थान या व्यक्तिके पास (समाचार, रोगाणु, विचारादि) भेजना, पहुँचाना, स्थानांतरित करना; कामसे हटाना, अलग करना।

संप्रेषणी–स्त्री० (सं०) एक मृतककर्म (जो मृत्युके बारहवें दिन होता है)।

संप्रैष–पु० (सं०) आह्वान, आमंत्रण; आदेश (ऋत्विक्को दिया जानेवाला); भेजना; वर्खास्तगी।

संप्रोक्त–वि० (सं०) संवोधित; कथित, घोषित।

संप्रोक्षण–पु० (सं०) अभिषेक, सिंचन; मंदिरादिको धोना; मदिरा आदिका उत्सर्ग।

संप्लव–पु० (सं०) प्लावन, बाढ़; घनी राशि; पुंजीभवन; शोरगुल, होहल्ला (युद्ध आदिका); जलमें डूबा रहना; नष्ट होना, अंत; आन्दोलन, हलचल।

संप्लुत–वि० (सं०)···में स्नात; जलप्लावित।

संफल–वि० (सं०) फलपूर्ण; बीजपूर्ण। पु० दे० 'संफाल'।

संफाल–पु० (सं०) भेड़।

संफुल्ल–वि० (सं०) पूर्णतः विकसित।

संफेट–पु० (सं०) क्रुद्ध व्यक्तियोंका आपसमें भिड़ जाना; कहासुनी; विमर्शके तेरह भेदोंमेंसे एक (दो पात्रोंमें कहासुनी–ना०); आरभटीके चार भेदोंमेंसे एक (ना०)।

संबंध–पु० (सं०) योग; मेल; साथ; रिश्ता, नाता; लगाव (कनेक्शन); घनिष्ठता; विवाह; मैत्री; उपयुक्तता, औचित्य; अभ्युदय, उन्नति; रिश्तेदार; मित्र; ग्रंथ; एक प्रकारकी विपत्ति या उपद्रव; सिद्धांतका हवाला; छठा कारक (व्या०)। वि० समर्थ; उपयुक्त। **–तत्व**–पु० अर्थतत्त्ववाले शब्दोंका पारस्परिक सम्बन्ध बतानेवाला तत्व (सा०)। **–वर्जित**–अ० एक रचनादोष-सूचक अव्यय।

संबंधक–वि० (सं०) संबंधी, विषयक; उपयुक्त, योग्य; दो व्यक्तियों, दो वस्तुओंमें पारस्परिक सम्बन्ध करानेवाला (कनेक्टिंग)। पु० रक्त या विवाहका संबंध; मैत्री; मित्र; रिश्तेदार; विवाहके द्वारा होनेवाली संधि।

संबंधयिता(तृ)–वि० संबंध स्थापित करनेवाला।

संबंधातिशयोक्ति–स्त्री० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकारका भेदविशेष जहाँ असंबंधसे संबंध दिखलाकर अतिशयोक्ति की जाय।

संबंधी(धिन्)–वि० (सं०)···से संबद्ध; संबंध रखनेवाला; प्रसंग, प्रकरण, विषयका; जिसका विवाह आदिके कारण संबंध हो; सद्गुणसंपन्न। पु० वह जिसके साथ विवाहके कारण संबंध हो; समधी; रिश्तेदार, नातेदार। **–(धि)भिन्न**–वि० रिश्तेदारोंमें विभक्त। **–शब्द**–पु० संबंध प्रकट करनेवाला शब्द।

संब–पु० (सं०) दे० 'शंब'; जल।

संवत, संवत्*–पु० दे० 'संवत्'।

संबद्ध–वि० (सं०) साथ जुड़ा या बँधा हुआ; संलग्न; संबंधी, विषयक; अर्थ-संबंध रखनेवाला; युक्त, विशिष्ट, संपन्न; बंद। **–दर्प**–वि० जिसमें गर्वका भाव हो, गर्वयुक्त।

संबद्धीकरण–पु० (एफिलियेशन) किसी एक परिवार या समाजका सदस्य बना लिया जाना; किसी विद्यालय या महाविद्यालयका संबंध विश्वविद्यालयसे हो जाना।

संबर–पु० (सं०) सेतु, पुल; एक तरहका हिरन; एक दैत्य जिसे प्रद्युम्नने मारा था; एक पर्वत; नियंत्रण, रोक; जल; एक धार्मिक अनुष्ठान; दे० 'शंबर'।

संबरण*–पु० दे० 'संवरण'।

संबरना*–स० क्रि० रोकना, नियंत्रण करना।

संबल–पु० (सं०) जल; दे० 'शंबल'।

संबाद*–पु० दे० 'संवाद'।

संबाध–वि० (सं०) तंग; संकुल, भरा हुआ; ठसा हुआ। पु० बाधा; भीड़; तंग जगह; भग; नरक-पथ; कष्ट; कठिनाई; खतरा; भय; संघर्ष।

संबाधक–वि० (सं०) बाधा, कष्ट देनेवाला; दबानेवाला; तंग करनेवाला; भीड़ लगानेवाला।

संबाधन–पु० (सं०) दबाना; अवरुद्ध करना; बाधा डालना; रोक; फाटक; भग; पौरिया; शूल या शूल-दंडकी नोक।

संबाधना–स्त्री० (सं०) घर्षण।

संबी–स्त्री० फली।

संबुक*–पु० घोंघा।

संबुद्ध–वि० (सं०) पूर्णतः जाग्रत; ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान्, पूर्णतः ज्ञात। पु० बुद्ध; जिन।

संबुद्धि–स्त्री० (सं०) पूर्ण-बोध या ज्ञान; पूरी चेतना; दूराह्वान; अपनी बात सुनाना; संबोधन कारक या उसकी विभक्ति (व्या०); उपाधि।

संबल–पु० (सं०) मार्गमें, यात्रामें, काम आनेवाला खाने पीनेका सामान, पाथेय; सहायक वस्तु (रिसोर्सेज); गेहूँकी फसलका एक रोग; सेमल वृक्ष।

संबोध–पु० (सं०) पूर्ण ज्ञान, सम्यक् बोध; समझाना, बतलाना; किसीको पुकारने या उससे कुछ कहनेकी क्रिया; ढाढ़स; भेजना; फेंकना; नाश, बरबादी। **–गीत**–पु० (ओड) किसीको सम्बोध कर लिखी गयी कविता।

संबोधन–पु० (सं०) जगाना; बतलाना, समझाना; संबोधित करना; संबोधन करनेमें प्रयुक्त की जानेवाली उपाधि; वह शब्द जिससे किसीके पुकारने या उससे कुछ कहनेकी बात सूचित हो; आठवाँ कारक (व्या०); जानना-समझना; आकाशभाषित (ना०)।

संबोधना*–स० क्रि० सांत्वना देना; समझाना।

संबोधि–स्त्री० (सं०) पूर्ण ज्ञान (बौ०)।

संबोधित–वि० (सं०) चिताया हुआ; जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो; बोध कराया हुआ।

संबोध्य–वि० (सं०) जिसे बतलाया, समझाया जाय; जिसे संबोधित किया जाय।

संबोसा–पु० (फा०) दे० 'समोसा'।

संभक्त–वि० (सं०) विभक्त, बँटा हुआ; उपभोग करनेवाला; भाग लेनेवाला; भक्ति-भाव रखनेवाला, श्रद्धालु।

संभक्ति–स्त्री० (सं०) विभाग; हिस्सा लेना; उपभोग करना; भक्ति करना; पूजा करना।

संभक्ष–पु० (सं०) साथ खाना; खाद्य-पदार्थ। वि० भोजी, खानेवाला (समासमें)।

संभग्न–वि० (सं०) छिन्न-भिन्न, टूटा-फूटा; पराभूत; असफल। पु० शिव।

संभर–वि० (सं०) भरण, पोषण करनेवाला। पु० साँभर झील और निकटवर्ती भूभाग।

संभरण–पु० (सं०) पालन, पोषण; साथ रखना, रचना; तैयारी; समूह; आवश्यक वस्तुओंका समायोजन (सप्लाई); यज्ञकी वेदीकी ईंटें। **–निधि**–स्त्री० (प्रॉविडेंट फंड) दे० 'भविष्य-निधि', सुविधायक कोष। **–मंत्री**–पु० आवश्यक वस्तुओंकी आपूर्तिकी व्यवस्था करनेवाला मंत्री।

संभरणी–स्त्री० (सं०) एक यज्ञपात्र, सोम-पात्र।

सँभरना*–अ० क्रि० दे० 'सँभलना'।

संभरवै, संभरेस*–पु० पृथ्वीराज।

संभल–पु० (सं०) घटक; कुटना; विवाहार्थी पुरुष; स्थानविशेष जहाँ कल्कि अवतार होनेवाला है।

सँभलना–अ० क्रि० अपनी बिगड़ती हुई स्थिति ठीक कर लेना; रुकना, थमना; काबूमें रहना; सावधान होना; टिका रहना; स्वस्थ होना; चोट आदिसे बचाव करना।

सँभला†–पु० बिगड़कर सुधरी हुई फसल।

संभली–स्त्री० (सं०) दूती, कुट्टनी।

संभव–पु० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; अस्तित्व; होना, घटित होना; उत्पत्ति और पोषण; कारण, हेतु, मूल; मिलन, संयोग; मैथुन; क्षमता, योग्यता; अँटना; संभावना; संकेत; अपाय; संगति, उपयुक्तता; समानता (एक तरहका प्रमाण); परिचय; नाश; एक लोक (बौ०); वर्तमान अवसर्पिणीके तीसरे अर्हत्। वि० जिसकी सत्ता हो; जो हो। **–नाथ**–पु० वर्तमान अवसर्पिणीके तीसरे अर्हत्।

संभवतः(तस्)–अ० (सं०) संभव है, हो सकता है।

संभवन–पु० (सं०) उत्पन्न होनेकी क्रिया; धृत होना; घटित होना।

संभवना*–स० क्रि० पैदा करना, उत्पन्न करना। अ० क्रि० पैदा होना; हो सकना, संभव होना।

संभवनीय–वि० (सं०) मुमकिन, हो सकनेवाला।

संभविष्णु–पु० (सं०) जनक, उत्पादक, स्रष्टा।

संभवी(विन्)–वि० (सं०) हो सकनेवाला, मुमकिन।

संभव्य–पु० (सं०) कपित्थ, कैथ। वि० हो सकनेवाला, उत्पाद्य।

संभाग–पु० (डिवीजन) प्रदेश या राज्यका बड़ा भाग जिसमें कई जिले हों; कमिश्नरी।

संभार–पु० (सं०) इकट्ठा, एकत्र करना; तैयारी; साज-सामान, उपकरण; संपत्ति; पूर्णता; समूह; परिमाण; अतिशयता, आधिक्य; पालन-पोषण; देखरेख; नियंत्रण। **–तंत्र**–पु० सैनिकोंके लिए आवश्यक सामग्री पहुँचानेकी व्यवस्था। **–शील**–वि० जिसमें आवश्यक वस्तुएँ रखनेका गुण हो।

सँभार*–पु० रोक-थाम; देख-भाल–'सूरदास प्रभु अपने ब्रजकी काहे न करत सँभार'–सूर; पालन-पोषण; होश; तैयारी–'भलो विचार कियो नरनायक, करहु यज्ञ सँभारा'–रघुराज।

सँभारना*–स० दे० 'सँभालना'; स्मरण करना–'यह सुनि बोली नारि कैकयी, अपनो वचन सँभारो'–सूर।

संभाराधिप–पु० (सं०) राजकीय पदार्थों, तोशाखानेका अफसर।

संभारी(रिन्)–वि० (सं०)···से पूर्ण, भरा हुआ।

संभार्य–वि० (सं०) विभिन्न भागोंसे निर्मित या संघटित किया जानेवाला; उपयोगके योग्य बनाया जानेवाला; पालनके योग्य, आश्रित।

सँभाल–स्त्री० देख-भाल; व्यवस्था, प्रबंध; चेत, होश; पोषणादिका भार।

सँभालना–स० क्रि० रोक-थाम करना; टेकना, सहारा देना; रक्षा करना; पालन करना; ग्रहण करना; काबूमें रखना; सहायता देना; प्रबंध करना; सहेजना; भार उठाना; अपनेको जब्त करना, संयत करना।

सँभाला–पु० मरनेके पहलेकी चेतनावस्था।

सँभालू–पु० श्वेत सिंधुवार।

संभावन–वि० (सं०) किसीके प्रति आदर-भाव रखनेवाला। पु० एकत्र करना; मिलन; पूजा-सत्कार, आदर-भाव; कल्पना, अनुमान; उपयुक्तता; योग्यता; प्रसिद्धि, ख्याति; विचारणा; मुमकिन होना (पॉसिबिलिटी); संदेह; प्रेम; एक काव्यालंकार जहाँ किसी एक बातके होनेपर दूसरीके होनेकी संभावना वर्णित की जाय।

संभावना–स्त्री० (सं०) दे० 'संभावन'।

संभावनीय–वि० (सं०) पूज्य, सम्मान्य; कल्पनाके योग्य; जिसकी संभावना हो, मुमकिन; भाग लेने योग्य।

संभावित–वि० (सं०) सम्मानित, आदृत; स्वाभिमानी; प्रस्तुत किया हुआ; गृहीत; विचारित; कल्पित; उपयुक्त; मुमकिन; उत्पादित, प्राप्त; तुष्ट। पु० कल्पना।

संभावितव्य–वि० (सं०) दे० 'संभावनीय'।

संभाव्य–वि० (सं०) आदरणीय, सम्मान्य; विचारणीय; मुमकिन; उपयुक्त; योग्य। पु० मनुका एक पुत्र; उपयुक्तता; योग्यता।

संभाष–पु० (सं०) बातचीत; करार, वादा; प्रहरीका संकेत-शब्द; अभिवादन; यौन-संबंध।

संभाषण–पु० (सं०) बातचीत; प्रहरीका संकेतशब्द; मैथुन, रति। **–निपुण**–वि० वार्तालाप करनेमें कुशल।

संभाषणीय–वि० (सं०) बातचीत करने योग्य।

संभाषा–स्त्री० (सं०) दे० 'संभाषण' (डिबेट)।

संभाषित–वि० (सं०) भली-भाँति कहा हुआ; जिससे बात की जा चुकी हो। पु० वार्तालाप।

संभाषी(षिन्)–वि० (सं०) बात कहनेवाला; वार्तालाप करनेवाला।

संभाष्य–वि० (सं०) बात करने योग्य।

संभिन्न–वि० (सं०) छिन्न-भिन्न; बिलकुल टूटा हुआ; क्षुब्ध; परित्यक्त; सिकुड़ा हुआ; युक्त; मिला हुआ; संपर्कमें आया हुआ; ठोस, कसा हुआ, गठा हुआ; विकसित। पु० शिव। **–प्रलाप**–पु० इधर-उधरकी निरर्थक बात (जो बौद्धोंके अनुसार एक पाप है)। **–प्रलापिक**–वि० निरर्थक बात बोलनेवाला। **–बुद्धि**–वि० जिसकी बुद्धिका ह्रास हो गया है। **–मर्याद**–वि० जिसने मर्यादा भंग कर दी है। **–वृत्त**–वि० जिसने सदाचारका परित्याग कर दिया है। **–सर्वांग**–वि० जिसने अपना सारा बदन सिकोड़ लिया है (जैसे–कछुवा)।

संभीत–वि० (सं०) बहुत डरा हुआ।

संभु–वि० (सं०)···से उत्पन्न;···से निर्मित। पु० जनक, पिता; एक वृत्त; * दे० 'शंभु'।

संभुक्त–वि० (सं०) खाया हुआ, उपभोग किया हुआ; प्रयोगमें लाया हुआ; अतिक्रांत।

संभुग्न–वि० (सं०) पूरे तौरसे झुका हुआ।

संभूत–वि० (सं०) उत्पन्न;···से निर्मित, रचित;···से मिला हुआ, युक्त, संपन्न; उपयुक्त; सदृश समान;···में परिणत। **–विजय**–पु० श्रुतकेवली नामके बौद्ध।

संभूति–स्त्री० (सं०) जन्म, उत्पत्ति; बाढ़, वृद्धि; विभूति; शक्ति; शक्तिका प्रदर्शन; पात्रता; उपयुक्तता; संयोग; दक्षकी एक कन्या। **–विजय**–पु० दे० 'संभूत-विजय'।

संभूय–अ० (सं०) साथ होकर या आपसमें मिलकर; साझेमें। **–कारी(रिन्)**–वि० सहयोगी साझेमें कारबार करनेवाला। **–क्रय**–पु० थोक मालकी खरीद-बिक्री (कौ०)। **–गमन,–यान**–पु० सबका मिलकर आक्रमण करना; साथ मिलकर जाना। **–समुत्थान**–पु० साझेका कारबार; कारबारमें साझेदारी।

संभूयासन–पु० (सं०) शत्रुसे मेलकर और उसे उदासीन समझकर बैठ जाना।

संभृत–वि० (सं०) एकत्र किया हुआ, केंद्रित; तैयार किया हुआ; युक्त, सहित; रखा, जमा किया हुआ; प्राप्त; पूर्ण, सारा; नीत, वाहित; पालित; उत्पादित; भरा हुआ; सम्मानित, पूजित; उच्च (ध्वनि)। पु० चीखनेकी आवाज। **–बल**–वि० जिसने सेना एकत्र की है। **–श्रुत**–वि० विद्वान्, बुद्धिमान्। **–संभार**–वि० जिसने किसी कामके लिए पूरी तैयारी कर ली है। **–स्नेह**–वि० प्रेमसे युक्त।

संभृतांग–वि० (सं०) जिसके शरीरका अच्छा पोषण हुआ हो; जिसका शरीर किसी चीजसे आवृत हो।

संभृतार्थ–वि० (सं०) जिसने काफी धन एकत्र कर लिया है।

संभृति–स्त्री० (सं०) संग्रह; राशि, समूह; साज-सामान, तैयारी; आधिक्य; पूर्णता; पालन-पोषण; रक्षा।

संभृष्ट–वि० (सं०) अच्छी तरह भूना हुआ; कुरकुरा; सुखाया हुआ; तुनुक; करारा।

संभेद–पु० (सं०) टूटना; भिदना; ढीला होना; अलग होकर गिरना; वियोग, पार्थक्य; फूट पैदा करना (शत्रु-पक्षमें); प्रकार, किस्म; एकरूपता; योग; मिलन; संसर्ग; नदियोंका मिलना, संगम; नदीका समुद्र आदिमें गिरना; विकसित होना, खिलना।

संभेदन–पु० (सं०) छेदना; तोड़ना; विदारण; जुटाना, भिड़ाना।

संभेद्य–वि० (सं०) भेदन करने योग्य; छेदने योग्य; संपर्कमें लाने, भिड़ाने योग्य।

संभोक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) खानेवाला; उपभोग करनेवाला, भोगनेवाला।

संभोग–पु० (सं०) उपभोग; किसी चीजमें आनंद लेना; रति, मैथुन; शृंगार रसका एक भेद, संयोग-शृंगार; उपयोग, कब्जा; लंपट; गजकुंभका एक विशेष भाग। **–काय**–पु० बुद्धके तीन शरीरोंमेंसे एक। **–क्षम**–वि० उपभोगके उपयुक्त। **–वेश्म(न्)**–पु० वेश्या या रखेलीका घर।

संभोगी(गिन्)–वि० (सं०) कामुक; उपभोग करनेवाला; व्यवहारमें लानेवाला। पु० लंपट, कामी पुरुष।

संभोग्य–वि० (सं०) भोग करने योग्य; काममें लाने योग्य, व्यवहार्य।

संभोज–पु० (सं०) भोजन।

संभोजक–पु० (सं०) खानेवाला, स्वाद लेनेवाला; खाना परसनेवाला।

संभोजन–पु० (सं०) वहुतोंके साथ खाना; भोज, दावत; भोजन।

संभोजनी–स्त्री० (सं०) साथ खाना।

संभोजनीय–वि० (सं०) खिलाने योग्य; खाने योग्य।

संभोज्य–वि० (सं०) खाने योग्य; खिलाने योग्य; जिसके साथ खाया जा सके।

संभ्रम–पु० चक्कर खाना; उतावली, जल्दवाजी; हलचल; घवड़ाहट, व्याकुलता; उत्साह, उमंग; साहस; आदर, सम्मान; भूल, गलती; शोभा, सौंदर्य; शिवके गणविशेष; अज्ञान; होहल्ला, शोर। वि० क्षुब्ध; घूमता, नाचता हुआ (जैसे नेत्र)। * अ० उतावलीमें। **–ज्वलित**–वि० व्याकुलता, उतावलीके कारण क्षुब्ध या उत्तेजित। **–भृत्**–वि० घवड़ाया हुआ, व्याकुल।

संभ्रांत–वि० (सं०) चक्कर खाया हुआ; घवड़ाया हुआ; क्षुब्ध, उत्तेजित; तेज, त्वरामय, स्फूर्तियुक्त; समादृत, सम्मानित। **–जन** वि० जिसके आदमी घवड़ाये हुए हों। पु० आदरणीय व्यक्ति। **–मना(नस्)**–वि० जिसका मन घवड़ा गया हो।

संभ्रांति–स्त्री० (सं०) घवड़ाहट; उतावली; चकपकाहट।

संभ्राजना*–अ० क्रि० शोभित, शोभायमान होना।

संमिश्रण–नाना क्षेत्रोंसे एकत्र की हुई अनुभूतियोंको जज्ब करनेकी क्रिया (एसीमिलेशन)।

संयंता(तृ)–पु० (सं०) रोकने, नियंत्रण करनेवाला; शासक, नेता।

संयंत्र–पु० (सं०) यंत्रों, औजारों आदिका समूह जिससे किसी कारखानेकी स्थापना की जाती है।

संयंत्रित–वि० (सं०) वँधा हुआ, बद्ध; रोका, दबाया हुआ; बंद।

संय–पु० (सं०) कंकाल, अस्थिपंजर।

संयत–वि० (सं०) रोका हुआ, दमित; संयमी, जितेंद्रिय; बद्ध, कैद किया हुआ; बंद किया हुआ; व्यवस्थित किया हुआ; उद्यत; सीमित। पु० यति; शिव। **–चेता(तस्)**,**–मना(नस्)**–वि० जिसका मन, चित्तवृत्ति नियंत्रित हो। **–प्राण**–वि० जिसका श्वास नियंत्रणमें हो, प्राणायाम करनेवाला। **–मुख**, **–वाक्(च्)**–वि० मितभाषी, बहुत कम बोलनेवाला।

संयतांजलि–वि० (सं०) बद्धांजलि।

संयताक्ष–वि० (सं०) जिसकी आँखें मुँदी हों।

संयतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दे० 'संयतचेता'।

संयताहार–वि० (सं०) मिताहारी।

संयति–स्त्री० (सं०) तपश्चर्या, निरोध, संयमन।

संयतेंद्रिय–वि० (सं०) जितेंद्रिय।

संयत्–वि० (सं०) संवद्ध; अविच्छिन्न, अविरल। स्त्री० करार, ठहराव; मिलाने, जोड़नेका साधन; नियत स्थान; लड़ाई, युद्ध; एक तरहकी ईंट।

संयत्त–वि० (सं०) उद्यत, सन्नद्ध; सावधान, सतर्क।

संयत्वर–वि० (सं०) मौन।

संयद्वर–पु० (सं०) राजा।

संयद्वसु–पु० (सं०) सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक। वि० धनी।

संयद्वाम–वि० (सं०) जो प्रिय हैं उनको आपसमें मिलानेवाला।

संयम–पु० (सं०) रोक, निग्रह, नियंत्रण; इंद्रियनिग्रह; बाँधना; वंद करना (नेत्र); ध्यान, धारणा और समाधि (यो०); प्रयत्न, उद्योग; दमन; नाश; प्रलय; धार्मिक अनुष्ठान या व्रत; तपस्या; मनुष्यत्व, दूसरोंके प्रति सद्भाव, तपस्या आरंभ करनेके पूर्व किया जानेवाला धार्मिक कृत्य; बुरी वस्तुओंसे परहेज (मॉडरेशन)।

संयमक–वि० (सं०) संयम, निग्रह करनेवाला।

संयमन–पु० (सं०) निग्रह, दमन; आत्मनिग्रह; बाँधना, जकड़ना; खींचना; कैद करना; यमपुरी, संयमनी; चार मकानोंसे बननेवाला प्रांगण; आत्मनिग्रह करनेवाला व्यक्ति। वि० दे० 'संयमक'।

संयमनी–स्त्री० (सं०) दे० 'संयमिनी'।

संयमित–वि० (सं०) नियंत्रित, रोका हुआ, दमन किया हुआ; वँधा हुआ; कारावद्ध; पकड़ा हुआ; रोक रखा हुआ; धार्मिक प्रवृत्तिवाला; एकत्र किया हुआ। पु० (स्वरका) नियंत्रण।

संयमिनी–स्त्री० (सं०) काशी; यमपुरी।

संयमी(मिन्)–वि० (सं०) निग्रह, निरोध करनेवाला; आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय; वँधा हुआ। पु० शासक; यति; ऋषि।

संयम्य–वि० (सं०) नियंत्रण, दमन करने योग्य।

संयात–वि० (सं०) साथ गया हुआ; पहुँचा हुआ; आया हुआ।

संयाति–पु० (सं०) नहुषका एक पुत्र।

संयात्रा–स्त्री० (सं०) साथ-साथ यात्रा करना; समुद्रयात्रा।

संयान–पु० (सं०) साँचा; साथ जाना; यात्रा; प्रस्थान; गाड़ी, वाहन; शववहन।

संयाम–पु० (सं०) संयम।

संयाव–पु० (सं०) दूध और घीके योगसे आटेका वना हुआ एक तरहका पकवान, गोझिया।

संयुक्(ज्)–वि० (सं०) संयुक्त; संवद्ध; संबंधी; गुणवान्। पु० संवंध; संयोग।

संयुक्त–वि० (सं०) जुड़ा, मिला हुआ; संवद्ध; संबंधी; ··से विवाहित; रखा, जड़ा हुआ; संपन्न, अन्वित, सहित; किसी कामको संयुक्त रूपसे करनेवाला (–संपादक)। पु० एक वृत्त। **–कुटुंब**,**–परिवार**–पु० वह कुटुंब जिसमें माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-भतीजे आदि मिलकर साथ-साथ रहते हों। **–निर्वाचक-वर्ग**–पु० (जॉइंट इलेक्टरेट) निर्वाचकोंका वह समूह जिसमें सभी संप्रदायोंके लोग हों तथा जिन्हें असांप्रदायिकताके आधारपर ही मत देनेका अधिकार हो। **–राष्ट्रसंघ**–पु० (यूनाइटेड नेशन्स आरगैनाइज़ेशन) अंतरराष्ट्रीय झगड़ों और समस्याओंपर विचार करनेवाली विश्वके बहुसंख्यक देशोंके आधिकारिक प्रतिनिधियोंकी संस्था। **–लेखा**–पु० (जॉइंट एकाउंट) एकसे अधिक व्यक्तियोंके नाम संयुक्त रूपसे चलनेवाला हिसाब-किताब। **–सरकार**–स्त्री० (कोलीशन गवर्नमेंट) संकट या विशेष आवश्यकताकी स्थितिमें वनायी गयी दो या अधिक दलोंके सदस्योंकी सरकार। **–स्कंध-प्रमंडल**–पु० (जाइंट स्टॉक कंपनी) वह प्रमंडल जिसमें एकाधिक व्यक्तियोंकी साझेदारी हो।

संयुक्ता–स्त्री० (सं०) एक छंद; एक लता, आवर्तकी; जयचंदकी लड़की संजोगिता।

संयुग–पु० (सं०) युद्ध; भिड़ंत; संयोग, मेल। **–गोष्पद**–पु० मामूली संघर्ष। **–मूर्धा(र्धन्)**–पु० युद्धका अगला मोरचा।

संयोग–पु० (सं०) मिलन, मेल; घनिष्ठ संपर्क; मिश्रण; संबंध, वैशेषिकोंके चौबीस गुणोंमेंसे एक; मैथुन; प्रेमी-प्रेमिकाका मिलन; विवाहजन्य संबंध; संघटन; युक्त, अन्वित होना; वह संधि जो सामान्य उद्देश्यकी पूर्तिके लिए दो राजाओंमें होती है; मतैक्य; किसी कार्यमें संलग्न होना; व्यंजन वर्णोंका मेल; दो आकाशीय पिंडोंका योग (ज्यो०); जोड़; योगफल; इत्तफाक; शिव; शृंगार रसका एक भेद, संभोग (सा०)। **–पृथक्त्व**–पु० अनित्य संबंधीका पार्थक्य (न्या०)। **–मंत्र**–पु० विवाह-संबंधी मंत्र। **–विरुद्ध**–वि० जो साथ-साथ न खाये जा सकें, साथ-साथ खानेसे रोग उत्पन्न करनेवाले (खाद्य-पदार्थ)। **–शृंगार**–शृंगार रसका

वह भेद जिसमें प्रेमियोंके मिलन आदि-संबंधी बातोंका वर्णन होता है। **–संधि**–स्त्री० आक्रमणके बाद सामान्य उद्देश्यसे की जानेवाली संधि।

संयोगिनी–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतमके साथ हो, वियोगिनी न हो।

संयोगी(गिन्)–वि० (सं०) मिलनेवाला; जो संपर्क, संसर्गमें हो; जिसका घनिष्ठ संबंध हो; प्रियासे युक्त; विवाहित।

संयोजक–वि० (सं०) (कन्वीनर) जोड़ने, मिलानेवाला; घटित करनेवाला; शब्दों या वाक्योंको जोड़नेवाला (शब्द)। पु० सभा, समिति आदिकी बैठकका आयोजन करनेवाला।

संयोजन–पु० (सं०) जोड़ना, जोड़ने, मिलानेकी क्रिया; सांसारिक बंधनमें बाँधनेवाला, संसृतिका कारण; मैथुन।

संयोजना–स्त्री० (सं०) दे० 'संयोजन'। मु० **–करना**–अ० क्रि० (टु कनवीन) सभा आदिका आयोजन करना, समाह्वान करना।

संयोजित–वि० (सं०) जोड़ा, मिलाया हुआ।

संयोज्य–वि० (सं०) जोड़ने, मिलाने योग्य।

संबोध–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई। **–कंटक**–पु० एक यक्ष।

संयोना*–स० क्रि० दे० 'सँजोना'।

संरंजन–वि० (सं०) आनंददायक। पु० मनका रंजन करना।

संरंभ–पु० (सं०) ग्रहण; उतावली, आतुरता; उग्रता; उत्तेजन; जोश; उत्कट इच्छा; क्रोध, गुस्सा; फोड़ेका शोथ और जलन; घमंड, दर्प; प्रगाढ़ता, घनता; आक्रमणकी प्रचंडता, युद्धवेग; आरंभ; एक अस्त्र। **–ताम्र**–वि० क्रोधसे लाल। **–दृक्(श्)**–वि० जिसकी आँखें क्रोधसे लाल हो गयी हों। **–परुष**–वि० जो गुस्सेकी वजहसे बहुत कठोर हो गया हो। **–रस**–वि० क्रोधान्वित। **–वेग**–पु० क्रोधका जोर।

संरंभी(भिन्)–वि० (सं०) जलन और शोथयुक्त (फोड़ा); क्रुद्ध; घमंडी।

संरक्त–वि० (सं०) रँगा हुआ; लाल; क्रोधाभिभूत; अनुरक्त; सुंदर, मनोहर।

संरक्ष–पु० (सं०) रक्षा, देख-भाल।

संरक्षक–वि०, पु० (सं०) रक्षा करनेवाला; देख-भाल, निरीक्षण करनेवाला (वार्डन); अभिभावक (गार्जियन); पालक; आश्रयदाता, प्रधान पोषक (पेट्रन)।

संरक्षकता–स्त्री० (सं०) संरक्षक होनेका भाव, संरक्षकका कार्य (गार्जियनशिप)।

संरक्षण–पु० (सं०) रक्षा करनेकी क्रिया, हिफाजत; निरीक्षण; प्रतिबंध; (प्रोटेक्शन) विदेशी मालपर कर आदि लगाकर देशी उद्योग-व्यवसायको बाहरकी अनुचित प्रतियोगितासे बचानेका कार्य या नीति। **–कर**–पु० (प्रोटेक्टिव ड्यूटी) अनुचित प्रतियोगितासे देशी उद्योगव्यवसायकी रक्षा करनेके लिए बाहरी मालपर लगाया जानेवाला कर।

संरक्षणीय–वि० (सं०) रक्षा करने योग्य; सुरक्षित रखने योग्य।

संरक्षित–वि० (सं०) सुरक्षित; अच्छी तरह बचाया हुआ; बचाकर रखा हुआ। **–राज्य**–पु० (प्रोटेक्टरेट) वह छोटी तथा कमजोर रियासत जो सुरक्षाकी दृष्टिसे किसी बड़े राज्यके अधीन या आश्रित हो।

संरक्षितव्य–वि० (सं०) संरक्षण करने योग्य।

संरक्षिती(तिन्)–वि० (सं०) जिसने रक्षण किया है।

संरक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) देख-भाल, संरक्षण करनेवाला।

संरक्ष्य–वि० (सं०) रक्षणके योग्य, देख-भाल करने योग्य।

संरचना–मन या किसी सूक्ष्म तत्त्वकी बनावट जो किसी भी प्रकारके भावग्रहणका माध्यम बनती है।

संरब्ध–वि० (सं०) उत्तेजित; क्रुद्ध; वर्द्धित; सूजा हुआ; अभिभूत; परस्पर गृहीत, जो परस्पर हाथ मिलाये हों।

सँरसी*–स्त्री० मछली फँसानेकी कँटिया, बंसी।

संराग–पु० (सं०) लालिमा; क्रोध; उग्रता; अनुरक्ति।

संराद्ध–वि० (सं०) पूरा किया हुआ, संपन्न; प्राप्त।

संराधक–वि०, पु० (सं०) ध्यान, पूजा करनेवाला।

संराधन–पु० (सं०) प्रसन्न करना; पूजा आदिके द्वारा तुष्ट करना; ध्यान; नारा; ऊँची आवाज; (रिकांसिलियेशन) रूठे या असंतुष्ट व्यक्तियोंको प्रसन्न करना, झगड़ेवाले दो पक्षोंमें पुनः अच्छे संबंध स्थापित करना। **–अधिकारी** (कन्सिलियेशन आफिसर) कारखानोंके मालिकों मजदूरोंको समझा बुझाकर समझौता करानेवाला सरकारी अधिकारी।

संराधित–वि० (सं०) पूजा आदिके द्वारा तुष्ट किया हुआ।

संराध्य–वि० (सं०) तुष्ट करने योग्य; ध्यान द्वारा प्राप्त करने योग्य।

संराव, संरावण–पु० (सं०) कोलाहल, होहल्ला, बहुतोंका मिलकर शोर मचाना।

संरावी(विन्)–वि० (सं०) शोर मचानेवाला, कोलाहल करनेवाला।

संरिहाण–पु० (सं०) प्यारसे चाटना (जैसे गाय बछड़ेको चाटती है)।

संरुग्ण–वि० (सं०) जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो, छिन्न-भिन्न।

संरुजन–पु० (सं०) पीड़ा, दर्द।

संरुद्ध–वि० (सं०) रोका हुआ, वर्जित, बाधित; भरा हुआ; रुका हुआ; वेष्टित, घिरा हुआ; बंद; अवरुद्ध, जिसपर घेरा डाला गया हो; ढका हुआ, आवृत; अस्वीकृत। **–चेष्ट**–वि० जिसकी चेष्टा, गति रोक दी गयी हो। **–प्रजनन**–वि० जो संतान उत्पन्न करनेसे रोक दिया गया हो।

संरुषित–वि० (सं०) चिढ़ा हुआ; क्रुद्ध।

संरूढ–वि० (सं०) अंकुरित; भरा हुआ (घाव); फूटकर निकला हुआ, प्रकट, व्यक्त; जिसकी जड़ दृढ़ हो गयी हो; प्रौढ, पुष्ट; धृष्ट। **–व्रण**–वि० जिसका घाव भर गया हो।

संरोदन–पु० (सं०) ढाढ़ मारकर रोना।

संरोध–पु० (सं०) बाधा, रोक; अवरोध, घेरा; बंधन, शृंखला आदि; बंद करना, कैद; प्रतिबंध; क्षति, बुराई; दमन; नाश; हिंसा; क्षेपण, फेंकना; नाकेबन्दी (ब्लाकेड)।

संरोधन–पु० (सं०) बाधा डालना, रोकना; दमन करना; कैद करना।

संरोधनीय–वि० (सं०) संरोधन, रोक-छेंक करने योग्य।

संरोध्य–वि० (सं०) रोकने-छेंकने योग्य; कैद करने योग्य।

संरोपण–पु० (सं०) पौधा, पेड़ लगाना; घाव भरना।

संरोपित–वि० (सं०) जमाया हुआ; रोपा हुआ, लगाया हुआ।

संरोप्य–वि० (सं०) जमाने, लगाने, रोपने लायक।

संरोषित–वि० (सं०) लिप्त, लेप किया हुआ।

संरोह–पु० (सं०) जमना, बढ़कर ऊपर छाना; घावका भरना; फूटकर निकलना, व्यक्त होना।

संरोहण–पु० (सं०) (पौधा) लगाना, रोपना, जमाना; बढ़कर ऊपर छाना; घावका भरना। वि० भरने, सूखनेवाला।

संलंघन–पु० (सं०) (समय) व्यतीत होना।

संलंघित–वि० (सं०) व्यतीत, गत (समय)।

संलक्षण–पु० (सं०) विशेष चिह्नों द्वारा भेद स्पष्ट करना; पहचानना।

संलक्षित–वि० (सं०) पहचाना हुआ; लक्षणोंसे जाना हुआ।

संलक्ष्य–वि० (सं०) पहचाने जाने योग्य; लक्षित होने योग्य। **–क्रमव्यंग्य**–पु० व्यंग्यका एक भेद-जिसमें वाच्यार्थसे व्यंग्यार्थके निकलनेका क्रम लक्षित हो जाता है (सा०)।

संलग्न–वि० (सं०) सटा, बिलकुल लगा हुआ, चिपका हुआ (एपेंडेड); संबद्ध (अटेच्ड); गर्क, लीन; जो दस्त-बदस्त लड़ रहे हों।

संलपन–पु० (सं०) गपशप; प्रलाप।

संलप्तक–वि० (सं०) बात करने योग्य, शिष्ट, भद्र।

संलब्ध–वि० (सं०) गृहीत; प्राप्त।

संलय–पु० (सं०) बैठना; चिड़ियोंका नीचे उतरना; लेटना; निद्रा; विलीन होना; प्रलय।

संलयन–पु० (सं०) चिड़ियोंका नीचे उतरना; लेटना; निद्रा; विलीन होना; नष्ट होना; प्रलय; चिपकना, साथ लगना; (फ्यूज़न) दो हलके भारके नाभिक जब परस्पर संयोग करके

अधिक वजनका नाभिक बनाते हैं तो द्रव्यमानका अल्पांश ऊर्जामें परिवर्तित होकर विमुक्त होता है। इस क्रियाको संलयन या 'तापन्यूक्लीय (थर्मोन्यूक्लियर) संलयन' कहते हैं।

संलाप–पु० (सं०) वार्तालाप, गपशप; अपने आप बकना या बड़बड़ाना (पूर्वानुरागकी एक दशा); आपसका या गुप्त वार्तालाप; आवेगरहित कथोपकथन (ना०); वियोगावस्थामें प्रियसे मन ही मन बातें करना।

संलापक–पु० (सं०) एक तरहका कथोपकथन; उपरूपकका एक भेद।

संलापित–वि० (सं०) जिससे बात की गयी हो।

संलापी(पिन्)–वि० (सं०) वार्तालाप करनेवाला।

संलालित–वि० (सं०) लालित, लाड़-प्यार किया हुआ।

संलिप्त–वि० (सं०) गर्क, लीन; प्रसक्त, लगा हुआ।

संलीढ–वि० (सं०) चाटा हुआ, चखा हुआ; भोग किया हुआ।

संलीन–वि० (सं०) अच्छी तरह लीन, लिप्त; लगा हुआ; आवृत, ढका हुआ; सिकुड़ा हुआ, संकुचित। **–कर्ण**–वि० जिसके कान नीचे लटके हों। **–मानस**–वि० खिन्न।

संलुलित–वि० (सं०) क्षुब्ध, अस्त-व्यस्त; संपर्कमें आया हुआ।

संलेख–पु० (सं०) पूरा परहेज, संयम (बौ०); (डीड) कोई विधिक कृत्य या उसका प्रामाणिक ब्यौरा देनेवाला लिखित पत्र, दे० 'विलेख'; राज्योंके बीच संधिका पूर्व लेख, जिसपर शर्तें भी लिखी हों और प्रतिनिधियोंके हस्ताक्षर भी हों (प्रोटोकोल), पूर्व लेख।

संलेप–पु० (सं०) पंक, कीचड़।

संलोकी(किन्)–वि० (सं०) जो औरों द्वारा देखे जानेकी स्थितिमें हो।

संलोडन–पु० (सं०) क्षुब्ध करना, हिलाना-डुलाना, झकझोरना।

संवत्–पु० (सं०) सन्, वर्ष, साल (संवत्सरका लघु रूप); विक्रम-संवत्सर; वर्षगणनाका कोई वर्ष।

संवत्सर–पु० (सं०) सन्, वर्ष; विक्रम संवत्; पंचवर्षीय युगका प्रथम वर्ष। **–कर**–पु० शिव। **–निरोध**–पु० एक सालकी कैद। **–फल**–पु० एक सालका शुभाशुभ फल। **–भुक्ति**–स्त्री० एक वर्षका मार्ग (सूर्यका)। **–भृत**–वि० एक सालके लिए रखा हुआ। **–भ्रमि**–वि० एक सालमें परिक्रमा पूरी करनेवाला (जैसे सूर्य)। **–मुखी**–स्त्री० ज्येष्ठ-शुक्ला दशमी। **–रय**–पु० एक वर्षका मार्ग।

संवत्सरी–स्त्री० (एनुअल) दे० 'वर्षबोध'।

संवत्सरीय–वि० (सं०) हर साल होनेवाला, वार्षिक।

संवदन–पु० (सं०) वार्तालाप; संदेश; विचार; परीक्षण; यंत्र-मंत्रसे वशमें करना, वशीकरण; जादू।

संवदना–स्त्री० (सं०) वशीकरण; मंत्र आदिसे किसीको वशीभूत करना।

संवनन–पु०, **संवनना**–स्त्री० (सं०) यंत्र-मंत्रसे वशमें करना; प्राप्ति; प्रेम।

संवपन–पु० (सं०) बिखेरना, फेंकना।

संवर–पु० (सं०) रोकना; बाँध; पुल; सामान; बाह्य जगत्को अपनेसे अलग रखना, कर्मोंका प्रवाह रोकना (जै०); बौद्धोंका एक व्रत; संयम, सहिष्णुता; मनोनिग्रह; पसंद, चुनाव; पति चुनना; ढकना; संकोचन; एक तरहका हिरन; एक दैत्य; जल; छिपाव; अनुभूति।

सँवर*–स्त्री० स्मरण, स्मृति; हाल।

संवरण–पु० (सं०) रोकना; निग्रह; ढकना, परदा करना, छिपाना; बहाना करना; बंद करना; गुप्त भेद; आवरण, ढक्कन; घेरा; बाँध; छिपाव; चुनना, पसंद करना; पति चुनना; गुदा चर्मकी तीन तहोंमेंसे एक; सभामें विवाद हो चुकनेपर उसकी समाप्ति (क्लोजर)। **–शील**–वि० जिसमें रोकनेकी शक्ति हो। **–शेष**–पु० (क्लोजिंग बैलेंस) दिनका हिसाब बंद करते समय बची हुई रकम, रोकड़ बाकी। **–स्कंध**–पु० (क्लोजिंग स्टॉक) दिनका (या निर्धारित अवधिका) लेन-देन समाप्त होनेके बाद गोदाममें बचा हुआ माल।

संवरणीय–पु० (सं०) छिपाने, ढकने योग्य; गुप्त रखने योग्य; विवाहके लिए वरण करने योग्य।

सँवरना*–अ० क्रि० ठीक होना–'विधि अब सँवरी बात बिगारी'–रामा०; सज्जित होना। स० क्रि० स्मरण करना –'जौलहि जिऔं राति दिन सँवरौं ओहिकर नावँ'–प०।

सँवरा†–वि० श्यामल।

सँवरिया*–वि० दे० 'साँवला'। पु० कृष्ण।

संवर्ग–पु० (सं०) अपने लिए (छीन-झपटकर) बटोरना; भक्षण करना, चट कर जाना; एक पदार्थका दूसरेमें विलीन होना; मिश्रण; गुणन या गुणनफल।

संवर्गण–पु० (सं०) आकृष्ट करना, अपनाना (मैत्री द्वारा)।

संवर्ग्य–वि० (सं०) जिसे गुणित करना हो।

संवर्जन–पु० (सं०) छीनना, हरण करना; खा जाना।

संवर्त–पु० (सं०) मोड़, घुमाव; नाश, प्रलय; नियत समयपर होनेवाला प्रलय; जलपूर्ण बादल; प्रलयके सात बादलोंमेंसे एक; वर्ष; घना समूह (मनुष्योंका); समूह, राशि; मुकाबला करना; पिंड, गोला; लपेटी हुई नयी पत्ती; एक दिव्यास्त्र; एक धूमकेतु; बिभीतक, बहेड़ा; गोली, वटिका। **–कल्प**–पु० प्रलयका एक विशेष काल (बौ०)। **–केतु**–पु० एक केतु जो राजाओंके नाशका सूचक है।

संवर्तक–वि० (सं०) लपेटनेवाला; नष्ट करनेवाला। पु० प्रलयाग्नि; वाड़वानल; प्रलयकारी बादलोंका एक वर्ग; प्रलय; बलराम; एक नाग; एक मुनि; एक पर्वत; बलरामका हल; बहेड़ा।

संवर्तकी(किन्)–पु० (सं०) बलदेव।

संवर्तन–पु० (सं०) एक दिव्यास्त्र; किसी ओर ले जाना, प्रवृत्त करना; लपेटना; फेरा देना; प्राप्त होना; हलास्त्र; युद्धमें शत्रुका प्रसार रोकना।

संवर्तनी–स्त्री० (सं०) प्रलय।

संवर्तनीय–वि० (सं०) लपेटने, फेरने योग्य।

संवर्ति, संवर्तिका–स्त्री० (सं०) कमलकी बँधी हुई पत्ती (जो अभी खुली न हो); लिपटी हुई वस्तु; हल; पद्म-केसरके पासका पत्ता; दीपशिखा; बत्ती।

संवर्तित–वि० (सं०) लपेटा हुआ; फेरा, घुमाया हुआ।

संवर्ती सूची–स्त्री० (कॉनकरेंट लिस्ट) वह सूची जो एक साथ कई स्थानोंसे प्रकाशित की जाय।

संवर्द्धक, संवर्धक–वि० (सं०) बढ़ानेवाला; आवभगत करनेवाला, अतिथिपरायण। **–शाला**–स्त्री० पोषशाला (नर्सरी)।

संवर्द्धन, संवर्धन–वि० (सं०) बढ़ानेवाला। पु० बढ़ना; पालन-पोषण करना; (बाल आदि) बढ़ानेका साधन; उन्नत होना; उन्नत करना; वृद्धि करना (ऑगमेंटेशन); पशुपक्षियों, पौधों आदिका विकास, विस्तार, वृद्धि करना (कल्चर)।

संवर्द्धनीय, संवर्धनीय–वि० (सं०) बढ़ने, बढ़ाने योग्य; पालनीय।

संवर्द्धित, संवर्धित–वि० (सं०) बढ़ा, बढ़ाया हुआ; पाला, पोसा हुआ।

संवर्मित–वि० (सं०) पूरी तरह हथियारोंसे लैस, शस्त्र-सज्ज।

संवल–पु० (सं०) दे० 'संबल'।

संवलन–पु० (सं०) भिड़ंत (शत्रुओंकी); मिश्रण, मेल; संयोग; इच्छानुकूल घटाने बढ़ानेकी व्यवस्था (कंडीशनिंग)।

संवलित–वि० (सं०) मिलित; मिश्रित; संयुक्त; ···से युक्त, अन्वित; परिवेष्टित; भिड़ा हुआ; चूर्णित; संबद्ध; तर किया हुआ।

संवल्गन–पु० (सं०) खुशीके मारे उछलना।

संवल्गित–वि० (सं०) रौंदा हुआ।

संवसति–स्त्री० (सं०) एक साथ रहना।

संवसथ–पु० (सं०) बस्ती, आबादी; ग्राम; मकान।

संवस्त्रण–पु० (सं०) एक ही जैसे कपड़े पहनना।

संवह–पु० (सं०) ले जानेवाला; आकाशके सात मार्गोंमेंसे तीसरेमें चलनेवाली वायु; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

संवहन–पु० (सं०) ले जाना; नेतृत्व करना; दिखलाना, प्रदर्शित

करना।

सँवाँ*–वि० समान, सदृश–'ह्वैसी आटा लूंण ज्यूं सोना सँवाँ सरीर' –कवीर।

संवाच्य–पु० (सं०) वात करनेका तरीका।

संवाटिका–स्त्री० (सं०) सिंघाड़ा।

संवातन–पु० (सं०) (वेंटिलेशन) कमरोंमें ठीक ढंगसे हवा आने जानेकी व्यवस्था, हवादारी।

संवाद–पु० (सं०) वार्तालाप; वहस; वाद-विवाद; संदेश, खवर; सहमति, स्वीकृति; ठहराव; दावा, मामला। **–दाता(तृ)**–पु० समाचार भेजनेवाला (रिपोर्टर)। **–विलोपन**–पु० (ब्लैक आउट) समाचारपत्रोंमें कुछ विशेष प्रकारके समाचारोंका जान-बूझकर छोड़ दिया जाना, विलकुल ही प्रकाशित न किया जाना।

संवादक–वि०, पु० (सं०) राजी होनेवाला, सहमत होनेवाला; वात करनेवाला; वाद्य वजानेवाला।

संवादन–पु० (सं०) राजी होना; वार्तालाप करना; एकराय होना; बजाना।

संवादिका–स्त्री० (सं०) कीड़ा; चींटी।

संवादित–वि० (सं०) वार्तालापमें प्रवृत्त किया हुआ, राजी किया हुआ।

संवादिता–स्त्री० (सं०) समानता, तुल्यता।

संवादी(दिन्)–वि० (सं०) वात करनेवाला; वजानेवाला; सहमत होनेवाला; सदृश, समान। पु० संगीतमें वह स्वर जिसका वादीसे मेल हो और जो राग-विशेषमें वादीसे कम पर अन्य स्वरोंसे अधिक महत्त्व रखता हो।

संवार–पु० (सं०) ढकना, छिपाना, वंद करना; उच्चारणमें कंठका संकुचन; बाधा; संरक्षण; व्यवस्थित करना; ह्रास; * रचना; समाचार।

संवारण–पु० (सं०) रोकना, हटाना; मना करना; छिपाना।

संवारणीय–वि० (सं०) ढकने, छिपाने योग्य; निवारण करने योग्य।

सँवारना–स० क्रि० सुसज्जित करना, सजाना; ठीक करना, तरतीवसे रखना; सँभालना।

संवारित–वि० (सं०) हटाया हुआ; वारित; ढका, छिपाया हुआ।

संवार्य–वि० (सं०) हटाने, दूर रखने योग्य; मना करने योग्य; ढकने, छिपाने योग्य।

संवावदूक–वि० (सं०) सहमत होनेवाला, राजी होनेवाला।

संवास–पु० (सं०) साथ वसना; मैथुन; मिलना-जुलना; समाज; बस्ती; रहनेका स्थान; मकान, घर; सभा, खेल आदिका सार्वजनिक स्थान।

संवासित–वि० (सं०) सुगंधसे वासा हुआ, सुगंधित वनाया हुआ; दुर्गन्धयुक्त (जैसे साँस)।

संवासी(सिन्)–वि० (सं०) साथ रहने, वसनेवाला; ···में वसने, रहनेवाला।

संवाह–पु० (सं०) ढोना, ले जाना; वदन दवाना, मुक्की लगाना; वदन दवानेवाला नौकर; पण्य-स्थान; उत्पीडन; मनोरंजन आदिके काम आनेवाला उपवन, 'पार्क'; सात वायुओंमेंसे एक।

संवाहक–पु० (सं०) मुक्की लगानेवाला, वदन दवानेवाला नौकर; ले जानेवाला। वि० गति प्रदान करनेवाला, चलानेवाला; ढोकर कहीं ले जानेवाला (कैरिअर); शरीर दवानेवाला सेवक।

संवाहकता–स्त्री० (सं०) संवाहक होनेका गुण, धर्म या अवस्था; किसी वस्तुका वह गुण जिसके कारण विजली, ताप, भाप आदिका अन्य अंगोंमें संवहन किया जाता है (कण्डक्टिविटी)।

संवाहन–पु० (सं०) ले जाना, ढोना; वदन दवाना; (वादलोंका) गमन; ताप, बिजली आदिका एक स्थानसे दूसरे स्थान तक पहुँचानेकी क्रिया (कंडक्शन)।

संवाहित–वि० (सं०) ढोया हुआ; पहुँचाया हुआ; चलाया हुआ; जिसका वदन दवाया गया हो, जिसे मुक्की लगायी गयी हो।

संवाही(हिन्)–वि० (सं०) ले जानेवाला; चलानेवाला; वदन दवानेवाला।

संवाह्य–वि० (सं०) ढोये जाने योग्य; दिखाने, प्रकट करने योग्य; मालिश करने, मुक्की लगाने योग्य।

संविक्त–वि० (सं०) छाँटकर अलग किया हुआ, प्रभेद किया हुआ।

संविग्न–वि० (सं०) डरा हुआ, उद्विग्न, व्याकुल, क्षुब्ध; इधर-उधर चक्कर लगाता हुआ। **–मानस**–वि० हतवुद्धि।

संविज्ञ–वि० (सं०) अच्छी जानकारी रखनेवाला, अभिज्ञ।

संविज्ञात–वि० (सं०) सर्वज्ञात, सर्वसम्मत।

संविज्ञान–पु० (सं०) सम्यक् ज्ञान; स्वीकृति, सहमति। **–भूत**–वि० जो सवको ज्ञात हो गया हो।

संविति–स्त्री० (सं०) प्रतिपत्ति; चेतना; अनुभव; वुद्धि।

संवितिकाफल–पु० (सं०) सेव (?)।

संवित्–स्त्री० (सं०) दे० 'संविद्'। **–पत्र**–पु० संधिपत्र, सुलहनामा।

संवित्ति–स्त्री० (सं०) वुद्धि, प्रज्ञा; चेतना; प्रतिपत्ति; मतैक्य, सहमति; स्मृति।

संविद–वि० (सं०) चेतन, सज्ञान। पु० करार, ठहराव; पु० संयुक्त विधायक दल, विधायकोंका वह समूह जिसमें कई दलोंके लोग शामिल हों।

संविदा–स्त्री० (सं०) इकरार, ठहराव; भाँग या गाँजेका पौधा। (कंट्रैक्ट) कुछ निश्चित शर्तोंपर दो या दोसे अधिक पक्षोंके वीच होनेवाला समझौता। **–प्रविधि**–स्त्री० संविदासे सम्वद्ध कानून (लॉ ऑफ कंट्रैक्ट)। **–मंजरी**–स्त्री० गाँजेका फूल।

संविदात–वि० (सं०) जाननेवाला, समझदार; सामंजस्यपूर्ण।

संविदित–वि० (सं०) जाना, समझा हुआ; स्वीकार किया हुआ, माना हुआ; प्रसिद्ध; ढूँढ़कर निकाला हुआ, मतैक्यसे निश्चित किया हुआ; उपदेश या परामर्श दिया हुआ; करार किया हुआ।

संविद्–स्त्री० (सं०) प्रज्ञा; चेतना; अनुभूति; वोध, ज्ञान; करार, ठहराव; स्वीकृति; प्रथा; युद्ध, लड़ाई; युद्धकी ललकार; प्रहरीका संकेतशव्द; नाम, संज्ञा; संकेत; तोषण; सहानुभूति; वार्तालाप; भाँग; समाधि; संकेतस्थल, मिलनस्थान; योजना; वृत्तांत, हाल; प्राप्ति; संपत्ति। **–वाद**–पु० यूरोपका एक सिद्धांत, चैतन्यवाद। **–व्यतिक्रम**–पु० वादे या समझौतेका पालन न होना।

संविध–स्त्री० (सं०) प्रामाणिक विधि या रीति; विधायिका सभा द्वारा स्वीकृत विधान (स्टैट्यूट)। **–ग्रंथ**–पु० संविधि पुस्तक (स्टैट्यूट वुक)।

संविधा–स्त्री० (सं०) योजना; प्रवंध, तैयारी; जीवनयापनका ढंग।

संविधाता(तृ)–पु० (सं०) प्रवंधक; स्रष्टा।

संविधान–पु० (सं०) व्यवस्था, प्रवंध, आयोजन; संपादन; रचना; योजना; तरीका; कथा-वस्तुमें घटनाओंकी व्यवस्था या विधान करना; (कांस्टिटयूशन) वह विधान तथा मौलिक सिद्धांतोंका समूह जिसके अनुसार किसी देश या राज्य या संस्थाका संघटन, संचालन आदि होता है। **–सभा,–परिषद्**–स्त्री० (कांस्टिटुएंट असेंवली) किसी देशका संविधान तैयार करनेवाली सभा। **–ज्ञ**–पु० (सं०) (कांस्टिटयूशनैलिस्ट) संविधानकी जानकारी रखनेवाला; दे० 'संविधान-शास्त्री'। **–शास्त्री(स्त्रिन्)**–पु० (सं०) (कांस्टिटयूशनैलिस्ट) संविधानका विशेषज्ञ, उसकी वारीकियोंको समझनेवाला, संविधानज्ञ।

संविधानक–पु० (सं०) कार्य करनेकी विशेष विधि; जीवनयापनकी विशेष विधि; कथा-वस्तुकी घटनाओंका विधान; नाटककी कथा-वस्तु; कथानक (प्लाट); कोई विचित्र कार्य; असाधारण घटना।

संविधि–स्त्री० (सं०) व्यवस्था, तैयारी; (स्टैट्यूट) विधानसभा द्वारा स्वीकृत वह लिखित विधान जो स्थायी विधि (कानून) के रूपमें हो।

संविधेय–वि० (सं०) जिसकी व्यवस्था की जाय; करणीय; प्रवंध-योग्य।

संविभक्त–वि० (सं०) वाँटा, पृथक् किया हुआ; दिया हुआ; सुडौल।

संविभक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) दूसरेके साथ हिस्सा वँटानेवाला।

संविभजन–पु० (सं०) बाँट; हिस्सा लेना।

संविभाग–पु० (सं०) बाँट, बँटवारा; हिस्सा; राज्यके मंत्रीका कार्यालय और विशिष्ट विभाग (पोर्टफोलियो)।

संविभागी(गिन्)–पु० (सं०) साझीदार; भाग लेनेवाला।

संविभाजन–पु० (एपोर्शनमेंट) लोगोंको देने, बाँटने आदिकी दृष्टिसे किसी वस्तुके अलग-अलग अंश या टुकड़े करना; दोष या दायित्व आदिका संश्लिष्ट व्यक्तियोंमें उचित रूपसे विभाजन करना।

संविभाव्य–वि० (सं०) समझे जाने योग्य।

संविर्दम–पु० (सं०) भीषण युद्ध, वह संघर्ष जिसमें बहुत रक्तपात हो।

संविवेक–पु० (सं०) विवेक; निर्णायक शक्ति (डिस्क्रीशन)।

संविषा–स्त्री० (सं०) अतिविषा, अतीस।

संविष्ट–वि० (सं०) पहुँचा, प्रवेश किया हुआ; लेटा हुआ, सोया हुआ; बैठा हुआ; वस्त्राच्छादित।

संविहित–वि० (सं०) जिसकी व्यवस्था या देख-भाल की गयी हो।

संवीक्षण–पु० (सं०) चारों तरफ देखना; तलाश करना; गौरसे देखना; अन्वेषण।

संवीक्षा–स्त्री० (सं०) (स्क्रूटिनी) किसी वस्तुकी बारीकसे बारीक जाँच, सूक्ष्म परीक्षण।

संवीत–वि० (सं०) ढका हुआ; छिपाया हुआ; वस्त्राच्छादित; अलंकृत; कवचयुक्त; परिवेष्टित; रुद्ध; अदृश्य; लुप्त; अनदेखा किया हुआ; लपेटा हुआ; अभिभूत। पु० वस्त्र; जनेऊ; श्वेत कटभी।

संवीती(तिन्)–वि० (सं०) उपवीतधारी।

संवृक्त–वि० (सं०) छीना हुआ; खाया, खर्च किया हुआ; नष्ट किया हुआ।

संवृत–वि० (सं०) ढका हुआ, छिपा हुआ; गुप्त; बंद; घिरा हुआ; रक्षित; ···से युक्त; अलग रखा हुआ; दबाया हुआ; अवदमित; रुद्ध; अस्पष्ट; मंद किया हुआ; जो तटस्थ, अलग हो गया हो; हरण किया हुआ। पु० एकांत या गुप्त स्थान; उच्चारणका एक प्रकार; एक तरहका बेंत; वरुणदेव। **–कोष्ठ**–वि० जिसे कब्ज हो। **–मंत्र**–वि० जो अपनी योजना गुप्त रखता हो। पु० गुप्त मंत्रणा। **–संवार्य**–वि० छिपाने योग्य बातको प्रकट न करनेवाला।

संवृति–स्त्री० (सं०) बंद करना, ढकना, छिपाना, गुप्त रखना; ढोंग; बाधा; गुप्त अभिप्राय, अभिसंधि।

संवृत्त–वि० (सं०) पास आया हुआ; घटित, जो हुआ हो; जो पूर्ण हुआ हो (अभिलाष आदि); एकत्र किया हुआ, राशीकृत; गत, बीता हुआ; ढका हुआ; ··से युक्त। पु० वरुण; एक नाग।

संवृत्ति–स्त्री० (सं०) होना, घटित होना; पूर्ति, सिद्धि; सम्मिलित अधिकार।

संवृद्ध–वि० (सं०) पूरा बढ़ा हुआ; उन्नति करता हुआ; जो बढ़कर बड़ा, लंबा, ऊँचा हो गया हो।

संवृद्धि–स्त्री० (सं०) बढ़ती, अभ्युदय; शक्ति।

संवेग–पु० (सं०) तीव्र उत्तेजना, क्षोभ; भय; तीव्र वेग; (मोमेन्टम) द्रव्यमान और वेगका गुणनफल; तीव्रता; जोर; उग्रता, प्रचंडता; शीघ्रता, आतुरता; बेचैन करनेवाली पीड़ा।

संवेजन–पु० (सं०) व्यग्र, उद्विग्न करना; डराना, सहमा देना; उत्तेजित, क्षुब्ध करना।

संवेद–पु० (सं०) बोध, ज्ञान; अनुभूति।

संवेदन–पु०, (सं०) ज्ञान; अनुभूति; जताना, सूचित करना; प्रकट करना। **–शील**–वि० प्रभावोंको शीघ्र ग्रहण करनेवाला, अनुभवग्राही; सहृदय, भावुक।

संवेदना–स्त्री० (सं०) अनुभूति; सहानुभूति (सिम्पेथी); दुःख या समवेदना प्रकट करनेकी क्रिया या भाव (कंडोलेंस); दुःखकी अनुभूति; नकछिकनी घास। **–वाद**–पु० (सेनसेशनलिज्म) यह सिद्धांत या मत कि हमें समस्त ज्ञानकी प्राप्ति संवेदनासे ही होती है। किसी पदार्थ या वस्तुको अनुभव करनेकी वह गहराई जो नवलेखनमें बहुचर्चित होती है। **–सूत्र**–पु० (नर्व) सारे शरीरमें फैली सूक्ष्म नसें। **–हरण**–पु० दे० 'अचेतनीकरण' (एनीस्थेसिस)। **–हारी**–वि० चेतनाहीन बना देनेवाला, 'निश्चेतक', 'अचेतनक' (एनीस्थेटिक)।

संवेदनीय–वि० (सं०) अनुभव करने योग्य; बोध, ज्ञान कराने योग्य।

संवेदित–वि० (सं०) अनुभव किया हुआ; बोध कराया हुआ, जताया हुआ।

संवेद्य–वि० (सं०) समझने योग्य; अनुभवगम्य, अनुभव करने योग्य; जताने, प्रकट करने योग्य। पु० नदियोंका संगम; एक तीर्थ।

संवेद्यता–स्त्री० संवेद्य होनेकी अवस्था, गुण या भाव (सेंसिबिलिटी)।

संवेश–पु० (सं०) निकट आना; प्रवेश; आराम करना, सोना; स्वप्न; शयनागार; आसन, कुरसी आदि; मैथुन; एक रतिबंध।

संवेशक–पु० (सं०) जमा करने, बटोरने, व्यवस्थित करनेवाला (सामान आदि); सोनेमें सहायता करनेवाला।

संवेशन–पु० (सं०) बैठना; लेटना, सोना; आसन; प्रवेश करना; रति, संभोग। वि० लेटनेमें प्रवृत्त करनेवाला।

संवेशी(शिन्)–वि० (सं०) लेटने, सोनेवाला।

संवेश्य–वि० (सं०) बैठने, लेटने योग्य; प्रवेश योग्य।

संवेष्ट–पु० (सं०)···से आवृत होना; आच्छादन, बेठन।

संवेष्टक–पु० (पैकर) वह व्यक्ति जो पुस्तकें, दवाएँ या अन्य माल कागज, दफ्ती, बोरे आदिमें लपेटकर या संदूकमें रखकर अन्यत्र भेजनेके लिए प्रस्तुत करे।

संवेष्टन–पु० (सं०) ढकना; लपेटना; घेरना; लपेटनेका कपड़ा, बेठन। **–व्यय**–पु० (पैकिंग चार्जेज़) बाहर भेजनेके लिए माल किसी डिब्बे, बोरे, थैले आदिमें बंद करनेके कारण होनेवाला व्यय।

संवेष्टिका–स्त्री० (पैकेट) किसी वस्तुका छोटा बंडल, लकड़ी, दफ्ती आदिके डिब्बों आदिमें बंद किया हुआ माल।

संवेष्टित–वि० (एनक्लोज्ड) जो किसी अन्य कागज, पत्रादिके साथ भीतर रख दिया गया हो।

संवैधानिक–वि० (सं०) (कंस्टीट्यूशनल) संविधान संबंधी। **–राजतंत्र**–पु० (कंस्टीट्यूशनल मॉनर्की) ऐसा शासन तंत्र जहाँ राजाके अधिकार और कर्तव्य संविधान द्वारा मर्यादित हों।

संव्यवहरण–पु० (सं०) कारबारमें तरक्की करना।

संव्यवहार–पु० (सं०) आपसका व्यवहार; वाणिज्य-व्यापार; कारबार; कर्तव्य; संपर्क; मामला; प्रयोग, इस्तेमाल; प्रचलित शब्द।

संव्याध–पु० (सं०) द्वंद्व युद्ध; लड़ाई।

संव्यान–पु० (सं०) कपड़ा; उत्तरीय वस्त्र; आच्छादन; आवरण।

संव्याय–पु० (सं०) वस्त्र; ओढ़ना।

संव्रात–पु० (सं०) समूह, झुंड।

संशंसा–स्त्री० (सं०) प्रशंसा, स्तुति, तारीफ।

संशप्त–वि० (सं०) शापग्रस्त; वचनबद्ध।

संशप्तक–पु० (सं०) अंततक युद्ध करने और दूसरोंको भागनेसे रोकनेकी शपथ खानेवाला योद्धा; चुना हुआ योद्धा; सहयोद्धा; किसीको मारनेकी शपथ खानेवाला षड्यंत्रकारी।

संशब्द–पु० (सं०) ललकार; वचन; उल्लेख, जिक्र; हवाला; प्रशंसा।

संशब्दन–पु० (सं०) ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना; प्रशंसा करना; पुकारना; हवाला देना।

संशम–पु० (सं०) पूरी शांति; संतुष्टि, इच्छादिका न रहना।

संशमन–पु० (सं०) स्थिर करना; शांत करना; नष्ट, दूर करना; निवृत्त करना; शांतिकारक औषध।

संशय–पु० (सं०) सोने या आराम करनेके लिए लेटना; अनिश्चय, हिचक; संदेह (डाउट); खतरा, संकट, कठिनाई; संभावना। **–कर**–वि० खतरनाक। **–गत**–वि० खतरेमें पड़ा हुआ। **–च्छेद**–पु० संदेह-निवारण। **–च्छेदी(दिन्)**–वि० संदेह दूर करनेवाला। **–सम**–पु० न्यायकी चौबीस जातियोंमेंसे एक। **–स्थ**–वि० जो संदिग्धावस्थामें हो, संदेहयुक्त। **–वाद**–पु० (स्केप्टिसिज्म) एक दार्शनिक वाद जिसमें यह विचार किया

जाता है कि अबतककी मान्यताएँ ठीक भी हैं अथवा नहीं; दे० 'संदेहवाद'।

संशयाक्षेप–पु० (सं०) संदेहका निवारण; एक काव्यालंकार।

संशयात्मक–वि० (सं०) संदेह पूर्ण, अनिश्चित।

संशयात्मा(त्मन्)–वि०, पु० (सं०) शक्की, अविश्वासी, संदेहवादी; शंकालु।

संशयान–वि० (सं०) दे० 'संशयालु'।

संशयापन्न–वि० (सं०) संदेहपूर्ण, अनिश्चित।

संशयालु–वि० (सं०) संदेहशील।

संशयावह–वि० (सं०) खतरनाक।

संशयित–वि० (सं०) संशयमें पड़ा हुआ; संदिग्ध; जो निरापद न हो।

संशयिता(तृ)–पु० (सं०) अविश्वासी, संशय करनेवाला।

संशयी(यिन्)–वि० (सं०) संशय, संदेह करनेवाला, शक्की।

संशयोच्छेदी(दिन्)–वि० (सं०) संदेह दूर करनेवाला।

संशयोपमा–स्त्री० (सं०) उपमाका एक प्रकार जिसमें संदेहके रूपमें सादृश्यका कथन हो।

संशयोपेत–वि० (सं०) संदेहयुक्त।

संशर–पु० (सं०) तोड़ना; विदारण करना; चूर करना।

संशरण–पु० (सं०) शरणमें जाना; युद्धारंभ, आक्रमण; भंग करना; चूर करना।

संशारुक–वि० (सं०) मर्दन, दलन करनेवाला; भंग करनेवाला।

संशासन–पु० (सं०) सुशासन; आदेश, आज्ञा।

संशित–वि० (सं०) तेज किया हुआ, सान-चढ़ाया हुआ; तेज; नुकीला; तैयार, उद्यत; दृढ़संकल्प; काम पूरा करनेमें तेज; दक्ष, निपुण; संपादित; कठोर। **–वाक्(च्)**–वि० कठोर भाषा वोलनेवाला। **–व्रत**–वि० कड़ाईके साथ अपना व्रत पूरा करनेवाला।

संशितात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) जिसने दृढ़ संकल्प कर लिया है।

संशिति–स्त्री० (सं०) वहुत तेज करना, सान चढ़ाना।

संशिष्ट–वि० (सं०) वचा हुआ।

संशीत–वि० (सं०) शीतसे जमा हुआ; जो ठंढा हो चुका हो।

संशीति–स्त्री० (सं०) संदेह, अनिश्चय।

संशीलन–पु० (सं०) नियमित रूपसे अभ्यास करना; किसी कामको आदतन करना; संसर्ग।

संशुद्ध–वि० (सं०) पूरी तरह शुद्ध किया हुआ, विशुद्ध; चमकाया, पालिश किया हुआ; जुर्मसे बरी किया हुआ; जिसने प्रायश्चित आदिके द्वारा अपनेको निर्दोष वना लिया है; परीक्षित; चुकता किया हुआ। **–किल्विष**–वि० जो पापमुक्त हो चुका हो।

संशुद्धि–स्त्री० (सं०) पूरी सफाई; शुद्धीकरण; मार्जन; सुधार; ऋण परिशोध; विशुद्धता, पवित्रता।

संशुष्क–वि० (सं०) विलकुल सूखा हुआ; मुरझाया हुआ; नीरस; शुष्क हृदयवाला, अरसिक।

संशून–वि० (सं०) वहुत सूजा हुआ।

संशृंगी–स्त्री० (सं०) वह गाय जिसके सींग एक दूसरेकी ओर मुड़े हों।

संशोधक–वि० (सं०) सुधारनेवाला; परिष्कार करनेवाला; चुकानेवाला; किसीकी शुद्धिमें सहायक (तत्त्व) (करेक्टिव)।

संशोधन–वि० (सं०) विशुद्ध करनेवाला, विकार नष्ट करनेवाला (वात, पित्तादिका)। पु० शुद्धीकरण; शुद्ध करनेका साधन; अदायगी; (त्रुटि आदि) सुधारना (करेक्शन); संस्कार करना; किसी प्रस्ताव आदिमें कुछ घटाना वढ़ाना (अमेंडमेंट)।

संशोधनीय–वि० (सं०) दे० 'संशोध्य'।

संशोधित–वि० (सं०) शुद्ध किया हुआ; सुधारा हुआ; अदा किया हुआ।

संशोधी(धिन्)–वि० (सं०) सुधारने, साफ करनेवाला। **–विधेयक**–पु० (एमेंडिंग विल) किसी अधिनियम आदिमें संशोधन या सुधार करनेके लिए उपस्थित किया जानेवाला विधेयक।

संशोध्य–वि० (सं०) सुधारने, साफ करने योग्य; जिसे सुधारा, साफ किया जाय; चुकाने योग्य।

संशोभित–वि० (सं०) अलंकृत; ···से दीप्त।

संशोष–पु० (सं०) अच्छी तरह सुखा देना; सोखना।

संशोषण–पु० (सं०) सोखना; सुखाना। वि० सुखाने, सोखनेवाला।

संशोषणीय–वि० (सं०) सोखने योग्य।

संशोषित–वि० (सं०) सोखा हुआ; सुखाया हुआ।

संशोषी(षिन्)–वि० (सं०) सोखनेवाला; सुखा देनेवाला (ज्वर)।

संशोष्य–वि० (सं०) सोखने, सुखाने योग्य।

संश्यान–वि० (सं०) संकुचित, सिकुड़ा हुआ; ठिठुरा हुआ; जमा हुआ।

संश्रय–पु० (सं०) संयोग, मेल; संपर्क, संवंध; सहारा लेना, शरणमें जाना, आश्रय ग्रहण करना; परस्पर सहायताके लिए की जानेवाली संधि; आश्रयस्थान, पनाह; विश्रामस्थल; निवास-स्थान, घर; संसक्ति, आसक्ति; अवयव; उद्देश्य; एक प्रजापति।

संश्रयण–पु० (सं०) शरण लेना, सहारा लेना; संसर्ग, संसक्ति।

संश्रयणीय–वि० (सं०) सहारा, शरण लेने योग्य।

संश्रयी(यिन्)–वि० (सं०) सहारा, शरण लेनेवाला। पु० नौकर।

संश्रव–पु० (सं०) सुनना; अंगीकार; प्रतिज्ञा। वि० सुनाई पड़नेवाला।

संश्रव(स्)–पु० (सं०) गौरव, ख्याति।

संश्रवण–पु० (सं०) कान देना, सुनना; श्रवणक्षेत्र; कान; प्रतिज्ञा, करार करना; अंगीकार करना।

संश्रांत–वि० (सं०) वहुत थका हुआ।

संश्राव–पु० (सं०) ध्यानसे सुनना; स्वीकार करना।

संश्रावक–पु० (सं०) सुननेवाला; शिष्य।

संश्रावयिता(तृ)–पु० (सं०) सुनानेवाला, घोषणा करनेवाला।

संश्रावित–वि० (सं०) जोरसे वोलकर (या पढ़कर) सुनाया हुआ।

संश्राव्य–वि० (सं०) सुनाई पड़नेवाला; सुनाने लायक।

संश्रित–वि० (सं०) संयुक्त; किसीके सहारे टिका हुआ, परावलंवी; लिपटा, चिपका हुआ; शरणागत; किसी स्थानमें ठहरा हुआ; आश्रित; आदी; निहित; गृहीत; उपयुक्त, उचित; अंगीकृत; संवंधी विषयक। पु० नौकर; परावलंबित व्यक्ति।

संश्रुत–वि० (सं०) सुना हुआ; पढ़ा हुआ; वादा किया हुआ; अंगीकृत।

संश्लिष्ट–वि० (सं०) आलिंगित; मिला हुआ; जुड़ा हुआ; विभिन्न तत्त्वों, घटकों आदिके मेलसे बना हुआ (सिंथेटिक); मिश्रित; संलग्न, संवद्ध; वनावटी, नकली (रवड़ इत्यादि); अस्पष्ट, जिसके विषयमें स्पष्ट रूपसे कुछ निश्चय न हो सके; ···से युक्त। पु० एक तरहका मंडप; राशि, समूह। **–कर्म(न्)**–पु० ऐसा कर्म जिसके भला-बुरा होनेका निश्चय न हो सके। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जो भले-वुरेका विवेक न कर सके। **–भाषा**–स्त्री० विभक्तियोंसे युक्त पदसंयुक्त ऐसी भाषा जिसमें प्रकृतिप्रत्यय अलग नहीं किये जा सकते। **–शरीरकारी(रिन्)**–वि० साथ-साथ रहनेवाले।

संश्लेष–पु० (सं०) संयोग; संवंध; संधि, जोड़; आलिंगन; वंधन, तसमा।

संश्लेषण–पु० (सं०) जुटाना, मिलाना; तत्त्वों या सरल संरचनावाले पदार्थोंका रासायनिक संयोग कराकर अधिक जटिल संरचनावाले यौगिकका निर्माण करना; (सिंथेसिस) विभिन्न तथ्यों, तत्त्वों, घटकों आदिको संलग्न या संवद्ध करना, विभिन्न कारणों या परिणामोंपर विचार कर संवंध दिखलाना, मिलान करना; संलग्न करना, लगाना; संवद्ध करना; वाँधने, जोड़नेवाली चीज।

संश्लेषणा–स्त्री० (सं०) दे० 'संश्लेषण'।

संश्लेषित–वि० (सं०) जोड़ा, मिलाया हुआ; संबद्ध किया हुआ; आलिंगित।

संश्लेषी(षिन्)–वि० (सं०) जोड़ने, मिलानेवाला; आलिंगन करनेवाला।

संश्वत्–पु० (सं०) जादूगर, वाजीगर; जादूगरी; धोखा; माया।

संसंग–पु० (सं०) संयोग; संबंध।

संसंगी(गिन्)–वि० (सं०) साथ लगनेवाला; निकट संपर्कमें आनेवाला।

संसंजन–पु० (कोहीज़न) ठोस या द्रवके अणुओंके बीच लगनेवाला आकर्षण बल जिसके कारण ठोसकी शक्ल बनी रहती है या द्रवके अणु एक दूसरेसे सम्बद्ध रह पाते हैं।

संस*–पु० दे० 'संशय'; † बरकत।

संसइ*–पु० दे० 'संशय'।

संसक्त–वि० (सं०) लगा हुआ; मिला हुआ, सटा हुआ (कंटिगुअस); संबद्ध; मिश्रित; भिड़ा हुआ (शत्रुके रूपमें); चिपकनेवाला; अस्पष्ट (वाणी); प्रवृत्त, संलग्न, लीन; विषयासक्त; अनुरक्त; ··· से युक्त; आसन्न, निकटवर्ती; घना, ठोस; लगातार, अविराम; सापेक्ष। **–चेता(तस्)**, **–मना(नस्)**– वि० जिसका मन किसी विषयपर जमा हुआ हो। **–युग**–वि० जूएमें जोता हुआ। **–सामंत**–पु० वह सामंत जिसकी जमीन चारों ओर हो।

संसक्ति–स्त्री० (सं०) घनिष्ठ-संबंध; साथ बाँधना; (एन्वाल्वमेंट) लेखकको विभिन्न समस्याओंसे गहराईसे सम्बद्ध होनेकी स्थिति; एक साथ लगे या सटे रहनेकी शक्ति (कोहीजन); सटे होनेका भाव (कंटीगुइटी)। घनिष्ठता, मेल-जोल; आसक्ति; प्रवृत्ति।

संसगर†–वि० उपजाऊ; लाभदायक; बरकतवाला।

संसज्जन–पु० (मोबिलाइज़ेशन) युद्धके लिए (सेनाका) पूर्णतः तैयार या शस्त्रास्त्रोंसे सज्जित किया जाना।

संसज्जमान–वि० (सं०) साथ लगनेवाला; हिचकनेवाला; हकलानेवाला; तैयार होनेवाला।

संसज्जित–वि० (मोबिलाइज्ड) युद्धके लिए प्रस्तुत तैयार की गयी (सेना)।

संसत्, संसद्–स्त्री० (सं०) सभा; न्यायालय; न्याय, धर्मकी सभा; (पार्लमेंट) किसी देश या राज्यकी जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियोंकी वह सर्वोच्च (केंद्रीय) विधान-सभा जिसका काम शासन-संबंधी कार्योंमें सहायता देना, आयव्ययक स्वीकार करना, विधान बनाना, उनमें संशोधन करना आदि हो (साधारणतया इसमें दो सदन होते हैं, जैसे ब्रिटेनमें कामंससभा तथा सरदारसभा और भारतमें लोकसभा तथा राज्यपरिषद); किसी विशिष्ट कार्यके लिए संगठित समुदाय (असोसियेशन); चौबीस दिन चलनेवाला एक यज्ञ; समूह, राशि। वि० साथ बैठनेवाला; यज्ञमें भाग लेनेवाला। **–सदस्य**–पु० पार्लमेंट या लोकसभाका सदस्य।

संसदन–पु० (सं०) खिन्नता, विषण्णता।

संसनन–पु० (सं०) प्राप्ति।

संसनाना–अ० क्रि० हवा बहने या पानी खौलनेसे 'सन-सन' शब्द होना।

संसय*–पु० दे० 'संशय'।

संसरण–पु० (सं०) गमन, भ्रमण; जन्म और पुनर्जन्म, पार्थिव जीवन; सेनाकी अबाध यात्रा; युद्धारंभ; राजमार्ग; नगर-द्वारके पासका पथिकालय।

संसर्ग–पु० (सं०) संयोग, मेल; मिश्रण; संबंध; संपर्क; निकट रहनेसे होनेवाला संबंध या लगाव (कंटैक्ट); साथ; मैथुन; घनिष्ठता; अस्तव्यस्तता; शरीरकी दो धातुओंका रोगकारक योग; सामीप्य; वस्तुओं आदिका सामान्य उपभोग; वह बिंदु जहाँ दो रेखाएँ कटती हों; अवधि; समवाय। **–ज**–वि० संपर्कसे उत्पन्न; छुतहा (इन्फ़ेक्शस) (रोग)। **–दोष**–पु० बुरे साथका बुरा फल। **–रोध** (क्वारेंटाइन) संक्रामक रोगोंसे बचानेके लिए विदेशियोंको कुछ समयतक अलग रखनेकी व्यवस्था; उसके लिए नियत स्थान; दे० 'संगरोध'। **–विद्या**–स्त्री० मिलने-जुलनेकी कला; समाज विज्ञान।

संसर्गाभाव–पु० (सं०) संबंधका अभाव; अभावके दो भेदोंमेंसे एक–किसी वस्तुसे संबंध रखनेवालेका अभाव (न्या०)।

संसर्गी–स्त्री० (सं०) शुद्धि, सफाई (आ० वे०)।

संसर्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) मिला हुआ, युक्त; संबद्ध; ··· से युक्त; बँटवारा होनेपर भी संबंधियोंके साथ रहनेवाला; परिचित, हेली-मेली। पु० साथी, मित्र।

संसर्जन–पु० (सं०) मिलना; संयोग होना; अपनी ओर करना; राजी या तुष्ट करना; परित्याग; निकालना, बाहर करना; शुद्धि, सफाई।

संसर्प–पु० (सं०) रेंगना; धीरे-धीरे चलना; क्षय मासवाले वर्षमें होनेवाला अधिक मास।

संसर्पण–पु० (सं०) रेंगना; धीरे-धीरे चलना; अचानक आक्रमण करना।

संसर्पी(र्पिन्)–वि० (सं०) रेंगनेवाला; धीरे-धीरे चलने, खिसकनेवाला; तिरने, उतरानेवाला; पहुँचने, फैलनेवाला।

संसह–वि० (सं०) समान, मुकाबलेका।

संसा*–पु० दे० 'संशय'; † सँड़सा।

संसाद–पु० (सं०) गोष्ठी, सभा।

संसादन–पु० (सं०) साथ रखना; तरतीबसे रखना।

संसादित–वि० (सं०) इकट्ठा किया हुआ; सजाया हुआ, क्रमबद्ध, तरतीबसे रखा हुआ।

संसाधक–वि० (सं०) पूरा, सिद्ध करनेवाला; जीतने, वशमें करनेवाला।

संसाधन–पु० (सं०) पूरा करना; अच्छी तरह करना; तैयारी; वशीभूत करना।

संसाधनीय–वि० (सं०) पूरा करने योग्य; वशमें करने योग्य।

संसाध्य–वि० (सं०) पूरा करने योग्य; प्राप्त करने योग्य; जीतने योग्य।

संसार–पु० (सं०) आवागमन; संसृति, जन्म-मरण; दुनिया; मायाजाल, लौकिक प्रपंच; मर्त्यलोक; गृहस्थी; विट्खदिर; समूह (ला०)। **–गमन**–पु० जन्म-मरण, आवागमन। **–गुरु**–पु० कामदेव; जगद्गुरु। **–चक्र**–पु० भवचक्र, संसृति। **–तिलक**–पु० एक तरहका चावल। **–पथ**–पु० भग, स्त्रियोंकी जननेंद्रिय। **–पदवी**, **–सरणि**–स्त्री० संसारका मार्ग; भग। **–बंधन**–पु० सांसारिक बंधन। **–भावन**–पु० संसारको दुःखमय मानना। **–मार्ग**–पु० संसारका मार्ग; स्त्रियोंकी जननेंद्रिय। **–मोक्ष**–पु० संसृतिसे छुटकारा। **–मोक्षण**–पु० संसृतिसे छुटकारा। वि० भवबंधनसे छुड़ानेवाला। **–यात्रा**–स्त्री० संसारमें रहना; जीवन बिताना; जिंदगी। **–वर्जित**–वि० भौतिक सत्तासे मुक्त। **–वर्त्म(न्)**–पु० दे० 'संसारमार्ग'। **–संग**–पु० संसारके प्रति आसक्ति। **–सारथि**–पु० संसार-मार्गका सारथि; शिव। **–सुख**–पु० भौतिक सुख।

संसारण–पु० (सं०) चलाना, गति प्रदान करना।

संसारी(रिन्)–वि० (सं०) दूर-दूर जानेवाला, दूरतक व्याप्त होनेवाला (जैसे बुद्धि); आवागमन करनेवाला; लौकिक; भौतिक; दुनियादार; संसारकी मायामें लिप्त जीव या व्यक्ति; दुनियामें रहनेवाला; व्यवहार-कुशल। पु० जीवधारी; जीवात्मा।

संसिक्त–वि० (सं०) तर किया हुआ, सींचा हुआ; छिड़काव किया हुआ।

संसिद्ध–वि० (सं०) अच्छी तरह निष्पन्न किया हुआ; प्राप्त; पककर तैयार (भोजन); किया हुआ; अच्छा किया हुआ (रोगादि); उद्यत, तैयार; कृत-संकल्प; संतुष्ट; चतुर, कुशल; जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो, मुक्त।

संसिद्धि–स्त्री० (सं०) कार्यका सम्यक् संपादन, सफलता; मोक्ष, अंतिम फल; निश्चित मत; पककर तैयार होना (भोजन); स्वभाव, धर्म; मत्त स्त्री, प्रमदा।

संसी†–स्त्री० दे० 'सँड़सी'।

संसुप्त–वि० (सं०) गाढ़ी नींदमें सोया हुआ।

संसूचक–वि० (सं०) स्पष्ट रूपमें दिखलाने, बतलानेवाला; (डिटेक्टर) रेडियो ग्राहित्रमें लगाया गया दिष्टकारी (रेक्टिफ़ायर) जो एरियलमें बाहरसे पहुँचनेवाली रेडियो तरंगों द्वारा प्रेरित प्रत्यावर्ती धाराको एक दैशिक निम्न आवृत्तिकी स्पंदनयुक्त धारामें बदल देता है; भेद खोलनेवाला; भर्त्सना करनेवाला।

संसूचन–पु० (सं०) प्रकट करना; दिखलाना; कहना; भर्त्सना

करना; संकेत करना; भेद खोलना।

संसूचित–वि० (सं०) प्रकट किया हुआ; दिखलाया हुआ; डाँटा-फटकारा हुआ; सूचित कराया हुआ, जनाया हुआ।

संसूची(चिन्)–वि० (सं०) दे० 'संसूचक'।

संसूच्य–वि० (सं०) जताने, प्रकट करने योग्य; दिखलाने योग्य; भर्त्सना करने योग्य; भेद प्रकट करने योग्य।

संसृति–स्त्री० (सं०) आवागमन, जन्म-मरणकी परंपरा; सातत्य, प्रवाह; संगति; संसार।

संसृष्ट–वि० (सं०) सहजात, एक साथ उत्पन्न (जैसे पशु-शावक); मिला हुआ, संयुक्त; मिश्रित; अंतर्भूत, सम्मिलित; बहुत परिचित, जिसके साथ घनिष्ठता हो; (रोगादिसे) आक्रांत; विभिन्न प्रकारका (भला-बुरा); पूरा किया हुआ, संपन्न; वमन आदिके द्वारा शुद्ध किया हुआ; स्वच्छ वस्त्र धारण किया हुआ; निर्मित, रचित; इकट्ठा किया हुआ; बँटवारेके बाद आपसमें मिले हुए (भाई आदि)। पु० एक पुराणोक्त पर्वत; निकट संबंध; मैत्री। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसके कर्म विभिन्न प्रकार–भले-बुरे दोनों प्रकार–के हों। **–भाव**–पु० निकट-संबंध, घनिष्ठता। **–रूप**–वि० मिलावटी। **–होम**–पु० (अग्नि और सूर्यको) एकमें ही दी जानेवाली आहुति।

संसृष्टता–स्त्री०, **संसृष्टत्व**–पु० (सं०) संयोग; मिश्रण; बँटवारेके बाद फिर एकमें मिल जाना।

संसृष्टि–स्त्री० (सं०) साथ-साथ होनेवाली उत्पत्ति; संयोग, मेल; मेल-जोल; एकत्रीकरण; निर्माण, रचना; साझेदारी; एक परिवारमें रहना; राशि, समूह; एक ही वाक्यमें दो या अधिक अलंकारोंकी योजना (सा०)।

संसृष्टी(ष्टिन्)–पु० (सं०) बँटवारेके बाद फिर आपसमें मिले हुए संबंधी; साझेदार।

संसेक–पु० (सं०) छिड़काव, सिंचन।

संसेचन–पु० (सं०) (इन्सेमिनेशन) संभोगकालमें पुरुष वीर्यका स्त्रीके डिम्बाशयमें मिलना; वीर्य-सेचन, गर्भाधान।

संसेवन–पु० (सं०) सेवा करना; व्यवहारमें लाना; संपर्क रखना; आदर-सत्कार।

संसेवा–स्त्री० (सं०) सेवा; व्यवहार, उपयोग; हाजिरी; पूजा-सत्कार; प्रवृत्ति, झुकाव।

संसेवित–वि० (सं०) जिसकी भली भाँति सेवा की गयी हो; अच्छी तरह व्यवहारमें लाया हुआ।

संसेविता(तृ)–वि० (सं०) व्यवहार, उपयोगमें लानेवाला।

संसेवी(विन्)–वि० (सं०) सेवा-टहल करनेवाला; पूजा-सत्कार करनेवाला।

संसेव्य–वि० (सं०) सेवा, पूजा करने योग्य; व्यवहार, उपयोगमें लाने योग्य।

संसोपा–पु० भारतका एक राजनीतिक दल, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी।

संसौ*–पु० श्वास, प्राण (वि०)।

संस्करण–पु० (सं०) साथ रखना; तैयार करना; क्रमवद्ध करना; शुद्ध करना, परिष्करण; शव-संस्कार करना; द्विजातियोंके विहित संस्कार करना; पुस्तकादिका एक बारका मुद्रण (एडिशन)।

संस्कर्तव्य–वि० (सं०) व्यवस्थित, तैयार करने योग्य; परिष्कार करने योग्य।

संस्कर्ता(र्तृ)–वि०, पु० (सं०) शुद्ध करनेवाला; संस्कार करनेवाला; भोजन तैयार करनेवाला; छाप डालनेवाला (जै०)।

संस्कार–पु० (सं०) साथ रखना; व्यवस्थित करना; सजाना; पूरा करना; सुधारना; शुद्धि, सफाई; भोजन तैयार करना; धातुकी चीजें माँजकर चमकाना; पौधों, जानवरों आदिका पालन-पोषण; स्नान करना; मानसिक शिक्षा; मनोवृत्ति, स्वभाव आदिका परिष्कार (कल्चर); द्विजातियोंके शास्त्रविहित कृत्य (सेक्रामेंट, –रिचिअल); (जो मनुके अनुसार बारह और कुछ लोगोंके अनुसार सोलह हैं। बारह संस्कार ये हैं–गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उपनयन, केशांत, समावर्तन और विवाह। अन्य चार संस्कार ये हैं–कर्णवेध, विद्यारंभ, वेदारंभ तथा अंत्येष्टि। कुछ लोगोंने वानप्रस्थ तथा सन्यासाश्रमको भी संस्कारोंमें गिनाया है जो ठीक नहीं जान पड़ता); अंत्येष्टि क्रिया; शुद्ध करनेवाला कोई कृत्य; स्मरण-शक्ति; मनपर पड़ी हुई छाप; पूर्वजन्मके कृत्योंकी वासना; वाह्य जगत्-विषयक कल्पना, भ्रांति-मूलक विश्वास; धारणा; माँजकर चमकानेके काम आनेवाला पत्थर या झाँवाँ। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० संस्कार करानेवाला ब्राह्मण। **–ज**–वि० संस्कारसे उत्पन्न। **–नाम(न्)**–पु० संस्कारके समय रखा हुआ नाम। **–पूत**–वि० संस्कार द्वारा विशुद्ध किया हुआ; शिक्षा आदिके द्वारा परिष्कृत। **–रहित,–वर्जित**–वि० दे० 'संस्कार-हीन'। **–विशिष्ट**–वि० पाक-क्रिया द्वारा बढ़िया बनाया हुआ। **–संपन्न**–वि० सुशिक्षित। **–हीन**–वि० जिसके संस्कार न हुए हों। पु० द्विजातिका वह व्यक्ति जिसका यज्ञोपवीत संस्कार न हुआ हो, व्रात्य।

संस्कारक–वि० (सं०) सुधारनेवाला; तैयार करनेवाला; शुद्ध करनेवाला; मनपर छाप डालनेवाला; खाद्यके रूपमें या पाकके काममें आनेवाला।

संस्कारवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसका सुधार किया गया हो; सुंदर; जिसके मनपर छाप पड़ी हो।

संस्काराधिकारी(रिन्)–वि० (सं०) जिसे संस्कार करने या करानेका अधिकार प्राप्त हो।

संस्कारिता–स्त्री० (सं०) अच्छे संस्कारसे युक्त होनेका भाव, शिष्ट व्यवहार।

संस्कारी(रिन्)–वि० (सं०) अच्छे संस्कारवाला।

संस्कार्य–वि० (सं०) तैयार, पूरा करने योग्य; जिसकी शुद्धि, सफाई की जाय; जिसके मनपर छाप डाली जाय।

संस्कृत–वि० (सं०) सुरचित, सुनिर्मित; पूरा किया हुआ; पकाकर तैयार किया हुआ (भोजन); सुधारा हुआ, परिष्कृत किया हुआ; संस्कार द्वारा शुद्ध, पवित्र किया हुआ; विवाहित; उत्तम; अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ। पु० द्विजातिका वह व्यक्ति जिसका शुद्धि-संस्कार हो चुका हो; विद्वान्; नियमानुसार बना हुआ शब्द; धार्मिक प्रथा। स्त्री० भारतीय आर्योंकी प्राचीन साहित्यिक भाषा (जो वैदिक भाषाके बाद प्रयोगमें आयी थी)।

संस्कृति–स्त्री० (सं०) पूरा करना; शुद्धि; सुधार, परिष्कार; निर्माण; पवित्रीकरण; सजावट; निश्चय; उद्योग; आचरण-गत परंपरा, सभ्यताका वह स्वरूप जो आध्यात्मिक एवं मानसिक वैशिष्ट्यका द्योतक होता है; २४ अक्षरोंके वर्णवृत्त।

संस्क्रिया–स्त्री० (सं०) तैयार करना; निर्माण; शुद्धि-संस्कार; शव-संस्कार।

संस्कृतीकरण–पु० (सं०) किसी वस्तुके संस्कृत करनेकी क्रिया; अन्य भाषाके शब्दोंको संस्कृत रूप देना।

संस्खलन–पु० (सं०) गिरना; भूल-चूक करना।

संस्खलित–वि० (सं०) गिरा हुआ; भूला-चूका हुआ। पु० भूल-चूक।

संस्तंभ–पु० (सं०) हठ, दृढ़तापूर्ण विरोध; सहारा, टेक; जमाना, दृढ़ करना; रुकावट, विराम; निश्चेष्टता; लकवा।

संस्तंभन–वि० (सं०) रोकनेवाला; कब्ज करनेवाला। पु० रोकनेवाली दवा; रुक जाना; रोक देना; सहारा देना।

संस्तंभनीय–वि० (सं०) सहारा देने योग्य; दृढ़ करने योग्य; प्रोत्साहित करने योग्य; रोके जाने योग्य।

संस्तंभित–वि० (सं०) जिसे सहारा दिया गया हो; जो निश्चेष्ट हो गया हो; पक्षाघातग्रस्त।

संस्तंभी(म्भिन्)–वि० (सं०) रोकनेवाला; (खतरेका) निवारण करनेवाला।

संस्तब्ध–वि० (सं०) जिसे सहारा दिया गया हो; रुका हुआ; जड़ीभूत, निश्चेष्ट।

संस्तर–पु० (सं०) तह, परत; तृणशय्या; विस्तर, पलंग; (फूलों आदिकी) फैलायी हुई राशि; बिखेरना, फैलाना; आच्छादन; प्रचार (विधान आदिका); यज्ञ या यज्ञका आयोजन।

संस्तरण–पु० (सं०) (पत्तों आदिकी) तह, परत; फैलाना; विछाना; आच्छादित करना।

संस्तव–पु० (सं०) प्रशंसा, स्तुति; उल्लेख; मेल-जोल, घनिष्ठता। **–प्रीति**–स्त्री० परिचय-जन्य प्रेम।

संस्तवन–पु० (सं०) प्रशंसा करना; स्तुति करना; (कॉमेंडिंग, कॉमेंडेशन) किसी व्यक्तिको योग्य वताकर किसीके सामने उसका समर्थन करने या उसकी नियुक्त आदिपर जोर देनेका कार्य।

संस्तवान–वि० (सं०) सम्यक् रूपमें स्तुतिपाठ करनेवाला; वाग्मी। पु० गायक; उद्गाता; प्रसन्नता।

संस्तार–पु० (सं०) तह; विस्तर, पलंग; यज्ञ; फ़ैलाव।

संस्ताव–पु० (सं०) प्रशंसा, स्तुति; सम्मिलित स्तुति-पाठ; यज्ञमें स्तुति-पाठकोंके रहनेका स्थान। **–करना**–अ० क्रि० (कॉमेंड) योग्य समझकर किसीके पक्षमें अनुकूल सम्मति देना या उसकी नियुक्त आदिपर जोर देना।

संस्ताव्य–वि० (कॉमेंडेविल) प्रशंसनीय।

संस्तीर्ण–वि० (सं०) फैलाया हुआ, विखरा हुआ; आवृत, आच्छादित।

संस्तुत–वि० (सं०) प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गयी हो; जिसकी सिफ़ारिश की गयी हो; परिगणित; सदृश, मिलता-जुलता; सामंजस्ययुक्त; परिचित, घनिष्ठ; अभिप्रेत, अभीष्ट।

संस्तुतक–वि० (सं०) शिष्ट, भद्र (वौ०)।

संस्तुति–स्त्री० (सं०) प्रशंसा, स्तुति; भावाभिव्यक्तिकी एक आलंकारिक शैली; (रेकॉमेंडेशन) दे० 'अभिस्ताव', सिफारिश।

संस्तूप–पु० (सं०) कूड़ेका ढेर।

संस्तृत–वि० (सं०) विछाया, फैलाया हुआ; ऊपरसे ढका हुआ।

संस्त्यान–पु० (सं०) जमना; ठोस, कड़ा होना (भ्रूणादिका)। वि० जमा हुआ, जमकर ठोस, कड़ा पड़ा हुआ।

संस्त्याय–पु० (सं०) राशि, समूह, ढेर; फैलाव, प्रसार; निवास-स्थान, मकान; घनिष्ठता; मित्रों या परिचितोंका वार्तालाप।

संस्थ–वि० (सं०)···में स्थित, ठहरा हुआ; पालतू; स्थिर; ···पर अवलंबित; ···से युक्त; कुछ ही कालतक टिकनेवाला; नष्ट; मृत; समाप्त, पूर्ण; व्यक्त। पु० निवासी; पड़ोसी; अपने देशका रहनेवाला भेदिया; दूत; चर।

संस्था–स्त्री० (सं०) ठहरना, रहना; सभा; समिति; समूह, मंडली; स्थिति, अवस्था; पेशा; रहन-सहनका बँधा हुआ तरीका; चिरकालसे चली आनेवाली कोई सामाजिक परंपरा या प्रथा (इंस्टीट्यूशन) (जैसे विवाह); रूढ़ि, विधि, नियम; सदाचार; अंत, पूर्ति; ठहराव, विराम; नाश, प्रलय; सादृश्य; राजकीय आज्ञा; एक प्रकारका सोमयज्ञ; मृत्यु; अभिव्यक्ति; आकृति, रूप, धर्म, स्वभाव; वध; शव-संस्कार; गुप्तचरवर्ग। **–कृत**–वि० निर्धारित, निश्चित। **–जप**–पु० यज्ञके अंतमें होनेवाला पाठ।

संस्थागार–पु० (सं०) सभाभवन, विधान वनानेवाली सभाका स्थान।

संस्थाध्यक्ष–पु० (सं०) व्यापारका प्रधान अधिकारी, व्यापाराध्यक्ष (कौ०)।

संस्थान–वि० (सं०) ठहरनेवाला; सदृश, मानिंद। पु० ठहरना, रहना, स्थिति; (युद्धमें) स्थिर रहना; सत्ता, अस्तित्व, जीवन; पालन (आज्ञा आदिका); निवासस्थान, बस्ती; सार्वजनिक स्थान (नगरस्थ); आकृति; सौंदर्य, कांति; चिह्न; विशेषक चिह्न; रोगका लक्षण; स्वभाव; अवस्था; समूह; ढेर; अंत, समाप्ति; मृत्यु; निर्माण; सामीप्य; पड़ोस; चतुष्पथ, चौराहा; ढाँचा; साहित्य, विज्ञान, कला आदिकी उन्नतिके लिए स्थापित संस्था (इंस्टीट्यूट, इंस्टीट्यूशन)।

संस्थापक–पु० (सं०) स्थापित करनेवाला (संस्था, औषधालय आदि); रूप, आकृति प्रदान करनेवाला, चीनी आदिकी मूर्तियाँ वनानेवाला; मत आदिका प्रवर्तक।

संस्थापन–पु० (सं०) एकत्र करना; निश्चित करना; खड़ा करना, निर्माण करना; स्थापित करना; रूप प्रदान करना; कोई नयी वात जारी करना; नवनिर्मित संस्था अथवा उसके कार्यकर्ता लोग (एस्टेब्लिशमेंट); नियंत्रित करना; नियम; विधान।

संस्थापना–स्त्री० (सं०) रोकना, नियंत्रित करना; स्थापित करना; प्रोत्साहित करना; शांत करनेका साधन।

संस्थापनीय–वि० (सं०) स्थापित करने योग्य।

संस्थापित–वि० (सं०) एकत्र किया हुआ, ढेर लगाया हुआ; जमाया हुआ; स्थपित किया हुआ; खड़ा किया हुआ; वनाया हुआ; प्रवर्तित; रोका हुआ, नियंत्रित।

संस्थाप्य–वि० (सं०) रखे, जमाये जाने योग्य; पूरा करने योग्य (जैसे यज्ञ); आराम पहुँचानेवाली वस्तिके द्वारा उपचार करने योग्य (आ० वे०)।

संस्थित–वि० (सं०) खड़ा; ठहरा हुआ; युद्धमें डटा हुआ; ···पर वैठा, लेटा हुआ; रखा हुआ; पड़ा हुआ; जो पड़ा रहने दिया गया हो (भोजन); टिकाऊ; भावी; समान, सदृश; एकत्र किया हुआ, राशीकृत; जमाया, स्थापित किया हुआ; प्रवृत्त; आधृत; दक्ष, कुशल; प्रस्थित; समाप्त, पूरा किया हुआ; नष्ट; मृत; स्थिर; रूप प्रदान किया हुआ; लगा हुआ, आसन्न। पु० आचरण; आकृति।

संस्थिति–स्त्री० (सं०) साथ होना; ठहरना; खड़ा, टिका रहना; दृढ़ता; ···पर वैठना, लेटना; सामीप्य, सन्निकटता; निवास-स्थान; राशि, ढेर; एक ही अवस्थामें रहना; अवस्था, स्थिति; रोक, नियंत्रण; मृत्यु; अंत; प्रलय; आकृति; स्वभाव, धर्म; वँधी व्यवस्था; कब्ज, कोष्ठवद्धता। **–संस्थितियाँ**–विशिष्ट परिस्थितियाँ जो व्यक्ति, समाज या विश्वको परिवर्तनके लिए विवश करती हैं। सार्त्रने 'सिचुएशन' पर वहुत ज़ोर दिया है।

संस्पर्द्धा, संस्पर्धा–वि० (सं०) प्रतियोगिता, होड़; ईर्ष्या।

संस्पर्द्धी(र्द्धिन्), संस्पर्धी(र्धिन्)–वि० (सं०) प्रतियोगी, होड़ करनेवाला; ईर्ष्या करनेवाला।

संस्पर्श–पु० (सं०) छू जाना; संपर्क, संसर्ग; संयोग, मेल; मिश्रण; प्रभावित होना; विषयके संयोगसे इंद्रियोंका संवेदन।

संस्पर्शन–पु० (सं०) छूना; संपर्क; मिश्रण।

संस्पर्शी–स्त्री० (सं०) एक सुगंधित पौधा, जनी।

संस्पर्शी(र्शिन्)–वि० (सं०) स्पर्श करने, छूनेवाला; संपर्कमें आनेवाला।

संस्पृष्ट–वि० (सं०) छुआ हुआ; संपर्कमें लाया हुआ; संयुक्त; मिला हुआ, मिश्रित; आसन्न; प्रभावित; पहुँचा हुआ, प्राप्त। **–मैथुना**–स्त्री० अपनीत वालिका (विवाहके अयोग्य)।

संस्फुट–वि० (सं०) खुला हुआ, फूटा हुआ; विकसित; खिला हुआ।

संस्फेट, संस्फोट–पु० (सं०) युद्ध, लड़ाई।

संस्मरण–पु० (सं०) स्मरण, याद करनेकी क्रिया; नाम लेना, जपना; संस्कारसे उत्पन्न ज्ञान; स्मृतिके आधारपर किसी विषय या व्यक्तिके संवंधमें लिखित लेख या ग्रंथ (रेमिनिसेंसेज)।

संस्मरणीय–वि० (सं०) याद करने योग्य; नाम जपने योग्य; जिसकी केवल याद रह गयी हो, गत, मृत; महत्त्वपूर्ण।

संस्मारक–पु० (सं०) स्मरण करानेवाला; किसी व्यक्तिकी स्मृतिमें निर्मित भवन, स्तंभ, संस्था आदि। वि० याद दिलानेवाला।

संस्मारण–पु० (सं०) याद दिलाना; गिनना (चौपायोंको)।

संस्मारित–वि० (सं०) स्मरण कराया हुआ; याद किया हुआ।

संस्मृत–वि० (सं०) याद किया हुआ; आदिष्ट, विहित; अभिहित।

संस्मृति–स्त्री० (सं०) पूर्ण स्मृति, याद।

संस्या*–पु० घोड़ा (वीसल०)।

संस्यार*–पु० संसार।

संस्यूत–वि० (सं०) साथ सिला हुआ; ओतप्रोत; अभेद्य रूपमें संवद्ध।

संस्रव–पु० (सं०) वहाव, क्षरण, रिसना; धारा, प्रवाह; वहता हुआ पानी; किसी वस्तुका बचा हुआ अंश; एक तरहका पिंडदान।

संस्रवण–पु० (सं०) वहना; चूना (गर्भ-संस्रवण–गर्भपात)।

संस्रष्टा(ष्टृ)–पु० (सं०) युद्धमें प्रवृत्त होनेवाला; भाग लेनेवाला; आयोजन करनेवाला; निर्माण करनेवाला; मिश्रण करनेवाला।

संस्राव–पु० (सं०) वहाव, प्रवाह; पूय आदिका जमा होना

(आ० वे०); किसी द्रवका अवशिष्टांश, तलछट; एक प्रकारका पिंडदान।

संस्रावण–(सं०) बहाना; बहना; टपकना, चूना।

संस्रावित–वि० (सं०) बहा हुआ; बहाया हुआ; टपका, चुआ हुआ।

संस्राव्य–वि० (सं०) बहाने योग्य; जो बहाया, टपकाया जाय।

संस्वार–पु० (सं०) साथ-साथ शब्द करना।

संस्वेद–पु० (सं०) पसीना। **–ज**–वि० पसीनेसे उत्पन्न (जूँ आदि)।

संस्वेदी(दिन्)–वि० (सं०) जिसके बदनसे पसीना निकल रहा हो।

संहंता(तृ)–वि०, पु० (सं०) वध करनेवाला; जोड़ने, मिलानेवाला।

संहत–वि० (सं०) जुड़ा हुआ, संयुक्त, मिलित; साथ रहनेवाला; ठोस, कड़ा; घना; दृढ़; हट्टा-कट्टा; मिश्र (स्वर, गंध आदि); आहत; बंद; एकमत; एकत्र; अच्छी तरह मिलाया हुआ (कंसालिडेटेड्)। **–कुलीन**–वि० संयुक्त परिवारका; ऐसे परिवारका जिसके साथ निकट संबंध हो। **–जानु,–जानुक**–वि० जिसके घुटने आपसमें टकराते हों, लग्न-जानुक। **–तल**–पु० अंजलिके रूपमें मिले हुए दोनों हाथ। **–पत्रिका**–स्त्री० सोआ। **–बल**–पु० संघटित सेना (कौ०)। **–भ्रू**–वि० जिसकी भौंहें सिकुड़ी हों। **–मूर्ति**–वि० हट्टा-कट्टा, मजबूत। **–स्तनी**–स्त्री० वह स्त्री जिसके स्तन एक दूसरेके बहुत नजदीक हों। **–हस्त**–वि० जो परस्पर हाथ मिलाये हों।

संहतल–पु० (सं०) अंजलि।

संहतांग–वि० (सं०) दृढ़काय, हृष्ट-पुष्ट; एक दूसरेसे लगा हुआ (जैसे पर्वत)।

संहतांजलि–वि० (सं०) बद्धांजलि, करबद्ध।

संहताख्य–पु० (सं०) एक अग्नि, पवमान।

संहति–स्त्री० (सं०) दृढ़ संबंध; एका, मेल; संघटन (कंसालिडेशन); संधि; संयोग; घनत्व, ठोसपन; सामंजस्य; समूह, राशि, ढेर; पिंड; बल, शक्ति; शरीर; सम्मिलित प्रयत्न। **–शाली(लिन्)**–वि० घना।

संहनन–वि० (सं०) ठोस, दृढ़; ठोस करनेवाला; वध करनेवाला; नष्ट करनेवाला। पु० संबद्ध करना, जोड़ना; घना, ठोस करना; वध करना; दृढ़ता; बलवत्ता; अनुकूलता, मेल; सामंजस्य; देह; कवच; मालिश।

संहरण–पु० (सं०) संग्रह करना, बटोरना; एक साथ बाँधना, गूँथना (केश); ग्रहण करना, पकड़ना; लौटा लेना (मंत्रसे बाण आदि); संकुचित करना; रोकना; नाश, ध्वंस करना; प्रलय।

संहरना*–अ० क्रि० नष्ट, विनष्ट होना। स० क्रि० नष्ट करना।

संहर्तव्य–वि० (सं०) एकत्र करने योग्य; पूर्व अवस्थामें लाने योग्य; नष्ट करने योग्य।

संहर्ता(र्तृ)–वि०, पु० (सं०) संग्रह करनेवाला, एकत्र करनेवाला; लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी–'राज्यकी उगाहीके लिए संहर्ता आयें'–मृग०। नाश करनेवाला; वध करनेवाला।

संहर्ष–पु० (सं०) रोमांच (आनंद आदिसे); प्रसन्नता, हर्ष; कामोत्तेजन; प्रतियोगिता; ईर्ष्या; वायु; संघर्षण, रगड़।

संहर्षण–पु० (सं०) पुलकित होना (हर्ष आदिसे), प्रसन्न होना; प्रतियोगिता, स्पर्धा। वि० पुलकित करनेवाला।

संहर्षित–वि० (सं०) रोमांचित, पुलकित।

संहर्षी(र्षिन्)–वि० (सं०) पुलकित, प्रसन्न होनेवाला; स्पर्धा, ईर्ष्या करनेवाला; प्रसन्न करनेवाला।

संहवन–पु० (सं०) साथ-साथ हवन करना; चार मकानोंका वर्गाकार समूह।

संहात–पु० (सं०) समूह, संघात; एक नरक; शिवका एक अनुचर।

संहात्य–पु० (सं०) संधिकी शर्तोंको भंग करना।

संहार–पु० (सं०) नजदीक लाना; बटोरना, एकत्र करना; सार, संक्षेप; संकोच; (हाथीका) सूँड़ अंदरकी ओर ले जाना; बाँधना, गूँथना (बाल); (मंत्रबलसे) छोड़ा हुआ बाण लौटाना; नाश; प्रलय; नाश करनेवाला (नाटक या नाटकके किसी अंकका) अंत; एक नरक; रोक लेना; समूह, मंडली; एक उच्चारण-दोष; कुशलता; अभ्यास; एक असुर। **–कारी(रिन्)**–वि० प्रलय करनेवाला; नाश करनेवाला। **–काल**–पु० प्रलयकाल। **–भैरव**–पु० भैरवके आठ रूपोंमेंसे एक। **–मुद्रा**–स्त्री० तांत्रिक पूजाकी एक मुद्रा, विसर्जन-मुद्रा।

संहारक–वि०, पु० (सं०) एकत्र करनेवाला; संकुचित, संक्षिप्त करनेवाला; नाश करनेवाला।

संहारना*–स० क्रि० नाश करना; वध करना।

संहारिक–वि० (सं०) सबका नाश करनेवाला।

संहारी(रिन्)–वि० (सं०) नाश करनेवाला।

संहार्य–वि० (सं०) बटोरने, संग्रह करने योग्य; हटाने, ले जाने योग्य; जो नीयमान हो, ले जाया जाय; निवारणीय, रोकने योग्य; बहकाये जाने योग्य; जिसका हक हो।

संहित–वि० (सं०) साथ रखा हुआ, मिलाया हुआ, संयुक्त किया हुआ; एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ; संकलित; अधिकारियों द्वारा विधिसंहिताके रूपमें लाया हुआ (कोडिफ़ायड); संबंध रखनेवाला; युक्त, अन्वित; जमाया हुआ; रचित; जिसका क्रमभंग न हुआ हो (शब्द-समूह); अनुकूल, मुवाफिक; जिससे मैत्री हो, मेली। **–पुष्पिका**–स्त्री० सोआ; धनिया।

संहिता–स्त्री० (सं०) संयोग, मेल; संधि (व्या०); संग्रह, संकलन; गद्यों आदिका वह संकलन जिसका क्रम आदि ठीक किया गया हो; मनु आदि द्वारा रचित धर्म-शास्त्र; वेदोंका मंत्रभाग; विश्वको संघटित रखनेवाली शक्ति; (कोड) अधिनियमों, विधियों आदिका क्रमबद्ध संग्रह। **–करण**–पु० (कोडिफ़िकेशन) किसी विषयको संहिताका रूप देना। **–कार**–पु० संहिताकी रचना करनेवाला। **–पाठ**–पु० वेदका क्रमबद्ध मंत्र।

संहिति–स्त्री० (सं०) एक साथ रखना; संबंध।

संहूति–स्त्री० (सं०) साथ-साथ पुकारना; शोर-गुल।

संहृत–वि० (सं०) संकुचित या संक्षिप्त किया हुआ; एकत्र किया हुआ; ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ; रोका हुआ, निवारित; नष्ट किया हुआ; हरण किया हुआ।

संहृति–स्त्री० (सं०) संकोच, संक्षेप; सार; नाश; प्रलय; अंत, समाप्ति; रोक; पकड़ना, ग्रहण; संचय, संग्रह, एकत्रीकरण; हरण।

संहृषित–वि० (सं०) प्रसन्न; जड़, गतिहीन, निश्चेष्ट।

संहृष्ट–वि० (सं०) रोमांचयुक्त (आनंद आदिसे); प्रसन्न; खड़ा (रोम); स्पर्धा भावसे उद्दीप्त; प्रज्वलित। **–मना(नस्)**–वि० प्रसन्नचित्त। **–वदन**–वि० जिसका मुख प्रसन्नतासे चमक रहा हो।

संहृष्टी(ष्टिन्)–वि० (सं०) खड़ा, उत्तेजित (शिश्न)।

संह्लाद–पु० (सं०) कोलाहल, हल्ला-गुल्ला; एक राक्षस।

संह्लादन–पु० (सं०) कोलाहल, शोर करना, चिल्लाना।

संह्लीण–वि० (सं०) लज्जित, शर्मिंदा; नम्र।

संह्लाद–पु० (सं०) एक प्रकारका आनंद।

संह्लादी(दिन्)–वि० (सं०) प्रसन्नचित्त।

स–पु० (सं०) विष्णु; सर्प; शिव; पक्षी; वायु; चंद्रमा; जीवात्मा; चिंतन; ज्ञान; दीप्ति; गाड़ीकी सड़क; बाड़ा, घेरा; षड्ज स्वरका सूचक अक्षर (संगीत); सगणका संक्षिप्त रूप। उप० यह शब्दोंके आरंभमें आकर सह (सरोष), समान (सजाति, सगोत्र), वही (सपिंड) आदि अर्थोंका द्योतन करता है।

सआदत–स्त्री० (अ०) सौभाग्य; नेकी, भलाई; कल्याण; बरकत; इक़बाल; तेज, प्रताप। **–मंद**–वि० भला; तेजोमय; तेजस्वी; आज्ञाकारी, (बड़ोंकी) सेवा करनेवाला (बेटा, भतीजा आदि); सौभाग्यशाली। **–मंदी**–स्त्री० भला, आज्ञा-पालक होना, गुरुजन-भक्ति।

सइ*–अ० साथ, से। प्र० करण और अपादानकी विभक्ति।

सइअन†–पु० दे० 'सहिँजन'।

सइन†–स्त्री० नासूर, नाड़ीका व्रण।

सइना*–स्त्री० सेना, फौज।

सइयो*–स्त्री० सहेली, सखी।

सइवर†–पु० सेवार।

सई–स्त्री० (अ०) बढ़ती, वृद्धि, बरकत; * सरस्वती नदी; सखी;

(अ०) दौड़-धूप; कोशिश, यत्न। **–सिफ़ारिश**–स्त्री० दौड़-धूप; कहना-सुनना, कोशिश-सिफारिश।

सईकंटा†–पु० एक पेड़।

सईद–वि० (अ०) शुभ, भला, मांगलिक।

सईस–पु० साईस।

सउँ*–प्र० सों, से।

सउजा†–पु० शिकार, साउज।

सउडि*–स्त्री० चादर, सौर (वीसल०)।

सउत†–स्त्री० सौत।

सउतेला†–वि० सौतेला।

सऊद–पु० (अ०) ऊँचाई; यातना; ऊपर चढ़नेवाला।

सऊदी अरब–पु० मध्य अरबका एक राज्य।

सऊर†–पु० दे० 'शऊर'।

सक़ंकूर–पु० गोह जैसा एक जीव।

सकंटक–वि० (सं०) काँटेदार, कँटीला; कष्टदायक, खतरनाक। पु० करंज वृक्ष; सिवार।

सकंपन–वि० (सं०) कंपनयुक्त; जो भूकंपके साथ हो।

सक–स्त्री० शक्ति; वल, सामर्थ्य। † पु० शक, संदेह; * साका, धाक; मर्यादा स्थापित करना।

सकट*–पु० शकट, सग्गड़, छकड़ा। वि० (सं०) वुरा; नीच। पु० शाखोट वृक्ष।

सकटान्न–पु० (सं०) अशुद्ध अन्न।

सकड़ी†–स्त्री० सिकड़ी।

सकत*–स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य; वैभव। अ० यथाशक्ति, भरसक।

सकता–स्त्री० शक्ति, वल, ताकत, सामर्थ्य। पु० (अ०) स्तब्धता; मूर्च्छा रोग; किसी शब्दके घट-वढ़ जानेसे शेरका वजन विगड़ जाना। **–(ते) का आलम**–विस्मय, विमूढ़ता।

सकति*–शक्ति, वल 'सवकी सकति शंभुधनु भानी'–रामा०।

सकती*–स्त्री० शक्ति, वल, सामर्थ्य; एक अस्त्र, शक्ति; सख्ती, जवरदस्ती–'कवि किंचित औसर जो अकती सकती नहीं हाँ पर कीजिये जू'–कवि० कौ०। (अ०) गिरी पड़ी चीजें वेचनेवाला, कवाड़ी।

सकना–अ० क्रि० (कोई काम करनेमें) समर्थ होना; योग्य होना; संभव होना, मुमकिन होना।

सकपक–स्त्री० हिचक, घवड़ाहट।

सकपकाना–अ० क्रि० हिचकना, आगा-पीछा करना; चकित होना; लज्जा आदिके कारण घवड़ाहटमें पड़ जाना, हिलना।

सकर–वि० (सं०) हस्तयुक्त; सूँड़वाला (हाथी); किरणोंवाला; कर लगाने योग्य। † स्त्री० शकर। **–कंद**–पु०, **–कंदी**–स्त्री० शकरकंद। **–कन**†–पु० शकरकंद। **–खंडी**†–स्त्री० खाँड़, शक्कर। **–पाला**–पु० एक तरहकी चौकोर मिठाई या नमकीन; इस शक्लकी सिलाई; एक तरहका कावुली नीवू।

सक़र–पु० (अ०) नरक, दोज़ख़।

सकरणक–वि० (सं०) (शरीरके किसी) अंग द्वारा संवाहित।

सकरना–अ० क्रि० स्वीकार किया जाना, कवूला जाना।

सकरमुद्धी†–स्त्री० (डोरीका) वह विशेष प्रकारका फंदा जो खिंचाव पड़नेपर अपने आप कस उठे। कुएँसे पानी निकालनेके लिए घड़े या लोटेके गलेमें डाला हुआ फंदा, सरकफूंद या सरफूंद (वुंदेल०)।

सकरा–वि० तंग, संकीर्ण; जूठा। पु० जूठन।

सकरात–स्त्री० (अ०) वेहोशी; प्राणांत वेलाकी छटपटाहट।

सकरान–वि० (अ०) मतवाला, नशेमें चूर।

सकरिया–स्त्री० लाल शकरकंद, रतालू।

सकरुंड–पु० एक वृक्ष।

सकरुण–वि० (सं०) कोमलचित्त, करुणाशील, दयायुक्त।

सकर्ण–वि० (सं०) कानोंवाला; सुननेवाला। **–प्रावृत**–वि० कानोंतक ढका हुआ।

सकर्तृक–वि० (सं०) साधनयुक्त।

सकर्मक–वि० (सं०) प्रभावकारी; कोई काम करनेवाला; जो कर्मके साथ हो, (वह क्रिया) जिसका प्रभाव कर्तापर न पड़कर दूसरेपर पड़े (व्या०)। **–क्रिया**–स्त्री० वह क्रिया जिसका प्रभाव कर्मपर पड़े (व्या०)।

सकर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) दे० 'सकर्मक'; एक ही या एक जैसा काम करनेवाला।

सकल–वि० (सं०) सव, समस्त, सव अंगोंसे युक्त; भौतिक जगत्से प्रभावित (जीव); मंद और मधुर स्वरवाला; ब्याज देनेवाला; सारी कलाओंसे पूर्ण (चंद्रमा)। पु० प्रत्येक वस्तु; पुरुष और प्रकृति; पशु; रोहित तृण। **–कामदुघ**–वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला। **–जननी**–स्त्री० सवकी माता; प्रकृति। **–परिसंपत्**–स्त्री० (ग्रॉस असेट्स) वह समस्त परिसंपत् जिसमेंसे ऋणादिकी रकम वाद न की गयी हो। **–प्रिय**–वि० जो सवको अच्छा लगे। पु० चना। **–वर्ण**–वि० जो झगड़ा कर रहे हों। पु० कलह। **–सिद्धि**–स्त्री० सव विषयोंमें सफलता। वि० जिसे पूरी सिद्धि प्राप्त हो गयी हो। **–०दा**–स्त्री० एक भैरवी (तं०)।

सकलखोरा–पु० दे० 'शकरख़ोरा'।

सकलात–पु० रजाई, दुलाई; भेंट, उपहार।

सकलाती–वि० अति उत्तम, वढ़िया; मखमलका।

सकलाधार–पु० (सं०) शिव।

सकलेंदु–पु० (सं०) पूर्ण चंद्र। **–मुख**–वि० पूर्ण चंद्र जैसे मुखवाला।

सकलेश्वर–पु० (सं०) विष्णु।

संकल्प–वि० (सं०) यज्ञ-संवंधी कृत्योंसे युक्त। पु० शिव।

सकषाय–वि० (सं०) वासनाभिभूत (वे०)।

सकसकाना*–अ० क्रि० वहुत डरना।

सकसना*–अ० क्रि० भयभीत होना; अँड़सना।

सकसाना*–अ० भयभीत होना, डर मानना। स० क्रि० अँड़साना।

सका†–पु० दे० 'सक़्क़ा'।

सकाकुल–पु० एक कंद, अंवर; शतावरका एक भेद; एक तरहकी मिसरी। **–मिसरी**–स्त्री० अंवरसे वनी हुई मिसरी।

सकाकोल–पु० (सं०) एक नरक। वि० काकोल नामक नरकसे युक्त।

सकाना*–अ० क्रि० शंका करना, डरना; हिचकना; शंकित होकर पीछे हटना; दुःखी होना।

सकाम–वि० (सं०) कामनायुक्त; इच्छुक; लब्धकाम, तृप्तकाम; कामी, कामवासनायुक्त; फलाकांक्षासे कार्य करनेवाला; प्रेमी, प्रेम करनेवाला। **–निर्जरा**–स्त्री० शक्तिमान् होकर भी शत्रुको क्षमा कर देनेकी वृत्ति (जै०)।

सकामा–वि० स्त्री० (सं०) कामपीड़िता।

सकामारि–पु० (सं०) कामियोंके शत्रु, शिव।

सकार–पु० (सं०) 'स' अक्षर या उसकी ध्वनि; सगण। वि० सक्रिय; फुर्तीला; उत्साही। स्त्री० स्वीकृति (एक्सेप्टेंस)।

सकारना–स० क्रि० स्वीकार करना, मंजूर करना; मान लेना; हुंडीपर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकार कर लेना (ऑनरिंग ऑफ ए ड्राफ्ट)।

सकारा–पु० हुंडी सकारने और समय वढ़ानेके लिए लिया जानेवाला धन; * सवेरा।

सकारात्मक–वि० (सं०) सहमतिसूचक (उत्तर) (एफ़र्मेटिव), निश्चित मानवाला या स्थिर (पाज़िटिव)।

सकारे, सकारैं*–अ० तड़के, सवेरे–'वाँग देइ नित साँझ सकारैं'–छत्रप्रकाश; ठीक समयपर; कुछ जल्दी।

सकाल–वि० (सं०) समयोचित। पु० सवेरा, प्रभात। अ० ठीक समयपर; तड़के।

सक़ालत–स्त्री० (अ०) भारीपन, वोझ; क्लिष्टता।

सकाश–पु० (सं०) सामीप्य, निकटता; पड़ोस; उपस्थिति। वि० जो दिखाई देता हो, समीपवर्ती, उपस्थित। अ० पास समीप।

सकिलना*–अ० क्रि० संकुचित होना; फिसलना; सरकना; हो सकना; इकट्ठा होना, वटुरना; समर्थ होना।

सकीनत–स्त्री० (अ०) सुख, चैन, आराम; धीरज; मंदता।

सकील–पु० (सं०) वह पुरुष जो यौन निर्वलताके कारण अपनी स्त्रीको स्वयं संभोग करनेके पहले परपुरुषके पास भेजता है।

सक़ील–वि० (अ०) भारी, वोझल, दुष्पाच्य; क्लिष्ट (शब्द,

भाषा)।

सकुक्षि–वि० (सं०) एक ही कोखसे उत्पन्न, सहोदर।

सकुच*–स्त्री० संकोच, लज्जा।

सकुचना*–अ० क्रि० लज्जा करना, लज्जित होना; संकुचित होना, मुंदना, संपुटित होना।

सकुचाई*–स्त्री० संकोच, शरमिंदगी, हया।

सकुचाना*–अ० क्रि० संकोच करना। स० क्रि० सिकोड़ना; संकुचित, लज्जित करना।

सकुची–स्त्री० लंबी और कड़ी पूँछवाली चक्कीके पाटकी शक्लकी एक मछली।

सकुचीला†–वि० संकोची, शर्मीला।

सकुचीली–स्त्री० लाजवंती, लजालू।

सकुचौहाँ*–वि० संकोचशील।

सकुड़ना†–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना'।

सकुन*–पु० दे० 'शकुंत'; शकुन।

सकुनी*–पु० दुर्योधनका मामा, शकुनि। स्त्री० पक्षी; चील।

सकुपना*–अ० क्रि० क्रोध करना।

सकुरुंड–पु० (सं०) दे० 'साकुरुंड'।

सकुल–वि० (सं०) सपरिवार; उत्तम कुलका, कुलीन; एक ही परिवारका। पु० नेवला; रिश्तेदार; एक मछली, सौरी। **–ज** –वि० एक ही परिवारमें उत्पन्न।

सकुला–पु० भिक्षुओंका नेता।

सकुलादनी–स्त्री० (सं०) कुटकी; महाराष्ट्री लता।

सकुली–स्त्री० (सं०) सौरी मछली।

सकुल्य–वि० (सं०) सगोत्र (तीसरीसे आठवीं पीढ़ीतकका)। पु० एक ही कुलका, पर दूरका संबंधी।

सकूतरा–पु० अफ्रीकाके पूर्वीतटके पासका एक टापू।

सकूनत–स्त्री० दे० 'सुकूनत'।

सकूनती–वि० दे० 'सुकूनती'।

सकृत्–अ० (सं०) एक बार; किसी समय; फौरन, तत्काल; साथ; सर्वदा। पु० विष्ठा; कौआ। **–प्रज**–पु० काक; सिंह। **–प्रजा**–स्त्री० वंध्यात्व; शेरनी। **–प्रसूता,–प्रसूतिका**–स्त्री० एक बार बच्चा जननेवाली गाय; वह स्त्री जिसने केवल एक बच्चा उत्पन्न किया है। **–फला**–स्त्री० केला। **–सू**–वि० स्त्री० एक बार या तत्काल बच्चा देनेवाली। **–स्नायी(यिन्)**–वि० सिर्फ एक बार स्नान करनेवाला।

सकृद्–अ० (सं०) 'सकृत्'का समासगत रूप। **–आगामी(मिन्)** –पु० बौद्धोंकी चार श्रेणियोंमेंसे दूसरी श्रेणी (जिसमें एक बार पुनर्जन्म होनेके बाद मोक्ष प्राप्त हो जाता है)। **–आच्छिन्न**–वि० जो एक ही बारमें कटकर अलग हो गया। **–आहृत**–वि० जिसका सूद किस्तोंमें न चुकाकर एकमुश्त चुकाया गया हो। **–गति**–स्त्री० संभावना मात्र। **–गर्भ**–पु० खच्चर। **–गर्भा**–स्त्री० एक ही बार गर्भवती होनेवाली स्त्री। **–वीर**–पु० वीर नामक वृक्ष।

सकृन्नंदा–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नदी।

सकृपण–वि० (सं०) दुःखी, दीन।

सकेत*–पु० संकेत, इशारा; प्रेमी-प्रेमिकाका मिलनस्थल; कष्ट, संकटकी स्थिति; (सं०) एक आदित्य। † वि० संकीर्ण, तंग।

सकेतना*–अ० क्रि० संपुटित होना, संकुचित होना।

सकेती–स्त्री० कष्ट; दुःख; कष्टमय स्थिति।

सकेरना*–स० क्रि० इकट्ठा करना, समेटना; बंद करना।

सकेलंग†–पु० वृक्षविशेष।

सकेलना*–स० क्रि० इकट्ठा करना, जमा करना।

सकेला–पु० एक तरहका लोहा। स्त्री० इस लोहेकी बनी तलवार।

सकेश–वि० (सं०) बालोंवाला; झबरीला।

सकैतव–वि० (सं०) छली, कपटी। पु० छल करनेवाला व्यक्ति, धूर्त।

सकोच*–पु० दे० 'संकोच'।

सकोड़ना–स० क्रि० दे० 'सिकोड़ना'।

सकोतरा–पु० दे० 'चकोतरा'।

सकोपना*–अ० क्रि० क्रोध करना।

सकोपित*–वि० क्रुद्ध, नाराज।

सकोरना*–स० क्रि० सिकोड़ना।

सकोरा–पु० कटोरी जैसा मिट्टीका एक बरतन, कसोरा।

सक्करी–स्त्री० एक छंद।

सक़्क़ा–पु० (फा०) पनभरा; भिश्ती; एक पक्षी। **–(क़्क़े) की बादशाही**–दो-चार दिनकी हुकूमत (निजाम नामके भिश्तीने हुमायूँको डूबनेसे बचाकर इनाममें २।। दिनकी बादशाही पायी और इस बीच राज्यमें चमड़ेका सिक्का चलाया था)।

सक्काक–वि० (अ०) लुहार; सिक्केपर ठप्पा लगानेवाला।

सक्त–वि० (सं०) प्रवृत्त, लीन; आसक्त; संलग्न, सटा हुआ; जड़ा हुआ; सौंपा हुआ; संबंध रखनेवाला; सावधान; बाधित। **–चक्र**–पु० शक्तिशाली राष्ट्रोंसे घिरा हुआ राष्ट्र। **–द्विट्(ष्),–वैर** –वि० शत्रुतामें प्रवृत्त। **–मूत्र**–वि० जिसे कठिनाईके साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब उतरे। **–सामंत**–पु० ग्रामसमूहका ताल्लुकेदार।

सक्तव्य–वि० (सं०) जो पीसा जाय, सत्तू बनाया जाय (अन्न)।

सक्ता–पु० (अ०) मूर्च्छा रोग; यतिभंग, छंदोभंग।

सक्ति*– स्त्री० दे० 'शक्ति'; (सं०) लिपटना (बेलोंका); संपर्क; संबंध; आसक्ति।

सक्तु–पु० (सं०) भूने हुए अन्नका पिसान, सत्तू (विशेषकर जौका)। **–कार,–कारक**–पु० सत्तू बनाने, बेचनेवाला। **–धानी**–स्त्री० सत्तू रखनेका पात्र। **–पिंडी**–स्त्री० सत्तूका बना हुआ छोटा पिंड। **–फला,–फली**–स्त्री० शमी वृक्ष। **–मिश्र**–वि० सत्तू मिला हुआ। **–होम**–पु० सत्तूका पिंडदान।

सक्तुक–पु० सत्तू; एक वानस्पतिक विष।

सक्तुल–वि० (सं०) जिसमें सत्तू मिला हो।

सक्थि–स्त्री० (सं०) जंघा; हड्डी; गाड़ीका लट्ठा।

सक्थी–स्त्री० दे० 'सक्थि'। पु० शरीरके ११ मेंसे एक मुख्य मर्मस्थल।

सक्र*–पु० 'शक्र'। **–धनु**–पु० इंद्रधनुष्। **–सरोवर**–पु० व्रजस्थ इंद्रकुंड।

सक्रतु–वि० (सं०) एकमत।

सक्रारि*–पु० इंद्रका शत्रु, मेघनाद।

सक्रिय–वि० (सं०) क्रियायुक्त, क्रियाशील; फुर्तीला; भ्रमणशील।

सक्रिय सेवा–स्त्री० (ऐक्टिव सरविस) किसी सैनिक द्वारा युद्ध-क्षेत्रादिमें किया गया काम या सेवा।

सक्रियता–स्त्री० (सं०) सक्रिय होनेका भाव (एक्टिविटी)।

सक्ष–वि० (सं०) अतिक्रमणीय; पराजित।

सक्षम–वि० (सं०) क्षमता-युक्त (कम्पीटेंट), शक्तिशाली, समर्थ; क्षमायुक्त।

सक्षार–वि० (सं०) लवणयुक्त।

सख–पु० (सं०) सखा (समासांतमें); खदिरका एक भेद।

सखत†–वि० दे० 'सख़्त'।

सख़्त–पु० (अ०) क्रोध; गुस्सा।

सखती†–स्त्री० दे० 'सख़्ती'।

सखर*–वि० खरा, चोखा; 'खर' राक्षस (के वर्णन)से युक्त; तेज, उग्र–'सखर सुकोमल मंजु'–रामा०।

सखर–पु० (सं०) एक राक्षस।

सखरच, सखरज*–वि० खुलकर अमीरोंकी तरह खर्च करनेवाला, शाहखर्च।

सखरण†–पु० दे० 'शिखरन'।

सखरस–पु० मक्खन।

सखरा–वि० खारा; निखराका उलटा। पु० कच्ची रसोई।

सखरी–स्त्री० कच्ची रसोई (दाल-भात आदि)।

सखस†–पु० दे० 'शख़्स'।

सखसावन†–पु० आरामकुर्सी; पलंग; पालकी।

सखा(खि)–पु० (सं०) साथी, संगी; मित्र; सहचर, सहयोगी; नायकका सहचर (ना०); साढ़। **–(खि) पूर्व**–वि० जो पहले मित्र था। **–भाव**–पु० मैत्री, घनिष्ठता। **–विग्रह**–पु० आपसकी लड़ाई।

सख़ा, सख़ावत–स्त्री० (अ०) सख़ी होना, उदारता, दान-शीलता।

सख़ाफ़त–स्त्री० (अ०) तुच्छता; ओछापन; मूर्खता।

सखिता–स्त्री०, **सखित्व**–पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

सखिल–वि० (सं०) मैत्रीपूर्ण।

सखी–स्त्री० (सं०) सहचरी, सहेली; नायिकाकी सहेली (ना०); एक छंद। **–भाव**–पु० अपनेको उपास्य देवकी पत्नी माननेका भाव। **–संप्रदाय**–पु० स्वामी हरिदास (जन्म-सं० १५४१ वि०) द्वारा स्थापित वैष्णवोंका एक संप्रदाय जिसमें भक्त अपनेको उपास्य देवकी स्त्री मानता है (निम्बार्क मतकी एक शाखा)।

सख़ी–वि० (अ०) दाता, दानशील, उदार।

सखुआ–पु० दे० 'साखू'।

सख़ुन–पु० दे० 'सुख़न'।

सखोल–पु० (सं०) एक प्राचीन स्थान।

सख़्त–वि० (अ०) कड़ा, कठोर; दृढ़; कठिन; तीखा, तेज (सख्त धूप); भारी (सख्त मुश्किल); सख्ती करनेवाला, कठोरहृदय। * स्त्री० कठिनाई, विपत्ति–'मुझपै परी अब सख्त'–सुजान। **–कलामी**–स्त्री० बदजबानी, कड़वे, तीखे वचन कहना। **–गीर**–वि० सामान्य दोषपर भी कड़ी सजा देनेवाला; जालिम। **–गीरी**–स्त्री० कठोरता, सख्ती। **–घड़ी**–स्त्री० कष्ट, कठिनाईका काल। **–ज़बान**–वि० कटुभाषी, बदजबान। **–ज़मीन**–स्त्री० मुश्किलरदीफ़, काफियेवाली तरह। **–जान**–वि० निर्दय; जिसकी जान मुश्किलसे निकले; (ला०) बेहयाईसे जीनेवाला; परिश्रमी; पराक्रमी। **–दिल**–वि० कठोरहृदय, निर्दय। **–पंजा**–वि० लोभी। **–बाज़ू**–वि० बलवान्। **–मिज़ाज**–वि० क्रोधी। **–मुश्किल**–स्त्री० भारी कठिनाई। वि० अति कठिन। **–मीर**–वि० मुश्किलसे मरनेवाला। **–लगाम**–वि० मुँहजोर, सरकश (घोड़ा)। **–सुस्त**–पु० बुरा-भला, झिड़की, भर्त्सना (कहना, सुनना)।

सख़्ती–स्त्री० कड़ापन; कठोरता; दृढ़ता; कष्ट, कठिनाई; अर्थकष्ट, तंगी; जुल्म, कठोर व्यवहार। **–कश**–वि० कष्ट झेलनेवाला। **मु० सख़्तियाँ उठाना, सख़्ती उठाना**–जुल्म बरदाश्त करना; मुसीबत झेलना। **–से**–कष्ट, कठिनाईसे (सख्तीसे दिन गुजारना)। **–से पेश आना**–कड़ाई करना, कठोर, निर्दयताका व्यवहार करना।

सख्य–पु० (सं०) सखापन; मैत्री, दोस्ती, सौहार्द; ईश्वरको सखा मानकर उपासना करनेका भाव (वैष्णव); समानता; मित्र। **–विसर्जन**–पु० मैत्री-भंग।

सख्यता–स्त्री० मैत्री, दोस्ती (असाधु)।

सगंध–वि० (सं०) गंधयुक्त; खुशबूदार, उसी गंधका; अभिमानी। पु० ज्ञाति, संबंधी।

सग–'साग'का समासगत लघु रूप। **–पहता,–पहती,–पहिती,–पैंती**–स्त्री० साग मिलाकर पकायी हुई दाल (पहिती=दाल)। **–भत्ता**–पु० साग मिलाकर पकाया हुआ भात।

सग*–वि० सगा, अपना।

सग–पु० (फा०) कुत्ता। **–जां**–वि० लोभी, लालची, निर्दयी। **–जानी**–स्त्री० लोभ; **–ज़ादा**–पु० कुत्तेका बच्चा (गाली)। **–जानी**–स्त्री० निर्दयता। **–बच्चा**–पु० पिल्ला। **–बान**–पु० कुत्तेका रखवाला। **–बानी**–स्त्री० कुत्तेकी रखवाली। **–(गे)बाजारी**–पु० लावारिस कुत्ता। **–सार**–वि० कुत्तेकी तरह अपवित्र और निकृष्ट व्यक्ति।

सगड़ी–स्त्री० छोटा सग्गड़।

सगण–वि० (सं०) दल या सेनासे युक्त। पु० शिव; छंदःशास्त्रका एक गण जिसमें दो लघुके बाद एक गुरु मात्रा होती है।

सगत,† **सगती**–स्त्री०, शक्ति, सामर्थ्य।

सगन*–पु० सगण (पिंगल); शकुन।

सगनौती–स्त्री० शकुन विचारना।

सगपन–पु० दे० 'सगापन'।

सगबग*–वि० आर्द्र, तर, सराबोर; द्रवित; भीत। अ० जल्दीसे।

सगबगना*–अ० क्रि० जाग्रत् होना, उद्‌बुद्ध होना।

सगबगाना–अ० क्रि० सकपकाना, घबड़ा जाना; हिलना-डुलना; तर होना; सराबोर होना।

सगभत्ता†–पु० साग मिलाकर पकाया हुआ भात।

सगर–वि० (सं०) विषयुक्त। पु० एक अर्हत्; एक सूर्यवंशी राजा जिनके साठ हजार पुत्र थे (कहा जाता है कि ये सभी लड़के अश्वमेध यज्ञके घोड़ेकी तलाशमें पाताल पहुँचे जहाँ वे कपिलपर चोरीका लांछन लगानेके कारण उनके क्रोधानलमें भस्म हो गये और कई पीढ़ियोंके बाद भगीरथने गंगाका प्रवाह वहाँ लाकर उनका उद्धार किया)।

सगर†–पु० सागर; तालाब–'काहे क बाबुल सगर खोदायेउ' –गीत।

सगरा–वि० सब, समस्त। पु० तालाब; झील।

सगर्भ–वि० (सं०) सगा, सहोदर (भाई); जिसके पत्ते अभी खुले न हों (पौधा)। पु० सगा भाई।

सगर्भा–स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री; सगी बहन।

सगर्भ्य–वि० (सं०) सहोदर। पु० सहोदर भाई।

सगल*–वि० सकल, सब।

सगलगी†–स्त्री० सगापन, अपनापन दिखाना; खुशामद, चापलूसी।

सगवती–स्त्री० दे० 'सगौती'।

सगवारा†–पु० गाँवके पासकी उससे संबद्ध भूमि।

सगा–वि० एक माँ-बापसे उत्पन्न, सहोदर; निकट संबंधी। **–पन**–पु० आत्मीयतापूर्ण संबंध, सगा होनेका भाव।

सगाई–स्त्री० मँगनी, विवाहका ठहराव; नाता, रिश्ता; विधवा या परित्यक्ताका एक तरहका विवाह या विवाह जैसा संबंध।

सगाबी–स्त्री० एक तरहका नेवला; ऊदबिलाव।

सगारत–स्त्री० सगापन।

सग़ीर–वि० (अ०) छोटा; कमउम्र; अदना; हीन। **–सिन**–वि० छोटी उम्रका। **–(रो) कबीर**–पु० छोटे-बड़े।

सगुण–वि० (सं०) ज्यायुक्त; गुणवान्, सद्‌गुणसंपन्न; भौतिक; साहित्यिक गुणोंसे युक्त (रचना)। पु० सत्त्व, रज, तमसे युक्त ब्रह्म; ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना करनेवाला संप्रदाय-विशेष।

सगुणी(णिन्)–वि० (सं०) सद्‌गुणोंसे युक्त, धार्मिक।

सगुणोपासना–स्त्री० (सं०) साकार ब्रह्मकी उपासना।

सगुन–पु० शकुन। वि०, पु० दे० 'सगुण'।

सगुनाना–अ० क्रि० शकुन विचारना, शकुन बतलाना।

सगुनिया–पु० शकुनका विचार करनेवाला।

सगुनौती–स्त्री० शकुन विचारने, निकालनेकी क्रिया; शकुनफल बतानेवाली पुस्तक; मंगलाचरण।

सगुरा–स्त्री० जिसने गुरुसे दीक्षा ली हो।

सगृह–वि० (सं०) सपरिवार, घर-गृहस्थीवाला।

सगोत–वि० पु० दे० 'सगोत्र'।

सगोती–वि० एक ही गोत्रका। पु० एक ही गोत्रके लोग, भाईबंद।

सगोत्र–वि० (सं०) एक ही गोत्रका। पु० एक ही गोत्रका व्यक्ति; तर्पण, पिंडदान आदि साथ करनेवाला व्यक्ति, एक ही कुलका व्यक्ति; दूरका संबंधी; वंश, खानदान।

सगोनीमर–पु० सागौन, शाल वृक्ष।

सगौती–स्त्री० खानेका गोश्त, कलिया।

सग्गड़–पु० सामान ढोनेकी गाड़ी या ठेला जिसे आदमी खींचते हैं।

सग्धि, सग्धिति–स्त्री० (सं०) एक साथ भोजन करना, सहभोजन।

सग्रह–वि० (सं०) घड़ियालोंसे पूर्ण (नदी); ग्रहादिसे ग्रस्त; ग्रस्त (चंद्रमा)।

सघन–वि० (सं०) घना, गझिन; ठोस; मेघाच्छन्न। **–खेती**–स्त्री० उपज बढ़ा देनेवाली खेती (इंटेंसिव कल्टिवेशन)।

सघनता–स्त्री० (सं०) निविड़ता।

सघली*–वि० स्त्री० सब, सारी।

सचंद्रक–वि० (सं०) जिसपर चंद्रमा जैसे बुंदे हों।

सच–पु० सच्ची बात। वि० सत्य, ज्योंकी त्यों (कही, देखी, सुनी बात); (सं०) संबद्ध; पूजा-सत्कार करनेवाला। **–मुच**–अ० (हिं०) वस्तुतः, यथार्थमें, निस्संदेह।

सचकित–वि० (सं०) आश्चर्यमें पड़ा हुआ, विस्मित; भयसे काँपता हुआ।

सचक्र–वि० (सं०) पहियोंवाला; मंडलयुक्त; ससैन्य।

सचक्री(क्रिन्)–पु० (सं०) सारथि ।

सचन–पु० (सं०) सेवा-टहल । वि० जो सहायता, सेवा करनेको उद्यत रहे ।

सचना*–स० क्रि० पूरा करना–'बहु कुंड शोनित सों भरे पितु-तर्पणादि क्रिया सची'–रामचंद्रिका; सजाना; जमा करना, बटोरना । अ० क्रि० प्रसन्न होना ।

सचर–पु० (सं०) सफेद कटसरैया । * वि० सचल, चलायमान, जंगम ।

सचरना*–अ० क्रि० फैलना; प्रचलित होना; प्रसिद्ध होना; प्रवेश करना ।

सचराचर–वि० (सं०) जिसमें स्थावर-जंगम सभी हों । पु० विश्व ।

सचल–वि० (सं०) चलनेकी शक्तिसे युक्त, जंगम (मूविंग); एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाने या ले जाये जानेवाला (–प्रदर्शनी, –चिकित्सालय) । पु० जंगम पदार्थ ।

सचलता–स्त्री० (सं०) गतिशीलता ।

सचल लवण–पु० साँचर नमक ।

सचाई–स्त्री० सत्यता; ईमानदारी; वास्तविकता ।

सचान–पु० बाज, श्येन ।

सचारना*–स० क्रि० फैलाना, संचारित करना ।

सचारु–वि० (सं०) बहुत सुंदर ।

सचावट†–स्त्री० सचाई ।

सचिंत–वि० (सं०) चिंतायुक्त, चिंतित ।

सचि–पु० (सं०) मित्र; मैत्री, घनिष्ठता । स्त्री० इंद्र-पत्नी ।

सचिक्कण–वि० (सं०) बहुत चिकना ।

सचिक्कन–वि० दे० 'सचिक्कण' ।

सचित्–वि० (सं०) ज्ञान, चेतनायुक्त ।

सचित्क–पु० (सं०) चिंतन, मनन ।

सचित्त–वि० (सं०) बुद्धिमान्, प्रज्ञा-विशिष्ट; सावधान; जिसका ध्यान किसी एक विषयपर हो ।

सचित्र–वि० (सं०) चित्रोंसे युक्त; चित्रित ।

सचिल्लक–वि० (सं०) क्लिन्न-चक्षु; हीन-दृष्टि ।

सचिव–पु० (सं०) साथी, मित्र; मंत्री, अमात्य, वजीर; (सेक्रेटरी) मंत्री; किसी संस्था या संघटनके संचालनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति; किसीके निजी कार्य, पत्रव्यवहार, व्यवस्था आदिमें सहायता करनेवाला व्यक्ति; शासनव्यवस्थाके किसी विभागका उच्चाधिकारी; काला धतूरा ।

सचिवता–स्त्री०, **सचिवत्व**–पु० (सं०) मंत्रित्व, वजारत ।

सचिवामय–पु० (सं०) एक तरहका कमल रोग; विसर्प ।

सचिवालय–पु० (सेक्रेटेरियट) किसी राज्यकी सरकारके सचिवों, मंत्रियों तथा विभिन्न विभागोंके प्रधान अधिकारियों आदिके कार्यालयोंका समूह, वह इमारत या स्थान जहाँ ये स्थित हों ।

सची–स्त्री० (सं०) दे० 'शची'; अगर । **–नंदन,–सुत**–पु० जयंत; चैतन्यदेव ।

सचु*–पु० सुख, आनंद; प्रसन्नता । वि० सत्य ।

सचेत–वि० चेतनाविशिष्ट; समझदार; सावधान, सतर्क ।

सचेतक–पु० (ह्विप) संसद् या विधानसभाका वह दलीय अधिकारी जो दलके सदस्यों द्वारा सभामें अनुशासन पालन कराने, उन्हें आवश्यक सूचना देने तथा प्रस्तावादिपर मत देनेके निमित्त उपस्थित रहनेके लिए सचेत करता है; दल-परिचालक, दे० 'चेतक' ।

सचेतन–वि० (सं०) चेतनायुक्त; समझदार, सज्ञान; सावधान । पु० सज्ञान प्राणी ।

सचेता(तस्)–वि० (सं०) समझदार; एकमत ।

सचेती–स्त्री० सतर्कता, सावधानी ।

सचेल, सचैल–वि० (सं०) वस्त्राच्छादित, वस्त्रयुक्त ।

सचेष्ट–वि० (सं०) चेष्टाशील; चेष्टा करनेवाला । पु० आमका पेड़ ।

सच्चरित, सच्चरित्र–वि० (सं०) अच्छे चरित्रका, सदाचारी । पु० अच्छा आचरण; सदाचारियोंका वृत्त ।

सच्चर्या–स्त्री० (सं०) उत्तम आचरण, सदाचार ।

सच्चा–वि० सच बोलनेवाला; ईमानदार; यथार्थ; विशुद्ध; अकृत्रिम; ठीक । **–ई**–स्त्री०,**–पन**–पु० सत्यता; ईमानदारी । **–हट**–स्त्री० सच्चापन, सचाई (क्व०) ।

सच्चाक–पु० (सं०) अदरकका पना ।

सच्चार–पु० (सं०) अच्छा गुप्तचर; संपत्तिका रक्षक ।

सच्चारा–स्त्री० (सं०) हलदी ।

सच्चिकन*–वि० दे० 'सचिक्कण' ।

सच्चित्–पु० (सं०) ब्रह्म जो सत् और चित्से युक्त है ।

सच्चिदानंद–पु० (सं०) सत्, चित्, आनंदस्वरूप ब्रह्म ।

सच्चिन्मय–वि० (सं०) सत् और चैतन्य स्वरूप, सत् और चैतन्यसे युक्त ।

सच्छंद*–वि० दे० 'स्वच्छन्द' ।

सच्छत*–वि० घायल ।

सच्छाय–वि० (सं०) छायादार; सुंदर रंगोंवाला, चमकदार; एक ही रंगका ।

सच्छास्त्र–पु० (सं०) अच्छा सिद्धांत-ग्रंथ ।

सच्छिद्र–वि० (सं०) छेददार; सदोष ।

सच्छी*–पु० स्त्री० दे० 'साक्षी' ।

सच्छील–पु० (सं०) सदाचार । वि० शीलवान्, उदाराशय ।

सच्छ्लोक–वि० (सं०) जिसका अच्छा नाम हो ।

सच्युति–वि० (सं०) स्खलनयुक्त । स्त्री० सदल यात्रा ।

सछंद*–वि० सपरिकर ।

सछिद्रता–स्त्री० (पोरॉसिटी) ऐसे छिद्रोंसे युक्त होना जिनसे होकर पानी एक ओरसे दूसरी ओर चला जाय ।

सजंबाल–वि० (सं०) पंकमय, कीचड़दार ।

सज–स्त्री० सजना, सजावट; रूप, आकृति; शोभा; † एक वृक्ष । **–दार**–वि० सुडौल, अच्छी आकृतिका, सुंदर । **–धज,–वज**–स्त्री० सजावट, बनाव-शृंगार; ठाटबाट ।

सजग–वि० सतर्क, सावधान, होशियार ।

सजड़ा†–पु० दे० 'सहिजन' ।

सजदा–पु० माथा टेकना, ईश्वरको प्रणाम करना; नमाज पढ़ते समय सिज्देमें जाना; दे० 'सिजदा' ।

सजन–पु० (सं०) एक ही परिवारके आदमी, संबंधी; पति, प्रियतम; सज्जन । वि० जनयुक्त; मनुष्योंसे बसा हुआ ।

सजनपद–वि० (सं०) एक ही देशके (व्यक्ति) ।

सजना–अ० क्रि० वस्त्राभूषणसे अलंकृत होना; उत्तम लगना, फबना, भला जान पड़ना; युद्धादिके लिए तैयार होना । स० क्रि० धारण करना; सजाना; व्यवस्थित करना । पु० सहिजन; † प्रियतम ।

सजनी–स्त्री० सखी, सहेली ।

सजनीय–वि० (सं०) प्रसिद्ध, ख्यात ।

सजनु–वि० (सं०) एक साथ उत्पन्न ।

सजप–पु० (सं०) यतियोंका एक भेद ।

सजल–वि० (सं०) जलयुक्त, भीगा हुआ; अश्रुपूर्ण, आबदार, चमकदार । **–नयन**–वि० जिसके नेत्र अश्रुपूर्ण हों ।

सजला–वि० मँझलेसे छोटा, सँझला । वि० स्त्री० (सं०) जलसे युक्त ।

सजवना*–पु० सजावट, तैयारी–'बहुतन अस गढ़ कीन्ह सजवना'–प० ।

सजवाई–स्त्री० सजवानेकी क्रिया या पारिश्रमिक ।

सजवाना–स० क्रि० किसीको सजनेके काममें प्रवृत्त करना ।

सज़ा–स्त्री० (फा०) बदला; अपराधका बदला, दंड; कारावास; जुर्माना । **–ए-क़त्ल**–स्त्री० प्राणदंड । **–ए-मौत**–स्त्री० प्राणदंड, फाँसीकी सजा । **–ए-सख़्त**–स्त्री० कठोर कारावास । **–याफ्ता**–वि० दंडप्राप्त, दंडित । **–याब**–वि० सजा पानेवाला, दंडका अधिकारी । **–यार**–वि० योग्य अधिकारी; शुभ; सुफल देनेवाला (होना) । **–वार**–वि० दंड पाने योग्य, दंडनीय–'फकत इस सजाके सजावार हैं हम' । मु० **–का मज़ा मिलना**–कियेका फल मिलना ।

सजाइ*–स्त्री० सजा, दंड ।

सजाई–स्त्री० सजानेकी क्रिया; सजानेकी मजदूरी ।

सजागर–वि० (सं०) जागरूक; सावधान, सतर्क ।

सजात–वि० (सं०) साथ उत्पन्न, एक ही समय उत्पन्न; संबंधियोंसे युक्त । –**काम**–वि० संबंधियोंपर शासन करनेका इच्छुक।

सजाति–वि० (सं०) एक ही जाति या वर्गका; एक जैसा । पु० एक ही जातिके पुरुष और स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र ।

सजातीय–वि० (सं०) दे० 'सजाति' । –**कर्म**–पु० (कागनेट आब्जेक्ट) किसी क्रियाका वह कर्म जिसका वही अर्थ हो जो क्रियाका हो (जैसे मैं 'दौड़' दौड़ता हूँ) ।

सजात्य–पु० (सं०) भ्रातृत्व; संबंध, रिश्ता । वि० सजातीय ।

सजान*–वि० सज्ञान, जानकार ।

सजाना–स० क्रि० सँवारना, सुसज्जित करना; व्यवस्थित करना ।

सजानि–वि० (सं०) सपत्नीक ।

सजाय–वि० (सं०) सपत्नीक, विवाहित । * स्त्री० दे० 'सज़ा' ।

सजार, सजारु–पु० शल्यक, साही ।

सजाल–वि० (सं०) अयालदार, केसरयुक्त ।

सजाव–पु० दहीका एक प्रकार (यह दूध खूब खौलाकर विना मलाई निकाले जमाया जाता है); सजावट ।

सजावट–स्त्री० अलंकरण, सज्जा; शोभा; तैयारी ।

सजावन*–पु० अलंकरण; तैयार, सुसज्जित करना ।

सज़ावल–पु० (तु०) मालगुजारी या सरकारी रुपया वसूल करनेवाला; दारोगा ।

सज़ावली–स्त्री० सजावलका पद या काम।

सजिना†–पु० दे० 'सहिजन' ।

सजीउ*–वि० दे० 'सजीव' ।

सजीला–वि० सजधजवाला, सजधजसे रहनेवाला, छैला; सुडौल, सुंदर, तरहदार (स्टाइलिश) ।

सजीव–वि० (सं०) सप्राण, प्राणयुक्त, जीवित; ज्यायुक्त। पु० प्राणी ।

सजीवता–स्त्री० (सं०) सजीव होनेका भाव ।

सजीवन–पु० संजीवनी बूटी । –**बूटी**–स्त्री० रुद्रवंती । –**मूर**,–**मूल***–पु० संजीवनी बूटी ।

सजीवनी–स्त्री० दे० 'संजीवन' । –**मंत्र**–पु० मृतकको जिलानेवाला कल्पित मंत्र; कार्यसाधक उपाय ।

सजीह–पु० (फा०) प्रकृति, स्वभाव; मिजाज ।

सजु(ष्, स्)–वि०(सं०) प्रिय; साथ रहनेवाला। पु० मित्र; साथी ।

सजुग*–वि० दे० 'सजग' ।

सजुता–स्त्री० एक छंद ।

सजूरी–स्त्री० एक मिठाई ।

सजोना†–अ० क्रि० शृंगार करना, सज्जित करना; तैयारी करना, सामान आदि ठीक करना ।

सजोयल*–वि० दे० 'सँजोइल' ।

सजोष–वि० (सं०) समान प्रीतिवाले; मेलसे काम करनेवाले ।

सजोषण–पु० (सं०) साथ-साथ आनंदोपभोग करना; पुरानी प्रीति ।

सज्ज–वि० (सं०) सजा हुआ; तैयार; शस्त्रादिसे युक्त; दे० 'सज्य' । –**कर्म(न्)**–पु० सजने, तैयार होनेकी क्रिया; धनुष् चढ़ाना ।

सज्जन–पु० (सं०) लटकाना; बाँधना; सजाना; हाथी आदिको वस्त्रादिसे सज्जित करना; तैयारी करना; हथियारोंसे लैस होना; घाट, विशेषकर सीढ़ीदार; पहरेदार; तैयारी; कुलीन व्यक्ति; सत्पुरुष, भला आदमी; प्रिय व्यक्ति ।

सज्जनता–स्त्री० (सं०) सौजन्य, भलमंसी ।

सज्जनताई*–स्त्री० दे० 'सज्जनता'।

सज्जना–स्त्री० (सं०) सजावट; तैयारी; राजा आदिकी सवारीके लिए हाथीको सजाना ।

सज्जा–स्त्री० (सं०) पोशाक, सजावट; साज-सामान; फौजी सामान, कवच आदि (इक्विपमेंट); (हिं०) शय्या । –**कला**–स्त्री० (डेकोरेटिव आर्ट) स्थान, वस्तुओं आदिको सजाकर आकर्षक बनानेकी कला ।

सज्जाद–वि० (अ०) सिजदा करनेवाला, पूजक, उपासक ।

सज्जादा–पु० (अ०) नमाज पढ़नेका आसन, जानमाज; किसी साधु-संतकी गद्दी । –**नशीं**–वि० गद्दीधर (फकीर, महंत) ।

सज्जित–वि० (सं०) सजा हुआ, अलंकृत; सामान आदिसे युक्त, तैयार; हथियारोंसे लैस (इक्विप्ड) ।

सज्जी–स्त्री० एक प्रकारकी क्षारयुक्त मिट्टी (फुलर्स अर्थ) । –**खार**–पु० सज्जी । –**बूटी**–स्त्री० एक क्षुप जिससे सज्जीखार बनाते हैं ।

सज्जुता–स्त्री० एक वृत्त ।

सज्जुष्ट–वि० (सं०) अच्छे लोगोंको प्रिय; सुखकर ।

सज्ञान–वि० (सं०) ज्ञानयुक्त; बुद्धिमान्, समझदार ।

सज्य–वि० (सं०) ज्यायुक्त (धनुष्) ।

सज्या*–स्त्री० शय्या ।

सज्योत्स्ना–स्त्री० (सं०) चाँदनी रात ।

सझिदार†–पु० हिस्सेदार ।

सझिदारी†–स्त्री० साझा, साझीदारी ।

सझिया†–पु० हिस्सेदार; साझा ।

सटंकार–वि०(सं०) प्रसिद्ध, ख्यात ।

सट–पु० (सं०) दे० 'सटा'; ब्राह्मण पिता और भटि मातासे उत्पन्न व्यक्ति ।

सटक–स्त्री० लचनेवाली पतली छड़ी; लंबा, मुड़नेवाला नैचा; चुपकेसे चल देनेकी क्रिया ।

सटकना–अ० क्रि० धीरेसे खिसक जाना । स० क्रि० नाज निकालनेके लिए डाँठ पीटना ।

सटकाना–स० क्रि० छड़ी आदिसे इस तरह मारना कि 'सट' 'सट' की आवाज हो; 'गुड़गुड़' ध्वनि उत्पन्न करते हुए हुक्का पीना ।

सटकार–स्त्री० सटकानेकी क्रिया; झटकारना; गौ आदिको हाँकना ।

सटकारना–स० क्रि० छड़ी आदिसे मारना; झटकारना ।

सटकारा*–वि० चिकना और लंबा ।

सटकारी–स्त्री० पतली, लचीली छड़ी ।

सटक्का–पु० झपट, दौड़ । **मु०**–**मारना**–तेजीसे जाना ।

सटना–अ० क्रि० दो वस्तुओंका एक साथ लग जाना; चिपकना; साथ होना; मैथुन होना; † लाठी-डंडे आदिसे मार-पीट होना ।

सटपट–स्त्री० हिचकिचाहट, संकोच; द्विविधा ।

सटपटाना–अ० क्रि० संकोच करना, हिचकिचाना; भौचक्का होना; दब जाना; 'सटपट' शब्द करना ।

सटर-पटर–वि० तुच्छ; बहुत मामूली । स्त्री० झंझट, बखेड़ा; झंझटिया काम; अदनी चीज ।

सट-सट–अ० 'सट-सट' शब्द करते हुए; जल्द, फौरन ।

सटांक–पु० (सं०) सिंह ।

सटा–स्त्री० (सं०) साधुओंकी जटा; शेरका अयाल; सूअरका बाल; कबरी, जूड़ा; कलँगी, शिखा ।

सटाक–पु० 'सट'की ध्वनि । **मु०**–**से**–सट या सटाक शब्द करते हुए ।

सटाकी–स्त्री० पैनेके सिरेपर बँधी हुई चमड़ेकी पट्टी ।

सटान–स्त्री० सटनेकी क्रिया; जोड़ ।

सटाना–स० क्रि० जोड़ना, मिलाना; चिपकाना; दो वस्तुओंको इतना समीप ले जाना कि एक दूसरीको छूने लगे ।

सटाल–वि० (सं०) अयालवाला; ' 'से युक्त या पूर्ण । पु० सिंह ।

सटालु–पु० (सं०) कच्चा फल ।

सटि–स्त्री० (सं०) शटी, कचूर ।

सटिका, सटी–स्त्री० (सं०) जंगली कचूर ।

सटियल–वि० घटिया ।

सटिया–स्त्री० सोने-चाँदीकी चूड़ी; सिंदूर भरनेकी चाँदीकी शलाका; षड्यंत्र रचना; * छड़ी, साँटी ।

सटीक–वि० (सं०) टीका, व्याख्यासे युक्त; बिलकुल ठीक, जो ठीक बैठे (हिं०) (–**निशाना**) ।

सटोरिया–पु० दे० 'सट्टेबाज' ।

सट्ठ–पु० (सं०) दरवाजेकी चौखटमें दोनों पार्श्वोंमें लगायी जानेवाली लकड़ियाँ ।

सट्टक–पु० (सं०) प्राकृत भाषामें रचित एक उपरूपक; जीरा मिला हुआ तक्र ।

सट्टा–पु० इकरारनामा; बाजारभावके घटवढ़के आधारपर किया जानेवाला एक तरहका कल्पित व्यापार या लेनदेन जिसमें हिसाव साफ करनेके लिए एक निश्चित तिथि पहलेसे निर्धारित रहती है (स्पेक्यूलेशन) । **–बट्टा**–पु० मेल-जोल; छलपूर्ण उपाय (लड़ाना) । **–(ट्टे) बाज़**–पु० अधिक लाभकी आशासे जोखिम उठाते हुए भी चीजोंका सौदा करनेवाला (स्पेक्यूलेटर) । **–वाज़ी**–स्त्री० सट्टेबाजका काम ।

सट्टी–स्त्री० किसी एक या एक जैसी चीजोंका बाजार । **मु० –मचाना**–शोरगुल करना । **–लगाना**–चीजें अस्त-व्यस्त करना ।

सट्वा–स्त्री० (सं०) एक तरहका पक्षी; एक वाद्य यंत्र (संगीत) ।

सठ*–दे० 'साँठि'–'किहिगाँ हठ कै सठ-हानि लई'–घन० ।

सठ*–वि०, पु० दे० 'शठ' । **–ता***–स्त्री० शठता; मूर्खता ।

सठईǀ–स्त्री० दे० 'शठता' ।

सठि–स्त्री० (सं०) कचूर ।

सठियाना–अ० क्रि० साठ वर्षकी अवस्थाका होना; वृद्ध होना; वार्द्धक्यके कारण मानसिक शक्तिका ह्रास होना ।

सठेरा–पु० सनका विना छालका डंठल, सनई, सलई ।

सठोरा–पु० दे० 'सोंठौरा' ।

सड़क–स्त्री० मनुष्यों, सवारियों आदिके गमनागमनके योग्य बना हुआ चौड़ा मार्ग; मार्ग, रास्ता ।

सड़क्का–पु० सटक्का ।

सड़न–स्त्री० सड़नेकी क्रिया; सड़नसे उत्पन्न बदबू 'सड़नके मारे खड़ा होना मुश्किल है' ।

सड़ना–अ० क्रि० किसी चीजका गलना, संयोजक तत्त्वोंका अलग-अलग हो जाना; बुरी हालतमें रहना ।

सड़सठ–वि० साठसे सात अधिक । पु० साठ और सातकी संख्या, ६७ ।

सड़सी–स्त्री० दे० 'सँड़सी' ।

सड़ाǀ–पु० बच्चा देनेपर गायोंको पिलायी जानेवाली एक तरहकी दवा ।

सड़ाइँद–स्त्री० दे० 'सड़ायँध' ।

सड़ाक–स्त्री० पतली छड़ी आदि सटकारनेकी आवाज; शीघ्रता ।

सड़ान–स्त्री० सड़नेकी क्रिया ।

सड़ाना–स० क्रि० किसी चीजको सड़नेमें प्रवृत्त करना; बुरी हालतमें रखना ।

सडायँध–स्त्री० सड़ी हुई चीजसे निकलनेवाली दुर्गंध ।

सड़ाव–पु० सड़नेकी क्रिया या स्थिति ।

सड़ासड़–अ० 'सड़-सड़'की ध्वनिके साथ ।

सड़ियल–वि० सड़ा; गला हुआ; खराव, रद्दी; नीच, तुच्छ ।

सण–पु० (सं०) दे० 'शण' । **–तूल**–पु० सनके रेशे । **–सूत्र**–पु० सनकी रस्सी ।

सतंद्र–वि० (सं०) तंद्रायुक्त; क्लांत ।

सत*–वि० सत्य, यथार्थ । पु० सचाई, यथार्थता; सत्त्व, किसी पदार्थका सार, मूल तत्त्व; जीवशक्ति । **–कार**–पु० आदर-सम्मान । **–गुरु**–पु० अच्छा गुरु; परमात्मा । **–जीत**–पु० सत्यजित् । **–जुग**–पु० सत्ययुग । **–भाय,–भाव***–पु० सद्भाव । **–युग**–पु० सत्ययुग । **–वंती**–स्त्री० सती, पतिव्रता । **–संग**–पु०,**–संगति**–स्त्री० अच्छी संगति । **–संगी**–वि० सत्संग करने या सत्संगमें रहनेवाला । **मु० –पर चढ़ना**–सती होना । **–पर रहना**–पातिव्रत्यका पालन करना; सत्यधर्मका पालन करना ।

सत*–वि० सौ । **–दल***–पु० शतदल, कमल । **–पत्र***–पु० कमल । **–परब**ǀ–पु० बाँस । **–मख***–पु० इंद्र । **–मूली**–स्त्री० शतमूली, सतावर ।

सत–वि० 'सात'का समासगत लघु रूप । **–कोन**–वि० सात कोनोंवाला । **–गँठिया**–स्त्री० एक वनस्पति जो तरकारी वनानेके काम आती है । **–दंता**–वि० सात दाँतोंवाला (पशु) । पु० सात दाँतोंवाला पशु । **–पतिया**–स्त्री० एक तरहकी तरोई; सात पति करनेवाली स्त्री, पुंश्चली । **–पुतिया**–स्त्री० एक तरहकी तरोई । **–पदी,–भौँरी**–स्त्री० दे० 'सतफेरा' । **–फेरा**–पु० सप्तपदी नामक वैवाहिक कृत्य । **–भइया**ǀ–स्त्री० एक तरहकी मैना । **–मासा,–वाँसा**–वि० सात मासमें उत्पन्न होनेवाला (बच्चा) । पु० वह बच्चा जिसकी पैदाइश गर्भस्थितिके सात महीनेपर हुई हो; गर्भस्थितिके सातवें मासमें होनेवाला उत्सव । **–रंग**–वि० सात रंगोंवाला । **–रंगा**–वि० सात रंगोंवाला । पु० इंद्रधनुष । **–रंजी**–स्त्री० दे० क्रममें । **–लड़ा**–वि० सात लड़ियोंवाला (हार) । **–लड़ी,–लरी**–स्त्री० सात लड़ियोंका हार । **–सई**–स्त्री० सात सौ पद्योंवाला ग्रंथ ।

सतकारना*–स० क्रि० आदर-सम्मान करना ।

सतत–वि० (सं०) अविच्छिन्न (समासमें) । अ० हमेशा, सर्वदा । **–ग,–गति**–पु० वायु । **–ज्वर**–पु० हमेशा बना रहनेवाला ज्वर । **–दुर्गत**–वि० हमेशा कष्टमें रहनेवाला । **–धृति**–वि० जो हमेशा दृढ़संकल्प हो । **–मानस**–वि० हमेशा किसी ओर मन प्रवृत्त करनेवाला । **–यायी (यिन्)**–वि० सततगतिशील; क्षयशील । **–शास्त्री (स्त्रिन्)**–वि० हमेशा अध्ययन करनेवाला । **–समिताभियुक्त**–पु० एक वोधिसत्त्व । **–स्पंदन**–वि० हमेशा स्पंदन करनेवाला ।

सततक–वि० (सं०) दिनमें दो बार होनेवाला (ज्वर) ।

सतताभियोग–पु० (सं०) हमेशा किसी काममें लगा रहना ।

सतत्त्व–पु० (सं०) स्वभाव, प्रकृति । वि० सत्यका जानकार ।

सतनजा–पु० सात तरहके अनाजोंका मिश्रण ।

सतनीǀ–स्त्री० सप्तपर्णी, छतिवन; एक ऊँचा पेड़ ।

सतनु–वि० (सं०) शरीरवाला; शरीरयुक्त ।

सतबरवाǀ–पु० एक नेपाली वृक्ष जिससे कागज वनाया जाता है ।

सतमसा–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

सतमस्क–वि० (सं०) अंधकाराच्छन्न ।

सतरंज–पु०, स्त्री० दे० 'शतरंज' ।

सतरंजी–स्त्री० दे० 'शतरंजी' ।

सतर*–वि० वक्र, टेढ़ा, कुटिल; क्रुद्ध । स्त्री० (अ०) पंक्ति, लकीर । **–बंदी**–स्त्री० इस तरह लिखना कि ऊपर-नीचे लकीर खींचनेसे अक्षरोंकी मात्राएँ, मरकज आदि कटें नहीं ।

सतर–पु० (अ०) छिपाना; स्त्री या पुरुषका गोपनीय स्थान, गुह्यांग; परदा । **–पोश**–वि० (वह चीज) जिससे तन ढाँकें, लज्जा-निवारण करें । **–पोशी**–स्त्री० तन ढाँकना, लज्जा-निवारण ।

सतरकी–स्त्री० सतरहवें दिन किया जानेवाला मृतक कर्म ।

सतरह–वि०, पु० दे० 'सत्तरह' ।

सतराना*–अ० क्रि० कोप, गुस्सा करना, कुढ़ना, विगड़ना ।

सतराहटǀ–स्त्री० कोप, रोष ।

सतरी–स्त्री० सर्पदंष्ट्रा नामकी ओषधि ।

सतरौहाँ*–वि० क्रोधयुक्त; क्रोधसूचक–'सतरौहीं भौंहनि नहीं दुरै दुराये नेह'–मतिराम ।

सतर्क–वि० (सं०) तर्कयुक्त, तर्कपूर्ण; तर्ककुशल, विवेकशील; सचेत, सावधान ।

सतर्कता–स्त्री० (सं०) सावधानी, होशियारी ।

सतर्पना*–स० क्रि० अच्छी तरह संतुष्ट, तृप्त करना ।

सतर्ष–वि० (सं०) तृषित, प्यासा ।

सतल–वि० (सं०) तलयुक्त; पेंदेवाला ।

सतलज–स्त्री० पंजावकी एक नदी, शतद्रु ।

सतह–स्त्री० (अ०) वस्तुका ऊपरी भाग; तल; वह वस्तु जिसमें लंबाई-चौड़ाईभर हो, गहराई न हो (ग०); जलका ऊपरी भाग (लेविल); फर्श; छत । **–(हे) आव**–स्त्री० नदी आदिके जलका ऊपरी भाग । **–ज़मीन**–स्त्री० पृथ्वीतल ।

सतहत्तर–वि० सत्तरसे सात अधिक । पु० सत्तरसे सात अधिककी संख्या, ७७ ।

सतही–वि० सतहका, ऊपरी; जिसमें गहराई न हो ।

सतांग*–पु० शतांग, रथ–'कोउ तुरंग चढ़ि, कोउ मतंग चढ़ि,

कोउ सतांग चढ़ि धाये'–रघुराज।

सतानंद–पु० (सं०) गौतमके पुत्र जो राजा जनकके पुरोहित थे, शतानंद।

सताना–स० क्रि० पीडित करना, कष्ट देना; परेशान करना।

सतार–पु० (सं०) ग्यारहवाँ स्वर्ग (जै०)। वि० ताराओंसे युक्त।

सतारुक–पु० (सं०) कुष्ठ रोगका एक भेद।

सतारू–पु० दे० 'सतारुक'।

सतालू–पु० दे० 'सफतालू'।

सतावना*–स० क्रि० दे० 'सताना'।

सतावर–स्त्री० एक वेल जो झाड़दार होती हैं और दवाके काम आती है, शतावर।

सतासी–वि० अस्सीसे सात अधिक। पु० सतासीकी संख्या, ८७।

सति–स्त्री० दान; अंत, नाश। * वि०, पु० दे० 'सत्य'।

सतिमा*–स्त्री० सौतेली माँ।

सतिवन–पु० सप्तपर्ण, छतिवन।

सती–स्त्री० (सं०) साध्वी, पतिव्रता स्त्री; पतिके शवके साथ जल जानेवाली स्त्री; मादा पशु; सन्न्यासिनी; एक तरहकी सुगंधित मिट्टी; विश्वामित्रकी स्त्री; दुर्गा; अंगिराकी एक स्त्री; दक्षकी कन्या जिसका विवाह शिवसे हुआ था; एक वृत्त। पु० सद्धर्मका पालनकर्ता; साधु। **–चौरा**–पु० (हिं०) किसी सतीके स्मारकके रूपमें बना हुआ चबूतरा। **–दोषोन्माद**–पु० सतीके प्रति दुष्ट भाव प्रदर्शित करनेके कारण स्त्रियोंको होनेवाला उन्माद रोग। **–पुत्र**–पु० साध्वी स्त्रीका पुत्र। **–व्रत**–पु० पातिव्रत्य। **–व्रता**–स्त्री० पतिव्रता स्त्री। **–सर(स्)**–पु० कश्मीरकी एक झील। **मु० –होना**–पतिके शवके साथ जल मरना; किसीके पीछे परेशान होना, मर मिटना।

सती*–पु० सत्यका अनुयायी–'राजा रंक, जती सती, करत सोई व्यवहार'–रामकलेवा।

सतीक–पु० (सं०) जल।

सतीत्व–पु० (सं०) सती होनेका भाव, पातिव्रत्य। **–हरण**–पु० सतीत्व नष्ट करना।

सतीन–वि० (सं०) यथार्थ, वास्तविक। पु० मटरका एक भेद, कलाय; बाँस; जल।

सतीनक–पु० (सं०) मटरका एक भेद, कलाय।

सतीपन–पु० दे० 'सतीत्व'।

सतीर्थ–वि० (सं०) तीर्थयुक्त। पु० सहाध्यायी, साथ अध्ययन करनेवाले ब्रह्मचारी; शिव।

सतीर्थ्य–पु० (सं०) सहाध्यायी, साथ पढ़नेवाले ब्रह्मचारी।

सतील–पु० (सं०) बाँस; वायु; कलाय।

सतीलक–पु० (सं०) कलाय।

सतीला–स्त्री० (सं०) कलायका एक भेद।

सतुआ–पु० भुने हुए अन्नका चूर्ण, सक्तु, सत्त। **–संक्रांति**–स्त्री० मेषकी संक्रांति (जिस दिन सत्तूके दान और भोजनका विधान है)। **–सोंठ**–स्त्री० एक तरहकी सोंठ।

सतुआन–स्त्री०, पु० दे० 'सतुआ-संक्रांति'।

सतुष–वि० (सं०) भूसीवाला। पु० तुषयुक्त अन्न।

सतून–पु० (फा०) खंभा, स्तंभ।

सतूना–पु० बाजके झपटनेका एक ढंग।

सतृट्(ष्), सतृष, सतृष्णा–वि० (सं०) प्यासा; इच्छुक।

सतेजा(जस्)–वि० (सं०) कांतियुक्त; जीव-शक्ति-संपन्न।

सतेर–पु० (सं०) भूसी।

सतेरक–पु० (सं०) ऋतु, मौसिम।

सतेस*–स्त्री० फुरती, शीघ्रता।

सतोखना*–स० क्रि० संतोष देना; ढाढ़स दिलाना; संतुष्ट करना।

सतोगुण†–पु० दे० 'सत्त्वगुण'।

सतोगुणी†–वि० सत्त्वगुणसे युक्त।

सतोदर–पु० दे० 'शतोदर'।

सतौला†–पु० प्रसवके सातवें दिन किया जानेवाला प्रसूताका स्नान।

सतौसर–पु० सात लड़ियोंका हार।

सत्–वि० (सं०) सत्तायुक्त; वर्तमान, विद्यमान; यथार्थ, सत्य; स्थायी; भला, धार्मिक; पवित्र; उच्च, उत्तम; उचित; सम्मान्य; विद्वान्, चतुर; सुंदर; धीर। पु० संत, सज्जन, धार्मिक व्यक्ति; वह जिसका अस्तित्व हो; यथार्थता, सत्य; ब्रह्म। **–कथा**–स्त्री० अच्छी वार्ता या कथा। **–कदंब**–पु० कदंबका एक भेद, केलिकदंब। **–करण**–पु० सत्कार करना; अंत्येष्टि क्रिया। **–कर्तव्य**–वि० जिसका सम्मान करना हो। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० अच्छा काम करनेवाला; हितैषी; सत्कार करनेवाला। पु० विष्णु। **–कर्म(न्)**–पु० नेक काम, पुण्य कर्म; वेदविहित कर्म; सत्कार; अंत्येष्टि; प्रायश्चित्त। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० अच्छा काम करनेवाला। **–कला**–स्त्री० ललित कला। **–कवि**–पु० उत्तम कवि, सुकवि। **–कांचनार**–पु० रक्तकांचन वृक्ष। **–कांड**–पु० बाज; चील। **–कायदृष्टि**–स्त्री० मृत्युके बाद आत्मा, शरीर आदिकी सत्ताका भ्रांत सिद्धांत (बौ०)। **–कार**–पु० आदर-सम्मान, आवभगत; आतिथ्य; देखभाल; पर्व, उत्सव; दावत। **–कार्य**–वि० सम्मानके योग्य; जिसकी अंत्येष्टि की जाय। पु० कारणमें कार्यका निहित रहना (सां०); अच्छा काम। **–०वाद**–पु० कारणके अभावमें कार्यकी उत्पत्ति न माननेका सिद्धांत। **–किष्कु**–पु० चार फुटकी एक प्राचीन माप। **–कीर्ति**–स्त्री० सुयश, अच्छी कीर्ति। वि० जिसका अच्छा नाम फैला हो। **–कुल**–पु० उत्तम कुल। वि० कुलीन, सद्वंशजात। **–कुलीन**–वि० अच्छे वंशका। **–कृत**–वि० अच्छी तरह किया हुआ; पूजित; सम्मानित; जिसकी आवभगत की गयी हो; जिसका अच्छा स्वागत किया गया हो। पु० शिव; सम्मान; आतिथ्य; पुण्य कार्य। **–कृति**–स्त्री० अच्छा कर्म करना; अच्छा कार्य; पुण्य; सद्व्यवहार; आदर-सत्कार। **–क्रिय**–वि० अच्छा कर्म करनेवाला। **–क्रिया**–स्त्री० नेक काम, पुण्य; व्यवस्थित करना; व्याख्या; आतिथ्य; सौजन्य; संस्कार; मृतककर्म। **–पत्र**–पु० कुमुद आदिका नया पत्ता। **–पथ**–पु० सुमार्ग, अच्छी सड़क; सदाचार; शास्त्रविहित सिद्धांत। **–पथीन**–वि० सुमार्गपर जानेवाला। **–परिग्रह**–पु० अच्छे, योग्य व्यक्तिसे दान ग्रहण करना। **–पशु**–पु० बलिके उपयुक्त पशु। **–पात्र**–पु० योग्य व्यक्ति, वह व्यक्ति जो कोई चीज पानेके योग्य हो। **–०वर्ष**–पु० योग्य व्यक्तिके प्रति उदारताका बर्ताव। **–०वर्षी(षिन्)**–वि० पात्रताका विचार कर दान आदि देनेवाला। **–पुत्र**–पु० योग्य पुत्र; वह पुत्र जो पितरोंके निमित्त विहित कर्म करे। **–पुरुष**–पु० भला आदमी, सज्जन। **–पुष्प**–पु० अच्छा पुष्प; विकसित पुष्प। **–प्रतिग्रह**–पु० दे० 'सत्परिग्रह'। **–प्रतिपक्ष**–वि० जिसके विपक्षमें समकक्ष हेतु भी हो। पु० हेत्वाभासके पाँच-प्रकारोंमेंसे एक (न्या०)। **–प्रमुदिता**–स्त्री० आठ सिद्धियोंमेंसे एक (सां०)। **–फल**–वि० अच्छे फलवाला। पु० अनार। **–संकल्प**–वि० अच्छे अभिप्रायवाला, नेक-नीयत। **–संग**–पु०, **–संगति**–स्त्री० अच्छे आदमियोंका साथ। **–संसर्ग**–पु० दे० 'सत्संग'। **–सन्निधान, –समागम**–पु० दे० 'सत्संग'। **–सहाय**–पु० अच्छा मित्र। वि० जिसके मित्र नेक हों। **–सार**–वि० जो अच्छा रसदार हो। पु० एक वृक्ष; कवि; चित्रकार।

सत्त–पु० सत्त्व, सारभाग, रस; तत्त्व; * सत्य; सतीत्व।

सत्तम–वि० (सं०) सर्वप्रथम; परम पूज्य।

सत्तमी*–स्त्री० सप्तमी।

सत्तर–वि० साठसे दस अधिक। पु० सत्तरकी संख्या, ७०।

सत्तरह–वि० दससे सात अधिक। पु० सत्तरहकी संख्या, १७।

सत्तांतरण–पु० (सं०) एक हाथसे दूसरे हाथमें सत्ताका हेर फेर।

सत्तांतरित प्रदेश–पु० (सीडेडटेरिटरी) वह प्रदेश जिसका शासन या सत्ता दूसरेको सौंप दी गयी हो; जो दूसरेको अर्पित कर दिया गया हो।

सत्ता–पु० सात बूटियोंवाला ताशका पत्ता। स्त्री० (सं०) अस्तित्व (बीइंग); यथार्थता; जातिका एक प्रकार (वै०); उत्तमता; अधिकार, प्रभुत्व; प्रभुसत्ता (सावरेनटी)। **–धारी(रिन्)**–वि० जिसके हाथमें शासनसूत्र हो। **–वाद**–पु० (ऑथॉरिटेरियनिज्म) यह सिद्धांत कि अधिनायक तंत्रकी सभी बातें निर्विरोध मानी जानी चाहिए। **–शास्त्र**–पु० वह शास्त्र

जिसमें मूल सत्ताका विवेचन हो (पाश्चात्य दर्शन)। **–सामान्यत्व** –पु० अनेक रूपोंमें किसी सामान्य द्रव्यका अस्तित्व।

सत्ताइस, सत्ताईस–वि० बीससे सात अधिक। पु० सत्ताईसकी संख्या, २७।

सत्तानबे–वि० नब्बेसे सात अधिक। पु० सत्तानबेकी संख्या, ९७।

सत्तार–पु० (अ०) परदा डालनेवाला, दोष ढाँकनेवाला; ईश्वर।

सत्तावन–वि० पचाससे सात अधिक। पु० सत्तावनकी संख्या, ५७।

सत्तासी–वि० अस्सीसे सात अधिक। पु० सत्तासीकी संख्या, ८७।

सत्ति*–स्त्री० शक्ति।

सत्तू–पु० सक्तु, भुने हुए अन्न (जौ, चने)का आटा। मु० –**बाँधकर पीछे पड़ना**–किसीके विरुद्ध निरंतर चेष्टाशील रहना; पूरी तैयारीसे किसी काममें लगना।

सत्र–पु० (सं०) सोमयज्ञ जो साधारणतः तेरहसे सौ दिनोंतक चलता था; यज्ञ; होम, दानादि; उदारता; पुण्य, धर्म; मकान; आच्छादन; वस्त्र; संपत्ति; जंगल; तालाब; छल, धोखा; छद्मवेश; आश्रयस्थान, पनाह; वह स्थान जहाँ दरिद्रोंको खाना बाँटा जाता है, लंगर; दो बड़े अवकाशोंके बीच किसी संस्थाका लगातार चलनेवाला कार्यकाल (सेशन)। **–गृह**–पु० यज्ञ-भवन; आश्रय-स्थान; विकट समय या स्थान। **–परिवेषण**–पु० यज्ञके अवसरपर भोजनादिका वितरण। **–फल**–पु० सोम-यज्ञका फल। **–०द**–वि० सत्र यज्ञका फल देनेवाला। **–याग**–पु० सोम-यज्ञ। **–वसति,–शाला**–स्त्री० दे० 'सत्र-गृह'। **–सद्म(न्)**–पु० दे० 'सत्र-गृह'।

सत्रागार–पु० (सं०) दे० 'सत्र-शाला'।

सत्रापश्रय–पु० (सं०) आश्रय-स्थान।

सत्रायण–पु० (सं०) यज्ञोंका लगातार चलनेवाला क्रम।

सत्राहा(हन्)–पु० (सं०) इंद्र।

सत्त्रि–पु० (सं०) वह जो प्रायः यज्ञ करता हो; हाथी; बादल।

सत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) यज्ञकर्ता; विदेशस्थ राजदूत; यज्ञका निरीक्षण करनेवाला, ब्रह्मा; वह जो छद्मवेशमें हो। वि० जयशील।

सत्त्व–पु० (सं०) अस्तित्व; सहजात प्रकृति, स्वभाव; धर्म, गुण; आत्मतत्त्व, चैतन्य; प्राण वायु, जीवन; भ्रूण; पदार्थ; धन; मूल तत्त्व (एब्सट्रैक्ट), वायु आदि; सार; प्राणी, जीवधारी; प्रेत; धार्मिकता; सत्य, यथार्थता; शक्ति, जीवशक्ति; बुद्धि, समझदारी; विशेषता; प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक जो सर्वोच्च है (सां०); संज्ञा। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० प्राणियोंका स्रष्टा। **–गुण**–पु० प्रकृतिके तीन गुणोंमेंसे एक, विशुद्धताका गुण। **–गुणी(णिन्)**–वि० सत्त्व गुणवाला। **–धाम(न्)**–पु० विष्णु। **–पति**–पु० जीवधारियोंका स्वामी। **–प्रधान**–वि० सत्त्वगुणी। **–भारत**–पु० व्यास। **–लक्षणा**–स्त्री० गर्भके लक्षणोंसे युक्त स्त्री। **–लोक**–पु० जीवलोक। **–विप्लव**–पु० चेतनाकी हानि। **–विहित**–वि० प्राकृतिक; सत्त्वगुणी। **–शाली(लिन्)**–वि० उत्साही, साहसी। **–शील**–वि० सत्त्वगुणी। **–संपन्न**–वि० सत्त्व-गुणयुक्त; धीर, शांतचित्त। **–संप्लव**–पु० प्रलय; शक्तिका नाश। **–संशुद्धि**–स्त्री० स्वभावकी विशुद्धता, खरापन। **–सार**–पु० शक्तिका सार; असाधारण साहस। **–स्थ**–वि० दृढ़; सप्राण; सशक्त; आत्मस्थ, प्रकृतिमें स्थित; सत्त्वगुणविशिष्ट, उत्तम।

सत्त्वक–पु० (सं०) प्रेतात्मा।

सत्त्वमेजय–वि० (सं०) जीवधारियोंको कंपित करनेवाला।

सत्त्ववान्(वत्)–वि० (सं०) जीवित, जिसका अस्तित्व हो; सत्त्वयुक्त; पुण्यात्मा; साहसी।

सत्त्वात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) सत्त्वगुणवाला।

सत्त्वाधिक–वि० (सं०) अच्छे स्वभावका; साहसी।

सत्त्वोद्रेक–पु० (सं०) सत्प्रकृतिका अतिरेक होना; उत्साह, साहस।

सत्यंकार–पु० (सं०) सत्य करना; वादा पूरा करना, समझौतेकी शर्तें पूरी करना; वादे, ठेकेका काम पूरा करनेके लिए जमानतके रूपमें पेशगी दी जानेवाली रकम।

सत्यंभरा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

सत्य–वि० (सं०) सच, यथार्थ; यथातथ्य; ईमानदार; विश्वस्त; सिद्ध; पुण्यात्मा; खरा, सच्चा। पु० ब्रह्मलोक; पीपलका पेड़; रामचंद्र; विष्णु; नांदीमुखश्राद्धका देवता; सच्ची बात; सचाई, यथार्थता; लगन; विशुद्धता, खरापन; अच्छाई; पारमार्थिक सत्ता; शपथ; वादा; कृतयुग, सत्ययुग; प्रमाणित सिद्धांत; जल; ब्रह्म; नवाँ कल्प; एक विश्वेदेव; एक व्यास; मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक; एक दिव्यास्त्र; सात व्याहृतियोंमेंसे एक। **–काम**–वि० सत्यका प्रेमी। **–कीर्ति**–पु० अस्त्रपर पढ़ा जानेवाला एक मंत्र; मंत्रसे चलाया जानेवाला एक अस्त्र। **–कृत्**–वि० उचित कार्य करनेवाला। **–केतु**–पु० एक बुद्ध; एक राजा जो प्रताप भानुके पिता थे। **–क्रिया**–स्त्री० शपथ; प्रतिज्ञा, वादा (बौ०)। **–ग्रंथी(थिन्)**–वि० गाँठ देकर ठीक तरहसे बाँधनेवाला। **–घ्न**–वि० प्रतिज्ञा भंग करनेवाला। **–जिति**–स्त्री० सच्ची विजय। **–जित्**–पु० तीसरे मन्वंतरका इंद्र; एक दानव; एक यक्ष। **–ज्ञ**–वि० सत्यका जानकार। **–तपा(पस्)**–पु० एक ऋषि। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सत्यासत्यका विवेक करनेवाला। पु० तेरहवें मन्वंतरका एक ऋषि। **–दृक्(श्)**–वि० दे० 'सत्यदर्शी'। **–धन**–वि० सत्यको ही सर्वस्व माननेवाला, परम सत्यवादी। **–धर्म**–पु० शाश्वत सत्य; तेरहवें मनुका एक पुत्र। वि० जिसके आदेश सत्य हों। **–०पथ**–पु० शाश्वत सत्यका मार्ग। **–धृति**–वि० परम सत्यवादी। पु० एक ऋषि। **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम सही हो। **–नारायण**–पु० एक देवता, सत्यदेव (जो बंगालमें सत्यपीर कहे जाते हैं)। **–निष्ठ**–वि० सत्यपर निष्ठा रखनेवाला; सत्यका प्रेमी। **–नेत्र**–पु० एक ऋषि (अत्रिपुत्र)। **–पर**–वि० ईमानदार, सच्चा। **–पारमिता**–स्त्री० सत्यकी सिद्धि (बौ०)। **–पाल**–पु० एक मुनि। **–पूत**–वि० सत्य द्वारा विशुद्ध किया हुआ। **–प्रतिज्ञ**–वि० वादेका पक्का, वचनका पालन करनेवाला। **–प्रतिश्रव**–वि० वचनका सच्चा। **–प्रतिष्ठान,–मूल**–वि० सत्यपर आधृत। **–फल**–पु० बेल, श्रीफल। **–बंध**–वि० सत्यवादी। **–भामा**–स्त्री० सत्राजितकी एक कन्या जो कृष्णकी आठ पत्नियोंमेंसे एक थी। **–भारत**–पु० व्यास। **–भेदी(दिन्)**–वि० वचन भंग करनेवाला। **–मेधा(धस्)**–वि० सच्ची प्रज्ञावाला (विष्णु)। **–युग**–पु० चार युगोंमेंसे पहला, कृतयुग। **–युगाद्या**–स्त्री० वैशाख-शुक्ला तृतीया (जिस दिन कृतयुगका आरंभ माना जाता है)। **–युगी**–वि० (हिं०) सत्ययुगका; बहुत नेक; बहुत पुराना। **–यौवन**–पु० विद्याधर। **–रत**–वि० सत्यपरायण। पु० व्यास। **–रथ**–पु० एक विदर्भ नरेश। **–रथा**–स्त्री० त्रिशंकुकी पत्नी। **–रूप**–वि० विश्वसनीय। **–लोक**–पु० सबसे ऊपरका लोक, ब्रह्मलोक। **–वक्ता(क्तृ)**–वि० सत्यवादी। **–वचन**–पु० सत्य भाषण; वादा, प्रतिज्ञा। वि० सत्यवादी। **–वचा(चस्)**–पु० ऋषि। वि० सत्यवादी। **–वदन**–पु० सत्य भाषण। **–वद्य**–वि० सत्य बोलनेवाला। पु० सत्य बात। **–वसु**–पु० विश्वेदेवोंका एक वर्ग। **–वाक**–पु० सत्य बोलना। **–वाक्(च्)**–स्त्री० सत्य वचन। पु० ऋषि; एक अस्त्र-मंत्र; कौआ; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; मनु सावर्णिका एक पुत्र। वि० सत्यवादी। **–वाक्य**–पु० सत्य वचन। **–वाचक**–वि० सत्यवादी। **–वाद**–पु० सत्यपर, धर्मपर दृढ़ रहना; वादा, प्रतिज्ञा। **–वादिनी**–स्त्री० दाक्षायणीकी एक मूर्ति; बोधिवृक्षकी एक देवी। **–वादी(दिन्)**–वि० स्पष्टवक्ता; सत्यपर दृढ़ रहनेवाला, सत्यनिष्ठ। पु० कौशिक। **–वाहन**–वि० सत्यका वहन करनेवाला (स्वप्न)। **–विक्रम**–वि० जिसमें सच्ची वीरता हो। **–वृत्त**–पु० सदाचार। वि० सदाचारी। **–वृत्ति**–स्त्री० सत्यका आचरण। **–व्यवस्था**–स्त्री० सत्यका निश्चय। **–व्रत**–वि० सत्यका व्रत रखनेवाला। पु० सत्यपालनका व्रत; एक प्राचीन नरेश; मनु वैवस्वत; धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–शपथ**–वि० जिसकी शपथ या शाप पूरा हो। **–शील,–शीली(लिन्)**–वि० सत्यपरायण। **–श्रावण**–पु० शपथ-ग्रहण। **–संकल्प**–वि० दृढ़संकल्प। **–संकाश**–वि० जो सत्य जान पड़े। **–संगर**–वि० अपने वचनका पालन करनेवाला।

पु० कुवेर । **–संध**–वि० वचन पूरा करनेवाला, सत्यसंकल्प । **–संधा**–स्त्री० द्रौपदी । **–संरक्षण**–पु० वचन पालन करना । **–संश्रव**–पु० वचन, प्रतिज्ञा । **–संहित**–वि० वादेका पक्का । **–साक्षी(क्षिन्)**–पु० विश्वस्त गवाह । **–सार**–वि० पूर्णतः सत्य । **–स्थ**–वि० अपने वचनपर टिकनेवाला । **–स्वप्न**–वि० जिसके स्वप्न सत्य होते हों ।

सत्यक–वि० (सं०) दे० 'सत्य' । पु० मनु रैवतका एक पुत्र; कृष्णका भद्रासे उत्पन्न एक पुत्र; सौदेका इकरार ।

सत्यतः(तस्)–अ० सचमुच, दरअसल, वस्तुतः ।

सत्यता–स्त्री० (सं०) सचाई, वास्तविकता; नित्यता ।

सत्यवती–स्त्री० (सं०) पराशरकी पत्नी और व्यासकी माता मत्स्यगंधा; नारदकी पत्नी; ऋचीककी पत्नी, एक नदी । – **–सुत**–पु० व्यास ।

सत्यवान्(वत्)–वि० (सं०) सत्यसे युक्त, सच्चा । पु० एक अस्त्र-मंत्र; मनु रैवतका एक पुत्र; मनु चाक्षुषका एक पुत्र; सावित्रीके पति ।

सत्या–स्त्री० (सं०) सच्चाई; एक शक्ति; सीता; व्यासजननी, सत्यवती; सत्यभामा; धर्मकी एक कन्या ।

सत्याकृति–स्त्री० (सं०) सौदेका इकरार करना; पेशगी देना ।

सत्याग्नि–पु० (सं०) अगस्त्य ऋषि ।

सत्याग्रह–पु० (सं०) सत्यके लिए आग्रह (सत्य पक्षके लिए कष्ट आदि झेलते हुए लक्ष्यकी प्राप्तिका उद्योग करना) (पैसिव रेज़िस्टेंस) ।

सत्याग्रही(हिन्)–वि० (सं०) उद्देश्य-पूर्तिके लिए सत्याग्रहका सहारा लेनेवाला ।

सत्यात्मक–वि० (सं०) सत्य जिसका सार हो ।

सत्यात्मज–पु० (सं०) सत्या या सत्यभामाका पुत्र ।

सत्यात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) सत्यपरायण । पु० सत्यवादी व्यक्ति ।

सत्यानास–पु० सर्वनाश, वरवादी ।

सत्यानासी–वि० सत्यानास, सर्वनाश करनेवाला; अभागा, भाग्यहीन । स्त्री० भड़भाँड़, घमोय ।

सत्यानुरक्त–वि० (सं०) सत्यवादी, सत्यभक्त ।

सत्यानृत–वि० (सं०) जिसमें सच और झूठका मेल हो; जो ऊपरसे सत्य जान पड़े, पर असलमें झूठा हो । पु० सच और झूठ; व्यापार ।

सत्यान्वेष–पु० सत्यकी खोज ।

सत्यापन–पु० (सं०) सत्यकी जाँच-पड़ताल; सत्य-भाषण या सत्यका पालन; सौदेका इकरार; (वेरिफिकेशन) जाँच-पड़तालके बाद किसी बातकी सत्यता स्थापित करना; प्रमाणादि देकर किसी कथनकी सत्यता दिखाना ।

सत्यापना–स्त्री० (सं०) सौदेका इकरार ।

सत्याभिधान–वि० (सं०) सत्यभाषी ।

सत्यालापी(पिन्)–वि० (सं०) सत्यवादी ।

सत्याषाढी–स्त्री० (सं०) कृष्ण यजुर्वेदकी एक शाखा ।

सत्येतर–पु० (सं०) वह जो सत्यसे भिन्न हो, असत्यता ।

सत्योत्तर–पु० (सं०) सच्ची वातकी स्वीकृति; इकवाल, अपराध स्वीकार करना ।

सत्योद्य–वि० (सं०) सत्यवादी ।

सत्योपपावन–पु० (सं०) एक फलदार पेड़ ।

सत्र–पु० दे० 'सत्त्र' । **–न्यायालय**–पु० (सेशनकोर्ट) जूरी आदिकी सहायतासे हत्या आदि अभियोगोंपर विचार करनेवाली अदालत ।

सत्रप–वि० (सं०) लज्जाशील, संकोची; विनम्र ।

सत्रह–वि०, पु० दे० 'सत्तरह' ।

सत्रहीँ–स्त्री० मृत्युके बाद १७वें दिनका कृत्य ।

सत्राजित–पु० (सं०) सत्यभामाका पिता ।

सत्राजिती–स्त्री० (सं०) सत्राजितकी पुत्री, सत्यभामा ।

सत्राजित्–पु० (सं०) सत्यभामाका पिता; एक एकाह ।

सत्रावसान–पु० (प्रोरोगेशन) विधानसभा आदिका पूर्णतः भंग या उत्सर्जन किये बिना अनिश्चित कालके लिए प्रायः अगले सत्रतकके लिए, स्थगित कर दिया जाना ।

सत्रु*–पु० दे० 'शत्रु' । **–घन,–हन**–पु० दे० 'शत्रुघ्न' ।

सत्व–पु० दे० 'सत्त्व' ।

सत्वर–वि० (सं०) तेज, फुर्तीला । अ० शीघ्र, फौरन ।

सथर*–पु० स्थल, भूमि, पृथ्वी ।

सथरी|–स्त्री० दे० 'साथरी' ।

सथिया*–पु० दीवार, कलश आदिपर अंकित किया जानेवाला एक मांगलिक चिह्न, स्वस्तिक (卐) ।

सथूत्कार–वि० (सं०) जिसके मुँहसे बोलते समय थूक निकले । पु० वातके साथ थूक निकलना ।

सदंजन–पु० (सं०) एक अंजन जो पीतलके भस्मसे तैयार किया जाता है, कुसुमांजन ।

सदंभ–वि० (सं०) अच्छे जलवाला (सद्+अंभ); दंभी, घमंडी (स+दंभ) ।

सदंश–वि० (सं०) तेज चोंचवाला । पु० केकड़ा । **–वदन**–पु० वगलेका एक भेद, कंक पक्षी ।

सदंशक–पु० (सं०) केकड़ा ।

सद–पु० (सं०) वृक्षका फल; एक एकाह; धृतराष्ट्रका एक पुत्र । * स्त्री० आदत, टेव । * अ० सद्यः, तुरंत । * वि० ताजा–'सद माखन साजो दधि मीठो मधुमेवा पकवान'–सूर; नया, हालका; (फ़ा०) सौ, शत; बहुत, सौ-सौ । **–आफ़रीँ**–अ० शत-शत साधुवाद, धन्य-धन्य । **–चाक**–वि० बहुत जगहसे फटा हुआ । **–चिराग़**–पु० लकड़ी या ईंटोंका खंभा जिसपर बहुत-से दीपक जलाये जाते हों । **–पा**–पु० कनखजूरा । **–पारा**–वि० शतधा विभक्त, खंड-खंड । **–बार**–स्त्री० सौ बार । **–यक**–वि० एक प्रतिशत । **–वर्ग**–पु० गेंदेका फूल । **–शुक्र,–शुक्रिया**–ईश्वरको बहुत-बहुत धन्यवाद है । **–साल**–पु० सौ साल, शती । **–साला**–वि० सौ सालका । **–हा**–वि० सैकड़ों, कई सौ ।

सद(स्)–पु० (सं०) निवास-स्थान; सभा ।

सदई*–अ० दे० 'सदा' ।

सदक–पु० दे० 'सदक़ा'; (सं०) पूर्णान्न, वह अन्न जिसकी भूसी न निकाली गयी हो ।

सदक़ा–पु० (अ०) वह चीज जो खुदाके नामपर फकीरोंको दी जाय, खैरात; वह चीज जो किसीपर वारकर दान की जाय या चौराहेपर रख दी जाय; अनुग्रह, प्रसाद (यह सब......का सदका है) । **–(क़े)का**–सदका किया हुआ, वारा हुआ (...का कौआ, चिराग, बुलबुल इ०) । **–का कौआ**–वह कौआ जो किसीपर वारकर छोड़ दिया जाय; (ला०) काला-कलूटा आदमी । **–का गुड्डा**–दे० 'सदक़ेका पुतला' । **–का चौराहा**–वह चौराहा जहाँ सदकेकी चीजें रखी जायँ । **–का पुतला**–वह पुतला जो सदकेकी चीजोंके साथ चौराहेपर रख दिया जाता है । **–की गुड़िया**–सदकेका पुतला; (ला०) कुरूप स्त्री जिसकी कुरूपता शृंगारसे भी न जाय । **–में**–प्रसाद, अनुग्रहसे; सदका करके, वारकर (सदकेमें छोड़ना) । मु० **–(क़े) उतारना**–कोई चीज किसीके सिरके चारों ओर घुमाकर किसीको देना या चौराहेपर रख आना । **–करना**–निछावर करना, वारना; (स्त्री०) चूल्हेमें डालना ('उन हाथोंके सदके करूँ जो मेरे बच्चेपर चलें') । **–जाना**–वारी जाना, निछावर होना । **–में छोड़ना**–वारकर छोड़ना (किसी चिड़ियाको) । **–होना**–निछावर होना, वारी जाना ।

सदक्ष–वि० (सं०) विवेकशील ।

सदक्षिण–वि० (सं०) जिसे भेंट दी गयी हो; दक्षिणायुक्त ।

सदन–पु० (सं०) निवासस्थान, घर, मकान; क्षीण होना; क्लांत होना, शिथिल होना; जल; यज्ञभवन; यमका निवासस्थान; बैठना, आसन; एक भक्त कसाई; (हाउस) वह भवन या स्थान जहाँ किसी विधानसभा या संसद्का अधिवेशन हो; उक्त स्थानमें होनेवाली सभा या उसमें उपस्थित सदस्योंका समूह । **–त्याग**–पु० (वाक आउट) दे० 'सभात्याग' । **–नेता**–पु० (लीडर ऑफ़ दि हाउस) संसद या विधानसभाका निर्वाचित नेता, प्रायः प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री ।

सदना†–अ० क्रि० रसना; नावके छेदोंसे पानी आना ।

सदनि–पु० (सं०) जल ।

सदनुग्रह–पु० (सं०) अच्छे लोगोंपर कृपा करना ।

सदफ़–स्त्री० (अ०) सीपी । **–ए-सादिक**– स्त्री० सच्चा मोती ।

सदमा–पु० (अ०) धक्का, आघात; चोट; दिलपर लगनेवाली चोट, दुःख, शोकका आघात; हानि, नुकसान । **मु० –उठाना**–दुःख, हृदयपर हुए आघातको सह लेना । **–पहुँचना**–चोट लगना; नुकसान पहुँचना ।

सदय–वि० (सं०) दयालु, रहमदिल । **–हृदय**–वि० रहमदिल, कोमलचित्त ।

सदर–वि० (सं०) डरा हुआ । पु० एक असुर ।

सदर–पु० दे० 'सद्र' । **–अमीन**–पु० वह अधिकारी जो जजके मातहत हो । **–आला**–पु० मातहत जज, 'सबजज' । **–जहाँ**–पु० मुसलमान स्त्रियोंका माना हुआ एक जिन । **–दीवान**–पु० शाही खजानेका प्रधान अधिकारी । **–दीवानी-अदालत**–स्त्री० हाईकोर्ट । **–बाज़ार**–पु० छावनीका बड़ा बाजार । **–बोर्ड**–पु० मालका सर्वोच्च विभाग । **–मालगुजार**–पु० वह आदमी जो सीधे सरकारको मालगुजारी अदा करे । **–मुदर्रिस**–पु० प्रधानाध्यापक । (रे)**–मुशाअरा**–पु० कवि-सम्मेलनका अध्यक्ष ।

सदरी–स्त्री० (अ०) बिना आस्तीनकी मिरजई, फतुही । वि० सीनेका, छातीका; सीनेमें छिपा हुआ ।

सदर्थ–पु० (सं०) असल, साध्य, मुख्य विषय, प्रकरण । वि० धनी, मालदार ।

सदर्थना*–स० क्रि० समर्थन, पुष्टि करना ।

सदर्प–वि० (सं०) घमंडी । अ० दर्प-पूर्वक ।

सदश–वि० (सं०) किनारीदार ।

सदसत्–वि० (सं०) यथार्थ और अयथार्थ; भला और बुरा । पु० वह जिसका अस्तित्व हो और वह जिसका न हो; सच्ची और झूठी बात, सचाई-झुठाई; अच्छाई-बुराई ।

सदसद्विवेक–पु० (सं०) भले-बुरेकी पहचान ।

सदसि–अ० (सं०) सभामें । * पु० गृह; सभा ।

सदस्य–पु० (सं०) विधिदर्शी, यज्ञका विधान देखनेवाला; किसी सभा, समाजसे संबंध रखनेवाला व्यक्ति, सभ्य, सभासद; पंच ।

सदस्यता–स्त्री० (सं०) सदस्य होनेकी स्थिति या भाव ।

सदा–अ० (सं०) नित्य, हमेशा; निरंतर । **–कांता**–स्त्री० एक नदी । **–कारी(रिन्)**–वि० जो हमेशा सक्रिय रहे; दे० क्रममें । **–कालवह**–वि० हमेशा प्रवाहित रहनेवाला । **–कुसुम**–पु० धातकी । **–गति**–वि० जो हमेशा गतियुक्त रहे । पु० वायु; सूर्य; ब्रह्मा; निर्वाण मोक्ष । **–०शत्रु**–पु० एरंड । **–तोया**–स्त्री० एलापर्णी; करतोया नदी; वह नदी जिसमें बराबर जल या धारा रहे । **–दान**–पु० दान बहानेवाला हाथी; ऐरावत; गणेश; दानशीलता । वि० हमेशा दान देनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) । **–नर्त**–वि० हमेशा नाचनेवाला । पु० खंजन पक्षी । **–निरामया**–स्त्री० एक नदी । **–नीरवहा,–नीरा**–स्त्री० करतोया नदी; वह नदी जिसमें बराबर जल या धारा रहे । **–परिभूत**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–पर्ण**–वि० जिसमें हमेशा पत्तियाँ रहें । **–पुष्प**–वि० हमेशा फूलनेवाला । पु० नारियल; कुंद; मदार । **–पुष्पी**–स्त्री० रक्तार्क; कपास; एक तरहकी चमेली । **–प्रमुदित**–पु० आठ सिद्धियोंमेंसे एक (सां०) । **–प्रसून**–वि० हमेशा फूलनेवाला । पु० कुंद; रोहितक; मदार । **–फर†**–वि० दे० 'सदाफल' । **–फल**–वि० हमेशा फलनेवाला । पु० बेल; कटहल; नारियल; गूलर; एक नीबू । **–फला,–फली**–स्त्री० जपाकुसुम; एक तरहका बैंगन । **–बरत**–पु० (हिं०) दे० 'सदावर्त' । **–बहार**–पु० (हिं०) एक फूल या उसका पेड़ जो हर ऋतुमें फूलता है । वि० हमेशा फूलनेवाला; जिसमें हमेशा पत्तियाँ रहें । **–भद्रा**–स्त्री० गंभारी वृक्ष । –**–भव**–वि० निरंतर, अविच्छिन्न । **–भव्य**–वि० जो हमेशा विद्यमान हो; सावधान । **–भ्रम**–वि० हमेशा भ्रमण करनेवाला । **–मंडल,–पत्रक**–पु० श्वेत पुनर्नवा । **–मत्त**–वि० हमेशा मौजमें, मतवाला रहनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) । **–मद**–वि० जो मारे खुशीके पागल हो गया हो; हमेशा नशेमें रहनेवाला; हमेशा घमंड आदिमें चूर रहनेवाला; हमेशा दान बहानेवाला (हाथी) । पु० गणेश । **–मुदित**–पु० एक सिद्धि । **–योगी(गिन्)**–वि० हमेशा योगाभ्यास करनेवाला । पु० विष्णु । **–रुह**–पु० बेल । **–वरदायक**–पु० समाधिका एक भेद । **–वर्त**–पु० (हिं०) हमेशा अन्न बाँटनेका व्रत; ऐसा अन्न । **–वर्ती–**–वि०, पु० (हिं०) हमेशा अन्न वितरण करनेवाला दानी । **–वृद्ध**–वि० हमेशा उन्नति करनेवाला । **–शिव**–वि० जो सदा दयालु रहे; जो हमेशा प्रसन्न या उन्नतिशील रहे । पु० शिव । **–सुहागिन**–वि०, स्त्री० (हिं०) जो हमेशा सुहागिन बनी रहे । स्त्री० सिंदूरपुष्पी; एक छोटी चिड़िया; स्त्री-वेशमें रहनेवाले एक तरहके फकीर; वेश्या ।

सदा–स्त्री० (अ०) ध्वनि, आवाज; प्रतिध्वनि; आहट; फकीरके माँगनेकी आवाज; पुकार, रट । **मु० –देना,–लगाना**–फकीरका आवाज लगाना; पुकारना । **–बुलंद करना**–आवाज उठाना, नारा लगाना ।

सदाक़त–स्त्री० (अ०) सचाई; खरापन; तसदीक । **–परस्त**–वि० सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ ।

सदाकारी(रिन्)–वि० (सं०) अच्छी आकृतिवाला; दे० 'सदा'में ।

सदागम–पु० (सं०) सज्जनका आगमन; उत्तम सिद्धांत, सत् शास्त्र ।

सदाचरण–पु० (सं०) सद्व्यवहार, अच्छा चाल-चलन ।

सदाचार–पु० (सं०) अच्छा चाल-चलन, अच्छा व्यवहार, अच्छा तौर-तरीका ।

सदाचारी(रिन्)–वि० (सं०) अच्छे चाल-चलनवाला, सुकर्मी ।

सदातन–वि० (सं०) जो हमेशा जारी रहे । पु० विष्णु ।

सदात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) अच्छे स्वभावका, नेक ।

सदानंद–वि० (सं०) हमेशा आनंदमें रहनेवाला; हमेशा आनंद देनेवाला । पु० हमेशा रहनेवाला आनंद; शिव; विष्णु ।

सदाप–वि० (सं०) अच्छे जलवाला ।

सदामर्ष–वि० (सं०) अधीर; अशांत; उच्छृंखल ।

सदार–वि० (सं०) सपत्नीक ।

सदारत–स्त्री० (अ०) सद्रका पद, सभापतित्व । **– ए अंजमन**–स्त्री० किसी संस्था, समितिकी अध्यक्षता ।

सदाशय–वि० (सं०) उदाराशय, ऊँचे विचारका ।

सदाश्रित–वि० (सं०) हमेशा दूसरेके आश्रयमें रहनेवाला, परावलंबी ।

सदिया–स्त्री० भूरे रंगकी मुनियाँ ।

सदिश–पु० (वेक्टर) ऐसी राशियाँ जिनमें परिमाण और दिशा दोनों मौजूद हों, जैसे वेग, बल आदि ।

सदी–स्त्री० (फा०) सौ सालका समय, शताब्दी; सैकड़ा ।

सदीद–वि० सरल, सीधा; यथार्थ; स्थायी । पु० पीप, मवाद ।

सदुक्ति–स्त्री० (सं०) अच्छी उक्ति, अच्छे शब्द । वि० अच्छे शब्दोंसे युक्त ।

सदुपदेश–पु० (सं०) उत्तम शिक्षा; अच्छी सलाह ।

सदुपयोग–पु० (सं०) अच्छा उपयोग, अच्छे काममें लगाया जाना ।

सदूर*–पु० शार्दूल, सिंह ।

सद्दा–पु० (अ०) ईरानियोंका एक उत्सव । –(द्दे) **राह**–स्त्री० रास्तेकी रोक । –(द्दे) **सिकंदर**–स्त्री० अजेय दीवार ।

सदृक–पु० (सं०) एक मिठाई ।

सदृक्(श्)–वि० (सं०) दे० 'सदृश' ।

सदृक्ष–वि० (सं०) समान, सदृश; उसी मरतबेका; उपयुक्त, योग्य ।

सदृश–वि० (सं०) समान, एक जैसा; उचित; उपयुक्त, योग्य । **–क्षम**–वि० समान सहिष्णुतावाला । **–विनिमय**–पु० समान वस्तुकी पहचानमें भ्रम होना । **–वृत्ति**–वि० एक ही जैसी वृत्तिवाला । **–स्त्री**–स्त्री० समान जातिकी पत्नी । **–स्पंदन**–पु० नियत समयपर होनेवाली धड़कन ।

सदृशता–स्त्री० (सं०) समानता, एकरूपता ।

सदेविक–वि० (सं०) रानीके साथ ।

सदेश–वि० (सं०) देशवाला, जिसके पास देश हो; एक ही देशका; पड़ोसी। पु० पड़ोस।

सदेह–वि० (सं०) देहयुक्त। अ० शरीरके साथ, बिना शरीर छोड़े।

सदैकरस–वि० (सं०) जिसकी हमेशा एक ही इच्छा रहे; सदा एक रस रहनेवाला।

सदैव–अ० (सं०) सर्वदा, हमेशा ही।

सदोगत–वि० (सं०) सभामें गया हुआ, सभामें उपस्थित।

सदोगृह–पु० (सं०) सभाभवन; राजदरबार।

सदोष–वि० (सं०) दोषयुक्त, आपत्ति-जनक; दोषी, अपराधी; रात्रियुक्त। **–मानवहत्या**–स्त्री० (कल्पेबिल होमीसाइड) ऐसा मानववध जो दोष या अपराध माना जाय।

सदोषक–वि० (सं०) दोषयुक्त, ऐबदार।

सदोसी†–क्रि० वि०.समयसे कुछ पहले ही 'अरी सदोसी ही निकल पड़ी!'–टूटे काँटे। ('सदोसी लौटियो')।

सद्–'सत्'का समासगत रूप। **–गति**–स्त्री० अच्छी दशा; मोक्षप्राप्ति; अच्छे आदमियोंका तौरतरीका। **–गव**–पु० अच्छा साँड़। **–गुण**–वि० अच्छे गुणोंसे युक्त। पु० अच्छा गुण; सज्जनता। **–गुरु**–पु० अच्छा गुरु, धर्मगुरु। **–ग्रंथ**–पु० उत्तम ग्रंथ; सन्मार्गकी ओर प्रवृत्त करनेवाला ग्रंथ। **–ग्रह**–पु० शुभ ग्रह। वि० सत्य और ईमानदारीकी ओर प्रवृत्त। **–धन**–पु० अच्छी संपत्ति, अच्छा धन। **–धर्म**–पु० अच्छा नियम; अच्छा न्याय; बौद्ध या जैन धर्मके लिए प्रयुक्त नाम। **–धी**–वि० बुद्धिमान्। **–ध्यायी(यिन्)**–वि० सत्यका चिंतन करनेवाला। **–ब्राह्मण**–पु० सद्वृत्त या कर्त्तव्यनिष्ठ ब्राह्मण; कुलीन ब्राह्मण। **–भाग्य**–पु० अच्छा भाग्य, सौभाग्य। **–भाव**–पु० अस्तित्व, सत्ता; पदार्थादिकी वास्तविक स्थिति; नेकमिजाजी; सज्जनता; दयालुता। **–०श्री**–स्त्री० एक देवी। **–भावी**–वि० सद्भाववाला, सदाशयी (बोनाफाइडी)। **–भूत**–वि० जो वस्तुतः सत्य या अच्छा हो। **–भृत्य**–पु० अच्छा नौकर। **–युक्ति**–स्त्री० अच्छा तर्क; अच्छा उपाय। **–युवती**–स्त्री० साध्वी स्त्री। **–वंश**–पु० अच्छा बाँस; अच्छा कुल। वि० कुलीन। **–०जात**–वि० अच्छे कुलमें उत्पन्न। **–वत्सल**–वि० सज्जनोंपर अनुग्रह करनेवाला। **–वसथ**–पु० ग्राम। **–वस्तु**–स्त्री० अच्छी चीज; अच्छा काम; अच्छा कथानक। **–वाजी(जिन्)**–पु० अच्छा घोड़ा। **–वादी(दिन्)**–वि० सत्यवादी। **–वार्त्ता**–स्त्री० अच्छी वार्ता; अच्छा समाचार। **–विगर्हित**–वि० सज्जनों द्वारा निंदित। **–विद्य**–वि० बहुश्रुत। **–वृत्त**–पु० सुंदर वर्तुलाकार आकृति; सदाचार। वि० सदाचारयुक्त; अच्छे छंदोंवाला। **–वृत्ति**–स्त्री० सद्व्यवहार, सदाचार।

सद्द*–अ० शीघ्र, तुरंत। † वि० ताजा, टटका (सद्द पानी)। * पु० शब्द, ध्वनि; (फा०) रोकना। स्त्री० रोक; दीवार। **–(द्दे) राह**–वि० रोक, प्रतिबंध लगनेवाला (बनाना, होना)। **–(द्दे) रोई**,**–सिकंदर**–स्त्री० काँसेकी दीवार जो कहा जाता है कि सिकंदरने तातार और चीनके बीच, उत्तरकी असभ्य जातियोंका हमला रोकनेके लिए, बनवायी थी; (ला०) अति दृढ़ और टिकाऊ वस्तु।

सद्म(न्)–पु० (सं०) मकान, निवास-स्थान; ठहरनेका स्थान; वेधशाला; देवालय; वेदी; आसन; युद्ध, संघर्ष; जल; पृथ्वी और आकाश।

सद्मा(द्मन्)–वि० (सं०) रहनेवाला, बसनेवाला।

सद्मिनी–स्त्री० (सं०) हवेली, महल।

सद्यः(द्यस्)–अ० (सं०) आज ही; उसी दिन; तत्क्षण, फौरन; तेजीसे; हालमें ही, कुछ ही काल पूर्व, अभी-अभी। **–(द्यः) कृत**–वि० जो तुरंत, उसी समय किया गया हो। **–कृत्त**–वि० जो तुरंत काटा गया हो। **–कृत्तोत**–वि० जो उसी दिन काता और बुना गया हो। **–क्रीत**–वि० उसी दिन खरीदा हुआ। पु० एक एकाह। **–क्षत**–पु० ताजा घाव। **–पर्युषित**–वि० एक दिन पहलेका। **–पाक**–वि० जिसका फल तुरंत देख पड़े। **–पाती(तिन्)**–वि० जल्द गिरनेवाला। **–प्रक्षालक**–पु० वह व्यक्ति जो तुरंत काममें लानेके लिए अन्नकी सफाई करे, जमा न कर सके। **–प्रज्ञाकर**–वि० तुरंत समझ पैदा करनेवाला। **–प्रसूता**–स्त्री० वह (स्त्री) जिसने अभी-अभी प्रसव किया है। **–प्राणकर**–वि० तुरंत शक्ति बढ़ानेवाला। **–प्राणहर**–वि० तुरंत शक्तिका नाश करनेवाला। **–फल**–वि० जिसका फल तुरंत देख पड़े। **–शक्तिकर**–वि० जल्द ताकत बढ़ानेवाला। **–शुद्धि**–स्त्री०,**–शौच**–पु० तुरंत की जानेवाली शुद्धि। **–शोथ**–वि० जल्द सूजन पैदा करनेवाला। **–शोथा**–स्त्री० केवाँच। **–श्राद्धी(द्धिन्)**–वि० जिसने अभी-अभी श्राद्ध किया है। **–स्नात**–वि० तुरंतका नहाया हुआ। **–स्नेहन**–पु० जल्द स्निग्ध करना।

सद्य–अ० दे० 'सद्यः'। पु० (सं०) शिवका एक रूप।

सद्यश्छिन्न–वि० (सं०) तुरंतका काटा या काटकर अलग किया हुआ।

सद्यस्क–वि० (सं०) वर्तमान कालका, उसी समयका; नया, ताजा; अत्यन्त आवश्यक (अर्जेण्ट)।

सद्यस्तन–वि० (सं०) ताजा, नया; उसी समयका।

सद्योजात–वि० (सं०) जो अभी उत्पन्न हुआ हो। पु० शिवका एक रूप; हालका उत्पन्न बछड़ा।

सद्योजाता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे हालमें ही बच्चा पैदा हुआ हो।

सद्योबल–वि० (सं०) तुरंत बल बढ़ानेवाला। **–कर**–वि० शीघ्र शक्ति बढ़ानेवाला।

सद्योभावी(विन्)–वि० (सं०) हालका उत्पन्न। पु० हालका पैदा हुआ बछड़ा।

सद्योमन्यु–वि० (सं०) शीघ्र क्रोध उत्पन्न करनेवाला।

सद्योमृत–वि० (सं०) जो अभी मरा हो।

सद्योव्रण–पु० (सं०) ताजा घाव।

सद्योहत–वि० (सं०) जो अभी आहत या हत हुआ हो।

सद्र–पु० (अ०) छाती, सीना; सर्वोच्च स्थान; शीर्षभाग; उच्चपदस्थ जनके बैठनेका स्थान; प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान; सदर मुकाम; सभापति; मकानका सहन; सामनेका रुख। अ० ऊपर (मुंदरजा सद्र)। **–अदालत**–स्त्री० सर्वोच्च न्यायालय। **–(द्रे)आज़म**–पु० वजीरे आजम, प्रधान मंत्री; प्रधान जज। **–आला**–पु० दे० 'सदर-आला'। **–नशीन**–वि० गद्दीपर बैठनेवाला। पु० सभापति। **–मजलिस**–पु० सभापति, मीर मजलिस। **–मुक़ाम**–पु० राजधानी; विभागविशेषके प्रधान अधिकारीके रहनेका स्थान।

सद्रव्य–वि० (सं०) द्रव्ययुक्त; सुनहला।

सद्रि–पु० (सं०) हाथी; पर्वत; भेड़ा।

सद्री–स्त्री० दे० 'सदरी'।

सद्रु–वि० (सं०) बैठने या आराम करनेवाला; जानेवाला।

सद्वंद्व–वि० (सं०) झगड़ालू; मुकदमेबाज।

सद्वती–स्त्री० (सं०) पुलस्त्यकी एक कन्या और अग्निकी पत्नी।

सधन–वि० (सं०) धनी; धनयुक्त। पु० सम्मिलित धन, सामान्य धन।

सधना–अ० क्रि० काम पूरा होना, कार्य सिद्ध होना; सँभलना; अपने अनुकूल होना; घोड़ों आदिका सीखकर कामके लायक होना, निकलना; अभ्यस्त होना; साधा जाना, नापा जाना; निशाना ठीक होना; † खर्च या समाप्त हो जाना ।

सधर*–पु० ऊपरी ओठ।

सधर्म–वि० (सं०) एक ही धर्म या स्वभाववाला; एक ही नियमके अंदर आनेवाला, समान, सदृश; पुण्यात्मा, सच्चा; एक ही जैसे कर्तव्योंवाला; एक ही (समान) संप्रदाय या जातिका। पु० एक ही (समान) गुण या स्वभाव। **–चारिणी**–स्त्री० पत्नी।

सधर्मक–वि० (सं०) दे० 'सधर्म'।

सधर्मा(मन्)–पु० (सं०) समान धर्मयुक्त।

सधर्मिणी–स्त्री० (सं०) पत्नी, भार्या।

सधर्मी(र्मिन्)–वि० (सं०) समान धर्मका अनुयायी।

सधवा–स्त्री० (सं०) सुहागिन, सौभाग्यवती।

सधाना–स० क्रि० साधनेके काममें दूसरेको प्रवृत्त करना।

सधावर–पु० सातवें महीनेमें गर्भवती स्त्रीको दिया जानेवाला उपहार।

सधि–पु० (सं०) अग्नि।

सधि(स्)–पु० (सं०) वृषभ, वैल।

सधूम–वि० (सं०) धुएँसे भरा या ढका हुआ। **–वर्णा**–स्त्री० अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

सधूमक–वि० (सं०) धुआँदार।

सधूम्र–वि० (सं०) कृष्ण-वर्णका। **–वर्णा**–स्त्री० दे० 'सधूमवर्णा'।

सधोर, सधौर†–पु० दे० 'सधावर'।

सध्रीची–स्त्री० (सं०) सखी, सहेली।

सध्रीचीन–वि० (सं०) साथ रहनेवाला; समान उद्देश्यवाला।

सध्वंस–पु० (सं०) काण्व ऋषि।

सनंक†–पु० सन्नाटा।

सनंद–पु० (सं०) दे० 'सनंदन'।

सनंदन–पु० (सं०) ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक।

सन–वि० स्तब्ध। * प्र० करणकारककी विभक्ति। पु० एक पौधा जिसकी छालके रेशोंसे रस्सी आदि बनाते हैं; दे० 'सन्'; (सं०) ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक; लाभ, प्राप्ति; आहार; हाथीका कान फटफटाना; घंटापाटलि वृक्ष। **–पर्णी**–स्त्री० असनपर्णी।

सन–स्त्री० किसी चीजके हवामें तेजीसे चलनेसे उत्पन्न शब्द। **–सन**–स्त्री० हवाकी आवाज, सनसनाहट; किसी चीजके हवामें चलनेकी लगातार आवाज; तलवार चलनेकी आवाज।

सनअत–स्त्री० (अ०) कारीगरी; हुनर; पेशा; अलंकार (सा०)। **–गर**–पु० कारीगर; पेशावर।

सनई–स्त्री० सनका एक भेद।

सनक–पु० (सं०) ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक। स्त्री० (हिं०) धुन, झोंक; खब्त, दीवानगी, पागलपन। मु० **–आना**–पागल होना। **–चढ़ना,–सवार होना**–धुन सवार होना। **–लेना**–पागलपनका कोई काम करना।

सनकना–अ० क्रि० उन्मत्त, पागल, झक्की होना।

सनकाना–स० क्रि० किसीको पागल बनाना।

सनकारना*–स० क्रि० इशारा करना; इशारेसे बुलाना–'सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ'–रामा०; किसी कामके लिए संकेत करना।

सनकियाना–स० क्रि० संकेत करना; पागल बनाना। अ० क्रि० पागल होना।

सनत–पु० व्यापार, वाणिज्य।

सनती–वि० व्यापारसंबंधी (–मामलोंके वजीर)।

सनत्–पु० (सं०) ब्रह्मा। **–कुमार**–पु० ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक; जैनोंके बारह चक्रवर्तियोंमेंसे एक; यौवनकी-सी अवस्था बनाये रखनेवाला कोई संत; तीसरा स्वर्ग (जै०)। **–०ज**–पु० एक देववर्ग (जै०)। **–सुजात**–पु० ब्रह्माके सात मानस पुत्रोंमेंसे एक।

सनत्ता–पु० रेशमके कीड़े पालनेका पेड़।

सनद–स्त्री० (अ०) वह जिसपर पीठ टेकी जाय, तकियागाह; प्रमाण; प्रमाणपत्र, सर्टिफिकेट; अनुमति-पत्र; तमस्सुक, किवाला; काजी या मुफ्तीकी मुहर। वि० प्रामाणिक; प्रमाण-रूप; भरोसा करने योग्य। **–याफ्ता**–वि० जिसके पास सनद या प्रमाणपत्र हो। **–ए फ़जीलत**–स्त्री० किसी विषयमें पारंगत होनेकी उपाधि। **–ए-मुआफ़ी**–स्त्री० मुआफ़ी ज़मीनका प्रमाणपत्र। **–ए विरासत**–उत्तराधिकारी होनेका प्रमाणपत्र। मु० **–गरदानना**–भरोसा करना, प्रमाणमें सामने रखना। **–जानना**–सही, प्रामाणिक मानना।

सनदी–वि० प्रामाणिक; सनदयाफ्ता। * स्त्री० हाल, वृत्तांत।

सनना–अ० क्रि० जलके योगसे चूर्णादिका एकमें मिलना; लथपथ होना; लिप्त होना, पगना।

सननी–स्त्री० पानीमें साना हुआ भूसा, सानी।

सनम–पु० (अ०) बुत, मूर्ति; (ला०) प्रेमपात्र, माशूक। **–कदा, –खाना**–पु० मंदिर, बुतखाना। **–परस्त**–वि० मूर्तिपूजक।

सनमान*–पु० दे० 'सम्मान'।

सनमानना*–स० क्रि० आदर, सत्कार करना।

सनमुख*–अ० दे० 'सम्मुख'।

सनसनाना–अ० क्रि० गतिशील पदार्थमें हवा लगने, हवा चलने या पानी उबलने आदिसे 'सन-सन' शब्द उत्पन्न होना।

सनसनाहट–स्त्री० हवा चलने, कोरे घड़ेमें पानी पड़ने, जलके उबलने आदिसे उत्पन्न 'सन-सन'की आवाज।

सनसनी–स्त्री० झुनझुनी; भय, आश्चर्य आदिके कारण उत्पन्न स्तब्धता; सन्नाटा; खलबली; सनसनाहट।

सनहकी–स्त्री० मुसलमानोंके काममें आनेवाला बड़ी तश्तरी जैसा मिट्टीका एक बरतन।

सनहाना†–पु० खटाई आदिके पानीसे भरा हुआ बरतन जिसमें जूठे बरतन माँजनेके पहले डाले जाते हैं।

सना–अ० (सं०) नित्य, सर्वदा। पु० (अ०) प्रशंसा, स्तुति। **–ख़्वाँ**–वि० प्रशंसक, स्तुति करनेवाला।

सनाढ्य–पु० ब्राह्मणोंकी एक उपजाति।

सनातन–वि० (सं०) नित्य; अनादि; सुनिश्चल, स्थायी; प्राचीन; परम्परानिष्ठ (आर्थोडाक्स)। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; पितरोंका अतिथि; ब्रह्माका एक मानस पुत्र। **–धर्म**–पु० प्राचीन धर्म; परंपरागत धर्म (जो साधारण हिंदू जनतामें प्रचलित है), विभिन्न देवीदेवताओंकी पूजा-उपासना, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तर्पण आदि जिसके प्रमुख अंग हैं। **–पुरुष**–पु० विष्णु; आदि पुरुष।

सनातनतम–पु० (सं०) विष्णु।

सनातनी–वि० सनातनधर्मका अनुयायी; बहुत पुराना; परंपरासे चला आया हुआ (प्रथा इ०)। स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; दुर्गा; सरस्वती।

सनात्–अ० (सं०) नित्य, सर्वदा।

सनाथ–वि० (सं०) स्वामियुक्त, जिसका कोई रक्षक हो; जनाकीर्ण (सभा आदि);······द्वारा अधिकृत;······से युक्त; * कृतकृत्य–'जो कदापि मोहि मारिहैं तो पुनि होब सनाथ'–रामा०; सफल–'भये सखि नैन सनाथ हमारे'–सूर। मु० **–करना**–आश्रय देना।

सनाथा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, जीवद्भर्तृका।

सनाभ–पु० (सं०) सगा भाई; सगा संबंधी।

सनाभि–वि० (सं०) नाभियुक्त; समान केंद्रवाले (जैसे पहियेके आरे); सहोदर, सगा; सपिंड; समान, सदृश। पु० सगा भाई; सातवीं पीढ़ीतकका संबंधी।

सनाभ्य–पु० (सं०) एक ही वंशका सातवीं पीढ़ीतकका संबंधी।

सनामक, सनामा(मन्)–वि० (सं०) समान, एक ही नामका।

सनाय–स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं, सोनामुखी।

सनासन–अ० 'सन-सन' शब्दके साथ; तेजीसे।

सनाह–पु० कवच, बख्तर।

सनि–पु० (सं०) पूजा; दान; प्रार्थना, विनय; * दे० 'शनि'। स्त्री० प्राप्ति; दिशा।

सनिकार–वि० (सं०) अपमानजनक (जैसे दंड)।

सनिग्रह–वि० (सं०) मूठदार।

सनित*–वि० साना, मिलाया हुआ, मिश्रित; (सं०) स्वीकृत; प्राप्त, लब्ध।

सनिद्र–वि० (सं०) सोया हुआ; निद्रायुक्त।

सनियम–वि० (सं०) नियमित; जो धर्मानुष्ठान कर रहा हो।

सनिया–पु० रेशमी पटका या छोटी धोती–'सनिया पहरकर ही चौकेमें जाता था'–गुनाहोंका देवता।

सनिर्घृण–वि० (सं०) निष्ठुर, कठोर, बेरहम।

सनिर्विशेष–वि० (सं०) उदासीन।

सनिष्ठिव, सनिष्ठीव–वि० (सं०) थूक मिला हुआ। पु० वह शब्द जिसका उच्चारण करते समय थूक निकला हो।

सनी–स्त्री० (सं०) सविनय प्रार्थना; दिशा; हाथीका कान फटफटाना; कांति, दीप्ति; गौरी।

सनीचर*–पु० दे० 'शनैश्चर'।

सनीचरी–स्त्री० शनिकी दशा; शनिको पैदा होनेवाली वछिया; शनिको लगनेवाला वाजार या सट्टी। वि० शनिसंवंधी।

सनीचरहा|–वि० शनिदृष्टिवाला (आदमी); जिसके (घूरकर) देखनेसे किसीको नजर लग जाय।

सनीड, सनील–वि० (सं०) जो एक ही घोंसलेमें रहते हों; साथ रहनेवाले; संवंधी, समीपी। अ० सन्निकट। पु० सामीप्य, नैकट्य; पड़ोस।

सनेस, सनेसा*–पु० दे० 'संदेश'।

सनेह*–पु० दे० 'स्नेह'।

सनेहिया*–पु० दे० 'सनेही'।

सनेही–वि० स्नेही, प्रेमी। पु० प्रेम करनेवाला।

सनै-सनै*–अ० दे० 'शनैः-शनैः'।

सनोवर–पु० (अ०) चीड़का पेड़।

सन्–पु० (अ०) साल, संवत्। **–ईसवी**–पु० ईसाइयोंका संवत् जो ईसाके जन्मदिनसे चला है। **–हाल**–पु० वर्तमान संवत्। **–हिजरी**–पु० मुसलमानोंका संवत् जिसका आरंभ मुहम्मदके मक्केसे हिजरत करनेकी तिथिसे हुआ है। **–(ने) जुलूस**–पु० किसी राजाके राज्याभिषेककी तिथिसे चलनेवाला संवत्। **–(ने)-वफ़ात**–पु० मरनेका साल।

सन्अत–स्त्री० (अ०) कला; शिल्पकारी; अलंकार। **–गर**–वि० शिल्पी; कारीगर। **–गाह**–स्त्री० उद्योगशाला।

सन्न–वि० भय आदिसे स्तब्ध, स्तंभित; (सं०) सिकुड़ा हुआ; मंद; गतिहीन; निःशक्त; वैठा हुआ; क्षीण; नष्ट; विषण्ण; निकटस्थ; गत, प्रस्थित। पु० पियाल वृक्ष; नाश, हानि; अल्प परिमाण। **–कंठ**–वि० जिसका गला रुँध गया हो। **–जिह्व** वि० मौन। **–धी**–वि० विषण्ण। **–शरीर**–वि० जिसका शरीर थक गया हो। **–हर्ष**–वि० खिन्न।

सन्नक–वि० (सं०) खर्व, नाटा, छोटे कदका। पु० पियाल वृक्ष। **–द्रु,–द्रुम**–पु० पियाल वृक्ष।

सन्नत–वि० (सं०) झुका हुआ, सिकुड़ा हुआ, खिन्न।

सन्नति–स्त्री० (सं०) झुकना; आदरपूर्वक प्रणाम करना; विनम्रता; एक यज्ञ; ध्वनि, शब्द; मनकी प्रवृत्ति; कृपादृष्टि; दक्षकी एक पुत्री।

सन्नद्ध–वि० (सं०) कसकर वँधा हुआ; कटिवद्ध; वख्तरवंद, युद्धके लिए तैयार, व्याप्त; ···से संपन्न, युक्त; घातक; संलग्न; आसन्नवर्ती; विकासोन्मुख; मोहक।

सन्नय–पु० (सं०) समूह, राशि; परिमाण; तादाद; पृष्ठभाग; सेनाका पृष्ठभाग।

सन्नयन–पु० (सं०) पास लाना; संवद्ध करना।

सन्नहन–पु० (सं०) तैयार होना, सन्नद्ध होना; युद्धके लिए प्रस्तुत होना; तैयारी करना; कसकर वाँधना; उद्योग, प्रयास करना।

सन्नाअ–वि० (अ०) शिल्पी; कारीगर।

सन्नाटा–पु० निस्तब्धता, नीरवता; निर्जनता; स्तब्धता, चुप्पी; हवा चलनेका शब्द; सनसनाहट। वि० निर्जन; नीरव। **मु० –खींचना,–मारना**–विलकुल चुप हो जाना। **–वीतना**–उदासीमें वक्त कटना। **–(टे)का**–सनसन आवाजके साथ वहनेवाला। **–के साथ,–से**–तेजीसे। **–में आना**–स्तंभित हो जाना, चुप रह जाना।

सन्नाम(न्)–पु० (सं०) सुंदर नाम।

सन्नाह–पु० (सं०) हथियारसे लैस होना, युद्धके लिए तैयार होना; युद्ध जैसी तैयारी; कवच; उद्योग, प्रयत्न।

सन्नाह्य–पु० (सं०) युद्धका हाथी।

सन्नि–स्त्री० (सं०) उदासी, विषण्णता; नैराश्य।

सन्निकट–अ० (सं०) पास, नजदीक।

सन्निकर्ष–पु० (सं०) निकट लाना; सामीप्य; उपस्थिति; संबंध; इंद्रियका विषयसे संवंध (न्या०)।

सन्निकर्षण–पु० (सं०) दे० 'सन्निकर्ष'।

सन्निकाश–वि० (सं०)···जैसे रूपवाला, मिलता-जुलता, समान।

सन्निकीर्ण–वि० (सं०) पूरा-पूरा फैला हुआ।

सन्निकृष्ट–वि० (सं०) पास लाया हुआ; निकट, पासका। पु० सामीप्य।

सन्निक्षेप्ता(प्तृ)–पु० (सं०) संघ या श्रेणीका कोषाध्यक्ष।

सन्निचय–पु० (सं०) राशि करना, ढेर लगाना; भंडार; रसद।

सन्नितास–पु० (सं०) एक ताल (संगीत)।

सन्निध–पु० (सं०) सान्निध्य, सामीप्य।

सन्निधाता(तृ)–पु० (सं०) पास लानेवाला; जमा करनेवाला; चोरीका माल लेनेवाला; अदालतमें लोगोंको ले जानेवाला अफसर; पास रखनेवाला।

सन्निधान–पु०, **सन्निधि**–स्त्री० (सं०) साथ, पास रखना; सामीप्य; गोचरता; आधार; अपने पास रखना; योग; जमा करना; इंद्रिय विषय।

सन्निपात–पु० (सं०) गिरना; उतरना; मिलना, संगम; टक्कर, भिड़ंत; कई घटनाओंका एक साथ घटित होना; कई वस्तुओंका एक साथ आना या मिल जाना (गुण सन्निपात); मेल, योग; समूह, राशि; पहुँच; वात, पित्त और कफजन्य ज्वर जो भीषण होता है; एक ताल (संगीत)।

सन्निवंध–पु० (सं०) दृढ़तापूर्वक वाँधना; संवंध, संग, लगाव; प्रभावकारिता।

सन्निवद्ध–वि० (सं०) दृढ़तापूर्वक वँधा हुआ; संवद्ध, संलग्न; अवलंवित; आवृत; अटका या फँसा हुआ।

सन्निभ–वि० (सं०) समान, सदृश।

सन्निभृत–वि० (सं०) पूर्णतः गुप्त रखा हुआ; छिपाया हुआ; चतुर; शिष्ट।

सन्निमग्न–वि० (सं०) पूरे तौरसे डूवा हुआ; सुप्त।

सन्निमित्त–पु० (सं०) अच्छा कारण; अच्छे लोगोंका हित; शुभ शकुन।

सन्नियंता(तृ)–वि०, पु० (सं०) शासन, नियंत्रण करनेवाला, डाँटने-डपटनेवाला।

सन्नियोग–पु० (सं०) संवंध; संयोग; आसक्ति; नियुक्ति; आदेश।

सन्निरुद्ध–वि० (सं०) रोका हुआ; दवाया हुआ; इकट्ठा किया हुआ, एक जगह बटोरा हुआ (जैसे अग्नि); भरा हुआ। **–गुद**–पु० कोष्ठवद्धता।

सन्निरोध–पु० (सं०) रोक, वाधा; दमन; कैद; तंगी, संकीर्णता; संकीर्ण मार्ग।

सन्निवास–पु० (सं०) साथ रहना; वसना; घोंसला।

सन्निविष्ट–वि० (सं०) साथ वैठा हुआ; एकत्रीभूत; लीन; समाया हुआ, प्रविष्ट; वीचमें जोड़ा हुआ, वढ़ाया हुआ (इंसर्टेड); आसन्नवर्ती, निकटस्थ; जिसने पड़ाव डाला हो। **–करना**–स० क्रि० (टु इनसर्ट) हटाये हुए शब्द, शब्दसमूह आदिके स्थानमें अन्य शब्द, शब्दसमूह आदि रखना या वैठाना।

सन्निवृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; रुका हुआ; हटा हुआ।

सन्निवृत्ति–स्त्री० (सं०) लौटना; हटना; रुकना; रोकथाम।

सन्निवेश–पु० (सं०) प्रवेश करना; साथ वैठना; एकत्र होना; आसन; वैठने, रहनेका स्थान; आधार; समूह, मंडली; संयोग; सामीप्य; रूप, आकृति; कुटीर, वासस्थान; उचित स्थानपर वैठाना; रखना, जमाना; नगर आदिके पासका वह मैदान जहाँ मनोरंजन, व्यायाम आदिके लिए लोग एकत्र होते हैं; छाप; रचना, निर्माण।

सन्निवेशन–पुनं (सं०) वैठाना; रखना; जमाना; जड़ना; मूर्ति स्थापित करना; वासस्थान; व्यवस्था।

सन्निवेशित–वि० (सं०) प्रविष्ट कराया हुआ; वैठाया, जमाया हुआ; ठहराया हुआ; सौंपा हुआ; स्थापित किया हुआ।

सन्निसर्ग–पु० (सं०) अच्छा स्वभाव, उदाराशयता।

सन्निहित–वि० (सं०) पास या साथमें रखा हुआ; निकटस्थ, आसन्न; उपस्थित; रखा, जमाया हुआ, ठहराया हुआ; उद्यत, तैयार; ठहरा हुआ, स्थित। पु० सामीप्य; एक विशेष अग्नि।

सन्नी–स्त्री० सनकी जातिका एक पौधा; सनसे बुना हुआ कपड़ा। वि० सन या पटसनसे बना; सनसे सम्वद्ध।

सन्नोदन–पु० (सं०) पशुओं आदिको भगाना, हाँकना; प्रेरित करना।

सन्न्यसन–पु० (सं०) त्याग; अलग करना; सांसारिक विषयोंका त्याग; जमा करना, सौंपना; रखना, धरना।

सन्न्यस्त–वि० (सं०) अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ; विरक्त; रखा हुआ; जमा किया हुआ; सौंपा हुआ; ठहराया हुआ।

सन्न्यास–पु० (सं०) छोड़ना, परित्याग; विरक्ति; हिंदुओंका चतुर्थाश्रम; धरोहर; पण, दाँव, बाजी; शरीरत्याग, मृत्यु; जटामासी; शर्त; एक तरहका मूर्च्छारोग। **–ग्रहण**–पु० चतुर्थाश्रममें प्रवेश करना। **–पल्ली**–स्त्री० सन्न्यासीकी कुटिया।

सन्न्यासी(सिन्)–वि० (सं०) त्याग करनेवाला; पृथक् करनेवाला; भोजनका त्याग करनेवाला, त्यक्ताहार। पु० चतुर्थाश्रममें प्रविष्ट ब्राह्मण; किसीके पास जमा करनेवाला।

सन्मंगल–पु० (सं०) अच्छा और शुभ कृत्य।

सन्मणि–पु० (सं०) विशुद्ध रत्न।

सन्मति–स्त्री० (सं०) अच्छी मति, सद्विचार, सुबुद्धि।

सन्मात्र–वि० (सं०) जिसका अस्तित्व माना भर जाय। पु० आत्मा।

सन्मान–पु० दे० 'सम्मान'; (सं०) सज्जनोंका आदर-सत्कार।

सन्मानना*–स० क्रि० दे० 'सनमानना'।

सन्मार्ग–पु० (सं०) सुमार्ग, सुपथ। **–योधी(धिन्)**–वि० धर्मपूर्वक युद्ध करनेवाला। **–स्थ**–वि० सुमार्गपर चलनेवाला।

सन्मार्गालोकन–पु० (सं०) सुमार्गका अनुसरण।

सन्मुख–अ० दे० 'सम्मुख'।

सन्यास–पु० दे० 'सन्न्यास'।

सन्यासी–पु० दे० 'सन्न्यासी'।

सपई†–स्त्री० पेटमें होनेवाला केंचुवा; बेलेका फूल।

सपक्ष–वि० (सं०) डैनोंवाला; पंखदार (बाण); पक्षवाला, जिसका दो पक्षोंमेंसे कोई एक पक्ष हो; एक ही (समान) पक्षका; मित्रों, सहायकोंसे युक्त; एकजातीय; समान, सदृश (ला०); जिसमें साध्य या अनुमानका विषय हो। पु० मित्र, सहायक; समर्थक; सजातीय व्यक्ति; वह दृष्टांत जिसमें साध्य हो।

सपक्षक–वि० (सं०) पंखदार।

सपक्षी–वि० दे० 'सपक्ष'।

सपच्छ*–वि०, पु० दे० 'सपक्ष'।

सपटा†–पु० सफेद कचनार; एक तरहका टाट; एक तरहकी पेटारी।

सपट्टी–स्त्री० (सं०) चौखटकी पार्श्वस्थ दोनों लकड़ियाँ।

सपत*–अ० दे० 'सपदि', तुरंत।

सपताक–वि० (सं०) झंडेसे युक्त।

सपत्न–वि० (सं०) शत्रुताका भाव रखनेवाला, वैरी। पु० शत्रु, दुश्मन। **–जित्**–वि० शत्रुओंको जीतनेवाला। **–दूषण**–वि० शत्रुओंको नष्ट करनेवाला। **–नाश**–पु० शत्रुका नाश। **–बलसूदन**–वि० शत्रुका बल नष्ट करनेवाला। **–वृद्धि**–स्त्री० शत्रुओंकी वृद्धि। **–श्री**–स्त्री० शत्रुकी विजय।

सपत्नारि–पु० (सं०) एक तरहका ठोस बाँस।

सपत्नी–स्त्री० (सं०) सौत।

सतत्नीक–वि० (सं०) पत्नीके साथ।

सपत्र–वि० (सं०) पंखदार।

सपत्राकरण–पु० (सं०) बाणसे इस प्रकार आहत करना कि पंख अंदर चला जाय; बहुत अधिक कष्ट देना।

सपत्राकृत–वि० (सं०) जो इतना घायल हुआ हो कि बदनमें बाण पंखतक घुस गया हो। पु० आहत मृगादि।

सपत्राकृति–स्त्री० (सं०) बहुत अधिक कष्ट।

सपथ–स्त्री० दे० 'शपथ'।

सपदि–अ० (सं०) शीघ्र, तत्काल, तुरंत।

सपन*–पु० दे० 'स्वप्न'।

सपना–पु० दे० 'स्वप्न'। मु० **–होना**–अप्राप्य होना, मिल न सकना।

सपर–पु० (सं०) एक बड़ी संख्या।

सपरदा, सपरदाई–पु० नाचनेवाली वेश्याके साथ साज बजानेवाला; समाजी; साजिंदा।

सपरन*–वि० पत्तों सहित (रामा०)।

सपरना–अ० क्रि० पार लगना, पूरा हो सकना, हो सकना; मर जाना; तैयारी करना; † स्नान करना, नहाना (बुंदेल०)।

सपरव*–वि० गाँठों सहित (रामा०)।

सपरस–वि० स्पृश्य, छूतसे युक्त–'अपरस ठौर तहाँ सपरस जाइ कैसें'–घन०।

सपराना–स० क्रि० पूरा करना, खतम करना, पार लगाना; † नहलाना, स्नान कराना।

सपरिकर, सपरिक्रम–वि० (सं०) अनुचरोंसे युक्त, सदलबल।

सपरिच्छेद–वि० (सं०) तैयारीके साथ; दलबलके साथ।

सपरिजन–वि० (सं०) दे० 'सपरिकर'।

सपरिवार–वि० (सं०) परिवारके सदस्योंके साथ।

सपरिवाह–वि० (सं०) उपटकर बहता हुआ; ऊपरतक भरा हुआ।

सपरिव्यय–वि० (सं०) मसालेदार (बना हुआ भोजन)।

सपरिश्रम कारावास–पु० (रिगरस इंप्रिज़नमेंट) वह कारावास जिसमें बंदीसे कठिन परिश्रमके काम कराये जायँ।

सपर्ण–वि० (सं०) पत्तियोंसे युक्त।

सपर्या–स्त्री० (सं०) पूजा; सत्कार; सेवा-टहल।

सपशु–वि० (सं०) पशुओंके साथ; पशु-बलिसे संबद्ध।

सपाट–वि० चौरस, समथर, जो ऊबड़-खाबड़ न हो। **–भाषा**–अनलंकृत भाषा, जिसे नवलेखनमें गुण माना जाता है।

सपाटा–पु० तेजी, झोंक; झपट; दौड़; थप्पड़, तमाचा; छल। मु० **सैर**–मनबहलावके लिए कहीं घूमना-फिरना; **–(टे)की तान**–संगीतकी वह तान जिसमें स्वरोंका उतार-चढ़ाव बहुत तेजीसे होता है।

सपाद–वि० (सं०) चरण-सहित; चतुर्थांश बढ़ाया हुआ; चतुर्थांशयुक्त, सवा (समासांतमें–जैसे सपादलक्ष–सवा लाख)। **–पीठ**–वि० पैर रखनेकी चौकीके साथ। **–मत्स्य**–पु० एक तरहकी मछली।

सपिंड–पु० (सं०) सामान्य पितरोंको पिंड देनेवाला; छः पुश्त ऊपरसे छः पुश्त नीचेतकका संबंधी।

सपिंडीकरण–पु० (सं०) श्राद्धविशेष जिसमें मृतकको पिंडदान द्वारा पितरोंके साथ मिलाते हैं, किसीको सपिंड होनेका अधिकार प्रदान करना।

सपीड–वि० (सं०) पीड़ायुक्त।

सपीतक–पु० (सं०) नेनुवा।

सपीति–स्त्री० (सं०) सहपान; सहभोज।

सपीतिका–स्त्री० (सं०) कद्दू; लौकी।

सपुलक–वि० (सं०) रोमांचयुक्त।

सपूत–पु० अच्छा, कुलका नाम बढ़ानेवाला पुत्र।

सपूती–स्त्री० सपूत होनेका भाव; अच्छे पुत्रकी माता।

सपेत*–वि० सफेद, श्वेत।

सपेती*–स्त्री० दे० 'सफ़ेदी'।

सपेद–वि० (फा०) दे० 'सफ़ेद'।

सपेरा–पु० दे० 'सँपेरा'।

सपेला, सपोला–पु० पोवा, साँपका छोटा बच्चा।

सप्त(न्)–वि० (सं०) छःसे एक अधिक। पु० सातकी संख्या। **–ऋषि**–पु० दे० 'सप्तर्षि'। **–कृत्**–पु० एक विश्वेदेव। **–कोण**–पु० सात रेखाओंसे घिरा हुआ क्षेत्र। वि० सात कोणोंवाला (क्षेत्र)। **–गंग**–पु० एक स्थान जहाँ गंगा सात धाराओंमें बहती है। **–गुण**–वि० सात गुना। **–गोदावरी**–स्त्री० एक नदी। **–ग्रही**–स्त्री० सात ग्रहोंकी एक राशिमें स्थिति। **–च्छद**–पु० विशालत्वक् नामक वृक्ष। **–जिह्व**–वि० सात जिह्वाओंवाला। पु० अग्नि। **–ज्वाल**–पु० अग्नि। **–तंति,–तंत्र**–वि० सात तारोंवाला। **–दश**–वि० सत्तरह। **–दशक**–वि० जिसमें सत्तरह सम्मिलित हों। **–दिन,–दिवस**–पु० सप्ताह। **–दीधिति**–पु० अग्नि। **–द्वीप**–पु० पृथ्वीके सातों खंड। वि० सप्त द्वीपमय (पृथ्वी)। **–धातु**–वि० सात धातुओंवाला (शरीर)। पु० चंद्रमाके दस अश्वोंमेंसे एक। स्त्री० शरीरके सात तत्त्व–पित्त, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, मज्जा और शुक्र। **–धातुक**–वि०

सात तत्त्वोंसे युक्त । **–धान्य**–पु० सात अन्नोंका मिश्रण (पूजादिके निमित्त) । **–नली**–स्त्री० चिड़िया फँसानेका कंपा । **–नाडिका**–स्त्री० सिंघाड़ा । **–नाडीचक्र**–पु० वर्षा-सूचक एक चक्र जो सात टेढ़ी रेखाओंसे बनता है । **–नामा**–स्त्री० आदित्यभक्ता, हुलहुल नामक पौधा । **–पत्र**–वि० सात पत्तोंवाला; सात घोड़ोंसे खींचा जानेवाला । पु० सूर्य; मोतिया (फूल); छतिवन । **–पद**–वि० सात पदोंवाला । **–पदी**–स्त्री० विवाहकी एक विधि जिसमें वर और वधू द्वारा अग्निकी सात बार परिक्रमा की जाती है; संधि पक्की करनेके लिए अग्निकी सात बार परिक्रमा करना । **–०पूजा**–स्त्री० विवाहकी एक रस्म जिसमें लोढ़ा पूजनेको कहा जाता है । **–पराक**–पु० एक प्रकारकी तपश्चर्या । **–पर्ण,–पलाश**–वि० सात पत्तोंवाला । पु० छतिवन । **–पर्णक**–पु० छतिवन । **–पर्णी**–स्त्री० लजालू; छतिवनका फूल; एक मिठाई । **–पाताल**–पु० सात अधोलोक–अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल । **–पुत्री**–स्त्री० एक तरहकी तुरई, सतपुतिया । **–पुरी**–स्त्री० सात पुरियाँ–अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका–जो मोक्ष देनेवाली मानी जाती हैं । **–पुरुष**–वि० सात पुरसा लंबा । **–प्रकृति**–स्त्री० राज्यके सात अंग–राजा, मंत्री, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग और सेना । **–बाह्य**–पु० बाह्लीक राज्य । **–बोध्यंगकुसुमाढ्य**–पु० बुद्ध । **–भंगिनय**–पु० स्याद्वादके तर्कके सात अंग (जै०) । **–भंगी(गिन्)**–पु० स्याद्वादके माननेवाले जैन । **–भद्र**–पु० शिरीष; गुंजा; नेवारी । **–भुवन**–पु० ऊपरके सात लोक, दे० 'सप्तलोक' । **–भूम**–वि० सात मंजिलोंवाला । **–भूमि**–स्त्री० रसातल । **–भूमिमय**–वि० दे० 'सप्तभूम' । **–भूमिक,–भौन**–वि० सतमंजिला । **–मंत्र**–पु० अग्नि । **–मरीचि**–वि० सात किरणों वाला । पु० अग्नि । **–महाभाग**–पु० विष्णु । **–मातृका**–स्त्री० विवाह आदिमें पूजी जानेवाली सात माताओंका वर्ग–ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा । **–मास्य**–वि० सात मासका (बच्चा) । **–मृत्तिका**–स्त्री० कुछ धर्मकृत्योंके अवसरपर एकत्र की जानेवाली सात स्थानोंकी मिट्टी । **–यम**–वि० सात स्वरोंवाला । **–रंगी**–वि० सात रंगोंवाला (इन्द्रधनुष) । **–रक्त**–पु० लाल रंगवाले शरीरके सात अंग–हथेली, तलवा, नख, आँखका कोण, जीभ, ओठ और तालु । **–रात्र**–पु० सात रातोंका काल, सप्ताह । **–रात्रक**–वि० सात रातोंतक चलनेवाला । **–राव**–पु० गरुड़का एक पुत्र । **–राशिक**–पु० त्रैराशिक जैसी गणितकी एक क्रिया जिसमें सात राशियाँ होती हैं । **–रुचि**–वि० सात किरणोंवाला । पु० अग्नि । **–ला**–स्त्री० सातला; चमेली, नवमल्लिका; रीठा; गुंजा, घुंघची । **–लोक**–पु० सातों लोक–भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक । **–लोकमय**–वि० सातोंलोक धारण करनेवाले (विष्णु) । **–लोकी**–स्त्री० पृथ्वीके सात खंड, संपूर्ण पृथ्वी । **–वरूथ**–वि० सात रक्षकोंवाला (रथ) । **–वर्ग**–पु० सातका समाहार । **–वर्ष**–वि० सात वर्षकी अवस्थाका । **–वादी(दिन्)**–पु० दे० 'सप्तभंगी' । **–विंश**–वि० सत्ताईस । **–विदारु**–पु० एक वृक्ष । **–विध**–वि० सात प्रकारका । **–शत**–वि० सात सौ । **–शती**–स्त्री० सात सौका समूह; सात सौ पद्योंका संग्रह । **–शलाक**–पु० विवाहका शुभ मुहूर्तसूचक एक चक्र । **–शिवा**–स्त्री० नागवल्ली । **–शीर्ष**–वि० सात सिरोंवाला । पु० विष्णु । **–सप्ति**–वि० सात घोड़ोंसे युक्त रथवाला । पु० सूर्य । **–समाधिपरिष्कारदायक**–पु० बुद्ध । **–समुद्रांत**–वि० जिसका विस्तार सात समुद्रोंतक हो (पृथ्वी) । **–सागर**–पु० एक लिंग । **–०दान**–पु० एक प्रकारका दान जिसमें सात पात्रोंमें सात तरहकी चीजें भरकर देते हैं । **–सागरक**–पु० दे० 'सप्तसागरदान' । **–सिरा**–स्त्री० पान, तांबूल । **–सू**–स्त्री० सात बच्चोंकी माँ । **–स्पर्धा**–स्त्री० एक नदी । **–स्वर**–पु० संगीतका सप्तक । **–हय**–पु० दे० 'सप्ताश्व' ।

सप्तक–वि० (सं०) सात; जिसमें सात हों; सातवाँ । पु० सातका संग्रह; संगीतके सात स्वरों–षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद–का समाहार ।

सप्तकी–स्त्री० (सं०) (स्त्रियोंका) कटिबंध, कांची ।

सप्तति–वि० (सं०) सत्तर ।

सप्तम–वि० (सं०) सातवाँ ।

सप्तमी–स्त्री० (सं०) पक्षकी सातवीं तिथि; अधिकरण कारककी विभक्ति (व्या०) ।

सप्तर्षि–पु० (सं०) सात ऋषियों–शतपथब्राह्मणके अनुसार–गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि; महाभारतके अनुसार–मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ–का मंडल; सात ताराओंका एक मंडल । **–ज**–पु० बृहस्पति ।

सप्तांग–वि० (सं०) सात अंगोंवाला । पु० दे० 'सप्त-प्रकृति' ।

सप्तांशु–वि० (सं०) सात किरणोंवाला । पु० अग्नि । **–पुंगव**–पु० शनि ग्रह ।

सप्तात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) ब्रह्म ।

सप्तार्चि(स्)–वि० (सं०) सात जिह्वाओंवाला; जिसकी नजर या शक्ल बुरी हो । पु० अग्नि; शनि ग्रह; चित्रक वृक्ष ।

सप्तार्णव–पु० (सं०) सातों समुद्र । वि० सात समुद्रोंसे घिरा हुआ ।

सप्तालु–पु० (सं०) शफ्तालू, सतालू ।

सप्ताश्र–पु० (सं०) सप्तभुज क्षेत्र ।

सप्ताश्व–पु० (सं०) सूर्य (सात घोड़ोंवाले रथके कारण) ।

सप्ताह–पु० (सं०) सात दिनकी अवधि, हफ्ता; सात दिन तक चलनेवाला यज्ञादि ।

सप्ताह्वा–स्त्री० (सं०) एक पौधा, सप्तला ।

सप्रकारक–वि० (सं०) जिसमें ब्योरोंका विवरण हो ।

सप्रज–वि० (सं०) बाल-बच्चोंसे युक्त ।

सप्रज्ञ–वि० (सं०) प्रज्ञावान्, बुद्धिमान् ।

सप्रतिबंध स्वीकृति–स्त्री० (कंडीशनल या क्वालिफाइड एक्सेप्टेंस) दे० 'विशेषित स्वीकृति' ।

सप्रतिभय–वि० (सं०) खतरनाक; अनिश्चित ।

सप्रभ–वि० (सं०) समान कांतिवाला; कांतियुक्त ।

सप्रमाण–वि० (सं०) प्रमाणयुक्त; प्रामाणिक, ठीक; विधान जिसके पक्षमें हो; जो वैध अधिकारी हो ।

सप्रसव–वि० (सं०) एक ही मूलसे उत्पन्न ।

सप्रसवा–वि० स्त्री० (सं०) बच्चोंवाली; गर्भवती ।

सप्रेटा–पु० (अं०) (सेपरेटेड मिल्क) मखनिया दूध; वह दूध जिसमेंसे मक्खन या चिकना अंश निकाल लिया गया हो ।

सप्लाई–स्त्री० (अं०) पहुँचाना (व्यवहार, उद्योग आदिकी चीज); प्राप्ति, पूर्ति, रसद । **–आफिस**–पु० पूर्तिकार्यालय । **–डिपार्टमेंट**–पु० पूर्तिविभाग ।

सफ–पु० दे० 'शफ' ।

सफ़–स्त्री० (अ०) पाँत, परा; नमाज पढ़नेवालोंकी पाँत; पाँत बाँधनेकी जगह; फर्श; बोरिया, चटाई । **–आरा**–वि० युद्धके लिए सैनिकोंको पंक्तिबद्ध करनेवाला; युद्धमें डटकर लड़नेवाला; चढ़ाई करनेवाला । **–दर**–वि० सफोंको तोड़नेवाला, वीर, योद्धा; पु० हज्रत अलीकी पदवी । **–बंदी**–स्त्री० परा जमाना, पाँत बाँधना । **–बस्ता**–वि० पंक्तिबद्ध । **–शिकन**–वि० पाँत तोड़नेवाला; वीर; रनबाँकुरा । **–(फ़े)मातम**–स्त्री० वह फर्श जिसपर मातम क़रनेवाले बैठें (मुसल०) । मु० **–उलट देना**–सैनिकोंकी पाँतको छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कर देना । **सफें साफ कर देना**–सैन्यपंक्तियोंका सफाया कर देना ।

सफगोल–पु० दे० 'इसबगोल' ।

सफतालू–पु० एक फल-वृक्ष, आड़ू ।

सफर–पु० (सं०) दे० 'सफरी' ।

सफ़र–पु० (अ०) हिजरी सन्का दूसरा महीना जिसे मुसलमान स्त्रियाँ मनहूस समझती हैं; शहरसे बाहर जाना; यात्रा; रवानगी, कूच । **–खर्च**–पु० सफरका खर्च, मार्गव्यय । **–नामा**–पु० भ्रमणवृत्तांत । **–ए आख़िरत**–पु० अंतिम यात्रा, परलोकयात्रा ।

सफ़रजल–पु० (अ०) बिही ।

सफ़रजली–वि० जिसमें सफरजलका योग हो ।

सफरदाई–पु० दे० 'सपरदाई' ।

सफरमैना–पु० (अं० सैपरमैन) सेनाके वे कर्मचारी जो फौजके आगे जाकर खाई, रास्ता आदि तैयार करते हैं ।

सफ़रा–पु० (अ०) पित्त । **–शिकन**–वि० पित्तनाशक ।

सफ़रावी–वि० पैत्तिक, पित्तकृत । **–मिज़ाज**–पु० पित्तप्रधान प्रकृति ।

सफरी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी छोटी चमकीली मछली ।

सफ़री–वि० सफरका; यात्रा-संबंधी; यात्राके उपयुक्त । पु० मुसाफिर, यात्री; अमरूद–'सफरी, सेब, छुहारे, पिस्ता जे तरबूजा नाम'–सूर । स्त्री० राहखर्च । **–आम**–पु० अमरूद ।

सफल–वि० (सं०) फलवाला, फलयुक्त; फल उत्पन्न करनेवाला; कृतकार्य, कामयाब; सार्थक; अंडयुक्त, बधिया नहीं ।

सफलक–वि० (सं०) ढालसे युक्त ।

सफलता–स्त्री० (सं०) कामयाबी; पूरा होनेका भाव, पूर्णता; सार्थकता ।

सफला–स्त्री० (सं०) पौष-कृष्णा एकादशी ।

सफलित–वि० दे० 'सफलीभूत' ।

सफलीकरण–पु० (सं०) सफल करना; सिद्ध; पूर्ण करना ।

सफलीभूत–वि० (सं०) कामयाब; जो सिद्ध, पूर्ण हो ।

सफलोदय–पु० (सं०) शिव ।

सफलोदर्क–वि० (सं०) जिसमें भविष्यमें सफलताकी आशा हो ।

सफ़हा–पु० (अ०) पन्ने या वरकका एक पार्श्व, पृष्ठ; (ला०) चौड़ाई; विस्तार । **–(हए)हस्ती**–पु० (ला०) जीवन पटल, दुनिया, इहलोक । **मु० –०से उठ जाना**–मर जाना ।

सफ़ा–स्त्री० (अ०) सफाई; निर्मलता; चमक; मक्काके पासकी एक पहाड़ी । वि० दे० 'साफ' । **–ई**–स्त्री० दे० क्रममें । **–चट**–वि० बिलकुल साफ, मैदान, जिसपर कोई पेड़-पौधा न हो; अच्छी तरह मुंड़ा हुआ (सिर) । **–०मैदान**–पु० चटैल मैदान जिसमें कोई पेड़-पौधा न हो । **मु० –कर देना**–साफ कर देना, कुछ रहने न देना, पूरी तरह मूंड़ देना; चाट-पोंछ जाना । **–कहना**–खरी, बेलाग कहना ।

सफ़ाई–स्त्री० (अ०) साफ होना, स्वच्छता; झाड़-पोंछ; मैल-गंदगीका दूर किया जाना; चमक; चिकनाहट; खुरदरापनका न रहना; सरलता; हृदय-शुद्धि; नेकनीयती, सचाई, खरापन; हिसाबका चुकता हो जाना; मेल, सुलह (सफा हो जाना); समाप्ति; तबाही, बरबादी; दोषसे मुक्ति; अभियुक्तका बचाव, उसकी निर्दोषता सिद्ध करनेके लिए पेश की जानेवाली गवाही इ०, अभियुक्तपक्ष (–का गवाह, वकील); फुरती, चतुराई (–का हाथ); (ला०) निर्लज्जता । **–का गवाह**–वह गवाह जो अभियुक्तकी सफाईमें पेश किया जाय । **–का वकील**–अभियुक्त-पक्षका वकील । **–का हाथ**–तलवारकी वह चोट जो जिस अंग या चीजपर पड़े उसको साफ दो टुकड़े कर दे । **मु०–कर देना**–साफ कर देना, चुकता कर देना; चट कर जाना; समाप्त कर देना । **–हो जाना**–मेल, चुकता, सफाया हो जाना ।

सफ़ाया–पु० समाप्ति; नाश; संहार । **मु० –कर देना**–खत्म कर देना, मिटा देना; सबको मार डालना ।

सफ़ी–वि० (अ०) स्वच्छ, पवित्र; मित्र; हज़्रत आदमका लक़ब । **–उल्लाह**–पु० ईश्वरका मित्र, आदम ।

सफ़ीना–पु० (अ०) किताब; बही; नोटबुक; समन ।

सफ़ीया–स्त्री० (अ०) शुद्ध अंतःकरणवाली; हज़्रत मुहम्मदकी एक पत्नी ।

सफीर–स्त्री० चिड़ियोंकी आवाज; सीटी; आवाज ।

सफ़ीर–पु० (अ०) दूत, राजदूत । स्त्री० सीटीकी आवाज़ ।

सफील–स्त्री० दे० 'सफीर' (सीटी, आवाज) ।

सफ़ीह–वि० (अ०) नीच, कमीना, मूर्ख ।

सफ़ूफ़–पु० (अ०) चूर्ण; चूर्णरूप औषध, चूरन ।

सफ़ेद–वि० (फा०) उजला, श्वेत; गोरा; कोरा, सादा (कागज) । स्त्री० गंजीफेकी आठ बाजियोंमेंसे एक । **–कोह**–पु० अफगानिस्तानका एक पहाड़ । **–चश्म**–वि० निर्लज्ज । **–झूठ**–पु० ऐसा झूठ जो ऊपरसे देखनेपर ही साफ झूठ जान पड़े और वस्तुस्थितिके स्पष्ट विपरीत हो । **–दाग़**–पु० श्वेतकुष्ठ । **–पलका**–पु० वह कबूतर जिसका रंग सफेद, पोट काला और दुम तथा डैने कुछ काले कुछ सफेद हों । **–पोश**–वि० सफेद कपड़े पहननेवाला; भला आदमी; जो अमीर न होते हुए भी भले आदमियोंकी तरह रहे, शिष्ट किंतु अल्पवित्त (जन) । **–बख़्त**–वि० भाग्यशाली । **–मिट्टी**–स्त्री० खड़िया मिट्टी । **–मुहरा**–पु० एक तरहकी सीप । **–रेश**–वि० जिसकी दाढ़ी सफेद हो गयी हो, बूढ़ा । **–(दो)सियाह**–पु० भला-बुरा, बनाना-बिगाड़ना । **–०का इख़्तियार**–बनाने-बिगाड़ने, सब कुछ करनेका अधिकार, सर्वाधिकार । **मु० –पड़ जाना**–(भय, रोग आदिसे) चेहरेका रंग उड़ जाना, पीला पड़ जाना । **–हाथी**–पु० बर्मामें मिलनेवाला सफेद रंगका हाथी; ऐसा कर्मचारी जिसका वेतन बहुत हो पर उपयोग बहुत कम हो (ह्वाइट एलिफ़ेंट) ।

सफ़ेदा–पु० एक तरहका आम; एक पेड़ जिसका धड़ सफेद होता है; एक तरहका खरबूजा; सुबहका उजाला; जस्तेसे बनाया जानेवाला एक सफेद रंग जिससे लोहे, लकड़ी आदिकी रँगाई की जाती है; सफेद चमड़ा ।

सफ़ेदी–स्त्री० सफेद होना, श्वेतता; मुँहपर लगानेका सफेद पाउडर; सफेद रंगका स्राव; गोराई; चूनेकी पुताई (करना, होना); सबेरेका उजाला । **मु० –आना**–बुढ़ापा आना, बालोंका सफेद होना ।

सफेन–वि० (सं०) फेनयुक्त । **–पुंज**–वि० घने फेनसे आच्छादित (जैसे समुद्र) ।

सफ्तालू–पु० दे० 'सफतालू' ।

सफ्फ़ाक–वि० (अ०) क्रूरकर्मा, जालिम, निर्दय; रक्तपाती ।

सफ्फ़ाकी–स्त्री० क्रूरता, निर्दयता, जुल्म; रक्तपात ।

सबंध, सबंधक–वि० (सं०) जिसके लिए कोई जमानत दी गयी हो । **–मुक्ति**–स्त्री० (पैरोल) किसी बंदीका कारागृहसे इस प्रतिबंधपर कुछ समयके लिए छोड़ दिया जाना कि अवधि समाप्त होते ही वह पुनः कारागारमें उपस्थित हो जायगा और मुक्तिकालमें कोई अवांछनीय या वर्जित कार्य न करेगा, सप्रतिबंधमुक्ति, साधिमुक्ति ।

सबंधु–वि० (सं०) जिसके साथ निकट-संबंध हो; मित्रयुक्त; एक ही वंशका । पु० संबंधी; रिश्तेदार ।

सब–वि० कुल; समस्त, सारा, संपूर्ण; (अं०) छोटा, गौण (समासमें) । **–इंस्पेक्टर**–पु० छोटा इंस्पेक्टर । **–ओवरसीयर**–पु० नायब ओवरसीयर । **–जज**–पु० छोटा जज, सदरआला । **–डिवीज़न**–पु० जिलेका एक भाग, विभाग, तहसील । **–डिवीज़नल**–वि० सब डिवीजनका । **–पोष्ट आफिस**–पु० मुफस्सिलका डाकखाना । **–रजिस्ट्रार**–पु० नायब रजिस्ट्रार ।

सबक़–पु० (अ०) पाठ, पुस्तकका उतना अंश जितना एक दिनमें गुरुसे पढ़ा जाय; शिक्षा, सीख; वह दंड जो चेतावनीका काम दे (देना, मिलना) । **मु० –पढ़ाना**–शिक्षा देना; पट्टी पढ़ाना, बहकाना । **–लेना**–पढ़ना; शिक्षा लेना । **–सिखाना**–शिक्षा देना ।

सबक़त–स्त्री० (अ०) दूसरेसे आगे बढ़ना; बढ़कर होना, बरतरी । **मु० –करना**–आगे बढ़ जाना; पहल करना । **–ले जाना**–आगे बढ़ जाना, (अपनी) श्रेष्ठता स्थापित करना ।

सबज–वि० दे० 'सब्ज़' ।

सबद–स्त्री० (फा०) टोकरी, डलिया । **–ए गुल**–स्त्री० फूलोंकी डलिया ।

सबद*–पु० शब्द; किसी महात्माकी बानी, भजन आदि ।

सबदी–वि० किसी महात्माके शब्द, वचन या आज्ञापर विश्वास रखनेवाला ।

सबब–पु० (अ०) कारण; अपादान कारण, हेतु; दलील । अ० ···की वजहसे, ···के कारण ।

सबर–पु० दे० 'सब्र' । * वि० दे० 'सबल' ।

सबरा*–पु० सब, कुल, सारा । पु० बरतनमें जोड़ लगानेका औजार ।

सबरी–स्त्री० जमीन, दीवार आदि खोलनेका एक औजार; * दे० 'शबरी' ।

सबल–वि० (सं०) सशक्त, बलवान्; सेनायुक्त। पु० वसिष्ठका एक पुत्र (सात ऋषियोंमेंसे एक); (अ०) मोतियाबिंद; अनाजकी बाल।

सबलि–वि० (सं०) राजकरसे युक्त; बलिके साथ। पु० गोधूलिवेला, सायंकाल (जब बलि चढ़ायी जाती है)।

सबा–स्त्री० (अ०) पूर्वी पवन, पूरबसे पच्छिमको बहनेवाली हवा। **–ख़राम,–दम**–वि० वायुवेगसे जानेवाला, बहुत तेज दौड़नेवाला (घोड़ा); मृदुगामिनी।

सबात–स्त्री० (अ०) स्थिरता, स्थायित्व; दृढ़ता। **–(ते) अक़्ल**–पु० बुद्धिकी स्थिरता।

सबाध–वि० (सं०) कष्टदायक; हानिकारक।

सबार, सबारा*–पु० दे० 'सवेरा'।

सबार, सबारै*–अ० जल्द, शीघ्र।

सबाष्प–वि० (सं०) अश्रुयुक्त; क्रंदन करता हुआ।

सबाष्पक–वि० (सं०) जिसमेंसे भाफ निकलती हो।

सबाह–स्त्री० (अ०) सुबह, प्रातःकाल; गोरा, सुन्दर। **–(हे)-ईद**–स्त्री० ईदका सवेरा; आनन्दका उदय।

सबिंदु–पु० (सं०) एक पर्वत। वि० बिंदुयुक्त।

सबी*–स्त्री० शबीह, छवि, चित्र–'चतुर चितेरे तुव सबी लिखत न हिय ठहराय'–रसनिधि।

सबीज–वि० (सं०) बीजयुक्त; जिसमें बीज हो।

सबील–स्त्री० (अ०) द्वार; साधन; रास्ता; उपाय–'बचै न बड़ी सबील हू चील घोंसुआ मांस'–वि०; वसीला; वह स्थान जहाँ लोगोंको पानी, शरबत आदि पिलाया जाय, प्याऊ; पौसरा; ढंग, तरीका।

सबीह–स्त्री० दे० 'शबीह'। वि० (अ०) गोरा-चिट्टा।

सबुईयत–स्त्री० (अ०) बेरहमी; भेड़ियापन।

सबुनाना–स० क्रि० साबुन लगाना।

सबू–पु० दे० 'सुबू' (फ़ा०)।

सबूत–पु० दे० 'सुबूत'।

सबूर–वि० (अ०) सब्र करनेवाला; क्षमाशील।

सबूरा–पु० बेवा (मुसलमान) स्त्रियोंकी काम-वासना तृप्त करनेका साधन-रूप काष्ठ या चर्मका दंड।

सबूस–पु० (फ़ा०) भूसी, चोकर; सिरपर जमनेवाली रूसी। **–(से) अस्पग़ोल**–स्त्री० ईसबगोलकी भूसी।

सबूह–स्त्री० (अ०) वह शराब जो सुबह पी जाय।

सबूही–स्त्री० सवेरे पी जानेवाली शराब; शराबकी बोतल।

सबेरा–पु० दे० 'सवेरा'।

सब्ज़–वि० (फ़ा०) हरा, कच्चा; हरा-भरा। **–क़दम**–वि० जिसके कदम, पौरा, अमंगलकर माने जाते हों, मनहूस (व्यंग्य)। **–क़दमी**–स्त्री० अमांगलिक होना, मनहूसी। **–घोड़ा**–पु० (ला०) भंग। **–परी**–स्त्री० 'अमानत'-लिखित इंद्र (इंदर) सभाकी नायिका जो गुलफामपर आशिक हुई थी; (ला०) शराब; सुंदर हरी चीज। **–पा**–वि० अभागा, मनहूस। **–पुल**–पु० आसमान। **–पोश**–वि० जो सब्ज रंगकी पोशाक पहने हो। **–फोड़ा**–पु० एक तरहका कबूतर जिसके हरे परोंके बीचमें सफेद पर होते हैं। **–बख़्त**–वि० सौभाग्यशाली। **–बख़्ती**–स्त्री० खुशनसीबी, सौभाग्य। **–मक्खी**–स्त्री० हरी मक्खी। **–मुखी**–पु० हरे रंगका कबूतर। **–वार**–पु० वह वह मुरगी जिसके सिरपर चोटी होती है। मु० **–बाग़ दिखाना**–ठगनेके लिए झूठी आशाएँ दिलाना, धोखा देना। **–होना**–हरा-भरा होना, फलना-फूलना।

सब्ज़ा–पु० (फ़ा०) हरी घास, हरियाली; पन्ना; नीलकंठ; वह घोड़ा जिसकी सफेदीमें स्याह रंगकी झलक हो; दाढ़ी-मूँछके उगनेसे चेहरेपर प्रकट होनेवाली हरियाली; कानका एक गहना; एक तरहका आम; एक तरहका खरबूजा; भंग। **–ज़ार**–पु० वह स्थान जहाँ हरी-हरी घासों, वनस्पतियोंका बाहुल्य हो। **–(ए) बेगाना**–पु० अपने आप या अस्थानमें उगनेवाला पौधा। मु० **–आना**–कपोलोंपर दाढ़ीके बाल उगने लगना।

सब्ज़ी–स्त्री० हरा रंग; हरियाली; साग-पात, हरी तरकारी; भंग। **–ख़ोर**–वि० शाकाहारी। **–फ़रोश**–पु० साग-तरकारी बेचनेवाला। **–मंडी**–स्त्री० वह जगह जहाँ साग-तरकारी और ताजा फल बिकते हों।

सब्जेक्ट–पु० (अं०) प्रजा; विषय। **–(क्ट्स) कमिटी**–स्त्री० विषयसमिति, विषयनिर्वाचिनी समिति।

सब्त–पु० (अ०) छुटे हुए बाल; शनिवार; लेख। मु० **–करना**–लिखना।

सब्र–पु० (अ०) सहन, बर्दाश्त; धैर्य; पीड़ितकी आहका असर जो उत्पीड़कपर पड़े; तसल्ली। **–(ब्रो) शुक्र**–पु० धैर्य धरना और ईश्वरको धन्यवाद देना। मु० **–आना**–धीरज धरना, कल पड़ना। **–करना**–सहन करना; जुल्मको चुपचाप सह लेना; ठहरना, धैर्य रखना; आशा त्याग देना। **–की सिल छाती या दिलपर रखना**–चुपचाप धैर्यपूर्वक सह लेना। **–देना**–(ईश्वरका) सहनेकी शक्ति देना; धीरज बँधाना। **–पड़ना**–पीड़ित या दुखियाकी आहका असर होना, सब्रके बदलेमें अत्याचारीको ईश्वरसे दंड मिलना। **(किसीका)–समेटना**–किसीको सतानेपर उसके सब्रके फल-भोगका भागी बनना।

सब्रह्मक–वि० (सं०) ब्रह्मा (पुरोहित)के साथ; ब्रह्मा (देवता)के साथ; ब्रह्मलोकके साथ।

सब्रह्मचर्य–पु० (सं०) सहाध्ययन।

सब्रह्मचारी(रिन्)–पु० (सं०) सहाध्यायी; वेदकी एक ही (समान) शाखा पढ़नेवाले; समान दुःखसे ग्रस्त व्यक्ति; साथी; एक जैसे व्यक्ति।

सभंग–वि० (सं०) खंडयुक्त। **–श्लेष**–पु० श्लेषका एक प्रकार जो शब्दका खंड करनेपर बनता है।

सभक्ष–वि० (सं०) सहभोजी।

सभय–वि० (सं०) डरा हुआ, भययुक्त; खतरनाक।

सभर्तृका–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा।

सभस्मा(स्मन्)–वि० (सं०) जो भस्म लगाये हो। **–(स्म) द्विज**–पु० पाशुपत या शैव सन्न्यासी।

सभा–स्त्री० (सं०) गोष्ठी, मजलिस; परिषद्, समिति; सभास्थल, सभाभवन; न्यायालय; दरबार; द्यूतशाला; पथिकालय, अतिथिशाला; भोजनालय; वह स्थान जहाँ लोग प्रायः आते-जाते हों; कार्य-विशेषके लिए संघटित संस्था। **–कक्ष**–पु० (लॉबी) दे० 'प्रकोष्ठ'। **–कार**–पु० सभा-भवनका निर्माता; सभा करनेवाला। **–ग**–वि० सभामें जानेवाला; दे० क्रममें। **–गत**–वि० जो न्यायालयमें उपस्थित हो। **–गृह**–पु० सभा-भवन (एसेम्बली हाउस)। **–चतुर**–वि० सभामें बातचीत करनेमें कुशल। **–चातुर्य**–पु० सभा, समाजमें बोलने, व्यवहार करनेकी चतुरता। **–त्याग**–पु० (वॉक आउट) अध्यक्षकी किसी व्यवस्था या सभाकी किसी काररवाई आदिके विरोधमें एक या अधिक सदस्योंका सभा छोड़कर बाहर चले आना। **–नायक,–पति**–पु० सभाका अध्यक्ष; जुएका अड्डा चलानेवाला। **–नेता**–पु० (लीडर ऑव दि हाउस) संसद् या विधानसभाके सदस्यों द्वारा चुना गया वह नेता जो संसद् या सभाका कार्यक्रम आदि निर्धारित करता है (कभी-कभी यह प्रधान मंत्री या मुख्य मंत्रीसे भिन्न भी होता है)। **–परिषद्**–स्त्री० समिति आदिका अधिवेशन। **–पर्व(न्)**–पु० महाभारतका दूसरा खंड जिसमें द्यूतादिका वर्णन है। **–पाल**–पु० सार्वजनिक भवन या सभाभवनका निरीक्षक। **–पूजा**–स्त्री० (प्रस्तावनामें) दर्शकोंके प्रति सम्मानप्रदर्शन (ना०)। **–प्रवेशन**–पु० न्यायालयमें प्रवेश करना। **–मंडन**–पु० सभा-भवनकी सजावट। **–योग्य**–वि० समाजके उपयुक्त। **–वशकर**–वि० सभाको प्रभावित करनेवाला। **–वी(विन्)**–पु० जुएका अड्डा चलानेवाला। **–सचिव**–पु० (पार्लमेंटरी सेक्रेटरी) विधानसभा या लोकसभाका वह सदस्य जो किसी मंत्रीके साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कामोंमें सहायता करता और जिसे इस कार्यके लिए वेतन भी मिलता है; संसत्सचिव। **–सद,–सद्**–पु० सदस्य; जूरीका सदस्य, अदालतकी पंचायतका सदस्य।

सभाग–वि० (सं०) जिसका हिस्सा हो; सामान्य; सार्वजनिक; दे० 'सभा'में।

सभागा*–वि० भाग्यशाली; सुंदर।

सभाग्य–वि० (सं०) भाग्यशाली ।

सभाचार–पु० (सं०) समाजका रीति-रिवाज; सभामें पालन करनेके आवश्यक नियम; अदालतका तरीका ।

सभाजन–पु० (सं०) आदर-सत्कार करना; स्वागत करना; शिष्टता, नम्रता दिखलाना (मिलने-जुलनेमें), मिलनसारी । वि० पात्रयुक्त ।

सभाजित–वि० (सं०) सम्मानित, आदृत; तुष्ट, प्रसन्न; प्रशंसित ।

सभाज्य–वि० (सं०) सम्मान करने, प्रशंसा करने योग्य ।

सभारता–स्त्री० (सं०) पूर्णता; आधिक्य; अभ्युदय ।

सभार्य, सभार्यक–वि० (सं०) सपत्नीक ।

सभावन–पु० (सं०) शिव ।

सभिक, सभीक–पु० (सं०) जुआ खेलानेवाला, जुएका अड्डा चलानेवाला ।

सभीति–वि० (सं०) भययुक्त, डरपोक ।

सभेय–वि० (सं०) सभोचित; विद्वान्; शिष्ट ।

सभोचित–वि० (सं०) सभाके योग्य । पु० विद्वान् ब्राह्मण; शिक्षित व्यक्ति ।

सभ्य–वि० (सं०) सभाका; सभासे संबद्ध; सभाके योग्य; शिष्ट (सिविल); संस्कृत; नम्र; विश्वस्त । पु० सभासद; पंच, न्याय करनेवाला; जुआ खेलानेवाला; कुलीन व्यक्ति; भृत्य; पंचाग्नियोंमेंसे एक ।

सभ्यता–स्त्री० (सिविलाइज़ेशन), **सभ्यत्व**–पु० (सं०) सभ्य होनेका भाव; सदस्यता; शिष्टता, नम्रता, भद्रता; कुलीनता; किसी देश या जातिकी वाह्य तथा भौतिक समृद्धि और परंपरागत विशेषताओंका सामूहिक रूप ।

सभ्येतर–वि० (सं०) उजड्ड, बेशऊर ।

समंक–वि० (सं०) समान चिह्न धारण करनेवाला । पु० फसल नष्ट करनेवाला एक जानवर ।

समंग–वि० (सं०) सभी अंगोंसे युक्त; पूर्ण । पु० एक खेल ।

समंगल–वि० (सं०) मंगलमय, मंगलकारक, शुभ ।

समंगा–स्त्री० (सं०) मंजिष्ठा; लज्जालु; वराहक्रांता; बाला ।

समंगिनी–स्त्री० (सं०) बोधि तरुकी एक देवी ।

समंगी(गिन्)–वि० (सं०) जिसके सभी अंग पूर्ण हों; सभी आवश्यक साधनोंसे युक्त ।

समंजन–पु० (सं०) किसी चीजका दूसरी चीजसे जोड़ बैठाना; यंत्रोंके पुरजोंको यथास्थान बैठाना; लेखा जोखा, हिसाब-किताब बराबर करना (एडजस्टमेंट); मेल मिलाना; मलना, मालिश करना; लेप लगाना । **–क्षमता, नेत्रकी**–स्त्री० (अक्कोमोडेशन ऑव दी आई) वह विधि जिसके द्वारा नेत्रकी पेशियाँ नेत्र-लेंसकी वक्रताको घटा बढ़ाकर दूर या निकटकी वस्तुओंका स्पष्ट प्रतिबिम्ब रेटिनापर बनाती हैं ।

समंजस–वि० (सं०) उचित, उपयुक्त; ठीक, समीचीन; संगत; स्पष्ट; नेक; अभ्यस्त; अनुभवी; स्वस्थ; उत्तम । पु० औचित्य, उपयुक्तता; सचाई; संगति; यथार्थता; ठीक प्रमाण ।

समंठ–पु० (सं०) गंडीर, पोय; तरकारीवाले फल (?) ।

समंत–वि० (सं०) संपूर्ण, समग्र; सार्वत्रिक । पु० सीमा, हद । **–कुसुम**–पु० एक देवपुत्र । **–गंध**–पु० एक पुष्प; एक देवपुत्र । **–चारित्रमति**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–दर्शी(र्शिन्)**–पु० एक बुद्ध । **–दुग्धा**–स्त्री० स्नुही वृक्ष । **–नेत्र**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–पंचक**–पु० कुरुक्षेत्र; कुरुक्षेत्रस्थ एक तीर्थ । **–प्रभ**–पु० एक पुष्प; एक बोधिसत्त्व । **–प्रभास**–पु० एक बुद्ध । **–प्रसादिक**–पु० एक बोधिसत्त्व ।**–प्रासादिक**–वि० जो सर्वत्र सहायता करनेके लिए प्रस्तुत हो । **–भद्र**–वि० जो पूर्णतः शुभ हो । पु० एक बुद्ध या जिन; एक बोधिसत्त्व । **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि । **–रश्मि**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–विलोकिता**–स्त्री० एक बौद्ध लोक ।

समंतर–पु० (सं०) एक देश; उस देशके निवासी ।

समंतालोक–पु० (सं०) समाधिका एक प्रकार ।

समंतावलोकित–पु० (सं०) एक बोधिसत्त्व ।

समंत्र–वि० (सं०) वैदिक मंत्रोंसे युक्त ।

समंत्रक–वि० (सं०) वैदिक मंत्रोंसे युक्त; जादू जाननेवाला ।

समंत्रिक–वि० (सं०) मंत्रियोंसे युक्त ।

समंद–पु० (फा०) बादामी रंगका घोड़ा जिसका अयाल, दुम और जाँघ या पाँव और जाँघके बाल स्याह हों; (अच्छी नस्लका) घोड़ा ।

समंदर–पु० (फा०) एक कल्पित जंतु जो फारसी कवि-समयके अनुसार अग्निकुंडमें उत्पन्न होता और उससे बाहर निकलकर तुरंत मर जाता है; * समुद्र ।

समंधकार–पु० (सं०) सार्वत्रिक अंधकार ।

सम–वि० (सं०) एक ही, अभिन्न; सदृश, एकसा; बराबर; चौरस, हमवार; जूस, जो दोसे पूरा-पूरा बँट जाय, विषम नहीं; पक्षपातरहित, निष्पक्ष; ईमानदार, सच्चा; साधु, नेक; मामूली, साधारण; कमीना; सीधा; उपयुक्त, सुविधाजनक; उदासीन, विरक्त; सब; समग्र । पु० वृष, कर्क आदि सम संख्यापर पड़नेवाली राशियाँ; चौरस मैदान; एक काव्यालंकार (१) जहाँ दो वस्तुओंमें यथायोग्य संबंधका होना दिखाया जाय या (२) जहाँ कारणके साथ कार्यका सारूप्य हो अथवा (३) जिसके लिए प्रयत्न किया जाय, उसकी सिद्धि बिना अनिष्टके ही होना वर्णित किया जाय; तालका एक अंग, संगीतमें वह स्थान जहाँ लयकी समाप्ति और तालका आरंभ होता है; वर्गमूल निकालनेकी क्रियामें राशिके ऊपर दी जानेवाली रेखा; वह बिंदु जिसपर मध्याह्नरेखा विषुवत् रेखासे मिलती है; तृणाग्नि; जिन; धर्मका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; सादृश्य, समानता; अच्छी दशा; * दे० 'शम' । * स्त्री० समता, बराबरी । **–कक्ष**–वि० समान वजनका, बराबरीका । **–० सरकार**–स्त्री० (पैरेलल गवर्नमेंट) दे० 'प्रतिसरकार' । **–कन्या**–स्त्री० उपयुक्त कन्या, विवाहके योग्य कन्या । **–कर**–वि० उचित रूपमें कर लगानेवाला; दे० क्रममें । **–कर्ण**–पु० शिव; बुद्ध; समान कर्णोंवाला क्षेत्र (ज्या०) । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० समान पेशा करनेवाला । **–काल**–पु० एक ही समय या क्षण । **–कालिक**–वि० (साइमल्टेनियस) युगपत्; एक ही समय होनेवाली (दो या कई बातें या काम) । **–कालीन**–वि० एक समयमें रहने या होनेवाला । दे० 'समसामयिक' । **–कोण**–वि० बराबर कोणोंवाला (क्षेत्र) । पु० वह कोण जो ९० अंशका हो । **–०त्रिभुज**–पु० (राइट एंगिल्ड ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसका एक कोण समकोण हो । **–कोल**–पु० सर्प । **–क्रम**–वि० जिसके कदम बराबर दूरीपर पड़ें । **–क्रमण**–पु०, **–क्रमिकता**–स्त्री० (सिंक्रोनाइज़ेशन) एक ही समयपर कई घटनाओंका घटित होना । **–क्रिय**–वि० एक जैसा कार्य करनेवाला । **–क्षेत्र**–पु० नक्षत्रोंकी एक विशेष स्थिति, (**समतलाकृति**–स्त्री०) (प्लेन फिगर) समतलका वह भाग जो एक या अधिक सरल या वक्र रेखाओंसे घिरा हो । **–खात**–पु० घनके रूपमें की गयी खुदाई । **–गंध**–वि० समान गंधवाला । स्त्री० बराबर रहनेवाली गंध । **–गंधक**–पु० एक ही जैसे पदार्थोंसे बना हुआ धूप । **–गंधिक**–वि० समान गंधवाला । पु० खस । **–चक्रवाल**–पु० वृत्त । **–चतुरश्र,–चतुरस्र**–वि० जिसके चारों कोण बराबर हों । पु० वर्गक्षेत्र (ज्या०) । **–चतुर्भुज**–पु० (र्‌हॉम्बस) वह क्षेत्र जिसकी चारों भुजाएँ बराबर हों । (ज्या०) । **–चतुष्कोण**–वि० जिसके चारों कोण बराबर हों (ज्या०) । **–चर**–वि० एक-सा व्यवहार या आचरण रखनेवाला । **–चित्त**–वि० धीर, शांत; उदासीन; जिसके विचार एक ही विषयपर केंद्रित हों । **–चेता(तस्)**–वि० दे० 'समचित्त' । **–च्छेद,–च्छेदन**–वि० जिनके हर समान हों (ग०) । **–जाति, –जातीय**–वि० समान जाति या वर्गका; एक ही प्रकारका । **–ज्ञा**–स्त्री० ख्याति, सुयश । **–तट**–वि० एक ही तटपर बसे हुए (देश) । **–तल**–वि० चौरस, हमवार; (प्लेन सरफेस) वह तल जिसमें यदि कोई भी दो बिंदु ले लिये जायँ तो इनको मिलानेवाली सरल रेखा सब जगह उसी तलमें रहती है । **–तलन**–पु० (लैवलिंग) ऊबड़खाबड़ तलको सम करनेकी क्रिया । **–तीर्थक**–वि० ऊपरतक, किनारेतक भरा हुआ । **–तुला**–स्त्री० समान मूल्य । **–तुलित**–वि० बराबर वजनका । **–तोल**–वि० समान तोल, महत्त्वका । **–तोलन**–पु० समान करना; तराजूके

पलड़ोंको बराबर करना (बैलेंसिग)। **–त्रय**–पु० तीन द्रव्यों–शर्करा, नागरमोथा और हर्रेका सम परिमाण। **–त्रिभुज**–वि० जिसकी तीनों भुजाएँ समान हों। पु० ऐसा क्षेत्र (ज्या०)। **–त्विट्(ष्)**–वि० समान चमकीला या सुंदर। **–दंत**–वि० जिसके दाँत बराबर हों। **–दर्शन**–वि० एकरूप, एक जैसी शक्लवाला; एक नजरसे देखनेवाला। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० सबको एक-सा देखने-समझनेवाला। **–दुःख**–वि० कृपालु, कारुणिक। **–दृक्(श्)**–वि० दे० 'समदर्शी'। **–दृष्टि**–वि० दे० 'समदर्शी'। स्त्री० सबको एक नजरसे देखनेकी क्रिया। **–देश**–पु० हमवार मैदान। **–द्युति**–वि० समान कांतियुक्त। **–द्वादशाश्र,–द्वादशास्त्र**–पु० बारह समान भुजाओंवाला क्षेत्र (ज्या०)। **–द्विद्विभुज**–पु० वह चतुर्भुज जिसकी आमने-सामनेकी भुजाएँ बराबर हों। **–द्विभाजन**–पु० (बाईसेक्शन) किसी वस्तुको दो समान भागोंमें विभाजित करना। **–द्विभुज**–वि० जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों। पु० ऐसा चतुर्भुज। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० एक जैसे स्वभावका। **–धृत**–वि० जिसका वजन बराबर किया गया हो; ...के बराबर। **–ध्वनि**–पु० (होमोनिम) ऐसे शब्द जिनका उच्चारण एक हो पर अर्थ भिन्न हो। **–नाम(न्)**–पु० वही या समान नाम, पर्याय। **–निंदास्तव**–वि० मानापमानके प्रति उदासीन। **–पद**–पु० बाण चलानेके समय खड़े होनेका एक ढंग; एक रतिबंध। **–पाद**–पु० दे० 'समपद'; नृत्यकी एक गति; समान चरणोंवाला छंद। **–प्रभ**–वि० समान कांतिवाला। **–बुद्धि**–वि० सुख-दुःखादि एक-सा समझनेवाला, उदासीन। स्त्री० वह बुद्धि जो किसी हालतमें विचलित न हो। **–भाग**–पु० बराबर हिस्सा। वि० बराबर हिस्सा पानेवाला। **–भुज**–वि० (इक्विलेटरल्) समबाहु; समान भुजाओंवाला। **–भूमि**–स्त्री० हमवार जमीन। **–मति**–वि० धीरे, शांत। **–मात्र**–वि० बराबर परिमाणका; बराबर मात्राओंवाला (छंद)। **–मिति**–वि० दे० क्रममें। **–रंजित**–वि० जिसका रंग सर्वत्र एक-सा हो। **–रज्जु**–स्त्री० गहराई आदि नापनेकी रेखा (ग०)। **–रत**–पु० एक रतिबंध। **–रभ**–पु० एक रतिबंध। **–रस**–वि० एक ही, समान भावसे युक्त; एक रसवाला; एक-सा। **–रूप**–वि० समान रूपका। **–लेपनी**–स्त्री० राजोंका सतह बराबर करनेका एक औजार। **–लोष्टकांचन**–वि० जिसकी दृष्टिमें ढेला और सोना बराबर हों। **–वयस्क**–वि० बराबर उम्रका, एक ही उम्रका, हमउम्र। **–वर्ण**–वि० एक ही रंगका; एक ही जातिका। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० किसीके प्रति पक्षपात न दिखानेवाला; एक-सा व्यवहार करनेवाला; समान दूरीपर स्थित। पु० यम। **–वितरण**–पु० (राशनिंग) खाद्यान्न या वस्त्रादिकी कमी होनेपर नागरिकोंको प्रतिदिन या प्रतिमासके लिए निर्धारित समान मात्रा वितरित करनेका कार्य या व्यवस्था, खुराकबंदी, राशन। **–विभाग**–पु० बराबर हिस्सोंमें संपत्तिका बँटवारा। **–विषम**–पु० वह जमीन जो ऊबड़-खाबड़ हो। वि० ऊबड़-खाबड़। **–वीर्य**–वि० बराबर बलवाला। **–वृत्त**–पु० बराबर चरणोंवाला छंद। वि० बराबर गोलाईवाला। **–वृत्ति**–स्त्री० धीरता, मनकी स्थिरता। वि० धीर, गंभीर। **––वेतन**–पु० (रैली) बालचरों, अनुयायियों आदिका एक स्थानपर जमा होना; तितर-बितर हुए सैनिकोंका पुनः एकत्र होना, समागमन। **–वेत होना**–अ० क्रि० (टु मीट, टु असेंबल) इकट्ठा होना, सभाके सदस्योंका सभाके रूपमें एकत्र होना। **–वेध**–पु० मध्य या औसत गहराई। **–वेष**–पु० एक जैसी पोशाक। **–व्यूह**–पु० एक प्रकारका व्यूह। **–शंकु**–पु० मध्याह्न। **–शशी(शिन्)**–पु० समान शृंगोंवाला चंद्रमा। **–शीतोष्ण**–वि० (स्थान या वस्तु) जहाँ या जिसमें सर्दी-गर्मीकी मात्रा बराबर रहे, न अधिक उष्णता हो, न शीत। **–०कटिबंध**–पु० पृथ्वीके वे भाग जो उत्तरमें कर्क रेखासे उत्तर वृत्ततक और दक्षिणमें मकर रेखासे दक्षिण वृत्ततक पड़ते हैं (यहाँ सर्दी-ग़र्मी समान रूपमें रहती है)। **–शील**–वि० एक ही जैसे स्वभाव या आचरणका। **–श्रुति**–वि० समान अवकाशवाला। **–श्रेणी**–स्त्री० सीधी रेखा। **–संख्यात**–वि० बराबर संख्यावाला। **–संधि**–स्त्री० बराबरकी शर्तपर होनेवाली सुलह; पूरी सहायता करनेकी शर्तके साथ होनेवाली संधि (कौ०)। **–संस्थान**–पु० एक योगासन। **–समयवर्ती(र्तिन्)**–वि० युगपत् होनेवाला, साथ-साथ होनेवाला। **–सामयिक**–वि० (कनटेंपोरैरी) जो एक ही समयमें हुए हों या विद्यमान रहे हों। **–सिद्धांत**–वि० समान उद्देश्य लेकर चलनेवाला। **–सुप्ति**–स्त्री० समान या सामान्य निद्रा (कल्पका अंत और विश्वका प्रलय)। **–सूत्र,–सूत्रस्थ**–वि० एक ही व्यासपर स्थित। **–स्थ**–वि० समान, सदृश; चौरस; उन्नतिशील। **–स्थल**–पु० चौरस जमीन। **–स्थली**–स्त्री० गंगा-यमुनाके बीचका भूभाग, अंतर्देश, दोआब। **–स्थान**–पु० योगका एक आसन। **–हित**–पु० समान हितवाले देश या राष्ट्र (एंटेंट)।

सम, सम्म–पु० (अ०) विष, जहर। **–(म्मे)क़ातिल**–पु० घातक विष।

समअ़–पु० (अ०) कान। **–ख़राशी**–स्त्री० बक-बक करके खोपड़ी चाटना (वक्ता विनयवश अपने कथन, निवेदनके लिए कहता है, शब्दार्थ–कान छीलना)।

समक–स्त्री० (अ०) मछली।

समकर–वि० (सं०) समुद्री जंतुओंसे पूर्ण; दे० 'सम'में।

समक्न–वि० (सं०) एक ही समय या साथ जानेवाला; गमनकर्ता; झुका हुआ।

समक्ष–वि० (सं०) जो आँखोंके सम्मुख हो, गोचर, उपस्थित। अ० सामने। **–दर्शन**–पु० आँखोंसे देखना; आँखों देखा प्रमाण, चश्मदीद गवाहका बयान।

समक्षता–स्त्री० (सं०) गोचरता, दृश्य होनेका भाव।

समग़–पु० अ० गोंद। **–अरबी**–पु० बबूलका गोंद।

समग्ग–वि० समग्र, पूरा, सब।

समग्र–वि० (सं०) सब, पूरा। **–णी**–वि० सर्वश्रेष्ठ। **–भक्षणशील**–वि० सब कुछ भक्षण करनेवाला। **–युद्ध**–पु० जिस युद्धमें नागरिकों और सामाजिक क्षेत्रोंपर भी प्रहार किया जाय (टोटल वार)। **–शक्ति**–वि० सारी शक्तियोंसे युक्त। **–संपद्**–वि० सब प्रकारके सुखसे युक्त।

समग्रेंदु–पु० (सं०) पूर्ण चंद्र।

समज–पु० (सं०) जंगल; पशुओं, पक्षियोंका झुंड; मूर्ख-मंडली; इंद्र।

समज्या–स्त्री० (सं०) मिलन-स्थान, सभा आदिका स्थान; सभा, गोष्ठी; नामवरी, ख्याति।

समझ–स्त्री० बुद्धि, प्रज्ञा; खयाल, विचार। **–दार**–वि० बुद्धिमान्।

समझना–अ० ठीक और पूरा ज्ञान प्राप्त करना; वस्तुविशेषसे सम्बद्ध बातोंका अनुमान करना (डीम)। अ० क्रि० जान लेना; विचारना। स० क्रि० किसी बातको जान लेना। **समझ-बूझकर**–जान-बूझकर। मु० **(अपने आपको) कुछ समझना**–अपनेमें किसी विशिष्ट गुण या योग्यताका अभिमान। **–समझ रखना**–खयाल करना, जान लेना (चेतावनी)। **–समझ लेना**–बदला लेना; समझौता करना; जान लेना।

समझाना–स० क्रि० बोध, ज्ञान कराना, जतलाना।

समझाव, समझावा–पु० समझने, समझानेका भाव।

समझौता–पु० दोनों पक्षों द्वारा संधिकी शर्तोंकी स्वीकृति, राजीनामा; मेल (कॅम्प्रोमाइज़)।

समता–स्त्री०, **समत्व**–पु० (सं०) चौरस होनेका भाव; सादृश्य, बराबरी, अनुरूपता; निष्पक्षता; धीरता; उदारता; अभिन्नता; पूर्णता; साधारणता।

समताई*–स्त्री० समता, बराबरी।

समतिक्रम–पु० (सं०) उल्लंघन; उपेक्षा।

समतूल*–वि० समान, सदृश–'सुजन क प्रेम हेम समतूला'–विद्या०।

समत्रिबाहु त्रिभुज–पु० (ईक्वीलेटरल ट्राइएंगिल) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ बराबर हों।

समत्रिभाजन–पु० (ट्राइसेक्शन) (किसी कोणादिको) तीन बराबर हिस्सोंमें बाँटना।

समथ*–वि० समर्थ ।

समत्थ*–वि० दे० 'समर्थ' ।

समद–वि० (सं०) मतवाला; मस्त (हाथी); प्रसन्न । (अ०) श्रेष्ठ; निस्पृह; अनश्वर; ईश्वर ।

समदन–पु० (सं०) युद्ध; * भेंट, नजर, उपहार । वि० प्रेमोन्मत्त; धतूरेके पौधोंसे युक्त ।

समदना*–अ० क्रि० भेंटना, मिलना । स० क्रि० भेंट, नजर करना; सौंपना; ब्याहमें देना–'दुहिता समदौ सुख पाइ अवै'–रामचंद्रिका; आनंदसे मनाना ।

समदाना*–स० क्रि० सौंपना, सुपुर्द करना; रखना; धरना ।

समद्विबाहु त्रिभुज–पु० (आइसॉसिलीज़ ट्राइऐंगिल) वह त्रिभुज जिसकी दो भुजाएँ बराबर हों ।

समद्विभाग–पु०. दो समान भाग । **–करना**–स० क्रि० (टु बाइसेक्ट) दो बराबर भागोंमें बाँटना ।

समद्विभाजक–पु० (बाइसेक्टर) दे० 'अर्द्धक' ।

समधिक–वि० (सं०) बहुत अधिक, अतिशय; साधारणसे बहुत ज्यादा (एक्सीडिंग); असाधारण ।

समधिगत–वि० (सं०) पास गया हुआ ।

समधिगम–पु० (सं०) भली भाँति समझना, अनुभव करना ।

समधिगमन–पु० (सं०) बढ़ जाना, आगे निकल जाना ।

समधियान, समधियाना–पु० पुत्र या पुत्रीकी ससुराल ।

समधी–पु० पुत्रका या पुत्रीका ससुर ।

समधीत–वि० (सं०) अच्छी तरह पढ़ा हुआ, अध्ययन किया हुआ ।

समधुर–वि० (सं०) मीठा ।

समधुरा–स्त्री० (सं०) अंगूर ।

समधौरा†–पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें समधी परस्पर मिलते हैं ।

समध्व–वि० (सं०) साथ यात्रा करनेवाला ।

समनंतर–वि० (सं०) सटा हुआ, बिलकुल बगलका ।

समन*–पुं० यम; (अं० 'सम्मन्स') प्रतिवादी या गवाहको अदालतमें हाजिर होनेके लिए उसकी ओरसे भेजी जानेवाली लिखित सूचना। (सं०) वि० शमन करनेवाला । (अ०) दाम, मोल, बेचीकी कीमत । स्त्री० (फा०) चमेली । **–अंदाम,–पैकर**–वि० चमेलीकी लताकी तरह सुंदर, सुकुमार देहवाला । **–ज़ार**–पु० चमेलीका बाग । **–बार**–वि० फूल बरसानेवाला ।

समनगा–स्त्री० (सं०) बिजली; सूर्यकिरण ।

समनीक–पु० (सं०) युद्ध ।

समनुकीर्तन–पुं० (सं०) खूब बढ़कर प्रशंसा करना ।

समनुज्ञा–स्त्री० (सं०) अनुमति ।

समनुज्ञात–वि० (सं०) पूर्णतः स्वीकृत; जिसे अधिकार दिया गया हो; जिसे जानेकी आज्ञा दी गयी हो; अनुगृहीत ।

समनुज्ञान–पु० (सं०) पूर्ण स्वीकृति, अनुमति ।

समन्मथ–वि० (सं०) आसक्त, प्रणयाविष्ट ।

समन्वय–पु० (सं०) नियमित क्रम; संबद्ध फल, कार्यकारण संबंधका निर्वाह; संयोग; मेल, पटरी ।

समन्वित–वि० (सं०) संयुक्त; स्वाभाविक रूपमें क्रमबद्ध; अनुगत;···से युक्त;···द्वारा प्रभावित; जिसका मेल बैठाया गया हो ।

समन्वेषण–पु० (एक्सप्लोरेशन) किसी प्रदेश या क्षेत्रके भीतर जाकर, वहाँ पहुँचकर, चारों तरफकी स्थिति आदिका पता लगाना ।

समपरिधान–पु० (यूनीफॉर्म) सैनिकों, पुलिसवालों आदिके लिए निर्धारित विशेष पोशाक जो प्रायः सबके लिए एक-सी होती है । वर्दी ।

समपहरण–पु० (कनफिसकेशन) दंडके रूपमें सरकार द्वारा किसीके धन या संपत्तिका छीन लिया जाना, उसपर कब्जा कर लेना; राज्यसात्करण ।

समप्पन*–पु० दे० 'समर्पण' ।

समबहुभुज–पु० (रेगुलर पालीगॉन) वह बहुभुज जो समान भुजिक और समान कोणिक, दोनों हो ।

समभिप्लुप्त–वि० (सं०) परिप्लावित; अभिभूत; ग्रस्त, ग्रहण-युक्त (जैसे चंद्र) ।

समभिव्याहार–पु० (सं०) साथ वर्णन करना; साथ, संगति; प्रसिद्ध अर्थवाले शब्दका सान्निध्य ।

समभिश्यान–वि० (सं०) पूर्णतः जमा हुआ ।

समभिसरण–पु० (सं०) किसी ओर बढ़ना; प्राप्तिके लिए प्रयत्न करना ।

समभिहरण–पु० (सं०) हरण करना, ले लेना; आवृत्ति, बार-बार करना या होना ।

समभिहार–पु० (सं०) ग्रहण, हरण; आधिक्य; आवृत्ति ।

समभुज (या समानभुजिक) बहुभुज–पु० (ईक्विलेटरल पॉलीगॉन) वह बहुभुज जिसकी सब भुजाएँ आपसमें बराबर हों ।

समभ्याहार–पु० (सं०) साथ लाना; साथ, सान्निध्य ।

समस्मित आकृति–स्त्री० (सिमेट्रिकल फिगर) वह आकृति जिसको बीचकी रेखाके बल तह करनेपर रेखाके एक ओरका भाग ठीक-ठीक दूसरी ओरके भागको ढक ले ।

समस्मिति–स्त्री० (सिमेट्री) शरीरके या किसी वस्तुके विभिन्न अंगोंमें उचित अनुपातका होना, सुडौलपन ।

समय–पु० (सं०) काल; वक्त; अवसर; फुरसत; उपयुक्त काल; अंत समय; अंत; ठहराव; प्रथा; विहिताचार; कवि-समय; समझौता; नियम; आदेश; उपदेश; संकटकी स्थिति; शपथ; प्रतिज्ञा; संकेत; सीमा, हद; सिद्धांत; सफलता; अभ्युदय; उन्नतिकी या सौभाग्यकी स्थिति 'समय प्रताप भानु कर जानी'–रामा० । कष्टकी समाप्ति (ना०); संपर्क; भाषण, व्याख्यान । **–काम**–वि० प्रतिज्ञा, ठहरावका इच्छुक । **–कार**–पु० समय नियत करनेवाला; संकेत । **–क्रिया**–स्त्री० समय नियत करना; दिव्य परीक्षाकी तैयारी; आपसमें व्यवहारके लिए नियम बनाना । **–च्युति**–स्त्री० मौका चूक जाना, अवसर हाथसे निकल जाना । **–ज्ञ**–वि० समयका ज्ञान रखनेवाला । **–दान**–पु० (एंगेजमेंट) किसीसे मिलने, बात करने आदिके लिए कोई समय पहलेसे निर्धारित या निश्चित कर देना । **–धर्म**–पु० प्रतिज्ञा-संबंधी कर्तव्य । **–निष्ठ**–वि० (पंक्चुअल) समयकी पाबंदी रखनेवाला, प्रत्येक काम समयपर करनेवाला । **–पद**–पु० समझौतेका विषय । **–परिरक्षण**–पु० समझौतेका पालन । **–बंधन**–वि० प्रतिज्ञाबद्ध । पु० प्रतिज्ञाका बंधन । **–भेद**–पु० प्रतिज्ञा भंग करना । **–विद्या**–स्त्री० फलित ज्योतिष । **–विपरीत**–वि० वादेके खिलाफ; वादा पूरा न करनेवाला । **–वेला**–स्त्री० काल-परिमाण, अवधि । **–व्यभिचार**–पु० प्रतिज्ञा-भंग । **–व्यभिचारी (रिन्)**–वि० प्रतिज्ञा भंग करनेवाला । **–सारिणी,–सूची**–स्त्री० (टाइमटेबिल) ट्रेनोंके पहुँचने तथा छूटने या विशेष विषयोंकी पढ़ाई, परीक्षा आदि शुरू होनेके लिए निर्धारित समयकी सूची, समय-विभागपत्र, वेलापत्रक ।

समयाचार–पु० (सं०) प्रचलित व्यवहार ।

समयाध्युषित–पु० (सं०) वह समय जब न सूर्य दृष्टिगोचर हो और न तारे दिखाई देते हों, संध्या ।

समयानंद–पु० (सं०) एक भैरव (तं०) ।

समयानुवर्ती (तिन्)–वि० (सं०) प्रचलित रीतिके अनुसार चलनेवाला; अवसरवादी (अपॉच्र्यूनिस्ट) ।

समयोचित–वि० (सं०) अवसरके उपयुक्त (एक्सपीडियन) ।

समर–पु० (अ०) फल, मेवा; बदला; परिणाम; सत्कर्मका सुफल; * स्मर, मनोज; (सं०) युद्ध, लड़ाई । **–कर्म (न्)**–पु० युद्धकर्म, लड़नेका कार्य । **–क्षिति,–भू,–भूमि,–वसुधा**–स्त्री० युद्धक्षेत्र । **–पोत**–पु० युद्धपोत, रणपोत । **–मर्दन**–पु० शिव । **–मूर्धा-(र्धन्)**–पु० युद्धका अगला मोरचा । **–विजयी (यिन्)**–वि० युद्धमें विजय प्राप्त करनेवाला । **–व्यसनी (निन्)**–वि० युद्ध-प्रिय । **–शायी (यिन्)**–वि० वीरगति प्राप्त करनेवाला । **–शिर (स्)**–पु० दे० 'समरमूर्धा' । **–शूर**–पु० युद्धमें वीरता प्रकट करनेवाला व्यक्ति । **–सीमा**–स्त्री० युद्धभूमि ।

समरक़ंद–पु० तुर्किस्तानका एक इतिहासप्रसिद्ध नगर जो अमीर तैमूरकी राजधानी था और अब उजबक (सोवियत) प्रजातंत्रके

अंतर्गत है; उजवक प्रजातंत्रका एक सूवा ।

समरक़ंदी–वि० समरकंदका । **–तवाज़ा**–पु० झूठ-मूठकी दावत ।

समरत्थ*–वि० दे० 'समर्थ' ।

समरथ*–वि० दे० 'समर्थ' ।

समरांगण–पु० (सं०) युद्धभूमि ।

समरा–पु० (अ०) नतीजा, फल; वदला ।

समराख्य–पु० (सं०) एक ताल (संगीत) ।

समरागम–पु० (सं०) युद्ध छिड़ना ।

समराजिर–पु० (सं०) युद्धक्षेत्र ।

समराना*–स० क्रि० पहनाना, सजाना–'आभूखन सव जड़ावके समराये'–अष्टछाप ।

समरूपप्रस्ताव–पु० (आइडेंटिकल मोशन) किसी अन्य प्रस्तावसे विलकुल मिलता-जुलता प्रस्ताव ।

समरोचित–वि० (सं०) युद्धके उपयुक्त (जैसे हाथी) ।

समरोद्देश–पु० (सं०) युद्धक्षेत्र ।

समरोद्यत–वि० (सं०) युद्धके लिए तैयार ।

समर्घ–वि० (सं०) सस्ता, कम दामोंका ।

समर्चक–वि०, पु० (सं०) पूजा करनेवाला ।

समर्चन–पु० (सं०) अच्छी तरह अर्चन, पूजन करना; आदर-सत्कार करना ।

समर्चना–स्त्री० (सं०) दे० 'समर्चन' ।

समर्ण–वि० (सं०) कष्टग्रस्त, पीड़ित; आहत; याचित, प्रार्थित ।

समर्थ–वि० (सं०) वलवान्, सशक्त; योग्य; उपयुक्त; प्रशस्त; उपयुक्त वनाया हुआ, तैयार किया हुआ; समानार्थक; अर्थतः संवद्ध; समान या उपयुक्त उद्देश्य रखनेवाला; व्याकरणकी दृष्टिसे समान स्थितिका । पु० भावपूर्ण, महत्त्वका शब्द; योग्यता; वोधगम्यता; हित ।

समर्थक–वि० (सं०) योग्य; सँभालनेवाला; प्रमाणित करनेवाला; समर्थन करनेवाला, पुष्टि करनेवाला, ताईद करनेवाला ।

समर्थता–स्त्री०, **समर्थत्व**–पु० (सं०) योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति; अर्थादिकी अभिन्नता ।

समर्थन–पु० (सं०) पुष्टि करना, ताईद करना (सपोर्ट), अनुपोषण; विवेचन, विचार करना; अंतर दूर कर सामंजस्य स्थापित करना, विवादका अंत करना; पक्ष ग्रहण करना; किसी वस्तुके औचित्यानौचित्यका निर्णय करना; आपत्ति; सामर्थ्य, शक्ति; उत्साह; योग्यता; अध्यवसाय ।

समर्थना–स्त्री० (सं०) आमंत्रण; अनुरोध; असंभव वातके लिए हठ करना; दे० 'समर्थन' ।

समर्थनीय–वि० (सं०) समर्थन करने योग्य; प्रमाणित करने योग्य; निश्चित करने योग्य ।

समर्थित–वि० (सं०) विवेचित, विचारित, निर्णीत; निश्चित, जिसका संकल्प किया गया हो; जिसकी पुष्टि या ताईद की गयी हो; प्रमाणित; सामर्थ्ययुक्त, योग्य ।

समर्थ्य–वि० (सं०) दे० 'समर्थनीय' ।

समर्द्धक, समर्धक–वि० (सं०) वर देनेवाला (देव, ऋषि आदि); समृद्ध, उन्नत करनेवाला ।

समर्पक–वि० (सं०) समर्पण करनेवाला ।

समर्पण–पु० (सं०) अर्पित करना (डेडिकेशन); शत्रुके हाथमें सौंपना, देना (सरेंडर); भेंट करना; जतलाना, सूचित करना; पात्रोंकी आपसकी भर्त्सना (ना०) । **–मूल्य**–पु० (सरेंडर वैल्यू) अवधि पूरी होनेके पहले ही वीमापत्र समर्पित कर देनेपर वीमा करानेवालेको उसके वदले दिया जानेवाला धन ।

समर्पना*–स० क्रि० सौंपना, समर्पण करना ।

समर्पयिता(तृ)–वि० (सं०) समर्पण करनेवाला, देनेवाला, सौंपनेवाला ।

समर्पित–वि० (सं०) समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, सौंपा हुआ; निक्षिप्त; रखा या जमाया हुआ; प्रत्यर्पित;......से भरा हुआ, पूर्ण ।

समर्प्य–वि० (सं०) समर्पणीय, समर्पण करने योग्य ।

समर्याद–वि० (सं०) परिमित, सीमित; निकट; सच्चरित्र, औचित्यकी सीमाके अंदर रहनेवाला; शिष्ट; विनम्र ।

समर्हण–पु० (सं०) सम्मान, आदर; उपढौकन, आदरपूर्वक दी जानेवाली भेंट ।

समलंकृत–वि० (सं०) खूब सजा हुआ, अलंकारादिसे पूर्णतः विभूषित ।

समल–वि० (सं०) मलयुक्त; गंदा; अशुद्ध; पापी । पु० मल, विष्ठा; एक असुर ।

समवकार–पु० (सं०) रूपकका एक भेद जिसमें तीन अंक होते हैं और देवासुरोंके वीरतापूर्ण कार्योंका उल्लेख होता है ।

समवच्छन्न–वि० (सं०) पूर्णतः आवृत, विलकुल ढका हुआ ।

समवतार–पु० (सं०) उतार; नदी आदिमें उतरनेकी सीढ़ी, घाट, तीर्थ ।

समवत्त–वि० (सं०) काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

समवधान–पु० (सं०) पूर्ण मनोयोग; तैयारी; मिलना, एकत्र होना ।

समवरोध–पु० (ब्लाकेड) किसी स्थान आदिका शत्रुकी सेनाओं, जहाजों आदि द्वारा इस तरह घेर लिया जाना जिससे आवागमनके मार्ग विलकुल अवरुद्ध हो जायँ, नाकेवंदी ।

समवर्णोपधान–पु० (सं०) वढ़िया मालमें घटिया मिलाना (कौ०) ।

समवर्तन–पु० (सं०) आवश्यकताकी दृष्टिसे किसी वस्तुका यथोचित विभाजन; समानवर्तन या व्यवहार ।

समवर्ती–वि० (कानकरेंट) साथ-साथ होने, रहने या चलनेवाला ।

समवश्यान–वि० (सं०) वर्वाद, नष्ट ।

समवसरण–पु० (सं०) सभा, गोष्ठी; उतरनेका स्थान; जिनका अवतार; उद्देश्य (वौ०) ।

समवस्कंद–पु० (सं०) दुर्गप्राचीर, परकोटा ।

समवस्था–स्त्री० (सं०) स्थिर अवस्था; समान अवस्था; अवस्था ।

समवस्थित–वि० (सं०) ठहरा हुआ, स्थिर; दृढ़; तैयार, उद्यत; जो किसी स्थानपर हो ।

समवहार–पु० (सं०) राशि; परिमाण; आधिक्य, प्राचुर्य; मिश्रण ।

समवाप्त–वि० (सं०) लब्ध, प्राप्त ।

समवाप्ति–स्त्री० (सं०) लब्धि, प्राप्ति ।

समवाय–पु० (सं०) संयोग, मेल; राशि, समूह; एकत्र होना; घनिष्ठ संवंध; अभेद्य संवंध, नित्य संवंध (जैसे–पदार्थ और गुण, अंगी और अंगका–वैशे०); नियमानुसार गठित वह व्यापारिक संस्था जिसमें कई हिस्सेदारोंकी पूँजी लगी हो, जिन्हें अपने हिस्सोंकी पूँजीके अनुसार लाभांश पानेका हक होता है (कम्पनी), प्रमंडल । **–संवंध**–पु० नित्य संवंध ।

समवायन–पु० (सं०) संपर्क स्थापित होना, संयोग होना, मिलना ।

समवायिक–वि० (सं०) जिसके साथ समवाय-संवंध हो ।

समवायी(यिन्)–वि० (सं०) घनिष्ठ रूपमें संवद्ध; जिसके साथ अभेद्य संवंध हो, नित्य संवंधी; राशिमय; वहुल । पु० हिस्सेदार; अंग, अवयव । **–(यि)कारण**–पु० वह कारण जो पृथक् न किया जा सके, अंतर्निहित हो, उपादान कारण (वैशे०) ।

समवेक्षित–वि० (सं०) विवेचित, विचारित ।

समवेत–वि० (सं०) संयुक्त, मिला हुआ; नित्य रूपमें संवद्ध; अंतर्भूत; जमा किया हुआ । पु० नित्य रूपमें संवद्ध होनेकी अवस्था ।

समष्टि–स्त्री० (सं०) सामूहिकता, संपूर्णता; समवेत सत्ता (वे०); एक जैसे अंगोंका समूह, व्यष्टिका उलटा । **–वाद**–ऐसा साम्यवाद जिसमें यह माना जाता है कि सभी पदार्थोंके उत्पादन और वितरणका सारा अधिकार राष्ट्रके हाथमें रहना चाहिए (कलेक्टिविज्म) ।

समष्ठिल–पु० (सं०) एक कँटीला पौधा, कोकुआ; गंडीर, पोय ।

समष्ठिला–स्त्री० (सं०) समष्ठिल, गंडीर साग; सूरन ।

समष्ठीला–स्त्री० (सं०) दे० 'समष्ठिल' ।

समसन–पु० (सं०) संयुक्त करना, जोड़ना; संक्षिप्त करना, संकुचित करना; समासका रूप देना ।

समसर*–स्त्री० बराबरी–'प्रीतम रूप कजाकके समसर कोई नाहिं' –रतन० ।

समसेर–स्त्री० शमसेर, तलवार ।

समस्त–वि० (सं०) जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ; समासके रूपमें परिणत; सब, समग्र, संपूर्ण; संक्षिप्त किया हुआ; सबमें व्याप्त (वे०) । पु० समवाय, सभी अंगोंका योग, समष्टि । **–धाता-(तृ)**–पु० सबका पालन करनेवाला (विष्णु) । **–विषयिक**–वि० सारे देशमें बसनेवाला ।

समस्तिका–स्त्री० (सं०) लेख, कथन आदिका सारांश (एब्सट्रैक्ट)।

समस्थानिक–पु० (आइसोटोप) एक ही तत्त्वके दो या दोसे अधिक परमाणु यदि ऐसे हैं कि उनके 'परमाणु क्रमांक' तो एक ही हैं किंतु उनके परमाणुभारमें अंतर है तो वे एक दूसरेके समस्थानिक कहलाते हैं ।

समस्य–वि० (सं०) संयुक्त करने योग्य; समासका रूप देने योग्य; पूर्ण करने योग्य ।

समस्या–स्त्री० (सं०) संयोग, मेल; साथ रहना; पूर्ण करनेके लिए दिया जानेवाला छंदका अंतिम चरण या चरणांश; कठिन विषय, टेढ़ा मामला, जटिल प्रश्न । **–पूर्ति**–स्त्री० छंदके चरण या चरणांशके आधारपर उसे अंतमें रखते हुए छंदकी पूर्ति करना ।

समाँ–पु० समय; ऋतु; जमाना, मौका; बहार; दृश्य, नजारा; रौनक, चमक-दमक । **मु० –बँधना**–रंग जमना, गाने या नाचसे प्रभावित होना । **–बदल जाना**–स्थिति बदल जाना । **–बाँधना** –रंग जमाना ।

समांगी–पु० (होमोजीनियस) जिसके हर भागकी संरचना एक समान हो ।

समांत–पु० (सं०) पड़ोसी; वर्षका अंत ।

समांतक–पु० (सं०) कामदेव ।

समांश–पु० समान भाग । वि० समान भागवाला ।

समांशक–वि० (सं०) समान भाग पानेवाला ।

समांशिक–वि० (सं०) समान भागोंवाला; समान भाग पानेवाला ।

समांशी(शिन्)–वि० (सं०) समान भाग पानेवाला ।

समांस–वि० (सं०) मांसयुक्त; मांसल ।

समांसमीना–स्त्री० (सं०) हर साल बच्चा देनेवाली गाय ।

समा–पु० दे० 'समाँ'; (अ०) आकाश, आसमान । **–वी**–वि० आकाशीय; दैवी, ग़ैबी । स्त्री० (सं०) वर्ष, संवत्सर, साल ।

समाअ़–पु० (अ०) राग सुनना; राग सुननेसे होनेवाली तल्लीनता ।

समाअत–स्त्री० (अ०) सुनना; श्रवणशक्ति; मुकदमेकी सुनवाई; विचार । **–के क़ाबिल**–सुनने लायक, विचार करने योग्य (मुकदमा) ।

समाई–स्त्री० समानेका भाव; सामर्थ्य । वि० (अ०) सुना हुआ, श्रुतिपर आश्रित; (शब्द) जिसे अहलेजबान बोलते हों (उनसे सुना गया हो), पर किसी नियमसे व्युत्पन्न न हो (व्या०) ।

समाउ*–पु० गुंजाइश, निर्वाह ।

समाकर्षण–पु० (सं०) अपनी ओर खींचना ।

समाकर्षी(षिन्)–वि० (सं०) अपनी ओर खींचने, आकृष्ट करनेवाला; दूरतक फैलनेवाला; खुशबू फैलानेवाला । पु० दूरतक फैलानेवाली खुशबू ।

समाकलन–पु० (क्रेडिट) किसीके खातेमें उससे प्राप्त कोई रकम या धन जमाकी ओर लिखना; एक ही प्रकारकी अनेक एकत्र वस्तुओंका मिलान करके देखना कि उनका क्रम या व्यवस्था ठीक है अथवा नहीं ।

समागमन–पु० (रैली) दे० 'समवेतन' ।

समाकार–वि० (सं०) एक ही आकारका, एकरूप ।

समाकुंचित–वि० (सं०) समाप्त किया हुआ, रोका हुआ (भाषण)।

समाकुल–वि० (सं०) अत्यंत व्यग्र, घबराया हुआ, बदहवास; ··· से भरा हुआ, ··· से पूर्ण ।

समाक्षिक–वि० (सं०) मधुयुक्त ।

समाख्या–स्त्री० (सं०) नामवरी, प्रसिद्धि, ख्याति; नाम, संज्ञा; व्याख्या ।

समाख्यात–वि० (सं०) गिना हुआ, शुमार किया हुआ; प्रसिद्ध, ख्यात; पूर्ण रूपसे वर्णित, घोषित; अभिहित ।

समाख्यान–पु० (सं०) नाम लेना; वर्णन; व्याख्या ।

समागत–वि० (सं०) पहुँचा हुआ; लौटा हुआ; आकर मिला हुआ; जो संयुक्त अवस्थामें हो ।

समागता–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली जिसका अर्थ संधिके द्वारा छिपा दिया जाता है ।

समागति–स्त्री० (सं०) आकर मिलना, योग; पहुँचना; एक जैसी अवस्था ।

समागम–पु० (सं०) भेंट, मिलन; भिड़ंत; साथ, संगति; आना, आगमन; (ग्रहोंका) योग; संघ, समूह; मैथुन ।

समागलित–वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित ।

समागाढ–वि० (सं०) अत्यंत गाढ़ा, बहुत घना; गुंजान ।

समाघात–पु० (सं०) युद्ध; वध ।

समाघ्राण–पु० (सं०) अच्छी तरह सूँघना ।

समाघ्रात–वि० (सं०) अच्छी तरह सूँघा हुआ ।

समाचक्षण–पु० (सं०) अच्छी तरह कहना; विवरण देना; निरूपण करना ।

समाचयन–पु० (सं०) संचय, चयन, संग्रह करना, एकत्र करना ।

समाचरण–पु० (सं०) अभ्यास करना; पूरा करना; व्यवहार करना ।

समाचरित–वि० (सं०) सम्यक् रूपमें आचरण किया हुआ; व्यवहृत ।

समाचार–पु० (सं०) व्यवहार, आचरण; सम्यक् या समान आचरण; रीति; प्रथा; वृत्तांत, संवाद, खबर; विवरण । **–पत्र**–पु० वह कागज जिसमें देश-विदेशकी खबरें छपी रहती हैं, अखबार । **–प्रसारण**–पु० (सं०) आकाशवाणी द्वारा समाचारोंका प्रसारित किया जाना (ब्राडकास्टिंग) । **–प्रेष**–पु० (न्यूज़ डिस्पैच) समाचारोंका भेजा जाना; वह सामग्री जो समाचारके रूपमें भेजी जाय, समाचार-सामग्री । **–सूचना**–स्त्री० (प्रेस नोट) समाचारपत्रोंके लिए या समाचारके रूपमें प्रकाशित सूचना ।

समाचीर्ण–वि० (सं०) व्यवहृत, आचरित; पूरा किया हुआ ।

समाचेष्टित–वि० (सं०) जिसके लिए चेष्टा की गयी हो; व्यवहृत, आचारित । पु० अंगभंगी; व्यवहार, आचरण ।

समाज–पु० (सं०) मिलना, एकत्र होना; समूह; संघ, दल; सभा, समिति; समान कार्य करनेवालोंका समूह; विशेष उद्देश्यकी पूर्तिके लिए संघटित संस्था (सोसाइटी); ग्रहोंका एक योग; आधिक्य; हाथी; * तैयारी, सरंजाम –'मृगया कर सब साजि समाजा ।'–रामा० । **–बहिष्कृत**–वि० सामाजिक नियमोंका उल्लंघन करनेवाला (व्यक्ति), जो समाज बहिष्कृतिको अपने जीवनकी उपलब्धि मानता है । **–वाद**–पु० (सोशलिज्म) यह सिद्धांत कि व्यक्तिगत स्वतंत्रताकी अपेक्षा समाजके सामूहिक हितको अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिये (वस्तुओंका उत्पादन सहयोगिताके आधारपर किया जाय, उसमें व्यक्तिगत प्रतिद्वंद्विता न हो, भूमि और पूँजीपर समाजका नियंत्रण हो आदि बातें इसीके अंतर्गत हैं) । **–वादी**–पु० (सोशलिस्ट) समाजवादका अनुयायी । वि० समाजवादका सिद्धांत माननेवाला; समाजवादके अनुकूल या उससे संबंध रखनेवाला । **–शास्त्र**–पु० मनुष्यको सामाजिक प्राणी मानकर समाजके प्रति उसके कर्तव्यों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र (सोशियालॉजी) । **–सन्निवेशन**–पु० सभाके उपयुक्त स्थान, सभा-भवन । **–सुधार**–पु० सामाजिक कुरीतियाँ दूर करना (सोशलरिफार्म) । **–सेवक** –पु० समाजके हितके लिए कार्य करनेवाला । **–सेवा**–स्त्री० समाजका हित-साधन । **–सेवी(विन्)**–वि०, पु० समाज सेवा करनेवाला ।

समाजत–स्त्री० (अ०) खुशामद; लज्जा, शर्मिंदगी; अनुनय (मिन्नत-समाजत), निकृष्टता ।

समाजी–पु० सपरदा; साजिंदा; आर्यसमाजके सिद्धांतोंको माननेवाला, आर्यसमाजी ।

समाजीकरण–पु० (सोशलाइजेशन) किसी उद्योग, व्यवसायादिको

ऐसा रूप देना जिससे उसपर सारे समाजका अधिकार हो जाय और उसका लाभ सब लोग समान रूपसे उठा सकें।

समाज्ञप्त–वि० (सं०) जिसे आज्ञा दी गयी हो, आदिष्ट।

समाज्ञा–स्त्री० (सं०) ख्याति, प्रसिद्धि; नाम, संज्ञा।

समाज्ञात–वि० (सं०) जाना हुआ; माना हुआ।

समातत–वि० (सं०) फैलाया हुआ; ताना हुआ (धनुष्); निरंतर, अविच्छिन्न।

समाता(तृ)–स्त्री० (सं०) माताके समान मान्य स्त्री; विमाता।

समातृक–वि० (सं०) मातृयुक्त।

समादत्त–वि० (सं०) गृहीत; प्राप्त।

समादर–पु० (सं०) विशेष आदर, प्रतिष्ठा, सत्कार।

समादरणीय–वि० (सं०) विशेष आदर करने योग्य, सम्मान्य।

समादान–पु० (सं०) पूर्ण रूपसे ग्रहण करना; अपनेपर लेना; आरंभ करना; निश्चय, संकल्प; उपयुक्त दान आदि प्राप्त करना; जैनोंका नित्यकर्म; * दे० 'शमादान'।

समादापन–पु० (सं०) उसकाना, बढ़ावा देना।

समादृत–वि० (सं०) सत्कृत, सम्मानित।

समादेय–वि० (सं०) ग्रहण करने योग्य; स्वागत करने योग्य, आदर करने योग्य।

समादेश–पु० (सं०) आज्ञा, आदेश, निर्देश (कमांड); निषेधाज्ञा, व्यादेश। **–याचिका**–स्त्री० (रिट ऑफ़ मैण्डमस) किसी राजनीतिक या विधिक आदेशकी कार्यान्विति रोकनेके लिए उच्च न्यायालयमें उपस्थित याचिका या दर्खास्त।

समाद्रित*–वि० दे० 'समादृत'।

समाधा–स्त्री० (सं०) दे० 'समाधान'।

समाधान–पु० (सं०) मिलाना, साथ करना; मेल बैठाना; सावधानता; औत्सुक्य; ध्यान; समाधि; संदेहनिवारण, निराकरण; प्रगाढ़ता; धीरता, स्थिरता; प्रतिपादन; सहमत होना, अंगीकार करना; मुख-संधिका एक अंग, बीजस्थापन (वह घटना जिससे कथानककी उत्पत्ति होती है (ना०)।

समाधानना*–स० क्रि० संतोष, समाधान करना; सांत्वना देना।

समाधि–स्त्री० (सं०) साथ रखना, मिलाना; गरदनका जोड़ या उसकी एक विशेष स्थिति; एक जगह जमाना; योगका अंतिम अंग–मनको ब्रह्मपर केंद्रित करना; योग साधनाका चरम फल; मनोयोग; तपस्या; मतभेद दूर करना; मौन; अंगीकार, स्वीकृति; प्रतिज्ञा; परिशोध; पूरा करना; अध्यवसाय; असंभव बातके लिए प्रयत्न करना; (दुर्भिक्षमें) अन्न जमा करना; वह मकान आदि जो शव-स्थलपर बनाया जाता है; एक अर्थालंकार जिसमें अन्य कारणोंके योगसे कार्य-सिद्धि वर्णित होती है; वृत्ति (शैली)का एक गुण; सहारा; नियम; इंद्रियनिरोध; शांति, चैन 'सो किमि लहै समाधि'–रामा०; सत्तरहवाँ कल्प। **–क्षेत्र,–स्थल**–पु० वह स्थान जहाँ साधुओं आदिको गाड़ते हैं। **–गर्भ**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–दशा**–स्त्री० ध्यानमें ब्रह्मसाक्षात्कारकी अवस्था। **–निष्ठ**–वि० समाधिस्थ। **–भंग**–पु० बाधा पड़नेके कारण समाधि, ध्यानका भंग होना। **–भृत्**–वि० समाधिमें लीन। **–भेद**–पु० दे० 'समाधिभंग'। **–मोक्ष**–पु० संधि भंग करना (कौ०)। **–लेख**–पु० (एपिटा) किसी कब्र या समाधिके पत्थरपर याददाश्तके रूपमें लिखा जानेवाला लेख। **–समानता**–स्त्री० समाधिका एक प्रकार (बौ०)। **–स्थ**–वि० समाधिमें स्थित।

समाधित–वि० (सं०) तुष्ट, शांत किया हुआ; जिसने समाधि लगायी या ली हो (?)।

समाधी(धिन्)–वि० (सं०) समाधिस्थ।

समाधूत–वि० (सं०) भगाया हुआ, तितर-बितर किया हुआ।

समाधेय–वि० (सं०) समाधान करने योग्य; व्यवस्थित करने योग्य; निर्देश करने योग्य; अंगीकार करने योग्य; (कंपाउंडेबिल) जिसे आपसमें निपटा लेने–समाधान करनेका अधिकार दोनों पक्षोंको हो (अपराध, विवाद)।

समाध्मात–वि० (सं०) फूँककर फुलाया हुआ; गर्वित।

समान–वि० (सं०) तुल्य, सदृश, एक-सा, बराबर, आकार, उम्र, पद आदिका; नेक, भला; साधारण; सम्मानित; क्रोधयुक्त; समान परिमाणका; एक ही स्थानसे उच्चारण किया जानेवाला (स्वर, अक्षर); बीचका। पु० बराबरीका साथी; शरीरस्थ पाँच प्राणवायुओंमेंसे एक जो नाभिके खातमें रहती है और पाचनके लिए आवश्यक है; एक ही स्थानसे बोले जानेवाले अक्षर। **–करण**–वि० एक ही उच्चारण-स्थानवाला (स्वर)। **–कर्तृक**–वि० जिनका कर्त्ता एक ही (समान) हों (व्या०)। **–कर्म(न्)**–पु० एक ही काम; एक ही कर्म (व्या०)। **–कर्मक**–वि० जिनका कर्म एक ही (समान) हो (व्या०); एक ही तरहका काम करनेवाले। **–कारक**–वि० सबको एक जैसा कर देनेवाला (काल)। **–काल,–कालीन**–वि० सम-सामयिक, एक ही समय होनेवाले। **–कोणिक बहुभुज**–पु० (ईक्विऐंग्यूलर पॉलिगॉन) वह बहुभुज जिसके सब कोण आपसमें बराबर हों। **–गति**–वि० आपसमें एकमत होनेवाले। **–गोत्र**–वि० सगोत्र, एक ही वंशका। **–ग्रामीय**–वि० एक ही ग्राममें रहनेवाले। **–जन**–पु० समान पदवाला व्यक्ति; एक ही वंशका व्यक्ति। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जिनका उत्पत्तिस्थान एक हो; एक उम्रके, हमउम्र। **–जातीय**–वि० एक ही वर्गका। **–तंत्र**–वि० जिनका काम समान हो, एक ही काम करनेवाले। **–तेजा(जस्)**–वि० समान कांति या गौरववाला। **–दुःख**–वि० सहानुभूति दिखानेवाला। **–देवत,–देवत्य**–वि० एक ही देवता-संबंधी। **–धर्मा(र्मन्)**–वि० एक ही जैसे गुणवाला (ले)। **–नामा(मन्)**–वि० समान नामवाला, नामरासी। **–निधन**–वि० एक ही परिणामवाले। **–प्रेमा(मन्)**–वि० एक-सा प्रेम करनेवाला। **–मान**–वि० जिसे बराबरीका सम्मान प्राप्त हो। **–यम**–पु० स्वरका वही उच्च ग्राम (संगीत)। **–योनि**–वि० एक ही योनि, स्थानसे उत्पन्न। **–रुचि**–वि० एक-सी रुचिवाला। **–रूप**–वि० एक ही रंग, शक्लवाले। **–वयस्क**–वि० हमउम्र। **–वर्चस**–वि० वैसी ही कांतिवाला। **–वर्ण**–वि० एक-से रंगवाले; एक ही स्वर वर्णवाले। **–वसन**–वि० समान वस्त्र धारण करनेवाले। **–विद्य**–वि० समकक्ष विद्वान्। **–शब्दा**–स्त्री०. एक तरहकी पहेली। **–शील**–वि० एक जैसे स्वभाववाले। **–संख्य**–वि० बराबर संख्यावाला। **–सलिल**–वि० दे० 'समानोदक'। **–स्थान**–पु० मध्य-स्थान। वि० जो एक जैसे स्थानपर हो।

समानता–स्त्री०, **समानत्व**–पु० (सं०) तुल्यता, सादृश्य, बराबरी।

समानयन–पु० (सं०) एकत्र करना; आदर-पूर्वक ले आना।

समानर्षि–वि० (सं०) एक ही ऋषिके वंश या गोत्रमें उत्पन्न।

समानांतर–वि० (सं०) (रेखाएँ आदि) जो नित्य समान अंतरपर रहें (पैरलल); साथ-साथ चलने, काम करनेवाला (समानांतर सरकार)। **–चतुर्भुज**–पु० (पैरेलेलोग्राम) वह चतुर्भुज जिसकी आमने-सामनेकी भुजाएँ समानांतर हों। **–रेखाएँ**–स्त्री० (पैरेलल लाइंस) वे रेखाएँ जो एक ही समतलमें हों और जो एक दूसरीसे न मिलें।

समाना–अ० क्रि० भीतर आना; अटना। स० क्रि० अटाना, भरना।

समानाधिकरण–वि० (सं०) समान कारक विभक्तिसे युक्त; एक ही श्रेणीका; जिनका आधार एक ही पदार्थ हो (वैशे०); जो समान स्थानपर हो। पु० एक ही कारककी विभक्तिसे युक्त होना; समान श्रेणी; समान आधार आदि।

समानाधिकार–पु० (सं०) जातीय गुण; बराबरीका अधिकार।

समानार्थ–वि० (सं०) जिनका उद्देश्य एक हो; एक अर्थवाले (शब्द); पर्याय (सिनोनिम)।

समानार्थक–वि० (सं०) एक ही अर्थ रखनेवाले (शब्द); पर्यायवाची (सिनॉनिमस)।

समानिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

समानुपात–पु० (सं०) समान अनुपात (प्रोपोर्शन)।

समानुपातिक–वि० (सं०) समानुपात संबंधी (प्रोपोर्शनेट)।

समानोदक–वि० (सं०) साथ तर्पण करनेवाले (ग्यारहवींसे चौदहवीं पीढ़ीतक एक ही पूर्वजवाले–सातवींतकके संबंधी समानोदक होनेके साथ सपिंड भी होते हैं)।

समानोदर्य–वि० (सं०) एक गर्भसे उत्पन्न, सहोदर । पु० सगा भाई ।

समानोपमा–स्त्री० (सं०) उपमाका एक प्रकार जिसमें उच्चारणकी दृष्टिसे एक ही शब्द भिन्न प्रकारसे खंड करनेपर भिन्न अर्थोंका द्योतक होता है ।

समाप–पु० (सं०) देवताको नैवेद्य आदि चढ़ाना, देवयजन ।

समापक–वि० (सं०) समाप्त, पूर्ण करनेवाला ।

समापतित–वि० (सं०) आया हुआ; घटित ।

समापत्ति–स्त्री० (सं०) मिलन; संयोगसे भेंट हो जाना; संयोग, मौका; मूल रूप ग्रहण करना; पूर्ति, समाप्ति; वशमें होना; ध्यानका एक अंग । –दृष्ट–वि० जो संयोगसे नजर आ गया हो ।

समापन–पु० (सं०) पूर्ण, समाप्त करना; प्राप्ति; वध करना; ग्रंथका खंड या अध्याय; समाधि; (वाइंडिंग अप, क्लोजर) कुछ और कहने या तर्क आदि देनेके बाद किसी प्रश्नका विचार या विवाद समाप्त करना । –प्रस्ताव–पु० (मोशन ऑव क्लोजर) दे० 'विवादांतप्रस्ताव' ।

समापनीय–वि० (सं०) समाप्त करने योग्य; वध करने योग्य, वध्य । –पट्टा–पु० (टरमिनेविल लीज़) कुछ समयके बाद समाप्त हो जानेवाला पट्टा ।

समापन्न–वि० (सं०) प्राप्त; घटित; आया हुआ; पूरा किया हुआ; सुविन्न, ज्ञाता; ·····से युक्त; कष्टग्रस्त; निहत । पु० समाप्ति, पूर्ति; अंत, मृत्यु ।

समापवर्तक–वि० (सं०) समापवर्तन करनेवाला । पु० दो या अधिक राशियोंको अलग-अलग भाग देनेपर पूरी कट जानेवाली राशि (ग०) (कॉमनफैक्टर) ।

समापवर्तन–पु० (सं०) राशियोंका अपवर्तन करके समापवर्तक निकालनेकी क्रिया (ग०) ।

समापादन–पु० (सं०) पूरा करना; मूल रूप प्रदान करना ।

समापिका–स्त्री० (सं०) वाक्य-पूर्तिके निमित्त आनेवाली क्रिया (व्या०) ।

समापित–वि० (सं०) समाप्त, पूर्ण किया हुआ ।

समापी(पिन्)–वि० (सं०) समाप्त करनेवाला ।

समापूर्ण–वि० (सं०) पूर्णतः भरा हुआ; समग्र, संपूर्ण ।

समाप्त–वि० (सं०) पूरा किया हुआ; चतुर, बुद्धिमान् । –प्राय –वि० लगभग समाप्त ।–भूयिष्ठ–वि० लगभग पूरा किया हुआ । –लंभ–पु० एक बड़ी संख्या (बौ०) । –शिक्ष–वि० जिसका अध्ययन पूरा हो गया हो । –सैन्य–पु० एक ही ढंगसे लड़नेवाली सेना ।

समाप्ताल–पु० (सं०) स्वामी, पति ।

समाप्ति–स्त्री० (सं०) अंत, पूर्ति, पूर्ण होना; पूर्ण प्राप्ति (विद्यादिकी); शरीरकी पंचत्व-प्राप्ति, विभिन्न तत्त्वोंमें मिल जाना; अवधि, सीमा आदिका अंत होना (एक्सपायरी, एक्सपायरेशन); विवादका अंत करना (एक्सटिंक्शन); अंतर दूर करना ।

समाप्तिक–वि० (सं०) अंतिम, जिससे अंत हो; जिसने कोई काम पूरा किया है । पु० समाप्त करनेवाला; वह जिसने वेदाध्ययन समाप्त किया है ।

समाप्य–वि० (सं०) समाप्त, पूरा करने योग्य ।

समाप्यायित–वि० (सं०) पोषित, अनुप्राणित ।

समाप्लव, समाप्लाव–पु० (सं०) गोता लगाना, नहाना ।

समाप्लुत–वि० (सं०) प्लावित; ···से भरा हुआ; स्नात ।

समाभाषण–पु० (सं०) वार्तालाप ।

समाम्नात–वि० (सं०) बार-बार कहा हुआ; (बात) जो परंपराके रूपमें चली आती हो; वर्णित । पु० वर्णन, कथन ।

समाम्नान–पु० (सं०) स्मृतिके आधारपर आवृत्ति करना; वर्णन ।

समाम्नाय–पु० (सं०) परंपरासे प्राप्त होना; परंपरागत वचनों आदिका संग्रह, शास्त्र; वर्णन; समूह, संग्रह; शिव; संहार, प्रलय ।

समाम्नायिक–पु० (सं०) शास्त्रज्ञ; शास्त्रविषयक ।

समाय–पु० (सं०) आगमन ।

समायत–वि० (सं०) फैलाया हुआ ।

समायत्त–वि० (सं०) अवलंबित, किसीके सहारे टिका हुआ ।

समायात–वि० (सं०) निकट आया हुआ; लौटा हुआ ।

समायी(यिन्)–वि० (सं०) साथ होनेवाला ।

समायुक्त–वि० (सं०) जोड़ा हुआ; तैयार किया हुआ; नियुक्त; संपर्कमें लाया हुआ; ···से युक्त; दत्तचित्त; किसीके पास पहुँचाया हुआ (सप्लायड) ।

समायुत–वि० (सं०) एकत्र किया हुआ; संयुक्त किया हुआ; ···से युक्त ।

समायोग–पु० (सं०) संयोग, संबंध; तैयारी; युक्त करना (धनुष्से बाण); निशाना ठीक करना; राशि, समूह; हेतु; उद्देश्य; बहुत आदमियोंका एकत्र होना ।

समायोजन–पु० (सप्लाई) आवश्यक वस्तुओंका जोगाड़ करना; जो कुछ आवश्यक हो उसे जुटाना और ऐसी व्यवस्था करना कि जिसे चाहिये उसे वह मिल जाय, उसके पास पहुँच जाय ।

समारंभ–पु० (सं०) आरंभ; उद्यम, साहसपूर्ण कार्य; साहसिक कार्यकी भावना; अंगराग ।

समारंभण–पु० (सं०) ग्रहण करना; आरंभ करना; आलिंगन; अंगराग लगाना ।

समारब्ध–वि० (सं०) आरंभ किया हुआ; जिसने कार्यारंभ किया है; घटित ।

समारभ्य–वि० (सं०) आरंभ करने योग्य ।

समाराधन–पु० (सं०) तुष्ट, प्रसन्न करना; प्रसन्न करनेका साधन; सेवा-टहल, आराधना ।

समारूढ–पु० (सं०) जो चढ़ा हो; जो चढ़ा गया हो; जिसने अंगीकार किया है; बढ़ा हुआ; भरा हुआ (घाव) ।

समारोप–पु० (सं०) ऊपर रखना; चढ़ाना (धनुष्); स्थानांतरण ।

समारोपक–वि० (सं०) उपजानेवाला; बढ़ानेवाला ।

समारोपण–पु० (सं०) आरोप करना; स्थानांतरण; चढ़ाना (धनुष्) ।

समारोपित–वि० (सं०) चढ़ाया हुआ; ताना हुआ (धनुष्); रखा हुआ; स्थानांतरित ।

समारोह–पु० (सं०) आरोह, चढ़ना; (किसी बातपर) राजी होना; उत्सवादिका आयोजन, धूमधाम (फंक्शन) ।

समारोहण–पु० (सं०) चढ़ने, सवार होनेकी क्रिया; बढ़ना (बालोंका); यज्ञाग्निका स्थानपरिवर्तन करना ।

समार्थ–वि० (सं०) समान, एक अर्थका ।

समार्थक–वि० (सं०) समान, एक ही अर्थवाला ।

समार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) बराबरी करनेकी इच्छा रखनेवाला ।

समार्हता–स्त्री० (पैरिटी) मूल्य, योग्यता आदिमें समान होना ।

समालंब–पु० (सं०) रोहिष तृण ।

समालंबन–पु० (सं०) (किसीका) सहारा लेना ।

समालंबित–वि० (सं०) किसीके सहारेपर टिका हुआ, अवलंबित; संलग्न ।

समालंबिनी–स्त्री० (सं०) तृण-विशेष ।

समालंबी(बिन्)–वि० (सं०) दूसरेके सहारे टिकनेवाला, परावलंबी, आश्रय ग्रहण करनेवाला । पु० भूतृण ।

समालंभ–पु० (सं०) ग्रहण करना; बलि-पशुको (वधके लिए) ग्रहण करना; अंगराग ।

समालंभन–पु० (सं०) अंगराग लगना; ग्रहण करना, छूना; बलिपशुको वधके लिए ग्रहण करना; आलिंगन ।

समालक्ष्य–वि० (सं०) गोचर ।

समालब्ध–वि० (सं०) गृहीत; संपर्कमें आया हुआ ।

समालभन–पु० (सं०) अंगराग ।

समालाप–पु० (सं०) वार्तालाप, बातचीत ।

समालिंगन–पु० (सं०) प्रगाढ़ आलिंगन ।

समालिप्त–वि० (सं०) भली भाँति लिप्त, पुता हुआ ।

समाली–स्त्री० (सं०) फूलोंका गुच्छा; गुलदस्ता ।

समालोक–पु० (सं०) देखना, निरीक्षण करना ।

समालोकन–पु० (सं०) निरीक्षण करना; मनन करना; परीक्षण

करना।

समालोकी (किन्)–वि० (सं०) अच्छी तरह देखनेवाला; मनन करनेवाला।

समालोच–पु० (सं०) कथोपकथन, वार्तालाप।

समालोचक–पु० (सं०) किसी वस्तुकी सम्यक् परीक्षा करनेवाला; किसी पदार्थके गुण-दोप आदिका सम्यक् विवेचन करनेवाला; किसी कृति, रचना, ग्रंथ आदिके गुण, दोप, महत्त्व आदिका प्रतिपादन करनेवाला।

समालोचन–पु० (सं०) समालोचना।

समालोचना–स्त्री० (सं०) अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना; किसी वस्तु, कृति, व्यक्ति आदिके गुण-दोषका सम्यक् विचार करना; गुण-दोषका विचार प्रस्तुत करनेवाला निबंध, ग्रंथ आदि, आलोचना।

समालोची (चिन्)–पु० (सं०) गुण-दोषकी परीक्षा, विचार करनेवाला, समालोचक।

समावयवी–पु० (आइसोमर) दो या दोसे अधिक रासायनिक यौगिकोंका आणविक सूत्र यदि एक-सा हो किंतु अणुके भीतर परमाणुओंका विन्यास भिन्न हो, तो ये यौगिक 'समावयवी' कहलाते हैं। जैसे अमोनियम सायनेट, NH_4CNO तथा यूरिया $CO(NH_2)$. परस्पर समावयवी हैं।

समावरण–पु० (सं०) किसी लिफाफेमें बड़े पत्रके साथ रखी गयी टिप्पणी, सूचना या लेख (एन्क्लोज़र), संलग्नक।

समावर्जन–पु० (सं०) आकृष्ट करना, अपनी ओर करना, अपने वशमें करना।

समावर्जित–वि० (सं०) झुकाया हुआ। **–केतु**–वि० जिसने अपना झंडा झुका दिया है।

समावर्त–पु० (सं०) वापस होना, लौटना; विष्णु।

समावर्तन–पु० (सं०) लौटना, वापस होना; अध्ययन पूर्ण करनेके बाद ब्रह्मचारीका घर लौटना; इस अवसरपर होनेवाला संस्कार (कान्वोकेशन)। **–संस्कार**–पु० अध्ययन समाप्त होने, विद्यार्थीके स्नातक बन जानेपर किया जानेवाला उत्सवादि।

समावर्तनीय–वि० (सं०) समावर्तन-संबंधी; समावर्तनके योग्य।

समावर्तमान, समावर्ती (र्तिन्)–वि० (सं०) गुरुकुलसे लौटनेवाला।

समावह–वि० (सं०) उत्पन्न, प्रस्तुत करनेवाला; कारण बननेवाला (आ०वे०)।

समावाय–पु० (सं०) संबंध, साथ; अभेद्य संबंध; समूह, राशि।

समावास–पु० (सं०) निवास-स्थान; टिकनेका स्थान; शिविर, पड़ाव।

समावासित–वि० (सं०) बसाया, ठहराया हुआ। **–कटक**–वि० जिसने सेनाका पड़ाव डलवा दिया है।

समाविग्न–वि० (सं०) क्षुब्ध; भीत; कंपित।

समाविद्ध–वि० (सं०) क्षुब्ध; कंपित; क्षीण; संघटित (?)।

समाविष्ट–वि० (सं०) पूर्णतः प्रविष्ट, व्याप्त; गृहीत, ग्रस्त; प्रेताविष्ट; ···से युक्त; अच्छी तरह सिखलाया हुआ; आसीन, उपविष्ट; एकाग्रचित्त; जिसका समावेश कर लिया गया हो, जो मिला लिया गया हो।

समावी–वि० (अ०) आसमानी; दैविक (जैसे समावी आफ़त)।

समावृत–वि० (सं०) घिरा हुआ; ढका हुआ; छिपाया हुआ; रक्षित; रोका हुआ; अलग हटाया हुआ; आकीर्ण।

समावृत्त–वि० (सं०) लौटा हुआ; अध्ययन ससाप्त कर गुरुकुलसे लौटा हुआ; पूरा किया हुआ; लिफाफेके भीतर पत्रके साथ बंद सूचनात्मक टिप्पणी (इन्क्लोज़्ड)। पु० वह विद्यार्थी जो अध्ययन समाप्त कर लौटा हो।

समावृत्तक–पु० (सं०) अध्ययन समाप्त कर लौटा हुआ ब्रह्मचारी, स्नातक।

समावृत्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'समावर्तन'; समाप्ति।

समावेश–पु० (सं०) प्रवेश; साथ रहना; मिलना, एकत्र होना; अंतर्भाव, शामिल होना; प्रेतावेश; व्याप्त होना; साथ-साथ होना या घटित होना; भावावेश; मतैक्य; मनोनिवेश।

समावेशन–पु० (सं०) प्रवेश; अधिकारमें करना; विवाहका संपन्न होना।

समावेशित–वि० (सं०) जिसका प्रवेश कराया गया हो; साथ किया हुआ; रखा, जड़ा हुआ; व्याप्त कराया हुआ, गर्क कराया हुआ।

समाश–पु० (सं०) भोजन।

समाश्रय–पु० (सं०) आश्रय चाहना; सहारा, शरण, पनाह; आश्रयस्थान; निवासस्थान, मकान।

समाश्रित–वि० (सं०) सम्यक् रूपमें आश्रित, जिसने आश्रय ग्रहण किया है; अवलंबित; एकत्रीभूत; अधिष्ठित; बसा हुआ; सहारेपर टिका हुआ। पु० सेवक; वह व्यक्ति जो भरण-पोषणके लिए दूसरेपर अवलंबित हो।

समाश्लिष्ट–वि० (सं०) सम्यक् रूपोंमें आलिंगित; संलग्न।

समाश्लेष–पु० (सं०) प्रगाढ़ आलिंगन।

समाश्वस्त–वि० (सं०) जिसे जीमें जी आया हो, तसल्ली हो गयी हो, ढाढ़स बँध गया हो; प्रोत्साहित; विश्वासपूर्ण।

समाश्वास–पु० (सं०) जीमें जी आना, तसल्ली होना, ढाढ़स बँधना; विश्वास, भरोसा; प्रोत्साहन।

समाश्वासन–पु० (सं०) ढाढ़स बँधाना; उत्साह बढ़ाना।

समासंग–पु० (सं०) मिलन; लगाव; किसीको कोई काम सौंपना।

समासंजन–पु० (सं०) संयुक्त करना, मिलाना; किसीपर जड़ना या रखना; संपर्क, संबंध, संयोग।

समास–पु० (सं०) योग, मेल; समर्थन; अंतर दूर कर विवादका निपटारा करना; संबंध; साथ रहना; समूह; पूर्णांश; संधि; संक्षिप्त करना; संक्षेप–'कवि सब चरित समास बखाने'–रामा०; दो या अधिक पदोंको मिलाकर एक पदका रूप देना (व्या०); समस्या; छंदका चरण (जिसकी पूर्ति करनी हो)। **–चिह्न**–पु०, **–रेखा**–स्त्री० (हाइफन) दो या दोसे अधिक शब्दोंको मिलाकर संयुक्त शब्द बनानेके लिए उनके बीचमें दी जानेवाली लघुरेखा, संयोजक चिह्न। **–प्राय, –बहुल**–वि० जिसमें समासोंकी बहुलता हो।

समासक्त–वि० (सं०) संलग्न, प्रवृत्त; संयुक्त; अनुरक्त; पहुँचा हुआ, प्राप्त; ···द्वारा प्रभावित।

समासक्ति–स्त्री० (सं०) योग, मेल; संबंध; अनुराग; समावेश, अंतर्भाव।

समासत्ति–स्त्री० (सं०) नैकट्य, सामीप्य।

समासन–पु० (सं०) समतल भूमिपर बैठना; साथ बैठना।

समासन्न–वि० (सं०) पहुँचा हुआ, प्राप्त; निकटवर्ती, पासका।

समासम–वि० (सं०) समान और असमान।

समासर्जन–पु० (सं०) परित्याग करना; दे देना।

समासवान् (वत्)–वि० (सं०) समासयुक्त। पु० तूनका पेड़।

समासादन–पु० (सं०) पास पहुँचना; मिलना; पूरा करना।

समासादित–वि० (सं०) आहृत; प्राप्त; निकटस्थ।

समासार्थ–पु० (सं०) समस्या (छंदकी पूर्तिके लिए दी जानेवाली)।

समासीन–वि० (सं०) सम्यक् प्रकारसे बैठा हुआ; साथ बैठा हुआ।

समासोक्ति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ विशेष शब्द-रचनाके कारण प्रस्तुतसे अप्रस्तुतका भान हो (स्पीच ऑफ़ ब्रेविटी)।

समास्या–स्त्री० (सं०) साथ बैठना; मुलाकात, भेंट।

समाहत–स्त्री० (अ०) दानशीलता; फ़ैयाज़ी।

समाहरण–पु० (सं०) संयुक्त करना; एकत्र करना, राशीकरण।

समाहर्ता (र्तृ)–वि० (सं०) मिलाने, जमा करनेवाला। पु० (कर आदिका) संग्राहक (कलेक्टर)। **–(र्तृ)पुरुष**–पु० समाहर्ताका कर्मचारी, कारकुन।

समाहार–पु० (सं०) ग्रहण; जोड़; मिलना; समूह, राशि; शब्दों या वाक्योंका योग; द्वंद्व समासका एक भेद (जिसमें दो पद आपसमें मिलकर वर्गके बोधक होते हैं); संक्षेप; विषयोंसे इंद्रियोंको पृथक् करना।

समाहित–वि० (सं०) साथ किया हुआ, एकत्र किया हुआ; निपटारा किया हुआ, तै किया हुआ; शांत 'फिर समाहित प्रांतर भागमें'–हरिऔध; प्रवृत्त, लीन; पूरा किया हुआ; व्यवस्थित; सुपुर्द किया हुआ; दबाया हुआ (स्वर); स्थापित, प्रतिपादित;

स्वीकृत; सदृश, अनुरूप; सामंजस्ययुक्त। पु॰ पुण्यात्मा व्यक्ति, साधु; एकाग्रचित्तता, अभिनिवेश। **–धी**–वि॰ आराधनामें लीन। **–मति**–वि॰ जिसका मन किसी विषयपर एकाग्र रहे। **–मना(नस्)**–वि॰ जिसका मन किसी विषयमें लीन हो।

समाहूत–वि॰ (सं॰) बुलाया या एकत्र किया हुआ; ललकारा हुआ।

समाह्व–पु॰ (सं॰) चुनौती, ललकार। वि॰ हमनाम, नामरासी।

समाह्वय–पु॰ (सं॰) चुनौती; युद्ध, संघर्ष; द्वंद्वयुद्ध; क्रीड़ाके लिए जानवरोंको लड़ाना; जानवरोंकी लड़ाईपर बाजी लगाना; नाम, संज्ञा।

समाह्वा–स्त्री॰ (सं॰) गोजिह्वा; नाम।

समाह्वाता(तृ)–वि॰ (सं॰) आह्वान करनेवाला; ललकारने, चुनौती देनेवाला।

समाह्वान–पु॰ (सं॰) सम्यक् प्रकारसे आह्वान करना; चुनौती देना; जानवरोंकी लड़ाईपर बाजी रखना।

समिंधन–पु॰ (सं॰) (अग्नि) जलाना, सुलगाना; ईंधन, लकड़ी।

समिक–पु॰ (सं॰) भाला, बरछा।

समित–वि॰ (सं॰) मिला हुआ; एकत्रीभूत; संयुक्त; निरंतर; समानांतर; अंगीकृत, स्वीकृत; पूरा किया हुआ; मापा हुआ; ···के समान।

समिता–स्त्री॰ (सं॰) गेहूँका आटा।

समितिंजय–वि॰ (सं॰) युद्धविजेता; सभाविजेता। पु॰ यम; विष्णु।

समिति–स्त्री॰ (सं॰) मिलना, एकत्र होना; सभा; विशेष कार्यके लिए गठित थोड़ेसे आदमियोंकी सभा; झुंड; युद्ध; साम्य, सादृश्य; आचारपद्धति (जै॰); हलकापन लाना, नरम बनाना। **–मर्दन**–वि॰ युद्धमें छक्के छुड़ानेवाला। **–शाली(लिन्)**–वि॰ वीर, बहादुर। **–शोभन**–वि॰ युद्धमें जिसकी प्रमुखता हो।

समित्–स्त्री॰ (सं॰) युद्ध; दे॰ 'समिध्'। **–कलाप**–पु॰ लकड़ीका गट्ठा। **–काष्ठ**–पु॰ लकड़ी, जलावन। **–पांथ**–पु॰ अग्नि। **–पूल**–पु॰ लकड़ीका गट्ठा।

समिथ–पु॰ (सं॰) युद्ध; अग्नि; आहुति।

समिदाधान–पु॰ (सं॰) अग्निकुण्डमें ईंधन डालना।

समिद्ध–वि॰ (सं॰) जलाया हुआ, प्रज्वलित; उत्तेजित। **–दर्प**–वि॰ गर्वसे उत्तेजित। **–होम**–पु॰ आहुति।

समिध–पु॰ (सं॰) अग्नि; ईंधन।

समिधा, समिधि–स्त्री॰ यज्ञीय लकड़ी।

समिध्–स्त्री॰ (सं॰) ईंधन; यज्ञीय लकड़ी।

समिर–पु॰ (सं॰) वायु; शिव।

समिश्र–वि॰ (सं॰) मिलनेवाला, मिश्रित होनेवाला।

समीक–पु॰ (सं॰) युद्ध।

समीकरण–पु॰ (सं॰) समान, बराबर करना, समानीकरण; ज्ञात राशिकी सहायतासे अज्ञात राशि निकालनेकी एक क्रिया (ग॰); जमीन बराबर करनेका बड़ा बेलन, 'रोलर'।

समीकार–पु॰ (सं॰) ज्ञात राशिके सहारे अज्ञात राशि निकालनेकी क्रिया (ग॰)।

समीकृत–वि॰ (सं॰) समान, बराबर किया हुआ; अनुकृत; योग किया हुआ।

समीकृति–स्त्री॰ (सं॰) बराबर करना; तौलना।

समीक्रिया–स्त्री॰ (सं॰) समान करनेकी क्रिया; ज्ञात राशिसे अज्ञात राशि निकालनेकी क्रिया (ग॰)।

समीक्ष–पु॰ (सं॰) विचार, विवेचन; पूरा ज्ञान; पूरी जाँच, पूर्ण परीक्षा; सांख्य शास्त्र।

समीक्षक–वि॰, पु॰ (सं॰) सम्यक् रूपसे देखनेवाला; समालोचक।

समीक्षण–पु॰ (सं॰) देखना; अन्वेषण; जाँच, परीक्षा; समालोचना।

समीक्षा–स्त्री॰ (सं॰) सम्यक् परीक्षा; समालोचना; देखनेकी इच्छा; दृष्टिपात; राय, सम्मति; प्रज्ञा; अन्वेषण, अनुसंधान; प्रयत्न; मीमांसा शास्त्र; पुरुष, प्रकृति आदि तत्त्व। **–के औजार**–(इंस्ट्रुमेंट ऑफ क्रिटिसिज्म) समीक्षाके विभिन्न प्रकारके मानदण्ड तथा पद्धतियाँ।

समीक्ष्य–वि॰ (सं॰) समीक्षा करने योग्य। पु॰ सांख्य दर्शन। **–कारी(रिन्)**, **–वादी(दिन्)**–वि॰ अच्छी तरह समझ-बूझकर काम करनेवाला।

समीच–पु॰ (सं॰) समुद्र।

समीचक–पु॰ (सं॰) मैथुन, संभोग।

समीची–स्त्री॰ (सं॰) प्रशंसा, स्तुति; मृगी, हिरनी।

समीचीन–वि॰ (सं॰) संगत, उचित; ठीक, यथार्थ; न्याय्य।

समीचीनता–स्त्री॰, **समीचीनत्व**–(सं॰) संगति, संगत होना, औचित्य; यथार्थता।

समीति*–स्त्री॰ दे॰ 'समिति'; समाधान।

समीद–पु॰ (सं॰) मैदा।

समीन–वि॰ (सं॰) वार्षिक; एक सालके लिए किरायेपर लिया हुआ। (फा॰) वि॰ मूल्यवान्।

समीनिका–स्त्री॰ (सं॰) हर साल बच्चा देनेवाली गाय।

समीप–वि॰, अ॰ (सं॰) निकट, पास। पु॰ निकटता। **–ग**–वि॰ साथ जानेवाला; जो बगलमें खड़ा हो। **–भाक्(ज्)**–वि॰ पड़ोसका। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि॰ निकट रहनेवाला, पासका। **–सहकार**–पु॰ पासका आमका पेड़। **–स्थ**–वि॰ दे॰ 'समीपवर्ती'।

समीपक–पु॰ (सं॰) सामीप्य, नैकट्य।

समीपता–स्त्री॰ (सं॰) निकटता, सामीप्य।

समीभाव–पु॰ (सं॰) साधारण अवस्थामें होना।

समीय–वि॰ (सं॰) सदृश, समान; जिनका मूल एक-सा हो; समान समझे जाने योग्य; सम-संबंधी।

समीर–पु॰ (सं॰) हवा, वायु; प्राण वायु; पवनदेव; शमी वृक्ष। (अ॰) वि॰ फलदार (वृक्ष)।

समीरण–वि॰ (सं॰) गतिशील करनेवाला; उद्दीपक। पु॰ वायु; पवनदेव; शरीरस्थ वायु; पाँचकी संख्या; पथिक; मरुवक; गतिशील करना; प्रेरण; प्रेषण। **–सहाय**–वि॰ जिसे वायुकी सहायता मिली हो (वनाग्नि)।

समीरित–वि॰ (सं॰) चालित; प्रेषित; उच्चारित (शब्द)।

समीहन–वि॰ (सं॰) ईर्ष्यालु; उत्सुक (विष्णुके लिए प्रयुक्त)।

समीहा–स्त्री॰ (सं॰) चेष्टा, उद्योग; इच्छा; जाँच, तलाश, अन्वेषण।

समीहित–वि॰ (सं॰) इच्छित, अभिलषित; चेष्टित; आरब्ध। पु॰ इच्छा; प्रयत्न, चेष्टा।

समुंद*–पु॰ समुद्र।

समुंदन–पु॰ (सं॰) आर्द्र होना, तर हो जाना; आर्द्रता।

समुंदर–पु॰ दे॰ 'समुद्र'। **–फल**–पु॰ दे॰ 'समुद्र-फल'। **–फूल**–पु॰ एक औषधि, विधाराका एक भेद। **–सोख**–पु॰ दे॰ 'समुद्रशोष'।

समुक्त–वि॰ (सं॰) जिसे कुछ कहा गया हो; जिसकी भर्त्सना की गयी हो।

समुक्षण–पु॰ (सं॰) निःसरण, स्राव; सिंचन।

समुख–वि॰ (सं॰) वाक्पटु, वाग्मी; बातूनी; जिसे मुख हो।

समुचित–वि॰ (सं॰) पसंद आनेवाला; उपयुक्त; ठीक, उचित; यथेष्ट।

समुच्च–वि॰ (सं॰) बहुत ऊँचा।

समुच्चय–पु॰ (सं॰) कुछ वस्तुओंका एकमें मिलना (कॉम्बिनेशन); संयुति, एक साथ इकट्ठा होना (क्युमुलेशन); समूह, राशि, समाहार; शब्दों या वाक्योंका योग; एक काव्यालंकार जहाँ कई भावोंका एक साथ ही प्रकट होना दिखलाया जाय या जहाँ एक ही कार्यके लिए कई कारणोंका विद्यमान रहना वर्णित किया जाय; वह आपत्ति जिसमें प्रस्तुत उपायके अतिरिक्त और उपायोंसे भी काम हो सके (कौ॰)।

समुच्चर–पु॰ (सं॰) ऊपर चढ़ना; ऊपरकी ओर उड़ना; उल्लंघन।

समुच्चार–पु॰ (सं॰) सम्यक् उच्चारण; सम्यक् त्याग, विसर्जन।

समुच्चित–वि॰ (सं॰) ढेर लगाया हुआ; संगृहीत (क्युमुलेटेड); क्रमबद्ध किया हुआ।

समुच्छन्न–वि० (सं०) अनावृत; ध्वस्त, विनष्ट किया हुआ ।

समुच्छित्ति–स्त्री० (सं०) टुकड़े-टुकड़े करना; बरबादी, विनाश ।

समुच्छिन्न–वि० (सं०) फटा हुआ; उन्मूलित; नष्टविनष्ट । **–वसन**–वि० जिसके कपड़े बिलकुल फट गये हों; (ला०) जिसका भ्रम दूर हो गया हो ।

समुच्छेद–पु० (सं०) ध्वंस, विनाश; उन्मूलन ।

समुच्छेदन–पु० (सं०) जड़से उखाड़ना; ध्वंस, विनाश करना ।

समुच्छ्रय–पु० (सं०) ऊँचाई; विरोध, शत्रुता; ऊपर उठना, उत्थान; उच्च पद; पर्वत; वृद्धि; उद्दीपन; राशि; जन्म (बौ०) ।

समुच्छ्राय–पु० (सं०) ऊँचाई; वृद्धि; उन्नति ।

समुच्छ्रित–वि० (सं०) बहुत ऊँचा, उन्नत; ऊँचे उठाया हुआ; शक्तिशाली । **–भुज**–वि० जिसने अपने हाथ ऊपर उठाये हों ।

समुच्छ्रिति–स्त्री० (सं०) उन्नति; वृद्धि ।

समुच्छ्वसित–वि० (सं०) जिसने लंबी साँस छोड़ी है । पु० गहरी, लंबी साँस ।

समुच्छ्वास–पु० (सं०) दीर्घ प्रश्वास ।

समुज्ज्वल–वि० (सं०) अत्यंत उज्ज्वल; चमकीला, कांतियुक्त ।

समुज्झित–वि० (सं०) परित्यक्त;···से मुक्त । पु० वह जो छोड़ दिया गया हो, छोड़ा हुआ अंश (जैसे जूठन आदि) ।

समुझ*–स्त्री० दे० 'समझ' ।

समुझना*–अ० क्रि० दे० 'समझना' ।

समुझनि*–स्त्री० समझनेकी क्रिया ।

समुत्कंटकित–वि० (सं०) रोमांचयुक्त ।

समुत्कंठा–स्त्री० (सं०) गहरी इच्छा ।

समुत्कट–वि० (सं०) ऊँचा; गौरवान्वित;···से संपन्न ।

समुत्कर्ष–पु० (सं०) आत्मोन्नति; प्राधान्य; उतार देना (कटिबंध आदि) ।

समुत्कीर्ण–वि० (सं०) अच्छी तरह खोदा हुआ; पूरे तौरसे छेदा हुआ ।

समुत्क्रम–पु० (सं०) उत्थान; सीमोल्लंघन ।

समुत्क्रोश–पु० (सं०) एक पक्षी, कुरर; चिल्लाहट ।

समुत्तेजन–वि० (सं०) उद्दीप्त, उत्तेजित करना ।

समुत्थ–वि० (सं०) उठा हुआ, समुत्थित;···से उत्पन्न ।

समुत्थान–पु० (सं०) ऊपर उठना; मृतकका पुनर्जीवित होकर उठना; उत्तोलन (ध्वजाका); स्वास्थ्य-लाभ करना; घावका भरना; रोगका लक्षण; वृद्धि; उद्भव; (नाभिका) फूलना; परिश्रम, उद्यम ।

समुत्थापक–वि० (सं०) उठानेवाला; जगानेवाला (बौ०) ।

समुत्थित–विभ (सं०) अच्छी तरह उठा हुआ; जो प्रकट हुआ हो; उद्भूत, उत्पन्न; घिरा हुआ (बादल); प्रस्तुत; जो आरोग्य लाभ कर चुका हो; फूला हुआ; (विरोधियोंके) मुक़ाबलेमें उठा हुआ ।

समुत्पतन–पु० (सं०) खूब ऊपर उड़ना; आरोह; प्रयत्न करना ।

समुत्पत्ति–स्त्री० (सं०) पैदाइश; मूल; घटित होना ।

समुत्पन्न–वि० (सं०) उद्भूत; घटित ।

समुत्परिवर्तिम–पु० (सं०) विक्रीत वस्तुमें चालाकीसे दूसरी चीज मिला देना (कौ०) ।

समुत्पाट–पु० (सं०) उन्मूलन; पृथक् करना ।

समुत्पात–पु० (सं०) संकटसूचक उपद्रव ।

समुत्पिंज, समुत्पिंजल–वि० (सं०) बहुत घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि । पु० वह सेना जो घबड़ाहटमें अस्त-व्यस्त हो गयी हो; घबड़ाहट ।

समुत्सन्न–वि० (सं०) नष्ट-विनष्ट, ध्वस्त ।

समुत्सर्ग–पु० (सं०) परित्याग, हटाना, छोड़ना; मलत्याग ।

समुत्सारण–पु० (सं०) भगाना; पीछा करना; शिकार करना ।

समुत्सुक–वि० (सं०) अधीर, विशेष इच्छुक, उत्कंठित; शोकान्वित ।

समुत्सेध–पु० (सं०) ऊँचाई; मोटापन; घनता ।

समुदंत–वि० (सं०) किनारेके ऊपर उठा हुआ; जो उपटकर बहनेकी अवस्थामें हो ।

समुद–वि० (सं०) प्रसन्नतायुक्त । अ० प्रसन्नतापूर्वक । * पु० समुद्र । **–लहर***–पु० एक कपड़ा ।

समुदक्त–वि० (सं०) खींचकर ऊपर लाया हुआ (जैसे कुएँसे पानी); ऊपर उठाया या फेंका हुआ ।

समुदय–पु० (सं०) (सूर्यका) ऊपर आना, उदित होना; विकास; उत्थान; अभ्युदय; राशि, समूह; समुदाय; संयोग; कर, लगान; चेष्टा; युद्ध; दिन; किसी ग्रहका उदय; लग्न; पूर्णांश; शरीरके तत्त्वोंका समाहार (बौ०); एक तत्त्व (बौ०); उत्पादक हेतु । वि० सब, सारा, समस्त ।

समुदस्त–वि० (सं०) गहराईसे खींचकर ऊपर लाया हुआ ।

समुदागम–पु० (सं०) पूर्ण ज्ञान (बौ०) ।

समुदाचार–पु० (सं०) स्वागत-सत्कार; सत्प्रयोग; सदाचार; संपर्क; अभिवादन; अभिप्राय, प्रयोजन, नीयत ।

समुदाय–पु० (सं०) संयोग; समूह, राशि; पूर्णांश; शरीरके तत्त्वोंका समाहार; एक नक्षत्र; युद्ध; सेनाका पृष्ठ भाग; रक्षित सेना; सामान्य हितोंकी रक्षाके लिए संगठित संस्था (असोसियेशन) । **–घोष**–पु० किसी दल या समुदाय द्वारा माँगों इत्यादिके संबंधमें पुनः पुनः लगायी गयी आवाज, नारा (स्लोगन) ।

समुवायि*–पु० समूह, झुंड ।

समुदाव*–पु० समूह, झुंड, राशि ।

समुदित–वि० (सं०) ऊपर उठा हुआ; ऊंचा; उत्पन्न; घटित; एकत्रीभूत; संयुक्त;···से युक्त, अन्वित; जिससे बात की गयी हो; जो किसी विषयपर सहमत हो; प्रचलित ।

समुदीरण–पु० (सं०) भाषण; उच्चारण; पाठ ।

समुद्ग–वि० (सं०) ऊपर उठनेवाला; पूर्णतः प्राप्त होनेवाला; ढक्कनदार; शहतीरदार । पु० छंदका एक प्रकार; यमकका एक भेद; कलीकी नोक; गोल मंजूषा; ढक्कनदार संदूक, संपुटक ।

समुद्गक–पु० (सं०) गोल संदूक, संपुटक; एक प्रकारका छंद ।

समुद्गत–वि० (सं०) उत्पन्न; उदित ।

समुद्गम–पु० (सं०) ऊपर जाना, उत्थान; उत्पत्ति ।

समुद्गार–पु० (सं०) सम्यक् कथन; उत्तोलन, उठाना; बहुत ज्यादा कै होना ।

समुद्गिरण–पु० (सं०) वमन; वमित पदार्थ; ऊपर उठाना ।

समुद्गीत–वि० (सं०) अच्छी तरह गाया हुआ; ऊँचे स्वरसे गाया हुआ । पु० ऊँचे स्वरमें गाया हुआ गीत ।

समुद्गीर्ण–वि० (सं०) वमित; उत्तोलित; कथित ।

समुद्दिष्ट–वि० (सं०) जिसका अच्छी तरह निर्देश किया गया हो; प्रदर्शित; जिसकी व्याख्या की गयी हो; अभिहित ।

समुद्देश–पु० (संभ) पूरी व्याख्या या विवरण; सिद्धांत; अभिप्राय; निर्देश ।

समुद्धत–वि० (सं०) ऊपर उठा या उठाया हुआ; उत्तेजित; घमंडमें फूला हुआ; उजड्ड; ऊँचा; परिवर्द्धित ।

समुद्धरण–पु० (सं०) ऊपर उठाना; खींचकर निकालना, उद्धार करना; हटाना, दूर करना; उन्मूलन; (अपना हिस्सा) अलग कर लेना; वांतान्न, वमनमें निकला हुआ अन्न ।

समुद्धर्त्ता(र्तृ)–वि०, पु० (सं०) उठानेवाला, उद्धार करनेवाला; उन्मूलन करनेवाला; ऋण चुकानेवाला ।

समुद्धार–पु० (सं०) दे० 'समुद्धरण' ।

समुद्धृत–वि० (सं०) उठाया हुआ; बचाया, उद्धार किया हुआ; वमित; हटाया हुआ; अलग किया हुआ, विभक्त; गृहीत; उद्धत, उजड्ड ।

समुद्बोधन–पु० (सं०) पूर्णतः जाग्रत् करना; होशमें लाना; पुनरुज्जीवित करना ।

समुद्भव–पु० (सं०) उत्पत्ति; पुनरुज्जीवन; उपनयनके समय होमके लिए जलायी जानेवाली अग्नि ।

समुद्भूत–वि० (सं०) उत्पन्न ।

समुद्भूति–स्त्री० (सं०) उत्पत्ति, पैदाइश ।

समुद्भेद–पु० (सं०) फोड़कर निकलना; प्रकट होना; बाढ़, प्रगति; विकास ।

समुद्यत–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; प्रदत्त; तैयार; लगा

हुआ, प्रवृत्त ।

समुद्यम–पु० (सं०) ऊपर उठाना; प्रयत्न, उद्योग; आरंभ; तैयारी; आक्रमण ।

समुद्योग–पु० (सं०) पूरी तैयारी, चेष्टा; प्रयोग; (वहुतसे कारणोंका) एक साथ हो जाना ।

समुद्र–वि० (सं०) मुद्रायुक्त, मुद्रांकित । पु० सागर; शिव; चारकी संख्या; (ला०) गुण आदिका वहुत बड़ा परिमाण (समासमें) । **–कंप**–पु० समुद्रमें होनेवाला कम्प (सी-क्वेक) । **–कटक**–पु० पोत । **–कफ**–पु० समुद्रका फेन । **–कांची**–स्त्री० समुद्रकी मेखला, पृथ्वी । **–कांता**–स्त्री० नदी; पृक्का । **–कुक्षि**–स्त्री० समुद्रका तट । **–ग**–वि समुद्रकी ओर जानेवाला; समुद्रीय कार्य करनेवाला । पु० नाविक; समुद्री व्यापारी । **–गमन**–पु० समुद्रयात्रा । **–गा**–स्त्री० नदी । **–गामी (मिन्)**–वि० समुद्रमें जाने या समुद्री व्यापार करनेवाला । **–गुप्त**–पु० गुप्तवंशका एक पराक्रमी राजा । **–गृह**–पु० गरमीके दिनोंके लिए जलमें वना हुआ मकान; स्नानागार । **–चुलुक**–पु० अगस्त्य ऋषि । **–ज**–वि० समुद्रसे प्राप्त या उसमें उत्पन्न । पु० मूँगा, मोती आदि । **–झाग**–पु० (हिं०) समुद्रका फेन । **–तट,–तीर**–पु० समुद्रका किनारा । **–तटवर्ती प्रदेश**–पु० (मैरिटाइम प्राविंस) किसी देशका वह भूभाग जो समुद्रके किनारे हो । **–तीरीय**–वि० समुद्र-तटवासी । **–दयिता,–पत्नी**–स्त्री० नदी । **–नवनीत,–नवनीतक**–पु० चंद्रमा; अमृत । **–नेमि,–नेमी**–स्त्री० पृथ्वी । **–पात**–पु० (हिं०) एक लता । **–फल**–पु० एक वृक्ष या उसका फल । **–फेन**–पु० समुद्रका झाग । **–भव**–वि० समुद्रमें उत्पन्न । **–मंडूकी**–स्त्री० सीपी । **–मथन**–पु० समुद्रका विलोडन; एक दैत्य । **–महिषी**–स्त्री० गंगा । **–मालिनी,–मेखला**–स्त्री० पृथ्वी । **–यात्रा**–स्त्री० समुद्री सफर (सी-वॉयेज) । **–यान**–पु० समुद्रयात्रा; पोत । **–यायी (यिन्)**–वि०, पु० दे० 'समुद्रग' । **–योषित्**–स्त्री० नदी । **–रसना**–स्त्री० पृथ्वी । **–लवण**–पु० समुद्रजलसे निकलनेवाला नमक । **–वल्लभा,–वसना**–स्त्री० पृथ्वी । **–वह्नि**–पु० वडवानल । **–वासी (सिन्)**–वि० समुद्रके पास रहनेवाला । **–विज्ञान**–पु० समुद्रशास्त्र (ओशनोग्राफी) **–वेला**–स्त्री० समुद्रकी तरंग । **–व्यवहारी (रिन्)** वि० समुद्री वाणिज्य करनेवाला । **–शुक्ति**–स्त्री० समुद्री सीपी । **–शोष**–पु० एक पौधा । **–सार**–पु० मोती । **–सुभगा**–स्त्री० गंगा ।

समुद्रांत–पु० (सं०) समुद्रतट; जायफल । वि० समुद्रतक पहुँचनेवाला; समुद्रमें गिरनेवाला ।

समुद्रांता–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; जवासा; पृक्का; कपास; दुरालभा ।

समुद्रांवरा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

समुद्रा–स्त्री० (सं०) शटी; शमी वृक्ष ।

समुद्राभिसारिणी–स्त्री० (सं०) समुद्रकी सहचरी (एक कल्पित देववाला) ।

समुद्रायणा–स्त्री० (सं०) नदी ।

समुद्रारु–पु० (सं०) सेतुबंध; एक वहुत वड़ा मत्स्य, तिमिंगिल; कुंभीर, मगर ।

समुद्रार्था–स्त्री० (सं०) नदी ।

समुद्रावरणा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी ।

समुद्रावरोहण–पु० (सं०) समाधिका एक प्रकार ।

समुद्रिय–वि० (सं०) समुद्रका; समुद्र-संवंधी; समुद्रसे उत्पन्न । पु० एक वृत्त ।

समुद्री–वि० समुद्रका; समुद्र-संवंधी; समुद्रकी ओरसे आनेवाली (हवा); समुद्रपर की जानेवाली (यात्रा); नौवल-संवंधी । **–गाय**–स्त्री० नीले रंगका एक समुद्री पशु । **–डाकू**–पु० (पाइरेट) जहाजों आदिपर डाका डालनेवाला । **–तार**–पु० (केविल) समुद्रमें पानीके भीतरसे जानेवाला तार ।

समुद्रीय–वि० (सं०) समुद्रका; समुद्र-संवंधी ।

समुद्रोन्मादन–पु० (सं०) स्कंदका एक अनुचर ।

समुद्र्य–वि० (सं०) दे० 'समुद्रीय' ।

समुद्वह–वि० (सं०) ऊपर उठानेवाला; ऊपर-नीचे जानेवाला ।

समुद्वाह–पु० (सं०) विवाह; ऊपर उठाना ।

समुद्वेग–पु० (सं०) घवड़ाहट; भय, त्रास ।

समुन्न–वि० (सं०) आर्द्र, तर, गीला ।

समुन्नत–वि० (सं०) ऊपर उठाया हुआ; विशेष रूपसे उन्नत; ऊँचा; गौरवान्वित; घमंडी; आगे निकला हुआ; खरा, वेलौस । पु० एक प्रकारका स्तंभ ।

समुन्नति–स्त्री० (सं०) ऊपर उठाना; ऊँचाई, उच्चता; गौरव; उच्च पद; प्राधान्य; सम्यक् उन्नति, समृद्धि; घमंड ।

समुन्नद्ध–वि० (सं०) ऊद्‌र्ध्ववद्ध, ऊपर वँधा हुआ; ऊपर उठाया हुआ; फूला हुआ; पूर्ण; घमंडी; पंडितम्मन्य; समुद्‌भूत; वंधनमुक्त; प्रधान ।

समुन्नमन–पु० (सं०) उठाना, उन्नत करना ।

समुन्नय–पु० (सं०) प्राप्ति; निष्कर्ष; अनुमान; घटना ।

समुन्नयन–पु० (सं०) उन्नत करना; प्राप्ति, लाभ ।

समुन्नाद–पु० (सं०) एक साथ होनेवाला गर्जन या चिल्लाहट ।

समुन्नीत–वि० (सं०) उन्नत किया हुआ ।

समुन्मीलित–वि० (सं०) खोला हुआ; फैलाया हुआ; प्रदर्शित ।

समुन्मूलन–पु० (सं०) जड़से उखाड़ देना, निर्मूलन ।

समुपकरण–पु० (सं०) सामग्री, सामान ।

समुपक्रम–पु० (सं०) आरंभ; उपचार, चिकित्साका आरंभ ।

समुपगम–पु० (सं०) निकट जाना; संपर्क ।

समुपचार–पु० (सं०) ध्यान देना; आदर, सम्मान ।

समुपद्रुत–वि० (सं०) आक्रांत, रौंदा हुआ ।

समुपनयन–पु० (सं०) नजदीक ले जाना ।

समुपन्यस्त–वि० (सं०) पूर्णतः वर्णित ।

समुपभोग–पु० (सं०) भोग करना; खाना; मैथुन ।

समुपयुक्त–वि० (सं०) उपयोगमें लाया हुआ; खाया हुआ; विशेष रूपसे उपयुक्त ।

समुपवेश–पु० (सं०) अच्छी तरह वैठना; अभ्यर्थना ।

समुपवेशन–पु० (सं०) निवास-स्थान, मकान; वैठाना; अभ्यर्थना; आसन; अच्छी तरह वैठनेकी क्रिया ।

समुपस्था–स्त्री०, **समुपस्थान**–पु० (सं०) निकट जाना; पहुँच; सामीप्य; घटित होना; घटना ।

समुपस्थित–वि० (सं०) उपस्थित, आया हुआ; आसीन; प्रकट; जो आरंभ हो गया हो; सामयिक; तैयार; निश्चय किया हुआ; प्राप्त ।

समुपस्थिति–स्त्री० (सं०) दे० 'समुपस्थान' ।

समुपहव–पु० (सं०) वहुतोंको एक साथ दिया जानेवाला निमंत्रण; होम, यज्ञ आदिमें देवताओंका आवाहन करना ।

समुपह्वर–पु० (सं०) गुप्त स्थान; छिपनेका स्थान ।

समुपागत–वि० (सं०) पास गया हुआ; पहुँचा हुआ, प्राप्त ।

समुपार्जन–पु० (सं०) विशेष रूपसे प्राप्त करना; एक साथ प्राप्त होना ।

समुपेत–वि० (सं०) पास आया हुआ; एकत्रीभूत; पहुँचा हुआ; ···से युक्त; आवाद किया हुआ ।

समुपोढ–वि० (सं०) उठा हुआ, ऊपर गया हुआ; वढ़ा हुआ; पास लाया हुआ; आरव्ध; प्रदत्त; रोका हुआ ।

समुपोषक–वि० (सं०) उपवास करनेवाला ।

समुल्लसित–वि० (सं०) सुंदर, चमकदार; क्रीड़ारत ।

समुल्लास–पु० (सं०) सम्यक् कांति; विशेष आनंद, उमंग; क्रीड़ा; ग्रंथका परिच्छेद ।

समुल्लेख–पु० (सं०) चारों ओर जमीन खोदना (पैर आदिसे); उत्सादन, उन्मूलन ।

समुहा*–वि० आगे, सामनेका । अ० आगे, सामने ।

समुहाना*–अ० क्रि० सामने आना, होना ।

समुहौं*–अ० दे० 'समुहैं' ।

समुहैं*–अ० सामने ।

समूचा–वि० संपूर्ण, समग्र, पूरा ।

समूढ–वि० (सं०) एकत्र किया हुआ; राशीकृत; आवृत; व्यवस्थित; शोधित; कुटिल; विवाहित; नीत; सद्योजात,

जो तुरंत पैदा हुआ हो; दमित; सहित; भुक्त; संगत । पु० ढेर, समूह; भंडार, आगार ।

समूर–पु० (सं०) दे० 'समूरु' । * वि०, अ० दे० 'समूल' ।

समूरु, समूरुक–पु० (सं०) सावर हिरन ।

समूल–वि० (सं०) जड़वाला, मूलयुक्त; सकारण । अ० जड़से, मूलसहित ।

समूह–पु० (सं०) ढेर, राशि; झुंड; समुदाय; समाज, वर्ग । –**कार्य**–पु० समाज या वर्गविशेषका कार्य । –**क्षारक**,–**गंध**–पु० गंधविलाव । –**वाद**–पु० (कलेक्टिविज्म) उद्योग-व्यवसायमें सामूहिक पूँजीके प्रयोगका प्रतिपादन करनेवाला सिद्धांत; भूमि तथा उत्पादनके साधनोंपर सामूहिक प्रभुत्वकी आवश्यकतापर जोर देनेवाला सिद्धांत । –**हितवादी(दिन्)**–वि० लोक, जन-कल्याणमें निरत ।

समूहन–वि० (सं०) वहारनेवाला; एकत्र करनेवाला । पु० वहारनेकी क्रिया; वटोरनेकी क्रिया; शर-संधान; राशि, ढेर ।

समूहनी–स्त्री० (सं०) सम्मार्जनी, झाड़ू ।

समूहोत्पादन–पु० (मास प्रॉडक्शन) दे० 'पुंजोत्पादन' ।

समूह्य–पु० (सं०) यज्ञाग्नि; यज्ञाग्नि रखनेके लिए बना हुआ स्थान । वि० सम्यक् रूपसे तर्क करने योग्य; वहारने योग्य ।

समृद्ध–वि० (सं०) उन्नतिशील, भाग्यशाली; प्रसन्न; धनी, मालदार; विशेष रूपसे युक्त या संपन्न; वहुल; समग्र; फलवान्; खूब बढ़ा हुआ ।

समृद्धि–स्त्री० (सं०) बढ़ती, उन्नति; अभ्युदय; धन; बाहुल्य; सामर्थ्य, शक्ति; प्राधान्य । –**करण**–पु० उन्नतिका साधन । –**काम**–वि० अभ्युदयका इच्छुक । –**समय**–पु० अभ्युदय या संपन्नताका समय ।

समृद्धी(द्धिन्)–पु० (सं०) भरा-पूरा, संपन्न; उन्नतिशील ।

समेकन–पु० (सं०) दो या अधिक पदार्थोंका गलकर एकरूप होना (फ्यूज़न); दे० 'चकबंदी'; संघनन ।

समेकनीय–वि० (सं०) समेकन योग्य (फ्यूज़िबुल) ।

समेटना–स० क्रि० वटोरना, इकट्ठा करना (विखरी चीजें); तह करके रखना (जाजिम आदि); अंगीकार करना ।

समेडी–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका ।

समेत–अ० साथ । वि० (सं०) मिला हुआ, एकत्र, संयुक्त । नजदीक आया हुआ; ··से युक्त; भिड़ा हुआ; सहमत । पु० दे० 'सम्मेत' । –**माय**–वि० मोहग्रस्त ।

समेधित–वि० (सं०) वहुत बढ़ा हुआ; शक्तिशाली; संयुक्त ।

समै, समैया*–पु० समय ।

समो*–पु० समय ।

समोखना*–स० क्रि० ताकीदसे कहना ।

समोदक–वि० (सं०) जिसमें आधा पानी हो । पु० मट्ठा, घोल ।

समोना*–स० क्रि० मिलाना; † समन्वय करना, पटरी या मेल वैठाना–'ऊपरके खंडसे दूसरे खंडको समोनेके लिए'–मृग० । * अ० क्रि० मिलना, अनुरक्त होना ।

समोय*–अ० अनुरक्त होकर–'वनमाली कहाँ धौं समोय चले' –घन० ।

समोसा–पु० सिंघाड़ेकी शक्लका एक नमकीन पकवान, तिकोना ।

समोह–पु० (सं०) लड़ाई, युद्ध ।

समौं*–पु० समय ।

समौरिया†–वि० सम उम्रवाला, समवयस्क, हमउम्र ।

सम्–उप० (सं०) यह शब्दोंके पूर्व आकर साथ, पूर्णता, आधिक्य, सामीप्य, अच्छाई आदिका द्योतन करता है ।

सम्मंत्रण–पु० (सं०) राय लेना, मंत्रणा करना ।

सम्मंत्रणा–स्त्री० (कानफरेंस) परस्पर सलाह-मशविरा करनेका कार्य ।

सम्मंत्रणीय–वि० (सं०) राय लेने योग्य; नमस्कार करने योग्य ।

सम्मंत्रव्य–वि० (सं०) मंत्रणा करने योग्य; विचार करने योग्य ।

सम्मंत्रित–वि० (सं०) सुविचारित ।

सम्मग्न–वि० (सं०) अच्छी तरह डूबा हुआ, निमग्न, गर्क ।

सम्मत–वि० (सं०) एक ही रायका, सहमत; माना हुआ; विचारित; प्रसिद्ध; सम्मानित; प्रिय; जिसे अनुमति या अधिकार दिया गया हो । पु० मनु सावर्णका एक पुत्र; राय, सम्मति; धारणा; अनुमति; स्वीकृति ।

सम्मति–स्त्री० (सं०) सहमति; स्वीकृति, अनुमति; राय, मत; आदर, सम्मान; इच्छा; आत्मज्ञान; प्रेम, सद्भाव; आदेश; एक नदी ।

सम्मत्त–वि० (सं०) उन्मत्त, नशेमें चूर; आनंदसे विह्वल; मस्त, दान बहाता हुआ (हाथी) ।

सम्मद–वि० (सं०) अत्यधिक प्रसन्न । पु० प्रसन्नता, खुशी; एक वड़ा मत्स्य; एक ऋषि ।

सम्मदी(दिन्)–वि० (सं०) उल्लसित; प्रसन्न ।

सम्मन–पु० (अं० 'सम्मन्स') अदालतकी ओरसे प्रतिवादी या गवाहको नियत तिथिपर उपस्थित होनेके लिए भेजी जानेवाली लिखित सूचना या आदेश ।

सम्मर्द–पु० (सं०) रगड़ना, संघर्षण; विवाद, झगड़ा; दवाव; रौंदना, कुचलना; मुकावला; युद्ध; भीड़ ।

सम्मर्दन–पु० (सं०) रगड़नेकी क्रिया, संघर्षण; मर्दन करना, रौंदना । पु० वासुदेवका एक पुत्र; विद्याधरोंका एक राजा ।

सम्मर्दी(र्दिन्)–वि० (सं०) मर्दन करनेवाला, दवाने, रौंदनेवाला; रगड़नेवाला ।

सम्मर्शन–पु० (सं०) सहलाना ।

सम्मर्शी(र्शिन्)–वि० (सं०) विचार करनेवाला ।

सम्मर्ष–पु० (सं०) धैर्य; सहिष्णुता ।

सम्मा–स्त्री० (सं०) समानता (संख्या, आकार आदिकी); एक वृत्त ।

सम्माता(तृ)–वि० (सं०) नाप-जोख करनेवाला; सगा; जिसकी माता साध्वी हो ।

सम्मातुर–वि० (सं०) जिसकी माता साध्वी हो । पु० सती माताका पुत्र ।

सम्माद–पु० (सं०) उन्माद; उन्मत्तता, मद ।

सम्मान–पु० (सं०) इज्जत, आदर, प्रतिष्ठा; मापना; तुलना करना; मान ।

सम्मानन–पु० (सं०) पूजन, आदर करना; सिखलाना, वतलाना ।

सम्मानना–स्त्री० (सं०) दे० 'सम्मानन' । * स० क्रि० आदर करना ।

सम्माननीय–वि० (सं०) दे० 'सम्मान्य' ।

सम्मानित–वि० (सं०) पूजित, आदृत ।

सम्मानी(निन्)–वि० (सं०) जिसमें सम्मानका भाव हो ।

सम्माम–स्त्री० (अ०) तेज तलवार ।

सम्मान्य–वि० (सं०) आदरणीय, आदरके योग्य ।

सम्मार्ग–पु० (सं०) प्रक्षालन; साफ करना; (लकड़ी आदिका वोझ वाँधनेके लिए वनायी जानेवाली) तृणकी रस्सी, गतार ।

सम्मार्जक–पु० (सं०) मेहतर; झाड़ू । वि० साफ करनेवाला ।

सम्मार्जन–पु० (सं०) झाड़ना-वहारना, साफ करना; स्नानादि (मूर्तिका); स्रुवा साफ करनेके काम आनेवाला दर्भका मुट्ठा, उसकन; थाली साफ करते समय निकला हुआ उच्छिष्ट; झाड़ू ।

सम्मार्जनी–स्त्री० (सं०) झाड़ू ।

सम्मार्जित–वि० (सं०) अच्छी तरह झाड़ा-वुहारा या साफ किया हुआ; हटाया हुआ; नष्ट किया हुआ ।

सम्मार्ष्टि–स्त्री० (सं०) सफाई, मार्जन ।

सम्मित–वि० (सं०) मापा हुआ; समान माप, परिमाण आदिका (सिमेट्रिकल); सदृश, एक जैसा, अनुरूप; ···से युक्त; ···के निमित्त । पु० एक पौराणिक योनि; वसिष्ठका एक पुत्र; फासला ।

सम्मिति–स्त्री० (सं०) वरावरी, तुलना करना; महत्त्वाकांक्षा ।

सम्मियात–स्त्री० (अ०) 'सम्म'का बहु०, ज़हरीली चीजें, विषद्रव्य ।

सम्मिलन–पु० (सं०) मिलना, एकत्र होना । –**विलेख**–पु० (इंस्ट्रूमेंट ऑव ऐक्सेशन) वह लिखित समझौता, जिसमें किसी राज्य, भू-क्षेत्रादिके अन्य राज्यमें सम्मिलित किये जानेकी शर्तें

दी हों और जिसपर दोनों पक्षोंके आधिकारिक व्यक्तियोंके हस्ताक्षर हों ।

सम्मिलित–वि० (सं०) साथ मिला हुआ, युक्त; एकत्र ।

सम्मिश्र–वि० (सं०) आपसमें मिला हुआ, मिश्रित; संबद्ध; युक्त, संपन्न ।

सम्मिश्रक–पु० (कंपाउंडर) अस्पतालों या पश्चिमी ढंगके औषधालयोंमें कई ओषधियोंका सम्मिश्रण कर रोग-विशेषकी दवा तैयार करनेवाला कर्मचारी ।

सम्मिश्रण–पु० (सं०) मिलानेकी क्रिया; मिलावट ।

सम्मिश्रित–वि० (सं०) मिलाया हुआ, एक साथ किया हुआ, मिलावटी ।

सम्मिश्ल–पु० (सं०) इंद्र ।

सम्मी–वि० (अ०) विषाक्त । **–(मे) क़ातिल**–पु० अत्यन्त कड़ा विष ।

सम्मीयत–स्त्री० (अ०) जहरीलापन, विषाक्तता ।

सम्मीलन–पु० (सं०) (पुष्पादिका) संकुचित होना, मुंदना; ढक लेना; पूर्ण ग्रहण, खग्रास; सक्रियताका अंत होना ।

सम्मीलित–वि० (सं०) जिसने आँखें बंद कर ली हैं, सुप्त । **–द्रुम**–पु० रक्त पुनर्नवा ।

सम्मुख–वि० (सं०) जो सामने हो, जो आँखोंके सामने मौजूद हो; भिड़नेवाला; अभिमुख,···की ओर प्रवृत्त; अनुकूल; किसी बातपर तुला हुआ; उपयुक्त । अ० सामने, समक्ष । **–कोण**–पु० (वर्टिकली अपोज़िट ऐंगिल्स) दो सरल रेखाओंके किसी एक बिंदुपर एक दूसरीको काटनेसे बने हुए आमने-सामनेके कोण ।

सम्मुखी(खिन्)–पु० (सं०) आईना; वह जो सामने हो ।

सम्मुखीन–वि० (सं०) सामनेका; अनुकूल; शुभ ।

सम्मुग्ध–वि० (सं०) भटका हुआ; घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि; सुंदर ।

सम्मूढ–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, हतबुद्धि; संज्ञाहीन; मूर्ख, ज्ञानहीन; राशीकृत; अस्तव्यस्त; तेजीसे उत्पन्न; भग्न, टूटा हुआ । **–चेता(तस्)**–वि० जिसका दिमाग ठिकाने न हो, हतबुद्धि । **–पीडिका**–स्त्री० एक शिश्न-रोग । **–हृदय**–वि० व्याकुल, उद्विग्नमना ।

सम्मूढा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी पहेली ।

सम्मूर्च्छ–पु० (सं०) घना होना; बढ़ना; फैलना । **–ज**–पु० तृण, घास ।

सम्मूर्च्छन–पु० (सं०) घना होने, बढ़ने, फैलनेकी क्रिया; मूर्च्छा, बेहोशी; ऊँचाई; पूर्ण व्याप्ति ।

सम्मूर्च्छनोद्भव–पु० (सं०) मछली या अन्य जलचर जंतु ।

सम्मूर्च्छित–वि० (सं०) घनीभूत; बेहोश; प्रतिफलित (जैसे किरण); मिलाया हुआ (स्वर) ।

सम्मृत–वि० (सं०) बिलकुल निर्जीव, मरा हुआ ।

सम्मृष्ट–वि० (सं०) खूब झाड़ा-बहारा, साफ किया हुआ; छाना हुआ ।

सम्मेघ–पु० (सं०) बादल-वर्षाका मौसिम ।

सम्मेत, सम्मेद–पु० (सं०) एक पर्वत ।

सम्मेलन–पु० (सं०) आपसमें मिलना, एकत्र होना; सभा, संस्था आदि; मिश्रण; मेल ।

सम्मोचित–वि० (सं०) मुक्त किया हुआ ।

सम्मोद–पु० (सं०) प्रीति; प्रसन्नता, खुशी; गंध ।

सम्मोदन–पु० (सैंक्शन) किसी नियम, अधिनियम आदिकी उच्चाधिकारियों द्वारा पुष्टि, आधिकारिक स्वीकृति ।

सम्मोह–पु० (सं०) घबड़ाहट, व्याकुलता; मूर्च्छा, संज्ञाहीनता; अज्ञान, मूर्खता; विमोहन, वशीकरण; हो-हल्ला; संग्राम; एक विशेष ग्रहयोग (ज्यो०) ।

सम्मोहक–वि० (सं०) बेहोश, संज्ञाहीन करनेवाला; मुग्ध, वशमें करनेवाला ।

सम्मोहन–वि० (सं०) दे० 'सम्मोहक' । पु० मुग्ध करना; बहकाना; कामदेवका एक बाण; एक पौराणिक अस्त्र । **–विद्या**–स्त्री० (हिपनाटिज़्म) कृत्रिम उपायों द्वारा उत्पन्न की गयी प्रगाढ निद्रा जैसी वह स्थिति जिसमें पड़ा हुआ व्यक्ति केवल सम्मोहन करनेवालेके बाह्य संकेतोंपर ही कोई कार्य करता है ।

सम्मोहनी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी माया ।

सम्मोहित–वि० (सं०) मुग्ध, वशमें किया हुआ; बेहोश किया हुआ; घबड़ाहटमें डाला हुआ ।

सम्म्राज*–पु० साम्राज्य ।

सम्यक्(च्, म्यंच्)–वि० (सं०) साथ जानेवाला; ठीक, सही; उपयुक्त; उचित; मनोनुकूल, प्रिय; एकरूप; जो एक पंक्तिमें हो (जैसे पदचिह्न); संपूर्ण, समग्र । अ०···के साथ; अच्छी तरह; उचित रूपमें; ठीक-ठीक; सम्मानपूर्वक; पूर्णतः; स्पष्टतः । **–(क्)कर्मांत**–पु० सत्कर्म (बौ०) । **–चारित्र**–पु० सदाचार, रत्नत्रयमेंसे एक (जै०) । **–पाठ**–पु० शुद्ध उच्चारण । **–प्रजिधान**–पु० प्रगाढ़ समाधि । **–प्रयोग**–पु० उचित प्रयोग । **–प्रवृत्ति**–स्त्री० (इंद्रियोंका) उचित कार्य । **–प्रहाण**–पु० उचित प्रयत्न । **–श्रद्धान**–पु० सही विश्वास (जै०) । **–संबुद्ध**–वि० जिसे पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो (बुद्ध) । **–संबुद्धि**–स्त्री० **–संबोध**–पु० पूर्ण ज्ञान, पूर्ण प्रकाश । **–समाधि**–स्त्री० ठीक समाधि । **–स्थिति**–स्त्री० साथ रहना । **स्मृति**–स्त्री० सही याद ।

सम्यगवबोध–पु० (सं०) ठीक समझ ।

सम्यगाजीव–पु० (सं०) उपयुक्त रहन-सहन ।

सम्यग्–'सम्यक्'का समासगत रूप । **–गत**–वि० पवित्रात्मा । **–गमन**–पु० साथ जाना । **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० सच्चा रक्षक । **–ज्ञान**–पु० सही ज्ञान । **–दंडन**–पु० उचित या वैध दंड देना । **–दर्शन**–पु० सही ज्ञान, रत्नत्रयमेंसे एक (जै०) । वि० अंतर्दृष्टिसे युक्त । **–दर्शी(र्शिन्)**,**–दृक्(श्)**–वि० दे० 'सम्यग्दर्शन' । **–बोध**–पु० सही ज्ञान । **–वर्तमान**–वि० जो अपना कर्तव्य करता जाता है । **–वाक्(च्)** स्त्री० उचित भाषण । **–विजयी(यिन्)**–वि० जिसे पूर्ण विजय प्राप्त हो । **–वृत्ति**–स्त्री० कर्तव्यका समुचित पालन ।

सम्याना*–पु० दे० 'शामियाना' ।

सम्यीची–स्त्री० (सं०) प्रशंसा, स्तुति; मृगी ।

सम्रथ*–वि० समर्थ ।

सम्राज्ञी–स्त्री० (सं०) सम्राट्की पत्नी; साम्राज्यके शासनसूत्रका संचालन करनेवाली स्त्री ।

सम्राट्(ज्)–पु० (सं०) वह जिसका शासन और राजाओंपर हो, राजेश्वर (जिसने राजसूय यज्ञ किया है) ।

सम्हलना–अ० क्रि० दे० 'सँभलना' ।

सम्हों*–पु० समय 'देवसहिं रहहिं पवरिया, रात सम्हों कोटवार'–चंदा० ।

सयत्न–अव्य० (सं०) यत्नपूर्वक 'सयत्न विन्यस्त केश' ।

सयन–पु० (सं०) बंधन; विश्वामित्रका एक पुत्र; * लेटनेकी क्रिया, सोनेकी क्रिया; विस्तर ।

सयन*–स्त्री० सैन्य, सेना–'तट कालिंदी तहँ विमल, करि मुकाम नृपराज । सथ्थ सयन सामंत भर, सूर जु आये साज'–रासो ।

सयल*–वि० सकल, सब ।

सयान*–पु० समझदारी, बुद्धिमानी । वि० चतुर । **–प,–पन**–पु० चतुराई ।

सयाना–वि० प्राप्त-वयस्क, प्रौढ़ अवस्थाका; बुद्धिमान्; चालाक, धूर्त । पु० वृद्ध-जन, बड़ा-बूढ़ा आदमी; नंबरदार, मुखिया; ओझा, झाड़-फूँक करनेवाला; हकीम । **–चारी**–स्त्री० गाँवके मुखियाका रसूम ।

सयूथ्य–वि० (सं०) एक ही वर्ग या श्रेणीका । पु० वह जो समान समूह या वर्गका हो ।

सयोनि–वि० (सं०) एक ही कोखसे उत्पन्न; निकटसंबंधी । पु० सगा भाई; इंद्र; सरौता ।

सयोनीयपथ–पु० (सं०) खेतोंका मार्ग ।

सरंग–पु० (सं०) चतुष्पद; एक तरहका हिरन; पक्षी । वि० रंगदार; सानुनासिक ।

सरंगा–स्त्री० पुरानी चालकी एक नाव ।

सरंजाम–पु० (फा०) कामका नतीजा; पूर्ति; प्रबंध, तैयारी (करना, होना)।

सरंड–पु० (सं०) पक्षी; गिरगिट; लंपट; दुष्ट व्यक्ति; एक आभूषण।

सरंध्र–वि० (पोरस) जिसमें सब जगह बहुत छोटे-छोटे छेद विद्यमान हों जिनसे होकर पानी (या अन्य तरल पदार्थ) धीरे-धीरे रिसता रहता हो।

सरः–'सरस्'का समासगत रूप। **–काक**–पु० हंस। **–काकी**–स्त्री० हंसी। **–प्रिय**–पु० एक जलीय पक्षी।

सर–वि० (सं०) चलनेवाला, गतिशील; रेचक। पु० गमन, गति; बाण; दहीका थक्का; नमक; हार; रस्सी; जलप्रपात; जल; ताल, तालाब; लघु मात्रा (छंद); वायु। **–ज**–पु० ताजा मक्खन। **–पत्रिका**–स्त्री० कमलका नया पत्ता; कमलिनी। **–संव्रत**–पु० तिधारा, थूहर।

सर–पु० (अं०) महोदय; श्रीमान्; ब्रिटिश सरकारकी एक सम्मानित उपाधि। (फा०) सिर; चोटी, शीर्ष भाग; आदि, आरंभ; शीर्षक; सरदार (सरपंच); किनारा; ताश, गंजीफेका कोई बड़ा पत्ता (इक्का, बादशाह इ०); इरादा; प्रेम; स्रोत, उत्पत्तिस्थान। **–अंजाम**–पु० दे० 'सरंजाम'। **–अफ़राज़**– वि० ऊँचे पदपर आसीन, महिमान्वित; घमंडी। **–अफ़राज़ी**–स्त्री० बड़प्पन; घमंड। **–करदा**–वि० सरदार, मुखिया। **–कर्दगी**–स्त्री० सरदारी। **–कश**–वि० उद्दंड; जो किसीसे न दबे; बागी। **–कशी,–ताबी**–स्त्री० उद्दंडता; विद्रोह। **–कार**–स्त्री० दे० 'क्रममें'। **–कोब**–वि० सिर कुचलनेवाला; दंड देनेवाला। पु० तोपखाना। **–कोबा**–पु० भारी गदा। **–कोबी**–स्त्री० सिर कुचलना; दंड, गोशमाली। **–ख़त**–पु० किरायानामा; वह कागज जिसपर नौकरीकी तारीखकी याददाश्त लिखी जाय; परवाना, आज्ञापत्र; किराये या लेनदेनका हिसाब लिखनेकी छोटी बही। **–ग़ना**–वि० सरदार, मुखिया। **–गराँ**–वि० रुष्ट, क्रुद्ध; घमंडी; त्रस्त। **–गरामी**–स्त्री० सिरका भारी होना; खुमार; रोष। **–गरोह**–पु० सरदार, नेता, मुखिया। **–गर्म**–वि० मुस्तैद, उत्साही; उत्साह और परिश्रमसे काम करनेवाला। **–गर्मी**–स्त्री० मुस्तैदी; उत्साह; दिलसे और पूरी शक्तिके साथ प्रयत्न करना। **–गुजश्त**–स्त्री० गुजरा हुआ हाल, वृत्त, घटना। **–गोशी**–स्त्री० कानाफूसी; चुगली, बुराई। **–चश्मा**–पु० चश्मेका उद्गम। **–ज़मीन**–स्त्री० देश, मुल्क; राज्य। **–ज़ोर**–वि० सरकश, अवज्ञाकारी। **–जोश**–पु० उबाल खाया हुआ शोरबा, शराब आदि। वि० (ला०) बढ़िया, साररूप। **–तराश**–पु० नाई; सिर मूँड़नेवाला। **–ताज**–पु० दे० 'सिरताज'। **–ताबी**–स्त्री० उद्दंडता; विद्रोह। **–दफ्तर**–पु० अध्यक्ष; हेड-क्लार्क। **–दरख़्ती**–स्त्री० पेड़ोंपर लगाया जानेवाला कर। **–दर्द**–पु० सिरका दर्द; व्यथा, कष्ट। **–दार**–पु० मुखिया, नेता; सेनापति; सिखोंकी पदवी। **–दारनी**–स्त्री० सरदारकी पत्नी; प्रतिष्ठित सिख महिला। **–दारी**–स्त्री० सरदारका पद। **–नविश्त**–स्त्री० कपाल-लेख, भाग्य। **–नाम**–वि० नामी, मशहूर। **–नामा**–पु० चिट्ठी पानेवालेका पता जो चिट्ठीके ऊपर या आरंभमें लिखा जाता है; प्रशस्ति। **–निगूँ**–वि० नतशिर; औंधे मुँहवाला; लज्जित। **–पंच**–पु० प्रधान पंच, पंचोंका मुखिया। **–परस्त**–वि० संरक्षक; सहायक; वली। **–परस्ती**–स्त्री० संरक्षण; सहायता। **–पेंच,–पेच**–पु० पगड़ीके ऊपर लगानेका एक गहना; एक तरहका गोटा। **–पोश**–पु० ढकना; ख्वानपोश; (ला०) गुप्त बात, भेद। **–फ़राज़**–वि० जिसका सिर ऊँचा हो; जिसे बड़ाई मिली हो; सम्मानित; घमंडी। (मु० **–०करना,–० फ़रमाना**–बड़ाई देना, सम्मानित करना; कृतार्थ करना।) **–फ़राज़ी**–स्त्री० दरजेकी ऊँचाई; बड़ाई। **–फ़रोश**–वि० जान देनेको तैयार; जानपर खेलनेवाला, निडर। **–फ़रोशी**–स्त्री० जान देनेको तैयार होना; वीरता। **–बंद**–पु० जिसका मुँह बंद हो। **–बमुह्र**–वि० मुहर किया हुआ, मुहरबंद। **–बरफ़**–वि० जो जान हथेलीपर लिये हो, मरनेको तैयार। **–बरहना**–वि० जो नंगे सिर हो। **–बराबुर्दा**– वि० मुखिया, प्रमुख। **–बराह**–वि० प्रबंधकर्ता, कारिंदा। **–० कार**–पु० प्रबंधक; जिलेदारोंका अफसर। **–०कारी**–स्त्री० सरबराहकारका पद। **–बराही**–स्त्री० प्रबंध। **–बसर**–अ० बराबर; सोलहों आने, सरासर। **–बाज़**–वि० जानपर खेलनेवाला; निडर। **–बार**–पु० छोटी गठरी जो बोझके ऊपर रखी जाय। **–बुलंद**–वि० जिसका सिर ऊँचा हो; उच्चपदस्थ; प्रतिष्ठित, सम्मानित। **–बुलंदी**–स्त्री० ऊँचा पद; सम्मान। **–मद**–वि० नित्य, अनश्वर। **–मस्त**–वि० मतवाला, शराबके नशेमें चूर। **–मस्ती**–स्त्री० मत्तता, मस्ती। **–माया**–पु० दे० 'क्रम'में। **–रिश्ता**–पु० विभाग, महकमा; योग्यता; इच्छा, अधिकार; सूत्र। **–वरक़**–पु० मुखपृष्ठ, पुस्तकका पहला पन्ना। **–ब(रो)पा**–अ० सिरसे पैरतक, नख-शिख। पु० सर्वांग;† सिरसे पैरतककी पोशाक। (मु० **–०की ख़बर न होना**–बेसुध, बदहवास होना।) **–ब(रो)सामान**–पु० सामान, असबाब। **–शुमारी**–स्त्री० सिरोंकी गिनती, मर्दुमशुमारी। **–सब्ज़**–वि० हरा-भरा, लहलहाता; फलता-फूलता। (मु० **–०होना**–सफल होना।) **–सब्ज़ी**–स्त्री० सरसब्ज होना। **–हंग**–पु० सेनानायक; पहलवान; सैनिक; योद्धा। वि० उद्दंड; किसीसे न दबनेवाला। **–हंगी**–स्त्री० सरहंग होना; उद्दंडता; लड़ाकापन। **–हद,–हद्द**–स्त्री० वह स्थान जहाँ कोई देश समाप्त होता हो। **–हदी**–वि० सीमा-संबंधी; सरहदका। **–(रे) इजलास**–अ० भरी कचहरीमें, हाकिमके सामने। **–कोह**–पु० पहाड़की चोटी। **–दरबार**–अ० खुल्लमखुल्ला, भरे दरबारमें। **–दस्त**–अ० अभी, फिलहाल। **–दीवार**–पु० दीवारका ऊपरी भाग। **–नौ**–अ० नये सिरेसे। **–बाज़ार**–अ० खुले खजाने, सबके सामने। **–बाम**–पु० कोठा, अटारी। **–बालीं**–पु० सिरहाना। **–राह**–अ० रास्तेके सिरेपर, रास्तेमें। **–लश्कर**–पु० सेनापति। **–शाम**–अ० शामके शुरूमें, संध्या होते ही। **–शीर**–पु० मलाई। मु० **–करना**–आरंभ करना (क्व०); (किला, मुहिम) जीतना, फतह करना; हराना; दबाना, काबूमें कर लेना; दागना, छोड़ना (तोप-बंदूक); ताश, गंजीफेमें खिलाड़ीका ऐसा पत्ता डालना जिसपर दूसरे खिलाड़ियोंको बड़ा पत्ता डालना पड़े। **–होना**–आरंभ होना (क्व०); फतह होना; दागा, छोड़ा जाना (तोप-बंदूक)।

सर*–पु० बाण; चिता–'ककनूँ पेखि जैस सर साजा'–प०; सरकंडा–'मसि खूटी सागर जल भीजे, सर दौ लागि जरै'–सूर। स्त्री० माला। **–धर**–पु० तरकश। **–पंजर**–पु० बाणोंका पिंजड़ा। **–बंधी**–पु० कमनैत।

सर(स्)–पु० (सं०) झील, ताल, जलाशय; जल।

सरई–स्त्री० सरपतका एक भेद।

सरकंडा–पु० एक सरपत जिसमें गाँठें होती हैं।

सरक–पु० (सं०) पथिकोंकी लगातार पंक्ति; काफिला, कारवाँ; ताल, झील; रत्न; सरकना; आकाश; मदिरा; सुरापान; पानपात्र; सुरा-वितरण; एक तीर्थ। वि० गतिशील। * स्त्री० खुमार; वेदना–'प्रेम सरक सबके उर सलै'–घन०।

सरकना–अ० क्रि० जमीनसे सटे हुए आगे बढ़ना; रेंगना, खिसकना; हट जाना; काम चलना; समयका टल जाना।

सरकफूँद, सरफूँदा†–स्त्री० एक तरहका सरकनेवाला फंदा, जिसे किसी चीजपर डालकर खींचनेसे वह उसे जकड़ ले (बुंदेल०; सकरमुद्धी, सरकवाँसी, भोजपुरी)।

सरका*–पु० आकाश; आज्ञाचक्र। मु० **–कूटना**–समाधिस्थ होना, ध्यान लगाना, योगियोंका प्राणवायुको ब्रह्मांडमें स्थिर करना।

सरक़ा–पु० (अ०) चोरी। **–बिलजब्र**–पु० डाका।

सरकार–स्त्री० (फा०) राजदरबार; राज्य, हुकूमत; शासन (गवर्नमेंट); शासन-प्रबंध; शासक-मंडल; अधिकारी; रियासत। पु० प्रांतका एक विभाग, जिला (मुगलराज्यप्रबंध); मालिक; घरका मालिक; प्रबंधकर्ता; बड़ेका संबोधन, हुजूर। **–अंग्रेजी**–स्त्री० अंग्रेजी हुकूमत, ब्रिटिश राज। **–कंपनी**–स्त्री० ईस्टइंडिया कम्पनी। **–दरबार**–पु० राजदरबार, कचहरी। मु० **–०करना,–०चढ़ना**–कचहरीमें नालिश-फरियाद करना।

–दिखाना–(क्व०) नालिश करना ।

सरकार, यदु(जदु)नाथ–पु० इतिहासके प्रसिद्ध प्राध्यापक तथा लेखक । आपकी इतिहास-संबंधी रचनाओंमें औरंगजेब तथा शिवाजी-विषयक ग्रंथ विशेष महत्त्वके हैं (१८७०–१९५८) ।

सरकारी–वि० सरकारका, राजकीय; दफ्तरका; मालिकका । **–अहलकार,–मुलाज़िम**–पु० राजकर्मचारी । **–आमदनी**–स्त्री० राज्यकी आय, राजस्व । **–काग़ज़**–पु० स्टांपका कागज; प्रामिसरी नोट । **–गवाह**–पु० अपराधियोंका साथ छोड़कर उनके विरुद्ध गवाही देनेवाला, इक़बाली गवाह (एप्रूवर) । **–साँड़**–पु० नस्ल-सुधारके लिए राज्यकी ओरसे रखा जानेवाला साँड़; (ला०) व्यभिचारी, लंपट ।

सरग*–पु० स्वर्ग । **–तिय**–स्त्री० अप्सरा । **–पताली**–वि० दे० 'सर्ग'में ।

सरगम–पु० स्वरोंके आरोह-अवरोहका क्रम (संगीत) ।

सरगही–स्त्री० दे० 'सहरगही' ।

सरगुन*–वि० दे० 'सगुण' ।

सरगुनिया*–पु० वह जो सगुणोपासक हो ।

सरघा–स्त्री० (सं०) मधुमक्खी; बड़ी जातिकी मधुमक्खी ।

सरजना*–स० क्रि० सृष्टि करना; बनाना, निर्माण करना ।

सरजसा, सरजस्का, सरजा(जस्)–स्त्री० (सं०) ऋतुमती स्त्री ।

सरजा–पु० सिंह; सरदार; शिवाजीकी उपाधि ।

सरजीव*–वि० सजीव, जीववाला–'सरजीव काटहि निर्जीव पूजहि अंतकाल कौ भारी'–कबीर ।

सरजीवन†–वि० जीवित करनेवाला; हरा-भरा, जरखेज ।

सरट–पु० (सं०) गिरगिट; वायु; छिपकली (लिजर्ड) ।

सरटि–पु० (सं०) वायु; बादल ।

सरटु–पु० (सं०) गिरगिट ।

सरट्–पु० (सं०) वायु; बादल; गिरगिट; मधुमक्खी ।

सरण–पु० (सं०) गमन, सरकना, खिसकना; लौहकिट्ट । वि० युद्धसे संबद्ध । **–मार्ग**–पु० गमन करनेवाला मार्ग ।

सरणा–स्त्री० (सं०) लता; प्रसारणी; त्रिवृता; गमन ।

सरणि, सरणी–स्त्री० (सं०) मार्ग, रास्ता; प्रसारणी; व्यवस्था; तरीका; परम्परा, परिपाटी, प्रथा; सीधी या लगातार पंक्ति; पगडंडी; गलेका एक रोग ।

सरण्यु–पु० (सं०) वायु; बादल; जल; वसंत; अग्नि; यम ।

सरतान–पु० (अ०) केकड़ा; कर्कराशि; दुष्ट व्रण, 'कैंसर' ।

सरता-बरता–पु० बँटाई; हिस्सा-बाँट । मु० **–करना**–एक दूसरेकी सहायतासे काम चलाना ।

सरतारा*–वि० निश्चित, बाफ़ुरसत, सावकाश–'बैद भये हरगोविंदजी तबसे जमदूत फिरैं सरतारे'–गुलाब ।

सरत्–वि० (सं०) गमनशील । पु० सूत्र, धागा ।

सरत्नि–स्त्री० (सं०) एक हाथकी माप ।

सरथ–वि० (सं०) रथयुक्त । पु० रथारोही सैनिक ।

सरद–वि० दे० 'सर्द' । * स्त्री० शरत् ऋतु ।

सरदई–वि० दे० 'सर्दई' ।

सरदर–अ० औसतन; एक सिरेसे ।

सरदल†–पु० दरवाजेका बाजू । अ० दे० 'सरदर' ।

सरदा–पु० दे० 'सर्दा' ।

सरद्वान्(द्वत्)–पु० (सं०) गौतम मुनि ।

सरधन*–वि० धनी, अमीर–'जो निर्धन सरधन कै जाई आगे बैठा पीठ फिराई'–कबीर ।

सरधा*–स्त्री० श्रद्धा; शक्ति ।

सरन*–स्त्री० दे० 'शरण' ।

सरनदीप*–पु० स्वर्णद्वीप, सिंहल, लंका ।

सरना–अ० क्रि० सरकना; काम चलना, पूरा पड़ना; * सड़ना; बीत जाना, पूरा हो जाना–'सुनहु कंस तेरो आयु सरयो'–सूर; कटना; निसृत होना, निकलना (वायु–अपान वायु निकलना) ।

सरनी*–स्त्री० रास्ता, मार्ग ।

सरप*–पु० सर्प, साँप ।

सरपट–स्त्री० घोड़ेकी सबसे तेज चाल जिसमें घोड़ा अगले पैरोंको एक साथ फेंकता हुआ दौड़ता है । वि० सपाट । अ० सरपट चालमें ।

सरपत–पु० कुशकी जातिका एक तृण ।

सरपि*–पु० सर्पि, घी ।

सरफराना*–अ० क्रि० व्यग्र होना, घबराना ।

सरफ़ा–पु० दे० 'सर्फ़ा' ।

सरफोका–पु० सरकंडा ।

सरब*–वि० दे० 'सर्व' । **–बिआपी**–वि० सर्वव्यापक ।

सरबत्तरि*–अ० सर्वत्र–'...सो मुलना सरबत्तरि गाजा'–कबीर ।

सरबदा*–अ० सर्वदा, हमेशा ।

सरबर*–स्त्री० दे० 'सरवर' ।

सरबरना*–स० क्रि० उपमा देना ।

सरबरि†–स्त्री० बराबरी; झगड़ा, वाग्युद्ध ।

सरबस*–पु० सर्वस्व, सब कुछ ।

सरबोर*–वि० दे० 'सराबोर' ।

सरभक–पु० (सं०) अन्नका एक कीट ।

सरभस–वि० (सं०) तेज; उग्र; प्रसन्न; भावाविष्ट ।

सरम*–स्त्री० लज्जा ।

सरमद–वि० (अ०) सदा रहनेवाला, नित्य, कायम; मस्त; एक प्रसिद्ध सूफ़ी संत ।

सरमा–पु० (फा०) जाड़ेका मौसिम, शीतकाल । स्त्री० (सं०) देवताओंकी कुतिया, देवशुनी (कहा जाता है, यह चार आँखोंवाले यमके कुत्तेकी जननी थी); कुतिया; कश्यप मुनिकी एक स्त्री; गंधर्वराज शैलूषकी एक कन्या और विभीषणकी स्त्री । **–पुत्र, –सुत**–पु० कुत्ता ।

सरमाई–वि० जाड़ेका । स्त्री० जाड़ेके कपड़े, जड़ावर ।

सरमात्मज–पु० (सं०) कुत्ता ।

सरमाया–पु० (फा०) पूँजी, मूलधन । **–दार**–पु० पूँजीपति; धनी । **–दारी**–स्त्री० सरमायादार होना ।

सरया†–पु० एक मोटा कुआरी धान; सारो ।

सरयु–पु० (सं०) वायु । स्त्री० दे० 'सरयू' ।

सरयू–स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध नदी जिसके तटपर अयोध्या स्थित है, घाघरा ।

सररा†–पु० ताना ठीक करनेके लिए लगायी जानेवाली बाँस या सरकंडेकी पतली छड़ी ।

सरराना*–अ० क्रि० हवाके तेज चलने या किसी वस्तुकी तीव्र गतिसे 'सर-सर' शब्द उत्पन्न होना ।

सरल–वि० (सं०) सीधा, जो वक्र न हो; प्रसारित; सही, ठीक; खरा, ईमानदार, निश्छल, सीधे स्वभावका; यथार्थ, असली; आसान, सुकर । पु० चीड़का पेड़; अग्नि; एक बुद्ध; गंधाबिरोजा; एक बड़ी संख्या (बौ०) । **–कद्रु**–पु० चिरौंजी । **–**
–काष्ठ–पु० चीड़की लकड़ी । **–तृण**–पु० भूतृण । **–द्रव,–**
–निर्यास–पु० गंधाबिरोजा । **–पुंटी**–स्त्री० पहिना मछली । **–यायिनी**–स्त्री० वह पौधा जिसका तना सीधा हो । **–यायी-(यिन्)**–वि० सीधे जानेवाला । **–रस**–पु० दे० 'सरलद्रव' । **–रेखा**–स्त्री० (स्ट्रेट लाइन) वह रेखा जिसकी दिशा सर्वत्र एक ही रहती है । **–लोलक**–पु० यदि एक नन्हें, भारी ठोसको पतली, हलकी और अप्रत्यास्थ डोरीसे लटकाएँ जिसका दूसरा सिरा स्थिर कीलपर बँधा हो, तो यह उपकरण सरल लोलक कहलाएगा । **–स्यंद**–पु० दे० 'सरलद्रव' ।

सरलता–स्त्री० (सं०) सीधापन; खरापन, ईमानदारी, निष्कपटता, सिधाई; आसानी; सादगी ।

सरलांग–पु० (सं०) दे० 'सरलद्रव' ।

सरला–स्त्री० (सं०) चीड़का पेड़; त्रिपुटा, मोतिया; एक नदी; काली तुलसी; निसोथ ।

सरलित–वि० (सं०) सीधा किया हुआ; सीधा ।

सरलीकरण–पु० (सं०) कठिन विषयको आसान बना देना; किसी जटिल या कठिन भिन्नको सरल रूपमें परिणत कर देना (ग०); किसी गंभीर समस्याको अपने मनपसन्द समाधानमें सीमित करनेका प्रयत्न ।

सरव–वि० (सं०) शब्दायमान। * पु० दे० 'सराव'।

सरवत–स्त्री० (अ०) मालदारी, धनाढ्यता।

सरवती–स्त्री० (सं०) वितस्ता नदी।

सरवन*–पु० दे० 'श्रमण'; 'श्रवण'।

सरवनी*–स्त्री० सुमरनी।

सरवर–पु० (फा०) सरदार, अफ़सर; * सरोवर। * स्त्री० बराबरी।

सरवरि*–स्त्री० बराबरी, स्पर्द्धा।

सरवरिया–वि० सरयूपार, सरवारका; स्पर्द्धा करनेवाला। पु० वह ब्राह्मण जो सरयूपारका हो।

सरवरी–स्त्री० सरदारी।

सरवाफ़–पु० संपुट; प्याला, कसोरा, दीया।

सरवान†–पु० खेमा, तंबू।

सरवार–पु० सरयूपारका भूखंड।

सरव्य–पु० (सं०) शरव्य, लक्ष्य।

सरशफ़–पु० (फा०) सरसों, सर्षप।

सरस–वि० (सं०) रसयुक्त, रसीला; स्वादिष्ठ, जायकेदार; आर्द्र, गीला; पसीनेसे तरबतर; प्रेमासक्त; नया, ताजा; सुंदर, मोहक; रसपूर्ण (काव्य)। पु० सरोवर।

सरसई–स्त्री० सरसों जैसे फलके दाने; * सरस्वती (नदी, देवी); सरसता, ताजगी।

सरसठ–वि० साठ और सात। पु० सरसठकी संख्या, ६७।

सरसना*–अ० क्रि० रसयुक्त होना; पनपना, हरा-भरा होना, लहलहाना; शोभा देना; भावाविष्ट होना; जलयुक्त होना।

सर-सर–पु० हवाके चलने या साँप आदिके रेंगनेका शब्द। अ० 'सर-सर' ध्वनिके साथ। वि० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करनेवाला। स्त्री० (अ०) तेज हवा; आँधी।

सरसराना–अ० क्रि० 'सर-सर' आवाज होना; हवाका तेजीसे चलना; साँप आदिका रेंगना।

सरसराहट–स्त्री० हवा, साँप आदिके चलनेका शब्द; सुरसुराहट।

सरसरी–वि० जल्दी या स्वारवीका, लापरवाहीसे किया जानेवाला, चलता (काम)। अ० जल्दीमें, विना अधिक सोचे-विचारे, चलते तौरपर, बिना बारीकीसे देखे-समझे। स्त्री० माथेपर पहननेका एक गहना; खफीफा अदालत; प्रत्येक शब्द या वर्णके पहले 'स' लगाकर रचित सांकेतिक भाषा (स्त्रि०)। **–इख़्तियार**–पु० विना तहकीकातके हुक्म देनेका अधिकार। **–तहक़ीक़ात**–स्त्री० वह जांच या तहकीकात जिसमें पूरी शहादत न लिखी जाय। **–नज़र**–स्त्री० दे० 'सरसरी निगाह'। **–नालिश**–स्त्री० खफीफा अदालतमें की जानेवाली नालिश। **–निगाह**–स्त्री० चलती निगाह। **–तौरपर**–मोटे तौरपर।

सरसा–स्त्री० (सं०) श्वेत त्रिवृता।

सरसाई*–स्त्री० सरसता; आधिक्य; सुंदरता।

सरसाना*–स० क्रि० हरा-भरा करना; रसपूर्ण करना। अ० क्रि० दे० 'सरसना'।

सरसिक, सरसीक–पु० (सं०) सारस पक्षी।

सरसिका–स्त्री० (सं०) बावली; छोटा ताल, सरोवर; हिंगुपत्री।

सरसिज–पु० (सं०) कमल। वि० तालमें उत्पन्न, उसमें रहनेवाला। **–योनि**–पु० ब्रह्मा।

सरसिरुह–पु० (सं०) कमल। वि० सरोवरमें उत्पन्न। **–बंधु**–पु० सूर्य।

सरसी–स्त्री० (सं०) छोटा ताल, तलैया; बावली; एक वृत्त। **–ज**–पु० कमल। **–रुह**–पु० कमल; सारस पक्षी।

सरसुति–स्त्री० सरस्वती।

सरसेटना–स० क्रि० फटकार बतलाना, खोटी-खरी सुनाना।

सरसों–स्त्री० एक तेलहन, सर्षप।

सरसौंहाँ*–वि० सरस बनाया हुआ, रसयुक्त।

सरस्वती–स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध नदी (वेदोंमें जिस सरस्वती नदीका वर्णन है उसका निश्चय नहीं हो पाया है कि वह कौन-सी नदी है। बादके साहित्यमें उल्लिखित सरस्वती नदी बीचमें लुप्त होकर नीचे-नीचे गंगासे मिली कही जाती है); विद्यादेवी जो ब्रह्माकी पत्नी मानी जाती हैं; देववाणी; वाणी, शब्द, स्वर; विद्या; दुर्गा; गाय; हठयोगमें सुषुम्ना नाड़ी; बौद्धोंकी एक देवी; नदी; सोमलता; ज्योतिष्मती लता; ब्राह्मी लता; स्त्रीरत्न, उत्तम स्त्री; एक छंद; एक मिश्रराग; दशनामी सन्न्यासियोंमेंसे एककी उपाधि; मनुपत्नी; जलाशयोंसे पूर्ण भूभाग। **–कंठाभरण**–पु० संस्कृतका एक प्रसिद्ध अलंकारग्रंथ; एक ताल (संगीत)। **–पुत्र**–पु० विद्वान्, ज्ञानी व्यक्ति, पंडित। **–पूजन**–पु०,**–पूजा**–स्त्री० सरस्वतीके जन्मदिनके उपलक्ष्यमें होनेवाली पूजा जो माघ-शुक्ला पंचमीको होती है। **–प्रयोग**–पु० तांत्रिकोंका एक प्रयोग। **–विनशन**–पु० वह स्थान जहाँ सरस्वती नदी लुप्त होती है।

सरस्वान्(स्वत्)–वि० (सं०) जलयुक्त; रसीला; स्वादिष्ठ; सुंदर; भावुक; रस प्राप्त करनेवाला। पु० समुद्र; नद; एक नदी; भैंसा।

सरहंग–पु० सेनापति; कोतवाल।

सरह*–पु० शलभ, पतंग।

सरह–वि० (फा०) निर्मल; निष्केवल; खरा सिक्का।

सरहज–स्त्री० सालेकी स्त्री, सलहज।

सरहटी–स्त्री० एक पौधा, नकुलकंद।

सरहना–पु० मछलीकी चोईं। * सराहना, प्रशंसा।

सरहर–पु० सरपत।

सरहरा–वि० ऊपरको सीधे बढ़ा हुआ (पेड़), लंबोतरा; चिकना, जिसपर हाथ-पैर न जमे।

सरहरी–स्त्री० सरपत जैसा एक तृण; सर्पाक्षी।

सरहिंद–पु० यमुना और सतलजके बीचका भूभाग।

सराँग†–स्त्री० लोहेका मोटा छड़ जिसपर पीटकर लोहेका बरतन आदि बनाते हैं।

सरा–स्त्री० (सं०) निर्झर; प्रसारणी लता; * चिता। स्त्री० (फा०) घर; मुसाफिरखाना, धर्मशाला; जमीनसे नीचेका तल, पाताल; गीली मिट्टी।

सराई–स्त्री० कसोरा, दीया; † सलाई; सरकंडेकी पतली लंबी छड़ी; पाजामा; * ठंढक।

सराग*–पु० सीखचा, शलाका–'विरह सरागन्हि भूँजै माँसू'–प०; कुलावेके बीचकी लकड़ी। वि० (सं०) रंगवाला, रंगदार; लाखसे रँगा हुआ; प्रेमाविष्ट; सुंदर।

सराजाम†–पु० सामान, सामग्री।

सराध*–पु० दे० 'श्राद्ध'।

सराना*–स० क्रि० संपादित कराना, पूरा कराना।

सराप*–पु० दे० 'शाप'।

सरापना*–स० क्रि० शाप देना, बुरा-भला कहना।

सरापा–अ० (फा०) सिरसे पैरतक, संपूर्ण। पु० सर्वांग, नख-शिख; वह पद्य जिसमें नख-शिखका वर्णन हो। **–नाज़**–वि० जिसमें नाज-नखरे भरे हों। **–नियाज़**–वि० अत्यधिक नम्र; बड़ा भक्त। **–शरारत**–वि० शरारतसे भरा हुआ।

सराफ़–पु० (अ० 'सर्राफ') रुपये, गहने इत्यादिका लेनदेन करनेवाला; सोने-चाँदीके गहने, बरतन आदि बेचनेवाला; भाँज लेकर नोट, रुपये आदिके बदलेमें छोटे सिक्के देनेवाला। **–ख़ाना**–पु० बंक, कोठी।

सराफ़ा–पु० सराफी; सराफोंका बाजार; बंक, कोठी।

सराफ़ी–स्त्री० सराफका धंधा; भाँज, भुनाई; कोठीवाली लिपि। **–पारचा**–पु० हुंडी, चेक। मु० **–करना**–रुपये-पैसे परखना; सराफका काम करना।

सराफ़ील–पु० (अ०) दे० 'इसराफ़ील'।

सराब–पु० (अ०) रेतीले मैदानपर सूर्यकी किरणें पड़नेसे होनेवाली जलकी भ्रांति, मृगमरीचिका; धोखा, भ्रांति। † स्त्री० दे० 'शराब'।

सराबोर–वि० तरबतर, अच्छी तरह भीगा हुआ।

सराय–स्त्री० (फा०) दे० 'सरा'। **–ए-फ़ानी**–स्त्री० दुनिया। **–का कुत्ता**–(ला०) अति लोभी।

सराव–पु० (सं०) ढक्कन; थाली; शराब; एक विषैला कीड़ा।

वि० शब्दायमान । * पु० प्याला, मधुपात्र; कसोरा; दीया; चौंसठ तोलेकी तौल । **–संपुट**–पु० दवा फूँकनेके लिए दो कसोरोंको मिलाकर बनाया जानेवाला पात्र ।

सरावग–पु० दे० 'सरावगी' ।

सरावगी–पु० जैनमतानुयायी, जैन-धर्मपर विश्वास करनेवाला; श्रावकधर्मावलम्बी ।

सरावन|–पु० पटेला, हेंगा ।

सराविका–स्त्री० एक तरहका फोड़ा ।

सरास*–पु० भूसी–'कहो कौन पै कढो जाइ कन बहुत सरास पछोरी'–सूर ।

सरासन*–पु० धनुष्, कमान ।

सरासर–अ० इस सिरेसे उस सिरेतक, सोलहों आने, पूर्णतया । वि० (सं०) इतस्ततः भ्रमण करनेवाला ।

सरासरी–वि०, अ० दे० 'सरसरी' । स्त्री० जल्दी; आसानी; अनुमान ।

सराह*–स्त्री० प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई ।

सराहत–स्त्री० (अ०) खोलकर कहना, व्याख्या । **–से**–खोलकर, विस्तारपूर्वक (कहना) ।

सराहना–स० क्रि० प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई करना । स्त्री० तारीफ, बड़ाई ।

सराहनीय–वि० प्रशंसनीय, उत्तम ।

सराहु–वि० (सं०) ग्रहण लगा हुआ, राहुग्रस्त (चंद्र) ।

सरि–स्त्री० (सं०) झरना, जलप्रपात; दिशा; * नदी; लड़, माला; बराबरी, समता । * वि० तुल्य, सदृश । * अ० तक, पर्यंत–'आऊ सरि राजा पहँ रहा'–प० ।

सरिक–वि० (सं०) जानेवाला ।

सरिका–स्त्री० (सं०) गमन, प्रस्थान; हिंगुपत्री; जानेवाली स्त्री; मोतियोंकी लड़ी ।

सरिगम–पु० दे० 'सरगम' ।

सरित–वि० (सं०) धारावाहिक (भाषण) । * स्त्री० नदी ।

सरितांपति–पु० (सं०) समुद्र; चारकी संख्या ।

सरितांवरा–स्त्री० (सं०) गंगा ।

सरिता–स्त्री० नदी; धारा ।

सरित्–स्त्री० (सं०) नदी; सूत्र, डोरी; दुर्गा । **–कफ**–पु० नदीका फेन । **–पति**–पु० समुद्र । **–सुत**–पु० भीष्म । **–सुरंगा**–स्त्री० जलप्रणाली ।

सरित्त*–स्त्री० सरिता, नदी ।

सरित्वान्(त्वत्)–पु० (सं०) समुद्र ।

सरिदधिपति–पु० (सं०) समुद्र ।

सरिदिही|–स्त्री० हर फसलपर जमींदारको दी जानेवाली भेंट ।

सरिदुभय–पु० (सं०) नदीके दोनों तट ।

सरिद्–'सरित्'का समासगत रूप । **–द्वीप**–पु० गरुड़का एक पुत्र । **–भर्ता(र्तृ)**–पु० समुद्र; चारकी संख्या । **–वरा**–स्त्री० गंगा ।

सरिन्नाथ–पु० (सं०) समुद्र ।

सरिन्मुख–पु० (सं०) नदीका मुहाना ।

सरिमा(मन्), सरीमा(मन्)–पु० (सं०) वायु । स्त्री० गति, गमन ।

सरिया|–पु० सरकंडा; पतला छड़ ।

सरियाना–स० क्रि० तरतीबसे रखना, व्यवस्थित करना; बटोरकर ठीक तरहसे रखना; मारना, पीटना (व्यंग्य) ।

सरिल–पु० (सं०) जल, सलिल ।

सरिवन–पु० एक ओषधि, शालपर्ण ।

सरिवर, सरिवरि*–स्त्री० बराबरी, समता ।

सरिश्क–पु० (फा०) बिंदु; अश्रुबिंदु, आँसू ।

सरिश्त–स्त्री० (फा०) सृष्टि; बनावट; प्रकृति, स्वभाव ।

सरिश्ता–पु० (फा०) दफ्तर, महकमा; कचहरी; रीति; उपाय । **–दार**–पु० दफ्तरका प्रधान; माल और दीवानी दफ्तरोंका एक विशेष कर्मचारी । **–दारी**–स्त्री० सरिश्तादारका पद या कार्य ।

सरिषप–पु० (सं०) सर्षप, सरसों ।

सरिस*–वि० समान, तुल्य, बराबर ।

सरी–स्त्री० (सं०) छोटा सरोवर; सोता, झरना ।

सरी–वि० (फा०) सरदारी, अध्यक्षता ।

सरीक|–वि० दे० 'शरीक' ।

सरीकत|–स्त्री० दे० 'शिरकत' ।

सरीकता*–स्त्री० साझा, शिरकत ।

सरीखा–वि० समान, सदृश ।

सरीफा–पु० दे० 'शरीफा' ।

सरीर*–पु० दे० 'शरीर' ।(अ०)तख्त, राजगद्दी । स्त्री० कलमके कागजपर चलनेसे (लिखनेमें) होनेवाली आवाज । **–आरा**–वि० तख्तपर बैठनेवाला, सिंहासनासीन ।

सरीरत–स्त्री० (अ०) भेद, रहस्य, मर्म ।

सरीसृप–वि० (सं०) रेंगनेवाला । पु० रेंगनेवाला, कीड़ा, साँप आदि; (रेपटाइल) कशेरुकी वर्गके वे प्राणी (छिपकली, साँप इ०) जो जल-स्थलचर तथा पक्षीके बीच रखे जा सकते हैं । सरीसृप प्राणियोंका शरीर प्रायः शुष्क शल्कोंसे ढका होता है–ये फेफड़ोंसे साँस लेते हैं । ये नियत-तापी प्राणी नहीं होते, बल्कि बाह्य तापके बदलनेपर इनके शरीरका ताप भी बदल जाता है । विष्णु ।

सरीह–वि० (अ०) प्रकट, खुला हुआ; स्पष्ट ।

सरीहन्–अ० खुले तौरपर; खुल्लमखुल्ला ।

सरु–वि० (सं०) पतला; छोटा । पु० तलवारकी मूठ; बाण ।

सरुक्(च्)–वि० (सं०) शोभायमान, कांतियुक्त ।

सरुक्(ज्)–वि० (सं०) समान कष्टसे ग्रस्त; कष्टग्रस्त, रोगी ।

सरुज–वि० (सं०) रोगयुक्त, रोगी ।

सरुट्(ष्)–वि० (सं०) क्रुद्ध, कुपित ।

सरुहना*–अ० क्रि० सुधरना, अच्छा, ठीक होना ।

सरुहाना*–स० क्रि० अच्छा, चंगा करना ।

सरूप–वि० (सं०) साकार, रूपवाला; एक ही रूपका; समान, तुल्य, एकसा; सुंदर; समान स्वरवाला । * पु० दे० 'स्वरूप' ।

सरूपता–स्त्री०, **सरूपत्व**–पु० (सं०) तुल्यरूपता, सादृश्य; मुक्तिका एक प्रकार, ब्रह्मरूप हो जाना ।

सरूपा–स्त्री० (सं०) भूतकी स्त्री और रुद्रोंकी माता ।

सरूपी(पिन्)–वि० (सं०) समान रूपका, तुल्यरूप ।

सरूर–पु० दे० 'सुरूर' ।

सरेख*–वि० उम्रमें बड़ा और चालाक; सज्ञान–'हँसि-हँसि पूछहिं सखी सरेखी'–प० ।

सरेखना–स० क्रि० सहेजना, सँभालनेके लिए प्रवृत्त करना ।

सरेखा|–वि० दे० 'सरेख' ।

सरेश–पु० (फा०) एक लसदार पदार्थ जो पशुओंके चमड़े आदिसे तैयार किया जाता है और लकड़ी जोड़ने तथा छपाईके बेलन बनानेमें विशेष रूपसे काममें आता है । वि० लसदार, चिपकनेवाला ।

सरेस–पु० दे० 'सरेश' ।

सरोँट*–स्त्री० कपड़ोंकी सिलवट, सिकुड़न ।

सरो–पु० बनझाऊ, एक सुंदर, सुडौल पेड़ जो सीधा बढ़ता और ऊपरकी ओर गावदुम होता है (यह उर्दू-फारसी कवितामें कद या सुंदर देह-यष्टिका उपमान माना गया है) ।

सरोई–पु० एक ऊँचा पेड़ ।

सरोकार–पु० (फा०) लगाव, वास्ता, प्रयोजन ।

सरोकारी–वि० (फा०) सरोकार रखनेवाला ।

सरोज–वि० (सं०) ताल आदिमें उत्पन्न । पु० कमल; एक वृत्त । **–खंड**–पु० पद्म-समूह । **–मुखी**–स्त्री० कमलके समान मुखवाली स्त्री । **–राग**–पु० एक रत्न, पद्मराग ।

सरोजना*–स० क्रि० पाना ।

सरोजल–पु० (सं०) तालका जल ।

सरोजिनी–स्त्री० (सं०) कमलोंसे भरा तालाब; कमल-समूह; कमलका पौधा ।

सरोजिनी नायडू–स्त्री० अंग्रेजीकी प्रसिद्ध कवयित्री । देश-सेवामें कई बार जेल गयीं । १९२५ में कांग्रेस अधिवेशनकी अध्यक्षा बनीं । स्वतंत्र भारतकी प्रथम महिला राज्यपाल (जन्म–

१८७९; मृत्यु–१९४९)।

सरोजी(जिन्)–वि० (सं०) कमलयुक्त; जहाँ कमलके फूल हों। पु० ब्रह्मा; एक बुद्ध।

सरोतर–वि० साफ, स्पष्ट; † अनवरत, लगातार।

सरोता*–पु० श्रोता; सरौता।

सरोत्सव–पु० (सं०) बगला।

सरोद–पु० (फा०) एक बाजा।

सरोधा–पु० श्वासके आधारपर भविष्य बतलानेकी विद्या।

सरोरक्ष, सरोरक्षक–पु० (सं०) तालाब आदिका रक्षक।

सरोरुह–पु० (सं०) कमल।

सरोवर–पु० (सं०) तालाब; ताल, झील।

सरोबिंदु–पु० (सं०) एक वैदिक गीत।

सरोश–पु० (फा०) ईश्वरका संदेश लानेवाला, फिरिश्ता; इलहाम।

सरोष–वि० (सं०) क्रुद्ध, कुपित।

सरोसामान–पु० (फा०) जीवनोपयोगी सामग्री; उपकरण (दे० 'सर'के साथ)।

सरोही–स्त्री० दे० 'सिरोही'।

सरौं–पु० कसोरा; ढक्कन; सरो।

सरौट*–स्त्री० सिलवट, शिकन–'मुरझे बिन ढंग अनंग सरौटनि' –घन०।

सरौता–पु० सुपारी काटनेका एक औजार।

सरौती–स्त्री० छोटा सरौता; एक तरहका ऊख।

सर्क–पु० (सं०) वायु; मन; एक प्रजापति।

सर्कस–पु० (अं०) वह स्थान जहाँ नृत्य, शौर्य आदिके प्रदर्शनके साथ सिखाये हुए जानवरोंके खेल दिखाये जायँ; नटों और पशुओंके खेलोंका प्रदर्शन करनेवाली मंडली।

सर्क़ा–पु० (अ०) चोरी; दूसरेका पद्य या लेख अपनी रचनामें सम्मिलित करना; भावादिका अपहरण।

सर्कार–स्त्री० दे० 'सरकार'।

सर्कारी–वि० दे० 'सरकारी'।

सर्किटहाउस–पु० (अं०) जिलेके मुख्य नगरमें बना हुआ मकान जिसमें दौरा करनेवाले राज-कर्मचारी ठहरते हैं।

सर्किल–पु० (अं०) वृत्त; हलका, गाँव, मुहल्लों आदिका समूह।

सर्क्यूलर–पु० (अं०) गश्ती चिट्ठी, परिपत्र।

सर्क्ष–वि० (सं०) नक्षत्रसे युक्त।

सर्ग–पु० (सं०) त्याग; मलत्याग; रचना, निर्माण; लोक-सृष्टि; प्रकृति; प्रवृत्ति; स्वभाव; निश्चय, संकल्प; स्वीकृति; ग्रंथका अध्याय; कूच; आक्रमण; शिव; रुद्रका एक पुत्र; मोह, मूर्च्छा; मूल, उद्गम; प्रजनन; संतान; उद्यम, चेष्टा; युद्धोपकरण; (किसी तरल पदार्थका) प्रवाह; गति; प्राणी; मुक्त जानवरोंका झुंड। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सृष्टिकर्ता। **–कालीन**–वि० सृष्टि-रचनाके समयका। **–क्रम**–पु० सृष्टिका क्रम। **–बंध**–पु० सर्गोंमें विभक्त महाकाव्य।

सर्ग*–पु० दे० 'स्वर्ग'। **–पताली**–पु० ऐंचाताना; वह बैल जिसका एक सींग ऊपर गया हो और दूसरा नीचे झुका हो।

सर्गक–वि० (सं०) उत्पादक।

सर्गुन*–वि० दे० 'सगुण'।

सर्चलाइट–स्त्री० (अं०) बिजलीकी तेज रोशनी जिसे प्रकाश-परावर्तक द्वारा बहुत दूरतक फैलाया जाता है। अन्वेषक प्रकाश, प्रकाश-प्रक्षेपक (जो जहाज आदिमें लगाया जाता है)।

सर्ज–स्त्री० (अं०) एक तरहका बढ़िया गरम कपड़ा। पु० (सं०) शालवृक्ष; सर्जरस, धूना; सलईका पेड़; असन वृक्ष। **–निर्यासक, –मणि, –रस**–पु० धूना।

सर्जक–पु० (सं०) पीत शाल वृक्ष; गरम दूधका मट्ठा पड़नेसे फटना।

सर्जन–पु० (सं०) त्याग, छोड़ना; निर्माण, रचना, सृष्टि; मलत्याग; अर्पण; सेनाका पृष्ठ भाग; धूना; (अं०) शल्योपचारक, चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर।

सर्जना–स्त्री० (सं०) रचना, निर्माण।

सर्जनी–स्त्री० (सं०) गुदाकी तीन वलियोंमेंसे एक।

सर्जरी–स्त्री० (अं०) शल्य-चिकित्सा।

सर्जि–स्त्री० (सं०) सज्जी। **–क्षार**–पु० सज्जीखार।

सर्जिका–स्त्री० (सं०) सज्जीखार। **–क्षार**–पु० सज्जीखार।

सर्जी–स्त्री० (सं०) दे० 'सर्जि'।

सर्जु–पु० (सं०) व्यापारी, बनिया। स्त्री० बिजली।

सर्जू–पु० (सं०) व्यापारी। स्त्री० गलेका हार; बिजली; गमन; * सरयू नदी।

सर्जूर–पु० (सं०) दिन।

सर्जेंट–पु० (अं०) हवलदार, जमादार (सेना, पुलिस); नाजिर; उच्च कोटिका वकील।

सर्ज्य–पु० (सं०) सर्जरस, धूना।

सर्टिफ़िकेट–पु० (अं०) प्रमाणपत्र (अच्छे चालचलन, योग्यता आदिका); परीक्षामें उत्तीर्ण होनेका प्रमाणपत्र, सनद।

सर्त*–स्त्री० दे० 'शर्त'।

सर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) घोड़ा।

सर्द–वि० (फा०) ठंढा; फीका, बेमजा; उदास, बेरौनक; नपुंसक; (ला०) निरुत्साह; निर्जीव। **–ख़ाना**–पु० ठंढा पानी या बर्फ रखनेकी जगह (कोल्ड स्टोरेज)। **–गर्म**–वि० ऊँच-नीच; काल या दशाके उलट-फेर। (मु० **–०झेलना**–दुनियाके भले-बुरे, दशाके परिवर्तनोंका अनुभव प्राप्त करना। **–० देखे हुए होना**–जमाना देखे हुए होना, अनुभवी होना।) **–बाई**–स्त्री० हाथियोंको होनेवाला एक रोग। **–बाज़ारी**–स्त्री० बाजारका ठंढा होना, माँग या पूछ न होना। **–मिज़ाज**–वि० शीतप्रकृति; उत्साहहीन; मुर्दादिल; रूखा; बेमुरौवत। **–मेह्री**–स्त्री० दुःशीलता; कठोरता; बेरहमी; बेमुरव्वती। मु० **–हो जाना**–ठंढा हो जाना; गरमी दूर हो जाना; मर जाना।

सर्दई–वि० सर्देके रंगका, हरापन लिये हुए पीला।

सर्दा–पु० खरबूजेका एक भेद जो बढ़िया और अधिक मीठा होता है।

सर्दाब–पु० (फा०) ठंढा पानी या बरफ रखनेकी जगह, सर्दखाना; तहखाना (कोल्ड स्टोरेज)।

सर्दाबा–पु० (फा०) वह कब्र जो कोई अपने जीवनकाल में ही खोदवा रखे।

सर्दार–पु० दे० 'सरदार'।

सर्दी–स्त्री० ठंढा, जाड़ा; जाड़ेका मौसिम; जुकाम; जूड़ी। **–गरमी**–स्त्री० जाड़ा-गरमी। मु० **–खाना**–ठंढ लगना; ठंढसे कष्ट पाना। **–गरमीसे बचाना**–ठंढे-गर्म मौसिम या हवासे बचाना।

सर्प–पु० (सं०) रेंगना, सरकना; कुटिल गति; प्रवाह; गमन; साँप; नागकेशर; अश्लेषा नक्षत्र; म्लेच्छोंकी एक जाति; एक रुद्र; एक राक्षस। **–कंकालिका, –कंकाली**–स्त्री० विषापहा नामक पौधा। **–काल**–पु० गरुड़। **–कोटर**–पु० साँपका बिल। **–गंधा**–स्त्री० गंध-नकुली। **–गति**–स्त्री० वक्र गति। **–गृह**–पु० साँपका बिल। **–घातिनी**–स्त्री० सर्पाक्षी। **–छत्र, –छत्रक**–पु० कुकुरमुत्ता, छत्रक। **–तनु**–पु० सर्पकंकालीका एक भेद। **–तृण**–पु० नकुलकंद। **–दंडा**–स्त्री० सिंहली पीपल, सैंहली। **–दंडी**–स्त्री० गोरक्षी; नागबला। **–दंती**–स्त्री० नागदंती। **–दंष्ट्र**–पु० साँपका विषदंत; दंती। **–दंष्ट्रा**–स्त्री० वृश्चिकाली; दंती। **–दंष्ट्रिका**–स्त्री० अजशृंगी। **–दमनी**–स्त्री० वंध्या कर्कोटकी। **–दष्ट**–पु० सर्पदंश। **–द्विट्(ष्)**–पु० मयूर। **–धारक**–पु० साँप पकड़नेवाला, सँपेरा। **–नामा**–स्त्री० सर्पकंकालीका एक भेद। **–निर्मोचन**–पु० केंचुली। **–नेत्रा**–स्त्री० गंधनाकुली, सर्पाक्षी। **–पति**–पु० शेषनाग। **–पुष्पी**–स्त्री० नागदंती। **–प्रिय**–पु० चंदन वृक्ष। **–फण**–पु० साँपका फैला हुआ मस्तक। **–०ज**–पु० साँपका मणि। **–फेण**–पु० अफ़ीम। **–बंध**–पु० पेचीदा चाल। **–बलि**–स्त्री० सर्पोंको दिया जानेवाला नैवेद्यादि। **–बेलि**–स्त्री० (हिं०) नागवल्ली, पान। **–भक्षक**–पु० मयूर; नकुलकंद। **–भुक्(ज्)**–पु० मयूर; सारस; एक बड़ा साँप; नकुलकंद। **–भृता**–स्त्री० पृथ्वी। **–मणि**–पु० सर्पके सिरपर पाया जानेवाला मणि। **–माला–**

स्त्री०–एक तरहकी सर्पकंकाली। **–मीन**–पु० सर्पकी तरह लम्बी समुद्री मछली (ईल); **–यज्ञ,–याग**–पु० सर्पोंके नाशका यज्ञ (जो जनमेजयने किया था)। **–राज**–पु० वासुकि। **–लता, –वल्ली**–स्त्री० नागवल्ली। **–विद्**–वि० जिसे सर्पोंका ज्ञान हो। पु० सँपेरा। **–विद्या**–स्त्री० सर्प-संबंधी विद्या; साँपोंको पकड़ने आदिकी विद्या। **–विवर**–पु० साँपका बिल। **–वेद**–पु० सर्पविद्या। **–व्यापादन**–पु० साँप मारना; सर्प द्वारा मारा जाना। **–व्यूह**–पु० एक तरहका सेनाका व्यूह। **–शीर्ष**–पु० हाथकी एक मुद्रा; एक तरहकी ईंट; सर्प जैसे सिरवाली एक मछली (ओफिसेफैलस)। वि० सर्पके-से सिरवाला। **–सत्त्र**–पु० दे० 'सर्पयज्ञ'। **–सत्त्री(त्त्रिन्)**–पु० जनमेजय। **–सहा**–स्त्री० सर्पकंकालीका एक भेद। **–सारीव्यूह**–पु० एक विशेष प्रकारका व्यूह (कौ०)। **–सुगंधा,–सुगंधिका**–स्त्री० सर्पगंधा। **–हा(हन्)**–पु० नेवला; गरुड़। **–हृदयचंदन**–पु० चंदनका एक भेद।

सर्पण–पु० (सं०) रेंगनेकी क्रिया; धीरेसे खिसकना; टेढ़ा चलना; बाणका जमीनके पाससे उसके समानांतर चलना।

सर्पांगी–स्त्री० (सं०) सहली; नाकुली।

सर्पांत–पु० (सं०) गरुड़का एक पुत्र।

सर्पा–स्त्री० (सं०) साँपिन; फणिलता।

सर्पाक्ष–पु० (सं०) रुद्राक्ष; सर्पाक्षी।

सर्पाक्षी–स्त्री० (सं०) गंधनाकुली, गंडिनी; शंखिनी; सर्पिणी; सरहटी; श्वेत अपराजिता।

सर्पाख्य–पु० (सं०) नागकेसर; महिषकंद।

सर्पादनी–स्त्री० (सं०) रास्ना; नकुलकंद।

सर्पाभ–वि० (सं०) साँपसे मिलता हुआ, साँप जैसा।

सर्पाराति–पु० (सं०) दे० 'सर्पारि'।

सर्पारि–पु० (सं०) गरुड़; नेवला; मोर।

सर्पावास–पु० (सं०) साँपके रहनेका स्थान; बामी; चंदन।

सर्पाशन–पु० (सं०) मोर; गरुड़।

सर्पास्य–वि० (सं०) साँप जैसे मुखवाला। पु० एक राक्षस।

सर्पास्या–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

सर्पिःसमुद्र–पु० (सं०) घृतसमुद्र।

सर्पि–पु० (सं०) घी; एक ऋषि। **–मंड**–पु० दे० 'सर्पिमंड'।

सर्पि(स्)–पु० (सं०) घी। **–(स्)समुद्र**–पु० दे० 'सर्पिःसमुद्र'।

सर्पिका–स्त्री० (सं०) छोटा साँप; एक नदी।

सर्पिणी–स्त्री० (सं०) सांपिन; एक लता, भुजंगी।

सर्पित–पु० (सं०) वास्तविक सर्पदंश, वह सर्पदंश जिसमें उसका चिह्न हो।

सर्पिरब्धि–पु० (सं०) घृतसागर।

सर्पिर्मंड–पु० (सं०) पिघलाये हुए घीका फेन।

सर्पिर्मेही(हिन्)–पु० (सं०) ऐसे प्रमेहसे ग्रस्त व्यक्ति जिसमें पेशाब घी जैसा होता है।

सर्पिल–वि० (सं०) साँपका-सा (सर्पेंटाइन)।

सर्पिष्क–पु० (सं०) घृत।

सर्पिष्कुंडिका–वि० (सं०) घीका मरतवान।

सर्पी*–पु० घी।

सर्पी(पिन्)–वि० (सं०) रेंगने, धीरे-धीरे चलनेवाला।

सर्पोष्ट–पु० (सं०) दे० 'सर्पेष्ट'।

सर्पेश्वर–पु० (सं०) वासुकि।

सर्पेष्ट–पु० (सं०) चंदन।

सर्पोन्माद–पु० (सं०) उन्मादका एक प्रकार जिसमें मनुष्य साँप जैसा आचरण करता है।

सर्फ़,–सर्फ़ा–पु० (फा०) खर्च, व्यय; लाभ; कृपणता; अधिकता; न्याय; उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र; (अ०) खर्च करना; बसर करना, बिताना। स्त्री० व्याकरणका वह विभाग जिसमें शब्दोंके भेद, रूपांतर, व्युत्पत्ति आदिका विवरण रहता है; पदव्याख्या; सीगोंकी गरदान। **–नहो,–(फ़ो) नहो**–स्त्री० व्याकरण-शास्त्र। मु० **–होना**–खर्च होना; बीतना।

सर्फ़ी–वि० व्याकरण जाननेवाला, वैयाकरण।

सर्बस*–पु० दे० 'सर्वस्व'।

सर्म–पु० (सं०) गमन, गति; आकाश; स्वर्ग। * स्त्री० दे० 'शर्म'।

सर्मा–पु० (फा०) शीतकाल। **–ए गुल**–पु० गुलाबी जाड़ा। **–ए तल्ख़**–पु० कड़ा जाड़ा।

सर्रा–पु० गराड़ीकी धुरी।

सर्राफ़–पु० (अ०) सोना-चाँदी आदिका व्यापार करने या उन्हें परखनेवाला; दे० 'सर्राफ़'।

सर्राफ़ा–पु० दे० 'सराफ़ा'।

सर्राफ़ी–स्त्री० दे० 'सराफ़ी'।

सर्वंकष–वि० (सं०) सबको पीड़ित करनेवाला, निर्दय। पु० दुष्ट व्यक्ति; पाप।

सर्वंदम, सर्वंदमन–पु० (सं०) शकुंतलाका पुत्र, भरत।

सर्वंभरि–वि० (सं०) सबका भरण-पोषण करनेवाला।

सर्वंसह–वि० (सं०) सब कुछ सहन करनेवाला।

सर्वंसहा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

सर्वंहर–वि० (सं०) सब कुछ ले जानेवाला।

सर्व–वि० (सं०) सब, समस्त, समग्र, कुल। पु० शिव; विष्णु; एक मुनि; एक जनपद; जल। **–कर**–पु० शिव। **–कर्ता(र्तृ)** पु० ब्रह्मा। **–कर्म(न्)**–पु० सब प्रकारके काम। **–कर्मा(र्मन्)** –पु० शिव। **–कर्मीण**–वि० सब काम करनेवाला। **–कांचन**–वि० खालिस सोनेका। **–काम**–वि० सब इच्छाएँ रखनेवाला; सब तरहकी इच्छा पूरी करनेवाला। पु० शिव; एक अर्हत्। **–०गम**–वि० इच्छानुसार गमन करनेवाला। **–०द**–वि० सारी कामनाएँ पूर्ण करनेवाला। पु० शिव। **–०दुघ**–वि० सारी अभिलाषाएँ पूरी करनेवाला। **–०वर**–पु० शिव। **–कामिक** –वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों। **–कामी(मिन्)**–वि० सारी इच्छाएँ पूरी करनेवाला; स्वेच्छापूर्वक काम करनेवाला; जिसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण हों। **–काम्य**–वि० सर्वप्रिय; जिसकी हर एक व्यक्ति इच्छा करे। **–कारी(रिन्)**–वि० सब कुछ करनेवाला या करनेमें समर्थ। पु० सबका निर्माता। **–काल**–अ० सर्वदा, हमेशा। **– ०प्रसाद**–पु० शिव। **–कालीन**–वि० सब कालका। **–कृत्**–वि० सर्वोत्पादक। **–कृष्ण**–वि० बहुत काला। **–केशी(शिन्)**–पु० अभिनेता, नट। **–केसर**–पु० बकुल, मौलसिरी। **–क्षमा**–स्त्री० (ऐमनेस्टी) किसी विशेष अवसरपर या विशेष कारणसे किसी कोटिके बहुतसे बंदियोंको क्षमा प्रदान कर कारागृहसे मुक्त कर देना। **–क्षय**–पु० सबका नाश, प्रलय। **–क्षार**–पु० एक क्षार, महाक्षार। **–क्षारनीति**–स्त्री० (स्कॉर्च्ड अर्थ पॉलिसी) युद्ध-भूमिमें पीछे हटनेवाली सेना द्वारा इमारतों, खेतों, पुलों, रेलों आदिका संपूर्ण विनाश जिससे शत्रु उनका प्रयोग न कर सके या उनसे लाभ न उठा सके, सर्वस्वाहानीति। **–क्षित्**–वि० सबमें रहनेवाला। **–गंध**–वि० जिसमें हर तरहकी गंध हो। पु० कपूर, कक्कोल, अगुरु, कुंकुम, लवंग और चातुर्जातक (नागकेशर, इलायची, तेजपात और दारचीनी)का समाहार। **–गंधिक**–वि० दे० 'सर्वगंध'। **–ग**–वि० सब जगह जानेवाला, सर्वव्यापक। पु० ब्रह्म; आत्मा; शिव; जल; भीमसेनका एक पुत्र। **–गण**–पु० रेह। **–गति**–वि० सर्वव्यापक। **–गा**–स्त्री० प्रियंगु। **–गामी(मिन्)**–वि० दे० 'सर्वग'। **–ग्रंथि,–ग्रंथिक**–पु० पिप्पलीमूल। **–ग्रह**–वि० सब कुछ एक ही बार खा जानेवाला। **–ग्रहापहा**–स्त्री० नागदमनी। **–ग्रास**–वि० सब खा जानेवाला। पु० खग्रास ग्रहण। **–चक्रा**–स्त्री० एक तांत्रिक देवी (बौ०)। **–चर्मीण**–वि० पूर्णतः चमड़ेका बना हुआ; सब तरहके चमड़ोंका बना हुआ। **–चारी(रिन्)**–वि० व्यापक। पु० शिव। **–च्छंदक**–वि० सबको वशमें करनेवाला। **–ज**–वि० त्रिदोषजन्य (आ० वे०)। **–जन**–पु० प्रत्येक व्यक्ति। **–०प्रिया** –स्त्री० एक ओषधि, ऋद्धि। **–०हिताय**–क्रि० वि० सबकी भलाईके लिए। **–जनीन**–वि० सबसे संबंध रखनेवाला, सार्वजनिक। **–जनीय**–वि० सबके हितका। **–जय**–स्त्री० पूर्ण विजय। **–जया**–स्त्री० एक पौधा, देवकली; स्त्रियोंका एक पर्व

जो मार्गशीर्षमें होता था। **–जित्**–वि० सबको जीतनेवाला, अजेय; सबसे बढ़ा हुआ; तीनों धातुओंको वशमें करनेवाला (आ० वे०)। पु० मृत्यु; एक एकाह; एक संवत्सर। **–जीवी(विन्)**–वि० जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह जीवित हों। **–ज्ञ**–वि० सब कुछ जाननेवाला। पु० ईश्वर; देवता; बुद्ध; अर्हत्; शिव। **–ज्ञा**–स्त्री० दुर्गा; एक योगिनी। **–ज्ञाता(तृ)**–वि० सर्वज्ञ। **–ज्यानि**–स्त्री० सर्वनाश। **–तंत्र**–पु० सब सिद्धांत; वह जिसने सब तंत्रोंका अध्ययन किया है। वि० सर्वशास्त्रसम्मत। **–तमोनुद**–वि० सारा अंधकार दूर करनेवाला (सूर्य)। **–तापन**–वि० सबको तप्त करनेवाला। पु० कामदेव; सूर्य। **–तिक्ता**–स्त्री० काकमाची; भंटाकी। **–तूर्यनिनादी(दिन्)**–पु० शिव। **–त्याग**–पु० सब कुछका त्याग; सर्वनाश। **–दंडधर**–वि० जो सबको दंड दे (शिव)। **–दंडनायक**–पु० एक सैनिक अधिकारी। **–द**–वि० सब देनेवाला। पु० शिव। **–दम,–दमन**–वि० सबका दमन करनेवाला। पु० शकुंतलाका पुत्र, भरत। **–दर्शन**–वि० सब देखनेवाला। **–दर्शी(शिन्)**–वि० सब कुछ देखनेवाला। पु० ईश्वर; बुद्ध: अर्हत्। **–दलीय**–वि० सब दलोंसे संबंध रखनेवाला; जिसमें सभी दलोंका सहयोग हो (आल पार्टी)। **–दाता(तृ)**–वि० सब कुछ देनेवाला। **–दान**–पु० सर्वस्वका दान। **–दिग्विजय**–स्त्री० विश्वविजय। **–दृक्(श्)**–वि० सर्वदर्शी। **–देवमय**–वि० जिसमें सब देव हों। पु० शिव। **–देवमुख**–पु० अग्नि। **–देशीय**–वि० सब देशोंसे संबद्ध; सब देशोंमें पाया जानेवाला। **–देशध**–वि० जो सब स्थानोंमें हो। **–द्रष्टा(ष्टृ)**–वि० सर्वदर्शी। **–द्वारिक**–वि० दिग्विजयी; सब दिशाओंमें युद्ध-यात्रा करनेके उपयुक्त। **–धन्वी(न्विन्)**–पु० कामदेव। **–धातुक**–पु० ताँबा। **–धारी(रिन्)**–वि० सब कुछ धारण करनेवाला। पु० शिव; एक संवत्सर। **–धुरावह**–वि० सब तरहका भार वहन करनेवाला। पु० गाड़ीमें जोता जानेवाला जानवर। **–धुरीण**–पु० दे० 'सर्वधुरावह'। वि० सब तरहकी गाड़ियोंमें जोते जाने योग्य। **–नाभ**–पु० एक अस्त्र। **–नाम(मन्)**–पु० संज्ञाके स्थानमें प्रयुक्त होनेवाला शब्द (व्या०)। **–नामा(मन्)**–वि० सब नामोंवाला। **–नाश**–पु० विध्वंस, बरबादी, तबाही। **–नाशी(शिन्)**–वि० सर्वनाश करनेवाला। **–निधन**–पु० सबका वध; एक एकाह। **–नियंता(तृ)**–पु० सबको अपने वशमें रखनेवाला। **–नियोजक**–वि० सबका नियोजन करनेवाला (विष्णु)। **–निलय**–वि० जिसका सर्वत्र निवास हो। **–पति**–पु० सबका स्वामी। **–पथीन**–वि० जो सारे मार्गपर फैला हो; हर दिशामें जानेवाला। **–पा**–वि० सब कुछ पीनेवाला; सबकी रक्षा करनेवाला। स्त्री० बलिकी पत्नी। **–पाचक**–पु० सुहागा। **–पारशव**–वि० बिलकुल लोहेका बना हुआ। **–पार्श्वमुख**–पु० शिव। **–पालक**–वि० सबका पालन, रक्षण करनेवाला। **–पावन**–वि० सबको पवित्र करनेवाला। पु० शिव। **–पूजित**–वि० सबके द्वारा पूजित। पु० शिव। **–पूत**–वि० पूर्णतः शुद्ध। **–पूर्ण**–वि० जिसके पास सब कुछ हो। **–पृष्ठा**–स्त्री० यज्ञविशेष। **–प्रत्यक्ष**–वि० जो सबके सामने हो। **–प्रद**–वि० सब कुछ देनेवाला। **–प्रभु**–पु० सबका स्वामी। **–प्राप्ति**–स्त्री० सब कुछकी प्राप्ति। **–प्रिय**–वि० जो सबको प्रिय हो; जिसे सब प्रिय हों। **–बंधविमोचन**–वि० सभी बंधनोंसे मुक्त करनेवाला। पु० शिव। **–बल**–पु० एक बड़ी संख्या (बौ०)। **–बाहु**–पु० युद्ध करनेका एक ढंग। **–बीज**–पु० सबका बीज या मूल। **–भक्ष**–वि० सब कुछ खानेवाला। **–भक्षा**–स्त्री० बकरी। **–भक्षी(क्षिन्)**–वि० सब कुछ खानेवाला। पु० अग्नि। **–भयंकर**–वि० सबको भीत करनेवाला। **–भवोद्भव**–पु० सूर्य। **–भाव**–पु० पूरी सत्ता; पूरी आत्मा; पूर्ण संतोष। **–०कर**–पु० शिव। **–भावन**–वि० सर्वोत्पादक। पु० शिव। **–भूत**–वि० जो सब जगह हो। पु० सारे जीव। **–०गुहाशय**–वि० जो सबके हृदयमें रहे। **–०पितामह**–पु० ब्रह्मा। **–०हर**–पु० शिव। **–०हित**–पु० सब जीवोंकी भलाई। **–भूमिक**–पु० दारचीनी। **–भृत्**–वि० सबका पोषण करनेवाला। **–भोग**–पु० धन, सेना आदिसे सहायता देनेवाला मित्र (कौ०)। **–०सह**–वि० सब कार्योंमें समर्थ, उपयोगी। **–भोगी(गिन्)**–वि० सबका भोग करनेवाला; सब कुछ खानेवाला। **–भोगीन,–भोग्य**–वि० सबके लिए लाभदायक, सबके भोगके योग्य। **–मंगल**–वि० सबके लिए शुभ। **–मंगला**–स्त्री० दुर्गा; लक्ष्मी। **–मलापगत**–पु० एक समाधि। **–महान्(हत्)**–वि० सबसे बड़ा। **–मांसाद**–वि० सब तरहका मांस खानेवाला। **–मूल्य**–पु० कोई छोटा सिक्का; कौड़ी। **–मूषक**–पु० सब कुछ चुराने, हरण करनेवाला, काल या समय। **–मेध**–पु० सार्वजनिक यज्ञ; एक सोमयज्ञ जो दस दिन चलता था; प्रत्येक यज्ञ; सर्वस्व दानका यज्ञ–'सर्वमेध यज्ञ करके श्रद्धानंदने गंगा तटपर संन्यास ग्रहण किया'; एक उपनिषद्। **–यंत्री(त्रिन्)**–वि० सब यंत्रों, औजारोंसे युक्त। **–योगी(गिन्)**–पु० शिव। **–रक्षण**–वि० सबसे रक्षा करनेवाला। **–रक्षी(क्षिन्)**–वि० सबकी रक्षा करनेवाला। **–रत्नक**–पु० नौ निधियोंमेंसे एक (जै०)। **–रत्ना**–स्त्री० एक श्रुति (संगीत)। **–रस**–पु० सब प्रकारका रस; लवण; धूना; सब तरहके स्वादिष्ठ भोजन; एक संगीतवाद्य। वि० सब रसोंसे युक्त; विद्वान्। **–रसा**–स्त्री० धानकी लाजाका माँड। –**–रसोत्तम**–पु० नमक। **–रास**–पु० धूना; एक वाद्य (संगीत)। **–रूप**–वि० सब रूप ग्रहण करनेवाला। पु० एक समाधि। **–रूपी(पिन्)**–वि० दे० 'सर्वरूप'। **–लक्षण**–पु० सारे शुभ चिह्न। **–लक्षित**–पु० शिव। **–लालस**–पु० शिव। **–लिंग**–वि० जो सब लिंगोंमें हो (विशेषण)। **–लिंगी(गिन्)**–वि० बाहरी लक्षण रखनेवाला, ढोंगी। **–लोक**–पु० सारा संसार; सभी लोग। **–०कृत्,–०भृत्**–पु० शिव। **–०गुरु**–पु० विष्णु। **–०पितामह**–पु० ब्रह्मा। **–०प्रजापति**–पु० शिव। **–०महेश्वर**–पु० शिव; विष्णु। **–लोकेश**–पु० विष्णु; शिव। **–लोकेश्वर**–पु० विष्णु; ब्रह्मा। **–लोचना**–स्त्री० गंधनाकुली। **–लोह**–वि० पूर्ण रूपसे लाल। पु० लोहेका बाण; सब धातुएँ। **–लोहित**–वि० बिलकुल लाल। **–लौह**–पु० लोहेका बाण; ताँबा। **–वर्णिका**–स्त्री० गंभारी वृक्ष। **–वर्णी(र्णिन्)**–वि० विभिन्न प्रकारका। **–वर्तुल**–वि० (पिंड) जिसका प्रत्येक बिंदु मध्य बिंदुसे समान दूरीपर हो; गोल (स्फेरिकल)। **–वल्लभ**–वि० जो सबको प्रिय हो। **–वल्लभा**–स्त्री० असती नारी, व्यभिचारिणी। **–वागीश्वरेश्वर**–पु० विष्णु। **–वातसह**–वि० सब तरहकी हवा बर्दाश्त करनेवाला (पोत)। **–वादी(दिन्)**–पु० शिव। **–०(दि)सम्मत**–वि० जिसे सबने मान लिया हो। **–वास,–वासी(सिन्)**–पु० शिव। **–वासक**–वि० पूर्णतः वस्त्राच्छादित। **–विक्रयी(यिन्)**–वि० सब तरहकी वस्तुएँ बेचनेवाला। **–विख्यात,–विग्रह**–पु० शिव। **–विज्ञान**–पु० हर एक विषयका ज्ञान। वि० सब विषयोंका ज्ञाता। **–विज्ञानी(निन्)**–वि० दे० 'सर्वविज्ञान'। **–विद्**–वि० सर्वज्ञ। पु० ईश्वर। स्त्री० ओम्। **–विद्य**–वि० सारी विद्याएँ जाननेवाला, सर्वज्ञ। **–विनाश**–पु० सर्वनाश। **–विश्रंभी(भिन्)**–वि० सबका विश्वास करनेवाला। **–विषय**–वि० सब विषयोंसे संबंध रखनेवाला, साधारण। **–वीर**–वि० बहुतसे पुत्रोंवाला। **–०जित्**–वि० सब वीरोंको जीतनेवाला। **–वीर्य**–वि० सारी शक्तियोंसे युक्त। **–वेत्ता(त्तृ)**–वि० सर्वज्ञ। **–वेद**–वि० पूर्ण ज्ञानवान्; सब वेदोंका ज्ञाता। पु० चारों वेदोंको जाननेवाला ब्राह्मण। **–वेदस**–वि० (यज्ञ) जिसमें सारी संपत्ति दान कर दी जाय; सारी संपत्ति दान करनेवाला। पु० सारी संपत्ति। **-वेदसी(सिन्)**–वि० सारी संपत्ति दान करनेवाला। **वेदा(दस्)**–पु० यज्ञांतमें सारी संपत्ति दान कर देनेवाला व्यक्ति। **–वेदी(दिन्)**–वि० सर्वज्ञ। **–वेशी(शिन्)**–पु० अभिनेता, नट। **–वैनाशिक**–वि० सबको नश्वर माननेवाला। पु० बौद्ध। –**–व्यापक**–वि० सबमें रहनेवाला। **–व्यापी(पिन्)**–वि० दे० 'सर्वव्यापक'। पु० ईश्वर; एक रुद्र। **–शंका**–स्त्री० प्रत्येक व्यक्तिके प्रति संदेह। **–शक्,–शक्तिमान्(मत्)**–वि० सब कुछ करनेकी शक्तिसे युक्त। पु० ईश्वर (ओम्नी पोटेंट)। **–शस्त्री(स्त्रिन्)**–वि० सारे शस्त्रोंसे युक्त। **–शीघ्र**–वि० सबसे तेज।

–शुभवाद–पु० (आप्टिमिज़्म) दे० 'आशावाद'। **–शून्य**–वि० बिलकुल रिक्त; सबको अस्तित्वरहित माननेवाला। **–०वादी-(दिन्)**–पु० शून्यवादका अनुयायी। **–शूर**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–श्राव्य**–वि० सबके सुनने योग्य। **–श्री**–वि० (मेसर्स) आदर सूचित करनेवाला एक विशेषण जिसका प्रयोग अनेक व्यक्तियोंका नाम एक साथ आनेपर उन सबके लिए सामूहिक रूपसे केवल एक बार, आरंभमें किया जाता है। **–श्रेष्ठ**–वि० सर्वोत्तम। **–श्वेता**–स्त्री० एक विषैला कीड़ा; एक ओषधि। **–संगत**–पु० एक तरहका जल्द तैयार होनेवाला धान, साठी। **–संज्ञा**–स्त्री० एक बड़ी संख्या। **–संपन्न**–वि० सब वस्तुओंसे युक्त। **–संभव**–पु० सबका मूल। **–संस्थ**–वि० सर्वव्यापक। **–संस्थान**–वि० सब रूपोंवाला। **–संहार**–वि० सर्वनाश करनेवाला। पु० काल; नाश, प्रलय। **–संहारी(रिन्)**–वि० सबका नाश करनेवाला। **–सन्नहन,–सन्नाह**–पु० पूरी सेना एकत्र करना; पूर्ण शस्त्रीकरण। **–समता**–स्त्री० सबके साथ समानता, निष्पक्षता। **–समाहर**–वि० सबका नाश करनेवाला। **–सम्मत**–वि० सब सदस्योंकी राय जिसके पक्षमें हो, सब सदस्योंको जो मान्य हो (यूनैनिमस)। **–सम्मति**–स्त्री० सब (सदस्यों)की स्वीकृति या राय। **–सर**–पु० मुँहमें होनेवाला एक तरहका व्रण। **–सह**–वि० सब कुछ सहन करनेवाला, सहनशील। पु० गुग्गुल। **–सहा**–स्त्री० पृथ्वी। **–सांप्रत**–पु० सर्वव्यापकता। **–साक्षी(क्षिन्)**–वि० सब कुछ देखनेवाला। पु० ईश्वर; वायु; अग्नि। **–साद**–वि० जिसमें सब कुछ लीन हो। **–साधन**–वि० सब कुछ सिद्ध करनेवाला। पु० शिव; धन; सुवर्ण। **–साधारण**–पु० साधारण लोग, जनता (पब्लिक)। वि० सामान्य। **–सामान्य**–वि० जो सबमें पाया जाय (कॉमन); जो सबके प्रयोगके लिए हो (पब्लिक)। **–सारंग**–पु० एक नाग। **–सार**–पु० सबका सार भाग। **–साह**–वि० सब कुछ सहन करनेवाला। **–सिद्धा**–स्त्री० चौथी, नवीं और चौदहवीं तिथियाँ। **–सिद्धार्थ**–वि० जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों। **–सिद्धि**–स्त्री० सारी इच्छाओंकी पूर्ति; पूर्ण प्रमाण; पूर्ण परिणाम; बेलका पेड़। **–सुलभ**–वि० जो सबको आसानीसे प्राप्त हो सके। **–सौवर्ण**–वि० पूर्णतः सोनेका। **–स्तोम**–पु० एक एकाह। **–स्व**–पु० सब कुछ, सारी संपत्ति; सर्वांश। **–०दंड,–०हरण,–०हार**–पु० सारी संपत्तिका हरण। **–०दक्षिण**–वि० जिसमें सारी संपत्ति दान कर दी जाय ((यज्ञ)। **–०संधि**–स्त्री० सब कुछ देकर की जानेवाली संधि। **–स्वामी(मिन्)**–वि० सबका मालिक। **–स्वार**–पु० एक एकाह। **–स्वी(स्विन्)**–पु० एक वर्णसंकर जाति (नापित पिता और ग्वालिन मातासे उत्पन्न)। **–हर**–वि० सब कुछ हरण कर लेनेवाला; सारी संपत्तिका उत्तराधिकारी; सब कुछ नष्ट करनेवाला। पु० काल; यम; महेश। **–हरण,–हार**–पु० सारी संपत्तिका हरण। **–हारा**–वि० निःस्व। पु० समाजका निम्नतम श्रमिक वर्ग; अकिंचन वर्ग (प्रोलेटैरियट) (आ०)। **–हारी(रिन्)**–वि० सब कुछ हरण करनेवाला। पु० एक प्रेत। **–हास्य**–वि० सबके द्वारा उपहास्य, हेय। **–हित**–वि० सबके लिए लाभदायक। पु० शाक्यमुनि, बुद्ध; मिर्च। **–०कर्म(न्)**–पु० सार्वजनिक उत्सव (कौ०)।

सर्व–पु० (फा०) दे० 'सरो'। **–अंदाम**–वि० सरोकी-सी सुडौल देहवाला। **–आज़ाद**–पु० सरोका एक भेद जो बिलकुल सीधा होता है। **–क़द,–कामत**–वि० सरोके-से कदवाला। मु० **–० उठना**–किसीके सम्मानके लिए खड़ा हो जाना।

सर्वक–वि० (सं०) सब, समग्र।

सर्वतः(तस्)–अ० (सं०) चारों ओर, सर्वत्र; सब प्रकारसे; सब तरफसे; पूर्णतः। **–पाणिपाद**–वि० जिसके हाथ-पैर सर्वत्र हों। **–शुभा**–स्त्री० प्रियंगु वृक्ष।

सर्वतश्चक्षु(स्)–वि० (सं०) जिसकी दृष्टि सर्वत्र हो।

सर्वतो–'सर्वतः'का समासगत रूप। **–गामी(मिन्)**–वि० सभी दिशाओंमें जानेवाला। **–दक्ष**–वि० (ऑल राउंडर) जो कई बातों, कामों आदिमें दक्ष हो; (वह खेलाड़ी) जो बल्लेबाजी, गोलंदाजी, क्षेत्ररक्षण आदि सबमें दक्ष हो। **–दिक्क**–वि० सब ओर फैला हुआ। **–धार**–वि० जिसकी सब तरफ तेज धार हो। **–धुर**–वि० जो सर्वत्र शीर्षस्थानीय हो। **–भद्र**–वि० जो सब प्रकारसे कल्याणकर हो; जिसके सारे सिर, मूँछ आदिके बाल मुँड़े हों। पु० वह वर्गाकार मंदिर या प्रासाद जिसमें चारों तरफ द्वार हों; एक तरहका व्यूह; विष्णुका रथ; बाँस; नीम; एक तरहका चित्रकाव्य; (पूजाके समय) वेदी ढकनेके वस्त्रपर बनाया जानेवाला एक चिह्न; एक तरहकी पहेली जिसमें शब्दों और खंडोंके अलग-अलग अर्थ ग्रहण किये जाते हैं; एक पर्वत; एक अरण्य; नीमका पेड़; बाँस; एक गंधद्रव्य; योगका एक आसन; वह मकान जिसमें चारों ओर छज्जा हो; दे० 'सर्वतोभद्रचक्र'; एक देवकानन; सिर, मूँछ आदिका मुँड़ाया जाना। **–०चक्र**–पु० एक वर्गाकार चक्र जो शुभाशुभ फल जाननेके लिए बनाया जाता है। **–भद्रकच्छेद**–पु० भगंदरमें लगा हुआ चौकोर चीरा; एक विशेष रूपका मंदिर। **–भद्रा**–स्त्री० अभिनेत्री, नटी; नर्तकी; गंभारी। **–भद्रिका**–स्त्री० गंभारी। **–भाव**–पु० सर्वत्र होना। **–भावेन**–अ० सब प्रकारसे, पूर्णतः। **–भोगी(गिन्)**–पु० अमित्रों, पड़ोसियों आदिसे रक्षा करनेवाला वशवर्ती मित्र। **–मुख**–वि० जिसका मुँह चारों ओर हो; पूर्ण; असीम। पु० एक तरहका व्यूह; शिव; ब्रह्मा; ब्रह्म; आत्मा; ब्राह्मण; अग्नि; आकाश; स्वर्ग; जल। **–वृत्त**–वि० सर्वव्यापक।

सर्वत्र–अ० (सं०) सब जगह; हर वक्त, हमेशा। **–ग**–वि० सब जगह जानेवाला, सर्वव्यापक। पु० वायु; मनुका एक पुत्र; भीमसेनका एक पुत्र। **–गत**–वि० सब जगह पहुँचा हुआ, पूर्ण। **–गामी(मिन्)**–वि० सब जगह जानेवाला। पु० वायु। **–सत्त्व**–पु० सर्वव्याप्ति।

सर्वत्रापि–वि० (सं०) सब जगह पहुँचनेवाला।

सर्वथा–अ० (सं०) हर तरहसे; पूर्णतः; बिलकुल; अत्यंत; हमेशा।

सर्वदा–अ० (सं०) हमेशा, सदा, हर समय।

सर्वरी–स्त्री० दे० 'शर्वरी'।

सर्वरीस*–पु० दे० 'शर्वरीश'।

सर्वला–स्त्री० (सं०) तोमर।

सर्वली–स्त्री० (सं०) लघु तोमर।

सर्वशः(शस्)–अ० (सं०) पूर्णतः; सब तरफसे; सब प्रकारसे; सर्वत्र।

सर्वस*–पु० सर्वस्व, सब कुछ।

सर्वस्वयुद्ध–पु० (टोटल वार) समस्त साधनोंसे लड़ा जानेवाला युद्ध, वह युद्ध जिसमें शत्रुके विरुद्ध समस्त साधन और सारी शक्ति लगा दी जाय, सर्वांगीण युद्ध।

सर्वस्वाहानीति–स्त्री० (स्कॉर्च्ड अर्थ पॉलिसी) दे० 'सर्वक्षारनीति'।

सर्वांग–पु० (सं०) सारा शरीर; सब वेदांग; संपूर्ण अंश, अवयव; शिव। **–पूर्ण**–वि० सब तरहसे पूर्ण। **–रूप**–पु० शिव। **–सुंदर**–वि० जिसके सब अंग सुंदर हों, बहुत सुंदर।

सर्वांगसम त्रिभुज–पु० (आइडेंटिकली ईक्वल; कांग्रुएंट) वे दोनों त्रिभुज जिनमेंसे एकके छहो अंग (तीनों भुजाएँ व तीनों कोण) दूसरेके छः अंगोंके बराबर हों।

सर्वांगिक–वि० (सं०) जो सब अंगोंके लिए हो (आभूषण)।

सर्वांगीण–वि० (सं०) सब अंगोंमें व्याप्त होनेवाला; सब वेदांगोंसे संबंध रखनेवाला। **–युद्ध**–पु० सब साधनोंसे लड़ा जानेवाला युद्ध।

सर्वांत–पु० (सं०) हर एकका अंत। **–कृत्**–वि० सबका अंत करनेवाला।

सर्वांतक–वि० (सं०) सबका अंत करनेवाला।

सर्वांतरस्थ–वि० (सं०) जो सबके अंदर हो।

सर्वांतरात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) ईश्वर।

सर्वांतर्यामी(मिन्)–पु० (सं०) ईश्वर।

सर्वांत्य–पु० (सं०) चारों चरणोंमें समान अंत्याक्षरवाला पद्य।

सर्वाक्ष–पु० (सं०) रुद्राक्ष। वि० सबको देखनेवाला।

सर्वाक्षी–स्त्री० (सं०) दुद्धी घास ।

सर्वाख्य–पु० (सं०) पारा ।

सर्वाजीव–वि० (सं०) सबको जीविका देनेवाला ।

सर्वाणी–स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा ।

सर्वातिथि–वि० (सं०) सबका आतिथ्य करनेवाला, मेहमानदार ।

सर्वातिशायी (यिन्)–वि० (सं०) सबसे बढ़ जानेवाला ।

सर्वातोद्यपरिग्रह–पु० (सं०) शिव ।

सर्वात्मवाद–पु० (सं०) शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद; सर्वेश्वरवाद (पैंथिइज्म) ।

सर्वात्मक राष्ट्र–पु० (टोटैलिटेरियनस्टेट) वह राष्ट्र या राज्य जहाँ केवल एक ही दल (शासकदल) का आधिपत्य हो जिसकी परिधिमें नागरिकोंका सार्वजनिक जीवन ही नहीं, व्यक्तिगत जीवन भी आ जाता हो ।

सर्वात्मा (त्मन्)–पु० (सं०) समस्त, संपूर्ण विश्वकी आत्मा, ब्रह्म; शिव; जिन, अर्हत् ।

सर्वादृश–वि० (सं०) औरोंके सदृश ।

सर्वाधिक–वि० (सं०) सबसे बढ़ा हुआ ।

सर्वाधिकार–पु० (सं०) पूरा अख्तियार; पूर्ण प्रभुत्व; सभी प्रकारके अधिकार; सबका निरीक्षण करनेका अधिकार ।

सर्वाधिकारी (रिन्)–पु० (सं०) सारे अधिकार रखनेवाला; शासक; निरीक्षक; अध्यक्ष । **–राष्ट्र**–पु० दे० 'सर्वात्मक राष्ट्र' ।

सर्वाधिपत्य–पु० (सं०) वह आधिपत्य या प्रभुता जो सबपर हो ।

सर्वाध्यक्ष–पु० (सं०) सबका शासन, निरीक्षण करनेवाला ।

सर्वानुकारिणी–स्त्री० (सं०) शालपर्णी ।

सर्वानुकारी (रिन्)–वि० (सं०) सबका अनुकरण, नकल करनेवाला ।

सर्वानुभू–वि० (सं०) सबकी अनुभूति करनेवाला ।

सर्वानुभूति–स्त्री० (सं०) व्यापक अनुभूति; श्वेत त्रिवृता । पु० इस नामके दो अर्हत् ।

सर्वान्न–पु० (सं०) सब तरहका खाद्य पदार्थ । **–भक्षक,–भोजी- (जिन्)**–वि० दे० 'सर्वान्नीन' ।

सर्वान्नीन–वि० (सं०) हर तरहका खाद्य-पदार्थ खानेवाला ।

सर्वान्य–वि० (सं०) पूर्णतः भिन्न ।

सर्वापरत्व–पु० (सं०) मोक्ष ।

सर्वापहार–पु० (सं०) सब कुछ छीन लेना, लूट लेना; किये हुए वादेसे मुकर जाना ।

सर्वाभिभू–पु० (सं०) एक बुद्ध ।

सर्वाभिशंकी (किन्)–वि० (सं०) सबपर शक करनेवाला ।

सर्वाभिसंधक–वि०, पु० (सं०) सबको धोखा देनेवाला ।

सर्वाभिसंधी (धिन्)–वि० (सं०) सबको धोखा देनेवाला; ढोंगी; परनिंदक । पु० सबकी निंदा करनेवाला ।

सर्वाभिसार–पु० (सं०) पूरी सेनाके साथ आक्रमण या युद्धयात्रा ।

सर्वामात्य–पु० (सं०) एक परिवार, घरमें रहनेवाले नौकर आदि सब लोग ।

सर्वायनी–स्त्री० (सं०) सफेद निसोथ ।

सर्वायस–वि० (सं०) पूर्णतः लोहेका बना हुआ ।

सर्वायुध–पु० (सं०) शिव ।

सर्वारण्यक–वि० (सं०) सिर्फ जंगली चीजें खाकर रहनेवाला ।

सर्वार्थ–पु० (सं०) सारे पदार्थ, सारे विषय; एक मुहूर्त । **–कर्ता- (र्तृ)**–पु० सब चीजोंका निर्माण करनेवाला । **–कुशल**–वि० सभी विषयोंमें दक्ष । **–चिंतक**–पु० सबका निरीक्षण करनेवाला । **–वाद**–पु० (यूनीवर्सलिज्म) सभी आत्माओंको ईश्वरकी कृपासे अंतमें मोक्ष मिलेगा –ऐसा दार्शनिक सिद्धांत । **–साधक**–वि० दे० 'सर्वार्थ-साधन' । **–साधन**–वि० सब कुछ पूरा करनेवाला । पु० सब कुछ सिद्ध करनेका साधन । **–साधिका**–स्त्री० दुर्गा । **–सिद्ध**–वि० जिसके सारे उद्देश्य पूर्ण हो गये हों । पु० गौतम बुद्ध । **–सिद्धि**–स्त्री० सारे उद्देश्योंकी पूर्ति । पु० एक देववर्ग (जैं०) ।

सर्वार्थानुसाधिनी–स्त्री० (सं०) दुर्गा ।

सर्वालोककर–पु० (सं०) एक तरहकी समाधि ।

सर्वावसर–पु० (सं०) अर्द्ध रात्रि ।

सर्वावसु–पु० (सं०) सूर्यकी एक किरण ।

सर्वावास, सर्वावासी (सिन्)–वि० (सं०) जिसका सब जगह निवास हो ।

सर्वाशय–पु० (सं०) सबका आश्रय, आधार; शिव ।

सर्वाशी (शिन्)–वि० (सं०) सर्वभक्षी ।

सर्वाश्य–पु० (सं०) सब तरहकी चीजें खाना ।

सर्वाश्रय–वि० (सं०) सबको आश्रय देनेवाला । पु० शिव ।

सर्वास्तिवाद–पु० (सं०) समस्त वस्तुओंकी सत्ताको वास्तव मानना (वैभाषिक बौद्ध सिद्धांतके चार भेदोंमेंसे एक जो गौतम-पुत्र राहुल द्वारा प्रवर्तित माना जाता है) ।

सर्वास्तिवादी (दिन्)–वि०, पु० (सं०) सर्वास्तिवादका अनुयायी ।

सर्वास्त्र–वि० (सं०) सब हथियारोंसे लैस ।

सर्वास्त्रा–स्त्री० (सं०) सोलह विद्यादेवियोंमें एक (जैं०) ।

सर्विस–स्त्री० (अं०) नौकरी; सेवा ।

सर्वीय–वि० (सं०) सबसे संबंध रखनेवाला; सबके लिए उपयुक्त ।

सर्वे–पु० (अं०) जमीनकी पैमाइश; पैमाइशका महकमा ।

सर्वेक्षक–पु० (सं०) सर्वेक्षण करनेवाला (सर्वेयर); दे० अधिकर्मी, 'ओवरसियर' ।

सर्वेक्षण–पु० (सर्वे) दे० 'पर्यवलोकन' ।

सर्वेयर–पु० (अं०) जमीनकी पैमाइश करनेवाला, अमीन ।

सर्वेश, सर्वेश्वर–पु० (सं०) सबका स्वामी; मालिक; चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; शिव; ईश्वर । **–वाद**–पु० (पैंथिइज्म) सर्व जगत् ईश्वरका प्रतिरूप है और ईश्वर सब जगत्का, यह सिद्धांत; सब देवताओंको मानने, उनकी पूजा करनेका सिद्धांत ।

सर्वेसर्वा–वि० जिसे किसी मामलेमें सब कुछ करनेका अधिकार हो, पूर्णधिकारी; प्रधान कर्ताधर्ता ।

सर्वोच्च–वि० (सं०) सबसे ऊँचा या बड़ा । **–न्यायालय**–पु० (सुप्रीम कोर्ट) देशका सबसे बड़ा न्यायालय, उच्चतम न्यायालय । **–सत्ता**–स्त्री० (पैरामाउंट पॉवर) देशकी सबसे बड़ी या प्रधान सत्ता (शक्ति) ।

सर्वोत्तम–वि० (सं०) सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ ।

सर्वोदय–पु० (सं०) सब लोगोंके आर्थिक, नैतिक, सामाजिक उत्थानके लिए महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया एक आंदोलन जिसमें अहिंसात्मक पद्धतिसे वर्गहीन शोषणहीन ग्रामोद्योग-प्रधान समाजरचनाकी कल्पना की गयी है ।

सर्वोपकारी (रिन्)–वि० (सं०) सबका उपकार, सहायता करनेवाला ।

सर्वोपरि–अ० (सं०) सबसे ऊपर या बढ़कर ।

सर्वोपाधि–स्त्री० (सं०) सर्व सामान्य गुण ।

सर्वौघ–पु० (सं०) सर्वांगपूर्ण सेना; दे० 'सर्वाभिसार'; एक तरहका मधु ।

सर्वौषध–वि० (सं०) जिसमें सब तरहकी ओषधियाँ हों । स्त्री० सब तरहकी ओषधियाँ ।

सर्वौषधि–स्त्री० (सं०) दस जड़ी-बूटियोंका एक वर्ग; सब तरहकी ओषधियाँ ।

सर्शफ–पु० दे० 'सर्षप' ।

सर्षप–पु० (सं०) सरसों; एक बहुत छोटी तौल (सरसोंके बराबर); एक विष । **–कंद**–पु० एक विषैला कंद । **–कण**–पु० सरसोंका दाना । **–तैल,–स्नेह**–पु० सरसोंका तेल । **–नाल**–स्त्री० सरसोंका साग । **–शाक**–पु० एक खाया जानेवाला साग ।

सर्षपक–पु० (सं०) एक तरहका साँप ।

सर्षपकी–स्त्री० (सं०) एक विषैला कीड़ा; एक तरहका चर्मरोग ।

सर्षपा–स्त्री० (सं०) सफेद सरसों ।

सर्षपारुण–पु० (सं०) एक असुर जो बालग्रह माना गया है ।

सर्षपिक–पु० (सं०) एक प्राणांतक विषैला कीड़ा (सुश्रुत) ।

सर्षपिका–स्त्री० (सं०) एक लिंगरोग (इसमें दाने निकल आते हैं); एक विषैला कीड़ा, सर्षपिक; मसूरिका रोगका एक भेद ।

सर्षपी–स्त्री० (सं०) खंजनिका; एक ओषधि; सफेद सरसों; एक तरहका चर्मरोग ।

ससों–स्त्री० दे० 'सरसों' ।

सलंबा नोन–पु० काच नमक ।

सल|–स्त्री० सिकुड़न, सिलवट; तह । पु० (सं०) पानी, जल; कुत्ता; सरल वृक्ष । –**पत्र**–पु० दारचीनी ।

सलई–स्त्री० चीड़; चीड़का गोंद ।

सलक्षण–वि० (सं०) समान चिह्नोंवाला ।

सलग*–वि० समग्र, पूरा, अखंडित–'सलग रुपैया भैया कापै दयो जात हैं' ।

सलगम–पु० दे० 'शलगम' ।

सलगा|–स्त्री० सलई, चीड़का पेड़ ।

सलग्नक–वि० (सं०) जामिन देकर लिया हुआ (कर्ज) ।

सलज–पु० पहाड़ी बरफका पानी । * वि० लज्जायुक्त ।

सलजम–पु० दे० 'शलगम' ।

सलज्ज–वि० (सं०) हयादार, लज्जाशील; विनम्र ।

सलटुक–पु० (सं०) चौलाईका साग ।

सलतनत–स्त्री० दे० 'सल्तनत' ।

सलना*–अ० क्रि० गड़ना; छिदना, साला जाना; किसी छिद्रमें (लकड़ी आदि) बैठाया जाना । पु० बरमा; मोती ।

सलफ़–वि० (अ०) अतीत कालका, प्राचीन । पु० बीते जमानेके लोग, पुरखे । –**से**–पुराने जमानेसे ।

सलब–पु० (अ०) दूर करना; लोप; हरण; छीन लेना; इनकार (करना) । **मु०** –**हो जाना**–लुप्त हो जाना; छिन जाना ।

सलभ*–पु० दे० 'शलभ' ।

सलमा–पु० सोने-चाँदीका गोलाईमें लपेटा हुआ तार, बादला ।

सलवट–स्त्री० दे० 'सिलवट' ।

सलवन–पु० सरिवन ।

सलवात–स्त्री० (अ०) खुदाकी रहमत; किसी चीजसे बाज आना, किसी बातको छोड़ देना; गाली । **मु०** –(**तें**) **सुनाना**–गालियाँ देना, बुरा-भला कहना ।

सलवार–पु० एक खास तरहकी काटका पाजामा ।

सलसलाना–अ० क्रि० सरसराहट, खुजली होना; गुदगुदी होना; कीड़ोंका रेंगना, पेटके बल चलना; गीला होकर कमजोर या ढीला पड़ जाना । स० क्रि० गुदगुदाना; खुजलाना; किसी काममें जल्दी करना ।

सलसलाहट–स्त्री० 'सल-सल' आवाज; सलसलानेका भाव; खुजली; गुदगुदी ।

सलसी–स्त्री० एक वृक्ष, बूक ।

सलहज–स्त्री० सालेकी पत्नी ।

सला–स्त्री० (अ०) बुलाना; आवाज देना; भोजनके लिए बुलाना; दावतका निमंत्रण । –(**ए**) **आम**–स्त्री० आम दावत, वह भोज जिसमें हर आदमी निमंत्रित समझा जाय ।

सलाई–स्त्री० धातुनिर्मित पतली और छोटी तीली; दियासलाई; सालनेकी क्रिया या मजदूरी; सलई । **मु०**–**फेरना**–(आँखमें) सुरमा, दवा लगाना; आँख फोड़ना, सलाई गरम करके आँखमें लगाना ।

सलाक*–स्त्री० शलाका, सलाई; तीर, बाण ।

सलाकना|–अ० क्रि० सलाई या सलाई जैसी चीजसे निशान बनाना ।

सलाख–स्त्री० धातुकी छड़, सलाई ।

सलाजीत–स्त्री० दे० 'शिलाजीत' ।

सलात–स्त्री० (अ०) नमाज; दुरूद ।

सलातीन–पु० (अ०) 'सुलतान'का बहु० ।

सलाद–पु० (अं० 'सैलैड') कच्चे मूल, पत्र आदिका नीबू, सिरके आदिके योगसे तैयार किया जानेवाला एक खाद्य, एक पौधा जिसके पत्ते उपर्युक्त रूपमें खाये जाते हैं ।

सलावत–स्त्री० (अ०) कठोरता; अनुचित कठोरता; वीरता; प्रताप । –**जंग**–पु० मुसलमान बादशाहोंकी ओरसे फौजी अफसरोंको दी जानेवाली एक उपाधि ।

सलाम–पु० (अ०) नमस्कार, प्रणाम, वंदगी; नमाजके अंतमें पढ़नेवालेका सिरको पहले दाहिने, फिर बायें फेरते हुए 'सलाम अलैकम' कहना; वह नज्म जिसमें करबलाके युद्धका वर्णन हो; नोहा नामक गीतका एक प्रकार । –**अलैक**–स्त्री० तुझपर सलाम हो, तू सलामत रहे; साहब-सलामत, परिचय । –**अलैकम**–तुम सलामत रहो, तुमपर सलामती हो (मुसलमान एक दूसरेको प्रायः यही कहकर नमस्कार करते हैं । दूसरा व्यक्ति जवाबमें 'वालैकुम स्सलाम' 'तुमपर भी सलामती हो' कहता है) । –**कराई**–स्त्री० वह रुपया या गहना जो कन्यापक्षवाले विदाईके समय दुल्हेको देते हैं (मुसल०) । –**पयाम**–पु०–संदेशा; बातचीत; मँगनी या ब्याहकी बातचीत । –**करनेवाला**–उम्मीदवार, प्रार्थी । **मु०** (**किसीको**)–**करना**–दूर रहनेकी इच्छा प्रकट करना; त्यागना; विदा होना; (किसीकी) उस्तादी, बड़ाई आदि मान लेना । (**किसीको**)–**देना**–विदा करना; किसी बड़े, विशेषकर अंग्रेज अफसरका मिलनेके लिए अंदर बुलाना । –**फेरना**–नमाजकी समाप्तिपर फिरसे झुककर प्रणाम करना; नाराजीके कारण किसीका सलाम स्वीकार न करना । –**लेना**–सलामका जवाब देना; मिलना बंद कर देना; विदा होना । –**है**–बाज आया, छोड़ा; माफ कीजिये ।

सलामत–स्त्री० (अ०) बचाव, रक्षा; कुशल । वि० सुरक्षित; स्वस्थ; जीवित; अखंड, साबित । अ० सकुशल, सही-सलामत । –**बाशेद**(वाक्य) जिओ, जीवित रहो । –**रवी**–स्त्री० बीचके रास्ते, मध्यमा वृत्तिका आश्रयण; सबसे हेलमेलसे रहना; किफायतसे गुजर करना । –**रौ**–वि० बीचके रास्तेपर चलने, अतिसे बचनेवाला; किफायतसे गुजर करनेवाला । **मु०** –**रहना**–कायम रहना, बना रहना; जीवित रहना ।

सलामती–स्त्री० रक्षा; कुशल; तंदुरुस्ती; जीवित होना, जिंदगी (मुसल० स्त्रि०) । **मु०**–**का जाम पीना**–स्वास्थ्यकामनाका प्याला पीना । –**चाहना**–कुशल मनाना । –**पढ़ना**–वह दुआ पढ़ना जिसमें खुदाके नित्य होने, सर्वकालमें विद्यमान होनेकी बात कही गयी हो । –**से**–भगवत्कृपासे, खुदाके फज्लसे (मुसलमान स्त्रियाँ अच्छी बात कहनेके पहले मंगलकी भावनासे कहती है–'सलामतीसे उसके चार बच्चे हैं ।')

सलामी–स्त्री० (फा०) सलाम करनेकी रस्म; हथियारोंको उठाकर सलाम करना; तोपों या बंदूकोंकी बाढ़ जो राजाओं, बड़े अधिकारियों आदिके सम्मानार्थ दागी जाय (देना, लेना); वह धन जो दूल्हे या दुलहिनको सलामकी रस्ममें दिया जाय; नजराना; भेंट; ढाल । वि० झुकनेवाला, ढालवाँ ('कारनिसकी सलामी कर दो') । पु० प्रार्थी, सलाम करनेवाला । **मु०** –**उतारना**–किसीके सम्मानार्थ तोपों या बंदूकोंकी बाढ़ दागना ।

सलार|–पु० एक चिड़िया ।

सलासत–स्त्री० (अ०) भाषाका सरल, प्रवाहयुक्त, क्लिष्ट शब्दावलीसे रहित होना; मृदुता; सादगी; सफाई । –(**ते**) **जबान**–स्त्री० भाषाकी मिठास; शब्दोंका माधुर्य ।

सलाह–स्त्री० (अ०) अच्छाई, भलाई; मंत्रणा, मशवरा; राय; * सुलह, मेल–'सिवासों सलाह राखिये तौ बात भली है'–भूषण । –**अंदेश**–वि० शुभचिंतक, हितैषी, खैरख्वाह । –**कार**–वि० सलाह देनेवाला, मंत्रणामें सम्मिलित होनेवाला ।

सलाहियत–स्त्री० (अ०) भलाई; योग्यता; नरमी; सदाचार; संयम; विद्वत्ता; गम्भीरता; यात्रियोंका पुलिसके रजिस्टरमें इन्दिराज ।

सलाही–पु० सलाह, परामर्श देनेवाला (क्व०) ।

सलाहीयत–स्त्री० (अ०) दे० 'सलाहियत' ।

सलिंग–वि० (सं०) समान चिह्नोंसे युक्त ।

सलिंगी(गिन्)–वि० (सं०) केवल चिह्न धारण करनेवाला, आडंबरी, ढोंगी ।

सलि*–स्त्री० चिता ।

सलिता*–स्त्री० सरिता, नदी ।

सलिल–पु० (सं०) जल; वर्षाका जल; वर्षा; अश्रु; एक तरहकी वायु; एक बड़ी संख्या; एक वृत्त; उत्तराषाढ़ा नक्षत्र । –**कर्म**-

(न्)–पु० पितृतर्पण। **–कुंतल**–पु० शैवाल। **–कुक्कुट**–पु० एक जलीय पक्षी, मुर्गावी। **–क्रिया**–स्त्री० पितृतर्पण; शव-स्नान। **–गर्गरी**–स्त्री० जलका घड़ा। **–गुरु**–वि० अश्रुपूर्ण। **–चर**–पु० जलचर। **–ज**–वि० जलमें उत्पन्न। पु० कमल; जलीय जीव; घोंघा। **–जन्म(न्)**–पु० कमल। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जलमें उत्पन्न। **–द,–धर**–पु० बादल। **–दायी(यिन्)**–वि० वर्षा बरसानेवाला। **–निधि**–पु० समुद्र; एक वृत्त। **–निपात**–पु० पानी बरसना। **–निषेक**–पु० जलका सिंचन। **–पति**–पु० वरुण। **–प्रिय**–पु० शूकर। **–भय**–पु० जल या जलप्लावनका भय। **–भर**–पु० झील, ताल। **–मुक्(च्)**–पु० बादल। **–योनि**–वि० जलसे उत्पन्न। पु० ब्रह्मा; जलसे उत्पन्न पदार्थ। **–रय**–पु० जलकी धारा, प्रवाह। **–राज**–पु० दे 'सलिलपति'। **–राशि**–पु० समुद्र; जलाशय। **–वात**–पु० सलिल नामक वायु। **–स्तंभी(म्भिन्)**–वि० जलका स्तंभन करनेवाला। **–स्थलचर**–वि० जल और स्थल दोनों जगह रहनेवाला, उभयचारी। पु० ऐसा जीव।

सलिलांजलि–स्त्री० (सं०) जलांजलि, तर्पण।

सलिलाकर–पु० (सं०) बड़ी जलराशि; समुद्र।

सलिलाधिप–पु० (सं०) वरुण।

सलिलार्णव–पु० (सं०) समुद्र।

सलिलार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) पिपासित, प्यासा।

सलिलालय–पु० (सं०) समुद्र।

सलिलाशन–वि० (सं०) जलमात्रपर रहनेवाला।

सलिलाशय–पु० (सं०) तालाव; ताल।

सलिलाहार–वि० (सं०) जल पीकर रहनेवाला। पु० जल पीकर रहना।

सलिलेंद्र–पु० (सं०) वरुण।

सलिलेंधन–पु० (सं०) वडवाग्नि।

सलिलेचर–वि० (सं०) जलचर। पु० जलीय जीव।

सलिलेश–पु० (सं०) वरुण।

सलिलेशय–वि० (सं०) जलमें सोनेवाला।

सलिलेश्वर–पु० (सं०) वरुण।

सलिलोद्भव–पु० (सं०) कमल; जलमें उत्पन्न वस्तु, घोंघा आदि। वि० जलमें उत्पन्न।

सलिलोपजीवी(विन्)–वि० (सं०) पानीसे जीविका प्राप्त करनेवाला। पु० मछुआ।

सलिलोपप्लव–पु० (सं०) जलप्लावन।

सलिलौका(कस्)–वि० (सं०) जलमें रहनेवाला। पु०, स्त्री० जोंक।

सलिलौदन–पु० (सं०) भात।

सलीक़ा–पु० (अ०) हर चीजको ढंगसे और यथास्थान रखनेकी बुद्धि; ढंग, शऊर; गुण; योग्यता; तहज़ीब; सभ्यता, शिष्टता। **–दार,–मंद**–वि० जिसमें सलीक़ा हो, शऊरदार।

सलीता–पु० एक तरहका मोटा मारकीन।

सलीपर–पु० (अं० 'स्लिपर') सिर्फ पंजेको ढकनेवाला हलका जूता; रेलकी पटरियोंके नीचे बिछाया जानेवाला लकड़ीका पटरा; पहियेकी हाल।

सलीब–स्त्री० (अ०) सूली या क्रासके ढंगका एक छोटा यंत्र जिसे ख्रिस्तीय संप्रदायके लोग, विशेषकर पादरी, गलेसे लटकाकर पहनते हैं।

सलीबी–वि० सलीबका। पु० ईसाई। **–जंग**–स्त्री० यरूशलमपर अधिकार करनेके लिए ईसाइयों और मुसलमानोंमें हुई लंबी लड़ाइयाँ।

सलीम–वि० (अ०) सरल, विनीत; ठीक, दुरुस्त; स्वस्थ; शांत; गम्भीर; सहनशील; शांतिप्रिय। पु० जहाँगीरका युवराजकालका नाम। **–चिश्ती**–पु० अकबरके समयके एक प्रसिद्ध मुसलमान संत जो फतहपुर सिकरीमें रहते थे। जहाँगीरका जन्म इनके आशीर्वादका फल मानकर अकबरने उसका पुकारनेका नाम उन्हींके नामपर सलीम रखा था। **–शाही**–स्त्री० दिल्लीमें बननेवाली एक तरहकी सुंदर, मुलायम जूती।

सलील–वि० (सं०) क्रीड़ाशील। अ० लीलापूर्वक। **–गज गामी(मिन्)**–पु० एक बुद्ध।

सलीस–वि० (अ०) आसान; चलती, क्लिष्ट शब्दावलीसे रहित (भाषा); समतल; सभ्य; शिष्ट; तमीज़दार; नरम, कोमल; मृदुल। **–ज़बान**–स्त्री० सरल, सुबोध भाषा। **–गोई**–स्त्री० क्लिष्ट शब्दावलीसे रहित शेर कहना।

सलूक–पु० दे० 'सुलूक'।

सलूका–पु० पूरी आस्तीनका कमरतकका पहनावा, शलूका।

सलून–पु० (सं०) छोटे परोपजीवी कीट, जूँ आदि।

सलूना–वि० दे० 'सलोना'।

सलूनी–स्त्री० चुक्रिका नामक साग।

सलूनो–पु० दे० 'सलोनो'।

सलेक–पु० (सं०) एक आदित्य।

सलेप–वि० (सं०) तैलीय पदार्थोंसे युक्त।

सलेमशाही–स्त्री० दे० 'सलीमशाही'।

सलेश–वि० (सं०) अंगों, खंडोंसे युक्त, संपूर्ण।

सलैना†–स० क्रि० काटकर ठीक करना, सालना।

सलैया†–स्त्री० सलई।

सलैला*–वि० पिच्छिल, फिसलनवाला, चिकना।

सलोक–वि० (सं०)···के साथ या एक ही, समान लोकमें रहनेवाला; लोगोंसे युक्त। पु० नगर; नगरनिवासी, नागरिक। * श्लोक, पद्य।

सलोकता–स्त्री० (सं०) (देवता आदि)के साथ उसी लोकमें रहना; मुक्तिका एक प्रकार, सालोक्य।

सलोट*–स्त्री० दे० 'सिलवट'।

सलोतर–पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्साशास्त्र।

सलोतरी–पु० पशुओं, विशेषतः अश्वोंका चिकित्सक।

सलोन*–वि० दे० 'सलोना'।

सलोना–वि० लवणयुक्त, नमकीन; लावण्यमय, सुंदर। **–पन**–पु० लावण्य, सौंदर्य।

सलोनो–पु० श्रावण पूर्णिमाको होनेवाला एक त्योहार, रक्षाबंधन।

सलोहित–वि० (सं०) एक ही, समान रक्तका; गाढ़ा लाल रँगा हुआ।

सलौना*–वि० दे० 'सलोना'।

सल्तनत–स्त्री० (अ०) राज्य, बादशाहत; हुकूमत, अमलदारी; प्रबंध। मु० **–जमना,–बैठना**–अधिकार स्थापित होना; प्रबंध ठीक होना।

सल्ल–पु० एक वृक्ष, सरल।

सल्लकी–स्त्री० (सं०) सलईका पेड़।

सल्लक्षणतीर्थ–पु० (सं०) एक तीर्थ।

सल्लक्ष्य–पु० (सं०) अच्छा निशाना; अच्छा उद्देश्य।

सल्लना*–स० क्रि० सालना, दुःख देना।

सल्लम†–पु०, स्त्री० एक मोटा कपड़ा, गजी, गाढ़ा।

सल्लाख़–पु० (अ०) खाल उतारनेवाला, जल्लाद।

सल्लाख़ी–स्त्री० (अ०) जिंदा आदमीकी खाल उतारना।

सल्लाह–स्त्री० दे० 'सलाह'।

सल्ली–स्त्री० सलईका पेड़।

सल्लू†–पु० चमड़ेकी डोरी।

सल्लेअला–स्त्री० (अव्ययपद) वाहवाह, क्या कहना, सुभान-अल्लाह (मुसल०)।

सल्लोक–पु० (सं०) भद्र पुरुष, सुजन।

सल्व–पु० दे० 'शल्व'।

सवंशा–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

सव–पु० (सं०) सोमरस निचोड़कर निकालना; यज्ञ; तर्पण; सूर्य; चंद्रमा; संतति; पुष्परस; उत्पादक; अकवन; जल; * शव।

सवगात†–स्त्री० दे० 'सौगात'।

सवजा–स्त्री० (सं०) अजगंधा।

सवत, सवति*–स्त्री० दे० 'सौत'।

सवत्स–वि० (सं०) जो बछड़ेके साथ हो; संतानयुक्त।

सवधूक–वि० (सं०) सपत्नीक ।

सवन–पु० (सं०) सोमरस निचोड़कर निकालना; यज्ञ; सोमरस-का पान तथा तर्पण; यज्ञ-स्नान; प्रसव; देना; सोनापाठा; अग्नि; भृगुका एक पुत्र; (रोहित मन्वंतरके) वशिष्ठका एक पुत्र; स्वयंभुव मनुका एक पुत्र । वि० वनयुक्त । **–कर्म(न्)**–पु० यज्ञकार्य, तर्पण । **–काल**–पु० तर्पणकाल । **–क्रम**–पु० यज्ञकृत्योंका क्रम । **–मुख**–पु० यज्ञारंभ । **–संस्था**–स्त्री० यज्ञांत ।

सवनीय–वि० (सं०) सोमतर्पण-संबंधी । **–पशु**–पु० बलिपशु । **–पात्र**–पु० सोमपात्र ।

सवपुष–वि० (सं०) सशरीर, मूर्त ।

सवयस, सवयस्क–वि० (सं०) समवयस्क, हमउम्र ।

सवया(यस्)–स्त्री० (सं०) सहेली, सखी; वयस्या । पु० वयस्य, सखा । वि० समवयस्क ।

सवर–पु० (सं०) जल; शिव ।

सवर्ण–वि० (सं०) समान रंगका; समान रूपका; समान जातिका; समान वर्गका (व्या०); पु० ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माताकी संतान; माहिष्य (ज्योतिषसे जीविका चलानेवाला); अस्पृश्योंसे भिन्न, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, कुलीन माने जानेवाले वर्ण । **–विवाह**–पु० एक ही वर्ण और जाति धर्म, वर्ग या समाजके बीच होनेवाला विवाह (एंडोगैमी) ।

सवर्णन–पु० (सं०) भिन्नोंको समान हरवाले भिन्नोंके रूपमें लाना (ग०) ।

सवर्णा–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी, छाया । वि० स्त्री० दे० 'सवर्ण' ।

सवर्य–वि० (सं०) अच्छे गुणोंसे युक्त ।

सवहा–स्त्री० (सं०) त्रिवृता, निसोथ ।

सवाँग–पु० दे० 'स्वाँग' ।

सवा–वि० चतुर्थांशसे युक्त (एक या कोई अंक) ।

सवाई–वि० चतुर्थांशयुक्त एक, सवा; बढ़-चढ़कर । स्त्री० सूद लेनेका एक प्रकार जिसमें मूल धन अपने चतुर्थांशसे युक्त हो जाता है; जयपुर नरेशोंकी उपाधि; मूत्रसंस्थानका एक रोग ।

सवाक् चित्र–पु० (सं०) (टॉकी) वह चलचित्र जिसमें पात्रोंके कार्य ही न दिखाई दें, उनका बोलना, गाना, रोना आदि भी सुनाई दे–जो मूक न रहकर बोलता हुआ-सा जान पड़े, बोलपट ।

सवागी–पु० सुहागा ।

सवाती*–स्त्री० स्वाती नक्षत्र–'सूरदास प्रभु प्रानहिं राखहु ह्वैकै बूंद सवाती'–सूर० ।

सवाद*–पु० दे० 'स्वाद' ।

सवादिक, सवादिल*–वि० स्वाद देनेवाला, स्वादिष्ठ ।

सवानहि–पु०, स्त्री० (फा०) 'सानिहा'का बहु०, घटनाएँ, वृत्त । **–उमरी**–स्त्री० जीवनचरित, जीवनवृत्तांत । **–निगार**–पु० वृत्त-लेखक; अखबारनवीस ।

सवाब–पु० (अ०) बदला; सुफल; सत्कर्मका (परलोकमें मिलनेवाला) फल । मु० **–कमाना**–पुण्य संचय करना, सत्कर्म करना । **–बख़शना**–दूसरेको पुण्यफल देना ।

सवाया–वि० सवागुना, बढ़कर, अधिक ।

सवार–पु० (फा०) घोड़े, हाथी, ऊँट आदिपर चढ़ा हुआ व्यक्ति, आरोही; अश्वारोही; अश्वारोही सैनिक; पुलिसका सिपाही जो घोड़ेपर सवार होकर काम करे । वि० सवारी (गाड़ी, मोटर आदि) पर बैठा हुआ; (ला०) मस्त, नशेमें चूर । * अ० सवेरे, जल्द ।

सवारना–स० क्रि० सजाना; सुधारना ।

सवारा*–पु० प्रातःकाल, सवेरा ।

सवारी–स्त्री० सवार होनेकी क्रिया; वह चीज जिसपर सवार हों (घोड़ा, गाड़ी, पालकी इ०); सवार; जुलूस (निकलना); कुश्तीका एक पेंच । **–का पायजामा**–वह पाजामा जिसकी काट जाँघोंके पाससे मेहराबदार हो । मु०**–आना**–(सवारीपर) पधारना । **–कसना,–गाँठना**–विपक्षीको सवारी (पेंच)में बाँधना; आसनतले दबाना । **–देना**–सवारीका काम देना । **–लगना**–सवारीका लगाया जाना । **–लगाना**–डोली, पालकी इत्यादिको सवार होनेके लिए ड्योढ़ीमें रखना । **–लेना**–सवारी-का काम लेना, सवार होना ।

सवारे, सवारैं*–अ० जल्द, शीघ्र–'तुरत चलो अबही फिर आवैं गोरस बेंचि सवारैं'–सूर; सवेरे ।

सवाल–पु० (अ० 'सुवाल') माँगना; माँग; पूछना; प्रश्न; याचना, भिक्षाकी याचना (फकीरका सवाल); प्रार्थना, निवेदन; अर्जी; नालिश, फरियाद; गणितका प्रश्न; मसला । **–ख़ानी**–स्त्री० दे० 'सवालख़्वानी' । **–ख़्वानी**–स्त्री० अदालतमें दर्खास्तों-को पढ़ना । **–जवाब**–पु० प्रश्नोत्तर; बहस; जिरह । मु० **–करना**–पूछना; जाँचके लिए कोई बात पूछना; माँगना; याचना करना । **–कुछ, जवाब कुछ**–प्रश्नसे असंबद्ध उत्तर देना, पूछा कुछ और जाय, बताया कुछ और । **–डालना**–प्रार्थना-याचना करना । **–दीगर, जवाब दीगर**–दे० 'सवाल कुछ, जवाब कुछ' । **–देना**–अर्जी या दर्खास्त देना; हल करनेके लिए गणितका प्रश्न या कोई मसला देना । **–बनाना**–परीक्षामें पूछनेके लिए प्रश्न तैयार करना ।

सवालात–पु० (अ०) 'सवाल'का बहुव० ।

सवालिया–वि० जिसमें सवाल हो, जिसमें कोई बात पूछी गयी हो (जुमला) ।

सवाली–वि० माँगनेवाला । पु० मरसिया पढ़नेवाला ।

सविकल्प, सविकल्पक–वि० (सं०) इच्छाधीन, विकल्पयुक्त; संदिग्ध; (ज्ञाता और ज्ञेयका) अंतर माननेवाला, निर्णय न कर पानेके कारण दोनोंको माननेवाला, संशयवादी । पु० समाधिका एक प्रकार; ज्ञाता और ज्ञेयके अंतरका ज्ञान (वे०) ।

सविकार–वि० (सं०) परिवर्तनयुक्त; जिसके भावोंमें परिवर्तन हो गया हो या भावोंका उन्मेष हुआ हो; जो सड़-गल रहा हो (खाद्य पदार्थ आदि) ।

सविकाश–वि० (सं०) विकसित, प्रफुल्ल; कांतियुक्त; विस्तृत ।

सविग्रह–वि० (सं०) शरीरयुक्त, मूर्त; अर्थयुक्त; बमानी; संघर्षरत, युद्धमें संलग्न ।

सविचार–वि० (सं०) जिसका विचार किया जाता हो । अ० विचारपूर्वक । पु० सविकल्प समाधिका एक भेद ।

सविज्ञान–वि० (सं०) विवेकशील, समझदार । अ० विज्ञान सहित ।

सविडालंभ–पु० (सं०) हँसी उत्पन्न करनेवाला एक प्रकारका मजाक (ना०) ।

सवितर्क–वि० (सं०) विचारवान् । पु० सविकल्प समाधिका एक भेद ।

सविता(तृ)–पु० (सं०) सूर्य; अकवन; लोकस्रष्टा; शिव; इंद्र; अट्ठाईस व्यासोंमेंसे एक; बारहकी संख्या । वि० उत्पन्न करनेवाला । **–(तृ)तनय,–पुत्र,–सुत**–पु० शनि, यमादि । **–देवत,–दैवत**–पु० हस्त नक्षत्र । **–फल**–पु० एक पुराणोक्त पर्वत ।

सवितृल–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी, सौर ।

सवित्र–पु० (सं०) उत्पत्तिका साधन या कारण ।

सवित्रिय–वि० (सं०) दे० 'सवितृल' ।

सवित्री–स्त्री० (सं०) माता; धात्री; गाय ।

सविद्य–वि० (सं०) एक ही, समान विषयका अध्ययन करनेवाला; विद्वान्, विज्ञानविद् ।

सविध–वि० समान, एक ही वर्गका; आसन्न, निकट । पु० सामीप्य । अ० विधिपूर्वक, नियमानुसार ।

सविधि–वि० (सं०) विधियुक्त । अ० विधिके अनुसार ।

सविनय–वि० (सं०) विनययुक्त, शिष्टतापूर्ण; विनम्र । अ० विनयपूर्वक । **–अवज्ञा**–स्त्री० (अन्यायपूर्ण) मुल्की कानूनकी नम्रतापूर्वक अवमानना (सिविल डिस्‌ओबीडिएंस) ।

सविभाल–पु० (सं०) नखी नामक गंधद्रव्य ।

सविभास–पु० (सं०) सात सूर्योंमेंसे एक ।

सविभ्रम–वि० (सं०) क्रीड़ायुक्त; विलासयुक्त, प्रणय-चेष्टायुक्त ।

सविमर्श–वि० (सं०) दे० 'सवितर्क' ।

सविलास–वि० (सं०) दे० 'सविभ्रम' ।

सविशंक–वि० (सं०) शंकायुक्त ।

सविशेष–वि० (सं०) विशेष गुणोंसे युक्त; असाधारण; श्रेष्ठ; अंतर करनेवाला।

सविशेषक–वि० (सं०) विशेषता लानेवाले गुणसे युक्त। पु० विशेष गुण।

सविश्रंभ–वि० (सं०) अंतरंग, घनिष्ठ (मित्र)।

सविष–वि० (सं०) विषयुक्त; विषाक्त। पु० एक नरक।

सविस्तर–अ० (सं०) ब्योरेके साथ, तफसीलवार।

सविस्मय–वि० (सं०) आश्चर्ययुक्त, चकित; संदेहपूर्ण। अ० विस्मयके साथ।

सवीर–वि० (सं०) अनुयायियोंसे युक्त।

सवीर्य–वि० (सं०) समान शक्तिसे युक्त; शक्तिशाली।

सवीर्या–स्त्री० (सं०) शतावरी।

सवृद्धिक–वि० (सं०) सूदके साथ, जिसका सूद मिले।

सवृष्टिक–वि० (सं०) वर्षासे युक्त।

सवेग–वि० (सं०) समान-वेगवाला; वेगशील, उग्र। अ० वेगपूर्वक।

सवेताल–वि० (सं०) वेताल द्वारा अधिकृत (शव)।

सवेध–वि० (सं०) आसन्न, निकट। पु० सामीप्य।

सवेरा–पु० सूर्योदय-काल, प्रातःकाल।

सवेरे–अ० प्रात काल, तड़के।

सवेश–वि० (सं०) अलंकृत, विभूषित; निकट, पासका।

सवेशीय–पु० (सं०) एक साम।

सवेष–वि० (सं०) वस्त्राभूषणसे सजा हुआ।

सवेष्टन–वि० (सं०) पगड़ीके साथ (सिर)।

सवैया–पु० सवासेरका बाट; सवाका पहाड़ा; एक छंद; सवाई।

सवैलक्ष्य–वि० (सं०) अस्वाभाविक, बनावटी; लज्जित। **–स्मित**–पु० बनावटी हँसी।

सव्य–वि० (सं०) बायाँ; दक्षिणी; प्रतिकूल; दाहिना। पु० विष्णु; जनेऊ; ग्रहणके दस प्रकारोंमेंसे एक; किसी व्यक्तिकी मृत्युके समय जलायी जानेवाली अग्नि। **–चारी(रिन्)**–पु० अर्जुन; अर्जुन वृक्ष। **–जानु**–पु० युद्धका एक पैतरा। **–बाहु**–पु० बायें हाथसे लड़नेका एक ढंग। **–साची(चिन्)**–पु० अर्जुन (दोनों हाथोंसे एक जैसे वेगसे बाण चलानेके कारण); कृष्ण; अर्जुन वृक्ष।

सव्यथ–वि० (सं०) व्यथासे ग्रस्त; शोकान्वित।

सव्यपेक्ष–वि० (सं०)···से संबद्ध;···पर अवलंबित।

सव्यभिचार–पु० (सं०) हेत्वाभासके पाँच भेदोंमेंसे एक (न्या०)।

सव्यांत–पु० (सं०) लड़नेका एक ढंग।

सव्याज–वि० (सं०) कपटी; धूर्त।

सव्यापार–वि० (सं०) कार्यलग्न, बाकार, बेकार नहीं।

सव्येतर–वि० (सं०) दाहिना।

सव्येष्ठ, सव्येष्ठा(ष्ठृ)–पु० (सं०) सारथि।

सव्रण–वि० (सं०) व्रणवाला; घायल; सदोष। **–शुक्र**–पु० आँखकी सफेदीमें होनेवाला एक रोग।

सव्रती(तिन्)–वि० (सं०) समान ढंगसे काम करनेवाला; एक ही रीति-रिवाजवाला।

सव्रीड–वि० (सं०) लज्जायुक्त; लज्जित।

सशंक–वि० (सं०) शंकायुक्त, शंकित; भीरु, डरपोक।

सशंकना*–अ० क्रि० डरना; शंकित होना।

सशक्तिक–वि० (सं०) बलशाली।

सशब्द–वि० (सं०) शब्दयुक्त; शब्दित; शोरगुलसे भरा हुआ; घोषित।

सशयन–वि० (सं०) जो पासमें स्थित हो, पड़ोसका, आसन्नवर्ती।

सशरीर–वि० (सं०) शरीरयुक्त, मूर्त; अस्थियुक्त। अ० शरीरके साथ। **–प्रतिभू**–पु० (होस्टेज) जमानतके रूपमें रखा गया आदमी, ओल।

सशल्क–वि० (सं०) छिलकेदार; चोदाईर। पु० एक तरहकी मछली।

सशल्य–वि० (सं०) कँटीला; काँटे, बाण या भालेसे विधा हुआ; (ला०) कष्टग्रस्त; कष्टकर। पु० भालू। **–व्रण**–पु० काँटे आदिका घाव।

सशवी–पु० काला जीरा (?)।

सशस्य–वि० (सं०) अन्नवाला; जिसमें अन्न उत्पन्न हो।

सशस्या–स्त्री० (सं०) नागदंती।

सशस्त्र–वि० (सं०) शस्त्र या शस्त्रोंसे युक्त, शस्त्र-सज्जित; जिसमें शस्त्रोंका प्रयोग हुआ हो। **–तटस्थता**–स्त्री० (आर्मड न्यूट्रैलिटी) तटस्थ रहते हुए भी आक्रमणका किसी भी समय सामना करनेके लिए शस्त्रोंसे सज्जित रहना।

सशाक–पु० (सं०) आदी, अदरक।

सशाद्वल–वि० (सं०) घाससे भरा या ढका हुआ।

सशुक्र–वि० (सं०) चमकवाला।

सशूक–वि० (सं०) टूँड़वाला। पु० ईश्वरमें विश्वास करनेवाला, आस्तिक।

सशेष–वि० (सं०) जिसमें शेष या बाकी रहे, जो पूर्णतः रिक्त न हुआ हो; अधूरा।

सशोथ–वि० (सं०) सूजा हुआ। **–पाक**–पु० एक तरहका नेत्ररोग।

सश्मश्रु–वि० (सं०) दाढ़ीवाला। स्त्री० दाढ़ीवाली स्त्री।

सश्रद्ध–वि० (सं०) विश्वस्त; सच्चा।

सश्रम–वि० (सं०) थका हुआ; क्लांत; श्रमयुक्त। अ० श्रमपूर्वक।

सश्रम कारावास–पु० (रिगरस इंप्रिज़नमेंट) दे० 'सपरिश्रम कारावास'।

सश्रीक–वि० (सं०) समृद्धिशाली, भाग्यवान्; सुंदर।

सश्रीवृक्ष–वि० (सं०) (वह घोड़ा) जिसके सीनेपर भँवरी हो।

सश्लेष–वि० (सं०) श्लेषयुक्त, दोहरे अर्थवाला।

सश्वास–वि० (सं०) श्वासयुक्त, जीवित।

ससंकेत–वि० (सं०) जिसके साथ कोई गुप्त समझौता हुआ हो।

ससंग–वि० (सं०) संबद्ध, संलग्न।

ससंततिक–वि० (सं०) संतानयुक्त।

ससंदेह–वि० (सं०) संदेहयुक्त। पु० एक काव्यालंकार, संदेहालंकार।

ससंध्य–वि० (सं०) संध्या-संबंधी।

ससंपद, ससंपद्–वि० (सं०) समृद्ध, सुखी।

ससंभ्रम–वि० (सं०) क्षुब्ध, घबड़ाया हुआ। अ० शीघ्रतामें, घबड़ाहटमें; सादर।

ससंरंभ–वि० (सं०) क्रुद्ध, कुपित।

ससंवाद–वि० (सं०) एकमत।

ससंविद्–वि० (सं०) जिसके साथ कोई ठहराव हुआ हो।

ससंशय–वि० (सं०) संदेहयुक्त; अनिश्चित, अस्पष्ट। पु० 'संदिग्धता' नामक काव्यदोष।

सस*–पु० चंद्रमा; शशक; शस्य, धान्य। **–धर,–हर**–पु० चंद्रमा।

ससक*–पु० शशक, खरहा। * स्त्री० सिसक।

ससकना*–अ० क्रि० दिल धड़कना, घबड़ाना, झिझकना।

ससत्त्व–वि० (सं०) शक्ति या साहसयुक्त; जीवोंसे पूर्ण।

ससत्त्वा–स्त्री० (सं०) गर्भवती, गर्भिणी स्त्री।

ससन–पु० (सं०) यज्ञपशुका वध।

ससना, ससाना*–अ० क्रि० दे० 'ससकना'–'···चौंक चितै मुख सूख ससानी'–वसंतमंजरी।

ससरना†–अ० क्रि० सरकना।

ससहाय–वि० (सं०) साथियों आदिके साथ।

ससा*–पु० शशक; † खीरा।

ससाध्वस–वि० (सं०) भययुक्त, डरा हुआ। अ० भयसहित।

ससार्थ–अ० (सं०) कारवाँके साथ। वि० माल लदा हुआ (पोत)।

ससि*–पु० चंद्रमा; धान्य। **–धर**–पु० चंद्रमा। **–रिपु**–पु० दिन–'ससिरिपु बरस सूररिपु युगवर, हररिपु किये फिरै घात'–सू०। **–हर**–पु० चंद्रमा। * स्त्री० शिशिर ऋतु–'कहि नारि पीय बिन कामिनी रिति ससिहर किम जीजियइ'–रासो।

ससित–वि० (सं०) शर्करायुक्त।

ससिद्ध–पु० (सं०) शाल, सर्जका पेड़ (?)।

ससी*–पु० चंद्रमा।

ससील*–वि० सुशील, शीलसंपन्न ।

ससुर–पु० दे० 'श्वशुर' । वि० (सं०) देवताओंके साथ; मदिराके साथ; नशेमें चूर, बदमस्त ।

ससुरा–पु० ससुर; एक गाली; † (लड़कीकी) ससुराल ।

ससुरार, ससुरारि*–स्त्री० दे० 'ससुराल' ।

ससुराल–स्त्री० पति या पत्नीके पिताका घर; जेल, कैदखाना (ला०) ।

ससेन, ससैन्य–वि० (सं०) सेनाके साथ ।

सस्तर–वि० (सं०) पत्तोंके विस्तरके साथ ।

सस्ता–वि० अल्प मूल्यका; जिसका मूल्य घट गया हो, मंदा; जो आसानीसे मिल सके; घटिया । **–माल**–पु० घटिया माल । **–समय**–पु० सस्तीका जमाना । मु० **–छूटना, सस्ते छूटना**–ज्यादा खर्च आदिकी जगह थोड़ेमें ही काम चल जाना । **–लगा देना**–सस्ता वेचना ।

सस्ताना†–अ० क्रि० सस्ता हो जाना । स० क्रि० दाम कम करना ।

सस्ती–स्त्री० सस्तापन, मंदी, मँहगीका न होना ।

सस्त्रीक–वि० (सं०) स्त्री, पत्नीसहित; विवाहित ।

सस्नेह–वि० (सं०) तैलयुक्त; प्रेमपूर्ण । अ० स्नेहपूर्वक ।

सस्पृह–वि० (सं०) इच्छुक, ख्वाहिशमंद ।

सस्फुर–वि० (सं०) स्फुरण, स्पंदनयुक्त; जीवित ।

सस्मय–वि० (सं०) घमंडी ।

सस्मित–वि० (सं०) जो मुस्करा रहा हो, अल्पहासयुक्त ।

सस्य–पु० (सं०) धान्य; किसी पौधेका फल; शस्त्र; सद्गुण; एक कीमती पत्थर । **–आवर्त्तन**–पु० (क्रॉप-रोटेशन) खेतमें क्रम-क्रमसे दूसरी फसल बदल-वदलकर तैयार करना, फसल-वदल । **–क्रेणी**–स्त्री० गल्लेकी खरीद । **–क्षेत्र**–पु० अनाज बोनेका खेत । **–पाल,–रक्षक**–पु० खेतका रखवाला । **–प्रद**–वि० उपजाऊ । **–मंजरी**–स्त्री० अनाजकी वाल । **–मारी(रिन्)**–पु० एक तरहका बड़ा चूहा । **–माली(लिन्)**–वि० धान्यपूर्ण (जैसे पृथ्वी) । **–वेद**–पु० कृषिशास्त्र । **–शाली(लिन्)**–वि० धान्यपूर्ण । **–शीर्षक**–पु० दे० 'सस्यमंजरी' । **–शूक**–पु० जौ आदिका टूँड़ । **–श्यामला**–स्त्री० फसलसे, धान्यसे हरीभरी (भूमि) । **–संवर**–पु० साल वृक्ष । **–संवरण**–पु० अश्वकर्ण वृक्ष । **–हंता(तृ)**–पु० कृषि नष्ट करनेवाला एक दैत्य । **–हा(हन्)**–वि० धान्य नष्ट करनेवाला । पु० दे० 'सस्यहंता' ।

सस्यक–वि० (सं०) सद्गुणसंपन्न । पु० तलवार; हथियार; एक बहुमूल्य पत्थर ।

सस्या–स्त्री० (सं०) गनियारी, अरनी ।

सस्वेदा–स्त्री० (सं०) वह कन्या जिसका हालमें ही कौमार्य भंग हुआ हो, दूषिता कन्या ।

सहँगा*–वि० सस्ता, 'महँगा'का उलटा ।

सहंडुक–पु० (सं०) मांसका रसा, शोरबा ।

सह–अ० (सं०) साथ, सहित; साथ-साथ, युगपत् । वि० सहन करनेवाला; धीर; समर्थ; सशक्त; पराभव करनेवाला । पु० मार्गशीर्ष; एक अग्नि; शक्ति, सामर्थ्य; शिव; मनुका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; माद्रीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र; पांशवलवण; मुकावला । **–अपराधी**–पु० (एकम्प्लिस) अपराधमें सहायक व्यक्ति । **–अस्तित्व**–पु० सहजीवन । (दे० क्रममें) । **–करण**–पु० साथ काम करना । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० साथ काम करनेवाला; सहायक । **–कार**–पु० साथ काम करना; सहायता देना; एक तरहका सुगंधित आम; आमकी मंजरी; आमका रस । **–०भंजिका**–स्त्री० एक खेल । **–कारी(रिन्)**–वि० साथ काम करनेवाला । पु० सहायक कार्यकर्ता । **–०समिति**–स्त्री० उपभोक्ताओंकी स्वयं संगठित संस्था (को-आपरेटिव सोसाइटी) । **–कृत्**–वि० सहायता देनेवाला । **–गमन**–पु० साथ जाना; सती होना । **–गवन***–पु० दे० 'सहगमन' । **–गान**–पु० (कोरस) कई व्यक्तियों द्वारा एक साथ गाया जानेवाला गान; कई व्यक्तियोंका एक साथ मिलकर गान; समवेत गान । **–गामिनी**–स्त्री० सती होनेवाली स्त्री; पत्नी । **–गामी(मिन्)**–वि० साथ जानेवाला । **–गौन***–पु० दे० 'सहगमन' । **–चर**–वि० साथ चलने या रहनेवाला; सदृश । पु० साथी, मित्र; पति; अनुचर, सेवक; प्रतिबंधक; झिंटी; जामिन । **–चरण**–पु० साथ जाना; साथ रहना । **–चरा**–स्त्री० नील झिंटी । **–चरित**–वि० साथ रहनेवाला; एक जातीय; संगत । **–चरी**–स्त्री० पीत झिंटी; सखी; पत्नी । **–चार**–पु० सामंजस्य, संगति; सत्पथ; सहचर; हेतुके साथ साध्यका रहना । **–०उपाधिलक्षणा**–स्त्री० लक्षणाका एक प्रकार जिसमें साथ रहनेवाली वस्तुसे व्यक्ति आदिका बोध हो जाता है (न्या०) । **–चारिणी**–स्त्री० सखी; पत्नी । **–ज**–वि० साथ-साथ या एक ही समय उत्पन्न; जन्मजात; प्राकृतिक; प्रकृत; सामान्य (नार्मल); आद्यंत एक-सा रहनेवाला; साधारण; आसान । पु० सगा भाई; स्वभाव; जन्मलग्नसे तीसरा स्थान; जीवन्मुक्ति । **–०कृति**–पु० सोना । **–०क्लैव**–पु० जन्मजात नपुंसकता । **–०जन्मा(न्मन्)**–वि० यमज; सहोदर । **–०धार्मिक**–वि० जो स्वभावसे ही सच्चा या ईमानदार हो । **–०पंथ**–पु० (हिं०) गौड़ीय वैष्णव संप्रदायका एक वर्ग । **–०बुद्धि**–स्त्री० (इंस्टिंक्ट) जन्मजात बुद्धि, सहज ज्ञान । जैसे, चिड़ियोंका घोंसला बनाना, स्तनपायी जंतुओंका अपने बच्चोंको दूध पिलाना । **–०मलिन**–वि० जो स्वभावसे ही गंदा हो । **–०मित्र**–पु० स्वभावसे ही मित्र (भांजा आदि) । **–०वत्सल**–वि० कोमलचित्त । **–०शत्रु**–पु० दे० 'सहजारि' । **–०सुहृद्**–पु० वह जो प्रकृत्या मित्र हो । **–जन्मा(न्मन्)**–वि० जन्मना प्राप्त; जुड़वाँ; सहोदर । पु० यमज । **–जात**–वि० एक साथ उत्पन्न; एक ही समय उत्पन्न, समवयस्क; प्राकृतिक; जुड़वाँ (बच्चे); सहोदर । **–जानि**–वि० सपत्नीक । **–जीवन**–पु० (को-एग्जिस्टेंस) सह-अस्तित्व; देशों या राष्ट्रोंका मिलजुलकर शान्तिपूर्वक रहना, युद्ध न करना; दो पेड़-पौधोंका साथ-साथ मिलकर बढ़ना, परस्पर पोषण देना (सिम्बायोसिस) । **–जीवी(विन्)**–वि० साथ रहनेवाला । **–दंड**–वि० ससैन्य । **–दान**–पु० साथ-साथ तर्पणादि करना; बहुतसे देवताओंके लिए साथ-साथ किया जानेवाला होमादि । **–दानी**–स्त्री० दे० क्रममें । **–दार**–वि० सस्त्रीक; विवाहित । **–दीक्षिती(तिन्)**–वि० साथ दीक्षा लेनेवाले । **–देव**–पु० माद्रीसे उत्पन्न पांडुके पाँचवें पुत्र; जरासंधका एक पुत्र; एक ऋषि; सुदासका एक पुत्र । **–देवा**–स्त्री० दंडोत्पल; वला; सहदेई; शारिवा; सर्पाक्षी; प्रियंगु; नील; देवककी पुत्री और वसुदेवकी पत्नी । **–देवी**–स्त्री० सर्पाक्षी; पीत दंडोत्पला; बलाका एक भेद; शारिवा; सहदेई; प्रियंगु; सहदेवकी पत्नी । **–धर्म**–पु० सामान्य धर्म या कर्तव्य । **–० चर**–वि० समान कर्तव्योंका पालन करनेवाला । **–०चरण**–पु० पतिके साथ कर्तव्योंका पालन करना । **–०चरी**–स्त्री० पत्नी । **–०चारिणी**–स्त्री० पत्नी । **–०चारी(रिन्)**–वि० साथ-साथ कर्तव्योंका पालन करनेवाला **–धर्मिणी**–स्त्री० पत्नी । **–धर्मी(र्मिन्)**–वि० समान कर्तव्योंवाला; समान धर्मवाला । **–धान्य**–वि० धान्ययुक्त । **–नर्तन, –नृत्य**–पु० साथ नाचना । **–निर्वाप**–पु० साथ-साथ किया जानेवाला होमादि । **–निवासी(सिन्)**–वि० साथ रहनेवाला । **–पंथा,–पथी (थिन्)**–पु० साथ यात्रा करनेवाला, हमराही । **–पति**–पु० ब्रह्मा । **–पत्र**–पु० संलग्नक; नत्थी किया हुआ पत्र (एन्क्लोज़र) । **–पत्नीक**–वि० सपत्नीक, सस्त्रीक । **–पांशुकिल, –पांशुक्रीडी(डिन्)**–पु० लँगोटिया दोस्त । **–पाठी(ठिन्)**–पु० साथ पढ़नेवाला । **–पान,–पानक**–पु० साथ पान करना । **–पिंडक्रिया**–स्त्री० साथ-साथ पिंडदान करना । **–प्रतिवादी**–पु० (को-डिफेंडेंट) किसी मामलेमें मुख्य प्रतिवादीके साथ गौण रूपसे मान लिया गया अन्य प्रतिवादी । **–प्रयायी(यिन्), –प्रस्थायी(यिन्)**–पु० दे० 'सहपंथा' । **–भागी (गिन्)** वि० समानताके भावसे किसी काममें हाथ बँटानेवाला । पु० (को-पार्टनर, शेयरर) व्यापारमें हिस्सेदार; किसी सम्पत्तिका आंशिक उत्तराधिकारी । **–भार्य**–वि० सस्त्रीक । **–भाव**–पु० (को-एग्जिस्टेंस) दे० 'सहअस्तित्वका सिद्धांत' । **–भावी(विन्)**–वि० संबद्ध । पु० मित्र; सहचर; सहायक । **–भुक्(ज्)**

–वि० साथ खानेवाला। **–भू**–वि० सहज, प्राकृतिक। **–भूत**–वि० संबद्ध, संयुक्त। **–भोज**–पु० (विभिन्न जातियों, श्रेणियोंके) बहुतसे आदमियोंका एक साथ बैठकर भोजन करना। – **–भोजन**–पु० मित्रों आदिके साथ भोजन करना। **–भोजी(जिन्)**–पु० साथ भोजन करनेवाला। **–मत**–वि० जिसका मत दूसरेसे मिलता हो। **–मति**–स्त्री० (सं०) समान मति; मतैक्य; विचारोंका मेल खाना। **–मना(नस)**–वि० बुद्धिमत्तापूर्ण। **–मरण**–पु० सती होना, सहगमन। **–मातृक**–वि० माताके साथ। **–मान**–वि० घमंडी। **–मृता**–स्त्री० वह स्त्री जो सती हो गयी हो। **–यायी(यिन्)**–पु० दे० 'सहपंथा'। **–योग**–पु० साथ मिलकर काम करना; सहायता। **–योगी(गिन्)**–वि०, पु० सहयोग करनेवाला; मददगार; साथ काम करनेवाला या साथ प्रकाशित होनेवाला। **–योजन**–पु० (कोआप्शन) विधिवत निर्वाचित न होनेपर भी काममें सहयोगकी दृष्टिसे किसीको संस्था या कमेटीमें शामिल कर लिया जाना। **–योजित**–भू० कृ० सहायतार्थ मिलाया गया (को-आपटेड)। **–०करना**–किसी संस्थाके विद्यमान सदस्योंका अपने अधिकारसे किसी बाहरी व्यक्तिको भी संस्थाका सदस्य निर्वाचित कर लेना। **–रसा**–स्त्री० मुद्गपर्णी, वनमूंग। **–राज्य**–पु० (कंडोमीनियम) ऐसा राज्य जहाँ दो या अधिक प्रभुसत्ताओंका शासन हो। **–लंगी※**–पु० साथी; हमराही। **–लोकधातु**–पु० पृथ्वी। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० साथ रहनेवाला (कान्कमिटेंट)। **–वसति**–स्त्री० साथ बसना, रहना। **–वाच्य**–वि० जो साथ कथित हो। **–वाद**–पु० कथोपकथन; वादविवाद। **–वास**–पु० साथ रहना; संभोग, मैथुन। **–वासिक,–वासी(सिन्)**–पु० साथ बसनेवाला; पड़ोसी; साथी। **–विस्तारी**–वि० (को-एक्सटेंसिव) साथ-साथ फैला हुआ। **–वीर्य**–पु० ताजा मक्खन। **–व्रत**–वि० समान कर्तव्यवाला। **–व्रता**–स्त्री० पत्नी। **–शय**–वि० साथ सोनेवाला। **–शय्या**–स्त्री० साथ सोना। **–शिष्ट**–वि० जिसे साथ-साथ शिक्षा दी गयी हो। **–संजात**–वि० साथ-साथ उत्पन्न। **–संभव**–वि० साथ-साथ उत्पन्न, सहज। **–संवाद**–पु० वार्तालाप। **–संवास**–पु० साथ रहना। **–संवेग**–वि० बहुत उत्तेजित। **–संसर्ग**–पु० शारीरिक संपर्क। **–सिद्ध**–वि० प्राकृतिक, सहज। **–स्थ**–वि० साथ रहनेवाला। पु० मित्र, साथी। **–स्थित** वि० जो साथ हो।

सह(स्)–पु० (सं०) शक्ति; बल; विजय; प्रचंडता; कांति; जल; मार्गशीर्ष।

सह अस्तित्वका सिद्धांत–पु० (प्रिंसिपल ऑफ को-एग्जिस्टेंस) वह राजनीतिक सिद्धांत जो यह स्वीकार करता है कि विभिन्न प्रकारकी प्रणालियोंसे शासित और विभिन्न प्रकारके सिद्धांतोंसे अनुप्राणित राज एक-दूसरेके साथ शांतिपूर्वक रह सकते हैं, सहभावका सिद्धांत।

सहक–वि० (सं०) धीर, सहिष्णु; क्षमाशील।

सहजन※–पु० दे० 'सहिजन'।

सहजांधदृक्(श्)–वि० (सं०) जन्मांध।

सहजाधिनाथ–पु० (सं०) जन्मकुंडलीके तीसरे स्थानका अधिपति ग्रह (ज्यो०)।

सहजानुभूति–क्रोचे द्वारा प्रचारित 'इंटूशन'के सिद्धांतकी केंद्रीय शक्ति या क्षमता जो सूक्ष्मके आकलनमें समर्थ होती है।

सहजारि–पु० (सं०) वह जो प्रकृत्या शत्रु हो (जिससे संपत्ति आदिके संबंधमें झगड़ा होनेकी संभावना हो, जैसे सौतेला या चचेरा भाई)।

सहजार्श–पु० (सं०) बवासीरका एक प्रकार (जिसमें मुँह अंदरकी ओर होता है)।

सहजिया–पु० सहज पंथका अनुयायी।

सहजेंद्र–पु० (सं०) जन्मकुंडलीके तीसरे स्थानका अधिपति ग्रह (ज्यो०)।

सहजेतर–वि० (सं०) जो प्राकृतिक, जन्मजात न हो।

सहजै※–अ० सरलतापूर्वक, आसानीसे, अनायास।

सहजोदासीन–वि० (सं०) जो प्रकृत्या मित्र या शत्रु न हो, साधारण रूपमें परिचित।

सहत※–पु० दे० 'शहद'। † वि० सस्ता।

सहतरा–पु० (सं०) पित्तपापड़ा।

सहता–स्त्री० (सं०) दे० 'सहत्व'। † वि० सस्ता।

सहताना※–अ० क्रि० सुसताना, थकान मिटाना; † सस्ता होना।

सहतूत–पु० दे० 'शहतूत'।

सहत्व–पु० (सं०) साथ होनेका भाव; हेलमेल।

सहदइया–स्त्री० दे० 'सहदेई'।

सहदानी※–स्त्री०, चिह्न, निशानी।

सहदूल–पु० दे० 'शार्दूल'।

सहदेई–स्त्री० एक वनौषधि।

सहन–वि० (सं०) सहिष्णु; धीर; क्षमाशील; शक्तिशाली। पु० सहिष्णुता; सहनेकी क्रिया; क्षमा। **–शील**–वि० सहिष्णु; धीर; संतोषी।

सहन–पु० (अ०) आँगन; खुली हुई समतल भूमि; बड़ा थाल; एक बढ़िया रेशमी कपड़ा; मोटा सूती कपड़ा। **–ची**–स्त्री० दालानकी बगलमें बनाया हुआ छोटा मकान या सहन। **–दार**–वि० (मकान) जिसमें आँगन हो। **–(ने)लामकां**–पु० अन्तरिक्ष।

सहनक–स्त्री० (अ०) 'सहन' (बड़ा थाल)का अल्पार्थक, रिकावी, थाली; फातिमाकी निमाजकी रिकावी (मुसल०)। **मु० –से उठ जाना**–सतीत्वसे च्युत हो जाना, सतियोंकी श्रेणीसे बाहर हो जाना।

सहनभंडार※–पु० धनराशि, खजाना।

सहना–स० क्रि० झेलना, सहन करना, बर्दाश्त करना; फल भोगना; भार ग्रहण करना।

सहनाई※–स्त्री० दे० 'शहनाई'।

सहनायन–स्त्री० शहनाई बजानेवाली।

सहनीय–वि० (सं०) सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक; क्षमाके योग्य।

सहबा–पु० (अ०) शराब, मदिरा।

सहबाला–पु० दे० 'शहबाला'।

सहम–पु० (फा०) डर, भय। **–गीं**–वि० भयभीत। **–नाक**–वि० डरावना, भयंकर। (अ०) भाग; कमानसे छूटा तीर।

सहमना–अ० क्रि० डरना; शंका मानना; घबरा जाना।

सहमाना–स० क्रि० डराना; घबड़ाहटमें डालना।

सहर–पु० जादू, टोना; सिहोर; ※ शहर; (सं०) एक दानव; (अ०) भोर, सूर्योदयसे पहलेका काल। **–गही**–स्त्री० वह हलका भोजन जो रमजानके दिनोंमें रोजा रखनेवाले मुसलमान कुछ रात रहते कर लेते हैं (हिंदू स्त्रियाँ भी हरितालिका और जीवत्पुत्रिका व्रतोंसे पहले सहरगही (सरगही) खाती हैं)। **–गाह,–दम**–अ० तड़के, भोरमें। **–(रो) शाम**–पु० सुबहशाम।

सहरना†–अ० क्रि० दे० 'सिहरना'।

सहरा–पु० (अ०) जंगल, बीहड़ वन; रेगिस्तान। **–ए–आजम**–पु० अफ्रीकाका विशाल रेगिस्तान, सहारा मरुभूमि। **–ए क़ियामत**–पु० कियामतका मैदान जहाँ सारे मुर्दे एकत्र होंगे। **–गर्द,–नविर्द**–वि० जंगलोंमें फिरने, भटकनेवाला; मुसाफिर। **–गर्दी,–नविर्दी**–स्त्री० जंगलोंमें फिरना, वनमें विचरना। **–नशीं**–पु० वनवासी; तपस्वी।

सहराई–वि० जंगली, वन्य।

सहराना※–स० क्रि० दे० 'सहलाना'। अ० क्रि० सिहरना; डरना।

सहरि–पु० (सं०) सूर्य; साँड़।

सहरिया–पु० एक तरहका गेहूँ।

सहरी–स्त्री० शफरी मछली, सिधरी; (अ०) दे० 'सहरगही'। वि० प्रातःकालीन।

सहरुण–पु० (सं०) चंद्रमाका एक घोड़ा।

सहल–वि० (अ०) नरम, सहजमें होनेवाला, आसान। **–इनकार**–वि० सुस्त, ढीला, आलसी। **–इनकारी**–स्त्री० सुस्ती, ढिलाई, आलस्य।

सहलाना–स० क्रि० धीरे-धीरे मलना या हाथ फेरना, सुहराना; गुदगुदाना । अ० क्रि० गुदगुदी मालूम होना ।

सहवन|–पु० एक तेलहन ।

सहस–वि० (सं०) हासयुक्त, हँसता हुआ; * दे० 'सहस्र' । **–कर, –किरण, –गो***–पु० सूर्य । **–जीभ, –फण, –फन, –बदन, –मुख, –वदन, –सीस**–पु० शेषनाग । **–दल, –पत्र**–पु० कमल ।

सहसा–अ० (सं०) अचानक, एकाएक; प्रचंड वेगसे; हठात्; मुस्कराहटके साथ । **–दृष्ट**–पु० गोद लिया हुआ पुत्र, दत्तक पुत्र । वि० अचानक, हठात् देख पड़ा हुआ ।

सहसाक्रामक चमू–स्त्री० (शॉक ट्रूप्स) सेनाकी वह टुकड़ी जिसे अचानक ऐसा भयावह आक्रमण करनेकी शिक्षा दी गयी हो जिसमें असाधारण वीरता और साहसकी आवश्यकता हो ।

सहसाक्षि, सहसाखी*–पु० सहस्राक्ष, इंद्र ।

सहसान–पु० (सं०) मयूर; यज्ञ । वि० सहनशील ।

सहसानन*–पु० शेषनाग ।

सहसानु–पु० (सं०) मोर, मयूर; यज्ञ । वि० सहनशील, क्षमायुक्त ।

सहसोपचार–पु० (शॉक ट्रीटमेंट) चकित करने या झकझोर देनेवाला वह उपाय जो सहसा काममें लाया जाय, वह उपचार जो सहसा किसीकी मानसिक स्थितिपर प्रभाव डालकर रोगादिका शमन करनेके लिए किया जाय; आक्षोभ चिकित्सा ।

सहस्त–वि० (सं०) हस्तयुक्त; हथियार चलानेमें कुशल ।

सहस्य–पु० (सं०) पौष मास । **–चंद**–पु० शीतकालीन चंद्रमा ।

सहस्र–वि० (सं०) दस सौ, हजार । पु० हजारकी संख्या । **–कर, –किरण**–पु० सूर्य । **–कांडा**–स्त्री० श्वेत दूर्वा । **–केतु**–वि० हजार झंडोंवाला । **–गु**–वि० हजार गायोंवाला; हजार किरणोंवाला; हजार नेत्रोंवाला । पु० सूर्य; इंद्र । **–गुण**–वि० हजार गुना । **–घाती(तिन्)**–वि० एक हजारको मारनेवाला । पु० एक युद्ध-यंत्र । **–चक्षु(ष्)**–वि० हजार नेत्रोंवाला । पु० इंद्र । **–चरण**–वि० हजार चरणोंवाला । पु० विष्णु । **–चित्त**–पु० विष्णु । **–जलधार**–पु० एक पर्वत । **–जित्**–वि० हजार योद्धाओंको जीतनेवाला । पु० विष्णु; कृष्णका एक पुत्र; कस्तूरी । **–जिह्व**–वि० हजार जीभोंवाला । पु० शेषनाग । **–णी**–वि० हजार व्यक्तियोंका नेतृत्व करनेवाला । पु० भीष्म । **–**पु० पाठीन मछली । **–दंष्ट्री(ष्ट्रिन्)**–पु० एक तरहकी मछली, वोदाल मत्स्य । **–द**–वि० हजार गौएँ देनेवाला; बहुत बड़ा दानी । पु० शिव । **–दक्षिण**–पु० यज्ञविशेष । **–दल**–पु० शतदल, कमल । **–दीधिति**–पु० सूर्य । **–दृक्(श्)**–पु० इंद्र; विष्णु । **–धामा(मन्)**–पु० सूर्य । **–धार**–वि० हजार धाराओंवाला; हजार धाराओंमें बहनेवाला; हजार धारोंवाला । पु० विष्णुका चक्र । **–धारा**–स्त्री० देवताओं आदिके स्नानके लिए बना हुआ हजार छिद्रोंवाला पात्र, एक तरहका हजारा । **–धी**–वि० बहुत चतुर । **–धौत**–वि० हजार बार धोया हुआ । **–नयन, –नेत्र**–पु० विष्णु; इंद्र । **–नाम(न्)**–पु० विष्णु या किसी देवताके हजार नामोंवाला स्तोत्र । **–नामा(मन्)**–वि० हजार नामोंवाला । पु० विष्णु; शिव; अम्लवेत । **–पति**–पु० हजार गाँवोंका शासक या स्वामी । **–पत्र**–पु० कमल; एक पर्वत । **–परम**–वि० हजारमें सबसे बढ़ा हुआ । **–पर्ण**–पु० बाण; एक वृक्ष । **–पर्वा**–स्त्री० श्वेत दूर्वा । **–पात्(द्)**–पु० पुरुष; विष्णु; शिव; ब्रह्मा; एक ऋषि । **–पाद**–पु० सूर्य; विष्णु; एक तरहका जलपक्षी, कारंड । **–बाहु**–पु० कार्तवीर्य, बाणासुर; शिव; स्कंदका एक अनुचर । **–बुद्धि**–वि० बहुत चतुर । **–भक्त**–पु० एक त्योहार जिसमें हजारों आदमी खिलाये जाते हैं । **–भागवती**–स्त्री० देवीकी एक मूर्ति । **–भानु**–वि० हजार किरणोंवाला । पु० सूर्य । **–भित्(द्)**–पु० कस्तूरी; अम्लवेत । **–भुज**–पु० विष्णु; एक गंधर्व । वि० हजार भुजाओंवाला । **–भुजा**–स्त्री० दुर्गा, महालक्ष्मी (महिषासुरका वध करनेवाली) । **–मरीचि**–पु० सूर्य । **–मूर्ति**–पु० विष्णु । **–मूर्ध**–पु० विष्णु । **–मूर्धा(र्धन्)**–पु० विष्णु; शिव । **–मूलिका, –मूली**–स्त्री० कांडपत्री; मुद्गपर्णी; मूषिकपर्णी; बड़ी शतावर । **–मौलि**–पु० विष्णु । **–याजी(जिन्)**–वि० हजार (गायों)की प्राप्तिके लिए यज्ञ करानेवाला । **–युग**–पु० हजार युगोंका काल । **–रश्मि**–पु० सूर्य । **–रुक्(च्)**–पु० सूर्य । **–रोम(न्)**–पु० कंबल । **–लोचन**–पु० इंद्र; विष्णु । **–वक्त्र**–वि० हजार मुखोंवाला । **–वदन**–पु० विष्णु । **–वाक**–वि० हजार श्लोकोंवाला । **–वाक्(च्)**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र । **–वीर्य**–वि० बहुत बड़ा बली । **–वीर्या**–स्त्री० दूर्वा; महा शतावरी । **–वेध**–पु० कांजी; चूक । **–वेधि**–पु० हींग । **–वेधी(धिन्)**–वि० हजारोंको भेदनेवाला । पु० अंबुवेतस; कस्तूरी; हींग । **–शाख**–वि० हजार शाखाओंवाला (वेद) । **–शिखर**–वि० हजार चोटियोंवाला । पु० विंध्यश्रेणी । **–शीर्षा(र्षन्)**–वि० हजार सिरोंवाला । पु० विष्णु । **–श्रवण**–पु० विष्णु । **–सम**–वि० हजार साल चलनेवाला । **–साव्य**–पु० एक अयन । **–स्तुति**–स्त्री० एक नदी । **–स्रोत**–पु० एक पर्वत । **–हर्यश्व, –हर्याश्व**–पु० इंद्रका रथ । **–हस्त**–पु० शिव ।

सहस्रक–वि० (सं०) एक हजार; एक हजारतक; एक हजारवाला ।

सहस्रतय–वि० (सं०) हजार गुना । पु० एक हजारकी संख्या ।

सहस्रधा–अ० (सं०) हजार भागोंमें; हजार गुना; हजार तरहसे ।

सहस्रशः(शस्)–अ० (सं०) हजारहा ।

सहस्रांक–पु० (सं०) सूर्य ।

सहस्रांगी–स्त्री० (सं०) मयूर-शिखा; पीलू वृक्ष ।

सहस्रांशु–पु० (सं०) सूर्य । **–ज**–पु० शनि, शनैश्चर ग्रह ।

सहस्रा–स्त्री० (सं०) अंबष्ठा; मयूर-शिखा ।

सहस्राक्ष–पु० (सं०) इंद्र; पुरुष; शिव; विष्णु; एक पीठ-स्थान । वि० हजार आँखोंवाला; सतर्क ।

सहस्राख्य–पु० (सं०) एक पर्वत ।

सहस्रात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) ब्रह्मा ।

सहस्राधिपति–पु० (सं०) एक हजार गाँवोंका शासक राजप्रतिनिधि; एक हजार व्यक्तियोंका नायक ।

सहस्रानन–पु० (सं०) विष्णु; शेषनाग ।

सहस्राब्द–पु०, **सहस्राब्दी**–स्त्री० (सं०) हजार वर्षोंका समय (माइलीनियम) ।

सहस्रायु(स्)–वि० (सं०) हजार वर्ष जीनेवाला ।

सहस्रार–पु० (सं०) सहस्र-दलका एक कल्पित कमल (शून्य चक्र । यह मनुष्यके मस्तकमें उलटा लटका माना जाता है–यो०); बारहवाँ स्वर्ग (जै०); विचारशक्ति और शरीरकी विकास करनेवाली ग्रंथियोंका केन्द्र (विज्ञान) । **–ज**–पु० एक देवता (जै०) ।

सहस्रार्चि(स्)–वि० (सं०) सौ किरणोंवाला । पु० सूर्य ।

सहस्रावर–पु० (सं०) पाँच सौसे एक हजार पणतकका अर्थदंड ।

सहस्रावर्ता–स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी ।

सहस्रास्य–पु० (सं०) विष्णु; अनंत नामक नाग ।

सहस्री(स्रिन्)–वि० (सं०) एक हजार वस्तुएँ आदि रखनेवाला; एक हजार सैनिकोंवाला; एक हजार पण दंड देनेवाला; एक हजारतकका (अर्थदंड) । पु० हजार आदमियोंका दल; एक हजार सैनिकोंका नायक ।

सहस्रेक्षण–पु० (सं०) इंद्र ।

सहस्वान्(स्वत्)–वि० (सं०) बलवान्, शक्तिशाली ।

सहांपति–पु० (सं०) ब्रह्मा; एक बोधिसत्त्व; एक नाग ।

सहांशी–पु० (सं०) साझीदार, हिस्सेदार (को-शेयरर) ।

सहा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; एक लोक (बौ०); पीत दंडोत्पला; रास्ना; घृतकुमारी; मुद्गपर्णी; श्वेत झिंटी; सर्पकंकाली; स्वर्णक्षीरी; तरणीपुष्प; नखभेपज; मेंहदी ।

सहा(हस्)–पु० (सं०) हेमंत ऋतु; अगहन ।

सहाइ*–पु० सहायक । स्त्री० सहायता ।

सहाई*–पु० सहायक, सहायता करनेवाला । स्त्री० सहायता ।

सहाउ–पु० दे० 'सहाय' ।

सहाचर–पु० (सं०) सहचर; पीली झिंटी, कटसरैया ।

सहाद्वय–पु० (सं०) बनमूँग ।

सहाध्यायी(यिन्)–पु० (सं०) सहपाठी; एक ही, समान विषयका अध्ययन करनेवाला ।

सहाना–पु० एक राग । * वि० दे० 'शहाना' ।

सहानी–वि० पीलापन लिये हुए लाल रंगका । पु० ऐसा रंग ।

सहानुगमन–पु० (सं०) दे० 'सहमरण' ।

सहानुसरण–पु० (सं०) दे० 'सहगमन' ।

सहानुभूति–स्त्री० (सं०) किसीके दुःखादिसे दुःखी होना, हमदर्दी ।

सहान्य–पु० (सं०) पहाड़ ।

सहापराधी–पु० (एकांप्लिस) किसी अपराधमें मुख्य अपराधीका साथ देनेवाला, उसकी सहायता करनेवाला ।

सहाव–पु० दे० 'शहाव'; (अ०) बादल, मेघ ।

सहाबत–स्त्री० (अ०) मित्रता; संग, साथ ।

सहाबी–पु० (अ०) वह आदमी जो इसलाम स्वीकार कर मुहम्मदके साथ रहा हो और मृत्युपर्यंत मुसलमान रहा हो । (स्त्री० 'सहाबिया'।)

सहाय–पु० (सं०) साथी, अनुयायी; मैत्री; साथ; सहायक; सहायता, सहारा, भरोसा; आश्रय; चक्रवाक; शिव; एक गंधद्रव्य । **–करण**–पु० मदद करना । **–कृत्**–पु० मित्र, साथी । **–कृत्य**–पु० दे० 'सहायकरण' ।

सहायक–पु० (सं०) सहायता करनेवाला, सहकारी; अधीनतामें काम करनेवाला । **–आजीविका**–स्त्री० (सबसिडियरी आक्युपेशन) मुख्य पेशे या कामसे होनेवाली आमदनीसे पूरा न पड़नेपर सहायताके रूपमें किया जानेवाला कोई अन्य कार्य या धंधा । **–नदी**–स्त्री० वह नदी जो किसी बड़ी नदीमें मिलती हो । **–संपादक**–पु० वह व्यक्ति जो किसी संपादकको संपादन-कार्यमें सहायता देता हो ।

सहायता–स्त्री० (सं०) साथ, मैत्री; मदद; मित्र-मंडली । **–गृह**–पु० (रेस्क्यू होम) खतरे या संकटमें पड़े हुए लोगोंकी सहायताके लिए स्थापित गृह ।

सहायत्व–पु० (सं०) साथ, मैत्री; मदद ।

सहायन–पु० (सं०) साथ देना; साथ जाना ।

सहायवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसके मित्र हों; जिसे सहायता प्राप्त हो ।

सहायी(यिन्)–वि० (सं०) साथ जानेवाला; अनुगमन करनेवाला ।

सहार–पु० सहना, बरदाश्त करना; सहनशीलता; (सं०) आमका पेड़; महाप्रलय ।

सहारना*–स० क्रि० सहन करना–'भूख और प्यास सहारी'–रत्नाकर; जिम्मेदारी लेना, सँभालना; गवारा करना ।

सहारा–पु० भरोसा, मदद; आश्रय; टेक ।

सहारोग्य–वि० (सं०) नीरोग, रोगरहित ।

सहार्थ–पु० (सं०) आनुषंगिक विषय; सहयोग; साधारण विषय । वि० समान अर्थवाला; समान उद्देश्यवाला । **–नाश**–वि० हानि-लाभ, सुख-दुःखमें एक-सा रहनेवाला ।

सहार्द–वि० (सं०) स्नेहयुक्त ।

सहालग–पु० शुभ वर्ष (ज्यो०); शादी, विवाहके दिन ।

सहावल–पु० (फा० 'शाकूल') लटकन, साहुल (दीवारकी सिधाई नापनेका साधन) ।

सहिंजन, सहिजन–पु० एक वृक्ष, शोभांजन ।

सहिँदोली*–स्त्री० सखी ।

सहिजानी*–स्त्री० दे० 'सहिदानी' ।

सहित–वि० (सं०) सहन किया हुआ; सँभाला हुआ; हितकर; युक्त । अ० साथ, समेत । **–कुंभक**–पु० प्राणायामका एक प्रकार ।

सहितव्य–वि० (सं०) सहने योग्य ।

सहिता(तृ)–वि० (सं०) सहन करनेवाला, सहनशील ।

सहित्र–पु० (सं०) सहिष्णुता, सहनशीलता; धैर्य ।

सहिथी*–स्त्री० बरछी ।

सहिदान*–पु० पहिचान, चिह्न ।

सहिदानी*–स्त्री० निशान, पहिचान, परिचय-चिह्न,–'दीन्हि राम तुमकहँ सहिदानी'–रामा० ।

सहिबाला†–पु० दे० 'शहबाला' ।

सहिर–पु० (सं०) पर्वत ।

सहिष्णु–वि० (सं०) सहनेवाला, सहनशील । पु० विष्णु; एक ऋषि ।

सहिष्णुता–स्त्री०, **सहिष्णुत्व**–पु० (सं०) सहनशीलता, तितिक्षा; क्षमा ।

सही–वि० दे० 'सहीह' । स्त्री० हस्ताक्षर; * सखी । अ० निश्चयपूर्वक । **–सलामत**–वि० नीरोग, स्वस्थ; दोषरहित; निरापद । मु० **–भरना**, सत्यताकी साक्षी देना ।

सहीफ़ा–पु० (अ०) पुस्तक; मासिकादि पत्र, रिसाला; धर्मग्रंथ; पत्र, चिट्ठी । **–(फ़ए)आसमानी**–पु० इलहामी किताब, ईश्वरप्रदत्त धर्मग्रंथ ।

सहीह–वि० (अ०) स्वस्थ; दोषरहित; ठीक, दुरुस्त; पूरा, अखंड । स्त्री० दस्तखत, निशान; तसदीक; वह हदीस जिसका प्रमाण पूर्णतः मान्य हो; वह पुस्तक जिसमें सही हदीसें लिखी हों । **–सलामत**–वि० दे० 'सहीसलामत' । **–सालिम**–वि० पूरा, ज्योंका त्यों; सही-सलामत ।

सहीहुलअक्ल–वि० (अ०) जिसकी अक्ल दुरुस्त हो; शुद्ध बुद्धि ।

सहीहुलनसब–वि० (अ०) जिसका नसब (कुल) निर्दोष हो ।

सहीहुलमिज़ाज–वि० (अ०) स्वस्थ; जिसका मिजाज दुरुस्त हो, शुद्धात्मा ।

सहुँ*–अ० सामने, सम्मुख; तरफ, ओर ।

सहुरि–पु० (सं०) सूर्य । स्त्री० पृथ्वी; अग्नि ।

सहूलत–स्त्री० (अ०) नरमी; आसानी ।

सहूलियत–स्त्री० (अ०) दे० 'सहूलत' ।

सहृदय–वि० (सं०) कोमलचित्त; दयालु; सच्चा; समझदार; प्रसन्नमना; रसिक । पु० विद्वान् व्यक्ति; वह जो गुण पहचाने; रसका अनुभव करनेवाला व्यक्ति ।

सहृदयता–स्त्री० (सं०) दयालुता, करुणा; चित्तकी कोमलता; रसज्ञता ।

सहृल्लेख–वि० (सं०) संदिग्ध, आपत्तिजनक । पु० आपत्तिजनक खाद्य पदार्थ ।

सहेज†–पु० जामन, जावन ।

सहेजना–स० क्रि० सँभालना; जाँचना; कोई चीज सचेत, सावधान करके सौंपना ।

सहेट*–पु० दे० 'सहेत' ।

सहेटी*–वि०, स्त्री० अभिसारिणी–'दीठि भई मिति ईठि सुजान न देहि क्यों पीठि जो दीठि सहेटी'–घन० (सहेट = संकेतस्थल) ।

सहेत*–पु० प्रेमी-प्रेमिकाके मिलनेका निश्चित स्थान, संकेतस्थल ।

सहेतु–वि० (सं०) कारणयुक्त, युक्तियुक्त । अ० हेतुसहित ।

सहेतुक–वि० (सं०) सकारण, सोद्देश्य ।

सहेल–वि० (सं०) क्रीड़ायुक्त; लापरवाह । † पु० जमीदारको असामीसे बेगार आदिके रूपमें मिलनेवाली सहायता ।

सहेलरी*–स्त्री० सखी, सहेली ।

सहेली–स्त्री० साथ, संग रहनेवाली स्त्री; साथिन; दासी, सेविका ।

सहैया–पु० सहने, बरदाश्त करनेवाला; * सहायक, मददगार ।

सहोणी*–स्त्री० सखी ।

सहोक्ति–स्त्री० (सं०) साथ बोलना; एक अर्थालंकार जहाँ संग, सहित आदि पदोंका प्रयोग करते हुए एक ही कामके साथ अन्य कितनी ही बातोंका होना मनोरंजक ढंगसे वर्णित किया जाय ।

सहोटज–पु० (सं०) मुनियोंकी पर्णकुटी (जो कभी-कभी उनके साथ जला दी जाती है) ।

सहोढ–वि० (सं०) जो चोरीके मालके साथ पकड़ा गया हो । पु० ऐसा चोर; बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (जो विवाहके पूर्वके गर्भसे उत्पन्न हुआ हो) ।

सहोत्थ–वि० (सं०) सहज ।

सहोदक–वि० (सं०) दे० 'समानोदक' ।

सहोदर–वि० (सं०) सगा, एक मातासे उत्पन्न; एक जैसा । पु० सगा भाई (स्त्री० सहोदरा) ।

सहोपमा–स्त्री० (सं०) उपमाका एक प्रकार (सा०) ।

सहोर–पु० साधु, संत; सिहोर, शाखोट । वि० (सं०) उत्तम,

बढ़िया ।

सहोवल–पु० (सं०) निष्ठरता, दौरात्म्य ।

सह्य–वि० (सं०) जो सहा जा सके; सहन करनेमें समर्थ; मुकाबला करनेमें समर्थ; शक्तिशाली; प्रिय, सुमधुर । पु० सह्याद्रि-श्रेणी; आरोग्य; सहायता; उपयुक्तता । **–कर्म(न्)** –पु० सहायता । **–वासिनी**–स्त्री० दुर्गा ।

सह्यात्मजा–स्त्री० (सं०) कावेरी नदी ।

सह्याद्रि–पु० (सं०) बंबई प्रांतकी एक पर्वतश्रेणी जो समुद्रतटके समीप स्थित है ।

सह्ल–पु० (सं०) पर्वत ।

सह्व–पु० (अ०) भूल-चूक; प्रमाद ।

सह्वन्–अ० (अ०) भूलसे, गलतीसे ।

सां–वि० (फा०) तुल्य, समान (जैसे यक सां) ।

साँईं–पु० स्वामी, मालिक; ईश्वर; पति; मुसलमान फकीर ।

साँकड़–स्त्री० जंजीर, सीकड़; पैरका एक गहना, साँकड़ा ।

साँकड़ा–पु० पैरका एक गहना ।

सांकथिक–वि० (सं०) वात करनेमें कुशल ।

सांकथ्य–पु० (सं०) वार्तालाप ।

साँकर*–पु० संकट, कष्ट । स्त्री० जंजीर, सीकड़ । वि० सँकरा, तंग; कष्टयुक्त ।

साँकरा*–पु० कष्ट–'साँकरेकी साँकरन सनमुख होत तोरै···'–रामचंद्रिका; † साँकड़ा । वि० तंग ।

सांकरिक–वि० (सं०) वर्णसंकर ।

सांकर्य–पु० (सं०) मिश्रण, मिलावट, संकरता ।

सांकल–वि० (सं०) जोड़नेसे वढ़ा हुआ ।

साँकल†–स्त्री० श्रृंखला, जंजीर; सिकड़ी ।

सांकल्पिक–वि० (सं०) कल्पनाप्रसूत, कल्पनापर आधृत ।

सांकाश्य–पु० (सं०) (जनकके भाई) कुशध्वजकी राजधानी ।

सांकाश्या–स्त्री० (सं०) दे० 'सांकाश्य' ।

साँकाहुली–स्त्री० शंखाहुली ।

सांकेतिक–वि० (सं०) संकेत-संबंधी, संकेतवाला; व्यवहार-सिद्ध; संकेत रूपमें होनेवाला; शब्दकी अभिधा शक्तिसे निकलनेवाला । **–भाषा**–स्त्री० बनावटी गोपनीय भाषा (कोड लैंग्वेज) ।

सांकेत्य–पु० (सं०) ठहराव, निश्चय (प्रेमिका आदिके साथ) ।

सांक्रमिक–वि० (सं०) संक्रमण करनेवाला, संक्रामक ।

सांक्षेपिक–वि० (सं०) संक्षिप्त, संकुचित, छोटा किया हुआ ।

सांख्य–वि० (सं०) संख्या-संबंधी; गणना करनेवाला; विचार, विवेक करनेवाला । पु० छः दर्शनोंमेंसे एक जिसके कर्ता कपिल ऋषि थे (इसमें प्रकृति ही सारे विश्वका मूल और पुरुष द्रष्टामात्र माना गया है; यह ईश्वरको सृष्टिका रचयिता और संचालक न स्वीकार कर आत्माके शेष चौबीस तत्त्वोंसे पार्थक्यके सम्यक् ज्ञानको ही मोक्षका साधन मानता है); इस दर्शनका अनुयायी; शिव । **–प्रसाद,–मुख्य**–पु० शिव ।

सांख्यायन–पु० (सं०) एक आचार्य (इन्होंने सांख्यायन कामसूत्र और ऋग्वेदके सांख्यायन ब्राह्मणकी रचना की) ।

सांख्यिक–पु० (स्टैटिस्टीशियन) जनन, मरण, उत्पादन आदि-संबंधी प्रामाणिक आँकड़े एकत्र करनेवाला कर्मचारी अथवा विशेषज्ञ, आंकिक ।

सांख्यिकी–स्त्री० (स्टैटिसटिक्स) जनन, मरण, उत्पादन, अपराध आदि-संबंधी आँकड़े (संख्याएँ) प्रामाणिक रूपसे एकत्र करने, तैयार करने आदिकी विद्या; इस तरह तैयार किये गये आँकड़ोंका समूह ।

सांख्यिकीय मंत्रणाकार–पु० (स्टैटिस्टिकल एडवाइजर) जनन, मरण, उत्पादन आदिके आँकड़ोंके संग्रह, अध्ययन, विवेचन इत्यादिके संबंधमें परामर्श देनेवाला (आंकिक मंत्रणाकार) ।

सांग–वि० (सं०) अंगयुक्त; प्रत्येक अवयवसे पूर्ण; छः अंगोंसे युक्त । **–ग्लानि**–वि० क्लांत, थका हुआ । **–ज**–वि० बालोंसे ढका हुआ, केशपूर्ण ।

साँग–स्त्री० वरछी; कुएँमें पानीका सोता खोलनेका एक औजार; भारी वोझ उठानेका डंडा ।

सांगतिक–वि० (सं०) संगति-संबंधी; सामाजिक । पु० अतिथि; अजनवी; वह जो किसी कारबारके सिलसिलेमें आया हो ।

सांगम–पु० (सं०) मेल, योग, संगम ।

साँगरी†–स्त्री० एक रंग ।

साँगी–स्त्री० वरछी–'चले निसाचर आयसु माँगी । गहि कर भिंडिपाल वर साँगी'–रामा०; जुएपर गाड़ीवानके बैठनेका स्थान; चीजें रखनेके लिए एक्केमें नीचे लगी हुई जाली ।

सांगुष्ठा–स्त्री० (सं०) गुंजा, घुँघची ।

सांगोपांग–वि० (सं०) अंगों, उपांगों और उपनिषदोंसे युक्त; अंगोंसे युक्त, पूर्ण ।

सांग्रहिक–वि० (सं०) संग्रह करनेवाला, संग्रहकुशल ।

सांग्रामिक–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी; यौद्धिक । पु० सेनापति । **–गुण**–पु० राजाके यौद्धिक गुण । **–परिच्छद**–पु० युद्धके उपकरण ।

सांघाटिका–स्त्री० (सं०) दूती, कुटनी; संभोग, मैथुन; जोड़ा; एक पेड़ ।

सांघात–पु० (सं०) दल, यूथ, समूह ।

सांघातिक–वि० (सं०) दल-संबंधी; मारात्मक, हननकारक (फ़ैटल) । पु० जन्मनक्षत्रसे सोलहवाँ नक्षत्र ।

सांघिक–वि० (सं०) (भिक्षुओं आदिके) संघ-संबंधी ।

साँच*–वि० ठीक, सत्य । पु० सच्ची वात ।

साँचर नमक*–पु० सौवर्चल लवण ।

साँचला*–वि० सत्यवादी ।

साँचा–पु० वह ढाँचा जिसमें कोई गीली चीज भरकर खास शकलकी चीज ढालते हैं (मोल्ड); छोटा नमूना; प्रतिमान (मॉडल); कपड़े आदिपर फूल आदि छापनेका लकड़ीका ठप्पा । * वि० सच्चा । **–(चे)में ढला**–सुडौल, सुंदर ।

सांचारिक–वि० (सं०) जंगम ।

साँचिया–पु० साँचा बनानेवाला; साँचेमें कोई चीज ढालनेवाला ।

साँचिला*–वि० सच्चा–'एक सनेही साँचिलो केवल कोसल पालु' –विनय० ।

साँची–पु० एक तरहका पान । स्त्री० छपाईका एक प्रकार जिसमें पंक्तियाँ वेंड़े रखी जाती हैं ।

सांजन–पु० (सं०) गिरगिट । वि० रंगवाला; जो विशुद्ध न हो ।

साँझ*–स्त्री० संध्या, सायंकाल ।

साँझला†–पु० एक हलसे दिनभरमें जुत जानेवाली भूमि ।

साँझा–पु० दे० 'साझा' ।

साँझी–स्त्री० मंदिरमें देवमूर्तिके सामने चौक पूरने जैसी की जानेवाली फूलोंकी सजावट (यह सजावट विशेषकर पितृपक्षमें शामको ही की जाती है); रंगीन वुकनी ।

साँट–स्त्री० छड़ी, कोड़ा; छड़ीकी चोटका दाग; रक्त पुनर्नवा ।

साँटा–पु० डंडा; ईख; कोड़ा; घोड़ेकी एँड; करघेका डंडा, जिसके ऊपर नीचे करनेसे तानेके तार ऊपर नीचे होते रहते हैं ।

साँटिया*–पु० डुग्गी पीटनेवाला ।

साँटी–स्त्री० पतली छड़ी, बाँसकी कमची, कैन; * मेल-जोल; वदला, प्रतिकार ।

साँठ–पु० साँटा; ईख; अन्न पीटनेका डंडा; सरकंडा; मेल, योग । **–गाँठ**–स्त्री० हेल-मेल; गुप्त-संबंध; दुरभिसंधि, साजिश ।

साँठना*–स० क्रि० पकड़े रहना ।

साँठि, साँठी*–स्त्री० पूँजी, धन 'वाम्हन तहवाँ लेइका गाँठि साँठि सुठि थोर'–प० ।

सांड–वि० (सं०) अंडयुक्त, जो वधिया न किया गया हो ।

साँड़–पु० मृतककी स्मृतिमें दागकर छोड़ा हुआ वृषभ; वह वृषभ या घोड़ा जो वधिया न कर जोड़ खिलानेके लिए पाला गया हो । वि० शक्तिशाली, मोटा-ताजा; आवारा, लंपट । मु० **–की तरह घूमना**–आजादी और वेफिक्रीसे घूमते फिरना । **–की तरह डकरना**–जोरसे चिल्लाना ।

साँड़नी–स्त्री० (तेज चालवाली) ऊँटनी ।

साँड़ा–पु० गिरगिटकी जातिका एक जंतु जिसका तेल दवाके काम आता है ।

साँड़िया–पु० तेज रफ्तारवाला ऊँट; साँड़नीका सवार।

सांत*–वि० दे० 'शांत'; (सं०) अंतयुक्त; प्रसन्न।

सांततिक–वि० (सं०) संतति प्रदान करनेवाला।

सांतपन–पु० (सं०) एक तरहका तप या व्रत। **–कृच्छ्र**–पु० दे० 'सांतपन'।

सांतर–वि० (सं०) अंतर या अवकाशयुक्त; झीना।

सांतानिक–वि० (सं०) फैलनेवाला (जैसे वृक्ष); संतान-संबंधी; संतान वृक्ष-संबंधी।

सांतापिक–वि० (सं०) ताप पहुँचानेवाला; तप्त करनेमें समर्थ; कष्ट देनेवाला।

सांति*–स्त्री० दे० 'शांति'।

सांत्व–पु० (सं०) दे० 'सांत्वन'। **–वाद**–पु० ढारस बँधानेवाली बात।

सांत्वन–पु० (सं०) ढाढ़स बँधाना; तसल्ली; तुष्ट करनेका साधन; तुष्ट करनेवाले शब्द; अभिवादन तथा कुशल-वार्ता; प्रेम, प्रणय।

सांत्वना–स्त्री० (सं०) दे० 'सांत्वन'।

सांत्वित–वि० (सं०) तुष्ट किया हुआ; ढाढ़स बँधाया हुआ, आश्वस्त।

साँथरी–स्त्री० दे० 'साथरी'।

साँथा†–पु० चमड़ा कूटनेका एक औजार।

साँथी–स्त्री० करघेमें लगनेवाली एक लकड़ी; तानेके सूतोंका नीचे-ऊपर होना।

साँद, साँदा†–पु० दे० 'ठेंगुर'।

सांदीपनि–पु० (सं०) एक मुनि जो कृष्ण और वलरामके गुरु थे (कहा जाता है कि उनके पुत्रको पंचजन नामक एक दानवने पकड़कर जलके अंदर रखा था और कृष्णने गुरुदक्षिणाके रूपमें उस दानवको मारकर उनके पुत्रको लौटाया था)।

सांदृष्टिक–वि० (सं०) तत्काल प्रत्यक्ष होनेवाला; प्रत्यक्ष; तात्कालिक। **–न्याय**–पु० एक न्याय जिसका प्रयोग पहले जैसा दृश्य देखनेसे उसकी स्मृति होनेपर किया जाता है।

सांद्र–वि० (सं०) घना, ठस, गफ; मोटा; एकमें मिला हुआ; हृष्ट-पुष्ट; अतिशय, अत्यधिक; प्रचंड; स्निग्ध; चिकना; कोमल; सुंदर, प्रिय। पु० राशि, झुंड; जंगल। **–कुतूहल**–वि० कुतूहलमें पड़ा हुआ, चकित। **–त्वक्क**–वि० मोटे आवरण, छालवाला। **–पुष्प**–पु० बहेड़ा। **–प्रसाद,–मेह**–पु० मधुमेह रोगका एक भेद। **–मणि**–पु० एक ऋषि। **–मूत्र**–वि० जिसका पेशाब गाढ़ा और चिपचिपा हो। **–मेह**–पु० प्रमेहका एक भेद, सांद्रप्रसादमेह। **–स्निग्ध**–वि० गाढ़ा और लसदार। **–स्पर्श**–वि० जो छूनेमें चिपचिपा हो।

सांध–वि० (सं०) संधि, जोड़-संबंधी; जो जोड़पर हो।

साँध*–पु० निशाना, लक्ष्य।

साँधना*–स० क्रि० निशाना लगाना–'करतल चाप रुचिर सर साँधा'–रामा०; सिद्ध करना; साधना; सानना, मिलाना, गूँधना–'तेहिमँह बिप्रमांस खल साँधा'–रामा०।

सांधिक–पु० (सं०) संधि करनेवाला; शौंडिक, कलाल।

सांधिविग्रहिक–पु० (सं०) संधि और युद्धका निश्चय करनेवाला मंत्री।

सांधिवेली–स्त्री० (सं०) संध्याकालमें फूलनेवाली बेल।

सांध्य–वि० (सं०) प्रातःकाल या संध्या-संबंधी। **–कुसुमा**–स्त्री० स्त्री० शामको फूलनेवाला पौधा या बेल। **–गोष्ठी**–स्त्री० (ईवनिंग पार्टी) संध्याकालमें होनेवाली मित्रोंकी गोष्ठी। **–भोजन**–पु० ब्यालू।

साँप–पु० पेटके बल रेंगनेवाला एक प्रसिद्ध विषैला कीड़ा, सर्प; समयका लाभ उठानेवाला विश्वासघाती (ला०); जलानेपर साँपकी तरह होनेवाला आतिशबाजीका दाना। **–धरण***–पु० शिव। मु० **–उतारना**–साँपका जहर दूर करना। **–कलेजे या छातीपर लोटना**–बहुत व्याकुल होना; भारी सदमा पहुँचना। **–का पाँव देखना**–असंभव बातके लिए प्रयत्न करना। **–का बच्चा**–दुष्ट, जालिम। **–की तरह जमीन पकड़ना**–जरा भी न हिलना। **–की तरह झाड़ या मारकर रह जाना**–वश न चलना, प्रयत्नमें विफल होना। **–कीलना**–मंत्र द्वारा साँपको काटनेसे रोकना। **–की-सी केंचुली झाड़ना या डालना**–साफ-सुथरा होना; आरोग्य-लाभ करना; पुराना भद्दा रूप बदलना; अवसरवादिता, समयानुकूल रंग रूप बनाना; वैसा आचरण करना (ला०)। **–की लहर**–सर्पदंशसे होनेवाली छटपटाहट। **–के मुँहमें**–खतरेमें। **–खेलाना**–मंत्रके बलसे साँप पकड़ना। **–छछूँदरकी गति या दशा**–द्विविधाकी स्थिति। **–लहराना**–साँपकी तरह आचरण करना; बहुत व्याकुल होना; ईर्ष्यासे जलना। **–सा लोटना**–बहुत व्याकुल होना। **–सूँघ जाना**–साँपका काटना या काटनेसे मर जाना। **–से खेलना**–खतरनाक आदमीसे मेल-मिलाप करना।

सांपत्तिक–वि० (सं०) संपत्ति-संबंधी, आर्थिक।

सांपद–वि० (सं०) संपत्ति-संबंधी; ···के उपकरण-संबंधी।

सांपन्निक–वि० (सं०) विलासमय जीवन व्यतीत करनेवाला।

सांपराय–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी; पारलौकिक। पु० संघर्ष; परलोक; परलोककी प्राप्तिका साधन; परवर्ती जीवनके संबंधमें पूछताछ करना; अनिश्चय; संकट; संकटमें साथ देनेवाला व्यक्ति।

सांपरायण–पु० (सं०) वह जो परलोक ले जाय (मृत्यु)।

सांपरायिक–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी, यौद्धिक; पारलौकिक; संकटमें सहायता करनेवाला। पु० युद्ध; युद्ध-रथ। **–कल्प**–पु० एक प्रकारका व्यूह।

साँपा†–पु० सियापा।

सांपादिक–वि० (सं०) प्रभावोत्पादक।

साँपिन–स्त्री० सर्पिणी, साँपकी मादा; घोड़े, बैलके शरीरपरकी एक तरहकी भौंरी जो बुरी मानी जाती है; † वह गाय जो बराबर जीभ निकाला करती हो।

साँपिया–पु० साँपके रंगसे मिलता हुआ रंग।

सांप्रत–वि० (सं०) उपयुक्त; उचित; सामयिक; ठीक; वर्तमान-काल-संबंधी। अ० अब; तत्काल, अभी; उपयुक्त रूपमें। – **–काल**–पु० वर्तमान काल।

सांप्रतिक–वि० (सं०) आधुनिक, वर्तमानकाल-संबंधी (करेंट); उपयुक्त, ठीक।

सांप्रदायिक–वि० (सं०) परंपरा-संबंधी; संप्रदाय-संबंधी; किसी संप्रदायसे संबंध रखनेवाला।

सांप्रदायिकता–स्त्री० (सं०) सांप्रदायिक होनेका भाव; केवल अपने संप्रदायका हित चाहना और दूसरे संप्रदायके हितोंकी उपेक्षा करनेको तैयार रहना (कम्यूनलिज्म)।

सांबंधिक–वि० (सं०) संबंध-विषयक, संबंध-जन्य। पु० विवाह-जन्य संबंध; ऐसी बात जो विवाह द्वारा संबद्ध लोगोंमें होती है; साला।

सांब–पु० (सं०) जांबवतीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र; शिव। **–पुर**–पु० चंद्रभागाके तटपर स्थित एक प्राचीन नगर। **–पुराण**–पु० एक उपपुराण। **–पुरी**–स्त्री० दे० 'सांबपुर'।

सांबर–पु० संबल, पाथेय; (सं०) साँभर हिरन; साँभर नमक।

सांबरी–स्त्री० (सं०) माया, जादूगरी; जादूगरनी।

सांबाधिक–पु० (सं०) रात्रिका दूसरा याम।

सांभर–पु० (सं०) संभर झीलसे प्राप्त लवण।

साँभर–पु० राजपूतानेकी एक झील; दे० 'सांभर'; एक तरहका हिरन; * संबल, पाथेय–'साँभर सोइ गाँठि जो होई'–प०।

सांभवी–स्त्री० (सं०) रक्त लोध्र; संभावना।

सांभाष्य–पु० (सं०) वार्तालाप, संभाषण।

साँमुहे†–अ० सामने।

सांयमन–वि० (सं०) संयमन-संबंधी।

सांयात्रिक–पु० (सं०) समुद्री व्यापार करनेवाला, पोतवणिक्; यान; तड़का, सवेरा।

सांयुग–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी।

सांयुगीन–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी; रणकुशल। पु० बहुत बड़ा योद्धा; रणकुशल व्यक्ति।

सांराविण–पु० (सं०) शोर-गुल, हो-हल्ला ।

सांँवक–पु० एक अन्न, सांँवाँ ।

साँवत–पु० एक राग; ⁕ योद्धा ।

सांवत्सर–वि० (सं०) वार्षिक । पु० गणक, ज्योतिषी, पंचांग वनानेवाला; चांद्रमास । **–रथ**–पु० सूर्य ।

सांवत्सरक–वि० (सं०) एक वर्षपर दिया जानेवाला (ऋण) । पु० गणक, ज्योतिषी ।

सांवत्सरिक–वि० (सं०) वार्षिक; वार्षिक यज्ञ-संवंधी । पु० गणक । **–श्राद्ध**–पु० हर साल किया जानेवाला श्राद्ध ।

सांवत्सरी–स्त्री० (सं०) मृत्युके एक साल वाद होनेवाला श्राद्ध ।

सांवत्सरीय–वि० (सं०) दे० 'सांवत्सर' ।

साँवर†–वि० साँवला ।

साँवलताई†–स्त्री० साँवलापन ।

साँवला–वि० श्याम वर्णका । पु० कृष्ण; पति; प्रेमी । **–पन**–पु० श्यामता ।

साँवलिया–वि० श्याम रंगका । पु० कृष्ण; पति; प्रेमी ।

साँवाँ–पु० चेना जैसा एक कदन्न ।

सांवादिक–वि० (सं०) (वोलचालमें) प्रचलित, व्यवहारमें आनेवाला; विवादग्रस्त । पु० नैयायिक; (न्यूज़मैन) सड़कपर घूम-घूमकर समाचार-पत्र वेचनेवाला; समाचार भेजनेवाला, पत्रकार; पत्र-प्रतिनिधि ।

सांविद्य–पु० (सं०) ऐकमत्य ।

सांविधिक–वि० (सं०) संविधिके रूपमें प्रचलित (स्टैट्यूअरी) ।

सांवृत्तिक–वि० (सं०) भ्रामक, मिथ्या ।

सांवेदिक–वि० (सं०) संवेदन सूत्रोंसे सम्वद्ध (सेंसरी) ।

सांव्यवहारिक–वि० (सं०) प्रचलित, जो व्यवहारमें आता हो । पु० साझेमें व्यापार करनेवाला व्यक्ति ।

सांश–वि० (सं०) हिस्सोंवाला ।

सांशयिक–पु० (सं०) संदिग्ध; खतरनाक; संदेह करनेवाला । पु० संदिग्ध या खतरनाक काम ।

साँस–स्त्री० नाक या मुँहसे अंदर खींची और वाहर निकाली जानेवाली हवा; गुंजाइश; फुरसत; विश्राम; दमा; हवा निकलनेका छेद; किसी प्रकारकी सक्रियता; किसी चीजके फटने आदिसे होनेवाली संधि, दराज । मु० **–अंदरकी अंदर, वाहरकी वाहर रह जाना**–भयसे स्तब्ध रह जाना । **–उखड़ना**–हाँफना, साँस फूलना । **–उड़ना**–दम रुकना । **–उलटी चलना**–आसन्न मृत्यु होना । **–ऊपरको चढ़ना**–आसन्न-मृत्यु होना । **–ऊपर-नीचे होना**–वहुत व्यस्त होना; साँस रुकना । **–का शुमार होना**–दे० 'साँस गिनना ।' **–खींचना**–ज़ोरसे साँस लेना; दम साधना । **–गिनना**–आसन्नमृत्युकी साँस देखकर हालतका निश्चय करना । **–चढ़ना**–हाँफना, साँस फूलना । **–चढ़ाना**–दम साधना, मुर्दा वन जाना । **–चलना**–ज़िंदा होना । **–छूटना**–मृत्यु होना, साँस रुक जाना । **–छोड़ना**–साँस वाहर निकालना । **–टूटना**–साँसका नियमित रूपसे न चलना । **–डकार न लेना**–माल पचा जाना और पता न लगने देना । **–तक न लेना**–विलकुल मौन रहना, कुछ न वोलना । **–देखना**–वीमारीकी हालतमें साँस देखकर मरणासन्न आदि होनेका निश्चय करना । **–न निकालना**–चुप रहना । **–न लेना**–फौरन मर जाना । **–फूलना**–दम चढ़ जाना, हाँफना । **–भरना**–ऊपरका दम लेना, हाँफना; आह भरना । **–रहते**–जीते जी । **–रुकना**–दम वंद होना; साँस लेनेमें तकलीफ होना । **–लेना**–साँस फेफड़ोंमें ले जाना और वाहर निकालना; आह भरना; दम लेना, रुक जाना, सुस्ता लेना । **(उलटी)–लेना**–वड़ी तकलीफमें होना । **–लेनेकी फुरसत**–थोड़ी-सी फुरसत । **–सीनेमें अड़ना**–साँस रुकना, मरणासन्न होना । **(गहरी, ठंडी या लंवी)–लेना**–अत्यधिक मानसिक कष्टके कारण, मनका वोझ हलका करनेके लिए लंवी साँस लेनेकी क्रिया ।

साँसत–स्त्री० साँस रुकने जैसी तकलीफ; वहुत वड़ा कष्ट; यंत्रणा; वखेड़ा । **–घर**–पु० कालकोठरी, जेलके अंदर वह छोटी-सी कोठरी जिसमें कैद तनहाईकी सजावाला आदमी अकेले रखा जाता है (इसमें हवा और प्रकाश वहुत कम आता है और कैदीका किसीसे संपर्क नहीं रहता) ।

साँसति⁕–स्त्री० दे० 'साँसत' ।

सांसद–वि० (पार्लमिंटरी) जो संसद या उसके सदस्योंकी मर्यादाके अनुकूल हो ।

सांसदी–पु० (पार्लमिंटेरियन) संसदके रीतिव्यवहारोंमें कुशल और पटु व्यक्ति ।

साँसना⁕–स० क्रि० शासन करना, दंड देना; पीड़ा देना ।

सांसर्गिक–वि० (सं०) संसर्गसे होनेवाला (कंटेजस) ।

साँसा–पु० फिक्र, चिंता; अंदेशा, शंका; डर; सोच-विचार; साँस; पीड़ा । मु० **–चढ़ना**–फिक्र होना । **(जवतक)–तव तक आसा**–अंत समयतक आशा रखना । **–पड़ना**–संदेह होना; फिक्र पड़ना । **–रहना**–अंदेशा रहना ।

सांसारिक–वि० (सं०) संसार-संवंधी, लौकिक, ऐहिक ।

सांसिद्धिक–वि० (सं०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, स्वतः प्रसूत ।

सांसिद्ध्य–पु० (सं०) अंतिम लक्ष्य प्राप्त कर लेनेकी अवस्था, सिद्धि, पूर्णता ।

सांस्कारिक–वि० (सं०) संस्कार-संवंधी; अंत्येष्टि या अन्य संस्कारोंके लिए आवश्यक ।

सांस्कृतिक–वि० (सं०) संस्कृति-संवंधी ।

सांस्थानिक–वि०, पु० (सं०) समान-देशीय, एक ही देशके निवासी ।

सांस्पर्शिक–वि० (कंटेजस) संस्पर्श या छूतसे होने, फैलनेवाला (रोग); छूतका, छूतवाला (रोग) ।

सांस्राविण–पु० (सं०) धारा, प्रवाह ।

सांहत्य–पु० (सं०) संवंध, योग ।

सांहननिक–वि० (सं०) शरीर-संवंधी, शारीरिक, दैहिक ।

सा–पु० सप्तकके प्रथम स्वर–'षड्ज'का सांकेतिक रूप । अ० सदृश, समान, जैसा; एक मानसूचक शब्द (फारसीमें यह 'साँ' और 'आसा'का संक्षिप्त रूप है और तुल्य आदि अर्थोंका ही द्योतक है) । स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; पार्वती ।

साअ़त–स्त्री० (अ०) ढाई घड़ीका काल, घंटा; क्षण, पल; घड़ी; नियत काल; कियामतका दिन । **–(ते) नह् स,–वद,–मनहूस**–स्त्री० अशुभ घड़ी । **–(ते)नेक**–स्त्री० शुभ घड़ी । **–(ते) संगीं**–स्त्री० कठिन समय ।

साइंस–स्त्री०, पु० (अं०) विज्ञान; रसायन, भौतिक, आयुर्वेद आदि विज्ञान ।

साइक⁕–पु० दे० 'शायक'; संध्याकाल ।

साइकिल–स्त्री० (अ०) पैर गाड़ी; वाइसिकिल ।

साइत–स्त्री० (अ० 'साअ़त') पल, छन; मुहूर्त, लग्न, (टलना, देखना, विचारना इ०) ।

साइनवोर्ड–पु० (अं०) व्यक्ति, दुकान, संस्था आदिके नाम और पतेका सूचक पट, तख्ता, नामपट्ट ।

साइव–वि० (अ०) पहुँचनेवाला; शुद्ध । **–(वु) र्राय**–वि० ठोस और शुद्ध रायवाला । **–(वु) ल अक़्ल**–वि० शुद्ध वुद्धि ।

साइवान–पु० दे० 'सायवान' ।

साइम–वि० (अ०) दे० 'सायम' ।

साइयाँ⁕–पु० दे० 'साँई' ।

साइर†–पु० दे० 'सायर' ।

साईँ–पु० दे० 'साँई' ।

साई–स्त्री० वह धन जो गाने-वजाने या इस तरहके काम करनेवालोंको नियत समयपर काम करनेके लिए अग्रिम दिया जाता है, वयाना; † किसानोंकी आपसकी सहायता । वि० (अ०) सई (कोशिश) करनेवाला; दौड़-धूप करनेवाला ।

साईस–पु० घोड़ेकी देखभाल करनेवाला नौकर ।

साईसी–स्त्री० साईसका काम ।

साउ†–पु० दे० 'साहु' ।

साउज⁕–पु० वे जानवर जिनका शिकार किया जाय–'कीन्हेसि साउज आरन रहई'–प० ।

साउथ–पु० (अं०) दक्षिण दिशा ।

साकंभरी–स्त्री० दे० 'शाकंभरी'।

साक–पु० (सं०) तरकारीके रूपमें खाया जानेवाला पौधे का पत्ता, साग; सागौन। * स्त्री० साख; धाक।

साक़–स्त्री० (अ०) पिंडली; पेड़का तना; पौधेका डंठल।

साकचेरि।–स्त्री० मेंहदी।

साकट*–पु० शाक्तमत माननेवाला; मद्य, मांस आदिका सेवन करनेवाला, निगुरा; खल।

साकत*–पु० दे० 'साकट'।

साकत्ति*–स्त्री० शक्ति।

साक़न–स्त्री० साकीकी स्त्री, हुक्का, शराव आदि पिलानेवाली स्त्री।

साकर।–वि० सँकरा, तंग। स्त्री० साँकल; शक्कर।

साकल–पु० स्यालकोटका पुराना नाम। स्त्री० दे० 'साँकल'।

साकल्य–पु० दे० 'शाकल्य'; (सं०) समग्रता, संपूर्णता। **–वचन**–पु० पूरा पाठ।

साकवर।–पु० वैल।

साकांक्ष–वि० (सं०) इच्छायुक्त, इच्छुक; जिसके लिए पूरक आवश्यक हो।

साका–पु० शाका, संवत्; रोव, दवदवा; नामवरी; कीर्तिस्मारक। * पु०, स्त्री० तीव्र इच्छा, चाह–'आजु आइ पूजी वह साका'–प०। मु० **–चलना**–रोव माना जाना। **–चलाना**–दवदवा कायम करना।

साकार–वि० (सं०) आकारयुक्त, रूपविशिष्ट, मूर्त, स्थूल; अच्छे आकारका, सुंदर। पु० ईश्वरका सगुण रूप।

साकारोपासना–स्त्री० (सं०) ईश्वरके सगुण रूपकी उपासना।

साकित–वि० (अ०) चुप; निश्चेष्ट, गतिहीन।

साक़ित–वि० (अ०) गिरानेवाला; गिरा हुआ; त्यक्त; नष्ट, लुप्त (होना)।

साकिन–वि० (अ०) गतिहीन। पु० हलवर्ण; रहनेवाला, निवासी। **–हाल**–वर्तमान निवासी (वर्तमान निवास वतानेके लिए कहते हैं)।

साक़िया–स्त्री० (अ०) शराब पिलानेवाली स्त्री; छोटी नदी; रहट।

साक़ी–पु० (अ०) पानी पिलानेवाला; शराव पिलानेवाला; हुक्का पिलानेवाला (उर्दू)। **–ए कौसर**–पु० मुहम्मद साहव। **–ए दर्यादिल**–पु० दिल खोलकर पिलानेवाला। **–ए महशर**–पु० क़ियामतके दिन विहिश्तकी शराब पिलानेवाला, हज़्रत मुहम्मद।

साकुच–पु० (सं०) सकुची मछली।

साकुरुंड–पु० (सं०) वृक्षविशेष, ग्रंथिफल।

साकूत–वि० (सं०) सार्थक, अर्थगर्भ; साभिप्राय; क्रीड़ायुक्त। **–स्मित,–हसित**–पु० साभिप्राय मंद हास; प्रणयसूचक हास और चितवन।

साकेत, साकेतन–पु० (सं०) अयोध्या।

साकेतक–पु० (सं०) अयोध्या-निवासी।

साकोटक–पु० दे० 'शाखोट'।

साक्तुक–पु० (सं०) भूना हुआ जौ; जौका सत्तू; एक विष। वि० सत्तू-संवंधी।

साक्ष–वि० (सं०) नेत्रयुक्त; जपमालासे युक्त।

साक्षर–वि० (सं०) पढ़ा-लिखा, शिक्षित।

साक्षरता–स्त्री० (सं०) पढ़े-लिखे होनेका भाव। **–आंदोलन**–पु० (लिटरेसी कैंपेन) निरक्षरोंको साक्षर, अपढ़ोंको पढ़ा हुआ, वनानेके लिए चलाया गया आंदोलन।

साक्षात्–अ० (सं०) आंखोंके सामने, प्रत्यक्ष; स्पष्टतः; वस्तुतः, सीधे। **–कर,–कारी(रिन्)**–वि० प्रत्यक्ष, गोचर करनेवाला; मिलनेवाला। **–करण**–पु० आँखोंके सामने रखनेकी क्रिया; अनुभूति; किसी वातका तात्कालिक कारण। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० सब-कुछ देखनेवाला। **–कार**–पु० ज्ञान, अनुभूति; मिलन, देखादेखी; मुलाकात (इंटरव्यू)। **–कृत**–वि० प्रत्यक्ष; गोचर कराया हुआ।

साक्षाद्दृष्ट–वि० (सं०) (अपनी) आँखों देखा हुआ।

साक्षिता–स्त्री०, **साक्षित्व**–पु० (सं०) गवाही, प्रमाण।

साक्षिपरीक्षा–स्त्री० (क्रॉस-इक्ज़ामिनेशन) दे० 'प्रति-परीक्षण'।

साक्षिमान् आधि–स्त्री० (सं०) गवाहोंके सामने, विना लिखा-पढ़ीके, गिरवी रखा हुआ माल।

साक्षी–स्त्री० गवाही, गवाहका वयान।

साक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) (अपनी) आँखों देखनेवाला, चश्मदीद। पु० अहम्; चश्मदीद गवाह। **–(क्षि)द्वैध**–पु० परस्पर विरोधी वयान (व्यवहार)। **–परीक्षण**–पु०, **–परीक्षा**–स्त्री० गवाहकी परीक्षा, जिरह। **–प्रत्यय**–पु० चश्मदीद गवाहका वयान। **–प्रश्न**–पु० जिरह। **–भावित**–वि० चश्मदीद गवाहके वयानसे सावित। **–भूत**–वि० जिसने स्वयं देखा हो। पु० विष्णु। **–मात्र**–पु० अहम्। **–लक्षण**–वि० प्रमाणसे सिद्ध।

साक्षीकरण, साक्ष्यंकन–पु० (अटेस्टेशन) किसी वातके साक्षिरूपमें हस्ताक्षर करना, किसी लेख या प्रमाणपत्रादिकी प्रतिलिपिपर हस्ताक्षर कर यह स्वीकार करना कि वह सच्ची और सही प्रतिलिपि है, सत्यापन।

साक्षीकृत, साक्ष्यंकित–वि० (अटेस्टेड) जिसपर साक्षिरूपमें हस्ताक्षर किया गया हो, हस्ताक्षर द्वारा जिसका सच्ची प्रतिलिपि होना स्वीकार किया गया हो।

साक्ष्यविधि–स्त्री० (लॉ ऑफ एविडेंस) साक्ष्य-संवंधी विधि या कानून।

साखपत्र–पु० (सिक्यूरिटीज़) साखपर लिये गये ऋणका सूचक पत्र, उस तरहके सार्वजनिक ऋणका सूचक पत्र जिसकी जामिन प्रायः देशकी सरकार होती है और कंपनियोंके हिस्सों आदिकी तरह जिसकी खरीद-विक्री अंकित मूल्यसे कम या अधिकपर की जा सकती है।

साक्षेप–वि० (सं०) आपत्तिजनक, आक्षेपात्मक; जिसमें व्यंग्य, ताना हो।

साक्ष्य–वि० (सं०)···को गोचर। पु० गवाही; प्रमाण।

साख–पु० गवाही; गवाह। स्त्री० रोव, दवदवा; लेन-देन-संवंधी एतवार या प्रतिष्ठा; * डाली; जाति या वंशका भाग या अंग।

साखना*–स० क्रि० गवाही, साक्षी देना।

साखर*–वि० दे० 'साक्षर'।

साखा*–स्त्री० शाखा, डाली; जाति या वंशका अंग; चक्कीका धुरा।

साखिल्य–पु० (सं०) मित्रता, दोस्ती।

साखी–पु० गवाह–'तुम ससि होहु तराइन साखी'–प०; पंच; * वृक्ष। स्त्री० गवाही; (कवीर आदिके) ज्ञान-विराग-विषयक पद।

साखू–पु० शालका पेड़, सखुआ।

साखेय–वि० (सं०) मित्र-संवंधी; मिलनसार।

साखोचार, साखोचारन*–पु० गोत्रोच्चार।

साखोट–पु० दे० 'शाखोट'।

साख़्त–स्त्री० (फा०) वनावट; डौल, शक्ल; वनायी हुई वात। **–गी**–स्त्री० वनावट। **–रू**–वि० लज्जासे मुंह वनाये हुए; मुँहपर पाउडर लिपस्टिक आदि लगाये हुए।

साख़्ता–वि० (फा०) वनाया हुआ; नकली। **–परदाख़्ता**–वि० वनाया, सँवारा हुआ; किया हुआ।

साख्य–पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

साग–पु० भाजीके रूपमें खायी जानेवाली पत्तियाँ, शाक; तरकारी। **–पात**–पु० साग-भाजी; रूखा-सूखा भोजन। मु० **–०समझना**–हकीर समझना।

सागम–वि० (सं०) ईमानदारीसे प्राप्त किया हुआ; वैध विधिसे प्राप्त।

सागरंगम–वि० (सं०) दे० 'सागरग'।

सागर–पु० (सं०) समुद्र (कहा जाता है कि राजा सगरके नामपर इसका नाम सागर पड़ा); सरोवर; चार या सातकी संख्या; एक बहुत बड़ी संख्या (दस पद्म); सन्न्यासियोंका वर्गविशेष; गत उत्सर्पिणीके तीसरे अर्हत् (जै०); एक नाग; सगर राजाके पुत्र; एक मृग; (ला०) वहुत बड़ी राशि या पुंज। वि० समुद्र-संबंधी। **–गंभीर**–पु० समाधिका एक प्रकार। **–ग,–**

गम,–गामी(मिन्)–वि॰ समुद्रमें जानेवाला। **–गा**–स्त्री॰ नदी; गंगा। **–॰सुत**–पु॰ भीष्म। **–ज**–पु॰ समुद्र लवण। **–॰मल**–पु॰ समुद्रफेन। **–धरा**–स्त्री॰ पृथ्वी। **–धीर,–चेता(तस्)**–वि॰ जिसका मन सागरकी तरह शांत और गंभीर हो। **–नेमि,–नेमी**–स्त्री॰ पृथ्वी। **–पर्यंत**–अ॰ समुद्रतक, आसमुद्र। **–प्लवन**–पु॰ नौकानयन; समुद्र लाँघना। **–मति**–पु॰ एक बोधिसत्त्व। **–मुद्रा**–स्त्री॰ समाधिका एक प्रकार। **–मेखला**–स्त्री॰ पृथ्वी। **–लिपि**–स्त्री॰ एक प्रकारकी प्राचीन लिपि। **–वरधर**–पु॰ महासागर। **–वासी(सिन्)**–वि॰ समुद्रतटपर रहनेवाला। **–व्यूहगर्भ**–पु॰ एक बोधिसत्त्व। **–शय**–वि॰ समुद्र में सोनेवाला। पु॰ विष्णु। **–शुक्ति**–स्त्री॰ समुद्री सीप। **–सूनु**–पु॰ चंद्रमा।

साग़र–पु॰ (फा॰) प्याला; शराबका प्याला। **कश**–वि॰ शराब पीनेवाला।

सागरक–पु॰ (सं॰) एक जनपद।

सागरांत–पु॰ (सं॰) समुद्रतट।

सागरांतर्गत–वि॰ (सं॰) समुद्रमें रहनेवाला।

सागरांता–स्त्री॰ (सं॰) पृथ्वी।

सागरांबरा–स्त्री॰ (सं॰) पृथ्वी।

सागरानुकूल–वि॰ (सं॰) समुद्रतटपर स्थित।

सागरापांग–वि॰ (सं॰) समुद्रवेष्टित।

सागरालय–वि॰ (सं॰) समुद्रमें रहनेवाला। पु॰ वरुण।

सागरावर्त–पु॰ (सं॰) खाड़ी, उपसागर।

साग़री–स्त्री॰ (तु॰) गुदा; मलद्वार।

सागरेश्वर–पु॰ (सं॰) एक तीर्थ।

सागरोत्थ–पु॰ (सं॰) समुद्रलवण।

सागरोद्गार–पु॰ (सं॰) ज्वार।

सागरोपम–पु॰ (सं॰) एक बड़ी संख्या (जै॰)। वि॰ सागरके समान।

सागवन, सागवान–पु॰ दे॰ 'सागौन'।

सागू–पु॰ (अं॰ 'सैगो') ताड़की जातिका एक पेड़ जिसके तनेके अंदरके पदार्थसे सागूदाने बनाये जाते हैं। **–दाना**–पु॰ सागूके तनेके अन्दरका भाग पीसकर बनाया हुआ दाना।

सागो–पु॰ दे॰ 'सागू'।

सागौन–पु॰ एक पेड़ जिसकी लकड़ी मेज, कुरसी आदि बनानेके काम आती है।

साग्नि–वि॰ (सं॰) अग्नियुक्त; यज्ञाग्नि सुरक्षित रखनेवाला।

साग्निक–वि॰ (सं॰) यज्ञाग्नि रखनेवाला; अग्निसे संबद्ध; अग्नि द्वारा साक्षीकृत। पु॰ यज्ञाग्नि रखनेवाला गृहस्थ, अग्निहोत्री।

साग्र–वि॰ (सं॰) समग्र, ··से अधिक, फाजिल।

साचक़–स्त्री॰ (तु॰) व्याहकी एक रस्म जिसमें व्याहके एक दिन पहले वरके घरसे कन्याके लिए कपड़े, मेंहदी, मेवे, मिठाइयाँ आदि भेजते हैं (मुसल॰)।

साचरी–स्त्री॰ (सं॰) एक रागिनी।

साचि–अ॰ (सं॰) तिरछे, टेढ़े। **–वाटिका**–स्त्री॰ श्वेत पुनर्नवा। **–विलोकित**–पु॰ तिरछी चितवन।

साचिविक–वि॰ (सेक्रेटेरियल) सचिव या उसके कर्तव्योंसे संबंध रखनेवाला। **–स्तरपर**–वि॰ (ऑन सेक्रेटेरियल लेवल) (समझौते, जाँच आदि-संबंधी बातचीत) जो दो या अधिक राज्योंके विभागीय सचिवोंके बीच की जाय।

साचिव्य–पु॰ (सं॰) मंत्रित्व; शासन; मैत्री; सहायता।

साचिव्याक्षेप–पु॰ (सं॰) आपत्तिगर्भ स्वीकृति (सा॰)।

साची कुम्हड़ा–पु॰ भतुआ, पेठा।

साचीकृत–वि॰ (सं॰) वक्रीकृत, तिरछा।

साचीन–वि॰ (सं॰) बगलसे आनेवाला।

साज–पु॰ दे॰ 'साज़'। वि॰ (सं॰) पूर्वाभाद्रपदायुक्त; * सदृश।

साज़–पु॰ (फा॰) सामग्री, सामान; सजावटकी सामग्री; लहँगेका साज; गानेके साथ बजाये जानेवाले बाजे (सारंगी, तबला इ॰); घोड़ेको सवारीके लिए तैयार करने या सजानेका सामान (जीन, काठी, लगाम इ॰); युद्धसामग्री; आयुध; मेलजोल; अनुकूलता; सुरोंका मेल; साजिश, साँठ-गाँठ। वि॰ (केवल समासमें) बनानेवाला (कारसाज, रंगसाज); बनाया हुआ (ख़ुदासाज़, दस्तसाज़–हाथका बनाया हुआ)। **–गार**–वि॰ अनुकूल; उपयुक्त। **–बाज़**–पु॰ साजिश, साँठ-गाँठ। **–मंद**–वि॰ सुसज्जित; अनुकूल। **–मंदी**–स्त्री॰ सुसज्जा, सजावट; अनुकूलता। **–सामान,–(ज़ो) सामान**–पु॰ (वस्तु या कार्य-विशेषके लिए) आवश्यक सामग्री; सामान, चीज, वस्तु। **–का परदा**–सारंगी, सितार आदिका वह पुरजा जिससे कोई विशेष स्वर बजाया जाय। मु॰ **–करना**–मेल करना; साजिश करना। **–छेड़ना**–साज बजाना।

साजक–पु॰ (सं॰) बाजरा (?)।

साजगिरी–स्त्री॰ संपूर्ण जातिका एक राग।

साजड़, साजर†–पु॰ वृक्षविशेष।

साजन–पु॰ प्रेमी; पति, भर्ता; सज्जन, सुजन; ईश्वर।

साजना*–स॰ क्रि॰ सजाना, सुसज्जित करना; तैयार करना। * पु॰ साजन।

साजा*–वि॰ सुंदर–'ये सुत कौनके शोभहिं साजे'–राम चंद्रिका; अच्छा; साफ।

साजात्य–पु॰ (सं॰) जाति या वर्गकी समानता, सहवर्गीयता।

साज़िंदा–पु॰ (फा॰)साज बजानेवाला(सारंगिया, तबलची इ॰)।

साजिद–वि॰ (अ॰) सिजदा करनेवाला, वंदना करनेवाला।

साज़िश–स्त्री॰ (सं॰) मेल-जोल; अविहित या अपराधरूप कार्यमें गुप्त सहयोग; ऐसे कार्यके लिए की जानेवाली गुप्त मंत्रणा, चक्र। **–कुनिंदा**–वि॰ कुचक्री; षड्यंत्रकारी, साज़िशी।

साज़िशी–वि॰ साजिश करनेवाला, चक्री।

साजुज्य*–पु॰ दे॰ 'सायुज्य'।

साझा–पु॰ शिरकत, हिस्सेदारी; पत्ती। **–(झे)दार**–पु॰ दे॰ 'साझी'। **–दारी**–स्त्री॰ साझेदार होना, हिस्सेदारी; दो खेलाड़ियोंका साथ साथ खेलना (क्रिकेट)।

साझी–पु॰ हिस्सेदार; जिसकी पत्ती हो।

साट–स्त्री॰ छड़ी; छड़ीके चोटका दाग। पु॰ विक्रय; लेनदेन; व्यापार; सट्टा। **–मार**–पु॰ हाथियोंको लड़ानेवाला।

साटक–पु॰ एक छंद; * भूसी, छिलका; तुच्छ वस्तु।

साटन–पु॰ (अं॰ 'सैटिन') एक बढ़िया रेशमी कपड़ा।

साटना–स॰ क्रि॰ मिलाना, जोड़ना; चिपकाना।

साटा*–पु॰ बदला।

साटी–स्त्री॰ छड़ी, कमची; पत्रभंग; सामान; † गदहपूर्ना; * बदला।

साटोप–वि॰ (सं॰) घमंडसे फूला हुआ; गरजता हुआ (जैसे बादल)।

साठ–वि॰ पचाससे दस अधिक। पु॰ साठकी संख्या, ६०। * स्त्री॰ पूँजी। **–नाठ**–वि॰ जिसकी पूँजी नष्ट हो गयी हो, धनहीन; रसहीन, रूखा; छिन्न-भिन्न। स्त्री॰ मेलजोल; अनुचित संबंध; षड्यंत्र।

साठसाती–स्त्री॰ दे॰ 'साढ़ेसाती'।

साठा–वि॰ साठ वर्षकी अवस्थाका। पु॰ साठी धान; ऊख; लंबा-चौड़ा खेत; एक मधुमक्खी।

साठी–पु॰ एक धान जो बहुत जल्द तैयार होता है।

साड–वि॰ (सं॰) नोक या डंकवाला।

साड़ी–स्त्री॰ स्त्रियोंकी धोती; साढ़ी।

साढ़साती*–स्त्री॰ दे॰ 'साढ़ेसाती'।

साढ़ि*–पु॰ ऊँट (बीसल॰)।

साढ़ी–स्त्री॰ असाढ़में बोयी जानेवाली फसल; मलाई; सालका निर्यास; † साड़ी।

साढ़ू–पु॰ पत्नीकी बहिनका पति।

साढ़े–वि॰ आधेके साथ। **–साती**–स्त्री॰ शनि ग्रहकी एक अनिष्टकर स्थिति। मु॰ **–साती आना या चढ़ना**–विपत्ति-ग्रस्त होना।

सात–वि॰ छः और एक; (सं॰) प्रदत्त; विनष्ट, ध्वस्त। पु॰ आनंद, प्रसन्नता; (हिं॰) सातकी संख्या, ७। **–पाँच**–पु॰

चालाकी, चालबाजी; दगा; बहाना; तकरार। (मु० –०न जानना–भोला-भाला होना।–०लाना–हुज्जत, तकरार करना)। –पूती–स्त्री० दे० 'सतपुतिया'। –फेरी–स्त्री० सप्तपदी। –भाई–स्त्री० दे० 'सतभइया'। –मु० –की नाक कटना–सारे परिवारका बदनाम होना। –घर भीख माँगना–दर-दर माँगना। –धार होकर निकलना–खाद्य पदार्थका विना पचे दस्त होकर निकलना। –परदे लगना–परदेमें रहना (उस स्त्रीके लिए प्रयुक्त जो अमीर होनेपर परदेमें रहने लगी हो)। –परदोंमें रखना–छिपाकर रखना; बड़ी सावधानीसे रखना। –राजाओंकी साक्षी देना–किसी बातकी सचाईपर जोर देना। –समुंदर पार–बहुत दूर। –सींकें बनाना–छठीकी एक रस्म। –(तों) भूल जाना–होशहवास खो देना।

सातगीं–पु० (तु०) प्रेयसी, माशूका; शरावका प्याला।

सातत्य–पु० (सं०) नैरंतर्य; अविच्छिन्नता; स्थायित्व।

सातला–स्त्री० (सं०) थूहरका एक भेद।

सातवाहन–पु० (सं०) शालिवाहन नामक राजा।

साता*–स्त्री० शांति–'रूम रूम साता भइ उरमें मिटि गई फेरा-फरी' –मीरा।

साति–स्त्री० (सं०) देना; भेंट; दान; प्राप्ति; सहायता; नाश, ध्वंस; अंत, समाप्ति; तीव्र वेदना; विराम; संपत्ति; * दंड, शास्ति।

सातिक, सातिग*–वि० दे० 'सात्त्विक'।

सातीन–पु० (सं०) मटरका एक प्रकार।

सातीनक, सातीलक–पु० (सं०) दे० 'सातीन'।

सात्त्व–वि० (सं०) सत्त्वगुण-संबंधी।

सात्त्विक–वि० (सं०) यथार्थ; सत्य, प्राकृतिक; सत्त्वगुणयुक्त, ईमानदार, नेक; शक्तिशाली; सत्त्वगुण-संबंधी; सत्त्वगुणप्रधान; भावजन्य। पु० एक भाव (अनुभाव) जिसमें स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय–ये आठ प्रकारके अंगविकार होते हैं (सा०); इन अंग-विकारोंका प्रदर्शन करनेवाला अभिनय; ब्रह्मा; ब्रह्म; ब्राह्मण; प्रजापतिकी आठवीं सृष्टि।

सात्त्विकी–स्त्री० (सं०) दुर्गा; दुर्गाकी एक तरहकी पूजा।

सात्म(न्)–वि० (सं०) अपनेसे युक्त।

सात्मक–वि० (सं०) आत्मासे युक्त।

सात्मीकृत–वि० (सं०) जो किसी बातका अभ्यस्त, आदी हो गया हो।

सात्म्य–वि० (सं०) प्रकृतिके अनुकूल, स्वास्थ्यकर। पु० प्रकृतिके अनुकूल होनेका भाव; सारूप्य; अनुकूल आहार आदि; अभ्यास।

सात्यकि–पु० (सं०) एक यादव योद्धा जो कृष्णका सारथि था और महाभारतमें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था।

सात्यकी–पु० दे० 'सात्यकि'।

सात्यदूत–पु० (सं०) सरस्वती तथा अन्य देवताओंके निमित्त किया जानेवाला होम।

सात्यवत, सात्यवतेय–पु० (सं०) सत्यवतीके पुत्र, वेदव्यास।

सात्रव–पु० गंधक।

सात्राजित–पु० (सं०) सत्राजितका वंशज; राजा शतानीक।

सात्राजिती–स्त्री० (सं०) सत्यभामा।

सात्रिक परीक्षा–स्त्री० (टरमिनल इग्जामिनेशन) विद्यालय आदिका एक सत्र समाप्त होनेपर ली जानेवाली परीक्षा।

सात्व–वि० दे० 'सात्त्व'।

सात्वत–वि० (सं०) सात्वत्-संबंधी। पु० सत्वतोंका राजा (कृष्ण, बलदेव आदि); यादव; कृष्णका भक्त; एक वर्णसंकर जाति (जातिच्युत वैश्य और ऐसी स्त्रीसे उत्पन्न संतान जो पहले क्षत्रियकी पत्नी रही हो)।

सात्वती–स्त्री० (सं०) सुभद्रा; शिशुपालकी माँ; दे० 'सात्वतीवृत्ति'। –पुत्र–पु० शिशुपाल। –वृत्ति–स्त्री० चार नाटकीय वृत्तियोंमेंसे एक जिसका वीर, अद्‌भुत, रौद्र आदि रसोंमें प्रयोग होता है।

सात्वत्–पु० (सं०) कृष्णका अनुयायी; यादव।

सात्विक–वि०, पु० दे० 'सात्त्विक'।

साथ–पु० संग, हेल-मेल; साथी। अ० सहित; से; विरुद्ध; प्रति; * द्वारा। –साथ–अ० एक साथ (चलना, रहना आदि)। मु० –करना–संपर्कमें रहना, पास रहना। –का खेला–लँगोटिया यार, बचपनका साथी। –को–वह जिससे रोटी लगाकर खायी जाय (तरकारी आदि)। –खोना–साथसे वंचित होना। –घसीटना–जबरदस्ती शरीक करना। –छूटना–साथियोंसे अलग होना, वियुक्त होना; दोस्ती छूटना। –देना–निबाहना; सहायता देना; शरीक होना; साथ यात्रा करना। –निबहना–निबाह होना। –रहना–संग रहना। –लग लेना–शरीक हो जाना। –लगा रहना–पीछा न छोड़ना। –लेकर डूबना–अपने साथ दूसरेका भी नुकसान करना। –सुलाना,–सोना–किसीका एक विस्तरेपर दूसरेके निकट सोना; हमविस्तर होना, सहवास करना। –सोकर मुँह छिपाना–घनिष्ठता होनेपर भी संकोच करना। –ही–सिवा, अलावा। –ही साथ–एकसाथ। –होना–शरीक होना।

साथरड़ै*–पु० स्रस्तर, कुशासन।

साथरा*–पु० दे० 'साथरी'।

साथरी*–स्त्री० कुश आदिकी चटाई।

साथी–पु० वह जो साथ रहता हो, मित्र, दोस्त; सहायक।

साद–पु० (सं०) विषाद; क्लांति; क्षीणता; क्षय, नाश; पीड़ा; स्वच्छता, विशुद्धता; शरण; गति; (अ०) अरबी वर्णमालाका एक वर्ण; किसी बातको ठीक मानने, पसंद करने या स्वीकार करनेका चिह्न। वि० भला, भद्र, शुभ, मांगलिक; आँख। मु० –करना–सही मानना, स्वीकृति सूचित करना।

सादगी–स्त्री० (फा०) सादापन, बनावटका अभाव; सरलता; भोलापन।

सादन–पु० (सं०) क्लांत होना; क्लांति; नाश; क्लांत करना। व्यवस्थित करना (पात्रादि); पात्र; थाली; मकान, सदन।

सादनी–स्त्री० (सं०) क्लांति; क्षय; कटुकी।

सादर–वि० (सं०) आदर प्रदर्शित करनेवाला; आदरयुक्त। अ० आदरके साथ।

सादा–वि० (फा०) विना सजावट, विना काम, विना गोटे, किनारीका; जिसमें बनावट न हो; कोरा, बिना लिखा हुआ (कागज); सरलहृदय, भोला; मूर्ख; विना दाढ़ीमूंछका; खालिस, बेमेल; जिसपर टिकट या स्टांप न लगा हो। –कपड़ा–पु० वह वस्त्र जिसपर काम न हो या जिसका रंग शोख न हो। –कागज–पु० कोरा कागज; वह कागज जिसपर स्टांप न लगाया गया हो। –कार–पु० सोने-चाँदीपर बढ़िया काम बनानेवाला (सुनार)। –कारी–स्त्री० सादाकारका काम। –तबअ–वि० भोलाभाला। –दिल–वि० सरलचित्त, सीधा। –पन–पु० सादगी। –मिजाज–वि० जिसके मिजाजमें बनावट न हो। –मिजाजी–स्त्री० सरलता, सादगी। –लोह–वि० सीधा, भोला; बुद्धू।

सादात–पु० (अ०) सैयद जाति या वंश।

सादाशिव–वि० (सं०) सदा शिव-संबंधी।

सादि–वि० (सं०) आरंभयुक्त। पु० सारथि; योद्धा; विषण्ण व्यक्ति; वायु।

सादिक़–वि० (अ०) सच्चा; ठीक, दुरुस्त; न्यायनिष्ठ; स्वामिभक्त; चरितार्थ। –(क़ु)र्राय–वि० जिसकी राय सच्ची होती हो। –मु० –आना–सिद्ध होना, घटित होना।

सादित–वि० (सं०) बैठाया हुआ; विषादित; शरण प्राप्त कराया हुआ; समाप्त किया हुआ; क्षीण किया हुआ; क्लांत किया हुआ।

सादिर–वि० (अ०) बाहर निकलनेवाला; जारी किया हुआ (करना, होना); निस्तब्ध; चकित; उद्विग्न।

सादी–स्त्री० एक चिड़िया (यह लाल जातिकी, भूरे रंगकी, छोटी-सी होती है); विना पीठीवाली पूरी; पतंगकी डोर, जिसपर माँझा न हो; † दे० 'शादी'। पु० फारसीका यशस्वी कवि और गुलिस्ताँ-बोस्ताँ आदिका रचयिता, शैख मुसलिहुद्दीन शीराजी। वि० स्त्री० दे० 'सादा'। –ख़ुराक–स्त्री० विना मिर्च-मसाले, चटनी-अचारकी खुराक। –ज़बान–स्त्री० वह भाषा जिसमें

बनावट या बनावटी क्लिष्टता न हो। **–सज़ा** (सिम्पुल इम्प्रिज़न-मेण्ट) क़ैदकी ऐसी सजा जिसमें कठोर श्रम न करना पड़ता हो।

सादी(दिन्)–वि० (सं०) बैठा हुआ; क्लांत करनेवाला; नष्ट करनेवाला। पु० अश्वारोही; गज़ारोही; रथारोही; सारथि।

सादीनव–वि० (सं०) पीडाग्रस्त।

सादूर*–पु० सिंह; हिंसक जीव।

सादृश्य–पु० (सं०) समानता, तुल्यता; बराबरी; तुलना; प्रतिमूर्ति।

साद्यंत–वि० (सं०) पूरा, संपूर्ण।

साद्यस्क–वि० (सं०) शीघ्र होनेवाला, जिसमें विलंब न हो।

साधंत–पु० (सं०) भिक्षुक।

साध–वि० अच्छा, भला, उत्तम। * महात्मा, साधु; सज्जन; योगी; ईश्वरको छोड़ अन्य किसीके समक्ष अपना मस्तक न झुकानेवाला उत्तर भारतका एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय। स्त्री० कामना, इच्छा; गर्भके सातवें मासमें होनेवाला एक उत्सव।

साधक–वि० (सं०) साधना करनेवाला; संपन्न, पूरा करनेवाला; समर्थ, योग्य; कुशल; मंत्रबलसे सिद्ध करनेवाला; सहायता देनेवाला; उपयोगी। पु० सहायक; साधन; कुशल व्यक्ति (विशेषकर जादूमें); ओझा; पित्त; दमनक; आराधक, तपस्वी; योगी। **–वर्ति**–स्त्री० जादूकी बत्ती, पलीता।

साधकता–स्त्री० (सं०) उपयुक्तता; उपयोगिता।

साधकत्व–पु० (सं०) जादू, बाजीगरी, सिद्धि।

साधका–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

साधन–वि० (सं०) सिद्ध, पूरा करनेवाला। पु० पूरा करना; सिद्धि; उद्देश्यप्राप्ति; जरिया; वसीला (मीन्स); कारण; करणकारक (व्या०); औजार, उपकरण (इन्स्ट्रूमेंट); सामग्री; आवश्यक तत्त्व (रिसोर्सेज); पदार्थ, द्रव्य; कार्यपूर्तिका माध्यम तत्व या वस्तु (एजेंसी); सेना; सहायता; प्रमाण; उपाय; हेतु (न्या०); मोहन, वशीकरण; नीरोग करना; मारण; तुष्टीकरण; गमन, प्रस्थान; अनुगमन; तपश्चर्या; उपासना; मंत्रादि सिद्ध करना; मोक्षप्राप्ति; धातु-शोधन, औषध-निर्माण; ऋण आदिकी प्राप्तिके लिए आदेश निकालना (व्यवहार); शरीरका कोई अवयव; शिश्न; थन; संपत्ति; मैत्री; लाभ; मृतक संस्कार। **–क्षम**–वि० जिसके लिए प्रमाण हो। **–चतुष्टय**–पु० चार प्रकारके प्रमाण। **–निर्देश**–पु० प्रमाण प्रस्तुत करना (व्यवहार)। **–पत्र**–पु० लिखित प्रमाण। **–हार** –वि० सिद्ध करनेवाला; सिद्ध होने योग्य।

साधनक–पु० (सं०) जरिया, उपकरण।

साधनता–स्त्री०, **साधनत्व**–पु० (सं०) उद्देश्यपूर्तिका जरिया होना; सिद्ध करनेकी क्रिया; सिद्धिकी अवस्था।

साधना–स्त्री० (सं०) कार्य-सिद्धि; आराधना, उपासना; तुष्टीकरण। स० क्रि० सिद्ध करना, पूरा करना; अभ्यास करना; शुद्ध करना; ठीक करना; इकट्ठा करना; निशाना लगाना; समझा लेना; संतुलित करना; वशमें करना–'अब लगि तुमहिं न काहू साधा'–रामा०; जाँच करना; नापना; प्रमाणित करना; * सहन करना–'साधे भूखन पियासन हैं, नाहनके निंदते'–भूषण।

साधनी–स्त्री० जमीन बराबर करनेका लोहे या लकड़ीका औजार।

साधनीय–वि० (सं०) सिद्ध करने योग्य; निर्माण करने योग्य (शब्द); प्राप्त करने योग्य (जैसे ज्ञान); प्रमाणित करने योग्य।

साधयंती–स्त्री० (सं०) उपासना करनेवाली।

साधयितव्य–वि० (सं०) साधने, सिद्ध करने योग्य।

साधयिता(तृ)–पु० (सं०) सिद्ध, पूरा करनेवाला; साधक।

सार्धामिक–पु० (सं०) समान धर्मका अनुयायी।

साधर्म्य–पु० (सं०) धर्म, स्वभाव, पद, कर्तव्य आदिके एक या समान होनेका भाव।

साधस*–पु० दे० 'साध्वस'।

साधा*–पु० साध, उत्कंठा–'साधा तन हेरियै'–घन०।

साधार–वि० (सं०) जिसका आधार हो, जो किसीपर टिका हो।

साधारण–वि० (सं०) निर्विशेष, मामूली (आर्डिनरी); सदृश, समान; सामान्य (कॉमन), लौकिक; आसान, सरल; मिला-जुला; एकाधिक विषयोंसे संबद्ध, अनैकांतिक (न्या०); बीचका। पु० एक संवत्सर; वह जो सबमें हो; वह नियम जो सर्वत्र लागू हो आम (यूज़ुअल); जाति या वर्गका सामान्य धर्म। **–गांधार**–पु० एक विकृत स्वर (संगीत)। **–देश**–पु० मामूली देश; जंगल, दलदल आदिवाला देश। **–धर्म**–पु० सबमें पाया जानेवाला धर्म; सार्वजनिक कर्तव्य (अहिंसा, सत्य आदि); प्रजनन-कार्य। **–निर्वाचन**–पु० (जनरल इलेक्शन) किसी विधान-सभा या संसद् आदिके सदस्योंका साधारण मतदाताओं द्वारा निर्वाचन। **–स्त्री**–स्त्री० वेश्या।

साधारणतः(तस्)–अ० (सं०) आम तौरपर; प्रायः।

साधारणतया–अ० (सं०) दे० 'साधारणतः'।

साधारणता–स्त्री०, **साधारणत्व**–पु० (सं०) सामान्य, सार्वजनिक होनेका भाव; सम्मिलित हित।

साधारणी–स्त्री० (सं०) ताली; बाँसकी कइन (टहनी)।

साधारणीकरण–पु० (सं०) (जेनरलाइज़ेशन) दे० 'विभावन' (सा०)।

साधारण्य–पु० (सं०) दे० 'साधारणता'।

साधारित–वि० (सं०) जिसे सहारा दिया गया हो, समर्थित।

साधिका–वि० स्त्री० (सं०) सिद्ध करनेवाली। स्त्री० गाढ़ी नींद।

साधिकार–अ० (सं०) अधिकारपूर्वक (ऑथॉरिटेटिवली)। वि० अधिकृत, आधिकारिक रूपसे किया हुआ (ऑथॉरिटेटिव)।

साधित–वि० (सं०) सिद्ध, पूरा किया हुआ; वशमें किया हुआ; प्रमाणित; प्राप्त; दंडित; दापित; शोधित (ऋणादि); छोड़ा हुआ, चालित (बाण)।

साधिवास–वि० (सं०) सुगंधयुक्त।

साधी(धिन्)–वि० (सं०) सिद्ध करनेवाला (समासमें)।

साधु–वि० (सं०) बढ़िया, उत्तम; पूर्ण; उपयुक्त, ठीक; धार्मिक, धर्मपरायण; दयालु; शुद्ध; प्रिय; कुलीन; शिष्ट। पु० सच्चा या नेक आदमी; संत; मुनि; जिन; त्यागी; विरक्त; सदाचारी; जौहरी; महाजनी करनेवाला, कुसीदक; व्यापारी; दमनक; वरुण वृक्ष। **–कारी(रिन्)**–वि० ठीक तरहसे काम करनेवाला, दक्ष, चतुर; उत्तम कार्य करनेवाला। **–कृत**–वि० उचित रूपोंमें किया हुआ। **–कृत्य**–पु० क्षतिपूर्ति; लाभ। **–ज**–वि० सद्वंश-जात। **–जात**–वि० सुंदर। **–दर्शन**–वि० सुंदर; विचारशील। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० विवेकी। **–देवी**–स्त्री० सास। **–धी**–स्त्री० सद्बुद्धि; अच्छा स्वभाव; सास। वि० अच्छे स्वभावका; चतुर। **–ध्वनि**–स्त्री० साधुवाद। **–पद**–पु० सन्मार्ग। **–पुष्प** पु० सुंदर फूल; स्थलपद्म। **–फल**–वि० अच्छा फल देनेवाला। **–भवन**–पु० कुटी। **–भाव**–पु० अच्छा स्वभाव, दयालुता। **–मत**–वि० सुविचारित। **–वाद**–पु० शाबाशी देना। **–वादी(दिन्)**–वि० उचित कहनेवाला; प्रशंसा करनेवाला। **–वाह**–पु० अच्छा सिखलाया हुआ घोड़ा। **–वाही(हिन्)**–वि० अच्छी तरह (गाड़ी) खींचनेवाला; अच्छे घोड़ेवाला। पु० अच्छा घोड़ा। **–वृक्ष**–पु० कदंब; वरुण वृक्ष। **–वृत्त**–वि० खूब गोला; सदाचारी; अच्छे स्वभावका। पु० सदाचार; ईमानदारी। **–वृत्ति**–स्त्री० अच्छा पेशा; अच्छी कारिका; धर्मानुष्ठान आदि। वि० दे० 'साधुवृत्त'। **–वेष**–वि० वस्त्राभूषित। **–शब्द**–पु० साधुवाद, प्रशंसा। **–शील**–वि० धर्मात्मा। **–शुक्ल**–वि० बहुत सफेद। **–संसर्ग**–पु० सत्संगति। **–सम्मत**–वि० अच्छे व्यक्तियोंको मान्य। **–साधु**–अ० शाबाश; धन्य-धन्य।

साधुक–पु० (सं०) एक नीच जाति; कदंब; वरुण वृक्ष।

साधुता–स्त्री०, **साधुत्व**–पु० (सं०) सज्जनता; नेकी; सरलता; विशुद्धता, पवित्रता; सचाई।

साधुमती–स्त्री० (सं०) एक तांत्रिक देवी; बोधिसत्त्वोंकी एक श्रेणी।

साधुम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको धर्मात्मा माननेवाला।

साधू–पु० दे० 'साधु'।

साधूक्त–वि० (सं०) सत्पुरुषों द्वारा कथित।

साधृत–पु० (सं०) दुकान; मयूरोंका झुंड; छाता; वन्य वीथी।

साधो*–पु० दे० साधु (संबोधनमें)।

साध्य–वि० (सं०) सिद्ध होने योग्य; पूरा किये जाने योग्य; प्रयोगमें लाये जाने योग्य; सरल; प्राप्य; प्रमाणित करने योग्य; निष्पाद्य; वशमें करने योग्य; अच्छा करने योग्य (रोग); वध्य; शोधनीय। पु० एक देववर्ग; देवता; एक मंत्र; सिद्धि, पूर्ति; वह जिसे प्रमाणित करना हो; सत्ताईस योगोंमेंसे एक (ज्यो०); अनुमेय पक्ष। **–पक्ष**–पु० वह पक्ष जिसे प्रमाणित करना हो (व्यवहार)। **–सम**–पु० एक तरहका हेतु जिसे प्रमाणित करना पड़े। **–साधन**–पु० हेतु (न्या०)। **–सिद्धि**–स्त्री० जिसे करना है उसका संपादन; निष्पत्ति।

साध्यता–स्त्री० (सं०) शक्यता; (रोगका) अच्छा किये जानेकी स्थितिमें होना।

साध्यर्षि–पु० (सं०) शिव।

साध्यवसान रूपक–पु० (सं०) साध्यवसाना लक्षणासे युक्त रूपक अलंकार (सा०) (एलिगोरी)।

साध्यवसाना, साध्यवसानिका–स्त्री० (सं०) पूर्वोक्त विषयका अन्य (विषयी)के साथ अभेदज्ञान करानेवाली लक्षणा (सा०)।

साध्यवसाय–वि० (सं०) जिसका अर्थ ऊपरसे ग्रहण किया जाय (सा०)।

साध्यवान्(वत्)–पु० (सं०) वह पक्ष जिसपर अपना वाद प्रमाणित करनेका भार हो (व्यवहार); वह जिसमें अनुमेय हो।

साध्वस–पु० (सं०) क्षोभ, भय, त्रास, घवड़ाहट; बनावटी भय (ना०)। **–विप्लुत**–वि० भयाभिभूत।

साध्वाचार–पु० (सं०) साधुओंका आचार; शिष्टाचार, भद्रोचित कार्य।

साध्वी–स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री; धर्मपरायणा स्त्री; एक मूल, मेदा।

सानंद–वि० (सं०) आनंदयुक्त, प्रसन्न। पु० सोलह प्रकारके ध्रुवकोंमेंसे एक; गुच्छकरंज; समाधिका एक प्रकार। अ० आनंदपूर्वक, खुशीके साथ।

सानंदाश्रु–पु० (सं०) आनंदके उद्रेकसे निकले हुए आँसू।

सानंदूर–पु० (सं०) एक तीर्थ।

सान–पु० (फा०) (ह्वटस्टोन) पत्थरकी वह चक्की जिसपर उस्तुरा, कैंची आदिकी धार तेज की जाती है (चढ़ाना, देना, धरना)। † स्त्री० शान। **–गुमान**–पु० सुराग; निशान; खयाल; इशारा। **–जदा**–वि० सान रखा हुआ।

सानना–स० क्रि० गूंधना, माँड़ना; शरीक करना, भागी बनाना; लपेटना।

सानल–वि० (सं०) अग्नियुक्त; कृत्तिका नक्षत्रयुक्त। पु० शाल वृक्षका निर्यास।

सानसि–पु० (सं०) सोना, सुवर्ण।

सानाथ्य–पु० (सं०) सहायता, मदद।

सानिका, सानेयिका, सानेयी–स्त्री० (सं०) वंशी।

सानिया–पु० (अ०) पल, क्षण।

सानी–स्त्री० पशुओंका पानीमें साना हुआ चारा; गाड़ीके पहियेमें लगाया जानेवाला गिट्टक; बेतरीके मिलाये हुए कई तरहके खाद्यपदार्थ (व्यंग्य); † सनई। **–पानी(पद)**–खली कराई, भूसे आदिको एकमें मिलाना; कई खाद्यपदार्थोंका मिश्रण। वि० (अ०) दूसरा; जोड़का; समता करनेवाला।

सानु–पु० (सं०) पहाड़की चोटी, शृंग; पहाड़के ऊपरकी चौरस भूमि; अँखुआ; पल्लव; जंगल; सड़क; सतह; करारा; छोर, सिरा; मुनि; विद्वान्; प्रभंजन; सूर्य। **–ज**–पु० प्रपौंडरीक; तुंबुरु वृक्ष। **–प्रस्थ**–पु० एक वानर। **–मानक**–पु० प्रपौंडरीक। **–रुह**–वि० पहाड़पर उपजनेवाला (जैसे जंगल)।

सानुकंप–वि० (सं०) दयालु, कोमलचित्त।

सानुक–वि० (सं०) जो ऊपरकी ओर उठा हो; गर्वित।

सानुकूल–वि० (सं०) दे० 'अनुकूल'।

सानुकूल्य–पु० (सं०) कृपा; सहायता।

सानुक्रम संस्थान–पु० (हायरैरकी) क्रमानुगत अधिकारियोंवाली कोई संस्था।

सानुक्रोश–वि० (सं०) दयालु; करुणाशील।

सानुज–वि० (सं०) अनुज, छोटे भाईसे युक्त। पु० दे० 'सानु'में।

सानुनय–वि० (सं०) विनयशील, शिष्ट। अ० विनयपूर्वक।

सानुनासिक–वि० (सं०) जिस (अक्षर)के उच्चारणमें नाकका योग हो; नाकके योगसे गाने या बोलनेवाला।

सानुप्रास–वि० (सं०) अनुप्रासयुक्त।

सानुप्लव–वि० (सं०) जो अनुयायियोंके साथ हो।

सानुबंध–वि० (सं०) जिसका संबंध विच्छिन्न न हुआ हो, क्रमबद्ध; परिणामयुक्त; जो अपनी वस्तुओंसे युक्त हो।

सानुमान्(मत्)–पु० (सं०) पर्वत।

सानुष्टि–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

साने–वि० (अ०) निर्माता, स्रष्टा; कारीगर। **–कुद्रत**–पु० प्रकृति, स्रष्टा, ईश्वर। **–मुत्लक़,–हक़ीक़ी**–पु० ईश्वर। **–रमा**–वि० बनानेवाला, निभानेवाला, स्रष्टा।

सान्नत–पु० (सं०) एक साम।

सान्नत्य–वि० (सं०) प्राकृतिक प्रवृत्ति-संबंधी।

सान्नहनिक–वि० (सं०) कवच-धारण करनेवाला; युद्धार्थ प्रस्तुत होनेके लिए प्रोत्साहित करनेवाला। पु० कवचधारी सैनिक।

सान्नाय–पु० (सं०) हवनके काममें आनेवाला अभिमंत्रित घृत, होमके लिए विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ घी। **–कुंभी**–स्त्री० उक्त घी रखनेका मरतवान। **–पात्र**–पु० सान्नाय रखनेका पात्र।

सान्न्यासिक–पु० (सं०) सन्न्यासी; यति।

सान्नाहिक–वि० (सं०) दे० 'सान्नहनिक'।

सान्निध्य–पु० (सं०) सामीप्य; सन्निकटता; मुक्तिका एक प्रकार।

सान्निपातिक–वि० (सं०) जटिल, पेचीदा, विषम; त्रिदोषजन्य (विषम रोग)।

सान्निपातिकी–स्त्री० (सं०) एक त्रिदोषज योनि रोग।

सान्मातुर–पु० (सं०) साध्वी स्त्रीका पुत्र।

सान्वय–वि० (सं०) आनुवंशिक; वंशजोंके साथ; सकुल; अर्थगर्भ; समान कार्य करनेवाला।

साप*–पु० दे० 'शाप'।

सापत्न–वि० (सं०) सौत-संबंधी या सौतसे उत्पन्न। पु० सौतेली संतान।

सापत्नक–पु० (सं०) सौतोंकी आपसकी होड़ या दुश्मनी; शत्रुता।

सापत्नेय–वि० (सं०) सौतेला।

सापत्न्य–पु० (सं०) सपत्नीभाव, सौतपन; सौतेलापन; सौतका पुत्र; सौतेला भाई; शत्रुता; प्रतिद्वंद्वी, शत्रु।

सापत्न्यक–पु० (सं०) प्रतिद्वंद्विता; शत्रुता।

सापत्रप–वि० (सं०) लज्जित, संकुचित।

सापन–पु० एक रोग जिसमें सिरके बाल गिर जाते हैं।

सापना*–स० क्रि० शाप देना; कोसना। * पु० स्वप्न–'सापनेमें बिछुरे हरि हेरि हरैं हरैं हरिनीदृग रोवैं'–भाववि०।

सापवादक–वि० (सं०) अपवादयुक्त, जिसमें अपवाद हो सके।

सापाय–वि० (सं०) शत्रुसे भिड़नेवाला; खतरेसे भरा हुआ।

सापिंड्य–पु० (सं०) सपिंडता, सपिंड होनेका भाव।

सापेक्ष–वि० (सं०) जिसमें किसीकी अपेक्षा हो, जो दूसरेपर अवलंबित हो।

सापेक्षतावाद–पु० (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) आइन्स्टाइनका यह सिद्धांत कि प्रकाशको छोड़कर अन्य सब वस्तुओंकी गति सापेक्ष है और उसी तरह दिक्, काल तथा पदार्थकी मात्रा भी सापेक्ष होती है; आपेक्षिकतावाद। (गति बढ़नेपर मात्रा भी बढ़ती है और दिक् तथा कालका मापन वे जिस प्रणालीमें घूम रहे हैं, उस प्रणालीकी गतिपर निर्भर रहता है।)

साप्ततंतव–पु० (सं०) एक प्राचीन धार्मिक संप्रदाय।

साप्तपद–वि० (सं०) सप्तपदी संबंधी, सप्तपदीपर आधृत। पु० सप्तपदी; मैत्री, घनिष्ठता।

साप्तपदीन–वि०, पु० (सं०) दे० 'साप्तपद'।

साप्तपुरुष, साप्तपौरुष–वि० (सं०) सात पीढ़ियोंतक विस्तृत।

साप्तमिक–वि० (सं०) सप्तमी तिथि-संबंधी; सप्तम कारक-

संबंधी ।

साप्ताहिक–वि० (सं०) सप्ताह-संबंधी; सप्ताहभरका; हर सप्ताह, एक सप्ताहके अंतरसे होने या निकलनेवाला । पु० नियत दिनपर हर हफ्ते निकलनेवाला समाचारपत्र ।

साफ़–वि० (अ०) जिसमें मैल न हो, स्वच्छ, निर्मल; उज्ज्वल; वेदाग; वेऐब, निर्दोष; खालिस, शुद्ध; पवित्र; स्पष्ट; खुला हुआ; पढ़ने, सुनने, समझनेमें आसान (लिखावट, आवाज); जिसमें मैल, बुराई न हो, बिना छल-कपटका; पक्का, दोटूक; समतल, बराबर; जिसमें कोई पेच-पाच न हो (बात, मामला); जिसमें सफाई हो (मँजा हुआ) । अ० खुले तौरपर (साफ कहना); पूरे तौरपर (साफ छिपना); सफाईसे, कुशलतापूर्वक (उड़ाना, निकल जाना, इ०); स्पष्ट रूपसे (साफ देखना) । **–इनकार**–पु० स्पष्ट, दोटूक इनकार । **–गो**–वि० स्पष्टभाषी । **–गोई**–स्त्री० स्पष्टवादिता । **–जवाब**–पु० दोटूक जवाब । वि० दोटूक जवाब देनेवाला । **–ज़मीर,–तीनत,–दिली,–बातिन** –वि० अंतःशुद्ध, स्वच्छ मनवाला, पवित्रमनस्क । **–दिल**–वि० जिसके दिलमें छल-कपट, वैर-बुराई न हो । **–दीदा**–वि० ढीठ; निर्लज्ज । **–बात**–स्त्री० दोटूक बात । –(फ़ो) **शफ़्फ़ाक़**–वि० अत्यंत स्वच्छ, निर्मल, चमकदमकवाला । **–साफ़**–अ० खुले तौरपर, स्पष्टतः । मु० **–करना**–सफाई करना; धोना, माँजना; मल दूर करना; फिरसे लिखना, कटी-कुटी लिखावटको ठीक करके लिखना; समतल, मैदान बनाना (जंगल); विघ्न-बाधा दूर करना, खोलना (रास्ता); चुकाना, निबटाना (हिसाब); कुछ बाकी न छोड़ना, सब उठा ले जाना (चोरोंने घर साफ कर दिया); सब खा-पी डालना; मार डालना; सबको खतम कर देना, किसीको जीवित न छोड़ना (हैजेने घरके घर साफ़ कर दिये); माँजना, अभ्यास पक्का करना (हाथ साफ़ करना) । **–कहना**–खरी, बेलाग कहना, सच्ची बात बिना कुछ घटाये-छिपाये कहना; खुलकर, स्पष्ट रूपमें कहना । **–छूटना**–बेदाग छूटना, निर्दोष सिद्ध होकर रिहाई पाना । **–बचना**–बाल-बाल बचना, तनिक भी आँच न आना । **–बनना**–पाक-साफ बनना, सचाई, साधुताका ढोंग करना । **–बोलना**–उच्चारण और लहजा ठीक होना, शुद्ध प्रवाहके साथ बोलना । **–मैदान पाना**–कोई विघ्न-बाधा न होना; एकांत मिलना । **–होना**–साफ किया जाना ।

साफल्य–पु० (सं०) फलयुक्त होनेका भाव; सफलता; उपयोगिता; लाभ ।

साफ़ा–पु० एक तरहकी पगड़ी जो कुछ अधिक ऊँची होती है, मुरेठा; वह कपड़ा जो इस काममें लाया जाय । **–पानी**–पु० (फ़ुरसतके साथ) नित्यके पहननेके कपड़ोंमें साबुन लगाकर सूखनेको डाल देना और फिर नहाना । मु० **–देना**–शिकारी जानवरोंको इसलिए भूखा रखना कि वे शिकारपर ज्यादा तेजीसे टूटें; कबूतरको अधिक ऊँचे उड़नेके लिए भूखा रखना ।

साफ़िर–वि० (अ०) सफर करनेवाला । पु० दुबला घोड़ा ।

साफ़ी–स्त्री० (अ०) छाननेका कपड़ा, खासकर वह कपड़ा जिससे भंग छानी जाय; गाँजेकी चिलमके नीचे लपेटनेका कपड़ा; वह कपड़ा जिससे बावरची देग आदि पकड़कर चूल्हेसे उतारते हैं । वि० शुद्ध करनेवाला; शुद्धता, सफ़ाई । **–नामा**–पु० राजीनामा ।

साबत†–वि० साबूत । पु० सामंत (डिं०) ।

साबन–पु० दे० 'साबुन' ।

साबर–पु० एक मंत्र जो शिवका बनाया माना जाता है; साँभर हिरन या उसका चमड़ा; सेंहुड़; मिट्टी आदि खोदनेका रुखानी जैसा एक औजार, सबरी ।

साबल–पु० भाला, बरछी; सबरी ।

साबस†–अ० दे० 'शाबाश' ।

साबाध–वि० (सं०) अस्त-व्यस्त; अस्वस्थ ।

साबिक़–वि० (अ०) पिछला, बीता हुआ, गत । **–दस्तूर**–अ० पुराने दस्तूर, रीतिके अनुसार, यथापूर्व । **–में**–अतीतकालमें, पहले ।

साबिक़ा–पु० (अ०) वास्ता, सरोकार; काम (पड़ना, होना) ।

साबित–वि० (अ०) स्थिर; दृढ़; सिद्ध: प्रमाणित; साबूत, अखंड, समूचा । पु० अचल तारा । **–क़दम**–वि० दृढ़; वचन, निश्चयपर दृढ़ रहनेवाला; दृढ़प्रतिज्ञ । **–क़दमी**–स्त्री० साबितकदम होना ।

साबिर–वि० (अ०) सब्र करनेवाला, सहन करनेवाला; सहनशील; हर हालतमें ईश्वरेच्छापर निर्भर रहनेवाला ।

साबिरा–स्त्री० (अ०) हर हालतमें प्रभुनिर्भरा स्त्री ।

साबुन–पु० कास्टिक सोडा, सज्जी, तेल आदिके योगसे प्रस्तुत एक प्रसाधन जिसे पानीमें रगड़नेसे फेन निकलता और जो शरीर, कपड़े आदि साफ करनेके काम आता है । **–का तार**–साबुन काटनेका तार; (ला०) अलिप्त, अनासक्त । **–फ़रोस**–वि० साबुन बेचनेवाला । **–साज़ी**–स्त्री० साबुन बनानेका धंधा ।

साबुनीकरण–(सैपोनिफ़िकेशन) वसा या तैल और क्षारक (बेस) की इस प्रकारकी पारस्परिक अभिक्रिया कि उससे ग्लिसरीन और कोई एक साबुन उत्पन्न हो जाय; जैसे बछड़ेकी चर्बी (वसा) जो एक एस्टर है, कास्टिक सोडाके साथ गर्म किये जानेपर ग्लिसरीन और साबुन देता है । प्रायः सदैव ही साबुनीकरणमें ग्लिसरीन एक उपोत्पादके रूपमें प्राप्त होता है ।

साबूदाना–पु० दे० 'सागूदाना' ।

साबूत–वि० अखंड, समूचा ।

साबून–पु० (अ०) दे० 'साबुन' ।

साब्दी–स्त्री० (सं०) द्राक्षा, दाख ।

साभार–अ० (सं०) आभारके साथ, एहसान प्रकट करते हुए ।

साभिप्राय–वि० (सं०) अभिप्राययुक्त; विशेष अर्थयुक्त; अपने निश्चयपर दृढ़; विशेष प्रयोजनवाला ।

साभिमान–वि० (सं०) गर्वीला, घमंडी । अ० घमंडके साथ ।

साभ्यसूय–वि० (सं०) ईर्ष्यालु, डाह करनेवाला । अ० ईर्ष्याके साथ, द्वेषपूर्वक ।

सामंजस्य–पु० (सं०) औचित्य; संगति; अनुकूलता; उपयुक्तता; विरोध, विषमता न होना, मेल ।

सामंत–वि० (सं०) सीमावर्ती, पड़ोसी; सार्वभौम । पु० पड़ोसी; पड़ोसका राजा; कर देनेवाला राजा; मांडलिक, बड़ा जमींदार; योद्धा; नायक; पड़ोस । **–चक्र**–पु० पड़ोसके राजाओंका मंडल । **–ज**–वि० करद नरेशसे उत्पन्न (खतरा) । **–तंत्र, –वाद**–पु० (फ्यूडल सिस्टम, फ्यूडलिज्म) किसी राज्यकी वह शासन-व्यवस्था जिसमें राज्यकी भूमि बड़े-बड़े सामंतों, सरदारों या जमींदारोंके जिम्मे रहती थी और ये उसके बदले राजाको आर्थिक या सनिक सहायता देते थे । **–देश**–पु० (प्रिंसिपैलिटी) किसी सामंत या सरदारके अधीन देश या क्षेत्र । **–भारती**–स्त्री० एक मिश्र राग । **–वासी(सिन्)**–वि० सीमापर रहनेवाला । **–शाही**–स्त्री० सामंती व्यवस्था, (फ्यूडलिज्म) । पु० पड़ोसी । **–सारंग**–पु० सारंग रागका एक भेद ।

सामंती–स्त्री० सामंतकी स्थिति, पद; (सं०) एक रागिनी ।

सामंतेय–पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि ।

सामंतेश्वर–पु० (सं०) सम्राट्, राजेश्वर ।

साम–पु० एशियाका एक देश, स्याम । (अ०) नूहका बड़ा बेटा (अरब, यहूदी, मिस्री आदि इसीकी संतान माने जाते हैं); मृत्यु; हनन, हलाकी । (फा०) पु० शोथ, पीड़ा, दर्द; अग्नि । वि० (सं०) जो अच्छी तरह पचा न हो; *श्याम, काले रंगका–'जमुना साम भई तेहि झारा'–प० । † स्त्री० दे० 'शाम'; शामी ।

साम(न्)–पु० (सं०) चार वेदोंमेंसे एक; वेदके गेय मंत्र; स्तुति-मंत्र; शांत करना; तुष्ट करना; राजाके चार उपायोंमेंसे एक (कह-सुनकर अपनी ओर कर लेना); मधुर वचन; कोमलता, नरमीयत । **–कारी(रिन्)**–वि० ढाढ़स बँधानेवाला, शांत करनेवाला; मधुरभाषी । पु० सामका निर्माता; एक तरहका सामगान । **–ग**–पु० सामवेदी ब्राह्मण; विष्णु । **–गर्भ**–पु० विष्णु । **–गान**–पु० सामका गायक; सामका गान । **–०प्रिय** –पु० शिव । **–गान,–गीत**–पु० सामका गान । **–गायक**–पु० सामवेदी ब्राह्मण । **–गायी(यिन्)**–वि०, पु० साम गानेवाला ।

–ज,–जात–वि० सामसे उत्पन्न; साम उपायसे उत्पन्न। पु० हाथी। **–त्रय**–पु० सोंठ, हर्रे और गिलोयका समाहार। **–ध्वनि**–स्त्री० सामगानकी ध्वनि। **–निधन**–पु० सामका अंतिम वाक्य। **–योनि**–वि० सामसे उत्पाद्य। पु० हाथी; ब्रह्मा। **–प्रयोग**–पु० मीठे शब्दोंका प्रयोग। **–वाद**–पु० मीठे वचन। **–विद्**–वि० सामवेदका ज्ञाता। **–विप्र**–पु० सामगान करनेवाला ब्राह्मण। **–वेद**–पु० तीसरा वेद। **–वेदी(दिन्)**–पु० सामवेद जाननेवाला ब्राह्मण। **–श्रवा(वस्)**–पु० याज्ञवल्क्यका एक शिष्य। **–साध्य**–वि० जो मेलसे सिद्ध किया जा सके। **–साली***–वि०, पु० राजनीतिज्ञ। **–सावित्री**–स्त्री० एक सावित्री मंत्र।

सामक–पु० साँवाँ; (सं०) मूल धन; सान चढ़ानेका पत्थर। वि० सामवेद-संबंधी।

सामग्री–स्त्री० (सं०) आवश्यक वस्तुओंका समूह, सामान, माल-असबाब; प्रयोजन-संबंधी वस्तुएँ, उपकरण; साधन।

सामग्र्य–पु० (सं०) समुदायत्व; संपूर्णता; औजार; भंडार, कोष; दलबल; माल-असबाव।

सामत*–स्त्री० शामत, विपत्ति, बदकिस्मती। पु० सामंत।

सामध*–पु० समधियोंका आपसमें मिलना (एक रस्म)–'सामध देखि देव अनुरागे'–रामा०।

सामना–पु० मुकाबला; भेंट; लड़ाई, भिड़ंत, मुठभेड़; किसी चीजका अगला हिस्सा, मोहरा; गुस्ताखी, धृष्टता।

सामनी–स्त्री० (सं०) पशुओंको बाँधनेकी रस्सी।

सामने–अ० आगे; मुकाबलेमें; रूबरू; मौजूदगीमें; सीधमें। मु० **–आना**–मुकाबलेमें आना; रूबरू होना; मुँह दिखाना; दिखाई देना। **–करना**–मुकाबलेमें लाना; पेश करना; आगे करना। **–का**–आगेका, मौजूदगीका; अपना देखा हुआ। **–की चोट**–खुली हुई चोट। **–की बात**–मौजूदगीका हाल। **–पड़ना**–रोककर खड़ा होना; संयोगसे मिल जाना। **–से उठ जाना**–मौजूदगीमें न रहना; मर जाना। **–होना**–रूबरू होना; परदा न करना; मुकाबला करना; लड़नेको तैयार होना; धृष्टतापूर्वक वर्ताव करना।

सामन्य–पु० (सं०) सामवेदी ब्राह्मण; सामगानमें कुशल व्यक्ति। वि० सामगानमें कुशल; मैत्रीपूर्ण, अनुकूल।

सामयिक–वि० (सं०) समयोचित, समयके विचारसे उपयुक्त; समय-संबंधी; वर्तमानकाल-संबंधी; एकमत; जो ठहरावके मुताबिक हो; ठीक समयपर होनेवाला; अस्थायी; नियत समयपर होनेवाला। **–पत्र**–पु० (पीरियाडिकल) दे० 'सावधिक पत्र'; नियत समयपर प्रकाशित होनेवाले पत्र या पत्रिकाएँ; मुकदमेकी शामिल पैरवीके लिए (बहुतोंका) लिखा जानेवाला इकरारनामा। **–वार्ता**–स्त्री० (टॉपिकल टॉक) आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की जानेवाली सामयिक घटनाओं या किसी सामयिक प्रश्न, विषय आदिकी चर्चा।

सामयिकी–स्त्री० (सं०) सामयिक बातोंसे सम्बद्ध चर्चा या विवेचन।

सामर*–पु० समर। * वि० श्याम रंगका; (सं०) देवयुक्त; समर-संबंधी।

सामरथ†–स्त्री० दे० 'सामर्थ्य'।

सामरिक–वि० (सं०) युद्ध-संबंधी; समरका।

सामरिकता–स्त्री० (सं०) युद्धकार्योंमें लग्न रहना, लड़ाई-भिड़ाई।

सामरेय–वि० (सं०) समर-संबंधी।

सामर्घ्य–पु० (सं०) सस्ती; सस्तापन।

सामर्थ†–स्त्री० दे० 'सामर्थ्य'।

सामर्थी–वि० शक्तिमान्, सामर्थ्ययुक्त, बलवान्, पराक्रमी; कार्य करनेकी शक्ति रखनेवाला।

सामर्थ्य–पु०, स्त्री० (सं०) शक्ति, बल, क्षमता; उद्देश्यकी समानता; भावकी समानता; उपयुक्तता, औचित्य; शब्दकी अर्थशक्ति; लाभ; धन। **–हीन**–वि० शक्तिहीन, निर्बल।

सामवायिक–वि० (सं०) समूह, दल-संबंधी; अभेद्य संबंध-विषयक। पु० मंत्री; दलका प्रधान। **–राज्य**–पु० युद्ध-भयसे आत्मरक्षार्थ मैत्री करनेवाला राज्य (कौ०)।

सामस्त–पु० (सं०) शब्दरचनाका सिद्धांत। * वि० दे० 'समस्त'।

सामस्त्य–पु० (सं०) समग्रता, संपूर्णता।

सामहिँ, सामहि–अ० सामने, समक्ष।

सामाँ, सामा*–पु० साँवाँ; सामान। स्त्री० डौल, प्रबंध।

सामांग–पु० (सं०) सामवेदका अंग।

सामाजिक–वि० (सं०) समाज-संबंधी; समाजसे संबंध रखनेवाला; सहृदय। पु० सदस्य; दर्शक। **–व्यवस्था**–स्त्री० (सोशल आर्डर) समाजके निर्माणादिका ढंग। **–सुरक्षा**–स्त्री० (सोशल सिक्यूरिटी) बेकारी और अभाव तथा चोर-डाकुओं आदिसे परित्राणकी व्यवस्था।

सामान–पु० (फा०) असबाव, चीज-वस्तु; किसी कार्यके लिए आवश्यक, साधनरूप वस्तुएँ, सामग्री। **–घर**–पु० (लगेज ऑफिस) रेल-स्टेशन, बस स्टेशन आदिका वह कमरा जहाँ मुसाफिरोंका सामान तौलकर महसूल लेने, सुरक्षित रखने आदिकी व्यवस्था होती है। **–(ने) ऐश**–पु० भोगविलासकी सामग्री, सुखसामग्री। **–ख़ानादारी**–पु० घर-गृहस्थीकी आवश्यक वस्तुएँ। **–(ने)जंग**–पु० युद्ध-सामग्री, हरबा-हथियार। **–ज़ीनत**–पु० सजावटकी सामग्री। **–सफ़र**–पु० यात्राके लिए आवश्यक वस्तुएँ। मु० **–करना**–तैयारी करना, आवश्यक चीजें जुटाना। **–बनना**–सामान होना, प्रबंध या तैयारी होना।

सामानग्रामिक–वि० (सं०) एक गाँवका रहनेवाला।

सामानदान–पु० (फा०) (मोटर आदिमें पीछेकी ओर बनी) सामान रखनेकी जगह।

सामानदेशिक–वि० (सं०) एक गाँवसे संबद्ध।

सामानाधिकरण्य–पु० (सं०) समान स्थितिमें होना; समान पद या कार्य; एक ही कर्मसे संबंध होनेकी स्थिति या एक ही कारकमें होना (व्या०)।

सामानिक–वि० (सं०) जो पदमें किसीके समान हो।

सामान्य–वि० (सं०) साधारण, मामूली; समान; औसत दरजेका; तुच्छ, अदना, महत्त्वहीन; संपूर्ण, समग्र। पु० सादृश्य, समानता; मानसिक साम्य; मध्यकी अवस्था; सार्वभौमता; समग्रता, संपूर्णता; सबमें पाया जानेवाला गुण या चिह्न; सार्वजनिक कार्य; प्रकार, भेद अनुरूपता; साधारण कथन या सिद्धांत; एक अर्थालंकार जहाँ दो या अधिक वस्तुओंका पृथक् अस्तित्व होते हुए भी एकरूपता, समानता आदिके कारण भेद न जान पड़े। **–च्छल**–पु० वाक्छलका एक भेद (प्रतिवादीके कथनको बहुत व्यापक बना देना)। **–ज्वर**–पु० मामूली बुखार। **–ज्ञान**–पु० सामान्य या साधारण धर्मका ज्ञान; लोक विषयक साधारण बातोंका ज्ञान। **–नायिका**–स्त्री० दे० 'सामान्यवनिता'। **–पक्ष**–पु० मध्य स्थिति। **–बुद्धि**–स्त्री० सहज बुद्धि (कॉमन सेंस)। **–भविष्यत्**–पु० भविष्यत् कालका एक भेद जिसमें भविष्यमें होनेवाली क्रियाका साधारण रूप रहता है (व्या०)। **–भूत**–पु० भूतकालका एक भेद जिसमें भूतकालकी क्रियाका साधारण रूप रहता है, कोई विशेषता नहीं होती (व्या०)। **–लक्षण**–पु० वह चिह्न जो जातिभरमें पाया जाय। **–लक्षणा**–स्त्री० तीन अलौकिकों (सन्निकर्षों)मेंसे एक (न्या०)। **–वचन**–वि० सामान्य धर्मका द्योतक। पु० वस्तुवाचक शब्द। **–वनिता**–स्त्री० वेश्या। **–वर्तमान**–पु० वर्तमान कालका एक भेद जिसमें क्रियाका वर्तमान कालमें होना दिखलाया जाता है (व्या०)। **–विधि**–स्त्री० आदेशका साधारण रूप जिसमें कोई विशेष बात, अपवाद आदि न हो (कॉमन ला)। **–शासन**–पु० सामान्य अधिकार; साधारण राजाज्ञा, निर्देश।

सामान्यतः(तस्), सामान्यतया–अ० (सं०) साधारणतः; आम, मामूली तौरसे।

सामान्यतोदृष्ट–पु० (सं०) एक तरहका अनुमान जो न तो कारणसे कार्यके रूपमें निकाला गया हो और न कार्यसे कारणके रूपमें; कार्य-कारण-संबंधसे भिन्न साधर्म्य।

सामान्या–स्त्री० (सं०) वारांगना, वेश्या।

सामान्यिक–पु० (सं०) सबपर समान भाव रखते हुए एकांतमें आत्मचिंतन करना (जै०)। वि० मायामय, मायायुक्त।

सामान्यीकरण–किसी विशिष्ट तत्त्वको इस ढंगसे प्रस्तुत करना कि वह अतिसाधारण प्रतीत हो। इसे नवलेखनमें अवगुण माना जाता है।

सामाश्रय–पु० (सं०) वह मकान जिसके पश्चिम ओर मार्ग हो।

सामासिक–वि० (सं०) सामूहिक; संक्षिप्त; समास-संबंधी (व्या०); मिश्रित। पु० समस्त पद।

सामि–स्त्री० (सं०) निंदा। अ० समयसे पहले, अधूरी अवस्थामें; अंशतः। **–कृत**–वि० जो अंशतः किया गया हो। **–पीत**–वि० आधा पिया हुआ। **–भुक्त**–वि० आधा खाया हुआ। **–संस्थित**–वि० अर्द्धकृत।

सामिक–पु० (सं०) बलिपशुको अभिमंत्रित करना; वृक्ष।

सामित–वि० (सं०) गेहूँका आटा मिलाया हुआ; गेहूँके आटेका बना हुआ।

सामित्य–पु० (सं०) समितिका भाव। वि० समिति-संबंधी।

सामिधेन–वि० (सं०) यज्ञाग्नि-संबंधी; यज्ञकी अग्नि जलानेसे संबंध रखनेवाला।

सामिधेनी–स्त्री० (सं०) यज्ञाग्नि जलाने या उसमें समित् डालनेका एक मंत्र; समित्।

सामिधेन्य–वि० (सं०) दे० 'सामिधेन'।

सामियाना–पु० दे० 'शामियाना'।

सामिरी–पु० (अ०) सामिरानिवासी एक जादूगर जिसने मूसाकी उम्मतमें गायकी पूजा प्रचलित की। **–फ़ेन**–वि० जादूगर, छली, प्रपंची, वंचक, मक्कार। **–यत**–स्त्री० जादूगरी, इन्द्रजाल।

सामिल†–वि० दे० 'शामिल'।

सामिष–वि० (सं०) मांसयुक्त। **–श्राद्ध**–पु० वह श्राद्ध जिसमें मांसका उपयोग हो।

सामिष भोजनालय–पु० (नॉन-वेजिटेरियन रिफ्रेशमेंट रूम या नॉन-वेजिटेरियन होटल) वह भोजनालय जहाँ मांस या मांसके बने पदार्थ भी भोजनार्थ उपलब्ध हों।

सामी*–पु० दे० 'स्वामी'। † स्त्री० छड़ी या औजार आदिकी रक्षाके लिए उसपर पहनाया जानेवाला लोहे, पीतल आदिका छल्ला। (फा०) वि० उच्च, श्रेष्ठ, पूज्य।

सामी–पु० साम–अरब, असीरिया, बेबिलोन आदि–भूभागके निवासी; उक्त प्रदेशकी प्राचीन भाषा।

सामीची–स्त्री० (सं०) वंदना, स्तुति; नम्रता, शिष्टता। **–करणीय**–वि० नम्रता-पूर्वक अभिवादन करने योग्य।

सामीचीन्य–पु० (सं०) औचित्य, उपयुक्तता।

सामीप्य–पु० (सं०) निकटता, समीपता; पड़ोस; मुक्तिका एक भेद; पड़ोसी।

सामीरण, सामीर्य–वि० (सं०) समीर-संबंधी।

सामुझि*–स्त्री० दे० 'समझ'।

सामुदायिक–वि० (सं०) समुदाय-संबंधी; सामूहिक। पु० जन्मके समय चंद्रमा जिस नक्षत्रमें हों उससे अठारहवाँ नक्षत्र। **–योजना**–स्त्री० (काम्यूनिटी प्रोजेक्ट) कृषि-सुधार, शिक्षा-प्रसार, पथ-निर्माण, नल-कूपखनन आदिकी ऐसी योजना जिसे देशके किसी भागका जनसमूह ही, मुख्य रूपसे, कार्यान्वित करे।

सामुद्ग–पु० (सं०) खातयुक्त संधि (जैसे कक्ष आदि); खानेके पहले और पीछे खायी जानेवाली दवा।

सामुद्र–वि० (सं०) समुद्रजन्य; समुद्र-संबंधी। पु० नाविक; सामुद्रिक व्यापार करनेवाला; कर्ण और वैश्यासे उत्पन्न संतान; एक तरहका मच्छड़; समुद्रलवण; समुद्रफेन; देहचिह्न; नारियल; एक विशेष समयकी वर्षाका जल। **–ज्ञ**–वि०.दे० 'सामुद्रविद्'। **–निष्कुट**–पु० समुद्रतटवासी; एक जनपद। **–बंधु**–पु० चंद्रमा। **–विद्**–वि० देहचिह्नोंका ज्ञाता। **–स्थलक**–पु० समुद्रके पासका भूभाग।

सामुद्रक–पु० (सं०) समुद्रलवण; देहचिह्नोंके शुभाशुभ होनेका विचार करनेवाला ग्रंथ या व्यक्ति।

सामुद्रिक–वि० (सं०) देहचिह्न संबंधी; समुद्रजन्य। पु० सामुद्रक; वह विद्या जिसके सहारे देह चिह्नोंका ज्ञान प्राप्त किया जाता है; नाविक।

सामुहाँ*–अ० सामने।

सामुहें*–अ० सामने।

सामूना–स्त्री० (सं०) एक तरहका काला हिरन जो लगभग डेढ़ हाथ लंबा होता है।

सामूहिक–वि० (सं०) समूह-संबंधी; समूहमें एकत्र; पंक्तिबद्ध; समूह द्वारा होनेवाला (कलेक्टिव)।

सामृद्ध्य–पु० (सं०) अभ्युदय, उन्नति; वैभव।

सामे–वि० (अ०) श्रोता, सुननेवाला। **–अब्रस**–स्त्री० छिपकली; गोह।

सामोद–वि० (सं०) आनंदयुक्त, प्रसन्न; सुगंधित। अ० आमोदपूर्वक।

सामोद्भव–पु० (सं०) हाथी।

सामोपचार, सामोपाय–पु० (सं०) नरम उपाय काममें लाना।

सामोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

साम्न–वि० (सं०) साम-मंत्रोंसे संबंध रखनेवाला।

साम्नी–स्त्री० (सं०) छंदका एक भेद; पशुओंको बाँधनेकी रस्सी।

साम्मत्य–पु० (सं०) सहमति, सम्मत होनेका भाव।

साम्मुखी–स्त्री० सायंकालतक रहनेवाली तिथि।

साम्मुख्य–पु० (सं०) उपस्थिति, विद्यमानता; अनुग्रह, कृपा; देखभाल।

साम्य–पु० (सं०) सादृश्य, समानता; सामंजस्य; उदासीनता, निष्पक्षता; दृष्टिकोणकी एकरूपता। **–तंत्र**–पु० साम्यवादके सिद्धांतानुसार चलनेवाली शासन-प्रणाली। **–वाद**–पु० मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एक सिद्धांत जिसका उद्देश्य प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा ऐसे वर्गहीन समाजकी स्थापना है जिसमें संपत्तिपर समाजका समान अधिकार हो और व्यक्तिसे शक्तिभर काम लेकर उसकी सारी आवश्यकताएँ पूर्ण की जायँ (कम्यूनिज्म)। **–वादी(दिन्)**–वि० साम्यवादका सिद्धांत माननेवाला (कम्यूनिस्ट)।

साम्या–स्त्री० (सं०) समदर्शितापूर्ण व्यवहार (ईक्विटी)। **–मूलक**–वि० साम्यिक (इक्विटेबुल)।

साम्यावस्था–स्त्री०, **साम्यावस्थान**–पु० (सं०) प्रकृतिके तीनों गुणों–सत्त्व, रज और तम–की समावस्था।

साम्राज्य–पु० (सं०) सार्वभौम सत्ता; पूर्ण प्रभुता; आधिपत्य; प्राधान्य; बाहुल्य; शासनाधीन बहुत बड़ा क्षेत्र जिसमें कई देश हों। **–कृत्**–वि० साम्राज्यका शासन करनेवाला। **–लक्ष्मी**–स्त्री० साम्राज्यकी अधिष्ठात्री देवी (तं०)। **–वाद**–पु० एक राष्ट्रका दूसरेको अधिकारमें लाकर उसे अपने हितका साधन बनानेका सिद्धांत (इंपीरियलिज्म); सैनिक विजय, राजनीतिक छलबल अथवा आर्थिक आधिपत्य द्वारा साम्राज्य स्थापित करनेकी प्रवृत्ति या नीति। **–वादी(दिन्)**–वि० साम्राज्यवादका अनुयायी।

साम्राज्यांतर्गत अधिमान्यता–स्त्री० (इंपीरियल प्रेफरेंस) व्यापार-वाणिज्यके मामलेमें ब्रिटिश-साम्राज्यके भीतरके देशोंको, अन्य देशोंकी तुलनामें, परस्पर कम आयात-निर्यात-कर लगाकर, अधिमान्यता देनेकी नीति।

साम्राणिकर्दम–पु० (सं०) जवादि नामक गंधद्रव्य।

साम्राणिज–पु० (सं०) महापारेवत।

साम्हना†–पु० दे० 'सामना'।

साम्हने†–अ० दे० 'सामने'।

साम्हर†–पु० दे० 'साँभर'।

सायं–'सायम्'का समासगत रूप। **–काल**–पु० शामका वक्त। अ० शामके वक्त। **–कालिक,–कालीन**–वि० संध्याकाल-संबंधी। **–गृह**–वि० जहाँ संध्या हो वहीं घर बना लेने, ठहर जानेवाला। **–धृति**–स्त्री० सायंकालका होम। **–निवास**–पु० सायंकालका विश्रामगृह। **–पोष**–पु० ब्यालू। **–प्रातः(तस्)**–अ० सुबह-शाम। **–भोजन**–पु० ब्यालू। **–संध्या**–स्त्री० गोधूलि, मंद प्रकाश; सायंकालीन उपासना; वह देवी जिसकी उपासना संध्यासमय की जाय। **–०देवता**–स्त्री० सरस्वती। **–होम**–पु० संध्या समय किया जानेवाला होम।

सायंतन–वि० (सं०) सायंकाल-संबंधी। **–मल्लिका**–स्त्री० शामको खिलनेवाली चमेली। **–समय**–पु० सायंकाल।

सायंस–पु० दे० 'साइंस'।

साय–पु० (सं०) अंत, समाप्ति, अवसान; दिनका अवसान, संध्या; वाण।

सायक–पु० (सं०) वाण; खड्ग; पाँचकी संख्या (कामदेवके पाँच वाणोंसे); आकाशका विस्तार; रामशर; एक वृत्त; * सायंकाल। **–पुंख**–पु० वाणका पंखवाला भाग। **–पुंखा**–स्त्री० शरपुंखा, सरफोंका।

सायण–पु० (सं०) ईसाकी चौदहवीं शताब्दीके एक सुप्रसिद्ध विद्वान् जिन्होंने वेदोंका भाष्य किया (ये मायणके पुत्र और विष्णु सर्वज्ञ तथा शंकरानंदके शिष्य थे)। **–वाद**–पु० आचार्य सायण द्वारा प्रवर्तित मत।

सायणीय–वि० (सं०) सायण-संबंधी। पु० सायणकृत ग्रंथ।

सायत–स्त्री० दे० 'साअ़त'।

सायन–पु० दे० 'सायण'। वि० (सं०) अयनांश अर्थात् क्रांतवृत्त और नाडीवृत्तोंके संपातसे युक्त (सूर्यकी स्थिति)।

सायबान–पु० (फा०) वह छप्पर या कपड़ा आदिका परदा जो धूप या वर्षासे बचावके लिए मकान या खीमेके आगे लगा लिया गया हो।

सायम–वि० (अ०) रोजा रहनेवाला।

सायमधिवास–पु० (सं०) आश्विन-शुक्ला पंचमीको किया जानेवाला दुर्गाका शृंगार।

सायमशन, सायमाश–पु० (सं०) सायंकालका भोजन; (डिनर) (श्वेतांग जातियोंमें) संध्याको किया जानेवाला मुख्य भोजन।

सायमाहुति–स्त्री० (सं०) सायंकालीन होम।

सायम्–अ० (सं०) संध्याके समय, शामके वक्त। **–मंडन**–पु० सूर्यास्त; सूर्य। **–मंत्र**–पु० सायंकाल प्रयुक्त होनेवाला मंत्र।

सायर*–पु० सागर–'नैन नीर सब सायर भरे'–प०; † पटेला, हेंगा। वि० (अ०) सैर करनेवाला, भ्रमणकारी; अनियत, अस्थायी। पु० महसूल, चुंगी; जिस भूमिपर कोई कर न लगता हो, जैसे जंगल, तालाव, नदी, वाग आदि। **–ख़र्च**–पु० फुटकर खर्च, अनिश्चित, असाधारण खर्च।

सायल–वि०, पु० (अ०) सवाल करनेवाला; चाहनेवाला; प्रार्थी, अर्जी देनेवाला; याचना करनेवाला।

साया–पु० साड़ीके नीचे पहननेकी घाँघरे जैसी चीज; (फा०) छाया, छाँह; परछाईं; (ला०) आश्रय, संरक्षण; सुहवतका असर; जिन, परीकी सवारी, प्रेतवाधा; चित्र या फोटोका छाया दिखानेवाला भाग। **–गाह**–स्त्री० सुरक्षा स्थान। **–ज़दा**–वि० प्रेतवाधाग्रस्त। **–दार**–वि० छायायुक्त, छाँहवाला। मु० **–उठना**–संरक्षकका मर जाना। **–उतरना**–छायाका ऊपरसे नीचे आना; प्रेतवाधा दूर होना। **–पड़ना**–छाँह पड़ना; सुहवतका असर होना। **–होना**–जिन, परीका असर, प्रेतवाधा होना। **–(ये)की तरह साथ या साथ-साथ फिरना, होना**–हर वक्त साथ लगे रहना, छनभरके लिए भी बिलग न होना। **–में आना**–जिन, परी आदिका असर पड़ जाना, प्रेतवाधा होना। **–से बचकर चलना**–बहुत दूर रहना, असर न पड़ने देना। **–से भागना**–भड़कना; सामीप्यसे डरना; नफरत करना।

सायाह्न–पु० (सं०) संध्या, शाम।

सायिका–स्त्री० (सं०) क्रमस्थिति; कटार।

सायी(यिन्)–पु० (सं०) अश्वारोही।

सायुज्य–पु० (सं०) ऐसा संयोग जिसमें कोई भेद न रहे, एकमें मिल जाना, एकत्व; मुक्तिका एक भेद जिसमें जीवात्मा परमात्मामें लीन हो जाता है; एकरूपता, सादृश्य।

सायुध–वि० (सं०) सशस्त्र; हथियारोंसे लैस (आर्म्ड)।

सारंग–वि० (सं०) नानावर्ण; बूंदोंवाला; रंजित; * सुंदर; सरस। पु० विभिन्न वर्ण; चित्रमृग; मृग–'सारंग प्रीति करी जो नादसों सनमुख बान सह्यो'–सूर; सिंह; हाथी; भ्रमर; कोयल; खंजन; लवा पक्षी; मयूर; राजहंस; चातक; मधुमक्खी; एक वृत्त; एक राग; बादल; वृक्ष; छाता; वस्त्र; बाल; शंख; शिव; कामदेव; पुष्प; कमल; कपूर; धनुष्; विष्णुका धनुष्; चंदन; एक वाद्य, सारंगी; आभूषण; सुवर्ण; पृथ्वी; रात्रि; प्रकाश; दीप्ति; शोभा; रत्न; अश्व; सरोवर; समुद्र; जल; कपोत; स्तन; वायस; हाथ; नक्षत्र; हल; मेढक; आकाश; अंजन; विद्युत्; सर्प; चंद्रमा। **–चर**–पु० शीशा (?)। **–ज**–पु० हिरन। **–०दृशी**–वि० स्त्री० मृगनयनी। **–नट**–पु० एक संकर राग। **–नाथ**–प० सारनाथका प्राचीन नाम। **–पाणि**–पु० विष्णु। **–पानि***–पु० विष्णु। **–लोचना**–वि० स्त्री० मृगनयनी। **–शवल**–वि० चित्र-विचित्र (अश्व)। **–हर***–पु० शार्ङ्गधर, विष्णु। **–ह्लार**–पु० योगियोंका एक भेद।

सारंगा–स्त्री० एक ही लकड़ीकी बनी हुई डोंगी; एक तरहकी बड़ी नाव; एक रागिनी।

सारंगाक्षा–वि० स्त्री० (सं०) मृगनयनी।

सारंगिक–पु० (सं०) बहेलिया, चिड़ीमार; एक वर्णवृत्त।

सारंगिका–स्त्री० (सं०) सारंगिक, बहेलियेकी स्त्री; सारंगी।

सारंगिया–पु० सारंगी बजानेवाला।

सारंगी–स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध तंत्रवाद्य; चित्रमृगी; एक वृत्त; एक रागिनी।

सारंड–पु० (सं०) साँपका अंडा।

सारंभ–पु० (सं०) क्रोधपूर्ण वार्तालाप, गरमागरम बहस।

सार–वि० (सं०) मुख्य; सर्वोत्तम; वास्तविक; दृढ़; शक्तिशाली; पूर्णतः प्रमाणित; दूर करनेवाला, नाशक; जिसमें आरे हों। पु० मूल भाग; सत; मज्जा; गूदा; यथार्थ बात; मथितार्थ; सारांश (ऐवस्ट्रैक्ट); निर्यास, गोंद; शक्ति, बल; शौर्य; साहस; दृढ़ता; संपत्ति; अमृत; ताजा मक्खन; वायु; साढ़ी; रोग; पूय; श्रेष्ठता; शतरंजका मोहरा; पाँसा; वज्रक्षार; हृदय; जल; उपयुक्तता; औचित्य; जंगल; इस्पात, लोहा–'मुए चामकी साँसते सार भसम हो जाय'; अस्थि, मज्जा आदि शरीरस्थ आठ (कुछके मतसे सात) पदार्थ; मूल्य, (बीसल०), महत्त्व; गोबर; गोशाला; नतीजा, फल; दुहनेके बाद तुरंत औटा हुआ दूध; चिरौंजीका पेड़; अनारका वृक्ष; मूंग; काढ़ा; नीलका पौधा; गमन, गति; विस्तार, फैलाव; एक वृत्त; एक अर्थालंकार जहाँ वर्णित वस्तुओंका उत्तरोत्तर उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाया जाय; † साला; * सँभाल, सेवा–'करिहैं सास ससुर सम सारा'–रामा०; हथियार; शल्य; धैर्य–'···कपि लौं पुकारैं कोऊ धरत न सार है'–भू०; शय्या; मैना। * स्त्री० संदेश, खबर–'तलफत छाँड़ि चले मधुवनको फिरिकै लई न सार'–सूर; होश-हवास। **–खदिर**–पु० एक तरहका कत्था। **–गंध**–पु० चंदन। **–ग**–वि० हृष्ट-पुष्ट, बलवान्। **–गर्भ,–गर्भित**–वि० तत्त्वपूर्ण। **–गात्र**–वि० सबल अंगोंवाला। **–गुण**–पु० मुख्य गुण या धर्म। **–ग्राही(हिन्)**–वि० किसी वस्तुका मुख्य तत्त्व ग्रहण करनेवाला। **–ग्रीव**–पु० शिव। **–ज**–पु० नवनीत। **–तंडुल**–पु० थोड़ा उबाला हुआ साबूत चावल। **–तरु**–पु० केलेका पेड़। **–दर्शी(र्शिन्)**–वि० अच्छी या तत्त्वकी बातें देखने-समझनेवाला। **–दा**–स्त्री० सरस्वती; दुर्गा। वि० स्त्री० सार देनेवाली। **–०सुंदरी**–स्त्री० दुर्गा। **–दारु**–पु० वह लकड़ी जो कड़ी हो या जिसमें हीर ज्यादा हो। **–द्रुम**–पु० अधिक हीर या कड़ी लकड़ीवाला वृक्ष; खदिर वृक्ष। **–धाता(तृ)**–पु० शिव; बोध करानेवाला व्यक्ति। **–धान्य**–पु० बढ़िया चावल; अच्छा अन्न। **–पत्र**–वि० कड़ी पत्तियोंवाला (वृक्ष)। **–पद**–पु० विष्किरकी जातिका एक पक्षी। **–पर्णी**–स्त्री० शालपर्णी। **–पाक**–पु० एक विषैला फल। **–पादप**–पु० धामन वृक्ष। **–फल**–पु० जँबीरी नीबू। **–बंधका**–स्त्री० मेंथी। **–भंग**–पु० शक्तिका नाश। वि० शक्ति-रहित। **–भांड**–पु० बहुमूल्य व्यापारिक वस्तुएँ; अकृत्रिम पात्र (जैसे मृगनाभि); कोश खजाना। **–भुक्(ज्)**–वि० किसी वस्तुका मुख्य भाग खा जानेवाला। पु० अग्नि (लोहा खा जानेके कारण)। **–भूत**–वि० जो सर्वश्रेष्ठ हो, सर्वोत्तम। पु० मुख्य या सर्वश्रेष्ठ वस्तु। **–भृत्**–वि० सर्वोत्तम पदार्थ लेने या चुन लेनेवाला। **–मंडूक**–पु० एक तरहका मेढक। **–महत्**–वि० बहुत मूल्यवान्। **–मार्गण**

पु० तत्त्व ढूंढ़ना; मज्जाकी तलाश करना। **–मिति–**पु० वेद। **–मूषिका–**स्त्री० देवदाली। **–योध–**वि० अच्छे योद्धाओंसे युक्त। **–रूप–**वि० सर्वोत्तम, मुख्य। **–लोह–**पु० इस्पात। **–वर्ग–**पु० वे वृक्ष जिनसे निर्यास निकलता है। **–वर्जित–**वि० निःसार; नीरस। **–वस्तु–**स्त्री० मूल्यवान् या महत्त्वपूर्ण वस्तु। **–विद्–**वि० किसी चीजका मूल्य या तत्त्व जाननेवाला। **–शल्य–**पु० श्वेत खदिर। **–शून्य–**वि० निःसार; निकम्मा। **–सैंधव–**पु० सेंधा नमक।

सार–प्र० (फा०) (संज्ञापदसे युक्त होकर विशेषण बनाता है) मिलता-जुलता, सदृश (खाकसार); भरा हुआ, प्रचुर (कोहसार); स्थान (नमकसार); रखनेवाला, मालिक (शर्मसार)। पु० ऊँट। **–बान–**पु० ऊँटहारा।

सार|–स्त्री० शाला; पशुशाला, ढोर बाँधनेकी जगह–'पशुओंको सारमें बाँधनेके बाद उन्होंने सारा वृत्तांत सुनाया'–मृग०। पु० वस्त्र।

सारक–वि० (सं०) विरेचक, दस्तावर; पूर्ण। पु० जयपाल, जमालगोटा।

सारखा|–वि० सदृश, समान।

सारघ–पु० (सं०) मधु।

सारजेंट–पु० (अं०) घुड़सवार सिपाहियोंका जमादार।

सारण–वि० (सं०) चलाने या बहानेवाला; फटा हुआ; जिसके सिरपर बालोंके पाँच गुच्छे हों। पु० एक गंधद्रव्य; अतीसार; आम्रातक वृक्ष, अमड़ा; भद्रबला; गंधप्रसारिणी; रावणका एक मंत्री; कृष्णका एक भाई; घरकी ओर ले चलना; मट्ठा (जिसमें चतुर्थांश जल हो)।

सारणा–स्त्री० (सं०) पारे आदिका एक तरहका संस्कार।

सारणि–स्त्री० (सं०) छोटी नदी; धारा; प्रणाली; पानीका नल; प्रसारिणी; पुनर्नवा।

सारणिक–पु० (सं०) पथिक, यात्री। वि० यात्रा करनेवाला। **–घ्न–**पु० लुटेरा, डाकू।

सारणी–स्त्री० (सं०) प्रसारिणी; क्षुद्र नदी; जल-प्रणाली; ग्रहगति बतलानेवाला ग्रंथ, तालिका; तुलनात्मक अध्ययन या विवेचनके लिए अनेक खानोंवाला कागज, या फलक (टेबुल)। **–कार–**पु० सारणी बनानेवाला व्यक्ति (टेबुलेटर)।

सारणेश–पु० (सं०) एक पर्वत।

सारतः(तस्)–अ० (सं०) धनके अनुसार; जोर लगाकर।

सारथि–पु० (सं०) रथ चलानेवाला, सूत; नायक; सागर, समुद्र; साथी, सहायक।

सारथ्य–पु० (सं०) रथचालन, रथ हाँकना; सवारी; साहाय्य।

सारद*–स्त्री० दे० 'शारदा'। वि० दे० 'शारद'।

सारदी–स्त्री० (सं०) जलपीपल। * वि० शारदीय।

सारदूल*–पु० दे० 'शार्दूल'।

सारना*–स० क्रि० दूर करना, निकलना; पोंछना, साफ करना; पूरा करना–'पर उपकारी सब जीवनके सारैं काज...'–सुंद०; लगाना; काढ़ना–'जांतहि राम तिलक तेहि सारा'–रामा०; दुरुस्त करना; सँभालना; सुंदर बनाना, चलाना।

सारनाथ–पु० बनारसके उत्तर-पूरब, लगभग तीन मीलपर स्थित एक स्थान जो बौद्धोंका प्रसिद्ध तीर्थ है।

सारभाटा–पु० दे० 'ज्वारभाटा'।

सारमेय–पु० (सं०) सरमाकी संतान, कुत्ता (विशेषकर यमके चार आँखोंवाले दो कुत्तोंमेंसे एक); श्वफल्कका एक पुत्र, अक्रूरका भाई। **–गणाधिप–**पु० कुबेर। **–चिकित्सा–**स्त्री० कुत्तेके काटनेका उपचार।

सारमेयादन–पु० (सं०) कुत्तेका भोजन; एक नरक (जिसमें पापियोंको यमके कुत्ते खा जाते हैं)।

सारमेयी–स्त्री० (सं०) कुतिया।

सारल्य–पु० (सं०) सरलता; सचाई, ईमानदारी।

सारव–वि० (सं०) सरयू नदी-संबंधी।

सारवती–स्त्री० (सं०) एक वृत्त; समाधिका एक प्रकार। वि० स्त्री० दे० 'सारवान्'।

सारवान्(वत्)–वि० (सं०) कठिन, ठोस; दृढ़, मजबूत; पोषक; मूल्यवान्; रसदार; जिसमेंसे निर्यास निकले; उपजाऊ।

सारशन, सारसन–पु० (सं०) कमरबंद, करधनी; फौजी कमरपट्टी; उरस्त्राण।

सारस–वि० (सं०) तालाब-संबंधी; चिल्लानेवाला; सारस पक्षी-संबंधी। पु० हंसकी जातिका एक लंबी टाँगोंवाला पक्षी; हंस; पक्षी; चंद्रमा; कमल; कमरबंद, करधनी; गरुड़का एक पुत्र; छप्पय छंदका एक भेद; झील आदिका जल; एक ताल (संगीत)। **–प्रिया–**स्त्री० सारसी।

सारसक–पु० (सं०) सारस।

सारसाक्ष–पु० (सं०) एक तरहका लाल (रत्न)।

सारसाक्षी–स्त्री० (सं०) पद्म-लोचना।

सारसिका–स्त्री० (सं०) सारसी।

सारसी–स्त्री० (सं०) सारसकी मादा; आर्या छंदका एक भेद।

सारसुता*–स्त्री० यमुना।

सारसुती*–स्त्री० दे० 'सरस्वती'।

सारस्य–पु० (सं०) पुकार, चिल्लाहट; जलप्राचुर्य; सरसता।

सारस्वत–वि० (सं०) सरस्वती (देवी या नदी)-संबंधी; सारस्वत ऋषि-संबंधी; सारस्वत देश-संबंधी; वाग्मी, विद्वान्। पु० सरस्वती तटवर्ती देशविशेष; एक ऋषि (जिनकी उत्पत्ति सरस्वती नदीसे मानी जाती है); सारस्वत देशके निवासी; ब्राह्मणोंकी एक उपजाति; बिल्वदंड; ब्रह्माका बारहवाँ दिन या कल्प; सरस्वती-पूजा-संबंधी एक विशेष कृत्य; वाणी; वाग्मिता। **–कल्प–**पु० सरस्वती-पूजा-संबंधी कृत्य-विशेष। **–व्रत–**पु० सरस्वतीके निमित्त किया जानेवाला व्रत-विशेष।

सारस्वतोत्सव–पु० (सं०) सरस्वती-पूजनका समारोह।

सारस्वत्य–वि० (सं०) सरस्वती-संबंधी।

सारांभ(स्)–पु० (सं०) नीबूका रस; निचोड़कर निकाला हुआ रस।

सारांश–पु० (सं०) सार, निचोड़; नतीजा; तात्पर्य, मथितार्थ; उपसंहार।

सारा–वि० पूरा, संपूर्ण, समस्त। * पु० दे० 'साला'। स्त्री० (सं०) दूर्वा; कुश; कृष्ण त्रिवृता; थूहर; केला; शातला; तालिसपत्र।

सारादान–पु० (सं०) सर्वोत्तमको चुन लेना।

सारापहार–पु० (सं०) सारपदार्थ या धनका अपहरण।

साराम्ल–पु० (सं०) धामिन; जँभीरी नीबू।

सारार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) किसी चीजसे लाभ उठानेका इच्छुक।

साराल–पु० (सं०) तिलका पौधा।

सारावती, सारावली–स्त्री० (सं०) एक छंद।

सारि–पु०, स्त्री० (सं०) शतरंज या पासेकी गोटी–'आसा फिरि-फिरि मारसी ज्यों चौपड़की सारि'–कबीर। स्त्री० मैना; * सारंगीकी खूंटी (?); पाँसा–'बैठि कुँअरि सब खेलहिं सारी'–प०। **–फलक–**पु० बिसात।

सारउँ*–स्त्री० मैना।

सारिक–पु० (सं०) दे० 'सारिका'; एक मुनि।

सारिका–स्त्री० (सं०) मैना पक्षी; चांडालवीणा; तंत्रवाद्यका पुल जैसा वह हिस्सा जिसपर तार टिके रहते हैं, घोरिया; दूती। **–मुख–**पु० एक विषैला कीड़ा।

सारिखा*–वि० दे० 'सरीखा'।

सारिणी–स्त्री० (सं०) सहदेई; दुरालभा; कपिल शिंशपा; प्रसारिणी; रक्त पुनर्नवा; कपास; सोता, जल-धारा, जल-प्रणाली। वि०, स्त्री० दे० 'सारी(रिन्)'।

सारिव–पु० (सं०) साठीकी जातिका एक धान।

सारिवा–स्त्री० (सं०) अनंतमूल; काला अनंतमूल। **–द्वय–**पु० अनंतमूल और श्यामा लता।

सारी–स्त्री० (सं०) सारिका, मैना; सप्तला; भ्रूभंगिमा; गोटी; पाँसा; † साढ़ी, मलाई; साली; * साड़ी। **–क्रीड़ा–**स्त्री० शतरंज जैसा खेल। (अ०) प्रवेशकर्ता।

सारी(रिन्)–वि० (सं०) गमन करनेवाला; पीछा करनेवाला;

···का सारभाग धारण करनेवाला ।

सारूप्य–पु० (सं०) एकरूप होनेका भाव; रूप-सादृश्य, एकरूपता; मुक्तिका एक प्रकार; रूपसादृश्यजन्य भ्रममें किया जानेवाला वर्ताव (क्रोधादि) ।

सारों–पु० एक अगहनिया धान; साला–'श्रीको अनुज, विष्णुको सारो' । * स्त्री० दे० 'सारिका' ।

सारोदक–पु० (सं०) अनंतमूलका रस ।

सारोपा–स्त्री० (सं०) लक्षणाका एक प्रकार जिसमें एक पदार्थमें दूसरेका आरोप किया जाता है (सा०) ।

सारोष्टिक, सारोष्ट्रिक–पु० (सं०) एक विष ।

सारौं*–स्त्री० मैना ।

सार्गड, सार्गल–वि० (सं०) जिसमें कोई रोक लगी हो, रोकवाला ।

सार्गाल–वि० (सं०) सृगाल-संबंधी ।

सार्गिक–पु० (सं०) स्रष्टा, सृष्टि करनेवाला ।

सार्जंट–पु० दे० 'सारजेंट' ।

सार्ज–पु० (सं०) सर्जिका, सज्जी; राल ।

सार्थ–वि० (सं०) अर्थयुक्त, अभिप्राययुक्त; उद्देश्यमय; समानार्थी; उपयोगी; धनी, मालदार । पु० धनी आदमी; कारवाँ, वणिक्समूह; जंतुसंघ; जनसमूह; समूह, झुंड; तीर्थयात्री; व्यापारिक माल (कौ०); व्यापारी । **–घ्न**–वि० कारवाँको नष्ट करनेवाला । पु० डाकू । **–ज**–वि० कारवाँमें पला हुआ, पालतू (हाथी आदि) । **–धर**–पु० वणिक्समूहका नायक । **–पति**–पु० कारवाँका मुखिया । **–पाल**–पु० कारवाँका रक्षक । **–भृत्**–पु० कारवाँका नेता । **–वाह**–पु० दे० 'सार्थभृत्'; सौदागर; एक बोधिसत्त्व । **–वाहन**–पु० दे० 'सार्थभृत्' । **–संचय**–वि० मालदार । **–हा(हन्)**–वि० कारवाँको नष्ट करनेवाला । पु० डाकू । **–हीन**–वि० जिसका कारवाँसे साथ छूट गया हो ।

सार्थक–वि० (सं०) अर्थपूर्ण; उपयोगी; लाभदायक; महत्त्वपूर्ण ।

सार्थकता–स्त्री० (सं०) महत्त्व; उपयोगिता ।

सार्थवान्(वत्)–वि० (सं०) अर्थयुक्त; साभिप्राय; बड़े दलवाला ।

सार्थातिवाह्य–पु० (सं०) मालकी रवानगी (कौ०) ।

सार्थिक–वि० (सं०) कारवाँके साथ यात्रा करनेवाला । पु० सफ़रका साथी; सौदागर ।

सार्थी–पु० रथ हाँकनेवाला, सारथि ।

सार्दूल–पु० दे० 'शार्दूल' ।

सार्द्ध, सार्ध–वि० (सं०) आधेके साथ पूर्ण (संख्या) । अ० सहित, साथ ।

सार्द्र–वि० (सं०) नम, गीला, भीगा हुआ ।

सार्प, सार्प्य–वि० (सं०) सर्प-संबंधी । पु० अश्लेषा नक्षत्र ।

सार्पिष, सार्पिष्क–वि० (सं०) घृत-संबंधी; घीमें बनाया हुआ; घृतयुक्त ।

सार्वसह–पु० (सं०) एक तरहका नमक ।

सार्व–वि० (सं०) सबसे संबंध रखनेवाला, आम; सबके लिए उपयुक्त । पु० कोई बुद्ध या जिन ।

सार्वकर्मिक–वि० (सं०) सब कामोंके लिए उपयुक्त ।

सार्वकामिक–वि० (सं०) सारे मनोरथ पूर्ण करनेवाला ।

सार्वकाम्य–पु० (सं०) सारी अभिलाषाओंकी पूर्ति ।

सार्वकार्मिक–वि० (सं०) सबसे प्रभावकारी ।

सार्वकाल–वि० (सं०) सभी समयोंमें होनेवाला (जैसे–विवाह) ।

सार्वकालिक–वि० (सं०) सब समयोंके लिए उपयुक्त; सब काल-संबंधी ।

सार्वगण–पु० (सं०) नोनावाली जमीन ।

सार्वगुणिक–वि० (सं०) सब अच्छे गुणोंसे युक्त ।

सार्वजनिक, सार्वजनीन–वि० (सं०) सबसे संबंध रखनेवाला (पब्लिक); सबके लिए उपयुक्त; सबके काममें आनेवाला (कॉमन) । **–निर्माणविभाग**–पु० (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) दे० 'लोकनिर्माण विभाग' । **–व्यवस्था**–स्त्री० (पब्लिक आर्डर) सर्वसाधारणमें शांति बनाये रखने तथा विधि-विधानोंके समादरणका भाव; जनतामें उपद्रव, अशांति या विधिके उल्लंघनकी प्रवृत्ति न फैलने देना ।

सार्वजन्य–वि० (सं०) आम, सबसे संबंध रखनेवाला ।

सार्वज्ञ, सार्वज्ञ्य–पु० (सं०) सर्वज्ञता ।

सार्वत्रिक–वि० (सं०) सब स्थानोंसे संबंध रखनेवाला; सब स्थानों या अवस्थाओंमें लागू होनेवाला ।

सार्वदेशिक–वि० (सं०) सब देशोंसे संबद्ध ।

सार्वनामिक–वि० (सं०) सर्वनाम-संबंधी (व्या०) ।

सार्वभौतिक–वि० (सं०) सब भूतों, जीवोंसे संबंध रखनेवाला ।

सार्वभौम–वि० (सं०) सारी भूमि-संबंधी; सारी पृथ्वीका शासन करनेवाला; विश्वविख्यात; मनकी सारी अवस्थाओंसे संबंध रखनेवाला । पु० चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; कुबेरका हाथी (उत्तरका दिग्गज); विश्वका साम्राज्य । **–गृह,–भवन**–पु० सम्राट्का प्रासाद ।

सार्वभौमिक–वि० (सं०) सारी पृथ्वीपर फैला हुआ; स्थानिक, राष्ट्रीय, जातीय अथवा अन्य संकुचित भावनाओंसे मुक्त व्यक्ति (कॉस्मोपालिटन) ।

सार्वयज्ञिक–वि० (सं०) सब प्रकारसे यज्ञोंसे संबंध रखनेवाला ।

सार्वरात्रिक–वि० (सं०) सारी रात टिकनेवाला (दीपक आदि) ।

सार्वराष्ट्रिय, सार्वराष्ट्रीय–वि० (सं०) सब राष्ट्रोंसे संबंध रखनेवाला; अंताराष्ट्रीय (इंटरनेशनल) ।

सार्वरुह–पु० (सं०) शोरा ।

सार्वरोगिक, सार्वरौगिक–वि० (सं०) सब तरहके रोगोंमें लाभदायक ।

सार्वलौकिक–वि० (सं०) सबको ज्ञात; सारे संसारमें व्याप्त; सार्वजनिक ।

सार्ववर्णिक–वि० (सं०) प्रत्येक प्रकारका; प्रत्येक जातिसे संबंध रखनेवाला ।

सार्ववेदस–वि० (सं०) यज्ञमें सब कुछ दान कर देनेवाला ।

सार्ववेद्य–पु० (सं०) वेद-चतुष्टय; सब वेदोंको जाननेवाला ब्राह्मण ।

सार्ववैदिक–वि० (सं०) सब वेदोंका ज्ञाता ।

सार्वसेन–पु० (सं०) एक पंचरात्र ।

सार्विक–वि० (सं०) सर्वत्र समान रूपसे देखनेमें आनेवाला (यूनिवर्सल); किसी समाजमें समान रूपसे होनेवाला, आम (जेनरल) । **–वध**–पु० सामूहिक हत्या (मैस्कर) ।

सार्षप–वि० (सं०) सरसों-संबंधी । पु० सरसोंका शाक-तेल आदि ।

सार्ष्ट–वि० (सं०) समान पद, अधिकार आदिवाला ।

सार्ष्टि–वि० (सं०) समान पद, अधिकार आदिसे युक्त ।

सार्ष्टिता–स्त्री० (सं०) पद, अधिकार आदिकी समानता; मुक्तिका एक प्रकार ।

सार्ष्ट्य–पु० (सं०) मुक्तिका एक प्रकार ।

सालंकार–वि० (सं०) आभूषणयुक्त, अलंकृत ।

सालंग–पु० (सं०) रागका प्रकारविशेष जो अमिश्र होते हुए भी दूसरे रागके आभाससे युक्त होता है ।

सालंब–वि० (सं०) जिसे किसीका सहारा हो (समासमें) ।

साल*–स्त्री० शाला । पु० जख्म, घाव; पीड़ा–'सौतिनके साल भो निहाल नंदलाल भो'–रसराज; छेद; काँटा; वह जो दुख देता हो; * धान । (सं०) वृक्षविशेष, साखू; सालका निर्यास; जड़; वृक्ष; परकोटा, प्राकार; दीवार; एक तरहकी मछली । (समासके लिए 'शाल' भी देखिये ।) **–पुष्प**–पु० स्थलपद्म । **–रस**–पु० राल । **–वाहन**–पु० शालिवाहन नरेश । **–वेष्ट**–पु० धूना । **–शृंग**–पु० प्राचीरका अग्रभाग ।

साल–पु० (फा०) बरस, १२ महीनेका काल । **–आइंदा**–पु० आनेवाला वर्ष । **–इलाही**–पु० अकबरका चलाया हुआ संवत् जिसका आरंभ उसकी राज्यारोहण-तिथिसे हुआ । **–ख़ुर्दा**–वि० पुराना अनुभवी । **–गिरह**–स्त्री० वार्षिक जन्मतिथि, नव वर्षमें प्रवेशका उत्सव, बरसगाँठ । **–गुज़श्ता**–पु० बीता हुआ साल, गतवर्ष । **–तमाम**–पु० वर्षका अंत । **–तमामी**–स्त्री० वार्षिक विवरण । **–नामा**–पु० किसी पत्र-पत्रिकाका विशेषांक जो नये वर्षमें प्रवेशके अवसरपर निकाला जाय । **–फ़सली**–पु० फसली

सन्। **–बसाल**–अ० हर साल, सालाना। **–हाल**–पु० वर्तमान वर्ष, चलता साल। **–हा,–साल**–अ० अनेक वर्षोंतक, बरसों। **–हिज्री**–पु० मुसलमानी सन्। (यह सन् हज्रत मुहम्मदके मक्का छोड़कर मदीना जानेकी तारीखसे शुरू होता है।) मु० **–पलटना**–वरस पूरा होकर दूसरा आरंभ होना। **–भारी होना**–वर्षका अशुभ, अनिष्टकर होना।

सालई†–स्त्री० दे० 'सलई'।

सालक*–वि० सालने, दुःख देनेवाला; (सं०) अलकोंसे भूषित; अलकयुक्त।

सालक्षण्य–पु० (सं०) चिह्नों, गुणोंकी समानता।

सालग–पु० (सं०) रागविशेष। **–सूडक**–पु० एक ताल (संगीत)।

सालग्राम, सालिग्राम–पु० दे० 'शालग्राम'।

सालग्रामी–स्त्री० गंडक नदी (शालग्रामकी प्राप्ति होनेके कारण)।

सालन–पु० मांस; शोरबादार तरकारी; (सं०) सालनिर्यास, सर्जरस; गोंद।

सालना–स० क्रि० कष्ट देना; चुभाना; चारपाईकी पाटी ठीक करना। अ० क्रि० चुभना; कष्टकर होना; खटकना।

सालपान–पु० एक क्षुप, चाँचर।

सालममिस्त्री–स्त्री० क्षुपविशेष, सुधामूली।

सालस–वि० (सं०) आलस्ययुक्त, क्लांत।

सालसा–पु० एक रक्तशोधक औषध।

सालहज–स्त्री० दे० 'सलहज'।

साला–पु० पत्नीका भाई; इस संबंधके आधारपर बनी एक गाली; * सारिका, मैना। वि० (समासमें व्यवहृत) सालका;··· सालपर होनेवाला (पंचश.ला वंदोवस्त)। स्त्री० (सं०) घर, मकान; दीवार; दे० 'शाला'। **–करी**–स्त्री० युद्धमें प्राप्त या पराजित स्त्री। **–वृक**–पु० कुत्ता; शृगाल; भेड़िया। **–वृकेय**–पु० भेड़िये, गीदड़ आदिका वच्चा।

सालातुरीय–पु० (सं०) दे० 'शालातुरीय'।

सालाना–वि० (फा०) सालका, वार्षिक; सालभरपर होनेवाला। अ० हर साल, सालवसाल। पु० भृति या वृत्ति जो सालमें एक वार, वर्षांतमें दी जाय।

सालार–पु० (सं०) दीवारमें गाड़ी हुई खूँटी, 'ब्रैकेट'; (फा०) नायक, नेता, सरदार। **–(रे)क़ाफ़िला**–पु० काफिलेका नेता। **–क़ौम**–पु० राष्ट्रीय नेता, क़ौमी नेता। **—जंग**–पु० सेनापति; सैनिकोंको दी जानेवाली एक उपाधि।

सालि–पु० दे० 'शालि'। स्त्री० साल, पीड़ा।

सालिक–वि० (अ०) राह चलनेवाला, यात्रा करनेवाला। पु० वह साधक जो भगवत्साक्षात्कारकी साधनाके साथ-साथ गृहधर्मका भी पालन करता रहे।

सालिका, सालेयिका, सालेयी–स्त्री० (सं०) वाँसुरी।

सालिक्रा–स्त्री० (अ०) कवच।

सालिनी–स्त्री० दे० 'शालिनी'।

सालिवमिस्त्री–स्त्री० दे० 'सालममिस्त्री'।

सालिस–वि० (अ०) सहीसलामत, सुरक्षित; अखंड, पूरा, सावित; ज्योंका त्यों; यथावत्।

सालियाना–पु० (फा०) वार्षिक वृत्ति। वि० सालाना।

सालिस–वि० (अ०) तीसरा। पु० पंच, तिसरैत। **–नामा**–पु० पंचनामा।

सालिसिटर–पु० (अं०) एक तरहका एडवोकेट जो हाईकोर्टके मुकदमेके कागजात तैयार करके बैरिस्टरको देता है।

सालिसी–वि० पंचका। स्त्री० पंचायत।

सालिह–वि० (अ०) नेक, साधुचरित।

सालिहा–स्त्री० (अ०) साध्वी; नेक़ और सच्चरित्र स्त्री।

सालिहोत्री–पु० दे० 'शालिहोत्री'।

साली–स्त्री० जमीन या बँधी हुई रकम जो वढ़ई, नाई आदिको उनके कामके वदले दी जाती है; पत्नीकी वहन। * पु० धान। (फा०) वि० जीर्ण, पुराना।

सालूर–पु० (सं०) मेढक।

सालेय–पु० (सं०) मयूरिका, अंवष्ठा; शालि धानका खेत।

सालेया–स्त्री० (सं०) सौंफ।

सालै गुग्गुल–पु० गुग्गुलका गोंद, राल।

सालोक्य–पु० (सं०) भगवान्के साथ भक्तका उसी लोकमें रहना, मुक्तिका एक प्रकार।

सालोहित–पु० (सं०) रक्त द्वारा संवद्ध व्यक्ति।

साल्मली–पु० शाल्मली, सेमल।

साल्व–पु० (सं०) एक देश; उस देशका निवासी; एक दैत्य जिसे विष्णुने मारा था। वि० साल्व देश-संवंधी। **–हा(हन्)**–पु० विष्णु।

साल्विक–पु० (सं०) मैना पक्षी।

साल्वेय–वि० (सं०) साल्व-संबंधी। पु० साल्व देश-निवासी।

सावँकरन†–पु० एक तरहका घोड़ा, श्यामकर्ण।

सावंत–पु० दे० 'सामंत'।

साव–पु० दे० 'साहु'; (सं०) सोमतर्पण।

सावक–पु० बौद्ध या जैन सन्न्यासी; (सं०) शावक, जानवरका बच्चा। वि० उत्पादक, जन्म देनेवाला।

सावकाश–वि० (सं०) जिसे अवकाश, फ़ुरसत हो, बाफ़ुरसत। अ० फ़ुरसतसे, मौकेसे। पु० अवकाश।

सावकास*–वि० दे० 'सावकाश'।

सावचेत*–वि० सतर्क, सावधान।

सावचेती†–स्त्री० सतर्कता, होशियारी।

सावज*–पु० 'साउज'।

सावज्ञ–वि० (सं०) घृणा करनेवाला।

सावणिक–पु० श्रावण मास।

सावत*–पु० सौतियाडाह; ईर्ष्या।

सावद्य–वि० (सं०) निंद्य, आपत्तिजनक; 'निरवद्य'का विपर्याय। पु० तीन योग-शक्तियोंमेंसे एक (शेष दो निरवद्य और सूक्ष्म हैं)।

सावधान–वि० (सं०) सचेत, सतर्क, खबरदार, जागरूक।

सावधानता–स्त्री० (सं०) सतर्कता, होशियारी; संकटसे सावधान रहनेके लिए की जानेवाली सुरक्षात्मक काररवाई।

सावधानी–स्त्री० सावधानता, सतर्कता, होशियारी।

सावधि–वि० (सं०) जिसकी अवधि, सीमा निश्चित कर दी गयी हो। **–आधि**–स्त्री० नियत समयके अंदर छुड़ा ली जानेवाली गिरवी।

सावधिक–वि० (पीरियाडिकल) निश्चित अवधिके बाद होने या निकलनेवाला। **–पत्र**–पु० (पीरियाडिकल) वह पत्र या पत्रिका जिसका प्रकाशन एक निश्चित अवधि–एक सप्ताह, एक पक्ष, एक माह–के बाद होता हो। **—प्रस्फोट**–पु० (टाइम बम) वह प्रस्फोट (बम) जो निर्धारित अवधिके बाद अपने आप फट पड़े, प्रज्वलित हो उठे। **–निक्षेप**–पु० (फिक्स्ड डिपॉज़िट) विशेष अवधितकके लिए रुपया जमा करना; मीयादी खातेमें जमा की गयी रकम।

सावन–वि० (सं०) सवन-यज्ञ-संबंधी। पु० यजमान; सोमयज्ञकी समाप्ति; वरुण; तीस सौर दिनोंका महीना; पूरा दिन और रात, सूर्योदयसे सूर्यास्ततकका समय; एक प्रकारका वर्ष; (हिं०) आषाढ़के वादका महीना, श्रावण; सावनमें गाया जानेवाला एक तरहका लोकगीत, कजली; * समूह; प्राचुर्य, आधिक्य। **–मास**–पु० तीस दिनोंका सौर मास। **–वर्ष**–पु० लगभग ३६० दिनोंका वर्ष।

सावनी–पु० भादोंमें होनेवाला एक धान। स्त्री० वरपक्षसे वधूके यहाँ सावनमें भेजी जानेवाली सौगात; सावनमें गाया जानेवाला लोकगीत।

सावर–पु० (सं०) दोष, अपराध; पाप; लोध्र वृक्ष; (हिं०) शिवकृत एक मंत्र; एक मृग; खुरपेकी धार ठीक करनेका एक औजार।

सावरक–पु० (सं०) सफेद लोध।

सावरण–वि० (सं०) ढका हुआ, वंद किया हुआ; अर्गल या ताल लगाया हुआ।

सावरणी–स्त्री० जैन यतियोंकी बुहारी।

सावरिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी जोंक।

सावर्ण–वि० (सं०) समान रंग या जातिवालेसे संबंध रखनेवाला। पु० आठवें मनु; एक ऋषि। **–लक्ष्य**–पु० चर्म।

सावर्णक–पु० (सं०) एक मनु।

सावर्णि–पु० (सं०) एक ऋषि; एक मनु जो सवर्णासे उत्पन्न सूर्यके पुत्र थे।

सावर्णिक–वि० (सं०) उसी जातिसे संबंध रखनेवाला; मनु सावर्ण-संबंधी।

सावर्ण्य–पु० (सं०) रंग या जातिकी समानता; आठवें मनुका युग या मन्वंतर।

सावलेप–वि० (सं०) घमंडी, गर्वीला।

सावशेष–वि० (सं०) जिसका कुछ अंश बाकी बचा हो; अपूर्ण, अधूरा। पु० शेष, बचा हुआ अंश। **–जीवित**–वि० जिसका जीवन अभी समाप्त न हुआ हो, जिसकी आयु बची हो। **–बंधन** –वि० जिसका बंधन अभी बना हुआ हो।

सावष्टंभ–वि० (सं०) घमंडी; रोबदार; साहसी; दृढ़; स्वावलंबी। पु० वह मकान जिसके उत्तर-दक्षिण सड़कें हों।

सावहित–वि० (सं०) सावधान।

सावहेल–वि० (सं०) उपेक्षा या घृणा करनेवाला।

सावाँ–पु० दे० 'साँवाँ'।

साविका–स्त्री० (सं०) धात्री।

सावित्र–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी; सूर्यसे उत्पन्न; सूर्यवंश-संबंधी; कर्ण-संबंधी; गायत्रीसे युक्त। पु० सूर्य; भ्रूण, गर्भ; ब्राह्मण; शिव; कर्ण; वसु; एक अग्नि; दसवाँ कल्प; मेरुकी एक चोटी; एक होम; यज्ञोपवीतसंस्कार; यज्ञोपवीत; हस्त नक्षत्र।

सावित्रिका–स्त्री० (सं०) एक शक्ति।

सावित्री–स्त्री० (सं०) सूर्य-संबंधी एक वेदमंत्र, गायत्री; उपनयनसंस्कार; ब्रह्माकी पत्नी; पार्वती; सधवा स्त्री; अश्वपतिकी पुत्री और सत्यवान्‌की पत्नी (जिसने अपने सतीत्वके बलसे अपने पतिको यमराजके हाथसे छुड़ाया था); दक्षकी पुत्री और धर्मकी पत्नी; कश्यपकी पत्नी; धारानरेश भोजकी पत्नी; अष्टावक्रकी एक पुत्री; यमुना नदी; सरस्वती नदी; प्रकाशकी किरण; सूर्यरश्मि; अनामिका (उँगली)। **–तीर्थ**–पु० एक तीर्थ। **–पतित,–परिभ्रष्ट**–वि० जिसका उचित समयपर उपनयनसंस्कार न हुआ हो। पु० ऐसा व्यक्ति। **–पुत्र**–पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति। **–व्रत,–व्रतक**–पु० पतिकी दीर्घायुके लिए ज्येष्ठकी अमावस्याको रखा जानेवाला हिंदू स्त्रियोंका एक व्रत। **–सूत्र**–पु० यज्ञोपवीत।

सावित्रेय–पु० (सं०) यम।

साविष्कार–वि० (सं०) प्रकट; अपने गुण, शक्ति आदिका प्रदर्शन करनेवाला, घमंडी।

सावेरी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

साशंक–वि० (सं०) आशंकायुक्त. डरा हुआ। अ० आशंकापूर्वक।

साशंस–वि० (सं०) इच्छुक; आशान्वित।

साशयंदक–पु० (सं०) छिपकली, ज्येष्ठी।

साशूक–पु० (सं०) कंबल।

साश्चर्य–वि० (सं०) आश्चर्यजनक; चकित। अ० आश्चर्यके साथ। **–चर्य**–वि० विचित्र आचरणवाला।

साश्र, सास्र–वि० (सं०) जिसमें कोण हों; अश्रुपूर्ण।

साश्रु–वि० (सं०) अश्रुपूर्ण, रोता हुआ।

साश्रुधी–स्त्री० (सं०) सास।

साश्वत–वि० दे० 'शाश्वत'।

साष्टांग–वि० (सं०) आठ अंगोंसे युक्त। **–प्रणाम**–पु० आठ अंगों (सिर, हाथ, पैर, आँख, जाँघ, हृदय, वचन और मन)के योगसे किया जानेवाला प्रणाम। **–योग**–पु० यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि–इन आठ अंगोंवाला योग।

सास–स्त्री० पति या पत्नीकी माता। वि० (सं०) जिसके पास कमान हो; मणिपूरचक्र स्थित अपान वायु (नाथ सं०)। पु० (फा०) खटमल, मत्कुण।

सासत–स्त्री० साँसत, कष्ट।

साँसति*–स्त्री० दंड, सजा, शासन–'सासति करि पुनि करहि पसाऊ' –रामा०।

सासन†–पु० दे० 'शासन'।

सासनलेट–पु० एक सफेद जालीदार कपड़ा।

सासना*–स्त्री० दे० 'शासन'; साँसत, कष्ट।

सासरा*–पु० ससुराल।

सासा*–स्त्री० संशय, संदेह; श्वास।

सासान–पु० ईरानके सासानी राजवंशका मूल पुरुष।

सासानी–पु० (फा०) ईरानका एक राजवंश।

सासु–वि० (सं०) प्राणयुक्त। * स्त्री० सास।

सासुर†–पु० ससुराल; ससुर।

सासुसू–वि० (सं०) बाणयुक्त।

सासूय–वि० (सं०) ईर्ष्यालु। अ० ईर्ष्यापूर्वक।

सास्थि–वि० (सं०) अस्थियुक्त। **–ताम्रार्ध**–पु० काँसा। **–वध** –पु० अस्थिवाले जीवका वध।

सास्ना–स्त्री० (सं०) गाय-बैलका गलकंबल।

सास्मित–पु० (सं०) शुद्ध सत्त्वकी विषयीभूत भावना।

सास्वादन–पु० (सं०) निर्वाणप्राप्तिकी चौदह अवस्थाओंमेंसे दूसरी (जै०)।

साह–पु० सुजन; साहूकार; महाजन; देहलीजका बाजू, चौखटके आधारपर लगनेवाले आमने-सामनेके स्तंभ; † दे० 'शाह'। वि० (सं०) सफलतापूर्वक प्रतिरोध करनेवाला; दमन करनेवाला। **–बुलबुल**–स्त्री० (हिं०) एक तरहकी लंबी पूंछवाली सफेद बुलबुल।

साहचर्य–पु० (सं०) सहगमन, सहचरता; साथ रहना, साथ, संगति।

साहजिक–वि० (सं०) सहजात, स्वाभाविक; सहज (इंस्टिंक्टिव)। **–धन**–पु० वेतन, विजय आदिमें प्राप्त धन।

साहत–स्त्री० (अ०) विशालता, फैलाव, चारों ओर खुली जगह।

साहन–पु० (सं०) सहन करनेमें प्रवृत्त करना; सहन।

साहनी*–स्त्री० साथी; पारिषद; सेना–'आये निसाचर साहनी साजि'–रघुराज; प्रधान।

साहब–पु० (अ०) मित्र, साथी; मालिक, स्वामी; हाकिम, सरदार; ईश्वर (संत कवि); आदरणीय व्यक्तिका संबोधन; नाम या पदवीके साथ व्यवहृत 'जी'का समानार्थकशब्द; यूरोपियन; अंग्रेज या अंग्रेजी ढंगसे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर। वि० वाला, रखनेवाला (साहबे इल्म, साहबे जायदाद)। **–किरां**–वि० तेजस्वी, प्रतापी। **–क़ुरान**–पु० अमीर तैमूरकी पदवी। **–जादा**–पु० बड़े आदमीका बेटा; संबोध्य जनका बेटा; (ला०) अल्हड़, अनुभवहीन नवयुवक। **–०पन**–पु० नासमझी। **–बहादुर**–पु० अंग्रेज अफसर; साहबी ढंगसे रहनेवाला हिंदुस्तानी अफसर। **–सलामत**–स्त्री० परस्पर अभिवादन, सलाम-बंदगी; सामान्य परिचय। **–सानी**–पु० शाहजहाँकी पदवी। **–(बे)आलम**–पु० ईश्वर; मुगल बादशाहोंकी पदवी। **–इंसाफ**–वि० न्यायशील। **–इल्म** –वि० विद्वान्। **–कमाल**–वि० गुणवान, हुनरमंद; सिद्ध, आत्मद्रष्टा। **–क़लम**–वि० उत्तम लेखक, जिसकी क़लममें ज़ोर हो। **–किताब**–पु० वह पैगंबर जिसपर इलहामी किताब उतरी हो। **–ख़ाना**–पु० घरका मालिक, मेजबान। **–ग़रज़**–वि० गरजमंद, अर्थी। **–ज़बान**–वि० भाषा-विशेषका पंडित, जबानदां। **–ज़र**–वि० धनवान। **–जलाल**–वि० तेजस्वी; क्रुद्धात्मा। **–ज़िला**–पु० जिलाधीश, कलक्टर। **–जायदाद** –वि० जगह-जमीनवाला, संपत्तिशाली। **–तदबीर**–वि० चतुर, उपायकुशल; नीतिज्ञ। **–ताज,–ताजोतख़्त**–पु० बादशाह। **–दिमाग़**–वि० घमंडी। **–दिल**–वि० बुद्धिमान्, ज्ञानी, खुदाशनास; पुण्यात्मा; सहृदय। **–नसीब**–वि० भाग्यशाली। **–मुरव्वत**–वि० सुशील। **–विलायत**–वि० बहुत बड़ा बली। **–हिम्मत, –हौसला**–वि० साहसी।

साहबान–पु० (अ०) 'साहब'का बहुव०।

साहबाना–वि० साहबका; साहबी।

साहबी–वि० साहबका; साहब जैसा (सा० ठाठ)। स्त्री०

साहबपन, अफसरी; (संत-सा०) हुकूमत; मालिकी; ईश्वरत्व, ऊँचा पद; एक तरहका अंगूर; एक धारीदार कपड़ा। मु० –करना–अफसरी शान दिखाना।

साहबीयत–स्त्री० साहबी चाल-ढाल; अंग्रेजोंकी नकल।

साहय–वि० (सं०) सहनेमें प्रवृत्त करनेवाला।

साहस–वि० (सं०) उतावली करनेवाला, जल्दवाज। पु० उग्रता, प्रचंडता; निष्ठुरता, उत्पीड़न; हिम्मत, किसी असाधारण कार्यमें दृढ़तापूर्वक प्रवृत्त होनेकी वृत्ति, जीवट; जल्दवाजी; औद्धत्य; दंड; जुर्माना; बलात्कार; लूट, अपहरण; परस्त्रीगमन; शत्रुता; पाकयज्ञकी अग्नि। **–करण**–पु० प्रचंडता; बलप्रयोग। **–कारी(रिन्)**–वि० औद्धत्यपूर्वक कार्य करनेवाला; हिम्मत करनेवाला। **–लांछन**–वि० जिसमें साहस परिचायक चिह्नके रूपमें हो।

साहसांक–पु० (सं०) राजा विक्रमादित्यका एक नाम।

साहसाध्यवसायी(यिन्)–वि० (सं०) अविवेक-पूर्वक या उतावली-में काम करनेवाला।

साहसिक–वि० (सं०) हिम्मतवर, दिलेर; निर्भीक; उद्धत; अविवेकी; निष्ठुर, अत्याचारी; परुषवादी; मिथ्यावादी; वहुत अधिक जोर लगानेवाला; दंडात्मक। पु० हिम्मतवर आदमी; डाकू, लुटेरा; खतरनाक आदमी; परस्त्रीगामी, लंपट। **–उपन्यास**–पु० नाना प्रकारकी साहसपूर्ण घटनाओंसे भरा हुआ उपन्यास।

साहसिक्य–पु० (सं०) औद्धत्य; प्रचंडता।

साहसी(सिन्)–वि० (सं०) प्रचंड; पराक्रमी; हिम्मतवर; निष्ठुर; उद्धत।

साहसैकरसिक–वि० (सं०) उद्धत; निष्ठुर; अत्याचार करनेपर तुला हुआ।

साहस्र–वि० (सं०) हजार-संबंधी; एक हजारवाला; एक हजारमें खरीदा हुआ; हजार पीछे दिया जानेवाला (सूद आदि); हजारगुना। पु० एक हजार सैनिकोंकी टुकड़ी; एक हजारका समूह। **–चूडिक**–पु० लोक-विशेष (बौ०)।

साहस्रक–वि० (सं०) जिसमें कोई चीज एक हजारा हो। पु० एक हजारका समूह; एक तीर्थ।

साहस्रवेधी(धिन्)–पु० (सं०) कस्तूरी।

साहस्रांत्य–पु० (सं०) एक एकाह।

साहस्राद्य–पु० (सं०) एक एकाह।

साहस्रिक–वि० (सं०) सहस्र-संबंधी। पु० हजारवाँ हिस्सा।

साहायक–पु० (सं०) सहायता, मदद; मैत्री; मित्र-मंडली; सहायक सेना।

साहाय्य–पु० (सं०) सहायता, मदद; मैत्री, साथ; संकटमें साथ देना (ना०)। **–कर**–वि० सहायता देनेवाला, मददगार।

साहि*–पु० शाह; राजा; भला आदमी; मालिक; साँईं।

साहिती–स्त्री० (सं०) साहित्य।

साहित्य–पु० (सं०) साथ, संयोग, मेल; वाक्यमें पदोंका सापेक्ष-संबंध; गद्यात्मक या पद्यात्मक रचना; लिपिवद्ध विचार, ज्ञान आदि; ग्रंथोंका समूह, वाङ्मय (लिटरेचर); काव्यशास्त्र; हितयुक्त होनेका भाव। **–दर्पण**–पु० विश्वनाथ कविराज-कृत साहित्य-शास्त्रका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–शास्त्र**–पु० साहित्यके विभिन्न अंगों–रस, अलंकार आदि–का विवेचन या विवेचनात्मक ग्रंथ।

साहित्यादि महाविद्यालय–पु० (आर्ट्स कालेज) साहित्य, इतिहास आदि विषयोंकी शिक्षा प्रदान करनेवाला महाविद्यालय।

साहित्यिक–वि० (सं०) साहित्य-संबंधी। पु० साहित्य-सेवी, साहित्यकार (असाधु)। **–उपनाम**–पु० (पेन-नेम) लेखक या कवि द्वारा साहित्यिक रचनाओंमें अपने असली नामके वदले या उसके साथ-साथ प्रयुक्त किया जानेवाला बनावटी नाम।

साहिनी–स्त्री० दे० 'साहनी'।

साहिब–पु० (अ०) दे० 'साहब'।

साहिबी–स्त्री० दे० 'साहबी'–'लै त्रिलोककी साहिबी दै धतूरको फूल'–मतिराम।

साहियाँ*–पु० दे० 'साँईं'।

साहिर–पु० (अ०) सेह्र–जादू करनेवाला।

साहिरी–स्त्री० जादूगरी।

साहिल–पु० (अ०) समुद्र या नदीका किनारा। † स्त्री० दे० 'साही'।

साहिली–स्त्री० एक काले रंगकी चिड़िया।

साही–स्त्री० एक छोटा (विल्लीसे कुछ बड़ा) जानवर जिसका सारा शरीर तेज लंबे काँटोंसे भरा रहता है और जो जमीनमें माँद बनाकर रहता है। वि० दे० 'शाही'।

साहु–पु० भला आदमी, सज्जन; महाजन; बनियोंका आदरपूर्ण संबोधन।

साहुल–पु० राजगीरोंका एक आला जिससे दीवारकी सीध जाँची जाती है।

साहू–पु० दे० 'साहु'।

साहूकार–पु० बड़ा व्यापारी, धनाढ्य महाजन।

साहूकारा–पु० रुपयोंके लेन-देनका काम; साहूकारोंकी वस्ती; बाजार। वि० साहूकारोंका।

साहूकारी–स्त्री० साहूकारका काम, महाजनी।

साहेब–पु० दे० 'साहब'।

साहैं*–स्त्री० भुजाएँ, वाजू। अ० सामने, सम्मुख।

सिँउँ*–अ० दे० 'स्यों'।

सिंकना–अ० क्रि० सेंका जाना (आँचपर); पकना।

सिंकोना–पु० (अं०) एक वृक्ष जिसके रससे कुनैन बनाते हैं।

सिंग†–पु० दे० 'सींग'।

सिंगड़ा–पु० बारूद आदि रखनेका सींगका बना वर्तन।

सिंगरफ–पु० ईंगुर।

सिंगरफी–वि० सिंगरफका बना हुआ।

सिंगरी–स्त्री० एक मछली।

सिँगरौर–पु० प्राचीन शृंगवेरपुरका वर्तमान नाम।

सिंगल–पु० दे० 'सिगनल'। † वि० दे० 'सिंगिल'।

सिंगा–पु० फूंककर बजाया जानेवाला एक बाजा, शृंग, रणसिंगा।

सिंगार, सिँगार–पु० शृंगार, सजावट; सजधज; शृंगार रस। **–दान**–पु० प्रसाधन सामग्री रखनेका छोटा संदूक। **–मेज**–स्त्री० वह आईनेदार मेज जिसके सामने बैठकर शृंगार किया जाता है। **–हाट**–स्त्री० वेश्याओंका वासस्थान, चकला। **–हार**–पु० हरसिंगार नामक पुष्पवृक्ष।

सिँगारना*–स० क्रि० शृंगार करना, सँवारना, सजाना।

सिंगारिया–पु० मंदिरमें मूर्तिका शृंगार करनेवाला।

सिंगारी–पु० दे० 'सिंगारिया'। वि० शृंगार-संबंधी।

सिंगाल†–पु० एक पहाड़ी बकरा।

सिंगाला–वि० सींगोंवाला।

सिंगासन†–पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंगिया–पु० एक विष जो एक पौधेका मूल है और सूखनेपर सींगकी शक्लका होता है।

सिंगिल–वि० (अं०) अकेला, अविवाहित; एक; दे० 'एकल'।

सिंगी–स्त्री० तूँबी लगानेकी नली; एक तरहकी सींगोंवाली मछली; घोड़ोंका एक ऐब। पु० सींगका बना बाजा; संगी; एक कपड़ा। **–मोहरा**–पु० सिंगिया विष।

सिँगौटी–स्त्री० तेल आदि रखनेका सींगका पात्र; सिंदूर आदि रखनेकी पिटारी; बैलके सींगका गहना।

सिंघ*–पु० दे० 'सिंह'।

सिंघण–पु० (सं०) लोहेका मुरचा; नाकसे निकला हुआ श्लेष्मा, रेंट।

सिंघल*–पु० दे० 'सिंहल'।

सिंघली–वि० दे० 'सिंहली'।

सिंघा†–पु० दे० 'सिंगा'।

सिंघाड़ा–पु० पानीमें पैदा होनेवाला एक तिकोना फल (वाटर चेस्ट नट); सिंघाड़ेके आकारकी एक मिठाई और एक नमकीन, समोसा; तिकोनी सिलाई; एक तरहकी आतिशबाजी; † सुनारोंका एक औजार; एक चिड़िया।

सिंघाड़ी–स्त्री० सिंघाड़ा पैदा करनेका छोटा तालाब।

सिंघाण–पु० (सं०) दे० 'सिंघण'।

सिंघाणक–पु० (सं०) दे० 'सिंघण'।

सिंघासन*–पु० दे० 'सिंहासन'।

सिंघिणी–स्त्री० (सं०) नासिका।

सिंघिनी†–स्त्री० शेरनी।

सिंघिया–पु० सिंगिया नामक विष।

सिंघी–स्त्री० सिंगी मछली; सोंठ।

सिंघेला*–पु० शेरका बच्चा।

सिंचन–पु० (सं०) सींचना, खेत, पेड़ आदिमें पानी डालना; छिड़काव करना।

सिँचना–अ० क्रि० सींचा जाना।

सिँचाई–स्त्री० सींचनेका काम; सींचनेकी उजरत।

सिँचाना–स० क्रि० सींचनेका काम कराना, किसीको सींचनेमें प्रवृत्त करना।

सिंचित–वि० (सं०) सींचा हुआ।

सिंचिता–स्त्री० (सं०) पिप्पली।

सिँचौनी†–स्त्री० दे० 'सिँचाई'।

सिंजा–स्त्री० (सं०) गहनोंके हिलने आदिसे उत्पन्न झंकार।

सिंजित–पु० (सं०) दे० 'सिंजा' (झंकार)।

सिंडिकेट–पु० (अं०) किसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए बनी हुई व्यापारिक संस्थाओंकी समिति; सिनेटकी प्रबंध-समिति।

सिंदन*–पु० स्यंदन, रथ।

सिंदान–स्त्री० (फा०) निहाई; अहरन।

सिंदीद–पु० (अ०) देश या वंशका प्रतिष्ठित व्यक्ति।

सिंदुक–पु० (सं०) सिंदुवार।

सिँदुरिया–वि० दे० 'सिंदूरिया'।

सिंदुरी–स्त्री० वलूतकी जातिका एक छोटा पेड़।

सिंदुवार–पु० (सं०) एक वृक्ष, निर्गुंडी; इस वृक्षका फल।

सिंदूर–पु० (सं०) एक वृक्ष; एक लाल चूर्ण जिससे स्त्रियाँ माँग भरती हैं। **–कारण**–पु० सीसा धातु। **–तिलक**–पु० सिंदूरका चिह्न; हाथी। **–तिलका**–स्त्री० सधवा स्त्री (जिसकी माँग सिंदूरसे भरी रहती है)। **–दान**–पु० विवाहकी एक रस्म जिसमें वर वधूकी माँगमें सिंदूर लगाता है। **–पुष्पी**–स्त्री० वीरपुष्पी, सिंदूरिया। **–रस**–पु० पारेसे बना हुआ एक रस। **–बंदन,–वंदन**–पु० दे० 'सिंदूरदान'।

सिंदूरिका–स्त्री० (सं०) सिंदूर नामक लाल द्रव्य।

सिंदूरित–वि० (सं०) लाल रँगा हुआ।

सिंदूरिया–वि० सिंदूरके रंगका। स्त्री० सिंदूरपुष्पी, सदासुहागिन।

सिंदूरी–वि० सिंदूरके रंगका। स्त्री० (सं०) रोचनी; सिंदूरपुष्पी; धातकी; लाल कपड़ा।

सिंदोरा–पु० सिंदूर रखनेकी लकड़ीकी डिबिया।

सिंध–पु० पाकिस्तानका एक प्रांत। स्त्री० एक प्रसिद्ध नदी; एक रागिनी।

सिंधव†–वि०, पु० दे० 'सैंधव'।

सिंधवी–स्त्री० एक मिश्र रागिनी।

सिंधी–वि० सिंध देशका। पु० इस देशका रहनेवाला; एक तरहका घोड़ा। स्त्री० इस देशकी भाषा।

सिंधु–पु० (सं०) सागर, समुद्र; एक प्रसिद्ध नदी; इस नदीके आस-पासका देश; हाथीकी सूँड़से निकलनेवाला पानी; गजमद, दान; हाथी; वरुण; सफेद सोहागा; सिंधुवार वृक्ष; एक राग; ओठकी आर्द्रता; सिंधु देशका निवासी; नद; चारकी या सातकी संख्या; विष्णु; एक नाग। स्त्री० नदी; मालवाकी एक नदी। **–कन्या**–स्त्री० लक्ष्मी। **–कफ**–पु० समुद्रफेन। **–कर**–पु० एक तरहका सोहागा। **–खेल**–पु० सिंधु प्रदेश। **–ज**–वि० समुद्र या सिंधु देशमें उत्पन्न; जलीय। पु० सेंधा नमक; पारा; सोहागा; शंख। **–जन्म(न्)**–पु० सेंधा नमक। **–जा**–स्त्री० लक्ष्मी; सीप। **–जन्मा(न्मन्)**–वि० समुद्र या सिंध देशमें उत्पन्न। पु० चंद्रमा। **–जात**–पु० सिंधी घोड़ा; मोती। **–तीरसंभव**–पु० सोहागा। **–देश**–पु० सिंध देश। **–नंदन**–पु० (समुद्रसे उत्पन्न) चंद्रमा। **–नाथ**–पु० सागर। **–पति**–पु० जयद्रथ; समुद्र। **–पर्णी**–स्त्री० गंभारी वृक्ष। **–पिब**–पु० अगस्त्य ऋषि। **–पुत्र**–पु० चंद्रमा; तेंदूकी जातिका एक वृक्ष। **–पुलिंद**–पु० एक जनपद। **–पुष्प**–पु० शंख; कदंब; वकुल। **–प्रसूत**–पु० सेंधा नमक। **–मंथ**–पु० समुद्रमंथन; पर्वत। **–०ज**–सेंधा नमक। **–माता(तृ)**–स्त्री० नदियोंकी माता, सरस्वती नदी। **–मुख**–पु० नदीका मुहाना। **–राज**–पु० समुद्र; जयद्रथ। **–राव**–पु० सिंधुवार। **–लताग्र**–पु० मूँगा। **–लवण**–पु० सेंधा नमक। **–वार**–पु० सिंधुक, निर्गुंडी; सिंधी घोड़ा। **–वारित**–पु० सिंधुवार। **–वासी(सिन्)**–पु० सिंध देशका रहनेवाला। **–विष**–पु० समुद्रसे निकला विष, कालकूट। **–वृष**–पु० विष्णु। **–वेषण**–पु० गंभारी वृक्ष। **–शयन**–पु० विष्णु। **–संगम**–पु० नदीका मुहाना। **–संभवा**–स्त्री० फिटकिरी। **–सर्ज**–पु० साल वृक्ष। **–सहा**–स्त्री० सिंधुवार। **–सुत,–सूनु**–पु० जालंधर नामक राक्षस। **–सुता**–स्त्री० लक्ष्मी; सीप। **–०सुत**–पु० मोती। **–सौवीरक**–पु० एक जनपद।

सिंधुक–वि० (सं०) समुद्रीय; सिंधमें उत्पन्न। पु० सिंधुवार।

सिंधुड़ा–स्त्री० (सं० ?) मालवरागकी एक भार्या।

सिंधुर–पु० (सं०) हाथी; आठकी संख्या। **–द्वेषी(षिन्)**–पु० सिंह। **–मणि**–पु० गजमुक्ता। **–वदन**–पु० गणेश, गजानन।

सिंधुरगामिनी–वि० स्त्री० (सं०) गजगामिनी, हथिनीकी-सी चालवाली।

सिंधुल–पु० (सं०) राजा भोजके पिता।

सिंधूत्थ–पु० (सं०) चंद्रमा; सेंधा नमक।

सिंधूद्भव, सिंधूपल–पु० (सं०) सेंधा नमक।

सिंधूरा–पु० संपूर्ण जातिका एक राग।

सिंधूरी–स्त्री० एक रागिनी।

सिँधोरा–पु० लकड़ीका बना हुआ सिंदूरपात्र।

सिँधोरी–स्त्री० सेंदुर रखनेकी छोटी डिबिया।

सिंब–पु० (सं०) दे० 'शिंब'।

सिंबा–स्त्री० (सं०) दे० 'शिंबा'; नखी।

सिंबिजा–स्त्री० (सं०) दे० 'शिंबिजा'।

सिंबी–स्त्री० (सं०) दे० 'शिंबी'।

सिंभालू–पु० सिंदुवार वृक्ष।

सिंभू*–पु० शंभु, शंकर।

सिंसप–पु० शीशमका वृक्ष।

सिंसपा–स्त्री० शीशमका पेड़।

सिंह–पु० (सं०) केसरी, मृगेंद्र, शेर; बारह राशियोंमेंसे एक राशि; (समासमें) अपने वर्गका सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति; एक विशेष आकार-प्रकारका मंदिर या प्रासाद; रक्त शिग्रु, लाल सहिजन; एक राग; वर्तमान अवसर्पिणीके चौबीसवें अर्हत्का चिह्न; रथके बैलोंके सिरका एक भूषण; एक पौराणिक पक्षी; वेंकट पर्वत; कृष्णका एक पुत्र; एक तरहके जैन साधु। **–कर्णी**–स्त्री० बाण चलाते समय दाहिने हाथकी एक विशेष स्थिति। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० सिंह जैसा पराक्रमी। **–केतु**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–केलि**–पु० एक बोधिसत्त्व (मंजुश्री)। **–केसर**–पु० सिंहका अयाल, कंधेपरके लंबे बाल; वकुल; एक तरहकी मिठाई। **–ग**–पु० शिव। **–ग्रीव**–वि० सिंहकी-सी गरदनवाला। **–घोष**–पु० एक बुद्ध। **–चित्रा**–स्त्री० माषपर्णी। **–च्छदा**–स्त्री० श्वेत दूर्वा। **–तल**–पु० अंजलि। **–ताल,–तालाख्य**–पु० दे० 'सिंहतल'। **–तुंड**–पु० एक मछली; सेहुँड़। **–तुंडक**–पु० एक मछली। **–दंष्ट्र**–पु० एक तरहका बाण; शिव; एक असुर। **–दर्प**–वि० सिंहकी तरह गर्वीला। **–द्वार**–पु० (सिंहकी मूर्त्तिवाला) प्रासाद आदिका प्रधान द्वार, सदर दरवाजा। **–द्वीप**–पु० एक टापू। **–ध्वज**–पु० एक बुद्ध। **–ध्वनि**–स्त्री० सिंहका गर्जन; सिंहका-सा गर्जन; ललकार, रणनाद। **–नंदन**–पु० एक ताल (संगीत)। **–नर्दी(र्दिन्)**–वि० सिंहकी तरह गरजनेवाला। **–नाद**–पु० सिंहका गर्जन; युद्ध-ध्वनि, ललकार; हुंकार; जोर देकर कोई बात कहना; बौद्ध सिद्धांतोंका पाठ; एक पक्षी; एक वृत्त; एक ताल (संगीत); शिव; एक असुर; रावणका एक पुत्र। **–नायक**

–पु० सिंहका गर्जन; रणनाद; सिंघा बाजा। **–नादिका**–स्त्री० दुरालभा; जवासा। **–नादी(दिन्)**–वि० सिंह जैसा गरजनेवाला। पु० एक बोधिसत्त्व। **–पत्रा**–स्त्री० माषपर्णी। **–पर्णी**–स्त्री० वासक। **–पिप्पली**–स्त्री० सैंहली। **–पुच्छिका,–पुष्पी**–स्त्री० चित्रपर्णिका। **–पुच्छी**–स्त्री० चित्रपर्णिका; पृश्निपर्णी; माषपर्णी। **–पुरुष**–पु० जैनियोंके नौ वासुदेवोंमेंसे एक। **–पौर**–पु० (हिं०) सिंहद्वार। **–प्रगर्जन**–वि० सिंहकी तरह गरजनेवाला। **–प्रगर्जित**–पु० सिंहगर्जन। **–प्रणाद**–पु० रणनाद, ललकार। **–मल**–पु० एक तरहका पीतल, पंचलोह। **–माया**–स्त्री० भ्रमजन्य सिंहका रूप। **–मुख**–वि० सिंहकेसे मुखवाला। पु० शिवका एक अनुचर। **–मुखी**–स्त्री० वासक; कृष्ण सिंदुवार; खारी मिट्टी; माषपर्णी। **–याना**–स्त्री० दुर्गा। **–रथा**–स्त्री० दुर्गा। **–रव**–पु० सिंहका गर्जन। **–लग्न**–पु० सिंह राशिका लग्न। **–लील**–पु० एक ताल (संगीत); एक तरहका रतिबंध। **–वक्त्र**–पु० एक राक्षस; सिंहका मुख; एक नगर। **–वत्स**–पु० एक नाग। **–वदना**–स्त्री० दे० 'सिंहमुखी'। **–वल्लभा**–स्त्री० वासक। **–वाह,–वाही(हिन्)**–वि० सिंहपर सवारी करनेवाला। **–वाहन**–वि० सिंहपर सवारी करनेवाला। पु० शिव। **–वाहना,–वाहिनी**–स्त्री० दुर्गा। **–विक्रम**–पु० एक ताल (संगीत); चंद्रगुप्त नरेश; घोड़ा। **–विक्रांत**–वि० सिंह जैसा पराक्रमी। पु० घोड़ा; सिंहकी गति; एक वृत्त। **–०गति, –०गामी(मिन्)**–वि० सिंहकी-सी चालवाला। **–विक्रीड**–पु० एक वृत्त। **–विक्रीडित**–पु० एक वृत्त; एक ताल; समाधिका एक प्रकार; एक बोधिसत्त्व। **–विजृंभित**–पु० समाधिका एक प्रकार (बौ०)। **–विन्ना**–स्त्री० माषपर्णी। **–विष्कंभित**–पु० एक तरहकी समाधि। **–विष्टर**–पु० सिंहासन। **–वृंता**–स्त्री० माषपर्णी। **–शाव,–शिशु**–पु० सिंहका बच्चा। **–संहनन**–वि० सिंह जैसे रूपवाला, सुंदर और बलिष्ठ अंगोंवाला। पु० सिंहका वध। **–स्कंध**–वि० सिंहके-से कंधोंवाला। **–स्थ**–पु० सिंह राशिमें स्थित बृहस्पति; उस समय होनेवाला एक पर्व। **–हनु**–वि० सिंहकी-सी दाढ़वाला। पु० गौतमके पितामह।

सिंहनी–स्त्री० शेरनी, सिंहकी मादा; एक वृत्त।

सिंहल–पु० (सं०) भारतके दक्षिण स्थित एक द्वीप, लंका; इस द्वीपका निवासी; टीन; पीतल; छाल; सैंहली। **–द्वीप**–पु० स्वर्ण-द्वीप, लंका। **–द्वीपी(पिन्)**–वि० सिंहल-संबंधी; सिंहलका। **–स्थ**–वि० सिंहलमें स्थित या वहाँ रहनेवाला। **–स्था**–स्त्री० सिंहलवासिनी; सैंहली।

सिंहलक–पु० (सं०) सिंहल द्वीप; पीतल; दारचीनी। वि० सिंहल द्वीप-संबंधी।

सिंहलांगुली–स्त्री० (सं०) पृश्निपर्णी।

सिंहला–स्त्री० (सं०) सिंहल द्वीप। **–स्थान**–पु० एक तरहका ताड़ वृक्ष।

सिंहली–वि० सिंहल द्वीप-संबंधी; सिंहलका। स्त्री० एक तरहकी पिप्पली; सिंहलकी भाषा। **–पीपल**–स्त्री० सिंहली पिप्पली।

सिंहा–स्त्री० (सं०) नाडी नामक पौधा; कंटकारी; वनभंटा।

सिंहाचल–पु० (सं०) एक पर्वत।

सिंहाण, सिंहान–पु० (सं०) नाकका मल, रेंट; लोहेका मुरचा।

सिंहाणक–पु० (सं०) नाकका मल।

सिंहानन–पु० (सं०) कृष्ण सिंधुवार; वासक।

सिंहारहार*–पु० हरसिंगार।

सिंहाली–स्त्री० सिंहली पीपल।

सिंहावलोक–पु० (सं०) एक प्रकारका वृत्त।

सिंहावलोकन–पु० (सं०) सिंहका आगे बढ़ते हुए पीछेकी ओर मुड़कर देखना; आगे बढ़ते हुए पीछेकी बातोंपर दृष्टिपात कर लेना (न्या०); छंदकी रचनाका एक प्रकार जिसमें दूसरा चरण पहले चरणके अंतिम शब्दोंसे प्रारंभ होता है।

सिंहावलोकित–पु० (सं०) दे० 'सिंहावलोकन'।

सिंहासन–पु० (सं०) राजा, देवता आदिका आसन; एक रतिबंध; कमलपत्राकार देवासन। **–चक्र**–पु० मनुष्याकृति एक चक्र जिसमें नक्षत्रोंके नाम भरे जाते हैं (ज्यो०)। **–त्रय**–पु० ज्योतिष-संबंधी एक चक्र। **–भ्रष्ट**–वि० गद्दीसे उतारा हुआ, राज्यच्युत। **–रण**–पु० गद्दी प्राप्त करनेके लिए होनेवाला युद्ध। **–स्थ**–वि० तख्तनशीन।

सिंहास्त्र–पु० (सं०) एक पौराणिक अस्त्र।

सिंहास्य–वि० (सं०) सिंहके-से मुखवाला। पु० एक तरहकी मछली; वासक; कचनार; हाथोंकी एक मुद्रा।

सिंहास्या–स्त्री० (सं०) अड़ूसा।

सिंहिका–स्त्री० (सं०) कश्यपकी पत्नी और राहुकी माता; दाक्षायिणीकी एक मूर्ति; वह कन्या जिसके घुटने आपसमें टकराते हों और विवाहके अयोग्य हो; वासक; कंटकारी; वनभंटा। **–तनय,–पुत्र,–सुत,–सूनु**–पु० राहु।

सिंहिकेय–पु० (सं०) सिंहिकापुत्र, राहु।

सिंहिनी–स्त्री० (सं०) एक देवी (बौ०); * शेरनी, सिंहनी।

सिंही–स्त्री० (सं०) शेरनी; राहुकी माता, सिंहिका; नस; अड़ूसा; थूहर; सिंघा नामक बाजा; नाडीशाक; कंटकारी; भंटा; मुद्गपर्णी। **–लता**–स्त्री० बृहती।

सिंहेश्वरी–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

सिंहोड़–पु० सेंहुड़, थूहर।

सिंहोदरी–वि० स्त्री० (सं०) सिंहके समान कटिवाली।

सिंहोद्धता, सिंहोन्नता–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

सिअनि*–स्त्री० सिलाई।

सिअरा*–वि० ठंढा किया हुआ, ठंढा–'सिअरे बदन सूखि गये कैसे'–रामा०। पु० छाया; † गीदड़।

सिआना*–स० क्रि० दे० 'सिलाना'।

सिआयत–स्त्री० (अ०) पिशुनता, निन्दा, चुगुलखोरी।

सिआर–पु० गीदड़।

सिएटो–पु० (अं०) (साउथ ईस्ट एशियन ट्रीटी आर्गेनाइज़ेशनका संक्षिप्त रूप) कम्युनिज्म-विरोधी एक अंतर्राष्ट्रीय संघटन।

सिकंजबीन–स्त्री० (फा०) नीबूके रस या सिरकेका पका हुआ शरबत।

सिकंजा–पु० दे० 'शिकंजा'।

सिकंदर–पु० सुप्रसिद्ध यूनानी विजेता जो मकदूनिया-नरेश फिलिप्स (फैलक्स)का बेटा था और जिसने मिस्र, ईरान, अफगानिस्तान और हिंदुस्तानमें तक्षशिला तथा सिंधुके इस पारका कुछ भाग भी जीत लिया था।

सिकंदरा–पु० रेलका सिगनल।

सिकंदरी–वि० सिकंदरका। स्त्री० घोड़ेका ठोकर खाना।

सिकटा†–पु० मिट्टीके बर्तन या खपड़ेका छोटा टुकड़ा।

सिकटी†–स्त्री० मिट्टीके बरतन आदिका बहुत छोटा टुकड़ा।

सिकड़ी–स्त्री० साँकल, जंजीर; जंजीर जैसा गलेका एक गहना; करधनी; जंजीर जैसी, एकमें एक खूब मिलाकर कसी हुई, उनचन।

सिकत*–स्त्री० बालू।

सिकता–स्त्री० (सं०) बलुई जमीन, बालुकायुक्त भूमि; बालू; शर्करा; लोणिका शाक; अश्मरी, पथरी (रोग)। **–प्राय**–पु० बालुकामय तट। **–मेह**–पु० प्रमेहका एक भेद जिसमें पेशाबमें बालूके-से कण रहते हैं। **–वर्त्म(न्)**–पु० पलकका एक रोग। **–सेतु**–पु० वह बाँध जो बालूसे बना हो।

सिकतामय–वि० (सं०) बालुकामय। पु० बालूसे बना हुआ तट; वह द्वीप जिसके तट बालूसे बने हों।

सिकतावान्(वत्)–वि० (सं०) दे० 'सिकतामय'।

सिकतिल–वि० (सं०) रेतीला, बालुकामय।

सिकतोत्तर–वि० (सं०) दे० 'सिकतिल'।

सिकत्तर–पु० (अं० 'सेक्रेटरी') संस्था या व्यक्तिका कार्य-निर्वाहक मंत्री (सचिव)।

सिकर–पु० शृगाल–'सिकर स्वान दुइ पंथ निहारैं'–बीजक। स्त्री० जंजीर।

सिकरवार†–पु० क्षत्रियोंकी एक उपजाति।

सिकरी–स्त्री० दे० 'सिकड़ी'।

सिकली–स्त्री० हथियार माँजकर तेज करना। **–गढ़***–पु० दे० 'सिकलीगर'। **–गर**–पु० हथियार तेज करनेवाला; चमक

लानेवाला।

सिकहर–पु० छींका।

सिकहरा*–पु० दे० 'सिकहर'।

सिकहुती, सिकहुली†–स्त्री० मूंज आदिकी बनी छोटी डलिया।

सिकार*–पु० दे० 'शिकार'।

सिकारी*–वि०, पु० दे० 'शिकारी'।

सिकुड़न–स्त्री० सिकुड़नेकी क्रिया, संकोच; सिकुड़नेका चिह्न, शिकन।

सिकुड़ना–अ० क्रि० संकुचित होना, बटुरना, सिमटना; तंग होना; शिकन पड़ना।

सिकुरना*–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना'।

सिकोड़ना–स० क्रि० संकुचित करना; बटोरना, समेटना; तंग, संकीर्ण करना।

सिकोरना*–स० क्रि० 'सिकोड़ना'।

सिकोरा–पु० कसोरा।

सिकोली–स्त्री० बेंत, बाँस आदिकी बनी हुई डलिया।

सिकोही*–वि० गर्वीला; पराक्रमी, वीर।

सिक्कड़–पु० जंजीर; सिकड़ी।

सिक्कर*–पु० दे० 'सिक्कड़'।

सिक्का–पु० (अ०) ठप्पा, छाप; मुद्रा, रुपया; वह ठप्पा जिससे रुपये आदि अंकित करते हैं; पदक; पद्धति। **–ज़न**–पु० सिक्के ढालनेवाला। **मु० –चलाना**–(अपना) सिक्का जारी करना। **–जमना,–बैठना**–रोब-दाब कायम होना, अधिकार स्थापित होना। **–जमाना,–बैठाना**–रोब-दाब कायम करना, अधिकार स्थापित करना।

सिक्की–स्त्री० छोटा सिक्का; अठन्नी; चवन्नी।

सिक्ख–पु० गुरु नानकका चलाया हुआ एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी।

सिक्त–वि० (सं०) सींचा हुआ; गीला, भींगा हुआ। (अ०) पु० मरा बच्चा; मरा बच्चा पैदा होना।

सिक्तता–स्त्री० (सं०) सींचे जानेकी क्रिया या भाव।

सिक्ति–स्त्री० (सं०) सींचनेकी क्रिया; निःसारण; धार फेंकना।

सिक्थ–पु० (सं०) मोम, मधूच्छिष्ट; माँड़ निकाला हुआ भात; भातका पिंड या ग्रास; नीली; मोतियोंका गुच्छा (जिसका वजन एक धरण हो)।

सिक्थक–पु० (सं०) दे० 'सिक्थ'।

सिक्य–पु० (सं०) दे० 'शिक्य'।

सिक्ष्य–पु० (सं०) काँच; स्फटिक।

सिखंड–पु० मोरकी पूँछ।

सिखंडी–पु० दे० 'शिखंडी'।

सिख–पु० दे० 'सिक्ख'; शिष्य। * स्त्री० शिक्षा, उपदेश; चोटी।

सिखना*–स० क्रि० सीखना।

सिखर*–पु० दे० 'शिखर'; मुकुट; सिकहर।

सिखरन–स्त्री० चीनी, गरी, केसर आदिके योगसे बना हुआ दहीका पेय।

सिखलाना–स० क्रि० सिखाना।

सिखवना*–स० क्रि० सिखलाना।

सिखा*–स्त्री० दे० 'शिखा'।

सिखाना–स० क्रि० शिक्षा देना, पढ़ाना, बतलाना; ताड़ना, दंड देना।

सिखापन*–पु० शिक्षा, उपदेश; शिक्षणकार्य।

सिखावन–स्त्री० शिक्षा, उपदेश, नसीहत।

सिखावना*–स० क्रि० दे० 'सिखाना'।

सिखिर*–पु० शिखर; जैनोंका एक तीर्थ, पारसनाथ पहाड़।

सिखी*–पु० मुर्गा; मोर।

सिगता†–स्त्री० दे० 'सिकता'।

सिगनल–पु० (अं०) रेलगाड़ीके आने-जानेका सूचक चिह्न-विशेष, सिकंदरा; संकेत।

सिग़र–पु० (अ०) छुटपन, बाल्य। **–सिन**–वि० छोटी उम्रका, कमसिन। **–सिनी**–स्त्री० बचपन, छुटाई।

सिगरा*–वि० संपूर्ण, सब।

सिगरेट–पु०, स्त्री० (अ०) धूमपानके लिए कागजमें तंबाकू लपेटकर बनायी हुई एक तरहकी बत्ती।

सिगरो, सिगरौ*–वि० दे० 'सिगरा'।

सिगार–पु० (अं०) एक तरहका सिगरेट, चुरुट।

सिग़ार–पु० (अ०) कम उम्रके लड़के लड़कियाँ। **–(रो) किबार**–पु० छोटे और बड़े, जवान और बूढ़ी।

सिगाल–स्त्री० (फा०) चिन्ता, फिक्र, खयाल। (प्रत्यय) ख़ैर सिगाल–शुभचिन्तक।

सिगोन–स्त्री० लाल रेत मिली मिट्टी जो नालोंके आस-पास मिलती है।

सिचय–पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र; फटा-पुराना कपड़ा।

सिचान*–पु० बाज चिड़िया।

सिचाना–स० क्रि० दे० 'सिंचाना'।

सिच्छक*–पु० शिक्षा देनेवाला; दंड देनेवाला–'साहिनके सिच्छक सिपाहिनके पातसाह'–भू०।

सिच्छा*–स्त्री० दे० 'शिक्षा'।

सिजदा–पु० (अ०) माथा टेकना; खुदाके आगे सिर झुकाना; मुसलमानोंकी उपासनाका एक अंग जिसमें माथा, नाक, कुहनियाँ, घुटने और पाँवोंकी उँगलियां ज़मीनपर लगती हैं। **–गाह**–पु०, स्त्री० उपासना-स्थल।

सिजल†–वि० सुंदर, अच्छा, सुघर।

सिजाफ़–स्त्री० (फा०) गोट, संजाफ।

सिजिस्तान–पु० अफगानिस्तानका एक प्रदेश जो ईरानके पूरबमें पड़ता है।

सिज्या*–स्त्री० शय्या।

सिझना–अ० क्रि० आँचपर पकना, सिझाया जाना।

सिझाना–स० क्रि० आँचपर पकाना, राँधना; शरीरको कष्टमय स्थितिमें रखना; बरतन बनानेके लिए मिट्टी तैयार करना; (चमड़ा) पकाना।

सिटकिनी–स्त्री० किवाड़ अंदरसे बंद करनेके लिए उसमें लगा हुआ छोटा-सा छड़, चटखनी।

सिटपिटाना–अ० क्रि० दब जाना; भय, घबड़ाहट आदिसे सहम जाना; मंद पड़ जाना; स्तब्ध हो जाना।

सिटी–पु०, स्त्री० (अं०) बड़ा शहर।

सिट्टी–स्त्री० बढ़-चढ़कर बातें करना, वाचालता। **मु० –गुम होना,–पिट्टी गुम होना,–भूल जाना**–घबराकर चुप हो जाना, सिटपिटा जाना।

सिट्ठी–स्त्री० दे० 'सीठी'।

सिठाई–स्त्री० फीकापन।

सिड़–स्त्री० पागलपन, दीवानगी, खब्त, सनक; धुन। **–पन,–पना**–पु० दे० 'सिड़'। **–बिला,–बिल्ला**–वि० मूर्ख, बेअक्ल; पागल, सनकी। **मु० –सवार होना**–सनक सवार होना।

सिड़ी–वि० सनकी, पागल; मनमौजी।

सितंबर–पु० (अं० 'सेप्टेंबर') ईसवी सन्‌का नवाँ महीना।

सित–वि० (सं०) श्वेत, सफेद; चमकीला; विशुद्ध, निर्मल; बद्ध; परिवेष्टित; ज्ञात; समाप्त। पु० सफेद रंग; शुक्ल पक्ष; शुक्र ग्रह; शुक्राचार्य; बाण; चाँदी; चंदन; मूली; शर्करा; मिसरी; स्कंदका एक अनुचर। **–कंटकारिका,–कंटा**–स्त्री० श्वेत कंटकारी। **–कंठ**–वि० सफेद गरदनवाला। पु० चातक, दात्यूह; शिव। **–कटभी**–स्त्री० एक वृक्ष। **–कमल**–पु० उजला कमल। **–कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। **–कर्णिका,–कर्णी**–स्त्री० वासक। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० जिसके कर्म पवित्र हों। **–काच**–पु० हलब्बी शीशा; बिल्लौर, स्फटिक। **–कुंजर**–पु० इंद्र; इंद्रका हाथी, ऐरावत; सफेद हाथी। वि० सफेद हाथीपर सवारी करनेवाला। **–कुंभी**–स्त्री० सफेद पाँडर; श्वेत पाटल (वृक्ष)। **–क्षार**–पु० एक तरहका सोहागा। **–क्षुद्रा**–स्त्री० श्वेत कंटकारी। **–खंड**–पु० मिसरीका डला। **–गुंजा**–स्त्री० सफेद घुंघची। **–चिह्न**–पु० एक तरहकी मछली, खैरा मछली, बालुकागड। **–च्छत्र**–पु० राजछत्र; श्वेत छत्र। **–च्छत्रा,–च्छत्री**–स्त्री०

शतपुष्पा, सौंफ; सोवा। –च्छत्रित–वि० श्वेत छत्रयुक्त; राजचिह्नयुक्त’ –च्छद–वि० सफेद पत्रोंवाला; सफेद पंखोंवाला। पु० हंस; सहिजनका एक प्रकार। –च्छदा–स्त्री० श्वेत दूर्वा। –जा–स्त्री० मधुशर्करा। –तुरग–पु० अर्जुन। –दर्भ–पु० श्वेत दूर्वा। –दीधिति–पु० चंद्रमा। –दीप्य–पु० श्वेत जीरक, सफेद जीरा। –दूर्वा–स्त्री० श्वेत दूर्वा। –द्रु–पु० शुक्लवर्ण वृक्ष; मोटर-विशेष। –द्रुम–पु० शुक्लवर्ण वृक्ष; अर्जुन; मोटर-विशेष। –द्विज–पु० हंस। –धातु–स्त्री० श्वेत खनिज द्रव्य; खड़िया मिट्टी। –पक्ष–पु० उजेला पाख; सफेद पंख; हंस। –पच्छ*–पु० हंस; शुक्ल पक्ष। –पद्म–पु० श्वेत कमल। –पर्णी–स्त्री० अर्कपुष्पिका। –पाटलिका–स्त्री० शुक्ल पाटल, सफ़ेद पाँडर। –पुंखा–स्त्री० श्वेत शरपुंखा। –पुंडरीक–पु० श्वेत कमल। –पुष्प–पु० केवटी मोथा; तगर वृक्ष; श्वेत रोहित; काँस। –पुष्पा–स्त्री० मल्लिका; बला; कंघी नामका पौधा। –पुष्पिका–स्त्री० एक प्रकारका कुष्ठ, फूल। –पुष्पी–स्त्री० श्वेत अपराजिता; केवटी मोथा; काँस; नागदंती; नागवल्ली। –प्रभ–वि० सफेद। पु० चाँदी। –भानु–पु० चंद्रमा। –मणि–पु० स्फटिक। –मना(नस्)–वि० पवित्र हृदयवाला। –मरिच–स्त्री० सफेद मिर्च। –माष–पु० राजमाष, लोबिया। –यामिनी–स्त्री० चाँदनी रात; चंद्रिका। –रंज–पु० कपूर। –रंजन–वि० पीला। पु० पीला रंग। –रश्मि–पु० चंद्रमा। –राग–पु० चाँदी। –रुचि–वि० सफेद रंगका। पु० चंद्रमा। –लता–स्त्री० अमृतवल्ली। –लशुन–पु० लहसुन। –वराह–पु० श्वेत वराह। –० पत्नी–स्त्री० पृथ्वी। –वर्णा–स्त्री० क्षीरिणी। –वर्षाभू–पु० पुनर्नवा। –वल्लरी–स्त्री० कठजामुन। –वल्लीज–पु० श्वेत मरिच। –वाजी(जिन्)–पु० अर्जुन। –वार,–वारक–पु० दे० ‘सितसार’। –वारण–पु० दे० ‘सित-कुंजर’। –शायका–स्त्री० श्वेत शरपुंखा। –शिंबिक–पु० गेहूँका एक भेद। –शिव–पु० सेंधा नमक; शमी वृक्ष। –शूक–पु० जौ। –शूरण–पु० बनसूरन, सफेद ओल। –शृंगी–स्त्री० अतिविषा। –सप्ति–पु० अर्जुन। –सर्षप–पु० सफेद सरसों। –सायका–स्त्री० श्वेत शरपुंखा। –सार,–सारक–पु० शालिंच शाक। –सिंधु–पु० क्षीरसागर। स्त्री० गंगा नदी। –सिंही–स्त्री० श्वेत कंटकारी। –सिद्धार्थ,–सिद्धार्थक–पु० सफेद सरसों। –सूर्या–स्त्री० हुरहुर।

सितजाम्रक–पु० (सं०) कलमी आम।

सितता–स्त्री० (सं०) श्वेतता, सफेदी।

सितम–पु० (फा०) जुल्म, अन्याय, उत्पीडन; अंधेर; गजब। –ईजाद–वि० अन्यायकी नीवें डालनेवाला; बहुत बड़ा जालिम। –कश,–ज़दा,–रसीदा–वि० जुल्म सहनेवाला, उत्पीड़ित। –गर,–गार–वि० जालिम, अन्यायी, अत्याचारी। –ज़रीफ़–वि० हास्य-विनोदके परदेमें जुल्म, अन्याय करनेवाला; जिसके हँसी-मजाकमें शोखी-शरारत मिली हो। –ज़रीफ़ी–स्त्री० हँसी-मजाकके परदेमें जुल्म करना। मु० –टूटना–बहुत बड़ा अनर्थ होना; भारी संकट आ पड़ना। –ढाना–जुल्म, भारी अन्याय करना, गजब करना। –तोड़ना–अन्याय, अत्याचार करना।

सितली–स्त्री० पीड़ा आदिकी हालतमें निकलनेवाला पसीना।

सितह–स्त्री० दे० ‘सतह’।

सिताँ–पु० (फा०) स्थान; निवासस्थान; देश; वह स्थान जहाँ किसी चीजका आधिक्य हो। वि० लेनेवाला, पकड़नेवाला, छीननेवाला।

सितांक–पु० (सं०) वालुकागड नामक मत्स्य। वि० श्वेत चिह्नवाला।

सितांग–पु० (सं०) श्वेत रोहित; कपूर; शिव; बेला। वि० श्वेत अंगोंवाला।

सितांबर–वि० (सं०) श्वेत वस्त्रधारी। पु० एक तरहके जैन साधु, श्वेतांबर।

सितांबुज, सितांभोज–पु० (सं०) श्वेत पद्म।

सितांशु–पु० (सं०) कपूर; चंद्रमा। वि० श्वेत किरणोंवाला।

सितांशुक–वि० (सं०) श्वेत वस्त्रधारी, सफेदपोश।

सिता–स्त्री० (सं०) शर्करा; मिसरी; चंद्रिका, चाँदनी–‘सरद सिता-सी जाकी साधना है विकसी’–कलस; शुक्ल पक्ष; सुंदरी; सुरा; श्वेत दूर्वा; मल्लिका; श्वेत कंटकारी; बकुची; विदारी; कुटुंबिनी; पिंगा; त्रायमाणा; अपराजिता; गंगा; आठ देवियोंमेंसे एक (बौ०); तेजनी; अर्कपुष्पी; सिंहली पीपल; आम्रातक; गोरोचन; वृद्धि लता; रजत; पुनर्नवा; मुरा। –खंड–पु० मधुजात शर्करा; मिसरीका डला। –लता–स्त्री० श्वेत दूर्वा।

सिताइश–स्त्री० (फा०) स्तुति, सराहना, प्रशंसा। –गर–वि० प्रशंसा करनेवाला। –गरी–स्त्री० प्रशंसन।

सिताख्य–पु० (सं०) सफेद मिर्च।

सिताख्या–स्त्री० (सं०) श्वेत दूर्वा।

सिताग्र–पु० (सं०) कंटक।

सिताजन–वि० (फा०) सितारवादक; तंत्री, दे० ‘सितारज़न’।

सिताजाजी–स्त्री० (सं०) श्वेत जीरक।

सितातपत्र, सितातपवारण–पु० (सं०) श्वेत छत्र (राजचिह्न)।

सितादि–पु० (सं०) शर्कराका पूर्वरूप, गुड़।

सितानन–वि० (सं०) श्वेत मुखवाला। पु० गरुड़; शिवका एक अनुचर।

सितापांग–पु० (सं०) मयूर, मोर।

सिताब*–अ० तुरंत, झटपट। स्त्री० शीघ्रता–‘तातें ढील न होइ काम यह है सिताबकौ’–सुजान; एक बरसाती पौधा, सर्पदंष्ट्रा।

सिताबी*–अ० दे० ‘सिताब’। स्त्री० शीघ्रता; चाँदनी।

सिताब्ज–पु० (सं०) श्वेत पद्म।

सिताभ–पु० (सं०) कपूर; शर्करा (?)। वि० श्वेत आभावाला।

सिताभा–स्त्री० (सं०) एक क्षुप, तक्रा।

सिताभ्र–पु० (सं०) सफेद बादल; कपूर।

सिताभ्रक–पु० (सं०) कपूर।

सितामोघा–स्त्री० (सं०) सितकुंभी, श्वेत पाटल।

सितायुध–पु० (सं०) एक मछली।

सितार–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध तंत्रवाद्य। –ज़न–वि० सितारवादक, तंत्री। –बाज़–वि०, पु० सितार बजानेवाला। –बाज़ी–स्त्री० सितार बजाना।

सितारा–पु० (फा० ‘सतारा’) तारा, नक्षत्र; (ला०) भाग्य; चाँदी-सोनेके पत्तरकी टिकली जो टोपी, जूते आदिपर लगायी जाती है, चमकी; आतिशबाजी; बंदूककी टोपीका गोल और सफेद भाग; कुछ घोड़ोंके माथेपर पाया जानेवाला सफेद निशान जो अँगूठेसे ढक जाय (यह चिह्न अशुभ माना जाता है); * सितार। –चश्म–वि० सितारे जैसी आँखोंवाला। –दाँ–पु० ज्योतिषी। –परस्त–वि० नक्षत्रपूजक, तारोंकी पूजा करनेवाला। –पेशानी–वि० (घोड़ा) जिसके माथेपर सितारा हो। –शनास,–शुमार–पु० ज्योतिषी। –शनासी–स्त्री० ज्योतिष विद्या। –(रे)-हिंद–पु० एक उपाधि जो अंग्रेज सरकारकी ओरसे प्रतिष्ठित भारतीयोंको सम्मानार्थ दी जाती थी। मु० –गर्दिशमें होना–दुर्भाग्यके दिन होना। –चमकना–भाग्य जगना, बढ़ती-चढ़तीके दिन होना। –बुलंद होना–सौभाग्य-काल होना। –भारी होना–दुर्दिनका आना।

सितारिया–पु० सितार बजानेवाला।

सितार्कक–पु० (सं०) श्वेत अर्क।

सितार्जक–पु० (सं०) श्वेत तुलसी।

सितालक, सितालर्क–पु० (सं०) सफेद मदार।

सितालि–वि० (सं०) श्वेत पंक्तियोंवाला। –कटभी–स्त्री० श्वेत कटभी वृक्ष।

सितालिका–स्त्री० (सं०) सीपी, सितुही।

सितावर†–स्त्री० एक बरसाती पौधा, सर्पदंष्ट्रा।

सितावभेद†–पु० एक पौधा जो दवाके काम आता है।

सितावर–पु० (सं०) एक साग, सुसना।

सितावरी–स्त्री० (सं०) वाकुची।

सिताश्व–पु० (सं०) अर्जुन; चंद्रमा।

सितासित–वि० (सं०) सफेद और काला; भला और बुरा। पु०

बलदेव; शुक्र और शनि; प्रयाग । **–रोग**–पु० एक नेत्ररोग ।

सितासिता–स्त्री० (सं०) सोमराजी, बकुची; गंगा और यमुना ।

सिताह्वय–पु० (सं०) शुक्र ग्रह; श्वेत रोहित; श्वेत शिग्रु; श्वेत तुलसी ।

सिति–वि० (सं०) बाँधनेवाला; दे० 'शिति' (समास भी) ।

सितिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) श्वेतता, सफेदी ।

सितुई, सितुही–स्त्री० सुतुही, सीपी ।

सितूदा–वि० (फा०) सराहा हुआ, प्रशस्त; प्रशंसनीय; नेक । **–कार**–वि० नेक काम करनेवाला । **–ख़सायल**–वि० अच्छे स्वभाववाला, प्रशंसनीय आदतोंवाला । **–सिफ़ात**–वि० सद्‌गुणी ।

सितून–पु० (फा०) खंभा, स्तंभ; पीलपाया, थूनी ।

सितेज़, सितेज़ा–पु० (फा०) युद्ध; शत्रुता; प्रतिकूलता ।

सितेक्षु–पु० (सं०) ऊखका एक भेद ।

सितेतर–वि० (सं०) श्वेतसे भिन्न, काला । पु० एक तरहका काला धान; कुलथी । **–गति**–पु० अग्नि ।

सितोत्पल–पु० (सं०) सफेद कमल ।

सितोदर–पु० (सं०) कुबेर ।

सितोदरा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी कौड़ी ।

सितोद्भव–पु० (सं०) चंदन । वि० चीनीका; चीनीसे बना हुआ ।

सितोपल–पु० (सं०) बिल्लौर, स्फटिक; खरिया, कठिनी, दुद्धी ।

सितोपला–स्त्री० (सं०) चीनी, शक्कर; मिस्री ।

सितोष्णवारण–पु० (सं०) श्वेत छत्र ।

सिथिल*–वि० दे० 'शिथिल' ।

सिदका–पु० दे० 'सदका' ।

सिदना*–स० क्रि० कष्ट पहुँचाना, सीदना–'दिलीपतिको सिदत हैं' –भू० ।

सिदरी–स्त्री० तीन दरवाजोंवाला दालान ।

सिदामा*–पु० दे० 'श्रीदामा' ।

सिदिक–स्त्री० दे० 'सिद्क़' । वि० सच्चा ।

सिदौसी*–अ० शीघ्रतापूर्वक–'दैयो यह संदेस, सिदौसी लौटियो'–सत्यना० ।

सिद्क़–स्त्री० (अ०) सचाई, निष्कपट भाव, दिलकी सफाई । **–दिली**–स्त्री० निष्कपटता, निश्छलता । **–मक़ाल,–शिआर**–वि० सत्यनिष्ठ; सत्यवादी; बातका पक्का । **–(क़े) आमाल**–पु० आचरणशुद्धि; अनासक्त भावसे कर्म करना ।

सिद्‌गुंड–पु० (सं०) ब्राह्मण पिता और पराजकी मातासे उत्पन्न संतान ।

सिद्दीक़–वि० (अ०) बहुत सच्चा; पु० विश्वस्त मित्र ।

सिद्ध–वि० (सं०) पूरा किया हुआ; प्राप्त, लब्ध; निश्चित; प्रमाणित; दृढ़, पक्का (नियम); सत्य माना हुआ; निर्णीत, जिसका फैसला हो गया हो (व्यवहार); चुकाया हुआ; पकाया हुआ (भोजन); पका हुआ (फलादि); अच्छी तरह तैयार किया हुआ–'मंदिर सिद्ध करवायो'–अष्टछाप; प्रस्तुत (रुपया); पराभूत; वशीकृत (मंत्रादि द्वारा); दक्ष, विशेषज्ञ; शुद्ध किया हुआ (तपश्चर्या आदिसे); मुक्त; अलौकिक शक्तिसे संपन्न; धर्मात्मा; पवित्र; अमर; प्रसिद्ध; दीप्तिमान्; ठीक घटा हुआ । पु० संत या योगी जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो; ऋषि; एक देवयोनि; जादूगर; मुकदमा, व्यवहार; एक योग (ज्यो०); गुड़; जिन; काला धतूरा; चौबीसकी संख्या; सेंधा नमक; बाजीगरी; अलौकिक शक्ति; काला सिंदुवार; पीली सरसों; सीधा, बिना पका हुआ अन्न –'जहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती'–रामा० । **–कज्जल**–पु० जादूका काजल । **–काम**–वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गयी हों । **–कामेश्वरी**–स्त्री० दुर्गाकी पंच मूर्तियोंमेंसे एक । **–कारी(रिन्)**–वि० शास्त्रानुसार आचरण करनेवाला । **–कार्य**–वि० कृतकार्य, सफल । **–क्षेत्र**–पु० सिद्धोंका स्थान; वह स्थान जहाँ योग आदिकी जल्द सिद्धि होती है; दंडक वनका एक भाग । **–खंड**–पु० एक तरहकी शर्करा । **–गंगा**–स्त्री० मंदाकिनी; स्वर्गगंगा । **–गति**–स्त्री० सिद्धिदायक कर्म (जै०) । **–गुटिका**–स्त्री० एक मंत्रसिद्ध वटिका जिसे मुँहमें रखनेपर मनुष्य अदृश्य हो सकता है । **–ग्रह**–पु० उन्माद उत्पन्न करनेवाला एक ग्रह या प्रेत; उन्मादका एक भेद । **–जल**–पु० पकाया हुआ पानी; माँड़ । **–तापस**–पु० अलौकिक शक्तियुक्त साधु । **–दर्शन**–पु० जीवन्मुक्त संतोंके दर्शन । **–देव**–पु० शिव । **–द्रव्य**–पु० जादूकी चीज । **–धातु**–स्त्री० पारा । **–नर**–पु० दैवज्ञ; वह व्यक्ति जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो । **–नाथ**–पु० महादेव । **–नामक**–पु० अश्मंतक । **–पक्ष**–पु० किसी प्रतिज्ञाका वह पक्ष जो प्रमाणित हो गया है । **–पथ**–पु० अंतरिक्ष । **–पात्र**–पु० स्कंदका एक अनुचर । **–पीठ**–पु० दे० 'सिद्धक्षेत्र' । **–पुर**–पु०,**–पुरी**–स्त्री० एक पौराणिक नगर (जो कुछके मतसे पृथ्वीके उत्तरी सिरेपर और कुछके मतसे पातालमें स्थित है) । **–पुरुष**–पु० वह व्यक्ति जिसे योगादिमें सिद्धि प्राप्त हो गयी हो । **–पुष्प**–पु० करवीर, कनेर । **–प्रयोजन**–पु० सफेद या पीली सरसों । **–प्राय**–वि० जो करीब-करीब सिद्ध हो चुका हो । **–भूमि**–स्त्री० दे० 'सिद्धक्षेत्र' । **–मंत्र**–पु० सिद्धिप्राप्त मंत्र । **–मत**–पु० सिद्ध व्यक्तियोंका विचार । **–मनोरम**–पु० कर्ममास । **–मातृका**–स्त्री० एक देवी; एक लिपि । **–मानस**–वि० जिसका मन पूर्णतः संतुष्ट हो । **–मोदक**–पु० तवराजोद्भव शर्करा, यवासशर्करा । **–यात्रिक**–पु० दे० 'सिद्धियात्रिक' (असाधु) । **–यामल**–पु० तंत्र शास्त्रका एक ग्रंथ । **–योग**–पु० ज्योतिषका एक योग । **–योगिनी**–स्त्री० मनसा देवी; जादूगरनी । **–योगी(गिन्)**–पु० शिव । **–रत्न**–वि० जिसके पास जादूका रत्न हो । **–रस**–पु० पारा; वह जिसने पारा सिद्ध कर लिया है; कीमियागर । **–०दंड**–पु० जादूकी छड़ी । **–रसायन**–पु० दीर्घायु बनानेवाला रस । **–लक्ष**–वि० जिसने निशाना ठीक-ठीक लगाया है; जिसका निशाना न चूके । **–लक्ष्मी**–स्त्री० लक्ष्मीकी एक मूर्ति । **–लोक**–पु० सिद्धोंका लोक । **–वटी**–स्त्री० एक देवी । **–वर्ति**–स्त्री० जादूकी बत्ती । **–वस्ति**–स्त्री० तेल आदिकी पिचकारी (एनिमा) । **–विद्या**–स्त्री० एक महाविद्या । **–विनायक**–पु० गणेशकी एक मूर्ति । **–शाबरतंत्र**–पु० तंत्र-विशेष । **–शिला**–स्त्री० ऊपरके लोकका एक स्थान (जै०) । **–संकल्प**–वि० जिसका संकल्प पूरा हो गया हो । **–संबंध**–वि० जिसके संबंधी प्रसिद्ध हों । **–सरित्**–स्त्री० गंगा; आकाशगंगा । **–सलिल**–पु० दे० 'सिद्धजल' । **–साधक**–पु० शिव; कल्पवृक्ष; धूर्तोंका प्रपंच जिसमें झूठे ही एकको सिद्ध बताकर जनताको ठगा जाता है । **–साधन**–पु० सफेद या पीली सरसों; सिद्धिकी प्राप्तिके लिए तांत्रिक आदि क्रियाओंका साधन; इन कृत्योंमें काम आनेवाले पदार्थ; प्रमाणितको प्रमाणित करना । **–साधित**–वि० जिसने चिकित्साका अनुभव अध्ययन द्वारा प्राप्त न कर व्यवहारसे प्राप्त किया है । **–साध्य**–वि० जिसने किया जानेवाला काम पूरा कर लिया है; प्रमाणित । पु० एक मंत्र; प्रदर्शित प्रमाण । **–सारस्वत**–वि० जिसे सरस्वती सिद्ध हो । **–सिंधु**–पु० मंदाकिनी, स्वर्गगंगा । **–सुसिद्ध**–वि० बहुत अधिक प्रभावकर । पु० एक मंत्र । **–सेन**–पु० कार्त्तिकेय । **–सेवित**–पु० भैरव या शिवका एक रूप, वटुकभैरव । **–स्थाली**–स्त्री० सिद्ध पुरुषकी बटुई; कहते हैं कि इससे इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है । **–हस्त**–वि० जिसका हाथ मँजा हो, दक्ष, कार्यकुशल । **–हेम(न्)**–पु० खरा; शुद्ध सोना ।

सिद्धक–पु० (सं०) सिंदुवार; साल वृक्ष; एक वृत्त ।

सिद्धता–स्त्री०, **सिद्धत्व**–पु० (सं०) सिद्ध होनेका भाव; सिद्धि; पूर्णता; प्रामाणिकता ।

सिद्धांगना–स्त्री० (सं०) सिद्ध जातिके देवोंकी स्त्री; वह स्त्री जिसे सिद्धि प्राप्त हो गयी हो ।

सिद्धांजन–पु० (सं०) एक अंजन (कहा जाता है इसके प्रयोगसे भूगर्भकी चीजें दिखाई देने लगती हैं) ।

सिद्धांत–पु० (सं०) अंतिम उद्देश्य या अभिप्राय; पूर्वपक्षके खंडनके बाद सिद्ध मत; निश्चित मत जिसका सत्यके रूपमें ग्रहण किया जाय, उसूल; पक्की राय; निर्धारित मतके आधारपर लिखित शास्त्रीय ग्रंथ । **–कोटि**–स्त्री० तर्कका वह स्थल या बिंदु जो निर्णायक हो । **–कौमुदी**–स्त्री० भट्टोजिदीक्षित-रचित संस्कृत व्याकरणका एक प्रसिद्ध ग्रंथ । **–ज्ञ**–वि० सिद्धांत जाननेवाला,

तत्त्वज्ञ। –धर्मागम–पु० परंपरागत नियम। –पक्ष–पु० तर्कसंगत पक्ष। –वाद–पु० मतवाद।

सिद्धांताचार–पु० (सं०) तांत्रिकोंका आचार-विशेष; इस आचारका पालन करनेवाला व्यक्ति।

सिद्धांतित–वि० (सं०) सत्य प्रमाणित किया हुआ, तर्क द्वारा निर्णीत।

सिद्धांती(तिन्)–पु० (सं०) आपत्तियोंका निराकरण कर अनुमानकी स्थापना करनेवाला; मीमांसक; वह जो सिद्धांत-ग्रंथोंका जानकार हो।

सिद्धांतीय–वि० (सं०) सिद्धांत-संबंधी।

सिद्धांबा–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

सिद्धा–स्त्री० (सं०) एक योगिनी; ऋद्धि; सिद्ध नामक देववर्गकी स्त्री।

सिद्धाई–स्त्री० सिद्धकी अवस्था।

सिद्धाज्ञ–वि० (सं०) जिसकी आज्ञाओंका पालन होता हो।

सिद्धान्न–पु० (सं०) एक अन्न।

सिद्धापगा–स्त्री० (सं०) दे० 'सिद्धसिंधु'।

सिद्धायिका–स्त्री० (सं०) चौबीस देवियोंमेंसे एक जो अर्हतोंका आदेश कार्यान्वित करती है।

सिद्धारि–पु० (सं०) एक तांत्रिक मंत्र।

सिद्धार्थ–वि० (सं०) जिसकी कामनाएँ पूरी हो गयी हों, सफलमनोरथ; लक्ष्यतक ले जानेवाला; जिसका अभिप्राय ज्ञात हो। पु० गौतम बुद्ध; एक मारपुत्र; स्कंदका एक अनुचर; महावीरके पिता; दशरथका एक मंत्री; सफेद या पीली सरसों; प्रसिद्धार्थ; वटी वृक्ष; एक संवत्सर; वह मकान जिसमें पूरब और दक्षिणकी ओर बड़े कमरे हों। –कारी(रिन्)–पु० शिव। –मति–पु० एक बोधिसत्त्व। –मानी(निन्)–वि० अपनेको सफलमनोरथ माननेवाला।

सिद्धार्थक–पु० (सं०) सफेद सरसों; एक मरहम।

सिद्धार्था–स्त्री० (सं०) सफेद सरसों; वटी वृक्ष; साठ संवत्सरोंमेंसे एक; वर्तमान अवसर्पिणीके चौथे अर्हत्की माता।

सिद्धासन–पु० (सं०) एक योगासन जिसमें बायें पैरका तलवा गुदा और शिश्नके बीचमें और दाहिना पैर शिश्नके ऊपर रखकर भ्रूमध्यपर दृष्टि जमाते हुए ध्यान करते हैं।

सिद्धि–स्त्री० (सं०) गर्भकी पूर्ति; सफलता; अभ्युदय; निष्पत्ति; अनुमान; निश्चय; (ऋणका) परिशोध; पाकक्रिया; प्रश्नका हल; पूर्ण शुद्धि; अणिमा, गरिमा आदि योगशास्त्रमें वर्णित अलौकिक शक्तियाँ (दे० 'अष्टसिद्धि'); दक्षता, निपुणता; सुपरिणाम; मोक्ष; प्रज्ञा; लोप; जादूकी खड़ाऊँ; योगका एक प्रकार; दुर्गा; पूर्ण ज्ञान; लाभ; लक्ष्यवेध; आरोग्यलाभ; प्रयोगमें आना (नियम); स्पष्ट होना; एक ही व्यक्तिमें विभिन्न गुणोंका समावेश (सां०); ऋद्धि नामक ओषधि; एक श्रुति (संगीत); दक्षकी एक कन्या; गणेशकी एक पत्नी; मेढ़ासिंगी; भंग; छप्पयका एक भेद। पु० शिव। –कर–वि० सफल बनानेवाला; समृद्ध करनेवाला। –कारक–वि० लक्ष्यप्राप्ति करानेवाला; प्रभावकर। –कारण–पु० मुक्तिका साधन। –कारी(रिन्)–वि० किसी बातकी सिद्धि करानेवाला। –ज्ञान–पु० सिद्धांतोंका ज्ञान। –द–वि० मोक्ष देनेवाला; सिद्धि देनेवाला। पु० बटुकभैरव; पुत्रजीव वृक्ष। –दर्शी(र्शिन्)–वि० भविष्यमें सिद्धि देखनेवाला; आगेकी स्थितिका ज्ञान रखनेवाला। –दाता(तृ)–पु० गणेश। –दात्री–स्त्री० दुर्गाका एक रूप। –प्रद–वि० सिद्धि देनेवाला। –भूमि–स्त्री० वह स्थान जहाँ सिद्धि जल्द मिले। –मार्ग–पु० सिद्धलोकमें पहुँचानेवाला रास्ता। –यात्रिक–पु० सिद्धिकी प्राप्तिके लिए यात्रा करनेवाला व्यक्ति। –योग–पु० ग्रहोंका एक शुभ योग; योग-शक्तिका प्रयोग। –योगिनी–स्त्री० योगिनीका एक भेद। –योग्य–वि० सिद्धिके लिए आवश्यक। –रस–पु० दे० 'सिद्धरस'। –राज–पु० एक पर्वत। –लाभ–पु० सिद्धिकी प्राप्ति। –वर्ति–स्त्री० जादूकी बत्ती। –वाद–पु० ज्ञानगोष्ठी। –विघ्न–पु० सिद्धिप्राप्तिके मार्गमें आनेवाली बाधा। –विनायक–पु० गणेशकी एक मूर्ति। –साधक–पु० सफेद सरसों; दमनक। –स्थान–पु० तीर्थस्थान; मोक्षप्राप्तिका स्थान; चिकित्सा-ग्रंथका उपचारखंड।

सिद्धिक–पु० (सं०) सिद्धि, अलौकिक शक्ति।

सिद्धिली–स्त्री० (सं०) क्षुद्र पिपीलिका, छोटी चींटी।

सिद्धीश्वर–पु० (सं०) महादेव; एक तीर्थ।

सिद्धेश्वर–पु० (सं०) योगिराज; शिव; गुलतुर्रा; एक पर्वत।

सिद्धेश्वरी–स्त्री० (सं०) देवीविशेष।

सिद्धोदक–पु० (सं०) कांजी; एक तीर्थ।

सिद्धौघ–पु० (सं०) (तांत्रिक) गुरुवर्गविशेष (नारद, काश्यप, शंभु, भार्गव और कुलकौशिक)।

सिध*–वि० दे० 'सिद्ध'।

सिधरी†–स्त्री० एक मछली।

सिधाई–स्त्री० सरलता, सीधापन।

सिधाना*–अ० क्रि० चला जाना, प्रस्थान करना; आना–'तब कर जोरि कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो'–रघुराज।

सिधारना–अ० क्रि० जाना, प्रस्थान करना; विदा, रवाना होना; मर जाना। * स० क्रि० सुधारना।

सिधि*–स्त्री० दे० 'सिद्धि'। –गुटका–पु० दे० 'सिद्ध-गुटिका'।

सिध्म–वि० (सं०) सफेद दागोंवाला; श्वेत कुष्ठसे ग्रस्त; सीधे जानेवाला। पु० कुष्ठके अठारह भेदोंमेंसे एक महाकुष्ठ; श्वेत कुष्ठ।

सिध्म(न्)–पु० (सं०) कुष्ठके अठारह भेदोंमेंसे एक; क्षुद्र कुष्ठ। –पुष्पिका–स्त्री० किलास, सेहुँआ।

सिध्मल–वि० (सं०) सेहुँएका रोगी।

सिध्मला–स्त्री० (सं०) सूखी मछली; एक तरहका कुष्ठ।

सिध्मवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसे सेहुँआ हुआ हो।

सिध्मा–स्त्री० (सं०) कुष्ठका दाग; कुष्ठ रोग।

सिध्य–पु० (सं०) पुष्य नक्षत्र।

सिध्र–वि० (सं०) साधु, प्रभावकारी, सफल; रक्षा करनेवाला। पु० वृक्ष।

सिध्रक–पु० (सं०) वृक्षविशेष। स्त्री० (सं०) वृक्षविशेष। –वन–पु० एक देवोद्यान।

सिन–पु० (सं०) शरीर; परिधान, पोशाक; ग्रास; कुंभी। वि० सफेद; काना, एकाक्ष।

सिन, सिन्न–पु० (अ०) उम्र, वय। –रसीदा–वि० बूढ़ा। –(ने)तमीज़–पु० प्रौढ़ावस्था; भलाबुरा सोचनेकी उम्र। –(ने)शऊर–पु० समझ आनेकी उम्र, यौवनारंभ। –(ने)शबाब–पु० युवावस्था। –(ने)शैख़ूख़त–पु० वृद्धावस्था। मु० –को पहुँचना–सयाना होना। –से उतर जाना–जवानी ढलने लगना।

सिनक–स्त्री० नाकका मल, रेंट।

सिनकना–स० क्रि० साँसके झोंकेसे नाकका मल निकालना, छिनकना।

सिनान–पु० (फा०) भाला; भालेका फल; तीरकी नोक।

सिनि–पु० क्षत्रियोंकी एक प्राचीन शाखा; एक यादववीर, सात्यकिका पिता।

सिनी–स्त्री० (सं०) गौर वर्णकी स्त्री।

सिनीपति–पु० एक यादववीर।

सिनीवाली–स्त्री० (सं०) एक वैदिक देवी (गर्भ-प्रसव या प्रतिपदाकी अधिष्ठात्री देवी); शुक्ल पक्षकी प्रतिपदा; दुर्गा; एक नदी; अंगिराकी एक कन्या।

सिनेट–स्त्री० (अं०) विश्वविद्यालयकी प्रबंध समिति।

सिनेमा–पु० (अं०) चलचित्र, छायाचित्र; वह स्थान जहाँ चलचित्र प्रदर्शित किये जायँ। –हाउस–पु० सिनेमाघर।

सिन्नी†–स्त्री० मिठाई; खुशीसे देवताको चढ़ाकर प्रसादके रूपमें बाँटी जानेवाली मिठाई।

सिपर–स्त्री० (फा०) ढाल, फरी; रोक; (ला०) पनाह; मददगार। –दारी–स्त्री० रक्षण, हिफाजत करना, रखवाली। मु० –डाल या फेंक देना–हथियार डाल देना, हार मान लेना। –मुँहपर लेना–हिफाजतके लिए ढाल उठाना। –अंदाख़्ता–वि० हार मान लेनेवाला। –अंदाज़ी–स्त्री० हार मान लेना।

सिपरा–स्त्री० दे० 'सिप्रा'।

सिपरी–वि० (फा०) समाप्त, ख़त्म।

सिपह–'सिपाह'का लघु रूप। **–गरी**–स्त्री० सिपाहीका काम या पेशा, सैनिकवृत्ति। **–दार**–पु० सेनानायक। **–सालार**–पु० सेनापति।

सिपाई*–पु० दे० 'सिपाही'।

सिपारस†–स्त्री० दे० 'सिफ़ारिश'।

सिपारसी†–वि० दे० 'सिफ़ारिशी'।

सिपारिश–स्त्री० (फा०) दे० 'सिफ़ारिश'।

सिपाव–पु० बाँस आदिका बना हुआ वह ढाँचा या साधन जिसे अड़ानेके लिए गाड़ीमें आगे लगाते हैं।

सिपास–पु० (फा०) सराहना, बड़ाई; कृतज्ञताप्रकाश। **–गुज़ार**–वि० प्रशंसक; कृतज्ञता प्रकट करनेवाला। **–नामा**–पु० अभिनंदनपत्र।

सिपाह–पु० (फा०) सेना, फौज (हिंदीमें स्त्री० भी–'मंद-मंद आवत मलिंदकी सिपाह लै'–रत्ना०)। **गरी**–स्त्री० सिपाहीका काम या पेशा; सैनिकवृत्ति। **–सालार**–दे० 'सिपहसालार'।

सिपाहियाना–वि० (फा०) सिपाहियों-सा, सैनिकोचित (–ठाट)।

सिपाही–पु० (फा०) सैनिक; योद्धा; कांस्टेबिल; चपरासी।

सिपुर्द–वि० (फा०) सौंपा हुआ, हवाले किया हुआ। **–गी**–स्त्री० सिपुर्द करनेका भाव; तहवील, हिरासत (–में लेना)। **–नामा**–पु० सिपुर्द करनेका लेख, समर्पणपत्र। **मु० –करना**–सौंपना, हवाले करना; हिरासतमें देना।

सिप्पर*–स्त्री० दे० 'सिपर'।

सिप्पा–पु० सीपका अर्धांश; ढव; निशाना; एक तरहकी छोटी तोप; मतलव; काम निकालनेका उपाय, डौल, टिप्पस; धाक। **मु० –जमाना**–भूमिका बाँधना, डौल खड़ा करना। **–भिड़ना, –लड़ना**–मौका मिलना, उपाय लग जाना। **–भिड़ाना,–लड़ाना**–टिप्पस जमाना, तदवीर करना। **–मारना,–लगाना**–निशाना लगाना; फंदा लगाना, जाल डालना।

सिप्र–पु० (सं०) चंद्रमा; पसीना, स्वेद; एक झील।

सिप्रा–स्त्री० (सं०) स्त्रियोंका कटिबंध; भैंस; एक झील; उज्जैनके पासकी एक नदी।

सिफ़त–स्त्री० (अ०) गुण, विशेषता; लक्षण; विशेषणपद। वि० (समासमें) तुल्य, सदृश (गुर्गसिफत–भेड़िये जैसे स्वभाववाला)।

सिफ़र–पु० (अ०) बिंदु, शून्य। वि० मूल्यरहित।

सिफ़लगी–स्त्री० कमीनापन, नीचता।

सिफ़ला–वि० (अ०) कमीना, नीच, क्षुद्र; छिछोरा। **–ख़ू, मिज़ाज**–वि० नीचप्रकृति। **–नवाज़,–परवर**–वि० कमीनोंको बढ़ाने, कमीनोंपर अनुग्रह करनेवाला। **–पन**–पु० ओछापन, नीचता।

सिफ़ली–वि० (अ०) नीचेका, निचला। **–अमल**–पु० वह मंत्र जिसमें शैतान या प्रेतात्माओंसे सहायता ली जाय।

सिफ़वत–स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता, पवित्रता। वि० पवित्र; निर्मल; उत्तम; बुजुर्ग; सार; तत्व; खुलासा।

सिफ़ा–स्त्री० दे० 'शिफ़ा'।

सिफ़ात–स्त्री० (अ०) 'सिफ़त'का बहु०। **–(ते)ज़ाती**–स्त्री० सहज गुण।

सिफ़ाती–वि० (अ०) गुणसे संबद्ध; शिक्षा, अभ्यास आदिसे प्राप्त; उपाधिकृत, जो सहज न हो।

सिफ़ारत–स्त्री० (अ०) सफीर(दूत)का पद या काम, दूतत्व; एक राज्यसे दूसरेको भेजा हुआ प्रतिनिधिमंडल। **–ख़ाना**–पु० दूतावास, राजदूतका दफ्तर।

सिफ़ारिश–स्त्री० (फा०) किसीके विषयमें भलाईकी बात कहना, किसीका कोई काम करनेके लिए दूसरेसे कहना; संस्तुति (रिकमेंडेशन); किसीमें किसी पद, कार्य इत्यादिकी योग्यता बताना; खुशामद; जरीया (क्व०)। **–नामा**–पु० सिफारिशी चिट्ठी।

सिफ़ारिशी–वि० जिसमें किसीकी सिफारिश की गयी हो; सिफारिश करनेवाला। **–टट्टू**–पु० वह आदमी जो योग्यताके बिना, महज सई-सिफारिश या चापलूसीसे कोई पद पा जाय।

सिफ़ाल–पु० (फा०) मिट्टीका बरतन; ठीकरा। **–गर**–वि० कुम्हार; मिट्टीके बर्तन बनानेवाला।

सिफ़ाला–पु० (फा०) मिट्टीका बरतन; ठीकरा; खपड़ा। **–पोश**–वि० खपरैलकी छाजनवाला।

सिबरनेटिक्स–पु० (सिबरनेटिक्स) मशीन और प्राणियोंमें संचार व्यवस्था तथा नियंत्रण प्रणालीके अध्ययनका विज्ञान।

सिबिका*–स्त्री० दे० 'शिविका'।

सिमंत*–पु० दे० 'सीमंत'।

सिम–वि० (सं०) प्रत्येक; सब; समग्र, संपूर्ण।

सिमई–स्त्री० सिवई।

सिमट–स्त्री० सिमटनेकी क्रिया।

सिमटना–अ० क्रि० सिकुड़ना, संकुचित होना; सिकुड़न पड़ना; एकत्र होना, बटुरना; लज्जित हो जाना, सहमना; अंजाम होना।

सिमर*–पु० सेमर–'चंदन भरम सिमर आलिगन मालि रहल हिय काँट'–विद्या०।

सिमरगोला–पु० एक तरहकी मेहराव।

सिमरन*–पु० स्मरण, याद करनेकी क्रिया।

सिमरना*–स० क्रि० स्मरण, याद करना।

सिमल–पु० हलका जुआ; जूएकी खूंटी।

सिमसिमाना†–अ० क्रि० ठंडा मालूम होना, कुछ-कुछ नमीका होना।

सिमाना†–पु० हद, सीवाना। * स० क्रि० दे० 'सिलाना'।

सिमिटना*–अ० क्रि० दे० 'सिमटना'।

सिमृति*–स्त्री० दे० 'स्मृति'।

सिमेटना*–स० क्रि० दे० 'समेटना'।

सिम्त–स्त्री० (अ०) दिशा, ओर, जानिब।

सिय*–स्त्री० सीता।

सियना*–स० क्रि० सर्जन करना, बनाना, उत्पन्न करना; † सीना।

सियरा*–वि० शीतल, ठंडा; कच्चा। पु० छाया; † सियार।

सियराई–स्त्री० शीतलता, ठंढक।

सियराना–अ० क्रि० शीतल, ठंढा होना।

सियह–वि० (फा०) दे० 'सियाह'। **–बादाम**–वि० काली आँख; काली आँखवाली सुन्दरी।

सिया*–स्त्री०–सीता, जानकी।

सियादत–स्त्री० (अ०) सरदारी, बड़ाई; राज्य; सैयद जाति।

सियाना†–वि० दे० 'सयाना'। स० क्रि० दे० 'सिलाना'।

सियापा–पु० स्त्रियोंका एकत्र होकर कुछ दिनोंतक मातम मनाना (पंजाब आदिका एक रिवाज); मातम।

सियार†–पु० गीदड़, शृगाल। **–लाठी**–स्त्री० अमलतास।

सियारा†–पु० एक तरहका लकड़ीका फावड़ा जिससे जुती हुई जमीन बराबर करते हैं; दे० 'सियाला'।

सियाल*–पु० शृगाल, गीदड़।

सियाला†–पु० जाड़ेका मौसिम।

सियालापोका–पु० लोनी मिट्टीवाली दीवारमें पाया जानेवाला एक छोटा कीड़ा।

सियाली†–वि० जाड़ेके मौसिमका; जाड़ेमें होनेवाली (फसल)। स्त्री० एक तरहका विदारी कंद।

सियावड़–पु० **सियावड़ी**†–स्त्री० खलिहानमें साधुओं आदिके लिए निकाला हुआ अन्नका अंश।

सियासत–स्त्री० (अ०) देशरक्षा; राज्यप्रबंध; राजनीति; राजकाज; दंड; शास्ति; दबदबा; भय; मारपीट। **–दाँ**–वि० राजनीतिज्ञ; शासनपटु।

सियासी–वि० राज्यप्रबंध या राजकाजसे संबद्ध; राजनीतिक।

सियाह–वि० (फा०) काला, श्याम; अशुभ। **–कार**–वि० बदकार, दुराचारी; अत्याचारी। **–कारी**–स्त्री० बदकारी, पाप; जुल्म। **–गोश**–पु० एक हिंस्र जंतु जिसके कान काले होते हैं, बनबिलाव। **–चश्म**–वि० काली आँखोंवाला; बेमुरौवत, बेवफा। **–ज़बान**–वि० बदजबान; जिसका शाप जल्दी पड़े

—ताब—वि० जिसकी सियाहीमें चमक हो। पु० नीला फौलाद। —दाना—पु० काला तिल; धनिया; सौंफका फूल। —दिल—वि० बेमुरौवत; निर्दय। —पुश्त—पु० एक तरहका कबूतर। —पोश—वि० काले रंगके कपड़े पहननेवाला; शोक या मातम मनानेवाला। मु०—०होना—मातम मनाना।) —फ़ाम—वि० काला, कृष्ण-काय। —बख़्त—वि० अभागा। —बख़्ती—स्त्री० दुर्भाग्य, बदनसीबी। —बातिन—वि० खोटे दिलका। —मस्त—वि० बदमस्त, शराबके नशेमें चूर। —मस्ती—स्त्री० सियाहमस्त होना। —रू—वि० काला; जलील। —सफ़ेद—पु० भलाई-बुराई। (मु०—० करना—जो चाहना सो करना। —०का मालिक होना—सर्वाधिकारी होना।) मु० (काग़ज़)—करना—लिखना; बहुत लिखना।

सियाहत—स्त्री० (अ०) भ्रमण; पर्यटन, सैर करना।

सियाहा—पु० (फा०) वह रोजनामचा जिसमें रोजका आमदनी-खर्च लिखा जाय; वह वही जिसमें लगान या मालगुजारीकी वसूली लिखी जाय। —नवीस—पु० सियाहा लिखनेवाला; रजिस्टरमें आज्ञाएँ लिखनेवाला। मु० —करना—सियाहेमें लिख लेना। —होना—सियाहेमें लिखा जाना, रजिस्टरमें दर्ज होना।

सियाही—स्त्री० (फा०) कालापन; श्यामता; कालिमा, कालिख; अंधकार; रोशनाई, मसि; दोष; काजल; कलंकका टीका। —चट,—सोख—पु० स्याही सोखनेवाला कागज, सोख़्ता, 'ब्लाटिंग पेपर'। मु० —दौड़ना—(मुँहपर) सियाही छा जाना।

सिर—पु० (सं०) पिप्पलीमूल; (हिं०) मनष्य तथा अन्य जानवरोंका गरदनके ऊपरका या आगेका हिस्सा; खोपड़ी, कपाल; किसी चीजका ऊपरका हिस्सा; चोटी; आरंभ; किनारा; सरदार; दिमाग। —कटा—वि० जिसका सिर कटा हो; दूसरोंका सिर काटनेवाला, अपकारी। —खप—वि० सिर खपानेवाला, मेहनती; बहादुर, दिलेर। —खपी—स्त्री० सिरतोड़ कोशिश, जान लगाकर मेहनत करना। —खिस्त—पु० यवासशर्करा। —गिरी—स्त्री० मुर्गेकी शिखा; पक्षियोंकी शिखा। —चंद—पु० हाथीके मस्तकका एक अर्द्धचंद्राकार भूषण। —चढ़ा—वि० मुँहलगा, ढीठ। —ताज—पु० सरदार; मालिक ; स्त्रियोंका एक सिरका गहना; एक तरहका नकाब; पति, शौहर। —त्राण*—पु० दे० 'शिरस्त्राण'। —दर्द—पु० माथेकी पीड़ा; चिन्ता या परेशानीका कारण। —दार*—पु० दे० 'सरदार'। —दारी*—स्त्री० दे० 'सरदारी'। —दुआली—स्त्री० लगामके साथका एक साज। —नामा—पु० पत्रपर लिखा जानेवाला पता; लेखादिका शीर्षक। —नेत—पु० सिरकी पगड़ी—'रे नेही मत डगमगै बाँधि प्रीति-सिरनेत'—रतन हजारा; क्षत्रियोंकी एक उपजाति या शाखा। —पाँव, पाव*—पु० दे० 'सिरोपाव'। —पेँच,—पेच—पु० पगड़ी; पगड़ीके ऊपरका छोटा कपड़ा; पगड़ीपर बाँधनेका एक गहना। —पोश—पु० सिरका आवरण; बन्दूकका गिलाफ़; किसी वस्तुके ढकनेका गिलाफ़। —फिरा—वि० जिसका सिर (मस्तिष्क) फिर गया हो, खराब हो गया हो, उलटी बुद्धिका; सनकी या पागल जैसा। —फूल—पु० स्त्रियोंका एक शिरोभूषण। —फेंटा,—बंद—पु० पगड़ी। —बंदी—स्त्री० माथेपरका एक गहना। —बोझी—स्त्री० पाटनके काममें आनेवाला पतला बाँस। —मग़ज़न—पु० माथापच्ची। —मनि*—पु० शिरोमणि। —मुँड़ा—वि० जिसके सिरके बाल मुँड़े हों; निगोड़ा (स्त्री०)। —मौर—पु० दे० 'सिरताज'।—रुह*—पु० दे० 'शिरोरुह'। —हाना—पु० खाटका वह हिस्सा जिधर सिर रहता है। मु० —अलग करना—सिर काटना। —आँखोंपर,—आँखोंसे—स्वीकार है, शौकसे। —आँखों पर बिठाना या बैठाना—बहुत इज्जत करना। —आँखों पर रखना—बड़ी आवभगत करना। —आँखोंपर होना—खुशीसे स्वीकार होना। —आना—सिरपर वार करना; प्रेताविष्ट होना; किसीके पीछे पड़ना, झगड़ना। —आ बनना—इलजाम लगना; मुसीबत आना। —उकसाना बना ऊँचा करना; दंगा-फसाद करना; बगावत करना। —उठाकर चलना—इतराना, गरूर करना। —उठाना—फ़ुर्सत, साँस, अवकाश पाना; विरोध, मुकाबला करना; उपद्रव, फसाद करना; लज्जित न होना, बराबर ताकना; अकड़ दिखाना, घमंड करना; प्रतिष्ठा, आत्मसम्मानसे रहना। —उठानेकी फ़ुरसत नहीं—जरा भी अवकाश नहीं। —उठाने नहीं देता—जरा भी फ़ुरसत नहीं देता, हर दम काममें जोते रहता है। —उड़ जाना,—उड़ना—सिर कट जाना। —उड़ाना,—उतारना—सिर काटना। —ऊँचा करना—आत्मसम्मानपूर्वक रहना। (किसीका)—ऊँचा करना—प्रतिष्ठा देना। —औंधाना—सिर नीचा करना। —कटना—सिरमें क्षत होना; जानसे मारा जाना। —क़दमपर रखना—पाँवपर सिर रखना, मिन्नत करना; इज्जत करना। —करना—जिम्मेवार बनाना; लड़ाना-भिड़ाना; जबर्दस्ती देना; चोटी गूँथना; ताश आदिकी बाजी जीतना। —क़लम करना—सिर काटना। —कहाँ फोड़ूँ—कहाँ तलाश करूँ? —काढ़ना—मशहूर होना; दबी हुई स्थितिसे ऊपर निकलनेका प्रयत्न करना। —का न पाँवका—बेसिर-पैरका, ऊल-जलूल। —का पसीना पाँवको आना या पाँवपर बहना—बहुत ज्यादा मेहनत करना। —का बोझ उतरना—किसी कामसे फ़ुरसत पाना। —का बोझ उतारना, टालना या डालना—लापरवाहीसे काम करना। —का बवाल होना—दूभर होना, जीका जंजाल होना। —की आफ़त टलना—मुसीबत दूर होना। —की क़सम या सौं—शपथका एक प्रकार (देना, खाना)। —की टली जानपर आयी—एक तरफ संकट टला, दूसरी तरफसे आया। —की सुध न पाँवकी बुध—कुछ होश नहीं, लापरवाह। —के ज़ोर—पूरी कोशिशसे। —के बल—सिरके सहारे, अदबके साथ (चलना, जाना)। —के साथ है—जानके साथ है। —कोरे उस्तुरेसे मूँड़ना—बुराई करना; जलील करना; सब कुछ लूट लेना। —खपाना—किसी काममें बहुत माथापच्ची करना। —खाना—व्यर्थकी बातोंसे परेशान करना; शोर मचाना। —ख़ाली करना—बेकार माथापच्ची करना; बकझक करना। —खींचना—तूल पकड़ना, सरकशी करना; सिर एक तरफ कर लेना। —खुजलाना,—खुजाना—शामत आना, मार खानेको जी चाहना (व्यंग्य)। —खुजलाने या खुजानेकी फ़ुरसत या मुहलत नहीं—जरा भी अवकाश नहीं। —खोलना—सिर उघाड़ना; बाल फैलाना; किसी कड़ी चीजसे मारकर सिर फोड़ना। —गंजा करना—इतना मारना कि सिरपर बाल न रह जायँ; कंगाल कर देना। —गाड़ी पैर पहिया करना—बहुत कठिन परिश्रम करना। —गाला मुँह बाला—सिर सफेद, पर चेहरेपर जवानीकी झलक; बुढ़ापेमें जवानोंकी स्पर्धा करना। —गिरना—सिर कटना; सिर झुकना। —गिराना—सिर तनसे अलग करना। —गूँधना—चोटी करना, बाल काढ़ना (औरतोंके)। —घुटनोंमें देना—खिन्न होना; लज्जित होना। —घूमना,—चकराना—सिरमें दर्द होना; चक्कर आना; बेहोशी होना; पागल हो जाना। —चढ़कर—निडर होकर; खुद छेड़खानी करके। —० बोलना—अपने आप भेद खुलना; भूत-प्रेत आदिके आवेशमें रोगीका बकझक करना। —० मरना—किसीके ऊपर प्राण देना, किसीको अपनी मृत्युका कारण बनाना। —० लड़ना—लड़ाई लेना; खाहमखाह छेड़खानी करना। —चढ़ना—यार, मुसाहब बनना। —चढ़ाकर पटकना—आदर देकर अपमानित करना। —चढ़ाना—आदरका भाव दिखाना; मनबढ़, गुस्ताख बनाना; देवी-देवताको बलि देना। —चला जाना—मौत होना, मरना। —चिकटना—सिरके बालोंका चिकट जाना। —चिकटाना—सिरके बालोंको चिकटनेकी स्थितिमें करना। —चीरना—सिर जख्मी करना; लड़ना; जिद करना; जबरदस्ती करना। —जाना—सिर कटना; किसीके जिम्मे पड़ना। —जोड़कर बैठना—मंत्र-परामर्शके लिए पास-पास बैठना। —जोड़ना—सिर मिलाना; एकत्र होना; मेल होना; राय करना; षड्यंत्र करना। —झाड़ मुँह पहाड़—जंगली, वहशियाना। —झुकना—सिर नीचा होना (लज्जा, पराजय आदिसे)। —झुकाना—नमस्कार करना; लज्जासे गर्दन नीची करना; चुपचाप स्वीकार कर लेना। —टकराकर मर जाना—इच्छा पूरी न होनेकी स्थितिमें ही दुःखमय अंत होना; व्यर्थ हैरान होना। —टकराना—सिरमें टक्कर लगाना; बहुत अधिक श्रम करना; सिर फोड़ना। —टीका होना—कामका किसीपर मुनहसर होना। —टूटना—सिर घायल होना, सिर फट जाना। —डालना—किसीके ऊपर थोपना,

मत्थे मढ़ना । **–ढाँकना**–सिरपर कपड़ा डाल लेना । **–तनसे उतारना,–तराशना**–सिर काटना । **–तोड़कर लेना**–वलपूर्वक कोई चीज ले लेना । **–तोड़ कोशिश करना**–वेहद कोशिश करना । **–तोड़ना**–सिर फोड़ना; वहुत मारना-पीटना; वशमें करना । **–थकाना**–किसीको हदसे ज्यादा समझाना; किसी काममें वहुत ज्यादा दिमाग लगाना । **–थामकर बैठ जाना या बैठना**–शोक, क्षोभ, आघात आदिके वेगसे सिर पकड़कर बैठ जाना । **–थाम लेना**–कोई वुरी खवर सुनकर या कोई चोट पहुँचानेवाली वात होनेपर सिर पकड़ लेना । **–थुप जाना**–जिम्मे पड़ना; इलजाम लगना । **–थोपना**–किसीके जिम्मे करना; इलजाम लगाना । **–दवाना,–दावना**–सिरकी मालिश करना; पराजित करना । **–दिखाना**–जूँएँ निकलवाना । **–दीवारोंसे टकराना**–वहुत ज्यादा घवड़ा जाना । **–दुखना**–सिरमें दर्द होना । **–दुखाना**–सिरमें दर्द पैदा करना; सिर फिराना; परेशान करना । **–दे-दे मारना,–दे मारना**–सिर पीटना (शोकादिमें) । **–देना**–प्राण निछावर करना, जान देना । **–धरना**–आदर-सम्मानपूर्वक स्वीकार करना; जिम्मे लगाना; इलजाम लगाना । **–धुनना**–शोक, पश्चात्ताप आदिके वेगसे सिर पीटना; मातम करना, शोक करना; पछताना । **–धोना**–सिरके वालोंको खली, मिट्टी वगैरह डालकर पानीसे साफ करना (स्त्रि०) । **–नंगा करना**–सिर खोलना; वेइज्जत करना । **–न उठाने देना**–दमभरकी मुहलत न देना, काममें लगाये रखना; सरकशी न करने देना; वोलनेकी फ़ुरसत न देना । **–न पाँव,–न पैर**–वेतुका, वेतरतीव, क्रमहीन । **–नवाना**–नमस्कार करना; दीन वनना । **–न उठा सकना**–उपकारके भारसे आँख न मिला सकना । **–निकालना**–पानी या किसी चीजमेंसे सिर वाहर करना, प्रकट होना; तरक्की करना । **–निहुराना**–लज्जासे सिर नीचा करना; कृतज्ञ रहना । **–नीचा करना**–लज्जित करना; उदास होना । **–नीचा होना**–पराजित होना; लज्जित होना; गर्व खंडित होना । **–पकड़कर बैठना**–शोकावेगसे मौन होकर वैठना; खेद और पश्चात्तापके चिह्न प्रकट करना । **–पकड़कर रह जाना**–अत्यंत दुःख और आश्चर्यकी स्थितिमें होना । **–पकड़कर रोना**–सिरपर हाथ धरके रोना । **–पचाना**–सोच-विचार करनेमें हैरान होना । **–पटकना**–वहुत परिश्रम करना; सिर फोड़ना; तिलमिलाना; सिर धुनना, पछताना; शोकके कारण सिर दे मारना; नाराज होना; घवड़ाना । **–पड़ना**–जिम्मे पड़ना; हिस्सेमें आना; मजवूरीका सौदा होना । **–पड़ेका सौदा**–जिम्मे पड़ेका मामला, मजवूरीका सौदा । **–पर**–वहुत निकट, पास । **–पर अजल या मौतका खेलना या हँसना**–मृत्युके लक्षण दिखाई देना । **–पर अहसान करना**–अहसानमंद वनाना । **–पर अहसान धर जाना या रखना**–किसीको कृतज्ञ वनाना । **–पर अहसान होना**–किसीका उपकार होना । **–पर आँखें न होना**–अक्ल न होना । **–पर आ चढ़ना**–पीछे पड़ जाना, छातीपर आ मौजूद होना । **–पर आ जाना**–वहुत समीप आ जाना, थोड़े ही दिन और रह जाना । **–पर आना**–वहुत पास आ जाना । **–पर आ पड़ना**–जिम्मे पड़ना; अपने ऊपर घटित होना । **–पर आ पहुँचना**–सन्निकट आना । **–पर आफ़त आना या पड़ना**–विपत्ति आना । **–पर आरे चलना**–अत्यंत संकटकी स्थिति होना । **–पर आसमान उठाना**–वहुत शोर-गुल मचाना । **–पर आसमान टूटना**–वहुत वड़ी विपत्ति आना; दैवी कोप होना । **–पर उठाना,–पर उठा लेना**–वहुत ऊधम; शोर-गुल करना (घरको सिरपर उठा लेना) । **–पर उठा ले जाना**–सिरपर रखकर ले जाना; मरकर साथ ले जाना । **–पर क़फ़न बाँधना**–मरनेके लिए तैयार रहना । **–पर क़यामत टूटना**–मुसीवत, विपत्ति आना । **–पर क़यामत वरपा करना**–मुसीवत लाना; शोर, हंगामा करना । **–पर काली हाँड़ी रखना**–शर्मिंदा होना (स्त्रि०) । **–पर क़ुरान उठाना**–कुरानकी क़सम खाना । **–पर क़ुरान रखना**–कुरानकी क़सम देना । **–पर कोई न होना**–कोई मददगार या संरक्षक न होना । **–पर कोदों दलना**–दूसरेको जलानेके लिए, सतानेके लिएं, कोई काम करना; एक पत्नीके रहते दूसरी शादी करना । **–पर खड़ा होना**–सामने रहना; सन्निकट होना; वेअदवीसे खड़ा होना । **–पर ख़ाक उड़ाना या डालना**–शोक करना । **–पर ख़ून चढ़ना,–पर ख़ून सवार होना**–किसी हत्यारेपर हत्याका आवेश आना, हत्या करनेका लक्षण प्रकट होना । **–पर ख़ून लेना,–पर ख़ून होना**–कत्लका जिम्मेवार होना । **–पर खेलना**–प्रेतका सिरपर आकर वातें करना, निकट होना, सिरपर आना; जान जोखिममें डालना । **–पर गठरी रखना**–सिरपर वोझ रखना; जिम्मेदारी डालना । **–पर चक्कियाँ चलना**–सिरहाने घर्घरकी आवाज, शोरगुल होना । **–पर चढ़ना**–मुँह लगना । **–पर चढ़ाना**–इज्जत करना; मनवढ़ करना, वढ़ावा देना, मुँहलग करना । **–पर चढ़ा रहना**–पीछे लगा रहना । **–पर चिल्लाना**–पास आकर शोर करना,**–पर छत उठा लेना**–वहुत हल्ला-गुल्ला करना, चिल्लाना । **–पर छप्पर रखना**–वड़ा भार सिरपर रखना, वोझ डालना, जिम्मे देना; दवाव डालना; इलजाम लगाना । **–पर जनून चढ़ना**–पागलपन सवार होना; धुन, जिद होना । **–पर जहानभरका वेड़ा उठा लेना**–वड़ा झगड़ा मोल लेना; वूतेसे वाहर काम ले वैठना । –**–पर जिन खेलना**–अभुआना, प्रेतके आवेशमें अंगोंका अस्वाभाविक परिचालन और प्रलाप करना । **–पर जिन चढ़ना**–भूत-प्रेतका सिरपर आना । **–पर जिन सवार होना**–भूत-प्रेतका सिरपर आना; जिद, हठ होना । **–पर जूँ न रेंगना**–चेत न होना, होश न होना; जरा भी प्रभाव न पड़ना, टससे मस न होना । **–पर टीका होना**–किसी कामकी सफलता किसीपर निर्भर होना; किसी तरहकी नामवरीका ताज होना; प्रतिष्ठा, सम्मान पाना । **–पर टूटना**–सिरपर मारकर तोड़ा जाना । **–डालना**–सिरपर डालना, मत्थे मढ़ना । **–पर ढोल वजाना**–शोर-गुल करना; चिल्लाना । **–पर थाली फिरना**–मजमा, भीड़-भाड़ होना । –**–पर धरना**–माथे मढ़ना, उत्तरदायी ठहराना; सिरपर पहनाना । **–पर नक्क़ारा वजना**–हंगामा, शोरगुल होना । **–पर न रहना**–किसी वड़े-वूढ़े, अभिभावक, मददगारका साया या संरक्षण न रह जाना । **–पर पड़ना**–माथे होना, जिम्मे होना । **–पर पत्थर ढोना**–वड़ी तकलीफसे जिंदगी विताना, अत्यधिक कष्ट सहना; वहुत मेहनत करना । **–पर पहाड़ गिरना**–मुसीवत आ पड़ना । **–पर पहाड़ गिराना**–मुसीवत डालना । **–पर पाँवका जूता टूटना**–जूतोंसे किसीका इतना पीटा जाना कि जूता टूट जाय । **–पर पाँव रखकर उड़ जाना**–वहुत जल्द भाग जाना । **–पर पाँव रखना**–वहुत जल्द भाग जाना; उद्दंडताका व्यवहार करना । **–पर पृथ्वी उठाना**–वहुत उत्पात करना; वहुत परिश्रमका काम करना । **–पर पेच पड़ना**–मुसीवत आना । **–पर बनना**–मुसीवतमें फँसना । **–पर बला आना**–संकट आना । **–पर बला लाना**–सिरपर विपत्ति लाना । **–पर वाल होना**–वोलनेकी ताकत होना, मजाल होना । **–पर विठाना या वैठाना**–सम्मानपूर्वक पास वैठाना; वहुत इज्जत करना । **–पर वोझ पड़ना**–अहसानमंद होना; चिंतित होना; जिम्मेवारी पड़ना । **–पर वोझ लेना**–जिम्मेवारी लेंना, भार लेना । **–पर वोलना**–मंत्रवलसे साँपकाटे रोगीका साँपकी ओरसे वोलना, वात करना । **–पर भार लेना**–उत्तरदायित्व लेना । **–पर भूत सवार होना**–वदहवास होना; पागल होना; किसी वातकी धुन होना; सिरपर भूत-प्रेतका आना । **–पर मिट्टी डालना**–शोक करना । **–पर मौतका खेलना**–मौत आना, मौत सवार होना । **–पर रखना**–आदरार्थ कोई चीज सिरपर रखना; आदर देना, प्रतिष्ठित करना; पदोन्नति करना । **–पर रख लेना**–सिरपर उठाना । **–पर रहना**–पास रहना; प्रतिष्ठित होना । **–पर लगाना**–सिरपर धौल या जूता मारना । **–पर लादकर ले जाना**–मरते समय सिरपर पापका भार ले जाना । **–पर लादना**–किसीके जिम्मे डालना । **–पर लिये फिरना**–सिरपर रखकर घूमना; वहुत दौड़-धूप, परिश्रम करना । **–पर ले जाकर खड़ा कर देना**–रूवरू, सामने हाजिर कर देना, खड़ा कर देना । **–पर ले जाना**–कोई भार ढोना; कोई चीज अपनी देख-रेखमें ले जाना । **–पर लेना**–सिरपर उठाना, रखना; अपने जिम्मे रखना । **–पर वारना**–कोई चीज किसीके सिरके चारों ओर घुमाकर निछावर करना, बाँट देना । **–पर**

शैतान चढ़ना, सवार होना–दुराग्रह, हठ होना; क्रोध चढ़ना; पापकी प्रवृत्ति होना । **–पर सनीचर सवार होना**–मुसीबत आना । **–पर सफ़ेदी आना**–बुढ़ापा आना । **–पर सवार करना**–धृष्ट करना, मनवढ़ करना । **–पर सवार रहना**–धृष्ट होना; साथ रहना; साथ न छोड़ना; कड़ाईसे निगरानी करना । **–पर सवार होना**–भूत-प्रेतका साया, प्रभाव होना; किसी बातकी धुन होना । **–पर सहना**–बरदाश्त करना । **–पर साया रखना**–किसीका अभिभावकत्व करना; कृपा रखना । **–पर साया रहना**–अभिभावक, सरपरस्तका होना । **–पर साया होना**–अभिभावकका जीवित रहना । **–पर सीँग होना**–कोई विशेषता, खूबी होना । **–परसे निकलना**–सिरहानेसे निकलना, पाससे निकलना । **–परसे वारना**–कोई चीज मंगल-कामनासे किसीके सिरके चारों ओर फेरकर बाँट देना । **–पर सौदा चढ़ना**–किसी चीजकी धुन होना, खब्त होना । **–पर हाथ धरके रोना**–पछताना, अफसोस करना; शोकाकुल होना । **–पर हाथ धरना**–अभिभावक, सरपरस्त होना । **–पर हाथ फेरना**–धीरज, दिलासा देना; प्यार करना । **–पर होना**–सहायक, समर्थक होना; जिम्मे पड़ना; थोड़े दिनकी अवधि रह जाना, बहुत निकट आ पड़ना । **–पाँव न होना**–सिलसिला न होना, बेढंगा होना । **–पाँवपर धरना**–पैरों पड़ना, दीनता प्रकट करना । **–पीटके रोना**–रोते समय दुःखातिरेकसे सिर पीटना । **–पीटना**–क्रोध, शोक, दुःखके आवेगमें सिरपर प्रहार करना । **–पैर न होना**–आदि और अंतका न होना । **–पैर होना**–आदि-अंत होना । **–फट जाना**–सिर फूटना, सिरपर गहरी चोट लगना (लाठी आदिसे) । **–फटा जाता है,–फटा पड़ता है**–सिर और आँखोंमें अत्यधिक पीड़ा होनेकी स्थिति । **–फिर जाना**–दिमाग परेशान होना; चक्कर आना; पागल हो जाना । **–फिरना**–अकल न रहना; दिमागमें फितूर होना; पागल होना । **–फिराना**–बकवाससे श्रोताके सिरमें दर्द पैदा करना । **–फूटना**–सिरका घायल होना; (पत्थर, ईंट, लाठी आदिकी चोटसे) । **–फेरना**–कहा न मानना, सरकशी करना । **–फोड़ना**–सिर दे मारना, पत्थर, ईंट आदिसे सिरको चुटीला करना; ईर्ष्या या शोकके आवेगमें अपने आपको व्यथित करना । **–फोड़े डालना**–सिर फोड़नेके लिए तैयार हो जाना । **–बक-बक कर खा जाना**–बकते-बकते सिर खा जाना, बक-झकसे परेशान कर देना । **–बाँधना**–सिरका निशाना बाँधना (पटेबाज); सिरके बाल गूँथना (स्त्रि०); बाग इस तरह लेना कि चलते समय घोड़ेका सिर सीधा रहे, दायें या बायें न हो । **(किसीके)–बीतना** सिरपर पड़ना । **–बेगार होना**–किसीके जिम्मे ऐसा काम होना जो उसे नागवार हो । **–बेचना**–जान खतरेमें डालना (फौजकी नौकरी करनेके विषयमें) । **–भारी होना**–सिरमें पीड़ा होना, जुकाम आदिके कारण सिरका भारी जान पड़ना । **–झिन्नाना**–सिर चकराना । **–मग़जन करना**–किसी काममें तरद्दुद करना; बकवास करना । **–मटकाना**–ताने या व्यंग्यसे सिर हिलाना । **–मढ़ना**–बलपूर्वक किसीके जिम्मे लगाना । **–मारते फिरना**–सिर टकराते फिरना; कठिनाइयोंसे जान-बूझकर उलझना । **–मारना**–समझाते-समझाते हैरान होना; सोचने-विचारनेमें हैरान होना; अत्यधिक परिश्रम करना; चिल्लाना । **–मुँड़ाते ही ओले पड़ना**–आरंभमें ही विघ्न-बाधा पड़ना । **–मुँड़ाना**–बाल घुटाना; साधु हो जाना । **–मूँड़ना**–सिरके बाल उतारना । **–मूँड़ा जाना**–एक सजा । **–में आग लगना तलुवोंमें बुझना**–अत्यधिक क्रोध, कोपके आवेशमें आना । **–में ख़ाक डालना**–मातम करना । **–में ख़न्नास समाना**–गरूर होना; सिरमें दर्द उठना । **–में तेल पड़ना**–शृंगार, केश-विन्यासके लिए बालोंमें तेल डाला जाना । **–में धमक होना**–सिर भारी होना, गरम होना, दर्द होना । **–में बाल होना**–मार खाने, झेलनेकी ताकत होना । **–में सफ़ेदी आना**–बाल सफेद होना, बुढ़ापा आना । **–में सौदा होना**–धुन, खब्त होना । **–में हवा भरना**–धुन समाना । **–रँगना**–सिर फोड़ना, लहू-लुहान करना । **–रहना**–किसीके पीछे पड़ना; रात दिन परिश्रम करना; जिंदा रहना; जिम्मे रहना । **–लगना**–इलजाम आना । **–लगाना**–किसीके जिम्मे करना । **–लड़ना**–सिरसे सिरका टकरा जाना । **–लड़ाना**–सिरसे सिर टकराना । **–लेना**–जिम्मे लेना । **–व तनकी ख़ैर होना**–खबरदार होना । **–सफ़ेद होना**–बूढ़ा होना, सिरके बाल पकना । **–सलामत रहे**–जिंदा रहे, जीवित रहे । **–सलामत है**–जीवित है, है । **–सहरा रहना**–प्रतिष्ठा होना, सरदारी प्राप्त होना । **–सहरा होना**–किसीपर किसी कामका निर्भर होना । **–सहलाना**–सिरपर हाथ फ़ेरना, प्यार, खुशामद करना । **–सहलाये भेजा खाये**–दोस्त बनकर हानि पहुँचाना । **–सुखाना**–बालोंकी नमी दूर करना (स्त्रि०) । **–से आसेब उतरना**–क्रोध, भय, भ्रम न रहना । **–से आसेब उतारना**–भय, भ्रम, क्रोध दूर करना । **–से उतारना**–सिरसे वारना । **–से क़दम तक बलाएँ लेना**–सारे शरीरकी बलाएँ लेना । **–से कफ़न बाँधना**–मरनेके लिए तैयार होना । **–से किनारा करना**–जान देना, मारना । **–से कुआँ खोदना**–बहुत परिश्रमसे काम करना; दुस्साध्य, असंभव काम करना । **–से खेल जाना**–मरनेके लिए तैयार हो जाना; बड़ी दिलेरीका काम करना । **–से खेलना**–सिरपर भूत-प्रेत आना । **–से गुज़र जाना,–से गुज़रना**–पानीका डुबाव होना; मर जाना, जीवन समाप्त होना । **–से चलना**–बहुत आदर-सम्मान करना; सिरके बल चलना । **–से जाना**–सिरके बल जाना, बहुत आदर-भावसे किसीके लिए जाना । **–से जिन उतारना**–क्रोध धीमा करना; भय दूर करना । **–से जोड़ना**–सिर मिलाना; एकत्र होना, मिलकर बैठना; एका करना; षड्यंत्र करना । **–से टलना**–पीछा छूटना । **–से टालना**–पीछा छुड़ाना । **–से तिनका उतारना**–जरा-सा उपकार करना । **–से तिनका उतारनेका अहसान मानना**–थोड़ेसे उपकारके लिए कृतज्ञ होना । **–से तोड़ना**–सिरपर मारकर तोड़ना; अपना सिर मारकर किसी चीजको टुकड़े-टुकड़े करना । **–से पटक जाना**–वापस कर जाना; जबरदस्ती किसीके जिम्मे डालना । **–से पहाड़ टालना**–सिरसे मुसीबत टालना । **–से पाँवतक**–आदिसे अंततक; ऊपरसे नीचेतक, तमाम । **–से पानी ऊपर होना या गुज़रना**–किसी बातका हदतक पहुँच जाना; असह्य हो जाना । **–से पैदा होना**–सिरकी ओरसे बच्चेका पैदा होना । **–से पैरतक**–आदिसे अंततक; ऊपरसे नीचेतक । **–० आग लगना**–अत्यधिक क्रोध चढ़ना । **–से फिरना**–सिरपर निसार होना, सिरके गिर्द फिरना । **–से बला टलना**–विपत्ति दूर होना । **–से बला टालना**–मन लगाकर काम न करना; किसी अप्रिय प्रसंगसे जान छुड़ाना । **–से बेगार टालना**–बेदिलीसे काम करना । **–से बोझ उतरना**–निश्चिंतता, बेफिक्री होना, झंझट दूर होना । **–से बोझ उतारना**–बोझ टालना; किसी भार और दायित्वसे मुक्ति प्राप्त करना । **–से बोझ बाँधना**–नाहक खर्च अपने जिम्मे लेना । **–से मारना**–नाखुश होकर कोई चीज किसीको लौटाना; बेदिलीसे कोई चीज देना; सिरपर मारना; फेंक देना; सिरसे टकराना । **–से लगाना**–आदर, प्यार करना । **–से बबाल उतरना**–किसी झंझटसे रिहाई होना । **–से वारना**–सिरपरसे निसार करना, निछावर करना । **–से साया उठना**–अभिभावक, गुरुजनका देहावसान होना । **–से साया उतरना**–जिन, परी आदिका असर दूर होना । **(किसीके)–से सेहरा बँधना**–औरोंसे अधिक सफलता या यश प्राप्त करना । **–से हाज़िर होना**–(किसी कामके लिए) सहर्ष तैयार होना । **–से होश जाना**–अक्ल न रहना, घबड़ा जाना । **–हथेलीपर धरना, रखना, लिये फिरना, लेना**–बहादुरीसे जान देनेके लिए तैयार रहना, जान-बूझकर दिलेरीसे मौतका सामना करना । **–हथेलीपर रहना, होना**–जान देनेको तैयार रहना । **–हाज़िर है**–(किसी कामके लिए) सहर्ष तैयार होना । **–हाथपर रखना**–मरनेके लिए तैयार होना । **–हिलना**–सिर काँपना (बुढ़ापेके कारण या स्वीकार-अस्वीकारके भावसे) । **–हिलाना**–सिरको ऊपर-नीचे या अगल-बगल हिलाना (प्रशंसा, स्वीकृति, अस्वीकृति, आदिकी सूचनाके लिए) । **(किसीका किसीके)–होना**–पीछा न छोड़ना, पीछा करना; बार-बार किसी चीजका आग्रह करके परेशान करना; उलझ पड़ना, झगड़ा करना । **(किसीके)–होना**–ऊपर पड़ना, जिम्मे होना (दोष आदि) । **(किसी बातके)–होना**–समझ लेना, ताड़ लेना ।

सिर–पु० (अ० 'सिर्र') भेद, रहस्य, राज। –(र्रे) **पिनहां**–पु० गुप्त भेद; गूढ़ मर्म। **मु० –की बात कहना**–भेद प्रकट करना। –**होना**–रहस्य होना।

सिरई–स्त्री० सिरहानेकी पाटी।

सिरका–पु० (फा०) धूपमें सड़ाकर खमीर उठाया हुआ ईख, अंगूर आदिका रस। –**कश**–पु० अर्क खींचनेका एक यंत्र। –**पेशानी**–वि० जिसकी त्योरी चढ़ी रहे।

सिरकी–स्त्री० सरकंडा, सरहरी; सरकंडेकी बनी हुई टट्टी।

सिरगा*–पु० घोड़ोंकी एक जाति।

सिरजक*–पु० सृष्टिकर्ता, बनानेवाला।

सिरजन*–पु० निर्माण, सृष्टि करना। –**हार**–पु० कर्तार, निर्माता, स्रष्टा।

सिरजना*–स० क्रि० उत्पन्न करना, रचना, बनाना; संचय करना। स्त्री० सृष्टि, रचना।

सिरजित*–वि० रचा हुआ, सृष्ट।

सिरतान–पु० काश्तकार; मालगुजार।

सिरती†–स्त्री० लगान, जमा।

सिरथन†–स्त्री० झाड़ू।

सिरथना†–स० क्रि० झाड़ू लगाना; ओसाते समय अनाजको झाड़ूसे सुव्यवस्थित करना।

सिरवा†–पु० ओसाते समय हवा करके भूसी उड़ानेका कपड़ा।

सिरवार†–पु० जमींदारकी सीरका प्रबंध करनेवाला कारिंदा; सिवार।

सिरस–पु० दे० 'शिरीष'।

सिरसा–पु० दे० 'सिरस'।

सिरहान–पु० (अ०) भेड़िया।

सिरहाना–पु० दे० 'सिर'में।

सिरांबु–पु० (सं०) रक्त।

सिराँह*–स्त्री० शीतलता–'आनँद घन दुखताप मेंटियै कीजै कृपा-सिराँह'–घन०।

सिरा–पु० अंतका भाग, छोर; शुरूका भाग; ऊपरका भाग; अगला भाग; नोक। –(रे)**का**–परले दरजेका।

सिरा–स्त्री० (सं०) रक्तनलिका, धमनी, नाड़ी; नाड़ी जैसा जलका तंग सोता, जलकी संकीर्ण प्रणाली; नसोंकी तरह एक-दूसरीको काटनेवाली रेखाएँ; डोल। –**जाल**–पु० नाड़ियोंका जाल; आँखकी केशिकाओं (सूक्ष्म धमनियों)का शोथ। –**पत्र**–पु० पीपलका वृक्ष; एक तरहका खजूर। –**प्रहर्ष**–पु० दे० 'सिराहर्ष'। –**मूल**–पु० नाभि। –**मोक्ष**–पु० रक्तमोक्षण, फसद खोलवाना। –**वृत्त**–पु० सीसा। –**वेध,–वेधन,–व्यध,–व्यधन**–पु० दे० 'सिरामोक्ष'। –**हर्ष**–पु० नाड़ियोंका पुलक; आँखके डोरोंकी लालीका बढ़ जाना।

सिराज–पु० (अ०) दीपक; सूर्य।

सिराजी–पु० शीराजका घोड़ा।

सिरात–स्त्री० (अ०) रास्ता, सड़क; मुसलमानोंके विश्वासानुसार कयामतके दिन दोजख(नरक)पर बनाया जानेवाला पुल (जो वालसे अधिक बारीक और तलवारसे अधिक तीक्ष्ण होगा और जिसपरसे सभीको गुजरना होगा–पुण्यात्मा आसानीसे पार हो जायँगे, पर पापी कट-कटकर दोजखमें गिरते जायँगे)। –(ते) **मुस्तक़ीम**–स्त्री० सीधा रास्ता; सन्मार्ग; सचाईका रास्ता, धर्मपथ।

सिराना*–अ० क्रि० ठंढा होना; बीतना, समाप्त होना–'चरचहिं सिगरी रैन सिरानी' दूर होना; उत्साह ढीला पड़ना; शांत होना, हार मान लेना; † अवकाश मिलना। स० क्रि० ठंढा करना; पानीमें डुबाना–'तुलसी भाँवरके परे नदी सिरावत मौर'–तुलसी०; खतम करना; बिताना।

सिरायत–स्त्री० (अ०) घुसना, प्रवेश; जज्ब करना।

सिरायना*–स० क्रि० दे० 'सिरावना'।

सिराल–वि० (सं०) अधिक या बड़ी नसों या रेशोंवाला। पु० एक जनपद; कमरखका फल।

सिरालक–पु० (सं०) एक अंगूर।

सिराला–स्त्री० (सं०) एक पौधा।

सिराली–स्त्री० मोरकी कलंगी।

सिरालु–वि० (सं०) दे० 'सिराल'।

सिरावन–पु० हेंगा, पाटा, पटेला। वि० ठंढा या दूर करनेवाला–'जीव-जिवावन ताप-सिरावन है, रसमय घन आनँद छायौ'–घन०।

सिरावना*–स० क्रि० दे० 'सिराना'।

सिरिख*–पु० दे० 'सिरस'।

सिरियारी–स्त्री० सुसनाका साग।

सिरिश्ता–पु० दे० 'सरिश्ता' (समास भी)।

सिरिस–पु० शिरीष वृक्ष, जिसका फूल अत्यंत कोमल होता है–'सिरिस सुमन कत बेधिय हीरा'–रामा०।

सिरी–स्त्री० (सं०) ढरकी; करघा (?); लांगली; * लक्ष्मी; ऐश्वर्य; शोभा, सौंदर्य; रोली; सिरका एक गहना। –**पंचमी**–स्त्री० वसंत पंचमी।

सिरीस–पु० दे० 'सिरस'।

सिरोत्पात–पु० (सं०) आँखकी एक बीमारी जिसमें डोरोंकी लाली बहुत बढ़ जाती है।

सिरोना–पु० घड़ा रखनेका रस्सीका मेंड़रा, इँडुरी, विड़वा।

सिरोपाउ*–पु० दे० 'सिरोपाव'।

सिरोपाव–पु० सिरसे पैरतकका पहनावा जो बादशाह या राजाकी ओरसे सम्मानार्थ मिलता था, खिलअत।

सिरोमनि*–पु० दे० 'शिरोमणि'।

सिरोरुह*–पु० दे० 'शिरोरुह'।

सिरोही–पु० तलवारके लिए प्रसिद्ध (राजपूतानाका) एक स्थान। स्त्री० तलवार; † एक चिड़िया।

सिर्का–पु० दे० 'सिरका'।

सिर्फ़–वि० (अ०) खालिस; अकेला; केवल। अ० केवल, महज।

सिर्री†–वि० दे० 'सिड़ी'।

सिल–स्त्री० शिला, चट्टान; मसाला आदि पीसनेकी पत्थरकी चौकोर पटिया; इमारतमें लगानेकी गढ़ी हुई पटिया; पूनी बनानेकी काठकी पटरी। पु० उंछ वृत्ति; बलूतकी जातिका एक पेड़। –**खड़ी,–खरी**–स्त्री० एक चिकना पत्थर, जो बरतन बनानेके काम आता है; खरिया मिट्टी। –**पोहनी**–स्त्री० विवाहकी एक रस्म। –**फोड़ा**–पु० पत्थरचूड़ नामका पौधा। –**बट्टा**–पु० सिल और लोढ़िया। –**वट**–पु० सिल; सिल और बट्टा। स्त्री० दे० क्रममें। –**हार,–हारा**–पु० उंछ वृत्तिवाला।

सिल–पु० (अ०) क्षयरोग, तपेदिक।

सिलक–पु० धागा। स्त्री० कतार; लड़ी।

सिलकी*–पु० बेल, श्रीफल।

सिलगना*–अ० क्रि० दे० 'सुलगना'।

सिलप*–पु० दे० 'शिल्प'।

सिलपची–स्त्री० दे० 'चिलमची'।

सिलपट–वि० चौरस, बराबर; साफ, चौपट; घिसा हुआ। पु० चप्पल, चट्टी।

सिलफ़ची–स्त्री० दे० 'चिलमची'।

सिलवट–स्त्री० शिकन, सिकुड़न। पु० दे० 'सिल' में।

सिलवाना–स० क्रि० सीनेका काम कराना।

सिलसिला*–वि० आर्द्र, चिकना, सिलहिला–'ऐसी सिलसिली ओप सुंदर कपोलनकी खिसिल खिसिल परै दीठि जिन परतें'–सुंदर। पु० (अ०) कड़ी, शृंखला; बेड़ी; पंक्ति; क्रम, तरतीब; वंश; कुल, वंश, गोत्र; वंशवृक्ष; कुरसीनामा; किसी महात्माके शिष्योंका अनुक्रम; लगाव, संबंध (जोड़ना, तोड़ना, निकालना इ०)। –**ए-कोह**–पु० पर्वतमाला। –**ए-ख़यालात**–पु० विचार-क्रम। –**ए-तालीम**–पु० शिक्षाक्रम। –**बंदी**–स्त्री० कतारबंदी; तरतीब। –(ले)**वार**–वि० क्रमयुक्त, तरतीबवार। **मु०**–**निकलना**–आरंभ होना, रास्ता खुलना। –**निकालना**–संबंध जोड़ना।

सिलह–पु० (अ०) हथियार, आयुध। –**ख़ाना**–पु० अस्त्रागार। –**दस्त**–वि० खड्गपाणि। –**दार**–वि० शस्त्रधारी। –**पोश**–

वि० हथियारोंसे लैस, शस्त्रसज्जित ।

सिलहट–पु० आसामका एक नगर; एक अगहनी धान; सिलहटमें होनेवाली नारंगी ।

सिलहटिया–वि० सिलहटका । † स्त्री० एक तरहकी नाव ।

सिलहिला–वि० पंक आदिके कारण चिकना, जिसपर पैर फिसले, पिच्छल ।

सिलही†–स्त्री० एक चिड़िया ।

सिला–पु० (अ०) इनाम; बदला; ✻ फसल कटनेके बाद खेतमें गिरे हुए दाने; उंछ वृत्ति; फटकनेके लिए रखा हुआ गल्लेका ढेर । ✻ स्त्री० दे० 'शिला' । **–जीत**–पु० दे० 'शिलाजतु' । **–वाक**–पु० दे० क्रममें । **–रस**–पु० सिल्हक वृक्ष; उसका निर्यास । **–वट**–पु० दे० क्रममें । **–सार**–पु० लोहा । **–हर**–पु० दे० 'सिलहार' ।

सिलाई–स्त्री० सीनेका काम या मजदूरी; सीयन, टाँका सीनेका ढंग ।

सिलाना–स० क्रि० दे० 'सिलवाना'; ✻ दे० 'सिराना' ।

सिलावाक–पु० पथरफूल, शैलज ।

सिलाबी–वि० सैलाबी; गीला, नम ।

सिलाम✻–मु० सलाम, प्रणाम (मीरा) ।

सिलावट–पु० पत्थर काटनेवाला, संगतराश ।

सिलाह–पु० (अ०) संधि; मैत्री; शांति; हथियार, आयुध । **–ख़ाना**–पु० शस्त्रागार । **–पोश,–बंद**–वि० हथियारबंद । **–साज़**–पु० शस्त्र बनानेवाला ।

सिलाही–पु० सैनिक, सिपाही ।

सिलिप✻–पु० शिल्प, कारीगरी ।

सिलिपट, सिलीपट–पु० (अं० 'स्लीपर') लकड़ी आदिकी वह पटिया जिसपर रेल बिछायी जाती है ।

सिलिया–स्त्री०मकान बनानेके काम आनेवाला एक तरहका पत्थर ।

सिलियार, सिलियारा–पु० दे० 'सिलाहर' ।

सिलसिलिक–पु० (सं०) निर्यास, गोंद, लासा ।

सिलींध्र–पु० दे० 'शिलींध्र' ।

सिलीमुख–पु० दे० 'शिलीमुख' ।

सिलेक्ट कमिटी–स्त्री० (अं०) चुने हुए कुछ सदस्योंकी समिति (जिसका काम किसी विषयपर विचार करना और निर्णय देना है), प्रवर समिति ।

सिलेट–स्त्री० दे० 'स्लेट' ।

सिलोच्च✻–पु० एक पर्वत जो रामको जनकपुरकी यात्रामें मार्गमें मिला था ।

सिलौट, सिलौटा–पु० सिल; सिल और बट्टा ।

सिलौटी–स्त्री० भाँग आदि पीसनेकी छोटी सिल ।

सिल्क–पु० (अं०) रेशम; रेशमी वस्त्र । स्त्री० (अ०) धागा; लड़ी; पंक्ति । **–बंदी**–स्त्री० मालगुजारीकी दैनिक आयका हिसाब जिसको महीनेके अंतमें जोड़ते हैं । **–(ल्के)गौहर,–मरवारीद**–स्त्री० मोतियोंकी लड़ी ।

सिल्प–पु० दे० 'शिल्प' ।

सिल्म–स्त्री० (अ०) बच्चोंके लिखनेकी पट्टी, तख़्ती ।

सिल्ल–पु० (अ०) दे० 'सिल' (अ०) ।

सिल्लकी–स्त्री० (सं०) शल्लकी, सलईका पेड़ ।

सिल्ला–पु० कटनीके बाद खेतमें गिरे हुए दाने; खलियानमें गिरा हुआ अन्न; ओसानेके बाद लगा हुआ भूसेका वह ढेर जिसमें कुछ दाने भी हों; दे० 'सिला' ।

सिल्ली–स्त्री० उस्तुरा आदि तेज करनेका पत्थर; † लकड़ीका वह मोटा और कुछ लंबा कुंदा जिसे चीरकर तख्ते आदि निकालते हैं; पत्थरकी पटिया; फटके जानेवाले अनाज या भूसेका ढेर ।

सिल्ह–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य; सिलारस वृक्ष । **–भूमिका**–स्त्री० सिलारस वृक्ष । **–सार**–पु० सिलारस नामक गंधद्रव्य ।

सिल्हक–पु० (सं०) सिलारस नामक गंधद्रव्य ।

सिल्हकी–स्त्री० (सं०) वह वृक्ष जिससे सिलारस निकलता है ।

सिव✻–पु० दे० 'शिव' । **–लिंग**–पु० दे० 'शिवलिंग' । **–लिंगी**–स्त्री० एक लता जिसके फूल और फल दवाके काम आते हैं ।

सिवईं–स्त्री० आटे या मैदेके सुखाये हुए लच्छे जिन्हें घीमें तलनेके बाद दूधमें पकाकर चीनीके साथ खाते हैं ।

सिवक–पु० (सं०) दरजी; सीनेवाला ।

सिवर–पु० (सं०) हाथी ।

सिवस–पु० (सं०) वस्त्र, कपड़ा; श्लोक ।

सिवा–अ० (अ०) अलावा, छोड़कर, अतिरिक्त । वि० अधिक, बढ़ा हुआ । ✻ स्त्री० पार्वती; शृगाली ।

सिवाइ–अ० दे० 'सिवा' ।

सिवाई†–स्त्री० दे० 'सिलाई' ।

सिवान–पु० सीमांत, सरहद; गाँवकी सीमावर्ती भूमि ।

सिवाय–अ०, वि० दे० 'सिवा' । † पु० नियत वसूलीके ऊपरकी आमदनी ।

सिवार–पु० एक जलीय पौधा, शैवाल ।

सिवाल–पु० दे० 'सिवार' ।

सिवाला–पु० शिवालय, शिवका मंदिर; † मंदिर ।

सिवाली–पु० हल्के रंगका पन्ना ।

सिवि✻–पु० दे० 'शिवि' ।

सिविका✻–स्त्री० दे० 'शिविका' ।

सिविर✻–पु० दे० 'शिविर' ।

सिविल–वि० (अं०) नागरिक, मुल्की; सभ्य, भद्र । **–डिसओबीडिएंस**–पु० सविनय अवज्ञा । **–प्रोसीजर कोड**–पु० जाब्ता-दीवानी, न्याय-विधान । **–मैरिज**–स्त्री० विवाहका वह प्रकार जिसमें वर-वधू अपने धर्मनिरपेक्ष होनेकी घोषणा करते हैं अथवा अपना विशिष्ट धर्म (हिंदू, ईसाई आदि) कायम रखते हुए सवर्ण या असवर्ण विवाह कर सकते हैं । **–वार**–पु० गृहयुद्ध । **–सर्जन**–पु० जिलेका सबसे बड़ा सरकारी डाक्टर । **–सर्विस**–स्त्री० देश-शासन-संबंधी पद ।

सिविलियन–पु० (अं०) शासन और प्रबंध-विभागका कर्मचारी ।

सिवैयाँ–स्त्री० दे० 'सिवईं' ।

सिष, सिष्य✻–पु० दे० 'शिष्य' ।

सिष्ट✻–स्त्री० बंसीकी डोरी । वि० दे० 'शिष्ट' ।

सिस✻–पु० दे० 'शिशु'–'बदनचंदके लखनको सिस ज्यों बिरझत नैन'–रतनहजारा ।

सिसकना–अ० क्रि० भीतर ही भीतर रोना, खुलकर न रोना; सिसकी भरना; उल्टी साँस लेना; व्याकुल होना; तरसना ।

सिसकारना–अ० क्रि० मुँहसे सीटीकी-सी आवाज निकालना; शीत्कार करना । स० क्रि० (कुत्तोंको) आक्रमण करनेके लिए बढ़ावा देना, लहकारना ।

सिसकारी–स्त्री० मुँहसे निकली हुई सीटीकी-सी आवाज; लहकारनेकी क्रिया; शीत्कार ।

सिसकी–स्त्री० सिसकनेकी आवाज; शीत्कार ।

सिसिक्षा–स्त्री० (सं०) सिंचनकी इच्छा ।

सिसिक्षु–वि० (सं०) सिंचनका इच्छुक ।

सिसियाँद–स्त्री० मछलीकी गंध, बिसायँध ।

सिसिर✻–पु० दे० 'शिशिर' ।

सिसु✻–पु० दे० 'शिशु' । **–ता**–स्त्री० बचपन, शैशव । **–पाल**–पु० दे० 'शिशुपाल' । **–मार**–पु० दे० 'शिशुमार' । **–०चक्र**–पु० दे० 'शिशुमार-चक्र' ।

सिसृक्षा–स्त्री० (सं०) सृष्टि, निर्माणकी इच्छा ।

सिसृक्षु–वि० (सं०) सृष्टि, निर्माण करनेका इच्छुक; बहानेका इच्छुक ।

सिसोदिया–पु० सीसोद-निवासी गुहलौत राजपूतोंकी विशेष शाखा (राणा कुंभा, साँगा, प्रताप आदि इतिहास-प्रसिद्ध पुरुष इसी शाखामें हुए थे) ।

सिस्टि✻–स्त्री० दे० 'सृष्टि' ।

सिस्न–पु० दे० 'शिश्न' ।

सिस्य✻–पु० दे० 'शिष्य' ।

सिह–वि० (फा०) तीन । **–गून**–वि० तिगुना । **–ज़मानी**–वि० त्रैकालिक । **–पहलू**–वि० त्रिकोण । **–मंज़िला**–वि० तिखंडा, तीन मंज़िलोंवाला । **–साल**–वि० तिसाला ।

सिहद्दा–पु० तीन सरहदोंका मिलन-स्थल ।

सिहपर्ण–पु० (सं०) अड़ूसा ।

सिहर–पु० (अ०) मंत्र-तंत्र द्वारा हिंसा, अभिचार; शावदावाजी; माया, इन्द्रजाल; जादू; टोना टोटका; तिलिस्म, चमत्कार । **–अंगेज़**–वि० आश्चर्यजनक । **–कलाम**–वि० जिसकी वातोंमें जादू हो । **–कार,–तराज़,–फ़न,–संज**–वि० जादूगर ।

सिहरन–स्त्री० सिहरनेकी क्रिया, कंपन ।

सिहरना–अ० क्रि० काँपना; ठंढसे काँपना; भयभीत होना; दहल जाना; रोमांच होना ।

सिहरा–पु० दे० 'सेहरा' ।

सिहराना–स० क्रि० कँपाना; सरदीसे कँपाना; भयभीत करना; सहलाना । अ० क्रि० सहलाना; दे० 'सिहलाना' ।

सिहरावन, सिहलावन–पु० गुलावी सरदी, हलकी ठंड ।

सिहरी–स्त्री० कँपकँपी; शीतजन्य कंप; भय; रोमांच; जूड़ीका वुखार ।

सिहलाना–अ० क्रि० ठंढा होना; सरदी खाना; ठंढ पड़ना ।

सिहली–स्त्री० शीतली लता ।

सिहान–पु० लोहमल, मंडूर ।

सिहाना*–अ० क्रि० ईर्ष्या, हसद करना; ललकना; देखकर प्रसन्न होना; मुग्ध होना । स० क्रि० ईर्ष्या या तृष्णाकी दृष्टिसे देखना –'देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं'–रामा०; प्रशंसा करना ।

सिहारना*–स० क्रि० ढूँढ़ना; ढूँढ़कर लाना ।

सिहिकना–अ० क्रि० सूखना (फसल आदिका) ।

सिहिटि*–स्त्री० सृष्टि–'औ तेहि प्रीति सिहिटि उपराजी'–प० ।

सिहुंड–पु० (सं०) स्नुही, सेहुँड़ ।

सिहोड़†–पु० थूहर, सेहुँड़ ।

सिहोर*–पु० दे० 'सिहोड़' ।

सिह्ल, सिह्लक–पु० (सं०) दे० 'सिल्ह', 'सिल्हक' ।

सिह्लकी, सिह्ली–स्त्री० (सं०) दे० 'सिल्हकी' ।

सिह्हत–स्त्री० स्वास्थ्य; शुद्धि; दे० 'सेहत' । **–अफ़ज़ा**–वि० स्वास्थ्यवर्धक । **–ख़ाना**–पु० संडास, शौचालय । **–मंद**–वि० स्वस्थ ।

सीँउ–स्त्री० दे० 'सीँवँ', सीमा –'सीँउ कि चापि सकै कोइ तासू' –रामा० ।

सीँक–स्त्री० मूँजकी जातिके एक तृणकी तीली जिसकी झाड़ू बनाते हैं; किसी घासका लंवा-पतला डंठल; नाकमें पहननेकी कील ।

सीँकर–पु० सींकका घूआ ।

सीँकिया–वि० सींक-सा पतला । पु० एक धारीदार कपड़ा । **–पहलवान**–पु० वहुत दुवला-पतला आदमी जो अपने आपको वली समझे (व्यंग्य) ।

सीँग–पु० गाय, वैल, भैंसे, मेढ़े, हिरन आदिके सिरके दोनों ओर निकली हुई कड़ी नुकीली शाखा जैसी चीज जिससे वे दूसरे प्राणियोंपर आघात करते हैं, शृंग, विषाण; सींगका बना हुआ बाजा, सींगी । मु० **–कटा या तुड़ाकर बछड़ोंमें मिलना**–बूढ़ा या बड़ी उम्रका होकर भी वच्चोंके-से काम करना, उनकी सुहबत करना । **–निकलना**–(ला०) सनक जाना । **–पूँछ गिरा देना**–अति दीन बन जाना । **–समाना**–स्थान, मौका मिलना, ठिकाना दिखाई देना (जहाँ सींग समाये वहाँ चले जाओ)। **(सिरपर या सिरमें)–होना**–कोई विशेषता, कोई विशेष चिह्न होना (क्या बेवकूफके सिरमें सींग होते हैं ?) ।

सीँगड़ा–पु० सींगका बना हुआ चोंगा जिसमें वारूद रखते हैं, वारूददान; सींगी ।

सीँगना–स० क्रि० सींगके जरिये चोरीके पशुकी पहचान करना ।

सीँगरी–स्त्री० एक तरहकी फली ।

सीँगी–स्त्री० हिरनके सींगका बना हुआ बाजा; सूराखदार सींग जिसे शरीरपर लगाकर खराब खून निकालते हैं; एक तरहकी मछली । मु० **–लगाना**–सींग लगाकर रक्त चूसना ।

सीँच–स्त्री० सींचनेकी क्रिया, सिंचाई ।

सीँचना–स० क्रि० पेड़-पौधोंको पानी देना, सिंचाई करना; तर करना; छिड़कना ।

सीँची†–स्त्री० सींचनेका समय ।

सीँवँ, सीँव*–स्त्री० सीमा, हद । मु० **–काटना,–चरना**–जोर-जवरदस्ती करना, कष्ट पहुँचाना ।

सी–अ० 'सा'का स्त्रीलिंग रूप; सदृश, समान । स्त्री० पीड़ाकी या आनंदकी आत्यंतिक अनुभूति होने या सरदी लगनेपर मुँहसे निकलनेवाली आवाज, सीत्कार । वि० (फा०)तीस । पु० तीसकी संख्या ।

सी० आई० डी०–पु० (अं०) क्रिमिनल इनवेस्टिगेशन डिपार्टमेंट, गुप्तचर-विभाग; गुप्तचर (हिं०), खुफिया पुलिस ।

सीउ*–पु० दे० 'शीत' ।

सीकचा–पु० दे० 'सीख़चा' ।

सीकर–पु० (सं०) पानीका छींटा, जलकण, शीकर; स्वेद-बिंदु; *गीदड़–'सीकर स्वान कागका भोजन तनकी यहै वड़ाई'–वीजक । * स्त्री० सिकड़ी, जंजीर ।

सीकल–पु० दे० 'सैकल', सिकली; † डालका पका हुआ आम ।

सीकस*–पु० ऊसर, बंजर भूमि ।

सीका–पु० सिरपर पहननेका सोनेका एक गहना; दे० 'छीका' ।

सीकाकाई–स्त्री० एक वृक्ष जिसकी फलियोंका झाग वाल मलनेके काम आता है ।

सीकुर†–पु० दे० 'शूक' ।

सीख–स्त्री० सिखावन, शिक्षा; सलाह । मु० **–लेना**–शिक्षा, उपदेश ग्रहण करना ।

सीख़–स्त्री० (फा०) लोहेकी सलाख या छड़ जिसपर कवाव भूनते हैं; सूआ; छड़के आकारकी लकड़ी जिससे बोरियोंका मुँह बाँधते हैं । **–चा**–पु० छोटी सीख । **–पा**–वि० पिछले पाँवोंपर खड़ा होनेवाला (घोड़ा) । **–का कवाब**–वह कवाव जो कीमेको पीसकर सीखपर बनाया जाय । मु० **–पा होना**–घोड़ेका अलफ होना, बहुत नाराज होना ।

सीखन*–पु० सिखावन, सीख ।

सीखना–स० क्रि० किसी विषयका ज्ञान प्राप्त करना, पढ़ना; किसी हुनर या कलाकी शिक्षा प्राप्त करना, अभ्यास करना (सितार सीखना); शिक्षा ग्रहण करना, अनुभव प्राप्त करना (आदमी कुछ खोकर सीखता है) ।

सीखा-पढ़ा–वि० शिक्षित, जानकार; चतुर ।

सीखा-सिखाया–वि० शिक्षित, कुशल; किसी कला या हुनरका जानकार ।

सीग़ा–पु० (अ०) साँचा; विभाग; क्रियाका रूप (काल, पुरुष, प्रयोग आदिकी दृष्टिसे); शीओंका निकाह ।

सीच*–स्त्री० हाल–'पहुँचैंगे तब कहेंगे वही देसकी सीच । अबही कहा तड़ागिये बेड़ी पायन बीच'–साखी ।

सीज–स्त्री० दे० 'सीझ' ।

सीजना–अ० क्रि० दे० 'सीझना' ।

सीझ–स्त्री० सीझने, पकनेकी क्रिया, पकाव ।

सीझना–अ० क्रि० आग और पानीकी सहायतासे पकना; पककर नरम होना; गलना–'रहिमन नीर पखान भीजै पै सीझै नहीं'–रहीम; चमड़ेका सिझावसे नरम, चिकना होना (सीज़निंग); पगना; कष्ट पाना; तपस्या करना; ठंढ खाना; पसेव निकलना; रिसना; प्राप्त होनेकी स्थितिमें होना (जैसे व्याज आदि); ऋणका भुगताया जाना ।

सीट–स्त्री० (अं०) बैठक, आसन; एक आदमीके बैठनेकी जगह; रेल, लारी आदिमें उतना स्थान जो एक आदमीको बैठनेके लिए मिलता है; किसी सभा, मंडल इत्यादिके सदस्यका स्थान (हरिजनोंको मंत्रिमंडलमें दो सीटें मिली हैं); जीट, डींग । **–पटाँग**–स्त्री० डींग, बहक ।

सीटना–अ० क्रि० जीट हाँकना, डींग मारना ।

सीटी–स्त्री० दोनों होठोंको सिकोड़कर बीचसे हवा निकालनेसे पैदा होनेवाली सुरीली आवाज; छोटा वाजा जिसे मुँहसे फूंकनेसे इस तरहकी आवाज निकलती है; बाजे, इंजन आदिसे निकला हुआ सीटी जैसा शब्द । **–बाज़**–पु० सीटी बजानेवाला । मु० **–देना**–

सीटी बजाना; सीटी बजाकर कोई संकेत करना; रेलका खुलनेके पहले इंजनमें लगे हुए यंत्रसे सीटीकी-सी आवाज निकालना।

सीठ–स्त्री० दे० 'सीठी'।

सीठना†–पु० व्याह आदिमें स्त्रियों द्वारा गाया जानेवाला अश्लील गीत, गाली।

सीठनी†–स्त्री० दे० 'सीठना'।

सीठा–वि० फीका, बेमजा। **–पन**–पु० नीरसता, फीकापन, बेमजा होना।

सीठी–स्त्री० रस चूस या निकाल लिये जानेपर बचा हुआ फोक या फुजला; साररहित वस्तु। वि०, स्त्री० दे० 'सीठा'।

सीड़–स्त्री० दे० 'सील'।

सीढ़ी–स्त्री० ऊँचे स्थानपर पहुँचनेके लिए बना हुआ लकड़ी, पत्थर, लोहे आदिके डंडों या पायोंका सिलसिला, जीना, निसेनी; उन्नति-क्रम। **–का डंडा**–लकड़ी या बाँसकी सीढ़ीका हर एक पाया, सोपान। मु०**–सीढ़ी चढ़ना**–क्रमशः ऊपर उठना, उन्नति करना। **–नुमा**–वि० समसमुन्नत।

सीत*–पु० दे० 'शीत'। **–कर**–पु० चंद्रमा। **–पकड़**–पु० हाथियोंको होनेवाला एक शीतजन्य रोग।

सीतल*–वि० दे० 'शीतल'। **–चीनी**–स्त्री० दे० 'शीतलचीनी'। **–पाटी**–स्त्री० एक तरहकी चटाई जो बहुत बढ़िया और चिकनी होती है; एक तरहका धारीदार कपड़ा। **–बुकनी**–स्त्री० सत्तू।

सीतला–स्त्री० दे० 'शीतला'। **–माई**–स्त्री० शीतलादेवी। **–मुँहदगा**–वि० जिसके मुँहपर चेचकके दाग हों, चेचकरू। **–का खाजा**–दूध-पीता बच्चा (जिसके चेचककी बलि होनेका पहले बहुत डर रहता था)।

सीता–स्त्री० (सं०) हलके फालसे धरतीमें बननेवाली रेखा, कूँड़; जोती हुई जमीन; कृषिकर्म; फाल; कृषिकी अधिष्ठात्री देवी; सीरध्वज जनककी कन्या जो रामको व्याही गयी; स्वर्गंगाकी चार धाराओंमेंसे एक; उमा; लक्ष्मी; मदिरा; ककही पौधा; पातालगारुड़ी; एक वृत्त; सीताध्यक्ष द्वारा एकत्र अन्न; विदेहकी एक नदी (जै०)। **–कुंड**–पु० अष्टभुजाकी पहाड़ी (विंध्याचल-पर)का एक झरना जिसका जल आरोग्यकर माना जाता है (इस नामके झरने और कुंड मुँगेर, भागलपुर, चंपारन आदिमें भी हैं)। **–गोप्ता(प्तृ)**–पु० जुताईकी रक्षा करनेवाला। **–जानि,–नाथ,–पति**–पु० रामचंद्र। **–द्रव्य**–पु० खेतीके औजार। **–धर**–पु० बलराम। **–नवमीव्रत**–पु० व्रतविशेष। **–फल**–पु० शरीफा; कुम्हड़ा। **–यज्ञ**–पु० जुताईके अवसरपर किया जानेवाला यज्ञ। **–रमण**–पु० रामचंद्र। **–रवन,–रौन***–पु० दे० 'सीतारमण'। **–लोष्ट,–लोष्ठ**–पु० जुते हुए खेतका ढेला। **–वट**–पु० प्रयाग और चित्रकूटके बीच एक स्थान जहाँ वटवृक्षके नीचे राम वनयात्रा-में ठहरे थे। **–वन**–पु० एक तीर्थ-स्थान। **–वर,–वल्लभ**–पु० रामचंद्र। **–सती**–स्त्री० सीता जैसी सती। **–स्वयंवर**–पु० सीताका स्वयंवर, धनुपयज्ञ।

सीतात्यय–पु० (सं०) कृषि-संबंधी जुरमाना, किसानपर होनेवाला जुरमाना (कौ०)।

सीताध्यक्ष–पु० (सं०) राजाकी सीरका प्रबंध करनेवाला कर्मचारी।

सीताहार–पु० (सं०) एक पौधा।

सीतीनक, सीतीलक–पु० (सं०) मटर; दाल।

सीतोदा–स्त्री० (सं०) विदेहकी एक नदी (जै०)।

सीत्कार–पु०, **सीत्कृति**–स्त्री० (सं०) 'सी-सी'की ध्वनि; सिसकी।

सीत्य–वि० (सं०) जुता हुआ (खेत)। पु० धान्य, धान।

सीथ*–पु० सिक्थ, भात, पके हुए चावलका दाना।

सीथि*–पु० दे० 'सीथ'।

सीद–पु० (सं०) दे० 'कुसीद'।

सीदना*–अ० क्रि० कष्ट पाना।

सीदी–पु० सीदियाका रहनेवाला, शक।

सीद्य–पु० (सं०) आलस्य, सुस्ती; अकर्मण्यता, निकम्मापन।

सीध–स्त्री० सीधा होनेका भाव, ठीक सामनेकी दिशा; ऋजुता; निशाना, शिस्त। मु० **–बाँधना**–निशाना बाँधना; दागबेल डालना। **–में**–ठीक सामने।

सीधा–पु० भोजनकी असिद्ध, कच्ची सामग्री (चावल, दाल, आटा आदि) जो किसीको पकाकर खानेके लिए या दानरूपमें दी जाय। वि० जो ठीक सामनेकी ओर या किसी एक ही दिशामें गया हो, जिसमें टेढ़ापन या घुमाव न हो, सरल, ऋजु; खड़ा; जो शरीर, फसादी, लड़ाका न हो, भला; जिसमें ऐंठ, अकड़, बनावट आदि न हो, भोला-भाला, बिना छक्के-पंजेका; खुला, साफ, बिना एँच-पेंचका (सीधा जवाब); आसान (काम); जो कटहा, मरकहा न हो (बैल, घोड़ा), नम्र, विनीत; दाहिना (सीधा हाथ)। अ० ठीक सामने; बिना मुड़े; बिना और कहीं गये या रुके (सीधा घरका रास्ता लिया)। **–उलटा**–अ० दे० 'उलटा-सीधा'। **–दिन**–पु० अच्छा दिन, सुदिन। **–पन**–पु० सिधाई; भोलापन। **–सादा,–साधा**–वि० भोला-भाला, सरलस्वभाव। **–तीर-सा**–अ० बिलकुल सीधा, ठीक सामने (सीधा तीर-सा गया)। मु० **–आना**–सामनेसे आना; सामना करना, भिड़ना (दिल्ली)। **–करना**–वक्रता, कुटिलता, ऐंठ, अकड़ दूर करना, सीधी राहपर लाना; ठोंक-पीटकर ठीक करना; निशाना बाँधनेके लिए तीर, बंदूकको लक्ष्यके सामने करना। **–जन्नतमें जाना**–बिना पाप-पुण्यका विचार हुए सीधे स्वर्ग जाना। **–होना**–सीधा किया जाना, ऐंठ, कुटिलता आदि दूर होना; आमादा होना; मेहरबान होना।

सीधी–वि०, स्त्री० दे० 'सीधा'। **–आँख**–स्त्री० दाहनी आँख; कृपादृष्टि। **–तरह**–अ० भलमनसीसे, सिधाईसे। **–नज़र,–निगाह**–स्त्री० कृपादृष्टि, प्रसन्नतासूचक दृष्टि। **–बात**–स्त्री० खुली, साफ बात, आसानीसे समझमें आनेवाली बात। **–राह**–स्त्री० भलाईका रास्ता, सत्पथ। **–लकीर**–स्त्री० सरल रेखा। मु० **–उँगलियों घी नहीं निकलता**–नरमीसे काम नहीं चलता। **–सुनाना**–खरी-खरी कहना; खुली गालियाँ देना।

सीधु–पु० (सं०) मद्य; ईखके पकाये हुए रससे बनायी हुई शराब; (ला०) अमृत। **–गंध**–पु० मौलसिरी। **–प**–वि० मद्यप। **–पर्णी**–स्त्री० गंभारी। **–पान**–पु० मद्यपान। **–पुष्प**–कदंब; मौलसिरी। **–पुष्पी**–स्त्री० धव वृक्ष, धातकी। **–रस**–पु० आमका पेड़। **–वृक्ष**–पु० थूहर, स्नुही। **–संज्ञ**–पु० मौलसिरी।

सीधे–अ० ठीक सामने, बिना मुड़े-झुके; बिना और कहीं गये या रुके; सिधाईसे; नरमी, भलमनसीसे। **–मुँह**–अ० शिष्टता, भलमनसीसे (सीधेमुँह बात न करना)। **–से**–भलमनसीसे, सिधाईसे।

सीध्र–पु० (सं०) गुदा, मलद्वार।

सीन–पु० (अ०) दृश्य, नज्जारा; नाटकका कोई परदा, गर्भांक; नाटक या कहानीमें वर्णित घटनाओंके घटित होनेका स्थान, घटनास्थल। **–सीनरी**–स्त्री० रंग-मंचकी सजावटका सामान।

सीनरी–स्त्री० (अ०) स्थानविशेषके प्राकृतिक दृश्य; रंग-मंचकी सजावटका सामान।

सीना–स० क्रि० सूई या सूएसे किये हुए छेदोंसे तागा निकालकर कपड़े, टाट, चमड़े आदिके टुकड़ोंको जोड़ना, टाँका मारना, सिलाई करना। **–पिरोना**–स० क्रि० सिलाई-बुनाईका काम करना। पु० सिलाईका काम।

सीना–पु० (फा०) छाती। **–चाक,–फ़िगार**–वि० भग्नहृदय, खिन्न। **–ज़न**–वि० छाती पीटनेवाला। **–ज़नी**–वि० छाती पीटना। **–ज़ोर**–वि० बली, जबरदस्त, अत्याचारी। **–ज़ोरी**–स्त्री० जबरदस्ती, धींगा-धींगी। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक पेंच। **–बंद**–पु० अँगिया; घोड़ेकी पेटी जो तंगके ऊपर कसी जाती है; वह कपड़ा जो बच्चोंकी छातीपर इसलिए बाँध देते हैं कि राल टपकनेसे और कपड़े खराब न हों; रुईदार फतुही या वास्कट। **–बसीना**–वि० (विद्या, मंत्र इ०) जो बापसे बेटे, गुरुसे शिष्यको पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुप्त रूपसे मिलता आया हो। अ० उक्त क्रम या रीतिसे; मुकाबलेमें, सामने। **साफ़**–वि० साफ दिलका, खरा। **–सिपर**–वि० युद्धमें डटा रहनेवाला। (मु० **–०रहना, –०होना**–खतरेकी जगहमें डटकर खड़ा रहना; आफतों, आघातों-को छातीपर लेना।) **–सियाह**–वि० खोटे दिलका, सियाहदिल। **–सोख़्ता**–वि० दग्धहृदय; मुसीबतका मारा। **–(ने) का**

उभार–छातियों या स्तनका उभर आना। **–की तैयारी**–छातीका भराव, छातीपर काफी मांस होना। **मु०–पर गुल खाना** प्रेयसीके छल्लेको गरम करके छातीको दागना। **–पर पत्थर रखना**–दे० 'छाती' के साथ। **–पर साँप लोटना**–दे० 'छाती'के साथ। **–पर हाथ मारना**–छाती पीटना। **–में जगह देना**–प्यार करना; सम्मान करना। **–में साँस समाना**–हाँफना बंद होना, शांति मिलना।

सीनियर–वि० (अं०) उम्र या पदमें बड़ा, 'जूनियर'का उलटा; वरिष्ठ।

सीनी–स्त्री० (फा०) ताँबे, पीतल या किसी और धातुका थालीकी शक्लका बड़ा बरतन।

सीनेट–स्त्री० (अं०) दे० 'सिनेट'।

सीप–पु०, स्त्री० शंख, घोंघे आदिकी जातिका एक जलचर प्राणी जिसका शरीर किश्तीनुमा दोहरे खोलके भीतर छिपा होता है और जिसके समुद्रमें पाये जानेवाले भेदके अंदर मोती पैदा होता है, शुक्ति; इस कीड़ेका किश्तीनुमा, कड़ा खोल जिसके बटन आदि बनाते हैं और जिसका भस्म दवाके काम आता है। **–ज,*–सुत***–पु० मोती।

सीप–(सं०) तर्पण आदिमें व्यवहृत लंबोतरा जलपात्र।

सीपति*–पु० दे० 'श्रीपति'।

सीपर*–स्त्री० दे० 'सिपर', ढाल।

सीपार–पु० (फा०) कुरानके तीस खण्डोंमेंसे एक।

सीपिज*–पु० मोती।

सीपी–स्त्री० दे० 'सीप'। **मु० –सा मुँह निकल आना**–इतना दुबला हो जाना कि चेहरेकी हड्डियाँ निकल आयें।

सीबी*–स्त्री० 'सी-सी'का शब्द, सीत्कार।

सीमंत–पु० (सं०) सिरमें निकाली हुई माँग; हद, सीमा-रेखा; सीमंतोन्नयन संस्कार; हड्डियोंका जोड़, अस्थि-संघात। **–करण**–पु० माँग काढ़ना। **–मणि**–पु० चूड़ामणि।

सीमंतक–पु० (सं०) माँग काढ़ना; सिंदूर; ईंगुर; नरकावास; सात नरकोंमेंसे एकका अधिपति (जै०); लाल रत्नका एक भेद।

सीमंतनी–स्त्री० दे० 'सीमंतिनी'।

सीमंतित–वि० (सं०) जिसके माँग निकाली गयी हो।

सीमंतिनी–स्त्री० (सं०) नारी।

सीमंतोन्नयन–पु० (सं०) द्विजोंके लिए विहित बारह संस्कारोंमेंसे एक, जो गर्भवतीको गर्भके चौथे, छठे या आठवें महीने करना होता है।

सीम–स्त्री० (फा०) चाँदी। **–अंदाम,–तन**–वि० गोरा-चिट्टा; सुंदर। **–कश**–पु० तारकश; चोर। **–कुशी**–स्त्री० फ़ुजूल ख़र्ची, अपव्यय। **–गर**–पु० सुनार। **–गूँ**–वि० चाँदीके रंगका।

सीम*–स्त्री० दे० 'सीमा'। **मु० –काँड़ना,–चरना**–दे० 'सीँव'के साथ। **–चाँपना**–हद दबाना, दूसरेकी हदमें घुसकर उसकी जमीनपर कब्जा करना।

सीमक–पु० (सं०) सीमा।

सीमल*–पु० सेमल।

सीमांकन–पु० (डिमार्केशन) (किसी खेत, भूक्षेत्र आदिकी) सीमा निश्चित या निर्धारित करना।

सीमांत–पु० (सं०) हद, सीमा; सिवाना, सीमावर्ती स्थान। **–पूजन**–पु० सीमाकी पूजा; गाँवकी सीमापर आनेपर की जानेवाली वरकी पूजा। **–प्रदेश**–पु० सरहदी इलाका; दो देशोंके बीचका भूभाग। **–बंध**–पु० आचरण-संबंधी मर्यादा। **–लेखा**–स्त्री० अंतिम छोर।

सीमांतर–पु० (सं०) गाँवकी सीमा।

सीमा–पु० (सं०) हद; सिवाना; खेत, गाँव आदिकी सीमापरका बाँध या मेंड़; सीमाचिह्न; बाँध; किनारा, कूल; क्षितिज; खोपड़ी आदिका जोड़; आचारकी मर्यादा; चरम बिंदु; खेत; ग्रीवाका पृष्ठभाग; अंडकोश। **–कर्षक**–पु० गाँवकी सीमापर खेती करनेवाला। **–कृषाण**–वि० सीमाचिह्नके किनारे हल चलानेवाला। **–गिरि**–पु० सीमावर्ती पहाड़। **–गुल्म**–पु० (बैरियर) सीमापर स्थित चौकी। **–चिह्न**–पु० (लैंडमार्क) किसी देश, स्थान आदिकी सीमा बतानेवाला पदार्थ; देश, जाति या व्यक्तिके इतिहासकी कोई मुख्य परिवर्तनकारी घटना। **–निश्चय**–पु० व्यवहार द्वारा सीमाका निर्धारण। **–पारण,–प्रक्षेप(ण)**–पु० (बाउंडरी) बल्लेसे गेंदपर इतने जोरका प्रहार करना कि वह खेलके मैदानकी बाहरी सीमातक पहुँच जाय या उसके पार हो जाय। **–पाल**–पु० सीमाकी रक्षा करनेवाला। **–बंध**–पु० आचारशास्त्र। **–बद्ध**–वि० जिसकी सीमा बाँध दी गयी हो, परिमित। **–लिंग**–पु०–सीमा-चिह्न। **–वाद**–पु० सीमा-संबंधी झगड़ा। **–विनिर्णय**–पु० दे० 'सीमानिश्चय'। **–विवाद**–पु० सीमा-संबंधी मुकदमा। **–वृक्ष**–पु० सीमाचिह्नका काम देनेवाला वृक्ष। **–शुल्क**–पु० (कस्टम्स ड्यूटी) बाहर जानेवाले या भीतर आनेवाले मालपर देशकी सीमाके समीप वसूल किया जानेवाला शुल्क। **–०अधिकारी**–पु० (कस्टम्स आफिसर) सीमा-शुल्क वसूल करनेवाला अधिकारी। **–संधि**–स्त्री० दो सीमाओंका मेल। **–सेतु**–पु० सीमापरका बाँध आदि।

सीमा(मन्)–स्त्री० (सं०) दे० 'सीमा' (ऊपर)। **–(म)लिंग**–पु० सीमापरका चिह्न, हदका निशान।

सीमातिक्रमण–पु० (सं०) सीमोल्लंघन।

सीमातिक्रमणोत्सव–पु० (सं०) सीमा पार करते समयका उत्सव (युद्धयात्रा आदिमें)।

सीमाधिप–पु० (सं०) सीमा-रक्षक; पड़ोसी राजा।

सीमापहारी(रिन्)–वि० (सं०) सीमाका निशान गायब कर देनेवाला।

सीमाब–पु० (फा०) पारा।

सीमाबी–वि० पारेके रंगका।

सीमावरोध–पु० (सं०) हदबंदी, सीमा स्थिर करना या होना (कौ०)।

सीमिक–पु० (सं०) चींटी या चींटी जैसा कीड़ा; दीमक; एक वृक्ष; बिमौटा।

सीमिका–स्त्री० (सं०) दीमक; चींटी।

सीमित–वि० (सं०) सीमाओंसे बँधा हुआ; बँधा हुआ (–आय); नियंत्रित, कम।

सीमिया–पु० (फा०) इंद्रजालविद्या; परकायप्रवेशविद्या।

सीमीँ–वि० चाँदीका, रजत-निर्मित। **–तन,–बदन**–वि० चाँदी जैसे धवल शरीरवाला (वाली)।

सीमीक–पु० (सं०) वृक्ष-विशेष।

सीमुर्ग़–पु० (फा०) एक कल्पित विशालकाय पक्षी।

सीमेंट–पु० (अं०) एक पत्थरका विशेष प्रकारसे तैयार किया हुआ चूर्ण जो पलस्तर आदि करनेके काम आता है।

सीमोल्लंघन–पु० (सं०) सीमा पार करना।

सीय*–स्त्री० सीता।

सीयन†–स्त्री० सिलाई, सिलाईका जोड़।

सीयरा*–वि० दे० 'सियरा'।

सीर–पु० (सं०) हल; हलमें जोता जानेवाला बैल; सूर्य; आक। **–धर**–पु० बलराम। **–ध्वज**–पु० राजा जनक (ये जब पुत्रकी कामनासे यज्ञके लिए भूमिको जोत रहे थे तो हलके कूंड़से सीताकी उत्पत्ति हुई); बलराम। **–पाणि,–भृत्**–पु० बलराम। **–योग**–पु० बैलको हलमें जोतना, जुआठना; जुआठे हुए बैलोंकी जोड़ी। **–वाह,–वाहक**–पु० हल जोतनेवाला, हलवाहा।

सीर–स्त्री० वह जमीन जिसे जमींदार खुद जोतता हो और जिसमें उसे कुछ खास हक हासिल हों। पु० रक्तनलिका। * वि० ठंढा, शीतल। पु० (फा०) लहसुन। **–वान्**–पु० सीरकी जमीन जोतनेवाला (नवनीत दिस० ६२)। **मु० –करना**–जमींदारका किसी जमीनको खुद जोतना, काश्त करना। **–खुलवाना**–फस्द खुलवाना। **–में**–एकत्र, साथ, एकमें। **–में होना**–जमींदारकी अपनी जोत, काश्तमें होना।

सीरक–वि० ठंडा–'सोइ करौ ज्यौं मिटै हृदयको दाह परै उर सीरक' –सू०।

सीरक–पु० (सं०) हल; सूर्य; सूंस।

सीरख, सीरष*–पु० दे० 'शीर्ष'।

सीरत–स्त्री० (अ०) गुण, स्वभाव; शील, चरित्र; जीवन-चरित्र। **–(ते) खूब**–स्त्री० अच्छी आदतें। **–पाक**–स्त्री० पवित्र स्वभाव; पवित्र जीवन-चरित्र।

सीरतन्–अ० (अ०) सीरतकी दृष्टि या विचारसे।

सीरनी–स्त्री० दे० 'शीरीनी'।

सीरम–पु० (अं०) रोगसे बचानेके लिए किसी प्राणीके रक्तमेंसे निकाला तरल पदार्थ, जिसकी सुई लगायी जाती है; रक्त प्लैज्माका वह भाग जो प्लैज्मामेंसे फिब्रिनोजेन तथा रक्त आतंच करानेवाले अवयवोंको पृथक् कर देनेपर शेष वच जाता है।

सीरा–पु० दे० 'शीराँ'; सिरहाना। स्त्री० (सं०) एक पुराणोक्त नदी। * वि० ठंढा; शांत।

सीरायुध–पु० (सं०) बलराम।

सीरियल–पु० (अं०) कहानी, लेख, पुस्तक जो किसी पत्रिकाके कई अंकोंमें या कई जिल्दोंमें मुद्रित हो; सिनेमामें कई भागोंमें दिखाया जानेवाला खेल।

सीरी(रिन्)–पु० (सं०) हलधर, बलराम।

सीरीज़–स्त्री० (अं०) श्रेणी, माला, क्रम; सिलसिला।

सीलंध–पु० (सं०) एक तरहकी मछली।

सील*–पु० दे० 'शील'। **–वंत,–वान**–वि० सुशील।

सील–स्त्री० जमीनकी नमी, सीड़; मूँछें निकलते समयके छोटे-छोटे वाल, मसें। पु० चूड़ियाँ सुडौल करनेका एक आला। **–का कूंड़ा**–मुसलमानोंकी एक रस्म जिसमें किसीकी मसें भीननेपर स्त्रियाँ कूड़ेमें सेवँई रखकर नियाज दिलाती हैं।

सील–पु० (सं०) हल; (अं०) मुहर, ठप्पा; एक समुद्री जंतु। मु० **–मुहर होना**–किसी चीजका मुहरबंद किया जाना।

सीला–पु० डाँठसे झड़े हुए दाने जो फसल कटनेके बाद खेतमें पड़े रह जाते हैं, शिल; ऐसे दानोंको चुनकर निर्वाह करनेकी वृत्ति, उंछवृत्ति। वि० नम, जिसमें सील हो।

सीवँ*–स्त्री० दे० 'सीमा'।

सीवक–पु० (सं०) सीनेवाला।

सीवन–स्त्री० (सं०) सिलाई; सूचीकर्म; टाँका; सिलाईका जोड़; संधि।

सीवनी–स्त्री० (सं०) सूई; लिंगमणिसे बीचोबीच गुदातक जानेवाली रेखा; घोड़ेका गुदासे नीचेका भाग।

सीवी–स्त्री० दे० 'सीवी'।

सीव्य–वि० (सं०) सीने योग्य।

सीस–पु० (सं०) सीसा। **–अंकनी**–स्त्री० (लेडपेंसिल) सीसेकी बनी पेंसिल। **–ज**–पु० सिंदूर। **–पत्र,–पत्रक**–सीसा।

सीस*–पु० सिर, शीर्ष। **–ताज**–पु० वह टोपी जिससे शिकारके लिए पाले हुए बाज आदिका सिर, आँख ढँककर रखी जाती है और शिकारके वक्त खोली जाती है, कुलह। **–त्रान***–पु० दे० 'शिरस्त्राण'। **–फूल**–पु० सिरपर पहननेका एक गहना।

सीसमहल–पु० वह कमरा या मकान जिसकी दीवारोंपर हर जगह शीशा जड़ा हो।

सीसक–पु० (सं०) सीसा।

सीसम–पु० एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी लकड़ी दरवाजा, टेबुल, कुरसी आदि बनानेके काम आती है।

सीसर–पु० (सं०) एक पौराणिक श्वान जो सरमाका पति था।

सीसा–पु० (लेड) एक प्रसिद्ध मूल धातु जिसकी चादरें, गोलियाँ आदि बनती और जिसका भस्म औषधरूपमें भी काममें लाया जाता है; * शीशा।

सीसी–स्त्री० 'सी-सी'की आवाज; * शीशी।

सीसों, सीसो†–पु० सीसम।

सीसोपधातु–स्त्री० (सं०) ईंगुर।

सीसोदिया, सीसौदिया–पु० दे० 'सिसोदिया'।

सीस्तान–पु० (फा०) ईरानके दक्षिणमें अवस्थित एक देश जो रुस्तमका जन्मस्थान और जागीर था।

सीस्मोग्राफ़–पु० (अं०) भूकंप-सूचक यंत्र।

सीह–स्त्री० गंध। * पु० 'सिंह'।

सीहगोस–पु० दे० 'सियाहगोश'।

सीहुंड–पु० (सं०) थूहर, स्नुही।

सुँ*–अ० दे० 'सों'।

सुंखड़ा†–पु० एक तरहके साधु।

सुंगवंश–पु० अंतिम मौर्य सम्राट् बृहद्रथके सेनापति पुष्यमित्र द्वारा संस्थापित राजवंश।

सुँघनी–स्त्री० सूँघनेकी चीज; तंवाकूके पत्तेका वारीक चूर्ण, नास।

सुँघाना–स० क्रि० किसीकी नाकके पास कोई चीज इस उद्देश्यसे लगाना कि वह उसका गंध ग्रहण करे, आघ्राण कराना।

सुँठि–स्त्री० दे० 'शुंठि'।

सुंड–पु० दे० 'शुंड'। **–भुसुंड***–पु० हाथी।

सुंडा–स्त्री० सूँड़। † पु० लद्दू गधेकी पीठपर रखनेका गद्दा।

सुंडाल–पु० हाथी।

सुंडाली–स्त्री० एक तरहकी मछली।

सुंद–पु० (सं०) रामदलका एक वानर; एक दैत्य, निसुंदका पुत्र और उपसुंदका भाई; विष्णु।

सुंदर–वि० (सं०) जो आँखोंको अच्छा लगे, सुरूप, खूबसूरत, शोभन; भला, अच्छा। पु० कामदेव; एक पेड़; एक नाग; लंकाका एक पर्वत। **–कांड**–पु० रामायणका एक कांड; सुंदर डंठल। **–वन**–पु० बंगालके दक्खिनमें समुद्रतटपर फैला वनखंड।

सुंदरता–स्त्री०, **सुंदरत्व**–पु० (सं०) सौंदर्य, खूबसूरती।

सुंदरताई*–स्त्री० दे० 'सुंदरता'।

सुंदरवती–स्त्री० (सं०) एक नदी।

सुंदरम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको सुंदर माननेवाला।

सुंदराई*–स्त्री० सुंदरता–'सहज सुंदराईपर राई लोन वारती' –दास।

सुंदरापा–पु० सुंदरता।

सुंदरी–स्त्री० सितार-इसराजमें लगे हुए लोहेके छल्ले जो विभिन्न सप्तकोंके अंतर्गत विशेष स्वरोंके स्थान होते हैं। वि०, स्त्री० (सं०) रूपवती। स्त्री० सुंदर स्त्री; त्रिपुर-सुंदरी देवी; वृक्ष-विशेष; श्वफल्ककी एक कन्या; वैश्वानरकी एक कन्या; माल्यवान्की पत्नी; एक योगिनी; सवैया छंद; एक वर्णवृत्त; हलदी। **–मंदिर**–पु० अंतःपुर।

सुंदरेश्वर–पु० (सं०) शिवकी एक मूर्ति।

सुंदोपसुंद–पु० (सं०) निसुंद दैत्यके दो बेटे जो तिलोत्तमा अप्सराको पत्नी बनानेके लिए आपसमें ही लड़ मरे।

सुंदरौदन–पु० (सं०) अच्छा भात।

सुँधाई–स्त्री० सोंधापन।

सुँधावट–स्त्री० दे० 'सुँधाई'।

सुँधिया–स्त्री० एक तरहकी ज्वार।

सुंपलुंठ–पु० (सं०) कर्पूरक।

सुंबा–पु० (फा०) पत्थर तोड़नेका एक भारी औजार; तोपका गज; खूँटी।

सुंबी–स्त्री० लोहेमें छेद करनेकी छेनी।

सुंबुल–पु० (फा०) एक सुगंधित घास जो फारसी-उर्दू कवितामें सुंदर घुंघराले केशका उपमान मानी गयी है, बालछड़। **–(ले)रूमी**–पु० वालछड़का एक भेद। **–हिंदी**–पु० वालछड़ (जटामासी)।

सुंबुला–पु० (फा०) गेहूँ या जौकी बाल; कन्याराशि।

सुंभ–पु० (सं०) एक देश; उस देशके निवासी; * दे० 'शुंभ'।

सुंभा–पु० दे० 'सुंबा'।

सु–उप० (सं०) शब्दोंके साथ जुड़कर यह सुंदर (सुदर्शन), उत्तम (सुगंध), अधिक, अतिशय (सुयोग्य), सहज, अनायास (सुकर, सुलभ), भलीभाँति, पूरे तौरपर (सुजीर्ण, सुसेवित, सुशासित) आदि अर्थोंका द्योतन करता है। पु० पूजा; अनुमति; कृच्छ्र; समृद्धि; कष्ट; सुंदरता; आनंद; वि० अच्छा; भला; सम्मानार्ह। सर्व * दे० 'सो'। * अ० तृतीया, पंचमी और षष्ठी विभक्ति।

सुअ*–पु० सुत, पुत्र।

सुअद्दा–पु० शुक, तोता।

सुअन–पु० वेटा, पुत्र।

सुअनजर्द*–पु० एक फूल, सोनजर्द ।

सुअना*–पु० शुक, तोता । * अ० क्रि० उत्पन्न होना, जनमना; उदय होना ।

सुअर–पु० दे० 'सूअर' । –दंता–वि० जिसके दाँत सूअरकेसे हों । पु० वह हाथी जिसके दाँत जमीनकी ओर झुके हुए हों ।

सुअवसर–पु० अच्छा अवसर, मौका ।

सुआ–पु० तोता, शुक । पु० बड़ी सुई, सूजा । स्त्री० एक हरी मछली ।

सुआउ*–वि० बड़ी आयुवाला, दीर्घायु ।

सुआद*–पु० स्वाद ।

सुआन*–पु० दे० 'श्वान' ।

सुआमी*–पु० दे० 'स्वामी' ।

सुआर*–पु० दे० 'सूपकार'–'लागे परसन निपुन सुआरा' । –रामा० ।

सुआरव*–वि० मधुर ध्वनि करनेवाला, सुरीला ।

सुआल–पु० (अ०) दे० 'सवाल' । स्त्री० खाँसी ।

सुआसन–पु० सुंदर, बढ़िया आसन।

सुआसिन, सुआसिनी*–स्त्री० सुहागिन स्त्री; पड़ोसिन ।

सुआहित–पु० तलवारका एक हाथ ।

सुई–स्त्री० दे० 'सूई' ।

सुकंकवान्(वत्)–पु० (सं०) एक पर्वत ।

सुकंटका–स्त्री० (सं०) घृतकुमारी; पिंडखजूर ।

सुकंठ–वि० (सं०) अच्छे गलेवाला, सुरीला । पु० सुग्रीव ।

सुकंडु–पु० (सं०) खुजली, कंडुरोग ।

सुकंद–पु० (सं०) कसेरू; प्याज ।

सुकंदक–पु० (सं०) प्याज; वाराहीकंद; धरणीकंद; एक जनपद ।

सुकंदा–स्त्री० (सं०) वंध्याकर्कोटकी; लक्षणाकंद ।

सुकंदी(दिन्)–पु० (सं०) सूरन, ओल ।

सुक–पु० दे० 'शुक' । –देव–पु० दे० 'शुकदेव' । –नासा–वि० जिसकी नाक तोतेकी ठोर जैसी नुकीली हो ।

सुकक्ष–पु० (सं०) एक मंत्रकार ऋषि ।

सुकचाना*–अ० क्रि० दे० 'सकुचाना' ।

सुकटु–पु० (सं०) सिरसका पेड़ । वि० वहुत कटु ।

सुकड़ना–अ० क्रि० सिमटना, फैलावका घटना; ठिठुरना; शिकन पड़ना ।

सुकना*–अ० क्रि० सूखना, सूख जाना–'सुकत सरोवर मचत कीच तलफंत मीन तन'–रासो ।

सुकन्यक, सुकन्याक–वि० (सं०) सुंदर कन्यावाला ।

सुकन्या–स्त्री० (सं०) च्यवन ऋषिकी पत्नी जो महाराज शर्यातिकी कन्या थी; अच्छी कन्या ।

सुकपर्दा–वि०, स्त्री० (सं०) सुंदर चोटीवाली (स्त्री०) ।

सुकमार†–वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकर–वि० (सं०) जो आसानीसे किया जा सके, सहज-साध्य, सरल; जो आसानीसे काबूमें किया जा सके (घोड़ा, गाय) । पु० दान; परोपकार; सीधा घोड़ा ।

सुकरा–स्त्री० (सं०) सीधी गाय ।

सुक़रात–पु० (अ०) प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातून (प्लेटो)का गुरु था ।

सुकराना*–पु० दे० 'शुक्राना' ।

सुकरित*–वि० भला, अच्छा । पु० दे० 'सुकृत' ।

सुकरीहार–पु० एक तरहका हार ।

सुकर्णक–पु० (सं०) हस्तिकंद । वि० सुंदर कानोंवाला ।

सुकर्णिका–स्त्री० (सं०) मूसाकानी; महाबला ।

सुकर्णी–स्त्री० (सं०) इंद्रवारुणी ।

सुकर्म–पु० (सं०) एक देववर्ग ।

सुकर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) सत्कर्म करनेवाला, पुण्यशाली; कर्मकुशल । पु० विश्वकर्मा; कुशल कारीगर; फलित ज्योतिषके २७ योगोंमेंसे एक ।

सुकर्मी–वि० अच्छा काम करनेवाला; अच्छे कर्मोंवाला, पुण्यात्मा, सदाचारी ।

सुकल–वि० (सं०) जो अपने धनका दान और भोगमें अच्छा उपयोग करे; * दे० 'शुक्ल' ।

सुकल्पित–वि० (सं०) सुसज्जित, हथियारोंसे लैस ।

सुकवाना*–अ० क्रि० चकित होना ।

सुकवि–पु० (सं०) अच्छा कवि ।

सुकष्ट–वि० (सं०) वहुत कष्टकर; खतरनाक (रोग) ।

सुकांड–वि० (सं०) सुंदर कांड, तने या पोरवाला । पु० करैलेकी लता ।

सुकांडिका–स्त्री० (सं०) कांडीर लता; करेला ।

सुकांडी(डिन्)–वि० (सं०) सुंदर कांडवाला; खूबसूरतीके साथ जुड़ा हुआ । पु० भौंरा ।

सुकांत–वि० (सं०) वहुत सुंदर ।

सुकाज–पु० अच्छा काम, सुकर्म ।

सुकाना*–स० क्रि० दे० 'सुखाना' ।

सुकानी, सुखानी–पु० मल्लाह, माँझी । (अ० सुक्कान–पतवार) ।

सुकाम–वि० (सं०) अच्छी कामनाओंवाला । –द–वि० कामनाएँ पूरी करनेवाला ।

सुकामा–स्त्री० (सं०) त्रायमाणा लता ।

सुकाल–पु० (सं०) अच्छा समय; वह वर्ष या काल जिसमें अन्न खूब उपजा हो, सुभिक्ष ।

सुकाली(लिन्)–पु० (सं०) पितरोंका एक गण ।

सुकालुका–स्त्री० (सं०) डोड़ी नामक क्षुप ।

सुकावना–स० क्रि० दे० 'सुखाना' ।

सुकाशन–वि० (सं०) खूब चमकनेवाला, बहुत दीप्तिमान् ।

सुकाष्ठ–वि० (सं०) अच्छी लकड़ीवाला । पु० काष्ठाग्नि ।

सुकाष्ठक–पु० (सं०) देवदारु । वि० अच्छी लकड़ीवाला ।

सुकाष्ठा–स्त्री० (सं०) जंगली केला, काष्ठकदली; कट्वी ।

सुकिज*–पु० दे० 'सुकृत' ।

सुकिया*–स्त्री० स्वकीया नायिका ।

सुकी*–स्त्री० तोतेकी मादा, सुग्गी ।

सुकीउ*–स्त्री० स्वकीया नायिका ।

सुकीर्ति–स्त्री० (सं०) सुयश, नेकनामी । वि० अच्छी कीर्तिवाला ।

सुकुंडल–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

सुकुंद–पु० (सं०) राल ।

सुकुंदक–पु० (सं०) प्याज ।

सुकुंदन–पु० (सं०) वर्वर नामक पौधा, बबुई तुलसी ।

सुकुआर†–वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकुट्ट–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद ।

सुकुटच–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद ।

सुकुड़ना–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सुकुति*–स्त्री० दे० 'शुक्ति' ।

सुकुमार–वि० (सं०) कोमल; बहुत नाजुक, कोमल अंगोंवाला; चिकना । पु० सुंदर, कोमलांग बालक या किशोर; ईखका एक भेद; सावाँ; वनचंपा; काव्यका एक गुण; एक दैत्य; एक नाग । –वन–पु० एक कल्पित वन जो सुमेरु पर्वतके नीचे माना जाता है ।

सुकुमारक–पु० (सं०) तमालपत्र; तेजपत्र; धान, शालि; सुंदर बालक; ईख; जांबवान्का एक लड़का; कानका एक विशेष भाग । वि० कोमलांग ।

सुकुमारता–स्त्री०, सुकुमारत्व–पु० (सं०) कोमलता; मृदुलता; नजाकत ।

सुकुमारा–स्त्री० (सं०) जाती; नवमल्लिका; कदली; पृक्का; मालती; एक नदी ।

सुकुमारिक–वि० (सं०) दे० 'सुकन्यक' ।

सुकुमारिका–स्त्री० (सं०) केलेका पेड़ ।

सुकुमारी–वि० स्त्री० (सं०) कोमलांगी । स्त्री० कोमलांगी बालिका; नवमल्लिका ।

सुकुरना*–अ० क्रि० दे० 'सिकुड़ना' ।

सुकुर्कुर–पु० (सं०) एक बालग्रह ।

सुकुर्रा–पु० (अ०) मिट्टीका छोटा प्याला; कुल्हड़; सिकोरा ।

सुकुल–पु० (सं०) सद्वंश । वि० कुलीन; * शुक्ल । –ज,–

जन्मा(न्मन्)–वि० सद्वंशजात । **–वेद**–पु० (हिं०) एक वृक्ष ।

सुकुलीन–वि० (सं०) दे० 'सुकुलंज' ।

सुकुवाँर, सुकुवार*–वि० दे० 'सुकुमार' ।

सुकुसुमा–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका ।

सुकूत–पु० (अ०) मौन, खामोशी । **–(ते) कामिल,–महज़**–पु० पूरा सन्नाटा ।

सुकून–पु० (अ०) ठहराव, विराम; शांति; आराम; बीमारीमें कमी; संतोष; धैर्य; जी ठंडा होना; साकिन (स्वररहित) वर्णका चिह्न । **–(ने) अब्दी**–पु० मृत्यु । **–कामिल**–पु० पूर्ण संतोष ।

सुकूनत–स्त्री० (अ०) निवास, रहाइश ।

सुकूनती–वि० रहनेका, रहाइशी (सुकूनती मकान) ।

सुकूर्कुर–पु० (सं०) एक बालग्रह ।

सुकृत–पु० (सं०) पुण्य, सत्कर्म; दान; दया; पारितोषिक; सौभाग्य । वि० शुभ, सुविहित; भाग्यवान्; ठीक तरहसे किया हुआ; पूर्ण रूपसे किया हुआ; सुनिर्मित; जिसके साथ सदय व्यवहार किया गया हो । **–कर्म(न्)**–पु० पुण्यकर्म । **–भाक्(ज्)**–वि० गुणवान् । **–व्रत**–पु० व्रतविशेष ।

सुकृतात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) सद्विचारशील, धर्मात्मा ।

सुकृतार्थ–वि० (सं०) सफलमनोरथ ।

सुकृति–स्त्री० (सं०) सत्कर्म, पुण्य, मंगल । वि० धर्मात्मा । पु० मनु स्वारोचिषका एक पुत्र; दसवें मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक; पृथुका एक पुत्र ।

सुकृती(तिन्)–वि० (सं०) धार्मिक, पुण्यवान्; भाग्यशाली; बुद्धिमान् । पु० दसवें मन्वंतरके एक ऋषिका नाम ।

सुकृत्–वि० (सं०) पुण्यवान्, धार्मिक, सुकृती; बुद्धिमान्; विद्वान्; भाग्यशाली; बहुत यज्ञ करनेवाला । पु० कुशल कार्यकर्ता; त्वष्टा ।

सुकृत्य–पु० (सं०) सत्कर्म, पुण्य ।

सुकेत–पु० (सं०) एक आदित्य । वि० उदाराशय ।

सुकेतु–पु० (सं०) चित्रकेतु राजाका नाम; सगरका एक पुत्र; ताड़का राक्षसीका बाप । **–सुता**–स्त्री० ताड़का राक्षसी ।

सुकेश–वि० (सं०) सुंदर बालोंवाला । पु० एक राक्षस ।

सुकेशर, सुकेसर–पु० (सं०) बिरौजा नीबू, बीजपूर; दो प्रकारके वृत्त; सिंह ।

सुकेशा–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर बालोंवाली (स्त्री०) ।

सुकेशि–पु० (सं०) एक राक्षस जिसके माल्यवान् आदि पुत्रोंसे राक्षसोंका वंश चलना माना जाता है ।

सुकेशी–वि० (सं०) स्त्री० सुंदर केशवाली (स्त्री) । स्त्री० एक अप्सरा; एक सुरांगना । **–भार्य**–वि० जिसकी स्त्रीके बाल बहुत सुंदर हों ।

सुकेशी(शिन्)–वि० (सं०) दे० 'सुकेश' ।

सुकोली–स्त्री० (सं०) क्षीरकाकोली ।

सुकोशक–पु० (सं०) कोषाम्र, कोसम ।

सुकोशला–स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नगरी ।

सुकोशा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी तरोई ।

सुक्कर–स्त्री० (अ०) चीनी, शकर ।

सुक्कडि–पु० (सं०) शुष्क चंदन ।

सुक्कान–पु० (अ०) पतवार; नाव; 'साकिन'का बहु०, रहनेवाले ।

सुक्ख*–पु० दे० 'सुख' ।

सुक्त–पु० (सं०) एक तरहकी काँजी ।

सुक्ता–स्त्री० (सं०) इमली ।

सुक्ति*–स्त्री० दे० 'शुक्ति' । पु० (सं०) एक पर्वत ।

सुक्र*–पु० दे० 'शुक्र' ।

सुक्र–पु० (अ०) अभिमान, मद; मादकता, नशा ।

सुक्रतु–पु० (सं०) सूर्य; सोम; अग्नि; शिव; इंद्र; मित्रावरुण । वि० सत्कर्म करनेवाला ।

सुक्रतूया–स्त्री० (सं०) प्रज्ञा, बुद्धि, दक्षता ।

सुक्रय–पु० (सं०) अच्छा सौदा ।

सुक्रित* -पु० दे० 'सुकृत' ।

सुक्रीडा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

सुक्ल*–वि० दे० 'शुक्ल' ।

सुक्षत्र–वि० (सं०) विस्तृत राज्यवाला; अच्छा शासन करनेवाला; बलवान्, शक्तिशाली ।

सुक्षद–पु० (सं०) उत्तम यज्ञशाला ।

सुक्षम*–वि० दे० 'सूक्ष्म' ।

सुक्षिति–स्त्री० (सं०) निवास, आश्रयका उत्तम, सुरक्षित स्थान; उत्तम स्थानमें रहनेवाला सुखी व्यक्ति ।

सुक्षेत्र–पु० (सं०) उत्तम क्षेत्र; वह मकान जिसमें तीन ओर (दक्षिण, पश्चिम और उत्तर) दालान हों; दसवें मनुका एक पुत्र । वि० उत्तम क्षेत्रोंवाला; अच्छी कोखसे उत्पन्न ।

सुक्षेम(न्)–पु० (सं०) जल ।

सुखंकर–वि० (सं०) दे० 'सुखकर'; सुकर ।

सुखंकरी–स्त्री० (सं०) जीवंती । वि० स्त्री० सुखकरी ।

सुखंधुण–पु० (सं०) शिवका एक अस्त्र, शिवखट्वांग ।

सुखंडी–स्त्री० बच्चोंको होनेवाला एक रोग, सूखा रोग । वि० दुबला, क्षीण ।

सुखंद*–वि० सुख देनेवाला, सुखद ।

सुख–पु० (सं०) वह अनुभूति जो तन-मनको भाये, अनुकूल हो; कामनाकी पूर्तिसे होनेवाला आनंद; आराम; आसानी; चैन; आमोद; अभ्युदय; कल्याण; सुविधा; स्वर्ग; जल; आरोग्य; वृद्धि नामक ओषधि । वि० प्रसन्न; खुश; अनुकूल, प्रिय; उपयुक्त । **–आसन**–पु० (हिं०) पालकी । **–कंद**–वि० सुख देनेवाला । **–कंदन***–वि० दे० 'सुखकंद' । **–कंदर***–वि० जो सुखका धाम, सुखका आकर है । **–कर**–वि० आनंददायक; सुकर, सरल । पु० राम । **–करण**–वि० सुखोत्पादक । **–करन***–वि० दे० 'सुखकरण' । **–कार,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि० सुखदायक । **–क्रिया**–स्त्री० सुख देना; सरल कार्य; सुखदायक कार्य । **–गंध**–वि० सुगंधित । **–ग**–वि० सुखपूर्वक जानेवाला । **–गम,–गम्य**–वि० सुगम, जिसपर आसानीसे गमन किया जा सके । **–ग्राह्य**–वि० जो आसानीसे ग्रहण किया जा सके; सुबोध । **–घात्य**–वि० जिसका आसानीसे हनन किया जा सके । **–चर**–वि० आरामसे जानेवाला । **–चार**–पु० बढ़िया घोड़ा । **–चाव**–पु० आनंदमंगल; सुख देनेवाले कार्य करनेका शौक । **–चित्त**–पु० मानसिक शांति । **–चैन**–स्त्री० सुख और शांति, सुख और आराम । **–च्छाय**–वि० सुखकर छाया देनेवाला । **–च्छेद्य**–वि० आसानीसे बेधने या नष्ट करने योग्य । **–जनक**–वि० सुख देने, उपजानेवाला । **–जननी**–वि०, स्त्री० सुख देने, उपजानेवाली । **–जात**–वि० सुखी; सुखपूर्वक उत्पन्न । पु० आनंददायक पदार्थ । **–जीवी(विन्)**–पु० सुखसे जीवन बितानेवाला अथवा सुखमय जीवन बितानेका इच्छुक; आरामतलब । **–ज्ञ**–वि० सुखका ज्ञाता । **–ढरन***–वि० सुखधाम; सुख देनेवाला । **–तला**–पु० (हिं०) चमड़ेका वह टुकड़ा जिसे जूतेके अंदर रखते हैं । **–थर***–पु० सुखस्थल, सुखका स्थान । **–द**–वि० सुख देनेवाला, आनंददायक । पु० विष्णु; एक पितृवर्ग; एक ताल (संगीत); विष्णुका निवास-स्थान; प्लक्षद्वीपका एक वर्ष । **–०गीत**–वि० प्रशंसनीय । **–दनियाँ***–वि० सुखदायक । **–दा**–वि० स्त्री० सुख देनेवाली । स्त्री० अप्सरा; गंगा नदी; शमी वृक्ष; एक वृत्त । **–दाइन***–वि०, स्त्री० दे० 'सुखदायिनी' । **–दाई**–वि० दे० 'सुखदायी' । **–दात***–वि० दे० 'सुखदाता' । **–दाता(तृ)**–वि० सुखदायक, आनंददायक । **–दान***–वि० सुखदाता । **–दानी**–वि० (हिं०) सुख देनेवाला । स्त्री० एक वृत्त । **–दाय,–दायो***–वि० दे० 'सुखदाता' । **–दायक**–वि० दे० 'सुखदाता' । **–दायिनी**–वि० स्त्री० सुख देनेवाली । स्त्री० रोहिणी लता । **–दायी(यिन्)**–वि० सुख देनेवाला । **–दाव***–वि० सुख देनेवाला । **–दास**†–पु० एक बढ़िया धान । **–दुःख**–पु० आराम और कष्ट; आनंद और शोक । **–दृश्य**–वि० प्रियदर्शन । **–देनी,–दैनी***–वि० स्त्री० सुख देनेवाली । **–दैन***–वि० सुख देनेवाला । **–दोहा,–दोह्या**–स्त्री० वह गाय जो आसानीसे दुही जा सके । **–धाम(न्)**–पु० सुखका घर, वैकुंठ ।

वि० (हिं०) सुखदायक; सुखी। **–पर**–वि० आरामतलब। **–पाल**–पु० (हिं०) एक तरहकी पालकी। **–पेय**–वि० पीनेमें आनंददायक या आसान। **–प्रणाद**–वि० मधुर शब्द करनेवाला। **–प्रतीक्ष**–वि० सुखकी प्रतीक्षा, आशा करनेवाला। **–प्रत्यर्थी(र्थिन्)**–वि० सुखका विरोधी। **–प्रद**–वि० सुख, आनंददायक। **–प्रबोधक**–वि० सुबोध। **–प्रवेप**–वि० आसानीसे कंपित होनेवाला (जैसे वृक्ष)। **–प्रश्न**–पु० कुशल-प्रश्न। **–प्रसव,–प्रसवन**–पु० सुखसे होनेवाला प्रसव। **–प्रसवा**–वि० स्त्री० आरामसे, बिना कष्टके बच्चा जननेवाली (स्त्री, गाय इ०)। **–प्राप्त**–वि० सुखी; आसानीसे मिला हुआ। **–प्राप्य**–वि० आसानीसे प्राप्त होनेवाला। **–प्रिय**–वि० सदा सुखसे रहनेका इच्छुक; एक कर्नाटकी राग। **–बंधन**–वि० विलासप्रिय। **–बद्ध**–वि० सुंदर। **–बुद्धि**–स्त्री० सरल ज्ञान। **–बोध**–पु० सुखकी अनुभूति; सरल ज्ञान। **–भंज**–पु० सफेद मिर्च। **–भक्षिकाकार**–पु० हलवाई। **–भाक्(ज्),–भागी(गिन्)**–वि० सुखी, सुख भोगनेवाला। **–भुक्(ज्)**–वि० सुखी; भाग्यवान्। **–भेद्य**–वि० जिसका भेदन, नाश आसानीसे किया जा सके। **–भोग**–पु० सुख भोगना; परिभोग (ईज़मेंट)। **–भोगी(गिन्)**–वि० सुखका भोग करनेवाला। **–भोग्य**–वि० जिसका आसानीसे भोग किया जा सके (जैसे धन)। **–भोजन**–पु० स्वादिष्ठ भोजन। **–मणि**–पु० सिखोंका नित्य पठनीय एक छोटा धर्मग्रंथ। **–मद**–वि० आनंददायक मद लानेवाला। **–मानी(निन्)**–वि० सुख माननेवाला; किसी चीजमें सुख समझनेवाला; हर हालतमें सुख माननेवाला। **–मुख**–वि० आसानीसे बोला जा सकनेवाला (शब्द या वर्ण); सुन्दर बातें करनेवाला। **–मोदा**–स्त्री० शल्लकी वृक्ष। **–रात्रि,–रात्रिका**–स्त्री० दिवालीकी रात; सुहागरात; शांत और आनंददायक रात। **–राशि**–वि० जो सुखकी राशि, भंडार है। **–रास,–रासी***–वि० दे० 'सुखराशि'। **–रोग**–पु० नाममात्रका या काल्पनिक रोग। **–लक्ष्य**–वि० जो आसानीसे लक्षित हो सके, पहचाना जा सके। **–लभ्य**–वि० जो आसानीसे मिल सके। **–लिप्सा**–स्त्री० सुखकी इच्छा। **–वर्च(स्),–वर्चक**–पु० सज्जीखार। **–वह**–वि० आसानीसे वहन करने योग्य। **–वाद**–पु० इंद्रिय-सुख, शरीरसुख ही जीवनकी सार्थकता है–यह मत (हीडॉनिज्म)। **–वादी(दिन्)**–वि० उक्त मतको माननेवाला (हीडॉनिस्ट)। **–वार**–वि० सुखी; सहज, सरल। **–वास**–पु० आनंददायक स्थान; तरबूज। **–वासन**–पु० मुखवासन। **–विहार**–पु० आरामकी जिंदगी। वि० आरामसे जिंदगी बितानेवाला। **–वेदन**–पु० सुखकी अनुभूति। **–शयन**–पु० आरामसे सोना। **–शयित**–वि० ...पर आरामसे सोया हुआ। **–शय्या**–स्त्री० आरामदेह पलंग आदि; आरामकी नींद। **–शांति**–स्त्री० सुख और शांति, सुख-चैन। **–शायी(यिन्)**–वि० आरामसे सोनेवाला। **–शीतल**–वि० कुछ-कुछ (सुखद रूपसे) ठंडा (प्रयोग देखो 'श्यामा'में)। **–श्रव,–श्राव्य,–श्रुति**–वि० श्रुतिमधुर, कानोंको प्रिय लगनेवाली (ध्वनि, बोल)। **–संग**–पु० सुखासक्ति। **–संगी(गिन्)**–वि० सुखमें आसक्ति रखनेवाला। **–संदुह्या,–संदोह्या**–स्त्री० दे० 'सुखदोह्या'। **–संपद्,–संपत्ति**–स्त्री० सुख और ऐश्वर्य, तन-मनका सुख और धन-संपत्ति। **–सलिल**–पु० कुनकुना या गरम पानी। **–सागर**–पु० सुखका समुद्र; एक ग्रंथ जो भागवतके दशम स्कंधका हिंदी अनुवाद है। **–साधन**–पु० सुख प्राप्त करनेका जरिया। **–साध्य**–वि० जो आसानीसे हो या किया जा सके, सहज; आसानीसे दूर होनेवाला (रोग)। **–सार**–पु० मोक्ष। **–सुप्ति**–स्त्री०, **–सुभीता**–पु० सुख सहूलियत (एमेनिटी)। **–स्वाप**–पु० सुखकी नींद। **–सेवक**–पु० एक नाग। **–सेव्य**–वि० सुखसे सेवन, भोग करने योग्य; सुलभ। **–सौभाग्य**–पु० सुख और सौभाग्य, सुख-चैन और धन-मान। **–स्पर्श**–वि० जिसका स्पर्श सुखद हो। **–स्वच्छंदता**–स्त्री० सुख और आजादी, बेफिक्री। **–स्वप्न**–पु० सुखमय जीवनकी कल्पना। **–हस्त**–वि० जिसका हाथ मुलायम हो। **–की नींद**–वह नींद जिसमें खलल न पड़े, आरामकी नींद। मु० **–देखना**–आराम पाना। **–फरमाना**–आराम करना। **–मानना**–किसी परिस्थितिमें आराम मानना। **–लूटना**–सुखोपभोग करना।

सुखक*–वि० दे० 'शुष्क'।

सुखता–स्त्री०, **सुखत्व**–पु० (सं०) आराम, चैन; आनंद; अभ्युदय।

सुख़न–पु० (अ०) बात, वचन, बातचीत; उक्ति; कौल; कविता, पद्यरचना। **–चीं**–वि० छिद्रान्वेषी; इधरकी उधर लगानेवाला। **–चीनी**–स्त्री० छिद्रान्वेषण, ऐबजोई। **–तकिया**–पु० वह शब्द, वाक्यखंड या लघुवाक्य जो सार्थक होते हुए निरर्थक होता है और जिसे कुछ लोग आदतके कारण, वाक्यके बीचमें, अक्सर आगेकी बात झट सोच न सकनेपर कहा करते हैं ('क्या नाम है', 'जो है सो' इ०), अवलंबन। **–दाँ**–वि० कवि, सुवक्ता, सुलेखक। **–दानी**–स्त्री० जबानदानी; शायरी। **–परवर**–वि० अपनी बातका पालन करनेवाला। **–फ़हम**–वि० बुद्धिमान्; काव्यरसिक। **–फ़हमी**–स्त्री० बुद्धिमानी; काव्यमर्मज्ञता। **–शनास**–वि० बातकी तहतक पहुँचनेवाला। **–साज**–वि० कवि; बात बनानेवाला; धोखेबाज। **–(ने) गर्म**–पु० तेज बात; गुस्सेकी बात; गुस्सा दिलानेवाली बात। **–तल्ख़**–पु० कड़वी बात; सच्ची और खरी बात।

सुखना*–अ० क्रि० दे० 'सूखना'।

सुखनीय–वि० (सं०) आनंददायक।

सुखमन*–स्त्री० दे० 'सुषुम्ना'।

सुखमा–स्त्री० एक वर्णवृत्त; * दे० 'सुषमा'।

सुखयिता(तृ)–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला।

सुखवंत*–वि० सुखी, प्रसन्न; सुखद।

सुखवती–स्त्री० (सं०) बुद्ध अमिताभका स्वर्ग। वि० स्त्री० दे० 'सुखवान्'।

सुखवन|–पु० सूखनेके लिए धूपमें डाला हुआ अनाज; सूखनेसे चीजकी तौलमें होनेवाली कमी; गीली लिखावट सुखानेके लिए डाली जानेवाली रेत।

सुखवा*–पु० सुख।

सुखवान्(वत्)–वि० (सं०) सुखी।

सुखवार–वि० सुखी, प्रसन्न।

सुखांत–वि० (सं०) जिसका अंत, परिणाम सुखमय हो; मैत्रीपूर्ण; सुखका नाश करनेवाला। **–नाटक**–पु० नाटकका एक प्रकार जिसका अंत सुखमय होता है, 'कामेडी'।

सुखांबु–पु० (सं०) दे० 'सुखसलिल'।

सुखा–स्त्री० (सं०) वरुणपुरी; पुण्य; एक मूर्च्छना (संगीत); शिवकी नौ शक्तियोंमेंसे एक।

सुखाकर–पु० (सं०) एक लोक (बौ०)।

सुखागत–पु० (सं०) स्वागत।

सुखाजात–पु० (सं०) शिव।

सुखाधार–पु० (सं०) स्वर्ग। वि० सुखका आधार, आश्रय-रूप।

सुखाधिकारवाद–पु० (सूट आफ ईज़मेंट) वह मामला या नालिश जो दूसरेकी किसी भूमि, पथ आदिका अपने आरामके लिए प्रयोग करनेसे हो या अपनी भूमि आदिका दूसरे द्वारा दुरुपयोग होनेसे रोकना ही जिसका विषय हो, सुविधाधिकार-संबंधी वाद।

सुखाना–स० क्रि० तरी, गीलापन दूर करना; गीली चीजको खुश्क करना। अ० क्रि० दे० 'सूखना'।

सुखानुभव–पु० (सं०) सुखकी अनुभूति।

सुखाप–वि० (सं०) सुखपूर्वक प्राप्य।

सुखापन्न–वि० (सं०) जिसे सुख प्राप्त हो।

सुखायत, सुखायन–पु० (सं०) आसानीसे काबूमें आनेवाला; सिखाया-सधाया हुआ घोड़ा।

सुखारा, सुखारी*–वि० सुखी, सुखमय; सरल।

सुखार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) सुख चाहनेवाला।

सुखाला*–वि० आनंददायक।

सुखालुका–स्त्री० (सं०) जीवंतीका एक प्रकार।

सुखालोक–वि० (सं०) सुंदर, मनोहर।

सुखावती–स्त्री० (सं०) बौद्ध आगममें माना हुआ एक स्वर्ग। –

देव–पु० अमिताभ ।

सुखावतीश्वर–पु० (सं०) एक बुद्ध, अमिताभ ।

सुखावह–वि० (सं०) सुखजनक, सुखद ।

सुखाश–पु० (सं०) स्वादिष्ठ भोजन; वरुण; तरबूज ।

सुखाशक–पु० (सं०) तरबूज ।

सुखाशा–स्त्री० (सं०) सुखकी उम्मीद ।

सुखाश्रय–वि० (सं०) सुखद; सुखका आधार । पु० ऐसा स्थान जहाँ सुख मिले ।

सुखासक्त–वि० (सं०) सुखमें लीन । पु० 'शिव' ।

सुखासन–पु० (सं०) सुखद आसन, वह आसन जिसपर बैठनेमें आराम मिले; पद्मासन; पालकी ।

सुखासिका–स्त्री० (सं०) आराम, चैन; स्वास्थ्य ।

सुखासीन–वि० (सं०) सुखसे बैठा हुआ ।

सुखिआ*–वि० दे० 'सुखिया' ।

सुखित–पु० (सं०) आनंद, सुख । वि० * सुखी, प्रसन्न किया हुआ; सूखा हुआ, शुष्क ।

सुखिता–स्त्री०, **सुखित्व**–पु० (सं०) दे० 'सुखता' ।

सुखिया–वि० दे० 'सुखी' ।

सुखिर*–पु० साँपका बिल ।

सुखी(खिन्)–वि० (सं०) सुखयुक्त, जिसे सुख प्राप्त हो, जिसकी जिंदगी आरामसे कट रही हो; प्रसन्न; जिसे खाने-पीने, रुपये-पैसे का सुख प्राप्त हो, खुशहाल । पु० यति ।

सुखीनां–पु० एक चिड़िया ।

सुख़ुन–पु० (अ०) दे० 'सुख़न' ।

सुख़ूनत–स्त्री० (अ०) गर्म होना; उष्णता; गर्मी ।

सुखेतर–पु० (सं०) वह जो सुखसे भिन्न हो, कष्ट । वि० जो सुखी न हो, भाग्यहीन ।

सुखेन*–पु० 'सुषेण' । अ० (सं०) सुखपूर्वक ।

सुखेष्ट–पु० (सं०) शिव ।

सुखैधित–वि० (सं०) सुखमें पला हुआ ।

सुखैना*–वि० सुखदायी ।

सुखैषी(षिन्)–वि० (सं०) सुख चाहनेवाला ।

सुखोचित–वि० (सं०) सुखका आदी ।

सुखोत्सव–पु० (सं०) आनंदोत्सव, उछाव-बधाव; पति; स्वामी ।

सुखोदक–पु० (सं०) दे० 'सुख-सलिल' ।

सुखोदय–पु० (सं०) सुखका उदय; सुखप्राप्ति; एक मादक पेय; वर्ष (भूखंड) विशेष । वि० जिसका परिणाम सुखद हो ।

सुखोदर्क–वि० (सं०) जिसका परिणाम सुखद हो ।

सुखोद्य–वि० (सं०) जिसका उच्चारण आसानीसे, सुखसे हो सके ।

सुखोपाय–पु० (सं०) सरल साधन । वि० सुलभ ।

सुखोपेक्षी–पु० (स्टोइक) विविध सुखों एवं विलासादिके प्रति उदासीन रहते हुए सदाचारमय, सात्त्विक जीवन वितानेको ही परम लक्ष्य माननेवाला दार्शनिक ।

सुखोर्जिक–पु० (सं०) सज्जीखार ।

सुखोष्ण–वि० (सं०) थोड़ा गरम, कुनकुना । पु० कुनकुना जल ।

सुख्ख*–पु० सुख ।

सुख्य–वि० (सं०) सुख-संबंधी ।

सुख्यात–वि० (सं०) सुप्रसिद्ध ।

सुख्याति–स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, नामवरी ।

सुगंध–वि० (सं०) खुशबूदार, सुंदर गंधवाला । स्त्री० अच्छी गंध, सुवास, खुशबू । पु० तुंबुरु; एक पर्वत; व्यापारी, वणिक; नील कमल; चंदन; ग्रंथिपर्ण; कटतृण; पत्रांग; गंधतृण; क्षुद्र जीरक; चना; भूतृण; गंधगोकुला; राल; लाल सहिजन; बासमती चावल; कसेरू; एक कीड़ा; एक तीर्थ । **–केसर**–पु० लाल सहिजन । **–कोकिला**–स्त्री० एक गंधद्रव्य । **–गंधक**–पु० गंधक । **–गंधा**–स्त्री० दारुहरिद्रा । **–गण**–पु० कपूर, कस्तूरी, अगर आदि सुगंधित द्रव्योंका गण या वर्ग । **–चंद्री**–स्त्री० गंधपलाशी । **–तृण**–पु० रूसा घास । **–तैलनिर्यास**–पु० जवादि नामक गंधद्रव्य । **–त्रय**–पु० चंदन, बला और नागकेसर । **–त्रिफला**–स्त्री० जायफल, लौंग और इलायची । **–नाकुली**–स्त्री० रास्नाका एक भेद । **–पत्रा**–स्त्री० रुद्रजटा; शतावरी; बृहती; क्षुद्र दुरालभा; अपराजिता; बला; विधारा । **–पत्री**–स्त्री० जावित्री; रुद्रजटा । **–प्रियंगु**–स्त्री० गंधप्रियंगु । **–फल**–पु० कंकोल । **–बाला**–स्त्री० एक सुगंधयुक्त वनौषधि जो ज्वर, अतिसार, रक्तविकार आदिकी दवा है । **–भूतृण**–पु० रूसा घास, गंधतृण । **–मुख**–पु० एक बोधिसत्त्व । **–मुख्या**–स्त्री० कस्तूरी । **–मूत्रपतन**–पु० मुश्कबिलाव । **–मूल**–पु० लवली फल । **–मूला**–स्त्री० स्थलकमल; रास्ना; आँवला; कपूरकचरी; हरफारेवड़ी । **–मूली**–स्त्री० कपूरकचरी । **–मूषिका**–स्त्री० छछूँदर । **–रोहिष**–पु० रोहिष तृण । **–वल्कल**–पु० दारचीनी । **–वैरजात्य**–पु० रोहिष तृण । **–शालि**–पु० बासमती चावल । **–षट्क**–पु० जायफल, शीतलचीनी, लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी–इन छ सुगंधित द्रव्योंका समाहार । **–सार**–पु० सागौनका पेड़ ।

सुगंधक–पु० (सं०) साठी चावल; नारंगी; लाल तुलसी; गंधक; नागरंजक; कर्कोटक; धरणीकंद; द्रोणपुष्पी ।

सुगंधन–पु० (सं०) जीरा ।

सुगंधरा–पु० एक फूल ।

सुगंधा–स्त्री० (सं०) रास्ना; कपूरकचरी; रुद्रजटा; पीली जूही; तुलसी; सलई; सौंफ; स्याह जीरा; बकुची; वंध्या कर्कोटकी; नवमल्लिका; माधवी; स्वर्णमूषिका; नाकुली; स्पृक्का; गंधकोकिला; एलवालुक; गंगापत्री; बिजौरा नीबू; अनंतमूल; नील सिंधुवार; सेवती ।

सुगंधाढ्य–वि० (सं०) जिसमें काफी सुगंध हो ।

सुगंधाढ्या–स्त्री० (सं०) त्रिपुरमल्लिका; बासमती चावल ।

सुगंधार–पु० (सं०) शिव ।

सुगंधि–वि० (सं०) सुंदर गंधवाला; खुशबूदार; पुण्यात्मा; धर्मपरायण । स्त्री० अच्छी गंध, सुवास । पु० परमात्मा; एक तरहका आम; सिंह; कसेरू; चंदन; एलवालुक; गंधतृण; पिप्पलीमूल; धनिया; मोथा । **–कुसुम**–पु० खुशबूदार फूल; पीत करवीर । **–कुसुमा**–स्त्री० पृक्का । **–कृत**–पु० शिलारस । **–तेजन**–पु० रोहिष तृण । **–त्रिफला**–स्त्री० जायफल, सुपारी और लौंगका समाहार । **–पुष्प**–पु० खुशबूदार फूल; केलिकदंब । **–फल**–पु० शीतलचीनी । **–माता(तृ)**–स्त्री० पृथ्वी । **–मुस्तक**–पु० एक तरहका मोथा । **–मूत्रपतन**–पु० गंधमार्जार । **–मूल**–पु० मूली; उशीर । **–मूषिका**–स्त्री० छछूँदर ।

सुगंधिक–वि० (सं०) सुगंधयुक्त । पु० खस; पुष्करमूल; कुमुदिनी, कुई; मोथा; महाशालि, बासमती चावल; गंधक; पुन्नाग; कृष्ण जीरक; एलवालुक; गौरसुवर्ण; सुरपर्ण; शिलारस; कपित्थ; सिंह, श्वेत पद्म ।

सुगंधिका–स्त्री० (सं०) कस्तूरी; केवड़ा; श्वेत सारिवा ।

सुगंधित–वि० (सं०) सुगंधयुक्त, खुशबूदार ।

सुगंधिता–स्त्री० (सं०) सौरभ, खुशबू ।

सुगंधिनी–स्त्री० (सं०) आरामशीतला शाक; पीली केतकी ।

सुगंधी(धिन्)–वि० (सं०) सुगंधयुक्त, खुशबूदार । पु० एलवालुक ।

सुग–वि० (सं०) सुंदर गतिवाला; सुगायक; सुगम, सुलभ; खूब सावधान, सचेत; सुबोध । पु० विष्ठा; सुख; सुमार्ग ।

सुगठन–स्त्री० सुंदर गठन, गढ़न; अंगसौष्ठव ।

सुगठित–वि० सुंदर गठन, गढ़नवाला; कसा हुआ; अंग-सौष्ठवयुक्त ।

सुगणक–वि० (सं०) अच्छा ज्योतिषी ।

सुगणा–स्त्री० (सं०) (सं०) स्कंदकी एक मातृका ।

सुगण्–वि० (सं०) अच्छा गणक, हिसाबी; जो आसानीसे गिना जाय ।

सुगत–वि० (सं०) सद्गतिप्राप्त; सुंदर गति या चालवाला; * सरल, आसान–'मेरे जान ब्रह्मको विचारिबो सुगत है'–बेनी । पु० बुद्ध भगवान्; बौद्ध । **–शासन**–पु० बौद्धसिद्धांत ।

सुगतायतन, सुगतालय–पु० (सं०) बौद्धमंदिर, बौद्ध-विहार ।

सुगति–स्त्री० (सं०) सद्गति; कल्याण; सुख; सुरक्षित आश्रय-स्थान; एक वृत्त । वि० सुंदरगति या स्थितिवाला (जैसे तारा) । पु० एक अर्हत् ।

सुगनां–पु० तोता; सहिजन ।

सुगभस्ति–वि० (सं०) दीप्तिमान्; कुशल हाथोंवाला (त्वष्टा)।

सुगम–वि० (सं०) सहजमें जाने या पाने योग्य; आसान, सरल; सुबोध। पु० एक दानव।

सुगमता–स्त्री० (सं०) सुगम होना, आसानी।

सुगम्य–वि० (सं०) दे० 'सुगम'।

सुगर–पु० (सं०) सिंदूर; शिंगरफ; हिंगुल। * वि० सुकंठ; सुघर; चतुर।

सुगर्भक–पु० (सं०) खीरा।

सुगल*–पु० सुग्रीव।

सुगहन–वि० (सं०) अति घना, निविड़।

सुगहना–स्त्री० (सं०) यज्ञस्थानको अस्पृश्यादिकी नजरसे बचानेके लिए खड़ी की गयी बाड़ या घेरा।

सुगहनावृत्ति–स्त्री० (सं०) दे० 'सुगहना'।

सुगाध–वि० (सं०) जिसकी थाह सहजमें मिल सके, कम गहरा, अगाधका उलटा; जो आसानीसे या बिना नौकाके पार किया जा सके।

सुगाना*–अ० क्रि० क्रुद्ध होना; खिन्न होना। स० क्रि० शक करना।

सुगीत–पु० दे० 'सुगीतिका'; (सं०) सुंदर गान। वि० अच्छी तरह गाया हुआ।

सुगीति–स्त्री० (सं०) अच्छा गान; आर्या छंदका एक भेद।

सुगीतिका–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

सुगीथ–पु० (सं०) एक ऋषि।

सुगुंडा–स्त्री० (सं०) तृणपत्नी।

सुगुप्त–वि० (सं०) अच्छी तरह छिपाया हुआ, जो बहुत गुप्त रखा गया हो। **–भांड**–वि० घरके बरतनोंकी अच्छी देखभाल करनेवाला। **–लेख**–पु० अत्यंत गुप्त पत्र; ऐसे अक्षरों या चिह्नोंमें लिखा हुआ पत्र जिसे पानेवालेके सिवा और कोई न समझ सके।

सुगुप्ता–स्त्री० (सं०) केवाँच।

सुगुरा–वि० जिसका गुरु अच्छा हो।

सुगृद्ध–वि० (सं०) सतृष्ण।

सुगृह–पु० (सं०) सुंदर गृह; बया पक्षी।

सुगृही–स्त्री० (सं०) प्रतुद जातिका एक पक्षी।

सुगृही(हिन्)–वि० (सं०) सुंदर घरवाला; सुंदर नीड़वाला।

सुगृहीत–वि० (सं०) अच्छी तरह पकड़ा हुआ; अच्छी तरह समझा हुआ; प्रातःस्मरणीय। **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम सवेरे कल्याणकी कामनासे लिया जाय, प्रातःस्मरणीय।

सुगेष्णा–स्त्री० (सं०) किन्नरी।

सुगैया*–स्त्री० चोली।

सुगौतम–पु० (सं०) गौतम बुद्ध।

सुग्गा†–पु० दे० 'शुक'। **–पंखी**–पु० एक तरहका धान। **–साँप**–पु० साँपका एक भेद।

सुग्रंथि–वि० (सं०) सुंदर गाँठोंवाला। पु० चोरक नामक गंधद्रव्य; पिप्पलीमूल।

सुग्रह–वि० (सं०) बढ़िया मूठवाला; सुलभ; सुबोध। पु० अच्छा ग्रह।

सुग्रीव–पु० (सं०) किष्किंधाका वानर राजा जो बालिका छोटा भाई था और जिसने रावणसे लड़नेमें अपनी सेना सहित रामकी सहायता की; विष्णु या कृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एक; हंस; शिव, इंद्र; वर्तमान अवसर्पिणीके नवें अर्हत्‌के पिता; वीर; जलाशय; एक पर्वत; पातालका एक नाग; एक प्रकारका मंडप; एक अस्त्र; शंख; शुंभ-निशुंभका दूत जो भगवतीके पास ब्याहका संदेसा लेकर गया था। वि० सुंदर गरदनवाला।

सुग्रीवा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

सुग्रीवाग्रज–पु० (सं०) बालि।

सुग्रीवी–स्त्री० (सं०) दक्षकी एक कन्या और कश्यपकी स्त्री जिससे घोड़ों, ऊँटों आदिकी उत्पत्ति हुई।

सुग्रीवेश–पु० (सं०) रामचंद्र।

सुग्ल–वि० (सं०) बहुत थका हुआ।

सुघट–वि० (सं०) सुघड़, सुडौल।

सुघटित–वि० (सं०) जिसका डौल, बनावट, गठन, सुंदर हो, सुडौल, सुयोजित।

सुघट्टित–वि० (सं०) दबाकर या पीटकर खूब चौरस, समतल किया हुआ।

सुघट्य–वि० (सं०) जिसे इच्छानुकूल मोड़कर सभी प्रकारके रूपोंमें लाया जा सके।

सुघड़–वि० जिसकी बनावट सुंदर हो, सुडौल; किसी कार्यमें कुशल, हुनरमंद। **–ता**–स्त्री०,**–पन**–पु० सुंदरता; कुशलता।

सुघड़ई–स्त्री० सुघड़पन, सुंदरता; निपुणता।

सुघड़ाई–स्त्री०, **सुघड़ापा**–पु० सुघड़पन, सुंदरता; कुशलता, दक्ष।

सुघड़ी–स्त्री० अच्छी, शुभ घड़ी।

सुघर–वि० दे० 'सुघड़'। **–ता**–स्त्री०,**–पन**–पु० दे० 'सुघड़पन'।

सुघरई–स्त्री० सुघड़पन।

सुघराई–स्त्री० दे० 'सुघड़ाई'। **–कान्हड़ा**–पु० एक राग। **–टोड़ी**–स्त्री० एक रागिनी।

सुघरी*–स्त्री० दे० 'सुघड़ी'। वि० स्त्री० दे० 'सुघड़'।

सुघोष–पु० (सं०) मधुर ध्वनि; नकुलका शंख; एक बुद्ध। वि० जिसकी आवाज मीठी हो; ऊँची आवाज करनेवाला।

सुघोषक–पु० (सं०) एक वाद्य (संगीत)।

सुचंचुका–स्त्री० (सं०) महाचंचु नामक शाक।

सुचंदन–पु० (सं०) बक्कम, रक्तसार।

सुचंद्र–पु० (सं०) एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा; एक देव-गंधर्व; एक बोधिसत्त्व।

सुचंद्रा–स्त्री० (सं०) समाधिका एक प्रकार।

सुच*–वि० दे० 'शुचि'।

सुचक्षु(स्)–वि० (सं०) सुंदर आँखोंवाला (शिव); अच्छी निगाहवाला; बुद्धिमान्, विवेकी। पु० गूलरका पेड़; बुद्धिमान व्यक्ति।

सुचना*–स० क्रि० जोड़ना, संचय करना–'कहि रहीम परकाज हित संपति सुचहिं सुजान'–रहीम।

सुचरित–वि० (सं०) उत्तम रूपमें किया हुआ; सदाचारी। पु० सदाचार; अच्छा चालचलन; गुण।

सुचरिता–स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री।

सुचरित्र–वि० (सं०) सदाचारी, नेकचलन। पु० सदाचार।

सुचरित्रा–स्त्री० (सं०) पतिव्रता स्त्री; धनिया।

सुचर्मा(र्मन्)–पु० (सं०) भोजपत्र। वि० सुंदर वल्कल या चर्मवाला।

सुचा*–स्त्री० ज्ञान, चेतना; विचार। वि० निर्मल।

सुचाना–स० क्रि० सोचनेकी क्रिया दूसरेसे कराना; ध्यान आकृष्ट करना; चिताना, समझाना।

सुचार*–स्त्री० दे० 'सुचाल'। वि० दे० 'सुचारु'।

सुचारा–स्त्री० (सं०) श्वफल्ककी एक कन्या।

सुचारु–वि० (सं०) अति चारु, सुंदर, मनोहर। पु० रुक्मिणीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र। **–दशना**–स्त्री० सुंदर दाँतोंवाली स्त्री। **–रूप**–वि० सुंदर रूपवाला। **–स्वर**–वि० सुंदर स्वरवाला।

सुचाल–स्त्री० अच्छी चाल, सदाचार, 'कुचाल'का उलटा।

सुचालक–वि० (गुड कंडक्टर) (वह वस्तु) जिसमें विद्युत्, ताप आदिका परिचालन सुगमतासे हो सके, सुसंवाहक।

सुचाली–वि० अच्छे चाल-चलनवाला, नेकचलन।

सुचाव–पु० सुचाना; सूचना, सुझाव।

सुचिंतन–पु० (सं०) गंभीर चिंतन, गहरा सोच-विचार।

सुचिंतित–वि० (सं०) भली भाँति सोचा-विचारा हुआ।

सुचिंतितार्थ–पु० (सं०) मारका एक पुत्र (बौ०)।

सुचि*–वि० दे० 'शुचि'। स्त्री० सूई। **–कर्मा**–वि० दे० 'शुचिकर्मा'। **–मंत**–वि० शुद्ध आचरणवाला, पाक-साफ।

सुचित–वि० दे० 'सुचित्त'।

सुचितई–स्त्री० सुचित्तता; अवकाश; निश्चितता; बेफिक्री; चित्तकी एकाग्रता और शांति।

सुचिती*–वि० दे० 'सुचित्त'।

सुचित्त–वि० (सं०) स्थिरचित्त; चिंतानिवृत्त; रुपये-पैसेसे सुखी,

संपन्न ।

सुचित्तता–स्त्री० (सं०) सुचित्त होना, इतमीनान, निश्चिंतता ।

सुचित्र–वि० (सं०) विभिन्न प्रकारका; विभिन्न रंगोंका । पु० एक नाग । **–बीजा**–स्त्री० बायविडंग ।

सुचित्रक–वि० (सं०) विभिन्न रंगोंवाला । पु० मुर्गावी; चीतल साँप; एक असुर ।

सुचित्रा–स्त्री० (सं०) चिर्भिटा, फूट नामकी ककड़ी ।

सुचिर–वि० (सं०) पुराना; चिरस्थायी । पु० दीर्घकाल ।

सुचिरायु(स्)–पु० (सं०) देवता ।

सुची*–स्त्री० दे० 'शुची' ।

सुचीरा–स्त्री० (सं०) दे० 'सुचारा' ।

सुचुक्रिका–स्त्री० (सं०) इमली ।

सुचुटी–स्त्री० (सं०) चिमटा; सँड़सी; कैंची ।

सुचेत–वि० सावधान; सचेत ।

सुचेता(तस्)–वि० (सं०) सुंदर चित्तवाला; उदाराशय; बुद्धिमान् । पु० प्रचेताका एक पुत्र ।

सुचेल–वि० (सं०) भली भाँति वस्त्राच्छादित ।

सुचेलक–पु० (सं०) सुंदर वस्त्र, बढ़िया कपड़ा । वि० जो बढ़िया कपड़ा पहने हो ।

सुचेष्टरूप–पु० (सं०) एक बुद्ध ।

सुच्छंद*–वि० दे० 'स्वच्छंद' ।

सुच्छ*–वि० दे० 'स्वच्छ' ।

सुच्छत्र–पु० (सं०) शिव ।

सुच्छत्रा, सुच्छत्री–स्त्री० (सं०) सतलज नदी ।

सुच्छद–वि० (सं०) सुंदर पत्तोंवाला ।

सुच्छम*–वि० दे० 'सूक्ष्म' ।

सुच्छाय–वि० (सं०) अच्छी चमकवाला (रत्न); अच्छी छायावाला (वृक्ष) ।

सुछंद*–वि० स्वच्छंद ।

सुजंगो–पु० भाँगका बीजदार पौधा ।

सुजंघ–वि० (सं०) सुंदर जाँघोंवाला ।

सुजघन–वि० (सं०) सुंदर जघनों (चूतड़ों)वाला; जिसका अंत अच्छा हो ।

सुजन–पु० (सं०) सज्जन, भला आदमी; * स्वजन । **–रंजनी**–स्त्री० एक कर्नाटकी रागिनी ।

सुजनता–स्त्री० (सं०) भद्रता, भलमनसी; कृपालुता; उदारता ।

सुजनन विज्ञान–पु० (यूजेनिक्स) विज्ञानकी वह शाखा जिसका संबंध आनुवंशिकता द्वारा मनुष्यकी नस्लको समुन्नत करनेसे है ।

सुजनी–स्त्री० (फ़ा० 'सोज़नी') कई तह कपड़ेको साटकर और ऊपर सुईसे बारीक काम करके बनाया हुआ बिछौना; पलंगपर बिछानेकी एक तरहकी मोटी, रंगीन चादर ।

सुजन्मा(न्मन्)–वि० (सं०) सत्कुलमें उत्पन्न, कुलीन; विवाहित स्त्री-पुरुषसे उत्पन्न, विहितजन्मा ।

सुजय–स्त्री० (सं०) बहुत बड़ी विजय । वि० आसानीसे जीते जाने योग्य ।

सुजल–वि० (सं०) सुंदर जलवाला । पु० सुंदर जल; कमल ।

सुजला–वि० स्त्री० (सं०) जहाँ जलकी बहुतायत हो; नदी-बहुला ।

सुजल्प–पु० (सं०) स्पष्टता, गांभीर्य, उत्कंठा आदिसे पूर्ण वाक्य ।

सुजस*–पु० दे० 'सुयश' ।

सुजाक†–पु० दे० 'सूज़ाक' ।

सुजागर–वि० सुंदर, मनोहर; प्रकाशमान ।

सुजात–वि० (सं०) अच्छा बढ़ा हुआ; सुजन्मा, कुलीन; सुंदर । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; भरतका एक पुत्र । **–रिपु**–पु० युधिष्ठिर ।

सुजातक–पु० (सं०) सौंदर्य, कांति ।

सुजातका–स्त्री० (सं०) शालि धान्य ।

सुजाता–वि० स्त्री० (सं०) कुलीना; सुंदरी । स्त्री० एक किसान बालिका जिसने भगवान् बुद्धको बुद्धत्व-प्राप्तिके निकट खीर खिलायी थी; तुवरी; गोपीचंदन ।

सुजाति–स्त्री० (सं०) अच्छी जाति । वि० अच्छी जाति, जन्मवाला, कुलीन, कुजातिका उलटा ।

सुजातिया–वि० दे० 'सुजाति'; *अपनी जातिका, सजातीय ।

सुजातीय–वि० (सं०) अच्छी जातिका ।

सुजान–वि० चतुर; ज्ञानी, सुविज्ञ; प्रवीण । पु० प्रेमी; प्रभु । **–ता**–स्त्री० सुजान होना ।

सुजानी*–वि० दे० 'सुजान' ।

सुजामि–वि० (सं०) जिसके बहुतसे भाई, बहनें या रिश्तेदार हों ।

सुजावा–पु० बैलगाड़ीकी पैंजनी और फड़में जड़ी रहनेवाली लकड़ी ।

सुजिह्व–वि० (सं०) सुंदर जीभवाला; मधुरभाषी । पु० अग्नि ।

सुजीर्ण–वि० (सं०) अच्छी तरह पचा हुआ (अन्न); जीर्ण-शीर्ण; क्षीण ।

सुजीवंती–स्त्री० (सं०) स्वर्णजीवंती ।

सुजीवित–पु० (सं०) सुखी जीवन । वि० सुखपूर्वक जीनेवाला ।

सुजूद–पु० (अ०) प्रणाम करना; ईश्वरके आगे, नमाजमें सिर झुकाना, सिज्दा करना ।

सुजेय–वि० (सं०) आसानीसे जीतने योग्य ।

सुजोग*–पु० दे० 'सुयोग' ।

सुजोधन*–पु० दे० 'सुयोधन' ।

सुजोर*–वि० शहजोर, बलवान्; दृढ़, पायदार ।

सुज्ञ–वि० (सं०) सुविज्ञ; पंडित ।

सुज्ञान–वि० (सं०) ज्ञानी; सुबोध । पु० अच्छा ज्ञान ।

सुज्येष्ठ–पु० (सं०) सुंगवंशी महाराज अग्निमित्रका पुत्र ।

सुझाना–स० क्रि० दिखाना; बताना, सूचना देना; सुझावके रूपमें कोई बात किसीके सामने रखना । अ० क्रि० दिखाई देना, सूझ पड़ना ।

सुझाव–पु० सुझानेकी क्रिया; सुझायी हुई बात, तजवीज (सजेशन); सलाह ।

सुटंक–वि० (सं०) तेज, कर्कश (शब्द) ।

सुटकुन†–स्त्री० बाँसकी कैन ।

सुटुकना†–अ० क्रि० चुपकेसे निकल जाना; सिकुड़ना । * स० क्रि० चाबुक लगाना; निगल जाना ।

सुठ*–वि० दे० 'सुठि' ।

सुठहर*–पु० अच्छा ठौर, स्थान ।

सुठार*–वि० सुडौल ।

सुठि*–वि० सुंदर, अच्छा । अ० अति, बहुत ज्यादा–'ना सुठि लाँबी, ना सुठि छोटी'–प०; पूरा-पूरा ।

सुठोना*–वि० अच्छा, सुंदर ।

सुड़क–स्त्री० सुड़कनेकी क्रिया या भाव ।

सुड़कना–स० क्रि० किसी तरल पदार्थको नाककी राह, साँसके साथ भीतर खींचना, नास लेना; नाकके मलको ऊपरकी ओर खींचना, चढ़ाना; पी जाना, उदरस्थ करना ।

सुड़सुड़–स्त्री० हुक्का पीनेसे निकलनेवाली आवाज ।

सुड़सुड़ाना–स० क्रि० (हुक्का आदि) इस तरह पीना कि 'सुड़-सुड़'की आवाज निकले ।

सुडीन, सुडीनक–पु० (सं०) पक्षियोंका सहज गतिसे उड़ना ।

सुड़ुकना†–स० क्रि० दे० 'सुड़कना' ।

सुडौल–वि० सुंदर डौल, बनावटवाला, सुघड़ । **–पन**–पु० सुडौल, सुंदरता ।

सुढंग–पु० अच्छा, सुंदर ढंग । वि० सुंदर, सुघड़; अच्छे स्वभावका ।

सुढर*–वि० प्रसन्न, अनुकूल, अनुग्रहके भावसे युक्त; सुडौल ।

सुढार*–वि० सुडौल, सुंदर–'तेहि पीछे मिथिलेश गृह कन्या भई सुढार'–राम सा० ।

सुतंत*–वि० दे० 'स्वतंत्र' ।

सुतंतर*–वि० दे० 'स्वतंत्र' ।

सुतंतु–पु० (सं०) विष्णु; शिव ।

सुतंत्र–वि० (सं०) सिद्धांतज्ञ; अच्छी सेनावाला; * दे० 'स्वतंत्र' । * अ० स्वतंत्रतापूर्वक, आजादीसे ।

सुतंत्रि–वि० (सं०) जो वीणाके मेलमें हो (गान); सुस्वर, ताललयसे युक्त; तंत्रवाद्यमें कुशल ।

सुतंभर–पु० (सं०) एक ऋषि, आत्रेय ।

सुत–वि० (सं०) उत्पन्न, पैदा किया हुआ; निचोड़कर निकाला हुआ (वै०)। पु० बेटा, पुत्र; राजा; जन्म-लग्नसे पाचवाँ स्थान; दसवें मनुका एक पुत्र; सोमरस (वै०)। **–जीवक**–पु० पुत्र-जीवक वृक्ष। **–दा**–वि० स्त्री० पुत्र देनेवाली। स्त्री० पुत्रदा लता; एक देवी। **–पादिका,–पादुका**–स्त्री० हंसपदी लता। **–पेय**–पु० सोमपान। **–याग**–पु० पुत्रकी कामनासे किया जानेवाला यज्ञ, पुत्रेष्टि। **–वत्सल**–वि० वात्सल्य प्रेमसे युक्त। पु० ऐसा पिता। **–वस्करा**–स्त्री० सात पुत्रोंकी माता। **–श्रेणी**–स्त्री० मूसाकानी। **–सुत**–पु० पौत्र। **–सोम**–पु० सोमका तर्पण करनेवाला; भीमसेनका एक पुत्र। **–सोमा**–स्त्री० कृष्णकी एक पत्नी। **–स्थान**–पु० जन्म-लग्नसे पाचवाँ स्थान। **–हिबुकयोग**–पु० एक विवाह-संबंधी योग।

सुतकरी–स्त्री० स्त्रियोंके पहननेकी पुराने ढंगकी जूती।

सुतड़ा–पु० नाखूनकी बगलमें निकलनेवाला चमड़ेका पतला, छोटा टुकड़ा।

सुतधार*–पु० सूत्रधार, नियंता।

सुतनय, सुतनुज–वि० (सं०) सुंदर संतानोंवाला।

सुतना†–पु० सूथन। अ० क्रि० सोना। वि० बहुत सोनेवाला।

सुतनी–स्त्री० सुथनी, स्त्रियोंका ढीला पायजामा।

सुतनु–वि० (सं०) सुंदर शरीरवाला; बहुत ही नाजुक, दुबला-पतला। पु० एक गंधर्व; उग्रसेनका एक पुत्र; एक बंदर। स्त्री० दे० 'सुतनू'।

सुतनू–स्त्री० (सं०) सुंदर स्त्री, कोमलांगी; अक्रूरकी पत्नी; उग्रसेनकी एक कन्या; वसुदेवकी एक उपपत्नी।

सुतप(स्)–पु० (सं०) तपश्चर्या।

सुतपा(पस्)–वि० (सं०) महा तपस्वी; अतिशय तापयुक्त। पु० वह जो तपस्या करता हो, मुनि; सूर्य।

सुतर*–पु० दे० 'शुतुर'। **–नाल**–स्त्री० दे० 'शुतुरनाल'। **–सवार**–पु० दे० 'शुतुरसवार'।

सुतरण–वि० (सं०) जिसे आसानीसे पार किया जा सके (नदी)।

सुतरां(राम्)–अ० (सं०) और भी; अतिशय; अतः, इसलिए; किंबहुना।

सुतरा†–पु० दे० 'सुतड़ा'।

सुतरी*–स्त्री० तुरही। † दे० 'सुतली'; सुतारी। पु० (फा०) ऊंट जैसे रंगका बैल। स्त्री० करघेमें साँथीके अगल-बगल लगी लकड़ी।

सुतर्कारी–स्त्री० (सं०) देवदाली लता।

सुतर्दन–पु० (सं०) कोयल।

सुतल–पु० (सं०) नीचेके सात लोकोंमेंसे एक; बड़ी इमारतका आधार।

सुतली–स्त्री० सन या पटसनके रेशोंसे बटकर बनायी हुई डोरी जिससे खाट बुनते और दूसरे काम लेते हैं।

सुतवाना†–स० क्रि० सोनेमें प्रवृत्त करना।

सुतवान्(वत्)–वि० (सं०) पुत्रोंवाला। पु० लड़केका बाप।

सुतहर, सुतहार*–पु० शिल्पी; बढ़ई।

सुतहा–पु० सीपी; सूतका व्यापार करनेवाला। वि० सूत-संबंधी।

सुतही–स्त्री० सीपी।

सुता–स्त्री० (सं०) लड़की, बेटी; दुरालभा। **–दान**–पु० कन्यादान। **–पति**–पु० दामाद। **–पुत्र,–सुत**–पु० नाती। **–भाव**–स्त्री० पुत्रीका भाव।

सुतात्मज–पु० (सं०) पौत्र; नाती।

सुतान–वि० (सं०) सुस्वर, सुरीला।

सुताना†–स० क्रि० दे० 'सुलाना'।

सुतार–पु० बढ़ई, शिल्पी; † सुभीता, अनुकूल, अवसर; (सं०) एक गंधद्रव्य; एक आचार्य; गुरुसे प्राप्त अध्यात्म शास्त्रका सम्यक् ज्ञान। वि० (सं०) बहुत चमकीला; अत्युच्च; जिसकी आँखकी पुतलियाँ सुंदर हों; * बहुत अच्छा।

सुतारका–स्त्री० (सं०) बौद्धोंकी उन चौबीस देवियोंमेंसे एकजो चौबीस अर्हतोंके आदेशोंको कार्यान्वित करती है।

सुतारा–स्त्री०)सं०) नौ तुष्टियोंमेंसे एक (सां०); अष्टसिद्धियोंमेंसे एक (सां०); एक अप्सरा; श्वफल्ककी एक कन्या।

सुतारी–स्त्री० जूता सीनेका सूआ; बढ़ईगिरी।

सुतार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) संतानका अभिलाषी।

सुताल–पु० (सं०) तालका एक भेद (संगीत)।

सुताली–स्त्री० मोचियोंका सूजा।

सुतिंतिडा, सुतिंतिडी–स्त्री० (सं०) इमली।

सुतिक्त–वि० (सं०) बहुत तीता। पु० पित्तपापड़ा।

सुतिक्तक–पु० (सं०) चिरायता; पित्तपापड़ा; पारिभद्र।

सुतिक्ता–स्त्री० (सं०) कोशातकी, तरई; शल्लकी।

सुतिन*–स्त्री० सुंदर स्त्री।

सुतिनी–स्त्री० (सं०) बेटेवाली स्त्री, पुत्रवती।

सुतिया–स्त्री० भली स्त्री; † गलेमें पहननेका एक गहना, हँसली।

सुतिहार*–पु० सुतार, शिल्पी।

सुती(तिन्)–वि० (सं०) जिसके बेटा हो, पुत्रवान्।

सुतीक्षण*–पु० अगत्स्यके भाई। वि० दे० 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीक्ष्ण–वि० (सं०) अति तीक्ष्ण। पु० अगत्स्य मुनिके भाई जो वनवासमें रामसे मिले थे; सहिजन। **–दंशन**–पु० शिव।

सुतीक्ष्णक–पु० (सं०) मुष्कक वृक्ष, मोरवा।

सुतीक्ष्णका–स्त्री० (सं०) सरसों।

सुतीखन, सुतीच्छन*– वि०, पु० दे० 'सुतीक्ष्ण'।

सुतीर्थ–वि० (सं०) जो आसानीसे पार किया जा सके। पु० अच्छा मार्ग; पवित्र स्नानस्थल; पूज्य वस्तु; अच्छा आचार्य; शिव। **–(राट्ज्)**–पु० एक पर्वत।

सुतुंग–वि० (सं०) बहुत ऊंचा, अत्युच्च। पु० नारियलका पेड़; ग्रहका उच्चांश।

सुतुर्ग–वि० (फा०) ज्येष्ठ, बड़ा, श्रेष्ठ।

सुतुही†–स्त्री० सीपी; वह सीपी जिससे पोस्तसे अफीम खुरचते हैं।

सुतून–पु० (फा०) दे० 'सितून'।

सुतूर–पु० (फा०) चौपाया, विशेपकर लादनेके काम आनेवाला चौपाया (घोड़ा, गधा, खच्चर, बैल)। (अ०) स्त्री० पंक्तियाँ, सतरें। **–(रे) जैल**–स्त्री० नीचेकी लकीरें। **(रे) बाला**–स्त्री० ऊपरकी लकीरें।

सुतेकर–पु० (सं०) सोमकी तैयारीके समय मंत्रपाठ करनेवाला, ऋत्विक् (वै०)।

सुतेजन–पु० (सं०) तेज नोकवाला बाण; धामिनका पेड़। वि० तीक्ष्ण, नुकीला।

सुतेजा(जस्)–वि० (सं०) तेजसे युक्त। पु० अतीत कल्पके दसवें अर्हत् (जै०); आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सुतेजित–वि० (सं०) दे० 'सुतेजन'।

सुतैला–स्त्री० (सं०) महाज्योतिष्मती।

सुतोत्पत्ति–स्त्री० (सं०) पुत्रजन्म।

सुतोर पु० (फा०) गाय; बैल; ऊँट; घोड़ा।

सुतोष, सुतोषण–वि० (सं०) जो जल्द ही तुष्ट, प्रसन्न हो जाय।

सुतोह–वि० (फा०) दुःखी; पीड़ित; निस्पृह।

सुत्थना–पु० सुथना।

सुत्य–पु० (सं०) सोमनिष्पीडन-दिवस।

सुत्या–स्त्री० (सं०) सोमनिष्पीडन; सोमतर्पण; प्रसव।

सुत्रामा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

सुत्रामा(मन्)–पु० (सं०) इंद्र; तेरहवें मन्वंतरका एक देववर्ग; रक्षक, शासक।

सुथना–पु० पाजामा।

सुथनिया*–स्त्री० सुथनी, ढीला पाजामा।

सुथनी–स्त्री० स्त्रियोंके पहननेका ढीला पाजामा; एक कंद, पिंडालू।

सुथरा–वि० साफ, स्वच्छ; परिष्कृत; निर्दोष (सुथरा मजाक)। **–पन**–पु० स्वच्छता, सफाई; परिष्कार। **–(रे) शाही**–पु० नानकके शिष्य सुथराशाहका चलाया हुआ पंथ; इस पंथका अनुयायी।

सुथराई–स्त्री० सुथरापन।

सुथरी–वि० स्त्री० दे० 'सुथरा'। **–जबान**–स्त्री० साफ जबान, परिष्कृत भाषा।

सुदंड–पु० (सं०) वेत ।

सुदंडिका–स्त्री० (सं०) गोरक्षी नामक पौधा ।

सुदंत–वि० (सं०) सुंदर दाँतोंवाला । पु० अच्छा दाँत; नट; नर्तक; एक समाधि ।

सुदंता–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

सुदंती–स्त्री० (सं०) पश्चिमोत्तर (वायव्य) दिशाकी दिक्करिणी ।

सुदंभ–वि० (सं०) जो आसानीसे पराभूत किया जा सके ।

सुदंशित–वि० (सं०) अच्छी तरह दंश किया हुआ; शस्त्रयुक्त; वहुत घना ।

सुदंष्ट्र–वि० (सं०) दृढ़ या सुंदर दाँतोंवाला । पु० कृष्णका एक पुत्र; एक राक्षस; शंवरका एक पुत्र ।

सुदक्षिण–वि० (सं०) वहुत कुशल; नम्र; सच्चा, खरा; वहुत उदार, दक्षिणा देनेवाला । पु० एक कंभोजनरेश; पौंड्रकका एक पुत्र ।

सुदक्षिणा–स्त्री० (सं०) दिलीपकी पत्नी; कृष्णकी एक पत्नी ।

सुदग्धिका–स्त्री० (सं०) दग्धा नामक पौधा ।

सुदच्छिन*–पु० दे० 'सुदक्षिण' ।

सुदती–वि० (सं०) सुंदर दाँतोंवाली (स्त्री) ।

सुदन्(त्)–वि० (सं०) सुंदर दाँतोंवाला ।

सुदम–वि० (सं०) दे० 'सुदंभ' ।

सुदमन–पु० (सं०) आम्र वृक्ष (?) ।

सुदरसन–पु० दे० 'सुदर्शन' । **–पानि**–पु० दे० 'सुदर्शनपाणि' ।

सुदर्भा–स्त्री० (सं०) इक्षुदर्भा ।

सुदर्श–वि० (सं०) जो देखनेमें सुंदर हो; जो आसानीसे देखा जा सके ।

सुदर्शक–पु० (सं०) एक समाधि ।

सुदर्शन–वि० (सं०) प्रियदर्शन, सुंदर; जिसका सहजमें दर्शन हो सके, सुदृश्य । पु० गृध्र; मछली; शिव; विष्णुका चक्र; मत्स्य; एक तरहकी गीत-रचना; अग्निका एक पुत्र; एक विद्याधर; एक मुनि; कोई बुद्ध; एक नाग; नौ वलदेवोंमेंसे एक (जै०); वर्तमान अवसर्पिणीके अठारहवें अर्हत्के पिता; एक मालवा-नरेश; एक उज्जयिनी-नरेश; एक पाटलिपुत्र-नरेश; शंखनका एक पुत्र; दधीचिका एक पुत्र; अजमीढ़का एक पुत्र; भरतका एक पुत्र; कवीरका एक श्वपच शिष्य; मेरु पर्वत; एक द्वीप; संन्यासियोंका छः गाँठोंवाला दंड; इंद्रपुरी, अमरावती; एक तीर्थ; जामुन; मदनमस्त; सोमवल्ली । **–चक्र**–पु० विष्णुका चक्र । **–चूर्ण**–पु० आयुर्वेदका एक योग जो ज्वरकी प्रसिद्ध औषध है । **–द्वीप** –पु० जंवूद्वीप । **–पाणि**–पु० विष्णु ।

सुदर्शना–वि० स्त्री० (सं०) सुंदरी, रमणीय रूपवाली । स्त्री० सुंदर नारी; आज्ञा; सोमवल्ली लता; चाँदनी रात; एक तरहकी मदिरा; पद्मसरोवर; दुर्योधनकी एक पुत्री; जामुनका पेड़; अमरावती ।

सुदर्शनी–स्त्री० (सं०) अमरावती, इंद्रपुरी । वि० स्त्री० सुंदरी ।

सुदल–पु० (सं०) मोरट; मुचकुंद; अच्छी सेना । वि० अच्छे पत्तोंवाला ।

सुदला–स्त्री० (सं०) शालपर्णी; तरुणी नामक पौधा ।

सुदांत–वि० (सं०) अतिशय शांत; खूव सधाया हुआ (जैसे घोड़ा)। पु० शाक्य मुनिका एक शिष्य; एक समाधि ।

सुदाम–पु० (सं०) कृष्णका एक सखा; एक जनपद ।

सुदामन–पु० (सं०) राजा जनकका एक मंत्री; एक दिव्यास्त्र ।

सुदामा–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका; उत्तर भारतकी एक नदी ।

सुदामा(मन्)–पु० (सं०) वादल; एक पर्वत; ऐरावत; समुद्र; कृष्णका एक सहपाठी जो उनकी कृपासे क्षणभरमें अति दरिद्रसे ऐश्वर्यशाली हो गया; कृष्णका एक गोप सखा; एक गंधर्व; कंसका एक माली; एक जनपद । वि० खूव दान करनेवाली ।

सुदाय–पु० (सं०) उत्तम दान; ब्राह्मणोंको व्रतभिक्षास्वरूप दिया जानेवाला धन; उपनयनकालमें ब्रह्मचारीको दी जानेवाली भिक्षा; कन्यादानकालमें जामाता आदिको दिया जानेवाला दान; इस प्रकारका दान करनेवाला (माता, पिता आदि) ।

सुदारु–पुं० (सं०) अच्छा काष्ठ; देवदार; विंध्यश्रेणीका एक पर्वत, पारियात्र पर्वत ।

सुदारुण–वि० (सं०) वहुत भीषण । पु० एक दिव्यास्त्र ।

सुदावन*–पु० दे० 'सुदामन' ।

सुदास–पु० (सं०) दिवोदासका पुत्र और त्रित्सुका राजा जिसका ऋग्वेदमें योद्धाके रूपमें उल्लेख हुआ है; ऋतुपर्णका पुत्र; च्यवनका पुत्र; वृहद्रथका एक पुत्र; एक जनपद; स्वामिभक्त, सेवापरायण दास ।

सुदि–स्त्री० (सं०) शुक्ल पक्ष ।

सुदिट्(ह्)–वि० (सं०) चमकीला; चमकाया हुआ; तेज (जैसे दाँत) ।

सुदिन–पु० (सं०) अच्छा दिन, शुभ दिन; सुखके दिन; सौभाग्यकाल ।

सुदिनाह–पु० (सं०) प्रशस्त दिन; पुण्य दिन ।

सुदिवस–पु० (सं०) प्रशस्त दिन।

सुदिव्–वि० (सं०) वहुत चमकीला, अति दीप्तिमान् ।

सुदी–स्त्री० शुक्ल पक्ष ।

सुदीक्षा–स्त्री० (सं०) लक्ष्मी ।

सुदीति–पु० (सं०) आंगरिस-गोत्रीय एक ऋषि । वि० वहुत चमकीला (वै०) । स्त्री० सुदीप्ति (वै०) ।

सुदीपति*–स्त्री० दे० 'सुदीप्ति' ।

सुदीप्त–वि० (सं०) अति दीप्तिमान्, खूव चमकता हुआ ।

सुदीप्ति–स्त्री० (सं०) तेज रोशनी या चमक ।

सुदीर्घ–वि० (सं०) वहुत लंवा (देश, काल); सुविस्तृत । **–घर्मा**–स्त्री० असनपर्णी । **–जीवफला**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी । **–फलका,–फलिका**–स्त्री० एक तरहका भंटा । **–फला** –स्त्री० ककड़ी ।

सुदीर्घा–वि० स्त्री० (सं०) वहुत लंवी । स्त्री० चीना-कर्कटी ।

सुदुःख–पु० (सं०) वहुत अधिक कष्ट या शोक । वि० वहुत कष्टकर; वहुत कठिन ।

सुदुःखित–वि० (सं०) वहुत व्यथित या शोकान्वित ।

सुदुःश्रव–वि० (सं०) जो सुननेमें वहुत वुरा या अप्रिय हो ।

सुदुःसह–वि० (सं०) जिसका सहन करना कठिन हो ।

सुदुकूल–वि० (सं०) वहुत वढ़िया कपड़ेका वना हुआ ।

सुदुघा–स्त्री० (सं०) दुधार, अधिक दूध देनेवाली गाय ।

सुदुराचार–वि० (सं०) वहुत दुष्ट, वुरे चाल-चलनका ।

सुदुर्जय–वि० (सं०) जिसे विजित करना वहुत कठिन हो । पु० एक तरहकी व्यूह-रचना ।

सुदुर्जया–स्त्री० (सं०) सिद्धिकी दस अवस्थाओंमेंसे एक (वौ०)।

सुदुर्जर–वि० (सं०) जिसे पचाना वहुत कठिन हो ।

सुदुर्दर्श, सुदुर्दृश–वि० (सं०) जिसे देखकर अलग करना कठिन हो; अप्रिय-दर्शन ।

सुदुर्भग–वि० (सं०) भाग्यहीन ।

सुदुर्भिद–वि० (सं०) जिसे तोड़ना वहुत कठिन हो ।

सुदुर्मर्ष–वि० (सं०) जिसे सहन करना वहुत कठिन हो ।

सुदुर्लभ–वि० (सं०) अति दुर्लभ, जिसे प्राप्त करना वहुत कठिन हो; वहुत नायाव ।

सुदुर्वच–वि० (सं०) जिसका उत्तर देना वहुत कठिन हो ।

सुदुर्विद, सुदुर्वेद–वि० (सं०) जो जल्द समझमें न आवे, दुर्वोध ।

सुदुश्चर–वि० (सं०) जो वड़ी कठिनाईसे किया जा सके; दुर्गम ।

सुदुष्कर–वि० (सं०) अति कष्टसाध्य, वहुत ही कठिन ।

सुदुष्प्राप–वि० (सं०) जिसे प्राप्त करना वहुत कठिन हो ।

सुदुस्तर, सुदुस्तार–वि० (सं०) जिसे पार करना वहुत कठिन हो ।

सुदुस्त्यज–वि० (सं०) जिसका त्याग करना वहुत कठिन हो ।

सुदूर–पु० (अ०) जारी होना, निकलना; पहुँचना । अ० (सं०) अति दूर, वहुत दूर । वि० वहुत दूरका । **–पराहत**–वि० चिरध्वस्त; जिसका निराकरण पहले ही हो चुका हो । **–पूर्व**–पु० अति पूर्वके देश, चीन, जापान इत्यादि ।

सुदृक्(श्)–वि० (सं०) सुंदर आँखों या तीक्ष्ण दृष्टिवाला; सुंदर । पु० एक देववर्ग (वौ०) । स्त्री० सुंदर आँख ।

सुदृढ–वि० (सं०) बहुत मजबूत; सुरक्षित। –त्वचा–स्त्री० गंभारी।

सुदृष्टि–वि० (सं०) शुभदृष्टिवाला; अच्छी निगाहवाला। पु० गिद्ध। स्त्री० पैनी दृष्टि।

सुदेल्ल–पु० (सं०) सुदेष्ण पर्वत।

सुदेव–पु० (सं०) अच्छा या सच्चा देवता; क्रीड़ाशील नायक; वह ब्राह्मण जिसने दमयंतीके कहनेसे नलका पता लगाया था; काशीका एक राजा जो हर्यश्वका पुत्र था; एक काश्यप; एक विदर्भनरेश; विष्णुका एक पुत्र; देवकका एक पुत्र।

सुदेवा–स्त्री० (सं०) अरिहकी पत्नी; आगेथी।

सुदेवी–स्त्री० (सं०) नाभिकी पत्नी और ऋषभकी माता।

सुदेव्य–पु० (सं०) भले या श्रेष्ठ देवोंका समुदाय (वै०)।

सुदेश–पु० (सं०) उपयुक्त स्थान; अच्छा; सुंदर देश। * वि० सुंदर।

सुदेशिक–पु० (सं०) अच्छा पथ-प्रदर्शक।

सुदेष्ण–पु० (सं०) रुक्मिणीसे उत्पन्न कृष्णका एक पुत्र; असमंजसका एक दत्तक पुत्र; एक प्राचीन जनपद; एक पुराणोक्त पर्वत।

सुदेष्णा–स्त्री० (सं०) बलिकी पत्नी; विराट्की पत्नी।

सुदेष्णु–स्त्री० (सं०) दे० 'सुदेष्णा'।

सुदेस*–पु० अच्छा स्थान; स्वदेश। वि० अच्छा, सुंदर।

सुदेसी†–वि० दे० 'स्वदेशी'।

सुदेह–स्त्री० (सं०) सुंदर देह। वि० सुंदर।

सुदैव–पु० (सं०) सुंदर अदृष्ट, सौभाग्य; अच्छा संयोग।

सुदोग्ध्री, सुदोघा–स्त्री० (सं०) अधिक दूध देनेवाली गाय।

सुदोहना, सुदोहा–वि० स्त्री० (सं०) जो आसानीसे दुही जा सके।

सुदौसी*–अ० शीघ्रता-पूर्वक।

सुद्दा–पु० (अ०) कड़ा मल जो आँतोंमें चिपक जाता है और मलावरोधका कारण होता है; आँतों या रगोंमें पड़नेवाली मवादकी गाँठ।

सुद्दी–स्त्री० दे० 'सुद्दा'।

सुद्ध*–वि० दे० 'शुद्ध'।

सुद्धाँ†–अ० साथ, समेत।

सुद्धि*–स्त्री० दे० 'शुद्धि'; दे० 'सुध'।

सुद्युत्–वि० (सं०) खूब चमकीला।

सुद्युम्न–पु० (सं०) वैवस्वत मनुका एक पुत्र इड़ (शापवश कुछ कालके लिए स्त्री हो जानेपर इसके गर्भसे पुरूरवाकी उत्पत्ति हुई)।

सुद्रष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) अच्छी, पैनी दृष्टिवाला।

सुद्विज–वि० (सं०) अच्छे दाँतोंवाला।

सुद्विजानन–वि० (सं०) जिसके मुँहमें अच्छे दाँत हों।

सुधंग*–पु० अच्छा ढंग।

सुध–स्त्री० याद; होश, चेत-खबर। * वि० शुद्ध। –बुध–स्त्री० होश-हवास, चेत (–न रहना)। –मना*–वि० होशवाला, सचेत। मु० –दिलाना–याद दिलाना। –न रहना–याद, होश न रहना। –बिसरना–याद न रहना, होश न रहना। –लेना–खोज-खबर लेना; याद करना; किसी बातकी ओर ध्यान देना।

सुधन–वि० (सं०) अति धनी, बहुत पैसेवाला (वै०)। पु० हिरण्याक्षका एक पुत्र।

सुधना*–अ० क्रि० शुद्ध होना, ठीक किया जाना।

सुधनु(स्)–पु० (सं०) सूर्यतनया ताप्तीके गर्भसे उत्पन्न कुरुका एक पुत्र; गौतम बुद्धके एक पूर्वज।

सुधन्वा(न्वन्)–वि० (सं०) जिसका धनुष् बहुत बढ़िया हो; धनुर्विद्यामें कुशल। पु० एक वर्णसंकर जाति (वैश्य); विष्णु; एक आंगरिस; वैराजका एक पुत्र और पूर्वदिशाका दिक्पाल; कुरुका एक पुत्र; शेषनाग; विश्वकर्मा; विदुर।

सुधन्वाचार्य–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति, सुधन्वा।

सुधर–पु० (सं०) एक अर्हत् (जै०)।

सुधरना–अ० क्रि० दुरुस्त होना, दोष या विकृति दूर होना, बिगड़े हुएका बनना।

सुधरवाना–स० क्रि० सुधार कराना।

सुधराई–स्त्री० सुधार; सुधारनेकी जरूरत।

सुधर्म–पु० (सं०) सुंदर, उत्तम धर्म, न्याय, कर्तव्य; चौबीसवें तीर्थंकर महावीरके दस शिष्योंमेंसे एक; किन्नरोंका एक अधिपति; एक देववर्ग।

सुधर्मा–स्त्री० (सं०) देवसभा।

सुधर्मा(मन्)–वि० (सं०) स्वधर्मपालक, धर्मनिष्ठ। पु० कुटुंबपालक, गृहस्थ; क्षत्रिय; एक दशार्ण-नरेश; देवसभा; एक विश्वेदेव; एक जैन।

सुधर्मी–वि० धर्मनिष्ठ। स्त्री० (सं०) देवसभा।

सुधवाना†–स० क्रि० दे० 'सुधरवाना'।

सुधाँ*–अ० साथ, समेत।

सुधांग–पु० (सं०) चंद्रमा।

सुधांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर। –भ्र,–रत्न–पु० मोती।

सुधा–स्त्री० (सं०) अमृत; मकरंद; रक्त; रस; दूध; जल; शहद; गंगा; बिजली; पृथ्वी; विष; आमला; हड़; थूहड़; सरिवन; गिलोय; मूर्वा; चूना; सफेदी; ईंट; घर; एक रुद्रकी पत्नी; एक वृत्त; वधू; पुत्री। –कंठ–पु० कोयल। वि० मृदुभाषी। –कर–पु० चन्द्रमा। –कार–पु० चूना, सफेदी करनेवाला, राज। –क्षार–पु० चूनेका क्षार। –क्षालित–वि० सफेदी किया हुआ। –गेह–पु० चंद्रमा। –घट–पु० चंद्रमा। –जीवी(विन्)–पु० सफेदी करनेवाला, राज। –दीधिति–पु० चंद्रमा। –द्रव–पु० अमृतोपम पेय; चूनेका घोल, कलई। –धर–पु० चंद्रमा। वि० जिसके अधरमें अमृत हो। –धवल–वि० सफेदी किया हुआ; चूने-सा सफेद। –धवलित–वि० सफेदी किया हुआ। –धाम–पु० (हिं०) चंद्रमा। –धामा(मन्)–पु० चंद्रमा। –धार–पु० अमृतपात्र, चंद्रमा। –धी*–वि० सुधावाला; सुधातुल्य। –धौत–वि० सफेदी किया हुआ। –निधि–पु० चंद्रमा; समुद्र; एक वृत्त। –पय(स्)–पु० थूहड़का दूध। –पाणि–पु० धन्वंतरि। –पाषाण–पु० सफेद खली, खड़िया। –पूर–पु० अमृतकी धारा। –भवन–पु० चूना पुता हुआ मकान; पंचम मुहूर्त। –भित्ति–स्त्री० सफेदी की हुई दीवार। –भुक्(ज्),–भोजी(जिन्)–पु० अमृतपान करनेवाला, देवता। –भृत्ति–पु० चंद्रमा; यज्ञ; कपूर। –मय–वि० अमृतपूर्ण, अमृतमय; चूनेका बना हुआ। पु० प्रासाद। –मयूख–पु० चंद्रमा। –मूली–स्त्री० सालममिसरी। –मोदक–पु० कपूर; यवासशर्करा; वंसलोचन। –०ज–पु० तवराजोद्भव खंड। –योनि–पु० चंद्रमा। –रश्मि–पु० चंद्रमा। –रस–पु० अमृत; दूध। वि० सुधा-सा स्वादिष्ठ। –वर्ष–पु०,–वृष्टि–स्त्री० अमृतकी वर्षा। –वर्षी(र्षिन्)–वि० अमृत बरसानेवाला। पु० ब्रह्मा; चंद्रमा; एक बुद्ध। –वास–पु० चन्द्रमा। –शर्करा–स्त्री० खड़िया, सफेद खली। –शुभ्र–वि० सफेदी किया हुआ। –श्रवा–स्त्री० दे० 'सुधास्रवा' (असाधु)। * पु० अमृत बरसानेवाला। –सदन–पु० चंद्रमा। –सागर,–सिंधु–पु० सुधाका समुद्र। –सिक्त–वि० सुधासे सींचा हुआ, सुधासे तर। –सित–वि० अमृत या चूने जैसा सफेद। ––सू–पु० चंद्रमा। –सूति–पु० चंद्रमा; कमल; यज्ञ। –सेक–पु० अमृतसे सींचना। –स्पर्धी(र्धिन्)–वि० अमृतसे स्पर्धा करनेवाला, बहुत मधुर (वचन)। –स्रवा–स्त्री० छोटी जीभ, कौवा; रुद्रवंती बूटी। –हर,–हर्ता(र्तृ),–हृत्–पु० गरुड। –ह्रद–पु० सुधा-सरोवर।

सुधाई†–स्त्री० दे० 'सिधाई'।

सुधाकर–पु० (सं०) दे० 'सुधा'में; चंद्रमा।

सुधाता(तृ)–वि० (सं०) सुव्यवस्थित करनेवाला।

सुधातु–स्त्री० (सं०) सोना। वि० धनी। –दक्षिण–वि० जिसे यज्ञमें बहुत अधिक दक्षिणा मिले; बहुत अधिक दक्षिणा देनेवाला (?)।

सुधाधर–वि० (सं०) जिसके अधरमें अमृत हो। पु० * 'सुधामें'।

सुधाधार–पु० (सं०) अमृतपात्र; चंद्रमा।

सुधाना*–स० क्रि० सुध कराना, याद दिलाना; ठीक कराना; शोध कराना; मुहूर्त आदि निकलवाना।

सुधामा(मन्)–पु० (सं०) चंद्रमा; एक ऋषि; एक देववर्ग; एक पर्वत।

सुधाय-पु० (सं०) आराम, सुख।

सुधार-पु० दोष दूर करने या होनेका भाव; संस्कार, इसलाह। वि० अच्छी धार या नोकवाला (बाण आदि)। **-प्रन्यास**-पु० (इंप्रूवमेंट ट्रस्ट) किसी नगरके सुधार, नवनिर्माण आदिके लिए स्थापित संस्था।

सुधारक-पु० सुधार करनेवाला; सुधारका आंदोलन करनेवाला।

सुधारना-स० क्रि० दोष, त्रुटि दूर करना, दुरुस्त करना, संस्कार करना।

सुधारा*-वि० सीधा, भोला।

सुधारालय-पु० (रिफ़ार्मेटरी) एक तरहका बंदीगृह जहाँ अपराध करनेके कारण सजा पाये हुए बालक रखे जाते हैं और शिल्प इत्यादिकी शिक्षा देकर उन्हें सुधारनेका प्रयत्न किया जाता है।

सुधावदात-वि० (सं०) 'दे० सुधाधवल'। पु० एक पर्वत।

सुधावासा-स्त्री० (सं०) खीरा।

सुधि-स्त्री० दे० 'सुध'।

सुधित-वि० (सं०) सुव्यवस्थित; ठीक तरहसे तैयार किया हुआ (भोजन); सुधातुल्य; लक्ष्यपर साधा हुआ; तुला हुआ; उदार, दयालु (वै०)।

सुधिति-स्त्री० (सं०) कुल्हाड़ी।

सुधी-पु० (सं०) पंडित, बुद्धिमान् व्यक्ति। स्त्री० सुंदर बुद्धि; सुबुद्धि। वि० सुंदर बुद्धिवाला; सुबुद्धियुक्त।

सुधीर-वि० (सं०) दृढ़, धैर्यवान्।

सुधूपक-पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, श्रीवेष्ट।

सुधूम्य-पु० (सं०) स्वादु नामक गंधद्रव्य।

सुधूम्रवर्णा-स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

सुधोद्भव-पु० (सं०) धन्वंतरि।

सुधोद्भवा-स्त्री० (सं०) हरीतकी, हड़।

सुधौत-वि० (सं०) अच्छी तरह धुला, साफ किया हुआ; चमकाया हुआ।

सुध्युपास्य-पु० (सं०) परमेश्वर; राजप्रासादका एक प्रकार; कृष्णका एक अनुचर; बलदेवका मूसल।

सुध्युपास्या-स्त्री० (सं०) स्त्री; उमा; उमाकी एक सहेली; एक रंग।

सुनंद-वि० (सं०) अच्छी तरह प्रसन्न करनेवाला। पु० कृष्णका एक पार्षद; बलदेवका मूसल; बारह प्रकारके राजभवनोंमेंसे एक; एक देवपुत्र; विश्वकर्मा-निर्मित मूसल या गदा; एक बौद्ध श्रावक।

सुनंदक-पु० (सं०) शिवका एक गण।

सुनंदन-पु० (सं०) कृष्णका एक पुत्र।

सुनंदा-स्त्री० (सं०) उमा; उमाकी एक सखी; नारी; दुष्यंतके पुत्र भरतकी पत्नी; सार्वभौमकी पत्नी; सार्वभौम दिग्गजकी हथिनी; बाहुकी माता; प्रतीपकी पत्नी; एक नदी; चेदिके राजा सुबाहुकी बहिन; गोरोचना; कृष्णकी एक पत्नी; अर्कपत्नी; एक तिथि; सफेद गाय।

सुनंदिनी-स्त्री० (सं०) एक पत्रशाक, आराम-शीतला; एक वर्णवृत्त।

सुन†-वि० सुन्न। **-बहरी**-स्त्री० एक तरहका कुष्ठ रोग जिसमें रुग्ण-स्थल सुन्न हो जाता है। (चिकोटी काटने या इस तरहकी कोई हरकत करनेपर उसमें कोई तकलीफ नहीं होती)।

सुनकातर-पु० एक तरहका साँप।

सुनकिरवा-पु० एक कीड़ा जिसके पर पन्नेके रंगके होते हैं, जुगनू; * एक पौधा।

सुनक्षत्र-पु० (सं०) उत्तम नक्षत्र; एक नरेश (मरुदेवका पुत्र); निरमित्रका एक पुत्र।

सुनक्षत्रा-स्त्री० (सं०) कर्ममासकी दूसरी रात्रि; स्कंदकी एक मातृका।

सुनगुन-स्त्री० हलकी, अस्पष्ट चर्चा, कानाफूसी; उड़ती हुई खबर; टोह (पाना, मिलना)।

सुनत-वि० (सं०) बहुत झुका हुआ। * स्त्री० दे० 'सुन्नत'।

सुनति-वि० (सं०) एक दैत्य। स्त्री० दे० 'सुन्नत'।

सुनना-स० क्रि० श्रवणेंद्रियसे शब्दका ग्रहण करना, कानोंसे आवाज मालूम करना; ध्यान देना; बुरा-भला सहना, फटकारा जाना (एक कहोगे, दस सुनोगे); मुकदमा सुनना। मु० **सुना सुनाया**-दूसरोंके मुँहसे सुना हुआ, जो आँखों देखा न हो। **सुनी-अनसुनी करना**-बात सुनकर भी उसपर ध्यान न देना।

सुनफा-स्त्री० ज्योतिषका एक योग (जिसमें सूर्यके अतिरिक्त और कोई ग्रह चंद्रमाके मुकाबलेमें गौण स्थानपर रहे)।

सुनबहरा-वि० जो बात सुनकर भी न सुननेका बहाना करे, तरह दे जाय (जिंदगी०)।

सुनबहरी-स्त्री० दे० 'सुन'के साथ।

सुनम्य-वि० (सं०) जो आसानीसे झुकाया या दबाया जा सके।

सुनय-पु० (सं०) सुनीति; सदाचार; ऋतका एक पुत्र; परिप्लवका एक पुत्र; खनित्रका भाई; एक जनपद।

सुनयन-वि० (सं०) सुंदर आँखोंवाला, सुलोचन। पु० हिरन।

सुनयना-वि० स्त्री० (सं०) सुलोचना। स्त्री० नारी; राजा जनककी पत्नी।

सुनरिया, सुनरी†-स्त्री० सुंदरी।

सुनर्द-वि० (सं०) बहुत गर्जन करनेवाला।

सुनवाई-स्त्री० श्रवण; मुकदमे या फरियादका सुना जाना।

सुनवानी*-वि० सुवर्णमय, सुनहरी 'असरचना कै कौन बनानी। सातौं करस धरै सुनवानी'-चंदा०।

सुनवैया-पु० सुननेवाला; सुनकर ध्यान देनेवाला। * सुनानेवाला।

सुनस-वि० (सं०) सुंदर नाकवाला।

सुनसान-वि० निर्जन, जनशून्य; वीरान। पु० सन्नाटा।

सुनहरा, सुनहला-वि० सोनेके रंगका (गोल्डेन)।

सुनहा*-पु० श्वान, कुत्ता-'सुनहा खेदै कुंजर असवारा'-कबीर।

सुनाई-स्त्री० दे० 'सुनवाई'।

सुनाकुत, सुनाकृत-पु० (सं०) कर्पूरक।

सुनाद-वि० (सं०) सुंदर ध्वनिवाला, सुस्वर। पु० शंख; सुंदर ध्वनि।

सुनादक-पु० (सं०) शंख। वि० सुंदर नाद करनेवाला।

सुनाना-स० क्रि० किसीके सामने, किसीको संबोधित करके कुछ कहना, दूसरेको श्रवण कराना; जताना; खरी-खोटी कहना, फटकारना।

सुनानी-स्त्री० दे० 'सुनावनी'।

सुनाभ-वि० (सं०) सुंदर नाभिवाला; बढ़िया मूठवाला। पु० चक्र; मैनाक पर्वत; पर्वत; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; वज्रनाभका एक भाई।

सुनाभक-पु० (सं०) दे० 'सुनाभ'।

सुनाभा-स्त्री० (सं०) कटभी।

सुनाभि-वि० (सं०) सुंदर नाभिवाला (वै०)।

सुनाम(न्)-पु० (सं०) नेकनामी, कीर्ति, यश। **-द्वादशी**-स्त्री० मार्गशीर्षकी शुक्ला द्वादशी।

सुनामा(मन्)-वि० (सं०) सुंदर नामवाला; कीर्तिशाली। पु० कंसका एक भाई; स्कंदका एक पार्षद; एक दैत्य; वैनतेयका एक पुत्र।

सुनाम्नी-स्त्री० (सं०) देवककी एक पुत्री और वसुदेवकी पत्नी।

सुनार-पु० सोने-चाँदीके गहने गढ़नेवाला, स्वर्णकार (स्त्री सुनारिन); (सं०) कुतियाका दूध; साँपका अंडा; गौरवा पक्षी।

सुनारी-स्त्री० सुनारका काम; सुनारकी स्त्री, सुनारिन।

सुनाल-वि० (सं०) सुंदर नालवाला। पु० लाल कमल।

सुनालक-पु० (सं०) बकपुष्प वृक्ष, अगस्त।

सुनावनी-स्त्री० परदेशसे किसी स्वजन-संबंधीकी मृत्युका समाचार आना; ऐसा समाचार मिलनेपर किया जानेवाला स्नान आदि।

सुनाशीर-पु० (सं०) दे० 'सुनासीर'।

सुनास-वि० (सं०) दे० 'सुनस'।

सुनासा-स्त्री० (सं०) सुंदर नाक; काकनासा।

सुनासिक-वि० (सं०) सुंदर नाकवाला।

सुनासिका–स्त्री० (सं०) सुंदर नाक; कौआठोठी ।

सुनासीर–पु० (सं०) इंद्र; एक देववर्ग ।

सुनाहक*–अ० दे० 'नाहक' ।

सुनिग्रह–वि० (सं०) अच्छी तरह नियंत्रित; जिसपर आसानीसे नियंत्रण किया जा सके ।

सुनिद्र–वि० (सं०) गाढ़ी नींदमें सोया हुआ ।

सुनिनद–वि० (सं०) सुस्वर; सुंदर शब्द करनेवाला ।

सुनिमय–वि० (सं०) जिसका आसानीसे विनिमय हो जाय ।

सुनियत–वि० (सं०) अच्छी तरह साथ रखा हुआ; संयत ।

सुनियम–पु० (सं०) सुंदर नियम; सुव्यवस्था ।

सुनिरूहण–पु० (सं०) अच्छा रेचक, जुलाव; एक तरहका वस्तिकर्म ।

सुनिर्यासा–स्त्री० (सं०) जिगनी वृक्ष ।

सुनिश्चय–पु० (सं०) पक्का निश्चय; सुंदर निश्चय ।

सुनिश्चल–वि० (सं०) अचल । पु० शिव ।

सुनिश्चित–वि० (सं०) भली भाँति निश्चित, पक्का । पु० कोई बुद्ध ।

सुनिषण्ण, सुनिषण्णक–पु० (सं०) एक साग, सुसन ।

सुनिष्टप्त–वि० (सं०) बहुत तपाया, गलाया हुआ; अच्छी तरह पकाया हुआ ।

सुनिस्त्रिंस–पु० (सं०) बढिया तलवार ।

सुनिहित–वि० (सं०) अच्छी तरहसे रखा हुआ, छिपा हुआ ।

सुनीच–वि० (सं०) अति नीच; किसी राशिके विशेष अंशमें पहुँचा हुआ; (ग्रह) ।

सुनीत–वि० (सं०) शिष्ट, विनीत । पु० भद्रता; बुद्धिमत्ता; अच्छी नीति; एक पौराणिक राजा (सुबलका पुत्र) ।

सुनीति–स्त्री० (सं०) सुंदर नीति; ध्रुवकी माता । वि० सुंदर नीतिविशिष्ट । पु० शिव ।

सुनीथ–वि० (सं०) धर्मशील । पु० ब्राह्मण; शिशुपाल; कृष्णका एक पुत्र; सुषेणका एक पुत्र; सुबलका एक पुत्र; एक दानव ।

सुनीथा–स्त्री० (सं०) मृत्युकी पुत्री, अंगपत्नी ।

सुनील–वि० (सं०) गहरा नीला । पु० अनारका पेड़; लामज्जक ।

सुनीलक–पु० (सं०) नीलम; काला भँगरा; नीलासन, असन वृक्ष ।

सुनीला–स्त्री० (सं०) अलसी; नीली विष्णुक्रांता; जरडी तृण ।

सुनु–पु० (सं०) जल ।

सुनेत्र–वि० (सं०) सुंदर आँखोंवाला । पु० मारका एक पुत्र (बौ०); धृतराष्ट्रका एक पुत्र; चक्रवाक ।

सुनेत्रा–स्त्री० (सं०) सांख्यमें मानी हुई नौ प्रकारकी तुष्टियोंमेंसे एक । वि० स्त्री० सुंदर नेत्रोंवाली ।

सुनैया–पु० सुननेवाला ।

सुनोची*–पु० एक तरहका घोड़ा ।

सुनौ–स्त्री० (सं०) अच्छी नौका । वि० अच्छी नौकाओंवाला । पु० जल ।

सुन्न–पु० शून्य, सुद्दा । वि० निर्जीव, जड़वत्, संवेदन-रहित ।

सुन्नत–स्त्री० (अ०) राह; रीति, दस्तूर; वह रास्ता या आचार-पथ जिसपर मुहम्मद और उनके प्रमुख साथी–पहलेके चार खलीफा –चले हों; खतना, मुसलमानी (सरकमसीजन) । –(ते) आबाई–स्त्री० बाप-दादोंका रास्ता, रीति । –(ते) पैग़म्बरी–स्त्री० पैगम्बर साहब द्वारा किया गया अमल ।

सुन्नसान–वि० दे० 'सुनसान' ।

सुन्ना–पु० शून्य, सिफर ।

सुन्नी–पु० (अ०) मुसलमानोंका एक फिरका ।

सुपंख–वि० (सं०) सुंदर पंखोंवाला; सुंदर तीरोंवाला ।

सुपंथ–पु० (सं० 'सुपंथाः') उत्तम मार्ग; सन्मार्ग ।

सुपक्क*–वि० दे० 'सुपक्व' ।

सुपक्व–वि० (सं०) अच्छी तरह पका हुआ । पु० एक सुगंधयुक्त आम ।

सुपक्ष–वि० (सं०) सुंदर पंखोंवाला ।

सुपक्ष्मा(क्ष्मन्)–वि० (सं०) सुंदर पलकोंवाला ।

सुपच*–पु० दे० 'श्वपच' ।

सुपट–पु० (सं०) सुंदर वस्त्र । वि० सुंदर वस्त्रोंवाला ।

सुपठ–वि० (सं०) जो आसानीसे पढ़ा जा सके ।

सुपत*–वि० जिसकी अच्छी प्रतिष्ठा हो, प्रतिष्ठित ।

सुपत्त्र–पु० (सं०) तेजपत्ता; हिंगोट; आदित्यपत्र; पल्लिवाह तृण; एक पौराणिक पक्षी । वि० सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखोंवाला; सुंदर परसे युक्त (बाण); सुंदर यानवाला ।

सुपत्त्रक–पु० (सं०) शिग्रु, सहिजन ।

सुपत्त्रा–स्त्री० (सं०) रुद्रजटा; शतावरी; पालक; शमी; शालपर्णी ।

सुपत्त्रिका–स्त्री० (सं०) जतुका ।

सुपत्त्रित–वि० (सं०) अच्छे पंखसे युक्त (बाण) ।

सुपत्नी–स्त्री० (सं०) गंगापत्नी ।

सुपत्त्री(त्त्रिन्)–वि० (सं०) दे० 'सुपत्त्रित' ।

सुपत्थ*–पु० दे० 'सुपथ' ।

सुपथ–पु० (सं०) अच्छा रास्ता; सन्मार्ग; सदाचार; एक वृत्त । नि० सुंदर मार्गवाला; * चौरस ।

सुपथी(थिन्)–वि० (सं०) सन्मार्गयुक्त । पु० सन्मार्ग ।

सुपथ्य–वि० (सं०) बहुत हितकर; बहुत स्वास्थ्यकर ।

सुपथ्य–वि० (सं०) बहुत हितकर; बहुत स्वास्थ्यकर । पु० ऐसा आहार; अच्छा मार्ग; आम ।

सुपथ्या–स्त्री० (सं०) बड़ा या सफेद बथुआ; छोटा या लाल बथुआ ।

सुपद–पु० अच्छा पद, शब्द । वि० सुंदर पैरोंवाला; शीघ्रगामी; † वाजिब ।

सुपद्–वि० (सं०) सुंदर पैरोंवाला ।

सुपद्मा–स्त्री० (सं०) वचा नामक औषधि ।

सुपन, सुपना*–पु० दे० 'स्वप्न' ।

सुपनक–वि० स्वप्नद्रष्टा, सपना देखनेवाला ।

सुपनाना†–स० क्रि० सपना दिखाना । अ० क्रि० स्वप्न देखना ।

सुपरण, सुपरन*–दे० 'सुपर्ण' ।

सुपरभतुरिता–स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी ।

सुपररायल–पु० (अं०) कागजके तावकी एक नाप (२२ × २९ इंच) ।

सुपरवाइजर–पु० (अं०) निरीक्षण करनेवाला ।

सुपरस*–पु० दे० 'स्पर्श' ।

सुपरिंटेंडेंट–पु० (अं०) अधीक्षक, निगरानी करनेवाला । –पुलिस –पु० पुलिस कप्तान, जिलेका प्रधान पुलिस-अफसर ।

सुपर्ण–वि० (सं०) सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखोंवाला । पु० सुंदर पत्ता; देवगंधर्व; गरुड़; कोई बड़ा शिकारी पक्षी; किरण; अश्व; मुर्गा; एक तरहकी व्यूहरचना; नागकेसर; अमलतास; अंतरिक्षका एक पुत्र; एक पर्वत; एक सौ तीन वैदिक मंत्रोंकी एक शाखा । –कुमार–पु० एक जैन देवता । –केतु–पु० गरुड़ध्वज, विष्णु । –यातु–पु० एक दैत्य । –राज–पु० गरुड़ । –वात–पु० गरुड़के पंखोंसे क्षुब्ध वायु । –सद्–वि० सुपर्णपर बैठने या चढ़नेवाला । पु० विष्णु ।

सुपर्णक–वि० (सं०) सुंदर पत्तोंवाला; सुंदर पंखोंवाला । पु० गरुड़ या कोई दिव्य पक्षी; आरग्वध वृक्ष, अमलतास; सप्तच्छद वृक्ष, सप्तपर्ण ।

सुपर्णांड–पु० (सं०) सूतसे उत्पन्न शूद्राका पुत्र ।

सुपर्णा–स्त्री० (सं०) कमलिनी; गरुड़की माता; एक नदी ।

सुपर्णाख्य–पु० (सं०) नागकेशर ।

सुपर्णिका–स्त्री० (सं०) स्वर्णजीवंती; पलाशी; शालपर्णी, सरिवन; रेणुका ।

सुपर्णी–स्त्री० (सं०) कमलिनी; गरुड़की माता; मादाचिड़िया; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; रात्रि; पलाशी; रेणुका; कद्रुके साथ उल्लिखित एक देवी जो छंदोंकी माता मानी जाती है । –तनय–पु० गरुड़ ।

सुपर्णी(र्णिन्)–पु० (सं०) गरुड़ ।

सुपर्णेय–पु० (सं०) गरुड़ ।

सुपर्वा–स्त्री० (सं०) श्वेत दूर्वा ।

सुपर्वा(र्वन्)–वि० (सं०) सुंदर गाँठों या पोरोंवाला; सुंदर पर्वों,

अध्यायोंवाला (ग्रंथ); बहुप्रशंसित । पु० शुभ काल; बेंत; बाँस; बाण; धूम, धुआँ; देवता ।

सुपवित्र–पु० (सं०) एक वृत्त ।

सुपश्चात्–अ० (सं०) बड़ी रात गये ।

सुपाकिनी–स्त्री० (सं०) आँबा हल्दी ।

सुपाक्य–पु० (सं०) साँचर नमक ।

सुपाठ्य–वि० (सं०) दे० 'सुपाठ' ।

सुपात्र–पु० (सं०) सुंदर पात्र; योग्य व्यक्ति (जो दानादिका अधिकारी हो) । वि० योग्य, अधिकारी ।

सुपाद–वि० (सं०) सुंदर पैरोंवाला ।

सुपान–वि० (सं०) जो सुखसे पिया जा सके, पान योग्य ।

सुपार–वि० (सं०) जो आसानीसे पार किया जा सके; जो जल्द गुजर जाय (जैसे वर्षा); सफलताकी ओर ले जानेवाला । **–क्षत्र** –वि० अपने राज्यको जल्द पार करनेवाला (वरुण) । **–ग**–वि० अच्छी तरह पार जानेवाला । पु० शाक्य मुनि ।

सुपारण–वि० (सं०) जिसका पाठ या अध्ययन करना आसान हो ।

सुपारा–स्त्री० (सं०) नौ प्रकारकी तुष्टियोंमेंसे एक (सां०) ।

सुपारी–स्त्री० नारियलकी जातिका एक पेड़; इस पेड़का फल जो पानके साथ या अलगसे मुख-शुद्धिके लिए खाया जाता है, छालिया, डली; शिश्नाग्र भाग । **–का फूल**– पु० मोचरस या सेमलका गोंद । **मु०–लगना**–सुपारीके टुकड़ेका गलेमें अटक जाना या अटकने जैसा प्रतीत होना (इसमें कभी-कभी बड़ी बेचैनी और गर्मी महसूस होती है) ।

सुपार्श्व–पु० (सं०) सुंदर पार्श्व; वर्तमान अवसर्पिणीके सातवें तीर्थंकर या अर्हत् (जै०); पाकड़का पेड़; संपाति (गिद्ध) का पुत्र; एक पर्वत; गजदंड (गर्दभांड) का पेड़; एक पौराणिक पक्षी (जो संपातिका पुत्र था); एक राक्षस; रुक्मरथका एक पुत्र; श्रुतायुका एक पुत्र; दृढ़नेमिका एक पुत्र । वि० सुंदर पार्श्ववाला ।

सुपार्श्वक–पु० (सं०) गर्दभांड वृक्ष; चित्रकका एक पुत्र; श्रुतायुका एक पुत्र; भावी उत्सर्पिणीके तीसरे अर्हत् (जै०) ।

सुपास–पु० आराम, सुभीता ।

सुपासी–वि० सुख, आराम देनेवाला; सुखी–'तुलसी बसि हरपुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी'–विनय० ।

सुपिंगला–स्त्री० (सं०) जीवंती; ज्योतिष्मती ।

सुपीडन–पु० (सं०) मालिश; जोरसे दबाना ।

सुपीत–पु० (सं०) गाजर; पाँचवाँ मुहूर्त (ज्यो०); पीली कटसरैया; पीत चंदन । वि० अच्छी तरह पिया हुआ; गहरा पीला ।

सुपीन–वि० (सं०) बहुत मोटा ।

सुपीवा(वन्)–वि० (सं०) अच्छी तरह पान करनेवाला ।

सुपुंख–वि० (सं०) अच्छी तरह पंख लगाया हुआ (बाण) ।

सुपुंखी–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति सुपुरुष हो ।

सुपुट–पु० (सं०) कोलकंद; विष्णुकंद । वि० सुंदर नथनोंवाला ।

सुपुटा–स्त्री० (सं०) सेवती ।

सुपुत्र–पु० (सं०) लायक बेटा, सपूत; जीवक वृक्ष । वि० अच्छे पुत्रोंवाला ।

सुपुत्रिका–वि०, स्त्री० (सं०) अच्छे पुत्रोंवाली । स्त्री० जतुका, पपड़ी ।

सुपुर–पु० (सं०) दृढ़ दुर्ग ।

सुपुरुष–पु० (सं०) भला आदमी; सुंदर पुरुष ।

सुपुर्द–वि० दे० 'सिपुर्द' ।

सुपुर्दार–स्त्री० (फा०) किसी कुर्कीका माल जिसे सुपुर्द किया गया हो ।

सुपुष्करा–स्त्री० (सं०) स्थलपद्मिनी ।

सुपुष्प–पु० (सं०) लौंग; आहुल्य; प्रपौंडरीक; परास-पीपल; मुचकुंद; शहतूत; सिरिस; देवदार; पारिभद्र; तूल; हरिद्रु; राजतरुणी; श्वेत अर्क; ब्रह्मदारु; स्त्री-रज । वि० सुंदर फूलोंवाला ।

सुपुष्पक–पु० (सं०) सिरिस; गर्दभांड; राजतरुणी; श्वेत अर्क; हरिद्रु; मुचकुंद ।

सुपुष्पा–स्त्री० (सं०) गूमा; तुरई; सौंफ; सेवती ।

सुपुष्पिका–स्त्री० (सं०) सौंफ; सोया; पाटला; जीर्णदारु; विधाराका एक भेद ।

सुपुष्पी–स्त्री० (सं०) सौंफ; सोया; केला; गूमा; विधारा; श्वेत अपराजिता ।

सुपूत–पु० दे० 'सपूत' । वि० (सं०) अतिपूत, पवित्र ।

सुपूती–स्त्री० दे० 'सपूती' ।

सुपूर–वि० (सं०) आसानीसे भरा जानेवाला; अच्छी तरह भरनेवाला । पु० बिजौरा नीबू ।

सुपूरक–पु० (सं०) वकपुष्प वृक्ष; बीजपूर, बिजौरा नीबू ।

सुपेत, सुपेद†–वि० सफेद ।

सुपेती*–स्त्री० दे० 'सफ़ेदी' ।

सुपेदी†–स्त्री० तोशक; रजाई; दे० 'सफ़ेदी' ।

सुपेली–स्त्री० छोटा सूप ।

सुपेश–पु० (सं०) बारीक बुना हुआ कपड़ा ।

सुपैदा†–पु० दे० 'सफ़ेदा' ।

सुपोष–वि० (सं०) जिसके पालन-पोषणमें कोई कठिनाई न हो ।

सुप्त–वि० (सं०) निद्रित, सोया हुआ; सोनेके लिए लेटा हुआ (पर सोया न हो); सुन्न; मुँदा हुआ, संकुचित (जैसे पुष्प); निष्क्रिय, बेकार; सुस्त; अविकसित (शक्ति); किसी वस्तुका गुण, प्रभाव या बल जो किन्हीं कारणोंसे दबा पड़ा हो, प्रसुप्त (डॉर्मेण्ट) । पु० गाढ़ी नींद; काले सीनेवाला खंजन । **–घातक** –वि० सोये हुएकी हत्या करनेवाला, हत्यारा । **–घ्न**–पु० एक राक्षस । वि० दे० 'सुप्तघातक' । **–च्युत**–वि० जिसे नींद आ गयी हो । **–जन**–पु० सोया हुआ व्यक्ति; आधी रात । **–ज्ञान, –विज्ञान**–पु० स्वप्न देखना; स्वप्न । **–त्वकक्(च्)**–वि० सुन्न, निश्चेष्ट । **–प्रबुद्ध**–वि० सोकर जागा हुआ । **–प्रलपित**–पु० पु० (स्वप्नावस्थामें) बर्राना । **–मांस**–वि० सुन्न, संज्ञाहीन, निश्चेष्ट । **–माली(लिन्)**–पु० तेइसवाँ कल्प । **–वाक्य**–पु० स्वप्नावस्थामें निकले हुए शब्द । **–विग्रह**–वि० सोया हुआ; जो निद्राकी तरह देख पड़े (कृष्ण) । **–विनिद्रक**–वि० जाग्रत् होनेवाला । **–स्थ,–स्थित**–वि० सोया हुआ ।

सुप्तक–पु० (सं०) निद्रा ।

सुप्तता–स्त्री०, **सुप्तत्व**–पु० (सं०) निद्रित होनेका भाव; नींद; निश्चेष्टा (अंगकी) ।

सुप्तांग–पु० (सं०) वह अंग जो सुन्न, निश्चेष्ट हो गया हो ।

सुप्ति–स्त्री० (सं०) नींद, ऊँघ; सपना; सुन्न हो जाना; विश्वास; लापरवाही ।

सुप्तोत्थित–वि० (सं०) सोकर उठा हुआ ।

सुप्रकेत–वि० (सं०) बहुत सावधान; विचारवान्, बुद्धिमान् ।

सुप्रचार–वि० (सं०) ठीक रास्तेपर जानेवाला; अच्छा देख पड़नेवाला ।

सुप्रचेता(तस्)–वि० (सं०) अति बुद्धिमान् ।

सुप्रज–वि० (सं०) अधिक या अच्छी संतानोंवाला ।

सुप्रजा(जस्)–वि० (सं०) दे० 'सुप्रज' (वै०) ।

सुप्रजात–वि० (सं०) बहुतसी संतानोंवाला ।

सुप्रज्ञ–वि० (सं०) बहुत बुद्धिमान् ।

सुप्रज्ञान–वि० (सं०) जिसका आसानीसे ज्ञान हो जाय ।

सुप्रतर–वि० (सं०) आसानीसे पार करने योग्य (नदी) ।

सुप्रतर्क–पु० (सं०) अच्छी समझ, प्रौढ़ विचार ।

सुप्रतर्दन–पु० (सं०) एक राजा ।

सुप्रतार–वि० (सं०) आसानीसे पार ले जानेवाला (पोत) ।

सुप्रतिकर–वि० (सं०) जिसका आसानीसे प्रतिकार किया जा सके ।

सुप्रतिज्ञ–वि० (सं०) अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला । पु० एक दानव ।

सुप्रतिपन्न–वि० (सं०) धार्मिक जीवन व्यतीत करनेवाला, सदाचारी ।

सुप्रतिभ–वि० (सं०) सुंदर या जाग्रत् प्रतिभावाला ।

सुप्रतिभा–स्त्री० (सं०) सुंदर प्रतिभा; मदिरा ।

सुप्रतिष्ठ–वि० (सं०) दृढ़तापूर्वक स्थित रहनेवाला; अच्छी

प्रतिष्ठावाला; सुप्रसिद्ध; सुंदर पैरोंवाला। पु० एक तरहकी व्यूहरचना; एक तरहकी समाधि।

सुप्रतिष्ठा–स्त्री० (सं०) सुंदर प्रतिष्ठा; प्रसिद्धि; मूर्ति आदिकी स्थापना; अच्छी, टिकाऊ स्थिति; अभिषेक; एक वर्णवृत्त; स्कंदकी एक मातृका।

सुप्रतिष्ठित–वि० (सं०) सुंदर प्रतिष्ठायुक्त; सुप्रसिद्ध; दृढ़तापूर्वक स्थित; अच्छी तरह स्थापित किया हुआ; अच्छी हालतमें रहनेवाला; सुंदर पैरोंवाला। पु० एक समाधि; गूलर; एक देवपुत्र। **–चरण**–पु० एक समाधि। **–चरित्र**–पु० एक बोधिसत्त्व।

सुप्रतिष्ठितासन–पु० (सं०) समाधिका एक प्रकार।

सुप्रतिष्णात–वि० (सं०) अच्छी तरह स्नान किया हुआ; किसी विषयका अच्छा जानकार; जिसकी खूब छान-बीन की गयी हो, सुनिश्चित।

सुप्रतीक–वि० (सं०) सुंदर अंगोंवाला, रूपवान्; ईमानदार। पु० शिव; कामदेव; ईशान कोणका दिग्गज; एक यक्ष।

सुप्रतीकिनी–स्त्री० (सं०) ईशान कोणके दिग्गज सुप्रतीककी पत्नी।

सुप्रदर्श–वि० (सं०) देखनेमें सुंदर, रूपवान्।

सुप्रदोहा–वि० स्त्री० (सं०) आसानीसे दुही जानेवाली (गाय)।

सुप्रधृष्य–वि० (सं०) आसानीसे क्षतिग्रस्त या पराभूत करने योग्य।

सुप्रबुद्ध–वि० (सं०) जिसे बहुत अधिक बोध हो गया हो। पु० एक शाक्य-नरेश।

सुप्रभ–वि० (सं०) सुंदर प्रभायुक्त; दीप्तिशाली; सुंदर। पु० शाल्मली द्वीपके अंतर्गत एक वर्ष; एक देवपुत्र; एक दानव; जैनियोंके नौ बलों (जिनों)मेंसे एक।

सुप्रभा–स्त्री० (सं०) सुंदर प्रभा, दीप्ति; अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; स्कंदकी एक मातृका; एक सुरांगना; सात सरस्वतियोंमेंसे एक।

सुप्रभात–पु० (सं०) सुंदर प्रभात; शुभसूचक प्रातःकाल; प्रातःकालीन स्तोत्र। वि० प्रातःकाल द्वारा प्रकाशित।

सुप्रभाता–स्त्री० (सं०) वह रात जिसका सवेरा सुंदर हो। भागवतमें उल्लिखित एक नदी।

सुप्रभाव–पु० (सं०) बहुत बड़ी शक्ति; सर्वशक्तिमत्ता; प्रभावपूर्ण।

सुप्रमय–वि० (सं०) आसानीसे मापे जाने योग्य।

सुप्रमाण–वि० (सं०) बहुत बड़े आकारका।

सुप्रयुक्त–वि० (सं०) ठीक तरहसे चलाया या प्रयुक्त हुआ; सुंदर ढंगसे पाठ किया हुआ; (कपट) जिसकी योजना खूब सोच-विचारकर बनायी गयी हो; सुसंबद्ध; सुव्यवस्थित। **–शर**–पु० अच्छा तीरंदाज।

सुप्रयोग–पु० (सं०) अच्छे ढंगसे काममें लाया जाना; सुप्रबंध; दक्षता; घनिष्ठ संपर्क। वि० जो ठीक तरह चलाया गया हो; जिसका अभिनय करना आसान हो (नाटक)। **–विशिख**–पु० अच्छा तीरंदाज।

सुप्रयोगा–स्त्री० (सं०) एक नदी।

सुप्रलंभ–वि० (सं०) सुलभ, जो सहजमें मिल जाय; जिसे आसानीसे धोखा दिया जा सके।

सुप्रलाप–पु० (सं०) अच्छा भाषण; वाग्मिता।

सुप्रवेदित–वि० (सं०) अच्छी तरह जनाया हुआ।

सुप्रशस्त–वि० (सं०) बहुप्रशंसित; बहुत प्रसिद्ध।

सुप्रश्न–पु० (सं०) कुशल-क्षेम पूछना।

सुप्रसन्न–वि० (सं०) बहुत खुश; बहुत साफ (जैसे जल); बहुत चमकीला (जैसे चेहरा); बहुत अनुकूल या कृपालु। पु० कुबेर।

सुप्रसन्नक–पु० (सं०) कृष्णार्जक, गरघ्न, जंगली बर्बरी।

सुप्रसरा–स्त्री० (सं०) गंधप्रसारिणी लता।

सुप्रसव–पु० (सं०) आसानीसे, बिना कष्टके होनेवाला प्रसव।

सुप्रसाद–पु० (सं०) कृपालुता, सुप्रसन्नता; शिव; विष्णु; स्कंदका एक अनुचर; एक असुर। वि० सुप्रसन्न; जो आसानीसे प्रसन्न किया जा सके।

सुप्रसादक–वि० (सं०) दे० 'सुप्रसाद'।

सुप्रसादा–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका।

सुप्रसारा–स्त्री० (सं०) दे० 'सुप्रसरा'।

सुप्रसिद्ध–वि० (सं०) अति प्रसिद्ध, खूब मशहूर।

सुप्रसू–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसे प्रसवमें आसानी हो।

सुप्राकृत–वि० (सं०) ग्रामीण, अशिष्ट।

सुप्राप, सुप्राप्य–वि० (सं०) सुलभ।

सुप्रिय–वि० (सं०) अतिप्रिय। पु० एक गंधर्व।

सुप्रिया–वि० स्त्री० (सं०) बहुत प्यारी। स्त्री० एक अप्सरा; एक छंद; प्रिय पत्नी।

सुप्रीम–वि० (अं०) सबसे ऊँचा, बड़ा। **–कोर्ट**–पु०, स्त्री० सर्वोच्च न्यायालय; ईस्ट इंडिया कंपनीके राज्यकालमें कलकत्तामें स्थापित प्रधान न्यायालय।

सुफल–पु० (सं०) सुंदर फल; अनार; छोटा अमलतास; बेर; कैथ; मूँग; बीजपूर। वि० सुंदर फलोंसे युक्त; सुंदर फलवाला (खड्गादि); सफल (हिं०)।

सुफलक*–पु० दे० 'श्वफल्क'। **–सुत**–पु० अक्रूर।

सुफला–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर फलवाली; तेज धारवाली (छुरी, कटार आदि); फलवती। स्त्री० इंद्रवारुणी; मुनक्का; केला; गंभारी; कुम्हड़ा।

सुफ़ारिश–स्त्री० (फा०) दे० 'सिफारिश'।

सुफुल्ल–वि० (सं०) सुंदर फूलोंवाला।

सुफ़ेद–वि० दे० 'सफेद'।

सुफ़ेदी–स्त्री० दे० 'सफ़ेदी'।

सुफेन–पु० (सं०) समुद्रफेन।

सुबंत–वि० (सं०) सुप् विभक्तियुक्त, प्रथमासे सप्तमीतककी विभक्तियोंसे युक्त (शब्द)। **–पद**–पु० कारक विभक्तियुक्त शब्द।

सुबंध–पु० (सं०) तिल। वि० अच्छी तरह बँधा हुआ।

सुबंधन-विमोचन–पु० (सं०) शिव।

सुबंधु–पु० (सं०) अच्छा भाई; एक बौद्ध नाटककार और कवि। वि० घनिष्ठ रूपमें संबद्ध।

सुबकदोश–वि० मुक्त 'कल हम सुबकदोश हो गये।'

सुबभ्रु–वि० (सं०) गहरा भूरा, धूसर।

सुबर*–पु० सुभट।

सुबरन*–पु० सोना, सुवर्ण; अच्छा रंग; सुंदर अक्षर।

सुबल–वि० (सं०) अति बली। पु० शिव; शकुनिका पिता; कृष्णका एक सखा; एक दिव्य पक्षी (वैनतेयका पुत्र); सुमतिका एक पुत्र; मनु भौत्यका एक पुत्र। **–पुत्र**–पु० शकुनि। **–पुर**–पु० कीकट राज्यका एक नगर।

सुबस*–वि० अच्छी तरह बसा हुआ; स्वाधीन। * अ० स्वेच्छापूर्वक, आजादीसे;...के कारण।

सुबह–स्त्री० (अ० 'सुब्ह') सवेरा, भोर, प्रातःकाल। **–खेज**–वि० तड़के उठनेवाला; पूजा-पाठ करनेवाला, भक्त। **–खेजा, –खेजिया**–पु० वह चोर जो मुसाफिरोंसे पहले जागकर उनका माल असबाब चुरा लेता है। **–दम**–अ० गजरदम, मुहँअँधेरे। **–सवेरे**–अ० तड़के। **–सुबह**–अ० बहुत सवेरे, तड़के। **–का तारा,–का सितारा**–शुक्र ग्रह। **–का सफ़ेदा**–पौ फटनेके समयका उजाला। **–से शामतक**–सारे दिन। मु० **–उठकर हाथ देखना**–सवेरे आँख खुलते ही अपने दोनों हाथोंकी रेखाएँ देखना, जिसमें किसी मनहूसका मुँह देखनेसे अनिष्ट होनेका डर न रहे। **–कर देना**–रात गुजार देना। **–का निकला शामको आना**–आवारागर्दी करना। **–की पूछो, शामकी कहना**–बदहवास होना। **–शाम करना**–टालमटोल, आज-कल करना। **–शाम होना**–टाल-मटोल किया जाना, आज-कल होना। **–(हो)शाम करना,–होना**–दे० 'सुबह-शाम करना, होना'।

सुबहान*–अ० दे० 'सुब्हान'।

सुबांधव–पु० (सं०) अच्छा मित्र; शिव।

सुबाल–वि० (सं०) बालकों जैसा। पु० अच्छा लड़का; एक देवता; एक उपनिषद्।

सुबालिश–वि० (सं०) बिलकुल बच्चों जैसा, मूर्ख।

सुबास–स्त्री॰ दे॰ 'सुगंध'।

सुबासना*–स्त्री॰ सुगंध। स॰ क्रि॰ सुवासित करना।

सुबासिक, सुबासित–वि॰ दे॰ 'सुवासित'।

सुबाहु–पु॰ (सं॰) एक राक्षस जो मारीचका भाई था और उसके साथ विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न करते हुए राम-लक्ष्मणसे पराजित हुआ; एक नागासुर; स्कंदका एक पार्षद; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; शत्रुघ्नका एक पुत्र; एक बोधिसत्त्व; एक वानर। वि॰ सुंदर या बलवान् बाहोंवाला। * स्त्री॰ सेना, फौज। **–शत्रु**–पु॰ राम।

सुबिस्ता†–पु॰ सुभीता, सुविधा।

सुबीज–पु॰ (सं॰) अच्छा बीज; खसखस; शिव। वि॰ सुंदर या अच्छे बीजोंवाला।

सुबीता–पु॰ दे॰ 'सुभीता'।

सुबुक–वि॰ (फा॰) हलका; नाजुक; तेज, चुस्त; * सुंदर। **–दस्त**–वि॰ फुरतीसे काम करनेवाला, लघुहस्त। **–दस्ती**–स्त्री॰ हाथकी फुरती, हस्त-लाघव। **–दोश**–वि॰ जिसके कंधेसे बोझ उतर गया हो, भारमुक्त; ऋण, कर्तव्य-भार आदिसे मुक्त, निश्चिंत। **–दोशी**–स्त्री॰ हलका-फुलका, भारमुक्त होना। **–रंदा**–पु॰ एक औजार जिससे बरतनोंकी कोर छीलते हैं। **–रफ्तार**–वि॰ तेज चलनेवाला, द्रुतगामी। मु॰ **– होना**–हलका होना, लज्जित होना; हेठी होना।

सुबुकी–स्त्री॰ हल्कापन; तेजी; हेठी, अप्रतिष्ठा।

सुबुद्धि–स्त्री॰ (सं॰) अच्छी, सुंदर बुद्धि। वि॰ अच्छी बुद्धिवाला, बुद्धिमान्।

सुबू–स्त्री॰ दे॰ 'सुबह'। पु॰ (फा॰) घड़ा, मटका; शराबका मटका। **–चा**–पु॰ छोटा मटका।

सुबूत–पु॰ (अ॰) प्रमाण; साक्ष्यसे सिद्धि।

सुबूह–वि॰ (अ॰) अत्यन्त पवित्र; ईश्वर।

सुबोध–वि॰ (सं॰) जो सहजमें समझ में आजाय, आसान। पु॰ सुंदर ज्ञान।

सुब्रह्मण्य–पु॰ (सं॰) कार्त्तिकेय; शिव; विष्णु; उद्गाताके तीन सहायकोंमेंसे एक; दक्षिण भारतका एक जिला। **–क्षेत्र,–तीर्थ**–पु॰ दक्षिण कनाड़ा जिलेमें अवस्थित एक तीर्थ।

सुब्रह्मवासुदेव–पु॰ (सं॰) ब्रह्मरूप वसुदेव-पुत्र, कृष्ण।

सुब्ह–स्त्री॰ (अ॰) सुबह, सबेरा, भोर। **–ख़ेज़**–वि॰ सबेरे उठनेका अभ्यासी। **–गाह,–दम**–अ॰ तड़के, बहुत सबेरे। **––(ब्हे)काज़िब**–स्त्री॰ भोरका वह उजाला जिसके बाद, कुछ देरके लिए, फिर अँधेरा हो जाता है। **–पीरी**–स्त्री॰ बुढ़ापेका आरंभ। **–बनारस**–स्त्री॰ बनारसका सबेरा (काशीमें सबेरे घाटोंपर, खासकर स्त्रियोंके स्नानार्थ जानेसे अधिक चहल-पहल होती है)। **–सादिक़**–स्त्री॰ सूर्योदयसे पहले पूर्वीय क्षितिजपर उदित होनेवाला प्रकाश; उषःकाल; सच्चा सबेरा।

सुब्हान–अ॰ (अ॰) खुदाको पवित्रतासे याद करना; पाक परमेश्वर। **–अल्लाह**–पाक है अल्लाह; पाकीसे याद करता हूँ अल्लाहको; धन्य है ईश्वर। (किसी अद्भुत, अनूठी या अति सुंदर वस्तुको देखकर सराहनाके भावमें बोलते हैं। बोल-चालमें अधिकतर 'सुभान' और 'सुभान अल्ला' बोलते हैं)। **–तेरी-कुद्रत**–धन्य है तेरी कुद्रतको (तीतरकी बोलीका अनुकरण; आश्चर्य प्रकट करनेके लिए या व्यंग्यमें बोलते हैं)।

सुब्हानी–वि॰ ईश्वरीय।

सुभंग–वि॰ (सं॰) जो आसानीसे टूट जाय, तुनुक। पु॰ नारियल-का पेड़।

सुभंत*–वि॰ शोभित।

सुभ–पु॰ (सं॰) शुभ ग्रह। * वि॰ दे॰ 'शुभ'।

सुभक्ष्य–पु॰ (सं॰) बढ़िया भोजन।

सुभग–वि॰ (सं॰) भाग्यवान्; सुंदर; प्रिय; नाजुक; पतला; उपयुक्त। पु॰ शिव; सोहागा; चंपा; अशोक; लाल कटसरैया; शिलापुष्प; गंधपाषाण; सुबलका एक पुत्र; सौभाग्य; सौभाग्य-जनक कर्म (जै॰)। **–मानी(निन्)**–वि॰ अपनेको सुंदर या भाग्यशाली माननेवाला।

सुभगता–स्त्री॰ (सं॰) सुभग होनेकी स्थिति, गुण या भाव; सौभाग्यसूचक लक्षण; स्नेह, प्रेम।

सुभगम्मन्य–वि॰ (सं॰) दे॰ 'सुभगमानी'।

सुभगा–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) सुंदरी; सुहागिन; सुशीला स्त्री (प्रायः संबोधनमें)। स्त्री॰ पतिप्रिया, पतिकी प्यारी स्त्री; (दुर्गाके प्रतीकके रूपमें पूजी जानेवाली) पंचवर्षीया कुमारी; एक रागिनी; हल्दी; कस्तूरी; वनमाल्लिका; स्कंदकी एक मातृका; कैवर्ती; शालपर्णी; नील दूर्वा; तुलसी; प्रियंगु; सुवर्णकदली। **–तनय,–सुत**–पु॰ पतिकी प्यारी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र।

सुभगानंदनाथ–पु॰ (सं॰) एक भैरव (तं॰)।

सुभगाह्वया–स्त्री॰ (सं॰) कैवर्ती; हरिद्रा; तुलसी; नील दूर्वा; सुवर्णकदली; सरिवन।

सुभग्ग*–वि॰ दे॰ 'सुभग'।

सुभट–पु॰ (सं॰) रणकुशल योद्धा।

सुभटवंत*–पु॰ दे॰ 'सुभट'।

सुभट्ट–पु॰ नामी योद्धा; (सं॰) बहुत बड़ा पंडित।

सुभद्र–वि॰ (सं॰) अति शुभ, अति मांगलिक। पु॰ विष्णु; सनत्कुमार; वसुदेवका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; इध्मजिह्वका एक पुत्र; एक पर्वत; सुभद्र द्वारा शासित प्लक्षद्वीपका एक वर्ष; कल्याण; सौभाग्य।

सुभद्रक–पु॰ (सं॰) देवरथ (जिसपर मूर्तिका जुलूस निकालते हैं); बेलका वृक्ष; एक वृत्त।

सुभद्रा–स्त्री॰ (सं॰) कृष्णकी बहिन जिसे अर्जुनने हरण करके ब्याह किया और जिससे अभिमन्युकी उत्पत्ति हुई; संगीतकी एक श्रुति; एक पीठस्था देवी; बलिकी एक पुत्री; अनिरुद्धकी पत्नी; एक पुराणोक्त गौ; सरिवन; गंभारी; घृतमंडा। **–पूर्वज**–पु॰ कृष्ण।

सुभद्राणी–स्त्री॰ (सं॰) त्रायमाणा लता।

सुभद्रिका–स्त्री॰ (सं॰) कृष्णकी छोटी बहिन; एक वर्णवृत्त; वेश्या; त्रायमाणा लता।

सुभद्रेश–पु॰ (सं॰) अर्जुन।

सुभर–वि॰ (सं॰) घना; प्रचुर; जिसका आसानीसे वहन या प्रयोग किया जा सके; अच्छी तरह अभ्यस्त; सुपोष; अच्छी तरह भरा हुआ, सुपुट–'सिर औ पायँ सुभर गिउ छोटी'–प॰; * शुभ्र–'मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहि'–कबीर।

सुभव–पु॰ (सं॰) ६० संवत्सरोंमेंसे अंतिम; इक्ष्वाकुवंशका एक राजा। वि॰ उत्तमजन्मा।

सुभांजन–पु॰ (सं॰) सहिजन।

सुभा–स्त्री॰ अमृत; शोभा, छवि; हड़; परस्त्री।

सुभाइ*–पु॰ दे॰ 'स्वभाव'। * अ॰ दे॰ 'स्वभावतः'।

सुभाउ*–पु॰ दे॰ 'स्वभाव'।

सुभाग–वि॰ (सं॰) भाग्यवान्; धनी (वै॰)। * पु॰ सौभाग्य।

सुभागी–वि॰ भाग्यवान्।

सुभागीन*–वि॰ सौभाग्यशाली।

सुभाग्य–वि॰ अति भाग्यशाली। * पु॰ दे॰ 'सौभाग्य'।

सुभान–अ॰ दे॰ 'सुब्हान'। **–अल्ला**–दे॰ 'सुब्हान अल्लाह'।

सुभाना*–अ॰ क्रि॰ सुहाना, शोभित होना।

सुभानु–वि॰ (सं॰) सुंदर दीप्तियुक्त। पु॰ कृष्णका एक पुत्र; सतरहवाँ संवत्सर।

सुभाय*–पु॰ दे॰ 'स्वभाव'।

सुभायक*–वि॰ दे॰ 'स्वाभाविक'।

सुभाव*–पु॰ दे॰ 'स्वभाव'।

सुभावित–वि॰ (सं॰) अच्छी तरह सिक्त, भावित किया हुआ; (औषधि) जिसकी अच्छी तरह भावना की गयी हो।

सुभाषचंद्र वसु–पु॰ 'नेताजी', जन्म २३ जनवरी, १८९७; १९२० में आई॰ सी॰ एस॰ के पदसे इस्तीफा देकर आप असहयोग आंदोलनमें सम्मिलित हो गये। ब्रिटिश सरकार आपसे बहुत भय खाती थी। इसीसे आपको ११ बार जेलकी हवा खानी पड़ी। द्वितीय महासमरके समय आप वेश बदलकर देशके बाहर चले गये

और वहाँ आपने भारतकी स्वतंत्रताके लिए 'आजाद-हिंद सेना'का संघटन किया। 'दिल्ली चलो' आपका नारा था। जापानके पतनके वाद सन् १९४५ में विमान-दुर्घटनामें आपकी मृत्यु हुई।

सुभाषण–पु० (सं०) सुंदर भाषण; युयुधानका एक पुत्र।

सुभाषित–वि० (सं०) सुंदर रूपसे कथित; वाग्मी, सुंदर भाषण करनेवाला। पु० सुंदर, कवित्वमय उक्ति, सूक्ति; एक बुद्ध। **–और विनोद**–पु० (विट एंड ह्यूमर) अनोखी वात कहने–विलक्षण उत्तर देने–की क्षमता तथा हास्यप्रियता।

सुभाषी(षिन्)–वि० (सं०) सुंदर भाषण करनेवाला, सुवक्ता; मिष्टभाषी।

सुभास–वि० (सं०) सुंदर भास, दीप्तिवाला। पु० एक दानव; सुधन्वाका एक पुत्र।

सुभास्वर–वि० (सं०) खूब चमकनेवाला, दीप्तिमान्। पु० पितरोंका एक वर्ग।

सुभिक्ष–पु० (सं०) भिक्षा या अन्नकी सुलभता; वह काल जव देशमें अन्नकी वहुतायत हो, भिक्षा सुलभ हो, सुकाल।

सुभिक्षा–स्त्री० (सं०) धातृपुष्पिका, धौका फूल।

सुभी*–वि० स्त्री० शुभकारिणी।

सुभीता–पु० आसानी; सुयोग; अनुकूल अवसर या परिस्थिति; आराम।

सुभीम–वि० (सं०) अति डरावना। (स्त्री० 'सुभीमा')। पु० एक दैत्य।

सुभीमा–स्त्री० (सं०) कृष्णकी एक पत्नी।

सुभीरक, सुभीरव–पु० (सं०) पलाशका पेड़।

सुभीरुक–पु० (सं०) चाँदी।

सुभुज–वि० (सं०) सुंदर भुजाओंवाला।

सुभूता–स्त्री० (सं०) उत्तर दिशा।

सुभूति–स्त्री० (सं०) मंगल; समृद्धि।

सुभूतिक–पु० (सं०) वेलका पेड़।

सुभूम–पु० (सं०) जैनोंके आठवें चक्रवर्ती कार्तवीर्य।

सुभूमि–स्त्री० (सं०) अच्छा स्थान। पु० उग्रसेनका एक पुत्र। **–प**–पु० उग्रसेनका एक पुत्र।

सुभूमिक–पु०, **सुभूमिका**–स्त्री० (सं०) सरस्वती नदीके किनारे अवस्थित एक प्राचीन जनपद।

सुभूषण–वि० (सं०) अच्छी तरह अलंकृत। पु० दे० 'सुभूमिप'।

सुभूषित–वि० (सं०) सुंदर रूपसे भूषित, खूब सजाया, सँवारा हुआ।

सुभृत–वि० (सं०) सुरक्षित; अच्छी तरह दिया हुआ; जिसपर अधिक भार लदा हो।

सुभृश–वि० (सं०) अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

सुभैक्ष–पु० (सं०) अच्छी भिक्षा।

सुभोग्य–वि० (सं०) अच्छी तरह भोगने योग्य।

सुभोज–पु० (सं०) इच्छा भर खाना।

सुभौटी*–स्त्री० शोभा।

सुभौम–पु० (सं०) एक जैन चक्रवर्ती, कार्तवीर्यका पुत्र।

सुभ्र*–वि० दे० 'शुभ्र'।

सुभ्रु, सुभ्रू–वि० (सं०) सुंदर भौंवाला। स्त्री० सुंदरी नारी; स्कंदकी एक मातृका।

सुमंगल–वि० (सं०) अति मंगलकारी, अति शुभ; यज्ञोंसे पूर्ण; सदाचारी। पु० शुभ वस्तु; एक विष।

सुमंगला–स्त्री० (सं०) एक पौराणिक नदी; स्कंदकी एक मातृका; एक अप्सरा; मकड़ा घास।

सुमंगली–स्त्री० कन्यापक्षके पुरोहितको दी जानेवाली सिंदूरदानकी दक्षिणा; नव-विवाहिता वधू।

सुमंगा–स्त्री० (सं०) एक पुराणोक्त नदी।

सुमंत–पु० दे० 'सुमंत्र'।

सुमंतु–पु० (सं०) वेदव्यासका एक शिष्य; जह्नुका एक पुत्र; मैत्रीभाव।

सुमंत्र–पु० (सं०) दशरथका मंत्री और सारथि जो वनको जाते समय रामको रथपर बैठाकर नगरसे वाहर ले गया; बाभ्रव गौतम नामक आचार्य; अंतरीक्षका एक पुत्र; अर्थमंत्री; सुंदर मंत्र, अच्छी सलाह; दे० 'सुमंत्रक'। वि० अच्छी सलाह माननेवाला। **–ज्ञ**–वि० धर्मग्रंथोंका अच्छा ज्ञान रखनेवाला।

सुमंत्रक–पु० (सं०) कल्किका वड़ा भाई।

सुमंत्रित–वि० (सं०) जिसे अच्छी सलाह दी गयी हो; जिसकी योजना बुद्धिमत्तापूर्वक बनायी गयी हो। पु० अच्छी सलाह।

सुमंत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) अच्छे मंत्रीवाला।

सुमंथन–पु० मंदराचल।

सुमंद–वि० (सं०) वहुत सुस्त। **–बुद्धि**–वि० मंद बुद्धिवाला; हतोत्साह।

सुमंदर†–पु० दे० 'सुमंद्र'।

सुमंदा–स्त्री० (सं०) शक्तिविशेष।

सुमंद्र–पु० (सं०) वर्णवृत्तविशेष।

सुम–पु० (सं०) फूल–'गुरु समीप सुम दोन दोउ धरि पद कियो प्रनाम'–रघुराज; चंद्रमा; आकाश; कपूर; (फा०) घोड़े या गधेका खुर जो बीचसे फटा नहीं होता। **–खारा**–पु० वह घोड़ा जिसकी एक आँखकी पुतली खराव हो गयी हो। **–तराश**–पुं० घोड़ेके खुर काटनेका औजार। **–फटा**–पु० घोड़ोंके खुरमें होनेवाला एक रोग। **–सुखड़ा**–वि० जिसका खुर सूख गया हो (घोड़ा)। पु० खुर सूखनेका रोग।

सुमख–वि० (सं०) अच्छे यज्ञोंवाला। पु० आनंदोत्सव।

सुमगधा–स्त्री० (सं०) अनाथपिंडिककी एक कन्या।

सुमणि–वि० (सं०) रत्नालंकृत। पु० स्कंदका एक अनुचर।

सुमत–वि० (सं०) सुंदर ज्ञानसे युक्त। * स्त्री० दे० 'सुमति'।

सुमतिजय–पु० (सं०) विष्णु।

सुमति–वि० (सं०) बहुत चतुर। स्त्री० अच्छी बुद्धि या स्वभाव, उदाराशयता; सद्भाव; देवानुग्रह; देन, अनुग्रह; सुरुचि; स्तुति; इच्छा; सगरकी पत्नी जो साठ हजार पुत्रोंकी जननी कही जाती है; विष्णुयशाकी पत्नी और कल्किकी माता; क्रतुकी एक कन्या; मेल, एका; मैना। पु० एक दैत्य; एक भार्गव; मनु सावर्णके अंतर्गत एक ऋषि; एक आत्रेय; सूतका एक पुत्र या शिष्य; भरतका एक पुत्र; सोमदत्तका एक पुत्र; सुपार्श्वका एक पुत्र; जनमेजयका एक पुत्र; नृगका एक पुत्र; दृढ़सेनका एक पुत्र; विदूरथका एक पुत्र; गत अवसर्पिणीके तेरहवें या वर्तमानके पाँचवें अर्हत्। **–मेरु**–पु० हलका एक भाग। **–रेणु**–पु० एक नाग।

सुमद–वि० (सं०) मतवाला। पु० रामकी वानरी सेनाका एक नायक।

सुमदन–पु० (सं०) आमका पेड़।

सुमदुम–वि० स्थूलकाय, तोंदवाला, मोटा।

सुमधुर–वि० (सं०) अति मधुर; बहुत नाजुक; सुंदर गानेवाला। पु० जीवशाक; मधुर वचन।

सुमध्यमा, सुमध्या–वि० स्त्री० (सं०) पतली कमरवाली (स्त्री)।

सुमनः–'सुमनस्'का समासगत रूप। **–पत्र**–पु०, **–पत्रिका**–स्त्री० जातीपत्रिका, जावित्री। **–फल**–पु० जातीफल, जायफल; कैथका पेड़।

सुमन–पु० (सं०) गेहूँ; धतूरा; बोधि वृक्षके चार देवताओंमेंसे एक; एक नागदैत्य। वि० मनोहर, सुंदर।

सुमन(स्)–पु० (सं०) पुष्प; * देवता। **–चाप**–पु० (हिं०) कामदेव। **–माल**–पु० (हिं०) पुष्पहार। **–राज***–पु० इंद्र।

सुमनस–पु० देवता; पुष्प। वि० सुंदर मनवाला, प्रसन्न।

सुमनस्क–वि० (सं०) प्रसन्नचित्त।

सुमना–स्त्री० (सं०) चमेली; सेवती; कबरी गाय; धर्मकी पत्नी; केकय नरेशकी कन्या; कैकेयी।

सुमना(नस्)–पु० (सं०) देवता; नेक आदमी; गेहूँ; करंजका एक भेद, पूतिकरंज; ब्रह्मचारी; निंब; एक दानव; हर्यश्वका एक पुत्र; एक पर्वत; वृक्ष। वि० उदाराशय; संतुष्ट।

सुमनामुख–वि० (सं०) प्रसन्नवदन।

सुमनास्य–पु० (सं०) एक नागदैत्य।

सुमनित*–वि० सुंदर मणि या मणियोंसे युक्त।

सुमनोकस, सुमनौकस–पु० (सं०) स्वर्ग ।

सुमनोज्ञघोष–पु० (सं०) एक बुद्ध ।

सुमनोदाम(न्)–पु० (सं०) पुष्पहार ।

सुमनोभर–वि० (सं०) पुष्पालंकृत ।

सुमनोमुख–पु० (सं०) एक नागदैत्य ।

सुमनोरज(स्)–स्त्री० (सं०) पराग ।

सुमन्यु–वि० (सं०) अतिक्रोधी । पु० एक देवगंधर्व ।

सुमर–पु० (सं०) वायु; सरल मृत्यु ।

सुमरन*–पु० दे० 'स्मरण' । स्त्री० सुमरनी ।

सुमरना*–स० क्रि० स्मरण करना, ध्यान करना; जपना ।

सुमरनी–स्त्री० छोटी जपमाला; एक दानेदार गहना ।

सुमरीचिका–स्त्री० (सं०) सांख्यमें मानी हुई पाँच बाह्य तुष्टियोंमेंसे एक ।

सुमर्मग–वि० (सं०) मर्मांगतक घुस जानेवाला (बाण) ।

सुमल्लिक–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद ।

सुमहाकपि–पु० (सं०) एक दैत्य ।

सुमहात्यय–वि० (सं०) बहुत ज्यादा बरबादी करनेवाला ।

सुमात्रा–पु० मलयद्वीपपुंजके अंतर्गत एक द्वीप ।

सुमानस–वि० (सं०) अच्छे मनवाला, नेकमिजाज ।

सुमानिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

सुमानी(निन्)–वि० (सं०) बहुत अभिमान करनेवाला, स्वाभिमानी ।

सुमान्य–वि० (सं०) विशेषरूपसे मान्य, प्रतिष्ठित । पु० कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े नगरोंके विशिष्ट अधिकारप्राप्त सम्मानित व्यक्ति, शेरिफ़ ।

सुमाय–वि० (सं०) बहुत चतुर; मायायुक्त । पु० असुरोंका एक राजा; एक विद्याधर ।

सुमार†–पु० दे० 'शुमार' । * वि० चुना हुआ ।

सुमार्ग–पु० (सं०) अच्छी राह, सुपथ ।

सुमात्स्नं–वि० (सं०) बहुत छोटा; बारीक ।

सुमाल–पु० (सं०) प्राचीन कालका एक जनपद ।

सुमालिनी–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; एक गंधर्वी ।

सुमाली–पु० अफ्रीकाके पूर्वी किनारेपर बसनेवाली एक अरब जाति । **–लैंड**–पु० अफ्रीकाके पूर्वी किनारेपर (अबीसिनियाके पूरब) अवस्थित एक देश ।

सुमाली(लिन्)–पु० (सं०) एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसीके गर्भसे रावण, कुंभकर्ण आदिकी उत्पत्ति हुई; एक वानर ।

सुमाल्यक–पु० (सं०) एक पुराणोक्त पर्वत ।

सुमावलि–स्त्री० (सं०) फूलोंका हार ।

सुमित्र–पु० (सं०) अच्छा दोस्त, सन्मित्र; कृष्णका एक पुत्र; सौराष्ट्रका एक राजा जिससे टाडके कथनानुसार मेवाड़के राणावंशकी उत्पत्ति हुई; इक्ष्वाकु-वंशके अंतिम राजा सुरथका पुत्र; एक मिथिला-नरेश; एक मगध-नरेश; गदका एक पुत्र; एक दानव । वि० अच्छे मित्रोंवाला । **–भू**–पु० वर्तमान अवसर्पिणीके २० वें अर्हत् (जै०); सगरका एक नाम (चक्रवर्तीके रूपमें) ।

सुमित्रा–स्त्री० (सं०) दशरथकी मँझली रानी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थीं; मार्कंडेयकी माता; एक यक्षिणी । **–तनय,–नंदन,–भू**–पु० लक्ष्मण और शत्रुघ्न ।

सुमित्रानंदन पंत–पु० (जन्म सं० १९५७) खड़ीबोलीके विशेष अध्ययनशील एवं स्वतंत्र चिंतनवाले कवि जिन्हें प्रकृतिके सूक्ष्म व्यापारोंका अच्छा ज्ञान है । पल्लव, वीणा, गुंजन आदि काव्य तथा परी, क्रीडा, ज्योत्स्ना आदि नाटक भी लिखे हैं । आपको 'चिदम्बरा'पर १ लाख रुपयेका ज्ञानपीठका सर्वोच्च पुरस्कार मिला है ।

सुमित्र्य–वि० (सं०) अच्छे मित्रोंवाला (वै०) ।

सुमिरन†–पु० दे० 'स्मरण' ।

सुमिरना–स० क्रि० दे० 'सुमरना' ।

सुमिरनिया*–स्त्री० दे० 'सुमरनी' ।

सुमिरनी–स्त्री० दे० 'सुमरनी' ।

सुमुख–वि० (सं०) सुंदर मुखवाला; सुंदर, मनोज्ञ; प्रसन्न; कृपालु; अच्छी नोकवाला (जैसे बाण); अच्छे द्वारवाला । पु० सुंदर मुख; शिव; गणेश; गरुड़का एक पुत्र; द्रोणका एक पुत्र; विद्वान् व्यक्ति; एक नागदैत्य; एक ऋषि; एक वानर; एक पक्षी; एक शाक; वनबर्बरी; सफेद तुलसी; राई; नखक्षत; भवनका एक प्रकार । **–सू**–पु० गरुड़ ।

सुमुखा–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर मुखवाली । स्त्री० सुंदरी स्त्री ।

सुमुखी–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर मुखवाली । स्त्री० सुंदरी स्त्री; आईना; एक मूर्च्छना (संगीत); एक वृत्त; एक अप्सरा; शंखपुष्पी; नील अपराजिता ।

सुमुष्टि, सुमुष्टिका–स्त्री० (सं०) विषमुष्टि नामक क्षुप, बकायन ।

सुमूर्ति–पु० (सं०) शिवका एक गण ।

सुमूल–पु० (सं०) अच्छा मूल; सफेद सहिजन । वि० अच्छी, मजबूत जड़वाला ।

सुमूलक–पु० (सं०) गाजर ।

सुमूला–स्त्री० (सं०) शालपर्णी; पृश्निपर्णी ।

सुमृग–पु० (सं०) यह स्थान जहाँ शिकारवाले जानवरोंकी अधिकता हो ।

सुमृत, सुमृति*–स्त्री० दे० 'स्मृति' ।

सुमेखल–पु० (सं०) मूँज । वि० सुंदर मेखलायुक्त ।

सुमेघ–पु० (सं०) एक पर्वत ।

सुमेध*–वि० दे० 'सुमेधा' ।

सुमेधा–स्त्री० (सं०) ज्योतिष्मती, मालकँगनी ।

सुमेधा(धस्)–वि० (सं०) सुंदर मेधा, बुद्धिवाला, सुबुद्धि । पु० पितरोंका एक गण; चाक्षुष मन्वंतरके एक ऋषि; पाँचवें मन्वंतरका एक देववर्ग ।

सुमेर–पु० गंगाजल रखनेका पात्र; दे० 'सुमेरु' ।

सुमेरु–पु० (सं०) एक पर्वत जो पुराणोंके अनुसार इलावृत-वर्षमें अवस्थित है और सोनेका बना हुआ है, स्वर्णगिरि; उत्तर ध्रुव; जपमालाके बीचका बड़ा दाना; एक वर्णवृत्त; शिव; एक विद्याधर । वि० अत्युच्च; उत्तम । **–जा**–स्त्री० सुमेरुसे निकलनेवाली एक नदी । **–वृत्त**–पु० उत्तरी ध्रुवसे २३॥ अक्षांशपर स्थित रेखा । **–समुद्र**–पु० उत्तर सागर ।

सुम्ह–पु० दे० 'सुह्म' ।

सुम्मी†–स्त्री० सुनारोंका एक औजार ।

सुयं*–अ० दे० 'स्वयम्' । **–बर***–पु० दे० 'स्वयंवर' ।

सुयंत्रित–वि० (सं०) सुबद्ध; सुशासित; संयत; आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय ।

सुयज्ञ–पु० (सं०) रुचि प्रजापतिका एक पुत्र; ध्रुवका एक पुत्र; सुंदर, उत्तम यज्ञ; वसिष्ठका एक पुत्र; उशीनरोंका एक राजा । वि० सुंदर, सफल यज्ञ करनेवाला ।

सुयज्ञा–स्त्री० (सं०) प्रसेनजितके एक वंशज, महाभौमकी पत्नी ।

सुयत–वि० (सं०) सुनियंत्रित; संयत; आत्मनिग्रही ।

सुयम–पु० (सं०) देवताओंका एक गण ।

सुयमा–स्त्री० (सं०) प्रियंगु लता ।

सुयवस–पु० (सं०) अच्छी घास; अच्छा चरागाह ।

सुयश(स्)–पु० (सं०) सुंदर यश, सुकीर्ति ।

सुयशा–स्त्री० (सं०) दिवोदासकी पत्नी; परीक्षित्की एक पत्नी ।

सुयशा(शस्)–वि० (सं०) सुंदर यशवाला ।

सुयष्टव्य–पु० (सं०) मनु रैवतका एक पुत्र ।

सुयाति–पु० (सं०) नहुषका एक पुत्र ।

सुयाम–पु० (सं०) एक देवपुत्र; एक देवगण ।

सुयामुन–पु० (सं०) राजप्रासाद; एक तरहका बादल; विष्णु; एक नरेश; एक पर्वत ।

सुयुक्ति–स्त्री० (सं०) सुंदर युक्ति, अच्छी दलील, अच्छा उपाय ।

सुयुद्ध–पु० (सं०) अच्छी तरह लड़ा हुआ युद्ध ; धर्मयुद्ध ।

सुयोग–पु० (सं०) सुंदर योग; बढ़िया मौका ।

सुयोग्य–वि० (सं०) अति योग्य, बहुत लायक; कुशल ।

सुयोधन–पु० (सं०) दुर्योधन ।

सुरंग–वि० (सं०) सुंदर रंगवाला, खुशरंग; सुंदर । पु० सुंदर

रंग; शिंगरफ; नारंगी; वक्कम, पतंग। स्त्री० सेंध; मकानके नीचे खोदकर बनाया हुआ गुप्त मार्ग (टनेल); जमीनके नीचे खोदकर बनायी हुई नाली जिसमें बारूद बिछाकर किलेकी दीवार, चट्टान आदि उड़ाते हैं (आ०)। –द–पु० पतंग, वक्कम। –धातु–स्त्री० गेरू। –धूलि–स्त्री० नारंगीका पराग। –युक्(ज्)–पु० सेंध मारनेवाला।

सुरंग–स्त्री० जमीन या समुद्रमें रखा जानेवाला बारूद आदिसे भरा गोला जिसका स्पर्श होनेपर विस्फोट होता है और जहाज आदि नष्ट हो जाते हैं (माइन)। वि० लाल रंगका–'सुरंग गुलाल कदम औ कूजा'–प०; * सरस; स्वच्छ। पु० लाल या लाखी रंगका घोड़ा। –प्रसारकपोत –पु० (माइनलेयर) आक्रमणकारी शत्रुके जहाजोंको रोकनेके लिए समुद्रमें बारूदकी सुरंगें बिछानेवाला पोत। –बुहार,–मार्जक(–हारक)पोत–पु० (माइन-स्वीपर) समुद्रमें बिछायी गयी बारूदसे भरी सुरंगोंको हटाने, दूर करनेवाला जहाज।

सुरंगा–स्त्री० (सं०) कैवर्तिका; सेंध।

सुरंगिका–स्त्री० (सं०) पोईका साग; सफेद मकोय; मूर्वा; छोटी सुरंग; जल, तेल आदि तरल पदार्थोंको दूरतक ले जानेवाली नाली (एक्केडक्ट); शरीरस्थ छोटी नली या नस।

सुरंगी–स्त्री० (सं०) कौआठोंठी; सुलताना चंपा; आलका पेड़; लाल सहिजन।

सुरंजन–पु० (सं०) सुपारीका पेड़।

सुरंधक, सुरंध्र–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सुर–पु० (सं०) देवता; देवमूर्ति; सूर्य; मुनि; पंडित; ३३ की संख्या। –कंत*–पु० इंद्र। –करींद्रदर्पापहा–स्त्री० गंगा। –करी(रिन्)–पु० देवताओंका हाथी, ऐरावत। –कानन–पु० देवोद्यान। –कामिनी–स्त्री० अप्सरा। –कारु–पु० देवताओंके शिल्पी, विश्वकर्मा। –कार्मुक–पु० इंद्रधनुष्। –कार्य–पु० देवताओंके निमित्त किया जानेवाला कार्य। –काष्ठ–पु० देवदारु। –कुल–पु० देवमंदिर। –कृत–वि० देवताओंका किया हुआ। –कृता–स्त्री० गुडुची। –कृत्–पु० विश्वामित्रका एक पुत्र। –केतु–पु० इंद्रकी ध्वजा; इंद्र। –खंडनिका–स्त्री० एक तरहकी वीणा। –गंड–पु० एक तरहका फोड़ा। –गज–पु० ऐरावत। –गण–पु० देवसमूह। –गति–स्त्री० देवताके रूपमें जन्म लेना; दैवीगति। –गर्भ–पु० देव-संतान। –गाय–स्त्री० (हिं०) कामधेनु। –गायक,–गायन–पु० गंधर्व। –गिरि–पु० मेरु। –गुरु–पु० बृहस्पति; बृहस्पति ग्रह। –०दिवस–पु० बृहस्पतिवार। –गृह–पु० दे० 'सुरकुल'। –गैया*–स्त्री० कामधेनु। –ग्रामणी–पु० देवताओंके नेता, इंद्र। –चाप–पु० इंद्रधनुष्। –जन–पु० देववर्ग; दे० क्रममें। –ज्येष्ठ–पु० ब्रह्मा। –तरंगिणी–स्त्री० गंगा नदी। –तरु–पु० कल्प वृक्ष। –तात–पु० कश्यप; इंद्र। –तुंग–पु० सुरपुन्नाग। –तोषक–पु० कौस्तुभ मणि। वि० देवताओंको प्रसन्न करनेवाला। –त्राण,–त्राता(तृ)–पु० विष्णु; इंद्र; श्रीकृष्ण। –दारु–पु० देवदारु। –दीर्घिका–स्त्री० आकाशगंगा। –दुंदुभी–स्त्री० देवपटह; तुलसी। –देवी–स्त्री० योगमाया। –दोखी*–पु० दे० 'सुरद्विट्'। –द्रु–पु० सुरवृक्ष। –द्रुम–पु० कल्पवृक्ष; देवनल, बड़ा नरसल; देवदारु। –द्विट्(ष्)–पु० सुरद्वेषी, असुर; राहु। –द्विप–पु० देवहस्ती; ऐरावत; एक दिग्गज। –धनु(स्)–पु० इंद्रधनुष्। –धाम(न्)–पु० स्वर्ग। (मु० –० सिधारना–मर जाना)। –धुनी–स्त्री० गंगा। –धूप–पु० राल। –धेनु–स्त्री० कामधेनु। –ध्वज–पु० इंद्रध्वज। –नंदा–स्त्री० एक नदी। –नगर–पु० स्वर्ग। –नदी–स्त्री० गंगा। –नाथ, –नायक–पु० इंद्र। –नारी–स्त्री० देवांगना; देववधू। –नाल–पु० एक तरहका बड़ा नरसल। –नाह*–पु० दे० 'सुरनाथ'। –निम्नगा–स्त्री० गंगा। –निर्गंध–पु० तेजपत्र। –निर्झरिणी–स्त्री० आकाशगंगा। –निलय–पु० मेरु पर्वत। –प*–पु० दे० 'सुरपति'। –पति–पु० इंद्र; शिव। –०गुरु–पु० बृहस्पति। –०चाप–पु० इंद्रधनुष्। –०तनय–पु० अर्जुन; जयंत। –पथ–पु० आकाश, छायापथ। –पन–पु० (हिं०) सुरपुन्नाग। –पर्ण–पु० एक साग, माचीपर्ण, देवपर्ण। –पर्णिक–पु० सुरपुन्नाग। –पर्णिका–स्त्री० पुन्नाग। –पर्णी–स्त्री० पलाशी। –पर्वत–पु० मेरु पर्वत। –पांसुला–स्त्री० अप्सरा। –पादप–पु० कल्प वृक्ष। –पाल,–पालक–पु० इंद्र। –पुन्नाग–पु० एक तरहका पुन्नाग। –पुर–पु० अमरावती; स्वर्ग। –०केतु–पु० इंद्र। –पुरी–स्त्री० अमरावती। – पुरोधा(धस्)–पु० बृहस्पति। –पुष्प–पु० स्वर्गीय पुष्प। –पौरी–स्त्री० राजप्रासादका प्रथम द्वार। –प्रतिष्ठा–स्त्री० देवप्रतिमाकी स्थापना। –प्रवीर–पु० एक अग्नि। –प्रिय– पु० इंद्र; बृहस्पति; अगस्त्य वृक्ष; एक पक्षी; एक पर्वत। वि० जो देवताओंको प्रिय हो। –प्रिया–स्त्री० जाती, चमेली; स्वर्णकदली; अप्सरा। –बाला–स्त्री० देवांगना। –बृच्छ*– पु० दे० 'सुरवृक्ष'। –बेल–स्त्री० (हिं०) कल्प लता। –भवन–पु० देवमंदिर; सुरनिवास, अमरावती। –भान*–पु० इंद्र; सूर्य। –भिषक्(ज्)–पु० अश्विनीकुमार। –भी–स्त्री० देवताका भय; दे० क्रममें। –भूप–पु० (हिं०) इंद्र; विष्णु। –भूय–पु० देवत्व प्राप्त होना। –भूरुह–पु० देवदारु; कल्प वृक्ष। –भूषण–पु० १००८ दानोंका चार हाथ लंबा मुक्ताहार। –भोग–पु० देवताओंका भोग्य, अमृत। –भौन*–पु० दे० 'सुर-भवन'। –मंडल–पु० देवमण्डल; एक बाजा। –मंडलिका–स्त्री० दे० 'सुरखंडनिका'। –मंत्री(त्रिन्)–पु० बृहस्पति। –मंदिर–पु० देवताका मंदिर, देवालय। –मणि–पु० चिंतामणि। –मृत्तिका–स्त्री० गोपीचंदन। –मेदा–स्त्री० महामेदा। –मौर*–पु० विष्णु। –यान–पु० देवरथ। –युवति,–योषित्–स्त्री० अप्सरा। –राइ*–पु० इंद्र; विष्णु। –राज–पु० इंद्र। –०गुरु, –०मंत्री(त्रिन्)–पु० बृहस्पति। –०वृक्ष–पु० पारिजात। –०शरासन–पु० इंद्रधनुष्। –राट्(ज्)–पु० दे० 'सुरराज'। –राय,–राव*–पु० दे० 'सुरराज'। –रिपु–पु० देवशत्रु, राक्षस, दानव। –रूख*–पु० कल्प वृक्ष। –लता–स्त्री० महाज्योतिष्मती लता। –ला–स्त्री० गंगा; एक नदी। –लासिका–स्त्री० वंशी। –लोक–पु० स्वर्ग, देवलोक। –०राज्य–पु० देवलोकका राज्य। –०सुंदरी–स्त्री० अप्सरा; दुर्गा। –वधू–स्त्री० देवांगना। –वन–पु० देवोद्यान। –वर–पु० इंद्र। –वर्त्म(न्)–पु० आकाश। –वल्लभा–स्त्री० सफेद दूब। –वल्ली–स्त्री० तुलसी। –वाणी–स्त्री० देववाणी; संस्कृत। –वास–पु० स्वर्ग। –वाहिनी–स्त्री० आकाश-गंगा। –विटप,–वृक्ष–पु० कल्प वृक्ष। –विद्विट्(ष्),–वैरी(रिन्)–पु० (देवताओंके शत्रु) असुर। –विलासिनी–स्त्री० अप्सरा। –वीथी–स्त्री० नक्षत्रवीथी, नक्षत्रोंका मार्ग। –वीर*–पु० इंद्र। –वेला–स्त्री० एक नदी। –वेश्म(न्)–पु० स्वर्ग; देवालय। –वैद्य–पु० अश्विनीकुमार। –शत्रु–पु० असुर। –०हा(हन्)–पु० शिव। –शयनी–स्त्री० विष्णु-शयनी एकादशी। –शाखी(खिन्)–पु० कल्प वृक्ष। –शिल्पी(ल्पिन्)–पु० विश्वकर्मा। –श्रेष्ठ–पु० वह जो देवताओंमें श्रेष्ठ हो; विष्णु; शिव; गणेश; इंद्र; धर्म। –श्रेष्ठा–स्त्री० ब्राह्मी। –श्वेता–स्त्री० एक तरहकी सफेद छोटी छिपकली; बभनी (?)। –संघ–पु० देवमंडली। –संभवा–स्त्री० आदित्यभक्ता, हुरहुर। –सख–पु० इंद्र; गंधर्व। –सत–स्त्री० सरस्वती। –सत्तम–पु० देवताओंमें श्रेष्ठ, विष्णु। –सदन, सद्म(न्)–पु० स्वर्ग; देवालय। –समिति–स्त्री० देवमंडली। –समिध्–स्त्री० देवदारु। –सर–पु० मानसरोवर। * स्त्री० दे० 'सुरसरि'। –०सुता–स्त्री० सरयू नदी। –सरि,–सरी*–स्त्री० गंगा; गोदावरी। –सरिता–स्त्री० (हिं०) दे० 'सुरसरित्'। –सरित्–स्त्री० गंगा। –०सुत–पु० भीष्म। –सर्षपक–पु० देवसर्षप। –साईं*–पु० इंद्र; विष्णु; शिव। –सागर–पु० एक तार वाद्य। –साल*–वि० देवताओंको सालनेवाला, सुरपीड़क। –साहब*–पु० देवताओंके स्वामी, विष्णु; इंद्र। –सिंधु–स्त्री० गंगा, मंदाकिनी; एक राग। –सुंदर–पु० सुंदर देवता। वि० देवता जैसा सुंदर। –सुंदरी–स्त्री० अप्सरा; दुर्गा; एक योगिनी। –सुरभी–स्त्री० कामधेनु। –सेनप–पु० देवताओंके सेनापति,

कार्त्तिकेय। –**सेना**–स्त्री० देवताओंकी सेना। –**सैयाँ***–पु० दे० 'सुरसाईं'। –**सैनी***–स्त्री० दे० 'सुरशयनी'। –**स्कंध**–पु० एक दानव। –**स्त्री**–स्त्री० अप्सरा। –**स्थान**–पु० देवलोक। –**स्रवंती**–स्त्री० आकाशगंगा। –**स्रोतस्विनी**–स्त्री० गंगा। –**स्वामी(मिन्)**–पु० इंद्र; विष्णु; शिव।

सुर–पु० स्वर, आवाज। –**कली**–स्त्री० एक रागिनी। –**कुदाव***–पु० स्वर-परिवर्तन द्वारा धोखा देना। –**टीप**–स्त्री० स्वरालाप। –**तान**–स्वरका आलाप; दे० क्रममें। –**ताल**–पु० स्वर और ताल। –**दार**–वि० सुरीला। –**फाँकताल**–पु० तालका एक प्रकार। –**बहार**–पु० सितार जैसा एक बाजा। –**भंग**–पु० दे० 'स्वरभंग'। –**सिंगार**–पु० एक बाजा। **मु०** –**मिलाना**–आवाज मिलाना; स्वरोंका मेल करना।

सुरअ़त–स्त्री० (अ०) तेजी, फुरती; जल्दी।

सुरक–पु० नाकपर बनाया हुआ भालेकी शक्लका तिलक। स्त्री० दे० 'सुड़क'।

सुरकना–स० क्रि० दे० 'सुड़कना'।

सुरक्त–वि० (सं०) गाढ़ा रँगा हुआ; गाढ़ा लाल; बहुत प्रभावित; अनुरक्त; बहुत सुंदर।

सुरक्तक–पु० (सं०) सोनगेरू; कोशम; एक प्रकारका आम।

सुरक्ष–पु० (सं०) एक मुनि; एक पर्वत।

सुरक्षण–पु० (सं०) सम्यक् रक्षण।

सुरक्षा–स्त्री० (सं०) सम्यक्, समुचित रक्षा (सिक्यूरिटी)। –**परिषद्**–स्त्री० (सिक्यूरिटी काउंसिल) संयुक्त राष्ट्रसंघकी कार्यपालिका परिषद् जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस तथा चीन–इन देशोंके पाँच स्थायी सदस्य और अन्य राष्ट्रोंके चार अस्थायी सदस्य लिये जाते हैं। (विश्वशांति संबंधी समस्याएँ मुख्य रूपसे इसीके सामने विचारार्थ उपस्थित की जाती हैं)।

सुरक्षित–वि० (सं०) भली भाँति, अच्छी तरह रक्षित। –**कोष्ठक**–पु० (सेफ्टीवाल्ट) किसी अधिकोष (बैंक)के कोषागारमें कबूतरके दरबेकी तरह बने हुए कोष्ठक, घर या खाने जिनमें ग्राहकोंसे किराया लेकर उनकी बहुमूल्य वस्तुएँ–आभूषण, सोना, रत्नादि–सुरक्षित रखी जाती हैं।

सुरक्षी(क्षिन्)–पु० (सं०) अच्छा रक्षक या अभिभावक।

सुरक्ष्य–वि० (सं०) जिसकी आसानीसे रक्षा की जा सके।

सुरख*–वि० दे० 'सुर्ख़'। –**रू**|–वि० दे० 'सुर्ख़रू'।

सुरखा–वि०, पु० दे० 'सुर्ख़ा'।

सुरख़ाब–पु० दे० 'सुर्ख़ाब'।

सुरखिया–स्त्री० एक चिड़िया जिसका सिर, गरदन और पीठ लाल रंगकी होती है।

सुरखी–स्त्री० दे० 'सुर्ख़ी'।

सुरग*–पु० दे० 'स्वर्ग'।

सुरच्छन*–पु० दे० 'सुरक्षण'।

सुरजःफल–पु० (सं०) कटहल।

सुरज*–पु० सूर्य।

सुरजन*–पु० सुजन, नेक आदमी; दे० 'सुर'में। वि० चतुर।

सुरजा–स्त्री० (सं०) एक नदी; एक अप्सरा।

सुरजा(जस्)–वि० (सं०) परागसे भरा हुआ।

सुरझन*–स्त्री० दे० 'सुलझन'।

सुरझना*–अ० क्रि० दे० 'सुलझना'।

सुरझाना–स० क्रि० दे० 'सुलझाना'।

सुरझावना*–स० क्रि० दे० 'सुलझाना'।

सुरत*–स्त्री० ध्यान, याद। पु० (सं०) संभोग, कामक्रीड़ा। वि० क्रीड़ाशील; अति अनुरक्त। –**केलि**,–**क्रीड़ा**–स्त्री० कामक्रीड़ा। –**गुप्ता**,–**गोपना**–स्त्री० रतिचिह्न छिपानेवाली नायिका। –**ग्लानि**–स्त्री० सुरत-जनित शिथिलता, थकावट। –**ताली**–स्त्री० दूती; सिरमें लपेटनेकी माला। –**प्रसंग**–पु० कामक्रीड़ामें आसक्ति। –**बंध**–पु० एक तरहका रतिबंध। –**भेद**–पु० एक तरहका रतिबंध। –**मृदित**–वि० रतिक्रीड़ामें मसला हुआ। –**रंगी(गिन्)**–वि० कामक्रीड़ामें आसक्त। –**वाररात्रि**–स्त्री० संभोग-रात्रि। –**विशेष**–पु० एक रतिबंध। –**स्थ**–वि० संभोगमें संलग्न। **मु०**–**धरना**,–**लगाना**–किसीकी ओर ध्यान देना। –**बिसारना**–किसीको भूल जाना। –**संभालना**–होश सँभालना।

सुरता–स्त्री० (सं०) देवत्व; सुरसमूह; एक अप्सरा; पत्नी; *ध्यान; होश। पु० समाधि लगानेवाला, ध्यान करनेवाला; श्रोता–'कथता, बकता, सुरता सोई...'–कबीर; खेतमें बीज छिटकनेके लिए बाँसकी नली।

सुरतान–पु० दे० 'सुलतान'; दे० 'सुर' (हिं०) में।

सुरति–स्त्री० (सं०) रति, कामक्रीड़ा, विहार। –**कमल** पु० हठयोगका सहस्रारके ऊपर माना जानेवाला चक्र। –**गोपना**–स्त्री० दे० 'सुरत-गोपना'। –**रव**–पु० रतिक्रीड़ाके समय गहनोंके बजनेकी आवाज। –**विचित्रा**–स्त्री० मध्या नायिकाके चार भेदोंमेंसे एक (अन्य तीन भेद ये हैं—आरूढ़यौवना, प्रादुर्भूत-मनोभवा, प्रगल्भवचना)।

सुरतिवंत*–वि० कामविह्वल।

सुरती–स्त्री० तंबाकूका सुखाया हुआ पत्ता।

सुरत्न–वि० (सं०) अच्छे रत्नोंवाला; सर्वश्रेष्ठ। पु० सुवर्ण; लाल आदि अच्छे रत्न।

सुरथ–पु० (सं०) सुंदर रथ; एक चंद्रवंशीय राजा जिसने लक्षबलि द्वारा दुर्गाकी आराधना की थी; कुशद्वीपके अंतर्गत एक वर्ष; एक पर्वत; द्रुपदका एक पुत्र; जनमेजयका एक पुत्र; अधिरथका एक पुत्र। वि० अच्छे रथवाला, सुंदर रथविशिष्ट।

सुरथा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा; एक पुराणवर्णित नदी।

सुरथाकार–पु० (सं०) एक वर्ष, भूखंड, देश।

सुरबुराना–अ० क्रि० (शब्द बाहर निकालनेके लिए ओठोंका हिलना, 'कुछ कहनेको उसके होंठ सुरबुराये'–टूटे काँटे।

सुरबुली–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़की छालसे रंग बनाते हैं।

सुरभि–वि० (सं०) सुगंधित, खुशबूदार; प्रिय, मनोरम; प्रसिद्ध; बुद्धिमान्, विद्वान्; नेक, धार्मिक; सद्भावपूर्ण। पु० सुगंधित द्रव्य; जायफल; शालनिर्यास, धूना; चंपक वृक्ष; शमी वृक्ष; कदंब वृक्ष; एक सुगंधित तृण, रोहिष तृण; वसंत ऋतु; चैत्र मास; यज्ञस्तूप स्थापित करनेके समय जलायी जानेवाली अग्नि; मौलसिरी; गंधक; सोना; गंधफल; कणगुग्गुल। स्त्री० सुगंधि, सुवास; सल्लकी; स्कंदकी एक मातृका; एक पौराणिक गाय जो गोजातिकी माता मानी जाती है; गाय; पृथ्वी; तुलसी; वनमल्लिका; मदिरा; मुरा; रुद्रजटा; एलवालुक। –**कंदर**–पु० एक पर्वत। –**कांता**–स्त्री० नेवारी। –**गंध**–स्त्री० खुशबू। वि० खुशबूदार। पु० तेजपत्र। –**गंधा**–स्त्री० चमेली। –**गंधि**–वि० खुशबूदार। –**गंधी(धिन्)**–स्त्री० खुशबूदार। –**चूर्ण**–पु० खुशबू मिलाया हुआ चूरा, 'पाउडर'। –**च्छद**–पु० कैथ; सुगंधित जामुन। –**तनय**,–**पुत्र**–पु० बैल। –**तनया**–स्त्री० गाय। –**त्रिफला**–स्त्री० जायफल, सुपारी और लौंग। –**त्वक्(च्)**–पु० बृहदेला, बड़ी इलायची। –**दारु**,–**दारुक**–पु० सरल नामक वृक्ष। –**पत्रा**–स्त्री० जंबु वृक्ष; राजजंबू। –**बाण**–पु० कामदेव। –**मंजरी**–स्त्री० श्वेत तुलसी। –**भक्षण**–पु० हठयोगकी एक क्रिया, खेचरी मुद्रा द्वारा जीभको उलटकर सहस्रारसे निकलनेवाले अमृतका पान। –**मास**–पु० वसंत ऋतु; चैत्र मास। –**मुख**–पु० वसंतका आरंभ। –**वल्कल**–पु० गुडत्वक्, दारचीनी। –**समय**–पु० वसंत ऋतु। –**स्रग्धर**–वि० सुगंधित हार पहननेवाला। **स्रवा**–स्त्री० सल्लकी।

सुरभिका–स्त्री० (सं०) स्वर्णकदली, सोनाकेला।

सुरभित–वि० (सं०) सुगंधित किया हुआ, वासा हुआ; प्रसिद्ध किया हुआ।

सुरभिमान्(मत्)–वि० (सं०) सुगंधियुक्त। पु० अग्नि।

सुरभी–स्त्री० (सं०) खुशबू; गाय; गोमाता; सलई; कौंच; वनतुलसी; रुद्रजटा; मुरामांसी; रास्ना; एलुवा; पोय साग; सुगंधित धान। –**गंध**–पु० तेजपत्र। –**गोत्र**,–**सुत**–पु० बैल; साँड़। –**पट्टन**–पु० एक महाभारतोक्त नगर। –**पत्रा**–स्त्री० राजजंबू। –**पुर**–पु० गोलोक। –**मूत्र**–पु० गोमूत्र। –**रसा**–स्त्री० शल्लकी वृक्ष। –**रुह**–पु० देवदारु।

सुरमई–वि० सुरमेके रंगका, हलका नीला। पु० सुरमेके रंगसे

मिलता-जुलता रंग; इस रंगका कबूतर। स्त्री० हलके काले रंगकी एक चिड़िया। –क़लम–स्त्री० सुरमा लगानेकी सलाई।

सुरमचू–पु० सुरमा लगानेकी सलाई।

सुरमा–पु० (फ़ा०) एक खनिज पदार्थ जिसका बारीक चूर्ण आँखोंमें अंजनके रूपमें लगाया जाता है; अंजन। वि० बहुत बारीक (करना, होनाके साथ)। –कश–वि० सुरमा लगानेवाला। पु० सुरमा लगानेकी सलाई। –दान–पु०,–दानी–स्त्री० सुरमा रखनेकी डिबिया। –सफ़ेद–पु० एक खनिज द्रव्य जो आँखोंकी जलन आदिमें काम आता है। –(मए)सुलैमान या सुलैमानी–पु० वह सुरमा जिसे आँजनेसे (मुसलमानोंके विश्वासानुसार) भूत-प्रेत, गड़ा धन आदि दिखाई देने लगते हैं। –(मे)का डोरा –आँखोंके अंदर खिंची हुई सुरमेकी लकीर। –की क़लम–पेंसिल। मु० –करना,–बनाना–बहुत बारीक करना, सुरमे-सा कर देना। –खाना–(ला०) चुप हो जाना (सुरमा खानेसे जबान बैठ जाती है)।

सुरमै*–वि०, पु० दे० 'सुरमई'।

सुरम्य–वि० (सं०) अति रमणीय, मनोहर।

सुरर्षभ–पु० (सं०) इंद्र; शिव।

सुरर्षि–पु० (सं०) देवर्षि।

सुरला–स्त्री० (सं०) एक नदी; गंगा नदी।

सुरली*–स्त्री० सुंदर क्रीड़ा।

सुरवस†–पु० पतला बाँस या सरकंडा।

सुरवा†–स्त्री० दे० 'श्रुवा'। पु० दे० 'शोरवा'।

सुरवाडी†–स्त्री० सूअरोंके रहनेका वाड़ा।

सुरवाल–पु० पायजामा; सेहरा।

सुरस–वि० (सं०) सुंदर रसयुक्त, रसीला; सुस्वादु; मधुर; सुंदर। पु० बोल; गुडत्वक्, दारचीनी; गंधतृण; तुलसी; सिंधुवार; मोचरस; तेजपत्र; एक नागासुर; एक पर्वत; धूना।

सुरसती*–स्त्री० 'सरस्वती'।

सुरसा–स्त्री० (सं०) समुद्र लाँघकर लंका जाते समय हनुमान्‌का रास्ता रोकनेवाली एक नागमाता; एक राक्षसी; तुलसी; रास्ना; मिश्रेया; सौंफ; ब्राह्मी; महाशतावरी; सिंधुवार; वार्ताकी; कंटकारी; सफेद जूही; श्वेत त्रिवृता; बोल; एक वृत्त; एक रागिनी; दक्षकी एक कन्या; रुद्राश्वकी एक कन्या; एक अप्सरा; दुर्गा; एक नदी।

सुरसाग्र–पु० (सं०) सिंधुवारकी एक मंजरी।

सुरसाग्रज–पु० (सं०) श्वेत तुलसी।

सुरसाग्रणी–स्त्री० (सं०) सफेद तुलसी।

सुरसाच्छद–पु० (सं०) श्वेत तुलसीका पत्ता।

सुरसादिवर्ग–पु० (सं०) आयुर्वेदमें वनौषधियोंका एक विशेष वर्ग जो श्वास, खाँसी, कृमि आदिका नाशक माना जाता है।

सुरसाष्ट–पु० (सं०) सुरसा, निर्गुंडी, बृहती, तुलसी, ब्राह्मी, कंटकारी, पुनर्नवा, मुनिभ–इन आठ ओषधियोंका समाहार।

सुरसुराना–अ० क्रि० कीड़ोंका रेंगना; खुजली होना।

सुरसुराहट–स्त्री० खुजली; सुरसुरानेका भाव।

सुरसुरी–स्त्री० सुरसुराहट; छछूंदर नामकी आतिशबाजी; लाल रंगका एक कीड़ा जो अनाजमें लगता है; एक कीड़ा जिसके काटनेसे जलन होती है। * सुरसरी, गंगा।

सुरहट*–वि० ऊँचा।

सुरहना*–अ० क्रि० (घाव आदिका) भर आना, सूख जाना–'सुरह्यौ घाइ देहबल आयौ'–छत्रप्रकाश।

सुरहरा*–वि० जिससे 'सुर-सुर'की आवाज निकलती हो।

सुरहित–स्त्री० दे० 'सुरही'।

सुरही–स्त्री० गाय; चमरी गाय; एक घास; दे० 'सोरही'।

सुरहुरी†–स्त्री० पानी, भात आदिका खाद्य-नलिकाके बजाय श्वासनलिकामें चढ़ जाना या उससे होनेवाली संवेदना।

सुरहोनी–पु० पुन्नागकी जातिका एक पेड़।

सुरांगना–स्त्री० (सं०) देवपत्नी, अप्सरा।

सुरा–स्त्री० (सं०) मद्य, शराब; जल; पानपात्र; सोम; साँप। –कर्म(न्)–पु० सुरा द्वारा किया जानेवाला एक संस्कार। –कार–पु० शराब चुआनेवाला, कलाल। –कुंभ,–घट–पु० शराब रखनेका मटका या घड़ा, मद्य-पात्र। –गृह–पु० मदिरालय। –ग्रह–पु० पानपात्र; मद्यपात्र। –जीवी(विन्)–पु० कलाल। –दृति–स्त्री० मदिरालय; शराब रखनेका चर्मपात्र। –धर–पु० एक असुर। –ध्वज–पु० मद्यपात्रका चिह्न जो मनुके अनुसार मद्यपके मस्तकपर गर्म लोहेसे दाग दिया जाना चाहिये; मदिरालयके द्वारपर लगाया जानेवाला, झंडा। –प–वि० सुरापान करनेवाला, शराबी; चतुर; सुंदर। पु० मदिरा-रक्षक। –पात्र–पु० शराब रखने या पीनेका पात्र। –पाण,–पान–पु० शराब पीना; मद्यपानके समय खायी जानेवाली चाट, गजक; पूर्वी भारतका निवासी (सुरापानके कारण)। –पी(पिन्)–वि० दे० 'सुराप'; शराबियोंको रखनेवाला। –पीत–वि० जिसने मद्यपान किया है। –पीथ–पु० मद्यपान। –प्रिय–वि० जिसे मद्य प्रिय हो। –बलि–वि० जिसे मदिराका तर्पण दिया जाय। –बीज–पु० शराब बनानेके काम आनेवाला एक पदार्थ; मद्यफेन। –भांड–पु० दे० 'सुरापात्र'। –भाग,–मंड–पु० (खमीर पैदा होनेपर) शराबके ऊपर उठ आनेवाला फेन, मद्यफेन। –भाजन–पु० मदिरा रखने या पीनेका पात्र। –मत्त–वि० बदमस्त, शराबके नशेमें चूर। –मद–पु० शराबका नशा। –मुख–वि० जिसके मुखमें शराब हो। पु० एक नागासुर। –मेह–पु० प्रमेह रोगका एक भेद। –मेही(हिन्)–वि० सुरामेहका रोगी। –वारि–पु० मदिरा; सुराब्धि। –वृत–पु० सूर्य। –संधान–पु० शराब चुआना। –समुद्र–पु० दे० 'सुराब्धि'। –सार–पु० दे० क्रममें, 'स्पिरिट'; 'अलकोहल'।

सुराई*–स्त्री० शूरता, बहादुरी।

सुराकर–पु० (सं०) शराबकी भट्ठी; नारियलका पेड़।

सुराख–पु० दे० 'सूराख़'; सुराग।

सुराग–पु० दे० 'सुराग़'; (सं०) प्रगाढ़ प्रेम; अच्छा रंग; अच्छा राग।

सुराग़–पु० (अ०) खोज; निशान; पद-चिह्न; पता; ठिकाना; जिज्ञासा; तलाश। –रसाँ–पु० पता लगानेवाला, खोजी; जासूस। –रसानी–स्त्री० खोज, तलाश।

सुरागाय–स्त्री० एक तरहकी जंगली गाय जिसकी पूँछके बालका चँवर बनाते हैं।

सुरागार–पु० (सं०) शराबखाना; देवालय।

सुराग़ी–पु० (अ०) खोजी; जासूस; मुखबिर।

सुराग्र्य–पु० (सं०) (सुराके पहले उत्पन्न) अमृत।

सुराचार्य–पु० (सं०) बृहस्पति।

सुराज–पु० अच्छा राज्य; स्वराज्य।

सुराजक–पु० (सं०) भँगरा।

सुराजा(जन्)–पु० (सं०) अच्छा राजा।

सुराजिका–स्त्री० (सं०) छिपकली।

सुराजी–पु० स्वराज्य चाहनेवाला, स्वतंत्रताके आंदोलनमें भाग लेनेवाला। वि० सुराजका, सुराज-संबंधी; सुराज जैसा; सुराजके लायक; सुराजमें प्रचलित।

सुराजीव–पु० (सं०) विष्णु; कलाल।

सुराजीवी(विन्)–पु० (सं०) कलाल।

सुराज्य–पु० (सं०) सुंदर, प्रजारंजक राज्य; † दे० 'स्वराज्य'।

सुराथी†–स्त्री० अनाजकी बालें पीटनेका डंडा।

सुराद्रि–पु० (सं०) सुमेरु पर्वत।

सुराधम–पु० (सं०) अधम, निकृष्ट देवता।

सुराधानी–स्त्री० (सं०) शराब रखनेका छोटा घड़ा।

सुराधिप, सुराधीश–पु० (सं०) इंद्र।

सुराध्यक्ष–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु (कृष्ण); शिव; इंद्र।

सुरानक–पु० (सं०) देवपटह।

सुरानीक–पु० (सं०) देवसेना।

सुरापगा–स्त्री० (सं०) गंगा।

सुराब्धि–पु० (सं०) सुराका समुद्र, पुराणोक्त समुद्र-विशेष।

सुराय*–पु० अच्छा, श्रेष्ठ राजा।

सुरायुध–पुभ (सं०) देवास्त्र।

सुरारणि–स्त्री॰ (सं॰) देवमाता, अदिति।

सुरारि–पु॰ (सं॰) (देवताओंका शत्रु) असुर, राक्षस; एक रोगकारक दैत्य; झींगुरकी झनकार। **–घ्न,–हंता(तृ)**–पु॰ असुरोंका नाश करनेवाले, विष्णु। **–हा(हन्)**–पु॰ शिव।

सुरारी†–स्त्री॰ एक बरसाती घास।

सुरार्चन–पु॰ (सं॰) देवपूजा।

सुरार्दन–पु॰ (सं॰) देवताओंको सतानेवाला, असुर।

सुरार्ह–पु॰ (सं॰) हरिचंदन; सुवर्ण; केसर।

सुरार्हक–पु॰ (सं॰) वैजयंती; वर्बरक।

सुराल–पु॰ (सं॰) राल।

सुरालय–पु॰ (सं॰) स्वर्ग; मेरु; देवालय; मदिरालय।

सुरालिका–स्त्री॰ (सं॰) सातला नामकी लता।

सुराव–पु॰ (सं॰) सुंदर ध्वनि।

सुरावट–स्त्री॰ स्वरका आरोह-अवरोह; सुरीलापन।

सुरावती–स्त्री॰ दे॰ 'सुरावनि'।

सुरावनि–स्त्री॰ (सं॰) अदिति; पृथिवी।

सुरावास–पु॰ (सं॰) सुमेरु; स्वर्ग; देवालय।

सुराश्रय–पु॰ (सं॰) मेरु पर्वत।

सुराष्ट्र–पु॰ (सं॰) पश्चिम भारतका एक प्रदेश, आधुनिक सूरत; दशरथका एक मंत्री। वि॰ अच्छे राज्यवाला। **–ज**–वि॰ सुराष्ट्रमें उत्पन्न। पु॰ गोपीचंदन; काली मूँग; लाल कुलथी; एक विष। **–जा**–स्त्री॰ गोपीचंदन।

सुराष्ट्रोद्भवा–स्त्री॰ (सं॰) फिटकरी।

सुरासव–पु॰ (सं॰) एक तरहका तीक्ष्ण आसव (स्पिरिट)।

सुरासार–पु॰ (अलकोहल) वह तात्त्विक तरल मादक द्रव्य जिससे शराब बनती है।

सुरासुर–पु॰ (सं॰) सुर और असुर। **–गुरु**–पु॰ शिव; कश्यप। **–विमर्द**–पु॰ देवताओं और असुरोंका संघर्ष।

सुरास्पद–पु॰ (सं॰) देवालय।

सुराही–स्त्री॰ (अ॰) लंबी गरदन और तंग मुँहका बरतन जिसमें पहले शराब रखते थे, पर अब अधिकतर पानी रखनेके काम आता है; सुराहीकी शक्लका कपड़ा जिसे अँगरखे आदिकी दोनों बगलोंके नीचे सुंदरताके लिए लगाते हैं; कपड़ेका एक काट; नैचेका चिलमके नीचे रहनेवाला हिस्सा; बाजू आदि गहनोंमें नीचे लटकनेवाले सूतमें लगाया जानेवाला (सुराहीकी शक्लका) टुकड़ा। वि॰ लंबा और खुशनुमा, सुराहीदार। **–दार**–वि॰ सुराहीकी शक्लका। **–॰गरदन**–स्त्री॰ लंबी और सुंदर गरदन। **–॰घुंघरू**–पु॰ सुराहीनुमा घुंघरू जो बहुधा पाजेबमें लगाये जाते हैं। **–नुमा**–वि॰ सुराहीकी शक्लका।

सुराह्व–पु॰ (सं॰) देवदारु; मरुवक; हरिद्र वृक्ष।

सुराह्वय–पु॰ (सं॰) देवदारु; लताविशेष।

सुरि–पु॰ (सं॰) बहुत बड़ा धनी।

सुरियाखार†–पु॰ शोरा।

सुरी–स्त्री॰ (सं॰) देवांगना–'नरी किन्नरी आसुरी सुरी रहत सिरनाय'–कविप्रिया।

सुरी*–स्त्री॰ छुरी।

सुरीन–स्त्री॰ (फा॰) नितम्ब।

सुरीला–वि॰ मधुर स्वरवाला।

सुरुंग–पु॰ (सं॰) शोभांजन; दे॰ 'सुरंग'। **–युक्(ज्)**–पु॰ सेंध लगानेवाला चोर।

सुरुंगा–स्त्री॰ (सं॰) सुरंग, सेंध आदि।

सुरुंगाहि–पु॰ (सं॰) दे॰ 'सुरंगयुक्'।

सुरुंदला–स्त्री॰ (सं॰) एक प्राचीन नदी।

सुरुख*–वि॰ जिसका रुख अच्छा हो, प्रसन्न; दे॰ 'सुर्ख़'। **–रू***–वि॰ दे॰ 'सुर्ख़रू'।

सुरुचि–स्त्री॰ (सं॰) सुंदर, संस्कृत रुचि; सुंदर प्रकाश; सुदीप्ति; राजा उत्तानपादकी पत्नी, ध्रुवकी सौतेली माँ। वि॰ सुंदर रुचिवाला। पु॰ एक यक्ष; एक गंधर्व राजा।

सुरुज–वि॰ (सं॰) बहुत बीमार। *पु॰ दे॰ 'सूर्य'। **–मुखी***स्त्री॰ दे॰ 'सूर्यमुखी'।

सुरुद्रि–स्त्री॰ (सं॰) सतलज नदी।

सुरुवा†–पु॰ दे॰ 'शोरवा'।

सुरूप–वि॰ (सं॰) अच्छी शक्लवाला, सुंदर; विद्वान्। पु॰ शिव; तूल; एक असुर; तामस मन्वंतरका एक देववर्ग; पलासपीपल; * स्वरूप।

सुरूपक–वि॰ (सं॰) अच्छी आकृतिका, सुंदर।

सुरूपा–वि॰ स्त्री॰ (सं॰) रूपवती, सुंदरी। स्त्री॰ भार्गी; सरिवन; सेवती; बेला; एक अप्सरा; एक नागकन्या; एक पौराणिक गौ।

सुरूर–पु॰ (अ॰) आनंद; हलका, सुखद नशा, खुमार; मादकता। **–अंगेज़**–वि॰ नशा पैदा करनेवाला, मादक। **–अफ़्ज़ा,–ख़ेज़,–पर्वर,–फ़िज़ा**–वि॰ आनन्दवर्द्धक। **–(रे) इबादत**–पु॰ प्रार्थना, आराधना, भजनका आनन्द। मु॰ **–गठना,–जमना**–हलका नशा होना, आँखोंमें नशेकी सुर्खी आना।

सुरूहक–पु॰ (सं॰) खच्चर, गर्दभाश्व।

सुरेंद्र–पु॰ (सं॰) देवराज; इंद्र; एक कंद, ओल। **–कंद**–पु॰ काटनेवाला ओल। **–गोप**–पु॰ वीरबहूटी। **–चाप**–पु॰ इंद्र-धनुष्। **–जित्**–पु॰ (इंद्रको जीतनेवाला) गरुड़। **–पूज्य**–पु॰ बृहस्पति। **–माला**–स्त्री॰ एक किन्नरी। **–लुप्त**–पु॰ इंद्रलुप्त, सिरका गंजापन। **–लोक**–पु॰ इंद्रलोक। **–वज्रा**–स्त्री॰ एक वर्णवृत्त।

सुरेंद्रक–पु॰ (सं॰) काटनेवाला ओल।

सुरेंद्रनाथ बनर्जी–पु॰ (१८४८ से १९२५) प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता तथा महान् वक्ता; बंगभंगको रद करानेमें इनका बड़ा हाथ था।

सुरेंद्रवती–स्त्री॰ (सं॰) इंद्राणी।

सुरेंद्रा–स्त्री॰ (सं॰) एक किन्नरी।

सुरेख–वि॰ (सं॰) सुंदर रेखाएँ बनानेवाला।

सुरेखा–स्त्री॰ (सं॰) सुंदर रेखा. शुभ-सूचक रेखा।

सुरेज्य–पु॰ (सं॰) बृहस्पति; बृहस्पति ग्रह। **–युग**–पु॰ बृहस्पतिका पाँच वर्षोंका काल।

सुरेज्या–स्त्री॰ (सं॰) तुलसी; ब्राह्मी।

सुरेणु–पु॰ (सं॰) त्रसरेणु। स्त्री॰ सप्त सरस्वतियोंमें परिगणित एक नदी; विवस्वान्की पत्नी। **–पुष्पध्वज**–पु॰ एक गंधर्व राजा।

सुरेतर–पु॰ (सं॰) असुर। वि॰ सुरोंसे भिन्न।

सुरेता(तस्)–वि॰ (सं॰) अति वीर्यवान्, अति पराक्रमी।

सुरेथ–पु॰ सूँस।

सुरेनुका*–स्त्री॰ दे॰ 'सुरेणु'।

सुरेभ–वि॰ (सं॰) सुंदर आवाजवाला, सुरीला। पु॰ देवहस्ती; टीन।

सुरेवट–पु॰ (सं॰) एक तरहकी सुपारी, रामपूग।

सुरेश–पु॰ (सं॰) देवराज; इंद्र; विष्णु; शिव; एक देवता; एक अग्नि। **–लोक**–पु॰ इंद्रलोक।

सुरेशी–स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा।

सुरेश्वर–पु॰ (सं॰) ब्रह्मा; शिव; एक रुद्र; इंद्र।

सुरेश्वराचार्य–पु॰ (सं॰) मंडन मिश्रका शंकराचार्यकी शिष्यता और सन्न्यास-ग्रहणके बादका नाम।

सुरेश्वरी–स्त्री॰ (सं॰) दुर्गा; स्वर्गंगा; लक्ष्मी; राधा।

सुरेष्ट–पु॰ (सं॰) सुरपुन्नाग; बड़ी मौलसिरी; अगस्त्य; साल।

सुरेष्टक–पु॰ (सं॰) शाल; शाल-निर्यास।

सुरेष्टा–स्त्री॰ (सं॰) ब्राह्मी।

सुरेस*–पु॰ दे॰ 'सुरेश'।

सुरै*–स्त्री॰ एक हानिकर घास। वि॰ (सं॰) बहुत अमीर।

सुरैत–स्त्री॰ रखेली। **–वाल,–वाला**–पु॰ सुरैतके पेटसे जनमा हुआ लड़का।

सुरैतिन–स्त्री॰ दे॰ 'सुरैत'।

सुरैया–पु॰ (अ॰) वृष राशिमें रहनेवाले सात नक्षत्रोंका समुदाय। स्त्री॰ कृत्तिका नक्षत्र; कानका झुमका; रोशनीका झाड़। **–बाम**–वि॰ जिसकी अटारी सुरैया जैसी ऊँची हो, जहाँ किसीकी पहुँच न हो सके।

सुरोचन–पु० (सं०) यज्ञबाहु द्वारा शासित एक वर्ष; यज्ञबाहुका एक पुत्र ।

सुरोचना–स्त्री० (सं०) कार्त्तिकेयकी एक मातृका ।

सुरोचि*–वि० सुंदर ।

सुरोचि(स्)–पु० (सं०) वसिष्ठका एक पुत्र ।

सुरोत्तम–पु० (सं०) सूर्य; इंद्र; विष्णु; सुराफेन । वि० देवताओंमें श्रेष्ठ ।

सुरोत्तमा–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

सुरोत्तर–पु० (सं०) चंदन ।

सुरोद–पु० सरोद; (सं०) सुराका समुद्र; (फा०) गान, गीत । **–नवाज़**–पु० गवैया । **–ए मस्तां**–पु० नशेमें चूर लोगोंका गाना ।

सुरोधा(धस्)–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि ।

सुरोपम–वि० (सं०) देवतुल्य ।

सुरोपयाम–पु० (सं०) मदिरापात्र ।

सुरोमा(न्)–वि० (सं०) सुंदर रोमोंवाला । पु० एक नागासुर ।

सुरोश–पु० (फा०) फिरिश्ता; शुभसंदेश लानेवाला फरिश्ता ।

सुरोषण–पु० (सं०) एक देव-सेनापति ।

सुरौक(स्)–पु० (सं०) स्वर्ग; देवालय ।

सुर्ख़–वि० (फा०) लाल । स्त्री० घुँघची, रत्ती; गंजीफेका एक खेल । **–चश्म**–वि० लाल आंखोंवाला । **–दाना**–पु० एक बूटी । **–पोश**–वि० जो लाल कपड़े पहने हो । **–रू**–वि० जिसका मुंह लाल हो; सफल, यशस्वी; प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाला । **–रूई**–स्त्री० सफलता; सम्मान, प्रतिष्ठा । **–सफ़ेद**–वि०, पु० दे० 'सुर्ख़ोसफ़ेद' । **–सर,–सार**–पु० एक चिड़िया जिसका सिर लाल होता है; (ला०) ईरानी । **–(ख़ों)-सफ़ेद**–वि० जिसकी गोराईमें सुर्खी मिली हो; सुंदर । पु० सुर्खी मिली हुई गोराई; (ला०) सोना-चाँदी । मु० **–होना**–दे० 'लाल होना' ।

सुर्ख़ा–पु० लाल रंग; लाल रंगका कबूतर; घोड़ेका एक रंग; एक तरहका आम; आँखपर होनेवाली सुर्खी ।

सुर्ख़ाब–पु० (फा०) चक्रवाक, चकवा-चकवी । **–का पर**–अनोखी बात, खास-खूबी (कलगियोंमें लगाये जानेके कारण) । मु० **–० लगा होना**–कोई अनोखी बात, कोई खास खूबी होना ।

सुर्ख़ी–स्त्री० लाल रंग; लाल स्याही; शीर्षक; ईंटोंका चूरा जो ईंटोंकी जुड़ाई और फर्श बनानेके काम आता है । **–मायल**–वि० जिसमें हल्की लाल रंगत हो । मु० **–कायम करना**–शीर्षक लगाना ।

सुर्ता*–वि० समझदार ।

सुर्ती–स्त्री० दे० 'सुरती' ।

सुर्रा–स्त्री० (फा०) नाभि; तुंडी । पु० (अ०) पोटली, रुपया रखनेकी थैली ।

सुलंक, सुलंकी*–पु० दे० 'सोलंकी' ।

सुलंघित–वि० (सं०) जिससे लंघन, उपवास कराया गया हो ।

सुलक्ष–वि० (सं०) शुभ लक्षणोंवाला; भाग्यवान् ।

सुलक्षण–वि० (सं०) सुंदर या शुभ लक्षणोंवाला; भाग्यशाली । पु० सुंदर या शुभ लक्षण; परीक्षण ।

सुलक्षणा–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर या शुभ लक्षणोंवाली । स्त्री० उमाकी एक सखी; कृष्णकी एक पत्नी ।

सुलक्षणी–वि० स्त्री० दे० 'सुलक्षणा' ।

सुलक्षित–वि० (सं०) सुपरीक्षित; सुनिश्चित ।

सुलग*–अ० निकट, पास ।

सुलगन–स्त्री० सुलगनेकी क्रिया ।

सुलगना–अ० क्रि० (लकड़ी, उपले आदिका) आग पकड़ना, जलने लगना; (तंबाकू आदिका) धुआँ देने लगना, पीने लायक होना; (ला०) ईर्ष्यासे जलना; कुढ़ना ।

सुलगाना–स० क्रि० आग जलाना; भड़काना; झगड़ा उकसाना; (तंबाकू आदि) पीने योग्य बनाना ।

सुलग्न–वि० (सं०)···में दृढ़तापूर्वक लगा हुआ, तल्लीन । पु० शुभ मुहूर्त ।

सुलच्छन*–वि०, पु० दे० 'सुलक्षण' ।

सुलच्छनी*–वि० स्त्री० दे० 'सुलक्षणा' ।

सुलछ*–वि० देखनेमें सुंदर ।

सुलझर–स्त्री० सुलझनेकी क्रिया, सुलझाव ।

सुलझना–अ० क्रि० गुत्थी, उलझी हुई डोर आदिका खुलना; मसलेका हल होना, उलझन, पेचीदगीका दूर होना ।

सुलझाना–स० क्रि० गुत्थी खोलना, उलझन दूर करना; हल करना, पेचीदगी दूर करना ।

सुलझाव–पु० सुलझनेका भाव; निबटारा ।

सुलटा–वि० सीधा, 'उलटा'का उलटा ।

सुलतान–पु० (अ०) बादशाह; हिंदुस्तानके तुर्क बादशाहों और तुर्कोंके सम्राटोंकी पदवी ।

सुलताना–स्त्री० (अ०) मलिका; सुलतानकी पत्नी या माँ । **–चंपा**–पु० एक पेड़, पुन्नाग ।

सुलतानी–वि० सुलतानका, शाही; लाल रंगका । पु० एक बढ़िया रेशमी वस्त्र; पुरानी चालका एक काग़ज़ । स्त्री० राज्य, बादशाही । **–बानात**–स्त्री० एक तहरकी बहुत बढ़िया और मोटी बानात । **–बुलबुल**–स्त्री० बुलबुलका एक भेद जिसकी चोटी स्याह और पर सुर्खी-मायल होते हैं ।

सुलप*–वि० दे० 'स्वल्प' ।

सुलफ–वि० लचीला; नाजुक ।

सुलफ़ा–पु० बिना तवा रखे भरा हुआ तंबाकू; गाँजेकी तरह भरकर पिया जानेवाला तंबाकू; चरस । **–(फ़े)बाज़**–वि० गाँजा, चरस पीनेवाला ।

सुलभ–वि० (सं०) जो आसानीसे मिल जाय, सुखलभ्य, आसान; (किसीके लिए) स्वाभाविक, समुचित; उपयोगी । पु० अग्निहोत्रकी अग्नि । **–कोप**–वि० जो आसानीसे भड़काया, कुपित किया जा सके । **–गणक**–पु० (रेडीरेकनर) वह पुस्तक जिसमें दी हुई विभिन्न सारिणियोंकी सहायतासे ब्याज, वेतन आदिका हिसाब लगानेमें आसानी हो । **–मुद्रा**–स्त्री० (सॉफ्ट करेंसी) किसी देशकी वह मुद्रा जो अन्य देशोंके पास आवश्यकतासे अधिक संख्यामें इकट्ठी हो गयी हो और जिसे वे उस देशसे और अधिक माल मँगाकर खर्च करनेमें असमर्थ हों (यह सुवर्णमें परिणत नहीं की जा सकती, अन्यथा इसे देकर अन्यान्य देशोंसे माल मँगा लिया जाता और यह बटुरने न पाती) । **–क्षेत्र**–पु० (सॉफ्ट करेंसी एरिया) सुलभ मुद्रावाले देशोंका क्षेत्र ।

सुलभा–स्त्री० (सं०) वेदकालकी एक ब्रह्मवादिनी महिला; तुलसी; माषपर्णी; वेला ।

सुलभ्य–वि० (सं०) जो आसानीसे प्राप्त हो सके ।

सुललिक–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति ।

सुललित–वि० (सं०) अति ललित; सुंदर; क्रीड़ाशील; बहुत प्रसन्न ।

सुलवण–वि० (सं०) उपयुक्त मात्रामें नमक मिलाया हुआ ।

सुलह–स्त्री० (अ०) मेल, परस्पर अनुकूलता; लड़ाई या झगड़ेके बाद किया जानेवाला मेल, समझौता । **–कुल,–दोस्त,–पसंद,–सामां**–वि० सबके साथ मेल रखनेवाला, जो किसीके साथ शत्रुभाव न रखे । स्त्री० सबके साथ मेल, मैत्री रखना । **–नामा**–पु० वह कागज जिसमें सुलह हो जानेकी बात या उसकी शर्तें लिखी गयी हों, राजीनामा, संधिपत्र । **–शिकन**–वि० संधिभंजक ।

सुलाखना*–स० क्रि० छेद करना; † सोने-चाँदीको तपाकर परखना ।

सुलागना*–अ० क्रि० दे० 'सुलगना' ।

सुलाना–स० क्रि० किसीको सोने या लेटनेमें प्रवृत्त करना ।

सुलाभ–वि० (सं०) दे० 'सुलभ' ।

सुलाभी(भिन्)–पु० (सं०) एक ऋषि ।

सुलाह*–स्त्री० दे० 'सुलह' ।

सुलिप*–वि० स्वल्प ।

सुलिपि–स्त्री० (सं०) उत्तम, स्पष्ट लिपि ।

सुलुलित–वि० (सं०) जो क्रीड़ा या आनंदमें इधर-उधर घूम रहा हो; बहुत क्षतिग्रस्त ।

सुलुस–पु० तीसरा भाग, तिहाई ।

सुलू–वि० (सं०) अच्छी तरह काटनेवाला ।

सुलूक–पु० (अ०) वर्ताव, व्यवहार, आचरण; नेकी, भलाई; मेल; मुहब्बत (सुलूकसे रहना); ईश्वरसामीप्यकी इच्छा, भगवान्‌को पानेका प्रयत्न। **–(के)नेक**–पु० सद्व्यवहार। **–(के)बद**–पु० दुर्व्यवहार।

सुलेख–वि० (सं०) शुभ रेखाओंवाला; शुभ रेखाएँ बनानेवाला। पु० सुंदर लेख।

सुलेखक–पु० (सं०) सुंदर अक्षर लिखनेवाला, खुशनवीस; सुंदर लेख, निबंध लिखनेवाला।

सुलेमाँ–पु० दे० 'सुलेमान'।

सुलैमान–पु० (फा०) दाऊदका बेटा; यहूदियोंका तीसरा बादशाह जिसने यरूशलम नगरका निर्माण कराया और जिसकी गणना विश्वके सबसे बड़े मनीषियोंमें की जाती है।

सुलैमानी–वि० सुलैमानका; सुलैमानसे संबद्ध। स्त्री० सुलैमानका पद। पु० सफेद आँखोंवाला घोड़ा; एक दोरंगा, बहुमूल्य पत्थर। **–नमक**–पु० एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण। **–सुरमा**–पु० एक करामाती सुरमा (कहा जाता है कि इसे लगानेपर जिन्नात दिखाई देते हैं)।

सुलोक–पु० (सं०) स्वर्ग।

सुलोचन–वि० (सं०) सुंदर आँखोंवाला। पु० हिरन; चकोर; रुक्मिणीके पिता; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक दैत्य; एक बुद्ध।

सुलोचना–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर आँखोंवाली। स्त्री० मेघनादकी पत्नी जो वासुकि नागकी कन्या थी; एक अप्सरा; एक यक्षिणी।

सुलोचनी–वि० स्त्री० दे० 'सुलोचना'।

सुलोम–वि० (सं०) सुंदर रोमों या बालोंवाला।

सुलोमनी–स्त्री० (सं०) जटामांसी।

सुलोमश–वि० (सं०) दे० 'सुलोम'।

सुलोमशा–स्त्री० (सं०) काकजंघा; जटामासी।

सुलोमा–स्त्री० (सं०) ताम्रवल्ली; मांसरोहिणी।

सुलोमा(मन्)–वि० (सं०) दे० 'सुलोम'।

सुलोल–वि० (सं०) बहुत इच्छुक।

सुलोह–पु० (सं०) एक तरहका बढ़िया लोहा।

सुलोहक–पु० (सं०) पीतल।

सुलोहित–वि० (सं०) गहरा लाल। पु० सुंदर लाल रंग।

सुलोहिता–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

सुलोही(हिन्)–पु० (सं०) एक ऋषि।

सुल्बी–वि० (अ०) औरस; सहोदर, हक़ीक़ी।

सुल्स–पु० दे० 'सुलुस'।

सुवंश–पु० (सं०) वसुदेवका एक पुत्र; सुंदर वंश। **–घोष**–वि० बाँसुरीकी तरह मधुर स्वरवाला।

सुवंशेषु–पु० (सं०) एक तरहका ऊख।

सुवंस–पु० दे० 'सुवंश'।

सुव*–पु० पुत्र।

सुवक्ता(क्तृ)–पु० (सं०) सुंदर वक्ता, वाग्मी।

सुवक्त्र–वि० (सं०) सुंदर मुखवाला, सुमुख; अच्छे स्वरोंवाला। पु० सुंदर मुख; अच्छा उच्चारण; शिव; स्कंदका एक पार्षद; वनतुलसी, वनबर्बरी।

सुवक्षा–स्त्री० (सं०) त्रिजटा और विभीषणकी माता।

सुवक्षा(क्षस्)–वि० (सं०) सुंदर, चौड़ी छातीवाला।

सुवच–वि० (सं०) जो आसानीसे कहा जा सके।

सुवचन–पु० (सं०) सुंदर वचन। वि० सुवक्ता; मधुरभाषी।

सुवचनी–वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। स्त्री० (सं०) एक देवी।

सुवचा–स्त्री० (सं०) एक गंधर्वी।

सुवचा(चस्)–वि० (सं०) वाग्मी, सुवक्ता।

सुवज्र–वि० (सं०) सुंदर वज्रवाला। पु० इंद्र।

सुवटा*–पु० दे० 'सुअटा'।

सुवत्सा–स्त्री० (सं०) एक दिक्कुमारी।

सुवदन–वि० (सं०) सुंदर मुखवाला। पु० एक पौधा, सुमुख, वनबर्बरी।

सुवदना–वि० स्त्री० (सं०) सुमुखी। स्त्री० एक वृत्त।

सुवन–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; चंद्रमा; * पुत्र; पुष्प, सुमन; देवता; पंडित। * वि० अच्छे मनवाला।

सुवना*–पु० तोता।

सुवनारा*–पु० दे० 'सुअन'।

सुवपु(स्)–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा। वि० सुंदर शरीरवाला।

सुवयसी–स्त्री० (सं०) दे० 'सुवया'।

सुवया–स्त्री० (सं०) वह जिसमें स्त्री-पुरुष दोनोंके चिह्न हों; प्रौढ़ा स्त्री।

सुवरण–पु० सोना, सुवर्ण।

सुवर्ग–वि० (सं०) अच्छे साथ-समाजवाला।

सुवर्चक, सुवर्चिका–पु० (सं०) सज्जी; एक वैदिक ऋषि।

सुवर्चल–पु० (सं०) एक देश; काला नमक; शिव।

सुवर्चला–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी; ब्राह्मी; अलसी; आदित्य-भक्ता, हुरहुर; सूर्यमुखी फूल।

सुवर्चस–पु० (सं०) शिव। वि० दीप्तिमान्।

सुवर्चसी(सिन्)–पु० (सं०) शिव; सज्जी।

सुवर्चस्क–वि० (सं०) कांतिमान्, दीप्तिमान्।

सुवर्चा(र्चस्)–वि० (सं०) सुंदर तेजसे युक्त, तेजस्वी। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र; गरुड़का एक पुत्र; स्कंदका एक पार्षद; दसवें मनुका एक पुत्र।

सुवर्चिका–स्त्री० (सं०) सज्जी; जतुका लता।

सुवर्ची(र्चिन्)–पु० (सं०) सज्जी।

सुवर्जिका–स्त्री० (सं०) जतुका लता।

सुवर्ण–वि० (सं०) अच्छे रंगका; पीला; सुनहला; चमकीला; सोनेका बना हुआ; अच्छी जातिका; प्रसिद्ध। पु० अच्छा रंग; अच्छी जाति; सोना; एक यज्ञ; शिव; धतूरा; सोनेका सिक्का; सोलह माशेकी सोनेकी एक तौल; धन, दौलत; हरिचंदन; एक तरहका गेरू, स्वर्णगैरिक; नागकेसर; एक वृत्त; दशरथका एक मंत्री; एक देवगंधर्व; एक कंद, सुवर्णालु; अंतरिक्षका एक पुत्र; कण-गुग्गुल; एक पौधा, गौर सुवर्ण; स्वरका शुद्ध उच्चारण; एक तीर्थ; एक लोक। **–कदली**–स्त्री० चंपा-केला। **–कमल**–पु० रक्त-कमल। **–करनी***–स्त्री० एक जड़ी। **–कर्ता (र्तृ) –कार,–कृत्**–पु० सुनार। **–कर्ष**–पु० सोनेकी एक तौल जो १६ माशेकी होती थी। **–केतकी**–स्त्री० लाल केतकी। **–केश**–पु० एक नागासुर (बौ०)। **–क्षीरी**–स्त्री० एक पौधा, स्वर्णक्षीरी। **–गणित**–पु० अंक-गणितका अंगविशेष; सोनेकी तौल और शुद्धिका हिसाब। **–गर्भ**–वि० जिसमें सोना भरा हो। पु० एक बोधिसत्त्व। **–गर्भा**–वि० स्त्री० सोनेकी खानोंवाली, स्वर्णप्रसवा (भूमि)। **–गिरि**–पु० एक पर्वत (जो राजगृहमें है)। **–गैरिक**–पु० लाल गेरू। **–गोत्र**–पु० एक राज्य (बौ०)। **–ग्रंथि**–स्त्री० सोना रखनेकी थैली। **–घ्न**–पु० राँगा। **–चंपक**–पु० पीला चंपक। **–चक्रवर्ती(र्तिन्)**–पु० राजा। **–चूड़**–पु० गरुड़का एक पुत्र; एक पक्षी। **–चूल**–पु० एक पक्षी। **जीविक**–पु० एक वर्णसंकर जाति जो सोनेका व्यापार करती थी। **–ज्योति(स्)**–वि० सुनहली कांतिवाला। **–तिलका**–स्त्री० ज्योतिष्मती लता। **–दुग्धी**–स्त्री० स्वर्णक्षीरी। **–द्वीप**–पु० सुमात्रा टापू। **–धेनु**–स्त्री० दानके लिए निर्मित सोनेकी गाय। **–नकुली**–स्त्री० महाज्योतिष्मती। **–पक्ष**–वि० सोनेके पंखोंवाला। पु० गरुड़। **–पत्र**–पु० एक तरहका पक्षी। **–पद्म**–पु० लाल कमल। **–पद्मा**–स्त्री० स्वर्गंगा। **–पार्श्व**–पु० एक जनपद। **–पालिका**–स्त्री० एक तरहका स्वर्णपात्र। **–पिंजर**–वि० सोनेकी तरह पीला। **–पुष्प**–पु० राजतरुणी, बड़ी सेवती। वि० सुनहले फूलोंवाला। **–पुष्पित**–वि० सुवर्णसे भरा-पूरा। **–पुष्पी**–स्त्री० एक तरहका पौधा। **–पृष्ठ**–वि० जिसकी सतह सोने की हो, जिसपर सोनेका पत्तर चढ़ाया गया हो। **–प्रतिमा**–स्त्री० सोनेकी मूर्ति। **–प्रभास**–पु० एक यक्ष (बौ०)। **–प्रसर, –प्रसव**–पु० एलवालुक। **–फला**–स्त्री० चंपाकेला। **–बिंदु**–पु० विष्णु; शिवकी एक मूर्ति। **–भांड,–भांडक**–पु० रत्नमंजूषा। **–भू**–स्त्री० उत्तर-पूरबका एक देश। **–भूमि**–स्त्री० सुमात्रा टापू; स्वर्णगर्भा भूमि। **–माक्षिक**–पु० सोनामक्खी। **–मान**–पु० दे० क्रममें। **–मालिका**–स्त्री० एक देवी। **–माष,–माषक**–

पु० एक प्राचीन मान जो बारह धानका होता था। **–मित्र**–पु० सुहागा। **–मुखरी**–स्त्री० एक नदी। **–मेदिनी**–स्त्री० स्वर्णके रूपमें पृथ्वी। **–मोचा**–स्त्री० चंपाकेला। **–यूथिका,–यूथी**–स्त्री० सोनजूही। **–रंभा**–स्त्री० चंपाकेला। **–रूप्यक**–वि० जहाँ सोने-चाँदीकी बहुतायत हो। पु० एक टापू। **–रेखा**–स्त्री० राँचीके पहाड़ोंसे निकलकर बंगालकी खाड़ीमें गिरनेवाली एक नदी; दे० 'सुवर्णलेखा'। **–रेता(तस्)**–पु० शिव। **–रोमा(मन्)**–वि० सुनहरे रोमोंवाला। पु० मेष। **–लता**–स्त्री० ज्योतिष्मती लता। **–लेखा**–स्त्री० (कसौटीपरकी) सोनेकी लकीर। **–वणिक्(ज्)**–पु० एक वर्णसंकर जाति जो सोनेका व्यापार करती थी; बंगालकी एक वणिक् जाति। **–वर्ण**–वि० सुनहरा। पु० विष्णु। **–वर्णा**–स्त्री० हल्दी। **–वृषभ**–पु० भेंट-स्वरूप देनेके लिए बना हुआ सोनेका बैल। **–शिलेश्वर**–पु० एक तीर्थ। **–शेखर**–पु० एक प्राचीन नगर। **–श्री**–स्त्री० आसामकी एक नदी। **–ष्ठीवी(विन्)**–पु० संजयका एक पुत्र। **–सिद्ध**–पु० वह जो इंद्रजाल या जादूसे सोना बना या प्राप्त कर ले। **–सूत्र**–पु० सोनेकी सिकड़ी। **–स्तेय**–पु० सोनेकी चोरी (पाँच महापातकोंमेंसे एक)। **–स्तेयी(यिन्)**–पु० सोना चुरानेवाला। **–स्थान**–पु० एक जनपद; सुमात्रा। **–हलि**–पु० एक वृक्ष।

सुवर्णक–वि० (सं०) सुंदर रंगका; सुनहला। पु० पीतल; सुवर्णकर्ष; सोना; सीसा; स्वर्णक्षीरी; आरग्वध।

सुवर्णता–स्त्री० (सं०) सुवर्णका गुण या भाव; सुनहलापन।

सुवर्णमान–पु० (गोल्ड स्टैंडर्ड) वह मुद्रा-प्रणाली जिसमें बैंकके नोटों (कागजी मुद्रा) का भुगतान किसी भी समय, निर्धारित दरके अनुसार, सुवर्णके रूपमें किया जा सके।

सुवर्णा–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; इक्ष्वाकुकी पुत्री जो सुहोत्रकी पत्नी थी; हल्दी; काला अगर; बला; स्वर्णक्षीरी; इंद्रायन; तितलौकी। वि० स्त्री० दे० 'सुवर्ण'।

सुवर्णाकर–पु० (सं०) सोनेकी खान

सुवर्णाक्ष–पु० (सं०) शिव।

सुवर्णाख्य–पु० (सं०) नागकेसर; धतूरा।

सुवर्णाभ–पु० (सं०) शंखपदका एक पुत्र; राजावर्त मणि। वि० सुनहला।

सुवर्णार–पु० (सं०) कचनार।

सुवर्णालु–पु० (सं०) एक कंद।

सुवर्णाह्वा–स्त्री० (सं०) सोनजूही।

सुवर्णिका–स्त्री० (सं०) पीली जीवंती।

सुवर्णिम–वि० (सं०) दे० 'स्वर्णिम'।

सुवर्णी–स्त्री० (सं०) मूसाकानी।

सुवर्तित–वि० (सं०) खूब घुमाया या गोला किया हुआ; सुव्यवस्थित।

सुवर्तुल–वि० (सं०) खूब गोला। पु० तरबूज।

सुवर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) उत्तम वर्म (कवच) से युक्त। पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

सुवर्षा–स्त्री० (सं०) अच्छी वर्षा; मल्लिका, मोतिया।

सुवल्लरी–स्त्री० (सं०) पुत्रदात्री लता।

सुवल्लि–स्त्री० (सं०) सोमराजी। **–ज**–पु० कंद; मूँगा।

सुवल्लिका–स्त्री० (सं०) सोमराजी; जतुका।

सुवल्ली–स्त्री० (सं०) रोमराजी; कटुकी; पुत्रदात्री।

सुवश्य–वि० (सं०) जो आसानीसे वसमें किया जा सके।

सुवसंत–पु० (सं०) चैत्रपूर्णिमा; सुंदर वसंतकाल; मदनोत्सव।

सुवसंतक–पु० (सं०) मदनोत्सव; नेवारी।

सुवस*–वि० जो अपने अधिकारमें हो।

सुवस्त्रा–स्त्री० (सं०) एक नदी। वि० स्त्री० सुंदर वस्त्रोंवाली।

सुवह–वि० (सं०) सुखसे वहन करने योग्य; धीर; अच्छी तरह वहन करनेवाला। पु० वायुका एक भेद।

सुवहा–स्त्री० (सं०) शेफालिका; रास्ना; गोधापदी; एलापर्णी; शल्लकी; त्रिवृता; रुद्रजटा; हंसपदी; गंधनाकुली; मुशली; नील सिंधुवार; वीणा।

सुवाँग†–पु० दे० 'स्वांग'।

सुवांत–वि० (सं०) जिसने अच्छी तरह वमन किया है।(जोंक जिससे चूसा हुआ रक्त निकाल लिया गया है)।

सुवा*–पु० सुग्गा, तोता।

सुवाक्य–वि० (सं०) मधुरभाषी, वाग्मी। पु० सुंदर वाक्य।

सुवाग्मी(ग्मिन्)–वि० (सं०) सुवक्ता।

सुवाच्य–वि० (सं०) आसानीसे पढ़े जाने योग्य।

सुवाजी(जिन्)–वि० (सं०) पंखसे सुसज्जित (बाण)।

सुवादित्र–पु० (सं०) सुंदर संगीत।

सुवाना*–स० क्रि० दे० 'सुलाना'।

सुवामा–स्त्री० (सं०) रामगंगा नदी।

सुवार–पु० (सं०) सुंदर दिन; * सूपकार, रसोइया।

सुवार्त्ता–स्त्री० (सं०) सुंदर वार्ता; शुभ संवाद; कृष्णकी एक पत्नी।

सुवाल–पु० (अ०) दे० 'सवाल'। वि० (सं०) (वह हाथी) जिसकी पूँछपर सुंदर बाल हों।

सुवालुका–स्त्री० (सं०) एक लता।

सुवास–स्त्री० (सं०) सुंदर वास, सुगंध। पु० सुंदर आवास; शिव; एक वर्णवृत्त। **–कुमार,–कुमारक**–पु० कश्यपका एक पुत्र।

सुवासक–पु० (सं०) तरबूज।

सुवासन–पु० (सं०) दसवें मन्वंतरका एक देववर्ग।

सुवासरा–स्त्री० (सं०) हिलमोचिका; चंसुर; चन्द्रशूर।

सुवासा(सस्)–वि० (सं०) सुंदर वस्त्रोंसे युक्त; सुंदर पंखोंसे युक्त (बाण)।

सुवासिका–वि० स्त्री० (सं०) सुगंधित करनेवाली, सुवास देनेवाली।

सुवासित–वि० (सं०) सुवासयुक्त, सुगंधित।

सुवासिन*–स्त्री० दे० 'सुआसिन'।

सुवासिनी–स्त्री० (सं०) पिताके घरमें रहनेवाली युवती; सुहागिन; भद्र सधवा स्त्रीके लिए प्रयोगमें आनेवाला एक आदर-सूचक शब्द।

सुवासी(सिन्)–वि० (सं०) आरामसे या बहुत अच्छे मकानमें रहनेवाला।

सुवास्तु–स्त्री० (सं०) सरहदी सूबेकी एक नदी, स्वात। पु० उक्त नदीके आस-पासका प्रदेश; इस प्रदेशके रहनेवाले।

सुवाह–वि० (सं०) जो आसानीसे वहन किया जा सके; अच्छे घोड़ोंवाला। पु० अच्छा घोड़ा; स्कंदका एक पार्षद।

सुवाहन–पु० (सं०) एक मुनि।

सुविक्रम–वि० (सं०) अति शूर, पराक्रमी, महावीर; सुंदर गतिवाला। पु० अच्छी शक्ति, पराक्रम।

सुविक्रांत–वि० (सं०) दे० 'सुविक्रम'। पु० योद्धा, वीर; शौर्य, वीरता।

सुविक्लव–वि० (सं०) भीरु, कायर; अस्थिरचित्त।

सुविख्यात–वि० (सं०) बहुत प्रसिद्ध।

सुविगुण–वि० (सं०) सब गुणोंसे हीन; दुष्ट।

सुविग्रह–वि० (सं०) सुंदर देहवाला, रूपवान्।

सुविचार–पु० (सं०) सुंदर, सूक्ष्म विचार; सुंदर न्याय।

सुविचारित–वि० (सं०) भली भाँति सोचा-विचारा हुआ।

सुविचित–वि० (सं०) जिसकी अच्छी तरह खोज की गयी हो; सुपरीक्षित।

सुविज्ञ–वि० (सं०) ज्ञानवान; अच्छा जानकार।

सुविज्ञान–वि० (सं०) विवेकशील; चतुर; जिसे जानना-समझना आसान हो।

सुविज्ञापक–वि० (सं०) जो आसानीसे सिखलाया जा सके।

सुविज्ञेय–वि० (सं०) जो आसानीसे जाना-समझा जा सके। पु० शिव।

सुवित–वि० (सं०) सुगम; सहजमें प्राप्त हो सकनेवाला; उन्नतिशील। पु० सुपथ; कल्याण; अभ्युदय।

सुवितत–वि० (सं०) अच्छी तरह फैला हुआ (जैसे जाल)।

सुवितल–पु० (सं०) विष्णुकी एक मूर्ति।

सुवित्त–वि० (सं०) बहुत धनी, बड़ा मालदार। पु० समृद्धि।

सुवित्ति–पु० (सं०) एक देवता।

सुविद–पु० (सं०) अंतःपुरका कर्मचारी या रक्षक, सौविद; राजा; तिलक वृक्ष।

सुविदग्ध–वि० (सं०) बहुत चालाक, काइयाँ ।

सुविदत्र–वि० (सं०) बहुत सावधान; उदार । पु० कृपा, अनुग्रह; परिवार; धन-सम्पत्ति; ज्ञान ।

सुविदन्(त्)–पु० (सं०) राजा ।

सुविदर्भ–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति ।

सुविदल्ल–पु० (सं०) अंतःपुरका रक्षक; अंतःपुर ।

सुविदल्ला–स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री ।

सुविदा–स्त्री० (सं०) चतुर, गुणवती स्त्री ।

सुविदित–वि० (सं०) अच्छी तरह विदित, ज्ञात ।

सुविद्–पु० (सं०) विद्वान् या चतुर व्यक्ति । वि० विद्वान् ।

सुविद्य–वि० (सं०) बड़ा विद्वान्, सुपंडित ।

सुविद्युत्–पु० (सं०) एक असुर ।

सुविध–वि० (सं०) अच्छी किस्म, प्रकारका; शीलवान् ।

सुविधा–स्त्री० दे० 'सुभीता' ।

सुविधाधिकार–पु० (राइट आफ ईजमेंट) दे० 'सुखाधिकारवाद' ।

सुविधान–पु० (सं०) अच्छी व्यवस्था । वि० सुव्यवस्थित ।

सुविधि–पु० (सं०) वर्तमान अवसर्पिणीके नवें अर्हत् (जै०) । स्त्री० अच्छा नियम या आदेश ।

सुविनय–वि० (सं०) सुशिक्षित; अनुशासित ।

सुविनीत–वि० (सं०) अति विनीत; अच्छी तरह सिखाया, सधाया हुआ (घोड़ा आदि) ।

सुविनीता–स्त्री० (सं०) आसानीसे दुही जानेवाली गाय ।

सुविनेय–वि० (सं०) जिसे शिक्षित करना आसान हो ।

सुविपिन–वि० (सं०) जंगलोंसे भरा हुआ । पु० अच्छा वन ।

सुविभीषण–वि० (सं०) बहुत भयंकर ।

सुविभु–पु० (सं०) एक नरेश जो विभुका पुत्र था ।

सुविरज–वि० (सं०) सभी वासनाओंसे मुक्त ।

सुविविक्त–वि० (सं०) जो बिलकुल अलग हो, अकेला; निर्णीत ।

सुविशाल–वि० (सं०) बहुत बड़ा । पु० एक असुर ।

सुविशाला–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका ।

सुविशुद्ध–वि० (सं०) पूर्णतः स्वच्छ । पु० एक लोक (बौ०) ।

सुविषाण–वि० (सं०) बड़े दाँतोंवाला (हाथी) ।

सुविष्टंभी(म्भिन्)–वि० (सं०) अच्छी तरह सँभालने, पालन करनेवाला । पु० शिव ।

सुविस्तर–पु० (सं०) बहुत अधिक फैलाव; बहुतायत, प्राचुर्य । वि० बहुत विस्तृत, बड़ा; बहुत अधिक; बहुत तेज या उग्र ।

सुविस्मय–वि० (सं०) बहुत चकित ।

सुविस्मित–वि० (सं०) दे० 'सुविस्मय'; बहुत आश्चर्यजनक ।

सुविहित–वि० (सं०) अच्छी तरह किया हुआ; अच्छी तरह रखा हुआ; सुव्यवस्थित;···से संपन्न ।

सुवीज–पु०, वि० (सं०) दे० 'सुबीज' ।

सुवीथीपथ–पु० (सं०) प्रासादमें प्रवेश करनेका द्वार-विशेष ।

सुवीर–वि० (सं०) बहुत बड़ा वीर, योद्धा; बहुतसे वीरों, पुत्रों आदिवाला । पु० स्कंद; शिव; एकवीर वृक्ष; बेरका पेड़; द्युतिमान्‌का एक पुत्र; शिविका एक पुत्र; देवश्रवाका एक पुत्र । –ज–पु० सुरमा ।

सुवीरक–पु० (सं०) बेर; सुरमा ।

सुवीराम्ल–पु० (सं०) काँजी ।

सुवीर्य–पु० (सं०) अति वीर्यवान्, पराक्रमी । पु० बेरका फल ।

सुवीर्या–स्त्री० (सं०) बनकपास; बड़ी सतावर; नाड़ी हींग ।

सुवृत्त–वि० (सं०) सच्चरित्र, नेक; खूब गोल; अच्छे छंदमें रचित । पु० सुंदर वृत्त, चरित्र; सूरन; कल्याण ।

सुवृत्ता–स्त्री० (सं०) एक अप्सरा; किशमिश; सेवती, शतपत्री; एक वृत्त ।

सुवृत्ति–स्त्री० (सं०) सुंदर वृत्ति, जीविका; सुंदर आचरण, सदाचार; संयम, पवित्रताका जीवन; ब्रह्मचर्य ।

सुवृद्ध–वि० (सं०) अति वृद्ध; अति प्राचीन । पु० दक्षिणी दिग्गज ।

सुवेग–वि० (सं०) तेज गतिवाला ।

सुवेगा–स्त्री० (सं०) महाज्योतिष्मती ।

सुवेणा–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

सुवेद–वि० (सं०) धर्मग्रंथोंका विशेषज्ञ; वेदोंका ज्ञाता; सुलभ ।

सुवेल–पु० (सं०) लंकाका त्रिकूट पर्वत जिसपर रामकी सेनाने पड़ाव किया था । वि० शांत; बहुत झुका हुआ, प्रणत, नम्र ।

सुवेश, सुवेष–वि० (सं०) सुंदर वेशयुक्त; सुंदर कपड़े पहने हुए; सुंदर; सजीला । पु० श्वेतेक्षु, सफेद ईख; बढ़िया पोशाक ।

सुवेशी(शिन्), सुवेषी(षिन्)–वि० (सं०) सुंदर वेशयुक्त ।

सुवेषित–वि० दे० 'सुवेश' ।

सुवेस*–वि० दे० 'सुवेश' । पु० सुंदर वेश ।

सुवेसल–वि० सुंदर ।

सुवैया–पु० सोनेवाला ।

सुव्यक्त–वि० (सं०) साफ; चमकदार; बहुत स्पष्ट; प्रकट ।

सुव्यवस्था–स्त्री० (सं०) सुंदर व्यवस्था, सुप्रबंध, सुयोजना ।

सुव्यवस्थित–वि० (सं०) सुंदर व्यवस्थायुक्त ।

सुव्यस्त–वि० (सं०) तितर-बितर, छिन्न-भिन्न (जैसे सेना) ।

सुव्याहृत–पु० (सं०) सिद्धांत-वाक्य; सूक्ति ।

सुव्रत–वि० (सं०) सुंदर व्रतधारी; दृढ़तासे व्रतका पालन करनेवाला, धर्मनिष्ठ, सीधा, सधा हुआ (घोड़ा आदि) । पु० ब्रह्मचारी; एक प्रजापति; स्कंदका एक अनुचर; वर्तमान अवसर्पिणीके बीसवें अर्हत्; भावी अवसर्पिणीके ग्यारहवें अर्हत्; उशीनरका एक पुत्र; रौच्य मनुका एक पुत्र; प्रियव्रतका एक पुत्र ।

सुव्रता–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर व्रतवाली; साध्वी । स्त्री० दक्षकी एक पुत्री; वर्तमान कल्पके पंद्रहवें अर्हत्‌की माता; कपूरकचरी; सीधी गाय; पतिव्रता स्त्री; एक अप्सरा ।

सुशंस–वि० (सं०) प्रशंसनीय; कीर्तिमान्; प्रख्यात; शुभाकांक्षी ।

सुशंसी(सिन्)–वि० (सं०) मंगलाकांक्षी; मंगलभाषी ।

सुशक–वि० (सं०) सुसाध्य, आसान, सरल ।

सुशक्त–वि० (सं०) सक्षम, समर्थ ।

सुशक्ति–वि० (सं०) दे० 'सुशक्त' ।

सुशब्द–वि० (सं०) सुस्वर, मधुर स्वरयुक्त (जैसे बाँसुरी) ।

सुशरण्य–वि० (सं०) शरण देनेवाला । पु० शिव ।

सुशरीर–वि० (सं०) सुंदर शरीरवाला ।

सुशर्मा(र्मन्)–वि० (सं०) बहुत सुखी । पु० एक असुर; निंदित ब्राह्मण (व्यंग्य); भोगकामी व्यक्ति; एक मनुका पुत्र; एक वैशालि; एक काण्व; तेरहवें मन्वंतरका एक देववर्ग ।

सुशल्य–पु० (सं०) खैरका पेड़ ।

सुशवी–स्त्री० (सं०) कारवेल्ल, करेला; कृष्ण जीरक; करंज ।

सुशांत–वि० (सं०) अति शांत, जिसमें जरा भी क्षोभ न हो (जैसे जल); प्रशमित ।

सुशांता–स्त्री० (सं०) राजा शशिध्वजकी पत्नी ।

सुशांति–स्त्री० (सं०) पूर्ण शांति । पु० तीसरे मन्वंतरके इंद्र; शांतिका एक पुत्र; अजमीढका एक पुत्र ।

सुशाक–पु० (सं०) अदरक; तंडुलीय, चौलाई; चंचु, चेंच; भिंडी ।

सुशाकक–पु० (सं०) ताजा अदरक ।

सुशासन–पु० (सं०) सुंदर शासन, उत्तम राज-प्रबंध, सुराज्य ।

सुशासित–वि० (सं०) भली भाँति शासित; सुनियंत्रित ।

सुशास्य–वि० (सं०) जिसपर आसानीसे शासन या नियंत्रण किया जा सके ।

सुशिंविका–स्त्री० (सं०) एक पौधा, शिंबीका एक भेद ।

सुशिक्षित–वि० (सं०) सुशिक्षाप्राप्त, जिसने अच्छी शिक्षा पायी हो; अच्छी तरह सधाया, सिखाया हुआ (घोड़ा आदि) ।

सुशिख–पु० (सं०) अग्नि । वि० सुंदर शिखा, चोटीवाला; अच्छी लौवाला (जैसे दीपक) ।

सुशिखा–स्त्री० (सं०) मोरकी शिखा; मुर्गेकी कलगी ।

सुशिर(रस्)–पु० (सं०) मुँहसे फूंककर बजानेका बाजा (बाँसुरी आदि) ।

सुशिरा(रस्)–वि० (सं०) सुंदर सिरवाला ।

सुशिष्ट–वि० (सं०) सुशासित । पु० विश्वस्त मंत्री ।

सुशीत–वि० (सं०) बहुत ठंढा । पु० पीला चंदन; पाकड़; जलबेंत; ठंढक ।

सुशीतल–वि० (सं०) अति शीतल । पु० गंधतृण; सफेद चंदन; नागदमनी; ठंढक ।

सुशीतला–स्त्री० (सं०) ककड़ी; खीरा ।

सुशीता–स्त्री० (सं०) शतपत्री, सेवती; स्थलकमल ।

सुशीम–वि० (सं०) शीतल; लेटने, बैठने लायक । पु० शीतलता । **–काम**–वि० वहुत आसक्त ।

सुशील–वि० (सं०) सुंदर शीलवाला, सत्स्वभाव; सच्चरित्र; विनीत; सीधा । पु० कुंडीन्यका एक पुत्र; अच्छा स्वभाव ।

सुशीलता–स्त्री० (सं०) सच्चरित्रता; विनम्रता; सीधापन ।

सुशीला–स्त्री० (सं०) सुदामाकी पत्नी; यमकी पत्नी; कृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक; राधाकी एक सहेली । वि० स्त्री० दे० 'सुशील' ।

सुशोविका–स्त्री० (सं०) वाराहीकंद ।

सुशुभ–वि० (सं०) वहुत सुंदर; मंगलमय (दिवस); वहुत नेक (काम) ।

सुश्रृंग–वि० (सं०) सुंदर सींगोंवाला । पु० श्रृंगी ऋषि ।

सुश्रृंगार–वि० (सं०) अच्छी तरह अलंकृत ।

सुशोण–वि० (सं०) गहरा लाल ।

सुशोभन–वि० (सं०) अति सुंदर, सुहावना ।

सुशोभित–वि० (सं०) अति शोभायुक्त, जो वहुत सजता-फवता हो ।

सुश्रम–पु० (सं०) धर्मका एक पुत्र ।

सुश्रव–वि० (सं०) सुनने योग्य ।

सुश्रवा(वस्)–पु० (सं०) एक प्रजापति; एक नागासुर; एक ऋषि । वि० प्रसिद्ध; यशस्वी; कीर्तिमान; उत्तम हविसे युक्त; प्रसन्नतापूर्वक सुननेवाला, दयालु ।

सुश्राव्य–वि० (सं०) जो सुननेमें अच्छा लगे; श्रुतिमधुर ।

सुश्री–वि० (सं०) अति सुंदर, शोभन; अति धनी । स्त्री० स्त्रियोंके नामके पूर्व आदर-सूचनार्थ लगाया जानेवाला शब्द ।

सुश्रीक–वि० (सं०) सुंदर श्री-युक्त ।

सुश्रीका–स्त्री० (सं०) सलई ।

सुश्रुत–वि० (सं०) अच्छी तरह सुना हुआ; प्रसन्नतापूर्वक सुना हुआ; वहुत प्रसिद्ध; वेदज्ञ । पु० आयुर्वेदके अति प्राचीन और स्तंभभूत आचार्य जो विश्वामित्रके पुत्र कहे जाते हैं और जिनका ग्रंथ सुश्रुतसंहिता आयुर्वेदकी वृहत्त्रयीके अंतर्गत है; सुश्रुतसंहिता । **–संहिता**–स्त्री० सुश्रुतरचित प्रसिद्ध चिकित्साग्रंथ ।

सुश्रुम–पु० (सं०) धर्मका एक पुत्र ।

सुश्रूखा*–स्त्री० दे० 'शुश्रूषा' ।

सुश्रूषा–स्त्री० दे० 'शुश्रूषा' ।

सुश्रोणा–स्त्री० (सं०) एक नदी ।

सुश्रोणि–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर नितंबोंवाली । स्त्री० एक देवी ।

सुश्लिष्ट–वि० (सं०) मजबूतीसे जुड़ा, मिला हुआ, दृढ़ भावसे संयुक्त; वहुत स्पष्ट या बोधगम्य ।

सुश्लेष–पु० (सं०) घनिष्ठ संबंध; प्रगाढ़ आलिंगन ।

सुश्लोक–वि० (सं०) पुण्यशाली; सुप्रसिद्ध ।

सुश्लोक्य–वि० (सं०) वहुत प्रसिद्ध । पु० प्रिय शब्द; प्रशंसा ।

सुषंधि–पु० (सं०) मांधाताका एक पुत्र; प्रसुश्रुतका एक पुत्र ।

सुष*–पु० सुख ।

सुषद्मा(द्मन्)–पु० (सं०) एक ऋषि ।

सुषम–वि० (सं०) अति सम; सुंदर; सुडौल; बोधगम्य । पु० सुंदर वर्ष ।

सुषम दुःषमा–स्त्री० (सं०) कालचक्रके दो आरे (जै०) ।

सुषमना*–स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुषमनि*–स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुषमा–स्त्री० (सं०) परम शोभा, अतिशय सुंदरता; नैसर्गिक शोभा; प्राकृतिक सौंदर्य; एक वर्णवृत्त; कालचक्रका एक आरा (जै०); एक सुरांगना; एक पौधा । **–शाली(लिन्)**–वि० अति सुंदर ।

सुषमित–वि० (सं०) सुषमायुक्त ।

सुषवी–पु० (सं०) कृष्ण जीरक; जीरक; करेला; क्षुद्र कारवेल्ल ।

सुषा–स्त्री० (सं०) कृष्ण जीरक ।

सुषाढ–पु० (सं०) शिव ।

सुषाना*–स० क्रि० सुखाना । अ० क्रि० सूखना ।

सुषारा*–वि० दे० 'सुखारा' ।

सुषि–स्त्री० (सं०) छेद । पु० नल ।

सुषिक–वि० (सं०) ठंढा । पु० ठंढक ।

सुषिक्त–वि० (सं०) अच्छी तरह सींचा हुआ ।

सुषिम–वि०, पु० (सं०) दे० 'सुषीम' ।

सुषिर–वि० (सं०) छेदवाला, सूराखदार, खोखला; सावकाश; विलंवित (उच्चारण) । पु० वाँस; वेंत; काठ; चूहा; छेद; अग्नि; फूँककर वजाया जानेवाला वाजा (संगीत); लौंग; वायुमंडल; काष्ठ । **–च्छेद**–पु० एक तरहकी वाँसुरी । **–विवर**–पु० (साँप आदिका) विल ।

सुषिरा–स्त्री० (सं०) नदी; एक सुगंधित छाल ।

सुषीम–वि० (सं०) सुंदर; शीतल । पु० चंद्रकांत मणि; एक तरहका साँप; ठंढक ।

सुषुप्त–वि० (सं०) गहरी नींदसे सोया हुआ । पु० सुषुप्तावस्था ।

सुषुप्ति–स्त्री० (सं०) गहरी नींद; सत्त्वप्रधान अज्ञान, आनंदमय कोष ।

सुषुप्स, सुषुप्सु–वि० (सं०) सोनेका इच्छुक, जिसे नींद लग रही हो ।

सुषुप्सा–स्त्री० (सं०) सोनेकी इच्छा; नींदमें होनेकी स्थिति ।

सुषुम्ण, सुषुम्न–पु० (सं०) सूर्यकी सात मुख्य रश्मियोंमेंसे एक ।

सुषुम्णा, सुषुम्ना–स्त्री० (सं०) इड़ा और पिंगला नाड़ियोंके बीचमें स्थित एक नाड़ी; आयुर्वेदके अनुसार नाभिके मध्यमें स्थित एक प्रधान नाड़ी ।

सुषेण–वि० (सं०) दिव्यास्त्रवाला (कृष्ण, इंद्र) । पु० विष्णु; एक गंधर्व; एक यक्ष; एक नागासुर; एक विद्याधर; वरुणका एक पुत्र; एक वानर जो सुग्रीवका चिकित्सक था; दूसरे मनुका एक पुत्र; कृष्णका एक पुत्र; सूरसेनका एक नरेश; परीक्षित्‌का एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; वसुदेवका एक पुत्र; शंवरका एक पुत्र; करौंदा; वेंत ।

सुषेणिका–स्त्री० (सं०) कृष्णत्रिवृता ।

सुषेणी–स्त्री० (सं०) त्रिवृत् ।

सुषोपति, सुषोप्ति*–स्त्री० दे० 'सुषुप्ति' ।

सुषोमा–स्त्री० (सं०) भागवतमें उल्लिखित एक नदी ।

सुष्ट–वि० भला, नेक ।

सुष्ठु–अ० (सं०) अतिशय; सुंदर रीतिसे; ठीक-ठीक ।

सुष्ठुता–स्त्री० (सं०) सुंदरता; कल्याण, अभ्युदय ।

सुष्म–पु० (सं०) रस्सी ।

सुष्मना*–स्त्री० दे० 'सुषुम्ना' ।

सुसंकट–वि० (सं०) दृढ़तापूर्वक वंद किया हुआ; जिसकी व्याख्या करना कठिन हो । पु० कठिनाई; कठिन काम ।

सुसंक्षेप–पु० (सं०) शिव ।

सुसंग–पु० (सं०) अच्छी सुहवत, सत्संग । वि० जिसके साथ रहा जाय; प्रिय ।

सुसंगत–वि० (सं०) वहुत उचित, युक्त ।

सुसंगति–स्त्री० (सं०) अच्छी सुहवत; अच्छा मेल (रेलीवेंसी) अच्छी तरह मेल खाने, ठीक बैठने, उपयुक्त होनेकी क्रिया या भाव ।

सुसंगम–पु० (सं०) अच्छी सभा; अच्छा सभास्थल ।

सुसंध–वि० (सं०) अपने वचनका पालन करनेवाला ।

सुसंधि–पु० (सं०) दे० 'सुषंधि' ।

सुसंपत्(द्)–स्त्री० (सं०) अति समृद्धि, सौभाग्य ।

सुसंपन्न–वि० (सं०) अति संपन्न, जिसके पास यथेष्ट धन-संपत्ति हो ।

सुसंभाव्य–पु० (सं०) रैवत मनुका एक पुत्र । वि० जिसके होनेकी अधिक संभावना हो ।

सुसंस्कृत–वि० (सं०) सुंदर संस्कारयुक्त; भली भाँति संस्कार किया हुआ; शिष्ट; सांस्कृतिक दृष्टिसे उन्नत (व्यक्ति या समाज); घृतादि द्वारा भली भाँति पकाया हुआ ।

सुस*–स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सुसकना*–अ० क्रि० दे० 'सिसकना' ।

सुसज्जित–वि० (सं०) अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ।

सुसताना–अ० क्रि० दे० 'सुस्ताना'।

सुसत्त्व–वि० (सं०) दृढ़; बहादुर।

सुसत्या–स्त्री० (सं०) राजा जनककी एक पत्नी।

सुसन, सुसना–पु०, **सुसनी**–स्त्री० एक साग, विच्छलक।

सुसभेय–वि० (सं०) सभाकुशल।

सुसम–वि० (सं०) खूब चौरस; चिकना; सुडौल।

सुसमय–पु० (सं०) अच्छा समय, सुकाल।

सुसमा*–स्त्री० दे० 'सुषमा'।

सुसर–पु० पति या पत्नीका पिता, श्वसुर।

सुसरा–पु० दे० 'सुसर'।

सुसरार, सुसरारि–स्त्री० दे० 'ससुराल'।

सुसराल–स्त्री० दे० 'ससुराल'।

सुसरित्–स्त्री० (सं०) गंगा।

सुसलिल–वि० (सं०) अच्छे जलवाला।

सुसह–वि० (सं०) जिसका सरलतासे सहन किया जा सके; सहनशील। पु० शिव।

सुसहाय–वि० (सं०) अच्छे साथी या सहायकवाला।

सुसा*–स्त्री० दे० 'स्वसा'। पु० एक चिड़िया।

सुसाधन–वि० (सं०) जो आसानीसे प्रमाणित किया जा सके।

सुसाधित–वि० (सं०) अच्छी तरह सिखलाया हुआ; अच्छी तरह पकाया या तैयार किया हुआ।

सुसाध्य–वि० (सं०) जिसका साधन सहज हो, सुखसाध्य, जो आसानीसे नियंत्रणमें रखा जा सके; आसान।

सुसाना*–अ० क्रि० सिसकना, सिसकी भरना।

सुसायटी–स्त्री० दे० 'सोसायटी'।

सुसार–वि० (सं०) अति सारयुक्त। पु० नीलम; लाल खैर।

सुसारना*–स० क्रि० समझाना, समझाकर कहना–'दीजो नहिं सुसारि उरहनों संधि-संधि समझाय'–सू०।

सुसारवान्(वत्)–वि० (सं०) दे० 'सुसार'। पु० स्फटिक।

सुसिकता–स्त्री० (सं०) अच्छी वालुका; शकर।

सुसिक्त–वि० (सं०) दे० 'सुषिक्त'।

सुसिद्ध–वि० (सं०) अच्छी तरह पका या पकाया हुआ; जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो।

सुसिद्धि–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ एक मनुष्यके परिश्रम करने तथा उसका फल किसी दूसरेको मिलनेका वर्णन हो।

सुसिर–पु० (सं०) एक दंतरोग।

सुसीता–स्त्री० (सं०) शतपत्री, सेवती।

सुसीम–वि० (सं०) अच्छी सीमाओंवाला; सुदर सीमंतयुक्त। पु० विंदुसारका एक पुत्र।

सुसीमा–स्त्री० (सं०) अच्छी सीमा; छठे अर्हत्की माता।

सुसुकना–अ० क्रि० सिसकना।

सुसुड़ी†–स्त्री० जौका एक कीड़ा।

सुसुपि*–स्त्री० दे० 'सुषुप्ति'।

सुसुरप्रिया–स्त्री० (सं०) चमेली।

सुसूक्ष्म–वि० (सं०) अति सूक्ष्म; नाजुक; तीक्ष्ण (जैसे बुद्धि); जो जल्द समझमें न आये। पु० परमाणु। **–पत्रा**–स्त्री० जटामाँसी।

सुसूक्ष्मेश–पु० (सं०) विष्णु।

सुसृत–वि० (सं०) अच्छी तरह पकाया हुआ; बहुत तप्त।

सुसेन–पु० दे० 'सुषेण'।

सुसेव्य–वि० (सं०) सेवा करने योग्य; आसानीसे अनुधावन करने योग्य (मार्ग); सरलतासे अनुसरण करने योग्य।

सुसैंधवी–स्त्री० (सं०) अच्छी सिंधी घोड़ी।

सुसौभग–पु० (सं०) दाम्पत्य सुख।

सुस्कंदन–पु० (सं०) एक सुगंधित पौधा।

सुस्कंध–वि० (सं०) अच्छे डंठलवाला। **–मार**–पु० दे० 'स्कंधमार'।

सुस्त–वि० (फा०) ढीला; कमजोर; आलसी; धीमा; मंद-बुद्धि; उदास, उतरा हुआ (चेहरा)। **–क्रंदम**–वि० धीमा चलनेवाला। **–पाँव**–पु० स्लॉथ नामके जंतुका एक भेद। **–राय**–वि० नादान। **–रीछ**–पु० पहाड़ोंमें पाया जानेवाला एक तरहका रीछ।

सुस्तना, सुस्तनी–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर स्तनोंवाली (स्त्री); प्रथम रजोदर्शनवाली स्त्री।

सुस्ताई*–स्त्री० सुस्ती।

सुस्ताना–अ० क्रि० थकावट दूर करना, आराम करना।

सुस्ती–स्त्री० ढिलाई; कमजोरी; आलस्य; पुरुषेंद्रियकी शिथिलता। **मु० –उतारना,–तोड़ना**–अँगड़ाई लेना।

सुस्तुत–पु० (सं०) सुपार्श्वका एक पुत्र।

सुस्तेन*–पु० दे० 'स्वस्त्ययन'।

सुस्थ–वि० (सं०) सुखपूर्वक स्थित; स्वस्थ; सुखी; उन्नतिशील। **–कल्प**–वि० जो करीब-करीब अच्छा हो। **–चित्त,–मानस**–वि० प्रसन्नचित्त; सुखी।

सुस्थता–स्त्री० (सं०) आरोग्य, स्वास्थ्य; सुख; प्रसन्नता।

सुस्थल–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सुस्थावती–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

सुस्थित–वि० (सं०) अच्छी तरह स्थित, दृढ़; स्वस्थ; सुखी; निर्दोष; भाग्यवान्; सीधा-सादा। पु० वह इमारत जिसके चारों ओर वीथिका बनी हो; घोड़ोंका एक ग्रह (शालिहोत्र ?)। **–मना(नस्)**–वि० प्रसन्नचित्त; सुखी; संतुष्ट।

सुस्थितम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको खुशहाल माननेवाला।

सुस्थिति–स्त्री० (सं०) सुंदर, सुखकी स्थिति; अभ्युदय; मंगल; सुख; स्वास्थ्य।

सुस्थिर–वि० (सं०) अधिक स्थिर, खूब दृढ़; शांत। **–यौवन**–वि० जिसकी युवावस्था बराबर बनी रहे।

सुस्थिरम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको खूब स्थिर माननेवाला।

सुस्थिरा–स्त्री० (सं०) एक शिरा या धमनी।

सुस्नयु–पु० (सं०) यजमान।

सुस्ना–स्त्री० (सं०) खेसारी।

सुस्नात–वि० (सं०) जिसने यज्ञोपरांत स्नान किया हो; अच्छी तरह स्नान किया हुआ।

सुस्निग्धा–स्त्री० (सं०) एक लता।

सुस्पर्श–वि० (सं०) छूनेमें बहुत अच्छा मालूम होनेवाला, मुलायम, कोमल।

सुस्फीत–वि० (सं०) बहुत उन्नतिशील।

सुस्मित–वि० (सं०) सुंदर, मधुर हास्ययुक्त, मुस्कराता हुआ, हँसमुख।

सुस्मिता–स्त्री० (सं०) हँसमुख स्त्री।

सुस्रग्धर–वि० (सं०) सुंदर हार पहननेवाला।

सुस्रोता–स्त्री० (सं०) पुराणमें उल्लिखित एक नदी।

सुस्वध–पु० (सं०) एक पितृवर्ग।

सुस्वधा–स्त्री० (सं०) अभ्युदय, कल्याण।

सुस्वन–वि० (सं०) सुंदर ध्वनिवाला; सुरीला; जोरका (शब्द)। पु० शंख; सुंदर स्वर।

सुस्वपन–पु० (सं०) शिव।

सुस्वप्न–पु० (सं०) शुभ स्वप्न; शिव।

सुस्वर–वि० (सं०) सुमधुर स्वरवाला; सुरीला; जोरका (शब्द)। पु० मधुर शब्द; शंख; गरुड़का एक पुत्र; वह कर्म जिससे स्वर मधुर होता है (जैन)।

सुस्वांत–वि० (सं०) अच्छे या प्रसन्न मनवाला।

सुस्वाद–वि० (सं०) अच्छे स्वादका, जायकेदार; मीठा। पु० अच्छा स्वाद।

सुस्वादु–वि० (सं०) दे० 'सुस्वाद'। **–तोय**–वि० मीठे जलवाला।

सुस्वाप–पु० (सं०) प्रगाढ निद्रा।

सुस्विन्न–वि० (सं०) खूब अच्छी तरह पकाया हुआ।

सुहंग*–वि० दे० 'सुहँगा'।

सुहंगम*–वि० सरल, सुगम।

सुहँगा–वि० सस्ता, महँगाका उलटा।

सुहटा*–वि० सुंदर, सुहावना।

सुहनी*–स्त्री० दे० 'सोहनी' ।

सुहनु–वि० (सं०) सुंदर ठुड्डीवाला । पु० एक असुर ।

सुहबत–स्त्रीं० (अ०) संग, साथ; मित्रता; साथ उठना-बैठना; जलसा, गोष्ठी; सहवास, मैथुन । **–दारी**–स्त्री० सहवास, मैथुन । **–(ते)तालेह**–स्त्री० कुसंग । **–(ते) सालेह**–स्त्री० सत्संग । **–याफ्ता**–त्रि० जो अच्छी संगतका लाभ उठा चुका हो; शिष्ट । **–का असर**–संगतिका गुण, साथका असर । मु० **–उठाना**–किसीकी सुहबतमें रहकर कुछ सीखना; पास रहना । **–बिगड़ना**–अनबन हो जाना, मित्रता भंग हो जाना ।

सुहबती–वि० साथ उठने-बैठनेवाला; मैत्रीभाव रखनेवाला ।

सुहर–पु० (सं०) एक असुर ।

सुहराब–पु० (फा०) रुस्तमका बेटा जो उसीके हाथों मारा गया ।

सुहल*–पु० दे० 'सुहैल' । वि० (सं०) अच्छे हलवाला ।

सुहव–पु० एक राग, सूहा । * वि० सुभग, सुंदर (बीसल०) ।

सुहवि(स्)–वि० (सं०) सुंदर हवि देनेवाला, धार्मिक । पु० एक आंगिरस; भुमन्युका एक पुत्र ।

सुहवी–स्त्री० दे० 'सुहव' ।

सुहसानन–वि० (सं०) हँसमुख ।

सुहस्त–वि० (सं०) सुंदर हाथोंवाला; कुशलहस्त; सुशिक्षित । पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

सुहस्ती(स्तिन्)–पु० (सं०) एक जैन आचार्य ।

सुहस्त्य–पु० (सं०) एक ऋषि । वि० कुशलहस्त ।

सुहा–पु० लाल नामकी चिड़िया ।

सुहाग–पु० सुहागिन होनेकी अवस्था, सौभाग्य, अहिवात; व्याहमें गाया जानेवाला मांगलिक गीत; वे गहने-कपड़े जो सुहागिन स्त्री पहिनती हैं; वह कपड़ा जो व्याहके समय दूल्हा पहिनता है; एक तरहका इत्र; प्यार, मुहब्बत, प्रणय-चेष्टा (अपना सुहाग अपने पास रखो); एक सदाबहार वृक्ष । **–घोड़ी**–स्त्री० व्याहके गीत जो दुल्हेके घरमें दुलंहिनके रूप-गुणके बखानमें गाये जाते हैं । **–पिटारा**–पु०,**–पिटारी**–स्त्री० गहनों और शृंगारसामग्रीका डिब्बा जो दूल्हेकी ओरसे दुलहिनको दिया जाता है । **–पुड़ा**–पु०,**–पुड़िया**–स्त्री० गोट आदि लगाकर कागजकी बनायी हुई सुंदर पुड़िया जिसमें सुगंधित वस्तुएँ रखकर दुलहिनके लिए भेजी जाती हैं । **–भरी**–वि० स्त्री० सुख-सौभाग्ययुक्त, सुखी । **–मंदिर**–पु० वरवधूका शयनागार; राजमहलमें राजारानीके विहारका मकान । **–रात**–स्त्री० दूल्हे-दुलहिनके मिलनकी पहली रात । **–सेज**–स्त्री० बरातका पलंग जिसपर दूल्हा-दुलहिन सोते हैं । मु० **–उजड़ना**–विधवा होना । **–उतरना**–पतिके मरनेपर पत्नीके शरीरसे सुहागकी चीजों (चूड़ियाँ, सिंदूर आदि) का उतारा जाना; विधवा होना । **–भरना**–पत्नीकी माँगमें सिन्दूर भरना । **–मनाना**–सौभाग्य, अहिवातकी कामना करना ।

सुहागन, सुहागिन–स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीता हो, सधवा, सौभाग्यवती ।

सुहागा–पु० एक क्षारद्रव्य जो सोना गलाने और दवाके काम आता है; † लकड़ीका आला जिससे किसान खेतके ढेले तोड़ते हैं ।

सुहागिनि, सुहागिनी, सुहागिल*–स्त्री० दे० 'सुहागिन' ।

सुहागी–पु० भाग्यवान् पुरुष ।

सुहाता–वि० सहने लायक ।

सुहाना–अ० क्रि० शोभित होना, सुंदर होना, सुंदर लगना, फबना; भाना, पसंद आना । वि० सुंदर, सुहावना ।

सुहाया*–वि० सुहावना ।

सुहारी*–स्त्री० सादी पूरी ।

सुहाल–पु० एक नमकीन पकवान जो मैदेमें मोयन देकर बनाया जाता है ।

सुहाली–स्त्री० दे० 'सुहारी' ।

सुहाव*–वि० दे० 'सुहावना' । पु० सुंदर हाव ।

सुहावता*–वि० सुहानेवाला ।

सुहावन*–वि० दे० 'सुहावना' ।

सुहावना–वि० सुंदर; भला लगनेवाला । **–पन**–पु० सुंदरता ।

सुहावला*–वि० दे० 'सुहावना' ।

सुहास–पु० (सं०) सुंदर, मृदु हास । वि० सुंदर, मृदु हासयुक्त ।

सुहासिनी–वि० स्त्री० (सं०) सुंदर हँसी हँसनेवाली, मधुर मुस्कान-युक्त (स्त्री) ।

सुहासी(सिन्)–वि० (सं०) सुंदर हासयुक्त, हँसता हुआ ।

सुहित–वि० (सं०) विहित; तृप्त; अति उपयुक्त; हितकर; स्नेही । पु० तृप्ति; प्राचुर्य ।

सुहिता–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक; रुद्रजटा ।

सुही*–वि० स्त्री० लाल–'सुही माल हाल रूप गुन न परै गनै' –घन० ।

सुहूँ*–वि० पूरा, ठीक, शुद्ध–'कहियै तौ समै लहियै न सुहूँ'–घन० ।

सुहूलत–स्त्री० (अ०) सुगमता, सरलता, आसानी ।

सुहृत्–वि० (सं०) सुंदर, स्नेहयुक्त हृदयवाला । पु० मित्र; कुंडलीमें लग्नसे चौथा स्थान । **–त्याग**–पु० मित्रका परित्याग । **–प्राप्ति**–स्त्री० मित्रकी प्राप्ति ।

सुहृत्ता–स्त्री० (सं०) मैत्री, दोस्ती ।

सुहृत्त्व–पु० (सं०) दे० 'सुहृत्ता' ।

सुहृद–पु० (सं०) शिव; मित्र । **–द्रुद्(ह्)**–वि० मित्रको हानि पहुँचानेवाला ।

सुहृदय–वि० (सं०) सुंदर हृदयवाला; स्नेही ।

सुहृद्–वि०, पु० (सं०) दे० 'सुहृत्' । **–बल**–पु० मित्र (राजा) की सेना । **–भेद**–पु० मित्रका पृथक् होना । **–वाक्य**–पु० सद्भाव-पूर्ण सम्मति ।

सुहेल–पु० दे० 'सुहैल' ।

सुहेलरा*–वि० दे० 'सुहेला' ।

सुहेला–वि० सुहावना; सुखद । पु० मंगलगीत; * प्रियजन ।

सुहैल–पु० (अ०) एक तारा ।

सुहोता(तृ)–पु० (सं०) अच्छा होता; भुमन्युका एक पुत्र; वितथका एक पुत्र ।

सुहोत्र–पु० (सं०) एक ऋषि, सहदेवका पुत्र; वितथका पुत्र; भरतवंशीय भुमन्युका एक पुत्र; सुधन्वाका एक पुत्र; एक दैत्य; एक वानर ।

सुह्म, सुह्मक–पु० (सं०) बंगालके पच्छिममें अवस्थित एक प्राचीन जनपद; उस जनपदका निवासी; एक यवन जाति ।

सूँ*–अ० दे० 'सों' ।

सूँइस–पु० दे० 'सूँस' ।

सूँघना–स० क्रि० नाकसे गंध ग्रहण करना, बास लेना; (ला०) बहुत कम खाना; (साँपका) डँसना । मु० **जमीन**–ऊँघते हुए बार-बार जमीनपर झुकना (व्यंग्य); प्रहार या आघातसे जमीनपर नाकके बल गिर पड़ना । **–सिर**–मंगलकामनाके लिए छोटोंका मस्तक सूँघना ।

सूँघा–पु० मिट्टी सूँघकर जमीनके अन्दरकी चीजें बतलानेवाला; सूँघकर शिकारकी टोह लगानेवाला; भेदिया, जासूस ।

सूँड़–स्त्री० हाथीकी स्तंभाकार नाक जो नीचे लटकती रहती है, शुंड ।

सूँडाल–पु० शुंडाल, हाथी ।

सूँड़ि†–स्त्री० दे० 'सूँड़' ।

सूँड़ी–स्त्री० फसलोंमें लगनेवाला एक कीड़ा । पु० कलालोंका एक भेद ।

सूँघी†–स्त्री० सज्जी ।

सूँस–पु० चार-पाँच हाथ लंबा एक जलजंतु जो नदीकी धारामें कभी-कभी कलैया लेता हुआ-सा देख पड़ता है ।

सूँह*–अ० सामने ।

सू–वि० (सं०) उत्पन्न करनेवाला (समासांतमें) । स्त्री० प्रसव; माता; (फा०) दिशा, तरफ, जानिब ।

सूअर–पु० एक जानवर जिसके पालतू और जंगली दो भेद होते हैं, पालतू मैलाखोर और जंगली बहुत बलवान् तथा हिंस्र होता है । **–बियान**–स्त्री० प्रतिवर्ष बच्चा जननेवाली स्त्री; बहुत बच्चे जनना । **–मुखी**–स्त्री० एक तरहकी ज्वार । **–का बच्चा**–हरामजादा (गाली) ।

सूअरनी–स्त्री० शूकरी; (ला०) बहुत बच्चोंकी माँ ।

सूआ–पु० वड़ी सूई; * तोता, शुक ।

सूई–स्त्री० लोहेका बारीक, नोकदार तार जिसके एक सिरेपरके छेदमें तागा डालकर कपड़ा सीते हैं, सूची; सूएके आकारका छिद्ररहित काँटा जिससे बुनाई, जाली वनाने आदिका काम करते हैं; तराजूका काँटा; घड़ी, कुतुबनुमा आदिका काँटा; अनाज, कपास आदिका अँखुआ; शरीरमें तरल दवाएँ पहुँचानेकी पिचकारी (सिरिंज); उसकी प्रक्रिया (इंजेक्शन) । **–डोरा**–पु० मालखंभकी एक कसरत । **–का काम**–सूईसे बनाये हुए बेल-बूटे । **–का नाका**–सूईका छेद । मु० **–का फावड़ा या भाला बना देना**–जरा-सी बातको बहुत तूल दे देना । **–की नाकसे ऊँट निकालना**–अनहोनी बात कर दिखाना । **–पिरोना**–सूईके छेदमें तागा डालना । **–लगाना**–पिचकारी द्वारा शरीरमें तरल दवा पहुँचाना । **सूइयों नाज पिरोना**–बहुत कंजूसी करना (स्त्रि०) ।

सूईकारी–स्त्री० (नीडिल वर्क) दे० 'सूचीकार्य' ।

सूक–पु० (सं०) वाण; वायु; कमल; ह्रदका एक पुत्र; * दे० 'शुक्र'–'उआ सूक जस नखतन्ह माहाँ'–प० ।

सूकना*–अ० क्रि० दे० 'सूखना' ।

सूकर–पु० (सं०) सूअर, शूकर; एक तरहका हिरन; कुम्हार; एक मछली; सफेद चावल; एक नरक । **–कंद**–पु० वराहीकंद । **–क्षेत्र**–पु० एक पुराना तीर्थस्थान । **–खेत***–पु० दे० 'सूकरक्षेत्र'। **–गृह**–पु० सूअरके रहनेका बाड़ा, खोभार । **–दंष्ट्र,–दंष्ट्रक**–पु० एक गुदा-रोग । **–नयन**–पु० लकड़ीमें किया जानेवाला एक तरहका छेद । **–पादिका**–स्त्री० कोलशिंवी; केवाँच । **–प्रेयसी**–स्त्री० पृथ्वीका एक नाम (वराहावतार द्वारा उद्धार होनेके कारण) । **–मुख**–पु० एक नरक ।

सूकरक–पु० (सं०) एक तरहका धान ।

सूकराक्रांता–स्त्री० (सं०) वराहक्रांता ।

सूकराक्षिता–स्त्री० (सं०) आँखका एक रोग ।

सूकरास्या–स्त्री० (सं०) एक बौद्ध देवी ।

सूकराह्वय–पु० (सं०) ग्रंथिपर्णी ।

सूकरिक–पु० (सं०) एक पौधा ।

सूकरिका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी ।

सूकरी–स्त्री० (सं०) मादा सूअर, सूअरी; वराही देवी; वराही कंद; वराहाक्रांता; एक पक्षी; शहतीरपरकी छोटी खँभिया ।

सूकरेष्ट–पु० (सं०) कसेरू; एक चिड़िया ।

सूका†–पु० रुपयेका चतुर्थांश या उसको सूचित करनेवाली खड़ी रेखा, चवन्नी; सूखा, अवर्षण । वि० सूखा, शुष्क ।

सूकी†–स्त्री० रिश्वत ।

सूक्त–वि० (सं०) सुंदर रीतिसे कथित; सुंदर उक्तिविशिष्ट (वाक्य) । पु० वेदका मंत्र या स्तोत्र; सुंदर कथन । **–चारी-(रिन्)**–वि० अच्छी बात या सम्मतिके अनुसार चलनेवाला । **–दर्शी(शिन्)**–पु० मंत्रद्रष्टा, वेदमंत्रोंका रचयिता । **–द्रष्टा-(ष्टृ)**–पु० दे० 'सूक्तदर्शी' । **–भाक्(ज्)**–वि० जिसके लिए वेदमंत्र हो । **–वाक**–पु० यज्ञविशेष; मंत्रपाठ । **–वाक्य**–पु० सूक्ति ।

सूक्ता–स्त्री० (सं०) सारिका, मैना ।

सूक्ति–स्त्री० (सं०) सुंदर उक्ति; चमत्कारपूर्ण वाक्य, पद्य ।

सूक्तिक–पु० (सं०) झाँझका एक प्रकार ।

सूक्तोक्ति–स्त्री० (सं०) मंत्रपाठ ।

सूक्षम*–वि० दे० 'सूक्ष्म' ।

सूक्ष्म–वि० (सं०) बहुत बारीक; बहुत छोटा; अणुरूप; तहतक पहुँचनेवाली, बारीक बातोंको देखने-समझनेमें समर्थ (दृष्टि, बुद्धि); रोमकूपसे प्रवेश करनेवाली (औषध); कठिनाईसे समझमें आने, ग्रहण करने योग्य; बिलकुल ठीक; धूर्त; महत्त्वहीन, तुच्छ । पु० अणु; परमात्मा; शिव; अध्यात्म; कपट, कैतव; एक अर्थालंकार जहाँ दूसरेका किया हुआ कोई सूक्ष्म कृत्य देखकर संकेतसे उसका उत्तर देना या समाधान कर देना दिखाया जाय; रीठा; निर्मली; सुपारी; सूक्ष्मता; तीन योग शक्तियोंमेंसे एक (शेष दो निरवद्य और सावद्य है); बारीक धागा; दाँतका खोखला; मज्जा; बुना हुआ रेशम; एक दानव । **–कृशफला,–कृष्णफला**–स्त्री० मध्यम जंबु वृक्ष, कठजामुन । **–कोण**–पु० न्यून कोण । **–घंटिका**–स्त्री० सनई । **–चक्र**–पु० एक तरहका चक्र । **–जीव**–पु० (माइक्रो-आर्गनिज़्म) ऐसे नन्हे जीव (पौधे तथा प्राणी) जो केवल सूक्ष्मदर्शीसे ही देखे जा सकते हों । **–तंडुल**–पु० खसखस, पोस्तेका दाना । **–तंडुला**–स्त्री० धूना; पिप्पली । **–तरंगें**–ऐसी रेडियो तरंगें जिनका तरंगदैर्घ्य ३० सें०मी० और १ मि०मी०के दर्मियान हो । **–तुंड**–पु० एक डँसनेवाला कीड़ा । **–दर्शक(दर्शी) यंत्र**–पु० खुर्दबीन, अण्वीक्षण-यंत्र । **–दर्शी(शिन्),–दृष्टि**–वि० बहुत बुद्धिमान् । **–दल**–पु० सरसों । **–दला**–स्त्री० दुरालभा । **–दारु**–पु० काठका पतला तख्ता । **–देह**–स्त्री० सूक्ष्म शरीर । **–देही–(हिन्)**–वि० सूक्ष्म शरीरवाला । पु० परमाणु । **–ध्वनिग्राहक**–वि० ध्वनि विस्तारक; दे० 'ध्वनिक्षेपक', माइक्रोफोन । **–नाभ**–पु० विष्णु । **–पत्र**–पु० धनिया; वनजीरक; देवसर्षप; लघुबदर; सुरपर्ण; वनबर्बरी; एक लाल ईख; कुकरौंदा; बबूल; दुरालभा; माष; अर्कपत्र । **–पत्रक**–पु० पर्पटक; वनबर्बरी । **–पत्रा**–स्त्री० बृहती; दुरालभा; बला; रक्त अपराजिता; बनजामुन; शतमूली । **–पत्रिका**–स्त्री० सौंफ; शतावरी; लघुब्राह्मी; छोटी पोय; दुरालभा; आकाशमांसी । **–पत्री**–स्त्री० सतावर; आकाशमांसी । **–परीक्षण**–पु० (स्क्रुटिनी) बारीकीसे जाँच करना, ब्यौरे आदिके संबंधमें अच्छी तरह छान-बीन करना; बेईमानी, पक्षपात आदिकी शंका होनेपर मतदानपत्रों, उत्तर-पुस्तकों आदिकी सावधानतापूर्वक फिरसे की जानेवाली जाँच । **–स्त्री०पर्णा**– शतपुष्पी, सनई; विधारा; बृहती । **–पर्णी**–स्त्री० रामदूती, रामतुलसी । **–पाद**–वि० बहुत छोटे पैरोंवाला । **–पिप्पली**–स्त्री० वनपिप्पली । **–पुष्पा**–स्त्री० सनई । **–पुष्पी**–स्त्री० यवतिक्ता; शंखिनी । **–फल**–पु० लिसोड़ा; सूक्ष्मबदर । **–फला**–स्त्री० भूम्यामलकी । **–बदरा**–पु०**–बदरी**–स्त्री० झड़बेरी, भूबदरी । **–बीज**–पु० पोस्ता दाना । **–बुद्धि,–मति**–स्त्री० बारीक बातोंको समझ सकनेवाली, तहको पहुँचनेवाली बुद्धि । वि० ऐसी बुद्धिवाला, तीक्ष्णबुद्धि । **–भूत**–पु० शुद्ध, अपंचीकृत भूत (आकाशादि) । **–मक्षिक**–पु० मशक, मच्छर । **–मति**–वि० सूक्ष्म और तीव्र बुद्धिवाला व्यक्ति । **–मान**–पु० सूक्ष्म तौल; नाप या गणना, वह मान जिससे सूक्ष्म अंतर भी मालूम किया जा सके । **–मूला**–स्त्री० जयंती; ब्राह्मी । **–लोभक**–पु० मुक्तिकी चौदह अवस्थाओंमेंसे दसवीं । **–वल्ली**–स्त्री० ताम्रवल्ली; जतुका लता; कारवेल्ल, करेला । **–शरीर**–पु० जीवका भोगशरीर, पंच प्राण, पंच ज्ञानेंद्रिय, पंच तन्मात्र और मन-बुद्धि–इन १७ अवयवोंका समूह । **–शर्करा**–स्त्री० रेत, वालुका । **–शाक**–पु० जालबर्बूर । **–शालि**–पु० सोरों धान । **–षट्चरण**–पु० पलकोंमें रहनेवाली जूँ, पक्ष्मयूक । **–स्फोट**–पु० एक तरहका कुष्ठ रोग ।

सूक्ष्मा–स्त्री० (सं०) यूथिका, जूही; छोटी इलायची; मूसली; रेत; करुणी; सूक्ष्म जटामासी; विष्णुकी नौ शक्तियोंमेंसे एक । वि० स्त्री० दे० 'सूक्ष्म' ।

सूक्ष्माक्ष–वि० (सं०) तीव्रदृष्टि; सूक्ष्म दृष्टि ।

सूक्ष्मात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) शिव ।

सूक्ष्मेक्षिका–स्त्री० (सं०) सूक्ष्म, तीव्र दृष्टि ।

सूक्ष्मैला–स्त्री० (सं०) छोटी इलायची ।

सूख*–वि० सूखा हुआ, शुष्क ।

सूखना–अ० क्रि० जलहीन होना; तरी या गीलापनका न रह जाना; रसहीन होना; उदास होना; दुबला होना; डरना; नष्ट होना; कड़ा पड़ जाना । मु० **सूखकर काँटा हो जाना**–बहुत दुबला हो जाना । **सूखकर सोंठ होना**–सूखकर सिकुड़ जाना । **सूख जाना**–सुन्न, स्तब्ध हो जाना (···सुनकर सूख गया); (गायका) –०दूध देना बंद हो जाना ।

सूखा–वि० सूखा हुआ, खुश्क, रसहीन; निस्तेज, उदास; स्नेहरहित; रूखा; निरा; बेमुरौवत (सूखा आदमी); कोरा, दो टूक । पु० अवर्षण, अकाल (ड्रॉट) (–पड़ना); बच्चोंका एक

रोग जिसमें उनकी देह सूखती और हड्डियाँ, खासकर रीढ़की हड्डी नरम होती जाती है; नदी किनारेकी सूखी जमीन; खुश्क तंवाकू; भाँग। **–जवाव**–पु० सफा, दो-टूक इनकार। **–(खी)-खाँसी**–स्त्री० ऐसी खाँसी जिसमें वलगम न निकलता हो। **(खी)-खुजली**–स्त्री० वह खुजली जिसमें दाने निकलकर पकते नहीं, केवल खुजली होती है। **–खेती**–स्त्री० विना जलकी या कम पानी-की खेती (ड्राइ फार्मिंग)। **–तनखाह**–स्त्री० वह वेतन जिसके साथ भोजन, भत्ता या ऊपरी आमदनी न हो। **–तरकारी**–स्त्री० विना रसेकी तरकारी। **–धुलाई**–स्त्री० विना पानीके केवल रासायनिक घोलसे की जानेवाली धुलाई (ड्राइ वाशिंग)। **–वर्फ (ड्राइ आइस)**–पु० ठोस रूपमें कार्वन डाई ऑक्साइड। यह प्रशीतन (रिफ्रिजरेशन) में काम आती है। **–(खे) टुकड़े**–पु० रोटीके सूखे टुकड़े, गरीवका भोजन। मु० **–टालना**–कोरा जवाव देना। **–पड़ना**–पानी न वरसना, अकाल पड़ना। **–लगना**–सूखा रोग होना, दुवला हो जाना। **–घाट उतरना**–वंचित रहना। **–(खी) सुनाना**–साफ जवाव देना, दोटूक इनकार करना। **–(खे) घाटों उतारना**–वंचित रखना। **–टुकड़ोंपर कौए उड़ाना**–छोटी-सी तनख्वाहपर जलील करना। **–धानोंपर पानी पड़ना**–नैराश्यकी दशामें मनोकामना पूरी होना।

सूघर*–वि० दे० 'सुघड़'।

* वि० शुद्ध, साफ; संज्ञायुक्त, होश-हवासमें।

सूच–पु० (सं०) दर्भांकुर, कुशका अँखुवा।

सूचक–वि० (सं०) सूचना देनेवाला, जतानेवाला, ज्ञापक; भेद वतानेवाला। पु० सीनेवाला, दरजी; सूई; चुगलखोर; भेदिया; शिक्षक; वर्णन करनेवाला; नाटकका सूत्रधार; वुद्ध; सिद्ध; पिशाच; कुत्ता; कौआ; विल्ली; सोरों धान; खल, दुष्ट। **–वाक्य**–पु० भेदियेकी वतायी हुई वात।

सूचकांक–पु० (सं०) वस्तुओंका वढ़ता घटता मूल्य वतानेवाला आँकड़ा या लेखा (इंडेक्स नम्वर)।

सूचकाक्षर–पु० किसी दल या संस्थाके पूरे नाममें आये (घटक) शव्दोंके वे प्रथमाक्षर जिन्हें मिलाकर लिखने या वोलनेसे पूरा नाम सूचित हो, जैसे संसोपा, भाक्रांद (भारतीय क्रांतिदल), संविद आदि।

सूचन–पु० (सं०) सूचित करना; जताना, ज्ञापन; छेदनेकी क्रिया; भेद खोलना; संकेत करना, इशारेसे वतलाना; वर्णन करना; जासूसी करना; दुष्टता करना; चोट पहुँचाना; मार डालना; सुगंधि फैलाना।

सूचना–स्त्री० (सं०) वताने, जतानेकी क्रिया; कुछ वताने, जतानेके लिए कही, लिखी गयी वात, इत्तिला (इनफरमेशन); संकेत; विज्ञापन (नोटिस); प्रतिवेदन (रिपोर्ट); मालके साथ आया चालान (एडवाइस); अभिनय; दृष्टि; गंधन; व्यधन; हिंसा। अ० क्रि० प्रकट करना व्यक्त करना। **–पट्ट**–पु० (नोटिस वोर्ड) लकड़ी लोहे आदिका वह पटल जिसपर आवश्यक सूचनाएँ लिख दी जायँ या लिखकर चिपका दी जायँ। **–पत्र**–पु० वह पत्र या लेख जिसमें कोई सूचना हो, इत्तलानामा, इश्तिहार।

सूचनाधिकारी–पु० (इनफरमेशन ऑफिसर) राज्यका या किसी संस्थाका वह अधिकारी जो उसके कार्यों या प्रगति आदि संवंधी प्रामाणिक जानकारी लोगोंमें प्रसारित या वितरित करता है।

सूचनामंत्री–पु० (इनफरमेशन मिनिस्टर) जनहित-संवंधी सरकारी कार्योंकी सूचना जनतामें प्रसारित करने और जनताकी माँगों, शिकायतों, कष्टों आदि-संवंधी विवरण सरकारतक पहुँचानेका काम करनेवाले विभागका नियंत्रण करनेवाला मंत्री।

सूचनाविभाग–पु० (इनफरमेशन डिपार्टमेंट) जनहित-संवंधी सरकारी कार्योंकी सूचना जनतामें प्रसारित करने और जनताकी माँगों, शिकायतों, कष्टों आदि संवंधी विवरण सरकारतक पहुँचानेका काम करनेवाला विभाग।

सूचनालय–पु० (इनफरमेशन व्यूरो) आवश्यक समाचार या जानकारी प्रसारित करने, प्रदान करनेवाला कार्यालय।

सूचनीय–वि० (सं०) सूचना करने, वताने, जताने योग्य।

सूचा–स्त्री० (सं०) छेदन; संकेत; भेद लेना; छेड़नेवाली वस्तु।

सूचि–स्त्री० (सं०) सूई या छेद करनेका कोई आला; किसी नोकदार चीजकी नोक; दर्भांकुर; सिटकनी; कटघरा; सेनाका एक व्यूह; ग्रंथके विषयोंकी तालिका; अनुक्रमणिका (इंडेक्स); क्रमानुसार तालिका (लिस्ट); स्तूप; अभिनय; एक तरहका रतिवंध; दृष्टि; वेश्यासे उत्पन्न निषादका पुत्र; सूप वनानेवाला; एक तरहका नृत्य; संकेत; केतकी। **–गृहक**–पु० सूई रखनेकी खोली। **–पत्र**–पु० दे० 'सूचीपत्र'। **–पत्रक**–पु० सितावर शाक; एक तरहका ऊख। **–पुष्प**–पु० केतक पुष्प, केवड़ा। **–भिन्न**–वि० सूई जैसी नोकोंमें विभक्त (कलीका सिरा)। **–भेद्य**–वि० सूईसे भेदन करने योग्य; वहुत घना (जैसे अंधकार)। **–मल्लिका**–स्त्री० नेवारी। **–रदन**–पु० नेवला। **–रोमा(मन्)**–वि० सूई जैसे नुकीले रोमोंवाला। पु० शूकर। **–वदन**–पु० नेवला; मच्छर। **–शालि**–पु० एक तरहका धान। **–शिखा**–स्त्री० सूईकी नोक। **–सूत्र**–पु० सीनेका तागा।

सूचिक–पु० (सं०) सिलाई करनेवाला; दरजी।

सूचिका–स्त्री० (सं०) सूई; हाथीकी सूँड़; केतक; एक अप्सरा। **–धर**–पु० हाथी। **–मुख**–वि० नुकीले मुँहवाला। पु० शंख।

सूचित–वि० (सं०) वताया, जताया हुआ; ज्ञापित; कहा हुआ; इशारेसे वताया हुआ; छेद किया हुआ; पूर्णतः उपयुक्त।

सूचितव्य–वि० (सं०) दे० 'सूच्य'।

सूचिनी–स्त्री० (सं०) सूई; रात्रि।

सूचिवान्(वत्)–वि० (सं०) नुकीला। पु० गरुड़।

सूची–स्त्री० (सं०) दे० 'सूचि'; मात्रिक छंदोंकी शुद्धता, संख्या आदि जाँचनेकी एक रीति। **–कटाह-न्याय**–पु० एक न्याय जिसका प्रयोग सरल और कठिन दो प्रकारके कामोंमेंसे पहले सरल काम करनेके संवंधमें किया जाता है। **–कर्म(न्)**–पु० सीनेका काम, सिलाई। **–कार्य**–पु० (नीडिल वर्क) कपड़े आदिपर सूई और डोरेसे वेल-वूटे या कोई आकृति आदि वनानेका काम, सूईकारी। **–तुंड**–पु० मच्छर। **–दल**–पु० सितावर। **–पत्र**–पु० वह पत्र या पुस्तक जिसमें पुस्तकों या और किसी चीजकी नामावली विषय, दाम आदि वताते हुए दी गयी हो (कैटलाग); एक तरहका ऊख; सितावर। **–पत्रक**–पु० दे० 'सूचीपत्र'। **–पद्म**–स्त्री० गंडदूर्वा। **–पुष्प**–पु० एक प्रकारकी व्यूह-रचना। **–पाश**–पु० सूईका छेद। **–पुष्प**–पु० दे० 'सूचि-पुष्प'। **–प्रोत**–वि० (सूई) जिसमें तागा डाला गया हो। **–भेद्य**–वि० दे० 'सूचिभेद्य'। **–मुख**–पु० सूईकी नोक; एक नरक; सितकुश; हीरा; पक्षी, मच्छर या इस तरहका डँसनेवाला कोई कीट; हाथोंकी एक मुद्रा। वि० सूई जैसी चोंच आदिवाला; सूई जैसा तीक्ष्ण; तंग, संकीर्ण। **–रोमा(मन्)**–वि०, पु० दे० 'सूचिरोमा'। **–वक्त्र**–वि० सूई जैसे मुखवाला; वहुत तंग, संकीर्ण। पु० स्कंदका एक अनुचर; एक असुर। **–वक्त्रा**–स्त्री० अत्यंत संकीर्ण योनि जो मैथुनके योग्य न हो। **–वानकर्म(न्)**–पु० सीने और वुननेकी कला। **–व्यह**–पु० एक तरहकी व्यूह-रचना। **–शिल्प**–दे० 'सूचीकार्य'। **–सूत्र**–पु० सीनेका तागा।

सूची–पु० (तु०) पानी पिलानेवाला; शराव वेचनेवाला। **–ख़ाना**–पु० (फा०) मदिरालय।

सूची(चिन्)–वि० (सं०) छेदनेवाला; जतानेवाला; भेद प्रकट करनेवाला; भेद लेनेवाला। पु० भेदिया।

सूचीक–पु० (सं०) डँसनेवाला कीड़ा (मच्छड़ आदि)।

सूच्छम*–वि० दे० 'सूक्ष्म'।

सूच्य–वि० (सं०) सूचनाके योग्य; व्यंग्य।

सूच्यग्र–पु० (सं०) सूईकी नोक; (ला० सूईकी नोक वरावर, वहुत थोड़ी-सी कोई चीज); काँटा। **–विद्ध**–वि० सूईसे छेदा हुआ। **–स्तंभ**–पु० मीनार। **–स्थूलक**–पु० एक तृण, उलप।

सूच्याकार–वि० (सं०) सूईके-से आकारका।

सूच्यार्थ–पु० (सं०) व्यंग्यार्थ।

सूच्यास्य–पु० (सं०) चूहा; मच्छर; हाथोंकी एक मुद्रा। वि० सूई जैसे मुँहवाला।

सूच्याह्व–पु० (सं०) सितावर शाक।

सूछम, सूछिम*–वि॰ दे॰ 'सूक्ष्म' ।

सूज*–स्त्री॰ सूई; † सूजन ।

सूजन–स्त्री॰ सूजनेका भाव या स्थिति, वरम, शोथ ।

सूजना–अ॰ क्रि॰ किसी अंगका फूल आना, वरम या शोथ होना । **मु॰ सूजा-फूला**–जो मुंह फुलाये हो, खफा ।

सूजनी–स्त्री॰ दे॰ 'सुजनी' ।

सूजा–पु॰ बड़ी सूई या इस तरहका कोई आला ।

सूज़ाक–पु॰ (फा॰) एक रोग जिसमें पेशाबमें जलन और शिश्नमें पीड़ा होती है ।

सूजी–स्त्री॰ गेहूँका रवेदार आटा जो हलवा आदि बनानेके काम आता है; * सूई । * पु॰ दरजी, सूचिक ।

सूझ–स्त्री॰ सूझनेका भाव; निगाह; उपज, कल्पना; कोई नयी या दूरकी बात सोचना । **–बूझ**–स्त्री॰ सोचने-समझनेकी शक्ति, बुद्धि ।

सूझना–अ॰ क्रि॰ दिखाई देना; दिमाग या ध्यानमें आना; * छुट्टी पाना ।

सूट–पु॰ (अं॰) पूरा (अंग्रेजी) पहनावा, कोट, पतलून आदि; सिलसिलेसे बने कमरोंका समूह; दावा, नालिश; मुकदमा । –**–केस**–पु॰ पहननेके कपड़े रखनेका बक्स ।

सूड़–स्त्री॰ सूंड़ ।

सूत–पु॰ रुई, रेशम आदिका बारीक तार, कच्चा धागा, सूत्र; धागा, डोरा; लकड़ी या पत्थरका निशान डालनेकी डोरी; इस तरह डाला हुआ निशान; एक नाप, तसूका १६ वाँ भाग; लहसुनियापरकी रेखा; * करधनी; बच्चोंके गलेका गंडा; * बहुत थोड़ेमें कहा हुआ बहुलार्थक वाक्य, सूत्र । * वि॰ अच्छा, भला । **–धार**–पु॰ बढ़ई । **–लड़**–पु॰ रहँट । **मु॰ –धरना, –बाँधना**–लकड़ी आदिपर सूतसे निशान डालना ।

सूत–पु॰ (सं॰) रथ हाँकनेवाला; रथ हाँकनेका काम करनेवाली एक वर्णसंकर जाति; वंदी, भाट; पुराणकी कथा कहनेवाला; व्यासके शिष्य लोमहर्षण मुनि; सूर्य; बढ़ई; पारा । वि॰ उत्पन्न, प्रसूत; प्रेरित । **–कर्म(न्)**–पु॰ रथ चलानेका काम । **–ग्रामणी**–पु॰ गाँवका मुखिया । **–ज**–पु॰ सारथिका पुत्र; कर्ण । **–तनय**–पु॰ कर्ण । **–नंदन**–पु॰ उग्रश्रवा । **–पुत्र**–पु॰ सारथिका पुत्र; सारथि; कर्ण; कीचक । **–पुत्रक**–पु॰ कर्ण । **–राट्(ज्)**–पु॰ पारा । **–वशा**–स्त्री॰ एक बच्चा देनेके बाद बच्चा न देनेवाली गाय । **–सव**–पु॰ एक एकाह यज्ञ ।

सूतक–पु॰ (सं॰) जन्म; जन्मका अशौच, जननाशौच; अशौच; पारा; बाधा । **–गेह**–पु॰ प्रसूति गृह । **–भोजन**–पु॰ जन्म-संबंधी भोज ।

सूतका–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'सूतिका' । **–गृह**–पु॰ दे॰ 'सूतिकागृह' ।

सूतकान्न–पु॰ (सं॰) वह भोज्य पदार्थ जो संतानकी उत्पत्तिके कारण अशुद्ध हो गया हो; सूतकीके घरका खाद्यपदार्थ ।

सूतकाशौच–पु॰ (सं॰) संतान-जन्मके कारण लगनेवाला अशौच ।

सूतकी(किन्)–वि॰ (सं॰) जिसे संतानोत्पत्तिके कारण अशौच लगा हो ।

सूतता–स्त्री॰ (सं॰) सूत, सारथीका काम ।

सूतना†–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'सोना' । पु॰ दे॰ 'सूथना' ।

सूतरी*–स्त्री॰ दे॰ 'सुतली' ।

सूता–पु॰ सूत; एक तरहका रेशम; † अफीम काछनेकी सीपी । वि॰ सोया हुआ 'देखा बाल तहाँ पुनि सूता'–रामा॰ । स्त्री॰ (सं॰) जच्चा, प्रसूता ।

सूति–स्त्री॰ (सं॰) जनन, प्रसव; संतान; सिलाई; सोमनिष्पीडन; सोमरस निकालनेका स्थान; उद्‌गम; फसलकी पैदावार । पु॰ हंस; विश्वामित्रका एक पुत्र । **–काल**–पु॰ प्रसवकाल । **–गृह**–पु॰ सूतिकागृह, जच्चाखाना । **–मारुत,–वात**–पु॰ प्रसववेदना । **–मास**–पु॰ वह महीना जिसमें बच्चा पैदा हुआ हो, प्रसवमास । **–रोग**–पु॰ दे॰ 'सूतिकारोग' ।

सूतिका–स्त्री॰ (सं॰) वह स्त्री जिसने तुरत या हालमें ही बच्चा जना हो, नवप्रसूता, जच्चा; सद्यःप्रसूता गौ । **–गद**–पु॰ दे॰ 'सूतिकारोग' । **–गृह,–गेह,–भवन**–पु॰ जच्चाखाना, सौरी । **–मारुत**–पु॰ दे॰ 'सूतिमारुत' । **–रोग**–पु॰ प्रसूताको आहार-विहारके दोषसे होनेवाला रोग । **–षष्ठी**–स्त्री॰ छठीके दिन सूतिकागृहमें पूजी जानेवाली एक देवी; छठी ।

सूतिकागार, सूतिकावास–पु॰ (सं॰) जच्चाखाना ।

सूतिग†–पु॰ दे॰ 'सूतक' ।

सूती*–स्त्री॰ सीपी; (सं॰) सूतकी पत्नी । वि॰ (हिं॰) सूतका, सूतका बना हुआ । **–कपड़ा**–पु॰ रुईके सूतका बना हुआ कपड़ा । **–माल**–पु॰ सूतकी बनी हुई चीजें ।

सूतीगृह–पु॰ (सं॰) दे॰ 'सूतिगृह' ।

सूतीघर–पु॰ सूतिकागार ।

सूतीमास–पु॰ (सं॰) दे॰ 'सूतिमास' ।

सूत्कार–पु॰ (सं॰) सिसकारी, सीत्कार ।

सूत्तर–वि॰ (सं॰) बहुत बढ़ा हुआ; धुर उत्तर । पु॰ उचित उत्तर, माकूल जवाब ।

सूत्थान–पु॰ (सं॰) अच्छा उत्थान; अच्छा प्रयत्न । वि॰ चतुर ।

सूत्पर–पु॰ (सं॰) शराब खींचना, सुरासंधान ।

सूत्पलावती–स्त्री॰ (सं॰) एक नदी ।

सूत्य–पु॰ (सं॰) सोमनिष्पीडनका समय ।

सूत्या–स्त्री॰ (सं॰) यज्ञोत्तर-स्नान; सोमका रस निकालना; सोमरसपान ।

सूत्याशौच–पु॰ (सं॰) जननाशौच ।

सूत्र–पु॰ (सं॰) सूत, तंतु; तागा; धागोंकी राशि; (फार्मूला) (रसायन संबंधी) किसी रासायनिक यौगिकके अणुको उसके अवयव तत्त्वोंके संकेत अक्षरों (सिम्बल) द्वारा व्यक्त करना । जैसे पानीके अणुका H_2O है; (गणित तथा भौतिकी संबंधी) सांकेतिक भाषामें तथ्योंका विवरण; यज्ञसूत्र, जनेऊ; कठपुतली नचानेकी डोरी; रेशा; व्यवस्था, नियम; सिलसिला; योजना; छोटा, अर्थगर्भ वाक्य जिसमें दर्शनादि शास्त्रोंकी रचना हुई है; ऐसे वाक्योंमें रचित मूल ग्रंथ (कल्पसूत्र, गृह्यसूत्र इ॰); शरीरकी मोटी नस (कॉर्ड); किसी वस्तुके निर्माणके सांकेतिक शब्द (फ़ार्मूला); संकेत, सुराग (क्लू); मूलमुद्दा (प्वाइंट); करधनी; कारण, निमित्त; (हिं॰) जरिया, किसी सूचना-समाचारके मिलनेका स्थान (विश्वसनीय सूत्रसे); एक वृक्ष । **–कंठ**–पु॰ ब्राह्मण; कबूतर; पेंडुकी; खंजन । **–करण**–पु॰ सूत्रवाक्यका निर्माण । **–कर्ता–(र्तृ)**–पु॰ सूत्रग्रंथका रचयिता । **–कर्म(न्)**–पु॰ बढ़ई, मेमारका काम; जुलाहेका काम । **–॰कृत्**–पु॰ बढ़ई; राज । **–कार**–पु॰ सूत्र रचनेवाला; बढ़ई; सूत कातनेवाला; जुलाहा । **–कृत्**–पु॰ दे॰ 'सूत्रकार' । **–कृति**–स्त्री॰ आँतोंके बारीक कीड़े (थ्रेड वर्म) । **–कोण,–कोणक**–पु॰ डमरू । **–कोश**–पु॰ सूतकी अंटी । **–क्रीडा**–स्त्री॰ सूतका एक खेल जिसकी गणना ६४ कलाओंमें है । **–गंडिका**–स्त्री॰ जुलाहोंका एक छड़ी जैसा उपकरण । **–ग्रंथ**–पु॰ सूत्ररूपमें रचित (मूल) ग्रंथ । **–ग्रह**–वि॰ सूत्र ग्रहण करनेवाला । **–जाल**–पु॰ सूतका बना हुआ जाल । **–तंतु**–पु॰ सूत, तार; अध्यवसाय । **–तर्कुटी**–स्त्री॰ तकला । **–दरिद्र**–वि॰ जिसकी बुनावटमें कम सूत लगाया गया हो, झीना । **–धर**–वि॰ सूत्र धारण करनेवाला । पु॰ सूत्रज्ञ व्यक्ति; दे॰ 'सूत्रधार' । **–धार**–पु॰ नाट्यशालाका व्यवस्थापक या प्रधान नट; इंद्र; बढ़ई । **–धृक्**–पु॰ (नाटकका) सूत्रधार; मेमार, शिल्पी । **–पत्रकर,–पत्री(त्रिन्)**–वि॰ जिसका धागा या पतला पत्ता बनाया जा सके । **–पदी**–वि॰ स्त्री॰ सूत जैसे पतले पैरोंवाली । **–पात**–पु॰ कार्यका आरंभ; मापवाले सूतसे मापनका कार्य । **–पिटक**–पु॰ बौद्धग्रंथ त्रिपिटकका प्रथम खंड । **–पुष्प**–पु॰ कपास । **–प्रोत**–वि॰ सूतसे बद्ध (जैसे पुत्तलिका) । **–बद्ध**–वि॰ सूत्ररूपमें लिखित, रचित । **–भिद्**–पु॰ दरजी । **–भृत्**–पु॰ नाटकका सूत्रधार । **–मध्यभू**–पु॰ यक्षधूप, धूना । **–यंत्र**–पु॰ सूतका बना जाल; करघा; ढरकी । **–ला**–स्त्री॰ तकला । **–वाप**–पु॰ बुननेका कार्य । **–विद्**–वि॰ सूत्रज्ञ । **–वीणा**–स्त्री॰ वीणाका एक भेद जिसमें तारकी जगह सूत लगे होते थे, लाबुकी । **–वेष्टन**–पु॰ बुननेकी क्रिया; ढरकी । **–शाख**–पु॰ शरीर । **–शाला**

–स्त्री० सूत कातने, एकत्र करनेका कारखाना (कौ०)। **–संग्रह** पु० सूत्रोंका संग्रह; बागडोर थामनेवाला। **–संचालक**–पु० (वायर पुलर) वह राजनीतिज्ञ जो गुप्त रूपसे घटनाओंका सूत्र-संचालन करता हो, दुरभिसंधिक। **–स्थान**–पु० सुश्रुतका प्रथम स्थान या परिच्छेद।

सूत्रक–पु० (सं०) तागा, धागा; लोहेके तारोंका कवच (कौ०)।

सूत्रण–पु० (सं०) सूत्ररूपमें रचना; सूत्ररूपमें नत्थी करना; सिलसिलेसे सजाना।

सूत्रयी–वि० सूत्र रचनेवाला।

सूत्रवानकर्मांत–पु० (सं०) कपड़ा बुननेका कारखाना (कौ०)।

सूत्रांग–पु० (सं०) बढ़िया काँसा।

सूत्रांत–पु० (सं०) बौद्ध सूत्र।

सूत्रांतक–वि० (सं०) बौद्ध सूत्रोंका ज्ञाता।

सूत्रात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) जीवात्मा; एक प्रकारकी बहुत सूक्ष्म वायु।

सूत्राध्यक्ष–पु० (सं०) वस्त्र-व्यापारका अध्यक्ष।

सूत्रामा(मन्)–पु० (सं०) इंद्र।

सूत्राली–स्त्री० (सं०) हार।

सूत्रिका–स्त्री० (सं०) सेंवई; हार, माला।

सूत्रित–वि० (सं०) नत्थी किया हुआ; सिलसिलेसे लगाया हुआ; सूत्ररूपमें कथित।

सूत्री(त्रिन्)–वि० (सं०) सूत्र-विशिष्ट। पु० कौआ; (नाटकका) सूत्रधार।

सूत्रीय–वि० (सं०) सूत्र-संबंधी।

सूत्रोत–वि० (सं०) सूतमें नत्थी किया हुआ।

सूथन, सूथना–पु० दे० 'सुथना'।

सूथनी–स्त्री० स्त्रियोंके पहननेका पाजामा।

सूथार*–पु० बढ़ई, शिल्पी।

सूद–पु० (सं०) हनन, वध; व्यंजन; रसोइया; रसा; कुआँ; झरना; सारथिका काम; मटरकी दाल; पंक; दोष, पाप; लोध्र वृक्ष; ढालना, चुलाना; कश्मीरका एक भूभाग। **–कर्म(न्)**–पु० रसोइयेका काम। **–शाला**–पु० रसोई-घर। **–शास्त्र**–पु० पाकविद्या।

सूद–पु० (फा०) लाभ, नफा; ऋणके रूपमें दिये गये धनपर लाभकी तरह मिलनेवाला अंश, ब्याज (इंटरेस्ट); भलाई। **–ख़ोर, ख़्वार**–पु० सूद लेनेवाला, ब्याजसे जीविका चलानेवाला। **–ख़ोरी**–स्त्री० सूद लेना, ब्याज-बट्टेका रोजगार। **–दरसूद**–पु० वह ब्याज जो मूल और ब्याज दोनोंको जोड़कर लगाया जाय, चक्रवृद्धि ब्याज (कम्पाउंड इन्टरेस्ट)। (अ०) काले रंगकी चीज़ें।

सूदक–वि० (सं०) मारने, नष्ट करनेवाला।

सूदन–पु० (सं०) हनन, वध; फेंकना; अंगीकार करना; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि ('सुजान-चरित्र'के रचयिता)। वि० हनन, नाश करनेवाला (रिपुसूदन, मधुसूदन); प्रिय।

सूदना*–स० क्रि० हनन करना, नष्ट करना।

सूदाध्यक्ष–पु० (सं०) पाकशालाका अध्यक्ष।

सूदि, सूदी (दिन्)–वि० (सं०) ऊपरसे बहनेवाला।

सूदित–वि० (सं०) आहत; हत; नष्ट किया हुआ।

सूदिता(तृ)–वि० (सं०) दे० 'सूदक'।

सूदी–वि० (रकम) जिसपर ब्याज मिलता हो। मु०–**चलाना**–सूदपर रुपया देना।

सूद्र†–पु० दे० 'शूद्र'।

सूध*–वि० दे० 'सूधा'; सीधा; शुद्ध। स्त्री० सीध। अ० सीधमें।

सूधना*–अ० क्रि० सत्य होना; सफल होना।

सूधरा*–वि० दे० 'सूधा'।

सूधा*–वि० निष्कपट, भोला-भाला; सीधा; जो वक्र या जटिल न हो; जो उलटा न हो। मु० **–सहना***–खरी-खरी सुनना। **–सूधी सुनाना***–खरी बात कहना।

सूधे*–अ० सीधेसे। **–सूध–दोटूक**।

सून*–वि० दे० 'शून्य'; दे० 'सना'; रहित। **–सान**–वि० दे० 'सुनसान'।

सून–वि० (सं०) जनमा हुआ, जात; खिला हुआ; रिक्त, खाली। पु० प्रसव; कली; फूल; फल; पुत्र। **–शर**–पु० कामदेव।

सूना–वि० खाली, शून्य, जनहीन। पु० एकांत स्थान। **–पन**–पु० सूना लगना, शून्यता। मु० **–लगना**–उचाट, उदास लगना।

सूना–स्त्री० (सं०) कन्या, पुत्री; पशुओं आदिका वध स्थान; मांसविक्रय; चोट पहुँचाना; वध करना; गलेका कौवा; कमरबंद; गलग्रंथियोंका शोथ; गलसुआ; प्रकाश-रश्मि; नदी; हाथीकी सूँड़; हाथीके अंकुशका दस्ता; घरकी उन पाँच वस्तुओं (चूल्हा, चक्की, ओखली, घड़ा और झाड़ू) मेंसे कोई जिनसे जीवहिंसाकी संभावना हो; तत्काल होनेवाली मृत्यु। **–दोष**–पु० घरकी उक्त पाँच वस्तुओंसे होनेवाली हिंसाका दोष।

सूनिक, सूनी (निन्)–पु० (सं०) व्याध; माँस बेचनेवाला।

सूनु–पु० (सं०) बेटा; बच्चा; नाती; छोटा भाई; सूर्य; आक; प्रेरणा करनेवाला (वै०); एक वैदिक ऋषि। स्त्री० दे० 'सूनू'।

सूनू–स्त्री० (सं०) बेटी।

सूनृत–वि० (सं०) सत्य और प्रिय; प्रिय; सद्भावपूर्ण; शुभ। पु० सत्य और प्रिय वाक्य (जै०); कल्याणकारिता।

सूनृता–स्त्री० (सं०) दयालुता, सद्भाव; सत्य और सद्भावपूर्ण वचन; धर्मकी कन्या और उत्तानपादकी पत्नी; सत्यकी अधिष्ठात्री देवी; एक अप्सरा; उत्तम गान; ऊषा; आहार।

सून्मद, सून्माद–वि० (सं०) दे० 'सोन्मद'।

सूप–पु० (सं०) पकी हुई दाल; रसा, जूस; मसाला; बरतन; रसोइया; बाण। **–कर्ता(र्तृ),–कार,–कृत्**–पु० रसोइया, पाचक। **–कारी***–पु० दे० 'सूपकार'। **–गंधि**–वि० जिसमें बहुत कम मसाला पड़ा हो। **–धूपक,–धूपन**–पु० हींग। **–पर्णी**–स्त्री० मुद्‌गपर्णी, बनमूंग। **–रस**–पु० रसेका जायका। **–शास्त्र**–पु० पाकशास्त्र। **–श्रेष्ठ**–पु० मूंग। **–संसृष्ट**–वि० मसाला मिलाया हुआ। **–स्थान**–पु० पाकशाला।

सूप–पु० (अं०) रोगियोंके लिए साग सब्जी आदिका तैयार किया जानेवाला रसा, जूस, सूप (सं०)।

सूप–पु० अनाज पछोरनेका बाँसके छिलके, सींक आदिका बना पात्र, छाज। **–नखा**–स्त्री० (सूपके समान नखवाली) सूर्पणखा नामकी राक्षसी जो रावणकी बहन थी। **–झरना**–पु० एक तरहका सूप जो झरनेका भी काम देता है।

सूपक–पु० रसोइया।

सूपच*–पु० दे० 'श्वपच'।

सूपचर–वि० (सं०) दयालु; जल्द नीरोग किया हुआ।

सूपचार–वि० (सं०) जो आसानीसे संतुष्ट हो जाय।

सूपतीर्थ, सूपतीर्थ्य–वि० (सं०) जिसमें नहानेके लिए अच्छी सीढ़ियाँ बनी हों।

सूपांग–पु० (सं०) हींग।

सूपा†–पु० सूप, छाज।

सूपिक–पु० (सं०) सूपकार, रसोइया।

सूपीय–वि० (सं०) दे० 'सूप्य'।

सूपोदन–पु० (सं०) दाल-भात।

सूप्य–वि० (सं०) रसा बनानेके योग्य। पु० रसादार खाद्य पदार्थ।

सूफ़–पु० (अ०) ऊन; कलमका रेशा; दवातमें डाला जानेवाला कपड़ा; घावमें भरा जानेवाला कपड़ा; गोटा बुननेका बाना। स्त्री० (अ०) विज्ञान।

सूफ़ार–पु० (फा०) तीरकी चुटकी; सूईका छेद।

सूफ़िया–पु० (अ०) मुसलमान साधुओंका एक संप्रदाय।

सूफ़ियाना–वि० सूफियों जैसा, सादा।

सूफ़ी–वि० (फा०) ऊनी कपड़े पहननेवाला; संत; पवित्र। पु० संसारकी आसक्तिसे मुक्त होकर ईश्वरप्राप्तिकी साधना करनेवाला; सूफिया संप्रदायका अनुयायी; इस संप्रदायके मुख्य भेद चार हैं–चिश्ती, कादिरी, सुहरावर्दी और नक्शबंदी; अध्यात्मवादी; ब्रह्मज्ञानी; तसव्वुफ़का अनुयायी; सभी धर्मोंसे प्रेम करनेवाला। **–ख़याल**–वि० सूफियोंके-से विचार रखनेवाला।

सूबा–पु० (अ०) राज्यका विभाग जिसमें कई जिले शामिल हों,

प्रदेश, प्रांत; सूबेदार। **–परस्ती**–स्त्री० प्रान्तीयता। **–(बे)-दार**–पु० सूबेका शासक, गवर्नर; फौजका एक छोटा अफसर। **–०मेजर**–पु० फौजका एक अफसर। **–दारी**–स्त्री० सूबेदारका पद या कार्य।

सूभर*–वि० दे० 'शुभ्र'।

सूम–वि० कंजूस, कृपण। पु० (सं०) जल; दूध; आकाश।

सूमड़ा–वि० सूम।

सूमी†–पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ीसे मेज, कुर्सी आदि बनाते हैं।

सूय–पु० (सं०) सोमनिष्पीडन; यज्ञ।

सूरंजान–स्त्री० (फा०) एक ओषधि। **–तल्ख़**–स्त्री० कड़वी सूरंजान। **–शीरीं**–स्त्री० मीठी सूरंजान।

सूर–वि० अंधा। पु० सूरदास; सूर्य। **–दास**–पु० व्रजभाषा और कृष्णकाव्यके सर्वश्रेष्ठ कवि (सुप्रसिद्ध कृष्णकाव्य सूरसागरके रचयिता ये ही थे और अकबरके शासनकालमें वर्तमान थे); (ला०) अंधा व्यक्ति। **–सागर**–पु० सूरदास रचित कृष्णलीलाका वर्णन करनेवाला एक बृहत् गीतिकाव्य।

सूर*–वि० दे० 'शूर'। पु० शूल; कृष्णके पितामह; शूकर; भूरे रंगका घोड़ा। **–कुमार**–पु० वसुदेव। **–ज**–पु० शूरवीरका लड़का। **–बीर**–पु० दे० 'शूरवीर'। **–सावंत**–पु० वीर सरदार; युद्धसचिव। **–सेन**–पु० दे० 'शूरसेन'। **–० पुर**–पु० मथुरा नगरी।

सूर–पु० (सं०) सूर्य; आक; वर्तमान कल्पके सत्तरहवें अर्हत् कुंथुके पिता; विद्वान् व्यक्ति, आचार्य। **–कंद**–पु० सूरन, ओल। **–कांत**–पु० सूर्यकांत मणि। **–कृत्**–पु० विश्वामित्रका एक पुत्र। **–चक्षा(क्षस्)**–वि० सूर्यकी तरह चमकनेवाला। **–ज**–पु० शनि; सुग्रीव; यम; कर्ण; दे० क्रममें। **–जा**–स्त्री० यमुना। **–पुत्र**–पु० सुग्रीव; शनि; कर्ण। **–मुखी(खिन्)**–पु० दे० 'सूर्यमुखी'। **–मुखीमनि**–पु० सूर्यकांतमणि। **–रिपु***–स्त्री० रात्रि (सू०)। **–सुत**–पु० दे० 'सूरज'। **–सुता**–स्त्री० यमुना। **–सूत**–पु० सूर्यका सारथि, अरुण।

सूर–पु० (अ०) तुरही, नरसिंघा; वह तुरही जिसे मुसलमानोंके विश्वासानुसार, कयामतके दिन, इसराफील नामका फिरिश्ता फूँकेगा; (फा०) लाल रंग; हर्ष; अफगानिस्तानका एक नगर; एक अफगान जाति।

सूरज–पु० सूर्य; एक तरहका गोदना; सूरदास, दे० 'सूर' (सं०)में। **–तनी***–स्त्री० सूर्यतनया, यमुना। **बंसी**–पु० दे० 'सूर्यवंशी'। **–बेध**–पु० गृहनिर्माणका एक दोष–पूरब या पश्चिम रुखवाले मकानमें आँगनकी उत्तर-दक्खिन लम्बाई पूरब-पश्चिमकी अपेक्षा कम होना। **–भगत**–पु० एक तरहकी गिलहरी। **–मुखी**–पु० दे० 'सूर्यमुखी'। **–सुत**–पु० सुग्रीव। **–सुता**–स्त्री० यमुना। मु० **–को चिराग़ या दीपक दिखाना**–अति गुणवान् या बुद्धिमान्को कुछ बताना-सिखाना; अति प्रसिद्ध पुरुषका परिचय देना। **–पर थूकना,–पर धूल फेंकना**–नितांत निर्दोष व्यक्तिपर लांछन लगाकर खुद लांछित होना।

सूरजी–पु० बालकके जन्मसे दसवें दिन सूर्यकी पूजाके समय राजस्थान आदिमें गाये जानेवाले गीत।

सूरण–पु० (सं०) शूरण, जमीकंद, ओल।

सूरत–वि० (सं०) कृपालु, अनुकूल; शांत। पु० भारतका एक प्रसिद्ध नगर। * स्त्री० स्मरण, याद; सुध; (अ०) कुरानका एक अध्याय; रूप, शक्ल; चित्र; सुंदरता; भेस; हालत, स्थिति; उपाय, ढब; ढंग, तौर; लक्षण, रंग-ढंग; वस्तुका बाह्य रूप, ऊपरी हालत। **–आशना**–वि० शक्ल पहचाननेवाला, मामूली जान-पहचानवाला। **–आशनाई**–स्त्री० जान-पहचान, अल्प-परिचय। **–गर**–पु० चित्रकार, मूर्तिकार। **–गरी**–स्त्री० चित्रकारी। **–दार**–वि० सुन्दर, रूपवान्। **–पज़ीरी**–स्त्री० तस्वीर बनाना, चित्रण। **–परस्त**–वि० रूपकी पूजा करनेवाला; केवल रूप देखनेवाला। **–बाज़**–वि० बहुरुपिया; नकलची। **–शकल,–शक्ल**–स्त्री० रूप। **–०वाला**–वि० सुंदर, रूपवान्। **–सीरत**–स्त्री० रूप-गुण। **–हराम**–वि० जो ऊपर अच्छा और भीतर बुरा हो, जिसकी सूरतसे धोखा हो। **–(ते) हाल**–स्त्री० स्थिति, वर्तमान अवस्था। मु० **–दिखाना**–शक्ल दिखाना, सामने आना। **–नज़र आना**–उपाय सूझना। **–निकल आना**–अधिक सुंदर हो जाना; उपाय सूझ जाना। **–पर झाड़ू फेरना**–अतिशय घृणाके कारण शक्ल न देखना, नाम न लेना (स्त्रि०)। **–बदलना**–भेस बदलना; हालत बदलना। **–बनाना**–शक्ल बनाना; चेहरेसे कोई भाव प्रकट करना; मुँह चिढ़ाना; चित्र बनाना; रूपरेखा बनाना। **–बिगड़ना**–शक्ल बुरी हो जाना; अवस्था बिगड़ना। **–बिगाड़ना**–शक्ल खराब कर देना; चेहरेसे रोष; अप्रसन्नता प्रकट करना। **–से बेज़ार होना**–अतिशय घृणा या रोष होना, देखना भी सह्य न होना।

सूरता–स्त्री० (सं०) सहजमें दुही जानेवाली, सीधी गाय; * वीरता।

सूरताई*–स्त्री० वीरता।

सूरति*–स्त्री० शक्ल, रूप; याद, स्मरण।

सूरन–पु० एक कंद शाक, शूरण, जमीकंद।

सूरपनखा*–स्त्री० 'शूर्पणखा'।

सूरबार–पु० पाजामा।

सूरमा–पु० बहादुर, योद्धा, शूरवीर। **–पन**–पु० वीरता।

सूरवाँ*–पु० दे० 'सूरमा'।

सूरा–पु० अनाजका एक कीड़ा; * अंधा मनुष्य; (अ०) कुरानका कोई अध्याय, सूरत। **–(रए)इखलास**–पु० कुरानका एक विशेष अध्याय जिसे मुसलमान स्त्रियाँ प्रेमपोषक मानकर व्याहमें दूल्हेसे पढ़वाती हैं। **–फातिहा**–स्त्री० कुरानकी सबसे पहली सूरत। **–यासीन**–स्त्री० कुरानकी एक सूरत जो मृत्युके समय सुनायी जाती है।

सूराख़–पु० (फा०) छेद। **–दार**–वि० जिसमें छेद हो।

सूरि–पु० (सं०) सूर्य; पंडित; ऋत्विक्; पूजा करनेवाला; कृष्ण; जैनाचार्योंकी उपाधि ('मल्लिनाथ सूरि'); बृहस्पति (देवाचार्य और ग्रह भी)।

सूरी–स्त्री० (सं०) सूर्यपत्नी; कुंती; राई; पंडिता; * शूली; बरछा। वि० (फा०) सूर जातिका। पु० भारतका एक मुसलिम राजवंश जो शेरशाहसे चला और जिसने १५३० से १५५६ ई० तक राज्य किया।

सूरी(रिन्)–वि० (सं०) विद्वान्। पु० विद्वान् व्यक्ति।

सूरुज*–पु० दे० 'सूर्य'।

सूरुवाँ*–पु० दे० 'सूरमा'।

सूर्क्षण, सूर्क्ष्यण–पु० (सं०) अनादर।

सूर्क्ष्य–पु० (सं०) माष, उड़द।

सूर्प–पु० (सं०) दे० 'शूर्प'। **–नखा**–स्त्री० (हिं०) दे० 'शूर्पणखा'।

सूर्मि, सूर्मी–स्त्री० (सं०) लोह-प्रतिमा (जिसे तप्त करके व्यभिचारीको जलाते थे); गृहस्तंभ; कांति; ज्वाला; पानीका नल।

सूर्य–पु० (सं०) सौर-मंडलका प्रधान पिंड या तारा जिसकी पृथ्वी और मंडलके दूसरे ग्रह प्रदक्षिणा किया करते हैं और जो पृथ्वीको प्रकाश और उष्णता मिलनेका साधन तथा उसके ऋतुक्रमका कारण है, आदित्य, रवि, भानु; आक; १२ की संख्या; बलिका एक पुत्र; एक दानव। **–कमल**–पु० सूरजमुखीका फूल। **–कर**–पु० सूर्यकिरण। **–करोज्ज्वल**–वि० सूर्यकी किरणें पड़नेसे प्रकाशित। **–कांत,–०मणि**–पु० एक तरहका स्फटिक जिससे सूर्यके सामने करनेसे आँच निकलती है, आतशी शीशा; स्फटिक; एक पुष्प, आदित्यपर्णी। **–कांति**–स्त्री० सूर्यकी दीप्ति, चमक; तिलका फूल; एक पुष्प। **–काल**–पु० दिन। **–कालनलचक्र**–पु० शुभाशुभ फल जाननेका एक चक्र (ज्यो०)। **–क्रांत**–पु० एक ताल (संगीत); एक जनपद। **–क्षय**–पु० सूर्य-मंडल। **–गर्भ**–पु० एक बोधिसत्त्व। **–ग्रह**–पु० सूर्य; सूर्यग्रहण; राहु और केतु; घड़ेका पेंदा। **–ग्रहण**–पु० चंद्रमाकी छाया पड़नेसे सूर्य-बिंबका छिप जाना (पौराणिक मतसे राहु या केतु द्वारा सूर्यका ग्रास); प्राणोंका पिंगला नाड़ीसे उठकर कुंडलिनीमें पहुँचनेका समय (हठयोग)। **–चक्षु(स्)**–पु० एक

राक्षस। **चित्रक**–पु० सूर्यका चित्र लेने और उसके तापकी घनता नापनेका यंत्र (हीलियोग्राफ)। **–ज**–पु० दे० ‘सूर्य-तनय’। **–जा**–स्त्री० दे० ‘सूर्यतनया’। **–तनय**–पु० शनि; यम; सावर्णि मनु; रेवंत; सुग्रीव; कर्ण। **–तनया**–स्त्री० यमुना। **–तपा(पस्)**–पु० एक मुनि। **–ताप**–पु० सूर्य किरणोंसे उत्पन्न होनेवाला ताप (इन्सोलेशन)। **–तापिनी**–स्त्री० एक उपनिषद्। **–तीर्थ**–पु० एक तीर्थ। **–तेज(स्)**–पु० सूर्यका तेज, धूप। **–दृक्(श्)**–वि० सूर्यकी ओर देखनेवाला। **–देव**–पु० सूर्य भगवान्। **–देवत्य**–वि० जिसका देवता सूर्य हो। **–ध्वज**–वि० जिसकी ध्वजामें सूर्यका चिह्न हो। **–०पताकी-(किन्)**–पु० शिव। **–नंदन**–पु० दे० ‘सूर्य-तनय’। **–नक्षत्र**–पु० वह नक्षत्र जिसमें सूर्य हो। **–नगर**–पु० कश्मीरका एक प्राचीन नगर, कश्मीरकी राजधानी। **–नमस्कार**–पु० सूर्योदयके समय सूर्यको साष्टांग प्रणाम करनेका एक विशिष्ट व्यायाम। **–नाड़ी**–स्त्री० पिंगला नाड़ी (हठयोग)। **–नाभ**–पु० एक दानव। **–नारायण**–पु० सूर्य भगवान्। **–नेत्र**–पु० गरुड़का एक पुत्र। **–पक्व**–वि० सूर्यतापसे पका हुआ, स्वयं पक्व। **–पति**–पु० सूर्य देवता। **–पत्नी**–स्त्री० संज्ञा; छाया। **–पत्र**–पु० आदित्यभक्ता; अर्क; अर्कपत्री। **–पर्णी**–स्त्री० अर्कपत्री; माषपर्णी। **–पर्व(न्)**–पु० सूर्यके नयी राशिमें प्रवेश या सूर्यग्रहण आदिका पुण्यकाल। **–पाद**–पु० सूर्यकी किरण। **–पुत्र**–पु० वरुण; शनि; यम; अश्विनीकुमार; सुग्रीव; कर्ण। **–पुत्री**–स्त्री० यमुना; विजली। **–पुर**–पु० दे० ‘सूर्यनगर’। **–पुराण**–पु० सूर्यके माहात्म्यका वर्णन करनेवाला ग्रंथ विशेष। **–प्रदीप**–पु० समाधिका एक प्रकार। **–प्रभ**–वि० सूर्यके समान प्रकाशित, प्रभायुक्त। पु० एक समाधि; एक बोधिसत्त्व; एक नागासुर; कृष्णकी एक पत्नी लक्ष्मणांका प्रासाद; एक नरेश। **–प्रभव**–वि० सूर्यसे उत्पन्न। **–प्रभातेजा(जस्)**–पु० समाधिका एक प्रकार। **–प्रशिष्य**–पु० राजा जनक। **–फणिचक्र**–पु० फलित ज्योतिषका एक चक्र जिससे कार्य-विशेषमें शुभाशुभका ज्ञान प्राप्त करते हैं। **–बिंब**–पु० सूर्यका मंडल। **–भ**–वि० सूर्य जैसा दीप्तिमान्। **–भक्त,–भक्तक**–वि० सूर्योपासक। पु० गुलदुपहरिया। **–भक्ता**–स्त्री० आदित्यभक्ता, हुरहुर। **–भा**–वि० सूर्यकी भाँति प्रकाशमान। **–भागा**–स्त्री० एक नदी। **–भानु**–पु० एक यक्ष; एक राजा। **–भ्राट्(ज्)**–वि० सूर्य जैसा कांतिमान्। **–भ्राता(तृ)**–पु० ऐरावत। **–मंडल**–पु० सूर्यका घेरा; एक गंधर्व। **–मणि**–पु० सूर्यकांत मणि; एक फूल। – **–माल**–पु० शिव। **–मास**–पु० सौर मास। **–मुखी(खिन्)**–पु० पीले रंगका एक बड़ा फूल जो सूर्यकी गतिके साथ ऊपर उठता और नीचे झुकता है। **–यंत्र**–पु० सूर्योपासनामें व्यवहृत सूर्यका चित्र या प्रतिमा; सूर्यके वेधमें काम आनेवाला एक यंत्र। – **–रश्मि**–स्त्री० सूर्यकी किरण; सविता। **–रुक्(च्)**–स्त्री० सूर्यका प्रकाश। **–लता**–स्त्री० आदित्यभक्ता, हुरहुर। **–लोक**–पु० सूर्यका लोक, सौरभुवन। **–वंश**–पु० भारतवर्षके दो प्रमुखतम राजवंशोंमेंसे एक जिसकी उत्पत्ति वैवस्वत मनुके पुत्र इक्ष्वाकुसे मानी जाती है, इक्ष्वाकुवंश। **–वंशी**–वि० (हिं०) सूर्यवंशका। पु० सूर्यवंशमें उत्पन्न पुरुष। **–वंश्य**–वि० सूर्यवंशका। **–वन**–पु० एक वन। **–वरलोचन**–पु० समाधिका एक प्रकार। **–वर्चा(र्चस्)**–वि० सूर्यसदृश; तेजोमंडित। पु० एक ऋषि; एक देवगंधर्व। **–वर्मा(र्मन्)**–पु० त्रिगर्तका एक महाभारतकालीन राजा। **–वल्लभा**–स्त्री० पद्मिनी; आदित्यभक्ता। **–वल्ली**–स्त्री० अर्कपुष्पिका; क्षीरकाकोली। **–वार**–पु० रविवार। **–विकासी(सिन्)**–वि० सूर्यके प्रकट होनेपर खिलनेवाला। **–विघ्न**–पु० विष्णु। **–विलोकन**–पु० बच्चेके चार महीनेका होनेपर उसे बाहर ले जाकर सूर्यदर्शन करानेकी रस्म। **–वृक्ष**–पु० आक; अंधाहुली। **–वेश्म(न्)**–पु० सूर्यमंडल। **–व्रत**–पु० सूर्यकी प्रसन्नताके लिए रविवारको किया जानेवाला व्रत; ज्योतिषमें एक चक्र। **–शत्रु**–पु० एक राक्षस। **–शिष्य**–पु० याज्ञवल्क्य। **–शिष्यांतेवासी(सिन्)**–पु० जनक। **–शोभा**–स्त्री० सूर्यका प्रकाश; एक फूल। **–श्री**–पु० एक विश्वेदेव। **–षष्ठी**–स्त्री० विहारका एक मुख्य पर्व जो कार्तिक शुक्ल षष्ठीको पड़ता है। **–संक्रम,–संक्रमण**–पु०,**–संक्रांति**–स्त्री० सूर्यका दूसरी राशिमें प्रवेश। **–संज्ञ**–पु० एक तरहका लाल; केसर; ताँबा; आक। **–सदृश**–पु० लीलावज्र (बौ०)। **–साम(न्)**–पु० कुछ सामोंके नाम। **–सारथि**–पु० अरुण। **–सावर्णि**–पु० एक मनु। **–सावित्र**–पु० एक विश्वेदेव। **–सिद्धांत**–पु० भास्कराचार्य-रचित गणित ज्योतिषका एक प्रसिद्ध ग्रंथ। **–सुत**–पु० शनि; सुग्रीव; कर्ण; यम। **–सूक्त**–पु० ऋग्वेदका एक सूक्त। **–सूत**–पु० सूर्यका सारथि, अरुण। **–स्तुति**–स्त्री०,**–स्तोत्र**–पु० वह स्तुति जो सूर्यके प्रति हो। **–स्तुत्**–पु० एक एकाह यज्ञ। **–स्नान**–पु० धूप स्नान (सन बाथ)। **–हृदय**–सूर्यका एक स्तोत्र।

सूर्यक–वि० (सं०) सूर्यसदृश।

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’–पु० (सं० १९५३–सं० २०१८) छायावादी कवियोंकी वृहत्त्रयीमें आपका स्थान है। काव्यमें मुक्त छंद और संगीतपरकता आपकी विशेष देन है। रचनाएँ–काव्य-परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, वेला, नये पत्ते, अपरा; उपन्यास–अप्सरा, अलका, निरुपमा आदि; कहानी-संग्रह-लिली, सुकुलकी वीवी आदि; आलोचनात्मक निबंध-संग्रह–प्रबंध प्रतिभा, रवीन्द्र-कविता कानन आदि; रेखा-चित्र–कुल्ली भाँट, बिल्लेसुर बकरिहा; जीवनियाँ–राणाप्रताप, प्रह्लाद आदि।

सूर्यर्क्ष–पु० (सं०) वह नक्षत्र जिसमें सूर्य हो।

सुर्यांशु–पु० (सं०) सूर्यकी किरण।

सूर्या–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी संज्ञा; इंद्रवारुणी; नव-विवाहित स्त्री।

सूर्याकर–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सूर्याक्ष–वि० (सं०) सूर्य जिसकी आँख हो; सूर्य जैसी आँखोंवाला। पु० विष्णु; एक राजा; एक वानर।

सूर्याणी–स्त्री० (सं०) सूर्यपत्नी, छाया।

सूर्यातप–पु० (सं०) धूप।

सूर्यात्मज–पु० (सं०) शनि; कर्ण; सुग्रीव; यम।

सूर्याद्रि–पु० (सं०) एक पर्वत।

सूर्यापाय, सूर्यायाम–पु० (सं०) सूर्यास्त।

सूर्यापीड–पु० (सं०) परीक्षित्का एक पुत्र।

सूर्यार्घ्य–पु० (सं०) सूर्यको भक्तिपूर्वक दिया जानेवाला अर्घ्य।

सूर्यालोक–पु० (सं०) सूरजकी रोशनी; धूप।

सूर्यावर्त–पु० (सं०) हुरहुरका पौधा; सुवर्चला; गज-पिप्पली; अर्द्धकपाली, आधासीसी; समाधिका एक प्रकार।

सूर्यावर्ता–स्त्री० (सं०) आदित्यभक्ता, हुरहुर।

सूर्याश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) सूर्यकांत मणि।

सूर्याश्व–पु० (सं०) सूर्यका घोड़ा।

सूर्यास्त–पु० (सं०) सूरजका डूबना; सूरजके डूबनेका समय, संध्या।

सूर्याह्व–वि० (सं०) सूर्यसंज्ञक। पु० ताँबा; अकवन; महेंद्रवारुणी।

सूर्येंदुसंगम–पु० (सं०) सूर्य-चंद्रमाका मिलन, अमावास्या।

सूर्योढ–वि० (सं०) अस्त होते हुए सूर्य द्वारा लाया हुआ। पु० सूर्यास्तकालमें आनेवाला अतिथि।

सूर्योत्थान–पु० (सं०) सूर्योदय।

सूर्योदय–पु० (सं०) सूरजका उगना; सूरजके उगनेका समय, सवेरा, प्रातःकाल। **–गिरि**–पु० उदयाचल।

सूर्योदयन–पु० (सं०) सूर्योदय।

सूर्योद्यान–पु० (सं०) सूर्यवन नामका तीर्थ।

सूर्योपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

सूर्योपस्थान–पु० (सं०) संध्योपासनके समय की जानेवाली सूर्यकी एक विशेष उपासना।

सूर्योपासक–पु० (सं०) सूर्यकी उपासना करनेवाला, सूर्यपूजक।

सूर्योपासना–स्त्री० (सं०) सूर्यदेवकी पूजा, आराधना।

सूल*–पु० दे० ‘शूल’; मालाका फुलरा। **–धर**–पु० दे० ‘शूलधर’।

–**धारी**–पु० दे० 'शूलधारी'। –**पानि**–पु० दे० 'शूलपाणि'।

सूलना*–अ० क्रि० दुखना, चुभना, व्यथित होना। स० क्रि० भालेसे छेदना; दुःख देना–'मधुकर कहत सँदेशो सूलहु'–सूर।

सूली–स्त्री० लोहेका नुकीला छड़ हलाकर प्राणदंड देनेका एक प्रकार; अत्यधिक कष्ट या पीड़ाकी स्थिति। मु० **प्राण–पर टँगे रहना**–दुविधाके कारण अत्यधिक मानसिक कष्ट होना। * पु० दे० 'शूली'।

सूवना*–अ० बहना, स्रवना। पु० सुग्गा, तोता।

सूवर†–पु० दे० 'सूअर'।

सूवा–पु० सुग्गा।

सूस–पु० एक जलजंतु, शिशुमार। स्त्री० (अ०) मुलेठी; (फा०) एक जंतु, गोह।

सूसमार–पु० सूँस। स्त्री० (फा०) गोह।

सूसि*–पु० दे० 'सूस'।

सूहा–पु० एक तरहका गहरा लाल रंग; एक संकर राग। वि० लाल। –**कान्हड़ा**–पु० एक संकर राग। –**टोड़ी**–स्त्री० एक रागिनी। –**बिलावल**–पु० एक संकर राग। –**श्याम**–पु० एक संकर राग।

सूही–वि० स्त्री० दे० 'सूहा'। स्त्री० लालिमा।

सृंखला*–स्त्री० दे० 'श्रृंखला'।

सृंग*–पु० चोटी, सिरा, कंगूरा; सींग; शृंग बाजा। –**बेर**–पु० अदरक; सोंठ। –० **पुर***–पु० 'शृंगवेरपुर'।

सृंगी*–पु० दे० 'शृंगी'।

सृंजय–पु० (सं०) एक जनपद; मनुका एक पुत्र।

सृंजयी, सृंजरी–स्त्री० (सं०) यजमानकी दो पत्नियाँ।

सृकंडु–स्त्री० (सं०) कंडू रोग, खुजलीकी बीमारी।

सृक–पु० (सं०) वायु, हवा; कमल; बाण, तीर; वज्र; * माला।

सृकाल*–पु० दे० 'शृगाल'।

सृक्क, सृक्व–पु० (सं०) ओष्ठका प्रांत भाग।

सृक्क(न्), सृक्व (न्)–पु० (सं०) दे० 'सृक्क'।

सृक्कणी, सृक्किणी, सृक्वणी, सृक्विणी–स्त्री० (सं०) दे० 'सृक्क'।

सृक्कि(न्), सृक्वि (न्)–पु० (सं०) दे० 'सृक्क'।

सृक्या–स्त्री० (सं०) जोंक।

सृग–पु० (सं०) भिंदिपाल, एक प्रकारका बरछा, भाला; बाण; * माला।

सृगाल–पु० (सं०) गीदड़; एक वृक्ष; एक दैत्य; दुष्ट, धूर्त, बुरे स्वभावका या कटुभाषी मनुष्य; कायर आदमी; करवीरपुरका राजा वासुदेव। –**कंटक**–पु० सत्यानासीका पौधा, भड़भाँड़। –**कोलि**–पु० एक तरहका बेर। –**घंटी**–स्त्री० तालमखाना। –**जंबु**–पु० तरबूज; बेरका फल। –**रूप**–पु० शिव। –**वदन**–पु० एक असुर। –**वास्तुक**–पु० एक तरहका बथुवा। –**विभा,–वृंता**–स्त्री० पृश्निपर्णी, पिठवन।

सृगालिका–स्त्री० (सं०) गीदड़ी; लोमड़ी; पलायन; दंगा; विदारी कंद।

सृग्विनी–स्त्री० (सं०) गीदड़ी।

सृगाली–स्त्री० (सं०) गीदड़ी; लोमड़ी; पलायन; दंगा; कोकिलाक्ष; विदारी कंद।

सृग्विनी*–स्त्री० दे० 'स्रग्विणी'।

सृजक*–पु० स्रष्टा, रचनेवाला।

सृजन*–पु० दे० 'सर्जन'। –**शीलता**–स्त्री० रचना-शक्ति। –**हार**–पु० स्रष्टा, सृष्टिकर्ता।

सृजना*–स० क्रि० रचना, बनाना, उत्पन्न करना।

सृजय–पु० (सं०) एक पक्षी।

सृजया–स्त्री० (सं०) नील मक्षिका।

सृजिकाक्षार–पु० (सं०) सर्जिकाक्षार, सज्जीखार।

सृज्य–वि० (सं०) छोड़ने योग्य; उत्पन्न करने योग्य।

सृणि–पु० (सं०) शत्रु; चंद्रमा। स्त्री० हाथीका अंकुश।

सृणिक–पु० (सं०) अंकुश।

सृणिका–स्त्री० (सं०) दे० 'सृणीका'।

सृणी–स्त्री० (सं०) हँसिया; हाथीका अंकुश।

सृणीक–पु० (सं०) वायु; अग्नि; वज्र; मत्त व्यक्ति।

सृणीका–स्त्री० (सं०) लाला, लार।

सृत–वि० (सं०) गत; विचलित; खिसका हुआ। पु० गमन; पलायन।

सृता–स्त्री० (सं०) गमन, पलायन।

सृति–स्त्री० (सं०) निर्माण; जन्म; गमन; सरकना; मार्ग; चोट पहुँचाना।

सृत्वर–वि० (सं०) गमनशील।

सृत्वरी–स्त्री० (सं०) धारा; नदी; माता।

सृत्वा(त्वन्)–पु० (सं०) स्रष्टा, प्रजापति; विसर्प, सरकना; वृद्धि।

सृदर–पु० (सं०) सर्प।

सृदाकु–पु० (सं०) वायु; अग्नि; वनाग्नि; हिरन; इंद्रका वज्र; सूर्यमंडल; एक तरहका गिरगिट, गोह। स्त्री० नदी; धारा।

सृप–पु० (सं०) चंद्रमा; एक असुर।

सृपाट–पु० (सं०) फूलके नीचेकी छोटी पत्ती।

सृपाटिका–स्त्री० (सं०) पक्षीकी चोंच।

सृपाटी–स्त्री० (सं०) एक माप; जूता; काँसा, मिलावटी धातु; पुस्तिका।

सृप्त–वि० (सं०) सरका हुआ; फिसलकर निकला हुआ।

सृप्मा(मन्)–पु० (सं०) शिशु; सर्प; सन्यासी।

सृप्र–वि० (सं०) चिकना, पिच्छल। पु० चंद्रमा; मधु।

सृप्रा–स्त्री० (सं०) सिप्रा नामक भारतकी प्रसिद्ध नदी।

सृमर–पु० (सं०) एक पशु; बालमृग; एक असुर। वि० गमनशील।

सृमल–पु० (सं०) एक असुर।

सृष्ट–वि० (सं०) निर्मित, बनाया हुआ; युक्त; त्यक्त, त्यागा हुआ; फेंका हुआ; अलंकृत, सज्जित, विभूषित; संपन्न,...से युक्त; तुला हुआ; प्रचुर; निश्चित। –**मारुत**–वि० उदरवायु निकालनेवाला। –**मूत्रपुरीष**–वि० पेशाब और दस्त लानेवाला।

सृष्टि–स्त्री० (सं०) परित्याग; निर्माण, निर्मिति; जगत्, संसार; प्रकृति; संसारकी उत्पत्ति, संसारके बनानेकी क्रिया; समूह; पदार्थका भावाभाव; दानशीलता; एक तरहकी ईंट; गंभारी। पु० उग्रसेनका एक पुत्र। –**कर्त्ता(र्तृ)**–पु० ब्रह्मा। –**कृत्**–पु० सृष्टि करनेवाला; ईश्वर; ब्रह्मा; पित्तपापड़ा। –**दा**–स्त्री० एक ओषधि, गर्भदात्री। –**पत्तन**–पु० एक मंत्रशक्ति। –**प्रदा**–स्त्री० पुत्रदा या गर्भदात्री नामक क्षुप। –**विज्ञान,–शास्त्र**–पु० सृष्टिकी रचना आदिकी मीमांसा करनेवाला शास्त्र, विज्ञान; (कास्मोलाजी, कास्मोगोनी) दे० 'विश्वोत्पत्ति विज्ञान'।

सृष्ट्यंतर–पु० (सं०) अंतर्जातीय विवाहसे उत्पन्न संतान।

सेँक–स्त्री० सेंकनेकी क्रिया।

सेँकना–स० क्रि० आगपर पकाना; गरम करना; कपड़े आदिसे पीड़ित अंगपर ताप पहुँचाना (फोमेन्टेशन)। मु० **आँखें–**रूपवती स्त्रीको बार-बार देखकर प्रसन्नताका अनुभव करना।

सेँगर–पु० एक पौधा; बबूलकी छीमी; एक धान; राजपूतोंका एक भेद।

सेँगरा†–पु० भारी चीज (लकड़ी, पत्थर आदि) लटकाकर ले जानेका डंडा।

सेँट*–स्त्री० दूधकी धार। पु० (अं०) खुशबू; सुगंधिपूर्ण द्रव्य।

सेँटर–पु० (अं०) केंद्रबिंदु या स्थान; केन्द्र।

सेँटीग्रेड तापक्रम–पु० (सेन्टीग्रेड स्केल) ताप नापनेका पैमाना जिसमें बर्फका गलनांक शून्य डिग्री तथा जलका क्वथनांक (वायुमण्डलीय दाबपर) १०० डिग्री लिया जाता है। इन दोनों तापमानोंका अन्तर १०० बराबर भागोंमें बँटा रहता है।

सेँट्रल–वि० (अं०) मुख्य, केंद्रीय।

सेँटो–पु० (अं०) (सेंट्रल ट्रीटी आर्गेनाइजेशनका संक्षिप्त रूप) यूरोप और एशियाके राष्ट्रोंका एक संगठन।

सेँठा†–पु० सरकंडेका निचला भाग; छप्पर छानेका एक तृण; निकम्मा आदमी (व्यंग्य)।

सेँढ़ा†–पु० सुनारोंके काम आनेवाला एक खनिज द्रव्य।

सेँत–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिमें कुछ रुपया-पैसा न लगना। **–मेँत**–अ० मुफ्तमें, बिना दाम दिये; नाहक। **–का**–जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो। **–में**–मुफ्तमें।

सेंत†–स्त्री०···सँभालकर या बटोरकर रखनेकी क्रिया; संचय, 'बरसातके लिए कण्डोंकी सेंत हो जायगी'–टूटे काँटे।

सेँतना*–स० क्रि० सँभालकर रखना; एकत्र करना, बटोरना; समेटना।

सेँति, सेँती*–स्त्री० दे० 'सेत'। प्र० करण और अपादानकी विभक्ति।

सेँथा†–पु० दे० 'सेँठा'।

सेँथी*–स्त्री० शक्ति, बरछी।

सेँदुर*–पु० सिंदूर। **–दानी**–स्त्री० सिंदूर रखनेकी डिबिया।

सेँदुरा–वि० दे० 'सेँदुरिया'।

सेँदुरिया–पु० लाल फूलोंवाला एक पौधा। वि० सिंदूरके रंगका। **–आम**–पु० एक आम जो पकनेपर कुछ लाल होता है।

सेँदुरी–वि० दे० 'सेंदुरिया'। स्त्री० लाल रंगकी गाय।

सेंद्रिय–वि० (सं०) इंद्रिययुक्त, सजीव; पुंस्त्वयुक्त।

सेँध–स्त्री० वह छेद जो चोर दीवार तोड़कर बनाते हैं, सुरंग।

सेँधना†–स० क्रि० सेंध लगाना।

सेँधा–पु० सिंधु नदीके पाससे निकलनेवाला एक खनिज नमक।

सेँधिया–वि० सेंध लगानेवाला। पु० एक मराठा राजवंश; † पेहँटा, फूट।

सेँधी–स्त्री० खजूर; खजूरकी शराब; फूट, पेहँटा।

सेँधुआर†–पु० एक मांसाहारी जंतु।

सेँमल*–पु० शाल्मलि, सेमल।

सेँवई*–स्त्री० मैदेसे बनाये हुए सूतके-से लच्छे। मु० **–पूरना,–बटना**–हथेलियोंसे बटकर सेंवई बनाना।

सेँवर*–पु० दे० 'सेमल'। वि० † दे० 'सेवर'।

सेंसर–पु० (अं०) वह सरकारी कर्मचारी जो पत्र, पुस्तक, फिल्म, नाटक और सेना-संबंधी सूचनाओंका परीक्षण या संवीक्षण कर आपत्ति-जनक अंश निकाल देता है; उत्तेजक और आपत्तिजनक अंशोंका परीक्षण। **–बोर्ड**–पु० सेंसर करनेवाले अधिकारियोंकी समिति।

सेंसस–पु० (अं०) जनगणना, मर्द्मशुमारी।

सेँह†–स्त्री० दे० 'सेँध'।

सेँहा†–पु० कुँआ खोदनेवाला।

सेँहुआ–पु० एक तरहका चर्मरोग जिसमें चमड़ेपर सफेद-सा धब्बा हो जाता है।

सेँहुड़–पु० स्नुही, थूहर।

से–प्र० करण कारक और अपादान कारकका चिह्न। वि० 'सा'का बहुवचन, समान, तुल्य। सर्व० 'सो' या 'जे'का अवधी बहुवचन रूप, वे। स्त्री० (सं०) सेवा, टहल; कामदेव-पत्नी।

सेई†–स्त्री० काठका एक बरतन जिससे अनाज नापते हैं।

सेउ*–पु० सेब नामका फल।

सेकंड–पु० (अं०) कालका एक बहुत छोटा परिमाण, मिनिटका साठवाँ हिस्सा। वि० दूसरा।

सेक–पु० (सं०) सींचनेकी क्रिया; छिड़काव; आर्द्र करना; अभिषेक; तर्पण; स्राव, नहानेके काम आनेवाला फुहारा; शुक्रस्राव; किसी तरल पदार्थकी बूंद; तैलमर्दन; एक प्राचीन जनपद। **–पात्र,–भाजन**–पु० पानी सींचनेका बरतन, डोल। **–मिश्रान्न**–पु० दही मिला हुआ खाद्य-पदार्थ।

सेकड़ा†–पु० पैना, चाबुक।

सेकिम–वि० (सं०) सींचा हुआ; गलाकर ढाला हुआ (जैसे लोहा)। पु० मूली।

सेकुवा†–पु० हलवाइयोंका डौआ।

सेक्तव्य–वि० (सं०) सींचने योग्य; सींचा, तर किया जानेवाला।

सेक्ता(क्तृ)–वि० (सं०) सींचनेवाला। पु० वह जो सींचनेका काम करे; पानी लानेवाला; पति; गाय, घोड़ी आदिमें गर्भाधान करानेवाला।

सेक्त्र–पु० (सं०) सींचनेका पात्र, बालटी।

सेक्रेटरियट–पु० (अं०) शासन-व्यवस्था करनेवाले सेक्रेटरियोंका दफ्तर; सचिवालय।

सेक्रेटरी–पु० (अं०) मंत्री; किसी संस्था, संघटनके कार्य-संचालनके लिए उत्तरदायी व्यक्ति (जैसे सोशलिस्टपार्टीका सेक्रेटरी); किसीके निजी कार्य, पत्रव्यवहार, व्यवस्थामें सहायता करनेवाला; शासन-व्यवस्थाके किसी विभागका उच्च अधिकारी।

सेकशन–पु० (अं०) विभाग।

सेख*–पु० शेषनाग; बचा हुआ अंश; अंत, समाप्ति; दे० 'शैख़'।

सेखर*–पु० दे० 'शेखर'।

सेखावत–पु० राजपूतोंकी एक उपशाखा।

सेखी†–स्त्री० दे० 'शेखी'।

सेगव–पु० (सं०) केकड़ेका बच्चा।

सेगा–पु० दे० 'सीग़ा'।

सेगुन†–पु० दे० 'सागौन'।

सेच–पु० (सं०) सिंचाई, छिड़काव।

सेचक–पु० (सं०) बादल। वि० सींचनेवाला।

सेचन–पु० (सं०) सिंचाई, छिड़काव; अभिषेक; स्राव; नहानेका फुहारा; ढलाई (लोहे आदिकी); बालटी; पानी उलीचनेका पात्र। **–घट**–पु० सींचनेका बरतन।

सेचनक–पु० (सं०) नहानेका फुहारा; अभिषेक।

सेचनी–स्त्री० (सं०) डोल, बालटी।

सेचनीय–वि० (सं०) सींचने, छिड़काव करने योग्य।

सेचित–वि० (सं०) सींचा, तर किया हुआ; छिड़काव किया हुआ।

सेच्य–वि० (सं०) दे० 'सेचनीय'।

सेज–स्त्री० शय्या, बिस्तरा। **–पाल**–पु० राजाके शयनागारका पहरेदार।

सेज़दह–वि०, पु० (फा०) दे० 'तेरह'।

सेज़दहुम–वि० (फा०) तेरहवाँ।

सेजरिया*–स्त्री० दे० 'सेज'।

सेजिया†–स्त्री० दे० 'सेज'।

सेज्या*–स्त्री० दे० 'सेज'।

सेझदादि*–पु० सह्याद्रि श्रेणी।

सेझना*–अ० क्रि० पृथक् होना, अलग होना।

सेट–पु० (सं०) एक पुरानी तौल या मान; (अं०) एक ही तरहकी कई चीज़ोंका समूह।

सेटना*–स० क्रि० मानना, समझना; कुछ महत्त्व समझना।

सेटिलमेंट–पु० (अं०) जमीनकी पैमाइश करके लगान तय करना, बंदोबस्त; उपनिवेश।

सेटु–पु० (सं०) एक फल, तरबूज या पेहँटा।

सेठ–पु० महाजन, बड़ा साहूकार; व्यापारी; धनी आदमी; सुनार (स्त्री० 'सेठानी'।)

सेठन†–पु० झाड़ू।

सेठा†–पु० दे० 'सेँठा'।

सेठाश्रयी–वि० पूंजीवादी प्रभावोंमें कार्य करनेवाले (साहित्यकार)।

सेड़ा†–पु० एक तरहका भदौंही धान।

सेढ़–पु० बादवान, पाल। **–ख़ाना**–पु० पाल बनानेका स्थान; जहाजका वह कमरा जिसमें पाल भरे रहते हैं।

सेढ़ा–पु० दे० 'सेड़ा'; * नाकका मैल–'···आँखिमें गीडर नाकमें सेढो'–सुंदरदास।

सेत*–वि० श्वेत, सफेद। **–कुली**–पु० एक नाग-कुल। **–दीप**–पु० श्वेत द्वीप। **–दुति**–पु० चंद्रमा।

सेत*–पु० सेतु, पुल। **–बंध**–पु० दे० 'सेतुबंध'।

सेतना†–स० क्रि० दे० 'सैँतना'।

सेतवा†–पु० अफीम काछनेकी करछी।

सेतव्य–वि० (सं०) साथ बाँधने योग्य।

सेतिका–स्त्री० (सं०) अयोध्या।

सेती*–प्र० से।

सेतु–पु० (सं०) मेंड़; बाँध; पुल (ब्रिज); बंधन; पहाड़परका तंग रास्ता; मर्यादा, सीमा; रोक; निश्चित नियम; प्रणव, ओम्; कारिका; टीका; वरुण वृक्ष; द्रुह्यु का एक पुत्र; बभ्रुका एक पुत्र;

वह मकान जिसकी छतकी धरनें कीलोंसे जड़ दी गयी हों। * वि० श्वेत। **–कर**–पु० पुल आदिका निर्माण करनेवाला। **–कर्म(न्)** –पु० पुल आदिके निर्माणका काम। **–ज**–पु० दक्षिणापथका एक खंड। **–पति**–पु० रामनद (मद्रास) के राजाओंकी वंशागत उपाधि। **–पथ**–पु० पहाड़ी, दुर्गम स्थानोंमें जानेवाला मार्ग। **–प्रद**–पु० कृष्ण। **–बंध**–पु० बाँध, पुल आदिका निर्माण; रामके लंका जानेके लिए समुद्रपर नल-नीलका बनाया हुआ पुल; पुल; नहर (कौ०)। **–बंधन**–पु० पुलका निर्माण; बाँध; पुल; सीमापरकी मेंड़ आदि। **–भेत्ता(त्तृ)**–पु० बाँध, पुल आदि तोड़नेवाला। **–भेद**–पु० बाँध, पुल आदिका टूटना। **–भेदी–(दिन्)**–वि० सीमा नष्ट करनेवाला; बाधक; दूर करनेवाला, दंती वृक्ष। **–वृक्ष**–पु० वरुण वृक्ष। **–शैल**–पु० सीमाका काम देनेवाला पर्वत।

सेतुक–पु० (सं०) बाँध; पुल; वरुण वृक्ष। * अ० सामने, सम्मुख।

सेतुवा*–पु० सत्तू।

सेत्र–पु० (सं०) बंधन; जंजीर; निगड, बेड़ी।

सेथिया–पु० नेत्रचिकित्सक।

सेद*–पु० दे० 'स्वेद'–'हरि औध सारे अंग सेदमें रहे हैं डूबि'–कलस। **–ज**–पु० स्वेदजन्य कीट।

सेदरा–पु० तीन द्वारोंवाला दालान।

सेदिवा(वस्)–वि० (सं०) बैठा हुआ।

सेदुक–पु० (सं०) एक प्राचीन राजा।

सेद्धव्य–वि० (सं०) निवारण करने योग्य।

सेध–वि० (सं०) हटाने, दूर करनेवाला। पु० निषेध।

सेधक–वि० (सं०) निवारक, प्रतिरोधक।

सेधा–स्त्री० (सं०) साही नामक जंतु।

सेन–वि० (सं०) स्वामियुक्त, सनाथ; आश्रित। पु० शरीर; वैद्यजातीय बंगालियोंकी उपाधि; दिगंबर जैन साधुओंका एक भेद; * श्येन, बाज पक्षी–'ज्यों गच काँच बिलोकि सेन जड़ छाँह आपने तनकी'–विनय०। स्त्री० सेनाका समासगत रूप; * सेना। **–कुल,–वंश**–पु० बंगालका एक राजवंश। **–जित्**–वि० सेनाको विजित करनेवाला। पु० कृष्णका एक पुत्र; कृशाश्वका एक पुत्र; विशदका एक पुत्र। स्त्री० एक अप्सरा। **–प*,–पति***–पु० सेनानायक। **–स्कंध**–पु० शंबरका एक पुत्र। **–हा (हन्)**–पु० शंबरका एक पुत्र।

सेनक–पु० (सं०) शंबरका एक पुत्र; एक वैयाकरण।

सेनांग–पु० (सं०) सेनाका–*पैदल, हाथी, घोड़ा और रथमेंसे कोई अंग; सेनाका कोई भाग; टुकड़ी। **–पति**–पु० टुकड़ीका नायक।

सेना–स्त्री० (सं०) रणशिक्षा-प्राप्त और सशस्त्र व्यक्तियोंका दल, वाहिनी, फौज; (आर्मी); शक्ति, भाला; इंद्राणी; इंद्रका वज्र; फौजकी एक बहुत छोटी टुकड़ी जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल सैनिक होते थे; वेश्याओंकी प्राचीन उपाधि; वर्तमान अवसर्पिणीके तीसरे अर्हत् शंभकी माता। **–कक्ष**–पु० सेनाका पार्श्व। **–कर्म(न्)**–पु० सेनाका प्रबंध या नेतृत्व। **–कल्प**–पु० शिव। **–गोप**–पु० एक तरहका सैनिक अधिकारी। **–चर**–पु० सैनिक, सिपाही। **–दार**–पु० (हिं०) सेनानायक; सैनिक। **–नायक**–पु० सेनापति। **–नी**–पु० सेनानायक; कार्त्तिकेय; एक रुद्र; शंबरका एक पुत्र; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; एक तरहका पाँसा। **–पति**–पु० सिपहसालार; कार्त्तिकेय; शिव; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; हिंदीके एक प्रसिद्ध कवि। **–०पति**–पु० प्रधान सेनापति। **–परिच्छद्**–वि० सेनासे घिरा हुआ। **–परिधान**–पु० लश्करका लवाजमा; सेनाके साथ रहनेवाले व्यक्तियोंका सारा सामान (एकाउण्टरमेंट)। **–पाल**–पु० सेनानायक। **–पृष्ठ**–पु० सेनाका पृष्ठभाग। **–प्रणेता(तृ)**–पु० सेनानायक। **–भंग**–पु० सेनाका तितर-बितर हो जाना। **–भक्त**–पु० फौजी रसद और बेगार (कौ०)। **–मुख**–पु० सेनाका अग्रभाग; फौजकी एक टुकड़ी जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ सैनिक होते थे; नगरद्वारतक जानेवाला ढका हुआ रास्ता; नगर-द्वारके सामने बना हुआ बाँध। **–योग**–पु० फौजकी तैयारी, फौजी सामान। **–रक्ष**–पु० प्रहरी, संतरी। **–रसद-विभाग**–पु० (कमिसैरियट) सेनाके लिए खाद्य सामग्री आदि जुटाने, पहुँचानेवाला विभाग। **–वास**–पु० शिविर; फौजकी छावनी। **–वाह**–पु० सेनानायक। **–व्यूह**–पु० सैनिकोंकी विशेष स्थानोंपर स्थापना। **–समुदय**–पु० सैनिकोंका एक जगह एकत्र होना; एकत्र सेना। **–स्थ**–पु० सैनिक। **–स्थान**–पु० शिविर; छावनी। **–हा(हन्)**–पु० शंबरका एक पुत्र, सेनहा।

सेना–स० क्रि० (सं० सेवन) सेवन करना; सेवा करना; उपासना करना; औषधि आदि नियमित रूपसे लेना; तीर्थ आदिका सेवन करना; व्यर्थ या फालतू पड़े रहना; (जैसे चारपाई सेना), चिड़ियोंका गरमी देनेके लिए अण्डोंपर बैठना।

सेनाग्र–पु० (सं०) सेनाका अगला हिस्सा।

सेनाजीव, सेनाजीवी(विन्)–पु० (सं०) सैनिक कार्योंसे जीविका प्राप्त करनेवाला।

सेनाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) सेनानायक, फौजी अफसर।

सेनाधिनाथ–पु० (सं०) सेनाका प्रधान।

सेनाधिप, सेनाधिपति–पु० (सं०) सेनापति।

सेनाधीश–पु० (सं०) सेनापति।

सेनाध्यक्ष–पु० (सं०) सेनापति।

सेनाभिगोप्ता (प्तृ)–पु० (सं०) सेनाका रक्षक।

सेनायत्त करना–स० क्रि० (कमांडियर) लोगोंको सेनामें भरती होनेके लिए विवश करना; सेनाकी आवश्यकताओंके लिए किसीकी संपत्ति आदिपर कब्जा कर लेना।

सेनि*–स्त्री० श्रेणी, पंक्ति।

सेनिका*–स्त्री० मादा बाज; एक छंद।

सेनी–पु० सहदेवका अज्ञातवासकालीन नाम। स्त्री० रकाबी; नक्काशीदार छोटी थाली; * श्रेणी; सीढ़ी; * मादा बाज।

सेनुर†–पु० सिंदूर।

सेफ–पु० (सं०) शिश्न।

सेफ़–पु० (अं०) एक तरहका लोहेका मजबूत संदूक जिसमें रुपये तथा बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं, तिजोरी।

सेफ़ालिका–स्त्री० दे० 'शेफालिका'।

सेब–पु० (फा०) एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।

सेभ्य–पु० (सं०) ठंढक, शीतलता। वि० ठंढा, शीतल।

सेमंतिका, सेमंती–स्त्री० (सं०) सफेद गुलाब, सेवती।

सेम–स्त्री० एक फली जो तरकारीके काम आती है, शिंबी।

सेमई–वि० हलके सब्ज रंगका। पु० ऐसा रंग। * स्त्री० सेंवई।

सेमर*–पु० शाल्मलि, सेमल; † दलदल।

सेमल–पु० एक बड़ा वृक्ष जिसके फलोंसे एक तरह की रुई निकलती है। **–मूसला**–पु० सेमलकी जड़। **–सफ़ेद**–पु० सेमलका एक भेद।

सेमा–पु० बड़ी सेम।

सेमिटिक–पु० नृवंश-शास्त्रके अनुसार एक मानव-वर्ग जिसमें अरब, यहूदी, मिस्री और सीरियन जातियोंकी गणना है। वि० शेमसे उत्पन्न (जातियाँ)।

सेमीकोलन–पु० (अं०) एक विराम-चिह्न, अर्द्ध विराम (;)।

सेमीफाइनल–पु० चार टीमोंके खेलमें होनेवाली वह प्रतियोगिता जिसमें सफल होनेपर उनमेंसे दो टीमें फाइनलमें जानेके योग्य समझी जाती हैं।

सेयन–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र।

सेर–पु० (सं०) सोलह छटाँककी एक तौल; * शेर, व्याघ्र; † एक धान। † स्त्री० एक मछली। **–साहि***–पु० शेरशाह जिसने हुमायूँको परास्त कर दिल्लीका शासन प्राप्त किया था।

सेर–वि० (फा०) भरा हुआ; तृप्त, संतुष्ट, जिसे किसी चीजकी चाह न हो; बहुत, प्रचुर (सेर हासिल)। **–आहंग**–वि० भारी आवाजवाला। **–ख़ोर**–वि० पेट भरकर खानेवाला, पेटू। **–चश्म**–वि० संतुष्ट, तृष्णारहित; उदार, दानशील; रुचिसे खिलानेवाला। **–चश्मी**–स्त्री० संतुष्टता; चाह, तृष्णाका अभाव।

सेरवा†–पु० ओसाते समय भूसा उड़ानेका कपड़ा; दे० 'सेरा'; दीवालीके प्रातःकाल सूप पीटनेकी प्रथा।

सेरवाना†–स० क्रि० दे० 'सेराना'।

सेरही–स्त्री० फसलकी उपजपर लगनेवाला एक कर।

सेरा–पु० खाटकी सिरकी ओरकी पाटी; वह जमीन जिसकी सिंचाई हो चुकी हो।

सेराना–स० क्रि० ठंढा करना; तृप्त करना; वहा देना। अ० क्रि० ठंढा होना; तृप्त होना; समाप्त होना; मरना। † पु० सिरहाना।

सेराब–वि० (फा०) अच्छी तरह सींचा हुआ, तर; हरा-भरा, प्रफुल्ल। –**हासिल**–वि० जिससे वहुत लाभ हो; उपजाऊ, जरखेज (जमीन)। मु०–**होना**–तृप्त होना; मन भर जाना; ऊव जाना।

सेराबी–स्त्री० सुसिक्त होना, सिंचाई; हरा-भरा होना।

सेराल–पु० (सं०) हलका पीलापन। वि० हलका पीला।

सेराह–पु० (सं०) दूधके रंगका घोड़ा।

सेरी–स्त्री० (फा०) तृप्ति; जी भर जाना; ऊव जाना; * रास्ता, मार्ग–'जा सेरी साधू गया सो तो राखी मूँदि'–साखी।

सेरीना–स्त्री० असामीसे जमींदारको मिलनेवाला अनाज या चारेका अंश।

सेरु–वि० (सं०) जकड़ने, वाँधनेवाला।

सेरुराह–पु० (सं०) माथेपर दागवाला सफेद घोड़ा।

सेरू†–पु० लिसोड़ेका पेड़, लहटोरा।

सेर्ष्य–वि० (सं०) ईर्ष्यासे भरा हुआ। अ० ईर्ष्यापूर्वक।

सेल–पु० साँग, भाला; † पानी उलीचनेका काठका वरतन; हलमें लगी हुई वीज गिरानेकी नली। † स्त्री० माला, वद्धी।

सेल–स्त्री० (अं० सेल) विद्युत् विज्ञानमेंसे ऐसा उपकरण, जिससे विद्युत्धारा उत्पन्न की जा सके; जैसे डेनिएल सेल, लेक्लाँशे सेल।

सेलखड़ी–स्त्री० दे० 'सिलखड़ी', खड़िया मिट्टी।

सेलग–पु० (सं०) लुटेरा।

सेलना†–अ० क्रि० 'सेल्हना'।

सेला–पु० रेशमी चादर या साफा (वर आदिका); उसना चावल।

सेलिया*–पु० घोड़ेकी एक जाति। स्त्री० विल्ली।

सेलिस–पु० (सं०) एक सफेद हिरन।

सेली–स्त्री० वरछी; छोटी चादर; सूत आदिकी योगियोंकी वद्धी; स्त्रियोंका एक गहना; एक मछली। (फा०) स्त्री० तमाचा, चाँटा, थप्पड़।

सेलु–पु० (सं०) लिसोड़ा; एक वड़ी संख्या (वौ०)।

सेलूलोज़–पु० (सेलूलोज़) पौधोंकी कोशिकाकी दीवारके ऊतकका मुख्य अवयव ($C_6H_{10}O_5$)।

सेल्ल, सेल्ला, सेल्ह*–पु० भाला, वरछा।

सेल्हना†–अ० क्रि० चल वसना, मर जाना।

सेल्हर–पु० नस।

सेल्हा–पु० एक अगहनिया धान; † रेशमी चादर या साफा।

सेल्ही–स्त्री० छोटी चादर; सूत, ऊन आदिकी माला।

सेवँ†–पु० एक ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ीसे आलमारी आदि वनाते हैं।

सेवँई–स्त्री० दे० 'सेंवई'; चारेके काम आनेवाली एक घास।

सेवँढ़ी†–स्त्री० एक धान।

सेवंत–पु० एक राग।

सेवँर*–पु० दे० 'सेमल'।

सेव–पु० वेसनसे वननेवाला सूत या डोरी जैसा पतला या कुछ मोटा पकवान जो नमकीन या मीठा होता है; दे० 'सेव'; (सं०) दे० 'सेवन'।

सेवक–वि० (सं०) सेवा, पूजा या सम्मान करनेवाला; अभ्यास करनेवाला; प्रयोगमें लानेवाला; आश्रित। पु० नौकर, परिचारक; आश्रित व्यक्ति; भक्त, आराधक; सीनेवाला, दरजी; वोरा।

सेवकाई–स्त्री० सेवा, टहल, परिचर्या।

सेवकालु–पु० (सं०) एक पौधा, दुग्धपेया।

सेवकी*–स्त्री० नौकरानी, दासी।

सेवग*–पु० दे० 'सेवक'।

सेवड़ा–पु० जैन साधुओंका एक भेद; मैदेका वना एक नमकीन पकवान।

सेवति*–स्त्री० दे० 'स्वाति'।

सेवती–स्त्री० (सं०) एक फूल, सफेद गुलाव।

सेवदाना–पु० सोयावीनके दाने।

सेवधि–पु० (सं०) दे० 'शेवधि'।

सेवन–पु० (सं०) सेवा, टहल; पूजन, उपासना, भक्ति; अभ्यास; व्यवहार; वास करना; मैथुन; वाँधना; सीना; टाँका लगाना; वोरा; † चारेके काम आनेवाली एक घास।

सेवना*–स० क्रि० सेवा करना। स्त्री० (सं०) आराधना।

सेवनी–स्त्री० (सं०) सूई; सीवन; सीवन जैसा शरीरके किसी अंगका योग (मस्तकमें पाँच, जीभमें एक और शिश्नमें एक–कुल सात); जूही; * दासी।

सेवनी(निन्)–पु० (सं०) हलवाहा (?)।

सेवनीय–वि० (सं०) आराध्य, पूज्य; व्यवहार्य; सेव्य, सेवा योग्य; सीने योग्य।

सेवर–पु० दे० 'शवर'; * सेमल–'विनु सत जस सेवरकर भूआ'–प०। † वि० कम पका हुआ, 'खर'का उलटा (मिट्टीका वरतन, जलेवी या रोटी)।

सेवरा*–पु० दे० 'सेवड़ा'।

सेवराई†–स्त्री० समयसे पहले जलपान कर लेनेसे गलेमें अनुभूत होनेवाला एक तरहका विकार ('खराई'का उलटा)।

सेवरी*–स्त्री० दे० 'शवरी'।

सेवल†–पु० व्याहकी एक रस्म जिसमें दूल्हा आरतीकी थालीसे सिर छुलाता है।

सेवांजलि–स्त्री० (सं०) अंजलिमें कोई वस्तु रखकर किसीको भक्तिपूर्वक अर्पित करना; अंजलिवद्ध होकर भक्तिपूर्वक प्रणाम करना।

सेवा–स्त्री० परिचर्या, खिदमत; पूजा, आराधना; प्रयोग; उपभोग; संभोग; व्यसन, आसक्ति; आश्रयण; रक्षण; चाटुकारिता। –**काकु**–पु० सेवाके समय स्वरका परिवर्तन करना (कभी जोरसे, कभी धीमे, कभी क्रोधसे और कभी अफसोसके साथ वोलना)। –**काल**–पु० किसी सेवामें नियुक्त रहनेकी अवधि (पीरियड आफ़ सर्विस)। –**जन**–पु० नौकर, सेवक। –**टहल**–स्त्री० (हिं०) खिदमत, शुश्रूषा। –**दक्ष**–वि० सेवा करनेमें कुशल। –**दार**–पु० गुरुद्वारेमें गुरुग्रंथ साहिवकी पूजाके लिए नियुक्त व्यक्ति। –**धर्म**–पु० सेवा-संवंधी कर्तव्य। –**नियोजनालय**–पु० (एंप्लॉयमेंट व्यूरो) दे० 'नियोजन-केंद्र'। –**पंजी**–स्त्री० सरकारी कर्मचारियोंकी सेवाकी मुख्य-मुख्य वातें लिखनेकी पुस्तिका (सर्विस वुक)। –**बंदगी**–स्त्री० (हिं०), पूजा, उपासना, आराधना। –**भृत्**–वि० सेवा, आराधनामें संलग्न। –**मुक्ति**–स्त्री० नौकरीसे हटा दिया जाना (–की नोटिस)। –**युक्त**–वि० (एम्प्लॉइड) जो कोई काम करने या किसी सेवाके लिए नियुक्त किया गया हो, नियोजित। –**योजक**–पु० (एंप्लॉयर) कोई काम करने या किसी सेवाके लिए व्यक्तियोंको अपने कारखाने आदिपर नियुक्त करनेवाला, नियोजक। –**योजनालय**–पु० (एम्प्लॉयमेंट व्यूरो) दे० 'नियोजनालय'। –**विलासिनी**–स्त्री० सेविका, दासी। **वृत्ति**–स्त्री० सेवा द्वारा प्राप्त जीविका, नौकरी। –**व्यवहार**–पु० सेवाकार्य।

सेवाती*–स्त्री० दे० 'स्वाति'।

सेवाभिरत–वि० (सं०) सेवामें लीन; सेवामें आनंद माननेवाला।

सेवाय†–अ० अलावा, सिवा। वि० अधिक।

सेवार–पु० दे० 'सिवार'।

सेवारा*–पु० दे० 'सेवड़ा'।

सेवाल*–पु० दे० 'सिवार'।

सेवावलंब–वि० (सं०) जो दूसरोंकी सेवापर अवलंबित हो।

सेविंग्स बैंक–पु० (अं०) छोटी रकमें व्याजपर लेनेवाला वैंक (डाकघरोंमें ऐसे वैंक होते हैं)।

सेवि–पु० (सं०) वेर; सेव (शायद फारसीके 'सेव'से)। * वि० पूज्य, आराध्य; पूजित।

सेविका–स्त्री० (सं०) दासी, परिचारिका; सेंवई ।

सेवित–वि० (सं०) जिसकी सेवा की गयी हो; पूजित; प्रयुक्त; उपभुक्त; आश्रित;···से युक्त, संपन्न । पु० दे० 'सेवि' । –**–मन्मथ**–वि० व्यसनी, कामी ।

सेवितव्य–वि० (सं०) वसने, रहने योग्य; प्रयोगमें लाने योग्य; रक्षा करने योग्य; सीने योग्य ।

सेविता–स्त्री० (सं०) सेवा; आश्रय; आराधन ।

सेविता(तृ)–वि० (सं०) पूजक; अनुसरण करनेवाला । पु० नौकर, सेवक ।

सेवी(विन्)–वि० (सं०) सेवा करनेवाला; आराधक, उपासक; (समासांतमें) संभोग, उपभोग करनेवाला; आदी ।

सेवुम–वि० दे० 'सैवुम' ।

सेवोपहार–पु० (ग्रैटु(चु)इटी) वह धन जो किसी सैनिक या कर्मचारीको अवकाश-ग्रहणके समय, उसके (लंबे) सेवाकालके उपहारस्वरूप दिया जाय ।

सेव्य–वि० (सं०) सेवा करने योग्य; आराध्यं, पूज्य; व्यवहारमें लाने योग्य; रक्षणीय; अध्ययनके योग्य; संचित करने योग्य । पु० स्वामी; वीरणमूल, खस; अश्वत्थ वृक्ष, पीपल; हिज्जल वृक्ष; लामज्जक; गौरैया; एक प्रकारका मद्य; रक्त चंदन; समुद्री नमक; दहीका खूब जमा हुआ वीचका हिस्सा; जल । **–सेवक**–पु० स्वामी और सेवक । **–०भाव**–पु० उपास्यको स्वामी मानकर सेवकके समान अपना आचरण रखना ।

सेव्या–स्त्री० (सं०) दूसरे पेड़ोंपर लगनेवाला एक पौधा, वांदा; आँवला; एक जंगली धान ।

सेशन–पु० (अं०) पार्लमेंट, न्यायालय आदि संस्थाओंकी निश्चित अवधि; कुछ समयतक निरंतर चालू रहनेवाली बैठक; स्कूल, कॉलेजकी लगातार पढ़ाईकी अवधि; दौरा अदालत । **–कोर्ट**–पु० जूरी, असेसर आदिकी सहायतासे हत्या आदि भारी अभियोगोंपर विचार करनेवाली अदालत; सत्र न्यायालय । **—जज**–पु० दौरा जज । मु०–**सिपुर्द करना**–अभियुक्त, अभियोगको सेशन जजके पास भेजना । **–सिपुर्द होना**–अभियोग विचारके लिए दौरा जजके पास भेजा जाना ।

सेश्वर–वि० (सं०) ईश्वरकी सत्ता माननेवाला; ईश्वरयुक्त ।

सेष*–पु० दे० 'शेष'; दे० 'शैख़' ।

सेषु, सेषुक–वि० (सं०) बाणयुक्त ।

सेस*–पु० दे० 'शेष' । **–नाग**–पु० शेषनाग । **–रंग**–पु० सफेद रंग ।

सेसर–पु० ताशका एक खेल; जाल । **–साजी**–स्त्री० धोखेबाजी ।

सेसरिया–वि० जाल करनेवाला, जालिया ।

सेह–पु० दे० 'सेँहा' । वि० (फा०) तीन (समासादिमें) । **–ख़ाना**–पु० तिमंजिला मकान । **–हज़ारी**–स्त्री० मुसलमानोंके शासन-कालमें दरवारियोंको दी जानेवाली एक उपाधि (ऐसे लोग तीन हजार सैनिक रख सकते थे) ।

सेहत–स्त्री० (अ० 'सेह्हत') स्वास्थ्य, आरोग्य; रोगमुक्ति; शुद्धि; सही, ठीक होना; निर्दोष होना । **–ख़ाना**–पु० पाखाना, शौचालय । **–नामा**–पु० शुद्धिपत्र; तंदुरुस्तीका प्रमाणपत्र । **–बख़्श**–वि० आरोग्यप्रद । **–याब**–वि० सेहत पानेवाला, बीमारीसे उठनेवाला । स्त्री० आरोग्यलाभ । मु०–**पाना**–आरोग्यलाभ करना, रोगमुक्त होना ।

सेहथना|–स० क्रि० झाड़-बुहार, लीप-पोतकर साफ सुथरा बनाना ।

सेहरा–पु० वे फूलों या गोटे आदिकी लड़ियाँ जो दूल्हे और दुलहिनके सिरपर बाँधी जाती हैं और मुँहपर लटकती रहती है; वह गाना जो सेहरा बाँधनेके समय गाया जाता है; कब्रके ताखेपर रखी जानेवाली फूलकी माला; मछलीके शरीरपर सीपीकी तरह चमकीले छिलके (फ़िशस्केल) । **–बँधाई**–स्त्री० सेहरा बाँधनेका नेग जो बहनोईको मिलता है । मु० **–बँधना**–सेहरा सिरपर रखा जाना; दूल्हा बनाया जाना; कामका श्रेय दिया जाना । **–(रे) जलवेकी**–विवाहिता (स्त्री) । **–के फूल खिलना**–विवाहका समय आना ।

सेहरी–स्त्री० एक तरहकी मछली, सहरी ।

सेहवन–पु० गेहूँका एक रोग ।

सेहा–पु० दे० 'सेँहा' ।

सेहिथान–पु० खलियान साफ करनेकी बुहारी ।

सेही–स्त्री० दे० 'साही' ।

सेहुँआ–पु० दे० 'सेँहुआ' ।

सेहुँड़–पु० दे० 'सेँहुड़' ।

सेहुंड–पु०, **सेहुंडा**–स्त्री० (सं०) स्नुही, थूहर ।

सेह्र–पु० (अ०) जादू, टोना; मंत्र; इंद्रजाल । **–बयान**–वि० जिसकी वाणीमें मोहनी हो, सुंदर, ललित पदावली बोलनेवाला । **–साज़**–वि० जादूगर । **–साज़ी**–स्त्री० जादूगरी ।

सैँगर–पु० बबूलकी फली ।

सैँतना–स० क्रि० दे० 'सेँतना' ।

सैँतालीस–वि० चालीस और सात । पु० सैंतालीसकी संख्या, ४७ ।

सैँतीस–वि० तीस और सात । पु० सैंतीसकी संख्या, ३७ ।

सैँथी*–स्त्री० भाला, शक्ति–'इंद्रजीत लीन्ही जब सैँथी देवन हहा करयो'–सूर ।

सैंदूर–वि० (सं०) सिंदूरी, सिंदूरके रंगवाला; सिंदूरसे रँगा हुआ ।

सैंधव–वि० (सं०) सिंधु प्रदेशका; सिंधु, समुद्र-संबंधी; सिंधुमें उत्पन्न; समुद्रमें उत्पन्न । पु० सिंधनरेश; राजा जयद्रथ; सिंधुप्रदेशके निवासी; एक प्रकारका लवण, सेंधा नमक; सिंधु प्रदेशका घोड़ा, सिंधी घोड़ा । **–खिल्य,–घन**–पु० सेंधा नमकका ढोका । **–चूर्ण**–पु० चूर्ण किया हुआ सेंधा नमक । **–पति**–पु० सिंध-नरेश; जयद्रथ ।

सैंधवक–वि० (सं०) सिंध-निवासियोंसे संबंध रखनेवाला । पु० सिंधका कोई तुच्छ निवासी ।

सैंधवायन–पु० (सं०) एक ऋषि या उनके वंशज ।

सैंधवारण्य–पु० (सं०) सिंधका जंगली भूभाग ।

सैंधवी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी ।

सैंधी–स्त्री० (सं०) ताड़ आदिका मादक रस, ताड़ी ।

सैंधू–स्त्री० दे० 'सैंधवी' ।

सैंपुल–पु० (अं०) विकनेवाली चीजका नमूना ।

सैँबल|–पु० शाल्मलि, सेमल ।

सैँयाँ–पु० दे० 'सैयाँ' ।

सैँवर*–पु० दे० 'साँभर' ।

सैँवार*–पु० शैवाल ।

सैंह–वि० (सं०) सिंह-संबंधी; सिंहका; सिंह जैसा । * अ० दे० 'सौँह' ।

सैँहथी–स्त्री० बर्छी, छोटा बर्छा ।

सैंहल–वि० (सं०) सिंहल द्वीप-संबंधी; सिंहलका; सिंहल द्वीपमें उत्पन्न ।

सैंहली–स्त्री० (सं०) सिंहपिप्पली ।

सैंहाद्रिक–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति ।

सैंहिक–वि० (सं०) सिंहकी भाँति, सिंहतुल्य । पु० सिंहिकाका पुत्र, राहु ।

सैंहिकेय–वि० (सं०) सिंहिकासे उत्पन्न । पु० सिंहिकाकी संतान (एक दानववर्ग); राहु ।

सैँहुड़–पु० सेंहुड़ ।

सै*–वि०, पु० दे० 'सौ' । स्त्री० शक्ति, ताकत; सार; वृद्धि; बढ़ती ।

सैकंट–पु० बबूलकी जातिका एक पेड़ ।

सैकड़ा–पु० सौ ।

सैकड़े–अ० प्रतिशत, फीसदी, सौ पीछे ।

सैकत–वि० (सं०) सिकतामय, वालूसे भरा, रेतीला; बालुकासे बना । पु० बालुकामय तट; रेतीला किनारा; एक ऋषिवंश ।

सैकतिक–वि० (सं०) सिकतामय तट-संबंधी; संदेहालु, संशयजीवी । पु० मंगलसूत्र; सन्न्यस्त व्यक्ति, सन्न्यासी ।

सैकती(तिन्)–वि० (सं०) बालुकामय तटयुक्त; बालुकामय ।

सैकतेष्ट–पु० (सं०) अदरक ।

सैकयत–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद ।

सैकेरीन–स्त्री० (अं०, सैकेरीन) एक कार्बनिक यौगिक (C_8

H,SO CONH; जो श्वेत क्रिस्टलके रूपमें होता है। इसकी मिठास चीनीकी तुलनामें ५५० गुनी अधिक होती है, किंतु इसमें पौष्टिक तत्त्वोंका सर्वथा अभाव हाता है।

सैक़ल–पु० (अ०) सफाई, जिला; हथियारोंको माँजकर चमकाना। **–गर**–पु० जिला करनेवाला, सिकलीगर; सान धरनेवाला।

सैकली–स्त्री० (फा०) सानका पत्थर।

सैका|–पु० कोल्हूसे गन्नेका रस निकालनेका घड़े जैसा एक पात्र; कटकर आयी हुई फसलकी राशि; एक सौ पूले।

सैक्य–वि० (सं०) सिंचावपर निर्भर; एकता-विशिष्ट। पु० सोनपीतल।

सैक्षव–वि० (सं०) शर्करायुक्त, चीनी मिलाया हुआ।

सैक्सन–पु० (अं०) उत्तरी जर्मनीकी एक जाति जो ईसाकी पाँचवीं-छठीं सदीमें इंग्लैंडपर कब्जा कर वहीं वस गयी।

सैजन–पु० दे० 'सहिजन'।

सैतव–वि० (सं०) सेतु-संवंधी। पु० एक आचार्य।

सैतवाहिनी–स्त्री० (सं०) वाहुदा नामकी नदी।

सैथी–स्त्री० छोटा वरछा, भाला।

सैद*–पु० दे० 'सैयद'; शिकार; शिकारका जानवर। **–फ़ुन**–वि० शिकारी। **–गाह**–पु०, स्त्री० शिकारगाह। **–पुरी**–स्त्री० एक प्रकारकी नाव। **–(दे) हरम**–पु० हरमके जानवर जिनका शिकार करना हराम है।

सैदानी–स्त्री० दे० 'सयदानी'।

सैद्धांतिक–वि० (सं०) सिद्धांत-संवंधी, सिद्धांतज्ञ। पु० सिद्धांत जाननेवाला व्यक्ति।

सैध्रक–वि० (सं०) सिध्रककी लकड़ीका वना हुआ।

सैध्रिक–पु० (सं०) वृक्षविशेष।

सैन–स्त्री० संकेत, इशारा; निशान, परिचायक चिह्न; * सेना। * पु० शयन; श्येन, वाज पक्षी। **–पति**–पु० सेनापति। **–भोग**–पु० शयनकालका भोग, नैवेद्य।

सैनक|–पु० दे० 'सनहकी'।

सैना–पु० (अ०) शामका एक पर्वत जिसपर मूसाको ईश्वर-साक्षात्कार होनेकी वात कही जाती है। * स्त्री० फौज, सेना। पु० संकेत। **–पति**–पु० सेनानायक।

सैनानीक–वि० (सं०) सैन्यमुख-संवंधी, सेनाके अगले भागसे संबंध रखनेवाला।

सैनान्य–पु० (सं०) सेनापतित्व।

सैनापत्य–वि० (सं०) सेनापति-संवंधी। पु० सेनापतिका कार्य, सेनापतित्व।

सैनिक–वि० (सं०) सेना-संवंधी, फौजी। पु० सिपाही, योद्धा; प्रहरी, संतरी; व्यूहवद्ध सेना; प्राणिवधके लिए नियुक्त व्यक्ति; शवरका एक पुत्र। **–न्यायालय**–पु० सैनिकोंके अपराधोंपर विचार करनेवालो विशिष्ट अदालत (कोर्टमार्शल)। **–वाद**–पु० युद्धका समर्थन करनेवाला सिद्धांत (मिलिटरिज्म)। **–सहचारी**–पु० (मिलिटरी अटेची) किसी राजदूतके दलवलका वह सैनिक कर्मचारी जिसे सैनिक विषयोंकी विशेष जानकारी हो।

सैनिकता–स्त्री० (सं०) सैनिक जीवन; युद्ध।

सैनिका–स्त्री० एक छंद।

सैनिकीकरण–पु० (मिलिटैराइज़ेशन) सैनिक शक्तिसे संपन्न वनाना, सेनासे युक्त करना।

सैनिटरी–वि० (अं०) सार्वजनिक स्वास्थ्यके रक्षण और अभिवृद्धिसे संवंध रखनेवाला।

सैनिटेशन–पु० (अं०) स्वास्थ्यरक्षणविज्ञान।

सैनी*–स्त्री० श्रेणी, पंक्ति; दे० 'सेना'; एक जाति।

सैनेटोरियम–पु० (अं०) स्वास्थ्य-सुधारके लिए उपयुक्त स्थान, स्वास्थ्य-निवास।

सैनेय*–वि० युद्ध करने योग्य।

सैनेश, सैनेस*–पु० सेनापति, सिपहसालार।

सैन्य–वि० (सं०) सेना-संवंधी। पु० सेना; सैनिक, सिपाही; रक्षक, प्रहरी, संतरी; शिविर। **–कक्ष**–पु० सेनाका पार्श्व। **–क्षोभ**–पु० सेनाका विद्रोह। **–घातकर**–वि० सेनाका ध्वंस करनेवाला। **–द्रोह**–पु० (म्यूटिनी) संघटित राजसत्ताके विरुद्ध, विशेषकर उच्चाधिकारियोंके विरुद्ध, सेना द्वारा किया गया विद्रोह। **–नायक**–पु० सेनापति। **–निवेशभूमि**–स्त्री० सेनाके ठहरने, पड़ाव डालनेका स्थान। **–पति,–पाल**–पु० सेनापति। **–पृष्ठ**–पु० सेनाका पिछला भाग। **–मुख**–सेनाका अगला भाग। **–वास**–पु० शिविर, सेनाका पड़ाव। **–विभागाध्यक्ष**–पु० (एडजूटेंट जनरल) सेनाके किसी विभागका अध्यक्ष जो सेनापतिके आदेशों आदिका पालन कराता है। **–वियोजन**–पु० (डिमोविलाइज़ेशन) युद्धके आवश्यकतावश प्रस्तुत किये गये सैनिकोंको सैन्यसेवासे पृथक् करना, सैन्यविघटन। **–व्यपदेश**–पु० सेनाका वुलावा। **–शिक्षार्थी**–पु० (केडेट) सैनिक विद्यालयमें शिक्षा पानेवाला युवक। **–शिर(स्)**–पु० फौजका अगला हिस्सा, सेनाका अग्र भाग। **–संसज्जन**–पु० (मोविलाइज़ेशन ऑफ दि आरमी) सेनाओंको शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित कर युद्धार्थ प्रयाणके लिए तैयार रखना। **–सज्जा**–स्त्री० सेना या युद्धकी तैयारी। **–हंता(तृ)**–पु० शंवरका एक पुत्र।

सैन्यादेशवाहक–पु० (एडेकांग) युद्ध-क्षेत्रमें सेनापतिके आदेश विभिन्न अधिकारियों, सैनिकों आदिके पास पहुँचाने तथा वस्तु-स्थितिका विवरण सेनापतिको देनेवाला कर्मचारी।

सैन्याधिपति, सैन्याध्यक्ष–पु० (सं०) सेनाध्यक्ष, सेनानायक।

सैन्यावास–पु० (वैरक) सैनिकोंके रहनेके लिए वने दालान जैसे आवास, 'वारिक'।

सैन्योपवेशन–पु० (सं०) सेनाका पड़ाव डालना।

सैफ़–स्त्री० (अ०) तलवार। **–ज़बान**–वि० जिसकी वाणीमें असर हो; जिसका आशीर्वाद सत्य हो; हृदयको काटनेवाली, तेज़ वातें करनेवाला। **–वान**–पु० वह परतला जिससे तलवार लटकाते हैं।

सैफ़ा–पु० (फा०) जिल्दसाजोंका एक औजार जिससे वे कागज काटते हैं।

सैफी*–वि० तिरछा, टेढ़ा।

सैफ़ी–स्त्री० (अ०) तसवीह; एक दुआ (मु०)। एक अभिचार जिससे शत्रुका मारण करते हैं। वि० ग्रीष्मकालीन।

सैमंतिक–पु० (सं०) सिंदूर (सीमंत, माँग भरनेके कारण)।

सैयद–पु० (अ०) नेता, सरदार; इमाम; फातमासे उत्पन्न अलीका वंश; इस वंशका जन। **–ज़ादा**–पु० सैयदका वेटा। **–ज़ादी**–स्त्री० सैयदकी वेटी। **–की गाय**–सैयद सालारके नामपर जवह की जानेवाली गाय।

सैयदा–स्त्री० सैयद स्त्री; सैयदकी पत्नी।

सैयदानी–स्त्री० सैयद स्त्री; सैयदकी पत्नी।

सैयदुश्शुहदा–पु० (अ०) इमाम हुसैन (शहीदोंके सरदार)।

सैयाँ*–पु० पति, मालिक; स्वामी।

सैया*–स्त्री० शय्या, विस्तरा।

सैयाद–पु० (अ०) वहेलिया, चिड़ीमार; शिकारी; मछुवा। **–फ़ित्रत**–वि० ज़ालिम, जो दूसरोंको जालमें फँसाना ख़ूब जानता हो।

सैयाफ़–वि० (अ०) वधिक, जल्लाद; खड्गजीवी।

सैयार–वि० (अ०) भ्रमणकारी। पु० ग्रह।

सैयारा–पु० (अ०) सूर्यकी परिक्रमा करनेवाला तारा, ग्रह। **–दां**–वि० ज्योतिषी। **–चीं,–शनास**–वि० दैवज्ञ, ज्योतिषी, नुजूमी।

सैयाल–वि० (अ०) वहनेवाला, तरल। पु० तरल पदार्थ।

सैयास–वि० (अ०) राजनीतिपटु; राजनीतिज्ञ।

सैयाह–पु० (अ०) सियाहत करनेवाला, घुमक्कड़; पर्यटक।

सैयाही–स्त्री० भ्रमण, सैर-सपाटा।

सैरंध्र–पु० (सं०) एक तरहका निम्न श्रेणीका या घरका काम करनेवाला नौकर; दस्यु (पुरुष) और अयोगवी (स्त्री) से उत्पन्न एक संकर जाति।

सैरंध्रिका–स्त्री० (सं०) दासी, नौकरानी।

सैरंध्री–स्त्री० (सं०) अंतःपुरकी दासी; अज्ञातवासमें विराट्-नरेशके अंतःपुरमें काम करते समय द्रौपदीका नाम; दूसरेके घरमें जाकर शिल्पकार्य करनेवाली स्त्री।

सैर–स्त्री० (अ०) भ्रमण; मनवहलानेके लिए किया जानेवाला भ्रमण; किसी रमणीय स्थानमें जाकर खाना-पीना, गाना-वजाना; दृश्य; तमाशा; (ला०) मनोरंजनके लिए किसी पुस्तकको पढ़ना, उलट-पुलटकर देखना। **–गाह**–पु०, स्त्री० सैरकी जगह, रमणीय स्थान; वह कंदील जिसमें कागजके हाथी-घोड़ोंकी छाया चलती हुई दिखाई देती है। **–(रे) क़मर**–स्त्री० चन्द्रलोककी, चांदकी सैर। **–मिर्रीख़**–स्त्री० मंगल ग्रहकी सैर। **–सपाटा**–पु० मनवहलाव या सुंदर दृश्य देखनेके लिए घूमना। **–(रो) शिकार**–सैर और शिकारमें कालयापन करना।

सैरंध–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति।

सैरंध्र–पु० (सं०) दे० 'सैरंध्र'; एक जाति।

सैरंध्री–स्त्री० (सं०) दे० 'सैरंध्री'।

सैरि–पु० (सं०) कार्त्तिक मास; एक प्राचीन जाति।

सैरिक–वि० (सं०) हल-संवंधी। पु० हलमें जुतनेवाला वैल; हलवाहा; आकाश।

सैरिभ–पु० (सं०) महिष, भैंसा; स्वर्ग; आकाश।

सैरीय, सैरीयक–पु० (सं०) झिंटी।

सैरेय, सैरेयक–पु० (सं०) झिंटी; झिंटीका पुष्प।

सैर्य–पु० (सं०) एक तृण, अश्ववाल (वै०)।

सैल–स्त्री०, पु० (अ०) पानीका वहाव, जलधारा; वाढ़। **–(ले) अरिम**–पु० जोरकी वाढ़। **–(ले) अश्क**–पु० आँसुओंकी वाढ़। **(ले) हवादिस**–पु० आपत्तियोंकी वाढ़। ※ पु० दे० 'शैल'। स्त्री० दे० 'सैर'; साँग–'जवहिं समर महँ सैल उछावैं'–छत्रप्रकाश। **–कुमारी–जा,–तनया,–सुता**–स्त्री० पार्वती।

सैलग–पु० (सं०) लुटेरा।

सैलवेशन आर्मी–स्त्री० (अं०) मुक्तिफौज, एक सामाजिक संघटन जिसका उद्देश्य जनताकी धार्मिक और नैतिक उन्नति है।

सैला–पु० लकड़ीका चीरा हुआ टुकड़ा; छेद आदिमें भरनेका पच्चड़; जुएके सिरेपर लगायी जानेवाली खूंटी; डंठलसे दाने झाड़नेका डंडा; पतवारका दस्ता।

सैलात्मजा※–स्त्री० पार्वती।

सैलानी–वि० (अ०) वहाव-संवंधी; सैर करनेका शौकीन, घुमक्कड़; मनमौजी।

सैलाव–पु० (फा०) वाढ़, पानीका चढ़ाव। **–ची**–स्त्री० चिलमची।

सैलावा–पु० पानीमें डूवी हुई फसल।

सैलावी–वि० वाढ़-संवंधी। स्त्री० ठंढक, तरी; वह जमीन जो नदीकी वाढ़से सींची जाती हो।

सैली–स्त्री० छोटा सैला, चैली; ढाककी जड़के रेशोंसे वनायी हुई रस्सी; एक प्रकारकी टोकरी। वि० सैलानी।

सैलूख※–पु० दे० 'शैलूष'।

सैलून–पु० (अं०) वड़े अफसरों आदिके सफरके लिए खास तौरसे सजा हुआ रेलका डव्वा; जहाजका मुख्य कमरा; नाचघर; नाईकी दुकान; अंग्रेजी शरावकी दुकान।

सैव※–पु० दे० 'शैव'।

सैवल※–पु० दे० 'शैवाल'।

सैवलिनी※–स्त्री० दे० 'शैवलिनी'।

सैवाल–पु० (सं०) दे० 'शैवाल'।

सैवुम–वि० (फा०) तीसरा। पु० मृत व्यक्तिका तीजा।

सैव्य※–पु० दे० 'शैव्य'।

सैस, सैसक–वि० (सं०) सीसा-संवंधी; सीसेका वना।

सैसव※–पु० दे० 'शैशव'।

सैसवता※–स्त्री० दे० 'शैशव'।

सैसिकत–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सैसिरिध्र–पु० (सं०) दे० 'सैसिकत'।

सैह–वि० (फा०) तीन। **–क़र्रर**–अ० तिवारा, तीसरी वार। **–गूना**–वि० तिगुना। **–गोशा**–वि० तिकोना। **–चंद**–वि० तिगुना। **–दरा**–पु० तीन दरवाजोंवाला दालान; मेहरावदार तीन दरवाजे। **–दरी**–स्त्री० तीन दरवाजोंवाला छोटा कमरा। **–पहर**–पु० तीसरे पहरका वक्त। **–पहरी**–स्त्री० तिपहरी, तीसरा पहर (स्त्रि०)। **–पहल**–वि० तिपहला। **–पहलू**–वि० तिपहला। पु० एक तरहका तीर। **–पाई**–स्त्री०, **–पाया**–पु० तिपाई। **–फ़सला**–वि० (खेत) जिसमें तीन फसलें उपजें; सालमें तीन वार फलनेवाला। **–वंदी**–पु० वह सिपाही जो हर साल राजकर वसूल करनेके लिए रखा जाता था। स्त्री० किस्त या तनखाह जो हर तीसरे महीने अदा की जाय। **–वारा**–अ० तीसरी वार। **–मंजिला**–वि० तीन मंजिलोंवाला (मकान)। **–माही**–वि० तीसरे महीने या हर तीन महीनेपर होनेवाला। स्त्री० तीन महीनेका काल, वरसका चौथाई; तीन महीनेपर मिलनेवाली वृत्ति, तनखाह इत्यादि। **–रोज़ा**–वि० तीन दिन वना रहनेवाला; तीसरे दिन निकलनेवाला (पत्र)। **–शंवा**–पु० मंगलवार। **–साला**–वि० तीन सालका, त्रैवार्षिक। **–हद्दा**–पु० तीन गाँवोंकी सरहदें मिलनेके स्थानपर वनाया हुआ चवूतरा या खंभा।

सैहथी–स्त्री० शक्ति, भाला, वरछी, सैंथी।

सैहा†–पु० पानी आदि डालनेका मिट्टीका पात्र।

सैही†–स्त्री० छोटा सैहा।

सों※–प्र० करण तथा अपादान कारकोंका चिह्न, 'से'। वि० सदृश, तुल्य। अ० सम्मुख, सामने; साथ, सहित, संग। स्त्री० सौंह, शपथ। सर्व० सो, वह।

सोंचा†–पु० दे० 'सोच'।

सोंचर नमक–पु० सौवर्चल, काला नमक।

सोंजा†–स्त्री० दे० 'सौंज'।

सोंझा†–जमीनकी साझेदारीकी व्यवस्था; साझेदारी।

सोंझिया–पु० सोंझमें काम करनेवाला, साझेदार–'फिर प्रेमके सोंझिये वाल-वच्चे वन जाते हैं'–अचल मेरा कोई।

सोंटा–पु० लाठी, डंडा; भाँग घोंटनेके काममें आनेवाला डंडा, भंगघोंटना; एक पौधा, लोविया। **–वरदार**–पु० वल्लमवरदार, असावरदार जो राजा, सरदार, अमीर आदिकी सवारीके आगे-आगे चलता है। मु० **–चलना**–लकड़ी, सोंटेसे मारपीट होना। **–चलाना,–जमाना**–सोंटेसे, लकड़ीसे मारना।

सोंठ–स्त्री० सूखा अदरक, शुंठी; वि० जानवूझकर मौन हो जानेवाला व्यक्ति। अति कृपण। पु० मौन, चुप्पी। **–मिट्टी**–स्त्री० एक तरहकी काली मिट्टी।

सोंठौरा–पु० जच्चाको दिया जानेवाला गुड़ या चीनीके योगसे सोंठ, मेवा आदि मिलाकर वनाया हुआ एक पुष्टिकारक मोदक।

सोंधा※–पु० दे० 'सौंधा'; † दे० 'सोंधा'। † वि० दे० 'सोंधा'।

सोंधा–वि० सुगंधित, सुवासित, खुशवूदार; तपी जमीन, मिट्टी, धूलपर पानी पड़नेसे उठी गंध-युक्त; अन्न भूनते समय उठी सुगंधसे युक्त या उसके समान गंधवाला। पु० महँक, सुगंध; वाल, साफ करने, धोनेके काम आनेवाला एक सुगंधित द्रव्य, मसाला।

सोंधिया–पु० एक तृण, रोहिष।

सोंधी–पु० एक वढ़िया धान।

सोंधु※–वि० सोंधा।

सोंपना–स० क्रि० दे० 'सौंपना' (दिल्ली, मेरठके आसपास इस रूपका प्रयोग अधिक होता है)।

सोंवनिया※–पु० नाकका एक गहना।

सोंह※–स्त्री० दे० 'सौंह'। अ० सामने।

सोंहीं※–अ० दे० 'सौंह'।

सोंहैं※–अ० दे० 'सौंह'।

सो–सर्व० वह। ※ वि० समान, भाँति। अ० इसलिए, अतः। स्त्री० (सं०) पार्वती।

सोऽहम्–(सं०) मैं वह (वही) हूँ (इसका तात्पर्य यह है कि 'मैं' ब्रह्म हूँ; यह वेदांत दर्शनका वाक्य है जिसमें यह माना जाता है कि इस ब्रह्मांडभरमें ब्रह्म व्याप्त है और जो कुछ है सव ब्रह्म ही है, जीव भी ब्रह्म ही है, पर जागतिक मायाके आवरणके कारण अपने (ब्रह्म) रूपको पहचान नहीं पाता; जव उक्त आवरण हट जाता है तव वह ब्रह्म ही हो जाता है)।

सोऽहमस्मि–(सं०) दे० 'सोऽहम्'।

सोअना※–अ० क्रि० दे० 'सोना'।

सोआ–पु० एक साग जिसकी पत्तियाँ वहुत महीन होती हैं और

फूल गुच्छेदार होते हैं।

सोई*–सर्व० नहीं। अ० इसलिए। † स्त्री० वह नीची जमीन जहाँ पानी रुका रह जाय।

सोक*–पु० दे० 'शोक'।

सोकन–पु० कालापन लिये हुए सफेद रंगका बैल; † एक तरहका धान जो नदीके किनारे रेतीली जमीनमें बोया जाता है।

सोकना*–अ० क्रि० शोक करना। स० क्रि० सोखना।

सोकित*–वि० शोकित, शोकान्वित, शोकयुक्त।

सोखक*–वि०, पु० शोषक, आर्द्रता दूर करनेवाला; रस चूस लेनेवाला; तत्त्व हरण करनेवाला।

सोखता–पु० स्याही सोख।

सोखन–पु० दे० 'सोकन'।

सोखना–स० क्रि० कोई तरल पदार्थ या किसी पदार्थका रस ग्रहण या जज्ब कर लेना।

सोखपत्र–पु० (ब्लाटिंग पेपर) सोख्ता, स्याहीसोख।

सोखा†–पु० झाड़-फूँक करनेवाला; वह व्यक्ति जिसपर किसी देवताका आवेश होता है।

सोखाई–स्त्री० झाड़-फूँक; सोखनेकी क्रिया; किसी वस्तुको सोखाने या सोखनेकी मजदूरी।

सोख़्त–स्त्री० (फा०) जलन वि० नष्ट; बर्बाद। मु० **–होना**–जब्त, नष्ट, बेकार होना।

सोख़्तनी–वि० (फा०) जलने या जलानेके योग्य।

सोख़्ता–वि० (फा०) जला हुआ, दग्ध; खिन्न, विषादयुक्त; प्रेमी, आशिक। पु० बुझा हुआ कोयला जिसमें जल्दी आग लग जाती है; (हिं०) जाजिब, स्याहीसोख; बारूदमें रँगा हुआ कपड़ा जिसमें चकमकसे जल्दी आग लग जाती है। **–क़िस्मत** वि० अभागा। **–जां**–वि० दग्धहृदय, दिलजला प्रेमी। **–जिगर**, **–दिल**–वि० प्रेमी, दिलजला।

सोगंद–स्त्री० दे० 'सौगंद'।

सोग*–पु० शोक, किसीके मरनेपर दुःखकी अभिव्यक्ति, विलाप। **–वारी**–स्त्री० शोकमें होना।

सोगिनी*–वि० स्त्री० शोक करनेवाली, शोकान्वित (स्त्री)।

सोगियाना–वि० (फा०) शोक वस्त्र, मातमी लिबास।

सोगी–वि० (फा०) शोक करनेवाला। † अ० क्रि० सोचनेसे परेशान होना, उदास होना। † स्त्री० दे० 'सोहगी', सुहागकी चीजें।

सोच–पु० सोचनेकी क्रिया, विचारनेका भाव; शोक, किसी प्रियके मरनेपर दुःखका प्रकटीकरण; चिंता; पश्चात्ताप, कोई बुरा काम कर डालनेका पछतावा। **–विचार**–पु० किसी विषयका विवेचन, गौर।

सोचना–स० क्रि० विचार करना, किसी विषय, बात आदिकी विवेचना करना। अ० क्रि० शोक, दुःख करना; चिंता करना; पछताना।

सोचाना–स० क्रि० किसीको सोचनेमें प्रवृत्त करना; विचार करवाना, दिखलाना।

सोच्छ्वास–वि० (सं०) प्रसन्न; ढीला; उच्छ्वासयुक्त; हाँफता हुआ। अ० उच्छ्वासपूर्वक, आरामकी साँस लेते हुए।

सोज–स्त्री० शोथ, सूजन; सौंज, सामग्री, सामान।

सोज़–पु० (फा०) जलन; मनस्ताप, वेदना; मरसियाख्वानीका एक ढंग; वे शेर जिन्हें मरसियाख्वाँ लयके साथ पढ़ते हैं। **–ख़्वाँ**–पु० करुण स्वरमें मरसिया पढ़नेवाला। **–ख़्वानी**–स्त्री० इस ढंगसे मरसिया पढ़ना। **–(ज़ो) गुदाज़**–पु० करुण रसके उत्पादक भाव; करुण रसकी व्यंजना।

सोज़न–स्त्री० (फा०) सूई–'केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सोजन जात'–रतन०। **–कारी**–स्त्री० सूईकारी।

सोज़नी–स्त्री० (फा०) दे० 'सुजनी'।

सोज़ाँ–वि० (फा०) जलानेवाला; दुःखद; करुणाजनक।

सोजाक–पु० दे० 'सूजाक'।

सोज़िंदा–वि० (फा०) जलानेवाला।

सोज़िश–स्त्री० (फा०) जलन; व्यथा, वेदना; सूजन। **–(शे) दुरूं**–स्त्री० हृदयकी जलन, प्रेमाग्नि।

सोझ*–वि० जो टेढ़ा न हो, सरल, सीधा। अ० सीधे।

सोझा*–वि० सीधा, सरल; खड़ा। † अ० सामने।

सोटा–पु० दे० 'सोंटा'; * तोता।

सोठ–स्त्री० दे० 'सोंठ'।

सोडा–पु० (अं०) सज्जीसे रासायनिक क्रिया द्वारा तैयार किया हुआ एक क्षार, सर्जिकाक्षार। **–वाटर**–पु० सर्जिकाक्षारके योगसे बनाया जानेवाला एक प्रकारका पाचक खारा जल जिसे गैसकी सहायतासे बोतलमें भरकर रखते हैं।

सोढ–वि० (सं०) सहन किया हुआ; सहिष्णु, धीर।

सोढर*–वि० बुद्धू, बेवकूफ, भोंदू।

सोढव्य–वि० (सं०) सहन करने योग्य, क्षम्य।

सोढा(ढृ)–वि० (सं०) सहिष्णु, क्षमाशील; शक्तिशाली, सक्षम।

सोढी(ढिन्)–वि० (सं०) जिसने सहन किया है।

सोणक–वि० लाल, रक्तवर्णका।

सोत*–पु० दे० 'सोता'।

सोता–पु० नदी, नाले, झरने आदिका उद्गम स्थान; झरना; नदी, नाले आदिकी शाखा; मूल, मूल स्थान (ला०)।

सोतिया*–स्त्री० छोटा सोता।

सोतिहा†–वि० जिसमें स्रोत या सोतेका पानी आता हो (कूप)।

सोती–स्त्री० स्रोत; धारा; जलकी शाखा; * स्वाती नक्षत्र। पु० श्रत्रिय।

सोत्कंठ–वि० (सं०) प्रबल इच्छासे युक्त, लालसाभरा; पश्चात्तापयुक्त; शोकान्वित।

सोत्कंप–वि० (सं०) कंपित।

सोत्क–वि० (सं०) इच्छुक, लालायित, उत्कंठित।

सोत्कर्ष–वि० (सं०) उन्नत, उन्नतिशील; उत्तम।

सोत्तरपणव्यवहार–पु० (सं०) वाद-विवादमें विजेताको विजितसे मिलनेवाली ठहरायी हुई रकम।

सोत्प्रास–वि० (सं०) अति, अधिक; अतिशयोक्तिपूर्ण, बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया; व्यंग्यात्मक, व्यंग्यपूर्ण। पु० सशब्द हँसी, अट्टहास; प्रिय वाक्य; व्यंग्यवाक्य, श्लेषवाक्य; व्याजस्तुति।

सोत्संग–वि० (सं०) खिन्न, विषण्ण।

सोत्सव–वि० (सं०) उत्सवयुक्त, उछाहभरा; आनंदित। अ० उत्सवपूर्वक, उत्साहपूर्वक।

सोत्सुक–वि० (सं०) उत्सुकतापूर्ण; जिज्ञासायुक्त; शोकान्वित। अ० उत्सुकतापूर्वक।

सोत्सेक–वि० (सं०) घमंडी, अभिमानी।

सोत्सेध–वि० (सं०) ऊँचा।

सोथ–पु० शोथ, सूजन।

सोदकुंभ–पु० (सं०) पितरोंके उद्देश्यसे किया जानेवाला एक यज्ञ।

सोदन–पु० छोटे-छोटे छेद करके बेलबूटे काढ़नेका कागज।

सोदय–वि० (सं०) सूद सहित, ब्याजके साथ; (आकाशीय पिंडोंके) उदयसे संबंध रखनेवाला; जिसका सिलसिला जारी रहे।

सोदर–वि० (सं०) सगा, एक उदरसे उत्पन्न। पु० सगा भाई।

सोदरा, सोदरी–स्त्री० (सं०) सगी बहिन।

सोदरीय–वि० (सं०) सोदर, सहोदर, सोदर-संबंधी।

सोदर्क–वि० (सं०) कंगूरेवाला; परिणामयुक्त; गानके पूरकसे युक्त। पु० गानका अंतिम पूरक।

सोदर्य–वि०, पु० (सं०) सहोदर।

सोद्यम–वि० (सं०) जो युद्धके लिए तैयार हो; सचेष्ट।

सोद्योग–वि० (सं०) उद्योगयुक्त, उद्योगशील, प्रयत्न करनेवाला; खतरनाक (रोग)।

सोद्वेग–वि० (सं०) घबड़ाया हुआ, उद्वेगशील; व्याकुल। अ० उद्वेगपूर्वक।

सोध–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति; * अनुसंधान, अनुशीलन, खोज; हालचाल, खोज-खबर; सुधार; होशहवास, सुध-बुध–'आनँद मगन भये सब डोलत कछू न सोध सरीर'–सूर; किसी व्यक्तिसे ऋण आदि लेकर उसे चुकानेकी क्रिया।

सोधक*–पु० दे० 'शोधक'।

सोधन*–पु० अनुसंधान करनेकी क्रिया, खोज करनेका काम;

सुधारने, ठीक करनेका काम; अदा करने, चुकानेका काम ।

सोधना*–स० क्रि० अनुसंधान, अनुशीलन करना; ढूँढ़ना, खोजना; त्रुटि दूर करना, गलती दुरुस्त करना, संशोधन करना; ऋण आदि चुकाना, अदा करना; किसी वस्तुकी गंदगी दूर करना, सफाई करना; गणना करना, विचार देना (जन्मपत्री आदि); औषधके लिए धातु (पारा, सोना आदि)की सफाई करना ।

सोधवाना†–स० क्रि० ढुँढ़वाना, खोज कराना; ठीक कराना; साफ करवाना ।

सोधाना*–स० क्रि० दे० 'सोधवाना' ।

सोन–पु० गंगाकी एक प्रसिद्ध सहायक नदी जो दानापुरके पास उसमें मिलती है, शोण; * सोना; 'सोना'का समासगत रूप; एक जलपक्षी । * वि० लाल । **–किरवा**–पु० दे० 'सुनकिरवा' । **–कीकर**–पु० एक बड़ा वृक्ष । **–केला**–पु० चंपाकेला । **–गेरू**–पु० सोनागेरू । **–चंपा**–पु० पीला, सोनेके रंगका चंपा । **–चिरी***–स्त्री० नर्तकी, नटी । **–जरद,–जर्द,–जिरद***–स्त्री० सोनजूही, स्वर्णयूथिका । **–जूही**–स्त्री० जूहीका एक प्रकार जो पीला होता है, स्वर्णयूथिका । **–पेँडुकी**–स्त्री० एक तरहकी चिड़िया । **–भद्र**–पु० सोन नदी । **–रास***–पु० पका हुआ पान । **–हार***–पु० एक समुद्री पक्षी ।

सोनवाना*–वि० सोनेका, सुनहला ।

सोनह–पु० (सं०) लहसुन ।

सोनहला–वि० सोनेके रंग और चमकका, स्वर्णिम ।

सोनहा–पु० कुत्तेकी जातिका एक जंगली पशु जो बाघको भी मार डालता है; एक पक्षी ।

सोना–पु० पीले रंगकी एक बहुमूल्य धातु जो विशेष रूपसे आभूषण आदि बनानेके काम आती है और भस्म करके दवाके रूपमें इस्तेमाल की जाती है; (ला०) बढ़िया और बहुमूल्य वस्तु, श्रेष्ठ व्यक्ति आदि; एक तरहका हंस; एक वृक्ष । **–गेरू**–पु० गेरूका एक भेद । **–चाँदी**–स्त्री० माल, धन, दौलत । **–पाठा**–पु० एक ऊँचा वृक्ष । **–पुर**–पु० स्वर्ग । **–पेट**–पु० सोनेकी खान । **–फूल**–पु० एक क्षुप । **–मक्खी,–माखी**–स्त्री० एक खनिज द्रव्य जिसमें सोनेका कुछ अंश होता है और जो औषधके काममें भी आता है; एक तरहका रेशमका कीड़ा । **–मुखी**–पु० सनाय । **मु० –कसना**–सोना जाँचना, परखना । **–कसाना**–सोनेको परखवाना । **–चढ़ना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा होना । **–चढ़वाना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा करवाना । **–चढ़ाना**–किसी चीजपर सोनेका मुलम्मा करना । **–लेकर मिट्टी (तक) न देना**–बेईमानी करना, नादेहंदा होना । **–(ने)का घर मिट्टी हो जाना**–बना-बनाया घर मिट जाना, बनी गृहस्थी बिगड़ जाना । **–का पानी**–सोनेका मुलम्मा । **–की कटार**–सुन्दर होनेपर भी घातक वस्तु । **–की चिड़िया**–मालदार आदमी; अमीर आदमी । **–०उड़ जाना, हाथसे उड़ या निकल जाना**–मालदार आदमीका चंगुलसे निकल जाना; सुअवसरका निकल जाना । **–०मिलना, हाथ आना या लगना**–किसी बहुमूल्य वस्तुका मिलना; किसी मालदार आदमीका काबूमें आना । **–के बराबर तौलना**–कोई मामूली कीमतकी भी चीज तौलमें एकदम ठीक देना जैसा सोना तौलनेमें किया जाता है, कम कीमतकी चीज भी अधिक कीमतकी चीजकी भाँति तौलना । **–के महल उठाना**–बहुत धनवान् होना । **–के मोल**–बहुमूल्य । **–में घुन लगना**–असंभव बातका होना । **–में सुगंध होना**–किसी वस्तु या व्यक्तिमें एक अच्छाईके साथ दूसरी अच्छाईके मिल जानेसे उसकी शोभा या प्रतिष्ठाका बढ़ जाना । **–में सुहागा**–गलते सोनेमें सुहागा मिला देनेसे उसका रंग निखर जाता है; किसी वस्तु अथवा व्यक्तिका उच्चतर, बेहतर होना । **–से लदे रहना या होना**–बहुत गहने पहने रहना ।

सोना–अ० क्रि० निद्राग्रस्त होना, शयन करना; लेटना; सुन्न या निष्क्रिय-सा हो जाना । **मु०–सोते-जागते**–हरवक्त, हमेशा ।

सोनार–पु० दे० 'सुनार' ।

सौनिजरद*–स्त्री० दे० 'सोनजर्द' ।

सोनित*–वि०, पु० दे० 'शोणित' ।

सोनी*–पु० स्वर्णकार, सोनार ।

सोन्मद–वि० (सं०) पागल ।

सोप–पु० एक प्रकारकी छपी चादर । (अं०) साबुन ।

सोपकरण–वि० (सं०) उपकरणयुक्त ।

सोपकार–वि० (सं०) साधनों या उपकरणोंसे युक्त; (बंधक) जिससे सूद मिलता हो; लाभदायक; जिसे सहायता दी गयी हो । **–आधि**–स्त्री० लाभके लिए लगायी हुई धरोहर ।

सोपचार–वि० (सं०) शिष्टतापूर्वक बर्ताव करनेवाला ।

सोपत*–पु० सुविधा, सुभीता ।

सोपध–वि० (सं०) कपटपूर्ण ।

सोपधि–वि० (सं०) कपटयुक्त, छली । **–प्रदान**–पु० ऋण बिना चुकाये गिरवीकी चीज किसी बहाने लौटा लेना । **–शेष**–वि० जिसमें छल-कपट शेष रह गया हो ।

सोपप्लव–वि० (सं०) ग्रस्त, ग्रहण लगा हुआ (चंद्र या सूर्य) ।

सोपाक–पु० (सं०) चांडालसे उत्पन्न पुल्कसीकी संतान (जिससे जल्लादका काम लिया जाता था); जड़ी-बूटियोंका विक्रेता ।

सोपाधि, सोपाधिक–वि० (सं०) उपाधिसहित; किसी विशेषतासे युक्त; विशिष्ट ।

सोपान–पु० (सं०) निःश्रेणी, सीढ़ी; मोक्षप्राप्तिका उपाय (जै०) । **–कूप**–पु० सीढ़ीदार कुआँ, बावली । **–तंत्र**–पु० (हायरेरकी) क्रमानुगत अधिकारियोंका वर्ग, पुरोहिततंत्र । **–पंक्ति,–परंपरा**–स्त्री० सीढ़ियोंका सिलसिला । **–पथ,–मार्ग**–पु० जीना, सीढ़ी । **–पद्धति**–स्त्री० दे० 'सोपान-पथ' । **–माला**–स्त्री० घुमावदार सीढ़ियाँ ।

सोपानक–पु० (सं०) सोपान; सोनेके तारमें गुँथी मोतियोंकी माला । **–परंपरा**–स्त्री० दे० 'सोपान-पंक्ति' ।

सोपानिका–स्त्री० (लिफ्ट) दे० 'उत्थानक'; उत्थापयंत्र । **–चालक**–पु० (लिफ्टमैन) उत्थानकमें बैठाकर नीचे-ऊपर ले जानेवाला कर्मचारी ।

सोपानित–वि० (सं०) सोपानयुक्त ।

सोपाश्रय–वि० (सं०) अवलंबयुक्त । पु० एक योगासन ।

सोपासन–वि० (सं०) पवित्र होमाग्नियुक्त ।

सोपि*–सोऽपि, वह भी ।

सोफ़ता–पु० ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो, एकांत स्थान; अवकाशका समय; चिकित्सासे रोगमें आनेवाली कमी ।

सोफ़ा–पु० (अं०) गद्दीदार पुश्त और बिस्तरेवाला आसन जो बैठने या लेटनेके काम आता है, 'कोच' । **–सेट**–पु० सोफ़ाके साथ वैसी ही दो या तीन-चार कुर्सियाँ ।

सोफियाना–वि० दे० 'सूफ़ियाना'; सादा देख पड़ते हुए भी भला लगनेवाला ।

सोफी–वि०, पु० दे० 'सूफ़ी' ।

सोब्रन†–पु० सुवर्ण, सोना ।

सोभ–पु० (सं०) गंधर्वनगर । * स्त्री० शोभा ।

सोभन*–वि०, पु० दे० 'शोभन' ।

सोभना*–अ० क्रि० सुंदर लगना, शोभायुक्त होना, सोहना ।

सोभनीक*–वि० शोभायुक्त, सुंदर ।

सोभर–पु० सूतिगृह, सौरी ।

सोभरि–पु० (सं०) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि ।

सोभांजन–पु० (सं०) दे० 'शोभांजन' ।

सोभा*–स्त्री० दे० 'शोभा' । **–कारी**–वि० शोभायुक्त, सुंदर ।

सोभायमान–वि० दे० 'शोभायमान' ।

सोभार–वि० उभारदार । अ० उभारके साथ ।

सोभित*–वि० दे० 'शोभित' ।

सोम–पु० (सं०) एक लता जिसका रस यज्ञमें तर्पण तथा पान करनेके काम आता था; इस लताका रस; चंद्रमा; चंद्रवार; सोमयज्ञ; अमृत; कपूर; वायु; जल; एक दिव्यौषधि, एक पर्वत; एक पितृवर्ग; कुबेर; शिव; यम; सुग्रीव; वानर-सेनाका एक नायक; माँड़; स्वर्ग; आकाश; प्रकाशकी किरण; (समासांतमें) प्रधान (नृसोम); एक वस्तु; एक राग; विवाहित पति; एक स्त्रीरोग; यज्ञोपकरण । वि० उमायुक्त । **–कन्या**–स्त्री० सोमकी पुत्री । **–कर**–पु० चंद्रकिरण । **–कर्म(न्)**–पु० सोमकी

तैयारी। **–कलश**–पु० सोमरस रखनेका घड़ा। **–कल्प**–पु० इक्कीसवाँ कल्प। **–कांत**–वि० चंद्रमा जैसा सुंदर; चंद्रमा जैसा प्रिय। पु० चंद्रकांत मणि। **–काम**–पु० सोमपानकी इच्छा। वि० सोमपानका इच्छुक। **–कीर्ति**–पु० धृतराष्ट्रका एक पुत्र। **–कुल्या**–स्त्री० एक नदी। **–क्रतवीय**–पु० एक साम। **–क्रतु**–पु० सोमतर्पण। **–क्रयण**–पु० सोमके मूल्यके रूपमें काम करनेवाला। **–क्रयणी**–स्त्री० सोमके मूल्यके रूपमें प्राप्त गौ। **–क्षय**–पु० चंद्रमाका लोप, अमावास्या। **–क्षीरा**–स्त्री० सोमवल्ली। **–क्षीरी**–स्त्री० सोमलता। **–खंडा**–स्त्री० सोमवल्ली। **–खड्डुक**–पु० नेपालके एक तरहके शैव साधु। **–गंधक**–पु० रक्त पद्म। **–गर्भ**–पु० विष्णु। **–गा**–स्त्री० सोमवल्ली। **–गिरि**–पु० एक पर्वत। **–गृष्टिका**–स्त्री० पेठा। **–ग्रह**–पु० सोमपानका पात्र; चंद्रग्रहण; एक अश्वग्रह। **–ग्रहण**–वि० सोमरस धारण करनेवाला। पु० चंद्रग्रहण। **–चमस**–पु० सोमपानका पात्र। **–ज**–वि० चंद्रमा द्वारा उत्पादित। पु० बुध ग्रह; दूध। **–जाजी***–पु० सोमयाजी। **–तीर्थ**–पु० इस नामका एक तीर्थ, प्रभास तीर्थ। **–दर्शन**–पु० एक नागासुर। **–दा**–स्त्री० एक गंधर्वी। **–दिन**–पु० सोमवार, चंद्रवार। **–देव**–पु० चंद्रदेव; कथासरित्सागरके रचयिता (जो कश्मीरमें ग्यारहवीं शताब्दीमें हुए थे)। **–देवत, –देवत्य,–दैवत्य**–वि० सोम जिसका देवता हो। **–धारा**–स्त्री० आकाश; छायापथ; स्वर्ग। **–धेय**–पु० एक प्राचीन जाति; एक प्राचीन जनपद। **–नंदी(दिन्)**–पु० शिवका एक अनुचर। **–नंदीश्वर**–पु० एक शिवलिंग। **–नाथ**–पु० भारतके सुप्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक जिसे महमूद गजनवीने १०२४ ईसवीमें लूटा और मूर्तिभंग किया था; काठियावाड़का एक प्राचीन नगर जहाँ इसका मंदिर है। **–नेत्र**–वि० सोम जिसका नायक हो; सोम जैसे नेत्रोंवाला। **–प**–वि० सोमरस पीनेवाला। पु० सोमयज्ञ करनेवाला; एक विश्वेदेव; स्कंदका एक अनुचर; एक असुर; एक पितृवर्ग; एक ऋषिवंश; एक जनपद। **–पति**–पु० इंद्र। **–पत्र**–पु० तृणविशेष, दर्भ। **–पद**–पु० एक लोक; एक तीर्थ। **–परिश्रयण,–पर्याणहन**–पु० सोमरस निचोड़नेका कपड़ा। **–पर्व(न्)**–पु० सोमोत्सवका समय। **–पा**–वि० सोमरस पीनेवाला। पु० सोमयज्ञ; यज्ञ करनेवाला; एक पितृवर्ग (विशेषकर ब्राह्मणोंका); ब्राह्मण। **–पात्र**–पु० सोमरस रखनेका पात्र। **–पान**–पु० सोमरस पीना। **–पायी(यिन्)**–वि० सोमरस पीनेवाला। **–पाल**–पु० सोमरक्षक; सोमविक्रेता; गंधर्व (रक्षक होनेके कारण)। **–पिती**–स्त्री० (हिं०) घिसा चंदन रखनेका पात्र। **–पीति**–स्त्री० सोमका पान; सोमयज्ञ। **–पीती(तिन्)**–वि० सोमपान करनेवाला। **–पीथ**–पु० सोमपान। **–पीथी(थिन्)**–वि० सोमपान करनेवाला। **–पुत्र**–पु० बुध ग्रह। **–पुर**–पु० सोमनगर; पाटलिपुत्रका एक प्राचीन नाम। **–पुरुष**–पु० सोमका सेवक; सोमपाल। **–पृष्ठ**–वि० सोम धारण करनेवाला (पर्वत)। **–पेय**–पु० सोमयज्ञ; सोमतर्पण। **–प्रदोष**–पु० सोमवारको किया जानेवाला विशेष प्रदोष-व्रत। **–प्रभ**–वि० चंद्रमा जैसा कांतिमान्। **–प्रवाक**–पु० सोमयज्ञकी घोषणा करनेवाला। **–बंधु**–पु० कुमुद; सूर्य; बुध। **–बेल**–स्त्री० (हिं०) गुलचाँदनी। **–भक्ष**–पु० सोमपान। **–भवा**–स्त्री० नर्मदा नदी। **–भू**–पु० बुध; एक जिनराज, चौथे कृष्ण वासुदेव। वि० चंद्रवंशी; सोमसे उत्पन्न। **–भृत्**–वि० सोम लानेवाला। **–भोजन**–पु० गरुड़का एक पुत्र; सोमपान। **–मख**–पु० सोमयज्ञ। **–मद**–पु० सोमपानसे होनेवाला नशा। **–यज्ञ**–पु० एक तरहका यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था। **–याग**–पु० सोमयज्ञ; एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमपान होता था। **–याजी(जिन्)**–वि०, पु० सोमतर्पण करनेवाला। **–योगी(गिन्)**–वि० जो चंद्रमाके योगमें हो। **–योनि**–पु० देवता; ब्राह्मण; एक सुगंधित चंदन। **–रक्ष**–पु० सोमपाल। **–रस**–पु० सोमलताका रस; तालुमूलमें स्थित माने जानेवाले चन्द्रमासे निकलनेवाला रस जो हठयोगी जीभ उलटकर पीते हैं। **–रसोद्भव**–पु० दूध। **–राग**–पु० राग-विशेष (संगीत)। **–राज**–पु० चंद्रमा। **–०सुत**–पु० बुध ग्रह। **–राजिका**–स्त्री० सोमराजी। **–राजी**–स्त्री० वाकुची; चंद्रशृंग; एक वृत्त। **–राजी(जिन्)**–पु० वाकुची। **–राज्य**–पु० चंद्रलोक। **–राष्ट्र**–पु० एक प्राचीन जनपद। **–रोग**–पु० प्रमेह जैसा स्त्रियोंका एक रोग। **–लता**–स्त्री० सोम नामकी लता, सोमवल्ली; गोदावरी नदी। **–लतिका**–स्त्री० गुडूची; सोमलता। **–लिप्त**–वि० सोम पुता हुआ। पु० एक सोमपात्र। **–लोक**–पु० चंद्रलोक। **–वंश**–पु० चंद्रवंश; युधिष्ठिर। **–वंशीय, वंश्य**–वि० चंद्रवंश-संबंधी; चंद्रवंशोत्पन्न। **–वत्**–वि० चंद्रमा जैसा। **–वर्चा(र्चस्)**–पु० एक विश्वेदेव; एक गंधर्व। वि० सोम जैसी कांतिवाला। **–वल्क**–पु० श्वेत खदिर; कट्फल, कायफल; करंज; रीठाकरंज; बबूर। **–वल्लरि,–वल्लरी**–स्त्री० सोमलता; ब्राह्मी। **–वल्लिका**–स्त्री० सोमलता; सोमराजी। **–वल्ली**–स्त्री० गुडूची; सोमलता; सोमराजी; पातालगारुड़ी; ब्राह्मी; सुदर्शन; लताकरंज; गजपिप्पली; वनकार्पास। **–वामी(मिन्)**–वि० सोम वमन करनेवाला। पु० वह ऋत्विक् जिसने बहुत सोमपान कर लिया है। **–वायव्य**–पु० एक ऋषिवंश। **–वार,–वासर**–पु० रविवारके बादका दिन, चंद्रवार। **–वारी**–स्त्री० (हिं०) सोमवती अमावस्या। वि० सोमवार-संबंधी। **–विक्रयी(यिन्)**–वि०, पु० सोम बेचनेवाला। **–वीथी**–स्त्री० चंद्रमाका पथ। **–वीर्य**–वि० सोम जैसा शक्तिशाली। **–वृक्ष**–पु० कट्फल वृक्ष; श्वेत खदिर। **–वृद्ध**–वि० सोमपानसे जिसकी शक्ति बढ़ी हो। **–वेश**–पु० एक मुनि। **–व्रत**–पु० सोमप्रदोष व्रत। एक साम। **–शकला**–स्त्री० एक तरहकी ककड़ी, शशांडुली। **–संज्ञ**–पु० कपूर। **–संस्था**–स्त्री० सोमयज्ञ का आरंभिक रूप। **–सलिल**–पु० सोमरस। **–सव**–पु० एक यज्ञकृत्य, सोमनिष्पीडन। **–सवन**–पु० वह जिससे सोमरस निचोड़ा जाय। **–सार**–पु० श्वेत खदिर; बबुर। **–सिंधु**–पु० विष्णु। **–सिद्धांत**–पु० एक बुद्ध; शैवोंका एक तांत्रिक मत; फलित ज्योतिष। **–सिद्धांती(तिन्)**–पु० सोम-सिद्धांतका अनुयायी। **–सुंदर**–वि० चंद्रमा जैसा सुंदर। **–सुत**–पु० बुध ग्रह। **–सुता**–स्त्री० नर्मदा नदी। **–सुति,–सुत्या**–स्त्री० सोमनिष्पीडन। **–सुत्**–पु० यज्ञमें सोमरस निकालनेवाला; सोमरस चढ़ानेवाला ऋत्विक्। **–सुत्वा(त्वन्)**–वि०, पु० यज्ञमें सोमरस चढ़ानेवाला। **–सूक्त**–पु० सोम-संबंधी ऋचाएँ। **–सूत्र**–पु० शिवलिंगके स्नानका जल निकलनेकी नाली। **–०प्रदक्षिणा**–स्त्री० शिवलिंगकी इस तरह परिक्रमा करना कि नाली लाँघनी न पड़े। **–सेन**–पु० शंबरका एक पुत्र। **–हार,–हारी(रिन्)**–वि० सोमका निष्पीडन या हरण करनेवाला।

सोमक–पु० (सं०) एक ऋषि; कृष्णका एक पुत्र; एक देश या जाति; द्रुपद-वंश; सहदेवका एक पुत्र; स्त्रियोंका सोम नामक रोग।

सोमकेश्वर–पु० (सं०) सोम देशका राजा; एक राजर्षि।

सोमन*–पु० एक अस्त्र।

सोमनस*–पु० दे० 'सौमनस्य'।

सोमवती अमावास्या–स्त्री० (सं०) सोमवारको पड़नेवाली अमावास्या।

सोमवान्(वत्)–वि० (सं०) सोमयुक्त; चंद्रमायुक्त।

सोमांग–पु० (सं०) सोमयज्ञका अंग।

सोमांशक–पु० (सं०) चंद्रमाका अंश।

सोमांशु–पु० (सं०) सोमलताका डंठल या अंकुर; चंद्रकिरण; सोमयज्ञका अंग।

सोमा–स्त्री० (सं०) सोमलता; एक अप्सरा; एक नदी।

सोमा(मन्)–पु० (सं०) सोमयज्ञ करनेवाला; चंद्रमा; यज्ञोपकरण; सोमका निष्पीडन करनेवाला (वै०)।

सोमाख्य–पु० (सं०) रक्त पद्म।

सोमाद–वि० (सं०) सोम खानेवाला; सोमपायी।

सोमाधार–पु० (सं०) एक तरहके पितर।

सोमापि–पु० (सं०) सहदेवका एक पुत्र।

सोमापूषण–पु० (सं०) सोम और पूषण देवता।

सोमाभ–वि० (सं०) चंद्रमा जैसा कांतिमान्।

सोमाभा–स्त्री० (सं०) चंद्रकिरण, चंद्रावली।

सोमाभिषव–पु० (सं०) सोमका रस चुलाना ।

सोमायन–पु० (सं०) २७ दिनोंका एक व्रत ।

सोमार्चि(स्)–पु० (सं०) एक देवप्रासाद ।

सोमार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) सोमका इच्छुक ।

सोमार्द्धधारी(रिन्), सोमार्धधारी(रिन्)–पु० (सं०) शिव, जो मस्तकपर अर्द्धचन्द्र धारण किये हैं ।

सोमार्द्धहारी(रिन्); सोमार्धहारी(रिन्)–पु० (सं०) दे० 'सोमार्धधारी' ।

सोमार्ह–वि० (सं०) सोम पानेका अधिकारी ।

सोमाल–वि० (सं०) कोमल; स्निग्ध, चिकना ।

सोमालक–पु० (सं०) पुखराज ।

सोमावती–स्त्री० (सं०) चंद्रमाकी माता ।

सोमाश्रम–पु० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ ।

सोमाश्रयायण–पु० (सं०) एक तीर्थस्थान ।

सोमाष्टमी–स्त्री० (सं०) सोमवारको पड़नेवाली अष्टमी ।

सोमास्त्र–पु० (सं०) एक अस्त्र जिसका संबंध सोम, चंद्रमासे माना जाता है ।

सोमाह–पु० (सं०) चंद्रवार, सोमवार ।

सोमाहुति–स्त्री० (सं०) सोमयज्ञ ।

सोमाह्वा–स्त्री० (सं०) सोम लता ।

सोमी(मिन्)–वि० (सं०) सोमवाला; सोमयज्ञ करनेवाला; सोम द्वारा अनुप्राणित ।

सोमीय–वि० (सं०) सोम-संबंधी ।

सोमेज्या–स्त्री० (सं०) सोमयज्ञ ।

सोमेश्वर–पु० (सं०) दे० 'सोमनाथ'; सोम द्वारा काशीमें स्थापित एक शिवलिंग; कृष्ण; एक देवता ।

सोमोद्भव–वि० (सं०) चंद्रमासे उत्पन्न । पु० कृष्ण ।

सोमोद्भवा–स्त्री० (सं०) नर्मदा नदी ।

सोम्य–वि० (सं०) सोम-संबंधी; सोमके योग्य; सोमकी आहुति देनेवाला; सोम जैसा; मुलायम, कोमल, मृदुल ।

सोय*–सर्व० वही । वि० वैसा ।

सोयम–वि० (फा०) तीसरा ।

सोया–पु० दे० 'सोआ' ।

सोरंजान†–पु० दे० 'सूरंजान' ।

सोर–पु० (सं०) वक्र गति; * शोरगुल, कोलाहल; ख्याति; बारूद; एक समुद्री बड़ी मछली, शार्क । † स्त्री० मूल, जड़; * सौरी ।

सोरट्ठ–पु० दे० 'सोरठ' ।

सोरठ–पु० भारतका एक प्रांत सौराष्ट्र; एक रागिनी । **–मल्लार** –पु० एक राग । **मु० खुली सोरठ कहना**–खुले आम कहना ।

सोरठा–पु० (११+१३+११+१३, मात्राओंका) दोहेसे मिलता-जुलता एक छंद ।

सोरठी–स्त्री० एक रागिनी ।

सोरण–वि० (सं०) कसैला, मीठा, खट्टा और नमकीन । पु० ऐसा स्वाद ।

सोरन†–पु० सूरन, ओल ।

सोरवा–पु० दे० 'शोरवा' ।

सोरह*–वि०, पु० दे० 'सोलह' ।

सोरही–स्त्री० सोलह चित्ती कौड़ियोंसे खेला जानेवाला एक प्रकारका जुआ; उक्त प्रकारका जुआ खेलनेके निमित्त एकत्र सोलह चित्ती कौड़ियाँ ।

सोरा*–पु० दे० 'शोरा' ।

सोराना–अ० किसी बोयी चीजमें सोर या जड़ निकलना ।

सोरावास–पु० (सं०) मांसका शोरवा जिसमें नमक न पड़ा हो ।

सोराष्ट्रिक–वि०, पु० दे० 'सौराष्ट्रिक' ।

सोरी–स्त्री० (सं०) बर्तनका महीन छेद जिसमेंसे पानी बह जाय ।

सोर्णभ्रू–वि० (सं०) जिसकी भवोंके बीचमें भँवरी हो ।

सोर्मि, सोर्मिक–वि० (सं०) तरंगयुक्त ।

सोलंकी–पु० क्षत्रियोंका एक राजवंश जिसका राज्य गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना आदिमें था ।

सोल–वि० (सं०) शीतल, ठंढा; कसैला, खट्टा और तीता । पु० ठंढक; कसैला, खट्टा और तीता स्वाद; (अं०) जूतेका तल्ला ।

सोलपोल–वि० निरर्थक, बेकार ।

सोलह–वि० पंद्रह और एक । पु० सोलहकी संख्या, १६ । **–नहाँ** –वि० सोलह नखोंवाला (हाथी) । **–सिंगार**–पु० दे० 'षोडश-शृंगार' । **मु०–गंडे सुनाना**–खूब गालियाँ देना । **–(हों)आने** –बिलकुल, पूर्णतः, शत-प्रतिशत ।

सोलही–स्त्री० दे० 'सोरही' ।

सोला†–पु० दलदली भूमिमें उगनेवाला एक झाड़ जिसकी सीधी और मजबूत डालियोंके छिलकेसे सोला हैट बनता है; एक प्रकारकी रेशमी धोती । **–हैट**–एक तरहका अंग्रेजी टोप ।

सोलाना–स० क्रि० दे० 'सुलाना' ।

सोलिक–वि० (सं०) ठंढा । पु० ठंडक ।

सोल्लास–वि० (सं०) उल्लासयुक्त, आनंदभरा । अ० उल्लासके साथ ।

सोल्लुंठ–पु० (सं०) व्यंग, ताना, चुटकी । वि० व्यंगपूर्ण । **–भाषण,–भाषित,–वचन**–पु० व्यंगपूर्ण वाक्य ।

सोल्लुंठन–पु०, वि० (सं०) दे० 'सोल्लुंठ' ।

सोल्लुंठोक्ति–स्त्री० (सं०) व्यंगपूर्ण वाक्य ।

सोवज*–पु० शिकारका जानवर आदि ।

सोवड़–पु० सूतिगृह, सौरी ।

सोवन*–पु० सोनेकी क्रिया ।

सोवना*–अ० क्रि० दे० 'सोना' ।

सोवनार*–स्त्री० सोनेका कमरा, शयनागार ।

सोवरी*–स्त्री० सौरी ।

सोवा–पु० दे० 'सोआ' ।

सोवाक–पु० (सं०) सोहागा ।

सोवाना*–स० क्रि० दे० 'सुलाना' ।

सोवारी–पु० पंद्रह मात्राओंका एक ताल (संगीत) ।

सोवाल–वि० (सं०) धूम्र, धुएँके रंगका । पु० धुएँका रंग ।

सोवियत–पु० (रूसी) रूसके किसी जिलेकी वह सभा जो मजदूरों और सिपाहियोंके चुने हुए प्रतिनिधियोंसे बनी हो; रूसका आधुनिक प्रजातंत्र ।

सोवैया*–पु० सोनेवाला ।

सोशल–वि० (अं०) सामाजिक; मिलनसार; समाज संबंधी ।

सोशलिज्म–पु० (अं०) दे० 'समाजवाद' ।

सोशलिस्ट–वि० (अं०) समाजवादी । पु० वह जो समाजवादका अनुयायी हो ।

सोष–वि० (सं०) खारी मिट्टी मिला हुआ ।

सोषक*–वि०, पु० दे० 'शोषक' ।

सोषण*–पु० दे० 'शोषण' ।

सोषना*–स० क्रि० दे० 'सोखना' ।

सोषु, सोसु–वि० सुखा डालनेवाला; शोषक ।

सोष्णीष–वि० (सं०) पगड़ीवाला । पु० वह मकान जिसमें सामने बरामदा हो ।

सोष्मा(ष्मन्)–वि० (सं०) उष्ण, गरम; ऊष्मायुक्त (वर्ण) । पु० ऊष्म वर्ण ।

सोष्यंती–स्त्री० (सं०) जच्चा, प्रसूता । **–कर्म(न्)**–पु० प्रसूता-संबंधी कृत्य । **–सवन**–पु० एक संस्कार । **–होम**–पु० प्रसूताकी ओरसे किया जानेवाला हवन ।

सोसन–स्त्री० दे० 'सौसन' ।

सोसनी–वि० सौसनके फूलके रंगका, लाली लिये हुए नीले रंगका ।

सोसाइटी, सोसायटी–स्त्री० (अं०) समाज, मंडली; सार्वजनिक संस्था; संग ।

सोस्मि*–दे० 'सोऽहमस्मि' ।

सोहँ–अ० दे० 'सौंह' ।

सोहं*–दे० 'सोऽहम्' ।

सोहंग*–दे० 'सोऽहम्' ।

सोहंगम*–दे० 'सोऽहम्' ।

सोहंजि–पु० (सं०) कुंतिभोजका एक पुत्र ।

सोहँन*–अ० दे० 'सौँह'।

सोहगी–स्त्री० तिलकके बादकी एक रस्म जिसमें कन्याके लिए वस्त्राभूषण, खिलौने आदि भेजे जाते हैं; सुहागकी चीजें।

सोहगैला†–पु० कंगूरेदार लंबा सिंधोरा।

सोहदा†–पु० दे० 'शुहदा'।

सोहन*–वि० शोभन, सुंदर, मोहक, सुहावना। पु० सुंदर व्यक्ति; नायक; † एक वृक्ष; दे० 'सोहान'। स्त्री० एक पक्षी जिसका शिकार करते हैं। **–चिड़िया**–स्त्री० एक बड़ा पक्षी। **–पपड़ी**–स्त्री० एक रेशेदार मिठाई जो मैदा और चीनी एकमें मिलाकर बनायी जाती है। **–हलवा**–पु० मेवे घी, चीनी आदिके मेलसे बनी एक स्वादिष्ठ तथा प्रसिद्ध मिठाई जो कतरोंके रूपमें जमी और घीसे तर रहती है।

सोहना–स० क्रि० (खेत) निराना। * अ० क्रि० सुशोभित होना, भला मालूम होना, सुंदर लगना। † वि० सुंदर, मोहक। † पु० कसेरोंका एक औजार।

सोहनी–स्त्री० कूँची, झाड़ू; एक रागिनी; निरानेकी क्रिया, निराई।

सोहबत–स्त्री० (अ०) मंडली, संगति; संभोग। **–दारी**–स्त्री० स्त्री-प्रसंग।

सोहबती–वि० दे० 'सुहबती'।

सोहमस्मि*–दे० 'सोऽहमस्मि'।

सोहर–पु० बच्चेका जन्म होनेके अवसरपर गाया जानेवाला एक मंगलगीत। स्त्री० नावका फर्श; पाल खींचनेकी रस्सी।

सोहरत*–स्त्री० दे० 'शोहरत'।

सोहराना*–स० क्रि० दे० 'सहलाना'।

सोहला–पु० सोहर; मंगलगीत; पूजाके अवसरपर गाया जानेवाला गीत।

सोहाइन*–वि० सुहावना, रमणीक।

सोहाई–स्त्री० निरानेका काम; निरानेकी मजदूरी।

सोहाग*–पु० सुहागा; सुहाग, सौभाग्य; अहिवात; सुहागका गीत;–'औ गावहिं सब नखत सोहागू'–प०; एक सदाबहार पेड़।

सोहागा–पु० दे० 'सुहागा'; हेंगा, पटेला।

सोहागिन, सोहागिनी, सोहागिल–स्त्री० दे० 'सुहागिन'।

सोहाता–वि० दे० 'सुहाता'; * सुंदर, सुहावना; सत्य।

सोहान–पु० (फा०) रेती। **–(ने)रूह**–वि० जानको रेतने, असह्य क्लेश देनेवाला।

सोहाना*–वि० सुहावना। अ० क्रि० अच्छा लगना, मनोनुकूल होना; सुशोभित होना।

सोहाया*–वि० सुंदर, मनोहर, सुशोभित।

सोहारद*–पु० दे० 'सौहार्द'।

सोहारी–स्त्री० (बड़ी) पूरी।

सोहाल–पु० दे० 'सुहाल'।

सोहाली†–स्त्री० ऊपरका मसूड़ा; पूरी।

सोहावन–वि० दे० 'सुहावना'।

सोहावना*–वि० सुंदर। अ० क्रि० अच्छा लगना, भला मालूम होना; शोभित होना।

सोहासित*–वि० मनोनुकूल, सुहावना; सुभाषित, अच्छा लगनेवाला, मुँहदेखा।

सोहिँ–अ० दे० 'सौँह'।

सोहिनी–स्त्री० एक रागिनी।

सोहिल*–पु० दे० 'सुहैल'।

सोहिला*–पु० दे० 'सोहला'; उत्सव, खुशी।

सोहीँ, सोहैँ*–अ० सामने।

सौँ*–स्त्री० सौंह, शपथ, कसम। अ० समान, सदृश, भाँति। पु० करण और अपादानकी विभक्ति।

सौँकारा, सौँकेरा†–पु० सबेरा, तड़का।

सौँकेरे†–अ० तड़के; समयसे कुछ पहले।

सौँघा*–वि० भला, अच्छा; अधिक।

सौँघाई–स्त्री० आधिक्य, प्रचुरता, बहुतायत 'एक कहहिं ऐसेहु सौंघाई। सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई–रामा०।

सौँचन†–स्त्री० मलत्याग; आबदस्त।

सौँचना†–अ० क्रि० मलत्याग करना; आबदस्त लेना।

सौँचर नमक–पु० काला नमक।

सौँचाना*†–स० क्रि० शौच, पाखाना कराना; आबदस्त दिलाना।

सौँज*–स्त्री० सामग्री, सामान–'मातु बचन सुनि मैथिली सकल सौंज लै साथ। जाय अलिन युत पूजिकै गिरजहिं नायो माथ'–रामरसायन, सरंजाम।

सौँजा–पु० आपसी समझौता; जोतने बोनेके लिए किसीको खेत देना; सौंपना, सुपुर्द करना; जंगली पशु।

सौँड़, सौँड़ा†–पु० ओढ़नेका भारी कपड़ा–रजाई, कंबल आदि; चादर।

सौंडी–स्त्री० (सं०) पिप्पली, पीपल।

सौँतना–स० क्रि० (तलवार) म्यानसे बाहर निकालना या घुमाना, लपलपाना; * संचित करना।

सौँतुख–अ० सम्मुख; सामने। पु० प्रत्यक्ष बात या वस्तु।

सौँदन–स्त्री० धोबियोंका गंदे कपड़े रेहमें सानना।

सौँदना–स० क्रि० सानना, लिप्त करना।

सौंदर्ज*–पु० दे० 'सौंदर्य'।

सौंदर्य–पु० (सं०) सुंदरता, खूबसूरती, उदाराशयता। **–चेता**–पु० सौंदर्यपरक आदर्शोंसे प्रेरित होकर निरंतर सुंदरके भीतरसे जीवनमूल्योंको ढूंढ़नेवाला रचनाकार। **–बोध**–पु० (सौंदर्यशास्त्रका एक पारिभाषिक शब्द) कलाके सूक्ष्म सौंदर्यका ज्ञान। **–वाद**–पु० कलामें सौंदर्यको प्राधान्य देने-संबंधी सिद्धांत (ईस्थेटिसिज्म)। **–विज्ञान**–पु० (ईस्थेटिक्स) सौंदर्य, सुरुचि और कला संबंधी शास्त्र।

सौंदर्यता*–स्त्री० दे० 'सौंदर्य' (असाधु)।

सौँध*–स्त्री० सुगंध, खुशबू। पु० महल, प्रासाद, अट्टालिका।

सौँधना†–स० क्रि० सुगंधयुक्त करना, सुगंधित करना; खुशबूदार बनाना; सानना, लिप्त करना।

सौंधा*–वि० दे० 'सोंधा', सुगंधित; रुचिकर। पु० खुशबू; बालोंमें लगानेका एक सुगंधित मसाला।

सौँनमक्खी*–स्त्री० दे० 'सोना-मक्खी'।

सौँनी*–पु० सोनी, सुनार।

सौँपना–स० क्रि० (कोई वस्तु आदि) किसीके जिम्मे, सिपुर्द करना; सहेजना।

सौँफ–स्त्री० सोए जैसा एक पौधा जिसका फल दवा और मसालेके काम आता है, शतपुष्पा।

सौँफिया, सौँफी–वि० (खाद्यपदार्थ या पेय) जिसमें सौंफका योग हो। स्त्री० सौंफके योगसे बनी हुई शराब; वह बीड़ी जिसकी सुरतीमें सौंफका अर्क पड़ा हो।

सौँभरि*–पु० एक प्राचीन ऋषि, सोभरि (जिन्होंने मांधाताकी पचास कन्याओंसे विवाह किया था)।

सौँर–स्त्री० चादर–'तेते पायँ पसारिये जेती लांबी सौंर'। † पु० संतानोत्पत्तिके दसवें दिन फेंके या तोड़े जानेवाले मिट्टीके पात्र।

सौँरई*–स्त्री० श्यामलता, साँवलापन।

सौँरना*–स० क्रि० स्मरण करना, याद करना–'लरिकाईके सौंरियत चोर-मिहिचनी खेल'–मतिराम; सुमिरन करना। अ० क्रि० दे० 'सँवरना'।

सौँरा*–वि० श्यामल, साँवला।

सौँसे†–वि० कुल, समस्त; बहुत बड़ा।

सौँह*–स्त्री० कसम, शपथ। अ० सामने, रूबरू।

सौँहन*–पु० एक औजार।

सौँही–स्त्री० एक प्रकारका अस्त्र। अ० सामने।

सौ–वि० नब्बे और दस, शत; बहुत। पु० सौकी संख्या, १००। * अ० सा। मु० **–की एक बात, –की एक सीधी बात**–बहुत ही उचित बात; सर्वमान्य बात। **–के सवाये करना**–पचीस प्रतिशत लाभ करना। **–के सवाये होना**–पचीस प्रतिशत लाभ होना। **–कोस भागना**–दूर रहना, अलग रहना। **–छिपायेँ**–चाहे किसी तरह भी गोप्य रखें; हरचंद छिपायें। **–जतन करना**–बहुत प्रयत्न करना, बहुत कोशिश करना। **–जानसे**–पूरे दिलसे, पूर्णतः। **–०आशिक होना**–अत्यंत मुग्ध होना। **–०कुर्बान**

होना,**–० फिदा होना**–अत्यंत मुग्ध होना । **–तरहका**–भिन्न-भिन्न ढंगका, विभिन्न प्रकारका । **–दो सौमें**–बहुतमें (से कुछ–छाँटनेके अर्थमें) । **–पचास**–कई, अनेक । **–पर सौ**–शत-प्रतिशत, सौ-फी सदी । **–बात सुनाना**–बुरा-भला कहना, लानत-मलामत करना । **–मनका**–बहुत भारी । **–में एक**–बहुत कम । **–में कहना**–बिना हिचकिचाहटके खुले तौरसे किसी बातको कहना । **–सुनाना**–बहुत गालियाँ देना, बहुत बुरा-भला कहना । **–सौ कोस (दूर) भागना**–करीब, निकट न आना, बहुत दूर भागना । **–सौ कोस नज़र न आना**–कहीं दिखाई न देना, कहीं पता न लगना । **–सौ घड़े पानी पड़ना**–बहुत लज्जित होना । **–सौ नाम धरना**–अनेक त्रुटियाँ निकालना, बहुत नुक्ता-चीनी करना । **–सौ पलटे लेना, सौ फेरे करना**–किसी जगहका बार-बार चक्कर लगाना । **–सौ बल खाना**–बहुत पेंच खाना । **–सौ मनके पाँव होना**–डर या घबड़ाहटके कारण चल न सकना । **–हाथका कलेजा हो जाना**–प्रसन्नताके कारण अत्यंत उत्साहित होना । **–हाथकी ज़बान होना**–चटोर होना ।

सौक*–वि० एक सौ । स्त्री० सपत्नी, सौत । † पु० दे० 'शौक़' ।

सौकर, सौकरक–वि० (सं०) सूकर-संबंधी; वाराहावतार-(विष्णु) संबंधी । पु० इस नामका तीर्थ । **–तीर्थ**–पु० एक तीर्थ जहाँ विष्णुकी (वाराहावतारमें) पूजा होती है ।

सौकरायण–पु० (सं०) शिकारी; एक आचार्य ।

सौकरिक–पु० (सं०) सूअरका शिकार करनेवाला व्यक्ति; शिकारी, बहेलिया, व्याध; सूकरका व्यापारी ।

सौकरीय–वि० (सं०) सूकर-संबंधी ।

सौकर्य–पु० (सं०) सूकर होनेका भाव, सूअरपन; सुकरता, आसानी; साध्यता; दक्षता ।

सौकीन†–वि० दे० 'शौक़ीन' ।

सौकीनी†–स्त्री० दे० 'शौक़ीनी' ।

सौकुमारक–पु० (सं०) दे० 'सौकुमार्य' ।

सौकुमार्य–पु० (सं०) सुकुमारता, कोमलता, मुलायमियत; यौवन; सुन्दर और कोमल शब्दोंका प्रयोग करनेसे उत्पन्न काव्यका एक गुण । वि० कोमल ।

सौकृत्य–पु० (सं०) धार्मिक कृत्य करनेका भाव, सुकृति ।

सौक्तिक–वि० (सं०) सूक्त-संबंधी ।

सौक्ष्मक–पु० (सं०) सूक्ष्म कीट ।

सौक्ष्म्य–पु० (सं०) सूक्ष्मता, बारीकी ।

सौख–पु० (सं०) सुखका भाव; * शौक । **–यानिक**–पु० यात्राकी सफलताकी कामना करनेवाला बंदिजन । **–रात्रिक**–पु० रात्रि सुखसे व्यतीत होनेका हाल पूछनेवाला । **–शय्यिक,–शायनिक,–शायिक**–पु० सुखपूर्वक सोनेका हाल पूछनेवाला । **–सुप्तिक**–पु० दे० 'सौखशायिक'; स्तुति पाठ द्वारा जगानेवाला बंदी ।

सौखिक–वि० (सं०) सुखार्थी, सुख चाहनेवाला; सुख-संबंधी; आनंद-दायक ।

सौखीन†–वि० दे० 'शौक़ीन' ।

सौखीय–वि० (सं०) सुख-संबंधी, आनंददायक ।

सौख्य–पु० (सं०) सुख, आनंद; कल्याण । **–द,–दायी (यिन्)**–वि० सुख देनेवाला, आनंददायक । **–दायक**–वि० सुखद । पु० मूंग ।

सौगंद–स्त्री० (फा०) कसम, शपथ ।

सौगंध–स्त्री० शपथ । वि० (सं०) सुगंधित, खुशबूदार । पु० अत्तार; सुगंधि, सुवास, खुशबू; एक तृण, कत्तृण ।

सौगंधक–पु० (सं०) नील कमल ।

सौगंधिक–वि० (सं०) सुगंधयुक्त, खुशबूदार । पु० सुगंध, इत्र, तेल आदिका व्यवसायी, गंधी; नीलोत्पल; श्वेत कमल; पद्मराग मणि; गंधक; एक प्रकारकी सुगंधित घास; एक अंत्रकृमि; एक पर्वत; एक तृण, कत्तृण; एक तरहका अंगराग; एक तरहका नपुंसक जिसे योनिकी गंधसे उद्दीपन होता है, नासायोनि (वै०) । **–वन**–पु० पद्मोंकी घनी राशि; एक तीर्थ ।

सौगंधिका–स्त्री० (सं०) कुबेर-नगरकी नदी; एक तरहकी पद्मिनी ।

सौगंधिपत्रक–पु० (सं०) श्वेत बर्बरी ।

सौगंध्य–पु० (सं०) सुबास, खुशबू ।

सौगत–वि० (सं०) सुगत-संबंधी; सुगतमतको माननेवाला । पु० बौद्ध, शून्यवादी; धृतराष्ट्रका एक पुत्र ।

सौगतिक–पु० (सं०) बौद्ध; बौद्ध भिक्षु; अनीश्वरवादी, नास्तिक; नास्तिकता, अनीश्वरवाद ।

सौगम्य–पु० (सं०) सुगमता; सुविधा ।

सौगरिया–पु० क्षत्रियोंकी एक शाखा ।

सौग़ात–स्त्री० (फा०) भेंट, उपहार, तुहफा ।

सौग़ाती–वि० उपहारमें देने योग्य; बढ़िया, उत्तम ।

सौघा*–वि० सस्ता, महँगाका उलटा ।

सौच*–पु० दे० 'शौच' ।

सौचि, सौचिक–पु० (सं०) सूची, सूईका काम करके निर्वाह करनेवाला व्यक्ति, दरजी ।

सौचिक्य–पु० (सं०) दरजीका काम ।

सौचीक–पु० (सं०) एक तरहकी यज्ञाग्नि ।

सौज*–स्त्री० दे० 'सौँज' ।

सौजना*–अ० क्रि० शोभा देना, सजना ।

सौजन्य–पु० (सं०) सुजन होनेका भाव, सुजनता, सज्जनता, भलमनसी; उदाराशयता ।

सौजन्यता–स्त्री० दे० 'सौजन्य' (असाधु) ।

सौजस्क, सौजा (जस्)–वि० (सं०) ओजवाला, शक्तिशाली ।

सौजा†–पु० आखेट योग्य पशु-पक्षी ।

सौड़†–पु० दे० 'सौँड़' ।

सौडि*–स्त्री० शय्या–'दरसन भया दयालका सूलि भई सुख सौडि' –साखी ।

सौत–स्त्री० पतिकी दूसरी पत्नी, सपत्नी । वि० (सं०) सूत, सारथि-संबंधी । स्त्री० (अ०) ध्वनि, आवाज़ । पु० कोड़ा, चाबुक । **–(ते)हमीर**–स्त्री० गधेकी रेंक ।

सौतन, सौतनि*–स्त्री० सौत ।

सौति*–स्त्री० सौत । पु० (सं०) (सूतपालित) कर्ण ।

सौतिन*–स्त्री० सौत ।

सौतिया डाह–स्त्री० दो सौतोंमें होनेवाली ईर्ष्या, द्वेष आदि ।

सौतुक, सौतुख, सौतुष*–अ०, पु० दे० 'सौँतुख'–'सौतुक तौ सपनो भयो सपनो सौतुक रूप'–मतिराम ।

सौतेला–वि० सौत-संबंधी, जिसका संबंध सौतसे हो; सौतसे उत्पन्न (सौतेला भाई) ।

सौत्य–वि० (सं०) सूत, सारथि-संबंधी; सोम-निष्पीडन-संबंधी । पु० सारथिका कार्य ।

सौत्र–वि० (सं०) सूत्र-संबंधी; सूतका बना हुआ; सूत्रमें कथित । पु० ब्राह्मण ।

सौत्रांतिक–पु० (सं०) बौद्ध मतकी चार प्रमुख शाखाओंमेंसे एक (यह 'अनुमान'-प्रधान शाखा है) ।

सौत्रामण–वि० (सं०) इंद्र-संबंधी । पु० एक तरहका एकाह यज्ञ । **–धनुस्**–पु० इंद्रधनुष् ।

सौत्रामणिक–वि० (सं०) सौत्रामणीमें उपस्थित या प्रयुक्त ।

सौत्रामणी–स्त्री० (सं०) एक यज्ञ जो इंद्रको प्रसन्न करनेके लिए किया जाता था; पूर्व दिशा ।

सौत्रि–पु० (सं०) जुलाहा ।

सौत्रिक–पु० (सं०) जुलाहा; बनी हुई वस्तु ।

सौदर्य–वि० (सं०) सहोदर भाई या बहिन-संबंधी । पु० भ्रातृत्व ।

सौदा–पु० (फा०) खरीद-बेची; वाणिज्य; वह चीज जो बाजारसे खरीदी जाय; क्रय-विक्रयकी वस्तु, माल । **–कारी**–स्त्री० सौदेबाजी (बारगेनिंग) । **–गर**–पु० व्यापारी, तिजारत करनेवाला । **–०बच्चा**–पु० व्यापारीका बेटा, वणिक्पुत्र । **–०बच्ची**–स्त्री० व्यापारीकी बेटी । **–गरी**–स्त्री० सौदागरका काम, व्यापार, तिजारत । वि० तिजारती । **–०माल**–पु० तिजारती माल, बिक्रीके लिए इकट्ठा किया हुआ माल । **–बही**–स्त्री० खरीद-बेची लिखनेकी बही । **–सुलफ़,–सुलुफ़,–सूत**–पु० बाजारसे खरीदी जानेवाली चीजें । मु० **–पटना**–खरीद-बेचीका मामला तै होना, भाव या दाम ठीक होना । **–पटाना**–मोल-भाव करके

दाम तै करना। **–होना**–सौदा पट जाना।

सौदा–पु० (अ०) यूनानी चिकित्साशास्त्रमें माने हुए चार खिल्तों (दोषों)मेंसे एक जिसका रंग स्याह माना गया है; वातविकार; उन्माद, सनक; प्रेम, इश्क; काली स्त्री; वेचनेका सामान। **–ज़दा**–वि० पागल, प्रेमी। **मु० –उछलना**–सनक सवार होना। **–होना**–खब्त, उन्माद होना; प्रेम होना।

सौदाई–वि० पागल, सनकी; खब्ती; प्रेमी; आशिक।

सौदामनी–स्त्री० (सं०) विद्युत्; मालाकार विद्युत्; ऐरावत (गज)की पत्नी; एक रागिनीका नाम; कश्यप और विनताकी एक पुत्री; एक अप्सरा; हाहा नामक गंधर्वकी एक कन्या; एक यक्षिणी ; सुदामा पर्वतका एक खंड।

सौदामनीय–वि० (सं०) विजलीके समान; विजली-संवंधी।

सौदामिनी–स्त्री० (सं०) दे० 'सौदामनी'।

सौदामिनीय–वि० (सं०) दे० 'सौदामनीय'।

सौदाम्नी–स्त्री० (सं०) दे० 'सौदामनी'।

सौदायिक–पु० (सं०) विवाहके अवसरपर माता-पिता तथा संबंधियोंसे कन्याको मिलनेवाला धन जिसपर विधानतः कन्याका अधिकार होता है; दहेज। वि० दहेज-संवंधी।

सौदावी–वि० सौदाका, सौदा-कृत (–मर्ज); जिसमें सौदाकी प्रधानता हो (–मिजाज)। (अ०) स्त्री० वात रोग।

सौदास–पु० (सं०) एक सूर्यवंशीय नरेश जो सगरसे तेरहवीं पीढ़ीमें हुए थे।

सौदेबाज़ी–स्त्री० (अ०, फा०) भावमोल करना (बारगेनिंग)।

सौदेव–पु० (सं०) राजा दिवोदास जो सुदेवके पुत्र और काशीके शासक थे।

सौद्युम्नि–पु० (सं०) सुद्युम्नके वंशज।

सौध–वि० (सं०) सुधा-संवंधी; सुधायुक्त; चूना (सुधा) पुता हुआ, पलस्तर किया हुआ। पु० चूना पुता निवास, घर; महल, प्रासाद; चूना; दुधिया पत्थर, दुग्धपाषाण; चाँदी; एक रत्न। **–कार**–पु० सौधनिर्माण करनेवाला व्यक्ति, राज, राजगीर, मेमार। **–तल**–पु० महलका नीचेका तला। **–मौलि,–शिखर**–पु० प्रासाद या कंगूरेका सिरा।

सौधक–पु० (सं०) परावसु गंधर्वका एक पुत्र।

सौधन्वन–पु० (सं०) एक संकर जाति; सुधन्वाके पुत्र ऋभु।

सौधर्म–पु० (सं०) एक देव-निवास (जै०)। **–ज**–पु० एक देववर्ग (जै०)।

सौधर्म्य–पु० (सं०) सुधर्म होनेका भाव, साधुता, सज्जनता, भलमनसी; सुधर्मपरायणता।

सौधाकर–वि० (सं०) चंद्रमा-संवंधी, चांद्र।

सौधात–पु० (सं०) ब्राह्मण और भृज्जकंठीसे उत्पन्न संतान।

सौधार–पु० (सं०) नाटकके चौदह भागोंमेंसे एक।

सौधाल–पु० (सं०) शिवमंदिर।

सौनंद–पु० (सं०) बलरामका मूसल।

सौनंदी (दिन्)–पु० (सं०) बलराम।

सौन–वि० (सं०) पशुवधालय-संवंधी। पु० बूचड़; बूचड़ द्वारा प्रस्तुत विक्रयार्थ ताजा मांस। * अ० सामने। **–धर्म्य**–पु० जानी दुश्मनी। **–पाल**–वि० जिसके यहाँ बूचड़ रक्षक हो।

सौनक*–पु० एक ऋषि, शौनक।

सौनन†–स्त्री० दे० 'सौँदन'।

सौनना†–स० क्रि० दे० 'सौंदना'।

सौना*–पु० दे० 'सोना'।

सौनाग–पु० (सं०) सुनागके अनुयायी, वैयाकरणोंकी एक शाखा।

सौनि*–स्त्री० स्वर्णकांति–'आनन समान छबि-छाँहपै छिपैयै सौनि'–घन०।

सौनिक–पु० (सं०) पशु-पक्षियोंका माँस बेचनेवाला व्यक्ति–कसाई, बूचड़; व्याध।

सौनीतेय–पु० (सं०) सुनीतिके पुत्र, ध्रुव।

सौपना*–स० क्रि० दे० 'सौँपना'।

सौपर्ण–वि० (सं०) सुपर्ण–गरुड़-संबंधी; सुपर्ण जैसा। पु० एक वेदमंत्र; मरकत; सोंठा; गरुड़पुराण; गरुड़का एक अस्त्र। **–केतव**–वि० विष्णु-संबंधी। **–व्रत**–पु० सन्न्यासियोंका व्रतविशेष।

सौपर्णी–स्त्री० (सं०) एक तरहकी लता, पातालगारुड़ी लता।

सौपर्णेय–पु० (सं०) सुपर्णीके पुत्र गरुड़; गायत्री आदि छंद।

सौपर्ण्य–वि० (सं०) दे० 'सौपर्ण'। पु० सुपर्ण (गरुड़ या बाज)की अवस्था या स्वभाव।

सौपस्तंबि–पु० (सं०) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

सौपाक–पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति।

सौपिक–वि० (सं०) रसा मिलाया हुआ; सूप-संवंधी।

सौप्तिक–वि० (सं०) शयन-संवंधी। पु० रात्रियुद्ध, सोते हुए पर किया जानेवाला आक्रमण। **–पर्व (न्)**–पु० महाभारतका दसवाँ पर्व (जिसमें अश्वत्थामा आदिके रात्रिमें पांडवोंके शिविरपर आक्रमण करनेका वर्णन है)।

सौप्रजास्त्व–पु० (सं०) अच्छी संतानोंका होना।

सौप्रतीक–वि० (सं०) सुप्रतीक नामक दिग्गज-संवंधी; हाथी-संवंधी।

सौफ–स्त्री० दे० 'सौँफ'।

सौफिया–स्त्री० पुरानी रूसा घास।

सौफियाना–वि० सूफ़ियाना।

सौवर*–पु० सुवर्ण–'रावरकी छवि वरनौं कैंस। सौवरको घर सोहत जैसे।'–घन०।

सौवल, सौवलक–पु० (सं०) सुवलका पुत्र शकुनि।

सौवली–स्त्री० (सं०) सुवलकी पुत्री तथा धृतराष्ट्रकी पत्नी गांधारी।

सौवलेय–पु० (सं०) शकुनि।

सौवलेयी–स्त्री० (सं०) सुवलकी पुत्री गांधारी।

सौवल्य–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सौविगा†–स्त्री० एक तरहकी बुलबुल।

सौवीर–पु० दे० 'सौवीर'।

सौभ–पु० (सं०) हरिश्चंद्रका हवाई नगर; एक जाति; सौभोंका राजा; शाल्वोंका एक नगर।

सौभकि–पु० (सं०) द्रुपद।

सौभग–पु० (सं०) सुभग होनेका भाव, सौंदर्य; अच्छा भाग्य, सौभाग्य; आनंद, प्रसन्नता; कल्याण; समृद्धि; धन-दौलत। वि० सुभग वृक्षसे उत्पन्न या बना हुआ।

सौभद्र–वि० (सं०) सुभद्रा-संवंधी। पु० सुभद्राके पुत्र अभिमन्यु; एक तीर्थ।

सौभद्रेय–पु० (सं०) सुभद्रा-पुत्र अभिमन्यु; विभीतक वृक्ष, बहेड़ा।

सौभर–वि० (सं०) सोभरि ऋषि-संवंधी। पु० एक वैदिक ऋषि।

सौभरि–पु० (सं०) एक मुनि जिन्होंने मांधाताकी पचास कन्याओंसे विवाह किया था।

सौभांजन–पु० (सं०) सहिंजन।

सौभागिनी–स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री, सधवा।

सौभागिनेय–पु० (सं०) ज्येष्ठा (सबसे प्रिय) पत्नीका पुत्र; सम्मानित माताका पुत्र।

सौभाग्य–पु० (सं०) अच्छा भाग्य, खुश-किस्मती; कल्याण; समृद्धि; सफलता; सौंदर्य; प्रेम; आनंद; शुभकामना; सुहाग, अहिवात; सिंदूर; सुहागा; एक पौधा; ज्योतिषका एक योग; एक व्रत। **–चिह्न**–पु० अच्छे भाग्यका चिह्न; अहिवातका चिह्न (जैसे सिंदूर आदि)। **–तंतु**–पु० वह सूत्र जो विवाहमें वर द्वारा कन्याके गलेमें बाँधा जाता है। **–तृतीया**–स्त्री० हरितालिका, तीज। **–फल**–वि० जिसका फल आनंददायक हो। **–मंजरी**–स्त्री० एक सुरांगना। **–मंडन**–पु० हरताल। **–मद**–पु० आनंद या सौंदर्यजन्य मद। **–विलोपी (पिन्)**–वि० सौभाग्य, सौंदर्य नष्ट करनेवाला। **–व्रत,–शयनव्रत**–पु० फाल्गुन-शुक्ला तृतीया-को होनेवाला एक व्रत।

सौभाग्यवती–स्त्री० (सं०) सधवा, सुहागिन। **–भव**–विवाहिता स्त्रियोंको दिया जानेवाला आशीर्वाद 'तुम्हारा सुहाग अचल रहे।'

सौभाग्यवान् (वत्)–वि० (सं०) भाग्यशाली, खुशकिस्मत।

सौभासिक–वि० (सं०) कांतिमान्।

सौभासिनिक (रत्न)–पु० (सं०) एक तरहका रत्न।

सौभिक–पु० (सं०) वाजीगर, जादूगर ।

सौभिक्ष–वि० (सं०) सुकाल, सुभिक्ष लानेवाला । पु० घोड़ोंको होनेवाला एक तरहका उदरशूल ।

सौभिक्ष्य–पु० (सं०) सुकाल, सुभिक्ष ।

सौभेय–पु० (सं०) सौभके निवासी ।

सौभेषज–वि० (सं०) जिसमें अच्छी ओषधियाँ हों ।

सौभ्रात्र–पु० (सं०) भाइयोंकी आपसकी प्रीति, सुभ्रांतृत्व, भायप ।

सौमंगल्य–पु० (सं०) कल्याण, समृद्धि; मांगलिक पदार्थ ।

सौमंत्रिण–वि० (सं०) अच्छे मंत्रीवाला ।

सौम–पु० (अ०) रोजा; महँगा बेचना, भाव चुकाना । वि० (सं०) सोम(चंद्रमा या लता)संबंधी; * दे० 'सौम्य' । **–ऋतव**–पु० एक साम । **–पौष**–पु० एक साम ।

सौमदत्ति–पु० (सं०) सोमदत्तका पुत्र, जयद्रथ ।

सौमन–पु० (सं०) एक दिव्यास्त्र ।

सौमनस–वि० (सं०) सुमन, पुष्प-संबंधी; अनुकूल वेदनीय, मन तथा अन्य बाह्य इंद्रियोंको अच्छा लगनेवाला, रुचिकर । पु० आनंद; संतोष; कृपा, दया; एक अस्त्रका नाम; कर्ममास, सावनमासकी आठवीं तिथि; पश्चिमका दिग्गज; एक पर्वत; जायफल; एक अस्त्रसंहार ।

सौमनसा–स्त्री० (सं०) जातीपत्री, जावित्री; एक नदी ।

सौमनसायनी–पु० (सं०) जावित्री, जातीपत्री ।

सौमनसी–स्त्री० (सं०) कर्ममास, सावनमासकी पाँचवीं रात ।

सौमनस्य–वि० (सं०) आह्लादकारक, आनंददायक । पु० तुष्टि, प्रसन्नता; पारस्परिक सद्भाव; विवेक; प्लक्षद्वीपका एक वर्ष; श्राद्ध आदिमें पुरोहितकी अंजलिमें फूल देना ।

सौमनस्यायनी–स्त्री० (सं०) मालती फूलकी कली ।

सौमना–स्त्री० (सं०) फूल; एक दिव्यास्त्र ।

सौमा–पु० (अ०) उपासनागृह; इबादतख़ाना ।

सौमायन–पु० (सं०) सोमपुत्र, बुध ।

सौमिक–वि० (सं०) सोमरस-संबंधी; सोमरस द्वारा किया जानेवाला (यज्ञ); सोमयज्ञ-संबंधी; चंद्र-संबंधी; चांद्रायण व्रत करनेवाला । पु० सोमरसका पात्र ।

सौमिकी–स्त्री० (सं०) सोमनिष्पीडनका कृत्य; एक यज्ञ ।

सौमित्र–पु० (सं०) मैत्री, मित्रता, दोस्ती; सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण; शत्रुघ्न; इस नामके कई साम ।

सौमित्रा*–स्त्री० दे० 'सुमित्रा' ।

सौमित्रि–पु० (सं०) सुमित्राके पुत्र लक्ष्मण; शत्रुघ्न; एक आचार्य ।

सौमित्रीय–वि० (सं०) सौमित्र-संबंधी ।

सौमिलिक–पु० (सं०) एक पदार्थ; भिक्षुओंका एक तरहका दंड (बौ०) ।

सौमी–स्त्री० चाँदनी ।

सौमुख्य–पु० (सं०) सुमुखता, सुर्खरूई; प्रसन्नता ।

सौमेचक–पु० (सं०) सोना ।

सौमेधिक–वि० (सं०) दिव्य ज्ञानविशिष्ट; शोभन मेधा-संबंधी । पु० दिव्य ज्ञानसंपन्न व्यक्ति, सिद्ध, ऋषि ।

सौमेरव–वि० (सं०) सुमेरु पर्वत-संबंधी । पु० इलावृत; सोना ।

सौमेरुक–वि० (सं०) सुमेरु-संबंधी; सुमेरुसे प्राप्त । पु० सोना ।

सौम्य–वि० (सं०) सोम(चंद्रमा या सोमलता)-संबंधी; सोमके गुणोंसे युक्त; सुंदर, रमणीक, प्रिय; मृदुल, कोमल; स्निग्ध; शांत; उत्तरी; मांगलिक, शुभ (नक्षत्र, पक्षी आदि); कांतिमान्; प्रसन्न । पु० बुध; ब्राह्मणके संबोधनकी उपाधि; ब्राह्मण; औदुंबर वृक्ष; वह रस जो अभी रक्तके रूपमें लाल न हुआ हो; अग्निरस; पृथ्वीके नौ खंडोंमेंसे एक; शुभ ग्रह; सोमपायी ब्राह्मण; एक कृच्छ्र; सोमयज्ञ; आराधक, उपासक; बुध नामक वैदिक ऋषि; बायाँ हाथ; यज्ञस्तूपका नीचेसे पंद्रहवाँ हाथ; मार्गशीर्ष मास; तेंतालीसवाँ संवत्सर; एक पितृवर्ग; ज्योतिषका सातवाँ युग; सौजन्य; मृगशिरा नक्षत्र; बायीं आँख; पाँचवाँ मुहूर्त; करका मध्य भाग; एक दिव्यास्त्र; आकाशमें होनेवाला एक तरहका शकुन । **–कृच्छ्र**–पु० पाँच दिनोंका एक व्रत जिसमें पहले पाँच दिन क्रमशः खली, माँड़, तक्र, जल और सत्तू खाते थे और छठे दिन उपवास करते थे । **–गंधा,–गंधी**–स्त्री० सेवती । **–गिरि**–पु० एक पर्वत । **–गोल**–पु० उत्तरी गोलार्द्ध । **–ग्रह**–पु० शुभ ग्रह । **–ज्वर**–पु० ज्वरका एक प्रकार जिसमें कभी-कभी ज्वर हो आता है । **–दर्शन**–वि० देखनेमें भला । **–धातु**–स्त्री० श्लेष्मा । **–नामा(मन्)**–वि० जिसका नाम सुननेमें अच्छा मालूम हो । **–प्रभाव**–वि० मृदुल स्वभावका । **–मुख**–वि० सुंदर मुखवाला । **–रूप**–वि०...के प्रति अच्छा बर्ताव करनेवाला । –**–वपु(स्)**–जिसकी आकृति भली मालूम हो । **–वार,–वासर**–पु० बुधवार । **–शिखा**–स्त्री० वृत्तविशेष । **–श्री**–वि० आनंददायक सौंदर्यवाला । **—विज्ञान**–पु० वह विज्ञान जिसमें दवाके लिए प्राणियोंके रक्तसे सौम्य बनानेका विवेचन होता है ।

सौम्यता–स्त्री०, **सौम्यत्व**–पु० (सं०) स्निग्धता, मार्दव; उदारता; सौंदर्य ।

सौम्या–स्त्री० (सं०) दुर्गा; मोती; आर्या छंदका एक भेद; महेंद्रवारुणी; रुद्र जटा; महाज्योतिष्मती; महिषवल्ली; गुंजा; शालपर्णी; ब्राह्मी; शटी; मल्लिका; मृगशिरा नक्षत्र; इल्वला नामका पाँच तारोंका समूह ।

सौम्याकृति–वि० (सं०) सुंदर आकृतिवाला ।

सौम्यी–स्त्री० (सं०) चंद्रिका, चाँदनी ।

सौयवस–पु० (सं०) घासकी बहुतायत, तृणप्राचुर्य ।

सौर–स्त्री० चादर; सौरी मछली । वि० (सं०) सूर्यसंबंधी; सूर्यसे उत्पन्न; सूर्यार्पित; सूर्योपासक; सूर्यकी गतिका अनुसरण करनेवाला; देवता-संबंधी; मदिरा-संबंधी । पु० सूर्यकी पूजा करनेवाला व्यक्ति; शनि ग्रह; बीसवाँ कल्प; सौर दिन; सौर मास; धनिया; तुंबुरु वृक्ष; यम; सूर्य-संबंधी वैदिक मंत्रोंका समूह; दाहिनी आँख; एक साम । **–ऋण**–पु० सुरापानके लिए लिया हुआ ऋण । **–ग्रीव**–पु० एक प्राचीन देश । **–ज**–पु० तुंबुरु वृक्ष; धनिया; दे० क्रममें । **–जगत्**–पु० सौरमंडल (सोलर सिस्टम) । **–तीर्थ**–पु० तीर्थविशेष । **–दिन,–दिवस**–पु० एक सूर्योदयसे दूसरे सूर्योदयतकका समय । **–द्रोणि**–स्त्री० छोटा ताल । **–ध्री**–स्त्री० एक तरहका तारवाला बाजा । **–नक्त**–पु० रविवारको किया जानेवाला एक व्रत । **–पत**–पु० सूर्यका उपासक । **–परिकर**–पु० सौर जगत् । **–बैटरी**–स्त्री० (सोलर बैटरी) अर्द्धचालकोंसे बनी बैटरी जो सूर्यकी विकिरण-ऊर्जासे विद्युत्धारा उत्पन्न करती है । **–भुवन**–पु० दे० 'सूर्यलोक' । **–मास**–पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला महीना । **–लोक**–पु० दे० 'सूर्यलोक' । **–वर्ष,–संवत्सर**–पु० सूर्यसंक्रांतिके अनुसार होनेवाला वर्ष । **–संहिता**–स्त्री०,**–सिद्धांत**–पु० ज्योतिषके सिद्धांतग्रंथ । **–सूक्त**–पु० सूर्य-संबंधी सूक्त । **–सैंधव**–पु० सूर्याश्व; गंगाके पुत्र भीष्म । वि० गंगा-संबंधी; गंगासे उत्पन्न ।

सौर–पु० (अ०) बैल; वृषराशि ।

सौरज*–पु० दे० 'शौर्य'; दे० 'सौर'में ।

सौरण–वि० (सं०) सूरण-संबंधी ।

सौरत–वि० (सं०) सुरत-संबंधी; केलि-क्रीड़ासे संबद्ध । पु० सुरत, रति; मंद समीर । स्त्री० (अ०) तीव्रता, प्रचंडता ।

सौरत्य–पु० (सं०) रतिसुख; रतिक्रीडा ।

सौरथ–पु० (सं०) योद्धा, वीर ।

सौरभ–वि० (सं०) सुरभि-संबंधी; सुगंधित, खुशबूदार; सुरभि (गाय)से उत्पन्न । पु० सुगंधि, खुशबू; केसर; धनिया; बोल नामक गंधद्रव्य; मदगंध; आम; तुंबुरु; एक साम । **–वाह**–पु० पवन ।

सौरभक–पु० (सं०) एक वर्णवृत्त ।

सौरभित–वि० (सं०) सौरभयुक्त, सुगंधयुक्त, खुशबूदार ।

सौरभी–स्त्री० (सं०) गाय; सुरभि नामकी गायकी पुत्री ।

सौरभेय–वि० (सं०) सुरभि-संबंधी । पु० सुरभि(गाय)से उत्पन्न वृष, बैल; पशुओंका झुंड ।

सौरभेयक–पु० (सं०) वृष, साँड़ ।

सौरभेयी–स्त्री० (सं०) गौ, गाय; एक अप्सरा ।

सौरभ्य–पु० (सं०) सुवास, खुशबू; मनोज्ञता, सौंदर्य; सदाचरण; प्रसिद्धि; कुबेर । **–द**–पु० एक गंधद्रव्य ।

सौरस–वि० (सं०) सुरसा नामक पौधेसे बना हुआ। पु० नमकीन रसा; बालका कीड़ा, जूँ; सुरसाकी संतान।

सौरसा–स्त्री० (सं०) पहाड़ी बेर।

सौरसेन–पु० (सं०) दे० 'शूरसेन'; 'शौरसेन'।

सौरसेय–पु० (सं०) कार्त्तिकेय, स्कंद।

सौरसैंधव–वि० (सं०) सुरसिंधु(गंगा)संबंधी। पु० दे० 'सौर'में।

सौरस्य–पु० (सं०) सुरस होनेका भाव, सुरसता।

सौरा–पु० (अ०) उपद्रव; राजद्रोह; बगावत।

सौराज्य–पु० (सं०) सुराज्य, अच्छा शासन।

सौराटी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

सौराव–पु० (सं०) नमकीन शोरवा।

सौराष्ट्र–वि० (सं०) सुराष्ट्र, सूरत-संबंधी। पु० सुराष्ट्र देश, काठियावाड़ तथा गुजरातका पुराना नाम; सुराष्ट्र देशका निवासी; कुंदुर नामक गंधद्रव्य; काँसा; एक वर्णवृत्त। **–नगर**–पु० सूरत। **–मृत्तिका**–स्त्री० सुराष्ट्र देशकी एक तरहकी मिट्टी जो सुगंधित होती है, गोपीचंदन।

सौराष्ट्रक–पु० (सं०) सौराष्ट्रके निवासी; पंचलौह; एक तरहका विष। वि० सुराष्ट्र-संबंधी।

सौराष्ट्रा–स्त्री० (सं०) तुवरी; गोपीचंदन।

सौराष्ट्रिक–वि० (सं०) सौराष्ट्र प्रदेशसे संबद्ध। पु० एक विष; सुराष्ट्र-निवासी; काँसा।

सौराष्ट्री–स्त्री० (सं०) गोपीचंदन।

सौराष्ट्रेय–वि० (सं०) सुराष्ट्र-संबंधी; सुराष्ट्रका।

सौरास्त्र–पु० (सं०) एक दिव्य अस्त्र।

सौरिंध्र–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सौरि–पु० (सं०) शनि; असन वृक्ष; आदित्यभक्ता; एक स्थान; दक्षिणकी एक जाति; * दे० 'शौरि'। **–रत्न**–पु० नीलम।

सौरिक–वि० (सं०) स्वर्ग-संबंधी; मदिराका; मदिरा-संबंधी। पु० शनि; स्वर्ग।

सौरी–स्त्री० सूतिगृह, सूतिकागार (लेबर रूम); सफरी मछली; (सं०) सूर्यपत्नी; कुरुकी माता, वैवस्वती; गाय; आदित्यभक्ता। मु० **–कमाना**–चमाइन द्वारा प्रसूताकी सेवा।

सौरीय–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी। पु० एक वृक्ष जिसका निर्यास विषैला होता है।

सौरेय, सौरेयक–पु० (सं०) श्वेतझिंटी।

सौर्य–वि० (सं०) सूर्य-संबंधी। पु० सूर्यका पुत्र, शनि; वर्ष; हिमालयके इस नामके दो शिखर; एक नगर। **–पृष्ठ**–पु० एक साम।

सौर्यप्रभ–वि० (सं०) सूर्यकी प्रभासे संबंध रखनेवाला।

सौर्यी(यिन्)–पु० (सं०) हिमालय।

सौर्योदयिक–वि० (सं०) सूर्योदय-संबंधी।

सौर्वल–वि०, पु० दे० 'सौवर्चल'।

सौलंकी–पु० दे० 'सोलंकी'।

सौल, सौला†–पु० राजगीरोंका एक आला, साहुल; एक बड़ी मछली।

सौलक्षण्य–पु० (सं०) सुलक्षण होनेका भाव, सुलक्षणता।

सौलत–स्त्री० (अ०) आतंक; रोब, दबदबा। **–पनाह**–वि० प्रतापी; आतंकवाला। **–(ते)शाही**–स्त्री० शाही दबदबा।

सौलभ्य–पु० (सं०) सुलभ होनेका भाव, सुलभता।

सौल्विक–पु० (सं०) ताँबेका काम करनेवाला व्यक्ति, ठठेरा, ताम्रकुट्टक।

सौव–वि० (सं०) अपने या अपनी संपत्तिसे संबंध रखनेवाला; स्वर्ग-संबंधी। पु० आदेश, शासन।

सौवर–वि० (सं०) स्वर-संबंधी।

सौवर्चल–वि० (सं०) सुवर्चल देश-संबंधी या वहाँ उत्पन्न होनेवाला। पु० सोंचर नमक; सर्जिकाक्षार।

सौवर्चला–स्त्री० (सं०) रुद्रकी पत्नी।

सौवर्चस–वि० (सं०) चमकदार, कांतिमान्।

सौवर्ण–वि० (सं०) सुवर्णका, स्वर्ण-निर्मित; एक सुवर्णकर्ष (१६ माशे) वजनका। पु० एक कर्षभर सोना; सोनेकी बाली; सोना। **–पर्ण**–वि० सुनहले पंखोंवाला। **–मेदिनी**–स्त्री० प्रियंगु।

सौवर्णिक–पु० (सं०) सुनार। वि० एक सुवर्णका या एक सुवर्णभर।

सौवर्णिका–स्त्री० (सं०) एक विषैला कीड़ा।

सौवर्ण्य–पु० (सं०) सुंदर, ताजा रंग; सोना होनेका भाव; स्वरोंका शुद्ध उच्चारण।

सौवश्व्य–पु० (सं०) घुड़दौड़ (वै०)।

सौवस्तिक–वि० (सं०) स्वस्ति-संबंधी, आशीर्वादात्मक। पु० पुरोहित।

सौवाध्यायिक–वि० (सं०) स्वाध्यायी।

सौवास–पु० (सं०) तुलसीका एक भेद जो सुगंधित होता है।

सौवासिनी–स्त्री० (सं०) दे० 'सुवासिनी'।

सौवास्तव–वि० (सं०) अच्छे स्थानपर निर्मित या वास्तु-संबंधी विशेषतासे युक्त (गृह)।

सौविद, सौविदल्ल, सौविदल्लक–पु० (सं०) अंतःपुर-रक्षक, रनिवासकी रखवाली करनेवाला व्यक्ति, कंचुकी।

सौवीर–पु० (सं०) बदरीफल, बेर; काँजीविशेष जो जौसे बनायी जाती है; सिंधु नदीके पासका एक प्रदेश; इस प्रदेशके निवासी; इस देशका राजा; सुरमा; एक कर्णाटकी राग (सं०)। **–पाण**–पु० वाह्लीक देशका निवासी (जौकी काँजी पीनेके कारण)। **–भक्त**–वि० सौवीरोंसे बसा हुआ। **–राज**–पु० सौवीरनरेश। **–सार**–पु० स्रोतोंजन, सुरमा।

सौवीरक–पु० (सं०) सौवीर नामक स्थान या वहाँका निवासी; कोई अदना सौवीर; जयद्रथ; बेरका पेड़; जौकी काँजी।

सौवीरांजन–पु० (सं०) सुरमा।

सौवीरा–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मूर्च्छना (संगीत)।

सौवीराम्ल–पु० (सं०) जौकी काँजी।

सौवीरिका–स्त्री० (सं०) बेरका पेड़।

सौवीरी–स्त्री० (सं०) दे० 'सौवीरा'; सौवीरकी राजकुमारी।

सौवीर्य–पु० (सं०) बहुत बड़ी वीरता; सौवीर-नरेश।

सौवीर्या–स्त्री० (सं०) सौवीरकी राजकुमारी।

सौव्रत्य–पु० (सं०) निष्ठा, भक्ति, आज्ञाकारिता।

सौशम्य–पु० (सं०) अच्छी शांति या तुष्टि।

सौशल्य–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

सौशील्य–पु० (सं०) सुशीलता, सदाचार।

सौश्रवस–पु० (सं०) सुकीर्ति, ख्याति; दौड़की होड़; दो साम; सुश्रवाके वंशज। वि० यशस्वी।

सौश्रिय–पु० (सं०) सौभाग्य; समृद्धि।

सौश्रुत–वि० (सं०) सुश्रुत-रचित। पु० सुश्रुतका वंशज।

सौषिर–पु० (सं०) एक दंतरोग; स्वरवाद्य।

सौषिर्य–पु० (सं०) पोलापन, खोखलापन।

सौषुम्ण–पु० (सं०) एक सूर्यरश्मि।

सौषुम्न–वि० (सं०) सुषुम्ना नाड़ीसे संबंधित (स्पाइनल)।

सौष्ठव–पु० (सं०) उत्तमता; सौंदर्य, सुडौलपन; सुघड़ता; दक्षता, चातुर्य; तेजी; शरीर या नृत्यकी एक मुद्रा; आत्मविश्वास; नाटकका एक अंग; आधिक्य।

सौसन–स्त्री० (फा०) लाली लिये नीले रंगका एक फूल जो उर्दू-फारसी कवितामें जबानका उपमान है।

सौसनी–वि० सौसनके रंगका, लाली लिये नीला। पु० लाली लिये नीला रंग; आसमानी रंगका घोड़ा।

सौसुराद–पु० (सं०) एक तरहका मलकीट।

सौस्थित्य–पु० (सं०) अच्छी स्थिति या स्थानपर होना; ग्रहोंका शुभ स्थानपर होना।

सौस्थ्य–पु० (सं०) कल्याण।

सौस्नातिक–वि० (सं०) स्नान मंगलकारी होनेके संबंधमें पूछनेवाला।

सौस्वर्य–पु० (सं०) सुस्वरता, सुरीलापन।

सौहँ*–स्त्री० कसम, शपथ। अ० सम्मुख, समक्ष, सामने।

सौहर†–पु० दे० 'शौहर'।

सौहार्द–पु० (सं०) हृदयकी सरलता; सद्भाव; मैत्री; मित्रका पुत्र। **–निधि**–पु० राम। **–व्यंजक**–वि० मैत्रीभावको छिपा न रख सकनेवाला।

सौहार्द्य–पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

सौहित्य–पु० (सं०) तृप्ति, संतुष्टि; पूर्णता; मनोहरता; हृदय-ग्राहिता।

सौहीं*–अ० सामने, सम्मुख। † पु० एक तरहकी रेती; एक औजार।

सौहृद–वि० (सं०) मित्र-संबंधी; मित्रका। पु० मित्र; एक प्राचीन जाति; प्रेम, मैत्री (समासमें); रुचि (समासमें)।

सौहृदय–पु० (सं०) प्रगाढ़ मैत्री।

सौहृदय्य, सौहृद्य–पु० (सं०) मैत्री, दोस्ती।

स्कंत्ता(त्तृ)–वि० (सं०) कूदनेवाला, छलाँग मारनेवाला।

स्कंद–पु० (सं०) क्षरण, बहना; नाश, ध्वंस; पारा; उछलना; उछलनेवाली चीज; कार्त्तिकेय; शिव; शरीर; राजा; नदीतट; चतुर व्यक्ति; एक बालरोग; तरल पदार्थका, रक्त आदिका गाढ़ा जमा हुआ रूप (क्लॉट)। **–गुप्त**–पु० गुप्तवंशका एक प्रसिद्ध सम्राट्। **–गुरु**–पु० शिव। **–ग्रह**–पु० एक बालग्रह। **–जननी**–स्त्री० पार्वती। **–जित्**–पु० विष्णु। **–पुत्र**–पु० चोरके लिए प्रयुक्त शिष्ट नाम। **–पुर**–पु० एक पुराना नगर। **–पुराण**–पु० अठारह पुराणोंमेंसे एक। **–माता(तृ)**–स्त्री० दुर्गा, पार्वती। **–विशाख**–पु० शिव। **–षष्ठी**–स्त्री० चैत्र-शुक्ला षष्ठी; इस दिन होनेवाला व्रत; कार्त्तिक या अगहन सुदी षष्ठी।

स्कंदक–पु० (सं०) कूदने उछलनेवाला व्यक्ति; सनिक; एक वृत्त।

स्कंदन–पु० (सं०) क्षरण, बहना; स्खलन, पात; रेचन; गमन; शोषण; रक्तका जमाना या ठंढक पहुँचाकर जमाना।

स्कंदन–पु० (कोग्यूलेशन) द्रव पदार्थका जम जाना, ठोस रूप ग्रहण कर लेना।

स्कंदांशक–पु० (सं०) पारा।

स्कंदापस्मार–पु० (सं०) एक बालग्रह जिसमें मूर्च्छा होती है।

स्कंदापस्मारी(रिन्)–वि० (सं०) स्कंदापस्मार रोगसे ग्रस्त।

स्कंदित–वि० (सं०) क्षरित, बहा हुआ; पतित; गमनशील।

स्कंदी(दिन्)–वि० (सं०) क्षरित होनेवाला, बहनेवाला; पतनशील; उछलने, कूदनेवाला; जमनेवाला; स्फुटित होनेवाला।

स्कंदेश्वरतीर्थ–पु० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ।

स्कंदोपनिषद्–स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

स्कंदोल–वि० (सं०) शीतल, ठंढा। पु० ठंढक।

स्कंध–पु० (सं०) कंधा, पीठका ऊपरी भाग; पेड़का तना (स्टेम); मोटी डाल; विज्ञान आदिका कोई विभाग; ग्रंथका अध्याय; सेनाका कोई अंग या भाग; सेनाका व्यूह; समूह, झुंड; (स्टॉक) वेचनेके लिए रखा गया तरह-तरहके मालका भांडार; पाँचों ज्ञानेंद्रियोंके विषय; जीवनके पाँच तत्त्व–रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान (बौ०); पिंड (जै०); आर्या छंदका एक भेद; राजा; अभिषेकके अवसरपर काम आनेवाले छत्र, जलपूर्ण कलश आदि उपकरण; मुनि; आचार्य; युद्ध; समझौता; कंक पक्षी; भारवाहक बलोंके ककुद्की ऊँचाईकी समानता; एक नागासुर; सड़क; मार्ग। **–चाप**–पु० बहँगी। **–ज**–वि० कंधेसे उत्पन्न होनेवाला। पु० ऐसा वृक्ष–शल्लकी; वटवृक्ष। **–तरु**–पु० नारियलका पेड़। **–देश**–पु० कंधेका भाग; तना; हाथीके कंधेके पासका वह भाग जहाँ महावत बैठता है। **–पंजी**–स्त्री० (स्टॉक रजिस्टर) भांडार या गोदाममें मौजूद मालका विवरण लिखनेकी पंजी। **–पथ**–पु० पगडंडी। **–परिनिर्वाण**–पु० शरीरके स्कंधों(पाँचों तत्त्वों)का पूर्ण लोप या नाश (बौ०)। **–पाद**–पु० एक पर्वत। **–पाल**–पु० भंडारका निरीक्षक अधिकारी (स्टोरकीपर)। **–पीठ**–पु० अंसफलक, कंधेकी हड्डी। **–प्रदेश**–पु० दे० 'स्कंध-देश'। **–फल**–पु० नारियल; गूलर; बेलका पेड़। **–बंधना**–स्त्री० मधुरिका, सौंफ। **–बीज**–पु० वट जैसे वृक्ष जिनके स्कंधसे शाखा निकलकर वृक्षका रूप धारण कर लेती है। **–मणि**–पु० एक तरहका रक्षाकवच, तावीज। **–मल्लक**–पु० कंक पक्षी। **–मार**–पु० चार मारोंमेंसे एक (बौ०)। **–रुह**–पु० वटवृक्ष। **–वह,–वाह,–वाहक**–पु० कंधेपर भार वहन करनेवाला (बैल आदि)। **–वाह्य**–वि० जो कंधेपर ढोया जाय। **–शाखा**–स्त्री० पेड़की मुख्य शाखा। **–शिर(स्)**–पु० अंसफलक। **–शृंग**–पु० भैंसा।

स्कंधक–पु० (सं०) एक तरहका आर्या छंद।

स्कंधा–स्त्री० (सं०) शाखा, डाल; लता।

स्कंधाक्ष–पु० (सं०) स्कंदका एक अनुचर।

स्कंधाग्नि–स्त्री० (सं०) कुंदेकी आग।

स्कंधानल–पु० (सं०) दे० 'स्कंधाग्नि'।

स्कंधावार–पु० (सं०) राजाका शिविर या सैनिक पड़ाव; राजधानी; सेना; सैन्यस्थिति; व्यापारियोंके ठहरनेका स्थान।

स्कंधिक–पु० (सं०) कंधेपर भार ढोनेवाला बैल।

स्कंधी(धिन्)–वि० (सं०) स्कंधयुक्त, जिसमें तना हो। पु० वृक्ष।

स्कंधेमुख–वि० (सं०) जिसका मुँह कंधेपर हो। पु० स्कंदका एक अनुचर।

स्कंधोग्रीवी–स्त्री० (सं०) वृहती छंदका एक भेद।

स्कंधोपनेय–पु० (सं०) शांति बनाये रखनेके लिए की जानेवाली एक तरहकी संधि। वि० जो कंधेपर ढोया जाय।

स्कंध्य–वि० (सं०) कंधेका; कंधेसे संबद्ध।

स्कंभ–पु० (सं०) खंभा, टेक, सहारा; पुरुष; परमेश्वर।

स्कंभन–पु० (सं०) खंभा; अवलंबन, टेक।

स्कन्न–वि० (सं०) च्युत, गिरा हुआ; क्षरित; गत; विफल; शुष्क। **–भाग**–वि० जिसका हिस्सा नष्ट हो गया हो।

स्कब्ध–वि० (सं०) सहारा दिया हुआ; रोका हुआ।

स्कभन–पु० (सं०) शब्द।

स्कांद–वि० (सं०) स्कंद-संबंधी। पु० स्कंदपुराण।

स्कांधिक–पु० (स्टॉकिस्ट) बिक्रीके लिए बहुत-सी चीजें अपनी दूकान या गोदाममें रखनेवाला।

स्काउट–पु० (अं०) गुप्तचर; निरीक्षकोंका संघ; बालचर।

स्काट, सर वाल्टर–पु० अंग्रेजीके एक प्रसिद्ध कवि तथा महान् उपन्यासकार। 'वेवरली', 'आइवन हो', 'केनिलवर्थ' आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं।

स्कालर–पु० (अं०) छात्र, विद्यार्थी; विद्वान्, पंडित। **–शिप**–स्त्री० छात्रवृत्ति; पांडित्य।

स्कीम–पु०, स्त्री० (अं०) योजना; मंत्रणा; कल्पना।

स्कूल–पु० (अं०) पाठशाला, अध्यापनका स्थान; वह स्थान जहाँ प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा दी जाती हो; विशिष्ट विचार-धारा। **–टीचर,–मास्टर**–पु० स्कूलका शिक्षक।

स्कूली–वि० स्कूलका; स्कूल जानेवाला; स्कूलमें पढ़ाया जाने या होनेवाला।

स्कोटिका–स्त्री० (सं०) एक पक्षी।

स्कोर–पु० (अं०) खेलाड़ियों द्वारा बनाये गये रनोंकी संख्या (क्रिकेट)।

स्क्रू–पु० (अं०) एक तरहकी कील जिसमें सिरेपर चूड़ियाँ बनी होती हैं, पेंच। **–होल्डर**–पु० पेचकस। **मु०–ढीला होना**–(दिमागका) ठीकसे काम न करना, कुछ त्रुटि होना।

स्क्वाड्रन–पु० (अं०) अश्वारोही सैन्यदल; जंगी बेड़ेका एक दल; सैनिक विमानोंकी टुकड़ी।

स्क्वायर, स्क्वेयर–पु० (अं०) वर्ग; वह चौकोर स्थान जिसके चतुर्दिक् मकान हों।

स्खदन–पु० (सं०) चीरना, फाड़ना, विदारण; वध; कष्ट देना, उत्पीड़न; स्थैर्य, दृढ़ता।

स्खल–पु० (सं०) लुढ़कना, गिरना।

स्खलद्वाक्य–वि० (सं०) बोलनेमें भूल करनेवाला; हकलानेवाला।

स्खलन–पु० (सं०) अपनी जगहसे हटकर नीचे आ जाना, पतन; मार्गसे विचलित होना; लड़खड़ाना; थरथराहट; भूल करना; गलती; विफलता; हकलाहट; चूना, क्षरण, श्राव; टक्कर, घर्षण, संघर्ष; वंचित होना।

स्खलन्मति–वि० (सं०) अस्थिरमति, कमजोर दिमागका।

स्खलित–वि० (सं०) लुढ़का हुआ, गिरा हुआ, पतित; लड़खड़ाया

हुआ, विचलित; अस्थिर; क्षुब्ध; मत्त; हकलाता हुआ; भूल करनेवाला; क्षरित, टपका हुआ; विफल; रोका हुआ, बाधित; घबड़ाया हुआ; गत; अधूरा, अपूर्ण। पु० क्षरण, श्राव; लड़खड़ाहट; भूल; विफलता; विकलन; दोष; पाप; छल-कपट; युद्धमें छलका सहारा लेना; हानि, क्षति। **–गति**–वि० जो चलनेमें लड़खड़ाता हो। **–वीर्य**–वि० जिसकी वीरता काम न दे सकी हो।

स्टांप–पु० (अं०) पक्की लिखापढ़ी करने या अर्जीदावा लिखनेका कागज; डाकखानेका टिकट; छाप, मोहर।

स्टाइल–स्त्री० (अं०) पद्धति; शैली।

स्टाक–पु० (अं०) बिक्रीका माल; साझेके कारवारमें लगायी हुई पूँजी; सरकारी कागजमें व्याजपर लगाया हुआ धन; सरकारी ऋणकी हुंडी; रसद; गोदाम। **–एक्सचेंज**–पु० स्टाक, शेयर खरीदने, वेचनेका मकान, वाड़ा, स्थान; दलालोंकी सभा। **–ब्रोकर**–पु० दूसरोंके लिए खरीद-बिक्रीका काम करनेवाला दलाल।

स्टाफ़–पु० (अं०) एक ही संघटन या संस्थामें काम करनेवालोंका समूह (जैसे स्कूल स्टाफ); फौजी अफसरोंका समूह। **–अफ़सर**–पु० सेना, सेनाके अफसरोंका अफसर।

स्टाल–पु० (अं०) छोटी दुकान (प्रदर्शनी आदिमें लगायी जानेवाली); रंगालयका स्थानविशेष।

स्टालिन(जोसेफ)–पु० (१८७९-१९५३) सोवियट रूसके राजनेता; कम्युनिस्टपार्टीकी कार्यसमितिके महामंत्री १९१९ से; रूसकी सोवियत सरकारके प्रमुख सदस्य।

स्टिचिंग–स्त्री० (अं०) सिलाई। **–मशीन**–स्त्री० किताब सीनेकी मशीन।

स्टीम–पु० (अं०) भाप। **–इंजिन**–पु० भापके जोरसे चलनेवाला इंजिन। **मु०–भरना**–जोश देना, उत्साहित करना।

स्टीमर–पु० (अं०) भापसे चलनेवाला छोटा जहाज।

स्टुडेंट–पु० (अं०) छात्र, विद्यार्थी।

स्टूल–पु० (अं०) तीन या चार पायोंकी कुर्सीनुमा छोटी चौकी, तिपाई।

स्टेज–पु० (अं०) रंगमंच; मंच। **–मैनेजर**–पु० रंगमंचका व्यवस्थापक।

स्टेट–पु० (अं०) स्वतन्त्र राष्ट्र, जनसमाज; शासन-शक्ति; संघ-राज्य या उसका कोई ऐसा प्रांत या प्रदेश जिसकी अपनी विधान-सभा और मन्त्रिमण्डल हो; देशी राज्य (ब्रिटिश भारतका); वड़ी जमींदारी (एस्टेट); किसीकी सारी स्थावर जंगम सम्पत्ति।

स्टेशन–पु० (सं०) रेलगाड़ियोंके ठहरनेका स्थान जहाँ यात्री उतरते और चढ़ते हैं; रिक्शे, मोटर आदि सवारियोंके ठहरनेका स्थान; कार्यविशेषके लिए लोगोंकी नियुक्ति और निवासका स्थान (जैसे–पुलिस स्टेशन)। **–मास्टर**–पु० रेलवे स्टेशनका प्रधान अधिकारी।

स्टैंडर्ड–पु० (अं०) निर्ख, श्रेष्ठतादिका नियत मान; स्तर। वि० आदर्श; श्रेष्ठताके नियत मानका।

स्टैंडिंग–वि० (अं०) स्थायी। **–कमिटी**–स्त्री० दे० 'स्थायी समिति'। **–कौंसल**–पु० सरकारकी ओरसे चलाये जानेवाले मुकदमेमें ऐडवोकेट-जनरलको सहायता देनेवाला ऐडवोकेट। **–मैटर**–पु० कंपोज किया हुआ वह लेख आदि जो एक बार छाप लेनेके बाद भविष्यमें फिर कभी छापनेके लिए रोक रखा गया हो।

स्टैच्यू–पु० (अं०) मूर्ति, प्रतिमा।

स्टोइक–पु० (अं०) विषयविरागी व्यक्ति; यूनानका एक दार्शनिक संप्रदाय।

स्ट्राइक–पु० (अं०) हड़ताल।

स्ट्रीट–स्त्री० (अं०) शहरके अंदरकी छोटी सड़क।

स्ट्रेट–पु० (अं०) जलडमरूमध्य।

स्तंकु–पु० (सं०) एक प्राचीन बाजा जो चमड़ा मढ़ा हुआ होता था।

स्तंब–पु० (सं०) गुल्म, प्रकांड-रहित पौधा–झिंटी आदि; तृणादिका गुच्छ; झुरमुट; हाथी बाँधनेका खूंटा, खंभा, स्तंभ; जड़ता, स्तंभ; पर्वत; वृक्ष। **–करि**–वि० गुच्छा बनानेवाला। पु० अन्न; धान। **–कार**–वि० गुच्छा बनानेवाला। **–घन**–पु० घासका गुच्छ नष्ट करनेके काम आनेवाला एक औजार–खुरपा या कुदाल; हँसिया; तिन्नी धान एकत्र करनेकी टोकरी। **–घात**–पु० घास या नाज काटना। **–घ्न**–वि० घास आदिका गुच्छा नष्ट करनेवाला। पु० दे० 'स्तंबघन'। **–पू(र्)**–स्त्री० एक पुरी, ताम्रलिप्त। **–यजु(स्)**–पु० घास निकालनेपर किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य। **–हनन**–पु०, **–हननी**–स्त्री० दे० 'स्तंबघन'।

स्तंबक–पु० (सं०) गुच्छा; नकछिकनी नामक पौधा।

स्तंबी(बिन्)–वि० (सं०) गुच्छेदार। पु० खरपा।

स्तंबेरम–पु० (सं०) हाथी।

स्तंबेरमासुर–पु० (सं०) एक असुर, गजासुर।

स्तंभ–पु० (सं०) गतिहीनता; संज्ञाहीनता, जड़ता (जो एक सात्त्विक भाव है); रोक, बाधा; दमन, नियंत्रण; घमंड, अभिमान; खंभा; (कॉलम) समाचारपत्रादिके पृष्ठका खड़ा विभाग या किसी विशेष विषयके लिए निर्धारित स्थान; पेड़का तना; सहारा, टेक; मंत्रबलसे किसी शक्ति या अनुभूतिका दमन; भरना; एक ऋषि। **–कर**–वि० बाधा डालनेवाला, रोकनेवाला; जड़ता लानेवाला। पु० घेरा, टट्टी; वेष्टन। **–कारण**–पु० बाधाका कारण। **–तीर्थ**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–पूजा**–स्त्री० विवाह आदिके अवसरपर मंडपके स्तंभोंकी पूजा। **–मित्र**–पु० एक ऋषि। **–लेखक**–पु० (कॉलमिस्ट) समाचार-पत्रमें विशेष विषयपर लेखादि लिखनेवाला। **–वृत्ति**–स्त्री० योगका एक अंग जिसमें प्राण-निरोध किया जाता है।

स्तंभक–वि० (सं०) रोकनेवाला; कब्ज करनेवाला; वीर्य रोकनेवाला। पु० खंभा; शिवका एक अनुचर।

स्तंभकी–स्त्री० (सं०) एक देवी।

स्तंभकी(किन्)–पु० (सं०) चर्ममंडित एक प्राचीन बाजा।

स्तंभन–वि० (सं०) जड़ बना देनेवाला; रोकनेवाला; सहारा देनेवाला; कब्ज करनेवाला। पु० कामदेवका एक वाण; स्तंभका रूप देना; सहारा देना, मजबूत करना; कड़ा पड़ना; जड़ीकरण; कड़ा करनेका साधन; (मंत्रादिके द्वारा) किसीकी शक्ति कुंठित करना; रक्त, वीर्य आदिका स्राव आदि रोकना; वीर्य रोकनेवाली दवा; शांत करना।

स्तंभनी–स्त्री० (सं०) एक तरहका जादू; इंद्रजाल।

स्तंभनीय–वि० (सं०) रोके या दृढ़ किये जाने योग्य; धारक या रोधक औषध प्रयुक्त करने योग्य।

स्तंभि–पु० (सं०) सागर।

स्तंभिका–स्त्री० (सं०) छोटा स्तंभ; कुर्सी आदिका पाया।

स्तंभित–वि० (सं०) स्थिर किया हुआ, दृढ़ किया हुआ; जड़ीभूत, स्तब्ध; सुन्न; जड़ीकृत; रोका हुआ; दबाया हुआ; भरा हुआ। **–वाष्पवृत्ति**–वि० अश्रुपात रोकनेवाला।

स्तंभिताश्रु–वि० (सं०) जिसने आँसुओंका बहना रोक दिया है।

स्तंभिनी–स्त्री० (सं०) एक तत्त्व, क्षिति।

स्तंभी(भिन्)–वि० (सं०) खंभोंसे युक्त; सहारा देनेवाला; घमंडसे फूला हुआ; रोकनेवाला, रोधक। पु० समुद्र।

स्तंभोत्कीर्ण–वि० (सं०) खंभोंमें खोदकर बनाया हुआ (चित्र, प्रतिमा आदि)।

स्तनंध–वि० (सं०) दे० 'स्तनंधय'।

स्तनंधय–वि० (सं०) स्तन-पान करनेवाला। पु० शिशु; बछड़ा। (स्त्री० 'स्तनंधया', 'स्तनंधयी'।)

स्तन–पु० (सं०) स्त्रियोंका अंगविशेष, कुच; मादा पशुका थन; चूचुक, ढेपनी; स्तन जैसे पात्रके ऊपरकी छोटी खूंटी। **–कलश**, **–कुंभ**–पु० कलश जैसा स्तन। **–कील**–पु० स्तनका एक रोग; थनेली। **–कुंड**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–कुड्मल**–पु०, स्त्रीका कुच। **–कोटि**–स्त्री० चूचुक। **–कोरक**–पु० कली जैसा स्तन। **–ग्रह**–पु० स्तनपान। **–चूचुक**–पु० ढेपनी। **–तट**–पु० स्तनका आगे निकला हुआ भाग। **–त्याग**–पु० स्तनपानका त्याग। **–धात्री**–स्त्री० स्तनपान करानेवाली, माँ, धाय। **–द्वेषी(षिन्)** वि० स्तन स्वीकार न करनेवाला। **–प**–वि० स्तन-पान करनेवाला। पु० दुधमुंहा बच्चा। **–पतन**–पु० स्तनका ढीला पड़ना, लटकना। **–पाता(तृ)**–वि० दे० 'स्तनप'। **–पान**–पु० स्तनका

दूध पीना। **–पायक**–वि० दे० 'स्तनप'। **–पायी(यिन्)**,**–पायी** –वि० पु० (मैमल्स) रीढ़वाले प्राणी जिनके शिशुओंका जन्म मादाके पेटके अन्दर पूर्ण विकास प्राप्त कर लेनेके उपरान्त होता है। स्तनपायी अपने शिशुओंको स्तन द्वारा दुग्धपान कराते हैं। मनुष्य, मवेशी आदि स्तनपायी हैं, ह्वेल भी स्तनपायी है; स्तनप। **–पोषिक**–पु० एक प्राचीन जनपद। **–बाल**–पु० एक जनपद। **–भर**–पु० पीन पयोधर; स्त्री जैसे स्तनोंवाला पुरुष। **–भव**–पु० एक तरहका रतिबंध। **–मंडल**–पु० स्तनका घेरा। **–मध्य**–पु० चूचुक; स्तनोंकें बीचकी जगह।**–मुख**–पु० ढेपनी।**–मूल**–पु० स्तनका जड़का भाग। **–योधिक**,**–योषिक**–पु० दे० 'स्तनपोषिक'। **–रोग**–पु० स्तन-संबंधी रोग। **–रोहित**–पु० स्तनके ऊपरका एक विशेष भाग। **–विद्रधि**–स्त्री० थनेली। **–वृंत**–पु० चूचुक, ढेपनी। **–वेपथु**–पु० स्तनका हिलना। **–शिखा**–स्त्री० ढेपनी। **–शोष**–पु० स्तन सूखनेका एक रोग।

स्तनथ–पु० (सं०) दहाड़ (शेरकी); गड़गड़ाहट।

स्तनथु–पु० (सं०) गर्जन, दहाड़ (शेरकी)।

स्तनन–पु० (सं०) ध्वनि; मेघशब्द; कराहना।

स्तनयित्नु–पु० (सं०) मेघ; मुस्तक; मेघध्वनि; विद्युत्; मृत्यु; रोग। **–घोष**–वि० मेघगर्जनकी तरह जोरदार।

स्तनांतर–पु० (सं०) स्तनोंके बीचका भाग; हृदय; वैधव्यका एक स्तनवर्ती लक्षण (सामु०)।

स्तनांशुक–पु० (सं०) स्तन बाँधने, ढकनेका कपड़ा।

स्तनाग्र–पु० (सं०) ढेपनी, चूचुक।

स्तनाभुक्(ज्)–वि० (सं०) दूध पीनेवाला।

स्तनाभुज–वि० (सं०) दूध पिलानेवाला (प्राणी)।

स्तनाभोग–पु० (सं०) स्तनकी पुष्टता; स्तनका घेरा; स्त्री जैसे स्तनोंवाला पुरुष।

स्तनावरण–पु० (सं०) स्तन ढकनेका कपड़ा।

स्तनित–वि० (सं०) गर्जित, ध्वनित, शब्दायमान। पु० मेघ-निर्घोष; ताली बजानेका शब्द; टंकोर। **–कुमार**–पु० एक देववर्ग (जै०)। **–फल**–पु० विकंटक वृक्ष। **–समय**–पु० मेघगर्जनका समय।

स्तनी(निन्)–वि० (सं०) स्तनवाला (एक प्रकारके रूप-विकृति-वाले घोड़ेके लिए प्रयुक्त)।

स्तनोत्तरीय–पु० (सं०) स्तनांशुक, कुचांशुक।

स्तन्य–वि० (सं०) जो स्तनमें हो। पु० दूध। **–जनन**–वि० दूधकी वृद्धि करनेवाला। **–त्याग**–पु० बच्चेका स्तनपान छोड़ना। **–द**–वि० दुग्ध उत्पन्न करनेवाला। **–दा**–वि० स्त्री० जिसके स्तनोंसे दूध निकले। **–दान**–पु० स्तनपान कराना; स्तनसे दूध देना। **–प**–वि० स्तनपान करनेवाला। पु० दुधमुहाँ बच्चा। **–पान**–पु० स्तनका दूध पीना; शैशवकाल। **–पायी(यिन्)**,**–भुक्(ज्)**–वि० दूध-पीता। **–रोग**–पु० माताके दूधके विकारसे होनेवाला रोग। **–स्राव**–पु० वात्सल्यके उद्रेकसे स्वतः स्तनोंसे दूधका बहने लगना।

स्तन्या–स्त्री० (सं०) कलमी शाक।

स्तवक–पु० (सं०) गुच्छ; फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; मोरकी पूँछका पंख; समूह; रेशमका झब्बा। **–खंड**–पु० एक कंदशाक। **–फल**–पु० फलविशेष।

स्तवकाचित–वि० (सं०) फूलोंसे ढका हुआ।

स्तवकित–वि० (सं०) फूलोंसे भरा हुआ।

स्तब्ध–वि० (सं०) स्थिर, दृढ; सहारा दिया हुआ; कड़ा; जड़ीभूत; गतिहीन; संज्ञाहीन; जड़ीकृत; घमंडी; धीमा, सुस्त; हठी; निष्ठुर; जमाया हुआ; रोका हुआ, रुद्ध; मोटा, स्थूल; भद्दा। पु० वंशीका मंद स्वरवाला छेद। **–गात्र**–वि० जो अपने अंगोंको कड़ा किये हो। **–तोय**–वि० जिसका पानी जम गया हो (जलाशय)। **–दृष्टि**,**–नयन**–वि० जिसकी पलकें न गिर रही हों, टकटकी बँध गयी हो। **–पाद**–वि० जिसके पैर गतिहीन हो गये हों। **–बाहु**–वि० जिसके हाथ निश्चेष्ट हो गये हों। **–मति**–वि० मंदबुद्धि, जिसकी बुद्धि कुंठित हो। **–मेढ्र**–वि० जिसका शिश्न जड़ हो गया हो, नपुंसक। **–रोमकूप**–वि० जिसके रोमछिद्र बंद हो गये हों। **–रोमा(मन्)**–पु० सूअर। वि० स्तंभित लोमयुक्त। **–लोचन**–वि० जिसकी पलकें न गिरें (देवता)। **–वपु(स्)**–वि० जिसका शरीर निश्चेष्ट हो गया हो। **–सक्थि**–वि० जिसके उरु निश्चेष्ट हों, लँगड़ा। **–संभार**–पु० एक राक्षस। **–हनु**–वि० जिसके जबड़ोंमें गति न हो।

स्तब्धता–स्त्री०, **स्तब्धत्व**–पु० (सं०) जड़ता, कड़ापन; स्थिरता; निश्चेष्टता, स्पंदनहीनता; घमंड।

स्तब्धाक्ष–वि० (सं०) दे० 'स्तब्धदृष्टि'।

स्तब्धि–स्त्री० (सं०) जड़ता; स्थिरता, निश्चलता; दृढ़ता; स्पंदनहीनता।

स्तब्धोद–वि० (सं०) दे० 'स्तब्धतोय'।

स्तभ–पु० (सं०) छाग या मेष।

स्तभि–स्त्री० (सं०) जड़ता।

स्तर–वि० (सं०) फैलनेवाला, ढकनेवाला। पु० कोई फैली हुई चीज; तह; कालविशेषमें पड़ी हुई भूमिकी परत (स्ट्रेटा); सतह; शय्या, पलंग; मान; तल (लेवेल)।

स्तरण–पु० (सं०) फैलाना, बिछाना, बिखेरना (विशेषकर यज्ञतृण); दीवारका पलस्तर करना; प्राकृतिक कारणोंसे पृथ्वीके विभिन्न स्तरोंका बनना (स्ट्रेटिफ़िकेशन); बिछौना।

स्तरणीय, **स्तर्य**–वि० (सं०) बिखेरने, फैलाने योग्य; बिछाने योग्य।

स्तरिमा(मन्), **स्तरीमा(मन्)**–पु० (सं०) तल्प; सेज।

स्तरी–स्त्री० (सं०) धुँआ; वाष्प; बछिया; बाँझ गाय।

स्तरीभूत–वि० (स्ट्रैटिफाइड) जो स्तरके रूपमें परिणत हो गया हो।

स्तरु–पु० (सं०) शत्रु; वैरी।

स्तव–पु० (सं०) प्रशंसा, स्तुति; स्तोत्र; एक पदार्थ। **–कर्णिका**–स्त्री० लाख आदिका बना हुआ कुंडल।

स्तवक–पु० (सं०) स्तुति; स्तुतिपाठक, बंदी; फूलोंका गुच्छा, गुलदस्ता; समूह; अध्याय, परिच्छेद। वि० स्तुति करनेवाला।

स्तवकित–वि० (सं०) फूलों या फूलोंके गुच्छोंसे भरा हुआ।

स्तवन–पु० (सं०) स्तुति करना; स्तोत्र।

स्तवनीय, **स्तवन्य**–वि० (सं०) स्तुतिके योग्य।

स्तवरक–पु० (सं०) आवरक; टट्टी, घेरा, 'रेलिंग'; एक रेशमी वस्त्र।

स्तवि–पु० (सं०) सामगायक।

स्तवितव्य, **स्तव्य**–वि० (सं०) दे० 'स्तवनीय'।

स्तविता(तृ)–पु० (सं०) स्तुतिपाठक।

स्तवेय्य–पु० (सं०) इंद्र।

स्ताघ–वि० (सं०) छिछला।

स्तायु–पु० (सं०) चोर, लुटेरा।

स्ताव–पु० (सं०) स्तुति; स्तुतिपाठक।

स्तावक–वि० (सं०) स्तुति करनेवाला; प्रशंसक; खुशामदी। पु० स्तुतिपाठक, बंदी।

स्ताव्य–वि० (सं०) दे० 'स्तवनीय'।

स्तिभि–पु० (सं०) दे० 'स्तिभि'।

स्तिभि–पु० (सं०) गुच्छ; समुद्र; बाधा।

स्तिभिनी–स्त्री० (सं०) गुच्छा।

स्तिमित–वि० (सं०) गीला, आर्द्र; स्थिर, निश्चल; निश्चेष्ट; शांत; कोमल; प्रसन्न; बंद। पु० आर्द्रता; गतिहीनता, निश्चलता। **–जव**–वि० धीरे-धीरे आगे बढ़नेवाला। **–नयन**–वि० जिसे टकटकी लग गयी हो। **–प्रवाह**–वि० बहुत धीमी गतिसे बहनेवाला। **–वायु**–स्त्री० शांत हवा। **–स्थित**–वि० जो बिना हिले-डुले खड़ा हो।

स्तिमितत्त्व–पु० (सठ०) गतिहीनता, निश्चलता।

स्तिया–स्त्री० (सं०) वह जल जिसमें प्रवाह न हो, एक ही स्थानपर रुका हुआ पानी।

स्तीम–स्त्री० (सं०) सुस्त, मंद।

स्तीमित–वि० (सं०) आर्द्र, गीला।

स्तीर्ण–वि० (सं०) छितराया, बिखेरा, फैलाया हुआ। पु० शिवका एक दैत्य अनुचर।

स्तोर्वि–पु० (सं०) नभ; रुधिर; एक तृण; अध्वर्यु; जल; इंद्र; शरीर; भय।

स्तुक–पु० (सं०) केशगुच्छ; संतान।

स्तुका–स्त्री० (सं०) केशगुच्छ; कबरी; बैलके सींगोंके बीचका वालोंका गुच्छा; जघन।

स्तुत–वि० (सं०) जिसकी स्तुति की गयी हो, प्रशंसित; क्षरित, वहा हुआ, रिसा हुआ। पु० शिव; स्तुति, प्रशंसा। **–स्तोम**–वि० जिसकी स्तुति की गयी हो, प्रशंसित।

स्तुति–स्त्री० (सं०) गुणगान, प्रशंसा; स्तोत्र; चाटुकारिता; दुर्गा। पु० शिव। **–गीत**–पु० स्तोत्र। **–गीतक**–पु० प्रशंसात्मक गीत। **–पद**–पु० प्रशंसाका विषय। **–पाठक**–पु० स्तुतिका पाठ करनेवाला, वंदी। **–प्रिय**–वि० प्रशंसाका इच्छुक। **–मंत्र**–पु० प्रशंसात्मक गीत। **–वचन,–वाद**–पु० प्रशंसात्मक वचन, गुणानुवाद। **–वादक**–पु० प्रशंसा करनेवाला; मुँहदेखी बोलनेवाला। **–व्रत**–पु० स्तुतिपाठक, वंदी। **–शब्द**–पु० प्रशंसात्मक शब्द। **–शील**–वि० गुणगानमें कुशल।

स्तुत्य–वि० (सं०) स्तवनीय, प्रशंसनीय। **–व्रत**–पु० हिरण्यरेताका एक पुत्र; उसके द्वारा शासित एक वर्ष।

स्तुत्या–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य, नली; गोपीचंदन।

स्तुनक–पु० (सं०) छाग, बकरा।

स्तुभ–पु० (सं०) एक अग्नि; वकरा।

स्तुव–पु० (सं०) घोड़ेके सिरका एक विशेष भाग।

स्तुवि–पु० (सं०) स्तुति करनेवाला; उपासक; यज्ञ।

स्तूप–पु० (सं०) केशगुच्छ; शिखर; ढेर, राशि; मिट्टी, ईंट आदिसे बना ढूह, विशेषकर बौद्धोंका (बुद्धके अवशिष्ट चिह्न रखनेके लिए); मकानकी मुख्य धरन; चिता; शक्ति। **–पृष्ठ**–पु० कच्छप। **–बिंब,–मंडल**–पु० स्तूपका घेरा। **–भेदक**–पु० स्तूप नष्ट करनेवाला।

स्तृ–पु० (सं०) तारा।

स्तृत–वि० (सं०) ढका हुआ; फैलाया हुआ; विस्तृत, फैला हुआ।

स्तृति–स्त्री० (सं०) ढँकनेकी क्रिया; फैलाना; फैलाव; आच्छादन, वस्त्र।

स्तेन–पु० (सं०) चोर; लुटेरा; चोर नामक गंधद्रव्य; चोरी। **–निग्रह**–पु० चोरोंका दमन। **–हृदय**–पु० मूर्तिमान् चोर, पक्का चोर।

स्तेम–पु० (सं०) आर्द्रता, गीलापन।

स्तेय–पु० (सं०) चोरी; रहजनी; चोरी गयी हुई या चोरी जाने योग्य वस्तु; छिपायी हुई या गोप्य वस्तु। **–कृत्**–पु० चोर। **–फल**–पु० एक पेड़, तेजवल।

स्तेयी(यिन्)–पु० (सं०) चोर; चूहा; सुनार।

स्तैन, स्तैन्य–पु० (सं०) चोरी; चोर।

स्तैमित्य–पु० (सं०) जड़ता; निश्चलता।

स्तोक–वि० (सं०) छोटा, लघु; कुछ; अल्प; नीच। पु० जलबिंदु; चातक; चिनगी; एक कालमान, सात बार साँस लेनेमें लगनेवाला काल (जै०)। **–काय**–वि० छोटे-कदका। **–नम्र**–वि० कुछ-कुछ झुका हुआ।

स्तोकक–पु० (सं०) चातक, पपीहा; एक विष, वत्सनाभ, बछनाग।

स्तोतव्य–वि० (सं०) स्तुत्य।

स्तोता(तृ)–वि० (सं०) प्रार्थना या स्तुति करनेवाला। पु० विष्णु।

स्तोत्र–पु० (सं०) स्तुति; स्तुत्यात्मक श्लोक; श्लोकबद्ध स्तुतिपरक ग्रंथ। **–कारी(रिन्)**–वि० स्तोत्रका पाठ करनेवाला।

स्तोत्रार्ह–वि० (सं०) स्तुत्य।

स्तोत्रिय, स्तोत्रीय–वि० (सं०) स्तोत्रका; स्तोत्र-संबंधी।

स्तोत्रिया–स्त्री० (सं०) स्तोत्रका पद्य।

स्तोभ–पु० (सं०) रोकना, बाधा देना; विराम; रोक; निश्चेष्टता; अवमानना, अवहेलना; स्तुति; सामवेदका एक भाग; सन्निविष्ट वस्तु।

स्तोभित–वि० (सं०) स्तुत; जय-जयकार किया हुआ।

स्तोम–पु० (सं०) स्तुति, गुणगान; यज्ञ; यज्ञकर्ता; सोम-तर्पण; सोमदिवस; समूह; राशि; बड़ी राशि; सिर; मस्तक; धन-दौलत; अन्न; लोहेकी नोकवाली छड़ी; एक तरहकी ईंट; मकान भाड़ेपर देना; दस धन्वंतर या ४० हाथकी एक माप। वि० वक्र, टेढ़ा। **–क्षार**–पु० साबुन। **–चिति**–स्त्री० स्तोम नामकी ईंटोंका चुना जाना।

स्तोमायन–पु० (सं०) यज्ञका बलिपशु।

स्तोमीय–वि० (सं०) स्तोम-संबंधी।

स्तोम्य–वि० (सं०) स्तुतिके योग्य।

स्तौपिक–पु० (सं०) बुद्ध-द्रव्य, स्तूपमें रखे हुए दंत, अस्थि आदि अवशिष्ट पदार्थ; बौद्ध या जैन साधुओं द्वारा धारण की जानेवाली मार्जनी।

स्तौभ–वि० (सं०) स्तोभ-संबंधी; खुशीके नारे लगानेवाला।

स्तौभिक–वि० (सं०) स्तोभयुक्त।

स्त्यान–वि० (सं०) राशीभूत, जमा हुआ; घनी-भूत, ठोस, कठिन; कोमल; स्निग्ध; शब्द करनेवाला। पु० घनत्व; स्निग्धता; अमृत; आलस्य, सुस्ती; अकर्मण्यता; शब्द; प्रतिध्वनि।

स्त्यानर्द्धि–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी निद्रा जिसमें मनुष्य सोता हुआ भी काम करता है (जै०)।

स्त्यायन–पु० (सं०) एकत्र होना, भीड़ लगाना।

स्त्येन–पु० (सं०) चोर; डाकू; अमृत।

स्त्यैन–पु० (सं०) चोर; डाकू। वि० थोड़ा, कम।

स्त्रियम्मन्य–वि० (सं०) अपनेको स्त्री मानने, समझनेवाला।

स्त्रींद्रिय–स्त्री० (सं०) योनि।

स्त्री–स्त्री० (सं०) औरत (शरीर रचना, स्वभाव आदिकी विशेषताओंके कारण स्त्रियोंके चार भेद ये हैं–पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी); पत्नी; मादा पशु; सफेद चींटी, दीमक; प्रियंगु; एक वृत्त। **–करण**–पु० यौन-संबंध, मैथुन। **–काम**–वि० स्त्रीका इच्छुक; कन्या संतानका अभिलाषी। पु० स्त्री या पत्नीकी इच्छा। **–कार्य**–पु० स्त्रीकी टहल। **–कितव**–पु० स्त्रियोंको बहकाने या छलनेवाला आदमी। **–कृत**–पु० यौन-संबंध; मैथुन। वि० स्त्रीका किया हुआ। **–कुसुम**–पु० रजःस्राव। **–कोश**–पु० खंजर, कटार। **–क्षीर**–पु० औरतका दूध; माताका दूध। **–क्षेत्र**–पु० नारी अर्थात् समसंख्यक (दूसरी, चौथी आदि) राशियाँ। **–ग**–वि० संभोग करनेवाला; परस्त्रीगामी। **–गमन**–पु० संभोग, रतिक्रिया। **–गवी**–स्त्री० दुधार गाय। **–गुरु**–स्त्री० दीक्षा या मंत्र देनेवाली स्त्री या पुरोहितानी। **–ग्रह**–पु० दे० 'स्त्रीक्षेत्र'। **–ग्राही(हिन्)**–वि० स्त्रीका संरक्षक बननेवाला (व्यवहार)। **–घातक,–घ्न**–वि० किसी स्त्री या पत्नीकी हत्या करनेवाला। **–घोष**–पु० तड़का, सवेरा, प्रत्यूष। **–चंचल**–वि० स्त्रियोंके पीछे लगनेवाला, लंपट। **–चरित्र**–पु० स्त्रियोंके कार्य। **–चित्तहारी(रिन्)**–वि० स्त्रियोंका मन हरण करनेवाला। पु० शोभांजन, सहिजन। **–चिह्न**–पु० योनि; स्त्री-संबंधी कोई चिह्न। **–चौर**–पु० व्यभिचारी। **–जन**–पु० स्त्रीजाति। **–जननी**–स्त्री० सिर्फ कन्याएँ उत्पन्न करनेवाली स्त्री। **–जाति**–स्त्री० स्त्रीवर्ग। **–जित**–वि० स्त्रीके वशमें रहनेवाला, जनमुरीद। **–तंत्र**–पु० (गाइनैरकी) स्त्री या स्त्रियों द्वारा परिचालित शासन-व्यवस्था। **–तानुकरोग**–पु० एक तरहका रोग। **–देहार्ध**–पु० शिव। **–द्विट्(ष्),–द्वेषी(षिन्)**–पु० स्त्रियोंसे द्वेष करनेवाला, रमणी-द्वेषी। **–धन**–पु० वह धन या संपत्ति जिसपर स्त्रीका ही अधिकार हो (जैसे दहेज आदि)। **–धर्म**–पु० स्त्रियोंका कर्त्तव्य; स्त्री-संबंधी विधान; मैथुन, संभोग; रजःस्राव। **–धर्मिणी**–स्त्री० ऋतुमती स्त्री। **–धव**–पु० पति; पुरुष। **–धूर्त**–पु० दे० 'स्त्री-कितव'। **–ध्वज**–पु० हाथी; मादा पशु। वि० स्त्रीके चिह्नोंसे युक्त। **–नाथ**–वि० स्त्री जिसकी स्वामिनी हो। **–नामा(मन्)**– वि० स्त्रीवाचक नामवाला। **–निबंधन**–पु० गृहिणीका कार्य। **–निर्जित**–वि० दे० 'स्त्रीजित'। **–पण्योपजीवी (विन्)**–पु० वेश्याएँ रखकर जीविका चलानेवाला। **–पर**–वि० कामी, लंपट। **–पुंस**–पु० जो स्त्री **–पुंयोग**–पु० स्त्री और पुरुषका संयोग। पुरुष दोनों है। **–०लक्षणा**–स्त्री० मर्दानी औरत। **–०लिंगी-**

(गिन्)–वि० स्त्री-पुरुष दोनोंके चिह्नोंसे युक्त। **–पुर**–पु० स्त्रियोंके रहनेका स्थान, अंतःपुर। **–पूर्व**–वि० दे० 'स्त्रीजित'; दे० 'स्त्री-पूर्वक'। **–पूर्वक,–पूर्वी (विन्)**–वि० जो पूर्व जन्ममें स्त्री था। **–प्रज्ञ**–वि० स्त्री जैसी बुद्धिवाला। **–प्रसंग**–पु० संभोग। **–प्रसू**–स्त्री० दे० 'स्त्री-जननी'। **–प्रिय**–वि० स्त्रियोंको प्यारा। पु० आम; अशोक। **–प्रेक्षा**–स्त्री० स्त्रियोंको दिखानेका खेल-तमाशा। **–बंध**–पु० रतिकार्य, मैथुन। **–बाध्य**–स्त्रीसे परेशान किया जानेवाला। **–बुद्धि**–स्त्री० स्त्रीकी बुद्धि। **–भय**–वि० जनाना; जनखा; नपुंसक। **–भव**–पु० नारीत्व, स्त्रीत्व। **–भूषण**–पु० केवड़ा। **–भोग**–पु० मैथुन। **–मंत्र**–पु० स्त्रीकी राय; 'स्वाहा'से अंत होनेवाला मंत्र। **–मध्य**–पु० स्त्रियोंका समाज। **–मानी (निन्)**–वि० अपनेको स्त्री माननेवाला। पु० भौत्य मनुका एक पुत्र। **–माया**–स्त्री० स्त्रियोंका छल-कपट। **–मुखप**–पु० अधरामृतका पान; वकुल; अशोक। **–यंत्र**–पु० पुरुषकी यंत्ररूप मानी जानेवाली स्त्री। **–रंजन**–पु० पान। **–रज (स्)**–पु० रजःस्राव। **–रत्न**–पु० उत्तम स्त्री; लक्ष्मी। **–राज्य**–पु० स्त्रियों द्वारा शासित एक महाभारतोक्त प्रदेश; ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार स्त्रियोंके हाथमें हो (गाइनैरकी)। **–राशि**–स्त्री० दे० 'स्त्री-क्षेत्र'। **–रोग**–पु० स्त्रियोंके विशेष रोग। **–लंपट**–वि० स्त्रीका इच्छुक, कामी। **–लक्षण** –पु० स्त्री-संबंधी कोई चिह्न। **–लिंग**–पु० जननेंद्रिय, योनि; स्त्री-बोधक लिंग (फ़ैमिनिन) (व्या०)। **–लोल**–वि० दे० 'स्त्री-लंपट'। **–लौल्य**–पु० स्त्रीकी प्राप्तिकी चाह। **–वश**–वि० स्त्री द्वारा शासित। पु० स्त्रीकी अधीनता। **–वश्य**–वि० दे० 'स्त्रीवश'। **–वार**–पु० सोम, बुध और शुक्रवार। **–वास**–पु० विमौटा। **–वास (स्)**–पु० रतिक्रियाके समय पहननेका वस्त्र। **–वाह्य**–पु० एक प्राचीन जनपद। **–विजित**–वि० दे० 'स्त्री-जित'। **–वित्त**–पु० पत्नीसे प्राप्त होनेवाला धन। **–विधेय**–वि० स्त्रीके वशमें रहनेवाला। **–वियोग**–पु० पत्नीसे पृथक् होना। **–विषय**–पु० मैथुन। **–वृत**–वि० स्त्रियोंसे घिरा हुआ, स्त्रियोंसे सेवित। **–व्यंजन**–पु० स्त्री होनेके चिह्न–स्तन आदि। **–०कृता**–वि० स्त्री० (वह कन्या) जो तरुण हो गयी हो। **–व्रण**–पु० योनि। **–व्रत**–पु० अपनी पत्नीके सिवा दूसरी स्त्रीकी कामना न करनेका व्रत, एक पत्नीव्रत। **–शेष**–वि० जिसमें केवल स्त्रियाँ बच रही हों। **–शौंड**–वि० कामी। **–संग**–पु० स्त्रियोंके साथ संपर्क; संभोग। **–संग्रहण**–पु० किसी स्त्रीका बलात् आलिंगन या भोग करना। **–संज्ञ**–वि० ऐसे नामवाला जिसका अंत स्त्रीवाचक शब्दसे होता हो। **–संभोग**–पु० मैथुन। **–संसर्ग**–पु० स्त्रियोंका संपर्क; मैथुन। **–संस्थान**–वि० स्त्रीकी आकृतिवाला। **–सख**–वि० स्त्रीसे युक्त। **–सभ**–पु० स्त्रियोंकी सभा। **–समागम**–पु० मैथुन। **–सुख**–पु० संभोग; शोभांजन। **–सेवन**–पु० संभोग, मैथुन। **–सेवा**–स्त्री० स्त्रियोंके प्रति आसक्ति। **–स्वभाव**–पु० स्त्रियोंकी प्रकृति; खोजा। **–हरण**–पु० बलात् स्त्रीका हरण कर ले जाना। **–हारी (रिन्)**–पु० स्त्रीका बलात् हरण करनेवाला पुरुष।

स्त्रीता–स्त्री०, **स्त्रीत्व**–पु० (सं०) स्त्री होनेका भाव, नारीत्व; पत्नीत्व; नारीसुलभ कोमलता, दुर्बलता आदि।

स्त्रीम्मन्य–वि० (सं०) दे० 'स्त्रियम्मन्य'।

स्त्रैण–वि० (सं०) स्त्री-संबंधी; स्त्रियोंके योग्य, नारीसुलभ; स्त्री द्वारा शासित। पु० स्त्रीत्व, नारीत्व; स्त्री-स्वभाव; नारीवर्ग; नारीसुलभ कोमलता या दौर्बल्य।

स्त्रैणकी–स्त्री० (सं०) जननेन्द्रियके रोगोंका चिकित्साशास्त्र (जैनिकॉलाजी)।

स्त्रैराजक–पु० (सं०) स्त्री-राज्यका निवासी।

स्त्र्यगार–पु० (सं०) अंतःपुर।

स्त्र्यध्यक्ष–पु० (सं०) अंतःपुरका निरीक्षक।

स्त्र्यनुज–वि० (सं०) बहनके बाद पैदा होनेवाला।

स्त्र्यभिगमन–पु० (सं०) संभोग; बलात्कार।

स्त्र्याख्या–स्त्री० (सं०) प्रियंगु लता।

स्त्र्याजीव–पु० (सं०) अपनी या दूसरी स्त्रियोंसे वेश्या-वृत्ति कराकर रोजी कमानेवाला।

स्थंडिल–पु० (सं०) अनावृत भूमि; यज्ञके लिए साफ और चौरस की हुई चौकोर जमीन; सीमा; ढेलोंका ढेर; एक ऋषि; बंजर भूमि। **–श**–वि० बिना बिस्तर भूमिपर सोनेवाला। **–शय्या**–स्त्री० अनावृत भूमिपर सोना (व्रतके कारण)। **–शायिका**–स्त्री० दे० 'स्थंडिलशय्या'। **–शायी (यिन्)**–वि०, पु० बिना बिस्तरके जमीनपर सोनेवाला। **–संवेशन**–पु० दे० 'स्थंडिलशय्या'। **–सितक**–पु० यज्ञवेदी।

स्थंडिलेय–पु० (सं०) रौद्राश्वका एक पुत्र।

स्थंडिलेशय–वि०, पु० (सं०) दे० 'स्थंडिलशायी'।

स्थ–वि० (सं०) (समासमें) ठहरा हुआ, स्थित; उपस्थित; संलग्न, रत रहनेवाला। पु० स्थल, स्थान। **–पति**–पु० राजा; शासक; शिल्पी; बढ़ई; मेमार, राज; सारथि; बृहस्पति-यज्ञ करनेवाला; अंतः-पुर-रक्षक; कुबेर; बृहस्पति। वि० मुख्य, प्रधान।

स्थकर–पु० (सं०) दे० 'स्थगर'।

स्थकित–वि० थका हुआ, क्लांत।

स्थग–वि० (सं०) छली, धूर्त; बेईमान; निर्लज्ज; लापरवाह। पु० खल, दुष्ट व्यक्ति।

स्थगणा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

स्थगन–पु० (सं०) छदन, आवृत करना, ढकना; छिपाना; अपवारण; समिति आदिकी कारवाई स्थगित करना; किसी सभा आदिका कार्य कुछ समयके लिए रोक रखना (एडजर्नमेण्ट); निलम्बन। (आ०)। **–प्रस्ताव**–विधायिका सभाओंमें कार्य-स्थगनके लिए उपस्थित किया गया प्रस्ताव (एडजर्नमेण्ट मोशन)।

स्थगर–वि० (सं०) एक गंधद्रव्य, तगर।

स्थगल–पु० दे० 'स्थगर'।

स्थगिका–स्त्री० (सं०) पानदान, पनडब्बा; अँगूठे आदिके सिरेपर बाँधनेकी एक तरहकी पट्टी; वेश्या; पान बनाकर देनेकी नौकरी।

स्थगित–वि० (सं०) ढका हुआ, आवृत; छिपाया हुआ; बंद किया हुआ (जैसे दरवाजा); अवरुद्ध, रोका हुआ; कुछ समयके लिए मुलतवी किया हुआ, रोका हुआ (एडजर्न्ड)।

स्थगी–स्त्री० (सं०) पनडब्बा।

स्थगु, स्थडु–पु० (सं०) कूबड़।

स्थपनी–स्त्री० (सं०) भौंहोंके बीचका स्थान।

स्थपुट–वि० (सं०) कूबड़वाला; विषम; ऊबड़-खाबड़; संकटग्रस्त, विपन्न; पीड़ासे नत। पु० कूबड़; विषम स्थान; आत्मा। **–गत**–वि० विषम स्थानमें रहनेवाला; कूबड़ संबंधी।

स्थपुटित–वि० (सं०) ऊबड़-खाबड़ किया हुआ, विषम बनाया हुआ।

स्थल–पु० (सं०) दृढ़ और सूखी भूमि; किनारा, कछार; धरती; स्थान; मैदान; भूभाग; ठहरनेका स्थान; ढूह; विषय (विचार आदिका); पुस्तकका अध्याय; (ग्रंथका) पाठ; तंबू; प्रासादकी छत; परिस्थिति, अवसर; मरुस्थल। **–कंद**–पु० एक पौधा, जंगली सूरन, बनओल। **–कमल**–पु०, **–कमलिनी**–स्त्री० स्थलपर होनेवाला एक पुष्प, स्थलपद्म। **–काली**–स्त्री० दुर्गाकी एक अनुचरी। **–कुमुद**–पु० करवीर। **–ग**–वि० भूमिपर रहनेवाला (जीव), स्थलचर। **–गत**–वि० सूखी धरतीपर गया या छोड़ा हुआ। **–चर,–चारी (रिन्)**–वि० जमीनपर रहनेवाला (प्राणी)। **–च्युत**–वि० किसी स्थान या पदसे गिरा या हटाया हुआ। **–ज**–वि० जमीनपर पैदा होनेवाला; सूखी जमीनपर रहनेवाला (टेरेस्ट्रिअल); स्थल-मार्गसे जानेवाले मालपर लगनेवाला (कर)। **–जा**–स्त्री० मुलेठी। **–दुर्ग**–पु० मैदानका किला। **–देवता**–पु० स्थानीय देवता। **–नलिनी**–स्त्री० दे० 'स्थलकमलिनी'। **–नीरज**–पु० स्थलपद्म। **–पत्तन**–पु० शुष्क भूमिपर स्थित नगर। **–पथ**–पु० खुश्की रास्ता। **–०भोग**–पु० उत्तम मार्गयुक्त भूभाग। **–पद्म**–पु० मानकच्चू; स्थलकमल; छत्रपत्र; तमालक। **–पद्मिनी**–स्त्री० दे० 'स्थलकमलिनी'। **–पिंडा**–स्त्री० पिंडखजूर। **–पुष्पा**–स्त्री० झंडूक नामक क्षुप। **–भंडा**–स्त्री० बनभंटा। **–मंजरी**–स्त्री० अपामार्ग। **–मर्कट**–पु० करौंदा। **–मार्ग**–पु०

खुश्की रास्ता। **–युद्ध**–पु० भूभागपर चलनेवाली लड़ाई। **–योधी(धिन्)**–पु० स्थलपर लड़नेवाला योद्धा। **–रुहा**–स्त्री० स्थलकमलिनी। **–वर्त्म(न्)**–पु० दे० 'स्थल-मार्ग'। **–विग्रह**–पु० दे० 'स्थलयुद्ध'। **–विहंग,–विहंगम**–पु० स्थलपर रहनेवाले पक्षी। **–वेतस**–पु० स्थलपर होनेवाला वेंत। **–शुद्धि**–स्त्री० भूमिकी सफाई। **–शृंगाट**–पु० गोक्षुर। **–शृंगाटक**–पु० स्त्री० गोक्षुरक। **–सीमा(मन्)**–स्त्री० देश या भूभागकी हद। **–सेना** स्त्री० पैदल सेना, जमीनपर लड़नेवाली सेना। **–स्थ**–वि० भूमिपर स्थित।

स्थलांतर–पु० (सं०) दूसरा स्थान।

स्थला–स्त्री० (सं०) सूखी जमीन; ऊँची की हुई सूखी जमीन।

स्थलारविंद–पु० (सं०) स्थलकमल।

स्थलारूढ़–वि० (सं०) जो भूमिपर उतरकर खड़ा हो (रथारूढ आदिका उलटा)।

स्थलालेख्य–पु० (सं०) किसी स्थलका रेखाचित्र (साइट प्लान)।

स्थली–स्त्री० (सं०) शुष्क भूमि; प्राकृतिक भूमि (जैसे वनकी); उपत्यका; शरीरका कोई निकला हुआ, प्रमुख भाग। **–देवता**–पु० स्थानीय देवता, ग्रामदेवता। **–शायी(यिन्)**–वि०, पु० दे० 'स्थंडिलशायी'।

स्थलीय–वि० (सं०) स्थल, भूमि-संबंधी; स्थानीय; विशेष स्थिति या विषय-संबंधी।

स्थलेजात–वि० (सं०) धरतीपर उत्पन्न होनेवाला। पु० मुलेठी।

स्थलेरुहा–स्त्री० (सं०) घीकुआर; दग्धा वृक्ष।

स्थलेशय–वि० (सं०) भूमिपर सोनेवाला। पु० ऐसा जीव (वाराह आदि)।

स्थलौका(कस्)–पु० (सं०) स्थलचारी जीव।

स्थवि–पु० (सं०) बोरा, थैला; स्वर्ग; जुलाहा; अग्नि; कोढ़ी या कोढ़ीका शरीर; चल वस्तु; फल।

स्थविका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मक्खी।

स्थविर–वि० (सं०) दृढ़, स्थिर, अचल; वृद्ध; प्राचीन; आदरणीय। पु० वृद्ध व्यक्ति; ब्रह्मा; वृद्ध भिक्षु; एक बौद्ध-संप्रदाय; शैलेय; विधारा। **–दारु**–पु० विधारा।

स्थविरता–स्त्री० (सं०) वृद्धावस्था।

स्थविरा–स्त्री० (सं०) महाश्रवणी; बूढ़ी स्त्री; गोरखमुंडी।

स्थविरायु(स्)–वि० (सं०) जो बहुत बूढ़ा हो गया हो।

स्थविष्ठ–वि० (सं०) बहुत स्थूल; बहुत बली।

स्थांडिल–वि० (सं०) व्रतके कारण अनावृत भूमिपर सोनेवाला।

स्थाई–वि० दे० 'स्थायी'।

स्थाग–पु० (सं०) शव; शिवका एक अनुचर।

स्थागर–वि० (सं०) स्थगर, तगरका बना हुआ।

स्थाणव–वि० (सं०) वृक्षके तनेसे बना या उत्पन्न।

स्थाणवीय–वि० (सं०) स्थाणु, शिव-संबंधी।

स्थाणु–वि० (सं०) दृढ़, स्थिर, अचल। पु० शिव; स्तंभ, खंभा; पेड़का शाखाओं-रहित तना; खूँटी; धूपघड़ीका काँटा; एक तरहका भाला; दीमकका बिल; जीवक नामक गंधद्रव्य; पेड़का ठूँठ; हलका एक भाग; ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक; एक प्रजापति; एक नागासुर; एक राक्षस; कोई अचल वस्तु; एक तरहका बैठनेका ढंग। **–कर्णी**–स्त्री० महेंद्रवारुणी लता। **–च्छेद**–पु० वृक्षका तना काटकर अलग करनेवाला व्यक्ति। **–तीर्थ**–पु० थानेश्वरका प्राचीन नाम। **–दिक्(श्)**–स्त्री० उत्तर-पूर्व दिशा। **–भूत**–वि० जो पेड़के ठूँठकी तरह गतिहीन हो गया हो। **–भ्रम**–पु० भ्रमवश स्थाणुको और कुछ समझ लेना। **–रोग**–पु० घोड़ेका एक रोग। **–वट**–पु० एक प्राचीन तीर्थ।

स्थाण्वीश्वर–पु० (सं०) थानेश्वरका एक शिवलिंग; थानेश्वर नामका नगर।

स्थातव्य–वि० (सं०) ठहरने योग्य, रहने योग्य।

स्थाता(तृ)–वि० (सं०) स्थित या स्थिर रहनेवाला; दृढ़, अचल।

स्थान–पु० (सं०) स्थित होने, ठहरने, रहनेकी क्रिया; टिकाव, ठहराव; स्थिर होना; स्थिति, अवस्था; जगह; पद, ओहदा; संबंध; रहनेकी जगह, घर; देश, भूभाग; नगर; अवसर; विषय; कारण; उपयुक्त अवसर; वर्णके उच्चारणकी जगह; पवित्र जगह, मंदिर आदि; वेदी; नगरस्थ प्रांगण; मृत्युके बाद कर्मानुसार प्राप्त होनेवाला लोक; आखेटमें शरीरकी एक मुद्रा; युद्धमें आक्रमणका सामना करनेकी दृढ़ता; उदासीनता; राज्यके मुख्य अंग–सेना आदि; सादृश्य; ग्रंथका अध्याय; अवकाश; गोदाम; एवज; शांतिकी स्थिति; दुर्ग; ज्ञानेंद्रिय; स्वरके स्पंदनकी मात्रा (संगीत); रूप, आकृति; अभिनयगत चरित्र; गंधर्वोंका एक राजा। **–ग्राही पदाधिकारी**–पु० (रिलीव्हिंग ऑफिसर) वह अधिकारी जो किसी अन्य अधिकारीके पदका भार ग्रहण कर उसे छुट्टी आदि लेकर कहीं जाने या अपने पदसे कुछ कालके लिए हटनेका अवसर दे। **–चंचला**–स्त्री० बर्बरी। **–चिंतक**–पु० सेनाके शिविरके लिए स्थानकी व्यवस्था करनेवाला अधिकारी। **–च्युत**–वि० स्थानभ्रष्ट, अपने स्थानसे गिरा हुआ; अपने पदसे हटाया हुआ, पदच्युत। **–त्याग**–पु० निवास-स्थानका त्याग; पदकी हानि। **–दाता(तृ)**–वि० किसीके लिए विशेष स्थानपर रहनेका निदेश करनेवाला। **–दीप्त**–वि० स्थानविशेषपर रहनेके कारण अशुभ। **–पति**–पु० स्थानका अधिकारी; विहार आदिका अध्यक्ष। **–पात**–पु० (दूसरेके) स्थानपर कब्जा करना। **–पाल**–पु० स्थान-विशेषका रक्षक या प्रधान निरीक्षक; प्रहरी, चौकीदार। **–प्रच्युत**–वि० दे० 'स्थानच्युत'। **–प्राप्ति**–स्त्री० किसी स्थान या पदका मिलना। **–बंधन**–पु० (इंटर्नमेंट) किसी व्यक्तिका आना-जाना, चलना-फिरना स्थान-विशेष तक सीमित कर दिया जाना, नजरबंदी। **–बद्ध करना**–स० क्रि० (टु इनटर्न) किसी व्यक्तिकी गति-विधि स्थान-विशेषके भीतर ही सीमित कर देना, दे० 'अंतर्वासित करना'। **–भंग**–पु० किसी स्थानकी बर्बादी या पतन। **–भूमि**–स्त्री० निवास-स्थान, महल, हवेली, मकान। **–भ्रंश**–पु० स्थान या पदकी हानि। **–भ्रष्ट**–वि० दे० 'स्थानच्युत'। **–माहात्म्य**–पु० किसी स्थानका गौरव या देवता आदिके कारण प्राप्त महत्त्व। **–मृग**–पु० कच्छप, मगर आदि जलजंतु जो स्थान-विशेषपर बार-बार आते रहते हैं। **–योग**–पु० वस्तुओंकी सुरक्षाके लिए उपयुक्त स्थान या उपाय काममें लाना। **–रक्षक**–पु० दे० 'स्थान-पाल'। **–वंचित**–वि० (अनसीटेड) दे० 'अनासीन'। **–विद्**–वि० जिसे स्थानविशेष, स्थानीय बातोंका अच्छा ज्ञान हो। **–विभाग**–पु० स्थानोंका बँटवारा, विशेष-विशेष स्थानपर रखा जाना। **–वीरासन**–पु० आसनका एक प्रकार। **–सीमन**–पु० (लोकेलाइजेशन) इधर-उधर फैले हुए कार्यों, व्यापार, उपद्रवों आदिको बटोरकर या काबूमें लाकर एक स्थानपर आबद्ध करना, सीमित करना; (उद्योगादिका) क्षेत्रविशेषके भीतर कर दिया जाना; किसीके लिए कोई स्थान निर्धारित करना या बताना। **–स्थ**–वि० एक ही स्थानपर स्थित, अचल।

स्थानक–पु० (सं०) जगह, ठौर; पद, ओहदा, मरतबा; बाण चलाते समयकी शरीरकी मुद्रा; नृत्यकी एक मुद्रा; नाटकीय व्यापारका एक विशेष स्थल; आलबाल, थाला; शराबकी सतहपर उठा हुआ फेन। **–वासी**–पु० जैनोंका एक सम्प्रदाय।

स्थानांग–पु० (सं०) जैन धर्मशास्त्रका तीसरा अंग।

स्थानांतर–पु० (सं०) भिन्न, दूसरा स्थान। **–गत**–वि० जो अन्यत्र चला गया हो।

स्थानांतरण–पु० (ट्रांसफर) किसी व्यक्ति या वस्तु, माल आदिका एक स्थानसे हटाकर किसी दूसरे स्थानपर पहुँचाया या भेजा जाना, तबादला करना।

स्थानांतरित–वि० (सं०) एक स्थानसे दूसरे स्थानपर किया हुआ; (ट्रांसफर्ड) जो एक स्थानसे हटाया जाकर दूसरे स्थानपर पहुँचाया या भेज दिया गया हो, जिसका किसी अन्य स्थानको तबादला हो गया हो।

स्थानाधिकार–पु० (सं०) देवालय आदिका निरीक्षण।

स्थानाधिपति–पु० (सं०) दे० 'स्थानपति'।

स्थानाध्यक्ष–पु० (सं०) स्थानविशेषका रक्षक या शासक।

स्थानापत्ति–स्त्री० (सं०) किसी व्यक्ति या वस्तुका स्थान ग्रहण करना; एवजमें काम करना।

स्थानापन्न–वि० (सं०) दूसरेकी जगह अस्थायी रूपसे काम करनेके लिए नियुक्त (आफ़िशिएटिंग)।

स्थानाबद्धकारी अधिनियम–पु० (पेगिंग ऐक्ट) वह अधिनियम जिसके अनुसार कुछ जातियों या वर्गोंका निवास विशेष स्थान या क्षेत्रतक ही सीमित कर दिया गया हो (जैसा कि दक्षिण अफ्रिकामें किया गया है)।

स्थानाश्रय–पु० (सं०) खड़े होनेकी जगह, आधार।

स्थानासेध–पु० (सं०) किसी व्यक्तिको किसी स्थानपर कैद करना या रोक रखना (इंटर्नमेंट)।

स्थानिक–वि० (सं०) स्थानविशेषसे संबद्ध, स्थानीय। पु० स्थानविशेषका रक्षक या शासक; देवालयका व्यवस्थापक; राजस्व-संग्राहक। **–अधिकरण**–पु० स्थानीय अधिकारियोंका वर्ग या निकाय (लोकल ऑथॉरिटी)। **–कर**–पु० स्थानीय कर (लोकल टैक्स)। **–परिषद्**–स्त्री० लोकल बोर्ड।

स्थानी(निन्)–वि० (सं०) स्थानवाला, (उच्च) पदस्थ; स्थायी; जो उपयुक्त स्थानपर हो, उपयुक्त, मौजूं। **–करण**–पु० इधर उधरसे कार्य समेटकर एक स्थानपर सीमित करना (लोकलाइजेशन)।

स्थानीय–वि० (सं०) स्थानविशेषसे संबंध रखनेवाला; स्थानविशेषके लिए उपयुक्त। पु० नगर; कसबा; आठ सौ गाँवोंके बीच स्थित दुर्ग। **–स्वशासन**–पु० (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट) देश या राज्यके नगरों, जिलों आदिको प्राप्त अपनी सड़कें बनवाने, सफाई, पानी आदिकी व्यवस्था करनेका अधिकार; वह शासन-पद्धति जिसके अनुसार नगरों, जिलों आदिको यह परिमित स्वराज्य प्राप्त हो।

स्थानीयकरण–पु० (सं०) स्थानीय बना दिया जाना, स्थानविशेषके भीतर कर दिया जाना।

स्थानेश्वर–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध तीर्थ, थानेश्वर; स्थानाध्यक्ष।

स्थापक–वि० (सं०) स्थापित करनेवाला; खड़ा करनेवाला; स्थिर करनेवाला। पु० मूर्तिकी स्थापना करनेवाला; कोई संस्था स्थापित करनेवाला; किसीके पास कुछ जमा करनेवाला; सूत्रधारका सहायक (ना०)।

स्थापत्य–पु० (सं०) अंतःपुरका रक्षक; किसी भूभागके शासकका पद; भवन-निर्माण; वास्तुविद्या। **–कला**–स्त्री० वास्तुविद्या। **–वेद**–पु० एक उपवेद, वास्तुशास्त्र।

स्थापन–पु० (सं०) खड़ा करना, स्थित करना; स्थिर करना; जमाना; स्थापित करना (संस्था आदि); किसी पदपर किसीको नियुक्त करना, बैठाना, लगाना (पोस्टिंग); निर्देशन, रंगमंचकी व्यवस्था; ध्यान; धारणा; निवासस्थान; गर्भाधान संस्कार; पुंसवन; प्रतिपादन; लटकाना; अंगोंको सशक्त करना; जीवन-वृद्धि या उसका उपाय; रक्तस्राव रोकनेका उपाय; परिभाषा; पारेकी एक क्रिया। **–निक्षेप**–पु० अर्हत्‌की प्रतिमाका पूजन। **–वृत्ति**–वि० जो शक्ति बढ़ायी जानेकी अवस्थामें न रह गया हो।

स्थापना–स्त्री० (सं०) रखने, जमाने, स्थापित करनेकी क्रिया या भाव; सँभालना; एकत्र करना; संरक्षण करना; निश्चित नियम, नियमित क्रम; प्रतिपादन; रंगमंचकी व्यवस्था, निर्देशन। **–सत्य**–पु० प्रतिमामें व्यक्ति आदिका आरोप (जै०)।

स्थापनिक–वि० (सं०) गोदाममें जमा किया हुआ।

स्थापनी–स्त्री० (सं०) पाठा।

स्थापनीय–वि० (सं०) स्थापित करने योग्य; रखने, पालन करने योग्य (कुत्ता, आदि); शक्तिवर्द्धक औषधसे उपचार करने योग्य।

स्थापयितव्य–वि० (सं०) किसी स्थानपर स्थापित करने, रखने योग्य; नियंत्रण रखने योग्य।

स्थापयिता(तृ)–वि० (सं०) स्थापित करनेवाला, संस्थापक।

स्थापित–वि० (सं०) जिसकी स्थापना की गयी हो; जमाया हुआ; कायम किया हुआ, प्रतिष्ठित किया हुआ; सुरक्षित; निर्देशित; निश्चित किया हुआ; किसी कार्यपर नियुक्त; विवाहित; व्यवस्थित; दृढ़, स्थिर।

स्थापी(पिन्)–पु० (सं०) मूर्तिका निर्माण या उसकी स्थापना करनेवाला।

स्थाप्य–वि० (सं०) स्थापित करने योग्य (मूर्ति आदि); रखे जाने योग्य; किसी पदपर नियुक्त किये जाने योग्य; किसी स्थानपर बंद किये जाने योग्य; पालने योग्य (जानवर); नियंत्रित करने योग्य। पु० धरोहर; देवप्रतिमा।

स्थाप्यापहरण, स्थाप्याहरण–पु० (सं०) अमानतकी खयानत, धरोहरकी वस्तु हड़प कर जाना।

स्थाम(न्)–पु० (सं०) शक्ति, सामर्थ्य; स्थान; घोड़ेकी हिनहिनाहट।

स्थाय–पु० (सं०) आधार, पात्र; दे० 'स्थाम'।

स्थाया–स्त्री० (सं०) धरती।

स्थायिक–वि० (सं०) टिकनेवाला, बना रहनेवाला; विश्वस्त।

स्थायिका–स्त्री० (सं०) खड़े होनेकी क्रिया।

स्थायिता–स्त्री०, **स्थायित्व**–पु० (सं०) बने रहनेका भाव; टिकाव, ठहराव; दृढ़ता, स्थिरता; नौकरी आदिपर नियमानुकूल सुरक्षित अधिकार।

स्थायी(यिन्)–वि० (सं०) स्थितियुक्त; ठहरने, टिकनेवाला, बना रहनेवाला; टिकाऊ (परमानेंट); विशेष स्थितिमें रहनेवाला; विश्वस्त; ··के रूपवाला; किसी स्थानमें रहनेवाला, अध्यवसायी। पु० गीतका वह चरण जो बार-बार गाया जाता है, टेक, ध्रुवक। **–करण**–पु० किसी वस्तु, कार्य या बातको स्थायी रूप देना; किसी पदपर किसीको स्थायी रूपसे नियुक्त करना; ऐसी आज्ञा (कन्फ़र्मेशन)। **–निधि**–स्त्री० स्थायी कोष (एण्डाउमेंट)। **–(यि)भाव**–पु० भावका एक प्रकार जो मनमें बना रहता है और परिपाक होनेपर रसावस्थामें परिणत होता है (रति, हास, क्रोध, शोक, जुगुप्सा, विस्मय, भय, उत्साह और निर्वेद)। **–समिति**–स्त्री० (स्टैंडिंग कमिटी) चुने हुए सदस्योंकी वह समिति जो अगले अधिवेशनतक सब कामोंकी व्यवस्था करती रहे; स्थायी रूपसे बनी रहकर कोई विशेष कार्य करनेके लिए नियुक्त की गयी समिति।

स्थायुक–वि० (सं०) दृढ़; स्थिर; जो ठहरनेवाला हो या जिसमें ठहरनेकी प्रवृत्ति हो; रहनेवाला (समासमें)। पुं० गाँवका मुखिया, ग्रामाध्यक्ष।

स्थाल–पु० (सं०) थाल, कटोरा, बटलोई आदि पात्र, कोई भोजनपात्र; दाँतका खोंड़रा; मसूड़ेका भीतरी भाग। **–रूप**–पु० पाक-पात्रकी आकृति।

स्थालक–पु० (सं०) पीठकी एक हड्डी।

स्थालपथ–वि० (सं०) जिसका स्थलमार्गसे आयात हुआ हो।

स्थालपथिक–वि० (सं०) स्थलमार्गसे यात्रा करनेवाला; दे० 'स्थलपथ'।

स्थालिक–पु० (सं०) मलकी दुर्गंध। वि० मलकी तरह बदबू करनेवाला।

स्थालिका–स्त्री० (सं०) एक तरहकी मक्खी।

स्थाली–स्त्री० (सं०) मिट्टीके बने हुए पाकपात्र–हंडी, कड़ाही आदि; थाली, तश्तरी; सोमरस तैयार करनेके काम आनेवाला एक तरहका पात्र; पाटला वृक्ष। **–ग्रह**–पु० पाकपात्रसे करछीभर निकाला हुआ पदार्थ। **–दरण**–पु० पात्रका भंग होना। **–द्रुम**–पु० बेलिया पीपल, नंदी वृक्ष। **–पक्व**–वि० स्थालीमें उबाला हुआ। **–पर्णी**–स्त्री० शालिपर्णी। **–पाक**–पु० होमके लिए दूधमें पकाया हुआ जौ या चावल। वि० दे० 'स्थाली-पाकीय'। **–पाकीय**–वि० स्थालीपाक नामक चरु-संबंधी। **–पुरीष**–पु० पाकपात्रमें जमा या बचा हुआ मैल या तरौंछ। **–पुलाक**–पु० स्थालीमें पकाया हुआ चावल। **–०न्याय**–पु० एक चावलकी परीक्षासे सारेका पता लग जानेकी तरह अंशके आधारपर अंशीके संबंधमें अनुमान करना। **–बिल**–पु० पाकपात्रका भीतरका हिस्सा। **–बिलीय,–बिल्य**–वि० पाकपात्रमें पकाने योग्य। **–वृक्ष**–पु० दे० 'स्थालीद्रुम'।

स्थाली(लिन्)–वि० (सं०) स्थालवाला, पात्रयुक्त।

स्थावर–वि० (सं०) गतिहीन; अचल (इम्मूवेबुल); स्थायी; निष्क्रिय; विधिबद्ध; वानस्पतिक; अचल संपत्ति-संबंधी। पु० पर्वत; कोई गतिहीन या निर्जीव पदार्थ (पत्थर, वृक्ष आदि);

स्थायित्व; अचल संपत्ति या वस्तु; धनुर्गुण; वंशांगत अस्थावर वस्तुएँ (आभूषण आदि जिन्हें वेचना उचित नहीं होता)। **–कल्प**–पु० सृष्टिसंवंधी एक विशेष कल्प (वौ०)। **–क्रयाणक**–पु० लकड़ीकी चीजें। **–गरल**–पु० एक वानस्पतिक विष। **–तीर्थ**–पु० (स्थिर जलवाला) एक प्राचीन तीर्थ। **–नाम**–पु० वह पापकर्म जिसके उदय होनेसे जीवको स्थावरकाय, स्थूल शरीर धारण करना पड़ता है (जैन०)। **–राज**–पु० हिमालय। **–०कन्या**–स्त्री० पार्वती।

स्थावराकृति–वि० (सं०) वृक्षकी आकृतिका।

स्थावरादि–पु० (सं०) वत्सनाभ नामक विष।

स्थाविर–पु० (सं०) वृद्धावस्था (७० से ९० वर्षकी अवस्था)। वि० मोटा; दृढ़। **–लगुड न्याय**–पु० लक्ष्यतक न पहुँच पानेकी स्थिति।

स्थासक–पु० (सं०) शरीरमें अंगराग, सुगंधित द्रव्य लगाना; पानी या किसी तरल पदार्थका बुलबुला; घोड़ेके साजमें लगा हुआ बुलवुलेके आकारका गहना; चंदन आदिसे बना हुआ चित्र।

स्थास्तु–पु० (सं०) शारीरिक वल।

स्थास्नु–वि० (सं०) स्थिर; अचल; स्थायी, टिकाऊ; सहनशील। पु० वृक्ष।

स्थिक–पु० (सं०) कटिप्रदेश; नितंव।

स्थित–वि० (सं०) खड़ा; ठहरा हुआ, टिका हुआ; रहता हुआ; घटित; किसी स्थानपर रखा या नियुक्त किया हुआ; किसी नियम, आदेश आदिका पालन करनेमें रत; रोका हुआ, वारित; जड़ा हुआ, जमाया हुआ; स्थिर, दृढ़; कृतसंकल्प; विहित; धीर; कर्तव्य-परायण; सच्चा, पुण्यात्मा; प्रतिज्ञाका पालन करनेवाला; प्रस्तुत; स्वीकृत; अवलंबित; आसीन। पु० चुपचाप खड़ा रहना; ठहरना, रहना; खड़ा होनेका तरीका; अध्यवसायपूर्वक सत्कर्ममें लगा रहना। **–धी**–वि० स्थिरवुद्धि, धीर। **–पाठ्य**–पु० स्त्रीका खड़ी होकर प्राकृतमें पाठ करना (ना०)। **–प्रज्ञ**–वि० जो संयमी, आत्मसंतुष्ट, धीर, स्थिरवुद्धि और निष्काम हो। **–प्रेमा(मन्)**–पु० विश्वस्त मित्र। **–वुद्धिदत्त**–पु० वुद्धविशेष। **–संविद्**–वि० प्रतिज्ञाका पालन करनेवाला।

स्थिति–स्त्री० (सं०) रहना; ठहरना; निवास; रुकना; चुपचाप खड़ा रहना; अवस्था; स्वभाव, प्रकृति; स्थायित्व; कर्तव्य-परायणता; अनुशासनका पालन; पद, ओहदा; निर्वाह; जीवनका बना रहना; (सिचुयेशन) अस्तित्ववादी दर्शनका पारिभाषिक शब्द–जो मानव जीवनको समझनेके लिए किसी मतकी अपेक्षा तात्कालिक वातावरणको महत्त्व देता है; पालनपोषण; आयु; विराम; छुटकारा; निवृत्ति; कल्याण; सामंजस्य; विधि, आदेश; जीवकी तीन अवस्थाओंमेंसे एक; किसी व्यक्ति या संस्थाकी कानूनी हालत या मर्यादा; पद, सम्मान आदिकी सूचक हालत (स्टेटस); निर्णय; गतिरोध; मर्यादा; ग्रहणको अवधि; किसी स्थानपर लगातार वने रहना; पृथ्वी; दृढ़ विश्वास; प्रथा; ठहरनेका स्थान; जड़ता, निश्चलता; रूप, आकृति; कार्यविधि; पद, मर्यादा आदि वतानेवाला सामाजिक स्थान (पोजीशन); अवसर। **–कर्ता(र्तृ)**–वि० स्थायित्व प्रदान करनेवाला। **–ज ऊर्जा**–स्त्री० (पोटेन्शल इनर्जी) किसी वस्तुकी वह ऊर्जा जो उस वस्तुकी स्थिति या विशेष दशाके कारण उसमें मौजूद हो। जैसे पृथ्वीकी सतहसे कुछ ऊँचाईपर रखी ईंटमें स्थितिज ऊर्जा मौजूद है क्योंकि यदि इसे भूमिपर नीचे गिरायें तो यह कार्य कर सकती है। **–ज्ञ**–वि० मर्यादाका खयाल रखनेवाला। **–देश**–पु० निवास-स्थान। **–पालन**–पु० स्थायित्व वनाये रखना। **–प्रद**–वि० दृढ़ता या स्थायित्व प्रदान करनेवाला। **–विपर्यय**–पु० पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतमें प्रयुक्त होनेवाला एक शब्द जो महाकाव्यों, उपन्यासों आदिमें प्रयुक्त स्थितियोंमें विपर्यय पैदा करके नवीन सांकेतिक अर्थकी विच्छित्ति पैदा करता है। **–भिद्**–वि० मर्यादा भंग करनेवाला। **–शील**–वि० सदा एक स्थितिमें रहनेवाला (स्टेटिक)। **–स्थापक**–वि० पूर्व अवस्था प्रदान करनेवाला (गुण)। **–स्थापकत्व**–पु० (इलैस्टिसिटी) (मोड़े या खींचे जानेके वाद) पुनः पूर्व अवस्था प्राप्त कर लेनेकी शक्ति या गुण, लचीलापन।

स्थितिमान्(मत्)–वि० (सं०) जिसमें दृढ़ता या धीरता हो; स्थायी; धार्मिक।

स्थिर–वि० (सं०) दृढ़; गतिहीन; अचल (स्टैवुल); स्थायी, स्थायी रूपसे एक स्थानपर टिका रहनेवाला (स्टेशनरी); शांत; धीर; जड़ा हुआ; आचारव्रती; नियत; विश्वस्त; निश्चित; कठिन, ठोस; वली; उग्र; कृतसंकल्प; कठोरहृदय। पु० देव; वृक्ष; धव; पर्वत; साँड़; शिव; कार्त्तिकेय; मोक्ष; वृष, सिंह, कुंभ और वृश्चिक राशियाँ; शनि ग्रह; एक वृत्त; एक अस्त्रमंत्र; स्कंदका एक अनुचर; ज्योतिषका एक योग; दृढ़ता। **–कर्मा(र्मन्)**–वि० अध्यवसायी। **–गंध**–वि० वहुत देरतक टिकनेवाली गंधवाला। पु० चंपक। **–गंधा**–स्त्री० पाटला; केतकी। **–गति**–पु० शनि। **–चक्र**–पु० मंजुश्री नामक जिन। **–चित्त,–चेता(तस्)**–वि० स्थिरवुद्धि। **–च्छद**–पु० भूर्जपत्र। **–च्छाय**–पु० छायातरु, सदावहार पेड़; वृक्ष। **–जिह्व**–पु० मछली। **–जीवित**–वि० जिसकी आयु लंवी रही हो। **–जीविता**–स्त्री० शाल्मली वृक्ष। **–जीवी(विन्)**–वि० दीर्घायु; कौआ। **–दंष्ट्र**–पु० सर्प; विष्णु (वाराह रूप); ध्वनि। **–धी**–वि० जिसकी वुद्धि स्थिर हो। **–पत्र**–पु० हिंताल। **–पद**–वि० वद्धमूल। **–पुष्प**–पु० चंपक; मौलसिरी। **–पुष्पी(ष्पिन्)**–पु० चंपक; वकुल; तिलपुष्पी। **–प्रतिज्ञ**–वि० दृढ़प्रतिज्ञ, अपने वचनका पालन करनेवाला। **–प्रतिवंध**–वि० दृढ़तापूर्वक प्रतिरोध करनेवाला। **–प्रतिष्ठा**–स्त्री० निश्चित निवासस्थान। **–प्रेमा(मन्)**–वि० जिसका प्रेम टिकाऊ हो। **–फला**–स्त्री० कुष्मांडी। **–वुद्धि**–वि० दृढ़चित्त। पु० एक असुर। **–मति**–स्त्री० स्थिरबुद्धि। वि० स्थिर वुद्धिवाला। **–मद**–वि० इतना नशीला कि उसका असर वना रहे; जो ऐसे नशेमें हो। पु० मयूर। **–मना(नस्)**–वि० स्थिरचित्त। **–मूल्य**–पु० किसी वस्तुका निश्चित मूल्य (फ़िक्स्ड प्राइस)। **–योनि**–पु० छायातरु, सदावहार पेड़। **–यौवन**–पु० विद्याधर; चिरस्थायी तारुण्य। **–रंगा**–स्त्री० नील। **–रागा**–स्त्री० दारुहरिद्रा। **–लोचन**–वि० स्थिर आँखोंवाला; जिसे टकटकी लग गयी हो। **–वाक्(च्)**–वि० जिसकी वातका विश्वास किया जाय। **–विक्रम**–वि० दृढ़तापूर्वक कदम वढ़ानेवाला। **–श्री**–वि० वनी रहनेवाली समृद्धिवाला। **–संगर**–वि० वातका धनी। **–संस्कार**–वि० पूर्णरूपमें संस्कृत। **–साधनक**–पु० सिंदुवार वृक्ष। **–सार**–पु० सागौन। **–सौहृद**–वि० जिसकी मैत्री स्थिर हो। पु० मैत्रीकी स्थिरता। **–स्थायी(यिन्)**–वि० दृढ़तापूर्वक ठहरने, टिकनेवाला।

स्थिरक–पु० (सं०) सागौन।

स्थिरता–स्त्री०, **स्थिरत्व**–पु० (सं०) स्थिर होनेका भाव, दृढ़ता; अचलता; कठोरता; स्थायित्व; धीरता, शांति।

स्थिरांघ्रप, स्थिरांह्रिप–पु० (सं०) हिंताल वृक्ष।

स्थिरा–स्त्री० (सं०) स्थैर्ययुक्त स्त्री; पृथ्वी; शालपर्णी; काकोली; शाल्मलि वृक्ष; वनमुद्ग; मूषाकर्णी, मासपर्णी।

स्थिराघात–वि० (सं०) आघात सहन करनेमें दृढ़; जो जल्द खोदा न जा सके।

स्थिरात्मा(त्मन्)–वि० (सं०) दृढ़चित्त।

स्थिरानुराग–पु० (सं०) सच्चा प्रेम। वि० जिसका प्रेम स्थिर हो।

स्थिरापाय–वि० (सं०) क्षयशील।

स्थिरायु(स्)–वि० (सं०) दीर्घजीवी। पु० शाल्मलि वृक्ष।

स्थिरीकरण–पु० (सं०) स्थिर करना; दृढ़ करना (स्टैबिलाइजेशन); समर्थन, पुष्टि। वि० दृढ़ करनेवाला।

स्थिरीकार–पु० (सं०) समर्थन, पुष्टि।

स्थुरी(रिन्)–पु० (सं०) दे० 'स्थौरी'।

स्थुल–पु० (सं०) एक तरहका लंबा तंवू।

स्थूण–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र; एक यक्ष; स्तंभ। **–कर्ण**–पु० एक ऋषि।

स्थूणा–स्त्री० (सं०) स्तंभ; गृहस्तंभ; थूनी; धरन; लौहप्रतिमा; निहाई; पेड़का तना; एक तरहका रोग। **–कर्ण**–पु० एक तरहका व्यूह; एक यक्ष; एक रोगग्रह; एक तरहका वाण। **–गर्त**–पु०

खंभा गाड़नेके लिए बनाया हुआ गड्ढा । **–पक्ष**–पु० एक तरहका व्यूह । **–भार**–पु० धरनका बोझ । **–राज**–पु० मुख्य स्तंभ । **–विरोहण**–पु० काष्ठस्तंभसे अंकुरका निकलना ।

स्थूणीय, स्थूण्य–वि० (सं०) स्तंभ-संबंधी ।

स्थूम–पु० (सं०) चंद्रमा; प्रकाश ।

स्थूर–पु० (सं०) साँड़; मनुष्य ।

स्थूरिका–स्त्री० (सं०) बाँझ गायका नथना ।

स्थूरी(रिन्)–पु० (सं०) भार ढोनेवाला अश्व या वैल ।

स्थूरीपृष्ठ–पु० (सं०) वह घोड़ा जो अभी सवारी करनेके काम न आया हो ।

स्थूल–वि० (सं०) बड़ा; पीन, मोटा; घना; बली; विषम, जो समतल न हो; मूर्ख, मंदबुद्धि; सुस्त; (व्याख्या या विवरण) जो बारीकी या ब्योरेके साथ न देकर मोटे तौरपर दिया गया हो (रफ़); भौतिक; सफेद (–कुमुद; –चंपक) । पु० कटहल; राशि, समूह; तंबू; कूट, पर्वतशिखर; शिवका एक अनुचर; मट्ठा; विष्णु; प्रियंगु; एक तरहका कदंब; अन्नमयकोश; शरीरकी सातवीं त्वचा; गोचर पदार्थ; ईख । **–कंगु**–पु० एक अन्न, वरक धान्य । **–कंटक**–पु० एक तरहका बबूल, जालबर्बूर । **–कंटकिका**–स्त्री० शाल्मलि वृक्ष । **–कंटफल**–पु० कटहल । **–कंटा**–स्त्री० वृहती, बनभंटा । **–कंद**–वि० बड़े कंदवाला । पु० लाल लहसुन; ओल, सूरन; बनओल; हस्तिकंद । **–कंदक**–पु० कच्चू । **–कणा**–स्त्री० स्थूलजीरक, मँगरैला । **–कर्ण**–पु० एक ऋषि । **–काय**–वि० मोटे शरीरवाला । **–काष्ठाग्नि**–स्त्री० स्कंधाग्नि । **–कुमुद**–पु० सफेद कनेर । **–केश**–पु० एक ऋषि । **–क्षेड,–क्ष्वेड**–पु० बाण । **–ग्रंथि**–पु० कुलंजन । **–ग्रीव**–वि० मोटी गरदनवाला । **–चंचु**–पु० महाचंचु नामक शाक । **–चंपक**–पु० सफेद चंपा । **–चाप**–पु० धुनकी । **–चूड**–वि० जिसके सिरपर बालके बड़े-बड़े गुच्छे हों । पु० किरात । **–जंघा**–स्त्री० नौ समिधाओंमेंसे एक । **–जिह्व**–वि० मोटी जीभवाला । पु० एक भूत । **–जीरक**–पु० मँगरैला । **–तंडुल**–पु० एक तरहका मोटा चावल । **–ताल**–पु० हिंताल । **–तिंदुक**–पु० आबनूस । **–तिक्ता**–स्त्री० दारुहलदी । **–तोमरी(रिन्)**–वि० मोटे बरछेवाला । **–त्वचा**–स्त्री० काश्मरी, गंभारी । **–दंड**–पु० एक तरहका बड़ा नरसल, देवनल । **–दर्भ**–पु० मूंज । **–दर्शक(यंत्र)**–पु० सूक्ष्मदर्शक यंत्र (सूक्ष्मको स्थूल रूप देनेवाला) । **–दला**–स्त्री० घृतकुमारी । **–देही(हिन्)**–वि० स्थूल शरीरवाला । **–धी**–वि० मूर्ख, मंदबुद्धि । **–नाल**–पु० देवनल, स्थूलदंड । **–नास,–नासिक**–पु० सूअर । वि० लम्बी नाकवाला । **–नील**–पु० वाज पक्षी । **–पट**–पु० मोटा कपड़ा । वि० मोटे कपड़े धारण करनेवाला । **–पट्ट**–पु० कपास; मोटा कपड़ा । **–पट्टाक**–पु० मोटा वस्त्र । **–पत्र**–पु० दौना; छतिवन । **–पर्णी**–स्त्री० छतिवन । **–पाद**–वि० मोटे या सूजे हुए पैरोंवाला । पु० हाथी; श्लीपद रोगसे ग्रस्त व्यक्ति । **–पिंडा**–स्त्री० पिंडखजूर । **–पुष्प**–पु० वक वृक्ष; झंटुक क्षुप, गुलमखमल । **–पुष्पा**–स्त्री० पर्वतजात अपराजिता । **–पुष्पी**–स्त्री० यवतिक्ता । **–प्रपंच**–पु० सृष्टि, विश्व । **–प्रियंगु**–पु० चेना धान्य । **–फल**–पु० शाल्मलि वृक्ष; बड़ा नीबू; लेखे आदिका मोटे तौरपर निकाला हुआ फल । **–फला**–स्त्री० शणपुष्पी; शाल्मलि । **–बुद्धि**–वि० मंदबुद्धि, मूर्ख । **–भद्र**–पु० श्रुतकेवलियोंके छः भेदोंमेंसे एक (जै०) । **–भुज**–पु० एक विद्याधर । **–भूत**–पु० आकाशादि पंच तत्त्व । **–मंजरी**–स्त्री० अपामार्ग । **–मध्य**–वि० जो बीचमें मोटा हो । **–मरिच**–स्त्री० कबाबचीनी, कक्कोल । **–मान**–पु० मोटामोटी हिसाब । **–मूल**–पु० एक एक तरहकी मूली । **–रोग**–पु० मोटापेका रोग । **–रोमा(मन्)**–वि० मोटे बालोंवाला । **–लक्ष,–लक्ष्य**–वि० उदार; दानी; कृतज्ञ; बुद्धिमान्, विद्वान्; लाभहानि दोनोंका ध्यान रखनेवाला; लापरवाहीसे निशाना लगानेवाला । **–लक्षिता**–स्त्री० उदारता; पांडित्य । **–वर्त्मकृत्**–पु० ब्राह्मणयष्टिका, भारंगी । **–वल्कल** –पु० रक्त लोध्र । **–वालुका**–स्त्री० एक नदी । **–विषय**–पु० भौतिक पदार्थ । **–वृक्षफल**–पु० मदनफल । **–वैदेही**–स्त्री० गजपिप्पली । **–शंखा**–स्त्री० बड़ी योनिवाली स्त्री । **–शर**–पु० एक तरहका नरसल, रामशर । **–शरीर**–वि० पंचतत्त्वनिर्मित (हाडमांसका) शरीर । वि० बड़े शरीरवाला । **–शल्क**–वि० बड़ी चोइँयोंवाला (जैसे मत्स्य) । **–शाकिनी**–स्त्री० एक शाक । **–शाट,–शाटक**–पु० मोटा वस्त्र । **–शाटिका,–शाटी**–स्त्री० दे० 'स्थूलशाट' । **–शालि**–पु० एक मोटा धान । **–शिंबी**–स्त्री० सफेद सेम । **–शिर(स्)**–पु० बड़ा सिर या चोटी । **–शिरा(रस्)**–पु० एक ऋषि; एक राक्षस; एक यक्ष । वि० बड़े शिरवाला । **–शीर्षिका**–स्त्री० क्षुद्रपिपीलिका । **–शूरण**–पु० एक तरहका बड़ा ओल । **–शोफ**–वि० बहुत सूजा हुआ । **–षट्पद**–पु० बर्रे । **–सायक**–पु० एक तरहका नरसल, रामशर । **–सिक्त**–पु० एक तीर्थ । **–सूरण**–पु० दे० 'स्थूलशूरण' । **–स्कंध**–पु० लकुच, बड़हल । **–हस्त**–पु० हाथीकी सूँड़ । वि० मोटी भुजावाला ।

स्थूलक–पु० (सं०) एक तृण । वि० मोटा, स्थूल ।

स्थूलका–स्त्री० (सं०) आँबाहलदी ।

स्थूलता–स्त्री०, **स्थूलत्व**–पु० (सं०) मोटापन; बड़ा होनेका भाव; मूर्खता ।

स्थूलांग–पु० (सं०) एक तरहका चावल । वि० बड़े शरीरवाला (जैसे मत्स्य) ।

स्थूलांत्र–पु० (सं०) बड़ी आँत ।

स्थूलांशा–स्त्री० (सं०) गंधपत्रा ।

स्थूला–स्त्री० (सं०) गजपिप्पली; एर्वारु; बड़ी इलायची; सौंफ; मुनक्का; कपास: सोआका साग; ककड़ी ।

स्थूलाक्ष–पु० (सं०) एक ऋषि; एक राक्षस ।

स्थूलाक्षा–स्त्री० (सं०) वेणुयष्टि, बाँसका डंडा ।

स्थूलाम्र–पु० (सं०) कलमी आम ।

स्थूलास्य–पु० (सं०) साँप ।

स्थूली(लिन्)–पु० (सं०) ऊँट ।

स्थूलेच्छ–वि० (सं०) जिसकी इच्छाएँ बहुत बढ़ी हुई हों ।

स्थूलैरंड–पु० (सं०) बड़ा एरंड ।

स्थूलैला–स्त्री० (सं०) बड़ी इलायची ।

स्थूलोच्चय–पु० (सं०) मुँहासा; हाथीकी मध्यम गति; पर्वतखंड जो गिरकर ऊबड़-खाबड़ बाँध जैसा बन गया हो, गंडोपल; अपूर्णता; हाथीके दाँतका रंध्र ।

स्थूलोदर–वि० (सं०) तोंदवाला ।

स्थेमा(मन्)–पु० (सं०) दृढ़ता, स्थिरता ।

स्थेय–वि० (सं०) रखे, स्थापित किये जाने योग्य; निर्णीत, निश्चित किये जाने योग्य । पु० निर्णायक, पंच; पुरोहित ।

स्थैर्य–पु० (सं०) स्थिरता; दृढ़ता; धैर्य; शांति; घनता, कठोरता; स्थायित्व । **–कर,–कृत्**–वि० स्थिरता, दृढ़ता प्रदान करनेवाला ।

स्थोरा–स्त्री० (सं०) जहाजपर लदा हुआ माल ।

स्थोरी(रिन्)–पु० (सं०) दे० 'स्थौरी' ।

स्थौणेय, स्थौणेयक–पु० (सं०) ग्रंथिपर्ण नामक गंधद्रव्य; गाजर ।

स्थौर–पु० (सं०) दृढ़ता; शक्ति, बल; घोड़े, गधे आदिपर लादनेका पूरा बोझ ।

स्थौरी(रिन्)–पु० (सं०) भारवाहक अश्व या बैल; मजबूत घोड़ा ।

स्थौललक्ष्य–पु० (सं०) उदारता ।

स्थौल्य–पु० (सं०) स्थूलता; भारीपन; बुद्धिकी मंदता ।

स्नपन–पु० (सं०) नहलाना । वि० स्नान करानेवाला; स्नानके काममें आनेवाला ।

स्नपित–वि० (सं०) नहलाया हुआ, स्नान कराया हुआ ।

स्नय–पु० (सं०) स्नान ।

स्नव–पु० (सं०) क्षरण, चूना, रिसना ।

स्नसा–स्त्री० (सं०) स्नायु; पेशी ।

स्ना–वि० (सं०) (समासमें) स्नात (जैसे घृतस्ना) ।

स्नात–वि० (सं०) नहाया हुआ । पु० वह जिसका वेदाध्ययन पूरा हो गया हो, स्नातक । **–वस्य**–वि० स्नानके बाद पहना जानेवाला । **–व्रत**–वि० दे० 'स्नातक व्रती' ।

स्नातक–पु० (सं०) वह ब्राह्मण जो वेदाध्ययन समाप्त करनेके अनंतर स्नान कर गृहस्थाश्रममें प्रवेश करे; वह ब्राह्मण जो किसी

धार्मिक उद्देश्यसे भिक्षु वन गया हो; किसी विश्वविद्यालयकी शिक्षा समाप्त कर उपाधि प्राप्त करनेवाला व्यक्ति। **–व्रत**–पु० स्नातकके कर्तव्य। वि० दे० 'स्नातकव्रती'। **–व्रती(तिन्)**–वि० स्नातकके कर्तव्योंका पालन करनेवाला।

स्नातकोत्तर-अध्ययन–पु० (पोस्ट ग्रेजुएट स्टडी) स्नातक (ग्रेजुएट) हो जानेके वाद किया जाने, जारी रखा जानेवाला अध्ययन।

स्नातव्य–वि० (सं०) स्नान कराने योग्य।

स्नान–पु० (सं०) जलसे सारे शरीरको धोना; धूप, वायु आदि सेवन; जलकी सहायतासे धोकर शुद्ध करना; मूर्तिको नहलाना; नहानेके काम आनेवाला पदार्थ (जल आदि)। **–कलश,–कुंभ**–पु० वह घड़ा जिसमें नहानेका पानी हो। **–गृह**–पु० नहानेका कमरा। **–घर**–पु० (हिं०) वह कोठरी या कोठरीनुमा स्थान जहाँ स्नान करनेकी व्यवस्था हो (वाथरूम, वेंदिगप्लेस)। **–तीर्थ**–पु० वह स्थान जहाँ धार्मिक स्नान किया जाय। **–तृण**–पु० कुश। **–द्रोणी**–स्त्री० नहानेका पात्र, 'टव'। **–यात्रा**–स्त्री० ज्येष्ठ पूर्णिमाको होनेवाली विष्णु (जगन्नाथ)की जलयात्रा। **–वस्त्र,–वास(स्)**–पु० स्नानका वस्त्र (वेंदिग सूट), गीला वस्त्र। **–वेश्म(न्)**–पु० स्नानगृह। **–शाला**–स्त्री० स्नानागार। **–शील**–वि० स्नानप्रेमी (विशेषकर तीर्थमें स्नान करनेका)।

स्नानांबु–पु० (सं०) स्नान करनेका जल।

स्नानागार–पु० (सं०) दे० 'स्नानगृह'।

स्नानी(निन्)–वि० (सं०) स्नान करनेवाला।

स्नानीय–वि० (सं०) नहाने योग्य; जिससे नहाया जा सके। पु० स्नानमें काम आनेवाली चीज। **–वस्त्र**–पु० नहानेका कपड़ा।

स्नानोदक–पु० (सं०) दे० 'स्नानांबु'।

स्नापक–पु० (सं०) स्नान करानेवाला सेवक।

स्नापन–पु० (सं०) नहलाना।

स्नापित–वि० (सं०) नहलाया हुआ।

स्नायविक–वि० (सं०) स्नायु-संवंधी (नर्व्हस)।

स्नायवीय–पु० (सं०) कर्मेंद्रिय (हाथ, आँख आदि)।

स्नायी(यिन्)–वि० (सं०) स्नान करनेवाला।

स्नायु–स्त्री० (सं०) रग, नाड़ी; पेशी; धनुष्की डोरी। पु० एक रोग जिसमें अंगोंके छोरपर चर्मस्फोट होता है। **–पाश,–बंध**–पु० प्रत्यंचा। **–मंडल,–संस्थान**–पु० (नर्व्हस सिस्टम) सुषुम्ना तथा उससे संवद्ध मस्तिष्ककी और शरीरके अन्य भागोंकी नाड़ियोंका समूह, नाड़ी-संस्थान। **–मर्म(न्)**–सु० स्नायुओंका संधिस्थल। **–रज्जु**–पु० शरीर। **–रोग**–पु० नहरुआ रोग। **–शूल**–पु० स्नायुओंमें होनेवाली वेदना। **–स्पंद**–पु० नब्जका चलना।

स्नायुक–पु० (सं०) एक तरहका परोपजीवी कीट; स्नायु नामक रोग, नहरुआ।

स्नाय्वर्म(न्)–पु० (सं०) आँखका एक रोग जिसमें सफेद भागपर अर्बुद निकल आता है।

स्नाव–(सं०) नस, रग; पेशी।

स्निग्ध–वि० (सं०) तेल लगा हुआ; लसदार, चिपकनेवाला; चिकना; आर्द्र; ठंढा करनेवाला; तैलीय पदार्थसे उपचरित; (ऑयली) चिकनेपनके कारण मशीनके पुर्जोंको गति देनेमें सहायक (लूब्रीकेटिंग); अनुरक्त; दयालु; मृदुल; सुंदर, प्रिय; घना; स्थिर (जैसे दृष्टि)। पु० मित्र, प्रेमी; रक्त; एरंड; सरल वृक्ष; तेल; मोम; प्रकाश, कांति; घनता। **–कंदा**–स्त्री० कंदली नामक पौधा। **–च्छद**–पु० वटवृक्ष। **–च्छदा**–स्त्री० वेरका पेड़। **–जन**–पु० प्रिय व्यक्ति। **–जीरक**–पु० ईसवगोल। **–तंडुल**–पु० साठी चावल। **–त्याग**–पु० प्रिय व्यक्तिका त्याग। **–दल**–पु० गुच्छकरंज। **–दारु**–पु० सरल वृक्ष; देवदारु। **–दृष्टि**–वि० टकटकी लगाकर देखनेवाला। **–निर्मल**–पु० काँसा। **–पत्रक**–पु० गुच्छकरंज; आवर्तकी; घृतकरंज; गजर तृण। **–पत्रा**–स्त्री० वेर; पालक; काश्मरी। **–पर्णी**–स्त्री० मूर्वा; पृश्निपर्णी। **–पिंडीतक**–पु० एक तरहका मदन वृक्ष। **–फला**–स्त्री० नाकुली। **–बीज**–पु० ईसवगोल। **–मज्जक**–पु० बादाम। **–मुद्ग**–पु० एक तरहकी मूंग। **–राजि**–पु० एक तरहका साँप। **–वर्ण**–वि० चमकीले रंगका।

स्निग्धा–स्त्री० (सं०) मज्जा; मेदा; विकंकत।

स्नीढ–वि० (सं०) कोमल, मृदुल; अनुरक्त।

स्नीहा–स्त्री० (सं०) नाकका मल, रेंट।

स्नु–स्त्री० (सं०) दे० 'स्नायु'।

स्नुक्(ह्)–स्त्री० (सं०) स्नुही, थूहड़। वि० वमन करनेवाला। **–च्छद**–पु० क्षीरकंचुकी वृक्ष।

स्नुत–वि० (सं०) क्षरित, रिसा हुआ।

स्नुषा–स्त्री० (सं०) पुत्रवधू; थूहड़। **–ग**–वि० पुत्रवधूसे अवैध संवंध रखनेवाला।

स्नुहा, स्नुहि, स्नुही–स्त्री० (सं०) थूहड़। **–क्षीर**–पु० थूहड़का दूध। **–बीज**–पु० थूहड़का बीज।

स्नेय–वि० (सं०) नहलाने योग्य।

स्नेह–पु० (सं०) प्रेम, मुहव्वत; कोमलता; दयालुता; तेल; मलाई आदि चिकने पदार्थ; वसा, भेजा आदि शरीरके रसवाले पदार्थ; आर्द्रता; एक राग। **–कर**–पु० शाल वृक्ष। **-कर्ता(र्तृ)**–वि० प्रेम, प्यार करनेवाला। **–कुंभ,–घट**–पु० तेल रखनेका भाँड़ा आदि। **–केसरी(रिन्)**–पु० एरंड। **–गर्भ**–पु० तिल। **–गुणित**–वि० प्रेमविशिष्ट। **–गुरु**–वि० प्रेमके कारण जिसका दिल भारी हो। **–घ्नी**–स्त्री० एक पौधा। **–च्छेद**–पु० प्रेममें अंतर पड़ना। **–द्विट्(ष्)**–वि० तेल न पसंद करनेवाला। **–पक्व**–वि० तेलमें तला हुआ। **–पात्र**–पु० प्रेमका पात्र, प्यारा व्यक्ति; तेलका वरतन। **–पान**–पु० दवाके रूपमें तेल पीना। **–पिंडीतक**–पु० मैनफल। **–पूर**–पु० तिल। **–प्रवृत्ति**–स्त्री० प्रेम। **–प्रसर,–प्रस्रव**–पु० प्रेमका प्रवाह। **–प्रिय**–पु० दीपक। वि० जिसे तेल अधिक प्रिय हो। **–फल**–पु० तिल। **–बंध**–पु० प्रेमका बंधन। **–बद्ध**–वि० प्रेमसूत्रमें बँधा हुआ। **–बीज**–पु० चिरौंजी। **–भंग**–पु० प्रेमका भंग हो जाना। **–भांड**–पु० तेल रखनेका वरतन। **–भू**–पु० श्लेष्मा। **–भूमि**–स्त्री० तेल, वसा आदि देनेवाले पदार्थ; प्रेमकी वस्तु। **–मापक**–पु० चिकनाई नापनेका यंत्र (बुटाइरो मीटर)। **–मीन**–स्त्री० कॉड मछली। **–मुख्य**–पु० तेल। **–रंग**–पु० तिल। **–रसन**–पु० मुख। **–रेकभू**–पु० चंद्रमा। **–वर**–पु० वसा। **–र्वात**–स्त्री० घोड़ोंका एक रोग। **–वस्ति**–स्त्री० तेलका एनिमा। **–विद्ध**–पु० देवदारु। **–विमर्दित**–वि० जिसके शरीरमें तेल मला गया हो। **–व्यक्ति**–स्त्री० प्रेम प्रकट करना। **–संभाष**–पु० प्रेमालाप। **–सम्मेलन**–पु० (सोशल गैदरिंग) दे० 'प्रीति-सम्मेलन'। **–संस्कृत**–वि० तेल या घीमें वनाया हुआ। **–सार**–पु० मज्जा। वि० जिसका मुख्य अंग तेल हो।

स्नेहक–वि० (सं०) प्रेम करनेवाला, प्रेमी; दयालु; (लूब्रीकैंट) वह तेल या तैलाक्त पदार्थ जिसके प्रयोगसे मशीनों, कल-पुरजों आदिमें चिकनापन लाकर उनके संचालनमें सहूलियत पैदा की जाती है।

स्नेहन–पु० (सं०) तैलमर्दन; तैलयुक्त होना; उबटन; चिकनाहट; श्लेष्मा; मक्खन; प्रेमाविष्ट होना; शिव। वि० तैलमर्दन करनेवाला; चिकनापन लानेवाला; नष्ट करनेवाला।

स्नेहनीय–वि० (सं०) तेल लगाने योग्य; प्रेम करने योग्य।

स्नेहल–वि० (सं०) प्रेमपूर्ण; कोमल हृदय।

स्नेहवती–स्त्री० (सं०) मेदा नामक ओषधि।

स्नेहांकन–पु० (सं०) प्रेमका चिह्न।

स्नेहा(हन्)–पु० (सं०) मित्र; चंद्रमा;. एक रोग।

स्नेहाकुल–वि० (सं०) प्रेमसे विह्वल।

स्नेहाकूट–पु० (सं०) प्रेमका भाव या अनुभूति।

स्नेहाक्त–वि० (सं०) तैललिप्त; चिकनाया हुआ।

स्नेहाश, स्नेहाशय–पु० (सं०) दीपक।

स्नेहित–वि० (सं०) जिससे प्रेम किया गया हो; दयालु; प्रेमी; प्यार किया हुआ; तेल लगाया हुआ। पु० मित्र; प्रिय व्यक्ति।

स्नेही(हिन्)–वि० (सं०) प्रेमयुक्त; प्रेमी; तैलयुक्त। पु० मित्र; तेल मलनेवाला; लेप आदि करनेवाला चिकित्सक; चित्रकार।

स्नेहु–पु० (सं०) एक तरहका रोग; चंद्रमा।

स्नेहोत्तम–पु० (सं०) तिलका तेल।

स्नेह्य–वि० (सं०) स्नेह, प्रेम करने योग्य; तेल लगाने, चिकनाने योग्य।

स्नैग्ध्य–पु० (सं०) चिकनापन, तैलयुक्तता; कोमलता; अनुरागिता।

स्नैहिक–वि० (सं०) चिकना; रोगनदार।

स्पंज–पु० (अं०) बहुतसे छेदों और रेशोंवाला एक मुलायम पदार्थ जो पानी ग्रहण कर लेता और दवानेपर निकाल देता है, मुरदावादल।

स्पंद–पु० (सं०) कंपन; प्रस्फुरण, फड़कना; गति; (पल्स) तरंगोंका समूह जो नियमित समय अन्तरालपर बार-बार प्रेषित किया जाय। जैसे रेडार यंत्रमें लघु रेडियो तरंगोंका स्पंद निश्चित दिशामें प्रेषित किया जाता है।

स्पंदन–पु० (सं०) कंपन; हिलना; विस्फुरण, फड़कना (पल्सेशन); अर्भकमें जीवका स्फुरण; तीव्र गति; एक वृक्ष।

स्पंदित–वि० (सं०) कंपायमान, काँपता हुआ; गतिशील किया हुआ; गया हुआ। पु० स्पंदन, फड़कन; कंपन।

स्पंदिनी–स्त्री० (सं०) ऋतुमती स्त्री; बराबर दूध देनेवाली गाय।

स्पंदी(दिन्)–वि० (सं०) कंपन, स्फुरणयुक्त, हिलने या काँपनेवाला।

स्पंदीलिका–स्त्री० (सं०) झूलते हुए आगे-पीछे जानेकी क्रिया (जैसे झूलेपर)।

स्पर–पु० (सं०) एक साम।

स्परिता(तृ)–वि० (सं०) कष्ट, दुःख देनेवाला (शत्रु, रोगादि)।

स्पर्द्ध, स्पर्ध–वि० (सं०) होड़ करनेवाला; ईर्ष्या करनेवाला।

स्पर्द्धन, स्पर्धन–पु० (सं०) होड़; ईर्ष्या।

स्पर्द्धनीय, स्पर्धनीय–वि० (सं०) स्पर्द्धा करने योग्य; अभिलषणीय।

स्पर्द्धा, स्पर्धा–स्त्री० (सं०) होड़, प्रतियोगिता; ईर्ष्या; साहस, हौसला, अभिलाषा,··की बराबरी; चुनौती; अच्छी बातमें बराबरी करनेकी इच्छा (एम्यूलेशन)।

स्पर्द्धी(र्द्धिन्), स्पर्धी(र्धिन्)–वि० (सं०) होड़, प्रतियोगिता करनेवाला; ईर्ष्यालु; घमंडी।

स्पर्श–पु० (सं०) छूना, संपर्क, संघर्ष, मुकाबला; संपर्क-ज्ञान; त्वचाका विषय; छूनेसे होनेवाला ज्ञान (ताप आदिका); प्रभाव; रोग; 'क्'से 'म्'तकके वर्ण; दान; भेंट; वायु; आकाश; एक रतिबंध; जासूस; ग्रहणकी छायाका आरंभ। **–कोण**–पु० परिधिके किसी बिंदुपर किसी सीधी रेखाका संपर्क होनेसे बननेवाला कोण। **–क्लिष्ट**–वि० जिसका स्पर्श कष्टदायक हो। **–ग्राह्य**–वि० जिसे स्पर्श द्वारा जाना समझा जाय (टैक्टाइल)। **–क्षम**–वि० जिसका स्पर्श किया जा सके, स्पर्शयोग्य। **–ज**–वि० स्पर्शसे उत्पन्न होनेवाला। **–जन्य**–वि० दे० 'स्पर्शज'। **–तन्मात्र**–पु० वह तत्त्व जिसका स्पर्शसे ज्ञान हो। **–दिशा**–स्त्री० ग्रहणमें छायाके स्पर्शकी दिशा। **–द्वेष**–पु० स्पर्शसे शीघ्र प्रभावित होनेका गुण। **–मणि**–पु० पारस पत्थर। **–०प्रभव**–पु० सोना। **–रसिक**–वि० कामुक। **–रेखा**–स्त्री० परिधिके किसी बिंदुको छूनेवाली रेखा, (टैनजेंट) वृत्तकी परिधिको एक बिंदुपर स्पर्श करती हुई बाहर ही बाहर एक ओरसे दूसरी ओर जानेवाली सरल रेखा। **–लज्जा**–स्त्री० लज्जालु। **–वज्रा**–स्त्री० एक बौद्ध देवी। **–वर्ग**–पु० 'क्'से 'म्'तकके वर्ण। **–विहार**–पु० सुविधाजनक, सुखद अस्तित्व। **–वेद्य**–वि० स्पर्शके द्वारा जिसका ज्ञान हो। **–शुद्धा**–स्त्री० शतमूली। **–संकोच**–पु० लज्जालु। **–संकोची(चिन्)**–पु० पिंडालू। **–संचारी(रिन्)**–वि० संक्रामक। पु० शूक रोगका एक भेद। **–सुख**–वि० जिसका स्पर्श आनंददायक हो। **–स्नान**–पु० ग्रहण आरंभ होनेके समयका स्नान। **–स्पंद**–पु० मेढक–। **–हानि**–स्त्री० त्वचाके स्पर्शसे संवेदन ग्रहण करनेकी शक्तिका नष्ट हो जाना।

स्पर्शक–वि० (सं०) छूनेवाला; अनुभव करनेवाला।

स्पर्शन–वि० (सं०) छूनेवाला; हाथ लगानेवाला; प्रभावित करनेवाला। पु० छूनेकी क्रिया; स्पर्शजन्य संवेदन; स्पर्शेंद्रिय; दान; वायु।

स्पर्शनक–पु० (सं०) वह जो छूनेका काम करे, त्वचा।

स्पर्शना–स्त्री० (सं०) स्पर्श-शक्ति।

स्पर्शनीय–वि० (सं०) छूने योग्य।

स्पर्शनेंद्रिय–स्त्री० (सं०) स्पर्शकी इंद्रिय, त्वचा।

स्पर्शवान्(वत्)–वि० (सं०) जिसका स्पर्श हो सके; कोमल; छूनेमें आनंददायक।

स्पर्शा–स्त्री० (सं०) कुलटा, पुंश्चली।

स्पर्शाक्रामक–वि० (सं०) संक्रामक।

स्पर्शाज्ञ–वि० (सं०) स्पर्शज्ञानसे रहित, संवेदन-शून्य।

स्पर्शानंदा–स्त्री० (सं०) अप्सरा।

स्पर्शासन–पु० (सं०) एक देववर्ग।

स्पर्शासह, स्पर्शासहिष्णु–वि० (सं०) जो स्पर्श सहन न कर सके।

स्पर्शास्पर्श–पु० (सं०) छूतछात, छूने या न छूनेका विचार।

स्पर्शिक–वि० (सं०) जिसका स्पर्शसे ज्ञान हो। पु० वायु।

स्पर्शिता(तृ)–वि० (सं०) स्पर्श करनेवाला।

स्पर्शी(र्शिन्)–वि० (सं०) छूनेवाला, प्रवेश करनेवाला। (समासांतमें)।

स्पर्शेंद्रिय–स्त्री० (सं०) स्पर्शका ज्ञान या यह ज्ञान प्राप्त करनेवाली इंद्रिय; त्वचा।

स्पर्शोपल–पु० (सं०) पारस पत्थर।

स्पर्ष्टा(र्ष्टृ)–पु० (सं०) शरीरकी अस्तव्यस्तता, रोग। वि० स्पर्श करनेवाला।

स्पश–पु० (सं०) गुप्तचर, जासूस; युद्ध; पुरस्कारके उद्देश्यसे जंगली जानवरोंसे लड़नेवाला; ऐसा युद्ध।

स्पष्ट–वि० (सं०) जो साफ-साफ देखा जा सके; व्यक्त; प्रत्यक्ष; बोधगम्य; सरल, सीधा (वक्रका उलटा); वास्तविक, सत्य; सही; विकसित; साफ-साफ देखनेवाला। **–कथन**–पु० कथनका एक प्रकार जिसमें कथित वाक्य ज्योंका त्यों कहा जाता है (डाइरेक्ट स्पीच)। **–गर्भा**–स्त्री० वह स्त्री जिसके गर्भके चिह्न साफ देख पड़ें। **–तारक**–वि० साफ दिखाई देनेवाले तारोंवाला (आकाश)। **–प्रतिपत्ति**–स्त्री० स्पष्ट ज्ञान या निश्चय। **–भाषी(षिन्)**, **–वक्ता(क्तृ)**, **–वादी (दिन्)** –वि० साफ-साफ कहनेवाला।

स्पष्टतया–अ० (सं०) स्पष्टरूपसे; साफ-साफ।

स्पष्टाक्षर–वि० (सं०) जिसका अक्षरशः स्पष्ट उच्चारण किया गया हो।

स्पष्टार्थ–वि० (सं०) जिसका अर्थ साफ, सुबोध हो। पु० साफ अर्थ।

स्पष्टीकरण–पु० (सं०) किसी बातको सुबोध करके समझाना, स्पष्ट करना; विस्तृत व्याख्या करना।

स्पष्टीकृत–वि० (सं०) स्पष्ट किया हुआ।

स्पार्शन–वि० (सं०) जिसका स्पर्शसे ज्ञान हो।

स्पिरिट–स्त्री० (अं०) आत्मा; प्रेतात्मा; सूक्ष्म शरीर; साहस, जीवशक्ति; सुरासार, उग्र सुरा।

स्पीकर–पु० (अं०) वक्ता; असेंबली, कौंसिलका अध्यक्ष, व्यवस्थापक-सभाका अध्यक्ष; लार्ड-सभाका अध्यक्ष (ब्रिटेन)।

स्पीच–स्त्री० (अं०) कथन, भाषण; व्याख्यान; प्रवचन; वाक्शक्ति।

स्पीड–स्त्री० (अं०) गति, चाल।

स्पीशीज–स्त्री० (अं०) ऐसे प्राणियोंका समूह, जिसके सभी प्राणी गुण, लक्षण, स्वभाव आदिमें एक दूसरेके साथ बहुत अधिक समानता रखते हों; उनमें अन्तःप्रजनन हो सकता हो; तथा वे सभी एक ही पूर्वजकी सन्तति माने जा सकते हों।

स्पृक्का–स्त्री० (सं०) दे० 'पृक्का'।

स्पृत–वि० (सं०) रक्षित; प्राप्त; विजित।

स्पृत्–वि० (सं०) अपनेको किसी चीजसे मुक्त करनेवाला, हटानेवाला; प्राप्त करनेवाला। स्त्री० एक तरहकी ईंट।

स्पृश–वि० (सं०) छूनेवाला; पहुँचनेवाला। पु० स्पर्श; संपर्क।

स्पृशा–स्त्री० (सं०) भुजंगघातिनी।

स्पृशी–स्त्री० (सं०) कंटकारी।

स्पृश्य–वि० (सं०) छूने लायक; अधिकृत करने योग्य।

स्पृश्या–स्त्री० (सं०) नौ समिधाओंमेंसे एक।

स्पृष्ट–वि० (सं०) छुआ हुआ; ⋯से प्रभावित; छूकर नापाक किया हुआ; उच्चारणांगोंके पूर्ण स्पर्शसे बना हुआ। पु० 'क्'से 'म्'तकके वर्णोंके उच्चारणमें होनेवाला आभ्यंतर प्रयत्न। **–मैथुन**–वि० मैथुनके कारण जिसकी पवित्रता नष्ट हो गयी हो। **–रोदनिका**–स्त्री० लजालू।

स्पृष्टक–पु० (सं०) आलिंगनका एक प्रकार।

स्पृष्टास्पृष्ट–पु०, **स्पृष्टास्पृष्टि**–स्त्री० (सं०) छुआछूत, स्पर्शास्पर्श, परस्पर स्पर्शन।

स्पृष्टि–स्त्री० (सं०) स्पर्श; संपर्क।

स्पृष्टिका–स्त्री० (सं०) शरीरके विभिन्न अंगोंका स्पर्श (शपथ-ग्रहणमें)।

स्पृष्टी(ष्टिन्)–वि० (सं०) स्पर्श करनेवाला, जिसने स्पर्श किया है।

स्पृहण–पु० (सं०) किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए इच्छा या प्रयत्न करना।

स्पृहणीय–वि० (सं०) जिसके लिए स्पृहा की जाय, अभिलषणीय; ईर्ष्या करने योग्य; रमणीय, मोहक; गौरवपूर्ण; प्रशंसनीय। **–शोभ**–वि० जिसका सौंदर्य ईर्ष्याका कारण हो।

स्पृहयालु–वि० (सं०) इच्छा करनेवाला; अभिलाषी; ईर्ष्यालु।

स्पृहा–स्त्री० (सं०) अभिलाषा; धर्मानुकूल पदार्थकी प्राप्तिकी कामना (न्या०); ईर्ष्या।

स्पृहालु–वि० (सं०) दे० 'स्पृहयालु'।

स्पृहित–वि० (सं०) जिसकी प्राप्तिकी अभिलाषा की गयी हो, जो ईर्ष्याका विषय हो।

स्पृही(हिन्)–वि० (सं०) इच्छुक, अभिलाषी; ईर्ष्या करनेवाला।

स्पृह्य–वि० (सं०) वांछनीय। पु० बिजौरा नीबू।

स्पेक्ट्रम–पु० (अं०) सूर्यका श्वेत प्रकाश जब काँचके प्रिज्मसे गुजरता है तो दूसरी ओर हमें प्रकाशकी एक रंगीन पट्टी मिलती है जिसमें इन्द्रधनुषके सातो रंग उसी क्रमसे पाये जाते हैं। इस रंगीन पट्टीको स्पेक्ट्रम नाम दिया गया है; वर्णक्रम।

स्पेशल–वि० (अं०) विशेष, खास; असाधारण; जो विशेष व्यक्ति या अवसरके निमित्त हो। स्त्री० विशेष व्यक्ति या कार्यके लिए चलनेवाली ट्रेन।

स्पेशलिस्ट–पु० (अं०) विशेषज्ञ।

स्प्रष्टव्य–वि० (सं०) छूने, हाथ लगाने योग्य; जिसका स्पर्शसे ज्ञान प्राप्त किया जाय। पु० स्पर्श।

स्प्रष्टा(ष्टृ)–वि० (सं०) छूनेवाला। पु० रोग।

स्प्रिंग–स्त्री० (अं०) स्थिति-स्थापक गुणसे युक्त लोहेकी कमानी। **–दार**–वि० कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज्म–पु० (अं०) प्रेतविद्या; अध्यात्मविद्या।

स्प्लिंट–पु० (अं०) अस्थिभंग या संधिभंग ठीक करनेके लिए उसपर बाँधी जानेवाली लकड़ीकी पट्टी।

स्फट–पु० (सं०) 'फट'-'फट'की ध्वनि; साँपका फन; रवा।

स्फटन–दे० 'स्फटिकीकरण'।

स्फटा–स्त्री० (सं०) साँपका फन; फिटकिरी।

स्फटिक–पु० (सं०) बिल्लौर; सूर्यकांत मणि; कपूर; फिटकिरी; (क्वार्ट्ज़) प्राकृतिक क्रिस्टलीय सिलिका (S_1O_2)। प्रायः यह श्वेत अपारदर्शी रूपमें मिलता है, कभी-कभी रंगहीन क्रिस्टलीय रूपमें भी। स्फटिकके लेंस तथा प्रिज्म आदि स्पेक्ट्रम उत्पन्न करनेके यंत्रोंमें प्रयुक्त किये जाते हैं। **–कुड्य**–पु० बिल्लौरकी दीवार। **–घड़ी**–स्त्री० (क्वाट्ज क्लॉक) ऐसी घड़ी जिसमें समयका नियंत्रण स्फटिक क्रिस्टलके कम्पन द्वारा किया जाता है। यह बहुत सही समय देती है। **–पात्र**–पु० बिल्लौरका पात्र। **–प्रभ**–वि० स्फटिक जैसा चमकीला, पारदर्शी। **–भित्ति**–स्त्री० दे० 'स्फटिककुड्य'। **–मणि**–पु०,**–शिला**–स्त्री० बिल्लौर पत्थर। **–विष**–पु० दारुमोच नामक विष। **–शिखरी(रिन्)**–पु० कैलास पर्वत। **–स्कंभ**–पु० बिल्लौरका खंभा। **–हर्म्य**–पु० बिल्लौरका बना हुआ प्रासाद।

स्फटिका–स्त्री० (सं०) फिटकिरी; कपूर।

स्फटिकाख्या–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

स्फटिकाचल–पु० (सं०) कैलास पर्वत।

स्फटिकात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) बिल्लौर।

स्फटिकाद्रि–पु० (सं०) कैलास पर्वत। **–भिद**–पु० कपूर।

स्फटिकाभ्र–पु० (सं०) कपूर।

स्फटिकारि, स्फटिकारिका, स्फटिकारी–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

स्फटिकाश्मा(श्मन्)–पु० (सं०) बिल्लौर पत्थर।

स्फटिकी–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

स्फटिकीकरण–पु० (क्रिस्टेलिज़ेशन) ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु स्फटिकका (या स्फटिक सदृश) रूप ग्रहण कर ले; मणिभीकरण; निश्चित और ठोस आकार धारण करना।

स्फटिकीय–वि० (क्रिस्टलाइन) पीसनेपर जिसके कण चमकीले और खुरदरे जान पड़ें; मणिभीय।

स्फटिकोपम–पु० (सं०) कपूर; जस्ता धातु; चंद्रकांत मणि।

स्फटिकोपल–पु० (सं०) बिल्लौर।

स्फटित–वि० (सं०) विदीर्ण।

स्फटी–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

स्फरण–पु० (सं०) काँपना; फड़कना; प्रवेश करना।

स्फाटक–पु० (सं०) बिल्लौर; जलकी बूँद।

स्फाटकी–स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

स्फाटिक–पु० (सं०) स्फटिक। वि० बिल्लौरका। **–सौध**–पु० बिल्लौर-निर्मित प्रासाद।

स्फाटिकोपल–पु० (सं०) बिल्लौर।

स्फाटित–वि० (सं०) फाड़ा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

स्फाटीक–पु० (सं०) बिल्लौर।

स्फात–वि० (सं०) बढ़ा हुआ, परिवृद्ध; फूला हुआ।

स्फाति–स्त्री० (सं०) वृद्धि, बढ़ती।

स्फार–वि० (सं०) बड़ा; बढ़ा हुआ; विकट; घना; ऊँचा (स्वर); फैला हुआ; बहुत, प्रचुर। पु० वृद्धि; धक्का; आघात; (सोनेमें पड़ी हुई) फुटकी; कंपन, फड़कना; प्राचुर्य; व्यक्त होना; टंकोर; अर्बुद या इस तरह निकली हुई कोई चीज।

स्फारण–पु० (सं०) स्फुरण, कंपन।

स्फारित–वि० (सं०) फैलाया हुआ।

स्फाल–पु० (सं०) कंपन, स्फुरण।

स्फालन–पु० (सं०) हिलाना, कँपाना; फटफटाना; थपथपाना; घर्षण।

स्फिक्(च्)–स्त्री० (सं०) नितंब, चूतड़। **–स्राव**–पु० एक रोग।

स्फिग्घातक, स्फिग्घातनक–पु० (सं०) कट्फल।

स्फिग्दघ्न–वि० (सं०) चूतड़तक पहुँचनेवाला।

स्फिर–वि० (सं०) विशाल; बहुत, प्रचुर।

स्फीत–वि० (सं०) बढ़ा हुआ; घना; मोटा; फूला हुआ; सफल; समृद्ध; बहुत अधिक; प्रसन्न; शुद्ध; पैतृक रोगसे ग्रस्त। **–नितंबा**–स्त्री० नितंबिनी।

स्फीति–स्त्री० (सं०) वृद्धि; प्राचुर्य; विस्तार (इन्फ्लेशन); समृद्धि, अभ्युदय।

स्फुट–वि० (सं०) फटा हुआ; खिला हुआ, विकसित, व्यक्त, प्रकट; स्पष्ट; श्वेत; चमकीला; प्रथित; फैला हुआ; अत्युच्च (स्वर); प्रत्यक्ष, सत्य; असाधारण; ⋯से युक्त या पूर्ण; संशोधित; फुटकर। पु० साँपका फन; जन्मकुंडलीमें ग्रहोंकी कला दिखाना (ज्यौ०)। **–चंद्रतारक**–वि० चंद्रमा ताराओंसे प्रकाशित। **–तार**–वि० जिसमें तारे स्पष्ट दिखाई देते हों। **–त्वचा**–स्त्री० महाज्योतिष्मती। **–ध्वनि**–पु० सफ़ेद पंडुक। **–पुंडरीक**–पु० (हृदयका) खिला हुआ कमल। **–पौरुष**–वि० जिसने अपनी शक्ति प्रकट की है। **–फल**–पु० तुंबुरु; त्रिभुजका क्षेत्रफल; किसी गणितका फल। **–फेनराजि**–वि० जो फेनराशिसे चमकीला देख पड़ता हो। **–बंधनी**–स्त्री० दे० 'स्फुटवल्कलि'। **–रंगिणी**–स्त्री० लताविशेष। **–वक्ता(क्तृ)**–वि० स्पष्टवक्ता। **–वल्कलि**–स्त्री० जोतिष्मती। **–सूर्यगति**–स्त्री० सूर्यकी स्पष्ट चाल।

स्फुटन–पु० (सं०) फटना, विदीर्ण होना; विकसित होना; (जोड़ोंका) चटकना।

स्फुटा–स्त्री० (सं०) साँपका फन।

स्फुटि, स्फुटी–स्त्री० (सं०) विवाई; एक फल, फूट।

स्फुटिका–स्त्री० (सं०) छोटा टुकड़ा।

स्फुटित–वि० (सं०) फटा हुआ; खिला हुआ; स्पष्ट किया हुआ; नष्ट किया हुआ; परिहसित। **–कांडभग्न**–पु० अस्थिभंगका एक प्रकार। **–चरण**–वि० जिसके पैर फैले हों।

स्फुटीकरण–पु० (सं०) प्रकट, स्पष्ट करना; ठीक करना, सुधारना।

स्फुत्कर–पु० (सं०) आग।

स्फुत्कार–पु० (सं०) फुफकार।

स्फुर–पु० (सं०) स्फुरण, कंपन; वृद्धि; ढाल; 'फुर्'-'फुर्' करना।

स्फुरण–पु० (सं०) काँपना, हिलना, फड़कना (अंग); फूटकर व्यक्त होना; चमकना; मनमें एकाएक आना; स्फूर्ति।

स्फुरणा–स्त्री० (सं०) अंगोंका फड़कना।

स्फुरति*–स्त्री० दे० 'स्फूर्ति'।

स्फुरदीप्ति–स्त्री० (फ़ास्फोरेसेंस) प्रकाशसे उद्भासित होनेके उपरान्त किसी वस्तुसे प्रकाश तरंगोंका उत्सर्जित होना। वाह्य प्रकाशस्रोत हटा लेनेपर भी स्फुरदीप्तिका प्रकाश कुछ देरतक उत्सर्जित होता रहता है।

स्फुरदुल्का–स्त्री० (सं०) उल्कापिंड।

स्फुरदोष्ठ, स्फुरदोष्ठक–वि० (सं०) जिसके ओठ फड़कते हों।

स्फुरद्गंध–स्त्री० (सं०) फैली हुई गंध।

स्फुरना*–अ० क्रि० हिलना; फड़कना; व्यक्त होना; प्रकाशित होना।

स्फुरित–वि० (सं०) स्फुरणयुक्त, स्पंदनयुक्त, कंपित; अस्थिर; चमकता हुआ; वढ़ा हुआ; व्यक्त, प्रकट। पु० स्फुरण, कंपन; मानसिक उथल-पुथल; चमक, कांति; एकाएक प्रकट होना।

स्फुर्तना, स्फुर्दना*–स्त्री० स्फूर्ति; किसी वातका अचानक ज्ञान होना; स्पष्टतः देख पड़ना; प्रकाशित होना।

स्फुल–पु० (सं०) खेमा, तंवू। **–मंजरी**–स्त्री० हुलहुल।

स्फुलन–पु० (सं०) कंपन, स्फुरण।

स्फुलिंग–पु० (सं०) अग्निकण, चिनगारी (स्पार्क)।

स्फुलिंगक–पु० (सं०) अग्निकण।

स्फुलिंगा–स्त्री० (सं०) दे० 'स्फुलिंग'।

स्फुलिंगिनी–स्त्री० (सं०) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक।

स्फुलिंगी(गिन्)–वि० (सं०) स्फुलिंगोंवाला, जिसमेंसे चिनगारियाँ निकलती हों।

स्फूर्छित–वि० (सं०) फैलाया हुआ; भूला हुआ।

स्फूर्ज–पु० (सं०) बादलोंकी गड़गड़ाहट; इंद्रका वज्र; एकाएक स्फोट होना; नायक-नायिकाका प्रथम मिलन जिसमें आनंदके साथ भय मिला होता है; स्फूर्जक नामक पौधा; एक राक्षस।

स्फूर्जक–पु० (सं०) एक वृक्ष, तिंदुक, तेंदू; सोनापाढ़ा।

स्फूर्जथु–पु० (सं०) विजलीकी गड़गड़ाहट; एक साग, चौलाई।

स्फूर्जन–पु० (सं०) तिंदुक, तेंदू; गड़गड़ाहट; स्फोट।

स्फूर्जित–वि० (सं०) गर्जित; गरजनेवाला। पु० बादलोंकी गड़गड़ाहट।

स्फूर्ण–वि० (सं०) दे० 'स्फूर्छित'; गरजा हुआ।

स्फूर्त–वि० (सं०) कंपित; जिसकी अचानक स्मृति हुई हो।

स्फूर्ति–स्त्री० (सं०) कंपन, स्फुरण; उछलना; मानसिक आवेश, उत्तेजना; डींग, घमंड; विकसित होना; व्यक्त, प्रकट होना; मनमें प्रकट होना; काव्यकी प्रेरणा; तेजी, फुरती। **–कारक**–वि० फुर्ती लानेवाला।

स्फूर्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) कंपनयुक्त; कोमलचित्त। पु० शिवका आराधक।

स्फोट–पु० (सं०) फूटकर निकलना; फैलना; (किसी बातका) प्रकट हो जाना; फोड़ा; अर्वुद; टुकड़ा, छोटा खंड; फटना; विस्फोट (इरप्शन); शब्दके श्रवणसे मनमें उत्पन्न होनेवाला भाव; नित्य शब्द (मीमांसा); ओंकार, प्रणव; मोती। **–बीजक,–हेतुक**–पु० भिलावाँ। **–लता**–स्त्री० एक लता, कनफोड़ा। **–वाद**–पु० नित्य शब्दको संसारका कारण माननेका सिद्धांत।

स्फोटक–पु० (सं०) फोड़ा; फुंसी; भल्लातक। वि० फट पड़नेवाला (बम, आदि)।

स्फोटन–पु० (सं०) फाड़ना, विदारण करना; व्यक्त करना, अचानक फट पड़ना; वायुके प्रकोपसे होनेवाला सिर-दर्द जिसमें ऐसा लगता हो कि सिर फटा जा रहा है; परस्पर मिले हुए व्यंजनोंका अलग-अलग उच्चारण; अनाज फटकना; उँगलियाँ चटकाना; व्रणपीड़ा; शिव; (हाथ) हिलाना।

स्फोटनी–स्त्री० (सं०) बरमा।

स्फोटा–स्त्री० (सं०) साँपका फन; हाथ हिलाना; सफेद अनंतमूल।

स्फोटायन–पु० (सं०) मुनिविशेष।

स्फोटिक–पु० (सं०) पत्थर, जमीन तोड़ना, फोड़ना।

स्फोटिका–स्त्री० (सं०) फोड़ा; हापुत्रिका नामक पक्षी।

स्फोटित–वि० (सं०) जिसका स्फोट किया गया हो; प्रकटित। वि० फटना। **–नयन**–वि० जिसकी आँखें फोड़ दी गयी हों।

स्फोटिनी–स्त्री० (सं०) कर्कटी, ककड़ी।

स्फोरण–पु० (सं०) दे० 'स्फुरण'।

स्मट्स, फील्ड मार्शल–पु० दक्षिण अफ्रीकाके प्रधान मंत्री। वे एक प्रसिद्ध सेनापति तथा राजनेता थे। (१८७०-१९५०)।

स्मय–पु० (सं०) आश्चर्य; गर्व, घमंड; हास। **–दान**–पु० दंभमय दान। **–नुत्ति**–स्त्री० गर्व चूर करना।

स्मयन–पु० (सं०) मंद हास, मुसकान।

स्मयी(यिन्)–वि० (सं०) मंद हासयुक्त, मुसकानेवाला।

स्मर–वि० (सं०) स्मरण करनेवाला। पु० स्मृति, स्मरण; प्रेम, प्रणय; कामदेव; एक राग। **–कथा**–स्त्री० प्रणयालाप, प्रेमवार्ता। **–कर्म(न्)**–पु० कामुकतापूर्ण व्यवहार। **–कार**–वि० कामोद्दीपक। **–कूप,–कूपक**–पु०,**–कूपिका**–स्त्री० भग। **–गुरु**–पु० विष्णु। **–गृह**–पु० भग। **–चंद्र,–चक्र**–पु० एक रतिबंध। **–चछत्र**–पु० भगशिश्निका। **–ज्वर**–पु० कामज्वर, कामजन्य ताप। **–दशा**–स्त्री० शरीरकी कामजन्य अवस्था (असौष्ठव, ताप, पांडुता, कृशता, अरुचि, अधृति, अनालंबन, तन्मयता, उन्माद और मरण)। **–दहन**–पु० शिव। **–दायी(यिन्),–दीपन**–वि० कामोद्दीपक। **–दुर्मद**–वि० प्रेमप्रमत्त। **–ध्वज**–पु० एक वाद्य (संगीत); पुरुषेंद्रिय; भग; एक पौराणिक मत्स्य (जो कामदेवका चिह्न है)। **–ध्वजा**–स्त्री० चाँदनी रात। **–निपुण**–वि० कामकलामें प्रवीण। **–पीड़ित**–वि० कामदेवका सताया हुआ। **–प्रिया**–स्त्री० रति। **–बाणपंक्ति**–स्त्री० कामदेवके पाँच बाणोंका समाहार। **–भासित**–वि० कामोद्दीप्त, कामतप्त। **–भू**–वि० कामज। **–मंदिर**–पु० योनि। **–मुद्(ष्)**–पु० शिव। **–मोह**–पु० कामजन्य संज्ञाहीनता। **–रुक्(ज्)**–स्त्री० कामजन्य रोग। **–लेख**–पु० प्रेमपत्र। **–लेखनी**–स्त्री० शारिका, मैना। **–वधू**–स्त्री० कामदेवकी स्त्री। **–वल्लभ**–पु० अनिरुद्ध। **–वीथिका**–स्त्री० वेश्या। **–वृद्धि**–स्त्री० एक पौधा (जिसका बीज कामोद्दीपक होता है)। **–शत्रु**–पु० शिव। **–शबर**–पु० वर्वर प्रेम। **–शर**–पु० कामदेवके बाण। **–शासन**–पु० शिव। **–शास्त्र**–पु० कामशास्त्र। **–सख**–पु० ऋतुराज; चंद्रमा; वि० कामोद्दीपक। **–सह**–वि० कामोद्दीपन करनेमें समर्थ। **–स्तंभ**–पु० शिश्न, पुरुषेंद्रिय। **–स्मरा**–स्त्री० सेवती। **–स्मर्य**–पु० गर्दभ। **–हर**–पु० शिव।

स्मरण–पु० (सं०) स्मृति, याद; चिंता; स्मृतिशक्ति; स्मृतिके आधारपर हस्तांतरित होना; देवताके नामका जप (भक्तिका एक प्रकार); खेदपूर्ण स्मृति; एक अर्थालंकार जहाँ पहले देखी हुई किसी वस्तुके समान अन्य वस्तुके देखने, सुननेसे उसका स्मरण हो आये। **–पत्र,–पत्रक**–पु० याद दिलानेके लिए लिखा हुआ पत्र (रिमाइंडर); **–पदवी**–स्त्री० मृत्यु। **–भू**–पु० कामदेव। **–शक्ति**–स्त्री० याद रखनेकी शक्ति (मैमरी)।

स्मरणापत्यतर्पक–पु० (सं०) कच्छा।

स्मरगासक्ति–स्त्री० (सं०) ईश्वरके स्मरणमें होनेवाली आसक्ति।

स्मरणी–स्त्री० (सं०) जप करनेकी माला, सुमिरनी।

स्मरणीय–वि० (सं०) स्मरण करने योग्य; याद रखने योग्य।

स्मरना*–स० क्रि० याद करना।

स्मरांकुश–पु० (सं०) नख; प्रणयी, कामातुर व्यक्ति; लिंग।

स्मरांध–वि० (सं०) कामांध।

स्मराकुल, स्मराकुलित–वि० (सं०) कामरोगसे ग्रस्त, कामविह्वल।

स्मराकृष्ट–वि० (सं०) प्रेमाभिभूत।

स्मरागार–पु० (सं०) दे० 'स्मरगृह'।

स्मरातुर–वि० (सं०) कामातुर।

स्मराधिवास–पु० (सं०) अशोक वृक्ष।

स्मराम्र–पु० (सं०) एक तरहका आम, राजाम्र।

स्मरारि–पु० (सं०) शिव।

स्मरार्त–वि० (सं०) कामतप्त।

स्मरासव–पु० (सं०) लाला रस।

स्मरोत्सुक–वि० (सं०) कामातुर।

स्मरोद्दीपन–वि० (सं०) कामोद्दीपक। पु० एक तरहका केशतैल।

स्मरोन्माद–पु० (सं०) काममद।

स्मरोपकरण–पु० (सं०) सुगंधित द्रव्य आदि काम-संबंधी वस्तुएँ।

स्मर्ण*–पु० दे० 'स्मरण'।

स्मर्तव्य–वि० (सं०) स्मरणके योग्य; जिसकी केवल स्मृति शेष रह गयी हो।

स्मर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) याद करने, रखनेवाला। पु० आचार्य।

स्मर्य–वि० (सं०) स्मरणीय।

स्मशान, स्मसान†–पु० दे० 'श्मशान'।

स्मार–पु० (मेमो) दे० 'ज्ञापन'।

स्मारक–वि० (सं०) याद दिलानेवाला। पु० किसीकी स्मृति-रक्षाके अभिप्रायसे संस्थापित संस्था, भवन, स्तंभ आदि (मेमोरियल); स्मरणपत्र, अभ्यावेदन। **–ग्रंथ**–पु० (कमेमोरेशन वाल्यूम) किसी विद्वान्, दार्शनिक, नेता आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रचित ग्रंथ।

स्मारण–पु० (सं०) याद दिलाना; फिरसे गिनना, लेखेकी जाँच करना।

स्मारणी–स्त्री० (सं०) ब्राह्मी लता।

स्मारिका–स्त्री० (सं०) किसी घटना या समारोह स्थलको रक्षित रखनेके उद्देश्यसे प्राप्त की गयी वस्तु; ऐसी वस्तु, समारोह या प्रसिद्ध व्यक्तिसे संबंधित बीती हुई मुख्य घटनाओंकी स्मृति बनाये रखनेवाली विवरणात्मक सचित्र पुस्तिका (सुवेनीर),. स्मृति-उपायन।

स्मारित–पु० (सं०) स्मरण होनेपर वादी द्वारा स्वपक्षका समर्थन करनेके लिए समाहूत साक्षी। वि० स्मरण दिलाया हुआ।

स्मारी(रिन्)–वि० (सं०) स्मरण रखनेवाला; याद दिलानेवाला।

स्मार्त–वि० (सं०) स्मृति-संबंधी; जो स्मृतिमें हो; स्मृतिके आधारपर बना हुआ, स्मृतिविहित, वैध; स्मृतिको माननेवाला; गृह-संबंधी (जैसे अग्नि)। पु० स्मृतिविहित कर्म; स्मृतियोंके अनुसार चलनेवाला एक संप्रदाय; इस संप्रदायका अनुयायी; स्मृतियोंका ज्ञाता ब्राह्मण। **–कर्म(न्)**–पु० स्मृतिविहित कर्म। **–काल**–पु० वह काल जबतक स्मृति बनी रह सके। (कुछके मतसे सौ वर्ष)। **–पंडित**–पु० स्मृतियोंका ज्ञाता ब्राह्मण।

स्मार्तिक–वि० (सं०) जो स्मृतिशास्त्रपर आधृत हो।

स्मार्य–वि० (सं०) स्मरण करने योग्य।

स्माल काज़ कोर्ट–पु० (अं०) छोटी अदालत, अदालत खफीफा।

स्मित–पु० (सं०) मंद हास, मुसकान। वि० खिला हुआ; मुसकाता हुआ। **–दृशी**–स्त्री० हँसमुख या सुंदर स्त्री। **–पूर्व**–वि० मंदहासयुक्त। **–मुख**–वि० हँसमुख। **–वाक्(च्)**–वि० मुसकराहटके साथ बोलनेवाला। **–शाली(लिन्)**–वि० मंदहासयुक्त।

स्मिति–स्त्री० (सं०) मंदहास; हास।

स्मितोज्ज्वल–वि० (सं०) हँसते हुए (नेत्र)।

स्मृत–वि० (सं०) स्मरण किया हुआ; उल्लिखित; स्मृतिविहित। पु० एक प्रजापति; स्मरण, याद। **–मात्र**–वि० जिसका केवल स्मरण किया गया हो।

स्मृति–स्त्री० (सं०) स्मरण, याद (मेमरी); अनुस्मरण (रिफ्लेक्शन); चिंतन; एक संचारी भाव; धर्मशास्त्र; अट्ठारहकी संख्या; एक वृत्त; इच्छा। **–उपायन**–पु० (सूवेनीर) पुरानी घटनाओं, अवसरों, स्थानों आदिकी स्मृति बनाये रखनेके लिए रखा गया या किसीको भेंटमें दिया गया चित्रादिका संग्रह या अन्य कोई वस्तु। **–कार**–पु० स्मृतिका निर्माता। **–कारक**–वि० स्मरणशक्ति बढ़ानेवाला। पु० ऐसी दवा। **–कारी(रिन्)**–वि० स्मृति जाग्रत करनेवाला। **–चिह्न**–पु० निशानी। **–जात**–पु० कामदेव। **–तंत्र**–पु० धर्मशास्त्र। **–द**–वि० स्मृति पुष्ट करनेवाला। **–पत्र**–पु० ज्ञापनपत्र। **–पथ,–वर्त्म(न्)**–पु० स्मृतिका विषय। **–पाठक**–पु० धर्मशास्त्री; विधानज्ञ व्यक्ति। **–प्रत्यवमर्श**–पु० स्मृति बनाये रखनेकी शक्ति। **–भू**–पु० कामदेव। **–भ्रंश**–पु० स्मृतिका नष्ट हो जाना, याद न रहना; ज्ञान न रहना। **–रोध,–लोप**–पु० क्षणिक विस्मरण। **–वर्धनी**–स्त्री० ब्राह्मी। **–विद्**–वि० धर्मशास्त्रज्ञ। **–विनय**–पु० कर्त्तव्यका स्मरण दिलाते हुए भर्त्सना करना। **–विभ्रम**–पु० स्पष्ट स्मरण न होना; स्मृतिभ्रंश। **–विरुद्ध**–वि० शास्त्रविरुद्ध। **–शास्त्र**–पु० धर्मशास्त्र। **–शेष**–वि० जिसकी केवल स्मृति रह गयी हो, गत, मृत; प्राचीन खंडहर या टूटाफूटा अंश (रेलिक); किसी महात्मा या महापुरुषके शरीरकी अस्थि, केश, दाँत आदि अथवा उसका कोई वस्त्र, खड़ाऊँ, पात्र आदि जो उसकी मृत्युके बाद उसकी स्मृतिके रूपमें सुरक्षित रखा गया हो। **–शैथिल्य**–पु० स्मरणशक्तिकी दुर्बलता। **–संस्कार**–पु० स्मृतिजन्य छाप। **–सम्मत**–वि० धर्मशास्त्रविहित। **–साध्य**–वि० शास्त्र द्वारा प्रमाणित करने योग्य। **–सिद्ध**–वि० शास्त्रविहित। **–हिता**–स्त्री० शंखपुष्पी। **–हीन**–वि० जो स्मरण न रख सके, विस्मरणशील। **–हेतु**–पु० स्मृतिका कारण; मनपर पड़ी हुई छाप।

स्मृतिक–पु० (सं०) जल।

स्मृतिमान्(मत्)–वि० (सं०) स्मृतिविशिष्ट; चिंतावान्।

स्मृत्यपेत–वि० (सं०) विस्मृत; शास्त्रविरुद्ध।

स्मृत्युक्त–वि० (सं०) शास्त्रविहित।

स्मेर–वि० (सं०) मंदहासयुक्त; विकसित; गर्वीला; प्रत्यक्ष। **–मुख**–वि० हँसमुख। **–विष्किर**–पु० मयूर।

स्यंद–पु० (सं०) रिसना, चूना, टपकना, स्राव; प्रवाहित होना; पसीना निकलना; गलना, पानी होना; एक नेत्र-रोग; चंद्रमा; तीव्र गति; रथ।

स्यंदक–पु० (सं०) तेंदूका पेड़।

स्यंदन–वि० (सं०) तेजीसे जानेवाला (जैसे रथ); बहनेवाला; रिसनेवाला; गलनेवाला। पु० रथ; युद्धरथ; एक अस्त्रमंत्र; वायु; गत उत्सर्पिणीके २३ वें अर्हत्; तीव्र गति या प्रवाह; स्राव; जल; तिनिश वृक्ष; तिंदुक वृक्ष। **–द्रुम**–पु० तिनिश वृक्ष (लकड़ीसे पहिया बननेके कारण)। **–ध्वनि**–स्त्री० रथके चलनेकी आवाज।

स्यंदनारूढ–वि० (सं०) रथारूढ़।

स्यंदनारोह–पु० (सं०) रथपर चढ़कर युद्ध करनेवाला योद्धा, रथी।

स्यंदनाह्वय–पु० (सं०) दे० 'स्यंदनद्रुम'।

स्यंदनि–पु० (सं०) तिनिश वृक्ष।

स्यंदनिका–स्त्री० (सं०) लारकी बूँद; सोता, छोटी नदी।

स्यंदनी–स्त्री० (सं०) लार, लाला; मूत्रनलिका।

स्यंदिता(तृ)–वि० (सं०) तेज दौड़नेवाला।

स्यंदिनी–स्त्री० (सं०) लाला; एक साथ दो बछड़े देनेवाली गाय।

स्यंदी(दिन्)–वि० (सं०) स्राव करनेवाला, रिसनेवाला; प्रवाहित होनेवाला; तेज जानेवाला।

स्यंदोलिका–स्त्री० (सं०) झूलनेकी क्रिया या झूला।

स्यद–पु० (सं०) तेज गति, वेग।

स्यन्न–वि० (सं०) रिसा हुआ, टपका हुआ; रिसनेवाला (जलादि)।

स्यमंतक–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध मणि (जो सत्राजित्को सूर्यसे और अंतमें कृष्णको जांबवान्से मिला था। कहा जाता है कि इसमें रोज सोना देने और संकटोंसे रक्षा करनेकी शक्ति थी)।

स्यमंतपंचक–पु० (सं०) एक तीर्थ (कहा जाता है कि यहाँ परशुराम-

ने पितरोंका तर्पण रक्तसे किया था)।

स्यमिक–पु० (सं०) बाँबी, वल्मीक; एक वृक्ष; बादल; समय।

स्यमीक–पु० (सं०) बाँबी, वल्मीक; समय; बादल; जल; एक प्राचीन राजवंश।

स्यमीका–स्त्री० (सं०) नीलका पौधा; एक कीड़ा।

स्यात्–अ० (सं०) कदाचित्, शायद।

स्याद्वाद–पु० (सं०) जैनोंका संशयवाद, अनेकांतवाद; जैन धर्म।

स्याद्वादिक, स्याद्वादी(दिन्)–पु० (सं०) स्याद्वादका अनुयायी जैन।

स्यान*–वि० दे० 'स्याना'। **–प,–पत,–पन**–पु० चतुरता, चालाकी।

स्याना–वि० चतुर, होशियार; धूर्त; बालिग, प्रौढ। पु० बड़ा-बूढ़ा; ओझा; नंबरदार, मुखिया; हकीम। **–चारी**|–स्त्री० गाँवके मुखियाको मिलनेवाला रसूम। **–पन**–पु० बालिग होनेकी अवस्था, युवावस्था; होशियारी, चालाकी; धूर्तता।

स्यापा–पु० दे० 'सियापा'। मु०**–छाना,–पड़ना**–रुदन-क्रंदन होना; सुनसान, उजाड़ होना।

स्यावास*–अ० दे० 'शाबास'।

स्याम–पु० बरमाके पूरब स्थित एक देश; * दे० 'श्याम'। * वि० दे० 'श्याम'। **–करन***–पु० दे० 'श्यामकर्ण'। **–ता,*–ताई*** –स्त्री० दे० 'श्यामता'।

स्यामक*–पु० वसुदेवके एक भाई, श्यामक।

स्यामल*–वि० दे० 'श्यामल'। **–ता**–स्त्री० श्यामलता, साँवलापन।

स्यामलिया*–पु० कृष्ण।

स्यामा*–स्त्री० दे० 'श्यामा'।

स्यार–पु० गीदड़, सियार। **–काँटा**–पु० सत्यानासी। **–जन**–पु० डरपोक आदमी। **–पन**–पु० शृगालकी-सी आदत। **–लाठी**–स्त्री० अमलतास।

स्यारी–स्त्री० शृगाली, गीदड़ी; | कातिक-अगहनमें तैयार होनेवाली फसल, खरीफ (बुंदेल०)।

स्याल–पु० स्यार; (सं०) साला, श्याल। **–कंटा**–पु० (हिं०) स्यारकाँटा।

स्यालक–पु० (सं०) साला।

स्यालिका–स्त्री० (सं०) पत्नीकी छोटी बहन, साली।

स्यालिया|–पु० गीदड़, सियार।

स्याली–स्त्री० (सं०) साली। **–पति**–पु० सालीका पति, साढ़ू।

स्यालू|–पु० ओढ़नी, चादर, सालू।

स्यावाज*–पु० सावज, शिकार।

स्याह–वि० (फा०) दे० 'सियाह' (समास भी)। **–काँटा**–पु० एक कँटीला पौधा। **–कलम**–पु० मुगल चित्रशैलीके विना रंग-भरे रेखाचित्र (लाइन ड्राइंग)। **–गोसर***–पु० दे० 'सियाह-गोश'। **–जवान**–पु० काली जीभवाला हाथी या घोड़ा। **–जीरा**–पु० काला जीरा। **–तालू**–पु० वह घोड़ा जिसका तालू काला हो (यह अशुभ माना जाता है)। **–दिल**–वि० दुष्ट, दिलका काला। **–पोश**–पु० शोक की काली पोशाक पहने हुए (मुस०)।

स्याहा–पु० दे० 'सियाहा'।

स्याही–स्त्री० साही नामक जानवर; (फा०) कालापन; अँधेरा; कालिख; काजल; रोशनाई; दाग; दोष, ऐब। **–चट**–पु० सोख्ता। **–दान**–पु० दवात। **–साज़**–पु० स्याही बनानेवाला। **–सोख**–पु० सोख्ता, 'ब्लाटिंग पेपर'। मु० **–जाना**–उम्र ढलना। **–दौड़ना**–स्याही छा जाना। **–धो जाना**–दुर्भाग्य या दोष दूर होना। **–लगना**–कालिख पुत जाना, बदनामी होना। **–लगाना**–मुँह काला करना, बदनाम करना।

स्युवक–पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद।

स्यू–स्त्री० (सं०) सूत, धागा।

स्यूत–वि० (सं०) सिया हुआ; बुना हुआ; भिदा हुआ। पु० मोटे कपड़ेकी थैली; बोरा।

स्यूति–स्त्री० (सं०) सिलाई; बुनाई; संतान; थैला।

स्यूत्न–पु० (सं०) प्रसन्नता, आनंद।

स्यून–पु० (सं०) बोरा, थैला; प्रकाश-रश्मि, किरण; सूर्य।

स्यूना–स्त्री० (सं०) किरण; कमरबंद।

स्यूम–पु० (सं०) जल; किरण; आनंद।

स्यूमक–पु० (सं०) आनंद।

स्यों, स्यो*–अ० सहित; नजदीक, पास।

स्योत–पु० (सं०) बोरा, थैला।

स्योती|–स्त्री० दे० 'सेवती'।

स्योन–वि० (सं०) सुंदर; प्रिय; शुभ, मंगलकारक। पु० किरण; सूर्य; बोरा, थैला; आनंद।

स्योनाक–पु० (सं०) एक वृक्ष, सोनापाढ़ा।

स्योनाग–पु० स्योनाक।

स्रंग*–पु० दे० 'शृंग'।

स्रंस–पु० (सं०) पतन; शयन, सोना।

स्रंसन–वि० (सं०) दस्तावर, रेचक; ढीला, करनेवाला। पु० गिरने या गिरानेकी क्रिया; ढीला करना; गर्भपात; दस्तावर पदार्थ या दवा।

स्रंसित–वि० (सं०) गिराया हुआ; ढीला किया हुआ।

स्रंसिनी–स्त्री० (सं०) एक योनिरोग। **–फल**–पु० एक वृक्ष, शिरीष।

स्रंसी(सिन्)–वि० (सं०) फिसलने, गिरनेवाला; लटकनेवाला; ढीला पड़नेवाला; पात होनेवाला (गर्भ)। पु० पीलु वृक्ष; सुपारीका पेड़।

स्रक–स्त्री० दे० 'स्रक्'।

स्रक्(ज्)–स्त्री० (सं०) पुष्पहार (विशेषकर सिरपर बाँधनेका); माला; एक वृक्ष; एक वृत्त; एक योग (ज्यो०)।

स्रग*–स्त्री० दे० 'स्रक्'।

स्रगाल*–पु० गीदड़।

स्रग्णु–पु० (सं०) मालाके रूपमें लिखित मंत्र।

स्रग्दाम(न्)–पु० (सं०) पुष्पहारका डोरा।

स्रग्धर–वि० (सं०) पुष्पहार धारण करनेवाला।

स्रग्धरा–स्त्री० (सं०) एक वृत्त; एक देवी (बौ०)।

स्रग्वान्(वत्)–वि० (सं०) माला-युक्त।

स्रग्विणी–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; एक देवी।

स्रग्वी(ग्विन्)–वि० (सं०) मालाविशिष्ट।

स्रज–पु० (सं०) एक विश्वेदेव। स्त्री० माला।

स्रजन*–पु० सृष्टि, सर्जन।

स्रजना*–स० क्रि० रचना, बनाना, निर्माण करना।

स्रज्वा–स्त्री० (सं०) रस्सी।

स्रज्वा(ज्वन्)–पु० (सं०) मालाकार, माली; प्रजापति।

स्रद्धा*–स्त्री० दे० 'श्रद्धा'।

स्रद्धू–स्त्री० (सं०) अपान वायुका त्याग।

स्रम*–पु० श्रम, मेहनत।

स्रमित*–वि० श्रमित, थका हुआ, क्लांत।

स्रवंती–स्त्री० (सं०) जलप्रवाह; नदी; एक बूटी; यकृत्-प्रदेश।

स्रव–पु० (सं०) क्षरण, स्राव; निर्झर; प्रवाह; धारा; मूत्र; * श्रवण। **–द्रंग**–पु० मेला; बाजार।

स्रवण–पु० (सं०) बहना, प्रवाहित होना; गर्भपात; प्रस्वेद; मूत्र; * कान। **–क्षेत्र**–पु० वह क्षेत्र जहाँ वर्षाका जल एकत्र होकर किसी नदीका मूलरूप धारण करता हो; अपवाह क्षेत्र (कैचमेंट एरिया)।

स्रवत्–वि० (सं०) चूता हुआ; बहता हुआ। **–तोया**–स्त्री० रुदंती नामक पौधा। **–पाणिपादा**–स्त्री० वह स्त्री जिसके हाथ-पैर आर्द्र रहते हों। **–स्वेदजल**–वि० पसीनेसे तर-बतर।

स्रवद्गर्भा–स्त्री० (सं०) वह स्त्री या कोई मादा पशु जिसका गर्भ गिर गया हो।

स्रवन*–पु० दे० 'श्रवण'।

स्रवना*–अ० क्रि० टपकना, चूना; गिरना। स० क्रि० बहाना, टपकाना; गिराना।

स्रवा–स्त्री० (सं०) मूर्वा; जीवंती।

स्रष्टव्य–वि० (सं०) सर्जन करने योग्य।

स्रष्टा(ष्ट)–वि० (सं०) स्राव करनेवाला; निर्माता, रचयिता। पु० सृष्टिका निर्माण करनेवाला, ब्रह्मा; शिव; विष्णु।

स्रष्टार–पु० (सं०) दे० 'स्रष्टा'।

स्रस्त–वि० (सं०) च्युत, पतित; ढीला पड़ा हुआ; हिलता हुआ; लटकता हुआ; धँसा हुआ (जैसे नेत्र); अलग किया हुआ, विच्छिन्न। **–कर**–वि० हिलती हुई सूँड़वाला। **–गात्र**–वि० जिसका शरीर ढीला पड़ गया हो। **–मुष्क**–वि० जिसका अंडकोश हिल रहा हो। **–स्कंध**–वि० जिसके कंधे झुक गये हों; लज्जित। **–हस्त**–वि० जिसने पकड़ ढीली कर दी हो।

स्रस्तर–पु० (सं०) आसन; सोफा।

स्रस्ति–स्त्री० (सं०) गिरना; लटकना; ढीला पड़ना।

स्राध*–पु० दे० 'श्राद्ध'।

स्राप*–पु० दे० 'शाप'।

स्रापित*–वि० दे० 'शापग्रस्त'।

स्राव–पु० (सं०) वहाव, क्षरण; टपकना, रिसना (सीक्रेशन); गर्भपात; निर्यास।

स्रावक–वि० (सं०) वहाने, स्राव करानेवाला। पु० कालीमिर्च।

स्रावण–वि० (सं०) वहानेवाला, स्राव करानेवाला; पात करानेवाला।

स्रावणी–स्त्री० (सं०) ऋद्धि नामकी ओषधि।

स्रावनी*–स्त्री० दे० 'श्रावणी'।

स्रावित–वि० (सं०) स्राव कराया हुआ।

स्रावी(विन्)–वि० (सं०) वहानेवाला; टपकानेवाला; चुलानेवाला।

स्राव्य–वि० (सं०) स्राव कराने योग्य।

स्रिंग*–पु० दे० 'शृंग'।

स्रिजन*–पु० सर्जन, सृष्टि, रचना।

स्रिय*–स्त्री० श्री, मंगल, कल्याण।

स्रुक्(च्)–स्त्री० (सं०) यज्ञाग्निमें घी डालनेके लिए पलाश या खदिरकी वनी हुई स्रुवा।

स्रुग्जिह्व–पु० (सं०) अग्नि।

स्रुग्दारु–पु० (सं०) विकंकत वृक्ष।

स्रुघ्न–पु० (सं०) एक प्राचीन नगर।

स्रुघ्निका–स्त्री० (सं०) सज्जी।

स्रुघ्नी–स्त्री० (सं०) सज्जी।

स्रुत–वि० (सं०) वहा हुआ, क्षरित; जो रिसकर खाली हो गया हो; * दे० 'श्रुत'। **–जल**–वि० जिसका पानी वह गया हो।

स्रुता–स्त्री० (सं०) हिंगुपत्री।

स्रुति–स्त्री० (सं०) वहाव; क्षरण; निर्यास; स्रोत, प्रवाह; वेदीके चारों ओर खींची जानेवाली रेखा; * 'श्रुति'। **–कीर्ति***–स्त्री० 'श्रुतिकीर्ति'। **–माथ***–पु० विष्णु।

स्रुव–पु० (सं०) एक तरहकी छोटी स्रुवा। **–तरु,–द्रुम**–पु० विकंकत वृक्ष। **–दंड**–पु० स्रुवका दस्ता। **–प्रग्रहण**–पु० सारा अपने लिए रख लेना। **–हस्त**–पु० शिव। **–होम**–पु० स्रुवसे दी हुई आहुति।

स्रुवा–स्त्री० (सं०) घीकी आहुति डालनेकी करछी। (लकड़ीकी वनी); शल्लकी; मूर्वा। **–वृक्ष**–पु० विकंकत वृक्ष।

स्रु–स्त्री० (सं०) स्रुवा; निर्झर, झरना।

स्रेनी*–स्त्री० दे० 'श्रेणी'।

स्रोणि–पु० (सं०) नितम्ब।

स्रोत–पु० (सं०) धारा, सोता; जरिया (आमदनीका–)। **–नदीभव**–पु० (यमुना नदीमें उत्पन्न) सुरमा या अंजन।

स्रोत(स्)–पु० (सं०) जलप्रवाह, धारा; नदी; तीव्र वेग; शरीरस्थ पोषण पहुँचानेवाले मार्ग; शरीरके रंध्र (जो पुरुषोंमें नौ और स्त्रियोंमें ग्यारह होते हैं); तरंग; जल; ज्ञानेंद्रिय; हाथीकी सूँड़; वंशपरंपरा।

स्रोतआपत्ति, स्रोतापत्ति–स्त्री० (सं०) (निर्वाणकी) नदीमें प्रवेश करना–निर्वाणके पथपर अग्रसर होना (बौ०)।

स्रोतआपन्न–वि० (सं०) जो (निर्वाणकी) नदीमें प्रवेश कर चुका है–जो निर्वाणके पथपर अग्रसर हो चुका है।

स्रोतईश–पु० (सं०) समुद्र।

स्रोतस्य–पु० (सं०) शिव; चोर।

स्रोतस्वती, स्रोतस्विनी–स्त्री० (सं०) नदी।

स्रोता*–पु० दे० 'श्रोता'।

स्रोतोंजन (स्रोतोऽञ्जन)–पु० (सं०) सुरमा।

स्रोतोज–पु० (सं०) सुरमा।

स्रोतोजव–पु० (सं०) धाराका वेग।

स्रोतोद्भव–पु० (सं०) दे० 'स्रोतोज'।

स्रोतोनदीभव–पु० (सं०) 'स्रोतोंजन।'

स्रोतोनुगत (स्रोतोऽनुगत्)–पु० (सं०) एक प्रकारकी समाधि।

स्रोतोरंध्र–पु० (सं०) हाथीकी सूँड़का छिद्र।

स्रोतोवहा–स्त्री० (सं०) नदी।

स्रोन*–पु० दे० 'श्रवण'।

स्रोनित*–पु० दे० 'शोणित'।

स्रौग्मत–पु० (सं०) एक साम।

स्रौघ्निका–स्त्री० (सं०) सज्जी।

स्रौत–पु० (सं०) एक साम।

स्रौतिक–पु० (सं०) सीप।

स्रौतोवह–वि० (सं०) नदी-संवंधी।

स्रौन*–पु० दे० 'श्रवण'।

स्रौव–वि० (सं०) श्रुवा-संवंधी; यज्ञ-संवंधी।

स्लिप–स्त्री० (अं०) चिट, परचा; कागजका लंवा कटा हुआ टुकड़ा (जो लेख आदि लिखनेके लिए तैयार किया जाता है)।

स्लीपर–पु० (अं० 'स्लिपर') एड़ीकी ओर खुली हुई जूती; लकड़ीका चौकोर लंवा टुकड़ा (जो रेलकी पटरियोंके नीचे विछाते हैं); वड़ी धरन; रेलमें यात्रियोंके सोनेके लिए आरक्षित डिव्वा।

स्लेज–स्त्री० (अं०) वर्फपर घिसटती हुई चलनेवाली एक तरहकी गाड़ी।

स्लेट–स्त्री० (अं०) एक तरहके काले पत्थरकी चौकोर पट्टी जो लिखनेके काम आती है।

स्लो–वि० (अं०) सुस्त, मंदगतिसे चलनेवाला; उचित समयसे पीछे (घड़ी)।

स्वंग–वि० (सं०) अच्छे अंगोंवाला। पु० आलिंगन।

स्वंजन–पु० (सं०) आलिंगन करना।

स्वंत–वि० (सं०) जिसका अंत अच्छा हो; शुभ, मंगलकारी।

स्वः–पु० (सं०) 'स्वर्'का समासगत रूप। **पति**–पु० स्वर्गपति। **–पथ**–पु० मृत्यु। **–पाल**–पु० स्वर्गकी देखभाल करनेवाला। **–पृष्ठ**–पु० कई सामोंके नाम। **–सद्**–पु० देवता। **–सरिता**–स्त्री० (हिं०) दे० 'स्वःसरित्'। **–सरित्,–सिंधु**–स्त्री० स्वर्गंगा। **–सुंदरी**–स्त्री० अप्सरा। **–स्यंदन**–पु० इंद्रका रथ। **–स्रवंती**–स्त्री० गंगा।

स्व–पु० (सं०) कुटुंव, आत्मीय जन, संवंधी; आत्मा; विष्णु; धन, संपत्ति; धन राशि (ग०)। वि० आत्मीय, अपना; सहजात, स्वाभाविक; अपनी जाति या वर्गका। **–अर्जित**–भू०कृ० स्वयं उपार्जित, स्वयं प्राप्त (सेल्फ़एक्वायर्ड)। **–कंपन**–पु० वायु। **–कंवला**–स्त्री० एक नदी। **–करण**–पु० किसी स्त्रीसे विवाह करना; स्वत्व जताना। **–०भाव**–पु० स्वत्व प्रमाणित किये विना किसी वस्तुपर अधिकार करना। **–०विशुद्ध**–वि० जिसपर किसीका व्यक्तिगत अधिकार न हो। **–कर्म(न्)**–पु० अपने कर्म, पेशा, कर्तव्य आदि। **–०कृत्**–पु० स्वतंत्र रूपसे काम करनेवाला कारीगर। **–कर्मी(र्मिन्)**–वि० स्वार्थी, खुदगरज। **–कामी(मिन्)**–वि० अपने मनके मुताविक चलनेवाला; स्वार्थी। **–कार्य**–पु० अपना काम या कर्तव्य। **–काल**–पु० उपयुक्त समय। **–कुल**–पु० अपना वंश। वि० अपने वंशका। **–०क्षय**–पु० मछली। **–कुल्य**–वि० अपने कुलका। **–कृत**–वि० अपना किया हुआ। पु० अपना कर्म। **–क्षत्र**–वि० जिसमें जन्मजात शक्ति हो; स्वाधीन। **–क्षालन-शौचालय**–पु० (फ्लश लैट्रिन) वह पैखाना जिसे साफ करनेके लिए मेहतरकी आवश्यकता न हो, जो पानी गिरा देनेसे अपने आप साफ हो जाय। **–गत**–वि० आत्मीय; अपने प्रति कथित। अ० आप ही आप (कहना)। **–०कथन**–पु० किसी पात्रका वोलकर अपना विचार इस प्रकार

व्यक्त करना जैसे दूसरे उसे सुनते न हों (ना०) (सोलिलोक्वी)। **—गति**—स्त्री० एक वृत्त। **—गुप्त**—वि० आत्मरक्षित। **—गुप्ता**—स्त्री० शूकसिबी, केवाँच; लजालू। **—गृह**—पु० अपना घर; एक पक्षी। **—०स्मारी**—वि० (होमसिक) जिसे बाहर जानेपर बारबार अपने घरका स्मरण आवे; घरसे दूर जानेपर जिसे दुःखका अनुभव हो; गृहातुर। **—गोप**—वि० अपनी रक्षा करनेवाला। **—ग्रह**—पु० एक बालग्रह। **—चर**—वि० अपने आप चलनेवाला। **—चित्तकारु**—पु० स्वतंत्र शिल्पी। **—च्छंद**—पु० अपनी इच्छा या पसंद; स्कंद। वि० मनमाना, अनैतिक और निन्दनीय आचरण करनेवाला, भ्रष्ट (वॉन्टन); अपनी इच्छाके अनुसार चलनेवाला अनियंत्रित, स्वाधीन; आपसे आप उगा हुआ, जंगली। **—०चर, —०चारी(रिन्)**—वि० अपनी इच्छासे चलनेवाला, आजाद। **—०चारिणी**—स्त्री० वेश्या। **—०मरण**—पु० अपनी इच्छासे मरनेकी शक्ति।**— चल,—चालित**—वि० स्वतः चलनेवाला (ऑटोमैटिक)। **—चालक**—वि० विना किसी विशिष्ट प्रक्रियाके स्वयं चलने या चलानेवाला (यंत्र) (सेल्फ स्टार्टर)। **—चालित**—वि० विना किसी चालकके, स्वतः चलनेवाली (तोप)। **—च्छंदता**—स्त्री० स्वतंत्रता, आजादी। **—ज**—वि० जो अपनेसे उत्पन्न हुआ हो। पु० पुत्र; प्रस्वेद; रक्त। **—जन**—पु० आत्मीय जन; संबंधी। **—०पक्षपात**—पु० (नीपॉटिज्म) (संरक्षण आदि देनेमें) अपने संबंधियों, मित्रों आदिके प्रति पक्षपात करना; भाई-भतीजावाद। **—०गंधी(धिन्)**—वि० जिसके साथ दूरका संबंध हो। **—जनी**—स्त्री० सखी; सहेली। **—जन्मा(न्मन्)**—वि० जो आप ही आप उत्पन्न हुआ हो। **—जा**—स्त्री० पुत्री। **—जात**—वि० अपनेसे उत्पन्न। पु० पुत्र। **—जाति**—स्त्री० अपनी जाति या वर्ग। वि० अपने वर्गका। **—०द्विट्(ष्)**—पु० कुत्ता। **—जातीय,—जात्य**—वि० अपनी जाति या वर्गका। **—जित**—वि० आत्मनिग्रही, जितेंद्रिय। **—ज्ञाति**—स्त्री० अपनी जाति या वर्ग। पु० संबंधी। **—तंत्र,—तंत्री(त्रिन्)**—वि० स्वाधीन, आजाद; बालिग। **—तंत्रता**—स्त्री० स्वाधीनता, आजादी (लिबर्टी); बिना किसी नियंत्रण या बंधनके स्वेच्छानुकूल कार्य करनेका अधिकार (फ्रीडम, इंडिपेन्डेन्स)। **—त्र**—वि० आत्मरक्षी। पु० अंधा व्यक्ति। **—दान**—पु० अपनी संपत्तिका दान। **—दार**—पु० अपनी पत्नी। **—०गामी(मिन्)**—वि० केवल अपनी पत्नीसे संबंध रखनेवाला। **—०निरत**—वि० स्त्रीपरायण। **—दृक्(श्)**—वि० आत्मदर्शी। **—देश**—पु० जन्मभूमि, मातृभूमि, वतन। **—०ज**—पु० अपने देशका आदमी। **—०निस्सारण**—पु० (एक्सपैट्रियेशन) किसीको स्वदेशसे बाहर भेज देना। **—०प्रतिप्रेषण**—पु० (रिपैट्रियेशन) किसीको जबरन् उसके देश वापस भेज देना। **—०प्रेम**—पु० जन्मभूमिका प्रेम। **—०बंधु**—पु० दे० 'स्वदेशज'। **—०स्मारी(रिन्)**—वि० घरके लिए उत्सुक, घरसे अधिक प्रेम रखनेवाला; गृहातुर। **—देशाभिष्यंदव**—पु० देशकी आबादी बढ़नेपर दूसरी जगह बसाना। **—देशी**—वि० (हिं०) दे० 'स्वदेशीय'। **—देशीय**—वि० अपने देशसे संबंध रखनेवाला; अपने देशका। **—धर्म**—पु० अपना धर्म; अपना कर्तव्य; अपनी विशेषता। **—०च्युत**—वि० अपने अधिकारसे वंचित; अपने कर्तव्यका पालन न करनेवाला। **—०त्याग**—पु० अपने धर्म या कर्तव्यकी उपेक्षा। **—०वर्ती(र्तिन्)**—वि० अपने कर्तव्यमें लगा रहनेवाला। **—०शास्त्र**—पु० व्यक्तिक विधि। **—०स्खलन**—पु० अपने कर्तव्यकी उपेक्षा। **—०स्थ**—वि० अपने कर्तव्यमें लगा हुआ। **—धामा(मन्)**—पु० तीसरे मन्वंतरका एक देववर्ग। **—धुर्**—वि० स्वाधीन। **—नाभक**—पु० एक अस्त्रमंत्र। **—नाम(न्)**—पु० अपना नाम। **—०धन्य**—वि० जो अपने नामके कारण धन्य हो। **—नामा(मन्)**—वि० जो अपने नामसे विख्यात हो। **—नाश**—पु० अपनी बरबादी। **—पक्ष**—पु० अपना पक्ष या दल; अपने पक्षका व्यक्ति, मित्र; अपना मत। **—पक्षीय**—वि० अपने पक्षका। **—पिंडा**—स्त्री० एक तरहका खजूर, पिंडखजूर। **—पूर्ण**—वि० अपने कार्योंसे पूर्णतः संतुष्ट। **—प्रकाश**—वि० जो अपने आप स्पष्ट हो; स्वयं प्रकाशित। **—प्रधान**—वि० स्वाधीन। **—प्रमितिक**—वि० अपना काम स्वयं करनेवाला। **—बंधु**—पु० अपना संबंधी या मित्र। **—बीज**—पु० आत्मा। **—भट**—पु० वह जो स्वयं अपनी रक्षा करता हो। **—भद्रा**—स्त्री० गंभारी। **—भाउ***—पु० स्वभाव, प्रकृति। **—भाव**—पु० स्वदेश; अपनी अवस्था; सहज प्रकृति (नेचर); आदत (हैबिट); मिजाज (डिस्पोज़ीशन)। **—०कृत्**—वि० प्राकृतिक। **—०ज,—०जनित**—वि० सहज, प्राकृतिक। **—०द्वेष**—पु० प्राकृतिक द्वेष। **—०प्रभव**—वि० दे० 'स्वभावज'। **—०सिद्ध**—वि० सहज, प्राकृतिक। **—भावतः(तस्)**—अ० स्वभावसे ही, प्रकृतितः। **—भावोक्ति**—स्त्री० एक काव्यालंकार जहाँ किसीके गुणों, क्रिया, स्वभावादिका यथावत् वर्णन हो। **—भू**—वि० आप ही आप उत्पन्न होनेवाला। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव। स्त्री० स्वदेश। **—भूति**—स्त्री० अपना कल्याण। **—भूमि**—स्त्री० स्वदेश, जन्मभूमि। पु० उग्रसेनका एक पुत्र। **—मनीषा**—स्त्री० अपना मत या विचार। **—मनीषिका**—स्त्री० अपनी राय; उदासीनता। **—योनि**—स्त्री० अपना उत्पत्तिस्थान; बहिन या निकट संबंधवाली कोई स्त्री। वि० जिसके साथ रक्त-संबंध हो (माताकी ओरसे); जो स्वयं अपना उत्पत्ति-स्थान हो। **—रस**—पु० किसीका अपना (अमिश्रित) रस; पत्रादिका पीसकर निकाला हुआ रस; प्राकृतिक स्वाद; एक विशेष कषाय; आत्मानंद; तैलीय पदार्थ सिलपर पीसनेपर लगी हुई तरौंछ; अपनी मनोवृत्ति; अपने लोगोंके प्रति होनेवाली भावना; आत्मरक्षाकी सहज वृत्ति; एक पर्वत; सादृश्य। वि० रुचिके अनुकूल। **—रसा**—स्त्री० कपित्थ-पत्रक; लाख। **—रसादि**—पु० क्वाथ। **—राजी**—वि० (हिं०) स्वराज्यके लिए आंदोलन करनेवाला; स्वराज्य-संबंधी। **—राज्य**—पु० स्वाधीन राज्य, जहाँके शासक वहींके लोग हों; एक साम। **—०भोगी(गिन्)**—वि० जिसे स्वराज्य या आत्मशासन प्राप्त हो। **—राट्(ज्)**—वि० जो स्वयं प्रकाशित हो। पु० ब्रह्मा; विष्णु; एक मनु; एक एकाह; सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक; कुछ वैदिक छंद; ऐसे राज्यका राजा जहाँ स्वराज्य हो। **—राष्ट्र**—पु० अपना राज्य (होम); एक जनपद; एक राजा (तामस मनुके पिता)। **—०मंत्री(त्रिन्)**—पु० देशके आन्तरिक शासन-संबंधी कार्योंकी देखभाल करनेवाला मंत्री (होम मिनिस्टर)। **—०सदस्य**—पु० गृहसदस्य। **—रुचि**—स्त्री० अपनी रुचि या पसंद। वि० अपनी रुचिसे चलनेवाला। **—रुट्(ह्)**—वि० आपही आप उगने या बढ़नेवाला। **—रूप**—पु० अपनी आकृति; अपनी विशेषता, स्वभाव; आत्मा; विशेष उद्देश्य; प्रकार; मूर्ति; चित्र; वह जो देवताका रूप धारण करे; घटना। अ० (समासांतमें) तौरपर। वि० अपनी विशेषतासे युक्त; समान, तुल्य; सुंदर, मनोहर; पंडित, बुद्धिमान्। **—०गत**—वि० अपनी ही जैसी विशेषताओं-वाला। **—०दया**—स्त्री० इहलोक और परलोकमें सुखप्राप्तिके लिए देखादेखी की जानेवाली दया, जीवरक्षा (जैन०)। **—०ज्ञ**—वि० तत्त्वज्ञानी, आत्मा-परमात्माका रूप समझनेवाला। **—०प्रतिष्ठा**—स्त्री० अपनी विशेषतासे युक्त होना; जीवका अपने स्वरूपमें प्रतिष्ठित होना। **—०रूपाभास**—पु० अभाव होते हुए स्वरूपका आभास होना। **—०संबंध**—पु० अनुरूपताके आधारपर स्थापित संबंध। **—रूपक**—पु०,**—रूपिका**—स्त्री० ···की मूर्ति; अपनी अवस्था या विशेषता; स्वभाव। **—रूपमान***—वि० दे० 'स्वरूपवान्'। **—रूपवान्(वत्)**—वि० सुंदर। **—रूपी(पिन्)**—वि० जो अपने प्राकृतिक रूपमें हो; ···के रूपमें प्रकट होनेवाला; मूर्तिमान्; समरूप। **—रूपोपनिषद्**—स्त्री० एक उपनिषद्। **—रोचि**—स्त्री० अपनी किरण। **—लक्षण**—पु० विशेषता, विशेष गुण। **—लिखित** वि० अपना लिखा हुआ। **—लीन**—पु० एक दानव। **—वंशी(शिन्)**—वि० बादवाली पीढ़ीका। **—वंश्य**—वि० अपने परिवारका। **—वर्गीय**—वि० अपने वर्गका। **—वश**—वि० आत्मनिग्रही; स्वाधीन। **—वशिनी**—स्त्री० एक वृत्त। **—वश्य**—वि० अपने ही वशमें रहनेवाला। **—वहित**—वि० आत्म-प्रेरित; सतर्क, चौकन्ना। **—वार**—पु० अपना स्थान। **—वार्त्त**—पु० अपनी अवस्था या भलाई। **—वासिनी**—स्त्री० पिताके घर रहनेवाली कन्या या विवाहिता स्त्री। **—विकत्थन**—वि० डींग मारनेवाला। **—विक्षिप्तसैन्य**—पु० स्वदेशमें मौजूद सेना। —

विग्रह–पु० अपना शरीर। **–विधेय**–वि० जो अपने करनेका हो। **–विनाश**–पु० अपना नाश, आत्महत्या। **–विवेक**–पु० उचित अनुचितका विचार करनेकी शक्ति (डिस्क्रीशन)। **–विषय**–पु० स्वदेश; अपना विषय या क्षेत्र। **–वृत्ति**–स्त्री० अपने जीवन-यापनका ढंग; आत्मनिर्भरता। वि० आत्मनिर्भर, स्वावलंबी। **–शासन**–पु० स्वायत्तशासन (सेल्फ़ गवर्नमेंट)। **–श्लाघा**–स्त्री० आत्मप्रशंसा। **–संभूत**–वि० आत्मसंभव। **–संविद्**–स्त्री० आत्मज्ञान। –वि० केवल अपनेको जाननेवाला। **–संवृत**–वि० आत्मरक्षित। **–संवेदन**–पु० अपना प्राप्त किया हुआ ज्ञान। **–संवेद्य**–वि० जिसका ज्ञान केवल अपनेको हो सके। **–संस्था**–स्त्री० आत्मलीन होना। **–सचिव**–पु० (प्राइवेट सेक्रटरी) दे० 'निजसचिव' या 'निजी सचिव'। **–समुत्थ**–वि० अपने आप उठनेवाला; प्राकृतिक; जो स्वदेशमें प्रस्तुत हुआ हो। **–सर्व**–पु० अपनी सारी संपत्ति। **–सू**–स्त्री० पृथ्वी। **–स्थ**–वि० अपनेमें स्थित; जो अपनी स्वाभाविक अवस्थामें हो; तंदुरुस्त, नीरोग; निर्दोष; स्थिरचित्त; शान्त; संतुष्ट; सुखी; स्वाधीन; आत्मनिर्भर। **–०चित्त**–वि० जिसके मनमें किसी तरहका विकार न हो। **–०वृत्त**–पु० स्वस्थ व्यक्तिका उपचार; स्वास्थ्य-रक्षाके नियम। **–स्थित**–वि० स्वाधीन। **–स्वध**–पु० एक पितृवर्ग। **–हंता(तृ)**–पु० आत्महत्या करनेवाला। **–हरण**–पु० संपत्तिका हरण। **–हस्त**–पु० अपना हाथ; हस्ताक्षर। **–हस्तिका**–स्त्री० कुदाल। **–हित**–वि० अपने लिए लाभदायक। पु० अपना हित।

स्वक–वि० (सं०) अपना, निजी। पु० अपना संबंधी, मित्र; अपनी संपत्ति।

स्वकीय–वि० (सं०) अपना, निजी; अपने परिवारका। पु० मित्र, अपने लोग।

स्वकीया–स्त्री० (सं०) अपनी पत्नी; वह विवाहिता स्त्री जो अपने ही पतिसे प्रेम करती हो।

स्वगृहस्मारी–वि० (होमसिक) जिसे बाहर जानेपर बार-बार अपने घरका स्मरण आये, घरसे दूर जानेपर जिसे दुःखका अनुभव हो; गृहातुर।

स्वचालित तोप–स्त्री० (ऑटोमैटिक गन) बिना किसी चालकके, स्वतः चलनेवाली तोप।

स्वक्त–वि० (सं०) अच्छी तरह लिप्त।

स्वक्ष–वि० (सं०) सुंदर धुरीवाला; पूर्ण अंगोंवाला; सुंदर नेत्रोंवाला; * दे० 'स्वच्छ'। पु० सुंदर धुरीवाला रथ; एक जाति।

स्वच्छ–वि० (सं०) निर्मल; साफ; पवित्र; सफेद; स्पष्ट; निश्छल, सुंदर; स्वस्थ। पु० बिलौर; मोती; बेरका पेड़; सोने और चाँदीका मिश्रण; स्वर्णमाक्षिक; रौप्यमाक्षिक; खटिका। **–द्रव्य**–पु० शरीरकी सफेद धातु। **–धातुक**–पु० सोने और चाँदीका मिश्रण। **–पत्र**–पु० अभ्रक। **–भाव**–पु० पारदर्शिता। **–भास**–वि० स्वच्छ प्रकाशवाला। **–मणि**–पु० बिल्लौर। **–वालुक**–पु० एक उपधातु, विमल।

स्वच्छक–वि० (सं०) बहुत साफ या चमकीला (जैसे कपोल)।

स्वच्छता–स्त्री०, **स्वच्छत्व**–पु० (सं०) सफाई, निर्मलता; विशुद्धता। **–वर्द्धक**–वि० (सैनिटरी) गंदगीका निवारण कर मकान आदिके चारों तरफकी स्वच्छता बढ़ानेवाला; स्वच्छता आदिके कारण स्वास्थ्यरक्षामें सहायक।

स्वच्छना*–स० क्रि० साफ करना।

स्वच्छा–स्त्री० (सं०) श्वेत दूर्वा।

स्वच्छी*–वि० 'स्वच्छ'।

स्वतंत्र पत्रकार–पु० (फ्री लांस जर्नलिस्ट) वह पत्रकार जो किसी एक ही पत्र या संवादसंस्था आदिका वेतनभोगी कर्मचारी न होकर स्वतंत्र रूपसे लेख लिखकर या संवाद भेजकर पारिश्रमिक पाता हो और उसीसे निर्वाह करता हो।

स्वतः(तस्)–अ० (सं०) आप ही, अपनेसे। **–प्रमाण,–सिद्ध**–वि० स्वयं सिद्ध, स्वयं प्रत्यक्ष।

स्वतोविरोधी(धिन्)–वि० (सं०) अपना ही विरोध करनेवाला।

स्वत्व–पु० (सं०) अपना भाव; स्वतंत्रता; अधिकार, स्वामित्व। **–निवृत्ति**–स्त्री० अधिकारका न रहना। **–बोधन**–पु० स्वामित्वका प्रमाण। **–शुल्क**–पु० स्वत्वका उपयोग करनेके लिए दिया जानेवाला शुल्क (रायल्टी)। **–संलेख**–पु० (टाइटिल डीड) वह संलेख या आधिकारिक लिखित पत्र जिसमें किसी मकान, खेत आदिपर किसीके पूर्ण और निर्द्वंद्व स्वत्वकी बात स्वीकार की गयी हो। **–हस्तांतरण**–पु० (एलियनेट) किसी संपत्ति आदिका अधिकार (स्वत्व) दूसरेको देना या उसके नाम लिखना। **–हानि**–पु० अधिकारका न रहना। **–हेतु**–पु० स्वामित्वका कारण या आधार।

स्वत्वाधिकारी(रिन्)–पु० (सं०) स्वामी, मालिक।

स्वदन–पु० (सं०) आस्वादन, खाना; लेह, चाटना।

स्वदित–वि० (सं०) आस्वादित, चखा हुआ, खाया हुआ।

स्वधा–अ० (सं०) पितरोंके उद्देश्यसे हवि देते समय उच्चारण करनेका एक शब्द। स्त्री० अपनी प्रकृति, स्वभाव; अपनी इच्छा, रुचि; पितरोंको दी जानेवाली हवि; पितरोंको दिया जानेवाला अन्न; भोजन, खाद्य; हवि; अपना भाग; श्राद्ध, मृतक-कर्म; माया। **–कर**–वि० पितरोंको हवि देनेवाला। **–कार**–पु० स्वधा शब्दका उच्चारण। **–प्रिय**–पु० अग्नि; पितर; पितृलोक; काला तिल। **–भुक्(ज्),–भोजी(जिन्)**–पु० पितर; देवता।

स्वधाधिप–पु० (सं०) अग्नि।

स्वधाशन–पु० (सं०) पितर।

स्वधिति, स्वधिती–स्त्री० (सं०) कुल्हाड़ी; वज्र; आरी। **–हेतिक**–पु० परशु धारण करनेवाला सैनिक।

स्वधिष्ठान–वि० (सं०) जो अच्छी स्थिति, अच्छी जगहपर हो (युद्ध, रथ)।

स्वधिष्ठित–वि० (सं०) जो ठहरने या रहनेके लिए अच्छा हो; अच्छी तरह सिखलाया-सधाया हुआ (जैसे हाथी)।

स्वधीत–वि० (सं०) जिसका अच्छी तरह पाठ किया गया हो; अच्छी तरह अध्ययन किया हुआ। पु० अच्छी तरह पढ़ा हुआ विषय।

स्वनंदा–स्त्री० (सं०) दुर्गा।

स्वन–पु० (सं०) ध्वनि, शब्द; एक अग्नि। वि० बुरा शब्द करनेवाला। **–चक्र**–पु० एक तरहका रतिबंध।

स्वनि–पु० (सं०) ध्वनि, शब्द; अग्नि।

स्वनिक–वि० (सं०) शब्द करनेवाला।

स्वनित–वि० (सं०) शब्दित, ध्वनित। पु० शब्द; गर्जन; बादलोंकी गर्जना।

स्वनिताह्वय–पु० (सं०) तंडुलीय, चौलाईका साग।

स्वनोत्साह–पु० (सं०) गैंड़ा।

स्वन्न–पु० (सं०) अच्छा आहार।

स्वपच*–पु० दे० 'श्वपच'।

स्वपन–पु० (सं०) नींद; स्वप्न; संज्ञाहीनता (त्वचाकी)।

स्वपना*–पु० स्वप्न।

स्वपनीय, स्वप्तव्य–वि० (सं०) सोने योग्य।

स्वप्न–पु० (सं०) निद्रा; अर्द्ध सुप्तावस्थामें जाग्रत् मनका व्यापार-विशेष, ख्वाब, सपना; आलस्य; सुस्ती; ऊँची कल्पना, कोई महत्त्वपूर्ण कार्य करनेका विचार। **–कर**–वि० निद्रा लानेवाला। **–कल्प**–वि० स्वप्न जैसा। **–काम**–वि० सोनेका इच्छुक। **–कृत्**–वि० निद्रा लानेवाला। पु० सुनिषण्णक नामक शाक, सुसना। **–गत**–वि० जो सो गया हो। **–गृह**–पु० शयनागार। **–चक्र**–पु० एक रतिबंध। **–ज**–वि० नींदमें उत्पन्न। पु० स्वप्न। **–ज्ञान**–पु० स्वप्नमें होनेवाली अनुभूति। **–तंद्रिता**–स्त्री० निद्रालुतासे उत्पन्न शैथिल्य। **–दर्शन,–निदर्शन,–संदर्शन**–पु० स्वप्न देखना। **–दर्शी(र्शिन)**, **–दृक्(श्)**–वि० स्वप्न देखनेवाला (ड्रीमर)। **–दोष**–पु० स्वप्नावस्थामें होनेवाला शुक्रपात। **–धीगम्य**–वि० निद्रा जैसी अवस्थामें अनुभूत होनेवाला। **–निकेतन**–पु० शयनागार। **–प्रपंच**–पु० स्वप्नमें प्रकट होनेवाला संसार। **–भाक्(ज्)**–वि० स्वप्न देखता हुआ, सोया हुआ। **–माणव, माणवक**–पु० स्वप्न पूरा करानेवाला एक

मंत्र। **–लब्ध**–वि० स्वप्नमें प्राप्त, स्वप्नमें दृष्ट। **–विकार**–पु० स्वप्नकृत परिवर्तन। **–विचारी(रिन्)**–वि० स्वप्नका विचार करनेवाला। पु० स्वप्नशास्त्री। **–विनश्वर**–वि० स्वप्न जैसा क्षणभंगुर। **–विपर्यय**–पु० सोनेका समय उलट देना। **–**वि० स्वप्नमें घटित होनेवाला। **–शास्त्री**–पु० स्वप्नके फलाफल आदि संबंधी विचार करनेवाला। **–शील**–वि० निद्रालु। **–सात्**–वि० स्वप्नमें लीन। **–सृष्टि**–स्त्री– स्वप्नका निर्माण। **–स्थान**–पु०शयनागार।

स्वप्नक्(ज्)–वि० (सं०) निद्रालु, निद्रित।

स्वप्नांत–पु० (सं०) निद्रा या स्वप्नकी अवस्था; स्वप्नका अंत।

स्वप्नांतर–पु० (सं०) दे० 'स्वप्नांत'। **–गत**–वि० स्वप्नमें घटित।

स्वप्नांतिक–पु० (सं०) स्वप्नकालिक चेतना।

स्वप्नादेश–पु० (सं०) स्वप्नका दिया हुआ आदेश।

स्वप्नाना*–स० क्रि० स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु–वि० (सं०) निद्रालु।

स्वप्नावस्था–स्त्री० (सं०) स्वप्नकी अवस्था (जीवनके लिए प्रयुक्त)।

स्वप्निल–वि० (सं०) सुप्त; स्वप्नका; जिसका अस्तित्व केवल स्वप्नमें हो, स्वप्नमय (स्वप्निल भाषा)।

स्वप्नोपम–वि० (सं०) स्वप्नतुल्य।

स्वमत(पक्ष)त्यागी–वि० (रेनीगेड) अपने पूर्व-विचारों या सिद्धांतोंका, अपने पक्षवालोंका, परित्याग कर देनेवाला।

स्वबरन*–पु० सुवर्ण, सोना।

स्वभाविक।–वि० दे० 'स्वाभाविक'।

स्वमेक–पु० (सं०) संवत्सर, वर्ष।

स्वयं–'स्वयम्'का समासगत रूप। **–कृत**–वि० आत्मकृत, अपना किया हुआ; प्राकृतिक; गोद लिया हुआ। **–कृती(तिन्)**–वि० प्रकृत्या काम करनेवाला। **–कृष्ट**–वि० खुद जोता हुआ। **–गुप्ता**–स्त्री० शूकशिंविका, केवाँच। **–ग्रह,–ग्रहण**–पु० बलात् ग्रहण कर लेना। **–ग्राह**–पु० बलात् ग्रहण कर लेना; स्वयं चुन लेना। वि० स्वयं चुन लेनेवाला। **–०दान**–पु० सेना द्वारा स्वतः सहायता पहुँचाना (कौ०)। **–जात**–वि० जो आपसे आप उत्पन्न हुआ हो। **–ज्योति(स्)**–वि० जो आप ही आप प्रकाशित हो। पु० परमेश्वर। **–तथ्य**–पु० जो तथ्य स्वयं ही सिद्ध हो (एक्जिअम)। **–दत्त**–वि० जिसने अपनेको स्वयं दे दिया है। पु० वह लड़का जो दूसरेका दत्तक पुत्र बन गया है। **–दान**–पु० स्वेच्छामूलक दान (कन्याका विवाहमें)। **–दूत**–पु० स्वयं अपना दूतत्व करनेवाला नायक। **–दूती**–स्त्री० अपना दूतत्व आप ही करनेवाली नायिका। **–दृक्(श्)**–वि० जो स्वयं प्रकट हो। **–देव**–पु० प्रत्यक्ष देवता। **–पतित**–वि० जो आप ही आप गिरा हो। **–पाकी(किन्)**– वि० स्वयं अपना भोजन बनानेवाला। **–पाठ**–पु० मूल पाठ। **–प्रकाश**–वि० जो खुद प्रकाशित हो। **–प्रकाशमान**–वि० दे० 'स्वयंप्रकाश'। **–प्रज्वलित**–वि० जो आप ही आप जल रहा हो। **–प्रभ**–वि० जो आप ही आप चमक रहा हो। पु० भावी उत्सर्पिणीके चौथे अर्हत्। **–प्रभा**–स्त्री० एक अप्सरा; मयकी एक कन्या। **–प्रभु**–वि० जो स्वयं शक्तिशाली हो; जो खुद अपना मालिक हो। **–प्रमाण**–वि० जो स्वयं प्रमाणित हो, जिसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता न हो। **–प्रस्तुत**–वि० स्वयं प्रशंसित। **–फल**–वि० जो आप ही अपना फल हो। **–भर**–वि० अपने आप भरनेवाला, खाली होनेवाला (पिस्तौल या बन्दूक) (सेल्फ़ लोडिंग)। **–भु**–पु० ब्रह्मा। **–भुव**–पु० आदि मनु; ब्रह्मा; शिव। **–भुवा**–स्त्री० धूम्रपत्रा। **–भू**–वि० जो स्वयं उत्पन्न हुआ हो; बुद्ध-संबंधी। पु० ब्रह्मा; विष्णु; शिव; बुद्ध; आदि बुद्ध; काल; कृष्ण वासुदेव (जै०); कामदेव; व्यास; स्त्रियोंका स्तन; अंतरिक्ष; माषपर्णी; लिंगिनी; * स्वायंभुव। **–भूत**–वि० जो आप ही आप उत्पन्न हुआ हो। **–भृत**–वि० जो स्वयं पोषित हुआ हो, अन्य द्वारा नहीं। **–भ्रमि,–भ्रमी(मिन्)**–वि० स्वयं चक्कर खानेवाला। **–मृत**–वि० जिसकी प्राकृतिक मृत्यु हुई हो; जो स्वेच्छासे मरा हो। **–म्लान**–वि० जो आप ही फीका पड़ गया हो, मुरझा गया हो। **–यान**–पु० स्वयं आक्रमणका आरंभ करना। **–वर**–पु० उपस्थित विवाहार्थियोंमेंसे कन्याका स्वयं पतिका चुन लेना; ऐसे वरणकी सभा या उत्सव। **–०पति**–पु० स्वयंवरमें चुना हुआ पति। **–०विवाह**–पु० स्वयंवरकी विधिसे होनेवाला विवाह, स्मृतियोंमें जायज माने हुए आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक। **–वरण**–पु० पतिका चुनाव। **–वरयित्री**–स्त्री० स्वयं पतिका चुनाव करनेवाली कन्या। **–वरा**–स्त्री० पतिका स्वयं वरण, चुनाव करनेवाली कन्या, पतिंवरा। **–वश**–वि० स्वाधीन। **–वह**–वि० स्वयं चलनेवाला (यंत्रादि); स्वयं अपनेको धारण करनेवाला। **–वादिदोष**–पु० न्यायालयमें झूठी बात दुहरानेका अपराध। **–वादी(दिन्)**–वि० जिरहमें झूठी बात दुहरानेवाला। **–विक्रीत**–वि० जिसने खुद अपनेको बेचा हो। **–विलीन**–वि० जो आप ही आप (दूसरेमें) लीन हो गया हो। **–विशीर्ण**–वि० जो आप ही आप गिरा हो। **–शृत**–वि० आप ही आप पका हुआ। **–श्रेष्ठ**–वि० प्रकृत्या सबसे अच्छा (शिव)। **–संयोग**–पु० आपसे आप होनेवाला (वैवाहिक) संबंध। **–सिद्ध**–वि० जिसके लिए प्रमाणकी आवश्यकता न हो; सर्वमान्य; (एग्ज़िओमैटिक) जो स्वयं अपनेमें पूर्ण हो (लोक)। **–सिद्धि**–स्त्री० (एक्जियम) ऐसी सरल बात जिसका सच होना बिना किसी प्रमाणके ही मानना पड़े। **–सेवक**–पु० बिना वेतन लिये स्वेच्छासे सेवा करनेवाला। (वालंटियर) किसी तरहकी सामाजिक सेवा या ऐसा ही अन्य कार्य स्वेच्छासे, बिना वेतन लिये, करनेवाला व्यक्ति। **–सेविका**–स्त्री० स्त्री स्वयंसेवक। **–हारिका,–हारी**–स्त्री० दुःसह और निर्माष्टिकी एक कन्या जो तिलका तेल, केसरका रंग आदि हरण कर लेती थी। **–होता(तृ)**–पु० स्वयं यज्ञ करनेवाला।

स्वयमधिगत–वि० (सं०) खुद प्राप्त किया हुआ।

स्वयमर्जित–वि० (सं०) खुद उपार्जित किया हुआ (धन)।

स्वयमवदीर्ण–पु० (सं०) पृथ्वीकी सतहपर आपसे आप फटी हुई दरार।

स्वयमागत–वि० (सं०) आपसे आप आया हुआ; बिना कहे किसी बातमें दखल देनेवाला।

स्वयमाहृत–वि० (सं०) स्वयं लाया हुआ। **–भोजी(जिन्)**–वि० अपना ही लाया हुआ खानेवाला।

स्वयमिंद्रियमोचन–पु० (सं०) आपसे आप शुक्रका पात होना।

स्वयमीश्वर–पु० (सं०) वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर।

स्वयमीहितलब्ध–वि० (सं०) स्वयं अपने प्रयत्नसे प्राप्त।

स्वयमुक्ति–पु० (सं०) वह गवाह जो आप ही–बिना कहे–गवाही दे।

स्वयमुज्ज्वल–वि० (सं०) जो स्वयं दीप्तिमान् हो।

स्वयमुदित–वि० (सं०) जिसका आपसे आप उदय हुआ हो।

स्वयमुद्घाटित–वि० (सं०) जो आप ही आप खुल गया हो (दरवाजा)।

स्वयमुपगत–वि० (सं०) स्वेच्छासे दासता स्वीकार करनेवाला।

स्वयमुपस्थित–वि० (सं०) जो आप ही, अपनी इच्छासे आया हो।

स्वयमुपागत–वि० (सं०) स्वेच्छासे आया हुआ। पु० वह लड़का जो स्वयं गोद लिये जानेको कहे।

स्वयमुपेत–वि० (सं०) अपनी इच्छासे आया हुआ।

स्वयमेव–अ० (सं०) स्वयं ही, अपने आप।

स्वयम्–अ० (सं०) खुद, आप, अपने आप, अपनेतईं, स्वतः; अकेले।

स्वर–पु० (सं०) आवाज; कंठध्वनि (साउण्ड); वह वर्ण जिसका पूरा उच्चारण अन्य वर्णकी सहायताके बिना हो सके (व्या०); संगीतके सात सुरों–षड्ज, ऋषभ आदिमेंसे कोई; श्वास; सातकी संख्या; उच्चारणमें स्पंदनकी मात्रा (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित); खर्राटा; *स्वर्; आकाश; विष्णु। **–कंप**–पु० स्वरका हिलना। **–कर**–वि० आवाज खोलने, सुरीली बनानेवाला; स्वर उत्पन्न करनेवाला। **–क्षय**–पु० स्वरकी हानि। **–गुप्ति**–स्त्री० स्वरकी गंभीरता। **–ग्राम**–पु० संगीतके सातों स्वरोंका क्रम, स्वरसप्तक, सरगम। **–घ्न**–पु० गलेका एक रोग। **–छिद्र**–पु० बाँसुरीका स्वरवाला छेद। **–दीप्त**–वि० स्वरके विचारसे अशुभ। **–नादी(दिन्)**–पु० मुँहसे फूँककर बजानेका

बाजा। **–नाभि**–पु० फूंककर बजानेका एक प्राचीन बाजा। **–पत्तन**–पु० सामवेद। **–परिवर्तन**–पु० स्वरका परिवर्तन। **–पात**–पु० (ऐक्सेंट) किसी शब्दका उच्चारण करते समय शुरूके या बीचके किसी वर्णपर किंचित् रुकना, उसपर जोर देना। **–पुरंजय**–पु० शेषका एक पुत्र। **–प्रधान**–वि० (राग) जिसमें स्वरकी ही प्रधानता हो, तालकी नहीं। **–बद्ध**–वि० ताल-स्वरमें बंधा हुआ (गाना)। **–ब्रह्म(न्)**–पु० वेदादि ग्रंथ। **–भंग**–पु० गले या आवाजका बैठ जाना; गलेका एक रोग; हर्ष, भय, क्रोध, मद आदिके कारण गला भर आना अथवा मुंहसे कुछ ऊटपटांग निकल जाना, एक सात्त्विक अनुभाव (सा०)। **–भंगी(गिन्)**–वि० स्वरभंग रोगसे पीड़ित। पु० एक पक्षी। **–भाव**–पु० अंगसंचालनके बिना केवल स्वरोंसे मनके भावोंका प्रकाशन। **–भेद**–पु० स्वरभंग; आवाजका बैठ जाना; उच्चारणमें लाया जानेवाला अंतर; संगीतके स्वरका अंतर। **–मंचनृत्य**–पु० नृत्यका एक प्रकार। **–मंडल**–पु०,**–मंडलिका**–स्त्री० एक तरहकी वीणा। **–मात्रा**–स्त्री० उच्चारणकी मात्रा। **–यंत्र**–पु० गलेका वह अवयव जिसकी सहायतासे शब्द या स्वर निकलते हैं (लैरिंक्स)। **–योग**–पु० शब्द, ध्वनि। **–लहरी**–स्त्री० स्वरोंकी लहर, तरंग। **–लासिका**–स्त्री० वंशी। **–लिपि**–स्त्री० संगीतके स्वरोंको लिखनेकी लिपि या रीति, रागविशेषमें प्रयुक्त स्वर, ताल, लय, मात्रा इत्यादि बतानेवाले चिह्नोंका समूह; ऐसे चिह्नोंकी सहायतासे प्रस्तुत पाठ (नोटेशन)। **–वाही(हिन्)**–वि० (बाजा) जो केवल स्वर निकाल सके, ताल आदि नहीं। **–विकार**–पु० आवाजका बिगड़ जाना। **–विज्ञान**–पु० स्वरोंका विवेचन करनेवाला विज्ञान, स्वरतत्त्व। **–वेधी(धिन्)**–पु० दे० 'शब्दवेधी'। **–शास्त्र**–पु० दे० 'स्वरविज्ञान'। **–शुद्ध**–वि० मात्रा आदिकी दृष्टिसे शुद्ध (स्वर)। **–शून्य**–वि० बेसुरा। **–संक्रम**–पु० सुरोंके उतार-चढ़ावका क्रम (संगीत)। **–संगति**–स्त्री० सुरोंका मेल। **–संदर्भ**–पु० दे० 'स्वर-संक्रम'। **–संधि**–स्त्री० स्वरवर्णों या स्वरांत और स्वरादि पदोंमें होनेवाली संधि। **–संपद्**–स्त्री० स्वरोंका मेल, सुर (संगीत)। **–संपन्न**–वि० सुरीला, जिसमें स्वरोंका मेल हो। **–सप्तक**–पु० संगीतके सात स्वरोंका समूह। **–समुद्र**–पु० प्राचीन कालका एक बाजा। **–साद**–पु० स्वरभंग। **–साधन**–पु० विभिन्न सप्तकोंके स्वरोंको ठीक-ठीक निकालनेका अभ्यास करना। **–सूत्र**–पु० गले और छातीके अन्दर सूत्राकार अंग; जिसकी सहायतासे स्वर निकलता है (वोकल कॉर्ड)। **–हा(हन्)**–पु० दे० 'स्वरघ्न'। **मु०** **–उतरना**–स्वरका धीमा पड़ना। **–चढ़ाना**–स्वर ऊँचा करना। **–फूंकना**–किसीको प्रभावित करना। **–निकालना**–स्वर उत्पन्न करना। **–भरना**–एक ही स्वरको देरतक निकालना; एक ही स्वर बजाकर बजानेवालेके स्वरकी पूर्ति करना। **–मिलाना**–किसीके स्वरके मेलमें स्वर निकालना। **–साधना**–सप्तकके स्वरोंका अभ्यास करना।

स्वरक्षु–स्त्री० (सं०) वक्षु नद।

स्वरग*–पु० 'स्वर्ग'।

स्वरतिक्रम–पु० (सं०) स्वर्गको लाँघकर वैकुंठ पहुँचना।

स्वरधीत–पु० (सं०) मेरु।

स्वरांत–वि० (सं०) स्वरसे अंत होनेवाला; जिसका अंतिम अक्षर स्वरित हो।

स्वरांतर–पु० (सं०) दो स्वरोंके उच्चारणके बीचका अवकाश।

स्वरांश–पु० (सं०) आधा या चौथाई स्वर (संगीत); सप्तमांश।

स्वरा–स्त्री० (सं०) ब्रह्माकी ज्येष्ठा पत्नी, गायत्रीकी सपत्नी।

स्वराघात–पु० (सं०) किसी शब्दका उच्चारण करते समय किसी व्यंजन या स्वरपर अधिक जोर देनेकी क्रिया (एक्सेंट)।

स्वरापगा–स्त्री० (सं०) स्वर्गंगा।

स्वरारूढ–वि० (सं०) स्वर्गपर चढ़ा हुआ।

स्वरालु–पु० (सं०) वचा।

स्वराष्टक–पु० (सं०) एक संकर राग।

स्वरिंगण–पु० (सं०) आँधी, तूफान।

स्वरित–वि० (सं०) स्वरयुक्त; ध्वनित; उच्चरित। पु० उदात्त-अनुदात्तके बीचका, मध्यम स्वर।

स्वरु–पु० (सं०) यज्ञ; यज्ञके स्तंभका एक अंश; यूपखंड; सूर्यरश्मि; वज्र; बाण; एक तरहका बिच्छू। **–मोचन**–पु० यज्ञस्तूपका नीचेसे तीसरे और ऊपरसे पंद्रहवें हाथवाला भाग।

स्वरु(स्)–पु० (सं०) वज्र।

स्वरेणु–स्त्री० (सं०) सूर्यकी पत्नी, संज्ञा।

स्वरोद–पु० दे० 'सरोद'।

स्वरोदय–पु० (सं०) स्वरका उदय, उत्पत्ति; श्वासभेदसे शुभाशुभ फल जाननेकी विद्या। वि० जिसके बाद स्वर हो।

स्वरोपघात–पु० (सं०) स्वरभंग।

स्वर्–पु० (सं०) स्वर्ग; आकाश; तीन व्याहृतियोंमेंसे एक; सूर्यके ऊपरका या सूर्य और ध्रुवके बीचका स्थान; कांति, दीप्ति; जल; शिव। **–गंगा**–स्त्री० गंगाकी स्वर्गमें बहनेवाली धारा, आकाश गंगा, मंदाकिनी। **–ग**–पु० दे० क्रममें। **–गणिका**–स्त्री० अप्सरा। **–गत**–वि० मृत। **–गति**–स्त्री०**–गमन**–पु० मृत्यु, स्वर्ग जाना। **–गा**–स्त्री० दे० 'स्वर्गंगा'। **–गिरि**–पु० सुमेरु। **–जित्**–पु० एक तरहका यज्ञ। वि०–स्वर्गपर विजय प्राप्त करनेवाला। **–ज्योति(स्)**–वि० स्वर्गकी ज्योतिसे चमकनेवाला। पु० एक साम। **–णदी**–स्त्री० मंदाकिनी; वृश्चिकाली; एक नदी, सितगंगा। **–णीत**–वि० स्वर्ग पहुँचाया हुआ। **–दंती(तिन्)**–पु० स्वर्गहस्ती। **–द**–वि० स्वर्ग देनेवाला। **–धुनी**–स्त्री० मंदाकिनी। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–नगरी**–स्त्री० अमरावती। **–नदी**–दे० 'स्वर्णदी'। **–नयन**–पु० स्वर्ग ले जाना। **–पति**–पु० इंद्र। **–भाणु**–पु० राहु। **–भानव**–पु० एक रत्न। **–भानु**–पु० राहु; एक कश्यप; कृष्णका एक पुत्र। **–०सूदन**–पु० सूर्य। **–मणि**–पु० सूर्य। **–यात**–पु० मृत। **–याता(तृ)**–वि० जो मर रहा हो। **–यान**–पु० मरण। **–योषित्**–स्त्री० अप्सरा। **–लोक**–पु० स्वर्ग; मेरु; देवता। **–वधू**–स्त्री० अप्सरा। **–वापी**–स्त्री० मंदाकिनी। **–वाहिनी**–स्त्री० मंदाकिनी। **–वेश्या**–स्त्री० अप्सरा। **–वैद्य**–पु० अश्विनीकुमार।

स्वर्ग–वि० (सं०) देवलोक जानेवाला। पु० हिंदुओंके माने हुए ऊपरके सात लोकोंमेंसे तीसरा जिसका विस्तार सूर्यलोकसे ध्रुवलोकतक है और जहाँ पुण्य कर्म करनेवाले देह-त्यागके अनंतर जाकर दुःख-क्लेष रहित सुखका भोग करते हैं, देवलोक; जैनमतानुसार १२ स्वर्ग ये हैं–सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतव, महा शुक्र, सहस्रार, आनंत, प्राणत, आरण, अच्युत; अमरावती; बिहिश्त (हेवेन); अतिसुंदर, सुखद, स्वर्गकी समता करनेवाला स्थान; आकाश (हिं०); * ईश्वर। **–काम**–वि० स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला। **–गंगा**–स्त्री० मंदाकिनी। **–गत**–वि० स्वर्ग गया हुआ, मृत। **–गति**–स्त्री०, **–गमन**–पु० स्वर्गकी यात्रा करना, मरण। (मु०**–गमन,–जाना,–सिधारना**–मृत्यु हो जाना।) **–गामी(मिन्)**–वि० स्वर्ग गमन करनेवाला। **–गिरि**–पु० मेरु पर्वत। **–च्युत**–वि० स्वर्गसे गिरा हुआ। **–जित्**–वि० स्वर्गको जीतनेवाला। **–जीवी(विन्)**–वि० स्वर्गमें रहनेवाला। **–तरंगिणी**–स्त्री० मंदाकिनी। **–तरु**–पु० कल्पवृक्ष। **–तर्ष**–पु० स्वर्ग-प्राप्तिकी उत्कट इच्छा। **–द,–दायक**–वि० स्वर्ग प्रदान करनेवाला। **–द्वार**–पु० स्वर्गका दरवाजा; एक तीर्थ; शिव। **–धाम(न्)**–पु० स्वर्गलोक। **–धेनु**–स्त्री० कामधेनु। **–नदी**–स्त्री० आकाशगंगा। **–पति**–पु० इंद्र। **–पथ**–पु० छायापथ। **–पद**–पु० एक तीर्थ। **–पर**–वि० स्वर्गका अभिलाषी। **–पुरी**–स्त्री० अमरावती। **–पुष्प**–पु० लौंग। **–प्रद**–वि० दे० 'स्वर्गद'। **–भर्ता(र्तृ)**–पु० स्वर्गपति; इंद्र। **–भूमि**–स्त्री० एक प्राचीन जनपद। **–मंदाकिनी**–स्त्री० स्वर्गंगा। **–मार्ग**–पु० छायापथ; एक तीर्थ। **–याण**–वि० स्वर्ग जाने या ले जानेवाला। पु० स्वर्गका मार्ग। **–योनि**–स्त्री० स्वर्गका कारण या साधन। **–लाभ**–पु० स्वर्गकी प्राप्ति; मृत्यु। **–लोक**–पु० देवलोक। **–लोकेश**–पु० इंद्र; शरीर। **–वधू**–स्त्री० अप्सरा। **–वाणी**–स्त्री० आकाशवाणी।

–वास–पु० स्वर्गमें निवास करना; मरना। (मु० –०होना–मरना।) **–०मेल**–स्त्री० मृत देहको ढोकर स्मशानतक ले जानेवाली मोटरगाड़ी। **–वासी(सिन्)**–वि० स्वर्गमें निवास करनेवाला; मृत। **–श्री**–स्त्री० स्वर्गका वैभव। **–संक्रम**–पु० स्वर्गका सोपान। **–संपादन**–पु० स्वर्गकी प्राप्ति। **–सद्**–पु० देवता। **–सरिद्वरा**–स्त्री० मंदाकिनी। **–साधन**–पु० स्वर्ग-प्राप्तिके साधन। **–सार**–पु० एक ताल (संगीत)। **–सुख**–पु० स्वर्गमें प्राप्त होनेवाला सुख। **–स्त्री**–स्त्री० अप्सरा। **–स्थ**–वि० स्वर्गमें स्थित, मृत। **–स्थित**–वि० दे० 'स्वर्गस्थ'।

स्वर्गापगा–स्त्री० (सं०) मंदाकिनी, स्वर्गंगा।

स्वर्गाभिकाम–वि० (सं०) स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाला।

स्वर्गारूढ़–वि० (सं०) स्वर्ग गया हुआ।

स्वर्गारोहण–पु० (सं०) स्वर्गकी ओर आरोहण करना; स्वर्गगमन, मरना।

स्वर्गार्गल–पु० (सं०) स्वर्गका फाटक।

स्वर्गावास–पु० (सं०) स्वर्गमें निवास करना।

स्वर्गिक–वि० स्वर्गीय।

स्वर्गी(र्गिन्)–वि० (सं०) स्वर्ग-संबंधी; स्वर्गीय; स्वर्गको जानेवाला; स्वर्गगामी, मृत। पु० देवता। **–(र्गि)गिरि**–पु० मेरु। **–वधू,–स्त्री**–स्त्री० अप्सरा।

स्वर्गीय–वि० (सं०) स्वर्गका; अलौकिक; दिव्य; स्वर्गवासी, मृत।

स्वर्गौका(कस्)–पु० (सं०) देवता।

स्वर्ग्य–वि० (सं०) स्वर्ग दिलाने, स्वर्गकी प्राप्ति करानेवाला; स्वर्ग-संबंधी।

स्वर्जि–स्त्री० (सं०) सज्जी; शोरा। **–क्षार**–पु० सज्जीखार।

स्वर्जिक–पु० (सं०) सज्जी; शोरा।

स्वर्जिका–स्त्री० (सं०) सज्जी। **–क्षार**–पु० सज्जीखार।

स्वर्जित–वि० (सं०) जिसने स्वर्ग जीत लिया हो। पु० एक यज्ञ।

स्वर्जी(र्जिन्)–पु० (सं०) सज्जी; शोरा।

स्वर्ण–पु० (सं०) अग्नि-विशेष; सोना नामकी धातु; सोनेका सिक्का; एक तरहका गेरू; गौरसुवर्ण नामक शाक; धतूरा; नागकेशर। **–कंडु**–पु० धूना। **–कण**–पु० कणगुग्गुल। **–कणिका**–स्त्री० सोनेका कण। **–कदली**–पु० सोनकेला। **–कमल**–पु० रक्तपद्म। **–काय**–पु० गरुड़। वि० सोने जैसी देहवाला। **–कार,–कारक**–पु० सुनार। **–कूट**–पु० हिमालयकी एक चोटी। **–कृत्**–पु० सुनार। **–केतकी**–स्त्री० पीले रंगकी केतकी। **–क्रोश**– पु० एक नद। **–क्षीरिणिका,–क्षीरी**–स्त्री० सत्यानासी। **–गणपति**–पु० गणेशका एक रूप। **–गर्भाचल**–पु० हिमालयकी एक चोटी। **–गिरि**–पु० एक पर्वत, सुमेरु। **–गैरिक**–पु० एक तरहका पीला गेरू। **–ग्रीव**–पु० स्कंदका एक अनुचर। **–ग्रीवा**–स्त्री० नाटक शैलके पूर्व भागसे निकली हुई एक नदी। **–चूड,–चूडक**–पु० नीलकंठ; मुर्गा। **–चूल**–पु० दे० 'सुवर्णचूड'। **–ज**–पु० राँगा। वि० सोनेसे उत्पन्न। **–जयंती**–स्त्री० (गोल्डन जुबिली) किसी संस्थाकी स्थापना या किसीके शासन, विवाहित जीवन आदिके पचासवें वर्षका उत्सव। **–जातिका,–जाति**–स्त्री० पीली चमेली। **–जीवंतिका,–जीवंती,–जीवी**–स्त्री० पीत जीवंती। **–जीवी(विन्)**–पु० सुनार। **–जूही**–स्त्री० (हिं०) पीली जूही। **–तीर्थ**–पु० एक प्राचीन तीर्थ। **–द**–वि० सोना देनेवाला। **–दा**–स्त्री० वृश्चिकाली। **–दामा**–स्त्री० एक देवी। **–दी**–स्त्री० मंदाकिनी; कामाख्याके पासकी एक नदी। **–दीधिति**–पु० अग्नि। **–दुग्धा,–दुग्धी**–स्त्री० सत्यानासी। **–द्रु**–पु० आरग्वध। **–द्वीप**–पु० सुमात्रा द्वीप। **–धातु**–स्त्री० सोना; पीले रंगका गेरू। **–नाभ**–पु० एक अस्त्रमंत्र; शालग्रामका एक प्रकार। **–निभ**–पु० पीले रंगका गेरू। **–पक्ष**–पु० गरुड़। **–पत्र**–पु० सोनेका पत्तर। **–पत्री**–स्त्री० सनाय। **–पद्मा**–स्त्री० मंदाकिनी। **–पर्णी**–स्त्री० पीत जीवंती। **–पर्पटी**–स्त्री० संग्रहणीकी एक प्रसिद्ध औषध। **–पाठक**–पु० टंकन, सुहागा। **–पारेवत**–पु० एक तरहका फलवृक्ष। **–पुंख**–वि० सोनेके पंखवाला (बाण)। पु० ऐसा बाण। **–पुरी**–स्त्री० लंका। **–पुष्प**–पु० आरग्वध; चंपक; कीकर; कपित्थ; पेठा। **–पुष्पा**–स्त्री० कलिकारी; स्वर्णली; सातला; स्वर्णकेतकी। **–पुष्पिका**–स्त्री० पीली चमेली। **–पुष्पी**–स्त्री० आरग्वध; स्वर्णकेतकी। **–प्रतिमा**–स्त्री० सोनेकी मूर्ति। **–प्रस्थ**–पु० जंबूद्वीपका एक उपद्वीप। **–फल**–पु० धतूरा। **–फला**–स्त्री० पीत रंभा, चंपाकेला। **–बंध,–बंधक**–पु० सोना गिरवी रखना। **–बिंदु,–बिंदु**–पु० विष्णु; एक तीर्थ; सोनेका बूँदका। **–बीज**–पु० धतूरेका बीज। **–भाक्(ज्)**–पु० सूर्य-विशेष। **–भूमि**–स्त्री० श्रीसंपन्न स्थान; दारचीनी। **–भूमिका**–स्त्री० अदरक। **–भूषण**–पु० पीला गेरू; आरग्वध। **–भृंगार**–पु० पीत भृंगराज; स्वर्णपात्र। **–मंडल**–पु० पीला गेरू। **–मय**– वि० स्वर्णसे युक्त; जो सोनेका बना हो। **–महा**–स्त्री० एक नदी। **–माक्षिक**–पु० एक उपधातु, सोनामक्खी। **–माता-(तृ)**–स्त्री० एक पौधा; एक नदी। **–मान**–पु० सोनेकी तौलमें मुद्राका मूल्य स्थिर करनेकी प्रणाली (अर्थ०)। **–मुखी**–स्त्री० सनाय। **–मुद्रा**–स्त्री० सोनेका सिक्का। **–मूल**–पु० एक पर्वत। **–मूषिका**–स्त्री० एक पौधा। **–युग**–पु० सुख-समृद्धिका समय। **–यूथिका,–यूथी**–स्त्री० पीली जूही। **–रंभा**–स्त्री० चंपाकेला। **–रस**–पु० किसी भी धातुको स्पर्शसे ही सोना बनानेवाला रस; रहस्यवादियोंकी साधनाकी वह क्रिया जिससे चंचल मन शांत हो सके। **–राग, –राज**–पु० श्वेत कमल। **–रीति**–स्त्री० सोने जैसा पीतल, राजपीतल। **–रेखा**–स्त्री० सोनेकी लकीर (कसौटीपरकी); उड़ीसाकी एक नदी। **—रेता(तस्)**–वि० सुनहले बीजोंवाला (सूर्य)। **–रोमा(मन्)**–पु० एक सूर्यवंशी राजा। **–लता**–स्त्री० ज्योतिष्मती; स्वर्णजीवंती। **–लाभ**–पु० स्वर्णकी प्राप्ति; एक अस्त्र-मंत्र। **–वंग**–पु० एक तरहका राँगेका भस्म। **–वज्र**–पु० एक तरहकी इस्पात। **–वणिक्-(ज्)**–पु० सर्राफ; सोनेका व्यापारी। **–वर्ण**–वि० सोनेके रंगका। पु० हलदी; हरताल; पीला गेरू; कणगुग्गुल; दारुहलदी। **–वर्णाक**–पु० मुरदासंग। **–वर्णा**–स्त्री० हरिद्रा; दारुहलदी। **–वर्णाभा**–स्त्री० जीवंती। **–वल्कल**–वि० सुनहले छिलकेवाला। पु० श्योनाक। **–वल्ली**–स्त्री० रक्तफला; पीत जीवंती; स्वर्णली। **–विद्या**–स्त्री० सोना बनानेकी विद्या, कीमियागरी। **–शिख**–पु० नीलकंठ। **–शुक्तिका**–स्त्री० स्वर्ण-द्वीपका सोना। **–शृंग**–वि० सोनेके सींगवाला। **–शृंगी(गिन्)**–पु० एक पर्वत। **–शेफालिका**–स्त्री० आरग्वध; पीत शेफालिका, पीला सिंधुवार। **–शैल**–पु० एक पर्वत। **–सू**–वि० सोना उत्पन्न करनेवाला (जैसे पर्वत)। **–स्थ**–वि० सोनेमें जड़ा हुआ। **–हालि**–पु० आरग्वध।

स्वर्णक–पु० (सं०) एक वृक्ष; सोना। वि० सोनेका, सुनहला।

स्वर्णली–पु० (सं०) स्वर्णपुष्पा।

स्वर्णांग–पु० (सं०) आरग्वध।

स्वर्णाकर–पु० (सं०) सोनेकी खान।

स्वर्णाद्रि–पु० (सं०) मेरु; उड़ीसाका भुवनेश्वर तीर्थ।

स्वर्णाभ–पु० (सं०) हरताल। वि० सोनेके रंगका; सर्वथा सुरक्षित।

स्वर्णारि–पु० (सं०) गंधक; सीसा।

स्वर्णालु–पु० (सं०) स्वर्णली।

स्वर्णाह्वा–स्त्री० (सं०) स्वर्णक्षीरी।

स्वर्णिका–स्त्री० (सं०) धनिया।

स्वर्णिम–वि० (सं०) सोनेका; सुनहला।

स्वर्णुली–स्त्री० (सं०) स्वर्णपुष्पा।

स्वर्णोपधातु–स्त्री० (सं०) सोनामक्खी।

स्वर्हण–पु० (सं०) अत्यधिक सम्मान।

स्वर्हत्–वि० (सं०) बहुत अधिक सम्मान्य।

स्वल्प–वि० (सं०) बहुत थोड़ा, अत्यल्प; बहुत छोटा; तुच्छ; संक्षिप्त। पु० नखी नामक गंधद्रव्य। **–कंक**–पु० चीलका एक भेद। **–कंद**–पु० कसेरू। **–केशरी(रिन्)**–पु० कचनार। **–केशी(शिन्)**–वि० जिसे बहुत कम बाल हों। पु० भूतकेश नामक पौधा। **–चटक**–पु० गौरैया। **–जंबुक**–पु० लोमड़ी। **–तंत्र–**

वि० जिसके खंड या अध्याय वहुत छोटे हों, संक्षेपमें लिखा हुआ। –**–तरु**–पु० केमुक। **–दृक्(श्)**,**–दृष्टि**–वि० अदूरदर्शी। **–देहा**–स्त्री० वहुत छोटे कदकी लड़की (विवाहके अयोग्य)। **–नख**–पु० नखी नामक गंधद्रव्य। **–पत्रक**–पु० पहाड़ी महुआ, गौरशाक। **–पर्णी**–स्त्री० मेदा नामकी ओषधि। **–फला**–स्त्री० अपराजिता। **–वल**–वि० कमजोर, दुर्वल। **–भाषी(षिन्)**–वि० कम वोलनेवाला, मितभाषी। **–रूपा**–स्त्री० शणपुष्पी। –**–वर्तुल**–पु० मटर। **–वल्कला**–स्त्री० तेजवल। **–विटप**–पु० केमुक। **–विरामज्वर**–पु० वह ज्वर जो वीच-वीचमें कम पड़ जाता हो। **–विषय**–पु० मामूली वात; वहुत छोटा अंश। –**व्यक्तितंत्र**–पु० चंद लोगोंका शासन, 'ओलिगार्की'। **–व्यय**–पु० वहुत कम खर्च। वि० कृपण। **–व्रीड**–वि० वहुत कम लज्जावाला, निर्लज्ज। **–शब्दा**–स्त्री० शणपुष्पी। **–शरीर**–वि० वहुत छोटे कदका, ठिंगना। **–शृगाल**–पु० रोहित मृग, वनरोहा। –**स्मृति**–वि० जिसे वहुत कम याद रहे।

स्वल्पक–वि० (सं०) वहुत कम; वहुत छोटा।

स्वल्पांगुलि–स्त्री० (सं०) कनिष्ठिका, कानी उँगली।

स्वल्पांतर–वि० (सं०) वहुत कम अंतरवाला।

स्वल्पायु(स्)–वि० (सं०) अल्पजीवी।

स्वल्पाहार–वि० (सं०) थोड़ा खानेवाला। पु० थोड़ा आहार।

स्वल्पिष्ठ–वि० (सं०) थोड़ेसे थोड़ा; अत्यंत अल्प; छोटेसे छोटा।

स्वल्पेच्छ–वि० (सं०) जिसकी इच्छाएँ वहुत कम हों, संतोषी।

स्ववग्रह–वि० (सं०) जिसका आसानीसे नियंत्रण किया जा सके, जो आसानीसे रोका जा सके।

स्ववच्छन्न–वि० (सं०) अच्छी तरह ढँका हुआ।

स्ववरन*–पु० सुवर्ण।

स्वव्याज–वि० (सं०) पूर्णतः निष्कपट; वहुत सच्चा, ईमानदार।

स्वशुर–पु० दे० 'श्वसुर'।

स्वसर–पु० (सं०) घर; घोंसला; दिन।

स्वसा(सृ)–स्त्री० (सं०) वहिन।

स्वसित–वि० (सं०) वहुत काला।

स्वसुर–पु० दे० 'श्वशुर'।

स्वसुराल–स्त्री० दे० 'ससुराल'।

स्वस्ति–अ० (सं०) 'कल्याण हो' इस अर्थका आशीर्वाद; दान-स्वीकारका मंत्र। स्त्री० कल्याण; व्रह्माकी एक पत्नी। **–कर**–पु० एक गोत्रकार ऋषि। **–कर्म(न्)**–पु० कल्याण करना। –**कार**–पु० स्वस्तिका उच्चारण करनेवाला वंदी; कल्याण करना। **–कृत्**–वि० कल्याण करनेवाला (शिव)। **–द**–वि० कल्याण देनेवाला (शिव)। **–देवी**–स्त्री० एक देवी (जो वायुकी पत्नी मानी जाती है)। **–पाठ**–पु० 'स्वस्तिनः' आदि मंत्रका पाठ। –**पुर**–पु० एक तीर्थ। **–भाव**–पु० शिव। **–मुख**–वि० जिसके मुखपर स्वस्ति शब्द हो। पु० पत्र (जो 'स्वस्ति'से आरंभ होता है); व्राह्मण; स्तुतिपाठक। **–वचन**–पु० स्वस्ति शब्दका उच्चारण। **–वाचक**–पु० आशीर्वाद; आशीर्वाद देनेवाला व्यक्ति। **–वाचन**,**–वाचनक**–पु० यज्ञ या मंगलकार्य आरंभ करते समय किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य; ऐसे अवसरपर व्राह्मणको दी जानेवाली दक्षिणा आदि। **–वाचनिक**–वि० आशीर्वाद देनेवाला, कल्याण मनानेवाला। पु० दे० 'स्वस्तिवाचन'। –**वाच्य**–पु० आशीर्वाद। वि० जिसे स्वस्ति-वचनके पाठके लिए कहा जाय। **–श्री**–पत्रके आरंभमें लिखा जानेवाला मंगल-सूचक शब्द।

स्वस्तिक–पु० (सं०) चारणोंका एक प्रकार (जो स्वस्तिपाठ करता है); कोई मंगलद्रव्य; एक मंगलचिह्न जो शरीर या किसी पदार्थपर वनाया जाता है (卐), सथिया; हाथोंको सीनेपर इस चिह्नके रूपमें रखना; इस चिह्नकी शक्लकी पट्टी; एक विशेष आकारकी थाली; एक तरहका पिष्टक; चौरेठेसे वना हुआ त्रिभुजाकार चित्र; वह मकान जिसमें पश्चिम एक और पूरव दो दालान हों; नष्टशल्य निकालनेका एक प्राचीन यंत्र; सितावर शाक; सुसना; मूली; रतालू; लहसुन; मुर्गा; लंपट; स्कंदका एक अनुचर; एक नागासुर; एक दानव; एक योगासन; साँपके फनपरकी रेखा; एक तरहकी प्राचीन नौका; शरीरका एक शुभ चिह्न; त्रिभुजाकार मुकुटमणि। **–कर्ण**–वि० जिसके कानपर स्वस्तिक चिह्न वना हो। **–दान**–पु० हाथोंको सीनेपर स्वस्तिकके रूपमें रखना। **–यंत्र**–पु० नष्टशल्य निकालनेका एक प्राचीन यंत्र।

स्वस्तिका–स्त्री० स्वस्तिक नामक मंगलचिह्न; (सं०) चमेली।

स्वस्तिकाह्वय–पु० (सं०) चौलाईका साग।

स्वस्तिमती–स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका। वि० स्त्री० कल्याणी।

स्वस्तिमान्(मत्)–वि० (सं०) सुखी, सौभाग्ययुक्त।

स्वस्तेन–पु० दे० 'स्वस्त्ययन'।

स्वस्त्यक्षर–पु० (सं०) किसी वातके लिए कृतज्ञता प्रकट करना।

स्वस्त्ययन–पु० (सं०) कृत्य-विशेषके आरंभमें विघ्नशांतिकी कामनासे किया जानेवाला मंत्रोच्चार या प्रायश्चित्त-विधान; समृद्धिप्राप्तिका साधन; किसी मांगलिक कृत्यमें जाते समय दलके आगे-आगे ले जाया जानेवाला जलपूर्ण कलश; दान स्वीकारके वाद व्राह्मणका आशीर्वाद देना। वि० मंगलकारक।

स्वस्त्यात्रेय–पु० (सं०) एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

स्वस्रीय, स्वस्रेय–पु० (सं०) वहिनका वेटा, भानजा।

स्वस्रीया, स्वस्रेयी–स्त्री० (सं०) वहिनकी वेटी, भानजी।

स्वहाना*–अ० क्रि० दे० 'सुहाना'।

स्वांकिक–पु० (सं०) ढोल वजानेवाला।

स्वांग–पु० (सं०) अपना ही अंग। **–भंग**–पु० अपने ही अंगको पहुँचनेवाली चोट आदि। **–शीत**–वि० जिसके सारे अंग शीतल हो गये हों।

स्वाँग–पु० हँसी-मजाक या धोखा देनेके लिए वनाया हुआ दूसरेका रूप; हँसी-मजाकका खेल-तमाशा; होली आदिपर निकाला जानेवाला हास्यजनक वेषभूषावाला जुलूस; करतव; जो न हो वैसा होनेका ढव अख्तियार करना। मु० **–वनाना**,**–भरना**–रूप धरना, भेस वनाना; नकल करना। **–लाना**–दे० 'स्वाँग भरना'।

स्वाँगना*–स० क्रि० स्वाँग वनाना।

स्वाँगी–पु० ढोंगी, स्वाँग करनेवाला, अनेक रूप धारण करनेवाला व्यक्ति। वि० रूप वनानेवाला।

स्वांगीकरण–पु० (एसीमिलेशन) किसी पोषकतत्त्व, विचार, सिद्धांतादिको अपनेमें पूरी तरह मिला लेना या मिलाकर एक कर लेना, आत्मसात करना; साधारण पौष्टिक पदार्थोंसे कोशिकाके लिए जीवित प्रोटोप्लाज्मके अवयवका निर्माण करना। उदाहरणके लिए शरीरमें स्वांगीकरण द्वारा सरल अमीनो अम्लसे प्रोटीन अणुओंका निर्माण हो जाता है।

स्वांजल्यक–पु० (सं०) हाथ जोड़ना (प्रार्थनाके लिए)।

स्वांतःसुखाय–(सं०) केवल अपना मन प्रसन्न करने, जी वहलानेके लिए, किसी अन्य लाभके लिए नहीं।

स्वांत–पु० (सं०) अपना अंत, मृत्यु; अपना राज्य; हृदय, अंतःकरण; गह्वर। वि० शब्दित, ध्वनित। **–ज**–पु० प्रेम, प्रणय; काम। **–स्थ**–वि० हृदयस्थ।

स्वाँस*–पु०, स्त्री० दे० 'साँस'।

स्वाँसा*–पु० दे० 'साँस'।

स्वाकार–पु० (सं०) स्वभाव। वि० जिसका अपना रूप हो।

स्वाक्षपाद–पु० (सं०) न्याय दर्शनका अनुयायी।

स्वाक्षर–पु० (सं०) दस्तखत, हस्ताक्षर, सही; (आटोग्राफ) किसी (प्रसिद्ध) व्यक्तिका स्व-हस्ताक्षर। **–युक्त**–वि० जिसपर दस्तखत किया गया हो।

स्वाक्षरित–वि० (सं०) हस्ताक्षर किया हुआ (साइंड)।

स्वागत–पु० (सं०) किसीके आगमनपर कुशल-प्रश्न आदिके द्वारा हर्षप्रकाश, अगवानी (रिसेप्शन); एक वुद्ध। वि० स्वयं आया हुआ; वैध उपायोंसे प्राप्त (धनादि)। **–कारिणीसमिति**,**–समिति**–स्त्री० किसी सभा, सम्मेलनमें आनेवाले प्रतिनिधियों, दर्शकोंको टिकाने, खिलाने-पिलानेका प्रवंध करनेवाली स्थानीय समिति। **–कारी(रिन्)**–वि० स्वागत करनेवाला। **–पतिका**–स्त्री दे० 'आगतपतिका'। **–प्रश्न**–पु० मिलनेपर स्वास्थ्यादिके संवंधमें पूछना। **–भाषण**–पु० स्वागत समितिके अध्यक्षका

भाषण । **—वचन**—पु० किसीके आनेपर 'स्वागत' शब्दका कथन ।

स्वागता—स्त्री० (सं०) एक वृत्त ।

स्वागतक—पु० (सं०) स्वागतकर्ता (रिसेप्शनिस्ट); आतिथेय, आगत व्यक्तियोंका आतिथ्य करनेवाला (होस्ट) ।

स्वागतिक—वि०, पु० (सं०) स्वागतकर्ता ।

स्वागतिका—स्त्री० (एयरहोस्टेस) आतिथेया; दे० 'विमान-परिचारिका' ।

स्वागम—पु० (सं०) स्वागत, शुभागमन; अभिनंदन ।

स्वाचरण—पु० (सं०) अच्छा चालचलन । वि० अच्छे चालचलनवाला ।

स्वाचांत—वि० (सं०) जिसने अच्छी तरह जलका आचमन किया है ।

स्वाच्छंद्य—पु० (सं०) स्वच्छंदता, नियंत्रणका अभाव, निरंकुशता ।

स्वाजन्य—पु० (सं०) स्वजनता, संबंध ।

स्वाजीव, स्वाजीव्य—वि० (सं०) आसानीसे जीविका प्रदान करनेवाला; जहाँ जीविकाके यथेष्ट साधन उपलब्ध हों ।

स्वाढ्यंकर—वि० (सं०) आसानीसे धनी बनानेवाला ।

स्वातंत्र्य—पु० (सं०) आजादी, स्वतंत्रता । **—प्रिय,—प्रेमी(मिन्)**—वि० स्वतंत्रताका प्रेमी, आजादी पसंद । **—युद्ध**—पु० (वार ऑफ इंडिपेंडेंस) विदेशी शासनसे मुक्त होने या स्वतंत्र होनेके लिए किया जानेवाला युद्ध । **—संग्राम**—पु० आजादीकी लड़ाई, स्वाधीनता-प्राप्तिका संग्राम ।

स्वात*—स्त्री० दे० 'स्वाति'; अफगानिस्तानकी एक नदी ।

स्वाति—स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रोंमेंसे १५ वाँ जो शुभ माना गया है (कवि-समयके अनुसार चातक इसमें ही होनेवाली वर्षाका जल पीता है और वह जल सीपके संपुटमें पहुँचकर मोती और बाँसमें वंशलोचन बनता है); सूर्यकी एक पत्नी; तलवार । वि० स्वाति नक्षत्रमें उत्पन्न । **—कारी**—स्त्री० एक कृषि-देवी । **—गिरि**—स्त्री० एक नागकन्या । **—पंथ,—पथ***—पु० आकाशगंगा । **—बिंदु**—पु० स्वाति नक्षत्रमें बरसनेवाले जलकी बूँद । **—मुख**—पु० एक समाधि; एक किन्नर । **—मुखा**—स्त्री० एक नागकन्या । **—योग**—पु० आषाढ़के शुक्ल पक्षमें स्वाति नक्षत्रका चंद्रमाके साथ योग । **—सुत,—सुवन***—पु० मोती ।

स्वाती—स्त्री० (सं०) दे० 'स्वाति' ।

स्वाद—पु० (सं०) कुछ खाने-पीनेसे जीभको होनेवाला रसानुभव, जायका, लज्जत; मजा; (काव्यगत) सौंदर्य; * चाह, इच्छा । **मु०—चखाना**—दे० 'मजा चखाना' ।

स्वादक—पु० (सं०) स्वाद चखनेवाला, राजा आदिकी पाकशालामें इस कामपर नियुक्त कर्मचारी ।

स्वादन—पु० (सं०) स्वाद लेना, चखना; रस लेना (कविता आदिका); जायकेदार बनाना ।

स्वादनीय—वि० (सं०) जायकेदार; स्वाद लेने योग्य ।

स्वादव—पु० (सं०) रुचिकर स्वाद ।

स्वादित—वि० (सं०) चखा हुआ, जिसका स्वाद लिया गया हो; जायकेदार बनाया हुआ; प्रसन्न किया हुआ ।

स्वादिमा(मन्)—स्त्री० (सं०) सुस्वादुता; माधुर्य ।

स्वादिष्ट—वि० दे० 'स्वादिष्ठ' ।

स्वादिष्ठ—वि० (सं०) अतिशय स्वादु, बहुत ही जायकेदार ।

स्वादी(दिन्)—वि० (सं०) स्वाद लेनेवाला; रसिक ।

स्वादीला—वि० स्वादिष्ठ, जायकेदार, सुस्वादु ।

स्वादु—वि० (सं०) स्वादयुक्त, जायकेदार; रुचिकर; मीठा; सुंदर; इष्ट । पु० मधुर रस; गुड़; जीवक; बेर; अगर; महुआ; दूध; पियाल; सेंधा नमक । स्त्री० दाख । **—कंट,—कंटक**—पु० विकंकत; त्रिकंटक वृक्ष; गोखरू । **—कंद**—पु० भुइँकुम्हड़ा; सफेद पिंडालू; केमुक । **—कंदक**—पु० केमुक । **—कंदा**—स्त्री० विदारीकंद । **—कर**—पु० एक संकर जाति । **—काम**—वि० मीठा पसंद करनेवाला । **—कार**—वि० जायकेदार बनानेवाला । **—कोषातकी**—स्त्री० तरोई । **—खंड**—पु० गुड़; मीठी चीजका टुकड़ा । **—गंध**—पु० रक्त शोभांजन । **—गंधा**—स्त्री० रक्त शोभांजन; भूमिकुष्मांड । **—गंधि**—स्त्री० रक्त शोभांजन । **—तिक्त**—पु० पीलू फल । **—०फल**—पु० नीबूका पेड़ । **—धन्वा(न्वन्)**—पु० कामदेव । **—पटोलिका**—स्त्री० परवलकी बेल । **—पर्णी**—स्त्री० दुग्धिका । **—पाक**—वि० पकाने या पचानेमें अच्छा । **—०फला**—स्त्री० मकोय । **—पाका**—स्त्री० काकमाची । **—पाकी(किन्)**—वि० दे० 'स्वादुपाक' । **—पिंडा**—स्त्री० पिंडखजूर । **—पुष्प**—पु०,**—पुष्पी**—स्त्री० कटभी । **—फल**—पु० बेरका फल; कोई मीठा फल । **—फला**—स्त्री० बेरका पेड़; खजूरका पेड़; केलेका पेड़; मुनक्का । **—बीज**—पु० पीपलका पेड़ । **—मज्जा (ज्जन्)**—पु० पर्वतीय पीलु । **—मस्तका**—स्त्री० खजूरका पेड़ । **—मांसी**—स्त्री० काकोली । **—माषी**—स्त्री० माषपर्णी । **—मुस्ता**—स्त्री० एक जलीय लता । **—मूल**—पु० गाजर । **—युक्त**—वि० मधुरतापूर्ण । **—योगी(गिन्)**—वि० स्वादयुक्त, मीठा । **—रस**—वि० जायकेदार । **—रसा**—स्त्री० मदिरा; द्राक्षा; काकोली, आम्रातक; शतावरी; मूर्वा । **—लता**—स्त्री० विदारीकंद । **—लुंगी**—स्त्री० मीठा नीबू । **—वारि**—पु० मीठे जलका समुद्र । वि० मीठे जलवाला । **—विवेकी(किन्)**—वि० स्वादका विवेक करनेवाला, स्वादका अंतर स्पष्ट करनेवाला । **—शुंठी**—स्त्री० श्वेत कटभी । **—शुद्ध**—पु० सेंधा नमक; सामुद्रलवण । **मु०—चखाना**—अनुचित कार्यके लिए किसीको दण्ड देना, बदला लेना ।

स्वादुका—स्त्री० (सं०) नागदंती ।

स्वादुल—पु० (सं०) क्षीरमूर्वा ।

स्वादेशिक—वि० (सं०) स्वदेश-संबंधी ।

स्वाद्य—वि० (सं०) स्वाद लेने योग्य; जायकेदार ।

स्वाद्वन्न—पु० (सं०) स्वादिष्ठ खाद्य, पकवान ।

स्वाद्वम्ल—पु० (सं०) अनारका पेड़; नारंगीका पेड़ ।

स्वाद्वी—स्त्री० (सं०) दाख; खजूरका पेड़; फूट ।

स्वाधिकार—पु० (सं०) अपना अधिकार या पद; अपना कर्तव्य ।

स्वाधिष्ठान—पु० (सं०) हठयोगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे दूसरा जिसका स्थान शिश्नमूल और रूप षड्दल कमलका माना जाता है; शरीर-स्थित वह केन्द्र जिसकी ग्रंथियोंसे यौवन शक्तिका विकास होता है (वि०) (हाइपोगैस्ट्रिक प्लेक्सस); अपना स्थान ।

स्वाधीन—वि० (सं०) जो अपने ही अधीन हो, दूसरेके नहीं; स्वतंत्र, आजाद; जो अपने वशमें हो; स्वच्छंद, किसीका अंकुश, दाब न माननेवाला । **—पतिका,—भर्तृका**—स्त्री० पतिको अपने वशमें रखनेवाली नायिका । **मु०—करना**—सौंपना, हवाले करना; स्वतंत्र करना ।

स्वाधीनता—स्त्री० (सं०) स्वतंत्रता, आजादी (इंडिपेण्डेन्स) । **—प्रेम**—पु० स्वातंत्र्यप्रियता, आजादीका प्रेम ।

स्वाधीनी*—दे० 'स्वाधीनता' ।

स्वाध्याय—पु० (सं०) आवृत्तिपूर्वक वेदाध्ययन; शास्त्राध्ययन; वेद; अध्ययन; वह दिन जब अनध्यायके बाद वेदपाठ आरंभ होता है । **—सदन**—पु० (स्टडीरूम) दे० 'अध्ययनकक्ष' ।

स्वाध्यायवान्(वत्)—वि० (सं०) स्वाध्यायविशिष्ट; वेदका पाठ करनेवाला ।

स्वाध्यायार्थी(र्थिन्)—पु० (सं०) वह विद्यार्थी जो अध्ययनकालमें अपनी जीविका खुद कमानेका यत्न करे ।

स्वाध्यायी(यिन्)—वि० (सं०) वेदपाठ करनेवाला । पु० वेदपाठ करनेवाला व्यक्ति; अध्ययनशील; व्यापारी ।

स्वान—पु० (सं०) शब्द, ध्वनि; घड़घड़ाहट (रथादिकी); * दे० 'श्वान' ।

स्वाना*—स० क्रि० दे० 'सुलाना' ।

स्वानुभव—पु०, **स्वानुभूति**—स्त्री० (सं०) अपना अनुभव ।

स्वानुरूप—वि० (सं०) अपने अनुरूप, योग्य; सहज, स्वाभाविक ।

स्वाप—पु० (सं०) नींद; स्वप्न; तंद्रा; स्पर्शाज्ञान, सुन्न हो जाना । **—व्यसन**—पु० निद्रालुता ।

स्वापक—वि० (सं०) निद्रा लानेवाला; (नार्कोटिक) ऐसे पदार्थ (ड्रग) जिन्हें खाने या पीनेसे पीड़ासे मुक्ति मिलती तथा नींद आने लगती है । इन्हें 'संवेदना-मन्दक' भी कहते हैं; जैसे अफीम मार्फिया, आदि ।

स्वापतेय—पु० (सं०) धन, संपत्ति; अपनी संपत्ति ।

स्वापद—पु० (सं०) दे० 'श्वापद' ।

स्वापन–पु० (सं०) सुलाना, नींद लाना; मंत्रवलसे चालित एक अस्त्र जिसके प्रभावसे शत्रुदल निद्राग्रस्त हो जाता था; नींद लानेवाली दवा। वि० नींद लानेवाला।

स्वापराध–पु० (सं०) अपने प्रति अपराध।

स्वापी(पिन्)–वि० (सं०) नींद लानेवाला।

स्वाप्त–वि० (सं०) वहुत अधिक; सुकुशल; विश्वस्त; स्वयं प्राप्त किया हुआ। **–समाचार**–पु० (स्कूप न्यूज) विशेष महत्त्वका समाचार जो किसी संवाददाताने खोज निकाला हो तथा अपने पत्रको सवसे पहले दिया हो, ऐकांतिक समाचार।

स्वाप्न–वि० (सं०) स्वप्न-संवंधी; निद्रा-संवंधी।

स्वाभाव–पु० (सं०) अपना अनस्तित्व।

स्वाभाविक–वि० (सं०) स्वभावसे उत्पन्न, स्वभावसिद्ध, प्राकृतिक (नेचुरल); पैदाइशी। पु० वौद्धोंका एक संप्रदाय। **–वर्णन**–पु० यथार्थ, वनावट या अत्युक्ति-रहित वर्णन। **–व्याधि**–स्त्री० स्वभावसे प्राप्त व्याधि–जैसे भूख; प्यास, जरा-मृत्यु इत्यादि।

स्वाभाविकेतर–वि० (सं०) जो स्वाभाविक न हो, अप्राकृतिक।

स्वाभाव्य–वि० (सं०) जिसका अस्तित्व आपसे आप हो (विष्णु)। पु० स्वाभाविक स्थिति, स्वाभाविकता; निजी विशेषता।

स्वाभास–वि० (सं०) वहुत दीप्तिमान्।

स्वाभिमान–पु० (सं०) अपनी प्रतिष्ठाका अभिमान, आत्मसम्मान।

स्वाभील–वि० (सं०) प्रचंड, भीषण।

स्वामि*–पु० दे० 'स्वामी'।

स्वामित*–पु० स्वामित्व।

स्वामिता–स्त्री०, **स्वामित्व**–पु० (सं०) मालिकपन, प्रभुत्व (ओनरशिप); राजत्व।

स्वामिन–स्त्री० दे० 'स्वामिनी'।

स्वामिनी–स्त्री० (सं०) मालिकिन; प्रभुकी पत्नी; राधिका (वल्लभ-संप्रदाय)।

स्वामिस्व–पु० (रायल्टी) किसी ग्रंथके लेखकको, किसी वस्तुका आविष्कार करनेवालेको या किसी भूमिके स्वामीको उसकी रचना, आविष्कार या स्वामित्वसे होनेवाले लाभके रूपमें मिलनेवाला पूर्ण आयका निश्चित अंश। **–चिह्न**–पु० स्वामित्वसूचन करनेवाला चिह्न (प्रापर्टी मार्क)।

स्वामिहीनत्व–पु० (बोना वैकेंशिया) किसी वस्तुके मिलनेपर उसका कोई स्वामी न जान पड़ना।

स्वामी(मिन्)–वि० (सं०) जिसे स्वत्व प्राप्त हो। पु० मालिक, प्रभु (ओनर, प्रोपराइटर); नरेश; पति, शौहर; गुरु, आचार्य; घरका मुखिया; विद्वान् ब्राह्मण; सन्न्यासी; कार्तिकेय; ईश्वर; विष्णु; शिव; वात्स्यायन; गरुड़; सेनानायक; गत उत्सर्पिणीके ग्यारहवें अर्हत्; देवमूर्ति या देवालय। **–(मि)कार्त्तिक**–पु० कार्त्तिकेय; एक ताल (संगीत)। **–कार्य**–पु० राजा या मालिकका कार्य। **–कार्यार्थी(र्थिन्)**–वि० मालिकका फायदा चाहनेवाला। **–कुमार**–पु० कार्त्तिकेय। **–जंघी(घिन्)**–पु० परशुराम। **–जनक**–पु० पतिका पिता, श्वशुर। **–भक्त**–वि० स्वामीमें भक्ति रखनेवाला, वफादार (नौकर)। **–भक्ति**–स्त्री० स्वामीके प्रति भक्तिभाव, वफादारी। **–भट्टारक**–पु० उत्तम स्वामी। **–भाव**–पु० स्वामित्व, स्वामीका भाव। **–मूल**–वि० स्वामीसे प्राप्त; स्वामी या पतिपर निर्भर। **–वात्सल्य**–पु० प्रभु या पतिके प्रति प्रेम। **–सद्भाव**–पु० स्वामीका अस्तित्व; स्वामीकी अच्छाई। **–सेवा**–स्त्री० स्वामीकी टहल; पतिका आदर-सम्मान।

स्वाम्नाय–वि० (सं०) परंपरागत।

स्वाम्य–पु० (सं०) प्रभुत्व; मालिकी (ओनरशिप); स्वत्व; शासनाधिकार। **–कारण**–पु० प्रभुत्वका कारण।

स्वाम्युपकारक–वि० (सं०) मालिकका हित करनेवाला। पु० घोड़ा।

स्वायंभुव–पु० (सं०) प्रथम मनु जिनकी उत्पत्ति स्वयं ब्रह्माके दाहिने अंगसे मानी जाती है; अत्रि; नारद; एक शैवतंत्र। वि० स्वयंभूसंवंधी; मनु स्वायंभुव-संवंधी। **–मनुपिता(तृ)**–पु० ब्रह्मा।

स्वायंभुवी–स्त्री० (सं०) ब्राह्मी।

स्वायंभू–पु० (सं०) स्वायंभुव।

स्वायत्त–वि० (सं०) जो अपने ही अधीन, अपने ही अधिकारमें हो, जिसपर दूसरेका शासन-नियंत्रण न हो। **–शासन**–पु० लोकप्रतिनिधियों द्वारा परिचालित शासन; स्थानिक शासन (जिला वोर्ड आदिका) (लोकल सेल्फ गवर्नमेण्ट); (ऑटोनॉमी) अपने देशका शासन स्वयं ही करनेका अधिकार; दे० मूलमें। **–शासी**–वि० (ऑटोनॉमस) (वह देश) जिसे अपना शासन स्वयं ही करनेका अधिकार प्राप्त हो।

स्वार–पु० (सं०) घोड़ेका घरींटा; मेघध्वनि; स्वरित स्वर, * सवार। वि० स्वर-संवंधी।

स्वारक्ष्य–वि० (सं०) आसानीसे रक्षा करने योग्य।

स्वारथ*–पु० स्वार्थ, अपना फायदा, अपना काम। वि० सिद्ध, सफल, कृतार्थ।

स्वारथी*–वि० स्वार्थी, अपना लाभ देखनेवाला, खुदगर्ज।

स्वारसिक–वि० (सं०) स्वारस्ययुक्त, सहज माधुर्ययुक्त (काव्यादि); प्राकृतिक, स्वाभाविक।

स्वारस्य–पु० (सं०) सहज, स्वाभाविक रस, मिठास; खूबी; स्वाभाविकता।

स्वाराज्य–पु० (सं०) स्वाधीन राज्य; इंद्रका राज्य, स्वर्गलोक; ब्रह्मके साथ तादात्म्य या अभेद।

स्वाराट्(ज्)–पु० (सं०) इंद्र।

स्वारी–स्त्री० दे० 'सवारी'।

स्वारूढ़–वि० (सं०) अच्छी सवारी करनेवाला; (घोड़ा) जिसपर अच्छी तरह सवारी की गयी है।

स्वारोचिष–पु० (सं०) स्वरोचिषके पुत्र दूसरे मनु। वि० स्वारोचिष मनु-संवंधी।

स्वार्जित–वि० (सं०) अपना कमाया हुआ।

स्वार्थ–पु० (सं०) (शब्दका) अपना अर्थ, वाच्यार्थ; अपना धन; अपना मतलव, गरज, प्रयोजन, अपना लाभ। वि० अपना ही मतलव देखनेवाला; वाच्यार्थवाला; जिसका कोई निजी उद्देश्य हो; सफल। **–त्याग**–पु० अपने स्वार्थ, अपने लाभका त्याग, आत्मत्याग। **–त्यागी(गिन्)**–वि० स्वार्थका त्याग करनेवाला। **–पंडित**–वि० स्वार्थसाधनमें चतुर। **–पर, –परायण**–वि० जिसे अपने ही स्वार्थकी चिंता हो, जो अपना ही मतलव देखें, खुदगर्ज। **–परता, –परायणता**–स्त्री० स्वार्थीपन, खुदगर्जी। **–प्रयत्न**–पु० अपने लाभकी योजना या उपाय। **–भाक्(ज्)**–वि० अपना कारवार देखनेवाला। **–भ्रंशी(शिन्)**–वि० अपने हितके लिए घातक। **–मना(नस्)**–वि० (सं०) जिसका मन स्वार्थमें रत हो, स्वार्थी। **–लिप्सु**–वि० स्वार्थसाधनके लिए लालायित रहनेवाला। **–विघात**–पु० अपने स्वार्थ, कार्य, प्रयोजनकी हानि। **–संपादन**–पु० दे० 'स्वार्थ-साधन'। **–साधक**–वि० अपना मतलव निकालनेवाला। **–साधन**–पु० अपनी गरज, मतलव निकालना, प्रयोजनकी पूर्ति। **–०तत्पर**–वि० अपना मतलव निकालनेपर तुला हुआ। **–सिद्धि**–स्त्री० प्रयोजनकी पूर्ति, काम निकालना।

स्वार्थांध–वि० (सं०) जो स्वार्थचिंता, स्वार्थ-साधनमें अंधा हो गया हो, जो केवल अपना मतलव देखे, दूसरेकी हानि और लाभका खयाल न करे।

स्वार्थाभिप्रयात–पु० (सं०) स्वार्थसिद्धिके उद्देश्यसे साथ लिया हुआ आदमी।

स्वार्थिक–वि० (सं०) वाच्यार्थयुक्त; जिसका अपना कोई प्रयोजन हो; लाभदायक (प्राफ़िटेवुल); अपने धनसे किया हुआ।

स्वार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) जो अपना ही मतलव देखे, खुदगर्ज।

स्वार्थोपपत्ति–स्त्री० (सं०) प्रयोजनकी सिद्धि।

स्वाल*–पु० दे० 'सवाल'।

स्वालक्षण, स्वालक्ष्य–वि० (सं०) जिसकी सरलतासे पहचान हो जाय।

स्वालक्षण्य–पु० (सं०) स्वभाव, विशेषता, खासियत।

स्वाल्प–वि० (सं०) बहुत छोटा; बहुत थोड़ा; बहुत कम। पु० छोटापन; कमी, अल्पता।

स्वावना*–स० क्रि० सुलाना–'जागि-जागि स्वावत हौं'–घन०।

स्वावमानन–पु०, **स्वावमानना**–स्त्री० (सं०) आत्म-भर्त्सना।

स्वावलंबन–पु० (सं०) अपना ही भरोसा करना, दूसरेसे सहायता न लेना।

स्वावलंबी(बिन्)–वि० (सं०) अपने ही बलपर काम करनेवाला, दूसरेका भरोसा न रखने, दूसरेसे सहायता न लेनेवाला।

स्वाश्रय–पु० (सं०) अपने भरोसे रहना। वि० विचारणीय विषयसे संबंध रखनेवाला।

स्वाश्रित–वि० (सं०) स्वावलंबी।

स्वास*–पु०, **स्वासा***–पु०, स्त्री० दे० 'श्वास'।

स्वास्थ्य–पु० (सं०) स्वस्थता, आरोग्य (हेल्थ); संतोष, चित्तका शांत, निरुद्विग्न होना। **–कर,–प्रद**–वि० स्वास्थ्य देनेवाला। **–निवास**–पु० (सैनेटोरियम) स्वास्थ्य-सुधारके लिए विशेषकर यक्ष्मापीड़ित व्यक्तियोंके लिए, पहाड़ी आदिपर बनाया गया निवास स्थान, आरोग्यशाला। **–भंग**–पु० स्वास्थ्यका बिगड़ जाना। **–रक्षा**–स्त्री० स्वास्थ्य, तंदुरुस्तीकी रक्षा। **–विज्ञान**–पु० (हाइजीन) स्वास्थ्य-रक्षणके नियमों, सिद्धांतों, उपायों आदिका विवेचन करनेवाला शास्त्र। **–विभाग**–पु० राज्य, म्युनिसिपल बोर्ड आदिका जन-स्वास्थ्यकी रक्षाका प्रबंध करनेवाला महकमा। **–सदन**–पु० (सैनेटोरियम) दे० 'स्वास्थ्यनिवास'। **–हानि**–स्त्री० स्वास्थ्यका नाश, तंदुरुस्तीका बिगड़ जाना।

स्वाहा–स्त्री० (सं०) अग्निकी पत्नी। अ० हविर्दानके समय उच्चारण किया जानेवाला एक शब्द। **–करण**–पु० स्वाहाका उच्चारण करते हुए हवि देना। **–कार**–पु० 'स्वाहा' शब्दका उच्चारण। **–कृति,–कृती**–स्त्री० दे० 'स्वाहाकरण'। **–कृत्**–पु० यज्ञकर्ता। **–पति,–प्रिय, –वल्लभ**–पु० अग्नि। **–भुक्-(ज्)**–पु० देवता। **–वन**–पु० एक जंगल। **मु० –करना**–फूंक डालना, नष्ट कर देना। **–होना**–नष्ट होना।

स्वाहार–वि० (सं०) जो आसानीसे प्राप्त हो जाय। पु० अच्छा खाद्यपदार्थ।

स्वाहार्ह–वि० (सं०) स्वाहाके योग्य; हवि पानेके योग्य।

स्वाहाशन–पु० (सं०) देवता।

स्वाहेय–पु० (सं०) स्कंद।

स्विदित–वि० (सं०) जिसे पसीना निकला या निकल रहा हो; पिघला हुआ।

स्विन्न–वि० (सं०) पसीनेसे तर; उबला हुआ, सीझा हुआ; सिक्त।

स्विष्ट–वि० (सं०) वांछित; प्रिय; सुपूजित, सुसम्मानित।

स्वीकरण–पु० (सं०) स्वीकार करना, ग्रहण करना, अपनाना; मानना; वचन देना; पत्नी-रूपमें ग्रहण करना।

स्वीकरणीय, स्वीकर्तव्य–वि० (सं०) स्वीकारके योग्य।

स्वीकर्ता(र्तृ)–वि० (सं०) स्वीकार करनेवाला।

स्वीकार–पु० (सं०) अंगीकार; अपनानेकी क्रिया, अपना कर लेना; ग्रहण; पत्नी-रूपमें ग्रहण; मानना, कबूल करना; वचन, इकरार। **–ग्रह**–पु० डाकेजनी, जबर्दस्ती ले लेना। **–पत्र**–पु० दानपत्र। **–रहित**–वि० जिसके लिए स्वीकृति न हो।

स्वीकारना*–स० क्रि० स्वीकार करना; ग्रहण करना।

स्वीकारात्मक–वि० (अफरमेटिव) (ऐसा वाक्य, कथन या उत्तर) जिसमें कोई बात स्वीकार की गयी हो, मान ली गयी हो या उसकी पुष्टि की गयी हो, 'हाँ' सूचक्।

स्वीकारोक्ति–स्त्री० (सं०) अपना अपराध स्वीकार करना, (कन्फ़ेशन)।

स्वीकार्य–वि० (सं०) स्वीकार करने योग्य, ग्राह्य, मान्य।

स्वीकृच्छ्र–पु० (सं०) एक व्रत (इसमें तीन-तीन दिनतक गोमूत्र, गोबर और जौकी लपसी खाकर रहा जाता है)।

स्वीकृत–वि० (सं०) स्वीकार किया हुआ, (सैंकशन्ड); गृहीत; प्रतिपन्न; मंजूर (एक्सेप्टेड); मान्यता-प्राप्त (रिकग्नाइज्ड); माना, अपनाया हुआ; वादा किया हुआ।

स्वीकृति–स्त्री० (सं०) स्वीकार, मंजूरी; छोटोंकी प्रार्थना मान लेना (सैंकशन); प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेना (एक्सेप्टेन्स); अपनाना, अपने अधिकारमें लेना।

स्वीय–वि० (सं०) अपना; स्वकीय। पु० आत्मीय, स्वजन।

स्वीया–स्त्री० (सं०) पतिमें अनुराग रखनेवाली, पतिव्रता स्त्री; स्वकीया।

स्वीयाक्षर–पु० (सं०) हस्ताक्षर; सही।

स्वे*–वि० दे० 'स्व'।

स्वेच्छा–स्त्री० (सं०) अपनी इच्छा, मरजी। **–कृत**–वि० (वालंटरी) जो बिना किसी बाहरी दबावके, स्वेच्छासे किया या दिया गया हो। **–चार**–पु० दे० क्रममें। **–चारी(रिन्)**–वि० दे० क्रममें। **–दत्त,–प्रेरित**–वि० दे० 'स्वेच्छाकृत'। **–मरण**–पु०, वि० दे० 'स्वेच्छा-मृत्यु'। **–मृत्यु**–स्त्री० अपनी इच्छासे मरना। पु० भीष्मपितामह। वि० अपनी इच्छासे मरनेवाला, स्वेच्छामरणका अधिकारी। **–सेवक**–पु० दे० 'स्वयं-सेवक'। **–सैनिक**–पु० अवैतनिक सिपाही, अफसर। **–०दल**–पु० (वालंटरी कोर) स्वेच्छासे सैन्य-सेवाके लिए अपना नाम देनेवाले लोगोंका दल।

स्वेच्छाचार–पु० (सं०) मनमाना आचरण, जो मनमें आये वह करना, निरंकुशता।

स्वेच्छाचारिता–स्त्री० (सं०) निरंकुशता, अपनी मनमानी करनेका भाव।

स्वेच्छाचारी(रिन्)–वि० (सं०) मनमाने आचरण करनेवाला, निरंकुश, यथेच्छाचारी; नियम-कानूनका बंधन न माननेवाला (शासक)।

स्वेच्छोपहार–पु० (सं०) (फ्रीगिफ्ट) स्वेच्छासे दानमें या उपहारमें दी गयी वस्तु।

स्वेटर–पु० (अं०) ऊनसे बुनी हुई बनियाइन।

स्वेत*–वि० दे० 'श्वेत'।

स्वेद–पु० (सं०) पसीना; भाप; गरमी; पसीना लानेका साधन। **–चूषक**–पु० ठंढी हवा। **–च्छिद्**–वि० स्वेद दूर करनेवाला, ठंढा करनेवाला। **–ज**–वि० पसीनेसे उत्पन्न होनेवाला; ताप या भापसे उत्पन्न होनेवाला। पु० स्वेदसे उत्पन्न होनेवाले जीव–खटमल आदि। **–०शाक**–पु० छत्रक। **–जल**–पु० पसीना। **–०कण**–पु०,**–०कणिका**–स्त्री० पसीनेकी बूंद। **–नाश**–पु० वायु। **–बिंदु**–पु० पसीनेकी बूंद। **–माता(तृ)**–स्त्री० पचे हुए खाद्य-पदार्थसे उत्पन्न रस, अन्नरस। **–लेश**–पु० स्वेदबिंदु। **–वारि**–पु० दे० 'स्वेदजल'। **–विप्रुट्(ष्)**–पु० स्वेदबिंदु।

स्वेदक–वि० (सं०) पसीना लानेवाला। पु० कांतिलौह।

स्वेदन–पु० (सं०) पसीना निकलना; पसीना लाना; स्वेदन-यंत्र; पारेका शोधन; श्लेष्मा; बफारा देना। वि० पसीना लानेवाला।

स्वेदनिका–स्त्री० (सं०) तवा; देगची; भभका; पाकशाला।

स्वेदनी–स्त्री० (सं०) तवा; कड़ाही।

स्वेदांबु–पु० (सं०) स्वेदजल।

स्वेदायन–पु० (सं०) पसीना निकलनेका मार्ग, रोमकूप।

स्वेदित–वि० (सं०) जिसे पसीना हुआ हो, स्वेदयुक्त; बफारा दिया हुआ; जिसका पसीना निकाला गया हो।

स्वेदी(दिन्)–वि० (सं०) स्वेदयुक्त; पसीना लानेवाला।

स्वेदोद, स्वेदोदक–पु० (सं०) स्वेदजल।

स्वेदोद्गम–पु० (सं०) पसीनेका निकलना।

स्वेद्य–वि० (सं०) स्वेदोत्पादक साधनोंसे उपचार करने योग्य।

स्वेष्ट–वि० (सं०) अपनेको प्रिय।

स्वै*–सर्व० सो ही, वही।

स्वैच्छिक–वि० (सं०) (वॉलेंटरी) अपनी इच्छाके अनुसार; किसीकी निजी इच्छासे सम्बद्ध।

स्वैर–वि० (सं०) मनमाना आचरण करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी; सुस्त, मंद; ढीला; धीरे-धीरे, सतर्कतापूर्वक चलनेवाला, ऐच्छिक। पु० मनमानी, स्वच्छंदता; यथेच्छ विहार। **–कथा**–स्त्री० अबाधित वार्तालाप, बकवास। **–गत**–वि० ऐच्छिक, स्वच्छंद भ्रमण करनेवाला। पु० ऐच्छिक गमन, स्वच्छंद भ्रमण। **–गति**–वि० दे० 'स्वैर-गत'। स्त्री० स्वेच्छा-

पूर्वक भ्रमण करना। **–चारिणी**–वि० स्त्री० मनमाना आचरण करनेवाली; व्यभिचारिणी (स्त्री)। **–चारी(रिन्)**–वि० मनमाने काम करनेवाला, स्वतंत्र; लंपट, व्यभिचारी। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० इच्छानुसार काम करनेवाला। **–विहारी(रिन्)**–वि० इच्छानुसार भ्रमण करनेवाला। **–वृत्त**–वि० दे० 'स्वैरवर्ती'। **–वृत्ति**–वि० दे० 'स्वैरवर्ती'। स्त्री० मनमानी, स्वच्छंदता। **–स्थ**–वि० उदासीन रहनेवाला।

स्वैरता, स्वैरिता–स्त्री० (सं०) मनमानी, स्वच्छंदता।

स्वैरथ–पु० (सं०) एक राजा, ज्योतिष्मान्‌का पुत्र; स्वैरथ द्वारा शासित एक वर्ष।

स्वैराचार–वि० (सं०) स्वेच्छाचारी। पु० स्वेच्छाचार।

स्वैराचारी(रिन्)–वि० (सं०) स्वेच्छाचारी, निरंकुश।

स्वैरालाप–पु० (सं०) दे० 'स्वैरकथा'।

स्वैराहार–पु० (सं०) यथेच्छ आहार, पर्याप्त आहार।

स्वैरिंध्री–स्त्री० (सं०) दे० 'सैरंध्री'।

स्वैरिणी–स्त्री० (सं०) कुलटा, व्यभिचारिणी; चमगादड़ (?)।

स्वैरी(रिन्)–वि० (सं०) इच्छानुसार घूमने या काम करनेवाला, निरंकुश, स्वच्छंद; दुराचारी; व्यभिचारी।

स्वोत्थ–वि० (सं०) अपनेसे उत्पन्न; स्वाभाविक।

स्वोदय–पु० (सं०) किसी आकाशीय पिंडका विशेष स्थानपर उदित होना।

स्वोपधि–पु० (सं०) अचल ग्रह।

स्वोपार्जित–वि० (सं०) अपना कमाया हुआ, स्वयमर्जित।

स्वोरस–पु० (सं०) तैलीय पदार्थ; सिलपर पीसनेके बाद उसमें लगा हुआ (उस पदार्थका) अंश या तलछट।

स्वोवशीय–पु० (सं०) सुख; समृद्धि (विशेषकर भावी जीवनमें)।

ह

ह–नागरी वर्णमालाका तैंतीसवाँ और ऊष्मवर्गका अंतिम व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ है।

हंक*–स्त्री० हाँक, पुकार; ललकार; बढ़ावा।

हँकड़ना–अ० क्रि० हुंकारना; गला फाड़कर चिल्लाना; अकड़ना; साँड़ आदिका जोरसे बोलना।

हँकड़ान,–स्त्री० **हँकड़ाव**–पु० हँकड़नेकी क्रिया। **मु० –देना,–भरना,–मारना**–बहुत जोर-जोरसे और अनेक बार हँकड़ना।

हकनी|–स्त्री० बैलोंको हाँकनेका एक तरहका डंडा जिसमें एक कील लगी रहती है, पैना; हाँकनेकी क्रिया।

हँकरना*–अ० क्रि० दे० 'हँकड़ना'। स० क्रि० बुलवाना, बुला भेजना।

हँकराना*–स० क्रि० बुलाना, पुकारना; बुलवाना।

हँकराव, हँकरावा–पु० बुलावा, आमंत्रण, निमंत्रण; पुकारने, बुलानेकी क्रिया।

हँकवा–पु० शेरके शिकारमें शोर-गुल मचा, बाजा आदि बजाकर उसे मचानके निकट लाना जिसमें शिकारी उसका शिकार कर सके; हांका।

हँकवाना–स० क्रि० चौपायोंको किसीके द्वारा हटवाना, भगवाना; (इक्के, बैलगाड़ी आदिको किसीके द्वारा) चलवाना; किसीसे किसीको पुकरवाना, बुलवाना।

हँकवैया–पु० हाँकनेवाला व्यक्ति।

हंका*–स्त्री० हाँक, पुकार; ललकार। **मु० –देना, –मारना**–ललकारना; पुकारना।

हँकाई–स्त्री० चौपायोंको हाँकनेकी क्रिया; बैलगाड़ी आदिके हाँकनेका काम; हाँकनेका पारिश्रमिक।

हँकाना–स० क्रि० हँकवाना; हाँकना।

हंकार–स्त्री० वह ललकार जो युद्ध, लड़ाई-झगड़ेके अवसरोंपर सुनी जाती है, हुंकार; * अहंकार, घमंड।

हँकार–स्त्री० ललकार; किसीको पुकारने, संबोधन करनेकी ऊँची आवाज, पुकार। **मु० –देना**–पुकारना। **–पड़ना,–लगना** –बुलाने, संबोधन करनेकी क्रियाका होना, पुकार या चिल्लाहट मचना।

हँकारना–स० क्रि० ललकारना; ऊँचे स्वरसे बुलाना, पुकारना, संबोधित करना; पास बुलाना, निकट आनेके लिए कहना। अ० क्रि० हुँकारना, हुंकार भरना।

हँकारा–पु० बुलावा; आमंत्रण, निमंत्रण; पुकार, बुलवानेकी क्रिया।

हंकारी*–वि० अहंकारी, घमंडी।

हँकालना–स० क्रि० हाँकना, (गाड़ीमें जुते) बैल, घोड़े आदिको डंडेसे मारकर या ललकारकर चलाना या हटाना।

हंगाम–पु० (फा०) समय, वक्त; ऋतु; इरादा; बल।

हंगामा–पु० (फा०) मारपीट, हुल्लड़, हल्ला-गुल्ला, हलचल, उपद्रव (इमर्जेंसी)।

हंगामी–वि० (फा०) क्षणिक; सामयिक; आवश्यक।

हंजा–स्त्री० (सं०) चेरी, सेविका (ना०)।

हंजि–स्त्री० (सं०) छींक।

हंजिका–स्त्री० (सं०) दासी, परिचारिका; भार्गी।

हंटर–पु० एक तरहका चाबुक जो लंबा होता है, कोड़ा। **मु० –जमाना,–लगाना**–हंटर मारना।

हंडना–अ० क्रि० घूमना, फिरना; बेमतलब घूमना। स० क्रि० चीजोंको उलट-पलटकर ढूंढ़ना।

हंडल–पु० दे० 'हैंडिल'।

हंडा–पु० पानी इत्यादि रखनेका ताँबे या पीतलका बना घड़े जैसा बड़ा पात्र; एक बड़ी रोशनी जिसमें हंडे जैसी चिमनी लगी रहती है (गैस)। स्त्री० (सं०) मिट्टीका बहुत बड़ा पात्र; निम्न जातिकी स्त्री, दासी आदि।

हंडिका–स्त्री० (सं०) बटलोई जैसी आकृतिवाला मिट्टीका बरतन, हाँड़ी। **–सुत**–पु० मिट्टीका छोटा बरतन।

हँड़िया–स्त्री० एक प्रकारका मिट्टीका बरतन; हंडिकाके ढंगका शीशेका पात्र जो शोभाके लिए रईसोंके कमरेमें अथवा विवाह आदिके अवसरोंपर छतसे लटकाया जाता है; एक तरहकी शराब जो जौ, चावल आदिसे बनायी जाती है। **मु० –चढ़ाना**–भोजन पकानेके लिए हाँड़ीमें पानी आदि डालकर आगपर रखना। **–दागना**–भोजन बनाना।

हंडी–स्त्री० (सं०) दे० 'हंडिका'।

हंत–अ० (सं०) हर्ष, खेद, विषाद, अनुकंपा, आश्चर्यादिका सूचक शब्द। **–कार**–पु० 'हंत' शब्द; अतिथिको दिया जानेवाला अन्न।

हंतव्य–वि० (सं०) वध्य, हननके योग्य, मार डालने योग्य; उल्लंघनीय; खंडनीय, अप्रमेय।

हंता(तृ)–पु० (सं०) मार डालनेवाला, विनाशक; डाकू। **–(तृ)-मुख**–पु० एक बालग्रह।

हंतु–पु० (सं०) हनन; मृत्यु; बैल। **–काम**–वि० वधेच्छु। **–मना(नस्)**–वि० जिसकी वध करनेकी नीयत हो।

हंतोक्ति–स्त्री० (सं०) 'हंत' शब्दका प्रयोग, हंतकार; सहानुभूति, करुणा।

हंत्री–वि० स्त्री० (सं०) वध करनेवाली।

हँथोरी*–स्त्री० हथेली।

हँथौरा–पु० दे० 'हथौड़ा'।

हँथौरी–स्त्री० दे० 'हथौड़ी'।

हंदा–पु० (सं०) ब्राह्मण या पुरोहितके लिए निकाला हुआ भोजन।

हँफनि*–स्त्री० हाँफनेकी क्रिया।

हँबा, हंभा–स्त्री० (सं०) बैल आदिका रभाँना। **–रव**–पु० रभाँनेका शब्द, गोध्वनि।

हंस–पु० (सं०) बड़ी-बड़ी झीलोंमें रहनेवाला एक सफेद जलपक्षी (स्थान-भेदसे इसके रंगमें भिन्नता भी होती है और कविमतके अनुसार यह दूधसे पानी अलग कर देता है); ब्रह्म; आत्मा; जीवात्मा; पंच प्राणवायुओंमेंसे एक; सूर्य; शिव; विष्णु; कामदेव; सन्न्यासियोंका एक भेद; अलौकिक गुणोंसे युक्त मनुष्य; लोभादिरहित नरेश; अश्व; उत्तम भारवाहक बैल या भैंसा;

पर्वत; विशेष आकृतिका मंदिर; एक मंत्र; चाँदी; द्वेष, ईर्ष्या; ईर्ष्याद्वेषसे रहित व्यक्ति; दो प्रकारके वृत्त; एक ताल (संगीत); दीक्षागुरु, आचार्य; एक देवगंधर्व; ब्रह्माका एक पुत्र; वासुदेवका एक पुत्र; जरासंधका एक सेनानायक; एक पर्वत; चंद्रमाका एक अश्व; एक तरहका नृत्य; प्लक्षद्वीप-निवासी ब्राह्मण; अग्रणी व्यक्ति या वस्तु। **–कांता**–स्त्री० हंसी। **–कालीतनय**–पु० भैंसा। **–कीलक**–पु० एक रतिबंध। **–कूट**–पु० हिमालयकी एक चोटी; ककुत्, डिल्ला। **–ग**–पु० ब्रह्मा। **–गति**–स्त्री० हंसकी-सी मोहक गति; ब्रह्मप्राप्ति; एक वृत्त। **–गद्‍गदा**–स्त्री० मधुरभाषिणी स्त्री। **–गमन**–पु० हंसकी चाल। **–गमना**–स्त्री० एक सुरांगना। **–गर्भ**–पु० रत्नविशेष। **–गामिनी**–स्त्री० हंसकी-सी गतिवाली स्त्री; ब्रह्माणी। **–चूड़**–पु० एक यक्ष। **–चौपड़**–पु० (हिं०) पासोंसे खेला जानेवाला एक पुराना खेल। **–च्छत्र**–पु० सोंठ। **–ज**–पु० स्कंदका एक अनुचर; धर्मराज, कर्ण आदि। **–जा**–स्त्री० सूर्यपुत्री, यमुना। **–जातीय**–वि० हंसवर्गका (पक्षी)। **–तूल**–पु०,**–तूलिका**–स्त्री० हंसके मुलायम पर। **–दाहन**–पु० अगुरु। **–द्वार**–पु० मानस झीलके पासकी एक घाटी। **–द्वीप**–पु० एक टापू। **–देह**–स्त्री० पंचतत्त्वसे रहित प्रकाश रूप देह। **–नाद**–पु० हंसध्वनि, हंसका कलरव। **–नादिनी**–वि० स्त्री० मधुरभाषिणी। स्त्री० स्त्रियोंका एक भेद (पतली कमर, बड़े नितंब, गजकी चाल और कोयलके स्वरवाली), सुंदर स्त्री। **–नादी(दिन्)**–वि० हंस जैसी ध्वनि करनेवाला। **–नाभ**–पु० एक पर्वत। **–नीलक**–पु० दे० 'हंसकीलक'। **–पक्ष**–पु० हाथोंकी एक विशेष स्थिति। **–पथ**–पु० एक जनपद। **–पद**–पु० हंसका पैर (चिह्न); एक तौल, कर्ष। **–पदिका**–स्त्री० दुष्यंतकी पहली पत्नी। **–पदी**–स्त्री० गोधापदी नामकी लता; एक वृत्त; एक अप्सरा। **–पाद**–पु० हंसका पैर; ईंगुर; सिंदूर; पारा। **–पादिका**–स्त्री० हंसपदी नामक लता। **–पादी**–स्त्री० हंसपदी नामक लता। **–प्रपतन**–पु० एक तीर्थ। **–बीज**–पु० हंसका अंडा। **–मंगला**–स्त्री० एक संकर रागिनी। **–माला**–स्त्री० हंसपंक्ति; एक तरहकी बतख; एक वृत्त। **–माषा**–स्त्री० माषपर्णी। **–मुख**–वि० हंसकी चोंच जैसा बना हुआ। **–यान**–पु० हंसको सवारी या यान खींचनेके काममें लाना। वि० हंस जिसका यान हो। **–युक्त**–वि० हंस द्वारा खींचा जानेवाला (ब्रह्माका रथ)। **–रथ**–पु० ब्रह्मा। **–रव**–पु० हंसका कलरव। **–राज**–पु० बड़ा हंस; एक बूटी; एक तरहका चावल। **–रुत**–पु० हंस-रव। **–रोम**–पु० दे० 'हंसतूल'। **–लिपि**–स्त्री० एक तरहकी लिपि। **–लील**–पु० एक ताल (संगीत)। **–लोमश**–पु० कासीस। **–लोहक**–पु० पीतल। **–वंश**–पु० सूर्यवंश। **–वक्त्र**–पु० स्कंदका एक अनुचर। **–वाह**–वि० हंसकी सवारी करनेवाला। **–वाहन**–पु० ब्रह्मा। **–विक्रांतगामिता**–स्त्री० हंस जैसी चाल। **–श्रेणी**–स्त्री० हंसपंक्ति। **–वता**–स्त्री० यमुना नदी।

हंसक–पु० (सं०) हंस पक्षी; पैरोंमें पहननेका भूषण, नूपुर, बिछिया आदि।

हँसन–स्त्री० हँसनेकी क्रिया; हँसनेका ढंग।

हँसना–अ० क्रि० खुले मुँहसे वेगपूर्वक हर्षध्वनि निकालना; प्रसन्न होना; खुशी मनाना; मजाक करना; अच्छा देख पड़ना, रौनकदार जान पड़ना। * स० क्रि० उपहास करना। **हँसता चेहरा, हँसता मुँह**–पु० प्रसन्न मुखड़ा। **हँसतामुखी***–वि० प्रसन्नवदन। मु० **हँसकर बात उड़ाना**–किसी बातको अनावश्यक समझकर उसपर ध्यान न देना। **हँसते-बोलते**–मजाक करते-करते, दिल्लगीसे। **हँसते-हँसते**–हँस-हँसकर, बहुत हँसते हुए। **–०पेटमें बल पड़ जाना**–अधिक हँसनेके कारण पेटमें एक प्रकारकी ऐंठन होने लगना। **–०लोट जाना**–बहुत हँसते हुए लोटपोट होने लगना। **हँस देना**–हँसने लगना। **हँसना-बोलना**–दिल्लगी, मजाक करना; प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना। **हँस पड़ना**–हँस देना। **हँस-बोलकर बसर करना**–प्रसन्नतापूर्वक जीवन-निर्वाह करना। **हँस-बोल लेना**–प्रसन्नतापूर्वक वार्तालाप करना, हँसी-खुशीसे बातचीत करना। **हँसा जाना**–उपहासास्पद बनना।

हँसनि*–स्त्री० दे० 'हँसन'।

हँसनी–स्त्री० मादा हंस, हंसी।

हँसमुख–वि० प्रसन्न, प्रफुल्लवदन, हँसते चेहरेवाला; दिल्लगीबाज, विनोदी।

हँसली–स्त्री० गलेके नीचेकी एक हड्डी; स्त्रियोंका एक गहना जो गलेमें पहना जाता है।

हंसवती–स्त्री० (सं०) हंसपदी लता; दुष्यंतकी प्रथम पत्नी।

हंसांघ्रि–पु० (सं०) ईंगुर।

हंसांशु–वि० (सं०) श्वेत।

हँसाई–स्त्री० ठट्ठा, हँसी; निंदा, बदनामी; उपहास।

हंसाधिरूढा–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

हँसाना–स० क्रि० किसीको हास्योन्मुख करना, हँसनेमें प्रवृत्त करना; खुश करना। मु० **हँसा मारना**–बहुत हँसाना।

हंसाभिख्य–पु० (सं०) चाँदी।

हँसाय*–स्त्री० हँसी, हँसाई।

हंसारूढ–वि० (सं०) हंसपर सवार। पु० ब्रह्मा।

हंसारूढा–स्त्री० (सं०) सरस्वती।

हंसालि–स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद।

हंसावधूत–पु० (सं०) चारमेंसे एक प्रकारके अवधूत (तंत्र)।

हंसावली–स्त्री० (सं०) हंस-श्रेणी।

हंसास्य–पु० (सं०) हाथोंकी एक विशेष स्थिति।

हंसिका–स्त्री० (सं०) हंसी।

हंसिनी–स्त्री० हंसी; (सं०) चलनेका एक विशेष ढंग।

हँसिया–पु० लोहेका एक धनुषाकार औजार जिससे फसल, तरकारी आदि काटते हैं।

हंसिर–पु० (संभ) एक तरहका चूहा।

हंसी–स्त्री० (सं०) मादा हंस; एक वर्णवृत्त; उत्तम श्रेणीकी गाय (पंजाब)।

हँसी–स्त्री० हँसनेकी क्रिया, हास; मजाक, दिल्लगी; उपहास; बदनामी; खेल, आसान काम। **–खेल**–पु० दिल्लगी और खेल, आसान काम। **–ठठोली**–स्त्री० हँसी-मजाक, दिल्लगी। मु०**–उड़ना**–किसीका मजाक होना; किसीका बनाया जाना। **–उड़ाना**–किसीको बनाना, किसीकी भद्द करना। **–छूटना**–तेजीसे हँसी आना। **–जब्त कर लेना**–हँसी रोक लेना। **–मानना**–मामूली या आसान काम या बात समझना। **–में उड़ जाना,–में उड़ना**–किसी कामका मजाक या दिल्लगीमें टल जाना। **–में उड़ा देना,–में उड़ाना**–किसी कामको दिल्लगीमें टाल देना। **–में टालना**–किसी बुरी बातको गंभीरतापूर्वक ग्रहण न करना, किसीकी बुरी हरकतपर गौर न कर हँसकर सहन कर लेना। **–में फूल झड़ना**–किसीका हँसना (हँसनेकी क्रिया) अच्छा लगना। **–में ले जाना**–किसी बातको मजाक बना देना। **–में ले लेना**–किसी बातको गंभीरतापूर्वक ग्रहण न करना। **–समझना**–आसान बात या काम मानना, खयाल, परवाह न करना। **–सूझना**–हास्य, विनोद, मजाक करनेकी प्रवृत्ति होना।

हँसुली†–स्त्री० दे० 'हँसली'।

हँसोड़–वि० हँसनेवाला, हँसानेवाला; विनोदप्रिय, विनोदी, दिल्लगीबाज।

हँसोर*–वि० दे० 'हँसोड़'।

हँसोहाँ, हँसौहाँ–वि० हास्ययुक्त; मजाकभरा, परिहासपूर्ण; हँसनेकी प्रकृतिवाला, जो स्वभावसे ही हँसनेवाला हो।

ह–पु० (सं०) शिवका एक विग्रह, नकुलीश; जल; आकाश; स्वर्ग; रक्त; शून्य, सिफर; ध्यान; धारण; शुभ, मंगल; भय; ज्ञान; चंद्रमा; विष्णु; युद्ध; अश्व; घमंड; चिकित्सक; रोमांच; कारण, हेतु; पापहरण; सकोपवारण; सुख; हास; ब्रह्म; आनंद; अस्त्र; रत्नकांति; आह्वान; वीणाका स्वर; नियोग; क्षेप; निग्रह; निंदा; प्रसिद्धि; सूखना। वि० नष्ट करनेवाला; हटानेवाला; निवारण करनेवाला। अ० अवश्य ही, निश्चयपूर्वक आदि अर्थोंका द्योतन करनेके लिए प्रयुक्त होता है।

हई*–पु० हयी, अश्वारोही, घुड़सवार। स्त्री० आश्चर्य, अचंभा।

हउँ–अ० क्रि० दे० 'हौं'। सर्व० दे० 'हौं'।

हउम–पु० (सं०) अहं का भाव; अहंकार; घमण्ड।

हक|–पु० आश्चर्य, शोक आदिके अवसरोंपर हृदयके सहसा धड़क उठनेकी क्रिया, धक; दे० हक़। **–दक**–वि० चकित, विस्मित। **–बक**–वि० हक्कावक्का।

हक़, हक्क़–पु० (अ०) सत्य, सचाई; उचित पक्ष; ईश्वर, खुदा; स्वत्व; अधिकार; दावा; फर्ज, कर्तव्य; नेग; दस्तूरी; वदला, मुआवजा (नमकका हक़)। वि० ठीक, दुरुस्त, सही; न्याय्य; प्राप्य। **–आगाह**–वि० सत्यनिष्ठ; महात्मा। **–आसाइश**–पु० पड़ोसीकी जमीनपर रास्ता आदि पानेका अधिकार। **–गो**–वि० सच वोलनेवाला, न्यायकी वात कहनेवाला। **–तलफ़ी**–स्त्री० हक मारना; वेइंसाफी; नुकसान। **–ताला**–पु० महिमाशाली ईश्वर, परमेश्वर। **–दार**–वि० हकवाला, अधिकारी। पु० उत्तर प्रदेशमें काश्तकारोंका एक वर्ग जिन्हें अपनी जमीनपर मौरूसी हक हासिल होता है। **–० उम्मीदवार**–पु० वह उम्मीदवार जो किसी चीजका या उसमें हिस्सा पानेका अधिकारी भी हो। **–नाशनास,–फ़रामोश**–वि० जो ईश्वर और सत्यको न पहचाने; कृतघ्न। **–नाहक़**–पु० हक और नाहक, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य। अ० जवरदस्ती, व्यर्थ। **–परस्त**–वि० ईश्वरभक्त; सत्यभक्त, सच्चा; न्यायशील। **–परस्ती**–स्त्री० हकपरस्त होना। **–बजानिब**–वि० ठीक, दुरुस्त, न्याय्य। **–बीनी**–स्त्री० सत्यनिष्ठता। **–मौरूसी**–पु० आनुवंशिक अधिकार। **–रसानी**–स्त्री० किसीका हक़ दिलाना। **–रसी**–स्त्री० न्याय पाना, न्याय मिलना। **–शनासी**–स्त्री० सत्यको पहचानना। **–शफ़ा**–पु० दे० 'हक़शुफ़ा'। **–शुफ़ा**–पु० अपनी जायदादसे लगी हुई जायदादको दूसरोंसे पहले खरीदनेका हक। **–शुफ़ैआ**–पु० पड़ोसकी जमीन या मकान विकते समय पड़ोसीको सवसे पहले उसे प्राप्त करनेका हक़। **–(क्क़े) जौजीयत** पु० पत्नी होनेका हक़; सहवास, मैथुन। **–(क्क़े) नमक**–पु० नमकका हक, किसीका नमक खानेसे उसके प्रति होनेवाला कर्तव्य (हक अदा करना)। **–मालिकाना**–पु० मालिकका हक। **मु० (किसी चीज़का)–अदा करना**–फर्ज पूरा करना, जैसा चाहिये उस तरह करना (नौकरीका हक अदा करना)। **–को पहुँचना**–न्याय पाना; सत्यको पा लेना। **–पर लड़ना**–हकके लिए, न्यायके लिए लड़ना। **–पर होना**–न्यायका पक्ष लेना, न्याय्य अधिकारका आग्रह करना। **–मारना**–नेग आदि न देना। **(किसीके)–में**–विषयमें; पक्षमें; ··के लिए। **–०काँटे बोना**–बुराई करना।

हकबकाना–अ० क्रि० स्तंभित होना, भौंचक रह जाना, हक्कावक्का हो जाना।

हकला–वि० हकलानेवाला, रुक-रुककर वोलने, एक ही अक्षर या शब्द कई बार कहनेवाला। **–पन**–पु० दे० 'हकलाहट'।

हकलाना–अ० क्रि० वाग्यंत्र, विशेषतः जिह्वाके दोषके कारण रुक-रुककर बोलना।

हकलाहट–स्त्री० हकलानेका भाव; हकलानेका दोष।

हकलाहा|–वि० हकला, हकलानेवाला।

हकार–पु० (सं०) 'ह' की ध्वनि या 'ह' वर्ण।

हकारत–स्त्री० (अ०) हकलापन, तुच्छता। **–मु०–की नज़र या निगाहसे देखना**–तुच्छ समझना, हेय मानना।

हक़ाइक़–पु० (अ०) 'हक़ीक़त' का बहु०।

हक़ीक़त–स्त्री० (अ०) वस्तुका स्वरूप; असलीयत, यथार्थता; सचाई, सच बात; हालत; हाल; वृत्तांत; शब्दका असली, अभिधेयार्थमें व्यवहार; हैसियत, बिसात (उसकी क्या हक़ीक़त है)। **–पसंद**–वि० सत्य-प्रेमी। **–बयानी**–स्त्री० सच्ची बात कहना। **मु०–खुल जाना**–असलीयत जाहिर हो जाना, सत्यका प्रकट हो जाना। **–में**–दरअसल, सचमुच, वस्तुतः।

हक़ीक़तन्–अ० (अ०) हकीकतमें, वस्तुतः।

हक़ीक़ी–वि० (अ०) असली; सच्चा; सगा (–भाई, बहिन); अभिधेय (अर्थ)।

हकीम–पु० (अ०) ज्ञानी; बुद्धिमान्; वैज्ञानिक; मीमांसक; यूनानी चिकित्सा-शास्त्रका पंडित, तवीब।

हकीमी–स्त्री० हकीमका काम, पेशा; यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। वि० हकीमका (–इलाज)।

हक़ीयत, हक्क़ीयत–स्त्री० (अ०) हक, अधिकार, हकदारी; मिलकियत, जायदाद, (–जमींदारी)।

हक़ीर–वि० (अ०) छोटा; तुच्छ। **–तरीन**–वि० अत्यल्प; वहुत ही छोटा।

हक़ूक़–पु० (अ०) 'हक़'का बहुवचन।

हक्क–पु० (सं०) हाथीको बुलानेका शब्द, गजाह्वान।

हक्का–स्त्री० (सं०) उल्लू पक्षी।

हक़्क़ा–वि० (अ०,फा०) ईश्वरकी शपथ; खुदाकी क़सम। **–नी**–वि० ईश्वरीय; खुदाई।

हक्काक–पु० (अ०) नग जड़नेवाला, नगीनासाज; मुहर खोदनेवाला।

हक्क़ानियत–स्त्री० (अ०) हक्कानी होना, अध्यात्म; सचाई।

हक़्क़ानी–वि० (अ०) हकसे संबंध रखनेवाला, ईश्वर-विषयक; ईश्वराभिमुख।

हक्कावक्का–वि० स्तंभित, घवड़ाया हुआ, भौंचक, चकित (अप्रत्याशित घटना आदिके कारण)।

हक्कार–पु० (सं०) आह्वान, पुकार।

हक्काहक्क–पु० (सं०) चुनौती, ललकार।

हक्क़ुलइबाद–पु० जनताका हक, सार्वजनिक अधिकार।

हक़्क़ुत्तहसील–पु० (अ०) वह हक जो नंवरदारको मालगुजारी अदा करनेके बदलेमें मिलता है।

हक़्क़ुलयक़ीन–पु० (अ०) किसी बातको निजके अनुभवसे जानना, अनुभवजन्य ज्ञान; अटल विश्वास; पूरा यक़ीन।

हगनहटी|–स्त्री० गुदा; शौच करने, पाखाना जानेका स्थान, शौचालय। **मु०–मचाना**–वार-वार शौच जाना।

हगना–अ० क्रि० शौच करना, पाखाना फिरना; (ला०) अत्यधिक मात्रामें देना (जैसे–आजकल उनका रोजगार रुपया हग रहा है); (ला०) धमकी, डर, दवावके कारण विवश होकर किसीको चीज दे देना (जैसे–लात खानेपर वे चुरायी चीजें हग देंगे)। वि० हगनेवाला; अधिक हगनेवाला। **मु० हग भरना या मारना**–मलका वेग सँभाल न सकनेके कारण तुरत उसे त्याग देना; बहुत डर जाना; कोई वस्तु बहुत गंदी कर देना।

हगनेटी, हगनौटी–स्त्री० दे० 'हगनहटी'।

हगाना–स० पाखाना फिराना; इस क्रियामें सहायता देना। **मु० हगा मारना**–वहुत थका देना; परेशान करना। **–लेना**–जवरदस्ती वसूल करना या लेना।

हगास–स्त्री० हगनेकी आवश्यकताका अनुभव, शौच जानेकी इच्छा, पाखानेकी हाजत। **मु०–लगना**–शौच मालूम पड़ना।

हगोड़ा–वि० बार-वार शौच जानेवाला।

हग्गन, हग्गू–वि० हगोड़ा।

हचक–स्त्री० धक्का, झोंका, झटका। **–मु० खाना**–झटका लगना, नीचे-ऊपर, आगे-पीछे हिलना-डोलना।

हचकना–अ० क्रि० ऊपर-नीचे, आगे-पीछे हिलना-डोलना, झोंकेसे इधर-उधर होना। स० क्रि० झोंका देना, हिलाना-डुलाना; (ला०) जोरसे मारना। **मु० हचक देना**–जोरसे मारना।

हचका–पु० दे० 'हचक'।

हचकाना–स० क्रि० झोंकेसे हिलाना-डुलाना।

हचकीला–वि० झोंकेसे, तेजीसे हिलने-डुलनेवाला।

हचकोला–पु० हचक, हचका।

हचना*–अ० क्रि० किसी कामके करनेमें असमंजस होना; हाँ-नहीं करना, हिचकना।

हज–पु० दे० 'हज्ज'; मक्का-मदीनाकी तीर्थयात्रा।

हज, हज्ज–पु० (अ) सुख, लुत्फ; लाभ (उठाना, पाना)। मुसलमानोंका एक आवश्यक धर्मकृत्य जो मक्का जाकर अदा करना पड़ता है।

हजम–पु० (अ०) मोटाई; आकार (किताबका ह०)।

हज़म–पु० (अ०) पाचन-क्रिया, तहलील; खयानत, गवन, चोरी। **मु०–कर जाना,–करना**–पचाना, तहलील करना; गवन कर

लेना, माल मारना। **–होना**–पचना; गबनका प्रकट न होगा।

हजर–पु० (अ०) पत्थर। **–(रे) असवद**–पु० वह काला पत्थर जो काबेकी दीवारमें लगा हुआ है।

हज़र–पु० (अ०) एक स्थानमें स्थिति, अवस्थान, 'सफर'का उलटा।

हज़रत–पु० (अ०) समीपता, हुजूर; दरबार; सम्मान-सूचक संबोधन, जनाब, महोदय; (ला०) मुहम्मद। वि० दुष्ट, खोटा; चालबाज; शरारत करनेवाला। **–सलामत**–पु० बादशाह, नवाब आदिका संबोधन; (ला०) बादशाह। **–०पसंद** वि० जो बादशाहको पसंद आये।

हजाम–पु० दे० 'हज्जाम'।

हजामत–स्त्री० (अ०) सिर मूंड़ना, क्षौर; सफाई; दुर्दशा। मु० **–बनना**–सिर मूंड़ा जाना; ठगा, लूटा जाना। **–बनाना**–सिर मूँड़ना; ठगना, लूटना।

हज़ार–वि० (फा०) दस सौ; अनेक, अनगिनत। पु० हजारकी संख्या। अ० कितना ही, हरचंद। **–हा**–वि० सहस्रों; बहुत, बेहद; अनगिनत। मु० **–जानसे**–बड़े शौकसे। **–में**–बहुत लोगोंके सामने।

हज़ारा–पु० (फा०) फौवारा; छिड़कावके काम आनेवाली एक बालटी जिसमें बहुतसे छेदोंवाला नल लगा रहता है; बहुतसे पटलोंवाला फूल; एक आतिशबाजी।

हज़ारी–वि० हजारसे संबंध रखनेवाला। पु० हजार आदमियोंका सरदार; हजार आदमियोंकी पलटन; वेश्या-पुत्र; शाही जमानेका एक ओहदा। **–बज़ारी**–वि० साधारण लोगोंमें बैठनेवाला; कमीना।

हज़ारों–वि० दे० 'हज़ारहा'। मु०–**घड़े पानी पड़ जाना**–बहुत लज्जित होना। **–में**–बहुतोंमें; खुल्लम-खुल्ला।

हजूम–पु० (अ०) जमघट, भीड़भाड़; भीड़ करना।

हजूर*–पु० दे० 'हुजूर'।

हजूरी*–स्त्री०, पु० दे० 'हुजूरी'।

हजो–स्त्री० व्यंगोक्ति; निंदा।

हज्ज–पु० (अ०) संकल्प करना; नियत कालपर काबेके दर्शन और प्रदक्षिणा करना; मक्केकी यात्रा। **–(ज्जे)-अकबर**–पु० अधिक पुण्यजनक हज, जुमेको किया जानेवाला हज। **–नफ़्सानी**–पु० इन्द्रियसुख। **–रूहानी**–पु० आत्मिक सुख; आराधनाका आनन्द।

हज्जत–स्त्री० (अ०) आनन्द, भोगविलास, ऐश।

हज्जाम–पु० (अ०) पछने लगानेवाला; हजामत बनानेवाला, नाई।

हज्जामी–स्त्री० हज्जामका धंधा।

हज़्म–पु० (अ०) सावधानी; कुशलता; दूरदर्शिता; हारकर सेनाका भागना। पचना, पाचनशक्ति।

हट–पु० दे० 'हठ'। **–पर्णि**–पु०, **–पर्णी**–स्त्री० शैवाल।

हटक*–स्त्री० मना करनेकी क्रिया, वर्जन; चौपायोंको हटाने, हाँकनेकी क्रिया। **–मु०–मानना**–रोकनेपर किसी कामको न करना।

हटकन†–स्त्री० दे० 'हटक'; चौपायोंको हाँकनेकी लाठी।

हटकना*–स० क्रि० बरजना, मना करना, रोकना, कहींसे किसीको विरत करना, हटाना; चौपायोंको किसी ओर जानेसे रोककर दूसरी ओर मोड़ना, हाँकना। अ० क्रि० पश्चात्पद होना, हिचकिचाना।

हटका†–पु० दरवाजे आदिको खुलने, हटनेसे रोकनेके लिए लगायी हुई चीज; अर्गल, ब्योंड़ा।

हटतार*–पु० मालाका सूत। *स्त्री० सिलसिला; टकटकी–'वह रूपकी राशि लखी तबतें सखी आँखिनकैं हटतार भई'–घना०; † हड़ताल।

हटताल*–स्त्री० किसी कर, अन्याय-अत्याचार आदिके विरोधमें दुकानोंमें ताले लगाकर खरीद-बेच, काम-काज आदि बंद कर देना, हड़ताल।

हटना–अ० क्रि० किसी स्थानसे चल, खिसक, सरककर दूसरी जगह जाना; किसी पदसे हट जाना, पद-त्याग करना; किसी स्थानसे अवकाश, विश्राम ग्रहण करना; पीछे हटना; भागना; आलसी होना, काम न करना, जी चुराना; किसी कामका आगेके लिए टल जाना; वादेपर कायम न रहना। *स० क्रि० हटकना। मु०–**बढ़ना**–चुपकेसे भाग जाना, खिसक जाना, इधर-उधर होना।

हटबया–पु० हाट, बाजारमें सामान लगाकर बेचनेवाला व्यक्ति, दूकानदार।

हटवाई*–स्त्री० बाजारका काम, सामान खरीदने-बेचनेका काम, दूकानदारी; † हटवानेकी मजदूरी।

हटवाना–स० क्रि० हटानेका काम दूसरेसे करवाना।

हटवार*–पु० हाट, बाजारमें सामान बेचनेवाला व्यक्ति, दूकानदार। † वि० हटानेवाला।

हटवैया–वि० हटाने, हटवानेवाला।

हटाना–स० क्रि० किसी वस्तु, व्यक्तिको एक स्थानसे दूसरे स्थानपर रखना, स्थानांतरित करना, खिसकाना; किसी बातपर ध्यान न देना, किसीको महत्त्व न देना, उपेक्षा करना; खत्म करना, बंद करना, सिलसिला तोड़ना; खदेड़ना; किसी पद, नौकरीसे अलग करना।

हटिआ–स्त्री० छोटा बाजार, छोटी हाट।

हटुवा†–पु० हाटवाला व्यक्ति, दूकानदार; तौलनेवाला।

हटुई–स्त्री० दूकानदारी।

हटैता†–पु० सौदा; हाटमें लाया गया सामान, माल।

हटौती, हड़ौती†–स्त्री० शरीरका ढाँचा।

हट्ट–पु० (सं०) हाट, बाजार; मेला। **–चौरक**–पु० बाजारमें चोरी करनेवाला व्यक्ति, गँठकटा, पाकेटमार। **–वाहिनी**–स्त्री० बाजारमें बनी हुई पानी निकलनेकी नाली। **–विलासिनी**–स्त्री० वारांगना, वेश्या; एक प्रकारका गंधद्रव्य; हरिद्रा, हलदी। **–वेश्माली**–स्त्री० दुकानोंकी पंक्ति।

हट्टा-कट्टा–वि० हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा; बलवान्।

हट्टाध्यक्ष–पु० (सं०) बाजारका निरीक्षक।

हट्टी–स्त्री० दूकान; बाजार।

हठ–पु० (सं०) बलात्कार, बलप्रयोग, जबरदस्ती; उत्पीडन; किसी बातपर अड़े रहनेकी प्रवृत्ति, दुराग्रह; दृढ़ प्रतिज्ञा; शत्रुके पृष्ठभागमें पहुँच जाना; पृश्नी। **–कर्म(न्)** पु० बलप्रयोगका काम। **–कामुक**–पु० वह स्त्रीकामी जो बलप्रयोगका सहारा ले। **–धर्म**–पु० सत्यासत्यका विवेक किये बिना किसी बातको सत्य मानकर उसपर डटे रहना; संकीर्णतासूचक धार्मिक या साम्प्रदायिक कट्टरता, दुराग्रह। **–धर्मी**–स्त्री० (हिं०) दे० 'हठधर्म'। –**–पर्णि**–पु०,**–पर्णी**–स्त्री० शैवाल। **–योग**–पु० योगका एक प्रकार जिसमें नेती-धोती, आसन आदि क्रियाएँ करते और त्राटक, धारणा, ध्यान आदिके द्वारा चित्तवृत्ति बाह्य विषयोंसे हटाकर अंतर्मुख करते हैं। **–योगी(गिन्)**–पु० हठयोग करनेवाला व्यक्ति। **–विद्या**–स्त्री० हठयोगकी विद्या। **–शील**–वि० हठी, जिद्दी। मु० **–पकड़ना**–जिद्द करना। **–माड़ना***–हठ पकड़ना। **–में पड़ना**–हठ करना; किसीके दृढ़ संकल्पका शिकार होना। **–रखना**–किसीके दृढ़ संकल्पकी पूर्ति करना। **–रोपना**–हठ माँड़ना।

हठना*–अ० क्रि० हठ करना, जिद्द करना–'करिहौं न तुमसे मान हठ, हठिहौं न माँगत दान'–सूर।

हठात्–अ० (सं०) हठपूर्वक; बलपूर्वक; सहसा, अचानक। **–कार**–पु० बलात्कार, जबरदस्ती।

हठादेशी(शिन्)–वि० (सं०) किसीके विरुद्ध बलप्रयोगका उपाय बतलानेवाला।

हठायात–वि० (सं०) अनिवार्य।

हठालु–पु० (सं०) कुंभिका।

हठाश्लेष–पु० (सं०) बलपूर्वक आलिंगन करना।

हठिका–स्त्री० (सं०) शोरगुल।

हठी(ठिन्)–वि० (सं०) हठ करनेवाला, जिद्दी।

हठीला–वि० हठी; युद्धमें दृढ़, जमनेवाला वीर, धीर; दृढ़संकल्प।

हड़–स्त्री० हर्रं; एक गहना, लटकन; 'हाड़'का समासगत रूप। **–कंप**–पु० तहलका, आतंक। (मु० **–०मचना**–आतंक फैलना।)

–कत–स्त्री०,**–जोड़**–पु० एक लता जो चोटकी जगह लगायी जाती है । **–गिल्ल,–गीला**–पु० बगलेकी जातिका एक पक्षी । **–फूटन**†–स्त्री० हड्डियोंमें होनेवाला दर्द । **–फूटनी**†–स्त्री० चमगादड़ । **–फोड़**–पु० एक तरहकी चिड़िया ।

हड़क–स्त्री० पागल कुत्तेके काटनेसे उत्पन्न जलका भय, जलांतक; कोई वस्तु पानेकी उत्कट इच्छा ।

हड़कना–अ० क्रि० किसी वस्तुके लिए लालायित होना, या उसके अभावमें दुखी होना, तरसना ।

हड़का–पु० हड़कने, तरसनेका भाव, तरस ।

हड़काना–स० क्रि० तरसाना; हतोत्साह करना; दूर हटा देना; तंग करनेमें किसीको प्रवृत्त करना ।

हड़काया–वि० उतावला; पागल (कुत्ता) ।

हड़ताल–स्त्री० दे० 'हटताल' । **–तोड़क**–पु० (ब्लैकलेग) वह कर्मचारी जो किसी कारखाने या व्यापारिक संस्थामें हड़ताल हो जानेपर भी अपने मालिकके लिए काम करनेको, हड़तालियोंकी चेष्टा विफल करनेको, कटिवद्ध हो ।

हड़ना–अ० क्रि० तौला जाना, तौलमें जाँचा जाना ।

हड़प–पु० खूराक निगलना; ग्रास एक ही बार निगल जाना; बिना चवाये निगल जाना; किसीका माल लेकर हजम कर जाना ।

हड़पना–स० क्रि० किसी वस्तुको अनुचित साधनों द्वारा कभी न देनेकी इच्छासे अपने अधिकारमें कर लेना, जबरदस्ती या चोरीसे किसी वस्तुको लेकर कभी न देना; जल्दी (और प्रायः अधिक) खाना; निगलना ।

हड़प्पा–पु० दे० 'हड़प'; गाली जो मर्द औरतोंको देते हैं; सिंधका एक स्थान जहाँ वहुत प्राचीन जनपदके चिह्न पाये गये हैं ।

हड़वड़–स्त्री० किसी कारणवश घवड़ाहटसे उत्पन्न जल्दबाजी, उतावली ।

हड़बड़ाना–अ० क्रि० हड़बड़ी, घवड़ाहटमें कोई काम करना । स० क्रि० जल्दी कार्य करनेके लिए किसीको प्रेरित करना ।

हड़बड़िया–वि० हड़बड़ी मचानेवाला, जल्दबाज, उतावला ।

हड़बड़ी–स्त्री० हड़बड़, जल्दबाजी, उतावली । **मु० –पड़ना**–किसी कामके लिए जल्दबाजी होना; घवड़ाहट होना । **(पेटमें) –पड़ना**†–बहुत घवड़ाना । **–सवार होना**–किसी कामको जल्दी करनेकी धुन होना ।

हड़हड़ाना–स० क्रि० 'हड़-हड़' शब्द करना, शीघ्र कार्य करनेके लिए किसीको प्रेरित करना । अ० क्रि० 'हड़-हड़' शब्द होना ।

हड़हा–वि० हाड़-संबंधी; अस्थिशेष (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डी-हड्डी रह गयी हो, बहुत दुबला-पतला । पु० जंगली बैल; किसीके पुरखेको मार डालनेवाला व्यक्ति ।

हड़ा–पु० एक प्रकारकी बंदूक, पथरकला बंदूक । अ० खेतसे चिड़ियोंको उड़ानेका शब्द ।

हड़ावर†–पु० गरमीमें पहननेके लिए नौकरोंको दी जानेवाली पोशाक ('जडावर'का उलटा) ।

हड़ावरि, हड़ावल†–स्त्री० हड्डियोंका ढेर; अस्थिपंजर, ठठरी; अस्थिमाल, हड्डियोंकी माला ।

हडि–पु० (सं०) काठकी बेड़ी; दे० 'हडिक' ।

हडिक–पु० (सं०) झाड़ू लगानेवाली, मल उठानेवाली जाति, भंगी आदि ।

हड़ीला–वि० हड्डीवाला, अस्थिशेष (व्यक्ति), जिसके शरीरमें हड्डियाँ ही रह गयी हों, बहुत दुबला-पतला ।

हड्ड–पु० (सं०) अस्थि, हड्डी, हाड़ । **–ज**–पु० मज्जा ।

हड्डक–पु० (सं०) दे० 'हडिक' ।

हड्डा–पु० भिड़की जातिका एक कीड़ा जो लाल और उससे कुछ बड़ा होता है; बड़ी बर्रें ।

हड्डि, हड्डिक, हड्डिप–पु० (सं०) दे० 'हडिक' ।

हड्डी–स्त्री० शरीरका वह कड़ा भाग जिससे उसका ढाँचा बनता है; (ला०) कुल, खानदान । **मु० –उखड़ना**–हड्डियोंका जोड़ खुल जाना । **–गढ़ना**–बुरी तरह पीटना । **–गुड्डी तोड़ना,–तोड़ना**–बुरी तरह पीटना । **–चबाना**–किसी वस्तुका अभाव होनेपर भी उसे जबरदस्ती प्राप्त करनेका प्रयत्न करना । **–बोलना**–हड्डी टूटना । **–से हड्डी बजाना**–लड़ना, लड़ाई-झगड़ा करना । **–हड्डी चूसना**–अशक्त व्यक्तिसे जबरदस्ती काम लेना, काम कराना आदि । **हड्डियाँ दिखाई पड़ना या निकल आना**–इतना दुबला हो जाना कि हड्डियाँ दिखाई देने लगें ।

हत–वि० (सं०) मार डाला हुआ; घायल किया हुआ; ताडित, पीटा हुआ; फोड़ा हुआ (जैसे नेत्र); तंग किया हुआ; विरहित; छला हुआ; विफलप्रयास, हताश, भग्न-हृदय; जिसमें बाधा डाली गयी हो; भ्रष्ट किया हुआ; ध्वस्त, विलुप्त; गुणित; ग्रस्त (कष्टसे); संपर्कमें आया हुआ (ज्यो०); निकम्मा; सदोष । पु० वध, हनन; गुणा । **–कंटक**–वि० जिसके काँटे (शत्रु) नष्ट कर दिये गये हों । **–किल्विष**–वि० जिसके पाप नष्ट हो गये हों । **–चित्त,–चेता(तस्)**–वि० बेसुध; घवड़ाया हुआ । **–चेतन**–वि० हतज्ञान । **–च्छाय**–वि० जिसकी कांति क्षीण हो गयी हो । **–जल्पित**–पु० निरर्थक बात । **–जीवन**–पु० दुःखमय जीवन । **–जीवित**–पु० दुःखी जीवन; जीवनसे नैराश्य । वि० जीवनसे निराशा; हताश । **–ज्ञान**–वि० संज्ञाहीन, बेसुध । **–ताप**–वि० जिसकी गरमी दूर हो गयी हो, ठंढा किया हुआ । **–त्रप**–वि० निर्लज्ज । **–दैव**–वि० हतभाग्य, भाग्यहीन । **–द्विट्(ष्)**–वि० जिसने अपने शत्रुओंका नाश कर दिया है । **–धी,–बुद्धि**–वि० दे० 'हतचित्त' । **–ध्वांत**–वि० अंधकारसे मुक्त । **–पुत्र**–वि० जिसके पुत्रकी हत्या की गयी हो । **–प्रभ**–वि० दे० 'हतच्छाय' । **–प्रभाव**–वि० जिसका प्रभाव नष्ट हो गया हो, अधिकारवंचित । **–प्रमाद**–वि० जिसकी लापरवाही दूर हो गयी हो । **–प्राय**–वि० जो करीब-करीब मार डाला गया हो । **–बांधव**–वि० संबंधियोंसे रहित । **–भाग,–भाग्य**–वि० भाग्यहीन, बदकिस्मत । **–भागी***–वि० दे० 'हतभाग' । **–मति**–वि० 'हतचित्त' । **–मान**–वि० गर्वहीन; अपनानित । **–मानस**–वि० दे० 'हतचित्त' । **–मूर्ख**–वि० बहुत अधिक मूर्ख । **–मेधा(धस्)**–वि० दे० 'हतचित्त' । **–रथ**–पु० वह रथ जिसका सारथि और घोड़े मारे गये हों । **–लक्षण**–वि० हतभाग्य । **–विधि**–वि० भाग्यहीन । **–विनय**–वि० जिसे शिष्टता आदिका ज्ञान न हो । **–वीर्य**–वि० जिसकी शक्ति नष्ट हो गयी हो; बलहीन । **–वृत्त**–वि० सदोष छंदवाला । **–वेग**–वि० जिसका वेग नष्ट हो गया हो । **–व्रीड**–वि० निर्लज्ज । **–शिष्ट,–शेष**–वि० जो जीवित बच गया हो । **–श्रद्ध**–वि० श्रद्धाहीन । **–श्री**–वि० जिसका वैभव नष्ट हो गया हो । **–संपद**–वि० दे० 'हतश्री' । **–साध्वस**–वि० जिसका भय नष्ट हो गया हो । **–स्त्रीक**–वि० जिसने किसी स्त्रीका वध किया है; जिसकी स्त्री मार डाली गयी हो । **–स्मर**–पु० शिव । **–स्वर**–वि० जिसका स्वर भंग हो गया हो । **–हृदय**–वि० भग्नहृदय, हताश ।

हतक–वि० (सं०) जिसे चोट पहुँचायी गयी हो; ··· से ग्रस्त (दुर्दैव आदिसे); दीन-दुःखी; पापी–'अब सजनी दूनो चढ्यो, हतक मनोजहिं दाप'–मतिराम । पु० नीच व्यक्ति; भीरु या कायर आदमी । स्त्री० (अ०) हत्क, बेइज्जती, मानहानि, हेठी; बेअदबी, धृष्टता । **–इज्जती**–स्त्री० मानहानि, बेइज्जती ।

हतना*–स० क्रि० जानसे मारना, बध करना; मारना-पीटना ।

हतवाना*–स० क्रि० मरवा डालना; पिटवाना ।

हता–स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका सतीत्व भंग किया गया हो; वह गयी-बीती कन्या जो विवाहके अयोग्य समझी जाय । * अ० क्रि० होनाका भूतकाल–था ।

हतादर–वि० (सं०) जिसका आदर नष्ट हो गया हो, अनादृत ।

हताना*–स० क्रि० दे० 'हतवाना' ।

हतारोह–वि० (सं०) (वह हाथी) जिसके आरोही मारे गये हों ।

हतावशेष–वि० (सं०) दे० 'हतशिष्ट' ।

हताश–वि० (सं०) जिसकी आशा नष्ट हो गयी हो; मूर्ख; दुःखी, दीन; फलहीन ।

हताश्रय–वि० (सं०) जिसका सहारा नष्ट हो गया हो, निराश्रय ।

हताश्वास–वि० (सं०) जिसे दिया हुआ आश्वासन सफल न हुआ हो, निराश ।

हताहत–वि० (सं०) मारे गये और घायल ।

हति–स्त्री० (सं०) वध; नाश; आहत करना; आघात; हानि; विफलता; दोष, ऐब; गुणा।

हते*–अ० क्रि० 'हता'का बहुवचन।

हतेक्षण–वि० (सं०) अंधा।

हतो*–अ० क्रि० दे० 'हता'।

हतोज*–वि० दे० 'हतौजा'।

हतोत्तर–वि० (सं०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके।

हतोत्साह–वि० (सं०) जिसका उत्साह भंग हो गया हो।

हतोद्यम–वि० (सं०) विफलप्रयत्न।

हतौजा(जस्)–वि० (सं०) जिसका ओज नष्ट हो गया हो; वीरोत्साहसे रहित।

हत्तलमकदूर–अ० (अ०) यथाशक्ति; शक्तिभर।

हत्थ*–पु० हाथ।

हत्था–पु० किसी वस्तुका वह भाग जो हाथसे पकड़ा जाय या जिसपर हाथ रखा जाय, मूठ, दस्ता (हेंडिल); कुरसीकी बाँही; दंड करते समय हाथके नीचे रखनेका पत्थर या ईंट; पूजन आदिके अवसरोंपर ऐपंन आदिसे दीवार या भूमिपर बनाया जानेवाला हाथके पंजेका चिह्न; केलेका घौद; लाल और पीले या मटमैले रंगके मिश्रणसे बना एक अशोभन रंग; कंबल बुनते समय उसकी पटिया ठोंकनेका एक औजार; निवार बुननेमें सूत ठोंकनेके काममें आनेवाला एक कंघीनुमा औजार; रेशमी वस्त्र बुननेके काममें आनेवाला एक औजार जो छतसे लटका रहता है; खेतकी नालीके पानीको चारों ओर उलीचनेका एक औजार। **मु० हत्थे परसे उखड़ना**–सफलताके निकट पहुँचकर विफल हो जाना; पतंग उड़ानेमें गुड्डीकी नखका परेते या हाथके पाससे कट जाना।

हत्था-जड़ी–स्त्री० एक पौधा, हस्तिशुंडा।

हत्थि*–पु० हाथी।

हत्थी–स्त्री० औजार, हथियार आदिका दस्ता; गोमुखीके ढंगकी घोड़ेका शरीर पोछनेकी ऊनी थैली; चमड़ेका टुकड़ा जिसे छापते समय छीपी अपने हाथमें लगा लेते हैं; कड़ाहमें रखा ईखका रस चलानेकी लकड़ी; बुनाईके कामका एक औजार; बुरे उद्देश्यसे छिपाकर दिया जानेवाला प्रोत्साहन।

हत्थे–अ० हाथमें। **मु० –चढ़ना**–अनजाने अपने विरोधीके पंजेमें, हाथमें आ जाना; उपयुक्त अवसरपर वशमें आना। **–लगना**–हाथमें आना, मिलना।

हत्या–स्त्री० (सं०) जानसे मारनेका काम, खून, वध; अनजाने अथवा संयोगवश किसीके प्राण ले लेना (होमीसाइड); हत्या करनेका पाप; बखेड़ा; झगड़ा; बहुत दुबला-पतला या बीमार व्यक्ति आदि। **मु० –टलना**–झंझट दूर होना। **–पल्ले बाँधना**–झगड़ेसे संबंध स्थापित करना। **–मोल लेना**–हत्या पल्ले बाँधना। **–सवार होना**–मुखाकृति आदिसे हत्याकी प्रवृत्ति प्रकट होना, खून चढ़ना। **–सिर मढ़ना**–अपराधी ठहराना; लड़ाई-झगड़ेका काम सौंपना। **–सिर लगाना**–दे० 'हत्या सिर मढ़ना'। **–सिर लेना**–पापका भागी होना।

हत्यार†–पु० दे० 'हत्यारा'।

हत्यारा–पु० हत्या करनेवाला व्यक्ति, खूनी।

हत्यारिन–स्त्री० हत्या करनेवाली स्त्री।

हत्यारी–स्त्री० हत्या करनेवाली स्त्री, हत्यारिन; हत्याका पाप।

हथ–पु० 'हाथ'का समासगत रूप; (सं०) चोट, आघात; वध; मृत्यु; हताश मनुष्य। **–उधरा**–पु० दे० 'हथ-उधार'। **–उधार**–पु० बिना लिखा-पढ़ीके किसीको थोड़े समयके लिए कर्ज देना। **–कंडा**–पु० षड्यंत्र; धूर्तता करनेकी पद्धति; चतुराईकी चाल; किसी कामके करनेमें हाथको फुर्तीसे इस ढंगसे चलाना कि कामकी गुप्त पद्धतिको देखनेवाला भाँप न सके; किसी कामके करनेमें हस्तलाघव, हाथकी सफाई। (**मु०–० चलना,–०लगना**–चालबाजी कारगर होना। **–०दिखाना**–हाथकी सफाईका प्रदर्शन करना; चालबाजीकी कला दिखाना।) **–कड़ी**–स्त्री० लोहेका विशेष ढंगका बना कड़ा जो कैदी या अपराधीको विवश करनेके लिए पहनाते हैं। (**मु०–०डालना**–हथकड़ी पहनाना; दोषी करार देना। **–०पड़ना**–हथकड़ीसे हाथोंका बाँधा जाना; अपराधी माना जाना, दोषी ठहराया जाना।) **–करघा**–पु० हाथसे कपड़ा बुननेका करघा (हैंडलूम)। **–करा**–पु० चमड़ेका दस्ताना; धुनियेकी कमानमें बँधा कपड़ेका टुकड़ा। **–करी**–स्त्री० दुकानके किवाड़ोंमें लगा एक ताला। **–कल**–पु० सूत या तार ऐंठनेका सुनारोंका एक औजार; पेंचकस; करघेकी दो डोरियाँ जिनमेंसे एकका छोर हत्थेके ऊपरी भागमें बँधा रहता है और दूसरीका लग्गेमें। **–कोड़ा**–पु० कुश्तीका एक दाँव। **–गोला**–पु० हाथसे फेंका जानेवाला विस्फोटक गोला। **–छुट**–वि० जिसे तुरत उत्तेजित होकर मार बैठनेकी आदत हो। **–छोड़**†–वि० दे० 'हथछुट'। **–फूल**–पु० एक आतिशबाजी; हाथके पंजेके ऊपरी भागपर पहननेका स्त्रियोंका एक आभूषण। **–फेर**–पु० द्रव्य लेने-देनेवालेके हाथकी सफाई जिससे खोटा या कम सिक्का दूसरे पक्षके जिम्मे पड़ जाता है; हस्तकौशल द्वारा किसी वस्तुको गायब करनेकी क्रिया; प्यारसे शरीरपर हाथ फेरनेकी क्रिया; हथउधार। वि० हाथकी सफाईसे चीजोंको गायब करनेवाला, हथलपक। **–बेंटा**†–पु० खेतमें लगे गन्नेको काटनेकी एक कुदाली। **–लपक**–वि० आँख बचाकर चुपकेसे चीजोंको गायब कर देनेवाला, हथफेर। **–लपका,**†**–लपक्का**†–वि० हथलपक। **–ली**–स्त्री० चरखेकी मुठिया। **–लेवा**–पु० हाथको हाथमें लेनेवाला व्यक्ति ('नामलेवा'की भाँति); विवाहके अवसर पर कन्याका हाथ ग्रहण करनेका कृत्य, पाणिग्रहण। **–बाँस**–पु० नाव खेनेका सामान। **–संकर, –साँकड़,–साँकर, –साँकल,–साँकला**–पु० हथफूल-नामक गहना।

हथनाल–स्त्री० हाथीपर चलनेवाली तोप।

हथनी–स्त्री० हाथीकी मादा; तालाबों आदिके घाटपर बनी वास्तुरचना जो ऊपर ऊँची रहती है और नीचे क्रमशः बड़ी-बड़ी सीढ़ियोंके रूपमें नीची होती जाती है।

हथबाँसना*–स० क्रि० अधिकारमें करना–'हथबाँसहु बोरहु तरनि कीजिय घाटारोह'–रामा०; अधिकार करके इस्तेमाल करना; पहले-पहल प्रयोगमें लाना।

हथसार–स्त्री० हाथियोंके रहनेका स्थान, हस्तिशाला, फीलखाना।

हथा†–पु० ऐपन आदिसे बनाया हुआ पंजेका चिह्न।

हथाहथी*–अ० हाथोहाथ, शीघ्र, जल्द।

हथिनी–स्त्री० हाथीकी मादा।

हथिया–पु० हस्त नक्षत्र।

हथियाना–स० क्रि० अपने अधिकारमें कर लेना; जबरदस्ती किसीकी चीज ले लेना; हाथसे पकड़ना।

हथियार–पु० अस्त्र-शस्त्र; औजार। **–घर**–पु० अस्त्र-शस्त्र रखनेका बड़ा घर, शस्त्रागार। **–बंद**–वि० अस्त्र-शस्त्र धारण करनेवाला, सशस्त्र। **मु०–उठाना**–युद्धके लिए प्रस्तुत होना। **–डालना**–लड़ाई बंद करना। **–बाँधना,–लगाना**–अस्त्र-शस्त्रसे सज्जित होना।

हथुई रोटी–स्त्री० वह रोटी जो बेलनेसे न बेलकर हाथकी अँगुलियोंसे दबाकर चौड़ी की गयी हो।

हथेरा–पु० खेतमें पानी उलीचनेका हत्था।

हथेरी*–स्त्री० दे० 'हथेली'।

हथेली–स्त्री० कलाईके आगेका चिकना और चौड़ा भाग, करतल; चरखेकी मुठिया। **मु० –का फफोला**–अत्यंत कोमल वस्तु जिसके टूटनेका भय बराबर बना रहे। **–खुजलाना**–द्रव्यप्राप्तिका शकुन होना; द्रव्यप्राप्तिकी पूर्वसूचना मिलना। **–देना,–लगाना**–हाथका सहारा देना। **–पर जान रखना या लेना**–दे० 'हथेलीपर सर रखना, लेना'। **–पर जान होना**–जान जानेकी स्थितिमें होना। **–पर दही जमाना**–कोई काम करानेके लिए जल्दी मचाना। **–पर बाल जमना**–किसीमें साहस, शक्तिका आना। **–पर सर रखना या लेना**–जान देनेके लिए तैयार रहना। **–पर सरसों जमाना**–कोई कठिन काम फुर्तीसे करना। **–पीटना,–बजाना**–ताली बजाना।

हथोड़ा–पु० दे० 'हथौड़ा'।

हथोरी*–स्त्री० हथेली।

हथौटी–स्त्री० हस्तकौशल, काम करनेका अच्छा ढंग; किसी काममें

हाथ लगाना। **–मु० –जमना,–मँजना,–सधना**–हाथ खूब सध जाना, काम करनेका कौशल प्राप्त होना।

हथौड़ा–पु० धातु, पत्थर, ईंट, लोहा आदि पीटने, ठोंकनेके काम आनेवाला लोहेका एक औजार।

हथौड़ी–स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हथौना†–पु० दूल्हे और दुलहिनके हाथमें मिठाई देनेकी रस्म।

हथ्याना*–स० क्रि० दे० 'हथियाना'।

हथ्यार*–पु० दे० 'हथियार'।

हथ्थि*–पु० दे० 'हाथी'।

हद–स्त्री० (अ० 'हद्द') किनारा; सीमा; पराकाष्ठा; ओट, आड़; अंत; औचित्यकी सीमा; इसलामी शरीअतके अनुसार दिया हुआ दंड; नियत स्थान। **–बंदी**–स्त्री० हद बाँधना, सीमानिर्धारण। **मु० –कर देना,–करना**–अति कर देना, औचित्यकी सीमा लाँघ जाना। **–से गुजरना**–सीमाके पार हो जाना, बहुत बढ़ जाना; अति हो जाना। **–से ज्यादा**–अत्यधिक।

हदका*–पु० धक्का, हचका–'अति खाय मग हदका पताका फरफराति अपार'–सत्यनारायन।

हदस–स्त्री० मनमें समाया हुआ डर।

हदसना–अ० क्रि० भयसे सन्न हो जाना, डर बैठना।

हदीस–स्त्री० (अ०) बात; नयी बात; मुहम्मदके कर्मकलाप और वचनोंका संग्रह जो कुरानमें अनुक्त विषयोंके लिए प्रमाण माना जाता है; वर्णन; इतिहास। **मु० –समझना**–बिलकुल सच समझना, प्रमाण मानना।

हद्द–स्त्री० (अ०) दे० 'हद'। **–(द्द) समाअत**–स्त्री० किसी दावेके सुने जानेकी अवधि। **मु० –हो जाना**–सुनाईकी अवधि बीत जाना, तमादी हो जाना। **(कोई) हद्दोहिसाब न होना**–बेहद, अत्यधिक हो जाना।

हनन–पु० (सं०) वध करना, जानसे मार डालना, कत्ल करना; चोट पहुँचाना, पीटना, मारना, ठोंकना; गुणन; नगाड़ा आदि बजानेका डंडा; एक कीड़ा। वि० वध करनेवाला। **–शील**–वि० खूनी स्वभावका, निष्ठुर।

हनना*–स० क्रि० वध करना, कत्ल करना, जानसे मार डालना; मारना–'बाँक नैन जनु हनहिं कटारी'–प०; पीटना, चोट पहुँचाना; ठोंकना; लकड़ीसे पीटकर नगाड़ा आदि बजाना।

हननीय–वि० (सं०) वध्य, मार डालने योग्य; मार खाने योग्य।

हनफ़ी–वि० (अ०) सच्चा; मोमिन। पु० सुन्नियोंका एक संप्रदाय।

हनवाना*–स० क्रि० मरवा डालना; मरवाना, पिटवाना, चोट पहुँचवाना, ठुकवाना; † नहलाना।

हनाना*–अ० क्रि० दे० 'नहाना'।

हनितवंत*–पु० हनुमान्।

हनीफ़–वि० (अ०) सत्यनिष्ठ; धर्मपरायण; इब्राहीमका अनुयायी।

हनील–पु० (सं०) केतकी।

हनु–स्त्री० (सं०) ऊपरी जबड़ा; ठुड्‌ढी; जीवनको क्षति पहुँचानेवाली वस्तु; अस्त्र, हथियार; रोग; मृत्यु; व्यभिचारिणी स्त्री; वेश्या। पु० एक संकर जाति। **–ग्रह,–स्तंभ**–पु० धनुष्टंकारका एक भेद जिसमें जबड़ा बैठ जाता है (लॉक जॉ)। **–भेद**–पु० जबड़ेका खुलना। **–मूल**–पु० जबड़ेकी जड़। **–मोक्ष**–पु० जबड़ेका ढीला पड़ना; जबड़ेका एक रोग। **–संहति**–स्त्री०,**–संहनन**–पु० जबड़ा बैठनेका एक प्रकार। **–स्वन**–पु० जबड़ेसे निकलनेवाला स्वर।

हनुका–स्त्री० (सं०) जबड़ा।

हनुमंत*–पु० दे० 'हनुमान्'। **–उड़ी**–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत।

हनुमंती–स्त्री० मालखंभकी एक कसरत।

हनुमज्जयंती–स्त्री० (सं०) कार्त्तिक-कृष्णा चतुर्दशी या चैत्र-पूर्णिमा जिसे हनुमान्‌का जन्मदिन मानते हैं।

हनुमत*–पु० दे० 'हनुमान्'।

हनुमान–पु० दे० 'हनुमान्'। **–बैठक**–स्त्री० बैठक (कसरत)का एक प्रकार।

हनुमान्(मत्)–पु० (सं०) सुग्रीवके एक मंत्री (ये अंजनासे उत्पन्न पवनके पुत्र थे और वीर होनेके साथ ही दौत्यकार्यमें भी बड़े कुशल थे। रामके तो ये अनन्य भक्त थे और सीताका पता लगाकर रावणपर उन्हें विजय दिलानेमें बड़े सहायक सिद्ध हुए। हिंदू इन्हें देवताके रूपमें पूजते हैं)। वि० जबड़ेवाला। **–कवच**–पु० हनुमान्‌को प्रसन्न करनेका एक मंत्र; हनुमान्‌की एक स्तुति। **–धारा**–स्त्री० चित्रकूटका एक पवित्र स्थान।

हनुल–वि० (सं०) मजबूत डाढ़वाला।

हनुव*–पु० दे० 'हनुमान्'।

हनू–स्त्री० (सं०) दे० 'हनु'।

हनूद–पु० (अ०) 'हिन्दू'का बहु०। हिन्दू लोग।

हनूफाल–पु० एक वृत्त।

हनूमान्(मत्)–पु० (सं०) दे० 'हनुमान्'।

हनूष–पु० (सं०) दैत्य, राक्षस।

हनोज़–अ० (फ़ा०) अभी, अभीतक।

हनोद–पु० एक राग।

हन्न–वि० (सं०) जिसने मलत्याग किया है। पु० मल, विष्ठा।

हन्यमान–वि० (सं०) हननीय, वध्य; मारा जाता हुआ।

हप–पु० मजबूती और फुर्तीसे दोनों होठोंको दबानेसे उत्पन्न शब्द। **मु० –कर जाना,–करना**–मुँहमें डालकर झटसे निगल जाना; तुरत चट कर जाना, उड़ा जाना।

हपटाना†–अ० क्रि० जल्दी-जल्दी साँस लेना, हाँफना।

हपुषा–स्त्री० (सं०) पीपलके गोदेके आकारका एक फल जो बहुत काला होता है और दवाके काम आता है, ध्मांक्षनाशिनी।

हप्पा–पु० मुलायम भोजन; कौर; घूस। **मु० –देना**–खिलाना; घूस देना।

हप्पू–पु० अफीम। वि० पेटू, अत्यधिक खानेवाला।

हफ़्त–वि० (फ़ा०) सात। **–रोजा**–वि० साप्ताहिक पत्र (वीकली)।

हफ़्ता–पु० (फ़ा०) सप्ताह।

हफ़्तेवार–वि० (फ़ा०) साप्ताहिक।

हफ़ादत–स्त्री० (अ०) कृपा, दया, अनुकम्पा; प्रसन्नता।

हफ़ीज़–वि० (अ०) रक्षक; संरक्षक; ईश्वर।

हबकना†–स० क्रि० किसी वस्तु–फल आदिको झटसे दाँतसे काटकर खाना, चटसे काटना; किसी व्यक्तिको झपटकर दाँतसे काटना।

हबड़ा–वि० बड़दंता; कुरूप।

हबरदबर, हबरहबर–अ० जल्दी-जल्दी; हड़बड़ीके साथ।

हबराना†–अ० क्रि० दे० 'हड़बड़ाना'।

हबश, हबशा–पु० (अ०) हब्शियोंका देश, पूर्वी अफ्रीकाके अंतर्गत एक देश।

हबशन, हबशिन–स्त्री० हबशी स्त्री; काली-कलूटी स्त्री; शाही महलकी चौकीदारी करनेवाली स्त्री।

हबशी–पु० हबशका रहनेवाला; हबशी जातिका आदमी। वि० काला-कलूटा। **–हलवा सोहन**–पुभ स्याह रंगका हलवा सोहन।

हबाब–पु० (अ०) पानीका बुलबुला; शीशेका गोला जिसे सजावटके लिए मकानमें लगाते हैं। **–आसा**–वि० क्षणभंगुर, बुलबुलेकी तरह। **–सा**–बारीक, पतला; जरा-सा।

हबाबी–वि० हबाब जैसा। **–आईना**–पु० टट्टीके शीशेका आईना जिसमें दल न हो।

हबीब–वि० (अ०) प्रेमी; दोस्त; प्यारा।

हबूब–पु० दे० 'हबाब'; (अ०) हब्बका बहुवचन, गोलियाँ, वटिकाएँ।

हबेली–स्त्री० दे० 'हवेली'।

हब्ब–पु० (अ०) गोली, वटिका; दाना, बीज। **–ज़ा**–अ० वाहवाह, धन्यधन्य।

हब्बा–पु० अनाजका दाना; रत्ती; अत्यल्प मात्रा; (ला०) पैसा-कौड़ी। **–भर**–रत्तीभर। **–हब्बा**–पैसा-पैसा, कौड़ी-कौड़ी।

हब्बा-डब्बा–पु० बच्चोंका एक रोग जिसमें उनकी साँस बहुत तेजीसे चलती है।

हब्स–पु० (अ०) कैद, अवरोध; कैदखाना; हवाका बंद हो जाना;

ऊमस (हिं०)। **–(ब्से)दम**–पु० साँसका रुकना; प्राणायाम; दमा। **–बेजा**–पु० नाजायज, गैरकानूनी कैद, किसीको जवर्दस्ती कहीं बंद कर देना।

हम–सर्व० 'मैं'का बहुवचन रूप। * पु० अहंकार, घमंड; बड़प्पनकी भावना। **–ता***–स्त्री० अहंकार।

हम–अ० (फा०) समान, एक-सा; संग, साथ; आपसमें। **–असर**–वि० एक जैसे प्रभाववाला; समप्रवृत्ति। **–उम्र**–वि० समवयस्क। **–क़ौम**–वि० एक जातिका, सजातीय। **–ख़ाना**–वि० एक ही घरमें रहनेवाला। **–ख़्वाबा**–वि० स्त्री० साथ सोनेवाली (पत्नी)। **–ग़म**–वि० हमदर्द। **–गोशा**–वि० पड़ोसी, मित्र। **–चश्म**–वि० मित्र। **–ज़बां**–वि० एक भाषाभाषी; मित्र। **–जिंस**–वि० एक-सा; एक ही पेशेका। **–जोली**–वि० एक ही उम्रका; वचपनमें साथ खेला हुआ। **–ज़ौक़**–वि० एकसे शौक़ीन। **–दर्द**–वि० (कष्ट, पीड़ा, दुःखमें) सहानुभूति रखनेवाला। **–दर्दी**–स्त्री० सहानुभूति, दर्दमंदी। **–दविस्तां,–मक्तब**–वि० सहपाठी। **–दिल**–वि० मित्र। **–दीवार**–वि० पड़ोसी। **–नफ़स**–वि० मित्र। **–नशीं**–वि० साथ बैठनेवाला। **–नाम**–वि० एक नामवाले, नामारासी। **–निवाला**–वि० साथ खानेवाला। **–पल्ला**–वि० वराबरकी टक्करका। **–पेशा**–वि० एक ही पेशा करनेवाला; साथ व्यवसाय करनेवाला, सहव्यवसायी। **–बिस्तर**–वि० एक ही विस्तरपर सोनेवाला। **–हमबिस्तरी**–स्त्री० एक ही विस्तरपर सोने की क्रिया, सहशयन, संभोग। **–मज़हब**–समान धर्मको माननेवाला, सहधर्मी। **–मुर्शिद**–वि० एक गुरुके चेले। **–मुल्क**–वि० एक देशके निवासी। **–रकाव**–वि० साथ-साथ सवारी करनेवाला। **–राह**–वि० साथ चलनेवाला। अ० साथमें। (**मु०** **–०करना**–किसीको कहीं जानेके लिए किसीके साथ कर देना। **–० होना**–साथ जाना।) **–राही**–वि० सहगामी। **–वतन**–पु० एक ही देशका निवासी। **–वार**–वि० बरावर, चौरस; एक-सा। **–शीर,–शीरा**–स्त्री० सगी बहन, सहोदरा। **–सफ़र**–वि० एक साथ यात्रा करनेवाला। **–सबक़**–वि० साथ पढ़नेवाला। **–सर**–वि० बरावरीका। **–सरी**–स्त्री० बरावरी। **–साया**–पु० पड़ोसी। **–साल,–सिन**–वि० दे० 'हमउम्र'। **–सुख़न**–वि० साथ-साथ कविता करनेवाले।

हमन*–सर्व० दे० 'हम'।

हमरा,हमरो–सर्व० दे० 'हमारा' (हमराके–हमको; हमरोके–हमको भी)।

हमल,–हम्ल–पु० (अ०) भेड़ या वकरीका बच्चा; मेषराशि; बोझ; गर्भ; भ्रूण। **–(ले)हराम**–पु० हरामका हमल, व्यभिचारसे स्थित गर्भ। **मु०** **–गिराना**–गर्भपात करना।

हमला–पु० (अ०) आक्रमण, धावा, चढ़ाई; चोट, वार। **–आवर(हमलावर)**–वि०, पु० हमला करनेवाला, आक्रमणकारी।

हमहमी–स्त्री० दे० 'हमाहमी'।

हमाक़त–स्त्री० (अ०) मूर्खता, नासमझी, धृष्टता। **–शियार**–वि० महामूर्ख।

हमाम–पु० दे० 'हम्माम'। पु० (अ०) कवूतर।

हमायल–स्त्री० (अ०) परतला; गलेमें डालनेकी चीज; छोटे आकारका कुरान जिसे गलेमें डाल सकें; गलेमें पहननेका एक गहना, हुमेल।

हमार*–सर्व० दे० 'हमारा'।

हमारा–सर्व० 'हम'का संवंध कारकका रूप।

हमाल–पु० दे० 'हम्माल'।

हमालल–पु० 'आदमकी चोटी' कहलानेवाला सिंहल(लंका)का सर्वोच्च पर्वत।

हमासत–स्त्री० (अ०) वीरता, शौर्य, वहादुरी।

हमाहमी–स्त्री० अनेकके स्वार्थमें अपने स्वार्थके लिए दौड़धूप करना, स्वार्थपरायणता; अपने अहंभावको ही आगे करनेका यत्न। **मु०** **–करना**–स्वार्थपरायण होना, स्वार्थी होना; अपने अहंकारकी तुष्टिके लिए यत्न करना, अपनी बात जबरदस्ती मनवानेका प्रयत्न करना।

हमीद–वि० (अ०) पवित्र, सदाचारी; सराहनीय।

हमीदा–वि० (अ०) साध्वी; पूज्या; पवित्र स्त्री।

हमीम–वि० (अ०) गरम; गरम पानी; ज्वर; स्वजन, रिश्तेदार।

हमीयत–स्त्री० (अ०) लज्जा, स्वाभिमान।

हमीर–पु० दे० 'हम्मीर'।

हमें–सर्व० 'हम'का कर्म तथा संप्रदान कारकका रूप, हमको।

हमेल–स्त्री० सोने या चाँदीके गोल सिक्कों या सिक्केके रूपमें गढ़े हुए धातुखंडोंमें कोंढ़ा लगाकर बनायी हुई माला।

हमेव*–पु० अहंकार, घमंड। **मु०** **–टूटना**–घमंड चूर होना।

हमेशा–अ० (फा०) सदैव।

हमेस, हमेसा*–अ० दे० 'हमेशा'।

हमैं*–सर्व० दे० 'हमें'।

हम्द–पु० (अ०) खुदाकी तारीफ, ईश्वरस्तुति, ईश्वरकी महिमाका गान। **–गो,–सरा**–वि० ईश्वरकी स्तुति, वंदना करनेवाला।

हम्माम–पु० (अ०) स्नानका स्थान; गरम स्नानागार। **–की लुंगी**–नहानेकी लुंगी; (ला०) वह चीज जो हर आदमीके काममें आये।

हम्मामी–पु० नहलानेवाला।

हम्मार*–सर्व० दे० 'हमारा'।

हम्माल–पु० (अ०) बोझ उठानेवाला, मोटिया, कुली।

हम्मीर–पु० रणथंभोरका एक वीर नरेश (चौदहवीं सदी) जो अलाउद्दीन खिलजीसे युद्ध करते समय मारा गया; (सं०) एक संकर राग। **–नट**–पु० एक संकर राग।

हयंकष–पु० (सं०) सारथि; इंद्रका सारथि मातलि।

हयंद*–पु० अच्छा घोड़ा, वड़ा घोड़ा।

हय–पु० (सं०) घोटक, घोड़ा; एक विशेष जातिका आदमी; सातकी संख्या; एक छंदका नाम; इंद्र; धनु राशि। **–कर्म(न्)**–पु० घोड़ोंका ज्ञान। **–कातरा,–कातरिका**–स्त्री० एक पौधा। **कोविद**–वि० पु०, अश्वविद्या जाननेवाला। **–गंध**–पु० काचलवण, काला नमक। **–गंधा**–स्त्री० अजमोदा; अश्वगंधा। **–गर्दभि**–पु० शिव। **–गृह**–पु० घुड़सार, अश्वशाला। **–ग्रीव**–पु० विष्णुका एक रूप जो मधु-कैटभसे वेदोंका उद्धार करनेके लिए ग्रहण किया गया था; एक दैत्य; एक तांत्रिक देवता। **–०रिपु**–पु० विष्णु। **–०हा(हन्)**–पु० विष्णु। **–ग्रीवा**–स्त्री० दुर्गा। **–घ्न**–पु० करवीर। **–चर्या**–स्त्री० यज्ञाश्वका भ्रमण। **–चछटा**–स्त्री० अश्वदल। **–ज्ञ**–पु० घोड़ेका व्यापारी; साईस। **–ज्ञान,–तत्त्व**–पु० घोड़ोंका ज्ञान। **–दानव**–पु० एक दानव, केशी। **–द्विषन्(त्)**–पु० भैंसा। **–नाल**–स्त्री० घोड़ेसे खींची जानेवाली तोप। **–निर्घोष**–पु० घोड़ेके टापकी आवाज। **–प**–पु० साईस। **–पुच्छिका,–पुच्छी**–स्त्री० माषपर्णी। **–प्रिय**–पु० जौ; जई। **–प्रिया**–स्त्री० अश्वगंधा; खर्जूरी। **–मार,–मारक**–पु० करवीर, कनेर। **–मारण**–पु० कनेर; अश्वत्थ, पीपल। **–मुख**–पु० देशविशेष (बौ०)। **–मेध**–पु० अश्वमेध। **–वाहन**–पु० सूर्यपुत्र, रेवंत; कुवेर। **–०शंकर**–पु० रक्त कांचन। **–विद्या**–पु० अश्वसंबंधी विद्या। **–शाला**–स्त्री० घुड़सार, अस्तवल। **–शास्त्र**–पु०,**–शिक्षा**–स्त्री० घोड़ोंको शिक्षा देनेकी विद्या। **–शिर(स्)**–पु० घोड़ेका सिर; एक दिव्यास्त्र; एक प्राचीन ऋषि। वि० घोड़े जैसे सिरवाला। **–शिरा(रस्)**–पु० विष्णु (हयग्रीवके रूपमें)। **–शीर्ष,–शीर्षा(र्षन्)**–वि० घोड़ेके सिरवाला। पु० विष्णु। **–स्कंध**–पु० अश्वदल।

हयन–पु० (सं०) वर्ष, साल; ढकी हुई गाड़ी या पालकी, कर्णीरथ।

हयना*–स० क्रि० दे० 'हनना', काटना–'प्रभु बहु बार बाहु सिर हये'–रामा०।

हयांग–पु० (सं०) धनु राशि।

हया–स्त्री० (सं०) अश्वगंधा; (अ०) लज्जा, शर्म। **–दार**–वि० लाज-शर्मवाला, लज्जाशील। **–दारी**–स्त्री० हयादार होना।

हयात–स्त्री० (अ०) जीवन, जिंदगी; प्राण। वि० जीवित, जिंदा 'हमें खुशी हुई कि बेग़म अभी हयात हैं।'

हयाध्यक्ष–पु० (सं०) अश्वपाल, घोड़ोंका निरीक्षक।

हयानंद–पु० (सं०) मुद्ग, मूँग।

हयानन–पु० (सं०) हयग्रीव; हयग्रीवके रहनेकी जगह।

हयानना–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

हयायुर्वेद–पु० (सं०) अश्वचिकित्सा-संबंधी शास्त्र, शालिहोत्र।

हयारि–पु० (सं०) करवीर, कनेर।

हयारूढ, हयारोह–पु० (सं०) अश्वारोही।

हयालय–पु० (सं०) अश्वशाला, अस्तबल।

हयाशना–स्त्री० (सं०) शल्लकी वृक्ष।

हयास्य, हयास्यक–पु० (सं०) विष्णु (हयग्रीवरूपमें)।

हयी–स्त्री० (सं०) घोड़ी।

हयी(यिन्)–पु० (सं०) अश्वारोही; घोड़ेवाला।

हयुषा–स्त्री० (सं०) एक पौधा जो दवाके काम आता है, हपुषा (?)।

हयेष्ट–पु० (सं०) यव; जई।

हर–वि० (सं०) हरण करनेवाला; दूर करनेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; ले जानेवाला; ग्रहण करनेवाला; आकृष्ट करनेवाला; हकदार; विभाजन करनेवाला; कब्जा करनेवाला। पु० शिव; अग्नि; गधा; भाजक (डिवाइज़र); भिन्नका निम्नांक; ग्रहण; हरण; ग्रहण करनेवाला; एक दानव; छप्पयका एक भेद। **–गिरि**–पु० कैलास पर्वत। **–गौरी**–स्त्री० शिवकी अर्ध-नारीश्वर मूर्ति।**–चूडामणि**–पु० शिवका शिरोरत्न; चंद्रमा। **–तेज(स्)**–पु० शिवका वीर्य; पारद, पारा। **–दग्धमूर्ति**–पु० कामदेव। **–द्वार**–पु० (हिं०) हरिद्वार। **–नर्तक**–पु० एक वृत्त। **–नेत्र**–पु० शिवनेत्र; तीनकी संख्या। **–प्रिय**–पु० करवीर। **–बीज**–पु० शिवका वीर्य; पारद, पारा। **–रूप**–पु० शिव। **–वल्लभ**–पु० तालका एक भेद (संगीत)। **–वाहन**–पु० (शिवका वाहन) बैल। **–शंकरी**–स्त्री० (हिं०) पाकड़ और पीपलका संयुक्त वृक्ष जो धार्मिक दृष्टिसे पवित्र माना जाता है। **–शृंगारा**–स्त्री० एक रागिनी। **–शेखरा**–स्त्री० गंगा। **–सख**–पु० कुबेर। **–सूनु**–पु० कार्त्तिकेय; गणेश। **–हार**–पु० शेषनाग; सर्प। **–हूरा**–स्त्री० द्राक्षा।

हर–वि० (फा०) प्रत्येक। **–एक**–वि० प्रत्येक। **–कहीं**–अ० हर जगह। **–चंद**–अ० जिस कदर, कितना ही। **–जाई**–वि० मारा-मारा फिरनेवाला, आवारागर्द; सब जगह जानेवाला, (वाली)। वि० स्त्री० कुलटा (स्त्री)। **–तरह**–अ० हर हालतमें। **–दम**–अ० हमेशा। **–दिल अज़ीज़ी**–स्त्री० लोकप्रियता। **–फ़न मौला**–वि० हर एक फन जाननेवाला। **–रोज़**–अ० प्रतिदिन।

हर*–पु० दे० 'हल'। **–जोता**–पु० हलवाहा; मूर्ख, उजड्ड, गँवार; मुंडा पक्षी। **–पुजी**–स्त्री० हलका पूजन जो किसान कार्त्तिकमें करते हैं। **–वाह,–वाहा**–पु० हल जोतनेवाला। **–वाही**–स्त्री० हल जोतनेका काम या मजदूरी।

हरई*–हल्कापन–'जिहिके परिभार पहार दबै, जग माँझ भई तिनतें हरई'–घन०।

हरएँ*–अ० धीरे-धीरे, आहिस्तेसे।

हरक–पु० (सं०) ग्रहण करने, ले लेनेवाला; चोर, ठग; भाजक; लचनेवाली लंबी तलवार; शिव (प्रलयंकर रूप)। वि० हरण करनेवाला।

हरक़–पु० (अ०) अग्नि, आग।

हरकत–स्त्री० (अ०) हिलना-डोलना, गति, चेष्टा; स्वर; (व्या०) स्वरसूचक चिह्न, मात्रा (जेर, जबर, पेश); काम; बुरा काम, शरारत। **–(ते) मज़बूही**–स्त्री० बुरी हरकत। मु० **–करना**–हिलना; चलना, प्रस्थान करना (फौजका हरकत करना)। **–देना**–जेर, जबर, पेश लगाना।

हरकना*–स० क्रि० रोकना, वर्जन करना। † अ० क्रि० भड़कना।

हरकात–स्त्री० (अ०) 'हरकत'का बहु०, मात्राएँ–जेर, जबर, पेश।

हरकारा, हरकाला–पु० (फा०) दूत, डाकिया, डाक ढोनेवाला।

हरकेस–पु० एक प्रकारका अगहनी धान।

हरख*–पु० दे० 'हर्ष'।

हरखना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना; खुश होना।

हरखाना*–अ० क्रि० दे० 'हरखना'। स० क्रि० खुश करना, प्रसन्न करना।

हरगिज़–अ० (फा०) कभी, किसी हालतमें (नहींके साथ प्रयुक्त)।

हरगिला†–पु० दे० 'हड़गीला'।

हरज–पु० (अ०) हानि, क्षति; देर, समय-नाश, काममें होनेवाली रुकावट (करना, होना)।

हरजा–पु० नुकसान; हरजाना; तावान; † संगतराशोंका एक औजार।

हरजाना–पु० (फा०) नुकसानके बदलेमें दी जानेवाली रकम, क्षतिपूर्ति।

हरजेवरी–स्त्री० एक झाड़ी।

हरट्ट*–वि० हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।

हरठिया†–पु० रहँटके बैलोंको हाँकनेवाला व्यक्ति।

हरड़ा†–पु० हर्र, हड़।

हरण–वि० (सं०) (समासांतमें) ले लेनेवाला; दूर करनेवाला; धारण करनेवाला। पु० हाथ, भुजा; नष्ट करना; दूर करना; ले लेना, छीन लेना; चुरा लेना; ले जाना या ले आना; भगा ले जाना (किडनैपिंग); वंचित करना; विभाजन, भाग (ग०); उपनयन-भिक्षा; यौतुक; शुक्र, वीर्य; स्वर्ण; कौड़ी; उबलता हुआ पानी; घोड़ेका चारा।

हरणि–स्त्री० (सं०) जलप्रणाली; मृत्यु।

हरणीय–वि० (सं०) हरण करने योग्य; ले लेने, छीन लेने योग्य।

हरता*–पु० दे० 'हर्ता'। **–धरता**–पु० बनाने-विगाड़नेवाला, सर्वेसर्वा; सर्वशक्तिमान्।

हरतार*–स्त्री० दे० 'हरताल'।

हरताल–स्त्री० गंधक और संखियाके योगसे बना एक पीला खनिज द्रव्य। मु० **–फेरना,–लगाना**–किसी बने कामको विगाड़ देना, नष्ट करना।

हरताली–वि० हरतालके रंगका। पु० हरतालका-सा रंग।

हरद*–स्त्री० दे० 'हल्दी'।

हरदा–पु० फसलका एक रोग, गेरुई।

हरदिया*–वि० हल्दीके रंगका, पीला। पु० पीले रंगका घोड़ा।

हरदियादेव*–पु० दे० 'हरदौल'।

हरदी†–स्त्री० हल्दी।

हरदौल–पु० ओड़छाके राजा जुझारसिंहके छोटे भाई जो वीरता और भ्रातृभक्तिके लिए बड़े प्रसिद्ध हैं (राजा जुझारसिंहने अपनी पत्नीके साथ अनुचित संबंध होनेके संदेहमें उसकी सतीत्व-परीक्षाके लिए उसीके हाथसे इन्हें विष खिलवाकर इनका अंत करा दिया)।

हरद्वान–पु० एक स्थानका नाम जहाँकी तलवार प्रसिद्ध है।

हरद्वानी–वि० हरद्वानका बना हुआ।

हरना–स० क्रि० हरण कर लेना, छीन लेना; दूर करना; आकृष्ट करना। अ० क्रि० हार जाना; परास्त होना; शिथिल पड़ जाना। * पु० मृग, हिरन।

हरनाकस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरनाच्छ*–पु० 'हिरण्याक्ष'।

हरनी†–स्त्री० हिरनकी मादा।

हरनौटा–पु० हिरनका बच्चा।

हरपरेवरी–स्त्री० एक टोटका जो औरतें वर्षा करानेके लिए करती हैं।

हरपा†–पु० वह छोटा डब्बा जिसमें सुनार तराजू आदि रखते हैं; सिधोरा।

हरफ़–पु० दे० 'हर्फ़'।

हरफारेवड़ी–स्त्री० आँवलेके बराबर खट्टे फलोंवाला एक वृक्ष या उसका फल, लवली।

हरफारचोरी*–स्त्री० दे० 'हरफारेवड़ी'।

हरबर*–स्त्री० दे० 'हड़बड़'। अ० हड़बड़ीके साथ, उतावलीमें, जल्द–'···तहँ मुनिवर हरबर आयो'–रघुराज।

हरबराना*–अ० क्रि० 'हड़बड़ाना'।

हरबा–पु० (अ०) युद्धका साधन, हथियार, आयुध। **–हथियार**–पु० अस्त्र-शस्त्र। मु० **–(बे) हथियारसे लैस होना**–शस्त्रसन्नद्ध हो जाना।

हरबोंग–वि० गुंडा, लट्ठधारी; मूढ़, मूर्ख; कुव्यवस्था; अंधेर; हो हल्ला; उपद्रव; कोलाहल। **–पुर**–पु० अंधेर नगरी।

हरबोला–पु० घूम-घूमकर राजाओंकी वीरता और उनके गौरवकी गाथाका वर्णन करते हुए भिक्षा माँगनेवाले एक तरहके बंदीजन या साधु। ये काले रंग का चिकचिक करता हुआ लंबा चोगा पहने रहते तथा हाथमें लोहेके तारके सात छल्ले तथा एक छोटा-सा डंडा थामे रहते थे जिसके सहारे वे छल्लोंको बजाते चलते थे (बुंदेल०)।

हरभूली†–स्त्री० धतूरेका एक प्रकार।

हरम–पु० (अ०) काबेकी चहारदीवारी; घेरा; अंतःपुर; विवाहिता स्त्री; रखेली बनायी हुई बाँदी। **–ख़ाना,–सरा**–पु० जनानखाना, अंतःपुर।

हरमज़दगी–स्त्री० हरामजादापन, दुष्टता, शरारत।

हरयाल*–स्त्री० 'हरियाली'।

हरये*–अ० दे० 'हरएँ'।

हरवल–पु० बिना ब्याजके हलवाहेको दिया हुआ द्रव्य; * पु० दे० 'हरावल'।

हरवली*–स्त्री० सेनाका नेतृत्व; मालिकका पद, स्वामित्व।

हरवा*–पु० दे० 'हार'। वि० हलका।

हरवाना*–अ० क्रि० 'हड़बड़ाना', जल्दी करना; हलका होना। स० क्रि० 'हराना' और 'हरना' का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाल†–पु० एक घास, सुरारी।

हरष*–पु० दे० 'हर्ष'।

हरषना, हरसना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना।

हरषाना, हरसाना*–अ० क्रि० प्रसन्न होना। स० क्रि० प्रसन्न करना।

हरषित*–वि० दे० 'हर्षित'।

हरसिंगार–पु० एक फूल, परजाता।

हरहट†–वि० दे० 'हरहा'।

हरहा–वि० हैरान, परेशान करनेवाला, भागा फिरनेवाला (पशु)। पु० हलमें जुतनेवाला बैल; † भेड़िया।

हरहाई–वि० स्त्री० शरारती (गाय)।

हराँस*–पु०, स्त्री० ज्वरांश, साधारण ज्वर, हरारत; थकावट।

हरा–वि० घास, पत्तीके रंगका, सब्ज, हरित (ग्रीन); अधपका; बिना भरा (घाव); तरोताजा; खुश, आनंदित, प्रफुल्ल। पु० हरा रंग; चौपायोंका हरा चारा; * हार, माला। स्त्री० (सं०) हर, शिवकी पत्नी पार्वती। **–पन**–पु० हरा होनेका भाव। **–भरा**–वि० हरियालीसे भरा हुआ; ताजा, प्रसन्न, प्रफुल्ल। मु० **–करना**–आनंदित, हर्षित, प्रसन्न करना। **–दिखाई पड़ना,–सूझना**–सुख, आशा आदिकी व्यर्थ कल्पना, अपने अज्ञानके कारण झूठी आशा बाँधना। **–बाग़ दिखाई पड़ना या सूझना**–दे० 'हरा दिखाई पड़ना'।

हराई†–स्त्री० एक या एकसे अधिक हलोंके एक फेरेमें जुत जानेवाली भूमि, बाह। मु०**–फाँदना,–फानना**–जुताई या कूँड़ आरंभ करना।

हरानत–पु० (सं०) रावण।

हराना–स० क्रि० युद्ध, लड़ाई-झगड़े, प्रतिद्वंद्विता आदिमें शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदिको परास्त करना, पछाड़ना; थकाना।

हराम–वि० (अ०) निषिद्ध, अविहित; धर्मशास्त्रमें निषिद्ध; शरअ (इसलामी धर्मशास्त्र)के विरुद्ध, हलालका उलटा; त्याज्य; अग्राह्य; अपवित्र। पु० पापकर्म; व्यभिचार, बदकारी। (मु० **–करना**–किसी कामको कष्टदायक बना देना। जैसे नींद–करना।)। **–कार**–पु० व्यभिचारी, बदकार। **–कारी**–स्त्री० व्यभिचार, बदकारी। **–ख़ोर**–वि० हरामकी चीजें खानेवाला; हरामका माल खानेवाला; घूसखोर; मुफ्तखोर; नमकहराम। **–ख़ोरी**–स्त्री० हरामका माल खाना, मुफ्तखोरी; घूसखोरी; नमकहरामी। **–ज़ादा**–पु० जारज, दोगला; दुष्ट, पाजी। वि० हरामके गर्भसे उत्पन्न। **–ज़ादी**–स्त्री० दोगली, हरामके पेटसे पैदा हुई स्त्री; दुष्टा, खोटी स्त्री। मु० **–कर देना**–कठिन, दुःखद बना देना, नामुमकिन कर देना (–जीना, खाना, सोना हराम कर देना)। **–का खाना**–बिना मेहनत किये खाना, मुफ्तखोरी करना। **–का जना**–जो हराम, व्यभिचारके गर्भसे जनमा हो, हरामजादा। **–का पिल्ला,–का बच्चा**–दोगला; दुष्ट। **–का पेट**–व्यभिचार, अविहित संबंधसे रह जानेवाला गर्भ। **–का माल**–अधर्म, बेईमानीसे कमाया हुआ धन; मुफ्तका माल। **–की कमाई**–अधर्म, बेईमानीसे कमाया हुआ पैसा, पापकी कमाई। **–की मौत मरना**–जहर खाकर मरना, आत्मघात करना। **–होना**–कठिन, दुःखद, नामुमकिन होना; त्याज्य होना (रोजा हराम होना)।

हरामी–वि० हरामका जना; दुष्ट, पाजी। **–पिल्ला**–पु० दे० 'हरामका पिल्ला'।

हरारत–स्त्री० (अ०) गर्मी; हलका ज्वर; (ला०) जोश, क्रोध।

हरावर*–पु० दे० 'हरावल'।

हरावरि*–स्त्री० दे० 'हड़ावरि'।

हरावल–पु० (तु०) सेनाका अग्रभाग; ठगोंका मुखिया।

हरास–पु० ह्रास; विषाद, दुःख; नैराश्य–'धनुष तोरि हरि सबकर हरेउ हरास'–बरवै रामा०; दुर्घटनाका भय, आशंका; डर।

हरास–वि० (अ०) किसान, काश्तकार।

हराहर*–पु० दे० 'हलाहल'। * स्त्री० छीना-झपटी–'दिन होरी-खेलकी हराहर भरचो हो सु तौ'–घन०।

हराहरि*–स्त्री० थकावट, क्लांति–'सुठि अंग हराहरि खोइ गयी'–उत्तररामचरित्र।

हरि–वि० (सं०) हरा; हरापन लिये पीला; पिंगल; कपिल; पीत; ले जानेवाला, वहन करनेवाला (समासांतमें)। पु० विष्णु; इंद्र (मेघ); शिव; ब्रह्मा; यम; सूर्य; चंद्रमा; मनुष्य; प्रकाशकी किरण; अग्नि; वायु; सिंह; सिंह राशि; अश्व; गीदड़; इंद्रका घोड़ा; बंदर; बनमानुस; हंस; कोयल; मेढक; साँप; मोर–'हरि (बादल) गर्जन सुनि हरि (मेढक) बोलेला, हरि (मेढक)के सबद सुनि हरि (साँप) चलेला, हरि (मोर) बिचहीं मिलल, हरि हरिके लिलल, हरिके प्रतापसे हरि बचेला'; तोता; पीला या पीलापन लिये हरा रंग; कृष्ण; राम; भर्तृहरि; शुक्र; गरुड़का एक पुत्र; एक पर्वत; एक लोक; एक वर्ष, भूभाग; एक बड़ी संख्या (बौ०); तामस मन्वंतरका एक देववर्ग। **–कथा**–स्त्री० विष्णुके अवतारोंके चरित्रोंका वर्णन। **–कर्म(न्)**–पु० यज्ञ। **–कांत**–वि० इंद्रप्रिय; सिंह जैसा सुंदर। **–कीर्तन**–पु० हरि–विष्णुके अवतारों आदि–का गुणगान। **–केलीय**–पु० बंगाल; बंगालनिवासी। वि० बंगाल-संबंधी; बंगालमें रहनेवाला। **–केश**–वि० भूरे बालोंवाला। पु० सूर्यकी सात रश्मियोंमेंसे एक; शिव; एक यक्ष। **–क्रांता**–स्त्री० विष्णुक्रांता लता। **–खंड**–पु० मोरपंख–'कबुहुँक इत पग धारि सिधारौ धरि हरिखंड सुवेस'–सू०। **–गंध**–पु० पीला चंदन। **–गण**–पु० घोड़ोंका झुंड। **–गिरि**–पु० एक पर्वत। **–गीता**–स्त्री० एक वृत्त; वह सिद्धांत जो नारायणने नारदको बतलाया था। **–गीतिका**–स्त्री० एक वृत्त। **–गृह**–पु० पुरीविशेष, एक चक्र; विष्णुमंदिर। **–चंदन**–पु० पाँच देवतरुओंमेंसे एक; एक चंदन; पीला चंदन; पद्मपराग; केसर; चाँदनी। **–चर्म(न्)**–पु० व्याघ्रचर्म। **–चाप**–पु० इंद्रधनुष्। **–ज**–पु० क्षितिज। **–जटा**–स्त्री० एक राक्षसी। **–जन**–पु० भगवान्‌का सेवक; अछूत जातिका व्यक्ति (आ०)। **–जान***–पु० विष्णुवाहन, गरुड़। **–ताल**–पु० हरापन लिये पीले रंगका कबूतर; हरताल। **–तालक**–पु० दे० 'हरताल'; बदन रँगना (अभिनयमें)। **–तालिका**–स्त्री० दूर्वा; भाद्र-शुक्ला तृतीया, जिस दिन स्त्रियाँ तीजका पर्व मनाती हैं। **–ताली**–स्त्री० तलवारका फल, खड्गलता; दे० 'हरितालिका'; मालकँगनी; आकाश-रेखा; वायुमंडल। **–तुरंगम,–तुरग**–पु० इंद्रका घोड़ा। **–दर्भ**–पु० एक तरहका हरा कुश। **–दास**–पु० विष्णुभक्त। **–दिक्(श्)**–स्त्री० इंद्रकी दिशा, पूरब दिशा। **–दिन,–दिवस**–पु० एकादशी। **–दिशा**–स्त्री० पूर्व दिशा। **–देव**–पु० विष्णु; श्रवणा नक्षत्र। **–द्रव**–पु० नागकेसरचूर्ण; हरा रस। **–द्रु**–पु० वृक्ष; दारुहरिद्रा। **–द्वार**–पु० हृषीकेशके पासका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। **–द्विद्-**

(ष्)–पु० असुर। **–धनुष्**–पु० इंद्रधनुष्। **–धाम(न्)**–पु० वैकुंठ। **–नक्षत्र**–पु० श्रवण नक्षत्र। **–नख**–पु० सिंहका नख; बाघके नखोंसे युक्त तावीज जो बच्चोंको पहनाया जाता है। **–नग***–पु० सर्पमणि। **–नाथ**–पु० हनुमान्। **–नाम(न्)**–पु० विष्णुका आख्यान; भगवान्का नाम। **–नामा(मन्)**–पु० मुद्‌ग। **–नेत्र**–वि० हरी या भूरी आँखोंवाला। पु० श्वेत पद्म; विष्णुका नेत्र; उल्लू; भूरी या हरी आँख। **–पद**–पु० वैकुंठ; एक वृत्त; गयाका एक प्रसिद्ध मंदिर। **–पर्ण**–वि० हरी पत्तियोंवाला। पु० मूली। **–पर्वत**–पु० एक पहाड़। **–पिंडा**–स्त्री० स्कंदकी एक मातृका। **–पुर**–पु० वैकुंठ। **–पैड़ी**–स्त्री० (हिं०) हरिद्वारका एक घाट। **–प्रस्थ**–पु० इंद्रप्रस्थ। **–प्रिय**–वि० विष्णुको प्रिय। पु० कदंब; बंधूक; विष्णुकंद; शंख; उशीर; मूर्ख; पागल आदमी; कवच; शिव; रक्त; या कृष्ण चंदन। **–प्रिया**–स्त्री० लक्ष्मी; पृथ्वी; तुलसी; सुरा; मधु; द्वादशी; लाल चन्दन; एक वृत्त। **–प्रीता**–स्त्री० एक मुहूर्त। **–बीज**–पु० हरताल। **–बोध**–पु० विष्णुका जागरण। **–बोधिनी**–स्त्री० कार्त्तिक-शुक्ला एकादशी। **–भक्त**–पु० भगवान्का भक्त, हरिसेवक। **–भक्ति**–स्त्री० भगवान्की भक्ति। **–भद्र**–पु० दे० 'हरिवालुक'। **–भाविणी,–भावनी**–स्त्री० भगवान्की भक्ति करनेवाली स्त्री। **–भुक्(ज्)**–पु० सर्प (मेढक खानेवाला)। **–मंथ**–पु० गणिकारिका; अग्निमंथ; मटर; चना; एक प्रदेश। **–०ज**–पु० चना। **–मंथक**–पु० चना। **–मंदिर**–पु० विष्णुमंदिर। **–मणि**–पु० सर्पका मणि। **–मेध**–पु० अश्वमेध; विष्णु। **–यान**–पु० गरुड़। **–योजन**–पु० घोड़े जोतना; इंद्र। **–रोमा(मन्)**–वि० जिसके शरीरपर सुंदर रोएँ हों। **–लीला**–स्त्री० भगवान्की लीला; एक वृत्त। **–लोचन**–वि० भूरी आँखोंवाला। पु० केकड़ा; उल्लू; एक रोगग्रह। **–लोमा(मन्)**–वि० भूरे बालोंवाला। **–वर**–पु० हरिभक्त; कोयल। **–वंश**–पु० कृष्णका वंश; वंदरोंका वंश; एक प्रसिद्ध ग्रंथ जो महाभारतका परिशिष्ट है। **–वर्ष**–पु० जंबूद्वीपका एक खंड। **–वल्लभा**–स्त्री० लक्ष्मी; तुलसी; जयां; अधिक मासकी कृष्ण एकादशी। **–वालुक**–पु० एलवालुक। **–वास**–वि० पीत वस्त्रधारी (विष्णु)। पु० अश्वत्थ, पीपल। **–वासर**–पु० एकादशी; रविवार। **–वासुक**–पु० दे० 'हरिवालुक'। **–वाहन**–पु० गरुड़; इंद्र; सूर्य। **–वृष**–पु० हरिवर्ष। **–शयन**–पु० विष्णुका शयन। **–शयनी**–स्त्री० आषाढ़-शुक्ला एकादशी (विष्णुके सोनेका दिन)। **–शर**–पु० शिव। **–श्मश्रु**–पु० हिरण्याक्षका एक पुत्र। वि० भूरी दाढ़ीवाला। **–षेण**–पु० दसवें मनुका एक पुत्र; जैनोंके अनुसार भारतके दसवें चक्रवर्ती। **–संकीर्तन**–पु० विष्णुका गुणगान। **–सख**–पु० गंधर्व। **–सिद्धि**–स्त्री० एक देवी। **–सुत**–पु० अर्जुन; प्रद्युम्न; जैनोंके अनुसार भारतके दसवें चक्रवर्ती। **–सूनु**–पु० अर्जुन। **–सौरभ**–पु० कस्तूरी। **–हंस**–पु० प्रातःकालीन सूर्य। **–हय**–पु० इंद्रका घोड़ा; इंद्र; सूर्य; स्कंद; गणेश। **–हर**–पु० विष्णु और शिव; एक नदी। **–०क्षेत्र**–पु० एक तीर्थस्थान जो सोनपुर (बिहार) में है और जहाँ कार्त्तिकी पूर्णिमाको बहुत बड़ा मेला लगता है। **–हरित**–पु० वीरबहूटी। **–हूति**–स्त्री० इंद्रवधू। **–हेति**–स्त्री० इंद्रधनुष्; विष्णुका चक्र। **–०हुति**–पु० चक्रवाक।

हरि*–अ० धीरे। **–हरि**–अ० धीरे-धीरे, आहिस्ते-आहिस्ते।

हरिअर†–वि० हरा।

हरिअराना†–अ० क्रि० हरा होना।

हरिअरी*–स्त्री० हरियाली, हरी वनस्पतिका ढेर, हरी घास, हरे पेड़-पौधोंकी राशि; हरा रंग।

हरिआना*–अ० क्रि० हरे रंगका होना, हरा होना; थकानका दूर होना; ताजा होना; आनंदित, प्रसन्न होना।

हरिआली–स्त्री० दे० 'हरिअरी'।

हरिक–पु० (सं०) भूरे रंगका घोड़ा; चोर; जुआड़ी।

हरिकारा†–पु० दे० 'हरकारा'।

हरिचंद*–पु० दे० 'हरिश्चंद्र'।

हरिजाई*–वि० स्त्री० दे० 'हरजाई'।

हरिण–पु० (सं०) मृग, कुरंग, हिरन; शिव; विष्णु; सूर्य; नेवला; हंस; एक लाक; शिवका एक गण; एक नागासुर; पीलापन लिये सफेद रंग, पांडुवर्ण। वि० पीलापन लिये सफेद, भूरा, पांडु रंगका; हरा। **–कलंक**–पु० चंद्रमा। **–चर्म(न्)**–पु० मृगछाला। **–धामा(न्)**–पु० चंद्रमा। **–नयना,–नयनी,–नेत्रा**–स्त्री० हरिण जैसी आँखोंवाली स्त्री। **–नर्तक**–पु० किन्नर। **–प्लुता**–स्त्री० एक अर्द्ध समवर्ण वृत्त। **–लक्षण,–लांछन**–पु० चंद्रमा। **–लता**–स्त्री० एक वृत्त। **–लोचना**–स्त्री० दे० 'हरिणनयनी'। **–लोलाक्षी**–स्त्री० हरिण जैसी चंचल आँखोंवाली स्त्री। **–हृदय**–वि० हरिणके समान भीरु हृदयवाला, बुजदिल।

हरिणक–पु० (सं०) छोटा हिरन।

हरिणांक–पु० (सं०) चंद्रमा।

हरिणाक्ष–पु० (सं०) चंद्रमा।

हरिणाक्षी–स्त्री० (सं०) दे० 'हरिणनयना'।

हरिणाधिप–पु० (सं०) सिंह।

हरिणारि–पु० (सं०) सिंह।

हरिणाश्व–पु० (सं०) वायु।

हरिणी–स्त्री० (सं०) मादा हरिण, मृगी; हरिद्रा; हरा रंग; स्वर्णजूयी, सोनजुही; मंजिष्ठा, मजीठ; स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक जिसे चित्रिणी कहते हैं; तरुणी, युवती; सुंदरी स्त्री; एक वर्णवृत्त; स्वर्णप्रतिमा। **–दृशी,–नयना**–स्त्री० मृगी जैसी नेत्रोंवाली स्त्री।

हरिणेश–पु० (सं०) सिंह।

हरित–त्रि० (सं०) हरा; ताजा; भूरा; पीला; गहरा नीला। पु० हरा रंग; भूरा रंग; इन रंगोंका पदार्थ; एक सुगंधित पौधा, स्थौणेयक; सिंह; कश्यपका एक पुत्र; यदुका एक पुत्र; युवनाश्वका एक पुत्र; रोहिताश्वका एक पुत्र; बारहवें मन्वंतरका एक देववर्ग; सोना; सब्जी आदि; पांडु रोग; मंथानक तृण। **–कपिश**–वि० पीलापन लिये भूरा। **–गोमय**–पु० ताजा गोबर। **–च्छद**–वि० हरी पत्तियोंवाला। **–धान्य**–पु० कच्चा अन्न (जो अभी पका न हो)। **–नेमी(मिन्)**–वि० जिसके रथके पहिये सुवर्णके हों (शिव)। **–पत्रिका,–लता**–स्त्री० पाची, मरकतपत्री। **–प्रभ**–वि० जिसका रंग पीला पड़ गया हो, पांडु। **–भेषज**–पु० कमला रोगकी दवा। **–मणि**–पु० मरकत। **–शाक**–पु० शिग्रु। **–हरि**–पु० सूर्य।

हरितक–पु० (सं०) शाक; हरी घास।

हरितकी–स्त्री० दे० 'हरीतकी'।

हरिता–स्त्री० (सं०) दूर्वा; नीली दूब; हरिद्रा, हलदी; कपिलद्राक्षा; जयंती; पात्री।

हरिताश्म(न्)–पु० (सं०) मरकत मणि, पन्ना; तूतिया।

हरिताश्मक–पु० (सं०) मरकत मणि।

हरिताश्व–वि० (सं०) पिंगल वर्णके घोड़ेवाला (सूर्य)।

हरितोपल–पु० (सं०) मरकत।

हरित्–वि० (सं०) हरा; पीला; पिंगल; हरा मिश्रित पीला। पु० हरा रंग; पीला रंग; पिंगल वर्ण; सूर्यका एक घोड़ा; मरकत; विष्णु; सूर्य; सिंह; मूँग; घास। स्त्री० हलदी; दिशा; तृण, घास। **–पति**–पु० दिक्पति। **–पर्ण**–पु० मूली।

हरिदंबर–वि० (सं०) पीला या हरा वस्त्र धारण करनेवाला।

हरिदश्व–पु० (सं०) सूर्य; अर्क वृक्ष, मदारका पेड़।

हरिद्‌गर्भ, हरिद्दर्भ–पु० (सं०) हरे रंगका कुश।

हरिद्दंतावल–पु० (सं०) हरिद्रा।

हरिद्रंजनी–स्त्री० (सं०) हरिद्रा।

हरिद्र–पु० (सं०) पीला चंदन।

हरिद्रक–पु० (सं०) पीला चंदन; एक नागासुर।

हरिद्रांग–पु० (सं०) हरिताल पक्षी।

हरिद्रा–स्त्री० (सं०) हलदी; हलदीका चूर्ण; एक नदी। –
गणपति,**–गणेश**–पु० तंत्रसारोक्त एक प्रकारके पीत रंगके गणेश।
–द्वय–पु० हलदी और दारुहलदी। **–प्रमेह,–मेह**–पु० एक
प्रकारका प्रमेह, जिसमें जलनके साथ पीला पेशाब होता है। –

–राग–वि० जिसका प्रेम हलदीके रंगकी तरह अस्थायी हो। पु० अस्थायी प्रेम। **–रागक**–वि० दे० 'हरिद्रा-राग'।

हरिद्राक्त–वि० (सं०) हरिद्रासे लिप्त, हलदी पुता हुआ।

हरिद्राभ–वि० (सं०) हलदीके रंगका, पीला।

हरिन–पु० (क्लोरिन) पीले तथा हरेसे रंगकी दुर्गंधियुक्त गैस, जो वजनदार भी होती है।

हरिन–पु० कुरंग, मृग।

हरिनाकुस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरिनाक्ष, हरिनाच्छ*–पु० दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरिनी–स्त्री० मृगी। **–दृग***–स्त्री० हरिणनयनी।

हरिन्मणि–पु० (सं०) मरकत मणि, पन्ना।

हरिन्मुद्ग–पु० (सं०) शारद मुद्ग।

हरिम–पु० (अ०) बूढ़ा, वृद्ध।

हरिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) पीलापन, पांडुता; हरापन। पु० समय।

हरिय–पु० (सं०) पिंगल वर्णका घोड़ा।

हरियर*–वि० दे० 'हरिअर'।

हरियराना*–अ० क्रि० दे० 'हरिअराना'।

हरिया†–पु० हलवाहा।

हरियाई*–स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरियाथोथा–पु० तूतिया।

हरियाना–अ० क्रि० दे० 'हरिआना'। पु० स्थान-विशेष।

हरियानी†–स्त्री० हिंदीकी एक बोलीका नाम; बाँगड़ू, जाटू बोली।

हरियाली–स्त्री० दे० 'हरिआली'। **–तीज**–स्त्री० हरतालिका तीज। मु० **–सूझना**–(प्रायः भ्रमसे) सुख ही सुखका आभास होना।

हरियावँ†–पु० फसल बाँटनेका एक नियम जिसमें जमींदारको ७ और किसानको ६ भाग मिलते हैं।

हरिल†–पु० हारिल पक्षी।

हरिव–पु० (सं०) एक बड़ी संख्या (बौ०)।

हरिश्चंद्र–पु० (सं०) त्रेतायुगके सूर्यवंशके २८ वें राजा (ये त्रिशंकुके पुत्र थे और अपनी उदारता तथा सत्यवादिताके लिए प्रसिद्ध थे जिसकी रक्षाके लिए इन्होंने अपनी स्त्रीको बेचा, स्वयं डोमकी दासता स्वीकार की और पुत्र रोहिताश्वके मरनेपर शैव्यासे करके रूपमें वस्त्रका आधा भाग फड़वाकर ले लिया); एक लिंग; हिंदीके कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र।

हरिष–पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता।

हरिस–स्त्री० हलकी वह लंबी लकड़ी जिसका एक सिरा हलकी फालवाली मोटी लकड़ीसे संबद्ध होता है और दूसरा बैलोंके जुएसे।

हरिसिंगार–पु० हरसिंगार, परजाता।

हरिहरात्मक–पु० (सं०) शिवका वृषभ; गरुड़; दक्ष।

हरिहाई*–वि० स्त्री० दे० 'हरहाई'। स्त्री० पशुओंकी परेशान करनेवाली प्रवृत्ति।

हरी–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त; बंदरोंकी माता; * जमींदारको दी जानेवाली हलकी बेगार। * पु० दे० 'हरि'। **–क्रांति**–स्त्री० कृषि-उत्पादनमें वृद्धिकी सफलताके लिए किया जानेवाला क्रांतिकारी प्रयत्न। **–खाद**–स्त्री० (ग्रीन मैन्योर) नील, मूंग, सन आदिके थोड़े बढ़े पौधे जो हल जोतकर खेतकी मिट्टीमें मिला लिये जाते हैं।

हरीकसीस–पु० दे० 'हीराकसीस'।

हरीकेन–पु० (अं०) बवंडर; एक तरहकी लालटेन।

हरीक्षणा–स्त्री० (सं०) मृगनयनी।

हरीचाह†–स्त्री० सुगंधित जड़वाला एक तृण, गंधतृण।

हरीछाल केला–पु० हरे छिलकेवाला एक तरहका केला जो बंबइया केला भी कहलाता है। (चीनिया केला पीला होता है।)

हरीत–पु० परेवा।

हरीतकी–स्त्री० (सं०) हड़, हर्रेका पेड़; इस पेड़का फल, हड़, हर्रे।

हरीतिमा–स्त्री० हरा रंग, हरियाली।

हरीफ़–पु० (अ०) हमपेशा; प्रतिद्वंद्वी; लड़नेवाला, शत्रु; प्रतिनायक, एक नायिकाके दो प्रेमी, परस्पर रक़ीब।

हरीरा–पु० (अ०) मुख्यतः प्रसूता स्त्रियोंके लिए सूजी आदिको दूधमें पकाकर बनाया हुआ मीठा पेय।

हरीरी–स्त्री० दे० 'हरीरा'।

हरील†–पु० दे० 'हारिल'।

हरीश–पु० (सं०) बानरोंका राजा, सुग्रीव; बानरोंमें श्रेष्ठ, हनुमान्।

हरीषा–स्त्री० (सं०) मांसका एक व्यंजन।

हरीस–स्त्री० दे० 'हरिस'। वि० (अ०) हिर्स करनेवाला, लोभी, लालची; पेटू।

हरुअ, हरुआ, हरुवा*–वि० हलका–'ऐसे हरुएको धरचो कहा जान मन नाम'–रतनहजारा।

हरुआई, हरुवाई*–स्त्री० हलकापन।

हरुआना*–अ० क्रि० हलका होना; जल्दी करना।

हरुए*–अ० धीरे-धीरे, हलके-हलके।

हरुण–पु० (सं०) एक बड़ी संख्या (बौ०)।

हरू–वि० दे० 'हरुअ'।

हरूफ़–पु० (अ०) 'हर्फ़'का बहुवचन।

हरें*–अ० दे० 'हरुए'। **–हरें**–अ० धीरे-धीरे, हौले-हौले।

हरे*–अ० आहिस्ते, धीरे, हौले। वि० धीमा; कोमल; मृदु; हलका। पु० 'हरि' शब्दका सम्बोधन रूप। **–हरये***–अ० धीरे-धीरे, हौले-हौले। **–हरे***–अ० धीरे-धीरे; राम! राम!! कैसी बात कहते हैं आप!

हरेक–वि० दे० 'हर-एक'।

हरेणु–स्त्री० (सं०) मटर; ताँबेके रंगकी हरिणी, ताम्रवर्ण मृगी; कुलस्त्री; ग्रामकी हद सूचित करनेवाली लता; रेणुका नामक गंधद्रव्य; लंका द्वीपका एक नाम।

हरेणुक–पु० (सं०) मटरका एक भेद, कलाय।

हरेरी*–स्त्री० हरिअरी, सब्जी।

हरेव*–पु० मंगोल जाति; मंगोल देश।

हरेवा–पु० हरे रंगका एक पक्षी; हरी बुलबुल।

हरैं*–अ० दे० 'हरे'। **–हरैं**–अ० दे० 'हरें-हरें', चुपके-चुपके। –'··हरैंई हरैं हरिनी दृग रोवैं'–भावविलास।

हरैना–पु० हलका वह भाग जिसमें नीचेकी ओर फाल लगाते हैं; बैलगाड़ीका वह भाग जो सामनेकी ओर निकला रहता है।

हरैया*–पु० हरण करनेवाला; दूर करनेवाला।

हरोल, हरौला*–पु० दे० 'हरावल'।

हरौती–स्त्री० दे० 'हलवत'।

हर्ज–पु० दे० 'हरज'।

हर्ज़ा–पु० (फा०) व्यर्थ; अनर्गल; बेहूदा। **–कार**–वि० व्यर्थके काम करनेवाला। **–गर्द**–वि० व्यर्थ घूमनेवाला। **–गो**–वि० अनर्गलवादी। **–गोश**–वि० व्यर्थकी बातें सुननेमें समय नष्ट करनेवाला।

हर्तव्य–वि० (सं०) हरण करने योग्य।

हर्ता(र्तृ)–पु० (सं०) हरण करनेवाला; ले जानेवाला; नष्ट करनेवाला; लानेवाला; डाकू; चोर; काटकर अलग करनेवाला; कर लगानेवाला (राजा); सूर्य।

हर्तु–पु० (सं०) मृत्यु; प्रगाढ प्रेम।

हर्फ़–पु० (अ०) अक्षर, वर्ण; शब्द, बात (शिकायतका हर्फ़); अव्यय, प्रत्यय (व्या०); दोष; ऐब। **–अंदाज़**–वि० धूर्त। **–आशना,–शनास**–वि० अक्षर पहचाननेवाला, नौसिखुआ। **–गीर**–वि० दोष निकालनेवाला, नुक्ताचीन। **–गीरी**–स्त्री० नुक्ताचीनी, छिद्रान्वेषण। **–हर्फ़**–अ० अक्षर-अक्षर, अक्षरशः। **–मु०** **–आना**–दोष लगना। **–उठाना**–(वर्णमाला पढ़नेवालेका) एक-एक अक्षरको पहचान और जोड़कर पढ़ना। **–पकड़ना**–गलती पकड़ना; टोकना (स्त्रि०)। **–बनाना**–सुंदर अक्षर लिखनेका अभ्यास करना; छापेके पत्थरपर गलत या अस्पष्ट लिखे हुए अक्षरोंको फिरसे ठीक करना। **–बैठाना**–छापेके अक्षर जोड़ना, कंपोज करना। **–लाना**–दोष, लांछन लगाना।

हर्ब–पु० (अ०) युद्ध, संग्राम। **–गाह**–पु०, स्त्री० युद्धस्थल,

रणभूमि । **–(र्बो)ज़र्ब**–पु० मारकाट, ख़ून ख़राबा ।

हर्बा–पु० दे० 'हरबा' ।

हर्म(न्)–पु० (सं०) जँभाई ।

हर्मिका–स्त्री० (सं०) स्तूपस्थ ग्रीष्म-भवन ।

हर्मित–वि० (सं०) फेंका हुआ, क्षिप्त; जला हुआ; जृंभित ।

हर्मुट–पु० (सं०) कच्छप; सूर्य ।

हर्म्य–पु० (सं०) वहुत बड़ा मकान, महल, प्रासाद; अग्निकुंड; यंत्रणा-स्थान, नरक । वि० मकानमें रहनेवाला । **–चर**–वि० महलमें रहनेवाला । **–तल,–पृष्ठ**–पु० महलकी ऊपरकी मंजिल या छत । **–भाक्(ज्)**–वि० महलमें रहनेवाला । **–वलभी**–स्त्री० दे० 'हर्म्यतल' । **–स्थल**–पु० दे० 'हर्म्यतल' ।

हर्यंककुल–वि० (सं०) सूर्यवंशमें उत्पन्न (जिसका चिह्न सिंह है)।

हर्यक्ष–वि० (सं०) भूरी आँखोंवाला । पु० सिंह; सिंह राशि; कुवेर; वंदर; एक रोगग्रह; शिव; एक असुर; पृथुका एक पुत्र ।

हर्यंत–पु० (सं०) घोड़ा; अश्वमेधके उपयुक्त घोड़ा ।

हर्यश्व–पु० (सं०) इंद्रका भूरे रंगका घोड़ा; इंद्र; शिव । **–चाप**–पु० इंद्रधनुष् ।

हर्यात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) व्यास ।

हर्र–स्त्री०, **हर्रा**–पु०, **हर्रे**–स्त्री० हरीतकी । **मु० – हर्रा लगे न फिटकिरी और रंग चोखा होना**–वेखर्चके काम वन जाना ।

हर्राफ़–वि० (अ०) वाचाल; वातूनी; धूर्त ।

हर्राफ़ा–स्त्री० (अ०) वातूनी स्त्री; भ्रष्टा, कुलटा; धूर्ता ।

हर्रैया–स्त्री० हर्रे जैसे दानोंवाला हाथका एक गहना; कंठेके छोड़ोंपरका दाना ।

हर्ष–पु० (सं०) प्रिय या इष्ट वस्तु, व्यक्ति आदिके देखने, उनके विषयमें सुनने, पढ़ने आदिसे उत्पन्न होनेवाला एक सुखात्मक भाव, आनंद, प्रसन्नता; रोमांच, रोंगटोंका खड़ा होना; एक संचारी भाव (सा०); कामोत्तेजना; गहरी इच्छा; एक असुर; कृष्णका एक पुत्र; दे० 'हर्षवर्द्धन' । **–कर,–कारक**–वि० प्रसन्न करनेवाला । **–कीलक**–पु० एक रतिवंध । **–गद्गद**–वि० जिसकी आवाज आनंदसे भर्रायी हुई हो, गद्गदकंठ । **–गर्भ**–वि० आनंदमय । **–चरित**–पु० वाणभट्टरचित एक गद्यकाव्य जिसमें सम्राट् हर्षवर्द्धनका चरित वर्णित है। **–चल**–वि० आनंदसे काँपता हुआ । **–ज**–वि० हर्षसे उत्पन्न । पु० शुक्र, वीर्य । **–जड**–वि० मारे खुशीके जड़वत् हो जानेवाला । **–दान**–पु० आनंदपूर्वक दिया हुआ दान । **–दोहल**–पु० कामुक इच्छा । **–धारिका**–स्त्री० एक ताल (संगीत) । **–ध्वनि**–स्त्री०,**–नाद**–पु० आनंदातिरेकसे की जानेवाली आवाज । **–निःस्वन,–निस्वन**–पु० दे० 'हर्षनाद' । **–पुरी**–स्त्री० एक राग । **–भाक्(ज्)**–वि० प्रसन्न । **–वर्द्धन,–वर्धन**–वि० हर्षको बढ़ानेवाला, आनंदवर्धक । पु० विक्रमकी सातवीं शतीमें होनेवाले भारतके अंतिम सम्राट (चीनी यात्री हुएन्सांग इन्हींके राजत्वकालमें आया था; ये स्वयं कवि थे और सुप्रसिद्ध संस्कृतकवि वाणभट्टको अपनी राजसभामें रखा था) । **–विवर्धन**–वि० आनंद बढ़ानेवाला । **–विह्वल**–वि० आनंदविभोर । **–संपुट**–पु० एक प्रकारका रतिवंध । **–समन्वित**–वि० आनंदयुक्त । **–स्वन**–पु० आनंदध्वनि ।

हर्षक–वि० (सं०) आनंददायक, प्रसन्न करनेवाला; रोमांच करनेवाला । पु० एक पर्वत; चित्रगुप्तका एक पुत्र; शिशुनागवंशका एक राजा ।

हर्षण–वि० (सं०) आनंददायक, प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला । पु० प्रसन्न होना; रोमांच होना; आनंद; कामदेवके पाँच वाणोंमेंसे एक; श्राद्धविशेष; श्राद्धका एक देवता; आँखका एक रोग; एक योग (ज्यो०); शिश्नोत्तेजन ।

हर्षणीय–वि० (सं०) आनंददायक ।

हर्षना*–अ० क्रि० आनंदित होना, प्रसन्न होना ।

हर्षमाण–वि० (सं०) हर्षयुक्त, प्रसन्न ।

हर्षयित्नु–वि० (सं०) हर्षणशील, आनंददायक । पु० सोना; पुत्र ।

हर्षाकुल–वि० (सं०) आनंदविह्वल ।

हर्षातिशय–पु० (सं०) आनंदातिरेक ।

हर्षाना–अ० क्रि० दे० 'हर्षना' । स० क्रि० आनंदित, प्रसन्न करना ।

हर्षान्वित, हर्षाविष्ट–वि० (सं०) आनंदयुक्त, प्रसन्न, खुश ।

हर्षाश्रु–पु० (सं०) आनंदसे निकले हुए आँसू, आनंदाश्रु ।

हर्षिणी–स्त्री० (सं०) विजया ।

हर्षित–वि० (सं०) आह्लादित, प्रसन्न; प्रसन्न किया हुआ; रोमांचित किया हुआ । पु० प्रसन्नता ।

हर्षी(षिन्)–वि० (सं०) प्रसन्न; प्रसन्न करनेवाला ।

हर्षीका–स्त्री० (सं०) वृत्तविशेष ।

हर्षुक–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला ।

हर्षुल–वि० (सं०) हर्षणशील, प्रसन्न करनेवाला । पु० हिरन; कामुक, प्रणयी ।

हर्षुला–स्त्री० (सं०) वह लड़की जिसकी ठुड्डीपर वाल हों (ऐसी लड़की विवाहके अयोग्य समझी जाती है) ।

हर्षोत्कर्ष–पु० (सं०) हर्षका आतिशय्य, आनंदातिरेक ।

हर्षोत्फुल्ल–वि० (सं०) हर्षसे फूला हुआ । **–लोचन**–वि० जिसके नेत्र आनंदसे खिले हुए हों ।

हर्षोन्माद–पु० (सं०) हर्षमें सुधबुध खो देना (एक्सटेसी) ।

हर्स–पु० (अ०) खेती, कृषि, काश्त । पु० हिरासत, निगरानी ।

हर्सा†–पु० दे० 'हरिस' ।

हलंत–वि० (सं०) जिसके अंतमें स्वररहित व्यंजन वर्ण हो ।

हल–पु० (सं०) खेत जोतनेका एक साधन, लांगल; भूमिकी एक माप; उत्तरका एक देश; बाधा, प्रतिषेध; कुरूपता, भद्दापन; एक नक्षत्रपुंज; एक शस्त्र; पैरका एक चिह्न; झगड़ा, विवाद । **–ककुद्**–पु० हलका वह भाग जिसके नीचेके हिस्सेमें फाल जड़ते हैं । **–गोलक**–पु० एक तरहका कीड़ा । **–ग्राही(हिन्)**–वि० हल चलानेवाला । **–जीवी(विन्)**–वि० हलके सहारे जीविका चलानेवाला । **–जुता**–पु० (हिं०) हल जोतनेवाला किसान, साधारण कृषक; गँवार आदमी । **–दंड**–पु० हरिस । **–धर**–पु० बलराम । **–पत**†–पु० परिहत । **–पाणि**–पु० बलराम । **–भूति**–पु० शंकराचार्य । **–भृति**–स्त्री० कृषिकर्म, किसानी । **–भृत्**–पु० हलधर । **–मार्ग**–पु० जुताईसे बनी हुई लकीर, कूँड़ । **–मुख**–पु० फाल । **–मुखी**–स्त्री० एक वर्णवृत्त । **–यंत्र**–पु० इंजिनसे चलनेवाला बड़ा हल, ट्रैक्टर । **–रद**–वि० हल जैसे दाँतोंवाला । **–राक्ष**–पु० आहुल्य । **–वंश**–पु० हरिस । **–वाह**–पु० (हिं०) हल जोतनेका काम करनेवाला । **–वाहा**–स्त्री० भूमिकी एक प्राचीन माप । पु० (हिं०) हलवाह । **–हति**–स्त्री० जुताई ।

हल–पु० (अ०) खुलना, सुलझाव; कठिनाईका दूर होना; घुलना; गणितकी प्रक्रिया; सवालका जवाव (सोल्यूशन) । **मु० –करना**–सुलझाना; घोंटना, पीसकर मिलाना; सवालका जवाब निकालना, पहेली बूझना ।

हलकंप–पु० दे० 'हड़कंप' ।

हलक़–पु० (अ० 'हल्क़') गला, कंठ; गरदन, मुंडन । **मु०–का दरबान**–खाने-पीनेमें रोक-टोक करनेवाला; बोलनेसे रोकनेवाला, बात-बातपर टोकनेवाला (स्त्रि०) । **–तक भरना**–ठूंस-ठूंसकर खाना । **–पर छुरी फेरना**–दे० 'गलेपर छूरी फेरना' । **–से उतरना**–गलेसे उतरना; मनमें बैठना ।

हलकई†–स्त्री० हलकापन; छोटापन; अप्रतिष्ठा ।

हलकन*–स्त्री० हिलने-डुलनेकी क्रिया ।

हलकना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना, पानीका हिलकोरा मारना ।

हलका–वि० कम वजनवाला, जो भारी न हो; मात्रामें थोड़ा, कम; मामूली, कम मूल्यवाला; पतला, अधिक जल या अन्य तरल वस्तु मिला हुआ; कम सांघातिक, जो (प्रहार) तेज या अधिक कष्टद न हो; मंद, मामूली; महीन, पतला, झीना; एकदम खाली, छूँछा; ताजा, थकानरहित, श्रांतिहीन; कमीना, नीच, ओछा; निंदित, अप्रतिष्ठित; कम परिश्रममें ही हो जानेवाला, सहल; जो गाढ़ा, गहरा, चटकीला न हो । † पु० जलका अनुपजाऊ; हिलकोरा, लहर; दे० 'हलक़ा' । **–पन**–पु० हलका होनेका भाव, भार न होना; तुच्छता, ओछापन; बुराई; कमीनापन; अपमान, बेइज्जती । **मु० –करना**–अपमानित करना । **–पड़ना**–एक वस्तु, व्यक्तिका दूसरी वस्तु, व्यक्तिके मुकाबलेमें नीचा, कमजोर,

अनुपयुक्त आदि होना। **−बनना,−होना**−अप्रतिष्ठित बनना, होना; लज्जित होना; टुच्चा, ओछा, कमीना समझा जाना। **−भारी होना**−घवड़ाना, ऊवना; अपनेको ओछा, तुच्छ बनाना।

हलक़ा−पु० (अ०) घेरा, मंडल; वृत्ताकार वस्तु; मंडली; पहिया; पहियेका हाल; लोहे या लकड़ीका गोल कुंडा; गाँवों आदिका मंडल जो किसी विशेष कर्मचारी या अधिकारीका कार्यक्षेत्र हो; तुकमा। **−(क़े)दार**−वि० घेरादार; वृत्ताकार। **मु० −बाँधना**−घेरा डालना।

हलकान†−वि० दे० 'हलाकान'।

हलकाना†−स० क्रि० हलका करना; किसी तरल वस्तुको हिलाना-डुलाना, हलकोरना। अ० क्रि० हलका होना।

हलकारा*−पु० दे० 'हरकारा'।

हलकारी−स्त्री० कपड़ा रँगनेके पूर्व उसका रंग पक्का करनेके लिए फिटकिरी, तेजाव आदिका पुट देनेकी क्रिया; एक विशेष प्रकारके रंगसे किनारेपरकी छपाई।

हलकोरा†−पु० जलकी तरंग, लहर, हिलोरा।

हलचल−स्त्री० किसी अनिष्ट घटना, अवसर आदिके उपस्थित होनेपर होनेवाला लड़ाई-झगड़ा, भाग-दौड़, शोर-गुल, तोड़-फोड़ आदि; अराजकता, उपद्रव, हड़कंप; (तरल पदार्थकी) अस्थिरता, हिलने-डोलनेकी क्रिया। **मु० −डालना**−उथल-पुथल मचाना, अराजकता, अव्यवस्था उत्पन्न करना। **−पड़ना**−उपद्रव, अराजकताका होना। **−मचना**−दे० 'हलचल पड़ना'। **−मचाना**−दे० 'हलचल डालना'।

हलड़ा−पु० लहरका बार-बार उठना।

हलद†−स्त्री० हलदी; । **हात**−स्त्री० विवाहकी एक रस्म, हलदी चढ़ना।

हलदिया−पु० एक रोग जिसमें आँख और सारा शरीर पीला पड़ जाता है, पीलिया रोग; कमल, काँवला रोग (जॉण्डिस); एक प्रकारका विष।

हलदी−स्त्री० एक प्रकारका पौधा जिसकी पीले रंगकी जड़ मसाले, रंग और औषधके काममें आती है। **मु० −उठना,−तेल उठना**−विवाहके कुछ दिन पहले वर और कन्याको हलदी और तेल मिला उवटन लगानेकी रस्म। **−का हाथ होना**−विवाह होना। **−चढ़ना**−दे० 'हलदी उठना'। **−लगना**−विवाह होना। **−लगाकर बैठना**−कोई काम न करना; अपनेको बहुत कुछ समझना।

हलद्दी−स्त्री० (सं०) हरिद्रा, हलदी।

हलना*−अ० क्रि० हिलना, अस्थिर होना; घुसना, प्रविष्ट होना।

हलफ़−पु० (अ०) शपथ, कसम। **−दरोग़ी**−स्त्री० झूठी शपथ लेना। **−नामा**−पु० लिखा हुआ हलफी बयान (एफ़ीडेविट्)। **मु० −उठाना,−लेना**−कसम खाना, कुरान या गंगाजल लेकर कहना। **−देना**−कसम खिलाना, कुरान या गंगाजल उठवाना।

हलफ़न्−अ० हलफकी रूसे; शपथ-पूर्वक।

हलफा−पु० लहर; ऊँची तरंग; तेज साँस। **मु०−चलना**−बहुत तेज साँस चलना (बच्चोंका हव्वा-डव्वा रोगसे ग्रस्त होना)। **−मारना**−ऊँची-ऊँची तरंगोंका पछाड़ खाना।

हलफ़ी−वि० हलफ लेकर कहा, दिया हुआ (बयान)।

हलब−पु० (अ०) शामका एक नगर जहाँका शीशा पुराने समयमें प्रसिद्ध था।

हलबल*−स्त्री० हलचल, खलबली।

हलबलाना*−अ० क्रि० घवड़ाना। स० क्रि० दूसरोंको घवड़ाहटमें डालना।

हलबली*−स्त्री० दे० 'हलबल'।

हलबी−वि० हलबका। पु० हलबका आईना, बढ़िया मोटे दलका शीशा।

हलब्बी−पु० दे० 'हलबी'।

हलभल*−स्त्री० दे० 'हलबल'।

हलभली*−स्त्री० हलचल।

हलरा−पु० दे० 'हलड़ा'।

हलराना−स० क्रि० छोटे बच्चोंको हाथपर या गोदमें लेकर उन्हें प्यार करने, चुप कराने, सुलाने आदिके लिए हिलाना।

हलवत−स्त्री० वर्षमें पहली बार खेतमें हल ले जानेकी रस्म; हरौती।

हलवा−पु० (अ०) एक मिष्टान्न जो सूजी या आटेको घीमें भूनकर पानी या दूधमें शकरके साथ पकानेसे बनता है, मोहनभोग; (ला०) तर और मुलायम चीज; बहुत आसान काम (हलवा समझना)। **−सोहन**−पु० घी-मैदेके योगसे बननेवाली एक मशहूर मिठाई। **मु० −निकल जाना**−कचूमर निकल जाना; गत बन जाना। **−निकाल देना**−पीटकर गत बना देना। **(अपने) हलवे माँड़ेसे काम होना**−केवल अपना भला, अपना मतलब देखना, दूसरेके हानि-लाभकी परवाह न करना।

हलवाई−पु० हलवा बनाने-बेचनेवाला, मिठाई बनाने-बेचनेवाला, मोदककार।

हलवान−पु० (अ०) भेड़ या बकरीका बच्चा जो दूध पीता हो और घास न खाता हो, मेमना; मुलायम गोश्त।

हलहल−वि० (सं०) हल जोतनेवाला।

हलहला−अ० (सं०) प्रसन्नतासूचक शब्द।

हलहलाना†−स० क्रि० घुसेड़ना; झटकेसे हिलाना, झकझोरना; तरल पदार्थभरे पात्र या वस्तुको झकझोरना, हिलाना। अ० क्रि० काँपना।

हला−स्त्री० (सं०) सखी; पृथ्वी; जल; मदिरा। अ० सखीको संबोधित करनेका एक शब्द (ना०)।

हलाक−पु० (अ०) मौत, काल; तवाही, बरबादी। वि० इच्छुक, खाहिशमंद। वि० (फा०) हत, वधित; किसी घटनामें मृत। **−ख़ोर**−वि० मृत पशुका मांस खानेवाला। **मु०−होना**−मरना; तवाह होना।

हलाकत−स्त्री० (अ०) दे० 'हलाक'; मेहनत; थकावट।

हलाकान†−वि० हैरान, परेशान।

हलाकानी†−स्त्री० हैरानी, परेशानी।

हलाकी−स्त्री० मौत; तवाही। वि० घातक।

हलाकू−वि० वधिक, घातक। **−ख़ाँ**−पु० चंगेज खाँका पौत्र जो उसीके समान निर्दय और हत्यारा था।

हलाना*−स० क्रि० दे० 'हिलाना'; धसाना।

हलाभ−पु० (सं०) दे० 'हलाह'।

हलाभला−पु० निवटारा; तै-तमाम; नतीजा, फल।

हलाभियोग−पु० (सं०) दे० 'हलवत'।

हलायुध−पु० (सं०) वलराम।

हलाल−वि० (अ०) 'हराम'का उलटा, विहित, जायज; शरअके अनुकूल; जिसका ग्रहण या भोग विहित हो। पु० शरई रीतिसे पशु-वध। **−ख़ोर**−पु० ईमानदारीसे, परिश्रमपूर्वक धन कमानेवाला; भंगी, मेहतर। **−ख़ोरी**−स्त्री० हलालखोरका काम; हलालखोरकी स्त्री। **−जादा**−पु० कुलीन, औरस। **मु०−करके खाना**−मेहनत करके, बदलेमें पूरा काम करके खाना। **−करना**−पशुका शरअकी विधिसे वध करना, जवह करना; गला काटना; यंत्रणा देना; बदलेमें पूरा काम कर देना, स्वकर्तव्यका पालन करना। **−का**−जायज, वैध (संतान); हरामका उलटा। **−की कमाई**−ईमानदारी, मेहनतसे कमाया हुआ पैसा।

हलावत−स्त्री० (अ०) मिठास, माधुर्य, शीरीनी। **−सुख़न**−स्त्री० बातोंकी मिठास; काव्यमाधुर्य।

हलाह−पु० (सं०) चित्रिताश्व, चितकबरा घोड़ा।

हलाहल−पु० (सं०) एक तरहका भीषण विष, कालकूट, समुद्र मंथनसे प्राप्त एक भयंकर विष; एक विषैला पौधा; एक सर्प, ब्रह्मसर्प; एक तरहकी छिपकली, अंजना; बुद्ध-विशेष। वि० (फा०) (हलाहिल) कालकूट।

हलि−पु० (सं०) बड़ा हल; जुताईकी लकीर, कूंड; कृषि।

हलिक−पु० (सं०) हल चलानेवाला, हलवाहा; किसान; एक नागासुर।

हलिक्षण−पु० (सं०) सिंहका एक भेद।

हलिनी−स्त्री० (सं०) लांगलिकी वृक्ष; हल-समूह।

हलिभ−पु० (सं०) एक बड़ी संख्या (बौ०)।

हलिमा−स्त्री० (सं०) स्कंदकी एक मातृका।

हली−स्त्री० (सं०) कलिकारी वृक्ष।

हली(लिन्)–पु० (सं०) दे० 'हलिक'; बलराम; एक ऋषि। **–(लि)प्रिय**–पु० कदंब। **–प्रिया**–स्त्री० मदिरा।

हलीन–पु० (सं०) शाक वृक्ष; केतकी।

हलीम–पु० (सं०) केतकी; (अ०) खुदाका एक नाम; मोटा जानवर; एक तरहकी खिचड़ी (मु०)। वि० सहनशील, धीर।

हलीमक–पु० (सं०) केतकी; पांडु रोगका एक प्रकार; एक नागासुर।

हलीमा–स्त्री० (अ०) सहनशीला, गम्भीर स्त्री; मुहम्मदसाहबको दूध पिलानेवाली।

हलील–पु० (अ०) पति, स्वामी; पड़ोसी; सहनिवासी।

हलीला–स्त्री० (अ०) भार्या, पत्नी।

हलीशा, हलीषा–स्त्री० (सं०) हरिस, हल दंड।

हलुआ, हलुवा।–पु० दे० 'हलवा'।

हलुक, हलुका*–वि० दे० 'हलका'।

हलोर*–स्त्री० हिलोर, लहर।

हलोरना–स० क्रि० जल अथवा अन्य तरल पदार्थको हाथसे या किसी चीजसे हिलाना, चंचल करना; सूप या अन्य पात्रमें अन्न अथवा दूसरी वस्तुओंको रखकर उन्हें इस प्रकार पछोड़ना कि उनका खोखला अंश अलग हो जाय; बहुत सहूलियतके साथ अधिक परिमाणमें द्रव्य प्राप्त करना (व्यंग्य)।

हलोरा*–पु० दे० 'हलोर'।

हल्–पु० (सं०) स्वरहीन व्यंजन, विशुद्ध व्यंजन (ऐसे व्यंजनके नीचे एक विशेष चिह्न (्) दिया जाता है)।

हल्क़–पु० (अ०) दे० 'हलक़'।

हल्का–पु० (अ०) दे० 'हलका'।

हल्द।–स्त्री० दे० 'हलद'। **–हात**–स्त्री० दे० 'हलदहात'।

हल्दी–स्त्री० दे० 'हलदी'।

हल्य–वि० (सं०) हल-संबंधी; जोती हुई; जोतने योग्य (जमीन); विरूप, भद्दा, बदसूरत। पु० जोतने योग्य खेत; जोती हुई जमीन; विरूपता, भद्दापन।

हल्या–स्त्री० (सं०) हलसमूह।

हल्लक–पु० (सं०) रक्त कमल।

हल्लन–पु० (सं०) सोते समय हिलना-डुलना, करवट बदलना।

हल्ला–पु० अनेक आदमियोंकी बातचीत, लड़ाई-झगड़े आदिसे हुई सम्मिलित स्वरध्वनि, शोर-गुल; ललकार; धावा, हमला। **–गुल्ला**–पु० शोर-गुल, कोलाहल। मु० **–बोलना**–ललकारकर धावा करना। **–मचना**–शोर होना। **–मचाना**–शोर करना।

हल्लाक़–वि० (अ०) नाई, मूंडनेवाला।

हल्लाज–पु० (अ०) धुनिया, रूई धुननेवाला।

हल्लाफ़–वि० (अ०) शपथ लेनेका आदी।

हल्लीश–पु० (सं०) स्त्रियोंका मंडलाकार नृत्य जिसमें एक पुरुष और कई स्त्रियाँ होती हैं; अठारह उपरूपकोंमेंसे एक जिसमें नृत्य-गानकी प्रधानता रहती है।

हल्लीशक–पु० (सं०) स्त्रियोंका मंडलाकार नृत्य।

हल्लीष, हल्लीस–पु० (सं०) दे० 'हल्लीश'।

हल्लीषक–पु० (सं०) दे० 'हल्लीशक'।

हल्लीसक–पु० (सं०) एक तरहका बाजा (संगीत)।

हवंग–पु० (सं०) फूलके बरतनमें दही-भात खाना।

हव–पु० (सं०) यज्ञ, होम; आह्वान; आज्ञा; अग्नि या अग्निदेव; चुनौती, ललकार।

हवन–पु० (सं०) मंत्र पढ़कर किसी देवताके लिए अग्निमें आहुति देना, होम; अग्नि या अग्निदेव; हवनकुंड; स्रुवा; होम करना।

हवनायु(स्)–पु० (सं०) अग्नि।

हवनी–स्त्री० (सं०) होमकुंड; स्रवा।

हवनीय–वि० (सं०) हव्य, आहुतिके रूपमें दिये जाने योग्य। पु० होमकी वस्तु।

हवन्नक़–वि० (अ०) मूर्ख, अहमक; भद्दी शक्लवाला।

हवलदार–पु० फौजका एक छोटा अफसर जिसके मातहत कुछ सिपाही होते हैं; बादशाही जमानेका एक कर्मचारी जो कर-संग्रह आदिका निरीक्षण करता था।

हवस–स्त्री० (अ०) इच्छा, चाह; उमंग; शौक; लालच; दिलेरी; खब्त; झूठा प्रेम। **–कार, –परस्त**–वि० लोभी; लालची। **–दार**–वि० इच्छुक। मु० **–उड़ा देना**–लालसा, इच्छा छोड़ देना। **–निकलना**–हौसला पूरा होना। **–निकालना**–उमंग पूरी करना। **–पकाना**–किसी इच्छाकी पूर्तिके लिए मन ही मन मंसूबे बाँधना। **–बुझना**–उमंग शांत होना।

हवा–स्त्री० (अ०) एक तत्त्व जो भूमंडलको चारों ओरसे घेरे हुए है और कुछ गैसों–विशेषकर आक्सीजन और नाइट्रोजन–के मेलसे बना है, समीर, वायु; साँस; गोज; भूत, प्रेतादि; लालच; खाहिश, अरमान; धुन; ख्याति; साख; संबंधजन्य प्रभाव; जमाना; फैशन या रीतिका चलन; अफवाह; चकमा; आडंबर; (ला०) बहुत हलकी वस्तु। **–कश**–पु० रोशनदान। **–ख़ोरी**–स्त्री० टहलना (वायुसेवन)। **–ख़्वाही**–स्त्री० खैरख्वाही, मंगलकामना। **–गीर**–पु० हवाई बान (आतिशबाजी) बनानेवाला। **–चक्की**–स्त्री० हवासे चलनेवाली चक्की। **–दार**–वि० जहाँ खूब हवा आती हो; खैरखाह। पु० अमीरोंके काम आनेवाली एक तरहकी सवारी जिसे कहार ढोते हैं। **–परस्ती**–स्त्री० अवसरवादिता। **–पानी**–पु० आबहवा। **–बाज़**–पु० वायुयानचालक। **–सा**–वि० बहुत हलका; बारीक। मु० **–उखड़ना**–बाजारमें साख न रहना। **–उड़ना**–किसी समाचारका प्रसारित होना; अफवाह फैलना। **–उड़ाना**–झूठी बातका प्रचार करना, अफवाह फैलाना; गोज करना। **–करना**–पंखा झलना; किसी वस्तुसे पंखेका काम लेकर हवा उत्पन्न करना। **–का कारख़ाना**–साखपर चलनेवाला काम। **–का गुज़र न होना**–किसीकी रसाई न होना। **–का रुख़ जानना**–परिस्थिति समझना। **–का रुख़ देखना**–जमानेका हाल समझकर काम करना। **–का रुख़ बताना**–परिस्थितिका आभास पहले ही दे देना; परिस्थितिका ज्ञान कराना। **–के घोड़ेपर आना**–बहुत तेज आना। **–के घोड़ेपर सवार होना**–बहुत जल्दीमें होना। **–के बबूले फोड़ना**–खयाली पुलाव पकाना। **–के मुँहपर जाना, –के रुख़ जाना**–हवाकी गतिकी दिशामें जाना; जमानेके मुताबिक चलना। **–खाना**–खुली जगहमें टहलना; असफल रहना, नाकामयाब होना। **(कहींकी)–खाना**–कहीं जाना। **–खिलाना**–किसीको असफल बनाना; बहकाना, चकमा देना। **(कहींकी)–खिलाना**–कहीं भेजना। **–गरम होना**–हवामें गरमी आना; गरमबाजारी होना। **–गाँठमें या मुट्ठीमें बाँधना**–असंभव कामके लिए प्रयत्न करना। **–गिरना**–तेज हवाका मंद हो जाना। **–छोड़ना**–अपानवायु छोड़ना, गोज करना। **–देखना**–जमानेकी हालत समझना। **–देना**–हवा करना; हवामें रखना; मुँहसे आग या और कोई चीज फूँकना; फसाद कराना; कबूतरोंको उड़ाना। **–पकड़ना**–पालका हवा ग्रहण करना। **–पर गिरह लगाना**–चालाकी करना। **–पलटना**–हवाका रुख बदलना; परिस्थितिका परिवर्तित होना। **–पीकर या फाँककर रहना**–निराहार रहना (व्यंग्य)। **–पीटना**–व्यर्थ ही कोई काम करना, ऐसा कोई काम करना जिसका कोई नतीजा न हो। **–फिरना**–दे० 'हवा पलटना'। **–फेंकना**–किसी वस्तुसे तेजीके साथ हवाका बाहर निकलना। **–बंदी करना**–छोटी बातें मशहूर करना; बदनाम करना; खयाली पुलाव पकाना। **–बँधना**–हवाका रुक जाना। **–बताना**–टालमटोल करना; टरका देना। **–बदलना**–दे० 'हवा पलटना'। **–बाँधकर जाना**–हवाकी उलटी ओर नाव खेना। **–बाँधना**–नाम करना; धाक जमाना; डींग मारना; बात बनाना। **–बिगड़ना**–वायुमंडलका दूषित होना; रोगके कीटाणुओंका फैलना; परिस्थिति खराब होना; किसी स्थानका रीति-रवाज बिगड़ जाना; साख नष्ट होना। **–बिगाड़ना**–वायुमण्डल दूषित करना; शत्रुको करारा जवाब देना। **–भर जाना**–खुशीसे फूल जाना; घमंड होना; मतका बदल जाना। **–लगना**–हवाका मिलना, हवाका शरीरसे स्पर्श होना; वात रोगसे ग्रस्त होना; प्रेताविष्ट होना; दिमाग फिरना; प्रभावमें आना। **(कहींकी)–लगना**–किसी स्थानसे विशेष प्रेम होना। **(किसीकी)–लगना**–किसीके संसर्गका प्रभाव पड़ना, संसर्गजन्य दोष आना। **–से बातें करना**–हवाकी तरह तेज दौड़ना; आप ही

आप बड़बड़ाना। **–से लड़ना**–झगड़ा करनेके लिए मौका ढूँढ़ना; अकारण-झगड़ा करना। **–हो जाना**–बहुत तेजीसे भागना; गायब हो जाना।

हवा-रोक–वि० (एयर टाइट) जिसमेंसे होकर या जिसके द्वारा हवा न आ-जा सके।

हवाई–वि० हवासे संबद्ध, वायु-संबंधी; हवाको चीरकर चलनेवाला; तीव्र गतिवाला; चालाक; आवारा; डींग मारनेवाला; कल्पित, व्यर्थ। स्त्री० एक तरहकी आतिशबाजी, अगिनबान; ऊपरी आमदनी; बेहूदा बात; अफवाह; रंगत, कान्ति; नकली वस्तु। **–अड्डा**–पु० वायुयानके उतरनेका स्थान। **–आँख**–स्त्री० वह आँख जो एक जगह न रहे। **–क़िला,–महल**–पु० खयाली पुलाव, मनोराज्य। **–ख़बर,–बात**–स्त्री० अफवाह। **–जहाज़**–पु० वायुयान। **–डाक**–स्त्री० वायुयानसे जानेवाली डाक। **–तोपची**–पु० (एयर गनर) हवाई जहाजपर रखी हुई तोप चलानेवाला कर्मचारी। **–पट्टी**–स्त्री० हवाई अड्डोंपर लम्बी, पक्की सड़क जिसपर चलकर विमान उड़ते या उतरते हैं (एयर स्ट्रिप)। **–पत्र-चित्र**–पु० (एयरग्राफ) हवाई डाक द्वारा प्रेरित करनेके लिए चिट्ठियों आदिका पहलेसे ले लिया गया चित्र, डाकीय लघु चित्र। **–फ़ैर**–पु० डराने आदिके लिए सिर्फ बारूद भरकर या ऊपरकी ओर किया जानेवाला फैर। **–बंदूक**–स्त्री० नकली बंदूक। **–मार्ग,–रास्ता**–पु० वायुयानके गमनागमनका मार्ग। **–मुठभेड़**–स्त्री० युद्धक विमानोंकी भिड़ंत। **–युद्ध**–पु०,**–लड़ाई**–स्त्री० वायुयानोंसे लड़ी जानेवाली लड़ाई। **–हमला**–पु० वायुयानों द्वारा होनेवाला हमला। **–मु०** **–उड़ना**–अफवाह फैलना; मुँह फक होना। **–उड़ाना**–अफवाह फैलाना। **–गुम होना**–अक्ल गायब होना, सिटपिटाना। **–छोड़ना**–आतिशबाजी छोड़ना। **–होना**–चेहरेका रंग उड़ जाना। **(चेहरे, मुँहपर) हवाइयाँ उड़ना**–मुखका विवर्ण होना, चेहरेके रंगका फीका पड़ना।

हवाल*–पु० समाचार, खबर; अवस्था, दशा; फल, परिणाम।

हवालदार–पु० दे० 'हवलदार'।

हवाला–पु० (सं०) सिपुर्दगी, सौंपनेकी क्रिया; पता, निशान; पते या प्रमाणके लिए उल्लेख (देना)। मु० **–देना**–पता-निशान देना, प्रमाणके लिए (पुस्तक, पृष्ठ आदिका) उल्लेख करना। **–(ले) करना**–कब्जेमें देना, सौंपना। **–पड़ना***–कब्जेमें, वसमें आना।

हवालात–स्त्री० (अ०) पहरे, चौकीमें रखना, हिरासत; वह मकान जिसमें विचाराधीन कैदी रखे जाते हैं।

हवालाती–वि० जो हवालातमें रखा गया हो, विचाराधीन हो। पु० विचाराधीन कैदी।

हवाली–पु० (अ०) आसपासका स्थान। **–मवाली**–पु० संगी-साथी।

हवास–पु० (अ०) 'हासा'का बहु०, देखने, सुनने, चखने आदिकी शक्तियाँ, पंचज्ञानेंद्रिय; मनकी शक्तियाँ (कल्पना, विचार, स्मृति इ०); संवेदनकी शक्ति; होश, सुध। **–बाख़्ता**–वि० खब्तुल-हवास, घबड़ाया हुआ, हतसंज्ञ, भौचक। मु० **–उड़ना**–होश ठिकाने न रहना।

हविःशाला–स्त्री० (सं०) हवि तैयार करनेका स्थान।

हविःशेष–पु० (सं०) हविका बचा हुआ अंश।

हविःश्रवा(वस्)–पु० (सं०) धृतराष्ट्रका एक पुत्र।

हवि(स्)–पु० (सं०) हवनीय द्रव्य, यज्ञ, हवनमें देवताओंके लिए अग्निमें छोड़ी जानेवाली आहुतिके द्रव्य; घी; जल; विष्णु; शिव, यज्ञ।

हवित्री–स्त्री० (सं०) हवनकुंड।

हविरद–वि० (सं०) हवि खानेवाला।

हविरशन–पु० (सं०) अग्नि; घीका भोजन; चित्रक वृक्ष।

हविराहुति–स्त्री० (सं०) हविका होम।

हविर्–'हविस्'का समासगत रूप। **–गंधा**–स्त्री० शमी। **–गृह, –गेह**–पु० यज्ञभवन। **–दान**–पु० हवि देनेकी क्रिया। **–धानी**–स्त्री० कामधेनु, सुरभि। **–धूम**–पु० होमजन्य धूम। **–निर्वपणपात्र**–पु० हवि देनेका पात्र। **–भाक्(ज्)**–वि० हवि ग्रहण करनेवाला। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि; क्षत्रियोंके पितर; शिव आदि देवता। **–भू**–स्त्री० हवन-स्थान; पुलस्त्य-पत्नी। **–मंथ**–पु० गनिकारी। **–यज्ञ**–पु० एक साधारण यज्ञ जिसमें केवल घीकी आहुति दी जाती है। **–याजी(जिन्)**–पु० पुरोहित। **–वर्ष**–पु० अग्नीध्रका एक पुत्र और उसके द्वारा शासित एक वर्ष। **–हुति**–स्त्री० हविका होम करना।

हविष्पात्र–पु० (सं०) हवि रखनेका बरतन।

हविष्मती–स्त्री० (सं०) कामधेनु।

हविष्मान्(मत्)–वि० (सं०) हवि देनेवाला। पु० एक आंगिरस; एक देवर्षि; छठे मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक; एक पितृवर्ग।

हविष्यंद–पु० (सं०) विश्वामित्रका एक पुत्र।

हविष्य–वि० (सं०) हविके उपयुक्त या उसके लिए तैयार किया हुआ; हवि पानेके योग्य (जैसे शिव)। पु० हविका द्रव्य; घी; तिन्नी; घी मिला हुआ चावल। **–भक्ष,–भुक्(ज्)**–वि० यज्ञ-संबंधी पदार्थ (चावल, घी आदि) खानेवाला। **–शन्न**–पु० यज्ञकी बची-खुची वस्तुएँ।

हविष्यान्न–पु० (सं०) यज्ञ आदिके अवसरपर खाये जानेवाले पवित्र पदार्थ।

हविष्याशी(शिन्)–वि० (सं०) दे० 'हविष्यभुक्'।

हविस†–स्त्री० दे० 'हवस'।

हवेली–स्त्री० (अ०) चहारदीवारीवाला मकान; बड़ा और पक्का मकान, महल।

हव्य–वि० (सं०) यज्ञमें आहुतिके रूपमें छोड़े जाने योग्य। पु० यज्ञमें किसी देवताके लिए दी जानेवाली आहुति; आहुति; घृत। **–कव्य**–पु० क्रमशः देवताओं तथा पितरोंको दी जानेवाली आहुति। **–प**–पु० तेरहवें मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक। **–पाक**–पु० चरु। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि। **–योनि**–पु० देवता। **–लेही-(हिन्)**–पु० अग्नि। **–वाह,–वाहन**–पु० अग्नि; पीपल।

हव्याद–वि० (सं०) हव्य खानेवाला।

हव्याश, हव्याशन–पु० (सं०) हुताशन, अग्नि।

हशम–पु० (अ०) नौकर-चाकर; टहलुओंकी भीड़।

हशमत–स्त्री० (सं०) नौकर-चाकर; टहलुओंकी भीड़; लाव-लश्कर; बड़ाई, गौरव; शान, दबदबा।

हशर–पु० दे० 'हश्र'।

हशरा–पु० (अ०) जमीनमें सूराख करके रहनेवाला कीड़ा या जंतु।

हशरात–पु० (अ०) 'हशरा'का बहु०, छोटे-छोटे कीड़े जो बरसातमें जमीनके अंदरसे निकल आते या पैदा हो जाते हैं।

हशाशत–स्त्री० (अ०) प्रसन्नता; प्रफुल्लता।

हश्र–पु० (अ०) प्रलय, कयामत; कोलाहल; रोना पीटना; उपद्रव, आफत। **–अंगेज़**–त्रि० प्रलयंकर। मु० **–के वादेपर देना**–ऐसे आदमीको ऋण देना जिससे कभी वसूल होनेकी आशा न हो। **–ढाना**–आफत मचाना। **–बरपा करना**–ऊधम, उपद्रव मचाना। **–बरपा होना**–कोलाहल होना, उपद्रव मचना। **–में उठना**–मुसलमानोंके विश्वासानुसार कयामतके दिन मुर्दोंका जिंदा होकर उठ बैठना।

हसंतिका–स्त्री० (सं०) अँगीठी।

हसंती–स्त्री० (सं०) अँगीठी; एक प्रकारकी मल्लिका; शाकिनी; एक नदी।

हस–पु० (सं०) हास; उपहास; खुशी।

हसद–पु० (अ०) दूसरेकी अच्छी हालत देखकर जलना, कीना, डाह, ईर्ष्या।

हसन–पु० (सं०) हँसनेकी क्रिया; मजाक; स्कंदका एक अनुचर। वि० (अ०) भला, नेक; सुंदर। पु० अलीके बड़े बेटेका नाम। **–हुसैन**–पु० अलीके दोनों बेटे जो मुहम्मदके नाती थे।

हसनी–स्त्री० (सं०) अंगारधानी, अँगीठी। **–मणि**–पु० अग्नि।

हसनीय–वि० (सं०) हँसने योग्य, उपहास योग्य।

हसब–अ० दे० 'हस्ब'। स्त्री० (अ०) ईंधन। पु० गणना, अनुमान, श्रेष्ठता। पु० (अ०) कुलक्रम, वंश, नस्ल। **–नसब**–पु० माता-पिताका कुलक्रम, खान्दानी सिलसिला।

हसर–पु० दे० 'हस्र'।

हसरत–स्त्री० (अ०) खेद, दुःख; वस्तुकी अप्राप्तिका दुःख; चाह, अरमान, लालसा। **—मंद**–वि० लालसाओंसे भरा हुआ। मु० **—करना**–इच्छा करना, चाहना। **—टपकना**–हसरत जाहिर होना। **—निकलना**–लालसा पूरी होना। **—निकालना**–अरमान निकालना। **—बरसना**–विषादकी व्यंजना होना; नैराश्य प्रकट होना। **—बाक़ी रहना**–लालसा रह जाना, अरमान पूरा न होना।

हसिका–स्त्री० (सं०) हँसी, हास; मजाक; उपहास।

हसित–वि० (सं०) हँसा या हँसता हुआ; जो हँसा है; विकसित; जो हँसा गया है। पु० हास्य; परिहास; कामदेवका धनुष्।

हसिता(तृ)–वि० (सं०) हँसनेवाला।

हसिर–पु० (सं०) चूहेका एक भेद।

हसीन–वि० (अ०) सुंदर, हुस्नवाला; प्यारा; लुभावना। वि० (अ०) अविचल, दृढ़, सुस्थिर।

हसीना–वि० (अ०) सुंदरी; रूपवती स्त्री।

हसीब–वि० (अ०) हिसाब करनेवाला; ईश्वर; पूज्य।

हसीलां–वि० सीधा।

हस्त–पु० (सं०) शरीरका एक अवयव, हाथ; एक हाथ–चौबीस अंगुल–की एक माप; हाथीकी सूंड़; हाथका एक विशेष विन्यास या मुद्रा; हस्त-लिपि, हस्ताक्षर; एक नक्षत्र; धौंकनी; एक वृक्ष; गुच्छ, समूह (केशका); छंदका चरण; वासुदेवका एक पुत्र। वि० हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न। **—कमल**–पु० हाथमें धारण किया हुआ कमल (सौभाग्यादिका सूचक), कमल जैसा हाथ। **—कला**–स्त्री० (मैनुअल आर्ट) हाथसे किया गया कलात्मक काम, हस्तकौशल। **—कार्य**–पु० हाथसे किया जानेवाला काम, दस्तकारी। **—कोहलि**–स्त्री० वर-कन्याके हाथमें मंगलसूत्र बाँधनेकी क्रिया। **—कौशल**–पु० हाथका काम करनेकी कुशलता। **—क्रिया**–स्त्री० दस्तकारी; हस्तमैथुन। **—क्षेप**–पु० दूसरोंकी बात या काममें दखल देना, दस्तंदाजी। **—ग**–वि० जो किसीके हाथ या अधिकारमें जानेवाला हो। **—गत**–वि० हाथमें आया हुआ, अधिकृत, प्राप्त। **—गामी(मिन्)**–वि० दे० 'हस्तग'। **—गिरि**–पु० एक पर्वत। **—ग्रह**–पु० हाथका ग्रहण, पाणिग्रहण, विवाह; किसी चीजमें हाथ लगाना। **—ग्राह**–वि० हाथ पकड़ानेवाला (पड़ोसी)। **—ग्राहक**–वि० गिड़गिड़ानेवाला, आग्रह-पूर्वक याचना करनेवाला। **—चापल्य**–पु० हस्तकौशल, हाथकी सफाई। **—चालन**–पु० हाथ हिलाना, हाथसे संकेत करना। **—ज्योडि**–पु० करज्योडि नामक वृक्ष। **—तल**–पु० हथेली। **—ताल**–पु० करताली। **त्र,—त्राण**–पु० अस्त्रादिसे हाथकी रक्षाके लिए धारण किया जानेवाला दस्ताना। **—दक्षिण**–वि० दाहिनी ओर स्थित; सही, ठीक। **—दीप**–पु० हाथकी लालटेन। **—दोष**–पु० नाप या तौलमें चोरी करनेका दोष; हाथसे होनेवाली भूल। **—धारण**–पु० हाथ पकड़कर सहारा देना; आघातका निवारण करना; पाणिग्रहण। **—पर्ण**–पु० ताड़का एक प्रकार। **—पाद**–पु० हाथ-पैर। **—पुच्छ**–पु० कलाईसे नीचेका भाग। **—पुस्तिका**–स्त्री० (हैण्डबुक, मैनुअल) हाथमें आसानीसे आ जाने लायक छोटी-सी पुस्तक; किसी लंबे-चौड़े विषयपर साररूपमें लिखी गयी लघु पुस्तक। **—पृष्ठ**–पु० हथेलीका पृष्ठभाग। **—प्रद**–वि० सहारा देनेवाला। **—प्राप्त**–वि० हस्तगत। **—प्राप्य**–वि० हाथ पहुँचने योग्य। **—बिब**–पु० शरीरमें गंधद्रव्योंका लेपन। **—भ्रंशी(शिन्)**,**—भ्रष्ट**–वि० हाथसे फिसला हुआ, जो बच निकला हो। **—मणि**–पु० कलाईपर पहना जानेवाला रत्न। **—मैथुन**–पु० शिश्नका हाथसे संचालन कर वीर्यपात करना। **—योग**–पु० हाथोंका प्रयोग या अभ्यास। **—रेखा**–स्त्री० हथेलीपरकी रेखाएँ (जिनके आधारपर शुभाशुभ फल निकालते हैं)। **—रोधी(धिन्)**–पु० शिव। **—लक्षण**–पु० हस्तरेखाओंका शुभाशुभ फल। **—लाघव**–पु० हाथकी फुर्ती, हाथकी कुशलता; हाथकी सफाई, बाजीगरी। **—लिखित**–वि० हाथका लिखा हुआ (ग्रंथादि)। **—लिपि**–स्त्री० हाथकी लिखावट, हस्तलेख; पांडुलिपि (मैनस्क्रिप्ट)। **—लेख**–पु० हाथकी लिखावट, चित्रादि। **—०विशेषज्ञ**–पु० (हैंडराइटिंग एक्सपर्ट) वह जो हस्तलिपि पहचान लेनेकी कलाका जानकार हो। **—लेपन**–पु० हाथका लेप। **—वर्ती(तिन्)**–वि० जो हाथमें हो, गृहीत। **—वातरक्त**–पु० हथेलीका एक रोग (इसमें फुंसियाँ निकलती हैं)। **—वाप**–पु० हाथसे बाणोंकी वर्षा करना। **—वाम**–वि० बायीं ओर स्थित; गलत। **—वारण**–पु० हाथ पकड़ लेना, आघातका निवारण करना। **—विज्ञापनक**–पु० (हैंडबिल) सिनेमा, सरकस आदि या किसी दवा, सार्वजनिक सभा इत्यादिका वह छोटा विज्ञापन जो इधर-उधर हाथसे वितरित किया जाय। **—विन्यास**–पु० हाथोंकी स्थिति। **—विषमकारी(रिन्)**–वि० हाथकी कुशलतासे बाजी जीतनेवाला। **—वेश्य**–पु० हाथका श्रम। **—शिल्प**–पु० दस्तकारी (हैंडक्राफ्ट)। **—श्रम**–पु० (मैनुअल लेबर) हाथकी मेहनत, शारीरिक परिश्रम, व्रात। **—संज्ञा**—स्त्री० हाथका संकेत। **—संवाहन**–पु० हाथसे रगड़ना, मालिश करना या दबाना। **—सिद्धि**–स्त्री० हाथसे किया जानेवाला काम; हाथका श्रम; पारिश्रमिक, भृति। **—सूत्र,—सूत्रक**–पु० विवाहके अवसरपर बाँधा जानेवाला मंगलसूत्र; विवाहके पहले धारण किया जानेवाला हाथका गहना, वलय। **—स्वस्तिक**–पु० हाथोंको स्वस्तिककी शक्लमें रखना। **—ह्रार्य**–वि० हाथसे ग्रहण किया जाने योग्य (पिंडादि)।

हस्तक–पु० (सं०) हाथ; एक हाथकी माप; हाथका सहारा; हाथोंकी स्थिति; ताल (संगीत); ताली; करताल नामका बाजा; निम्न श्रेणीका सेवक।

हस्तवान्(वत्)–वि० (सं०) दक्ष, हस्तकुशल।

हस्तांकित ऋणपत्र–पु० (हैंडनोट) ऋण लेते समय हाथसे लिखा गया वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि ऋण लेनेवाला निर्धारित अवधिके भीतर कुल रकम ब्याजके समेत चुका देगा, प्रोनोट।

हस्तांजलि–स्त्री० (सं०) हाथोंकी वह स्थिति जिसमें वे गहराई बनाते हुए मिले हों, करसंपुट।

हस्तांतर–पु० (सं०) दूसरा हाथ।

हस्तांतरण–पु० (सं०) (ट्रांसफरेंस) (संपत्ति, शक्ति, अधिकार आदिका) एक व्यक्तिके हाथसे दूसरे हाथमें जाना या दिया जाना।

हस्तांतरपत्र–पु० (कानवेयेंस) संपत्ति आदिके हस्तांतरण-संबंधी प्रलेख।

हस्तांतरित–वि० (सं०) (ट्रांसफर्ड) (वह संपत्ति आदि) जो एकके हाथसे दूसरेके हाथमें गयी या दी गयी हो।

हस्तांतरिती–पु० (सं०) जिसे किसी संपत्तिका अधिकार सौंपा गया हो (ट्रांसफरी)।

हस्ता–स्त्री० (सं०) हस्त नक्षत्र।

हस्ताक्षर–पु० (सं०) दस्तखत, सही। **—कर्ता**–पु० (सिग्नेटरी) वह जिसने किसी संधिपत्र, आवेदन-पत्र आदिपर हस्ताक्षर किये हों।

हस्ताग्र–पु० (सं०) हाथका अगला भाग, अँगुली।

हस्तादान–पु० (सं०) हाथसे ग्रहण करना। वि० हाथसे ग्रहण करनेवाला।

हस्ताभरण–पु० (सं०) हाथका गहना; एक तरहका साँप।

हस्तामलक–पु० (सं०) हाथमेंका आँवला (जो बिलकुल स्पष्ट और बोधगम्य होनेका सूचक है); शंकराचार्य-रचित एक वेदांतका ग्रंथ।

हस्तारूढ–वि० (सं०) जो हाथपर हो, बिलकुल स्पष्ट।

हस्तालंब, हस्तावलंब–पु० (सं०) आश्रय, सहारा।

हस्तावाप–पु० (सं०) हस्तत्राण।

हस्ताहस्ति–स्त्री० (सं०) हाथापाई।

हस्ताहस्तिका–स्त्री० (सं०) गुत्थमगुत्थी, दस्त-बदस्त लड़ाई।

हस्तिक–पु० (सं०) हाथियोंका झुंड; खिलौनेका हाथी; निम्न श्रेणीका सेवक।

हस्तिनपुर, हस्तिनीपुर–पु० (सं०) दे० 'हस्तिनापुर'।

हस्तिनापुर–पु० (सं०) चंद्रवंशी नरेश हस्ती द्वारा निर्मित एक (प्राचीन) नगर जो वर्तमान दिल्लीसे लगभग ५७ मील पूर्वोत्तर था।

हस्तिनी–स्त्री० (सं०) गजपत्नी, हथिनी; हट्टविलासिनी नामक गंधद्रव्य; स्त्रियोंके चार भेदोंमेंसे एक; हस्तिनापुर।

हस्तिपक–पु॰ (सं॰) दे॰ 'पीलवान'।

हस्ती–स्त्री (फा॰) जीवित, विद्यमान, होनेका भाव, अस्तित्व; जीवन; प्राण; संसार; प्राणीवर्ग; सामर्थ्य। **–ए चंदरोज़ा**–स्त्री॰ क्षणिक जीवन। **मु॰ –खोना**–नष्ट होना, (किसीके) नामोनिशानका न रहना। **–मिटना**–नाश होना, बरवाद होना। **–मिटाना**–नष्ट, बरवाद करना। **–होना**–जीवित, विद्यमान रहना; महत्त्वका होना।

हस्ती(स्तिन्)–वि॰ (सं॰) कर-युक्त; सूँड़वाला; कार्यकुशल। पु॰ हाथी; अजमोदा; धृतराष्ट्रका एक पुत्र; सुहोत्र (एक चंद्रवंशी नरेश) का एक पुत्र; कुरुका एक पुत्र। **–(स्ति)कंद**–पु॰ एक तरहका बड़ा कंद, हाथीकंद। **–कक्ष**–पु॰ एक विषैला कीड़ा। **–कक्ष्य**–पु॰ सिंह; बाघ। **–कच्छ**–पु॰ एक नागासुर। **–करंज, –करंजक**–पु॰ महाकरंज। **–करणक**–पु॰ एक तरहकी ढाल। **–कर्ण**–पु॰ एरंड वृक्ष; पलाश; कच्चू; शिवका एक गण; एक तरहके गणदेवता; एक राक्षस; एक नागासुर। **–॰दल**–पु॰ पलाशका एक भेद। **–कर्णक**–पु॰ एक तरहका किंशुक। **–कर्णिक**–पु॰ योगका एक आसन। **–कोलि**–स्त्री॰ एक तरहका बेर। **–कोशातकी**–स्त्री॰ तोरई। **–गिरि**–पु॰ एक पर्वत; कांची नगर। **–घात**–पु॰ हाथीका वध। **–घोषा**–स्त्री॰ वृहत् घोषा, बड़ी तोरई। **–घोषातकी**–स्त्री॰ दे॰ 'हस्तिघोषा'। **–घ्न**–वि॰ हाथी मारनेमें समर्थ। पु॰ मनुष्य। **–चार**–पु॰ हाथियोंको डरानेका एक हथियार। **–चारिणी**–स्त्री॰ महाकरंज। **–चारी(रिन्)**–पु॰ पीलवान। **–जागरिक**–पु॰ हाथीकी देखभाल करनेवाला व्यक्ति। **–जिह्वा**–स्त्री॰ दाहिनी आँखकी एक विशेष शिरा। **–जीवी(विन्)**–पु॰ पीलवान। **–दंत**–पु॰ हाथी-दाँत; दीवारमें गड़ी हुई खूँटी; मूली। **–॰फला**–स्त्री॰ एर्वारु। **–दंतक**–पु॰,**–दंती**–स्त्री॰ मूली। **–द्वयस**–वि॰ हाथी जितना ऊँचा या बड़ा। **–नख**–पु॰ हाथीका नाखून; पुरद्वारपर बना हुआ मिट्टीका ढूहा। **–नासा**–स्त्री॰ हाथीकी सूँड़। **–निषदन**–पु॰ एक आसन (योग)। **–प**–पु॰ पीलवान; हाथीकी देखभाल करनेवाला; हस्त्यारोह। **–पत्र**–पु॰ दे॰ 'हस्तिकंद'। **–पद**–पु॰ हाथीका रास्ता; एक नागासुर। **–पर्णिका,–पर्णिनी**–स्त्री॰ राजकोषातकी, तोरई। **–पर्णी**–स्त्री॰ कर्कटी; मोरटा लता। **–पादिका**–स्त्री॰ एक ओषधि। **–पाल,–पालक**–पु॰ पीलवान। **–पिंड**–पु॰ एक नागासुर। **–पिप्पली**–स्त्री॰ गजपिप्पली। **–प्रमेह**–पु॰ प्रमेहका एक प्रकार। **–बंध**–पु॰ हाथी फँसानेका स्थान। **–भद्र**–पु॰ एक नागासुर। **–मकर**–पु॰ जलहस्ती (ड्यूगांग)। **–मद**–पु॰ हाथीके गंडस्थलसे बहनेवाला रस, दान। **–मल्ल**–पु॰ ऐरावत; गणेश, पातालका आठवाँ नाग; शंख; राखका ढेर; धूलकी वर्षा; पाला, हिम। **–माया**–स्त्री॰ एक जादू या मंत्र। **–मुख**–पु॰ गणेश ; एक राक्षस। **–मेह**–पु॰ दे॰ 'हस्तिप्रमेह'। **–यूथ**–पु॰ हाथियोंका झुंड। **–राज**–पु॰ बहुत बड़ा हाथी; हाथियोंके झुंडका मुखिया। **–रोध्रक,–लोध्रक**–पु॰ लोध्र वृक्ष। **–रोहणक**–पु॰ महाकरंज। **–वक्त्र**–पु॰ गणेश। **–वाह**–पु॰ पीलवान; अंकुश। **–विषाणी**–स्त्री॰ कदली। **–व्यूह**–पु॰ हाथियोंसे बना एक तरहका व्यूह जिसमें हाथी मध्य और पक्षमें रहते हैं। **–शाला**–स्त्री॰ गजगृह, फीलखाना। **–शुंड**–पु॰ हाथीकी सूँड़। **–शुंडा,–शुंडी**–स्त्री॰ एक क्षुप। **–श्यामक**–पु॰ काला सावाँ। **–सोमा**–स्त्री॰ एक नदी। **–हस्त**–पु॰ हाथीकी सूँड़।

हस्ते–अ॰ हत्थे, द्वारा, मार्फत; (सं॰) हाथमें। **–करण**–पु॰ पाणिग्रहण, विवाह।

हस्त्य–वि॰ (सं॰) हाथ-संबंधी; हाथसे किया हुआ; हाथसे दिया हुआ।

हस्त्यध्यक्ष–पु॰ (सं॰) हाथियोंका निरीक्षक।

हस्त्यशन–पु॰ (सं॰) लोबानका पौधा।

हस्त्याजीव–पु॰ (सं॰) हस्तिव्यवसायी; पीलवान।

हस्त्यायुर्वेद–पु॰ (सं॰) हस्तिचिकित्सा-संबंधी शास्त्र।

हस्त्यारोह–पु॰ (सं॰) हाथीपर बैठनेवाला व्यक्ति; महावत; पीलवान।

हस्त्यारोही(हिन्)–पु॰ (सं॰) हाथीका सवार। वि॰ हाथीपर सवारी करनेवाला।

हस्त्यालुक–पु॰ (सं॰) एक कंद।

हस्ब–अ॰ (अ॰) अनुसार, मुताबिक। **–(स्बे)इंसाफ़**–वि॰ न्यायानुकूल। **–ऐलान**–वि॰ घोषणाके अनुसार। **–ज़ाबिता**–अ॰ जाबिते, कानूनके अनुसार, यथानियम। **–ज़ैल**–अ॰ नीचे लिखे हुए ब्योरेके अनुसार। **–मंशा**–अ॰ (किसी दफाके) मंशा, अभिप्रायके अनुसार (कानून)। **–मामूल**–अ॰ रीति, नित्य-नियमके अनुसार, दस्तूरके मुताबिक। **–हाल**–अ॰ स्थितिके अनुरूप, यथायोग्य। **–हैसियत**–अ॰ अपनी हैसियत, अपने वित्तके अनुसार।

हस्र–वि॰ (सं॰) हँसने, मुसकरानेवाला; मूर्ख, अज्ञान। पु॰ (अ॰) घेरना, इहाता करना; अवलंबन। **मु॰–होना**–अवलंबित होना (इसीपर क्या हस्र है)।

हहर–स्त्री॰ घबड़ाहट; डर, भय; चकपकाहट; प्रसन्नता-मिश्रित हड़बड़ी; कँपकँपी, सिहरन (शीत, भय आदिसे)।

हहरना–अ॰ क्रि॰ डरना; चकित होना, किसी अलौकिक वस्तुको देखकर चकपकाना, दंग होना; डरसे काँपना; परेशान होना–'बरसि-बरसि हहरे सब बादर'–सूर; शीतसे काँपना; अतीव प्रसन्नता और उत्सुकतापूर्वक किसीसे मिलना; किसीकी संपन्नता देखकर ईर्ष्या करना, सिहाना। **मु॰ –हहरकर मिलना**–अत्यंत प्रसन्नता तथा उत्सुकतापूर्वक किसीसे मिलना।

हहराना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'हहरना'। स॰ क्रि॰ भीत करना, डराना, दहलाना।

हहल–स्त्री॰ दे॰ 'हहर'। पु॰ (सं॰) हलाहल विष।

हहलना–अ॰ क्रि॰ दे॰ 'हहरना'।

हहलाना–अ॰ क्रि॰, स॰ क्रि॰ दे॰ 'हहराना'।

हहव–पु॰ एक नरक (बौ॰)।

हहा–स्त्री॰ हँसनेका शब्द; चिरौरी, विनती। पु॰ (सं॰) एक गंधर्व। **–गति***–स्त्री॰ दुर्दशा। **मु॰ –खाना**–बहुत गिड़गिड़ाना।

हाँ–अ॰ स्वीकृति, निश्चय, आत्मसंतोष, स्मृति आदिका सूचक शब्द। स्त्री॰ स्वीकृति, स्वीकृति देने, 'हाँ' कहनेका कार्य। –हाँ–अ॰ वर्जन करनेके लिए प्रयुक्त शब्द। **मु॰ –जी हाँजी करना**–चापलूसी करना, खुशामद करना। **–में हाँ मिलाना**–चापलूसी करना; बिना समझे किसीकी स्वीकृतिको ठीक मान लेना, खुशामद भय आदिके कारण बिना विचार किये ही दूसरे द्वारा स्वीकृत बातको ठीक करना। **–हाँ करना**–स्वीकृति देना, किसी वस्तुके सही होनेकी बात मानना।

हाँक–स्त्री॰ जोरसे बोलकर किसीको पुकारनेकी क्रिया; हुंकार, गर्जना, ललकार; युद्ध, प्रतियोगिता आदिमें किसीको आगे बढ़नेके लिए दी गयी ललकार, बढ़ावा; उद्धार, सहायता, रक्षा आदिके लिए किसी सशक्त व्यक्ति या ईश्वरका आह्वान। **मु॰ –देना,–मारना,–लगाना**–ऊँची आवाजसे पुकारना, संबोधित करना।

हाँकना–स॰ क्रि॰ इक्का, बैलगाड़ी आदि वाहनोंको चलाना; गाड़ीमें जुते घोड़ा, बैल आदि चौपायोंको चाबुक मारकर या मुँहसे बोलकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर करना; चौपायोंसे प्रायः किसी वस्तुकी रक्षाके लिए उन्हें किसी स्थानसे हटाना; पंखा झलना; लंबी-चौड़ी बातें करना, बढ़ा-चढ़ाकर बातें कहना; अत्यधिक दाम बताना; उच्च स्वरसे बोलकर पुकारना, आह्वान करना; हाँक लगाना, ललकारना। **–मु॰ गप–,दूनकी–,शेखी**–लम्बी-चौड़ी बातें करना, अतिशयोक्ति करना। **हाँक पुकारकर कहना**–सबको जनाकर कोई बात कहना।

हाँका–पु॰ दे॰ 'हँकवा'; * दे॰ 'हाँक'।

हाँकारी–पु॰ (आइज) किसी प्रस्तावके पक्ष या संबंधमें 'हाँ' कहनेवाले सदस्य।

हांगर–पु॰ (सं॰) एक बड़ी मछली।

हाँगा–पु॰ ताकत, जोर, शारीरिक बल; बलप्रयोग। **मु॰ –करना**–किसीके विरुद्ध बलप्रयोग करना। **–छूटना**–शारीरिक बल न रहना; शारीरिक बलमें अंतर पड़ना।

हाँगी–स्त्री० मंजूरी, हामी, स्वीकृति। **मु० –भरना**–मंजूर करना, स्वीकृति देना, हामी भरना।

हाँड़ना–अ० क्रि० आवारागर्दी करना। वि० आवारागर्द।

हाँड़ी–स्त्री० दे० 'हंडी'। **मु० –उबलना**–पकती हुई चीजका उबलना; मारे खुशीके फूलना। **काठकी**–एक बार किसी चालका चल जाना, दुबारा नहीं। **–चढ़ाना**–दे० 'हँड़िया चढ़ाना'। **–पकना**–हाँड़ीमें रखी वस्तुओंका आँचके कारण पकना; किसी षड्यंत्रका रचा जाना; गप लड़ना। **(किसीके नामपर)–फोड़ना**–किसी अप्रिय व्यक्तिके चले जानेपर प्रसन्नता प्रकट करना।

हाँता*–वि० त्यक्त, छोड़ा हुआ; हटाया हुआ; दूर किया हुआ।

हांत्र–पु० (सं०) मरण; एक राक्षस; युद्ध।

हांद्र–पु० (सं०) मरण।

हाँपना, हाँफना–अ० क्रि० किसी प्रकारके शारीरिक श्रम या रोगके कारण साँसकी गतिका तीव्र होना।

हाँफा–पु० हाँफनेकी क्रिया। **मु० –छूटना**–कड़ा शारीरिक श्रम करनेपर तुरंत हाँफने लगना।

हाँफी–स्त्री० दे० 'हाँफा'।

हांबीरी–स्त्री० (सं०) एक रागिनी।

हांस–वि० (सं०) हंस-संबंधी।

हाँस†–स्त्री० हँसी।

हाँसना*–अ० क्रि० दे० 'हँसना'।

हाँसल, हाँसुल–पु० एक प्रकारका घोड़ा जिसका रंग मेहँदीका-सा और चारों पैर कुछ काले रंगके होते हैं।

हाँसी–स्त्री० हँसनेकी क्रिया, हँसी; मजाक, दिल्लगी, परिहास; बदनामी, निंदा, उपहास।

हाँसु*–स्त्री० हँसी; हँसली।

हा–अ० (सं०) आनंद, शोक; खेद, क्रीड़ा, घृणा, आश्चर्य, क्रोध आदिका सूचक शब्द। **–हंत**–अ० बड़े शोककी अवस्थामें निकलनेवाला एक शब्द। **–हा**–पु०, अ० दे० क्रममें।

हा(हन्)–वि० (सं०) मार डालनेवाला, नष्ट करनेवाला (समासांतमें)।

हाइ*–अ० दे० 'हाय'।

हाइड्रोकार्बन–पु० (हाइड्रोकार्बन) ऐसा यौगिक जिसके अणु केवल कार्बन तथा हाइड्रोजन परमाणुओंके रासायनिक संयोगसे बने हों; जैसे बेन्जीन ($C_6 H_6$), गैसोलिन ($C_8 H_{18}$) आदि।

हाइड्रोजन–पु० (अं०) आर्द्रजन; दे० 'उदजन'। **–बम**–पु० (हाइड्रोजन बम) प्रचण्ड विस्फोट ऊर्जा उत्पन्न करनेवाला बम जिसके अन्दर लिथियम-ड्यूटराइडके संलयनसे हीलियम नाभिक निर्माण करनेकी क्रियामें पदार्थ की अल्पमात्रा ढेर-सी ऊर्जामें परिणत हो जाती है।

हाइड्रोफोबिया–पु० (अं०) कुत्तोंको होनेवाला एक रोग जो इस रोगसे ग्रस्त कुत्तोंके काटनेपर मनुष्यों आदिको भी हो जाता है (इसमें जलसे भय होता है), जलातंक।

हाइफन–पु० (अं०) शब्दोंका परस्पर संबंध दिखलानेके लिए उनके बीचमें रखा जानेवाला एक चिह्न (-)।

हाइल–वि० दे० 'हायल'।

हाई*–स्त्री० ढंग, पद्धति, ढब; तरह; घात करनेकी चाल; अवस्था, परिस्थिति। वि० (अं०) ऊँचा; बड़ा। **–कोर्ट**–पु० उच्च न्यायालय, प्रदेश या राज्यकी सबसे बड़ी अदालत। **–स्कूल**–पु० वह अँगरेजी स्कूल जिसमें मैट्रिकतककी पढ़ाई होती है।

हाउस–पु० (अं०) घर, निवास-स्थान; सभा; राजवंश।

हाऊ–पु० छोटे बच्चोंको डरवानेके लिए एक मनगढ़ंत डरावने जीवका नाम, भकाऊँ, हौवा।

हॉकर–पु० (अं०) फेरी करके छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचनेवाला व्यक्ति; घूम-घूमकर अखबार बेचनेवाला व्यक्ति।

हाकल–पु० (सं०) एक मात्रिक छंद।

हाकलिका–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

हाकली–स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।

हाकिनी–स्त्री० (सं०) तांत्रिकोंकी एक देवी।

हाकिम–पु० (अ०) हुक्म करनेवाला; हुकूमत करनेवाला, शासक; राजा; प्रधान अधिकारी; मालिक। **–(मे)आला,–वाला**–पु० प्रधान अधिकारी, बड़ा अफसर; (ला०) ईश्वर। **–वक्त**–पु० वर्तमान शासक; तत्कालीन राजा। **–हक़ीक़ी**–पु० ईश्वर, परमात्मा। **मु० –के कुत्ते**–बड़े अफसरके नौकर-चाकर जो बिना भेंट-पूजाके उसके पास न जाने दें।

हाकिमाना–वि० हाकिमके जैसा, अधिकारी योग्य। (–ढंग लहजे।)

हाकिमी–स्त्री० हुकूमत; अफसरी। वि० शासन-संबंधी।

हॉकी–स्त्री० (अं०) एक अंग्रेजी खेल जिसमें टेढ़े डंडेके सहारे गेंद आगे बढ़ाते हुए गोल करते हैं।

हाजत–स्त्री० (अ०) आवश्यकता; अभाव; इच्छा, चाह; शौच आदिका वेग; हवालात। **–ख़्वाह**–वि० मुहताज; प्रार्थी। **–मंद**–वि० जिसे अभाव, आवश्यकता हो; मुहताज, इच्छुक। **–रवा**–वि० हाजत पूरी करनेवाला। **–रवाई**–स्त्री० जरूरत पूरी करना, किसीका काम निकालना। **मु० –रफ़ा करना**–हाजत पूरी करना; पाखाने जाना।

हाजती–स्त्री० वह बरतन जिसमें बीमार चारपाईपर पड़े-पड़े पेशाब कर ले; रातको अमीरोंके पलंगके पास पेशाब करनेके लिए रखा जानेवाला बरतन। पु० फकीर; प्रार्थी। वि० हाजतवाला; हवालाती।

हाज़मा–पु० (अ०) हजम करने, पचानेकी ताकत; पाचन। **मु० –ख़राब होना,–बिगड़ना**–पाचन क्रियाका ठीक तरहसे न होना, पाचन-शक्तिका ठीक तरहसे काम न करना।

हाज़िक़–वि० (अ०) पंडित; कुशल, निपुण।

हाज़िम–वि० (अ०) हजम करने, पचानेवाला।

हाज़िर–वि० (अ०) जो सामने हो, उपस्थित, मौजूद; प्रस्तुत; तैयार। **–जवाब**–वि० जो बातका तुरत जवाब दे, जिसे बातका बढ़िया, यथायोग्य जवाब तुरत सूझ जाय। **–जवाबी**–स्त्री० हाजिर जवाब होना, बातका तुरत बढ़िया जवाब सोच लेनेकी शक्ति। **–ज़ामिन**–पु० वह जो किसी आदमीको अदालतमें हाजिर कर देनेकी जिम्मेदारी ले। **–ज़ामिनी**–स्त्री० हाजिर-जामिन होना; हाजिर कर देनेकी जिम्मेदारी। **–दिमाग़**–वि० (अ०) किसी बातको ठीक समझकर ठीक सलाह देना। **–नाज़िर**–वि० मौजूद और देखनेवाला। **–बाश**–वि० जो किसीके पास, किसीकी सेवामें बराबर रहे, हाजिरी बजानेवाला। **–बाशी**–स्त्री० हाजिरबाश होना, सतत उपस्थिति; दरबारदारी। **मु० –में हुज्जत नहीं**–जो कुछ मौजूद है, बिना हीला-हुज्जतके हाजिर है।

हाजिराई–पु० ओझा; जादूगर।

हाज़िरात–स्त्री० (फा०) अनेक प्रेतात्माओंका एक साथ आवाहन, जिन, भूत-प्रेत इत्यादिकी हाजिरीका जलसा (करना, होना)।

हाज़िराती–पु० हाजिरात करनेवाला।

हाज़िरी–स्त्री० उपस्थिति, मौजूदगी; हाजिरबाशी; सबेरेका खाना; अंग्रेजोंका नाश्ता; वह खाना जो मुर्देके दफन किये जानेके बाद मृत जनके कुटुंबियोंके लिए भेजा जाय (मुसल०)। **–बही**–स्त्री० उपस्थिति पंजिका (अटेंडेंस रजिस्टर)। **मु० –देना**–हाजिर होना, उपस्थितिकी सूचना देना। **–बजाना**–किसी बड़े आदमीके पास बराबर रहना, दरबारदारी करना। **–लेना**–नाम पुकारकर छात्रों आदिकी उपस्थिति मालूम करना, लिखना।

हाज़िरीन–पु० (अ०) 'हाज़िर'का बहु०, (सभा आदिमें) उपस्थित जन, श्रोतृमंडली। **–(ने) जलसा**–पु० सभामें उपस्थित जन-समाज।

हाजी–पु० (अ०) हज करनेवाला; वह जो हज कर चुका हो।

हाट–स्त्री० बाजार; बाजार लगनेका दिन; दुकान। **–व्यवस्था**–स्त्री० (मारकेटिंग) उत्पादित वस्तुओंके खरीदने, बेचने तथा बिकवानेकी व्यवस्था। **मु० –करना**–दुकान करना, किसी बाजारमें दुकान खोलकर बेचना, खरीदना; बाजारमें सामान खरीदना। **–खोलना**–दुकान करना; दुकान लगाना। **–चढ़ना**–बाजारमें बिकनेके लिए जाना। **–बाजार करना**–सौदा

खरीदनेके लिए बाजार जाना। **–लगना**–बाजार, दुकानमें बेचनेके लिए चीजोंका सजाया जाना।

हाटक–वि० (सं०) स्वर्णनिर्मित, स्वर्णमय। पु० स्वर्ण, सोना; धतूरा; दुकानका किराया; एक देश। **–गिरि**–पु० सुमेरु। **–पुर**–पु० (स्वर्णनिर्मित) लंका। **–लोचन**–पु० हिरण्याक्ष।

हाटकी–स्त्री० (सं०) अधोलोककी एक नदी।

हाटकीय–वि० (सं०) स्वर्णनिर्मित।

हाटकेश, हाटकेश्वर–पु० (सं०) गोदावरी नदीके तटपर पूजित होनेवाला एक शिवलिंग।

हाड़*–पु० हड्डी; कुलीनता।

हाड़ा–पु० क्षत्रिय जातिकी एक शाखा; हड्डा।

हाडिका–स्त्री० (सं०) दे० 'हंडिका'।

हाड़ी–स्त्री० ऊखल; † बर्रें, भिड़। पु० एक तरहका बगला; काग।

हात–वि० (सं०) छोड़ा हुआ, परित्यक्त।

हातव्य–वि० (सं०) छोड़ने, त्याग करने योग्य; पीछे छोड़े जाने योग्य।

हाता–पु० दे० 'एहाता'; रोक। * वि० परित्यक्त; दूर; नाशक।

हातिम–पु० (अ०) न्यायाधीश, जज; काज़ी। अरबके तै कबीलेका एक सरदार जो दानशीलता और परोपकार-परायणताका आदर्श-सा माना जाता है। वि० अति दानशील; अति परोपकारी; कुशल, उस्ताद। **–ताई**–पु० हातिम; हातिमकी दयाशीलताका वर्णन करनेवाली पुस्तक। मु० **–की क़ब्रपर लात मारना**–दानशीलता या परोपकारमें हातिमसे बढ़ जाना।

हातु–पु० (सं०) मृत्यु; सड़क।

हात्र–पु० (सं०) वेतन, पारिश्रमिक।

हाथ–पु० दे० 'हस्त'; वार करनेका ढंग; ताश, कौड़ी आदि खेलनेवालोंकी बारी, दावँ; दस्ता, मूठ; कर्मचारी। **–कंडा**–पु० दे० 'हथकंडा'। **–तोड़**–पु० कुश्तीका एक दावँ। **–पान**–पु० पानके आकारका एक आभूषण जो हाथके पंजेके ऊपरी भागपर पहना जाता है। **–फूल**–पु० हथेलीके ऊपरी भागपर पहननेका फूलके आकारका एक गहना। **–बाँह**–स्त्री० एक तरहकी कसरत। मु० **–आँखोंसे लगाना**–बहुत आदर-सम्मान करना (कारीगरीकी प्रशंसा आदिके अवसरपर)। **–आगे करना**–किसी वस्तुको लेने या देनेके लिए हाथ बढ़ाना। **–आजमाना**–किसी कामके करनेमें अपनी कारीगरी, शक्ति आदिकी आजमाइश करना। **–आना**–वशमें होना, अधिकारमें होना; फायदा होना। **–उठा-उठाकर कोसना**–आसमानकी ओर हाथ करते हुए बहुत बददुआएँ देना। **–उठा-उठाकर दुआ देना**–प्रसन्नतापूर्वक आकाशकी ओर हाथ उठाकर आशीर्वाद देना। **–उठाकर देना**–स्वेच्छासे किसीको कुछ देना; दान देना। **(किसीको)–उठाना**–किसीका अभिवादन करना, प्रणाम करना, नमस्कार करना। **(किसीपर) –उठाना**–किसीको ताड़ित करना, मारना। **–उठा बैठना**–किसीको मार बैठना; असहयोग कर देना, किसी काममें सहायता देना बंद करना। **–उठा लेना**–दे० 'हाथ उठा बैठना'। **–उतरना**–हाथ उखड़ना, हाथकी हड्डीका स्थानभ्रष्ट होना। **–ऊँचा करना**–खर्चीला होना; किसीके लिए दुआ करना, किसीको आशीर्वाद देना। **–ऊँचा रहना**–खर्चीला होना, देनेके काबिल रहना। **–ऊँचा होना**–दानी होना; दानवृत्तिकी ओर उन्मुख होना; खर्चीला होना। **–ओछा पड़ना**–हाथकी पूरी ताकतसे वार न होना। **–ओट लेना**–दोनों हाथ इकट्ठे फैलाकर किसी चीजको लेना। **–कट जाना**–विवश हो जाना, बेकाबू हो जाना; किसीको किसी कामके लिए वचन देकर बँध जाना। **–कटा देना, –कटाना, –कटा लेना**–दे० 'हाथ कट जाना'। **–करना**–ताश आदि खेलमें बाजी जीतना। **–क़लम करना**–पूरा हाथ काटना। **–क़लम होना**–पूरा हाथ कटना। **–का झूठा**–रुपये-पैसेके मामलेमें, लेन-देनमें जिसपर विश्वास न किया जाय, बेईमान। **–काट देना**–विवश कर देना, बेकाबू कर देना; किसी द्वारा किसीके लिए पत्र, वचन आदि दिलाकर उसे विवश, बेकाबू कर देना। **–का दिया**–दान दिया हुआ; दान ('हायदिया' रूप भी चलता है)। **–कानोंपर रखना**–(हाथसे कानोंको छूकर) पनाह माँगना; किसी कामको न करना, किसी कामके करनेसे इनकार कर देना, किसी कामके करनेमें अपनेको बिलकुल अयोग्य दिखलाना। **–का मैल**–धनसंपन्न व्यक्तिके लिए अधिक द्रव्यका भी बहुत थोड़ा होना; तुच्छ वस्तु। **–का सच्चा**–रुपये-पैसेके मामलेमें, लेन-देनमें जिसपर विश्वास किया जाय, ईमानदार। **–की सफ़ाई**–शिल्प, बाजीगरी आदिमें हाथकी कारीगरी; लड़ाई-भिड़ाईमें वार करनेका अच्छा अभ्यास। **–के तोते उड़ जाना**–सहसा किसी अनिष्ट आदिके कारण स्तब्ध हो जाना; वांछित क्रममें बाधा पड़ जाना; आशाके विपरीत कुछ हो जाना। **–के नीचे आना**–किसीके पंजेमें दबना, फँसना, किसीके काबूमें होना। **–को हाथ नज़र न आना**–घोर अंधकार होना। **–खाना**–वारकी चपेटमें आना; वार खाना। **–ख़ाली जाना**–जुए आदिमें दावँ, बाजीका न आना; वार चूकना, हमला नाकामयाब होना; युक्ति, चालाकी, उपायका न लगना, सफल न होना। **–ख़ाली न होना**–काममें व्यस्त रहना, कामसे फुर्सत न मिलना। **–ख़ाली होना**–बिना पैसेका होना; करनेके लिए हाथमें किसी कामका न होना। **–खींचना**–किसी कामसे हट जाना, उसमें सहयोग न करना; द्रव्य देना बंद करना, आर्थिक सहायता रोकना। **–खुजलाना**–द्रव्यप्राप्तिकी पूर्वसूचना मिलना; चपत जमाने, थप्पड़ लगाने, पीटनेकी प्रवृत्ति होना। **–खुलना**–दानोन्मुख होना; खर्चीला होना; हाथका चलना, काम देने लगना; हथछुट होना। **–खोलना**–दान करना; खूब खर्च करना, आजादी देना; तंगी न रहने देना। **–गरदनमें डालना या देना**–दे० 'गरदनमें हाथ देना'। **–गरम होना**–अर्थकी प्राप्ति होना, पैसा मिलना। **–गलना**–हाथ ठिठुरना, अत्यंत शीतसे हाथका सुन्न पड़ जाना। **–गलेमें डालना**–समवयस्कके प्रति प्रेम प्रकट करना; छोटेको प्यार करना। **–घिस जाना**–बहुत परिश्रमसे कोई (हाथका) काम बहुत देरतक करना। **–चढ़ना**–दे० 'हाथ आना'। **–चमकाना**–औरतोंकी तरह हाथ उठा, हिलाकर बातें करना; औरतोंका हाथकी उँगलियाँ टेढ़ी कर हाथ हिलाना; तलवारको म्यानसे निकालकर हिलाना। **–चलना**–किसीके द्वारा कामका अच्छी तरह किया जाना; किसीका मारनेकी ओर अधिक प्रवृत्त होना। **–चलाना**–किसी कामको भली भाँति करना; मारना। **–चूमना**–किसीके हाथकी कारीगरीसे प्रभावित होकर उसके हाथोंको चूमना (वस्तुतः ऐसा होता नहीं, सिर्फ कहते हैं)। **–छुटा होना**–बेधड़क मारनेकी आदत होना। **–छूटना**–मारनेके लिए प्रवृत्त होना, मारनेके लिए हाथ उठना; वैवाहिक संबंधका विच्छिन्न होना। **–छोड़ना**–मारना; वैवाहिक संबंध भंग करना। **–जड़ना**–तमाचा लगाना, थप्पड़ मारना, प्रहार करना, मारना। **–जमना**–तमाचा, थप्पड़ पड़ना, प्रहार होना; किसी कामके करनेमें हाथका अभ्यस्त होना, किसी व्यक्तिका किसी हस्तकौशलमें निपुण, प्रवीण होना। **–जमाना**–दे० 'हाथ जड़ना'; किसी हस्तकौशलमें हाथको अभ्यस्त, निपुण करना, किसी हस्तकौशलमें कुशलता प्राप्त करना। **–जाना**–हाथका किसी स्थानपर पहुँचना। **–जूठा करना**–थोड़ा-सा खाना। **–जोड़ देना**–हार मान लेना; क्षमा माँग लेना। **–जोड़ना**–प्रायः साक्षात्कार होनेपर दोनों हाथोंको मिलाकर अभिवादन करना, नमस्कार, प्रणाम करना; प्रार्थना, अनुनय, विनय करना; मारे डरके किसीको हाथ जोड़कर क्षमा-याचना करना, प्रार्थना करना; संबंध विच्छेद करना (व्यंग्य)। **–झाड़कर खड़ा हो जाना**–पासमें एक पैसा भी न होनेकी बात करना। **–झाड़कर जाना**–जुए आदिमें रुपया-पैसा हारकर खाली हाथ जाना। **–झाड़ना**–दे० 'हाथ झाड़कर खड़ा होना'; तड़ातड़ थप्पड़, पटाका मारना, प्रहार करना; मार-पीट, युद्धमें खुलकर अस्त्र-शस्त्र चलाना। **–झुलाते आना**–दे० 'हाथ हिलाते आना'। **–झूठा पड़ना, –झूठा होना**–हाथ सुन्न होना, हाथका काम करनेके योग्य न रहना; वार खाली जाना। **–झूल जाना**–हाथ टूट जाना, हाथका इस तरह टूट जाना कि वह झूलने लगे। **–टेकना**–सहारा, सहायता लेना (प्रायः शारीरिक-हाथका)। **–टेकाना**–प्रायः शारीरिक (हाथका) सहारा, सहा-

यता, अवलंब देना। **—डालना**—कोई काम आरंभ करना; किसी काममें दखल देना; द्रव्य आदि लूटना। **—डोलाये जाना**—वरावर खाते जाना। **—तंग होना**—रुपये-पैसेकी कमी होना। **—तकना**—किसीके भरोसे रहना, किसीपर अवलंवित होना। **—दिखाना**—हस्तरेखाविद्को भूत, भविष्यके संवंधमें जानकारीके लिए हाथकी रेखाएँ दिखाना; वैद्यको नाड़ी दिखाना। **—देखना**—भूत, भविष्यकी वातोंको वतानेके लिए हस्तरेखा देखना; नाड़ी देखना। **—देना**—सहायता देना, सहायक होना; वचन देना (वाग्वद्ध होते समय लोग आपसमें हाथ मिला लेते हैं); वाजी लगाना; जुआ आदिके खेलमें वाजी हारना; मारना, पीटना; रुकनेके लिए इशारा करना। **—धरना**—सहारा देना, सहायता करना; रक्षा करना; किसीको कोई काम करनेसे रोकना, मना करना; पाणिग्रहण करना। **—धोकर पीछे पड़ना**—जी-जानसे किसी काममें (विशेषकर किसीका अनिष्ट करनेमें) जुट जाना। **—धोना,—धो बैठना**—खो देना, खो बैठना। **(पुट्ठेपर)—न धरने, न रखने देना**—वातोंमें न आना, किसीकी वात न मानना, अपनी वातपर दृढ़ रहना। **(किसी स्त्रीका)—न होना**—मासिक धर्मके कारण रसोई आदिके अयोग्य होना। **—पकड़ते पहुँचा पकड़ना**—थोड़ी-सी रिआयत पा जानेसे ही वहुत हिलमिल जाना; थोड़ा-सा सहारा मिल जानेपर अधिक प्राप्तिका अवसर ढूंढ़ना (दे० 'उँगली'के मु० में)। **—पकड़ना**—दे० 'हाथ धरना'। **—पकड़नेकी लाज करना,—पकड़ेकी लाज रखना**—किसीको वचन या आश्रय देकर उसका निर्वाह करना। **—पड़ जाना**—विना परिश्रम, प्रयत्नके, यों ही किसी वस्तुका मिल जाना; चोरी हो जाना। **—पड़ना**—दे० 'हाथ आना'; लूटा जाना। **—पत्थर तले दबना**—संकटमें पड़ना, किसीपर विपत्ति आ जाना; असहाय हो जाना, कुछ करने लायक न रह जाना; किसी चलते कामको एकदम रोक देनेके लिए बाध्य, विवश होना। **—पर कुरान,—पर गंगाजल या गंगाजली रखना**—किसीको कुरान, गंगाकी कसम खिलाना। **—पर तोता पालना**—अपने हाथके घाव, फोड़े, फुंसीको अच्छा न होने देना; अपने हाथको चोटैल, जख्मी करना। **—पर धरा रहना**—किसी वस्तुका किसीके लेनेके लिए हाथपर होना, तैयार रहना। **—पर धरा हुआ होना**—किसी वस्तुका हर वक्त पास या तैयार रहना। **—पर नाग खेलाना**—जान जोखों डालना, प्राणको संकटमें डालना। **—पर हाथ धरकर बैठ जाना**—निराश हो जाना। **—पर हाथ धरे बैठना या बैठे रहना**—कुछ काम न करना; निरुद्यम होना, आलसी होना। **—पर हाथ मारना**—वाग्वद्ध होना, प्रतिज्ञा करना; बाजी लगाना। **—पल्ले न पड़ना**—कुछ भी प्राप्त न होना, कोई लाभदायक परिणाम न निकलना। **—पसारना**—याचना करना, माँगना; भिक्षा माँगना। **—पसारे जाना**—इस संसारसे बिना कुछ लिये परलोक जाना, इस जगत्से खाली हाथों जाना। **—पाँव कहनेमें होना**—हाथ-पाँवका काम करना, हाथ-पैरका काबूमें रहना। **—पाँवका जवाब देना,—पाँवका हारना**—वीमारी या वृद्धावस्थाके कारण हाथ-पाँवका काम न कर सकना, अस्वस्थता या बुढ़ापेके कारण शरीरका काम करनेके योग्य न रह जाना। **—पाँव —पाँव चलना**—उद्योगी होना; शरीरमें शक्तिका रहना। **—पाँव चलाना**—उद्योग करना, कर्मशील होना। **—पाँव जोड़ना**—गिड़गिड़ाना। **—पाँव झूठे पड़ जाना**—हाथ-पाँवका वेकाम हो जाना, काम करनेके योग्य न रह जाना। **—पाँव ठंढे होना**—मरणासन्न होना; मृत्यु होना, मर जाना; अत्यंत भीत होना, स्तब्ध होना, काठ मार जाना। **—पाँव तैयार होना**—व्यायाम द्वारा हाथ-पाँव या शरीरका तंदुरुस्त, पुष्ट होना। **—पाँव धुनना —**हाथ-पैरमें सनसनाहट होना। **—पाँव निकालना**—शरीरको खूब मोटा-ताजा बनाना; अपनी सीमाके बाहर होना; अधिकारसे अधिक चाहना; शरारत, छेड़छाड़ करना। **—पाँव पटकना**—तड़फड़ाना, छटपटाना। **—पाँव पीटना**—व्यर्थ प्रयत्न करना, बेफायदे कोशिश करना। **—पाँव फूलना**—विपत्तिसे घबड़ा जाना। **—पाँव फैलाना**—उन्नति करना; कार्यक्षेत्र बढ़ाना। **—पाँव बचाना —**किसी कष्ट, खतरे आदिसे शरीरको बचाना। **—पाँव मारना**—तैरनेमें हाथ-पैर हिलाना, चलाना; खूब कोशिश करना, कष्ट सहते हुए भी प्रयत्न करना; खूब काम करना; पीड़ा, शोक आदिसे तड़फड़ाना, छटपटाना। **—पाँव रह जाना**—हाथ-पाँवका काम न करना, हाथ-पाँवका वेकार हो जाना। **—पाँव सँभालना —**हाथ-पाँवको वशमें करना, रोकना। **—पाँव सीधे करना**—सीधा लेटकर हाथ-पाँवको आराम देना। **—पाँव हारना**—निःशक्त होना; निराश होना; साहसहीन होना। **—पाँव हिलाना**—दे० 'हाथ-पाँव मारना'। **—पीले करना**—विवाह करना। **—पैर चलाना, मारना, हिलाना**—जीविकाके लिए कोई काम धंधा करना; उद्देश्यपूर्तिका प्रयत्न करना; पानीमें तैरनेका प्रयत्न करना, जोर लगाना, श्रम करना। **—फेँकना**—जुए आदिके खेलमें अपनी पारीपर कौड़ी, पासा आदि फेंकना। **—फेर देना**—किसी वस्तुको चुरा, उड़ा लेना। **—फेरना**—प्यारसे किसीकी पीठ या सिर सहलाना, लाड़-प्यार करना; उड़ा लेना। **—फैलाना**—याचना करना। **—बँटाना**—सहायता देना, सहयोग करना। **—बंद होना**—दे० 'हाथ तंग होना'। **—बचाना**—आक्रमण रोकना, वार वचाना। **—बढ़ाना**—कोई वस्तु लेने, पकड़ने आदिके लिए हाथ आगे करना, फैलाना; अपने अधिकार, हक, अपनी सीमासे अधिक माँगना, जाना। **—बाँधे खड़ा रहना,—बाँधे रहना**—हाथ जोड़े खड़ा रहना; सेवाभिमुख रहना, खिदमतके लिए हर वक्त तैयार रहना। **(किसीके)—बिकना या बिकाना**—किसीका क्रीत दास होना, विवश हो, किसीके कहनेके अनुसार काम करना। **—बेचना**—मूल्य लेकर किसीको कुछ देना। **—बैठना**—दे० 'हाथ जमना'। **—भरका कलेजा होना**—बहुत खुश होना; खुशीसे दिलका बढ़ जाना। **—भरकी जबान होना**—कटुभाषी होना, गुस्ताख होना; खाद्य पदार्थोंका लालची होना। **—भरना**—हाथ थकना, काम करते-करते हाथकी नाड़ियोंमें रक्त अधिक मात्रामें भर जाना। **—भरा होना**—धनवान्, दौलतमंद होना; हाथमें किसी चीज (मेहँदी आदि)का लगा रहना। **—भेजना**—किसीके द्वारा कोई चीज भेजना। **—मँजना**—दे० 'हाथ जमना'। **—मलना —**पछताना, पश्चात्ताप करना। **—माँजना**—अभ्यास करना। **—मारना**—हाथ साफ करना; हाथपर हाथ मारना, बाजी लगाना; किसी वस्तुको सफाईसे चुरा लेना, गायब करना, हड़पना; प्रायः अच्छा भोजन मिलनेपर खूब खाना; कुशलतापूर्वक किसीपर हथियारका वार करना। **(उलटा)—मारना**—प्रत्याक्रमण करना, वारका जवाव वारसे देना। **—मिलाना**—साक्षात्कार होनेपर अभिवादनके रूपमें आपसमें हाथ मिलाना (शेक हैण्ड) (यह अंग्रेजी प्रथा है); कुश्ती लड़नेके पूर्व लड़नेवालेसे हाथ मिलाना; रोजगारियोंका आपसमें सौदा तै करना, खरीद-फरोख्त करना। **—मींजना,—मीड़ना**—दे० 'हाथ मलना'। **—मुँहपर रख देना**—बोलने न देना। **—में करना**—बलात् या प्रेमपूर्वक किसीको वशमें करना; अधिकार करना। **—में जाना**—किसीके अधिकारमें जाना, किसीके पास पहुँचना। **—में ठीकरा देना**—किसीकी आर्थिक स्थिति खराब कर उसे गरीव, भिखारी बनाना। **—में ठीकरा लेना**—भीख माँगना, बहुत गरीब होना। **—में दिल रखना**—अपने मनको वशमें रखना। **—में पड़ना**—दे० 'हाथ आना'। **—में रखना**—दे० 'हाथमें करना'। **—में लाना**—दे० 'हाथमें करना'। **—में लेना**—किसी कामका जिम्मा अपने ऊपर लेना; पकड़ना। **—में सनीचर आना**—बहुत गरीव हो जाना। **—में हाथ डालना**—हाथ पकड़ना। **—में हाथ देना**—पाणिग्रहण कराना, ब्याह कराना। **—में हाथ होना**—साथ-साथ होना; किसीके संरक्षण, सरपरस्तीमें होना। **—में हुनर होना**—हाथकी कारीगरीमें काबिल होना। **—में होना**—वशमें होना, अधिकारमें होना। **—रँगना**—कोई अकरणीय कार्य कर बदनाम होना; हाथमें मेहँदी लगाना; घूस लेना। **—रखना —**बेवकूफ बनाना। **(किसीके सिरपर)—रखना**—किसीका रक्षक, प्रतिपालक होना। **—रह जाना**—काम करते-करते हाथ थक जाना। **—रोकना**—किसी कामके करनेमें अड़ंगा लगाना, किसी कामके करनेमें बाधा उपस्थित करना; काम करना बंद करना; किसीको मारते-मारते रुकना; किसी कारणवश किसीको मारनेके लिए उद्यत होकर भी न मारना। **—लगना**—अधिकारमें आना, मिलना; किसी चीजका किसीके हाथसे छू जाना, स्पर्श हो जाना;

किसी कामका शुरू, आरंभ होना; गणितके प्रश्नोंमें दहाईकी संख्याका आगे जोड़नेके लिए बचना। **–लगाना**–कोई काम आरंभ करना; किसी चीजको छूना। **–लगाये कुम्हलाना**–अत्यंत कोमल, निहायत नाजुक होना। **–लगे मैला होना**–किसी वस्तुका इतना चमकदार और स्वच्छ होना कि वह छूनेमात्रसे मैलो हो जाय। **–लपकाना**–हाथ बढ़ाना। **–समेटना**–दे॰ 'हाथ खींचना'। **–साधना**–दे॰ 'हाथ आजमाना'; दे॰ 'हाथ माँजना'; दे॰ 'हाथ साफ़ करना'। **(किसीपर)–साफ करना**–किसीको मार डालना; हड़पना; दे॰ 'हाथ मारना'। **–सिरपर रखकर रोना**–बहुत पछताना; परेशान होना। **–सिरपर रखना**–सिरकी कसम खाना। **–से काम निकलना**–किसीके जरिये कोई काम होना; किसी कामका अनुभव होना। **–से काम निकालना**–किसीसे कोई काम कराना; किसीको किसी कामका अनुभव कराना। **–से खोना**–मिलती हुई वस्तु न लेना; किसी चीजका हाथसे निकल जाना। **–से जाना,–से निकलना**–हाथसे छूट, गिर जाना; किसीके काबू, वशके बाहर होना; अधिकारमें न रहना। **–से दिल जाना,–से दिल फिसलना**–किसीपर मुग्ध, आशिक होना। **–से रख देना**–हाथपर ली हुई कोई वस्तु जमीनपर रख देना। **–हिलाते आना**–खाली हाथों आना, बिना पैसा-कौड़ी लिये आना। **–हिलाये जाना**–बराबर खाते जाना। **–होना**–वश, अख्तियार होना। **–(थों) उचकना**–मनुष्य या पशुका बहुत उछलना। **–उछलना**–खूब तड़पना; खूब कूदना। **–कलेजा उछलना**–अत्यंत उत्साहित होना; अत्यंत प्रसन्न होना। **–दिल बढ़ाना**–बहुत हौसला, साहस बढ़ाना। **–पलना**–दे॰ 'हाथ बिकना'। **–में रखना**–बड़े प्यारसे पालना, रखना। **(दोनों)–समेटना**–खूब धन एकत्र करना। **–हाथ**–एक हाथसे दूसरे हाथमें, तुरत, शीघ्र। **–हाथ उठाकर ले जाना**–ऊपर ही ऊपर ले जाना। **–हाथ उड़ जाना,–बिक जाना**–तुरत, दम मारते भरमें बिकना। **–हाथ लेना**–मनसे स्वागत करना, सम्मानपूर्वक आवभगत करना।

हाथा–पु॰ हथियार आदिका दस्ता, मुठिया; खेत सींचनेका एक औजार, हत्था; दीवारपर पंजेसे डाली हुई ऐपनकी छाप।

हाथाछाँटी–स्त्री॰ लेन-देन आदिमें धूर्तता करना।

हाथाजोड़ी–स्त्री॰ हाथके मिले हुए पंजोंके आकारकी निसर्गतः बनी हुई सरकंडेकी जड़; औषधके काममें आनेवाला एक पौधा।

हाथापाई, हाथाबाँही–स्त्री॰ ऐसी सामान्य लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक दूसरेको हाथ-पैरके बलसे मारते, पटकते हैं, उठा-पटक।

हाथी–पु॰ हस्ती, एक सूँड़दार चौपाया जो बहुत बड़ा होता है और पालतू बनाकर सवारीके काममें भी लाया जाता है (यह बहुत बुद्धिमान् और स्वामिभक्त होता है); शतरंजका एक मोहरा। * स्त्री हाथका सहारा। **–ख़ाना**–पु॰ हस्तिशाला, फीलखाना। **–चक**–पु॰ औषधके काम आनेवाला एक पौधा। **–दाँत**–पु॰ हाथीके मुंहके बाहर निकले हुए गोल और लंबे दाँत जिनसे आभूषण, सजावटके सामान आदि बनाये जाते हैं। **–नाल**–स्त्री॰ दे॰ 'गजनाल'। **–पाँव**–पु॰ फीलपाँव नामक रोग। **–पीच**–पु॰ दवाके काम आनेवाला एक पौधा। **–बच**–स्त्री॰ तरकारीके काम आनेवाला एक पौधा। **–वान**–पु॰ महावत। **मु॰ –पर चढ़ना**–बहुत बड़ा सम्मान प्राप्त करना; बहुत धनी होना। **–पर चढ़ाना**–बहुत सम्मान देना, करना। **–बाँधना**–बहुत संपत्तिशाली होना, क्योंकि हाथी जैसे बहुमूल्य पशुको बहुत बड़े धनी व्यक्ति ही अपने पास रख सकते हैं। **–सा होना**–बहुत मोटा होना।

हादसा–पु॰ दे॰ 'हादिसा'।

हादिम–वि॰ (अ॰) नष्टकर्ता, ध्वंसकारी।

हादिस–वि॰ (अ॰) नया; मिटनेवाला।

हादिसा–पु॰ (अ॰) दुर्घटना, विपद्।

हादी–पु॰ (अ॰) ऊँटवाला। वि॰ नेता, पथ-प्रदर्शक।

हान–पु॰ (सं॰) परित्याग; नुकसान; विफलता; बच निकलना; शक्ति; अभाव; विराम। * स्त्री॰ हानि।

हानव्य–वि॰ (सं॰) जो जबड़ेमें हो (दाँत)।

हानि–स्त्री॰ (सं॰) परित्याग; नुकसान; क्षति; विफलता; अनस्तित्व, लोप; ह्रास; उपेक्षा; क्षय; कमी; त्रुटि; बरबादी। **–कर,–कारक,–कारी(रिन्),–कृत्**–वि॰ हानि पहुँचानेवाला, अपकारी। **मु॰ –उठाना**–घाटा सहना, नुकसान बर्दाश्त करना।

हानीय–वि॰ (सं॰) दे॰ 'हातव्य'।

हानु–पु॰ (सं॰) दाँत।

हापन–पु॰ (सं॰) परित्याग करनेके लिए बाध्य करना; हटाना; ह्रास।

हापुत्रिका, हापुत्री–स्त्री॰ (सं॰) खंजनका एक भेद।

हाफिका–स्त्री॰ (सं॰) जृंभा, जम्हाई।

हाफ़िज़–वि॰ (अ॰) हिफाजत करनेवाला, रक्षक (खुदाहाफ़िज़–ईश्वर रक्षक है)। पु॰ वह आदमी जिसे कुरान कंठ हो।

हाफ़िज़ा–पु॰ (अ॰) याद रखनेकी शक्ति, धारणाशक्ति।

हाफ़िद–वि॰ (अ॰) मित्र; सेवक; पोता; नाती।

हाबी–स्त्री॰ (अ॰) कब्रकी मिट्टी। स्त्री॰ (अं॰) विशिष्ट शौक।

हाबुस–पु॰ (सं॰) एक नमकीन व्यंजन जो गेहूँ जौकी कच्ची बालोंको भूनकर बनाया जाता है।

हाबूड़ा–पु॰ लूटमार, चोरी आदि करनेवाली एक अशिक्षित असभ्य जाति।

हामिद–वि॰ (अ॰) तारीफ, ईश्वरकी स्तुति, भगवान्‌का गुणगान करनेवाला। पु॰ सूखी घास, पुराना कपड़ा।

हामिल–वि॰ (अ॰) बोझ उठानेवाला; ले जानेवाला, वाहक। **–(ले) मत्‌न**–वि॰ सटीक मूल पुस्तक। **–वही**–पु॰ ईश दूत; पैगंबर।

हामिला–स्त्री॰ (अ॰) गर्भवती स्त्री।

हामी–स्त्री॰ स्वीकृति। वि॰ (अ॰) हिमायत करनेवाला, पृष्ठपोषक; सहायक। **मु॰ –भरना**–किसी कामको करनेकी स्वीकृति देना, स्वीकार करना।

हाय–अ॰ मानसिक और शारीरिक पीड़ा होनेपर मुखसे निकलनेवाला शब्द। स्त्री॰ व्यथा, कष्ट; तकलीफ; कष्टकी आवाज। **–हाय**–अ॰ दे॰ 'हाय'। स्त्री॰ दे॰ 'हाय'; व्यस्तता, परेशानी, घबड़ाहट। (**मु॰ –॰करना**–परेशान होना, व्यस्त रहना। **–॰पड़ना**–घबड़ाहटकी स्थितिमें होना, घबड़ाना)। **मु॰ –करके रह जाना**–विवश होकर शारीरिक या मानसिक पीड़ा सह लेना। **–पड़ना**–कष्ट देनेवालेको किसीको दिये हुए कष्टका बुरा परिणाम मिलना। **–मारना**–शोकादिसे हाय-हाय करना। **–होना**–किसीके सुख, वैभव आदिको देखकर पीड़ा होना, डाह होना।

हायन–पु॰ (सं॰) संवत्सर, वर्ष; अग्निशिखा; धान्यविशेष, एक प्रकारका लाल चावल; परित्याग; गुजर जाना।

हायनक–पु॰ (सं॰) एक तरहका लाल चावल।

हायल–वि॰ (अ॰) बीचमें आनेवाला, रुकावट डालनेवाला, बाधक; * चोटैल, घायल।

हार–स्त्री॰ जीतका उलटा, पराजय; असफलता; थकावट। **–जीत**–स्त्री॰ जय-पराजय; पु॰ † जंगल (बुंदेल॰)। **मु॰ –खाना**–पराजित होना, हार जाना। **–देना**–पराजित करना।

हार–पु॰ (फा॰) माला। वि॰ गिरा हुआ, नष्ट, ध्वस्त। (अ॰) वि॰ गर्म, उष्ण; उष्ण स्वभाव या ओषधि; उष्णवीर्य।

हार–वि॰ (सं॰) ले जानेवाला; हरण करनेवाला; चुरानेवाला; (कर) बैठाने, लगाने, उगाहनेवाला; मोहक; हर (शिव)-संबंधी; विष्णु-संबंधी। पु॰ हरण; जब्ती; क्षय; श्रांति; हानि; युद्ध; वाहक, भाजक, हर (ग॰); माला; मुक्तामाला; गुरुमात्रा (छंद); वियोग। **–गुटिका**–स्त्री॰ मालाका मोती या दाना। **–फल,–फलक**–पु॰ पाँच लड़ियोंकी माला। **–बंध**–पु॰ वह चित्र-काव्य जो हारके रूपमें रखा जाय। **–भूरा**–स्त्री॰ अंगूर। **–भूषिक**–पु॰ एक जाति। **–मुक्ता**–स्त्री॰ मालाके मोती। **–यष्टि**–स्त्री॰ मालाकी लड़ी। **–लता**–स्त्री॰ दे॰ 'हारयष्टि'। **–सिंगार**–पु॰ (हिं॰) एक फूल, परजाता। **–हारा**–स्त्री॰ एक तरहका अंगूर, कपिल द्राक्षा। **–हूण**–पु॰ एक जनपद। **–हूर**–पु॰ मादक पेय, मद्य। **–हूरा,–हूरिका**–स्त्री॰ अंगूर।

हारक–वि॰ (सं॰) हरण, ग्रहण करनेवाला; चुरा या लूट लेने

वाला; आकृष्ट करनेवाला; मोहक, सुंदर। पु० चोर; लुटेरा; ठग; दुष्ट, खल; जुआरी; भाजक (ग०); मोतियोंकी लड़ी; शाखोट वृक्ष; गद्यका एक भेद; एक विज्ञान।

हारणा–स्त्री० (सं०) हरण कराना।

हारद*–वि० हृदय-संबंधी; हार्दिक।

हारना–अ० क्रि० युद्ध, खेल, प्रतियोगिता, मुकदमे आदिमें असफल, पराजित होना; थकना। स० क्रि० खोना; देना; त्यागना। मु० **हारकर रह जाना**–थककर चुप बैठ जाना।

हारमोनियम–पु० (अं०) एक संदूकनुमा अँगरेजी बाजा जिसमें तीनों प्रकारके–मंद्र, मध्य और तार सप्तकवाले स्वर निकालनेके लिए पटरियाँ रहती हैं।

हारल†–पु० दे० 'हारिल'।

हारवार*–स्त्री० हड़वड़ी, उतावली, जल्दवाजी।

हारा–प्र० 'वाला'-सूचक एक प्रत्यय। (स्त्री० 'हारी'।)

हारावलि, हारावली–स्त्री० (सं०) मोतियोंकी लड़ी।

हारि–वि० (सं०) रुचिर, मनोहर। स्त्री० हार, पराजय, जुएमें दाँव हारना; पथिकदल। * स्त्री० थकावट। **–कंठ**–पु० कोकिल। वि० मधुरभाषी; जिसके गलेमें मोतियोंकी माला हो।

हारिक–वि० (सं०) हरिके समान। पु० एक प्राचीन जनपद।

हारिका–स्त्री० (सं०) एक वृत्त।

हारिज–वि० (अ०) हरज करनेवाला; बाधक। वि० उपद्रवकारी।

हारिण–वि० (सं०) हरिण-संबंधी। पु० हरिणमांस।

हारिणाश्वा–स्त्री० (सं०) एक मूर्च्छना (संगीत)।

हारिणिक–पु० (सं०) हरिणको मार डालनेवाला, हरिणघाती, व्याध।

हारित–वि० (सं०) हरण कराया हुआ; लाया हुआ; छीना हुआ; नष्ट किया हुआ; वंचित; मुग्ध; परास्त; समर्पित। पु० हरा रंग; साधारण हवा (न बहुत तेज, न बहुत मंद); एक तरहका कबूतर; विश्वामित्रका एक पुत्र; एक वृत्त।

हारितक–पु० (सं०) हरी तरकारी, शाक।

हारिद्र–वि० (सं०) हलदीसे रँगा हुआ, पीला। पु० पीला रंग; कदंब वृक्ष; एक वानस्पतिक विष; ज्वरका एक प्रकार। **–मेह**–पु० दे० 'हरिद्रामेह'।

हारिल–पु० एक तरहका पक्षी। मु० **–की लकड़ी**–दृढ़ आधार।

हारी–स्त्री० (सं०) मोती; बदनाम लड़की (विवाहके अयोग्य)।

हारी(रिन्)–वि० (सं०) हरण करनेवाला, अपहारक; वहन करनेवाला, वाहक; चोरी करने, लूट लेनेवाला; नाश करनेवाला; अस्त-व्यस्त करनेवाला, गड़बड़ करनेवाला; ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला; इकट्ठा करने, उगाहनेवाला; मोहक, मनोहर; आनंदकारी, प्रसन्न करनेवाला; किसीसे बढ़ जानेवाला; पछाड़नेवाला; मोतियोंका हार धारण करनेवाला।

हारीत–पु० (सं०) चोर; शठ; धूर्त; चोरी; ठगी; एक तरहका कबूतर; एक जनपद; एक स्मृतिकार ऋषि। **–बंध**–पु० एक तरहका वृत्त।

हारीतक–पु० (सं०) एक तरहका कबूतर।

हारुक–वि० (सं०) हरण करनेवाला; ग्रहण करनेवाला।

हारून–पु० (अ०) दूत, राजदूत; संरक्षक; नेता।

हारौल–पु० दे० 'हरावल'।

हार्द–वि० (सं०) हृदय-संबंधी। पु० प्रेम; दया; अभिप्राय, प्रयोजन।

हार्दिक–वि० (सं०) हृदय-संबंधी; आंतरिक, दिली।

हार्दिक्य–पु० (सं०) मैत्री, सौहार्द।

हार्दी(दिन्)–वि० (सं०) स्नेहयुक्त, सहृदय। पु० वह जो बहुत प्रिय हो।

हार्मोन–पु० (अं० हार्मोन) विशेष कार्बनिक यौगिक जो पौधों तथा प्राणियों, दोनोंमें पाये जाते हैं। पौधोंमें उनकी बाढ़, जड़ोंके कार्य तथा अन्य जीवन क्रियाओंका नियमन हार्मोन द्वारा होता है। प्राणियोंमें शरीरके विभिन्न अंगोंके कार्यसंचालनमें हार्मोन महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

हार्य–वि० (सं०) हरणयोग्य; ग्रहण करने योग्य, ग्रहणीय; वहन करने योग्य; हटाये जाने योग्य; विचलित करने योग्य; प्रभावित करने योग्य; अभिनय करने योग्य, अभिनेय; जो विभाजित किया जानेवाला हो; सुंदर, मोहक। पु० साँप; विभीतक वृक्ष; भाज्य।

हार्या–स्त्री० (सं०) एक तरहका चंदन।

हार्रा–वि० (अ०) गरम; गरमी करनेवाला; कृपिभूमि; बोये हुए खेत।

हाल–पु० (सं०) हल; बलराम; शालिवाहन नरेश; एक तरहका पक्षी। **–भृत्**–पु० वलराम।

हाल–स्त्री० लकड़ीके पहियेपर चढ़ाया जानेवाला लोहेका पट्टा; हिलना, कंप; झोंका, झटका। **–गोला**–पु० गेंद। **–डोल**–पु० हिलना, डुलना; हलचल।

हाल–पु० (फा०) सफेद इलायची; सुख, चैन; नृत्य; चौगानकी गेंद। पु० (अ०) वर्तमान काल; दशा, अवस्था; वृत्त, दशाका वर्णन; भक्तिभावभरी, ईश्वर प्रेमपरक कविता; गीत सुननेसे सहृदयको होनेवाली आत्मविस्मृति या आनंदविह्वलता। * अ० हालमें; अभी; तुरत। **–दारी**–स्त्री० एक तरहका कर जो पहले बंगालमें व्याहके अवसरपर देना होता था। मु० **–आना**–ईश्वरप्रेमपरक रचना या गीत सुनकर सुधबुध खो देना, आनंदविह्वल हो जाना। **–का**–थोड़े दिनोंका, कुछ ही दिन पहलेका। **–की महफ़िल**–वह जलसा जिसमें हाल लानेवाली चीजें गायी जायँ। **–ग़ैर होना**–दशा बिगड़ना। **–तबाह होना**–बुरा हाल होना। **–में**–थोड़े दिन पहले। **–लाना**–आत्मविस्मृति, आनंदविह्वलता उत्पन्न करना।

हॉल–पु० (अं०) बहुत बड़ा कमरा।

हालक–पु० (सं०) पीतहरित–पीलापन लिये भूरे रंगका–घोड़ा।

हालत–स्त्री० (अ०) दशा, अवस्था; समाचार; वर्तमान आर्थिक दशा, मौजूदा हैसियत। मु० **–ग़ैर होना,–तबाह होना**–दे० 'हाल ग़ैर होना', 'हाल तबाह होना'। **–पतली होना**–दयनीय अवस्था हो जाना।

हालना*–अ० क्रि० हिलना-डोलना; काँपना; झूमना। पु० एक जातीय उपाधि।

हालरा–पु० बच्चोंको गोदमें लेकर हिलाना; झटका, झोंका; पानीका झटका, लहर।

हालहल, हालहाल–पु० (सं०) दे० 'हलाहल'।

हालहली–स्त्री० (सं०) सुरा, मदिरा।

हालहूल–स्त्री० शोर-गुल, उपद्रव; उलटफेर, हलचल।

हालाँकि–अ० यद्यपि, गोकि।

हाला–स्त्री० (सं०) मद्य, शराब। (हिं०) घेरा, मंडल; गड्ढा।

हालाडोला–पु० दे० 'हालडोल'।

हालात–पु० (फा०) 'हाल'का बहु०; दशाओंकी समष्टि; परिस्थिति; वृत्त, समाचार।

हालाह–पु० (सं०) दे० 'हलाह'।

हालाहल–पु० (सं०) एक विषैला पौधा; इसकी जड़से बना हुआ घातक विष; समुद्रमंथनसे प्राप्त विष; एक तरहकी छिपकली; एक तरहका मकड़ा।

हालाहला–स्त्री० (सं०) क्षुद्र मूषिका, चुहिया।

हालाहली–स्त्री० (सं०) मदिरा।

हालाहाली†–स्त्री० शीघ्रता, जल्दी। अ० शीघ्रतामें, जल्दीमें।

हालिक–वि० (सं०) हल-संबंधी। पु० हलवाहा; कृषक, किसान; हल खींचनेवाला (जैसे बैल); शस्त्रके रूपमें हल लेकर लड़नेवाला व्यक्ति; एक छंदका नाम; कसाई, बूचड़। (अ०) वि० प्राणघातक।

हालिनी–स्त्री० (सं०) एक प्रकारकी बड़ी छिपकली जो घरोंमें रहती है।

हालिम–पु० चंसुर नामक पौधा जिसका बीज दवाके काम आता है।

हाली–स्त्री० (सं०) छोटी साली। वि० (अ०) वर्तमान कालका; सामयिक; आभूषित। पु० चलनसार सिक्का। † अ० अभी, तत्काल। **–मवाली**–पु० संगी, सुहबती।

हालु–पु० (सं०) दाँत ।

हालूक–स्त्री० अच्छी ऊनके लिए प्रसिद्ध एक तिब्बती भेड़ ।

हालों*–पु० चंसुर ।

हॉल्ट–पु० (अं०) चलते समय सेना आदिके नायकका आदेश पाकर अथवा किसी कारणसे रुक जाना, ठहराव ।

हाव–पु० (सं०) आह्वान, पुकार; स्त्रियोंके हृदयमें शृंगार, प्रेमका भाव उदित होनेपर उनके द्वारा की गयी स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुषोंको आकृष्ट करती हैं । **–भाव**–पु० नाज-नखरा, चोचला ।

हावक–पु० (सं०) आह्वान करने, पुकारनेवाला व्यक्ति; दुलहिनको बुलाने, पुकारनेवाला आदमी (जो दूल्हेका अनुचर होता है); यज्ञ करानेवाला ।

हावका–पु० किसीकी तरक्की देखकर ठण्डी साँस भरना; किसी वस्तुकी तीव्र इच्छा ।

हावन–पु० (फा०) कूटनेका वरतन, खल । **–दस्ता**–पु० खल-बट्टा ।

हावनीय–पु० (सं०) हवन कराये जाने योग्य ।

हावर†–पु० एक तरहका पेड़ ।

हावला-बावला–वि० पागल, विक्षिप्त ।

हावहाव–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्त करनेकी लालचभरी आकुलता, हाही, हायहाय ।

हावी–वि० (अ०) घेरनेवाला; दबा रखनेवाला ।

हावी(विन्)–वि० (सं०) हवि देनेवाला, हवन करनेवाला ।

हाशिया–पु० (अ०) गोट-किनारा; कोर; पन्ने या पृष्ठके चारों ओरका (प्रायः सादा) किनारा; शाली रूमाल, कालीन आदिके हाशियेपर बने हुए वेल-बूटे; हाशियेपर लिखित टीका, फुटनोट; टीकाकी टीका । **–आराई**–स्त्री० हाशिया चढ़ाना । **–नशीन**–पु० आसपास बैठनेवाले, मुसाहब । **मु० –चढ़ाना**–गोट टाँकना; टीका लिखना; अपनी ओरसे कुछ जोड़ना, बढ़ाना, नमक-मिर्च लगाना । **–(ये) का गवाह**–वह गवाह जो किसी दस्तावेजके हाशियेपर अपना नाम लिखे या सही बनाये ।

हास–पु० (सं०) हँसनेकी क्रिया, हँसी; प्रसन्नता, खुशी; हास्य रसका स्थायी भाव (सा०); उपहास, मजाक, हँसी-दिल्लगी; खिलना, विकास; चौंध पैदा करनेवाली सफेदी; घमंड । **–कर**–वि० हँसी उत्पन्न करनेवाला । **–गैस**–स्त्री० (लाफ़िंग गैस) नाइट्रस ऑक्साइड N. O गैस । इसका स्वाद मीठा होता है तथा इसे सूँघनेसे चेतना लुप्त हो जाती है । वायु मिश्रित नाइट्रस ऑक्साइडमें श्वास लेनेपर एक प्रकारकी उत्तेजना होती है और मनुष्य अनायास हँसने लगता है । **–शील**–वि० हँसोड़ ।

हासक–पु० (सं०) मजाकिया, विदूषक; हँसी ।

हासन–वि० (सं०) हँसी उत्पन्न करनेवाला, हँसनेवाला । पु० हँसाना ।

हासनिक–पु० (सं०) सहक्रीडक, साथ खेलनेवाला ।

हासवती–स्त्री० (सं०) तांत्रिकोंकी एक देवी ।

हासा(सस्)–पु० (सं०) चंद्रमा ।

हासास्पद–पु० (सं०) हँसीका विषय ।

हासिका–स्त्री० (सं०) हास, हँसी; मजाक, ठट्ठा ।

हासिद–वि० (अ०) हसद (डाह) करनेवाला, जलनेवाला ।

हासिल–वि० (अ०) जो कुछ बचा हो; जो कुछ हाथ लगा हो, लब्ध । पु० वस्तुका अवशेष; लाभ; उपज; भूमिकर; नतीजा, निचोड़ । **–कलाम**–पु० वातका नतीजा, खुलासा, निचोड़ । **–जमा**–पु० योगफल, जोड़ । **–ज़रब,–ज़र्ब**–पु० गुणनफल । **–तक़सीम**–पु० भाग-फल, लब्धि । **–तफ़रीक़**–पु० घटानेसे वचनेवाली संख्या, शेषफल । **–मसदर**–पु० क्रियासे वननेवाली भाववाचक संज्ञा । **मु० –आना**–आगे जोड़े या लिखे जानेके लिए वच रहना, हाथ लगना (ग्यारह दुना वाईसके दो, हाथ लगे दो) । **–करना**–पाना; कमाना; पैदा करना । **–होना**–लाभ होना; मिलना, हाथ लगना ।

हासी(सिन्)–वि० (सं०) हँसनेवाला; उपहास करनेवाला; चौंध पैदा करनेवाली सफेदीवाला ।

हास्त–वि० (सं०) हाथसे वना हुआ । **–मुकुल**–पु० अंजलि ।

हास्तिक–वि० (सं०) हाथी-संबंधी । पु० महावत, पीलवान; हाथीपर चढ़नेवाला व्यक्ति; हाथियोंका झुंड, हस्तिसमूह ।

हास्तिदंत–वि० (सं०) हाथीदाँतका वना हुआ ।

हास्तिन–पु० (सं०) हस्तिनापुर । वि० हाथी-संवंधी; हस्तिपरिमाण गहरा (जैसे पानी) । **–पुर**–पु० हस्तिनापुर ।

हास्य–वि० (सं०) हँसने योग्य; उपहास्य; हास्यजनक । पु० हँसी; आनंद, प्रसन्नता; मजाक, दिल्लगी; एक रस (सा०) । **–कथा**–स्त्री० हँसी उत्पन्न करनेवाली वार्ता । **–कर,–कार,–कृत,–जनक**–वि० हास्योत्पादक, हँसी उत्पन्न करनेवाला । **–कार्य**–पु० उपहास्य कार्य । **–कौतुक**–पु० हँसी-खेल, हँसी-तमाशा । **–पदवी**–स्त्री० दिल्लगी, मजाक । **–रस**–पु० एक काव्यरस जिसका स्थायी भाव हास है । **–रसात्मक**–वि० जिसमें हास्यरस हो (काव्य) । **–रसिक**–वि० विनोदप्रिय; हास्यरसका प्रेमी । **–हीन**–वि० जो हँसता न हो, विकासरहित ।

हास्यास्पद–पु० (सं०) हास्यका आलंवन, हँसीका विषय, वह जिसे देखकर हँसी उत्पन्न हो; उपहासका विषय ।

हास्योत्पादक–वि० (सं०) हास्य उत्पन्न करनेवाला ।

हा हंत–अ० (सं०) शोकसूचक उद्गार ।

हाहल, हाहाल–पु० (सं०) घातक विष ।

हाहव–पु० (सं०) एक नरक ।

हाहा–पु० (सं०) एक गंधर्व; एक बहुत बड़ी संख्या । अ० आश्चर्य, शोक आदिका सूचक एक शव्द; दे० ‘हाहा’ (हिं०) । **–कार**–पु० रुदनकी उच्च ध्वनि; युद्धका कोलाहल; भय, दुःख या पीड़ासे पीड़ित होकर जोरसे रोना चिल्लाना । **–रव**–पु० ‘हाहा’ करके चिल्लानेकी आवाज । **–हूत***–पु० भयजन्य कोलाहल ।

हाहा–पु० खुलकर हँसनेकी आवाज; अनुनय-विनय, गिड़गिड़ानेकी आवाज । **–ठीठी**–स्त्री० हँसी-मजाक, हास-परिहास, हँसी-ठट्ठा । **–हीही**–दे० ‘हाहा-ठीठी’ (**मु० –०करना**–हँसी-ठट्ठा करना । **–०मचना,–०होना**–हँसी-मजाक होना)। **–हूहू**–पु० हँसी-ठट्ठा । **मु० –करना,–खाना**–गिड़गिड़ाना । **–मचना,–होना**–खूब हँसी होना ।

हाहा(हस्)–पु० (सं०) एक गंधर्व ।

हाही–स्त्री० किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए व्यग्रता । **मु० –पड़ना** किसी वस्तुकी प्राप्तिके लिए अत्यंत व्यग्र होना ।

हाहू*–पु० ऊधम, हुड़दंग, शोरगुल ।

हाहूबेर–पु० जंगली वेर, झड़वेरी ।

हिँकरना–अ० क्रि० घोड़ेका हिनहिनाना, हींसना ।

हिंकार–पु० (सं०) ‘हिं’ ध्वनि करनेकी क्रिया; सामगानका एक अंग; रँभानेका शव्द; वाघके वोलनेका शव्द; वाघ ।

हिंक्रिया–स्त्री० (सं०) रँभाने आदिका शव्द ।

हिंग–स्त्री० हींग । पु० (सं०) एक प्राचीन जनपद ।

हिंगनबेर–पु० इँगुदी, हिंगोट ।

हिंगलाची–स्त्री० (सं०) एक यक्षिणी (वौ०) ।

हिंगलाज–स्त्री० दे० ‘हिंगुलाजा’ ।

हिंगु–पु० (सं०) एक वृक्ष जो मुलतान तथा खुरासानमें विशेष रूपसे होता है; इस वृक्षके मूलका निर्यास, हींग; वंशपत्नी । **–नाड़िका**–स्त्री० नाड़ीहिंगु । **–निर्यास**–पु० निंव वृक्ष; हिंगु वृक्षका निर्यास, गोंद । **–पत्र**–पु० इंगुदी वृक्ष; हिंगु वृक्षका पत्र । **–पत्री**–स्त्री० दे० ‘हिंगुपर्णी’ । **–पर्णी**–स्त्री० वंशपत्नी । **–शिराटिका,–शिवाटिका**–स्त्री० वंशपत्नी ।

हिंगुक–पु० (सं०) हिंगु वृक्ष ।

हिंगुदी, हिंगुली–स्त्री० (सं०) वार्ताकी, वैगन ।

हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुलु–पु० (सं०) इंगुर ।

हिंगुला–स्त्री० (सं०) प्रदेशविशेष जो सिंध तथा बलूचिस्तानके मध्यमें है । **–जा**–स्त्री० देवीकी एक मूर्ति जो हिंगुला प्रदेशमें है ।

हिंगुलिका–स्त्री० (सं०) कंटकारी ।

हिंगूज्ज्वला–स्त्री० (सं०) एक गंधद्रव्य ।

हिंगूल–पु० (सं०) मधुमूल; हिज्जल ।

हिंगोट–पु० हिंगुपत्र, इंगुदी ।

हिंग्वाष्टक चूर्ण–पु० (सं०) एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण जिसमें हींगके अतिरिक्त ७ अन्य ओषधियाँ मिलायी जाती हैं ।

हिँछना†–अ० क्रि० इच्छा करना, कामना करना, चाहना ।

हिँछा*–स्त्री० इच्छा ।

हिंजीर–पु० (सं०) हाथीका पैर बाँधनेकी रस्सी या सीकड़; हस्तिपादबंध ।

हिंडक–पु० दे० 'नाड़ीतरंग' । वि० भ्रमणशील । **–पोत**–पु० (क्रूजर) द्रुतगामी युद्धपोत, प्रधावी पोत, गश्ती जहाज ।

हिंडन–पु० (सं०) भ्रमण; संभोग; लेखन ।

हिंडिक–पु० (सं०) लग्नाचार्य, ज्योतिषी ।

हिंडिर–पु० (सं०) दे० 'हिंडीर' ।

हिंडी–स्त्री० (सं०) दुर्गा । **–कांत,–प्रियतम**–पु० शिव ।

हिंडीर–पु० (सं०) समुद्रफेन; पुरुष, नर; वार्ताकु; रुचक; दाडिम ।

हिंडुक–पु० (सं०) शिव ।

हिँडोरना†–पु० दे० 'हिंडोला'–'हिँडोरनो माई झूलत गोकुलचंद'–सूर । स० क्रि० दे० 'हिँडोलना' ।

हिँडोरा*–पु० दे० 'हिँडोला' ।

हिँडोरी*–स्त्री० छोटा हिंडोला ।

हिँडोल–पु० हिंडोला; एक राग ।

हिँडोलना†–पु० 'हिँडोला' । स० क्रि० आलोडित करना, घँघोलना ।

हिँडोला–पु० झूला; पालना; नीचे ऊपर चक्कर खानेवाला एक तरहका झूला, चरखी ।

हिंडोली–स्त्री० एक रागिनी ।

हिंताल–पु० (सं०) छोटी जातिका एक जंगली खजूर ।

हिंद–पु० (फा०) भारतवर्ष, हिंदुस्तान (यह नाम 'सिंधु'का फारसी और परिवर्तित रूप है) ।

हिंदवी–स्त्री० हिंदुस्तानकी भाषा (उर्दू-फारसी और कुछ पुराने हिंदी-लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिंदीका पुराना नाम) ।

हिंदी–वि० (फा०) हिंद, हिंदुस्तानसे संबद्ध । पु० हिंदनिवासी, भारतवर्षमें रहनेवाला । स्त्री० भारतवर्षकी राष्ट्रभाषा (जो उत्तर प्रदेश, बिहार आदिमें मुख्य रूपसे बोली जाती है) । **–दां**–वि० हिंदी भाषा जाननेवाला । **–रेवंद**–पु० एक पौधा जो दवाके काम आता है । **–मु० –की चिंदी निकालना**–कुतर्क; व्यर्थके दोष निकालना ।

हिंदुत्व–पु० हिंदू होनेका भाव या गुण; हिंदुओंके आचार-विचार; हिंदू-धर्मका भाव ।

हिंदुस्तान–पु० (फा०) हिंदुओंका निवास-स्थान, भारतवर्ष; भारतवर्षका उत्तरी भाग जो गंगा तथा यमुनाके द्वाबेके मध्यमें पड़ता है, जिसे प्राचीन समयमें अंतर्वेद या मध्य देश कहते थे ।

हिंदुस्तानी–वि० हिंदुस्तान-संबंधी । पु० हिंदुस्तानमें रहनेवाला व्यक्ति, भारतवासी । स्त्री० हिंदुस्तानकी भाषा; समाज, परिवार आदिमें नित्यप्रतिके व्यवहारमें आनेवाली खड़ी बोलीका ऐसा स्वाभाविक रूप जिसमें अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और अँगरेजीके भी प्रचलित तत्सम तथा तद्भव शब्द हों; खड़ी बोली हिंदीका वह बनावटी रूप जिसमें अरबी, फारसी, उर्दूके तत्सम शब्दोंका बाहुल्य तथा संस्कृत, हिंदी और अँगरेजी शब्दोंकी विरलता हो । **–संगीत**–पु० उत्तर भारतमें प्रचलित संगीत; कर्णाटकी संगीतसे भिन्न संगीत ।

हिंदुस्थान–पु० दे० 'हिंदुस्तान' ।

हिंदू–पु० (फा०) प्रत्यक्षतः या परोक्षतः वेदोक्त विचारोंके आधारपर बने आचार-व्यवहार, रीति-नीति, समाज-व्यवस्था, धर्म आदिमें किसी न किसी रूपमें विश्वास करने और उनपर चलनेवाला भारतीय । **–पन**–पु० दे० 'हिंदुत्व' ।

हिंदूकुश–पु० (फा०) अफगानिस्तानके उत्तरमें स्थित एक पर्वत-श्रेणी जो हिमालयसे मिली हुई है ।

हिंदोरना–स० क्रि० घँघोलना ।

हिंदोल–पु० (सं०) झूला, हिंडोला; श्रावणके शुक्ल पक्षमें होनेवाला दोलोत्सव; एक राग; भगवद्यात्रा ।

हिंदोलक–पु० (सं०) झूला; पालना ।

हिंदोला–स्त्री० (सं०) दे० 'हिंदोलक' ।

हिंदोस्तान–पु० दे० 'हिंदुस्तान' ।

हिंदोस्तानी–वि०, पु०, स्त्री० दे० 'हिंदुस्तानी' ।

हिँयाँ*–अ० यहाँ ।

हिँव†–पु० हिम ।

हिँवार†–पु० हिम ।

हिंस*–स्त्री० घोड़ेके हिनहिनानेकी आवाज, हिनहिनाहट, हींस ।

हिंसक–वि० (सं०) हिंसा करनेवाला; घातक; बुराई करनेवाला, हानिकर; शत्रुता करनेवाला । पु० हिंस्र पशु, खूँखार जानवर; शत्रु; तांत्रिक ब्राह्मण ।

हिंसन–पु० (सं०) मारना; चोट पहुँचाना; सताना; शत्रु ।

हिंसना*–अ० क्रि० हींसना, हिनहिनाना । स० क्रि० मार डालना; चोट पहुँचाना; सताना; नुकसान पहुँचाना । स्त्री० (सं०) मारने, चोट पहुँचानेकी क्रिया ।

हिंसनीय–वि० (सं०) हिंसा करने योग्य; मार डालने योग्य; वध्य (जैसे पशु) ।

हिंसा–स्त्री० (सं०) घात, मारण, हत्या; नाश; चोट या हानि पहुँचाना; क्षति; बुराई; लूट; चोरी । **–कर्म(न्)**–पु० नुकसान पहुँचानेवाला काम, बुराईका काम; तंत्रप्रयोग द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कार्य । **–प्राणी(णिन्)**–पु० जंगली, खूँखार जानवर । **–प्राय**–वि० हानिकरप्राय । **–रत,–रुचि**–वि० मारपीट, तोडफोड करने या उसमें रुचि लेनेवाला; बुराई करनेमें आनंद माननेवाला । **–विहार**–वि० घूम-फिरकर बुराई करनेमें आनंद माननेवाला ।

हिंसात्मक–वि० (सं०) जिसमें हिंसा हो, हिंसायुक्त; बुराई करनेवाला, हानिकारक । **–आन्दोलन**–पु० ऐसा आन्दोलन जिसमें तोड़फोड़, आगजनी, मारकाट आदि की जाती है ।

हिंसारु–पु० (सं०) हिंस्र पशु; बाघ ।

हिंसालु–वि० (सं०) हिंसा करनेवाला, हिंसक; हिंसात्मक प्रवृत्ति, प्रकृतिवाला । पु० हिंसाशील कुत्ता ।

हिंसालुक–पु० (सं०) हिंसाशील कुत्ता, शिकारी कुत्ता; कटहा कुत्ता ।

हिंसित–वि० (सं०) मारा हुआ; आहत; जिसे हानि या क्षति पहुँचायी गयी हो । पु० क्षति, नुकसान ।

हिंसितव्य–वि० (सं०) हिंसा-योग्य, मार डालने, पीड़ा पहुँचाने, चोट पहुँचाने योग्य ।

हिंसीन–पु० (सं०) जंगली, हिंस्र पशु ।

हिंसीर–वि० (सं०) हानिकारक, बुराई करनेवाला; नाशक । पु० व्याघ्र; खग; बुराई करनेवाला व्यक्ति ।

हिंस्य–वि० (सं०) वध्य; सताये जाने योग्य ।

हिंस्र–वि० (सं०) हानिकारक, बुराई करनेवाला; घातक; निष्ठुर, निर्दय; भयानक; जंगली, खूँखार । पु० दूसरोंके उत्पीड़नमें आनंद माननेवाला व्यक्ति; शिकारी जानवर; शिव; भीमसेन; निष्ठुरता, कठोरता । **–जंतु,–पशु**–पु० खूँखार जानवर । **–यंत्र**–पु० कष्ट या क्षति पहुँचानेवाला आला, फंदा; एक अभिचार-मंत्र ।

हिंस्रक–पु० (सं०) हिंस्र पशु, खूँखार जानवर ।

हिंस्रा–स्त्री० (सं०) अपकार करनेवाली स्त्री; मांसी; जटामासी; एलावली; काकादनी; शिरा; वसा ।

हिंस्रिका–स्त्री० (सं०) शत्रुओं अथवा डाकुओंकी नौका ।

हि*–प्र० एक विभक्ति जो कई कारकों, विशेषकर कर्म और संप्रदानमें प्रयुक्त होती थी । अ० ही ।

हिअ, हिआ*–पु० वक्ष, छाती; हृदय ।

हिआउ, हिआव*–पु० हिम्मत, साहस ।

हिकमत–स्त्री० (अ०) बुद्धिमानी, चतुराई; बुद्धि; चाल, युक्ति; चिकित्साकार्य, हकीमी । **–अमली**–स्त्री० नीति, राजनीति; चतुराई; चाल, जोड़-तोड़ ।

हिकमती–वि० चालाक, जोड़-तोड़ लगानेवाला ।

हिकलाना–अ० क्रि० दे० 'हकलाना' ।

हिकायत–स्त्री० (अ०) कहानी, किस्सा; बात । **–गर**–वि० कहानी कहनेवाला; हाल बतानेवाला ।

हिक़ारत–स्त्री० दे० 'हक़ारत' ।

हिक्कल–पु० बौद्ध भिक्षुओंका दंड ।

हिक्का–स्त्री० (सं०) हिचकी; हिचकीका रोग; अस्पष्ट ध्वनि; उल्लूक । **–श्वासी(सिन्)**–वि० जिसे हिचकीका रोग हो ।

हिक्का–स्त्री० (अ०) खाज, खुजली ।

हिक्किका–स्त्री० (सं०) हिचकी; खर्राटा ।

हिक्की(क्किन्)–वि० (सं०) हिचकी रोगसे पीड़ित ।

हिचक–स्त्री० सफलतामें संदेह, सामर्थ्यहीनता आदिके कारण किसी कामके करनेमें मनका रुकना; आगा-पीछा करना, हिचकिचाहट, झिझक ।

हिचकना–अ० क्रि० कोई काम करनेसे पहले, किसी आशंका, असमर्थता आदिके कारण कुछ रुकना, आगा-पीछा करना; हिचकी लेना ।

हिचकिचाना–अ० क्रि० मनका आगा पीछा करना ।

हिचकिचाहट–स्त्री० दे० 'हिचक' ।

हिचकिची–स्त्री० दे० 'हिचक' ।

हिचकी–स्त्री० दे० 'हिक्का'; अत्यधिक रोनेके बाद एक साथ तीन-चार बार जोर-जोरसे साँस लेनेकी क्रिया । **मु० –बँध जाना,–लगना**–ज्यादा रोनेसे साँस रुकने लगना । **हिचकियाँ लगना**–प्राणांतके समय वायुका मुखसे निकलनेके प्रयत्नके कारण ठहर-ठहरकर हिचकीका आना; मृत्युके निकट होना । **–लेना**–रोते समय साँसका रुक-रुककर निकलना ।

हिचर-मिचर, हिचिर-मिचिर–पु० हिचक; आलस्य, असमर्थता आदिके कारण किसी कामको टालने, न करनेकी प्रवृत्ति, टाल-मटोल ।

हिजड़ा–पु० नपुंसक, खोजा (यूनक) ।

हिजरत–स्त्री० (अ०) संकटमें देशत्याग । हिजरी सनका प्रारंभ ।

हिजरी–पु० (अ०) मुसलमानी संवत् जो मुहम्मदके मक्कासे मदीना पलायन करनेकी तिथि–१५ जुलाई, सन् ६२२–से आरंभ होता है; हिज्रतवाला ।

हिजा–स्त्री० (अ०) निंदा; अपवाद; बुराई; अक्षरोंका मात्राके साथ उच्चारण ।

हिजाज़–पु० (अ०) अरबका एक भाग ।

हिजाब–पु० (अ०) परदा, ओट; लज्जा । **मु० –उठना**–परदा, रोक न रहना; निर्लज्ज हो जाना ।

हिज्ज, हिज्जल–पु० (सं०) वृक्षविशेष ।

हिज्जे–पु० (अ०) किसी शब्दमें आये हुए वर्णों तथा मात्राओंको अलग-अलग कहना, वर्ण-विवृति, अक्षरी; 'स्पेलिंग' । **मु० –करना**–अक्षरोंको जोड़ना; किसी मामलेमें खाहमखाह हुज्जतें निकालना । **–निकालना**–टुकड़े-टुकड़े करना; एतराज करना । **–पकड़ना**–गलती निकालना ।

हिज्र–पु० (अ०) वियोग, विरह, जुदाई । **–नसीब**–वि० जिसके भाग्यमें वियोग ही वियोग हो ।

हिटकना†–स० क्रि० दे० 'हटकना' ।

हिटलर, एडोल्फ़–पु० १८८९-१९४५; जर्मनीका अधिनायक –चांसलर १९३३ से १९४५ तक ।

हिडिंब–पु० (सं०) एक विशालकाय राक्षस जिसे भीमने मारा था । **–जित्,– –द्विट्(ष्),–निसूदन, –भिद्,–रिपु**–पु० भीम ।

हिडिंबा–स्त्री० (सं०) एक राक्षसी जो हिडिंबकी बहन थी (इसने अपनेको सुंदर स्त्रीके रूपमें परिवर्तित कर भीमसे ब्याह किया । उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम घटोत्कच था) । **–पति, –रमण**–पु० भीम; हनुमान् (?) ।

हिडोरा, हिडोला–पु० हिंडोला ।

हित–वि० (सं०) रखा हुआ; गृहीत, उपयुक्त; उचित, अच्छा; लाभदायक, उपयोगी; अनुकूल, स्वास्थ्यकर; सद्भावपूर्ण; प्रेषित; प्रेरित; प्रस्थित, गया हुआ; शुभ, मंगलकारक; निर्दिष्ट । पु० मित्र; संबंधी; भलाई चाहनेवाला; लाभ, भलाई; उपयुक्त वस्तु; कल्याण, मंगल; सद्भाव, प्रेम । अ० (हिं०)···के निमित्त, के लिए । **–कर**–वि० मित्र-सा व्यवहार करनेवाला, हितेच्छु; उपयोगी, लाभप्रद; आरामदेह, स्वास्थ्यवर्धक । **–कर्ता(र्तृ)**–उपकार करनेवाला । पु० उपकारी व्यक्ति । **–काम**–वि० हितेच्छु, मंगलाकांक्षी । **–काम्या**–स्त्री० दूसरेके लिए मंगलकामना । **–कारक,–कारी(रिन्),–कृत**–वि० दे० 'हित-कर' । **–चिंतक**–वि० किसीकी भलाईके लिए सोचने, विचारने, चिंतना करनेवाला । **–चिंतन**–पु० किसीकी भलाई, उपकारकी बात सोचना, किसीकी भलाई चाहना । **–प्रणी**–पु० गुप्तचर । **–प्रेप्सु**–वि० दे० 'हितकाम' । **–बुद्धि**–स्त्री० मैत्रीपूर्ण भावना । वि० सद्भावनावाला । **–मित्र**–पु० उदार मित्र; भाई-बंद । वि० जिसके मित्र उदाराशय हों । **–वचन,–वाक्य**–पु० मैत्रीपूर्ण परामर्श । **–वादी(दिन्)**–वि० भलाईकी बात कहनेवाला; सत्परामर्श देनेवाला । **–हरिवंश**–पु० (सं०) राधावल्लभी सम्प्रदायके संस्थापक एक प्रसिद्ध महात्मा, व्रजभाषाके एक सुकवि (सं० १५५९-१६०९) ।

हितक–पु० (सं०) बच्चा; पशुशावक ।

हितता–स्त्री० (सं०) भलाई ।

हितवना*–अ० क्रि० हित, मित्र जैसा आचरण करना ।

हितवार*–पु० प्रेम, स्नेह–'चुंवत अंग परस्पर मनु जुग चंद करत हितवार'–सूर ।

हिता–स्त्री० (सं०) प्रणाली, नाली; शिराविशेष । **–भंग**–पु० नालीका भंग हो जाना ।

हिताई–स्त्री० संबंध, रिश्ता; संबंधीका घर ।

हिताकांक्षी(क्षिन्)–वि० (सं०) भलाई चाहनेवाला ।

हिताधायी(यिन्)–वि० (सं०) हितकर ।

हिताधिकारी–पु० (बेनीफिशियरी) वह जिसे किसी वस्तु, व्यवस्था आदिसे लाभ हो रहा हो या होनेकी संभावना हो ।

हिताना*–अ० क्रि० मित्र सदृश होना, भलाई करनेवाला होना; प्रेमयुक्त होना, किसीकी ओर प्रेमकी दृष्टि होना; प्रिय लगना, अनुकूल मालूम पड़ना, अच्छा प्रतीत होना –'नवल वधूके संगमें अहितो बात हिताति'–मतिराम ।

हितार्थी(र्थिन्)–वि० (सं०) मंगलाकांक्षी, हितेच्छु ।

हितावह–वि० (सं०) कल्याणकारी ।

हिताहित–पु० (सं०) भलाई-बुराई, मंगल-अमंगल; लाभालाभ ।

हिती–वि० हितैषी, भलाई चाहनेवाला । पु० हितैषी व्यक्ति, मित्र, दोस्त ।

हितु, हितू*–पु० हितेच्छु व्यक्ति; मित्र, सखा, दोस्त; संबंधी ।

हितेच्छा–स्त्री० (सं०) हितकामना; किसीकी भलाईकी इच्छा ।

हितेच्छु–वि० (सं०) भलाई चाहनेवाला, मंगल कामना करनेवाला ।

हितैषणा–स्त्री० (सं०) हितेच्छा ।

हितैषिता–स्त्री० (सं०) हितैषी होनेका भाव, किसीकी हितकामनाकी वृत्ति ।

हितैषी(षिन्)–वि० (सं०) हितेच्छु । पु० मित्र ।

हितोक्ति–स्त्री० (सं०) सत्परामर्श, अच्छी, नेक सलाह ।

हितोपदेश–पु० (सं०) हितकारी उपदेश, सत्परामर्श, नेक सलाह; विष्णुशर्माकृत नीतिशास्त्र-संबंधी एक प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

हित्ती–पु० पश्चिमी एशियाकी एक प्राचीन जाति, हिटाइट; इस जातिकी भाषा ।

हितौना*–अ० क्रि० दे० 'हिताना' ।

हिदायत–स्त्री० (अ०) मार्ग-प्रदर्शन, रहनुमाई; आदेश (इन्सट्रक्शन) । **–कार**–वि० अनुदेशक, निर्देशक, निर्देष्टा । **–नामा**–पु० हिदायतों, आदेशों आदिकी किताब ।

हिद्दत–स्त्री० (अ०) तेजी, तीव्रता; गरमी; क्रोध ।

हिनकाना†–अ० क्रि० (घोड़ेका) हिंनहिनाना ।

हिनती*–स्त्री० हीनता ।

हिनवाना–पु० तरबूज ।

हिनहिनाना–अ० क्रि० (घोड़ेका) हींसना ।

हिनहिनाहट–पु० स्त्री० (घोड़ेके) हींसनेकी आवाज ।

हिना–स्त्री० (अ०) मेहँदी । **–बंदी**–स्त्री० मुसलमानोंमें होनेवाली ब्याहकी एक रस्म । **–का चोर**–हाथमें वह सफेद जगह जहाँ मेहँदी न लगी हो (स्त्रि०) ।

हिनाई–वि० मेहँदीके रंगका । स्त्री० पीलापन लिये हुए सुर्ख रंग;

हीनता; मानहानि। –कागज़–पु० एक तरहका कागज।

हिप्पी–अमेरिकाके समाजत्यक्त ऐसे लोगोंका समूह जो नशीले पदार्थोंके प्रयोग द्वारा आत्मसाक्षात्कार करनेका ढोंग करता है। इनमें अन्य यूरोपीय देशोंके भी अनेक युवक सम्मिलित हैं। ये सभी प्रकारके विधि-निषेधोंको तोड़ना अपना उद्देश्य मानते हैं।

हिफ़ाज़त–स्त्री० (अ०) रक्षा, रखवाली, निगरानी; बचाव। –**ख़ुद इख्तियारी**–स्त्री० आत्मरक्षा।

हिफ़्ज़–पु० (अ०) हिफाजत, रक्षा। वि० कंठस्थ, बरजबान (करना, होना)। –**सेहत**–पु० स्वास्थ्यरक्षा।

हिफ़्ज़ान–पु० (अ०) हिफाज़त, रक्षा; संरक्षण।

हिबुक–पु० (सं०) चौथा लग्न, पाताल।

हिब्बा–पु० दे० 'हब्बा'; दान, नजर। –**नामा**–पु० दानपत्र।

हिमंचल†–पु० दे० 'हिमाचल'।

हिमंत*–पु० दे० 'हेमंत'।

हिम–वि० (सं०) ठंढा, शीतल। पु० वर्फ, पाला; शीत, ठंढक; जाड़ा; हेमंत ऋतु; हिमालय पर्वत; चंदन; चंद्रमा; नवनीत, मक्खन; कपूर; मोती; पद्मकाष्ठ; कमल; रंग, राँगा; रात्रि; एक वर्ष, भूभाग। –**उपल**–पु० ओला, पत्थर। –**ऋतु**–स्त्री० जाड़ेका मौसिम, हेमंत ऋतु। –**कण**–पु० ओसकी बूंदें; बर्फके कण। –**कर**–पु० चंद्रमा; कपूर। वि० ठंढक लानेवाला। –**०तनय**–पु० बुध ग्रह। –**कारी मिश्रण**–पु० (फ्रीज़िंग मिक्शचर) कुछ लवण बर्फके चूरेके साथ मिलाये जानेपर बर्फका ताप घटा देते हैं। अतः इस मिश्रणको हिमकारी मिश्रण कहते हैं। यह कुलफ़ीकी वर्फ आदिको जमानेके काम आता है। –**किरण**–पु० चंद्रमा। –**किरीटिनी**–स्त्री० (सं०) हिमका मुकुट धारण करनेवाली, भारत माता। –**कूट**–पु० शिशिर ऋतु; हिमालय पर्वत; हिमालयकी चोटी। –**खंड**–पु० ओला। –**गर्भ**–वि० वर्फसे भरा हुआ। –**गह्वर**–पु० पत्थरोंके बहनेके कारण बरफीले पहाड़ोंमें बना गहरा गोलाकार गड्ढा। –**गिरि**–पु० हिमालय पर्वत। –० **सुता**–स्त्री० पार्वती। –**गु**–पु० चंद्रमा। –**गृह**,–**गृहक**–पु० वह कमरा जो ठंढक लानेवाली चीजोंके जरिये ठंढा बनाया गया हो; सर्दखाना। –**गौर**–वि० वर्फ जैसा सफेद। –**घ्न**–वि० हिमका निवारण करनेवाला। –**ज**–पु० मैनाक पर्वत। वि० ठंडकसे उत्पन्न; हिमालयमें उत्पन्न। –**जा**–स्त्री० पार्वती, गिरि-सुता; शची; क्षीरिणी वृक्ष, खिरनीका पेड़। –**ज्वर**–जाड़ा-बुखार। –**झंझावात**–पु० बरफीला तूफ़ान (ब्लिजर्ड, स्नो स्टॉर्म)। –**झंटि**,–**झटि**–स्त्री० पाला। –**तैल**–पु० कपूरके योगसे बना हुआ तेल। –**दंश**–पु० दे० 'हिमाघात'। –**दीधिति** –पु० चंद्रमा। –**दुग्धा**–स्त्री० क्षीरिणी, खिरनी। –**दुर्दिन**–पु० पाला, अति ठंढक पड़नेके कारण कष्टदायक दिन या मौसम। –**द्युति**–पु० चंद्रमा। –**द्रुट्(ह्)**–पु० सूर्य। –**द्रुम**–पु० महा- निंब वृक्ष। –**धर**–पु० हिमालय पर्वत। –**धातु**–पु० हिमालय पर्वत। –**धामा(मन्)**–पु० चंद्रमा। –**ध्वस्त**–वि० पालेका मारा हुआ। –**नद**–पु० (ग्लेशियर) ऊँचे पहाड़ोंकी घाटीमें बर्फकी विशाल राशि जो धीरे-धीरे ढालकी ओर खिसकती जाती है। हिमनदके प्रवाहका वेग लगभग एक फुट प्रतिदिन होता है। –**पात**–पु० पालेका पड़ना; ओलेका गिरना। –**पुरुष**–पु० दे० 'हिममानव', येती। –**प्रस्थ**–पु० हिमालय। –**बालुक**,–**वालुक**–पु०,–**बालुका**,–**वालुका**–स्त्री० कर्पूर। –**भानु**–पु० चंद्रमा। –**भूभृत्**–पु० हिमालय पर्वत। –**मय वृष्टि**–स्त्री० (स्लीट) वह वर्षा जिसमें पानीके साथ-साथ ओलों या हिमकी भी वर्षा हो। –**मयूख**–पु० चंद्रमा। –**मानव**–पु० हिमालयकी बरफीली चोटियोंपर प्राप्त बड़े-बड़े पदचिह्नोंवाला एक कल्पित रहस्यमय जंतु, येती (स्नो मैन)। –**युक्त**–पु० एक तरहका कपूर। –**रश्मि**, –**रुचि**–पु० चंद्रमा। –**रेखा**–स्त्री० (स्नोलाइन) पर्वतोंकी ऊँचाईपर मानी गयी वह रेखा जिसके ऊपर बरफ निरंतर जमी रहती है, गर्मीमें भी नहीं पिघलती। –**वारि**–पु० ठंडा पानी। –**वृष्टि**–स्त्री० पाला पड़ना; ओले गिरना। –**शर्करा**–स्त्री० यवनालसे निकली चीनी। –**शिखरी(रिन्)**–पु० हिमालय। –**शिलास्खलन**–पु० (एवेलांश) हिमराशिका मिट्टी, पत्थर आदिसे मिलकर बड़ी चट्टान जैसा रूप धारण करनेके बाद वेगपूर्वक नीचे खिसक पड़ना। –**शीतल**–वि० बहुत ठंढा; जमा देनेवाला (शीत)। –**शुभ्र**–वि० बर्फ जैसा सफेद। –**शैल**–पु० हिमालय पर्वत; समुद्रमें पहाड़ोंकी तरह तैरती हुई वरफकी चट्टानें (आइस बर्ग)। –**०जा**–स्त्री० पार्वती। –**श्रथ**, –**श्रथन**–पु० बर्फका पिघलना। –**संघात**–पु०,–**संहति**–स्त्री० वर्फका ढेर। –**सर(स्)**–पु० ठंढा पानी। –**सुत्**–पु० चंद्रमा। –**हानकृत्**–पु० अग्नि। –**हासक**–पु० हिंताल वृक्ष, खजूरका पेड़।

हिमक–पु० (सं०) विकंकत वृक्ष।

हिमर्तु–स्त्री० (सं०) हेमंत ऋतु, जाड़ेका मौसिम।

हिमवल–पु० (सं०) मोती।

हिमवान्(वत्)–पु० (सं०) हिमालय; कैलास। वि० बर्फीला। –**(वत्)कुक्षि)**–स्त्री० हिमालयकी दरी। –**पुर**–पु० हिमालयकी राजधानी, ओषधिप्रस्थ। –**प्रभव**–वि० हिमालयसे उत्पन्न। –**सुत**–पु० मैनाक। –**सुता**–स्त्री० पार्वती; गंगा।

हिमांक–पु० (सं०) कपूर; (फ्रीजिंग पाइंट) वह तापमान जहाँ पानी जमकर वर्फ बनने लगता है (फारेन हाइटका ३२ अंश अथवा सेंटीग्रेड तापमापक यंत्रमें शून्य अंश)।

हिमांत–पु० (सं०) जाड़ेके मौसमकी समाप्ति।

हिमांबु, हिमांभ(स्)–पु० (सं०) ठंढा पानी; ओस।

हिमांशु–पु० (सं०) चंद्रमा; कपूर।

हिमा–स्त्री० (सं०) हेमंत; छोटी इलायची; रेणुका; भद्रमुस्ता; नागमुस्ता; पृक्का; दुर्गा।

हिमाक़त–स्त्री० दे० 'हमाक़त'।

हिमागम–पु० (सं०) जाड़ेका आरंभ।

हिमाघात–पु० (फ्रॉस्ट बाइट) अतिशय ठण्डके सम्पर्कमें आनेपर शरीरके ऊतकोंका प्रभावित होना, जिससे चमड़ीपर सूजन, जलन होती है और उसमें विगलन या सड़न शुरू हो जाती है; हिमदंश।

हिमाचल–पु० (सं०) हिमालय पर्वत।

हिमाच्छादित–वि० (सं०) बरफसे ढका हुआ।

हिमाच्छन्न–वि० (सं०) तुषारावृत।

हिमात्यय–पु० (सं०) जाड़ेका अंत।

हिमाद्रि–पु० (सं०) हिमालय पहाड़। –**जा**–स्त्री० गंगा; पार्वती; खिरनी। –**तनया**–स्त्री० दुर्गा; गंगा।

हिमानिल–पु० (सं०) सर्द हवा, वर्फीली हवा।

हिमानी–स्त्री० (सं०) हिम-समूह; बरफका ढेर जो पहाड़परसे खिसकता हुआ नीचे आता है; पालेका समूह, ओसकण-समूह; हिमशर्करा। –**विशद**–वि० बर्फ जैसा सफेद।

हिमापह–पु० (सं०) अग्नि।

हिमाब्ज–पु० (सं०) नील कमल।

हिमाभ–वि० (सं०) वर्फ जैसा।

हिमाभ्र–पु० (सं०) कपूर।

हिमामदस्ता–पु० दे० 'इमामदस्ता'।

हिमायत–स्त्री० (अ०) तरफ़दारी; मदद; रखवाली। –**गर**–वि० पक्षपाती।

हिमायती–वि० तरफदारी करनेवाला, पक्ष ग्रहण करनेवाला।

हिमाराति–पु० (सं०) सूर्य; अग्नि; अर्क वृक्ष; चित्रक वृक्ष।

हिमारि–पु० (सं०) अग्नि।

हिमारुण–वि० (सं०) जो पालेसे भूरा-सा हो गया हो।

हिमार्त–वि० (सं०) पालेसे ठिठुरा, जमा हुआ।

हिमाल–पु० (सं०) हिमालय।

हिमालय–पु० (सं०) भारतवर्षकी उत्तरी सीमापर स्थित एक पर्वतमाला (इसकी चोटियाँ बहुत ऊँची-ऊँची हैं और उनपर बराबर वर्फ जमी रहती है। सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट है जिसकी ऊँचाई २९,००२ फुट है और जो संसारकी सबसे ऊँची चोटी है); श्वेत खदिर वृक्ष। –**सुता**–स्त्री० पार्वती।

हिमालया–स्त्री० (सं०) भूम्यामली।

हिमावती–स्त्री० (सं०) स्वर्णक्षीरी।

हिमाविल–वि० (सं०) बर्फसे ढका हुआ।

हिमाश्रया–स्त्री० (सं०) स्वर्णजीवंती।

हिमाहति–स्त्री० (सं०) हिमपात ।

हिमाह्व–पु० (सं०) कपूर; जंबुद्वीपका एक वर्ष ।

हिमाह्वय–पु० (सं०) कपूर; कमल ।

हिमि*–पु० दे० 'हिम' ।

हिमिका–स्त्री० (सं०) पाला, तुषार ।

हिमित–वि० (सं०) जो बर्फमें परिणत हो गया हो ।

हिमियानी–स्त्री० (फा०) टाँची, बसनी; कमरमें रुपये बाँधनेकी थैली ।

हिमी–वि० (सं०) हिम सम्बन्धी (फ्रॉस्टी) । **–वर्षा**–स्त्री० वह वर्षा जिसमें पानीके साथ ओले भी बरसें (स्लीट) ।

हिमीकर–वि० (रिफ्रीजरेटर) हिमकी तरह (ठंढा) बना देनेवाला । पु० (खाद्य पदार्थोंको) ठंढा बनाकर सड़ने या नष्ट होनेसे बचानेका यंत्र, प्रशीतक ।

हिमेलु–वि० (सं०) हिमक्लेशित, हिमार्त ।

हिमेश–पु० (सं०) हिमालय ।

हिमोत्तरा–स्त्री० (सं०) कपिल द्राक्षा ।

हिमोपल–पु० (सं०) जाड़ोंमें वर्षाके साथ गिरनेवाले ओले ।

हिमोत्पन्ना–स्त्री० (सं०) दे० 'हिमशर्करा' ।

हिमोद्भवा–स्त्री० (सं०) शटी; क्षीरिणी ।

हिमोस्र–पु० (सं०) चंद्रमा ।

हिम्न–पु० (सं०) बुद्ध ग्रह ।

हिम्मत–स्त्री० (अ०) साहस; वीरता, बहादुरी; पौरुष, पराक्रम । **–वर**–स्त्री० साहसी । **–शिकन**–वि० उत्साह भंग करनेवाला । **मु० –पड़ना**–साहस होना । **–हारना**–पस्त हो जाना, साहस छोड़ना, किसी कामके करनेमें साहसका न रह जाना ।

हिम्मती–वि० साहसी; बहादुर, वीर; पराक्रमी, पुरुषार्थी ।

हिम्य–वि० (सं०) सर्द; बर्फीला; बर्फसे ढका हुआ; बहुत ठंडा ।

हिय*–पु० हृद्, हृदय, मन; वक्षःस्थल, छाती, सीना । **मु० –हारना**–हिम्मत हारना, शारीरिक या मानसिक दृष्टिसे थक जाना ।

हियरा*–पु० दे० 'हिय' ।

हियाँ†–अ० यहाँ ।

हिया–पु० दे० 'हिय' । **मु० –जलना**–बहुत गुस्सा होना । **–ठंढा होना**–कलेजा ठंढा होना, हृदय शांत होना, सुख, आनंदका अनुभव होना । **–फटना**–कलेजा फटना, शोक, दुःख, पीड़ाके अतिरेकका अनुभव होना । **–भर आना**–करुणार्द्र होना, शोककातर होना, दुःखार्त होना । **–भर लेना**–शोक, दुःख पीड़ा आदिके कारण लंबी साँस लेना; शोक, दुःख पीड़ा आदिकी अभिव्यक्ति करना । **–शीतल होना**–दे० 'हिया ठंढा होना' । **–(ये)का अंधा**–भीतरी आँखोंसे हीन, अज्ञान; मूर्ख, बेवकूफ । **–की फूटना**–सत्-असत्का विवेक न रहना, ज्ञानका न रहना । **–पर पत्थर धरना**–सब्र कर लेना । **–में लोन-सा लगना**–कटेपर लोन लगनेकी तरह मनमें बहुत पीड़ा होना । **–लगना**–गलेसे लगना, भेंटना, आलिंगन करना ।

हियातत–स्त्री० (अ०) चौकसी, सावधानी, एहतियात ।

हियाव*–पु० साहस । **मु० –खुलना**–धड़का खुलना, साहस, दृढ़ताका आना । **–पड़ना**–हिम्मत पड़ना ।

हियैल*–स्त्री० पछेली ।

हिरंगु–पु० (सं०) राहु ।

हिर–पु० (सं०) पट्टी; मेखला ।

हिरकना*–अ० क्रि० धीरे-धीरे परचना; किसी व्यक्ति या वस्तुसे सटना, चिपकना–'···कोउ खिरकीमें कोऊ हिरकी किवारमें'–रामरसा० ।

हिरकाना*–स० क्रि० परचाना; निकट ले जाना, सटाना, स्पर्श कराना ।

हिरगुनी†–स्त्री० एक प्रकारकी बढ़िया कपास ।

हिरण–पु० (सं०) स्वर्ण; वीर्य, शुक्र; वराटक, कौड़ी; * हिरन, मृग ।

हिरण्मय–वि० (सं०) सोनेका, सोनेका बना; सुनहरा । पु० ब्रह्मा; एक ऋषि; अग्नीध्रका एक पुत्र; संसारके नौ खंडोंमेंसे एक । **–कोश**–पु० सूक्ष्म शरीर, आत्माके सप्त आवरणोंमेंसे एक जो अंतिम है ।

हिरण्य–पु० (सं०) सुवर्ण; स्वर्णपात्र; चाँदी; कोई बहुमूल्य धातु; संपत्ति; वीर्य, शुक्र; कौड़ी; एक मान; नित्य पदार्थ; धतूरा; तेज; अमृत; हिरण्मयवर्ष; एक दैत्य; अग्नीध्रका एक पुत्र । वि० स्वर्णनिर्मित । **–कंठ**–वि० सोनेके कंठवाला । **–कक्ष**–वि० सुनहला कमरबंद धारण करनेवाला । **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सुनार । **–कवच**–वि० सोनेके कवचवाला । पु० शिव । **–कशिपु**–पु० कश्यप और अदितिका पुत्र और प्रसिद्ध भक्त प्रह्लादका पिता जिसे विष्णुने नरसिंहके रूपमें खंभेसे प्रकट होकर मारा था । **–कामधेनु**–स्त्री० स्वर्णनिर्मित कामधेनु (जिसका दान सोलह महादानोंमें परिगणित है) । **–कार**–पु० सुनार । **–कृतचूड**–पु० शिव । **–क्लृप्**–पु० अग्नि । **–केश**–वि० सोनेके बालोंवाला । पु० विष्णु । **–खादि**–वि० सोनेका काँटा या क्लिप लगानेवाला । **–गर्भ**–पु० ब्रह्मा (सोनेके अंडेसे उत्पन्न होनेके कारण); विष्णु; सूक्ष्म शरीर धारण करनेवाली आत्मा, सूत्रात्मा; एक लिंग । वि० ब्रह्मा-संबंधी । **–गर्भा**–स्त्री० एक नदी । **–द**–पु० समुद्र । वि० सुवर्ण देनेवाला । **–दा**–स्त्री० पृथ्वी; एक नदी । **–नाभ**–पु० मैनाक पर्वत; विष्णु; एक तरहका मकान जिसमें पूरब, पच्छिम और उत्तर बड़े-बड़े कमरे हों । **–पर्वत**–पु० एक पहाड़ । **–पुर**–पु० असुरोंका एक आकाशीय नगर । **–पुरुष**–पु० स्वर्णनिर्मित पुरुष-प्रतिमा । **–पुष्पी**–स्त्री० एक पौधा । **–बाहु**–पु० शिव; सोन नद; एक नागासुर । **–बिंदु**–पु० अग्नि; एक पर्वत; एक तीर्थ । **–माली(लिन्)**–वि० सोनेकी माला धारण करनेवाला । **–रशन**–वि० सोनेकी करधनी पहननेवाला । **–रेता(तस्)**–पु० अग्नि; सूर्य; शिव; चित्रक वृक्ष; बारह आदित्योंमेंसे एक । वि० स्वर्णबीजवाला । **–रोमा(मन्)**–पु० एक लोकपाल (मरीचिके पुत्र); भीष्मक । **–लोमा(मन्)**–वि० पाँचवें मन्वंतरके एक ऋषि । **–वर्चस**–वि० सोनेकी-सी कांतिवाला । **–वर्णा**–स्त्री० नदी । **–वस्त्र**–पु० वैदिक कालमें बनाया जानेवाला सुनहले तारोंका एक कपड़ा । **–वान्**–वि० सोनेवाला, जिसके पास सोना हो । पु० अग्नि । **–वाह**–पु० सोन नद; शिव । **–विंदु**–पु० अग्नि, एक तीर्थ, एक पर्वत । **–वीर्य**–पु० अग्नि; सूर्य । **–शकल**–पु० सोनेका छोटा टुकड़ा । **–शृंग**–पु० एक पर्वत । **–ष्ठीव**–पु० एक पर्वत । **–ष्ठीवी(विन्)**–वि० सोना वमन करनेवाला (एक पक्षी) । **–संकाश**–वि० सोनेकी तरह चमकनेवाला । **–सर(स्)**–पु० एक तीर्थ । **–स्थाल**–पु० सोनेका कटोरा । **–स्रक्**–स्त्री० सोनेकी माला या सिकड़ी ।

हिरण्यक–पु० (सं०) स्वर्णकी इच्छा ।

हिरण्यय–वि० (सं०) सोनेका (वै०) ।

हिरण्यव–पु० (सं०) देवसंपत्ति, देवस्व; स्वर्णाभूषण ।

हिरण्या–स्त्री० (सं०) अग्निकी एक जिह्वा ।

हिरण्याक्ष–पु० (सं०) हिरण्यकशिपुका यमज भाई जिसे विष्णुने वराहका रूप धारण कर मारा था । **–रिपु, –हर**–पु० विष्णु ।

हिरण्याश्व–पु० (सं०) सोलह महादानोंमेंसे एक जिसमें सोनेका घोड़ा दान किया जाता है । **–रथ**–पु० दानार्थ स्वर्णनिर्मित अश्व और रथ (सोलह महादानोंमेंसे एक) ।

हिरदय*–पु० दे० 'हृदय' ।

हिरदा*–पु० हृदय ।

हिरदावल–पु० घोड़ेके सीनेपरकी भौंरी जो अशुभ है ।

हिरन–पु० हरिण, मृग । **–खुरी**–स्त्री० एक बरसाती लता । **–मूसा**–पु० चूहाकी तरहका एक जंतु जो हिरनकी तरह छलांगें भरता है । **मु० –हो जाना**–चंपत हो जाना, लुप्त हो जाना; तुरत भागकर दूर हो जाना ।

हिरना†–अ० क्रि० हरण होना, छीना जाना । पु० 'हिरन' ।

हिरनाकुस*–पु० दे० 'हिरण्यकशिपु' ।

हिरनौटा–पु० मृगशावक, हिरनका बच्चा ।

हिरफ़त–स्त्री० (अ०) पेशा; हुनर; चालाकी, धूर्तता । **–बाज**–वि० चालाक, चालबाज ।

हिरमची, हिरमिजी–स्त्री० (फा०) एक तरहकी लाल मिट्टी जिससे

दीवार आदि रँगते हैं; एक तरहका लाल फूल जिससे कपड़े रँगते हैं; एक रंग।

हिरस†–स्त्री० दे० 'हिर्स'।

हिरा–स्त्री० (सं०) शिरा।

हिरात–पु० अफगानिस्तानकी सीमाके पासका एक स्थान।

हिराती–वि० हिरात-संबंधी। पु० एक तरहका घोड़ा (जो हिरातमें होता है)।

हिराना–अ० क्रि० खो जाना, लुप्त हो जाना, गायब हो जाना; अस्तित्व न रह जाना, अभाव होना; सुध-बुध खो देना, अपनेको भूल जाना; स्तब्ध रह जाना, अत्यंत आश्चर्यान्वित होना; नष्ट होना। स० क्रि० याद न रखना, विस्मरण करना, भूलना; ढुंढ़वाना; खादकी गरजसे भेड़ आदि पशुओंको खेतमें रखना।

हिरावल–पु० दे० 'हरावल'।

हिरास–स्त्री० (फा०) डर, भय, दहशत; नैराश्य, मायूसी। वि० दे० 'हिरासाँ'–'यों कहि सुमंत हिय ह्वै हिरास'–रामरसा०।

हिरासत–स्त्री० (फा०) निगरानी, पहरा; नजरबंदी; अभिरक्षा, परिरक्षा (कस्टडी); निगरानीमें रखनेका स्थान; हवालात (लॉक अप)। मु० **–में करना,–में लाना**–हवालातमें रखना।

हिरासाँ–वि० (फा०) भीत, डरा हुआ, त्रस्त; निराश, मायूस।

हिरोदक–पु० (सं०) रक्त।

हिरौल*–पु० दे० 'हरावल'।

हिर्ज़–पु० (अ०) तावीज, रक्षा कवच; दृढ़ स्थान। **–(र्ज़े)जां**–पु० प्राणोंकी रक्षाका कवच; अत्यन्त प्रिय वस्तु।

हिर्फ़त–स्त्री० (अ०) दे० 'हिरफ़त'।

हिर्म–वि० (अ०) खानपानके लिए निषिद्ध पदार्थ।

हिर्मां–पु० (अ०) निराशा, दुर्भाग्य। **–ज़दा**–वि० अभागा, निराश।

हिर्मास–पु० (अ०) शेर, सिंह।

हिर्स–स्त्री० (अ०) लोभ, लालच; तृष्णा, हवस। मु० **–करना, –होना**–लालच होना। **–छूटना**–लालच होना। **–दिलाना, देना**–लालच देना।

हिर्साहा–वि० लालची।

हिर्साहिर्सी–अ० दूसरोंको करते देखकर, देखा-देखी।

हिर्सी–वि० लालची। **–टट्टू**–पु० ऐसा लालची आदमी जिसे दूसरोंकी देखा-देखी लालच आ जाय।

हिलकना†–अ० क्रि० 'हिहकना'; हिचकना; सिसकना। स० क्रि० सिकोड़ना।

हिलकी*–स्त्री० हिचकी–'सपनेमें लालन चलत लखि रोई अकुलाय। जागत हू पियहिय लगी हिलकी तऊ न जाय।' –मतिराम; सिसकनेकी क्रिया, सिसक; उमंग, लहर–'जो जागौं तो कोऊ नाहीं, रोके रहति न हिलकी'–सूर।

हिलकोर–पु० जलकी तरंग, हिल्लोल।

हिलकोरना–स० क्रि० जलको तरंगित करना, पानीमें लहरें उठाना।

हिलकोरा–पु० दे० 'हिलकोर'। मु० **–देना**–पानीको धक्केसे हिलाना, तरंगित करना। **–लेना**–तरंगित होना।

हिलग–स्त्री० परचनेका भाव, मेलजोल; प्रेम।

हिलगना–अ० क्रि० परचना; मेलजोल होना; हिरकना; चिपकना; उलझना, फँसना; अटकना, ठहरना, रुकना; पास आना।

हिलगाना–स० क्रि० परचाना; मेलजोल कायम करना; फँसाना, उलझाना; पास लाना।

हिलना–अ० क्रि० अस्थिर होना, चंचल होना; (मनका) डिगना; किसी स्थानपर स्थिर, स्थित, जमी, अवस्थासे इधर-उधर होना; किसी स्थानसे इधर-उधर जाना, डोलना, होना; काँपना; झूमना; ढीला होना; सरकना; जलमें प्रविष्ट होना; परचना, परिचित होना। मु० **हिल जाना**–परच जाना। **हिलना-डोलना**–चंचल होना; घूमना-फिरना; काम-धाम करना; उद्यम, प्रयत्न, कोशिश करना। **–मिलना**–घुलना-मिलना, एक हो जाना; भेंट-मुलाकात करते रहना।

हिलमोचि, हिलमोचिका, हिलमोची–स्त्री० (सं०) एक शाक।

हिलसा–स्त्री० एक तरहकी मछली।

हिलाना–स० क्रि० चंचल करना, अस्थिर करना, किसी चीजको इधर-उधर करना, डोलाना; किसी वस्तु या व्यक्तिको किसी स्थानसे हटाना, खिसकाना; कँपाना; जलमें प्रविष्ट कराना; परचाना; किसी वस्तुको ऊपर-नीचे, दायें-वायें ले जाना, डोलाना।

हिलाल–पु० (अ०) नया चाँद; नया और आखिरी चाँद; पगड़ीकी उठी हुई ऐंठन।

हिलोर–स्त्री० हिल्लोल, जल-तरंग।

हिलोरना–स० क्रि० 'हिलकोरना'; † दे० 'हलोरना'।

हिलोरा–पु० हिलोर। मु० **–लेना**–हिलकोरा लेना, तरंगित होना।

हिलोल–पु० हिल्लोल, लहर।

हिल्लोल–पु० (सं०) लहर; मनकी तरंग; हिंडोल राग; एक प्रकारका रतिबंध; धुन, सनक।

हिल्वला–स्त्री० (सं०) मृगशिरा नक्षत्रके सिरके पासके पाँच छोटे तारे।

हिवँ†–पु० वर्फ़; तुषार, पाला।

हिवंचल†–पु० हिमाचल; पाला, हिम; वरफ।

हिवाँर–पु० हिम, पाला। मु० **–होना**–बहुत शीतल होना।

हिस, हिस्स–स्त्री० (अ०) अनुभूति; किसी ज्ञानेंद्रियके द्वारा जानना, संवेदन; गति, चेष्टा।

हिसका–स्त्री० ईर्ष्या, डाह; होड़।

हिसाव–पु० (अ०) गिनती, गणना; किसी आर्थिक व्यवहारका विवरण, लेन-देन, खरीद-बेची आदिका ब्योरा, लेखा; गणित विद्या; गणितका प्रश्न; भाव, निर्ख; नियम, रीति; हाल; ढंग, तरीका; लेन-देन; राय, खयाल, समझ; किफायत। **–किताब**–पु० आर्थिक व्यवहारका ब्योरा, लेखा; लेन-देन; बही-खाता; (ला०) ढंग, तरीका। **–चोर**–पु० वह जो हिसाब करनेमें कोई रकम दबा ले। **–दाँ**–वि० हिसाब जाननेवाला, गणितज्ञ। **–दार**–पु० हिसाब रखनेवाला। **–बही**–स्त्री० वह वही जिसमें आमदनी खर्चका ब्योरा लिखा जाय। मु० **–करना**–देना-पावना समझना, जोड़ना; देना-पावना चुकता करना। **–चुकता करना –देना** चुका देना। **–तलब करना**–हिसाव माँगना, हिसाब समझानेको कहना। **–देना**–हिसाव समझाना। **–न होना**–बेहिसाब होना, गिनती न होना। **–पर चढ़ना**–बही या खातेमें लिखा जाना। **–पाक करना**–देना चुका देना। **–पूछना**–हिसाव माँगना। **–बेबाक करना**–खातेमें कुछ बाकी न रहने देना। **–बैठना**–ब्योंत बैठना, सब कामों, आवश्यकताओंका उपाय निकल आना; मेल मिलना। **–साफ़ करना**–हिसाब चुकता करना। **–से**–अंदाजासे, परिमित मात्रामें, किफायतसे (हिसाबसे खर्च करो, चलो); क्रमसे,···मात्रामें (जिस हिसाबसे ज्वर बढ़ेगा···); हिसाबके मुताबिक। **(किसीके)–से**–···की दृष्टिसे,···के विचारसे। **–से चलना**–नाप-तौलपर काम करना; किफायतसे खर्च करना।

हिसाबिया–पु० हिसाब (गणित)का अच्छा जानकार; आगापीछा छोड़कर काम करनेवाला।

हिसाबी–वि० हिसाब जाननेवाला; हिसाबसे चलनेवाला।

हिसार–पु० (अ०) घेरा, इहाता; परकोटा; किला। **–बन्द**–वि० किलेमें बंद होकर बैठनेवाला; मंत्रकी कुंडलीके भीतर बैठनेवाला। मु० **–करना**–घेरा डालना। **–बाँधना**–घेरा डालना; चारों ओर सैनिकोंकी पाँत या कोई दूसरी रोक खड़ी कर देना।

हिसिषा*–स्त्री० ईर्ष्या–'जौं अस हिसिषा करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान'–रामा०; किसीसे चढ़ा-ऊपरी करनेकी भावना, होड़।

हिस्टीरिया–पु० (अं०) एक तरहका मूर्च्छा रोग जो विशेषतः स्त्रियोंको होता है।

हिस्न–पु० (अ०) रक्षास्थल; किला, दुर्ग।

हिस्सा–पु० (अ०) भाग, अंश, खंड; बाँट, बखरा; विभाग; अंशाधिकार, साझा; अंग (बदनके किसी हिस्सेमें)। **–बखरा**–पु० अंश, भाग। (मु० **–०होना**–बँटवारा होना, जायदादका हिस्सेदारोंमें बँट जाना।)**–रसदी**–अ० हिस्सेके अनुसार, जितना जिसके हिस्सेमें आये। **–(स्से)दार**–पु० अंशका अधिकारी, जिसका किसी संपत्ति या रोजगारमें हिस्सा हो, साझी। **–दारी**–

स्त्री० हिस्सेदार होना, साझा । मु० **–लेना,–शिरकत करना**–भाग लेना । **–(स्से)करना**–बाँटना । **–में आना**–बाँटेमें पड़ना, बटवारेसे मिलना ।

हिहिनाना*–अ० क्रि० दे० 'हिनहिनाना' ।

हींग–स्त्री० दे० 'हिंगु' ।

हींछना*–अ० क्रि० इच्छा करना, चाहना; कामना करना ।

हींछा*–स्त्री० इच्छा, कामना ।

हींडना†–स० क्रि० घँघोलकर गंदा करना (भोज०); हुड़कना (बुंदेल०) ।

हींताल–पु० (सं०) हिंताल वृक्ष ।

हींस–स्त्री० घोड़ेकी हिनहिनाहट ।

हींसना–अ० क्रि० घोड़ेका हिनहिनाना ।

हींहीं–स्त्री० हँसनेसे उत्पन्न ध्वनि, शब्द ।

ही–अ० इसका प्रयोग निश्चय, सीमा, कमी, अकेलापन, अनन्यता आदिके अवसरोंपर होता है। सभी अवस्थाओंमें यह किसी बातपर जोर देने तथा निश्चयके लिए ही प्रयुक्त मिलता है । पु० हिय, हृदय । * अ० क्रि० थी ।

हीअ*–पु० दे० 'हिय' ।

हीक–स्त्री० एक प्रकारकी दुर्गंध जिससे प्रायः मतली आती है; हिचकी । मु० **–मारना**–वार-वार बुरी महक फेंकना, गंधाना ।

हीचना*–अ० क्रि० हिचकिचाना, किसी कामके करनेमें आगा-पीछा देखना ।

हीछना†–अ० क्रि० दे० 'हींछना' ।

हीछा†–स्त्री० दे० 'हींछा' ।

हीठना–अ० क्रि० जाना, निकट जाना, पास फटकना ।

हीनमन्यता–स्त्री० दे० 'हीनग्रंथि', लघुंमन्यता ।

हीन–वि० (सं०) अधम, नीच; निंद्य, गर्ह्य; रहित, वर्जित; परित्यक्त; निम्न कोटिका; जिसकी आर्थिक स्थिति बुरी हो, दीन; दबता हुआ, कमजोर; अनुपयुक्त; पद, मार्ग, स्थान आदिसे च्युत, भ्रष्ट; सदोष; अधूरा; क्षीण । पु० अयोग्य गवाह, दोषपूर्ण साक्षी; व्यवकलन, घटाव; कमी, अभाव; अधम नायक (सा०) । **–कर्मा(र्मन्)**–वि० धार्मिक दृष्टिसे विहित कर्मों–याग, यज्ञादिको न करनेवाला; नीच काम करनेवाला । **–कुल**–वि० नीच कुलका, कलंकित वंशका । **–कुष्ठ**–पु० क्षुद्रकुष्ठ (?) । **–कोश**–वि० जिसका खजाना खाली हो । **–क्रतु**–वि० यज्ञ न करनेवाला । **–क्रम**–पु० काव्य-संबंधी एक दोष जिसमें वर्णित विषयोंके क्रमका निर्वाह न हुआ हो । **–चरित**–वि० कदाचारी, बुरे आचरणका । **–ज**–वि० नीचकुलमें उत्पन्न । **–जाति**–वि० नीच जातिका; जातिच्युत । **–नायक**–वि० जिसका नायक अधम हो (ना०) । **–पक्ष**–पु० तर्क द्वारा समर्थित न होनेवाला पक्ष, दलीलकी दृष्टिसे कमजोर पक्ष । वि० अरक्षित । **–प्रतिज्ञ**–वि० प्रतिज्ञाका पालन न करनेवाला । **–बल**–वि० निर्बल, कमजोर । **–बाहु**–पु० शिवका एक गण । **–बुद्धि,–मति**–वि० बुद्धिहीन, मूढ़, मूर्ख । **–भावना**–हीनताकी भावना; हीनक मनोग्रंथि । **–मूल्य**–वि० कम कीमतका । पु० अल्प मूल्य । **–यान**–पु० बौद्ध मतकी दो शाखाओंमेंसे एक (दूसरी शाखाका नाम 'महायान' है—पहले हीनयानका ही प्रवर्तन हुआ और इसके अनुयायी बुद्धके वचनको ही प्रमाण मानते हैं) । **–योग**–वि० योगभ्रष्ट । **–योनि**–वि० बुरे खानदानमें उत्पन्न, नीच जातिका । **–रस**–पु० काव्यगत एक दोष जो रसविरोधी भावके प्रसंगकी नियोजनासे होता है । **–रोमा(मन्)**–वि० केशहीन, गंजा । **–वर्ग,–वर्ण**–पु० शूद्र वर्ण; नीच जाति । वि० नीच जातिका; शूद्रवर्णका । **–वाद**–पु० दोषपूर्ण तर्क; विरोधी बात या दलील; कमजोर दलील; दोषी प्रमाण, साक्ष्य । **–वादी(दिन्)**–वि० परस्पर विरोधी बातें कहनेवाला, (ऐसा व्यक्ति या गवाह) जिसकी पूर्वापर कही बातें असंगत हों, विरुद्धार्थवादी; गूँगा, मूक । **–वीर्य**–वि० बलहीन, कमजोर । **–सख्य**–वि० नीचोंसे मित्रता करनेवाला । **–सेवा**–स्त्री० नीचोंकी टहल ।

हीन–पु० (अ०) काल, जमाना । **–हयात**–पु० जीवनकाल । अ० जीवनकालमें, जीतेजी; जिंदगीभर । **–हयाती**–वि० जिसपर जिंदगीभर अधिकार रहे, जीवनकालके लिए प्राप्त । **–०काश्तकार**–पु० वह काश्तकार जिसे अपनी जमीनपर जिंदगीभर कब्जा रखनेका अधिकार हो ।

हीनक–वि० (सं०)...से वंचित, रहित ।

हीनता–स्त्री०, **हीनत्व**–पु० (सं०) सदोषता; राहित्य, अभाव; नीचता; बुराई । **–ग्रंथि**–स्त्री० दूसरोंसे अपनेको हीन समझनेकी भावना, हीनंमन्यता ।

हीनांग–वि० (सं०) अंगहीन, विकलांग ।

हीनांगी–स्त्री० (सं०) छोटी चींटी ।

हीनांशु–वि० (सं०) किरणरहित, अँधेरा ।

हीनार्थ–वि० (सं०) जिसका प्रयोजन सिद्ध न हुआ हो ।

हीनित–वि० (सं०)···से वंचित; ···से वियुक्त; घटाया हुआ ।

हीनोपमा–स्त्री० (सं०) उपमा अलंकारका एक भेद जिसमें बड़ेकी उपमा छोटेसे दी जाय ।

हीमिया–स्त्री० (अ०) जादू, इन्द्रजाल । **–गर,–दां**–वि० जादूगर ।

हीय, हीयरा, हीया*–पु० दे० 'हिय' ।

हीर–पु० एक पंजाबी प्रेमगीत ।

हीर–पु० सार अंश, गूदा; वीर्य, शक्ति; (सं०) एक रत्न, हीरा; वज्र; शिव; सिंह; सर्प; एक वृत्त; मोतियोंकी माला ।

हीरक–पु० (सं०) हीरा नामक रत्न; एक वृत्त । **–जयंती**–स्त्री० किसीके शासन, विवाहित जीवन आदिके साठवें वर्षका उत्सव; किसी संस्था आदिकी स्थापनाका साठवां वार्षिकोत्सव, 'डायमंड जुबिली' ।

हीरा–पु० एक बहुमूल्य रत्न जो अत्यंत कठिन और श्वेत कांतियुक्त होता है, हीरक; (ला०) उत्तम व्यक्ति या वस्तु । स्त्री० (सं०) लक्ष्मी; पिपीलिका; काश्मरी; तैलांबुका (?) । **–आदमी**–पु० बहुत नेक आदमी, भलामानुस । **–कट**–वि० हीरेकी तरह कटा हुआ । **–कसीस**–पु० गंधकके योगसे उत्पन्न लोहेका विकार । **–दोखी**–स्त्री० विजयसालका गोंद । **–नखी**–पु० एक बढ़िया धान । **–मन**–पु० लोककथामें वर्णित तोतेकी एक कल्पित जाति । मु० **–खाना**–आत्महत्या करनेके विचारसे हीरेका कण खा लेना; ईर्ष्यासे जान देना । **–चाटना**–हीरा चाटकर मर जाना । **–(रे)की कनी खाना या चाटना**–दे० 'हीरा खाना' ।

हील–पु० (सं०) वीर्य, शुक्र; (अं०) जूतेकी एड़ी; † पनालेका कीचड़ । स्त्री० (फा०) छोटी इलायची ।

हीलना–स्त्री० (सं०) क्षति । * अ० क्रि० दे० 'हिलना' ।

हीला–पु० (अ०) बहाना, मकर, बनावट; वसीला; रोजगार, काम; † कीचड़ । **–तराश**–वि० नये नये बहाने गढ़नेवाला । **–हवाला**–पु० टालमटोल । **।(ले)गर,–बाज,–साज**–वि० बहाने बनानेवाला । **–गरी,–बाजी,–साजी**–स्त्री० बहानेबाजी, फरेब । मु० **–निकलना**–उपाय निकल आना । **–होना**–बहाना होना; नौकर होना; कोशिश होना ।

हीसका*–स्त्री० ईर्ष्या; स्पर्द्धा ।

हीही–स्त्री० जोरसे हँसनेकी ध्वनि, उच्च हास्य-ध्वनि; हीनता प्रदर्शित करते हुए हँसना ।

हुँ–अ० बात करते समय बात सुनने या उस बातकी स्वीकृतिका सूचक शब्द; हाँ; * दे० 'हू' ।

हुंकना, हुँकरना–अ० क्रि० दे० 'हुंकारना' ।

हुंकार–पु० (सं०) दर्पयुक्त होकर 'हुं' शब्द करना; गर्जना; ललकार; सूअरका गुर्राना; धनुष्की टंकोर ।

हुंकारना–अ० क्रि० दर्पयुक्त होकर 'हुं' शब्दका उच्चारण करना; गर्जन करना; चिग्घाड़ना । स० क्रि० युद्ध, लड़ाई-झगड़े, प्रतियोगिता आदिमें अपने शत्रु, प्रतिद्वंद्वी आदिको ललकारना ।

हुँकारी–स्त्री० 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा स्वीकृति सूचित करनेकी क्रिया; विकारी । मु० **–भरना**–कहानी सुनते समय 'हुँ-हुँ' शब्द द्वारा कहानी सुनते रहनेकी सूचना देना; किसी कामके लिए स्वीकृति देना ।

हुंकृत–पु० (सं०) हुंकार; सूअरकी गुर्राहट; मेघगर्जन; मंत्र; रँभानेका शब्द ।

हुंकृति–स्त्री० दे० 'हुंकार'।

हुंजिका–स्त्री० (सं०) एक राग।

हुंड–पु० (सं०) व्याघ्र; मेढ़ा; ग्रामशूकर; भारतकी एक प्राचीन बर्बर जाति; राक्षस; मूर्ख व्यक्ति; एक जनपद; नाजकी बाल।

हुंडन–पु० (सं०) शिवका एक गण; अंगका निश्चेष्ट होना, लकवा मार जाना।

हुंडनेश–पु० (सं०) शिव।

हुंडा–पु० वरकी ओरसे कन्याको दिया जानेवाला धन; खेतके मालिकको ठेकेदारसे नियत परिमाणमें मिलनेवाला गल्ला। स्त्री० (सं०) आगके चिटखनेका शब्द। **–भाड़ा**–पु० महाजनी बोलीमें महसूल आदि चुकाकर कहींपर माल पहुँचानेकी जिम्मेदारी।

हुँड़ार–पु० भेड़िया; मोटाताजा किन्तु निकम्मा व्यक्ति।

हुंडावन–पु० हुंडीकी दस्तूरी; हुंडीकी दर।

हुंडि–स्त्री० (सं०) पिंडित ओदन।

हुंडिका–स्त्री० (सं०) दे० 'हुंडी'; सेनाके निर्वाहके लिए प्राचीन कालमें दिया जानेवाला आदेशपत्र।

हुंडी–स्त्री० वह पत्र जो आपसमें लेन-देन करनेवाले महाजन किसीको रुपया दिलानेके लिए भेजते हैं, महाजनी 'चेक'; (ड्राफ्ट, बिल या बिल आफ एक्सचेंज); कर्ज देनेका एक तरीका जिसमें महाजन सूदकी रकम मूलमें पहले ही शामिल करके एक बार या किस्त करके लेता है। **–बही**–स्त्री० हुंडियोंका ब्योरा रखनेकी बही; वह बही जिसमेंसे हुंडी काटकर दी जाय। **मु० –करना**–हुंडी लिखना। **–खड़ी रखना**–किसी वजहसे हुंडीको मुल्तवी रखना। **–पटना**–हुंडीके रुपयेका अदा होना। **–भेजना**–हुंडी द्वारा द्रव्य चुकता करना, अदा करना। **–सकारना**–हुंडीमें लिखी रकम देना स्वीकार करना।

हुँत, हुँते–प्र० हिंदीके करण तथा अपादान कारकोंकी विभक्ति, से, द्वारा; (किसीकी) ओरसे; (किसीके) लिए, हेतु, वास्ते–'तुम हुँत मँडप गयेउ परदेसी'–प०।

हु*–अ० भी।

हुआँ–पु० गीदड़ोंके बोलनेकी आवाज। † अ० वहाँ।

हुआना–अ० क्रि० गीदड़का 'हुआँ-हुआँ' शब्द करके बोलना।

हुक–पु० (अं०) एक ओर मुड़ी कील, कँटिया जिसमें या जिससे कोई चीज फँसायी जाती है। † स्त्री० गर्दन या पीठकी नसोंका तनाव जिससे उस अवयवको हिलाना-डुलाना मुश्किल होता है और ऐसा करनेसे चिलक होती है।

हुकना–अ० क्रि० वार खाली जाना, निशाना चूकना।

हुक़्ना–पु० (अ०) दवाकी बत्ती या पिचकारी जो पाखाना आनेके लिए दी जाय, वस्ति।

हुकरना–अ० क्रि० दे० 'हुँकरना'।

हुकारना–अ० क्रि०, स० क्रि० दे० 'हुँकारना'।

हुकुम†–पु० दे० 'हुक्म'।

हुकुर-पुकुर, हुकुर-हुकुर–स्त्री० शारीरिक कमजोरी, भय, आशंका आदिके कारण हृद्‌गतिका तीव्र होना, कलेजेका जल्दी-जल्दी धड़कना।

हुकूक़–पु० (अ०) 'हक़'का बहु०।

हुकूमत–स्त्री० (अ०) शासन, राज्य; अधिकार, प्रभुत्व। **मु० –चलाना**–अधिकारका उपयोग करना; दूसरेपर हुक्म चलाना। **–जताना**–अधिकार, प्रभुत्वका प्रदर्शन करना।

हुक्का–दे० 'हुक़्क़ा'। **–तमाखू**–पु० हुक्का पिलानेका सत्कार (करना, होना)। **–पानी**–पु० दे० 'हुक़्क़ा पानी'।

हुक़्क़ा–पु० (अ०) तंबाकू पीनेका, नरकुलकी दो नलियों और फरशीके योगसे प्रस्तुत यंत्र, गुड़गुड़ी; जवाहिरात रखनेकी डिबिया। **–पानी**–पु० हुक्का पीने-पिलानेका व्यवहार, जाति-बिरादरीका संबंध। (**मु० –०पिलाना**–आवभगत करना। **–०बंद करना**–बिरादरीसे खारिज कर देना, खान-पान बंद करना।) **–बरदार**–पु० हुक्का लेकर साथ चलनेवाला टहलू। **–बाज़**–पु० जो बहुत हुक्का पीये; मदारी, बाजीगर। **मु० –ताजा करना**–फरशीका पानी बदलना और नैचेको तर करना। **–भरना**–चिलमपर तंबाकू और आग रखकर हुक्का तैयार करना।

हुक्काम–पु० (अ०) 'हाकिम'का बहु०।

हुक्म–पु० (अ०) आज्ञा, आदेश; फैसला; शरई फैसला, फतवा; इजाजत; हुकूमत, अधिकार; ताशका एक रंग, काला पान। **–उदूली**–स्त्री० आज्ञाकी उपेक्षा, अवज्ञा; सरकशी। **–क़तई**–पु० अंतिम निर्णय। **–गश्ती**–पु० वह आज्ञा जो सब जगह फिरायी जाय। **–दरमियानी**–पु० वह आज्ञा जो अंतिम निर्णय या कतई हुक्मके पहले दी जाय। **–नामा**–पु० आज्ञापत्र। **–बरदार**–वि० आज्ञापालक। **–बरदारी**–स्त्री० आज्ञाका पालन, फरमाँबरदारी। **–रान**–वि० हुक्म चलानेवाला; शासन करनेवाला। **–रानी**–स्त्री० हुकूमत, शासन। **मु० –की तामील**–आज्ञापालन। **–चलना**–हुकूमत होना, अधिकार होना। **–चलाना**–आज्ञा प्रचारित करना; हुकूमत करना। **–बजा लाना**–आज्ञा पालन करना। **–में होना**–आज्ञाधीन होना; अधिकारमें होना। **–लगाना**–पक्की राय देना, फैसला करना।

हुक्मी–वि० अचूक, खता न करनेवाला (–दवा); आज्ञाधीन, जो हुक्म मिले वह करनेवाला (–बंदा)। **–बंदा**–हुक्मका गुलाम।

हुचकी–स्त्री० दे० 'हिचकी'।

हुजरा–पु० (अ०) कोठरी; उपासना करनेका कमरा।

हुजूअ–पु० (अ०) निद्रा; स्वप्न; शांति; सुख।

हुजूद–पु० (अ०) रात्रि जागरण।

हुजूम–पु० (अ०) जनसमूह, भीड़।

हुजूर–पु० (अ०) हाजिर होना, सामने आना, उपस्थिति; दरबार, इजलास; सम्मान्य जनका संबोधन, श्रीमान्, जनाबआली (मातहत कर्मचारी अफसरका तथा वकील-मुख्तार जज-कलेक्टर आदिका इसी शब्दसे संबोधन करते हैं)। **–तहसील**–स्त्री० सदर तहसील। **–वाला**–पु० (संबोधन) श्रीमन्, जनाबआली। **(किसीके)–में**–दरबारमें; सामने; सेवामें।

हुजूरी–स्त्री० समीपता; हाजिरी; शाही दरबार। पु० (राजा आदिका) खास नौकर; दरबारी।

हुज्जत–स्त्री० (अ०) दलील; बहस; विवाद, झगड़ा; प्रमाण। **–(तु)ल्लाह**–स्त्री० ईश्वरके सत्य होनेका प्रमाण।

हुज्जती–वि० हुज्जत करनेवाला, झगड़ालू।

हुज़्न–पु० (अ०) दुःख, शोक, संताप, खेद।

हुड–पु० (सं०) मेष; एक युद्धास्त्र या युद्धका उपकरण; चोरोंके निवारणार्थ जमीनमें गाड़ा हुआ लोहेका काँटा; (रथपर बना हुआ) मल-मूत्र त्यागका स्थान; लगुड; (अं०) मोटर, रिक्शे आदिकी कमानीदार छाजन जो इच्छानुसार चढ़ायी-उतारी जा सकती है; सिरका ढक्कन (बरसाती आदिका)।

हुड़कना–अ० क्रि० छोटे बच्चेका अपने प्रिय व्यक्ति-(जिससे वह हिला-मिला हो)के न मिलनेपर रोना, डरना, खाना-पीना छोड़ देना आदि।

हुड़का–पु० विरहजनित पीड़ा (विशेषतः बच्चोंको होनेवाली), दे० 'हुडुक'।

हुड़काना–स० क्रि० तड़फाना, दुःखित करना।

हुड़दंग, हुड़दंगा–पु० ऊधम, उपद्रव, हुल्लड़।

हुडुंब–पु० (सं०) भूना हुआ चिउड़ा।

हुडु–पु० (सं०) मेष।

हुडुक–पु० दे० 'हुडुक्क'।

हुडुक्क–पु० (सं०) एक बाजा जो डमरूकी शक्लका, पर आकारमें उससे बड़ा होता है; एक पक्षी, दात्यूह; मतवाला आदमी; अर्गला; लोहा जड़ा हुआ डंडा, लोहबंदा। **–हिक्का**–स्त्री० हुड़केकी ध्वनि।

हुडुत्–पु० (सं०) वृषभका शब्द; धमकी।

हुड्डु–वि० बेशऊर; मूढ़।

हुढक्क–पु० हुडुक बाजा।

हुत–वि० (सं०) हवन किया हुआ; जिसके निमित्त हवन किया गया है। पु० शिव; हवन-सामग्री। * अ० क्रि० 'होना'का भूतकाल, था। **–भक्ष**–पु० अग्नि। **–भुक्(ज्)**–पु० अग्नि; चित्रक; एक तारा। **–०प्रिया**–स्त्री० अग्निभार्या, स्वाहा। –

भोक्ता(क्तृ),–भोजन–पु० दे० 'हुतभक्ष'। **–वह**–पु० अग्नि। **–शिष्ट,–शेष**–पु० हवनका बचा हुआ अंश। **–होम**–पु० वह ब्राह्मण जिसने हवन किया है।

हुतमा–स्त्री० (अ०) प्रचण्ड अग्नि, तेज़ आग।

हुता*–अ० क्रि० दे० 'हुत'।

हुताग्नि–वि० (सं०) हवन करनेवाला; अग्निमें हव्य डालनेवाला। स्त्री० हवनकी अग्नि, यज्ञाग्नि।

हुतात्मा(त्मन्)–वि० पु० (सं०) (मार्टर) किसी अच्छे कार्यमें अपनेको बलि कर देनेवाला, शहीद।

हुताश–पु० (सं०) अग्नि; तीनकी संख्या; चित्रक वृक्ष; भय, त्रास। **–वृत्ति**–स्त्री० अग्निके सहारे चलनेवाली जीविका। –**–शाला**–स्त्री० अग्निशाला।

हुताशन–पु० (सं०) अग्नि।

हुताशना–स्त्री० (सं०) एक योगिनी।

हुताशनी–स्त्री० (सं०) फाल्गुनी पूर्णिमा (जिस दिन होलिका-दहन होता है)।

हुति–स्त्री० (सं०) होम, हवन। * प्र० करण और अपादानकी विभक्ति।

हुतो*–अ० क्रि० दे० 'हुत', था।

हुदकाना*–स० क्रि० उभाड़ना।

हुदना*–अ० क्रि० आश्चर्यचकित होना, ठक रह जाना।

हुदहुद–पु० (अ०) कठफोड़ा पक्षी।

हुदूद–पु०, स्त्री० 'हद'का बहु०; चारों ओरकी सीमा, चतुस्सीमा; चारों दिशाएँ। **–(दे) शरई**–पु० धर्मशास्त्रकी सीमाएँ।

हुन–पु० स्वर्ण, सोना; स्वर्णमुद्रा, सोनेका सिक्का। **मु० –बरसना**–द्रव्यका आधिक्य होना।

हुनना–स० क्रि० हव्य–घृत, यव आदि–अग्निमें डालना, आहुति देना; यज्ञ करना, होम करना।

हुनर–पु० (फा०) फन, कारीगरी; हाथकी कारीगरी; खूबी; निपुणता; योग्यता। **–आश्ना**–वि० गुणी। **–मंद**–वि० हुनर जाननेवाला; गुणी; निपुण, कुशल। **–मंदी**–स्त्री० कारीगरी; कुशलता, निपुणता।

हुन्न, हुन्ना*–पु० दे० 'हुन'।

हुबाब–पु० (अ०) दे० 'हबाब'।

हुबाबी–वि० दे० 'हबाबी'।

हुबूर–पु० (अ०) बुद्धिमान लोग; हर्ष, प्रसन्नता।

हुब्ब–स्त्री० (अ०) प्रेम, मुहब्बत; मित्रता; चाह।

हुब्बुलवतन, हुब्बेवतन–स्त्री० (सं०) स्वदेशप्रेम, वतनकी मुहब्बत।

हुमकना, हुमगना–अ० क्रि० उल्लसित होना, आनंदातिरेकसे उछलना-कूदना; छोटे बच्चोंका अल्हड़पनके साथ चलना, ठुमकना; चोट करनेके लिए पैरको फुर्तीसे उठाना, तानना; पैरके पूरे जोरसे किसी वस्तुको ठेलना।

हुमसाना, हुमसावना*–स० क्रि० मनमें कामना, इच्छा, विचार आदि उठाना, हृदयके भावों, मनके विचारोंको उत्तेजित करना; उठाना, खड़ा करना।

हुमा–पु० (फा०) एक कल्पित पक्षी (कहा जाता है कि यह जिसके सिरसे गुजर जाय वह राजा हो जाय; यह हमेशा उड़ता रहता है, हड्डियाँ खाता है और किसीको नहीं सताता)।

हुमाई–वि० हुमा-संबंधी; भाग्यशाली।

हुमेल–स्त्री० स्त्रियोंके गलेका एक गहना जो अशर्फियों, रुपयों या इस आकारके सोने-चाँदीके नक्काशीदार टुकड़ोंमें कोंढ़ा जोड़कर और उन्हें तागोंमें गूँथकर पहननेके योग्य बनाया जाता है (पशुओंके गलेका भी यह गहना है)।

हुरकनी†–स्त्री० वेश्या।

हुरदंग, हुरदंगा–पु० दे० 'हुड़दंग'।

हुरमत–स्त्री० (अ०) इज्जत, आबरू; बड़ाई, प्रतिष्ठा; सतीत्व; निषेध। **–वाला**–वि० प्रतिष्ठित, इज्जतदार। **–मु०–उतारना, –लेना**–आबरू लेना, इज्जत बिगाड़ना।

हुरमति*–स्त्री० दे० 'हुरमत'–'कहे कबीर बाप राम राय, हुरमति राखहु मेरी'–कबीर।

हुरहुर–पु० एक बरसाती पौधा जिसके कई भेद होते हैं और जो दवाके भी काम आता है।

हुरहुरिया†–स्त्री० एक चिड़िया।

हुरिजक–पु० (सं०) निषाद और कवटीसे उत्पन्न एक संकर जाति।

हुरिहाई*–स्त्री० होली खेलनेवाली।

हुरिहार*–पु० होलीका राग-रंग करनेवाला, होली खेलनेवाला।

हुरुट्टक–पु० (सं०) (हाथीका) अंकुश।

हुरुमयी–स्त्री० नृत्यका एक प्रकार।

हुरूफ़–पु० (अ०) 'हर्फ़'का बहु०; अक्षरमाला। **–शनास**–वि० कम पढ़ा लिखा, केवल अक्षर पहचाननेवाला।

हुर्रा–पु० (अं०) एक प्रकारकी हर्षध्वनि। (अ०) सेवामुक्त दासी, स्वतंत्र स्त्री।

हुर्रीयत–स्त्री० (अ०) स्वाधीनता, आज़ादी। **–परस्त**–वि० प्राण देकर भी पराधीनतासे मुक्ति चाहनेवाला।

हुल–पु० (सं०) दोधारा छुरा। **–मातृका**–स्त्री० लंबी कटार।

हुलकना–अ० क्रि० वमन करना, कै करना।

हुलकी–स्त्री० उलटी, वमन, कै।

हुलना–अ० क्रि० लाठी आदिका ठेला जाना।

हुलसना–अ० क्रि० उल्लसित, आनंदित होना; स्फुरित होना, उमड़ना; * शोभित होना–'हिये हुलसै बनमाल सुहाई'–रसविलास। * स० क्रि० उल्लसित करना।

हुलसाना–स० क्रि० आनंदित करना। * अ० क्रि० दे० 'हुलसना'।

हुलसी–स्त्री० हुलास, उल्लास, मनकी तरंग; गोस्वामी तुलसीदासकी माताका नाम (कुछ लोगोंके मतसे)।

हुलहुल–पु० दे० 'हुरहुर'।

हुलहुली–स्त्री० (सं०) आनंद-मंगलके अवसरपर उच्चरित स्त्रियोंका अस्पष्ट शब्द।

हुलाग्रका–स्त्री० (सं०) एक अस्त्र।

हुलाना†–स० क्रि० दे० 'हूलना'।

हुलास–पु० उल्लास, मनकी उमंग, आनंदकी उठान; उत्साह। † स्त्री० सुँघनी। **–दानी**–स्त्री० नस रखनेकी डिबिया, नसदानी।

हुलासी–वि० उल्लासपूर्ण, आनंदयुक्त; उत्साहपूर्ण, उत्साही।

हुलिंग–पु० (सं०) मध्यदेशका एक भाग।

हुलिया–पु० (अ०) चेहरेकी बनावट; चेहरा; शक्ल; नख-शिख, शक्ल-सूरतका ब्योरा; आभूषण; ज़ेवर। **–नामा**–पु० शक्ल-सूरत आदिका विवरण-पत्र। **मु०–कटाना,–कराना,–लिखाना**–भगे या खोये हुए आदमीकी पहचान पुलिसमें लिखाना। **–तंग होना**–परेशानीमें पड़ना। **–बताना,–बयान करना**–शक्ल-सूरतका हाल बताना। **–बिगड़ना**–बुरी हालत होना; गत बनना। **–बिगाड़ देना,–बिगाड़ना**–मुँहपर ऐसा मारना कि सूरत बिगड़ जाय।

हुलिहुली–स्त्री० (सं०) भूकना; गर्जन; विवाहके समय गाया जानेवाला गीत।

हुलु–पु० (सं०) मेष।

हुलूक†–पु० एक तरहका बंदर। पु० (अ०) विनाश।

हुलैया–स्त्री० डूबनेके पूर्व नावका डगमगाना।

हुल्ल–पु० (सं०) नृत्यका एक प्रकार।

हुल्लड़–पु० शोर-गुल, हो-हल्ला; उत्पात, ऊधम; दंगा-फ़साद; गड़बड़।

हुल्लास–पु० एक मात्रिक छंद।

हुश्–अ० किसीको अकरणीय कार्य करने या करनेके प्रयत्नसे विरत करनेके लिए झटकेसे मुँहसे निकलनेवाला एक शब्द; पशु-पक्षी आदिको भगानेका शब्द।

हुसियार*–वि० दे० 'होशियार'।

हुसैन–पु० (अ०) अलीके दूसरे बेटे जो करबलाके युद्धमें शहीद हुए। **–बंद**–पु० जंजीरसे जुड़े हुए चाँदीके दो छल्ले जिन्हें मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रमके दिनोंमें बच्चोंको पहना देती हैं।

हुसैनी–पु० एक तरहका चर्मपात्र; एक तरहका अंगूर; एक रागिनी। **–कान्हड़ा**–पु० एक राग।

हुस्न–पु० (अ०) भलाई, खूबी; सुंदरता, लावण्य; शोभा। –

परस्त–वि० सौंदर्यकी पूजा करनेवाला, सौंदर्यप्रेमी । **–परस्ती**–स्त्री० सौंदर्य-प्रेम, सौंदर्योपासना । **–फ़रोश**–स्त्री० रूपाजीवा, गणिका । **–शिनास**–वि० सौंदर्योपासक । **–(स्ने)खुदादाद**–पु० सहज सौंदर्य । **–ज़न**–पु० (किसीके विषयमें) अच्छा गुमान, सद्भावना । **–तलब**–पु० किसी चीजको इशारेसे माँगना, खूवसूरतीसे माँगना । **हुस्नका आलम**–खूवसूरतीका जमाना ।

हुस्यार*–वि० दे० 'होशियार' ।

हुहव–पु० (सं०) एक नरक ।

हुहु, हुहू–पु० (सं०) एक गंधर्व ।

हूँ–अ० दे० 'हुँ'; दे० 'हू' । अ० क्रि० उत्तम पुरुषके एक-वचनके साथ प्रयुक्त होनेवाला 'होना' क्रियाका वर्तमानकालिक रूप । * सर्व० हौं, मैं ।

हूँकना–अ० क्रि० 'हुँ' शब्द करना, हुंकार करना, गर्जन करना; मानसिक या शारीरिक पीड़ासे जोर-जोरसे रोना; पीड़ाके कारण गायका रँभाना, वोलना, हुड़कना ।

हूंकार–पु० (सं०) दे० 'हुंकार' ।

हूँठ–वि० साढ़े तीन ।

हूँठा–पु० साढ़े तीनका पहाड़ा ।

हूँड़–स्त्री० सिंचाई आदि खेतीके कामोंमें किसानोंकी आपसकी सहायता ।

हूँस–स्त्री० किसीको सकारण और अकारण भी कटूक्ति कहते रहनेकी क्रिया, भर्त्सना; ईर्ष्या, डाह; किसी भी प्रकार किसी वस्तुको पानेकी इच्छा; बुरी नजर ।

हूँसना–स० क्रि० बुरी नजरसे देखना, नजर लगाना । अ० क्रि० ईर्ष्या करना, जलना; कुढ़ना, बुरा-भला कहना ।

हू–पु० (सं०) गीदड़के वोलनेकी ध्वनि । * अ० भी । **–रव**–पु० गीदड़ । (फा०) ब्रह्म; ईश्वर; शून्य ।

हूक–स्त्री० साल; पीड़ा, कसक; मानसिक पीड़ा; खटका ।

हूकना–अ० क्रि० पीड़ा होना, दर्द करना; सालना ।

हूटना*–अ० क्रि० विलग होना, पृथक् होना; विमुख होना, मुंह मोड़ना–'कालबस जंग ते नाहिं हूटचो'–सुजान० ।

हूठा–पु० अँगूठा; ठेंगा । **मु० –देना**–अँगूठा दिखाना ।

हूड़–वि० हुड्ड, अनाड़ी, मूढ; लापरवाह ।

हूण, हून–पु० (सं०) एक म्लेच्छ जाति जिसने भारतकी पश्चिमोत्तर सीमापर कई बार आक्रमण किया था और जिसे एक बार विक्रमादित्यने बुरी तरह हराया भी था; स्त्री० एक स्वर्णमुद्रा । **मु० –(नें)बरसना**–अत्यधिक आमदनी होना ।

हूत–वि० (सं०) बुलाया हुआ, आमंत्रित ।

हूति–स्त्री० (सं०) आह्वान, आमंत्रण; ललकार; नाम, संज्ञा ।

हूतो*–अ० दे० 'हुति' ।

हूदा–पु० पीड़ा, शूल; धक्का ।

हून–पु० (अ०) अपमान, तिरस्कार, बेइज्ज़ती ।

हूनना–स० क्रि० आगमें डालकर भूनना ।

हूबा–स्त्री० उत्साह, हिम्मत । पु० (अ०) पाप, हत्या ।

हूबहू–वि० ज्योंका त्यों, वैसा ही ।

हूय–पु० (सं०) आह्वान, बुलावा ।

हूर–स्त्री० (अ०) विहिश्त या स्वर्गलोककी स्त्री, अप्सरा; (ला०) परम सुंदरी, परी जैसी सुंदर स्त्री; * दे० 'हूल' । **–का बच्चा**–बहुत सुंदर आदमी ।

हूरना–स० क्रि० पेलना, ठेलना; चुभाना, गड़ाना ।

हूरहूण–पु० (सं०) एक जाति, हूणोंकी एक शाखा ।

हूरा–पु० लाठी आदिका छोर ।

हूर्छन–पु० (सं०) वक्र गतिसे चलना, टेढ़ी चाल चलना; धूर्तता करना ।

हूर्छिता(तृ)–वि० (सं०) टेढ़ी चाल चलनेवाला; कुटिल, धूर्त ।

हूल–स्त्री० लाठीके हूरे, तलवार, भाले आदिकी नोक तेजीसे कहीं गड़ाने, गोदने, भोंकनेकी क्रिया; पीड़ा, वेदना, शूल; वमन, कैकी प्रवृत्तिका होना; उलट-पलट; हल्ला-गुल्ला, शोर-गुल; आनंद-ध्वनि, खुशीसे उत्पन्न आवाज; प्रसन्नता, हर्ष; युद्ध आदिके हेतु आह्वान, ललकार; बहेलियेका चिड़िया फँसानेका लासा लगा बाँस ।

हूलना–स० क्रि० दे० 'हूरना' ।

हूला–पु० हूलने, हूरनेकी क्रिया ।

हूश–वि० (फा०) जाहिल, जंगली, उजड्ड; आचार, व्यवहार आदि-संबंधी तौर-तरीकेसे अपरिचित, असंस्कृत, अशिष्ट ।

हूह–स्त्री० युद्धकी ललकार; हुंकार, गर्जन ।

हूहक़–स्त्री० (अ०) हाहा हूहू, शोरगुल ।

हूहू–पु० आगके जलनेका शब्द; (सं०) दे० 'हुहु' ।

हृच्छय–वि० (सं०) हृदयमें रहनेवाला । पु० कामदेव; प्रेम । **–पीड़ित**–वि० कामपीड़ित । **–वर्धन**–वि० प्रेमवर्धक; कामोद्दीपक ।

हृच्छूल–पु० (सं०) हृदयका शूल, कलेजेकी ऐंठन ।

हृच्छोष–पु० (सं०) अंदरकी शुष्कता ।

हृज्ज–वि० (सं०) हृदयसे उत्पन्न ।

हृणिया, हृणीया–स्त्री० (सं०) निंदा; लज्जा, ब्रीडा; दया, अनुकंपा ।

हृत–वि० (सं०) हरण किया हुआ; गृहीत; वहन किया हुआ, ले जाया गया हुआ; वंचित; मुग्ध; स्वीकृत; विभक्त । पु० भाग, हिस्सा । **–चंद्र**–वि० चंद्रमासे रहित (कुमुद) । **–ज्ञान**–वि० ज्ञानहीन । **–दार**–वि० पत्नीरहित । **–द्रव्य,–वित्त**–वि० संपत्तिसे वंचित । **–प्रतिदान**–पु० (रेस्टीटच्यूशन) छीनी हुई या जब्त की हुई वस्तु, संपत्ति आदिका पुनः लौटा दिया जाना । **–प्रत्यर्पण**–पु० (रेस्टोरेशन) हरे हुए, छीने हुए व्यक्ति या राज्यादिको पुनः अर्पित कर देना, सौंप देना; दे० 'पूर्ववत्करण' । **–प्रसाद**–वि० जिसकी शांति नष्ट हो गयी हो । **–मानस**–वि० वेसुध, संज्ञाहीन । **–राज्य**–वि० राज्यसे वंचित । **–वासा-(सस्)**–वि० वस्त्रविरहित । **–सर्वस्व**–वि० जिसका सब कुछ ले लिया या नष्ट कर दिया गया हो ।

हृताधिकार–वि० (सं०) अधिकारवंचित, पदच्युत ।

हृति–स्त्री० (सं०) अपहरण, ले लेने, लूटनेकी क्रिया; ध्वंस, नाश ।

हृत्–वि० (सं०) (समासांतमें) हरण करनेवाला; ग्रहण करनेवाला; ले जानेवाला; आकृष्ट, मुग्ध करनेवाला । पु० 'हृद्'का समासगत रूप । **–कंप**–पु० दिलकी धड़कन (पल्पिटेशन ऑफ़ हार्ट) । **–कमल**–पु० योगमें माने हुए छः चक्रोंमेंसे एक जो हृदयके पास स्थित है । **–ताप**–पु० हृदयकी जलन, मनोव्यथा । **–पंकज,–पद्म**–पु० कमलवत् हृदय । **–पिंड**–पु० सीनेके पास स्थित अंग-विशेष, हृदय । **–पीडन**–पु० हृदयको कष्ट देना । **–पीडा**–स्त्री० मनोव्यथा । **–पुंडरीक,–पुष्कर**–पु० दे० 'हृत्पंकज' । **–प्रिय**–वि० हृदयको प्रिय लगनेवाला । **–स्तंभ**–पु० हृदयका निश्चेष्ट होना । **–स्थ**–वि० हृदयमें स्थित । **–स्फोट**–पु० हृदयका विदीर्ण होना; भग्न हृदय ।

हृदयंगम–वि० (सं०) मर्मस्पर्शी; सुंदर, मनोहर; हृदयगत; आकर्षक; आनंददायक; प्रिय; हृदयसे निकलनेवाला; हृदयमें अच्छी तरह बैठा हुआ; भली प्रकार समझमें आया हुआ; उपयुक्त; वांछित । पु० उपयुक्त वचन ।

हृदय–पु० (सं०) वक्षके भीतर बायीं ओर स्थित मांसका रक्तकोश जिसमें भरा शुद्ध रक्त नाड़ियों द्वारा सारे शरीरमें प्रवाहित होता है, दिल; छाती, सीना (हार्ट); मन, अंतःकरण; आत्मा; नीरक्षीरविवेकिनी बुद्धि; भीतरी रहस्य; किसी स्थानका भीतरी भाग जो प्राय महत्त्वपूर्ण होता है; सार वस्तु, तत्त्व, हीर; बहुत ही प्रिय, प्यारा व्यक्ति । **–कंप**–पु० दे० 'हृत्कंप' । **–कंपन**–वि० हृदयको क्षुब्ध करनेवाला । **–क्लम**–पु० दिलकी कमजोरी, बुजदिली । **–क्षोभ**–पु० मनकी अशांति । **–गत**–वि० हृदय-संबंधी, हार्दिक, आंतरिक; हृदयस्थित । **–ग्रंथि**–स्त्री० हृदयकी गाँठ, दिलको कष्ट देनेवाली बात । **–ग्रह**–पु० कलेजेकी ऐंठन । **–ग्राह**–पु० रहस्य जान लेना । **–ग्राहक**–वि० दिलको विश्वास करानेवाला । **–ग्राही(हिन्)**–वि० मनोहर; मनोरंजक; सुन्दर; रुचिकर; अभीष्ट । **–चोर,–चौर**–पु० हृदयका हरण करनेवाला व्यक्ति । **–च्छिद्**–वि० हृदयका छेदन करनेवाला । **–ज**–पु० पुत्र । **–ज्ञ**–वि० दिलकी बात समझनेवाला; रहस्य जाननेवाला ।

–ज्वर–पु० दिलकी जलन। **–दाही(हिन्)**–वि० हृदय जलानेवाला। **–देश**–पु० हृदयका क्षेत्र। **–दौर्बल्य**–पु० दिलकी कमजोरी। **–द्रव**–पु० दिलका बहुत तेजीके साथ धड़कना। **–निकेत,–निकेतन**–पु० मनोज, कामदेव। **–पीडा**–स्त्री० दे० 'हृत्पीडा'। **–पुंडरीक**–पु० दे० 'हृत्पुंडरीक'। **–पुरुष**–पु० दिलकी धड़कन। **–प्रमाथी(थिन्)**–वि० मनको क्षुब्ध करनेवाला; मुग्ध करनेवाला। **–प्रस्तर**–वि० संगदिल, निष्ठुर। **–प्रिय**–वि० दिलको प्यारा, स्वादिष्ठ। **–बंधन**–वि० मुग्ध करनेवाला। **–रोग**–पु० हृदयमें होनेवाला रोग। **–लेख**–पु० ज्ञान; चिंता। **–लेख्य**–वि० आनंददायक। **–वल्लभ**–पु० प्राणप्रिय व्यक्ति, प्रियतम। **–वान(वत्)**–वि० सहृदय, दिलदार; रसिक; भावुक, दयालु, कोमल हृदय। **–विदारक**–वि० हृदयको विदीर्ण करनेवाला, शोक, करुणा आदि उत्पन्न करनेवाला। **–विध्,–वेधी(धिन्)**–वि० मर्माहत करनेवाला। **–विरोध**–पु० हृदयका पीड़न। **–वृत्ति**–स्त्री० मनकी प्रवृत्ति। **–व्यथा**–पु० मानसिक पीड़ा। **–व्याधि**–स्त्री० हृदयका रोग। **–शल्य**–पु० दिलका काँटा; दिलका जख्म। **–शून्य**–वि० दे० 'हृदयहीन'। **–शैथिल्य**–पु० विषण्णता। **–शोषण**–वि० दिलको सुखानेवाला। **–संघट्ट**–पु० हृदयकी गतिका रुकना। **–संसर्ग**–पु० हृदयोंका मेल। **–सम्मित**–वि० सीनेके बराबर ऊँचा। **–स्थ**–वि० जो हृदयमें स्थित हो; शरीरस्थ (जैसे कीटाणु)। **–स्थली**–स्त्री०, **–स्थान**–पु० वक्षःस्थल। **–स्पृक्(श्)**–वि० हृदयको छूनेवाला। **–स्पर्शी(शिन्)**–वि० हृदयको प्रभावित करनेवाला। **–हारी(रिन्)**–वि० मनको मुग्ध करनेवाला। **–हीन**–वि० निष्ठुर; अरसिक। **मु० –उमड़ना, –भर आना**–प्रेम, करुणा आदिके कारण चित्तका द्रवित होना, विकल होना। **–विदीर्ण होना**–शोक, मानसिक पीड़ा अथवा करुणा आदिके कारण अत्यधिक कष्ट होना; ऐसा लगना मानों हृदय फट जायगा। **–से लगाना**–आलिंगन करना; आत्मीय और प्रिय बनाना।

हृदयाकाश–पु० (सं०) हृदयका खात।

हृदयातिपात–पु० (सं०) हृदयकी धड़कनका बन्द हो जाना (हार्ट फ़ेल्योर)।

हृदयात्मा(त्मन्)–पु० (सं०) कंक पक्षी।

हृदयानुग–वि० (सं०) हृदयको तुष्ट करनेवाला।

हृदयामय–पु० (सं०) हृद्रोग।

हृदयालु–वि० (सं०) दे० 'हृदयवान्'।

हृदयावर्जक–वि० (सं०) हृदय जीतनेवाला।

हृदयिक, हृदयी(यिन्)–वि० (सं०) दे० 'हृदयवान्'।

हृदयेश, हृदयेश्वर–पु० (सं०) पति; परम प्रिय व्यक्ति।

हृदयेशा, हृदयेश्वरी–स्त्री० (सं०) पत्नी, प्रियतमा।

हृदयोन्मादिनी–स्त्री० (सं०) एक श्रुति (संगीत)। वि० स्त्री० मनको उन्मत्त या मुग्ध करनेवाली।

हृदामय–पु० (सं०) हृदयका रोग।

हृदावर्त–पु० (सं०) घोड़ेके सीनेपरकी भँवरी।

हृदिशय–वि० (सं०) हृदयमें रहनेवाला।

हृदिस्थ–वि० (सं०) जो हृदयमें हो; प्रिय।

हृदिस्पृक्(श्)–वि० (सं०) हृदयको स्पर्श करनेवाला; मुग्धकारी, सुंदर।

हृदुत्क्लेद, हृदुत्क्लेश–पु० (सं०) हृदय या पेटका रोग; मतली, वमन।

हृद्–पु० (सं०) दिल, मन; आत्मा; सीना; किसी पदार्थका भीतरी भाग, हीर। **–ग**–वि० सीनेतक पहुँचनेवाला (जैसे पानी)। **–गत**–वि० मनमें आया हुआ; हृदयस्थ; हृदय-संबंधी; वांछित; प्रिय; आनंददायक; अभिप्रेत। पु० अभिप्राय। **–गद**–पु० हृद्रोग। **–गम**–वि० हृदयमें प्रवेश करनेवाला। **–गोल**–पु० एक पर्वत। **–ग्रंथ**–पु० दे० 'हृद्व्रण'। **–ग्रह**–पु० कलेजेकी ऐंठन। **–घटन**–पु० हृदयका एक रोग। **–दाह,–विदाह**–पु० हृदयकी जलन। **–देश**–पु० हृदयका क्षेत्र; वक्षःस्थल। **–द्रव**–पु० दिलका तेजीसे धड़कना। **–द्वार**–पु० हृदयका द्वार। **–रुक्(ज्)**–स्त्री० हृदयका रोग; हृदयका शूल। **–रोग**–पु० हृदयका रोग; शोक; प्रेम; दे० क्रममें। **–०वैरी(रिन्)**–पु० अर्जुन वृक्ष। **–वंटक**–पु० जठर। **–वर्ती(र्तिन्)**–वि० हृदयस्थ। **–व्यथा**–स्त्री० मनोव्यथा; हृदयका स्पंदन। **–व्रण**–पु० कलेजेका जख्म।

हृद्य–वि० (सं०) हार्दिक; प्रिय; वांछित; अनुकूल; आनंददायक; सुंदर, मनोहर; स्वादिष्ठ; हृदयसे उत्पन्न। पु० दारचीनी; एक वशीकरण मंत्र; वृद्धि नामक ओषधि; बेलका पेड़; श्वेत जीरक; दही; मधुसे बनी हुई शराब; कैथ। **–गंध**–वि० सुगंधित, खुशबूदार। पु० बेलका पेड़; क्षुद्र जीरक; सौवर्चल लवण। **–गंधक**–पु० सौवर्चल लवण। **–गंधि**–पु० क्षुद्र जीरक।

हृद्यांशु–पु० (सं०) चंद्रमा।

हृद्रोग–पु० (सं०) कुंभ राशि; दे० 'हृद्'में।

हृल्लास, हृल्लासक–पु० (सं०) हृदयकी धड़कन; हिचकी।

हृल्लेख–पु० (सं०) चिंता; ज्ञान, समझ।

हृषि–स्त्री० (सं०) प्रसन्नता, आनंद; संतोष; दीप्ति; कांति। पु० झूठ बोलनेवाला आदमी।

हृषित–वि० (सं०) प्रसन्न, आनंदित, उल्लसित; रोमांचित; ताजा; चकित; प्रतिहत, भोथरा; प्रणत; वर्मित, शस्त्रसज्ज; हताश।

हृषीक–पु० (सं०) इंद्रिय। **–नाथ**–पु० विष्णु या कृष्ण।

हृषीकेश–पु० (सं०) परमात्मा, इंद्रियोंका स्वामी; सभी इंद्रियोंका संचालक, मन; विष्णु या कृष्ण; वर्षका दसवाँ महीना, पौष मास; एक तीर्थस्थान जो हरिद्वारके निकट है।

हृषीकेश्वर–पु० (सं०) विष्णु या कृष्ण।

हृषु–वि० (सं०) प्रसन्न; झूठ बोलनेवाला। पु० अग्नि; सूर्य; चंद्रमा।

हृष्ट–वि० (सं०) हृषित, प्रसन्न; रोमांचित; विस्मित; कड़ा, जिसमें लोच न हो; कुंठित। **–चित्त,–चेतन,–चेता(तस्)**–वि० प्रसन्नचित्त। **–तनूरुह**–वि० रोमांचित। **–तुष्ट**–वि० प्रसन्न और संतुष्ट। **–पुष्ट**–वि० तगड़ा, हट्टा-कट्टा। **–मना(नस्),–मानस**–वि० प्रसन्नचित्त। **–रोमा(मन्)**–वि० रोमांचयुक्त। पु० एक असुर। **–वदन**–वि० प्रसन्न मुद्रावाला। **–संकल्प**–वि० प्रसन्न, संतुष्ट। **–हृदय**–वि० प्रसन्नचित्त।

हृष्टि–स्त्री० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, आनंद; रोमांच; दर्प, गर्व। **–योनि**–पु० एक तरहका अर्धक्लीव पुरुष, ईर्ष्यक।

हृष्यका–स्त्री० (सं०) एक मूर्च्छना (संगीत)।

हेँगा–पु० जोती हुई जमीन बराबर करनेका पटरा, पटेला।

हेँगुरी|–स्त्री० उँगली।

हेँहेँ–पु० धीरे-धीरे हँसनेकी ध्वनि; गिड़गिड़ानेके वक्त निकलनेवाला शब्द। **मु० –करना**–गिड़गिड़ाना; जी-हुजूरी करना।

हे–अ० (सं०) संबोधन, आह्वानके लिए प्रयुक्त शब्द; अवज्ञा, घृणा-सूचक शब्द। * अ० क्रि० थे।

हेकड़–वि० बलवान् (बुरे अर्थमें), जबरदस्त; अशिष्ट, जाहिल; उजड्ड; मजबूत शरीरवाला, तंदुरुस्त।

हेकड़ी–स्त्री० जबरदस्ती; बलात् कुछ करनेकी प्रवृत्ति; अशिष्टता, उजड्डपन।

हेकलो|–वि० अकेला।

हेक्का–स्त्री० (सं०) हिक्का, हिचकी।

हेक्टेयर–पु० (अं०) भूमिकी एक माप, लगभग २॥ एकड़।

हेच–वि० (फा०) निकम्मा; फज़ूल, बेकार; अकिंचन, क्षुद्र, तुच्छ; निस्तत्त्व, सारहीन। पु० थोड़ी-सी चीज। **–कस**–वि० अधम, कमीना। **–दाँ**–वि० कुछ न जाननेवाला, मूर्ख। **–दानी**–स्त्री० नादानी। **–पोच**–वि० मामूली, अदना, घटिया; बेफायदा; निकम्मा। पु० तुच्छ व्यक्ति; मामूली हैसियतका आदमी; मामूली चीज। **–मदाँ**–वि० निपट मूर्ख। **–मर्द**–वि० दीन, दुःखी व्यक्ति।

हेजाज़–पु० (अ०) दे० 'हिजाज़'।

हेट*–पु० सहेट, संकेत स्थल।

हेठ*–वि० कम; नीचा; हीन। अ० नीचे–'हेठ दाबि कपि भालु निसाचर'–रामा०। पु० (सं०) क्षति; चोट; बाधा।

हेठा–वि० दे० 'हेठ'। **–पन**–पु० क्षुद्रता; नीचता।

हेठी–स्त्री० अप्रतिष्ठा, मानहानि; हीनता।

हेड–पु० (सं०) उपेक्षा, अवमानना। **–ज**–पु० क्रोध; अप्रसन्नता।

हेड–पु० (अं०) सिर; प्रधान व्यक्ति, सर्वोच्च अधिकारी। **–ऑफिस**–पु० प्रधान कार्यालय। **–क्वार्टर**–पु० प्रधान व्यक्ति या सर्वोच्च अधिकारीका आवास, सदर मुकाम। **–मास्टर**–पु० प्रधान अध्यापक।

हेडावुक्क–पु० (सं०) घोड़ेका व्यापारी।

हेडिंग–स्त्री० (अं०) शीर्षक।

हेड़ी|–स्त्री० विक्रयार्थ चौपायोंका दल। पु० व्याध।

हेत*–पु० हेतु; प्रीति, प्रेम। अ० लिए।

हेति–स्त्री० (सं०) अस्त्र; सूर्यकिरण; आगकी लपट, लौ; प्रकाश, तेज; आघात, चोट; जख्म; औजार; अँखुवा; एक असुर।

हेती*–पु० प्रेमी, हित-मित्र; हितू; संबंधी।

हेतु–पु० (सं०) कारण; लक्ष्य, मकसद; अभिप्राय, उद्देश्य (मोटिव); ऐसी घटना, काम आदि जिसके बिना हुए दूसरी घटना, दूसरा काम न हो, मूल कारण, एकमात्र कारण; एक अर्थालंकार जहाँ कारणको ही कार्यरूपमें वर्णित करते हैं; तर्क, दलील; तर्कशास्त्र; व्यापक ज्ञापक कारण, ऐसा कारण जो व्याप्ति, अव्याप्ति और अतिव्याप्ति नामक दोषोंसे दूषित न हो; * प्रेम। **–दुष्ट**–वि० जिसकी बात तर्कसंगत न हो। **–दृष्टि**–स्त्री० कारणकी परीक्षा। **–बलिक**–वि० तर्कप्रबल, तर्ककुशल। **–भेद**–पु० ग्रहयुद्धका एक भेद (ज्यो०)। **–मात्रता**–स्त्री० केवल बहाना होना। **–युक्त**–वि० सकारण, साधार। **–रूपक**–पु० रूपकका एक प्रकार जो सकारण होता है। **–लक्षण**–पु० हेतुकी विशेषताएँ। **–वचन**–पु० तर्कयुक्त बात। **–वाद**–पु० विवाद-हेतुका उल्लेख। **–वादी(दिन्)**–पु० तर्क करनेवाला, तार्किक; नास्तिक। **–विद्या**–स्त्री०,**–शास्त्र**–पु० तर्कशास्त्र। **–शून्य**–वि० हेतुरहित, निराधार। **–हानि**–स्त्री० तर्कका न दिया जाना। **–हिल**–पु० एक बड़ी संख्या (बौ०)। **–हेतुमद्भाव** पु० कारण और कार्यका संबंध। **–हेतुमद्भूत**–पु० भूत कालका एक भेद जिसमें कारणरूप क्रिया न होनेपर कार्यरूप क्रियाका न होना दिखलाया जाता है।

हेतुक–वि० (सं०) कारणरूप होनेवाला, उत्पन्न करनेवाला (समासांतमें)। पु० कारण; तार्किक; शिवका एक गण; एक बुद्ध।

हेतुकी–स्त्री० (सं०) निदानशास्त्र (इटियालॉजी)।

हेतुता–स्त्री०, **हेतुत्व**–पु० (सं०) कारणका होना।

हेतुमान्(मत्)–वि० (सं०) जो सकारण हो; तर्कयुक्त; साधार। पु० कार्य।

हेतूत्प्रेक्षा–स्त्री० (सं०) उत्प्रेक्षा अलंकारका एक भेद जहाँ अहेतुको हेतु मानकर उत्प्रेक्षा की जाय।

हेतूपक्षेप, हेतूपन्यास–पु० (सं०) कारण देना, तर्क उपस्थित करना।

हेतूपमा–स्त्री० (सं०) दे० 'हेतूत्प्रेक्षा'।

हेत्वपदेश–पु० (सं०) हेतुका उल्लेख।

हेत्वपह्नुति–स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें प्रकृतके निषेधका हेतु व्यक्त रहता है।

हेत्वाभास–पु० (सं०) वह हेतु जो किसी कार्यका कारण तो न हो परंतु हेतु-सा आभासित हो, कुतर्क, हेतुदोष (फ़ैलिसी)।

हेना–पु० दे० 'हिना'।

हेमंत–पु० (सं०) छः ऋतुओंमेंसे एक जो मार्गशीर्ष और पौषमें पड़ती है। **–नाथ**–पु० कपित्थ, कैथ। **–मेघ**–पु० जाड़ेका बादल। **–समय**–पु० जाड़ेका मौसिम।

हेमंती–स्त्री० (सं०) जाड़ेका मौसिम।

हेम–पु० (सं०) सुवर्ण; धतूरा; काले या भूरे रंगका घोड़ा; एक स्वर्णमान, माशा; बुध ग्रह।

हेम(न्)–पु० (सं०) सोना; जल; पाला, हिम; धतूरा; केसरका फूल; बुध ग्रह। **–कंदल**–पु० प्रवाल, मूँगा। **–कक्ष**–पु० सोनेका कमरबंद। **–कर**–पु० शिव। **–करक**–पु० स्वर्णपात्र। **–कर्ता(र्तृ)**–पु० सुनार; एक पक्षी। **–कलश**–पु० (गुंबदपर लगानेकी) सोनेकी कलसी, स्वर्णनिर्मित शृंगकलश। **–कल्याण**–पु० संगीतमें कल्याण रागका एक भेद। **–कांति**–स्त्री० दारुहरिद्रा। वि० सोनेकी-सी कांतिवाला। **–कार,–कारक**–पु० सुनार। **–कारिका**–स्त्री० एक पौधा। **–किंजल्क**–पु० नागकेसर। **–कुंभ**–पु० सोनेका कलश। **–कूट**–पु० हिमालयके उत्तरका एक पर्वत। **–केतकी**–स्त्री० स्वर्ण केतकी। **–केलि**–पु० अग्नि। **–केश**–पु० शिव। **–गंधिनी**–स्त्री० रेणुका नामक गंधद्रव्य। **–गर्भ**–पु० उत्तरका एक पर्वत। वि० जिसके अंदर सोना हो। **–गिरि**–पु० मेरु पर्वत। **–गुह**–पु० एक नागासुर। **–गौर**–वि० सोने जैसा गौरवर्णयुक्त। पु० किंकिरात वृक्ष; अशोक वृक्ष। **–घ्न**–पु० सीसा। **–घ्नी**–स्त्री० हलदी। **–चंद्र**–वि० सोनेके चाँदसे अलंकृत (जैसे रथ)। पु० एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा; एक जैनाचार्य। **–चक्र**–वि० सोनेके पहियोंवाला। **–चूली(लिन्)**–वि० स्वर्णशिखरयुक्त। **–ज**–पु० टीन; राँगा। **–जट**–पु० किरातोंकी एक जाति। **–जीवंती**–स्त्री० एक पौधा। **–ज्वाल**–पु० अग्नि। **–तरु**–पु० धतूरा। **–तार**–पु० तूतिया। **–ताल**–पु० उत्तरका एक पहाड़ी प्रदेश। **–तुला**–स्त्री० सोनेका तुलादान। **–दंता**–स्त्री० एक अप्सरा। **–दुग्ध,–दुग्धक,–दुग्धी(ग्धिन्)**–पु० गूलर। **–दुग्धा,–दुग्धी**–स्त्री० स्वर्णक्षीरी। **–धन्वा(न्वन्)**–पु० ग्यारहवें मनुका एक पुत्र। **–धान्य**–पु० तिल। **–धान्यक**–पु० डेढ़ माशेका एक तौल। **–धारण**–पु० आठ पलकी एक तौल। **–नेत्र**–पु० एक यक्ष। **–पर्वत**–पु० सुमेरु पर्वत; (महादानके लिए बना हुआ) सोनेका पर्वत। **–पुष्प**–पु० चंपा; अशोक-पुष्प; नागकेसर; अमलतास। **–पुष्पक**–पु० चंपक-पुष्प; लोध्र। **–पुष्पिका**–स्त्री० स्वर्णयूथिका। **–पुष्पी**–स्त्री० मंजिष्ठा; स्वर्णजीवंती; इंद्रवारुणी; स्वर्णली; मुषली; कंटकारी। **–पृष्ठ**–वि० सोनेका मुलम्मा किया हुआ। **–प्रतिमा**–स्त्री० सोनेकी मूर्ति। **–प्रभ**–वि० सोनेकी कांतिवाला। **–फला**–स्त्री० स्वर्णकंदली.। **–भस्त्रा**–स्त्री० सोनेकी थैली। **–माक्षिक**–पु० एक उपधातु, सोनामाखी। **–माला**–स्त्री० यमकी पत्नी। **–मालिका**–स्त्री० सोनेका हार। **–माली(लिन्)**–वि० सोनेका हार धारण करनेवाला; सोनेसे अलंकृत। पु० सूर्य; खर नामक राक्षसका पिता। **–माशा**–स्त्री० सोनेकी एक तौल। **–मुद्रा**–स्त्री० सोनेका सिक्का, मोहर, अशर्फी। **–यूथिका**–स्त्री० स्वर्णयूथिका। **–रागिनी**–स्त्री० हरिद्रा। **–रेणु**–पु० त्रसरेणु। **–लंब,–लंबक**–पु० ३१ वाँ संवत्सर। **–ल**–पु० स्वर्णकार; गिरगिट; छिपकली; कसौटी। **–लता**–स्त्री० स्वर्णजीवंती। **–वर्ण**–वि० सोनेके रंगका। पु० गरुड़का एक पुत्र; एक बुद्ध। **–वल**–पु० मोती। **–वल्ली**–स्त्री० स्वर्णजीवंती। **–शंख**–पु० विष्णु। **–शिखा**–स्त्री०,**–शीत**–पु० स्वर्णक्षीरी। **–शृंग**–पु० एक पर्वत। **–शैल**–पु० एक पर्वत। **–सागर**–पु० एक पौधा। **–सार**–पु० तूतिया। **–सुता**–स्त्री० पार्वती। **–सूत्र,–सूत्रक**–पु० हारविशेष। **–हस्तिरथ**–पु० महादानविशेष (जिसमें सोनेका हस्तिरथ दिया जाता है)।

हेमक–पु० (सं०) स्वर्ण; स्वर्णखंड; एक अरण्य; एक दैत्य।

हेमांक–वि० (सं०) स्वर्णालंकृत।

हेमांग–पु० (सं०) ब्रह्मा; विष्णु; गरुड़; सिंह; सुमेरु; चंपक वृक्ष। वि० सुनहला।

हेमांगद–वि० (सं०) सोनेका बिजायठ पहननेवाला। पु० एक गंधर्व; एक कलिंगनरेश; वसुदेवका एक पुत्र।

हेमांगा–स्त्री० (सं०) स्वर्णक्षीरी।

हेमांड, हेमांडक–पु० (सं०) ब्रह्मांड।

हेमा–स्त्री० (सं०) पृथ्वी; सुंदर स्त्री; एक अप्सरा; माधवी लता।

हेमा(मन्)–पु० (सं०) बुध ग्रह।

हेमाचल–पु० (सं०) दे० 'हेमपर्वत'।

हेमाढ्य–वि० (सं०) सोनेसे भरा-पूरा।

हेमाद्रि–पु० (सं०) मेरु। **–जरण**–पु० स्वर्णक्षीरी।

हेमाद्रिका–पु० (सं०) स्वर्णक्षीरी।

हेमाभ–वि० (सं०) सोने जसी चमकवाला।

हेमाल–पु० एक राग।

हेमाह्व–पु० (सं०) वनचंपक; धतूरा।

हेमाह्वा–स्त्री० (सं०) स्वर्णजीवंती; स्वर्णक्षीरी।

हेमियानी–स्त्री० रुपया रखनेकी थैली।

हेम्न–पु० (सं०) बुध ग्रह।

हेम्ना–स्त्री० (सं०) एक राग।

हेम्य–वि० (सं०) सोनेका; सुनहला।

हेय–वि० (सं०) त्याज्य; बुरा, खराब; घटाये जाने योग्य।

हेरंब–पु० (सं०) गणेश; भैंसा; शौर्यगर्वित, धीरोद्धत नायक; बुद्धविशेष। **–जननी**–स्त्री० दुर्गा। **–मंत्र**–पु० गणेशका एक मंत्र। **–हट्ट**–पु० दक्षिणका एक प्राचीन भूभाग।

हेरंबक–पु० (सं०) एक प्राचीन जाति।

हेर–पु० (सं०) हरिद्रा, हलदी; एक प्रकारका मुकुट; आसुरी माया। * स्त्री० खोज, तलाश।

हेरक–पु० (सं०) शिवका एक दैत्य-गण; गुप्तचर।

हेरना*–स० क्रि० किसी चीजको ढूँढ़ना, तलाश करना, खोजना; देखना, निहारना; किसी वस्तुको विवेकपूर्वक देखना, परीक्षा करना, जाँच-पड़ताल करना, परखना। **मु० –फेरना**–एक जगहकी चीज दूसरी जगह करना, उलट-पलट करना, अदल-बदल करना, परिवर्तन करना।

हेरफेर–पु० परिवर्तन, उलट-पलटकी क्रिया; अदल-बदल करनेका काम; रद्दोबदल (आलट्रेशन); विनिमय; भेद, अंतर, दूरी; टेढ़ी-सीधी बात, साफ-साफ, सीधे-सीधे बात न करनेकी क्रिया; चालबाजी। **–कर**–किसी-न-किसी तरह, घूम-फिरकर।

हेरवाना†–स० क्रि० पता लगवाना, खोजवाना; खोना।

हेराना*–स० क्रि० दे० 'हेरवाना'। अ० क्रि० गायब हो जाना, खो जाना; एकदम न रह जाना, अभाव हो जाना; अपनेको भूल जाना, अपनी सुध-बुध खोना।

हेरा-फेरी–स्त्री० हेर-फेर; उलट-पलट, वस्तुओंका यथास्थान न रह जाना, चीजोंका इधर-उधर होना।

हेरिक–पु० (सं०) भेदिया, गुप्तचर।

हेरी*–स्त्री० आह्वान, पुकार, गुहार। **–मु० –देना**–गुहार लगाना, आह्वान करना।

हेरुक–पु० (सं०) गणेश; शिवका एक गण; एक बोधिसत्त्व; नास्तिकोंका एक भेद।

हेलंची–स्त्री० (सं०) एक साग, हिलमोचिका।

हेल–पु० परिचय ('मेल'के साथ प्रयुक्त); कीचड़, गोवर आदिका ढेर; ढेर; अवज्ञा, उपेक्षा; घृणा। **–मेल**–पु० मेल-जोल, घनिष्ठता।

हेलक–पु० (सं०) एक प्राचीन तौल।

हेलन–पु० (सं०) अवहेलना, तिरस्कार; रस-क्रीड़ा, किलोल।

हेलना–स्त्री० (सं०) दे० 'हेलन'। * अ० क्रि० राग-रंग मनाना, किलोल, क्रीड़ा करना; निश्चिंत रहना, परवाह न करना; (जानपर) खेलना; (जलमें) प्रवेश करना; हँसी-मजाक करना। स० क्रि० अवहेलना, उपेक्षा करना, तुच्छ समझना; तैरना, हलकर पार करना।

हेलनीय–वि० (सं०) उपेक्षाके योग्य।

हेलया–अ० (सं०) खेल ही खेलमें, आसानीसे ('हेला'का करण कारकका रूप)।

हेला–पु० मेहतर; आह्वान, पुकार; उतारा–'और घाट ह्वै कीजै हेला'–छत्र०; आक्रमण, धावा; ठेलनेकी क्रिया, धक्का; खेवा, खेप। स्त्री० (सं०) तिरस्कार, अवज्ञा; अपमान; केलि, क्रीड़ा; चंद्रिका; आनंद, प्रसन्नता; आसानी, सरलता; स्त्रियोंमें सुरतकी बलवती इच्छा; एक मूर्च्छना (संगीत); स्त्रियोंका शृंगारसूचक व्यक्त हाव जो एक प्रकारका सत्त्वज अलंकार है।

हेलाल–पु० दे० 'हिलाल'।

हेलावुक्क–पु० (सं०) दे० 'हेडावुक्क'।

हेलि–पु० (सं०) सूर्य। स्त्री० आलिंगन; रास्तेपर जाती हुई बरात।

हेलिक–पु० (सं०) सूर्य।

हेलिन, हेलिनी–स्त्री० मेहतरानी।

हेली*–स्त्री० सखी; सहेली; होली (बीसल०); घर, मकान।

हेली-मेली–पु० जिससे हेल-मेल हो, संगी-साथी।

हेल्थ–पु० (अं०) तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

हेवंत*–पु० दे० 'हेमंत'।

हेवज्र–पु० (सं०) एक बौद्ध देवता।

हेवाक–पु० (सं०) प्रबल इच्छा।

हेवाकस–वि० (सं०) तीव्र, प्रबल (इच्छा)।

हेवाकी(किन्)–वि० (सं०) बहुत इच्छुक; लीन।

हेष, हेषित–पु० (सं०) हिनहिनाहट।

हेषा–स्त्री० (सं०) दे० 'हेष'।

हेषी(षिन्)–पु० (सं०) घोड़ा।

हैं–अ० क्रि० 'है'का बहुवचन रूप। अ० आश्चर्यसूचक शब्द; अस्वीकृति, निषेधसूचक शब्द।

हैंगिंग–वि० (अं०) लटकनेवाला। **–गार्डेन**–पु० झूला बाग। **–ब्रिज**–पु० झूला पुल। **–लैंप**–पु० वह लैंप जो छतसे लटकाकर जलाया जाय।

हैंगुल–वि० (सं०) हिंगुलसे संबद्ध, ईंगुर-संबंधी; ईंगुरके रंगका।

हैंडबिल–पु० (अं०) नोटिस, पर्चा।

हैंडबैग–पु० (अं०) चमड़ेका छोटा बक्स जिसमें प्रायः व्यापार, पढ़ने-लिखने आदिके अत्यावश्यक सामान रखते हैं।

हैंडिल–पु० (अं०) मुठिया, दस्ता।

हैंस†–स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ दवाके काम आती है।

है–अ० क्रि० 'होना'का वर्तमान कालका एकवचन रूप। * पु० हय, अश्व, घोड़ा। **–वर**–पु० सुंदर, अच्छा घोड़ा।

हैकड़–वि० दे० 'हेकड़'।

हैकल–स्त्री० चौकोर, पानके तथा अन्य प्रकारके आकारके कई जंतरोंसे बना गलेमें पहननेका स्त्रियोंका एक गहना, हुमेल।

हैज़–पु० (अ०) मासिक रजःस्राव।

हैज़ा–पु० (अ०) संक्रामक माना जानेवाला एक रोग जिसमें कै और दस्त आते हैं, विषूचिका। स्त्री० रजस्वला।

हैट–पु० (अं०) अंग्रेजी टोप।

हैडिंब–वि० (सं०) हिडिंब–संबंधी। पु० हिडिंबाका पुत्र, घटोत्कच।

हैडिंबि–पु० (सं०) हिडिंबाका पुत्र, घटोत्कच।

हैतुक–वि० (सं०) कारणरूप होनेवाला; हेतु-संबंधी; सहेतु, सकारण; हेतु, तर्क-संबंधी; तार्किक। पु० कारण; तार्किक; मीमांसक; नास्तिक; धार्मिक विषयोंमें उदार विचारोंवाला व्यक्ति; एक बुद्ध; शिवका एक गण।

हैदर–पु० (अ०) शेर। **–अली**–पु० दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध मुसलिम शासक, टीपूका पिता।

हैना*–स० क्रि० मारना, हनन करना।

हैफ़–पु० (अ०) खेद, अफसोस। अ० हा, हंत, अफसोस।

हैबत–स्त्री० (अ०) डर, भय, दहशत। **–ज़दा**–वि० भीत, डरा हुआ। **–नाक**–वि० डरावना। **–सुलतानी**–स्त्री० बादशाहका डर या रुआब। **मु० –छाना**–डर जाना। **–दिलाना**–डरा देना। **–मचना**–घबड़ाहट होना।

हैमंत–वि० (सं०) हेमंत-संबंधी; जाड़ेमें उत्पन्न होनेवाला; जाड़ेके उपयुक्त। पु० हेमंत ऋतु।

हैमंतिक–वि० (सं०) दे० 'हैमंत'। पु० शालि धान्य।

हैम–वि० (सं०) हिम-संबंधी; हिमसे उत्पन्न; जाड़ेमें होनेवाला; बर्फसे ढका हुआ; हिमालय-संबंधी; सोनेका बना हुआ; सोनेके रंगका। पु० हिम, पाला; ओस; शिव; भूनिंब, चिरायता। **–मुद्रा,–मुद्रिका**–स्त्री० सोनेका सिक्का। **–वल्कल**–वि० सोनेका पत्तर चढ़ा हुआ। **–शैल**–पु० एक पर्वत।

हैमन–वि० (सं०) जाड़ेका, शीतकालीन; जाड़ेके उपयुक्त; सोनेका बना हुआ। पु० हेमंत ऋतु; मार्गशीर्ष मास; शालि धान्य।

हैमल–पु० (सं०) हेमंत।

हैमवत–वि० (सं०) बर्फीला; हिमालय-संबंधी; हिमालयपर उत्पन्न; हिमालयपर स्थित। पु० भारतवर्ष; एक प्रकारका

विष; मोती; हिमालयके निवासी; एक तरहके दैत्य; बौद्धोंका एक भेद । **–वर्ष**–पु० भारतवर्ष ।

हैमवतिक–पु० (सं०) हिमालयके निवासी ।

हैमवती–स्त्री० (सं०) हरीतकी; स्वर्णक्षीरी; श्वेत वचा; कपिलद्राक्षा; अतसी; रेणुका; पार्वती; गंगा; कौशिककी भार्या ।

हैमा, हैमी–स्त्री० (सं०) पीत यूथिका । (अ०) पु० बेपानीका जंगल ।

हैयंगवीन–पु० (सं०) एक दिनके बासी दूधके मक्खनसे बना घी; ताजा घी; एक दिनका बासी मक्खन ।

हैरंब–वि० (सं०) गणेशका; गणेश-संबंधी । पु० गाणपत्य संप्रदाय ।

हैरण्य–वि० (सं०) स्वर्णमय, सोनेका बना हुआ; स्वर्णवहन करनेवाला (नद); सोना देनेवाला (हाथ) । **–वासा(सस्)**–वि० सुनहला पंख लगा हुआ (बाण) ।

हैरण्यक–पु० (सं०) स्वर्णकार; स्वर्णनिधिका निरीक्षक; एक वर्ष (देश) ।

हैरण्यगर्भ–वि० (सं०) हिरण्यगर्भ-संबंधी ।

हैरण्यिक–पु० (सं०) स्वर्णकार ।

हैरत–स्त्री० (अ०) अचंभा, विस्मय ।**–अंगेज़**–वि० विस्मयजनक । **–ज़दा**–वि० चकित, विस्मित; भौचक्का ।

हैरान–वि० (अ०) चकित; हतबुद्धि, भौचक्का; भटकनेवाला; परेशान ।

हैरानी–स्त्री० विस्मय; परेशानी ।

हैरिक–पु० (सं०) चोर; गुप्तचर ।

हैल–स्त्री० (अ०) शक्ति, बल, ताक़त ।

हैलोजेन–पु० (अं० हैलोजेन) फ्लोरीन, क्लोरीन, ब्रोमीन तथा आयडीन 'हैलोजेन'के नामसे पुकारे जाते हैं, क्योंकि इनके रासायनिक गुणोंमें बहुत अधिक समानता है ।

हैवान–पु० (अ०) प्राणी; पशु, जानवर; (ला०) मूर्ख; उजड्ड, जंगली । **–(ने) ज़ाहिक**–पु० बंदर, हँसनेवाला प्राणी । **–नातिक**–पु० बोलनेवाला प्राणी, मनुष्य ।

हैवानात–पु० (अ०) 'हैवान'का बहुवचन ।

हैवानियत–स्त्री० पशुभाव, पशुता; जंगलीपन; निष्ठुरता; कठोरता ।

हैवानी–वि० जानवरका, पाशव; अमानुषिक ।

हैस–स्त्री० (अ०) युद्ध, कलह; गलत राह ।

हैसबैस–पु० (अ०) बहस, विवाद ।

हैसियत–स्त्री० (अ० 'हैसीयत') ढंग, तौर; योग्यता; सामर्थ्य; बिसात; मालियत; आर्थिक योग्यता; धन-संपत्ति; दरजा, श्रेणी (जमीनकी हैसियत); मान-प्रतिष्ठा । **–दार**–वि० हैसियतवाला, जिसके पास पैसा या जायदाद हो ।

हैहय–पु० (सं०) एक देश या वहाँका निवासी; यदुका प्रपौत्र, कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन; एक पर्वत । **–राज**–पु० सहस्रार्जुन ।

हैहात–स्त्री० (अ०) हा हंत, हाय हाय, अफ़सोस ।

हैहेय–पु० (सं०) अर्जुन कार्तवीर्य ।

हैहै–अ० शोक, दुःख आदिका सूचक शब्द, हाय-हाय ।

होँ–अ० क्रि० 'होना'का संभावना-सूचक (बहुवचन) रूप ।

होँठ–पु० मुँहके बाहरका ऊपर या नीचेका भाग, ओष्ठ, दंतच्छद । मु० **–काटना, –चबाना**– क्रोध, शोक आदिके आवेशमें दाँतोंसे होंठको काटना । **–चाटना**–कोई स्वादिष्ठ पदार्थ अधिकसे अधिक खानेकी इच्छा करना; किसी अच्छी चीज़का स्वाद याद आना । **–चिपकना**–किसी मनचाही मीठी चीजका नाम सुनते ही उसे पानेकी प्रबल इच्छा होना । **–चूसना**–अधर (रस) पान करना । **–मिलाना**–चुंबन करना । **–सी लेना**–मौन हो जाना । **–हिलाना**–बोलना; धीरेसे कुछ कहना । **होँठोँपर छठीका दूध याद आ जाना**–बहुत बड़ी मुसीबतमें पड़ना ।

होँठल–वि० बड़े और मोटे होठोंवाला ।

होँठी†–स्त्री० किनारा, कोर ।

हो–अ० क्रि० 'होना'का संभावनासूचक (अन्य पुरुष, एकवचनका) रूप; * 'होना'का सामान्य भूत, था । अ० संबोधनमें प्रयुक्त शब्द, हे ।

होजरी–स्त्री० (अं०) गंजी, मोजा, आदि वस्त्र (–की दूकान) ।

होटल–पु० (अं० 'होटेल') द्रव्य देकर यात्रियों तथा अन्य लोगोंके भी खाने, रहने, मनोरंजन आदिकी आधुनिक ढंगकी व्यवस्थासे युक्त स्थान ।

होड–पु० (सं०) बेड़ा, भेला; नाव ।

होड़–स्त्री० किसी विषयमें एक दूसरेसे बढ़ जानेकी चाह और प्रयत्न, लाग-डाट, चढ़ा-ऊपरी, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता, प्रतियोगिता; किसी काममें हार-जीत होनेपर पूर्वनिश्चयके अनुसार किसीको कुछ देने या उससे कुछ लेनेकी प्रतिज्ञा, बाजी, शर्त ।

होडा(डृ)–पु० (सं०) चोर; लुटेरा; डाकू ।

होड़ाबादी–स्त्री० दे० 'होड़' ।

होड़ाहोड़ी–स्त्री० दे० 'होड़' । अ० होड़ लगाकर ।

होढ–वि० (सं०) चुराया हुआ । पु० चोरीका माल ।

होतव, होतव्यता*–स्त्री० होनेवाली बात, भवितव्यता, होनहार ।

होतव*–वि० होने योग्य ।

होतव्य–वि० (सं०) हवन करने योग्य ।

होता(तृ)–वि० (सं०) हवन करनेवाला । पु० मंत्र पढ़ते हुए यज्ञ-कुंडमें हव्य डालनेवाला व्यक्ति, यज्ञकर्ता, यज्ञ करानेवाला पुरोहित; शिव; अग्नि । **–(तृ)कर्म(न्)**–पु० होताका कार्य । **–चमस**–पु० होता द्वारा प्रयुक्त किये जानेवाले पात्र–स्रुवा आदि । **–प्रवर**–पु० होताका चुनाव । **–षदन**–पु० होताके बैठनेका स्थान ।

होतृक–पु० (सं०) दे० 'होत्रक' ।

होत्र–पु० (सं०) हवि, होम; हवन-सामग्री, घी आदि ।

होत्रक–पु० (सं०) होताका सहायक ।

होत्रा–स्त्री० (सं०) यज्ञ; स्तुति ।

होत्री–स्त्री० (सं०) यजमानके रूपमें शिवकी मूर्ति, शिवकी आठ मूर्तियोंमेंसे एक ।

होत्री(त्रिन्)–पु० (सं०) होता ।

होत्रीय–वि० (सं०) होतासे संबंध रखनेवाला । पु० होता, यज्ञकर्ता पुरोहित; हवनगृह, यज्ञ-मंडप ।

होत्वा(त्वन्)–पु० (सं०) यज्ञकर्ता ।

होनहार–वि० होनेवाला, अवश्यमेव होनेवाला; भविष्यके विकास, उत्कर्ष, समृद्धि आदिका आभास देनेवाला । पु०, स्त्री० भवितव्यता, अवश्यमेव घटित होनेवाली घटना, बात आदि ।

होना–अ० क्रि० कायम, मौजूद, विद्यमान रहना; परिस्थिति; अवस्था आदिमें परिवर्तन आना, एक स्थितिसे दूसरी स्थितिका आना, कुछसे कुछ होना; प्रस्तुत होना, बनना; तैयार होना; किसी कार्यका पूरा होना, निर्मित होना; शरीरमें किसी प्रकारकी व्याधिका होना; समयका व्यतीत होना, दिन बीतना; किसी घटनाका घटित होना; उत्पन्न होना, पैदा होना; काम चलना, निकलना, किसी कामका हो जाना । **(जो) हुआ सो हुआ**–जो घटना या बात हो चुकी उसके लिए चिंता करनेकी आवश्यकता नहीं; जो घटना या बात हो चुकी उसे पुनः भविष्यमें न होने देना चाहिये, काम तो बुरा हुआ, अब फिर इसे कदापि न करना चाहिये । **तो क्या हुआ ?**–जाने दो, कोई परवाह नहीं (नहीं करना चाहते हो तो कोई परवाह नहीं) । **हुआ-हुआ**–किसीसे कोई काम न होनेपर कही जानेवाली उक्ति (व्यंग्यरूपमें प्रयुक्त होनेके कारण यह निषेधके रूपमें न होनेपर भी निषेधका अर्थ देता है); बहुत कुछ कह चुकनेपर किसीको मना करनेके लिए कही गयी बात । **हो आना**–कहीं जाकर लौट आना; किसीसे भेंट-मुलाकात करने जाना; मिलने जाना । **होकर**–पाससे, समीपसे, बीचसे, मध्यसे । **होकर रहना**–जरूर होना, अवश्य घटित होना । **हो गुज़रना**– **हो चलना**–समाप्तिके घटनाका घटित होना; समाप्त होना । **हो चुकना**–समाप्त हो जाना, निकट आना; बहुत हो जाना । **हो चुकना**–समाप्त हो जाना, तमाम हो जाना; खर्च हो जाना; मर जाना; किसी बात, वस्तु आदिका सीमातक पहुँच जाना, हद हो जाना । **हो चुका**–असम्भव; नहीं हो सकता; कभी नहीं होगा । **हो जाना**–काम पूरा हो जाना, काम बन जाना; कहीं आकर चला जाना; किसीसे मिलकर चला जाना; मर जाना; बन जाना, किसी भी क्षेत्रमें

स्थितिका अच्छा हो जाना; (किसी कामका) खत्म हो जाना; लड़ाई झगड़ा, मार-पीट हो जाना; कुछ लायक हो जाना; भूत-प्रेतका प्रभाव पड़ जाना; भोजन आदिका तैयार हो जाना; **(किसीको) कुछ हो जाना**–स्वभाव, स्वास्थ्य आदिकी चिंताकी कोई बात हो जाना। **होते-सोते**–उपस्थित रहते। **होते हुए**–दे॰ 'होकर'। **हो न हो**–कौन जाने (अनिश्चय सूचनार्थ)। **(किसीका) होना**–किसीका प्रिय, प्रेमी, विश्वासपात्र, कुटुंबी, सेवक आदि होना। **(लाखोंमें एक) होना**–किसीका अनेकमें श्रेष्ठ होना, अत्यंत उच्च कोटिका होना। **हो निकलना**–होकर जाना, पाससे जाना, किसी जगह आ जाना। **होनेका**–होनेवाला। **होने लगना**–किसी कामका आरंभ होना। **हो पड़ना**–अकस्मात् कुछ घटित हो जाना; अचानक झगड़ा-तकरार हो जाना। **हो बैठना**–हो जाना, बन पड़ जाना; कुछ हो जाना (बड़ा आदमी आदि); दे॰ 'हो पड़ना'। **हो रहना**–हो जाना, होना। **(कहींका) हो रहना**–कहींसे लौटनेमें बहुत देर लगाना; कहींसे न लौटना। **(किसीका) हो रहना**–किसीका प्रिय या प्रेमी हो जाना। **हो लेना**–हो चुकना, समाप्त होना; पूरा होना, पूर्ण रूपसे होना; कोई मार्ग ग्रहण कर लेना; किसी पक्षका हो जाना; साथ चलना; पैदा होना, उत्पन्न होना; लड़ाई-झगड़ा होना। **(पीछे) हो लेना**–पीछे-पीछे जाना, चलना; किसीकी पैरवी करना। **हो सो हो**–चाहे जो कुछ हो (निश्चयार्थक)। **हो-हवा चुकना**–हो चुकना। **हो-होकर**–दे॰ 'होकर'।

होनिहार*–वि॰, पु॰ दे॰ 'होनहार'।

होनी–स्त्री॰ होनहार, भवितव्यता; उत्पत्ति।

होम–पु॰ (सं॰) हवन, यज्ञ; ब्राह्मणों द्वारा नित्य किया जानेवाला पंच महायज्ञोंमेंसे एक देवयज्ञ। **–कर्म(न्)**–पु॰ यज्ञ संबंधी कर्तव्य या विधियाँ। **–कल्प**–पु॰ होम करनेकी विधि। **–काल**–पु॰ यज्ञका समय। **–काष्ठी**–स्त्री॰ यज्ञाग्नि प्रज्वलित करनेकी फुँकनी। **–कुंड**–पु॰ हवन करनेके लिए बना हुआ कुंड। **–तरंग**–पु॰ यज्ञका घोड़ा। **–दर्वी**–स्त्री॰ स्रुवा। **–द्रव्य**–पु॰ हवनकी सामग्री, घी आदि। **–धान**–पु॰ यज्ञभवन। **–धान्य**–पु॰ तिल। **–धूम**–पु॰ होमकी अग्निका धुआँ। **–धेनु**–स्त्री॰ हवनके लिए दूध देनेवाली गाय। **–भस्म(न्)**–पु॰ हवनकी राख। **–भांड**–पु॰ हवनमें काम आनेवाले पात्र। **–यूप**–पु॰ यज्ञस्तंभ। **–वेला**–स्त्री॰ होमकाल। **–शाला**–स्त्री॰ यज्ञशाला। मु॰ **–करते हाथ जलना**–किसीका उपकार करते (उपकार करनेवालेका) अपकार होना। **–कर देना**–बलिदान कर देना, उत्सर्ग कर देना; अग्निमें जला डालना; जलाकर नष्ट कर देना, खराब कर देना।

होमक–पु॰ (सं॰) होता; होत्रक।

होमना–स॰ क्रि॰ हवन करना; बलिदान करना; नष्ट करना।

होमर–पु॰ ग्रीक भाषाका प्राचीन कवि, जिसने 'इलियड' तथा 'आडिसी' नामक महाकाव्योंकी रचना की थी (८५० ईसवी पूर्व)।

होमरूल–पु॰ (अं॰) अपने देशपर अपना शासन, स्वराज; (लोकमान्य तिलक, श्रीमती ऐनी वेसेण्ट आदि द्वारा स्वायत्त शासनके लिए चलाया गया आन्दोलन–'जब होमरूल होगा, बरबैंक जन्म लेंगे। हाँ, हाँ जनाब तब तो गूलर भी फूल देंगे।'

होमाग्नि–स्त्री॰, **होमानल**–पु॰ (सं॰) यज्ञाग्नि।

होमार्जुनी–स्त्री॰ (सं॰) दे॰ 'होम-धेनु'।

होमि–पु॰ (सं॰) घृत; जल; अग्नि; चित्रक वृक्ष।

होमियोपैथ–पु॰ (अं॰) होमियोपैथिक-पद्धतिके अनुसार चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

होमियोपैथिक–वि॰ (अं॰) होमियोपैथी-संबंधी।

होमियोपैथी–स्त्री॰ (अं॰) हनीमान द्वारा आविष्कृत एक चिकित्सा-पद्धति जिसमें प्रायः विषौषध द्वारा रोग-निवारण करते हैं।

होमी(मिन्)–पु॰ (सं॰) होमकर्ता।

होमीय–वि॰ (सं॰) होम-संबंधी; हवनके उपयुक्त। **–द्रव्य**–पु॰ हवनके काम आनेवाले पदार्थ, घृत आदि।

होमेंधन–पु॰ (सं॰) यज्ञकाष्ठ।

होम्य–वि॰ (सं॰) दे॰ 'होमीय'। पु॰ घृत।

होर–वि॰ ठहरा, रुका हुआ। * पु॰ ओर, मार्ग।

होरसा–पु॰ रोटी बेलने या चंदन आदि घिसनेका पत्थरका बना चौका।

होरहा†–पु॰ चनेका फलदार हरा पौधा; आगपर भूना हुआ जौ, चने आदिका हरा दाना।

होरा–पु॰ दे॰ 'होलक'। स्त्री॰ (सं॰) ज्योतिष शास्त्रोक्त लग्न; ढाई घड़ी; आधी राशि; होराज्ञापक शास्त्र; जन्मपत्री; चिह्न, रेखा। **–विद्**–वि॰ जन्मपत्री देखनेमें कुशल। **–शास्त्र**–पु॰ फलित ज्योतिष।

होरिल, होरिलवा, होरिला*–पु॰ शिशु; नवजात शिशु।

होरिहार*–पु॰ होली खेलनेवाला।

होरी–स्त्री॰ दे॰ 'होली'; जहाजपर माल लादने और उसपरसे उतारनेके काम आनेवाली बड़ी नाव।

होलक–पु॰ (सं॰) मटर, चने आदिकी आगपर भूनी हुई अधपकी फलियाँ।

होला–पु॰ दे॰ 'होलक'। स्त्री॰ (सं॰) होलीका त्योहार। **–खेलन**–पु॰ फाग खेलना।

होलाक–पु॰ (सं॰) पसीना निकालनेका एक उपचार (जिसमें गरम राखकी सहायता लेते थे)।

होलाका–स्त्री॰ (सं॰) वसंतोत्सव, होलीका त्योहार; फाल्गुनकी पूर्णिमा।

होलाष्टक–पु॰ (सं॰) होलीके पूर्वके आठ दिन जिनमें विवाह नहीं होता।

होलिका–स्त्री॰ (सं॰) होलीका त्योहार; लकड़ी, पेड़, घास-फूस आदिका ढेर जिसका दहन फाल्गुनकी पूर्णिमाकी रातमें होता है; एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपुकी भगिनी थी।

होली–स्त्री॰ एक त्योहार; कपड़े आदिके ढेरका जला दिया जाना (ला॰); एक प्रकारका गीत जो विशेष रूपसे होलीके अवसरपर गाया जाता है; दे॰ 'होलिका'। मु॰**–खेलना**–फाग खेलना, एक दूसरेपर रंग आदि डालना।

होल्ड-ऑल, होल्डाल–पु॰ (अं॰) सफरके काम आनेवाला एक तरहका थैला जिसमें जरूरी कपड़े रखकर लेटनेके लिए बिस्तरकी तरह डाल लेते और चलते समय लपेटकर बंडलकी तरह बना लेते हैं।

होल्डर–पु॰ (अं॰) लकड़ी आदिका बना अँगरेजी कलमका हाथसे पकड़ा जानेवाला अंश जिसके निचले भागमें निब लगी रहती है; बिजलीके तारमें लगा हुआ वह साधन जिसमें बल्ब अटकाया जाता है।

होश–पु॰ (फा॰) जीवकी अपनी संज्ञा, जीवित रहनेका ज्ञान, चेतना; सुधबुध; स्मरण; अक्ल, बुद्धि, समझ। **–बाख़्ता**–वि॰ हतसंज्ञ, जिसका दिमाग ठिकाने न हो। **–मंद**–वि॰ बुद्धिमान्, समझदार। **–मंदी**–स्त्री॰ बुद्धिमानी, समझदारी। **–रुबा**–वि॰ होश उड़ा देनेवाला। **–वाला**–वि॰ अनुभवी, समझदार। **–हवास**–पु॰ सुधबुध। मु॰ **–आना**–समझ आना, समझदार होना, चतुर होना, अक्ल, बुद्धि आना; आपेमें आना, चेतनायुक्त होना; † स्मरण होना, खयाल आना। **–उड़ जाना,–उड़ना,–उड़ा देना,–उड़ाना**–बदहोश हो जाना, घबड़ा जाना; आश्चर्यचकित हो जाना, हैरतमें आ जाना; अक्ल खोना। **–काफ़ूर होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–खोना**–दे॰ 'होशसे बाहर होना'। **–गुम होना**–होश उड़ना। **–जाता रहना,–जाना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–ठिकाने रहना**–होश-हवास दुरुस्त रहना। **–ठिकाने होना**–अक्ल ठीक होना। **–दंग होना**–दे॰ 'होश उड़ना'। **–दिलाना**–स्मरण कराना, याद दिलाना। **–न रहना**–खबर न रहना, होश उड़ जाना; बेहोश हो जाना। **–न होना**–होश-हवास दुरुस्त न होना। **–पकड़ना**–उमरमें बढ़ना, सयाना होना; होशियार होना। **–पैतरे होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–बाख़्ता होना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–बिखरना**–दे॰ 'होश उड़ जाना'। **–में आना**–ज्ञान प्राप्त करना, अक्ल हासिल करना; तमीज सीखना, व्यवहार सीखना; समझदार, होशियार होना; आपेमें

आना, सँभलना। **–रखना**–बुद्धिमान् होना, अक्ल रखना। **–रहना**–होश दुरुस्त रहना। **–सँभालना**–सयाना होना, बड़ा होना; आचार-व्यवहार, तमीज सीखना। **–से बाहर होना**–चेतनाहीन होना, बेहोश होना, बेखुद हो जाना। **–हवा होना,–हिरन होना**–दे० 'होश उड़ जाना'। **–होना**–अक्ल होना; खबर होना; होश-हवास दुरुस्त होना; किसी प्रकारके नशेमें न होना; बड़ा होना, सयाना होना।

होशियार–वि० (फा०) अक्लमंद, बुद्धिमान्; खबरदार, सावधान, सजग; प्रवीण; अनुभवी। **मु०–करना**–असावधानको सावधान करना। **–रहना**–सावधान रहना, चौकस रहना। **–हो जाना**–सावधान हो जाना; गफलत दूर होना।

होशियारी–स्त्री० (फा०) बुद्धिमानी; सावधानी; चालाकी; अनुभव।

होस*–पु० दे० 'होश'।

होस्टल–पु० (अं० 'होस्टेल') छात्रावास।

होहल्ला–पु० शोरगुल, हुल्लड़।

हौं†–सर्व० उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम, मैं। अ० क्रि० वर्तमान-कालिक क्रिया 'होना'के उत्तम पुरुष एकवचनका रूप, हूँ।

हौंकना*–अ० क्रि० हुंकारना, गर्जन करना; हाँफना; † पंखे आदिकी हवासे आगको दहकाना; पंखे आदिसे हवा करना।

हौंस–स्त्री० दे० 'हौस'।

हौंसला†–पु० दे० 'हौसला।

हौ*–अ० क्रि० 'होना'का मध्यम पुरुष एकवचनका वर्तमानकालिक रूप, हो; 'होना' का भूतकालिक रूप, था।

हौआ–पु० एक कल्पित वस्तु जिसका नाम लेकर स्त्रियाँ बच्चोंको डराया करती हैं, भकाऊँ; असाधारण और डरावनी चीज (बॉगी)। स्त्री० दे० 'हौवा'।

हौका–पु० खानेकी तृष्णा, पेटूपन; लोभ, लालच।

हौज़–पु० (अ०) कुंड; चहबच्चा; नाँद।

हौज़ा–पु० (फा०) हौदा, हाथीकी अम्मारी।

हौड़*–स्त्री० दे० 'होड़'।

हौतभुज–वि० (सं०) अग्नि-संबंधी। पु० कृत्तिका नक्षत्र।

हौताशन–वि० (सं०) अग्नि-संबंधी। **–लोक**–पु० अग्नि-लोक। **–कोण**–पु० अग्निकोण।

हौताशनि–पु० (सं०) स्कंद; नील नामक बंदर।

हौतृक–वि० (सं०) होतासे संबद्ध। पु० होताका काम; होताका सहायक।

हौत्र–पु० (सं०) होताका कर्म। वि० दे० 'हौतृक'।

हौत्रिक–वि० (सं०) होताके कार्यसे संबंध रखनेवाला।

हौद–पु० हौज, कुंड; नाँद।

हौदा–पु० दे० 'हौज़ा'; दे० 'हौज़'।

हौन*–पु० अपनापन।

हौमीय–वि० (सं०) दे० 'होमीय'।

हौम्य–पु० (सं०) घी। **–धान्य**–पु० दे० 'होमधान्य'।

हौरा†–पु० हल्ला, शोरगुल। स्त्री० (अ०) गोरी स्त्री।

हौरे-हौरे*–अ० धीरे-धीरे, हौले-हौले, आहिस्तेसे।

हौल–पु० (अ०) भीति, भय, डर, दहशत; आसपास; शक्ति। **–खौल,–जौल**–स्त्री० जल्दी, शीघ्रता; उतावली; शीघ्रताजनित उद्विग्नता, घबराहट। **–ज़दा**–वि० भयभीत, त्रस्त। **–दिल**–स्त्री० दिलकी धड़कन, हृत्कंप; दिल धड़कनेकी एक बीमारी। वि० भीत, डरा हुआ; व्यग्र, व्याकुल; जिसे दिलकी धड़कन (की बीमारी) होती हो। **–दिला**–वि० डरपोक। **–दिली**–स्त्री० यशव नामक पत्थरका छोटा टुकड़ा जो डोरेमें पिरोकर यह मानकर गलेमें पहनते हैं कि इससे कलेजेकी धड़कन आदि दूर होगी। **–नाक**–वि० भयंकर, खौफनाक। **मु० –पैठना,–बैठना**–मनमें डर पैदा होना, दहशत समाना।

हौलाजौली–स्त्री० जल्दी; हड़बड़ी।

हौलिगी–वि० (अ०, फा०) त्रस्त, भयभीत, उद्विग्न, व्याकुल।

हौली–स्त्री० शराब बिकनेकी जगह, कलवरिया, मदिरालय।

हौले-हौले–अ० धीरे-धीरे, आहिस्तेसे।

हौवा–स्त्री० (अ०) आदमकी पत्नी, इसलाम, ईसाई-यहूदी धर्मोंके अनुसार मानव जातिकी माता (ईव)। पु० दे० 'हौआ'।

ह्रौश–पु० स्थान।

हौस–स्त्री० हवस, हौसला; मनकी तरंग, उमंग; उत्कंठा, प्रबल इच्छा।

हौसला–पु० (अ०) सामर्थ्य; साहस, हिम्मत, उत्साह; लालसा। **–मंद**–वि० हौसलेवाला, उत्साही। **–शिकन**–वि० उत्साह तोड़नेवाला। **मु० –निकालना**–अरमान पूरा करना, हवस निकालना। **–पस्त होना**–जोश ठंढा पड़ना, हिम्मत टूट जाना।

ह्नव, ह्नवन–पु० (सं०) छिपाना।

ह्नुत–वि० (सं०) छिपाया हुआ; अलग किया हुआ।

ह्नुति–स्त्री० (सं०) दुराव, छिपाव; इनकार।

ह्यः(ह्यस्)–अ० (सं०) बीता हुआ कल, गत दिन। **–कृत**–वि० कल किया हुआ, कल घटित।

ह्यस्तन–वि० (सं०) गत दिवस-संबंधी। **–दिन**–पु० गत दिवस।

ह्यस्त्य–वि० (सं०) दे० 'ह्यस्तन'।

ह्याँ*–अ० यहाँ।

ह्यो*–पु० हिया, हृदय।

ह्योभव–वि० (सं०) जो कल हुआ हो।

ह्रणिया, ह्रणीया–स्त्री० (सं०) दे० 'हृणिया'।

ह्रद–पु० (सं०) गहरा जलाशय; गहरी झील; प्रकाशकी किरण; ध्वनि; मेष। **–ग्रह**–पु० कुंभीर, घड़ियाल।

ह्रदिनी–स्त्री० (सं०) नदी; विद्युत्।

ह्रसित–वि० (सं०) संक्षिप्त किया हुआ, छोटा किया हुआ, घटाया हुआ; ध्वनित।

ह्रसिमा(मन्)–स्त्री० (सं०) छोटापन, लघुता; अल्पता।

ह्रस्व–वि० (सं०) छोटा, लघु (दीर्घका उलटा); नाटा; ठिंगना; तुच्छ; नीचा, अनुच्च (जैसे द्वार)। पु० बौना; एकमात्रिक, लघु स्वर; यम; पुष्पकासीस। **–कर्ण**–पु० एक राक्षस। **–कुश**–पु० कुशका एक भेद, श्वेत कुश। **–गर्भ**–पु० कुश। **–गवेधुका**–स्त्री० गांगेरुकी, नागवल्ली। **–जंबू**–पु० क्षुद्रजंबू। **–जातरोग**–पु० एक रोग जिसमें चीजें छोटी दिखाई देती हैं। **–जात्य**–वि० छोटी किस्मका। **–तंडुल**–पु० एक तरहका धान, राजान्न। **–दर्भ**–पु० दे० 'ह्रस्वकुश'। **–दा**–स्त्री० गंधद्रव्य देनेवाला वृक्ष, शल्लकी। **–निर्वांशक**–पु० छोटी तलवार। **–पत्रक**–पु० पहाड़ी महुवा। **–पत्रिका**–स्त्री० छोटा पीपल, अश्वत्थी। **–पर्ण**–पु० पाकर। **–प्लक्ष**–पु० पाकरका छोटा वृक्ष। **–प्रवासी**–पु० थोड़े समयके लिए परदेश जानेवाला व्यक्ति (कौ०)। **–फल**–पु० खजूर। **–फूला**–स्त्री० भूमिजंबू। **–बाहु**–वि० छोटी बाहोंवाला। पु० राजा नलका एक नाम। **–बाहुक**–वि० दे० 'ह्रस्वबाहु'। **–मूर्ति**–वि० ठिंगना, छोटे कदका। **–मूल**–पु० लाल गन्ना, रक्तेक्षु। **–शाखाशिफ**–पु० क्षुप, झाड़ी। **–सभा**–स्त्री० तंग दालान।

ह्रस्वक–वि० (सं०) बहुत छोटा।

ह्रस्वांग–वि० (सं०) वामन, बौना, ठिंगना। पु० जीवक नामक पौधा; बौना आदमी।

ह्रस्वाग्नि–पु० (सं०) अर्क, मदारका पेड़।

ह्राद–पु० (सं०) शब्द, ध्वनि; मेघगर्जन; एक नागासुर; हिरण्यकशिपुका एक पुत्र।

ह्रादिनी–स्त्री० (सं०) बिजली; इंद्रका वज्र; नदी; शल्लकी।

ह्रादी(दिन्)–वि० (सं०) शब्दमय, शब्द करनेवाला; गरजनेवाला।

ह्रास–पु० (सं०) क्षय, क्षीणता, अवनति; अभाव, कमी; शब्द, ध्वनि; छोटी संख्या।

ह्रासक–वि० (सं०) क्षय करनेवाला; कम करनेवाला।

ह्रासन–पु० (सं०) क्षीण करनेकी क्रिया; कम करनेका काम, घटाना।

ह्रासनीय–वि० (सं०) कम करने, घटाने योग्य।

ह्रिणिया, ह्रिणीया–स्त्री० (सं०) दे० 'हृणिया'।

ह्रित–वि० (सं०) हरण किया हुआ, लाया हुआ, नीत; लज्जित;

विभक्त । पु० अंश ।

ह्रिति–स्त्री० (सं०) हृति, हरण ।

ह्री–स्त्री० (सं०) लज्जा, व्रीडा, संकोच; जैनोंकी एक देवी; दक्षकी पुत्री जो धर्मको व्याही थी । **–जित्**–वि० लज्जाके वशीभूत, लज्जाशील, संकोची । **–देव**–पु० एक वौद्ध देवता । **–धारी(रिन्)**–वि० लज्जा अनुभव करनेवाला, शरमीला । **–निरास**–पु० लज्जाका परित्याग, निर्लज्जता । **–निषेव**–वि० विनयी, नम्र । **–पद**–पु० लज्जाका कारण । **–वल**–वि० अति नम्र, संकोची । **–भय**–पु० लज्जाका डर । **–मूढ**–वि० लज्जासे घवड़ाया हुआ ।

ह्रीक–पु० (सं०) नेवला ।

ह्रीका–स्त्री० (सं०) लज्जा; संकोच; भय ।

ह्रीकु–वि० (सं०) लज्जित; सलज्ज । पु० विल्ली; लाख; राँगा, टीन ।

ह्रीण, ह्रीत–वि० (सं०) लज्जित । **–मुख**–वि० लज्जित मुखवाला ।

ह्रीति–स्त्री० (सं०) लज्जा, संकोच ।

ह्रीवेर, ह्रीवेल, ह्रीवेलक–पु० (सं०) एक गंधद्रव्य, वालक ।

ह्रेपण–पु० (सं०) लज्जित करनेकी क्रिया ।

ह्रेपित–वि० (सं०) लज्जित किया हुआ ।

ह्रेषा–स्त्री० (सं०) (घोड़ेकी) हिनहिनाहट ।

ह्रेषित–वि० (सं०) हिनहिनाया हुआ । पु० हिनहिनाहट ।

ह्रेषी(षिन्)–वि० (सं०) हिनहिनानेवाला ।

ह्रेषुक–पु० (सं०) एक तरहकी कुदाल ।

ह्लत्ति–स्त्री० (सं०) आनंद, प्रसन्नता ।

ह्लन्न–वि० (सं०) प्रसन्न, संतुष्ट ।

ह्लाद–पु० (सं०) ताजगी; प्रसन्नता, आनंद; हिरण्यकशिपुका एक पुत्र ।

ह्लादक–वि० (सं०) प्रसन्न करनेवाला ।

ह्लादन–पु० (सं०) आनंदित करनेकी क्रिया । वि० प्रसन्न करनेवाला ।

ह्लादित–वि० (सं०) आनंदित ।

ह्लादिनी–वि० स्त्री० (सं०) आनंद देनेवाली । स्त्री० दे० 'ह्रादिनी'; एक शक्ति; बिजली ।

ह्लादी(दिन्)–वि० (सं०) आनंदयुक्त; प्रसन्न करनेवाला; वहुत शब्दवाला ।

ह्लीका–स्त्री० (सं०) लज्जा ।

ह्लीकु–वि०, पु० (सं०) दे० 'ह्रीकु' ।

ह्लेषा–स्त्री० (सं०) दे० 'ह्रेषा' ।

ह्वलन–पु० (सं०) लुढ़कना, लड़खड़ाना ।

ह्वाँ–अ० वहाँ ।

ह्वान–पु० (सं०) शोरगुल; पुकार, निकट बुलाना; आह्वान ।

ह्वायक–वि० (सं०) पुकारनेवाला ।

ह्वायी(यिन्)–वि० (सं०) आह्वान करनेवाला; ललकारनेवाला ।

ह्विस्की–स्त्री० (अं०) एक प्रकारकी अँगरेजी शराव जो जौ आदिसे बनायी जाती है ।

ह्वेल–पु० (अं०) एक बहुत ही बड़ा समुद्री जंतु जिसका शिकार तेल, चरवी, हड्डी आदिके लिए किया जाता है ।

परिशिष्ट

अंशांकन–पु०(सं०) अंश या हिस्से बनाकर चिह्न या रेखाएँ अंकित करना (ग्रेजुएशन), क्रमचिह्नांकन।

अक्कादी–पु० एक जन-जातिके लोग। स्त्री० अक्कादियोंकी भाषा।

अनकृपा†–स्त्री० कृपाका अभाव; नाखुशी; क्रोध।

अभिकल्पन–पु० (डिज़ाइन या डिज़ाइनिंग) दे० 'अभिकल्पना'; दे० 'रूपांकन'।

अभिचिह्न–पु० (सं०) झंडों, शिरस्त्राणों आदिपर पहचानके लिए लगाये गये चिह्न।

अभिसंचन–पु० (सं०) किसी रूपक, नाटक आदिका, तदर्थ निर्मित मंचपर, पात्रों द्वारा प्रदर्शित या अभिनीत किया जाना; मंचन।

अभिव्यक्तिवाद–पु० (सं०) उन्नीसवीं शतीमें प्रचलित चित्रकलाका एक सिद्धान्त (इम्प्रेशनिज्म) जिसमें चित्रकार शास्त्रीय सिद्धान्तोंकी उपेक्षा कर वस्तुका ऐसा चित्रण करता है जैसा उसे वास्तवमें दिखाई देता है।

अभ्यंकन–पु० (सं०) अंकित या चिह्नित करनेकी क्रिया; चित्रण; लेखन।

अभ्यनुकूलन–पु० (सं०) स्थिति, रुचि, आदिके अनुकूल बना लेनेकी क्रिया (एडेप्टेशन)।

अभित्र–वि० अतुकान्त (हिं० क० में युगांतर पृ० १०१)।

अल्पित–वि० जिसमें अल्पना की गयी हो, अल्पना-सज्जित, चित्रित।

अवधूरक–वि० दूषणीय, गर्हित। **–आचरण**–पु० निन्दनीय या गर्हित व्यवहार (स्कैंडेलस विहेवियर) (विश्व० १२, २०४)।

अवसायन–पु० (सं०) दे० 'समापन'।

अभ्र–पु०...। **–विज्ञान**–पु० दे० 'अभ्रशास्त्र'।

आयातित–वि० (सं०)-आयात किया हुआ, वाहरसे मँगाया हुआ (माल)।

आरिष्ट–पु० किसीकी संपत्तिको दोषपूर्ण क्षति पहुँचाना (शरारत)। **–प्रतिरूपण**–पु० (छद्म परिचय) अपनेको अन्य व्यक्ति बतलाकर छल करना।

इच्छाद्रुम,–वृक्ष–पु० इच्छा पूरी करनेवाला वृक्ष, कल्पतरु,(नवीन-कृत, 'रश्मिरेखा')।

इतिवृत्त–पु०···घटनाका विवरण।

इमला–पु० दे० 'श्रुतलेख' (डिक्टेशन)।

उच्छल–वि० (सं०) तरंग-युक्त, तरंगित; उछलता हुआ; चंचल।

उतारना–स०क्रि०···(बरीकी बनी) छतको माँजकर तैयार करना।

उगंठी†–स्त्री० आँवलेके सूखे टुकड़े।

ऊबना†–अ० क्रि० गरमाहट आ जाना, गतिमान हो उठना, 'नाड़ी डूब-सी रही थी पर गरम चाय पीनेसे फिर ऊब उठी।'

कंकोल†–पु० कनखजूरा।

कचान–स्त्री० कचायँध, किसी चीजके अच्छी तरह न भुन पाने, कच्चे रह जानेपर आनेवाली गंध या स्वाद।

करुना*–स्त्री०···; करुणाजनक शब्दोंमें हृदयकी वेदना प्रकट करना, रुदन, विलाप 'जनि अवला जिमि करुना करहूँ'–रामा०।

कांडारी–पु० माँझी (मैथिली० कृत 'अंजलि')।

कीलाक्षर–पु० (सं०) लोहेके काँटेसे खोदकर लिखे गये अक्षर।

कृतित्व–पु० (सं०) काम करनेकी क्षमता या योग्यता; किये हुए कामकी अच्छाई; कुशलता।

कृपांक–पु०(सं०) दो चार अंकोंसे फेल होनेवाले विद्यार्थीको पास होनेके लिए कृपा-स्वरूप दिये गये अंक (ग्रेस मार्क्स)।

कृपैषी–वि० (सं०) कृपा चाहनेवाला; कृपाका इच्छुक।

कोशिका–स्त्री० शरीरका निर्माण करनेवाला जीवित एकक, जो जीवद्रव्यसे भरा रहता है।

क्विंटल–पु०(अं०) सौ किलोग्रामकी तौल (लगभग २ मन २७ सेर)।

क्षैतिज–वि० (सं०) क्षितिजके या भूमिपृष्ठके समनुरूप('सुरंग एक तरहका अंतर्भौम क्षैतिज मार्ग है')।

खारवा–पु० पाँवकी उँगलियोंके बीचका घाव, खुरा(कादं०, नव० ७०); मल्लाह, जहाजी।

गवा†–पु० हाथकी या पैरकी उँगलियोंके बीचकी, मूलके पासकी जगह।

गागल†–पु० एक तरहका बड़ा, रसदार और बढ़िया नीबू 'गागल निबुआ औ घिउ तात'–घाघ।

गुरुब–वि० अस्त (सूरज गुरुब हो रहा था)।

गेंदुरा†–पु० चमगादड़।

गोड़ाई†–स्त्री० पैरका एक आभूषण, 'गलेमें हैकल और पैरोंमें चाँदीकी गोड़ाई।'

घन-सिद्धांत–पु० (सं०) चित्रकलाका एक नया सिद्धान्त (क्यूविज्म), जिसमें किसी वस्तुका विभिन्न दृष्टिकोणोंसे देख पड़नेवाला चित्र प्रस्तुत करनेकी चेष्टा की जाती है। इसमें घनों तथा ज्यामितिकी अन्य आकृतियोंका प्रयोग किया जाता है। पिकासोने इसकी नींव डाली।

घरोवा–पु० अपने घरके लोगों जैसा व्यवहार, निकटका सम्बन्ध, आत्मीयता।

घुड़हाट–स्त्री० घोड़ोंकी मंडी।

चढोत्री, चढौती–स्त्री० देवमूर्तिके सामने चढायी गयी सामग्री, पैसा इत्यादि; चढावा।

चमकना–वि० चौंकनेवाला, भड़क उठनेवाला ('बैल चमकना जोतमें')।

चमकल†–वि० जल्दी भड़क उठनेवाला, झगड़ पड़नेवाला ('बैल मरकहा, चमकल जोय'।

चमरा†**एकादशी**–स्त्री० (कार्तिक शुक्लपक्षकी) देवोत्थान एकादशी जिसमें व्रत रहनेपर दिनभर फल आदि खा सकते हैं (बकरियाऊ एकादशी–बुंदेल०)।

चित्रण–पु० (सं०) चित्र बनानेका कार्य; अंकित करना; किसी घटना, स्वभावादिका सुस्पष्ट वर्णन करना।

चित्रलेख–पु० (पिक्टोग्राम) चित्र द्वारा स्थितिका संकेतन, वर्णन या दिग्दर्शन।

छननी–स्त्री० दूध, घी, चाय आदि छाननेका आला या साधन।

जलसंत्रास–पु० पागल कुत्ते आदिके काटनेसे उत्पन्न एक रोग जिसमें पानीको देखनेसे रोगीको भय मालूम होता है।

जहेज़–पु०...। **–टाँक देना**–दहेज़के कपड़ोंपर सलमा-सितारे आदि टाँक देना।

जुआठा–पु० पशुओंके मुँहपर पहना दिया जानेवाला जाल या फंदा (दे० 'मेथि')।

झपताला–पु० तबलेकी थापका एक प्रकार।

झिलमिला–पु० कागजका बना कंदील जिसमें रखे दीपकसे रह-रहकर हिलता हुआ प्रकाश निकले।

झुग्गी–स्त्री० पत्तों आदिसे छायी हुई झोपड़ी।

डँडेल†**–घी**–पु० पूड़ी आदि छाननेके बाद बचा हुआ मैला-सा घी (बुंदेल०)।

डूबना–अ० क्रि० शिथिल या ठंडा-सा हो जाना (नाड़ी डूबना)।

डेका मीटर–पु० (अं०) दस मीटर (लगभग ३३ फुट)

डेका लिटर–पु० (अं०) दस लिटर (लगभग २.२ गेलन या लगभग १० किलोग्राम की धारिताकी माप)।

तंग-दिमाग़ी–स्त्री० दिमागकी कमजोरी, अल्पबुद्धि ('तंग'के साथ)।

तश्किरा–पु० चर्चा; बातचीत; समाचारोंकी या महत्त्वपूर्ण घटनाओंकी समीक्षा।

तसव्वुफ़–पु० (अ०) ब्रह्मवाद, अध्यात्मवाद; सूफीवाद; विरक्ति।

दर्शन–पु०···विचारधारा, ('देशको नये दर्शनकी आवश्यकता है')।

दहाना–पु०...मंदिरका चौड़ा द्वार।

दिशाहारा–वि० जिसे दिशा सम्बन्धी भ्रम हो गया हो, दिग्भ्रमित।

दीपवंश–पु० सिंहलका एक ऐतिहासिक ग्रन्थ (दे० महावंश)।

दुग्ध–पु० (सं०) **–चूर्ण**–पु० वैज्ञानिक विधिसे सुखाये हुए दूधका चूर्ण।

दूर-मुद्रक–पु० (टेलीप्रिंटर) टाइपराइटरकी तरहका यंत्र जिससे टंकण करनेपर एक स्थानके समाचार, लेखादि दूसरे स्थानपर बैठायी गयी मशीनपर लगे कागजपर अपने आप छपते चलते हैं।

देशना–स्त्री० रचना, बनावट ('कापालिक देशनाके आधारपर')।

देशांग–पु० (सं०) देशका भाग, प्रदेश; क्षेत्र।

दौग्ध–वि० (सं०) दूध सम्बन्धी; दूधका या दूधसे बना ('दौग्ध पदार्थ')।

धड़प्रतिमा–स्त्री० (टॉरसो) मुंड-विहीन प्रतिमा।

धान्यागार–पु० (सं०) अनाज रखनेका भण्डारगृह।

नखलिस्तान–पु०रेगिस्तानमें पायी जानेवाली हरित भूमि, मरूद्यान।

नश्र–वि० प्रसारित, दे० 'तश्किरा'।

नहुस–वि० मनहूसियत का सूचक, दुर्भाग्यपूर्ण, अशुभ 'कुत्तोंका रोना बड़ा नहुस होता है।'

नाई–पु० एक बाजा "(ताशकंदमें) वाद्योंमें तम्बूरा, नाई, सुरनाई और डमरू मैंने देखे"–दिनकर।

नामघर–पु० (असमियोंके) घरका मंदिर या उपासना-गृह।

निकाय–पु०···सुत्त पिटक के पाँच भाग जिनमें छोटे बड़े सुत्त संगृहीत हैं (विश्वकोश, १२, १२६)।

निक्षेप–पु०···जमीनके अन्दर इकट्ठा पाया जानेवाला धातु-भंडार; भूगर्भ स्थित खनिज वस्तुका जमाव।

निर्गंधीकरण–पु० (सं०) गंधरहित बनानेकी प्रक्रिया या कार्य।

निर्भृति–स्त्री०···मजदूरी न देना, बेगार।

निर्मोचन–पु०केंचुल, पंख आदि छोड़ देना, गिरा देना (मोल्टिंग)।

निष्प्रभावी–वि० जिसका प्रभाव न रह गया हो, अप्रभावी।

नृतत्वविज्ञान–पु० (सं०) मानवकी रचना तथा इतिहासादि सम्बन्धी विज्ञान, मानव-विज्ञान (एंथ्रोपॉलॉजी)।

नृतत्ववेत्ता–पु० (सं०) मानवशास्त्री (एंथ्रोपॉलॉजिस्ट)।

पक्षति–स्त्री०, **पक्षावरण**–पु० पंखोंका आवरण, पंखोंका समूह (प्लमेज)।

पताका–स्त्री०···। **–वाहक**–पु० नेता, मुखिया, मार्गदर्शक। (आन्दोलनके पताका वाहक)।

पत्रक–पु० वह ज्ञापन या आवेदन पत्र जिसमें शिकायतें दूर करानेके लिए की गयी माँगें उल्लिखित हों।

परिप्रोत–वि० गुथा हुआ, भरा हुआ (राष्ट्रप्रेमसे परि०)।

परिवीक्षा–स्त्री० (सं०) (नियुक्तिके बाद) योग्यता परखनेकी क्रिया या अवधि। **–काल**–पु० अस्थायी नियुक्तिके बादका वह समय जो नियुक्त किये गये व्यक्तिकी योग्यता या अयोग्यताकी जाँच करनेके लिए रखा जाता है (प्रोबेशन पीरियड)।

परिसर–पु०...विश्वविद्यालय या महाविद्यालयसे सम्बद्ध वह खुली भूमि जहाँ उसका कार्यालय, छात्रावास तथा अन्य भवन अवस्थित हों, 'कैम्पस'।

पर्णिका–स्त्री०···दो या चार पन्नोंकी विवरणिका, चौपतिया, 'लीफलेट'।

पिलछौंह–वि० पीला जैसा, पीलासे मिलता-जुलता, कुछ कुछ पीला।

पैछरा†–स्त्री० पदचाप।

पौवा†–पु० एक तरहकी खडाऊँ, दे० 'पौला'–'बिन बरसातके पहने पौवा। घाघ कहें ये तीनों कौवा'–घाघ।

प्रतिबद्ध–वि० (सं०)···किसी विशिष्ट विचार-धारा आदिसे अभिन्न रूपसे सम्बद्ध (कमिटेड)।

प्रतिबद्धता–स्त्री०···(कमिटमेंट) दर्शन, साहित्य आदिके विशिष्ट नियमोंसे बँधे रहनेका भाव।

प्रसाधक–पु० (स्त्री०, प्रसाधिका)–प्रसाधनों (प्रसाधन द्रव्यों) द्वारा स्त्री-पुरुषका श्रृंगार करनेकी कलामें दक्ष पुरुष (या स्त्री)।

प्रांतर–पु०···देहात, ग्राम खंड ('नगर और प्रांतरमें दीपावलीकी छटा छायी है')।

प्रावधान–पु० (प्रॉविजन)···व्यवस्था।

फयास†–स्त्री० रूसी, 'जाड़ेमें बालोंमें फयास पड़ जाती है।'

फाल–पु०···फलक, (फरसेका लोहे आदिका) आयताकार टुकड़ा (ब्लेड)–'हड़प्पामें बिल्लौरके फाल मिले'।

बताम†–पु० किवाड़ बन्द करते समय पल्लेका बीचमें दब जानेवाला किनारा।

बायस–पु० (अ०) 'दे० 'बाइस', कारण।

बिंदुरैखिकी–स्त्री० (सं०) बिन्दु-रेखाओं द्वारा चित्र प्रस्तुत करनेकी कला (ग्रैफिक्स)।

बीज–स्त्री० सिरपर सामनेकी ओर पहना जानेवाला एक आभूषण (राजस्थान)।

बेड़ा–पु०···मकानके पीछेकी घिरी हुई जमीन, बाड़ा, घेरा।

बैताना†–वि० (बुंदेल०) ऐंचाताना, भेंगा ('स्क्विट-आइड')।

भंडारण–पु० भंडार गृहों या गोदामोंमें गेहूँ चावल आदिका बड़ी मात्रामें सुरक्षित रूपसे संचित किया जाना।

भक्त†–स्त्री० देवीके गीत (बुंदेल०, 'भक्तें गाते हुए जवारोंका जुलूस'–सेठ गोविददास)।

भाव-प्रसू–वि० भाव उत्पन्न करनेवाला, भावपूर्ण ('भाव'के साथ)।

भ्रमरिका, भ्रमरी–स्त्री० एक राग (भरतकोश)।

मंचन–पु० (सं०) दे० 'अभिमंचन'।

मड़िया†–स्त्री० तालाबका पानी सूखने लगनेसे कीचड़का बढ़ जाना 'भैंस सुखी जब मडिया परै'।

मरूद्यान–पु० (ओयसिस) रेगिस्तानमें पायी जानेवाली हरित-भूमि; नखलिस्तान।

मुँहदूबर†–वि० अल्पभाषी।

मुचकंद–पु० (सं०) प्याज, पलांडु, मुखदूषण।

मुसीका–पु० मुँहका बंधन।

मृच्छकटिक–पु०···मिट्टीका रथ; फ्रेम (मृच्छकटिकोंके चौखटे मिले–हड़प्पामें सिंधु घाटीकी सभ्यता)।

युगबोध–पु० विशिष्ट समयमें प्रचलित विचारधारा या सामान्य प्रवृत्ति 'मैथिलीशरणका युगबोध सियारामने अपनाया'।

रवक़त†–स्त्री० रौनक़, शोभा 'यह खसमछुटी मजलिसकी रवक़त बिगाड़ रही है।'

राजत्व–पु० राज्यकाल; शासन।

राजभर–पु० एक हिन्दू जाति, जिसके लोग अपनेको सामान्य भर जातिके लोगोंसे कुछ ऊँचा मानते हैं।

रियाज–पु०...कष्ट; परिश्रम; तपस्या; अभ्यास। **–करना**–परिश्रम करना; कसरत करना।

रुक्न–पु० (अ०)–पु० स्तंभ, खंभा; सदस्य, मेम्बर।

रोगाणुनाशक–वि० (सं०) (डिसइन्फेक्टैंट) रोगके जीवाणुओंको नष्ट कर देनेवाला।

लक्ष्मीनिवास–पु० विष्णु (दे० 'लच्छिनिवास'), रमानिवास।

ललना–पु० ललन, बालक, प्यारा बच्चा, शिशुके लिए प्रयुक्त प्यारका शब्द 'मातु दुलारैं कहि प्रिय ललना', (रामा०)।

लिल्ली घोड़ी†–स्त्री० गिजाई या ग्वालिन नामक बरसाती कीड़ा।

वचनकार–पु०···अन्तर्दृष्टि योगी (वीरशैव)।

विद्युत् जनित्र–पु० विद्युत् शक्ति उत्पादक यंत्र (इलेक्ट्रिक जनेरेटर)।

विधायिका–स्त्री० जनप्रतिनिधियों की वह संस्था जो देशके लिए या प्रदेशके लिए विधानका निर्माण करे।

विमान–पु०...मंदिरका स्कंधसे मेरु तकका भाग।

विश्व-न्यायाधिकरण–पु० विश्वके राष्ट्रोंके बीच उत्पन्न विवादको, समझौतेकी शर्तोंके अनुसार, सुलझानेके लिए स्थापित संस्था (इंटरनैशनल ट्रिब्यूनल)।

विषाणु–पु० ऐसे सूक्ष्म जीवित पदार्थ जो अनेक रोगोंके जनक माने जाते हैं ('वायरस')।

शंकरी–वि०···शंकर जैसा, भयानक 'वह है एक शंकरी हलचल'–नवीन।

शवोत्सर्ग–पु० (सं०) मृतक शरीरको बिना जलाये छोड़ देने

(कब्रमें गाड़ देने आदि) की प्रथा।

शिश्न–पु०···।–**मल**–पु० शिश्नके ऊपरी आवरणके नीचे जमजानेवाला सफेद सा मैल (स्मेग्मा)। –**मुंड**–पु० शिश्नका अग्र भाग।

शूरंमन्य–दे० 'शूरम्मन्य'।

श्रुतलेख–पु० –(डिक्टेशन) किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा धीरे-धीरे वोली हुई शव्दावलीको सुनकर लिख लेनेका कार्य, या इस प्रकार लिखी गयी सामग्री; इमला।

संगत–स्त्री०···गुरुद्वारेमें उपासनादिके लिए एकत्र सिखोंकी भीड़।

संगीति–स्त्री०···त्रिपिटकके सुत्तोंके वे पाँच संग्रह जिनका एक साथ पारायण भिक्षु करते थे।

संदोह–पु०···चंदा, चंदेके रूपमें लिया गया सारा दूध, दही 'प्रत्येक गोपसे तीन दिनका संदोह लिया जाता था'।

संपुट–पु० (सं०) रामायण (तु०) के सामूहिक अखंड पाठके समय प्रत्येक दोहे या सोरठेके वाद दोहरायी जानेवाली विशिष्ट चौपाई; किसी भी मंत्र द्वारा किसी श्लोकादिको आवृत्त करते हुए (आगे-पीछे दुहराते हुए) पाठ करना।

संरंभ–पु० (सं०) गर्जन-तर्जन; जोर-शोर ('मम्मटके काव्य-लक्षणका वड़े संरंभके साथ खंडन किया है'।)

सप्तशिरा–स्त्री० दे० 'सप्तसिरा' ('सप्त'के साथ)।

सबेरे–अव्य० 'सवेरे'; देर होनेसे पहले, जल्द, 'आयो शरण सबेरे'।

समापन–पु०···कारोवार वन्द करनेका कार्य, अवसायन; (लिक्विडेशन)।

सर्वजीववाद–पु० (ऐनीमेटिज्म) प्राकृतिक पदार्थोंमें आत्माओंका अस्तित्व स्वीकार न करते हुए भी उनमें एक प्रकारका व्यक्तित्व और इच्छाशक्ति या समीहा (विल) माननेका सिद्धान्त; जड-समीहावाद। (विश्वकोश ११, ४९४)।

सर्वात्मवाद–पु० (ऐनीमिज़्म) जड़ पदार्थों (कीट-पतंग, पेड़-पौधों आदि) में भी आत्माका अस्तित्व माननेका सिद्धान्त।

सर्वाह्न–पु० (सं०) सारा दिन। अ० दिनभर, सारे दिन।

साका–पु०···गौरव-गीत 'जिनके साके देश-विदेशोंमें गाये जाते हैं' (कादं०, सितं०, ६७)।

साध्यवाद–पु० (टेलियोलॉजी) प्रत्येक कार्य या रचनामें कोई प्रयोजन या अन्तिम कारण विहित माननेका सिद्धान्त।

सुगबुगी–स्त्री० हलकी-सी हलचल या कंपन (दिनकर)।

सुरनाई–पु० एक वाजा (दे० 'नाई', इसी परिशिष्टमें)।

सुविधाधिकार–पु० दूसरे की भूमिमें या उसके सम्वन्धमें प्राप्त कुछ करनेका अधिकार, भोगाधिकार (राइट ऑफ ईज़मेण्ट)।

सुसंवातित–वि० (सं०) जिसमें भरपूर हवा के आने जानेकी गुंजाइश या सुविधा हो। (वेल-वेंटिलेटेड)।

सोधा†–वि० वदमाश, शैतान (सूधाका उलटा)।

सोयावीन–पु० एक पौधा जिसके वीजकी दाल वनती है और वीजोंसे तेल भी निकाला जाता है।

स्कंध–पु०...मंदिरके द्वारके कुछ ऊपरका वह भाग या सीमा जहाँसे विमान शुरू होता है।

स्तनपोषी(षिन्)–वि० (सं०) स्तनका दूध पिलाकर सन्तानका पोषण करनेवाले प्राणी ('मैमल्स'); दे० 'स्तनपायी'।

स्वस्तिक मंत्र–पु० शुभ और शान्तिके लिए प्रयुक्त मंत्र।

हवामार-तोप–स्त्री० हवामें उड़नेवाले विमानोंपर प्रहार करनेवाली तोप (ऐण्टी-एयरक्राफ्ट गन)।

हालर†–पु० फर्श और दीवारके जोड़पर वनायी जानेवाली सीमेंट या वरीकी पट्टी।

हेक्टोमीटर–पु० (अं०) सौ मीटर (लगभग ३२८ फुट) की माप।

हेक्टोलिटर–पु० (अं०) सौ लिटर।